पवित्र बाइबल

बाइबल लीग
अन्तर्राष्ट्रीय

Bible League International and its Global Partners provide Scriptures for millions of people who still do not have the life-giving hope found in God's Word. Every purchase of an Easy-to-Read Translation™ enables the printing of a Bible for a person who needs God's Word somewhere in the world. To provide even more Scriptures for more people, please make a donation at www.bibleleague.org/donate or contact us at Bible League International, 1 Bible League Plaza, Crete, IL 60417, USA. Bible League International exists to develop and provide Easy-to-Read Bible translations and Scripture resources for churches and partners as they help people meet Jesus.

Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™)
© 1995 Bible League International

Maps, Illustrations © Bible League International

Additional materials © Bible League International

All rights reserved.

This copyrighted material may be quoted up to 1000 verses without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. This copyright notice must appear on the title or copyright page:

> Taken from the Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™) © 1995 Bible League International and used by permission.

When quotations from the ERV are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials (ERV) must appear at the end of each quotation. Requests for permission to use quotations or reprints in excess of 1000 verses or more than 50% of the work in which they are quoted, or other permission requests, must be directed to and approved in writing by Bible League International.

BibleLeague® INTERNATIONAL
God's Word. Local Church. Global Strategy.™

Bible League International
1 Bible League Plaza
Crete, IL 60417, USA
Phone: 866–825–4636
Email: permissions@bibleleague.org
Web: www.bibleleague.org

B-HIN-89800: ISBN: 978-1-935189-80-0
B-HIN-89992: ISBN: 978-1-935189-99-2
B-HIN-07536: ISBN: 978-1-61870-753-6
B-HIN-61738-POD: ISBN: 978-1-62826-173-8

Free downloads: www.bibleleague.org/downloads

पुराने नियम की पुस्तकें

पुस्तकों के नाम	संक्षेप	पृष्ठ	पुस्तकों के नाम	संक्षेप	पृष्ठ
उत्पत्ति	*उत्पत्ति*	1	सभोपदेशक	*सभो.*	645
निर्गमन	*निर्गमन*	56	श्रेष्ठगीत	*श्रेष्ठ.*	655
लैव्यव्यवस्था	*लैव्य.*	102	यशायाह	*यशा.*	660
गिनती	*गिनती*	134	यिर्मयाह	*यिर्म.*	721
व्यवस्था विवरण	*व्यवस्था.*	177	विलापगीत	*विलाप.*	783
यहोशू	*यहोशू*	216	यहेजकेल	*यहेज.*	789
न्यायियों	*न्यायियों*	242	दानिय्येल	*दानि.*	840
रूत	*रूत*	271	होशे	*होशे*	859
1 शमूएल	*1 शमू.*	275	योएल	*योएल*	868
2 शमूएल	*2 शमू.*	311	आमोस	*आमोस*	872
1 राजा	*1 राजा*	341	ओबद्याह	*ओब.*	879
2 राजा	*2 राजा*	375	योना	*योना*	881
1 इतिहास	*1 इति.*	410	मीका	*मीका*	884
2 इतिहास	*2 इति.*	441	नहूम	*नहूम*	890
एज्रा	*एज्रा*	478	हबक्कूक	*हबक.*	893
नहेमायाह	*नहेमा*	490	सपन्याह	*सपन.*	896
एस्तेर	*एस्तेर*	508	हाग्गै	*हाग्गै*	899
अय्यूब	*अय्यूब*	517	जकर्याह	*जकर्य*	901
भजन संहिता	*भजन.*	549	मलाकी	*मलाकी*	910
नीतिवचन	*नीति.*	622			

नये नियम की पुस्तकें

पुस्तकों के नाम	संक्षेप	पृष्ठ	पुस्तकों के नाम	संक्षेप	पृष्ठ
मत्ती	*मत्ती*	915	1 तीमुथियुस	*1 तीम.*	1137
मरकुस	*मरकुस*	952	2 तीमुथियुस	*2 तीम.*	1141
लूका	*लूका*	974	तीतुस	*तीतुस*	1144
यूहन्ना	*यूहन्ना*	1012	फिलेमोन	*फले.*	1146
प्रेरितों के काम	*प्र.क.*	1039	इब्रानियों	*इब्रानि.*	1147
रोमियों	*रोमी.*	1073	याकूब	*याकूब*	1159
1 कुरिन्थियों	*1 कुरिन्थ.*	1088	1 पतरस	*1 पतर.*	1163
2 कुरिन्थियों	*2 कुरिन्थ.*	1103	2 पतरस	*2 पतर.*	1168
गलातियों	*गलाति.*	1113	1 यूहन्ना	*1 यूहन्ना*	1171
इफिसियों	*इफिसि.*	1119	2 यूहन्ना	*2 यूहन्ना*	1175
फिलिप्पियों	*फलिप्पि.*	1124	3 यूहन्ना	*3 यूहन्ना*	1176
कुलुस्सियों	*कुलुस्सि.*	1128	यहूदा	*यहूदा*	1177
1 थिस्सलुनीकियों	*1 थिस्स.*	1132	प्रकाशित वाक्य	*प्र.व.*	1179
2 थिस्सलुनीकियों	*2 थिस्स.*	1135	*शब्दावली*		**1197**

प्रस्तावना

पवित्र बाइबल के इस रुपान्तर को विशेष रुप से साधारण लोगों, बच्चों, तथा उन लोगों के लिये जिन्होंने हाल ही में पढ़ना-लिखना शुरु किया है, तैयार किया गया है। इस बात को ध्यान में रखते हुए अनुवादकों का यह प्रयास रहा है कि वे सरल शब्दों तथा छोटे-छोटे वाक्यों का ही प्रयोग करे।

इस रुपान्तर का मार्गदर्शन, उत्तम अनुवाद उत्तम संचार की धारणा ने किया है। अनुवादकों ने इस का विशेष ध्यान रखा है कि वह पाठकों के सामने बाइबल के लेखकों का सन्देश उसी स्वाभाविकता तथा वास्तविकता से प्रस्तुत करे जैसा की मूल भाषा में पुराने समय के लोगों के सामने पेश किया गया था। (एक विश्वसनीय अनुवाद का अर्थ केवल मूल भाषा के शब्दों को शब्दकोष से मिलाना ही नहीं बल्कि वह तो एक ऐसी प्रकिया है जिस के द्वारा मूल सन्देश इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि न केवल उस का अर्थ ही संप्रेषित हो, बल्कि वह सुनने में भी उतना ही सही तथा उसी प्रकार आकर्षक हो और प्रभाव भी वैसा ही हो जैसा हजारों वर्ष पूर्व अनुभव किया जाता था।)

इसलिए इस शास्त्र के अनुवाद में अनुवादकों के लिये प्रभावशाली संचार का अत्यन्त महत्व रहा है। परन्तु संचार की इस इच्छा ने परिशुद्धता की महत्व को कम नहीं किया। लेकिन "परिशुद्धता" का अर्थ यह समझा गया है कि विचारों को विश्वसनीय ढंग से व्यक्त किया जाये, न कि उनकी रूपात्मक विशेषताओं का यथार्थ सामंजस्य किया जाये।

धर्मशास्त्र के लेखकों ने, विशेषकर नया नियम की रचना करने वालों ने, भाषा तथा शैली का प्रयोग करते समय उत्तम संचार का विशेष ध्यान रखा है। इस अनुवाद को तैयार करने में भी इस बात को ध्यान में रखा गया है। और इसलिए ऐसी भाषा का प्रयोग किया गया है जिस के द्वारा हिन्दी भाषा बोलने वालों के सामने शास्त्रों के सत्य अपने को पूरी तरह प्रकट कर सकें।

इस रुपान्तर में कई विशेषताओं का प्रयोग हुआ है जिससे समझने में पूरी सुविधा का अनुभव हो। पुस्तक में प्रयोग किये गये कठिन तथा अस्पष्ट शब्दों के तुरन्त बाद अक्सर संक्षिप्त व्याख्या या समानार्थ देखने को मिलते हैं। इन व्याख्यात्मक शब्दों को कोष्ठक सहित नियर्गक्षरों में लिखा गया है। जिन शब्दों या मुहावरों में विस्तृत स्पष्टीकरण की अपेक्षा होती है, उनको तारक चिन्हों का प्रयोग करके पन्ने के अन्त में फुटनोटों द्वारा समझाया गया है। इस के अतिरिक्त शास्त्रीय उदाहरणों की पहचान तथा परिवर्तित पठन भी कभी कभी फुटनोटों द्वारा दिये गये है।

भूमिका

“बाइबल” शब्द ग्रीक भाषा से लिया गया है जिसका अर्थ है “किताबें।” वास्तव में बाइबल दो पुस्तकों का संग्रह है, जिन्हें “पुराना नियम” तथा “नया नियम” कहा जाता है। अनुवादित शब्द “टेस्टामेन्ट”, प्राय: एक वाचा या समझौते के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह शब्द परमेश्वर का, अपने भक्तों के प्रति प्रतिज्ञा एवं आशीर्वाद का हवाला देता है। पुराना नियम रचनाओं का वह संग्रह है और उस वाचा से सम्बन्धित है, जिसे परमेश्वर ने, मूसा के समय में, यहूदी लोगों (इस्राएलियों) के साथ किया था। “नया नियम” उन रचनाओं का संग्रह है जिन का सम्बन्ध उस समझौते से है, जो परमेश्वर ने उन लोगों के साथ किया, जो यीशु मसीह पर विश्वास रखते हैं।

पुराने नियम के लेख, परमेश्वर के उन महान कार्यों का विवरण देते हैं जो परमेश्वर के द्वारा यहूदी लोगों के साथ हुए व्यवहार को बताते हैं, तथा परमेश्वर की उस योजना के विषय में भी बताते हैं जिस के द्वारा इन लोगों को सारे संसार पर आशीर्वाद लाने के लिये प्रयोग किया गया। ये लेख, आनेवाले मुक्तिदाता (मसीहा) की ओर भी इशारा करते हैं जिस को परमेश्वर अपनी योजना के अनुसार भेजने वाला था। नये नियम के लेख, पुराने नियम की कथा का परिणाम है। ये आनेवाले मुक्तिदाता (यीशु मसीह) तथा सम्पूर्ण मनुष्य जाति के लिये उसके आने के महत्व को समझाते हैं। नये नियम की पुस्तकों को समझने के लिये पुराना नियम को समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि पुराना नियम आवश्यक पृष्ठभूमि प्रदान करता है और नया नियम उद्धार की उस कथा को, पूरा करता है जो पुराने नियम में आरम्भ हुई।

पुराना नियम:
पुराने नियम के लेख 39 पुस्तकों का वह संग्रह है जिसे विभिन्न लेखकों ने लिखा है। यह अधिकतर हिब्रू भाषा में लिखी गयी है, जो प्राचीन इस्राएल की भाषा हुआ करती थी। कुछ खण्ड अरामी भाषा में भी लिखे गये हैं जो बाबेल राज्य की सरकारी भाषा थी। “पुराने नियम” के कुछ खण्ड तीन हजार पाँच सौ वर्ष पूर्व लिखे गये थे और इस नियम की पहली पुस्तक और अंतिम पुस्तक के बीच, लगभग एक हजार वर्ष से भी अधिक समय का अंतराल है। इस संग्रह में व्यवस्था, इतिहास, गद्य, गीत, भजन और विवेकी पुरुषों के उपदेश सम्मिलित हैं।

“पुराना नियम” प्राय: तीन प्रमुख खण्डों में विभाजित किया गया है–व्यवस्था, भविष्यवक्ता तथा पवित्र लेखन। व्यवस्था खण्ड में पाँच पुस्तकें हैं जो “मूसा की पाँच पुस्तकें” कहलातीं हैं। इस में पहली पुस्तक उत्पत्ति है, जो संसार के आरम्भ के विषय में बताती है अर्थात् पहले पुरुष और स्त्री तथा परमेश्वर के प्रति उनके पहले अपराध का ब्योरा देती है। इस पुस्तक में “महा जलप्रलय” और उसमें से परमेश्वर के द्वारा उस परिवार के बचाये जाने तथा इस्राएल के राष्ट्र के आरम्भ, जिन लोगों को परमेश्वर ने आदि समय से एक विशेष उद्देश्य हेतु प्रयोग करने के लिये चुना था, के बारे में भी विवरण देता है।

इब्राहीम की कथा:
परमेश्वर ने इब्राहीम के साथ एक वाचा की। इब्राहीम एक बहुत भरोसेमंद व्यक्ति था। उस वाचा में परमेश्वर ने इब्राहीम को एक महान राष्ट्र का पिता बनाने का तथा उसे और उसके वंशजों को कनान देश की भूमि देने का वचन दिया। यह दिखाने के लिये कि इब्राहीम ने इस वाचा को स्वीकार कर लिया, उस का ख़तना किया गया और फिर ख़तना परमेश्वर और उसके लोगों के बीच हुई इस वाचा का सबूत बन गया। इब्राहीम को समझ में नहीं आया कि उन बातों को परमेश्वर कैसे पूरा करेगा जिनका उसने वचन दिया है किन्तु इब्राहीम को परमेश्वर पर पूरा भरोसा और विश्वास था, इस से परमेश्वर बहुत अधिक प्रसन्न हुआ।
परमेश्वर ने इब्राहीम को आदेश दिया कि वह मैसोपोटामिया–हिब्रूओं के बीच से अपना घर छोड़ दे और परमेश्वर उसे कनान की (जिसे पलिश्तीन भी कहा जाता है), भूमि की ओर ले गया जिसे उसको देने का वचन दिया गया था। बुढ़ापे में इब्राहीम को एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम इसहाक था। इसहाक को याकूब नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। याकूब (वह इस्राएल भी कहलाता है) के बारह पुत्र और एक पुत्री हुई। यह परिवार आगे चलकर इस्राएल राष्ट्र बना किन्तु अपने जनजातीय मूल को इस ने कभी नहीं भुलाया। वह अपने आपको इस्राएल के बारह कबीलों (या “परिवार समूहों”) से सम्बन्धित बताता रहा। ये कबीले याकूब के बारह पुत्रों के वंशज थे। ये बारह पुत्र थे:–रूबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा,

इस्साकार, जबूलून, यूसुफ, बिन्यामीन, दान, नप्ताली, गाद, और आशेर। इब्राहीम, इसहाक और याकूब (इस्राएल) इस्राएल के "पूर्वजों" अथवा "मुखियाओं" के रूप में जाने जाते हैं।

इब्राहीम एक अन्य प्रकार का "पिता" भी था। प्राचीन इस्राएल में अक्सर परमेश्वर ने कुछ विशेष व्यक्तियों को अपना सन्देशवाहक बनाने के लिये चुना था। परमेश्वर के वे सन्देशवाहक या नबी, लोगों के लिए परमेश्वर के प्रतिनिधि थे। इन नबियों के द्वारा परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को वचन, चेतावनियाँ, व्यवस्था, शिक्षाओं व अनुभवों पर आधारित उपदेश तथा भावी घटनाओं पर आधारित निर्देश दिये। शास्त्रों में "इब्राहीम–हिब्री" का प्रथम नबी के रूप में उल्लेख हुआ है।

दासता से इस्राएल का छुटकारा

याकूब (इस्राएल) का परिवार बढ़ता गया और उस में लगभग सत्तर अन्य सीधे वंशज शामिल थे। उसके पुत्रों में से एक यूसुफ था जो मिस्र का एक ऊँचा अधिकारी था। कठिन समय था, इसलिए याकूब और उसका परिवार मिस्र चले गये, जहाँ खाने–पीने को बहुत था और जीवन अधिक सुविधापूर्ण था। हिब्रुओं का यह कबीला, एक छोटी सी जाति के रूप में विकसित हुआ और फिर मिस्र के राजा फ़िरौन ने इन लोगों को दास बना लिया। निर्गमन की पुस्तक हमें बताती है कि चार सौ वर्ष की दासता के बाद अपने लोगों को मिस्र से छुटकारा दिलाने के लिए परमेश्वर ने नबी–मूसा को भेजा। मूसा इस्राएल के लोगों को वापस पलिश्तीन ले आया। छुटकारे का मूल्य भारी था किन्तु यह मूल्य मिस्र के लोगों ने दिया। फ़िरौन और मिस्र के सभी परिवारों को अपने पहलौठे पुत्रों को खोना पड़ा और इसके बाद ही फ़िरौन ने इस्राएलियों को स्वतन्त्र किया। इन लोगों के छुटकारे के लिये, पहलौठों को मरना पड़ा। इस्राएल के लोग, अपनी उपासना तथा बलियों में, इस घटना को अनेक प्रकार से स्मरण करते रहे।

इस्राएल के लोग अपनी स्वतंत्रता की यात्रा के लिए तैयार थे। वस्त्र पहन कर मिस्र से भाग निकलने के लिए वे तैयार हो गये। प्रत्येक परिवार ने एक मेमने को काट कर उसको भूना। प्रत्येक परिवार ने परमेश्वर के प्रति एक विशेष प्रतीक के रूप में, अपने घरों के दरवाजों की चौखटों पर मेमने के लहू को लगाया। उन्होंने शीघ्रता से अख़मीरी रोटी पकाई और उस को खाया। उस रात यहोवा का दूत उस धरती पर से होकर गुज़रा और जिस घर की चौखट पर मेमने का लहू नहीं लगा था उस परिवार के पहलौठे की मृत्यु हो गई। इस्राएल के लोगों को छुटकारा मिल गया, किन्तु जैसे ही दास मिस्र छोड़ने वाले थे फ़िरौन का मन बदल गया और उसने उनको पकड़कर वापस ले आने के लिए अपनी सेना को भेजा, किन्तु परमेश्वर ने अपने लोगों की रक्षा की। परमेश्वर ने लाल समुद्र को चीर दिया और अपने लोगों को छुटकारा दिलवाने के लिये उन्हें उस पार पहुँचाया, पीछा करने वाली मिस्री सेना वहीं नष्ट हो गयी। तब अरब प्राय द्वीप के आस पास सीनै मरुभूमि में एक पहाड़ पर उन लोगों के साथ परमेश्वर ने एक विशेष वाचा की।

मूसा की व्यवस्था

परमेश्वर के द्वारा इस्राएल के लोगों को बचाये जाने और सीनै पर उनके साथ की गई वाचा ने, इस जाति को दूसरों से भिन्न बना दिया। इस वाचा में, इस्राएलियों के लिये प्रतिज्ञा और नियम थे। इस वाचा के एक खंड को "दस आज्ञाओं" (टेन–कमान्डमैन्टस) के नाम से जाना जाता है। परमेश्वर द्वारा दिए गए इन आदेशों को, पत्थर की दो पट्टियों पर लिखकर, लोगों को दिया गया। इन आदेशों में वे मूल सिद्धांत विद्यमान थे जिन के आधार पर परमेश्वर की इच्छानुसार इस्राएल के लोगों को अपना जीवन व्यतीत करना था, और अपने परिवार तथा सहवासियों के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करना था।

आगे चलकर ये आज्ञाएें और शेष धर्म–नियम तथा सीनै पर्वत पर दिये गये उपदेश "मूसा की व्यवस्था" अथवा केवल "धर्म–नियम" के नाम से प्रसिद्ध हुए। अनेक अवसरों पर, ये दोनों शब्द शास्त्रों की पहली पाँच पुस्तके और समूचे पुराने नियम के लिये भी प्रयोग में लाये जाते हैं।

दस आदेशों तथा जीवन–यापन के अन्य नियमों के अतिरिक्त मूसा की व्यवस्था में याजकों, बलियों, उपासना और पवित्र दिनों के विषय में नियम विद्यमान हैं। ये नियम लैव्यव्यवस्था में पाये जाते हैं। मूसा की व्यवस्था के अनुसार सभी याजक और उनके सहायक लेवी कबीले से थे और "लेवी" कहलाये जाते थे। सबसे मुख्य और महत्वपूर्ण याजक को "महायाजक" कहा जाता था।

इस व्यवस्था में पवित्र तम्बू या मिलापवाले तम्बू बनाने और इस्राएली लोगों द्वारा परमेश्वर की उपासना के स्थान के विषय में नियम शामिल हैं। इस में परमेश्वर की उपासना में काम आने वाली वस्तुओं के बारे में भी बताया गया है। इस व्यवस्था में, इस्राएली लोगों को यरूशलेम में सिय्योन पर्वत पर मन्दिर बनाने के लिये तैयार किया, जहाँ वे बाद में परमेश्वर की उपासना करने के लिये जाया करते थे। बलियों और उपासना से सम्बन्धित नियमों ने इस्राएलियों को यह जानने के लिए बाध्य कर दिया कि वे एक दूसरे तथा परमेश्वर के प्रति पाप कर रहे हैं। साथ ही इन नियमों ने, इन लोगों को क्षमा किये

जाने तथा आपस में एक दूसरे तथा परमेश्वर से एक बार फिर से जुड़ जाने का मार्ग भी दिखाया। इन बलियों ने उस बलि को ठीक प्रकार समझना भी सिखाया, जिसे परमेश्वर, सारी मानव जाति के हेतु प्रदान करने की तैयारी कर रहा था।

इस व्यवस्था में पवित्र दिनों और पर्वों को मनाने के विषय में भी नियम दिये गये हैं। प्रत्येक पर्व का अपना एक विशेष महत्व था। कुछ अवसर, वर्ष में हर्ष और उल्लास के दिन माने जाते थे जैसे पहले फल का पर्व, "सब्त" यानी यहूदी पर्व अथवा साप्ताहिक भोज (पिन्तेकुस्त या सप्ताहों का पर्व) तथा डेरों का पर्व (सुकोथ)।

कुछ पर्व ऐसे थे, जो परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए जो अद्भुत बातें की हैं, उन्हें याद करने के लिए, मनाये जाते थे। "फसह पर्व" ऐसा ही एक पर्व था। प्रत्येक परिवार मिस्र से बच निकलने की घटना को एक बार फिर से स्मरण करता था। लोग परमेश्वर का स्तुतिगान गाते थे। एक मेमना काट कर भोजन तैयार किया जाता था। दाखमधु का प्रत्येक प्याला और भोजन का हर कौर, लोगों को उन बातों को याद दिलाता था, कि किस तरह परमेश्वर ने पीड़ा और दु:ख के जीवन से उनको छुड़ाया था।

इनके अतिरिक्त, दूसरे पर्व बड़ी गंभीरता से मनाये जाते थे। प्रत्येक वर्ष "प्रायश्चित्त के दिन" पर लोग अपने बुरे कर्मों को याद करते थे जो उन्होंने दूसरों तथा परमेश्वर के प्रति किये थे। यह दिन पश्चात्ताप का दिन होता था, तथा इस दिन लोग भोजन नहीं करते थे, तथा महायाजक उनके सभी पापों को क्षमा करने के लिये विशेष बलियाँ चढ़ाता था।

"पुराने नियम" के लेखकों के लिए परमेश्वर तथा इस्राएल के बीच हुई वाचा का अत्यधिक महत्व था। प्राय: सभी नबियों की पुस्तकें और पवित्र लेख इस बात पर आधारित हैं कि इस्राएल के राष्ट्र तथा इस्राएल के हर नागरिक ने अपने परमेश्वर के साथ एक अतिविशिष्ट वाचा किये थे। इसे वे "यहोवा की वाचा" अथवा केवल "वाचा" ही कहा करते थे। इतिहास की पुस्तकें उस वाचा के प्रकाश में ही, घटनाओं की व्याख्या करती हैं। व्यक्ति अथवा प्रजा (राष्ट्र) यदि परमेश्वर और उस वाचा के प्रति विश्वासयोग्य हो तो परमेश्वर उन्हें प्रतिफल प्रदान करता था, और यदि लोग, उस वाचा से भटक जाते थे तो परमेश्वर उन्हें दण्ड दिया करता था। परमेश्वर लोगों को, अपने साथ हुई वाचा को याद दिलाने के लिए अपने नबियों को भेजता था। इस्राएल के कवियों ने, परमेश्वर द्वारा अपने आज्ञाकारी लोगों के लिए किये गये अद्भुत कार्यों के गीत गाये और इसी प्रकार उनके लिये, जिन्होंने परमेश्वर को नकारा, उनके कष्टों और उन्हें दिये गये दण्डों पर शोक गीत गाये। वाचा की शिक्षाओं के आधार पर ही इन लेखकों ने अपनी उचित व अनुचित धारणाएँ बनायीं। जब भोले-भाले निर्दोष लोग यातनाएँ भोगते थे, तो कवि यह समझने का प्रयास करते कि ऐसा क्यों हो रहा है।

इस्राएल का राज्य

प्राचीन इस्राएल की कहानी, लोगों के परमेश्वर को भूल जाने, परमेश्वर द्वारा लोगों को बचाकर निकालने एवं उनका परमेश्वर की ओर लौटने और उनके पुन: परमेश्वर को भूल जाने की कहानी है। लोगों के द्वारा परमेश्वर की वाचा को स्वीकार करने के तत्काल बाद से ही यह कथा-चक्र शुरू हो गया था, और फिर यही कथा-चक्र बार बार घूमता रहा। सीनै पर्वत पर, इस्राएल के लोगों ने परमेश्वर का अनुसरण करना स्वीकार किया था, फिर उन्होंने परमेश्वर के प्रति बगावत कर दी, इस के फलस्वरूप उन्हें चालीस वर्षों तक मरुभूमि में भटकना पड़ा था। अंत में मूसा का सहायक यहोशू उन्हें उस देश में ले गया जिसे उन्हें देने का वचन दिया गया था। यह एक विजय की शुरुआत हुई और इस्राएल को आंशिक रूप से बसाया गया। इस आबादी के बाद, शुरू की कुछ शताब्दियों तक लोगों पर, स्थानीय नेताओं का राज्य रहा जिन्हें "न्यायाधीश" कहा जाता था।

अंत में एक ऐसा समय आया जब लोग किसी एक राजा की इच्छा करने लगे और पहला राजा शाऊल बना। शाऊलने परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया इसलिए परमेश्वर ने दाऊद नाम के एक गड़ेरिये के लड़के को नया राजा बनाने के लिये चुन लिया। शमूएल नबी ने आकर उसके सिर पर तेल डालकर इस्राएल के राजा के रूप में उसका अभिषेक किया। परमेश्वर ने दाऊद को वचन दिया कि यहूदा कबीले के उसके वंशज, इस्राएल के भावी राजा होंगे। दाऊद ने यरूशलेम नगर पर विजय हासिल की और उसे अपनी राजधानी तथा मन्दिर-निर्माण का भावी स्थल बनाया। उसने मन्दिर में सेवा, उपासना के लिए याजकों, नबियों, गीत-लेखकों, संगीतकारों और गायकों को संगठित किया। दाऊद ने स्वयं भी बहुत से गीत (या भजन) लिखे किन्तु परमेश्वर ने उसे मन्दिर का निर्माण नहीं करने दिया।

दाऊद जब बूढ़ा हो गया और मृत्यु-शैय्या पर था, तभी उसने अपने पुत्र सुलैमान को इस्राएल का राजा बना दिया। दाऊद ने अपने पुत्र को सावधान कर दिया था कि वह परमेश्वर का सदा अनुसरण करे और वाचाओं का पालन करता रहे। राजा बनने के बाद सुलैमान ने मन्दिर का निर्माण कराया और इस्राएल की सीमाओं का विस्तार किया। उस समय इस्राएल वैभव का शिखर चूमने लगा। सुलैमान प्रसिद्ध हो गया और इस्राएल सुदृढ़ बन गया।

यहूदा और इस्राएल–विभाजित राज्य

सुलैमान की मृत्यु पर वहाँ नागरिक विवाद उठ खड़ा हुआ और देश विभाजित हो गया। उत्तर के दस कबीले अपने आप को इस्राएल कहने लगे और दक्षिण के कबीलों ने स्वयं को “यहूदा” नाम दिया (आज का “यहूदी” शब्द, इसी नाम से निकला है)। यहूदा “वाचा” के प्रति सच्चा रहा तथा दाऊद का वंश (राजाओं का परिवार) उस समय तक यरूशलेम पर राज्य करता रहा। आखिर में, यहूदा पराजित हुआ और बाबेल के लोग, यहूदा के लोगों को देश से निकाल कर ले गये।

क्योंकि लोग वाचा का अनुसरण नहीं करते थे इसलिए (उत्तरी राज्य इस्राएल में बहुत से राजवंश आये और चले गये।) अलग–अलग समयों में इस्राएल के राजाओं ने विभिन्न नगरों में अपनी राजधानियाँ बनायीं, इन्हीं में से अंतिम राजधानी थी, शोमरोन। इस्राएल के राजाओं ने प्रजा पर नियन्त्रण बनाये रखने के लिए परमेश्वर की उपासना का ढंग बदल दिया था, उन्होंने नये याजक चुने और दो नये मन्दिरों का निर्माण कराया एक इस्राएल की उत्तरी सीमा पर दान में और दूसरा बेतेल में (इस्राएल की यहूदा से लगती हुई सीमा पर)। इस्राएल और यहूदा के बीच अनेक गृहयुद्ध हुए।

नागरिक युद्ध और अशांति के दौरान परमेश्वर ने यहूदा और इस्राएल में अनेक नबी भेजे थे। उनमें से कुछ नबी याजक कुछ किसान, कुछ राजाओं के सलाहकार, तो कुछ अत्यन्त सादा जीवन व्यतीत करने वाले लोग थे, कुछ नबियों ने अपनी शिक्षाओं और अपनी भविष्यवाणियों को लिखा और बहुतों ने नहीं लिखा। किन्तु सभी नबी न्याय, सत्य और सहायता के लिए परमेश्वर पर निर्भर रहने का उपदेश देते रहे।

बहुत से नबियों ने चेतावनी दी कि यदि लोग परमेश्वर की ओर वापस नहीं मुड़ेंगे तो वे पराजित होकर तितर–बितर हो जायेंगे। इन नबियों में से कुछने तो भावी संवृद्धि और भावी दण्डों के दिव्य दर्शन भी किये थे। इनमें से बहुतों ने उस समय का पूर्व दर्शन कर लिया था, जब उस राज्य का शासन करने के लिए एक नये राजा का आगमन होगा। कुछ ने देखा कि वह राजा जो दाऊद का वंशज होगा एवं परमेश्वर के जनों को एक नये स्वर्णिम युग में ले जायेगा। जहाँ कुछ लोगों ने इस राजा के बारे में कहा कि वह एक अनन्त राज्य पर युगानुयुग तक राज्य करेगा तथा दूसरों ने उसे एक ऐसे सेवक के रूप में देखा जो अपने लोगों को परमेश्वर की ओर लौटाने के लिए अनेक प्रकार की यातनाएँ झेलेगा। किन्तु सबने उसे एक मसीहा के रूप में देखा, नये युग को लाने वाला परमेश्वर का एक “अभिषिक्त।”

इस्राएल और यहूदा का विनाश

इस्राएल की जनता ने परमेश्वर की चेतावनियों पर ध्यान नहीं दिया। इसलिए 722/721 ईसा पूर्व में शोमरोन ने आक्रमणकारी अशूर के आगे घुटने टेक दिये। इस्राएल के लोगों को, उनके घरों से ले जाकर समूचे अश्शूर राज्य में फैला दिया गया, यहूदा में लोग अपने भाई–बहनों से वे हमेशा के लिए बिछड़ गये। फिर अशूरियों ने दूसरे देशों के लोगों को लाकर, इस्राएल की धरती को पुन: बसा दिया। इन लोगों को यहूदा और इस्राएल के धर्म की शिक्षा दी गयी, उनमें से अनेकों ने वाचा का अनुसरण करने का प्रयत्न किया। ये लोग सामरी के नाम से जाने गये। अशूर के लोगों ने यहूदा पर आक्रमण करने का प्रयास किया। आक्रमणकारियों के आगे बहुत से राज्यों ने घुटने टेक दिये, किन्तु यरूशलेम की परमेश्वर ने रक्षा की। अशूर का पराजित राजा अपनी मातृभूमि लौट आया और वहाँ अपने ही दो पुत्रों के हाथों मारा गया। इस प्रकार यहूदा की रक्षा हुई।

कुछ समय के बाद, यहूदा के लोग बदल गये और थोड़े समय के लिये, वे परमेश्वर की आज्ञा मानने लगे किन्तु अन्त में वे भी पराजित हुए और तितर–बितर हो गये। बाबेल शक्तिशाली हो गया और उसने यहूदा पर धावा कर दिया। पहले तो बंदी के रूप में उन्होंने वहाँ से कुछ महत्वपूर्ण लोगों को ही लिया किन्तु कुछ वर्ष बाद 587/586 ई.पूर्व में यरूशलेम और मन्दिर को नष्ट करने के लिए एक बार वे फिर लौटे। कुछ लोग बचकर मिस्र भाग गए किन्तु अधिकांश को दास बना कर बाबेल ले जाया गया। परमेश्वर ने लोगों के पास फिर नबियों को भेजा और लोगों ने उन की बातों पर ध्यान देना शुरू कर दिया। मानो, मन्दिर और यरूशलेम के विनाश और बाबेल में देश–निकाला, लोगों में एक वास्तविक परिवर्तन ला दिया। नबियों ने नये राजा और उसके राज्य के बारे में बहुत कुछ कहने लगे। जिनमें से एक नबी यिर्मयाह ने तो एक नई वाचा की भी बात कही। यह नई वाचा, पत्थर की पट्टियों पर नहीं लिखी होगी बल्कि यह परमेश्वर के भक्तों के हृदय में लिखी होगी।

पलिस्तीन को यहूदियों की वापसी

इसी दौरान, कुस्रू, मध्य फारस का शासक बन गया और उसने बाबेल को जीत लिया। कुस्रू ने लोगों को अपने देश में लौटने की आज्ञा दी। इस तरह सत्तर वर्ष के “देश–निकाला” के बाद यहूदा के बहुत से लोग अपने घर वापस लौटे। लोगों ने अपने राष्ट्र का पुनर्निर्माण करने का प्रयत्न किया किन्तु फिर भी यहूदा छोटा और कमज़ोर ही बना रहा। लोगों ने फिर से मन्दिर का निर्माण किया परन्तु यह मन्दिर उतना सुन्दर नहीं बन पाया जितना सुलैमान का बनवाया मन्दिर था। बहुत से लोग सच्चाई के साथ परमेश्वर की ओर मुड़े और नियमों, नबियों के अभिलेखों तथा अन्य पवित्र ग्रन्थों का अध्ययन करने

लगे। उनमें से बहुत से लोग लेखक (विशेष प्रकार के विद्वान) बने, जो शास्त्रों की प्रतिलिपियाँ तैयार किया करते थे। धीरे–धीरे इन लोगों ने शास्त्रों के अध्ययन के लिए पाठशालाओं की स्थापना की। लोगों ने सब्त के दिन (शनिवार) को अध्ययन, प्रार्थना और एक साथ मिलकर परमेश्वर की आराधना के लिए एकत्र होना प्रारम्भ किये। अपने धर्मसभाओं में लोग शास्त्रों का अध्ययन करने लगे और बहुत से लोग आने वाले मसीहा की प्रतीक्षा में जुट गए।

पश्चिम में, सिकन्दर महान ने यूनान पर अपना शासन स्थापित कर लिया और शीघ्र ही उस ने विश्व के अधिकांश हिस्सों पर विजय प्राप्त की। उसने दुनिया के बहुत से भागों में यूनानी भाषा, रीति–रिवाज तथा वहाँ की संस्कृति का प्रचार किया। किन्तु जब उसकी मृत्यु हुई तो उसका राज्य विभाजित हो गया और शीघ्र ही एक ऐसे राज्य का उदय हुआ जिसने उस समय तक के ज्ञात विश्व के एक बड़े भाग पर काबू पा लिया। इसमे पलिश्तीन भी शामिल था, जहाँ यहूदा के लोग रहा करते थे।

रोम के ये नये शासक, प्राय: बहुत क्रूर और अत्याचारी हुआ करते थे, तथा यहूदी अभिमानी और स्वभाव से ही विद्रोही थे। अशांति के इन दिनों में बहुत से ऐसे यहूदी थे जो अपने जीवन काल में ही मसीह के प्रकट होने की प्रतीक्षा करने लगे थे। यहूदी बस यह चाहते थे कि मात्र परमेश्वर का और उस मसीह का शासन हो जिसे भेजने का उन्हें परमेश्वर ने वचन दिया था। वे यह नहीं समझते थे कि परमेश्वर की यह योजना है कि वह मसीह के द्वारा जगत के लोगों का उद्धार करेगा, वे तो यही सोचते थे कि परमेश्वर की योजना सिर्फ यहूदियों को ही बचाने की है। कुछ यहूदी परमेश्वर द्वारा भेजे जाने वाले मसीह की प्रतीक्षा करने में ही सन्तुष्ट थे, किन्तु दूसरों ने नये राज्य की स्थापना में परमेश्वर की "सहायता" पाने का निश्चय किया, ये यहूदी ही धर्मोत्साही "जिलौत" कहलाए। इन धर्मोत्साहियों ने रोमियों के विरुद्ध युद्ध करने का प्रयत्न किया तथा उन यहूदियों की हत्या भी की जिन का रोमियों के साथ सहयोग हुआ करता था।

यहूदी धार्मिक समुदाय
पहली शताब्दी ई.पूर्व तक मूसा की व्यवस्था यहूदियों के लिए बहुत अधिक महत्वपूर्ण हो गयी थी। लोगों ने इस व्यवस्था का अध्ययन किया था और उस पर वाद विवाद किया था। लोगों ने इस व्यवस्था को अनेक ढंगों से समझा परन्तु कुछ यहूदी इस व्यवस्था के लिए मरने तक को तैयार थे। यहूदियों में तीन प्रमुख धार्मिक समुदाय हुआ करते थे, और प्रत्येक समुदाय के अपने उपदेशक (विधि ज्ञाता या शास्त्री) थे।

सदूकी
इनमें से एक समुदाय का नाम था सदूकी। हो सकता है यह नाम सादोक नाम से आया हो। सादोक, राजा दाऊद के समय का प्रमुख याजक हुआ करता था। बहुत से याजक और अधिकारी लोग, सदूकी थे। ये लोग केवल व्यवस्था को (मूसा की पाँच किताबों को) धार्मिक विषयों में प्रमाण स्वरूप माना करते थे। याजकों और बलियों के विषय में तो (मूसा की व्यवस्था) व्यवस्था बहुत सी बातें सिखाती थी, परन्तु मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में वह कुछ नहीं बताती थी। इसलिए सदूकी मृत्यु के बाद, लोगों के पुनरुत्थान में विश्वास नहीं करते थे।

फरीसी
यहूदियों का दूसरा धार्मिक समुदाय फरीसी कहलाता था। यह नाम हिब्रू भाषा के एक ऐसे शब्द से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है "व्याख्या करना" अथवा "अलग करना।" इन लोगों ने सर्वसाधारण जनता को मूसा की व्यवस्था सिखाने अथवा उसकी व्याख्या करने का प्रयत्न करते थे। फरीसियों का विश्वास था कि एक मौखिक परम्परा जो मूसा के समय तक चली आयी थी। उनका कहना था कि हर पीढ़ी के व्यक्ति मूसा की व्यवस्था की इस प्रकार व्याख्या कर सकते हैं जो उस पीढ़ी के लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करती हो। इसका अर्थ यह हुआ कि फरीसी न केवल मूसा की व्यवस्था को ही बल्कि नबियों, पवित्र ग्रन्थों और यहाँ तक की अपनी परम्पराओं को भी अधिकृत रूप में माना करते थे। ये लोग व्यवस्था की विधि और अपनी परम्पराओं का बड़ी कठोरता से पालन करने का प्रयत्न करते थे। इसलिए, वे क्या खाते और छूते हैं इस के प्रति बड़े सावधान रहते थे। वे हाथ धोने और स्नान करने का बहुत ध्यान रखते थे। ये लोग मृत्यु के बाद पुनरुत्थान में भी विश्वास रखते थे क्योंकि वे समझते थे कि अनेक नबियों ने यह कहा है कि पुनरुत्थान होगा।

इसीन
तीसरा प्रमुख समुदाय था इसीन। यरूशलेम में बहुत से याजक उस रूप में जीवन यापन नहीं करते थे जिस रूप में परमेश्वर चाहता था। इसके अतिरिक्त रोमियों ने बहुत से महायाजक नियुक्त कर दिये थे और इनमें से बहुत से मूसा की व्यवस्था के अनुसार याजक बनने के योग्य नहीं थे। इसलिए इसीन समुदाय के लोग यह नहीं मानते थे कि यरूशलेम में उपासना और बलियाँ उचित रूप से सम्पन्न हो रही है। इस कारण इसीन समुदाय के लोग, यहूदिया के रेगिस्तान में रहने के लिये चले गये थे। उन्होंने अलग से अपना एक समाज बना लिया था जहाँ केवल इसीन लोग ही आ सकते थे, और निवास कर सकते थे। इसीन लोग उपवास रखा करते थे, प्रार्थना किया करते थे और इसकी प्रतीक्षा करते थे कि परमेश्वर मसीह को भेजेगा और मन्दिर तथा याजकत्व को पवित्र करेगा।

नया नियम

परमेश्वर ने अपनी योजना प्रारम्भ कर दी। उसने एक विशेष राष्ट्र को चुना। वहाँ के लोगों के साथ, उसने एक वाचा की जिससे वे परमेश्वर के न्याय और उसकी भलाइयों को समझने के लिए तैयार हो जायें। एक नयी और बेहतर वाचा पर आधारित एक सम्पूर्ण "आध्यात्मिक राज्य" की स्थापना के द्वारा संसार को शुभाशीष देने की योजना को नबियों और कवियों के द्वारा उसने प्रकट किया। यह योजना, मसीह के आगमन की प्रतिक्षा के साथ शुरू होगा। नबियों ने उसके आने के बारे में बड़े विस्तार के साथ बताया था। उन्होंने बताया कि मसीह का जन्म कहाँ होगा, वह किस प्रकार का व्यक्ति होगा और उसे किस प्रकार के काम करने होंगे। अब वह समय आ चुका था जब मसीह को आना था और नई वाचा को शुरू करना था। नये धर्म-नियम के लेख बताते हैं कि परमेश्वर का नया नियम किस प्रकार प्रकट हुआ और यीशु ने उसे किस प्रकार कार्यान्वित किया, यीशु जो मसीह था (अर्थात् "एक अभिषिक्त" मसीह)। ये लेख बताते हैं कि यह नई वाचा, सभी लोगों के लिए थी। यह भी बताया गया है कि परमेश्वर के इस दयापूर्ण प्रेम-उपहार को पहली शताब्दी के लोगों ने किस प्रकार ग्रहण किया। और वे किस प्रकार इस नयी वाचा का अंग बन गये। ये लेख यह भी सिखाते हैं कि परमेश्वर के भक्तों को इस संसार में जीवन कैसे बिताना चाहिए। ये उन वरदानों की भी व्याख्या करते हैं जिन्हें, परमेश्वर ने अपने भक्तों को एक सम्पूर्ण और सार्थक जीवन यहाँ बिताने के लिए वचन दिए थे; और मृत्यु के बाद उसके (परमेश्वर के) साथ।

नया नियम में कम से कम आठ अलग-अलग लेखकों की सत्ताईस विभिन्न पुस्तकें सम्मिलित हैं। इन सभी लेखकों ने यूनानी भाषा में लिखा है। यह भाषा पहली शताब्दी के संसार में व्यापक रूप से बोली जाती थी। इनमें आधे से भी अधिक लेख चार प्रेरितों के द्वारा लिखे गये हैं। ये प्रेरित अपने विशेष प्रतिनिधियों या सहायकों के रूप में यीशु द्वारा चुने गये थे। इनमें से तीन, मत्ती, यूहन्ना और पतरस इस धरती पर यीशु के जीवन के दौरान उसके बारह निकटतम अनुयायिओं में से थे। एक अन्य लेखक था, पौलुस जिसे यीशु ने अद्भूत प्रकार से दर्शन देकर, आगे एक प्रेरित के रूप में चुना था।

पहली चार पुस्तकें "गॉस्पल" या "सुसमाचार" कहलातीं हैं। इनमें यीशु मसीह के जीवन और मृत्यु के अलग-अलग विवरण दिये गये हैं। ये पुस्तकें यीशु के उपदेशों, इस धरती पर उसके प्रकट होने के प्रयोजन तथा उसकी मृत्यु के महत्व पर बल देती है न कि मात्र उसके जीवन के ऐतिहासिकतथ्यों पर। यूहन्ना का सुसमाचार ("गॉस्पल") उन चारों पुस्तकों में एक विशेष सच्चाई रखता है। पहले तीन सुसमाचार ("गॉस्पल") विषयों के आधार पर एक समान हैं। वास्तव में एक पुस्तक की अधिकांश विषय सामग्री दोनों अन्य पुस्तकों में एक ही जैसी प्राप्त होती हैं। जो भी हो प्रत्येक लेखक ने भिन्न प्रकार के श्रोताओं के लिए लिखा है और प्रतीत होता है कि प्रत्येक लेखक की दृष्टि में कुछ भिन्न लक्ष्य भी रहा है।

इन चार पुस्तकों के बाद जिन्हें "सुसमाचार" ("गॉस्पल") कहा जाता है, "प्रेरितों के काम" नामक पुस्तक आती है। इसमें यीशु की मृत्यु के बाद की घटनाओं का इतिहास है। इसमें बताया गया है कि यीशु के अनुयायिओं के द्वारा परमेश्वर के प्रेम का उपहार जो सभी लोगों के लिए था, समूचे संसार में किस प्रकार घोषित किया गया। यह बताती है कि इस "गॉस्पल" अथवा "सुसमाचार" के प्रचार (घोषणा) से समूचे पलिश्तीन और रोमी साम्राज्य में मसीही विश्वास को व्यापक रूप से कैसे अपनाया गया। "प्रेरितों के काम" नामक पुस्तक लूका द्वारा लिखी गयी है। उसने जो कुछ भी लिखा है, उसके अधिकांश का, वह प्रत्यक्षदर्शी था। लूका तीसरे "सुसमाचार" ("गॉस्पल") का लेखक भी था। उसकी दोनों पुस्तकों में एक तर्क-पूर्ण संगति है क्योंकि "प्रेरितों के काम" यीशु के जीवन वृतांत की सहज परिणति है। "प्रेरितों के काम" के बाद पत्रों का एक संग्रह है जो अलग-अलग व्यक्तियों अथवा मसीही समूहों के नाम लिखे गये हैं। ये पत्र पौलुस अथवा पतरस जैसे मसीही मार्ग दर्शकों द्वारा भेजे गये हैं। ये दोनों ही यीशु के प्रेरित थे। उस समय के व्यक्ति जिन समस्याओं का सामना कर रहे थे, उन से निपटने में लोगों की सहायता के लिए ये पत्र लिखे गये थे। ये पत्र न केवल उन लोगों को सूचित करने, सुधारने, शिक्षा देने और बढ़ावा देने के लिए लिखे गये थे बल्कि ये सभी मसीहियों को उनके विश्वास, पारस्परिक जीवन और संसार में उनके जीवन के सम्बन्ध में उन्हें सहायता प्रदान करने के लिए भीा लिखे गये थे।

नये नियम की अंतिम पुस्तक "प्रकाशित वाक्य" अन्य सभी पुस्तकों से भिन्न प्रकार की पुस्तक है। इसमें अति अलंकृत भाषा का प्रयोग किया गया है और इसके लेखक प्रेरित यूहन्ना ने जो दिव्य-दर्शन देखे थे उनके बारे में उन्होंने बताया है। इसके बहुत से अलंकार और बिम्ब "पुराना नियम" से लिये गये हैं और "पुराने नियम" की पुस्तकों के साथ तुलना करने के बाद ही उन्हें अच्छी तरह समझा जा सकता है। यह अंतिम पुस्तक अपने मार्ग दर्शक और सहायक यीशु मसीह तथा परमेश्वर की शक्ति द्वारा बुराई की शक्तियों पर अंतिम विजय पाने के लिए विश्वासियों को आश्वस्त करती है।

नये नियम की पुस्तकें

निम्नलिखित विवरण, नये नियम की प्रत्येक पुस्तक को पढ़ने में सहायक सिद्ध होंगे:

मत्ती: मत्ती, यीशु के बारह नज़दीकी शिष्यों में से एक था। यीशु ने जब उसे अपने प्रेरित के रुप में चुना, उस समय वह एक यहूदी कर वसूल करने वाले की हैसियत में काम कर रहा था। मत्ती के लेखन पर उस की यहूदी पृष्ठभूमि तथा अभिरूचि

की झलक नज़र आती है। उस की विशेष अभिरुचि, पुराने नियम की भविष्यवाणियों के, यीशु के जीवन में ही पूर हो जाने की ओर थी। वास्तव में, मत्ती की पुस्तक यीशु के उपदेशों पर केन्द्रित है।

मरकुस: मरकुस कुछ प्रेरितों का एक युवा सहयोगी था। उस के लिखने की शैली संक्षिप्त व गतिशीलता से भरपूर है। मत्ती व लूका की भांति उसने, यीशु के उपदेशों की ओर इतना ध्यान नहीं दिया। मरकुस के लेखन का उद्धेश्य गैर यहूदीयों तथा रोमी बुद्धि जीवियों के दिलो को जीतना था। इसलिए वह यीशु के उन कार्यो की ओर इशारा करता है,जो साबित करते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था। मरकुस, केवल यह चाहता है कि लोग यह बात जान जायें कि यीशु इस धरती पर हमें पाप के परिणामों से बचाने के लिये आया।

लूका: यह पुस्तक प्रेरित पौलुस के यात्रिक सहयोगी द्वारा लिखी गई दो पुस्तकों में से एक है। लूका, एक शिक्षित डाक्टर व एक प्रतिभाशील लेखक था। ऐसा प्रतीत होता है कि उसे मरकुस तथा मत्ती की पुस्तक का काफी ज्ञान तो था परन्तु उस ने अपनी पुस्तक में मुख्यत: उन ही भागों को लिया है जिन में उस के ग़ैर यहूदी श्रोताओं की अभिरुचि हो। अन्य “गॉस्पल” लेखकों की तुलना में, लूका यीशु के जीवन विवरण को क्रमबद्धता से और एक ऐतिहासिक वास्तविकता से पेश करना चाहता है। परन्तु ऐसा करने में वह यीशु के जीवन की घटनाओं पर ज़ोर नहीं देता है। वह यीशु को एक ऐसे रूप में पेश करता है जो अपने लोगों को जीवन का असली अर्थ देता है तथा उस की पहुँच उन सब की जरुरतों तक है। और वह पूर्ण सामर्थ्य के साथ उनकी सहायता तथा उन्हें बचाने की क्षमता रखता है।

यूहन्ना: यह “गॉस्पल”, बाकी तीनों से अत्यन्त भिन्न पाया गया है। इस बात का प्रमाण हमें इस की सुन्दर तथा गंभीर भूमिका द्वारा तुरन्त ही मिल जाता है। यूहन्ना ने अपने “गॉस्पल” में वे बात प्रस्तुत की है जो अन्य “गॉस्पलों” में उपलब्ध नहीं है। उसने यीशु को इस धरती केमसीह, “परमेश्वर” केदैवी “पुत्र,” तथा “मुक्ति-दाता” के रुप में प्रस्तुत किया है।

प्रेरितों के काम: लूका द्वारा रचित इस पुस्तक का आरम्भ उस की पहली पुस्तक के अन्त से होता है। शुरुआत, अपने शिष्यों को यीशु द्वारा दिये गये इस आदेश से होती है कि वह सम्पूर्ण संसार में परमेश्वर के हमारे प्रति अटूट प्रेम के “सुसमाचार” के सन्देश को फैलायें। यीशु चाहता था कि वे उसके दिव्य मिशन जिस के द्वारा लोगों को उन के पाप के परिणामों से बचाया जायेगा उस के विषय में अपने ज्ञान को दूसरों तक फैलाये। लूका, पतरस तथा पौलुस जैसे दो मुख्य व्यक्तियों द्वारा इस कार्य के पूरा किये जाने की उत्तेजक घटनाओं को प्रस्तुत करता है। वह यह भी बताता है कि ईसाई धर्म यरुशलेम में एक लघु आरम्भ से, यहूदिया और सामरिया के चारों ओर के इलाकों से होता हुआ अन्त में रोमी राज्य तक किस शीघ्रता से फैल गया।

पौलुस की पत्रियाँ, नया नियम के लेखनों के अगले वर्ग के अंतर्गत आती है। प्रेरित पौलुस (जो पहले शाऊल के नाम से जाना जाता था) एक शिक्षित यहूदी था जिस का संबन्ध सिसली के टारसस स्थान से था। पौलुस ने यरूशलेम में शिक्षा प्राप्त की, वह फ़रीसियों का नेता था तथा शुरु में ईसाई धार्मिक आन्दोलन के सख्त खिलाफ था। यीशु ने उसे दर्शन दिया तथा उसके जीवन की दिशा ही बदल गई। दस वर्ष पश्चात उसने अनेक यात्राओं द्वारा मसीह के सन्देश को फैलाना आरम्भ किया। इस समय के दौरान उसने कलीसियाओं तथा व्यक्तियों को (ईसाई समूहों को) अनेकों पत्रियाँ लिखीं। इन पत्रियों में से तेरह का उल्लेख हमे नया नियम में मिलता है।

रोमियों को लिखी, पौलुस की पत्री उसकी सब पत्रियों में सब से लम्बी तथा सम्पूर्ण मानी जाती है। अधिकतर इस की पत्रियाँ उन शहरों के ईसाई समूहों के नाम है जहाँ उसने यीशु का सन्देश तथा कलीसियाओं को संगठित करने के काम को आरम्भ किया। रोमियों के नाम जब उसने पत्री लिखी उस समय तक वह रोम नहीं गया था। 57 ईसा पशचात् में वह यूनान में था, क्योंकि वह रोम जाने में असमर्थ था इसलिये उसने अपने उपदेश को पत्री के रूप में लिखकर भेज दिया। यह पत्री ईसाई धर्म के सैद्धान्तिक सत्य को बड़ी सावधानी से प्रस्तुत करती है।

1कुरिन्थियों तथा 2कुरिन्थियों दक्षिण यूनान के एक शहर कुरिन्थ के ईसाईयों के नाम, पौलुस द्वारा लिखी अनेक पत्रियों में से है। इन दोनों पत्रियों में पहले पौलुस वहाँ के ईसाईयों के बीच उत्पन्न हुई समस्याओं तथा उन के द्वारा किये गये प्रश्नों के कुछ उत्तर प्रस्तुत करता है जैसे ईसाई एकता, विवाह, लैंगिक पाप, तलाक तथा यहूदी रीति रिवाज आदि कुछ विषय हैं। अध्याय तेरह विशेष महत्व रखता है जिस में प्रेम के प्रसिद्ध विषय को सब समस्याओं के हल करने का साधन बताया गया है। दूसरी पत्री, कुरिन्थ के लोगों द्वारा पहली पत्री के फलस्वरुप जो जवाब दिया गया उसको आगे बढ़ाती है।

गलातियों के नाम लिखी गई पौलुस की पत्री गलेशिया के इसाईयों की एक भिन्न प्रकार की समस्या से संबन्धित है। पौलुस ने वहाँ ईसाई सन्देश की घोषणा की तथा कुछ कलीसियाओं का निर्माण भी किया। फिर वहाँ जाकर यहूदी उपदेशकों के एक समूह ने कुछ ऐसे विचारों को फैलाया जो यीशु के वास्तविक उपदेशों से बहुत ही भिन्न थे। इस प्रकार एक गंभीर समस्या

उत्पन्न हो गई क्योंकि इस का संबन्ध उस आधार से था जिस पर एक व्यक्ति तथा परमेश्वर का आपसी सम्बन्ध निर्भर करता है। गलेशिया तक यात्रा न कर पाने के कारण पौलुस ने इस पत्री के द्वारा अपने विचारों को ठोस रुप में प्रस्तुत किया। रोमियों के नाम पौलुस द्वारा लिखी पत्री की भांति यह पत्री भी इसाई धर्म के आधारों से संबन्ध रखती है केवल कारण भिन्न है।

पौलुस ने इफिसियों के नाम पत्री जेलखाने से लिखी। परन्तु हमें इस का ज्ञान नहीं है कि कहाँ और कब लिखी। इस पत्री की विषयवस्तु परमेश्वर की उस योजना से संबन्ध रखती है जिस के द्वारा पृथ्वी के समस्त लोग, मसीह के राज्य में शामिल हो जायेंगे। पौलुस ने ईसाईयों को भाईचारे से रहने तथा उनके लिये, परमेश्वर के उद्देश्य के प्रति सम्पूर्णता से अर्पित रहने की शिक्षा दी।

फिलिप्पियों को भी पौलुस ने जेलखाने से ही पत्री लिखी, यह पत्री संभवत: है रोम से लिखी गई थी। उस समय पौलुस स्वयं कई कठिनाइयों का सामना कर रहा था परन्तु परमेश्वर पर उसका अटूट विश्वास इस पत्री के लेखन के उल्लास तथा हौसले में झलकता है। फिलिप्पि के ईसाईयों को प्रोत्साहन देने तथा उनके द्वारा दी गई आर्थिक सहायता के लिये धन्यवाद हेतु यह पत्री लिखी गई।

कुलुस्सियों के नाम लिखी पौलुस की पत्री ऐशिया माईनर(टर्की)के एक शहर कोलोसे की उस कलीसिया के लिये थी जो कुछ असत्य, उपदेशों के कारण परेशान थी। इस पत्री के कुछ भाग इफिसियों के नाम लिखी पत्री से मिलते जुलते हैं। किसी ईसाई व्यक्ति को किस प्रकार जीवन व्यतीत करना चाहिये इस विषय में पौलुस ने इस में व्यावहारिक सुझाव दिये है।

ऐसा ज्ञात होता है कि 1 थिस्सलुनीकियों तथा 2 थिस्सलुनीकियों पत्रियाँ पौलुस की पहली पत्रियों में से हैं। मैसेडोनिया (उत्तरी यूनान) में पौलुस की पहली यात्रा के दौरान उस ने थिस्सलुनिका के लोगों को प्रभु का सन्देश दिया। कई लोगों ने विश्वास किया परन्तु पौलुस को शीघ्र ही वह स्थान छोड़ना पड़ा। लोगों द्वारा अपनायें गये नये धर्म के प्रति प्रोत्साहन देने के लिये उसने यह पत्री लिखी। कुछ बातें जिन्हें लोग समझ नहीं पा रहे थे उनका भी उसने वर्णन किया जैसे मसीह की वापसी। दूसरी पत्री इसी विषय को ले कर आगे बढ़ती है।

पौलुस ने 1 तीमुथियुस, 2 तीमुथियुस तथा तीतुस की पत्रियों को अपने दो नज़दीकी सहयोगियों के लिये जीवन के अन्तिम भाग में लिखा। पौलुस, तीमुथियुस को इफीसुस तथा तीतुस को करेत में कलीसिया के कार्य तथा प्रबन्ध संबन्धी समस्याओं में सहायता देने के लिये छोड़ आया था। जाहिर है कि तीमुथियुस तथा तीतुस का काम था कि वे वहाँ कलीसिया को, स्वतन्त्र नेतृत्व तथा कार्यवाही के लिये तैयार करें। पहली तीमुथियुस तथा तीतुस को लिखी पत्री में पौलुस ने नेता चयन तथा समस्याओं को सुलझाने के सुझाव दिये हैं। तीमुथियुस को लिखी दूसरी पत्री उस समय लिखी गई जब पौलुस जेलखाने में था और उसे अपने जीवन का अन्त अनुभव होने लगा था। इसलिये यह पत्री व्यक्तिगत स्वभाव की है, तथा सलाह व प्रोत्साहन से भरपूर है। पौलुस तीमुथियुस को विश्वास, हौंसला तथा सहनशक्ति के प्रति अपना उदाहरण दे कर प्रेरित करता है।

फिलेमोन पौलुस द्वारा लिखी एक संक्षिप्त पत्री है और यह भी उसी समय लिखी गई जब कुलुस्सियों को उसने पत्री लिखी। फिलेमोन, कोलोसे नगर का एक ईसाई तथा एक भागे हुये गुलाम ओनेसिमस का मालिक था। इस ने पौलुस के प्रभाव से ईसाई धर्म को अपनाया। इस पत्री में पौलुस फिलेमोन से ओनेसिमस को क्षमा करने तथा उसका पुन: स्वागत करने की याचना करता है।

पौलुस की पत्रियों के अतिरिक्त यीशु के अन्य अनुयायियों ने आठ और पत्रियाँ लिखी। इब्रानियों का लेखक अज्ञात है परन्तु यह बात स्पष्ट है कि यह अवश्य ही मसीह में विश्वास रखने वाले यहूदियों के नाम लिखी गई, यीशु में जिन के विश्वास को हिलाया जा रहा था, उनके विश्वास को प्रोत्साहित तथा दृढ़ करने के लिये यह पत्री लिखी गई। लेखक ने सारे संसार में यीशु मसीह के महत्व पर सब से अधिक ज़ोर दिया है। उस का कहना है कि यीशु मसीह की अमर याजकता तथा "बेहतर समझौता" पुराने नियम की याजकता तथा "पहले समझौते" से कहीं अधिक उत्तम है। अन्त में लेखक लोगों को परमेश्वर में विश्वास करने तथा उस ही के नाम से जीवन व्यतीत करने के लिये प्रोत्साहित करता है।

याकूब की पत्री में हमेशा "व्यावहारिक" शब्द का प्रयोग किया जाता है। कुछ लोगों का विचार है कि यह लेखक यीशु के भाइयों में से एक है। जब वह न्याय तथा निष्पक्षता, निर्धनो की सहायता, संसार से मित्रता, बुद्धि, आत्म नियन्त्रण, आजमाइशें, करने व सुनने तथा धर्म व कार्य के विषय में कहता है तो उस की यहूदी पृष्ठभूमि साफ दिखाई पड़ती है। उस ने लोगों को, धीरज तथा प्रार्थना के लिये प्रेरित भी किया।

1 पतरस तथा 2 पतरस की पत्रियाँ प्रेरित पतरस द्वारा उन ईसाईयों के लिये लिखी गई, जो विभिन्न स्थानों में रह रहे थे। उसने इन लोगों को सजीव आशा तथा स्वर्ग में उनके असली घर के विषय में शिक्षा दी। वे जिन कठिनाइयों में से गुजर रहे

थे पतरस ने उन्हें यह हौसला दिया कि परमेश्वर उन्हें भुला नहीं सकता और यह कष्ट उनको बेहतरी की ओर ले जायेगा। वह उन्हें यह याद दिलाता है कि परमेश्वर ने उन्हें आशीर्वाद दिया है और उनके पापों को यीशु मसीह के द्वारा क्षमा कर दिया है। इस के बदले में उन्हें सही जीवन व्यतीत करना चाहिये। 2 पतरस में लेखक ने बनावटी उपदेशकों का सामना किया और सच्चे ज्ञान तथा मसीह की वापसी की शिक्षा दी।

1 यूहन्ना, 2 यूहन्ना तथा 3 यूहन्ना की पत्रियाँ प्रेरित यूहन्ना द्वारा लिखी गई। यूहन्ना की ये प्रेम भाव से पूर्ण पत्रियाँ विश्वासियों को यह हौसला देती हैं कि परमेश्वर उन्हें हमेशा ही स्वीकार करेगा। वह यह शिक्षा देती है कि अपने चारों ओर के लोगें के प्रति प्रेम-भाव रखने तथा उन कामों को करने से जो परमेश्वर चाहता है, हम उस के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त कर सकते है। दूसरी तथा तीसरी पत्री ईसाईयों को एक दूसरे से प्रेम-भाव रखने की माँग तथा बनावटी उपदेशकों व अपवित्र आचरण से सावधान करती है।

यहूदा की पत्री का लेखक याकूब का भाई अतथा कदाचित् यीशु के भाइयों में से एक है। यह पत्री वफादारी को प्रोत्साहन देती है तथा फ़सादियों व बनावटी उपदेशकों के विषय में सूचित करती है।

प्रेरित यूहन्ना का प्रकाशित वाक्य नये नियम की सब पुस्तकों में से अलग प्रकार की है। इस पुस्तक में, यूहन्ना के दिव्य दर्शनों के वर्णन को अत्यन्त आलंकारिक भाषा का प्रयोग कर के, प्रस्तुत किया गया है, कई आकृतियाँ तथा प्रतिरुप पुराना नियम से लिये गये है उन्हें समझने के लिये उन की तुलना पुराने नियम के लेखनों से करना उचित होगा। इस पुस्तक द्वारा ईसाईयों को इस बात का विश्वास दिलाया जाता है कि पाप की शक्तियों पर अन्त में परमेश्वर तथा यीशु मसीह ही की विजय होगी जो उनका नेता व सहायक दोनों ही है।

"नया नियम" और आज का पाठक

आज के, इस पुस्तक के पाठक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि ये पुस्तकें हज़ारों साल से भी पहले के उन लोगों के लिये लिखी गई थीं जो हमारी आज की सभ्यता से एक दम अलग सभ्यता में रहा करते थे। सामान्य रुप से इन पुस्तकों में उन जीवन-मूल्यों को रेखांकित किया गया है जो शाश्वत रूप से सत्य हैं, यद्यपि बहुत से प्रयोग किये गये ऐतिहासिक विवरण, उदाहरण और उद्धरण उस युग की संस्कृति और उस काल के कुछ ज्ञान के आधार पर ही समझे जा सकते हैं जिस युग के वे लोग थे। उदाहरण के लिए यीशु एक व्यक्ति की कहानी सुनाता है जो एक ऐसे खेत में अनाज बो रहा है जिसकी मिट्टी की दशा अलग-अलग प्रकार की है। वास्तव में, मिट्टी की वे दशाएँ क्या थीं, आज के व्यक्ति के लिये अनजानी हो सकती हैं किन्तु इस उदाहरण से यीशु जो शिक्षा प्रदान करता है, वह प्रत्येक देश अथवा काल के व्यक्ति पर पूरी उतरती है।

हो सकता है, आज के पाठक को इस ग्रन्थ में वर्णित संसार कुछ विचित्र लगे। उस समय के रीति रिवाज, प्रवृत्तियाँ, लोगों के बातचीत का ढंग, अपरिचित से लगें किन्तु तर्कसंगत यही है कि इन बातों का आज के मानदण्डों की अपेक्षा उस देश काल के मानदण्डों के आधार पर ही मूल्यांकन किया जाये। इस बात का ध्यान रखना भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि बाइबल एक विज्ञान की पुस्तक के रूप में नहीं लिखी गई, वह तो ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या और मानव जाति के लिए उन घटनाओं के महत्व को प्रस्तुत करने के लिए ही मुख्य रूप से लिखी गई। इसकी शिक्षाएँ सार्वभौम सत्यों पर आधारित हैं जो विज्ञान की सीमा से परे हैं। आज के इस युग में भी यह ग्रंथ पूरी तरह प्रासंगिक है क्योंकि इसका सम्बन्ध मनुष्य की उन बुनियादी आध्यात्मिक जरूरतों से है जो कभी बदलती नहीं हैं।

बाइबल के किसी भी पाठक को इसके अध्ययन से अनेक लाभ मिल सकते हैं। उसे प्राचीनतम संसार की सभ्यता और इतिहास का ज्ञान हो सकता है, यीशु मसीह के जीवन और शिक्षाओं की जानकारी मिल सकती है और उसे इस बात का पता चल सकता है कि उसका अनुयायी होने का अर्थ क्या है उसे बुनियादी आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि प्राप्त हो सकती है, और वह सशक्त आनन्दपूर्ण जीवन जीने के व्यावहारिक ज्ञान को पा सकता है। जीवन के अत्यन्त गूढ़ प्रश्नों के उत्तर वह सहज ही प्राप्त कर सकता है। इसलिये कहा जा सकता है कि इस पुस्तक को पढ़ने के बहुत से उत्तम कारण हैं और जो पाठक इस ग्रन्थ को खुले दिल-दिमाग और जिज्ञासा के साथ पढ़ेगा वह इस रहस्य को जान जायेगा कि परमेश्वर ने यह जीवन उसे क्यों दिया है।

Bible League International and its Global Partners provide Scriptures for millions of people who still do not have the life-giving hope found in God's Word. Every purchase of an Easy-to-Read Translation™ enables the printing of a Bible for a person who needs God's Word somewhere in the world. To provide even more Scriptures for more people, please make a donation at www.bibleleague.org/donate or contact us at Bible League International, 1 Bible League Plaza, Crete, IL 60417, USA. Bible League International exists to develop and provide Easy-to-Read Bible translations and Scripture resources for churches and partners as they help people meet Jesus.

Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™)

© 1995 Bible League International

Maps, Illustrations © Bible League International

Additional materials © Bible League International

All rights reserved.

This copyrighted material may be quoted up to 1000 verses without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. This copyright notice must appear on the title or copyright page:

> Taken from the Hindi Holy Bible: Easy-to-Read Version™ (ERV™) © 1995 Bible League International and used by permission.

When quotations from the ERV are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials (ERV) must appear at the end of each quotation. Requests for permission to use quotations or reprints in excess of 1000 verses or more than 50% of the work in which they are quoted, or other permission requests, must be directed to and approved in writing by Bible League International.

God's Word. Local Church. Global Strategy.™

Bible League International
1 Bible League Plaza
Crete, IL 60417, USA
Phone: 866–825–4636
Email: permissions@bibleleague.org
Web: www.bibleleague.org

B-HIN-89800: ISBN: 978-1-935189-80-0
B-HIN-89992: ISBN: 978-1-935189-99-2
B-HIN-07536: ISBN: 978-1-61870-753-6
B-HIN-61738-POD: ISBN: 978-1-62826-173-8

Free downloads: www.bibleleague.org/downloads

उत्पत्ति

संसार का आरम्भ

पहला दिन–उजियाला

1 आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाया।
2पृथ्वी बेडौल और सुनसान थी। धरती पर कुछ भी
नहीं था। समुद्र पर अंधेरा छाया था और परमेश्वर का
आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था।* 3तब परमेश्वर
ने कहा, "उजियाला हो"* और उजियाला हो गया।
4परमेश्वर ने उजियाले को देखा और वह जान गया कि
यह अच्छा है। तब परमेश्वर ने उजियाले को अंधियारे
से अलग किया। 5परमेश्वर ने उजियाले का नाम "दिन"
और अंधियारे का नाम "रात" रखा।
शाम हुई और तब सवेरा हुआ। यह पहला दिन था।

दूसरा दिन–आकाश

6तब परमेश्वर ने कहा, "जल को दो भागों में अलग
करने के लिए वायुमण्डल* हो जाए।" 7इसलिए परमेश्वर
ने वायुमण्डल बनाया और जल को अलग किया। कुछ
जल वायुमण्डल के ऊपर था और कुछ वायुमण्डल के
नीचे। 8परमेश्वर ने वायुमण्डल को "आकाश" कहा!
तब शाम हुई और सवेरा हुआ। यह दूसरा दिन था।

तीसरा दिन–सूखी धरती और पेड़ पौधे

9और तब परमेश्वर ने कहा, "पृथ्वी का जल एक
जगह इकट्ठा हो जिससे सूखी भूमि दिखाई दे" और
ऐसा ही हुआ। 10परमेश्वर ने सूखी भूमि का नाम "पृथ्वी"
रखा और जो पानी इकट्ठा हुआ था, उसे "समुद्र" का
नाम दिया। परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।
11तब परमेश्वर ने कहा, "पृथ्वी, घास, पौधे जो अन्न
उत्पन्न करते हैं, और फलों कें पेड़ उगाये। फलों के
पेड़ ऐसे फल उत्पन्न करें जिनके फलों के अन्दर बीज
हो और हर एक पौधा अपनी जाति का बीज बनाए। इन
पौधों को पृथ्वी पर उगनें दो" और ऐसा ही हुआ।
12पृथ्वी ने घास और पौधे उपजाए जो अन्न उत्पन्न
करते हैं और ऐसे पेड़, पौधे उगाए जिनके फलों के
अन्दर बीज होते हैं। हर एक पौधे ने अपने जाति अनुसार
बीज उत्पन्न किये और परमेश्वर ने देखा कि यह
अच्छा है।
13तब शाम हुई और सवेरा हुआ। यह तीसरा दिन
था।

चौथा दिन–सूरज, चाँद और तारे

14तब परमेश्वर ने कहा, "आकाश में ज्योतियाँ होने
दो। यह ज्योतियाँ दिन को रात से अलग करेंगी। यह
ज्योतियाँ एक विशेष चिन्ह के रूप में प्रयोग की जाएंगी
जो यह बताएंगी कि विशेष सभाएं कब शुरू की जाएं
और यह दिनों तथा वर्षो के समयों को निश्चित करेंगे।
15वे पृथ्वी पर प्रकाश देने के लिए आकाश में ज्योतियाँ
ठहरें" और ऐसा ही हुआ।
16तब परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियाँ बनाई। परमेश्वर
ने उन में से बड़ी ज्योति को दिन पर राज्य करने के
लिए बनाया और छोटी ज्योति को रात पर राज्य करने
के लिए बनाया। परमेश्वर ने तारे भी बनाए। 17परमेश्वर
ने इन ज्योतियों को आकाश में इसलिए रखा कि वह
पृथ्वी पर चमकें। 18परमेश्वर ने इन ज्योतियों को आकाश
में इसलिए रखा कि वह दिन तथा रात पर राज्य करें।
इन ज्योतियों ने उजियाले को अंधकार से अलग किया
और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।
19तब शाम हुई और सवेरा हुआ। यह चौथा दिन था।

पाँचवाँ दिन–मछलियाँ और पक्षी

20तब परमेश्वर ने कहा, "जल, अनेक जलचरों से
भर जाए और पक्षी पृथ्वी के ऊपर वायुमण्डल में उड़ें।"

मण्डराता था हिब्रू भाषा में इस शब्द का अर्थ है "ऊपर उड़ना" या "तेजी से ऊपर से नीचे आना। जैसे कि एक पक्षी अपने बच्चों की रक्षा के लिए घोंसले के ऊपर मण्डराता है।

तब परमेश्वर ... उजियाला हो "उत्पत्ति में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी का सृजन किया। जबकि 2पृथ्वी का कोई विशेष आकार न था, और समुद्र के ऊपर घनघोर अंधेरा छाया था और परमेश्वर का आत्मा पानी के ऊपर मण्डरा रहा था। 3परमेश्वर ने कहा, "उजियाला हो!" या, "जब परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना शुरू की, 2जबकि पृथ्वी बिल्कुल खाली थी, और समुद्र पर अंधेरा छाया था, और पानी के ऊपर एक जोरदार हवा बही, 3परमेश्वर ने कहा, 'उजियाला होने दो।'"

वायुमण्डल इस हिब्रू शब्द का अर्थ "फैलाव" "विस्तार" या "मण्डल" है।

21इसलिए परमेश्वर ने समुद्र में बहुत बड़े बड़े जलजन्तु
बनाए। परमेश्वर ने समुद्र में विचरण करने वाले सभी
जीवित प्राणियों को बनाया। समुद्र में भिन्न–भिन्न जाति
के जलजन्तु हैं। परमेश्वर ने इन सब की सृष्टि की।
परमेश्वर ने हर तरह के पक्षी भी बनाये जो आकाश में
उड़ते हैं। परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।

22परमेश्वर ने इन जानवरों को आशीष दी, और
कहा, “जाओ और बहुत से बच्चे उत्पन्न करो और
समुद्र के जल को भर दो। पक्षी भी बहुत बढ़ जाये।”

23तब शाम हुई और सवेरा हुआ। यह पाँचवाँ दिन
था।

छठवाँ दिन–भूमि के जीवजन्तु और मनुष्य

24तब परमेश्वर ने कहा, “पृथ्वी हर एक जाति के
जीवजन्तु उत्पन्न करे। बहुत से भिन्न जाति के जानवर
हों। हर जाति के बड़े जानवर और छोटे रेंगनेवाले
जानवर हो और यह जानवर अपने जाति के अनुसार
और जानवर बनाए” और यही सब हुआ।

25तो, परमेश्वर ने हर जाति के जानवरों को बनाया।
परमेश्वर ने जंगली जानवर, पालतू जानवर, और सभी
छोटे रेंगनेवाले जीव बनाये और परमेश्वर ने देखा कि
यह अच्छा है।

26तब परमेश्वर ने कहा, “अब हम मनुष्य बनाएं।
हम मनुष्य को अपने स्वरूप जैसा बनाएंगे। मनुष्य हमारी
तरह होगा। वह समुद्र की सारी मछलियों पर और
आकाश के पक्षियों पर राज करेगा। वह पृथ्वी के सभी
बड़े जानवरों और छोटें रेंगनेवाले जीवों पर राज करेगा।”

27इसलिए परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में*
बनाया। परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में
सृजा। परमेश्वर ने उन्हें नर और नारी बनाया। 28परमेश्वर
ने उन्हें आशीष दी। परमेश्वर ने उनसे कहा, “तुम्हारे
बहुत सी संताने हों। पृथ्वी को भर दो और उस पर
राज्य करो। समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों
पर राज्य करो। हर एक पृथ्वी के जीवजन्तु पर राज्य
करो।”

29परमेश्वर ने कहा, “देखो, मैंने तुम लोगों को सभी
बीज वाले पेड़ पौधे और सारे फलदार पेड़ दिए हैं। ये
अन्न तथा फल तुम्हारा भोजन होगा। 30मैं प्रत्येक हरे
पेड़ पौधे जानवरों के लिए दे रहा हूँ। ये हरे पेड़–पौधे
उन का भोजन होगा। पृथ्वी का हर एक जानवर,
आकाश का हर एक पक्षी और पृथ्वी पर रेंगने वाले
सभी जीवजन्तु इस भोजन को खाएंगे।” ये सभी बातें
हुईं। 31परमेश्वर ने अपने द्वारा बनाई हर चीज़ को देखा
और परमेश्वर ने देखा कि हर चीज़ बहुत अच्छी है।
शाम हुई और तब सवेरा हुआ। यह छठवाँ दिन था।

सातवाँ दिन–विश्राम

2 इस तरह पृथ्वी, आकाश और उसकी प्रत्येक
वस्तु की रचना पूरी हुई। 2परमेश्वर ने अपने
किए जा रहे काम को पूरा कर लिया। अत: सातवें दिन
परमेश्वर ने अपने काम से विश्राम किया। 3परमेश्वर
ने सातवें दिन को आशीषित किया और उसे पवित्र दिन
बना दिया। परमेश्वर ने उस दिन को पवित्र दिन इसलिए
बनाया कि संसार को बनाते समय जो काम वह कर
रहा था उन सभी कार्यों से उसने उस दिन विश्राम
किया।

मानव जाति का आरम्भ

4यह पृथ्वी और आकाश का इतिहास है। यह कथा
उन चीज़ों की है, जो परमेश्वर द्वारा पृथ्वी और आकाश
बनाते समय, घटित हुई। 5तब पृथ्वी पर कोई पेड़ पौधा
नहीं था और खेतों में कुछ भी नहीं उग रहा था,
क्योंकि यहोवा ने तब तक पृथ्वी पर वर्षा नहीं भेजी थी
तथा पेड़ पौधों की देखभाल करने वाला कोई व्यक्ति भी
नहीं था। 6परन्तु कोहरा पृथ्वी से उठता था और जल
सारी पृथ्वी को सींचता था।

7तब यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी से धूल उठाई और
मनुष्य को बनाया। यहोवा ने मनुष्य की नाक में जीवन
की साँस फूँकी और मनुष्य एक जीवित प्राणी बन गया।
8तब यहोवा परमेश्वर ने पूर्व में अदन नामक जगह में
एक बाग लगाया। यहोवा परमेश्वर ने अपने बनाए
मनुष्य को इसी बाग में रखा। 9यहोवा परमेश्वर ने हर
एक सुन्दर पेड़ और भोजन के लिए सभी अच्छे पेड़ों
को उस बाग में उगाया। बाग के बीच में परमेश्वर ने
जीवन के पेड़ को रखा और उस पेड़ को भी रखा जो
अच्छे और बुरे की जानकारी देता है।

10अदन से होकर एक नदी बहती थी और वह बाग़
को पानी देती थी। वह नदी आगे जाकर चार छोटी
नदियाँ बन गयी। 11पहली नदी का नाम पीशोन है। यह
नदी हवीला प्रदेश के चारों ओर बहती है। 12(उस प्रदेश
में सोना है और वह सोना अच्छा है। मोती और गोमेदक
रत्न उस प्रदेश में हैं।) 13दूसरी नदी का नाम गीहोन है
जो सारे कूश प्रदेश के चारों ओर बहती है। 14तीसरी
नदी का नाम दजला है। यह नदी अश्शूर के पूर्व में
बहती है। चौथी नदी फरात है।

15यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को अदन के बाग में
रखा। मनुष्य का काम पेड़–पौधे लगाना और बाग की
देख भाल करना था।

16यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को आज्ञा दी, “तुम
बग़ीचे के किसी भी पेड़ से फल खा सकते हो। 17लेकिन
तुम अच्छे और बुरे की जानकारी देने वाले पेड़ का
फल नहीं खा सकते। यदि तुमने उस पेड़ का फल खा
लिया तो तुम मर जाओगे।”

परमेश्वर ... स्वरूप में तुलना करें उत्पत्ति 5:1–3

पहली स्त्री

18तब यहोवा परमेश्वर ने कहा, “मैं समझता हूँ कि
मनुष्य का अकेला रहना ठीक नहीं है। मैं उसके लिए
एक सहायक बनाऊँगा जो उसके लिए उपयुक्त होगा।”
19यहोवा ने पृथ्वी के हर एक जानवर और आकाश
की हर एक पक्षी को भूमि की मिट्टी से बनाया। यहोवा
इन सभी जीवों को मनुष्य के सामने लाया और मनुष्य
ने हर एक का नाम रखा। 20मनुष्य ने पालतू जानवरों,
आकाश के सभी पक्षियों और जंगल के सभी जानवरों
का नाम रखा। मनुष्य ने अनेक जानवर और पक्षी देखे
लेकिन मनुष्य कोई ऐसा सहायक नहीं पा सका जो
उसके योग्य हो। 21अत: यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को
गहरी नींद में सुला दिया और जब वह सो रहा था,
यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य के शरीर से एक पसली
निकाल ली। तब यहोवा ने मनुष्य की उस त्वचा को
बन्द कर दिया जहाँ से उसने पसली निकाली थी। 22यहोवा
परमेश्वर ने मनुष्य की पसली से स्त्री की रचना की।
तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री को मनुष्य के पास लाया
23और मनुष्य ने कहा, “अन्तत! हमारे समान एक
व्यक्ति। इसकी हड्डियाँ मेरी हड्डियों से आई
इसका शरीर मेरे शरीर से आया। क्योंकि यह मनुष्य
से निकाली गई, इसलिए मैं इसे स्त्री कहूँगा।”
24इसलिए पुरुष अपने माता–पिता को छोड़ कर अपनी
पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन हो जाऐंगे।
25मनुष्य और उसकी पत्नी बाग में नंगे थे, परन्तु वे
लजाते नहीं थे।

पाप का आरम्भ

3 यहोवा द्वारा बनाए गए सभी जानवरों में सबसे अधिक
चतुर साँप* था। (वह स्त्री को धोखा देना चाहता
था।) साँप ने कहा, “हे स्त्री क्या परमेश्वर ने सचमुच
तुम से कहा है कि तुम बाग के किसी पेड़ से फल ना
खाना?”
2स्त्री ने साँप से कहा, “नहीं परमेश्वर ने यह नहीं
कहा। हम बाग के पेड़ों से फल खा सकते हैं। 3लेकिन
एक पेड़ है जिसके फल हम लोग नहीं खा सकते।
परमेश्वर ने हम लोगों से कहा, ‘बाग के बीच के पेड़
के फल तुम नहीं खा सकते, तुम उसे छूना भी नहीं,
नहीं तो मर जाओगे।’”
4लेकिन साँप ने स्त्री से कहा, “तुम मरोगी नहीं।
5परमेश्वर जानता है कि यदि तुम लोग उस पेड़ से फल
खाओगे तो अच्छे और बुरे के बारे में जान जाओगे
और तब तुम परमेश्वर के समान हो जाओगे।”
6स्त्री ने देखा कि पेड़ सुन्दर है। उसने देखा कि फल
खाने के लिए अच्छा है और पेड़ उसे बुद्धिमान बनाएगा।

साँप शायद शैतान। उसे बहुधा साँप, अजदहा और “सागर का दैत्य” कहा गया है।

तब स्त्री ने पेड़ से फल लिया और उसे खाया। उसका
पति भी उसके साथ था इसलिए उसने कुछ फल उसे
दिया और उसने उसे खाया।
7तब पुरुष और स्त्री दोनों बदल गए। उनकी आँखे
खुल गई और उन्होंने वस्तुओं को भिन्न दृष्टि से देखा।
उन्होंने देखा कि उनके कपड़े नहीं हैं, वे नंगे हैं।
इसलिए उन्होंने कुछ अंजीर के पत्ते लेकर उन्हें जोड़ा
और कपड़ो के स्थान पर अपने लिए पहना।
8तब पुरुष और स्त्री ने दिन के ठण्डे समय में यहोवा
परमेश्वर के आने की आवाज बाग में सुनी। वे बाग में
पेड़ों के बीच में छिप गए। 9यहोवा परमेश्वर ने पुकार
कर पुरुष से पूछा, “तुम कहाँ हो?”
10पुरुष ने कहा, “मैंने बाग में तेरे आने की आवाज
सुनी और मैं डर गया। मैं नंगा था, इसलिए छिप गया।”
11यहोवा परमेश्वर ने पुरुष से पूछा, “तुम्हें किसने
बताया कि तुम नंगे हो? तुम किस कारण से शरमाए?
क्या तुमने उस विशेष पेड़ का फल खाया जिसे मैंने
तुम्हें न खाने की आज्ञा दी थी?”
12पुरुष ने कहा, “तूने जो स्त्री मेरे लिए बनाई
उसने उस पेड़ से मुझे फल दिए, और मैंने उसे
खाया।”
13तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा, “यह तुमने
क्या किया?” स्त्री ने कहा, “साँप ने मुझे धोखा दिया।
उसने मुझे बेवकूफ बनाया और मैंने फल खा लिया।”
14तब यहोवा परमेश्वर ने साँप से कहा, “तुमने यह
बहुत बुरी बात की। इसलिए तुम्हारा बुरा ही होगा। अन्य
जानवरों की अपेक्षा तुम्हारा बहुत बुरा होगा। तुम अपने
पेट के बल रेंगने को मजबूर होगे। और धूल चाटने को
विवश होगे जीवन के सभी दिनों में।
15मैं तुम्हें और स्त्री को एक दूसरे का दुश्मन
बनाऊँगा।तुम्हारे बच्चे और इसके बच्चे आपस में दुश्मन
होंगे। तुम इसके बच्चे के पैर में डसोगे और वह तुम्हारा
सिर कुचल देगा।”
16 तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा, “मैं तेरे
गर्भावस्था में तुझे बहुत दु:खी करूँगा और जब तू बच्चा
जनेगी तब तुझे बहुत पीड़ा होगी। तेरी चाहत तेरे पति के
लिये होगी किन्तु वह तुझ पर प्रभुता करेगा।”*
17तब यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य से कहा, “मैंने
आज्ञा दी थी कि तुम विशेष पेड़ का फल न खाना।
किन्तु तुमने अपनी पत्नी की बाते सुनीं और तुमने उस
पेड़ का फल खाया। इसलिए मैं तुम्हारे कारण इस भूमि
को शाप देता हूँ* अपने जीवन के पूरे काल तक उस

तेरी चाहत … प्रभुता करेगा शाब्दिक तुम अपने पति पर हुकम चलाना चाहोगी। लेकिन वह तुझ पर प्रभुता करेगा।

शाप देता हूँ शाब्दिक किसी वस्तु या व्यक्ति के लिये बुरा आत्मा लेकिन वह तुझ पर प्रभुता करेगा।

भोजन के लिए जो धरती देती है तुम्हें कठिन मेहनत
करनी पड़ेगी।
18तुम उन पेड़ पौधों को खाओगे जो खेतों में उगते हैं।
किन्तु भूमि तुम्हारे लिए काँटे और खर–पतवार पैदा
करेगी।
19तुम अपने भोजन के लिए कठिन परिश्रम करोगे।
तुम तब तक परिश्रम करोगे जब तक माथे पर पसीना
न आ जाये। तुम तब तक कठिन मेहनत करोगे जब
तक तुम्हारी मृत्यु न आ जाये। उस समय तुम दुबारा
मिट्टी बन जाओगे। जब मैंने तुमको बनाया था, तब
तुम्हें मिट्टी से बनाया था और जब तुम मरोगे तब तुम
उसी मिट्टी में पुन: मिल जाओगे।"
20आदम ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा रखा, क्योंकि
सारे मनुष्यों की वह आदिमाता थी।
21यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य और उसकी पत्नी के
लिए जानवरों के चमड़ों से पोशाक बनाया। तब यहोवा
ने ये पोशाक उन्हें दी। 22यहोवा परमेश्वर ने कहा,
"देखो, पुरुष हमारे जैसा हो गया है। पुरुष अच्छाई और
बुरा जानता है और अब पुरुष जीवन के पेड़ से भी फल
ले सकता है। अगर पुरुष उस फल को खायेगा तो सदा
ही जीवित रहेगा।"
23तब यहोवा परमेश्वर ने पुरुष को अदन के बाग
छोड़ने के लिए मजबूर किया। जिस मिट्टी से आदम
बना था उस पृथ्वी पर आदम को कड़ी मेहनत करनी
पड़ी। 24परमेश्वर ने आदम को बाग से बाहर निकाल
दिया। तब परमेश्वर ने करूब (स्वर्गदूतों) को बाग के
फाटक की रखवाली के लिए रखा। परमेश्वर ने वहाँ
एक आग की तलवार भी रख दी। यह तलवार जीवन
के पेड़ के रास्ते की रखवाली करती हुई चारों ओर
चमकती थी।

पहला परिवार

4 आदम और उसकी पत्नी हव्वा के बीच शारीरिक
सम्बन्ध हुए और हव्वा ने एक बच्चे को जन्म
दिया। बच्चे का नाम कैन रखा गया। हव्वा ने कहा,
"यहोवा की मदद से मैंने एक मनुष्य पाया है।"
2इसके बाद हव्वा ने दूसरे बच्चे को जन्म दिया। यह
बच्चा कैन का भाई हाबिल था। हाबिल गड़ेरिया बना।
कैन किसान बना।

पहली हत्या

3-4फसल के समय* कैन एक भेंट यहोवा के पास
लाया। जो अन्न कैन ने अपनी ज़मीन में उपजाया था
उसमें से थोड़ा अन्न वह लाया। परन्तु हाबिल अपने
जानवरों के झुण्ड में से कुछ जानवर लाया। हाबिल
अपनी सबसे अच्छी भेड़ का सबसे अच्छा हिस्सा
लाया।*
यहोवा ने हाबिल तथा उसकी भेंट को स्वीकार किया।
5परन्तु यहोवा ने कैन तथा उसके द्वारा लाई भेंट को
स्वीकार नहीं किया इस कारण कैन क्रोधित हो गया।
वह बहुत व्याकुल और निराश* हो गया। 6यहोवा ने
कैन से पूछा, "तुम क्रोधित क्यों हो? तुम्हारा चेहरा
उतरा हुआ क्यों दिखाई पड़ता है? 7अगर तुम अच्छे
काम करोगे तो तुम मेरी दृष्टि में ठीक रहोगे। तब मैं
तुम्हें अपनाऊँगा। लेकिन अगर तुम बुरे काम करोगे
तो वह पाप तुम्हारे जीवन में रहेगा। तुम्हारे पाप तुम्हें
अपने वश में रखना चाहेंगे लेकिन तुम को अपने पाप
को अपने बस में रखना होगा।"*
8कैन ने अपने भाई हाबिल से कहा, "आओ हम
मैदान में चलें।" इसलिए कैन और हाबिल मैदान में गए।
तब कैन ने अपने भाई पर हमला किया और उसे मार
डाला। 9बाद में यहोवा ने कैन से पूछा, "तुम्हारा भाई
हाबिल कहाँ है?"
कैन ने जवाब दिया, "मैं नहीं जानता। क्या यह मेरा
काम है कि मैं अपने भाई की निगरानी और देख भाल
करूँ?"
10तब यहोवा ने कहा, "तुमने यह क्या किया? तुम्हारे
भाई का खून जमीन से बोल रहा है कि क्या हो गया है?
11तुमने अपने भाई की हत्या की है, पृथ्वी तुम्हारे हाथों
से उसका खून लेने के लिए खुल गई है। इसलिए अब मैं
उस जमीन को बुरा करने वाली चीज़ों को पैदा करूँगा।
12बीते समय में तुमने फ़सलें लगाई और वे अच्छी उगीं।
लेकिन अब तुम फसल बोओगे और जमीन तुम्हारी
फसल अच्छी होने में मदद नहीं करेगी। तुम्हें पृथ्वी पर
घर नहीं मिलेगा। तुम जगह जगह भटकोगे।"
13तब कैन ने कहा, "यह दण्ड इतना अधिक है कि
मैं सह नहीं सकता। 14मेरी ओर देख। तूने मुझे जमीन
में फसल के काम को छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया
है और मैं अब तेरे करीब भी नहीं रहूँगा। मेरा कोई घर
नहीं होगा और पृथ्वी पर से मैं नष्ट हो जाऊँगा और
यदि कोई मनुष्य मुझे पाएगा तो मार डालेगा।"
15तब यहोवा ने कैन से कहा, "मैं यह नहीं होने दूँगा।
यदि कोई तुमको मारेगा तो मैं उस आदमी को बहुत

फसल के समय इसका अर्थ फसल काटने का समय। या कुछ निश्चित समय के बाद भी हो सकता है।

अच्छा हिस्सा लाया शाब्दिक उसकी चर्बी। यह जानवर का वह हिस्सा था जो हमेशा परमेश्वर के लिये बचाया जाता था। जब यह वेदी पर जलाया जाता था तो उसमें से बहुत मनभावनी सुगन्ध निकलती थी।

व्याकुल और निराश शाब्दिक, "उसका मुँह झुक गया"

लेकिन ... रखना होगा अगर तुम सही नहीं करते तब पाप तुम्हारे दरवाजे पर एक सिंह की तरह घात लगा है। यह तुम्हें दबोचना चाहता है किन्तु तुम इस पर हावी रहो।

कठोर दण्ड दूँगा।" तब यहोवा ने कैन पर एक चिन्ह
बनाया। यह चिन्ह वह बताता था कि कैन को कोई न
मारे।

कैन का परिवार

16तब कैन यहोवा को छोड़कर चला गया। कैन नोद
देश में रहने लगा। 17कैन ने अपनी पत्नी के साथ
शारीरिक सम्बन्ध किया। वह गर्भवती हुई। उसने हनोक
नामक बच्चे को जन्म दिया। कैन ने एक शहर बसाया,
और उसका नाम अपने पुत्र के नाम पर हनोक ही
रखा। 18हनोक से ईराद उत्पन्न हुआ, ईराद से महूयाएल
उत्पन्न हुआ, महूयाएल से मतूशाएल उत्पन्न हुआ और
मतूशाएल से लेमेक उत्पन्न हुआ।

19लेमेक ने दो स्त्रियों से विवाह किया। एक पत्नी का
नाम आदा और दूसरी का नाम सिल्ला था। 20आदा ने
याबाल को जन्म दिया। याबाल उन लोगों का पिता* था
जो तम्बूओं में रहते थे तथा पशुओं का पालन करके
जीवन–निर्वाह करते थे। 21आदा का दूसरा पुत्र यूबाल
भी था। यूबाल, याबाल का भाई था। यूबाल उन लोगों
का पिता था जो वीणा और बाँसुरी बजाते थे। 22सिल्ला
ने तूबलकैन को जन्म दिया। तूबलकैन उन लोगों का
पिता था जो काँसे और लोहे का काम करते थे।
तूबलकैन की बहन का नाम नामा था।

23लेमेक ने अपनी पत्नियों से कहा:

"ऐ आदा और सिल्ला मेरी बात सुनो। लेमेक की
पत्नियों जो बाते मैं कहता हूँ, सुनो। एक पुरुष ने मुझे
चोट पहुँचाई,मैंने उसे मार डाला। एक जवान ने मुझे
चोट दी इसलिए मैंने उसे मार डाला।

24कैन की हत्या का दण्ड बहुत भारी था।
इसलिए मेरी हत्या का दण्ड भी उससे बहुत, बहुत
भारी होगा।"

आदम और हव्वा को नया पुत्र हुआ

25आदम ने हव्वा के साथ फिर शारीरिक सम्बन्ध
किया और हव्वा ने एक और बच्चे को जन्म दिया।
उन्होंने इस बच्चे का नाम शेत रखा। हव्वा ने कहा,
"यहोवा ने मुझे दूसरा पुत्र दिया है। कैन ने हाबिल को
मार डाला किन्तु अब शेत मेरे पास है।"

26शेत का भी एक पुत्र था। इसका नाम एनोश
था। उस समय लोग यहोवा पर विश्वास करने
लगे।*

आदम के परिवार का इतिहास

5 यह अध्याय आदम के परिवार के बारे में है।
परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में* बनाया।
2परमेश्वर ने एक पुरुष और एक स्त्री को बनाया।
जिस दिन परमेश्वर ने उन्हें बनाया, आशीष दी। एवं
उसका नाम "आदम" रखा।

3जब आदम एक सौ तीस वर्ष का हो गया तब वह
एक और बच्चे का पिता हुआ। यह पुत्र ठीक आदमसा
दिखाई देता था। आदम ने पुत्र का नाम शेत रखा। 4शेत
के जन्म के बाद आदम आठ सौ वर्ष जीवित रहा। इन
दिनों में आदम के अन्य पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुई। 5इस
तरह आदम पूरे नौ सौ तीस वर्ष तक जीवित रहा, तब
वह मरा। 6जब शेत एक सौ पाँच वर्ष का हो गया तब
उसे एनोश नाम का पुत्र पैदा हुआ।

7एनोश के जन्म के बाद शेत आठ सौ सात वर्ष
जीवित रहा। इसी शेत के अन्य पुत्र–पुत्रियाँ पैदा हुई।
8इस तरह शेत पूरे नौ सौ बारह वर्ष जीवित रहा, तब
वह मरा।

9एनोश जब नब्बे वर्ष का हुआ, उसे केनान नाम का
पुत्र पैदा हुआ। 10केनान के जन्म के बाद एनोश आठ
सौ पन्द्रह वर्ष जीवित रहा। इन दिनों इसके अन्य पुत्र
और पुत्रियाँ पैदा हुई। 11इस तरह एनोश पूरे नौ सौ पाँच
वर्ष जीवित रहा, तब वह मरा।

12जब केनान सत्तर वर्ष का हुआ, उसे महललेल
नाम का पुत्र पैदा हुआ। 13महललेल के जन्म के बाद
केनान आठ सौ चालीस वर्ष जीवित रहा। इन दिनों
केनान के दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुई। 14इस तरह
केनान पूरे नौ सौ दस वर्ष जीवित रहा, तब वह मरा।

15जब महललेल पैंसठ वर्ष का हुआ, उसे येरेद
नाम का पुत्र पैदा हुआ। 16येरेद के जन्म के बाद
महललेल आठ सौ तीस वर्ष जीवित रहा। इन दिनों में
उसे दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुई। 17इस तरह
महललेल पूरे आठ सौ पंचानबे वर्ष जीवित रहा। तब
वह मरा।

18जब येरेद एक सौ बासठ वर्ष का हुआ तो उसे
हनोक नाम का पुत्र पैदा हुआ। 19हनोक के जन्म के
बाद येरेद आठ सौ वर्ष जीवित रहा। इन दिनों में उसे
दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुई। 20इस तरह येरेद पूरे नौ
सौ बासठ वर्ष जीवित रहा, तब वह मरा।

21जब हनोक पैंसठ वर्ष का हुआ, उसे मतूशेलह नाम
का पुत्र पैदा हुआ। 22मतूशेलह के जन्म के बाद हनोक
परमेश्वर के साथ तीन सौ वर्ष रहा। इन दिनों उसके
दूसरे पुत्र–पुत्रियाँ पैदा हुई। 23इस तरह हनोक पूरे तीन
सौ पैंसठ वर्ष जीवित रहा। 24एक दिन हनोक परमेश्वर

उन लोगों का पिता था इसका मतलब शायद यह है इसने इन चीजों का आविष्कार किया या इनका इस्तेमाल करने वाला यह पहला व्यक्ति था।

उस समय ... लगे शाब्दिक उस समय लोग यहोवा को पुकारने लगे।

अपने स्वरूप में उसने उसे परमेश्वर के समान बनाया। तुलना करे उत्पत्ति 1:27; 5:3

के साथ चल रहा था* और गायब हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया। 25जब मतूशेलह एक सौ सत्तासी वर्ष का हुआ, उसे लेमेक नाम का पुत्र पैदा हुआ। 26लेमेक के जन्म के बाद मतूशेलह सात सौ बयासी वर्ष जीवित रहा। इन दिनों उसे दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुई। 27इस तरह मतूशेलह पूरे नौ सौ उनहत्तर वर्ष जीवित रहा, तब यह मरा।

28जब लेमेक एक सौ बयासी वर्ष का हुआ, वह एक पुत्र का पिता बना। 29लेमेक के पुत्र का नाम नूह रखा। लेमेक ने कहा, "हम किसान लोग बहुत कड़ी मेहनत करते हैं क्योंकि परमेश्वर ने भूमि को शाप दे दिया है। किन्तु नूह हम लोगों को विश्राम देगा।"

30नूह के जन्म के बाद, लेमेक पाँच सौ पंचानबे वर्ष जीवित रहा। इन दिनों उसे दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुई। 31इस तरह लेमेक पूरे सात सौ सतहत्तर वर्ष जीवित रहा, तब वह मरा।

32जब नूह पाँच सौ वर्ष का हुआ, उसके शेम, हाम, और येपेत नाम के पुत्र हुए।

लोग पापी हो गये

6 पृथ्वी पर मनुष्यों की संख्या बढ़ती रही। इन लोगों के लड़कियाँ पैदा हुई। 2-4परमेश्वर के पुत्रों ने देखा कि ये लड़कियाँ सुन्दर हैं। इसलिए परमेश्वर के पुत्रों ने अपनी इच्छा के अनुसार जिससे चाहा उसी से विवाह किया।

इन स्त्रियों ने बच्चों को जन्म दिया। इन दिनों और बाद में भी नेफिलिम लोग उस देश में रहते थे। ये प्रसिद्ध लोग थे। ये लोग प्राचीन काल से बहुत वीर थे।*

तब यहोवा ने कहा, "मनुष्य शरीर ही है। मैं सदा के लिए इनसे अपनी आत्मा को परेशान नहीं होने दूँगा। मैं उन्हें एक सौ बीस वर्ष का जीवन दूँगा।"*

5यहोवा ने देखा कि पृथ्वी पर मनुष्य बहुत अधिक पापी हैं। यहोवा ने देखा कि मनुष्य लगातार बुरी बातें ही सोचता है। 6यहोवा को इस बात का दुःख हुआ, कि मैंने पृथ्वी पर मनुष्यों को क्यों बनाया? यहोवा इस बात से बहुत दुःखी हुआ। 7इसलिए यहोवा ने कहा, "मैं अपनी बनाई पृथ्वी के सारे लोगों को खतम कर दूँगा। मैं हर एक व्यक्ति, जानवर और पृथ्वी पर रेंगने वाले हर एक जीवजन्तु को खतम करूँगा। मैं आकाश के पक्षियों को भी खतम करूँगा। क्यों? क्योंकि मैं इस बात से दुःखी हूँ कि मैंने इन सभी चीज़ों को बनाया।"

8लेकिन पृथ्वी पर यहोवा को खुश करने वाला एक व्यक्ति था–नूह।

नूह और जल प्रलय

9यह कहानी नूह के परिवार की है। अपने पूरे जीवन में नूह ने सदैव परमेश्वर का अनुसरण किया। 10नूह के तीन पुत्र थे, शेम, हाम, और येपेत।

11-12परमेश्वर ने पृथ्वी पर दृष्टि की और उसने देखा की पृथ्वी को लोगों ने बर्बाद कर दिया है। हर जगह हिंसा फैली हुई। लोग पापी और भ्रष्ट हो गये है, और उन्होंने पृथ्वी पर अपना जीवन बर्बाद कर दिया है।

13इसलिए परमेश्वर ने नूह से कहा, "सारे लोगों ने पृथ्वी को क्रोध और हिंसा से भर दिया है। इसलिए मैं सभी जीवित प्राणियों को नष्ट करूँगा। मैं उनको पृथ्वी से हटाऊँगा। 14गोपेर की लकड़ी* का उपयोग करो और अपने लिए एक जहाज बनाओ।जहाज में कमरे बनाओ* और उसे राल से भीतर और बाहर पोत दो।

15"जो जहाज मैं बनवाना चाहता हूँ उसका नाप तीन सौ हाथ* लम्बाई, पचास हाथ* चौड़ाई, तीस हाथ *ऊँचाई है। 16जहाज के लिए छत से करीब एक हाथ* नीचे एक खिड़की बनाओ* जहाज की बगल में एक दरवाज़ा बनाओ। जहाज में तीन मंजिलें बनाओ। ऊपरी मंजिल, बीच की मंजिल और नीचे की मंजिल।"

17"तुम्हें जो बता रहा हूँ उसे समझो। मैं पृथ्वी पर बड़ा भारी जल का बाढ़ लाऊँगा। आकाश के नीचे सभी जीवों को मैं नष्ट कर दूँगा। पृथ्वी के सभी जीव मर जाएंगें। 18किन्तु मैं तुमको बचाऊँगा। तब मैं तुम से एक विशेष वाचा करूँगा। तुम, तुम्हारे पुत्र तुम्हारी पत्नी तुम्हारे पुत्रों की पत्नियाँ सभी जहाज़ में सवार होगे।

हनोक ... रहा था शाब्दिक "हनोक परमेश्वर के साथ साथ चलता था।"

ये लोग ... वीर थे नेफिलिम लोग उन दिनों उस देश में रहते थे। ये इसके बाद भी वहाँ रहते रहे जब परमेश्वर के पुत्रों ने मानव की पुत्रियों से विवाह किया और इन स्त्रियों ने बच्चों को जन्म दिया। ये बच्चे प्रसिद्ध हुए। ये प्राचीन काल से वीर थे।"

मनुष्य ... दूँगा मेरी आत्मा मनुष्य के साथ सदा नहीं रहेगी क्योंकि वे हाड़ माँस हैं। आदमी केवल 120 वर्ष जीवित रहेगा। या "मेरा विवेक लोगों का न्याय सदा नहीं करता रहेगा क्योंकि वे सभी 120 वर्ष की उम्र में ही मरेंगे।

गोपेर की लकड़ी हम नहीं जानते कि यह असली में किस तरह की लकड़ी है। शायद यह एक किस्म का एक पेड़ हो या तराशी हुई लकड़ी।

जहाज में कमरे बनाओ जहाज के लिए तैल–जूट आदि बनाओ, "ये छोटे पौधे हो सकते हैं जो जहाजों के जोड़ों में घुसाए जाते थे और राल से पोते दिए

तीन सौ हाथ चार सौ पचास फीट।

पचास हाथ पचहत्तर फीट।

तीस हाथ पैंतालीस फीट।

एक हाथ शाब्दिक ढेढ़ फीट।

जहाज ... बनाओ जहाज के लिए करीब ढेढ़ फीट ऊँचा एक खुला भाग रखो।

19साथ ही साथ पृथ्वी पर जीवित प्राणियों के जोड़े भी तुम्हें लाने होंगे। हर एक के नर और मादा को जहाज में लाओ। अपने साथ उनको जीवित रखो। 20पृथ्वी की हर तरह की चिड़ियों के जोड़ों को भी खोजो। पृथ्वी के हर तरह के जानवरों के जोड़ों को भी खोजो। पृथ्वी पर रेंगने वाले हर एक जीव के जोड़ों को भी खोजो। पृथ्वी के हर प्रकार के जानवरों के नर और मादा तुम्हारे साथ होंगे। जहाज पर उन्हें जीवित रखो। 21पृथ्वी के सभी प्रकार के भोजन भी जहाज पर लाओ। यह भोजन तुम्हारे लिए तथा जानवरों के लिए होगा।"

22नूह ने यह सब कुछ किया। नूह ने परमेश्वर की सारी आज्ञाओं का पालन किया।

जल प्रलय आरम्भ होता है

7 तब यहोवा ने नूह से कहा, "मैंने देखा है कि इस समय के पापी लोगों में तुम्हीं एक अच्छे व्यक्ति हो। इसलिए तुम अपने परिवार को इकट्ठा करो और तुम सभी जहाज में चले जाओ। 2हर एक शुद्ध जानवर के सात जोड़े, (सात नर तथा सात मादा) साथ में ले लो और पृथ्वी के दूसरे अशुद्ध जानवरों के एक-एक जोड़े एक नर और एक मादा लाओ। इन सभी जानवरों को अपने साथ जहाज में ले जाओ। 3हवा में उड़ने वाले सभी पक्षियों के सात जोड़े (सात नर और सात मादा) लाओ। इससे ये सभी जानवर पृथ्वी पर जीवित रहेंगे, जब दूसरे जानवर नष्ट हो जाएंगे। 4अब से सातवें दिन मैं पृथ्वी पर बहुत भारी वर्षा भेजूँगा। यह वर्षा चालीस दिन और चालीस रात होती रहेगी। पृथ्वी के सभी जीवित प्राणी नष्ट हो जाएंगे। मेरी बनाई सभी चीज़ें खतम हो जाएंगी।" 5नूह ने उन सभी बातों को माना जो यहोवा ने आज्ञा दी।

6वर्षा आने के समय नूह छ: सौ वर्ष का था। 7नूह और उसका परिवार बाढ़ के जल से बचने के लिए जहाज में चला गया। नूह की पत्नी, उसके पुत्र और उनकी पत्नियाँ उसके साथ थीं। 8पृथ्वी के सभी शुद्ध जानवर एवं अन्य जानवर, पक्षी और पृथ्वी पर रेंगने वाले सभी जीव 9नूह के साथ जहाज में चढ़े। इन जानवरों के नर और मादा जोड़े परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार जहाज में चढ़े। 10सात दिन बाद बाढ़ प्रारम्भ हुई। धरती पर वर्षा होने लगी।

11-13दूसरे महीने के सातवें दिन, जब नूह छ: सौ वर्ष का था, जमीन के नीचे के सभी सोते खुल पड़े और जमीन से पानी बहना शुरु हो गया। उसी दिन पृथ्वी पर भारी वर्षा होने लगी। ऐसा लगा मानो आकाश की खिड़कियाँ खुल पड़ी हों। चालीस दिन और चालीस रात तक वर्षा पृथ्वी पर होती रही।" ठीक उसी दिन नूह, उसकी पत्नी, उसके पुत्र, शेम, हाम और येपेत और उनकी पत्नियाँ जहाज़ पर चढ़ें। 14वे लोग और पृथ्वी के हर एक प्रकार के जानवर जहाज में थे। हर प्रकार के मवेशी, पृथ्वी पर रेंगने वाले हर प्रकार के जीव और हर प्रकार के पक्षी जहाज में थे। 15ये सभी जानवर नूह के साथ जहाज़ में चढ़े। हर जाति के जीवित जानवरों के ये जोड़े थे। 16परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार सभी जानवर जहाज़ में चढ़े। उनके अन्दर जाने के बाद यहोवा ने दरवाजा बन्द कर दिया।

17चालीस दिन तक पृथ्वी पर जल प्रलय होता रहा। जल बढ़ना शुरु हुआ और उसने जहाज को जमीन से ऊपर उठा दिया। 18जल बढता रहा और जहाज पृथ्वी से बहुत ऊपर तैरती रही। 19जल इतना ऊँचा उठा कि ऊँचे-से-ऊँचे पहाड़ भी पानी में डूब गए। 20जल पहाड़ों के ऊपर बढ़ता रहा। सबसे ऊँचे पहाड़ से तेरह हाथ ऊँचा था।

21-22पृथ्वी के सभी जीव मारे गए। हर एक स्त्री और पुरुष मर गए। सभी पक्षियों और सभी तरह के जानवर मर गए। 23इस तरह परमेश्वर ने पृथ्वी के सभी जीवित हर एक मनुष्य, हर एक जानवर, हर एक रेंगने वाले जीव और हर एक पक्षी को नष्ट कर दिया। ये सभी पृथ्वी से खतम हो गए। केवल नूह, उसके साथ जहाज में चढ़े लोगों और जानवरों का जीवन बचा रहा। 24और जल एक सौ पचास दिन तक पृथ्वी को डुबाए रहा।

जल प्रलय खतम होता है

8 लेकिन परमेश्वर नूह को नहीं भूला। परमेश्वर ने नूह और जहाज में उसके साथ रहने वाले सभी पशुओं और जानवरों को याद रखा। परमेश्वर ने पृथ्वी पर आँधी चलाई और सारा जल गायब होने लगा।

2आकाश से वर्षा रूक गई और पृथ्वी के नीचे से पानी का बहना भी रूक गया। 3पृथ्वी को डुबाने वाला पानी बराबर घटता चला गया। एक सौ पचास दिन बाद पानी इतना उतर गया कि जहाज फिर से भूमि पर आ गई। 4जहाज अरारात के पहाड़ों में से एक पर आ टिकी। यह सातवें महीने का सत्तरहवाँ दिन था। 5जल उतरता गया और दसवें महीने के पहले दिन पहाड़ों की चोटियाँ जल के ऊपर दिखाई देने लगी। 6जहाज में बनी खिड़की को नूह ने चालीस दिन बाद खोला। 7नूह ने एक कौवे को बाहर उड़ाया। कौवा उड़ कर तब तक फिरता रहा जब तक कि पृथ्वी पूरी तरह से न सूख गयी। 8नूह ने एक फ़ाख्ता भी बाहर भेजा। वह जानना चाहता था कि पृथ्वी का पानी कम हुआ है या नहीं।

9फ़ाख्ते को कहीं बैठने की जगह नहीं मिली क्योंकि अभी तक पानी पृथ्वी पर फैला हुआ था। इसलिये वह नूह के पास जहाज पर वापस लौट आया। नूह ने अपना हाथ बढ़ा कर फ़ाख्ते को वापस जहाज के अन्दर लेलिया। 10सात दिन बाद नूह ने फिर फ़ाख्ते को भेजा। 11उस दिन दोपहर बाद फ़ाख्ता नूह के पास आया।

फ़ाख्ते के मुँह में एक ताज़ी जैतून की पत्ती थी। यह
चिन्ह नूह को यह बताने के लिए था कि अब पानी
पृथ्वी पर धीरे–धीरे कम हो रहा है। **12**नूह ने सात दिन
बाद फिर फ़ाख्ते को भेजा। किन्तु इस समय फ़ाख्ता
लौटा ही नहीं।

13उसके बाद नूह ने जहाज का दरवाजा खोला*
नूह ने देखा और पाया कि भूमि सूखी है। यह वर्ष के
पहले महीने का पहला दिन था। नूह छ: सौ एक वर्ष
का था। **14**दूसरे महीने के सत्ताइसवें दिन तक भूमि पूरी
तरह सूख गई।

15तब परमेश्वर ने नूह से कहा, **16**“जहाज को छोड़ो।
तुम, तुम्हारी पत्नी, तुम्हारे पुत्र और उनकी पत्नियाँ
सभी अब बाहर निकलो। **17**हर एक जीवित प्राणी, सभी
पक्षियों, जानवरों तथा पृथ्वी पर रेंगने वाले सभी को
जहाज के बाहर लाओ। ये जानवर अनेक जानवर
उत्पन्न करेंगे और पृथ्वी को फिर भर देंगे।”

18अत: नूह अपने पुत्रों, अपनी पत्नी, अपने पुत्रों की
पत्नियों के साथ जहाज से बाहर आया। **19**सभी जानवरों,
सभी रेंगने वाले जीवों और सभी पक्षियों ने जहाज को
छोड़ दिया। सभी जानवर जहाज से नर और मादा के
जोड़े में बाहर आए।

20तब नूह ने यहोवा के लिए एक वेदी बनाई। उसने
कुछ शुद्ध पक्षियों और कुछ शुद्ध जानवरो* को लिया
और उनको वेदी पर परमेश्वर को भेंट के रूप में
जलाया।

21यहोवा इन बलियों की सुगन्ध पाकर खुश हुआ।
यहोवा ने मन–ही–मन कहा, “मैं फिर कभी मनुष्य के
कारण पृथ्वी को शाप नहीं दूँगा। मानव छोटी आयु से
ही बुरी बातें सोचने लगता हैं। इसलिये जैसा मैंने अभी
किया है इस तरह मैं अब कभी भी सारे प्राणियों को
सजा नहीं दूँगा। **22**जब तक यह पृथ्वी रहेगी तब तक इस
पर फसल उगाने और फ़सल काटने का समय सदैव
रहेगा। पृथ्वी परगरमी और जाड़ा तथा दिन और रात
सदा होते रहेंगे।”

नया आरम्भ

9 परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों को आशीष दी
और उनसे कहा, “बहुत से बच्चे पैदा करो और
अपने लोगों से पृथ्वी को भर दो। **2**पृथ्वी के सभी
जानवर तुम्हारे डर से काँपेंगे और आकाश के हर एक
पक्षी भी तुम्हारा आदर करेंगे और तुमसे डरेंगे। पृथ्वी
पर रेंगने वाला हर एक जीव और समुद्र की हर एक
मछली तुम लोगों का आदर करेगी और तुम लोगो से
डरेगी। तुम इन सभी के ऊपर शासन करोगे। **3**बीते
समय में तुमको मैंने हर पेड़–पौधे खाने को दिए थे।
अब हर एक जानवर भी तुम्हारा भोजन होगा। मैं पृथ्वी
की सभी चीज़ें तुमको देता हूँ–अब ये तुम्हारी हैं। **4**मैं
तुम्हें एक आज्ञा देता हूँ कि तुम किसी जानवर को तब
तक न खाना जब तक कि उसमें जीवन (खून) है। **5**मैं
तुम्हारे जीवन बदले में तुम्हारा खून माँगूगा। अर्थात् मैं
उस जानवर का जीवन मागूँगा जो किसी व्यक्ति को
मारेगा और मैं हर एक ऐसे व्यक्ति का जीवन मागूँगा जो
दूसरे व्यक्ति को जिन्दगी नष्ट करेगा।”

6“परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया है।
इसलिए जो कोई किसी व्यक्ति का खून बहाएगा, उसका
खून व्यक्ति द्वारा ही बहाया जाएगा।”

7“नूह तुम्हें और तुम्हारे पुत्रों के अनेक बच्चे हों
और धरती को लोगों से भर दो।”

8तब परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रो से कहा,
9“अब मैं तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को वचन देता हूँ।
10मैं यह वचन तुम्हारे साथ जहाज से बाहर आने वाले
सभी पक्षियों, सभी पशुओं तथा सभी जानवरों को देता
हूँ। मैं यह वचन पृथ्वी के सभी जीवित प्राणियों को देता
हूँ।” **11**मैं तुमको वचन देता हूँ, “जल की बाढ़ से पृथ्वी
का सारा जीवन नष्ट हो गया था। किन्तु अब यह कभी
नहीं होगा। अब बाढ़ फिर कभी पृथ्वी के जीवन को
नष्ट नहीं करेगी।”

12और परमेश्वर ने कहा, “यह प्रमाणित करने के
लिए कि मैंने तुमको वचन दिया है कि मैं तुमको कुछ
दूँगा। यह प्रमाण बतायेगा कि मैंने तुम से और पृथ्वी के
सभी जीवित प्राणियों से एक वाचा बाँधी है। यह वाचा
भविष्य में सदा बनी रहेगी जिसका प्रमाण यह है **13**कि
मैंने बादलों में मेघधनुष बनाया है। यह मेघधनुष मेरे
और पृथ्वी के बीच हुए वाचा का प्रमाण है। **14**जब मैं
पृथ्वी के ऊपर बादलों को लाऊँगा तो तुम बादलों में
मेघधनुष को देखोगे। **15**जब मैं इस मेघधनुष को देखूँगा
तब मैं तुम्हारे, पृथ्वी के सभी जीवित प्राणियों और
अपने बीच हुई वाचा को याद करूँगा। यह वाचा इस
बात की है कि बाढ़ फिर कभी पृथ्वी के प्राणियों को
नष्ट नहीं करेगी। **16**जब मैं ध्यान से बादलों में मेघधनुष
को देखूँगा तब मैं उस स्थायी वाचा को याद करूँगा। मैं
अपने और पृथ्वी के सभी जीवित प्राणियों के बीच हुई
वाचा को याद करूँगा।”

17इस तरह यहोवा ने नूह से कहा, “वह मेघधनुष मेरे
और पृथ्वी के सभी जीवित प्राणियों के बीच हुई वाचा
का प्रमाण है।”

समस्यायें फिर शुरु होती हैं

18नूह के पुत्र उसके साथ जहाज से बाहर आए।
उनके नाम शेम, हाम और येपेत थे। (हाम तो कनान

दरवाजा खोला पर्दे को हटाया

शुद्ध ... शुद्ध जानवर वे पक्षियों और जानवर जिनके बारे में यहोवा ने कहा कि ये भोजन और बलि बनाए जा सकते हैं।

का पिता था।) 19ये तीनों नूह के पुत्र थे और संसार के
सभी लोग इन तीनों से ही पैदा हुए।
20नूह किसान बना। उसने अंगूरों का बाग लगाया।
21नूह ने दाखमधु बनाया और उसे पिया। वह मतवाला
हो गया और अपने तम्बू में लेट गया। नूह कोई कपड़ा
नहीं पहना था। 22कनान के पिता हाम ने अपने पिता
को नंगा देखा। तम्बू के बाहर अपने भाईयों से हाम ने
यह बताया। 23तब शेम और येपेत ने एक कपड़ा लिया।
वे कपड़े को पीठ पर डाल कर तम्बू में ले गए। वे उल्टे
मुँह तम्बू में गए। इस तरह उन्होंने अपने पिता को नंगा
नहीं देखा।
24बाद में नूह सोकर उठा। वह दाखमधु के कारण
सो रहा था। तब उसे पता चला कि उसके सब से छोटे
पुत्र हाम ने उसके बारे में क्या किया है। 25इसलिए नूह
ने शाप दिया,
“यह शाप कनान के लिए हो कि वह अपने भाईयों
का दास हो।”
26नूह ने यह भी कहा, “शेम का परमेश्वर यहोवा
धन्य हो! कनान शेम का दास हो।
27 परमेश्वर येपेत को अधिक भूमि दे। परमेश्वर
शेम के तम्बूओं में रहे और कनान उनका दास बनें।”
28बाढ़ के बाद नूह साढ़े तीन सौ वर्ष जीवित रहा।
29नूह पूरे साढ़े नौ सौ वर्ष जीवित रहा, तब वह मरा।

राष्ट्र बढ़े और फैले

10 नूह के पुत्र शेम, हाम, और येपेत थे। बाढ़ के
बाद ये तीनों बहुत से पुत्रों के पिता हुए। यहाँ
शेम, हाम और येपेत से पैदा होने वाले पुत्रों की सूची दी
जा रही है:

येपेत के वंशज

2येपेत के पुत्र थे: गोमेर, मागोग, मादै, यावान, तूबल,
मेशेक और तीरास।
3गोमेर के पुत्र थे: अशकनज, रीपत और तोगर्मा
4यावान के पुत्र थे: एलीशा, तर्शीश, कित्ती और दोदानी
5भूमध्य सागर के चारों ओर तटों पर जो लोग रहने
लगे वे येपेत के वंशज के ही थे। हर एक पुत्र का
अपना अलग प्रदेश था। सभी परिवार बढ़े और अलग
राष्ट्र बन गए। हर एक राष्ट्र की अपनी भाषा थी।

हाम के वंशज

6हाम के पुत्र थे: कूश, मिस्र, फूत और कनान।
7कूश के पुत्र थे: सबा, हवीला, सबता, रामा, सबूतका।
रामा के पुत्र थे: शबा और ददान।
8कूश का एक पुत्र निम्रोद नाम का भी था। निम्रोद
पृथ्वी पर बहुत शक्तिशाली व्यक्ति हुआ। 9यहोवा के
सामने निम्रोद एक बड़ा शिकारी था। इसलिए लोग दूसरे
व्यक्तियों की तुलना निम्रोद से करते हैं और कहते हैं,
“वह व्यक्ति यहोवा के सामने बड़ा शिकारी निम्रोद के
समान है।”
10निम्रोद का राज्य शिनार देश में बाबुल, एरेख और
अक्कद प्रदेश में प्रारम्भ हुआ। 11निम्रोद अश्शूर में भी
गया। वहाँ उसने नीनवे, रहोबोतीर, कालह और 12रेसेन
नाम के नगरों को बसाया। (रेसेन, नीनवे और बड़े
शहर कालह के बीच का शहर है।)
13-14मिस्रम (मिस्र)—लूद, अनाम, लहाब, नप्तूह, पत्रूस,
कसलूह और कप्तोर देशों के निवासियों का पिता था।
(पलिश्ती लोग कसलूह लोगों से आए थे।)
15कनान सीदोन का पिता था। सिदोन कनान का
पहला पुत्र था। कनान, हित्त (जो हित्ती लोगों का पिता
था) का भी पिता था।
16और कनान, यबूसी, एमोरी, गिर्गाशी, 17हिव्वी,
अर्की, सीनी, 18अर्वदी, समारी, हमाती लोगों का पिता
था। कनान के परिवार संसार के विभिन्न भागों मे
फैले।
19कनान लोगों का देश सीदोन से उत्तर में और
दक्षिण में गरार तक, पश्चिम में अज्जा से पूर्व में सदोम
और अमोरा तक, अदमा और सबोयीम से लाशा तक
था। 20ये सभी लोग हाम के वंशज थे। उन सभी परिवारों
की अपनी भाषाएँ और अपने प्रदेश थे। वे अलग—अलग
राष्ट्र बन गये।

शेम के वंशज

21शेम येपेत का बड़ा भाई था। शेम का एक वंशज
एबेर हिब्रू लोगों का पिता था।*
22शेम के पुत्र एलाम, अश्शूर, अर्पक्षद, लूद और
अराम थे।
23अराम के पुत्र ऊस, हूल, गेतेर और मश थे।
24अर्पक्षद शेलह का पिता था। शेलह एबेर का पिता
था। 25एबेर के दो पुत्र थे। एक पुत्र का नाम पेलेग था।
उसे यह नाम इसलिए दिया गया क्योंकि जीवन काल में
धरती का विभाजन हुआ। दूसरे भाई का नाम योक्तान
था।
26योक्तान अल्मोदाद, शेलेप, हसर्मावेत, येरह,
27यदोरवाम, ऊजाल, दिक्ला, 28ओबाल, अबीमाएल, शबा,
29ओपीर हवीला और योबाब का पिता था। ये सभी लोग
योक्तान की संतान हुए। 30ये लोग मेशा और पूर्वी पहाड़ी
प्रदेश के बीच की भूमि में रहते थे। मेशा सपारा प्रदेश
की ओर था। 31वे लोग शेम के परिवार से थे। वे
परिवार, भाषा, प्रदेश और राष्ट्र की इकाईयों में व्यवस्थित
थे।
32नूह के पुत्रों से चलने वाले परिवारों की यह सूची
है। वे अपने—अपने राष्ट्रो में बँटकर रहते थे। बाढ़ के

शेम ... था एबेर के सन्तानों का पिता शेम से पैदा हुआ था।”

बाद सारी पृथ्वी पर फैलने वाले लोग इन्हीं परिवारों से निकले।

संसार बँटा

11 बाढ़ के बाद सारा संसार एक ही भाषा बोलता था। सभी लोग एक ही शब्द–समूह का प्रयोग करते थे। 2लोग पूर्व से बढ़े। उन्हें शिनार देश में एक मैदान मिला। लोग वहाँ रहने के लिए ठहर गए।

3लोगों ने कहा, "हम लोगों को ईटें बनाना और उन्हें आग में तपाना चाहिये, ताकि वे कठोर हो जायें।" इसलिये लोगों ने अपने घर बनाने के लिये पत्थरों के स्थान पर ईटों का प्रयोग किया और लोगों ने गारे के स्थान पर राल का प्रयोग किया।

4लोगों ने कहा, "हम अपने लिए एक नगर बनाएँ और हम एक बहुत ऊँची इमारत बनाएंगे जो आकाश को छुएगी। हम लोग प्रसिद्ध हो जाएंगे। अगर हम लोग ऐसा करेंगे तो पूरी धरती पर बिखरेंगे नहीं हम लोग एक जगह पर एक साथ रहेंगे।"

5यहोवा नगर और बहुत ऊँची इमारत को देखने के लिए नीचे आया। यहोवा ने लोगों को यह सब बनाते देखा। 6यहोवा ने कहा, "ये सभी लोग एक ही भाषा बोलते हैं और मैं देखता हूँ कि वे इस काम को करने के लिए एकजुट हैं। यह तो, ये जो कुछ कर सकते हैं उसका, केवल आरम्भ है। शीघ्र ही वे वह सब कुछ करने के योग्य हो जाएंगे जो ये करना चाहेंगे। 7इसलिए आओ हम नीचे चले और इनकी भाषा को गड़बड़ कर दें। तब ये एक दूसरे की बात नहीं समझेंगे।"

8यहोवा ने लोगों को पूरी पृथ्वी पर फैला दिया। इससे लोगों ने नगर को बनाना पूरा नहीं किया। 9यही वह जगह थी जहाँ यहोवा ने पूरे संसार की भाषा को गड़बड़ कर दिया था। इसलिए इस जगह का नाम बाबुल पड़ा। इस प्रकार यहोवा ने उस जगह से लोगों को पृथ्वी के सभी देशों में फैलाया।

शेम के परिवार की कथा

10यह शेम के परिवार की कथा है। बाढ़ के दो वर्ष बाद जब शेम सौ वर्ष का था उसके पुत्र अर्पक्षद का जन्म हुआ। 11उसके बाद शेम पाँच सौ वर्ष जीवित रहा। उसके अन्य पुत्र और पुत्रियाँ थीं।

12जब अर्पक्षद पैंतीस वर्ष का था उसके पुत्र शेलह का जन्म हुआ। 13शेलह के जन्म होने के बाद अर्पक्षद चार सौ तीन वर्ष जीवित रहा। इन दिनों उसके दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ पैदा हुई।

14शेलह के तीस वर्ष के होने पर उसके पुत्र एबेर का जन्म हुआ। 15एबेर के जन्म के बाद शेलह चार सौ तीन वर्ष जीवित रहा। इन दिनों में उसके दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ उत्पन्न हुई।

16एबेर के चौंतीस वर्ष के होने के बाद उसके पुत्र पेलेग का जन्म हुआ। 17पेलेग के जन्म के बाद एबेर चार सौ तीन वर्ष और जीवित रहा। इन दिनों में इसको दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ हुई।

18जब पेलेग तीस वर्ष का हुआ, उसके पुत्र 'रु' का जन्म हुआ। 19'रु' के जन्म के बाद पेलेग दो सौ नौ वर्ष और जीवित रहा। उन दिनों में उसके अन्य पुत्रियों और पुत्रों का जन्म हुआ।

20जब रु बत्तीस वर्ष का हुआ, उसके पुत्र सरूग का जन्म हुआ। 21सरुग के जन्म के बाद रु दो सौ सात वर्ष और जीवित रहा। इन दिनों उसके दूसरे पुत्र और पुत्रियाँ हुई।

22जब सरुग तीस वर्ष का हुआ, उसके पुत्र नाहोर का जन्म हुआ। 23नाहोर के जन्म के बाद सरूग दो सौ वर्ष और जीवित रहा। इन दिनों में उसके दूसरे पुत्रों और पुत्रियों का जन्म हुआ।

24जब नाहोर उनतीस वर्ष का हुआ, उसके पुत्र तेरह का जन्म हुआ। 25तेरह के जन्म के बाद नाहोर एक सौ उन्नीस वर्ष और जीवित रहा। इन दिनों में उसके दूसरी पुत्रियों और पुत्रों का जन्म हुआ।

26तेरह जब सत्तर वर्ष का हुआ, उसके पुत्र अब्राम, नाहोर और हारान का जन्म हुआ।

तेरह के परिवार की कथा

27यह तेरह के परिवार की कथा है। तेरह अब्राम, नाहोर और हारान का पिता था। हारान लूत का पिता था। 28हारान अपनी जन्मभूमि कसदियों के उर नगर में मरा। जब हारान मरा तब उसका पिता तेरह जीवित था। 29अब्राम और नाहोर दोनों ने विवाह किया। अब्राम की पत्नी सारै थी। नाहोर की पत्नी मिल्का थी। मिल्का हारान की पुत्री थी। हारान मिल्का और यिस्का का बाप था। 30सारै के कोई बच्चा नहीं था क्योंकि वह किसी बच्चे को जन्म देने योग्य नहीं थी।

31तेरह ने अपने परिवार को साथ लिया और कसदियों के उर नगर को छोड़ दिया। उन्होंने कनान की यात्रा करने का इरादा किया। तेरह ने अपने पुत्र अब्राम, अपने पोते लूत (हारान का पुत्र), अपनी पुत्रवधू (अब्राम की पत्नी) सारै को साथ लिया। उन्होंने हारान तक यात्रा की और वहाँ ठहरना तय किया। 32तेरह दो सौ पाँच वर्ष जीवित रहा। तब वह हारान में मर गया।

परमेश्वर अब्राम को बुलाता है

12 यहोवा ने अब्राम से कहा, "अपने देश और अपने लोगों को छोड़ दो। अपने पिता के परिवार को छोड़ दो और उस देश जाओ जिसे मैं तुम्हें दिखाऊँगा।

2मैं तुम्हें आशीर्वाद दूँगा। मैं तुझसे एक महान राष्ट्र बनाऊँगा। मैं तुम्हारे नाम को प्रसिद्ध करूँगा। लोग

तुम्हारे नाम का प्रयोग दूसरों के कल्याण के लिए करेंगे।
3मैं उन लोगों को आशीर्वाद दूँगा जो तुम्हारा भला करेंगे। किन्तु उनको दण्ड दूँगा जो तुम्हारा बुरा करेंगे। पृथ्वी के सारे मनुष्यो को आशीर्वाद देने के लिये मैं तुम्हारा उपयोग करूँगा।"

अब्राम कनान जाता है

4अब्राम ने यहोवा की आज्ञा मानी। उसने हारान को
छोड़ दिया और लूत उसके साथ गया। इस समय अब्राम
पच्हत्तर वर्ष का था। 5अब्राम ने जब हारान छोड़ा तो वह
अकेला नहीं था। अब्राम अपनी पत्नी सारै, भतीजे लूत
और हारान में उनके पास जो कुछ था, सबको साथ
लाया। हारान में जो दास अब्राम को मिले थे वे भी
उनके साथ गए। अब्राम और उसके दल ने हारान को
छोड़ा और कनान देश तक यात्रा की। 6अब्राम ने
कनान देश में शकेम के नगर और मोरे के बड़े पेड़
तक यात्रा की। उस समय कनानी लोग उस देश में
रहते थे।
7यहोवा अब्राम के सामने आया* यहोवा ने कहा,
"मैं यह देश तुम्हारे वंशजो को दूँगा।"
यहोवा अब्राम के सामने जिस जगह पर प्रकट हुआ
उस जगह पर अब्राम ने एक वेदी यहोवा की उपासना
के लिए बनाया। 8तब अब्राम ने उस जगह को छोड़ा
और बेतेल के पूर्व पहाड़ों तक यात्रा की। अब्राम ने वहाँ
अपना तम्बू लगाया। बेतेल नगर पश्चिम में था। ये नगर
पूर्व में था। उस जगह अब्राम ने यहोवा के लिए दूसरी
वेदी बनाई और अब्राम ने वहाँ यहोवा की उपासना की।
9इसके बाद अब्राम ने फिर यात्रा आरम्भ की। उसने
नेगव की ओर यात्रा की।

मिस्र में अब्राम

10इन दिनों भूमि बहुत सूखी थी। वर्षा नहीं हो रही थी
और कोई खाने की चीज़ नहीं उग सकती थी। इसलिए
अब्राम जीवित रहने के लिए मिस्र चला गया। 11अब्राम
ने देखा कि उसकी पत्नी सारै बहुत सुन्दर थी। इसलिए
मिस्र में आने के पहले अब्राम ने सारै से कहा, "मैं
जानता हूँ कि तुम बहुत सुन्दर स्त्री हो। 12मिस्र के लोग
तुम्हें देखेंगे। वे कहेंगे 'यह स्त्री इसकी पत्नी है।' तब वे
मुझे मार डालेंगे क्योंकि वे तुमको लेना चाहेंगे। 13इसलिए
तुम लोगों से कहना कि तुम मेरी बहन हो। तब वे
मुझको नहीं मारेंगे। वे मुझ पर दया करेंगे क्योंकि वे
समझेंगे कि मैं तुम्हारा भाई हूँ। इस तरह तुम मेरा जीवन
बचाओगी। 14इस प्रकार अब्राम मिस्र में पहुँचा। मिस्र के
लोगों ने देखा, सारै बहुत सुन्दर स्त्री है। 15कुछ मिस्र के
अधिकारियों ने भी उसे देखा। उन्होंने फ़िरौन से कहा
कि वह बहुत सुन्दर स्त्री है। वे अधिकारी सारै को
फ़िरौन के घर ले गए। 16फ़िरौन ने अब्राम के ऊपर
दया की क्योंकि उसने समझा कि वह सारै का भाई है।
फ़िरौन ने अब्राम को भेड़ें मवेशी और गधे दिए। अब्राम
को ऊँटों के साथ–साथ आदमी और स्त्रियाँ दास दासी
के रूप में मिले।
17फ़िरौन अब्राम की पत्नी को रख लिया। इससे
यहोवा ने फ़िरौन और उसके घर के मनुष्यों में बुरी
बीमारी फैला दी।
18इसलिए फ़िरौन ने अब्राम को बुलाया। फिरौन ने
कहा, "तुमने मेरे साथ बड़ी बुराई की है। तुमने यह नहीं
बताया कि सारै तुम्हारी पत्नी है। क्यों? 19तुमने कहा,
'यह मेरी बहन है।' तुमने ऐसा क्यों कहा? मैंने इसे
इसलिए रखा कि यह मेरी पत्नी होगी। किन्तु अब मैं
तुम्हारी पत्नी को तुम्हें लौटाता हूँ। इसे लो और जाओ।"
20तब फ़िरौन ने अपने पुरुषों को आज्ञा दी कि वे
अब्राम को मिस्र के बाहर पहुँचा दे। इस तरह अब्राम
और उसकी पत्नी ने वह जगह छोड़ी और वे सभी चीज़ें
अपने साथ ले गए जो उनकी थीं।

अब्राम कनान लौटा

13 अब्राम ने मिस्र छोड़ दिया। अब्राम ने अपनी
पत्नी तथा अपने सभी सामान के साथ नेगव से
होकर यात्रा की। लूत भी उसके साथ था। 2इस समय
अब्राम बहुत धनी था। उसके पास बहुत से जानवर,
बहुत सी चाँदी और बहुत सा सोना था।
3अब्राम चारों तरफ यात्रा करता रहा। उसने नेगेव
को छोड़ा और बेतेल को लौट गया। वह बेतेल नगर
और ऐ नगर के बीच के प्रदेश में पहुँचा। यह वही जगह
थी जहाँ अब्राम और उसका परिवार पहले तम्बू लगाकर
ठहरा था। 4यह वही जगह थी जहाँ अब्राम ने एक वेदी
बनाई थी। इसलिए अब्राम ने यहाँ यहोवा की उपासनाकी।

अब्राम और लूत अलग हुए

5इस समय लूत भी अब्राम के साथ यात्रा कर रहा
था। लूत के पास बहुत से जानवर और तम्बू थे। 6अब्राम
और लूत के पास इतने अधिक जानवर थे कि भूमि
एक साथ उनको चारा नहीं दे सकती थी। 7अब्राम और
लूत के मजदूर आपस में बहस करने लगे। उन दिनों
कनानी लोग और परिज्जी लोग भी इसी प्रदेश में रहते
थे।
8अब्राम ने लूत से कहा, "हमारे और तुम्हारे बीच
कोई बहस नहीं होनी चाहिए। हमारे और तुम्हारे लोग
भी बहस न करें। हम सभी भाई हैं। 9हम लोगों को
अलग हो जाना चाहिए। तुम जो चाहो जगह चुन लो।

यहोवा ... आया परमेश्वर प्राय: विशेष रीति से दिखाई पड़ा। जिससे लोग उसे देख सके जैसे आदमी, स्वर्गदूत, आग तो कभी तेज ज्योति बनता था।

अगर तुम बायीं ओर जाओगे तो मैं दाहिनी ओर जाऊँगा।
अगर तुम दाहिनी ओर जाओगे तो मैं बायीं ओर जाऊँगा।"
10लूत ने निगाह दौड़ाई और यरदन की घाटी को
देखा। लूत ने देखा कि वहाँ बहुत पानी है। (यह बात उस
समय की है जब यहोवा ने सदोम और अमोरा को नष्ट
नहीं किया था। उस समय यरदन की घाटी सोअर तक
यहोवा के बाग की तरह पूरे रास्ते के साथ साथ फैली
थी। यह प्रदेश मिस्र देश की तरह अच्छा था।) 11इसलिए
लूत ने यरदन घाटी में रहना स्वीकार किया। इस तरह
दोनों व्यक्ति अलग हुए और लूत ने पूर्व की ओर यात्रा
शुरु की। 12अब्राम कनान प्रदेश में रहा और लूत घाटी
के नगरों में रहा। लूत सदोम के दक्षिण में बढ़ा और
ठहर गया। 13सदोम के लोग बहुत पापी थे। वे हमेशा
यहोवा के विरुद्ध पाप करते थे।
14जब लूत चला गया तब यहोवा ने अब्राम से कहा,
"अपने चारों ओर देखो, उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम
की ओर देखो। 15यह सारी भूमि, जिसे तुम देखते हो, मैं
तुमको और तुम्हारे बाद जो तुम्हारे लोग रहेंगे उनको
देता हूँ। यह प्रदेश सदा के लिए तुम्हारा है। 16मैं तुम्हारे
लोगों को पृथ्वी के कणों के समान अनगिनत बनाऊँगा।
अगर कोई व्यक्ति पृथ्वी के कणों को गिन सके तो वह
तुम्हारे लोगों को भी गिन सकेगा। 17इसलिए जाओ।
अपनी भूमि पर चलो। मैं इसे अब तुमको देता हूँ।"
18इस तरह अब्राम ने अपने तम्बू हटाया। वह मम्रे के
बड़े पेड़ों के पास रहने लगा। यह हेब्रोन नगर के करीब
था। उस जगह पर अब्राम ने एक वेदी यहोवा की
उपासना के लिए बनायी।

लूत पकड़ा गया

14 अम्रापेल शिनार का राजा था। अर्योक एल्लासार
का राजा था। कदोर्लाओमेर एलाम का राजा
था। तिदाल गोयीम का राजा था। 2इन सभी राजाओं ने
सदोम के राजा बेरा, अमोरा के राजा बिर्शा, अद्मा के
राजा शिनाब, सबोयीम के राजा शेमेबेर तथा बेला (बेला
सोअर भी कहा जाता है) के राजा के साथ एक लड़ाई
लड़ी। 3सिद्दीम की घाटी में ये सभी राजा अपनी सेनाओं
से मिले। (सिद्दीम की घाटी आजकल लवण सागर है।)
4इन राजाओं ने कदोर्लाओमेर की सेवा बारह वर्ष तक
की थी। किन्तु तेरहवें वर्ष वे सभी उसके विरुद्ध हो गए।
5इसलिए चौदहवें वर्ष कदोर्लाओमेर अन्य राजाओं के
साथ उनसे लड़ने आया। कदोर्लाओमेर और उसके
साथ के राजाओं ने रपाई लोगों को अशतरोत्कनम में
हराया। उन्होंने हाम में जूजि लोगों को भी हराया। उन्होंने
एमि लोगों को शाबेकिर्यातैम में हराया 6और उन्होंने
होरीत लोगों को सेईर के पहाड़ी प्रदेश से हराकर
एल्पारान की ओर भगाया। (एल्पारान मरूभूमि के
करीब है।) 7तब राजा कदोर्लाओमेर पीछे को मुड़ा और
एन्मिशपात को गया। (यह कादेश भी कहलाता है।)
और सभी अमालेकी लोगों को हराया। उसने एमोरी
लोगों को भी हराया। ये लोग हससोन्तामार में रहते हैं।
8उस समय सदोम का राजा, अमोरा का राजा, अदमा
का राजा, सबोयीम का राजा, और बेला का राजा,
(बेला सोअर ही है।) सभी एक साथ मिल कर अपने
शत्रुओं से लड़ने के लिए गए। 9वे एलाम के राजा
कदोर्लाओमेर, गोयीम के राजा तिदाल, शिनार के राजा
अम्रापेल, और एल्लासार के राजा अर्योक से लड़े। इस
तरह चार राजा पाँच राजाओं से लड़ रहे थे।
10सिद्दीम की घाटी में राल से भरे हुए अनेक गड्ढे
थे। सदोम और अमोरा के राजा और उनकी सेनाएं
भाग गईं। अनेक सैनिक उन गड्ढों में गिर गए। किन्तु
दूसरे लोग पहाड़ीं में भाग गए।
11सदोम और अमोरा के पास जो कुछ था उसे उनके
शत्रुओं ने ले लिया। उन्होंने उनके सारे भोजन-वस्त्रों
को ले लिया और वे चले गए। 12अब्राम के भाई का पुत्र
लूत सदोम में रहता था, उसे शत्रुओं ने पकड़ लिया।
उसके पास जो कुछ था उसे भी शत्रु लेकर चले गए।
13एक व्यक्ति ने, जो पकड़ा नहीं जा सका था उसने
अब्राम (जो हिब्रू था) को ये सारी बातें बतायीं। एमोरी
मम्रे के पेड़ों के पास अब्राम ने अपना डेरा डाला था।
मम्रे एशकोल और आनेर ने एक सन्धि एक दूसरे की
मदद करने के लिए की थी* और उन्होंने अब्राम की
मदद के लिए भी एक वाचा की थी।

अब्राम लूत को छुड़ाता है

14तब अब्राम को पता चला कि लूत पकड़ा गया है।
तो उसने अपने पूरे परिवार को इकट्ठा किया और
उनमें से तीन सौ अट्ठारह प्रशिक्षित सैनिको को लेकर
अब्राम ने दान नगर तक शत्रुओं का पीछा किया।
15उसी रात उसने और उसके पुरुषों ने शत्रुओं पर
अचानक धावा बोल दिया। उन्होंने शत्रुओं को हराया
तथा दमिश्क के उत्तर मे होबा तक उनका पीछा किया।
16तब अब्राम शत्रु द्वारा चुराई गई सभी चीज़ें लाया।
अब्राम स्त्रियों, नौकर, लूत और लूत की अपनी सभी
चीजें ले आया।
17कदोर्लाओमेर और उसके साथ के सभी राजाओं
को हराने के बाद अब्राम अपने घर लौट आया। जब
वह घर आया तो सदोम का राजा उससे मिलने शावे की
घाटी पहुँचा। (इसे अब राजा की घाटी कहते है।)

मेल्कीसेदेक

18शालेम का राजा मेल्कीसेदेक भी अब्राम से मिलने
गया। मेल्कीसेदेक, सबसे महान परमेश्वर का याजक

मम्रे ... लिये की थी एश्कोल का भाई और अनेर का भाई था।

था। मेल्कीसेदेक रोटी और दाखरस लाया। 19मेल्कीसेदेक
ने अब्राम को आशीर्वाद दिया और कहा:
"अब्राम, सबसे महान परमेश्वर तुम्हें आशीष दे।
परमेश्वर ने पृथ्वी और आकाश बनाया।
20और हम सबसे महान परमेश्वर की स्तुति करते
हैं। परमेश्वर ने शत्रुओं को हराने में तुम्हारी मदद
की।"
तब अब्राम ने लड़ाई में मिली हर एक चीज़ का दसवाँ
हिस्सा मेल्कीसेदेक को दिया। 21तब सदोम के राजा ने
कहा, "तुम ये सभी चीज़ें अपने पास रख सकते हो, मुझे
केवल मेरे उन मनुष्यों को दे दो जिन्हें शत्रु पकड़ कर
ले गये थे।"
22किन्तु अब्राम ने सदोम के राजा से कहा, "मैंने
सबसे महान परमेश्वर यहोवा जिसने पृथ्वी और आकाश
को बनाया है। उसके सम्मुख यह शपथ ली है 23कि जो
आपकी चीज है उसमें से कुछ भी न लूँगा। यहाँ तक
की एक धागा व जूते का तस्मा भी नहीं लूँगा। मैं यह
नहीं चाहता कि आप कहें, 'मैंने अब्राम को धनी बनाया।'
24मैं केवल वह भोजन स्वीकार करूँगा जो हमारे जवानों
ने खाया है किन्तु आप दूसरे लोगों को उनका हिस्सा दें।
हमारी लड़ाई में जीती हुई चीज़ें आप लें और इसमें से
कुछ आनेर, एश्कोल और मम्रे को दें। इन लोगों ने
लड़ाई में मेरी मदद की थी।"

अब्राम के साथ परमेश्वर की वाचा

15 इन बातों के हो जाने के बाद यहोवा का आदेश
अब्राम को एक दर्शन में आया। परमेश्वर ने
कहा, "अब्राम, डरो, नहीं। मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा और
मैं तुम्हें एक बड़ा पुरस्कार दूँगा।"
2किन्तु अब्राम ने कहा, "हे यहोवा ऐसा कुछ भी नहीं
है जिसे तू मुझे देगा और वह मुझे प्रसन्न करेगा। क्यों?
क्योंकि मेरे पुत्र नहीं है। इसलिए मेरा दास दमिश्क का
निवासी एलीएज़ेर मेरे मरने के बाद मेरा सब कुछ
पाएगा। 3अब्राम ने कहा, "तू ही देख, तूने मुझे कोई पुत्र
नहीं दिया है। इसलिए मेरे घर में पैदा एक दास मेरे सभी
चीज़ें पाएगा।"
4तब यहोवा ने अब्राम से बातें की। परमेश्वर ने
कहा, "तुम्हारी चीज़ों को तुम्हारा यह दास नहीं
पाएगा। तुमको एक पुत्र होगा और तुम्हारा पुत्र ही
तुम्हारी चीज़ें पाएगा।"
5तब परमेश्वर अब्राम को बाहर ले गया। परमेश्वर
ने कहा, "आकाश को देखो। अनेक तारों को देखो। ये
इतने हैं कि तुम गिन नहीं सकते। भविष्य में तुम्हारा
कुटुम्ब ऐसा ही होगा।"
6अब्राम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और परमेश्वर
ने उसके विश्वास को एक अच्छा काम माना, 7परमेश्वर
ने अब्राम से कहा, "मैं ही वह यहोवा हूँ जो तुम्हें
कसदियों के ऊर से बाहर लाया। यह मैंने इसलिए
किया कि यह प्रदेश मैं तुम्हें दे सकूँ, तुम इस प्रदेश को
अपने कब्ज़े में कर सको।"
8किन्तु अब्राम ने कहा, "हे यहोवा, मेरे स्वामी, मुझे
कैसे विश्वास हो कि यह प्रदेश मुझे मिलेगा?"
9परमेश्वर ने अब्राम से कहा, "हम लोग एक वाचा
बांधेंगे। तुम मुझको तीन वर्ष की एक गाय, तीन वर्ष की
एक बकरी, और तीन वर्ष का एक भेड़ लाओ। एक
फाख्ता और एक कबूतर का बच्चा भी लाओ।"
10अब्राम ये सभी चीज़ें परमेश्वर के पास लाया।
अब्राम ने इन प्राणियों को मार डाला और हर एक के
दो टुकड़े कर डाले। अब्राम ने एक आधा टुकड़ा एक
तरफ तथा उसका दूसरा आधा टुकड़ा उसके विपरीत
दूसरी तरफ रखा। अब्राम ने पक्षियों के दो टुकड़े नहीं
किए। 11थोड़ी देर बाद माँसाहारी पक्षी वेदी पर चढ़ाए
हुए मृत जीवों को खाने के लिये नीचे आए किन्तु
अब्राम ने उनको भगा दिया।
12बाद में सूरज डूबने लगा। अब्राम को गहरी नींद आ
गयी। घनघोर अंधकार ने उसे चारों तरफ से घेर
लिया। 13तब यहोवा ने अब्राम से कहा, "तुम्हें ये बातें
जाननी चाहिए। तुम्हारे वंशज विदेशी बनेंगे और वे उस
देश में जाएंगे जो उनका नहीं होगा। वे वहाँ दास होंगे।
चार सौ वर्ष तक उनके साथ बुरा व्यवहार होगा। 14मैं
उस राष्ट्र का न्याय करूँगा तथा उसे सजा दूँगा, जिसने
उन्हें गुलाम बनाया और जब तुम्हारे बाद आने वाले
लोग उस देश को छोड़ेंगे तो अपने साथ अनेक अच्छी
वस्तुएं ले जायेंगे।"
15"तुम बहुत लम्बी आयु तक जीवित रहोगे। तुम
शान्ति के साथ मरोगे और तुम अपने पुरखाओं के पास
दफनाए जाओगे। 16चार पीढ़ियों के बाद तुम्हारे लोग
इसी प्रदेश में फिर आएंगे। उस समय तुम्हारे लोग एमोरियों
को हराएंगे। यहाँ रहने वाले एमोरियों को, दण्ड देने के
लिए मैं तुम्हारे लोगों का प्रयोग करूँगा। यह बात भविष्य
में होगी क्योंकि एमोरी दण्ड पाने योग्य बुरे अभी नही
हुए हैं।"
17जब सूरज ढ़ल गया, तो बहुत अंधेरा छा गया। मृत
जानवर अभी तक जमीन पर पड़े हुए थे। हर जानवर
दो भागों में कटे पड़े थे। उसी समय धुएँ तथा आग का
एक खम्भा* मरे जानवरों के टुकड़ों के बीच से
गुजरा।* 18इस तरह उस दिन यहोवा ने अब्राम को

धुँए ... का खम्भा इन चिन्हों को परमेश्वर दिखाया करता था जिससे लोग जाने कि परमेश्वर उनके साथ है।

मरे जानवरों ... से गुजरा इससे यह पता चला कि परमेश्वर ने अब्राम और अपने बीच की वाचा पर हस्ताक्षर कर दिया है या अपनी मुहर लगा दी है। जब लोग वाचा करते थे तो कटे जानवरों के बीच से जाते थे और कुछ इस तरह कहते थे। यदि मैं वाचा का पालन न करूँ तो मेरे साथ भी ऐसा ही हो।

वचन दिया और उसके साथ वाचा की। यहोवा ने
कहा, "मैं यह प्रदेश तुम्हारे वंशजों को दूँगा। मैं मिस्र
की नदी और बड़ी नदी परात के बीच का प्रदेश उनको
दूँगा। **19**यह देश केनी, कनिज्जी, कदमोनी, **20**हित्ती,
परीज्जी, रपाई, **21**एमोरी, कनानी, गिर्गाशी तथा यबूसी
लोगों का है।"

दासी हाजिरा

16 सारै अब्राम की पत्नी थी। अब्राम और उसके
कोई बच्चा नहीं था। सारै के पास एक मिस्र
की दासी थी। उसका नाम हाजिरा था। **2**सारै ने अब्राम
से कहा, "देखो, यहोवा ने मुझे कोई बच्चा नहीं दिया है।
इसलिए मेरी दासी को रख लो। मैं इसके बच्चे को
अपना बच्चा ही मान लूँगी। अब्राम ने अपनी पत्नी का
कहना मान लिया। **3**कनान में अब्राम के दस वर्ष रहने
के बाद यह बात हुई और सारै ने अपने पति अब्राम को
हाजिरा को दे दिया। (हाजिरा मिस्री दासी थी।)

4हाजिरा, अब्राम से गर्भवती हुई। जब हाजिरा ने यह
देखा तो उसे बहुत गर्व हुआ और यह अनुभव करने
लगी कि मैं अपनी मालकिन सारै से अच्छी हूँ। **5**लेकिन
सारै ने अब्राम से कहा, "मेरी दासी अब मुझसे घृणा
करती है और इसके लिए मैं तुमको दोषी मानती हूँ।
मैंने उसको तुमको दिया। वह गर्भवती हुई और तब वह
अनुभव करने लगी कि वह मुझसे अच्छी है। मैं चाहती
हूँ कि यहोवा सही न्याय करे।"

6लेकिन अब्राम ने सारै से कहा, "तुम हाजिरा की
मालकिन हो। तुम उसके साथ जो चाहो कर सकती
हो।" इसलिए सारै ने अपनी दासी को दण्ड दिया और
उसकी दासी भाग गई।

हाजिरा का पुत्र इश्माएल

7यहोवा के दूत ने मरुभूमि में पानी के सोते के पास
दासी को पाया। यह सोता शूर जाने वाले रास्ते पर था।
8दूत ने कहा, "हाजिरा, तुम सारै की दासी हो। तुम यहाँ
क्यों हो? तुम कहाँ जा रही हो?"

हाजिरा ने कहा, "मैं अपने मालकिन सारै के यहाँ से
भाग रही हूँ।"

9यहोवा के दूत ने उससे कहा, "तुम अपने मालकिन
के घर जाओ और उसकी बातें मानो।" **10**यहोवा के दूत
ने उससे यह भी कहा, "तुम से बहुत से लोग उत्पन्न
होंगे। ये लोग इतने हो जाएंगे कि गिने नहीं जा सकेंगे।"

11दूत ने और भी कहा, "अभी तुम गर्भवती हो और
तुम्हें एक पुत्र होगा। तुम उसका नाम इश्माएल रखना।
क्योंकि यहोवा ने तुम्हारे कष्ट को सुना है और वह
तुम्हारी मदद करेगा।

12"इश्माएल जंगली और आजाद होगा एक जंगली
गधे की तरह। वह सबके विरुद्ध होगा। वह एक स्थान
से दूसरे स्थान को जायेगा। वह अपने भाईयों के पास
अपना डेरा डालेगा किन्तु वह उनके विरुद्ध होगा।"

13तब यहोवा ने हाजिरा से बातें की उसने परमेश्वर
को जो उससे बाते कर रहा था, एक नये नाम से
पुकारा। उसने कहा, "तुम वह 'यहोवा हो जो मुझे
देखता है।'" उसने उसे वह नाम इसलिये दिया क्योंकि
उसने अपने आप से कहा, "मैंने देखा है कि वह मेरे
ऊपर नज़र रखता है।" **14**इसलिए उस कुएँ का नाम
लहैरोई पड़ा। यह कुआँ कादेश तथा बेरेद के बीच में
है।

15हाजिरा ने अब्राम के पुत्र को जन्म दिया। अब्राम ने
पुत्र का नाम इश्माएल रखा। **16**अब्राम उस समय छियासी
वर्ष का था जब हाजिरा ने इश्माएल को जन्म दिया।

खतना वाचा का सबूत

17 जब अब्राम निन्यानबें वर्ष का हुआ, यहोवा ने
उससे बात की। यहोवा ने कहा, "मैं सर्वशक्तिमान
परमेश्वर हूँ।* मेरे लिए ये काम करो। मेरी आज्ञा
मानो और सही रास्ते पर चलो। **2**अगर तुम यह करो तो
मैं अपने और तुम्हारे बीच एक वाचा तैयार करूँगा। मैं
तुम्हारे लोंगों को एक महान राष्ट्र बनाने का वचन
दूँगा।"

3अब्राम ने अपना मुँह जमीन की ओर झुकाया। तब
परमेश्वर ने उससे बातचीत की और कहा, **4**"हमारी
वाचा का यह भाग मेरा है। मैं तुम्हें कई राष्ट्रों का पिता
बनाऊँगा। **5**मैं तुम्हारे नाम को बदल दूँगा। तुम्हारा नाम
अब्राम नहीं रहेगा। तुम्हारा नाम इब्राहीम होगा। मैं तुम्हें
यह नाम इसलिए दे रहा हूँ कि तुम बहुत से राष्ट्रों के
पिता बनोगे।" **6**"मैं तुमको बहुत वंशज दूँगा। तुमसे नये
राष्ट्र उत्पन्न होंगे। तुमसे नये राजा उत्पन्न होंगे **7**और मैं
अपने और तुम्हारे बीच एक वाचा करूँगा। यह वाचा
तुम्हारे सभी वंशजों के लिए होगी। मैं तुम्हारा और
तुम्हारे सभी वंशजों का परमेश्वर रहूँगा। यह वाचा सदा
के लिए बनी रहेगी **8**और मैं यह प्रदेश तुमको और
तुम्हारे सभी वंशजों को दूँगा। मैं वह प्रदेश तुम्हें दूँगा
जिससे होकर तुम यात्रा कर रहे हो। मैं तुम्हें कनान
प्रदेश दूँगा। मैं तुम्हें यह प्रदेश सदा के लिए दूँगा और मैं
तुम्हारा परमेश्वर रहूँगा।"

9परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, "अब वाचा का यह
तुम्हारा भाग है। मेरी इस वाचा का पालन तुम और
तुम्हारे वंशज करेंगे। **10**यह वह वाचा है जिसका तुम
पालन करोगे। यह वाचा मेरे और तुम्हारे बीच है। यह
तुम्हारे सभी वंशजो के लिए है। हर एक बच्चा जो पैदा
होगा उसका खतना अवश्य होगा। **11**तुम चमड़े को यह
बताने के लिए काटोगे कि तुम अपने और मेरे बीच के

मैं ... परमेश्वर हूँ शाब्दिक "अल शददइ।"

वाचा का पालन करते हो। 12जब बच्चा आठ दिन का
हो जाये, तब तुम उसका खतना करना। हर एक लड़का
जो तुम्हारे लोगों में पैदा हो या कोई लड़का जो तुम्हारे
लोगों का दास हो, उसका खतना अवश्य होगा। 13इस
प्रकार तुम्हारे राष्ट्र के प्रत्येक बच्चे का खतना होगा।
जो लड़का तुम्हारे परिवार में उत्पन्न होगा या दास के
रूप में खरीदा जायेगा उसका खतना होगा। 14यही मेरा
नियम है और मेरे और तुम्हारे बीच वाचा है। जिस
किसी व्यक्ति का खतना नहीं होगा वह तुम्हारे लोगों से
अलग कर दिया जायेगा। क्यों? क्योंकि उस व्यक्ति ने
मेरी वाचा तोड़ी है।"

इसहाक प्रतिज्ञा का पुत्र

15परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, "मैं सारै को जो
तुम्हारी पत्नी है, नया नाम दूँगा। उसका नाम सारा
होगा। 16मैं उसे आशीर्वाद दूँगा। मैं उसे पुत्र दूँगा और
तुम पिता होगे। वह बहुत से नये राष्ट्रों की माँ होगी।
उससे राष्ट्रों के राजा पैदा होंगे।"

17इब्राहीम ने अपना सिर परमेश्वर को भक्ति दिखाने
के लिए जमीन तक झुकाया। लेकिन वह हँसा और
अपने से बोला, "मैं सौ वर्ष का बूढ़ा हूँ। मैं पुत्र पैदा नहीं
कर सकता और सारा नब्बे वर्ष की बुढ़िया है। वह
बच्चों को जन्म नहीं दे सकती।"

18तब इब्राहीम के कहने का मतलब परमेश्वर से
पूछा, "क्या इश्माएल जीवित रहे और तेरी सेवा करे?"

19परमेश्वर ने कहा, "नहीं, मैंने कहा कि तुम्हारी
पत्नी सारा पुत्र को जन्म देगी। तुम उसका नाम
इसहाक रखोगे। मैं उसके साथ वाचा करूँगा। यह वाचा
ऐसी होगी जो उसके सभी वंशजों के साथ सदा बनी
रहेगी।

20"तुमने मुझसे इश्माएल के बारे में पूछा और मैंने
तुम्हारी बात सुनी। मैं उसे आशीर्वाद दूँगा। उसके बहुत
से बच्चे होंगे। वह बारह बड़े राजाओं का पिता होगा।
उसका परिवार एक बड़ा राष्ट्र बनेगा। 21किन्तु मैं अपनी
वाचा इसहाक के साथ बनाऊँगा। इसहाक ही वह पुत्र
होगा जिसे सारा जनेगी। यह पुत्र अगले वर्ष इसी समय मे
पैदा होगा।"

22परमेश्वर ने जब इब्राहीम से बात करनी बन्द की,
इब्राहीम अकेला रह गया। परमेश्वर इब्राहीम के पास से
आकाश की ओर उठ गया। 23परमेश्वर ने कहा था
कि तुम अपने कुटुम्ब के सभी लड़कों और पुरुषों का
खतना कराना। इसलिए इब्राहीम ने इश्माएल और अपने
घर में पैदा सभी दासों को एक साथ बुलाया। इब्राहीम ने
उन दासों को भी एक साथ बुलाया जो धन से खरीदे गए
थे। इब्राहीम के घर के सभी पुरुष और लड़के इकट्ठे
हुए और उन सभी का खतना उसी दिन उनका माँस
काट कर दिया गया।

24जब खतना हुआ इब्राहीम निन्यानबे वर्ष का था
25और उसका पुत्र इश्माएल खतना होने के समय तेरह
वर्ष का था। 26इब्राहीम और उसके पुत्र का खतना उसी
दिन हुआ। 27उसी दिन इब्राहीम के सभी पुरुषों का
खतना हुआ। इब्राहीम के घर में पैदा सभी दासों और
खरीदे गए सभी दासों का खतना हुआ।

तीन अतिथि

18 बाद में यहोवा फिर इब्राहीम के सामने प्रकट
हुआ। इब्राहीम मम्रे के बांज के पेड़ों के पास
रहता था। एक दिन, दिन के सबसे गर्म पहर में इब्राहीम
अपने तम्बू के दरवाजे पर बैठा था। 2इब्राहीम ने आँख
उठा कर देखा और अपने सामने तीन पुरुषों को खड़े
पाया। जब इब्राहीम ने उनको देखा, वह उनके पास गया
और उन्हें प्रणाम किया। 3इब्राहीम ने कहा, "महोदयों,*
आप अपने इस सेवक के साथ ही थोड़ी देर ठहरें। 4मैं
आप लोगों के पैर धोने के लिए पानी लाता हूँ। आप पेड़ों
के नीचे आराम करें। 5मैं आप लोगों के लिए कुछ
भोजन लाता हूँ और आप लोग जितना चाहे खाएं। इसके
बाद आप लोग अपनी यात्रा आरम्भ कर सकते हैं।"

तीनों ने कहा, "यह बहुत अच्छा है। तुम जैसा कहते
हो, करो।"

6इब्राहीम जल्दी से तम्बू में घुसा। इब्राहीम ने सारा से
कहा, "जल्दी से तीन रोटियों के लिए आटा तैयार
करो।" 7तब इब्राहीम अपने मवेशियों की ओर दौड़ा।
इब्राहीम ने सबसे अच्छा एक जवान बछड़ा लिया। इब्राहीम
ने बछड़ा नौकर को दिया। इब्राहीम ने नौकर से कहा
कि तुम जल्दी करो, इस बछड़े को मारो और भोजन के
लिए तैयार करो। 8इब्राहीम ने तीनों को भोजन के लिए
माँस दिया। उसने दूध और मक्खन भी दिया।जब तक
तीनों पुरुष खाते रहे तब तक इब्राहीम पेड़ के नीचे
उनके पास खड़ा रहा।

9उन व्यक्तियों ने इब्राहीम से कहा, "तुम्हारी पत्नी
सारा कहाँ है?"

इब्राहीम ने कहा, "वह तम्बू में है।"

10तब यहोवा ने कहा, "मैं बसन्त में फिर आऊँगा
उस समय तुम्हारी पत्नी सारा एक पुत्र को जन्म देगी।"

सारा तम्बू में सुन रही थी और उसने इन बातों को
सुना। 11इब्राहीम और सारा दोनों बहुत बूढ़े थे। सारा
प्रसव की उम्र को पार कर चुकी थी। 12सारा मन ही
मन मुस्करायी। उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं
हुआ। उसने अपने आप से कहा, "मैं और मेरे पति
दोनों ही बूढ़े हैं। मैं बच्चा जनने के लिये काफी बूढ़ी हूँ।"

13तब यहोवा ने इब्राहीम से कहा, "सारा हंसी और
बोली, 'मैं इतनी बूढ़ी हूँ कि बच्चा जन नहीं सकती।'

महोदय इस हिब्रू शब्द का अर्थ "सामन्त" या "यहोवा" हो सकता
है। इससे पता चल सकता है कि वे साधारण पुरुष नहीं थे।

14क्या यहोवा के लिए कुछ भी असम्भव है? नहीं, मैं
फिर बसन्त में अपने बताए समय पर आऊँगा और
तुम्हारी पत्नी सारा पुत्र जनेगी।"
15लेकिन सारा ने कहा, "मैं हंसी नहीं।" (उसने ऐसा
कहा, क्योंकि वह डरी हुई थी।)

लेकिन यहोवा ने कहा, "नहीं, मै जानता हूँ कि
तुम्हारा कहना सही नहीं है। तुम जरूर हंसी।"
16तब वे पुरुष जाने के लिए उठे। उन्होंने सदोम की
ओर देखा और उसी ओर चल पड़े। इब्राहीम उनको
विदा करने के लिए कुछ दूर तक उनके साथ गया।

परमेश्वर के साथ इब्राहीम का सौदा

17यहोवा ने मन में कहा, "क्या मैं इब्राहीम से वह
कह दूँ जो मैं अभी करूँगा? 18इब्राहीम एक बड़ा और
शक्तिशाली राष्ट्र बन जाएगा। इसी के कारण पृथ्वी के
सारे मनुष्य आशीर्वाद पायेंगे। 19मैंने इब्राहीम के साथ
खास वाचा की है। मैंने यह इसलिए किया है कि वह
अपने बच्चे और अपने वंशज को उस तरह जीवन
बिताने के लिए आज्ञा देगा जिस तरह का जीवन बिताना
यहोवा चाहता है। मैंने यह इसलिए किया कि वे सच्चाई
से रहेंगे और भले बनेंगे। तब मैं यहोवा प्रतिज्ञा की गई
चीजों को दूँगा।"
20तब यहोवा ने कहा, "मैने बार बार सुना है कि
सदोम और अमोरा के लोग बहुत बुरे हैं। 21इसलिए मैं
वहाँ जाऊँगा और देखूँगा कि क्या हालत उतनी ही
खराब है जितनी मैंने सुनी है। तब मै ठीक–ठीक जान
लूँगा।"
22तब वे लोग मुड़े और सदोम की ओर चल पड़े।
किन्तु इब्राहीम यहोवा के सामने खड़ा रहा। 23तब इब्राहीम
यहोवा से बोला "हे यहोवा, क्या तू बुरे लोगों को नष्ट
करने के साथ अच्छे लोगों को भी नष्ट करने की बात
सोच रहा है? 24यदि उस नगर में पचास अच्छे लोग हों
तो क्या होगा? क्या तब भी तू नगर को नष्ट कर देगा?
निश्चय ही तू वहाँ रहने वाले पचास अच्छे लोगों के
लिए उस नगर को बचा लेगा। 25निश्चय ही तू नगर को
नष्ट नहीं करेगा। बुरे लोगों को मारने के लिए तू पचास
अच्छे लोगों को नष्ट नहीं करेगा। अगर ऐसा हुआ तो
अच्छे और बुरे लोग एक ही हो जाएँगे, दोनों को ही
दण्ड मिलेगा। तू पूरी पृथ्वी को न्याय देने वाला है। मैं
जानता हूँ कि तू न्याय करेगा।"
26तब यहोवा ने कहा, "यदि मुझे सदोम नगर में
पचास अच्छे लोग मिले तो मैं पूरे नगर को बचा लूँगा।"
27तब इब्राहीम ने कहा, "हे यहोवा, तेरी तुलना में, मैं
केवल धूलि और राख हूँ। लेकिन तू मुझको फिर थोड़ा
कष्ट देने का अवसर दे और मुझे यह पूछने दे कि
28यदि पाँच अच्छे लोग कम हों तो क्या होगा? यदि नगर
में पैंतालीस ही अच्छे लोग हो तो क्या होगा? क्या तू
केवल पाँच लोगों के लिए पूरा नगर नष्ट करेगा?" तब
यहोवा ने कहा, "यदि मुझे वहाँ पैंतालीस अच्छे लोग
मिले तो मैं नगर को नष्ट नहीं करूँगा।"
29इब्राहीम ने फिर यहोवा से कहा, "यदि तुझे वहाँ
केवल चालीस अच्छे लोग मिले तो क्या तू नगर को
नष्ट कर देगा?"

यहोवा ने कहा, "यदि मुझे चालीस अच्छे लोग वहाँ
मिले तो मैं नगर को नष्ट नहीं करूँगा।"
30तब इब्राहीम ने कहा, "हे यहोवा कृपा करके मुझ
पर नाराज न हो। मुझे यह पूछने दे कि यदि नगर में
केवल तीस अच्छे लोग हो तो क्या तू नगर को नष्ट
करेगा?"

यहोवा ने कहा, "यदि मुझे तीस अच्छे लोग वहाँ मिले
तो मैं नगर को नष्ट नहीं करूँगा।"
31तब इब्राहीम ने कहा, "हे यहोवा, क्या मैं तुझे फिर
कष्ट दूँ और पूछ लूँ कि यदि बीस ही अच्छे लोग वहाँ
हो तो?"

यहोवा ने उत्तर दिया, "अगर मुझे बीस अच्छे लोग
मिले तो भी मैं नगर को नष्ट नहीं करूँगा।"
32तब इब्राहीम ने कहा, "हे यहोवा तू मुझसे नाराज न
हो मुझे अन्तिम बार कष्ट देने का मौका दे। यदि तुझे
वहाँ दस अच्छे लोग मिले तो तू क्या करेगा?"

यहोवा ने कहा, "यदि मुझे नगर में दस अच्छे लोग
मिले तो भी मैं नगर को नष्ट नहीं करूँगा।"
33यहोवा ने इब्राहीम से बोलना बन्द कर दिया, इसलिए
यहोवा चला गया और इब्राहीम अपने घर लौट आया।

लूत के अतिथि

19 उनमे से दो स्वर्गदूत साँझ को सदोम नगर में
आए। लूत नगर के द्वार पर बैठा था और
उसने स्वर्गदूतों को देखा। लूत ने सोचा कि वे लोग नगर
के बीच से यात्रा कर रहे हैं। लूत उठा और स्वर्गदूतों के
पास गया तथा जमीन तक सामने झुका। 2लूत ने कहा,
"आप सब महोदय, कृपा कर मेरे घर चलें और मैं आप
लोगों की सेवा करूँगा। वहाँ आप लोग अपना पैर धो
सकते हैं और रात को ठहर सकते हैं। तब कल आप
लोग अपनी यात्रा आरम्भ कर सकते हैं।"

स्वर्गदूतों ने उत्तर दिया, "नहीं, हम लोग रात को
मैदान* में ठहरेंगे।"
3किन्तु लूत अपने घर चलने के लिए बार–बार
कहता रहा। इस तरह स्वर्गदूत लूत के घर जाने के लिए
तैयार हो गए। जब वे घर पहुँचे तो लूत उनके पीने के
लिए कुछ लाया। लूत ने उनके लिए रोटियाँ बनाई। लूत
का पकाया भोजन स्वर्गदूतों ने खाया।

मैदान नगर में खुली जगह, शायद नगर के द्वार के पास ही। कभी–कभी यात्री नगर में आने पर मैदान में डेरा डालते थे।

4उस शाम सोने के समय के पहले ही नगर के सभी
भागों से लोग लूत के घर आए। सदोम के पुरुषों ने लूत
का घर घेर लिया और बोले। 5उन्होंने कहा, "आज रात
को जो लोग तुम्हारे पास आए, वे दोनों पुरुष कहाँ है?
उन पुरुषों को बाहर हमें दे दो। हम उनके साथ कुकर्म
करना चाहते हैं।"

6लूत बाहर निकला और अपने पीछे से उसने दरवाजा
बन्द कर लिया। 7लूत ने पुरुषों से कहा, "नहीं मेरे
भाईयों मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप यह बुरा काम न
करें। 8देखो मेरी दो पुत्रियाँ हैं, वे इसके पहले किसी
पुरुष के साथ नहीं सोयी हैं। मैं अपनी पुत्रियों को तुम
लोगों को दे देता हूँ। तुम लोग उनके साथ जो चाहो कर
सकते हो। लेकिन इन व्यक्तियों के साथ कुछ न करो।
ये लोग हमारे घर आए हैं और मैं इनकी रक्षा जरूर
करूँगा।"

9घर के चारों ओर के लोगों ने उत्तर दिया, "रास्ते से
हट जाओ।" तब पुरुषों ने अपने मन में सोचा, "यह
व्यक्ति लूत हमारे नगर में अतिथि के रूप में आया।
अब यह सिखाना चाहता है कि हम लोग क्या करें।"
तब लोगों ने लूत से कहा, "हम लोग उनसे भी अधिक
तुम्हारा बुरा करेंगे।" इसलिए उन व्यक्तियों ने लूत को
घेर कर उसके निकट आना शुरु किया। वे दरवाजे
को तोड़कर खोलना चाहते थे।

10किन्तु लूत के साथ ठहरे व्यक्तियों ने दरवाजा
खोला और लूत को घर के भीतर खींच लिया। तब
उन्होंने दरवाजा बन्द कर लिया। 11दोनों व्यक्तियों ने
दरवाजे के बाहर के पुरुषों को अन्धा कर दिया। इस
तरह घर में घुसने की कोशिश करने वाले जवान व
बूढ़े सब अन्धे हो गए और दरवाजा न पा सके।

सदोम से बच निकलना

12दोनों व्यक्तियों ने लूत से कहा, "क्या इस नगर में
ऐसा कोई व्यक्ति है जो तुम्हारे परिवार का है? क्या
तुम्हारे दामाद, तुम्हारी पुत्रियाँ या अन्य कोई तुम्हारे
परिवार का व्यक्ति है? यदि कोई दूसरा इस नगर में
तुम्हारे परिवार का है तो तुम अभी नगर छोड़ने के लिए
कह दो। 13हम लोग इस नगर को नष्ट करेंगे। यहोवा ने
उन सभी बुराईयों को सुन लिया है जो इस नगर में है।
इसलिए यहोवा ने हम लोगों को इसे नष्ट करने केलिए
भेजा है।"

14इसलिए लूत बाहर गया और अपनी अन्य पुत्रियों से
विवाह करने वाले दामादों से बातें की। लूत ने कहा,
"शीघ्रता करो और इस नगर को छोड़ दो।" यहोवा इसे
तुरन्त नष्ट करेगा। लेकिन उन लोगों ने समझा कि लूत
मजाक कर रहा है। 15दूसरी सुबह को भोर के समय ही
स्वर्गदूत लूत से जल्दी करने की कोशिश की। उन्होंने
कहा, "देखो इस नगर को दण्ड मिलेगा। इसलिए तुम
अपनी पत्नी और तुम्हारे साथ जो दो पुत्रियाँ जो अभी
तक हैं, उन्हें लेकर इस जगह को छोड़ दो। तब तुम
नगर के साथ नष्ट नहीं होगे।"

16लेकिन लूत दुविधा में रहा और नगर छोड़ने की
जल्दी उसने नहीं की। इसलिए दोनों स्वर्गदूतों ने लूत,
उसकी पत्नी और उसकी दोंनो पुत्रियों के हाथ पकड़
लिए। उन दोनों ने लूत और उसके परिवार को नगर
के बाहर सुरक्षित स्थान में पहुँचाया। लूत और उसके
परिवार पर यहोवा की कृपा थी। 17इसलिए दोनों ने लूत
और उसके परिवार को नगर के बाहर पहुँचा दिया।
जब वे बाहर हो गए तो उनमें से एक ने कहा, "अपना
जीवन बचाने के लिए अब भागो। नगर को मुड़कर भी
मत देखो। इस घाटी में किसी जगह न रूको। तब तक
भागते रहो जब तक पहाड़ों में न जा पहुँचो। अगर तुम
ऐसा नहीं करते, तो तुम नगर के साथ नष्ट हो जाओगे।"

18तब लूत ने दोनों से कहा, "महोदयों, कृपा करके
इतनी दूर दौड़ने के लिए विवश न करें। 19आप लोगों ने
मुझ सेवक पर इतनी अधिक कृपा की है। आप लोगों
ने मुझे बचाने की कृपा की है। लेकिन मैं पहाड़ी तक
दौड़ नहीं सकता। अगर मैं आवश्यकता से अधिक धीरे
दौड़ा तो कुछ बुरा होगा और मैं मारा जाऊँगा। 20लेकिन
देखें यहाँ पास में एक बहुत छोटा नगर है। हमें उस नगर
तक दौड़ने दें। तब हमारा जीवन बच जायेगा।"

21स्वर्गदूत ने लूत से कहा, "ठीक है, मैं तुम्हें ऐसा भी
करने दूँगा। मैं उस नगर को नष्ट नही करूँगा जिसमें
तुम जा रहे हो। 22लेकिन वहाँ तक तेज दौड़ो। मैं तब
तक सदोम को नष्ट नहीं करूँगा जब तक तुम उस
नगर में सुरक्षित नहीं पहुँच जाते।" (इस नगर का नाम
सोअर है क्योंकि यह छोटा है।)

सदोम और अमोरा नष्ट किए गए

23जब लूत सोअर में घुस रहा था, सवेरे का सूरज
चमकने लगा 24और यहोवा ने सदोम और अमोरा को
नष्ट करना आरम्भ किया। यहोवा ने आग तथा जलते
हुए गन्धक को आकाश से नीचें बरसाया। 25इस तरह
यहोवा ने उन नगरों को जला दिया और पूरी घाटी के
सभी जीवित मनुष्यों तथा सभी पेड़ पौधों को भी नष्ट
कर दिया।

26जब वे भाग रहे थे, तो लूत की पत्नी ने मुड़कर
नगर को देखा। जब उसने मुड़कर देखा तब वह एक
नमक की ढेर हो गई। 27उसी दिन बहुत सवेरे इब्राहीम
उठा और उस जगह पर गया जहाँ वह यहोवा के सामने
खड़ा होता था। 28इब्राहीम ने सदोम और अमोरा नगरों
की ओर नजर डाली। इब्राहीम ने उस घाटी की पूरी
भूमि की ओर देखा। इब्राहीम ने उस प्रदेश से उठते हुए
घने धुँए को देखा। बड़ी भयंकर आग से उठते धुँए के
समान वह दिखाई पड़ा।

29घाटी के नगरों को परमेश्वर ने नष्ट कर दिया।
जब परमेश्वर ने यह किया तब इब्राहीम ने जो कुछ
माँगा था उसे उसने याद रखा। परमेश्वर ने लूत का
जीवन बचाया लेकिन परमेश्वर ने उस नगर को नष्ट
कर दिया जिसमें लूत रहता था।

लूत और उसकी पुत्रियाँ

30लूत सोअर में लगातार रहने से डरा। इसलिए वह
और उसकी दोनों पुत्रियाँ पहाड़ों में गई और वहीं रहने
लगीं। वे वहाँ एक गुफा में रहते थे। 31एक दिन बड़ी
पुत्री ने छोटी से कहा, "पृथ्वी पर चारों ओर पुरुष और
स्त्रियाँ विवाह करते हैं। लेकिन यहाँ आस पास कोई
पुरुष नहीं है जिससे हम विवाह करें। हम लोगों के पिता
बूढ़े हैं। 32इसलिए हम लोग अपने पिता का उपयोग
बच्चों को जन्म देने के लिए करें जिससे हम लोगों का
वंश चल सके। हम लोग अपने पिता के पास चलेंगे
और दाखरस पिलायेंगे तथा उसे मदहोश कर देंगे। तब
हम उसके साथ सो सकते हैं।"

33उस रात दोनों पुत्रियाँ अपने पिता के पास गई और
उसे उन्होंने दाखरस पिलाकर मदहोश कर दिया। तब
बड़ी पुत्री पिता के बिस्तर में गई और उसके साथ सोई।
लूत अधिक मदहोश था इसलिए यह न जान सका कि
वह उसके साथ सोया।

34दूसरे दिन बड़ी पुत्री ने छोटी से कहा, "पिछली रात
मैं अपने पिता के साथ सोई। आओ इस रात फिर हम
उसे दाखरस पिलाकर मदहोश कर दें। तब तुम उसके
बिस्तर में जा सकती हो और उसके साथ सो सकती
हो। इस तरह हम लोगों को अपने पिता का उपयोग
बच्चों को जन्म देकर अपने वंश को चलाने के लिए
करना चाहिए।" 35इसलिए उन दोनों पुत्रियों ने अपने
पिता को दाखरस पिलाकर मदहोश कर दिया। तब
छोटी पुत्री उसके बिस्तर में गई और उसके पास सोई।

लूत इस बार भी न जान सका कि उसकी पुत्री उसके
साथ सोई।

36इस तरह लूत की दोनों पुत्रियाँ गर्भवती हुई। उनका
पिता ही उनके बच्चों का पिता था। 37बड़ी पुत्री ने एक
पुत्र को जन्म दिया। उसने लड़के नाम मोआब रखा।
मोआब उन सभी मोआबी लोगों का पिता है, जो अब
तक रह रहे हैं। 38छोटी पुत्री ने भी एक पुत्र जना। इसने
अपने पुत्र का नाम बेनम्मी रखा। बेनम्मी अभी उन
सभी अम्मोनी लोगों का पिता है जो अब तक रह रहे
हैं।

इब्राहीम गरार जाता है

20 इब्राहीम ने उस जगह को छोड़ दिया और
नेगेव की यात्रा की। इब्राहीम कादेश और शूर
के बीच गरार में बस गया। 2गरार में इब्राहीम ने लोगों
से कहा कि सारा मेरी बहन है। गरार के राजा अबीमेलेक
ने यह बात सुनी। अबीमेलेक सारा को चाहता था
इसलिए उसने कुछ नौकर उसे लाने के लिए भेजे।
3लेकिन एक रात परमेश्वर ने अबीमेलेक से स्वप्न में
बात की। परमेश्वर ने कहा, "देखो, तुम मर जाओगे।
जिस स्त्री को तुमने लिया है उसका विवाह हो चुका
है।"

4लेकिन अबीमेलेक अभी सारा के साथ नहीं सोया
था। इसलिए अबीमेलेक ने कहा, "हे यहोवा, मैं दोषी
नहीं हूँ। क्या तू निर्दोष व्यक्ति को मारेगा। 5इब्राहीम ने
मुझसे खुद कहा, 'यह स्त्री मेरी बहन है' और स्त्री ने भी
कहा, 'यह पुरुष मेरा भाई है।' मैं निर्दोष हूँ। मैं नहीं
जानता था कि मैं क्या कर रहा हूँ?"

6तब परमेश्वर ने अबीमेलेक से स्वप्न में कहा, "हाँ,
मैं जानता हूँ कि तुम निर्दोष हो और मैं यह भी जानता हूँ
कि तुम यह नहीं जानते थे कि तुम क्या कर रहे थे?
मैंने तुमको बचाया। मैंने तुम्हें अपने विरूद्ध पाप नहीं
करने दिया। यह मैं ही था जिसने तुम्हें उसके साथ सोने
नहीं दिया। 7इसलिए इब्राहीम को उसकी पत्नी लौटा दो।
इब्राहीम एक नबी है। वह तुम्हारे लिए प्रार्थना करेगा
और तुम जीवित रहोगे किन्तु यदि तुम सारा को नहीं
लौटाओगे तो मैं शाप देता हूँ कि तुम मर जाओगे।
तुम्हारा सारा परिवार तुम्हारे साथ मर जाएगा।"

8इसलिए दूसरे दिन बहुत सवेरे अबीमेलेक ने अपने
सभी नौकरों को बुलाया। अबीमेलेक ने सपने में हुई
सारी बातें उनको बताई। नौकर बहुत डर गए। 9तब
अबीमेलेक ने इब्राहीम को बुलाया और उससे कहा,
"तुमने हम लोगों के साथ ऐसा क्यों किया? मैनें तुम्हारा
क्या बिगाड़ा था? तुम ने यह झूठ क्यों बोला कि वह
तुम्हारी बहन है। तुमने हमारे राज्य पर बहुत बड़ी
विपत्ति ला दी है। यह बात तुम्हें मेरे साथ नहीं करनी
चाहिए थी। 10तुम किस बात से डर रहे थे? तुमने ये
बातें मेरे साथ क्यों की?"

11तब इब्राहीम ने कहा, "मैं डरता था। क्योंकि मैंने
सोचा कि यहाँ कोई भी परमेश्वर का आदर नहीं
करता। मैंने सोचा कि सारा को पाने के लिए कोई मुझे
मार डालेगा। 12वह मेरी पत्नी है, किन्तु वह मेरी बहन
भी है। वह मेरे पिता की पुत्री तो है परन्तु मेरी माँ की
पुत्री नहीं है। 13परमेश्वर ने मुझे पिता के घर से दूर
पहुँचाया है। परमेश्वर ने कई अलग-अलग प्रदेशों में
मुझे भटकाया। जब ऐसा हुआ तो मैंने सारा से कहा,
'मेरे लिए कुछ करो, लोगों से कहो कि तुम मेरी बहन
हो।'"

14तब अबीमेलेक ने जाना कि क्या हो चुका है।
इसलिए अबीमेलेक ने इब्राहीम को सारा लौटा दी।
अबीमेलेक ने इब्राहीम को कुछ भेड़ें, मवेशी तथा दास
भी दिए। 15अबीमेलेक ने कहा, "तुम चारों ओर देख

लो। यह मेरा देश है। तुम जिस जगह चाहो, रह सकते हो।"

16अबीमेलेक ने सारा से कहा, "देखो, मैंने तुम्हारे भाई को एक हजार चाँदी के टुकड़े दिए हैं। मैंने यह इसलिए किया कि जो कुछ हुआ उससे मैं दुःखी हूँ। मैं चाहता हूँ कि हर एक व्यक्ति यह देखे कि मैंने अच्छे काम किए हैं।"

17-18परमेश्वर ने अबीमेलेक के परिवार की सभी स्त्रियों को बच्चा जनने के अयोग्य बनाया। परमेश्वर ने वह इसलिए किया कि उसने इब्राहीम की पत्नी सारा को रख लिया था। लेकिन इब्राहीम ने परमेश्वर से प्रार्थना की और परमेश्वर ने अबीमेलेक, उसकी पत्नियों और दास–कन्याओं को स्वस्थ कर दिया।

अन्त में सारा को एक बच्चा

21 यहोवा ने सारा को यह वचन दिया था कि वह उस पर कृपा करेगा। यहोवा अपने वचन के अनुसार उस पर दयालु हुआ। 2सारा गर्भवती हुई और उसने बुढ़ापे में इब्राहीम के लिए एक बच्चा जनी। सही समय पर जैसा परमेश्वर ने वचन दिया था वैसा ही हुआ। 3सारा ने पुत्र जना और इब्राहीम ने उसका नाम इसहाक रखा। 4परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार इब्राहीम ने आठ दिन का होने पर इसहाक का खतना किया।

5इब्राहीम सौ वर्ष का था जब उसका पुत्र इसहाक उत्पन्न हुआ 6और सारा ने कहा, "परमेश्वर ने मुझे सुखी* बना दिया है। हर एक व्यक्ति जो इस बारे में सुनेगा वह मुझसे खुश होगा। 7कोई भी यह नहीं सोचता था कि सारा इब्राहीम को उसके बुढ़ापे के लिये उसे एक पुत्र देगी। लेकिन मैंने बूढ़े इब्राहीम को एक पुत्र दिया है।"

घर में परेशानी

8अब बच्चा इतना बड़ा हो गया कि माँ का दूध छोड़ वह ठोस भोजन खाना शुरू करे। जिस दिन उसका दूध छुड़वाया गया उस दिन इब्राहीम ने एक बहुत बड़ा भोज रखा। 9बीते समय में मिस्री दासी हाजिरा ने एक पुत्र को जन्म दिया था। इब्राहीम उस पुत्र का भी पिता था। सारा ने हाजिरा के पुत्र को खेलते हुए देखा। 10इसलिए सारा ने इब्राहीम से कहा, "उस दासी स्त्री तथा उसके पुत्र को यहाँ से भेज दो। जब हम लोग मरेंगे हम लोगों की सभी चीज़ें इसहाक को मिलेंगी। मैं नहीं चाहती कि उसका पुत्र इसहाक के साथ उन चीज़ों में हिस्सा ले।"

11इन सभी बातों ने इब्राहीम को बहुत दुःखी कर दिया। वह अपने पुत्र इश्माएल के लिए दुःखी था। 12किन्तु परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, "उस लड़के के बारे में दुःखी मत होओ। उस दासी स्त्री के बारे में भी दुःखी मत होओ। जो सारा चाहती है तुम वही करो। तुम्हारा वंश इसहाक के वंश से चलेगा। 13लेकिन मैं तुम्हारे दासी के पुत्र को भी आशीर्वाद दूँगा। वह तुम्हारा पुत्र है इसलिए मैं उसके परिवार कोभी एक बड़ा राष्ट्र बनाऊँगा।"

14दूसरे दिन बहुत सवेरे इब्राहीम ने कुछ भोजन और पानी लिया। इब्राहीम ने यह चीज़ें हाजिरा को दे दी। हाजिरा ने वे चीज़ें ली और बच्चे के साथ वहाँ से चली गई। हाजिरा ने वह स्थान छोड़ा और वह बेर्शेबा की मरुभूमि में भटकने लगी।

15कुछ समय बाद हाजिरा का सारा पानी समाप्त हो गया। पीने के लिए कुछ भी पानी न बचा। इसलिए हाजिरा ने अपने बच्चे को एक झाड़ी के नीचे रखा। 16हाजिरा वहाँ से कुछ दूर गई। तब वह रूकी और बैठ गई। हाजिरा ने सोचा कि उसका पुत्र मर जाएगा क्योंकि वहाँ पानी नहीं था। वह उसे मरता हुआ देखना नहीं चाहती थी। वह वहाँ बैठ गई और रोने लगी।

17परमेश्वर ने बच्चे का रोना सुना। स्वर्ग से एक दूत हाजिरा के पास आया। उसने पूछा, "हाजिरा, तुम्हें क्या कठिनाई है। परमेश्वर ने वहाँ बच्चे का रोना सुन लिया। 18जाओ, और बच्चे को संभालो। उसका हाथ पकड़ लो और उसे साथ ले चलो। मैं उसे बहुत से लोगों का पिता बनाऊँगा।"

19परमेश्वर ने हाजिरा की आँखे इस प्रकार खोली कि वह एक पानी का कुआँ देख सकी। इसलिए कुएँ पर हाजिरा गई और उसने थैले को पानी से भर लिया। तब उसने बच्चे को पीने के लिए पानी दिया।

20बच्चा जब तक बड़ा न हुआ तब तक परमेश्वर उसके साथ रहा। इश्माएल मरुभूमि में रहा और एक शिकारी बन गया। उसने बहुत अच्छा तीर चलाना सीख लिया। 21उसकी माँ मिस्र से उसके लिए दुल्हन लाई। वे पारान मरूभूमि में रहने लगे।

इब्राहीम का अबीमेलेक से सन्धि

22तब अबीमेलेक और पीकोल ने इब्राहीम से बातें की। पीकोल अबीमेलेक की सेना का सेनापति था। उन्होंने इब्राहीम से कहा, "तुम जो कुछ करते हो, परमेश्वर तुम्हारा साथ देता है। 23इसलिए तुम परमेश्वर के सामने वचन दो। यह वचन दो कि तुम मेरे और मेरे बच्चों के लिए भले रहोगे। तुम यह वचन दो कि तुम मेरे प्रति और जहाँ रहे हो उस देश के प्रति दयालु रहोगे। तुम यह भी वचन दो कि मैं तुम्हारे प्रति जितना दयालु रहा उतना तुम मुझ पर भी दयालु रहोगे।"

24इब्राहीम ने कहा, "मैं वचन देता हूँ कि तुमसे मैं वैसा ही व्यवहार करूँगा जैसा तुमने मेरे साथ व्यवहार किया है। 25तब इब्राहीम ने अबीमेलेक से शिकायत की। इब्राहीम ने इसलिये शिकायत की कि अबीमेलेक

सुखी हिब्रू में "सुखी" शब्द इसहाक के नाम की तरह है।

के नौकरों ने पानी के एक कुएँ पर कब्जा कर लिया था।

26अबीमेलेक ने कहा, "इसके बारे में मैंने यह पहली बार सुना है! मुझे नहीं पता है, कि यह किसने किया है, और तुमने भी इसकी चर्चा मुझसे इससे पहले कभी नहीं की।"

27इसलिए इब्राहीम और अबीमेलेक ने एक सन्धि
की। 28इब्राहीम ने सन्धि के प्रमाण के रूप में अबीमेलेक को कुछ भेड़े और मवेशी दिए। इब्राहीम सात मादा मेमने भी अबीमेलेक के सामने लाया।

29अबीमेलेक ने इब्राहीम से पूछा, "तुम ये सात मादा मेमने अलग क्यों दे रहे हो?"

30इब्राहीम ने कहा, "जब तुम इन सात* मेमनों को मुझसे लोगे तो यह सबूत रहेगा कि यह कुआँ मैंने खोदा है।"

31इसलिए इसके बाद वह कुआँ बेर्शेबा कहलाया। उन्होंने कुएँ को यह नाम दिया क्योंकि यह वह जगह थी जहाँ उन्होंने एक दूसरे को वचन दिया था।

32इस प्रकार इब्राहीम और अबीमेलेक ने बेर्शेबा में सन्धि की। तब अबीमेलेक और सेनापति दोनों पलिश्तियों के प्रदेश में लौट गए।

33इब्राहीम ने बेर्शेबा में एक विशेष पेड़ लगाया। उस
जगह इब्राहीम ने यहोवा परमेश्वर से प्रार्थना की 34और
इब्राहीम पलिश्तियों के देश में बहुत समय तक रहा।

इब्राहीम, अपने पुत्र को मार डालो!

22 इन बातों के बाद परमेश्वर ने इब्राहीम के विश्वास की परीक्षा लेना तय किया। परमेश्वर ने उससे कहा, "इब्राहीम!"

और इब्राहीम ने कहा, "हाँ।"

2परमेश्वर ने कहा, "अपना पुत्र लो, अपना एकलौता पुत्र, इसहाक जिससे तुम प्रेम करते हो मोरिय्याह पर जाओ तुम उस पहाड़ पर जाना जिसे मैं तुम्हें दिखाऊँगा। वहाँ तुम अपने पुत्र को मारोगे और उसको होमबलि स्वरूप मुझे अर्पण करोगे।"

3सवेरे इब्राहीम उठा और उसने गधे को तैयार किया। इब्राहीम ने इसहाक और दो नौकरों को साथ लिया। इब्राहीम ने बलि के लिए लकड़ियाँ काटकर तैयार कीं। तब वे उस जगह गए जहाँ जाने के लिए परमेश्वर ने
कहा। 4उनकी तीन दिन की यात्रा के बाद इब्राहीम ने ऊपर देखा और दूर उस जगह को देखा जहाँ वे जा रहे
थे। 5तब इब्राहीम ने अपने नौकरों से कहा, "यहाँ गधे के साथ ठहरो। मैं अपने पुत्र को उस जगह ले जाऊँगा और उपासना करूँगा। तब हम बाद में लौट आयेंगे।"

6इब्राहीम ने बलि के लिए लकड़ियाँ ली और इन्हें पुत्र के कन्धों पर रखा। इब्राहीम ने एक विशेष छुरी और आग ली। तब इब्राहीम और उसका पुत्र दोनों उपासना के लिए उस जगह एक साथ गए।

7इसहाक ने अपने पिता इब्राहीम से कहा, "पिताजी!"

इब्राहीम ने उत्तर दिया, "हाँ, पुत्र।"

इसहाक ने कहा, "मैं लकड़ी और आग तो देखता हूँ, किन्तु वह मेमना कहाँ है जिसे हम बलि के रूप में जलाएंगे?"

8इब्राहीम ने उत्तर दिया, "पुत्र परमेश्वर बलि के लिये मेमना स्वयं जुटा रहा है।"

इसहाक बचाया गया

इस तरह इब्राहीम और उसका पुत्र उस जगह साथ–साथ
गए। 9वे उस जगह पर पहुँचे जहाँ परमेश्वर ने पहुँचने को कहा था। वहाँ इब्राहीम ने एक बलि की वेदी बनाई। इब्राहीम ने वेदी पर लकड़ियाँ रखी। तब इब्राहीम ने अपने पुत्र को बाँधा। इब्राहीम ने इसहाक को वेदी की
लकड़ियों पर रखा। 10तब इब्राहीम ने अपनी छुरी निकाली
और अपने पुत्र को मारने की तैयारी की। 11तब यहोवा के दूत ने इब्राहीम को रोक दिया। दूत ने स्वर्ग से पुकारा और कहा, "इब्राहीम, इब्राहीम।"

इब्राहीम ने उत्तर दिया, "हाँ।"

12दूत ने कहा, "तुम अपने पुत्र को मत मारो अथवा उसे किसी प्रकार की चोट न पहुँचाओ। मैंने अब देख लिया कि तुम परमेश्वर का आदर करते हो और उसकी आज्ञा मानते हो। मैं देखता हूँ कि तुम अपने एकलौते पुत्र को मेरे लिए मारने के लिए तैयार हो।"

13इब्राहीम ने ऊपर दृष्टि की और एक मेढ़े को देखा। मेढ़े की सींगे एक झाड़ी में फँस गयी थी। इसलिए इब्राहीम वहाँ गया, उसे पकड़ा और उसे मार डाला। इब्राहीम ने मेढ़े को अपने पुत्र के स्थान पर बलि
चढ़ाया। इब्राहीम का पुत्र बच गया। 14इसलिए इब्राहीम ने उस जगह का नाम "यहोवा यिरे"* रखा। आज भी लोग कहते हैं, "इस पहाड़ पर यहोवा को देखा जा
सकता है।" 15यहोवा के दूत ने स्वर्ग से इब्राहीम को
दूसरी बार पुकारा। 16दूत ने कहा, "तुम मेरे लिए अपने पुत्र को मारने के लिए तैयार थे। यह तुम्हारा एकलौता पुत्र था। तुमने मेरे लिए ऐसा किया है इसलिए मैं, यहोवा
तुमको वचन देता हूँ कि। 17मैं तुम्हें निश्चय ही आशीर्वाद दूँगा। मैं तुम्हें उतने वंशज दूँगा जितने आकाश में तारे हैं। ये इतने अधिक लोग होंगे जितने समुद्र के तट पर बालू के कण और तुम्हारे लोग अपने सभी शत्रुओं को
हराएंगे। 18संसार के सभी राष्ट्र तुम्हारे परिवार के द्वारा

सात "सात" के लिये हिब्रू शब्द "शपथ," या "वचन देना जैसा है इसलिए "सात" जानवर उसे वचन देने के प्रमाण थे।

याहवे ... यिरे या "यहोवा यिरे" इसका अर्थ "ईश्वर देखता है" या "ईश्वर पूर्ति करता है" है।

आशीर्वाद पाएँगे।* मैं यह इसलिए करूँगा क्योंकि तुमने मेरी आज्ञा का पालन किया।"

19तब इब्राहीम अपने नौकरों के पास लौटा। उन्होंने बेर्शेबा तक वापसी यात्रा की और इब्राहीम वहीं रहने लगा।

20इसके बाद, इब्राहीम को यह खबर मिला। खबर यह था, "तुम्हारे भाई नाहोर और उसकी पत्नी मिल्का के अब बच्चे हैं। 21पहला पुत्र ऊस है। दूसरा पुत्र बूज है। तीसरा पुत्र अराम का पिता कमूएल है। 22इसके अतिरिक्त केसेद, हजो, पिल्दाश, यिदलाप और बतूएल है।" 23बतूएल, रिबका का पिता था। मिल्का इन आठ पुत्रों की माँ थी और नाहोर पिता था। नाहोर इब्राहीम का भाई था। 24नाहोर के दूसरे चार लड़के उसकी एक रखैल रुमा से थे। ये पुत्र तेबह, गहम, तहश, माका थे।

सारा मरती है

23 सारा एक सौ सत्ताईस वर्ष तक जीवित रही। 2वह कनान प्रदेश के किर्यतर्बा (हेब्रोन) नगर में मरी। इब्राहीम बहुत दुःखी हुआ और उसके लिए वहाँ रोया। 3तब इब्राहीम ने अपनी मरी पत्नी को छोड़ा और हित्ती लोगों से बात करने गया। उसने कहा, 4"मैं इस प्रदेश में नहीं रहता। मैं यहाँ केवल एक यात्री हूँ। इसलिए मेरे पास अपनी पत्नी को दफनाने के लिए कोई जगह नहीं है। मैं कुछ भूमि चाहता हूँ जिसमें अपनी पत्नी को दफना सकूँ।"

5हित्ती लोगों ने इब्राहीम को उत्तर दिया, 6"महोदय, आप हम लोगों के बीच परमेश्वर के प्रमुख व्यक्तियों में से एक है। आप अपने मरे को दफनाने के लिए सबसे अच्छी जगह, जो हम लोगों के पास है, ले सकते हैं। आप हम लोगों की कोई भी दफनाने की जगह, जो आप चाहते हैं, ले सकते हैं। हम लोगों में से कोई भी आपको अपनी पत्नी को दफनाने से नहीं रोकेगा।"

7इब्राहीम उठा और लोगों की तरफ सिर झुकाया। 8इब्राहीम ने उनसे कहा, "यदि आप लोग सचमुच मेरी मरी हुई पत्नी को दफनाने में मेरी मदद करना चाहते हैं तो सोहर के पुत्र एप्रोन से मेरे लिए बात करें। 9मैं मकपेला की गुफा को खरीदना पसन्द करूँगा। एप्रोन इसका मालिक है। यह उसके खेत के सिरे पर है। मैं इसके मूल्य के अनुसार उसे पूरी कीमत दूँगा। मैं चाहता हूँ कि आप लोग इस बात के गवाह रहे कि मैं इस भूमि को कब्रिस्तान के रुप में खरीद रहा हूँ।"

10एप्रोन वहीं लोगों के बीच बैठा था। एप्रोन ने इब्राहीम को उत्तर दिया, 11"नहीं, महोदय। मैं आपको भूमि दूँगा। मैं आपको वह गुफा दूँगा। मैं यह आपको इसलिए दूँगा कि आप इसमें अपनी पत्नी को दफना सकें।"

12तब इब्राहीम ने हित्ती लोगों के सामने अपना सिर झुकाया। 13इब्राहीम ने सभी लोगों के सामने एप्रोन से कहा, "किन्तु मैं तो खेत की पूरी कीमत देना चाहता हूँ। मेरा धन स्वीकार करें। मैं अपने मरे हुए को इसमें दफनाऊँगा।"

14एप्रोन ने इब्राहीम को उत्तर दिया, 15"महोदय, मेरी बात सुनें। चार सौ चाँदी के शेकेल। हमारे और आपके लिए क्या अर्थ रखते हैं? भूमि लें और अपनी मरी पत्नी को दफनाएँ।"

16इब्राहीम ने समझा कि एप्रोन उसे भूमि की कीमत बता रहा है, इसलिये हित्ती लोगों को गवाह मानकर, इब्राहीम ने चाँदी के चार सौ शेकेल एप्रोन के लिये तौले। इब्राहीम ने पैसा उस व्यापारी* को दे दिया जो इस भूमि के बेचने का धन्धा कर रहा था।

17-18इस प्रकार एप्रोन के खेत के मालिक बदल गये। यह खेत मम्रे के पूर्व मकपेला में था। नगर के सभी लोगों ने एप्रोन और इब्राहीम के बीच हुई वाचा को देखा। 19इसके बाद इब्राहीम ने अपनी पत्नी सारा को मम्रे कनान प्रदेश में हेब्रोन के निकट उस खेत की गुफा में दफनाया। 20इब्राहीम ने खेत और उसकी गुफा को हित्ती लोगों से खरीदा। यह उसकी सम्पत्ति हो गई, और उसने इसका प्रयोग कब्रिस्तान के रूप में किया।

इसहाक के लिए पत्नी

24 इब्राहीम बहुत बुढ़ापे तक जीवित रहा। यहोवा ने इब्राहीम को आशीर्वाद दिया और उसके हर काम में उसे सफलता प्रदान की। 2इब्राहीम का एक बहुत पुराना नौकर था जो इब्राहीम का जो कुछ था उसका प्रबन्धक था। इब्राहीम ने उस नौकर को बुलाया और कहा, "अपने हाथ मेरी जांघों के नीचे रखो। 3अब मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे एक वचन दो। धरती और आकाश के परमेश्वर यहोवा के सामने तुम वचन दो कि तुम कनान की किसी लड़की से मेरे पुत्र का विवाह नहीं होने दोगे। हम लोग उनके बीच रहते हैं, किन्तु एक कनानी लड़की से उसे विवाह न करने दो। 4तुम मेरे देश और मेरे अपने लोगो में लौटकर जाओ। वहाँ मेरे पुत्र इसहाक के लिए एक दुल्हन खोजो। तब उसे यहाँ उसके पास लाओ।"

5नौकर ने उससे कहा, "यह हो सकता है कि वह दुल्हन मेरे साथ इस देश में लौटना न चाहे। तब, क्या मैं तुम्हारे पुत्र को तुम्हारी जन्मभूमि को ले जाऊँ?"

6इब्राहीम ने उससे कहा, "नहीं, तुम हमारे पुत्र को उस देश में न ले जाओ। 7यहोवा, स्वर्ग का परमेश्वर मुझे मेरी जन्मभूमि से यहाँ लाया। वह देश मेरे पिता और मेरे परिवार का घर था। किन्तु यहोवा ने यह

तुम्हारे ... पाएंगे या "तुम्हारे वंशजों द्वारा पृथ्वी के सभी राष्ट्र वरदान पाएंगे।"

व्यापारी कोई व्यक्ति जो अपनी रोजी खरीद और बेचकर चलाता है। यह एप्रोन या कोई दूसरा व्यक्ति हो सकता है।

वचन दिया कि वह नया प्रदेश मेरे परिवार वालों का
होगा। यहोवा अपना एक दूत तुम्हारे सामने भेजे जिससे
तुम मेरे पुत्र के लिए दुल्हन चुन सको। 8किन्तु यदि
लड़की तुम्हारे साथ आना मना करे तो तुम अपने
वचन से छुटकारा पा जाओगे। किन्तु तुम मेरे पुत्र को
उस देश में वापस मत ले जाना।"

9इस प्रकार नौकर ने अपने मालिक के जांघों के
नीचे अपना हाथ रखकर वचन दिया।

खोज आरम्भ होती है

10नौकर ने इब्राहीम के दस ऊँट लिए और उस जगह
से वह चला गया। नौकर कई प्रकार की सुन्दर भेंटें
अपने साथ ले गया। वह नाहोर के नगर मेसोपोटामिया
को गया। 11वह नगर के बाहर के कुएँ पर गया। यह
बात शाम को हुई जब स्त्रियाँ पानी भरने के लिए बाहर
आती हैं। नौकर ने वहीं ऊँटों को घुटनों के बल बिठाया।

12नौकर ने कहा, "हे यहोवा, तू मेरे स्वामी इब्राहीम
का परमेश्वर है। आज तू उसके पुत्र के लिए मुझे एक
दुल्हन प्राप्त करा। कृपया मेरे स्वामी इब्राहीम पर यह
दया कर। 13मैं यहाँ इस जल के कुएँ के पास खड़ा हूँ
और पानी भरने के लिए नगर से लड़कियाँ आ रहीं हैं।
14मैं एक विशेष चिन्ह की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जिससे मैं
जान सकूँ कि इसहाक के लिए कौन सी लड़की ठीक
है। यह विशेष चिन्ह है: मैं लड़की से कहूँगा 'कृपा कर
आप घड़े को नीचे रखे जिससे मैं पानी पी सकूँ।' मैं तब
समझूँगा कि यह ठीक लड़की है जब वह कहेगी, 'पीओ,
और मैं तुम्हारे ऊँटों के लिए भी पानी दूँगी।' यदि ऐसा
होगा तो तू प्रमाणित कर देगा कि इसहाक के लिए यह
लड़की ठीक है। मैं समझूँगा कि तूने मेरे स्वामी पर
कृपा की है।"

एक दुल्हन मिली

15तब नौकर की प्रार्थना पूरी होने के पहले ही रिबका
नाम की एक लड़की कुएँ पर आई। रिबका बतूएल की
पुत्री थी। बतूएल इब्राहीम के भाई नाहोर और मिल्का
का पुत्र था। रिबका अपने कंधे पर पानी का घड़ा
लेकर कुएँ पर आई थी। 16लड़की बहुत सुन्दर थी। वह
कुँवारी थी। वह किसी पुरुष के साथ कभी नहीं सोई
थी। वह अपना घड़ा भरने के लिए कुएँ पर आई। 17तब
नौकर उसके पास तक दौड़ कर गया और बोला,
"कृपा कर के अपने घड़े से पीने के लिए थोड़ा जल
दें।"

18रिबका ने जल्दी कंधे से घड़े को नीचे उतारा और
उसे पानी पिलाया। रिबका ने कहा, "महोदय, यह पिएँ।"
19ज्यों ही उसने पीने के लिए कुछ पानी देना खतम
किया। रिबका ने कहा, "मैं आपके ऊँटों को भी पानी
दे सकती हूँ।"

20इसलिए रिबका ने झट से घड़े का सारा पानी ऊँटों
के लिए बनी नाद में उंडेल दिया। तब वह और पानी
लाने के लिए कुएँ को दौड़ गई और उसने सभी ऊँटों
को पानी पिलाया।

21नौकर ने उसे चुपचाप ध्यान से देखा। वह तय
करना चाहता था कि यहोवा ने शायद बात मान ली है
और उसकी यात्रा को सफल बना दिया है। 22जब ऊँटों
ने पानी पी लिया तब उसने रिबका को चौथाई औंस*
तौल की एक सोने की अँगूठी दी।

उसने उसे दो बाजूबन्द भी दिए जो तौल में हर एक
पाँच औंस* थे। 23नौकर ने पूछा, "तुम्हारा पिता कौन
है? क्या तुम्हारे पिता के घर में इतनी जगह है कि हम
सब के रहने तथा सोने का प्रबन्ध हो सके?"

24रिबका ने उत्तर दिया, "मेरे पिता बतूएल हैं जो
मिल्का और नाहोर के पुत्र हैं।" 25तब उसने कहा,
"और हाँ हम लोगों के पास तुम्हारे ऊँट के लिए चारा है
और तुम्हारे लिए सोने की जगह है।"

26नौकर ने सिर झुकाया और यहोवा की उपासना
की। 27नौकर ने कहा, "मेरे मालिक इब्राहीम के परमेश्वर
यहोवा की कृपा है। यहोवा हमारे मालिक पर दयालु है।
यहोवा ने मुझे अपने मालिक के पुत्र के लिए सही
दुल्हन* दिया है।"

28तब रिबका दौड़ी और जो कुछ हुआ था अपने
परिवार को बताया। 29-30रिबका का एक भाई था।
उसका नाम लाबान था। रिबका ने उसे वे बातें बताई
जो उससे उस व्यक्ति ने की थी। लाबान उसकी बातें
सुन रहा था। जब लाबान ने अगूँठी और बहन की बाहों
पर बाजूबन्द देखा तो वह दौड़कर कुएँ पर पहुँचा और
वहाँ वह व्यक्ति कुएँ के पास, ऊँटों के बगल में खड़ा
था।

31लाबान ने कहा, "महोदय, आप पधारें आपका
स्वागत है। आपको यहाँ बाहर खड़ा नहीं रहना है। मैंने
आपके ऊँटों के लिए एक जगह बना दी है और आपके
सोने के लिए एक कमरा ठीक कर दिया है।"

32इसलिए इब्राहीम का नौकर घर में गया। लाबान ने
ऊँटों और उस की मदद की और ऊँटों को खाने के
लिए चारा दिया। तब लाबान ने पानी दिया जिससे वह
व्यक्ति तथा उसके साथ आए हुए दूसरे नौकर अपने पैर
धो सकें। 33तब लाबान ने उसे खाने के लिए भोजन
दिया। लेकिन नौकर ने भोजन करना मना किया।
उसने कहा, "मैं तब तक भोजन नहीं करूँगा जब तक
मैं यह न बता दूँ कि मैं यहाँ किसलिए आया हूँ।"

इसलिए लाबान ने कहा, "तब हम लोगों को बताओ।"

चौथाई औंस शाब्दिक "एक बेक।"

पाँच औंस शाब्दिक पाँच माप।

सही दुल्हन शाब्दिक "मेरे मालिक के भाई के घर।"

रिबका इसहाक की पत्नी बनी

34नौकर ने कहा, "मैं इब्राहीम का नौकर हूँ। **35**यहोवा
ने हमारे मालिक पर हर एक विषय में कृपा की है।
मेरे मालिक महान व्यक्ति हो गए हैं। यहोवा ने इब्राहीम
को कई भेड़ों की रेवड़े तथा मवेशियों के झुण्ड दिए हैं।
इब्राहीम के पास बहुत सोना, चाँदी और नौकर हैं।
इब्राहीम के पास बहुत से ऊँट और गधे हैं। **36**सारा, मेरे
मालिक की पत्नी थी। जब वह बहुत बूढ़ी हो गई थी
उसने एक पुत्र को जन्म दिया और हमारे मालिक ने
अपना सब कुछ उस पुत्र को दे दिया है। **37**मेरे स्वामी
ने मुझे एक वचन देने के लिए विवश किया। मेरे
मालिक ने मुझ से कहा, 'तुम मेरे पुत्र को कनान की
लड़की से किसी भी तरह विवाह नहीं करने दोगे। हम
लोग उनके बीच रहते हैं, किन्तु मैं नहीं चाहता कि वह
किसी कनानी लड़की से विवाह करे। **38**इसलिए तुम्हें
वचन देना होगा कि तुम मेरे पिता के देश को जाओगे।
मेरे परिवार में जाओ और मेरे पुत्र के लिए एक दुल्हन
चुनो।' **39**मैंने अपने मालिक से कहा, 'यह हो सकता है
कि वह दुल्हन मेरे साथ इस देश को न आए।' **40**लेकिन
मेरे मालिक ने कहा, 'मैं यहोवा की सेवा करता हूँ और
यहोवा तुम्हारे साथ अपना दूत भेजेगा और तुम्हारी मदद
करेगा। तुम्हें वहाँ मेरे अपने लोगों में मेरे पुत्र के लिए
एक दुल्हन मिलेगी। **41**किन्तु यदि तुम मेरे पिता के देश
को जाते हो और वे लोग मेरे पुत्र के लिए एक दुल्हन
देना मना करते हैं तो तुम्हे इस वचन से छुटकारा मिल
जाएगा।'

42"आज मैं इस कुएँ पर आया और मैंने कहा, 'हे
यहोवा मेरे मालिक के परमेश्वर कृपा करके मेरी
यात्रा सफल बना। **43**मैं यहाँ कुएँ के पास ठहरुँगा और
पानी भरने के लिए आने वाली किसी युवती का प्रतिक्षा
करूँगा। तब मैं कहूँगा, कृपा करके आप अपने घड़े से
पीने के लिए पानी दें। **44**उपयुक्त लड़की ही विशेष रूप
से उत्तर देगी। वह कहेगी यह पानी पीओ और मैं तुम्हारे
ऊँटों के लिए भी पानी लाती हूँ। इस तरह मैं जानूँगा कि
यह वही स्त्री है जिसे यहोवा ने मेरे मालिक के पुत्र के
लिएचुनाहै।'

45"मेरी प्रार्थना पूरी होने के पहले ही रिबका कुएँ पर
पानी भरने आई। पानी का घड़ा उसने अपने कंधे पर
ले रखा था। वह कुएँ तक गई और उसने पानी भरा।
मैंने इससे कहा, "कृपा करके मुझे थोड़ा पानी दें।"

46उसने तुरन्त कंधे से घड़े को झुकाया और मेरे
लिए पानी डाला और कहा, 'यह पीएं और मैं आपके
ऊँटों के लिए भी पानी लाऊँगी।' इसलिए मैंने पानी पीया
और अपने ऊँटों को भी पानी पिलाया। **47**तब मैंने इससे
पूछा, 'तुम्हारे पिता कौन हैं?' इसने उत्तर दिया, 'मेरा
पिता बतूएल है।' मेरे पिता के माता–पिता मिल्का और
नाहोर हैं। तब मैंने इसे अँगूठी और बाहों के लिए
बाजूबन्द दिए। **48**उस समय मैंने अपना सिर झुकाया
और यहोवा को धन्य कहा। मैंने अपने मालिक इब्राहीम
के परमेश्वर यहोवा को कृपालु कहा। मैंने उसे धन्य
कहा क्योंकि उसने सीधे मेरे मालिक के भाई की पोती
तक मुझे पहुँचाया। **49**अब बताओ कि तुम क्या करोगे?
क्या तुम मेरे मालिक पर दयालु और श्रद्धालु बनोगे
और अपनी पुत्री उसे दोगे? या तुम अपनी पुत्री देना मना
करोगे? मुझे बताओ, जिससे, मैं यह समझ सकूँकि मुझे
क्या करना है।"

50तब लाबान और बतूएल ने उत्तर दिया, "हम लोग
यह देखते हैं कि यह यहोवा की ओर से है। इसे हम
टाल नहीं सकते। **51**रिबका तुम्हारी है। उसे लो और
जाओ। अपने मालिक के पुत्र से इसे विवाह करने दो।
यही है जिसे यहोवा चाहता है।"

52इब्राहीम के नौकर ने यह सुना और वह यहोवा के
सामने भूमि पर झुका। **53**तब उसने रिबका को वे भेंटे
दीं जो वह साथ लाया था। उसने रिबका को सोने और
चाँदी के गहने और बहुत से सुन्दर कपड़े दिए। उसने,
उसके भाई और उसकी माँ को कीमती भेंटे दीं। **54**नौकर
और उसके साथ के व्यक्ति वहाँ ठहरे तथा खाया और
पीया। वे वहाँ रातभर ठहरे। वे दूसरे दिन सवेरे उठे
और बोले "अब हम अपने मालिक के पास जाएँगे।"
55रिबका की माँ और भाई ने कहा, "रिबका को हम
लोगों के पास कुछ दिन और ठहरने दो। उसे दस दिन
तक हमारे साथ ठहरने दो। इसके बाद वह जा सकती
है।"

56लेकिन नौकर ने उनसे कहा, "मुझ से प्रतीक्षा न
करवाएँ। यहोवा ने मेरी यात्रा सफल की है। अब मुझे
अपने मालिक के पास लौट जाने दें।"

57रिबका के भाई और माँ ने कहा, "हम लोग रिबका
को बुलाएंगे और उस से पूछेंगे कि वह क्या चाहती है?"
58उन्होंने रिबका को बुलाया और उससे कहा, "क्या
तुम इस व्यक्ति के साथ अभी जाना चाहती हो?"

रिबका ने कहा, "हाँ, मैं जाऊँगी।"

59इसलिए उन्होंने रिबका को इब्राहीम के नौकर
और उसके साथियों के साथ जाने दिया। रिबका की
धाय भी उनके साथ गई। **60**जब वह जाने लगी तब वे
रिबका से बोले,

"हमारी बहन, तुम लाखों लोगों की जननी बनो और
तुम्हारे वंशज अपने शत्रुओं को हराएँ और उनके
नगरों को ले लें।"

61तब रिबका और धाय ऊँट पर चढ़ीं और नौकर
तथा उसके साथियों के पीछे चलने लगीं। इस तरह
नौकर ने रिबका को साथ लिया और घर को लौटने
की यात्रा शुरू की।

62इस समय इसहाक ने लहैरोई को छोड़ दिया था
और नेगेव में रहने लगा था। **63**एक शाम इसहाक

मैदान में विचरण* करने गया। इसहाक ने नजर उठाई और बहुत दूर से ऊँटों को आते देखा।

64रिबका ने नजर डाली और इसहाक को देखा। तब वह ऊँट से कूद पड़ी। **65**उसने नौकर से पूछा, "हम लोगों से मिलने के लिये खेतों में टहलने वाला वह युवक कौन है?"

नौकर ने कहा, "यह मेरे मालिक का पुत्र है।" इसलिए रिबका ने अपने मुँह को पर्दे में छिपा लिया।

66नौकर ने इसहाक को वे सभी बातें बताई जो हो चुकी थीं। **67**तब इसहाक लड़की को अपनी माँ के तम्बू में लाया। उसी दिन इसहाक ने रिबका से विवाह कर लिया। वह उससे बहुत प्रेम करता था। अत: उसे उसकी माँ की मृत्यु के पश्चात् भी सांत्वना मिली।

इब्राहीम का परिवार

25 इब्राहीम ने फिर विवाह किया। उसकी नयी पत्नी का नाम कतूरा था। **2**कतूरा ने जिम्रान, योक्षान, मदना, मिद्यान, यिशबाक और शूह को जन्म दिया। **3**योक्षान, शबा और ददान का पिता हुआ। ददान के वंशज अश्शूर और लुम्मी लोग थे। **4**मिद्यान के पुत्र एपा, एपेर, हनोक, अबीद और एल्दा थे। ये सभी पुत्र इब्राहीम और कतूरा से पैदा हुए। **5-6**इब्राहीम ने मरने से पहले अपनी दासियों* के पुत्रों को कुछ भेंट दिया। इब्राहीम ने पुत्रों को पूर्व को भेजा। उसने इन्हें इसहाक से दूर भेजा। इसके बाद इब्राहीम ने अपनी सभी चीज़ें इसहाक को दे दीं।

7इब्राहीम एक सौ पचहत्तर वर्ष की उम्र तक जीवित रहा। **8**इब्राहीम धीरे–धीरे कमजोर पड़ता गया और भरे–पूरे जीवन के बाद चल बसा। उसने लम्बा भरपूर जीवन बिताया और फिर वह अपने पुरखों के साथ दफनाया गया।

9उसके पुत्र इसहाक और इश्माएल ने उसे मकपेला की गुफा में दफनाया। यह गुफा सोहर के पुत्रों एप्रोन के खेत में है। यह मम्रे के पूर्व में थी। **10**यह वही गुफा है जिसे इब्राहीम ने हित्ती लोगों से खरीदा था। इब्राहीम को उसकी पत्नी सारा के साथ दफनाया गया। **11**इब्राहीम के मरने के बाद परमेश्वर ने इसहाक पर कृपा की और इसहाक लहैरोई में रहता रहा।

12इश्माएल के परिवार की यह सूची है। इश्माएल इब्राहीम और हाजिरा का पुत्र था। (हाजिरा सारा की मिस्री दासी थी।) **13**इश्माएल के पुत्रों के ये नाम हैं पहला पुत्र नबायोत था, तब केदार पैदा हुआ, तब अदबेल, मिबसाम, **14**मिश्मा, दूमा, मस्सा, **15**हदर, तेमा, यतूर, नापीश और केदमा हुए। **16**ये इश्माएल के पुत्रों के नाम थे। हर एक पुत्र के अपने पड़ाव थे जो छोटे नगर में बदल गये। ये बारह पुत्र अपने लोगों के साथ बारह राजकुमारों के समान थे। **17**इश्माएल एक सौ सैंतीस वर्ष जीवित रहा। **18**इश्माएल के लोग हवीला से लेकर शूर के पास मिस्र की सीमा और उससे भी आगे अश्शूर के किनारे तक, घूमते रहे और अपने भाईयों और उनसे सम्बन्धित देशों में आक्रमण करते रहे।*

इसहाक का परिवार

19यह इसहाक की कथा है। इब्राहीम का एक पुत्र इसहाक था। **20**जब इसहाक चालीस वर्ष का था तब उसने रिबका से विवाह किया। रिबका पद्दनराम की रहने वाली थी। वह अरामी बतूएल की पुत्री थी और लाबान की बहन थी। **21**इसहाक की पत्नी बच्चे नहीं जन सकी। इसलिए इसहाक ने यहोवा से अपनी पत्नी के लिए प्रार्थना की। यहोवा ने इसहाक की प्रार्थना सुनी और यहोवा ने रिबका को गर्भवती होने दिया।

22जब रिबका गर्भवती थी तब वह अपने गर्भ के बच्चों से बहुत परेशान थी, लड़के उसके गर्भ में आपस में लिपट के एक दूसरे को मारने लगे। रिबका ने यहोवा से प्रार्थना की और बोली, "मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है।" **23**यहोवा ने कहा "तुम्हारे गर्भ में दो राष्ट्र हैं। दो परिवारों के राजा तुम से पैदा होगें और वे बँट जाएंगे। एक पुत्र दूसरे से बलवान होगा। बड़ा पुत्र छोटे पुत्र की सेवा करेगा" **24**और जब समय पूरा हुआ तो रिबका ने जुड़वे बच्चों को जन्म दिया। **25**पहला बच्चा लाल हुआ। उसकी त्वचा रोंयेदार पोशाक की तरह थी। इसलिए उसका नाम एसाव पड़ा। **26**जब दूसरा बच्चा पैदा हुआ, वह एसाव की एड़ी को मजबूती से पकड़े था। इसलिए उस बच्चे का नाम याकूब पड़ा। इसहाक की उम्र उस समय साठ वर्ष की थी। जब याकूब और एसाव पैदा हुए।

27लड़के बड़े हुए। एसाव एक कुशल शिकारी हुआ। वह मैदानों में रहना पसन्द करने लगा। किन्तु याकूब शान्त व्यक्ति था। वह अपने तम्बू में रहता था। **28**इसहाक एसाव को प्यार करता था। वह उन जानवरों को खाना पसन्द करता था जो एसाव मार कर लाता था। किन्तु रिबका याकूब को प्यार करती थी। **29**एक बार एसाव शिकार से लौटा। वह थका हुआ और भूख से परेशान था। याकूब कुछ दाल* पका रहा था।

30इसलिए एसाव ने याकूब से कहा, "मैं भूख से कमजोर हो रहा हूँ। तुम उस लाल दाल में से कुछ मुझे दो।" (यही कारण है कि लोग उसे एदोम कहते हैं।)

विचरण इस शब्द का अर्थ "प्रार्थना करना" या "टहलना" है।

दासियों शाब्दिक "रखैल" दास स्त्रियाँ जो उसके लिये पत्नियाँ थीं।

अपने भाईयों ... रहे देखें उत्पत्ति 16:12

दाल या "अरहर।"

31किन्तु याकूब ने कहा, "तुम्हे पहलौठा होने का
अधिकार* मुझको आज बेचना होगा।"
32एसाव ने कहा, "मैं भूख से मरा जा रहा हूँ। यदि मैं
मर जाता हूँ तो मेरे पिता का सारा धन भी मेरी सहायता
नहीं कर पाएगा। इसलिए तुमको मैं अपना हिस्सा दूँगा।"
33किन्तु याकूब ने कहा, "पहले वचन दो कि तुम यह
मुझे दोगे।" इसलिए एसाव ने याकूब को वचन दिया।
एसाव ने अपने पिता के धन का अपना हिस्सा याकूब
को बेच दिया। 34तब याकूब ने एसाव को रोटी और
भोजन दिया। एसाव ने खाया, पिया और तब चला गया।
इस तरह एसाव ने यह दिखाया कि वह पहलौठे होने के
अपने हक की परवाह नहीं करता।

इसहाक अबीमेलेक से झूठ बोलता है

26 एक बार अकाल* पड़ा। यह अकाल वैसा ही
था जैसा इब्राहीम के समय में पड़ा था। इसलिए
इसहाक गरार नगर में पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक
के पास गया। 2यहोवा ने इसहाक से बात की। यहोवा ने
इसहाक से यह कहा, "मिस्र को न जाओ। उसी देश में
रहो जिसमें रहने का आदेश मैंने तुम्हें दिया है। 3उसी
देश में रहो और मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुम्हें आशीर्वाद
दूँगा। मैं तुम्हें और तुम्हारे परिवार को यह सारा प्रदेश
दूँगा। मैं वही करूँगा जो मैंने तुम्हारे पिता इब्राहीम को
वचन दिया है। 4मैं तुम्हारे परिवार को आकाश के
तारागणों की तरह बहुत से बनाऊँगा और मैं सारा प्रदेश
तुम्हारे परिवार को दूँगा। पृथ्वी के सभी राष्ट्र तुम्हारे
परिवार के कारण मेरा आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। 5मैं यह
इसलिए करूँगा कि तुम्हारे पिता इब्राहीम ने मेरी आज्ञा
का पालन किया और मैंने जो कुछ कहा, उसने किया।
इब्राहीम ने मेरे आदेशों, मेरे विधियों और मेरे नियमों
का पालन किया।"
6इसहाक ठहरा और गरार में रहा। 7इसहाक की
पत्नी रिबका बहुत ही सुन्दर थी। उस जगह के लोगों ने
इसहाक से रिबका के बारे में पूछा। इसहाक ने कहा,
"यह मेरी बहन है।" इसहाक यह कहने से डर रहा था
कि रिबका मेरी पत्नी है। इसहाक डरता था कि लोग
उसकी पत्नी को पाने के लिए उसको मार डालेंगे।
8जब इसहाक वहाँ बहुत समय तक रह चुका,
अबीमेलेक ने अपनी खिड़की से बाहर झाँका और
देखा कि इसहाक, रिबका के साथ छेड़ खानी कर रहा
है। 9अबीमेलेक ने इसहाक को बुलाया और कहा, "यह
स्त्री तुम्हारी पत्नी है। तुमने हम लोगों से यह क्यों कहा
कि यह मेरी बहन है।"
इसहाक ने उससे कहा, "मैं डरता था कि तुम उसे
पाने के लिए मुझे मार डालोगे।"
10अबीमेलेक ने कहा, "तुमने हम लोगों के लिए बुरा
किया है। हम लोगों का कोई भी पुरुष तुम्हारी पत्नी के
साथ सो सकता था। तब वह बड़े पाप का दोषी होता।"
11इसलिए अबीमेलेक ने सभी लोगों को चेतावनी दी।
उसने कहा, "इस पुरुष और इस स्त्री को कोई चोट नहीं
पहुँचाएगा। यदि कोई इन्हें चोट पहुँचाएगा तो वह व्यक्ति
जान से मार दिया जाएगा।"

इसहाक धनी बना

12इसहाक ने उस भूमि पर खेती की और उस साल
उसे बहुत फसल हुई। यहोवा ने उस पर बहुत अधिक
कृपा की। 13इसहाक धनी हो गया। वह अधिक से
अधिक धन तब तक बटोरता रहा जब तक बहुत धनी
नहीं हो गया।14उसके पास बहुत सी रेवड़े और
मवेशियों के झुण्ड थे। उसके पास अनेक दास भी थे।
सभी पलिश्ती उससे डाह रखते थे। 15इसलिए
पलिश्तियों ने उन सभी कुओं को नष्ट कर दिया जिन्हें
इसहाक के पिता इब्राहीम और उसके साथियों ने वर्षों
पहले खोदा था। पलिश्तयों ने उन्हें मिट्टी से भर दिया
16और अबीमेलेक ने इसहाक से कहा, "हमारा देश
छोड़ दो। तुम हम लोगों से बहुत अधिक शक्तिशाली हो
गए हो।"
17इसलिए इसहाक ने वह जगह छोड़ दी और गरार
की छोटी नदी के पास पड़ाव डाला। इसहाक वहीं ठहरा
और वहीं रहा। 18इसके बहुत पहले इब्राहीम ने कई
कुएँ खोदे थे। जब इब्राहीम मरा तो पलिश्तियों ने मिट्टी
से कुओं को भर दिया। इसलिए वहीं इसहाक लौटा और
उन कुओं को फिर खोद डाला। 19इसहाक के नौकरों
ने छोटी दी के पास एक कुआँ खोदा। उस कुएँ से एक
पानी का सोता फूट पड़ा। 20तब गरार के गड़ेरिये उस
कुएँ की वजह से इसहाक के नौकरों से झगड़ा करने
लगे। उन्होंने कहा, "यह पानी हमारा है।" इसलिए इसहाक
ने उसका नाम एसेक रखा।
उसने यह नाम इसलिए दिया कि उसी जगह पर उन
लोगों ने उससे झगड़ा किया था।
21तब इसहाक के नौकरों ने दूसरा कुआँ खोदा। वहाँ
के लोगों ने उस कुएँ के लिए भी झगड़ा किया। इसलिए
इसहाक ने उस कुएँ का नाम सित्रा रखा।
22इसहाक वहाँ से हटा और दूसरा कुआँ खोदा। उस
कुएँ के लिए झगड़ा करने कोई नहीं आया। इसलिए
इसहाक ने उस कुएँ का नाम रहोबोत रखा। इसहाक ने
कहा, "यहोवा ने यहाँ हमारे लिए जगह उपलब्ध कराई
है। हम लोग बढ़ेंगे और इसी भूमि पर सफल होंगे।"

पहलौठा ... अधिकार पिता के मरने के बाद पिता की अधिक से अधिक सम्पत्ति पहलौठे पुत्र को प्राय: मिलती थी और बड़ा पुत्र ही परिवार का नया संरक्षक होता था।

अकाल वह समय जब बहुत समय तक वर्षा न हो और कोई फसल न उग सके। आमतौर पर आदमी और जानवर पर्याप्त खाना और पानी न मिलने से मर जाते हैं।

23उस जगह से इसहाक बेर्शेबा को गया। 24यहोवा
उस रात इसहाक से बोला, "मैं तुम्हारे पिता इब्राहीम का
परमेश्वर हूँ। डरो मत। मैं तुम्हारे साथ हूँ और मैं तुम्हें
आशीर्वाद दूँगा। मैं तुम्हारे परिवार को महान बनाऊँगा।
मैं अपने सेवक इब्राहीम के कारण यह करूँगा।" 25इसलिए
इसहाक ने उस जगह यहोवा की उपासना के लिए एक
वेदी बनाई। इसहाक ने वहाँ पड़ाव डाला और उसके
नौकरों ने एक कुआँ खोदा। 26अबीमेलेक गरार से
इसहाक को देखने आया। अबीमेलेक अपने साथ
सलाहकार अहुज्जत और सेनापति पीकोल को लाया।

27इसहाक ने पूछा, "तुम मुझे देखने क्यों आए हो?
तुम इसके पहले मेरे साथ मित्रता नहीं रखते थे। तुमने
मुझे अपना देश छोड़ने को विवश किया।"

28उन्होंने जवाब दिया, "अब हम लोग जानते हैं कि
यहोवा तुम्हारे साथ है। हम चाहते हैं कि हम तुम्हारे
साथ एक वाचा करें। हम चाहते हैं कि तुम हमें एक
वचन दो। 29हम लोंगो ने तुम्हें चोट नहीं पहुँचाई, अब
तुम्हें यह वचन देना चाहिए कि तुम हम लोगों को चोट
नहीं पहुँचाओगे। हम लोगों ने तुमको भेजा। लेकिन हम
लोगों ने तुम्हें शान्ति से भेजा। अब साफ है कि यहोवा ने
तुम्हें आशीर्वाद दिया है।"

30इसलिए इसहाक ने उन्हें दावत दी। सभी ने खाया
और पीया। 31दूसरे दिन सवेरे हर एक व्यक्ति ने वचन
दिया और शपथ खाई। तब इसहाक ने उनको शान्ति से
विदा किया और वे सकुशल उसके पास से चले आये।

32उस दिन इसहाक के नौकर आए और उन्होंने
अपने खोदे हुए कुएँ के बारे में बताया। नौकरों ने कहा,
"हम लोगों ने उस कुएँ से पानी पीया।" 33इसलिए इसहाक
ने उसका नाम शिबा रखा और वह नगर अभी भी
बेर्शेबा कहलाता है।

एसाव की पत्नियाँ

34जब एसाव चालीस वर्ष का हुआ, उसने हित्ती स्त्रियों
से विवाह किया। एक बेरी की पुत्री यहूदीत थी। दूसरी
एलोन की पुत्री बाशमत थी। 35इन विवाहों ने इसहाक
और रिबका का मन दुःखी कर दिया।

वसीयत के झगड़े

27 जब इसहाक बूढ़ा हो गया तो उसकी आँखे
अच्छी न रहीं। इसहाक साफ-साफ नहीं देख
सकता था। एक दिन उसने अपने बड़े पुत्र एसाव को
बुलाया। इसहाक ने कहा, "पुत्र!"

एसाव ने उत्तर दिया, "हाँ, पिताजी।"

2इसहाक ने कहा, "देखो, मैं बूढ़ा हो गया। हो सकता
है मैं जल्दी ही मर जाऊँ। 3अब तू अपना तरकश और
धनुष लेकर, मेरे लिए शिकार पर जाओ। मेरे खाने के
लिए एक जानवर मार लाओ। 4मेरा प्रिय भोजन बनाओ।
उसे मेरे पास लाओ, और मैं इसे खाऊँगा। तब मैं मरने
से पहले तुम्हें आशीर्वाद दूँगा।" 5इसलिए एसाव शिकार
करने गया।

याकूब ने इसहाक से चाल चली

रिबका ने वे बातें सुन ली थी, जो इसहाक ने अपने
पुत्र एसाव से कहीं। 6रिबका ने अपने पुत्र याकूब से
कहा, "सुनों, मैंने तुम्हारे पिता को, तुम्हारे भाई से बातें
करते सुना है। 7तुम्हारे पिता ने कहा, 'मेरे खाने के
लिए एक जानवर मारो। मेरे लिए भोजन बनाओ और
मैं उसे खाऊँगा। तब मैं मरने के पहले तुमको आशीर्वाद
दूँगा।' 8इसलिए पुत्र सुनो। मैं जो कहती हूँ, करो। 9अपनी
बकरियों के बीच जाओ और दो नयी बकरियाँ लाओ।
मैं उन्हें वैसा बनाऊँगी जैसा तुम्हारे पिता को प्रिय है।
10तब तुम वह भोजन अपने पिता के पास ले जाओगे
और वह मरने के पहले तुमको ही आशीर्वाद देगा।"

11लेकिन याकूब ने अपनी माँ रिबका से कहा, "किन्तु
मेरा भाई रोयेंदार है और मैं उसकी तरह रोयेंदार नहीं
हूँ। 12यदि मेरे पिता मुझको छूते हैं, तो जान जाएंगे कि मैं
एसाव नहीं हूँ। तब वे मुझे आशीर्वाद नहीं देंगे। वे मुझे
शाप* देंगे क्योंकि मैंने उनके साथ चाल चलने का
प्रयत्न किया।"

13इस पर रिबका ने उससे कहा, "यदि कोई परेशानी
होगी तो मैं अपना दोष मान लूँगी। जो मैं कहती हूँ करो।
जाओ, और मेरे लिए बकरियाँ लाओ।"

14इसलिए याकूब बाहर गया और उसने दो बकरियों
को पकड़ा और अपनी माँ के पास लाया। उसकी माँ ने
इसहाक की पसंद के अनुसार विशेष ढंग से उन्हें
पकाया। 15तब रिबका ने उस पोशाक को उठाया जो
उसका बड़ा पुत्र एसाव पहनना पसंद करता था। रिबका
ने अपने छोटे पुत्र याकूब को वे कपड़े पहना दिए।
16रिबका ने बकरियों के चमड़े को लिया और याकूब
के हाथों और गले पर बांध दिया। 17तब रिबका ने
अपना पकाया भोजन उठाया और उसे याकूब को
दिया।

18याकूब पिता के पास गया और बोला, "पिताजी।"
और उसके पिता ने पूछा, "हाँ पुत्र, तुम कौन हो?"

19याकूब ने अपने पिता से कहा, "मैं आपका बड़ा
पुत्र एसाव हूँ। आपने जो कहा है, मैंने कर दिया है। अब
आप बैठें और उन जानवरों को खाएं जिनका शिकार
मैंने आपके लिए किया है। तब आप मुझे आशीर्वाद दे
सकते हैं।"

20लेकिन इसहाक ने अपने पुत्र से कहा, "तुमने
इतनी जल्दी शिकार करके जानवरों को कैसे मारा
है?"

शाप यह माँगना कि किसी का बुरा हो।

याकूब ने उत्तर दिया, "क्योंकि आपके परमेश्वर
यहोवा ने मुझे जल्दी ही जानवरों को प्राप्त करा दिया।"
21तब इसहाक ने याकूब से कहा, "मेरे पुत्र मेरे पास
आओ जिससे मैं तुम्हें छू सकूँ। यदि मैं तुम्हें छू सकूँगा तो
मैं यह जान जाऊँगा कि तुम वास्तव में मेरे पुत्र एसाव ही
हो।"
22याकूब अपने पिता इसहाक के पास गया। इसहाक
ने उसे छुआ और कहा,"तुम्हारी आवाज याकूब की
आवाज जैसी है। लेकिन तुम्हारी बाहें एसाव की रोंयेदार
बाहों की तरह है।" **23**इसहाक यह नहीं जान पाया कि
यह याकूब है क्योंकि उसकी बाहें एसाव की बाहों की
तरह रोंयेदार थीं। इसलिए इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद
दिया।
24इसहाक ने कहा, "क्या सचमुच तुम मेरे पुत्र एसाव
हो?"
याकूब ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं हूँ।"

याकूब के लिए "आशीर्वाद"

25तब इसहाक ने कहा, "भोजन लाओ। मैं इसे खाऊँगा
और तुम्हें आशीर्वाद दूँगा।" इसलिए याकूब ने उसे भोजन
दिया और उसने खाया। याकूब ने उसे दाखमधु दी, और
उसने उसे पीया।
26तब इसहाक ने उससे कहा, "पुत्र, मेरे करीब आओ
और मुझे चूमों।" **27**इसलिए याकूब अपने पिता के पास
गया और उसे चूमा। इसहाक ने एसाव के कपड़ों की
गन्ध पाई और उसको आशीर्वाद दिया। इसहाक ने
कहा,
"अहा, मेरे पुत्र की सुगन्ध यहोवा से वरदान पाए
खेतों की सुगन्ध की तरह है। **28**यहोवा तुम्हें बहुत वर्षा
दे। जिससे तुम्हें बहुत फसल और दाखमधु मिले।
29सभी लोग तुम्हारी सेवा करें। राष्ट्र तुम्हारे सामने
झुकें। तुम अपने भाईयों के ऊपर शासक होगे। तुम्हारी
माँ के पुत्र तुम्हारे सामने झुकेंगे और तुम्हारी आज्ञा
मानेंगे। हर एक व्यक्ति जो तुम्हें शाप देगा, शाप पाएगा
और हर एक व्यक्ति जो तुम्हें आशीर्वाद देगा, आशीर्वाद
पाएगा।"

एसाव को "आशीर्वाद"

30इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद देना पूरा किया।
तब ज्योंही याकूब अपने पिता इसहाक के पास से गया
त्योंही एसाव शिकार करके अन्दर आया। **31**एसाव ने
अपने पिता की पसंद का विशेष भोजन बनाया। एसाव
इसे अपने पिता के पास लाया। उसने अपने पिता से
कहा, "पिताजी, उठें और उस भोजन को खाएं जो
आपके पुत्र ने आपके लिए मारा है। तब आप मुझे
आशीर्वाद दे सकते है।"
32किन्तु इसहाक ने उससे कहा, "तुम कौन हो?"
उसने उत्तर दिया, "मैं आपका पहलौठा पुत्र एसाव
हूँ।"
33तब इसहाक बहुत झल्ला गया और बोला, "तब
तुम्हारे आने से पहले वह कौन था? जिसने भोजन
पकाया और जो मेरे पास लाया। मैंने वह सब खाया
और उसको आशीर्वाद दिया। अब अपने आशीर्वादों को
लौटाने का समय निकल चुका है।"
34एसाव ने अपने पिता की बात सुनी। उसका मन
बहुत गुस्से और कड़वाहट से भर गया। वह चीखा। वह
अपने पिता से बोला, "पिताजी, तब मुझे भी आशीर्वाददें।"
35इसहाक ने कहा, "तुम्हारे भाई ने मुझे धोखा दिया।
वह आया और तुम्हारा आशीर्वाद लेकर गया।"
36एसाव ने कहा, "उसका नाम ही याकूब ("चालबाज")
है। यह नाम उसके लिए ठीक ही है। उसका यह नाम
बिल्कुल सही रखा गया है वह सचमुच में चालबाज है।
उसने मुझे दो बार धोखा दिया। उसने पहलौठा होने के
मेरे अधिकार को ले ही चुका था और अब उसने मेरे
हिस्से के आशीर्वाद को भी ले लिया। क्या आपने मेरे
लिए कोई आशीर्वाद बचा रखा है?"
37इसहाक ने जवाब दिया, "नहीं, अब बहुत देर हो
गई। मैंनें याकूब को तुम्हारे ऊपर शासन करने का
अधिकार दे दिया है। मैंने यह भी कह दिया कि सभी
भाई उसके सेवक होंगे। मैंने उसे बहुत अधिक अन्न
और दाखमधु का आशीर्वाद दिया है। पुत्र तुम्हें देने के
लिए कुछ नहीं बचा है।"
38किन्तु एसाव अपने पिता से माँगता रहा। "पिताजी,
क्या आपके पास एक भी आशीर्वाद नहीं है? पिताजी,
मुझे भी आशीर्वाद दें।" यों एसाव रोने लगा।
39तब इसहाक ने उससे कहा, "तुम अच्छी भूमि पर
नहीं रहोगे। तुम्हारे पास बहुत अन्न नहीं होगा।
40तुम्हें जीने के लिए संघर्ष करना होगा। और तुम
अपने भाई के दास होगे। किन्तु तुम आजादी के लिए
लड़ोगे, और उसके शासन से आजाद हो जाओगे।"
41इसके बाद इस आशीर्वाद के कारण एसाव याकूब
से घृणा करता रहा। एसाव ने मन ही मन सोचा, "मेरा
पिता जल्दी ही मरेगा और मैं उसका शोक मनाऊँगा।
लेकिन उसके बाद मैं याकूब को मार डालूँगा।"
42रिबका ने एसाव द्वारा याकूब को मारने का षड़यन्त्र
सुना। उसने याकूब को बुलाया और उससे कहा, "सुनो,
तुम्हारा भाई एसाव तुम्हें मारने का षड़यन्त्र कर रहा है।
43इसलिए पुत्र जो मैं कहती हूँ, करो। मेरा भाई लाबान
हारान में रहता है। उसके पास जाओ और छिपे रहो।
44उसके पास थोड़े समय तक ही रहो जब तक तुम्हारे
भाई का गुस्सा नहीं उतरता। **45**थोड़े समय बाद तुम्हारा
भाई भूल जाएगा कि तुमने उसके साथ क्या किया? तब
मैं तुम्हें लौटाने के लिए एक नौकर को भेजूँगी। मैं एक
ही दिन दोनों पुत्रों को खोना नहीं चाहती।"

46तब रिबका ने इसहाक से कहा, "तुम्हारे पुत्र एसाव ने हित्ती स्त्रियों से विवाह कर लिया है। मैं इन स्त्रियों से परेशान हूँ क्योंकि ये हमारे लोगों में से नहीं हैं। यदि याकूब भी इन्हीं स्त्रियों में से किसी के साथ विवाह करता है तो मैं मर जाना चाहूँगी।"

याकूब पत्नी की खोज करता है

28 इसहाक ने याकूब को बुलाया और उसको आशीर्वाद दिया। तब इसहाक ने उसे आदेश दिया। इसहाक ने कहा, "तुम कनानी स्त्री से विवाह नहीं कर सकते। 2इसलिए इस जगह को छोड़ो और पद्दनराम को जाओ। अपने नाना बतूएल के घराने में जाओ। वहाँ तुम्हारा मामा लाबान रहता है। उसकी किसी एक पुत्री से विवाह करो। 3मैं प्रार्थना करता हूँ कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर तुम्हें आशीर्वाद दे और तुम्हें बहुत से पुत्र दे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम एक महान राष्ट्र के पिता बनो। 4मैं प्रार्थना करता हूँ कि जिस तरह परमेश्वर ने इब्राहीम को वरदान दिया था उसी तरह वह तुमको भी आशीर्वाद दे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर तुम्हें इब्राहीम का आशीर्वाद दे, यानी वह तुम्हें और तुम्हारी आने वाली पीढ़ी को, यह जगह जहाँ तुम आज परदेशी की तरह रहते हो, हमेशा के लिए तुम्हारी सम्पत्ति बना दे।"

5इस तरह इसहाक ने याकूब को पद्दनराम के प्रदेश को भेजा। याकूब अपने मामा लाबान के पास गया। अरामी बतूएल लाबान और रिबका का पिता था और रिबका याकूब और एसाव की माँ थी।

6एसाव को पता चला कि उसके पिता इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद दिया है और उसने याकूब को पद्दरनाम में एक पत्नी की खोज के लिए भेजा है। एसाव को यह भी पता लगा कि इसहाक ने याकूब को आदेश दिया है कि वह कनानी स्त्री से विवाह न करे। 7एसाव ने यह समझा कि याकूब ने अपने पिता और माँ की आज्ञा मानी और वह पद्दरनाम को चला गया। 8एसाव ने इससे यह समझा कि उसका पिता नहीं चाहता कि उसके पुत्र कनानी स्त्रियों से विवाह करें। 9एसाव की दो पत्नियाँ पहले से ही थीं। किन्तु उसने इश्माएल की पुत्री महलत से विवाह किया। इश्माएल इब्राहीम का पुत्र था। महलत नबायोत की बहन थी।

परमेश्वर का घर बेतेल

10याकूब ने बेर्शेबा को छोड़ा और वह हारान को गया। 11याकूब के यात्रा करते समय ही सूरज डूब गया था। इसलिए याकूब रात बिताने के लिए एक जगह ठहरने गया। याकूब ने उस जगह एक चट्टान देखी और सोने के लिए इस पर अपना सिर रखा। 12याकूब ने सपना देखा। उसने देखा कि एक सीढ़ी पृथ्वी से स्वर्ग तक पहुँची है। 13याकूब ने स्वर्गदूतों को उस सीढ़ी पर चढ़ते उतरते देखा और यहोवा को सीढ़ी के पास खड़ा देखा। यहोवा ने कहा, "मैं तुम्हारे पितामह इब्राहीम का परमेश्वर यहोवा हूँ। मैं इसहाक का परमेश्वर हूँ। मैं तुम्हें वह भूमि दूँगा जिस पर तुम अब सो रहे हो। मैं यह भूमि तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को दूँगा। 14तुम्हारे वंशज उतने होंगे जितने पृथ्वी पर मिट्टी के कण हैं। वे पूर्व, पश्चिम, उत्तर, तथा दक्षिण में फैलेंगे। पृथ्वी के सभी परिवार तुम्हारे वंशजों के कारण वरदान पाएंगे।

15"मैं तुम्हारे साथ हूँ और मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा जहाँ भी जाओगे और मैं इस भूमि पर तुम्हें लौटा ले आऊँगा। मैं तुमको तब तक नहीं छोड़ूँगा जब तक मैं वह नहीं कर लूँगा जो मैंने करने का वचन दिया है।"

16तब याकूब अपनी नींद से उठा और बोला, "मैं जानता हूँ कि यहोवा इस जगह पर है। किन्तु यहाँ जब तक मैं सोया नहीं था, मैं नहीं जानता था कि वह यहाँ है।"

17याकूब डर गया। उसने कहा, "यह बहुत महान जगह है। यह तो परमेश्वर का घर है। यह तो स्वर्ग का द्वार है।"

18याकूब दूसरे दिन बहुत सवेरे उठा। याकूब ने उस शिला को उठाया और उसे किनारे से खड़ा कर दिया। तब उसने इस पर तेल चढ़ाया। इस तरह उसने इसे परमेश्वर का स्मरण स्तम्भ बनाया। 19उस जगह का नाम लूज था किन्तु याकूब ने उसे बेतेल नाम दिया।

20तब याकूब ने एक वचन दिया। उसने कहा, "यदि परमेश्वर मेरे साथ रहेगा और अगर परमेश्वर, जहाँ भी मैं जाता हूँ, वहाँ मेरी रक्षा करेगा, अगर परमेश्वर मुझे खाने को भोजन और पहनने को वस्त्र देगा। 21अगर मैं अपने पिता के पास शान्ति से लौटूँगा, यदि परमेश्वर ये सभी चीज़ें करेगा, तो यहोवा मेरा परमेश्वर होगा। 22इस जगह, जहाँ मैंने यह पत्थर खड़ा किया है, परमेश्वर का पवित्र स्थान होगा, और परमेश्वर जो कुछ तू मुझे देगा उसका दशमांश मैं तुझे दूँगा।"

याकूब राहेल से मिलता है

29 तब याकूब ने अपनी यात्रा जारी रखी। वह पूर्व के प्रदेश में गया। 2याकूब ने दृष्टि डाली, उसने मैदान में एक कुआँ देखा। वहाँ कुएँ के पास भेड़ों की तीन रेवड़े पड़ी हुई थीं। यही वह कुआँ था जहाँ ये भेड़े पानी पीती थी। वहाँ एक बड़े शिला से कुएँ का मुँह ढका था। 3जब सभी भेड़े वहाँ इकट्ठी हो जातीं तो गड़ेंरिये चट्टान को कुएँ के मुँह पर से हटाते थे। तब सभी भेड़े उसका जल पी सकती थीं। जब भेड़े पी चुकती थी तब गड़ेंरिये शिला को फिर अपनी जगह पर रख देते थे। 4याकूब ने वहाँ गड़ेंरियों से कहा, "भाईयों, आप लोग कहाँ के हैं?"

उन्होंने उत्तर दिया, "हम हारान के हैं।"

5तब याकूब ने कहा, "क्या आप लोग नाहोर के पुत्र लाबान को जानते हैं?"

गड़ेरियों ने जवाब दिया, "हम लोग उसे जानते हैं।"

6तब याकूब ने पूछा, "वह कुशल से तो है?"

उन्होंने कहा, "वे ठीक हैं। सब कुछ बहुत अच्छा है। देखो, वह उसकी पुत्री राहेल अपनी भेड़ों के साथ आ रही है।"

7याकूब ने कहा, "देखो, अभी दिन है और सूरज डूबने में अभी काफी देर है। रात के लिए जानवरों को इकट्ठा करने का अभी समय नहीं है। इसलिए उन्हें पानी दो और उन्हें मैदान में लौट जाने दो।"

8लेकिन उस गड़ेरियें ने कहा, "हम लोग यह तब तक नहीं कर सकते जब तक सभी रेवड़े इकट्ठी नहीं हो जाती। तब हम लोग शिला को कुएँ से हटाएंगें और सभी भेड़े पानी पीएँगी।"

9याकूब जब तक गड़ेरियों से बातें कर रहा था तब राहेल अपने पिता की भेड़ों के साथ आई। (राहेल का काम भेड़ों की देखभाल करना था।) 10राहेल लाबान की पुत्री थी। लाबान, रिबका का भाई था, जो याकूब की माँ थी। जब याकूब ने राहेल को देखा तो जाकर शिला को हटाया और भेड़ों को पानी पिलाया। 11तब याकूब ने राहेल को चूमा और जोर से रोया। 12याकूब ने बताया कि मैं तुम्हारे पिता के खानदान से हूँ। उसने राहेल को बताया कि मैं रिबका का पुत्र हूँ। इसलिए राहेल घर को दौड़ गई और अपने पिता से यह सब कहा।

13लाबान ने अपनी बहन के पुत्र, याकूब के बारे में खबर सुनी। इसलिए लाबान उससे मिलने के लिए दौड़ा। लाबान उससे गले मिला, उसे चूमा और उसे अपने घर लाया।याकूब ने जो कुछ हुआ था, उसे लाबान को बताया।

14तब लाबान ने कहा, "आश्चर्य है, तुम हमारे खानदान से हो।" अत: याकूब लाबान के साथ एक महीने तक रुका।

लाबान याकूब के साथ धोखा करता है

15एक दिन लाबान ने याकूब से कहा, "यह ठीक नहीं है कि तुम हमारे यहाँ बिना वेतन में काम करते रहो। तुम रिश्तेदार हो, दास नहीं। मैं तुम्हें क्या वेतन दूँ?"

16लाबान की दो पुत्रियाँ थीं। बड़ी लिआ थी और छोटी राहेल।

17राहेल सुन्दर थी और लिआ की धुंधली आँखें थी।* 18याकूब राहेल से प्रेम करता था। याकूब ने लाबान से कहा, "यदि तुम मुझे अपनी पुत्री राहेल के साथ विवाह करने दो तो मैं तुम्हारे यहाँ सात साल तक काम कर सकता हूँ।"

19लाबान ने कहा, "यह उसके लिए अच्छा होगा कि किसी दूसरे के बजाय वह तुझसे विवाह करे। इसलिए मेरे साथ ठहरो।"

20इसलिए याकूब ठहरा और सात साल तक लाबान के लिए काम करता रहा। लेकिन यह समय उसे बहुत कम लगा क्योंकि वह राहेल से बहुत प्रेम करता था।

21सात साल के बाद उसने लाबान से कहा, "मुझे राहेल को दो जिससे मैं उससे विवाह करुँ। तुम्हारे यहाँ मेरे काम करने का समय पूरा हो गया।"

22इसलिए लाबान ने उस जगह के सभी लोगों को एक दावत दी। 23उस रात लाबान अपनी पुत्री लिआ को याकूब के पास लाया। याकूब और लिआ ने परस्पर शारीरिक सम्बन्ध स्थापित किया। 24(लाबान ने अपनी पुत्री को, सेविका के रूप में अपनी नौकरानी जिल्पा को दिया।) 25सवेरे याकूब ने जाना कि वह लिआ के साथ सोया था। याकूब ने लाबान से कहा, "तुमने मुझे धोखा दिया है। मैंने तुम्हारे लिए कठिन परिश्रम इसलिए किया कि मैं राहेल से विवाह कर सकूँ। तुमने मुझे धोखा क्यों दिया?"

26लाबान ने कहा, "हम लोग अपने देश में छोटी पुत्री का बड़ी पुत्री से पहले विवाह नहीं करने देते। 27किन्तु विवाह के उत्सव को पूरे सप्ताह मनाते रहो और मैं राहेल को भी तुम्हें विवाह के लिए दूँगा। परन्तु तुम्हें और सात वर्ष तक मेरी सेवा करनी पड़ेगी।"

28इसलिए याकूब ने यही किया और सप्ताह को बिताया। तब लाबान ने अपनी पुत्री राहेल को भी उसे उसकी पत्नी के रूप में दिया। 29(लाबान ने अपनी पुत्री राहेल की सेविका के रूप में अपनी नौकरानी बिल्हा को दिया।) 30इसलिए याकूब ने राहेल के साथ भी शारीरिक सम्बन्ध स्थापित किया और याकूब ने राहेल को लिआ से अधिक प्यार किया। याकूब ने लाबान के लिए और सात वर्ष तक काम किया।

याकूब का परिवार बढ़ता है

31यहोवा ने देखा कि याकूब लिआ से अधिक राहेल को प्यार करता है। इसलिए यहोवा ने लिआ को इस योग्य बनाया कि वह बच्चों को जन्म दे सके। लेकिन राहेल को कोई बच्चा नहीं हुआ।

32लिआ ने एक पुत्र को जन्म दिया। उसने उसका नाम रूबेन रखा। लिआ ने उसका यह नाम इसलिये रखा क्योंकि उसने कहा, "यहोवा ने मेरे कष्टों को देखा है। मेरा पति मुझको प्यार नहीं करता, इसलिए हो सकता है कि मेरा पति अब मुझसे प्यार करे।" 33लिआ फिर गर्भवती हुई और उसने दूसरे पुत्र को जन्म दिया।

लिआ ... थी यह यही कहने का एक विनम्र ढँग हो सकता है कि लिआ बहुत सुन्दर नहीं थी।

उसने इस पुत्र का नाम शिमोन रखा। लिआ ने कहा,
“यहोवा ने सुना कि मुझे प्यार नहीं मिलता, इसलिए
उसने मुझे यह पुत्र दिया।”
34लिआ फिर गर्भवती हुई और एक ओर पुत्र को
जन्म दिया। उसने पुत्र का नाम लेवी रखा। लिआ ने
कहा, “अब निश्चय ही मेरा पति मुझको प्यार करेगा।
मैंने उसे तीन पुत्र दिए हैं।”
35तब लिआ ने एक और पुत्र को जन्म दिया। उसने
इस लड़के का नाम यहूदा रखा। लिआ ने उसे यह नाम
दिया क्योंकि उसने कहा, “अब मैं यहोवा की स्तुति
करूँगी।” तब लिआ को बच्चा होना बन्द हो गया।

30 राहेल ने देखा कि वह याकूब के लिए किसी
बच्चे को जन्म नहीं दे रही है। राहेल अपनी
बहन लिआ से ईर्ष्या करने लगी। इसलिए राहेल ने
याकूब से कहा, “मुझे बच्चे दो, वरना मैं मर जाऊँगी।”
2याकूब राहेल पर क्रुद्ध हुआ। उसने कहा, “मैं
परमेश्वर नहीं हूँ। वह परमेश्वर ही है जिसने तुम्हें
बच्चों को जन्म देने से रोका है।”
3तब राहेल ने कहा, “तुम मेरी दासी बिल्हा को ले
सकते हो। उसके साथ सोओ और वह मेरे लिए बच्चे
को जन्म देगी।* तब मैं उसके द्वारा माँ बनूँगी।”
4इस प्रकार राहेल ने अपने पति याकूब के लिए
बिल्हा को दिया। याकूब ने बिल्हा के साथ शारीरिक
सम्बन्ध किया। 5बिल्हा गर्भवती हुई और याकूब के
लिए एक पुत्र को जन्म दिया।
6राहेल ने कहा, “परमेश्वर ने मेरी प्रार्थना सुन ली
है। उसने मुझे एक पुत्र देने का निश्चय किया।” इसलिए
राहेल ने इस पुत्र का नाम दान रखा।
7बिल्हा दूसरी बार गर्भवती हुई और उसने याकूब
को दूसरा पुत्र दिया। 8राहेल ने कहा, “अपनी बहन से
मुकाबले के लिए मैंने कठिन लड़ाई लड़ी है और मैंने
विजय पा ली है।” इसलिए उसने इस पुत्र का नाम
नप्ताली रखा। 9लिआ ने सोचा कि वह और अधिक
बच्चों को जन्म नहीं दे सकती। इसलिए उसने अपनी
दासी जिल्पा को याकूब के लिए दिया। 10तब जिल्पा ने
एक पुत्र को जन्म दिया। 11लिआ ने कहा, “मैं भाग्यवती
हूँ। अब स्त्रियाँ मुझे भाग्यवती कहेंगी।” इसलिए उसने
पुत्र का नाम गाद रखा। 12जिल्पा ने दूसरे पुत्र को जन्म
दिया। 13लिआ ने कहा, “मैं बहुत प्रसन्न हूँ।” इसलिए
उसने लड़के का नाम आशेर रखा।
14गेहूँ कटने के समय रूबेन खेतों में गया और कुछ
विशेष फूलों को देखा। रूबेन इन फूलों को अपनी माँ
लिआ के पास लाया। लेकिन राहेल ने लिआ से कहा,
“कृपाकर अपने पुत्र के फूलों में से कुछ मुझे दे दो।”
15लिआ ने उत्तर दिया, “तुमने तो मेरे पति को पहले
ही ले लिया है। अब तुम मेरे पुत्र के फूलों को भी ले
लेना चाहती हो।”
लेकिन राहेल ने उत्तर दिया, “यदि तुम अपने पुत्र के
फूल मुझे दोगी तो तुम आज रात याकूब के साथ सो
सकती हो।”
16उस रात याकूब खेतों से लौटा। लिआ ने उसे देखा
और उससे मिलने गई। उसने कहा, “आज रात तुम मेरे
साथ सोओगे। मैंने अपने पुत्र के फूलों को तुम्हारी
कीमत के रूप में दिया है।” इसलिए याकूब उस रात
लिआ के साथ सोया।
17तब परमेश्वर ने लिआ को फिर गर्भवती होने
दिया। उसने पाँचवें पुत्र को जन्म दिया। 18लिआ ने
कहा, “परमेश्वर ने मुझे इस बात का पुरस्कार दिया है
कि मैंने अपनी दासी को अपने पति को दिया।” इसलिए
लिआ ने अपने पुत्र का नाम इस्साकार रखा।
19लिआ फिर गर्भवती हुई और उसने छठे पुत्र को
जन्म दिया। 20लिआ ने कहा, “परमेश्वर ने मुझे एक
सुन्दर भेंट दी है। अब निश्चय ही याकूब मुझे अपनाएगा,
क्योंकि मैंने उसे छ: बच्चे दिए हैं।”
इसलिए लिआ ने पुत्र का नाम जबूलून रखा। 21इसके
बाद लिआ ने एक पुत्री को जन्म दिया। उसने पुत्री का
नाम दीना रखा।
22तब परमेश्वर ने राहेल की प्रार्थना सुनी। परमेश्वर
ने राहेल के लिए बच्चे उत्पन्न करना संभव बनाया।
23-24राहेल गर्भवती हुई और उसने एक पुत्र को जन्म
दिया। राहेल ने कहा, “परमेश्वर ने मेरी लज्जा समाप्त
कर दी है और मुझे एक पुत्र दिया है।” इसलिए राहेल ने
अपने पुत्र का नाम यूसुफ रखा।

याकूब ने लाबान के साथ चाल चली

25यूसुफ के जन्म के बाद याकूब ने लाबान से कहा,
“अब मुझे अपने घर लौटने दो। 26मुझे मेरी पत्नियाँ
और बच्चे दो। मैंने चौदह वर्ष तक तुम्हारे लिए काम
करके उन्हें कमाया है। तुम जानते हो कि मैंने तुम्हारी
अच्छी सेवा की है।”
27लाबान ने उससे कहा, “मुझे कुछ कहने दो।* मैं
अनुभव करता हूँ* कि यहोवा ने तुम्हारी वजह से मुझ
पर कृपा की है। 28बताओ कि तुम्हें मैं क्या दूँ और मैं
वही तुमको दूँगा।”
29याकूब ने उत्तर दिया, “तुम जानते हो, कि मैंने
तुम्हारे लिए कठिन परिश्रम किया है। तुम्हारी रेवड़े

वह ... देगी शाब्दिक “वह मेरी गोद में ही बच्चे को जन्म देगी और उसके द्वारा मेरा भी पुत्र होगा।

मुझे कुछ कहने दो “यदि आपकी दृष्टि में मैं कृपापात्र हूँ।” कुछ कहने के लिए आज्ञा पाने का यह तरीका प्राय: प्रयोग में आता है।

मैं अनुभव करता हूँ “अनुमान किया” “दिव्य ज्ञान हुआ” या “निर्णय किया।”

बड़ी हैं और जब तक मैंने उनकी देखभाल की है,
ठीक रही हैं। **30**जब मैं आया था, तुम्हारे पास थोड़ी सी
थीं। अब तुम्हारे पास बहुत अधिक है। हर बार जब मैंने
तुम्हारे लिए कुछ किया है यहोवा ने तुम पर कृपा की
है। अब मेरे लिए समय आ गया है कि मैं अपने लिए
काम करूँ, यह मेरे लिए अपना घर बनाने का समय
है।"

31लाबान ने पूछा, "तब मैं तुम्हें क्या दूँ?"

याकूब ने उत्तर दिया, "मैं नहीं चाहता कि तुम मुझे
कुछ दो। मैं केवल चाहता हूँ कि तुम जो मैंने काम
किया है उसकी कीमत चुका दो। केवल यही एक काम
करो। मैं लौटूँगा और तुम्हारी भेड़ों की देखभाल करूँगा।
32मुझे अपनी सभी रेवड़ों के बीच से जाने दो और
दागदार या धारीदार हर एक मेमने को मुझे ले लेने दो
और काली नई बकरी को ले लेने दो हर एक दागदार
और धारीदार बकरी को ले लेने दो। यही मेरा वेतन
होगा। **33**भविष्य में तुम सरलता से देख लोगे कि मैं
ईमानदार हूँ। तुम मेरी रेवड़ों को देखने आ सकते हो।
यदि कोई बकरी दागदार नहीं होगी या कोई भेड़ काली
नहीं होगी तो तुम जान लोगे कि मैंने उसे चुराया है।"

34लाबान ने उत्तर दिया, "मैं इसे स्वीकार करता हूँ।
हम तुमको जो कुछ मागोगे देंगे।" **35**लेकिन उस दिन
लाबान ने दागदार बकरों को छिपा दिया और लाबान ने
सभी दागदार या धारीदार बकरियों को छिपा दिया।
लाबान ने सभी काली भेड़ों को भी छिपा दिया। लाबान
ने अपने पुत्रों को इन भेड़ों की देखभाल करने को
कहा। **36**इसलिए पुत्रों ने सभी दागदार जानवरों को लिया
और वे दूसरी जगह चले गए। उन्होंने तीन दिन तक
यात्रा की। याकूब रूक गया और बचे हुए जानवरों की
देखभाल करने लगा। किन्तु उनमें कोई जानवर दागदार
या काला नहींथा।

37इसलिए याकूब ने चिनार, बादाम और अर्मोन पेड़ों
की हरी शाखाएँ काटी। उसने उनकी छाल इस तरह
उतारी कि शाखाएँ सफेद धारीदार बन गई। **38**याकूब ने
पानी पिलाने की जगह पर शाखाओं को रेवड़े के
सामने रख दिया। जब जानवर पानी पीने आए तो उस
जगह पर वे गाभिन होने के लिए मिले। **39**तब बकरियाँ
जब शाखाओं के सामने गाभिन होने के लिए मिली तो
जो बच्चे पैदा हुए वे दागदार, धारीदार या काले हुए।

40याकूब ने दागदार और काले जानवरो को रेवड़ के
अन्य जानवरों से अलग किया। सो इस प्रकार, याकूब
ने अपने जानवरों को लाबान के जानवरों से अलग
किया। उसने अपनी भेड़ों को लाबान की भेड़ों के पास
नहीं भटकने दिया। **41**जब कभी रेवड़ में स्वस्थ जानवर
गाभिन होने के लिए मिलते थे तब याकूब उनकी
आँखों के सामने शाखाएँ रख देता था, उन शाखाओं के
करीब ही ये जानवर गाभिन होने के लिए मिलते थे।
42लेकिन जब कमजोर जानवर गाभिन होने के लिए
मिलते थे। तो याकूब वहाँ शाखाएँ नहीं रखता था। इस
प्रकार कमजोर जानवरों से पैदा बच्चे लाबान के थे।
स्वस्थ जानवरों से पैदा बच्चे याकूब के थे। **43**इस प्रकार
याकूब बहुत धनी हो गया। उसके पास बड़ी रेवड़ें, बहुत
से नौकर ऊँट और गधे थे।

विदा होने के समय याकूब भागता है

31 एक दिन याकूब ने लाबान के पुत्रों को बात
करते सुना। उन्होंने कहा, "हम लोगों के पिता
का सब कुछ याकूब ने ले लिया है। याकूब धनी हो गया
है, और यह सारा धन उसने हमारे पिता से लिया है।"
2याकूब ने यह देखा कि लाबान पहले की तरह प्रेम
भाव नहीं रखता है। **3**परमेश्वर ने याकूब से कहा, "तुम
अपने पूर्वजों के देश को वापस लौट जाओ जहाँ तुम पैदा
हुए। मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।"

4इसलिए याकूब ने राहेल और लिआ से उस मैदान में
मिलने के लिए कहा जहाँ वह बकरियों और भेड़ों की
रेवड़े रखता था। **5**याकूब ने राहेल और लिआ से कहा,
"मैंने देखा है कि तुम्हारे पिता मुझ से क्रोधित हैं। उन
का मेरे प्रति वह पहले जैसा प्रेम–भाव अब नहीं रहा।
6तुम दोनों जानती हो कि मैंने तुम लोगों के पिता के
लिए उतनी कड़ी मेहनत की, जितनी कर सकता था।
7लेकिन तुम लोगों के पिता ने मुझे धोखा दिया। तुम्हारे
पिता ने मेरा वेतन दस बार बदला है। लेकिन इस पूरे
समय में परमेश्वर ने लाबान के सारे धोखों से मुझे
बचाया है।

8"एक बार लाबान ने कहा, 'तुम दागदार सभी बकरियों
को रख सकते हो। यह तुम्हारा वेतन होगा।' जब से
उसने यह कहा तब से सभी जानवरों ने धारीदार बच्चे
दिये। इस प्रकार वे सभी मेरे थे। लेकिन लाबान ने तब
कहा, 'मैं दागदार बकरियों को रखूँगा। तुम सारी धारीदार
बकरियाँ ले सकते हो। यही तुम्हारा वेतन होगा।' उसके
इस तरह कहने के बाद सभी जानवरों ने धारीदार बच्चे
दिये। **9**इस प्रकार परमेश्वर ने जानवरों को तुम लोगों
के पिता से ले लिया है और मुझे दे दिया है।

10"जिस समय जानवर गाभिन होने के लिए मिल रहे
थे मैंने एक स्वप्न देखा। मैंने देखा कि केवल नर
जानवर जो गाभिन करने के लिए मिल रहे थे धारीदार
और दागदार थे। **11**स्वप्न में परमेश्वर के दूत ने मुझ से
बातें की। स्वर्गदूत ने कहा, 'याकूब!'

"मैंने उत्तर दिया 'हाँ।'

12"स्वर्गदूत कहा, 'देखो, केवल दागदार और धारीदार
बकरियाँ ही गाभिन होने के लिए मिल रही हैं। मैं ऐसा
कर रहा हूँ। मैंने वह सब बुरा देखा है जो लाबान तुम्हारे
लिए करता है। मैं यह इसलिए कर रहा हूँ कि सभी नये
बकरियों के बच्चे तुम्हारे हो जायें। **13**मैं वही परमेश्वर

हूँ जिससे तुमने बेतेल में वाचा बाँधी थी। उस जगह तुमने
एक स्मरण स्तम्भ बनाया था और जैतून के तेल से
उसका अभिषेक किया था और उस जगह तुमने मुझसे
एक प्रतिज्ञा की थी। अब, उठो और यह जगह छोड़ दो
और वापस अपने जन्म भूमि को लौट जाओ।'"
14-15राहेल और लिआ ने याकूब को उत्तर दिया,
"हम लोगों के पिता के पास मरने पर हम लोगों को देने
के लिए कुछ नहीं है। उसने हम लोगों के साथ अजनबी
जैसा व्यवहार किया है। उसने हम लोगों को और
तुमको बेच दिया और इस प्रकार हम लोगों का सारा
धन उसने खर्च कर दिया। 16परमेश्वर ने यह सारा धन
हमारे पिता से ले लिया है और अब यह हमारा है।
इसलिए तुम वही करो जो परमेश्वर ने करने के लिए
कहा है।"
17इसलिए याकूब ने यात्रा की तैयारी की। उसने
अपनी पत्नियों और पुत्रों को ऊँटों पर बैठाया। 18तब वे
कनान की ओर लौटने लगे जहाँ उसका पिता रहता
था। जानवरों की भी सभी रेवड़े, जो याकूब की थीं,
उनके आगे चल रही थीं। वह वो सभी चीज़ें साथ ले जा
रहा था जो उसने पद्दनराम में रहते हुए प्राप्त की थी।
19इस समय लाबान अपनी भेड़ों का ऊन काटने गया
था। जब वह बाहर गया तब राहेल उसके घर में घुसी
और अपने पिता के गृह देवताओं को चुरा लाई।
20याकूब ने अरामी लाबान को धोखा दिया। उसने
लाबान को यह नहीं बताया कि वह वहाँ से जा रहा है।
21याकूब ने अपने परिवार और अपनी सभी चीज़ों को
लिया तथा शीघ्रता से चल पड़ा। उन्होंने फरात नदी को
पार किया और गिलाद पहाड़ की ओर यात्रा की।
22तीन दिन बाद लाबान को पता चला कि याकूब
भाग गया। 23इसलिए लाबान ने अपने आदमियों को
इकट्ठा किया और याकूब का पीछा करना आरम्भ
किया। सात दिन बाद लाबान ने याकूब को गिलाद
पहाड़ के पास पाया।24उस रात परमेश्वर लाबान के
पास स्वप्न में प्रकट हुआ। परमेश्वर ने कहा, "याकूब
से तुम जो कुछ कहो उसके एक-एक शब्द के लिए
सावधान रहो।"

चुराए गए देवताओं की खोज

25दूसरे दिन सवेरे लाबान ने याकूब को जा पकड़ा।
याकूब ने अपना तम्बू पहाड़ पर लगाया था। इसलिए
लाबान और उसके आदमियों ने अपने तम्बू गिलाद
पहाड़ पर लगाये।
26लाबान ने याकूब से कहा, "तुमने मुझे धोखा क्यों
दिया? तुम मेरी पुत्रियों को ऐसे क्यों ले जा रहे हो मानो
वे युद्ध में पकड़ी गई स्त्रियाँ हो? 27मुझसे बिना कहे तुम
क्यों भागे? यदि तुमने कहा होता तो मैं तुम्हें दावत देता।
उसमें बाजे के साथ नाचना और गाना होता। 28तुमने
मुझे अपने नातियों को चूमने तक नहीं दिया और न ही
पुत्रियों को विदा कहने दिया। तुमने यह करके बड़ी
भारी मूर्खता की। 29तुम्हें सचमुच चोट पहुँचाने की
शक्ति मुझमें है। किन्तु पिछली रात तुम्हारे पिता का
परमेश्वर मेरे स्वप्न में आया। उसने मुझे चेतावनी दी
कि मैं किसी प्रकार तुमको चोट न पहुँचाऊँ। 30मैं
जानता हूँ कि तुम अपने घर लौटना चाहते हो। यही
कारण है कि तुम वहाँ से चल पड़े हो। किन्तु तुमने मेरे
घर से देवताओं को क्यों चुराया?"
31याकूब ने उत्तर दिया, "मैं तुमसे बिना कहे चल
पड़ा, क्योंकि मैं डरा हुआ था। मैंने सोचा कि तुम
अपनी पुत्रियों को मुझसे ले लोगे। 32किन्तु मैंने तुम्हारे
देवताओं को नहीं चुराया। यदि तुम यहाँ मेरे पास किसी
व्यक्ति को, जो तुम्हारे देवताओं को चुरा लाया है, पाओ,
तो वह मार दिया जाएगा। तुम्हारे लोग ही मेरे गवाह
होंगे। तुम अपनी किसी भी चीज़ को यहाँ ढूँढ सकते हो।
जो कुछ भी तुम्हारा हो, ले लो।" (याकूब को यह पता
नहीं था कि राहेल ने लाबान के गृह देवता चुराये हैं।)
33इसलिए लाबान याकूब के तम्बू में गया और उसमें
ढूँढा। उसने याकूब के तम्बू में ढूँढा और तब लिआ के
तम्बू में भी। तब उसने उस तम्बू में ढूँढा जिसमें दोनो
दासियाँ ठहरी थी। किन्तु उसने उसके घर से देवताओं
को नहीं पाया। तब लाबान राहेल के तम्बू में गया।
34राहेल ने ऊँट की जीन में देवताओं को छिपा रखा था
और वह उन्ही पर बैठी थी। लाबान ने पूरे तम्बू में ढूँढा
किन्तु वह देवताओं को न खोज सका।
35और राहेल ने अपने पिता से कहा, "पिताजी, मुझ
पर क्रुद्ध न हों। मैं आपके सामने खड़ी होने में असमर्थ
हूँ। इस समय मेरा मासिकधर्म चल रहा है।" इसलिए
लाबान ने पूरे तम्बू में ढूँढा, लेकिन वह उसके घर से
देवताओं को नहीं पा सका।
36तब याकूब बहुत क्रुद्ध हुआ। याकूब ने कहा, "मैंने
क्या बुरा किया है? मैंने कौन सा नियम तोड़ा है? मेरा
पीछा करने और मुझे रोकने का अधिकार तुम्हें कैसे
है? 37मेरा जो कुछ है उसमें तुमने ढूँढ लिया। तुमने ऐसी
कोई चीज़ नहीं पाई जो तुम्हारी है। यदि तुमने कोई चीज़
पाई हो तो मुझे दिखाओ। उसे यहीं रखो जिससे हमारे
साथी देख सकें। हमारे साथियों को तय करने दो कि
हम दोनों में कौन ठीक है। 38मैंने तुम्हारे लिए बीस वर्ष
तक काम किया है। इस पूरे समय में बच्चा देते समय
कोई भी बच्चा या भेड़ नहीं मरे और मैंने कोई मेमना
तुम्हारी रेवड़ में से नहीं खाया है। 39यदि कभी जंगली
जानवरों ने कोई भेड़ मारी तो मैंने तुरन्त उसकी कीमत
स्वयं दे दी। मैंने कभी मरे जानवर को तुम्हारे पास ले
जाकर यह नहीं कहा कि इसमें मेरा दोष नहीं। किन्तु
रात-दिन मुझे लूटा गया। 40दिन में सूरज मेरी ताकत
छीनता था और रात को सर्दी मेरी आँखों से नींद चुरा

लेती थी। 41मैंने बीस वर्ष तक तुम्हारे लिए एक दास की
तरह काम किया। पहले के चौदह वर्ष मैंने तुम्हारी दो
पुत्रियों को पाने के लिये काम किया। बाद के छ: वर्ष
मैंने तुम्हारे जानवरों को पाने के लिए काम किया और
इस बीच तुमने मेरा वेतन दस बार बदला। 42लेकिन मेरे
पूर्वजों के परमेश्वर इब्राहीम का परमेश्वर और इसहाक
का भय* मेरे साथ था। यदि परमेश्वर मेरे साथ नहीं
होता तो तुम मुझे खाली हाथ भेज देते। किन्तु परमेश्वर
ने मेरी परेशानियों को देखा। परमेश्वर ने मेरे किए
काम को देखा और पिछली रात परमेश्वर ने प्रमाणित
कर दिया कि मैं ठीक हूँ।"

याकूब और लाबान की सन्धि

43लाबान ने याकूब से कहा, "ये लड़कियाँ मेरी पुत्रियाँ
हैं। उनके बच्चे मेरे हैं। ये जानवर मेरे हैं। जो कुछ भी
तुम यहाँ देखते हो, मेरा है। लेकिन मैं अपनी पुत्रियों
और उनके बच्चों को रखने के लिए कुछ नहीं कर
सकता। 44इसलिए मैं तुमसे एक सन्धि करना चाहता हूँ।
हम लोग पत्थरों का एक ढेर लगाएगें जो यह बताएगा
कि हम लोग सन्धि कर चुके हैं।"

45इसलिए याकूब ने एक बड़ी चट्टान ढूँढी और उसे
यह पता देने के लिए वहाँ रखा कि उसने सन्धि की है।
46उसने अपने पुरुषों को और अधिक चट्टानें ढूँढने
और चट्टानों का एक ढेर लगाने को कहा। तब उन्होंने
चट्टानों के समीप भोजन किया। 47लाबान ने उस जगह
का नाम यग्र सहादूथा रखा। लेकिन याकूब ने उस
जगह का नाम गिलियाद रखा।

48लाबान ने याकूब से कहा, "यह चट्टानों का ढेर
हम दोनों को हमारी सन्धि की याद दिलाने में सहायता
करेगा।" यह कारण है कि याकूब ने उस जगह को
गिलियाद कहा।

49तब लाबान ने कहा, "यहोवा हम लोगों के एक
दूसरे से अलग होने का साक्षी रहे।" इसलिए उस जगह
का नाम मिजपा भी होगा।

50तब लाबान ने कहा, "यदि तुम मेरी पुत्रियों को चोट
पहुँचाओगे तो याद रखो, परमेश्वर तुमको दण्ड देगा।
यदि तुम दूसरी स्त्री से विवाह करोगे तो याद रखो,
परमेश्वर तुमको देख रहा है। 51यहाँ ये चट्टानें हैं, जो
हमारे बीच में रखी हैं और यह विशेष चट्टान है जो
बताएगी कि हमने सन्धि की है। 52चट्टानों का ढेर तथा
यह विशेष चट्टान हमें अपनी सन्धि को याद कराने में
सहायता करेगा। तुमसे लड़ने के लिए मैं इन चट्टानों
के पार कभी नहीं जाऊँगा और तुम मुझसे लड़ने के
लिए इन चट्टानों से आगे मेरी ओर कभी नहीं आओगे।
53यदि हम लोग इस सन्धि को तोड़ें तो इब्राहीम का
परमेश्वर, नाहोर का परमेश्वर और उनके पूर्वजों का
परमेश्वर हम लोगों का न्याय करेगा।"

याकूब के पिता इसहाक ने परमेश्वर को "भय"
नाम से पुकारा। इसलिए याकूब ने सन्धि के लिए उस
नाम का प्रयोग किया। 54तब याकूब ने एक पशु को
मारा और पहाड़ पर बलि के रूप में भेंट किया और
उसने अपने पुरुषो को भोजन में सम्मिलित होने के
लिए बुलाया। भोजन करने के बाद उन्होंने पहाड़ पर
रात बिताई। 55दूसरे दिन सवेरे लाबान ने अपने नातियों
को चूमा और पुत्रियों को विदा दी। उसने उन्हें आशीर्वाद
दिया और घर लौट गया।

एसाव के साथ फिर मेल

32 याकूब ने भी वह जगह छोड़ी। जब वह यात्रा
कर रहा था। उसने परमेश्वर के स्वर्गदूत को
देखा। 2जब याकूब ने उन्हें देखा तो कहा, "यह परमेश्वर
का पड़ाव है।" इसलिए याकूब ने उस जगह का नाम
महनैम रखा।

3याकूब का भाई एसाव सेईर नामक प्रदेश में रहता
था। यह एदोम का पहाड़ी प्रदेश था। याकूब ने एसाव के
पास दूत भेजा। 4याकूब ने दूत से कहा, "मेरे स्वामी
एसाव को यह खबर दो: 'तुम्हारा सेवक याकूब कहता
है, मैं इन सारे वर्षों लाबान के साथ रहा हूँ। 5मेरे पास
मवेशी, गधे, रेवड़े और बहुत से नौकर हैं। मैं इन्हें
तुम्हारे पास भेजता हूँ और चाहता हूँ कि तुम हमें
स्वीकार करो।'"

6दूत याकूब के पास लौटा और बोला, "हम तुम्हारे
भाई एसाव के पास गए। वह तुमसे मिलने आ रहा है।
उसके साथ चार सौ सशस्त्र वीर हैं।"

7उस सन्देश ने याकूब को डरा दिया। उसने अपने
सभी साथीयों को दो दलों में बाँट दिया। उसने अपनी
सभी रेवड़ों, मवेशियों के झुण्ड और ऊँटों को दो भागों
में बाँटा। 8याकूब ने सोचा, "यदि एसाव आकर एक
भाग को नष्ट करता है तो दूसरा भाग सकता है और
बच सकता है।"

9याकूब ने कहा, "हे मेरे पूर्वज इब्राहीम के परमेश्वर।
हे मेरे पिता इसहाक के परमेश्वर। तूने मुझे अपने देश
में लौटने और अपने परिवार में आने के लिए कहा।
तूने कहा कि तू मेरी भलाई करेगा। 10तू मुझ पर बहुत
दयालु रहा है। तूने मेरे लिए बहुत अच्छी चीज़ें की हैं।
पहली बार मैंने यरदन नदी के पास यात्रा की, मेरे पास
टहलने की छड़ी* के अतिरिक्त कुछ भी न था। किन्तु
मेरे पास अब इतनी चीज़ें हैं कि मैं उनको पूरे दो दलों
में बाँट सकूँ। 11तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि कृपा करके

इसहाक का भय परमेश्वर का ही एक नाम। इससे पता चलता है कि परमेश्वर बहुत शक्तिशाली है जिससे बहुत लोग डरते हैं।

छड़ी या गड़रिये की लाठी।

मुझे मेरे भाई एसाव से बचा। मैं उससे डरा हुआ हूँ।
इसलिए कि वह आएगा और हम सभी को, यहाँ तक
कि बच्चों सहित माताओं को भी जान से मार डालेगा।
12हे यहोवा, तूने मुझसे कहा, 'मैं तुम्हारी भलाई करूँगा।
मैं तुम्हारे परिवार को बढ़ाऊँगा और तुम्हारे वंशजो को
समुद्र के बालू के कणों के समान बढ़ा दूँगा। वे इतने
अधिक होंगे कि गिने नहीं जा सकेंगे।'"

13याकूब रात को उस जगह ठहरा। याकूब ने कुछ
चीजें एसाव को भेंट देने के लिए तैयार कीं। **14**याकूब ने
दो सौ बकरियाँ, बीस बकरे, दो सौ भेड़ें तथा बीस नर
भेड़े लिए। **15**याकूब ने तीस ऊँट और उनके बच्चें,
चालीस गायें और दस बैल, बीस गदहियाँ और दस गदहे
लिए। **16**याकूब ने जानवरों का हर एक झुण्ड नौकरों
को दिया। तब याकूब ने नौकरों से कहा, "सब जानवरों
के हर झुण्ड को अलग कर लो। मेरे आगे–आगे चलो
और हर झुण्ड के बीच कुछ दूरी रखो।" **17**याकूब ने
उन्हें आदेश दिया। जानवरों के पहले झुण्ड वाले नौकर
से याकूब ने कहा, "मेरा भाई एसाव जब तुम्हारे पास
आए और तुमसे पूछे, 'यह किसके जानवर हैं? तुम
कहाँ जा रहे हो? तुम किसके नौकर हो? **18**तब तुम
उत्तर देना, "ये जानवर आपके सेवक याकूब के हैं।
याकूब ने इन्हें अपने स्वामी एसाव को भेंट के रूप में
भेजे है, और याकूब भी हम लोगों के पीछे आ रहा है।'"

19याकूब ने दूसरे नौकर, तीसरे नौकर, और सभी
अन्य नौकरों को यही बात करने का आदेश दिया।
उसने कहा, "जब तुम लोग एसाव से मिलो तो यही एक
बात कहोगे। **20**तुम लोग कहोगे, 'यह आपकी भेंट हैं,
और आपका सेवक याकूब भी लोगों के पीछे आ रहा
है।'"

याकूब ने सोचा, "यदि मैं भेंट के साथ इन पुरुषों को
आगे भेजता हूँ तो यह हो सकता है कि एसाव मुझे क्षमा
कर दे और मुझको स्वीकार कर ले।" **21**इसलिए याकूब
ने एसाव को भेंट भेजी। किन्तु याकूब उस रात अपने
पड़ाव में ही ठहरा।

22बाद में उसी रात याकूब उठा और उस जगह को
छोड़ दिया। याकूब ने अपनी दोनों पत्नियों, अपनी दोनों
दासियों और अपने ग्यारह पुत्रों को साथ लिया। घाट पर
जाकर याकूब ने यब्बोक नदी को पार किया। **23**याकूब
ने अपने परिवार को नदी के उस पार भेजा। तब
याकूब ने अपनी सभी चीज़ें नदी के उस पार भेज दीं।

परमेश्वर से मल्ल युद्ध

24याकूब नदी को पार करने वाला अन्तिम व्यक्ति
था। किन्तु पार करने से पहले जब तक वह अकेला ही
था, एक व्यक्ति आया और उससे मल्ल युद्ध करने
लगा। उस व्यक्ति ने उससे तब तक मल्ल युद्ध किया
जब तक सूरज न निकला। **25**व्यक्ति ने देखा कि वह
याकूब को हरा नहीं सकता। इसलिए उसने याकूब के
पैर को उसके कूल्हे के जोड़ पर छुआ। उस समय
याकूब के कूल्हे का जोड़ अपने स्थान से हट गया।

26तब उस व्यक्ति ने याकूब से कहा, "मुझे छोड़ दो।
सूरज ऊपर चढ़ रहा है।"

किन्तु याकूब ने कहा, "मैं तुमको नहीं छोड़ूँगा। मुझको
तुम्हें आशीर्वाद देना होगा।"

27और उस व्यक्ति ने उससे कहा, "तुम्हारा क्या नाम
है?" और याकूब ने कहा, "मेरा नाम याकूब है।"

28तब व्यक्ति ने कहा, "तुम्हारा नाम याकूब नहीं
रहेगा। अब तुम्हारा नाम इस्राएल होगा। मैं तुम्हें यह नाम
इसलिए देता हूँ कि तुमने परमेश्वर के साथ और मनुष्यों
के साथ युद्ध किया है और तुम हराए नहीं जा सके हो।"

29तब याकूब ने उससे पूछा, "कृपया मुझे अपना नाम
बताएं।"

किन्तु उस व्यक्ति ने कहा, "तुम मेरा नाम क्यों पूछते
हो?" उस समय उस व्यक्ति ने याकूब को आशीर्वाद
दिया। **30**इसलिए याकूब ने उस जगह का नाम पनीएल
रखा। याकूब ने कहा, "इस जगह मैंने परमेश्वर का
प्रत्यक्ष दर्शन किया है। किन्तु मेरे जीवन की रक्षा हो
गई।"

31जैसे ही वह पनीएल से गुजरा, सूरज निकल आया।
याकूब अपने पैरों के कारण लंगड़ाकर चल रहा था।
32इसलिए आज भी इस्राएल के लोग पुट्ठे की माँसपेशी
को नहीं खाते क्योंकि इसी माँसपेशी पर याकूब को
चोट लगी थी।

याकूब अपनी वीरता दिखाता है

33 याकूब ने दृष्टि उठाई और एसाव को आते
हुए देखा। एसाव आ रहा था और उसके साथ
चार सौ पुरूष थे। याकूब ने अपने परिवार को चार
समूहों मे बाँटा। लिआ और उसके बच्चे एक समूह में
थे, राहेल और यूसुफ एक समूह में थे, दासी और
उनके बच्चे दो समूहों में थे। **2**याकूब ने दासियों और
उनके बच्चों को आगे रखा। उसके बाद उनके पीछे
लिआ और उसके बच्चों को रखा और याकूब ने
राहेल और यूसुफ को सबके अन्त में रखा। **3**याकूब
स्वयं एसाव की ओर गया। इसलिए वह पहला व्यक्ति था
जिसके पास एसाव आया। अपने भाई की ओर बढ़ते
समय याकूब ने सात बार जमीन पर झुककर प्रणाम
किया।

4जब एसाव ने याकूब को देखा, वह उससे मिलने को
दौड़ पड़ा। एसाव ने याकूब को अपनी बाहों में भर लिया
और छाती से लगाया। तब एसाव ने उसकी गर्दन को
चूमा और दोनों आनन्द में रो पड़े। **5**एसाव ने नजर
उठाई और स्त्रियों तथा बच्चों को देखा। उसने कहा,
"तुम्हारे साथ ये कौन लोग हैं?"

याकूब ने उत्तर दिया, "ये वे बच्चे हैं जो परमेश्वर ने
मुझे दिए हैं। परमेश्वर मुझ पर दयालु रहा है।"
6तब दोनों दासियाँ अपने बच्चों के साथ एसाव के
पास गए। उन्होंने उसको झुककर प्रणाम किया।
7तब लिआ अपने बच्चों के साथ एसाव के सामने
गई और उसने प्रणाम किया और तब राहेल और
यूसुफ एसाव के सामने गए और उन्होंने भी प्रणाम
किया। 8एसाव ने कहा, "मैंने जिन सब लोगों को यहाँ
आते समय देखा वे कौन थे? और वे सभी जानवर
किसलिए थे?"

याकूब ने उत्तर दिया, "वे तुमको मेरी भेंट हैं जिससे
तुम मुझे स्वीकार कर सको।"

9किन्तु एसाव ने कहा, "भाई, तुम्हें मुझको कोई भेंट
नहीं देनी चाहिए क्योंकि मेरे पास सब कुछ बहुतायत से
हैं।"

10याकूब ने कहा, "नहीं! मैं तुमसे विनती करता हूँ।
यदि तुम सचमुच मुझे स्वीकार करते हो तो कृपया जो
भेंटें देता हूँ तुम स्वीकार करो। मैं तुमको दुबारा देख
कर बहुत प्रसन्न हूँ। यह तो परमेश्वर को देखने जैसा
है। मैं यह देखकर बहुत प्रसन्न हूँ कि तुमने मुझे स्वीकार
किया है। 11इसलिए मैं विनती करता हूँ कि जो भेंट मैं
देता हूँ उसे भी स्वीकार करो। परमेश्वर मेरे ऊपर
बहुत कृपालु रहा है। मेरे पास अपनी आवश्यकता से
अधिक है।" इस प्रकार याकूब ने एसाव से भेंट स्वीकार
करने को विनती की। इसलिए एसाव ने भेंट स्वीकार
की।

12तब एसाव ने कहा, "अब तुम अपनी यात्रा जारी
रख सकते हो। मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।"

13किन्तु याकूब ने उससे कहा, "तुम यह जानते हो
कि मेरे बच्चे अभी कमजोर हैं और मुझे अपनी रेवड़ों
और उनके बच्चों की विशेष देख-रेख करनी चाहिए।
यदि मैं उन्हें बहुत दूर एक दिन में चलने के लिए विवश
करता हूँ तो सभी पशु मर जाएंगें। 14इसलिए तुम आगे
चलो और मैं धीरे-धीरे तुम्हारे पीछे आऊँगा। मैं पशुओं
और अन्य जानवरों की रक्षा के लिए काफी धीरे-धीरे
बढ़ूँगा और मैं काफी धीरे-धीरे इसलिए चलूँगा कि मेरे
बच्चे बहुत अधिक थक न जायें। मैं सेईर में तुमसे
मिलूँगा।"

15इसलिए एसाव ने कहा, "तब मैं अपने कुछ साथियों
को तुम्हारी सहायता के लिए छोड़ दूँगा।"

किन्तु याकूब ने कहा, "यह तुम्हारी विशेष दया है।"
किन्तु ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं है।"
16इसलिए उस दिन एसाव सेईर की वापसी यात्रा पर
चल पड़ा। 17किन्तु याकूब सुक्कोत को गया। वहाँ उसने
अपने लिए एक घर बनाया और अपने मवेशियों के
लिये छोटी पशुशालाऐं बनाई। इसी कारण इस जगह का
नाम सुक्कोत रखा।

18बाद में याकूब ने अपना जो कुछ था उसे कनान
प्रदेश से शकेम नगर को भेज दिया। याकूब ने नगर के
समीप मैदान में अपना डेरा डाला। 19याकूब ने उस भूमि
को शकेम के पिता हमोर के परिवार से खरीदा। याकूब
ने चाँदी के सौ सिक्के दिए। 20याकूब ने परमेश्वर की
उपासना के लिए वहाँ एक विशेष स्मरण स्तम्भ बनाया।
याकूब ने जगह का नाम "एले, इस्राएल का परमेश्वर"
रखा।

दीना के साथ कुकर्म

34 दीना लिआ और याकूब की पुत्री थी। एक
दिन दीना उस प्रदेश की स्त्रियों को देखने के
लिए बाहर गई। 2उस प्रदेश के राजा हमोर के पुत्र
शकेम ने दीना को देखा। उसने उसे पकड़ लिया और
अपने साथ शारीरिक सम्बन्ध करने के लिए उसे विवश
किया। 3शकेम दीना से प्रेम करने लगा और उससे
विवाह करना चाहा। 4शकेम ने अपने पिता से कहा,
"कृपया इस लड़की को प्राप्त करें जिससे मैं इसके साथ
विवाह कर सकूँ।"

5याकूब ने यह जान लिया कि शकेम ने उसकी पुत्री
के साथ ऐसी बुरी बात की है। किन्तु याकूब के सभी
पुत्र अपने पशुओं के साथ मैदान में गए थे। इसलिए वे
जब तक नहीं आए, याकूब ने कुछ नहीं किया। 6उस
समय शकेम का पिता हमोर याकूब के साथ बात
करने गया। 7खेतों में याकूब के पुत्रों ने जो कुछ हुआ
था, उसकी खबर सुनी। जब उन्होंने यह सुना तो वे
बहुत क्रुद्ध हुए। वे पागल से हो गए क्योंकि शकेम ने
याकूब की पुत्री के साथ सोकर इस्राएल को कलंकित
किया था। शकेम ने बहुत घिनौनी बात की थी। इसलिए
सभी भाई खेतों से घर लौटे।

8किन्तु हमोर ने भाईयों से बात की। उसने कहा,
"मेरा पुत्र शकेम दीना से बहुत प्रेम करता है। कृपया
उसे इसके साथ विवाह करने दो। 9यह विवाह इस बात
का प्रमाण होगा कि हम लोगों ने विशेष सन्धि की है।
तब हमारे लोग तुम लोगों की स्त्रियों और तुम्हारे लोग
हम लोगों की स्त्रियों के साथ विवाह कर सकते हैं।
10तुम लोग हमारे साथ एक प्रदेश में रह सकते हो। तुम
भूमि के स्वामी बनने और यहाँ व्यापार करने के लिए
स्वतन्त्र होगे।"

11शकेम ने भी याकूब और भाईयों से बात की।
शकेम ने कहा, "कृपया मुझे स्वीकार करें और मैंने
जो किया उसके लिए क्षमा करें। मुझे जो कुछ आप
लोग करने को कहेंगे, करूँगा। 12मैं कोई भी भेंट* जो
तुम चाहोगे, दूँगा, अगर तुम मुझे दीना के साथ विवाह
करने दोगे।"

भेंट या दहेज। यहाँ इसका अर्थ वह धन है जो पत्नी को पाने के
लिए दिया जाता है।

13याकूब के पुत्रों ने शकेम और उसके पिता से झूठ
बोलने का निश्चय किया। भाई अभी भी पागल हो रहे
थे क्योंकि शकेम ने उनकी बहन दीना के साथ ऐसा
घिनौना व्यवहार किया था। 14इसलिए भाईयों ने उससे
कहा, "हम लोग तुम्हें अपनी बहन के साथ विवाह नहीं
करने देंगे क्योंकि तुम्हारा खतना अभी नहीं हुआ है।
हमारी बहन का तुमसे विवाह करना अनुचित होगा।
15किन्तु हम लोग तुम्हें उसके साथ विवाह करने देगें
यदि तुम यही एक काम करो कि तुम्हारे नगर के हर
पुरुष का खतना हम लोगों की तरह हो जाये। 16तब
तुम्हारे पुरुष हमारी स्त्रियों से विवाह कर सकते हैं और
हमारे पुरुष तुम्हारी स्त्रियों से विवाह कर सकते हैं। तब
हम एक ही लोग बन जाएंगे। 17यदि तुम खतना कराना
अस्वीकार करते हो तो हम लोग दीना को ले जाएंगे।"

18इस सन्धि ने हमोर और शकेम को बहुत प्रसन्न
किया। 19दीना के भाईयों ने जो कुछ कहा उसे करने में
शकेम बहुत प्रसन्न हुआ।

बदला

शकेम परिवार का सबसे अधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति
था। 20हमोर और शकेम अपने नगर के सभास्थल को
गए। उन्होंने नगर के लोगों से बातें कीं और कहा
21"इस्राएल के ये लोग हमारे मित्र होना चाहते हैं। हम
लोग उन्हें अपने प्रदेश में रहने देना चाहते हैं और
अपने साथ शान्ति बनाए रखना चाहते हैं। हम लोगों के
पास अपने सभी लोगों के लिए काफी भूमि है। हम लोग
इनकी स्त्रियों के साथ विवाह करने को स्वतन्त्र हैं
और हम लोग अपनी स्त्रियाँ उनको विवाह के लिए देने
में प्रसन्न हैं। 22किन्तु एक बात है जिसे करने के लिए
हम सभी को सन्धि करनी होगी। 23यदि हम ऐसा करेगें
तो उनके पशुओं तथा जानवरों से हम धनी हो जाएंगे।
इसलिए हम लोग उनके साथ यह सन्धि करें और वे
यहाँ हम लोगों के साथ रहेंगे।" 24सभास्थल पर जिन
लोगों ने यह बात सुनी वे हमोर और शकेम के साथ
सहमत हो गए और उस समय हर एक पुरुष का खतना
कर दिया गया।

25तीन दिन बाद खतना कर दिए गए पुरुष अभी
जख्मी थे। याकूब के दो पुत्र शिमोन और लेवी जानते
थे कि इस समय लोग कमजोर होगें, इसलिए वे नगर
को गए और उन्होंने सभी पुरुषों को मार डाला। 26दीना
के भाई शिमोन और लेवी ने हमोर और उसके पुत्र
शकेम को मार डाला। उन्होंने दीना को शकेम के घर
से निकाल लिया और वे चले आए। 27याकूब के अन्य
पुत्र नगर में गए और उन्होंने वहाँ जो कुछ था, लूट
लिया। शकेम ने उनकी बहन के साथ जो कुछ किया
था, उससे वे तब तक क्रुद्ध थे। 28इसलिए भाईयों ने
उनके सभी जानवर ले लिए। उन्होंने उनके गधे तथा
नगर और खेतों में अन्य जो कुछ था सब से लिया।
29भाईयों ने उन लोगों का सब कुछ ले लिया। भाईयों ने
उनकी पत्नियों और बच्चों तक को ले लिया।

30किन्तु याकूब ने शिमोन और लेवी से कहा, "तुम
लोगों ने मुझे बहुत कष्ट दिया है और इस प्रदेश के
निवासियों के मन में घृणा उत्पन्न करायी। सभी कनानी
और परिज्जी लोग हमारे विरुद्ध हो जाएंगे। यहाँ हम बहुत
थोड़े हैं। यदि इस प्रदेश के लोग हम लोगों के विरुद्ध
लड़ने के लिए इकट्ठे होंगे तो मैं नष्ट हो जाऊँगा और
हमारे साथ हमारे सभी लोग नष्ट हो जाएंगे।"

31किन्तु भाईयों ने उत्तर दिया, "क्या हम लोग उन
लोगों को अपनी बहन के साथ वेश्या जैसा व्यवहार
करने दें? नहीं हमारी बहन के साथ वैसा व्यवहार
करने वाले लोग बुरे थे।"

याकूब बेतेल में

35 परमेश्वर ने याकूब से कहा, "बेतेल नगर को
जाओ, वहाँ बस जाओ और वहाँ उपासना की
वेदी बनाओ। परमेश्वर को याद करो, वह जो तुम्हारे
सामने प्रकट हुआ था जब तुम अपने भाई एसाव से बच
कर भाग रहे थे। उस परमेश्वर की उपासना के लिए
वहाँ वेदी बनाओ।"

2इसलिए याकूब ने अपने परिवार और अपने सभी
सेवकों से कहा, "लकड़ी और धातु के बने जो झूठे
देवता तुम लोगों के पास हैं उन्हें नष्ट कर दो। अपने
को पवित्र करो। साफ कपड़े पहनो। 3हम लोग इस
जगह को छोड़ेंगे और बेतेल को जाएंगे। उस जगह में
अपने परमेश्वर के लिए एक वेदी बनायेंगे। यह वही
परमेश्वर है जो मेरे कष्टों के समय में मेरी सहायता
की और जहाँ कहीं मैं गया वह मेरे साथ रहा।"

4इसलिए लोगों के पास जो झूठे देवता थे, उन सभी
को उन्होंने याकूब को दे दिया। उन्होंने अपने कानों में
पहनी हुई सभी बालियों को भी याकूब को दे दिया।
याकूब ने शकेम नाम के शहर के समीप एक सिन्दूर
के पेड़ के नीचे इन सभी चीज़ों को गाड़ दिया। 5याकूब
और उसके पुत्रों ने वह जगह छोड़ दी। उस क्षेत्र के लोग
उनका पीछा करना चाहते थे और उन्हें मार डालना
चाहते थे। किन्तु वे बहुत डर गए और उन्होंने याकूब
का पीछा नहीं किया। 6इसलिए याकूब और उसके लोग
लूज पहुँचे। अब लूज को बेतेल कहते हैं। यह कनान
प्रदेश में है। 7याकूब ने वहाँ एक वेदी बनायी। याकूब ने
उस जगह का नाम "एलबेतेल" रखा। याकूब ने इस
नाम को इसलिए चुना कि जब वह अपने भाई के यहाँ
से भाग रहा था, तब पहली बार परमेश्वर यहीं प्रकट
हुआ था। 8रिबका की धाय दबोरा यहाँ मरी थी, उन्होंने
बेतेल में सिन्दूर के पेड़ के नीचे उसे दफनाया। उन्होंने
उस स्थान का नाम अल्लोन बक्कूत रखा।

याकूब का नया नाम

9जब याकूब पद्दनराम से लौटा तब परमेश्वर फिर
उसके सामने प्रकट हुआ। परमेश्वर ने याकूब को
आशीर्वाद दिया। 10परमेश्वर ने याकूब से कहा, "तुम्हारा
नाम याकूब है। किन्तु मैं उस नाम को बदलूँगा। अब
तुम याकूब नहीं कहलाओगे। तुम्हारा नया नाम इस्राएल
होगा।" इसलिए इसके बाद याकूब का नाम इस्राएल
हुआ।

11परमेश्वर ने उससे कहा, "मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर
हूँ और तुमको मैं यह आशीर्वाद देता हूँ तुम्हारे बहुत
बच्चे हों और तुम एक महान राष्ट्र बन जाओ। तुम ऐसा
राष्ट्र बनोगे जिसका सम्मान अन्य सभी राष्ट्र करेंगे।
अन्य राष्ट्र और राजा तुमसे पैदा होंगे। 12मैंने इब्राहीम
और इसहाक को कुछ विशेष प्रदेश दिए थे। अब वह
प्रदेश मैं तुमको देता हूँ।" 13तब परमेश्वर ने वह जगह
छोड़ दी। 14-15याकूब ने इस स्थान पर एक विशेष
चट्टान खड़ी की। याकूब ने उस पर दाखरस और तेल
चढ़ाकर उस चट्टान को पवित्र बनाया। यह एक विशेष
स्थान था क्योंकि परमेश्वर ने वहाँ याकूब से बात की
थी और याकूब ने उस स्थान का नाम बेतेल रखा।

राहेल जन्म देते समय मरी

16याकूब और उसके दल ने बेतेल को छोड़ा। एप्राता
(बेतलेहेम) आने से ठीक पहले राहेल अपने बच्चे को
जन्म देने लगी। 17लेकिन राहेल को इस जन्म से बहुत
कष्ट होने लगा। उसे बहुत दर्द हो रहा था। राहेल की
धाय ने उसे देखा और कहा, "राहेल, डरो नहीं। तुम
एक और पुत्र को जन्म दे रही हो।"

18पुत्र को जन्म देते समय राहेल मर गई। मरने के
पहले राहेल ने बच्चे का नाम बेनोनी रखा। किन्तु
याकूब ने उसका नाम बिन्यामीन रखा। 19एप्राता को
आनेवाली सड़क पर राहेल को दफनाया गया। (एप्राता
बेतलेहेम है) 20और याकूब ने राहेल के सम्मान में
उसकी कब्र पर एक विशेष चट्टान रखी। वह विशेष
चट्टान वहाँ आज तक है। 21तब इस्राएल (याकूब) ने
अपनी यात्रा जारी रखी। उसने एदेर स्तम्भ के ठीक
दक्षिण में अपना डेरा डाला।

22इस्राएल वहाँ थोड़े समय ठहरा। जब वह वहाँ था
तब रूबेन इस्राएल की दासी बिल्हा के साथ सोया।
इस्राएल ने इस बारे में सुना और बहुत क्रुद्ध हुआ।

इस्राएल का परिवार

याकूब (इस्राएल) के बारह पुत्र थे।

23उसकी पत्नी लिआ से उसके छ: पुत्र थे: रूबेन,
शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, जबूलून।

24उसकी पत्नी राहेल से उसके दो पुत्र थे: यूसुफ,
बिन्यामीन।

25राहेल की दासी बिल्हा से उसके दो पुत्र थे: दान,
नप्ताली।

26और लिआ की दासी जिल्पा से उसके दो पुत्र थे:
गाद, आशेर।

ये याकूब (इस्राएल) के पुत्र हैं जो पद्दनराम में पैदा हुए
थे।

27मम्रे के किर्यतर्बा (हेब्रोन) में याकूब अपने पिता
इसहाक के पास गया। यह वही जगह है जहाँ इब्राहीम
और इसहाक रह चुके थे। 28इसहाक एक सौ अस्सी
वर्ष का था। 29इसहाक बहुत वर्षों तक जीवित रहा। जब
वह मरा, वह बहुत बुढ़ा था। उसके पुत्र एसाव और
याकूब ने उसे वहीं दफनाया जहाँ उसका पिता को
दफनाया गया था।

एसाव का परिवार

36 एसाव ने कनान देश की पुत्रियों से विवाह
किया। यह एसाव के परिवार की एक सूची
है। (जो एदोम भी कहा जाता है।) 2एसाव की पत्नियाँ
थी: आदा, हित्ती एलोन की पुत्री। ओहोलीबामा हिव्वी
सिबोन की नतिनी और अना की पुत्री। 3बासमत इश्माएल
की पुत्री और नबायोत की बहन। 4आदा ने एसाव को
एक पुत्र एलीपज दिया। बासमत को रूएल नाम पुत्र
हुआ। 5ओहोलीबामा ने एसाव को तीन पुत्र दिए यूश,
यालाम और कोरह ये एसाव के पुत्र थे। ये कनान प्रदेश
में पैदा हुए थे।

6-8याकूब और एसाव के परिवार अब बहुत बढ़ गये
और कनान में इस बड़े परिवार का खान–पान जुटा
पाना कठिन हो गया। इसलिए एसाव ने कनान छोड़
दिया और अपने भाई याकूब से दूर दूसरे प्रदेश में चला
गया। एसाव अपनी सभी चीज़ों को अपने साथ लाया।
कनान में रहते हुए उसने ये चीज़ें प्राप्त की थीं। इसलिए
एसाव अपने साथ अपनी पत्नियों, पुत्रों, पुत्रियों सभी
सेवकों, पशु, और अन्य जानवरों को लाया। एसाव और
याकूब के परिवार इतने बड़े हो रहे थे कि उनका एक
स्थान पर रहना कठिन था। वह भूमि दोनों परिवारों के
पोषण के लिए काफी बड़ी नहीं थी। उनके पास अत्याधिक
पशु थे। एसाव पहाड़ी प्रदेश सेईर की ओर बढ़ा। (एसाव
का नाम एदोम भी है।)

9एसाव एदोम के लोगों का आदि पिता है। सेईर एदोम
के पहाड़ी प्रदेश में रहने वाले एसाव के परिवार के ये
नाम हैं।

10एसाव के पुत्र थे: एलीपज, आदा और एसाव का
पुत्र। रूएल बासमत और एसाव का पुत्र।

11एलीपज के पाँच पुत्र थे: तेमान, ओमार, सपो,
गाताम, कनज।

12एलीपज की एक तिम्ना नामक दासी भी थी। तिम्ना
और एलीपज ने अमालेक को जन्म दिया।

13रुएल के चार पुत्र थे : नहत, जेरह, शम्मा, मिज्जा।
ये एसाव की पत्नी बासमत से उसके पौत्र हैं।
14एसाव की तीसरी पत्नी अना की पुत्री ओहोलीबामा
थी। अना सिबोन का पुत्र था। एसाव और ओहोलीबामा
के पुत्र थे: यूश, यालाम, कोरह।
15एसाव से चलने वाले वंश ये ही हैं। एसाव का पहला
पुत्र एलीपज था। एलीपज से आए: तेमान, ओमार, सपो,
कनज, 16कोरह, गाताम, अमालेक। ये सभी परिवार
एसाव की पत्नी आदा से आए।
17एसाव का पुत्र रुएल इन परिवारों का आदि पिता
था: नहत, जेरह, शम्मा, मिज्जा। ये सभी परिवार एसाव
की पत्नी बासमत से आए।
18अना की पुत्री एसाव की पत्नी ओहोलीबामा ने
यूश, यालाम और कोरह को जन्म दिया। ये तीनों
अपने–अपने परिवारों के पिता थे। 19ये सभी परिवार
एसाव से चले।
20एसाव के पहले एदोम में सईर नामक एक होरी
व्यक्ति रहता था। सेईर के पुत्र ये हैं: लोतान, शोबाल,
शिबोन, अना 21दीशोन, एसेर, दिशान। ये पुत्र अपने
परिवारों के मुखिया थे।
22लोतान, होरी, हेमाम का पिता था। (तिम्ना लोतान
की बहन थी।) 23शोबल, आल्वान, मानहत एबल शपो,
ओनाम का पिता था।
24शिबोन के दो पुत्र थे: अय्या, अना, (अना वह
व्यक्ति है जिसने अपने पिता के गधों की देखभाल करते
समय पहाड़ों में गर्म पानी का सोता ढूँढा।)
25अना, दीशोन और ओहोलीबामा का पिता था।
26दीशोन के चार पुत्र थे: हेमदान, एश्बान, यित्रान,
करान।
27एसेर के तीन पुत्र थे: बिल्हान, जावान, अकान।
28दीशान के दो पुत्र थे: ऊस और अरान।
29ये होरी परिवारों के मुखियाओं के नाम हैं। लोतान,
शोबाल, शिबोन, अना। 30दिशोन, एसेर, दीशोन। ये व्यक्ति
उन परिवारों के मुखिया थे जो सेईर (एदोम) प्रदेश में
रहते थे। 31उस समय एदोम में कई राजा थे। इस्राएल में
राजाओं के होने के बहुत पहले ही एदोम में राजा थे।
32बोर का पुत्र बेला एदोम में शासन करने वाला राजा
था। वह दिन्हाबा नगर पर शासन करता था। 33जब
बेला मरा तो योबाब राजा हुआ। योबाब बोम्रा से जेरह
का पुत्र था। 34जब योबाब मरा, हूशाम ने शासन किया।
हूशाम तेमानी लोगों के देश का था। 35जब हूशाम मरा,
हदद ने उस क्षेत्र पर शासन किया। हदद बदद का पुत्र
था। (हदद वह व्यक्ति था जिसने मिद्यानी लोगों को
मोआब देश में हराया था।) हदद अबीत नगर का था।
36जब हदद मरा, सम्ला ने उस प्रदेश पर शासन किया।
सम्ला मस्रेका का था। 37जब सम्ला मरा, शाऊल ने उस
क्षेत्र पर शासन किया। शाऊल फरात नदी के किनारे
रहोबोत का था। 38जब शाऊल मरा, बाल्हानान ने उस
देश पर शासन किया। बाल्हानान अकबोर का पुत्र था।
39जब बाल्हानान मरा, हदर ने उस देश पर शासन
किया। हदर पाऊ नगर का था। मत्रेद की पुत्री हदर की
पत्नी का नाम महेतबेल था। मत्रेद का पिता मेजाहब
था।
40-43एदोमी परिवारों, तिम्ना, अल्बा, यतेत,
ओहोलीबामा, एला, पीपोन, कनज, तेमान, मिबसार,
मग्दीएल और ईराम आदि का पिता एसाव था। हर एक
परिवार एक ऐसे प्रदेश में रहता था जिसका नाम वही
था जो उनका पारिवारिक नाम था।

स्वप्नदृष्टा यूसुफ

37 याकूब ठहर गया और कनान प्रदेश में रहने
लगा। यह वही प्रदेश है जहाँ उसका पिता
आकर बस गया था। 2याकूब के परिवार की यही कथा
है। यूसुफ एक सत्रह वर्ष का युवक था। उसका काम
भेड़ बकरियों कि देख भाल करना था। यूसुफ यह
काम अपने भाईयों यानि कि बिल्हा और जिल्पा के
पुत्रों के साथ करता था। (बिल्हा और जिल्पा उस के
पिता की पत्नियाँ थी।) 3यूसुफ अपने पिता को अपने
भाईयों की बुरी बातें बताया करता था। यूसुफ उस समय
उत्पन्न हुआ जब उसका पिता इस्राएल (याकूब) बहुत
बुढ़ा था। इसलिए इस्राएल (याकूब), यूसुफ को अपने
अन्य पुत्रों से अधिक प्यार करता था। याकूब ने अपने
पुत्र को एक विशेष अंगरखा दिया। यह अंगरखा लम्बा
और बहुत सुन्दर था। 4यूसुफ के भाईयों ने देखा कि
उनका पिता उनकी अपेक्षा यूसुफ को अधिक प्यार
करता है। वे इसी कारण अपने भाई से घृणा करते थे।
वे यूसुफ से अच्छी तरह बात नहीं करते थे।
5एक बार यूसुफ ने एक विशेष सपना देखा। बाद में
यूसुफ ने अपने इस सपने के बारे मे अपने भाईयों को
बताया। इसके बाद उसके भाई पहले से भी अधिक
उससे घृणा करने लगे।
6यूसुफ ने कहा, "मैंने एक सपना देखा। 7हम सभी
खेत में काम कर रहे थे। हम लोग गेहूँ को एक साथ
गट्ठे बाँध रहे थे। मेरा गट्ठा खड़ा हुआ और तुम लोगों
के गट्ठों ने मेरे गट्ठें के चारों ओर घेरा बनाया। तब
तुम्हारे सभी गट्ठों ने मेरे गट्ठे को झुककर प्रणाम
किया।"
8उसके भाईयों ने कहा, "क्या, तुम सोचते हो कि
इसका अर्थ है कि तुम राजा बनोगे और हम लोगों पर
शासन करोगे?" उसके भाईयों ने यूसुफ से अब और
अधिक घृणा करनी आरम्भ की क्योंकि उसने उनके
बारे में सपना देखा था।
9तब यूसुफ ने दूसरा सपना देखा। यूसुफ ने अपने
भाईयों से इस सपने के बारे में बताया। यूसुफ ने कहा,

"मैंने दूसरा सपना देखा है। मैंने सूरज, चाँद और ग्यारह
नक्षत्रों को अपने को प्रणाम करते देखा।"
10यूसुफ ने अपने पिता को भी इस सपने के बारे में
बताया। किन्तु उसके पिता ने इसकी आलोचना की।
उसके पिता ने कहा, "यह किस प्रकार का सपना है?
क्या तुम्हें विश्वास है कि तुम्हारी माँ, तुम्हारे भाई और
हम तुमको प्रणाम करेंगे?" 11यूसुफ के भाई उससे
लगातार इर्षा करते रहे। किन्तु यूसुफ के पिता ने इन
सभी बातों के बारे में बहुत गहराई से विचार किया और
सोचा कि उनका अर्थ क्या होगा? 12एक दिन यूसुफ के
भाई अपने पिता की भेड़ों की देखभाल के लिए शकेम
गए। 13याकूब ने यूसुफ से कहा, "शकेम जाओ। तुम्हारे
भाई मेरी भेड़ों के साथ वहाँ हैं।"
यूसुफ ने उत्तर दिया, "मैं जाऊँगा।"
14यूसुफ के पिता ने कहा, "जाओ और देखो कि
तुम्हारे भाई सुरक्षित हैं। लौटकर आओ और बताओ
कि क्या मेरी भेड़ें ठीक हैं?" इस प्रकार यूसुफ के पिता
ने उसे हेब्रोन की घाटी से शकेम को भेजा।
15शकेम में यूसुफ खो गया। एक व्यक्ति ने उसे खेतों
में भटकते हुए पाया। उस व्यक्ति ने कहा, "तुम क्या
खोज रहे हो?" 16यूसुफ ने उत्तर दिया, "मैं अपने भाईयों
को खोज रहा हूँ। क्या तुम बता सकते हो कि वे अपनी
भेड़ों के साथ कहाँ हैं?"
17व्यक्ति ने उत्तर दिया, "वे पहले ही चले गए हैं। मैंने
उन्हें कहते हुए सुना कि वे दोतान को जा रहें हैं।"
इसलिए यूसुफ अपने भाईयों के पीछे गया और उसने
उन्हें दोतान में पाया।

यूसुफ दासता के लिए बेचा गया

18यूसुफ के भाईयों ने बहुत दूर से उसे आते देखा।
उन्होंने उसे मार डालने की योजना बनाने का निश्चय
किया। 19भाईयों ने एक दूसरे से कहा, "यह सपना
देखने वाला यूसुफ आ रहा है। 20मौका मिले हम लोग
उसे मार डाले हम उसका शरीर सूखे कुओं में से किसी
एक में फेंक सकते हैं। हम अपने पिता से कह सकते हैं
कि एक जंगली जानवर ने उसे मार डाला। तब हम लोग
उसे दिखाएँगे कि उसके सपने व्यर्थ हैं।"
21किन्तु रूबेन यूसुफ को बचाना चाहता था। रूबेन
ने कहा, "हम लोग उसे मारे नहीं। 22हम लोग उसे चोट
पहुँचाए बिना एक कुएँ में डाल सकते हैं।" रूबेन ने
यूसुफ को बचाने और उसके पिता के पास भेजने की
योजना बनाई। 23यूसुफ अपने भाईयों के पास आया।
उन्होंने उस पर आक्रमण किया और उसके लम्बे
सुन्दर अंगरखा को फाड़ डाला। 24तब उन्होंने उसे खाली
सूखे कुएँ में फेंक दिया।
25यूसुफ कुएँ में था, उसके भाई भोजन करने बैठे।
तब उन्होंने नजर उठाई और व्यापारियों का एक दल
को देखा। जो गिलाद से मिस्र की यात्रा पर थे। उनके
ऊँट कई प्रकार के मसाले और धन ले जा रहे थे।
26इसलिए यहूदा ने अपने भाईयों से कहा, अगर हम
लोग अपने भाई को मार देंगे और उसकी मृत्यु को
छिपाएंगे तो उससे हमें क्या लाभ होगा? 27हम लोगों को
अधिक लाभ तब होगा जब हम उसे इन व्यापारियों के
हाथ बेच देंगे। अन्य भाई मान गए। 28जब मिद्यानी
व्यापारी पास आए, भाईयों ने यूसुफ को कुएँ से बाहर
निकाला। उन्होंने बीस चाँदी के टुकड़ों में उसे व्यापारियों
को बेच दिया। व्यापारी उसे मिस्र ले गए।
29इस पूरे समय रूबेन भाईयों के साथ वहाँ नहीं था।
वह नहीं जानता था कि उन्होंने यूसुफ को बेच दिया
था। जब रूबेन कुएँ पर लौटकर आया तो उसने देखा
कि यूसुफ वहाँ नहीं है। रूबेन बहुत अधिक दुःखी
हुआ। उसने अपने कपड़ों को फाड़ा। 30रूबेन भाईयों
के पास गया और उसने उनसे कहा, "लड़का कुएँ पर
नहीं है। मैं क्या करुँ?" 31भाईयों ने एक बकरी को
मारा और उसके खून को यूसुफ के सुन्दर अंगरखे पर
डाला। 32तब भाईयों ने उस अंगरखे को अपने पिता को
दिखाया और भाईयों ने कहा, "हमे यह अंगरखा मिला
है, क्या यह यूसुफ का अंगरखा है?"
33पिता ने अंगरखे को देखा और पहचाना कि यह
यूसुफ का है। पिता ने कहा, "हाँ, यह उसी का है।
संभव है उसे किसी जंगली जानवर ने मार डाला हो।
मेरे पुत्र यूसुफ को कोई जंगली जानवर खा गया।"
34याकूब अपने पुत्र के लिए इतना दुःखी हुआ कि उसने
अपने कपड़े फाड़ डाले। तब याकूब ने विशेष वस्त्र
पहने जो उसके शोक के प्रतीक थे। याकूब लम्बे समय
तक अपने पुत्र के शोक में पड़ा रहा। 35याकूब के सभी
पुत्रों, पुत्रियों ने उसे धीरज बँधाने का प्रयत्न किया।
किन्तु याकूब कभी धीरज न धर सका। याकूब ने
कहा, "मैं मरने के दिन तक अपने पुत्र यूसुफ के शोक
में डूबा रहूँगा।"
36उन मिद्यानी व्यापारियों ने जिन्होनें यूसुफ को
खरीदा था, बाद में उसे मिस्र में बेच दिया। उन्होंने
फ़िरौन के अंगरक्षकों के सेनापति पोतीपर के हाथ
उसे बेचा।

यहूदा और तामार

38 उन्हीं दिनों यहूदा ने अपने भाइयों को छोड़
दिया और हीरा नामक व्यक्ति के साथ रहने
चला गया। हीरा अदुल्लाम नगर का था। 2यहूदा एक
कनानी स्त्री से वहाँ मिला और उसने उससे विवाह कर
लिया। स्त्री के पिता का नाम शूआ था। 3कनानी स्त्री ने
एक पुत्र को जन्म दिया। उन्होंने उसका नाम एर रखा।
4बाद में उसने दूसरे पुत्र को जन्म दिया। उन्होंने लड़के
का नाम ओनान रखा। 5बाद में उसे अन्य पुत्र शेला

नाम का हुआ। यहूदा तीसरे बच्चे के जन्म के समय कजीब में रहता था।

6यहूदा ने अपने पहले पुत्र एर के लिए पत्नी के रूप में एक स्त्री को चुना। स्त्री का नाम तामार था। 7किन्तु एर ने बहुत सी बुरी बातें की। यहोवा उससे प्रसन्न नहीं था। इसलिए यहोवा ने उसे मार डाला। 8तब यहूदा ने एर के भाई ओनान से कहा, "जाओ और मृत भाई की पत्नी के साथ सोओ।"* तुम उसके पति के समान बनो। अगर बच्चे होंगे तो वे तुम्हारे भाई एर के होंगे।"

9ओनान जानता था कि इस जोड़े से पैदा बच्चे उसके नही होंगे। ओनान ने तामार के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। किन्तु उसने उसे अपना गर्भधारण करने नहीं दिया। 10इससे यहोवा क्रुद्ध हुआ। इसलिए यहोवा ने ओनान को भी मार डाला। 11तब यहूदा ने अपनी पुत्रवधू तामार से कहा, "अपने पिता के घर लौट जाओ। वहीं रहो और तब तक विवाह न करो जब तक मेरा छोटा पुत्र शेला बड़ा न हो जाए।" यहूदा को डर था कि शेला भी अपने भाईयों की तरह मार डाला जाएगा। तामार अपने पिता के घर लौट गई।

12बाद में शुआ की पुत्री यहूदा की पत्नी मर गई। यहूदा अपने शोक के समय के बाद अदुल्लाम के अपने मित्र हीरा के साथ तिम्नाथ गया। यहूदा अपनी भेड़ों का ऊन काटने तिम्नाथ गया। 13तामार को यह मालुम हुआ कि उसके ससुर यहूदा अपनी भेड़ों का ऊन काटने तिम्नाथ को जा रहा है। 14तामार सदा ऐसे वस्त्र पहनती थी जिससे मालुम हो कि वह विधवा है। इसलिए उसने कुछ अन्य वस्त्र पहने और मुँह को पर्दे में ढक लिया। तब वह तिम्नाथ नगर के पास एनैम को जाने वाली सड़क के किनारे बैठ गई। तामार जानती थी कि यहूदा का छोटा पुत्र शेला अब बड़ा हो गया है। लेकिन यहूदा उससे उसके विवाह की कोई योजना नहीं बना रहा था।

15यहूदा ने उसी सड़क से यात्रा की। उसने उसे देखा, किन्तु सोचा कि वह वेश्या है। (उसका मुख वेश्या की तरह ढका हुआ था।)

16इसलिए यहूदा उसके पास गया और बोला, "मुझे अपने साथ शारीरिक सम्बन्ध करने दो।" (यहूदा नहीं जानता था कि वह उसकी पुत्र वधू तामार है।) तामार बोली, "तुम मुझे कितना दोगे?"

17यहूदा ने उत्तर दिया, "मैं अपनी रेवड़ से तुम्हें एक नयी बकरी भेजूँगा।" उसने उत्तर दिया, "मैं इसे स्वीकार करती हूँ किन्तु पहले तुम मुझे कुछ रखने को दो जब तक तुम बकरी नहीं भेजते।"

18यहूदा ने पूछा, "मैं बकरी भेजूँगा इसके प्रमाण के लिए तुम मुझ से क्या लेना चाहोगी?"

तामार ने उत्तर दिया, "मुझे विशेष मुहर और इसकी रस्सी,* जो तुम अपने पत्रों के लिए प्रयोग करते हो, दो और मुझे अपने टहलने की छड़ी दो।" यहूदा ने ये चीजें उसे दे दी। तब यहूदा और तामार ने शारीरिक सम्बन्ध किया और तामार गर्भवती हो गई। 19तामार घर गई और मुख को ढकने वाले पर्दे को हटा दिया। तब उसने फिर अपने को विधवा बताने वाले विशेष वस्त्र पहन लिए।

20यहूदा ने अपने मित्र हीरा को तामार के घर उसको वचन दी हुई बकरी देने के लिए भेजा। यहूदा ने हीरा से विशेष मुहर तथा टहलने की छड़ी भी उससे लेने के लिए कहा। किन्तु हीरा उसका पता न लगा सका। 21हीरा ने एनैम नगर के कुछ लोगों से पूछा, "सड़क के किनारे जो वेश्या थी वह कहाँ है?"

लोगों ने कहा, "यहाँ कभी कोई वेश्या नहीं थी।"

22इसलिए यहूदा का मित्र यहूदा के पास लौट गया और उससे कहा, "मैं उस स्त्री का पता नहीं लगा सका। जो लोग उस स्थान पर रहते हैं उन्होंने बताया कि वहाँ कभी कोई वेश्या नहीं थी।"

23इसलिए यहूदा ने कहा, "उसे वे चीज़ें रखने दो। मैं नहीं चाहता कि लोग हम पर हँसे। मैंने उसे बकरी देनी चाही, किन्तु हम उसका पता नहीं लगा सके यही पर्याप्त है।"

तामार गर्भवती है

24लगभग तीन महीने बाद किसी ने यहूदा से कहा, "तुम्हारी पुत्रवधु तामार ने वेश्या की तरह पाप किया है और अब वह गर्भवती है।"

तब यहूदा ने कहा, "उसे बाहर निकालो और मार डालो। उसके शरीर को जला दो।"

25उसके आदमी तामार को मारने गए। किन्तु तामार ने अपने ससुर के पास सन्देश भेजा। तामार ने कहा, "जिस पुरुष ने मुझे गर्भवती किया है उसी की ये चीज़ें हैं। तब उसने उसे विशेष मुहर बाजूबन्द और टहलने की छड़ी दिखाई। इन चीज़ों को देखो। ये किसकी है? यह किस की विशेष मुहर बाजूबन्द और रस्सी है? किसकी यह टहलने की छड़ी है?"

26यहूदा ने उन चीज़ों को पहचाना और कहा, "यह ठीक कहती है। मैं गलती पर था। मैंने अपने वचन के अनुसार अपने पुत्र शेला को इसे नहीं दिया" और यहूदा उसके साथ फिर नहीं सोया।

जाओं ... सोओ इस्राएल में यह रिवाज था कि यदि कोई व्यक्ति बिना सन्तान के मर जाता था तो विधवा को भाईयों में से कोई एक रख लेता था। यदि कोई बच्चा पैदा होता था तो वह मृत व्यक्ति का बच्चा समझा जाता था।

विशेष ... रस्सी मुहर रबर की मुहर की तरह प्रयुक्त होती थी। लोग वाचा लिखते थे, उसकी तय करते थे, उसे रस्सी से बाँधते थे, रस्सी पर मोम या मिट्टी लगाते थे और हस्ताक्षर के रूप में मुहर लगाते थे।

27तामार के बच्चा देने का समय आया और उन्होंने
देखा कि वह जुड़वे बच्चों को जन्म देगी। 28जिस समय
वह जन्म दे रही थी एक बच्चे ने बाहर हाथ निकाला।
धाय ने हाथ पर लाल धागा बाँधा और कहा, "यह बच्चा
पहले पैदा हुआ।" 29लेकिन उस बच्चे ने अपना हाथ
वापस भीतर खींच लिया। तब दूसरा बच्चा पहले पैदा
हुआ। तब धाय ने कहा, "तुम ही पहले बाहर निकलने
में समर्थ हुए।" इसलिए उन्होंने उसका नाम पेरेस रखा।
(इस नाम का अर्थ "खुल पड़ना" या "फट पड़ना" है।)
30इसके बाद दूसरा बच्चा उत्पन्न हुआ। यह बच्चा हाथ
पर लाल धागा था। उन्होंने उसका नाम जेरह रखा।

यूसुफ मिस्री पोतीपर को बेचा गया

39 व्यापारी जिसने यूसुफ को खरीदा वह उसे
मिस्र ले गए। उन्होंने फ़िरौन के अंगरक्षक के
नायक के हाथ उसे बेचा। 2किन्तु यहोवा ने यूसुफ की
सहायता की। यूसुफ एक सफल व्यक्ति बन गया। यूसुफ
अपने मिस्री स्वामी पोतीपर के घर में रहा।

3पोतीपर ने देखा कि यहोवा यूसुफ के साथ है। पोतीपर
ने यह भी देखा कि यहोवा जो कुछ यूसुफ करता है,
उसमें उसे सफल बनाने में सहायक है। 4इसलिए पोतीपर
यूसुफ को पाकर बहुत प्रसन्न था। पोतीपर ने उसे
अपने लिए काम करने तथा घर के प्रबन्ध में सहायता
करने में लगाया। पोतीपर की अपनी हर एक चीज़ का
यूसुफ अधिकारी था। 5जब यूसुफ घर का अधिकारी
बना दिया गया तब यहोवा ने उस घर और पोतीपर की
हर एक चीज़ को आशीर्वाद दिया। यहोवा ने यह यूसुफ
के कारण किया और यहोवा ने पोतीपर के खेतों में
उगने वाली हर चीज़ को आशीर्वाद दिया। 6इसलिए
पोतीपर ने घर की हर चीज़ की जिम्मेदारी यूसुफ को
दी। पोतीपर किसी चीज़ की चिन्ता नहीं करता था वह
जो भोजन करता था एक मात्र उसकी उसे चिन्ता थी।

यूसुफ पोतीपर की पत्नी को मना करता है

यूसुफ बहुत सुन्दर और सुरूप था। 7कुछ समय बाद
यूसुफ के मालिक की पत्नी यूसुफ से प्रेम करने लगी।
एक दिन उसने कहा, "मेरे साथ सोओ।"

8किन्तु यूसुफ ने मना कर दिया। उसने कहा, "मेरा
मालिक घर की अपनी हर चीज़ के लिए मुझ पर
विश्वास करता है। उसने यहाँ की हर एक चीज़ की
जिम्मेवारी मुझे दी है। 9मेरे मालिक ने अपने घर में मुझे
लगभग अपने बराबर मान दिया है। किन्तु मुझे उसकी
पत्नी के साथ नहीं सोना चाहिए। यह अनुचित है। यह
परमेश्वर के विरुद्ध पाप है।"

10वह स्त्री हर दिन यूसुफ से बात करती थी किन्तु
यूसुफ ने उसके साथ सोने से मना कर दिया। 11एक
दिन यूसुफ अपना काम करने घर में गया। उस समय
वह घर में अकेला व्यक्ति था। 12उसके मालिक की
पत्नी ने उसका अंगरखा पकड़ लिया और उससे कहा,
"आओ और मेरे साथ सोओ।" किन्तु यूसुफ घर से
बाहर भाग गया और उसने अपना अंगरखा उसके हाथ
में छोड़ दिया। 13स्त्री ने देखा कि यूसुफ ने अपना
अंगरखा उसके हाथों में छोड़ दिया है और उसने जो
कुछ हुआ उसके बारे में झूठ बोलने का निश्चय किया।
वह बाहर दौड़ी। 14और उसने बाहर के लोगों को
पुकारा। उसने कहा, "देखो, यह हिब्रू दास हम लोगों का
उपहास करने यहाँ आया था। वह अन्दर आया और
मेरे साथ सोने की कोशिश की। किन्तु मैं जोर से
चिल्ला पड़ी। 15मेरी चिल्लाहट ने उसे डरा दिया और
वह भाग गया। किन्तु वह अपना अंगरखा मेरे पास छोड़
गया।" 16इसलिए उसने यूसुफ के मालिक अपने पति
के घर लौटने के समय तक उसके अंगरखे को अपने
पास रखा। 17और उसने अपने पति को वही कहानी
सुनाई। उसने कहा, "जिस हिब्रू दास को तुम यहाँ लाए
उसने मुझ पर हमला करने का प्रयास किया। 18किन्तु
जब वह मेरे पास आया तो मैं चिल्लाई। वह भाग गया,
किन्तु अपना अंगरखा छोड़ गया।"

यूसुफ कारागार में

19यूसुफ के मालिक ने जो उसकी पत्नी ने कहा, उसे
सुना और वह बहुत क्रुद्ध हुआ। 20वहाँ एक कारागार
था जिसमें राजा के शत्रु रखे जाते थे। इसलिए पोतीपर
ने यूसुफ को उसी बंदी खाने में डाल दिया और यूसुफ
वहाँ पड़ा रहा।

21किन्तु यहोवा यूसुफ के साथ था। यहोवा उस पर
कृपा करता रहा। 22कुछ समय बाद कारागार के रक्षकों
का मुखिया युसूफ से स्नेह करने लगा। रक्षकों के
मुखिया ने सभी कैदियों का अधिकारी यूसुफ को बनाया।
यूसुफ उनका मुखिया था, किन्तु काम वही करता था
जो वे करते थे। 23रक्षकों का अधिकारी कारागार की
सभी चीज़ों के लिए यूसुफ पर विश्वास करता था। यह
इसलिए हुआ कि यहोवा यूसुफ के साथ था। यहोवा
यूसुफ को, वह जो कुछ करता था, सफल करने में
सहायता करता था।

यूसुफ दो सपनों की व्याख्या करता है

40 बाद में फ़िरौन के दो नौकरों ने फ़िरौन का
कुछ नुकसान किया। इन नौकरों में से एक
रोटी पकाने वाला तथा दूसरा फ़िरौन को दाखमधु देने
की सेवा करता था। 2फ़िरौन अपने रोटी पकाने वाले
तथा दाखमधु देने वाले नौकर पर क्रुद्ध हुआ। 3इसलिए
फ़िरौन ने उसी कारागार में उन्हें भेजा जिसमें यूसुफ
था। फ़िरौन के अंगरक्षकों का नायक पोतीपर उस
कारागार का अधिकारी था। 4नायक ने दोनों कैदियों

को यूसुफ की देख रेख में रखा। दोनों कुछ समय तक
कारागार में रहे। 5एक रात दोनों कैदियों ने एक सपना
देखा। (दोनों कैदी मिस्र के राजा के रोटी पकानेवाले
तथा दाखमधु देने वाले नौकर थे।) हर एक कैदी के
अपने–अपने सपने थे और हर एक सपने का अपना
अलग अलग अर्थ था। 6यूसुफ अगली सुबह उनके पास
गया। यूसुफ ने देखा कि दोनों व्यक्ति परेशान थे। 7यूसुफ
ने पूछा, "आज तुम लोग इतने परेशान क्यों दिखाई पड़ते
हो?"

8दोनों व्यक्तियों ने उत्तर दिया, "पिछली रात हम लोगों
ने सपना देखा, किन्तु हम लोग नहीं समझते कि सपने
का क्या अर्थ है? कोई व्यक्ति ऐसा नहीं है जो सपनों की
व्याख्या करे या हम लोगों को स्पष्ट बताए।"

यूसुफ ने उनसे कहा, "केवल परमेश्वर ही ऐसा है
जो सपने को समझता और उसकी व्याख्या करता है।
इसलिए मैं निवेदन करता हूँ कि अपने सपने मुझे
बताओ।"

दाखमधु देने वाले नौकर का सपना

9इसलिए दाखमधु देने वाले नौकर ने यूसुफ को
अपना सपना बताया। नौकर ने कहा, "मैंने सपने में
अँगूर की बेल देखी। 10उस अँगूर की बेल की तीन
शाखाएँ थी। मैंने शाखाओं में फूल आते और उन्हें
अँगूर बनते देखा। 11मैं फ़िरौन का प्याला लिए था।
इसलिए मैंने अँगूरों को लिया और प्याले में रस निचोड़ा।
तब मैंने प्याला फ़िरौन को दिया।"

12तब यूसुफ ने कहा, "मैं तुमको सपने की व्याख्या
समझाऊँगा। तीन शाखाओं का अर्थ तीन दिन है। 13तीन
दिन बीतने के पहले फ़िरौन तुमको क्षमा करेगा और
तुम्हें तुम्हारे काम पर लौटने देगा। तुम फ़िरौन के लिए
वही काम करोगे और जो पहले करते थे। 14किन्तु जब
तुम स्वतन्त्र हो जाओगे तो मुझे याद रखना। मेरी सहायता
करना। फिरौन से मेरे बारे में कहना जिससे मैं इस
कारागार से बाहर हो सकूँ। 15मुझे अपने घर से लाया
गया था जो मेरे अपने लोगों हिब्रूओं का देश है। मैंने
कोई अपराध नहीं किया है। इसलिए मुझे कारागार में
नहीं होना चाहिए।"

रोटी बनाने वाले का सपना

16रोटी बनाने वाले ने देखा कि दूसरे नौकर का
सपना अच्छा था। इसलिए रोटी बनाने वाले ने यूसुफ से
कहा, "मैंने भी सपना देखा। मैंने देखा कि मेरे सिर पर
तीन रोटियों की टोकरियाँ हैं। 17सबसे ऊपर की टोकरी
में हर प्रकार के पके भोजन थे। यह भोजन राजा के
लिए था। किन्तु इस भोजन को चिड़ियाँ खा रही थीं।"

18यूसुफ ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हें बताऊँगा कि सपने
का क्या अर्थ है? तीन टोकरियों का अर्थ तीन दिन है।
19तीन दिन बीतने के पहले राजा तुमको इस जेल से
बाहर निकालेगा। तब राजा तुम्हारा सिर काट डालेगा।
वह तुम्हारे शरीर को एक खम्भे पर लटकाएगा और
चिड़ियाँ तुम्हारे शरीर को खाएंगी।"

यूसुफ को भुला दिया गया

20तीन दिन बाद फ़िरौन का जन्म दिन था। फ़िरौन ने
अपने सभी नौकरों को दावत दी। दावत के समय
फ़िरौन ने दाखमधु देने वाले तथा रोटी पकाने वाले
नौकरों को कारागार से बाहर आने दिया। 21फ़िरौन ने
दाखमधु देने वाले नौकर को स्वतन्त्र कर दिया। फ़िरौन
ने उसे नौकरी पर लौटा लिया और दाखमधु देने वाले
नौकर ने फ़िरौन के हाथ में एक दाखमधु का प्याला
दिया। 22लेकिन फ़िरौन ने रोटी बनाने वाले को मार
डाला। सभी बातें जैसे यूसुफ ने होनी बताई थी वैसे ही
हुई। 23किन्तु दाखमधु देने वाले नौकर को यूसुफ की
सहायता करना याद नहीं रहा। उसने यूसुफ के बारे में
फ़िरौन से कुछ नहीं कहा। दाखमधु देने वाला नौकर
यूसुफ के बारे में भूल गया।

फ़िरौन के सपने

41 दो वर्ष बाद फ़िरौन ने सपना देखा। फ़िरौन ने
सपने में देखा कि वह नील नदी के किनारे
खड़ा है। 2तब फ़िरौन ने सपने में नदी से सात गायों को
बाहर आते देखा। गायें मोटी और सुन्दर थीं। गायें वहाँ
खड़ी थी और घास पर चर रही थीं। 3तब सात अन्य
गायें नदी से बाहर आई, और नदी के किनारे मोटी
गायों के पास खड़ी हो गई। किन्तु ये गायें दुबली और
भद्दी थी। 4ये सातों दुबली गायें, सुन्दर मोटी सात गायों
को खा गई। तब फ़िरौन जाग उठा।

5फ़िरौन फिर सोया और दूसरी बार सपना देखा।
उसने सपने में अनाज की सात बालें* एक अनाज के
पीछे उगी हुई देखीं। अनाज की बालें मोटी और अच्छी
थी। 6तब उसने उसी अनाज के पीछे सात अन्न बालें
उगी देखीं। अनाज की ये बालें पतली और गर्म हवा से
नष्ट हो गई थीं।

7तब सात पतली बालों ने सात मोटी और अच्छी बालों
को खा लिया। फ़िरौन फिर जाग उठा और उसने
समझा कि यह केवल सपना ही है। 8अगली सुबह
फ़िरौन इन सपनों के बारे में परेशान था। इसलिए उसने
मिस्र के सभी जादूगरों को और सभी गुणी लोगों को
बुलाया। फ़िरौन ने उनको सपना बताया। किन्तु उन
लोगों में से कोई भी सपने को स्पष्ट या उसकी व्याख्या
न कर सका।

बालें "अन्नों के अग्र भाग।"

नौकर फ़िरौन को यूसुफ के बारे में बताता है

9तब दाखमधु देने वाले नौकर को यूसुफ याद आ
गया। नौकर ने फ़िरौन से कहा, "मेरे साथ जो कुछ
घटा वह मुझे याद आ रहा है। 10आप मुझ पर और एक
दूसरे नौकर पर क्रुद्ध थे और आपने हम दोनों को
कारागार में डाल दिया था। 11कारागार में एक ही रात
हम दोनों ने सपने देखे। हर सपना अलग अर्थ रखता
था। 12एक हिब्रू युवक हम लोगों के साथ कारागार में
था। वह अंगरक्षको के नायक का नौकर था। हम
लोगों ने अपने सपने उसको बताए, और उसने सपने
की व्याख्या हम लोगों को समझाई। उसने हर सपने का
अर्थ हम लोगों को बताया। 13जो अर्थ उसने बताए वे
ठीक निकले। उसने बताया कि मैं स्वतन्त्र होऊँगा और
अपनी पुरानी नौकरी फिर पाऊँगा और यही हुआ।
उसने कहा कि रोटी पकाने वाला मरेगा और वही
हुआ।"

यूसुफ सपनें की व्याख्या करने के लिए बुलाया गया

14इसलिए फ़िरौन ने यूसुफ को कारागार से बुलाया।
रक्षक जल्दी से यूसुफ को कारागार से बाहर लाए।
यूसुफ ने बाल कटाए और साफ कपड़े पहने। तब वह
गया और फ़िरौन के सामने खड़ा हुआ। 15तब फ़िरौन
ने यूसुफ से कहा, "मैंने एक सपना देखा है। किन्तु कोई
ऐसा नहीं है जो सपने की व्याख्या मुझको समझा सके।
मैंने सुना है कि जब कोई सपने के बारे में तुमसे कहता
है तब तुम सपनों की व्याख्या और उन्हें स्पष्ट कर
सकते हो।"

16यूसुफ ने उत्तर दिया, "मेरी अपनी बुद्धि नहीं है कि
मैं सपनों को समझ सकूँ केवल परमेश्वर ही है जो ऐसी
शक्ति रखता है और फ़िरौन के लिए परमेश्वर ही यह
करेगा।"

17तब फ़िरौन ने कहा, "अपने सपने में, मैं नील नदी
के किनारे खड़ा था। 18मैंने सात गायों को नदी से बाहर
आते देखा और घास चरते देखा। ये गायें मोटी और
सुन्दर थीं। 19तब मैंने अन्य सात गायों को नदी से बाहर
आते देखा। ये गाये पतली और भद्दी थीं। मैंने मिस्र देश
में जितनी गायें देखी हैं उनमें वे सब से अधिक बुरी थीं।
20और इन भद्दी और पतली गायों ने पहली सुन्दर सात
गायों को खा डाला। 21लेकिन सात गायों को खाने के
बाद तक भी वे पतली और भद्दी ही रहीं। तुम उनको
देखो तो नहीं जान सकते कि उन्होंने अन्य सात गायों
को खाया है। वे उतनी ही भद्दी और पतली दिखाई
पड़ती थीं जितनी आरम्भ में थीं। तब मैं जाग गया।

22"तब मैंने अपने दूसरे सपने में अनाज की सात
बालें एक ही अनाज के पीछे उगी देखीं। ये अनाज की
बालें भरी हुई, अच्छी और सुन्दर थीं। 23तब उनके बाद
सात अन्य बालें उगीं। किन्तु ये बाले पतली, भद्दी और
गर्म हवा से नष्ट थीं। 24तब पतली बालों ने सात अच्छी
बालों को खा डाला।

"मैनें इस सपने को अपने लोगों को बताया जो जादूगर
और गुणी हैं। किन्तु किसी ने सपने की व्याख्या मुझको
नहीं समझाई। इसका अर्थ क्या हैं?"

यूसुफ सपने का अर्थ बताता है

25तब यूसुफ ने फ़िरौन से कहा, "ये दोनों सपने एक
ही अर्थ रखते हैं। परमेश्वर तुम्हें बता र हा है जो
जल्दी ही होगा। 26सात अच्छी गायें और सात अच्छी
अनाज की बालें* सात वर्ष हैं दोनों सपने एक ही हैं।
27सात दुबली और भददी गायें तथा सात बुरी अनाज
की बालें देश में भूखमरी के सात वर्ष हैं। ये सात वर्ष,
अच्छे सात वर्षों के बाद आयेंगे। 28परमेश्वर ने आपको
यह दिखा दिया है कि जल्दी ही क्या होने वाला है। यह
वैसा ही होगा जैसा मैंने कहा है। 29आपके सात वर्ष पूरे
मिस्र में अच्छी पैदावार और भोजन बहुतायत के होंगे।
30लेकिन इन सात वर्षों के बाद पूरे देश में भूखमरी के
सात वर्ष आएंगे। जो सारा भोजन मिस्र में पैदा हुआ है
उसे लोग भूल जाएंगे। यह अकाल देश को नष्ट कर
देगा। 31भरपूर भोजनस्मरण रखना लोग भूल जायेंगे कि
क्या होता है?

32"हे फ़िरौन, आपने एक ही बात के बारे में दो सपने
देखे थे। यह इस बात को दिखाने के लिए हुआ कि
परमेश्वर निश्चय ही ऐसा होने देगा और यह बताया है
कि परमेश्वर इसे जल्दी ही होने देगा। 33इसलिए हे
फ़िरौन आप एक ऐसा व्यक्ति चुनें जो बहुत चुस्त और
बुद्धिमान हो। आप उसे मिस्र देश का प्रशासक बनाएँ।
34तब आप दूसरे व्यक्तियों को जनता से भोजन इकट्ठा
करने के लिए चुने। हर व्यक्ति सात अच्छे वर्षों में
जितना भोजन उत्पन्न करे, उसका पाँचवाँ हिस्सा दे।
35इन लोगों को आदेश दें कि जो अच्छे वर्ष आ रहे हैं
उनमें सारा भोजन इकट्ठा करें। व्यक्तियों से कह दें
कि उन्हें नगरों में भोजन जमा करने का अधिकार है।
तब वे भोजन की रक्षा उस समय तक करेंगे जब
उनकी आवश्यकता होगी। 36वह भोजन मिस्र देश में
आने वाले भूखमरी के सात वर्षों में सहायता करेगा।
तब मिस्र में सात वर्षों में लोग भोजन के अभाव में मरेंगे
नहीं।"

37फ़िरौन को यह अच्छा विचार मालूम हुआ। इससे
सभी अधिकारी सहमत थे। 38फ़िरौन ने अपने
अधिकारियों से पूछा, "क्या तुम लोगों में से कोई इस
काम को करने के लिए यूसुफ से अच्छा व्यक्ति ढूँढ
सकता है? परमेश्वर की आत्मा ने इस व्यक्ति को
सचमुच बुद्धिमान बना दिया है।"

सात ... बालें या अनाज का अग्र भाग सात वर्ष है।

39फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, "परमेश्वर ने ये सभी
चीज़ें तुम को दिखाई हैं। इसलिये तुम ही सर्वाधिक
बुद्धिमान हो। 40इसलिए मैं तुमको देश का प्रशासक
बनाऊँगा। जनता तुम्हारे आदेशों का पालन करेगी। मैं
अकेला इस देश में तुम से बड़ा प्रशासक रहूँगा।"

41एक विशेष समारोह और प्रदर्शन था जिसमें फ़िरौन
ने यूसुफ को प्रशासक बनाया तब फ़िरौन ने यूसुफ से
कहा, "मैं अब तुम्हें मिस्र के पूरे देश का प्रशासक
बनाता हूँ।" 42तब फ़िरौन ने अपनी राजकीय मुहर
वाली अगूँठी यूसुफ को दी और यूसुफ को एक सुन्दर
रेशमी वस्त्र पहनने को दिया। फ़िरौन ने यूसुफ के गले
में एक सोने का हार डाला। 43फ़िरौन ने दूसरे श्रेणी के
राजकीय रथ पर यूसुफ को सवार होने को कहा।
उसके रथ के आगे विशेष रक्षक चलते थे। वे लोगों से
कहते थे, "हे लोगों, यूसुफ को झुककर प्रणाम करो।
इस तरह यूसुफ पूरे मिस्र का प्रशासक बना। 44फ़िरौन
ने उससे कहा, "मैं सम्राट फ़िरौन हूँ। इसलिए मैं जो
करना चाहूँगा, करूँगा। किन्तु मिस्र में कोई अन्य व्यक्ति
हाथ पैर नहीं हिला सकता है जब तक तुम उसे न
कहो।"

45फ़िरौन ने उसे दूसरा नाम सापन तपानेह दिया।
फ़िरौन ने आसनत नाम की एक स्त्री, जो ओन के
याजक पोतीपेरा का पुत्री थी, यूसुफ को पत्नी के रूप में
दी। इस प्रकार यूसुफ पूरे मिस्र देश का प्रशासक हो
गया। 46यूसुफ उस समय तीस वर्ष का था जब वह मिस्र
के सम्राट की सेवा करने लगा। यूसुफ ने पूरे मिस्र देश
में यात्राएँ की। 47अच्छे सात वर्षों में देश में पैदावार बहुत
अच्छी हुई 48और यूसुफ ने मिस्र में सात वर्ष खाने की
चीज़ें बचायीं। यूसुफ ने भोजन नगरों में जमा किया।
यूसुफ ने नगर के चारों ओर के खेतों के उपजे अन्न
को हर नगर में जमा किया। 49यूसुफ ने बहुत अन्न
इकट्ठा किया। यह समुद्र के बालू के सदृश था। उसने
इतना अन्न इकट्ठा किया कि उसके वजन को भी न
आँका जासके।

50यूसुफ की पत्नी आसनत ओन के याजक पोतीपरा
कि पुत्री थी। भूखमरी के पहले वर्ष के आने के पूर्व
यूसुफ और आसनेत के दो पुत्र हुए। 51पहले पुत्र का
नाम मनश्शे रखा गया। यूसुफ ने उसका यह नाम रखा
क्योंकि उसने बताया, "मुझे जितने सारे कष्ट हुए तथा
घर की हर बात परमेश्वर ने मुझसे भुला दी।" 52यूसुफ
ने दूसरे पुत्र का नाम एप्रैम रखा। यूसुफ ने उसका नाम
यह रखा क्योंकि उसने बताया, "मुझे बहुत दुःख मिला,
लेकिन परमेश्वर ने मुझे फुलाया-फलाया।"

भूखमरी का समय आरम्भ होता है

53सात वर्ष तक लोगों के पास खाने के लिए वह सब
भोजन था जिसकी उन्हें आवश्यकता थी और जो चीज़ें
उन्हें आवश्यक थीं वे सभी उगती थीं। 54किन्तु सात
वर्ष बाद भूखमरी के दिन शुरु हुए। यह ठीक वैसा ही
हुआ जैसा यूसुफ ने कहा था। सारी भूमि में चारों ओर
अन्न पैदा न हुआ। लोगों के पास खाने को कुछ न था।
किन्तु मिस्र में लोगों के खाने के लिए काफी था,
क्योंकि यूसुफ ने अन्न जमा कर रखा था। 55भूखमरी
का समय शुरू हुआ और लोग भोजन के लिए फ़िरौन
के सामने रोने लगे। फ़िरौन ने मिस्री लोगों से कहा,
"यूसुफ से पूछो। वही करो जो वह करने को कहता
है।"

56इसलिए जब देश में सर्वत्र भूखमरी थी, यूसुफ ने
अनाज के गोदामों से लोगों को अन्न दिया। यूसुफ ने
जमा अन्न को मिस्र के लोगों को बेचा। मिस्र में बहुत
भयंकर अकाल था। 57मिस्र के चारों ओर के देशों के
लोग अनाज खरीदने मिस्र आए। वे यूसुफ के पास आए
क्योंकि वहाँ संसार के उस भाग में सर्वत्र भूखमरी थी।

स्वप्न सच हुआ

42 इस समय याकूब के प्रदेश में भूखमरी थी।
किन्तु याकूब को यह पता लगा कि मिस्र में
अन्न है। इसलिए याकूब ने अपने पुत्रों से कहा, "हम
लोग यहाँ हाथ पर हाथ धरे क्यों बैठे हैं? 2मैंने सुना है
कि मिस्र में खरीदने के लिए अन्न है। इसलिए हम लोग
वहाँ चलें और वहाँ से अपने खाने के लिए अन्न खरीदें,
तब हम लोग जीवित रहेंगे, मरेंगे नहीं।"

3इसलिए यूसुफ के भाईयों में से दस अन्न खरीदने
मिस्र गए। 4याकूब ने बिन्यामीन को नहीं भेजा। (बिन्यामीन
यूसुफ का एकमात्र सगा भाई* था।)

5कनान में भूखमरी का समय बहुत भयंकर था।
इसलिए कनान के बहुत से लोग अन्न खरीदने मिस्र
गए। उन्हीं लोगों में इस्राएल के पुत्र भी थे।

6इस समय यूसुफ मिस्र का प्रशासक था। केवल
यूसुफ ही था जो मिस्र आने वाले लोगों को अन्न बेचने
का आदेश देता था। यूसुफ के भाई उसके पास आए
और उन्होंने उसे झुककर प्रणाम किया। 7यूसुफ ने
अपने भाईयों को देखा और उसने उन्हें पहचान लिया
कि वे कौन हैं। किन्तु यूसुफ उनसे इस तरह बात
करता रहा जैसे वह उन्हें पहचानता ही नहीं। उसने
उनके साथ क्रूरता से बात की। उसने कहा, "तुम लोग
कहाँ से आए हो?" भाईयों ने उत्तर दिया, "हम कनान
देश से आए हैं। हम लोग अन्न खरीदने आये हैं।"
8यूसुफ जानता था कि ये लोग उसके भाई हैं। किन्तु वे
नहीं जानते थे कि वह कौन हैं? 9यूसुफ ने उन सपनों
को याद किया जिन्हें उसने अपने भाईयों के बारे में
देखा था।

सगा भाई शाब्दिक "भाई" यूसुफ और बिन्यामीन की एक ही माँ
थी।

यूसुफ अपने भाईयों को जासूस कहता है

यूसुफ ने अपने भाईयों से कहा, "तुम लोग अन्न
खरीदने नहीं आए हो। तुम लोग जासूस हो। तुम लोग यह
पता लगाने आए हो कि हम कहाँ कमज़ोर हैं?"
10किन्तु भाईयों ने उससे कहा, "नहीं, महोदय! हम
तो आपके सेवक के रूप में आए हैं। हम लोग केवल
अन्न खरीदने आए हैं। 11हम सभी लोग भाई हैं, हम
लोगों का एक ही पिता है। हम लोग ईमानदार हैं। हम
लोग केवल अन्न खरीदने आए हैं।"
12तब यूसुफ ने उनसे कहा, "नहीं, तुम लोग यह पता
लगाने आए हो कि हम कहाँ कमजोर हैं?"
13भाईयों ने कहा, "नहीं, हम सभी भाई हैं। हमारे
परिवार में बारह भाई हैं। हम सबका एक ही पिता है।
हम लोगों का सबसे छोटा भाई अभी भी हमारे पिता के
साथ घर पर है और दूसरा भाई बहुत समय पहले मर
गया। हम लोग आपके सामने सेवक की तरह हैं। हम
लोग कनान देश के हैं।"
14किन्तु यूसुफ ने कहा, "नहीं मुझे पता है कि मैं
ठीक हूँ। तुम भेदिये हो। 15किन्तु मैं तुम लोगों को यह
प्रमाणित करने का अवसर दूँगा कि तुम लोग सच कह
रहे हो। तुम लोग यह जगह तब तक नहीं छोड़ सकते
जब तक तुम लोगों का छोटा भाई यहाँ नहीं आता।
16इसलिए तुम लोगों में से एक लौटे और अपने छोटे
भाई को यहाँ लाए। उस समय तक अन्य यहाँ कारागार
में रहेंगे। हम देखेंगे कि क्या तुम लोग सच बोल रहे हो।
किन्तु मुझे विश्वास है कि तुम लोग जासूस हो।" 17तब
यूसुफ ने उन सभी को तीन दिन के लिए कारागार में
डाल दिया।

शिमोन बन्धक के रूप में रखा गया

18तीन दिन बाद यूसुफ ने उनसे कहा, "मैं परमेश्वर
का भय मानता हूँ। इसलिए मैं तुम लोगों को यह प्रमाणित
करने का एक अवसर दूँगा कि तुम लोग सच बोल रहे
हो। तुम लोग यह काम करो और मैं तुम लोगों को
जीवित रहने दूँगा। 19अगर तुम लोग ईमानदार व्यक्ति हो
तो अपने भाईयों में से एक को कारागार में रहने दो।
अन्य जा सकते हैं और अपने लोगों के लिए अन्न ले जा
सकते है। 20तब अपने सबसे छोटे भाई को लेकर यहाँ
मेरे पास आओ। इस प्रकार मैं विश्वास करूँगा कि तुम
लोग सच बोल रहे हो।"
भाईयों ने इस बात को मान लिया। 21उन्होंने आपस
में बात की, "हम लोग दण्डित किए गए हैं।"* क्योंकि
हम लोगों ने अपने छोटे भाई के साथ बुरा किया है। हम
लोगों ने उसके कष्टों को देखा जिसमें वह था। उसने
अपनी रक्षा के लिए हम लोगों से प्रार्थना की। किन्तु
हम लोगों ने उसकी एक न सुनी। इसलिए हम लोग
दुःखों में है।"
22तब रूबेन ने उनसे कहा, "मैंने तुमसे कहा था कि
उस लड़के का कुछ भी बुरा न करो। लेकिन तुम लोगों
ने मेरी एक न सुनी। इसलिए अब हम उसकी मृत्यु के
लिए दण्डित हो रहे हैं।"
23यूसुफ अपने भाईयों से बात करने के लिए एक
दुभाषिये से काम ले रहा था। इसलिए भाई नहीं जानते
थे कि यूसुफ उनकी भाषा जानता है। किन्तु वे जो कुछ
कहते थे उसे यूसुफ सुनता और समझता था। 24उनकी
बातों से यूसुफ बहुत दुःखी हुआ। इसलिए यूसुफ उनसे
अलग हट गया और रो पड़ा। थोड़ी देर में यूसुफ उनके
पास लौटा। उसने भाईयों में से शिमोन को पकड़ा और
उसे बाँधा जब कि अन्य भाई देखते रहे। 25यूसुफ ने
कुछ सेवकों को उनकी बोरियों को अन्न से भरने को
कहा। भाईयों ने इस अन्न का मूल्य यूसुफ को दिया।
किन्तु यूसुफ ने उस धन को अपने पास नहीं रखा।
उसने उस धन को उनकी अनाज की बोरियों में रख
दिया। तब यूसुफ ने उन्हें वे चीज़ें दी, जिनकी आवश्यकता
उन्हें घर तक लौटने की यात्रा में हो सकती थी।
26इसलिए भाईयों ने अन्न को अपने गधों पर लादा
और वहाँ से चल पड़े। 27वे सभी भाई रात को ठहरे
और भाईयों में से एक ने कुछ अन्न के लिए अपनी
बोरी खोली और उसने अपना धन अपनी बोरी में पाया।
28उसने अन्य भाईयों से कहा, "देखो, जो मूल्य मैंने
अन्न के लिए चुकाया, वह यहाँ है। किसी ने मेरी बोरी
में ये धन लौटा दिया है। वे सभी भाई बहुत अधिक
भयभीत हो गए। उन्होंने आपस में बातें की, परमेश्वर
हम लोगों के साथ क्या कर रहा है?"

भाईयों ने याकूब को सूचित किया

29वे भाई कनान देश में अपने पिता याकूब के पास
गए। उन्होंने जो कुछ हुआ था अपने पिता को बताया।
30उन्होंने कहा, "उस देश का प्रशासक हम लोगों से
बहुत रूखाई से बोला। उसने सोचा कि हम लोग उस
सेना की ओर से भेजे गए हैं जो वहाँ के लोगों को नष्ट
करना चाहती है। 31लेकिन हम लोगों ने कहा कि हम
लोग ईमानदार हैं। हम लोग किसी सेना में से नहीं हैं।
32हम लोगों ने उसे बताया कि हम लोग बारह भाई हैं।
हम लोगों ने अपने पिता के बारे में बताया, और यह
कहा कि हम लोगों का सबसे छोटा भाई अब भी कनान
देश में है।
33"तब देश के प्रशासक ने हम लोगों से यह कहा,
'यह प्रमाणित करने के लिये कि तुम ईमानदार हो यह
रास्ता है: अपने भाईयों में से एक को हमारे पास यहाँ
छोड़ दो। अपना अन्न लेकर अपने परिवारों के पास
लौट जाओ। 34अपने सबसे छोटे भाई को हमारे पास

हम ... गये हैं शाब्दिक "हम अपराधी हैं।"

लाओ। तब मैं समझूँगा कि तुम लोग ईमानदार हो अथवा
तुम लोग हम लोगों को नष्ट करने वाली सेना की ओर
नहीं भेजे गए हो। यदि तुम लोग सच बोल रहे हो तो मैं
तुम्हारे भाई को तुम्हें दे दूँगा।'"

35तब सब भाई अपनी बोरियों से अन्न लेने गए और
हर एक भाई ने अपने धन की थैली अपने अन्न की
बोरी में पाई। भाईयों और उनके पिता ने धन को देखा,
और वे बहुत डर गए।

36याकूब ने उनसे कहा, "क्या तुम लोग चाहते हो कि
मैं अपने सभी पुत्रों से हाथ धो बैठूँ। यूसुफ तो चला ही
गया। शिमोन भी गया और तुम लोग बिन्यामीन को भी
मुझसे दूर ले जाना चाहते हो।"

37तब रूबेन ने अपने पिता से कहा, "पिताजी आप
मेरे दो पुत्रों को मार देना यदि मैं बिन्यामीन को आपके
पास न लौटाऊँ। मुझ पर विश्वास करें। मैं आपके पास
बिन्यामीन को लौटा लाऊँगा।"

38किन्तु याकूब ने कहा, "मैं बिन्यामीन को तुम लोगों
के साथ नहीं जाने दूँगा। उसका भाई मर चुका है और
मेरी पत्नी राहेल का वही अकेला पुत्र बचा है। मिस्र
तक की यात्रा में यदि उसके साथ कुछ हुआ तो वह
घटना मुझे मार डालेगी। तुम लोग मुझ वृद्ध को कब्र में
बहुत दुःखी करके भेजोगे।"

याकूब ने बिन्यामीन को मिस्र जाने की आज्ञा दी

43 देश में भूखमरी का समय बहुत ही बुरा था।
वहाँ कोई भी खाने की चीज़ नहीं उग रही
थी। **2**लोग वह सारा अन्न खा गए जो वे मिस्र से लाये थे।
जब अन्न समाप्त हो गया, याकूब ने अपने पुत्रों से
कहा, "फिर मिस्र जाओ। हम लोगों के खाने के लिए
कुछ और अन्न खरीदो।"

3किन्तु यहूदा ने याकूब से कहा, "उस देश के प्रशासक
ने हम लोगों को चेतावनी दी है। उसने कहा है, 'यदि
तुम लोग अपने भाई को मेरे पास वापस नहीं लाओगे तो
मैं तुम लोगों से बात करने से मना भी कर दूँगा।' **4**यदि
तुम हम लोगों के साथ बिन्यामीन को भेजोगे तो हम
लोग जाएंगे और अन्न खरीदेंगे। **5**किन्तु यदि तुम बिन्यामीन
को भेजना मना करोगे तब हम लोग नहीं जाएंगे। उस
व्यक्ति ने चेतावनी दी कि हम लोग उसके बिना वापस
न आयें।"

6इस्राएल (याकूब) ने कहा, "तुम लोगों ने उस व्यक्ति
से क्यों कहा, कि तुम्हारा अन्य भाई भी है।" तुम लोगों
ने मेरे साथ ऐसी बुरी बात क्यों की?"

7भाईयों ने उत्तर दिया, "उस व्यक्ति ने सावधानी से
हम लोगों से प्रश्न पूछे। वह हम लोगों तथा हम लोगों के
परिवार के बारे में जानना चाहता था। उसने हम लोगों
से पूछा, 'क्या तुम लोगों का पिता अभी जीवित है? क्या
तुम लोगों का अन्य भाई घर पर है?' हम लोगों ने
केवल उसके प्रश्नों के उत्तर दिए। हम लोग नहीं जानते
थे कि वह हमारे दूसरे भाई को अपने पास लाने को
कहेगा।"

8तब यहूदा ने अपने पिता इस्राएल से कहा, "बिन्यामीन
को मेरे साथ भेजो। मैं उसकी देखभाल करूँगा हम
लोग मिस्र अवश्य जाएंगे और भोजन लाएंगे। यदि हम
लोग नहीं जाते हैं तो हम लोगों के बच्चे भी मर जाएंगे।

9"मैं विश्वास दिलाता हूँ कि वह सुरक्षित रहेगा। मैं
इसका उत्तरदायी रहूँगा। यदि मैं उसे तुम्हारे पास लौटाकर
न लाऊँ तो तुम सदा के लिए मुझे दोषी ठहरा सकते हो।
10यदि तुमने हमें पहले जाने दिया होता तो भोजन के
लिए हम लोग दो यात्राएँ अभी तक कर चुके होते।"

11तब उनके पिता इस्राएल ने कहा, "यदि यह सचमुच
सही है तो बिन्यामीन को अपने साथ ले जाओ। किन्तु
प्रशासक के लिए कुछ भेंट ले जाओ। उन चीज़ों में से
कुछ ले जाओ जो हम लोग अपने देश में इकट्ठा कर
सके हैं उसके लिए कुछ शहद, पिस्ते बादाम, गोंद और
लोबान ले जाओ। **12**इस समय, पहले से दुगना धन भी ले
लो जो पिछली बार देने के बाद लौटा दिया गया था।
संभव है कि प्रशासक से गलती हुई हो। **13**बिन्यामीन को
साथ लो और उस व्यक्ति के पास ले जाओ। **14**मैं प्रार्थना
करता हूँ कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर तुम लोगों की
उस समय सहायता करेगा जब तुम प्रशासक के सामने
खड़े होओगे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह बिन्यामीन
और शिमोन को भी सुरक्षित आने देगा। यदि नहीं तो मैं
अपने पुत्र से हाथ धोकर फिर दुःखी होऊँगा।"

15इसलिए भाईयों ने प्रशासक को देने के लिए भेंटें
ली और उन्होंने जितना धन पहले लिया था उसका
दुगना धन अपने साथ लिया। बिन्यामीन भाईयों के साथ
मिस्र गया।

भाई यूसुफ के घर निमन्त्रित होते हैं

16मिस्र में यूसुफ ने उनके साथ बिन्यामीन को देखा।
यूसुफ ने अपने सेवक से कहा, "उन व्यक्तियों को मेरे
घर लाओ। एक जानवर मारो और पकाओ। वे व्यक्ति
आज दोपहर को मेरे साथ भोजन करेंगे।" **17**सेवक को
जैसा कहा गया था वैसा किया। वह उन व्यक्तियों को
यूसुफ के घर लाया।

18भाई डरे हुए थे जब वे यूसुफ के घर लाए गए।
उन्होंने कहा, "हम लोग यहाँ उस धन के लिए लाए गए
हैं जो पिछली बार हम लोगों की बोरियों में रख दिया
गया था। वे हम लोगों को अपराधी सिद्ध करने लिए
उनका उपयोग करेंगे। तब वे हम लोगों के गधों को
चुरा लेंगे और हम लोगों को दास बनाएंगे।"

19अत: यूसुफ के घर की देख-रेख करने वाले
सेवक के पास सभी भाई गए। **20**उन्होंने कहा, "महोदय
मैं प्रतिज्ञापूर्वक सच कहता हूँ कि पिछली बार हम आए

थे। हम लोग भोजन खरीदने आए थे। 21-22घर लौटते समय हम लोगों ने अपनी बोरियाँ खोलीं और हर एक बोरी में अपना धन पाया। हम लोग नहीं जानते कि उनमें धन कैसे पहुँचा। किन्तु हम वह धन आपको लौटाने के लिए साथ लाए हैं और इस समय हम लोग जो अन्न खरीदना चाहते हैं उसके लिए अधिक धन लाए हैं।"

23किन्तु सेवक ने उत्तर दिया, "डरो नहीं, मुझ पर विश्वास करो। तुम्हारे पिता के परमेश्वर ने तुम लोगों के धन को तुम्हारी बोरियों में भेंट के रूप में रखा होगा। मुझे याद है कि तुम लोगों ने पिछली बार अन्न का मूल्य मुझे दे दिया था।"

सेवक शिमोन को कारागार से बाहर लाया। 24सेवक उन लोगों को यूसुफ के घर ले गया। उसने उन्हें पानी दिया और उन्होंने अपने पैर धोए। तब तक उसने उनके गधों को खाने के लिये चारा दिया।

25भाईयों ने सुना कि वे यूसुफ के साथ भोजन करेंगे। इसलिए उसके लिए अपनी भेंट तैयार करने में वे दोपहर तक लगे रहे। 26यूसुफ घर आया और भाईयों ने उसे भेंट दीं जो वे अपने साथ लाए थे। तब उन्होंने धरती पर झुककर प्रणाम किया।

27यूसुफ ने उनकी कुशल पूछी। यूसुफ ने कहा, "तुम लोगों का वृद्ध पिता जिसके बारे में तुम लोगों ने बताया, ठीक तो है? क्या वह अब तक जीवित है?"

28भाईयों ने उत्तर दिया, "महोदय, हम लोगों के पिता ठीक हैं। वे अब तक जीवित है" और वे फिर यूसुफ के सामने झुके।

यूसुफ अपने भाई बिन्यामीन से मिलता है

29तब यूसुफ ने अपने भाई बिन्यामीन को देखा। (बिन्यामीन और यूसुफ की एक ही माँ थी) यूसुफ ने कहा, "क्या यह तुम लोगों का सबसे छोटा भाई है जिसके बारे में तुम ने बताया था?" तब यूसुफ ने बिन्यामीन से कहा, "परमेश्वर तुम पर कृपालु हो।"

30तब यूसुफ कमरे से बाहर दौड़ गया। यूसुफ बहुत चाहता था कि वह अपने भाईयों को दिखाए कि वह उनसे बहुत प्रेम करता है। वह रोने–रोने सा हो रहा था, किन्तु वह नहीं चाहता था कि उसके भाई उसे रोता देखें। इसलिए वह अपने कमरे में दौड़ता हुआ पहुँचा और वहीं रोया। 31तब यूसुफ ने अपना मुँह धोया और बाहर आया। उसने अपने को संभाला और कहा, "अब भोजन करने का समय है।"

32यूसुफ ने अकेले एक मेज पर भोजन किया। उसके भाईयों ने दूसरी मेज पर एक साथ भोजन किया। मिस्री लोगों ने अन्य मेज पर एक साथ खाया। उनका विश्वास था कि उनके लिए यह अनुचित है कि वे हिब्रू लोगों के साथ खाएँ। 33यूसुफ के भाई उसके सामने की मेज पर बैठे थे। सभी भाई सबसे बड़े भाई से आरम्भ कर सबसे छोटे भाई तक क्रम में बैठे थे। सभी भाई एक दूसरे को, जो हो रहा था उस पर आश्चर्य करते हुए देखते जा रहे थे। 34सेवक यूसुफ की मेज से उनको भोजन ले जाते थे। किन्तु औरों की तुलना में सेवकों ने बिन्यामीन को पाँच गुना अधिक दिया। यूसुफ के साथ वे सभी भाई तब तक खाते और दाखमधु पीते रहे जब तक वे नशे में चूर नहीं हो गया।

यूसुफ जाल बिछाता है

44 तब यूसुफ ने अपने नौकर को आदेश दिया। यूसुफ ने कहा, "उन व्यक्तियों की बोरियों में इतना अन्न भरो जितना ये ले जा सके और हर एक का धन उस की अन्न की बोरी में रख दो। 2सबसे छोटे भाई की बोरी में धन रखो। किन्तु उसकी बोरी में मेरी विशेष चाँदी का प्याला भी रख दो।" सेवक ने यूसुफ का आदेश पूरा किया।

3अगले दिन बहुत सुबह सब भाई अपने गधों के साथ अपने देश को वापस भेज दिये गए। 4जब वे नगर को छोड़ चुके, यूसुफ ने अपने सेवक से कहा, "जाओ और उन लोगों का पीछा करो। उन्हें रोको और उनसे कहो, 'हम लोग आप लोगों के प्रति अच्छे रहे। किन्तु आप लोगों ने हमारे यहाँ चोरी क्यों की? आप लोगों ने यूसुफ का चाँदी का प्याला क्यों चुराया? 5हमारे मालिक यूसुफ इसी प्याले से पीते हैं। वे सपने की व्याख्या के लिए इसी प्याले का उपयोग करते हैं। इस प्याले को चुराकर आप लोगों ने अपराध किया है।'"

6अत: सेवक ने आदेश का पालन किया। वह सवार हो कर भाईयों तक गया और उन्हें रोका। सेवक ने उनसे वे ही बातें कहीं जो यूसुफ ने उनसे कहने के लिए कही थीं।

7किन्तु भाईयों ने सेवक से कहा, "प्रशासक ऐसी बातें क्यों कहते हैं? हम लोग ऐसा कुछ नहीं कर सकते। 8हम लोग वह धन लौटाकर लाए जो पहले हम लोगों की बोरियों में मिले थे। इसलिए निश्चय ही हम तुम्हारे मालिक के घर से चाँदी या सोना नहीं चुराएंगे। 9यदि आप किसी बोरी में चाँदी का वह प्याला पा जाये तो उस व्यक्ति को मर जाने दिया जाये। तुम उसे मार सकते हो और हम लोग तुम्हारे दास होंगे।"

10सेवक ने कहा, "जैसा तुम कहते हो हम वैसा ही करेंगे, किन्तु मैं उस व्यक्ति को मारुँगा नहीं। यदि मुझे चाँदी का प्याला मिलेगा तो वह व्यक्ति मेरा दास होगा। अन्य भाई स्वतन्त्र होंगे।"

जाल फेंका गया, बिन्यामीन पकड़ा गया

11तब सभी भाईयों ने अपनी बोरियाँ जल्दी जल्दी जमीन पर खोलीं। 12सेवक ने बोरियों में देखा। उसने

सबसे बड़े भाई से आरम्भ किया और सबसे छोटे भाई
पर अन्त किया। उसने बिन्यामीन की बोरी में प्याला
पाया। 13भाई बहुत दुःखी हुए। उन्होंने दुःख के कारण
अपने वस्त्र फाड़ डाले। उन्होंने अपनी बोरियाँ गधों पर
लादीं और नगर को लौट पड़े।

14यहूदा और उसके भाई यूसुफ के घर लौटकर गए।
यूसुफ तब तक वहाँ था। भाईयों ने पृथ्वी तक झुककर
प्रणाम किया। 15यूसुफ ने उनसे कहा, "तुम लोगों ने यह
क्यों किया? क्या तुम लोगों को पता नहीं है कि गुप्त
बातों को जानने का मेरा विशेष ढंग है। मुझसे बढ़कर
अच्छी तरह कोई दूसरा यह नहीं कर सकता।"

16यहूदा ने कहा, "महोदय, हम लोगों को कहने के
लिए कुछ नहीं है। स्पष्ट करने का कोई रास्ता नहीं है।
यह दिखाने का कोई तरीका नहीं है कि हम लोग
अपराधी नहीं है। हम लोगों ने और कुछ किया होगा
जिसके लिए परमेश्वर ने हमें अपराधी ठहराया। इसलिए
हम सभी बिन्यामीन भी, आपके दास होंगे।"

17किन्तु यूसुफ ने कहा, "मैं तुम सभी को दास नहीं
बनाऊँगा। केवल वह व्यक्ति जिसने प्याला चुराया है,
मेरा दास होगा। अन्य तुम लोग शान्ति से अपने पिता के
पास जा सकते हो।"

यहूदा बिन्यामीन की सिफारिश करता है

18तब यहूदा यूसुफ के पास गया और उसने कहा,
"महोदय, कृपाकर मुझे स्वयं आपसे स्पष्ट कह लेने दें।
कृपा कर मुझ से अप्रसन्न न हों। मैं जानता हूँ कि आप
स्वयं फिरौन जैसे हैं। 19जब हम लोग पहले यहाँ आए थे,
आपने पूछा था कि 'क्या तुम्हारे पिता या भाई हैं?'
20और हमने आपको उत्तर दिया, 'हमारे एक पिता है,
वे बूढ़े हैं और हम लोगों का एक छोटा भाई है। हमारे
पिता उससे बहुत प्यार करते हैं। क्योंकि उसका जन्म
उनके बूढ़ापे में हुआ था, यह अकेला पुत्र है। हम लोगों
के पिता उसे बहुत प्यार करते हैं।' 21तब आपने हमसे
कहा था, 'उस भाई को मेरे पास लाओ। मैं उसे देखना
चाहता हूँ।' 22और हम लोगों ने कहा था, 'वह छोटा
लड़का नहीं आ सकता। वह अपने पिता को नहीं छोड़
सकता। यदि उसके पिता को उससे हाथ धोना पड़ा तो
उसका पिता इतना दुःखी होगा कि वह मर जाएगा।'
23किन्तु आपने हमसे कहा, 'तुम लोग अपने छोटे भाई
को अवश्य लाओ, नहीं तो मैं फिर तुम लोगों के हाथ
अन्न नहीं बेचूँगा।'

24"इसलिए हम लोग अपने पिता के पास लौटे और
आपने जो कुछ कहा, उन्हें बताया।

25"बाद में हम लोगों के पिता ने कहा, 'फिर जाओ
और हम लोगों के लिए कुछ और अन्न खरीदो।' 26और
हम लोगों ने अपने पिता से कहा, 'हम लोग अपने सबसे
छोटे भाई के बिना नहीं जा सकते। शासक ने कहा है
कि वह तब तक हम लोगों को फिर अन्न नहीं बेचेगा
जब तक वह हमारे सबसे छोटे भाई को नहीं देख लेता।'
27तब मेरे पिता ने हम लोगों से कहा, 'तुम लोग जानते
हो कि मेरी पत्नी राहेल ने मुझे दो पुत्र दिये। 28मैंने एक
पुत्र को दूर जाने दिया और वह जंगली जानवर द्वारा
मारा गया और तब से मैंने उसे नहीं देखा है। 29यदि तुम
लोग मेरे दूसरे पुत्र को मुझसे दूर ले जाते हो और उसे
कुछ हो जाता है तो मुझे इतना दुःख होगा कि मैं मर
जाऊँगा।' 30इसलिए यदि अब हम लोग अपने सबसे छोटे
भाई के बिना घर जायेंगे तब हम लोगों के पिता को यह
देखना पड़ेगा। यह छोटा लड़का हमारे पिता के जीवन में
सबसे अधिक महत्व रखता है। 31जब वे देखेंगे कि
छोटा लड़का हम लोगों के साथ नहीं है वे मर जायेंगे
और यह हम लोगों का दोष होगा। हम लोग अपने पिता
के घोर दुःख एवं मृत्यु का कारण होंगे।

32"मैंने छोटे लड़के का उत्तरदायित्व लिया है। मैंने
अपने पिता से कहा, 'यदि मैं उसे आपके पास लौटाकर
न लाऊँ तो आप मेरे सारे जीवनभर मुझे दोषी ठहरा
सकते हैं।' 33इसलिए अब मैं आपसे माँगता हूँ, और आप
से प्रार्थना करता हूँ कि कृपया छोटे लड़के को अपने
भाईयों के साथ लौट जाने दें और मैं यहाँ रुकूँगा और
आपका दास होऊँगा। 34मैं अपने पिता के पास लौट
नहीं सकता यदि हमारे साथ छोटा भाई नहीं रहेगा। मैं
इस बात से बहुत भयभीत हूँ कि मेरे पिता के साथ क्या
घटेगा।"

यूसुफ अपने को प्रकट करता है कि वह कौन है

45 यूसुफ अपने को और अधिक न संभाल सका।
वह वहाँ उपस्थित सभी लोगों के सामने रो
पड़ा। यूसुफ ने कहा, "हर एक से कहो कि यहाँ से हट
जाये।" इसलिए सभी लोग चले गये। केवल उसके भाई
ही यूसुफ के साथ रह गए। तब यूसुफ ने उन्हें बताया
कि वह कौन है। 2यूसुफ रोता रहा, और फ़िरौन के
महल के सभी मिस्री व्यक्तियों ने सुना। 3यूसुफ ने अपने
भाईयों से कहा, "मैं आप लोगों का भाई यूसुफ हूँ। क्या
मेरे पिता सकुशल हैं?" किन्तु भाईयों ने उसको उत्तर
नहीं दिया। वे डरे हुए तथा उलझन में थे।

4इसलिए यूसुफ ने अपने भाईयों से फिर कहा, "मेरे
पास आओ।" इसलिए यूसुफ के भाई निकट गए और
यूसुफ ने उनसे कहा, "मैं आप लोगों का भाई यूसुफ
हूँ।" मैं वही हूँ जिसे मिस्रियों के हाथ आप लोगों ने दास
के रूप में बेचा था। 5अब परेशान न हों। आप लोग
अपने किए हुए के लिए स्वयं भी पश्चाताप न करें। वह
तो मेरे लिए परमेश्वर की योजना थी कि मैं यहाँ आऊँ।
मैं यहाँ तुम लोगों का जीवन बचाने के लिए आया हूँ।
6यह भयंकर भूखमरी का समय दो वर्ष ही अभी बीता
है और अभी पाँच वर्ष बिना पौधे रोपने या उपज के

आएंगे। 7इसलिए परमेश्वर ने तुम लोगों से पहले मुझे
यहाँ भेजा जिससे मैं इस देश में तुम लोगों को बचा सकूँ।
8यह आप लोगों का दोष नहीं था कि मैं यहाँ भेजा गया।
यह परमेश्वर की योजना थी। परमेश्वर ने मुझे फ़िरौन
के पिता सदृश बनाया। ताकि मैं उसके सारे घर और
सारे मिस्र का शासक रहूँ।"

इस्राएल मिस्र के लिए आमन्त्रित हुआ

9यूसुफ ने कहा, "इसलिए जल्दी मेरे पिता के पास
जाओ। मेरे पिता से कहो कि उसके पुत्र यूसुफ ने यह
सन्देश भेजा है।"

परमेश्वर ने मुझे पूरे मिस्र का शासक बनाया है। मेरे
पास आइये। प्रतीक्षा न करें। अभी आएँ।

10आप मेरे निकट गोशेन प्रदेश में रहेंगे। आपका,
आपके पुत्रों का, आपके सभी जानवरों एवं झुण्डों का
यहाँ स्वागत है। 11भुखमरी के अगले पाँच वर्षों में मैं
आपका देखभाल करूँगा। इस प्रकार आपके और आपके
परिवार की जो चीज़ें हैं उनसे आपको हाथ धोना नहीं
पड़ेगा।

12यूसुफ अपने भाईयों से बात करता रहा। उसने
कहा, "अब आप लोग देखते हैं कि यह सचमुच मैं ही
हूँ" और आप लोगों का भाई बिन्यामीन जानता है
कि यह मैं हूँ। मैं आप लोगों का भाई आप लोगों से
बात कर रहा हूँ। 13इसलिए मेरे पिता से मेरी मिस्र की
अत्याधिक सम्पत्ति के बारे में कहें। आप लोगों ने जो
यहाँ देखा है उस हर एक चीज़ के बारे में मेरे पिता को
बताएं। अब जल्दी करो और मेरे पिता को लेकर मेरे
पास लौटो।"

14तब यूसुफ ने अपने भाई बिन्यामीन को गले लगाया
और रो पड़ा और बिन्यामीन भी रो पड़ा। 15तब यूसुफ
ने सभी भाईयों को चूमा और उनके लिए रो पड़ा।
इसके बाद भाई उसके साथ बातें करने लगे।

16फ़िरौन को पता लगा कि यूसुफ के भाई उसके
पास आए हैं। यह खबर फ़िरौन के पूरे महल में फैल
गई। फ़िरौन और उसके सेवक इस बारे में बहुत प्रसन्न
हुए। 17इसलिये फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, "अपने भाईयों
से कहो कि उन्हें जितना भोजन चाहिए, लें और कनान
देश को लौट जायें। 18अपने भाईयों से कहो कि वे
अपने पिता और अपने परिवारों को लेकर यहाँ मेरे
पास आयें। मैं तुम्हें जीविका के लिए मिस्र में सबसे
अच्छी भूमि दूँगा और तुम्हारा परिवार सबसे अच्छा
भोजन करेगा जो हमारे पास यहाँ है।" 19तब फ़िरौन ने
कहा, "हमारी सबसे अच्छी गाड़ियों में से कुछ अपने
भाईयों को दो। उन्हें कनान जाने और गाड़ियों में अपने
पिता, स्त्रियों और बच्चों को यहाँ लाने को कहो। 20उनकी
कोई भी चीज़ यहाँ लाने की चिन्ता न करो। हम उन्हें
मिस्र में जो कुछ सबसे अच्छा है, देंगे।"

21इसलिए इस्राएल के पुत्रों ने यही किया। यूसुफ ने
फ़िरौन के वचन के अनुसार अच्छी गाड़ियाँ दी और
यूसुफ ने यात्रा के लिए उन्हें भरपूर भोजन दिया। 22यूसुफ
ने हर एक भाई को एक एक जोड़ा सुन्दर वस्त्र दिया।
किन्तु यूसुफ ने बिन्यामीन को पाँच जोड़े सुन्दर वस्त्र
दिये और यूसुफ ने बिन्यामीन को तीन सौ चाँदी के
सिक्के भी दिए। 23यूसुफ ने अपने पिता को भी भेंटें
भेजी। उसने मिस्र से बहुत सी अच्छी चीज़ों से भरी
बोरियों से लदे दस गधों को भेजा और उसने अपने पिता
के लिए अन्न, रोटी और अन्य भोजन से लदी हुई दस
गदहियों को उनकी वापसी यात्रा के लिए भेजा। 24तब
यूसुफ ने अपने भाईयों को जाने के लिए कहा। जब वे
जाने को हुए थे यूसुफ ने उनसे कहा, "सीधे घर जाओ
और रास्ते में लड़ना नहीं।"

25इस प्रकार भाईयों ने मिस्र को छोड़ा और कनान
देश में अपने पिता के पास गए। 26भाईयों ने उससे कहा,
"पिताजी यूसुफ अभी जीवित है और वह पूरे मिस्र देश
का प्रशासक है।"

उनका पिता चकित हुआ। उसने उन पर विश्वास
नहीं किया। 27किन्तु यूसुफ ने जो बातें कहीं थी, भाईयों
ने हर एक बात अपने पिता से कहीं। तब याकूब ने उन
गाड़ियों को देखा जिन्हें यूसुफ ने उसे मिस्र की वापसी
यात्रा के लिए भेजा था। तब याकूब भावुक हो गया और
अत्यन्त प्रसन्न हुआ। 28इस्राएल ने कहा, "अब मुझे
विश्वास है कि मेरा पुत्र यूसुफ अभी जीवित है। मैं मरने
से पहले उसे देखने जा रहा हूँ।"

परमेश्वर इस्राएल को विश्वास दिलाता है

46 इसलिए इस्राएल ने मिस्र की अपनी यात्रा प्रारम्भ
की। पहले इस्राएल बेर्शेबा पहुँचा। वहाँ इस्राएल
ने अपने पिता इसहाक के परमेश्वर की उपासना की।
उसने बलि दी।

2रात में परमेश्वर इस्राएल से सपने में बोला। परमेश्वर
ने कहा, "याकूब, याकूब"

और इस्राएल ने उत्तर दिया, "मैं यहाँ हूँ।"

3तब यहोवा ने कहा, "मैं यहोवा हूँ तुम्हारे पिता का
परमेश्वर। मिस्र जाने से न डरो। मिस्र में मैं तुम्हें महान
राष्ट्र बनाऊँगा। 4मैं तुम्हारे साथ मिस्र चलूँगा और मैं
तुम्हें फिर मिस्र से बाहर निकाल लाऊँगा। तुम मिस्र में
मरोगे। किन्तु यूसुफ तुम्हारे साथ रहेगा। जब तुम मरोगे
तो वह स्वयं अपने हाथों से तुम्हारी आँखे बन्द करेगा।"

इस्राएल मिस्र को जाता है

5तब याकूब ने बेर्शेबा छोड़ा और मिस्र तक यात्रा की।
उसके पुत्र, अर्थात् इस्राएल के पुत्र अपने पिता, अपनी
पत्नियों और अपने सभी बच्चों को मिस्र ले आए। उन्होंने
फिरौन द्वारा भेजी गयी गाड़ियों में यात्रा की। 6उनके

पास, उनके पशु और कनान देश में उनका अपना जो
कुछ था, वह भी साथ था। इस प्रकार इस्राएल अपने
सभी बच्चे और अपने परिवार के साथ मिस्र गया।
7उसके साथ उसके पुत्र और पुत्रियाँ एवं पौत्र और
पौत्रियाँ थी। उसका सारा परिवार उसके साथ मिस्र को
गया।

याकूब का परिवार

8यह इस्राएल के उन पुत्रों और परिवारों के नाम है
जो उसके साथ मिस्र गए:

रूबेन याकूब का पहला पुत्र था। 9रुबेन के पुत्र थे:
हनोक, पल्लू, हेस्रोन और कर्म्मी।

10शिमोन के पुत्र: यमूएल, यामीन, ओहद, याकीन
और सोहर। वहाँ शाऊल भी था। (शाऊल कनानी
पत्नी से पैदा हुआ था।)

11लेवी के पुत्र: गेर्शोन, कहात और मरारी

12यहूदा के पुत्र: एर, ओनान, शेला, पेरेस और जेरह।
(एर और ओनान कनान में रहते समय मर गये थे।)
पेरेस के पुत्र: हेस्रोन और हामूल।

13इस्साकार के पुत्र: तोला, पुब्बा, योब और शिम्रोन।

14जबूलून के पुत्र: सेरेद, एलोन और यहलेल।

15रूबेन, शिमोन लेवी, इस्साकार और जबूलून और
याकूब की पत्नी लिआ से उसकी पुत्री दीना भी थी।
इस परिवार में तैंतीस व्यक्ति थे।

16गाद के पुत्र: सिय्योन, हाग्गी, शूनी, एसबोन, एरी,
अरोदी, और अरेली।

17आशेर के पुत्र: यिम्ना, यिश्वा, यिस्वी, बरीआ और
उनकी बहन सेरह और बरीआ के पुत्र: हेबेर और
मल्कीएल थे।

18ये सभी याकूब की पत्नी की दासी जिल्पा से उसके
पुत्र थे। इस परिवार में सोलह व्यक्ति थे।

19याकूब के साथ उसकी पत्नी राहेल से पैदा हुआ
पुत्र बिन्यामीन भी था। (यूसुफ भी राहेल से पैदा था,
किन्तु वह पहले से ही मिस्र में था।)

20मिस्र में यूसुफ के दो पुत्र थे, मनश्शे, एप्रैम। (यूसुफ
की पत्नी ओन के याजक पोतीपेरा की पुत्री आसनतथी।)

21बिन्यामीन के पुत्र: बेला, बेकेर, अश्बेल, गेरा, नामान,
एही, रोश, हुप्पीम, मुप्पीम और आर्द।

22वे याकूब की पत्नी राहेल से पैदा हुए उसके पुत्र
थे। इस परिवार में चौदह व्यक्ति थे।

23दान का पुत्र: हूशीम। 24नप्ताली के पुत्र: यहसेल
गूनी, सेसेर शिल्लेम।

25वे याकूब और बिल्हा के पुत्र थे। (बिल्हा राहेल
की सेविका थी।) इस परिवार में सात व्यक्ति थे।

26इस प्रकार याकूब का परिवार मिस्र में पहुँचा।
उनमें छियासठ उसके सीधे वंशज थे। (इस संख्या में
याकूब के पुत्रों की पत्नियाँ सम्मिलित नहीं थीं।) 27यूसुफ
के भी दो पुत्र थे। वे मिस्र में पैदा हुए थे। इस प्रकार मिस्र
में याकूब के परिवार में सत्तर व्यक्ति थे।

इस्राएल मिस्र पहुँचता है

28याकूब ने पहले यहूदा को यूसुफ के पास भेजा।
यहूदा गोशेन प्रदेश में यूसुफ के पास गया। जब याकूब
और उसके लोग उस प्रदेश में गए। 29यूसुफ को पता
लगा कि उसका पिता निकट आ रहा है। इसलिए यूसुफ
ने अपना रथ तैयार कराया और अपने पिता इस्राएल से
गोशेन में मिलने चला। जब यूसुफ ने अपने पिता को
देखा तब वह उसके गले से लिपट गया और देर तक
रोतारहा।

30तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, "अब मैं शान्ति से
मर सकता हूँ। मैंने तुम्हारा मुँह देख लिया और मैं
जानता हूँ कि तुम अभी जीवित हो।"

31यूसुफ ने अपने भाईयों और अपने पिता के परिवार
से कहा, "मैं जाऊँगा और फ़िरौन से कहूँगा कि मेरे
पिता यहाँ आ गए हैं। मैं फ़िरौन से कहूँगा, 'मेरे भाईयों
और मेरे पिता के परिवार ने कनान देश छोड़ दिया है
और यहाँ मेरे पास आ गए हैं। 32यह चरवाहों का
परिवार है। उन्होंने सदैव पशु और रेवड़े रखी हैं। वे
अपने सभी जानवर और उनका जो कुछ अपना है उसे
अपने साथ लाए हैं।' 33जब फ़िरौन आप लोगों को
बुलाएंगे और आप लोगों से पूछेंगे कि 'आप लोग क्या
काम करते हैं?' 34आप लोग उनसे कहना, 'हम लोग
चरवाहे हैं। हम लोगों ने पूरा जीवन अपने जानवरों की
देखभाल में बिताया है। हम लोगों से पहले हमारे पूर्वज
भी ऐसे ही रहे।' तब फ़िरौन तुम लोगों को गोशेन प्रदेश
में रहने की आज्ञा दे देगा। मिस्री लोग चरवाहों को
पसन्द नहीं करते, इसलिये अच्छा यही होगा कि आप
लोग गोशेन में ही ठहरें।"

इस्राएल गोशेन में बसता है

47 यूसुफ फ़िरौन के पास गया और उसने कहा,
"मेरे पिता, मेरे भाई और उनके सब परिवार
यहाँ आ गए हैं।" वे अपने सभी जानवर तथा कनान में
उनका अपना जो कुछ था, उसके साथ हैं। इस समय वे
गोशेन प्रदेश में हैं।" 2यूसुफ ने अपने भाईयों में से पाँच
को फ़िरौन के सामने अपने साथ रहने के लिए चुना।

3फ़िरौन ने भाईयों से पूछा, "तुम लोग क्या काम
करते हो?"

भाईयों ने फ़िरौन से कहा, "मान्यवर. हम लोग चरवाहे
हैं। हम लोगों से पहले हमारे पूर्वज भी चरवाहे थे।"
4उन्होंने फ़िरौन से कहा, "कनान में भूखमरी का यह
समय बहुत बुरा है। हम लोगों के जानवरों के लिए घास
वाला कोई भी खेत बचा नहीं रह गया है। इसलिए हम
लोग इस देश में रहने आए हैं। आपसे हम लोग प्रार्थना

करते हैं कि आप कृपा करके हम लोगों को गोशेन प्रदेश में रहने दें।"

5तब फ़िरौन ने यूसुफ से कहा, "तुम्हारे पिता और तुम्हारे भाई तुम्हारे पास आए हैं। 6तुम मिस्र में कोई भी स्थान उनके रहने के लिए चुन सकते हो। अपने पिता और अपने भाईयों को सबसे अच्छी भूमि दो। उन्हें गोशेन प्रदेश में रहने दो और यदि ये कुशल चरवाहे हैं, तो वे मेरे जानवरों की भी देखभाल कर सकते हैं।"

7तब यूसुफ ने अपने पिता याकूब को अन्दर फ़िरौन के सामने बुलाया। याकूब ने फ़िरौन को आशीर्वाद दिया। 8तब फ़िरौन ने याकूब से पूछा, "आपकी उम्र क्या है? 9याकूब ने फ़िरौन से कहा, "बहुत से कष्टों के साथ मेरा छोटा जीवन रहा। मैं केवल एक सौ तीस वर्ष जीवन बिताया हूँ। मेरे पिता और उनके पिता मुझसे अधिक उम्र तक जीवित रहे।"

10याकूब ने फ़िरौन को आशीर्वाद दिया। तब फ़िरौन से विदा लेकर चल दिया। 11यूसुफ ने फ़िरौन का आदेश माना। उसने अपने पिता और भाईयों को मिस्र में भूमि दी। यह रामसेस नगर के निकट मिस्र में सबसे अच्छी भूमि थी। 12यूसुफ ने अपने पिता, भाईयों और उनके अपने लोगों को, जो भोजन उन्हें आवश्यक था, दिया।

यूसुफ फ़िरौन के लिए भूमि खरीदता है

13भूखमरी का समय और भी अधिक बुरा हो गया। देश में कहीं भी भोजन न रहा। इस बुरे समय के कारण मिस्र और कनान बहुत गरीब हो गए। 14देश में लोग अधिक से अधिक अन्न खरीदने लगे। यूसुफ ने धन बचाया और उसे फ़िरौन के महल में लाया। 15कुछ समय बाद मिस्र और कनान में लोगों के पास पैसा नहीं रहा। उन्होंने अपना सारा धन अन्न खरीदने में खर्च कर दिया। इसलिए लोग यूसुफ के पास गए और बोले, "कृपा कर हमें भोजन दें। हम लोगों का धन समाप्त हो गया। यदि हम लोग नहीं खाएंगे तो आपके देखते–देखते हम मर जायेंगे।"

16लेकिन यूसुफ ने उत्तर दिया, "अपने पशु मुझे दो और मैं तुम लोगों को भोजन दूँगा।" 17इसलिए लोग अपने पशु, घोड़े और अन्य सभी जानवरों को भोजन खरीदने के लिए उपयोग में लाने लगे और उस वर्ष यूसुफ ने उनके जानवरों को लिया तथा भोजन दिया।

18किन्तु दूसरे वर्ष लोगों के पास जानवर नहीं रह गए और भोजन खरीदने के लिए कुछ भी न रहा। इसलिए लोग यूसुफ के पास गए और बोले, "आप जानते हैं कि हम लोगों के पास धन नहीं बचा है और हमारे सभी जानवर आपके हो गये हैं। इसलिए हम लोगों के पास कुछ नहीं बचा है। वह बचा है केवल, जो आप देखते हैं, हमारा शरीर और हमारी भूमि। 19आपके देखते हुए ही हम निश्चय ही मर जाएंगे। किन्तु यदि आप हमें भोजन देते हैं तो हम फ़िरौन को अपनी भूमि देंगे और उसके दास हो जाएंगे। हमें बीज दो जिन्हें हम बो सकें। तब हम लोग जीवित रहेगें और मरेंगे नहीं और भूमि हम लोगों के लिए फिर अन्न उगाएगी।"

20इसलिए यूसुफ ने मिस्र की सारी भूमि फ़िरौन के लिए खरीद ली। मिस्र के सभी लोगों ने अपने खेतों को यूसुफ के हाथ बेच दिया। उन्होंने यह इसलिए किया क्योंकि वे बहुत भूखे थे। 21और सभी लोग फ़िरौन के दास हो गए। मिस्र में सर्वत्र लोग फ़िरौन के दास थे। 22एक मात्र वही भूमि यूसुफ ने नहीं खरीदी जो याजकों के अधिकार में थी। याजकों को भूमि बेचने की आवश्यकता नहीं थी। क्योंकि फ़िरौन उनके काम के लिए उन्हें वेतन देता था। इसलिए उन्होंने इस धन को खाने के लिए भोजन खरीदने में खर्च किया।

23यूसुफ ने लोगों से कहा, "अब मैंने तुम लोगों की और तुम्हारी भूमि को फ़िरौन के लिए खरीद लिया है। इसलिए मैं तुमको बीज दूँगा और तुम लोग अपने खेतों में पौधे लगा सकते हो। 24फसल काटने के समय तुम लोग फसल का पाँचवाँ हिस्सा फ़िरौन को अवश्य देना। तुम लोग अपने लिए पाँच में से चार हिस्से रख सकते हो। तुम लोग उस बीज को जिसे भोजन और बोने के लिए रखोगे उसे दूसरे वर्ष उपयोग में ला सकोगे। अब तुम अपने परिवारों और बच्चों को खिला सकते हो।"

25लोगों ने कहा, "आपने हम लोगों का जीवन बचा लिया है।" हम लोग आपके और फिरौन के दास होने में प्रसन्न हैं।"

26इसलिए यूसुफ ने उस समय देश में एक नियम बनाया और वह नियम अब तक चला आ रहा है। नियम के अनुसार भूमि से हर एक उपज का पाँचवाँ हिस्सा फ़िरौन का है। फ़िरौन सारी भूमि का स्वामी है। केवल वही भूमि उसकी नहीं है जो याजकों की है।

"मुझे मिस्र में मत दफनाना"

27इस्राएल (याकूब) मिस्र में रहा। वह गोशेन प्रदेश में रहा। उसका परिवार बढ़ा और बहुत बड़ा हो गया। उन्होंने मिस्र में उस भूमि को पाया और अच्छा जीवन बिताया। 28याकूब मिस्र में सत्रह वर्ष रहा। इस प्रकार याकूब एक सौ सैंतालीस वर्ष का हो गया। 29वह समय आ गया जब इस्राएल (याकूब) समझ गया कि वह जल्दी ही मरेगा, इसलिए उसने अपने पुत्र यूसुफ को अपने पास बुलाया। उसने कहा, "यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो तो तुम अपने हाथ मेरी जांघ के नीचे रख कर मुझे वचन दो।* वचन दो कि तुम, जो मैं कहूँगा करोगे और तुम मेरे प्रति सच्चे रहोगे। जब मैं मरुँ तो मुझे मिस्र

तुम ... वचन दो यह संकेत करता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण शपथ था और याकूब विश्वास करता था कि यूसुफ अपना वचन पूरा करेगा।

में मत दफनाना। 30उसी जगह मुझे दफनाना जिस जगह
मेरे पूर्वज दफनाए गए हैं। मुझे मिस्र से बाहर ले जाना
और मेरे परिवार के कब्रिस्तान में दफनाना।"

यूसुफ ने उत्तर दिया, "मैं वचन देता हूँ कि वही
करूँगा जो आप कहते है। 31तब याकूब ने कहा, "मुझसे
एक प्रतिज्ञा करो" और यूसुफ ने उससे प्रतिज्ञा की कि
वह इसे पूरा करेगा। तब इस्राएल (याकूब) ने अपना
सिर पलंग पर पीछे को रखा।*

मनश्शे और एप्रैम को आशीर्वाद

48 कुछ समय बाद यूसुफ को पता लगा कि
उसका पिता बहुत बीमार है। इसलिए यूसुफ
ने अपने दोनों पुत्रों मनश्शे और एप्रैम को साथ लिया
और अपने पिता के पास गया। 2जब यूसुफ पहुँचा तो
किसी ने इस्राएल से कहा, "तुम्हारा पुत्र यूसुफ तुम्हें
देखने आया है।" इस्राएल बहुत कमजोर था, किन्तु
उसने बहुत प्रयत्न किया और पलंग पर बैठ गया।

3तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, "कनान देश में लूज
के स्थान पर सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मुझे स्वयं
दर्शन दिया। परमेश्वर ने वहाँ मुझे आशीर्वाद दिया।
4परमेश्वर ने मुझसे कहा, 'मैं तुम्हारा एक बड़ा परिवार
बनाऊँगा। मैं तुमको बहुत से बच्चे दूँगा और तुम एक
महान राष्ट्र बनोगे। तुम्हारे लोगों का अधिकार इस देश
पर सदा बना रहेगा।' 5और अब तुम्हारे दो पुत्र हैं। मेरे
आने से पहले–मिस्र देश में यहाँ ये पैदा हुए थे। तुम्हारे
दोनों पुत्र एप्रैम और मनश्शे मेरे अपने पुत्रों की तरह
होंगे। वे वैसे ही होंगे जैसे मुझे रूबेन और शिमोन हैं।
6इस प्रकार ये दोनों मेरे पुत्र होगें वे मेरी सभी चीज़ों में
हिस्सेदार होंगे। किन्तु यदि तुम्हारे अन्य पुत्र होंगे तो वे
तुम्हारे बच्चे होगें। किन्तु वे भी एप्रैम और मनश्शे के
पुत्रों के समान होंगे। अर्थात् भविष्य में एप्रैम और मनश्शे
का जो कुछ होगा, उसमें हिस्सेदार होंगे। 7पद्दनराम से
यात्रा करते समय राहेल मर गई। इस बात ने मुझे बहुत
दुःखी किया। वह कनान देश में मरी। हम लोग अभी
एप्राता की ओर यात्रा कर रहे थे। मैंने उसे एप्राता की
ओर जाने वाली सड़क पर दफनाया (एप्राता बेतलेहेम
है।)"

8तब इस्राएल ने यूसुफ के पुत्रों को देखा। इस्राएल ने
पूछा, "ये लड़के कौन हैं?"

9यूसुफ ने अपने पिता से कहा, "ये मेरे पुत्र हैं। ये वे
लड़के हैं जिन्हें परमेश्वर ने मुझे दिया है।"

इस्राएल ने कहा, "अपने पुत्रों को मेरे पास लाओ। मैं
उन्हें आशीर्वाद दूँगा।"

10इस्राएल बूढ़ा था, और उसकी आँखें ठीक नहीं थीं।
इसलिए यूसुफ अपने पुत्रों को अपने पिता के निकट ले
गया। इस्राएल ने बच्चों को चूमा और गले लगाया। 11तब
इस्राएल ने यूसुफ से कहा, "मैंने कभी नहीं सोचा कि मैं
तुम्हारा मुँह फिर देखूँगा किन्तु देखो! परमेश्वर ने तुम्हें
और तुम्हारे बच्चों को भी मुझे देखने दिया।"

12तब यूसुफ ने बच्चों को इस्राएल की गोद से लिया
और वे उसके पिता के सामने प्रणाम करने को झुके।
13यूसुफ ने एप्रैम को अपनी दायीं ओर किया और
मनश्शे को अपनी बायीं ओर (इस प्रकार एप्रैम इस्राएल
की बायीं ओर था और मनश्शे इस्राएल की दायीं ओर
था।) 14किन्तु इस्राएल ने अपने हाथों की दिशा बदलकर
अपने दायें हाथ को छोटे लड़के एप्रैम के सिर पर रखा
और तब बायें हाथ को इस्राएल ने बड़े लड़के मनश्शे
के सिर पर रखा। उसने अपने बायें हाथ को मनश्शे
पर रखा, यद्यपि मनश्शे का जन्म पहले हुआ था 15और
इस्राएल ने यूसुफ को आशीर्वाद दिया और कहा,

"मेरे पूर्वज इब्राहीम और इसहाक ने हमारे परमेश्वर
की उपासना की और वही परमेश्वर मेरे पूरे जीवन
का पथ–प्रदर्शक रहा है।

16वही दूत रहा जिसने मुझे सभी कष्टों से बचाया
और मेरी प्रार्थना है कि इन लड़कों को वह आशीर्वाद
दे। अब ये बच्चे मेरा नाम पाएंगे। वे हमारे पूर्वज इब्राहीम
और इसहाक का नाम पाएंगे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि
वे इस धरती पर बड़े परिवार और राष्ट्र बनेंगे।"

17यूसुफ ने देखा कि उसके पिता ने एप्रैम के सिर पर
दायाँ हाथ रखा है। यह यूसुफ को प्रसन्न न कर सका।
यूसुफ ने अपने पिता के हाथ को पकड़ा। वह उसे एप्रैम
के सिर से हटा कर मनश्शे के सिर पर रखना चाहता
था। 18यूसुफ ने अपने पिता से कहा, "आपने अपना
दायाँ हाथ गलत लड़के पर रखा है। मनश्शे का जन्म
पहले है।"

19किन्तु उसके पिता ने तर्क दिया और कहा, "पुत्र,
मैं जानता हूँ। मनश्शे का जन्म पहले है और वह महान
होगा। वह बहुत से लोगों का पिता भी होगा। किन्तु छोटा
भाई बड़े भाई से बड़ा होगा और छोटे भाई का परिवार
उससे बहुत बड़ा होगा।"

20इस प्रकार इस्राएल ने उस दिन उन्हें आशीर्वाद
दिया। उसने कहा, "इस्राएल के लोग तुम्हारे नाम का
प्रयोग आशीर्वाद देने के लिये करेंगे, तुम्हारे कारण
कृपा प्राप्त करेंगे। लोग प्रार्थना करेंगे, 'परमेश्वर तुम्हें
एप्रैम और मनश्शे के समान बनायें।'"

इस प्रकार इस्राएल ने एप्रैम को मनश्शे से बड़ा बनाया।
21तब इस्राएल ने यूसुफ से कहा, "देखो मेरी मृत्यु का
समय निकट आ गया है। किन्तु परमेश्वर तुम्हारे साथ
अब भी रहेगा। वह तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों के देश तक
लौटा ले जायेगा। 22मैंने तुमको ऐसा कुछ दिया है जो

तब इस्राएल ... रखा या तब इस्राएल ने अपने डंडे का सहारा लेकर उपासना में अपना सिर झुकाया। डंडे के लिए हिब्रू शब्द "बिछौने" शब्द की तरह है और उपासना के लिए प्रयुक्त शब्द का अर्थ "प्रणाम करना" "लेटना" होता है।

तुम्हारे भाईयों को नहीं दिया है। मैं तुमको वह पहाड़ देता हूँ जिसे मैंने एमोरी लोगों से जीता था। उस पहाड़ के लिए मैंने अपनी तलवार और अपने धनुष से युद्ध किया था और मेरी जीत हुई थी।"

याकूब अपने पुत्रों को आशीर्वाद देता है

49 तब याकूब ने अपने सभी पुत्रों को अपने पास
बुलाया। उसने कहाँ, "मेरे सभी पुत्रों, यहाँ मेरे
पास आओ। मैं तुम्हें बताऊँगा कि भविष्य में क्या होगा।
2"याकूब के पुत्रों, एक साथ आओ और सुनो, अपने
पिता इस्राएल की सुनो।"

रूबेन

3"रूबेन, तुम मेरे प्रथम पुत्र हो। तुम मेरे पहले पुत्र
और मेरे शक्ति का पहला सबूत हो। तुम मेरे सभी पुत्रों
से अधिक गर्वीले और बलवान हो।
4किन्तु तुम बाढ़ की तरंगों की तरह प्रचण्ड हो। तुम
मेरे सभी पुत्रों से अधिक महत्व के नहीं हो सकोगे। तुम
उस स्त्री के साथ सोए जो तुम्हारे पिता की थी। तुमने
अपने पिता के बिछौने को सम्मान नहीं दिया।"

शिमोन और लेवी

5"शिमोन और लेवी भाई हैं। उन्हें अपनी तलवारों से
लड़ना प्रिय है।
6उन्होंने गुप्त रूप से बुरी योजनाएँ बनाई। मेरी आत्मा
उनकी योजना का कोई अंश नहीं चाहती। मैं उनकी
गुप्त बैठकों को स्वीकार नहीं करूँगा। उन्होंने आदमियों
की हत्या की जब वे क्रोध में थे और उन्होंने केवल
विनोद के लिए जानवरों को चोट पहुँचाई।
7उनका क्रोध एक अभिशाप है। ये अत्याधिक कठोर
और अपने पागलपन में क्रुद्ध हैं। याकूब के देश में
इनके परिवारों की अपनी भूमि नहीं होगी। वे पूरे
इस्राएल में फैलेंगे।"

यहूदा

8"यहूदा, तुम्हारे भाई तुम्हारी प्रशंसा करेंगे। तुम अपने
शत्रुओं को हराओगे। तुम्हारे भाई तुम्हारे सामने झुकेंगे।
9यहूदा उस शेर की तरह है जिसने किसी जानवर
को मारा हो। हे मेरे पुत्र, तुम अपने शिकार पर खड़े
शेर के समान हो जो आराम करने के लिये लेटता है,
और कोई इतना बहादुर नहीं कि उसे छेड़ दे।
10यहूदा के परिवार के व्यक्ति राजा होंगे। उसके
परिवार का राज-चिन्ह उसके परिवार से वास्तविक
शासक के आने से पहले समाप्त नहीं होगा। तब अनेकों
लोग उसका आदेश मानेंगे और सेवा करेंगे।
11वह अपने गधे को अँगूर की बेल से बाँधता है। वह
अपने गधे के बच्चों को सबसे अच्छी अँगूर की बेलों में
बाँधता है। वह अपने वस्त्रों को धोने के लिए सबसे
अच्छी दाखमधु का उपयोग करता है।
12उसकी आँखे दाखमधु पीने से लाल रहती हैं। उसके
दाँत दूध पीने से उजले हैं।"*

जबूलून

13"जबूलून समुद्र के निकट रहेगा। इसका समुद्री तट
जहाजों के लिए सुरक्षित होगा। इसका प्रदेश सीदोन तक
फैला होगा।"

इस्साकर

14"इस्साकर उस गधे के समान है जिसने अत्याधिक
कठोर काम किया है। वह भारी बोझ ढोने के कारण
पस्त पड़ा है। 15वह देखेगा कि उसके आराम की जगह
अच्छी है। तथा यह कि उसकी भूमि सुहावनी है। तब
वह भारी बोझे ढोने को तैयार होगा। वह दास के रूप
में काम करना स्वीकार करेगा।"

दान

16"दान अपने लोगों का न्याय वैसे ही करेगा जैसे
इस्राएल के अन्य परिवार करते हैं।
17दान सड़क के किनारे के साँप के समान है। वह
रास्ते के पास लेटे हुये उस भयंकर साँप की तरह है, जो
घोड़े के पैर को डसता है, और सवार घोड़े से गिर पड़ता
है। 18यहोवा, मैं उद्धार की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

गाद

19"डाकुओं का एक गिरोह गाद पर आक्रमण करेगा।
किन्तु गाद उन्हें मार भगाएगा।"

आशेर

20"आशेर की भूमि बहुत अच्छी उपज देगी। उसे
वही भोजन मिलेगा जो राजाओं के लिये उपयुक्त होगा।"

नप्ताली

21"नप्ताली स्वतन्त्र दौड़नेवाले हिरन की तरह है और
उसकी बोली उनके सुन्दर बच्चों की तरह है।"

यूसुफ

22"यूसुफ बहुत सफल है। यूसुफ फलों से लदी अंगूर
की बेल के समान है। वह सोते के समीप उगी अँगूर
की बेल की तरह है, बाड़े के सहारे उगी अँगूर की बेल
की तरह है।

उसकी आँखे ... उजले हैं या उसका गधा अँगूर की बेल में बंधेगा, उसके गधे के बच्चे सर्वोतम अँगूर की बेल में बांधे जायेंगे। वह अपने वस्त्र दाखमधु से धोएगा और सर्वोतम वस्त्र अँगूर के रस से धोएगा। उसकी आँखे दाखमधु से अधिक लाल होंगी और उसके दाँत दूध से अधिक सफेद होंगे।

23बहुत से लोग उसके विरुद्ध हुए और उससे
लड़े।धर्नुधारी लोग उसे पसन्द नहीं करते।
24किन्तु उसने अपने शक्तिशाली धनुष और कुशल
भुजाओं से युद्ध जीता। वह याकूब के शक्तिशाली परमेश्वर
चरवाहे, इस्राएल की चट्टान, से शक्ति पाता है
25और अपने पिता के परमेश्वर से शक्ति पाता है।
परमेश्वर तुम को आशीर्वाद दे। सर्व शक्तिमान परमेश्वर
तुम को आशीर्वाद दे। वह तुम्हें ऊपर आकाश से आशीर्वाद
दे और नीचे गहरे समुद्र से आशीर्वाद दे। वह तुम्हें
स्तनों और गर्भ का आशीर्वाद दे।"
26मेरे माता–पिता को बहुत सी अच्छी चीज़ें होती रही
और तुम्हारे पिता से मुझको और अधिक आशीर्वाद
मिला। तुम्हारे भाईयों ने तुमको बेचना चाहा। किन्तु
अब तुम्हें एक ऊँचे पर्वत के समान, मेरे सारे आशीर्वाद
का ढेर मिलेगा।"

बिन्यामीन

27"बिन्यामीन एक ऐसे भूखे भेड़िये के समान है। जो
सवेरे मारता है और उसे खाता है। शाम को वह बचे
खुचे से काम चलाता है।"
28ये इस्राएल के बारह परिवार है और वही चीज़ें हैं
जिन्हें उनके पिता ने उनसे कहा था। उसने हर एक पुत्र
को वह आशीर्वाद दिया जो उसके लिए ठीक था। 29तब
इस्राएल ने उनको एक आदेश दिया। उसने कहा, "जब
मैं मरुँ तो मैं अपने लोगों के बीच रहना चाहता हूँ। मैं
अपने पूर्वजों के साथ हित्ती एप्रोन के खेतों की गुफा में
दफनाया जाना चाहता हूँ। 30वह गुफा मम्रे के निकट
मकपेला के खेत में है। यह कनान देश में है। इब्राहीम
ने उस खेत को एप्रोन से इसलिए खरीदा था जिससे
उसके पास एक कब्रिस्तान हो सके। 31इब्राहीम और
उसकी पत्नी सारा उसी गुफा में दफनाए गए हैं। इसहाक
और उसकी पत्नी रिबका उसी गुफा में दफनाए गए।
मैंने अपनी पत्नी लिआ को उसी गुफा में दफनाया।"
32वह गुफा उस खेत में है जिसे हित्ती लोगों से खरीदा
गया था। 33अपने पुत्रों से बातें समाप्त करने के बाद
याकूब लेट गया, पैरों को अपने बिछोने पर रखा और
मर गया।

याकूब का अन्तिम संस्कार

50 जब इस्राएल मरा, यूसुफ बहुत दु:खी हुआ।
वह पिता के गले लिपट गया, उस पर रोया
और उसे चूमा। 2यूसुफ ने अपने सेवकों को आदेश
दिया कि वे उसके पिता के शरीर को तैयार करें (ये
सेवक वैद्य थे।) वैद्यों ने याकूब के शरीर को दफनाने
के लिए तैयार किया। उन्होंने मिस्री लोगों के विशेष
तरीके से शरीर को तैयार किया। 3जब मिस्री लोगों ने
विशेष तरह से शव तैयार किया तब उसे दफनाने के
पहले चालीस दिन तक प्रतिक्षा की। उसके बाद मिस्रियों
ने याकूब के लिए शोक का विशेष समय रखा। यह
समय सत्तर दिन का था।
4सत्तर दिन बाद शोक का समय समाप्त हुआ। इसलिए
यूसुफ ने फ़िरौन के अधिकारियों से कहा, "कृपया
फ़िरौन से यह कहो, 5'जब मेरे पिता मर रहे थे तब मैंने
उनसे एक प्रतिज्ञा की थी। मैंने प्रतिज्ञा की थी कि मैं
उन्हें कनान देश की गुफा में दफनाऊँगा। यह वह गुफा
है जिसे उन्होंने अपने लिए बनाई है। इसलिए कृपा
करके मुझे जाने दें और वहाँ पिता को दफनाने दें। तब
मैं आपके पास वापस यहाँ लौट आऊँगा।'"
6फ़िरौन ने कहा, "अपनी प्रतिज्ञा पूरी करो। जाओ
और अपने पिता को दफनाओ।"
7इसलिए यूसुफ अपने पिता को दफनाने गया। फ़िरौन
के सभी अधिकारी यूसुफ के साथ गए। फ़िरौन के बड़े
लोग (नेता) और मिस्र के बड़े लोग यूसुफ के साथ गए।
8यूसुफ और उसके भाईयों के परिवार के सभी व्यक्ति
उसके साथ गए और उसके पिता के परिवार के सभी
लोग भी यूसुफ के साथ गए। (केवल बच्चे और जानवर
गोशेन प्रदेश में रह गए।) 9यूसुफ के साथ जाने के लिए
लोग रथों और घोड़ो पर सवार हुए। यह बहुत बड़ा
जनसमूह था।
10वे गोरन आताद को गए। जो यरदन नदी के पूर्व में
था। इस स्थान पर इन्होंने इस्राएल का अन्तिम संस्कार
किया। ये अन्तिम संस्कार सात दिन तक होता रहा।
11कनान के निवासियों ने गोरन आताद में अन्तिम
संस्कार को देखा। उन्होंने कहा, "वे मिस्री सचमुच बहुत
शोक भरा संस्कार कर रहे हैं।" इसलिए उस जगह
का नाम अब आबेल मिस्रैम है।
12इस प्रकार याकूब के पुत्रों ने वही किया जो उनके
पिता ने आदेश दिया था। 13वे उसके शव को कनान ले
गए और मकपेला की गुफा में उसे दफनाया। यह गुफा
मम्रे के निकट उस खेत में थी जिसे इब्राहीम ने हित्ती
एप्रोन से खरीदा था। 14यूसुफ ने जब अपने पिता को
दफना दिया तो वह और उसके साथ समूह का हर एक
व्यक्ति मिस्र को लौट गया।

भाई यूसुफ से डरे

15याकूब के मरने के बाद यूसुफ के भाई चिंतित
हुए। वे डर रहे थे कि उन्होंने जो कुछ पहले किया था
उसके लिए यूसुफ अब भी उनसे क्रोध में पागल होगा।
उन्होंने कहा, "क्या जो कुछ हम ने किया उसके लिए
यूसुफ अब भी हम से घृणा करता है?"
16इसलिए भाईयों ने यह सन्देश यूसुफ को भेजा:
तुम्हारे पिता ने मरने के पहले हम लोगों को
आदेश दिया था। 17उसने कहा, 'यूसुफ से कहना
कि मैं निवेदन करता हूँ कि कृपा कर वह उस

अपराध को क्षमा कर दे जो उन्होंने उसके साथ किया।' इसलिए अब हम तुमसे प्रार्थना करते हैं कि उस अपराध को क्षमा कर दो जो हम ने किया। हम लोग केवल तुम्हारे पिता के परमेश्वर के सेवक हैं।

यूसुफ के भाईयों ने जो कुछ कहा उससे उसे बड़ा
दुःख हुआ और वह रो पड़ा। 18यूसुफ के भाई उसके
सामने गए और उसके सामने झुककर प्रणाम किया।
उन्होंने कहा, "हम लोग तुम्हारे सेवक होंगे।"

19तब यूसुफ ने उनसे कहा, "डरो नहीं मैं परमेश्वर
नहीं हू। 20तुम लोगों ने मेरे साथ जो कुछ बुरा करने
की योजना बनाई थी। किन्तु परमेश्वर सचमुच अच्छी
योजना बना रहा था। परमेश्वर की योजना बहुत से
लोगों का जीवन बचाने के लिए मेरा उपयोग करने की
थी और आज भी उसकी यही योजना है। 21इसलिए डरो
नहीं। मैं तुम लोगों और तुम्हारे बच्चों की देखभाल
करूँगा।" इस प्रकार, यूसुफ ने उन्हें सान्त्वना दी और
उनसे कोमलता से बातें की।

22यूसुफ अपने पिता के परिवार के साथ मिस्र में
रहता रहा। यूसुफ एक सौ दस वर्ष का होकर मरा।
23यूसुफ के जीवन काल में एप्रैम के पुत्र और पौत्र हुए
और उसके पुत्र मनश्शे का एक पुत्र माकीर नाम का
हुआ। यूसुफ माकीर के बच्चों को देखने के लिए
जीवित रहा।

यूसुफ की मृत्यु

24जब यूसुफ मरने को हुआ, उसने अपने भाईयों से
कहा, "मेरे मरने का समय आ गया। किन्तु मैं जानता हूँ
कि परमेश्वर तुम लोगों की रक्षा करेगा। वह इस देश
से तुम लोगों को बाहर ले जायेगा। परमेश्वर तुम लोगों
को उस देश में ले जायेगा जिसे उसने इब्राहीम, इसहाक
और याकूब को देने का वचन दिया था।"

25तब यूसुफ ने अपने लोगों से एक प्रतिज्ञा करने को
कहा। यूसुफ ने कहा, "मुझ से प्रतिज्ञा करो कि तब
मेरी अस्थियाँ अपने साथ ले जाओगे जब परमेश्वर तुम
लोगों को नये देश में ले जायेगा।"

26यूसुफ मिस्र में मरा, जब वह एक सौ दस वर्ष
का था। वैद्यों ने उसके शव को दफनाने के लिए
तैयार किया और मिस्र में उसके शव को एक
डिब्बे में रखा।

निर्गमन

मिस्र में याकूब का परिवार

1 याकूब (इस्राएल) ने अपने पुत्रों के साथ मिस्र की
यात्रा की थी, और हर एक पुत्र के साथ उसका
अपना परिवार था। इस्राएल के पुत्रों के नाम हैं: 2रूबेन,
शिमोन, लेवी, यहूदा, 3इस्साकर, जबूलून, बिन्यामीन,
4दान, नप्ताली, गाद, आशेर। 5याकूब के अपने वंश में
सत्तर लोग थे। उसके बारह पुत्रों में एक यूसुफ़ पहले
से ही मिस्र में था।

6बाद में यूसुफ़, उसके भाई और उसकी पीढ़ी के
सभी लोग मर गए। 7किन्तु इस्राएल के लोगों की बहुत
सन्तानें थीं, और उनकी संख्या बढ़ती ही गई। ये लोग
शक्तिशाली हो गए और इन्हीं लोगों से मिस्र भर गया था।

इस्राएल के लोगों को कष्ट

8तब एक नया राजा मिस्र पर शासन करने लगा। यह
व्यक्ति यूसुफ को नहीं जानता था। 9इस राजा ने अपने
लोगों से कहा, "इस्राएल के लोगों को देखो, इनकी संख्या
अत्याधिक है, और हम लोगों से अधिक शक्तिशाली हैं।
10हम लोगों को निश्चय ही इनके विरुद्ध योजना बनानी
चाहिए। यदि हम लोग ऐसा नहीं करते तो हो सकता है,
कि कोई युद्ध छिड़े और इस्राएल के लोग हमारे शत्रुओं
का साथ देने लगें। तब वे हम लोगों को हरा सकते हैं
और हम लोगों के हाथों से निकल सकते हैं।"

11मिस्र के लोग इस्राएल के लोगों का जीवन कठिन
बनाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने इस्राएल के लोगों पर
दास-स्वामी नियुक्त किए। उन स्वामियों ने फ़िरौन के
लिए पितोम और रामसेस नगरों को बनाने के लिए
इस्राएली लोगों को विवश किया। उन्होंने इन नगरों में
अन्न तथा अन्य चीज़ें इकट्ठी कीं।

12मिस्री लोगों ने इस्राएल के लोगों को कठिन से
कठिन काम करने को विवश किया। किन्तु जितना
अधिक काम करने के लिए इस्राएली लोगों को विवश
किया गया उनकी संख्या उतनी ही बढ़ती चली गई और
मिस्री लोग इस्राएली लोगों से अधिकाधिक भयभीत होते
गए। 13इसलिए मिस्र के लोगों ने इस्राएली लोगों को और
भी अधिक कठिन काम करने को विवश किया।
14मिस्री लोगों ने इस्राएली लोगों का जीवन दूभर कर
दिया। उन्होंने इस्राएली लोगों को ईंट-गारा बनाने का
बहुत कड़ा काम करने के लिए विवश किया। उन्होंने
उन्हे खेतों में भी बहुत कड़ा काम करने को विवश
किया। वे जो कुछ करते थे उन्हे कठिन परिश्रम के
साथ करने को विवश किया।

यहोवा की अनुगामी धाइयाँ

15वहाँ शिप्रा और पूआ नाम की दो धाइयाँ थीं। ये
धाइयाँ इस्राएली स्त्रियों के बच्चों का जन्म देने में सहायता
करती थीं। मिस्र के राजा ने धाइयों से बातचीत की।
16राजा ने कहा, "तुम हिब्रू* स्त्रियों को बच्चा जनने में
सहायता करती रहोगी। यदि लड़की पैदा हो तो उसे
जीवित रहने दो। किन्तु यदि लड़का पैदा हो तो तुम लोग
उसे मार डालो।"

17किन्तु धाइयों ने परमेश्वर पर विश्वास किया।
इसलिए उन्होंने मिस्र के राजा के आदेश का पालन नहीं
किया। उन्होंने सभी लड़कों को जीवित रहने दिया।
18मिस्र के राजा ने धाइयों को बुलाया और कहा, "तुम
लोगों ने ऐसा क्यों किया? तुम लोगों ने पुत्रों (लड़कों)
को क्यों जीवित रहने दिया?"

19धाइयों ने फ़िरौन से कहा, "हिब्रू स्त्रियाँ मिस्री स्त्रियों
से अधिक बलवान हैं। उनकी सहायता के लिए हम
लोगों के पहुँचने से पहले ही वे बच्चों को जन्म दे देती
हैं।"

20-21(परमेश्वर धाइयों पर कृपालु था क्योंकि वे
परमेश्वर से डरती थीं। इसलिए परमेश्वर उनके लिए
अच्छा रहा और उन्हें अपने परिवार बनाने दिया और
हिब्रू लोग अधिक बच्चे उत्पन्न करते रहे और वे बहुत
शक्तिशाली हो गए।) 22इसलिए फ़िरौन ने अपने सभी
लोगों को यह आदेश दिया: "जब कभी पुत्र पैदा हो तब
तुम अवश्य ही उसे नील नदी में फेंक दो। किन्तु सभी
पुत्रियों को जीवित रहने दो।"

बालक मूसा

2 लेवी के परिवार का एक व्यक्ति वहाँ था। उसने
लेवी के परिवार की ही एक स्त्री से विवाह किया।
2वह स्त्री गर्भवती हुई और उसने एक पुत्र को जन्म

हिब्रू इस्राएल के लोग। इस नाम का अर्थ एवर के वंशज भी हो सकता है या फरात नदी के पूर्व के लोग। देखें उत्पत्ति 10:25-31

दिया। माँ ने देखा कि बच्चा अत्याधिक सुन्दर है और
उसने उसे तीन महीने तक छिपाए रखा। 3किन्तु तीन
महीने बाद माँ डरी कि बच्चा ढूँढ लिया जायेगा तब वह
मार डाला जाएगा, क्योंकि वह लड़का है। इसलिए उसने
एक टोकरी बनाई और उस पर तारकोल का लेप इस
प्रकार किया कि वह तैर सके। उसने बच्चे को टोकरी
में रख दिया। तब उसने टोकरी को नदी के किनारे
लम्बी घास में रख दिया। 4बच्चे की बहन वहाँ रुकी
और उसकी रखवाली करती रही। वह देखना चाहती
थी कि बच्चे के साथ क्या घटित होगा।

5उसी समय फ़िरौन की पुत्री नहाने के लिए नदी को
गई। उसकी सखियाँ नदी के किनारे टहल रही थीं।
उसने ऊँची घास में टोकरी देखी। उसने अपने दासियों
में से एक को जाकर उसे लाने को कहा। 6राजा की
पुत्री ने टोकरी को खोला और लड़के को देखा। बच्चा
रो रहा था और उसे उस पर दया आ गई। उसने कहा,
यह हिब्रू बच्चों में से एक है।

7बच्चे की बहन अभी तक छिपी थी। तब वह खड़ी
हुई और फ़िरौन की पुत्री से बोली, "क्या आप चाहती हैं
कि मैं बच्चे की देखभाल करने में आपकी सहायता के
लिए एक हिब्रू स्त्री जाकर ढूँढ लाऊँ?"

8फ़िरौन की पुत्री ने कहा, "धन्यवाद हो।"

इसलिए लड़की गई और बच्चे की अपनी माँ को ही
ढूँढ लाई।

9फ़िरौन की पुत्री ने कहा, "इस बच्चे को ले जाओ
और मेरे लिए इसे पालो। इस बच्चे को अपना दूध
पिलाओ मैं तुम्हे वेतन दूँगी।"

सो उस स्त्री ने अपने बच्चे को ले लिया और उसका
पालन पोषण किया। 10बच्चा बड़ा हुआ और कुछ समय
बाद वह स्त्री उस बच्चे को फ़िरौन की पुत्री के पास
लाई। फ़िरौन की पुत्री ने अपने पुत्र के रूप में उस बच्चे
को अपना लिया। फ़िरौन की पुत्री ने उसका नाम मूसा
रखा। क्योंकि उसने उसे पानी से निकाला था।

मूसा अपने लोगों की सहायता करता है

11मूसा बड़ा हुआ और युवक हो गया। उसने देखा
कि उसके हिब्रू लोग अत्यन्त कठिन काम करने के
लिए विवश किए जा रहे हैं। एक दिन मूसा ने एक मिस्री
व्यक्ति द्वारा एक हिब्रू व्यक्ति को पीटते देखा। 12इसलिए
मूसा ने चारों ओर नज़र घुमाई और देखा कि कोई देख
नहीं रहा है। सो मूसा ने मिस्री को मार डाला और उसे
रेत में छिपा दिया। 13अगले दिन मूसा ने दो हिब्रू व्यक्तियों
को परस्पर लड़ते देखा। मूसा ने देखा कि एक व्यक्ति
गलती पर था। मूसा ने उस आदमी से कहा, "तुम अपने
पड़ोसी को क्यों मार रहे हो?"

14उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, "क्या किसी ने कहा है
कि तुम हमारे शासक और न्यायाधीश बनो? नहीं! मुझे
बताओ कि क्या तुम मुझे भी उसी प्रकार मार डालोगे
जिस प्रकार तुमने कल मिस्री को मार डाला?"

तब मूसा डरा। मूसा ने मन ही मन सोचा, "अब हर
एक व्यक्ति जानता है कि मैंने क्या किया है।"

15फ़िरौन ने सुना कि मूसा ने मिस्री की हत्या की है
मूसा ने जो कुछ किया फ़िरौन ने उसके बारे में सुना,
इसलिए उसने मूसा को मार डालने का निश्चय किया।
किन्तु मूसा फ़िरौन की पकड़ से निकल भागा।

मिद्यान में मूसा

मूसा मिद्यान देश में गया। उस प्रदेश में मूसा एक कुएँ
के समीप रुका। 16मिद्यान में एक याजक था जिसकी
सात पुत्रियाँ थीं। एक दिन उसकी पुत्रियाँ अपने पिता
की भेड़ों के लिए पानी लेने उसी कुएँ पर गई। वे
कठौती को पानी से भरने का प्रयत्न कर रही थीं।
17किन्तु कुछ चरवाहों ने उन लड़कियों को भगा दिया
और पानी नहीं लेने दिया। इसलिए मूसा ने लड़कियों
की सहायता की और उनके जानवरों को पानी दिया।

18तब वे अपने पिता रुएल के पास लौट गई। उनके
पिता ने उनसे पूछा, "आज तुम लोग क्यों जल्दी घर
चली आई ?"

19लड़कियों ने उत्तर दिया, "चरवाहों ने हम लोगों को
भगाना चाहा। किन्तु एक मिस्री व्यक्ति ने हम लोगों की
सहायता की। उसने हम लोगों के लिए पानी निकाला
और हम लोगों के जानवरों को दिया।"

20इसलिए रुएल ने अपनी पुत्रियों से कहा, "यह व्यक्ति
कहाँ है ? तुम लोगों ने उसे छोड़ा क्यों ? उसे यहाँ
बुलाओ और हम लोगों के साथ उसे भोजन करने दो।"

21मूसा उस आदमी के साथ ठहरने से प्रसन्न हुआ।
और उस आदमी ने अपनी पुत्री सिप्पोरा को मूसा की
पत्नी के रूप में उसे दे दिया।

22सिप्पोरा ने एक पुत्र को जन्म दिया। मूसा ने अपने
पुत्र का नाम गेर्शोम रखा। मूसा ने अपने पुत्र को यह
नाम इसलिए दिया कि वह उस देश में अजनबी था जो
उसका अपना नहीं था।

परमेश्वर ने इस्राएल को सहायता देने का निश्चय किया

23लम्बा समय बीता और मिस्र का राजा मर गया।
इस्राएली लोगों को जब भी कठिन परिश्रम करने के
लिए विवश किया जाता था। वे सहायता के लिए
पुकारते थे। और परमेश्वर ने उनकी पुकार सुनी।
24परमेश्वर ने उनकी प्रार्थनाएँ सुनीं और उस वाचा
को याद किया जो उसने इब्राहीम, इसहाक और याकूब
के साथ की थी। 25परमेश्वर ने इस्राएली लोगों के
कष्टों को देखा और उसने सोचा कि वे शीघ्र ही उनकी
सहायता करेगा।

जलती हुई झाड़ी

3 मूसा के ससुर का नाम यित्रो था। यित्रो मिद्यान का याजक था। मूसा यित्रो की भेड़ों का चरवाहा था। एक दिन मूसा भेड़ों को मरुभूमि के पश्चिम की ओर ले गया। मूसा होरेब नाम के उस एक पहाड़ को गया, जो परमेश्वर का पहाड़ था। 2मूसा ने उस पहाड़ पर यहोवा के दूत को एक जलती हुई झाड़ी में देखा। यह इस प्रकार घटित हुआ। मूसा ने एक झाड़ी को जलते हुए देखा जो भस्म नहीं हो रही थी। 3इसलिए मूसा ने कहा कि मैं झाड़ी के निकट जाऊँगा और देखूँगा कि बिना राख हुए कोई झाड़ी कैसे जलती रह सकती है।

4यहोवा ने देखा कि मूसा झाड़ी को देखने आ रहा है। इसलिए परमेश्वर ने झाड़ी से मूसा को पुकारा। उसने कहा, "मूसा, मूसा!" और मूसा ने कहा, "हाँ, यहोवा।"

5तब यहोवा ने कहा, "निकट मत आओ। अपनी जूतियाँ उतार लो। तुम पवित्र भूमि पर खड़े हो। 6मैं तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर हूँ। मैं इब्राहीम का परमेश्वर इसहाक का परमेश्वर तथा याकूब का परमेश्वर हूँ।"

मूसा ने अपना मुँह ढक लिया क्योंकि वह परमेश्वर को देखने से डरता था।

7तब यहोवा ने कहा, "मैंने उन कष्टों को देखा है जिन्हें मिस्र में हमारे लोगों ने सहा है और मैंने उनका रोना भी सुना है जब मिस्री लोग उन्हें चोट पहुँचाते हैं। मैं उनकी पीड़ा के बारे में जानता हूँ। 8मैं अब जाऊँगा और मिस्रियों से अपने लोगों को बचाऊँगा। मैं उन्हें उस देश से निकालूँगा और उन्हें मैं एक अच्छे देश में ले जाऊँगा जहाँ वे कष्टों से मुक्त हो सकेंगे। जो अनेक अच्छी चीज़ों से भरा पड़ा है।* उस प्रदेश में विभिन्न लोग रहते हैं। कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी हिब्बी और यबूसी। 9मैंने इस्राएल के लोगों की पुकार सुनी है। मैंने देखा है कि मिस्रियों ने किस तरह उनके लिए जीवन को कठिन कर दिया है। 10इसलिए अब मैं तुमको फ़िरौन के पास भेज रहा हूँ। जाओ! मेरे लोगों अर्थात् इस्राएल के लोगों को मिस्र से बाहर लाओ।"

11किन्तु मूसा ने परमेश्वर से कहा, "मैं कोई महत्वपूर्ण आदमी नहीं हूँ। मैं ही वह व्यक्ति क्यों हूँ जो फ़िरौन के पास जाए और इस्राएल के लोगों को मिस्र के बाहर निकाल कर ले चले?"

12परमेश्वर ने कहा, "क्योंकि मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुमको भेज रहा हूँ, यह प्रमाण होगा: लोगों को मिस्र के बाहर निकाल लाने के बाद तुम आओगे और इस पर्वत पर मेरी उपासना करोगे।"

13तब मूसा ने परमेश्वर से कहा, "किन्तु यदि मैं इस्राएल के लोगों के पास जाऊँगा और उनसे कहूँगा, 'तुम लोगों के पूर्वजों के परमेश्वर ने मुझे तुम लोगों के पास भेजा है,' 'तब लोग पूछेंगे, उसका क्या नाम है?' मैं उनसे क्या कहूँगा?"

14तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, "उनसे कहो, 'मैं जो हूँ सो हूँ।'* जब तुम इस्राएल के लोगों के पास जाओ, तो उनसे कहो, 'मैं हूँ' जिसने मुझे तुम लोगों के पास भेजा है।"

15परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा, "लोगों से तुम जो कहोगे वह यह है की: 'यहवे तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर, इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर है। मेरा नाम सदा यहोवा रहेगा। इसी रूप में लोग आगे पीढ़ी दर पीढ़ी मुझे जानेंगे।' लोगों से कहो, 'यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।'"

16यहोवा ने यह भी कहा, "जाओ और इस्राएल के बुज़ुर्गों (नेताओं) को इकट्ठा करो और उनसे कहो, 'तुम्हारे, पूर्वजों का परमेश्वर यहोवा, मेरे सामने प्रकट हुआ। इब्राहीम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर ने मुझसे बातें कीं। यहोवा ने कहा है: मैंने तुम लोगों के बारे में सोचा है और उस सबके बारे में भी जो तुम लोगों के साथ मिस्र में घटित हुआ है। 17मैंने निश्चय किया है कि मिस्र में तुम लोग जो कष्ट सह रहे हो उससे तुम्हें बाहर निकालूँ। मैं तुम लोगों को उस देश में ले चलूँगा जो अनेक लोगों अर्थात्: कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिब्बी, और यबूसी का है। मैं तुम लोगों को ऐसे अच्छे देश को ले जाऊँगा जो बहुत अच्छी चीज़ों से भरा पूरा है। 18बुज़ुर्ग (नेता) तुम्हारी बातें सुनेंगे और तब तुम और बुज़ुर्ग (नेता) मिस्र के राजा के पास जाओगे। तुम उससे कहोगे 'हिब्रू लोगों का परमेश्वर यहोवा है। हमारा परमेश्वर हम लोगों के पास आया था। उसने हम लोगों से तीन दिन तक मरुभूमि में यात्रा करने के लिए कहा है। वहाँ हम लोग अपने परमेश्वर यहोवा को निश्चय ही बलियाँ चढायेंगे।'

19"किन्तु मैं जानता हूँ कि मिस्र का राजा तुम लोगों को जाने नहीं देगा। केवल एक महान शक्ति ही तुम लोगों को जाने देने के लिए उसे विवश करेगी। 20इसलिए मैं अपनी महान शक्ति का उपयोग मिस्र के विरुद्ध करूँगा। मैं उस देश में चमत्कार होने दूँगा। जब मैं ऐसा करूँगा तो वह तुम लोगों को जाने देगा। 21और मैं मिस्री लोगों को इस्राएली लोगों के प्रति कृपालु बनाऊँगा। इसलिए जब तुम लोग विदा होंगे तो वे तुम्हें भेंट देंगे।

22"हर एक हिब्रू स्त्री अपने मिस्री पड़ोसी से तथा अपने घर में रहने वालों से मांगेगी और वे लोग उसे भेंट देंगे। तुम्हारे लोग भेंट में चाँदी, सोना और सुन्दर वस्त्र पाएंगे। जब तुम लोग मिस्र को छोड़ोगे तुम लोग उन

जो ... पड़ा है शाब्दिक वह प्रदेश जिसमें मधु और दूध की नदियाँ बहती हों।

मैं जो हूँ सो हूँ हिब्रू शब्द "यहवे (यहोवा) नाम की तरह है।"

भेटों को अपने बच्चों को पहनाओगे। इस प्रकार तुम
लोग मिस्रियों का धन ले आओगे।"

मूसा के लिए प्रमाण

4 तब मूसा ने परमेश्वर से कहा, "किन्तु इस्राएल के
लोग मुझ पर विश्वास नहीं करेंगे जब मैं उनसे
कहूँगा कि तूने मुझे भेजा है। वे कहेंगे, 'यहोवा ने तुमसे
बातें नहीं कीं।'"

2किन्तु परमेश्वर ने मूसा से कहा, "तुमने अपने हाथ
में क्या ले रखा है?"

मूसा ने उत्तर दिया, "यह मेरी टहलने की लाठी है।"

3तब परमेश्वर ने कहा, "अपनी लाठी को जमीन पर
फेंको।"

इसलिए मूसा ने अपनी लाठी को जमीन पर फेंका
और लाठी एक साँप बन गया। मूसा डरा और इससे दूर
भागा। 4किन्तु यहोवा ने मूसा से कहा, "आगे बढ़ो और
साँप की पूँछ पकड़ लो।"

इसलिए मूसा आगे बढ़ा और उसने साँप की पूँछ
पकड़ लिया। जब मूसा ने ऐसा किया तो साँप फिर लाठी
बन गया। 5तब परमेश्वर ने कहा, "अपनी लाठी का
इसी प्रकार उपयोग करो और लोग विश्वास करेंगे कि
तुमने यहोवा अर्थात् अपने पूर्वजों के परमेश्वर, इब्राहीम
के परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर तथा याकूब के
परमेश्वर को देखा है।"

6तब यहोवा ने मूसा से कहा, "मैं तुमको दूसरा प्रमाण
दूँगा। तुम अपने हाथ को अपने लबादे के अन्दर करो।"

इसलिए मूसा ने अपने लबादे को खोला और हाथ को
अन्दर किया। तब मूसा ने अपने हाथ को लबादे से
बाहर निकाला और वह बदला हुआ था। उसका हाथ
बर्फ की तरह सफेद दाग़ों से ढका था।

7तब परमेश्वर ने कहा, "अब तुम अपना हाथ फिर
लबादे के भीतर रखो।" इसलिए मूसा ने अपना हाथ
अपने लबादे के भीतर फिर किया। तब मूसा ने अपना
हाथ बाहर निकाला, और उसका हाथ बदल गया था।
अब उसका हाथ पहले की तरह ठीक हो गया था।

8तब परमेश्वर ने कहा, "यदि लोग तुम्हारा विश्वास
लाठी का उपयोग करने पर न करें, तो वे तुम पर तब
विश्वास करेंगे जब तुम इस चिन्ह को दिखाओगे। 9यदि
वे दोनों चीज़ों को दिखाने के बाद भी विश्वास न करें
तो तुम नील नदी से कुछ पानी लेना। पानी को जमीन
पर गिराना शुरू करना और ज्योंही यह जमीन को
छुएगा, खून बन जाएगा।"

10किन्तु मूसा ने यहोवा से कहा, "किन्तु हे यहोवा, मै
सच कहता हूँ मैं कुशल वक्ता नहीं हूँ। मैं लोगों
से कुशलतापूर्वक बात करने के योग्य नहीं हुआ
और अब तुझ से बातचीत करने के बाद भी मैं
कुशल वक्ता नहीं हूँ। तू जानता हैं कि मैं धीरे-धीरे
बोलता हूँ* और उत्तम शब्दों का उपयोग नहीं
करता।"

11तब यहोवा ने उससे कहा, "मनुष्य का मुँह किसने
बनाया? और एक व्यक्ति को कौन बोलने और सुनने
में असमर्थ बना सकता है? मनुष्य को कौन देखनेवाला
और अन्धा बना सकता है? यह मैं हूँ जो इन सभी चीज़ों
को कर सकता हूँ। मैं यहोवा हूँ। 12इसलिए जाओ। जब
तुम बोलोगे, मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुम्हें बोलने के
लिए शब्द दूँगा।"

13किन्तु मूसा ने कहा, "मेरे यहोवा, मैं दूसरे व्यक्ति
को भेजने के लिए प्रार्थना करता हूँ मुझे न भेज।"

14यहोवा मूसा पर क्रुद्ध हुआ। यहोवा ने कहा, "मैं
तुमको सहायता के लिये एक व्यक्ति दूँगा। मैं तुम्हारे
भाई हारून का उपयोग करूँगा। वह कुशल वक्ता है।
हारून पहले ही तुम्हारे पास आ रहा था। वह तुमको
देखकर बहुत प्रसन्न होगा। 15वह तुम्हारे साथ फ़िरौन
के पास जाएगा। मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम्हें क्या कहना
है। तब तुम हारून को बताओगे। हारून फ़िरौन से कहने
के लिए उचित शब्द चुनेगा। 16हारून ही तुम्हारे लिए
लोगों से बात करेगा। तुम उसके लिए महान राजा के
रूप में रहोगे, और वह तुम्हारा अधिकृत वक्ता होगा।*
17इसलिए जाओ और अपनी लाठी साथ ले जाओ।
अपनी लाठी और दूसरे चमत्कारों का उपयोग लोगों
को यह दिखाने के लिए करो कि मैं तुम्हारे साथ हूँ।"

मूसा मिस्र लौटता है

18तब मूसा अपने ससुर यित्रो के पास लौटा। मूसा ने
यित्रो से कहा, "मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे मिस्र
में अपने लोगों के पास जाने दे। मैं यह देखना चाहता हूँ
कि क्या वे अभी तक जीवित हैं।"

यित्रो ने मूसा से कहा, "तुम शान्तिपूर्वक जा सकते
हो।"

19उस समय जब मूसा मिद्यान में ही था, परमेश्वर ने
उससे कहा, "इस समय तुम्हारे लिए मिस्र को जाना
सुरक्षित है। जो व्यक्ति तुमको मारना चाहते थे वे मर
चुके हैं।"

20इसलिए मूसा ने अपनी पत्नी और अपने पुत्रों को
लिया और उन्हें गधे पर बिठाया। तब मूसा ने मिस्र देश
की वापसी यात्रा की। मूसा उस लाठी को अपने साथ ले
गया जिसमें परमेश्वर की शक्ति थी।

21जिस समय मूसा मिस्र की वापसी यात्रा पर था,
परमेश्वर उससे बोला। परमेश्वर ने कहा, "जब तुम
फ़िरौन से बात करो तो उन सभी चमत्कारों को दिखाना।

मैं धीरे ... हूँ या "मैं हकलाता हूँ और साफ़ नहीं बोलता।"

तुम्हारा ... होगा शाब्दिक "वह तुम्हारी वाणी होगा, और तुम उसके परमेश्वर होगे।"

याद रखना जिन्हें दिखाने की शक्ति मैंने तुम्हे दी है। किन्तु फ़िरौन को मैं बहुत हठी बना दूँगा। वह लोगों को जाने नहीं देगा। 22तब तुम फ़िरौन से कहना: 23यहोवा कहता है, 'इस्राएल मेरा पहलौठा पुत्र है और मैं तुम से कहता हूँ कि मेरे पुत्र को जाने दो तथा मेरी उपासना करने दो। यदि तुम इस्राएल को जाने से मना करते हो तो मैं तुम्हारे पहलौठे पुत्र को मार डालूँगा।'"

मूसा के पुत्र का ख़तना

24मूसा मिस्र की अपनी यात्रा करता रहा। यात्रियों के लिए बने एक स्थान पर वह सोने के लिए रुका। यहोवा इस स्थान पर मूसा से मिला और उसे मार डालने की कोशिश की। 25किन्तु सिप्पोरा ने पत्थर का एक तेज चाकू लिया और अपने पुत्र का खतना किया। उसने चमड़े को लिया और उसके पैर छुए। तब उसने मूसा से कहा, "तुम मेरे खून बहाने वाले पति हो।" 26सिप्पोरा ने यह इसलिए कहा कि उसे अपने पुत्र का ख़तना करना पड़ा था। इसलिए परमेश्वर ने मूसा को क्षमा किया और उसे मारा नहीं।

परमेश्वर के सामने मूसा और हारून

27यहोवा ने हारून से बात की थी। यहोवा ने उससे कहा था, "मरुभूमि में जाओ और मूसा से मिलो।" इसलिए हारून गया और परमेश्वर के पहाड़ पर मूसा से मिला। जब हारून ने मूसा को देखा, उसने उसे चूमा। 28मूसा ने हारून को यहोवा द्वारा भेजे जाने का कारण बताया और मूसा ने हारून को उन चमत्कारों और उन संकेतों को भी समझाया जिन्हें उसे प्रमाण रूप में प्रदर्शित करना था। मूसा ने हारून को वह सब कुछ बताया जो यहोवा ने कहा था।

29इस प्रकार मूसा और हारून गए और उन्होंने इस्राएल के लोगों के सभी बुज़ुर्गों (नेताओं) को इकट्ठा किया। 30तब हारून ने लोगों से कहा। उसने लोगों को वे सारी बातें बताईं जो यहोवा ने मूसा से कहीं थीं। तब मूसा ने सब लोगों को दिखाने के लिए सारे प्रमाणों को करके दिखाया। 31लोगों ने विश्वास किया कि परमेश्वर ने मूसा को भेजा है। उन्होंने झुक कर प्रणाम किया और परमेश्वर की उपासना की, क्योंकि वे जान गए कि परमेश्वर इस्राएल के लोगों की सहायता करने आ गया है और उन्होंने परमेश्वर की इसलिए उपासना की क्योंकि वे जान गए कि यहोवा ने उनके कष्टों को देखा है।

मूसा और हारून फ़िरौन के सामने

5 लोगों से बात करने के बाद मूसा और हारून फ़िरौन के पास गए। उन्होंने कहा, "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'मेरे लोगों को मरुभूमि में जाने दे जिससे वे मेरे लिए उत्सव कर सकें।'"

2किन्तु फ़िरौन ने कहा, "यहोवा कौन है? मैं उसका आदेश क्यों मानूँ? मैं इस्राएलियों को क्यों जाने दूँ? मैं उसे नहीं जानता जिसे तुम यहोवा कहते हो। इसलिए मैं इस्राएलियों को जाने देने से मना करता हूँ।"

3तब हारून और मूसा ने कहा, "हिब्रूओं के परमेश्वर ने हम लोगों को दर्शन दिया है। इसलिए हम लोग आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हम लोगों को तीन दिन तक मरुभूमि में यात्रा करने दें। वहाँ हम लोग अपने परमेश्वर यहोवा को एक बलि चढ़ाएंगे। यदि हम लोग ऐसा नहीं करेंगे तो वह क्रुद्ध हो जायेगा और हमें नष्ट कर देगा। वह हम लोगों को रोग या तलवार से मार सकता है।"

4किन्तु फ़िरौन ने उनसे कहा, "मूसा और हारून, तुम लोगों को परेशान कर रहे हैं। तुम उन्हें काम करने से हटा रहे हो। उन दासों को काम पर लौटने को कहो। 5यहाँ बहुत से श्रमिक हैं तुम लोग उन्हें अपना काम करने से रोक रहे हो।"

फ़िरौन द्वारा लोगों को दण्ड

6ठीक उसी दिन फ़िरौन ने इस्राएल के लोगों के काम को और अधिक कड़ा बनाने का आदेश दिया। फ़िरौन ने दास स्वामियों से कहा, 7"तुम ने लोगों को सदा भूसा दिया है जिसका उपयोग वे ईंट बनाने में करते हैं। किन्तु अब उनसे कहो कि वे ईंटें बनाने के लिए भूसा स्वयं जाकर इकट्ठा करें। 8किन्तु वे संख्या में अब भी उतनी ही ईंटें बनाएं जितनी वे पहले बनाते थे। वे आलसी हो गए हैं। यही कारण है कि वे जाने की माँग कर रहे हैं। उनके पास करने के लिए काफी काम नहीं है इसलिए वे मुझसे माँग कर रहे हैं कि मैं उन्हें उनके परमेश्वर को बलि चढ़ाने दूँ। 9इसलिए इन लोगों से अधिक कड़ा काम कराओ। इन्हें काम में लगाए रखो। तब उनके पास इतना समय ही नहीं होगा कि वे मूसा की झूठी बातें सुनें।"

10इसलिए मिस्री दास स्वामी और हिब्रू कार्य–प्रबन्धक इस्राएल के लोगों के पास गए और उन्होंने कहा, "फ़िरौन ने निर्णय किया है कि वह तुम लोगों को तुम्हारी ईंटों के लिए तुम्हें भूसा नहीं देगा। 11तुम लोगों को स्वयं जाना होगा और अपने लिए भूसा स्वयं इकट्ठा करना होगा। इसलिए जाओ और भूसा जुटाओ। किन्तु तुम लोग उतनी ही ईंटें बनाओ जितनी पहले बनाते थे।"

12इस प्रकार हर एक आदमी मिस्र में भूसा खोजने के लिए चारों ओर गया। 13दास स्वामी लोगों को अधिक कड़ा काम करने के लिए विवश करते रहे। वे लोगों को उतनी ही ईंटें बनाने के लिए विवश करते रहे जितनी वे पहले बनाया करते थे। 14मिस्री दास स्वामियों ने हिब्रू कार्य–प्रबन्धक चुन रखे थे और उन्हें लोगों के काम का उत्तरदायी बना रखा था। मिस्री दास स्वामी इन कार्य–प्रबन्धकों को पीटते थे और उनसे कहते थे,

“तुम उतनी ही ईंटें क्यों नहीं बनाते जितनी पहले बना
रहे थे। जब तुम यह काम पहले कर सकते थे तो तुम
इसे अब भी कर सकते हो।”

15तब हिब्रू कार्य–प्रबन्धक फ़िरौन के पास गए। उन्होंने
शिकायत की और कहा, “आप अपने सेवकों के साथ
ऐसा बरताव क्यों कर रहे हैं? 16आपने हम लोगों को
भूसा नहीं दिया। किन्तु हम लोगों को आदेश दिया गया
कि उतनी ही ईंटें बनाएं जितनी पहले बनती थीं और
अब हम लोगों के स्वामी हमे पीटते हैं। ऐसा करने में
आपके लोगों की ग़लती है।”

17फ़िरौन ने उत्तर दिया, “तुम लोग आलसी हो। तुम
लोग काम करना नहीं चाहते। यही कारण है कि तुम
लोग माँग करते हो कि मैं तुम लोगों को जाने दूँ और
यही कारण है कि तुम लोग यह स्थान छोड़ना चाहते हो
और यहोवा को बलि चढ़ाना चाहते हो। 18अब काम पर
लौट जाओ! हम तुम लोगों को कोई भूसा नहीं देंगे।
किन्तु तुम लोग उतनी ही ईंटें बनाओ जितनी पहले
बनाया करतेथे।”

19हिब्रू कार्य–प्रबन्धक समझ गए कि वे परेशानी में
पड़ गए हैं। कार्य–प्रबन्धक जानते थे कि वे उतनी ईंटें
नहीं बना सकते जितनी बीते समय में बनाते थे।

20जब वे फ़िरौन से मिलने के बाद जा रहे थे, वे
मूसा, और हारून के पास से निकले। मूसा और हारून
उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। 21इसलिए उन्होंने मूसा और
हारून से कहा, “तुम लोगों ने बुरा किया कि तुम ने
फ़िरौन से हम लोगों को जाने देने के लिए कहा। यहोवा
तुम को दण्ड दे क्योंकि तुम लोगों ने फ़िरौन और
उसके प्रशासकों में हम लोगों के प्रति घृणा उत्पन्न की।
तुम ने हम लोगों को मारने का एक बहाना उन्हें दिया
है।”

मूसा की परमेश्वर से शिकायत

22तब मूसा ने यहोवा से प्रार्थना की और कहा, “हे
स्वामी, तूने अपने लोगों के लिए यह बुरा काम क्यों
किया है? तूने हमको यहाँ क्यों भेजा है? 23मैं फ़िरौन के
पास गया और जो तूने कहने को कहा उसे मैंने उससे
कहा। किन्तु उस समय से वह लोगों के प्रति अधिक
क्रूर हो गया। और तूने उनकी सहायता के लिए कुछ
नहीं किया है।”

6 तब यहोवा ने मूसा से कहा, “अब तुम देखोगे कि
फ़िरौन का मैं क्या करता हूँ। मैं अपनी महान
शक्ति का उपयोग उसके विरोध में करूँगा और वह
मेरे लोगों को जाने देगा। वह उन्हें छोड़ने के लिए इतना
अधिक आतुर होगा कि वह स्वयं उन्हें जाने के लिए
विवश करेगा।”

2तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, 3“मै यहोवा हूँ। मैं
इब्राहीम, इसहाक और याकूब के सामने प्रकट हुआ
था। उन्होंने मुझे एल–सद्दायी (सर्वशक्तिमान परमेश्वर)
कहा। मैंने उनको यह नहीं बताया था कि मेरा नाम
यहोवा (परमेश्वर) है। 4मैंने उनके साथ एक साक्षीपत्र
बनाया मैंने उनको कनान प्रदेश देने का वचन दिया। वे
उस प्रदेश में रहते थे, किन्तु वह उनका अपना प्रदेश
नहीं था। 5अब मैं इस्राएल के लोगों के कष्ट के बारे में
जानता हूँ। मैं जानता हूँ कि वे मिस्र के दास हैं और मुझे
अपना साक्षीपत्र याद है। 6इसलिए इस्राएल के लोगों से
कहो कि मैं उनसे कहता हूँ, ‘मैं यहोवा हूँ। मैं तुम लोगों
की रक्षा करूँगा। मैं तुम लोगों को स्वतन्त्र करूँगा। तुम
लोग मिस्रियों के दास नहीं रहोगे। मैं अपनी महान शक्ति
का उपयोग करूँगा और मिस्रियों को भयंकर दण्ड
दूँगा। तब मैं तुम लोगों को बचाऊँगा। 7तुम लोग मेरे
लोग होगे और मैं तुम लोगों का परमेश्वर। मैं यहोवा
तुम लोगों का परमेश्वर हूँ और जानोगे कि मैंने तुम
लोगों को मिस्र की दासता से मुक्त किया। 8मैंने इब्राहीम,
इसहाक और याकूब से बड़ी प्रतिज्ञा की थी। मैंने उन्हें
विशेष प्रदेश देने का वचन दिया था। इसलिए मैं तुम
लोगों को उस प्रदेश तक ले जाऊँगा। मैं वह प्रदेश तुम
लोगों को दूँगा। वह तुम लोगों का होगा। मैं यहोवा हूँ।’”

9इसलिए मूसा ने यह बात इस्राएल के लोगों को बताई।
किन्तु लोग इतना कठिन श्रम कर रहे थे कि वे मूसा
के प्रति धीरज न रख सकें। उन्होंने उसकी बात नहीं
सुनी। 10तब यहोवा ने मूसा से कहा, 11“जाओ और
फ़िरौन से कहो कि वह इस्राएल के लोगों को इस देश
से निश्चय ही जाने दे।”

12किन्तु मूसा ने उत्तर दिया, “इस्राएल के लोग मेरी
बात सुनना भी नहीं चाहते हैं इसलिए निश्चय ही फ़िरौन
भी सुनना नहीं चाहेगा। मैं बहुत खराब वक्ता हूँ!”*

13किन्तु यहोवा ने मूसा और हारून से बातचीत की।
परमेश्वर ने उन्हें जाने और इस्राएल के लोगों से बातें
करने का आदेश दिया और यह भी आदेश दिया कि वे
जाएं और फ़िरौन से बातें करें। परमेश्वर ने आदेश
दिया कि वे इस्राएल के लोगों को मिस्र के बाहर ले
जाए।

इस्राएल के कुछ परिवार

14इस्राएल के परिवारों के प्रमुख लोगों के नाम हैं:
इस्राएल के पहले पुत्र रूबेन के चार पुत्र थे। वे थे
हनोक, पल्लू, हेस्रोन और कर्म्मी। 15शिमोन के पुत्र थे:
यमूएल, यामीन, ओहद, याकीन, सोहर और शाउल।
शाउल एक कनानी स्त्री का पुत्र था। 16लेवी एक सौ
सैंतीस वर्ष जीवित रहा। लेवी के पुत्र थे गेर्शोन, कहात
और मरारी। 17गेर्शोन के दो पुत्र थे–लिबनी और शिमी।

मैं बहुत खराब वक्ता हूँ या “मैं बोली से विदेशी सा लगता हूँ।” शाब्दिक “मेरे ओंठ ख़तना रहित हैं।” यह एक अलंकार पूर्ण प्रयोग है।

18कहात एक सौ तैंतीस वर्ष जीवित रहा। कहात के पुत्र
थे अम्राम, यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल। 19मरारी के
पुत्र थे महली और मूशी। ये सभी परिवार इस्राएल के
पुत्र लेवी के थे।

20अम्राम एक सौ सैंतीस वर्ष जीवित रहा। अम्राम ने
अपने पिता की बहन योकेबेद से विवाह किया। अम्राम
और योकेबेद ने हारून और मूसा को जन्म दिया।
21यिसहार के पुत्र थे कोरह नेपग और जिक्री। 22उज्जीएल
के पुत्र थे मीशाएल एलसापान और सित्री।

23हारून ने ऐलीशेबा से विवाह किया। (एलीशेबा
अम्मीनादाब की पुत्री थी और नहशोन की बहन।)
हारून और एलीशेबा ने नादाब, अबीहू, ऐलाजार, और
ईतामार को जन्म दिया। 24कोरह के पुत्र अर्थात् कोरही
थे: अस्सीर एलकाना और अबीआसाप। 25हारून के
पुत्र एलाजार ने पूतीएल की पुत्री से विवाह किया और
उन्होंने पीनहास को जन्म दिया। ये सभी लोग इस्राएल
के पुत्र लेवी से थे।

26इस प्रकार हारून और मूसा इसी परिवार समूह से
थे और ये ही वे व्यक्ति हैं जिनसे परमेश्वर ने बातचीत
की और कहा, "मेरे लोगों को समूहों* में बाँटकर मिस्र
से निकालो।" 27हारून और मूसा ने ही मिस्र के राजा
फ़िरौन से बातचीत की। उन्होंने फ़िरौन से कहा कि
वह इस्राएल के लोगों को मिस्र से जाने दे।

यहोवा का मूसा को फिर बुलावा

28मिस्र देश में परमेश्वर ने मूसा से बातचीत की।

29उसने कहा, "मैं यहोवा हूँ। मिस्र के राजा से वे सारी
बातें कहो जो मैं तुमसे कहता हूँ।"

30किन्तु मूसा ने उत्तर दिया, "मैं अच्छा वक्ता नहीं हूँ।
राजा मेरी बात नहीं सुनेगा।"

7 यहोवा ने मूसा से कहा, "मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।
फ़िरौन के लिए तुम एक महान राजा* की तरह
होगे और हारून तुम्हारा अधिकृत वक्ता* होगा। 2जो
आदेश मैं दे रहा हूँ वह सब कुछ हारून से कहो। तब
वह वे बातें जो मैं कह रहा हूँ, फ़िरौन से कहेगा और
फ़िरौन इस्राएल के लोगों को इस देश से जाने देगा।
3किन्तु मैं फ़िरौन को हठी बनाऊँगा। वह उन बातों को
नहीं मानेगा जो तुम कहोगे। तब मैं मिस्र में बहुत से
चमत्कार करूँगा। किन्तु वह फिर भी नहीं सुनेगा।
4इसलिए तब मैं मिस्र को बुरी तरह दण्ड दूँगा और मैं
अपने लोगों को उस देश के बाहर ले चलूँगा। 5तब मिस्र
के लोग जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ। मैं उनके विरुद्ध हो
जाऊँगा, और वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ। तब मैं अपने
लोगों को उनके देश से बाहर ले जाऊँगा।"

6मूसा और हारून ने उन बातों का पालन किया
जिन्हें यहोवा ने कहा था। 7इस समय मूसा अस्सी वर्ष
का था और हारून तिरासी का।

मूसा की लाठी का साँप बनना

8यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, 9"फ़िरौन तुमसे
तुम्हारी शक्ति को प्रमाणित करने के लिए कहेगा। वह
तुम्हें चमत्कार दिखाने के लिए कहेगा। तुम हारून से
उसकी लाठी ज़मीन पर फेंकने को कहना। जिस समय
फ़िरौन देख रहा होगा तभी लाठी साँप बन जाएगी।"

10इसलिए मूसा और हारून फ़िरौन के पास गए और
यहोवा की आज्ञा का पालन किया। हारून ने अपनी
लाठी नीचे फेंकी। फ़िरौन और उसके अधिकारियों के
देखते देखते लाठी साँप बन गयी।

11इसलिए फ़िरौन ने अपने गुणी पुरुषों और जादूगरों
को बुलाया। इन लोगों ने अपने रहस्य चातुर्य का उपयोग
किया और वे भी हारून के समान कर सके। 12उन्होंने
अपनी लाठियाँ जमीन पर फेंकी और वे साँप बन गई।
किन्तु हारून की लाठी ने उनकी लाठियों को खा
डाला। 13फ़िरौन ने फिर भी, लोगों का जाना मना कर
दिया। यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था।
फ़िरौन ने मूसा और हारून की बात सुनने से मना कर
दिया।

पानी का ख़ून बनना

14तब यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, "फ़िरौन
हठ पकड़े हुए है। फ़िरौन लोगों को जाने से मना करता
है। 15सवेरे फ़िरौन नदी पर जाएगा। उसके साथ नील
नदी के किनारे-किनारे जाओ। उस लाठी को अपने
साथ ले लो जो साँप बनी थी। 16उससे यह कहो: 'हिब्रू
लोगों के परमेश्वर यहोवा ने हमको तुम्हारे पास भेजा
है। यहोवा ने मुझे तुमसे यह कहने को कहा है, मेरे
लोगों को मेरी उपासना करने के लिए मरुभूमि में जाने
दो। तुमने भी अब तक यहोवा की बात पर कान नहीं
दिया है। 17इसलिए यहोवा कहता है कि, मैं ऐसा करूँगा
जिससे तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। जो मैं अपने हाथ
की इस लाठी को लेकर नील नदी के पानी पर मारूँगा
और नील नदी खून में बदल जाएगी। 18तब नील नदी
की मछलियाँ मर जाएंगी और नदी से दुर्गन्ध आने
लगेगी। और मिस्री लोग नदी से पानी नहीं पी पाएँगे।'"

19यहोवा ने मूसा को यह आदेश दिया: "हारून से
कहो कि वह नदियों, नहरों, झीलों तथा तालाबों सभी
स्थानों पर जहाँ मिस्र के लोग पानी एकत्र करते हैं,
अपने हाथ की लाठी को बढ़ाए। जब वह ऐसा करेगा तो
सारा जल खून में बदल जाएगा। सारा पानी, यहाँ तक

समूहों या "टुकड़ियों।" यह सैनिक परिभाषिक शब्द है और इससे पता चलता है कि इस्राएल सेना के रूप में संगठित था।

महान राजा या "परमेश्वर।"

वक्ता या "नबी।"

कि लकड़ी और पत्थर के घड़ों का पानी भी, खून में
बदल जाएगा।"
20इसलिए मूसा और हारून ने यहोवा का जैसा आदेश
था, वैसा किया। उसने लाठी को उठाया और नील नदी
के पानी पर मारा। उसने यह फ़िरौन और उसके
अधिकारियों के सामने किया। फिर नदी का सारा जल
खून में बदल गया। 21नदी में मछलियाँ मर गई और नदी
से दुर्गन्ध आने लगी। इसलिए मिस्री नदी से पानी नहीं पी
सकते थे। मिस्र में सर्वत्र खून था।
22जादूगरों ने अपनी जादूगरी दिखाई और उन्होंने भी
वैसा ही किया। इसलिए फ़िरौन ने मूसा और हारून को
सुनने से इन्कार कर दिया। यह ठीक वैसा ही हुआ
जैसा यहोवा ने कहा था। 23फ़िरौन मुड़ा और अपने घर
चला गया। फ़िरौन ने, मूसा और हारून ने जो कुछ
किया, उसकी उपेक्षा की।
24मिस्री नदी से पानी नहीं पी सकते थे। इसलिए पीने
के पानी के लिए उन्होंने नदी के चारों ओर कुएँ खोदे।

मेंढक

25यहोवा द्वारा नील नदी के बदले जाने के बाद सात
दिन बीत गये।
8 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "फ़िरौन के पास
जाओ और उससे कहो कि यहोवा यह कहता है,
'मेरे आदमियों को मेरी उपासना के लिए जाने दो! 2यदि
फ़िरौन उनको जाने से रोकता है तो मैं मिस्र को मेंढकों
से भर दूँगा। 3नील नदी मेंढकों से भर जाएगी। वे नदी से
निकलेंगे और तुम्हारे घरों में घुसेंगे। वे तुम्हारे सोने के
कमरों और तुम्हारे बिछौनों में होंगे। मेंढक तुम्हारे
अधिकारियों के घरों में, रसोई में और तुम्हारे पानी के
घड़ों मे होंगे। 4मेंढक पूरी तरह तुम्हारे ऊपर, तुम्हारे
लोगों के ऊपर और तुम्हारे अधिकारियों के ऊपर
होंगे।'"
5तब यहोवा ने मूसा से कहा, "हारून से कहो कि वह
अपने हाथ की लाठी को नहरों, नदियों और झीलों के
ऊपर उठाए और मेंढक बाहर निकलकर मिस्र देश में
भर जाएँगे।"
6तब हारून ने मिस्र देश में जहाँ भी जल था उसके
ऊपर हाथ उठाया और मेंढक पानी से बाहर आने
आरम्भ हो गए और पूरे मिस्र को ढक दिया।
7जादूगरों ने भी वैसा ही किया। वे भी मिस्र देश में
मेंढक ले आए।
8फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलाया। फ़िरौन ने
कहा, "यहोवा से कहो कि वे मुझ पर तथा मेरे लोगों
पर से मेंढकों को हटाएं। तब मैं लोगों को यहोवा के
लिए बलि चढ़ाने को जाने दूँगा।"
9मूसा ने फ़िरौन से कहा, "मुझे यह बताएं कि आप
कब चाहते हैं कि मेंढक चले जाएं। मैं आपके लिए,
आपके लोगों के लिए तथा आपके अधिकारियों के
लिए प्रार्थना करूँगा। तब मेंढक आपको और आपके
घरों को छोड़ देंगे। मेंढ़क केवल नदी में रह जाएंगे।
आप कब चाहते हैं कि मेंढक चले जाएं?"
10फ़िरौन ने कहा, "कल"
मूसा ने कहा, "जैसा आप कहते हैं वैसा ही होगा। इस
प्रकार आप जान जायेंगे कि हमारे परमेश्वर यहोवा के
समान कोई अन्य देवता नहीं है। 11मेंढक आपको,
आपके घर को, आपके अधिकारियों को और आपके
लोगों को छोड़ देंगे। मेंढक केवल नदी में रह जाएंगे।"
12मूसा और हारून फ़िरौन से विदा हुए। मूसा ने उन
मेंढकों के लिए, जिन्हें फ़िरौन के विरुद्ध यहोवा ने भेजा
था, यहोवा को पुकारा। 13और यहोवा ने वह किया जो
मूसा ने कहा था। मेंढक घरों में, घर के आँगनों में और
खेतों में मर गए। 14वे सड़ने लगे और पूरा देश दुर्गन्ध से
भर गया। 15जब फ़िरौन ने देखा कि वे मेंढकों से मुक्त
हो गए हैं तो वह फिर हठी हो गया। फ़िरौन ने वैसा नहीं
किया जैसा मूसा और हारून ने उससे करने को कहा
था। यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था।

जूँएं

16तब यहोवा ने मूसा से कहा, "हारून से कहो कि
वह अपनी लाठी उठाए और जमीन पर की धूल पर
मारे। मिस्र में सर्वत्र धूल जूँएं बन जाएगीं।"
17उन्होंने यह किया। हारून ने अपने हाथ की लाठी
को उठाया और जमीन पर धूल में मारा मिस्र में सर्वत्र
धूल जूँएं बन गई। जूँएं जानवरों और आदमियों पर
छागईं। 18जादूगरों ने अपने जादूओं का उपयोग किया
और वैसा ही करना चाहा। किन्तु जादूगर धूल से जूँएं न
बना सके। जूँएं जानवरों और आदमियों पर छाई रहीं।
19इसलिए जादूगरों ने फ़िरौन से कहा कि परमेश्वर की
शक्ति ने ही यह किया है। किन्तु फ़िरौन ने उनकी
सुनने से इन्कार कर दिया। यह ठीक वैसा ही हुआ
जैसा यहोवा ने कहा था।

मक्खियाँ

20यहोवा ने मूसा से कहा, "सवेरे उठो और फ़िरौन
के पास जाओ। फ़िरौन नदी पर जाएगा। उससे कहो कि
यहोवा कह रहा है, 'मेरे लोगों को मेरी उपासना के
लिए जाने दो! 21यदि तुम मेरे लोगों को नहीं जाने दोगे
तो तुम्हारे घरों में मक्खियाँ आएँगी। मक्खियाँ तुम्हारे
और तुम्हारे अधिकारियों के ऊपर छा जाएंगी। मिस्र के
घर मक्खियों से भर जाएंगे। मक्खियाँ पूरी जमीन पर
छा जाएंगी।
22"'किन्तु मैं इस्राएल के लोगों के साथ वैसा ही
बरताव नहीं करूँगा जैसा मिस्री लोगों के साथ करूँगा।
जहाँ गोशेन में मेरे लोग रहते हैं वहाँ कोई मक्खी नहीं

होगी। इस प्रकार तुम जानोगे कि मैं यहोवा, इस देश में
हूँ। 23अत: मैं कल अपने लोगों के साथ तुम्हारे लोगों से
भिन्न बरताव करूँगा। यही मेरा प्रमाण होगा।'"

24अत: यहोवा ने वही किया, उसने जो कहा। झुण्ड
की झुण्ड मक्खियाँ मिस्र में आई। मक्खियाँ फ़िरौन के
घर और उसके सभी अधिकारियों के घर में भरी थीं।
मक्खियाँ पूरे मिस्र देश में भरी थीं। मक्खियाँ देश को
नष्ट कर रही थीं। 25इसलिए फ़िरौन ने मूसा और
हारून को बुलाया। फ़िरौन ने कहा, "तुम लोग अपने
परमेश्वर यहोवा को इसी देश में बलियाँ भेंट करो।"

26किन्तु मूसा ने कहा, "वैसा करना ठीक नहीं होगा।
मिस्री सोचते हैं कि हमारे परमेश्वर यहोवा को जानवरों
को मार कर बलि चढ़ाना एक भयंकर बात है। इसलिए
यदि हम लोग यहाँ ऐसा करते तो मिस्री हमें देखेंगे वे हम
लोगों पर पत्थर फेकेंगे और हमें मार डालेंगे। 27हम
लोगों को तीन दिन तक मरुभूमि में जाने दो और हमें
अपने यहोवा परमेश्वर को बलि चढ़ाने दो। यही बात है
जो यहोवा ने हम लोगों से करने को कहा है।"

28इसलिए फ़िरौन ने कहा,"मैं तुम लोगों को जाने दूँगा
और मरुभूमि में तुम लोगों के यहोवा परमेश्वर को
बलियाँ भेंट करने दूँगा। किन्तु तुम लोगों को ज्यादा दूर
नहीं जाना होगा। अब तुम जाओ और मेरे लिए प्रार्थना
करो।"

29मूसा ने कहा, "देखो, मैं जाऊँगा और यहोवा से
प्रार्थना करूँगा कि कल वे तुम से, तुम्हारे लोगों से और
तुम्हारे अधिकारियों से मक्खियों को हटा लें। किन्तु
तुम लोग यहोवा को बलियाँ भेंट करने से मत रोको।"

30इसलिए मूसा फ़िरौन के पास से गया और यहोवा से
प्रार्थना की 31और यहोवा ने यह किया जो मूसा ने
कहा। यहोवा ने मक्खियों को फ़िरौन, उसके
अधिकारियों और उसके लोगों से हटा लिया। कोई
मक्खी नहीं रह गई। 32किन्तु फ़िरौन फिर हठी हो गया
और उसने लोगों को नहीं जाने दिया।

खेतों के जानवरों को बीमारियाँ

9 तब यहोवा ने मूसा से कहा फ़िरौन के पास जाओ
और उससे कहो : "हिब्रू लोगों का परमेश्वर यहोवा
कहता है, 'मेरी उपासना के लिए मेरे लोगों को जाने
दो!' 2यदि तुम उन्हें रोकते रहे और उनका जाना मना
करते रहे 3तब यहोवा अपनी शक्ति का उपयोग तुम्हारे
खेत के जानवरों के विरुद्ध करेगा। यहोवा तुम्हारे सभी
घोड़ों, गधों, ऊँटों, गाय, बैल, बकरियों और भेड़ों को
भयंकर बीमारियों का शिकार बना देगा। 4यहोवा इस्राएल
के जानवरों के साथ मिस्र के जानवरों से भिन्न बरताव
करेगा। इस्राएल के लोगों का कोई जानवर नहीं मरेगा।
5यहोवा ने इसके घटित होने का समय निश्चित कर
दिया है। कल यहोवा इस देश में इसे घटित होने देगा।"

6अगली सुबह मिस्र के सभी खेत के जानवर मर गए।
किन्तु इस्राएल के लोगों के जानवरों में से कोई नहीं
मरा। 7फ़िरौन ने लोगों को यह देखने भेजा कि क्या
इस्राएल के लोगों का कोई जानवर मरा या इस्राएल के
लोगों का कोई जानवर नहीं मरा था। फ़िरौन हठ पकड़े
रहा। उसने लोगों को नहीं जाने दिया।

फोड़े फुंसियाँ

8यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, "अपनी अंजलियों
में भट्टी की राख भरो। और मूसा तुम फ़िरौन के
सामने राख को हवा में फेंका। 9यह धूल बन जाएगी
और पूरे मिस्र देश में फैल जाएगी। जैसे ही धूल आदमी
या जानवर पर मिस्र में पड़ेगी, चमड़े पर फोड़े फुंसी
(घाव) फूट निकलेंगे।"

10इसलिए मूसा और हारून ने भट्टी से राख ली। तब
वे गए और फ़िरौन के सामने खड़े हो गए। उन्होंने राख
को हवा में फेंका और लोगों और जानवरों को फोड़े
होने लगे। 11जादूगर मूसा को ऐसा करने से न रोक
सके, क्योंकि जादूगरों को भी फोड़े हो गए थे। सारे मिस्र
में ऐसा ही हुआ। 12किन्तु यहोवा ने फ़िरौन को हठी
बनाए रखा। इसलिए फ़िरौन ने मूसा और हारून को
सुनने से मना कर दिया। यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा
ने कहाथा।

ओले

13तब यहोवा ने मूसा से कहा, "सवेरे उठो और
फ़िरौन के पास जाओ। उससे कहो कि हिब्रू लोगों का
परमेश्वर यहोवा कहता है, 'मेरे लोगों को मेरी उपासना
के लिए जाने दो! 14यदि तुम यह नहीं करोगे तो मैं तुम्हें,
तुम्हारे अधिकारियों और तुम्हारे लोगों के विरुद्ध पूरी
शक्ति का प्रयोग करूँगा। तब तुम जानोगे कि मेरे समान
दुनिया में अन्य कोई परमेश्वर नहीं है। 15मैं अपनी
शक्ति का प्रयोग कर सकता हूँ तथा मैं ऐसी बीमारी
फैला सकता हूँ जो तुम्हें और तुम्हारे लोगों को धरती से
समाप्त कर देगी। 16किन्तु मैंने तुम्हें यहाँ किसी कारणवश
रखा है। मैंने तुम्हें यहाँ इसलिए रखा है कि तुम मेरी
शक्ति को देख सको। तब सारे संसार के लोग मेरे बारे
में जान जाएंगे। 17तुम अब भी मेरे लोगों के विरुद्ध हो।
तुम उन्हें स्वतन्त्रतापूर्वक नहीं जाने दे रहे हो। 18इसलिए
कल मैं इसी समय भयंकर ओला बारिश उत्पन्न करूँगा।
जब से मिस्र राष्ट्र बना तब से मिस्र में ऐसी ओला बारिश
पहले कभी नहीं आई होगी। 19अत: अपने जानवरों को
सुरक्षित जगह में रखना। जो कुछ तुम्हारा खेतों में हो
उसे सुरक्षित स्थानों में अवश्य रख लेना। क्यों? क्योंकि
कोई भी व्यक्ति या जानवर जो मैदानों में होगा, मारा
जाएगा। जो कुछ तुम्हारे घरों के भीतर नहीं रखा होगा
उस सब पर ओले गिरेंगे।'"

20फ़िरौन के कुछ अधिकारियों ने यहोवा के सन्देश पर ध्यान दिया। उन लोगों ने जल्दी-जल्दी अपने जानवरों और दासों को घरों में कर लिया। 21किन्तु अन्य लोगों ने यहोवा के सन्देश की उपेक्षा की। उन लोगों के वे दास और जानवर नष्ट हो गए जो बाहर मैदानों में थे।

22यहोवा ने मूसा से कहा, "अपनी भुजाएं हवा में उठाओ और मिस्र पर ओले गिरने आरम्भ हो जाएंगे। ओले पूरे मिस्र के सभी खेतों में लोगों, जानवरों और पेड़-पौधों पर गिरेंगे।"

23अत: मूसा ने अपनी लाठी को हवा में उठाया और यहोवा ने गर्जन और बिजलियां भेजे, तथा ज़मीन पर ओले बरसायें। ओले पूरे मिस्र पर पड़े। 24ओले पड़ रहे थे, और ओलों के साथ बिजली चमक रही थी। जब से मिस्र राष्ट्र बना था तब से मिस्र को हानि पहुँचाने वाले ओले वृष्टि में यह सबसे भयंकर थे। 25आँधी ने मिस्र के खेतों में जो कुछ था उसे नष्ट कर दिया। ओलों ने आदमियों, जानवरों और पेड़-पौधों को नष्ट कर दिया। ओले ने खेतों में सारे पेड़ों को भी तोड़ दिया। 26गोशेन प्रदेश ही, जहाँ इस्राएल के लोग रहते थे, ऐसी जगह थी जहाँ ओले नहीं पड़े।

27फ़िरौन ने मूसा और हारून को बुलाया। फ़िरौन ने उनसे कहा, "इस बार मैंने पाप किया है। यहोवा सच्चा है, और मैं तथा मेरे लोग दुष्ट हैं। 28ओले और परमेश्वर की गरजती आवाजे अत्याधिक हैं! परमेश्वर से तूफ़ान को रोकने को कहो। मैं तुम लोगों को जाने दूँगा। तुम लोगों को यहाँ रहना नहीं पड़ेगा।"

29मूसा ने फ़िरौन से कहा, "जब मैं नगर को छोड़ूँगा तब मैं प्रार्थना में अपनी भुजाओं को यहोवा के सामने उठाऊँगा और गर्जन तथा ओले रूक जाएंगे। तब तुम जानोगे कि पृथ्वी यहोवा ही की हैं। 30किन्तु मैं जानता हूँ कि तुम और तुम्हारे अधिकारी अब भी यहोवा से नहीं डरते हैं और न ही उसका सम्मान करते हैं।"

31जूट में दाने पड़ चुके थे। और जौ पहले ही फट चुका था। इसलिए ये फ़सलें नष्ट हो गईं। 32गेहूँ और कठिया नामक गेहूँ अन्य अन्नों से बाद में पकते हैं अत: ये फ़सलें नष्ट नहीं हुई थीं।

33मूसा ने फ़िरौन को छोड़ा और नगर के बाहर गया। उसने यहोवा के सामने अपनी भुजाएं फैलायीं और गरज

तथा ओले बन्द हो गये। वर्षा भी धरती पर होना बन्द हो गई। 34जब फ़िरौन ने देखा कि वर्षा, ओले और गर्जन बन्द हो गये तो उसने फिर गलत काम किया। वह और उसके अधिकारी फिर हठ पकड़े रहे। 35फ़िरौन ने इस्राएल के लोगों को स्वतन्त्रतापूर्वक जाने से इन्कार कर दिया। यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने मूसा से कहा था।

टिड्डियाँ

10 यहोवा ने मूसा से कहा, "फ़िरौन के यहाँ जाओ। मैंने उसे और उसके अधिकारियों को हठी बना दिया है। मैंने यह इसलिए किया है कि मैं उन्हें अपने शक्तिशाली चमत्कार दिखा सकूँ। 2मैंने इसे इसलिए भी किया कि तुम अपने पुत्र-पुत्रियों तथा पौत्र-पौत्रियों से उन चमत्कारों और अद्‌भुत बातों को बता सको जो मैंने मिस्र में किया है। तब तुम सभी जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।"

3इसलिए मूसा और हारून फ़िरौन के पास गए। उन्होंने उससे कहा, "हिब्रू लोगों का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'तुम मेरे आदेशों का पालन करने से कब तक इन्कार करोगे? मेरे लोगों को मेरी उपासना करने के लिए जाने दो! 4यदि तुम मेरे लोगों को जाने से मना करते हो तो मैं कल तुम्हारे देश में टिड्डियों को लाऊँगा। 5टिड्डियाँ पूरी जमीन को ढक लेंगी। टिड्डियों की संख्या इतनी अधिक होगी कि तुम जमीन नहीं देख सकोगे। जो कोई चीज़ ओले भरी आँधी से बच गई है उसे टिड्डियाँ खा जाएंगी। टिड्डियाँ मैदानों में पेड़ों की सारी पत्तियाँ खा डालेंगी। 6टिड्डियाँ तुम्हारे सभी घरों, तुम्हारे अधिकारियों के सभी घरों और मिस्र के सभी घरों में भर जाएंगी। जितनी टिड्डियाँ तुम्हारे बाप-दादों ने कभी देखीं होंगी उससे भी अधिक टिड्डियाँ यहाँ होंगी। जब से लोग मिस्र में, रहने लगे तब से जब कभी जितनी टिड्डियाँ हुई होंगी उससे अधिक टिड्डियाँ होंगी।'" तब मूसा मुड़ा और उसने फ़िरौन को छोड़ दिया।

7फ़िरौन के अधिकारियों ने उससे पूछा, "हम लोग कब तक इन लोगों के जाल में फँसे रहेंगे। लोगों को उनके परमेश्वर यहोवा की उपासना करने जाने दें। यदि आप उन्हें नहीं जाने देंगे तो आपके जानने से पहले मिस्र नष्ट हो जाएगा। 8अत: फ़िरौन के अधिकारियों ने मूसा और हारून को उसके पास वापस बुलाने को कहा। फ़िरौन ने उनसे कहा, "जाओ और अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करो। किन्तु मुझे बताओ कि सचमुच कौन-कौन जा रहा है?" 9मूसा ने उत्तर दिया, "हमारे युवक और बूढ़े लोग जाएंगे और हम लोग अपने साथ अपने पुत्रों और पुत्रियों, तथा भेड़ों और पशुओं को भी ले जाएंगे। हम सभी जाएंगे क्योंकि यह हमारे लिये हम लोगों के यहोवा का त्यौहारहै।"

10फ़िरौन ने उनसे कहा, "इससे पहले कि मैं तुम्हें और तुम्हारे सभी बच्चों को मिस्र छोड़कर जाने दूँ यहोवा को वास्तव में तुम्हारे साथ होना होगा। देखो तुम लोग एक बहुत बुरी योजना बना रहे हो। 11केवल पुरुष जा सकते हैं और यहोवा की उपासना कर सकते हैं। तुमने प्रारम्भ में यही माँग की थी। किन्तु तुम्हारे सारे लोग नहीं जा सकते।" तब फ़िरौन ने मूसा और हारून को भेज दिया।

12यहोवा ने मूसा से कहा, "मिस्र की भूमि के ऊपर
अपना हाथ उठाओ और टिड्डियाँ आ जाएंगी। टिड्डियाँ
मिस्र की सारी भूमि पर फैल जाएंगी। टिड्डियाँ ओलों से
बचे सभी पेड़-पौधों को खा जाएंगी।"

13मूसा ने अपनी लाठी को मिस्र देश के ऊपर उठाया
और यहोवा ने पूर्व से प्रबल आँधी उठाई। आँधी उस पूरे
दिन और रात चलती रही। जब सवेरा हुआ, आँधी ने
मिस्र देश में टिड्डियों को ला दिया था। 14टिड्डियाँ मिस्र
देश में उड़कर आई और भूमि पर बैठ गई। मिस्र में
कभी जितनी टिड्डियाँ हुई थीं उनसे अधिक टिड्डियाँ
हुई और उतनी संख्या में वहाँ टिड्डियाँ फिर कभी नहीं
होंगी। 15टिड्डियों ने जमीन को ढक लिया और पूरे देश
में अँधेरा छा गया। टिड्डियों ने उन सभी पौधों और पेड़ों
के हर फल को, जो ओले से नष्ट नहीं हुआ था, खा
डाला। मिस्र में कहीं भी किसी पेड़ या पौधे पर कोई पत्ती
नहीं रह गई।

16फ़िरौन ने मूसा और हारून को जल्दी बुलवाया।
फ़िरौन ने कहा, "मैंने तुम्हारे और तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। 17इस समय मेरे पाप
को अब क्षमा करो। अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना
करो कि इस 'मृत्यु' (टिड्डियों) को मुझ से दूर करे।"

18मूसा फ़िरौन को छोड़ कर चला गया और उसने
यहोवा से प्रार्थना की। 19इसलिए यहोवा ने हवा का रूख
बदल दिया। यहोवा ने पश्चिम से तेज़ आँधी उठाई और
उसने टिड्डियों को दूर लाल सागर में उड़ा दिया। एक
भी टिड्डी मिस्र में नहीं बची। 20किन्तु यहोवा ने फ़िरौन
को फिर हठी बनाया और फ़िरौन ने इस्राएल के लोगों
को जाने नहीं दिया।

अंधकार

21तब यहोवा ने मूसा से कहा, "अपनी बाहों को
आकाश में ऊपर उठाओ और अंधकार मिस्र को ढक
लेगा। यह अंधकार इतना सघन होगा कि तुम मानो
उसे महसूस कर सकोगे।"

22अत: मूसा ने हवा में बाहें उठाई और घोर अन्धकार
ने मिस्र को ढक लिया। मिस्र में तीन दिन तक अंधकार
रहा। 23कोई भी किसी अन्य को नहीं देख सकता था
और तीन दिन तक कोई अपनी जगह से नहीं उठ
सका। किन्तु उन सभी जगहों पर जहाँ इस्राएल के लोग
रहते थे, प्रकाश था।

24फ़िरौन ने मूसा को फिर बुलाया। फ़िरौन ने कहा,
"जाओ और यहोवा की उपासना करो! तुम अपने साथ
अपने बच्चों को ले जा सकते हो। केवल अपनी भेड़ें
और पशु यहाँ छोड़ देना।"

25मूसा ने कहा, "हम लोग केवल अपनी भेड़ें और
पशु ही अपने साथ नहीं ले जाएंगे बल्कि जब हम लोग
जाएंगे तुम हम लोगों को भेंट और बलि भी दोगे और
हम लोग इन बलियों का अपने परमेश्वर यहोवा की
उपासना के रूप में प्रयोग करेंगे। 26हम लोग अपने
जानवर अपने साथ अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना
के लिए ले जाएंगे। एक खुर भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा।
अभी तक हम नहीं जानते कि यहोवा की उपासना के
लिए किन चीज़ों की सचमुच आवश्यकता पड़ेगी। यह
हम लोग तब जान सकेंगे जब हम लोग वहाँ पहुँचेंगे जहाँ
हम जा रहे हैं। अत: ये सभी चीज़ें अवश्य ही हम अपने
साथ ले जाएंगे।"

27यहोवा ने फ़िरौन को फिर हठी बनाया। इसलिए
फ़िरौन ने उनको जाने से मना कर दिया। 28तब फ़िरौन
ने मूसा से कहा, "मुझ से दूर हो जाओ! मैं नहीं चाहता
कि तुम यहाँ फिर आओ! इसके बाद यदि तुम मुझसे
मिलने आओगे तो मारे जाओगे!"

29तब मूसा ने फ़िरौन से कहा, "तुम जो कहते हो,
सही है। मैं तुमसे मिलने फिर कभी नहीं आऊँगा!"

पहलौठों की मृत्यु

11 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "फ़िरौन और मिस्र
के विरुद्ध मैं एक और विपत्ति लाऊँगा इसके
बाद वह तुम लोगों को मिस्र से भेज देगा। वस्तुत: वह
तुम लोगों को यह देश छोड़ने को विवश करेगा। 2तुम
इस्राएल के लोगों को यह सन्देश अवश्य देना: 'तुम सभी
स्त्री और पुरुष अपने पड़ोसियों से चाँदी और सोने की
बनी चीज़ें माँगना। 3यहोवा मिस्रियों को तुम लोगों पर
कृपालु बनाएगा। मिस्री लोग, यहाँ तक कि फ़िरौन के
अधिकारी भी पहले से मूसा को महान पुरुष समझते
हैं।'"

4मूसा ने लोगों से कहा, "यहोवा कहता है, 'आज
आधी रात के समय, मैं मिस्र से होकर गुजरूँगा, 5और
मिस्र का हर एक पहलौठे पुत्र मिस्र के शासक फ़िरौन
के पहलौठे पुत्र से लेकर चक्की चलाने वाली दासी तक
का पहलौठा पुत्र मर जाएगा। पहलौठे नर जानवर भी
मरेंगे। 6मिस्र की समूची धरती पर रोना-पीटना मचेगा।
यह रोना-पीटना किसी भी गुजरे समय के रोने-पीटने
से अधिक बुरा होगा और यह भविष्य के किसी भी
रोने-पीटने के समय से अधिक बुरा होगा। 7किन्तु
इस्राएल के किसी व्यक्ति को कोई चोट नहीं पहुँचेगी।
यहाँ तक कि उन पर कोई कुत्ता तक नहीं भौंकेगा।
इस्राएल के लोगों के किसी व्यक्ति या किसी जानवर को
कोई चोट नहीं पहुँचेगी। इस प्रकार तुम लोग जानोगे कि
मैंने मिस्रियों के साथ इस्राएल वालों से भिन्न व्यवहार
किया है।

8तब ये सभी तुम लोगों के दास मिस्री झुक कर मुझे
प्रणाम करेंगे और मेरी उपासना करेंगे। वे कहेंगे, "जाओ,
और अपने सभी लोगों को अपने साथ ले जाओ।" तब
मैं फ़िरौन को क्रोध में छोड़ दूँगा।'"

9तब यहोवा ने मूसा से कहा, "फ़िरौन ने तुम्हारी बात नहीं सुनी। क्यों? इसलिए कि मैं अपनी महान शक्ति मिस्र में दिखा सकूँ।" 10यही कारण था कि मूसा और हारून ने फ़िरौन के सामने ये बड़े–बड़े चमत्कार दिखाए। और यही कारण है कि यहोवा ने फ़िरौन को इतना हठी बनाया कि उसने इस्राएल के लोगों को अपना देश छोड़ने नहीं दिया।

फसह पर्व के निर्देश

12 मूसा और हारून जब मिस्र में ही थे, यहोवा ने उनसे कहा। 2"यह महीना तुम लोगों के लिए वर्ष का पहला महीना होगा। 3इस्राएल की पूरी जाति के लिए यह आदेश है: इस महीने के दसवें दिन हर एक व्यक्ति अपने परिवार के लोगों के लिए एक मेमना अवश्य प्राप्त करेगा। 4यदि पूरा मेमना खा सकने वाले पर्याप्त आदमी अपने परिवारों में न हों तो उस भोजन में सम्मिलित होने के लिए अपने कुछ पड़ोसियों को निमन्त्रित करना चाहिए। खाने के लिए हर एक को पर्याप्त मेमना होना चाहिए। 5एक वर्ष का यह नर मेमना दोषरहित होना चाहिए। यह जानवर या तो एक भेड़ का बच्चा हो सकता है या बकरे का बच्चा। 6तुम्हें इस जानवर को महीने के चौदहवें दिन तक सावधानी के साथ रखना चाहिए। उस दिन इस्राएल जाति के सभी लोग सन्ध्या काल में इन जानवरों को मारेंगे। 7इन जानवरों का खून तुम्हें इकट्ठा करना चाहिए। कुछ खून उन घरों के दरवाजों की चौखटों के ऊपरी सिरे तथा दोनों पटों पर लगाना चाहिए जिन घरों में लोग यह भोजन करें।

8"इस रात को तुम मेमने को अवश्य भून लेना और उसका माँस खा जाना। तुम्हें कड़वी जड़ी–बूटियों और अख़मीरी रोटियाँ भी खानी चाहिए। 9तुम्हें मेमने को पानी में उबालना नहीं चाहिए। तुम्हें पूरे मेमने को आग पर भूनना चाहिए। इस दशा में भी मेमने का सिर, उसके पैर तथा उसका भीतरी भाग ठीक बना रहना चाहिए। 10उसी रात को तुम्हें सारा माँस अवश्य खा लेना चाहिए। यदि थोड़ा माँस सवेरे तक बच जाये तो उसे आग में अवश्य ही जला देना चाहिए।

11"जब तुम भोजन करो तो ऐसे वस्त्रों को पहनो जैसे तुम लोग यात्रा पर जा रहे हो तुम लोगों के लबादे तुम्हारी पेटियों में कसे होने चाहिए। तुम लोग अपने जूते पहने रहना और अपनी यात्रा की छड़ी को अपने हाथों में रखना। तुम लोगों को शीघ्रता से भोजन कर लेना चाहिए। क्यों? क्योंकि यह यहोवा का फसह है वह समय जब यहोवा ने अपने लोगों की रक्षा की और उन्हें शीघ्रता से मिस्र के बाहर ले गया।

12"आज रात मैं मिस्र से होकर गुजरूँगा और मिस्र में प्रत्येक पहलौठे पुत्र को मार डालूँगा। मैं सभी पहलौठे जानवरों और मनुष्यों को मार डालूँगा। मैं मिस्र के सभी देवताओं को दण्ड दूँगा और दिखा दूँगा कि मैं यहोवा हूँ। 13किन्तु तुम लोगों के घरों पर लगा हुआ खून एक विशेष चिन्ह होगा। जब मैं खून देखूँगा, तो तुम लोगों के घरों को छोड़ता हुआ गुजर जाऊँगा।* मैं मिस्र के लोगों के लिए हानिकारक चीजें उत्पन्न करूँगा। किन्तु उन बुरी बीमारियों में से कोई भी तुम लोगों को हानि नहीं पहुँचाएगी।

14"सो तुम लोग आज की इस रात को सदा याद रखोगे, तुम लोगों के लिए यह एक विशेष पवित्र पर्व होगा। तुम्हारे वंशज सदा इस पवित्र पर्व को यहोवा की भक्ति किया करेंगे। 15इस पवित्र पर्व पर तुम लोग अख़मीरी आटे की रोटियाँ सात दिनों तक खाओगे। इस पवित्र पर्व के आने पर तुम लोग पहले दिन अपने घरों से सारे ख़मीर को निकाल बाहर करोगे। इस पवित्र पर्व के पूरे सात दिन तक किसी को भी ख़मीर नहीं खाना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति ख़मीर खाए तो उसे तुम इस्राएल के अन्य व्यक्तियों से निश्चय ही अलग कर देना। 16इस पवित्र पर्व के प्रथम और अन्तिम दिनों में धर्म सभा होगी। इन दिनों तुम्हें कोई भी काम नहीं करना होगा। इन दिनों केवल एक काम जो किया जा सकता, वह है अपना भोजन तैयार करना। 17तुम लोगों को अवश्य अखमीरी रोटीका पवित्र पर्व याद रखना होगा। क्यों? क्योंकि इस दिन ही मैंने तुम्हारे लोगों के सभी वर्गो को मिस्र से निकाला। अत: तुम लोगों के सभी वंशजो को यह दिन याद रखना ही होगा। यह नियम ऐसा है जो सदा रहेगा। 18इसलिए प्रथम महीने निसन के चौदहवें दिन की सन्ध्या से तुम लोग अखमीरी रोटी खाना आरम्भ करोगे। उसी महीने के इक्कीसवें दिन की सन्ध्या तक तुम ऐसी रोटी खाओगे। 19सात दिन तक तुम लोगों के घरों में कोई खमीर नहीं होना चाहिए। कोई भी व्यक्ति चाहे वह इस्राएल का नागरिक हो या विदेशी, जो इस समय खमीर खाएगा अन्य इस्राएलियों से अवश्य अलग कर दिया जाएगा। 20इस पवित्र पर्व में तुम लोगों को खमीर नहीं खाना चाहिए। तुम जहाँ भी रहो अखमीरी रोटी ही खाना।"

21इसलिए मूसा ने सभी बुज़ुर्गों (नेताओं) को एक स्थान पर बुलाया। मूसा ने उनसे कहा, "अपने परिवारों के लिए मेमने प्राप्त करो। फसह पर्व के लिए मेमने को मारो। 22जूफ़ा* के गुच्छों को लो और खून से भरे प्यालों में उन्हें डुबाओ। खून से चौखटों के दोनों पटों और सिरों को रंग दो। कोई भी व्यक्ति सवेरा होने से

गुजर जाऊँगा या "रक्षा करूँगा।"

जूफ़ा लगभग 3 फीट ऊँचे तनेवाला पौधा। इसकी पत्तियाँ और शाखाएं केशों की तरह होती हैं, जिससे उनका उपयोग कूची की तरह हो सके।

पहले अपना घर न छोड़े। 23उस समय जब यहोवा
पहलौठे सन्तानों को मारने के लिए मिस्र से होकर
जाएगा तो वह चौखट के दोनों पटों और सिरों पर खून
देखेगा तब यहोवा उस घर की रक्षा करेगा। यहोवा नाश
करने वाले को तुम्हारे घरों के भीतर आने और तुम
लोगों को चोट नहीं पहुँचाने देगा। 24तुम लोग इस आदेश
को अवश्य याद रखना। यह नियम तुम लोगों तथा तुम
लोगों के वंशजों के निमित्त सदा के लिए है। 25तुम लोगों
को यह कार्य तब भी याद रखना होगा जब तुम लोग
उस देश में पहुँचोगे जो यहोवा तुम लोगों को देगा। 26जब
तुम लोगों के बच्चे तुम से पूछेंगे, 'हम लोग यह त्योहार
क्यों मनाते हैं?' 27तो तुम लोग कहोगे, 'यह फसह पर्व
यहोवा की भक्ति के लिए है। क्यों? क्योंकि जब हम
लोग मिस्र में थे तब यहोवा इस्राएल के घरों से होकर
गुजराथा। यहोवा ने मिस्रियों को मार डाला, किन्तु उसने
हम लोगों के घरों में लोगों को बचाया। इसलिए लोग
अब यहोवा को झुककर प्रणाम करते हैं तथा उपासना
करते हैं।'"

28यहोवा ने यह आदेश मूसा और हारून को दिया
था। इसलिए इस्राएल के लोगों ने वही किया जो यहोवा
का आदेश था।

29आधी रात को यहोवा ने मिस्र के सभी पहलौठे
पुत्रों, फ़िरौन के पहलौठे पुत्र (जो मिस्र का शासक था)
से लेकर बन्दीगृह में बैठे कैदी के पुत्र तक सभी को
मार डाला। पहलौठे जानवर भी मर गए। 30मिस्र में उस
रात को हर घर में कोई न कोई मरा। फ़िरौन, उसके
अधिकारी और मिस्र के सभी लोग जोर से रोने चिल्लाने
लगे।

इस्राएलियों द्वारा मिस्र को छोड़ना

31इसलिए उस रात फ़िरौन ने मूसा और हारून को
बुलाया। फ़िरौन ने उनसे कहा, "तैयार हो जाओ और
हमारे लोगों को छोड़ कर चले जाओ। तुम और तुम्हारे
लोग वैसा ही कर सकते हैं जैसा तुमने कहा है। जाओ
और अपने यहोवा की उपासना करो। 32और तुम लोग
जैसा तुमने कहा है कि तुम चाहते हो, अपनी भेड़ें और
मवेशी अपने साथ ले जा सकते हो, जाओ! और मुझे
भी आशीष दो!" 33मिस्र के लोगों ने भी उनसे शीघ्रता से
जाने के लिए कहा। क्यों? क्योंकि उन्होंने कहा, "यदि
तुम लोग नहीं जाते हो हम सभी मर जाएंगे।"

34इस्राएल के लोगों के पास इतना समय न रहा कि वे
अपनी रोटी में खमीर डालें। उन्होंने गुँधे आटे की परातों
को अपने कपड़ों में लपेटा और अपने कंधों पर रख
कर ले गए। 35तब इस्राएल के लोगों ने वही किया जो
मूसा ने करने को कहा। वे अपने मिस्री पड़ोसियों के
पास गए और उनसे वस्त्र तथा चाँदी और सोने की बनी
चीज़े माँगी। 36यहोवा ने मिस्रियों को इस्राएल के लोगों
के प्रति दयालु बना दिया। इसलिए उन्होंने अपना धन
इस्राएल के लोगों को दे दिया।

37इस्राएल के लोग रमसिज से सुक्कॉम गए। वे लगभग
छः लाख* पुरुष थे। इसमें बच्चे सम्मिलित नहीं है।
38उनके साथ अनेक भेड़ें, गाय–बकरियाँ और अन्य
पशुधन था। उनके साथ ऐसे अन्य लोग भी यात्रा कर
रहे थे। जो इस्राएली नहीं थे, किन्तु वे इस्राएल के लोगों
के साथ गए। 39किन्तु लोगों को रोटी में खमीर डालने
का समय न मिला। और उन्होंने अपनी यात्रा के लिए
कोई विशेष भोजन नहीं बनाया। इसलिए उन्हें बिना
खमीर के ही रोटियाँ बनानी पड़ीं।

40इस्राएल के लोग मिस्र* में चार सौ तीस वर्ष तक
रहे। 41चार सौ तीस वर्ष बाद, ठीक उसी दिन, यहोवा
की सारी सेना* ने मिस्र से प्रस्थान किया। 42वह विशेष
रात है जब लोग याद करते हैं कि यहोवा ने क्या किया।
इस्राएल के सभी लोग उस रात को सदा याद रखेंगे।

43यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, "फसह पर्व के
नियम ये हैं: कोई विदेशी फसह पर्व में से नहीं खाएगा।
44किन्तु यदि कोई व्यक्ति दास को खरीदेगा और यदि
उसका खतना करेगा तो वह दास उस में से खा सकेगा।
45किन्तु यदि कोई व्यक्ति केवल तुम लोगों के देश में
रहता है या किसी व्यक्ति को तुम्हारे लिए मजदूरी पर
रखा गया है तो उस व्यक्ति को उस में से नहीं खाना
चाहिए। वह केवल इस्राएल के लोगों के लिए है।

46"प्रत्येक परिवार को घर के भीतर ही भोजन करना
चाहिए। कोई भी भोजन घर के बाहर नहीं ले जाना
चाहिए। मेमने की किसी हड्डी को न तोड़े। 47पूरी
इस्राएली जाति इस उत्सव को अवश्य मनाए। 48यदि
कोई ऐसा व्यक्ति तुम लोगों के साथ रहता है जो इस्राएल
की जाति का सदस्य नहीं है किन्तु वह फसह पर्व में
सम्मिलित होना चाहता है तो उसका खतना अवश्य
होना चाहिए। तब वह इस्राएल के नागरिक के समान
होगा, और वह भोजन में भाग ले सकेगा। किन्तु यदि
उस व्यक्ति का खतना नहीं हुआ हो तो वह इस फसह
पर्व के भोजन को नहीं खा सकता। 49ये ही नियम हर
एक पर लागू होंगे। नियमों के लागू होने में इस बात का
कोई महत्व नहीं होगा कि वह व्यक्ति तुम्हारे देश का
नागरिक है या विदेशी है। 50इसलिए इस्राएल के सभी
लोगों ने उन आदेशों का पालन किया जिन्हें यहोवा ने
मूसा और हारून को दिया था। 51इस प्रकार यहोवा

छः लाख या "छः सौ परिवारों के समूह" हिब्रू शब्द "सहस्र" उस हिब्रू शब्द की तरह है जिसका अर्थ "परिवार के समूह" होता है।

मिस्र प्राचीन ग्रीक और समरीती अनुवादों में "मिस्र और कनान" है। इससे पता चलता है कि वे लगभग इब्राहीम के समय से वर्षो की गणना कर रहे थे, यूसुफ के समय से नहीं। देखें उत्पत्ति 15:12–16 और गलतियों 3:17

यहोवा की सारी सेना अर्थात् इस्राएल के लोग।

उसी दिन इस्राएल के सभी लोगों को मिस्र से बाहर ले
गया। लोगों ने समूहों में प्रस्थान किया।

13 तब यहोवा ने मूसा से कहा, 2"प्रत्येक पहलौठा
इस्राएली लड़का मुझे समर्पित होगा। हर एक
स्त्री का पहलौठा नर बच्चा मेरा ही होगा। तुम लोग हर
एक नर पहलौठे जानवर को भी मुझे समर्पित करना।"

3मूसा ने लोगों से कहा, "इस दिन को याद रखो। तुम
लोग मिस्र में दास थे। किन्तु इस दिन यहोवा ने अपनी
महान शक्ति का उपयोग किया और तुम लोगों को
स्वतन्त्र किया। तुम लोग ख़मीर के साथ रोटी मत
खाना। 4आज के दिन आबीब के महीने में तुम लोग
मिस्र से प्रस्थान कर रहे हो। 5यहोवा ने तुम लोगों के
पूर्वजों से विशेष प्रतिज्ञा की थी। यहोवा ने तुम लोगों को
कनानी, हित्ती, एमोरी, हिब्बी और यबूसी लोगों की
धरती देने की प्रतिज्ञा की थी। यहोवा जब तुम लोगों को
उस सम्पन्न और सुन्दर देश में पहुँचा दे तब तुम लोग
इस दिन को अवश्य याद रखना। तुम लोग हर वर्ष के
पहले महीने में इस दिन को उपासना का विशेष दिन
रखना।

6"सात दिन तक तुम लोग वही रोटी खाना जिसमें
खमीर न हो। सातवें दिन एक बड़ी दावत होगी। यह
दावत यहोवा के सम्मान का सूचक होगी। 7अत: सात
दिन तक लोगों को खमीर के साथ बनी रोटी खानी
नहीं चाहिए। तुम्हारे प्रदेश में किसी भी जगह खमीर की
कोई रोटी नहीं होनी चाहिए। 8इस दिन तुम को अपने
बच्चों से कहना चाहिए, 'हम लोग यह दावत इसलिए
कर रहे हैं कि यहोवा ने मुझ को मिस्र से बाहर
निकाला।'

9"यह पवित्र दिन तुम लोगों को याद रखने में सहायता
करेगा अर्थात् तुम लोगों की हाथ पर बंधे धागे* का
काम करेगा। यह पवित्र दिन यहोवा के उपदेशों को
याद करने में तुमको सहायता करेगा। तुम्हें यह याद
दिलाने में सहायता करेगा कि यहोवा ने तुम लोगों को
मिस्र से बाहर निकालने के लिए अपनी महान शक्ति
का उपयोग किया। 10इसलिए हर वर्ष इस दिन को
ठीक समय पर याद रखो।

11"यहोवा तुम लोगों को उस देश में ले चलेगा जिसे
तुम लोगों को देने के लिए उसने प्रतिज्ञा की है। इस
समय वहाँ कनानी लोग रहते हैं। किन्तु यहोवा ने तुम से
पहले तुम्हारे पूर्वजों से यह प्रतिज्ञा की थी कि वह यह
प्रदेश तुम लोगों को देगा। परमेश्वर जब यह प्रदेश तुम
को देगा उसके बाद 12तुम लोग अपने हर एक पहलौठे
पुत्र को उसे समर्पित करना याद रखना और हर एक
पहलौठा नर जानवर यहोवा को अवश्य समर्पित होना
चाहिए। 13हर एक पहलौठा गधा यहोवा से वापस खरीदा
जा सकता है। तुम लोग उसके बदले मेमने को अर्पित
कर सकते हो और गधे को वापस ले सकते हो। यदि
तुम यहोवा से गधे को खरीदना नहीं चाहते तो इसे मार
डालो। यह एक बलि होगी तुम उसकी गर्दन अवश्य
तोड़ दो। हर एक पहलौठा लड़का यहोवा से पुन: अवश्य
खरीद लिया जाना चाहिए।

14"भविष्य में तुम्हारे बच्चे पूछेंगे कि तुम यह क्यों
करते हो। वे कहेंगे, 'इस सबका क्या मतलब है?' और
तुम उत्तर दोगे, 'यहोवा ने हम लोगों को मिस्र से बचाने
के लिए महान शक्ति का उपयोग किया। हम लोग वहाँ
दास थे। किन्तु यहोवा ने हम लोगों को बाहर निकाला
और वह यहाँ लाया। 15मिस्र में फ़िरौन हठी था। उसने
हम लोगों को प्रस्थान नहीं करने दिया। किन्तु यहोवा ने
उस देश के सभी पहलौठे नर सन्तानों को मार डाला।
(यहोवा ने पहलौठे नर जानवरों और पहलौठे पुत्रों को
मार डाला।) इसलिए हम लोग हर एक पहलौठे नर
जानवर को यहोवा को समर्पित करते हैं। और यही
कारण है कि हम प्रत्येक पहलौठे पुत्रों को फिर यहोवा
से खरीदते हैं।' 16यह तुम्हारी हाथ पर बँधे धागे की
तरह है और यह तुम्हारी आँखों के सामने बँधे चिन्ह
की तरह है। यह इसे याद करने में सहायक है कि
यहोवा अपनी महान शक्ति से हम लोगों को मिस्र से
बाहर लाया।"

मिस्र से बाहर यात्रा

17फ़िरौन ने लोगों को मिस्र छोड़ने के लिये विवश
किया। यहोवा ने लोगों को समुद्र के तट की सड़क को
नहीं पकड़ने दिया। वह सड़क पलिश्ती तक का सबसे
छोटा रास्ता है, किन्तु यहोवा ने कहा, "यदि लोग उस
रास्ते से जाएंगे तो उन्हें लड़ना पड़ेगा। तब वे अपना मन
बदल सकते हैं और मिस्र को लौट सकते हैं।" 18इसलिए
यहोवा उन्हें अन्य रास्ते से ले गया। वह लाल सागर की
तटीय मरुभूमि से उन्हें ले गया। किन्तु इस्राएल के लोग
तब युद्ध के लिए वस्त्र पहने थे जब उन्होंने मिस्र छोड़ा।

यूसुफ़ की अस्थियों का घर ले जाया जाना

19मूसा यूसुफ़ की अस्थियों को अपने साथ ले गया।
(मरने के पहले यूसुफ़ ने इस्राएल की सन्तानों से प्रतिज्ञा
कराई कि वे यह करेंगे। मरने के पहले यूसुफ़ ने कहा,
"जब परमेश्वर तुम लोगों को बचाए, मेरी अस्थियों को
मिस्र के बाहर अपने साथ ले जाना याद रखना।")

यहोवा का अपने लोगों को ले जाया जाना

20इस्राएल के लोगों ने सुक्कोत नगर छोड़ा और
एताम में डेरा डाला। एताम मरुभूमि के छोर पर था।

बंधे धागे शाब्दिक तुम्हारे हाथों पर एक चिन्ह, तुम्हारे ललाट पर एक प्रतीक। यह उस विशेष चीज़ का संकेत कर सकता है जिसे यहूदी व्यक्ति अपनी भुजाओं और ललाट पर परमेश्वर के नियमों को याद दिलाने के लिए बाँधता है।

21यहोवा ने रास्ता दिखाया। दिन में यहोवा ने एक बड़े
बादल का उपयोग लोगों को ले चलने के लिए किया।
और रात में यहोवा ने रास्ता दिखाने के लिए एक ऊँचे
अग्नि स्तम्भ का उपयोग किया। यह आग उन्हें प्रकाश
देती थी अत: वे रात को भी यात्रा कर सकते थे। 22एक
ऊँचे स्तम्भ के रूप में बादल सदा उनके साथ दिन में
रहा और रात को अग्नि स्तम्भ सदा उनके साथ रहा।

14 तब यहोवा ने मूसा से कहा, 2"लोगों से पीहाहीरोत
तक पीछे मुड़कर यात्रा करने को कहो। रात
में मिगदोल और समुद्र के बीच उनसे ठहरने को कहो।
यह बाल सपोन के करीब है। 3फ़िरौन सोचेगा कि
इस्राएल के लोग मरुभूमि में भटक गए है और वह
सोचेगा कि लोगों को कोई स्थान नहीं मिलेगा जहाँ वे
जाएं। 4मैं फ़िरौन की हिम्मत बढ़ाऊँगा ताकि वह तुम
लोगों का पीछा करे। किन्तु फ़िरौन और उसकी सेना
को हराऊँगा। इससे मुझे गौरव प्राप्त होगा। तब मिस्र के
लोग जानेंगे कि मैं ही यहोवा हूँ।" इस्राएल के लोगों ने
परमेश्वर काआदेश माना अर्थात् उन्होंने वही किया जो
उसने कहा।

फ़िरौन द्वारा इस्राएलियों का पीछा किया जाना

5जब फ़िरौन को यह सूचना मिली कि इस्राएल के
लोग भाग गये हैं तो उसने और उसके अधिकारियों ने
उन्हें वहाँ से चले जाने देने का जो वचन दिया था,
उसके प्रति अपना मन बदल दिया। फ़िरौन ने कहा,
"हमने इस्राएल के लोगों को क्यों जाने दिया? हमने उन्हें
भागने क्यों दिया? अब हमारे दास हमारे हाथों से निकल
चुके हैं।"

6इसलिए फ़िरौन ने अपने युद्ध रथ को तैयार किया
और अपनी सेना को साथ लिया। 7फ़िरौन ने अपने
लोगों में से छ: सौ सबसे अच्छे आदमियों तथा अपने
सभी रथों को लिया। हर एक रथ में एक अधिकारी
बैठा था। 8इस्राएल के लोग विजय के उत्साह में अपने
शस्त्रों को ऊपर उठाए जा रहे थे किन्तु यहोवा ने मिस्र
के राजा फ़िरौन को साहसी बनाया। और फ़िरौन ने
इस्राएल के लोगों का पीछा करना शुरु कर दिया।

9मिस्री सेना के पास बहुत से घोड़े, सैनिक, और रथ
थे। उन्होंने इस्राएल के लोगों का पीछा किया और उस
समय जब वे लाल सागर के तट पर पीहाहीरोत में,
बालसपोन के पूर्व में डेरा डाले थे,वे उनके समीप
आगए।

10इस्राएल के लोगों ने फ़िरौन और उसकी सेना को
अपनी ओर आते देखा तो लोग बुरी तरह डर गए।
उन्होंने सहायता के लिए यहोवा को पुकारा। 11उन्होंने
मूसा से कहा, "तुम हम लोगों को मिस्र से बाहर क्यों
लाए? तुम हम लोगों को इस मरुभूमि में मरने के लिए
क्यों ले आए? हम लोग शान्तिपूर्वक मिस्र में मरते, मिस्र
में बहुत सी कब्रें थीं। 12हम लोगों ने कहा था कि ऐसा
होगा। मिस्र में हम लोगों ने कहा था, 'कृपया हम लोगों
को कष्ट न दो। हम लोगों को यहीं ठहरने और मिस्रियों
की सेवा करने दो।' यहाँ आकर मरुभूमि में मरने से
अच्छा यह होता कि हम लोग वहीं मिस्रियों के दास
बनकर रहते।"

13किन्तु मूसा ने उत्तर दिया, "डरो नहीं! भागो नहीं
रुक जाओ! जरा ठहरो और देखो कि आज तुम लोगों
को यहोवा कैसे बचाता है। आज के बाद तुम लोग इन
मिस्रियों को कभी नहीं देखोगे! 14तुम लोगों को शान्त
रहने के अतिरिक्त और कुछ नहीं करना है। यहोवा
तुम लोगों के लिए लड़ता रहेगा।"

15तब यहोवा ने मूसा से कहा, "तुम्हें मुझको
पुकारना नहीं पड़ेगा! इस्राएल के लोगों को आगे चलने
का आदेश दो। 16अपने हाथ की लाठी को लाल
सागर के ऊपर उठाओ और लाल सागर फट जाएगा।
तब लोग सूखी भूमि से समुद्र को पार कर सकेंगे। 17मैंने
मिस्रियों को साहसी बनाया है। इस प्रकार वे तुम्हारा
पीछा करेंगे। किन्तु मैं दिखाऊँगा कि मैं फ़िरौन,
उसके सभी घुड़सवारों और रथों से अधिक शक्तिशाली
हूँ। 18तब मिस्री समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ। जब मैं फ़िरौन,
उसके घुड़सवारों और रथों को हराऊँगा वे तब मुझे
सम्मान देंगे।"

यहोवा का मिस्री सेना को हराना

19उस समय यहोवा का दूत लोगों के पीछे गया।
(यहोवा का दूत प्राय: लोगों के आगे था और उन्हें ले जा
रहा था।) इसलिए बादल का स्तम्भ लोगों के आगे से
हट गया और उनके पीछे आ गया। 20इस प्रकार बादल
मिस्रियों और इस्राएलियों के बीच खड़ा हुआ। इस्राएल के
लोगों के लिए प्रकाश था किन्तु मिस्रियों के लिए अँधेरा।
इसलिए मिस्री उस रात इस्राएलियों के अधिक निकट न
आ सके।

21मूसा ने अपनी बाहें लाल सागर के ऊपर उठाईं।
और यहोवा ने पूर्व से तेज आँधी चला दी। आँधी रात
भर चलती रही। समुद्र फटा और पुरवायी हवा ने जमीन
को सुखा दिया। 22इस्राएल के लोग सूखी जमीन पर
चलकर समुद्र के पार गए। उनकी दायीं और बाईं ओर
पानी दीवार की तरह खड़ा था। 23तब फ़िरौन के सभी
रथों और घुड़सवारों ने समुद्र में उनका पीछा किया।
24बहुत सवेरे ही यहोवा ने लम्बे बादल और आग के
स्तम्भ पर से मिस्र की सेना को देखा और यहोवा ने
उन पर हमला किया और उन्हें हरा दिया।

25रथों के पहिए धंस गए। रथों का नियन्त्रण कठिन
हो गया। मिस्री चिल्लाए, "हम लोग यहाँ से निकल चलें!
यहोवा हम लोगों के विरुद्ध लड़ रहा है। यहोवा इस्राएल
के लोगों के लिए लड़ रहा है।"

26तब यहोवा ने मूसा से कहा, "अपने हाथ को समुद्र
के ऊपर उठाओ। फिर पानी गिरेगा तथा मिस्री रथों
और घुड़सवारों को डूबो देगा।"
27इसलिए ठीक दिन निकलने से पहले मूसा ने अपना
हाथ समुद्र के ऊपर उठाया और पानी अपने उचित
तल पर वापस पहुँच गया। मिस्री भागने का प्रयत्न कर
रहे थे। किन्तु यहोवा ने मिस्रियों को समुद्र में बहा कर
डूबो दिया। 28पानी अपने उचित तल तक लौटा और
उसने रथों तथा घुड़सवारों को ढक लिया। फ़िरौन की
पूरी सेना जो इस्राएली लोगों का पीछा कर रही थी,
डूबकर नष्ट हो गई। उनमें से कोई भी न बचा!
29किन्तु इस्राएल के लोगों ने सूखी जमीन पर चलकर
समुद्र पार किया। उनकी दायीं और बायीं ओर पानी
दीवार की तरह खड़ा था। 30इसलिए उस दिन यहोवा ने
इस्राएल के लोगों को मिस्रियों से बचाया और इस्राएल के
लोगों ने मिस्रियों के शवों को लाल सागर के किनारे
देखा। 31इस्राएल के लोगों ने यहोवा की महान शक्ति को
देखा जब उसने मिस्रियों को हराया। अत: लोगों ने
यहोवा का भय माना और सम्मान किया और उन्होंने
यहोवा और उसके सेवक मूसा पर विश्वास किया।

मूसा का गीत

15 तब मूसा और इस्राएल के लोग यहोवा के लिए
यह गीत गाने लगे:
"मैं यहोवा के लिए गाऊँगा क्योंकि उसने महान
काम कियें हैं। उसने घोड़ों और सवारों को समुद्र में
फेंका है।
2यहोवा ही मेरी शक्ति है। वह हमें बचाता है और मैं
गाता हूँ गीत उसकी प्रशंसा के।* मेरा परमेश्वर यहोवा
है और मैं उसकी स्तुति करता हूँ। मेरे पूर्वजों का
परमेश्वर यहोवा है और मैं उसका आदर करता हूँ।
3यहोवा महान योद्धा है। उसका नाम यहोवा है।
4उसने फ़िरौन के रथ और सैनिकों को समुद्र में
फेंक दिया। फ़िरौन के उत्तम अधिकारी लाल सागर में
डूब गए।
5गहरे पानी ने उन्हें ढका। वे चट्टानों की तरह गहरे
पानी में डूबे।
6तेरी दायीं भुजा अद्भुत शक्तिशाली है। यहोवा, तेरी
दायीं भुजा ने शत्रु को चकनाचूर कर दिया।
7तूने अपनी महामहिमा में नष्ट किया उन्हें जो व्यक्ति
तेरे विरुद्ध खड़े हुए। तेरे क्रोध ने उन्हें उस प्रकार नष्ट
किया जैसे आग तिनके को जलाती है।
8तूने जिस तेज आँधी को चलाया, उसने जल को
ऊँचा उठाया। वह तेज बहता जल ठोस दीवार बना।
समुद्र ठोस बन गया अपने गहरे से गहरे भाग तक।
9शत्रु ने कहा, 'मैं उनका पीछा करूँगा और उनको
पकड़ूँगा। मैं उनका सारा धन लूँगा। मैं अपनी तलवार
चलाऊँगा और उनसे हर चीज़ लूँगा। मैं अपने हाथों का
उपयोग करूँगा और अपने लिए सब कुछ लूँगा।'
10किन्तु तू उन पर टूट पड़ा और उन्हें समुद्र से ढक
दिया तूने वे सीसे की तरह डूबे गहरे समुद्र में।
11क्या कोई देवता यहोवा के समान है? नहीं! तेरे
समान कोई देवता नहीं, तू है अद्भुत अपनी पवित्रता
में! तुझमें है विस्मयजनक शक्ति तू अद्भुत चमत्कार
करता है!
12तू अपना दाँया हाथ उठा कर संसार को नष्ट कर
सकता था!
13परन्तु तू कृपा कर उन लोगों को ले चला जिन्हें
तूने बचाया है। तू अपनी शक्ति से इन लोगों को अपने
पवित्र और सुहावने देश को ले जाता है।
14अन्य राष्ट्र इस कथा को सुनेंगे और वे भयभीत
होंगे। पलिश्ती लोग भय से काँपेंगे।
15तब एदोम के मुखिया भय से कँापेंगे मोआब के
शक्तिशाली नेता भय से कँापेंगे कनान के व्यक्ति अपना
साहस खो देंगे।
16वे लोग आतंक और भय से आक्रांत होंगे जब वे
तेरी शक्ति देखेंगे। वे चट्टान के समान शान्त रहेंगे जब
तक तुम्हारे लोग गुज़रेंगे जब तक तेरे द्वारा लाए गए
लोग गुज़रेंगे।
17यहोवा अपने लोगों को स्वयं ले जाएगा अपने पर्वत
पर उस स्थान तक जिसे तूने अपने सिंहासन के लिए
बनाया है। हे स्वामी, तू अपना मन्दिर अपने हाथों
बनायेगा!
18यहोवा सदा सर्वदा शासन करता रहेगा।"
19हाँ, ये सचमुच हुआ! फ़िरौन के घोड़े, सवार, और
रथ समुद्र में चले गए और यहोवा ने उन्हें समुद्र के पानी
से ढक दिया। किन्तु इस्राएल के लोग सूखी जमीन पर
चलकर समुद्र के पार चले गए। 20तब हारून की बहन
नबिया मरियम ने एक डफ़ली ली। मरियम और स्त्रियों
ने नाचना, गाना आरम्भ किया। मरियम की टेक थी,
21"यहोवा के लिए गाओ क्योंकि उसने महान काम
कियें हैं फेंका उसने घोड़े को और उसके सवार को
सागर के बीच में।"
22मूसा इस्राएल के लोगों को लाल सागर से दूर ले
जाता रहा, लोग शूर मरुभूमि में पहुँचे। वे तीन दिन तक
मरुभूमि में यात्रा करते रहे। लोग तनिक भी पानी न पा
सके। 23तीन दिन के बाद लोगों ने मारा की यात्रा की।
मारा में पानी था, किन्तु पानी इतना कड़वा था कि
लोग पी नहीं सकते थे। (यही कारण था कि इस स्थान
का नाम मारा पड़ा।)
24लोगों ने मूसा से शिकायत शुरू की। लोगों ने कहा,
"अब हम लोग क्या पीएँ?"

यहोवा ... प्रशंसा के शाब्दिक "यहोवा मेरी शक्ति और स्तुति और वह मेरी मुक्ति बनता है।"

25मूसा ने यहोवा को पुकारा। इसलिए यहोवा ने उसे
एक पेड़ दिखाया। मूसा ने पेड़ को पानी में डाला। जब
उसने ऐसा किया, पानी अच्छा पीने योग्य हो गया।

उस स्थान पर यहोवा ने लोगों की परीक्षा ली और
उन्हें एक नियम दिया। यहोवा ने लोगों के विश्वास की
जाँच की। 26यहोवा ने कहा, "तुम लोगों को अपने
परमेश्वर यहोवा का आदेश अवश्य मानना चाहिए।
तुम लोगों को वह करना चाहिए जिसे वह ठीक कहता
है। यदि तुम लोग यहोवा के आदेशों और नियमों का
पालन करोगे तो तुम लोग मिस्रियों की तरह बीमार नहीं
होगे। मैं तुम्हारा यहोवा तुम लोगों को कोई ऐसी बीमारी
नहीं दूँगा जैसी मैंने मिस्रियों को दी। मैं यहोवा हूँ। मैं ही
वह हूँ जो तुम्हें स्वस्थ बनाता है।"

27तब लोगों ने एलीम तक की यात्रा की। एलीम में
पानी के बारह सोते थे। और वहाँ सत्तर खजूर के पेड़
थे। इसलिए लोगों ने वहाँ पानी के निकट डेरा डाला।

16 तब लोगों ने एलीम से यात्रा की और सीनै
मरुभूमि में पहुँचे। यह स्थान एलीम और सीनै
के बीच था। वे इस स्थान पर दूसरे महीने के पन्द्रहवें
दिन* मिस्र छोड़ने के बाद पहुँचे। 2तब इस्राएल के लोगों
ने फिर शिकायत करनी शुरू की। उन्होंने मूसा और
हारून से मरूभूमि में शिकायत की। 3लोगों ने मूसा
और हारून से कहा, "यह हमारे लिये अच्छा होता कि
यहोवा ने हम लोगों को मिस्र में मार डाला होता। मिस्र में
हम लोगों के पास खाने को बहुत था। हम लोगों के पास
वह सारा भोजन था जिसकी हमें आवश्यकता थी।
किन्तु अब तुम हमें मरुभूमि में ले आये हो। हम सभी
यहाँ भूख से मर जाएंगे।"

4तब यहोवा ने मूसा से कहा, "मैं आकाश से भोजन
गिराऊँगा। यह भोजन तुम लोगों के खाने के लिए होगा।
हर एक दिन लोग बाहर जायें और उस दिन खाने के
जरूरत के लिए भोजन इकट्ठा करें। मैं यह इसलिए
करूँगा कि मैं देखूँ कि क्या लोग वही करेंगे जो मैं
करने को कहूँगा। 5हर एक दिन लोग प्रत्येक दिन के
लिए पर्याप्त भोजन इकट्ठा करें। किन्तु शुक्रवार को
जब भोजन तैयार करने लगे तो देखें कि वे दो दिन के
लिए पर्याप्त भोजन रखते हैं।"*

6इसलिए मूसा और हारून ने इस्राएल के लोगों से
कहा, "आज की रात तुम लोग यहोवा की शक्ति देखोगे।
तुम लोग जानोगे कि एक मात्र वह ही ऐसा है जिसने तुम
लोगों को मिस्र देश से बचा कर बाहर निकाला। 7कल
सवेरे तुम लोग यहोवा की महिमा देखोगे। तुम लोगों ने
यहोवा से शिकायत की। उसने तुम लोगों की सुनी। तुम
लोग हम लोगों से शिकायत पर शिकायत कर रहे हो।
संभव है कि हम लोग अब कुछ आराम कर सकें।"

8और मूसा ने कहा, "तुम लोगों ने शिकायत की
और यहोवा ने तुम लोगों कि शिकायतें सुन ली है।
इसलिए रात को यहोवा तुम लोगों को माँस देगा और
हर सवेरे तुम लोग वह सारा भोजन पाओगे, जिसकी
तुम को जरूरत है। तुम लोग मुझसे और हारून से
शिकायत करते रहे हो। याद रखो तुम लोग मेरे और
हारून के विरुद्ध शिकायत नहीं कर रहे हो। तुम लोग
यहोवा के विरुद्ध शिकायत कर रहे हो।"

9तब मूसा ने हारून से कहा, "इस्राएल के लोगों को
सम्बोधित करो। उनसे कहो, 'यहोवा के सामने इकट्ठे
हों क्योंकि उसने तुम्हारी शिकायतें सुनी हैं।'"

10हारून ने इस्राएल के सभी लोगों को सम्बोधित
किया। वे सभी एक स्थान पर इकट्ठे थे। जब हारून
बातें कर रहा था तभी लोग मुड़े और उन्होंने मरुभूमि
की ओर देखा और उन्होंने यहोवा की महिमा को
बादल में प्रकट होते देखा।

11यहोवा ने मूसा से कहा, 12"मैंने इस्राएल के लोगों
की शिकायत सुनी है। इसलिए उनसे मेरी बातें कहो। मैं
कहता हूँ, 'आज साँझ को तुम माँस खाओगे और कल
सवेरे तुम लोग भरपेट रोटियाँ खाओगे, तब तुम लोग
जानोगे कि तुम लोग अपने परमेश्वर यहोवा पर विश्वास
कर सकते हो।'"

13उस रात बटेरें (पक्षियाँ) डेरे के चारों ओर आईं।
लोगों ने इन बटेरों को माँस के लिए पकड़ा। सवेरे डेरे
के पास ओस पड़ी होती थी। 14सूरज के निकलने पर
ओस पिघल जाती थी किन्तु ओस के पिघलने पर पाले
की तह की तरह जमीन पर कुछ रह जाता था। 15इस्राएल
के लोगों ने इसे देखा और परस्पर कहा, "वह क्या
है?"* उन्होंने यह प्रश्न इसलिए पूछा कि वे नहीं जानते
थे कि वह क्या चीज़ है। इसलिए मूसा ने उनसे कहा,
"यह भोजन है जिसे यहोवा तुम्हें खाने को दे रहा है।
16यहोवा कहता है, 'हर व्यक्ति उतना इकट्ठा करे
जितना उसे आवश्यक है। तुम लोगों में से हर एक
लगभग दो क्वार्ट* अपने परिवार के हर व्यक्ति के
लिए इकट्ठा करे।'"

17इसलिए इस्राएल के लोगों ने ऐसा ही किया। हर
व्यक्ति ने इस भोजन को इकट्ठा किया। कुछ व्यक्तियों
ने अन्य लोगों से अधिक इकट्ठा किया। 18उन लोगों ने
अपने परिवार के हर एक व्यक्ति को भोजन दिया। जब
भोजन नापा गया तो हर एक व्यक्ति के लिए सदा पर्याप्त
रहा, किन्तु कभी भी आवश्यकता से अधिक नहीं

दूसरे महीने के पन्द्रहवें दिन अर्थात् पन्द्रहवाँ इययर। इस्राएल के लोग एक महीने तक यात्रा करते रहे थे।

शुक्रवार ... है यह इसलिए हुआ ताकि लोग सब्त (शनिवार) को विश्राम न करें।

"वह क्या है?" हिब्रू में यह "मन्ना" की तरह उच्चारित होता है।

दो क्वार्ट मूल में एक ओमेर।

हुआ। हर व्यक्ति ने ठीक अपने लिए तथा अपने परिवार
के खाने के लिए पर्याप्त इकट्ठा किया।
19मूसा ने उनसे कहा, “अगले दिन खाने के लिए वह
भोजन मत बचाओ।” 20किन्तु लोगों ने मूसा की बात न
मानी। कुछ लोगों ने अपना भोजन बचाया जिससे वे उसे
अगले दिन खा सकें। किन्तु जो भोजन बचाया गया था
उसमें कीड़े पड़ गए और वह दुर्गन्ध देने लगा। मूसा उन
लोगों पर क्रुद्ध हुआ जिन्होंने यह किया था।
21हर सवेरे लोग भोजन इकट्ठा करते थे। हर एक
व्यक्ति उतना इकट्ठा करता था जितना वह खा सके।
किन्तु जब धूप तेज होती थी भोजन गल जाता था और
वह समाप्त हो जाता था।
22शुक्रवार को लोगों ने दुगना भोजन इकट्ठा किया।
उन्होंने चार क्वार्ट हर व्यक्ति के लिए इकट्ठा किया।
इसलिए लोगों के सभी मुखिया आए और उन्होंने यह
बात मूसा से कही।
23मूसा ने उनसे कहा, “यह वैसा ही है जैसा यहोवा ने
बताया था। क्यों? क्योंकि कल यहोवा के आराम का
पवित्र दिन सब्त है। तुम लोग आज के लिए जितना
भोजन तुम्हें चाहिए पका सकते हो। किन्तु शेष भोजन
कल सवेरे के लिए बचाना।”
24इसलिए लोगों ने अगले दिन के लिए बाकी भोजन
बचाया और कोई भोजन खराब नहीं हुआ। और इनमें
कहीं कोई कीड़े नहीं पड़े।
25शनिवार को मूसा ने लोगों से कहा, “आज यहोवा
को समर्पित आराम का पवित्र दिन सब्त है। इसलिए
तुम लोगों में से कल कोई भी खेत में बाहर नहीं होगा।
कल का इकट्ठा भोजन खाओ। 26तुम लोगों को छः
दिन भोजन इकट्ठा करना चाहिए। किन्तु सातवाँ दिन
आराम का दिन है इसलिए जमीन पर कोई विशेष
भोजन नहीं होगा।”
27शनिवार को कुछ लोग थोड़ा भोजन एकत्र करने
गए, किन्तु वे वहाँ जरा सा भी भोजन नहीं पा सके।
28तब यहोवा ने मूसा से कहा, “तुम्हारे लोग मेरे आदेश
का पालन करने और उपदेशों पर चलने से कब तक
मना करेंगे? 29देखो यहोवा ने शनिवार को तुम्हारे
आराम का दिन बनाया है। इसलिए शुक्रवार को यहोवा
दो दिन के लिये पर्याप्त भोजन तुम्हें देगा। इसलिए सब्त
को हर एक को बैठना और आराम करना चाहिए।
वहीं ठहरे रहो जहाँ हो।” 30इसलिए लोगों ने सब्त को
आराम किया।
31इस्राएली लोगों ने इस विशेष भोजन को “मन्ना”
कहना आरम्भ किया। मन्ना छोटे सफ़ेद धनिया के
बीजों के समान था और इसका स्वाद शहद के साथ
बने पापड़ की तरह था। 32तब मूसा ने कहा, “यहोवा ने
आदेश दिया कि, ‘इस भोजन का आठ प्याले भर अपने
वंशजों के लिए बचाना। तब वे उस भोजन को देख
सकेंगे जिसे मैंने तुम लोगों को मरुभूमि में तब दिया था
जब मैंने तुम लोगों को मिस्र से निकाला था।’”
33इसलिए मूसा ने हारून से कहा, “एक घड़ा लो और
इसे आठ प्याले मन्ना से भरो और इस मन्ना को यहोवा
के सामने रखने के लिये और अपने वंशजों के लिए
बचाओ।” 34(इसलिए हारून ने वैसा ही किया जैसा
यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था। हारून ने आगे
चलकर मन्ना के घड़े को साक्षीपत्र के सन्दूक के
सामने रखा।) 35लोगों ने चालीस वर्ष तक मन्ना खाया।
वे मन्ना तब तक खाते रहे जब तक उस प्रदेश में नहीं
आ गए जहाँ उन्हें बसना था। वे उसे तब तक खाते रहे
जब तक वे कनान के निकट नहीं आ गए। 36(वे मन्ना
के लिए जिस तोल का उपयोग करते थे, वह ओमेर
था। एक ओमेर* लगभग आठ प्यालों के बराबर था।)

17 इस्राएल के सभी लोगों ने सीन की मरुभूमि से
एक साथ यात्रा की। वे यहोवा जैसा आदेश देता
रहा, एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते रहे।
लोगों ने रपीदीम की यात्रा की और वहाँ उन्होंने डेरा
डाला। वहाँ लोगों के पीने के लिए पानी न था। 2इसलिए
वे मूसा के विरुद्ध हो गए और उससे बहस करने लगे।
लोगों ने कहा, “हमें पीने के लिए पानी दो।”
किन्तु मूसा ने उनसे कहा, “तुम लोग मेरे विरुद्ध क्यों
हो रहे हो? तुम लोग यहोवा की परीक्षा क्यों ले रहे हो?
क्या तुम लोग समझते हो कि यहोवा हमारे साथ नहीं
है?”
3किन्तु लोग बहुत प्यासे थे। इसलिए उन्होंने मूसा से
शिकायत जारी रखी। लोगों ने कहा, “हम लोगों को तुम
मिस्र से बाहर क्यों लाए? क्या तुम इसलिए लाए कि
पानी के बिना हमको, हमारे बच्चों को, और हमारी
गाय, बकरियों को प्यासा मार डालो? 4इसलिए मूसा ने
यहोवा को पुकारा, “मैं इन लोगों के साथ क्या करूँ? ये
मुझे मार डालने को तैयार हैं।” 5यहोवा ने मूसा से कहा,
“इस्राएल के लोगों के पास जाओ और उनके कुछ
बुज़ुर्गों (नेताओं) को अपने साथ लो। अपनी लाठी अपने
साथ ले जाओ। यह वही लाठी है जिसे तुमने तब उपयोग
में लिया था जब नील नदी पर इससे चोट की थी।
6होरेब (सीनै) पहाड़ पर मैं तुम्हारे सामने एक चट्टान
पर खड़ा होऊँगा। लाठी को चट्टान पर मारो और
इससे पानी बाहर आ जाएगा। तब लोग पी सकते हैं।”
मूसा ने वही बातें कीं और इस्राएल के बुज़ुर्गों (नेताओ)
ने इसे देखा। 7मूसा ने इस स्थान का नाम मरीबा और
मस्सा रखा। क्योंकि यह वह स्थान था जहाँ इस्राएल के
लोग उसके विरुद्ध हुए और उन्होंने यहोवा की परीक्षा
ली थी। लोग यह जानना चाहते थे कि यहोवा उनके
साथ है या नहीं।

ओमेर एक ओमेर एपा का 1/10 भाग था।

8अमालेकी लोग रपीदीम आए और इस्राएल के लोगों
के विरुद्ध लड़े। 9इसलिए मूसा ने यहोशू से कहा, “कुछ
लोगों को चुनों और अगले दिन अमालेकियों से जाकर
लड़ो। मैं पर्वत की चोटी पर खड़ा होकर तुम्हें देखूँगा। मैं
परमेश्वर द्वारा दी गई छड़ी को पकड़े रहूँगा।”

10यहोशू ने मूसा की आज्ञा मानी और अगले दिन
अमालेकियों से लड़ने गया। उसी समय मूसा, हारून
और हूर पहाड़ी की चोटी पर गए। 11जब कभी मूसा
अपने हाथ को हवा में उठाता तो इस्राएल के लोग युद्ध
जीत लेते। किन्तु जब मूसा अपने हाथ को नीचे करता
तो इस्राएल के लोग युद्ध में हारने लगते।

12कुछ समय बाद मूसा की बाहें थक गई। मूसा के
साथ के लोग ऐसा उपाय करना चाहते थे जिससे मूसा
की बाहें हवा में रह सकें। इसलिए उन्होंने एक बड़ी
चट्टान मूसा के नीचे बैठने के लिए रखी तथा हारून
और हूर ने मूसा की बाहों को हवा में पकड़े रखा।
हारून मूसा की एक ओर था तथा हूर दूसरी ओर। वे
उसके हाथों को वैसे ही ऊपर तब तक पकड़े रहे जब
तक सूरज नहीं डूबा। 13इसलिए यहोशू और उसके
सैनिकों ने अमालेकियों को इस युद्ध में हरा दिया।

14तब यहोवा ने मूसा से कहा, “इस युद्ध के बारे में
लिखो। इस युद्ध की घटनाओं को एक पुस्तक में लिखो
जिससे लोग याद करेंगे कि यहाँ क्या हुआ था और
यहोशू से कहो कि मैं अमालेकी लोगों को धरती से
पूर्णरूप से नष्ट कर दूँगा।”

15तब मूसा ने एक वेदी बनायी। मूसा ने वेदी का नाम
“यहोवा निस्सी” रखा। 16मूसा ने कहा, “मैंने यहोवा के
सिंहासन की ओर अपने हाथ फैलाए। इसलिए यहोवा
अमालेकी लोगों से लड़ा जैसा उसने सदा किया है।”

मूसा को उसके ससुर की सलाह

18 मूसा का ससुर यित्रो मिद्यान में याजक था।
परमेश्वर ने मूसा और इस्राएल के लोगों की
अनेक प्रकार से जो सहायता की उसके बारे में यित्रो ने
सुना। यित्रो ने इस्राएल के लोगों को यहोवा द्वारा मिस्र से
बाहर ले जाए जाने के बारे में सुना। 2इसलिए यित्रो मूसा
के पास गया जब वह परमेश्वर के पर्वत के पास डेरा
डाले था। वह मूसा की पत्नी सिप्पोरा को अपने साथ
लाया। (सिप्पोरा मूसा के साथ नहीं थी क्योंकि मूसा ने
उसे उसके घर भेज दिया था।) 3यित्रो मूसा के दोनो पुत्रों
को भी साथ लाया। पहले पुत्र का नाम गेर्शोम रखा
क्योंकि जब वह पैदा हुआ, मूसा ने कहा, “मैं विदेश में
अजनबी हूँ।” 4दूसरे पुत्र का नाम एलीएजेर रखा क्योंकि
जब वह उत्पन्न हुआ तो मूसा ने कहा, “मेरे पिता के
परमेश्वर ने मेरी सहायता की और मिस्र के राजा की
तलवार से मुझे बचाया है।” 5इसलिए यित्रो मूसा के पास
तब गया जब वह परमेश्वर के पर्वत (सीनै पर्वत) के
निकट मरुभूमि में डेरा डाले था। मूसा की पत्नी और
उसके दो पुत्र यित्रो के साथ थे।

6यित्रो ने मूसा को एक सन्देश भेजा। यित्रो ने कहा,
“मैं तुम्हारा ससुर यित्रो हूँ और मैं तुम्हारी पत्नी और
उसके दोनों पुत्रों को तुम्हारे पास ला रहा हूँ।”

7इसलिए मूसा अपने ससुर से मिलने गया। मूसा उसके
सामने झुका और उसे चूमा। दोनों लोगों ने एक दूसरे
का कुशल क्षेम पूछा। तब वे मूसा के डेरे में और
अधिक बातें करने गए। 8मूसा ने अपने ससुर यित्रो को
हर एक बात बताई जो यहोवा ने इस्राएल के लोगों के
लिए की थी। मूसा ने वे चीज़ें भी बताई जो यहोवा ने
फ़िरौन और मिस्र के लोगों के लिए की थीं। मूसा ने
रास्ते की सभी समस्याओं के बारे में बताया और मूसा
ने अपने ससुर को बताया कि किस तरह यहोवा ने
इस्राएली लोगों को बचाया, जब-जब वे कष्ट में थे।

9यित्रो उस समय बहुत प्रसन्न हुआ जब उसने यहोवा
द्वारा इस्राएल के लिए की गई सभी अच्छी बातों को
सुना। यित्रो इसलिए प्रसन्न था कि यहोवा ने इस्राएल के
लोगों को मिस्रियों से स्वतन्त्र कर दिया था।

10यित्रो ने कहा, “यहोवा की स्तुति करो! उसने तुम्हें
मिस्र के लोगों से स्वतन्त्र कराया। यहोवा ने तुम्हें फ़िरौन
से बचाया है।

11अब मैं जानता हूँ कि यहोवा सभी देवताओं से
महान है उन्होंने सोचा कि सबकुछ उनके काबू में है
लेकिन देखो, परमेश्वर ने क्या किया!”

12तब यित्रो ने परमेश्वर के सम्मान में बलि तथा भेंटे
दीं। तब हारून तथा इस्राएल के सभी बुज़ुर्ग (नेता) मूसा
के ससुर यित्रो के साथ भोजन करने आए। यह उन्होंने
परमेश्वर की उपासना की विशेष विधि के रूप में
किया।

13अगले दिन मूसा लोगों का न्याय करने वाला था।
वहाँ लोगों की संख्या बहुत अधिक थी। इस कारण
लोगों को मूसा के सामने सारे दिन खड़ा रहना पड़ा।
14यित्रो ने मूसा को न्याय करते देखा। उसने पूछा, “तुम
ही यह क्यों कर रहे हो? एक मात्र न्यायाधीश तुम्हीं
क्यों हो? और लोग केवल तुम्हारे पास ही सारे दिन क्यों
आते हैं?”

15तब मूसा ने अपने ससुर से कहा, “लोग मेरे पास
आते हैं और अपनी समस्याओं के बारे में मुझ से
परमेश्वर का निर्णय पूछते हैं। 16यदि उन लोगों का
कोई विवाद होता है तो वे मेरे पास आते हैं। मैं निर्णय
करता हूँ कि कौन ठीक है। इस प्रकार मैं परमेश्वर के
नियमों और उपदेशों की शिक्षा लोगों को देता हूँ।”

17किन्तु मूसा के ससुर ने उससे कहा, “जिस प्रकार
तुम यह कर रहे हो, ठीक नहीं है। 18तुम्हारे अकेले के
लिए यह काम अत्याधिक है। इससे तुम थक जाते हो
और इससे लोग भी थक जाते हैं। तुम यह काम स्वयं

अकेले नहीं कर सकते। 19मैं तुम्हें कुछ सुझाव दूँगा। मैं
तुम्हें बताऊँगा कि तुम्हें क्या करना चाहिए। मेरी प्रार्थना
है कि परमेश्वर तुम्हारा साथ देगा। जो तुम्हें करना
चाहिए वह यह है। तुम्हें परमेश्वर के सामने लोगों का
प्रतिनिधित्व करते रहना चाहिए और तुम्हें उनके इन
विवादों और समस्याओं को परमेश्वर के सामने रखना
चाहिए। 20तुम्हें परमेश्वर के नियमों और उपदेशों की
शिक्षा लोगों को देनी चाहिए। लोगों को चेतावनी दो कि
वे नियम न तोड़ें। लोगों को जीने की ठीक राह बताओ।
उन्हें बताओ कि वे क्या करें। 21किन्तु तुम्हें लोगों में से
अच्छे लोगों को चुनना चाहिए।

“तुम्हें अपने विश्वासपात्र आदमियों का चुनाव करना
चाहिए अर्थात् उन आदमियों का जो परमेश्वर का
सम्मान करते हों। उन आदमियों को चुनो जो धन के
लिए अपना निर्णय न बदलें। इन आदमियों को लोगों का
प्रशासक बनाओ। हजार, सौ, पचास, और दस लोगों पर
भी प्रशासक होने चाहिए। 22इन्हीं प्रशासकों को लोगों
का न्याय करने दो। यदि कोई बहुत ही गंभीर मामला हो
तो वे प्रशासक निर्णय के लिए तुम्हारे पास आ सकते
हैं। किन्तु अन्य मामलों का निर्णय वे स्वयं ही कर
सकते हैं। इस प्रकार यह तुम्हारे लिए अधिक सरल
होगा। इसके अतिरिक्त, ये तुम्हारे काम में हाथ बटा
सकेंगे। 23यदि तुम यहोवा की इच्छानुसार ऐसा करते हो
तब तुम अपना कार्य करते रहने योग्य हो सकोगे। और
इसके साथ ही साथ सभी लोग अपनी समस्याओ के हल
हो जाने से शान्तिपूर्वक घर जा सकेंगे।”

24इसलिए मूसा ने वैसा ही किया जैसा यित्रो ने कहा
था। 25मूसा ने इस्राएल के लोगों मे से योग्य पुरुषों को
चुना। मूसा ने उन्हें लोगों का अगुआ बनाया। वहाँ
हजार, सौ, पचास और दस लोगों के ऊपर प्रशासक थे।
26ये प्रशासक लोगों के न्यायाधीश थे। लोग अपनी समस्याएं
इन प्रशासको के पास सदा ला सकते थे। और मूसा को
केवल गंभीर मामले ही निपटाने पड़ते थे।

27कुछ समय बाद मूसा ने अपने ससुर यित्रो से विदा
ली और यित्रो अपने घर लौट गया।

इस्राएल के साथ परमेश्वर का साक्षीपत्र

19 मिस्र से अपनी यात्रा करने के तीसरे महीने में
इस्राएल के लोग सीनै मरुभूमि में पहुँचे। 2लोगों
ने रपीदीम को छोड़ दिया था और वे सीनै मरुभूमि में
आ पहुँचे थे। इस्राएल के लोगों ने मरुभूमि में पर्वत* के
निकट डेरा डाला। 3तब मूसा पर्वत के ऊपर परमेश्वर
के पास गया। जब मूसा पर्वत पर था तभी पर्वत से
परमेश्वर ने उससे कहा, “ये बातें इस्राएल के लोगों
अर्थात् याकूब के बड़े परिवार से कहो: 4‘तुम लोगों ने
देखा कि मैं अपने शत्रुओं के साथ क्या कर सकता हूँ।
तुम लोगों ने देखा कि मैंने मिस्र के लोगों के साथ क्या
किया। तुम ने देखा कि मैंने तुम को मिस्र से बाहर एक
उकाब की तरह पंखों पर बैठाकर निकाला। और यहाँ
अपने समीप लाया। 5इसलिए अब मैं कहता हूँ तुम लोग
मेरा आदेश मानो। मेरे साक्षीपत्र का पालन करो। यदि
तुम मेरे आदेश मानोगे तो तुम मेरे विशेष लोग बनोगे।
समस्त संसार मेरा हैं। 6तुम एक विशेष लोग और याजकों
का राज्य बनोगे।' मूसा, जो बातें मैंने बताई हैं उन्हें
इस्राएल के लोगों से अवश्य कह देना।”

7इसलिए मूसा पर्वत से नीचे आया और लोगों के
बुज़ुर्गों (नेताओं) को एक साथ बुलाया। मूसा ने बुज़ुर्गों से
वह बातें कहीं जिन्हें कहने का आदेश यहोवा ने उसे
दिया था। 8फिर सभी लोग एक साथ बोले, “हम लोग
यहोवा की कही हर बात मानेगें।”

तब मूसा परमेश्वर के पास पर्वत पर लौट आया।
मूसा ने कहा कि लोग उसके आदेश का पालन करेंगे।
9और यहोवा ने मूसा से कहा, “मैं घने बादल में तुम्हारे
पास आऊँगा। मैं तुमसे बात करूँगा। सभी लोग मुझे
तुमसे बातें करते हुए सुनेंगे। मैं यह इसलिए करूँगा
जिससे लोग उन बातों में सदा विश्वास करेंगे जो तुमने
उनसे कहीं।”

तब मूसा ने परमेश्वर को वे सभी बातें बताई जो
लोगों ने कही थीं।

10यहोवा ने मूसा से कहा, “आज और कल तुम लोगों
को विशेष सभा के लिए अवश्य तैयार करो। लोगों को
अपने वस्त्र धो लेने चाहिए 11और तीसरे दिन मेरे लिए
तैयार रहना चाहिए। तीसरे दिन मैं (यहोवा) सीनै पर्वत
पर नीचे आऊँगा और सभी लोग मुझ (यहोवा) को
देखेंगे। 12-13किन्तु उन लोगों से अवश्य कह देना कि वे
पर्वत से दूर ही रूकें। एक रेखा खींचना और उसे लोगों
को पार न करने देना। यदि कोई व्यक्ति या जानवर
पर्वत को छूएगा तो उसे अवश्य मार दिया जाएगा। वह
पत्थरों से मारा जाएगा या बाणों से बेधा जाएगा। किन्तु
किसी व्यक्ति को उसे छूने नहीं दिया जाएगा। लोगों को
तुरही बजने तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। उसी समय
उन्हें पर्वत पर जाने दिया जाएगा।”

14सो मूसा पर्वत से नीचे उतरा। वह लोगों के समीप
गया और विशेष बैठक के लिए उन्हें तैयार किया।
लोगों ने अपने वस्त्र धोए।

15तब मूसा ने लोगों से कहा, “परमेश्वर से मिलने के
लिए तीन दिन में तैयार हो जाओ। उस समय तक कोई
भी पुरुष स्त्री से सर्म्पक न करे।”

16तीसरे दिन पर्वत पर बिजली की चमक और मेघ
की गरज हुई। एक घना बादल पर्वत पर उतरा और
तुरही की तेज ध्वनि हुई। डेरे के सभी लोग डर गए।
17तब मूसा लोगों को पर्वत की तलहटी पर परमेश्वर से

पर्वत अर्थात् होरेब पर्वत जिसे सीनै पर्वत भी कहा जाता हैं।

मिलने के लिए डेरे के बाहर ले गया। 18सीनै पर्वत धूएँ
से ढका था। पर्वत से धूआँ इस प्रकार उठा जैसे किसी
भट्टी से उठता है। यह इसलिए हुआ कि यहोवा आग में
पर्वत पर उतरे और साथ ही सारा पर्वत भी काँपने
लगा। 19तुरही की ध्वनि तीव्र से तीव्रतर होती चली गई।
जब भी मूसा ने परमेश्वर से बात की, मेघ की गरज में
परमेश्वर ने उसे उत्तर दिया। 20इस प्रकार यहोवा सीनै
पर्वत पर उतरा। यहोवा स्वर्ग से पर्वत की चोटी पर
उतरा। तब यहोवा ने मूसा को अपने साथ पर्वत की
चोटी पर आने को कहा। इसलिए मूसा पर्वत पर चढ़ा।
21यहोवा ने मूसा से कहा, "जाओ और लोगों को
चेतावनी दो कि वे मेरे पास न आएं न ही मुझे देखें। यदि
वे ऐसा करेंगे तो वे मर जाएंगे और इस तरह बहुत सी
मौतें हो जाएंगी। 22उन याजकों से भी कहो जो मेरे पास
आएंगे कि वे इस विशेष, मिलन के लिए स्वंय को
तैयार करें। यदि वे ऐसा नहीं करते तो मैं उन्हें दण्ड
दूँगा।"
23मूसा ने यहोवा से कहा, "किन्तु लोग पर्वत पर नहीं
आ सकते। तूने स्वयं ही हम से एक रेखा खींचकर
पर्वत को पवित्र समझने और उसे पार न करने के लिए
कहा था।"
24यहोवा ने उससे कहा, "लोगों के पास जाओ और
हारून को लाओ। उसे अपने साथ वापस लाओ। किन्तु
याजकों और लोगों को मत आने दो। यदि वे मेरे पास
आएंगे तो मैं उन्हें दण्ड दूँगा।" 25इसलिए मूसा लोगों के
पास गया और उनसे ये बातें कहीं।

दस आदेश

20 तब परमेश्वर ने ये बातें कहीं, 2"मैं तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा हूँ। मैं तुम्हें मिस्र देश से बाहर
लाया। मैंने तुम्हें दासता से मुक्त किया। इसलिए तुम्हें
निश्चय ही इन आदेशों का पालन करना चाहिए:

3"तुम्हे मेरे अतिरिक्त किसी अन्य देवता को,
नहीं मानना चाहिए।
4"तुम्हें कोई भी मूर्ति नहीं बनानी चाहिए। किसी
भी उस चीज़ की आकृति मत बनाओ जो ऊपर
आकाश में या नीचे धरती पर अथवा धरती के
नीचे पानी में हो। 5किसी भी प्रकार की मूर्ति की
पूजा मत करो, उसके आगे मत झुको। क्यों?
क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। मेरे लोग
जो दूसरे देवताओं की पूजा करते है मैं उनसे घृणा
करता हूँ। यदि कोई व्यक्ति मेरे विरुद्ध पाप करता
है तो मैं उसका शत्रु हो जाता हूँ। मैं उस व्यक्ति की
सन्तानों की तीसरी और चौथी पीढ़ी तक को दण्ड
दूँगा। 6किन्तु मैं उन व्यक्तियों पर बहुत कृपालू
रहूँगा जो मुझसे प्रेम करेंगे और मेरे आदेशों को
मानेंगे। मैं उनके परिवारों के प्रति सहस्रों पीढ़ी
तक कृपालु रहूँगा।
7"तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के नाम का उपयोग
तुम्हें गलत ढंग से नहीं करना चाहिए। यदि कोई
व्यक्ति यहोवा के नाम का उपयोग गलत ढंग से
करता है तो वह अपराधी है और यहोवा उसे
निरपराध नहीं मानेंगा।
8"सब्त को एक विशेष दिन के रूप में मानने
का ध्यान रखना। 9सप्ताह में तुम छः दिन अपना
कार्य कर सकते हो। 10किन्तु सातवाँ दिन तुम्हारे
परमेश्वर यहोवा की प्रतिष्ठा में आराम का दिन
है। इसलिए उस दिन कोई व्यक्ति चाहें तुम, या
तुम्हारे पुत्र और पुत्रियाँ तुम्हारे दास और दासियाँ,
पशु तथा तुम्हारे नगर में रहनें वाले सभी विदेशी
काम नहीं करेंगे।" 11क्यों? क्योंकि यहोवा ने छः
दिन काम किया और आकाश, धरती, सागर,
और उनकी हर चीज़ें बनाई। और सातवें दिन
परमेश्वर ने आराम किया। इस प्रकार यहोवा ने
शनिवार को वरदान दिया कि उसे आराम के
पवित्र दिन के रूप में मनाया जाएगा। यहोवा ने
उसे बहुत ही विशेष दिन के रूप में स्थापित
किया।
12"अपने माता और अपने पिता का आदर करो।
यह इसलिए करो कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा
जिस धरती को तुम्हें दे रहा है, उसमें तुम दीर्घ
जीवन बिता सको।
13"तुम्हें किसी व्यक्ति की हत्या नहीं करनी चाहिए।
14"तुम्हें व्यभिचार नहीं करना चाहिए।
15"तुम्हें चोरी नहीं करनी चाहिए।
16"तुम्हें अपने पड़ोसियों के विरुद्ध झूठी गवाही
नहीं देनी चाहिए।
17"दूसरे लोगों की चीज़ों को लेने की इच्छा तुम्हें
नहीं करनी चाहिए। तुम्हें अपने पड़ोसी का घर,
उसकी पत्नी, उसके सेवक और सेविकाओं, उसकी
गायों, उसके गधों को लेने की इच्छा नहीं करनी
चाहिए। तुम्हें किसी की भी चीज़ को लेने की
इच्छा नहीं करनी चाहिए।"

लोगों का परमेश्वर से डरना

18घाटी में लोगों ने इस पूरे समय गर्जन सुनी और
पर्वत पर बिजली की चमक देखी। उन्होंने तुरही की
ध्वनि सुनी और पर्वत से उठते धूएँ को देखा। लोग डरे
और भय से काँप उठे। वे पर्वत से दूर खड़े रहे और
देखते रहे। 19तब लोगों ने मूसा से कहा, "यदि तुम हम
लोगों से कुछ कहना चाहोगे तो हम लोग सुनेंगे। किन्तु
परमेश्वर को हम लोगों से बात न करने दो। यदि यह
होगा तो हम लोग मर जाएंगे।"

20तब मूसा ने लोगों से कहा, "डरो मत! यहोवा यह
प्रमाणित करने आया है कि वह तुमसे प्रेम करता है।"
21लोग उस समय उठकर पर्वत से दूर चले आए
जबकि मूसा उस गहरे बादल में गया जहाँ यहोवा था।
22तब यहोवा ने मूसा से इस्राएलियों को बताने के लिए ये
बातें कहीं: "तुम लोगों ने देखा कि मैंने तुमसे आकाश
से बातें की। 23इसलिए तुम लोग मेरे विरोध में सोने या
चाँदी की मूर्तियाँ न बनाना। तुम्हें इन झूठे देवताओं की
मूर्तियाँ कदापि नहीं बनानी हैं।
24"मेरे लिए एक विशेष वेदी बनाओ। इस वेदी को
बनाने के लिए धूलि का उपयोग करो। इस वेदी पर
बलि के रूप में होमबलि तथा मेलबलि चढ़ाओ। इस
काम के लिए अपनी भेड़ों और गाय, बकरियों का
उपयोग करो। उन सभी स्थानों पर यही करो जहाँ मैं
अपने को याद करने के लिए कह रहा हूँ। तब मैं
आऊँगा और तुम्हें आशीर्वाद दूँगा। 25यदि तुम लोग वेदी
को बनाने के लिए चट्टानों का उपयोग करो तो तुम
लोग उन चट्टानों का उपयोग न करो जिन्हें तुम लोगों
ने अपने किसी लोहे के औज़ारों से चिकना किया है।
यदि तुम लोग चट्टानों पर किसी औज़ारों का उपयोग
करोगे तो मैं वेदी को स्वीकार नहीं करूँगा। 26तुम लोग
वेदी तक पहुँचाने वाली सीढ़ियाँ भी न बनाना। यदि
सीढ़ियाँ होंगी तो जब लोग ऊपर वेदी को देखेंगे तो वे
तुम्हारे वस्त्रों के भीतर नीचे से तुम्हारी नग्नता को भी
देख सकेंगे।"

अन्य नियम एवं आदेश

21 तब परमेश्वर ने मूसा से कहा, "ये वे अन्य
नियम हैं, जिन्हें तुम लोगों को बताओगे:
2"यदि तुम एक हिब्रू दास खरीदते हो तो उसे तुम्हारी
सेवा केवल छ: वर्ष करनी होगी। छ: वर्ष बाद वह
स्वतन्त्र हो जाएगा। उसे कुछ भी नहीं देना पड़ेगा। 3तुम्हारा
दास होने के पहले यदि उसका विवाह नहीं हुआ है तो
वह पत्नी के बिना ही स्वतन्त्र होकर चला जाएगा।
किन्तु यदि दास होने के समय वह व्यक्ति विवाहित होगा
तो स्वतन्त्र होने के समय वह अपनी पत्नी को अपने
साथ ले जाएगा। 4यदि दास विवाहित नहीं होगा तो उसका
स्वामी उसे पत्नी दे सकेगा। यदि वह पत्नी, पुत्र या
पुत्रियों को जन्म देगी तो वह स्त्री तथा बच्चे उस दास के
स्वामी के होंगे। अपने सेवाकाल के पूरा होने पर केवल
वह दास ही स्वतन्त्र किया जाएगा।
5"किन्तु यह हो सकता है कि दास यह निश्चय करे
कि वह अपने स्वामी के साथ रहना चाहता है। तब उसे
कहना पड़ेगा, 'मैं अपने स्वामी से प्रेम करता हूँ। मैं
अपनी पत्नी और अपने बच्चों से प्रेम करता हूँ। मैं
स्वतन्त्र नहीं होऊँगा मैं यहीं रहूँगा।' 6यदि ऐसा हो तो
दास का स्वामी उसे परमेश्वर के सामने लाएगा। दास
का स्वामी उसे किसी दरवाजे तक या उसकी चौखट
तक ले जाएगा और दास का स्वामी एक तेज औज़ार से
दास के कान में एक छेद करेगा। तब दास उस स्वामी
की सेवा जीवन भर करेगा।
7"कोई भी व्यक्ति अपनी पुत्री को दासी के रूप में
बेचने का निश्चय कर सकता है। यदि ऐसा हो तो उसे
स्वतन्त्र करने के लिए वे ही नियम नहीं हैं जो पुरुष
दासों को स्वतन्त्र करने के लिए हैं। 8यदि स्वामी उस
स्त्री से सन्तुष्ट नहीं है तो वह उसके पिता को उसे
वापस बेच सकता है। किन्तु यदि दासी का स्वामी उस
स्त्री से विवाह करने का वचन दे तो वह दूसरे व्यक्ति
को उसे बेचने का अधिकार खो देता है। 9यदि दासी का
स्वामी उस दासी से अपने पुत्र का विवाह करने का
वचन दे तो उससे दासी जैसा व्यवहार नहीं किया जाएगा।
उसके साथ पुत्री जैसा व्यवहार करना होगा।
10"यदि दासी का स्वामी किसी दूसरी स्त्री से भी
विवाह करे तो उसे चाहिए कि वह पहली पत्नी को
कम भोजन या वस्त्र न दे और उसे चाहिए कि उन
चीज़ों को लगातार वह उसे देता रहे जिन्हें पाने का उसे
अधिकार विवाह से मिला है। 11उस व्यक्ति को ये तीन
चीज़ें उसके लिए करनी चाहिए। यदि वह इन्हें नहीं
करता तो स्त्री स्वतन्त्र की जाएगी और इसके लिए उसे
कुछ देना भी नहीं पड़ेगा। उसे उस व्यक्ति को कोई धन
नहीं देना होगा।
12"यदि कोई व्यक्ति किसी को चोट पहुँचाए और उसे
मार डाले तो उस व्यक्ति को भी मार दिया जाय। 13किन्तु
यदि ऐसा संयोग होता है कि कोई बिना पूर्व योजना के
किसी व्यक्ति को मार दे, तो ऐसा परमेश्वर की इच्छा से
ही हुआ होगा। मैं कुछ विशेष स्थानों को चुनूँगा जहाँ
लोग सुरक्षा के लिए दौड़कर जा सकते हैं। इस प्रकार
वह व्यक्ति दौड़कर इनमें से किसी भी स्थान पर जा
सकता है। 14किन्तु कोई व्यक्ति यदि किसी व्यक्ति के
प्रति क्रोध या घृणा रखने के कारण उसे मारने की
योजना बनाए तो हत्यारे को दण्ड अवश्य मिलना चाहिए।
उसे मेरी वेदी से दूर ले जाओ और उसे मार डालो।
15"कोई व्यक्ति जो अपने माता-पिता को चोट पहुँचायें
वह अवश्य ही मार दिया जाये। 16यदि कोई व्यक्ति
किसी को दास के रूप में बेचने या अपना दास बनाने
के लिए चुराए तो उसे अवश्य मार दिया जाये। 17कोई
व्यक्ति, जो अपने माता-पिता को शाप दे तो उसे अवश्य
मार दिया जाये। 18दो व्यक्ति बहस कर सकते हैं और
एक दूसरे को पत्थर या मुक्के से मार सकते हैं। उस
व्यक्ति को तुम्हें कैसे दण्ड देना चाहिए? यदि चोट खाया
हुआ व्यक्ति मर न जाये तो चोट पहुँचाने वाला व्यक्ति
मारा न जाए। 19किन्तु यदि चोट खाए व्यक्ति को कुछ
समय तक चारपाई पकड़नी पड़े तो चोट पहुँचाने वाले
व्यक्ति को उसे हर्जाना देना चाहिए। चोट पहुँचाने वाला

व्यक्ति उसके समय की हानि को धन से पूरा करे। वह व्यक्ति तब तक उसे हर्जाना दे जब तक वह पूरी तरह ठीक न हो जाये।

20“कभी–कभी लोग अपने दास और दासियों को पीटते हैं। यदि पिटाई के बाद दास मर जाये तो हत्यारे को अवश्य दण्ड दिया जाये। 21किन्तु दास यदि मरता नहीं और कुछ दिनों बाद वह स्वस्थ हो जाता है तो उस व्यक्ति को दण्ड नहीं दिया जायेगा। क्यों? क्योंकि दास के स्वामी ने दास के लिए धन दिया और दास उसका है।

22“दो व्यक्ति आपस में लड़ सकते हैं और किसी गर्भवती स्त्री को चोट पहुँचा सकते हैं। यदि वह स्त्री अपने बच्चे को समय से पहले जन्म देती है, और माँ बुरी तरह घायल नहीं है तो चोट पहुँचानेवाला व्यक्ति उसे अवश्य धन दे। उस स्त्री का पति यह निश्चित करेगा कि वह व्यक्ति कितना धन दे। न्यायाधीश उस व्यक्ति को यह निश्चय करने में सहायता करेंगे कि वह धन कितना होगा। 23किन्तु यदि स्त्री बुरी तरह घायल हो तो वह व्यक्ति जिसने उसे चोट पहुँचाई है अवश्य दण्डित किया जाये। यदि एक व्यक्ति मार दिया जाता है तो हत्यारा अवश्य मार दिया जाये। तुम एक जीवन के बदले दूसरा जीवन लो। 24तुम आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ, पैर के बदले पैर लो। 25जले के बदले जलाओ, खरोंच के बदले खरोंच करो और घाव के बदले घाव।

26“यदि कोई व्यक्ति किसी दास की आँख को चोट पहुँचाए और दास उस आँख से अन्धा हो जाये तो वह दास स्वतन्त्र हो जाने दिया जाएगा। उसकी आँख उसकी स्वतन्त्रता का मूल्य है। यह नियम दास या दासी दोनों के लिए समान है। 27यदि दास का स्वामी दास के मुँह पर मारे और दास का कोई दाँत टूट जाए तो दास को स्वतन्त्र कर दिया जाएगा। दास का दाँत उसकी स्वतन्त्रता का मूल्य है। यह दास और दासी दोनों के लिए समान है।

28“यदि किसी व्यक्ति का कोई बैल किसी स्त्री को या पुरुष को मार देता है तो तुम पत्थरों का उपयोग करो और बैल को मार डालो। तुम्हें उस बैल को खाना नहीं चाहिए। किन्तु बैल का स्वामी अपराधी नहीं है। 29किन्तु यदि बैल ने पहले लोगों को चोट पहुँचाई हो और स्वामी को चेतावनी दी गई हो तो वह स्वामी अपराधी है। क्यों? क्योंकि इसने बैल को बाँधा या बन्द नहीं रखा। यदि बैल स्वतन्त्र छोड़ा गया हो और किसी को वह मारे तो स्वामी अपराधी है। तुम पत्थरों से बैल और उसके स्वामी को भी मार दो। 30किन्तु मृतक का परिवार यदि चाहे तो बदले में धन लेकर बैल के मालिक को छोड़ सकता है। किन्तु वह उतना धन दे जितना न्यायाधीश निश्चित करे।

31“यही नियम उस समय भी लागू होगा जब बैल किसी व्यक्ति के पुत्र या पुत्री को मारता है। 32किन्तु बैल यदि दास को मार दे तो बैल का स्वामी दास के स्वामी को एक नये दास का मूल्य चाँदी के तीस सिक्के* दे और बैल भी पत्थरों से मार डाला जाये। यह नियम दास और दासी के लिए समान होगा।

33“कोई व्यक्ति कोई गड्ढा या कुँआ खोदे और उसे ढके नहीं और यदि किसी व्यक्ति का जानवर आए और उसमें गिर जाये तो गड्ढे का स्वामी दोषी है। 34गड्ढे का स्वामी जानवर के लिए धन देगा। किन्तु जानवर के लिए धन देने के बाद उसे उस मरे जानवर को लेने दिया जायेगा।

35“यदि किसी का बैल किसी दूसरे व्यक्ति के बैल को मार डाले तो वे दोनों उस जीवित बैल को बेच दें। दोनों व्यक्ति बेचने से प्राप्त आधा–आधा धन और मरे बैल का आधा–आधा भाग ले लें। 36किन्तु यदि उस व्यक्ति के बैल ने पहले भी किसी दूसरे जानवर को चोट पहुँचाई हो तो उस बैल का स्वामी अपने बैल के लिए उत्तरदायी है। यदि उसका बैल दूसरे बैल को मार डालता है तो वह अपराधी है क्योंकि उसने बैल को स्वतन्त्र छोड़ा। वह व्यक्ति बैल के बदले बैल अवश्य दे। वह मारे गए बैल के बदले अपना बैल दे।

22 “जो व्यक्ति किसी बैल या भेड़ को चुराता है उसे तुम कैसे दण्ड दोगे? यदि वह व्यक्ति जानवर को मार डाले या बेच दे तो वह उसे लौटा तो नहीं सकता। इसलिए वह एक चुराए बैल के बदले पाँच बैल दे। या वह एक चुराई गई भेड़ के बदले चार भेड़ दे। वह चोरी के लिए कुछ धन भी दे। 2-4किन्तु यदि उसके पास अपना कुछ भी नहीं है तो चोरी के लिए उसे दास के रूप में बेचा जाएगा। किन्तु यदि उसके पास चोरी का जानवर पाया जाए तो वह व्यक्ति जानवर के स्वामी को हर एक चुराए गए जानवर के बदले दो जानवर देगा। इस बात का कोई अन्तर नहीं पड़ेगा कि जानवर बैल, गधा या भेड़ हो। यदि कोई चोर रात को घर में सेंध लगाने का प्रयत्न करते समय मारा जाये तो उसे मारने का अपराधी कोई नहीं होगा। किन्तु यदि यह दिन में हो तो उसका हत्यारा व्यक्ति अपराध का दोषी होगा। चोर को निश्चय ही क्षतिपूर्ति करनी होगी।

5“यदि कोई व्यक्ति अपने खेत या अँगूर के बाग में आग लगाये और वह उस आग को फैलने दे और वह उसके पड़ोसी के खेत या अँगूर के बाग को जला दे तो वह अपने पड़ोसी की हानि की पूर्ति में देने के लिए अपनी सबसे अच्छी फसल का उपयोग करेगा।*

चाँदी के तीस सिक्के नये दास के लिए मूल्य।

व्यक्ति … उपयोग करेगा “यदि कोई व्यक्ति अपने जानवरों को अपने खेत या अपने अँगूर के बाग में चरने के लिए छोड़े और जानवर दूसरे के खेत या अँगूर के बाग में बहक जाएं तो स्वामी को अवश्य बदले में देना होगा। भुगतान उसकी सबसे अच्छी फ़सल का किया जायेगा।”

6“कोई व्यक्ति अपने खेत की झाड़ियों को जलाने के
लिए आग लगाए। किन्तु यदि आग बढ़े और उसके
पड़ोसी की फसल या पड़ोसी के खेत में उगे अन्न को
जला दे तो आग लगाने वाला व्यक्ति जली हुयी चीज़ों के
बदले भुगतान करेगा।

7“कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी से उसके घर में कुछ
धन या कुछ अन्य चीज़ें रखने को कहे और यदि वह
धन या वे चीज़ें पड़ोसी के घर से चोरी चली जायें तो तुम
क्या करोगे? तुम्हें चोर का पता लगाने का प्रयत्न
करना चाहिए। यदि तुमने चोर को पकड़ लिया तो वह
चीज़ों के मूल्य का दुगना देगा। 8किन्तु यदि तुम चोर
का पता न लगा सके तब परमेश्वर निर्णय करेगा कि
पड़ोसी अपराधी है या नहीं। घर का स्वामी परमेश्वर
के सामने जाए और परमेश्वर ही निर्णय करेगा कि
उसने चुराया है या नहीं।

9“यदि दो व्यक्ति किसी खोए बैल, गधा, भेड़, वस्त्र,
यदि किसी अन्य खोई हुई चीज़ के बारे में सहमत न हों
तो तुम क्या करोगे? एक व्यक्ति कहता है, ‘यह मेरी
है।’ और दूसरा कहता है, ‘नहीं, यह मेरी है।’ दोनों
व्यक्ति परमेश्वर के सामने जाएँ। परमेश्वर निर्णय
करेगा कि अपराधी कौन है। जिस व्यक्ति को
परमेश्वर अपराधी पाएगा वह उस चीज़ के मूल्य से
दुगना भुगतान करे।

10“कोई अपने पड़ोसी से कुछ समय के लिए अपने
जानवर की देखभाल के लिए कहे। यह जानवर बैल,
भेड़, गधा या कोई अन्य पशु हो और यदि वह जानवर
मर जाये, उसे चोट आ जाये या कोई उसे तब हाँक ले
जाये जब कोई न देख रहा हो तो तुम क्या करोगे?
11वह पड़ोसी स्पष्ट करे कि उसने जानवर को नहीं
चुराया है। यदि यह सत्य हो तब पड़ोसी यहोवा की
शपथ उठाए कि उसने वह नहीं चुराया है। जानवर का
मालिक इस शपथ को अवश्य स्वीकार करे। पड़ोसी
को जानवर के लिए मालिक को भुगतान नहीं करना
होगा। 12किन्तु यदि पड़ोसी ने जानवर को चुराया हो
तो वह मालिक को जानवर के लिए भुगतान अवश्य
करे। 13यदि जंगली जानवरों ने जानवर को मारा हो
तो प्रमाण के लिए उसके शरीर को पड़ोसी लाए।
पड़ोसी मारे गए जानवर के लिए मालिक को भुगतान
नहीं करेगा।

14“यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी से किसी जानवर
को उधार ले तो उसके लिए वह व्यक्ति ही उत्तरदायी है।
यदि उस जानवर को चोट पहुँचे या वह मर जाये तो
पड़ोसी मालिक को उस जानवर के लिए भुगतान करे।
पड़ोसी इसलिए उत्तरदायी है क्योंकि उसका मालिक
स्वयं वहाँ नहीं था। 15किन्तु यदि मालिक जानवर के
साथ वहाँ हो तब पड़ोसी को भुगतान नहीं करना होगा।
या यदि पड़ोसी काम लेने के लिए धन का भुगतान कर
रहा हो तो जानवर के मरने या चोट खाने पर उसे कुछ
भी नहीं देना होगा। जानवर के उपयोग के लिए दिया
गया भुगतान ही पर्याप्त होगा।

16“यदि कोई पुरुष किसी अविवाहित कुँवारी कन्या
से यौन सम्बन्ध करे तो वह उससे निश्चय ही विवाह
करे। और वह उस लड़की के पिता को पूरा दहेज* दे।
17यदि पिता अपनी पुत्री को उसे विवाह के लिए देने से
इन्कार करता है तो भी उस व्यक्ति को धन देना पड़ेगा।
वह उसे दहेज का पूरा धन दे।

18“तुम किसी स्त्री को जादू टोना मत करने
देना। यदि वह ऐसा करे तो तुम उसे जीवित मत
रहने देना।

19“तुम किसी व्यक्ति को किसी जानवर के साथ यौन
सम्बन्ध न रखने देना। यदि ऐसा हो तो वह व्यक्ति
अवश्य मार डाला जाये।

20“यदि कोई किसी मिथ्या देवता को बलि चढ़ाए तो
उस व्यक्ति को अवश्य नष्ट कर दिया जाये। केवल
परमेश्वर यहोवा ही ऐसा है जिसे तुमको बलि चढ़ानी
चाहिए।

21“याद रखो इससे पहले तुम लोग मिस्र देश में विदेशी
थे। अत: तुम लोग उस व्यक्ति को न ठगो, न ही चोट
पहुँचाओ जो तुम्हारे देश में विदेशी हो।

22“निश्चय ही तुम लोग ऐसी स्त्रियों का कभी बुरा
नहीं करोगे जिनके पति मर चुके हों या उन बच्चों का
जिनके माता-पिता न हों। 23यदि तुम लोग उन विधवाओं
या अनाथ बच्चों का कुछ बुरा करोगे तो वे मेरे आगे
रोएंगे और मैं उनके कष्टों को सुनूँगा 24और मुझे बहुत
क्रोध आएगा। मैं तुम्हें तलवार से मार डालूँगा। तब
तुम्हारी पत्नियाँ विधवा हो जाएंगी और तुम्हारे बच्चे
अनाथ हो जाएंगे।

25“यदि मेरे लोगों में से कोई गरीब हो और तुम उसे
कर्ज़ दो तो उस धन के लिए तुम्हें ब्याज नहीं लेना
चाहिए। और जल्दी चुकाने के लिए भी तुम उसे
मजबूर नहीं करोगे। 26कोई व्यक्ति उधार लिए हुए
धन के भुगतान के लिए अपना लबादा गिरवी रख
सकता है। किन्तु तुम सूरज डूबने के पहले उसका
वह वस्त्र अवश्य लौटा देना। 27यदि वह व्यक्ति
अपना लबादा नहीं पाता तो उसके पास शरीर ढकने
को कुछ भी नहीं रहेगा। जब वह सोएगा तो उसे
सर्दी लगेगी। यदि वह मुझे रोकर पुकारेगा तो मैं
उसकी सुनूँगा। मैं उसकी बात सुनूँगा क्योंकि मैं
कृपालु हूँ।

28“तुम्हें परमेश्वर या अपने लोगों के मुखियाओं को
शाप नहीं देना चाहिए।

दहेज वह धन जो एक व्यक्ति दुल्हन के पिता को इसलिए देता था ताकि वह उस युवती से विवाह कर सके।

29“फ़सल कटने के समय तुम्हें अपना प्रथम अन्न
और प्रथम फल का रस मुझे देना चाहिए। इसे टालो
मत। मुझे अपने पहलौठे पुत्रों को दो। 30अपनी पहलौठी
गायों तथा भेड़ों को भी मुझे देना। पहलौठे को उसकी
माँ के साथ सात दिन रहने देना। उसके बाद आठवें
दिन उसे मुझको देना।

31“तुम लोग मेरे विशेष लोग हो। इसलिए ऐसे किसी
जानवर का माँस मत खाना जिसे किसी जंगली जानवर
ने मारा हो। उस मरे जानवर को कुत्तों को खाने दो।

23 “लोगों के विरुद्ध झूठ मत बोलो। यदि तुम
न्यायालय में गवाह हो तो बुरे व्यक्ति की सहायता
के लिए झूठ मत बोलो।

2“उस भीड़ का अनुसरण मत करो, जो गलत कर
रहा हो। जो जन समूह बुरा कर रहा हो उसका अनुसरण
करते हुए न्यायालय में उसका समर्थन मत करो।

3“न्यायालय में किसी गरीब का इसलिए पक्ष मत लो
कि वह गरीब है। तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। यदि
वह सही है तब ही उसका समर्थन करो।

4“यदि तुम्हें कोई खोया हुआ बैल या गधा मिले तो
तुम्हें उसे उसके मालिक को लौटा देना चाहिए। चाहे
वह तुम्हारा शत्रु ही क्यों न हो।

5“यदि तुम देखो कि कोई जानवर इसलिए नहीं चल
पा रहा है कि उसे अत्याधिक बोझ ढोना पड़ रहा है तो
तुम्हें उसे रोकना चाहिए और उस जानवर की सहायता
करनी चाहिए। तुम्हें उस जानवर की सहायता तब भी
करनी चाहिए जब वह जानवर तुम्हारे शत्रुओं में से भी
किसी का हो।

6“तुम्हें, लोगों को गरीबों के प्रति अन्यायी नहीं होने
देना चाहिए। उनके साथ भी अन्य लोगों के समान ही
न्याय होना चाहिए।

7“तुम किसी को किसी बात के लिए अपराधी कहते
समय बहुत सावधान रहो। किसी व्यक्ति पर झूठे दोष न
लगाओ। किसी निर्दोष व्यक्ति को उस अपराध के दण्ड
के द्वारा मत मरने दो जो उसने नहीं किया। कोई व्यक्ति
जो निर्दोष की हत्या करे, दुष्ट है। और मैं उस दुष्ट
व्यक्ति को क्षमा (माफ़) नहीं करूँगा।

8“यदि कोई व्यक्ति गलत होने पर अपने से सहमत
होने के लिए रिश्वत देने का प्रयत्न करे तो उसे मत
लो। ऐसी रिश्वत न्यायाधीशों को अन्धा कर देगी जिससे
वे सत्य को नहीं देख सकेंगे। रिश्वत अच्छे लोगों को
झूठ बोलना सिखाएगी। 9तुम किसी विदेशी के साथ
कभी बुरा बरताव न करो। याद रखो जब तुम मिस्र देश
में रहते थे तब तुम विदेशी थे।

विशेष पर्व

10“छः वर्ष तक बीज बोओ, अपनी फ़सलों को काटो
और खेत को तैयार करो। 11किन्तु सातवें वर्ष अपनी
भूमि का उपयोग न करो। सातवाँ वर्ष भूमि के विश्राम
का विशेष समय होगा। अपने खेतों में कुछ भी न
बोओ। यदि कोई फ़सल वहाँ उगती है तो उसे गरीब
लोगों को ले लेने दो। जो भी खाने की चीज़ें बच जायें
उन्हें जंगली जानवरों को खा लेने दो। यही बात तुम्हें
अपने अंगूर और जैतून के बागों के सम्बन्ध में भी
करनी चाहिए।

12“छः दिन तक काम करो। तब सातवें दिन विश्राम
करो। इससे तुम्हारे दासों और तुम्हारे दूसरे मजदूरों को
भी विश्राम का समय मिलेगा। और तुम्हारे बैल और
गधे भी आराम कर सकेंगे।

13“संकल्प करो कि तुम इन नियमों का पालन करोगे।
मिथ्या देवताओं की पूजा मत करो। तुम्हें उनका नाम
भी नहीं लेना चाहिए!

14“प्रति वर्ष तुम्हारे तीन विशेष पवित्र पर्व होंगे।
इन दिनों तुम लोग मेरी उपासना के लिए मेरी विशेष
जगह पर आओगे। 15पहला पवित्र पर्व अखमीरी रोटी
का पर्व होगा। यह वैसा ही होगा, जैसा मैंने आदेश दिया
है। इस दिन तुम लोग ऐसी रोटी खाओगे जिसमें ख़मीर
न हो। यह सात दिन तक चलेगा। तुम लोग यह आबीब
के महीने में करोगे। क्योंकि यही वह समय है जब तुम
लोग मिस्र से आए थे। इन दिनों कोई भी व्यक्ति मेरे
सामने खाली हाथ नहीं आएगा।

16“दूसरा पवित्र पर्व कटनी का पर्व होगा। यह पवित्र
पर्व ग्रीष्म के आरम्भ में, तब होगा जब तुम अपने खेतों
मे उगायी गई फ़सल को काटोगे।

“तीसरा पवित्र पर्व बटोरने का पर्व होगा। यह पतझड़
में होगा।* यह उस समय होगा जब तुम अपनी सारी
फ़सलें खेतों से इकट्ठा करते हो।

17“इस प्रकार प्रति वर्ष तीन बार सभी पुरुष यहोवा
परमेश्वर के सामने उपस्थित होंगे।

18“जब तुम किसी जानवर को मारो और इसका
ख़ून बलि के रूप में भेंट चढ़ाओ तब ऐसी रोटी भेंट नहीं
करो जिसमें खमीर हो। और जब तुम इस बलि के माँस
को खाओ तब तुम्हें एक ही दिन में वह सारा माँस खा
लेना चाहिए। अगले दिन के लिए कुछ भी माँस न
बचाओ।

19“फ़सल काटने के समय जब तुम अपनी
फ़सलें इकट्ठी करो तब अपनी काटी हुई फ़सल
की पहली उपज अपने यहोवा परमेश्वर के भवन में
लाओ।

“तुम्हें छोटी बकरी के उस माँस को नहीं खाना
चाहिए जो उस बकरी की माँ के दूध में पका हो।

पतझड़ में होगा शाब्दिक “वर्ष के अन्त में।” इसका अर्थ फसल उगाने के मौसम की समाप्ति है।

परमेश्वर इस्राएलियों को उनकी भूमि लेने में सहायता करेगा

20परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम्हारे सामने एक दूत भेज
रहा हूँ। यह दूत तुम्हें उस स्थान तक ले जाएगा जिसे
मैंने तुम्हारे लिए तैयार किया है। यह दूत तुम्हारी रक्षा
करेगा। 21दूत की आज्ञा मानो और उसका अनुसरण
करो। उसके विरुद्ध विद्रोह न करो। वह दूत उन अपराधों
को क्षमा नहीं करेगा जो तुम उसके प्रति करोगे। उसमें
मेरी शक्ति निहित है। 22वह जो कुछ कहे उसे मानो।
तुम्हें हर एक वह कार्य करना चाहिए जो मैं तुम्हें
कहता हूँ। यदि तुम यह करोगे तो मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।
मैं तुम्हारे सभी शत्रुओं के विरुद्ध होऊँगा। और मैं उस
हर व्यक्ति का शत्रु होऊँगा जो तुम्हारे विरुद्ध होगा।"

23परमेश्वर ने कहा, "मेरा दूत तुम्हें इस देश से
होकर ले जाएगा। वह तुम्हें कई भिन्न लोगों–एमोरी,
हित्ती, परिज्जी, कनानी, हिब्बी, और यबूसी के विरुद्ध
कर देगा। किन्तु मैं उन सभी लोगों को नष्ट कर दूँगा।

24"उनके देवताओं को मत पूजो। उन देवताओं को
झुककर कभी प्रणाम मत करो। तुम उस ढंग से कभी
न रहो जिस ढ़ंग से वे रहते हैं। तुम्हें उनकी मूर्तियों को
निश्चय ही नष्ट कर देना चाहिए और तुम्हें उनके
प्रस्तर पिण्ड़ों को तोड़ देना चाहिए जो उन्हें उनके
देवताओं को याद दिलाने में सहायता करती है। 25तुम्हें
अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा करनी चाहिए। यदि
तुम यह करोगे तो मैं तुम्हें भरपूर रोटी और पानी का
वरदान दूँगा। मैं तुम्हारी सारी बीमारियों को दूर कर
दूँगा। 26तुम्हारी सभी स्त्रियाँ बच्चों को जन्म देने लायक
होंगी। जन्म के समय उनका कोई बच्चा नहीं मरेगा
और मैं तुम लोगों को भरपूर लम्बा जीवन प्रदान करूँगा।

27"जब तुम अपने शत्रुओं से लड़ोगे, मैं अपनी प्रबल
शक्ति तुमसे भी पहले वहाँ भेज दूँगा।* मैं तुम्हारे सभी
शत्रुओं के हराने में तुम्हारी सहायता करूँगा। वे लोग
जो तुम्हारे विरुद्ध होंगे वे युद्ध में घबरा कर भाग जाएंगे।
28मैं तुम्हारे आग–आगे बर्रे भेजूँगा वह तुम्हारे शत्रुओं
को भागने के लिए विवश करेंगे। हिब्बी, कनानी और
हित्ती लोग तुम्हारा प्रदेश छोड़ कर भाग जाएंगे। 29किन्तु
मैं उन लोगों को तुम्हारे प्रदेश से बाहर जाने को
शीघ्रतापूर्वक विवश नहीं करूँगा। मैं यह केवल एक
वर्ष में नहीं करूँगा। यदि मैं लोगों को अति शीघ्रता से
बाहर जाने को विवश करूँ तो प्रदेश ही निर्जन हो जाए।
तब सभी प्रकार के जंगली जानवर बढ़ेंगे और वे तुम्हारे
लिए बहुत कष्टकर होंगे। 30मैं उन्हें धीरे और उस
समय तक बाहर खदेड़ता रहूँगा जब तक तुम उस धरती
पर फैल न जाओ और उस पर अधिकार न कर लो।

31"मैं तुम लोगों को लाल सागर से लेकर फरात तक
का सारा प्रदेश दूँगा। पश्चिमी सीमा पलिश्ती सागर
(भूमध्य सागर) होगा और पूर्वी सीमा अरब मरुभूमि
होगी। मैं ऐसा करूँगा कि वहाँ के रहने वालों को तुम
हराओ। और तुम इन सभी लोगों को वहाँ से भाग जाने
के लिए विवश करोगे। 32तुम उनके देवताओं या उन
लोगों में से किसी के साथ कोई समझौता नहीं करोगे।
33उन्हें अपने देश में मत रहने दो। यदि तुम उन्हें रहने
दोगे तो तुम उनके जाल में फँस जाओगे। वे तुमसे मेरे
विरुद्ध पाप करवाएंगे और तुम उनके देवताओं की
सेवा आरम्भ कर दोगे।"

परमेश्वर का इस्राएल से वाचा

24 परमेश्वर ने मूसा से कहा, "तुम हारून नादाब,
अबीहू और इस्राएल के सत्तर बुज़ुर्ग (नेता)
पर्वत पर आओ और कुछ दूर से मेरी उपासना करो।
2तब मूसा अकेले यहोवा के समीप आयेगा। अन्य लोग
यहोवा के समीप न आएँ, और शेष व्यक्ति पर्वत तक
भी न आएँ।"

3इस प्रकार मूसा ने यहोवा के सभी नियमों और
आदेशों को लोगों को बताया। तब सभी लोगों ने कहा,
"यहोवा ने जिन सभी आदेशों को दिया उनका हम
पालन करेंगे।"

4इसलिए मूसा ने यहोवा के सभी आदेशों को चर्म पत्र
पर लिखा। अगली सुबह मूसा उठा और पर्वत की
तलहटी के समीप उसने एक वेदी बनाई और उसने
बारह शिलाएँ इस्राएल के बारह कबीलों के लिए स्थापित
कीं। 5तब मूसा ने इस्राएल के युवकों को बलि चढ़ाने के
लिए बुलाया। इन व्यक्तियों ने यहोवा को होमबलि और
मेलबलि के रूप में बैल की बलि चढ़ाई।

6मूसा ने इन जानवरों के खून को इकट्ठा किया।
मूसा ने आधा खून प्याले में रखा और उसने दूसरा
आधा खून वेदी पर छिड़का।*

7मूसा ने चर्म पत्र पर लिखे विशेष साक्षीपत्र को पढ़ा।
मूसा ने साक्षीपत्र को इसलिए पढ़ा कि सभी लोग उसे
सुन सकें और लोगों ने कहा, "हम लोगों ने उन नियमों
को जिन्हें यहोवा ने हमें दिया, सुन लिया है और हम सब
लोग उनके पालन करने का वचन देते हैं।"

8तब मूसा ने खून को लिया और उसे लोगों पर
छिड़का। उसने कहा, "यह खून बताता है कि यहोवा ने
तुम्हारे साथ विशेष साक्षीपत्र स्थापित किया। ये नियम
जो यहोवा ने दिए हैं वे साक्षीपत्र को स्पष्ट करते हैं।"

9तब मूसा, हारून, नादाब, अबीहू और इस्राएल के
सत्तर बुज़ुर्ग (नेता) ऊपर पर्वत पर चढ़े। 10पर्वत पर इन

मैं ... दूँगा या मेरी शक्ति का समाचार तुमसे पहले पहुँच जाएगा और तुम्हारे शत्रु डर जाएंगे।

मूसा ... छिड़का खून यहोवा और लोगों के बीच की वाचा की पुष्टि के लिये प्रयोग में आता था। ख़ून वेदी पर यह दिखाने के लिये डाला जाता था कि यहोवा वाचा में साथ है।

लोगों ने इस्राएल के परमेश्वर को देखा। परमेश्वर
किसी ऐसे आधार पर खड़ा था जो नीलमणि सा दिखता
था ऐसा निर्मल जैसा आकाश। 11इस्राएल के सभी नेताओं
ने परमेश्वर को देखा, किन्तु परमेश्वर ने उन्हें नष्ट
नहीं किया।* तब उन्होंने एक साथ खाया और पिया।"

मूसा को पत्थर की पट्टियाँ मिलीं

12यहोवा ने मूसा से कहा, "मेरे पास पर्वत पर आओ।
मैंने अपने उपदेशों और आदेशों को दो समतल पत्थरों
पर लिखा है। ये उपदेश लोगों के लिए हैं। मैं इन समतल
पत्थरों को तुम्हें दूँगा।"

13इसलिए मूसा और उसका सहायक यहोशू परमेश्वर
के पर्वत तक गए। 14मूसा ने चुने हुए बुज़ुर्गों से कहा,
"हम लोगों की यहीं प्रतीक्षा करो, हम तुम्हारे पास
लौटेंगे। जब तक मैं अनुपस्थित रहूँ, हारून और हूर
आप लोगों के अधिकारी होंगे। यदि किसी को कोई
समस्या हो तो वह उनके पास जाए।"

मूसा का परमेश्वर से मिलना

15तब मूसा पर्वत पर चढ़ा और बादल ने पर्वत को
ढक लिया। 16यहोवा की दिव्यज्योति सीनै पर्वत पर
उतरी। बादल ने छः दिन तक पर्वत को ढके रखा।
सातवें दिन यहोवा, बादल में से मूसा से बोला। 17इस्राएल
के लोग यहोवा की दिव्यज्योति को देख सकते थे। यह
पर्वत की चोटी पर दीप्त प्रकाश की तरह थी। 18तब
मूसा बादलों में और ऊपर पर्वत पर चढ़ा। मूसा पर्वत
पर चालीस दिन और चालीस रात रहा।

पवित्र वस्तुओं के लिए भेंट

25 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"इस्राएल के लोगों से
मेरे लिए भेंट लाने को कहो। हर एक व्यक्ति
अपने मन में निश्चय करे कि वह मुझे इन वस्तुओं
में से क्या अर्पित करना चाहता है। इन उपहारों को
मेरे लिए अर्पित करो। 3इन वस्तुओं की सूची यह है
जिन्हें तुम लोगों से स्वीकार करोगे: सोना, चाँदी, काँसा;
4नीला बैगनी और लाल सूत, सुन्दर रेशमी कपड़ा;
बकरियों के बाल, 5लाल रंग से रंगा भेड़ का चमड़ा,
सुइसों के चमड़ें; बबूल की लकड़ी; 6दीपक में जलाने
का तेल, धूप के लिए सुगन्धित द्रव्य, अभिषेक के तेल
के लिए भीनी सुगन्ध देने वाले मसाले। 7गोमेदक रत्न
तथा अन्य मूल्यवान रत्न भी जो याजकों के पहनने
की एपोद और न्याय की थैली पर जड़े जायें, अर्पित
करो।"

पवित्र तम्बू

8परमेश्वर ने यह भी कहा, "लोग मेरे लिए एक
पवित्र तम्बू बनाएंगे। तब मैं उनके साथ रह सकूँगा। 9मैं
तुम्हें दिखाऊँगा कि पवित्र तम्बू कैसा दिखाई पड़ना
चाहिए। मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि इसमें सभी चीज़े कैसी
दिखाई देनी चाहिए। जैसा मैंने दिखाया हैं हर एक चीज़
ठीक वैसा ही बनाओ।

साक्षीपत्र का सन्दूक

10"बबूल की लकड़ी का उपयोग करके एक विशेष
सन्दूक बनाओ। यह सन्दूक निश्चय ही पैंतालिस
इंच* लम्बा, सत्ताईस इंच* चौड़ा और सत्ताईस इंच
ऊँचा होना चाहिए। 11सन्दूक को भीतर और बाहर से
ढकने के लिए शुद्ध सोने का उपयोग करो। सन्दूक के
कोनों को सोने से मढ़ो। 12सन्दूक को उठाने के लिए
सोने के चार कड़े बनाओ। सोने के कड़ो को चारों
कोनों पर लगाओ। दोनों तरफ़ दो-दो कड़े हों।
13तब सन्दूक ले चलने के लिए बल्लियाँ बनाओ। ये
बल्लियाँ बबूल की लकड़ी की बनी हो और सोने से
मढ़ी होनी चाहिए। 14सन्दूक के बगलों के कोनों पर
लगे कड़ों में इन बल्लियों को डाल देना। इन बल्लियों
का उपयोग सन्दूक को ले जाने के लिए करो। 15ये
बल्लियाँ सन्दूक के कड़ों में सदा पड़ी रहनी चाहिए।
बल्लियों को बाहर न निकालो।"

16परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम्हें साक्षीपत्र दूँगा। इस
साक्षीपत्र को इस सन्दूक में रखो। 17तब एक ढक्कन
बनाओ। इसे शुद्ध सोने का बनाओ। इसे पैंतालिस
इंच लम्बा और सत्ताईस इंच चौड़ा बनाओ। 18तब दो
करूब बनाओ और उन्हें ढक्कन के दोनों सिरों
पर लगाओ। इन करूबों को बनाने के लिए स्वर्ण
पत्रों का उपयोग करो। 19एक करूब को ढक्कन के
एक सिरे पर लगाओ तथा दूसरे को दूसरे सिरे पर।
करूब और ढक्कन को परस्पर जोड़ कर के एक
इकाई के रूप में बनाया जाये। 20करूब एक दूसरे के
आमने-सामने होने चाहिए। करूबों के मुख ढक्कन
की ओर देखते हुए होने चाहिए। करूबों के पंख ढक्कन
पर फैले हों।

21"मैंने तुमको साक्षीपत्र को जो प्रमाण दिया है उसे
साक्षीपत्र के सन्दूक में रखो और विशेष ढक्कन से
सन्दूक को बन्द करो। 22जब मैं तुमसे मिलूँगा तब मैं
करूबो के बीच से, जो साक्षीपत्र के सन्दूक के विशेष
ढक्कन पर हैं, बात करूँगा। मैं अपने सभी आदेश
इस्राएल के लोगों को उसी स्थान से दूँगा।

परमेश्वर ... किया बाइबल कहती है कि यहोवा अदृश्य है। उसे देखा नहीं जा सकता। किन्तु यहोवा चाहता था कि ये प्रमुख उसे किसी विशेष प्रकार से देख सकें सो यहोवा ने उन्हें अपना दर्शन करने दिया।

पैंतालिस इंच शाब्दिक "ढाई हाथ।"

सत्ताईस इंच शाब्दिक "डेढ़ हाथ।"

विशेष रोटी की मेज़

23“बबूल की लकड़ी का एक मेज बनाओ। मेज
छत्तीस इंच* लम्बा अट्ठारह इंच चौड़ा और सत्ताईस
इंच ऊँचा होना चाहिए। 24मेज को शुद्ध सोने से मढ़ो
और उसके चारों ओर सोने की झालर लगाओ। 25तब
तीन इंच चौड़ा सोने का चौखरा मेज के ऊपर चारों
ओर जड़ दो। और उसके चारों ओर सोने की झालर
लगाओ। 26तब सोने के चार कड़े बनाओ और मेज के
चारों कोनों पर पायों के पास लगाओ। 27हर एक पाए
पर एक कड़ा लगा दो। जो मेज के ऊपर की चारों
ओर की सजावट के समीप हो। इन कड़ों में मेज को
ले जाने के लिए बनी बल्लियाँ फँसी होंगी। 28बल्लियों
को बनाने के लिए बबूल की लकड़ी का उपयोग करो
और उन्हें सोने से मढ़ो। बल्लियाँ मेज को ले जाने के
लिए हैं। 29पात्र, तवे, मर्तबान और अर्ध के लिए कटोरे–इन
सबको शुद्ध सोने का बनाना। 30विशेष रोटी मेज पर
मेरे सम्मुख रखो। यह सदैव मेरे सम्मुख वहाँ रहनी
चाहिए।

दीपाधार

31“तब तुम्हें एक दीपाधार बनाना चाहिए। दीपाधार
के हर एक भाग को बनाने के लिए शुद्ध सोने के पत्तर
तैयार करो। सुन्दर दिखने के लिए दीप पर फूल बनाओ।
ये फूल, इनकी कलियाँ और पंखुडियाँ शुद्ध सोने की
बनी होनी चाहिए और ये सभी चीज़ें एक ही में जुड़ी हुई
होनी चाहिए।
32“दीपाधार की छ: शाखाएँ होनी चाहिए। तीन शाखाएँ
एक ओर और तीन शाखाएँ दूसरी ओर होनी चाहिए।
33हर शाखा पर बादाम के आकार के तीन प्याले होने
चाहिए। हर प्याले के साथ एक कली और एक फूल
होना चाहिए। 34और स्वयं दीपाधार पर बादाम के फूल
के आकार के चार और प्याले होने चाहिए। इन प्यालों
के साथ भी कली और फूल होने चाहिए। 35दीपाधार से
निकलने वाली छ: शाखाएँ दो दो के तीन भागों में बटीं
होनी चाहिए। हर एक दो शाखाओं के जोड़े के नीचे
एक एक कली बनाओ जो दीपाधार से निकलती हो।
36ये सभी शाखाएँ और कलियाँ दीपाधार के साथ एक
इकाई बननी चाहिए। और हर एक चीज़ शुद्ध सोने से
तैयार की जानी चाहिए। 37तब सात छोटे दीपक दीपाधार
पर रखे जाने के लिए बनाओ। ये दीपक दीपाधार के
सामने के स्थान को प्रकाश देंगे। 38दीपक की बत्तियाँ
बुझाने के पात्रऔर तश्तरियाँ शुद्ध सोने के बनाने चाहिए।
39पचहत्तर पौंड* शुद्ध सोने का उपयोग दीपाधार और
इसके साथ की सभी चीज़ों को बनाने में करें। 40सावधानी
के साथ हर एक चीज़ ठीक–ठीक उसी ढँग से बनायी
जाये जैसी मैंने पर्वत पर तुम्हें दिखाई है।”

पवित्र तम्बू

26 यहोवा ने मूसा से कहा, “पवित्र तम्बू दस कनातों
से बनाओ। इन कनातों को अच्छे रेशम तथा
नीले, लाल और बैंगनी कपड़ों से बनाओ। किसी कुशल
कारीगर को चाहिए कि वह करूबों को पंख सहित
कनातों पर काढ़े। 2हर एक कनात को एक बराबर
बनाओ। हर एक कनात चौदह गज़* लम्बी और दो
गज़* चौड़ी होनी चाहिए। 3सभी कनातों को दो भागों में
सीओ। एक भाग में पाँच कनातों को एक साथ सीओ
और दूसरे भाग में पाँच को एक साथ। 4आखिरी कनात
के सिरे के नीचे छल्ले बनाओ। इन छल्लों को बनाने
के लिए नीला कपड़ा उपयोग में लाओ। कनातों के
दोनों भागों में एक और नीचे छल्ले होंगे। 5पहले भाग
की आखिरी कनात में पचास छल्ले होंगे और दूसरे
भाग की आखिरी कनात में पचास। 6तब पचास सोने
के कड़े छल्लों को एक साथ मिलाने के लिए बनाओ।
यह कनातों को इस प्रकार जोड़ेंगे कि पवित्र तम्बू एक
ही हो जायेगा।
7“तब तुम दूसरा तम्बू बनाओगे जो पवित्र तम्बू को
ढकेगा। इस तम्बू को बनाने के लिए बकरियों के बाल
से बनी ग्यारह कनातों का उपयोग करो। 8ये सभी
कनातें एक बराबर होनी चाहिए। वे पन्द्रह गज* लम्बी
और दो गज़ चौडी होनी चाहिए। 9एक भाग में पाँच
कनातों को एक साथ सीओ तब बाकी छ: कनातों को
दूसरे भाग में एक साथ सीओ। छठी कनात का उपयोग
तम्बू के सामने के पर्दे के लिए करो। इसे इस प्रकार
लपेटो कि यह द्वार की तरह खुले। 10एक भाग की
आखिरी कनात के सिरे पर पचास छल्ले बनाओ, ऐसा
ही दूसरे भाग की आखिरी कनात के लिए करो। 11तब
पचास काँसे के कड़े बनाओ। इन काँसे के कड़ों का
उपयोग छल्लों को एक साथ जोड़ने के लिए करो। ये
कनातों को एक साथ तम्बू के रूप में जोड़ेंगे। 12ये
कनातें पवित्र तम्बू से अधिक लम्बी होंगी। इस प्रकार
अन्त के कनात का आधा हिस्सा तम्बू के पीछे किनारों
के नीचे लटका रहेगा।
13“वहाँ अट्ठारह इंच* कनात तम्बू के बगलों में
निचले किनारों से लटकती रहेगी। यह तम्बू को पूरी
तरह ढक लेगी। 14बाहरी आवरण को ढकने के लिए
दो अन्य पर्दे बनाओ। एक लाल रंगे मेढ़े के चमड़े से

छत्तीस इंच शाब्दिक “दो हाथ।”

पचहत्तर पौंड शाब्दिक “एक किक्कार।”

चौदह गज शाब्दिक “अट्ठाइस हाथ।”

दो गज शाब्दिक “चार हाथ।”

पन्द्रह गज शाब्दिक “तीस हाथ।”

अट्ठारह इंच शाब्दिक “एक हाथ।”

बनाना चाहिए तथा दूसरा पर्दा सुइसों के चमड़े का बना
होना चाहिए।
15“तम्बू के सहारे के लिए बबूल की लकड़ी के
तख़्ते बनाओ। **16**तख़्ते पन्द्रह फुट* लम्बे और सत्ताईस
इंच चौड़े होने चाहिए। **17**हर तख़्ता एक जैसा होना
चाहिए। हर एक तख़्ते के तले में* उन्हें जोड़ने के लिए
साथ–साथ दो खूंटियाँ होनी चाहिए। **18**तम्बू के दक्षिणी
भाग के लिए बीस तख़्ते बनाओ। **19**ढाँचें के ठीक नीचे
चाँदी के दो आधार हर एक तख़्ते के लिए होने चाहिए।
इसलिए तुम्हें तख़्तों के लिए चाँदी के चालीस आधार
बनाने चाहिए। **20**तम्बू के उत्तरी भाग के लिए बीस तख़्ते
और बनाओ। **21**इन तख़्तों के लिए भी चाँदी के चालीस
आधार बनाओ, अर्थात् एक तख़्ते के लिए दो आधार।
22तुम्हें तम्बू के पश्चिमी छोर के लिए छ: और तख़्ते
बनाने चाहिए। **23**दो तख़्ते पिछले कोनों के लिए बनाओ।
24कोने के दोनों तख़्ते एक साथ जोड़ देने चाहिए। तले
में दोनों तख़्तों की खूँटियाँ चाँदी के एक ही आधार में
लगेंगी, और ऊपर धातु का एक छल्ला दोनों तख़्तों को
एक साथ रखेगा। **25**इस प्रकार सब मिलाकर आठ
तख़्ते तम्बू के सिरे के लिए होंगे, और हर तख़्ते के
नीचे दो आधारों के होने से सोलह चाँदी के आधार
पश्चिमी छोर के लिए होंगे।
26“बबूल की लकड़ी का उपयोग करो और तम्बू के
तख़्तों के लिए कुण्डियाँ बनाओ। तम्बू के पहले भाग के
लिए पाँच कुण्डियाँ होंगी। **27**और तम्बू के दूसरे भाग के
ढाँचे के लिए पाँच कुण्डियाँ होंगी। और तम्बू के पश्चिमी
भाग के ढाँचे के लिए पाँच कुण्डियाँ होंगी अर्थात् तम्बू
के पीछे। **28**पाँचों कुण्डियों के बीच की कुण्डी तख़्तों के
मध्य में होनी चाहिए। यह कुण्डी तख़्तों के एक सिरे से
दूसरे सिरे तक पहुँचनी चाहिए।* **29**तख़्तों को सोने से
मढ़ो। और तख़्तों की कुण्डियों को फँसाने के लिए कड़े
बनवाओ। ये कड़े भी सोने के ही बनने चाहिए। कुण्डियों
को भी सोने से मढ़ो। **30**पवित्र तम्बू को तुम उसी ढंग
की बनाओ जैसा मैंने तुम्हें पर्वत पर दिखाया था।

पवित्र तम्बू का भीतरी भाग

31“सन के अच्छे रेशों का उपयोग करो और तम्बू
के भीतरी भाग के लिए एक विशेष पर्दा बनाओ। इस
पर्दे को नीले, बैंगनी और लाल रंग के कपड़े से बनाओ।
करूब के प्रतिरूप कपड़े में काढ़ो। **32**बबूल की लकड़ी
के चार खम्भे बनाओ। चारों खम्भों पर सोने की बनी
खूँटियाँ लगाओ। खम्भों को सोने से मढ़ दो। खम्भों के
नीचे चाँदी के चार आधार रखो। तब सोने की खूँटियों
में पर्दा लटकाओ। **33**खूँटियों पर पर्दे को लटकाने के
बाद, साक्षीपत्र के सन्दूक को पर्दे के पीछे रखो। यह पर्दा
पवित्र स्थान को सर्वाधिक पवित्र स्थान से अलग करेगा।
34सर्वाधिक पवित्र स्थान में साक्षीपत्र के सन्दूक पर
ढक्कन रखो। **35**पवित्र स्थान में पर्दे के दूसरी ओर
विशेष मेज़ को रखो। मेज तम्बू के उत्तर में होनी
चाहिए। तब दीपाधार को तम्बू के दक्षिण में रखो।
दीपाधार मेज़ के ठीक सामने होगा।

पवित्र तम्बू का मुख्य द्वार

36“तब तम्बू के मुख्य द्वार के लिए एक पर्दा बनाओ।
इस पर्दे को बनाने के लिए नीले बैंगनी, लाल कपड़े
तथा सन के उत्तम रेशों का उपयोग करो। और कपड़े
में चित्रों की कढ़ाई करो। **37**द्वार के इस पर्दे के लिए
सोने के छल्ले बनवाओ। सोने से मढ़े बबूल की लकडी
के पाँच खम्भे बनाओ और पाँचों खम्भों के लिए काँसे
के पाँच आधार बनाओ।”

भेंट जलाने के लिए वेदी

27 यहोवा ने मूसा से कहा, “बबूल की लकड़ी का
उपयोग करो और एक वेदी बनाओ। वेदी
वर्गाकार होनी चाहिए। यह साढ़े सात फुट* लम्बी साढ़े
सात फुट चौड़ी और साढ़े चार फुट* ऊँची होनी चाहिए।
2वेदी के चारों कोनों पर सींग बनाओ। हर एक सींग
को इसके कोनों से ऐसे जोड़ो कि सभी एक हो जाये तब
वेदी को काँसे से मढो।
3“वेदी पर काम आने वाले सभी उपकरणों और
तश्तरियों को काँसे का बनाओ। काँसे के बर्तन, पल्टे,
कटोरे, काँटे और तसले बनाओ। ये वेदी से राख को
निकालने में काम आएंगे। **4**जाल के जैसी काँसे की
एक बड़ी जाली बनाओ। जाली के चारों कोनों पर काँसे
के कड़े बनाओ। **5**जाली को वेदी की परत के नीचे
रखो। जाली वेदी के भीतर बीच तक रहेगी। **6**वेदी के
लिए बबूल की लकड़ी के बल्ले बनाओ और उन्हे काँसे
से मढ़ो। **7**वेदी के दोनों ओर लगे कड़ों में इन बल्लों को
डालो। इन बल्लों को वेदी को ले जाने के लिए काम में
लो। **8**वेदी भीतर से खोखली रहेगी और इसकी
अगल–बगल तख़्तों की बनी होगी। वेदी वैसी ही बनाओ
जैसी मैंने तुमको पर्वत पर दिखाई थी।

पवित्र तम्बू का आँगन

9“तम्बू के चारों ओर कनातों की एक दीवार बनाओ।
यह तम्बू के लिए एक आँगन बनाएगी। दक्षिण की

पन्द्रह फुट शाब्दिक “दस हाथ।”

तले में धातु के आधार पर बने छेदों में ये खूंटियाँ बैठाई जाएंगी जिससे तख़्ते कनातों के लिए खड़े ढाँचे बन सकें।

यह कुण्डी ... चाहिए या मध्यवर्ती कुण्डी तख़्तों से होती हुई एक सिरे से दूसरे सिरे तक होनी चाहिए।

साढ़े सात फुट शाब्दिक “पाँच हाथ।”

साढ़े चार फुट शाब्दिक “तीन हाथ।”

ओर कनातों की यह दीवार पचास गज* लम्बी होनी
चाहिए। ये कनातें सन के उत्तम रेशों से बनी होनी
चाहिए। 10बीस खम्भों और उनके नीचे बीस काँसे के
आधारों का उपयोग करो। खम्भों के छल्लें और पर्दे
की छड़े* चाँदी की बननी चाहिए। 11उत्तर की ओर
लम्बाई उतनी ही होनी चाहिए जितनी दक्षिण की ओर
थी। इसमें पचास गज़ लम्बी पर्दो की दीवार, बीस खम्भे
और बीस काँसे के आधार होने चाहिए। खम्भे और
उनके पर्दों की छड़ों के छल्ले चाँदी के बनने चाहिए।

12"आँगन के पश्चिमी सिरे पर कनातों की एक
दीवार पच्चीस गज़ लम्बी होनी चाहिए। वहाँ उस दीवार
के साथ दस खम्भे और दस आधार होने चाहिए। 13आँगन
का पूर्वी सिरा भी पच्चीस गज लम्बा होना चाहिए।
14-15यह पूर्वी सिरा आँगन का प्रवेश द्वार है। प्रवेश द्वार
की हर एक ओर की कनातें साढ़े सात गज लम्बी होनी
चाहिए। उस ओर तीन खम्भे और तीन आधार होने
चाहिए।

16"एक कनात दस गज* लम्बी आँगन के प्रवेश द्वार
को ढ़कने के लिए बनाओ। इस कनात को सन के
उत्तम रेशों और नीले, लाल और बैंगनी कपड़े से बनाओ।
इन कनातों पर चित्रों को काढ़ो। उस पर्दे के लिए चार
खम्भे और चार आधार होने चाहिए। 17आँगन के चारों
ओर के सभी खम्भे चाँदी की छड़ों से ही जोड़े जाने
चाहिए।* खम्भों के छल्ले चाँदी के बनाने चाहिए और
खम्भों के आधार काँसे के होने चाहिए। 18आँगन पचास
गज लम्बा और पच्चीस गज* चौड़ा होना चाहिए। आँगन
के चारों ओर की दीवार साढ़े सात फ़ुट ऊँची होनी
चाहिए। पर्दा सन के उत्तम रेशों का बना होना चाहिए।
सभी खम्भों के नीचे के आधार काँसे के होने चाहिए।
19सभी उपकरण, तम्बू की खूँटियाँ, और तम्बू में लगी
हर एक चीज़ काँसे की ही बननी चाहिए। और आँगन
के चारों ओर के पर्दों के लिए खूँटियाँ काँसे की ही
होनी चाहिए।

दीपक के लिए तेल

20"इस्राएल के लोगों को सर्वोत्तम जैतून का तेल लाने
का आदेश दो। इस तेल का उपयोग हर एक सन्ध्या को
जलने वाले दीपक के लिए करो। 21हारून और उसके
पुत्र प्रकाश का प्रबन्ध करने का कार्य संभालेंगे। वे
मिलापवाले तम्बू के पहले कमरे में जाएंगे। यह कमरा
साक्षीपत्र के सन्दूक वाले कमरे के बाहर उस पर्दे के
सामने है जो दोनों कमरों को अलग करता है। वे
इसका ध्यान रखेंगे कि इस स्थान पर यहोवा के सामने
दीपक सन्ध्या, से प्रात: तक लगातार जलते रहेंगे। इस्राएल
के लोग और उनके वंशज इस नियम का पालन सदैव
करेंगे।"

याजकों के वस्त्र

28 "अपने भाई हारून और उसके पुत्रों नादाब,
अबीहू, एलिआजार और ईतामर को इस्राएल
के लोगों में से अपने पास आने को कहो। ये व्यक्ति मेरी
सेवा याजक के रूप में करेंगे।

2"अपने भाई हारून के लिए विशेष वस्त्र बनाओ। ये
वस्त्र उसे आदर और गौरव देंगे। 3लोगों में ऐसे कुशल
कारीगर हैं जो ये वस्त्र बना सकते हैं। मैंने इन व्यक्तियों
को विशेष बुद्धि दी है। उन लोगों से हारून के लिए वस्त्र
बनाने को कहो। ये वस्त्र बताएंगे कि वह मेरी सेवा
विशेष रूप से करता है। तब वह मेरी सेवा याजक के
रूप में कर सकता है। 4कारीगरों को इन वस्त्रों को
बनाना चाहिए: न्याय का थैला एपोद बिना बाँह की
विशेष एपोद एक नीले रंग का लबादा, एक सफ़ेद बुना
चोगा, सिर को ढकने के लिये एक साफ़ा और एक
पटुका लोगों को ये विशेष वस्त्र तुम्हारे भाई हारून और
उसके पुत्रों के लिए बनवाने चाहिए। तब हारून और
उसके पुत्र मेरी सेवा याजक के रूप में कर सकते हैं।
5लोगों से कहो कि वे सुनहरे धागों, सन के उत्तम रेशों
तथा नीले, लाल और बैंगनी कपड़े उपयोग में लाएं।

एपोद और पटुका

6"एपोद बनाने के लिए सुनहरे धागे, सन के उत्तम
रेशों तथा नीले, लाल और बैंगनी कपड़े का उपयोग
करो। इस विशेष एपोद को कुशल कारीगर बनाएंगे।
7एपोद के हर एक कंधे पर पट्टी लगी होगी। कंधे की
ये पट्टियाँ एपोद के दोनों कोनों पर बंधी होंगी।

8"कारीगर बड़ी सावधानी से एपोद पर बांधने के
लिए एक पटुका बुनेंगे। (यह पटुका उन्हीं चीज़ों का
होगा जिनका एपोद, सुनहरे धागे, सन के उत्तम रेशों
और बैंगनी कपड़े।)

9"तुम्हें दो गोमेदक रत्न लेने चाहिए। इन नगों पर
इस्राएल के बारह पुत्रों के नाम खोदो। 10छ: नाम एक
नग पर और छ: नाम दूसरे नग पर। नामों को सबसे
बड़े से सबसे छोटे के क्रम में लिखो। 11इस्राएल के पुत्रों
के नामों को इन नगों पर खुदवाओ। यह उसी प्रकार
करो जिस प्रकार वह व्यक्ति जो मुहरें बनाता है, शब्द
और चित्रों को खोदता है। नग के चारों ओर सोना
लगाओ जिससे उन्हें एपोद के कंधों पर टाँका जा सके।

पचास गज़ शाब्दिक "सौ हाथ।"

छड़े ये या तो खम्भों को एक साथ जोड़ने वाली छड़े थी या पर्दे में सिले कड़े थे।

दस गज शाब्दिक "बीस हाथ।"

आँगन ... चाहिए ये सम्भवत: पर्दे की छड़ें हैं जिनका वर्णन सँख्या दस में हुआ है।

पच्चीस गज शाब्दिक "पचास हाथ।"

12तब एपोद के हर एक कंधे के पट्टी पर इन दोनों
नगों को जड़ो। हारून यहोवा के सम्मुख जब खड़ा
होगा, इस विशेष एपोद को पहनेगा और इस्राएल के पुत्रों
के नाम वाले दोनों नग एपोद पर होंगे। यह इस्राएल के
लोगों को याद रखने में यहोवा की सहायता करेगा।
13अच्छा सोना ही नगों को एपोद पर ढँकने के लिए
उपयोग में लाओ। 14रस्सी की तरह एक में शुद्ध सोने
की जंजीरें बटो। सोने की ऐसी दो जंजीरे बनाओ और
सोने के जड़ाव के साथ इन्हें बांधो।

सीनाबन्द

15"महायाजक के लिए सीनाबन्द बनाओ। कुशल
कारीगर इस सीनाबन्द को वैसे ही बनाए जैसे एपोद को
बनाया। वे सुनहरे धागे, सन के उत्तम रेशों तथा नीले,
लाल और बैंगनी कपड़े का उपयोग करें। 16सीनाबन्द
नौ इंच लम्बा और नौ इंच* चौड़ा होना चाहिए। चौकोर
जेब बनाने के लिए इसकी दो तह करनी चाहिए।
17सीनाबन्द पर सुन्दर रत्नों की चार पक्तियाँ जड़ो। रत्नों
की पहली पंक्ति में एक लाल, एक पुखराज और एक
मर्कत मणि होनी चाहिए। 18दूसरी पंक्ति मे फिरोज़ा,
नीलम तथा पन्ना होना चाहिए। 19तीसरी पंक्ति मे धूम्रकान्त,
अकीक और याकूत लगना चाहिए। 20चौथी पंक्ति में
लहसुनिया, गोमेदक रत्न और कपिश मणि लगानी
चाहिए। सीनाबन्द पर इन्हें लगाने के लिए इन्हें सोने मे
जड़ो। 21सीनाबन्द पर बारह रत्न होगें जो इस्राएल के
बारह पुत्रों का एक प्रतिनिधित्व करेंगे। हर एक नग
पर इस्राएल के पुत्रों* में से एक-एक का नाम लिखो।
मुहर की तरह हर एक नग पर इन नामों को खोदो।
22"सीनाबन्द के चारों ओर जाती हुई सोने की जंजीरें
बनाओ। ये जंजीर बटी हुई रस्सी की तरह होंगी। 23दो
सोने के छल्ले बनाओ और इन्हें सीनाबन्द के दोनों
कोनों पर लगाओ। 24(दोनों सुनहरी जंजीरों को सीनाबन्द
में दोनों में लगे छल्लों में डालो।) 25सोने की जंजीरों को
दूसरे सिरों को कंधे की पट्टियों पर के जड़ाव में
लगाओ। जिससे वे एपोद के साथ सोने पर कसे रहें।
26दो अन्य सोने के छल्ले बनाओ और उन्हें सीनाबन्द
के दूसरे दोनों कोनों पर लगाओ। यह सीनाबन्द का
भीतरी भाग एपोद के समीप होगा। 27दो और सोने के
छल्ले बनाओ और उन्हें कंधे की पट्टी के तले एपोद
के सामने लगाओ। सोने के छल्लों को एपोद की पेटी
के समीप ऊपर के स्थान पर लगाओ। 28सीनाबन्द के
छल्लों को एपोद के छल्लों से जोड़ो। उन्हें पेटी से एक
साथ जोड़ने के लिए नीली पट्टियों का उपयोग करो।
इस प्रकार सीनाबन्द एपोद से अलग नहीं होगा।
29"हारून जब पवित्र स्थान में प्रवेश करे तो उसे इस
सीनाबन्द को पहने रहना चाहिए। इस प्रकार इस्राएल के
बारहों पुत्रों के नाम उसके मन में रहेंगे और यहोवा को
सदा ही उन लोगों की याद दिलाई जाती रहेगी। 30ऊरीम
और तुम्मीम को सीनाबन्द में रखो। हारून जब यहोवा
के सामने जाएगा तब ये सभी चीज़ें उसे याद होंगी।
इसलिए हारून जब यहोवा के सामने होगा तब वह
इस्राएल के लोगों का न्याय करने का साधन सदा अपने
साथ रखेगा।

याजक के अन्य वस्त्र

31"एपोद के नीचे पहनने के लिए एक चोग़ा बनाओ।
चोगा केवल नीले कपड़े का बनाओ। 32सिर के लिए
इस कपड़े के बीचोबीच एक छेद बनाओ। इस छेद के
चारों ओर गोट लगाओ जिससे यह फटे नहीं। 33नीले,
लाल और बैंगनी कपड़े के फुँदने बनाओ जो अनार के
आकार के हों। इन अनारों को चोगे के निचले सिरे में
लटकाओं और उनके बीच सोने की घंटियाँ लटकाओ।
34इस प्रकार चोग़े के निचले सिरे के चारों ओर क्रमश:
एक अनार और एक सोने की घंटी होगी। 35हारून तब
इस चोग़े को पहनेगा जब वह याजक के रूप में सेवा
करेगा और यहोवा के सामने पवित्र स्थान में जाएगा।
जब वह पवित्र स्थान में प्रवेश करेगा और वहाँ से
निकलेगा तब ये घंटियाँ बजेंगी। इस प्रकार हारून मरेगा
नही।*
36"शुद्ध सोने का एक पतरा बनाओ। सोने में मुहर
की तरह शब्द लिखो। ये शब्द लिखो: "यहोवा के लिए
पवित्र" 37सोने के इस पतरे को उस पगड़ी पर लगाओ
जो सिर को ढकने के लिए पहनी गयी है। उस पगड़ी से
सोने के पतरे को बाँधने के लिए नीले कपड़े की पट्टी
का उपयोग करो। 38हारून यह दर्शाने के लिए इसे
अपने ललाट पर पहनेगा कि इस्राएल के लोगों ने अपने
अपराधों के लिए जो पवित्र भेंटें यहोवा को अर्पित की
हैं उनके अपराधों को प्रतीक रूप में हारून वहन कर
रहा है। हारून जब भी यहोवा के सामने जायेगा ये सदा
पहने रहेगा, ताकि यहोवा उन्हें स्वीकार कर ले।
39"लबादा बनाने के लिए सन के उत्तम रेशों को
उपयोग में लाओ, और उस कपड़े को बनाने के लिए
भी सन के उत्तम रेशों को उपयोग में लाओ जो सिर को
ढ़कता है, इसमें कढ़ाई कढ़ी होनी चाहिए। 40लबादा,
पटुका और पगड़ियाँ हारून के पुत्रों के लिए भी बनाओ,
ये उन्हें गौरव तथा आदर देंगे। 41ये पोशाक अपने भाई

नौ इंच शाब्दिक "बालिस्त" अँगूठे के सिरे से छोटी अँगुली के सिरे तक की दूरी।

इस्राएल के पुत्रों अर्थात् बारह वंशों के नाम, ये नाम इस्राएल (याकूब) के बारह पुत्रों के नाम पर ही रखे गए थे।

इस ... नहीं इसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है। इससे पता चलता रहेगा कि हारून जीवित है।

हारून और उसके पुत्रों को पहनाओ। उसके बाद जैतून का तेल उनके सिर पर यह दिखाने के लिए डालो कि वे याजक हैं, यह उन्हें पवित्र बनायेगा। तब वे मेरी सेवा याजक के रूप में करेंगे।

42"उन के वस्त्रों को बनाने के लिए सन के उत्तम रेशों का उपयोग करो जो विशेष याजक के वस्त्रों के नीचे पहनने के लिए होंगे। ये अधोवस्त्र कमर से जाँघ तक पहने जाएंगे। **43**हारून और उसके पुत्रों को इन वस्त्रों को ही पहनना चाहिए जब कभी वे मिलापवाले तम्बू में जाएं। उन्हें इन्हीं वस्त्रों को पहनना चाहिए जब कभी वे पवित्र स्थान में याजक के रूप में सेवा के लिए वेदी के समीप आएं। यदि वे इन पोशाकों को नहीं पहनेंगे, तो वे अपराध करेंगे और उन्हें मरना होगा। यह ऐसा नियम होना चाहिए जो हारून और उसके बाद उसके वंश के लोगों के लिए सदा के लिए बना रहेगा।"

याजकों की नियुक्ति का उत्सव

29 "अब मैं तुम्हे बताऊँगा कि हारून और उसके पुत्र मेरी सेवा विशेष रूप में करते हैं, यह दिखाने के लिए तुम्हें क्या करना चाहिए। एक दोष रहित बछड़ा और दो दोष रहित मेढ़े लाओ। **2**जिसमें खमीर न मिलाया गया हो ऐसा महीन आटा लो और उससे तीन तरह की रोटियाँ बनाओ–पहली बिना खमीर की सादी रोटी। दूसरी तेल का मोमन डली रोटी और तीसरी वैसे ही आटे की छोटी पतली रोटी बनाकर उस पर तेल चुपड़ो। **3**इन रोटियों को एक टोकरी में रखो और फिर इस टोकरी को हारून और उसके पुत्रों को दो, साथ ही वह बछड़ा और दोनों मेढ़े भी दो। **4**"तब हारून और उसके पुत्रों को मिलापवाले तम्बू के द्वार के सामने लाओ, तब उन्हें पानी से नहलाओ। **5**हारून की विशेष पोशाक उसे पहनाओ, लबादा, चोग़ा और एपोद। फिर उस पर सीनाबन्द, फिर विशेष पटुका बांधो **6**और फिर पगड़ी उसके सिर पर बाँधों। सोने की पट्टी को जो एक विशेष मुकुट के जैसी है पगड़ी के चारों ओर बाँधो **7**और जैतून का तेल डालो। जो बताएगा कि हारून इस काम के लिए चुना गया है।

8"तब उसके पुत्रों को उस स्थान पर लाओ और उन्हें चोगे पहनाओ। **9**तब उनकी कमर के चारों ओर पटुके बाँधों। उन्हें पहनने को पगड़ी दो। उस समय से वे याजक के रूप में काम करना आरम्भ करेंगे। वे उस नियम के अनुसार जो सदा रहेगा, याजक होंगे। यही ढंग है जिससे तुम हारून और उसके पुत्रों को याजक बनाओगे।

10"तब मिलापवाले तम्बू के सामने के स्थान पर बछड़े को लाओ। हारून और उसके पुत्रों को चाहिए कि वे बछड़े के सिर पर हाथ रखें। **11**तब उस बछड़े को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के सामने मार डालो। **12**तब बछड़े का कुछ खून लो और वेदी तक जाओ। अपनी उँगली से वेदी पर लगे सींगों पर कुछ खून लगाओ। बचा हुआ सारा खून नीचे वेदी पर डालो। **13**तब बछड़े में से सारी चर्बी निकालो। तब कलेजे के चारों ओर की चर्बी और दोनों गुर्दे और उसकी चारों ओर की चर्बी लो। इस चर्बी को वेदी पर जलाओ। **14**तब बछड़े के माँस, उसके चमड़े, और उसके दूसरे अंगों को लो और अपने डेरे से बाहर जाओ। इन चीज़ों को डेरे के बाहर जलाओ। यह भेंट है जो याजकों के पापों को दूर करने के लिए चढ़ाई जाती है।

15"तब हारून और उसके पुत्रों से मेढ़े के सिर पर हाथ रखने को कहो। **16**तब उस मेढ़े को मार डालो और उसके खून को लो। खून को वेदी के चारों ओर छिड़को। **17**तब मेढ़े को कई टुकड़ों में काटो। मेढ़े के भीतर के सभी अंगो और पैरों को धोओ। इन चीज़ों को सिर तथा मेढ़े के अन्य टुकडों के साथ रखो। **18**तब वेदी पर इन को जलाओ। यह वह विशेष भेंट है जो जलाई जाती है। यह होमबलि यहोवा के लिए है। इसकी सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करेगी। यह ऐसी होमबलि है जो यहोवा को आग के द्वारा दी जाती है।

19"हारून और उसके पुत्रों को दूसरे मेढ़े पर हाथ रखने को कहो। **20**उस मेढ़े को मारो और उसका कुछ खून लो। उस खून को हारून और उसके पुत्रों के दाएं कान के निचले भाग में लगाओं। उनके दाएँ हाथ के अंगूठों पर भी कुछ खून लगाओ और कुछ खून उनके दाएँ पैर के अगूंठों पर लगाओ। बाकी के खून को वेदी के चारों और छिड़को। **21**तब वेदी पर छिड़के खून में से कुछ खून लो। इसे अभिषेक के तेल में मिलाओ और हारून तथा उसके वस्त्रों पर छिड़को और उसके पुत्रों और उनके वस्त्रों पर भी छिड़को। यह बताएगा कि हारून और उसके पुत्र मेरी सेवा विशेष रूप से करते हैं। और यह सूचित करेगा कि उनके वस्त्र विशेष अवसर पर ही काम में आते हैं।

22"तब उस मेढ़े से चर्बी लो। (यही मेढ़ा है जिसका उपयोग, हारून को महायाजक बनाने में होगा।) पूँछ के चारों ओर की चर्बी तथा उस चर्बी को लो जो शरीर के भीतर के अंगों को ढकती है, कलेजे को ढकने वाली चर्बी को लो, दोनों गुर्दो और दाएँ पैर को लो। **23**तब उस रोटी की टोकरी को लो जिसमें तुमने अख़मीरी रोटियाँ रखी थीं। यही टोकरी है जिसे तुम्हें यहोवा के सम्मुख रखना है। इन रोटियों को टोकरी से बाहर निकालो। एक रोटी, सादी, एक तेल से बनी और एक छोटी पतली चुपड़ी हुई। **24**तब इन को हारून और उसके पुत्रों को दो: फिर उनसे कहो कि वे यहोवा के सामने इन्हें अपने हाथों में उठाएँ। यह यहोवा को विशेष भेंट होगी। **25**तब इन रोटियों को हारून और उसके पुत्रों से लो और इन्हें वेदी पर मेढ़ें के साथ रखो। यह एक होमबलि है, यह

यहोवा को ऐसी भेंट होगी जो आग के द्वारा दी जाती है।
इस की सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करेगी।
26“तब इस मेढ़े से उसकी छाती को निकालो। यही
मेढ़ा है जिसका उपयोग हारून को महायाजक बनाने
के लिए बलि दिया जाएगा। मेढ़े की छाती को विशेष भेंट
के रूप में यहोवा के सामने पकड़ो। जानवर का यह
भाग तुम्हारा होगा। **27**तब मेढ़े की उस छाती और टाँग
को लो जो हारून को महायाजक बनाने के लिए उपयोग
में आयी थी। इन्हें पवित्र बनाओ और इन्हें हारून और
उसके पुत्रों को दो। यह भेंट का विशेष अंश होगा।
28इस्राएल के लोग इन अंगो को हारून और उसके पुत्रों
को सदा देंगे जब कभी इस्राएल के लोग यहोवा को
मेलबलि चढ़ायेंगे तो ये भाग सदा याजकों के होंगे। जब
वे इन भागों को याजकों को देंगे तो यह यहोवा को देने
जैसा ही होगा।

29“उन विशेष वस्त्रों को सुरक्षित रखो जो हारून के
लिए बने थे। ये वस्त्र उसके उत्तराधिकारी वंशजों के
लिए होंगे। वे उन वस्त्रों को तब पहनेंगे जब याजक
नियुक्त किए जाएँगे। **30**हारून का जो पुत्र उसके बाद
अगला महायाजक होगा, वह सात दिन तक उन वस्त्रों
को पहनेगा, जब वह मिलापवाले तम्बू के पवित्र स्थान
में सेवा करने आएगा।

31“उस मेढ़े के माँस को पकाओ जो हारून को
महायाजक बनाने के लिए उपयोग में आया था। उस
माँस को एक पवित्र स्थान पर पकाओ। **32**तब हारून
और उसके पुत्र मिलापवाले तम्बू के द्वार पर माँस
खाएंगे, और वे उस टोकरी की रोटी भी खाएँगे। **33**इन
भेंटों का उपयोग उनके पाप को समाप्त करने के लिए
तब हुआ था जब वे याजक बने थे। ये मेढ़े बस उन्हीं को
खाना चाहिए किसी अन्य को नहीं। क्योंकि ये पवित्र हैं।
34यदि उस मेढ़े का कुछ माँस या कोई रोटी अगले सवेरे
के लिए बच जाये तो उसे जला देना चाहिए। तुम्हें वह
रोटी या माँस नहीं खाना चाहिए क्योंकि यह केवल
विशेष ढंग से विशेष समय पर ही खाया जाना चाहिए।

35“वैसा ही करो जैसा मैंने तुम्हें हारून और उसके
पुत्रों के लिए करने को आदेश दिया है। यह समारोह
सात दिन तक चलेगा। **36**सात दिन तक हर रोज़ एक-एक
बछड़े को मारो। यह हारून और उसके पुत्रों के पाप के
लिए भेंट होगी। तुम इन दिनों दिए गए बलिदानों का
उपयोग वेदी को शुद्ध करने के लिए करना, और वेदी
को पवित्र बनाने के लिए जैतून का तेल इस पर डालना।
37तुम सात दिन तक वेदी को शुद्ध और पवित्र करना।
उस समय वेदी अत्याधिक पवित्र होगी। वेदी को छूने
वाली कोई भी चीज़ पवित्र हो जाएगी।

38“हर एक दिन वेदी पर तुम्हें एक भेंट चढानी
चाहिए। तुम्हें एक-एक वर्ष के दो मेमनों की भेंट
चढ़ानी चाहिए। **39**एक मेमने की भेंट प्रात: काल चढ़ाओ
और दूसरे की सन्ध्या के समय। **40-41**जब तुम पहले
मेमने को मारो, दो पौण्ड़* गेहूँ का महीन आटा भी
भेंट चढ़ाओ। गेहूँ के आटे को एक क्वार्ट* भेंट स्वरूप
दाखमधु में मिलाओ। जब तुम दूसरे मेमने को सन्ध्या के
समय मारो तब दो पौण्ड़ महीन आटा भी भेंट में चढ़ाओ
और एक क्वार्ट दाखमधु भी भेंट करो। यह वैसा ही है
जैसा तुमने प्रात: काल किया था। यह यहोवा को भोजन
की भेंट होगी। जब तुम उस भेंट को जलाओगे तो
यहोवा इसकी सुगन्ध लेगा और यह उसे प्रसन्न करेगी।

42“तुम्हें इन चीज़ों को यहोवा को भेंट में रोज़ जलाना
चाहिए। यह यहोवा के सामने, मिलापवाले तम्बू के द्वार
पर करो। यह सदा करते रहो। जब तुम भेंट चढाओगे
तब मैं अर्थात् यहोवा, वहाँ तुम से मिलूँगा और तुमसे
बातें करूँगा। **43**मैं इस्राएल के लोगों से उस स्थान पर
मिलूँगा, और वह स्थान मेरे तेज के कारण पवित्र बन
जाएगा।

44“इस प्रकार मैं मिलापवाले तम्बू को पवित्र बनाऊँगा,
और मैं वेदी को भी पवित्र बनाऊँगा, और मैं हारून
और उसके पुत्रों को पवित्र बनाऊँगा जिससे वे मेरी सेवा
याजक के रूप में कर सकें। **45**मैं इस्राएल के लोगों के
साथ रहूँगा। मैं उनका परमेश्वर होऊँगा। **46**लोग यह
जानेंगे कि मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ। वे जानेंगे कि
मैं ही वह हूँ जो उन्हें मिस्र से बाहर लाया ताकि मैं
उनके साथ रह सकूँ। मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ।”

धूप जलाने की वेदी

30 परमेश्वर ने मूसा से कहा, “बबूल की लकड़ी
की एक वेदी बनाओ। तुम इस वेदी का
उपयोग धूप जलाने के लिए करोगे। **2**तुम्हें वेदी को
वर्गाकार अट्ठारह इंच लम्बी और अट्ठारह इंच चौड़ी
बनानी चाहिए। यह छत्तीस इंच ऊँची होनी चाहिए। चारों
कोनों पर सींग लगे होने चाहिए। ये सींग वेदी के साथ
एक ही इकाई के रूप में वेदी के साथ जड़े जाने चाहिए।
3वेदी के ऊपरी सिरे तथा उसकी सभी भुजाओं को
शुद्ध सोने से मढो। वेदी के चारों ओर सोने की पट्टी
लगाओ। **4**इस पट्टी के नीचे सोने के दो छल्ले होने
चाहिए। वेदी के दूसरी ओर भी सोने के दो छल्ले होने
चाहिए। ये छल्ले वेदी को ले जाने के लिए बल्लियों को
फँसाने के लिए होंगे। **5**बल्लियों को भी बबूल की लकड़ी
से ही बनाओ। बल्लियों को सोने से मढ़ो। **6**वेदी को
विशेष पर्दे के सामने रखो। साक्षीपत्र का सन्दूक उस पर्दे
के दूसरी ओर है। उस सन्दूक को ढकने वाले ढक्कन
के सामने वेदी रहेगी। यही वह स्थान है जहाँ मैं तुमसे
मिलूँगा।

दो पौण्ड़ शाब्दिक “एपा माप का 1/10”

एक क्वार्ट शाब्दिक “1 हिन।”

7“हारून हर प्रात: सुगन्धित धूप वेदी पर जलाएगा।
वह यह तब करेगा जब वह दीपकों की देखभाल करने
आएगा। 8उसे शाम को जब वह दीपकों की देखभाल
करने आए फिर धूप जलानी चाहिए। जिससे यहोवा के
सामने नित्य प्रति सुबह शाम धूप जलती रहे। 9इस वेदी
का उपयोग किसी अन्य प्रकार की धूप या होमबलि के
लिए मत करना। इस वेदी का उपयोग अन्नबलि या पेय
भेंट के लिए मत करना।

10“वर्ष में एक बार हारून यहोवा को विशेष
बलिदान अवश्य चढाए। हारून पापबलि के खून का
उपयोग लोगों के पापों को धोने के लिए करेगा,
हारून इस वेदी के सींगों पर यह करेगा। यह दिन
प्रायश्चित का दिन कहलाएगा। यह यहोवा के लिए
अति पवित्र दिन होगा।”

मन्दिर के लिए कर

11यहोवा ने मूसा से कहा, 12“इस्राएल के लोगों को
गिनो जिससे तुम जानोगे कि वहाँ कितने लोग हैं। जब
कभी यह किया जाएगा हर एक व्यक्ति अपने जीवन के
लिए यहोवा को धन देगा। यदि हर एक व्यक्ति यह
करेगा तो लोगों के साथ कोई भी भयानक घटना घटित
नहीं होगी। 13हर व्यक्ति जिसे गिना जाये वह आधा
शेकेल चाँदी अवश्य दे। 14हर एक पुरुष जिसे गिना
जाये और जो बीस वर्ष या उससे अधिक आयु का हो,
यहोवा को यह भेंट देगा। 15धनी लोग आधे शेकेल से
अधिक नहीं देंगे, और गरीब लोग आधे शेकेल से कम
नहीं देंगे। सभी लोग यहोवा को बराबर ही भेंट देंगे यह
तुम्हारे जीवन का मूल्य होगा। 16इस्राएल के लोगों से यह
धन इकट्ठा करो। मिलापवाले तम्बू में सेवा के लिए
इसका उपयोग करो। यह भुगतान यहोवा के लिए अपने
लोगों को याद करने का एक तरीका होगा। वे अपने
जीवन के लिए भुगतान करते रहेंगे।”

हाथ पैर धोने की चिलमची

17यहोवा ने मूसा से कहा, 18“एक काँसे की चिलमची
बनाओ और इसे काँसे के आधार पर रखो। तुम इसका
उपयोग हाथ पैर धोने के लिए करोगे। चिलमची को
मिलापवाले तम्बू और वेदी के बीच रखो। चिलमची को
पानी से भरो। 19हारून और उसके पुत्र इस चिलमची
के पानी से अपने हाथ पैर धोएंगे। 20हर बार जब वे
मिलापवाले तम्बू में आएँ तो पानी से हाथ पैर अवश्य
धोएँ, इससे वे मरेंगे नहीं। जब वे वेदी के समीप यहोवा
की सेवा करने या धूप जलाने आयें, 21तो वे अपने हाथ
पैर अवश्य धोएं, इससे वे मरेंगे नहीं। यह ऐसा नियम
होगा जो हारून और उसके लोगों के लिए सदा बना
रहेगा। यह नियम हारून के उन सभी लोगों के लिए
बना रहेगा जो भविष्य में होंगे।”

अभिषेक का तेल

22तब यहोवा ने मूसा से कहा, 23“बहुत अच्छे मसाले
लाओ। बारह पौंड* द्रव लोबान लाओ और इस तोल
का आधा अर्थात् छ: पौंड,* सुगन्धित दालचीनी और
बारह पौंड सुगन्धित छाल, 24और बारह पौंड तेजपात
लाओ। इन्हें नापने के लिए प्रामाणिक बाटों का उपयोग
करो। एक गैलन* जैतून का तेल भी लाओ।

25“सुगन्धित अभिषेक का तेल बनाने के लिए इन
सभी चीज़ों को मिलाओ। 26मिलापवाले तम्बू और साक्षीपत्र
के सन्दूक पर इस तेल को डालो। यह इस बात का
संकेत करेगा कि इन चीज़ों का विशेष उद्देश्य है।
27मेज और मेज़ पर की सभी तश्तरियों पर तेल डालो।
इस तेल को दीपक और सभी उपकरणों पर डालो।
28धूप वाली वेदी पर तेल डालो। यहोवा के लिए होमबलि
वाली वेदी पर भी तेल डालो। उस वेदी की सभी चीज़ों
पर यह तेल डालो। कटोरे और उसके नीचे के आधार
पर यह तेल डालो। 29तुम इन सभी चीज़ों को समर्पित
करोगे। वे अत्यन्त पवित्र होंगी। कोई भी चीज़ जो इन्हें
छूएगी वह भी पवित्र हो जाएगी।

30“हारून और उसके पुत्रों पर तेल डालो। यह स्पष्ट
करेगा कि वे मेरी विशेष ढंग से सेवा करते हैं। तब ये
मेरी सेवा याजक कि तरह कर सकते हैं। 31इस्राएल के
लोगों से कहो कि अभिषेक का तेल मेरे लिए सदैव
अति विशेष होगा। 32साधारण सुगन्ध की तरह कोई भी
इस तेल का उपयोग नहीं करेगा। उस प्रकार कोई
सुगन्ध न बनाओ जिस प्रकार तुमने यह विशेष तेल
बनाया। यह तेल पवित्र है और यह तुम्हारे लिए अति
विशेष होना चाहिए। 33यदि कोई इस पवित्र तेल की
तरह सुगन्ध बनाए और उसे किसी विदेशी को दे तो उस
व्यक्ति को अपने लोगों से अवश्य अलग कर दिया
जाये।”

धूप

34तब यहोवा ने मूसा से कहा, “इन सुगन्धित मसालों
को लो: रसगंधा, कस्तूरी गंधिका, बिरोजा और शुद्ध
लोबान। सावधानी रखो कि तुम्हारे पास मसालों की
बराबर मात्रा हो। 35मसालों को सुगन्धित धूप बनाने के
लिए आपस में मिलाओ। इसे उसी प्रकार करो जैसा
सुगन्ध बनाने वाला व्यक्ति करता है। इस धूप में नमक
भी मिलाओ। यह इसे शुद्ध और पवित्र बनाएगा। 36कुछ
धूप को तब तक पीसते रहो जब तक उसका बारीक
चूर्ण न हो जाये। मिलापवाले तम्बू में साक्षीपत्र के सन्दूक
के सामने इस चूर्ण को रखो। यही वह स्थान है जहाँ मैं

बारह पौंड शाब्दिक “पाँच सौ माप।”

छ: पौंड शाब्दिक “ढ़ाई सौ माप।”

एक गैलन शाब्दिक “एक हिन।”

तुमसे मिलूँगा। तुम्हें इस धूप के चूर्ण का उपयोग इसके
अति विशेष अवसर पर ही करना चाहिए। 37तुम्हें इस
चूर्ण का उपयोग केवल विशेष ढँग से यहोवा के लिए ही
करना चाहिए। तुम इस धूप को विशेष ढँग से बनाओगे।
इस विशेष ढँग का उपयोग अन्य कोई धूप बनाने के
लिए मत करो। 38कोई व्यक्ति अपने लिए कुछ ऐसे धूप
बनाना चाह सकता है जिससे वह सुगन्ध का आनन्द ले
सके। किन्तु यदि वह ऐसा करे तो उसे अपने लोगों से
अवश्य अलग कर दिया जाये।"

बसलेल और ओहोलीआब

31 तब यहोवा ने मूसा के कहा, 2"मैंने यहूदा के
कबीले से ऊरो के पुत्र बसलेल को चुना है।
ऊरो हूर का पुत्र था। 3मैंने बसलेल को परमेश्वर की
आत्मा से भर दिया है, अर्थात् मैंने उसे सभी प्रकार की
चीज़ों को करने का ज्ञान और निपुणता दे दी है।
4बसलेल बहुत अच्छा शिल्पकार है और वह सोना,
चाँदी तथा काँसे की चीज़ें बना सकता है। 5बसलेल
सुन्दर रत्नों को काट और जड़ सकता है। वह लकड़ी
का भी काम कर सकता है। बसलेल सब प्रकार के
काम कर सकता है। 6मैंने ओहोलीआब को भी उसके
साथ काम करने को चुना है। आहोलीआब दान कबीले
के अहीसामाक का पुत्र है और मैंने दूसरे सब श्रमिकों
को भी ऐसी निपुणता दी है कि वे उन सभी चीज़ों को
बना सकते हैं जिसे मैंने तुमको बनाने का आदेश दिया
है:

7मिलापवाला तम्बू, साक्षीपत्र का सन्दूक, सन्दूक को
ढकने वाला ढक्कन, मिलापवाले तम्बू का साजोसामान,

8मेज और उस पर की सभी चीज़ें, शुद्ध सोना का
दीपाधार, धूप जलाने की वेदी,

9भेंट जलाने के लिए वेदी, और वेदी पर उपयोग की
चीज़ें, चिलमची और उसके नीचे का आधार,

10याजक हारून के लिए सभी विशेष वस्त्र और
उसके पुत्रों के लिए सभी विशेष वस्त्र, जिन्हें वे याजक
के रूप मे सेवा करते समय पहनेंगे,

11अभिषेक का सुगन्धित तेल, और पवित्र स्थान के
लिए सुगन्धित धूप। इन सभी चीज़ों को उसी ढंग से
बनांएगे जैसा मैंने तुमको आदेश दिया है।"

सब्त

12"तब यहोवा ने मूसा से कहा, 13"इस्राएल के लोगों
से यह कहो: 'तुम लोग मेरे विशेष विश्राम के दिन वाले
नियमों का पालन करोगे। तुम्हें यह अवश्य करना
चाहिए, क्योंकि ये मेरे और तुम्हारे बीच सभी पीढ़ियों
के लिए प्रतीक स्वरूप रहेंगें। इससे तुम्हें पता चलेगा कि
मैंनें अर्थात् यहोवा ने तुम्हें अपना विशेष जनसमूह
बनाया है।

14"'सब्त के दिन को विशेष दिवस मनाओ। यदि
कोई व्यक्ति सब्त के दिन को अन्य दिनों की तरह
मानता है तो वह व्यक्ति अवश्य मार दिया जाना चाहिए।
कोई व्यक्ति जो सब्त के दिन काम करता है अपने
लोगों से अवश्य अलग कर दिया जाना चाहिए। 15सप्ताह
में दूसरे अन्य छ: दिन काम करने के लिए हैं, किन्तु
सातवाँ दिन विश्राम करने का विशेष दिन है, अर्थात्
यहोवा को सम्मान देने का विशेष दिन है, कोई व्यक्ति
जो सब्त के दिन काम करेगा अवश्य ही मार दिया
जाये। 16इस्राएल के लोग सब्त के दिन को अवश्य याद
रखें और इसे विशेष दिन बनाएं। वे इसे लगातार मनाते
रहें। यह मेरे और उनके बीच साक्षीपत्र है जो सदा बना
रहेगा। 17सब्त का दिन मेरे और इस्राएल के लोगों के
बीच सदा के लिए प्रतीक रहेगा। यहोवा ने छ: दिन काम
किया तथा आकाश एवं धरती को बनाया। सातवें दिन
उसने अपने को विश्राम दिया।'"

18इस प्रकार परमेश्वर ने मूसा से सीनै पर्वत पर बात
करना समाप्त किया। तब परमेश्वर ने उसे आदेश
लिखे हुए दो समतल पत्थर दिए। परमेश्वर ने अपनी
अंगुलियों का उपयोग किया और पत्थर पर उन नियमों
को लिखा।

सोने का बछड़ा

32 लोगों ने देखा कि लम्बा समय निकल गया
और मूसा पर्वत से नीचे नहीं उतरा। इसलिए
लोग हारून के चारों ओर इकट्ठा हुए। उन्होंने उससे
कहा, "देखो, मूसा ने हमें मिस्र देश से बाहर निकाला।
किन्तु हम यह नहीं जानते कि उसके साथ क्या घटित
हुआ है। इसलिए कोई देवता हमारे आगे चलने और
हमें आगे ले चलने वाला बनाओ।"

2हारून ने लोगों से कहा, "अपनी पत्नियों, पुत्रों और
पुत्रियों के कानों की बालियाँ मेरे पास लाओ।"

3इसलिए सभी लोगों ने कान की बालियाँ इकट्ठी कीं
और वे उन्हें हारून के पास लाए। 4हारून ने लोगों से
सोना लिया, और एक बछड़े की मूर्ति बनाने के लिए
उसका उपयोग किया। हारून ने मूर्ति बनाने के लिए
मूर्ति को आकार देने वाले एक औज़ार का उपयोग
किया। तब इसे उसने सोने से मढ़ दिया।

तब लोगों ने कहा, "इस्राएल के लोगों, ये तुम्हारे वे
देवता हैं जो तुम्हें मिस्र से बाहर ले आया।"*

5हारून ने इन चीज़ों को देखा। इसलिए उसने बछड़े
के सम्मुख एक वेदी बनाई। तब हारून ने घोषणा की।
उसने कहा, "कल यहोवा के लिए विशेष दावत
होगी।"

इस्राएल के ... आया यहाँ मूल में पाँच बछड़ों के लिए बहुवचन का प्रयोग किया गया है। इसका मतलब यह हो सकता है कि सोने का वह बछड़ा बहुत से मिथ्या देवताओं का प्रतीक था।

6अगले दिन सुबह लोग शीघ्र उठ गए। उन्होंने जानवरों
को मारा और होमबलि तथा मेलबलि चढ़ाई। लोग खाने
और पीने के लिये बैठे। तब वे खड़े हुए और उनकी
एक उन्मत्त दावत हुई।
7उसी समय यहोवा ने मूसा से कहा, “इस पर्वत से
नीचे उतरो। तुम्हारे लोग अर्थात् उन लोगों ने, जिन्हें तुम
मिस्र से लाए हो, भयंकर पाप किया है। 8उन्होंने उन
चीज़ों को करने से शीघ्रता से इन्कार कर दिया है जिन्हें
करने का आदेश मैंने उन्हें दिया था। उन्होंने पिघले
सोने से अपने लिए एक बछड़ा बनाया है। वे उस बछड़े
की पूजा कर रहे हैं और उसे बलि भेंट कर रहे हैं।
लोगों ने कहा है, ‘इस्राएल, ये देवता है जो तुम्हें मिस्र से
बाहर लाए हैं।’”
9यहोवा ने मूसा से कहा, “मैंने इन लोगों को देखा है।
मैं जानता हूँ कि ये बड़े हठी लोग हैं जो सदा मेरे विरुद्ध
जाएंगे। 10इसलिए अब मुझे इन्हें क्रोध करके नष्ट
करने दो। तब मैं तुझसे एक महान राष्ट्र बनाऊँगा।”
11किन्तु मूसा ने अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना
की। मूसा ने कहा, “हे यहोवा, तू अपने क्रोध को अपने
लोगों को नष्ट न करने दे। तू अपार शक्ति और अपने
बल से इन्हें मिस्र से बाहर ले आया। 12किन्तु यदि तू
अपने लोगों को नष्ट करेगा तब मिस्र के लोग कह
सकते हैं, ‘यहोवा ने अपने लोगों के साथ बुरा करने
की योजना बनाई। यही कारण है कि उसने इनको मिस्र
से बाहर निकाला। वह उन्हें पर्वतों में मार डालना
चाहता था। वह अपने लोगों को धरती से मिटाना चाहता
था।’ इसलिए तू लोगों पर क्रुद्ध न हो। अपना क्रोध त्याग
दे। अपने लोगों को नष्ट न कर। 13तू अपने सेवक
इब्राहीम, इसहाक और इस्राएल (याकूब) को याद कर।
तूने अपने नाम का उपयोग किया और तूने उन लोगों
को वचन दिया। तूने कहा: ‘मैं तुम्हारे लोगों को उतना
अनगिनत बनाऊँगा जितने आकाश में तारे हैं। मैं तुम्हारे
लोगों को वह सारी धरती दूँगा जिसे मैंने उनको देने का
वचन दिया है। यह धरती सदा के लिए उनकीहोगी।’”
14इसलिए यहोवा ने लोगों के लिए अफ़सोस किया।
यहोवा ने वह नहीं किया जो उसने कहा कि वह करेगा
अर्थात् लोगों को नष्ट नहीं किया।
15तब मूसा पर्वत से नीचे उतरा। मूसा के पास आदेश
वाले दो समतल पत्थर थे। ये आदेश पत्थर के सामने
तथा पीछे दोनों तरफ लिखे हुए थे। 16परमेश्वर ने स्वयं
उन पत्थरों को बनाया था और परमेश्वर ने स्वयं उन
आदेशों को उन पत्थरों पर लिखा था। 17जब वे पर्वत से
उतर रहे थे यहोशू ने लोगों का उन्मत्त शोर सुना।
यहोशू ने मूसा से कहा, “नीचे पड़ाव में युद्ध की तरह
का शोर है!”
18मूसा ने उत्तर दिया, “यह सेना का विजय के लिए
शोर नहीं है। यह हार से चिल्लाने वाली सेना का शोर
भी नहीं है। मैं जो आवाज़ सुन रहा हूँ वह संगीत की
है।”
19जब मूसा डेरे के समीप आया तो उसने सोने के
बछड़े और गाते हुए लोगों को देखा। मूसा बहुत क्रोधित
हो गया और उसने उन विशेष पत्थरों को ज़मीन पर
फेंक दिया। पर्वत की तलहटी में पत्थरों के कई टुकडें
हो गए। 20तब मूसा ने लोगों के बनाए बछड़े को नष्ट
कर दिया। उसने इसे आग में गला दिया। उसने सोने को
तब तक पीसा जब तक यह चूर्ण न हो गया और उसने
उस चूर्ण को पानी में फेंक दिया। उसने इस्राएल के
लोगों को वह पानी पीने को विवश किया। 21मूसा ने
हारून से कहा, “इन लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया?
तुम उन्हें ऐसा बुरा पाप करने की ओर क्यों ले गए?”
22हारून ने उत्तर दिया, “महाशय, क्रोधित मत हो।
आप जानते हैं कि ये लोग सदा गलत काम करने को
तैयार रहते हैं। 23लोगों ने मुझ से कहा, ‘मूसा हम लोगों
को मिस्र से बाहर लाया। किन्तु हम लोग नहीं जानते
कि उसके साथ क्या घटित हुआ।’ इसलिए हम लोगों
का मार्ग दिखाने वाला कोई देवता बनाओ, 24इसलिए
मैंने लोंगो से कहा, ‘यदि तुम्हारे पास सोने की अंगूठियाँ
हों तो उन्हें मुझे दे दो।’ लोगों ने मुझे अपना सोना दिया।
मैंने इस सोने को आग में फेंका और उस आग से यह
बछड़ा आया।”
25मूसा ने देखा कि हारून ने विद्रोह उत्पन्न किया है।
लोग मूर्खों की तरह उग्र व्यवहार इस तरह कर रहे थे
कि उनके सभी शत्रु देख सकें। 26इसलिए मूसा डेरे के
द्वार पर खड़ा हुआ। मूसा ने कहा, “कोई व्यक्ति जो
यहोवा का अनुसरण करना चाहता है मेरे पास आए”
तब लेवी के परिवार के सभी लोग दौड़कर मूसा के
पास आए। 27तब मूसा ने उनसे कहा, “मैं तुम्हें बताऊँगा
कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा क्या कहता है: ‘हर
व्यक्ति अपनी तलवार अवश्य उठा ले और डेरे के एक
सिरे से दूसरे सिरे तक जाये। तुम लोग इन लोगों को
अवश्य दण्ड दोगे चाहे किसी व्यक्ति को अपने भाई,
मित्र और पड़ोसी को ही क्यों न मारना पड़े।’”
28लेवी के परिवार के लोगों ने मूसा का आदेश
माना। उस दिन इस्राएल के लगभग तीन हज़ार लोग
मरे। 29तब मूसा ने कहा, “यहोवा ने आज तुम को ऐसे
लोगों के रूप में चुना है जो अपने पुत्रों और भाइयों को
आशीर्वाददेंगे।”
30अगली सुबह मूसा ने लोगों से कहा, “तुम लोगों ने
भयंकर पाप किया है। किन्तु अब मैं यहोवा के पास
ऊपर जाऊँगा और ऐसा कुछ कर सकूँगा जिससे वह
तुम्हारे पापों को क्षमा कर दें।” 31इसलिए मूसा वापस
यहोवा के पास गया और उसने कहा, “कृपया सुन! इन
लोगों ने बहुत बुरा पाप किया है और सोने का एक
देवता बनाया है। 32अब उन्हें इस पाप के लिए क्षमा

कर। यदि तू क्षमा नहीं करेगा तो मेरा नाम उस किताब
से मिटा दें जिसे तूने लिखा है।"*
33किन्तु यहोवा ने मूसा से कहा, "जो मेरे विरुद्ध पाप
करते हैं केवल वे ही ऐसे लोग हैं जिनका नाम मैं
अपनी पुस्तक से मिटाता हूँ। 34इसलिए जाओ और लोगों
को वहाँ ले जाओ जहाँ मैं कहता हूँ। मेरा दूत तुम्हारे
आगे आगे चलेगा और तुम्हें रास्ता दिखाएगा। जब उन
लोगों को दण्ड देने का समय आएगा जिन्होंने पाप किया
है तब उन्हें दण्ड दिया जायेगा।" 35इसलिए यहोवा ने
लोगों में एक भयंकर बीमारी उत्पन्न की। उन्होंने यह
इसलिए किया कि उन लोगों ने हारून से सोने का
बछड़ा बनाने को कहा था।

"मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा"

33 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "तुम और तुम्हारे
वे लोग जिन्हें तुम मिस्र से लाए हो उस जगह
को अवश्य छोड़ दो। और उस प्रदेश में जाओ जिसे मैंने
इब्राहीम, इसहाक और याकूब को देने का वचन दिया
था। मैंने उन्हें वचन दिया मैंने कहा, मैं वह प्रदेश तुम्हारे
भावी वंशजों को दूँगा। 2मैं एक दूत तुम्हारे आगे आगे
चलने के लिए भेजूँगा, और मैं कनानी, एमोरी, हित्ती,
परिज्जी, हिब्बी और यबूसी लोगो को हराऊँगा, मैं उन
लोगों को तुम्हारा प्रदेश छोड़ने को विवश करूँगा।
3इसलिए उस प्रदेश को जाओ जो बहुत ही अच्छी चीज़ों*
से भरा है। किन्तु मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा, तुम लोग
बड़े हठी हो, यदि मैं तुम्हारे साथ गया तो मैं तुम्हें शायद
रास्ते में ही नष्ट कर दूँ।"
4लोगों ने यह बुरी खबर सुनी और वे बहुत दु:खी
हुए। इसके बाद लोगों ने आभूषण नहीं पहने। 5उन्होंने
आभूषण नहीं पहने क्योंकि यहोवा ने मूसा से कहा,
"इस्राएल के लोगों से कहो, 'तुम हठी लोग हो। यदि मैं
तुम लोगों के साथ थोड़े समय के लिए भी यात्रा करुँ तो
मैं तुम लोगों को नष्ट कर दूँगा, इसलिए अपने सभी
गहने उतार लो। तब मैं निश्चय करूँगा कि तुम्हारे साथ
क्या करुँ।'"
6इसलिए इस्राएल के लोगों ने होरेब (सीनै) पर्वत पर
अपने सभी गहने उतार लिए।

मिलापवाला तम्बू

7मूसा मिलापवाला तम्बू को डेरे से कुछ दूर ले गया।
वहाँ उसने उसे लगाया और उसका नाम "मिलापवाला
तम्बू" रखा। कोई व्यक्ति जो यहोवा से कुछ जानना
चाहता था उसे डेरे के बाहर मिलापवाले तम्बू तक
जाना होता था। 8जब कभी मूसा बाहर तम्बू में जाता तो
लोग उसको देखते रहते। लोग अपने तम्बूओं के द्वार
पर खड़े रहते और मूसा को तब तक देखते रहते जब
तक वह मिलापवाले तम्बू में चला जाता। 9जब मूसा
तम्बू में जाता तो एक लम्बा बादल का स्तम्भ सदा नीचे
उतरता था। वह बादल तम्बू के द्वार पर ठहरता। इस
प्रकार यहोवा मूसा से बात करता था। 10जब लोग तम्बू
के द्वार पर बादल को देखते तो सामने झुकते और
उपासना करते थे। हर एक व्यक्ति अपने तम्बू के द्वार
पर उपासना करता था।
11यहोवा मूसा से आमने-सामने बात करता था। यहोवा
मूसा से इस प्रकार बात करता था जिस प्रकार कोई
व्यक्ति अपने मित्र से बात करता है। यहोवा से बात
करने के बाद मूसा हमेशा अपने डेरे मे वापस लौटता
था। नून का पुत्र नवयुवक यहोशू मूसा का सहायक
था। यहोशू सदा तम्बू में रहता था जब मूसा उसे छोड़ता
था।

मूसा को यहोवा की महिमा का दर्शन

12मूसा ने यहोवा से कहा, "तूने मुझे इन लोगों को ले
चलने को कहा। किन्तु तूने यह नहीं बताया कि मेरे
साथ किसे भेजेगा। तूने मुझसे कहा, 'मैं तुम्हें अच्छी
तरह जानता हूँ और मैं तुमसे प्रसन्न हूँ।' 13यदि तुझे मैंने
सचमुच प्रसन्न किया है तो अपने निर्णय मुझे बता। तुझे
मैं सचमुच जानना चाहता हूँ। तब मैं तुझे लगातार प्रसन्न
रख सकता हूँ। याद रख कि ये सभी तेरे लोग हैं।"
14यहोवा ने कहा, "मैं स्वयं तुम्हारे साथ चलूँगा। मैं
तुम्हें रास्ता दिखाऊँगा।"*
15तब मूसा ने उससे कहा, "यदि तू हम लोगों के साथ
न चले तो तू इस स्थान से हम लोगों को दूर मत भेज।
16हम यह भी कैसे जानेंगे कि तू मुझसे और इन लोगों
से प्रसन्न है? यदि तू साथ चलेगा तो हम लोग निश्चयपूर्वक
यह जानेंगे। यदि तू हम लोगों के साथ नहीं जाता तो मैं
और ये लोग धरती के अन्य दूसरे लोगों से भिन्न नहीं
होंगे।"
17तब यहोवा ने मूसा से कहा, "मैं वह करूँगा जो तू
कहता है। मैं यह करूँगा क्योकि मैं तुझसे प्रसन्न हूँ। मैं
तुझे अच्छी तरह जानता हूँ।"
18तब मूसा ने कहा, "अब कृपया मुझे अपनी महिमा
दिखा।"
19तब यहोवा ने उत्तर दिया, "मैं अपनी सम्पूर्ण भलाई
को तुम तक जाने दूँगा। मैं यहोवा हूँ और मैं अपने नाम
की घोषणा करूँगा जिससे तुम उसे सुन सको। मैं उन
लोगों पर कृपा और प्रेम दिखाऊँगा जिन्हें मैं चुनूँगा।
20किन्तु तुम मेरा मुख नहीं देख सकते। कोई भी व्यक्ति

उस किताब ... लिखा है संभवत यह "जीवन की पुस्तक" की ओर संकेत है। यह वैसा ही है कि परमेश्वर एक किताब रखता है जिसमें उसके सभी लोगों के नाम लिखे रहते हैं।

अच्छी चीज़ें अर्थात् दूध और शहद से भरपूर।

मैं ... दिखाऊँगा या "आराम दूँगा।"

मुझे देख नहीं सकता और यदि देख ले तो जीवित नहीं
रह सकता है।
21"मेरे समीप के स्थान पर एक चट्टान है। तुम उस
चट्टान पर खड़े हो सकते हो। 22मेरी महिमा उस स्थान
से होकर गुज़रेगी। उस चट्टान की बड़ी दरार में मैं तुम
को रखूँगा और गुजरते समय मैं तुम्हें अपने हाथ से
ढकूँगा। 23तब मैं अपना हाथ हटा लूँगा और तुम मेरी
पीठ मात्र देखोगे। किन्तु तुम मेरा मुख नहीं देख पाओगे।"

पत्थर की नयी पट्टियाँ

34 तब यहोवा ने मूसा से कहा, "दो और समतल
चट्टानें ठीक वैसी ही बनाओ जैसे पहली दो
थीं जो टूट गई। मैं इन पर उन्हीं शब्दों को लिखूँगा जो
पहले दोनों पर लिखे थे। 2कल प्रात:काल तैयार रहना
और सीनै पर्वत पर आना। वहाँ मेरे सामने पर्वत की
चोटी पर खड़े रहना। 3किसी व्यक्ति को तुम्हारे साथ
नहीं आने दिया जाएगा। पर्वत के किसी भी स्थान पर
कोई भी व्यक्ति दिखाई तक नहीं पड़ना चाहिए। यहाँ
तक कि तुम्हारे जानवरों के झुण्ड और भेड़ों की रेवडें
भी पर्वत की तलहटी में घास नहीं चर सकेंगी।"
4इसलिए मूसा ने पहले पत्थरों की तरह पत्थर की दो
समतल पट्टियाँ बनाईं। तब अगले सवेरे ही वह सीनै
पर्वत पर गया। उसने हर एक चीज़ यहोवा के आदेश
के अनुसार की। मूसा अपने साथ पत्थर की दोनों
समतल पट्टियाँ ले गया। 5मूसा के पर्वत पर पहुँच जाने
के बाद यहोवा उसके पास बादल में नीचे पर्वत पर
आया। यहोवा वहाँ मूसा के साथ खड़ा रहा, और उसने
यहोवा का नाम लिया।*
6यहोवा मूसा के सामने से गुज़रा था और उसने
कहा, "यहोवा दयालु और कृपालु परमेश्वर है। यहोवा
जल्दी क्रोधित नहीं होता। यहोवा महान, प्रेम से भरा है।
यहोवा विश्वसनीय है। 7यहोवा हजारों पीढ़ियों पर कृपा
करता है। यहोवा लोगों को उन गलतियों के लिए जो वे
करते हैं क्षमा करता है। किन्तु यहोवा अपराधियों को
दण्ड देना नहीं भूलता। यहोवा केवल अपराधी को ही
दण्ड नहीं देगा अपितु उनके बच्चों, उनके पौत्रों और
प्रपौत्रों को भी उस बुरी बात के लिए कष्ट सहना होगा
जो वे लोग करते हैं।"
8तब तत्काल मूसा भूमि पर झुका और उसने यहोवा
की उपासना की। मूसा ने कहा, 9"यहोवा, यदि तू मुझसे
प्रसन्न हैं तो मेरे साथ चल। मैं जानता हूँ कि ये लोग
हठी हैं। किन्तु तू हमें उन पापों और अपराधों के लिए
क्षमा कर जो हमने किए हैं। अपने लोगों के रूप में हमें
स्वीकारकर।"
10तब यहोवा ने कहा, "मैं तुम्हारे सभी लोगों के
साथ यह साक्षीपत्र बना रहा हूँ। मैं ऐसे अद्‌भुत काम
करूँगा जैसे इस धरती पर किसी भी दूसरे राष्ट्र के लिए
पहले कभी नहीं किए। तुम्हारे साथ सभी लोग देखेंगे
कि मैं यहोवा अत्यन्त महान हूँ। लोग उन अद्‌भुत
कामों को देखेंगे जो मैं तुम्हारे लिए करूँगा। 11आज मैं
जो आदेश देता हूँ उसका पालन करो और मैं तुम्हारे
शत्रुओं को तुम्हारा देश छोड़ने को विवश करूँगा। मैं
एमोरी, कनानी, हित्ती, परिज्जी, हिब्बी और यबूसी को
बाहर निकल जाने को विवश करूँगा। 12सावधान रहो।
उन लोगों के साथ कोई सन्धि न करो जो उस प्रदेश में
रहते हैं जहाँ तुम जा रहे हो। यदि तुम उनके साथ सन्धि
करोगे जो उस प्रदेश में रहते हैं जहाँ तुम जा रहे हो।
यदि तुम उनके साथ साक्षीपत्र बनाओगे तो तुम उस में
फँस जाओगे। 13उनकी वेदियों को नष्ट कर दो। उन
पत्थरों को तोड़ दो जिनकी वे पूजा करते हैं। उनकी
मूर्तियों* को काट गिराओ। 14किसी दूसरे देवता की
पूजा न करो। मैं यहोवा (कना) जलन रखने वाला
परमेश्वर हूँ। यह मेरा नाम है। मैं (एलकना) जल उठने
वाला परमेश्वर हूँ।
15"सावधान रहो उस प्रदेश में जो लोग रहते हैं उनसे
कोई सन्धि न हो। यदि तुम यह करोगे तो जब वे अपने
देवताओं की पूजा करेंगे तब तुम उनके साथ हो सकोगे।
वे लोग तुम्हें अपने में मिलने के लिए आमंत्रित करेंगे
और तुम उनकी बलियों को खाओगे। 16तुम उनकी
कुछ लड़कियों को अपने पुत्रों की पत्नियों के रूप में
चुन सकते हो। वे पुत्रियाँ असत्य देवताओं की सेवा
करतीं हैं। वे तुम्हारे पुत्रों से भी वही करवा सकतीं हैं।
17मूर्तियाँ मत बनाना। 18"अखमीरी रोटियों की दावत
का उत्सव मनाओ। मेरे दिए आदेश के अनुसार सात
दिन तक अखमीरी रोटी खाओ। इसे उस महीने में करो
जिसे मैंने चुना हैं–आबीब का महीना। क्यों? क्योंकि
यह वही महीना है जब तुम मिस्र से बाहर आए।
19"किसी भी स्त्री का पहलौठा बच्चा सदा मेरा है।
पहलौठा जानवर भी जो तुम्हारी गाय, बकरियों या भेड़ों
से उत्पन्न होता है, मेरा है। 20यदि तुम पहलौठे गधे को
रखना चाहते हो तो तुम इसे एक मेमने के बदले खरीद
सकते हो। किन्तु यदि तुम उस गधे को मेमने के बदले
नहीं ख़रीदते तो तुम उस गधे की गर्दन तोड़ दो। तुम्हें
अपने पहलौठे सभी पुत्र मुझसे वापस खरीदने होंगे।
कोई व्यक्ति बिना भेंट के मेरे सामने नहीं आएगा।
21"तुम छ: दिन काम करोगे। किन्तु सातवें दिन
अवश्य विश्राम करोगे। पौधे रोपने और फसल काटने
के समय भी तुम्हें विश्राम करना होगा।

यहोवा ... लिया शाब्दिक "उसने यहोवा के नाम पर पुकारा" इस का अर्थ "मूसा ने यहोवा की उपासना की" या "यहोवा ने अपना नाम मूसा से कहा।"

पत्थरों ... मूर्तियाँ शाब्दिक "स्मारक अशेरा स्तम्भ।" ये पत्थर के प्रतीक और लकड़ी के स्तम्भ थे जिन्हें लोग असत्य देवताओं को याद रखने तथा श्रद्धा अर्पित करने के लिए खड़ी करते थे।"

22"सप्ताह की दावत को मनाओ। गेहूँ की फ़सल के
पहले अनाज का उपयोग इस दावत में करो और वर्ष
के अन्त में फ़सल कटने की दावत मनाओ।
23"हर वर्ष तुम्हारे सभी पुरुष तीन बार अपने स्वामी,
परमेश्वर इस्राएल के यहोवा के पास जाएंगे।
24"जब तुम अपने प्रदेश में पहुँचोगे तो मैं तुम्हारे
शत्रुओं को उस प्रदेश से बाहर जाने को विवश करूँगा।
मैं तुम्हारी सीमाओं को बढ़ाऊँगा और तुम अधिकाधिक
प्रदेश पाओगे। तुम अपने परमेश्वर यहोवा के सामने
वर्ष में तीन बार जाओगे। और उन दिनों तुम्हारा देश
तुम से लेने का कोई भी प्रयत्न नहीं करेगा।
25"यदि तुम मुझे बलि से खून भेंट करो तो उसी
समय मुझे खमीर भेंट मत करो
"और फसह पर्व का कुछ भी माँस अगली सुबह तक
के लिए नहीं छोड़ा जाना चाहिए।
26"यहोवा को अपनी पहली काटी हुई फ़सलें दो। उन
चीज़ों को अपने परमेश्वर यहोवा के घर लाओ।
"कभी बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में न
पकाओ।"
27तब यहोवा ने मूसा से कहा, "जो बातें मैंने बताई हैं
उन्हें लिख लो। ये बातें हमारे तुम्हारे और इस्राएल के
लोगों के मध्य साक्षीपत्र हैं।"
28मूसा वहाँ यहोवा के साथ चालीस दिन और चालीस
रात रहा। उस पूरे समय उसने न भोजन किया न ही
पानी पिया। और मूसा ने साक्षीपत्र के शब्दों के दस–आदेशों
को, पत्थर की दो समतल पट्टियों पर लिखा।

मूसा का तेजस्वी मुख

29तब मूसा सीनै पर्वत से नीचे उतरा। वह यहोवा की
दोनों पत्थरों की समतल पट्टियों को साथ लाया जिन
पर यहोवा के नियम लिखे थे। मूसा का मुख चमक
रहा था। क्योंकि उसने परमेश्वर से बातें की थीं। किन्तु
मूसा यह नहीं जानता था कि उसके मुख पर तेज हैं।
30हारून और इस्राएल के सभी लोगों ने देखा कि मूसा
का मुख चमक रहा था। इसलिए वे उसके पास जाने से
डरे। 31किन्तु मूसा ने उन्हें बुलाया। इसलिए हारून और
लोगों के सभी अगुवा मूसा के पास गए। मूसा ने उन से
बातें कीं। 32उसके बाद इस्राएल के सभी लोग मूसा के
पास आए। और मूसा ने उन्हें वे आदेश दिए जो यहोवा
ने सीनै पर्वत पर उसे दिए थे। 33जब मूसा ने बातें करना
खत्म किया तब उसने अपने मुख को एक कपड़े से
ढक लिया। 34जब कभी मूसा यहोवा के सामने बातें
करने जाता तो कपड़े को हटा लेता था। तब मूसा बाहर
आता और इस्राएल के लोगों को वह बताता जो यहोवा
का आदेश होता था। 35इस्राएल के लोग देखते थे कि
मूसा का मुख तेज से चमक रहा है। इसलिए मूसा
अपना मुख फिर ढक लेता था। मूसा अपने मुख को
तब तक ढके रखता था जब तक वह यहोवा के साथ
बात करने अगली बार नहीं जाता था।

सब्त के नियम

35 मूसा ने इस्राएल के सभी लोगों को एक साथ
इकट्ठा किया। मूसा ने उनसे कहा, "मैं वे
बातें बताऊँगा जो यहोवा ने तुम लोगों को करने के लिए
कही हैं:
2"काम करने के छ: दिन हैं। किन्तु सातवाँ दिन तुम
लोगों का विश्राम का विशेष दिन होगा। उस विशेष दिन
को विश्राम करके तुम लोग यहोवा को श्रद्धा अर्पित
करोगे। यदि कोई सातवें दिन काम करेगा तो उसे
अवश्य मार दिया जाएगा। 3सब्त के दिन तुम्हें किसी
स्थान पर आग तक नहीं जलानी चाहिए, जहाँ कहीं तुम
रहते हो।"

पवित्र तम्बू के लिए चीज़ें

4मूसा ने इस्राएल के सभी लोगों से कहा, "यही है जो
यहोवा ने आदेश दिया है। 5यहोवा के लिए विशेष भेंट
इकट्ठी करो। तुम्हें अपने मन में निश्चय करना चाहिए
कि तुम क्या भेंट करोगे। और तब तुम वह भेंट यहोवा
के पास लाओ। सोना, चाँदी और काँसा; 6नीला बैंगनी
और लाल कपड़ा, सन का उत्तम रेशा; बकरी के बाल;
7भेंड़ की लाल रंगी खाल, सुइसों का चमड़ा; बबूल की
लकड़ी; 8दीपकों के लिए जैतून का तेल; अभिषेक के
तेल के लिए मसाले, सुगन्धित धूप के लिए मसाले,
9गोमेदक नग तथा अन्य रत्न भेंट में लाओ। ये नग
और रत्न एपोद और सीनाबन्द पर लगाए जाएंगे।
10"तुम सभी कुशल कारीगरों को चाहिए कि यहोवा
ने जिन चीज़ों का आदेश दिया है उन्हें बनाए। ये वे चीज़ें
हैं जिनके लिए यहोवा ने आदेश दिया हैं: 11पवित्र तम्बू,
इसका बाहरी तम्बू, और इसका आच्छादन, छल्ले, तख्ते,
पट्टियाँ, स्तम्भ और आधार; 12पवित्र सन्दूक, और
इसकी बल्लियाँ तथा सन्दूक का ढक्कन, और सन्दूक
रखे जाने की जगह को ढकने के लिए पर्दे; 13मेज और
इसकी बल्लियाँ, मेज पर रहने वाली सभी चीज़ें, और
मेज पर रखी जाने वाली विशेष रोटी; 14प्रकाश के लिए
उपयोग में आने वाला दीपाधार, और वे सभी चीज़ें जो
दीपाधार के साथ होती हैं अर्थात् दीपक, और प्रकाश
के लिए तेल; 15धूप जलाने के लिए वेदी और इसकी
बल्लियाँ अभिषेक का तेल और सुगन्धित धूप, मिलापवाले
तम्बू के प्रवेश द्वार को ढकने वाली कनात; 16होमबलियों
के लिए वेदी और इसकी काँसे की जाली, बल्लियाँ
और वेदी पर उपयोग में आने वाली सभी चीज़ें, काँसे
की चिलमची और इसका आधार; 17आँगन की चारों
ओर की कनातें, और उनके खंभे और आधार, और
आँगन के प्रवेशद्वार को ढकने वाला कनात; 18आँगन

और तम्बू के सहारे के लिए उपयोग में आने वाली खूँटियाँ, और खूँटियों से बँधने वाली रस्सियाँ; 19और विशेष बुने वस्त्र जिन्हें याजक पवित्र स्थानों में पहनेंगे। ये विशेष वस्त्र याजक हारून और उसके पुत्रों के पहनने के लिए हैं वे इन वस्त्रों को तब पहनेंगे जब वे याजक के रूप में सेवा-कार्य करेंगे।"

लोगों की महान भेंट

20तब इस्राएल के सभी लोग मूसा के पास से चले गए। 21सभी लोग जो भेंट चढ़ाना चाहते थे आए और यहोवा के लिए भेंट लाए। ये भेंटे मिलापवाले तम्बू को बनाने, तम्बू की सभी चीज़ों, और विशेष वस्त्र बनाने के काम में लाई गई। 22सभी स्त्री और पुरुष, जो चढ़ाना चाहते थे, हर प्रकार के अपने सोने के गहने लाए। वे चिमटी कान की बालियाँ, अगूंठियाँ, अन्य गहने लेकर आए। उन्होंने अपने सभी सोने के गहने यहोवा को अर्पित किए। यह यहोवा को विशेष भेंट थी।

23हर व्यक्ति जिसके पास सन के उत्तम रेशे, नीला, बैंगनी और लाल कपड़ा था वह इन्हें यहोवा के पास लाया। वह व्यक्ति जिसके पास बकरी के बाल, लाल रंग से रंगी भेड़ की खाल, सुइसों का खाल था उसे वह यहोवा के पास लाया। 24हर एक व्यक्ति जो चाँदी, काँसा, चढ़ाना चाहता था यहोवा को भेंट के रूप में उसे लाया। हर एक व्यक्ति जिसके पास बबूल की लकड़ी थी, आया और उसे यहोवा को अर्पित किया। 25हर एक कुशल स्त्री ने सन के उत्तम रेशों और नीला, बैंगनी तथा लाल कपड़ा बनाया। 26उन सभी स्त्रियों ने जो कुशल थीं और हाथ बँटाना चाहती थीं उन्होंने बकरी के बालों से कपड़ा बनाया।।

27अगुवा लोग गोमेदक नग तथा अन्य रत्न ले आए। ये नग और रत्न याजक के एपोद तथा सीनाबन्द में लगाए गए। 28लोग मसाले और जैतून का तेल भी लाए। ये चीज़ें सुगन्धित धूप, अभिषेक का तेल और दीपकों के तेल के लिए उपयोग में आई।

29इस्राएल के वे सभी लोग जिनके मन में प्रेरणा हुई यहोवा के लिए भेंट लाए। ये भेंटें मुक्त भाव से दी गई थीं, लोगों ने इन्हें दिया क्योंकि वे देना चाहते थे। ये भेंट उन सभी चीज़ों के बनाने के लिए उपयोग में आई जिन्हें यहोवा ने मूसा और लोगों को बनाने का आदेश दिया था।

बसलेल और ओहोलीआब

30तब मूसा ने इस्राएल के लोगों से कहा, "देखों! यहोवा ने बसलेल को चुना है जो ऊरी का पुत्र और यहूदा के परिवार समूह का है। (ऊरी हूर का पुत्र था।) 31यहोवा ने बसलेल को परमेश्वर की शक्ति से भर दिया अर्थात् बसलेल को हर प्रकार का काम करने की विशेष निपुणता और जानकारी दी। 32वह सोने, चाँदी और काँसे की चीज़ों का आलेखन करके उन्हें बना सकता है। 33वह नग और रत्न को काट और जड़ सकता है। बसलेल लकड़ी का काम कर सकता है और सभी प्रकार की चीजें बना सकता है। 34यहोवा ने बसलेल और ओहोलीआब को अन्य लोगों के सिखाने की विशेष निपुणता दे रखी है। (ओहोलीआब दान के परिवार समूह से अहीसामाक का पुत्र था।) 35यहोवा ने इन दोनों व्यक्तियों को सभी प्रकार का काम करने की विशेष निपुणता दे रखी है। वे बढ़ई और ठठेरे का काम करने की निपुणता रखते हैं, वे नीले, बैंगनी, और लाल कपड़े और सन के उत्तम रेशों में चित्रों को काढ़ कर उन्हें सी सकते हैं और वे ऊन से भी चीजों को बुन सकते हैं।"

36 "इसलिए, बसलेल, ओहोलीआब और सभी निपुण व्यक्ति उन कामों को करेंगे जिनका आदेश यहोवा ने दिया है। यहोवा ने इन व्यक्तियों को उन सभी निपुण काम करने की बुद्धि और समझ दे रखी है जिनकी आवश्यकता इस पवित्र स्थान को बनाने के लिए है।"

2तब मूसा ने बसलेल, ओहोलीआब और सभी अन्य निपुण लोगों को बुलाया जिन्हें यहोवा ने विशेष निपुणता दी थी और ये लोग आए क्योंकि ये काम में सहायता करना चाहते थे। 3मूसा ने इस्राएल के इन लोगों को उन सभी चीज़ों को दे दिया जिन्हें इस्राएल के लोग भेंट के रूप में लाए थे। और उन्होंने उन चीज़ों का उपयोग पवित्र स्थान बनाने में किया। लोग प्रत्येक सुबह भेंट लाते रहे। 4अन्त में प्रत्येक निपुण कारीगरों ने उस काम को छोड़ दिया जिसे वे पवित्र स्थान पर कर रहे थे और वे मूसा से बातें करने गए। 5उन्होंने कहा, "लोग बहुत कुछ लाए हैं। हम लोगों के पास उससे अधिक है जितना तम्बू को पूरा करने के लिए यहोवा ने कहा है।"

6तब मूसा ने पूरे डेरे में यह खबर भेजी : "कोई पुरुष या स्त्री अब कोई अन्य भेंट तम्बू के लिए नहीं चढ़ाएगा।" इस प्रकार लोग और अधिक न देने के लिए विवश किए गए। 7लोगों ने पर्याप्त से अधिक चीज़ें पवित्र स्थान को बनाने के लिए दीं।

पवित्र तम्बू

8तब निपुण कारीगरों ने पवित्र तम्बू बनाना आरम्भ किया। उन्होंने नीले, बैंगनी और लाल कपड़े और सन के उत्तम रेशों की दस कनातें बनाई। और उन्होंने करूब के पंख सहित चित्रों को कपड़े पर काढ़ दिया। 9हर एक कनात बराबर नाप की थी। यह चौदह गज* लम्बी तथा, दो गज़ चौड़ी थी। 10पाँच कनातें एक साथ

चौदह गज़ शाब्दिक "अट्ठाइस हाथ।"

आपस में जोड़ी गई जिससे वे एक ही बन गई। दूसरी को
बनाने के लिए अन्य पाँच कनातें आपस में जोड़ी गई।
11पाँच से बनी पहली कनात को अन्तिम कनात के
सिरे के साथ लुप्पी बनाने के लिए उन्होंने नीले कपड़े
का उपयोग किया। उन्होंने वही काम दूसरी पाँच से
बनी अन्य कनातों के साथ भी किया। 12एक में पचास
छेद थे और दूसरी में भी पचास छेद थे। छेद एक दूसरे
के आमने–सामने थे। 13तब उन्होंने पचास सोने के
छल्ले बनाए। उन्होंने इन छल्लों का उपयोग दोनों कनातों
को जोड़ने के लिए किया। इस प्रकार पूरा तम्बू एक ही
कपड़े में जुड़कर एक हो गया।

14तब कारीगरों ने बकरी के बालों का उपयोग तम्बू
को ढकने वाली ग्यारह कनातों को बनाने के लिए
किया। 15सभी ग्यारह कनातें एक ही माप की थी। वे
पन्द्रह गज लम्बी और दो गज चौड़ी थीं। 16कारीगरों ने
पाँच कनातों को एक में सीआ, और तब छः को एक
दूसरे में एक साथ सीआ। 17उन्होंने पहले समूह की
अन्तिम कनात के सिरे में पचास लुप्पियाँ बनाईं। और
दूसरे समूह की अन्तिम कनात के सिरे में पचास।
18कारीगरों ने दोनों को एक में मिलाने के लिए पचास
काँसे के छल्ले बनाए। 19तब उन्होंने तम्बू के दो और
आच्छादन बनाए। एक आच्छादन लाल रंगे हुए मेढ़े की
खाल से बनाया गया। दूसरा आच्छादन सुइसों के चमड़े
का बनाया गया।

20तब बसलेल ने बबूल की लकड़ी के तख़्ते बनाए।
21हर एक तख़्ता पन्द्रह फीट लम्बा और सत्ताइस इंच
चौड़ा बनाया। 22हर एक तख़्ते के तले में अगल बगल
दो चूलें थीं। इनका उपयोग तख़्तों को जोड़ने के लिए
किया जाता था। पवित्र तम्बू के लिए हर एक तख़्ता
इसी प्रकार का था। 23बसलेल ने तम्बू के दक्षिण भाग
के लिए बीस तख़्ते बनाए। 24तब उसने चालीस चाँदी के
आधार बनाए जो बीस तख़्तों के नीचे लगे। हर एक
तख़्ते के दो आधार थे अर्थात् हर तख़्ते की हर "चूल"
के लिए एक। 25उसने बीस तख़्ते तम्बू की दूसरी ओर
उत्तर की तरफ़ के भी बनाए।

26उसने हर एक तख़्ते के नीचे दो लगने वाले चाँदी
के चालीस आधार बनाए। 27उसने तम्बू केपिछले भाग
(पश्चिमी ओर) के लिए छः तख़्ते बनाए। 28उसने तम्बू
के पिछले भाग के कोनों के लिए दो तख़्ते बनाए।

29ये तख़्ते तले में एक दूसरे से जोड़े गए थे, और ऐसे
छल्लों में लगे थे जो उन्हें जोड़ते थे। उसने प्रत्येक सिरे
के लिए ऐसा किया। 30इस प्रकार वहाँ आठ तख़्ते थे,
और हर एक तख़्ते के लिए दो आधार के हिसाब से
सोलह चाँदी के आधार थे।

31-32तब उसने तम्बू के पहली बाजू के लिए पाँच,
और तम्बू की दूसरी बाजू के लिए पाँच तथा तम्बू के
पश्चिमी (पिछली) ओर के लिए पाँच कीकर की कड़ियाँ
बनाईं। 33उसमें बीच की कड़ियाँ ऐसी बनाईं जो तख़्तों में
से एक दूसरे से होकर एक दूसरे तक जाती थीं। 34उसने
इन तख़्तों को सोने से मढ़ा। उसने कड़ियों को भी सोने
से मढ़ा और उसने कड़ियों को पकड़े रखने के लिए
सोने के छल्ले बनाए।

35तब उसने सर्वाधिक पवित्र स्थान के द्वार के लिए
पर्दे बनाए। उसने सन के उत्तम रेशों और नीले लाल
तथा बैंगनी कपड़े का उपयोग किया। उसने सन के
उत्तम रेशों में करूबों का चित्र काढ़ा। 36उसने बबूल
की लकड़ी के चार खम्भे बनाए और उन्हें सोने से
मढ़ा। तब उसने खम्भों के लिए सोने के छल्ले बनाए
और उसने खम्भों के लिए चार चाँदी के आधार बनाए।

37तब उसने तम्बू के द्वार के लिए पर्दा बनाया। उसने
नीले, बैंगनी और लाल कपड़े तथा सन के उत्तम रेशों
का उपयोग किया। उसने कपड़े में चित्र काढ़े।

38तब उसने इस पर्दे के लिए पाँच खम्भे और उनके
लिए छल्ले बनाए। उसने खम्भों के सिरों और पर्दे की
छड़ों को सोने से मढ़ा, और उसने काँसे के पाँच आधार
खम्भों के लिए बनाए।

साक्षीपत्र का सन्दूक

37 बसलेल ने बबूल की लकड़ी का पवित्र सन्दूक
बनाया। सन्दूक पैंतालिस इंच लम्बा, सत्ताईस
इंच चौड़ा, और सत्ताईस इंच ऊँचा था। 2उसने सन्दूक के
भीतरी और बाहर भाग को शुद्ध सोने से मढ़ दिया। तब
उसने सोने की पट्टी सन्दूक के चारों ओर लगाई।
3फिर उसने सोने के चार कड़े बनाए और उन्हें नीचे
के चारों कोनों पर लगाया। ये कड़े सन्दूक को ले जाने
के लिए उपयोग में आते थे। दोनों तरफ दो–दो कड़े थे।
4तब उसने सन्दूक ले चलने के लिए बल्लियों को
बनाया। बल्लियों के लिए उसने बबूल की लकड़ी का
उपयोग किया और बल्लियों को शुद्ध सोने से मढ़ा।
5उसने सन्दूक के हर एक सिरे पर बने कड़ों में बल्लियों
को डाला। 6तब उसने शुद्ध सोने से ढक्कन को बनाया।
ये ढाई हाथ लम्बा तथा डेढ़ हाथ चौड़ा था। 7तब बसलेल
ने सोने को पीट कर दो करूब बनाए। उसने ढक्कन
के दोनों छोरो पर करूब लगाये। 8उसने एक करूब को
एक ओर तथा दूसरे को दूसरी ओर लगाया। करूब को
ढक्कन से एक बनाने के लिए जोड़ दिया गया। 9करूबों
के पंख आकाश की ओर उठा दिए गए। करूबों ने
सन्दूक को अपने पंखों से ढक लिया। करूबों एक दूसरे
के सामने ढक्कन को देख रहे थे।

विशेष मेज

10तब बसलेल ने बबूल की लकड़ी की मेज बनाई।
मेज़ छत्तीस इंच लम्बी, अट्ठारह इंच चौड़ी और सत्ताईस
इंच ऊँची थी। 11उसने मेज को शुद्ध सोने से मढ़ा।

उसने सोने की सजावट मेज के चारों ओर की। 12तब
उसने मेज के चारों ओर एक किनारे बनायी। यह
किनारे लगभग तीन इंच* चौड़ी थी। उसने किनारे पर
सोने की झालर लगाई। 13तब उसने मेज के लिए चार
सोने के कड़े बनाए। उसने नीचे के चारों कोनों पर
सोने के चार कड़े लगाए। ये वहीं–वहीं थे जहाँ चार पैर
थे। 14कड़े किनारी के समीप थे। कड़ों में वे बल्लियाँ
थीं जो मेज को ले जाने में काम आती थीं। 15तब उसने
मेज को ले जाने के लिए बल्लियाँ बनाई। बल्लियों के
लिए उसने बबूल की लकड़ी का उपयोग किया और
उन को शुद्ध सोने से मढ़ा। 16तब उसने उन चीज़ों को
बनाया जो मेज पर काम आती थीं। उसने तश्तरी,
चम्मच, परात, और पेय भेंटों के लिए उपयोग में आने
वाले घड़े बनाए। ये सभी चीज़ें शुद्ध सोने से बनाई गई
थीं।

दीपाधार

17तब उसने दीपाधार बनाया। इसके लिए उसने शुद्ध
सोने का उपयोग किया और उसे पीट कर आधार तथा
उसके डंडे को बनाया। तब उसने फूलों के समान
दिखने वाले प्याले बनाए। प्यालों के साथ कलियाँ और
खिले हुए पुष्प थे। हर एक चीज़ शुद्ध सोने की बनी थी।
ये सभी चीज़ें एक ही इकाई बनाने के रूप में परस्पर
जुड़ी थी। 18दीपाधार के दोनों ओर छः शाखाएं थीं। एक
ओर तीन शाखाएं थी तथा तीन शाखाएं दूसरी ओर।
19हर एक शाखा पर सोने के तीन फूल थे। ये फूल
बादाम के फूल के आकार के बने थे। उनमें कलियाँ
और पंखुडियाँ थीं। 20दीपाधार की डंडी पर सोने के चार
फूल थे। वे भी कली और पंखुडियों सहित बादाम के
फूल के आकार के बने थे।

21छः शाखाएं दो–दो करके तीन भागों में थीं। हर
एक भाग की शाखाओं के नीचे एक कली थी। 22ये
सभी कलियां, शाखाएं और दीपाधार शुद्ध सोने के बने
थे। इस सारे सोने को पीट कर एक ही में मिला दिया
गया था। 23उसने इस दीपाधार के लिए सात दीपक
बनाए तब उसने तश्तरियाँ और चिमटे बनाए। हर एक
वस्तु को शुद्ध सोने से बनाया। 24उसने लगभग पचहत्तर
पौंड़ शुद्ध सोना दीपाधार और उसके उपकरणों को
बनाने में लगाया।

धूप जलाने की वेदी

25तब उसने धूप जलाने की एक वेदी बनाई। उसने
इसे बबूल की लकड़ी का बनाया। वेदी वर्गाकार थी।
यह अट्ठारह इंच लम्बी, अट्ठारह इंच चौड़ी और
छत्तीस इंच ऊँची थी। वेदी पर चार सींग बनाए गए थे।
हर एक कोने पर एक सींग बना था। ये सींगे वेदी के
साथ एक इकाई बनाने के लिए जोड़ दिए गए थे।
26उसने सिरे, सभी बाजुओं और सींगो को शुद्ध सोने के
पतरे से मढ़ा। तब उसने वेदी के चारों ओर सोने की
झालर लगाई। 27उसने सोने के दो कड़े वेदी के लिए
बनाए। उसने सोने के कड़ों को वेदी के हर ओर की
झालर से नीचे रखा। इन कड़ों में वेदी को ले जाने के
लिए बल्लियाँ डाली जाती थीं। 28तब उसने बबूल की
लकड़ी की बल्लियाँ बनाई और उन्हें सोने से मढ़ा।
29तब उसने अभिषेक का पवित्र तेल बनाया। उसने
शुद्ध सुगन्धित धूप भी बनाई। ये चीज़ें उसी प्रकार बनाई
गई जिस प्रकार कोई निपुण बनाता है।

होमबलि की वेदी

38 तब उसने होमबलि की वेदी बनाई। यह वेदी
होमबलि के लिए उपयोग में आने वाली थी।
उसने बबूल की लकड़ी से इसे बनाया। वेदी वर्गाकार
थी। यह साढ़े सात फुट लम्बी, साढ़े सात फुट चौड़ी और
साढ़े चार फुट ऊँची थी। 2उसने हर एक कोने पर एक
सींग बनाये। उसने सींगों को वेदी के साथ जोड़ दिया।
तब उसने हर चीज़ को काँसे से ढक लिया।

3तब उसने वेदी पर उपयोग में आने वाले सभी उपकरणों
को बनाया। उसने इन चीज़ों को काँसे से ही बनाया।
उसने पात्र, बेलचे, कटोरे, माँस के लिए काँटे, और
कढ़ाहियाँ बनाई। 4तब उसने वेदी के लिए एक जाली
बनायी। यह जाली काँसे की जाली की तरह थी। जाली
को वेदी के पायदान से लगाया। यह वेदी के भीतर
लगभग मध्य में था। 5तब उसने काँसे के कड़े बनाए। ये
कड़े वेदी को ले जाने के लिए बल्लियों को फँसाने के
काम आते थे। उसने पर्दे के चारों कोनों पर कड़ों को
लगाया। 6तब उसने बबूल की लकड़ी की बल्लियाँ
बनाई और उन्हें काँसे से मढ़ा। 7उसने बल्लियाँ को
कड़ों में डाला। बल्लियाँ वेदी की बगल में थीं। वे वेदी
को ले जाने के काम आती थीं। उसने वेदी को बनाने
के लिए बबूल के तख़्तों का उपयोग किया। वेदी भीतर
खाली थी, एक खाली सन्दूक की तरह।

8उसने हाथ धोने के बड़े पात्र तथा उसके आधार को
उस काँसे से बनाया जिसे पवित्र तम्बू के प्रवेश द्वार पर
सेवा करने वाली स्त्रियों द्वारा दर्पण के रूप में काम में
लाया जाता था।

पवित्र तम्बू के चारों ओर का आँगन

9तब उसने आँगन के चारों ओर पर्दे की दीवार
बनाई। दक्षिण की ओर के पर्दे की दीवार पचास गज
लम्बी थी। ये पर्दे सन के उत्तम रेशों के बने थे। 10दक्षिणी
ओर के पर्दो को बीस खम्भों पर सहारा दिया गया था।
ये खम्भे काँसे के बीस आधारों पर थे। खम्भों और

तीन इंच शाब्दिक "एक हथेली" एक व्यक्ति के हाथ की चौड़ाई।

बल्लियों के लिए छल्ले चाँदी के बने थे। 11उत्तरी तरफ़
का आँगन भी पचास गज लम्बा था और उसमे बीस
खम्भे बीस काँसे के आधारों के साथ थे। खम्भों और
बल्लियों के लिए छल्ले चाँदी के बने थे।

12आँगन के पश्चिमी तरफ के पर्दे पच्चीस गज लम्बे
थे। वहाँ दस खम्भे और दस आधार थे। खम्भों के लिए
छल्ले तथा कुँड़े चाँदी के बनाए गए थे।

13आँगन की पूर्वी दीवार पच्चीस गज चौड़ी थी। आँगन
का प्रवेश द्वार इसी ओर था। 14प्रवेश द्वार के एक तरफ
पर्दे की दीवार साढ़े सात गज लम्बी थी। इस तरफ तीन
खम्भे और तीन आधार थे। 15प्रवेश द्वार के दूसरी
तरफ़ पर्दे की दीवार की लम्बाई भी साढ़े सात गज़ थी।
वहाँ भी तीन खम्भे और तीन आधार थे। 16आँगन के
चारों ओर की कनाते सन के उत्तम रेशों की बनी थीं।
17खम्भों के आधार काँसे के बने थे। छल्लों और
कनातों की छड़े चाँदी की बनी थीं। खम्भों के सिरे भी
चाँदी से मढ़े थे। आँगन के सभी खम्भे कनात की चाँदी
की छड़ों से जुड़े थे।

18आँगन के प्रवेश द्वार की कनात सन के उत्तम
रेशों और नीले, लाल तथा बैंगनी कपड़े की बनी थी।
इस पर कढ़ाई कढ़ी हुई थी। कनात दस गज लम्बी और
ढाई गज* ऊँची थी। ये उसी ऊँचाई की थी जिस
ऊँचाई की आँगन की चारों ओर की कनातें थीं।
19कनात चार खम्भों और चार काँसें के आधारों पर
खड़ी थी। खम्भों के छल्ले चाँदी के बने थे। खम्भों के
सिरे चाँदी से मढ़े थे और पर्दे की छड़े भी चाँदी की बनी
थी। 20पवित्र तम्बू और आँगन के चारों ओर की कनातों
की खूँटियाँ काँसे की बनी थी।

21मूसा ने सभी लेवी लोगों को आदेश दिया कि वे
तम्बू अर्थात् साक्षीपत्र का तम्बू बनाने में काम आई हुई
चीज़ों को लिख ले। हारून का पुत्र ईतामार इस सूची
को रखने का अधिकारी था। 22यहूदा के परिवार समूह
से हूर के पुत्र ऊरी के पुत्र बसलेल ने भी सभी चीज़ें
बनाईं जिनके लिए यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।
23दान के परिवार समूह से अहीसामाक के पुत्र
ओहोलीआब ने भी उसे सहायता दी। ओहोलीआब एक
निपुण कारीगर और शिल्पकार था। वह सन के उत्तम
रेशों और नीला, बैंगनी और लाल कपड़े बुनने में निपुण
था। 24दो टन* से अधिक सोना पवित्र तम्बू के लिए
यहोवा को भेंट किया गया था। (यह मन्दिर के प्रामाणिक
बाटों से तोला गया था।)

25लोगों ने पौने चार टन* से अधिक चाँदी दी। (यह
अधिकारिक मन्दिर के बाट से तोली गयी थी।) 26यह
चाँदी उनके द्वारा कर वसूल करने से आई। लेवी पुरुषों
ने बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र के लोगों की गणना
की। छः लाख तीन हजार पाँच सौ पचास लोग थे और
हर एक पुरुष को एक बेका* चाँदी कर के रूप में
देनी थी। (मन्दिर के अधिकारिक बाट के अनुसार
एक बेका आधा शेकेल होता था।) 27पौने चार टन
चाँदी का उपयोग पवित्र तम्बू के सौ आधारों और
कनातों को बनाने में हुआ था। उन्होंने पचहत्तर पौंड
चाँदी हर एक आधार में लगायी। 28अन्य पचास पौंड*
चाँदी का उपयोग खूँटियों कनातों की छड़ों और खम्भों
के सिरों को बनाने में हुआ था।

29साढ़े छब्बीस टन* से अधिक काँसा यहोवा को
भेंट चढ़ाया गया। 30उस काँसे का उपयोग मिलापवाले
तम्बू के प्रवेश द्वार के आधारों को बनाने में हुआ।
उन्होंने काँसे का उपयोग वेदी और काँसे की जाली
बनाने में भी किया और वह काँसा, सभी उपकरण
और वेदी की तश्तरियों को बनाने के काम में आया।
31इसका उपयोग आँगन के चारों ओर की कनातों के
आधारों और प्रवेश द्वार की कनातों के आधारों के
लिए भी हुआ। और काँसे का उपयोग तम्बू के लिए
खूँटियों को बनाने और आँगन के चारों ओर की
कनातों के लिए हुआ।

याजकों के विशेष वस्त्र

39 कारीगरों ने नीले, लाल और बैंगनी कपड़ों
के विशेष वस्त्र याजकों के लिए बनाए जिन्हें
वे पवित्र स्थान में सेवा के समय पहनेंगे। उन्होंने हारून
के लिए भी वैसे ही विशेष वस्त्र बनाये जैसा यहोवा ने
मूसा को आदेश दिया था।

एपोद

2उन्होंने एपोद सन के उत्तम रेशों और नीले, लाल
और बैंगनी कपड़े से बनाया। 3(उन्होंने सोने को बारीक
पट्टियों के रूप मे पीटा और तब उन्होंने उसे लम्बे
धागों के रूप में काटा। उन्होंने सोने को नीले, बैंगनी,
लाल कपड़ों और सन के उत्तम रेशों में बुना। इसे
निपुणता के साथ किया गया।) 4उन्होंने एपोद के कंधों
की पट्टियाँ बनाई। और कंधे की इन पट्टियों को
एपोद के कंधे पर टाँका। 5पटुका उसी प्रकार बनाया
गया था। यह एपोद से एक ही इकाई के रूप मे जोड़
दिया गया। यह सोने के तार, सन के उत्तम रेशों, नीला,
लाल और बैंगनी कपड़े से वैसा ही बना जैसा यहोवा ने
मूसा को आदेश दिया था।

ढ़ाई गज़ शाब्दिक "पाँच हाथ।"

दो टन शाब्दिक "उनत्तीस किक्कार और सात सौ शेकेल।"

पौने चार टन शाब्दिक "सौ किक्कर और 1,775 शेकेल।"

एक बेका या "1/5 औंस।"

पचास पौंड़ शाब्दिक "1,775 शेकेल।"

साढ़े छब्बीस टन शाब्दिक "सत्तर किक्कर और दो हजार चार सौ शेकेल।"

6कारीगरों ने रत्नों को सोने को पट्टी में जड़ा।
उन्होंने इस्राएल के पुत्रों के नाम रत्नों पर लिखे। 7तब
उन्होंने रत्नों को एपोद के कंधे के पेबन्द पर लगाया।
हर एक रत्न इस्राएल के बारह पुत्रों मे से एक-एक का
प्रतिनिधित्व करता था। यह वैसा ही किया गया जैसा
यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

सीनाबन्द

8तब उन्होंने सीनाबन्द बनाया। यह वही निपुणता के
साथ बनाया गया था। सीनाबन्द एपोद की तरह बनाया
गया था। यह सोने के तार, सन के उत्तम रेशों, नीला,
लाल और बैंगनी कपड़े का बनाया गया था। 9सीनाबन्द
वर्गाकार दोहरा तह किया हुआ था। यह नौ इंच लम्बा
और नौ इंच चौड़ा था। 10तब कारीगर ने इस पर सुन्दर
रत्नों की पक्तियाँ जड़ीं। पहली पंक्ति में एक लाल, एक
पुखराज और एक मर्कतमणि थी। 11दूसरी पंक्ति में एक
फिरोज़ा, एक नीलम तथा एक पन्ना था। 12तीसरी पंक्ति
में एक धूम्रकान्त, अकीक और एक याकूत था। 13चौथी
पंक्ति में एक लहसुनिया, एक गोमेदक मणि, और एक
कपिश मणि थी। ये सभी रत्न सोने में जड़े थे। 14इन
बारह रत्नों पर इस्राएल के पुत्रों के नाम उसी प्रकार
लिखे गये थे जिस प्रकार एक कारीगर मुहर पर खोदता
है। हर एक रत्न पर इस्राएल के बारह पुत्रों में से
एक-एक का नाम था।

15सीनाबन्द के लिए शुद्ध सोने की एक जंजीर बनाई
गई। ये रस्सी की तरह बटी थी। 16कारीगरों ने सोने की
दो पट्टियों और दो सोने के छल्ले बनाए। उन्होंने दोनों
छल्लों को सीनाबन्द के ऊपरी कोनों पर लगाया। 17तब
उन्होंने दोनों सोने की जंजीरों को दोनों छल्लों में बाँधा।
18उन्होंने सोने की जंजीरों के दूसरी सिरों को दोनों
पट्टियों से बाँधा। तब उन्होंने एपोद के दोनों कंधों से
सामने की ओर उन्हें फँसाया। 19तब उन्होंने दो और
सोने के छल्ले बनाए और सीनाबन्द के निचले कोनों
पर उन्हें लगाया। उन्होंने छल्लों को चोगे के समीप
अन्दर लगाया। 20उन्होंने सामने की ओर कंधे की
पट्टी के तले में सोने के दो छल्ले लगाए। ये छल्ले
बटनों के समीप ठीक पटुके के ऊपर थे। 21तब उन्होंने
एक नीली पट्टी का उपयोग किया और सीनाबन्द के
छल्लों को एपोद के छल्लों से बाँधा। इस प्रकार सीनाबन्द
पेटी के समीप लगा रहा। यह गिर नहीं सकता था।
उन्होंने यह सब चीज़ें यहोवा के आदेश के अनुसार
कीं।

याजक के अन्य वस्त्र

22तब उन्होंने एपोद के नीचे का चोगा बनाया। उन्होंने
इसे नीले कपड़े से बनाया। यह एक निपुण व्यक्ति का
काम था। 23चोग़े के बीचोंबीच एक छेद था। इस छेद के
चारों ओर कपड़े की गोट लगी थी। यह गोट छेद को
फटने से बचाती थी। 24तब उन्होंने सन के उत्तम रेशों,
नीले, लाल और बैंगनी कपड़े से फूँदने बनाए जो अनार
के आकार के नीचे लटके थे। उन्होंने इन अनारों को
चोग़े के नीचे के सिरे पर चारों ओर बाँधा। 25तब
उन्होंने शुद्ध सोने की घंटियाँ बनाई। उन्होंने अनारों के
बीच में चोगे के नीचे के सिरे के चारों ओर इन्हें बाँधा।
26लबादे के नीचे के सिरे के चारो ओर अनार और
घंटियाँ थी। हर एक अनारों के मध्य घंटी थी। याजक
उस चोगे को तब पहनता था जब वह यहोवा की सेवा
करता था, जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

27कारीगरों ने हारून ओर उसके पुत्रों के लिए लबादे
बनाए। ये लबादे सन के उत्तम रेशों के थे। 28और
कारीगरों ने सन के उत्तम रेशों के साफ़े बनाए। उन्होंने
सिर की पगड़ियाँ और अधोवस्त्र भी बनाए। उन्होंने इन
चीज़ों को सन के उत्तम रेशों का बनाया। 29तब उन्होंने
पटुके को सन के उत्तम रेशों, नीले, बैंगनी और लाल
कपड़े से बनाया। कपड़े में काढ़ने काढ़े गए। ये चीज़ें
वैसी ही बनाई गई जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया
था।

30तब उन्होंने सिर पर बाँधने के लिए सोने का पतरा
बनाया। उन्होंने सोने पर ये शब्द लिखे: यहोवा के लिए
पवित्र। 31तब उन्होंने पतरे से एक नीली पट्टी बाँधी
और उसे पगड़ी पर इस प्रकार बाँधा जैसा यहोवा ने मूसा
को आदेश दिया था।

मूसा द्वारा पवित्र तम्बू का निरीक्षण

32इस प्रकार मिलापवाले तम्बू का सारा काम पूरा हो
गया। इस्राएल के लोगों ने हर चीज़ ठीक वैसी ही बनाई
जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था। 33तब उन्होंने
मिलापवाला तम्बू मूसा को दिखाया। उन्होंने उसे तम्बू
और उसमें की सभी चीज़ें दिखाई। उन्होंने उसे छल्ले,
तख्ते, छड़ें खम्भें तथा आधार दिखाए। 34उन्होंने उसे
तम्बू का आच्छादन दिखाया जो लाल रंगी हुई भेड़ की
खाल का बना था और उन्होंने वह आच्छादन दिखाया
जो सुइसों के चमड़े का बना था और उन्होंने वह
कनात दिखाई जो प्रवेश द्वार से सब से अधिक पवित्र
स्थान को ढकती थी।

35उन्होंने मूसा को साक्षीपत्र का सन्दूक दिखाया।
उन्होंने सन्दूक को ले जाने वाली बल्लियाँ तथा सन्दूक
को ढकने वाले ढक्कन को दिखाया। 36उन्होंने विशेष
रोटी की मेज़ तथा उस पर रहने वाली सभी चीज़ें और
साथ में विशेष रोटी मूसा को दिखायी। 37उन्होंने मूसा
को शुद्ध सोने का दीपाधार और उस पर रखे हुए
दीपकों को दिखाया। उन्होंने तेल और अन्य सभी चीज़ें
मूसा को दिखाई, जिनका उपयोग दीपकों के साथ होता
था। 38उन्होंने उसे सोने की वेदी, अभिषेक का तेल,

सुगन्धित धूप, और तम्बू के प्रवेश द्वार को ढकने वाली
कनात को दिखाया। 39उन्होने काँसे की वेदी और काँसे
की जाली को दिखाया। उन्होंने वेदी को ले जाने के लिए
बनी बल्लियों को भी मूसा को दिखाया। और उन्होंने
उन सभी चीज़ों को दिखाया जो वेदी पर काम मे आती
थी। उन्होंने चिलमची और उसके नीचे का आधार
दिखाया।

40उन्होंने आँगन के चारों ओर की कनातों को,
खम्भों ओर आधारों के साथ मूसा को दिखाया। उन्होंने
उसको उस कनात को दिखाया जो आँगन के प्रवेशद्वार
को ढके थी। उन्होने उसे रस्सियाँ और काँसे की तम्बू
वाली खूँटियाँ दिखाईं। उन्होंने मिलापवाले तम्बू में उसे
सभी चीज़ें दिखाईं।

41तब उन्होंने मूसा को पवित्र स्थान में सेवा करने
वाले याजकों के लिए बने वस्त्रों को दिखाया। वे उन
वस्त्रों को तब पहनते थे जब वे याजक के रूप में सेवा
करते थे।

42यहोवा ने मूसा को जैसा आदेश दिया था इस्राएल के
लोगों ने ठीक सभी काम उसी तरह किया। 43मूसा ने
सभी कामों को ध्यान से देखा। मूसा ने देखा कि सब
काम ठीक उसी प्रकार हुआ जैसा यहोवा ने आदेश
दिया था। इसलिए मूसा ने उनको आशीर्वाद दिया।

मूसा द्वारा पवित्र तम्बू की स्थापना

40 तब यहोवा ने मूसा से कहा, 2"पहले महीने के
पहले दिन पवित्र तम्बू जो मिलाप वाला तम्बू
है खड़ा करो। 3साक्षीपत्र के सन्दूक को मिलापवाले
तम्बू मे रखो। सन्दूक को पर्दे से ढक दो। 4तब विशेष
रोटी की मेज को अन्दर लाओ। जो सामान मेज पर
होने चाहिए उन्हें उस पर रखो। तब दीपाधार को तम्बू
में रखो। दीपाधार पर दीपकों को ठीक स्थानों पर
रखो।

5सोने की वेदी को, धूप की भेंट के लिए तम्बू में
रखो। वेदी को साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने रखो।
तब कनात को पवित्र तम्बू के प्रवेश द्वार पर लगाओ।

6"होमबलि की वेदी को मिलापवाले तम्बू की पवित्र
तम्बू के प्रवेशद्वार पर रखो। 7चिलमची को वेदी और
मिलापवाले तम्बू के बीच में रखो। चिलमची में पानी
भरो। 8आँगन के चारों ओर कनाते लगाओ। तब आँगन
के प्रवेशद्वार पर कनात लगाओ।

9"अभिषेक के तेल को डालकर पवित्र तम्बू और
इसमें की हर एक चीज़ का अभिषेक करो। जब तुम
इन चीज़ों पर तेल डालोगे तो तुम इन्हें पवित्र बनाओगे। *
10होमबलि की वेदी का अभिषेक करो। वेदी की हर
एक चीज़ का अभिषेक करो। तुम वेदी को पवित्र
करोगे। यह अत्यधिक पवित्र होगी। 11तब चिलमची
और उसके नीचे के आधार का अभिषेक करो। ऐसा
उन चीज़ों के पवित्र करने के लिए करो।

12"हारून और उसके पुत्रों को मिलापवाले तम्बू के
प्रवेशद्वार पर लाओ। उन्हें पानी से नहलाओ। 13तब
हारून को विशेष वस्त्र पहनाओ। तेल से उसका अभिषेक
करो और उसे पवित्र करो। तब वह याजक के रूप में
मेरी सेवा कर सकता है। 14तब उसके पुत्रों को वस्त्र
पहनाओ। 15पुत्रों का अभिषेक वैसे ही करो जैसे उनके
पिता का अभिषेक किया। तब वे भी मेरी सेवा याजक
के रूप में कर सकते हैं। जब तुम अभिषेक करोगे, वे
याजक हो जाएंगे। वह परिवार भविष्य में भी सदा के
लिए याजक बना रहेगा।" 16मूसा ने यहोवा की आज्ञा
मानी। उसने वह सब किया जिसका यहोवा ने आदेश
दिया था।

17इस प्रकार ठीक समय पर पवित्र तम्बू खड़ा किया
गया। यह मिस्र छोड़ने के बाद के दूसरे वर्ष में पहले
महीने का पहला दिन था। 18मूसा ने पवित्र तम्बू को
यहोवा के कथनानुसार खड़ा किया। पहले उसने आधारों
को रखा। तब उसने आधारों पर तख़्तों को रखा। फिर
उसने बल्लियाँ लगाईं और खम्भों को खड़ा किया।
19उसके बाद मूसा ने पवित्र तम्बू के ऊपर आच्छादन
रखा। इसके बाद उसने तम्बू के आच्छादन पर दूसरा
आच्छादन रखा। उसने यह यहोवा के आदेश के अनुसार
किया।

20मूसा ने साक्षीपत्र के उन पत्थरों को जिन पर
यहोवा के आदेश लिखे थे, सन्दूक में रखा। मूसा ने
बल्लियों को सन्दूक के छल्लों में लगाया। तब उसने
ढक्कन को सन्दूक के ऊपर रखा। 21तब मूसा सन्दूक
को पवित्र तम्बू के भीतर लाया। और उसने पर्दे को
ठीक स्थान पर लटकाया। उसने पवित्र तम्बू में साक्षीपत्र
के सन्दूक को ढक दिया। मूसा ने ये चीज़ें यहोवा के
आदेश के अनुसार कीं। 22तब मूसा ने विशेष रोटी की
मेज को मिलापवाले तम्बू में रखा। उसने इसे पवित्र
तम्बू के उत्तर की ओर रखा। उसने इसे पर्दे के सामने
रखा। 23तब उसने यहोवा के सामने मेज पर रोटी रखी।
उसने यह यहोवा ने जैसा आदेश दिया था, वैसा ही
किया। 24तब मूसा ने दीपाधार को मिलापवाले तम्बू में
रखा। उसने दीपाधार को पवित्र तम्बू के दक्षिण ओर
मेज के पार रखा। 25तब यहोवा के सामने मूसा ने
दीपाधार पर दीपक रखे। उसने यह यहोवा के आदेश
के अनुसार किया। 26तब मूसा ने सोने की वेदी को
मिलापवाले तम्बू में रखा। उसने सोने की वेदी को पर्दे
के सामने रखा। 27तब उसने सोने की वेदी पर सुगन्धित
धूप जलाई। उसने यह यहोवा के आदेशानुसार किया।
28तब मूसा ने पवित्र तम्बू के प्रवेश द्वार पर कनात
लगाई। 29मूसा ने होमबलि वाली वेदी को, मिलापवाले

पवित्र बनाओगे या "दिखाओ कि वे विशेष उद्देश्य के लिए दूसरों से अलग हैं।"

तम्बू के प्रवेशद्वार पर रखा। तब मूसा ने एक होमबलि
उस वेदी पर चढ़ाई। उसने अन्नबलि भी यहोवा को
चढ़ाई। उसने ये चीज़ें यहोवा के आदेशानुसार कीं।
30तब मूसा ने मिलापवाले तम्बू और वेदी के बीच
चिलमची को रखा। और उसमे धोने के लिए पानी
भरा। **31**मूसा, हारून और हारून के पुत्रों ने अपने हाथ
और पैर धोने के लिए इस चिलमची का उपयोग किया।
32वे हर बार जब मिलापवाले तम्बू में जाते तो अपने
हाथ और पैर धोते थे। जब वे वेदी के निकट जाते थे
तब भी वे हाथ और पैर धोते थे। वे इसे वैसे ही करते
थे जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।
33तब मूसा ने पवित्र तम्बू के आँगन के चारों ओर
कनातें खड़ी कीं। मूसा ने वेदी को आँगन में रखा। तब
उसने आँगन के प्रवेश द्वार पर कनात लगाई। इस
प्रकार मूसा ने वे सभी काम पूरे कर लिए जिन्हें करने
का आदेश यहोवा ने दिया था।

यहोवा की महिमा

34जब सभी चीज़ें पूरी हो गई, बादल ने मिलापवाले
तम्बू को ढक लिया। और यहोवा के तेज से पवित्र तम्बू
भर गया। **35**बादल मिलापवाले तम्बू पर उतर आया।
और यहोवा के तेज ने पवित्र तम्बू को भर दिया।
इसलिए मूसा मिलापवाले तम्बू में नहीं घुस सका। **36**इस
बादल ने लोगों को संकेत दिया कि उन्हें कब चलना है।
जब बादल तम्बू से उठता तो इस्राएल के लोग चलना
आरम्भ कर देते थे।
37किन्तु जब बादल तम्बू पर ठहर जाता तो लोग
चलने की कोशिश नहीं करते थे। वे उसी स्थान पर
ठहरे रहते थे, जब तक बादल तम्बू से नहीं उठता था।
38इसलिए दिन में यहोवा का बादल तम्बू पर रहता
था, और रात को बादल में आग होती थी। इसलिए
इस्राएल के सभी लोग यात्रा करते समय बादल को देख
सकते थे।

लैव्यव्यवस्था

होमबलि के नियम

1 यहोवा परमेश्वर ने मूसा को बुलाया और मिलापवाले
तम्बू में से उससे बोला। यहोवा ने कहा, 2"इस्राएल के
लोगों से कहो: तुम लोगों में से कोई जब यहोवा को भेंट
लाए तो वह भेंट तुम्हें उन जानवरों में से लानी चाहिए
जो तुम्हारे झुण्ड या रेवड़ में से हो।
3"यदि कोई व्यक्ति अपने पशुओं में से किसी की
होमबलि दे तो वह नर होना चाहिए और उस जानवर
में कोई दोष नहीं होना चाहिए। उस व्यक्ति को चाहिए
कि वह जानवर को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर ले
जाये। तब यहोवा भेंट स्वीकार करेगा। 4इस व्यक्ति को
अपना हाथ जानवर के सिर पर रखना चाहिए। परमेश्वर
होमबलि को व्यक्ति के पाप के लिए भुगतान के रूप में
स्वीकार करेगा।
5"व्यक्ति को चाहिए कि वह बछड़े को यहोवा के
सामने मारे। हारून के याजक पुत्रों को बछड़े का खून
लाना चाहिए। उन्हें मिलापवाले तम्बू के द्वार की वेदी
पर चारों ओर खून छिड़कना चाहिए। 6वह उस जानवर
का चमड़ा हटा देगा और उसे टुकड़ों में काटेगा। 7हारून
के याजक पुत्रों को वेदी पर लकड़ी और आग रखनी
चाहिए। 8हारून के याजक पुत्रों को वे टुकड़े, (सिर
और चर्बी) लकड़ी पर रखनी चाहिए। वह लकड़ी वेदी
पर आग के ऊपर होती है। 9याजक को जानवर के
भीतरी भागों और पैरों को पानी से धोना चाहिए। तब
याजक को जानवर के सभी भागों को वेदी पर जलाना
चाहिए। यही होमबलि है अर्थात् आग के द्वारा यहोवा
को सुगन्ध से प्रसन्न करना।
10"यदि कोई व्यक्ति भेड़ या बकरी की होमबलि
चढ़ाए तो वह एक ऐसे नर पशु की भेंट दे जिसमें कोई
दोष न हो। 11उस व्यक्ति को वेदी के उत्तर की ओर
यहोवा के सामने पशु को मारना चाहिए। हारून के
याजक पुत्रों को वेदी के चारों ओर खून छिड़कना
चाहिए। 12तब याजक को चाहिए कि वह पशु को
टुकड़ों में काटे। पशु का सिर और चर्बी याजक को
लकड़ी के ऊपर क्रम से रखना चाहिए। लकड़ी वेदी
पर आग के ऊपर रहती है। 13याजक को पशु के
भीतरी भागों और उसके पैरों को पानी से धोना चाहिए।
तब याजक को चाहिए कि वह पशु के सभी भागों को
वेदी पर जलाएँ। यह होमबलि है अर्थात् आग के द्वारा
यहोवा को सुगन्ध से प्रसन्न करना।
14"यदि कोई व्यक्ति यहोवा को पक्षी की होमबलि
चढ़ाए तो यह पक्षी फ़ाख्ता या नया कबूतर होना चाहिए।
15याजक भेंट को वेदी पर लाएगा। याजक पक्षी के सिर
को अलग करेगा। तब याजक पक्षी को वेदी पर जलाएगा।
पक्षी का खून वेदी की ओर बहना चाहिए। 16याजक
को पक्षी के गले की थैली और उसके पंखों को वेदी
के पूर्व की ओर फेंक देना चाहिए। यह वही जगह है
जहाँ वे वेदी से निकालकर राख डालते हैं।
17तब याजक को पंख के पास से पक्षी को चीरना
चाहिए, किन्तु पक्षी को दो भागों में नहीं बाँटना चाहिए।
याजक को वेदी के ऊपर आग पर रखी लकड़ी के
ऊपर पक्षी को जलाना चाहिए। यह होमबलि है अर्थात्
आग के द्वारा यहोवा को सुगन्ध से प्रसन्न करना।

अन्नबलि के नियम

2 "जब कोई व्यक्ति यहोवा को अन्नबलि चढ़ाये तो
उसकी भेंट महीन आटे की होनी चाहिए। वह
व्यक्ति उस आटे पर तेल डाले और उस पर लोबान
रखे। 2तब वह इसे हारून के याजक पुत्रों के पास लाए।
वह व्यक्ति तेल और लोबान से मिला हुआ एक मुट्ठी
महीन आटा ले तब याजक वेदी पर स्मृतिभेंट के रूप में
आटे को आग में जलाए। यह यहोवा के लिए सुगन्ध
होगी 3और बची हुई अन्नबलि हारून और उसके पुत्रों
के लिए होगी। यह भेंट यहोवा को आग से दी जाने वाली
भेंटों में सबसे अधिक पवित्र होगी।

चूल्हे में पकी अन्नबलि के नियम

4"जब तुम चूल्हे में पकी अन्नबलि लाओ तो यह
अखमीरी मैदे के फुलके या ऊपर से तेल डाली हुई
अख़मीरी चपातियाँ होनी चाहिए। 5यदि तुम भूनने की
कड़ाही से अन्नबलि लाते हो तो यह तेल मिली अख़मीरी
महीन आटे की होनी चाहिए। 6तुम्हें इसे कई टुकड़े
करके कई भागों में बाँटना चाहिए और इन पर तेल
डालना चाहिए। यह अन्नबलि है। 7यदि तुम अन्नबलि
तलने की कड़ाही से लाते हो तो यह तेल मिले महीन
आटे की होनी चाहिए।

8"तुम इन चीज़ों से बनी अन्नबलि यहोवा के लिए
लाओगे। तुम उन चीज़ों को याजक के पास ले जाओगे
और वह उन्हें वेदी पर रखेगा। 9फिर उस अन्नबलि में
से याजक इसका कुछ भाग लेकर उसे स्मृति भेंट के
रूप में वेदी पर जलायेगा। यह आग द्वारा दी गई एक भेंट
है। इस की सुगन्ध से यहोवा प्रसन्न होता है। 10बची हुई
अन्नबलि हारून और उसके पुत्रों की होगी। यह भेंट
यहोवा को आग से चढ़ाई जाने वाली भेंटों में अति पवित्र
होगी।

11"तुम्हें यहोवा को ख़मीर वाली कोई अन्नबलि नहीं
चढ़ानी चाहिए। तुम्हें यहोवा को, आग द्वारा भेंट के रूप
में ख़मीर या शहद नहीं जलाना चाहिए। 12तुम पहली
फ़सल से तैयार की गई खमीर या शहद यहोवा को भेंट
के रूप में ला सकते हो, किन्तु खमीर और शहद
मधुर गन्ध के रूप में ऊपर जाने के लिए वेदी पर
जलाने नहीं चाहिए। 13तुम्हें अपनी लायी हुई हर एक
अन्नबलि पर नमक भी रखना चाहिए। यहोवा से तुम्हारे
वाचा के प्रतीक रूप, नमक का अभाव तुम्हारी किसी
अन्नबलि में नहीं होना चाहिए। तुम्हें अपनी सभी भेटों
के साथ नमक लाना चाहिए।

पहली फ़सल से अन्नबलि के नियम

14"यदि तुम पहली फ़सल से यहोवा को अन्नबलि
लाते हो तो तुम्हें भुनी हुई अन्न की बालें लानी चाहिए।
इस अन्न को दलकर छोटे टुकड़ों में तोड़ा जाना
चाहिए। इस पहली फ़सल से तुम्हारी अन्नबलि होगी।
15तुम्हें इस पर तेल डालना और लोबान रखना चाहिए।
यह अन्नबलि है। 16याजक को चाहिए कि वह स्मृति
भेंट के रूप में दले गए अन्न के कुछ भाग, तेल और
इस पर रखे पूरे लोबान को जलाए। यह यहोवा को
आग से चढ़ाई भेंट है।

मेलबलि के नियम

3 "यदि यह भेंट मेलबलि है और यह यहोवा को
अपने पशुओं के झुण्ड से एक नर या मादा पशु
देता है, तो इस पशु में कोई दोष नहीं होना चाहिए। 2
इस व्यक्ति को अपना हाथ पशु के सिर पर रखना
चाहिए। मिलापवाले तम्बू के द्वार पर उस व्यक्ति द्वारा
उस पशु को मार डालना चाहिए। तब हारून के याजक
पुत्रों को वेदी पर चारों ओर खून छिड़कना चाहिए। 3इस
व्यक्ति को मेलबलि में से यहोवा को आग द्वारा भेंट
चढ़ानी चाहिए। भीतरी भागों को ढकने वाली और
भीतरी भागों में रहने वाली चर्बी की भेंट चढ़ानी
चाहिए। 4उस के दोनों गुर्दों पर की चर्बी और पुट्ठे*
की चर्बी भी भेंट में चढ़ानी चाहिए। गुर्दों के साथ कलेजे
को ढकने वाली चर्बी भी निकाल लेनी चाहिए। 5तब
हारून के पुत्र चर्बी को वेदी पर जलाएंगे। वे आग पर
रखी हुई लकड़ी, जिस पर होमबलि रखी गई, उसके
ऊपर उसे रखेंगे। इस की सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न
करती है।

6"यदि व्यक्ति यहोवा के लिए अपनी रेवड़ में से
मेलबलि के रूप में पशु को लाता है तब उसे एक नर
या मादा पशु भेंट में देना चाहिए जिसमें कोई दोष न हो।
7यदि वह भेंट में एक मेमना लाता है तो उसे यहोवा के
सामने लाना चाहिए। 8उसे अपना हाथ पशु के सिर पर
रखना चाहिए और मिलापवाले तम्बू के सामने उसे
मारना चाहिए। हारून के पुत्र वेदी पर चारों ओर पशु
का खून डालेंगे। 9तब वह व्यक्ति मेलबलि का एक भाग
यहोवा को आग द्वारा भेंट के रूप में चढ़ाएगा। इस
व्यक्ति को चर्बी और चर्बी से भरी सम्पूर्ण पूँछ और पशु
के भीतरी भागों के ऊपर और चारों ओर की चर्बी
लानी चाहिए। (उसे उस पूँछ को रीढ़ की हड्डी के
एकदम पास से काटना चाहिए।)

10इस व्यक्ति को दोनों गुर्दे और इन्हें ढकने वाली
चर्बी और पुट्ठे की चर्बी भी भेंट में चढ़ानी चाहिए। उसे
कलेजे को ढकने वाली चर्बी भी भेंट में चढ़ानी चाहिए।
उसे गुर्दों के साथ कलेजे को भी निकाल लेना चाहिए।
11तब याजक वेदी पर इस को जलाएगा। यह यहोवा
को आग द्वारा दी गई भेंट होगी तथा यह लोगों के लिए
भी भोजन होगी।

मेलबलि के रूप में बकरे की बलि के नियम

12"यदि किसी व्यक्ति की भेंट एक बकरा है तो वह
उसे यहोवा के सामने भेंट करे। 13इस व्यक्ति को
बकरे के सिर पर हाथ रखना चाहिए और मिलापवाले
तम्बू के सामने उसे मारना चाहिए। तब हारून के पुत्र
बकरे का खून वेदी पर चारों ओर डालेंगे। 14तब व्यक्ति
को बकरे का एक भाग यहोवा को अग्नि द्वारा भेंट के
रूप में चढ़ाने के लिए लाना चाहिए। इस व्यक्ति को
भीतरी भाग के ऊपर और उसके चारों ओर की चर्बी
की भेंट चढ़ानी चाहिए। 15उसे दोनों गुर्दे, उसे ढकने
वाली चर्बी तथा पशु के पुट्ठे की चर्बी भेंट में चढ़ानी
चाहिए। उसे कलेजे को ढकने वाली चर्बी चढ़ानी चाहिए।
उसे कलेजे के साथ गुर्दे को निकाल लेना चाहिए।
16याजक को वेदी पर बकरे के भागों को जलाना
चाहिए। यह यहोवा को आग द्वारा दी गई भेंट तथा
याजक का भोजन होगा। इसकी सुगन्ध यहोवा को
प्रसन्न करती है। (लेकिन सारा उत्तम भाग यहोवा का
है।) 17यह नियम तुम्हारी सभी पीढ़ियों में सदा चलता
रहेगा। तुम जहाँ कहीं भी रहो, तुम्हें खून या चर्बी नहीं
खानी चाहिए।"

पुट्ठे पशु की पसली के पिछली से लेकर उसकी पिछली टाँगों
तक का भाग।

संयोगवश हुए पापों के लिए पापबलि के नियम

4 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"इस्राएल के लोगों से कहो: यदि किसी व्यक्ति से संयोगवश कोई ऐसा पाप हो जाए जिसे यहोवा ने न करने का आदेश दिया है तो उस व्यक्ति को निम्न बातें करनी चाहिए:

3"यदि अभिषिक्त याजक से कोई ऐसा पाप हुआ हो जिसका बुरा असर लोगों पर पड़ा हो तो उसे अपने किए गए पाप के लिये यहोवा को बलि चढ़ानी चाहिए : उसे एक बछड़ा यहोवा को भेंट में देना चाहिए जिसमें कोई दोष न हो। उसे यहोवा को बछड़ा पापबलि के रूप में चढ़ाना चाहिए। 4अभिषिक्त याजक को उस बछड़े को परमेश्वर के सामने मिलापवाले तम्बू के द्वार पर लाना चाहिए। उसे अपना हाथ उस बछड़े के सिर पर रखना चाहिए और यहोवा के सामने उसे मार देना चाहिए। 5तब अभिषिक्त याजक को बछड़े का कुछ खून लेना चाहिए और मिलापवाले तम्बू में ले जाना चाहिए। 6याजक को अपनी उँगलियाँ खून में डालनी चाहिए और महापवित्र स्थान के पर्दे के सामने खून को सात बार परमेश्वर के सामने छिड़कना चाहिए। 7याजक को कुछ खून सुगन्धित धूप की वेदी के सिरे पर लगाना चाहिए। यह वेदी यहोवा के सामने मिलापवाले तम्बू में है। याजक को बछड़े का सारा ख़ून होमबलि की वेदी की नींव पर डालना चाहिए। (वह वेदी मिलापवाले तम्बू के द्वार पर है।) 8और उसे पापबलि किए गए बछड़े की सारी चर्बी को निकाल लेना चाहिए। उसे भीतरी भागों के ऊपर और उसके चारों ओर की चर्बी को निकाल लेनी चाहिए। 9उसे दोनों गुर्दे, उसके ऊपर की चर्बी और पुट्ठे पर की चर्बी ले लेनी चाहिए। उसे कलेजे को ढकने वाली चर्बी भी लेनी चाहिये और उसे कलेजे को गुर्दे के साथ निकाल लेना चाहिए। 10याजक को ये चीज़ें ठीक उसी तरह लेनी चाहिए जिस प्रकार उसने ये चीज़ें मेलबलि के बछड़े से ली थी।* याजक को होमबलि की वेदी पर पशु के भागों को जलाना चाहिए। 11-12किन्तु याजक को बछड़े का चमड़ा, सिर सहित इसका सारा माँस, पैर, भीतरी भाग और शरीर का बेकार भाग निकाल लेना चाहिए। याजक को डेरे के बाहर विशेष स्थान पर बछड़े के पूरे शरीर को ले जाना चाहिए जहाँ राख डाली जाती है। याजक को वहाँ लकड़ी की आग पर बछड़े को जलाना चाहिए। बछड़े को वहाँ जलाया जाना चाहिए जहाँ राख डाली जाती है।

13"ऐसा हो सकता है कि पूरे इस्राएल राष्ट्र से अनजाने में कोई ऐसा पाप हो जाए जिसे न करने का आदेश परमेश्वर ने दिया है। यदि ऐसा होता है तो वे दोषी होंगे। 14यदि उन्हें इस पाप का पता चलता है तो पूरे राष्ट्र के लिए एक बछड़ा पापबलि के रूप में चढ़ाया जाना चाहिए। उन्हें बछड़े को मिलापवाले तम्बू के सामने लाना चाहिए। 15बुजुर्गों को यहोवा के सामने बछड़े के सिर पर अपने हाथ रखने चाहिए। यहोवा के सामने बछड़े को मारना चाहिए। 16तब अभिषिक्त याजक को बछड़े का कुछ खून मिलापवाले तम्बू में लाना चाहिए। 17याजक को अपनी उँगलियाँ खून में डुबानी चाहिए और पर्दे के सामने सात बार खून को यहोवा के सामने छिड़कना चाहिए। 18तब याजक को कुछ खून वेदी के सिरे के सींगों पर डालना चाहिए। (वह वेदी मिलापवाले तम्बू में यहोवा के सामने है।) याजक को सारा खून होमबलि की वेदी की नींव पर डालना चाहिए। वह वेदी मिलापवाले तम्बू के द्वार पर है।

19"तब याजक को पशु की सारी चर्बी निकाल लेनी चाहिए और उसे वेदी पर जलाना चाहिए। 20वह बछड़े के साथ वैसा ही करेगा जैसा उसने पापबलि के रूप में चढ़ाये गये बछड़े के साथ किया था। इस प्रकार याजक लोगों के पाप का भुगतान करता है, इससे यहोवा इस्राएल के लोगों को क्षमा कर देगा। 21याजक डेरे के बाहर बछड़े को ले जाएगा और उसे वहाँ जलाएगा। यह पहले के समान होगा। यह पूरे समाज के लिये पापबलि होगी।

22"हो सकता है किसी शासक से संयोगवश, कोई ऐसी बात हो जाए जिसे उसके परमेश्वर यहोवा ने न करने का आदेश दिया है, तो यह शासक दोषी होगा। 23यदि उसे इस पाप का पता चलता है तब उसे एक ऐसा बकरा लाना चाहिए जिसमें कोई दोष न हो। यही उसकी भेंट होगी। 24शासक को बकरे के सिर पर हाथ रखना चाहिए और उसे उस स्थान पर मारना चाहिए जहाँ वे होमबलि को यहोवा के सामने मारते हैं। बकरा पापबलि है। 25याजक को पापबलि का कुछ खून अपनी उँगली पर लेना चाहिए। याजक होमबलि की वेदी के सिरे पर खून छिड़केगा। याजक को बाकी खून होमबलि की वेदी की नींव पर डालना चाहिए 26और याजक को बकरे की सारी चर्बी वेदी पर जलानी चाहिए। इसे उसी प्रकार जलाना चाहिए जिस प्रकार वह मेलबलि की चर्बी को जलाता है। इस प्रकार याजक शासक के पाप का भुगतान करता है और यहोवा शासक को क्षमा करेगा।

27"हो सकता है कि साधारण जनता में से किसी व्यक्ति से संयोगवश कोई ऐसी बात हो जाए जिसे यहोवा ने न करने का आदेश दिया है। 28यदि उस व्यक्ति को अपने पाप का पता चले तो वह एक बकरी लाए जिसमें कोई दोष न हो। यह उस व्यक्ति की भेंट होगी। वह इस बकरी को उस पाप के लिए लाए जो उसने किया है। 29उसे अपना हाथ पशु के सिर पर रखना चाहिए और होमबलि के स्थान पर उसे मारना चाहिए। 30तब याजक को उस बकरी का कुछ खून

जिस प्रकार ... ली थी देखें लैव्यव्यवस्था 3:1–5

अपनी उँगली पर लेना चाहिए और होमबलि की वेदी
के सिरे पर डालना चाहिए। याजक को वेदी की नींव
पर बकरी का सारा खून उँडेलना चाहिए। 31तब याजक
को बकरी की सारी चर्बी उसी प्रकार निकालनी चाहिए
जिस प्रकार मेलबलि से चर्बी निकाली जाती है। याजक
को इसे यहोवा के लिये सुगन्धित धूप की वेदी पर
जलाना चाहिए। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के पापों
का भुगतान कर देगा और यहोवा उस व्यक्ति को क्षमा
कर देगा।

32"यदि यह व्यक्ति पापबलि के रूप में एक मेमने को
लाता है तो उसे एक मादा मेमना लानी चाहिए जिसमें
कोई दोष न हो। 33व्यक्ति को उसके सिर पर हाथ
रखना चाहिए और उसे उस स्थान पर पापबलि के रूप
मे मारना चाहिए जहाँ वे होमबलि के पशु को मारते हैं।
34याजक को अपनी उँगली पर पापबलि का खून लेना
चाहिए और इसे होमबलि की वेदी के सिरे पर डालना
चाहिए। तब उसे मेमने के सारे खून को वेदी की नींव
पर उँड़ेलना चाहिए। 35याजक को मेमने की सारी चर्बी
उसी प्रकार लेनी चाहिए जिस प्रकार मेलबलि के मेमने
की चर्बी ली जाती है। याजक को यहोवा के लिए आग
द्वारा दी जाने वाली भेंटों के समान ही वेदी पर इन
टुकड़ों को जलाना चाहिए। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति
के पापों का भुगतान करेगा और यहोवा उस व्यक्ति को
क्षमा कर देगा।

असावधानी में किए गए विभिन्न अपराध

5 "यदि कोई व्यक्ति न्यायालय में गवाही देने के लिए
बुलाया जाता है और जो कुछ उसने देखा है या
सुना है, उसे नहीं बताता तो वह पाप करता है। उसे
उसके अपराध के लिए अवश्य ही दण्ड भोगना होगा।
2अथवा कोई व्यक्ति किसी ऐसी चीज़ को छूता है जो
अशुद्ध है जैसे अशुद्ध जंगली जानवर का शव या अशुद्ध
मवेशी का शव अथवा रेंगने वाले किसी अशुद्ध जन्तु
का शव और उस व्यक्ति को इसका पता भी नहीं
चलता कि उसने उन चीज़ों को छुआ है, तो भी वह बुरा
करने का दोषी होगा। 3किसी भी व्यक्ति से बहुत सी
ऐसी चीज़ें निकलती है जो शुद्ध नहीं होतीं। कोई व्यक्ति
इनमें से दूसरे व्यक्ति की किसी भी अशुद्ध वस्तु को
अनजाने में ही छू लेता है तब वह दोषी होगा। 4अथवा
ऐसा हो सकता है कि कोई व्यक्ति अच्छा या बुरा करने
का जल्दी में वचन दे देता है। लोग बहुत प्रकार के
वचन जल्दी में दे देते हैं। यदि कोई व्यक्ति ऐसा वचन दे
देता है और उसे भूल जाता है तो वह अपराधी है और
जब उसे अपना वचन याद आता है तब भी वह
अपराधी है। 5अत:, यदि वह इनमें से किसी का दोषी है
तो उसे अपनी बुराई स्वीकार करनी चाहिए। 6उसे
परमेश्वर को अपने किए हुए पाप के लिए दोषबलि
लानी चाहिए। उसे दोषबलि के रूप में अपनी रेवड़ से
एक मादा जानवर लाना चाहिए। यह मेमना या बकरी
हो सकता है। तब याजक वह कार्य करेगा जिससे उस
व्यक्ति के पाप का भुगतान होगा।

7"यदि कोई व्यक्ति मेमना भेंट करने में असमर्थ है तो
उसे दो फ़ाख्ता या कबूतर के दो बच्चे यहोवा को भेंट में
देना चाहिए। यह उसके पाप के लिए दोषबलि होगी।
एक पक्षी दोषबलि के लिए होना चाहिए तथा दूसरा
होमबलि के लिए होना चाहिए। 8उस व्यक्ति को चाहिए
कि वह उन पक्षियों को याजक के पास लाए। पहले
याजक को दोषबलि के रूप में एक पक्षी को चढ़ाना
चाहिए। याजक पक्षी की गर्दन को मोड़ देगा। किन्तु
याजक पक्षी को दो भागों में नहीं बाँटेगा। 9तब याजक
को दोषबलि के खून को वेदी के सिरों पर डालना
चाहिए। तब याजक को बचा हुआ खून वेदी की नींव
पर डालना चाहिए। यह दोषबलि है। 10तब याजक को
नियम के अनुसार होमबलि के रूप में दूसरे पक्षी की
भेंट चढ़ानी चाहिए। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के
अपराधों का भुगतान देगा। और परमेश्वर उस व्यक्ति
को क्षमा करेगा।

11"यदि कोई व्यक्ति दो फ़ाख़्ता या दो कबूतर भेंट
चढ़ाने में असमर्थ हो तो उसे एपा का दसवाँ भाग*
महीन आटा लाना चाहिए। यह उसकी दोषबलि होगी।
उस व्यक्ति को आटे पर तेल नहीं डालना चाहिए। उसे
इस पर लोबान नहीं रखना चाहिए क्योंकि यह दोषबलि
है। 12व्यक्ति को आटा याजक के पास लाना चाहिए।
याजक इसमें से मुट्ठी भर आटा निकालेगा। यह स्मृति
भेंट होगी। याजक यहोवा को आग द्वारा दी गई भेंट पर
वेदी के ऊपर आटे को जलाएगा। यह दोषबलि है। 13इस
प्रकार याजक व्यक्ति के अपराधों के लिए भुगतान
करेगा और यहोवा उस व्यक्ति को क्षमा करेगा। बची
हुई दोषबलि याजक की वैसे ही होगी जैसे अन्नबलि
होती है।"

14यहोवा ने मूसा से कहा, 15"कोई व्यक्ति यहोवा की
पवित्र वस्तुओं* के प्रति अकस्मात् कोई गलती कर
सकता है। तो उस व्यक्ति को एक दोष रहित मेढ़ा लाना
चाहिए। यह मेढ़ा यहोवा के लिए उसकी दोषबलि होगी।
तुम्हें उस मेढ़े का मूल्य निर्धारित करने के लिए अधिकृत
मानक का प्रयोग करना चाहिए। 16उस व्यक्ति को
पवित्र चीज़ों के विपरीत किये गये पाप के लिए भुगतान
अवश्य करना चाहिए। जिन चीज़ों का उसने वायदा
किया है, वे अवश्य देनी चाहिए। उसे मूल्य में पाँचवाँ
भाग जोड़ना चाहिए। उसे यह धन याजक को देना

एपा का दसवां भाग अर्थात् लगभग बराबर दो लीटर।

यहोवा की पवित्र वस्तुओं ये संभवत: विशेष भेंटे हैं जिन्हें व्यक्ति चढ़ाने का वचन देता है।

चाहिए। इस प्रकार याजक दोषबलि के मेढ़े द्वारा उस
व्यक्ति के पाप को धोएगा और यहोवा उसके पाप को
क्षमा करेगा।

17"यदि कोई व्यक्ति पाप करता है और जिन चीज़ों
को न करने का आदेश यहोवा ने दिया है, उन्हें करता
है तो इस बात का कोई महत्व नहीं कि वह इसे नहीं
जानता। वह व्यक्ति अपराधी है और उसे अपने पाप का
फल भोगना होगा। **18**उस व्यक्ति को एक निर्दोष मेढ़ा
अपनी रेवड़ से याजक के पास लाना चाहिए। मेढ़ा
दोषबलि होगा। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के उस
पाप का भुगतान करेगा जिसे उसने अनजाने में किया।
यहोवा उस व्यक्ति को क्षमा करेगा। **19**व्यक्ति अपराधी ह
चाहे वह यह न जानता हो कि वह पाप कर रहा है।
इसलिए उसे यहोवा को दोषबलि देनी होगी।"

बेईमान लोगों की दोषबलि

6 यहोवा ने मूसा से कहा, **2**"कोई व्यक्ति यहोवा के
प्रति इनमें से किसी एक को करके अपराध
कर सकता है: वह किसी अन्य के लिए जिसकी वह
देखभाल कर रहा हो, उसे कुछ होने के बारे में झूठ
बोल सकता है, अथवा कोई व्यक्ति अपने दिए वचन*
के बारे में झूठ बोल सकता है, अथवा कोई व्यक्ति
कुछ चुरा सकता है, या कोई व्यक्ति किसी को ठग
सकता है, **3**अथवा किसी को कोई खोई चीज़ मिले
और तब वह उसके विषय में झूठ बोल सकता है या
कोई व्यक्ति कुछ करने का वचन दे सकता है और तब
अपने दिए गए वचन को पूरा नहीं करता है, अथवा
कोई कुछ अन्य बुरा कर सकता है। **4**यदि कोई
व्यक्ति इनमें से किसी को करता है तो वह पाप
करने का दोषी है। उस व्यक्ति को जो कुछ उसने
चुराया हो या ठगकर जो कुछ लिया हो या किसी व्यक्ति
के कहने से उसकी धरोहर के रूप में जो रखा हो, या
किसी का खोया हुआ पाकर उसके बारे में झूठ बोला
हो **5**या जिस किसी के बारे में झूठा वचन दिया हो, वह
उसे लौटाना चाहिए। उसे पूरा मूल्य चुकाना चाहिए
और तब उसे वस्तु के मूल्य का पाँचवाँ हिस्सा
अतिरिक्त देना चाहिए। उसे असली मालिक को धन
देना चाहिए। उसे यह उसी दिन करना चाहिए जिस दिन
वह दोषबलि लाए।

6"उस व्यक्ति को दोषबलि याजक के पास लाना
चाहिए। यह रेवड़ से एक मेढ़ा होना चाहिए। मेढ़े में कोई
दोष नहीं होना चाहिए। यह उसी मूल्य का होना चाहिए
जो याजक कहे। यह यहोवा को दी गई दोषबलि होगी।
7तब याजक यहोवा के पास जाएगा और उस व्यक्ति के
उन पापों के लिए भुगतान करेगा जिनका वह अपराधी
है, और यहोवा उस व्यक्ति को उन सभी पापों के लिए
क्षमा करेगा जिन्होंने उसे अपराधी बनाया।"

होमबलि

8यहोवा ने मूसा से कहा, **9**"हारून और उसके पुत्रों
को यह आदेश दो: यह होमबलि का नियम है। होमबलि
को वेदी के अग्नि कुण्ड में पूरी रात सवेरा होने तक
रखना चाहिए। वेदी की आग को वेदी पर जलती रहनी
चाहिए। **10**याजक को सन के उत्तम रेशों के बने वस्त्र
पहनने चाहिए। उसे अपने शरीर से चिपका सन का
अर्न्तवस्त्र पहनना चाहिए। तब याजक को वेदी पर
होमबलि पर जलने के बाद बची हुई राख को उठाना
चाहिए। याजक को वेदी की एक ओर राख को रखना
चाहिए। **11**तब याजक को अपने वस्त्रों को उतारना
चाहिए और अन्य वस्त्र पहनने चाहिए। तब उसे डेरे से
बाहर स्वच्छ स्थान पर राख ले जानी चाहिए। **12**किन्तु
वेदी की आग वेदी में जलती रहनी चाहिए। इसे बुझने
नहीं देना चाहिए। याजक को हर सुबह वेदी पर लकड़ी
जलानी चाहिए। उसे वेदी पर लकड़ी रखनी चाहिए। उसे
मेलबलि की चर्बी जलानी चाहिए। **13**वेदी पर आग लगातार
जलती रहनी चाहिए। यह बुझनी नहीं चाहिए।

अन्नबलि

14"अन्नबलि का यह नियम है कि: हारून के पुत्रों
को वेदी के सामने यहोवा के लिए इसे लाना चाहिए।
15याजक को अन्नबलि में से मुट्ठी भर उत्तम आटा
लेना चाहिए। तेल और लोबान अन्नबलि पर अवश्य
होना चाहिए। याजक को अन्नबलि को वेदी पर जलाना
चाहिए। यह यहोवा को एक सुगन्धित और स्मृति भेंट
होगी।

16"हारून और उसके पुत्रों को बची हुई अन्नबलि
को खाना चाहिए। अन्नबलि एक प्रकार की अख़मीरी
रोटी की भेंट है। याजक को इस रोटी को पवित्र स्थान
में खाना चाहिए। उन्हें मिलापवाले तम्बू के आँगन में
अन्नबलि खानी चाहिए। **17**अन्नबलि खमीर के साथ
नहीं पकाई जानी चाहिए। मुझको (यहोवा को) आग
द्वारा दी जाने वाली बलि में से उनके (याजकों के) भाग
के रूप में मैंने इसे दिया है। यह पापबलि तथा दोषबलि
के समान अत्यन्त पवित्र है। **18**हारून की सन्तानों में से
हर एक लड़का आग द्वारा यहोवा को चढ़ाई गई भेंट में
से खा सकता है। यह तुम्हारी पीढ़ियों का सदा के
लिए नियम है। इन बलियों का स्पर्श उन व्यक्तियों को
पवित्र करता है।"*

अपने दिए वचन "बन्धक सा सुरक्षा धन" यह ऐसा कुछ है जिसे तुम किसी व्यक्ति को इस बात के प्रमाण के रूप में देते हो कि तुम उससे कुछ अधिक महत्वपूर्ण करोगे।

इन... करता है इसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है: इन्हें जो कोई छुए उसे पहले पवित्र (शुद्ध) हो लेना चाहिए।

याजकों की अन्नबलि

19यहोवा ने मूसा से कहा, 20“हारून तथा उसके पुत्रों
को जो बलि यहोवा को लानी चाहिए, वह यह है। उन्हें
यह उस दिन करना चाहिए जिस दिन हारून का अभिषेक
हुआ है। उन्हें सदा दो क्वार्ट* उत्तम महीन आटा अन्नबलि
के लिए लेना चाहिए। उन्हें इसका आधा प्रात:काल तथा
आधा सन्ध्या काल में लाना चाहिए। 21उत्तम महीन आटे
में तेल मिलाना चाहिए और उसे कड़ाही में भूनना
चाहिए। जब यह भुन जाए तब इसे अन्दर लाना चाहिए।
तुम्हें अन्नबलि का चूरमा बना लेना चाहिए। इस की
सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करेगी।

22‘हारून के वंश में से वह याजक जिसका हारून के
स्थान पर अभिषेक हो, यहोवा को यह अन्नबलि चढ़ाए।
यह नियम सदा के लिये है। यहोवा के लिए अन्नबलि
पूरी तरह जलाई जानी चाहिए। 23याजक की हर एक
अन्नबलि पूरी तरह जलाई जानी चाहिए। इसे खाना नहीं
चाहिए।”

पापबलि के नियम

24यहोवा ने मूसा से कहा, 25“हारून और उसके पुत्रों
से कहो: पापबलि के लिए यह नियम है कि पापबलि
को भी वहीं मारा जाना चाहिए जहाँ यहोवा के सामने
होमबलि को मारा जाता है। यह अत्यन्त पवित्र है। 26उस
याजक को इसे खाना चाहिए, जो पापबलि चढ़ाता है।
उसे पवित्र स्थान पर मिलापवाले तम्बू के आँगन में
इसे खाना चाहिए। 27पापबलि के माँस का स्पर्श किसी
भी व्यक्ति को पवित्र करता है। यदि छिड़का हुआ खून
किसी के वस्त्रों पर पड़ता है तो उन वस्त्रों को धो दिया
जाना चाहिए। तुम्हें उन वस्त्रों को एक निश्चित, पवित्र
स्थान में धोना चाहिए। 28यदि पापबलि किसी मिट्टी के
बर्तन में उबाली जाए तो उस बर्तन को फोड़ देना चाहिए।
यदि पापबलि को काँसे के बर्तन में उबाला जाय तो
बर्तन को माँजा जाए और पानी में धोया जाए।

29“परिवार का प्रत्येक पुरुष सदस्य याजक, पापबलि
को खा सकता है। यह अत्यन्त पवित्र है। 30किन्तु यदि
पापबलि का खून पवित्र स्थान को शुद्ध करने के लिए
मिलापवाले तम्बू में ले जाया गया हो तो पापबलि को
आग में जला देना चाहिए। याजक उस पापबलि को नहीं
खा सकते।

दोषबलि

7 “दोषबलि के लिए यह नियम है। यह अत्यन्त पवित्र
है। 2याजक को दोषबलि को उसी स्थान पर मारना
चाहिए जिस पर वह होमबलियों को मारता है। याजक
को दोषबलि में से वेदी के चारों ओर खून छिड़कना
चाहिए। 3याजक को दोषबलि की सारी चर्बी चढ़ानी
चाहिए। उसे चर्बी भरी पूँछ, भीतरी भागों को ढकने
वाली चर्बी, 4दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी,
पुट्ठो की चर्बी, और कलेजे की चर्बी चढ़ानी चाहिए।
5याजक को वेदी पर उन सभी चीज़ों को जलाना चाहिए।
ये यहोवा को आग द्वारा दी गई बलि होगी। यह दोषबलि
है।

6“हर एक पुरुष जो याजक है, दोषबलि खा सकता
है। यह बहुत पवित्र है। अत: इसे एक निश्चित पवित्र
स्थान में खाना चाहिए। 7दोषबलि पापबलि के समान है।
दोनों के लिए एक जैसे नियम हैं। वह याजक, जो बलि
चढ़ाता है, उसको वह प्राप्त करेगा। 8वह याजक जो
बलि चढ़ाता है चमड़ा भी होमबलि से ले सकता है। 9हर
एक अन्नबलि चढ़ाने वाले याजक की होती है। याजक
उन अन्नबलियों को लेगा जो चूल्हे में पकी हों, या
कड़ाही में पकी हों या तवे पर पकी हों। 10अन्नबलि
हारून के पुत्रों की होगी। उससे कोई अन्तर नहीं पड़ेगा
कि वे सूखी अथवा तेल मिली हैं। हारून के पुत्र याजक
समान भागीदार होंगे।

मेलबलि

11“ये मेलबलि के नियम हैं, जिसे कोई व्यक्ति यहोवा
को चढ़ाता है: 12कोई व्यक्ति मेलबलि अपनी कृतज्ञता
प्रकट करने के लिए ला सकता है। यदि वह कृतज्ञता
प्रकट करने के लिए बलि लाता है तो उसे तेल मिले
अखमीरी फुलके, अखमीरी चपातियाँ और तेल मिले
उत्तम आटे के फुलके भी लाने चाहिए।13उस व्यक्ति को
अपनी मेलबलि के लिए खमीरी रोटियों के साथ अपनी
बलि लानी चाहिए। यह वह बलि है जिसे कोई व्यक्ति
यहोवा के प्रति कृतज्ञता दर्शाने के लिए लाता है। 14उन
रोटियों में से एक उस याजक की होगी जो मेलबलि के
खून को छिड़कता है। 15इस मेलबलि का माँस उसी
दिन खाया जाना चाहिए जिस दिन यह चढ़ाया जाए।
कोई व्यक्ति परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के
लिए यह भेंट चढ़ाता है। किन्तु कुछ भी माँस अगले दिन
के लिए नहीं बचना चाहिए।

16“कोई व्यक्ति मेलबलि यहोवा को केवल भेंट चढ़ाने
की इच्छा से ला सकता है अथवा सम्भवत: उस व्यक्ति
ने यहोवा को विशेष वचन दिया हो। यदि यह सत्य है तो
बलि उसी दिन खायी जानी चाहिए जिस दिन वह उसे
चढ़ाये। यदि कुछ बच जाए तो उसे अगले दिन खा लेना
चाहिए। 17किन्तु यदि इस बलि का कुछ माँस फिर भी
तीसरे दिन के लिए बच जाए तो उसे आग में जला दिया
जाना चाहिए। 18यदि कोई व्यक्ति मेलबलि का माँस
तीसरे दिन खाता है तो यहोवा उस व्यक्ति से प्रसन्न नहीं
होगा। यहोवा उस बलि को उसके लिए महत्व नहीं देगा।
यह बलि घृणित वस्तु बन जाएगी और यदि कोई व्यक्ति

दो क्वार्ट “1/10 एपा।”

उस माँस का कुछ भी खाता है तो वह अपने पाप के
लिए उत्तरदायी होगा।
19"लोगों को ऐसा माँस भी नहीं खाना चाहिए जिसे
कोई अशुद्ध वस्तु छू ले। उन्हें इस माँस को आग में
जला देना चाहिए। वे सभी व्यक्ति जो शुद्ध हों, मेलबलि
का माँस खा सकते हैं। 20किन्तु यदि कोई व्यक्ति अपवित्र
हो और यहोवा के लिए मेलबलि में से कुछ माँस खा ले
तो उस व्यक्ति को उस के लोगों से अलग कर देना
चाहिए।
21"सम्भव है कि कोई व्यक्ति कोई ऐसी चीज़ छू ले
जो अशुद्ध है। यह चीज़ लोगों द्वारा या गन्दे जानवर द्वारा
या किसी घृणित गन्दी चीज़ द्वारा अशुद्ध बनाई जा सकती
है। वह व्यक्ति अशुद्ध हो जाएगा और यदि वह यहोवा
के लिए मेलबलि से कुछ माँस खा ले तो उस व्यक्ति को
उसके लोगों से अलग कर देना चाहिए।"
22यहोवा ने मूसा से कहा, 23"इस्राएल के लोगों से
कहो: तुम लोगों को गाय, भेड़ और बकरी की चर्बी
नहीं खानी चाहिए। 24तुम उस जानवर की चर्बी का
प्रयोग कर सकते हो जो स्वत: मरा हो या अन्य जानवरों
द्वारा फाड़ दिया गया हो। किन्तु तुम उस जानवर को
कभी नहीं खाना। 25यदि कोई व्यक्ति उस जानवर की
चर्बी खाता है जो यहोवा को आग द्वारा भेंट चढ़ाया गया
हो तो उस व्यक्ति को उस के लोगों से अलग कर दिया
जाना चाहिए। 26तुम चाहे जहाँ भी रहो, तुम्हें किसी पक्षी
या जानवर का खून कभी नहीं खाना चाहिए। 27यदि
कोई व्यक्ति कुछ खून खाता है तो उस व्यक्ति को उस
के लोगों से अलग कर दिया जाना चाहिए।"

उत्तोलन बलि के नियम

28यहोवा ने मूसा से कहा, 29"इस्राएल के लोगों से
कहो: यदि कोई व्यक्ति यहोवा को मेलबलि लाए तो उस
व्यक्ति को उस भेंट का एक भाग यहोवा को देना
चाहिए। 30भेंट का वह भाग आग में जलाया जाएगा। उसे
उस भेंट का वह भाग अपने हाथ में लेकर चलना
चाहिए। उसे जानवर की छाती की चर्बी लेकर चलना
चाहिए और छाती को याजक के पास ले जाना चाहिए।
छाती को यहोवा के सामने ऊपर उठाया जायेगा। यह
उत्तोलन बलि होगी। 31तब याजक को वेदी पर चर्बी
जलानी चाहिए। किन्तु जानवर की छाती हारून और
उसके पुत्रों की होगी। 32मेलबलि से दायीं जांघ हारून
के पुत्रों में से याजक को देनी चाहिये। 33मेलबलि में से
दायीं जांघ उस याजक की होगी जो मेलबलि की चर्बी
और खून चढ़ाता है। 34मैं (यहोवा) उत्तोलन बलि की
छाती तथा मेलबलि की दायीं जांघ इस्राएल के लोगों से
ले रहा हूँ और मैं उन चीज़ों को हारून और उसके पुत्रों
को दे रहा हूँ। इस्राएल के लोगों के लिए यह नियम सदा
के लिए होगा।"
35यहोवा को आग द्वारा दी गई भेंट हारून और
उसके पुत्रों की है, जब कभी हारून और उसके पुत्र
यहोवा के याजक के रूप में सेवा करते हैं तब वे बलि
का वह भाग पाते हैं। 36जिस समय यहोवा ने याजकों
का अभिषेक किया उसी समय उन्होंने इस्राएल के
लोगों को वे भाग याजकों को देने का आदेश दिया। वे
भाग सदा उनकी पीढ़ी याजकों को दिए जाने हैं।
37ये होमबलि, अन्नबलि, पापबलि, दोषबलि, याजकों
की नियुक्ति, और मेलबलि के नियम हैं। 38यहोवा ने
सीनै पर्वत पर ये नियम मूसा को दिए। यहोवा ने ये
नियम उस दिन दिए जिस दिन उसने इस्राएल के लोगों
को सीनै मरुभूमि में यहोवा के लिए अपनी भेंट लाने
का आदेश दिया था।

मूसा हारून और उसके पुत्रों को उपासना के लिए पवित्र करता है

8 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"हारून और उसके साथ
उसके पुत्रों, उनके वस्त्र, अभिषेक का तेल, पापबलि
का बैल, दो भेड़ें और अखमीरी मैदे के फुलके की
टोकरी लो, 3तब मिलापवाले तम्बू के द्वार पर लोगों को
एक साथ लाओ।"
4मूसा ने वही किया जो यहोवा ने उसे आदेश दिया।
लोग मिलापवाले तम्बू के द्वार पर एक साथ मिले। 5तब
मूसा ने लोगों से कहा, "यह वही है जिसे करने का
आदेश यहोवा ने दिया है।"
6तब मूसा, हारून और उसके पुत्रों को लाया। उसने
उन्हें पानी से नहलाया। 7तब मूसा ने हारून को अन्त:वस्त्र
पहनाया। मूसा ने हारून के चारों ओर एक पेटी बाँधी।
तब मूसा ने हारून को बाहरी लबादा पहनाया। इसके
ऊपर मूसा ने हारून को चोगा पहनाया और उस पर
एपोद पहनाई, फिर उस पर सुन्दर पटुका बाँधा। 8तब
मूसा ने न्याय की थैली की जेब में ऊरीम और तुम्मीम
रखा। 9मूसा ने हारून के सिर पर पगड़ी भी बाँधी। मूसा
ने इस पगड़ी के अगले भाग पर सोने की पट्टी बांधी।
यह सोने की पट्टी पवित्र मुकुट के समान है। मूसा ने
यह यहोवा के आदेश के अनुसार किया।
10तब मूसा ने अभिषेक का तेल लिया और पवित्र
तम्बू तथा इसमें की सभी चीज़ों पर छिड़का। इस प्रकार
मूसा ने उन्हें पवित्र किया। 11मूसा ने अभिषेक का कुछ
तेल वेदी पर सात बार छिड़का। मूसा ने वेदी, उसके
उपकरणों और तश्तरियों का अभिषेक किया। मूसा ने
बड़ी चिलमची और उसके आधार पर भी अभिषेक का
तेल छिड़का। इस प्रकार मूसा ने उन्हें पवित्र किया।
12तब मूसा ने अभिषेक के कुछ तेल को हारून के
सिर पर डाला। इस प्रकार उसने हारून को पवित्र
किया। 13तब मूसा हारून के पुत्रों को लाया और उन्हें
विशेष वस्त्र पहनाए। उसने उन्हें पटुके पेटियाँ बाँधे। तब

उसने उन के सिर पर पगड़ियाँ बाँधी। मूसा ने ये सब वैसे ही किया जैसे यहोवा ने आदेश दिया था।

14तब मूसा पापबलि के बैल को लाया। हारून और उसके पुत्रों ने अपने हाथों को पापबलि के बैल के सिर पर रखा। **15**तब मूसा ने बैल को मारा। मूसा ने उसके खून को लिया। मूसा ने अपनी उँगली का उपयोग किया और कुछ खून वेदी पर के सभी कोनों पर छिड़का। इस प्रकार मूसा ने वेदी को बलि के लिए शुद्ध किया। तब मूसा ने वेदी की नींव पर खून को उँडेला। इस प्रकार मूसा ने वेदी को लोगों के पापों के भुगतान के लिए पाप बलियों के लिए तैयार किया। **16**मूसा ने बैल के भीतरी भागों से सारी चर्बी ली। मूसा ने दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी के साथ कलेजे को ढकने वाली चर्बी ली। तब उसने उन्हें वेदी पर जलाया। **17**किन्तु मूसा बैल के चमड़े, उसके माँस और शरीर के व्यर्थ भीतरी भाग को डेरे के बाहर ले गया। मूसा ने डेरे के बाहर आग में उन चीज़ों को जलाया। मूसा ने ये सब वैसा ही किया जैसा यहोवा ने आदेश दिया था।

18मूसा होमबलि के मेढ़े को लाया। हारून और उसके पुत्रों ने अपने हाथ मेढ़े के सिर पर रखे। **19**तब मूसा ने मेढ़े को मारा। उसने वेदी के चारों ओर खून छिड़का। **20-21**मूसा ने मेढ़े को टुकड़ों में काटा। मूसा ने भीतरी भागों और पैरों को पानी से धोया। तब मूसा ने पूरे मेढ़े को वेदी पर जलाया। मूसा ने उसका सिर, टुकड़े और चर्बी को जलाया। यह आग द्वारा होमबलि थी। यह यहोवा के लिए सुगन्ध थी। मूसा ने यहोवा के आदेश के अनुसार वे सब काम किए।

22तब मूसा दूसरे मेढ़े को लाया। इस मेढ़े का उपयोग हारून और उसके पुत्रों को याजक बनाने के लिए किया गया। हारून और उसके पुत्रों ने अपने हाथ मेढ़े के सिर पर रखे। **23**तब मूसा ने मेढ़े को मारा। उसने इसका कुछ खून हारून के कान के निचले सिरे पर, दाएं हाथ के अंगूठे पर और हारून के दाएं पैर के अंगूठे पर लगाया। **24**तब मूसा हारून के पुत्रों को वेदी के पास लाया। मूसा ने कुछ खून उनके दाएं कान के निचले सिरे पर, दाएं हाथ के अंगूठे पर और उनके दाएं पैर के अंगूठों पर लगाया। तब मूसा ने वेदी के चारों ओर खून डाला। **25**मूसा ने चर्बी, चर्बी भरी पूँछ, भीतरी भाग की सारी चर्बी, कलेजे को ढकने वाली चर्बी, दोनों गुर्दे और उनकी चर्बी और दायीं जाँघ को लिया। **26**एक टोकरी अखमीरी मैदे के फुलके हर एक दिन यहोवा के सामने रखी जाती हैं। मूसा ने उन फुलकियों में से एक रोटी, और एक तेल से सनी फुलकी, और एक अखमीरी चपाती ली। मूसा ने उन फुलकियों के टुकड़ों को चर्बी तथा मेढ़े की दायीं जाँघ पर रखा। **27**तब मूसा ने उन सभी को हारून और उसके पुत्रों के हाथों में रखा। मूसा ने उन टुकड़ों को यहोवा के सामने उत्तोलन बलि के रूप में हाथों में ऊपर उठवाया। **28**तब मूसा ने इन चीज़ों को हारून और उसके पुत्रों के हाथों से लिया। मूसा ने उन्हें वेदी पर होमबलि के ऊपर जलाया। इस प्रकार वह बलि हारून और उसके पुत्रों को याजक नियुक्त करने के लिए थी। यह आग द्वारा दी गई बलि थी। यह यहोवा को प्रसन्न करने के लिए सुगन्ध थी। **29**तब मूसा ने उस मेढ़े की छाती को लिया और यहोवा के सामने उत्तोलन बलि के लिए ऊपर उठवाया। याजकों को नियुक्त करने के लिए यह मूसा के हिस्से का मेढ़ा था। यह ठीक वैसा ही था जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था। **30**मूसा ने अभिषेक का कुछ तेल और वेदी पर का कुछ खून लिया। मूसा ने उस में से थोड़ा हारून और उसके वस्त्रों पर छिड़का और कुछ हारून के उन पुत्रों पर जो उसके साथ थे और कुछ उनके वस्त्रों पर छिड़का। इस प्रकार मूसा ने हारून, उसके वस्त्रों, उसके पुत्रों और उनके वस्त्रों को पवित्र बनाया।

31तब मूसा ने हारून और उसके पुत्रों से कहा, "क्या तुम्हें मेरा आदेश* याद है? मैंने कहा, 'हारून और उसके पुत्र इन चीज़ों को खाएंगे।' अत: याजक नियुक्ति संस्कार से रोटी की टोकरी और माँस लो। मिलापवाले तम्बू के द्वार पर उस माँस को उबालो। तुम उस माँस और उस रोटी को उसी स्थान पर खाओगे। **32**यदि कुछ माँस या रोटी बच जाए तो उसे जला देना। **33**याजक नियुक्ति संस्कार सात दिन तक चलेगा। तुम मिलापवाले तम्बू से तब तक नहीं जाओगे जब तक तुम्हारा याजक नियुक्ति संस्कार का समय पूरा नहीं हो जाता। **34**यहोवा ने उन कामों को करने का आदेश दिया था जो आज किए गए उन्होंने तुम्हारे पापों के भुगतान के लिए यह आदेश दिया था। **35**तुम्हें मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सात दिन तक, पूरे दिन रात रहना चाहिए। यदि तुम यहोवा का आदेश नहीं मानते हो तो तुम मर जाओगे। यहोवा ने मुझे ये आदेश दिया था।" **36**इसलिए हारून और उसके पुत्रों ने वह सब कुछ किया जिसे करने का आदेश यहोवा ने मूसा को दिया था।

परमेश्वर द्वारा याजकों को स्वीकृति

9 आठवें दिन, मूसा ने हारून और उसके पुत्रों को बुलाया। उस ने इस्राएल के बुजुर्गों (नेताओं) को भी बुलाया। **2**मूसा ने हारून से कहा, "अपने पशुओं में से एक बछड़ा और एक मेढ़ा लो। इन जानवरों में कोई दोष नहीं होना चाहिए। बछड़ा पापबलि होगा और मेढ़ा होमबलि होगा। इन जानवरों को यहोवा को भेंट करो।

मेरा आदेश यहाँ मेरा आदेश से अभिप्राय है मेरे द्वारा दिया गया यहोवा का आदेश मूसा का वचन, यहोवा का वचन है क्योंकि वह यहोवा का प्रवक्ता है। इसलिए यहाँ मूसा ने यहोवा के आदेश को मेरा आदेश कहा है।

3इस्राएल के लोगों से कहो, ‘पापबलि हेतु एक बकरा
लो। एक बछड़ा और एक मेमना होमबलि के लिए लो।
बछड़ा और मेमना दोनों एक वर्ष के होने चाहिए। इन
जानवरों में कोई दोष नहीं होना चाहिए। 4एक साँड़ और
एक मेढ़ा मेलबलि के लिए लो। उन जानवरों को और
तेल मिली अन्नबलि लो और उन्हें यहोवा को भेंट
चढ़ाओ। क्यों? क्योंकि आज यहोवा की महिमा तुम्हारे
सामने प्रकट होगी।’”

5इसलिए सभी लोग मिलापवाले तम्बू में आए और वे
सभी उन चीज़ों को लाए जिनके लिए मूसा ने आदेश
दिया था। सभी लोग यहोवा के सामने खड़े हुए। 6मूसा
ने कहा, “तुमने वही किया है जो यहोवा ने आदेश
दिया। तुम लोग यहोवा की महिमा देखोगे।”

7तब मूसा ने हारून से ये बातें कहीं, “जाओ और वह
करो जिसके लिए यहोवा ने आदेश दिया था। वेदी के
पास जाओ और पापबलि तथा होमबलि चढ़ाओ। यह
सब अपने और लोगों के पापों के भुगतान के लिए
करो। तुम लोगों की लायी हुई बलि को लो और उसे
यहोवा को अर्पित करो। यह उनके पापों का भुगतान
होगा।”

8इसलिए हारून वेदी के पास गया। उसने बछड़े को
पापबलि हेतु मारा। यह पापबलि स्वयं उसके अपने लिए
थी। 9तब हारून के पुत्र हारून के पास खून लाए।
हारून ने अपनी उँगली ख़ून में डाली और वेदी के सिरों
पर इसे लगाया। तब हारून ने वेदी की नींव पर खून
उँडेला। 10हारून ने पापबलि से चर्बी, गुर्दे और कलेजे
की चर्बी को लिया। उस ने उन्हें वेदी पर जलाया। उसने
उसी प्रकार किया जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को
आदेश दिया था। 11तब हारून ने डेरे के बाहर माँस
और चमड़े को जलाया। 12इसके बाद, हारून ने होमबलि
के लिए उस जानवर को मारा। जानवर को टुकड़ों में
काटा गया। हारून के पुत्र खून को हारून के पास लाए
और हारून ने वेदी के चारों ओर खून डाला। 13हारून
के पुत्रों ने उन टुकड़ों और होमबलि का सिर हारून
को दिया। तब हारून ने उन्हें वेदी पर जलाया। 14हारून
ने होमबलि के भीतरी भागों और पैरों को धोया और
उसने उन्हें वेदी पर जलाया।

15तब हारून लोगों की बलि लाया। उसने लोगों के
लिए पापबलि वाले बकरे को मारा। उसने बकरे को
पहले की तरह पापबलि के लिए चढ़ाया। 16हारून होमबलि
को लाया और उसने वह बलि चढ़ाई। वैसे ही जैसे
यहोवा ने आदेश दिया था। 17हारून अन्नबलि को वेदी
के पास लाया। उसने मुट्ठी भर अन्न लिया और प्रात:
काल की नित्य बलि के साथ उसे वेदी पर रखा।
18हारून ने लोगों के लिए मेलबलि के साँड़ और मेढ़े
को मारा। हारून के पुत्र खून को हारून के पास लाए।
हारून ने इस खून को वेदी के चारों ओर उँडेला।
19हारून के पुत्र साँड़ और मेढ़े की चर्बी भी लाए। वे
चर्बी भरी पूँछ, भीतरी भागों को ढकने वाली चर्बी, गुर्दे
और कलेजे को ढकने वाली चर्बी भी लाए। 20हारून के
पुत्रों ने चर्बी के इन भागों को साँड़ और मेढ़े की
छातियों पर रखा। हारून ने चर्बी के भागों को लेकर
उसे वेदी पर जलाया। 21मूसा के आदेश के अनुसार
हारून ने छातियों और दायीं जाँघ को उत्तोलन भेंट के
लिए यहोवा के सामने हाथों में ऊपर उठाया।

22तब हारून ने अपने हाथ लोगों की ओर उठाए
और उन्हें आशीर्वाद दिया। हारून पापबलि, होमबलि
और मेलबलि को चढ़ाने के बाद वेदी से नीचे उतर
आया। 23मूसा और हारून मिलापवाले तम्बू में गए और
फिर बाहर आकर उन्होंने लोगों को आशीर्वाद दिया।
यहोवा की उपस्थिति से सभी लोगों के सामने तेज प्रकट
हुआ। 24यहोवा से अग्नि प्रकट हुई और उसने वेदी पर
होमबलि और चर्बी को जलाया। सभी लोगों ने जब यह
देखा तो वे चिल्लाए और उन्होंने धरती पर गिरकर
प्रणाम किया।

परमेश्वर की ज्वाला द्वारा विनाश

10 फिर तभी हारून के पुत्रों नादाब और अबीहू ने
पाप किया। दोनों पुत्रों ने लोबान जलाने के लिए
तश्तरी ली। उन्होंने एक अलग ही आग का प्रयोग
किया और लोबान को जलाया। उन्होंने उस आग का
उपयोग नहीं किया जिसके उपयोग का आदेश मूसा ने
उन्हें दिया था। 2इसलिए यहोवा से ज्वाला प्रकट हुई
और उसने नादाब और अबीहू को नष्ट कर दिया। वे
यहोवा के सामने मरे।

3तब मूसा ने हारून से कहा, “यहोवा कहता है, ‘जो
याजक मेरे पास आए, उन्हें मेरा सम्मान करना चाहिए!
मै उन के लिये और सब ही के लिये पवित्र माना जाऊँ।’”
इसलिए हारून अपने मरे हुए पुत्रों के लिए खामोश रहा।

4हारून के चाचा उज्जीएल के दो पुत्र थे। वे मीशाएल
और एलसाफान थे। मूसा ने उन पुत्रों से कहा, “पवित्र
स्थान के सामने के भाग में जाओ। अपने चचेरे भाइयों
के शवों को उठाओ और उन्हें डेरे के बाहर ले जाओ।”

5इसलिए मीशाएल और एलसाफान ने मूसा का आदेश
माना। वे नादाब और अबीहू के शवों को बाहर लाए।
नादाब और अबीहू तब तक अपने विशेष अन्त:वस्त्र
पहने थे।

6तब मूसा ने हारून और उसके अन्य पुत्रों एलीआज़ार
और ईतामार से बात की। मूसा ने उनसे कहा, “कोई
शोक प्रकट न करो! अपने वस्त्र न फाड़ो या अपने
बालों को न बिखेरो! शोक प्रकट न करो, तुम मरोगे
नहीं और यहोवा तुम सभी लोगों से अप्रसन्न नहीं होगा।
इस्राएल का पूरा राष्ट्र तुम लोगों का सम्बन्धी है। वे
यहोवा द्वारा नादाब और अबीहू के जलाने के विषय में

रो पीट सकते हैं। 7किन्तु तुम लोगों को मिलापवाला
तम्बू भी नहीं छोड़ना चाहिए। यदि तुम लोग उस द्वार से
बाहर जाओगे तो मर जाओगे। क्यों? क्योंकि यहोवा के
अभिषेक का तेल तुम ने लगा रखा है।" सो हारून,
एलीआज़ार और ईतामार ने मूसा की आज्ञा मानी।

8तब यहोवा ने हारून से कहा, 9"तुम्हें और तुम्हारे
पुत्रों को दाखमधु या मद्य उस समय नहीं पीनी चाहिए
जब तुम लोग मिलापवाले तम्बू में आओ। यदि तुम ऐसा
करोगे तो मर जाओगे! यह नियम तुम्हारी पीढ़ियों में
सदा चलता रहेगा। 10तुम्हें, जो चीज़ें पवित्र हैं तथा जो
पवित्र नहीं हैं, जो शुद्ध हैं और जो शुद्ध नहीं हैं उनमें
अन्तर करना चाहिए। 11यहोवा ने मूसा को अपने नियम
दिए और मूसा ने उन नियमों को लोगों को दिया।
"हारून, तुम्हें उन सभी नियमों की शिक्षा लोगों को देनी
चाहिए।"

12अभी तक हारून के दो पुत्र एलीआज़ार और ईतामार
जीवित थे। मूसा ने हारून और उसके दोनों पुत्रों से बात
की। मूसा ने कहा, "कुछ अन्नबलि उन बलियों में से
बची है जो आग में जलाई गई थी। तुम लोग अन्नबलि
का वह भाग खाओगे। किन्तु तुम लोगों को इसे बिना
ख़मीर मिलाए खाना चाहिये। इसे वेदी के पास खाओ।
क्यों? क्योंकि वह भेंट बहुत पवित्र है। 13वह उस भेंट
का भाग है, जो यहोवा के लिए आग में जलाई गई थी
और जो नियम मैंने तुमको बताया, वह सिखाता है कि
वह भाग तुम्हारा और तुम्हारे पुत्रों का है। किन्तु तुम्हें
इसे पवित्र स्थान पर ही खाना चाहिए।

14"तुम, तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रियाँ भी उत्तोलन
बलि से छाती को और मेलबलि से जाँघ को खा सकेंगे।
इन्हें तुम्हें किसी पवित्र स्थान पर नहीं खाना है। बल्कि
तुम्हें इन्हें किसी शुद्ध स्थान पर खाना चाहिए। क्यों?
क्योंकि ये मेलबलियों में से मिली है। इस्राएल के लोग ये
बलि यहोवा को देते हैं। उन जानवरों के कुछ भाग को
लोग खाते हैं किन्तु छाती और जाँघ तुम्हारा भाग है।
15लोगों को अपने जानवरों की चर्बी आग में जलाई
जाने वाली बलि के रूप में लानी चाहिए। उन्हें मेलबलि
की जाँघ और उत्तोलन बलि की छाती भी लानी चाहिए।
उसे यहोवा के सामने उत्तोलित करना होगा और यह
बलि तुम्हारा भाग होगा। यह तुम्हारा और तुम्हारे बच्चों
का होगा। यहोवा के आदेश के अनुसार बलि का वह
भाग सदा तुम्हारा होगा।"

16मूसा ने पापबलि के बकरे के बारे में पूछा। किन्तु
उसे पहले ही जला दिया गया था। मूसा हारून के शेष
पुत्रों एलीआज़ार और ईतामार पर बहुत क्रोधित हुआ।
मूसा ने कहा, 17"तुम लोगों को यह बकरा पवित्र स्थान
पर खाना था। यह बहुत पवित्र है! तुम लोगों ने इसे
यहोवा के सामने क्यों नहीं खाया? यहोवा ने उसे तुम
लोगों के अपराधों को दूर करने के लिए दिया। वह
बकरा लोगों के पापों के भुगतान के लिए था। 18देखो!
तुम उस बकरे का खून पवित्र स्थान के भीतर नहीं
लाए। तुम्हें इस बकरे को पवित्र स्थान पर खाना था
जैसा कि मैंने आदेश दिया है।"

19किन्तु हारून ने मूसा से कहा, "सुनों, आज वे
अपनी पापबलि और होमबलि यहोवा के सामने लाए।
किन्तु तुम जानते हो कि आज मेरे साथ क्या हुआ! क्या
तुम यह समझते हो कि यदि मैं पापबलि को आज
खाऊँगा तो यहोवा प्रसन्न होगा? नहीं!"* 20जब मूसा ने
यह सुना तो वह सहमत हो गया।

माँस भोजन के नियम

11 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, 2"इस्राएल
के लोगों से कहो: ये जानवर हैं जिन्हें तुम खा
सकते हो: 3यदि जानवर के खुर दो भागों में बँटे हों
और वह जानवर जुगाली भी करता हो तो तुम उस
जानवर का माँस खा सकते हो।

ऐसे जानवर जिनका माँस नहीं खाना चाहिए

4-6"कुछ जानवर जुगाली करते हैं, किन्तु उनके खुर
फटे नहीं होते। तो ऐसे जानवरों को मत खाओ-ऊँट,
शापान और खरगोश वैसे हैं, इसलिए वे तुम्हारे लिए
अपवित्र हैं। 7अन्य जानवर दो भागों में बँटी खुरों वाले
हैं, किन्तु वे जुगाली नही करते। उन जानवरों को मत
खाओ। सुअर वैसे ही हैं, अत: वे तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं।
8उन जानवरों का माँस मत खाओ! उनके शव को
छूना भी मत! वे तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं!

समुद्री भोजन के नियम

9"यदि कोई जानवर समुद्र या नदी में रहता है और
उसके पंख और परतें हैं तो तुम उस जानवर को खा
सकते हो। 10-11किन्तु यदि जानवर समुद्र या नदी में
रहता है और उसके पंख और परतें नहीं होतीं तो उस
जानवर को तुम्हें नहीं खाना चाहिए। वह गन्दे जानवरों
में से एक हैं। उस जानवर का माँस मत खाओ। उसके
शव को छूना भी मत! 12तुम्हें पानी के हर एक जानवर
को, जिसके पंख और परतें नहीं होतीं, उसे घिनौने
जानवरों में समझना चाहिए।

अभोज्य पक्षी

13"तुम्हें निम्न पक्षियों को भी घिनौने पक्षी समझना
चाहिए। इन पक्षियों में से किसी को मत खाओ : उकाब,
गिद्ध, शिकारी पक्षी, 14चील, सभी प्रकार के बाज नामक
पक्षी, 15सभी प्रकार के काले पक्षी, 16शुतुर्मुर्ग, सींग

क्या ... नहीं हारून अपने दो पुत्रों की मृत्यु के कारण इतना अधिक परेशान था कि पापबलि को नहीं खा सका था।

वाला उल्लू, समुद्री जलमुर्ग, सभी प्रकार के बाज, 17उल्लू,
समुद्री काग, बड़ा उल्लू, 18जलमुर्ग, मछली खाने वाले
पेलिकन नामक खेत जलपक्षी, समुद्री गिद्ध, 19हंस, सभी
प्रकार के सारस, कठफोड़वा और चमगादड़।

कीटपतंगों को खाने के नियम

20"और सभी ऐसे कीट पतंगे जिनके पंख होते हैं तथा
जो रेंग कर चलते भी हैं। ये घिनौने कीट पतंगे हैं!
21किन्तु यदि पतंगों के पंख हैं और वह रेंग कर चलता
भी है तथा उसके पैरों के ऊपर टांगों में ऐसे जोड़ हैं कि
वह उछल सके तो तुम उन पतंगों को खा सकते हो।
22ये पतंगे हैं जिन्हें तुम खा सकते हो: हर प्रकार की
टिड्डियाँ, हर प्रकार की सपंख टिड्डियाँ, हर प्रकार के
झींगुर, हर प्रकार के टिड्डे।

23"किन्तु अन्य सभी वे कीट पतंगे जिनके पंख हैं
और जो रेंग भी सकते हैं, तुम्हारे लिये घिनौने प्राणी हैं।
24वे कीट पतंगे तुमको अशुद्ध करेंगे। कोई व्यक्ति जो
मरे कीट पतंगे को छु एगा, सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।
25यदि कोई मरे कीट पतंगों में से किसी को उठाता है
तो उस व्यक्ति को अपने कपड़े धो लेने चाहिए। वह
व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

घिनौने जानवरों के विषय में अन्य नियम

26-27"कुछ जानवरों के खुर फटे होते हैं किन्तु खुर
के ठीक-ठीक दो भाग नहीं होते। कुछ जानवर जुगाली
नहीं करते। कुछ जानवरों के खुर नहीं होते, वे अपने
पंजों* पर चलते हैं ऐसे सभी जानवर तुम्हारे लिए
घिनौने हैं। कोई व्यक्ति, जो उन्हें छुयेगा अशुद्ध हो जाएगा।
वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 28यदि कोई व्यक्ति
उनके मरे शरीर को उठाता है तो उस व्यक्ति को
अपने वस्त्र धोने चाहिए। वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध
रहेगा। वे जानवर तुम्हारे लिए अशुद्ध है।

रेंगने वाले जानवरों के बारे में नियम

29"ये रेंगने वाले जानवर तुम्हारे लिए घिनौने हैं:
छछून्दर, चूहा, सभी प्रकार के बड़े गिरगिट, 30छिपकली,
मगरमच्छ, गिरगिट, रेगिस्तानी गोहेर, और रंग बदलता
गिरगिट। 31ये रेंगने वाले जानवर तुम्हारे लिए घिनौने
हैं। कोई व्यक्ति जो उन मरे हुओं को छुएगा सन्ध्या तक
अशुद्ध रहेगा।

घिनौने जानवरों के बारे में नियम

32"यदि किसी घिनौने जानवरों में से कोई मरा हुआ
जानवर किसी चीज़ पर गिरे तो वह चीज़ अशुद्ध हो
जाएगी। यह लकड़ी, चमड़ा, कपड़ा, शोक वस्त्र या कोई
भी औज़ार हो सकता है। जो कुछ भी वह हो उसे पानी
से धोना चाहिए। यह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। तब यह
फिर शुद्ध हो जाएगा। 33यदि उन गन्दे जानवरों में से
कोई मरा हुआ मिट्टी के कटोरे में गिरे तो कटोरे की
कोई भी चीज़ अशुद्ध हो जाएगी। तुम्हें कटोरा अवश्य
तोड़ देना चाहिए। 34यदि अशुद्ध मिट्टी के कटोरे का
पानी किसी भोजन पर पड़े तो भोजन अशुद्ध हो जाएगा।
अपवित्र कटोरे में कोई भी दाखमधु अशुद्ध हो जाएगी।
35यदि किसी मरे हुए घिनौने जानवर का कोई भाग
किसी चीज़ पर आ पड़े तो वह चीज़ शुद्ध नहीं रहेगी।
इसे टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहिए। चाहे वह चूल्हा हो
चाहे कड़ाही। वे तुम्हारे लिए सदा अशुद्ध रहेगी।

36"कोई सोता या कुआँ, जिसमें पानी रहता है, शुद्ध
बना रहेगा किन्तु कोई व्यक्ति जो किसी मरे घिनौने
जानवर को छुयेगा, अशुद्ध हो जाएगा। 37यदि उन घिनौने
मरे जानवरों का कोई भाग बोए जाने वाले बीज पर आ
पड़े तो भी वह शुद्ध ही रहेगा। 38किन्तु भिगोने के लिए
यदि तुम कुछ बीजों पर पानी डालते हो और तब यदि
मरे घिनौने जानवर का कोई भाग उन बीजों पर आ
पड़े तो वे बीज तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं।

39"और भी, यदि भोजन के लिए उपयुक्त कोई जानवर
अपने आप मर जाए तो जो व्यक्ति उसके मरे शरीर को
छुयेगा, सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा 40और उस व्यक्ति को
अपने वस्त्र धोने चाहिए। जो उस मृत जानवर के शरीर
का माँस खाए। वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। जो
व्यक्ति मरे जानवर के शरीर को उठाए उसे भी अपने
वस्त्रों को धोना चाहिए। यह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध
रहेगा।

41"हर एक ऐसा जानवर जो धरती पर रेंगता है, वो
उन जानवरों में से एक है, जिसे यहोवा ने खाने को
मना किया है। 42तुम्हें ऐसे किसी भी रेंगने वाले जानवर
को नहीं खाना चाहिए जो पेट के बल रेंगता है या चारों
पैरों पर चलता है, या जिसके बहुत से पैर हैं। ये तुम्हारे
लिए घिनौने जानवर हैं! 43उन घिनौने जानवरों से अपने
को अशुद्ध मत बनाओ। तुम्हें उनके साथ अपने को
अशुद्ध नहीं बनाना चाहिए! 44क्यों? क्योंकि मैं तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा हूँ! मैं पवित्र हूँ इसलिए तुम्हें अपने को
पवित्र रखना चाहिए! उन घिनौने रेंगने वाले जानवरों से
अपने को घिनौना न बनाओ! 45मैं तुम लोगों को मिस्र
से लाया। मैंने यह इसलिए किया कि तुम लोग मेरे
विशेष जन बने रह सको। मैंने यह इसलिए किया कि मैं
तुम्हारा परमेश्वर बन सकूँ। मैं पवित्र हूँ, अत: तुम्हें भी
पवित्र रहना है!"

46वे नियम सभी मवेशियों, पक्षियों और धरती के
अन्य जानवरों के लिए हैं। वे नियम समुद्र में रहने वाले
सभी जानवरों और धरती पर रेंगने वाले सभी जानवरों
के लिए हैं। 47वे उपदेश इसलिए हैं कि लोग शुद्ध

पंजें जानवरों के पैर। पंजों के तले में नाख़ून और नरम गद्दी
होती है खुर की तरह कठोर भाग नहीं होता।

जानवरों और घिनौने जानवरों में अन्तर कर सकें। इस
प्रकार लोग जानेंगे कि कौन सा जानवर खाने योग्य है
और कौन सा खाने योग्य नहीं है।

नयी माताओं के लिए नियम

12 यहोवा ने मूसा से कहा, **2**“इस्राएल के लोगों से
कहो: यदि कोई स्त्री एक लड़के को जन्म देती
है तो वह स्त्री सात दिन तक अशुद्ध रहेगी। यह उसके
रक्त-स्राव के मासिकधर्म के समय अशुद्ध होने की
तरह होगा। **3**आठवें दिन लड़के का खतना होना चाहिए।
4खून की हानि से उत्पन्न अशुद्धि से शुद्ध होने के
तैंतीस दिन बाद तक यह होगा। उस स्त्री को वह कुछ
नहीं छूना चाहिए जो पवित्र है। उसे पवित्र स्थान में तब
तक नहीं जाना चाहिए जब तक उसके पवित्र होने का
समय पूरा न हो जाए। **5**किन्तु यदि स्त्री लड़की को जन्म
देती है तो माँ रक्त स्राव के मासिक धर्म के समय की
तरह दो सप्ताह तक शुद्ध नहीं होगी। वह अपने खून
की हानि के छियासठ दिन बाद शुद्ध हो जाती है।

6“नई माँ जिसने अभी लड़की या लड़के को जन्म
दिया है, ऐसी माँ के शुद्ध होने का विशेष समय पूरा होने
पर उसे मिलापवाले तम्बू में विशेष भेंटें लानी चाहिए।
उसे उन भेंटों को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक
को देना चाहिए। उसे एक वर्ष का मेमना होमबलि के
लिए और पापबलि के हेतु एक फ़ाख्ता या कबूतर का
बच्चा लाना चाहिए।

7-8“यदि स्त्री मेमना लाने में असमर्थ हो तो वह दो
फ़ाख्ते या दो कबूतर के बच्चे ला सकती है। एक
पक्षी होमबलि के लिए होगा तथा एक पापबलि के
लिये। याजक यहोवा के सामने उन्हें अर्पित करेगा।
इस प्रकार वह उसके लिए उसके पापों का भुगतान
करेगा। तब वह अपने खून की हानि की अशुद्धि से
शुद्ध होगी। ये नियम उन स्त्रियों के लिए है जो एक
लड़का या लड़की को जन्म देती हैं।”

गंभीर चर्मरोगों के बारे में नियम

13 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, **2**“किसी
व्यक्ति के चर्म पर कोई भयंकर सूजन हो सकती
है, या खुजली अथवा सफेद दाग हो सकते हैं। यदि घाव
चर्मरोग की तरह दिखाई पड़े तो व्यक्ति को याजक
हारून या उसके किसी एक याजक पुत्र के पास लाया
जाना चाहिए। **3**याजकों को व्यक्ति के चर्म के घाव को
देखना चाहिए। यदि घाव के बाल सफेद हो गए हों और
घाव व्यक्ति के चर्म से अधिक गहरा मालूम हो तो यह
भयंकर चर्म रोग है। जब याजक व्यक्ति की जाँच खत्म
करे तो उसे घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति अशुद्ध है।

4“कभी–कभी किसी व्यक्ति के चर्म पर कोई सफेद
दाग हो जाता है किन्तु दाग़ चर्म से गहरा नहीं मालूम
होता। यदि वह सत्य हो तो याजक उस व्यक्ति को सात
दिन के लिए अन्य लोगों से अलग करे। **5**सातवें दिन
याजक को उस व्यक्ति की जाँच करनी चाहिए। यदि
याजक देखे कि घाव में परिवर्तन नहीं हुआ है और वह
चर्म पर और अधिक फैला नहीं है तो याजक को और
सात दिन के लिए उसे अलग करना चाहिए। **6**सात दिन
बाद याजक को उस व्यक्ति की फिर जाँच करनी
चाहिए। यदि घाव सूख गया हो और चर्म पर फैला न
हो, तो याजक को घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति शुद्ध
है। वह केवल एक खुरंड है। तब रोगी को अपने वस्त्र
धोने चाहिए और फिर से शुद्ध होना चाहिए।

7“किन्तु यदि व्यक्ति ने याजक को फिर अपने आपको
शुद्ध बनाने के लिए दिखा लिया हो और उसके बाद
चर्मरोग त्वचा पर अधिक फैलने लगे तो उस व्यक्ति
को फिर याजक के पास आना चाहिए। **8**याजक को
जाँच करके देखना चाहिए। यदि घाव चर्म पर फैला हो
तो याजक को घोषणा करनी चाहिए कि वह व्यक्ति
अशुद्ध है अर्थात् उसे कोई भयानक चर्मरोग है।

9“यदि व्यक्ति को भयानक चर्मरोग हुआ हो तो उसे
याजक के पास लाया जाना चाहिए। **10**याजक को उस
व्यक्ति की जाँच करके देखना चाहिए। यदि चर्म पर
सफ़ेद दाग़ हो और उसमे सूजन हो, उस स्थान के
बाल सफ़ेद हों गए हो और यदि वहाँ घाव कच्चा हो **11**तो
यह कोई भयानक चर्मरोग है जो उस व्यक्ति को बहुत
समय से है। अत: याजक को उस व्यक्ति को अशुद्ध
घोषित कर देना चाहिए। याजक उस व्यक्ति को केवल
थोड़े से समय के लिए ही अन्य लोगों से अलग नहीं
करेगा। क्यों? क्योंकि वह जानता है कि वह व्यक्ति
अशुद्ध है।

12“यदि कभी चर्मरोग व्यक्ति के सारे शरीर पर फैल
जाए, वह चर्मरोग उस व्यक्ति के चर्म को सिर से पाँव
तक ढक ले, **13**और याजक देखे कि चर्मरोग पूरे शरीर
को इस प्रकार ढके है कि उस व्यक्ति का पूरा शरीर ही
सफेद हो गया है तो याजक को उसे शुद्ध घोषित कर
देना चाहिए। **14**किन्तु यदि व्यक्ति का चर्म घाव जैसा
कच्चा हो तो वह शुद्ध नहीं है। **15**जब याजक कच्चा चर्म
देखे, तब उसे घोषित करना चाहिए कि व्यक्ति अशुद्ध
है। कच्चा चर्म शुद्ध नहीं है। यह भयानक चर्मरोग है।

16“यदि चर्म फिर कच्चा पड़ जाये और सफेद हो जाये
तो व्यक्ति को याजक के पास आना चाहिए। **17**याजक
को उस व्यक्ति की जाँच करके देखना चाहिए। यदि
रोग ग्रस्त अंग सफेद हो गया हो तो याजक को घोषित
करना चाहिए कि वह व्यक्ति जिसे छूत रोग है, वह अंग
शुद्ध है। सो वह व्यक्ति शुद्ध है।

18“हो सकता है कि शरीर के चर्म पर कोई फोड़ा
हो। और फोड़ा ठीक हो जाय। **19**किन्तु फोड़े की जगह
पर सफेद सूजन, या गहरी लाली लिए सफेद और चमकीला

दाग रह जाय तब चर्म का यह स्थान याजक को
दिखाना चाहिए। 20याजक को उसे देखना चाहिए। यदि
सूजन चर्म से गहरा है और इस पर के बाल सफेद हो
गये हैं तो याजक को घोषणा करनी चाहिए कि वह
व्यक्ति अशुद्ध है। वह दाग भयानक चर्मरोग है। यह
फोड़े के भीतर से फूट पड़ा है। 21किन्तु यदि याजक उस
स्थान को देखता है और उस पर सफेद बाल नहीं हैं
और दाग चर्म से गहरा नहीं है, बल्कि धुंधला है तो
याजक को उस व्यक्ति को सात दिन के लिए अलग
करना चाहिए। 22यदि दाग का अधिक भाग चर्म पर
फैलता है तब याजक को घोषणा करनी चाहिए कि
व्यक्ति अशुद्ध है। यह छूत रोग है। 23किन्तु यदि सफेद
दाग अपनी जगह बना रहता है, फैलता नहीं तो वह
पुराने फोड़े का केवल घाव है। याजक को घोषणा
करनी चाहिए कि व्यक्ति शुद्ध है।

24-25"किसी व्यक्ति का चर्म जल सकता है। यदि
कच्चा चर्म सफेद या लालीयुक्त दाग होता है तो याजक
को इसे देखना चाहिए। यदि वह दाग चर्म से गहरा
मालूम हो और उस स्थान के बाल सफेद हो तो यह
भयंकर चर्म रोग है। जो जले में से फूट पड़ा है। तब
याजक को उस व्यक्ति को अशुद्ध घोषित करना चाहिए।
यह भयंकर चर्म रोग है। 26किन्तु याजक यदि उस
स्थान को देखता है और सफेद दाग में सफेद बाल नहीं
है और दाग चर्म से गहरा नहीं है, बल्कि हल्का है तो
याजक को उसे सात दिन के लिए ही अलग करना
चाहिए। 27सातवें दिन याजक को उस व्यक्ति को फिर
देखना चाहिए। यदि दाग चर्म पर फैले तो याजक को
घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति अशुद्ध है। यह भयंकर
चर्म रोग है।

28किन्तु यदि सफेद दाग चर्म पर न फैले, अपितु
धुंधला हो तो यह जलने से पैदा हुई सूजन है। याजक को
उस व्यक्ति को शुद्ध घोषित करना चाहिए। यह केवल
जले का निशान है। 29किसी व्यक्ति के सिर की खाल
पर या दाढ़ी में कोई छूत रोग हो सकता है। 30याजक
को छूत के रोग को देखना चाहिए। यदि छूत का रोग
चर्म से गहरा मालूम हो और इसके चारों ओर के बाल
बारीक और पीले हों तो याजक को घोषणा करनी
चाहिए कि व्यक्ति अशुद्ध है। यह बुरा चर्मरोग है। 31यदि
रोग चर्म से गहरा न मालूम हो, और इसमें कोई काला
बाल न हो तो याजक को उसे सात दिन के लिए अलग
कर देना चाहिए। 32सातवें दिन याजक को छूत के रोगी
को देखना चाहिए। यदि रोग फैला नहीं है या इसमें पीले
बाल नहीं उग रहे है और रोग चर्म से गहरा नहीं है,
33तो व्यक्ति को बाल काट लेने चाहिए। किन्तु उसे रोग
वाले स्थान के बाल नहीं काटने चाहिए। याजक को
उस व्यक्ति को और सात दिन के लिए अलग करना
चाहिए। 34सातवें दिन याजक को रोगी को देखना
चाहिए। यदि रोग चर्म में नहीं फैला है और यह चर्म से
गहरा नहीं मालूम होता है तो याजक को घोषणा करनी
चाहिए कि व्यक्ति शुद्ध है। व्यक्ति को अपने वस्त्र धोने
चाहिए तथा शुद्ध हो जाना चाहिए। 35किन्तु यदि व्यक्ति
के शुद्ध हो जाने के बाद चर्म में रोग फैलता है 36तो
याजक को फिर व्यक्ति को देखना चाहिए। यदि रोग
चर्म में फैला है तो याजक को पीले बालों को देखने की
आवश्यकता नहीं है, व्यक्ति अशुद्ध है। 37किन्तु यदि
याजक यह समझता है कि रोग का बढ़ना रुक गया है
और इसमें काले बाल उग रहे हैं तो रोग अच्छा हो गया
है। व्यक्ति शुद्ध है। याजक को घोषणा करनी चाहिए
कि व्यक्ति शुद्ध है।

38"जब व्यक्ति के चर्म पर सफेद दाग हों, 39तो याजक
को उन दागों को देखना चाहिए। यदि व्यक्ति के चर्म के
दाग धुंधले सफेद हैं, तो रोग केवल अहानिकारक
फुंसियाँ है। वह व्यक्ति शुद्ध है।

40"किसी व्यक्ति के सिर के बाल झड़ सकते है। वह
शुद्ध है। यह केवल गंजापन है। 41किसी आदमी के सिर
के माथे के बाल झड़ सकते हैं। वह शुद्ध है। यह दूसरे
प्रकार का गंजापन है। 42किन्तु यदि उसके सिर की
चमड़ी पर लाल सफेद फुंसियाँ हैं तो यह भयानक चर्म
रोग है। 43याजक को ऐसे व्यक्ति को देखना चाहिए।
यदि छूत ग्रस्त त्वचा की सूजन लाली युक्त सफेद है और
कुष्ठ की तरह शरीर के अन्य भागों पर दिखाई पड़
रही है 44तो उस व्यक्ति के सिर की चमड़ी पर भयानक
चर्मरोग है। व्यक्ति अशुद्ध है, याजक को घोषणा करनी
चाहिए। 45यदि किसी व्यक्ति को भयानक चर्मरोग हो तो
उस व्यक्ति को अन्य लोगों को सावधान करना चाहिए।
उस व्यक्ति को जोर से 'अशुद्ध! अशुद्ध!' कहना चाहिए,
उस व्यक्ति के वस्त्रों को, सिलाई से फाड़ देना चाहिए।
उस व्यक्ति को अपने बालों को सँवारना नहीं चाहिए
और उस व्यक्ति को अपना मुख ढकना चाहिए। 46जो
व्यक्ति अशुद्ध होगा उसमें छूत का रोग सदा रहेगा। वह
व्यक्ति अशुद्ध है। उसे अकेले रहना चाहिए। उनका
निवास डेरे से बाहर होना चाहिए।

47-48"कुछ वस्त्रों पर फफूँदी लग सकती हैं। वस्त्र
सन का या ऊनी हो सकता है। वस्त्र बुना हुआ या कढ़ा
हुआ हो सकता है। फफूँदी किसी चमड़े या चमड़े से
बनी किसी चीज पर हो सकती है। 49यदि फफूँदी हरी
या लाल हो तो उसे याजक को दिखाना चाहिए। 50याजक
को फफूँदी देखनी चाहिए। उसे उस चीज को सात दिन
तक अलग स्थान पर रखना चाहिए। 51-52सातवें दिन,
याजक को फफूँदी देखनी चाहिए। यह महत्वपूर्ण नहीं है
कि फफूँदी चमड़े या कपड़े पर है। यह महत्वपूर्ण नहीं
कि वस्त्र बुना हुआ या कढ़ा हुआ है। यह महत्वपूर्ण
नहीं कि चमड़े का उपयोग किस लिए किया गया था।
यदि फफूँदी फैलती है तो वह कपड़ा या चमड़ा अशुद्ध

है। वह फफूँदी अशुद्ध है। याजक को उस कपड़े या चमड़े को जला देना चाहिए।

53"यदि याजक देखे कि फफूँदी फैली नहीं तो वह कपड़ा या चमड़ा धोया जाना चाहिए। यह महत्वपूर्ण नहीं कि यह चमड़ा है या कपड़ा, अथवा कपड़ा बुना हुआ है या कढ़ा हुआ, इसे धोना चाहिए। 54याजक को लोगों को यह आदेश देना चाहिए कि वे चमड़े या कपड़े के टुकड़ों को धोएं, तब याजक वस्त्रों को और सात दिनों के लिए अलग करे। 55उस समय के बाद याजक को फिर देखना चाहिए। यदि फफूँदी ठीक वैसी ही दिखाई देती है तो वह वस्तु अशुद्ध है। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि छूत फैली नहीं है। तुम्हें उस कपड़े या चमड़े को जला देना चाहिए।

56 "किन्तु यदि याजक उस चमड़े या कपड़े को देखता है कि फफूँदी मुरझा गई है तो याजक को चमड़े या कपड़े के फफूँदी युक्त दाग को चमड़े या कपड़े से फाड़ देना चाहिए। यह महत्वपूर्ण नहीं कि कपड़ा कढ़ा हुआ है या बारीक बुना हुआ है। 57किन्तु फफूँदी उस चमड़े या कपड़े पर लौट सकती है। यदि ऐसा होता है तो फफूँदी बढ़ रही है। उस चमड़े या कपड़े को जला देना चाहिए। 58किन्तु यदि धोने के बाद फफूँदी न लौटे, तो वह चमड़ा या कपड़ा शुद्ध है। इसका कोई महत्व नहीं कि कपड़ा कढ़ा हुआ या बुना हुआ था। वह कपड़ा शुद्ध है।" 59चमड़े या कपड़े पर की फफूँदी के विषय में ये नियम हैं। इसका कोई महत्व नहीं कि कपड़ा कढ़ा हुआ है या बुना हुआ है।

भयानक चर्म रोगी को शुद्ध करने के नियम

14 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"ये उन लोगों के लिए नियम हैं जिन्हें भयानक चर्म रोग था और जो स्वस्थ हो गए। ये नियम उस व्यक्ति को शुद्ध बनाने के लिए है।

"याजक को उस व्यक्ति को देखना चाहिए जिसे भयानक चर्म रोग है। 3याजक को उस व्यक्ति के पास डेरे के बाहर जाना चाहिए। याजक को यह देखने का प्रयत्न करना चाहिए कि वह चर्म रोग अच्छा हो गया है। 4यदि व्यक्ति स्वस्थ है तो याजक उसे यह करने को कहेगा: उसे दो जीवित शुद्ध पक्षी, एक देवदारू की लकड़ी, लाल कपड़े का एक टुकड़ा और एक जूफा का पौधा लाना चाहिए। 5याजक को बहते हुए पानी के ऊपर मिट्टी के एक कटोरे में एक पक्षी को मारने का आदेश देना चाहिए। 6तब याजक दूसरे पक्षी को ले, जो अभी जीवित है और देवदारू की लकड़ी, लाल कपड़े के टुकड़े और जूफा का पौधा ले। याजक को जीवित पक्षी और अन्य चीज़ों को बहते हुए पानी के ऊपर मारे गए पक्षी के खून में डूबाना चाहिए। 7याजक उस व्यक्ति पर सात बार खून छिड़केगा जिसे भयानक चर्म रोग है। तब याजक को घोषित करना चाहिए कि वह व्यक्ति शुद्ध है। तब याजक को खुले मैदान में जाना चाहिए और जीवित पक्षी को उड़ा देना चाहिए।

8"इसके बाद उस व्यक्ति को अपने वस्त्र धोने चाहिए। उसे अपने सारे बाल काट डालने चाहिए और पानी से नहाना चाहिए। वह शुद्ध हो जाएगा। तब वह व्यक्ति डेरे में जा सकेगा। किन्तु उसे अपने खेमे के बाहर सात दिन तक रहना चाहिए। 9सातवें दिन उसे अपने सारे बाल काट डालने चाहिए। उसे अपने सिर, दाढ़ी, भौंहों के सभी बाल कटवा लेने चाहिए। तब उसे अपने कपड़े धोने चाहिए और पानी से नहाना चाहिए। तब वह व्यक्ति शुद्ध होगा।

10"आठवें दिन उस व्यक्ति को दो नर मेमने लेने चाहिए जिनमें कोई दोष न हो। उसे एक वर्ष की एक मादा मेमना भी लेनी चाहिए जिसमें कोई दोष न हो। उसे छ: क्वार्ट* तेल मिला उत्तम महीन आटा लेना चाहिए। यह आटा अन्नबलि के लिए है। व्यक्ति को दो तिहाई पिन्ट* जैतून का तेल लेना चाहिए। 11याजक को घोषणा करनी चाहिए कि वह व्यक्ति शुद्ध है। याजक को उस व्यक्ति और उसकी बलि को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के सामने लाना चाहिए। 12याजक नर मेमनों में से एक को दोषबलि के रूप में चढ़ाएगा। वह उस मेमनों और उस तेल को यहोवा के सामने उत्तोलन बलि के रूप में चढ़ाएगा। 13तब याजक नर मेमने को उसी पवित्र स्थान पर मारेगा जहाँ वे पापबलि और होमबलि को मारते हैं। दोषबलि, पापबलि के समान है। यह याजक की है। यह अत्यन्त पवित्र है।

14"याजक दोषबलि का कुछ खून लेगा और फिर याजक इसमें से कुछ खून शुद्ध किये जाने वाले व्यक्ति के दाएँ कान के निचले सिरे पर लगाएगा। याजक कुछ खून उस व्यक्ति के हाथ के दाएँ अंगूठे और दाएँ पैर के अंगूठे पर लगाएगा। 15याजक कुछ तेल भी लेगा और अपनी बाँयी हथेली पर डालेगा। 16तब याजक अपने दाएँ हाथ की उँगलियाँ अपने बाएँ हाथ की हथेली में रखे हुये तेल में डुबाएगा। वह अपनी उँगली का उपयोग कुछ तेल यहोवा के सामने सात बार छिड़कने के लिए करेगा। 17याजक अपनी हथेली का कुछ तेल शुद्ध किये जाने वाले व्यक्ति के दाएँ कान के निचले सिरे पर लगाएगा। याजक कुछ तेल उस व्यक्ति के दाएँ हाथ के अंगूठे और दाएँ पैर के अंगूठे पर लगाएगा। याजक कुछ तेल दोषबलि के खून पर लगाएगा।* 18याजक अपनी हथेली में बचा हुआ तेल शुद्ध किए जाने वाले व्यक्ति के सिर

छ: क्वार्ट 3/10 एपा।

दो तिहाई पिन्ट "एक लोज।"

याजक ... लगाएगा अर्थात् तेल उस खून के ऊपर लगाया जाता है जो व्यक्ति के कान, अंगूठे और पैर के अंगूठे पर लगा था।

पर लगाएगा। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के पाप का
यहोवा के सामने भुगतान करेगा।
19"उसके बाद याजक पापबलि चढ़ाएगा और व्यक्ति
के पापों का भुगतान करेगा जिससे वह शुद्ध हो जाएगा।
इसके पश्चात याजक होमबलि के लिए जानवर को
मारेगा। **20**तब याजक होमबलि और अन्नबलि को वेदी
पर चढ़ाएगा। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के पापों का
भुगतान करेगा और वह व्यक्ति शुद्ध हो जायेगा।
21"किन्तु यदि व्यक्ति गरीब है और उन बलियों को
देने में असमर्थ है तो उसे एक मेमना दोषबलि के रूप में
लेना चाहिए। यह उत्तोलनबलि होगी जिससे याजक उसके
पापों के भुगतान के लिए देगा। उसे दो क्वार्ट* तेल
मिला उत्तम महीन आटा लेना चाहिए। यह आटा अन्नबलि
के रूप में उपयोग में आएगा। व्यक्ति को दो तिहाई पिन्ट
जैतून का तेल **22**और दो फ़ाख्ते या दो कबूतर के बच्चे
लेने चाहिए। इन चीज़ों को देने में गरीब लोग भी समर्थ
होंगे। एक पक्षी पापबलि के लिए होगा और दूसरा
होमबलि का होगा
23"आठवें दिन, वह व्यक्ति उन चीज़ों को याजक के
पास मिलापवाले तम्बू के द्वार पर लाएगा। वे चीज़ें यहोवा
के सामने बलि चढ़ाई जाएंगी जिससे व्यक्ति शुद्ध हो
जाएगा। **24**याजक, दोषबलि के रूप में तेल और मेमने
को लेगा तथा यहोवा के सामने उत्तोलनबलि के रूप में
चढ़ाएगा। **25**तब याजक दोषबलि के मेमने को मारेगा।
याजक दोषबलि का कुछ खून लेगा। याजक इसमें से
कुछ खून शुद्ध बनाए जाने वाले व्यक्ति के दाएँ कान के
निचले सिरे पर लगाएगा। याजक इसमें से कुछ खून
इस व्यक्ति के दाएँ हाथ के अंगूठे और दाएँ पैर के
अंगूठे पर लगाएगा। **26**याजक इस तेल में से कुछ अपनी
बायीं हथेली में भी डालेगा। **27**याजक अपने दाएँ हाथ की
उँगली का उपयोग अपनी हथेली के तेल को यहोवा के
सामने सात बार छिड़कने के लिए करेगा। **28**तब याजक
अपनी हथेली के कुछ तेल को शुद्ध बनाए जाने वाले
व्यक्ति के दाएँ कान के सिरे पर लगाएगा। याजक इस
तेल में से कुछ तेल व्यक्ति के दाएँ हाथ के अंगूठे और
उसके दाएँ पैर के अंगूठे पर लगाएगा। याजक दोषबलि
के खून लगे स्थान पर इसमें से कुछ तेल लगाएगा।
29याजक को अपनी हथेली के बचे हुये तेल को शुद्ध
किए जाने वाले व्यक्ति के सिर पर डालना चाहिए। इस
प्रकार यहोवा के सामने याजक उस व्यक्ति के पापों
का भुगतान करेगा।
30"तब व्यक्ति फ़ाख्तों में से एक या कबूतर के बच्चों
में से एक की बलि चढ़ाएगा। गरीब लोग भी इन पक्षियों
को भेंट करने में समर्थ होंगे। **31**व्यक्ति को अपनी
सामर्थ्य के अनुसार बलि चढ़ानी चाहिए। उसे पक्षियों में
से एक को पापबलि के रूप में चढ़ाना चाहिए और दूसरे
पक्षी को होमबलि के रूप में उसे उनको अन्नबलि के
साथ भेंट चढ़ाना चाहिए। इस प्रकार याजक यहोवा के
सामने उस व्यक्ति के पाप का भुगतान करेगा और वह
व्यक्ति शुद्ध हो जाएगा।"
32ये भयानक चर्मरोग के ठीक होने के बाद किसी
एक व्यक्ति को शुद्ध करने के नियम हैं। ये नियम उन
व्यक्तियों के लिए हैं जो शुद्ध होने के लिए सामान्य
बलियों का व्यय नहीं उठा सकते।

घर में लगी फफूँदी के लिए नियम

33यहोवा ने मूसा और हारून से यह भी कहा, **34**"मैं
तुम्हारे लोगों को कनान देश दे रहा हूँ। तुम्हारे लोग इस
भूमि पर जाएंगे। उस समय मैं हो सकता है, कुछ लोगों
के घरों में फफूँदी लगा दूँ। **35**तो उस घर के मालिक
को याजक के पास आकर कहना चाहिए, 'मैंने अपने
घर में फफूँदी जैसी कोई चीज़ देखी है।'
36"तब याजक को आदेश देना चाहिए कि घर को
खाली कर दिया जाय। लोगों को याजक के फफूँदी
देखने जाने से पहले ही यह करना चाहिए। इस तरह घर
की सभी चीज़ों को याजक को अशुद्ध नहीं कहना
पड़ेगा। लोगों द्वारा घर खाली कर दिए जाने पर याजक
घर में देखने जाएगा। **37**याजक फफूँदी को देखेगा। यदि
फफूँदी ने घर की दीवारों पर हरे या लाल रंग के
चकत्ते बना दिए हैं और फफूँदी दीवार की सतह पर
बढ़ रही है, **38**तो याजक को घर से बाहर निकल आना
चाहिए और सात दिन तक घर बन्द कर देना चाहिए।
39"सातवें दिन, याजक को वहाँ लौटना चाहिए और
घर की जाँच करनी चाहिए। यदि घर की दीवारों पर
फफूँदी फैल गई हो **40**तो याजक को लोगों को आदेश
देना चाहिए कि वे फफूँदी सहित पत्थरों को उखाड़ें
और उन्हें दूर फेंक दें। उन्हें उन पत्थरों को नगर से
बाहर विशेष अशुद्ध स्थान पर फेंकना चाहिए। **41**तब
याजक को पूरे घर को अन्दर से खुरचवा डालना
चाहिए। लोगों को उस लेप को जिसे उन्होंने खुरचा है,
फेंक देना चाहिए। उन्हें उस लेप को नगर के बाहर
विशेष अशुद्ध स्थान पर डालना चाहिए। **42**तब उस
व्यक्ति को नए पत्थर दीवारों में लगाने चाहिए और उसे
उन दीवारों को नए लेप से ढक देना चाहिए।
43"सम्भव है कोई व्यक्ति पुराने पत्थरों और लेप को
निकाल कर नये पत्थरों और लेप को लगाए और
सम्भव है वह फफूँदी उस घर में फिर प्रकट हो। **44**तब
याजक को आकर उस घर की जाँच करनी चाहिए।
यदि फफूँदी घर में फैल गई है तो यह रोग है जो दूसरी
जगहों में जल्दी से फैलता है। अत: घर अशुद्ध है। **45**उस
व्यक्ति को वह घर गिरा देना चाहिए। उन्हें सारे पत्थर,
लेप तथा अन्य लकड़ी के टुकड़ों को नगर से बाहर

दो क्वार्ट "1/10 एपा।"

अशुद्ध स्थान पर ले जाना चाहिए 46और कोई व्यक्ति जो उसमें जाता है, सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 47यदि कोई व्यक्ति उसमें भोजन करता है या उसमें सोता है तो उस व्यक्ति को अपने वस्त्र धोने चाहिए।

48"घर में नये पत्थर और लेप लगाने के बाद याजक को घर की जाँच करनी चाहिए। यदि फफूँदी घर में नहीं फैली है तो याजक घोषणा करेगा कि घर शुद्ध है। क्यों? क्योंकि फफूँदी समाप्त हो गई है!

49"तब, घर को शुद्ध करने के लिए याजक को दो पक्षी, एक देवदारू की लकड़ी, एक लाल कपड़े का टुकड़ा और जूफा का पौधा लेना चाहिए। 50याजक बहते पानी के ऊपर मिट्टी के कटोरे में एक पक्षी को मारेगा। 51तब याजक देवदारू की लकड़ी, जूफा का पौधा, लाल कपड़े का टुकड़ा और जीवित पक्षी को लेगा। याजक बहते जल के ऊपर मारे गए पक्षी के खून में उन चीज़ों को डुबाएगा। तब याजक उस खून को उस घर पर सात बार छिड़केगा। 52इस प्रकार याजक उन चीज़ों का उपयोग घर को शुद्ध करने के लिए करेगा। 53याजक खुले मैदान में नगर के बाहर जाएगा और पक्षी को उड़ा देगा। इस प्रकार याजक घर को शुद्ध करेगा। घर शुद्ध हो जाएगा।"

54वे नियम भयानक चर्मरोग के, 55घर या कपड़े के टुकड़ों पर की फफूँदी के बारे में है। 56वे नियम सूजन, फुंसियों या चर्मरोग पर सफेद दाग से सम्बन्धित हैं। 57वे नियम सिखाते हैं कि चीज़े कब अशुद्ध हैं तथा कब शुद्ध हैं। वे नियम उस प्रकार की बिमारियों से सम्बन्धित हैं।

शरीर से बहने वाले स्रावों के नियम

15 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, 2"इस्राएल के लोगों से कहो: जब किसी व्यक्ति के शरीर से धात का स्राव होता है तब वह व्यक्ति अशुद्ध होता है। 3वह धात शरीर से खुला बहता है या शरीर उसे बहने से रोक देता है इसका कोई महत्व नहीं।

4"यदि धात त्याग करने वाला बिस्तर पर सोया रहता है तो वह बिस्तर अशुद्ध हो जाता है। जिस चीज़ पर भी वह बैठता है वह अशुद्ध हो जाती है। 5यदि कोई व्यक्ति उसके बिस्तर को छूता भी है तो उसे अपने वस्त्रों को धोना और पानी से नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 6यदि कोई व्यक्ति उस चीज पर बैठता है जिस पर धात त्याग करने वाला व्यक्ति बैठा हो तो उसे अपने वस्त्र धोना और बहते पानी में नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 7यदि कोई व्यक्ति उस व्यक्ति को छूता है जिसने धात त्याग किया है तो उसे अपने वस्त्रों को धोना चाहिए तथा बहते पानी में नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

8"यदि धात त्याग करने वाला व्यक्ति किसी शुद्ध व्यक्ति पर थूकता है तो शुद्ध व्यक्ति को अपने वस्त्र धोने चाहिए तथा नहाना चाहिए। यह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 9पशु पर बैठने की कोई काठी जिस पर धात त्याग करने वाला व्यक्ति बैठा हो तो वह अशुद्ध हो जाएगी। 10इसलिए कोई व्यक्ति जो धात त्याग करने वाले व्यक्ति के नीचे रहने वाली किसी चीज़ को छूता है, सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। जो व्यक्ति धात त्याग करने वाले व्यक्ति के नीचे की चीज़ें ले जाता है उसे अपने वस्त्रों को धोना चाहिए तथा बहते पानी में नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

11"यह सम्भव है कि धात त्याग करने वाला व्यक्ति पानी में हाथ धोए बिना किसी अन्य व्यक्ति को छूए। तब दूसरा व्यक्ति अपने वस्त्रों को धोए और बहते पानी में नहाए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

12"धात त्याग करने वाला व्यक्ति यदि मिट्टी का कटोरा छूए तो वह कटोरा फोड़ देना चाहिए। यदि धात त्याग करने वाला व्यक्ति कोई लकड़ी का कटोरा छूए तो उस कटोरे को बहते पानी में अच्छी तरह धोना चाहिए। 13जब धात त्याग करने वाला कोई व्यक्ति अपने धात त्याग से शुद्ध किया जाता है तो उसे अपनी शुद्धि के लिए उस दिन से सात दिन गिनने चाहिए। तब उसे अपने वस्त्र धोने चाहिए और बहते पानी में नहाना चाहिए। वह शुद्ध हो जाएगा। 14आठवें दिन उस व्यक्ति को दो फ़ाख्ते या दो कबूतर के बच्चे लेने चाहिए। उसे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के सामने आना चाहिए। वह व्यक्ति दो पक्षी याजक को देगा। 15याजक पक्षियों की बलि चढ़ाएगा। एक को पापबलि के लिए तथा दूसरे को होमबलि के लिये। इस प्रकार याजक इस व्यक्ति को यहोवा के सामने उस के धात त्याग से हुई अशुद्धता से शुद्ध करेगा।

पुरुषों के लिये नियम

16"यदि व्यक्ति का वीर्य निकल जाता है तो उसे सम्पूर्ण शरीर से बहते पानी में नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 17यदि वीर्य किसी वस्त्र या चमड़े पर गिरे तो वह वस्त्र या चमड़ा पानी में धोना चाहिए। यह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 18यदि कोई व्यक्ति किसी स्त्री के साथ सोता है और वीर्य निकलता है तो स्त्री पुरुष दोनों को बहते पानी में नहाना चाहिए। वे सन्ध्या तक अशुद्ध रहेंगे।

स्त्रियों के लिये नियम

19"यदि कोई स्त्री मासिक रक्त स्राव के समय मासिकधर्म से है तो वह सात दिन तक अशुद्ध रहेगी। यदि कोई व्यक्ति उसे छूता है तो वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 20अपने मासिकधर्म के समय स्त्री जिस किसी चीज़ पर लेटेगी, वह भी अशुद्ध होगी और उस समय में जिस चीज़ पर वह बैठेगी, वह भी अशुद्ध होगी।

21यदि कोई व्यक्ति उस स्त्री के बिस्तर को छूता है तो
उसे अपने वस्त्रों को बहते पानी में धोना और नहाना
चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 22यदि कोई
व्यक्ति उस चीज़ को छूता है जिस पर वह स्त्री बैठी हो
तो उस व्यक्ति को अपने वस्त्र बहते पानी में धोने चाहिए
और नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।
23वह व्यक्ति स्त्री के बिस्तर को छूता है या उस चीज़
को छूता है जिस पर वह बैठी हो, तो वह व्यक्ति सन्ध्या
तक अशुद्ध रहेगा। 24यदि कोई व्यक्ति किसी स्त्री के
साथ मासिक धर्म के समय यौन सम्बन्ध करता है तो
वह व्यक्ति सात दिन तक अशुद्ध रहेगा। हर एक बिस्तर
जिस पर वह सोता है, अशुद्ध होगा।

25"यदि किसी स्त्री को कई दिन तक रक्त स्राव रहता
है जो उसके मासिकधर्म के समय नहीं होता, या निश्चित
समय के बाद मासिकधर्म होता है तो वह उसी प्रकार
अशुद्ध होगी जिस प्रकार मासिकधर्म के समय और तब
तक अशुद्ध रहेगी जब तक रहेगा। 26पूरे रक्त स्राव के
समय वह स्त्री जिस बिस्तर पर लेटेगी, वह वैसा ही होगा
जैसा मासिकधर्म के समय। जिस किसी चीज़ पर वह
स्त्री बैठेगी, वह वैसे ही अशुद्ध होगी जैसे वह मासिकधर्म
से अशुद्ध होती है। 27यदि कोई व्यक्ति उन चीज़ों को
छूता है तो वह अशुद्ध होगा। इस व्यक्ति को बहते पानी
से अपने कपड़े धोने चाहिए तथा नहाना चाहिए। वह
सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 28उसके बाद जब स्त्री अपने
मासिकधर्म से अशुद्ध हो जाती है तब से उसे सात दिन
गिनने चाहिए। इसके बाद वह शुद्ध होगी। 29फिर आठवें
दिन उसे दो फ़ाख्ते और दो कबूतर के बच्चे लेने
चाहिए। उसे उन्हें मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक
के पास लाना चाहिए। 30तब याजक को एक पक्षी
पापबलि के रूप में तथा दूसरे को होमबलि के रूप में
चढ़ाना चाहिए। इस प्रकार वह याजक उसे यहोवा के
सामने उसके स्राव से उत्पन्न अशुद्धि से शुद्ध करेगा।

31"इसलिए तुम इस्राएल के लोगों को अशुद्ध होने
और उनको अशुद्धि से दूर रहने के बारे में सावधान
करना। यदि तुम लोगों को सावधान नहीं करते तो वे
मेरे पवित्र तम्बू को अशुद्ध कर सकते हैं और तब उन्हें
मरना होगा!"

32ये नियम धात त्याग करने वाले लोगों के लिए हैं।
ये नियम उन व्यक्तियों के लिए हैं जो वीर्य के शरीर से
बाहर निकलने से अशुद्ध होते हैं 33और ये नियम उन
स्त्रियों के लिए हैं जो अपने मासिकधर्म के रक्त स्राव के
समय अशुद्ध होती हैं और वे नियम उन पुरुषों के लिए
हैं जो अशुद्ध स्त्रियों के साथ सोने से अशुद्ध होते हैं।

पाप से निस्तार का दिन

16 हारून के दो पुत्र यहोवा को सुगन्ध भेंट चढ़ाते
समय मर गए थे। फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
2"अपने भाई हारून से बात करो कि वह जब चाहे तब
पर्दे के पीछे महापवित्र स्थान में नहीं जा सकता है। उस
पर्दे के पीछे जो कमरा है उसमें पवित्र सन्दूक रखा है।
उस पवित्र सन्दूक के ऊपर उसका विशेष ढक्कन लगा
है। उस विशेष ढक्कन के ऊपर एक बादल में मैं प्रकट
होता हूँ। यदि हारून उस कमरे में जाता है तो वह मर
जायेगा!

3"पाप से निस्तार के दिन पवित्र स्थान में जाने के
पहले हारून को पापबलि के रूप में एक बछड़ा और
होमबलि के लिए एक मेढ़ा भेंट करना चाहिए। 4हारून
अपने पूरे शरीर को पानी डालकर धोएगा। तब हारून
इन वस्त्रों को पहनेगा: हारून पवित्र सन के वस्त्र
पहनेगा। सन के निचले वस्त्र शरीर से सटे होगें। उसकी
पेटी सन का पटुका होगी। हारून सन की पगड़ी बांधेगा।
ये पवित्र वस्त्र है।

5"हारून को इस्राएल के लोगों से दो बकरे पापबलि
के रूप में और एक मेढ़ा होमबलि के लिए लेना चाहिए।
6तब हारून बैल की पापबलि चढ़ाएगा। यह पापबलि
उसके अपने लिए और उसके परिवार के लिए है। तब
हारून वह उपासना करेगा जिसमें वह और उसका
परिवार शुद्ध होंगे।

7"इसके बाद हारून दो बकरे लेगा और मिलापवाले
तम्बू के द्वार पर यहोवा के सामने लाएगा। 8हारून दोनों
बकरों के लिए चिठ्ठी डालेगा। एक चिठ्ठी यहोवा के
लिए होगी। दूसरी चिठ्ठी अजाजेल के लिए होगी। 9"तब
हारून चिठ्ठी डालकर यहोवा के लिए चुने गए बकरे
की भेंट चढ़ाएगा। हारून को इस बकरे को पापबलि के
लिये चढ़ाना चाहिए। 10किन्तु चिठ्ठी डालकर अजाजेल
के लिए चुना गया बकरा यहोवा के सामने जीवित लाया
जाना चाहिए। याजक उसे शुद्ध बनाने के लिये उपासना
करेगा। तब यह बकरा मरुभूमि में अजाजेल के पास
भेजा जाएगा।

11"तब हारून अपने लिए बैल को पापबलि के रूप में
चढ़ाएगा। हारून अपने आप को और अपने परिवार
को शुद्ध करेगा। हारून बैल को अपने लिए पापबलि
के रूप में मारेगा। 12तब उसे आग के लिए एक तसला
वेदी के अंगारों से भरा हुआ यहोवा के सामने लाना
चाहिए। हारून दो मुट्ठी वह मधुर सुगन्धित धूप लेगा
जो बारीक पीसी गई है। हारून को पर्दे के पीछे कमरे में
उस सुगन्धि को लाना चाहिए। 13हारून को यहोवा के
सामने सुगन्धि को आग में डालना चाहिए। तब सुगन्धित
धूप के धुएँ का बादल साक्षीपत्र के ऊपर के विशेष
ढक्कन को ढक लेगा। इस प्रकार हारून नहीं मरेगा।
14साथ ही साथ हारून को बैल का कुछ खून लेना
चाहिए और उसे अपनी उँगली से उस विशेष ढक्कन
के पूर्व की ओर छिड़कना चाहिए। इस के सामने वह
अपनी उँगली से सात बार खून छिड़केगा।

15“तब हारून को लोगों के लिए पापबलि स्वरूप
बकरे को मारना चाहिए। हारून को बकरे का खून पर्दे
के पीछे कमरे में लाना चाहिए। हारून को बकरे के
खून से वैसा ही करना चाहिए जैसा बैल के खून से
उसने किया। हारून को उस ढक्कन पर और ढक्कन
के सामने बकरे का खून छिड़कना चाहिए। **16**ऐसा
अनेक बार हुआ जब इस्राएल के लोग अशुद्ध हुए।
इसलिए हारून इस्राएल के लोगों के अपराध और पाप
से महापवित्र स्थान को शुद्ध करने के लिए उपासना
करेगा। हारून को ये काम क्यों करना चाहिए? क्योंकि
मिलापवाला तम्बू अशुद्ध लोगों के बीच में स्थित है।
17जिस समय हारून महापवित्र स्थान को शुद्ध करे,
उस समय कोई व्यक्ति मिलापवाले तम्बू में नहीं होना
चाहिए। किसी व्यक्ति को उसके भीतर तब तक नहीं
जाना चाहिए जब तक हारून बाहर न आ जाय। इस
प्रकार, हारून अपने को और अपने परिवार को शुद्ध
करेगा और तब इस्राएल के सभी लोगों को शुद्ध करेगा।
18तब हारून उस वेदी पर जाएगा जो यहोवा के सामने
है। हारून वेदी को शुद्ध करेगा। हारून बैल का कुछ
खून और कुछ बकरे का खून लेकर वेदी के कोनों
पर चारों ओर लगाएगा। **19**तब हारून कुछ खून अपनी
उँगली से वेदी पर सात बार छिड़केगा। इस प्रकार हारून
इस्राएल के लोगों के सभी पापों से वेदी को शुद्ध और
पवित्र करेगा।

20“हारून महापवित्र स्थान, मिलापवाले तम्बू तथा
वेदी को पवित्र बनाएगा। इन कामों के बाद हारून
यहोवा के पास बकरे को जीवित लाएगा। **21**हारून
अपने दोनों हाथों को जीवित बकरे के सिर पर रखेगा।
तब हारून बकरे के ऊपर इस्राएल के लोगों के
अपराध और पाप को कबूल करेगा। इस प्रकार हारून
लोगों के पापों को बकरे के सिर पर डालेगा। तब वह
बकरे को दूर मरुभूमि में भेजेगा। एक व्यक्ति बगल में
बकरे को ले जाने के लिए खड़ा रहेगा। **22**इस प्रकार
बकरा सभी लोगों के पाप अपने ऊपर सूनी मरुभूमि में
ले जाएगा। जो व्यक्ति बकरे को ले जाएगा वह मरुभूमि
में उसे खुला छोड़ देगा।

23“तब हारून मिलापवाले तम्बू में जाएगा। वह सन
के उन वस्त्रों को उतारेगा जिन्हें उसने महापवित्र
स्थान में जाते समय पहना था। उसे उन वस्त्रों को
वहीं छोड़ना चाहिए। **24**वह अपने पूरे शरीर को पवित्र
स्थान में पानी डालकर धोएगा। तब वह अपने अन्य
विशेष वस्त्रों को पहनेगा। वह बाहर आएगा और अपने
लिये होमबलि और लोगों के लिये होमबलि चढ़ाएगा।
वह अपने को तथा लोगों को पापों से मुक्त
करेगा। **25**तब वह वेदी पर पापबलि की चर्बी को
जलाएगा। **26**जो व्यक्ति बकरे को अजाजेल के पास ले
जाए, उसे अपने वस्त्र तथा अपने पूरे शरीर को पानी
डालकर धोना चाहिए। उसके बाद वह व्यक्ति डेरे में आ
सकता है।

27“पापबलि के बैल और बकरे को डेरे के बाहर ले
जाना चाहिए। उन जानवरों का खून पवित्र स्थान में
पवित्र चीज़ों को शुद्ध करने के लिए लाया गया था।
याजक उन जानवरों का चमड़ा, शरीर और शरीर मल
आग में जलाएगा। **28**तब उन चीज़ों को जलाने वाले
व्यक्ति को अपने वस्त्र और पूरे शरीर को पानी डालकर
धोना चाहिए। उसके बाद वह व्यक्ति डेरे में आ सकता
है।

29यह नियम तुम्हारे लिए सदैव रहेगा: सातवें महीने
के दसवें दिन तुम्हें उपवास करना चाहिए। तुम्हें कोई
काम नहीं करना चाहिए। तुम्हारे साथ रहने वाले यात्री
या विदेशी भी कोई काम नहीं कर सकेंगे। **30**क्यों?
क्योंकि इस दिन याजक तुम्हें शुद्ध करता है और
तुम्हारे पापों को धोता है। तब तुम यहोवा के लिए शुद्ध
होंगे। **31**यह दिन तुम्हारे लिए आराम करने का विशेष
दिन है। तुम्हें इस दिन उपवास करना चाहिए। यह
नियम सदैव के लिए होगा।

32“सो वह पुरुष जो महायाजक बनने के लिए अभिषिक्त
है, वस्तुओं को शुद्ध करने की उपासना को सम्पन्न
करेगा। यह वही पुरुष है जिसे उसके पिता की मृत्यु के
बाद महायाजक के रूप में सेवा के लिए नियुक्त किया
गया है। उस याजक को सन के पवित्र वस्त्र धारण
करने चाहिए। **33**उसे पवित्र स्थान, मिलापवाले तम्बू
और वेदी को शुद्ध करना चाहिए और उसे याजक और
इस्राएल के सभी लोगों को शुद्ध करना चाहिए। **34**इस्राएल
के लोगों को शुद्ध करने का यह नियम सदैव रहेगा।
इस्राएल के लोगों के पाप के निस्तार के लिए तुम उन
क्रियाओं को वर्ष में एक बार करोगे।”

इसलिए उन्होंने वही किया जो यहोवा ने मूसा को
आदेश दिया था।

जानवरों को मारने और खाने के नियम

17 यहोवा ने मूसा से कहा, **2**“हारून, उसके पुत्रों
और इस्राएल के सभी लोगों से कहो। उनको
कहो कि यहोवा ने यह आदेश दिया है: **3**कोई इस्राएली
व्यक्ति किसी बैल या मेमने या बकरे को डेरे में या डेरे
के बाहर मार सकता है। **4**वह व्यक्ति उस जानवर को
मिलापवाले तम्बू के द्वार पर लाएगा। उसे उस जानवर
का एक भाग यहोवा को भेंट के रूप में देना चाहिए।
उस व्यक्ति ने खून बहाया है, मारा है इसलिए उसे
यहोवा के पवित्र तम्बू में भेंट ले जानी चाहिए। यदि वह
जानवर के भाग को भेंट के रूप में यहोवा को नहीं ले
जाता तो उसे अपने लोगों से अलग कर देना चाहिए।
5यह नियम इसलिए है कि लोग मेलबलि यहोवा को
अर्पित करें। इस्राएल के लोगों को उन जानवरों को

लाना चाहिए जिन्हें वे मैदानों में मारते हैं। उन्हें उन
जानवरों को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर लाना चाहिए।
उन्हें उन जानवरों को याजक के पास लाना चाहिए।
6तब याजक उन जानवरों का खून मिलापवाले तम्बू के
द्वार के समीप यहोवा की वेदी तक फेंकेगा और याजक
उन जानवरों की चर्बी को वेदी पर जलाएगा। यह यहोवा
के लिए मधुर सुगन्ध होगी। 7उन्हें आगे अब कोई भी
भेंट 'बकरे की मूर्तियों' को नहीं चढ़ानी चाहिए। ये लोग
उन अन्य देवताओं के पीछे लग चुके हैं। इस प्रकार
उन्होंने वेश्याओं जैसा काम किया है। ये नियम सदैव ही
रहेंगे!

8"लोगों से कहो: इस्राएल का कोई नागरिक, या
कोई यात्री, या कोई विदेशी जो तुम लोगों के बीच
रहता है, होमबलि या बलि चढ़ा सकता है। 9उस
व्यक्ति को वह बलि मिलापवाले तम्बू के द्वार पर ले
जानी चाहिए और उसे यहोवा को चढ़ानी चाहिए। यदि
वह व्यक्ति ऐसा नहीं करता तो उसे अपने लोगों से
अलग कर देना चाहिए।

10"मैं (परमेश्वर) हर ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध होऊँगा
जो खून खाता है। चाहे वह इस्राएल का नागरिक हो या
वह तुम्हारे बीच रहने वाला कोई विदेशी हो। मैं उसे
उसके लोगों से अलग करूँगा। 11क्यों? क्योंकि प्राणी
का जीवन खून में है। मैंने तुम्हें उस खून को वेदी पर
डालने का नियम दिया है। तुम्हें अपने को शुद्ध करने
के लिए यह करना चाहिए। तुम्हें वह खून उस जीवन
के बदले में मुझे देना होगा जो तुम लेते हो। 12इसलिए मैं
इस्राएल के लोगों से कहता हूँ: तुममें से कोई खून नहीं
खा सकता और न ही तुम्हारे बीच रहने वाला कोई
विदेशी खून खा सकता है। 13यदि कोई व्यक्ति किसी
जंगली जानवर या पक्षी को पकड़ता है जिसे खाया जा
सके तो उस व्यक्ति को खून जमीन पर बहा देना चाहिए
और मिट्टी से उसे ढक देना चाहिए। चाहे वह व्यक्ति
इस्राएल का नागरिक हो या तुम्हारे बीच रहनेवाला
विदेशी। 14तुम्हें यह क्यों करना चाहिए? क्योंकि यदि
खून तब भी माँस में है तो उस जानवर का प्राण भी माँस
में है। इसलिए मैं इस्राएल के लोगों को आदेश देता हूँ:
उस माँस को मत खाओ जिसमें खून हो! कोई भी
व्यक्ति जो खून खाता है अपने लोगों से अलग कर दिया
जाए।

15यदि कोई व्यक्ति अपने आप मरे जानवर या किसी
दूसरे जानवर द्वारा मारे गए जानवर को खाता है तो वह
व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। उस व्यक्ति को अपने
वस्त्र और अपना पूरा शरीर पानी से धोना चाहिए। चाहे
वह व्यक्ति इस्राएल का नागरिक हो या तुम्हारे बीच
रहने वाला कोई विदेशी। 16यदि वह व्यक्ति अपने वस्त्रों
को नहीं धोता और न ही नहाता है तो वह पाप करने
का अपराधी होगा।"

यौन सम्बन्धों के बारे में नियम

18 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"इस्राएल के लोगों से
कहो: मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। 3यहाँ
आने के पहले तुम लोग मिस्र में थे। तुम्हें वह नहीं
करना चाहिए जो वहाँ हुआ करता था! मैं तुम लोगों को
कनान ले जा रहा हूँ। तुम लोगों को वह नहीं करना है
जो उस देश में किया जाता है! 4तुम्हें मेरे नियमों का
पालन करना चाहिए और मेरे नियमों के अनुसार
चलना चाहिए। उन नियमों के पालन में सावधान रहो!
क्यों? क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।

5इसलिए तुम्हें मेरे नियमों और निर्णयों का पालन
करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति मेरे विधियों और नियमों
का पालन करता है तो वह जीवित रहेगा! मैं यहोवा हूँ!

6"तुम्हें अपने निकट सम्बन्धियों से कभी यौन सम्बन्ध
नहीं करना चाहिए! मैं यहोवा हूँ!

7"तुम्हें अपने पिता का अपमान नहीं करना चाहिए
अर्थात् तुम्हें अपनी माता के साथ यौन सम्बन्ध नहीं
करना चाहिए। 8तुम्हें अपनी विमाता से भी यौन सम्बन्ध
नहीं करना चाहिए। पिता की पत्नी से यौन सम्बन्ध
केवल तुम्हारे पिता के लिए है।

9"तुम्हें अपने पिता या माँ की पुत्री अर्थात् अपनी
बहन से यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। इससे अन्तर
नहीं पड़ता कि तुम्हारी उस बहन का पालन पोषण
तुम्हारे घर हुआ या किसी अन्य जगह।

10"तुम्हें अपने नाती पोतियों से यौन सम्बन्ध नहीं
करना चाहिए। वे बच्चे तुम्हारे अंग हैं!*

11"यदि तुम्हारे पिता और उनकी पत्नी की कोई पुत्री
है* तो वह तुम्हारी बहन है। तुम्हें उसके साथ यौन
सम्बन्ध नहीं करना चाहिए।

12"अपने पिता की बहन के साथ तुम्हारा यौन सम्बन्ध
नहीं होना चाहिए। वह तुम्हारे पिता के गोत्र की है।
13तुम्हें अपनी माँ की बहन के साथ यौन सम्बन्ध नहीं
करना चाहिए। वह तुम्हारी माँ के गोत्र की है।

14तुम्हें अपने पिता के भाई का अपमान नहीं करना
चाहिये अर्थात् उसकी पत्नी के साथ यौन सम्बन्ध के
लिए नहीं जाना चाहिए।

15"तुम्हें अपनी पुत्रवधू के साथ यौन सम्बन्ध नहीं
करना चाहिए। वह तुम्हारे पुत्र की पत्नी है। तुम्हें उसके
साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए।

16"तुम्हें अपने भाई की वधू के साथ यौन सम्बन्ध
नहीं करना चाहिये। यह अपने भाई के साथ यौन

वे बच्चे तुम्हारे अंग है शाब्दिक "उनकी नग्नता तुम्हारी नग्नता है।"

यदि … पुत्री है इसका तात्पर्य यह है कि यह आवश्यक नहीं कि पिता की पत्नी आवश्यक रूप से व्यक्ति की माँ हो, किन्तु वह व्यक्ति और पिता की पुत्री भाई बहन हैं।

सम्बन्ध रखने जैसा होगा। केवल तुम्हारा भाई अपनी पत्नी के साथ यौन सम्बन्ध रख सकता है।*

17"तुम्हें किसी स्त्री और उसकी पुत्री के साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए और तुम्हें इस स्त्री की पोती से यौन सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए। इससे अन्तर नहीं पड़ता कि वह पोती उस स्त्री के पुत्र की या पुत्री की बेटी है। उसकी पोतियाँ उसके गोत्र की हैं। उनके साथ यौन सम्बन्ध करना अनुचित है।

18"जब तक तुम्हारी पत्नी जीवित है, तुम्हें उसकी बहन को दूसरी पत्नी नहीं बनाना चाहिए। यह बहनों को परस्पर शत्रु बना देगा। तुम्हें अपनी पत्नी की बहन से यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए।

19"तुम्हें किसी स्त्री के पास उसके मासिकधर्म के समय यौन सम्बन्ध के लिए नही जाना चाहिए। वह इस समय अशुद्ध है।

20"तुम्हें अपने पड़ोसी की पत्नी से यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। यह तुम्हें केवल अशुद्ध बनाएगा!

21"तुम्हें अपने किसी बच्चे को आग द्वारा मोलेक को भेंट नहीं चढ़ाना चाहिए। यदि तुम ऐसा करते हो तो तुम यही दिखाते हो कि तुम अपने यहोवा के नाम का सम्मान नहीं करते! मैं यहोवा हूँ।

22"तुम्हें किसी पुरुष के साथ वैसा ही यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए जैसा किसी स्त्री के साथ किया जाता है। यह भयंकर पाप है!

23"किसी जानवर के साथ तुम्हारा यौन सम्बन्ध नहीं होना चाहिए। यह केवल तुम्हें घिनौना बना देगा! स्त्री को भी किसी जानवर के साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। यह प्रकृति के विरुद्ध है!

24"इन अनुचित कामों में से किसी से अपने को अशुद्ध न करो! मैं उन जातियों को उनके देश से बाहर कर रहा हूँ और मैं उनकी धरती तुम को दे रहा हूँ! क्यों? क्योंकि वे लोग वैसे भयंकर पाप करते हैं! 25इसलिए वह देश अशुद्ध हो गया है! वह देश अब उन कामों से ऊब गया है और वह देश उसमें रहने वालों को बाहर निकाल फेंक रहा है!*

26"इसलिए तुम मेरे नियमों और निर्णयों का पालन करोगे। तुम्हें उन में से कोई भयंकर पाप नहीं करना चाहिए। ये नियम इस्राएल के नागरिकों और जो तुम्हारे बीच रहते हैं, उनके लिए है। 27जो लोग तुम से पहले वहाँ रहे उन्होंने वे सभी भयंकर काम किए। जिससे वह धरती गन्दी हो गयी। 28यदि तुम भी वही काम करोगे तो तुम धरती को गंदा बनाओगे। यह तुम लोगों को वैसे ही निकाल बाहर करेगी, जैसे तुमसे पहले रहने वाली जातियों को किया गया। 29यदि कोई व्यक्ति वैसे भयंकर पाप करता है तो उस व्यक्ति को अपने लोगों से अलग कर देना चाहिए। 30अन्य लोगों ने उन भयंकर पापों को किया है। किन्तु मेरे नियमों का पालन करना चाहिए। तुम्हें उन भयंकर पापों में से कोई भी नहीं करना चाहिए। उन भयंकर पापों से अपने को अशुद्ध मत बनाओ। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"

इस्राएल परमेश्वर का है

19 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"इस्राएल के सभी लोगों से कहो: कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ मैं पवित्र हूँ! इसलिए तुम्हें पवित्र होना चाहिए! 3तुम में से हर एक व्यक्ति को अपने माता पिता का सम्मान करना चाहिए और मेरे विश्राम के विशेष दिनों को मानना चाहिए। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

4"मूर्तियों की उपासना मत करो। अपने लिए देवताओं की मूर्तियाँ धातु गला कर मत बनाओ। मैं तुम लोगों का परमेश्वर यहोवा हूँ!

5"जब तुम यहोवा को मेलबलि चढ़ाओ तो तुम उसे ऐसे चढ़ाओ कि तुम यहोवा द्वारा स्वीकार किए जा सको। 6तुम इसे चढ़ाने के दिन खा सकोगे और अगले दिन भी। किन्तु यदि बलि का कुछ भाग तीसरे दिन भी बच जाए तो उसे तुम्हें आग में जला देना चाहिए। 7किसी भी बलि को तीसरे दिन नहीं खाना चाहिए। यह अशुद्ध है। यह स्वीकार नहीं होगी। 8यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो वह अपराधी होगा! क्यों? क्योंकि उसने यहोवा की पवित्र चीज़ों का सम्मान नहीं किया। उस व्यक्ति को अपने लोगों से अलग कर दिया जाना चाहिए।

9"जब तुम कटनी के समय अपनी फ़सल काटो तो तुम सब ओर से खेत के कोनों तक मत काटो और यदि अन्न जमीन पर गिर जाता है तो तुम्हें उसे इकट्ठा नहीं करना चाहिए। 10अपने अँगूर के बाग के सारे अँगूर न तोड़ो और जो जमीन पर गिर जाएँ उन्हें न उठाओ। क्यों? क्योंकि तुम्हें वे चीज़ें गरीब लोगों और जो तुम्हारे देश से यात्रा करेंगे, उनके लिए छोड़नी चाहिए। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

11"तुम्हें चोरी नहीं करनी चाहिए। तुम्हें लोगों को ठगना नहीं चाहिए। तुम्हें आपस में झूठ नहीं बोलना चाहिए। 12तुम्हें मेरे नाम पर झूठा वचन नहीं देना चाहिए। यदि तुम ऐसा करते हो तो तुम यह दिखाते हो कि तुम अपने परमेश्वर के नाम का सम्मान नहीं करते हो। मैं यहोवा हूँ!

13"तुम्हें अपने पड़ोसी को धोखा नहीं देना चाहिए। तुम्हें उसकी चोरी नहीं करनी चाहिए। तुम्हें मजदूर की मजदूरी पूरी रात, सवेरे तक नहीं रोकनी चाहिए।*

तुम्हारा भाई ... है "वह तुम्हारे भाई की नग्नता है।"

निकाल फेंक रहा है उल्टी कर रहा है।

तुम्हें मजदूर ... रोकनी चाहिये इससे यह पता चलता है कि मजदूरी पर रखे गए मजदूर को उस दिन किए गए काम की मजदूरी उसी दिन दी जाती थी।

14"तुम्हें किसी बहरे आदमी को अपशब्द नहीं कहना चाहिए। तुम्हें किसी अन्धे को गिराने के लिए उसके सामने कोई चीज़ नहीं रखनी चाहिए। किन्तु तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा का सम्मान करना चाहिए। मैं यहोवा हूँ!

15"तुम्हें न्याय करने में ईमानदार होना चाहिए। न तो तुम्हें ग़रीब के साथ विशेष पक्षपात करना चाहिए और न ही बड़े एवं धनी लोगों के प्रति कोई आदर दिखाना चाहिए। तुम्हें अपने पड़ोसी के साथ न्याय करते समय ईमानदार होना चाहिए। 16तुम्हें अन्य लोगों के विरुद्ध चारों ओर अफवाहें फैलाते हुए नहीं चलना चाहिए। ऐसा कुछ न करो जो तुम्हारे पड़ोसी के जीवन को ख़तरे में डाले। मैं यहोवा हूँ!

17"तुम्हें अपने हृदय में अपने भाईयों से घृणा नहीं करनी चाहिए। यदि तुम्हारा पड़ोसी कुछ बुरा करता है तो इसके बारे में उसे समझाओ। किन्तु उसे क्षमा करो।! 18लोग, जो तुम्हारा बुरा करें, उसे भूल जाओ। उससे बदला लेने का प्रयत्न न करो। अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करो जैसे अपने आप से करते हो। मैं यहोवा हूँ!

19"तुम्हें मेरे नियमों का पालन करना चाहिए। दो जातियों के पशुओं को प्रजनन के लिए आपस में मत मिलाओ। तुम्हें खेत में दो प्रकार के बीज नहीं बोने चाहिए। तुम्हें दो प्रकार की चीज़ों के मिलावट से बने वस्त्रों को नहीं पहनना चाहिए।

20"यह हो सकता है कि किसी दूसरे व्यक्ति की दासी से किसी व्यक्ति का यौन सम्बन्ध हो। यदि यह दासी न तो खरीदी गई है न ही स्वतन्त्र कराई गई है तो उन्हें दण्ड दिया जाना चाहिए। किन्तु वे मारे नहीं जाएंगे। क्यों? क्योंकि स्त्री स्वतन्त्र नहीं थी। 21उस व्यक्ति को अपने अपराध के लिए मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा को बलि चढ़ानी चाहिए। व्यक्ति को एक मेढ़ा दोषबलि के रूप में लाना चाहिए। 22याजक उस व्यक्ति के पापों के भुगतान करने के लिए उपासना करेगा। याजक यहोवा को दोषबलि के रूप में मेढ़े को चढ़ाएगा। यह व्यक्ति के किए हुए पापों के लिए होगा। तब व्यक्ति अपने किए पाप के लिए क्षमा किया जाएगा।

23"भविष्य में तुम अपने प्रदेश में प्रवेश करोगे। उस समय भोजन के लिए तुम अनेकों प्रकार के पेड़ लगाओगे। पेड़ लगाने के बाद पेड़ के किसी फल का उपयोग करने के लिए तुम्हें तीन वर्ष तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। तुम्हें उससे पहले के फल का उपयोग नहीं करना चाहिए। 24चौथे वर्ष उस पेड़ के फल यहोवा के होंगे। यह यहोवा की स्तुति के लिए पवित्र भेंट होगी। 25तब, पाँचवें वर्ष तुम उस पेड़ का फल खा सकते हो और पेड़ तुम्हारे लिए अधिक से अधिक फल पैदा करेगा। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

26"तुम्हें कोई चीज़, उसमें खून रहते तक नहीं खानी चाहिए। तुम्हें भविष्यवाणी करने के लिये जादू या शगुन आदि का उपयोग नहीं करना चाहिए।

27"तुम्हें अपने सिर के बगल के बढ़े बालों को कटवाना नहीं चाहिए। तुम्हें अपनी दाढ़ी के किनारे नहीं कटवाने चाहिए। 28किसी मरे व्यक्ति की याद को बनाए रखने के लिए तुम्हें अपने शरीर को काटना नहीं चाहिए। तुम्हें अपने ऊपर कोई चिन्ह गुदवाना नहीं चाहिए। मैं यहोवाहूँ!

29"तुम अपनी पुत्री को वेश्या मत बनने दो। इससे केवल यह पता चलता है कि तुम उसका आदर नहीं करते। तुम अपने देश में स्त्रियों को वेश्याएँ मत बनने दो। तुम अपने देश को इस प्रकार के पापों से मत भर जानेदो।

30"तुम्हें मेरे विश्राम के विशेष दिनों में काम नहीं करना चाहिए। तुम्हें मेरे पवित्र स्थान का सम्मान करना चाहिए। मैं यहोवा हूँ!"31ओझाओं तथा भूतसिद्धियों के पास सलाह के लिए मत जाओ। उनके पास तुम मत जाओ, वे केवल तुम्हें अशुद्ध बनाएँगे। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!"

32"बूढ़े लोगोका सम्मान करो। जब वे कमरे में आएँ तो खड़े हो जाओ। अपने परमेश्वर का सम्मान करो। मैं यहोवा हूँ!"

33"अपने देश में रहने वाले विदेशियों के साथ बुरा व्यवहार मत करो! 34तुम्हें विदेशियों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा तुम अपने नागरिकों के साथ करते हो। तुम विदेशियों से वैसा प्यार करो जैसा अपने से करते हो। क्यों? क्योंकि तुम भी एक समय मिस्र में विदेशी थे। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ! 35तुम्हें न्याय करते समय लोगों के प्रति ईमानदार होना चाहिए। तुम्हें चीज़ों के नापने और तौलने में ईमानदार होना चाहिए। 36तुम्हारी टोकरियाँ ठीक माप की होनी चाहिए। तुम्हारे नापने के पात्रों में द्रव की उचित मात्रा आनी चाहिए। तुम्हारे तराजू और तुम्हारे बाट चीज़ों को ठीक तौलने वाले होने चाहिए। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ! मैं तुम्हें मिस्र देश से बाहर लाया! 37तुम्हें मेरे सभी नियमों और निर्णयों को याद रखना चाहिएऔर तुम्हें उनका पालन करना चाहिए। मैं यहोवा हूँ!"

मूर्ति पूजा के विरुद्ध चेतावनी

20 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"तुम्हें इस्राएल के लोगों से यह भी कहना चाहिए: तुम्हारे देश में कोई व्यक्ति अपने बच्चों में से किसी को झूठे देवता मोलेक को दे सकता है। उस व्यक्ति को मार डालना चाहिए। इससे अन्तर नहीं पड़ता कि वह इस्राएल का नागरिक है या इस्राएल में रहने वाला कोई विदेशी है, तुम्हें उसे पत्थर फेंक-फेंक कर मार डालना चाहिए।

3मैं उस व्यक्ति के विरुद्ध होऊँगा। मैं उसे उसके लोगों से अलग करूँगा। क्यों? क्योंकि उसने अपने बच्चों को मोलेक को दिया। उसने यह प्रकट किया कि वह मेरे पवित्र नाम का सम्मान नहीं करता। उसने मेरे पवित्र स्थान को अशुद्ध किया। 4सम्भव है साधारण लोग उस व्यक्ति की उपेक्षा करे। सम्भव है वे उस व्यक्ति को न मारे जिसने बच्चों को मोलेक को दिया है। 5किन्तु मैं उस व्यक्ति और उसके परिवार के विरुद्ध होऊँगा। मैं उसे उसके लोगों से अलग करूँगा। मैं किसी भी ऐसे व्यक्ति को उसके लोगों से अलग करूँगा जो मेरे प्रति विश्वास नहीं रखता और मोलेक का अनुसरण करता है। 6मैं उस व्यक्ति के विरुद्ध होऊँगा जो किसी ओझा और भूतसिद्धि के पास सलाह के लिए जाता है। वह व्यक्ति मुझसे विश्वासघात करता है। इसलिए मैं उस व्यक्ति को उसके लोगों से अलग करूँगा। 7विशेष बनो। अपने को पवित्र बनाओ। क्यों? क्योंकि मैं पवित्र हूँ! मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। 8मेरे आज्ञाओं का पालन करो और उन्हें याद रखो। मैं यहोवा हूँ और मैंने तुम्हें अपना विशेष लोग बनाया है। 9यदि कोई व्यक्ति अपने माता-पिता के अनिष्ट की कामना करता है तो उस व्यक्ति को मार डालना चाहिए। उसने अपने पिता या माँ का अनिष्ट चाहा है, इसलिए उसे दण्ड देना चाहिए।*

यौन पापों के दण्ड

10"यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी की पत्नी के साथ यौन सम्बन्ध करता है तो स्त्री और पुरुष दोनों अनैतिक सम्बन्ध के अपराधी हैं। इसलिए स्त्री और पुरुष दोनों को मार डालना चाहिए। 11यदि कोई व्यक्ति अपनी विमाता से यौन सम्बन्ध करता है तो उस व्यक्ति को मार डालना चाहिए। उस व्यक्ति को और उसकी विमाता दोनों को मार डालना चाहिए। उस व्यक्ति ने अपने पिता के विरूद्ध पाप किया है।*

12"यदि कोई व्यक्ति अपनी पुत्रवधू के साथ यौनसम्बन्ध करता है तो दोनों को मार डालना चाहिए। उन्होंने बहुत बुरा यौन पाप किया है। उन्हें दण्ड अवश्य मिलना चाहिए।

13"यदि कोई व्यक्ति किसी पुरुष के साथ स्त्री जैसा यौन सम्बन्ध करता है तो दोनों को मार डालना चाहिए। उन्होंने बहुत बुरा यौन पाप किया है। उन्हें दण्ड अवश्य मिलना चाहिए।

14"यदि कोई व्यक्ति किसी स्त्री और उसकी माँ के साथ यौन सम्बन्ध करता है तो यह यौन पाप है। लोगों को उस व्यक्ति तथा दोनों स्त्रियों को आग में जला देना चाहिए। इस यौन पाप को अपने लोगों में मत होने दो।

15"यदि कोई व्यक्ति किसी जानवर से यौन सम्बन्ध करे तो उस व्यक्ति को मार डालना चाहिए और तुम्हें उस जानवर को भी मार देना चाहिए। 16यदि कोई स्त्री किसी जानवर से यौन सम्बन्ध करती है तो तुम्हें उस स्त्री और जानवर को मार डालना चाहिए। उन्हें अवश्य मार देना चाहिए। उन्हें दण्ड अवश्य मिलना चाहिए।

17"यह एक भाई और उसकी बहन के लिए लज्जाजनक है कि आपस में वे यौन सम्बन्ध करे।* उन्हें सामाजिक रूप में दण्ड मिलना चाहिए। वे अपने लोगों से अलग कर दिए जाने चाहिए। वह व्यक्ति जिसने अपनी बहन के साथ यौन सम्बन्ध किया है, अपने पाप के लिए दण्ड पाएगा।

18"यदि कोई व्यक्ति किसी स्त्री के साथ मासिकधर्म के रक्त स्राव के समय यौन सम्बन्ध करेगा तो स्त्री पुरुष दोनों को अपने लोगों से अलग कर देना चाहिए। उन्होंने पाप किया है क्योंकि उसने खून के स्रोत को उघाड़ा। 19तुम्हें यौन सम्बन्ध अपनी माँ की बहन या पिता की बहन के साथ नहीं करना चाहिए। यह गोत्रीय अनैतिकता का पाप है।* उन्हें उनके पाप के लिए दण्ड मिलेगा।

20"किसी पुरुष को अपने चाचा/मामा की पत्नी के साथ नहीं सोना चाहिए। यह व्यक्ति तथा उसकी चाची व मामी को उनके पापों के लिए दण्ड मिलेगा। वे बिना किसी सन्तान के मरेंगे।

21"किसी व्यक्ति के लिए यह बुरा है कि वह अपने भाई की पत्नी के साथ यौन सम्बन्ध करे। उस व्यक्ति ने अपने भाई के विरुद्ध पाप किया है।* उनकी कोई सन्तान नहीं होगी।

22"तुम्हें मेरे सारे नियमों और निर्णयों को याद रखना चाहिए और तुम्हें उनका पालन अवश्य करना चाहिए। मैं तुम्हें तुम्हारे प्रदेश को ले जा रहा हूँ। तुम लोग उस प्रदेश में रहोगे। यदि तुम लोग मेरे नियमों और निर्णयों को मानते रहे तो वह प्रदेश तुम लोगों को निकाल बाहर नहीं करेगा। 23मैं अन्य लोगों को उस प्रदेश को छोड़ने के लिए विवश कर रहा हूँ। क्यों? क्योंकि उन लोगों ने वे सभी पाप किए। मैं उन पापों से घृणा करता हूँ। इसलिए जिस प्रकार वे लोग रहे, उस तरह तुम नहीं रहोगे। 24मैंने कहा है कि तुम उनका प्रदेश प्राप्त करोगे। मैं उनका प्रदेश तुमको दूँगा। यह तुम्हारा प्रदेश होगा।

उसने पिता ... देना चाहिये शाब्दिक "उसने अपनी मौत आप बुलाई है।"

पिता ... है शाब्दिक "उसने अपने पिता की नग्नता को उघाड़ा।"

आपस में यौन सम्बन्ध करें शाब्दिक "वह उसकी नग्नता को देखता है और वह उसकी नग्नता को देखती हैं।

गोत्रीय ... पाप है गोत्र के व्यक्तियों के यौन सम्बन्ध का पाप।

उस व्यक्ति ... पाप किया है शाब्दिक "उस व्यक्ति ने अपने भाई की नग्नता को उघाड़ा हैं।"

वह प्रदेश बहुत सुन्दर है। उसमें दूध व मधु की नदियाँ बहती हैं। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

"मैंने तुम्हें विशेष बनाया है। मैंने तुम्हारे साथ अन्य लोगों से भिन्न व्यवहार किया है। 25इसलिए तुम्हें शुद्ध जानवरों के साथ अशुद्ध जानवरों से भिन्न व्यवहार करना चाहिए। तुम्हें शुद्ध पक्षियों के साथ अशुद्ध पक्षियों से भिन्न व्यवहार करना चाहिए। उन में से किसी भी अशुद्ध पक्षी, जानवर और कीट-पतंग को मत खाओ जो भूमि पर रेंगते हैं। मैंने उन चीज़ों को अशुद्ध बनाया है। 26मैंने तुम्हें अपना विशेष जन बनाया है। इसलिए तुम्हें मेरे लिए पवित्र होना चाहिए। क्यों? क्योंकि मैं यहोवा हूँ और मैं पवित्र हूँ!

27"कोई पुरुष या कोई स्त्री जो ओझा हो या कोई भूतसिद्धि हो, तो उन्हें निश्चय ही मार दिया जाना चाहिए। लोगों को चाहिए कि वे उन्हें पत्थर मार–मार कर मार दें। उन्हें मार ही दिया जाना चाहिए।"

याजकों के लिये नियम

21 यहोवा ने मूसा से कहा, "ये बातें हारून के याजक पुत्रों से कहो: किसी मरे व्यक्ति को छूकर याजक अपने को अशुद्ध न करें। 2 किन्तु यदि मरा हुआ व्यक्ति उसके नजदीकी सम्बन्धियों में से कोई है तो वह मृतक के शरीर को छू सकता है। याजक अपने को अशुद्ध कर सकता है यदि मृत व्यक्ति उसकी माँ, पिता, उसका पुत्र, या पुत्री, उसका भाई, 3उसकी अविवाहित बहन है। (यह बहन उसकी नजदीकी है क्योंकि उसका पति नहीं है।) इसलिए याजक अपने को अशुद्ध कर सकता है, यदि वह मरती है। 4किन्तु याजक अपने को अशुद्ध नहीं कर सकता, यदि मरा व्यक्ति उसके दासों में से एक हो।*

5"याजक को शोक प्रकट करने के लिए अपने सिर का मुण्डन नहीं कराना चाहिए। याजक को अपनी दाढ़ी के सिरे नहीं कटवाने चाहिए। याजक को अपने शरीर को कहीं भी काटना नहीं चाहिए। 6याजक को अपने परमेश्वर के लिए पवित्र होना चाहिए। इन्हे परमेश्वर के नाम के लिए सम्मान दिखाना चाहिए। क्यों? क्योंकि वे रोटी और आग द्वारा भेंट यहोवा को पहुँचाते हैं। इसलिए उन्हें पवित्र होना चाहिए।

7"याजक परमेश्वर की सेवा विशेष ढंग से करता है। इसलिए याजक को ऐसी स्त्री से विवाह नहीं करना चाहिए जिसने किसी के साथ यौन सम्बन्ध किया हो। याजक को किसी वेश्या, या किसी तलाक दी गई स्त्री से विवाह नहीं करना चाहिए। 8याजक परमेश्वर की सेवा विशेष ढंग से करता है। इसलिए तुम्हें उसके साथ विशेष व्यवहार करना चाहिए। क्यों? क्योंकि वह पवित्र चीज़ें ले चलता है। वह पवित्र रोटी यहोवा को पहुँचाता है और मैं पवित्र हूँ। मैं यहोवा हूँ, और मैं तुम्हें पवित्र बनाता हूँ।

9"यदि याजक की पुत्री वेश्या बन जाती है तो वह अपनी प्रतिष्ठा नष्ट करती है तथा अपने पिता को कलंक लगाती है। इसलिए उसे जला देना चाहिए।

10"महायाजक अपने भाइयों में से चुना जाता था। अभिषेक का तेल उसके सिर पर डाला जाता था। इस प्रकार वह महायाजक के विशेष कर्त्तव्य के लिए नियुक्त किया जाता था। वह महायाजक के विशेष वस्त्र को पहनने के लिए चुना जाता था। इसलिए उसे अपने दु:ख को प्रकट करने वाला कोई काम समाज में नहीं करना चाहिए। उसे अपने बाल जंगली ढंग से नहीं बिखेरने चाहिए। उसे अपने वस्त्र नहीं फाड़ने चाहिए। 11उसे मुर्दे को छूकर अपने को अशुद्ध नहीं बनाना चाहिए। उसे किसी मुर्दे के पास नहीं जाना चाहिए। चाहे वह उसके अपने माता–पिता का ही क्यों न हो। 12महायाजक को परमेश्वर के पवित्र स्थान के बाहर नहीं जाना चाहिए। यदि उसने ऐसा किया तो वह अशुद्ध हो जायेगा और तब वह परमेश्वर के पवित्र स्थान को अशुद्ध कर देगा। अभिषेक का तेल महायाजक के सिर पर डाला जाता था। यह उसे शेष लोगों से भिन्न करता था। मैं यहोवा हूँ!

13"महायाजक को विवाह करके उसे पत्नी बनाना चाहिए जो कुवाँरी हो। 14महायाजक को ऐसी स्त्री से विवाह नहीं करना चाहिए जो किसी अन्य पुरुष के साथ यौन सम्बन्ध रख चुकी हो। महायाजक को किसी वेश्या, या तलाक दी गई स्त्री, या विधवा स्त्री से विवाह नहीं करना चाहिए। महायाजक को अपने लोगों में से एक कुवाँरी से विवाह करना चाहिए। 15इस प्रकार लोग उसके बच्चों को सम्मान देंगे। मैं, यहोवा ने, याजक को विशेष काम के लिए भिन्न बनाया है।"

16यहोवा ने मूसा से कहा, 17"हारून से कहो: यदि तुम्हारे वंशजों की सन्तानों में से कोई अपने में कोई दोष पाए तो उन्हें विशेष रोटी परमेश्वर तक नहीं ले जानी चाहिए। 18कोई व्यक्ति, जिसमें कोई दोष हो, याजक का काम न करे और न ही मेरे पास भेंट लाए, ये लोग याजक के रूप में सेवा नहीं कर सकते:

अन्धे व्यक्ति, लगंड़े व्यक्ति, विकृत चेहरे वाले व्यक्ति, अत्यधिक लम्बी भुजा और टाँग वाले व्यक्ति।

19 टूटे पैर या हाथ वाले व्यक्ति, 20कुबड़े व्यक्ति, बौने, आँख में दोष वाले व्यक्ति,। खुजली और चर्म रोग वाले व्यक्ति, बधिया किए गए नपुंसक व्यक्ति।

21यदि हारून के वंशजों मे से कोई कुछ दोष वाला है तो वह यहोवा को आग से बलि नहीं चढ़ा सकता और वह व्यक्ति विशेष रोटी अपने परमेश्वर को नहीं पहुँचा

किन्तु याजक ... एक हो शाब्दिक "किन्तु स्वामी को अपने लोगों के लिए अशुद्ध नहीं होना चाहिये।"

सकता। 22वह व्यक्ति याजकों के परिवार से है अत: वह
पवित्र रोटी खा सकता है। वह अति पवित्र रोटी भी खा
सकता है। 23किन्तु वह सबसे अधिक पवित्र स्थान में
पर्दे से होकर नहीं जा सकता और न ही वह वेदी के
पास जा सकता है। क्यों? क्योंकि उस में कुछ दोष है।
उसे मेरे पवित्र स्थान को अपवित्र नहीं बनाना चाहिए।
मैं यहोवा उन स्थानों को पवित्र बनाता हूँ।"

24इसलिए मूसा ने ये बातें हारून से, हारून के पुत्रों
और इस्राएल के सभी लोगों से कही।

22 परमेश्वर यहोवा ने मूसा से कहा, 2"हारून
और उसके पुत्रों से कहो: इस्राएल के लोग जो
चीज़ें मुझे देंगे, वे पवित्र हो जाएंगी। वे मेरी हैं। इसलिए
तुम याजकों को वे चीज़ें नहीं लेनी चाहिए। यदि तुम उन
पवित्र चीज़ों का उपयोग करते हो तो तुम यह प्रकट
करोगे कि तुम मेरे पवित्र नाम का सम्मान नहीं करते।
मैं यहोवा हूँ। 3यदि तुम्हारे सभी वंशजो में से कोई व्यक्ति
उन चीज़ों को छूएगा तो वह अशुद्ध हो जाएगा। वह
व्यक्ति मुझसे अलग हो जाएगा। इस्राएल के लोगों ने वे
चीज़ें मुझे दीं। मैं यहोवा हूँ!

4"यदि हारून के किसी वंशज को बुरे चर्म रोगों में से
कोई रोग हो या उससे कुछ रिस रहा हो तो वह तब
तक पवित्र भोजन नहीं कर सकता जब तक वह शुद्ध
न हो जाय। यह नियम किसी भी याजक के लिए है जो
अशुद्ध हो। वह याजक किसी शव को छू कर या अपने
वीर्य पात से अशुद्ध हो सकता है। 5वह तब अशुद्ध हो
सकता है जब वह किसी रेंगने वाले जानवर को छूए।
वह तब अशुद्ध हो सकता है जब वह किसी अशुद्ध
व्यक्ति को छूए। इसका कोई महत्व नहीं कि उस व्यक्ति
को किस चीज़ ने अशुद्ध किया है। 6यदि कोई व्यक्ति
उन चीज़ों को छुएगा तो वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।
उस व्यक्ति को पवित्र भोजन में से कुछ भी नहीं खाना
चाहिए। पानी डालकर नहाये बिना वह पवित्र भोजन
नहीं कर सकता है। 7वह सूरज के डूबने पर ही शुद्ध
होगा। तभी वह पवित्र भोजन कर सकता है। क्यों?
क्योंकि वह भोजन उसका है।

8"यदि याजक को कोई ऐसा जानवर मिलता है जो
स्वयं मर गया हो या किसी अन्य जानवर द्वारा मार दिया
गया हो तो उसे मरे जानवर को नहीं खाना चाहिए। यदि
वह व्यक्ति उस जानवर को खाता है तो वह अशुद्ध
होगा। मैं यहोवा हूँ!

9"याजक को मेरी सेवा के विशेष समय रखने होंगे।
उन्हें उन दिनों सावधान रहना होगा। उन्हें इस बात के
लिए सावधान रहना होगा कि वे पवित्र चीज़ों को अपवित्र
न बनाएँ। यदि वे सावधान रहेंगे तो मरेंगे नहीं। मैं यहोवा
ने उन्हें इस विशेष काम के लिए दूसरों से भिन्न किया
है। 10केवल याजकों के परिवार के व्यक्ति ही पवित्र
भोजन खा सकते हैं। याजक के साथ ठहरने वाला
अतिथि या मजदूर पवित्र भोजन में से कुछ भी नहीं
खाएगा। 11किन्तु यदि याजक अपने धन से किसी दास
को खरीदता है तो वह पवित्र चीज़ों में से कुछ को खा
सकता है और याजक के घर में उत्पन्न दास भी उस
पवित्र भोजन में से कुछ खा सकता है। 12किसी याजक
की पुत्री ऐसे व्यक्ति से विवाह कर सकती है जो याजक
न हो। यदि वह ऐसा करती है तो पवित्र भेंट में से कुछ
नहीं खा सकती। 13किसी याजक की पुत्री विधवा हो
सकती है, या उसे तलाक दिया जा सकता है। यदि
उसके भरन पोषण के लिए उसके बच्चे नहीं हैं और
वह अपने पिता के यहाँ लौटती है, जहाँ वह बचपन में
रही है तो वह पिता के भोजन में से कुछ खा सकती है।
किन्तु केवल याजक के परिवार के व्यक्ति ही इस
भोजन को खा सकते हैं।

14"कोई व्यक्ति भूल से कुछ पवित्र भोजन खा सकता
है। उस व्यक्ति को वह पवित्र भोजन याजक को देना
चाहिए और उसके अतिरिक्त उस भोजन के मूल्य का
पाँचवाँ भाग उसे और देना होगा।

15"इस्राएल के लोग यहोवा को भेंट चढ़ाएँगे। वे भेंटें
पवित्र हो जाती हैं। इसलिए याजक को उन पवित्र चीज़ों
को अपवित्र नहीं बनाना चाहिए। 16यदि याजक उन
चीज़ों को अपवित्र समझते हैं तो वे तब अपने पाप को
बढ़ाएँगे जब पवित्र भोजन को खाएँगे। मैं, यहोवा, उन्हें
पवित्र बनाता हूँ!"

17यहोवा ने मूसा से कहा, 18"हारून और उसके पुत्रों,
और इस्राएल के सभी लोगों से कहो: सम्भव है कि
इस्राएल का कोई नागरिक या कोई विदेशी कोई भेंट
लाना चाहे। सम्भव है उसने कोई विशेष वचन दिया हो,
और यह उसके लिए हो। या सम्भव है यह वह विशेष
भेंट हो जिसे वह व्यक्ति अर्पित करना चाहता हो। 19-20ये
ऐसी भेंटें हैं जिन्हें लोग इसलिए लाते हैं कि वे यहोवा को
भेंट चढ़ाना चाहते हैं। तुम्हें कोई ऐसी भेंट नहीं स्वीकार
करनी चाहिए जिसमें कोई दोष हो। मैं उस भेंट से
प्रसन्न नहीं होऊँगा! यदि भेंट एक साँड़ है, या एक भेड़
है, या एक बकरा है तो वह नर होना चाहिए और इसमें
कोई दोष नहीं होना चाहिए।

21"कोई व्यक्ति यहोवा को मेलबलि चढ़ा सकता है।
वह मेलबलि उस व्यक्ति द्वारा दिए गए किसी वचन के
लिए भेंट के रूप में हो सकती है या यह कोई स्वत:
प्रेरित भेंट हो सकती है जिसे वह व्यक्ति यहोवा को
चढ़ाना चाहता है। यह बैल या मेढ़ा हो सकता है। किन्तु
वह स्वस्थ तथा दोष रहित होना चाहिए। 22तुम्हें यहोवा
को ऐसा कोई जानवर नहीं भेंट करना चाहिए जो अन्धा
हो या जिसकी हड्डियाँ टूटी हों, या जो लंगड़ा हो, या
जिसके कोई घाव रिस रहा हो या बुरे चर्म रोग वाला
हो। तुम्हें यहोवा की वेदी की आग पर उस बीमार
जानवर की भेंट नहीं चढ़ानी चाहिए।

23"कभी-कभी किसी मवेशी या मेमने के पैर
अत्याधिक लम्बे हो सकते हैं या ऐसे पैर हो सकते हैं
जिनका विकास ठीक से न हुआ हो। यदि कोई व्यक्ति
ऐसे जानवर को यहोवा को विशेष भेंट के रूप में
चढ़ाना चाहता है तो वह स्वीकार किया जाएगा। किन्तु
इसे किसी व्यक्ति द्वारा दिए गए वचन के लिए किये जाने
वाले भुगतान के रूप में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
24यदि जानवर के अण्ड कोष जख़्मी, कुचले हुए या
फाड़े हुए हों तो तुम्हें उस जानवर की भेंट यहोवा को
नहीं चढ़ानी चाहिए।

25"तुम्हें विदेशियों से बलि के लिए ऐसे जानवरों को
नहीं लेना चाहिए। क्यों? क्योंकि ये जानवर किसी प्रकार
चोट खाए हुए हैं। उनमें कुछ दोष है। ये स्वीकार नहीं
किए जाएंगे!"

26यहोवा ने मूसा से कहा, 27"जब कोई बछड़ा, या
भेड़, या बकरी पैदा हो तो अपनी माँ के साथ उसे सात
दिन रहने देना चाहिए। तब आठवें दिन और उसके
बाद यह जानवर यहोवा को आग द्वारा दी जाने वाली
बलि के रूप में स्वीकार किया जाएगा। 28किन्तु तुम्हें
उसी दिन उस जानवर और उसकी माँ को नहीं मारना
चाहिए। यही नियम गाय और भेड़ों के लिए है।

29"यदि तुम्हें यहोवा को कोई विशेष कृतज्ञता बलि
चढ़ानी हो तो तुम उस भेंट को चढ़ाने में स्वतन्त्र हो।
किन्तु यह इस प्रकार करो कि वह परमेश्वर को
प्रसन्न करे। 30तुम्हें पूरा जानवर उसी दिन खा लेना
चाहिए। तुम्हें अगली सुबह के लिए कुछ भी माँस नहीं
छोड़ना चाहिए। मै यहोवा हूँ! 31मेरे आदेशों को याद
रखो और उनका पालन करो। मैं यहोवा हूँ! 32मेरे
पवित्र नाम का सम्मान करो! मुझे इस्राएल के लोगों के
लिए बहुत विशिष्ट होना चाहिए। मैं, यहोवा ने तुम्हें
अपना विशेष लोग बनाया है। 33मैं तुम्हें मिस्र से लाया।
मैं तुम्हारा परमेश्वर बना। मैं यहोवा हूँ!"

विशेष पवित्र दिन

23 यहोवा ने मूसा के कहा, 2"इस्राएल के लोगों
से कहो: तुम यहोवा के निश्चित पर्वों को
पवित्र घोषित करो। ये मेरे विशेष पवित्र दिन हैं:

सब्त

3"छ: दिन काम करो। किन्तु सातवाँ दिन, आराम
का एक विशेष दिन या पवित्र मिलन का दिन होगा।
उस दिन तुम्हें कोई काम नहीं करना चाहिए। यह
तुम्हारे सभी घरों में यहोवा का सब्त है।

फ़सह पर्व

4"ये यहोवा के चुने हुए पवित्र दिन हैं। उनके लिए
निश्चित समय पर तुम पवित्र सभाओ की घोषणा करोगे।
5यहोवा का फ़सह पर्व पहले महीने की चौदह तारीख
को सन्ध्या काल में है।

अख़मीरी मैदे के फुलकों का पर्व

6"उसी महीने की पन्द्रह तारीख को अखमीरी मैदे
के फुलकों का पर्व होगा तुम सात दिन तक
अखमीरी मैदे के फुलके खाओगे। 7इस पर्व के पहले
दिन तुम एक पवित्र सभा करोगे। उस दिन तुम्हें कोई
काम नहीं करना चाहिए। 8सात दिन तक तुम यहोवा
को आग द्वारा बलि चढ़ाओगे। सातवें दिन एक पवित्र
सभा होगी। उस दिन तुम्हें कोई काम नहीं करना
चाहिए।"

पहली फ़सल का पर्व

9यहोवा ने मूसा से कहा, 10"इस्राएल के लोगों से
कहो: तुम उस धरती पर जाओगे जिसे मैं तुम्हें दूँगा। तुम
उसकी फ़सल काटोगे। उस समय तुम्हें अपनी फ़सल
की पहली पूली याजक के पास लानी चाहिए। 11याजक
पूली को यहोवा के सामने उत्तोलित करेगा। तब वह
तुम्हारे लिए स्वीकार कर ली जाएगी। याजक पूली को
रविवार के प्रात: काल उत्तोलित करेगा।

12"जिस दिन तुम पूली को उत्तोलित करो, उस दिन
तुम एक वर्ष का एक नर मेमना बलि चढ़ाओगे। उस
मेमने में कोई दोष नहीं होना चाहिए। वह मेमना यहोवा
को होमबलि होगी। 13तुम्हें चार क्वॉट अच्छे जैतून के
तेल मिले आटे की अन्नबलि देनी चाहिए। तुम्हें एक
क्वॉट दाखमधु भी देनी चाहिए। यह भेंट यहोवा को
प्रसन्न करने वाली सुगन्ध होगी। 14जब तक तुम अपने
परमेश्वर को भेंट नहीं चढ़ाते, तब तक तुम्हें कोई नया
अन्न, या फल या नये अन्न से बनी रोटी नहीं खानी
चाहिए। यह नियम तुम चाहे जहाँ भी रहो, तुम्हारी पीढ़ी
दर पीढ़ी चलता रहेगा।

सप्ताहों का पर्व

15"उस रविवार के प्रात:काल से वह दिन जब तुम
पूली उत्तोलन भेंट के लिए लाते हो, सात सप्ताह गिनो।
16सातवें सप्ताह के अगले रविवार को (अर्थात् पचास
दिन) बाद तुम यहोवा के लिये नये अन्नबलि लाओगे।
17उस दिन तुम अपने घरों से दो-दो रोटियाँ लाओ। ये
रोटियाँ उत्तोलन भेंट होंगी। खमीर का उपयोग करो
और चार क्वॉट आटे की रोटियाँ बनाओ। वह तुम्हारी
पहली फसल से यहोवा की भेंट होगी।

18"लोगों से अन्नबलि के साथ में एक बछड़ा, दो मेढ़े
और एक-एक वर्ष के सात नर मेमने भेंट किए जाएंगे।
इन जानवरों में कोई दोष नहीं होना चाहिए। ये यहोवा
की होमबलि होंगे। वे आग द्वारा यहोवा को दी गई भेंट
होगी। इस की सुगन्ध से यहोवा प्रसन्न होगा। 19तुम भी

पापबलि के रूप में एक बकरा तथा एक वर्ष के दो
मेमने मेलबलि के रूप में चढ़ाओगे।
20"याजक यहोवा के सामने उत्तोलन बलि के लिए दो
मेमने और पहली फ़सल की रोटी उन्हें उत्तोलित करेगा।
वे यहोवा के लिए पवित्र हैं। वे याजक के होंगे। **21**उसी
दिन, तुम एक पवित्र सभा बुलाओगे। तुम कोई काम
नहीं करोगे। यह नियम तुम्हारे सभी घरों में सदैव
चलेगा।

22"जब तुम अपने खेतों की फ़सल काटो तो खेतों के
कोनों की सारी फ़सल मत काटो। जो अन्न जमीन पर
गिरे, उसे मत उठाओ। उसे तुम गरीब लोगों तथा तुम्हारे
देश में यात्रा करने वाले विदेशियों के लिए छोड़ दो। मैं
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!"

तुरही का पर्व

23यहोवा ने मूसा से फिर कहा, **24**"इस्राएल के लोगों
से कहो: सातवें महीने के प्रथम दिन तुम्हें आराम का
विशेष दिन मानना चाहिए। उस दिन एक धर्म सभा
होगी। तुम्हें इसे मनाने के लिए तुरही बजानी चाहिए।
25तुम्हें कोई काम नहीं करना चाहिए। तुम यहोवा को
आग द्वारा बलि चढ़ाने के लिए बलि लाओगे।"

प्रायश्चित्त का दिन

26यहोवा ने मूसा से कहा, **27**"सातवें महीने के दसवें
दिन प्रायश्चित्त का दिन होगा। उस दिन एक धर्म सभा
होगी। तुम भोजन नहीं करोगे* और तुम यहोवा को
आग द्वारा बलि चढ़ाओगे। **28**तुम उस दिन कोई काम
नहीं करोगे। क्यों? क्योंकि यह प्रायश्चित्त का दिन है।
उस दिन याजक यहोवा के सामने जाएगा और वह
उपासना करेगा जो तुम्हें शुद्ध बनाती है।

29"यदि कोई व्यक्ति उस दिन उपवास करने से मना
करता है तो उसे अपने लोगों से अलग कर देना चाहिए।
30यदि कोई व्यक्ति उस दिन काम करेगा तो उसे मैं
(परमेश्वर) उसके लोगों में से काट दूँगा। **31**तुम्हें कोई
भी काम नहीं करना चाहिए। यह नियम तुम जहाँ कहीं
रहो, सदैव रहेगा। **32**यह तुम्हारे लिए आराम का विशेष
दिन होगा। तुम्हें भोजन नहीं करना चाहिए। तुम आराम
के इस विशेष दिन को महीने के नवें दिन की सन्ध्या*
से आरम्भ करोगे। यह आराम का विशेष दिन उस
सन्ध्या से आरम्भ करके अगली सन्ध्या तक रहता है।"

आश्रय का पर्व

33यहोवा ने मूसा से फिर कहा, **34**"इस्राएल के लोगों
से कहो : सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन आश्रय का पर्व
होगा। यहोवा के लिए यह पवित्र पर्व सात दिन तक
चलेगा। **35**पहले दिन एक धर्म सभा होगी। तुम्हें तब कोई
काम नहीं करना चाहिए। **36**तुम सात दिनों तक यहोवा
के लिये आग द्वारा बलि चढ़ाओगे। आठवें दिन तुम
दूसरी धर्म सभा करोगे। तुम यहोवा को आग द्वारा बलि
चढ़ाओगे। यह एक धर्म सभा होगी। तुम्हें तब कोई
काम नहीं करना चाहिए।

37"ये यहोवा का विशेष पवित्र दिन है। उन दिनों धर्म
सभाएँ होंगी। तुम यहोवा को होमबलि, अन्नबलि, बलियाँ,
पेयबलि अग्नि द्वारा चढ़ाओगे। तुम वे बलियाँ ठीक
समय पर लाओगे। **38**तुम यहोवा के सब्त दिवसों को
याद करने के अतिरिक्त उन पवित्र दिनों का पर्व मनाओगे।
तुम उन बलियों को यहोवा को अपनी अन्नबलि के
अतिरिक्त दोगे। तुम विशेष दिए गए अपने वचन को
पूरा करने के रूप में दी गई किसी भेंट के अतिरिक्त
उन चीज़ों को दोगे। वे उन विशेष भेंटों के अतिरिक्त
होंगी जिन्हें तुम यहोवा को देना चाहते हो।

39"सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन, जब तुम अपने खेतों
से फसल ला चुकोगे, सात दिन तक यहोवा का पर्व
मनाओगे। तुम पहले और आठवें दिन आराम करोगे।
40पहले दिन तुम फलदार पेड़ों से अच्छे फल लोगे और
तुम नाले के किनारे के खजूर के पेड़, चीड़ और बेंत
के पेड़ों से शाखाएँ लोगे। तुम अपने परमेश्वर यहोवा के
सामने सात दिन तक पर्व मनाओगे।

41"तुम इस पवित्र दिन को हर वर्ष यहोवा के लिये
सात दिनों तक मनाओगे। यह नियम सदैव रहेगा। तुम
इस पवित्र दिन को सातवें महीने में मनाओगे। **42**तुम
सात दिन तक अस्थायी आश्रयों में रहोगे। इस्राएल में
उत्पन्न हुए सभी लोग उन आश्रयों में रहेंगे। **43**क्यों?
इससे तुम्हारे सभी वंशज यह जानेंगे कि मैंने इस्राएल के
लोगों को अस्थायी आश्रयों में रहने वाला उस समय
बनाया जिस समय मैं उन्हें मिस्र से लाया। मैं तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा हूँ!"

44इस प्रकार मूसा ने इस्राएल के लोगों को यहोवा के
विशेष पवित्र दिनों के बारे में बताया।

दीपाधार और पवित्र रोटी

24 यहोवा ने मूसा से कहा, **2**"इस्राएल के लोगों
को कोल्हू से निकाला हुआ जैतून का शुद्ध
तेल अपने पास लाने का आदेश दो। वह तेल दीपकों के
लिए है। ये दीपक बिना बुझे जलते रहने चाहिए। **3**हारून
यहोवा के मिलापवाले तम्बू में साक्षीपत्र के पर्दे के आगे
सन्ध्या समय से प्रात:काल तक दीपकों को जलाये रखेगा।
यह नियम सदा-सदा के लिए है। **4**हारून को सोने की
दीपाधार पर यहोवा के सामने दीपकों को सदैव जलता
हुआ रखना चाहिए।

5"अच्छा महीन आटा लो और उसकी बारह रोटियाँ
बनाओ। हर एक रोटी के लिए चार क्वार्ट आटे का

भोजन नहीं करोगे शाब्दिक "अपने को विनीत दिखाओगे।"

सन्ध्या यहूदी लोगों के लिए दिन का आरम्भ सन्ध्या से होता है।

उपयोग करो। 6उन्हें दो पँक्तियों में सुनहरी मेज़ पर
यहोवा के सामने रखो। हर एक पँक्ति में छः रोटियाँ
होंगी। 7हर एक पँक्ति पर शुद्ध लोबान रखो। यह यहोवा
को आग द्वारा दी गई भेंट के सम्बन्ध में यहोवा को याद
दिलाने में सहायता करेगा। 8हर एक सब्त दिवस को
हारून रोटियों को यहोवा के सामने क्रम में रखेगा।
इसे सदैव करना चाहिए। इस्राएल के लोगों के साथ यह
वाचा सदैव बनी रहेगी। 9वह रोटी हारून और उसके
पुत्रों की होगी। वे रोटियों को पवित्र स्थान में खायेंगे।
क्यों? क्योंकि वह रोटी यहोवा को आग द्वारा चढ़ाई गई
भेंटों में से है। वह रोटी सदैव हारून का हिस्सा है।"

वह व्यक्ति जिसने यहोवा को शाप दिया

10एक इस्राएली स्त्री का पुत्र था। उसका पिता मिस्री
था। इस्राएली स्त्री का यह पुत्र इस्राएली था। वह इस्राएली
लोगों के बीच में घूम रहा था और उसने डेरे में लड़ना
आरम्भ किया। 11इस्राएली स्त्री के लड़के ने यहोवा के
नाम के बारे में बुरी बातें कहनी शुरू कीं । इसलिए
लोग उस पुत्र को मूसा के सामने लाए। (लड़के की माँ
का नाम शलोमीत था जो दान के परिवार समूह से दिब्री
की पुत्री थी।) 12लोगों ने लड़के को कैदी की तरह
पकड़े रखा और तब तक प्रतीक्षा की, जब तक यहोवा
का आदेश उन्हें स्पष्ट रूप से ज्ञात नहीं हो गया।

13तब यहोवा ने मूसा से कहा,

14"उस व्यक्ति को डेरे के बाहर एक स्थान पर
लाओ, जिसने शाप दिया है। तब उन सभी लोगों को
एक साथ बुलाओ जिन्होंने उसे शाप देते सुना है। वे लोग
अपने हाथ उसके सिर पर रखेंगे।* और तब सभी लोग
उस पर पत्थर मारेंगे और उसे मार डालेंगे। 15तुम्हें
इस्राएल के लोगों से कहना चाहिए : यदि कोई व्यक्ति
अपने परमेश्वर को शाप देता है तो उस व्यक्ति को
दण्ड मिलना चाहिए। 16कोई व्यक्ति, जो यहोवा के नाम
के विरुद्ध बोलता है, अवश्य मार दिया जाना चाहिए।
सभी लोगों को उसे पत्थर मारने चाहिए। विदेशी को
वैसे ही दण्ड मिलना चाहिए जैसे इस्राएल में जन्म लेने
वाले व्यक्ति को मिलता है। यदि कोई व्यक्ति यहोवा
के नाम को अपशब्द कहता है तो उसे अवश्य मार
देना चाहिए।

17"और यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को मार
डालता है तो उसे अवश्य मार डालना चाहिए। 18यदि
कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के जानवर को मार डालता है
तो उसके बदले में उसे दूसरा जानवर देना चाहिए।*

19"यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोस में किसी को चोट
पहुँचाता है तो उस व्यक्ति को उसी प्रकार की चोट उस
व्यक्ति को पहुँचानी चाहिए।* 20एक टूटी हड्डी के लिए
एक टूटी हड्डी, एक आँख के लिए एक आँख, और
एक दाँत के लिए दाँत। उसी प्रकार की चोट उस
व्यक्ति को पहुँचानी चाहिए, जैसा उसने दूसरे को पहुँचाई
है। 21इसलिए जो व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के जानवर
को मारे तो इसके बदले में उसे दूसरा जानवर देना
चाहिए। किन्तु जो व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को मार
डालता है वह अवश्य मार डाला जाना चाहिए। 22तुम्हारे
लिए एक ही प्रकार का न्याय होगा। यह विदेशी और
तुम्हारे अपने देशवासी के लिए समान होगा। क्योंकि मैं
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!"

23तब मूसा ने इस्राएल के लोगों से बात की और वे
उस व्यक्ति को डेरे के बाहर एक स्थान पर लाए,
जिसने शाप दिया था। तब उन्होंने उसे पत्थरों से मार
डाला। इस प्रकार इस्राएल के लोगों ने वह किया जो
यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

भूमि के लिए आराम का समय

25 यहोवा ने मूसा से सीनै पर्वत पर कहा। यहोवा
ने कहा, 2"इस्राएल के लोगों से कहो, तुम लोग
उस भूमि पर जाओगे जिसे मैं तुमको दे रहा हूँ। उस
समय तुम्हें भूमि को आराम का विशेष समय देना
चाहिए। यह यहोवा को सम्मान देने के लिए धरती के
आराम का विशेष समय होगा। 3तुम छः वर्ष तक अपने
खेतों में बीज बोओगे। तुम अपने अँगूर के बागों में छः
वर्ष तक कटाई करोगे और उसके फल लाओगे। 4किन्तु
सातवें वर्ष तुम उस भूमि को आराम करने दोगे। यह
यहोवा को सम्मान देने के लिए आराम का विशेष
समय होगा। तुम्हें अपने खेतों में बीज नहीं बोना चाहिए
और अँगूर के बागों में बेलों की कटाई नहीं करनी
चाहिए। 5तुम्हें उन फ़सलों की कटाई नहीं करनी चाहिए
जो फ़सल काटने के बाद अपने आप उगती है। तुम्हें
अपनी उन अँगूर की बेलों से अँगूर नहीं उतारने चाहिए
जिनकी तुमने कटाई नहीं की है। यह भूमि के विश्राम
का वर्ष होगा। 6यह भूमि के विश्राम का वर्ष होगा,
किन्तु तुम्हारे पास फिर भी पर्याप्त भोजन रहेगा। तुम्हारे
पुरुष व स्त्री दासों के लिए पर्याप्त भोजन रहेगा। मज़दूरी
पर रखे गए तुम्हारे मजदूर और तुम्हारे देश में रहने
वाले विदेशियों के लिए भोजन रहेगा। 7तुम्हारे मवेशियों
और अन्य जानवरों के खाने के लिए पर्याप्त चारा
होगा।

हाथ उसके सिर पर रखेंगे इससे पता चलता है कि वे सब लोग उस लड़के को दण्ड देने में हाथ बटा रहे थे।

दूसरा जानवर देना चाहिये शाब्दिक इसके लिए भुगतान करो "जीवन के लिये जीवन।"

यदि ... चाहिये यह नियम समाज को अपराधों का दण्ड निश्चत करने के लिए एक दिशा निर्देश देता है। निजी रूप से बदला लेने की अपेक्षा अपराध के अनुरूप दण्ड समाज को निश्चित करना है।

जुबली मुक्ति वर्ष

8“तुम सात वर्षों के सात समूहों को गिनोगे। ये उन्नचास
वर्ष होंगे। इस समय के भीतर भूमि के लिए सात वर्ष
आराम के होंगे। 9प्रायश्चित्त के दिन तुम्हें मेढ़े का सींग
बजाना चाहिए। वह सातवें महीने के दसवें दिन होगा।
तुम्हें पूरे देश में मेढ़े का सींगा बजाना चाहिए। 10तुम
पचासवें वर्ष को विशेष वर्ष मनाओगे। तुम अपने देश
में रहने वाले सभी लोगों की स्वतन्त्रता घोषित करोगे।
इस समय को “जुबली मुक्तिवर्ष” कहा जाएगा। तुममें से
हर एक को उसकी धरती लौटा दी जाएगी।* और
तुममें से हर एक अपने परिवार में लौट जाएगा। 11पचासवाँ
वर्ष तुम्हारे लिए विशेष उत्सव का वर्ष होगा। उस वर्ष
तुम बीज मत बोओ। अपने आप उगी फसल न काटो।
अँगूर की उन बेलों से अँगूर मत लो। 12वह जुबली वर्ष
है। यह तुम्हारे लिए पवित्र समय होगा। तुम उस पैदावार
को खाओगे जो तुम्हारे खेतों से आती है। 13जुबली वर्ष
में हर एक व्यक्ति को उसकी धरती वापस हो जाएगी।

14“किसी व्यक्ति को अपनी भूमि बेचने में मत ठगो
और जब तुम उससे भूमि खरीदो तब उसे अपने को मत
ठगने दो। 15यदि तुम किसी की भूमि खरीदना चाहते हो
तो पिछले जुबली से काल गणना करो और उस गणना
का उपयोग धरती का ठीक मूल्य तय करने के लिए
करो। यदि तुम भूमि को बेचो, तो फसलों के काटने के
वर्षों को गिनो और वर्षों की उस गणना का उपयोग
ठीक मूल्य तय करने के लिए करो। 16यदि अधिक
वर्ष हैं तो मूल्य ऊँचा होगा। यदि वर्ष थोड़े हैं तो मूल्य
कम करो। क्यों? क्योंकि वह व्यक्ति तुमको सचमुच
कुछ वर्षों की कुछ फसलें ही बेच रहा है। अगली जुबली
पर भूमि उसके परिवारों की हो जाएगी। 17तुम्हें एक
दूसरे को ठगना नहीं चाहिए। तुम्हें अपने परमेश्वर का
सम्मान करना चाहिए। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

18“मेरे नियमों और निर्णयों को याद रखो। उनका
पालन करो। तब तुम अपने देश में सुरक्षित रहोगे।
19भूमि तुम्हारे लिए उत्तम फ़सल पैदा करेगी। तब
तुम्हारे पास बहुत अधिक भोजन होगा और तुम अपने
प्रदेश में सुरक्षित रहोगे।

20“किन्तु कदाचित तुम यह कहो, ‘यदि हम बीज न
बोए या अपनी फ़सलें न इकट्ठी करें तो सातवें वर्ष हम
लोगों के लिए खाने को कुछ भी नहीं रहेगा।’ 21चिन्ता
मत करो! मैं छठे वर्ष में अपनी आशीष को तुम्हारे पास
आने का आदेश दूँगा। भूमि तीन वर्ष तक फ़सल पैदा
करती रहेगी। 22जब आठवें वर्ष तुम बोओगे तब तक
फ़सल पैदा करती रहेगी। तुम पुरानी पैदावार को नवें
वर्ष तक खाते रहोगे जब आठवें वर्ष में बोयी हुई फ़सल
घरों में आ जाएगी।

आवासीय भूमि के नियम

23“भूमि वस्तुत: मेरी है। इसलिए तुम इसे स्थायी रूप
में नहीं बेच सकते। तुम मेरे साथ मेरी भूमि पर केवल
विदेशी और यात्री के रूप में रह रहे हो। 24कोई व्यक्ति
अपनी भूमि बेच सकता है, किन्तु उसका परिवार सदैव
अपनी भूमि वापस पाएगा। 25कोई व्यक्ति तुम्हारे देश में
बहुत गरीब हो सकता है। वह इतना गरीब हो सकता
कि उसे अपनी सम्पत्ति बेचनी पड़े। ऐसी हालत में उसके
नजदीकी रिश्तेदारों को आगे आना चाहिए और अपने
रिश्तेदार के लिए वह सम्पत्ति वापस खरीदनी चाहिए।
26किसी व्यक्ति का कोई ऐसा नजदीकी रिश्तेदार नहीं
भी हो सकता है जो उसके लिए सम्पत्ति वापस खरीदे।
किन्तु हो सकता है वह स्वयं भूमि को वापस खरीदने
के लिए पर्याप्त धन पा ले। 27तो उसे जब से भूमि बिकी
थी तब से वर्षों को गिनना चाहिए। उसे उस गणना का
उपयोग, भूमि का मूल्य निश्चित करने के लिए करना
चाहिए। तब उसे भूमि को वापस खरीदना चाहिए। तब
भूमि फिर उसकी हो जाएगी। 28किन्तु यदि वह व्यक्ति
अपने लिए भूमि को वापस खरीदने के लिए पर्याप्त धन
नहीं जुटा पाता तो जो कुछ उसने बेचा है वह उस व्यक्ति
के हाथ में जिसने उसे खरीदा है, जुबली पर्व के आने
तक रहेगा। तब उस विशेष उत्सव के समय भूमि प्रथम
भू स्वामी के परिवार की हो जाएगी। इस प्रकार सम्पत्ति
पुन: मूल अधिकारी परिवार की हो जाएगी।

29“यदि कोई व्यक्ति नगर परकोटे के भीतर अपना
घर बेचता है तो घर के बेचे जाने के बाद एक वर्ष तक
उसे वापस लेने का अधिकार होगा। घर को वापस लेने
का उसका अधिकार एक वर्ष तक रहेगा। 30किन्तु
यदि घर का स्वामी एक पूरा वर्ष बीतने के पहले अपना
घर वापस नहीं खरीदता तो नगर परकोटे के भीतर का
घर जो व्यक्ति खरीदता है उसका और उसके वंशजों
का हो जाता है। जुबली के समय प्रथम गृह स्वामी को
वापस नहीं होगा। 31बिना परकोटे वाले नगर खुले मैदान
माने जाएंगे। अत: उन छोटे नगरों में बने हुए घर जुबली
पर्व के समय प्रथम गृहस्वामी को वापस होंगे।

32“किन्तु लेवियों के नगर के बारे में: जो नगर
लेवियों के अपने हैं, उनमें वे अपने घरों को किसी भी
समय वापस खरीद सकते हैं। 33यदि कोई व्यक्ति लेवी से
कोई घर खरीदे तो लेवीयों के नगर का वह घर फिर
जुबली पर्व के समय लेवियों का हो जाएगा। क्यों? क्योंकि
लेवी नगर के घर लेवी के परिवार समूह के लोगों के
हैं। इस्राएल के लोगों ने उन नगरों को लेवी लोगों को
दिया। 34लेवी नगरों के चारों ओर के खेत और चरागाह
बेचे नहीं जा सकते। वे खेत सदा के लिए लेवियों के हैं।

धरती लौटा दी जाएगी इस्राएल में भूमि परिवारों और परिवार–समूहों की थी। कोई व्यक्ति अपनी भूमि बेच सकता था, किन्तु जुबली के समय वह भूमि फिर उसी परिवार या सयुँक्त परिवार की हो जाती थी जिसे वह सर्वप्रथम दी गई थी।

दासों के स्वामियों के लिए नियम

35"सम्भवत: तुम्हारे देश का कोई व्यक्ति इतना अधिक
गरीब हो जाए कि अपना भरण पोषण न कर सके। तुम
उसे एक अतिथि की तरह जीवित रखोगे। **36**उसे दिए
गए अपने कर्ज़ पर कोई सूद मत लो। अपने परमेश्वर
का सम्मान करो और अपने भाई को अपने साथ रहने
दो। **37**उसे सूद पर पैसा उधार मत दो। जो भोजन वह
करे, उस पर कोई लाभ लेने का प्रयत्न मत करो। **38**मैं
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। मैं तुम्हें मिस्र देश से कनान
प्रदेश देने और तुम्हारा परमेश्वर बनने के लिए बाहर
लाया।

39"सम्भवत: तुम्हारा कोई बन्धु इतना गरीब हो जाय
कि वह दास के रूप में तुम्हे अपने को बेचे। तुम्हें उससे
दास की तरह काम नहीं लेना चाहिए। **40**वह जुबली वर्ष
तक मजदूर और एक अतिथि की तरह तुम्हारे साथ
रहेगा। **41**तब वह तुम्हें छोड़ सकता है। वह अपने बच्चों
को अपने साथ ले जा सकता है और अपने परिवार में
लौट सकता है। वह अपने पूर्वजों की सम्पत्ति को लौट
सकता है। **42**क्यों? क्योंकि वे मेरे सेवक हैं। मैंने उन्हें
मिस्र की दासता से मुक्त किया। वे फिर दास नहीं होने
चाहिए। **43**तुम्हें ऐसे व्यक्ति पर क्रूरता से शासन नहीं
करना चाहिए। तुम्हें अपने परमेश्वर का सम्मान करना
चाहिए।

44"तुम्हारे दास दासियों के बारे में : तुम अपने चारों
ओर के अन्य राष्ट्रों से दास दासियाँ ले सकते हो। **45**यदि
तुम्हारे देश में रहने वाले विदेशियों के परिवारों के बच्चे
तुम्हारे पास आते हैं तो तुम उन्हें भी दास रख सकते हो।
वे बच्चे तुम्हारे दास होंगे। **46**तुम इन विदेशी दासों को
अपने बच्चों को भी दे सकते हो जो तुम्हारे मरने के
बाद तुम्हारे बच्चों के होंगे। वे सदा के लिए तुम्हारे दास
रहेंगे। तुम इन विदेशियों को दास बना सकते हो। किन्तु
तुम्हें अपने भाईयों, इस्राएल के लोगों पर क्रूरता से
शासन नहीं करना चाहिए।

47"सम्भव है कि कोई विदेशी यात्री या अतिथि तुम्हारे
बीच धनी हो जाय। सम्भव है कि तुम्हारे देश का कोई
व्यक्ति इतना गरीब हो जाय कि वह अपने को तुम्हारे
बीच रहने वाले किसी विदेशी या विदेशी परिवार के
सदस्य को दास के रूप में बेचे। **48**वह व्यक्ति वापस
खरीदे जाने और स्वतन्त्र होने का अधिकारी होगा।
उसके भाईयों में से कोई भी उसे वापस खरीद सकता है
49अथवा उसके चाचा, मामा व चचेरे, ममेरे भाई उसे
वापस खरीद सकते हैं या उसके नजदीकी रिश्तेदारों में
से उसे कोई खरीद सकता है अथवा यदि व्यक्ति पर्याप्त
धन पाता है तो स्वयं धन देकर वह फिर मुक्त हो
सकता है।

50"तुम उसका मूल्य कैसे निश्चित करोगे? विदेशी
के पास जब से उसने अपने को बेचा है तब से अगली
जुबली तक के वर्षों को तुम गिनोगे। उस गणना का
उपयोग मूल्य निश्चित करने में करो। क्यों? क्योंकि
वस्तुत: उस व्यक्ति ने कुछ वर्षों के लिए उसे 'मजदूरी'
पर रखा।

51"यदि जुबली के वर्ष के पूर्व कई वर्ष हो तो व्यक्ति
को मूल्य का बड़ा हिस्सा लौटाना चाहिए। यह उन वर्षों
की संख्या पर आधारित है। **52**यदि जुबली के वर्ष तक
कुछ ही वर्ष शेष हो तो व्यक्ति को मूल कीमत का थोड़ा
सा भाग ही लौटाना चाहिए। **53**किन्तु वह व्यक्ति प्रति वर्ष
विदेशी के यहाँ मजदूर की तरह रहेगा, विदेशी को उस
व्यक्ति पर क्रूरता से शासन न करने दो।

54"वह व्यक्ति किसी के द्वारा वापस न खरीदे जाने
पर भी मुक्त होगा। जुबली के वर्ष वह तथा उसके बच्चे
मुक्त हो जाएंगे। **55**क्यों? क्योंकि इस्राएल के लोग मेरे
दास हैं। वे मेरे सेवक हैं। मैंने मिस्र की दासता से उन्हें
मुक्त किया। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

परमेश्वर की आज्ञा पालन का पुरस्कार

26 "अपने लिए मूर्तियाँ मत बनाओ। मूर्तियाँ या
यादगार के पत्थर स्थापित मत करो। अपने
देश में उपासना करने के लिए पत्थर की मूर्तियाँ स्थापित
न करो। क्यों? क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

2"मेरे आराम के विशेष दिनों को याद रखो और मेरे
पवित्र स्थान का सम्मान करो। मैं यहोवा हूँ!

3"मेरे नियमों और आदेशों को याद रखो और उनका
पालन करो। **4**यदि तुम ऐसा करोगे तो मैं जिस समय
वर्षा आनी चाहिए, उसी समय वर्षा कराऊँगा। भूमि
फ़सलें पैदा करेंगी और पेड़ अपने फल देंगे। **5**तुम्हारा
अनाज निकालने का काम तब तक चलेगा जब तक
अँगूर इकट्ठा करने का समय आएगा और अँगूर का
इकट्ठा करना तब तक चलेगा जब तक बोने का
समय आएगा। तब तुम्हारे पास खाने के लिए बहुत
होगा, और तुम अपने प्रदेश में सुरक्षित रहोगे। **6**मैं
तुम्हारे देश को शान्ति दूँगा। तुम शान्ति से सो सकोगे।
कोई व्यक्ति भयभीत करने नहीं आएगा। मैं विनाशकारी
जानवरों को तुम्हारे देश से बाहर रखूँगा। और सेनाएं
तुम्हारे देश से नहीं गुजरेंगी।

7"तुम अपने शत्रुओं को पीछा करके भगाओगे और
उन्हें हराओगे। तुम उन्हें अपनी तलवार से मार डालोगे।
8तुम्हारे पाँच व्यक्ति सौ व्यक्तियों को पीछा कर के
भगाएंगे और तुम्हारे सौ व्यक्ति हजार व्यक्तियों का पीछा
करेंगे। तुम अपने शत्रुओं को हराओगे और उन्हें
तलवार से मार डालोगे।

9"तब मैं तुम्हारी ओर मुड़ूंगा मैं तुम्हें बहुत से बच्चों
वाला बनाऊँगा। मैं तुम्हारे साथ अपनी वाचा का
पालन करूँगा। **10**तुम्हारे पास एक वर्ष से अधिक चलने
वाली पर्याप्त पैदावार रहेगी। तुम नयी फसल

काटोगे। किन्तु तब तुम्हें पुरानी पैदावार नयी पैदावार
के लिए जगह बनाने हेतु फेंकनी पड़ेगी। 11तुम लोगों के
बीच मैं अपना पवित्र तम्बू रखूँगा। मैं तुम लोगों से अलग
नहीं होऊँगा। 12मैं तुम्हारे साथ चलूँगा और तुम्हारा
परमेश्वर रहूँगा। तुम मेरे लोग रहोगे। 13मैं तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा हूँ। तुम मिस्र में दास थे। किन्तु मैं
तुम्हें मिस्र से बाहर लाया। तुम लोग दास के रूप में
भारी बोझ ढोने से झुके हुए थे किन्तु मैंने तुम्हारे
कंधों के जुंए को तोड़ फेंका। मैंने तुम्हें पुन: गर्व से
चलने वाला बनाया।

यहोवा की आज्ञा पालन न करने के लिए दण्ड

14“किन्तु यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन नहीं करोगे
और मेरे ये सब आदेश नहीं मानोगे तो ये बुरी बातें
होंगी। 15यदि तुम मेरे नियमों और आदेशों को मानना
अस्वीकार करते हो तो तुमने मेरी वाचा को तोड़ दिया
है। 16यदि तुम ऐसा करते हो तो मैं ऐसा करूँगा कि
तुम्हारा भयंकर अनिष्ट होगा। मैं तुमको असाध्य रोग
और तीव्र ज्वर लगाऊँगा। वे तुम्हारी आँखे नष्ट करेंगे
और तुम्हारा जीवन ले लेंगे। जब तुम अपने बीज बोओगे
तो तुम्हें सफलता नहीं मिलेगी तुम्हारी पैदावार तुम्हारे
शत्रु खाएंगे।

17मैं तुम्हारे विरुद्ध होऊँगा, अत: तुम्हारे शत्रु तुमको
हराएंगे। वे शत्रु तुमसे घृणा करेंगे और तुम्हारे ऊपर
शासन करेंगे। तुम तब भी भागोगे, जब तुम्हारा पीछा
कोई न कर रहा होगा।

18“यदि इस के बाद भी तुम मेरी आज्ञा पालन नहीं
करते हो तो मैं तुम्हारे पापों के लिए सात गुना अधिक
दण्ड दूँगा। 19मैं उन बड़े नगरों को भी नष्ट करूँगा जो
तुम्हें गर्वीला बनाते हैं। आकाश वर्षा नहीं देगा और
धरती पैदावार नहीं उत्पन्न करेगी।* 20तुम कठोर
परिश्रम करोगे, किन्तु इससे कुछ भी नहीं होगा। तुम्हारी
भूमि में कोई पैदावार नहीं होगी और तुम्हारे पेड़ों पर
फल नहीं आएंगे।

21“यदि तब भी तुम मेरे विरुद्ध जाते हो और मेरी
आज्ञा का पालन करना अस्वीकार करते हो तो मैं सात
गुना कठोरता से मारूँगा। जितना अधिक पाप करोगे
उतना अधिक दण्ड पाओगे। 22मैं तुम्हारे विरुद्ध जंगली
जानवरों को भेजूँगा। वे तुम्हारे बच्चों को तुमसे छीन ले
जाएगें। वे तुम्हारे मवेशियों को नष्ट करेंगे। वे तुम्हारी
संख्या बहुत कम कर देंगे। लोग यात्रा करने से भय
खाएंगे, सड़कें खाली हो जाएंगी!

23“यदि उन चीज़ों के होने पर भी तुम्हें सबक नहीं
मिलता और तुम मेरे विरुद्ध जाते हो, 24तो मैं तुम्हारे
विरुद्ध होऊँगा। मैं, हाँ, मैं (यहोवा), तुम्हारे पापों के
लिए तुम्हें सात गुना दण्ड दूँगा। 25तुमने मेरी वाचा तोड़ी
है, अत: मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। मैं तुम्हारे विरुद्ध सेनाएँ
भेजूँगा। तुम सुरक्षा के लिए अपने नगरों में जाओगे।
किन्तु मैं ऐसा करूँगा कि तुम लोगों में बीमारियाँ फैलें।
तब तुम्हारे शत्रु तुम्हें हराएंगे। 26मैं उस नगर में छोड़े गए
अन्न का एक भाग तुम्हें दूँगा। किन्तु खाने के लिए
बहुत कम अन्न रहेगा। दस स्त्रियाँ अपनी सभी रोटी
एक चूल्हे में पका सकेंगी। वे रोटी के हर एक टूकड़े
को नापेंगी। तुम खाओगे, किन्तु फिर भी भूखे रहोगे!

27“यदि तुम इतने पर भी मेरी बातें सुनना अस्वीकार
करते हो, और मेरे विरुद्ध रहते हो 28तो मैं वस्तुत:
अपना क्रोध प्रकट करूँगा! मैं, हाँ, मैं (यहोवा), तुम्हें
तुम्हारे पापों के लिए सात गुना दण्ड दूँगा। 29तुम अपने
पुत्र, पुत्रियों के शरीरों को खाओगे। 30मैं तुम्हारे ऊँचे
स्थानों को नष्ट करूँगा। मैं तुम्हारी सुगन्धित वेदियों को
काट डालूँगा। मैं तुम्हारे शवों को तुम्हारी निर्जीव मूर्तियों
के शवों पर डालूँगा। तुम मुझको अत्यन्त घिनौने लगोगे।
31मैं तुम्हारे नगरों को नष्ट करूँगा। मैं ऊँचे पवित्र
स्थानों को खाली कर दूँगा। मैं तुम्हारी भेंटों की मधुर
सुगन्ध को नहीं लूँगा। 32मैं तुम्हारे देश को इतना खाली
कर दूँगा कि तुम्हारे शत्रु तक जो इसमें रहने आएंगे, वे
इस पर चकित होंगे। 33और मैं तुम्हें विभिन्न प्रदेशों में
बिखेर दूँगा। मैं अपनी तलवार खीचूँगा और तुम्हें नष्ट
करूँगा। तुम्हारी भूमि ख़ाली हो जाएगी और तुम्हारे
नगर उजाड़ हो जाएंगे।

34“तुम अपने शत्रु के देशों में ले जाये जाओगे। तुम्हारी
धरती खाली हो जायेगी और वह अंत में उस विश्राम को
पायेगी। 35जिसे तुमने उसे तब नहीं दिया था जब तुम उस
पर रहते थे। 36बचे हुए व्यक्ति अपने शत्रुओं के देश में
अपना साहस खो देंगे। वह हर चीज़ से भयभीत होंगे।
वह हवा में उड़ती पत्ती की तरह चारों ओर भागेंगें। वे
ऐसे भागेंगे मानों कोई तलवार लिए उनका पीछा कर
रहा हो। 37वे एक दूसरे पर तब भी गिरेंगे, जब कोई भी
उनका पीछा नहीं कर रहा होगा।

“तुम इतने शक्तिशाली नहीं रहोगे कि अपने शत्रुओं
के मुकाबले खड़े रह सको। 38तुम अन्य लोगों में विलीन
हो जाओगे। तुम अपने शत्रुओं के देश में लुप्त हो
जाओगे। 39इस प्रकार तुम्हारी सन्तानें तुम्हारे शत्रुओं के
देश में अपने पापों में सड़ेंगी। वे अपने पापों में ठीक वैसे
ही सड़ेंगी जैसे उनके पूर्वज सड़े।

आशा सदा रहती है

40“सम्भव है कि लोग अपने पाप स्वीकार करें और
वे अपने पूर्वजों के पापों को स्वीकार करेंगे। सम्भव है
वे स्वीकार करें कि वे मेरे विरुद्ध हुए। सम्भव है वे यह
स्वीकार करें कि उन्होंने मेरे विरुद्ध पाप किया है।

आकाश ... करेगी शाब्दिक “तुम्हारे लिए आकाश लोहा सा होगा और भूमि काँसे जैसी।”

41सम्भव है कि वे स्वीकार करें कि मैं उनके विरुद्ध
हुआ और उन्हें उनके शत्रुओं के देश में लाया। उन
लोगों ने मेरे साथ अजनबी का सा व्यवहार किया। यदि
वे विनम्र* हो जाएं और अपने पापों के लिए दण्ड
स्वीकार करें 42तो मैं याकूब के साथ के अपनी वाचा
को याद करूँगा। इसहाक के साथ के अपनी वाचा को
याद करूँगा। इब्राहीम के साथ की गई वाचा को मैं याद
करूँगा और मैं उस भूमि को याद करूँगा।

43"भूमि खाली रहेगी। भूमि आराम के समय का
आनन्द लेगी। तब तुम्हारे बचे हुए लोग अपने पाप के
लिए दण्ड स्वीकार करेगें। वे सीखेंगे कि उन्हें इसलिए
दण्ड मिला कि उन्होंने मेरे व्यवस्था से घृणा की और
नियमों का पालन करना अस्वीकार किया। 44उन्होंने
सचमुच पाप किया। किन्तु यदि वे मेरे पास सहायता के
लिए आते हैं तो मैं उनसे दूर नहीं रहूँगा। मैं उनकी बातें
तब भी सुनूँगा जब वे अपने शत्रुओं के देश में भी होगें।
मैं उन्हें पूरी तरह नष्ट नहीं करूँगा। मैं उनके साथ
अपनी वाचा को नहीं तोड़ूँगा। क्यों? क्योंकि मैं उनका
परमेश्वर यहोवा हूँ! 45मैं उनके पूर्वजों के साथ की गई
वाचा को याद रखूँगा। मैं उनके पूर्वजों को इसलिए मिस्र
से बाहर लाया कि मैं उनका परमेश्वर हो सकूँ। दूसरे
राष्ट्रों ने उन बातों को देखा। मैं यहोवा हूँ!"

46ये वे विधियाँ, नियम और व्यवस्थाएं हैं जिन्हें यहोवा
ने इस्राएल के लोगों को दिया। वे नियम इस्राएल के
लोगों और यहोवा के बीच वाचा है। यहोवा ने उन
नियमों को सीनै पर्वत पर दिया था। उसने मूसा को
नियम दिए और मूसा ने उन्हें लोगों को दिया।

वचन महत्वपूर्ण हैं

27 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"इस्राएल के लोगों से
कहो : कोई व्यक्ति यहोवा को विशेष वचन दे
सकता है। वह व्यक्ति यहोवा को किसी व्यक्ति को
अर्पित करने का वचन दे सकता है। वह व्यक्ति यहोवा
की सेवा विशेष ढंग से करेगा। याजक उस व्यक्ति के
लिए विशेष मूल्य निश्चित करेगा। यदि लोग उसे यहोवा
से वापस खरीदना चाहते हैं तो वे मूल्य देंगे। 3बीस से
साठ वर्ष तक की आयु के पुरुष का मूल्य पचास
शेकेल चाँदी होगी। (तुम्हें चाँदी को तोलने के लिए
पवित्र स्थान से प्रामाणिक शेकेल का उपयोग करना
चाहिए।) 4बीस से साठ वर्ष आयु की स्त्री का मूल्य
तीस शेकेल है। 5पाँच से बीस वर्ष की आयु के पुरुष
का मूल्य बीस शेकेल है। पाँच से बीस वर्ष आयु की स्त्री
का मूल्य दस शेकेल हैं। 6एक महीने से पाँच महीने
तक के बालक का मूल्य पाँच शेकेल है। एक बालिका
का मूल्य तीन शेकेल है। 7साठ या साठ से अधिक
आयु के पुरुष का मूल्य पन्द्रह शेकेल है। एक स्त्री का
मूल्य दस शेकेल है।

8"यदि व्यक्ति इतना गरीब है कि मूल्य देने में असमर्थ
है तो उस व्यक्ति को याजक के सामने लाओ। याजक
यह निश्चित करेगा कि वह व्यक्ति कितना मूल्य भुगतान
में दे सकता है।

यहोवा को भेंट

9"कुछ जानवरों का उपयोग यहोवा की बलि के रूप
में किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति उन जानवरों में
से किसी को लाता है तो वह जानवर पवित्र हो जाएगा।
10वह व्यक्ति यहोवा को उस जानवर को देने का वचन
देता है। इसलिए उस व्यक्ति को उस जानवर के स्थान
पर दूसरा जानवर रखने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए।
उसे अच्छे जानवर को बुरे जानवर से नहीं बदलना
चाहिए। उसे बुरे जानवर को अच्छे जानवर से नहीं
बदलना चाहिए। यदि वह व्यक्ति दोनों जानवरों को
बदलना ही चाहता है तो दोनों जानवर पवित्र हो जाएगें।
दोनों जानवर यहोवा के हो जाएंगे।

11"कुछ जानवर यहोवा को बलि के रूप में नहीं भेंट
किए जा सकते। यदि कोई व्यक्ति उन अशुद्ध जानवरों
में से किसी को यहोवा के लिए लाता है तो वह जानवर
याजक के सामने लाया जाना चाहिए। 12याजक उस
जानवर का मूल्य निश्चित करेगा। इससे कोई जानवर
नहीं कहा जाएगा कि वह जानवर अच्छा है या बुरा,
यदि याजक मूल्य निश्चित कर देता है तो जानवर का
वही मूल्य है। 13यदि व्यक्ति जानवर को वापस खरीदना
चाहता है* तो उसे मूल्य में पाँचवाँ हिस्सा और जोड़ना
चाहिए।

यहोवा को भेंट किए गए मकान का मूल्य

14"यदि कोई व्यक्ति अपने मकान को पवित्र
मकान के रूप में यहोवा को अर्पित करता है तो
याजक को इसका मूल्य निश्चित करना चाहिए। इससे
कोई अन्तर नहीं पड़ता कि मकान अच्छा है या बुरा,
यदि याजक मूल्य निश्चित करता है तो वही मकान
का मूल्य है। 15किन्तु वह व्यक्ति जो मकान अर्पित
करता है यदि उसे वापस खरीदना चाहता है तो उसे
मूल्य में पाँचवाँ हिस्सा जोड़ना चाहिए । तब घर उस
व्यक्ति का हो जाएगा।

उन लोगो … विनम्र शाब्दिक "यदि वे अपने खतनारहित हृदय को विनम्र करें।"

वापस खरीदना चाहता है पहलौठा बच्चे या जानवर यहोवा को दिये जाते थे। किन्तु गधों की तरह बच्चों की बलि नहीं दी जाती थी। इस प्रकार व्यक्ति प्रथम उत्पन्न को याजक को देता था। याजक मूल्य निश्चित करता था, और व्यक्ति प्रथम उत्पन्न को धन या बलि चढ़ाने योग्य जानवर से वापस खरीद लेता था। देखें निर्गमन 13:1‒16

भूसम्पत्ति का मूल्य

16"यदि कोई व्यक्ति अपने खेत का कोई भाग यहोवा
को अर्पित करता है तो उन खेतों का मूल्य उनको
बोने के लिए आवश्यक बीज पर आधारित होगा। एक
होमेर जौ के बीज की कीमत चाँदी के पचास शेकेल
होगी। 17यदि व्यक्ति जुबली के वर्ष खेत का दान करता
है तब मूल्य वह होगा जो याजक निश्चित करेगा।
18किन्तु व्यक्ति यदि जुबली के बाद खेत का दान करता
है तो याजक को वास्तविक मूल्य निश्चित करना
चाहिए। उसे अगले जुबली वर्ष तक के वर्षों को गिनना
चाहिए। तब वह उस गणना का उपयोग मूल्य निश्चित
करने के लिए करेगा। 19यदि खेत दान देने वाला व्यक्ति
खेत को वापस खरीदना चाहे तो उसके मुल्य में पाँचवाँ
भाग और जोड़ा जाएगा। 20यदि वह व्यक्ति खेत को
वापस नहीं खरीदता है तो खेत सदैव याजकों का होगा।
यदि खेत किसी अन्य को बेचा जाता है तो पहला व्यक्ति
उसे वापस नहीं खरीद सकता।

21"यदि व्यक्ति खेत को वापस नहीं खरीदता है तो
जुबली के वर्ष खेत केवल यहोवा के लिए पवित्र रहेगा।
यह सदैव याजकों का रहेगा। यह उस भूमि की तरह
होगा जो पूरी तरह यहोवा को दे दी गई हो।

22"यदि कोई अपने खरीदे खेत को यहोवा को
अर्पित करता है जो उसकी निजी सम्पत्ति* का भाग
नहीं है। 23तब याजक को जुबली के वर्ष तक वर्षों को
गिनना चाहिए और खेत का मूल्य निश्चित करना
चाहिए। तब वह खेत यहोवा का होगा। 24जुबली के वर्ष
वह खेत मूल भूस्वामी के पास चला जाएगा। वह उस
परिवार को जाएगा जो उसका स्वामी है।

25"तुम्हें पवित्र स्थान से प्रामाणिक शेकेल का उपयोग
उन मूल्यों को अदा करने के लिए करना चाहिए। पवित्र
स्थान के प्रामाणिक शेकेल का तोल बीस गेरा* है।

जानवरों का मूल्य

26"लोग मवेशियों और भेड़ों को यहोवा को दान दे
सकते हैं, किन्तु यदि जानवर पहलौठा है तो वह जानवर
जन्म से ही यहोवा का है। इसलिए लोग पहलौठा जानवर
का दान नहीं कर सकते। 27लोगों को पहलौठा जानवर
यहोवा को देना चाहिए। किन्तु यदि पहलौठा जानवर
अशुद्ध है तो व्यक्ति को उस जानवर को वापस खरीदना
चाहिए। याजक उस जानवर का मूल्य निश्चित करेगा
और व्यक्ति को उस मूल्य का पाँचवाँ भाग उसमें जोड़ना
चाहिए। यदि व्यक्ति जानवर को वापस नहीं खरीदता तो
याजक को अपने निश्चित किए गए मूल्य पर उसे बेच
देना चाहिए।

विशेष भेंटें

28"एक विशेष प्रकार की भेंट है जिसे लोग यहोवा
को चढ़ाते हैं। वह भेंट पूरी तरह यहोवा की है। वह भेंट
न तो वापस खरीदी जा सकती है न ही बेची जा सकती
है। वह भेंट यहोवा की है। उस प्रकार की भेंटें ऐसे लोग,
जानवर और खेत हैं, जो परिवार की सम्पत्ति है।29यदि
वह विशेष प्रकार की यहोवा को भेंट कोई व्यक्ति है तो
उसे वापस खरीदा नहीं जा सकता। उसे अवश्य मार
दिया जाना चाहिए।

30"सभी पैदावारों का दसवाँ भाग यहोवा का है। इसमें
खेतों, फसलें और पेड़ों के फल सम्मिलित हैं। वह दसवाँ
भाग यहोवा का है। 31इसलिए यदि कोई व्यक्ति अपना
दसवाँ भाग वापस लेना चाहता है तो उसके मूल्य का
पाँचवाँ भाग उसमें जोड़ना चाहिए और वापस खरीदना
चाहिए।

32"याजक व्यक्तियों के मवेशियों और भेड़ों में से हर
दसवाँ जानवर लेगा। हर दसवाँ जानवर यहोवा का
होगा। 33मालिक को यह चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि
वह जानवर अच्छा है या बुरा। उसे जानवर को अन्य
जानवर से नहीं बदलना चाहिए। यदि वह बदलने का
निश्चय करता है तो दोनों जानवर यहोवा के होंगे। वह
जानवर वापस नहीं खरीदा जा सकता।"

34ये वे आदेश हैं जिन्हें यहोवा ने सीनै पर्वत पर मूसा
को दिये। ये आदेश इस्राएल के लोगों के लिए हैं।

निजी सम्पत्ति अर्थात् वह भूमि जो उसके परिवार या उसके परिवार समूह को दी गई हो।

बीस गेरा 1/50 औंस।

गिनती

इस्राएल की गिनती की जाती है

1 यहोवा ने मूसा से मिलापवाले तम्बू में बात की। यह
सीनै मरुभूमि में हुई। यह बात इस्राएल के लोगों द्वारा
मिस्र छोड़ने के बाद दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के पहले
दिन की थी। यहोवा ने मूसा से कहा: 2“इस्राएल के सभी
लोगों को गिनो। हर एक व्यक्ति की सूची उसके परिवार
और उसके परिवार समूह के साथ बनाओ। 3तुम तथा
हारून इस्राएल के सभी पुरुषों को गिनोगे। उन पुरुषों
को गिनो जो बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र के हैं। (ये
वे हैं जो इस्राएल की सेना में सेवा करते हैं।) इनकी
सूची इनके समुदाय* के आधार पर बनाओ। 4हर एक
परिवार समूह से एक व्यक्ति तुम्हारी सहायता करेगा।
यह व्यक्ति अपने परिवार समूह का नेता होगा। 5तुम्हारे
साथ रहने और तुम्हारी सहायता करने वाले व्यक्तियों
के नाम ये हैं:

रूबेन परिवार समूह से-शदेऊर का पुत्र एलीसूर;
6 शिमोन परिवार समूह से–सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल;
7 यहूदा के परिवार समूह से-अम्मीनादाब का पुत्र
नहशोन;
8 इस्साकार के परिवार समूह से-सूआर का पुत्र नतनेल;
9 जबूलून के परिवार समूह से–हेलोन का पुत्र एलीआब;
10 यूसुफ के वंश से, एप्रैम के परिवार समूह से-
अम्मीहूद का पुत्र एप्रैम; मनश्शे के परिवार समूह
से- पदासूर का पुत्र गम्लीएल;
11 बिन्यामीन के परिवार समूह से-गिदोनी का
पुत्र अबीदान;
12 दान के परिवार समूह से-अम्मीशद्दै का
पुत्र अहीएजेर;
13 आशेर के परिवार समूह से-ओक्रान का
पुत्र पगीएल;
14 गाद के परिवार समूह से-दूएल* का
पुत्र एल्यासाप;
15 नप्ताली के परिवार समूह से-एनाम का
पुत्र अहीरा;

16ये सभी व्यक्ति अपने लोगों द्वारा अपने परिवार
समूह के नेता चुने गए। ये लोग अपने परिवार समूह के
नेता हैं। 17मूसा और हारून ने इन व्यक्तियों (और
इस्राएल के लोगों) को एक साथ लिया जो नेता होने के
लिये आये थे। 18मूसा और हारून ने इस्राएल के सभी
लोगों को बुलाया। तब लोगों की सूची उनके परिवार
और परिवार समूह के अनुसार बनी। बीस वर्ष या उससे
अधिक उम्र के सभी व्यक्तियों की सूची बनी। 19मूसा ने
ठीक वैसा ही किया जैसा यहोवा का आदेश था। मूसा ने
लोगों को तब गिना जब वे सीनै की मरुभूमि में थे।

20रूबेन के परिवार समूह को गिना गया। (रूबेन
इस्राएल का पहलौठा पुत्र था।) उन सभी पुरुषों की सूची
बनी जो बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र के थे और सेना
में सेवा करने योग्य थे। उनकी सूची उनके परिवार
और उनके परिवार समूह के साथ बनी। 21रूबेन के
परिवार समूह से गिने गए पुरुषों की संख्या छियालीस
हजार पाँच सौ थी।

22शिमोन के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष
या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य
सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके
परिवार और उनके परिवार समूह के साथ बनी।
23शिमोन के परिवार समूह को गिनने पर सारे पुरुषों
की संख्या उनसठ हजार तीन सौ थी।

24गाद के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष या
उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य सभी
पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके
परिवार और उनके परिवार समूह के साथ बनी। 25गाद
के परिवार समूह को गिनने पर पुरुषों की सारी संख्या
पैंतालीस हजार छ: सौ पचास थी।

26यहूदा के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष या
उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य सभी
पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके
परिवार और उनके परिवार समूह के साथ बनी। 27यहूदा
के परिवार समूह को गिनने पर सारी संख्या चौहत्तर
हजार छ: सौ थी।

28इस्साकार के परिवार समूह को गिना गया। बीस
वर्ष या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने
योग्य सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची

समुदाय या, “टुकड़ी”। यह सेना का पारिभाषिक शब्द है जो यह संकेत करता है कि इस्राएल एक सेना की तरह संगठित था।

दूएल या, “रूएल।”

उनके परिवार समूह के साथ बनी। 29इस्साकार के
परिवार समूह को गिनने पर पुरुषों की सारी संख्या
चौवन हजार चार सौथी।

30जबूलून के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष
या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य
सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके
परिवार और उनके परिवार समूह के साथ बनी।
31जबूलून के परिवार समूह को गिनने पर पुरुषों की
सारी संख्या सत्तावन हजार चार सौ थी।

32एप्रैम के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष या
उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य सभी
पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके
परिवार समूह के साथ बनी। 33एप्रैम के परिवार समूह
को गिनने पर सारी संख्या चालीस हजार पाँच सौ थी।

34मनश्शे के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष
या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य
सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके
परिवार समूह के साथ बनी। 35मनश्शे के परिवार
समूह को गिनने पर पुरुषों की सारी संख्या बत्तीस हजार
दो सौ थी।

36बिन्यामीन के परिवार समूह को गिना गया। बीस
वर्ष या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने
योग्य सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची
उनके परिवार और उनके परिवार समूह के साथ
बनी। 37बिन्यामिन के परिवार समूह को गिनने पर
पुरुषों की सारी संख्या पैंतीस हजार चार सौ थी।

38दान के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष या
उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य सभी
पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके
परिवार और उनके परिवार समूह के साथ बनी। 39दान
के परिवार समूह को गिनने पर सारी संख्या बासठ
हजार सात सौ थी। 40आशेर के परिवार समूह को
गिना गया। बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र और सेना में
सेवा करने योग्य सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी।
उनकी सूची उनके परिवार और उनके परिवार समूह
के साथ बनी। 41आशेर के परिवार समूह को गिनने
पर पुरुषों की सारी संख्या एकतालीस हजार पाँच सौ
थी।

42नप्ताली के परिवार समूह को गिना गया। बीस वर्ष
या उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य
सभी पुरुषों के नामों की सूची बनी। उनकी सूची उनके
परिवार और उनके परिवार समूह के साथ बनी।
43नप्ताली के परिवार समूह को गिनने पर पुरुषों की
सारी संख्या तिरपन हजार चार सौ थी। 44मूसा, हारून
और इस्राएल के नेताओं ने इन सभी पुरुषों को
गिना। वहाँ बारह नेता थे। (हर परिवार समूह से एक
नेता था।) 45इस्राएल का हर एक पुरुष जो बीस वर्ष या
उससे अधिक उम्र और सेना में सेवा करने योग्य था,
गिना गया। इन पुरुषों की सूची उनके परिवार समूह
के साथ बनी। 46पुरुषों की सारी संख्या छः लाख तीन
हजार पाँच सौ पचास थी।

47लेवी के परिवार समूह से परिवारों की सूची इस्राएल
के अन्य पुरुषों के साथ नहीं बनी। 48यहोवा ने मूसा से
कहा था: 49"लेवी के परिवार समूह के पुरुषों को तुम्हें
नहीं गिनना चाहिए। इस्राएल के अन्य पुरुषों के एक
भाग के रूप में उनकी संख्या को मत जोड़ो। 50लेवीवंश
के पुरुषों से कहो कि वे साक्षीपत्र के पवित्र तम्बू के
लिए उत्तरदायी हैं। वे उसकी और उसमें जो चीज़ें हैं,
उनकी देखभाल करेंगे। वे मिलापवाले तम्बू और उसकी
सभी चीजें लेकर चलेंगे। वे अपना डेरा उसके चारों
ओर डालेंगे तथा उसकी देखभाल करेंगे। 51जब कभी
वह पवित्र तम्बू कहीं ले जाया जाएगा, तो लेवीवंश के
पुरुषों को ही उसे उतारना होगा। जब कभी मिलापवाला
तम्बू किसी स्थान पर लगाया जाएगा तो लेवीवंश के
पुरुषों को ही यह करना होगा। वे ही ऐसे पुरुष हैं जो
मिलापवाले तम्बू की देखभाल करते हैं। यदि कोई ऐसा
अन्य पुरुष तम्बू के निकट आना चाहता है जो लेवी के
परिवार समूह का नहीं है तो वह मार डाला जाएगा।
52इस्राएल के लोग अपने डेरे अलग अलग समूहों में
लगाएंगे। हर एक व्यक्ति को अपना डेरा अपने परिवार
के झण्डे के पास लगाना चाहिए। 53किन्तु लेवी के लोगों
को अपना डेरा पवित्र तम्बू के चारों ओर डालना चाहिए।
लेवीवंश के लोग साक्षीपत्र के पवित्र तम्बू की रक्षा
करेंगे। वे पवित्र तम्बू की रक्षा करेंगे जिससे इस्राएल के
लोगों का कुछ भी बुरा नहीं होगा।"

54इसलिए इस्राएल के लोगों ने उन सभी बातों को
माना जिसका आदेश यहोवा ने मूसा को दिया था।

डेरे की व्यवस्था

2 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा: 2"इस्राएल के
लोगों को मिलापवाले तम्बू के चारों ओर अपने
डेरे लगाने चाहिए। हर एक समुदाय का अपना विशेष
झण्डा होगा और हर एक व्यक्ति को अपने समूह के
झण्डे के पास अपना डेरा लगाना चाहिए।"

3यहूदा के डेरे का झण्डा पूर्व में होगा, जिधर सूरज
निकलता है। यहूदा के लोग वहीं डेरा लगाएंगे। यहूदा के
लोगों का नेता अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन है। 4इस
समूह में चौहत्तर हजार छः सौ पुरुष थे।

5 इस्साकार का परिवार समूह यहूदा के लोगों के
ठीक बाद में होगा। इस्साकार के लोगों का नेता सूआर
का पुत्र नतनेल है। 6इस समूह में चौवन हजार चार सौ
पुरुष थे।

7जबूलून का परिवार समूह भी यहूदा के परिवार
समूह से ठीक बाद में अपना डेरा लगाएगा। जबूलून के

लोगों का नेता हेलोन का पुत्र एलीआब है। 8इस समूह में
सत्तावन हजार चार सौ पुरुष थे। 9यहूदा के डेरे में एक
लाख छियासी हजार चार सौ पुरुष थे। ये सभी अपने
अलग अलग परिवार समूह में बंटे हुए हैं। यहूदा पहला
समूह होगा जो उस समय आगे चलेगा जब लोग एक
स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करेंगे। 10रूबेन का
झण्डा पवित्र तम्बू के दक्षिण में होगा। हर एक समूह
अपने झण्डे के पास अपना डेरा लगाएगा। रूबेन के
लोगों का नेता शदेऊर का पुत्र एलीसूर है। 11इस समूह
में छियालीस हजार पाँच सौ पुरुष थे। 12शिमोन का
परिवार समूह रूबेन के परिवार समूह के ठीक बाद
अपना डेरा लगाएगा। शिमोन के लोगों का नेता सूरीशद्दै
का पुत्र शलूमीएल है। 13इस समूह में उनसठ हजार तीन
सौ पुरुष थे।

14गाद का परिवार समूह भी रूबेन के लोगों के ठीक
बाद अपना डेरा लगाएगा। गाद के लोगों का नेता रूएल
का पुत्र एल्यासाप है। 15इस समूह में पैंतालीस हजार चार
सौ पचास पुरुष थे।

16रूबेन के डेरे में सभी समूहों के एक लाख इकयावन
हजार चार सौ पचास पुरुष थे। रूबेन का डेरा दूसरा
समूह होगा जो उस समय चलेगा जब लोग एक स्थान से
दूसरे स्थान की यात्रा करेंगे।

17जब लोग यात्रा करेंगे तो लेवी का डेरा ठीक उसके
बाद चलेगा। मिलापवाला तम्बू दूसरे अन्य डेरों के बीच
उनके साथ रहेगा। लोग अपने डेरे उसी क्रम में लगाएंगे
जिस क्रम में वे चलेंगे। हर एक व्यक्ति अपने परिवार
के झण्डे के साथ रहेगा।

18एप्रैम का झण्डा पश्चिम की ओर रहेगा। एप्रैम के
परिवार के समूह वहीं डेरा लगाएंगे। एप्रैम के लोगों का
नेता अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा है। 19इस समूह में
चालीस हजार पाँच सौ पुरुष थे।

20मनश्शे का परिवार समूह एप्रैम के परिवार के
ठीक बाद अपना डेरा लगाएगा। मनश्शे के लोगों का
नेता पदासूर का पुत्र गम्लीएल है। 21इस समूह में बत्तीस
हजार दो सौ पुरुष थे।

22बिन्यामीन का परिवार समूह भी एप्रैम के परिवार
के ठीक बाद अपना डेरा लगाएगा। बिन्यामीन के लोगों
का नेता गिदोनी का पुत्र अबीदान है। 23इस समूह में
पैंतीस हजार चार सौ पुरुष थे।

24एप्रैम के डेरे में एक लाख आठ हजार एक सौ
पुरुष थे। यह तीसरा परिवार होगा जो तब चलेगा जब
लोग एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करेंगे।

25दान के डेरे का झण्डा उत्तर की ओर होगा। दान
के परिवार का समूह वहीं डेरा लगाएगा। दान के लोगों
का नेता अम्मीशद्दै का पुत्र अहीएजेर है। 26इस समूह में
बासठ हजार सात सौ पुरुष थे। 27आशेर का परिवार
समूह दान के परिवार समूह के ठीक बाद अपना डेरा
लगाएगा। आशेर के लोगों का नेता ओक्रान का पुत्र
पगीएल है। 28इस समूह मे इकतालीस हजार पाँच सौ
पुरुष थे।

29नप्ताली का परिवार समूह भी दान के परिवार
समूह के ठीक बाद अपने डेरे लगाएगा। नप्ताली के
लोगों का नेता एनान का पुत्र अहीरा है। 30इस समूह में
तिरपन हजार चार सौ पुरुष थे।

31दान के डेरे में एक लाख सत्तावन हजार छ: सौ
पुरुष थे। जब लोग एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा
करेंगे तो यह चलने वाला आखिरी परिवार होगा। ये
अपने झण्डे के नीचे अपना डेरा लगाएंगे।

32इस प्रकार ये इस्राएल के लोग थे। वे परिवार के
अनुसार गिने गये थे। सभी डेरों में अलग–अलग समूहों
के सभी परिवारों के पुरुषों की समूची संख्या थी छ:
लाख तीन हजार पाँच सौ पचास। 33मूसा ने इस्राएल के
अन्य लोगों में लेवीवंश के लोगों को नहीं गिना। यह
यहोवा का आदेश था।

34यहोवा ने मूसा को जो कुछ करने को कहा उस
सबका पालन इस्राएल के लोगों ने किया। हर एक
समूहों ने अपने झण्डों के नीचे अपने डेरे लगाए और
हर एक व्यक्ति अपने परिवार और अपने परिवार
समूह के साथ रहा।

हारून का याजक परिवार

3 जिस समय यहोवा ने सीनै पर्वत पर मूसा से बात
की, उस समय हारून और मूसा के परिवार का
इतिहास यह है। 2हारून के चार पुत्र थे। नादाब पहलौठा
पुत्र था। उसके बाद अबीहू, एलीआज़ार और ईतामार
थे। 3ये पुत्र चुने हुए याजक थे।

इन्हें याजक के रूप में यहोवा की सेवा का विशेष
कार्य सौंपा गया था। 4किन्तु नादाब और अबीहू यहोवा
की सेवा करते समय पाप करने के कारण मर गए।
उन्होंने यहोवा को भेंट चढ़ाई, किन्तु उन्होंने उस आग
का उपयोग किया जिसके लिए यहोवा ने आज्ञा नहीं दी
थी। इस प्रकार नादाब और अबीहू वहीं सीनै की मरुभूमि
में मर गए। उनके पुत्र नहीं थे, अत: एलीआज़ार और
ईतामार याजक बने और यहोवा की सेवा करने लगे। वे
यह उस समय तक करते रहे जब तक उनका पिता
हारून जीवित था।

लेवीवंशी–याजकों के सहायक

5यहोवा ने मूसा से कहा, “6लेवी के परिवार समूह के
सभी लोगों को याजक हारून के सामने लाओ। वे लोग
हारून के सहायक होंगे। 7लेवीवंशी हारून की उस
समय सहायता करेंगे जब वह मिलापवाले तम्बू में सेवा
करेगा और लेवीवंशी इस्राएल के सभी लोगों की उस
समय सहायता करेंगे जिस समय वे पवित्र तम्बू में उपासना

करने आएंगे। 8इस्राएल के लोग मिलापवाले तम्बू की
हर एक चीज़ की रक्षा करेंगे, यह उनका कर्तव्य है।
किन्तु इन चीज़ों की देखभाल करके ही लेवीवंश के
लोग इस्राएल के लोगों की सेवा करेंगे। पवित्र तम्बू में
उपासना करने की उनकी यही पद्धति होगी।

9“इस्राएल के सभी लोगों में से लेवीवंशी चुने गए थे।
ये लेवी, हारून और उसके पुत्रों की सहायता के लिए
चुने गए थे।

10“तुम हारून और उसके पुत्रों को याजक नियुक्त
करोगे। वे अपना कर्तव्य पूरा करेंगे और याजक के
रूप में सेवा करेंगे। कोई अन्य व्यक्ति जो पवित्र चीज़ों
के समीप आने का प्रयत्न करता है,* मार दिया जाना
चाहिए।”

11यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, 12“मैंने तुमसे कहा
कि इस्राएल का हर एक परिवार अपना पहलौठा पुत्र
मुझ को देगा, किन्तु अब मैं लेवीवंश को अपनी सेवा
के लिए चुन रहा हूँ। वे मेरे होंगे। अत: इस्राएल के सभी
अन्य लोगों को अपना पहलौठा पुत्र मुझको नहीं देना
पड़ेगा।

13“जब तुम मिस्र में थे, मैंने मिस्र के लोगों के पहलौठों
को मार डाला था। उस समय मैंने इस्राएल के सभी
पहलौठों को अपने लिए लिया। सभी पहलौठे बच्चे और
सभी पहलौठे जानवर मेरे हैं। किन्तु अब मैं तुम्हारे
पहलौठे बच्चों को तुम्हें वापस करता हूँ और लेवीवंश
को अपना बनाता हूँ। मैं यहोवा हूँ।”

14यहोवा ने फिर सीनै की मरुभूमि में मूसा से बात
की। यहोवा ने कहा, 15“लेवीवंश के सभी परिवार
समूहों और परिवारों को गिनो। प्रत्येक पुरुष या लड़कों
को जो एक महीने या उससे अधिक के हैं, उनको
गिनो।” 16अत: मूसा ने यहोवा की आज्ञा मानी। उसने
उन सभी को गिना।

17लेवी के तीन पुत्र थे: उनके नाम थे: गेर्शोन, कहात
और मरारी। 18हर एक पुत्र परिवार समूहों का नेता
था।

गेर्शोन के परिवार समूह थे: लिब्नी और शिमी।

19कहात के परिवार समूह थे: अम्राम, यिसहार, हेब्रोन,
उज्जीएल।

20मरारी के परिवार समूह थे: महली और मूशी। ये
ही वे परिवार थे जो लेवी के परिवार समूह से सम्बन्धित
थे।

21लिब्नी और शिमियों के परिवार गेर्शोन के परिवार
समूह से सम्बन्धित थे। वे गेर्शोनवंशी परिवार समूह थे।
22इन दोनों परिवार समूहों में एक महीने से अधिक उम्र
के लड़के या पुरुष सात हजार पाँच सौ थे। 23गेर्शोन वंश
के परिवार समूहों को पश्चिम में डेरा लगाने के लिये
कहा गया। उन्होंने पवित्र तम्बू के पीछे अपना डेरा
लगाया। 24गेर्शोन वंश के परिवार समूहों का नेता लाएल
का पुत्र एल्यासाप था। 25मिलापवाले तम्बू में गेर्शोन
वंशी लोग पवित्र तम्बू, आच्छादन और बाहरी तम्बू की
देखभाल का कार्य करने वाले थे। वे मिलापवाले तम्बू
के प्रवेश द्वार के पर्दे की भी देखभाल करते थे। 26वे
आँगन के पर्दे की देखभाल करते थे। वे आँगन के द्वार
के पर्दे की भी देखभाल करते थे। यह आँगन पवित्र
तम्बू और वेदी के चारों ओर था। वे रस्सियों और पर्दे
के लिए काम में आने वाली हर एक चीज़ की देखभाल
करते थे।

27अम्रामियों, यिसहारियों, हेब्रोनियों और उज्जीएल के
परिवार कहात के परिवार से सम्बन्धित थे। वे कहात
परिवार समूह के थे। 28इस परिवार समूह में एक महीने
या उससे अधिक उम्र के लड़के और पुरुष आठ हजार
छ: सौ थे। कहात वंश के लोगों को पवित्र स्थान की
देखभाल का कार्य सौंपा गया। 29कहात के परिवार
समूहों को “पवित्र तम्बू” के दक्षिण का क्षेत्र दिया गया।
यह वह क्षेत्रथा जहाँ उन्होंने डेरे लगाए।30कहात के
परिवार समूह का नेता उज्जीएल का पुत्र एलीसापान था।
31उनका कार्य पवित्र सन्दूक, मेज, दीपाधार, वेदियों
और पवित्र स्थान के उपकरणों की देखभाल करना
था। वे पर्दे और उनके साथ उपयोग में आने वाली सभी
चीज़ों की भी देखभाल करते थे। 32लेवीवंश के प्रमुखों
का नेता हारून का पुत्र एलीआज़ार था। वह याजक
था। एलीआज़ार पवित्र चीज़ों की देखभाल करने वाले
सभी लोगों का अधीक्षक था।

33-34महली और मूशियों के परिवार समूह मरारी
परिवार से सम्बन्धित थे। एक महीने या उससे अधिक
उम्र के लड़के और पुरुष महली परिवार समूह में छ:
हजार दो सौ थे। 35मरारी समूह का नेता अबीहैल का
पुत्र सूरीएल था। इस परिवार समूह को पवित्र तम्बू के
उत्तर का क्षेत्र दिया गया था। यही वह क्षेत्र है जहाँ
उन्होंने डेरा लगाया। 36मरारी लोगों को पवित्र तम्बू के
ढाँचे की देखभाल का कार्य सौंपा गया। वे सभी छड़ों,
खम्बों, आधारों और पवित्र तम्बू के ढाँचे में जो कुछ
लगा था, उन सब की देखभाल करते थे। 37पवित्र तम्बू
के चारों ओर के आँगन के सभी खम्भों की भी देखभाल
किया करते थे। इनमें सभी आधार, तम्बू की खूँटियाँ
और रस्सियाँ शामिल थीं।

38मूसा, हारून और उसके पुत्रों ने मिलापवाले तम्बू
के सामने पवित्र तम्बू के पूर्व में अपने डेरे लगाए। उन्हें
पवित्र स्थान की देखभाल का काम सौंपा गया। उन्होंने
यह इस्राएल के सभी लोगों के लिए किया। कोई दूसरा
व्यक्ति जो पवित्र स्थान के समीप आता, मार दिया जाता
था। 39यहोवा ने लेवी परिवार समूह के एक महीने या

कोई ... करता है या, “याजक के रूप में सेवा करना चाहता है।”

उससे अधिक उम्र के लड़कों और पुरुषों को गिनने
का आदेश दिया। सारी संख्या बाइस हजार थी।

लेवीवंशी पहलौठे पुत्र का स्थान लेते हैं

40यहोवा ने मूसा से कहा, "इस्राएल में सभी एक
महीने या उससे अधिक उम्र के पहलौठे लड़के और
पुरुषों को गिनो। उनके नामों की एक सूची बनाओ।
41अब मैं इस्राएल के सभी पहलौठे लड़कों और पुरुषों
को नहीं लूँगा। अब मैं अर्थात् यहोवा लेवीवंशी को ही
लूँगा। इस्राएल के अन्य सभी लोगों के पहलौठे जानवरों
को लेने के स्थान पर अब मैं लेवीवंश के लोगों के
पहलौठे जानवरों को ही लूँगा।"

42इस प्रकार मूसा ने वह किया जो यहोवा ने आदेश
दिया। मूसा ने इस्राएल के पहलौठी सारी सन्तानों को
गिना। 43मूसा ने सभी पहलौठे एक महीने या उससे
अधिक उम्र के लड़कों और पुरुषों की सूची बनाई।
उस सूची में बाइस हजार दो सौ तिहत्तर नाम थे।

44यहोवा ने मूसा से यह भी कहा, 45"मैं अर्थात् यहोवा
यह आदेश देता हूँ: 'इस्राएल के अन्य परिवारों के पहलौठे
पुरुषों के स्थान पर लेवीवंश के लोगों को लो और मैं
अन्य लोगों के जानवरों के स्थान पर लेवीवंश के
जानवरों को लूँगा। लेवीवंशी मेरे हैं। 46लेवीवंश के लोग
बाइस हजार हैं और अन्य परिवारों के बाइस हजार दो
सौ तिहत्तर पहलौठे पुत्र हैं। इस प्रकार केवल दो सौ
तिहत्तर पहलौठे पुत्र लेवीवंश के लोगों से अधिक हैं।
47इसलिए पहलौठे दो सौ तिहत्तर पुत्रों में से हर एक के
लिए पाँच शेकेल* चाँदी दो। यह चाँदी इस्राएल के लोगों
से इकट्ठा करो। 48वह चाँदी हारून और उसके पुत्रों
को दो। यह इस्राएल के दो सौ तिहत्तर लोगों के लिए
भुगतान है।'"

49मूसा ने दो सौ तिहत्तर लोगों के लिए धन इकट्ठा
किया। क्योंकि यहाँ इतने लेवी नहीं थे जो दूसरे परिवार
समूह के दो सौ तिहत्तर पहलौठों की जगह ले सकें।
50मूसा ने इस्राएल के पहलौठे लोगों से चाँदी इकट्ठा
की। उसने एक हजार तीन सौ पैंसठ शेकेल चाँदी
"अधिकृत भार" का उपयोग करके इकट्ठा की। 51मूसा
ने यहोवा की आज्ञा मानी। मूसा ने यहोवा के आदेश के
अनुसार वह चाँदी हारून और उसके पुत्रों को दी।

कहात परिवार के सेवा-कार्य

4 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा: 2"कहात
परिवार समूह के पुरुषों को गिनो। (कहात परिवार
समूह लेवी परिवार समूह का एक भाग है।) 3अपने
सेवा कर्तव्य का निर्वाह करने वाले तीस से पचास वर्ष
की उम्र वाले पुरुषों को गिनो। ये व्यक्ति मिलापवाले
तम्बू में कार्य करेंगे। 4उनका कार्य मिलापवाले तम्बू के
सर्वाधिक पवित्र स्थान की देखभाल करना है।

5"जब इस्राएल के लोग नए स्थान की यात्रा करें तो
हारून और उसके पुत्रों को चाहिए कि वे पवित्र तम्बू में
जाएँ और पर्दे को उतारें और साक्षीपत्र के पवित्र सन्दूक
को उससे ढकें। 6तब वे इन सबको सुइसों के चमड़े से
बने आवरण में ढकें। तब वे पवित्र सन्दूक पर बिछे
चमड़े पर पूरी तरह से एक नीला वस्त्र फैलाएंगे और
पवित्र सन्दूक में लगे कड़ों में डंडे डालेंगे।

7"तब वे एक नीला कपड़ा पवित्र मेज के ऊपर
फैलाएंगे। तब वे उस पर थाली, चम्मच, कटोरे और पेय
भेंट के कलश रखेंगे। वे विशेष रोटी भी मेज पर
रखेंगे। 8तब तुम इन सभी चीज़ों के ऊपर एक लाल
कपड़ा डालोगे। तब हर एक चीज़ को सुइसों के चमड़े
से ढक दो। तब मेज के कड़ों में डंडे डालो।

9"तब दीपाधार और दीपकों को नीले कपड़े से ढको।
दीपक जलने के लिए उपयोग में आनेवाली सभी चीज़ों
और दीपक के लिए उपयोग में आने वाले तेल के सभी
घड़ों को ढको। 10तब सभी चीज़ों को सुइसों के चमड़े में
लपेटो और इन्हें ले जाने के लिये उपयोग में आने वाले
डंडों पर इन्हें रखो।

11"सुनहरी वेदी पर एक नीला कपड़ा फैलाओ। उसे
सुइसों के चमड़े से ढको। तब वेदी को ले जाने के लिए
उसमें लगे हुए कड़ों में डंडे डालो।

12"पवित्र स्थान में उपासना के उपयोग में आने वाली
सभी विशेष चीज़ों को एक साथ इकट्ठा करो। इन्हें
एक साथ इकट्ठा करो और इनको नीले कपड़े में
लपेटो। तब इसे सुइसों के चमड़े से ढको। इन चीज़ों को
ले जाने के लिए इन्हें एक ढाँचे पर रखो।

13"काँसेवाली वेदी से राख को साफ कर दो और
इसके ऊपर एक बैंगनी रंग का कपड़ा फैलाओ। 14तब
वेदी पर उपासना के लिए उपयोग में आने वाली चीज़ों
को इकट्ठा करो। आग के तसले, माँस के लिए काँटे,
बेलचे और चिलमची हैं। इन चीज़ों को काँसे की वेदी
पर रखो। तब वेदी के ऊपर सुइसों के चमड़े का
आवरण फैलाओ। वेदी में लगे कड़ों में, इसे ले जाने
वाले डंडेडालो।

15"जब हारून और उसके पुत्र पवित्र स्थान की सभी
पवित्र चीज़ों को ढकना पूरा कर लें तब कहात परिवार
के व्यक्ति अन्दर आ सकते हैं और उन चीज़ों को ले
जाना आरम्भ कर सकते हैं। इस प्रकार वे इस पवित्र
वस्तुओं को छुएंगे नहीं। सो वे मरेंगे नहीं। 16याजक
हारून का पुत्र एलीआज़ार पवित्र तम्बू के लिए उत्तरदायी
होगा। वह पवित्र स्थान और इसकी हर एक चीज़ के
लिए उत्तरदायी होगा। वह दीपक के तेल, मधुर सुगन्धवाली
सुगन्धि तथा दैनिक बलि और अभिषेक के तेल के
लिये उत्तरदायी होगा।"

पाँच शेकेल या, "दो औंस"

17यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, **18**"सावधान
रहो! इन कहातवंशी व्यक्तियों को नष्ट मत होने दो।
19तुम्हें यह इसलिए करना चाहिए ताकि कहातवंशी
सर्वाधिक पवित्र स्थान तक जाएँ और मरें नहीं: हारून
और उसके पुत्रों को अन्दर जाना चाहिए और हर एक
कहातवंशी को बताना चाहिए कि वह क्या करे। उन्हें
हर एक व्यक्ति को वह चीज़ देनी चाहिए जो उसे ले
जानी है। **20**यदि तुम ऐसा नहीं करते हो तो कहातवंशी
अन्दर जा सकते हैं और पवित्र चीज़ों को देख सकते हैं।
यदि वे एक क्षण के लिए भी उन पवित्र वस्तुओं की
ओर देखते हैं तो उन्हें मरना होगा।"

गेर्शोन परिवार के सेवा-कार्य

21यहोवा ने मूसा से कहा, **22**"गेर्शोन परिवार के सभी
लोगों को गिनो। उनकी सूची परिवार और परिवार
समूह के अनुसार बनाओ। **23**अपना सेवा कर्तव्य कर
चुकने वाले तीस वर्ष से पचास वर्ष तक के पुरुषों को
गिनो। ये लोग मिलापवाले तम्बू की देखभाल का
सेवा-कार्य करेंगे।

24"गेर्शोन परिवार को यही करना चाहिए और इन्हीं
चीजों को ले चलना चाहिए: **25**इन्हें पवित्र तम्बू के पर्दे,
मिलापवाले तम्बू, इसके आवरण और सुइसों के चमड़े
से बना आवरण ले चलना चाहिए। उन्हें मिलापवाले
तम्बू के द्वार के पर्दे भी ले चलना चाहिए। **26**उन्हें
आँगन के उन पर्दों को, जो पवित्र तम्बू और वेदी के
चारों ओर लगे हैं, ले चलना चाहिए। उन्हें आँगन के
प्रवेश द्वार का पर्दा भी ले चलना चाहिए। उन्हें सारी
रस्सियाँ और पर्दे के साथ उपयोग में आनेवाली सभी
चीज़ें ले चलनी चाहिए। गेर्शोन वंश के लोग उस किसी
भी चीज़ के लिए उत्तरदायी होंगे जो इन चीज़ों से की
जानी है। **27**हारून और उसके पुत्र इन सभी किए गए
कार्यों की निगरानी करेंगे। गेर्शोन वंश के लोग जो कुछ
ले जाएंगे और जो दूसरे कार्य करेंगे उनकी निगरानी
हारून और उसके पुत्र करेंगे। तुम्हें उनको वे सभी
चीज़ें बतानी चाहिए जिनके ले जाने के लिये वे उत्तरदायी
हैं। **28**यही काम है जिसे गेर्शोन वंश के परिवार समूह
के लोगों को मिलापवाले तम्बू के लिए करना है। हारून
का पुत्र ईतामार याजक उनके काम के लिए उत्तरदायी
होगा।"

मरारी परिवार के सेवा-कार्य

29"मरारी परिवार समूह के परिवार और परिवार
समूह के पुरुषों को गिनो। **30**सेवा-कर्तव्य कर चुके
तीस से पचास वर्ष के सभी पुरुषों को गिनो। ये लोग
मिलापवाले तम्बू के लिए विशेष कार्य करेंगे। **31**जब तुम
यात्रा करोगे तब उनका यह कार्य है कि वे मिलापवाले
तम्बू के तख्ते ले चलें। उन्हें तख़्ते, खम्भों और आधारों
को ले चलना चाहिए। **32**उन्हें आँगन के चारों ओर के
खम्भों को भी ले चलना चाहिए। उन्हें उन तम्बू की
खूंटियों, रस्सियों और वे सभी चीज़ें जिनका उपयोग
आँगन के चारों ओर के खम्भों के लिए होता है, ले
चलना चाहिए। नामों की सूची बनाओ और हर एक
व्यक्ति को बताओ कि उसे क्या-क्या चीज़ें ले जाना है।
33यही बातें हैं जिसे मरारी वंश के लोग मिलापवाले तम्बू
के कार्यों में सेवा करने के लिए करेंगे। हारून का पुत्र
ईतामार याजक इनके कार्य के लिए उत्तरदायी होगा।"

लेवी परिवार

34मूसा, हारून और इस्राएल के लोगों के नेताओं ने
कहातवंश के लोगों को गिना। उन्होंने इनको परिवार
और परिवार समूह के अनुसार गिना। **35**उन्होंने अपना
सेवा-कर्तव्य कर चुके तीस से पचास वर्ष के उम्र के
लोगों को गिना। इन लोगों को मिलापवाले तम्बू के लिए
विशेष कार्य करने को दिए गए।

36कहात परिवार समूह में जो इस कार्य को करने
की योग्यता रखते थे, दो हजार सात सौ पचास पुरुष थे।
37इस प्रकार कहात परिवार के इन लोगों को मिलापवाले
तम्बू के विशेष कार्य करने के लिए दिए गए। मूसा और
हारून ने इसे वैसे ही किया जैसा यहोवा ने मूसा से
करने को कहा था। **38**गेर्शोन परिवार समूह को भी
गिना गया। **39**सभी पुरुष जो अपना कर्तव्य सेवा कर
चुके थे और तीस से पचास वर्ष की उम्र के थे, गिने
गए। इन लोगों को मिलापवाले तम्बू में विशेष कार्य
करने का सेवा-कार्य दिया गया। **40**गेर्शोन परिवार समूह
के परिवारों में जो योग्य थे, वे दो हजार छः सौ तीस
पुरुष थे। **41**इस प्रकार इन पुरुषों को जो गेर्शोन परिवार
समूह के थे, मिलापवाले तम्बू में विशेष कार्य करने का
सेवा-कार्य सौंपा गया। मूसा और हारून ने इसे वैसे ही
किया जैसा यहोवा ने मूसा को करने को कहा था।

42मरारी के परिवार और परिवार समूह भी गिने
गए। **43**सभी पुरुष जो अपना सेवा-कर्तव्य कर चुके थे
और तीस से पचास वर्ष की उम्र के थे, गिने गए। इन
व्यक्तियों को मिलापवाले तम्बू के लिए विशेष कार्य
करने का सेवा-कार्य दिया गया। **44**मरारी परिवार समूह
के परिवारों में जो लोग योग्य थे, वे तीन हजार दो सौ
व्यक्ति थे। **45**इस प्रकार मरारी परिवार समूह के इन
लोगों को विशेष कार्य दिया गया। मूसा और हारून ने
इसे वैसे ही किया जैसा यहोवा ने मूसा से करने को
कहा था।

46मूसा, हारून और इस्राएल के लोगों के नेताओं ने
लेवीवंश परिवार समूह के सभी सदस्यों को गिना।
उन्होंने प्रत्येक परिवार और प्रत्येक परिवार समूह को
गिना। **47**सभी व्यक्ति जो अपने सेवा-कर्तव्य का निर्वाह
कर चुके थे और जो तीस वर्ष से पचास वर्ष उम्र के थे,

गिने गए। इन व्यक्तियों को मिलापवाले तम्बू के लिए विशेष कार्य करने का सेवा–कार्य दिया गया। उन्होंने मिलापवाले तम्बू को ले चलने का कार्य तब किया जब उन्होंने यात्रा की। **48**पुरुषों की सारी संख्या आठ हजार पाँच सौ अस्सीथी।

49यहोवा ने यह आदेश मूसा को दिया था। हर एक पुरुष को अपना कार्य दिया गया था और हर एक पुरुष से कहा गया था कि उसे क्या–क्या ले चलना चाहिए। इसलिए यहोवा ने जो आदेश दिया था उन चीज़ों को पूरा किया गया। सभी पुरुषों को गिना गया।

शुद्धता सम्बन्धी नियम

5 यहोवा ने मूसा से कहा, **2**"मैं इस्राएल के लोगों को, उनके डेरे बीमारियों व रोगों से मुक्त रखने का आदेश देता हूँ। इस्राएल के लोगों से कहो कि हर उस व्यक्ति को जो बुरे चर्म रोगों, शरीर से निकलने वाले स्रावों या किसी शव को छूने के कारण अशुद्ध हो गये हैं, उन्हें डेरे से बाहर निकाल दें, **3**चाहे वे पुरुष हो चाहे स्त्री। उन्हें डेरे से बाहर निकाल दें ताकि वे जिस डेरे में मेरा निवास है उसे वे अशुद्ध न कर दें। मैं तुम्हारे डेरे में तुम लोगों के बीच रह रहा हूँ।"

4अत: इस्राएल के लोगों ने परमेश्वर का आदेश माना। उन्होंने उन लोगों को डेरे के बाहर भेज दिया। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

अपराध के लिए अर्थ–दण्ड

5यहोवा ने मूसा से कहा, **6**"इस्राएल के लोगों को यह बताओ: जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति का कुछ बुरा करता है तो वस्तुत: वह यहोवा के विरुद्ध पाप करता है। वह व्यक्ति अपराधी है। **7**इसलिए वह व्यक्ति लोगों को अपने किए गए पाप को बताए। तब यह व्यक्ति अपने बुरे किए गए काम का पूरा भुगतान करे। वह भुगतान में पाँचवाँ हिस्सा जोड़े और उसका भुगतान उसे करे जिसका बुरा उसने किया है। **8**किन्तु जिस व्यक्ति का उसने बुरा किया है, वह मर भी सकता है और सम्भव है उस मृतक का कोई नजदीकी सम्बन्धी न हो जिसे भुगतान किया जाए। उस स्थिति में, बुरा करने वाला व्यक्ति यहोवा को भुगतान करेगा। वह व्यक्ति पूरा भुगतान याजक को करेगा। याजक को क्षमादान रूपी मेढ़े की बलि देनी चाहिए। बुरा करने वाले व्यक्ति के पापों को ढकने के लिए इस मेढ़े की बलि दी जानी चाहिए किन्तु याजक बाकी बचे भुगतान को अपने पास रख सकता है।

9"यदि इस्राएल का कोई व्यक्ति यहोवा को विशेष भेंट देता है तो वह याजक जो उसे स्वीकार करता है उसे अपने पास रख सकता है। यह उसकी है। **10**किसी व्यक्ति को ये विशेष भेंट देनी नहीं पड़ेगी। किन्तु यदि वह उनको देता है तो वह याजक की होगी।"

शंकालु पति

11तब यहोवा ने मूसा से कहा: **12**"इस्राएल के लोगों से यह कहो, किसी व्यक्ति की पत्नी पतिव्रता नहीं भी हो सकती है। **13**उस का किसी दूसरे व्यक्ति के साथ शारीरिक सम्बन्ध हो सकता है और वह इसे अपने पति से छिपा सकती है। कोई ऐसा व्यक्ति भी नहीं होता जो कहे कि उसने यह पाप किया। उसका पति उसे कभी जान भी नहीं सकता जो बुराई उसने की है और वह स्त्री भी अपने पति से अपने पाप के बारे में नहीं कहेगी। **14**किन्तु पति शंका करना आरम्भ कर सकता है कि उसकी पत्नी ने उसके विरुद्ध पाप किया है। वह उसके प्रति ईर्ष्या रख सकता है। चाहे वह सच्ची हो चाहे नहीं। **15**यदि ऐसा होता है तो वह अपनी पत्नी को याजक के पास ले जाए। पति एक भेंट भी ले जाएगा। यह भेंट **1/10** एपा* जौ का आटा होगा। उसे जौ के आटे पर तेल या सुगन्धि नहीं डालनी चाहिये। यह जौ का आटा यहोवा को अन्नबलि है। यह इसलिए दिया जाता कि पति ईर्ष्यालु है। यह भेंट यह संकेत करेगी कि उसे विश्वास है कि उसकी पत्नी पतिव्रता नहीं है।

16"याजक स्त्री को यहोवा के सामने ले जाएगा और स्त्री यहोवा के सामने खड़ी होगी। **17**तब याजक कुछ विशेष पानी लेगा और उसे मिट्टी के घड़े में डालेगा। याजक पवित्र तम्बू के फर्श से कुछ मिट्टी पानी में डालेगा। **18**याजक स्त्री को यहोवा के सामने खड़ा रहने के लिए विवश करेगा। तब वह उसके बाल खोलेगा और उसके हाथ में अन्नबलि देगा। यह जौ का आटा होगा जिसे उसके पति ने ईर्ष्या के कारण उसे दिया था। उसी समय वह विशेष कड़वे जल वाले मिट्टी के घड़े को पकड़े रहेगा। यह विशेष कड़वा जल ही है जो स्त्री को परेशानी पैदा करता है।

19"तब याजक स्त्री से कहेगा कि उसे झूठ नहीं बोलना चाहिए। उसे सत्य बोलने का वचन देना चाहिए। याजक उससे कहेगा: 'यदि तुम दूसरे व्यक्ति के साथ नहीं सोई हो, और तुमने अपने पति के विरुद्ध पाप नहीं किया है, जबकि तुम्हारा विवाह उसके साथ हुआ है, तो यह कड़वा जल तुमको हानि नहीं पहुँचाएगा। **20**किन्तु यदि तुमने अपने पति के विरुद्ध पाप किया है, यदि तुम किसी अन्य पुरुष के साथ सोई हो तो तुम शुद्ध नहीं हो। क्यों? क्योंकि जो तुम्हारे साथ सोया है तुम्हारा पति नहीं है और उसने तुम्हें अशुद्ध बनाया है। **21**इसलिए जब तुम इस विशेष जल को पीओगी तो तुम्हें बहुत परेशानी होगी। तुम्हारा पेट फूल जाएगा* और तुम कोई बच्चा

1/10 एपा शाब्दिक आठ प्याला।

पेट फूल जायेगा शाब्दिक, "तुम्हारा गर्भपात होगा।"

उत्पन्न नहीं कर सकोगी। यदि तुम गर्भवती हो, तो तुम्हारा बच्चा मर जाएगा। तब तुम्हारे लोग तुम्हें छोड़ देंगे और वे तुम्हारे बारे में बुरी बातें कहेंगे।'

"तब याजक को स्त्री से यहोवा को विशेष वचन देने के लिए कहना चाहिए। स्त्री को स्वीकार करना चाहिए कि ये बुरी बातें उसे होगी, यदि वह झूठ बोलेगी। **22**याजक को कहना चाहिए, 'तुम इस जल को लोगी जो तुम्हारे शरीर में परेशानी उत्पन्न करेगा। यदि तुमने पाप किया है तो तुम बच्चों को जन्म नहीं दे सकोगी और यदि तुम्हारा कोई बच्चा गर्भ में है तो वह जन्म लेने के पहले मर जाएगा।' तब स्त्री को कहना चाहिए: 'मैं वह स्वीकार करती हूँ जो आप कहते हैं।'

23"याजक को इन चेतावनियों को चर्म–पत्र पर लिखनी चाहिए। फिर उसे इस लिखावट को पानी में धो देना चाहिए। **24**तब स्त्री उस पानी को पीएगी जो कड़वा है। वह पानी उसमें जाएगा और यदि वह अपराधी है, तो उसे बहुत परेशानी उत्पन्न करेगा।

25"तब याजक उस अन्नबलि को उससे लेगा। ईर्ष्या के लिए भेंट और उसे यहोवा के सामने उठाएगा और उसे वेदी तक ले जाएगा।

26तब याजक अपनी अंजली में अन्न भरेगा और उसे वेदी पर रखेगा। तब वह उसे जलाएगा। उसके बाद, वह स्त्री से पानी पीने को कहेगा। **27**यदि स्त्री ने पति के विरुद्ध पाप किया होगा, तो पानी उसे परेशान करेगा। पानी उसके शरीर में जाएगा और उसे बहुत कष्ट देगा और कोई बच्चा जो उसके गर्भ में होगा, पैदा होने से पहले मर जाएगा और वह कभी बच्चे को जन्म नहीं दे सकेगी। सभी लोग उसके विरुद्ध हो जायेंगे। **28**किन्तु यदि स्त्री ने पति के विरुद्ध पाप नहीं किया है तो वह पवित्र है, फिर याजक घोषणा करेगा कि वह अपराधी नहीं है और बच्चों को जन्म देने के योग्य हो जाएगी।

29"इस प्रकार यह ईर्ष्या के विषय में नियम है। तुम्हें यही करना चाहिए यदि कोई विवाहित स्त्री अपने पति के विरुद्ध पाप करती है। **30**या यदि कोई व्यक्ति ईर्ष्या करता है और अपनी पत्नी के सम्बन्ध में शंका करता है कि उसने उसके विरुद्ध पाप किया है तो व्यक्ति को यही करना चाहिए। याजकको कहना चाहिए कि वह स्त्री यहोवा के सामने खड़ी हो। तब याजक इन सभी कार्यों को करेगा। यही नियम है। **31**पति कोई बुरा करने का अपराधी नहीं होगा। किन्तु स्त्री कष्ट उठाएगी, यदि उसने पाप किया है।"

नाज़ीरों का वंश

6 यहोवा ने मूसा से कहा, **2**"ये बातें इस्राएल के लोगों से कहो: कोई पुरुष या स्त्री कुछ समय के लिए किन्हीं अन्य लोगों से अलग रहना चाह सकता है। इस अलगाव का उद्देश्य यह हो कि वह व्यक्ति पूरी तरह अपने को उस समय के लिए यहोवा को समर्पित कर सके। वह व्यक्ति नाज़ीर कहलाएगा। **3**उस काल में व्यक्ति को कोई दाखमधु या कोई अधिक नशीली चीज़ नहीं पीनी चाहिए। व्यक्ति को सिरका जो दाखमधु से बना हो या किसी अधिक नशीले पेय को नहीं पीना चाहिए। उस व्यक्ति को अंगूर का रस नहीं पीना चाहिए और न ही अंगूर या किशमिश खाने चाहिए। **4**उस अलगाव के विशेष काल में उस व्यक्ति को अंगूर से बनी कोई चीज़ नहीं खानी चाहिए। उस व्यक्ति को अंगूर का बीज या छिलका भी नहीं खाना चाहिए।

5"उस अलगाव के काल में उस व्यक्ति को अपने बाल नहीं काटने चाहिए। उस व्यक्ति को उस समय तक पवित्र रहना चाहिए जब तक अलगाव का समय समाप्त न हो। उसे अपने बालों को लम्बे होने देना चाहिए। उस व्यक्ति के बाल, परमेश्वर को दिए गये उसके वचन का एक विशेष भाग है। वह उन बालों को परमेश्वर के लिए भेंट के रूप में देगा। इसलिए वह व्यक्ति अपने बालों को तब तक लम्बा होने देगा जब तक अलगाव का समय समाप्त न होगा।

6"इस अलगाव के काल में नाज़ीर को किसी शव के पास नहीं जाना चाहिए। क्यों? क्योंकि उस व्यक्ति ने अपने को पूरी तरह यहोवा को समर्पित कर दिया है। **7**यदि उसके अपने पिता, अपनी माता, अपने भाई या अपनी बहन भी मरें तो भी उसे उनको छूना नहीं चाहिए। यह उसे अपवित्र करेगा। उसे यह दिखाना चाहिए कि उसे अलग किया गया है और अपने को पूरी तरह परमेश्वर को समर्पित कर चुका है। **8**जिस पूरे काल में वह अलग किया गया, वह पूरी तरह अपने को यहोवा को समर्पित किए हुए है।

9"यह संभव है कि नाज़ीर किसी दूसरे व्यक्ति के साथ हो और वह दूसरा व्यक्ति अचानक मर जाए। यदि नाज़ीर मरे व्यक्ति को छुएगा तो वह अपवित्र हो जाएगा। यदि ऐसा होता है तो नाज़ीर को सिर से अपने बाल कटवा लेना चाहिए। वे बाल उसके विशेष दिए गए वचन के भाग थे। उसे अपने बालों को सातवें दिन काटना चाहिए क्योंकि उस दिन वह पवित्र किया जाता है। **10**तब आठवें दिन उसे दो फ़ाख्ते या कबूतर के दो बच्चे याजक के पास लाने चाहिए। उसे याजक को उन्हें मिलापवाले तम्बू के द्वार पर देना चाहिए। **11**तब याजक एक को पापबलि के रूप में भेंट करेगा। वह दूसरे को होमबलि के रूप में भेंट करेगा। यह होमबलि उस व्यक्ति द्वारा किये गये पाप के लिए भुगतान होगी। उसने पाप किया क्योंकि वह शव के पास था। उस समय वह व्यक्ति फिर वचन देगा कि सिर के बालों को परमेश्वर को भेंट करेगा। **12**इसका यह तात्पर्य हुआ कि उस व्यक्ति को फिर अलगाव के दूसरे समय के लिए अपने

आपको यहोवा को समर्पित कर देना चाहिए। उस व्यक्ति
को एक वर्ष का एक मेढ़ा लाना चाहिए। वह इसे पाप
के लिए भेंट के रूप में देगा। उसके अलगाव के सभी
दिन भुला दिये जाते हैं। उस व्यक्ति को नये अलगाव के
समय का आरम्भ करना होगा। यह अवश्य किया
जाना चाहिए क्योंकि उसने अलगाव के प्रथम काल में
एक शव का स्पर्श किया। **13**जब व्यक्ति के अलगाव
का समय पूरा हो तो उसे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर
जाना चाहिए। **14**वहाँ वह अपनी भेंट यहोवा को देगा।
उसकी भेंट होनी चाहिए:

होमबलि के लिए बिना दोष का एक वर्ष का एक
मेढ़ा; पापबलि के लिए बिना दोष की एक वर्ष की एक
मादा भेड़; मेलबलि के लिए बिना दोष का एक नर
भेड़;

15अखमीरी रोटियों की एक टोकरी, (तेल से मिश्रित
अच्छे आटे के फुलके इन "फुलकों" पर तेल लगाना
चाहिए।) अन्य भेंट तथा पेय भेंट जो इन भेंटों का एक
भाग है।

16"तब याजक इन चीज़ों को यहोवा को देगा। याजक
पापबलि और होमबलि चढ़ाएगा। **17**याजक रोटियों की
टोकरी यहोवा को देगा। तब वह यहोवा की मेलबलि के
रूप में नर भेड़ को मारेगा। वह यहोवा को अन्नबलि
और पेय भेंट के साथ इसे देगा। **18**नाज़ीर को मिलापवाले
तम्बू के द्वार पर जाना चाहिए। वहाँ उसे अपने बाल
कटवाने चाहिए जिन्हें उसने यहोवा के लिए बढ़ाया था।
उन बालों को मेलबलि के रूप में दी गई बलि के नीचे
जल रही आग में डाला जाना चाहिए।

19"जब नाज़ीर अपने बालों को काट चुकेगा तो याजक
उसे नर मेढ़ का एक पका हुआ कंधा और टोकरी से
एक बड़ा और एक छोटा "फुलका" देगा। ये दोनों अख़मीरी
फुलके होंगे।**20**तब याजक इन चीज़ों को यहोवा के
सामने उत्तोलित करेगा। यह एक उत्तोलन भेंट हैं। ये
चीज़ें पवित्र हैं और याजक की हैं। नर भेड़ की छाती
और जांघ भी यहोवा के सामने उत्तोलित किये जाएंगे। ये
चीज़ें भी याजक की हैं। इसके बाद नाज़ीर दाखमधु पी
सकता है।

21"यह नियम उन व्यक्तियों के लिए है जो नाज़ीर होने
का वचन लेते हैं। उस व्यक्ति को यहोवा को ये सभी
भेंटे देनी चाहिए यदि कोई व्यक्ति अधिक देने का वचन
देता है तो उसे अपने वचन का पालन करना चाहिए।
लेकिन उसे कम से कम वह सभी चीज़ें देनी चाहिए जो
नाज़ीर के नियम में लिखी हैं।

याजक का आशीर्वाद

22यहोवा ने मूसा से कहा, **23**"हारून और उसके पुत्रों
से कहो। इस्राएल के लोगों को आशीर्वाद देने का ढंग
यह है। उन्हें कहना चाहिए:

24यहोवा तुम पर कृपा करे और तुम्हारी रक्षा करे।
25यहोवा की कृपादृष्टि तुम पर प्रकाशित हो। वह
तुमसे प्रेम करे।
26 यहोवा की दृष्टि तुम पर हो। वह तुम्हें शान्ति दे।"

27तब यहोवा ने कहा, "इस प्रकार हारून और उसके
पुत्र इस्राएल के लोगों के सामने मेरा नाम लेंगे और मैं
उन्हें आशीर्वाद दूँगा।"

पवित्र तम्बू का समर्पण

7 जिस दिन मूसा ने पवित्र तम्बू का लगाना पूरा
किया, उसने इसे यहोवा को समर्पित किया। मूसा
ने तम्बू और इसमें उपयोग आने वाली चीज़ों को अभिषिक्त
किया। मूसा ने वेदी और इसके साथ उपयोग में आने
वाली चीज़ों को भी अभिषिक्त किया। ये दिखाती थी कि
ये सभी वस्तुएं केवल यहोवा की उपासना के लिये
प्रयोग की जानी चाहिए।

2तब इस्राएल के नेताओं ने भेंटे चढ़ाई। ये अपने–अपने
परिवारों के मुखिया थे जो अपने परिवार समूह के नेता
थे। इन्हीं नेताओं ने लोगों को गिना था। **3**ये नेता यहोवा
के लिये भेंटे लाए। वे चारों ओर से ढकी छ: गाड़ियाँ
और बारह गायें लाए। (हर एक नेता द्वारा एक गाय दी
गई थी। हर नेता ने दूसरे नेता से चारों ओर से ढकी
गाड़ी को देने में साझा किया।) नेताओं ने पवित्र तम्बू
पर यहोवा को ये चीज़ें दीं।

4यहोवा ने मूसा से कहा, **5**"नेताओं की इन भेंटों को
स्वीकार करो। ये भेंटें मिलापवाले तम्बू के काम में
उपयोग की जा सकती हैं। इन चीज़ों को लेवीवंश के
लोगों को दो। यह उन्हें अपने काम करने में सहायक
होंगी।"

6इसलिए मूसा ने चारों ओर से ढकी गाड़ियों और
गायों को लिया। उसने इन चीज़ों को लेवीवंश के लोगों
को दिया। **7**उसने दो गाड़ियाँ और चार गायें गेर्शोन
वंशियों को दीं। उन्हें अपने काम के लिए उन गाड़ियों
और गायों की आवश्यकता थी। **8**तब मूसा ने चार
गाड़ियों और आठ गायें मरारी वंश को दीं। उन्हें अपने
काम के लिए गाड़ियों और गायों की आवश्यकता थी।
याजक हारून का पुत्र ईतामार इन सभी व्यक्तियों के
कार्य के लिए उत्तरदायी था। **9**मूसा ने कहात वंशियों को
कोई गाय या कोई गाड़ी नहीं दी। इन व्यक्तियों को पवित्र
चीज़ें अपने कंधों पर ले जानी थीं। यही कार्य उनको
करने के लिए सौंपा गया था।

10उस दिन के अभिषेक के पश्चात नेता अपनी भेंटे
वेदी पर समर्पण के लिए लाए। उन्होंने अपनी भेंटे वेदी
के सामने यहोवा को अर्पित कीं। **11**यहोवा ने पहले से
ही मूसा से कह रखा था, "वेदी को समर्पण के रूप में दी
जाने वाली अपनी भेंट का भाग हर एक नेता एक एक
दिन लाएगा।"

12-83*बारह नेताओं में से प्रत्येक नेता अपनी–अपनी भेंटे लाया। वे भेंटे ये हैं: प्रत्येक नेता चाँदी की एक थाली लाया जिसका वजन था एक सौ तीस शेकेल।* प्रत्येक नेता चाँदी का एक कटोरा लाया जिसका वजन सत्तर शेकेल।* इन दोनों ही उपहारों को पवित्र अधिकृत भार से तोला गया था। हर कटोरे और हर थाली में तेल मिला बारीक आटा भरा हुआ था। यह अन्नबलि के रूप में प्रयोग में लाया जाना था। प्रत्येक नेता सोने की एक बड़ी करछी भी लेकर आया जिसका भार दस शेकेल* था। इस करछी में धूप भरी हुई थी। प्रत्येक नेता एक बछड़ा, एक मेढ़ा और एक वर्ष का एक मेमना भी लाया। ये पशु होमबलि के लिए थे। प्रत्येक नेता पापबलि के रूप में इस्तेमाल किये जाने के लिए एक बकरा भी लाया। प्रत्येक नेता दो गाय, पाँच मेढ़े, पाँच बकरे और एक-एक वर्ष के पाँच मेमने लाया। इन सभी की मेलबलि दी गयी।

अम्मीनादाब का पुत्र नहशोम, जो यहूदा के परिवार समूह से था, पहले दिन अपनी भेंटे लाया।

दूसरे दिन सूआर का पुत्र नतनेल जो इस्साकार का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

तीसरे दिन हेलोन का पुत्र एलीआब जो जबूलूनियों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

चौथे दिन शदेऊर का पुत्र एलीसूर जो रूबेनियों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

पाँचवे दिन सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल जो शिमौनियों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

छठे दिन दूएल का पुत्र एल्यासाप जो गादियों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

सातवें दिन अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा जो एप्रैम के लोगों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

आठवें दिन पदासूर का पुत्र गम्लीएल जो मनश्शे के लोगों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

नवें दिन गिदोनी का पुत्र अबीदान जो बिन्यामिन के लोगों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

दसवें दिन अम्मीशद्दै का पुत्र अखीआजर जो दान के लोगों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

ग्यारहवें दिन ओक्रान का पुत्र पजीएल जो आशेर के लोगों का नेता था, अपनी भेंटे लाया।

और फिर बारहवें दिन एनान का पुत्र अहीरा जो नप्ताली के लोगों का नेता था, अपनी भेंटे लेकर आया।

84इस प्रकार ये सभी चीज़ें इस्राएल के लोगों के नेताओं की भेंटें थी। ये चीज़ें तब लाई गई जब मूसा ने वेदी को विशेष तेल डालकर समर्पित किया। वे बारह चाँदी की तश्तरियाँ, बारह चाँदी के कटोरे और बारह सोने के चम्मच लाए। 85चाँदी की हर एक तश्तरी का वजन लगभग सवा तीन पौंड़ था और हर एक कटोरे का वजन लगभग पौने दो पौंड़ था। चाँदी की तश्तरियों और चाँदी के कटोरों का कुल अधिकृत भार साठ पौंड़ था। 86सुगन्धि से भरे सोने के चम्मचों में से प्रत्येक का अधिकृत भार दस शेकेल था। बारह सोने के चम्मचों का कुल वजन लगभग तीन पौंड़ था।

87होमबलि के लिए जानवरों की कुल संख्या बारह बैल, बारह मेढ़े और बारह एक वर्ष के मेमने थे। वहाँ अन्नबलि भी थी। यहोवा को पापबलि के रूप में उपयोग में आने वाले बारह बकरे भी थे। 88नेताओं ने मेलबलि के रूप में उपयोग और मारे जाने के लिए भी जानवर दिए। इन जानवरों की संख्या थी चौबीस बैल, साठ मेढ़े, साठ बकरे और साठ एक वर्ष के मेमने थे। वेदी के समर्पण काल में ये चीज़ें भेंट के रूप में दी गई। यह मूसा द्वारा अभिषेक का तेल उन पर डालने के बाद हुआ।

89मूसा मिलापवाले तम्बू में यहोवा से बात करने गया। उस समय उसने अपने से बात करती हुई यहोवा की वाणी सुनी। वह वाणी साक्षीपत्र के सन्दूक के ऊपर के विशेष ढक्कन पर के दोनों करूबों के मध्य से आ रही थी। इस प्रकार परमेश्वर ने मूसा से बातें की।

दीपाधार

8 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"हारून से बात करो और उससे कहो, उन स्थानों पर सात दीपकों को रखो जिन्हें मैंने तुम्हें दिखाया था। वे दीपक दीपाधार के सामने के क्षेत्र को प्रकाशित करेंगे।"

3हारून ने यह किया। हारून ने दीपकों को उचित स्थान पर रखा और उनका रुख ऐसा कर दिया कि उससे दीपाधार के सामने का क्षेत्र प्रकाशित हो सके। उसने मूसा को दिये गए यहोवा के आदेश का पालन किया। 4दीपाधार सोने की पट्टियों से बना था। सोने का उपयोग आधार से आरम्भ हुआ था और ऊपर सुनहरे फूलों तक पहुँचा हुआ था। यह सब उसी प्रकार बना था जैसा कि यहोवा ने मूसा को दिखाया था।

लेवीवंशियों का समर्पण

5यहोवा ने मूसा से कहा, 6"लेवीवंश के लोगों को इस्राएल के अन्य लोगों से अलग ले जाओ। उन लेवीवंशी लोगों को शुद्ध करो। 7यह तुम्हें पवित्र बनाने के लिए

पद 12–83 मूल में प्रत्येक नेता की भेंटों की सूची अलग–अलग दी गई है। किन्तु प्रत्येक भेंट का लिखित पाठ एक जैसा ही है। इसलिए पाठ–सुविधा को ध्यान में रखते हुए पद संख्या 12 से 83 तक को यहाँ एक साथ मिलाकर अनुवादित किया गया है।

एक सौ तीस शेकेल अर्थात् 3 1/4 पौंड।

सत्तर शेकेल अर्थात् 1 3/4 पौंड।

दस शेकेल अर्थात् चार औंस।

करना होगा। पापबलि से विशेष पानी* उन पर छिड़को। यह पानी उन्हें पवित्र करेगा। तब वे अपने शरीर के बाल कटवायेंगे तथा अपने कपड़ों को धोएंगे। यह उनके शरीर को शुद्ध करेगा।

8"तब वे एक नया बैल और उसके साथ उपयोग में आने वाली अन्नबलि लेंगे। यह अन्नबलि, तेल मिला हुआ आटा होगा। तब अन्य बैल को पापबलि के रूप में लो। 9लेवीवंश के लोगों को मिलापवाले तम्बू के सामने के क्षेत्र में लाओ। तब इस्राएल के सभी लोगों को चारों ओर से इकट्ठा करो। 10तब तुम्हें लेवीवंश के लोगों को यहोवा के सामने लाना चाहिए और इस्राएल के लोग अपना हाथ उन पर रखेंगे।* 11तब हारून लेवीवंश के लोगों को यहोवा के सामने लाएगा-वे परमेश्वर के लिए भेंट के रूप में होंगे। इस ढंग से लेवीवंश के लोग यहोवा का विशेष कार्य करने के लिए तैयार होंगे।

12"लेवीवंश के लोगों से कहो कि वे अपना हाथ बैलों के सिर पर रखें। एक बैल यहोवा को पापबलि के रूप में होगा। दूसरा बैल यहोवा को होमबलि के रूप में काम आएगा। ये भेंटे लेवीवंश के लोगों को शुद्ध करेंगी। 13लेवीवंश के लोगों से कहो कि वे हारून और उसके पुत्रों के सामने खड़े हों। तब यहोवा के सामने लेवीवंश के लोगों को उत्तोलन भेंट के रूप में प्रस्तुत करो। 14यह लेवीवंश के लोगों को पवित्र बनायेगा। यह दिखायेगा कि वे परमेश्वर के लिये विशेष रीति से इस्तेमाल होंगे। वे इस्राएल के अन्य लोगों से भिन्न होंगे और लेवीवंश के लोग मेरे होंगे।

15"इसलिए लेवीवंश के लोगों को शुद्ध करो और उन्हें यहोवा के सामने उत्तोलन भेंट के रूप में प्रस्तुत करो। जब यह पूरा हो जाए तब वे आ सकते हैं और मिलापवाले तम्बू में अपना काम कर सकते हैं। 16ये लेवीवंशी इस्राएल के वे लोग हैं जो मुझको दिये गए हैं। मैंने उन्हें अपने लोगों के रूप में स्वीकार किया है। बीते समय में हर एक इस्राएल के परिवार में पहलौठा पुत्र मुझे दिया जाता था किन्तु मैंने लेवीवंश के लोगों को इस्राएल के अन्य परिवारों के पहलौठे पुत्रों के स्थान पर स्वीकार किया है। 17इस्राएल का हर पुरुष जो हर एक परिवार में पहलौठा है, मेरा है। यदि यह पुरुष या जानवर है तो भी मेरा है। मैंने मिस्र में सभी पहलौठे बच्चों और जानवरों को मार डाला था। इसलिए मैंने पहलौठे पुत्रों को अलग किया जिससे वे मेरे हो सकें। 18अब मैंने लेवीवंशी लोगों को ले लिया है। मैंने इस्राएल के अन्य लोगों के परिवारों में पहलौठे बच्चों के स्थान पर इनको स्वीकार किया है। 19मैंने इस्राएल के सभी लोगों में से लेवीवंश के लोगों को चुना है। मैंने उन्हें हारून और उसके पुत्रों को इन्हें भेंट के रूप में दिया है। मैं चाहता हूँ कि वे मिलापवाले तम्बू में काम करें। वे इस्राएल के सभी लोगों के लिए सेवा करेंगे और वे उन बलिदानों को करने में सहायता करेंगे जो इस्राएल के लोगों के पापों को ढकने में सहायता करेंगी। तब कोई बड़ा रोग या कष्ट इस्राएल के लोगों को नहीं होगा जब वे पवित्र स्थान के पास आएंगे।"

20इसलिए मूसा, हारून और इस्राएल के सभी लोगों ने यहोवा का आदेश माना। उन्होंने लेवीवंशियों के प्रति वैसा ही किया जैसा उनके प्रति करने का यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था। 21लेवीयों ने अपने को शुद्ध किया और अपने वस्त्रों को धोया। तब हारून ने उन्हें यहोवा के सामने उत्तोलन भेंट के रूप में प्रस्तुत किया। हारून ने वे भेंटें भी चढ़ाई जिन्होंने उनके पापों को नष्ट करके उन्हें शुद्ध किया था। 22उसके बाद लेवीवंश के लोग अपना काम करने के लिए मिलापवाले तम्बू में आए। हारून और उसके पुत्रों ने उनकी देखभाल की। वे लेवीवंश के लोगों के कार्य के लिए उत्तरदायी थे। हारून और उसके पुत्रों ने उन आदेशों का पालन किया जिन्हें यहोवा ने मूसा को दिया था।

23यहोवा ने मूसा से कहा, 24"लेवीवंश के लोगों के लिए यह विशेष आदेश है: हर एक लेवीवंशी पुरुष को, जो पच्चीस वर्ष या उससे अधिक उम्र का है, अवश्य आना चाहिए और मिलापवाले तम्बू के कामों में हाथ बटाना चाहिए। 25जब कोई व्यक्ति पचास वर्ष का हो जाए तो उसे नित्य के कामों से छुट्टी लेनी चाहिए। उसे पुन: काम करने की आवश्यकता नहीं है। 26पचास वर्ष या उससे अधिक उम्र के लोग मिलापवाले तम्बू में अपने भाईयों को उनके काम में सहायता दे सकते हैं। किन्तु वे लोग स्वयं काम नहीं करेंगे। उन्हें सेवा-निवृत्त होने की स्वीकृति दी जाएगी। इसलिए उस समय लेवीवंश के लोगों से यह कहना याद रखो जब तुम उन्हें उनका सेवा-कार्य सौंपो।"

फसह पर्व

9 यहोवा ने मूसा को सीनै की मरुभूमि में कहा। उस समय से एक वर्ष और एक महीना हो गया जब इस्राएल के लोग मिस्र से निकले थे। यहोवा ने मूसा से कहा, 2"इस्राएल के लोगों से कहो कि वे निश्चित समय पर फसह पर्व की दावत को खाना याद रखें। 3वह निश्चित समय इस महीने का चौदहवाँ दिन है। उन्हें सन्ध्या के समय दावत खानी चाहिए और दावत के बारे में मैंने जो नियम दिए हैं उनको उन्हें याद रखना चाहिए।"

4इसलिए मूसा ने इस्राएल के लोगों से फसह पर्व की दावत खाने को याद रखने के लिए कहा 5और लोगों ने

विशेष पानी इस पानी में लाल गायों की राख थी जिन्हें पापबलि के रूप में वेदी पर जलाया गया था।

हाथ उन पर रखेंगे यह संकेत करता था कि लोग सम्मिलित रूप से लेवीवंश के लोगों को उनके विशेष कार्य के लिये नियुक्त करते थे।

चौदहवें दिन सन्ध्या के समय सीनै की मरुभूमि में वैसा
ही किया। यह पहले महीने में था। इस्राएल के लोगों ने
हर एक काम वैसे ही किया जैसे यहोवा ने मूसा को
आदेश दिया था। **6**किन्तु कुछ लोग फसह पर्व की दावत
उसी दिन नहीं खा सके। वे एक शव के कारण शुद्ध
नहीं थे। इसलिए वे उस दिन मूसा और हारून के पास
गए। **7**उन लोगों ने मूसा से कहा, “हम लोग एक शव
को छूने के कारण अशुद्ध हुए हैं। याजकों ने हमें
निश्चित समय पर यहोवा को चढ़ाई जाने वाली भेंट देने
से रोक दिया है। अत: हम फसह पर्व को अन्य इस्राएली
लोगों के साथ नहीं मना सकते। हमें क्या करना चाहिए?”

8मूसा ने उनसे कहा, “मैं यहोवा से पूछूँगा कि वह इस
सम्बन्ध में क्या कहता है।”

9तब यहोवा ने मूसा से कहा, **10**“इस्राएल के लोगों से
ये बातें कहो: यह हो सकता है कि तुम ठीक समय पर
फसह पर्व न मना सको क्योंकि तुम या तुम्हारे परिवार
का कोई व्यक्ति शव को स्पर्श करने के कारण अशुद्ध
हो या संभव है कि तुम किसी यात्रा पर गए हुए हो।”
11तो भी तुम फसह पर्व मना सकते हो। तुम फसह पर्व
को दूसरे महीने के चौदहवें दिन सन्ध्या के समय मनाओगे।
उस समय तुम मेमना, अख़मीरी रोटी और कड़वा
सागपात खाओगे। **12**अगली सुबह तक के लिए तुम्हें
उसमें से कोई भी भोजन नहीं छोड़ना चाहिए। तुम्हें
मेमने की किसी हड्डी को भी नहीं तोड़ना चाहिए। उस
व्यक्ति को फसह पर्व के सभी नियमों का पालन करना
चाहिए। **13**किन्तु कोई भी व्यक्ति जो समर्थ है, फसह पर्व
की दावत को ठीक समय पर ही खाये। यदि वह शुद्ध है
और किसी यात्रा पर नहीं गया है तो उसके लिये कोई
बहाना नहीं है। यदि वह व्यक्ति फसह पर्व को ठीक
समय पर नहीं खाता है तो उसे अपने लोगों से अलग
भेज दिया जायेगा। वह अपराधी है! क्योंकि उसने यहोवा
को ठीक समय पर अपनी भेंट नहीं चढ़ाई सो उसे दण्ड
अवश्य दिया जाना चाहिए।”

14“तुम लोगों के साथ रहने वाला कोई भी व्यक्ति जो
इस्राएली लोगों का सदस्य नहीं है, यहोवा के फसह पर्व
में तुम्हारे साथ भाग लेना चाह सकता है। यह स्वीकृत
है, किन्तु उस व्यक्ति को उन नियमों का पालन करना
होगा जो तुम्हें दिए गए हैं। तुम्हें अन्य लोगों के लिए भी
वे ही नियम रखने होंगे जो तुम्हारे लिए हैं।”

बादल और अग्नि

15जिस दिन पवित्र साक्षीपत्र का तम्बू लगाया गया,
एक बादल इसके ऊपर रूक गया। रात को बादल
अग्नि की तरह दिखाई पड़ता था। **16**बादल तम्बू के
ऊपर निरन्तर ठहरा रहा और रात को बादल अग्नि
की तरह दिखाई दिया। **17**जब बादल तम्बू के ऊपर
अपने स्थान से चलता था, इस्राएली इसका अनुसरण
करते थे। जब बादल रूक जाता था तब इस्राएल के लोग
वहीं अपना डेरा डालते थे। **18**यही ढंग था जिससे यहोवा
इस्राएल के लोगों को यात्रा करने का आदेश देता था,
और यही उसका उस स्थान के लिए आदेश था जहाँ
उन्हें डेरा लगाना चाहिए था और जब तक बादल तम्बू
के ऊपर ठहरता था, लोग उसी स्थान पर डेरा डाले
रहते थे। **19**कभी–कभी बादल तम्बू के ऊपर लम्बे
समय तक ठहरता था। इस्राएली यहोवा का आदेश
मानते थे और यात्रा नहीं करते थे। **20**कभी–कभी
बादल तम्बू के ऊपर कुछ ही दिनों के लिए रहता था
और लोग यहोवा के आदेश का पालन करते थे। वे
बादल का अनुसरण तब करते जब वह चलता था।
21कभी–कभी बादल केवल रात में ही ठहरता था और
जब बादल अगली सुबह चलता था तब लोग अपनी चीजें
इकट्‌ठी करते थे और उसका अनुसरण करते थे, रात
में या दिन में, यदि बादल चलता था तो लोग उसका
अनुसरण करते थे। **22**यदि बादल तम्बू के ऊपर दो दिन
या एक महीना या एक वर्ष ठहरता था तो लोग यहोवा
के आदेश का पालन करते रहते थे। वे उसी डेरे में
ठहरते थे और तब तक नहीं चलते थे, जब तक बादल
नहीं चलता था। जब बादल अपने स्थान से उठता और
चलता तब लोग भी चलते थे। **23**इस प्रकार लोग यहोवा
के आदेश का पालन करते थे। वे वहाँ डेरा डालते थे
जिस स्थान को यहोवा दिखाता था और जब यहोवा
उन्हें स्थान छोड़ने के लिए आदेश देता था तब लोग
बादल का अनुसरण करते हुए स्थान छोड़ते थे। लोग
यहोवा के आदेश का पालन करते थे। यह आदेश था
जिसे यहोवा ने मूसा के द्वारा उन्हें दिया।

चाँदी का बिगुल

10 यहोवा ने मूसा से कहा: **2**“बिगुल बनाने के
लिये चाँदी का उपयोग करो। चाँदी का पतरा
बना कर उससे दो बिगुल बनाओ। ये बिगुल लोगों को
एक साथ बुलाने और यह बताने के लिए होंगी कि डेरे
को कब चलाना है। **3**जब तुम इन दोनों बिगुलों को
बजाओगे, तो सभी लोगों को मिलापवाले तम्बू के सामने
तुम्हारे आगे इकट्‌ठा हो जाना चाहिए। **4**यदि तुम केवल
एक बिगुल बजाते हो, तो नेता (इस्राएल के बारह परिवारों
के मुखिया) तुम्हारे सामने इकट्‌ठे होंगे।

5“जब तुम बिगुल को पहली बार कम बजाओ, तब
पूर्व में डेरा लगाए हुए परिवारों के समूहों को चलना
आरम्भ कर देना चाहिए। **6**जब तुम बिगुल को दूसरी
बार कम बजाओगे तो दक्षिण के डेरे को चलना आरम्भ
कर देना चाहिए। बिगुल की ध्वनि यह घोषणा करेगी
कि लोग चलें। **7**जब तुम सभी लोगों को इकट्‌ठा करना
चाहते हो तो बिगुल को दूसरे ढंग से लम्बी स्थिर ध्वनि
निकालते हुए बजाओ। **8**केवल हारून के याजक पुत्रों

को बिगुल बजाना चाहिए। यह तुम लोगों के लिए नियम
है जो भविष्य में माना जाता रहेगा।

9"यदि तुम अपने देश में किसी शत्रु से लड़ रहे हो तो,
तुम उनके विरुद्ध जाने के पहले बिगुल को जोर से
बजाओ। तब तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारी बात सुनेगा,
और वह तुम्हें तुम्हारे शत्रुओं से बचाएगा। 10अपनी
विशेष प्रसन्नता के समय में भी तुम्हें अपना बिगुल
बजाना चाहिए। अपने विशेष पवित्र दिनों और नये चाँद
की दावतों में बिगुल बजाओ और तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा को तुम्हें याद करने का यह विशेष तरीका
होगा। मैं तुम्हें यह करने का आदेश देता हूँ; मैं तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा हूँ।"

इस्राएल के लोग अपने डेरे को ले चलते हैं

11दूसरे वर्ष के दूसरे महीने में इस्राएल के लोगों द्वारा
मिस्र छोड़ने के बीसवें दिन के बाद साक्षीपत्र के तम्बू के
ऊपर से बादल उठा। 12इसलिए इस्राएल के सभी लोगों
ने सीनै की मरुभूमि से यात्रा करनी आरम्भ की। वे
एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा तब तक करते रहे
जब तक बादल पारान की मरुभूमि में नहीं रूका।
13यह पहला समय था कि लोगों ने अपने डेरों को वैसे
चलाया जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

14यहूदा के डेरे से तीन दल पहले गए। उन्होंने अपने
झण्डे के साथ यात्रा की। पहला दल यहूदा के परिवार
समूह का था। अम्मीनादाब का पुत्र नहशोन उस दल
का नेता था। 15उसके ठीक बाद इस्साकार का परिवार
समूह आया। सूआर का पुत्र नतनेल उस दल का नेता
था 16और तब जबूलून का परिवार समूह आया। हेलोन
का पुत्र एलीआब उस दल का नेता था। 17तब मिलापवाले
तम्बू उतारे गए और गेर्शोन तथा मरारी परिवार के
लोग पवित्र तम्बू को लेकर चले। इसलिए इन परिवारों
के लोग पंक्ति में ठीक बाद में थे।

18तब रूबेन के डेरे के तीन दल आए। उन्होंने अपने
झण्डे के साथ यात्रा की। पहला दल रूबेन परिवार समूह
का था। शदेऊर का पुत्र एलीआज़र इस दल का नेता
था। 19इसके ठीक बाद शिमोन का परिवार समूह आया।
सूरीशद्दै का पुत्र शलूमीएल उस दल का नेता था।
20और तब गाद का परिवार समूह आया। दूएल का पुत्र
एल्यासाप उस दल का नेता था। 21तब कहात परिवार
के लोग आए। वे उन पवित्र चीज़ों को ले जा रहे थे जो
पवित्र तम्बू में थीं। ये लोग इस समय इसलिए आए ताकि
इन लोगों के पहुँचने के पहले पवित्र तम्बू लगा दिया
जाए और तैयार कर दिया जाए।

22इसके ठीक बाद एप्रैम के डेरे के तीन दल आए।
उन्होंने अपने झण्डे के साथ यात्रा की। पहला दल एप्रैम
के परिवार समूह का था। अम्मीहूद का पुत्र एलीशामा
उस दल का नेता था। 23ठीक उसके बाद मनश्शे का
परिवार समूह आया। पदासूर का पुत्र गम्लीएल उस दल
का नेता था। 24तब बिन्यामीन का परिवार समूह आया।
गिदोनी का पुत्र अबीदान उस दल का नेता था।

25पंक्ति में आखिरी तीन परिवार समूह अन्य सभी
परिवार समूहों के लिए पृष्ठ रक्षक थे। ये दल दान के
डेरे मे से थे। उन्होंने अपने झण्डे के साथ यात्रा की।
पहला दल दान के परिवार समूह का था। अम्मीशद्दै का
पुत्र अहीएजेर उस दल का नेता था। 26उसके ठीक बाद
आशेर का परिवार समूह आया। ओक्रान का पुत्र पजीएल
उस दल का नेता था। 27तब नप्ताली का परिवार समूह
आया। एनान का पुत्र अहीरा उस दल का नेता था।
28जब इस्राएल के लोग एक स्थान से दूसरे स्थान की
यात्रा करते थे तब उनका यही ढंग था।

29रूएल का पुत्र होबाब मिद्यानी था। रूएल मूसा का
ससुर था। मूसा ने होबाब से कहा, "हम लोग उस देश
की यात्रा कर रहे हैं जिसे परमेश्वर ने हम लोगों को
देने का वचन दिया है। इसलिए हम लोगों के साथ
आओ, हम लोग तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार करेंगे।
परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को अच्छी चीज़ें देने का
वचन दिया है।"

30किन्तु होबाब ने उत्तर दिया, "नहीं, मैं तुम्हारे साथ
नहीं जाऊँगा। मैं अपने देश और अपने लोगों के पास
लौटूँगा।"

31तब मूसा ने कहा, "हमें छोड़ो मत। तुम रेगिस्तान
के बारे में हम लोगों से अधिक जानते हो। तुम हमारे
पथ पदर्शक हो सकते हो। 32यदि तुम हम लोगों के साथ
आते हो तो यहोवा जो कुछ अच्छी चीज़ें देगा उसमें
तुम्हारे साथ हम हिस्सा बटाएंगे।"

33इसलिए होबाब मान गया और उन्होंने यहोवा के
पर्वत से यात्रा आरम्भ की। याजकों ने यहोवा के साक्षीपत्र
के पवित्र सन्दूक को लिया और लोगों के आगे चले। वे
डेरा डालने के स्थान की खोज में तीन दिन तक पवित्र
सन्दूक ढोते रहे। 34यहोवा का बादल हर एक दिन
उनके ऊपर था और हर एक सुबह जब वे अपने डेरे
को छोड़ते थे तो उनको रास्ता दिखाने के लिए बादल
वहाँ रहता था। 35जब लोग पवित्र सन्दूक के साथ यात्रा
आरम्भ करते थे और पवित्र सन्दूक डेरे से बाहर ले
जाया जाता था, मूसा सदा कहता था,

"यहोवा, उठ! तेरे शत्रु सभी दिशाओं में भागें। जो
लोग तेरे विरुद्ध हों तेरे सामने से भागें।"

36और जब पवित्र सन्दूक अपनी जगह पर रखा जाता
था तब मूसा सदा यह कहता था,

"यहोवा, वापस आ, इस्राएल के लाखों लोगों के पास।"

लोग फिर शिकायत करते हैं

11 इस समय लोगों ने अपने कष्टों के लिए शिकायत
की। यहोवा ने उनकी शिकायतें सुनी। जब

यहोवा ने ये बातें सुनी तो वह क्रोधित हुआ। यहोवा की
तरफ से डेरे में आग लग गई। आग ने डेरे के छोर पर
के कुछ हिस्से को जला दिया। 2इसलिए लोगों ने मूसा
को सहायता के लिये पुकारा। मूसा ने यहोवा से प्रार्थना
की और आग का जलना बन्द हो गया। 3इसलिए उस
स्थान को तबेरा कहा गया। लोगों ने उस स्थान को यही
नाम दिया क्योंकि यहोवा ने उनके बीच आग जला दी
थी।

सत्तर अग्रज नेता

4इस्राएल के लोगों के साथ जो विदेशी मिल गए थे
अन्य चीज़ें खाने की इच्छा करने लगे। शीघ्र ही इस्राएल
के लोगों ने फिर शिकायत करनी आरम्भ की। लोगों
ने कहा, "हम माँस खाना चाहते हैं! 5हम लोग मिस्र में
खायी गई मछलियों को याद करते हैं। उन मछलियों का
कोई मूल्य नहीं देना पड़ता था। हम लोगों के पास बहुत
सी सब्जियाँ थीं जैसे ककड़ियाँ, खरबूजे, गन्दने, प्याज
और लहसुन। 6किन्तु अब हम अपनी शक्ति खो चुके हैं
हम और कुछ भी नहीं खाते, इस मन्ने के अतिरिक्त!"
7(मन्ना धनियाँ के बीज के समान था, वह गूगुल के
पारदर्शी पीले गौंद के समान दिखता था। 8लोग इसे
इकट्ठा करते थे और तब इसे पीसकर आटा बनाते थे
या वे इसे कुचलने के लिए चट्टान का उपयोग करते
थे। तब वे इसे बर्तन में पकाते थे अथवा इसके "फुलके"
बनाते थे। "फुलके" का स्वाद जैतून के तेल से पकी
रोटी के समान होता था। 9हर रात को जब भूमि ओस
से गीली होती थी तो मन्ना भूमि पर गिरता था।)

10मूसा ने हर एक परिवार के लोगों को अपने खेमों
के द्वारों पर खड़े शिकायत करते सुना। यहोवा बहुत
क्रोधित हुआ। इससे मूसा बहुत परेशान हो गया। 11मूसा
ने यहोवा से पूछा, "यहोवा, तूने अपने सेवक मुझ पर
यह आपत्ति क्यों डाली है? मैंने क्या किया है? जो बुरा
है। मैंने तुझे अप्रसन्न करने के लिए क्या किया है? तूने
मेरे ऊपर इन सभी लोगों का उत्तरदायित्व क्यों सौंपा है?
12तू जानता है कि मैं इन सभी लोगों का पिता नहीं हूँ। तू
जानता है कि मैंने इनको पैदा नहीं किया है। किन्तु यह
तो ऐसे हैं कि मैं इन्हें अपनी गोद में वैसे ही ले चलूँ जैसे
कोई धाय बच्चे को ले चलती है। तू हमें ऐसा करने को
विवश क्यों करता है? तू मुझे क्यों विवश करता है कि
मैं इन्हें उस देश को ले जाऊँ जिसे देने का वचन तूने
उनके पूर्वजों को दिया है? 13मेरे पास इन लोगों के लिए
पर्याप्त माँस नहीं है। किन्तु वे लगातार मुझसे शिकायत
कर रहे हैं। वे कहते हैं, 'हमें खाने के लिए माँस दो!'
14मैं अकेले इन सभी लोगों की देखभाल नहीं कर
सकता। यह बोझ मेरी बरदाश्त के बाहर है। 15यदि तू
उनके कष्ट को मुझे देकर चलाते रहना चाहता है तो
तू मुझे अभी मार डाल। यदि तू मुझे अपना सेवक
मानता है तो अभी मुझे मर जाने दे। तब मेरे सभी कष्ट
समाप्त हो जाएंगे!"

16यहोवा ने मूसा से कहा, "मेरे पास इस्राएल के ऐसे
सत्तर अग्रजों को लाओ, जो लोगों के अग्रज और अधिकारी
हों। इन्हें मिलापवाले तम्बू में लाओ। वहाँ उन्हें अपने
साथ खड़ा करो। 17तब मैं आऊँगा और तुमसे बातें
करूँगा। अब तुम पर आत्मा आई है। किन्तु मैं उन्हें भी
आत्मा का कुछ अंश दूँगा। तब वे लोगों की देखभाल
करने में तुम्हारी सहायता करेंगे। इस प्रकार, तुमको
अकेले इन लोगों के लिए उत्तरदायी नहीं होना पड़ेगा।
18लोगों से कहो: कल के लिए अपने को तैयार करो।
कल तुम लोग माँस खाओगे। यहोवा ने सुना है जब तुम
लोग रोए-चिल्लाए। यहोवा ने तुम लोगों की बातें सुनीं
जब तुम लोगों ने कहा, 'हमें खाने के लिए माँस चाहिए!
हम लोगों के लिए मिस्र में अच्छा था।" अब यहोवा तुम
लोगों को माँस देगा और तुम लोग उसे खाओगे। 19तुम
लोग उसे केवल एक दिन नहीं, दो, पाँच, दस या बीस
दिन भी खा सकोगे। 20तुम लोग वह माँस महीने भर
खाओगे। तुम लोग वह माँस तब तक खाओगे जब तक
उससे ऊब नहीं जाओगे। यह होगा, क्योंकि तुम लोगों ने
यहोवा के विरुद्ध शिकायत की है। यहोवा तुम लोगों में
घूमता है और तुम्हारी आवश्यकताओं को समझता है।
किन्तु तुम लोग उसके सामने रोए-चिल्लाए और शिकायत
की है! तुम लोगों ने कहा, 'हम लोगों ने आखिर मिस्र
छोड़ा ही क्यों?'"

21मूसा ने कहा, "यहोवा, यहाँ छ: लाख पुरुष साथ
चल रहे हैं और तू कहता है, 'मैं उन्हें पूरे महीने खाने
के लिए पर्याप्त माँस दूँगा!' 22यदि हमें सभी भेड़ें और
मवेशी मारने पड़े तो भी इतनी बड़ी संख्या में लोगों के
महीने भर खाने के लिए वह पर्याप्त नहीं होगा और
यदि हम समुद्र की सारी मछलियाँ पकड़ लें तो भी
उनके लिए वे पर्याप्त नहीं होंगी।"

23 किन्तु यहोवा ने मूसा से कहा, "यहोवा की शक्ति
को सीमित न करो। तुम देखोगे कि यदि मैं कहता हूँ
कि मैं कुछ करूँगा तो उसे मैं कर सकता हूँ।"

24इसलिए मूसा लोगों से बात करने बाहर गया। मूसा
ने उन्हें वह बताया जो यहोवा ने कहा था। तब मूसा ने
सत्तर अग्रज नेताओं को इकट्ठा किया। मूसा ने उनसे
तम्बू के चारों ओर खड़ा रहने को कहा। 25तब यहोवा
एक बादल में उतरा और उसने मूसा से बातें की।
आत्मा मूसा पर थी। यहोवा ने उसी आत्मा को सत्तर
अग्रज नेताओं पर भेजा। जब उन में आत्मा आई तो वे
भविष्यवाणी करने लगे। किन्तु यह केवल उसी समय
हुआ जब उन्होंने ऐसा किया।

26अग्रजों में से दो एलदाद और मेदाद तम्बू में नहीं
गए। उनके नाम अग्रज नेताओं की सूची में थे। किन्तु
वे डेरे में रहे किन्तु आत्मा उन पर भी आई और वे भी

डेरे में भविष्यवाणी करने लगे। 27एक युवक दौड़ा और
मूसा से बोला। उस पुरुष ने कहा, “एलदाद और मेदाद
डेरे में भविष्यवाणी कर रहे हैं।”

28किन्तु नून के पुत्र यहोशू ने मूसा से कहा, “मूसा,
तुम्हें उन्हें रोकना चाहिए!” (यहोशू मूसा का तब से
सहायक था जब वह किशोर था।)

29किन्तु मूसा ने उत्तर दिया, “क्या तुम्हें डर है कि
लोग सोचेंगे कि अब मैं नेता नहीं हूँ? मैं चाहता हूँ कि
यहोवा के सभी लोग भविष्यवाणी करने योग्य हों। मैं
चाहता हूँ कि यहोवा अपनी आत्मा उन सभी पर भेजे।”
30तब मूसा और इस्राएल के नेता डेरे में लौट गए।

बटेरें आई

31तब यहोवा ने समुद्र की ओर से भारी आंधी चलाई।
आंधी ने उस क्षेत्र में बटेरों को पहुँचाया। बटेरें डेरों के
चारों ओर उड़ने लगीं। वहाँ इतनी बटेरें थीं कि भूमि
ढक गई। भूमि पर बटेरों की तीन फीट ऊँची परत जम
गई थी। कोई व्यक्ति एक दिन में जितनी दूर जा सकता
था उतनी दूर तक चारों ओर बटेरें थीं। 32लोग बाहर
निकले और पूरे दिन और पूरी रात बटेरों को इकट्ठा
किया और फिर पूरे अगले दिन भी उन्होंने बटेरें इकट्ठी
कीं। हर एक आदमी ने साठ बुशेल* या उससे अधिक
बटेरें इकट्ठी की। तब लोगों ने बटेरों को अपने डेरे के
चारों ओर फैलाया। 33लोगों ने माँस खाना आरम्भ
किया, किन्तु यहोवा बहुत क्रोधित हुआ। जब माँस
उनके मुँह में था और लोग जब तक इसको खाना
खत्म करें इसके पहले ही, यहोवा ने एक बीमारी लोगों
में फैला दी। 34इसलिए लोगों ने उस स्थान का नाम
किब्रोथत्तावा रखा। उन्होंने उस स्थान को वह नाम
इसलिए दिया कि यह वही स्थान है जहाँ उन्होंने उन
लोगों को दफनाया था जो स्वादिष्ट भोजन की प्रबल
इच्छा रखते थे। 35किब्रोथत्तावा से लोगों ने हसेरोत की
यात्रा की और वे वहीं ठहरे।

मरियम और हारून मूसा की पत्नी के विरुद्ध कहते हैं

12 मरियम और हारून मूसा के विरुद्ध बात करने
लगे। उन्होंने उसकी आलोचना की, क्योंकि
उसकी पत्नी कूशी थी। उन्होंने सोचा कि यह अच्छा
नहीं कि मूसा ने कूशी लोगों में से एक के साथ विवाह
किया। 2उन्होंने आपस में कहा, “यहोवा ने लोगों से बात
करने के लिए मूसा का उपयोग किया है। किन्तु मूसा
ही एकमात्र नहीं है। यहोवा ने हम लोगों के द्वारा भी
कहाहै।”
यहोवा ने यह सुना। 3(मूसा बहुत विनम्र व्यक्ति था।
वह न डींग हाँकता था, न शेखी बघारता था। वह धरती
पर के किसी व्यक्ति से अधिक विनम्र था।) 4इसलिये
यहोवा अचानक आया और मूसा, हारून और मरियम
से बोला। यहोवा ने कहा, “तुम तीनों को अब मिलापवाले
तम्बू में आना चाहिए।”

इसलिए मूसा, हारून और मरियम तम्बू में गए। 5तब
यहोवा बादल में उतरा। यहोवा तम्बू के द्वार पर खड़ा
हुआ। यहोवा ने “हारून और मरियम” को अपने पास
आने के लिए कहा! जब दोनों उसके समीप आए तो,
6यहोवा ने कहा, “मेरी बात सुनो जब मैं तुम लोगों में
नबी भेजूँगा, तब मैं अर्थात् यहोवा अपने आपको उसके
दर्शन में दिखाऊँगा और मैं उससे उसके सपने में बात
करूँगा। 7किन्तु मैंने अपने सेवक मूसा के साथ ऐसा
नहीं किया। मैंने उसे अपने सभी लोगों के ऊपर शक्ति
दी है। 8जब मैं उससे बात करता हूँ तो मैं उसके
आमने-सामने बात करता हूँ। मैं जो बात कहना चाहता
हूँ उसे साफ-साफ कहता हूँ। मैं छिपे अर्थ वाले विचित्र
विचारों को उसके सामने नहीं रखता और मूसा यहोवा
के स्वरूप को देख सकता है। इसलिए तुमने मेरे सेवक
मूसा के विरुद्ध बोलने का साहस कैसे किया?”

9तब यहोवा उनके पास से गया। किन्तु वह उनसे
बहुत क्रोधित था। 10बादल तम्बू से उठा। तब हारून
मुड़ा और उसने मरियम को देखा और उसे दिखाई पड़ा
कि उसे भयंकर चर्मरोग हो गया है। उसकी त्वचा बर्फ
की तरह सफेद थी! 11तब हारून ने मूसा से कहा,
“महोदय, कृपा करके जो मूर्खता भरा पाप हम लोगों ने
किया है, उसके लिए क्षमा करें। 12उसकी त्वचा का
रंग उस प्रकार न उड़ने दे जैसा मरे हुए उत्पन्न बच्चे
का होता है।” (कभी–कभी इस प्रकार का बच्चा आधी
गली हुई त्वचा के साथ उत्पन्न होता है।)

13इसलिए मूसा ने यहोवा से प्रार्थना की, “परमेश्वर,
कृपा करके इस बीमारी से उसे स्वस्थ कर!”

14यहोवा ने मूसा को उत्तर दिया, “यदि उसका पिता
उसके मुँह पर थूके, तो वह सात दिन तक लज्जित
रहेगी। इसलिए उसे सात दिन तक डेरे से बाहर रखो।
उस समय के बाद वह ठीक हो जायेगी। तब वह डेरे में
वापस आ सकती है।”

15इसलिए मरियम सात दिन के लिए डेरे से बाहर ले
जाई गई और तब तक वे वहाँ से नहीं चले जब तक वह
फिर वापस नहीं लाई गई। 16उसके बाद लोगों ने हसेरोत
को छोड़ा और पारान मरुभूमि की उन्होंने यात्रा की।
लोगों ने उस मरुभूमि में डेरे लगाए।

जासूस कनान को गए

13 यहोवा ने मूसा से कहा, 2“कुछ व्यक्तियों को
कनान देश का अध्ययन करने के लिए भेजो।

साठ बुशेल एक बुशल बराबर हुआ करता था लगभग छत्तीस
लिटर के।

यही वह देश है जिसे मैं इस्राएल के लोगों को दूँगा। हर
एक बारह परिवार समूह से एक नेता को भेजो।"
3इसलिए मूसा ने यहोवा की आज्ञा मानी। उसने परान
के रेगिस्तान से नेताओं को भेजा। 4ये उनके नाम हैं:

जककूर का पुत्र शम्मू-रूबेन के
परिवार समूह से;
5 होरी का पुत्र शापात-शिमोन के
परिवार समूह से;
6 यपुन्ने का पुत्र कालेब-यहूदा के
परिवार समूह से;
7 योसेप का पुत्र यिगास-इस्साकार के
परिवार समूह से;
8 नून का पुत्र होशे-एप्रैम के
परिवार समूह से;
9 रापू का पुत्र पलती-बिन्यामीन के
परिवार समूह से;
10 सोदी का पुत्र गद्दीएल-जबूलून के
परिवार समूह से;
11 सूसी का पुत्र गद्दी-मनश्शे के
परिवार समूह से;
12 गमल्ली का पुत्र अम्मीएल-दान के
परिवार समूह से;
13 मीकाएल का पुत्र सतूर-आशेर के
परिवार समूह से;
14 वोप्सी का पुत्र नहूबी-नप्ताली
परिवार समूह से;
15 माकी का पुत्र गूएल-गाद के
परिवार समूह से;

16ये उन व्यक्तियों के नाम हैं जिन्हें मूसा ने प्रदेश को
देखने और जाँच करने के लिए भेजा। मूसा से नून के
पुत्र होशे को दूसरे नाम से पुकारा। मूसा ने उसे यहोशू
कहा।

17मूसा जब उन्हें कनान की छानबीन के लिए भेज
रहा था, तब उसने कहा, "नेगेव घाटी से होकर पहाड़ी
प्रदेश में जाओ। 18यह देखो कि देश कैसा दिखाई देता है
और उन लोगों की जानकारी प्राप्त करो जो वहाँ रहते
हैं। वे शक्तिशाली हैं या कमजोर हैं? वे थोड़े हैं या
अधिक संख्या में हैं? 19उस प्रदेश के बारे में जानकारी
करो जिसमें वे रहते हैं। क्या यह अच्छा प्रदेश है या
बुरा? किस प्रकार के नगरों में वे रहते हैं? क्या उन
नगरों के परकोटे हैं? क्या नगर शक्तिशाली ढंग से
सुरक्षित है? 20और प्रदेश के बारे में अन्य बातों की
जानकारी प्राप्त करो। क्या भूमि उपज के लिए उपजाऊ
है या ऊसर है? क्या जमीन पर पेड़ उगे हैं? और उस
भूमि से कुछ फल लाने का प्रयत्न करो।" (यह उस
समय की बात है जब अंगूर की पहली फसल पकी हो।)

21तब उन्होंने प्रदेश की छानबीन की। वे जिन मरुभूमि
से रहोब और लेबो हमात तक गए। 22वे नेगेव से होकर
तब तक यात्रा करते रहे जब तक वे हेब्रोन नगर को
पहुँचे। हेब्रोन मिस्र में सोअन नगर के बसने के सात वर्ष
पहले बना था। अहीमन, शेशै और तल्मै वहाँ रहते थे।
ये लोग अनाक के वंशज थे। 23तब वे लोग एश्कोल की
घाटी में आये उन व्यक्तियों ने अंगूर की बेल की एक
शाखा काटी। उस शाखा में अंगूर का एक गुच्छा था।
लोगों में से दो व्यक्ति अपने बीच एक डंडे पर उसे रख
कर लाए। वे कुछ अनार और अंजीर भी लाए। 24उस
स्थान का नाम एश्कोल की घाटी था। क्योंकि यह वही
स्थान है जहाँ इस्राएल के आदमियों ने अंगूर के गुच्छे
काटे थे। 25उन व्यक्तियों ने उस प्रदेश की छानबीन
चालीस दिन तक की। तब वे डेरे को लौटे। 26वे व्यक्ति
मूसा, हारून और अन्य इस्राएल के लोगों के पास कादेश
में लौटे। यह पारान मरुभूमि में था। तब उन्होंने मूसा,
हारून और सभी लोगों को, जो कुछ देखा, सब कुछ
सुनाया और उन्होंने उन्हें उस प्रदेश के फलों को दिखाया।
27उन लोगों ने मूसा से यह कहा, "हम लोग उस प्रदेश
में गए जहाँ आपने हमें भेजा। वह प्रदेश अत्यधिक
अच्छा है-यहाँ दूध और मधु की नदियाँ बह रही हैं! ये वे
कुछ फल हैं जिन्हें हम लोगों ने वहाँ पाया। 28किन्तु वहाँ
जो लोग रहते हैं, वे बहुत शक्तिशाली और मजबूत हैं।
उनके नगर मजबूती के साथ सुरक्षित हैं और उनके
नगर बहुत विशाल हैं। हम लोगों ने वहाँ उनके परिवार
के कुछ लोगों को देखा भी। 29अमालेकी लोग नेगेव की
घाटी में रहते हैं। हित्ती, यबूसी और एमोरी पहाड़ी प्रदेशों
में रहते हैं। कनानी लोग समुद्र के किनारे और यरदन
नदी के किनारे रहतेहैं।"

30तब कालेब ने मूसा के समीप के लोगों को शान्त
होने को कहा। कालेब ने कहा, "हम लोगों को वहाँ
जाना चाहिए और उस प्रदेश को अपने लिए लेना चाहिए।
हम लोग उस प्रदेश को सरलता से ले सकते हैं।"

31किन्तु जो व्यक्ति उसके साथ गया था, वह बोला,
"हम लोग उन लोगों के विरुद्ध लड़ नहीं सकते। वे हम
लोगों की तुलना में अधिक शक्तिशाली हैं" 32और उन
लोगों ने सभी इस्राएली लोगों से कहा कि उस प्रदेश के
लोगों को पराजित करने के लिए वे पर्याप्त शक्तिशाली
नहीं हैं। उन्होंने कहा, "जिस प्रदेश को हम लोगों ने
देखा, वह शक्तिशाली लोगों से भरा है। वे लोग इतने
अधिक शक्तिशाली हैं कि जो कोई व्यक्ति वहाँ जाएगा
उसे वे सरलता से हरा सकते हैं। 33हम लोगों ने वहाँ
नपीलियों को देखा! अनाक के परिवार के लोग जो
नपीलों के वंश के थे, उनके सामने खड़े होने पर हम
लोगों ने अपने आपको टिड्डा अनुभव किया। उन
लोगों ने हम लोगों को ऐसे देखा मानो हम टिड्डे के
समान छोटे हों।"

लोग फिर शिकायत करते हैं

14 उस रात डेरे के सब लोगों ने जोर से रोना आरम्भ किया। **2**इस्राएल के सभी लोगों ने हारून और मूसा के विरुद्ध फिर शिकायत की। सभी लोग एक साथ आए और मूसा तथा हारून से उन्होंने कहा, "हम लोगों को मिस्र या मरुभूमि में मर जाना चाहिए था, अपने नए प्रदेश में तलवार से मरने की अपेक्षा यह बहुत अच्छा रहा होता। **3**क्या यहोवा हम लोगों को इस नये प्रदेश में मरने के लिए लाया है? हमारी पत्नियाँ और हमारे बच्चे हमसे छीन लिए जाएंगे और हम तलवार से मार डाले जाएंगे। यह हम लोगों के लिए अच्छा होगा कि हम लोग मिस्र को लौट जाएं।"

4तब लोगों ने एक दूसरे से कहा, "हम लोगों को दूसरा नेता चुनना चाहिए और मिस्र लौट चलना चाहिए।"

5तब मूसा और हारून वहाँ इकट्ठे सारे इस्राएल के लोगों के सामने भूमि पर झुक गए। **6**उस प्रदेश की छानबीन करने वाले लोगों में से दो व्यक्ति बहुत परेशान हो गए। वे दोनों नून का पुत्र यहोशू और यपुन्ने का पुत्र कालेब थे। **7**इन दोनों ने वहाँ इकट्ठे इस्राएल के सभी लोगों से कहा, "जिस प्रदेश को हम लोगों ने देखा है वह बहुत अच्छा है **8**और यदि यहोवा हम लोगों से प्रसन्न है तो वह हम लोगों को उस प्रदेश में ले चलेगा। वह प्रदेश सम्पन्न है, ऐसा है जैसे वहाँ दूध और मधु की नदियाँ बहती हो और यहोवा उस प्रदेश को हम लोगों को देने के लिए अपनी शक्ति का उपयोग करेगा। **9**किन्तु हम लोगों को यहोवा के विरुद्ध नहीं जाना चाहिए। हम लोगों को उस प्रदेश के लोगों से डरना नहीं चाहिए। हम लोग उन्हें सरलता से हरा देंगे। उनके पास कोई सुरक्षा नहीं है, उन्हें सुरक्षित रखने के लिए उनके पास कुछ नहीं है। किन्तु हम लोगों के साथ यहोवा है। इसलिए इन लोगों से डरो मत!"

10तब इस्राएल के सभी लोग उन दोनों व्यक्तियों को पत्थरों से मार देने की बातें करने लगे। किन्तु यहोवा का तेज मिलापवाले तम्बू पर आया। इस्राएल के सभी लोग इसे देख सकते थे। **11**यहोवा ने मूसा से कहा, "ये लोग इस प्रकार मुझसे कब तक घृणा करते रहेंगे? वे प्रकट कर रहे हैं कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते। वे दिखाते हैं कि उन्हें मेरी शक्ति पर विश्वास नहीं। वे मुझ पर विश्वास करने से तब भी इन्कार करते हैं जबकि मैंने उन्हें बहुत से शक्तिशाली चिन्ह दिखाये हैं। मैंने उनके बीच अनेक बड़ी चीज़ें की हैं। **12**मैं उन्हें नष्ट कर दूँगा और तुम्हारा उपयोग दूसरा राष्ट्र बनाने के लिए करूँगा और तुम्हारा राष्ट्र इन लोगों से अधिक बड़ा और अधिक शक्तिशाली होगा।"

13तब मूसा ने यहोवा से कहा, "यदि तू ऐसा करता है तो मिस्र में लोग यह सुनेंगे कि तूने अपने सभी लोगों को मार डाला। तूने अपनी बड़ी शक्ति का उपयोग उन लोगों को मिस्र से बाहर लाने के लिए किया **14**और मिस्र के लोगों ने इसके बारे में कनान के लोगों को बताया है। वे पहले से ही जानते हैं कि तू यहोवा है। वे जानते हैं कि तू अपने लोगों के साथ है और वे जानते हैं कि तू प्रत्यक्ष है। इस देश में रहने वाले लोग उस बादल के बारे में जानेंगे जो लोगों के ऊपर ठहरता है तूने उस बादल का उपयोग दिन में अपने लोगों को रास्ता दिखाने के लिए किया और रात को वह बादल लोगों को रास्ता दिखाने के लिए आग बन जाता है। **15**इसलिए तुझे अब लोगों को मारना नहीं चाहिए। यदि तू उन्हें मारता है तो सभी राष्ट्र, जो तेरी शक्ति के बारे में सुन चुके हैं, कहेंगे, **16**'यहोवा इन लोगों को उस प्रदेश में ले जाने में समर्थी नहीं था जिस प्रदेश को उसने उन्हें देने का वचन दिया था। इसलिए यहोवा ने उन्हें मरुभूमि में मार दिया।'

17"इसलिए तुझे अपनी शक्ति दिखानी चाहिए। तुझे इसे वैसे ही दिखाना चाहिए जैसा दिखाने की घोषणा तूने की है। **18**तूने कहा था, 'यहोवा क्रोधित होने में सहनशील है। यहोवा प्रेम से परिपूर्ण है। यहोवा पाप को क्षमा करता है और उन लोगों को क्षमा करता है जो उसके विरुद्ध भी हो जाते हैं। किन्तु यहोवा उन लोगों को अवश्य दण्ड देगा जो अपराधी हैं। यहोवा तो बच्चों को, उनके पितामह और प्रपितामह के पापों के लिए भी दण्ड देता है!' **19**इसलिए इन लोगों को अपना महान प्रेम दिखा। उनके पाप को क्षमा कर। उनको उसी प्रकार क्षमा कर जिस प्रकार तू उनको मिस्र छोड़ने के समय से अब तक क्षमा करता रहा है।"

20यहोवा ने उत्तर दिया, "मैंने लोगों को तुम्हारे कहे अनुसार क्षमा कर दिया है। **21**किन्तु मैं तुमसे यह सत्य कहता हूँ, क्योंकि मैं शाश्वत हूँ और मेरी शक्ति इस सारी पृथ्वी पर फैली है। अत: मैं तुमको यह वचन दूँगा। **22**उन लोगों में से कोई भी व्यक्ति जिसे मैं मिस्र से बाहर लाया, उस देश को कभी नहीं देखेगा। उन लोगों ने मिस्र में मेरे तेज और मेरे महान संकेतों को देखा है और उन लोगों ने उन महान कार्यों को देखा जो मैंने मरुभूमि में किए। किन्तु उन्होंने मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया और दस बार मेरी परीक्षा ली। **23**मैंने उनके पूर्वजों को वचन दिया था। मैंने प्रतिज्ञा की थी कि मैं उनको एक महान देश दूँगा। किन्तु उनमें से कोई भी व्यक्ति जो मेरे विरुद्ध में हो चुका है उस देश में प्रवेश नहीं करेगा। **24**किन्तु मेरा सेवक कालेब इनसे भिन्न है। वह पूरी तरह मेरा अनुसरण करता है। इसलिए मैं उसे उस देश में ले जाऊँगा जिसे उसने पहले देखा है और उसके लोग यह प्रदेश प्राप्त करेंगे। **25**अमालेकियों और कनानी लोग घाटी में रह रहें हैं इसलिये तुम्हारे जाने के लिए कोई जगह नहीं है। कल इस स्थान को छोड़ो और रेगिस्तान की ओर लालसागर से होकर लौट जाओ।"

यहोवा लोगों को दण्ड देता है

26यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, **27**"ये लोग
कब तक मेरे विरुद्ध शिकायत करते रहेंगे? मैं इन
लोगों की शिकायत और पीड़ा को सुन चुका हूँ। **28**इसलिए
इनसे कहो, "यहोवा कहता है कि वह निश्चय ही सभी
काम करेगा जिनके बारे में तुम लोगों की शिकायत है।
29तुम लोगों को यह सब होगा: तुम लोगों के शरीर इस
मरुभूमि में मरे हुए गिरेंगे। हर एक व्यक्ति जो बीस वर्ष
या अधिक उम्र का था हमारे लोगों के सदस्य के रूप
में गिना गया और तुम लोगों में से हर एक ने मेरे
अर्थात् यहोवा के विरुद्ध शिकायत की। इसलिए तुम
लोगों में से हर एक मरुभूमि में मरेगा। **30**तुम लोगों में से
कोई भी कभी उस देश में प्रवेश नहीं करेगा जिसे मैंने
तुमको देने का वचन दिया था। केवल यपुन्ने का पुत्र
कालेब और नून का पुत्र यहोशू उस देश में प्रवेश
करेंगे। **31**तुम लोग डर गए थे और तुम लोगों ने शिकायत
की कि उस नये देश में तुम्हारे शत्रु तुम्हारे बच्चों को
तुमसे छीन लेंगे। किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं उन
बच्चों को उस देश में ले जाऊँगा। वे उन चीज़ों का भोग
करेंगे जिनका भोग करना तुमने स्वीकार नहीं किया।
32जहाँ तक तुम लोगों की बात है, तुम्हारे शरीर इस
मरुभूमि में गिर जाएंगे।

33"तुम्हारे बच्चे यहाँ मरुभूमि में चालीस वर्ष तक
गड़ेरिए रहेंगे। उनको यह कष्ट होगा क्योंकि तुम लोगों
ने विश्वास नहीं किया। वे इस मरुभूमि में तब तक
रहेंगे जब तक तुम सभी यहाँ मर नहीं जाओगे। तब तुम
सबके शरीर इस मरुभूमि में दफन हो जाएंगे। **34**तुम
लोग अपने पाप के लिए चालीस वर्ष तक कष्ट भोगोगे।
(तुम लोगों ने इस देश की छानबीन में जो चालीस दिन
लगाए उसके प्रत्येक दिन के लिए एक वर्ष होगा।) तुम
लोग जानोगे कि मेरा तुम लोगों के विरुद्ध होना कितना
भयानक है।

35"मैं यहोवा हूँ और मैंने यह कहा है। मैं वचन देता
हूँ कि मैं इन सभी बुरे लोगों के लिए यह करूँगा। ये
लोग मेरे विरुद्ध एक साथ आए इसलिए वे सभी यहाँ
मरुभूमि में मरेंगे।"

36जिन लोगों को मूसा ने नये प्रदेश की छानबीन के
लिए भेजा, वे ऐसे थे जो लौट आए और जो सभी
इस्राएलियों में शिकायत करते हुए फैल गए। उन लोगों
ने कहा कि लोग उस प्रदेश में प्रवेश करने के लिए
पर्याप्त शक्तिशाली नहीं हैं। **37**वे लोग इस्राएली लोगों में
परेशानी फैलाने के लिए उत्तरदायी थे। इसलिए यहोवा
ने एक बीमारी उत्पन्न करके उन सभी को मर जाने
दिया।

38किन्तु नून का पुत्र यहोशू और यपुन्ने का पुत्र
कालेब उन लोगों में थे जिन्हें देश की छानबीन करने
के लिए भेजा गया था और यहोवा ने उन दोनों आदमियों
को बचाया। उनको वह बीमारी नहीं हुई जिसने अन्य
लोगों को मार डाला।

लोग कनान में जाने का प्रयत्न करते हैं

39मूसा ने ये सभी बातें इस्राएल के लोगों से कहीं।
लोग बहुत अधिक दुःखी हुए। **40**अगले दिन बहुत सवेरे
लोगों ने ऊँचे पहाड़ी प्रदेश की ओर बढ़ना आरम्भ
किया। लोगों ने कहा, "हम लोगों ने पाप किया है। हम
लोगों को दुःख है कि हम लोगों ने यहोवा पर विश्वास
नहीं किया। हम लोग उस स्थान पर जाएंगे जिसे यहोवा
ने देने का वचन दिया है।"

41किन्तु मूसा ने कहा, "तुम लोग यहोवा के आदेश
का पालन क्यों नहीं कर रहे हो? तुम लोग सफल नहीं
हो सकोगे। **42**उस देश में प्रवेश न करो। यहोवा तुम
लोगों के साथ नहीं है। तुम लोग सरलता से अपने
शत्रुओं से हार जाओगे। **43**अमालेकी और कनानी लोग
वहाँ तुम्हारे विरुद्ध लड़ेंगे। तुम लोग यहोवा से विमुख हुए
हो। इसलिए वह तुम लोगों के साथ नहीं होगा जब तुम
लोग उनसे लड़ोगे और तुम सभी उनकी तलवार से मारे
जाओगे।"

44किन्तु लोगों ने मूसा पर विश्वास नहीं किया। वे
ऊँचे पहाड़ी प्रदेश की ओर गए। किन्तु मूसा और यहोवा
का साक्षीपत्र का सन्दूक लोगों के साथ नहीं गया।

45तब अमालेकी और कनानी लोग जो पहाड़ी प्रदेशों
में रहते थे, आए और उन्होंने इस्राएली लोगों पर आक्रमण
कर दिया। अमालेकी और कनानी लोगों ने उनको
सरलता से हरा दिया और होर्मा तक उनका पीछा
किया।

बलि के नियम

15 यहोवा ने मूसा से कहा, **2**"इस्राएल के लोगों से
बातें करो और उनसे कहो: तुम लोग ऐसे
प्रदेश में प्रवेश करोगे जिसे मैं तुम लोगों को तुम्हारे घर
के रूप में दे रहा हूँ। **3**जब तुम उस प्रदेश में पहुँचोगे तब
तुम्हें यहोवा को आग द्वारा विशेष भेंट देनी चाहिए।
इसकी सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करेगी। तुम अपनी
गायें, भेड़ें और बकरियों का इस्तेमाल होमबलि, बलिदानों,
विशेष मनौतियों, मेलबलि, शान्ति भेंट या विशेष पर्वों में
करोगे।

4"और उस समय जो अपनी भेंट लाएगा उसे यहोवा
को अन्नबलि भी देनी होगी। यह अन्नबलि एक क्वार्ट
जैतून के तेल में मिली हुई दो क्वार्ट* अच्छे आटे की
होगी। **5**हर एक बार जब तुम एक मेमना होमबलि के
रूप में दो तो तुम्हें एक क्वार्ट दाखमधु पेय भेंट के रूप
में तैयार करनी चाहिए।

दो क्वार्ट या "1/2 हिन।"

6"यदि तुम एक मेढ़ा दे रहे हो तो तुम्हें अन्नबलि भी
तैयार करनी चाहिए। यह अन्नबलि एक चौथाई क्वार्ट
जैतून के तेल में मिली हुई चार क्वार्ट अच्छे आटे की
होनी चाहिए 7और तुम्हें एक चौथाई क्वार्ट दाखमधु पेय
भेंट के रूप में तैयार करनी चाहिए। इसे यहोवा को भेंट
करो। इसकी सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करेगी।
8"होमबलि, शान्ति भेंट अथवा किसी मनौती के लिए
यहोवा को भेंट के रूप में तुम एक बछड़े को तैयार कर
सकते हो। 9इसलिए तुम्हें बैल के साथ अन्नबलि भी
लानी चाहिए। अन्नबिल दो क्वार्ट जैतून के तेल में मिली
हुई छ: क्वार्ट अच्छे आटे की होनी चाहिए। 10दो क्वार्ट
दाखमधु भी पेय भेंट के रूप में लाओ। आग में जलाई
गई यह भेंट यहोवा के लिए मधुर गन्ध होगी। 11प्रत्येक
बैल या मेढ़ा या मेमना या बकरी का बच्चा, जिसे तुम
यहोवा को भेंट करो, उसी प्रकार तैयार होना चाहिए।
12जो जानवर तुम भेंट करो उनमें से हर एक के लिए
यह करो।
13"इसलिए जब लोग यह होमबलि देंगे तो यहोवा को
यह सुगन्ध प्रसन्न करेगी। किन्तु इस्राएल के हर एक
नागरिक को इसे वैसे ही करना चाहिए जिस प्रकार मैंने
बताया है। 14और भविष्य के सभी दिनों में, यदि कोई
व्यक्ति जो इस्राएल के परिवार में उत्पन्न नहीं है और
तुम्हारे बीच रह रहा है तो उसे भी इन सब चीज़ों का
पालन करना चाहिए। उसे ये वैसे ही करना होगा जैसा
मैंने तुमको बताया है। 15इस्राएल के परिवार में उत्पन्न
लोगों के लिये जो नियम होगें वही नियम उन अन्य
लोगों के लिये भी होंगे जो तुम्हारे बीच रहते हैं। यह
नियम अब से भविष्य में लागू रहेगा। तुम और तुम्हारे
बीच रहने वाले लोग यहोवा के सामने समान होंगे।
16इसका यह तात्पर्य है कि तुम्हें एक ही विधि और
नियम का पालन करना चाहिए। वे नियम इस्राएल के
परिवार में उत्पन्न तुम्हारे लिए और अन्य लोगों के लिए
भी है जो तुम्हारे बीच रहते हैं।"
17यहोवा ने मूसा से कहा, 18"इस्राएल के लोगों से यह
कहो: मैं तुम्हें दूसरे देश में ले जा रहा हूँ। 19जब तुम वह
भोजन करो जो उस प्रदेश में उत्पन्न हो तो भोजन का
कुछ अंश यहोवा को भेंट के रूप में दो। 20तुम अन्न
इकट्ठा करोगे और इसे आटे के रूप में पीसोगे और
उसे रोटी बनाने के लिए गूँदोगे। फिर उस आटे की
पहली रोटी को यहोवा को अर्पित करोगे। वह ऐसी
अन्नबलि होगी जो खलिहान से आती है। 21यह नियम
सदा सर्वदा के लिए है। इसका तात्पर्य है कि जिस अन्न
को तुम आटे के रूप में माढ़ते हो, उसकी पहली रोटी
यहोवा को अर्पित की जानी चाहिए।
22"यदि तुम यहोवा द्वारा मूसा को दिये गए आदेशों में
से किसी का पालन करना भूल जाओ तो तुम क्या
करोगे? 23ये आदेश उसी दिन से आरम्भ हो गए थे
जिस दिन यहोवा ने इन्हें तुमको दिया था और ये आदेश
भविष्य में भी लागू रहेंगे। 24इसलिये यदि तुम कोई
गलती करते हो और इन सभी आज्ञाओं का पालन
करना भूल जाते हो तो तुम क्या करोगे? यदि इस्राएल
के सभी लोग गलती करते हैं, तो सभी लोगों को मिलकर
एक बछड़ा यहोवा को भेंट चढ़ाना चाहिए। यह होमबलि
होगी और इसकी यह सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करेगी।
बैल के साथ अन्नबलि और पेय भेंट भी याद रखो और
तुम्हें एक बकरा भी पापबलि के रूप में देना चाहिए।
25"याजक लोगों को पापों से शुद्ध करने के लिये ऐसा
करेगा। वह इस्राएल के सभी लोगों के लिए ऐसा करेगा।
लोगों ने नहीं जाना था कि वे पाप कर रहे हैं। किन्तु
जब उन्होंने यह जाना तब वे यहोवा के पास भेंट लाए।
वे एक भेंट अपने पाप के लिए देने आए और एक
होमबलि के लिये जिसे आग में जलाया जाना था। इस
प्रकार लोग क्षमा किये जाएंगे। 26इस्राएल के सभी लोग
और उनके बीच रहने वाले सभी अन्य लोग क्षमा कर
दिये जाएंगे। वे इसलिए क्षमा किये जाएंगे क्योंकि वे नहीं
जानते थे कि वे बुरा कर रहे हैं।
27"किन्तु यदि एक व्यक्ति आदेश का पालन करना
भूल जाता है तो उसे एक वर्ष की बकरी पापबलि के
रूप में लानी चाहिए। 28याजक इसे उस व्यक्ति के पापों
के लिए यहोवा को अर्पित करेगा और उस व्यक्ति को
क्षमा कर दिया जाएगा क्योंकि याजक ने उसके लिए
भुगतान कर दिया है। 29यही हर उस व्यक्ति के लिए
नियम है जो पाप करता है, किन्तु जानता नहीं कि बुरा
किया है। यही नियम इस्राएल के परिवार में उत्पन्न
लोगों के लिए है या अन्य लोगों के लिए भी जो तुम्हारे
बीच में रहते हैं।
30"किन्तु कोई व्यक्ति जो पाप करता है और जानता
है कि वह बुरा कर रहा है, वह यहोवा का अपमान
करता है। उस व्यक्ति को अपने लोगों से अलग भेज
देना चाहिए। यह इस्राएल के परिवार में उत्पन्न व्यक्ति
तथा किसी भी अन्य व्यक्ति के लिए, जो तुम्हारे बीच
रहता है, समान है। 31वह व्यक्ति यहोवा के आदेश के
विरुद्ध गया है। उसने यहोवा के आदेश का पालन नहीं
किया है। उस व्यक्ति को तुम्हारे समूह से अलग कर
दिया जाना चाहिए। वह व्यक्ति अपराधी ही रहेगा और
दण्ड का भागी होगा!"

एक व्यक्ति विश्राम के दिन काम करता है

32इस समय, इस्राएल के लोग अभी तक मरुभूमि में
ही थे। ऐसा हुआ कि एक व्यक्ति को जलाने के लिए
कुछ लकड़ी मिली। इसलिए वह व्यक्ति लकड़ियाँ इकट्ठी
करता रहा। किन्तु वह सब्त (विश्राम) का दिन था।
कुछ अन्य लोगों ने उसे यह करते देखा। 33जिन लोगों ने
उसे लकड़ी इकट्ठी करते देखा, वे उसे मूसा और

हारून के पास लाए और सभी लोग चारों ओर इकट्ठे
हो गए। **34**उन्होंने उस व्यक्ति को वहाँ रखा क्योंकि वे
नहीं जानते थे कि उसे कैसे दण्ड दें।

35तब यहोवा ने मूसा से कहा, "इस व्यक्ति को मरना
चाहिए। सभी लोग डेरे के बाहर इसे पत्थर से मारेंगे।"
36इसलिए लोग उसे डेरे से बाहर ले गए और उसे पत्थरों
से मार डाला। उन्होंने यह वैसे ही किया जैसा मूसा को
यहोवा ने आदेश दिया था।

परमेश्वर नियमों को याद रखने में लोगों की सहायता करता है

37यहोवा ने मूसा से कहा, **38**"इस्राएल के लोगों से बातें
करो और उनसे यह कहो: मैं तुम लोगों को कुछ अपने
आदेशों को याद रखने के लिए दूँगा। धागे के कई
टुकड़ों को एक साथ बांधकर उन्हें अपने वस्त्रों के
कोने पर बांधो। एक नीले रंग का धागा हर एक ऐसी
गुच्छियों में डालो। तुम इन्हें अब से हमेशा के लिये
पहनोगे। **39**तुम लोग इन गुच्छियों को देखते रहोगे और
यहोवा ने जो आदेश तुम्हें दिये हैं, उन्हें याद रखोगे। तब
तुम आदेशों का पालन करोगे। तुम लोग आदेशों को
नहीं भूलोगे और आँखों तथा शरीर की आवश्यकताओं
से प्रेरित हो कर कोई पाप नहीं करोगे। **40**तुम हमारे
सभी आदेशों के पालन की बात याद रखोगे। तब तुम
यहोवा के विशेष लोग बनोगे। **41**मैं तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा हूँ। वह मैं हूँ जो तुम्हें मिस्र से बाहर लाया। मैंने
यह किया अत: मैं तुम्हारा परमेश्वर रहूँगा। मैं तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा हूँ।"

कोरह, दातान और अबीराम मूसा के विरुद्ध हो जाते हैं

16 कोरह, दातान, अबीराम और ओन मूसा के
विरुद्ध हो गए। (कोरह यिसहार का पुत्र था।
यिसहार कहात का पुत्र था, और कहात लेवी का पुत्र
था। एलीआब के पुत्र दातान और अबीराम भाई थे और
ओन पेलेत का पुत्र था। दातान, अबीराम और ओन
रूबेन के वंशज थे।) **2**इन चार व्यक्तियों ने इस्राएल के
दो सौ पचास व्यक्तियों को एक साथ इकट्ठा किया
और ये मूसा के विरुद्ध आए। ये दो सौ पचास इस्राएली
व्यक्ति लोगों में आदरणीय नेता थे। वे समिति के सदस्य
चुने गए थे। **3**वे एक समूह के रूप में मूसा और हारून
के विरुद्ध बात करने आए। इन व्यक्तियों ने मूसा और
हारून से कहा, "हम उससे सहमत नहीं जो तुमने किया
है। इस्राएली समूह के सभी लोग पवित्र हैं। यहोवा उनके
साथ है। तुम अपने को सभी लोगों से ऊँचे स्थान पर
क्यों रख रहेहो?"

4जब मूसा ने यह बात सुना तो वह भूमि पर गिर
गया। **5**तब मूसा ने कोरह और उसके अनुयायियों से
कहा, "कल सवेरे यहोवा दिखाएगा कि कौन व्यक्ति
सचमुच उसका है। यहोवा दिखाएगा कि कौन व्यक्ति
सचमुच पवित्र है और यहोवा उसे अपने समीप ले
जाएगा। यहोवा उस व्यक्ति को चुनेगा और यहोवा उस
व्यक्ति को अपने निकट लेगा। **6**इसलिए कोरह, तुम्हें
और तुम्हारे सभी अनुयायियों को यह करना चाहिए:
7किसी विशेष अग्निपात्र में आग और सुगन्धित धूप
रखो। तब उन पात्रों को यहोवा के सामने लाओ। यहोवा
एक पुरुष को चुनेगा जो सचमुच पवित्र होगा। किन्तु
मुझे डर है कि तुमने और तुम्हारे लेवीवंशी भाईयों ने
सीमा का अतिक्रमण किया है।"

8मूसा ने कोरह से यह भी कहा, "लेवीवंशियों! मेरी
बात सुनो। **9**तुम लोगों को प्रसन्न होना चाहिए कि इस्राएल
के परमेश्वर ने तुम लोगों को अलग और विशेष बनाया
है। तुम लोग बाकी इस्राएली लोगों से भिन्न हो। यहोवा ने
तुम्हें अपने समीप लिया जिससे तुम यहोवा की उपासना
में इस्राएल के लोगों की सहायता के लिए यहोवा के
पवित्र तम्बू में विशेष कार्य कर सको। क्या यह पर्याप्त
नहीं है? **10**यहोवा ने तुम्हें और अन्य सभी लेवीवंश के
लोगों को अपने समीप लिया है। किन्तु अब तुम याजक
भी बनना चाहते हो। **11**तुम और तुम्हारे अनुयायी परस्पर
एकत्र होकर यहोवा के विरोध में आए हो। क्या हारून
ने कुछ बुरा किया है? नहीं। तो फिर उसके विरुद्ध
शिकायत करने क्यों आए हो?"

12तब मूसा ने एलीआब के पुत्रों दातान और अबीराम
को बुलाया। किन्तु दोनों आदमियों ने कहा, "हम लोग
नहीं आएंगे! **13**तुम हमें उस देश से बाहर निकाल लाए
हो जो सम्पन्न था और जहाँ दूध और मधु की नदियाँ
बहती थीं। तुम हम लोगों को यहाँ मरुभूमि में मारने के
लिए लाए हो और अब तुम दिखाना चाहते हो कि तुम
हम लोगों पर अधिक अधिकार भी रखते हो। **14**हम
लोग तुम्हारा अनुसरण क्यों करें? तुम हम लोगों को
उस नये देश में नहीं लाए हो जो सम्पन्न है और जिसमें
दूध और मधु की नदियाँ बहती हैं। तुमने हम लोगों को
वह देश नहीं दिया है जिसे देने का वचन यहोवा ने दिया
था। तुमने हम लोगों को खेत या अंगूर के बाग नहीं दिये
हैं। क्या तुम इन लोगों को अपना गुलाम बनाओगे?
नहीं! हम लोग नहीं आएंगे।"

15इसलिए मूसा बहुत क्रोधित हो गया। उसने यहोवा
से कहा, "इनकी भेंटें स्वीकार न कर! मैंने इनसे कुछ
नहीं लिया है-एक गधा तक नहीं और मैंने इनमें से
किसी का बुरा नहीं किया है।"

16तब मूसा ने कोरह से कहा, "तुम्हें और तुम्हारे
अनुयायियों को कल यहोवा के सामने खड़ा होना चाहिए।
हारून तुम्हारे साथ यहोवा के सामने खड़ा होगा। **17**तुम
में से हर एक को एक अग्निपात्र लेना चाहिए और
उसमें धूप रखनी चाहिए। ये दो सौ पचास अग्निपात्र

प्रमुखों के लिये होंगे। हर एक अग्निपात्र को यहोवा के
सामने ले जाओ। तुम्हें और हारून को अपने अग्निपात्रों
को यहोवा के सामने ले जाना चाहिए।" 18इसलिए हर
एक व्यक्ति ने एक अग्निपात्र लिया और उसमें जलती
हुई धूप रखी। तब वे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खड़े
हुए। मूसा और हारून भी वहाँ खड़े हुए। 19कोरह ने
अपने सभी अनुयायियों को एक साथ इकट्ठा किया।
ये वे व्यक्ति हैं जो मूसा और हारून के विरुद्ध हो गए थे।
कोरह ने उन सभी को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर
इकट्ठा किया। तब यहोवा का तेज वहाँ हर एक व्यक्ति
पर प्रकट हुआ।

20यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, 21"इन पुरुषों
से दूर हटो! मैं अब उन्हें नष्ट करना चाहता हूँ!"

22किन्तु मूसा और हारून भूमि पर गिर पड़े और
चिल्लाए, "हे परमेश्वर, तू जानता है कि लोग क्या सोच
रहे हैं। कृपा करके इस पूरे समूह पर क्रोधित न हो।
एक ही व्यक्ति ने सचमुच पाप किया है।"

23तब यहोवा ने मूसा से कहा, 24"लोगों से कहो कि
वे कोरह, दातान और अबीराम के डेरों से दूर हट
जाए।"

25मूसा खड़ा हुआ और दातान और अबीराम के पास
गया। इस्राएल के सभी अग्रज (नेता) उसके पीछे चले।
26मूसा ने लोगों को चेतावनी दी, "इन बुरे आदमियों के
डेरों से दूर हट जाओ। इनकी किसी चीज़ को न छुओ!
यदि तुम लोग छूओगे तो इनके पापों के कारण नष्ट हो
जाओगे।"

27इसलिए लोग कोरह, दातान और अबीराम के तम्बुओं
से दूर हट गए। दातान और अबीराम अपने डेरे के
बाहर अपनी पत्नी, बच्चे और छोटे शिशुओं के साथ
खड़े थे। 28तब मूसा ने कहा, "मैं प्रमाण प्रस्तुत करूँगा
कि यहोवा ने मुझे उन चीज़ों को करने के लिए भेजा है
जो मैंने तुमको कहा है। मैं दिखाऊँगा कि वे सभी मेरे
विचार नहीं थे। 29ये पुरुष यहाँ मरेंगे। किन्तु यदि ये
सामान्य ढंग से मरते हैं अर्थात् जिस प्रकार आदमी सदा
मरते हैं तो यह प्रकट करेगा कि यहोवा ने वस्तुत: मुझे
नहीं भेजा है। 30किन्तु यदि यहोवा इन्हें दूसरे ढंग अर्थात्
कुछ नये ढंग से मरने देता है तो तुम लोग जानोगे कि
इन व्यक्तियों ने सचमुच यहोवा के विरुद्ध पाप किया है।
पृथ्वी फटेगी और इन व्यक्तियों को निगल लेगी। वे
अपनी कब्रों में जीवित ही जाएंगे और इनकी हर एक
चीज़ इनके साथ नीचे चली जाएगी।"

31जब मूसा ने इन बातों का कहना समाप्त किया,
व्यक्तियों के पैरों के नीचे पृथ्वी फटी। 32यह ऐसा था
मानों पृथ्वी ने अपना मुँह खोला और इन्हें खा गई और
उनके सारे परिवार और कोरह के सभी व्यक्ति तथा
उनकी सभी चीज़ें पृथ्वी में चली गई। 33वे जीवित ही
कब्र में चले गए। उनकी हर एक चीज़ उनके साथ गई।
तब पृथ्वी उनके ऊपर से बन्द हो गई। वे नष्ट हो गए
और वे उस डेरे से लुप्त हो गए। 34इस्राएल के लोगों ने
नष्ट किये जाते हुए लोगों का रोना चिल्लाना सुना।
इसलिए वे चारों ओर दौड़ पड़े और कहने लगे, "पृथ्वी
हम लोगों को भी निगल जाएगी।"

35तब यहोवा से आग आई और उसने दो सौ पचास
पुरुषों को, जो सुगन्धि भेंट कर रहे थे, नष्ट कर दिया।

36यहोवा ने मूसा से कहा, 37-38"हारून के पुत्र याजक
एलीआज़ार से कहो कि वह आग में से सुगन्धि के पात्रों
को एकत्र करे। डेरे से दूर के क्षेत्र में उन कोयलों को
फैलाओ। सुगन्धि के बर्तन अब भी पवित्र हैं। ये वे पात्र
हैं जो उन व्यक्तियों के हैं जिन्होंने मेरे विरुद्ध पाप किया
था। उनके पाप का मूल्य उनका जीवन हुआ। बर्तनों
को पीट कर पत्तरों में बदलो। इन धातुओं के पत्तरों का
उपयोग वेदी को ढकने के लिए करो। वे पवित्र थे
क्योंकि उन्हें यहोवा के सामने प्रस्तुत किया गया था।
उन चपटे बर्तनों को इस्राएल के सभी लोगों के लिए
चेतावनी बनने दो।"

39तब याजक एलीआज़ार ने काँसे के उन सभी बर्तनों
को इकट्ठा किया जिन्हें वे लोग लाए थे। वे सभी व्यक्ति
जल गए थे, किन्तु बर्तन तब भी वहाँ थे। तब एलीआज़ार
ने कुछ व्यक्तियों को बर्तनों को, चपटी धातु के रूप में
पीटने को कहा। तब उसने धातु की चपटी चादरों को
वेदी पर रखा। 40उसने इसे वैसे ही किया जैसा यहोवा ने
मूसा के द्वारा आदेश दिया था। यह संकेत था कि जिससे
इस्राएल के लोग याद रख सकें कि केवल हारून के
परिवार के व्यक्ति को यहोवा के सामने सुगन्धि भेंट
करने का अधिकार है। यदि कोई अन्य व्यक्ति यहोवा
के सामने सुगन्धि जलाता है तो वह व्यक्ति कोरह और
उसके अनुयायियों की तरह हो जाएगा।

हारून लोगों की रक्षा करता है

41अगले दिन इस्राएल के लोगों ने मूसा और हारून
के विरुद्ध शिकायत की। उन्होंने कहा, "तुमने यहोवा
के लोगों को मारा है।"

42मूसा और हारून मिलापवाले तम्बू के द्वार पर खड़े
थे। लोग उस स्थान पर मूसा और हारून की शिकायत
करने के लिए इकट्ठा हुए। किन्तु जब उन्होंने मिलापवाले
तम्बू को देखा तो बादल ने उसे ढक लिया और वहाँ
यहोवा का तेज प्रकट हुआ। 43तब मूसा और हारून
मिलापवाले तम्बू के सामने गए। 44तब यहोवा ने मूसा से
कहा, 45"उन लोगों से दूर हट जाओ जिससे मैं उन्हें अब
नष्ट कर दूँ।" मूसा और हारून धरती पर गिर पड़े।

46तब मूसा ने हारून से कहा, "वेदी की आग और
अपने काँसे के बर्तन को लो। तब इसमें सुगन्धि डालो।
लोगों के समूह के पास शीघ्र जाओ और उनके पाप के
लिए भुगतान करो। यहोवा उन पर क्रोधित है। परेशानी
आरम्भ हो चुकी है।"

47इसलिए, हारून ने मूसा के कथनानुसार काम किया। सुगन्धि और आग को लेने के बाद वह लोगों के बीच दौड़कर पहुँचा। किन्तु लोगों में बीमारी पहले ही आरम्भ हो चुकी थी। हारून ने लोगों के भुगतान के लिए सुगन्धि की भेंट दी। 48हारून मरे हुए और जीवित लोगों में खड़ा हुआ और तब बीमारी रूक गई।

49किन्तु इसके पहले कि हारून उनके पापों के लिए भुगतान करे, चौदह हजार सात सौ लोग उस बीमारी से मर गए। तब यहोवा ने इसे रोका। वहाँ ऐसे लोग भी थे जो कोरह के कारण मरे। 50 तब हारून मिलापवाले तम्बू के द्वार पर मूसा के पास लौटा। लोगों की भयंकर बीमारी रोक दी गई।

परमेश्वर प्रमाणित करता है कि हारून महायाजक है

17 यहोवा ने मूसा से कहा, 2 "इस्राएल के लोगों से कहो। अपने लोगों से बारह लकड़ी की छड़ियाँ लें। बारह परिवार समूहों में हर एक के नेता से एक छड़ी लो। हर एक व्यक्ति की छड़ी पर उसका नाम लिख दो। 3लेवी की छड़ी पर हारून का नाम लिखो। बारह परिवार समूहों के हर एक मुखिया की छड़ी होनी चाहिए। 4इन छड़ियों को साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने मिलापवाले तम्बू में रखो। यही वह स्थान है जहाँ मैं तुमसे मिलता हूँ। 5मैं एक व्यक्ति को चुनूँगा। तुम जान जाओगे कि किस व्यक्ति को मैंने चुना है। क्योंकि उस छड़ी में नयी पत्तियाँ उगनी आरम्भ होंगी। इस प्रकार, मैं लोगों को अपने और तुम्हारे विरुद्ध सदा शिकायत करने से रोक दूँगा।"

6इसलिए मूसा ने इस्राएली लोगों से बातें कीं। प्रत्येक नेता ने उसे एक छड़ी दी। सारी छड़ियों की संख्या बारह थी। हर एक परिवार समूह के नेता की एक छड़ी उसमें थी। हारून की छड़ी उनमें थी। 7मूसा ने साक्षी के मिलापवाले तम्बू में यहोवा के सामने छड़ियों को रखा।

8अगले दिन मूसा ने तम्बू में प्रवेश किया। उसने देखा कि हारून की वह छड़ी, जो लेवीवंश की थी, एक मात्र ऐसी थी जिससे नयी पत्तियाँ उगनी आरम्भ हुई थीं। उस छड़ी में कलियाँ, फूल और बादाम भी लग गए थे। 9इसलिए मूसा यहोवा के स्थान से सभी छड़ियों को लाया। मूसा ने इस्राएल के लोगों को छड़ियाँ दिखाई। उन सभी ने छड़ियों को देखा और हर एक पुरुष ने अपनी छड़ी वापस ली।

10तब यहोवा ने मूसा से कहा, "हारून की छड़ी को तम्बू में रख दो। यह उन लोगों के लिए चेतावनी होगी जो सदा मेरे विरुद्ध जाते हैं। यह उनकी मेरे विरुद्ध शिकायतों को रोकेगा। इस प्रकार वे नहीं मरेंगे।" 11मूसा ने उन आदेशों का पालन किया जो यहोवा ने दिए थे।

12इस्राएल के लोगों ने मूसा से कहा, "हम जानते हैं कि हम मरेंगे! हमें नष्ट होना ही है! हम सभी को नष्ट होना ही हैं! 13कोई व्यक्ति यहोवा के पवित्र तम्बू के निकट आने पर भी मरेगा। क्या हम सभी मर जाएंगे?"

याजकों और लेवीवंशियों के कार्य

18 यहोवा ने हारून से कहा, "तुम, तुम्हारे पुत्र और तुम्हारे पिता का परिवार अब किसी भी बुराई के लिए उत्तरदायी है जो पवित्र स्थान के विरुद्ध की जाएंगी। तुम और तुम्हारे पुत्र उन बुराइयों के लिए उत्तरदायी होंगे जो याजकों के विरुद्ध होंगी। 2अन्य लेवीवंशी लोगों को अपना साथ देने के लिए अपने परिवार समूह से लाओ। वे तुम्हारी और तुम्हारे पुत्रों की सहायता साक्षी के पवित्र तम्बू के कार्यों को करने में करेंगे। 3लेवी परिवार के वे लोग तुम्हारे अधीन हैं। वे उन सभी कार्यों को करेंगे जिन्हें तम्बू में किया जाना है। किन्तु उन्हें वेदी या पवित्र स्थान की चीज़ों के पास नहीं जाना चाहिए। यदि वे ऐसा करेंगे तो वे मर जायेंगे और तुम भी मर जाओगे। 4वे तुम्हारे साथ होंगे और तुम्हारे साथ काम करेंगे। वे मिलापवाले तम्बू की देखभाल करने के उत्तरदायी होंगे। सभी कार्य, जिन्हें तम्बू में किया जाना चाहिए, वे करेंगे। अन्य कोई भी उस स्थान के निकट नहीं आएगा जहाँ तुम हो।

5"पवित्र स्थान और वेदी की देखभाल करने के उत्तरदायी तुम हो। मैं इस्राएल के लोगों पर फिर क्रोधित होना नहीं चाहता। 6मैंने तुम्हारे लोगों अर्थात् लेवीवंश के लोगों को स्वयं इस्राएल के सभी लोगों में से चुना है। वे तुमको भेंट की तरह हैं। उनका एकमात्र उपयोग परमेश्वर की सेवा और मिलापवाले तम्बू के काम को करने में है। 7किन्तु केवल तुम और तुम्हारे पुत्र याजक के रूप में सेवा कर सकते हो। एक मात्र तुम्हीं वेदी के पास जा सकते हो। केवल तुम्हीं पर्दे के भीतर अति पवित्र स्थान में जा सकते हो। मैं याजक के रूप में तुम्हारी सेवा को तुम्हें एक भेंट के रूप में दे रहा हूँ। कोई भी अन्य, जो पवित्र स्थान के पास आएगा, मार डाला जाएगा।"

8तब यहोवा ने हारून से कहा, "मैंने अपने लिए चढ़ाई गई भेटों का उत्तरदायित्व तुमको दिया है। इस्राएल के लोग जो सारी भेंट मुझको देंगे, वह मैं तुमको देता हूँ। तुम और तुम्हारे पुत्र इन पवित्र भेंटों को आपस में बाँट सकते हैं। यह सदा तुम्हारी होंगी। 9उन सभी पवित्र भेंटों में तुम्हारा अपना भाग होगा जो जलाई नहीं जाएंगी। लोग मेरे पास भेंटे सर्वाधिक पवित्र भेंट के रूप में लाते हैं। ये अन्नबलि, या पापबलि या दोषबलि है। किन्तु ये सभी चीजें तुम्हारी और तुम्हारे पुत्रों की होंगी। 10इन सबको सर्वाधिक पवित्र चीज़ों के रूप में खाओ। तुम्हारे परिवार का हर एक पुरुष इसे खाएगा। तुम्हें इसको पवित्र मानना चाहिए। 11और वे सभी भी जो इस्राएल के लोगों

द्वारा उत्तोलन-भेंट के रूप में दी जाएंगी, तुम्हारी ही होंगी। मैं इसे तुमको, तुम्हारे पुत्रों और तुम्हारी पुत्रियों को देता हूँ। यह तुम्हारा भाग है। तुम्हारे परिवार का हर एक व्यक्ति जो पवित्र होगा, इसे खा सकेगा।

12"और मैं सारा अच्छा जैतून का तेल, सारी सर्वोत्तम नयी दाखमधु और अन्न तुम्हें देता हूँ। ये वे चीज़ें हैं जिन्हें इस्राएल के लोग मुझे अर्थात् अपने यहोवा को देते हैं। ये वे पहली चीज़ें हैं जिन्हें वे अपनी फसल पकने पर इकट्ठी करते हैं। 13जब लोग अपनी फसलें इकट्ठी करते हैं तब लोग पहली चीज़ यहोवा के पास लाते हैं। अत: ये चीज़ें मैं तुमको दूँगा और हर एक व्यक्ति जो तुम्हारे परिवार में पवित्र है, इसे खा सकेगा। 14और इस्राएल में हर एक चीज़ जो यहोवा को दी जाती है, तुम्हारी है।

15"किसी भी परिवार में पहलौठा बालक या जानवर यहोवा की भेंट होगा और वह तुम्हारा होगा। किन्तु तुम्हें प्रत्येक पहलौठे बच्चे और हर एक पहलौठे अशुद्ध पशु को फिर से खरीदने के लिए स्वीकार करना चाहिए। तब पहलौठा बच्चा फिर उस परिवार का हो जाएगा। 16जब वे एक महीने के हो जाए तब तुम्हें उनके लिए भुगतान ले लेना चाहिए। उसका मूल्य दो औंस चाँदी होगी।

17"किन्तु तुम्हें पहलौठे गाय, भेड़ या बकरे के लिए भुगतान नहीं लेना चाहिए। वे पशु पवित्र हैं-वे शुद्ध हैं। उनका खून वेदी पर छिड़को और उनकी चर्बी जलाओ। यह भेंट अग्नि द्वारा समर्पित है। इस भेंट की सुगन्ध मेरे लिए अर्थात् यहोवा के लिए मधुर सुगन्ध होगी। 18किन्तु इन पशुओं का माँस तुम्हारा होगा। और उत्तोलन भेंट की छाती भी तुम्हारी होगी। अन्य भेंटों की दायीं जांघ तुम्हारी होगी। 19कोई भी चीज़, जिसे लोग पवित्र भेंट के रूप में मुझे चढ़ाते हैं, मैं यहोवा उसे तुमको देता हूँ। यह तुम्हारा हिस्सा है। मैं इसे तुमको और तुम्हारे पुत्रों और तुम्हारी पुत्रियों को देता हूँ। यह यहोवा के साथ की गयी वाचा है जो सदा बनी रहेगी। मैं यह वचन तुमको और तुम्हारे वंशजों को देता हूँ।"

20यहोवा ने हारून से यह भी कहा, "तुम कोई भूमि नहीं प्राप्त करोगे और ऐसी कोई चीज़ नहीं रखोगे जैसी अन्य लोग रखते हैं। मैं, यहोवा, तुम्हारा रहूँगा। इस्राएल के लोग वह देश प्राप्त करेंगे जिसके लिए मैंने वचन दिया है। किन्तु तुम्हारे लिए अपना उपहार मैं स्वयं होऊँगा।

21"इस्राएल के लोग उनके पास जो कुछ होगा उसका दसवाँ भाग देंगे। इस प्रकार मैं लेवीवंश के लोगों को दसवाँ भाग देता हूँ। यह उनके उस कार्य के लिए भुगतान है जो वे मिलापवाले तम्बू में सेवा करते हुए करते हैं। 22किन्तु इस्राएल के अन्य लोगों को मिलापवाले तम्बू के निकट कभी नहीं जाना चाहिए। यदि वे ऐसा करते हैं तो उन्हें अपने पाप के लिए भुगतान करना पड़ेगा और वे मर जाएंगे! 23जो लेवीवंशी मिलापवाले तम्बू में काम कर रहे हैं वे इसके विरुद्ध किये गए पापों के लिए उत्तरदायी हैं। यह नियम भविष्य के दिनों के लिए भी रहेगा। लेवीवंशी लोग उस भूमि को नहीं लेंगे जिसे मैंने इस्राएल के अन्य लोगों को दिया है। 24किन्तु इस्राएल के लोगों के पास जो कुछ होगा उसका दसवाँ हिस्सा मुझको देंगे। इस तरह मैं लेवीवंशी लोगों को दसवाँ हिस्सा दूँगा। यही कारण है कि मैंने लेवीवंशियों के लिये कहा है: वे लोग उस भूमि को नहीं पाएंगे जिसे मैंने इस्राएल के लोगों को देने का वचन दिया है।"

25यहोवा ने मूसा से कहा, 26"लेवीवंशी लोगों से बातें करो और उनसे कहो: इस्राएल के लोग अपनी हर एक चीज का दसवाँ भाग यहोवा को देंगे। वह दसवाँ भाग लेवीवंशियों का होगा। किन्तु तुम्हें उसका दसवाँ भाग यहोवा को उनकी भेंट के रूप में देना चाहिए। 27फसल कटने के बाद तुम लोग खलिहानों से अन्न और दाखमधुशाला से रस प्राप्त करोगे। तब वह भी यहोवा को तुम्हारी भेंट होगी। 28इस प्रकार, तुम यहोवा को वैसे ही भेंट दोगे जिस प्रकार इस्राएल के अन्य लोग देते हैं। तुम इस्राएल के लोगों का दिया हुआ दसवाँ भाग प्राप्त करोगे और तब तुम उसका दसवाँ भाग याजक हारून को दोगे। 29जब इस्राएल के लोग अपनी हर एक चीज़ का दसवाँ भाग दें तो तुम्हें उनमें से सर्वोत्तम और पवित्रतम भाग चुनना चाहिए। वही दसवाँ भाग है जिसे तुम्हें यहोवा को देना चाहिए।

30 "मूसा, लेवियों से यह कहो: इस्राएल के लोग तुम लोगों को अपनी फसल या अपनी दाखमधु का दसवाँ भाग देंगे। तब तुम लोग उसका सर्वोत्तम भाग यहोवा को दोगे। 31जो बचेगा उसे तुम और तुम्हारे परिवार के व्यक्ति खा सकते हैं। यह तुम लोगों के उस काम के लिए भुगतान है जो तुम लोग मिलापवाले तम्बू में करते हो। 32और यदि तुम सदा इसका सर्वोत्तम भाग यहोवा को देते रहोगे तो तुम कभी दोषी नहीं होगे। तुम इस्राएल के लोगों की पवित्र भेंट के प्रति पाप नहीं करोगे और तुम मरोगे नहीं।"

लाल गाय की राख

19 यहोवा ने मूसा और हारून से बात की। उसने कहा, 2"ये नियम और उपदेश हैं जिन्हें यहोवा इस्राएल के लोगों को देता है। उन्हें दोष से रहित एक लाल गाय लेनी चाहिए और उसे तुम्हारे पास लाना चाहिए। उस गाय को कोई खरोंच भी न लगी हो और उस गाय के कंधे पर कभी जुआ* नहीं रखा गया हो।

जुआ एक डंडा जो किसी व्यक्ति या जानवर को भारी बोझ ढोने या गाड़ी खींचने में सहायक होता है।

3इस गाय को याजक एलीआज़ार को दो। एलीआज़ार
गाय को डेरे से बाहर ले जाएगा और वह वहाँ गाय को
मारेगा। 4तब याजक एलीआज़ार को इसका कुछ खून
अपनी उंगलियों पर लगाना चाहिए और उसे कुछ खून
पवित्र तम्बू की दिशा में छिड़कना चाहिए। उसे यह सात
बार करना चाहिए। 5तब पूरी गाय को उसके सामने
जलाना चाहिए। चमड़ा, माँस, खून और आतें सभी जला
डालनी चाहिए।

6तब याजक को एक देवदारु की लकड़ी, एक जूफ़ा
की शाखा और लाल रंग का कपड़ा लेना चाहिए।
याजक को इन चीज़ों को उस आग में डालना चाहिए
जिसमें गाय जल रही हो। 7तब याजक को, अपने को
तथा अपने कपड़ों को पानी से धोना चाहिए। तब उसे
डेरे में लौटना चाहिए। याजक सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।
8जो व्यक्ति गाय को जलाए उसे अपने को तथा अपने
वस्त्रों को पानी से धोना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध
रहेगा।

9"तब एक पुरुष जो शुद्ध होगा, गाय की राख को
इकट्ठा करेगा। वह इस राख को डेरे के बाहर एक
शुद्ध स्थान पर रखेगा। यह राख उस समय उपयोग में
आएगी जब लोग शुद्ध होने के लिए विशेष संस्कार
करेंगे। यह राख व्यक्ति के पाप को दूर करने के लिए
उपयोग में आएगी।

10"वह व्यक्ति, जिसने गाय की राख को इकट्ठा
किया, अपने कपड़े धोएगा। वह सन्ध्या तक अशुद्ध
रहेगा।

"यह नियम सदा चलता रहेगा। यह नियम इस्राएल के
नागरिकों के लिए है और यह उन विदेशियों के लिए
भी है जो तुम्हारे बीच रहते हैं। 11यदि कोई व्यक्ति एक
मरे व्यक्ति को छूता है, तो वह सात दिन के लिए अशुद्ध
हो जाएगा। 12उसे अपने को तीसरे दिन तथा फिर
सातवें दिन विशेष पानी से धोना चाहिए। यदि वह ऐसा
नहीं करता, तो वह अशुद्ध रह जाएगा। 13यदि कोई
व्यक्ति किसी शव को छूता है, तो वह व्यक्ति अशुद्ध है।
यदि वह व्यक्ति अशुद्ध रहता है और तब पवित्र तम्बू में
जाता है तो पवित्र तम्बू अशुद्ध हो जाती है। इसलिए उस
व्यक्ति को इस्राएल के लोगों से अलग कर दिया जाना
चाहिए। यदि अशुद्ध व्यक्ति पर विशेष जल नहीं डाला
जाता तो वह व्यक्ति अशुद्ध रहेगा।

14"यह नियम उन लोगों से सम्बन्धित है जो अपने
खेमों में मरते हैं। यदि कोई व्यक्ति खेमें में मरता है तो
उस खेमे का हर एक व्यक्ति अशुद्ध हो जाएगा। वे सात
दिन तक अशुद्ध रहेंगे 15और हर एक ढक्कन रहित
बर्तन और घड़ा अशुद्ध हो जाता है। 16यदि कोई शव
को छूता है, तो वह व्यक्ति सात दिन तक अशुद्ध रहेगा।
यह तब भी सत्य होगा जब व्यक्ति बाहर देश में मरा हो
या युद्ध में मारा गया हो। यदि कोई व्यक्ति मरे व्यक्ति की
हड्डी या किसी कब्र को छूता है तो वह व्यक्ति अशुद्ध
हो जाता है।

17"इसलिए तुम्हें दग्ध गाय की राख का उपयोग उस
व्यक्ति को पुन: शुद्ध करने के लिए करना चाहिए।
स्वच्छ पानी* घड़े में रखी हुई राख पर डालो। 18शुद्ध
व्यक्ति को एक जूफा की शाखा लेनी चाहिए और इसे
पानी में डुबाना चाहिए। तब उसे तम्बू, बर्तनों तथा डेरे में
जो व्यक्ति हैं उन पर यह जल छिड़कना चाहिए। तुम्हें
यह उन सभी व्यक्तियों के साथ करना चाहिए जो शव
को छुऐंगे। तुम्हें यह उस के साथ भी करना चाहिए जो
युद्ध में मरे व्यक्ति के शव को छूता है या उस किसी के
साथ भी जो किसी मरे व्यक्ति की हड्डियों या कब्र को
छूता है।

19"तब कोई शुद्ध व्यक्ति इस जल को अशुद्ध व्यक्ति
पर तीसरे दिन और फिर सातवें दिन छिड़के। सातवें
दिन वह व्यक्ति शुद्ध हो जाता है। उसे अपने कपड़ों को
पानी में धोना चाहिए। वह सन्ध्या के समय पवित्र हो
जाता है।

20"यदि कोई व्यक्ति अशुद्ध हो जाता है और शुद्ध
नहीं होता तो उसे इस्राएल के लोगों से अलग कर देना
चाहिए। उस व्यक्ति पर विशेष पानी नहीं छिड़का गया।
वह शुद्ध नहीं हुआ। तो वह पवित्र तम्बू को अशुद्ध कर
सकता है। 21यह नियम तुम्हारे लिए सदा के लिए होगा।
जो व्यक्ति इस विशेष जल को छिड़कता है, उसे भी
अपने कपड़े अवश्य धो लेने चाहिए। कोई व्यक्ति जो
इस विशेष जल को छुएगा, वह सन्ध्या तक अशुद्ध
रहेगा। 22यदि कोई अशुद्ध व्यक्ति किसी अन्य को छूए,
तो वह व्यक्ति भी अशुद्ध हो जाएगा। वह व्यक्ति सन्ध्या
तक अशुद्ध रहेगा।"

मरियम मरी

20 इस्राएल के लोग सीन मरुभूमि में पहले महीने
में पहुँचे। लोग कादेश में ठहरे। मरियम की
मृत्यु हो गई और वह वहाँ दफनाई गई।

मूसा की गलती

2उस स्थान पर लोगों के लिये पर्याप्त पानी नहीं था।
इसलिए लोग मूसा और हारून के विरुद्ध शिकायत
करने के लिए इकट्ठे हुए। 3लोगों ने मूसा से बहस की।
उन्होंने कहा, "क्या ही अच्छा होता हम अपने भाइयों
की तरह यहोवा के सामने मर गए होते। 4तुम यहोवा के
लोगों को इस मरुभूमि में क्यों लाए? क्या तुम चाहते हो
कि हम और हमारे जानवर यहाँ मर जाए? तुम हम
लोगों को मिस्र से क्यों लाए? 5तुम हम लोगों को इस बुरे

स्वच्छ पानी शाब्दिक, "जीवन-जल" इसका अर्थ संभवत: ताजा बहता पानी है।

स्थान पर क्यों लाए? यहाँ कोई अन्न नहीं है, कोई अंजीर, अंगूर या अनार नहीं है और यहाँ पीने के लिये पानी नहीं है।"
6इसलिए मूसा और हारून ने लोगों को छोड़ा और वे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर पहुँचे। उन्होंने दण्डवत् (प्रणाम) किया और उन पर यहोवा का तेज प्रकाशित हुआ।

7यहोवा ने मूसा से बात की। उसने कहा,
8"अपने भाई हारून और लोगों की भीड़ को साथ लो और उस चट्टान तक जाओ। अपनी छड़ी को भी लो। लोगों के सामने चट्टान से बातें करो। तब चट्टान से पानी बहेगा और तुम वह पानी अपने लोगों और जानवरों को दे सकते हो।"

9छड़ी यहोवा के सामने पवित्र तम्बू में थी। मूसा ने यहोवा के कहने के अनुसार छड़ी ली।
10तब उसने तथा हारून ने लोगों को चट्टान के सामने इकट्ठा होने को कहा। तब मूसा ने कहा, "तुम लोग सदा शिकायत करते हो। अब मेरी बात सुनो। हम इस चट्टान से पानी बहायेंगे।"
11मूसा ने अपनी भुजा उठाई और दो बार चट्टान पर चोट की। चट्टान से पानी बहने लगा और लोगों तथा जानवरों ने पानी पिया।

12किन्तु यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, "इस्राएल के सभी लोग चारों ओर इकट्ठे थे। किन्तु तुमने मुझको सम्मान नहीं दिया। तुमने लोगों को नहीं दिखाया कि पानी निकालने की शक्ति मुझसे तुममें आई। तुमने लोगों को यह नहीं बताया कि तुमने मुझ पर विश्वास किया। मैं उन लोगों को वह देश दूँगा मैंने जिसे देने का वचन दिया है। लेकिन तुम उस देश में उनको पहुँचाने वाले नहीं रहोगे।"

13इस स्थान को मरीबा का पानी कहा जाता था। यही वह स्थान था जहाँ इस्राएल के लोगों ने यहोवा के साथ बहस की और यह वह स्थान था जहाँ यहोवा ने यह दिखाया कि वह पवित्र था।

एदोम ने इस्राएल को पार नहीं होने दिया

14जब मूसा कादेश में था, उसने कुछ व्यक्तियों को एदोम के राजा के पास एक संदेश के साथ भेजा। सन्देश यह था: "तुम्हारे भाई इस्राएल के लोग तुमसे यह कहते हैं: तुम जानते हो कि हम लोगों ने कितनी कठिनाइयाँ सही हैं।
15अनेक वर्ष पहले हमारे पूर्वज मिस्र चले गये थे और हम लोग वहाँ अनेक वर्ष रहे। मिस्र के लोग हम लोगों के प्रति क्रूर थे।
16किन्तु हम लोगों ने यहोवा से सहायता के लिए प्रार्थना की।" यहोवा ने हम लोगों की प्रार्थना सुनी और उन्होंने हम लोगों की सहायता के लिए एक दूत भेजा। यहोवा हम लोगों को मिस्र से बाहर लाया है।

"अब हम लोग यहाँ कादेश में हैं जहाँ से तुम्हारा प्रदेश आरम्भ होता है।
17कृपया अपने देश से हम लोगों को यात्रा करने दें। हम लोग किसी खेत या अंगूर के बाग से यात्रा नहीं करेंगे। हम लोग तुम्हारे किसी कुएँ से पानी नहीं पीएंगे। हम लोग केवल राजपथ से यात्रा करेंगे। हम राजपथ को छोड़कर दायें या बायें नहीं बढ़ेंगे। हम लोग तब तक राजपथ पर ही ठहरेंगे जब तक तुम्हारे देश को पार नहीं कर जाते।"

18किन्तु एदोम के राजा ने उत्तर दिया, "तुम हमारे देश से होकर यात्रा नहीं कर सकते। यदि तुम हमारे देश से होकर यात्रा करने का प्रयत्न करते हो तो हम लोग आएंगे और तुमसे तलवारों से लड़ेंगे।"

19इस्राएल के लोगों ने उत्तर दिया, "हम लोग मुख्य सड़क से यात्रा करेंगे। यदि हमारे जानवर तुम्हारा कुछ पानी पीएंगे, तो हम लोग उसके मूल्य का भुगतान करेंगे। हम लोग तुम्हारे देश से केवल चलकर पार जाना चाहते हैं। हम लोग इसे अपने लिए लेना नहीं चाहते।"

20किन्तु एदोम ने फिर उत्तर दिया, "हम अपने देश से होकर तुम्हें जाने नहीं देंगे।"

तब एदोम के राजा ने एक विशाल और शक्तिशाली सेना इकट्ठी की और इस्राएल के लोगों से लड़ने के लिए निकल पड़ा।
21एदोम के राजा ने इस्राएल के लोगों को अपने देश से यात्रा करने से मना कर दिया और इस्राएल के लोग मुड़े और दूसरे रास्ते से चल पड़े।

हारून मर जाता है

22इस्राएल के सभी लोगों ने कादेश से होर पर्वत तक यात्रा की।
23होर पर्वत एदोम की सीमा पर था। यहोवा ने मूसा और हारून से कहा,
24"हारून को अपने पूर्वजों के साथ जाना होगा। यह उस प्रदेश में नहीं जाएगा जिसे देने के लिए मैंने इस्राएल के लोगों को वचन दिया है। मूसा, मैं तुमसे यह कहता हूँ क्योंकि तुमने और हारून ने मरीबा के पानी के विषय में मेरे दिये आदेश का पूरी तरह पालन नहीं किया।
25हारून और उसके पुत्र एलीआज़ार को होर पर्वत पर लाओ।

26हारून के विशेष वस्त्रों को उससे लो और उन वस्त्रों को उसके पुत्र एलीआज़ार को पहनाओ। हारून वहाँ पर्वत पर मरेगा और वह अपने पूर्वजों के साथ हो जाएगा।"

27मूसा ने यहोवा के आदेश का पालन किया। मूसा, हारून और एलीआज़ार होर पर्वत पर गए। इस्राएल के सभी लोगों ने उन्हें जाते देखा।
28मूसा ने हारून के वस्त्र उतार लिए और उन वस्त्रों को हारून के पुत्र एलीआज़ार को पहनाया। तब हारून पर्वत की चोटी पर मर गया। मूसा और एलीआज़ार पर्वत से उतर आए।
29तब इस्राएल के सभी लोगों ने जाना कि हारून मर गया। इसलिए इस्राएल के हर व्यक्ति ने तीस दिन तक शोक मनाया।

कनानियों से युद्ध

21 अराद का कनानी राजा नेगेव मरुभूमि में
रहता था। उस ने सुना कि इस्राएल के लोग
अथारीम को जाने वाली सड़क से आ रहे हैं। इसलिए
राजा बाहर निकला और उसने इस्राएल के लोगों पर
आक्रमण कर दिया। उसने उनमें से कुछ को पकड़
लिया और उन्हें बन्दी बनाया। 2तब इस्राएल के लोगों ने
यहोवा को यह वचन दिया: "हे यहोवा, इन लोगों को
पराजित करने में हमारी मदद करो। उन्हें हमारे अधीन
कर दो। यदि तू ऐसा करेगा, तो हम लोग उनके नगरों
को पूरी तरह नष्ट कर देंगे।" 3यहोवा ने इस्राएल के
लोगों की प्रार्थना सुनी और यहोवा ने इस्राएल के लोगों
से कनानी लोगों को हरवा दिया। इस्राएल के लोगों ने
कनानी लोगों तथा उनके नगरों को पूरी तरह नष्ट
कर दिया। इसलिए उस स्थान का नाम होर्मा पड़ा।

काँसे* का साँप

4इस्राएल के लोगों ने होर पर्वत को छोड़ा और लाल
सागर के किनारे-किनारे चले। उन्होंने ऐसा इसलिए
किया जिससे वे एदोम कहे जाने वाले स्थान के चारों
ओर जा सकें। किन्तु लोगों को धीरज नहीं था। जिस
समय वे चल रहे थे उसी समय उन्होंने लम्बी यात्रा के
विरुद्ध शिकायत करनी आरम्भ की। 5लोगों ने परमेश्वर
और मूसा के विरुद्ध बातें की। लोगों ने कहा, "तुम हमें
मिस्र से बाहर क्यों लाए हो? हम लोग यहाँ मरुभूमि में
मर जाएंगे! यहाँ रोटी नहीं मिलती! यहाँ पानी नहीं है
और हम लोग इस खराब भोजन से घृणा करते हैं।"

6इसलिए यहोवा ने लोगों के बीच जहरीले साँप भेजे।
साँपों ने उन लोगों को डसा और बहुत से लोग मर गए।
7लोग मूसा के पास आए और उससे कहा, "हम जानते
हैं कि जब हमने यहोवा और तुम्हारे विरुद्ध शिकायत
की तो हमने पाप किया। यहोवा से प्रार्थना करो। उनसे
कहो कि इन साँपों को दूर करे।" इसलिए मूसा ने लोगों
के लिए प्रार्थना की।

8यहोवा ने मूसा से कहा, "एक काँसे का साँप बनाओ
और उसे एक ऊँचे डंडे पर रखो। यदि किसी व्यक्ति को
साँप काटे, तो उस व्यक्ति को डंडे के ऊपर काँसे के
साँप को देखना चाहिए। तब वह व्यक्ति मरेगा नहीं।"
9इसलिए मूसा ने यहोवा की आज्ञा मानी और एक काँसे
का साँप बनाया तथा उसे एक डंडे के ऊपर रखा। तब
जब किसी व्यक्ति को साँप काटता था तो वह डंडे के
ऊपर के साँप को देखता था और जीवित रहता था।

होर पर्वत से मोआब घाटी को

10इस्राएल के लोग यात्रा करते रहे। उन्होंने ओबोत
नामक स्थान पर डेरा डाला। 11तब लोगों ने ओबोत से
ईय्ये अबीराम तक की यात्रा की और वहाँ डेरा डाला।
यह मोआब के पूर्व में मरुभूमि में था। 12तब लोगों ने
उस स्थान को छोड़ा और जेरेद की यात्रा की। उन्होंने
वहाँ डेरा डाला। 13तब लोगों ने अर्नोन घाटी की यात्रा
की। उन्होंने उस क्षेत्र के समीप डेरा डाला। यह एमोरियों
के प्रदेश के पास मरुभूमि में था। अर्नोन घाटी मोआब
और एमोरी लोगों के बीच की सीमा है। 14यही कारण है
कि यहोवा के युद्धों की पुस्तक में निम्न विवरण प्राप्त
है:

"...और सूपा में वाहेब, अर्नोन की घाटी 15और आर
की बस्ती तक पहुँचाने वाली घाटी के किनारे की
पहाड़ियाँ। ये स्थान मोआब की सीमा पर हैं।"

16इस्राएल के लोगों ने उस स्थान को छोड़ा और
उन्होंने बैर की यात्रा की। इस स्थान पर एक कुँआ था।
यहोवा ने मूसा से कहा, "यहाँ सभी लोगों को इकट्ठा
करो और मैं उन्हें पानी दूँगा।" 17तब इस्राएल के लोगों
ने यह गीत गाया:

"कुएँ! पानी से उमड़ बहो! इसका गीत गाओ!
18महापुरुषों ने इस कुएँ को खोदा। महान नेताओं ने
इस कुएँ को खोदा। अपनी छड़ों और डण्डों से इसे
खोदा। यह मरुभूमि में एक भेंट* है।"

लोग "मत्ताना" नाम के कुएँ पर थे। 19तब लोगों ने
मत्ताना से नहलीएल की यात्रा की। तब उन्होंने नहलीएल
से बामोत की यात्रा की। 20लोगों ने बामोत घाटी की
यात्रा की। इस स्थान पर पिसगा पर्वत की चोटी मरुभूमि
के ऊपर दिखाई पड़ती है।

सीहोन और ओग

21इस्राएल के लोगों ने कुछ व्यक्तियों को एमोरी लोगों
के राजा सीहोन के पास भेजा। इन लोगों ने राजा से
कहा, 22"अपने देश से होकर हमें यात्रा करने दो। हम
लोग किसी खेत या अंगूर के बाग से होकर नहीं जाएंगे।
हम तुम्हारे किसी कुएँ से पानी नहीं पीएंगे। हम लोग
केवल राजपथ से यात्रा करेंगे। हम लोग तब तक उस
सड़क पर ही ठहरेंगे जब तक हम लोग तुम्हारे देश से
होकर यात्रा पूरी नहीं कर लेते।"

23किन्तु राजा सीहोन इस्राएल के लोगों को अपने देश
से होकर यात्रा करने की अनुमति नहीं दी। राजा ने
अपनी सेना इकट्ठी की और मरुभूमि की ओर चल
पड़ा। वह इस्राएल के लोगों के विरुद्ध आक्रमण कर
रहा था। यहस नाम के एक स्थान पर राजा की सेना ने
इस्राएल के लोगों के साथ युद्ध किया।

24किन्तु इस्राएल के लोगों ने राजा को मार डाला।
तब उन्होंने अर्नोन घाटी से लेकर यब्बोक क्षेत्र तक के

काँसा हिब्रू में इसे 'तांबा' भी कहा जाता हैं।

मरुभूमि में एक भेंट हिब्रू में यह उस नाम की तरह है जिसका
अर्थ "मत्ताना" होता है।

उसके प्रदेश पर अधिकार कर लिया। इस्राएल के लोगों
ने अम्मोनी लोगों की सीमा तक के प्रदेश पर अधिकार
किया। उन्होंने और अधिक क्षेत्र पर अधिकार नहीं
जमाया क्योंकि वह सीमा अम्मोनी लोगों द्वारा दृढ़ता से
सुरक्षित थी। 25किन्तु इस्राएल ने अम्मोनी लोगों के सभी
नगरों पर कब्जा कर लिया। उन्होंने हेशबोन नगर तक
को और उसके चारों ओर के छोटे नगरों को भी
हराया। 26हेशबोन वह नगर था जिसमें राजा सीहोन
रहता था। इसके पहले सीहोन ने मोआब के राजा को
हराया था और सीहोन ने अर्नोन घाटी तक के सारे
प्रदेश पर अधिकार कर लिया था। 27यही कारण है कि
गायक यह गीत गाते हैं:

“आओ हेशबोन को, इसे फिर से बसाना है। सीहोन
के नगर को फिर से बनने दो।

28हेशबोन में आग लग गई थी। वह आग सीहोन के
नगर में लगी थी। आग ने आर (मोआब) को नष्ट
किया इसने ऊपरी अर्नोन की पहाड़ियों को जलाया।

29ऐ मोआब! यह तुम्हारे लिए बुरा है, कमोश के लोग
नष्ट कर दिए गए हैं। उसके पुत्र भाग खड़े हुए। उसकी
पुत्रियाँ बन्दी बनीं- एमोरी लोगों के राजा सीहोन द्वारा।

30किन्तु हमने उन एमोरियों को हराया, हमने उनके
हेशबोन से दीबोन तक नगरों को मिटाया मेदबा के
निकट नशिम से नोपह तक।”

31इसलिए इस्राएल के लोगों ने एमोरियों के देश में
अपना डेरा लगाया।

32मूसा ने गुप्तचरों को याजेर नगर पर निगरानी के
लिए भेजा। मूसा के ऐसा करने के बाद, इस्राएल के
लोगों ने उस नगर पर अधिकार कर लिया। उन्होंने
उसके चारों ओर के छोटे नगर पर भी अधिकार
जमाया। इस्राएल के लोगों ने उस स्थान पर रहने वाले
एमोरियों को वह स्थान छोड़ने को विवश किया।

33तब इस्राएल के लोगों ने बाशान की ओर जाने
वाली सड़क पर यात्रा की। बाशान के राजा ओग ने
अपनी सेना ली और इस्राएल के लोगों का सामना करने
निकला। वह एद्रेई नाम के क्षेत्र में उनके विरुद्ध लड़ा।

34किन्तु यहोवा ने मूसा से कहा, “उस राजा से मत
डरो। मैं तुम्हें उसको हराने दूँगा। तुम उसकी पूरी सेना
और प्रदेश को प्राप्त करोगे। तुम उसके साथ वही करो
जो तुमने एमोरी लोगों के राजा सीहोन के साथ किया।”

35अत: इस्राएल के लोगों ने ओग और उसकी सेना
को हराया। उन्होंने उसे, उसके पुत्रों और उसकी सारी
सेना को हराया। तब इस्राएल के लोगों ने उसके पूरे देश
पर अधिकार कर लिया।

बिलाम और मोआब का राजा

22 तब इस्राएल के लोगों ने मोआब के मैदान की
यात्रा की। उन्होंने यरीहो के उस पार यरदन
नदी के निकट डेरा डाला। 2-3सिप्पोर के पुत्र बालाक ने
एमोरी लोगों के साथ इस्राएल के लोगों ने जो कुछ किया
था, उसे देखा था और मोआब बहुत अधिक भयभीत
था क्योंकि वहाँ इस्राएल के बहुत लोग थे। मोआब
इस्राएल के लोगों से बहुत आतंकित था। 4मोआब के
नेताओं ने मिद्यान के अग्रजों से कहा, “लोगों का यह
विशाल समूह हमारे चारों ओर की सभी चीज़ों को वैसे
ही नष्ट कर देगा जैसे कोई गाय मैदान की घास चर
जाती है।”

इस समय सिप्पोर का पुत्र बालाक मोआब का राजा
था। 5उसने कुछ व्यक्तियों को बोर के पुत्र बिलाम को
बुलाने के लिए भेजा। बिलाम नदी के निकट पतोर नाम
के क्षेत्र में था। बालाक ने कहा, “लोगों का एक नया
राष्ट्र मिस्र से आया है। वे इतने अधिक हैं कि पूरे प्रदेश
में फैल सकते हैं। उन्होंने ठीक हमारे पास डेरा डाला
है। 6आओ और इन लोगों के साथ निपटने में मेरी
सहायता करो। वे मेरी शक्ति से बहुत अधिक शक्तिशाली
हैं। संभव है कि तब इनको मैं हरा सकूँ। तब मैं उन्हें
अपना देश छोड़ने को विवश कर सकता हूँ। मैं जानता
हूँ कि तुम बड़ी शक्ति रखते हो। यदि तुम किसी व्यक्ति
को आशीर्वाद देते हो तो उसका भला हो जाता है। यदि
तुम किसी व्यक्ति के विरुद्ध कहते हो तो उसका बुरा हो
जाता है। इसलिए आओ और इन लोगों के विरुद्ध कुछ
कहो।”

7मोआब और मिद्यान के अग्रज चले। वे बिलाम से
बातचीत करने गए। वे उसकी सेवाओं के लिए धन देने
को ले गए। तब उन्होंने, बालाक ने जो कुछ कहा था,
उससे कहा। 8बिलाम ने उनसे कहा, “यहाँ रात में
रुको। मैं यहोवा से बातें करूँगा और जो उत्तर, वह मुझे
देगा, वह तुमसे कहूँगा।” इसलिए उस रात मोआबी लोगों
के नेता उसके साथ ठहरे।

9परमेश्वर बिलाम के पास आया और उसने पूछा,
“तुम्हारे साथ ये कौन लोग हैं?”

10बिलाम ने परमेश्वर से कहा,“मोआब के राजा
सिप्पोर के पुत्र बालाक ने उन्हें मुझको एक सन्देश देने
को भेजा है। 11सन्देश यह है: लोगों का एक नया राष्ट्र
मिस्र से आया है। वे इतने अधिक हैं कि सारे देश में
फैल सकते हैं। इसलिए आओ और इन लोगों के विरुद्ध
कुछ कहो। तब सम्भव है कि उनसे लड़ने में मैं समर्थ
हो सकूँ और अपने देश को छोड़ने के लिए उन्हें विवश
कर सकूँ।”

12किन्तु परमेश्वर ने बिलाम से कहा, “उनके साथ
मत जाओ। तुम्हें उन लोगों के विरुद्ध कुछ नहीं कहना
चाहिए। उन्हें यहोवा से वरदान प्राप्त है।”

13दूसरे दिन सवेरे बिलाम उठा और बालाक के
नेताओं से कहा, “अपने देश को लौट जाओ। यहोवा
मुझे तुम्हारे साथ जाने नहीं देगा।”

14इसलिए मोआबी नेता बालाक के पास लौटे और
उससे उन्होंने ये बातें कहीं। उन्होंने कहा, "बिलाम ने
हम लोगों के साथ आने से इन्कार कर दिया।"
15इसलिए बालाक ने दूसरे नेताओं को बिलाम के
पास भेजा। इस बार उसने पहली बार की अपेक्षा बहुत
अधिक आदमी भेजे और ये नेता पहली बार के नेताओं
की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण थे। 16वे बिलाम के पास
गए और उन्होंने उससे कहा, "सिप्पोर का पुत्र बालाक
तुमसे कहता है: कृपया अपने को यहाँ आने से किसी
को रोकने न दें। 17जो मैं तुमसे माँगता हूँ यदि तुम वह
करोगे तो मैं तुम्हें बहुत अधिक भुगतान करूँगा। आओ
और इन लोगों के विरुद्ध मेरे लिए कुछ कहो।"
18किन्तु बिलाम ने उन लोगों को उत्तर दिया। उसने
कहा, "मुझे यहोवा मेरे परमेश्वर की आज्ञा माननी
चाहिए। मैं उसके आदेश के विरुद्ध कुछ नहीं कर
सकता। मैं बड़ा-छोटा कुछ भी तब तक नहीं कर सकता
जब तक यहोवा नहीं कहता कि मैं उसे कर सकता हूँ।
यदि राजा बालाक अपने सोने-चाँदी भरे सुन्दर घर को
दे तो भी मैं अपने परमेश्वर यहोवा के आदेश के
विरुद्ध कुछ नहीं करूँगा। 19किन्तु तुम भी उन दूसरे
लोगों की तरह आज की रात यहाँ ठहर सकते हो और
रात में मैं जान जाऊँगा कि यहोवा मुझसे क्या कहलवाना
चाहता है।"
20उस रात परमेश्वर बिलाम के पास आया। परमेश्वर
ने कहा, "ये लोग अपने साथ ले जाने के लिए कहने
को फिर आ गए हैं। इसलिए तुम उनके साथ जा सकते
हो। किन्तु केवल वही करो जो मैं तुमसे करने को
कहूँ।"

बिलाम और उसका गधा

21अगली सुबह, बिलाम उठा और अपने गधे पर
काठी रखी। तब वह मोआबी नेताओं के साथ गया।
22बिलाम अपने गधे पर सवार था। उसके सेवकों में से
दो उसके साथ थे। जब बिलाम यात्रा कर रहा था,
परमेश्वर उस पर क्रोधित हो गया। इसलिए यहोवा का
दूत बिलाम के सामने सड़क पर खड़ा हो गया। दूत
बिलाम को रोकने जा रहा था।* 23 बिलाम के गधे ने
यहोवा के दूत को सड़क पर खड़ा देखा। दूत के हाथ में
एक तलवार थी। इसलिए गधा सड़क से मुड़ा और खेत
में चला गया। बिलाम दूत को नहीं देख सकता था।
इसलिए वह गधे पर बहुत क्रोधित हुआ। उसने गधे को
मारा और उसे सड़क पर लौटने को विवश किया।
24बाद में, यहोवा का दूत ऐसी जगह पर खड़ा हुआ
जहाँ सड़क सँकरी हो गई थी। यह दो अंगूर के बागों के
बीच का स्थान था। वहाँ सड़क के दोनों ओर दीवारें
थीं। 25गधे ने यहोवा के दूत को फिर देखा। इसलिए
गधा एक दीवार से सटकर निकला। इससे बिलाम का
पैर दीवार से छिल गया। इसलिए बिलाम ने अपने गधे
को फिर मारा।
26इसके बाद, यहोवा का दूत दूसरे स्थान पर खड़ा
हुआ। यह दूसरी जगह थी जहाँ सड़क सँकरी हो गई थी।
वहाँ कोई ऐसी जगह नहीं थी जहाँ गधा मुड़ सके। गधा
दायें या बायें नहीं मुड़ सकता था। 27गधे ने यहोवा के
दूत को देखा इसलिए गधा बिलाम को अपनी पीठ पर
लिए हुए जमीन पर बैठ गया। बिलाम गधे पर बहुत
क्रोधित था। इसलिए उसने उसे अपने डंडे से पीटा।
28तब यहोवा ने गधे को बोलने वाला बनाया। गधे ने
बिलाम से कहा, "तुम मुझ पर क्यों क्रोधित हो? मैंने
तुम्हारे साथ क्या किया है? तुमने मुझे तीन बार मारा
है!"
29बिलाम ने गधे को उत्तर दिया, "तुमने दूसरों की
नजर में मुझे मूर्ख बनाया है यदि मेरे हाथ में तलवार
होती तो मैं अभी तुम्हें मार डालता।"
30किन्तु गधे ने बिलाम से कहा, "मैं तुम्हारा अपना
गधा हूँ जिस पर तुम अनेक वर्ष से सवार हुए हो और
तुम जानते हो कि मैंने ऐसा इसके पहले कभी नहीं
किया है।"

"यह सही है।" बिलाम ने कहा।

31तब यहोवा ने बिलाम को सड़क पर खड़े दूत को
देखने दिया। बिलाम ने दूत और उसकी तलवार को
देखा। तब बिलाम ने झुक कर प्रणाम किया।
32यहोवा के दूत ने बिलाम से पूछा, "तुमने अपने गधे
को तीन बार क्यों मारा? तुम्हें मुझ पर क्रोध से पागल
होना चाहिए। मैं तुमको रोकने के लिए यहाँ आया हूँ।
तुम्हें कुछ अधिक सावधान रहना चाहिए।* 33गधे ने
मुझे देखा और वह तीन बार मुझसे मुड़ा। यदि गधा मुड़ा
न होता तो मैंने तुमको मार डाला होता। किन्तु मुझे
तुम्हारे गधे को नहीं मारना था।"
34तब बिलाम ने यहोवा के दूत से कहा, "मैंने पाप
किया है। मैं यह नहीं जानता था कि तुम सड़क पर खड़े
हो। यदि मैं बुरा कर रहा हूँ तो मैं घर लौट जाऊँगा।"
35यहोवा के दूत ने बिलाम से कहा, "नहीं, तुम इन
लोगों के साथ जा सकते हो। किन्तु सावधान रहो। वही
बातें कहो जो मैं तुमसे कहने के लिए कहूँगा।" इसलिए
बिलाम बालाक द्वारा भेजे गए नेताओं के साथ गया।
36बालाक ने सुना कि बिलाम आ रहा है। इसलिए
बालाक उससे मिलने के लिए अर्नोन सीमा पर मोआबी
नगर को गया। यह उसके देश की छोर थी। 37जब
बालाक ने बिलाम को देखा तो उसने बिलाम से कहा,

रोकने ... रहा था शाब्दिक "उसका विरोध करने।"

सावधान रहना चाहिये शाब्दिक "जैसे कि मेरे सामने से मार्ग हट गया है" या "क्योंकि तुम उचित नहीं कर रहे हो..." यहाँ हिब्रू पाठ समझना कठिन है।

"मैंने इसके पहले तुमसे आने के लिए कहा था और यह भी बताया था कि यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। तुम हमारे पास क्यों नहीं आए? क्या यह सच है कि तुम मुझसे कोई भी पुरस्कार या भुगतान नहीं पाना चाहते?"

38किन्तु बिलाम ने उत्तर दिया, "मैं अब तुम्हारे पास आया हूँ।" लेकिन मैं, जो तुमने करने को कहा था उनमें से, शायद कुछ भी न कर सकूँ। मैं केवल वही बातें तुमसे कह सकता हूँ जो परमेश्वर मुझसे कहने को कहता है।"

39तब बिलाम बालाक के साथ किर्यथूसोत गया।
40बालाक ने कुछ मवेशी तथा कुछ भेड़ें उसकी भेंट के रूप मे मारीं। उसने कुछ माँस बिलाम तथा कुछ उसके साथ के नेताओं को दिया।

41अगली सुबह बालाक को बमोथ बाल नगर को ले गया। उस नगर से वे इस्राएली लोगों के कुछ डेरों को देख सकते थे।

बिलाम की पहली भविष्यवाणी

23 बिलाम ने कहा, "यहाँ सात वेदियाँ बनाओ और मेरे लिए सात बैल और सात मेढ़े तैयार करो।" 2बालाक ने वह सब किया जो बिलाम ने कहा। तब बिलाम ने हर एक वेदी पर एक बैल और एक मेढ़े को मारा।

3तब बिलाम ने बालाक से कहा, "इस वेदी के समीप ठहरो। मैं दूसरी जगह जाऊँगा। तब कदाचित यहोवा मेरे पास आएगा और बताएगा कि मैं क्या कहूँ।" तब बिलाम एक अधिक ऊँचे स्थान पर गया।

4परमेश्वर उस स्थान पर बिलाम के पास आया और बिलाम ने कहा, "मैंने सात वेदियाँ तैयार की हैं और मैंने हर एक वेदी पर एक बैल और एक मेढ़े को मारा है।"

5तब यहोवा ने बिलाम को वह बताया जो उसे कहना चाहिए। तब यहोवा ने कहा, "बालाक के पास जाओ और इन बातों को कहो जो मैंने कहने के लिए बताई हैं।"

6इसलिए बिलाम बालाक के पास लौटा। बालाक तब तक वेदी के पास खड़ा था और मोआब के सभी नेता उसके साथ खड़े थे। 7तब बिलाम ने ये बातें कहीं:

मोआब के राजा बालाक ने मुझे आराम से बुलाया पूर्व के पहाड़ों से। बालाक ने मुझसे कहा- "आओ और मेरे लिए याकूब के विरुद्ध कहो, आओ और इस्राएल के लोगों के विरुद्ध कहो।"

8 परमेश्वर उन लोगों के विरुद्ध नहीं है, अत: मैं भी उनके विरुद्ध नहीं कह सकता। यहोवा ने उनका बुरा होने के लिए नहीं कहा है। अत: मैं भी वैसा नहीं कर सकता।

9मैं उन लोगों को पर्वत से देखता हूँ। मैं ऐसे लोगों को देखता हूँ जो अकेले रहते हैं। वे लोग किसी अन्य राष्ट्र के अंग नहीं हैं।

10याकूब के लोग बालू के कण से भी अधिक हैं। इस्राएल के लोगों की चौथाई को भी कोई गिन नहीं सकता। मुझे एक अच्छे मनुष्य की तरह मरने दो, मुझे उन लोगों की तरह ही मरने दो।

11बालाक ने बिलाम से कहा, "तुमने हमारे लिए क्या किया है? मैंने तुमको अपने शत्रुओं के विरुद्ध कुछ कहने को बुलाया था। किन्तु तुमने उन्हीं को आशीर्वाद दिया है।"

12किन्तु बिलाम ने उत्तर दिया, "मुझे वही करना चाहिए जो यहोवा मुझे करने को कहता है।"

13तब बालाक ने उससे कहा, "इसलिए मेरे साथ दूसरे स्थान पर आओ। उस स्थान पर तुम लोगों को भी देख सकते हो। किन्तु तुम उनके एक भाग को ही देख सकते हो, सभी को नहीं देख सकते और उस स्थान से तुम मेरे लिए उनके विरुद्ध कुछ कह सकते हो।"
14इसलिए बालाक बिलाम को सोपीम के मैदान में ले गया। यह पिसगा पर्वत की चोटी पर था। बालाक ने उस स्थान पर सात वेदियाँ बनाई। तब बालाक ने हर एक वेदी पर बलि के रूप में एक बैल और एक मेढ़ा मारा।

15इसलिए बिलाम ने बालाक से कहा, "इस वेदी के पास खड़े रहो। मैं उस स्थान पर परमेश्वर से मिलने जाऊँगा।"

16इसलिए यहोवा बिलाम के पास आया और उसने बिलाम को बताया कि वह क्या कहे। तब यहोवा ने बिलाम को बालाक के पास लौटने और उन बातों को कहने को कहा। 17इसलिए बिलाम बालाक के पास गया। बालाक तब तक वेदी के पास खड़ा था। मोआब के नेता उसके साथ थे। बालाक ने उसे आते हुए देखा और उससे पूछा, "यहोवा ने क्या कहा?"

बिलाम की दूसरी भविष्यवाणी

18तब बिलाम ने ये बातें कहीं: "बालाक! खड़े हो और मेरी बात सुनों। सिप्पोर के पुत्र बालाक! मेरी बात सुनो।

19परमेश्वर मनुष्य नहीं है, वह झूठ नहीं बोलेगा; परमेश्वर मनुष्य पुत्र नहीं, उसके निर्णय बदलेंगे नहीं। यदि यहोवा कहता है कि वह कुछ करेगा-तो वह अवश्य उसे करेगा। यदि यहोवा वचन देता है तो अपने वचन को अवश्य पूरा करेगा।

20यहोवा ने मुझे उन्हें आशीर्वाद देने का आदेश दिया। यहोवा ने उन्हें आशीर्वाद दिया है, इसलिए मैं उसे बदल नहीं सकता।

21याकूब के लोगों में कोई दोष नहीं था। इस्राएल के लोगों में कोई पाप नहीं था। यहोवा उनका परमेश्वर है

और वह उनके साथ है। महाराजा (परमेश्वर) की
वाणी उनके साथ है!

22परमेश्वर उन्हें मिस्र से बाहर लाया। इस्राएल के वे
लोग जंगली साँड़ की तरह शक्तिशाली हैं।

23कोई जादुई शक्ति नहीं जो याकूब के लोगों को
हरा सके। याकूब के बारे में और इस्राएल के लोगों के
विषय में भी लोग यह कहेंगे। "परमेश्वर ने जो महान
कार्य किये हैं उन पर ध्यान दो!"

24वे लोग सिंह की तरह शक्तिशाली होंगे। वे सिंह
जैसे लड़ेंगे। और यह सिंह कभी विश्राम नहीं करेगा,
जब तक वह शत्रु को खा नहीं डालता, और वह सिंह
कभी विश्राम नहीं करेगा जब तक वह उनका रक्त
नहीं पीता जो उसके विरुद्ध हैं।"

25तब बालाक ने बिलाम से कहा, "तुमने उन लोगों
के लिए अच्छी चीज़ें होने की मांग नहीं की। किन्तु
तुमने उनके लिए बुरी चीज़ें होने की भी माँग नहीं
की।"

26बिलाम ने उत्तर दिया, "मैंने पहले ही तुमसे कह
दिया कि मैं केवल वही कहूँगा जो यहोवा मुझसे कहने
के लिए कहता है।"

27तब बालाक ने बिलाम से कहा, "इसलिए तुम मेरे
साथ दूसरे स्थान पर चलो। सम्भव है कि परमेश्वर
प्रसन्न हो जाये और तुम्हें उस स्थान से शाप देने दे।"
28इसलिए बालाक बिलाम को पोर पर्वत की चोटी पर
ले गया। यह पर्वत मरुभूमि के छोर पर स्थित है।
29बिलाम ने कहा, "यहाँ सात वेदियाँ बनाओ। तब सात
साँड़ तथा सात मेढ़े वेदियों पर बलि के लिये तैयार
करो।" 30बालाक ने वही किया जो बिलाम ने कहा।
बालाक ने बलि के रूप में हर एक वेदी पर एक साँड़
तथा एक मेढ़ा मारा।

बिलाम की तीसरी भविष्यवाणी

24 बिलाम को मालूम हुआ कि यहोवा इस्राएल
को आशीर्वाद देना चाहता है। इसलिए बिलाम
ने किसी प्रकार के जादू मन्तर का उपयोग करके उसे
बदलना नहीं चाहा। किन्तु बिलाम मुड़ा और उसने
मरुभूमि की ओर देखा। 2बिलाम ने मरुभूमि के पार
तक देखा और इस्राएल के सभी लोगों को देख लिया। वे
अपने अलग-अलग परिवार समूहों के क्षेत्र में डेरा डाले
हुए थे। तब परमेश्वर ने बिलाम को प्रेरित किया। 3और
बिलाम ने ये शब्द कहे:

"बोर का पुत्र बिलाम जो सब कुछ स्पष्ट देख सकता
है ये बातें कहता है। 4ये शब्द कहे गए, क्योंकि मैं
परमेश्वर की बात सुनता हूँ। मैं उन चीज़ों को देख
सकता हूँ जिसे सर्वशक्तिमान परमेश्वर चाहता है कि
मैं देखूँ। मैं जो कुछ स्पष्ट देख सकता हूँ वही नम्रता के
साथ कहता हूँ।

5याकूब के लोगों तुम्हारे खेमे बहुत सुन्दर हैं! इस्राएल
के लोगों जिनके घर सुन्दर हैं!

6तुम्हारे डेरे घाटियों की तरह प्रदेश के आर-पार
फैले हैं। ये नदी के किनारे उगे बाग की तरह हैं। ये
यहोवा द्वारा बोयी गई फसल की तरह हैं। ये नदियों के
किनारे उगे देवदार के सुन्दर पेड़ों की तरह हैं।

7तुम्हें पीने के लिए सदा पर्याप्त पानी मिलेगा। तुम्हें
फसलें उगाने के लिये पर्याप्त पानी मिलेगा। तुम लोगों
का राजा अगाग से महान होगा। तुम्हारा राज्य बहुत
महान हो जाएगा।

8परमेश्वर उन लोगों को मिस्र से बाहर लाया। वे
इतने शक्तिशाली हैं जितना कोई जंगली साँड़। वे अपने
सभी शत्रुओं को हरायेंगे। वे अपने शत्रुओं की हड्डियाँ
चूर करेंगे। और उनके बाण उनके शत्रु को मार डालेंगे
वे उस सिंह की तरह हैं जो अपने शिकार पर टूट पड़ना
चाहता हो।

9वे उस सिंह की तरह है जो सो रहा हो। कोई व्यक्ति
इतना साहसी नहीं जो उसे जगा दे! कोई व्यक्ति जो तुम्हें
आशीर्वाद देगा, आशीष पाएगा, और कोई व्यक्ति जो
तुम्हारे विरुद्ध बोलेगा विपत्ति में पड़ेगा।"

10तब बिलाम पर बालाक बहुत क्रोधित हुआ। बालाक
ने बिलाम से कहा, "मैंने तुम्हें आने और अपने शत्रुओं
के विरुद्ध कुछ कहने के लिए बुलाया। किन्तु तुमने
उनको आशीर्वाद दिया है। तुमने उन्हें तीन बार आशीर्वाद
दिया है। 11अब विदा हो और घर जाओ। मैंने कहा था
कि मैं तुम्हें बहुत अधिक सम्पन्न बनाऊँगा। किन्तु
यहोवा ने तुम्हें पुरस्कार से वंचित कराया है।"

12बिलाम ने बालाक से कहा, "तुमने आदमियों को
मेरे पास भेजा। उन व्यक्तियों ने मुझसे आने के लिए
कहा। किन्तु मैंने उनसे कहा, 13'बालाक अपना
सोने-चाँदी से भरा घर मुझको दे सकता है। परन्तु मैं
तब भी केवल वही बातें कह सकता हूँ जिसे कहने के
लिए यहोवा आदेश देता है। मैं अच्छा या बुरा स्वयं कुछ
नहीं कर सकता। मुझे वही करना चाहिए जो यहोवा
का आदेश हो।' क्या तुम्हें याद नहीं कि मैंने ये बातें
तुम्हारे लोगों से कहीं? 14अब मैं अपने लोगों के बीच जा
रहा हूँ किन्तु तुमको एक चेतावनी दूँगा। मैं तुमसे कहूँगा
कि भविष्य में इस्राएल के ये लोग तुम्हारे और तुम्हारे
लोगों के साथ क्या करेंगे।"

बिलाम की अन्तिम भविष्यवाणी

15तब बिलाम ने ये बातें कहीं: "बोर के पुत्र बिलाम
के ये शब्द हैं: ये उस व्यक्ति के शब्द हैं जो चीज़ों को
साफ-साफ देख सकता है।

16ये उस व्यक्ति के शब्द हैं जो परमेश्वर की बातें
सुनता है। सर्वोच्च परमेश्वर ने मुझे ज्ञान दिया है। मैंने
वह देखा है जिसे सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मुझे दिखाना

चाहा है। मैं जो कुछ स्पष्ट देखता हूँ वही नम्रता के
साथ कहता हूँ।
17मैं देखता हूँ कि यहोवा आ रहा है, किन्तु अभी
नहीं। मैं उसका आगमन देखता हूँ, किन्तु यह शीघ्र
नहीं है। याकूब के परिवार से एक तारा आएगा। इस्राएल
के लोगों में से एक नया शासक आएगा। वह शासक
मोआबी लोगों के सिर कुचल देगा। वह शासक सेईर
के सभी पुत्रों के सिर कुचल देगा।
18एदोम देश पराजित होगा नये राजा का शत्रु सेईर
पराजित होगा। इस्राएल के लोग शक्तिशाली हो जाएंगे।
19याकूब के परिवार से एक नया शासक आएगा।
नगर में जीवित बचे लोगों को वह शासक नष्ट
करेगा।"
20तब बिलाम ने अपने अमालेकी लोगों को देखा
और ये बातें कहीं:
"सभी राष्टों में अमालेक सबसे अधिक बलवान था।
किन्तु अमालेक भी नष्ट किया जाएगा।"
21तब बिलाम ने केनियों को देखा और उनसे ये बातें
कहीं:
"तुम्हें विश्वास है कि तुम्हारा देश उसी प्रकार
सुरक्षित है। जैसे किसी ऊँचे खड़े पर्वत पर बना घोंसला।
22किन्तु केनियों, तुम नष्ट किये जाओगे। अश्शूर
तुम्हें बन्दी बनाएगा।"
23तब बिलाम ने ये शब्द कहे, "कोई व्यक्ति नहीं रह
सकता जब परमेश्वर यह करता है।
24कित्तियों के तट से जहाज आएंगे। वे जहाज अश्शूर
और एबेर को हराएंगे। किन्तु तब वे जहाज भी नष्ट
कर दिए जाएंगे।"
25तब बिलाम उठा और अपने घर को लौट गया
और बालाक भी अपनी राह चला गया।

पोर में इस्राएल

25 इस्राएल के लोग अभी तक शित्तीम के क्षेत्र में
डेरा डाले हुए थे। उस समय लोग मोआबी
स्त्रियों के साथ यौन सम्बन्धी पाप करने लगे। 2मोआबी
स्त्रियों ने पुरुषों को आने और अपने मिथ्या देवताओं
को भेंट चढ़ाने में सहायता करने के लिए आमंन्त्रित
किया। इस्राएली लोगों ने वहाँ भोजन किया और मिथ्या
देवताओं की पूजा की। 3अत: इस्राएल के लोगों ने इसी
प्रकार मिथ्या देवता पोर के बाल की पूजा आरम्भ की।
यहोवा इन लोगों पर बहुत क्रोधित हुआ।
4यहोवा ने मूसा से कहा, "इन लोगों के नेताओं को
लाओ। तब उन्हें सभी लोगों की आँखों के सामने मार
डालो। उनके शरीर को यहोवा के सामने डालो। तब
यहोवा इस्राएल के लोगों पर क्रोधित नहीं होगा।"
5इसलिए मूसा ने इस्राएल के न्यायाधीशों से कहा,
"तुम लोगों में से हर एक को अपने परिवार समूह में
उन लोगों को ढूँढ निकालना है जिन्होंने लोगों को पोर
के मिथ्या देवता बाल की पूजा के लिए प्रेरित किया है।
तब तुम्हें उन लोगों को अवश्य मार डालना चाहिए।"
6उस समय मूसा और सभी इस्राएल के अग्रज (नेता)
मिलापवाले तम्बू के द्वार पर एक साथ इकट्ठे थे। एक
इस्राएली व्यक्ति एक मिद्यानी स्त्री को अपने भाईयों के
पास अपने घर लाया। उसने यह वहाँ किया जहाँ उसे
मूसा और सारे नेता देख सकते थे। मूसा और नेता बहुत
दु:खी हुए। 7याजक हारून के पोते तथा एलीआज़ार के
पुत्र पीनहास ने इसे देखा। इसलिए उसने बैठक छोड़ी
और अपना भाला उठाया। 8वह इस्राएली व्यक्ति के
पीछे–पीछे उसके खेमे में गया। तब उसने इस्राएली पुरुष
और मिद्यानी स्त्री को अपने भाले से मार डाला। उसने
अपने भाले को दोनों के शरीरों के पार कर दिया। उस
समय इस्राएल के लोगों में एक बड़ी बीमारी फैली थी।
किन्तु जब पीनहास ने इन दोनों लोगों को मार डाला तो
बीमारी रूक गई। 9इस बीमारी से चौबीस हजार लोग
मर चुके थे।
10यहोवा ने मूसा से कहा, 11"याजक हारून के पोते
तथा एलीआज़ार के पुत्र पीनहास ने इस्राएल के लोगों
को मेरे क्रोध से बचा लिया है। उसने मुझे प्रसन्न करने
के लिए कठिन प्रयत्न किया। वह वैसा ही है जैसा मैं हूँ।
उसने मेरी प्रतिष्ठा को लोगों में सुरक्षित रखने का
प्रयत्न किया। इसलिए मैं लोगों को वैसे ही नहीं मारूँगा
जैसे मैं मारना चाहता था। 12इसलिए पीनहास से कहो
कि मैं उसके साथ एक शान्ति की वाचा करना चाहता
हूँ। 13वह और उसके बाद के वंशज मेरे साथ एक
वाचा करेंगे। वे सदा याजक रहेंगे क्योंकि उसने अपने
परमेश्वर की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए कठिन प्रयत्न
किया। इस प्रकार उसने इस्राएली लोगों के दोषों के लिए
हर्जाना दिया।"
14जो इस्राएली मिद्यानी स्त्री के साथ मारा गया था
उसका नाम जिम्रि था वह साल का पुत्र था। वह शिमोन
के परिवार समूह के परिवार का नेता था 15और मारी
गई मिद्यानी स्त्री का नाम कोजबी था। वह सूर की पुत्री
थी। वह अपने परिवार का मुखिया था और वह मिद्यानी
परिवार समूह का नेता था।
16यहोवा ने मूसा से कहा, 17"मिद्यानी लोग तुम्हारे
शत्रु हैं। तुम्हें उनको मार डालना चाहिए। 18उन्होंने
पहले ही तुमको अपना शत्रु बना लिया है। उन्होंने
तुमको धोखा दिया और तुमसे अपने मिथ्या देवताओं
की पोर में पूजा करवाई और उन्होंने तुममें से एक
व्यक्ति का विवाह कोजबी के साथ लगभग करा दिया
जो मिद्यानी नेता की पुत्री थी। यही स्त्री उस समय मारी
गयी जब इस्राएली लोगों में बीमारी आई। बीमारी इसलिए
उत्पन्न की गई कि लोग पोर में मिथ्या देवता बाल की
पूजा कर रहे थे।"

दूसरी गिनती

26 बड़ी बीमारी के बाद यहोवा ने मूसा और
हारून के पुत्र याजक एलीआज़ार से बातें
की। 2उसने कहा, "सभी इस्राएली लोगों की संख्या
गिनो। हर एक परिवार को देखो और बीस वर्ष या
उससे अधिक उम्र के हर एक पुरुष को गिनो। ये वे
पुरुष हैं जो इस्राएल की सेना में सेवा करने योग्य हैं।"
3इस समय लोग मोआब के मैदान में डेरा डाले थे।
यह यरीहो के पार यरदन नदी के समीप था। इसलिए
मूसा और याजक एलीआज़ार ने लोगों से बातें कीं।
4उन्होंने कहा, "तुम्हें बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र के
हर एक पुरुष को गिनना चाहिए। यही वह आदेश था
जो यहोवा ने मूसा को पालन करने के लिए दिया था।"
यहाँ उन इस्राएल के लोगों की सूची है जो मिस्र से आए
थे:
5ये रूबेन के परिवार के लोग हैं। (रूबेन इस्राएल
(याकूब) का पहलौठा पुत्र था।) ये परिवार थे:
हनोक-हनोकी परिवार। पल्लू-पल्लिय परिवार।
6 हेस्रोन-हेस्रोनी परिवार। कर्मी-कर्मी परिवार।
7रूबेन के परिवार समूह में वे परिवार थे। योग में
सभी तैंतालीस हजार सात सौ तीस पुरुष थे।
8 पल्लू का पुत्र एलीआब था। 9 एलीआब के तीन पुत्र
थे-नमूएल, दातान और अबीराम। याद रखो कि दातान
और अबीराम वे दो नेता थे जो मूसा और हारून के
विरोधी हो गए थे। वे कोरह के अनुयायी थे और
कोरह यहोवा का विरोधी हो गया था। 10वही समय था
जब पृथ्वी फटी थी और कोरह एवं उसके सभी अनुयायियों
को निगल गई थी। कुल दो सौ पचास पुरुष मर गये थे।
यह इस्राएल के सभी लोगों के लिए एक संकेत और
चेतावनी थी।
11किन्तु कोरह के परिवार के अन्य लोग नहीं मरे।
12शिमोन के परिवार समूह के ये परिवार थे:
नमूएल-नमूएल परिवार। यामीन-यामीन परिवार।
याकीन-याकीन परिवार।
13जेरह-जेराही परिवार। शाऊल-शाऊल परिवार।
14शिमोन के परिवार समूह में वे परिवार थे। इसमें
कुल बाइस हजार पुरुष थे।
15गाद के परिवार समूह के ये परिवार हैं: सपोन-सपोन
परिवार। हाग्गी-हाग्गी परिवार। शूनी-शूनी परिवार।
16ओजनी-ओजनी परिवार। ऐरी-ऐरी परिवार।
17अरोद-अरोद परिवार। अरेली-अरेली परिवार।
18गाद के परिवार समूह के वे परिवार थे। इनमें कुल
चालीस हजार पाँच सौ पुरुष थे।
19-20 यहूदा के परिवार समूह के ये परिवार हैं:
शेला-शेला परिवार। पेरेस-पेरेस परिवार। जेरह-जेरह
परिवार। (यहूदा के दो पुत्र एर, ओनान–कनान में मर
गए थे।)
21पेरेस के ये परिवार हैं: हेस्रोन-हेस्रोनी परिवार।
हामूल-हामूल परिवार।
22यहूदा के परिवार समूह के वे परिवार थे। इनके
कुल पुरुषों की संख्या छिहत्तर हजार पाँच सौ थी।
23 इस्साकार के परिवार समूह के परिवार ये थे:
तोला-तोला परिवार। पुव्वा-पुव्वा परिवार।
24याशूब-याशूब परिवार। शिम्रोन-शिम्रोन परिवार।
25इस्साकार के परिवार समूह के वे परिवार थे।
इनमें कुल पुरुषों की संख्या चौसठ हजार तीन सौ थी।
26जबूलून के परिवार समूह के परिवार ये थे: सेरेद-सेरेद
परिवार। एलोन-एलोन परिवार। यहलेल-यहलेल परिवार।
27जबूलून के परिवार समूह के वे परिवार थे। इनमें
कुल पुरुषों की संख्या साठ हजार पाँच सौ थी।
28यूसुफ के दो पुत्र मनश्शे और एप्रैम थे। हर एक
पुत्र अपने परिवारों के साथ परिवार समूह बन गया था।
29मनश्शे के परिवार में ये थे: माकीर-माकीर परिवार,
(माकीर गिलाद का पिता था।) गिलाद-गिलाद परिवार।
30गिलाद के परिवार ये थे: ईएजेर-ईएजेर परिवार।
हेलेक-हेलेकी परिवार।
31अस्रीएल-अस्रीएली परिवार। शेकेम-शेकेमी परिवार।
32 शमीदा-शमीदा परिवार। हेपेर-हेपेरी परिवार।
33हेपेर का पुत्र सलोफाद था। किन्तु उसका कोई पुत्र
न था। केवल पुत्री थी। उसकी पुत्रियों के नाम महला,
नोआ, होग्ला, मिल्का, और तिर्सा थे।
34मनश्शे परिवार समूह के ये परिवार हैं। इनमें कुल
पुरुष बावन हजार सात सौ थे।
35एप्रैम के परिवार समूह के ये परिवार थे:
शूतेलह-शूतेलही परिवार। बेकेर-बेकेरी परिवार। तहन-
तहनी परिवार।
36एरान शूतेलह परिवार का था। उसका परिवार
एरनी था।
37एप्रैम के परिवार समूह में ये परिवार थे। कुल
पुरुषों की संख्या इसमें बत्तीस हजार पाँच सौ थी। वे ऐसे
सभी लोग हैं जो यूसुफ के परिवार समूहों के हैं।
38बिन्यामीन के परिवार समूह के परिवार ये थे:
बेला-बेला परिवार। अशबेल-अश्बेली परिवार।
अहीरम-अहीरमी परिवार।
39 शपूपाम-शपूपाम परिवार। हूपाम-हूपामी परिवार।
40बेला के परिवार में ये थे: अर्द-अर्दी परिवार। नामान-
नामानी परिवार।
41बिन्यामीन के परिवार समूह के ये सभी परिवार थे।
इसमें पुरुषों की कुल संख्या पैंतालीस हजार छ: सौ थी।
42दान के परिवार समूह में ये परिवार थे: शूहाम-शूहाम
परिवार समूह। दान के परिवार समूह से वह परिवार
समूह था।
43शूहामी परिवार समूह में बहुत से परिवार थे। इनमें
पुरुषों की कुल संख्या चौंसठ हजार चार सौ थी।

44आशेर के परिवार समूह के ये परिवार हैं: यिम्ना-यिम्नी परिवार। यिश्री-यिश्री परिवार। बरीआ-बरीआ परिवार।

45बरीआ के ये परिवार हैं: हेबेर-हेबेरी परिवार। मल्कीएल-मल्कीएली परिवार।

46(आशेर की एक पुत्री सेरह नाम की थी।) 47आशेर के परिवार समूह में वे परिवार थे। इसमें पुरुषों की संख्या तिरपन हजार चार सौ थी।

48नप्ताली के परिवार समूह के ये परिवार थे: यहसेल-यहसेली परिवार। गूनी-गूनी परिवार।

49येसेर-येसेरी परिवार। शिल्लेम-शिल्लेमी परिवार। 50नप्ताली के परिवार समूह के ये परिवार थे। इसमें पुरुषों की कुल संख्या पैंतालीस हजार चार सौ थी।

51इस प्रकार इस्राएल के पुरुषों की कुल संख्या छ: लाख एक हजार सात सौ तीस थी। 52यहोवा ने मूसा से कहा, 53"हर एक परिवार समूह को भूमि दी जाएगी। यह वही प्रदेश है जिसके लिए मैंने वचन दिया था। हर एक परिवार समूह उन लोगों के लिये पर्याप्त भूमि प्राप्त करेंगे जिन्हें गिना गया। 54बड़ा परिवार समूह अधिक भूमि पाएगा और छोटा परिवार समूह कम भूमि पाएगा। किन्तु हर एक परिवार समूह को भूमि मिलेगी जिसके लिए मैंने वचन दिया है और जो भूमि वे पाएंगे वह उनकी गिनी गई संख्या के बराबर होगी। 55हर एक परिवार समूह को पासों के आधार पर निश्चय करके धरती दी जाएगी और उस प्रदेश का वही नाम होगा जो उस परिवार समूह का होगा। 56वह प्रदेश जिसे मैंने लोगों को देने का वचन दिया, उनके उत्तराधिकार में होगा। यह बड़े और छोटे परिवार समूहों को दिया जाएगा। निर्णय करने के लिए तुम्हें पासे फेंकने होंगे।"

57लेवी का परिवार समूह भी गिना गया। लेवी के परिवार समूह के ये परिवार है:

गेर्शोन-गेर्शोन परिवार। कहात-कहात परिवार। मरारी-मरारी परिवार।

58लेवी के परिवार समूह से ये परिवार भी थे:

लिब्नि परिवार। हेब्रोनी परिवार। महली परिवार। मूशी परिवार। कहात परिवार।

अम्राम कहात के परिवार समूह का था। 59अम्राम की पत्नी का नाम योकेबेद था। वह भी लेवी के परिवार समूह की थी। उसका जन्म मिस्र में हुआ था। अम्राम और योकेबेद के दो पुत्र हारून और मूसा थे। उनकी एक पुत्री मरियम भी थी।

60हारून, नादाब, अबीहू, एलीआज़ार तथा ईतामार का पिता था। 61किन्तु नादाब और अबीहू मर गए। वे मर गए क्योंकि उन्होंने यहोवा को उस आग से भेंट चढ़ाई जो उनके लिए स्वीकृत नहीं थी।

62लेवी परिवार समूह के सभी पुरुषों की संख्या तेईस हजार थी। किन्तु ये लोग इस्राएल के अन्य लोगों के साथ नहीं गिने गए थे। वे भूमि नहीं पा सके जिसे अन्य लोगों को देने का वचन यहोवा ने दिया था। 63मूसा और याजक एलीआज़ार ने इन सभी लोगों को गिना। उन्होंने इस्राएल के लोगों को मोआब के मैदान में गिना। यह यरीहो से यरदन नदी के पार था। 64बहुत समय पहले मूसा और याजक हारून ने इस्राएल के लोगों को सीनै मरुभूमि में गिना था। किन्तु वे सभी लोग मर चुके थे। मोआब के मैदान में मूसा ने जिन लोगों को गिना, वे पहले गिने गए लोगों से भिन्न थे। 65यह इसलिए हुआ कि यहोवा ने इस्राएल के लोगों से यह कहा था कि वे सभी मरुभूमि में मरेंगे। जो केवल दो जीवित बचे थे यपुन्ने का पुत्र कालेब और नून का पुत्र यहोशू थे।

सलोफाद की पुत्रियाँ

27 सलोफाद हेपेर का पुत्र था। हेपेर गिलाद का पुत्र था। गिलाद माकीर का पुत्र था। माकीर मनश्शे का पुत्र था और मनश्शे यूसुफ का पुत्र था। सलोफाद की पाँच पुत्रियाँ थीं। उनके नाम महला, नोवा, होग्ला, मिल्का और तिर्सा था। 2ये पाँचों स्त्रियाँ मिलापवाले तम्बू में गई और मूसा, याजक एलीआज़ार, नेतागण और सब इस्राएलियों के सामने खड़ी हो गई।

पाँचों पुत्रियों ने कहा, 3"हमारे पिता उस समय मर गये जब हम लोग मरुभूमि से यात्रा कर रहे थे। वह उन लोगों में से नहीं था जो कोरह के दल में सम्मिलित हुए थे। (कोरह वही था जो यहोवा के विरुद्ध हो गया था।) हम लोगों के पिता की मृत्यु स्वाभाविक थी। किन्तु हमारे पिता का कोई पुत्र नहीं था। 4इसका तात्पर्य यह हुआ कि हमारे पिता का नाम नहीं चलेगा। यह ठीक नहीं है कि हमारे पिता का नाम मिट जाए। इसलिए हम लोग यह माँग करते हैं कि हमें भी कुछ भूमि दी जाए जिसे हमारे पिता के भाई पाएंगे।"

5इसलिए मूसा ने यहोवा से पूछा कि वह क्या करे। 6यहोवा ने उससे कहा, 7"सलोफाद की पुत्रियाँ ठीक कहती हैं। तुम्हें उनके चाचाओं के साथ-साथ उन्हें भी भूमि का भाग अवश्य देना चाहिए जो तुम उनके पिता को देते।

8"इसलिए इस्राएल के लोगों के लिए इसे नियम बना दो। 'यदि किसी व्यक्ति के पुत्र न हो और वह मर जाए तो हर एक चीज जो उसकी है, उसकी पुत्री की होगी। 9यदि उसे कोई पुत्री न हो तो, जो कुछ भी उसका है उसके भाईयों को दिया जाएगा। 10यदि उसका कोई भाई न हो तो, जो कुछ उसका है उसके पिता के भाईयों को दिया जाएगा। 11यदि उसके पिता का कोई भाई नहीं है तो, जो कुछ उसका हो उसे उसके परिवार के निकटतम सम्बन्धी को दिया जाएगा। इस्राएल के लोगों में यह

नियम होना चाहिए। यहोवा मूसा को यह आदेश देता
है।'"
12तब यहोवा ने मूसा से कहा, "उस पर्वत के ऊपर
चढ़ो। जो अबारीम पर्वत श्रृंखला में से एक है। वहाँ तुम
उस प्रदेश को देखोगे जिसे मैं इस्राएल के लोगों को दे
रहा हूँ। 13जब तुम इस प्रदेश को देख लोगे तब तुम
अपने भाई हारून की तरह मर जाओगे। 14उस बात को
याद करो जब लोग सीन की मरुभूमि में पानी के लिए
क्रोधित हुए थे। तुम और हारून दोनों ने मेरा आदेश
मानना अस्वीकार किया था। तुम लोगों ने मेरा सम्मान
नहीं किया था और लोगों के सामने मुझे पवित्र नहीं
बनाया था।" (यह पानी सीन की मरुभूमि में कादेश के
अन्तर्गत मरीबा में था।)
15मूसा ने यहोवा से कहा, 16"यहोवा परमेश्वर है वही
जानता है कि लोग क्या सोच रहे हैं। यहोवा मेरी प्रार्थना
है कि तू इन लोगों के लिये एक नेता चुन।* 17मैं
प्रार्थना करता हूँ कि यहोवा एक ऐसा नेता चुन जो उन्हें
इस प्रदेश से बाहर ले जाएगा तथा उन्हें नये प्रदेश में
पहुँचायेगा। तब यहोवा के लोग गड़ेरिया रहित भेड़ के
समान नहीं होंगे।"
18इसलिए यहोवा ने मूसा से कहा, नून का पुत्र यहोशू
नेता होगा। यहोशू बहुत बुद्धिमान है* उसे नया नेता
बनाओ। 19उससे याजक एलीआज़ार और सभी लोगों
के सामने खड़े होने को कहो। तब उसे नया नेता
बनाओ।
20"लोगों को यह दिखाओ कि तुम उसे नेता बना रहे
हो, तब सभी उसका आदेश मानेंगे। 21यदि यहोशू कोई
विशेष निर्णय लेना चाहेगा तो उसे याजक एलीआज़ार
के पास जाना होगा। एलीआज़ार ऊरीम का उपयोग
यहोवा के उत्तर को जानने के लिए करेगा। तब यहोशू
और इस्राएल के सभी लोग वह करेंगे जो परमेश्वर
कहेगा। यदि परमेश्वर कहेगा, 'युद्ध करने जाओ।' तो वे
युद्ध करने जाएंगे और यदि परमेश्वर कहे, 'घर जाओं,'
तो घर जायेंगे।"
22मूसा ने यहोवा की आज्ञा मानी। मूसा ने यहोशू से
याजक एलीआज़ार और इस्राएल के सब लोगों के सामने
खड़ा होने के लिए कहा। 23तब मूसा ने अपने हाथों को
उसके सिर पर यह दिखाने के लिए रखा कि वह नया
नेता है। उसने यह वैसे ही किया जैसा यहोवा ने कहा
था।

नित्य-भेंट

28 तब यहोवा ने मूसा से बात की। उसने कहा,
2"इस्राएल के लोगों को यह आदेश दो। उनसे
कहो कि वे ठीक समय पर निश्चयपूर्वक मुझे विशेष
भेंट चढ़ाएं। उनसे कहो कि वे अन्नबलि और होमबलि
चढ़ाएं। यहोवा उन होमबलियों की सुगन्ध पसन्द करता
है। 3इन होमबलियों को उन्हें यहोवा को चढ़ाना ही
चाहिए। उन्हें दोषरहित एक वर्ष के दो मेढ़े नित्य भेंट
के रूप में चढ़ाना चाहिए। 4मेढ़ों में से एक को सवेरे
चढ़ाओ और दूसरे मेढ़े को सन्ध्या के समय। 5इसके
अतिरिक्त दो क्वार्ट* अन्नबलि एक क्वार्ट* जैतून के
तेल के साथ मिला आटा दो।" 6(उन्होंने सीनै पर्वत पर
नित्य भेंट देनी आरम्भ की थी। यहोवा ने उन होमबलियों
की सुगन्ध पसन्द की थी।) 7लोगों को होमबलि के साथ
पेय भेंट भी चढ़ानी चाहिए। उन्हें हर एक मेमने के साथ
एक क्वार्ट दाखमधु देनी चाहिए। उस पेय भेंट को पवित्र
स्थान में वेदी पर डालो। यह यहोवा को भेंट है। 8दूसरे
मेढ़े की भेंट गोधूलि के समय चढ़ाओ। इसे सवेरे की
भेंट की तरह चढ़ाओ। वैसे ही पेय भेंट भी चढ़ाओ। ये
आग द्वारा दी गई भेंट होगी। इस की सुगन्ध यहोवा को
प्रसन्न करेगी।"

सब्त भेंट

9"शनिवार को, जो छुट्टी का दिन है, एक वर्ष के
दोष रहित दो मेमने जैतून के तेल के साथ मिले चार
क्वार्ट* अच्छे आटे की अन्नबलि और पेय भेंट चढ़ाओ।
10यह छुट्टी के दिन की विशेष भेंट है। यह भेंट नियमित
नित्य भेंट और पेय भेंट के अतिरिक्त है।"

मासिक बैठकें

11"हर एक महीने के प्रथम दिन तुम यहोवा को
होमबलि चढ़ाओगे। यह भेंट दोष रहित दो बैलों, एक
मेढ़ा और सात एक वर्ष के मेमनों की होगी। 12हर एक
बैल के साथ जैतून के तेल के साथ मिले छ: क्वार्ट*
अच्छे आटे की अन्नबलि भी चढ़ाओ। हर एक मेढ़े के
साथ जैतून के तेल के साथ मिले चार क्वार्ट अच्छे
आटे की अन्नबलि भी चढ़ाओ। 13हर एक मेमने के
साथ जैतून के तेल के साथ मिले दो क्वार्ट अच्छे आटे
की अन्नबलि भी चढ़ाओ। यह ऐसी होमबलि होगी जो
यहोवा के लिए मधुर गन्ध होगी। 14पेय भेंट में दो क्वार्ट
दाखमधु हर एक बैल के साथ, एक चौथाई क्वार्ट*

यहोवा ... चुन इसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है– सभी लोगों की आत्माओं के परमेश्वर यहोवा, इन लोगों के लिए एक नेता नियुक्त कर ।

नून ... है शाब्दिक "नून के पुत्र यहोशू को चुनो। वह व्यक्ति अपने भीतर विशेष शक्ति रखता है।" इसका अर्थ यह हो सकता है कि यहोशू बहुत बुद्धिमान था अथवा यह भी अर्थ हो सकता है कि उसमें परमेश्वर की आत्मा का निवास था।

दो क्वार्ट शाब्दिक "1/2 हिन।"

एक क्वार्ट शाब्दिक "1/4 हिन।"

चार क्वार्ट आठ प्याला।

छ: क्वार्ट अर्थात् लगभग एक लीटर।

एक चौथाई क्वार्ट मूल में "1/3 हिन।"

दाखमधु हर एक मेढ़े के साथ और एक क्वार्ट दाखमधु हर एक मेमने के साथ होगी। यह होमबलि है जो वर्ष के हर एक महीने चढ़ाई जानी चाहिए। 15नित्य दैनिक होमबलि और पेय भेंट के अतिरिक्त तुम्हें यहोवा को एक बकरा देना चाहिए। वह बकरा पापबलि होगा।

फसह पर्व

16“पहले महीने के चौदहवें दिन यहोवा के सम्मान में फसह पर्व होगा। 17उस महीने के पन्द्रहवें दिन अख़मीरी रोटी की दावत आरम्भ होती है। यह पर्व सात दिन तक रहता है। तुम वही रोटी खा सकते हो जो अख़मीरी हो। 18इस पर्व के पहले दिन तुम्हें विशेष बैठक बुलानी चाहिए। उस दिन तुम कोई काम नहीं करोगे। 19तुम यहोवा को होमबलि दोगे। यह होमबलि दोष रहित दो बैल, एक मेढ़ा और एक वर्ष के सात मेमनों की होगी। 20-21हर एक बैल के साथ जैतून के तेल के साथ मिले हुए छ: क्वार्ट अच्छे आटे, मेढ़े के साथ जैतून के तेल के साथ मिले हुए चार क्वार्ट अच्छे आटे और हर एक मेमने के साथ दो क्वार्ट जैतून के तेल के साथ मिले हुए आटे की अन्नबलि भी होगी। 22तुम्हें एक बकरा भी देना चाहिए। वह बकरा तुम्हारे लिए पापबलि होगा। यह तुम्हारे पापों को ढकेगा। 23तुम लोगों को वे भेंटे उन भेंटों के अतिरिक्त देनी चाहिए जो तुम हर एक सवेरे होमबलि के रूप में देते हो।

24उसी प्रकार तुम्हें सात दिन तक आग द्वारा भेंट देनी चाहिए और इस के साथ पेय भेंट भी देनी चाहिए। यह भेंट यहोवा के लिए मधुर गन्ध होगी। तुम्हें ये भेंटे होमबलि के अतिरिक्त देनी चाहिए जो तुम प्रतिदिन देते हो।

25तब फसह पर्व के सातवें दिन तुम एक विशेष बैठक बुलाओगे और उस दिन तुम कोई काम नहीं करोगे।

सप्ताहों का पर्व (कटनी का पर्व)

26“प्रथम फल का पर्व या सप्ताहों के पर्व के समय तुम यहोवा को नये फसल की अन्नबलि दो। उस समय तुम्हें एक विशेष बैठक भी बुलानी चाहिए। तुम उस दिन कोई काम नहीं करोगे। 27तुम होमबलि चढ़ाओगे। वह बलि यहोवा के लिए सुगन्ध होगी। तुम दोष रहित दो साँड़, एक मेढ़ा और एक वर्ष के सात मेमनों की भेंट चढ़ाओगे। 28तुम हर एक साँड़ के साथ जैतून के तेल के साथ मिले हुए छ: क्वार्ट अच्छे आटे, हर एक मेढ़े के साथ चार क्वार्ट 29और हर एक मेमने के साथ दो क्वार्ट आटे की भेंट चढ़ाओगे। 30तुम्हें अपने पापों को ढकने के लिए एक बकरे की बलि चढ़ानी चाहिए। 31तुम्हें यह भेंट प्रतिदिन होमबलि और इसकी अन्नबलि के अतिरिक्त चढ़ानी चाहिए। निश्चय कर लो कि जानवरों में कोई दोष न हो और यह निश्चय कर लो कि पेय भेंट ठीक है।

बिगुल का पर्व

29 “सातवें महीने के प्रथम दिन एक विशेष बैठक होगी। तुम उस दिन कोई काम नहीं करोगे। वह बिगुल बजाने* का दिन है। 2तुम होमबलि चढ़ाओगे। ये भेंटे यहोवा के लिए मधुर गन्ध होगी। तुम दोष रहित एक साँड़, एक मेढ़ा और एक वर्ष के सात मेमनों की भेंट चढ़ाओगे। 3तुम छ: क्वार्ट तेल मिला अच्छा आटा भी बैल के साथ, चार क्वार्ट मेढ़े के साथ और 4 सात मेमनों में से हर एक के साथ दो क्वार्ट आटे की भेंट चढ़ाओगे। 5इसके अतिरिक्त, पापबलि के लिए एक बकरा भी चढ़ाओगे। यह तुम्हारे पापों को ढकेगी। 6ये भेंटे नवचन्द्र बलि और उसकी अन्नबलि के अतिरिक्त होगी और ये नित्य की भेंटों, इसकी अन्नबलियों तथा पेय भेंटों के अतिरिक्त होगी। ये नियम के अनुसार की जानी चाहिए। इन्हें आग में जलाना चाहिए। इसकी सुगन्धि यहोवा को प्रसन्न करेगी।

प्रायश्चित का दिन

7“सातवें महीने के दसवें दिन एक विशेष बैठक होगी। उस दिन तुम उपवास करोगे।* और तुम कोई काम नहीं करोगे। 8तुम होमबलि दोगे। यह यहोवा के लिए मधुर गन्ध होगी। तुम दोष रहित दो साँड़, एक मेढ़ा और एक वर्ष के सात मेमनों की भेंट चढ़ाओगे। 9तुम हर एक बैल के साथ जैतून के मिले हुए छ: क्वार्ट आटे, मेढ़े के साथ चार क्वार्ट आटे 10और हर एक सातों मेमनों के साथ दो क्वार्ट आटे की भेंट चढ़ाओगे। 11तुम एक बकरा भी पापबलि के रूप में चढ़ाओगे। यह प्रायश्चित के दिन की पापबलि के अतिरिक्त होगी। यह दैनिक बलि, अन्न और पेय भेंटों के भी अतिरिक्त होगी।

बटोरने का पर्व

12“सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन एक विशेष बैठक होगी। तुम उस दिन कोई काम नहीं करोगे। तुम यहोवा के लिए सात दिन तक छुट्टी मनाओगे। 13तुम होमबलि चढ़ाओगे। यह यहोवा के लिए मधुर गन्ध होगी। तुम दोष रहित तेरह साँड़, दो मेढ़े और एक-एक वर्ष के चौदह मेमने भेंट चढ़ाओगे। 14तुम तेरह बैलों में से हर एक के साथ जैतून के साथ मिले हुए छ: क्वार्ट आटे, दोनों मेढ़ों में से हर एक के लिए चार क्वार्ट 15और चौदह मेढ़ों में से हर एक के लिए दो क्वार्ट आटे की भेंट चढ़ाओगे।

बिगुल बजाना या ‘चिल्लाना’ और शोर मचाना व खुशी मनाना भी शामिल है।

उपवास करोगे शाब्दिक, “तुम अपनी आत्मा को विनीत करोगे।”

16तुम्हें एक बकरा भी पापबलियों के रूप में अर्पित करना चाहिए। यह दैनिकबलि, अन्न और पेय भेंट के अतिरिक्त होगी।

17"इस पर्व के दूसरे दिन तुम्हें दोष रहित बारह साँड़, दो मेढ़ें और एक-एक वर्ष के चौदह मेमनों की भेंट चढ़ानी चाहिए। 18तुम्हें साँड़, मेढ़ों और मेमनों के साथ अपेक्षित मात्रा में अन्न और पेय भेंट भी चढ़ानी चाहिए। 19तुम्हें पापबलि के रूप में एक बकरे की भी भेंट देनी चाहिए। यह दैनिक बलि और अन्नबलि तथा पेय भेंट के अतिरिक्त भेंट होगी।

20"इस छुट्टी के तीसरे दिन तुम्हें दोष रहित ग्यारह साँड़, दो मेढ़े और एक-एक वर्ष के चौदह मेमनों की भेंट चढ़ानी चाहिए। 21तुम्हें बैलों, मेढों और मेमनों के साथ अपेक्षित मात्रा में अन्न और पेय की भेंट भी चढ़ानी चाहिए। 22तुम्हें पापबलि के रूप में एक बकरे की भी भेंट देनी चाहिए। यह दैनिक बलि और अन्नबलि तथा पेय भेंट के अतिरिक्त भेंट होनी चाहिए।

23"इस छुट्टी के चौथे दिन तुम्हें दोष रहित दस साँड़, दो मेढ़े और एक-एक वर्ष के चौदह मेमनों की भेंट चढ़ानी चाहिए। 24तुम्हें बैलों, मेढ़ों और मेमनों के साथ अपेक्षित मात्रा में अन्न और पेय की भी भेंट चढ़ानी चाहिए। 25तुम्हें पापबलि के रूप में एक बकरे की भी भेंट देनी चाहिए। यह दैनिक बलि और अन्नबलि तथा पेय भेंट के अतिरिक्त भेंट होगी।

26"इस छुट्टी के पाँचवें दिन तुम्हें दोष रहित नौ साँड़, दो मेढ़े और एक-एक वर्ष के चौदह मेमनों की भेंट चढ़ानी चाहिए। 27तुम्हें बैलों, मेढ़ों और मेमनों के साथ अपेक्षित मात्रा में अन्न तथा पेय की भी भेंट चढ़ानी चाहिए। 28तुम्हें पापबलि के रूप में एक बकरे की भी भेंट देनी चाहिए। यह दैनिक बलि और अन्नबलि तथा पेय भेंट के अतिरिक्त भेंट होगी।

29"इस छुट्टी के छठे दिन तुम्हें दोष रहित आठ साँड़, दो मेढ़े और एक-एक वर्ष के चौदह मेमनों की भेंट चढ़ानी चाहिए। 30तुम्हें बैलों, मेढ़ों और मेमनों के साथ अपेक्षित मात्रा में अन्न और पेय की भेंट भी चढ़ानी चाहिए। 31तुम्हें पापबलि के रूप में एक बकरे की भी भेंट देनी चाहिए। यह दैनिक बलि और अन्नबलि तथा पेय भेंट के अतिरिक्त भेंट होगी।

32"इस छुट्टी के सातवें दिन तुम्हें दोष रहित सात साँड़, दो मेढ़े, और एक-एक वर्ष के चौदह मेमनों की भेंट चढ़ानी चाहिए। 33तुम्हें बैलों, मेढ़ों और मेमनों के साथ अपेक्षित मात्रा में अन्न और पेय की भी भेंट चढ़ानी चाहिए। 34तुम्हें पापबलि के रूप में एक बकरे की भी भेंट देनी चाहिए। यह दैनिक बलि और अन्नबलि तथा पेय भेंट के अतिरिक्त भेंट होगी।

35"इस छुट्टी का आठवाँ दिन तुम्हारी विशेष बैठक का दिन है। तुम्हें उस दिन कोई काम नहीं करना चाहिए। 36तुम्हें होमबलि चढ़ानी चाहिए। ये आग द्वारा दी गई भेंट होगी। यह यहोवा के लिए मधुर सुगन्ध होगी। तुम्हें दोषरहित एक साँड़, एक मेढ़ा और एक-एक वर्ष के सात मेमने भेंट में चढ़ाने चाहिए। 37तुम्हें साँड़, मेढ़ा और मेमनों के लिए अपेक्षित मात्रा में अन्न और पेय की भी भेंट देनी चाहिए। 38तुम्हें पापबलि के रूप में एक बकरे की भी भेंट देनी चाहिए। यह दैनिक बलि और अन्नबलि तथा पेय भेंट के अतिरिक्त भेंट होनी चाहिए।

39"वे (तुम्हारे) विशेष छुट्टियाँ यहोवा के सम्मान के लिए हैं। तुम्हें उन विशेष मनौतियों, स्वेच्छा भेंटों, होमबलियों मेलबलियों या अन्न और पेय भेंटें, जो तुम यहोवा को देना चाहते हो, उसके अतिरिक्त इन विशेष दिनों को मनाना चाहिए।"

40मूसा ने इस्राएल के लोगों से उन सभी बातों को कहा जो यहोवा ने उसे आदेश दिया था।

विशेष दिए गए वचन

30 मूसा ने सभी इस्राएली परिवार समूहों के नेताओं से बातें कीं। मूसा ने यहोवा के इन आदेशों के बारें में उनसे कहा: 2यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर को विशेष वचन देता है या यदि वह व्यक्ति यहोवा को कुछ विशेष अर्पित करने का वचन देता है तो उसे वैसा ही करने दो। किन्तु उस व्यक्ति को ठीक वैसा ही करना चाहिए जैसा उसने वचन दिया है।

3सम्भव है कि कोई युवती अपने पिता के घर पर ही रहती हो और वह युवती यहोवा को कुछ चढ़ाने का विशेष वचन देती है। 4और उसका पिता इस वचन के विषय में सुनता है और उसे स्वीकार कर लेता है तो उस युवती को उस वचन को अवश्य ही पूरा कर देना चाहिए जिसे करने का उसने वचन दिया है। 5किन्तु यदि उसका पिता उसके दिये गये वचन के बारे में सुन कर उसे स्वीकार नहीं करता तो उस युवती को वह वचन पूरा नहीं करना है। उसके पिता ने उसे रोका अत: यहोवा उसे क्षमा करेगा।

6सम्भव है कोई स्त्री अपने विवाह से पहले यहोवा को कोई वचन देती है अथवा बात ही बात में बिना सोचे विचारे कोई वचन ले लेती है और बाद में उसका विवाह हो जाता है 7और पति दिये गये वचन के बारे में सुनता है और उसे स्वीकार करता है तो उस स्त्री को अपने दिये गए वचन के अनुसार काम को पूरा करना चाहिए। 8किन्तु यदि पति दिये गए वचन के बारे में सुनता है और उसे स्वीकार नहीं करता तो स्त्री को अपने दिये गए वचन को पूरा नहीं करना पड़ेगा। उसके पति ने उसका वचन तोड़ दिया और उसने उसे उसकी कही बात को पूरा नहीं करने दिया, अत: यहोवा उसे क्षमा करेगा।

9कोई विधवा या तलाक दी गई स्त्री विशेष वचन दे सकती है। यदि वह ऐसा करती है तो उसे ठीक अपने वचन के अनुसार करना चाहिए। 10एक विवाहित स्त्री यहोवा को कुछ चढ़ाने का वचन दे सकती है। 11यदि उसका पति दिये गए वचन के बारे में सुनता है और उसे अपने वचन को पूरा करने देता है, तो उसे ठीक अपने दिए वचनों के अनुसार ही वह कार्य करना चाहिए। 12किन्तु यदि उसका पति उसके दिये गए वचन को सुनता है और उसे वचन पूरा करने से इन्कार करता है, तो उसे अपने दिये वचन के अनुसार वह कार्य पूरा नहीं करना पड़ेगा। इसका कोई महत्व नहीं होगा कि उसने क्या वचन दिया था, उसका पति उस वचन को भंग कर सकता है। यदि उसका पति वचन को भंग करता है, तो यहोवा उसे क्षमा करेगा। 13एक विवाहित स्त्री यहोवा को कुछ चढ़ाने का वचन दे सकती है या स्वयं को किसी चीज़ से वंचित रखने का वचन दे सकती है* या वह परमेश्वर को कोई विशेष वचन दे सकती है। उसका पति उन वचनों में से किसी को रोक सकता है या पति उन वचनों में से किसी को पूरा करने दे सकता है।

14पति अपनी पत्नी को कैसे अपने वचन पूरा करने देगा? यदि वह दिये वचन के बारे में सुनता है और उन्हें रोकता नहीं है तो स्त्री को अपने दिए वचन के अनुसार कार्य को पूरा करना चाहिए। 15किन्तु यदि पति दिये गए वचन के बारे में सुनता है और उन्हें रोकता है तो उसके वचन तोड़ने का उत्तरदायित्व पति पर होगा।*

16ये आदेश है जिन्हें यहोवा ने मूसा को दिया। ये आदेश एक व्यक्ति और उसकी पत्नी के बारे में है तथा पिता और उसकी उस पुत्री के बारे में है जो युवती हो और अपने पिता के घर में रह रही हो।

इस्राएल ने मिद्यानियों के विरुद्ध प्रत्याक्रमण किया

31 यहोवा ने मूसा से बात की। उसने कहा, 2 "मैं इस्राएल के लोगों के साथ मिद्यानियों ने जो किया है उसके लिए उन्हें दण्ड दूँगा। उसके बाद, मूसा, तू मर जाएगा।"*

3इसलिए मूसा ने लोगों से बात की। उसने कहा, "अपने कुछ पुरुषों को युद्ध के लिये तैयार करो। यहोवा उन व्यक्तियों का उपयोग मिद्यानियों को दण्ड देने में करेगा। 4ऐसे एक हजार पुरुषों को इस्राएल के हर एक कबीले से चुनो। 5इस्राएल के सभी परिवार समूहों से बारह हजार सैनिक होंगे।"

6मूसा ने उन बारह हजार पुरुषों को युद्ध के लिए भेजा। उसने याजक एलीआज़ार को उनके साथ भेजा। एलीआज़ार ने अपने साथ पवित्र वस्तुएं, सींग और बिगुल ले लिये। 7इस्राएली लोगों के साथ वैसे ही लड़े जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था। उन्होंने सभी मिद्यानीं पुरुषों को मार डाला। 8जिन लोगों को उन्होंने मार डाला उनमें एवी, रेकेम, सूर, हूर, और रेबा ये पाँच मिद्यानी राजा थे। उन्होंने बोर के पुत्र बिलाम को भी तलवार से मार डाला।

9इस्राएल के लोगों ने मिद्यानी स्त्रियों और बच्चों को बन्दी बनाया। उन्होंने उनकी सारी रेवड़ों, मवेशियों के झुण्डों और अन्य चीज़ों को ले लिया। 10तब उन्होंने उनके उन सारे खेमों और नगरों में आग लगा दी जहाँ वे रहते थे। 11उन्होंने सभी लोगों और जानवरों को ले लिया, 12और उन्हें मूसा, याजक एलीआज़ार और इस्राएल के सभी लोगों के पास लाए। वे उन सभी चीज़ों को इस्राएल के डेरे में लाए जिन्हें उन्होंने वहाँ प्राप्त किया। इस्राएल के लोग मोआब में स्थित यरदन घाटी में डेरा डाले थे। यह यरीहो के समीप यरदन नदी के पूर्व की ओर था। 13तब मूसा, याजक एलीआज़ार और लोगों के नेता सैनिकों से मिलने के लिए डेरों से बाहर गए।

14मूसा सेनापतियों पर बहुत क्रोधित था। वह उन एक हजार की सेना के संचालकों और सौ की सेना के संचालकों पर क्रोधित था जो युद्ध से लौट कर आए थे। 15मूसा ने उनसे कहा, "तुम लोगों ने स्त्रियों को क्यों जीवित रहने दिया? 16देखो यह स्त्री ही थी जिसके कारण बिलाम की घटना में इस्रालियों के लिए समस्याएं पैदा हुई और पोर में वे यहोवा के विरुद्ध हो गये जिससे इस्राएल के लोगों को महामारी झेलनी पड़ी। 17अब सभी मिद्यानी लड़कों को मार डालो और उन सभी मिद्यानी स्त्रियों को मार डालो जो किसी व्यक्ति के साथ रही हैं। उन सभी स्त्रियों को मार डालो जिनका किसी पुरुष के साथ यौन सम्बन्ध था। 18तुम केवल उन सभी लड़कियों को जीवित रहने दे सकते हो जिनका किसी पुरुष के साथ यौन सम्बन्ध नहीं हुआ है। 19तब अन्य व्यक्तियों को मारने वाले तुम लोगों को सात दिन तक डेरे के बाहर रहना पडेगा। तुम्हें डेरे से बाहर रहना होगा यदि तुमने किसी शव को छूआ हो। तीसरे दिन, तुम्हें और तुम्हारें बन्दियों को अपने आप को शुद्ध करना होगा। तुम्हें वही कार्य सातवें दिन फिर करना होगा। 20तुम्हें अपने सभी कपड़े धोने चाहिए। तुम्हें चमड़े की बनी हर वस्तु ऊनी और लकड़ी की बनी वस्तुओं को भी धोना चाहिए। तुम्हें शुद्ध हो जाना चाहिए।"

21तब याजक एलीआज़ार ने सैनिकों से बात की। उसने कहा, "ये नियम वे ही हैं जिन्हें यहोवा ने मूसा को

स्वंय को ... सकती है शाब्दिक, "अपनी आत्मा को विनीत करना।" इसका सामान्य तात्पर्य है कि अपने शरीर को कुछ कष्ट दिया जाय, जैसे उपवास रखना।

पति ... होगा शाब्दिक, "वह पत्नी के दोष का भागी होता है।"

तू मर जाएगा शाब्दिक, "अपने पूर्वजों के साथ हो जाओगे।"

दिए थे। वे नियम युद्ध से लौटने वाले सैनिकों के लिये
हैं। **22-23**किन्तु जो चीज़ें आग में डाली जा सकती हैं
उनके बारे में अलग-अलग नियम हैं। तुम्हें सोना, चाँदी,
काँसा, लोहा, टिन या सीसे को आग में डालना चहिए
और जब उन्हें पानी से धोओ वे शुद्ध हो जाएंगी। यदि
चीज़ें आग में न डाली जा सकें तो तुम्हें उन्हें पानी से
धोना चाहिए। **24**सातवें दिन तुम्हें अपने सारे वस्त्र धोने
चाहिये। जब तुम शुद्ध हो जाओगे।"

25उसके बाद तुम डेरे में आ सकते हो। तब यहोवा ने
मूसा से कहा, **26**"मूसा तुम्हें याजक एलीआज़ार और
सभी नेताओं को चाहिये कि तुम उन बन्दियों, जानवरों
और सभी चीजों को गिनों जिन्हें सैनिक युद्ध से लाए हों।

27तब उन चीज़ों को युद्ध में भाग लेने वाले सैनिकों
और शेष इस्राएल के लोगों में बाँट देना चाहिए। **28**जो
सैनिक युद्ध में भाग लेने गये थे उनसे उन चीज़ों का
आधा लो। वह हिस्सा यहोवा का होगा। हर एक पाँच सौ
चीजों में से एक यहोवा का हिस्सा होगा। इसमें व्यक्ति
मवेशी, गधे और भेड़े सम्मिलित हैं। **29**सैनिकों ने युद्ध में
जो चीज़ें प्राप्त कीं उनका आधा हर एक से लो। तब
उन चीज़ों को (प्रत्येक पाँच सौ में से एक) याजक
एलीआज़ार को दो। वह भाग यहोवा का होगा **30**और
तब बाकी के लोगों के आधे में से हर एक पचास चीज़ों
में से एक चीज़ लो। इसमें व्यक्ति, मवेशी, गधा, भेड़ या
कोई अन्य जानवर शामिल हैं। यह हिस्सा लेवीवंशी को
दो। क्यों? क्योंकि लेवीवंशी यहोवा के पवित्र तम्बू की
देखभाल करते हैं।"

31इस प्रकार मूसा और याजक एलीआज़ार ने वही
किया जो मूसा को यहोवा का आदेश था। **32**सैनिकों ने
छः लाख पचहत्तर हजार भेड़ें, **33**बहत्तर हजार मवेशी,
34एकसठ हजार गधे, **35**बत्तीस हजार स्त्रियाँ लूटी थी। ये
ऐसी स्त्रियाँ थीं जिनका किसी पुरुष के साथ यौन सम्बन्ध
नहीं हुआ था। **36**जो सैनिक युद्ध में गए थे उन्होंने अपने
हिस्से की तीन लाख सैंतीस हजार पाँच सौ भेड़ें प्राप्त
कीं। **37**उन्होंने छः सौ पचहत्तर भेड़ें यहोवा को दीं।
38सैनिकों को छत्तीस हजार मवेशी मिले। उन्होंने बहत्तर
यहोवा को दिए। **39**सैनिकों ने साढ़े तीस हजार गधे प्राप्त
किये। उन्होंने यहोवा को एकसठ गधे दिये। **40**सैनिकों
को सोलह हजार स्त्रियाँ मिलीं। उन्होंने बत्तीस स्त्रियाँ
यहोवा को दीं। **41**यहोवा के आदेश के अनुसार मूसा ने
यहोवा के लिए दी गई उन सारी भेटों को याजक
एलीआज़ार को दे दिया।

42तब मूसा ने लोगों को प्राप्त आधे हिस्से को गिना।
यह वह हिस्सा था जिसे मूसा ने युद्ध में भाग लेने वाले
सैनिकों से लिया था। **43**लोगों ने तीन लाख सैंतीस हजार
पाँच सौ भेड़ें, **44**छत्तीस हजार मवेशी, **45**तीस हजार पाँच
सौ गधे **46**और सोलह हजार स्त्रियाँ प्राप्त कीं। **47**मूसा ने
हर एक पचास चीज़ों पर एक चीज़ यहोवा के लिए ली।
इसमें जानवर और व्यक्ति दोनों शामिल थे। तब उन
चीज़ों को उसने लेवीवंशी को दे दिया। क्यों? क्योंकि वे
यहोवा के पवित्र तम्बू की देखभाल करते थे। मूसा ने
यह यहोवा के आदेश के अनुसार किया।

48तब सेना के संचालक एक हजार सैनिकों के सेनापति
तथा एक सौ सैनिकों के सेनापति मूसा के पास गए।
49उन्होंने मूसा से कहा, "तेरे सेवक हम लोगों ने अपने
सभी सैनिकों को गिना है। हम लोगों में से कोई भी कम
नहीं है। **50**इसलिए हम लोग हर एक सैनिक से यहोवा
की भेंट ला रहे हैं। हम लोग सोने की चीज़ें बाज़ूबन्द,
शुजबन्द, अंगूठी, कान की बालियाँ और हार ला रहे हैं।
यहोवा को ये भेंटे हमारे पापों के भुगतान के लिए हैं।"

51इसलिए मूसा ने वे सभी सोने की चीज़ें लीं और
याजक एलीआज़ार को उन्हें दिया। **52**एक हजार सैनिकों
और सौ सैनिकों के सेनापतियों ने जो सोना एकत्र किया
और यहोवा को दिया उसका वजन लगभग चार सौ
बीस पौंड * था। **53**प्रत्येक सैनिक ने युद्ध में प्राप्त चीज़ों
का अपना हिस्सा अपने पास रख लिया। **54**मूसा और
एलीआज़ार ने एक हजार सैनिकों और एक सौ सैनिकों
के सेनापतियों से सोना लिया। तब उन्होंने सोने को
मिलापवाले तम्बू में रखा। यह भेंट एक यादगार * के
रूप में इस्राएल के लोगों के लिए यहोवा के सामने थी।

यरदन नदी के पूर्व के परिवार समूह

32 रूबेन और गाद के परिवार समूहों के पास
भारी संख्या में मवेशी थे। उन लोगों ने याजेर
और गिलाद के समीप की भूमि को देखा। उन्होंने सोचा
कि वह भूमि उनके मवेशियों के लिए ठीक है। **2**इसलिए
रूबेन और गाद परिवार समूह के लोग मूसा के पास
आए। उन्होंने मूसा, याजक एलीआज़ार तथा लोगों के
नेताओं से बात की। **3-4** उन्होंने कहा, "तेरे सेवक, हम
लोगों के पास भारी संख्या में मवेशी हैं और वह भूमि
जिसे यहोवा ने इस्राएल के लोगों को युद्ध में दिया है,
मवेशियों के लिए ठीक है। इस प्रदेश में अतारोत,
दीबोन याजेर, निम्रा, हेशबोन, एलाले, सबाम नबो और
बोन शामिल हैं। **5**यदि तेरी स्वीकृति हो तो हम लोग
चाहेंगे कि यह प्रदेश हम लोगों को दिया जाए। हम लोगों
को यरदन नदी की दूसरी ओर न ले जाए।"

6मूसा ने रूबेन और गाद के परिवार समूह से पूछा,
"क्या तुम लोग यहाँ बसोगे और अपने भाइयों को यहाँ
से जाने और युद्ध करने दोगे? **7**तुम लोग इस्राएल के
लोगों को निरुत्साहित क्यों करना चाहते हो? तुम लोग
उन्हें नदी पार करने की सोचने नहीं दोगे और जो प्रदेश

चार सौ बीस पौंड मूल में, 16,750 शेकेल।

यादगार कोई ऐसी चीज़ जिसे लोग इस रूप में याद करते हैं कि कभी अतीत में ऐसा हुआ।

यहोवा ने उन्हें दिया है उसे नहीं लेने दोगे। 8तुम्हारे
पिताओं ने मेरे साथ ऐसा ही किया। कादेशबर्ने से मैंने
जासूसों को प्रदेश की छान–बीन करने के लिये भेजा।
9वे लोग एश्कोल घाटी तक गए। उन्होंने प्रदेश को देखा
और उन लोगों ने इस्राएल के लोगों को उस धरती पर
जाने को निरुत्साहित किया। उन लोगों ने इस्राएल के
लोगों को उस प्रदेश में जाने की इच्छा नहीं करने दी
जिसे यहोवा ने उनको दे दिया था। 10यहोवा लोगों पर
बहुत क्रोधित हुआ। यहोवा ने यह निर्णय सुनाया: 11'मिस्र
से आने वाले लोगों और बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र
का कोई भी व्यक्ति इस प्रदेश को नहीं देख पाएगा। मैंने
इब्राहीम, इसहाक और याकूब को यह वचन दिया था।
मैंने यह प्रदेश इन व्यक्तियों को देने का वचन दिया था।
किन्तु इन्होंने मेरा अनुसरण पूरी तरह नहीं किया।
इसलिए वे इस प्रदेश को नहीं पाएंगे। 12केवल कनजी
यपुन्ने के पुत्र कालेब और नून के पुत्र यहोशू ने यहोवा
का पूरी तरह अनुसरण किया।'

13"यहोवा इस्राएल के लोगों के विरुद्ध बहुत क्रोधित
था। इसलिए यहोवा ने लोगों को चालीस वर्ष तक मरुभूमि
में रोके रखा। यहोवा ने उनको तब तक वहाँ रोके
रखा जब तक वे लोग, जिन्होंने यहोवा के विरुद्ध पाप
किए थे, मर न गए 14और अब तुम लोग वही कर रहे
हो जो तुम्हारे पूर्वजों ने किया। अरे पापियों! क्या तुम
चाहते हो कि यहोवा इस्राएल के लोगों के विरुद्ध और
अधिक क्रोधित हो? 15यदि तुम लोग यहोवा का अनुसरण
करना छोड़ोगे तो यहोवा इस्राएल को और अधिक
समय तक मरुभूमि में ठहरा देगा। तब तुम इन सभी
लोगों को नष्ट कर दोगे!"

16किन्तु रूबेन और गाद परिवार समूहों के लोग मूसा
के पास गए। उन्होंने कहा, "यहाँ हम लोग अपने बच्चों
के लिए नगर और अपने जानवरों के लिए बाड़े बनाएंगे।
17तब हमारे बच्चे उन अन्य लोगों से सुरक्षित रहेंगे जो
इस प्रदेश में रहते हैं। किन्तु हम लोग प्रसन्नता से आगे
बढ़कर इस्राएल के लोगों की सहायता करेंगे। हम लोग
उन्हें उनके प्रदेश में ले जाएंगे। 18हम लोग तब तक घर
नहीं लौटेंगे जब तक हर एक व्यक्ति इस्राएल में अपनी
भूमि का हिस्सा नहीं पा लेता। 19हम लोग यरदन नदी
के पश्चिम में कोई भूमि नहीं लेंगे। नहीं! हम लोगों की
भूमि का भाग यरदन नदी के पूर्व ही है।"

20मूसा ने उनसे कहा, "यदि तुम लोग यह सब करोगे
तो यह भूमि तुम लोगों की होगी। किन्तु तुम्हारे सैनिक
यहोवा के सामने युद्ध में जाने चाहिए। 21तुम्हारे सैनिकों
को यरदन नदी पार करनी चाहिए और शत्रु को उस
देश को छोड़ने के लिए विवश करना चाहिए। 22जब
हम सभी को भूमि प्राप्त कराने में यहोवा सहायता कर
चुके तब तुम घर वापस जा सकते हो। तब यहोवा और
इस्राएल तुमको अपराधी नहीं मानेंगे। तब यहोवा तुमको
यह प्रदेश लेने देगा। 23 किन्तु यदि तुम ये बातें पूरी नहीं
करते हो, तो तुम लोग यहोवा के विरुद्ध पाप करोगे
और यह गाँठ बांधो कि तुम अपने पाप के लिए दण्ड
पाओगे। 24अपने बच्चों के लिए नगर और अपने जानवरों
के लिए बाड़े बनाओ। किन्तु उसके बाद उसे पूरा करो
जिसे करने का तुमने वचन दिया है।"

25तब गाद और रूबेन परिवार समूह के लोगों ने मूसा
से कहा, "हम तेरे सेवक हैं। तू हमारा स्वामी है। इसलिए
हम लोग वही करेंगे जो तू कहता है। 26हमारी पत्नियाँ,
बच्चे और हमारे जानवर गिलाद नगर में रहेंगे। 27किन्तु
तेरे सेवक, हम यरदन नदी को पार करेंगे। किन्तु हम
लोग यहोवा के सामने अपने स्वामी के कथनानुसार
युद्ध में कूद पड़ेंगे।"

28मूसा ने याजक एलीआज़ार, नून के पुत्र यहोशू
और इस्राएल के परिवार समूह के सभी नेताओं को
उनके बारे में आज्ञा दी। 29मूसा ने उनसे कहा, "गाद
और रूबेन के पुरुष यरदन नदी को पार करेंगे। वे
यहोवा के आगे युद्ध में धावा बोलेंगे। वे देश जीतने में
तुम्हारी सहायता करेंगे और तुम लोग गिलाद का प्रदेश
उनके हिस्से के रूप में उन्हें दोगे। 30वे वचन देते हैं कि
वे कनान देश को जीतने में तुम्हारी सहायता करेंगे।"

31गाद और रूबेन के लोगों ने उत्तर दिया, "हम लोग
वही करने का वचन देते हैं जो यहोवा का आदेश है।
32हम लोग यरदन नदी पार करेंगे और कनान देश पर
यहोवा के सामने धावा बोलेंगे और हमारे देश का भाग
यरदन नदी के पूर्व की भूमि होगी।"

33इस प्रकार मूसा ने उस प्रदेश को गाद, रूबेन और
मनश्शे परिवार समूह के आधे लोगों को दिया। मनश्शे
यूसुफ का पुत्र था। उस प्रदेश में एमोरियों के राजा
सीहोन का राज्य और बाशान के राजा ओग का राज्य
शामिल थे। उस प्रदेश में उस क्षेत्र के चारों ओर के
नगर भी शामिल थे।

34गाद के लोगों ने दीबोन, अतारोत, अरोएर, 35अत्रौत,
शोपान, याजेर, योगबहा, 36बेतनिम्रा और बेथारान नगरों
को बनाया। उन्होंने मजबूत चाहारदीवारों के साथ नगरों
को बनाया और अपने जानवरों के लिए बाड़े बनाए।

37रूबेन के लोगों ने हेशबोन, एलाले, कियर्तैम, 38नबो,
बालमोन, मूसा-बॉथ और तित्पा नगर बनाए। उन्होंने
जिन नये नगरों को फिर से बनाया उनके पुराने नामों
का ही उपयोग किया गया किन्तु नबो और बालमोन
को नये नाम दिये गए।

39मनश्शे परिवार समूह की सन्तान माकीर से उत्पन्न
लोग गिलाद को गए। उन्होंने नगर को हराया। उन्होंने
उन एमोरी को हराया जो वहाँ रहते थे। 40इसलिए
मनश्शे के परिवार समूह के माकीर को मूसा ने गिलाद
दिया। इसलिए उसका परिवार वहाँ बस गया। 41मनश्शे
की सन्तान याईर ने वहाँ के छोटे नगरों को हराया। तब

उसने उन्हें याईर के नगर नाम दिया। 42नोबह ने कनात
और उसके पास के छोटे नगरों को हराया। तब उसने
उस स्थान का नाम अपने नाम पर नोबह रखा।

मिस्र से इस्राएलियों की यात्रा

33 मूसा और हारून ने इस्राएल के लोगों को मिस्र
से समूहों में निकाला ये वे स्थान हैं जिनकी
उन्होंने यात्रा की। 2मूसा ने उन यात्राओं के बारे में
लिखा। मूसा ने वे बातें लिखीं जिन्हें यहोवा चाहता था। वे
यात्रायें यहाँ हैं। 3प्रथम महीने के पन्द्रहवें दिन उन्होंने
रामसेस छोड़ा। फसह पर्व के बाद सवेरे, इस्राएल के
लोगों ने विजय के साथ अपने अस्त्र-शस्त्रों को उठाए
हुए मिस्र से बाहर प्रस्थान किया। मिस्र के सभी लोगों ने
उन्हें देखा। 4मिस्री उन लोगों को जला रहे थे जिन्हें
यहोवा ने मार डाला था। वे अपने सभी पहलौठे पुत्रों को
जला रहे थे। यहोवा ने मिस्र के देवताओं के विरुद्ध
अपना निर्णय दिखाया था।

5इस्राएल के लोगों ने रामसेस को छोड़ा और सुक्कोत
की यात्रा की। 6सुक्कोत से उन्होंने एताम की यात्रा की।
वहाँ पर लोगों ने मरुभूमि के छोर पर डेरे डाले। 7उन्होंने
एताम को छोड़ा और पीहहीरोत को गए। यह बालसपोन
के पास था। लोगों ने मिगदोल के पास डेरे डाले।

8लोगों ने पीहहीरोत छोड़ा और समुद्र के बीच से चले।
वे मरुभूमि की ओर चले। तब वे तीन दिन तक एताम
मरुभूमि से होकर चले। लोगों ने मारा में डेरे डाले।
9लोगों ने मारा को छोड़ा और एलीम गए तथा वहाँ डेरे
डाले। वहाँ पर बारह पानी के सोते थे और सत्तर खजूर
के पेड़ थे। 10लोगों ने एलीम छोड़ा और लाल सागर के
पास डेरे डाले।

11लोगों ने लालसागर को छोड़ा और सीन मरुभूमि में
डेरे डाले।

12लोगों ने सीन मरुभूमि को छोड़ा और दोपका में डेरे
डाले।

13लोगों ने दोपका छोड़ा और आलूश में डेरे डाले।

14 लोगों ने आलूश छोड़ा और रपीदीम में डेरे डाले।
वहाँ लोगों को पीने के लिए पानी नहीं था।

15लोगों ने रपीदीम छोड़ा और सीनै मरुभूमि में डेरे
डाले।

16लोगों ने सीनै मरुभूमि को छोड़ा और किब्रोथत्तावा
में डेरे डाले।

17लोगों ने किब्रोथत्तावा छोड़ा और हसेरोत में डेरे
डाले।

18लोगों ने हसेरोत को छोड़ा और रित्मा में डेरे डाले।

19लोगों ने रित्मा को छोड़ा और रिम्मोनपेरेस में डेरे
डाले।

20लोगों ने रिम्मोनपेरेस को छोड़ा और लिब्ना में डेरे
डाले।

21लोगों ने लिब्ना छोड़ा और रिस्सा में डेरे डाले।

22लोगों ने रिस्सा छोड़ा और कहेलाता में डेरे डाले।

23लोगों ने कहेलाता छोड़ा और शेपेर पर्वत पर डेरे
डाले।

24लोगों ने शेपेर पर्वत छोड़ा और हरादा में डेरे डाले।

25लोगों ने हरादा छोड़ा और मखेलोत में डेरे डाले।

26लोगों ने मखेलोत छोड़ा और तहत में डेरे डाले।

27लोगों ने तहत छोड़ा और तेरह में डेरे डाले।

28लोगों ने तेरह को छोड़ा और मित्का में डेरे डाले।

29लोगों ने मित्का छोड़ा और हशमोना में डेरे डाले।

30लोगों ने हशमोना को छोड़ा और मोसेरोत में डेरे
डाले।

31लोगों ने मोसेरोत छोड़ा और बने-याकान में डेरे
डाले।

32लोगों ने बने-याकान छोड़ा और होर्हग्गिदगाद में
डेरे डाले।

33लोगों ने होर्हग्गिदगाद छोड़ा और योतबाता में डेरे
डाले।

34लोगों ने योतबाता छोड़ा और अब्रोना में डेरे डाले।

35लोगों ने अब्रोना छोड़ा और एस्योनगेबेर में डेरे
डाले।

36लोगों ने एस्योनगेबेर छोड़ा और सीन मरुभूमि में
कादेश में डेरे डाले।

37 लोगों ने कादेश छोड़ा और होर में डेरे डाले। यह
एदोम देश की सीमा पर एक पर्वत था। 38याजक हारून
ने यहोवा की आज्ञा मानी और वह होर पर्वत पर चढ़ा।
हारून पाँचवें महीने के प्रथम दिन मरा। वह मिस्र को
इस्राएल के लोगों द्वारा छोड़ने का चालीसवाँ वर्ष था।
39हारून जब होर पर्वत पर मरा तब वह एक सौ तेईस
वर्ष का था।

40अरात कनान के नेगेव प्रदेश में था। कनानी राजा
ने वहाँ सुना कि इस्राएल के लोग आ रहे हैं। 41लोगों ने
होर पर्वत को छोड़ा और सलमोना में डेरे डाले।

42लोगों ने सलमोना को छोड़ा और पूनोन में डेरे
डाले।

43लोगों ने पूनोन छोड़ा और ओबोस में डेरे डाले।

44लोगों ने ओबोस छोड़ा और अबारीम में डेरे डाले।
यह मोआब देश की सीमा पर था।

45लोगों ने इयीम (इयीम अबारीम) को छोड़ा और
दीबोन-गाद में डेरे डाले।

46लोगों ने दीबोन-गाद छोड़ा और अल्मोनदिबलातैम
में डेरे डाले।

47लोगों ने अल्मोनदिबलातैम छोड़ा और नबो के पास
अबारीम पर्वतों पर डेरे डाले।

48लोगों ने अबारीम पर्वतों को छोड़ा और यरदन नदी
के पास मोआब के प्रदेश में डेरे डाले। यह यरीहो के
पास था। 49उन्होंने यरदन के पास डेरे डाले। उनके डेरे

वेत्यशीमोत से अबेलशित्तीम चरागाह तक फैले थे। यह अबारीम मोआब के मैदानों में था।

50यरीहो के पार यरदन घाटी के मोआब के मैदानों में, यहोवा ने मूसा से बात की। उसने कहा, 51“इस्राएल के लोगों से बात करो। उनसे यह कहो: तुम लोग यरदन नदी को पार करोगे। तुम लोग कनान देश में जाओगे। 52तुम लोग उन लोगों से भूमि ले लोगे जिन्हें तुम वहाँ पाओगे। तुम लोगों को उनकी उत्कीर्ण मूर्तियों और प्रतीकों को नष्ट कर देना चाहिए। तुम्हें उनके सभी उच्च स्थानों को नष्ट कर देना चाहिए। 53तुम वह देश लोगे और वहाँ बसोगे। क्यों? क्योंकि यह देश मैं तुमको दे रहा हूँ। यह तुम्हारे परिवारों का होगा। 54तुम्हारा हर एक परिवार भूमि का हिस्सा पाएगा। तुम इस बात के लिए गोट डालोगे कि देश का कौन सा हिस्सा किस परिवार को मिलता है। बड़े परिवार भूमि का बड़ा हिस्सा पाएंगे। छोटे परिवार देश का छोटा भाग पाएंगे। भूमि उन लोगों को दी जाएगी जिनके नाम गोट निश्चित करेंगी। हर एक परिवार समूह अपनी भूमि पाएगा।

55तुम लोगों को उन अन्य लोगों से देश खाली करा लेना चाहिए। यदि तुम उन लोगों को अपने देश में ठहरने दोगे तो वे तुम्हारे लिए बहुत परेशानियाँ उत्पन्न करेंगे। वे तुम्हारी आँखों में काँटे या तुम्हारी बगल के कीलें की तरह होंगे। वे उस देश पर बहुत विपत्तियाँ लाएंगे जहाँ तुम रहोगे। 56मैंने तुम लोगों को समझा दिया जो मुझे उनके साथ करना है और मैं तुम्हारे साथ वही करूँगा यदि तुम लोग उन लोगों को अपने देश में रहने दोगे।”

कनान की सीमाएँ

34 यहोवा ने मूसा से बात की। उसने कहा, 2“इस्राएल के लोगों को यह आदेश दो: तुम लोग कनान देश में आ रहे हो। तुम लोग इस देश को हराओगे। तुम लोग पूरा कनान देश ले लोगे। 3दक्षिणी ओर तुम लोग एदोम के निकट सीन मरुभूमि का भाग प्राप्त करोगे। तुम्हारी दक्षिणी सीमा मृत सागर की दक्षिणी छोर से आरम्भ होगी। 4यह बिच्छूदर्रे (स्कार्पियन पास) के दक्षिण से गुजरेगी। यह सीन मरुभूमि से होकर कादेशबर्ने तक जाएगी, और तब हसरद्दार तथा तब यह अस्मोन से होकर जाएगी। 5अस्मोन से सीमा मिस्र की नदी तक जाएगी और इसका अन्त भूमध्य सागर पर होगा। 6तुम्हारी पश्चिमी सीमा भूमध्य सागर होगी। 7तुम्हारी उत्तरी सीमा भूमध्य सागर पर आरम्भ होगी और होर पर्वत तक जाएगी। लबानोन में 8होर पर्वत से यह लेबोहामात को जाएगी और तब सदाद को। 9तब यह सीमा जिप्रोन को जाएगी तथा यह हसेरनान पर समाप्त होगी। इस प्रकार यह तुम्हारी उत्तरी सीमा होगी। 10तुम्हारी पूर्वी सीमा एनान पर आरम्भ होगी और यह शापान तक जाएगी। 11शापान से सीमा ऐन के पूर्व रिबला तक जाएगी। किन्नरेत सागर गलील के सागर के साथ की पहाड़ियों के साथ सीमा चलती रहेगी। 12तब सीमा यरदन नदी के साथ-साथ चलेगी। इसका अन्त मृत सागर पर होगा। तुम्हारे देश के चारों ओर की सीमा यही है।”

13मूसा ने इस्राएल के लोगों को आदेश दिया: “यही वह देश है जिसे तुम प्राप्त करोगे। तुम लोग नौ परिवार समूहों और मनश्शे परिवार समूह के आधे लोगों के लिए भूमि बाँटने के लिए उनके नाम गोटें डालोगे। 14रूबेन, गाद और मनश्शे के आधे परिवार के लोगों के परिवार समूहों ने पहले ही अपना प्रदेश ले लिया है। 15उस ढाई परिवार समूह ने यरीहो के निकट यरदन नदी के पूर्व अपना प्रदेश ले लिया है।”

16तब यहोवा ने मूसा से बात की। उसने कहा, 17“ये वे लोग हैं जो भूमि बाँटने में तुम्हारी सहायता करेंगे: याजक एलीआज़ार, नून का पुत्र यहोशू 18और हर एक परिवार समूह से तुम एक नेता चुनोगे। ये लोग भूमि का बँटवारा करेंगे। 19नेताओं के नाम ये हैं:

यहूदा के परिवार समूह से, यपुन्ने का पुत्र कालेब;

20शिमोन के परिवार समूह से, अम्मीहूद का पुत्र शमूएल।

21 बिन्यामीन के परिवार समूह से, किसलोन का पुत्र एलीदाद।

22दान के परिवार समूह से, योग्ली का पुत्र बुक्की।

23मनश्शे (यूसुफ का पुत्र) के परिवार समूह से, एपोद का पुत्र हन्नीएल।

24एप्रैम (यूसुफ का पुत्र) के परिवार समूह से, शिप्तान का पुत्र कमूएल।

25जबूलून के परिवार समूह से, पर्नाक का पुत्र एलीसापान।

26इस्साकार के परिवार समूह से, अज्जान का पुत्र पलतीएल।

27आशेर के परिवार समूह से, शलोमी का पुत्र अहीहूद।

28नप्ताली के परिवार समूह से, अम्मीहूद का पुत्र पदहेल।”

29यहोवा ने इन पुरुषों को इस्राएल के लोगों में कनान की भूमि बाँटने के लिये चुना।

लेवीवंश के नगर

35 यहोवा ने मूसा से बात की जो यरीहो के पार यरदन नदी के किनारे मोआब की यरदन घाटी में हुई। यहोवा ने कहा, 2“इस्राएल के लोगों से कहो किउन्हें अपने हिस्से के देश में कुछ नगर लेवीवंशियों को देने चाहिए। इस्राएल के लोगों को नगर और उसके चारों ओर की चरागाहें लेवीवंशियों को देनी चाहिए। 3लेवीवंशी उन नगरों में रह सकेंगे और सभी मवेशी

तथा अन्य जानवर, जो लेवीवंशियों के होंगे, नगर के
चारों ओर की चरागाहों में चर सकेंगे।

4तुम लेवीवंशियों को अपने देश का कितना भाग
दोगे? नगरों की दीवारों से डेढ़ हजार फीट* बाहर तक
नापते जाओ। वह सारी भूमि लेवीवंशियों की होगी।
5सारी तीन हजार फीट भूमि नगर के पूर्व तीन हजार
फीट नगर के दक्षिण, तीन हजार फीट नगर के पश्चिम
तथा तीन हजार फीट* नगर के उत्तर, भी लेवीवंशियों
की होगी। उस भूमि के मध्य में नगर होगा। 6उन नगरों
में से छ: नगर सुरक्षा नगर होंगे। यदि कोई व्यक्ति किसी
को संयोगवश मार डालता है तो वह सुरक्षा के लिए उन
नगरों में भाग कर जा सकता है। उन छ: नगरों के
अतिरिक्त तुम लेवीवंशियों को बयालीस अन्य नगर दोगे।
7इस प्रकार तुम लेवीवंशियों को कुल अड़तालीस नगर
दोगे। तुम उन नगरों को चारों ओर की भूमि भी दोगे।
8इस्राएल के बड़े परिवार भूमि के बड़े भाग देंगे। इस्राएल
के छोटे परिवार भूमि के छोटे भाग देंगे। सभी परिवार
समूह लेवीवंशियों को अपने हिस्से के प्रदेश में से कुछ
भाग प्रदान करेंगे।"

9तब यहोवा ने मूसा से बात की। उसने कहा, 10"लोगों
से यह कहो: तुम लोग यरदन नदी को पार करोगे और
कनान देश में जाओगे। 11तुम्हें "सुरक्षा नगर" बनाने के
लिए नगरों को चुनना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति संयोगवश
किसी को मार डालता है, तो यह सुरक्षा के लिए इन
नगरों में से किसी में भागकर जा सकता है। 12वह उस
किसी भी व्यक्ति से सुरक्षित रहेगा जो मृतक व्यक्ति के
परिवार का हो और उसे पकड़ना चाहता हो। वह तब
तक सुरक्षित रहेगा जब तक न्यायालय में उनके बारे में
निर्णय नहीं हो जाता। 13"सुरक्षा नगर" छ: होंगे। 14उन
नगरों में तीन नगर यरदन नदी के पूर्व होंगे और तीन
अन्य नगर कनान प्रदेश में यरदन नदी के पश्चिम में
होंगे। 15वे नगर इस्राएल के नागरिकों, विदेशियों और
यात्रियों के लिए सुरक्षा नगर होंगे। कोई भी व्यक्ति, जो
संयोगवश किसी को मार डालता है, इन किसी एक
नगर में भाग कर जा सकेगा।

16"यदि कोई व्यक्ति किसी को मारने के लिए लोहे
का हथियार उपयोग में लाता है, तो उस व्यक्ति को
मरना चाहिए 17और यदि कोई व्यक्ति एक पत्थर उठाता
है और किसी को मार डालता है, तो उसे भी मरना
चाहिए। पत्थर उस आकार का होना चाहिए जिसे व्यक्तियों
को मारने के लिए प्राय: उपयोग में लाया जाता है।

डेढ़ हजार फीट शाब्दिक, "एक हजार हाथ" लोग, संभवत: अपनी भेड़ों और मवेशियों को इस भूमि का उपयोग करने देते थे।

डेढ़ हजार फीट शाब्दिक, "एक हजार हाथ" लोग, संभवत: अपनी भेड़ों और मवेशियों को इस भूमि का उपयोग करने देते थे।

18यदि कोई व्यक्ति किसी लकड़ी का उपयोग करता है
और किसी को मार डालता है, तो उसे मरना चाहिए।
लकड़ी एक हथियार के रूप में होनी चाहिए जिसका
उपयोग प्राय: लोग मनुष्यों को मारने के लिए करते हैं।
19मृतक व्यक्ति के परिवार का सदस्य* उस हत्यारे
का पीछा कर सकता है और उसे मार सकता है।

20-21"कोई व्यक्ति किसी पर हाथ से प्रहार कर सकता
है और उसे मार सकता है या कोई व्यक्ति किसी को
धक्का दे सकता है और उसे मार सकता है या कोई
व्यक्ति पर कुछ फेंक सकता है और उसे मार सकता
है। यदि उस मारने वाले ने घृणा के कारण ऐसा किया
तो वह हत्यारा है। उस व्यक्ति को मार डालना चाहिए।
मृतक के परिवार का कोई सदस्य उस हत्यारे का पीछा
कर सकता है और उसे मार सकता है।

22"किन्तु कोई व्यक्ति संयोगवश किसी को मार सकता
है। वह व्यक्ति उस व्यक्ति से घृणा नहीं करता था, वह
घटना संयोगवश हो गई या कोई व्यक्ति कुछ फेंक
सकता है और संयोगवश किसी को मार सकता है,
उसने मारने का इरादा नहीं किया था। 23या कोई
व्यक्ति कोई बड़ा पत्थर फेंक सकता है और वह पत्थर
किसी ऐसे व्यक्ति पर गिर पड़े जो उसे न देख रहा हो
और वह उसे मार डाले। उस व्यक्ति ने किसी को मार
डालने का इरादा नहीं किया था। उसने मृतक व्यक्ति
के प्रति घृणा नहीं रखी थी, यह केवल संयोगवश हुआ।
24यदि ऐसा हो, तो जाति निर्णय करेगी कि क्या किया
जाए। जाति का न्यायालय यह निर्णय देगा कि मृतक
व्यक्ति के परिवार का सदस्य उसे मार सकता है।
25यदि न्यायालय को यह निर्णय देना है कि वह जीवित
रहे तो उसे अपने "सुरक्षा नगर" में जाना चाहिए। उसे
वहाँ तब तक रहना चाहिए जब तक महायाजक न मरे,
यह महायाजक वही होना चाहिए जिसका अभिषेक
पवित्र तेल से हुआ हो।

26-27"उस व्यक्ति को अपने "सुरक्षा नगर" की सीमाओं
के कभी बाहर नहीं जाना चाहिए। यदि वह सीमाओं के
पार जाता है और मृतक व्यक्ति परिवार का सदस्य उसे
पकड़ता है और उसको मार डालता है तो वह सदस्य
हत्या का अपराधी नहीं होता।

28उस व्यक्ति को, जिसने संयोगवश किसी को मार
डाला है, "सुरक्षा नगर" में तब तक रहना पड़ेगा जब
तक महायाजक मर नहीं जाता। महायाजक के मरने
के बाद वह व्यक्ति अपने देश को लौट सकता है। 29ये
नियम तुम्हारे लोगों के नगरों के लिये सदा के लिए
नियम होंगे।

मृतक व्यक्ति परिवार का सदस्य शाब्दिक, "खून का बदला लेने वाला।" प्राय: यह मित्र या परिवार का सदस्य होता था जो मृतक व्यक्ति के हत्यारे का पीछा कर सकता था और उसे मार सकता था।

30"हत्यारे को तभी मृत्यु दण्ड दिया जा सकेगा। जब
उसके विरोध में एक से अधिक गवाहियाँ होंगी। यदि
एक ही गवाह होगा तो किसी व्यक्ति को प्राणदण्ड नहीं
दिया जाएगा। 31यदि कोई व्यक्ति हत्यारा है, तो उसे मार
डालना चाहिए। धन के बदले उसे छोड़ नहीं दिया जाना
चाहिए। उस हत्यारे को मार दिया जाना चाहिए।

32"यदि किसी व्यक्ति ने किसी को मारा और वह
भाग कर किसी "सुरक्षा नगर" में गया, तो घर लौटने
के लिये उससे धन न लो। उस व्यक्ति को उस नगर में
तब तक रहना पड़ेगा जब तक याजक न मरे।

33"अपने देश को निरपराधों के खून से भ्रष्ट मत
होने दो। यदि कोई व्यक्ति किसी को मारता है, तो उस
अपराध का बदला केवल यही है कि उस व्यक्ति को
मार दिया जाए। अन्य कोई ऐसा भुगतान नहीं है जो उस
अपराध से उस देश को मुक्त कर सके। 34मैं यहोवा हूँ!
मैं इस्राएल के लोगों के साथ तुम्हारे देश में सदा रहता
रहूँगा। मैं उस देश में रहता रहूँगा अत: निरपराध लोगों
के खून से उस देश को अपवित्र न करो।"

सलोफाद की पुत्रियों का देश

36 मनश्शे यूसुफ का पुत्र था। माकीर मनश्शे
का पुत्र था। गिलाद माकीर का पुत्र था।
गिलाद परिवार के नेता मूसा और इस्राएल के परिवार
समूह के नेताओं से बात करने गए। 2उन्होंने कहा,
"महोदय, यहोवा ने आदेश दिया कि हम लोग अपनी
भूमि गोट डालकर प्राप्त करें और महोदय, यहोवा ने
आदेश दिया कि सलोफाद की भूमि उसकी पुत्रियों
को मिले। सलोफाद हमारा भाई था। 3यह हो सकता है
कि किसी दूसरे परिवार समूह का व्यक्ति सलोफाद की
किसी पुत्री से विवाह करे। क्या वह भूमि हमारे परिवार
से निकल जाएगी? क्या उस दूसरे परिवार समूह के
व्यक्ति उस भूमि को प्राप्त करेंगे? क्या हम लोग वह
भूमि खो देंगे जिसे हम लोगों ने गोट डालकर प्राप्त
किया था? 4 लोग अपनी भूमि बेच सकते हैं। किन्तु
जुबली के वर्ष में सारी भूमि उस परिवार समूह को
लौट जाती है जो इसका असली मालिक होता है। उस
समय सलोफाद की पुत्रियों की भूमि कौन पाएगा? यदि
वैसा होता है तो हमारा परिवार उस भूमि से सदा के
लिए वंचित हो जाएगा।"

5मूसा ने इस्राएल के लोगों को यह आदेश दिया। यह
आदेश यहोवा का था। "यूसुफ के परिवार समूह के ये
व्यक्ति ठीक कहते हैं! 6सलोफाद की पुत्रियों के लिए
यहोवा का यह आदेश है: यदि तुम किसी से विवाह
करना चाहती हो तो तुम्हें अपने परिवार समूह के
किसी पुरुष के साथ ही विवाह करना चाहिए। 7इस
प्रकार, इस्राएल के लोगों में भूमि एक परिवार समूह से
दूसरे परिवार समूह में नहीं जाएगी। हर एक इस्राएली
अपने पूर्वजों की भूमि को ही अपने पास रखेगा। 8और
यदि कोई पुत्री पिता की भूमि प्राप्त करती है, तो उसे
अपने परिवार समूह में से ही किसी के साथ विवाह
करना चाहिए। इस प्रकार, हर एक व्यक्ति वही भूमि
अपने पास रखेगा जो उसके पूर्वजों की थी। 9इस प्रकार,
इस्राएल के लोगों में एक परिवार समूह से दूसरे परिवार
समूह में नहीं जाएगी। हर एक इस्राएली वह भूमि रखेगा
जो उसके अपने पूर्वजों की थी।"

10सलोफाद की पुत्रियों ने, मूसा को दिये गए यहोवा
के आदेश को स्वीकार किया। 11इसलिए सलोफाद की
पुत्रियाँ महला, तिर्सा, होग्ला, मिल्का और नोआ ने
अपने चचेरे भाइयों के साथ विवाह किया। 12उनके
पति यूसुफ के पुत्र मनश्शे के परिवार समूह के थे,
इसलिए उनकी भूमि उनके पिता के परिवार और
परिवार समूह की बनी रही।

13इस प्रकार ये नियम और आदेश यरीहो के पार
यरदन नदी के किनारे मोआब क्षेत्र में मूसा को दिये गए
यहोवा के आदेश थे और मूसा ने उन नियमों और
आदेशों को इस्राएल के लोगों को दिया।

व्यवस्था विवरण

मूसा इस्राएल के लोगों से बातचीत करता है

1 मूसा द्वारा इस्राएल के लोगों को दिया गया सन्देश यह
है। उसने उन्हें यह सन्देश तब दिया जब वे यरदन
की घाटी में, यरदन नदी के पूर्व के मरुभूमि में थे। यह
सूप के उस पार एक तरफ पारान मरुभूमि और दूसरी
तरफ तोपेल, लाबान, हसेरोत और दीजाहाब नगरों के
बीच में था।
2होरेब (सीनै) पर्वत से सेईर पर्वत से होकर कादेशबर्ने
की यात्रा केवल ग्यारह दिन की है। 3किन्तु जब मूसा ने
इस्राएल के लोगों को इस स्थान पर सन्देश दिया तब
इस्राएल के लोगों को मिस्र छोड़े चालीस वर्ष हो चुके थे।
यह चालीस वर्ष के ग्यारहवें महीने का पहला दिन था,
जब मूसा ने लोगों से बातें कीं तब उसने उनसे वही बातें
कहीं जो यहोवा ने उसे कहने का आदेश दिया था। 4यह
यहोवा की सहायता से उनके द्वारा एमोरी लोगों के राजा
सीहोन और बाशान के राजा ओग को पराजित किए
जाने के बाद हुआ। (सीहोन हेशबोन और ओग अशतारोत
एवं एद्रेई में रहते थे।) 5उस समय वे यरदन नदी के पूर्व
की ओर मोआब के प्रदेश में थे और मूसा ने परमेश्वर
के आदेशों की व्याख्या की। मूसा ने कहा:
6"यहोवा, हमारे परमेश्वर ने होरेब (सीनै) पर्वत पर
हमसे कहा। उसने कहा, 'तुम लोग काफी समय तक
इस पर्वत पर ठहर चुके हो। 7यहाँ से चलने के लिए हर
एक चीज़ तैयार कर लो। एमोरी लोगों के यरदन घाटी,
पहाड़ी क्षेत्र, पश्चिमी ढाल–अराबा का पहाड़ी प्रदेश,
नीची भूमि, नेगेव और समुद्र से लगे क्षेत्रों में जाओ।
कनानी लोगों के देश में तथा लबानोन में परात नामक
बड़ी नदी तक जाओ। 8'देखो, मैंने यह सारा देश तुम्हें
दिया है। अन्दर जाओ, और स्वयं उस पर अधिकार
करो। यह वही देश है जिसे देने का वचन मैंने तुम्हारे
पूर्वजों इब्राहीम, इसहाक और याकूब को दिया था। मैंने
यह प्रदेश उन्हें तथा उनके वंशजों को देने का वचन
दिया था।'"

मूसा प्रमुखों की नियुक्ति करता है

9मूसा ने कहा, "उस समय जब मैंने तुमसे बात की
थी तब कहा था, मैं अकेले तुम लोगों का नेतृत्व करने
और देखभाल करने मे समर्थ नहीं हूँ। 10यहोवा तुम्हारे
परमेश्वर ने क्रमश: लोगों को इतना बढ़ाया है कि
तुम लोग अब उतने हो गए हो जितने आकाश में तारे
हैं! 11तुम्हें यहोवा, तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर, आज
तुम जितने हो, उससे हजार गुना अधिक करे! वह तुम्हें
वह आशीर्वाद दे जो उसने तुम्हें देने का वचन दिया है!
12किन्तु मैं अकेले तुम्हारी देखभाल नहीं कर सकता
और न तो तुम्हारी सारी समस्याओं और वाद–विवाद
का समाधान कर सकता हूँ। 13'इसलिए हर एक परिवार
समूह से कुछ व्यक्तियों को चुनो और मैं उन्हें तुम्हारा
नेता बनाऊँगा। उन बुद्धिमान लोगों को चुनो जो समझदार
और अनुभवी हों।'
14"और तुम लोगों ने कहा, 'हम लोग समझते हैं ऐसा
करना अच्छा है।'
15"इसलिए मैंने, तुम लोगों द्वारा अपने परिवार समूह
से चुने गए बुद्धिमान और अनुभवी व्यक्तियों को लिया
और उन्हें तुम्हारा प्रमुख बनाया। मैंने उनमें से कुछ को
हजार का, कुछ को सौ का, कुछ को पचास का और
कुछ को दस का प्रमुख बनाया है। उनको मैंने तुम्हारे
परिवार समूहों के लिये अधिकारी नियुक्त किया है।
16"उस समय, मैंने तुम्हारे इन प्रमुखों को तुम्हारा
न्यायाधीश बनाया था। मैंने उनसे कहा, 'अपने लोगों के
बीच के वाद–प्रतिवाद को सुनों। हर एक मुकदमे का
फैसला सही–सही करो। इसका कोई महत्व नहीं कि
मुकदमा दो इस्राएली लोगों के बीच है या इस्राएली और
विदेशी के बीच। तुम्हें हर एक मुकदमे का फैसला सही
करना चाहिए। 17जब तुम फैसला करो तब यह न सोचो
कि कोई व्यक्ति दूसरे की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण
है। तुम्हें हर एक व्यक्ति का फैसला एक समान समझकर
करना चाहिए। किसी से डरो नहीं क्योंकि तुम्हारा फैसला
परमेश्वर से आया है। किन्तु यदि कोई मुकदमा इतना
जटिल हो कि तुम फैसला ही न कर सको तो उसे मेरे
पास लाओ और इसका फैसला मैं करूँगा।'
18उसी समय, मैंने वे सभी दूसरी बातें बताई जिन्हें
तुम्हें करना है।

जासूस कनान देश में गए

19"तब हम लोगों ने वह किया जो हमारे परमेश्वर
यहोवा ने हमें आदेश दिया। हम लोगों ने होरेब पर्वत को

छोड़ा और एमोरी लोगों के पहाड़ी प्रदेश की यात्रा की।
हम लोग उन बड़ी और सारी भयंकर मरुभूमि से
होकर गुजरे जिन्हें तुमने भी देखा। हम लोग कादेशबर्ने
पहुँचे। 20तब मैंने तुमसे कहा, 'तुम लोग एमोरी लोगों के
पहाड़ी प्रदेश में आ चुके हो। यहोवा हमारा परमेश्वर
यह देश हमको देगा। 21देखो, यह देश वहाँ है! आगे बढ़ो
और भूमि को अपना बना लो! तुम्हारे पूर्वजों के यहोवा
परमेश्वर ने तुम लोगों को ऐसा करने को कहा है।
इसलिए डरो नहीं, किसी प्रकार की चिन्ता न करो!'

22"तब तुम सभी मेरे पास आए और बोले, 'हम लोगों
के पहले उस देश को देखने के लिए व्यक्तियों को
भेजो। वे वहाँ के सभी कमजोर और शक्तिशाली स्थानों
को देख सकते हैं। वे तब वापस आ सकते हैं और हम
लोगों को उन रास्तों को बता सकते हैं जिनसे हमें जाना
है तथा उन नगरों को बता सकते हैं जिन तक हमें
पहुँचना है।'

23"मैंने सोचा कि यह अच्छा विचार है। इसलिए मैंने
तुम लोगों में से हर परिवार समूह के लिए एक व्यक्ति
के हिसाब से बारह व्यक्तियों को चुना। 24तब वे व्यक्ति
हमें छोड़कर पहाड़ी प्रदेश में गए। वे एशकोल की घाटी
में गए और उन्होंने उसकी छान–बीन की। 25उन्होंने
उस प्रदेश के कुछ फल लिए और उन्हें हमारे पास
लाए। उन्होंने हम लोगों को विवरण दिया और कहा,
'यह अच्छा देश है जिसे यहोवा हमारा परमेश्वर हमें दे
रहा है!'

26"किन्तु तुमने उसमें जाने से इन्कार किया। तुम
लोगों ने अपने यहोवा परमेश्वर के आदेश को मानने से
इन्कार किया। 27तुम लोगों ने अपने खेमों में शिकायत
की। तुम लोगों ने कहा, 'यहोवा हमसे घृणा करता है!
वह हमें मिस्र से बाहर एमोरी लोगों को देने के लिए ले
आया। जिससे वे हमें नष्ट कर सके! 28अब हम लोग
कहाँ जायें? हमारे बारह जासूस भाईयों ने अपने विवरण
से हम लोगों को डराया। उन्होंने कहा: वहाँ के लोग हम
लोगों से बड़े और लम्बे हैं,नगर बड़े हैं और उनकी
दीवारें आकाश को छूती हैं और हम लोगों ने दानव
लोगों को वहाँदेखा।'

29"तब मैंने तुमसे कहा, 'घबराओ नहीं! उन लोगों से
डरो नहीं! 30यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे सामने
जायेगा और तुम्हारे लिए लड़ेगा। वह यह वैसे ही करेगा
जैसे उसने मिस्र में किया। तुम लोगों ने वहाँ अपने
सामने उसको 31मरुभूमि में जाते देखा। तुमने देखा कि
यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें वैसे ले आया जैसे कोई
व्यक्ति अपने पुत्र को लाता है। यहोवा ने पूरे रास्ते तुम
लोगों की रक्षा करते हुए तुम्हें यहाँ पहुँचाया है।'

32"किन्तु तब भी तुमने यहोवा अपने परमेश्वर पर
विश्वास नहीं किया। 33जब तुम यात्रा कर रहे थे तब
वह तुम्हारे आगे तुम्हारे डेरे डालने के लिए जगह खोजने
गया। तुम्हें यह बताने के लिए कि तुम्हें किस राह जाना
है वह रात को आग में और दिन को बादल में चला।

लोगों के कनान जाने पर प्रतिबन्ध

34"यहोवा ने तुम्हारा कहना सुना, वह क्रोधित हुआ।
उसने प्रतिज्ञा की। उसने कहा, 35'आज तुम जीवित बुरे
लोगों में से कोई भी व्यक्ति उस अच्छे देश में नहीं
जाएगा जिसे देने का वचन मैंने तुम्हारे पूर्वजों को दिया
है। 36यपुन्ने का पुत्र कालेब ही केवल उस देश को
देखेगा। मैं कालेब को वह देश दूँगा जिस पर वह चला
और मैं उस देश को कालेब के वंशजों को दूँगा। क्यों?
क्योंकि कालेब ने वह सब किया जो मेरा आदेश था।'

37"यहोवा तुम लोगों के कारण मुझसे भी अप्रसन्न
था। उसने मुझसे कहा, 'तुम भी उस देश में नहीं जा
सकते। 38किन्तु तुम्हारा सहायक, नून का पुत्र यहोशू
उस देश में जाएगा। यहोशू को उत्साहित करो, क्योंकि
वही इस्राएल के लोगों को भूमि पर अपना अधिकार
जमाने के लिए ले जाएगा।'

39"और यहोवा ने हमसे कहा, 'तुमने कहा, कि
तुम्हारे छोटे बच्चे शत्रु द्वारा ले लिए जायेंगे। किन्तु वे
बच्चे उस देश में जायेंगे। मैं तुम्हारी गलतियों के लिए
तुम्हारे बच्चों को दोषी नहीं मानता। क्योंकि वे अभी
इतने छोटे हैं कि वे यह जान नहीं सकते कि क्या सही
है और क्या गलत। इसलिए मैं उन्हें वह देश दूँगा।
तुम्हारे बच्चे अपने देश के रूप में उसे प्राप्त करेंगे।
40लेकिन तुम्हें, पीछे मुड़ना चाहिए और लाल सागर
जाने वाले मार्ग से मरुभूमि को जाना चहिए।'

41"तब तुमने कहा, 'मूसा, हम लोगों ने यहोवा के
विरुद्ध पाप किया है। किन्तु अब हम आगे बढ़ेंगे और
जैसे पहले यहोवा हमारे परमेश्वर ने आदेश दिया था
वैसे ही लड़ेंगे।' तब तुम में से हर एक ने युद्ध के लिये
शस्त्र धारण किये। तुम लोगों ने सोचा कि पहाड़ में
जाना सरल होगा।

42"किन्तु यहोवा ने मुझसे कहा, 'लोगों से कहो कि वे
वहाँ न जायें और न लड़ें। क्यों? क्योंकि मैं उनका साथ
नहीं दूँगा और उनके शत्रु उनको हरा देंगे।' 43इसलिए
मैंने तुम लोगों को समझाने की कोशिश की, किन्तु तुम
लोगों ने मेरी एक न सुनी। तुम लोगों ने यहोवा का
आदेश मानने से इन्कार कर दिया। तुम लोगों ने अपनी
शक्ति का उपयोग करने की बात सोची। इसलिए तुम
लोग पहाड़ी प्रदेश में गए। 44तब एमोरी लोग तुम्हारे
विरुद्ध आए। वे उस पहाड़ी प्रदेश में रहते हैं। उन्होंने
तुम्हारा वैसे पीछा किया जैसे मधुमक्खियाँ लोगों का
पीछा करती हैं। उन्होंने तुम्हारा सेईर से लेकर होर्मा
तक पूरे रास्ते पीछा किया और तुम्हें वहाँ हराया। 45तुम
सब लौटे और यहोवा के सामने सहायता के लिये रोए–
चिल्लाए। किन्तु यहोवा ने तुम्हारी बात कुछ न सुनी।

उसने तुम्हारी बात सुनने से इन्कार कर दिया। 46इसलिए
तुम लोग कादेश में बहुत समय तक ठहरे।

इस्राएल के लोग मरुभूमि में भटकते हैं

2 "तब हम लोग मुड़े और लालसागर के सड़क पर
मरुभूमि की यात्रा की। यह वह काम है जिसे
यहोवा ने कहा कि हमें करना चाहिए। हम लोग सेईर
के पहाड़ी प्रदेश से होकर कई दिन चले। 2तब यहोवा ने
मुझसे कहा, 3'तुम इस पहाड़ी प्रदेश से होकर काफी
समय चल चुके हो। उत्तर की ओर मुड़ो। 4और उसने
मुझे तुमसे यह कहने को कहा: तुम सेईर प्रदेश से
होकर गुजरोगे। यह प्रदेश तुम लोगों के सम्बन्धी एसाव
के वंशजों का है। वे तुमसे डरेंगे। बहुत सावधान रहो।
5उनसे लड़ो मत। मैं उनकी कोई भी भूमि एक फुट
भी तुमको नहीं दूँगा। क्यों? क्योंकि मैंने एसाव को
सेईर का पहाड़ी प्रदेश उसके अधिकार में दे दिया।
6तुम्हें एसाव के लोगों को वहाँ पर भोजन करने या
पानी पीने का मूल्य चुकाना चाहिए। 7यह याद रखो
कि यहोवा तुम्हारे परमेश्वर, ने तुमको तुमने जो
कुछ भी किया उन सभी के लिए आशीर्वाद दिया। वह
इस विस्तृत मरुभूमि से तुम्हारा गुजरना जानता है।
यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर इन चालीस वर्षों में तुम्हारे
साथ रहा है। तुम्हें वे सभी चीज़ें मिली हैं जिनकी तुम्हें
आवश्यकता थी।'

8"इसलिए हम लोग सेईर में रहने वाले अपने सम्बन्धी
एसाव के लोगों के पास से आगे बढ़ गए। यरदन घाटी से
एलत और एस्योनगेबेर नगरों को जाने वाली सड़क को
पीछे छोड़ दिया। तब हम उस मरुभूमि की तरफ जाने
वाली सड़क पर मुड़े जो मोआब में है।

आर–प्रदेश में इस्राएल

9"यहोवा ने मुझसे कहा, 'मोआब के लोगों को परेशान
न करो। उनके खिलाफ लड़ाई न छेड़ो। मैं उनकी कोई
भूमि तुमको नहीं दूँगा। वे लूत के वंशज हैं, और मैंने
उन्हें आर प्रदेश दिया है।'"

(10पहले, आर में एमी लोग रहते थे। वे शक्तिशाली
लोग थे और वहाँ उनमें से बहुत से थे। वे अनाकी
लोगों की तरह बहुत लम्बे थे। 11अनाकी लोगो की
तरह, एमी रपाई लोगों के एक भाग समझे जाते थे।
किन्तु मोआबी लोग उन्हें "एमी" कहते थे। 12पहले होरी
लोग भी सेईर में रहते थे, किन्तु एसाव के लोगों ने
उनकी भूमि ले ली। एसाव के लोगों ने होरीतों को नष्ट
कर दिया। तब एसाव के लोग वहाँ रहने लगे जहाँ
पहले होरीत रहते थे। यह वैसा ही काम था जैसा
इस्राएल के लोगों द्वारा उन लोगों के प्रति किया गया जो
यहोवा द्वारा इस्राएली अधिकार में भूमि को देने के
पहले वहाँ रहते थे।)

13"यहोवा ने मुझसे कहा, 'अब तैयार हो जाओ और
जेरेद घाटी के पार जाओ।' इसलिए हमने जेरेद घाटी को
पार किया। 14कादेशबर्ने को छोड़ने और जेरेद घाटी
को पार करने में अड़तीस वर्ष का समय बीता था। उस
पीढ़ी के सभी योद्धा मर चुके थे। यहोवा ने कहा था कि
ऐसा ही होगा। 15यहोवा उन लोगों के विरुद्ध तब तक
रहा जब तक वे सभी नष्ट न हो गए। 16जब सभी योद्धा
मर गए और लोगों के बीच से सदा के लिए समाप्त हो
गए। 17तब यहोवा ने मुझसे कहा, 18'आज तुम्हें आर
नगर की सीमा से होकर जाना चाहिए। 19जब तुम
अम्मोनी लोगों के पास पहुँचो तो उन्हें तंग मत करना।
उनसे लड़ना नहीं क्योंकि मैं तुम्हें उनकी भूमि नहीं
दूँगा। क्यों? क्योंकि मैंने वह भूमि लूत के वंशजों को
अपने पास रखने के लिए दी है।'"

20(वह प्रदेश रपाई लोगों का देश भी कहा जाता है।
वे ही लोग पहले वहाँ रहते थे। अम्मोनी के लोग उन्हें
"जमजुम्मी लोग" कहते थे। 21जमजुम्मी लोग बहुत
शक्तिशाली थे और उनमें से बहुत से वहाँ थे। वे अनाकी
लोगों की तरह लम्बे थे। किन्तु यहोवा ने जमजुम्मी
लोगों को अम्मोनी लोगों के लिए नष्ट किया। अम्मोनी
लोगों ने जमजुम्मी लोगों का प्रदेश ले लिया और अब वे
वहाँ रहते थे। 22परमेश्वर ने यही काम एसावी लोगों के
लिए किया जो सेईर में रहते थे। उन्होंने वहाँ रहने वाले
होरी लोगों को नष्ट किया। अब एसाव के लोग वहाँ
रहते हैं जहाँ पहले होरी लोग रहते थे। 23और कुछ लोग
कप्तोर से आए और अव्वियों को उन्होंने नष्ट किया।
अव्वी लोग अज्जा तक, नगरों में रहते थे किन्तु यहोवा
ने अव्वियों को कप्तोरी लोगों के लिए नष्ट किया।)

एमोरी लोगों के विरुद्ध युद्ध करने का आदेश

24"यहोवा ने मुझसे कहा, 'यात्रा के लिए तैयार हो
जाओ। अर्नोन नदी की घाटी से होकर जाओ। मैं तुम्हें
हेशबोन के राजा एमोरी सीहोन पर विजय की शक्ति दे
रहा हूँ। मैं तुम्हें उसका देश जीतने की शक्ति दे रहा हूँ।
इसलिए उसके विरुद्ध लड़ो और उसके देश पर अधिकार
करना आरम्भ करो। 25आज मैं तुम्हें सारे संसार के
लोगों को भयभीत करने वाला बनाना आरम्भ कर
रहा हूँ। वे तुम्हारे बारे में सूचनाएँ पाएंगे और वे भय से
काँप उठेंगे। जब वे तुम्हारे बारे में सोचेंगे तब वे घबरा
जाएंगे।'

26"कदेमोत की मरुभूमि से मैंने हेशबोन के राजा
सीहोन के पास एक दूत को भेजा। दूत ने सीहोन के
सामने शान्ति–सन्धि रखी। उन्होंने कहा, 27'अपने देश
से होकर हमें जाने दो। हम लोग सड़क पर ठहरेंगे। हम
लोग सड़क से दायें या बाएं नहीं मुड़ेंगे। 28हम जो भोजन
करेंगे या जो पानी पीएंगे उसका मूल्य चाँदी में चुकाएंगे।
हम केवल तुम्हारे देश से यात्रा करना चाहते हैं। 29अपने

देश से होकर तुम हमें तब तक जाने दो जब तक हम
यरदन नदी को पार कर उस देश में न पहुँचे जिसे
यहोवा, हमारा परमेश्वर, हमे दे रहा है। अन्य लोगों में
सेईर में रहने वाले एसाव तथा आर में रहने वाले
मोआबी लोगों ने अपने देश से हमें गुजरने दिया है।'

30"किन्तु हेशबोन के राजा सीहोन ने, अपने देश से
हमें गुजरने नहीं दिया। यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर ने, उसे
बहुत हठी बना दिया था। यहोवा ने यह इसलिए किया
कि वह सीहोन को तुम्हारे अधिकार में दे सके और
उसने अब यह कर दिया है।

31"यहोवा ने मुझसे कहा, 'मैं राजा सीहोन और उसके
देश को तुम्हें दे रहा हूँ। भूमि लेना आरम्भ करो। यह
तब तुम्हारी होगी।'

32"तब राजा सीहोन और उसके सब लोग हमसे यहस
में युद्ध करने बाहर निकले। 33किन्तु हमारे परमेश्वर
ने उसे हमें दे दिया। हमने उसे, उसके नगरों और
उसके सभी लोगों को हराया। 34हम लोगों ने उन सभी
नगरों पर अधिकार कर लिया जो सीहोन के अधिकार
में उस समय थे। हम लोगों ने हर एक नगर में लोगों–पुरुष,
स्त्री तथा बच्चों को पूरी तरह नष्ट कर दिया। हम लोगों
ने किसी को जीवित नहीं छोड़ा। 35हम लोगों ने जिन
नगरों को जीता उनसे केवल पशु और कीमती चीज़ें
ली। 36हमने अरोएर नगर को जो अर्नोन की घाटी में है
तथा उस घाटी के मध्य के अन्य नगर को भी हराया।
यहोवा हमारे परमेश्वर ने हमें अर्नोन घाटी और गिलाद
के बीच के सभी नगरों को पराजित करने दिया। कोई
नगर हम लोगों के लिए हमारी शक्ति से बाहर दृढ़ नहीं
था। 37किन्तु उस प्रदेश के निकट नहीं गए जो अम्मोनी
लोगों का था। तुम यब्बोक नदी के तटों या पहाड़ी प्रदेश
के नगरों के निकट नहीं गए। तुम ऐसी किसी जगह के
निकट नहीं गए जिसे यहोवा, हमारा परमेश्वर हमें लेने
देना नहीं चाहता था।

बाशान के लोगों के साथ युद्ध

3 "हम मुड़े और बाशान को जानेवाली सड़क पर
चलते रहे। बाशान का राजा ओग और उसके सभी
लोग प्रदेश में हम लोगों से लड़ने आए। 2यहोवा ने मुझसे
कहा, 'ओग से डरो मत, क्योंकि मैंने इसे तुम्हारे हाथ में
देने का निश्चय किया है। मैं इसके सभी लोगों और
भूमि को तुम्हें दूँगा। तुम इसे वैसे ही हराओगे जैसे तुमने
हेशबोन के शासक एमोरी राजा सीहोन को हराया।'

3"इस प्रकार यहोवा, हमारे परमेश्वर ने बाशान के
राजा ओग और उसके सभी लोगों को हमारे हाथ में
दिया। हमने उसे इस तरह हराया कि उसका कोई
आदमी नहीं बचा। 4तब हम लोगों ने उन नगरों पर
अधिकार किया जो उस समय ओग के थे। हमने ओग
के लोगों से, बाशान में ओग के राज्य अर्गोब क्षेत्र के
सारे साठ नगर लिए। 5ये सभी नगर ऊँची दीवारों, द्वारों
और द्वारों में मजबूत छड़ों के साथ बहुत शक्तिशाली थे।
कुछ दूसरे नगर बिना दीवारों के थे। 6हम लोगों ने उन्हें
वैसे नष्ट किया जैसे हेशबोन के राजा सीहोन के नगरों
को नष्ट किया था। हमने हर एक नगर को उनके
लोगों के साथ, स्त्रियों और बच्चों को भी, नष्ट किया।
7किन्तु हमने नगरों से सभी पशुओं और कीमती चीज़ों
को अपने लिए रखा। 8उस समय, हमने एमोरी लोगों के
दो राजाओं से भूमि ली। यह भूमि यरदन नदी की दूसरी
ओर है। यह भूमि अर्नोन घाटी से लेकर हेर्मोन पर्वत
तक है। 9(सिदोनी हेर्मोन पर्वत को "सिर्योन" कहते हैं,
किन्तु एमोरी इसे "सनीर" कहते हैं।) 10हमने समतल
मैदान के नगर और गिलाद और सारे बाशान में सल्का
और एद्रेई तक के नगर पर आधिपत्य स्थापित किया।
सल्का और एद्रेई बाशान में ओग के राज्य के नगर
थे।"

(11बाशान का राजा ओग अकेला व्यक्ति था जो
रपाई लोगों में जीवित छोड़ा गया था। ओग की चारपाई
लोहे की थी। यह लगभग नौ हाथ लम्बी और चार हाथ
चौड़ी* थी। रब्बा नगर में यह चारपाई अभी तक है,
जहाँ एमोरी लोग रहते हैं।)

यरदन नदी के पूर्व की भूमि

12"उस समय उस भूमि को हम लोगों ने जीता था।
मैंने रूबेन परिवार समूह को और गादी परिवार समूह
को अर्नोन घाटी के सहारे अरोएर से लेकर गिलाद के
आधे पहाड़ी भाग तक उसके नगरों के साथ का प्रदेश
दिया है। 13मनश्शे के आधे परिवार समूह को मैंने
गिलाद का दूसरा आधा भाग और पूरा बाशान दिया
अर्थात् अर्गोब का पूरा क्षेत्र बाशान ओग का राज्य
था।" (बाशान का क्षेत्र रपाईयों का प्रदेश कहा जाता
था। 14मनश्शे के एक वंशज याईर ने अर्गोब के पूरे
क्षेत्र अर्थात् बाशान, गशूरी और माका लोगों की सीमा
तक के पूरे प्रदेश पर आधिपत्य स्थापित किया। याईर
ने बाशान के इन शहरों को अपने नाम पर रखा। इसी
से आज भी याईर नगर के नाम से पुकारा जाता है।)

15"मैंने गिलाद माकीर को दिया। 16और रूबेन परिवार
समूह को तथा गाद परिवार समूह को मैंने वह प्रदेश
दिया जो अर्नोन घाटी से यब्बोक नदी तक जाता है।
घाटी के मध्य एक सीमा है। यब्बोक नदी अम्मोनी
लोगों की सीमा है। 17यरदन घाटी में यरदन नदी पश्चिम
सीमा निर्मित करती है। इस क्षेत्र के उत्तर में किन्नेरेत
झील और दक्षिण में अराबा सागर है (जिसे लवण
सागर कहते हैं।) यह पूर्व में पिसगा की चोटी के तलहटी
में स्थित है।

नौ हाथ लम्बी और चार हाथ चौड़ी शाब्दिक तेरह फुट लम्बी और छ: फुट चौड़ी।

18“उस समय, मैंने उन परिवार समूहों को यह आदेश
दिया था: ‘यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर ने तुमको रहने के
लिए यरदन नदी के इस तरफ का प्रदेश दिया है। किन्तु
अब तुम्हारे योद्धाओ को अपने हथियार उठाने चाहिए
और अन्य इस्राएली परिवार समूहों को नदी के पार ले
जाने की अगुवाई करना चाहिए। 19तुम्हारी पत्नियाँ,
तुम्हारे छोटे बच्चे और तुम्हारे पशु (मैं जानता हूँ कि
तुम्हारे पास बहुत से पशु हैं।) यहाँ उन शहरों में रहेंगे
जिन्हें मैंने तुम्हें दिया है। 20किन्तु तुम्हें अपने इस्राएली
सम्बन्धियों की सहायता तब तक करनी चाहिए जब
तक वे यरदन नदी केदूसरे किनारे पर उस प्रदेश को
पा नहीं लेते जो यहोवा ने दिया है। उनकी तब तक
सहायता करो जब तक वे ऐसी शान्ति पा ले जैसी तुमने
यहाँ पा ली है। तब तुम यहाँ अपने देश में लौट सकते हो
जिसे मैंने तुम्हें दिया है।’

21“तब मैंने यहोशू से कहा, ‘तुमने वह सब देखा है।
जो यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर ने इन दो राजाओं के साथ
किया है। यहोवा ऐसा ही उन सभी राजाओं के साथ
करेगा जिनके राज्य में तुम प्रवेश करोगे। 22इन देशों
के राजाओं से डरो मत, क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर,
तुम्हारे लिए लड़ेगा।’

मूसा को कनान में प्रवेश करने से मना

23“मैंने उस समय यहोवा से विशेष कृपा की प्रार्थना
की। 24मैंने यहोवा से कहा, ‘मेरे स्वामी, यहोवा, मैं तेरा
सेवक हूँ। मैं जानता हूँ कि तूने उन शक्तिशाली और
अद्भुत चीज़ों का एक छोटा भाग ही मुझे दिखाया है जो
तू कर सकता है। स्वर्ग या पृथ्वी पर कोई ऐसा दूसरा
ईश्वर नहीं है, जो तूने किया है तेरे समान महान और
शक्तिशाली कार्य कर सके! 25मैं तुमसे निवेदन करता
हूँ कि तू मुझे पार जाने दे और यरदन नदी के दूसरी
ओर के अच्छे प्रदेश, सुन्दर पहाड़ी प्रदेश लबानोन को
देखने दे।’

26“किन्तु यहोवा तुम्हारे कारण मुझ पर अप्रसन्न था।
उसने मेरी बात सुनने से इन्कार कर दिया। उसने मुझसे
कहा, ‘तुम अपनी बात यहीं खत्म करो! इसके बारे में
एक शब्द भी न कहो। 27पिसगा पर्वत की चोटी पर
जाओ। पश्चिम की ओर, उत्तर की ओर, दक्षिण की
ओर, पूर्व की ओर देखो। सारे प्रदेश को तुम अपनी
आँखों से ही देखो क्योंकि तुम यरदन नदी को पार नहीं
करोगे। 28तुम्हें यहोशू को निर्देश देना चाहिए। उसे दृढ़
और साहसी बनाओ! क्यों? क्योंकि यहोशू लोगों को
यरदन नदी के पार ले जाएगा। यहोशू उन्हें प्रदेश को
लेने और उसमें रहने के लिए ले जाएगा। यही वह प्रदेश
है जिसे तुम देखोगे।’ 29इसलिए हम बेतपोर की दूसरी
ओर घाटी में ठहर गये।”

मूसा लोगों को परमेश्वर के नियमों पर ध्यान देने के लिए चेतावनी देता है

4 “इस्राएल, अब उन नियमों और आदेशों को सुनो
जिनका उपदेश मैं दे रहा हूँ। उनका पालन करो।
तब तुम जीवित रहोगे और जा सकोगे तथा उस प्रदेश
को ले सकोगे जिसे यहोवा तुम्हारे पूर्वजों का परमेश्वर
तुम्हें दे रहा है। 2जो मैं आदेश देता हूँ उसमें और कुछ
जोड़ना नहीं। तुम्हें उसमें से कुछ घटाना भी नहीं चाहिए।
तुम्हें अपने यहोवा परमेश्वर के उन आदेशों का पालन
करना चाहिए जिन्हें मैंने तुम्हें दिये हैं।

3“तुमने देखा है कि बालपोर में यहोवा ने क्या किया।
तुम्हारे यहोवा परमेश्वर ने तुम्हारे उन सभी लोगों को
नष्ट कर दिया जो पोर में बाल के अनुयायी थे। 4किन्तु
तुम लोग सभी जो यहोवा अपने परमेश्वर के साथ रहे
आज जीवित हो।

5“ध्यान दो, मेरे परमेश्वर यहोवा ने जो मुझे आदेश
दिये उन्ही नियमों, विधियों की मैंने तुमको शिक्षा दी है।
मैंने यहोवा के इन नियमों की शिक्षा इसलिए दी कि
जिस देश में प्रवेश करने और जिसे अपना बनाने के
लिये तैयार हो उसमें उनका पालन कर सको। 6इन
नियमों का सावधानी से पालन करो। यह अन्य राष्ट्रों
को सूचित करेगा कि तुम बुद्धि और समझ रखते हो।
जब उन देशों के लोग इन नियमों के बारे में सुनेंगे तो वे
कहेंगे कि, ‘सचमुच, इस महान राष्ट्र (इस्राएल) के लोग
बुद्धिमान और समझदार हैं।’

7“किसी राष्ट्र का कोई देवता उनके साथ उतना
निकट नहीं रहता जिस तरह हमारा परमेश्वर यहोवा
जो हम लोगों के पास रहता है, जब हम उसे पुकारते हैं
8और कोई दूसरा राष्ट्र इतना महान नहीं कि उसके
पास वे अच्छे विधि और नियम हो जिनका उपदेश मैं
आज कर रहा हूँ। 9किन्तु तुम्हें सावधान रहना है।
निश्चय कर लो कि जब तक तुम जीवित रहोगे, तब
तक तुम देखी गई चीजों को नहीं भूलोगे। तुम्हें इन
उपदेशों को अपने पुत्रों और पौत्रों को देना चाहिए।
10उस दिन को याद रखो जब तुम होरेब (सीनै) पर्वत
पर अपने यहोवा परमेश्वर के सामने खड़े थे। यहोवा ने
मुझसे कहा, ‘मैं जो कुछ कहता हूँ, उसे सुनने के लिए
लोगों को इकट्ठा करो। तब वे मेरा सम्मान सदा करना
सीखेंगे जब तक वे धरती पर रहेंगे। और वे ये उपदेश
अपने बच्चों को भी देंगे।’ 11तुम समीप आए और पर्वत
के तले खड़े हुए। पर्वत में आग लग गई और वह
आकाश छूने लगी। घने काले बादल और अंधकार
उठे। 12तब यहोवा ने आग में से तुम लोगों से बातें कीं।
तुमने किसी के बोलने वाले की आवाज सुनी। किन्तु
तुमने कोई रूप नहीं देखा। केवल आवाज सुनाई पड़
रही थी। 13यहोवा ने तुम्हें यह साक्षीपत्र दिया। उसने दस
आदेश दिए और उन्हें पालन करने का आदेश दिया।

यहोवा ने साक्षीपत्र के नियमों को दो पत्थर की शिलाओं
पर लिखा। 14उस समय यहोवा ने मुझे भी आदेश दिया
कि मैं तुम्हें इन विधियों और नियमों का उपदेश दूँ। ये
वे नियम व विधि हैं जिनका पालन तुम्हें उस देश में
करना चाहिए जिसे तुम लेने और जिसमें रहने तुम जा
रहे हो।

15“उस दिन यहोवा ने होरेब पर्वत की आग से तुमसे
बातें कीं। तुमने उसको किसी शारीरिक रूप में नहीं
देखा। 16इसलिए सावधान रहो! पाप मत करो और
किसी जीवित के रूप में किसी का प्रतीक या उसकी
मूर्ति बनाकर अपने जीवन को चौपट न करो। ऐसी
मूर्ति न बनाओ जो किसी पुरुष या स्त्री के सदृश हो।
17ऐसी मूर्ति न बनाओ जो धरती के किसी जानवर या
आकाश के किसी पक्षी की तरह दिखाई देती हो।
18और ऐसी मूर्ति न बनाओ जो धरती पर रेंगने वाले या
समुद्र की मछली की तरह दिखाई देती है। 19जब तुम
आकाश की ओर दृष्टि डालो और सूरज, चाँद, तारे
और बहुत कुछ तुम जो कभी आकाश में देखो, उससे
सावधान रहो कि तुम में उनकी पूजा या सेवा के लिए
प्रलोभन न उत्पन्न हो। यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने इन
सभी चीजों को संसार के दूसरे लोगों को दिया है।
20किन्तु यहोवा तुम्हें मिस्र से बाहर लाया है जो तुम्हारे
लिए लोहे की भट्टी* थी। वह तुम्हें इसलिये लाया कि
तुम उसके निज लोग वैसे ही बन सको जैसे तुम आज
हो।

21“यहोवा तुम्हारे कारण मुझ से क्रुद्ध था। उसने एक
विशेष वचन दिया: उसने कहा कि मैं यरदन नदी के
उस पार नहीं जा सकता। उसने कहा कि मैं उस सुन्दर
प्रदेश में प्रवेश नहीं पा सकता जिसे तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा तुम्हें दे रहा है। 22इसलिए मुझे इस देश में मरना
चाहिए। मैं यरदन नदी के पार नहीं जा सकता। किन्तु
तुम तुरन्त उसके पार जाओगे और उस देश को रहने
के लिए प्राप्त करोगे। 23उस नये देश में तुम्हें सावधान
रहना चाहिए कि तुम उस वाचा को न भूल जाओ जो
यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर ने तुमसे की है। तुम्हें किसी
भी प्रकार की मूर्ति नहीं बनानी चाहिये। यहोवा तुम्हारे
परमेश्वर ने तुम्हें उन्हें न बनाने की आज्ञा दी है।
24क्यों? क्योंकि यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर अपने लोगों
द्वारा किसी दूसरे देवता की पूजा से घृणा करता है और
यहोवा नष्ट करने वाली आग की तरह प्रलयंकर हो
सकता है!

25“जब तुम उस देश में बहुत समय रह लो और
तुम्हारे पुत्र, पौत्र हों तब अपने को नष्ट न करो, बुराई
न करो। किसी भी रूप में कोई मूर्ति न बनाओ। यहोवा
तुम्हारा परमेश्वर यह कहता है कि यह बुरा है! इससे
वह क्रोधित होगा! 26यदि तुम उस बुराई को करोगे तो
मैं धरती और आकाश को तुम्हारे विरुद्ध साक्षी के
लिए बुलाता हूँ कि यह होगा। तुम शीघ्र ही नष्ट हो
जाओगे। तुम यरदन नदी को उस देश को लेने के लिए
पार कर रहे हो, किन्तु तुम वहाँ बहुत समय तक नहीं
रहोगे। नहीं, तुम पूरी तरह नष्ट हो जाओगे! 27यहोवा
तुमको राष्ट्रों में तितर-बितर कर देगा और तुम लोगों
में से उस देश में कुछ ही जीवित रहेंगे जिसमें यहोवा
तुम्हें भेजेगा। 28तुम लोग वहाँ मनुष्यों के बनाए देवताओं
की पूजा करोगे, उन चीजों की जो लकड़ी और पत्थर
की होंगी जो देख नहीं सकती, सुन नहीं सकतीं, खा
नहीं सकतीं, सूँघ नहीं सकतीं। 29किन्तु इन दूसरे देशों
में तुम यहोवा अपने परमेश्वर की खोज करोगे। यदि
तुम अपने हृदय और पूरी आत्मा से उसकी खोज
करोगे तो उसे पाओगे। 30जब तुम विपत्ति में पड़ोगे और
वे सभी बातें तुम पर घटेंगी तो तुम यहोवा अपने परमेश्वर
के पास लौटोगे और उसकी आज्ञा का पालन करोगे।
31यहोवा तुम्हारा परमेश्वर कृपालु है, वह तुम्हारा परित्याग
नहीं करेगा। वह तुम्हें नष्ट नहीं करेगा। वह उस
वाचा को नहीं भूलेगा जो उसने तुम्हारे पूर्वजों को वचन
के रूप में दी।

उन महान कर्मों को सोचो जो यहोवा ने तुम्हारे लिये किये

32“क्या इतनी महान घटनाओं में से कोई इसके पहले
हुई? कभी नहीं! बीते समय को देखो। तुम्हारे जन्म के
पहले जो महान घटनाएँ घटी उन्हें याद करो। उस समय
तक पीछे जाओ जब परमेश्वर ने धरती पर आदमी को
बनाया। उन सभी घटनाओं को देखो जो संसार में कभी
कहीं भी घटी हैं। क्या इस महान घटना जैसी घटना
किसी ने कभी पहले सुनी है? नहीं! 33तुम लोगों ने
परमेश्वर को तुमसे आग में से बोलते सुना और तुम
लोग अभी भी जीवित हो। 34क्या ऐसी घटना किसी के
साथ घटित हुई है? नहीं! और क्या किसी दूसरे ईश्वर
ने कभी किसी दूसरे राष्ट्रों के भीतर जाकर स्वयं वहाँ
से लोगों को बाहर लाने का प्रयत्न किया है? नहीं!
किन्तु तुमने स्वयं यहोवा अपने परमेश्वर को, इन
अद्भुत कार्यों को करते देखा है। उसने अपनी शक्ति
और दृढ़ता को दिखाया। तुमने उन विपत्तियों को देखा
जो लोगों के लिए परीक्षा थी। तुम लोगों ने चमत्कार
और आश्चर्य देखे। तुम लोगों ने युद्ध और जो भंयकर
घटनाएँ हुई, उन्हें देखा।

35उसने तुम्हें ये सब दिखाए जिससे तुम जान सको
कि यहोवा ही परमेश्वर है। उसके समान कोई अन्य
देवता नहीं है। 36यहोवा आकाश से अपनी बात
इसलिए सुनने देता था जिससे वह तुम्हें शिक्षा दे सके।

भट्टी वह जगह जहाँ बहुत प्रखर आग जलती है। यहाँ मिस्र की तुलना गर्म भट्टी से की गई है।

धरती पर उसने अपनी महान आग दिखायी और वह उसमें से बोला।

37“यहोवा तुम्हारे पूर्वजों से प्यार करता था। यही कारण था कि उसने उनके वंशजों अर्थात् तुमको चुना और यही कारण है कि यहोवा तुम्हें मिस्र से बाहर लाया। वह तुम्हारे साथ था और अपनी बड़ी शक्ति से तुम्हें बाहर लाया।
38जब तुम आगे बढ़े तो यहोवा ने तुम्हारे सामने से राष्ट्रों को बाहर जाने के लिए विवश किया। ये राष्ट्र तुमसे बड़े और अधिक शक्तिशाली थे। किन्तु यहोवा तुम्हें उनके देश में ले आया। उसने उनका देश तुमको रहने को दिया और यह देश आज भी तुम्हारा है।

39“इसलिए आज तुम्हें याद रखना चाहिए और स्वीकार करना चाहिए कि यहोवा परमेश्वर है। वहाँ ऊपर स्वर्ग में तथा यहाँ धरती का परमेश्वर है। यहाँ और कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है!
40और तुम्हें उसके उन नियमों और आदेशों का पालन करना चाहिए जिन्हें मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ। तब हर एक बात तुम्हारे और तुम्हारे उन बच्चों के लिए ठीक रहेगी जो तुम्हारे बाद होंगे और तुम लम्बे समय तक उस देश में रहोगे जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें सदा के लिए दे रहा है।”

मूसा सुरक्षा के नगरों को चुनता है

41तब मूसा ने तीन नगरों को यरदन नदी की पूर्व की ओर चुना।
42यदि कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को संयोगवश मार डाले तो वह इन नगरों में से किसी में भागकर जा सकता था और सुरक्षित रह सकता था। यदि वह मारे गए व्यक्ति से घृणा नहीं करता था और उसे मार डालने का इरादा नहीं रखता था तो वह उन नगरों में से किसी एक में जा सकता था और उसे प्राण–दण्ड नहीं दिया जा सकता था।
43मूसा ने जिन तीन नगरों को चुना, वे ये थे: रुबेनी लोगों के लिए मरुभूमि की मैदानी भूमि में बेसेर; गादी लोगों के लिए गिलाद में रामोत और मनश्शे लोगों को लिए बाशान में गोलान।

मूसा के नियमों का परिचय

44इस्राएली लोगों के लिए जो नियम मूसा ने दिया वह यह है।
45ये उपदेश, विधि और नियम मूसा ने लोगों को तब दिये जब वे मिस्र से बाहर आए।
46मूसा ने इन नियमों को तब दिया जब लोग यरदन नदी के पूर्वी किनारे पर बेतपोर के पार घाटी में थे। वे एमोरी राजा सीहोन के देश में थे, जो हेशबोन में रहता था। (मूसा और इस्राएल के लोगों ने सीहोन को तब हराया था जब वे मिस्र से आए थे।
47उन्होंने सीहोन के देश को अपने पास रखने के लिए ले लिया था। ये दोनों एमोरी राजा यरदन नदी के पूर्व में रहते थे।
48यह प्रदेश अर्नोन घाटी के सिरे पर स्थित अरोएर से लेकर सीओन पर्वत तक फैला था, (अर्थात् हेर्मोन पर्वत तक।)
49इस प्रदेश में यरदन नदी के पूर्व का पूरा अराबा सम्मिलित था। दक्षिण में यह अराबा सागर तक पहुँचता था और पूर्व में पिसगा पर्वत के चरण तक पहुँचता था।)

दस आदेश

5 मूसा ने इस्राएल के सभी लोगों को एक साथ बुलाया और उनसे कहा, “इस्राएल के लोगों, आज जिन नियम व विधियों को मैं बता रहा हूँ उन्हें सुनो। इन नियमों को सीखो और दृढ़ता से उनका पालन करो।
2यहोवा, हम लोगों के परमेश्वर ने होरेब (सीनै) पर्वत पर हमारे साथ वाचा की थी।
3यहोवा ने यह वाचा हम लोगों के पूर्वजों के साथ नहीं की थी, अपितु हम लोगों के साथ की थी। हाँ, हम लोगों के साथ जो यहाँ आज जीवित हैं।
4यहोवा ने पर्वत पर तुमसे आमने–सामने बातें कीं। उसने तुम से आग में से बातें कीं।
5उस समय तुमको यह बताने के लिए कि यहोवा ने क्या कहा, मैं तुम लोगों और यहोवा के बीच खड़ा था। क्यों? क्योंकि तुम आग से डर गए थे और तुमने पर्वत पर जाने से इन्कार कर दिया था। यहोवा ने कहा:
6मैं यहोवा तुम्हारा वह परमेश्वर हूँ जो तुम्हें मिस्र से बाहर लाया जहाँ तुम दास की तरह रहते थे।

7“मेरे अतिरिक्त किसी अन्य देवता की पूजा न करो।

8“किसी की मूर्तियाँ या किसी के चित्र जो आकाश में ऊपर, पृथ्वी पर या नीचे समुद्र में हो, न बनाओ।
9“किसी प्रकार के प्रतीक की पूजा या सेवा न करो। क्यों? क्योंकि मैं यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ। मैं अपने लोगों द्वारा किसी अन्य देवता की पूजा से घृणा करता हूँ। ऐसे लोग जो मेरे विरुद्ध पाप करते हैं, मेरे शत्रु हो जाते हैं। मैं उन लोगों को दण्ड दूँगा और मैं उनके पुत्रों, पौत्रों और प्रपौत्रों को दण्ड दूँगा।
10किन्तु मैं उन लोगों पर बहुत दयालु रहूँगा जो मुझसे प्रेम करते हैं और मेरे आदेशों को मानते हैं। मैं उनकी सहस्र पीढ़ी तक उन पर दयालु रहूँगा!

11“यहोवा, अपने परमेश्वर के नाम का उपयोग गलत ढ़ंग से न करो। यदि कोई व्यक्ति उसके नाम का उपयोग गलत ढ़ंग से करता हो तो वह दोषी है और यहोवा उसे निर्दोष नहीं बनाएगा।

12“सब्त के दिन को विशेष महत्व देना याद रखो। यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर ने आदेश दिया है कि तुम सब्त के दिन को सप्ताह के अन्य दिनों से भिन्न करो।
13पहले छ: दिन तुम्हारे काम करने के लिए हैं।
14किन्तु सातवाँ दिन यहोवा तुम्हारे परमेश्वर के सम्मान में आराम का दिन है। इसलिए सब्त के दिन कोई व्यक्ति काम न करे, अर्थात् तुम, तुम्हारे पुत्र, तुम्हारी पुत्रियाँ, तुम्हारे सेवक, दास स्त्रियाँ, तुम्हारी

गायें, तुम्हारे गधे, अन्य जानवर, और तुम्हारे ही
नगरों में रहने वाले विदेशी, कोई भी नहीं! तुम्हारे
दास तुम्हारी ही तरह आराम करने की स्थिति में
होने चाहिए। 15यह मत भूलो कि तुम मिस्र में दास
थे। यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर महान शक्ति से तुम्हें
मिस्र से बाहर लाया। उसने तुम्हें स्वतन्त्र किया। यही
कारण है कि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर आदेश देता
है कि तुम सब्त के दिन को हमेशा विशेष दिन
मानो।

16"अपने माता-पिता का सम्मान करो। यहोवा
तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें यह करने का आदेश
दिया है। यदि तुम इस आदेश का पालन करते हो तो
तुम्हारी उम्र लम्बी होगी और उस देश में जिसे
यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुमको दे रहा है तुम्हारे
साथ सब कुछ अच्छा होगा।

17"किसी की हत्या न करो।

18"व्यभिचार का पाप न करो।

19"कोई चीज मत चुराओ।

20"दूसरों ने जो कुछ किया है उसके बारे में झूठ
मत बोलो।

21"तुम दूसरों की चीज़ों को अपना बनाने की
इच्छा न करो। दूसरे व्यक्ति की पत्नी, घर, खेत,
पुरुष या स्त्री सेवक, गायें और गधे को लेने की
इच्छा तुम्हें नहीं करनी चाहिए!"

लोगों का भय

22मूसा ने कहा, "यहोवा ने ये आदेश तुम सभी को
दिये जब तुम एक साथ पर्वत पर थे। यहोवा ने स्पष्ट
शब्दों में बातें कीं और उसकी तेज आवाज आग, बादल
और घने अन्धकार से सुनाई दे रही थी। जब उसने यह
आदेश दे दिये तब और कुछ नहीं कहा। उसने अपने
शब्दों को दो पत्थर की शिलाओं पर लिखा और उन्हें
मुझे दे दिया।

23"तुमने आवाज को अंधेरे में तब सुना जब पर्वत
आग से जल रहा था। तब तुम मेरे पास आए, तुम्हारे
परिवार समूह के सभी नेता और तुम्हारे सभी बुजुर्ग।
24उन्होंने कहा, 'यहोवा हमारे परमेश्वर ने अपना गौरव
और महानता दिखाई है। हमने उसे आग में से बोलते
सुना है! आज हम लोगों ने देख लिया है कि किसी
व्यक्ति का परमेश्वर से बात करने के बाद भी जीवित
रह सकना, सम्भव है। 25किन्तु यदि हमने यहोवा अपने
परमेश्वर को दुबारा बात करते सुना तो हम जरूर मर
जाएंगे! वह भयानक आग हमें नष्ट कर देगा। किन्तु
हम मरना नहीं चाहते। 26कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जिसने
हम लोगों की तरह कभी जीवित परमेश्वर को आग में
से बात करते सुना हो और जीवित हो! 27मूसा, तुम
समीप जाओ और यहोवा हम लोगों का परमेश्वर, जो
कहता है सुनो। तब वह सब बातें हमें बताओ जो यहोवा
तुमसे कहता है, और हम लोग वह सब करेंगे जो तुम
कहोगे।'

यहोवा मूसा से बात करता है

28"यहोवा ने वे बाते सुनीं जो तुमने मुझसे कहीं। तब
यहोवा ने मुझसे कहा, 'मैंने वे बाते सुनीं जो इन लोगों ने
कही। जो कुछ उन्होंने कहा है, ठीक है। 29मैं केवल
यह चाहता हूँ कि वे हृदय से मेरा सम्मान करें और मेरे
आदेशों को मानें। तब हर एक चीज़ उनके तथा उनके
वंशजों के लिए सदैव अच्छी रहेगी।

30"'जाओ और लोगों से कहो कि अपने डेरों में लौट
जायें। 31किन्तु मूसा, तुम मेरे निकट खड़े रहो। मैं तुम्हें
सारे आदेश, विधि और नियम दूँगा जिसकी शिक्षा तुम
उन्हें दोगे। उन्हें ये सभी बातें उस देश में करनी चाहिए
जिसे मैं उन्हें रहने के लिए दे रहा हूँ।'

32"इसलिए तुम सभी लोगों को वह सब कुछ करने
के लिए सावधान रहना चाहिए जिसके लिए यहोवा का
तुम्हें आदेश है। तुम्हें न दाहिने हाथ मुड़ना चाहिये और
न ही बायें हाथ। सदैव उसकी आज्ञाओं का पालन
करना चाहिये! 33तुम्हें उसी तरह रहना चाहिए, जिस
प्रकार रहने का आदेश यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने
तुमको दिया है। तब तुम सदा जीवित रह सकते हो और
हर चीज़ तुम्हारे लिए अच्छी होगी। उस देश में, जो
तुम्हारा होगा, तुम्हारी आयु लम्बी हो जायेगी।

सदैव परमेश्वर से प्रेम करो तथा आज्ञा मानों!

6 "जिन आदेशों, विधियों और नियमों को यहोवा,
तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें सिखाने को मुझे कहा
है, वे ये हैं। इनका पालन उस देश में करो जिसमे रहने
के लिए तुम प्रवेश कर रहे हो। 2तुम और तुम्हारे
वंशजों को जब तक जीवित रहो, यहोवा अपने परमेश्वर
का सम्मान करना चाहिए। तुम्हें उनके उन सभी नियमों
और आदेशों का पालन करना चाहिए जिन्हें मैं तुम्हें दे
रहा हूँ। यदि तुम ऐसा करोगे तो उस नये देश में लम्बी
उम्र पाओगे। 3इस्राएल के लोगों, इसे ध्यान से सुनो और
इन नियमों का पालन करो। तब सब कुछ तुम्हारे साथ
अच्छा होगा और तुम एक महान राष्ट्र बनोगे। यहोवा,
तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने, इन सबके लिए वचन
दिया है कि तुम बहुत सी अच्छी वस्तुओं से युक्त धरती
को, जहाँ दूध और शहद बहता है, प्राप्त करोगे।

4"इस्राएल के लोगों, ध्यान से सुनो! यहोवा हमारा
परमेश्वर है, यहोवा एक है! 5और तुम्हें यहोवा, अपने
परमेश्वर से अपने सम्पूर्ण हृदय, आत्मा और शक्ति से
प्रेम करना चाहिए। 6इन आदेशों को सदा याद रखो
जिन्हें मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ। 7इनकी शिक्षा अपने
बच्चों को देने के लिये सावधान रहो। इन आदेशों के

बारे में तुम अपने घर में बैठे और सड़क पर घूमते बातें
करो। जब तुम लेटो और जब जागो तब इनके बारे में
बातें करो। 8इन आदेशों को लिखो और मेरे उपदेशों
को याद रखने में सहायता के लिए अपने हाथों पर इसे
बांधों तथा प्रतीक रूप में अपने ललाट पर धारण करो।
9अपने घरों के दरवाजों, खम्भों और फाटकों पर इसे
लिखो।

10“यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें उस देश में ले
जाएगा जिसके लिए उसने तुम्हारे पूर्वजों–इब्राहीम,
इसहाक और याकूब को देने का वचन दिया था। तब
वह तुम्हें बड़े और सम्पन्न नगर देगा जिन्हें तुमने नहीं
बनाया। 11यहोवा तुम्हें अच्छी चीज़ों से भरे घर देगा
जिन्हें तुमने वहाँ नहीं रखा। यहोवा तुम्हें कुएँ देगा जिन्हें
तुमने नहीं खोदा है। यहोवा तुम्हें अंगूरों और जैतून के
बाग देगा जिन्हें तुमने नहीं लगाया। तुम्हारे खाने के लिए
भरपूर होगा।

12“किन्तु सावधान रहो। यहोवा को मत भूलो जो
तुम्हें मिस्र से लाया, जहाँ तुम दास थे। 13यहोवा अपने
परमेश्वर का सम्मान करो और केवल उसी की सेवा
करो। वचन देने के लिए तुम केवल उसी के नाम
का उपयोग करोगे। 14तुम्हें अन्य देवताओं का अनुसरण
नहीं करना चाहिए। तुम्हें अपने चारों ओर रहने वाले
लोगों के देवताओं का अनुसरण नहीं करना चाहिए।
15यहोवा तुम्हारा परमेश्वर सदा तुम्हारे साथ है और
यदि तुम दूसरे देवताओं का अनुसरण करोगे तो वह तुम
पर बहुत क्रोधित होगा! वह धरती से तुम्हारा सफाया
कर देगा। यहोवा अपने लोगों द्वारा अन्य देवताओं की
पूजा से घृणा करता है।

16“तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर का परीक्षण उस
प्रकार नहीं करना चाहिए जिस प्रकार तुमने मस्सा में
किया। 17तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर के आदेशों के
पालन के लिए दृढ़ निश्चय रखना चाहिए। तुम्हें उसके
सभी उन उपदेशों और नियमों का पालन करना चाहिए
जिन्हें उसने तुमको दिया है। 18तुम्हें वे बातें करनी
चाहिए जो ठीक और अच्छी अर्थात् यहोवा को प्रसन्न
करने वाली हों। तब तुम्हारे लिये हर एक बात ठीक
होगी और तुम उस अच्छे देश में जा सकते हो जिसके
लिए यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों को वचन दिया था 19और
तुम अपने सभी शत्रुओं को बलपूर्वक बाहर निकाल
सकोगे, जैसा यहोवा ने कहा है।

अपने बच्चों को परमेश्वर के कार्यों की शिक्षा दो

20“भविष्य में, तुम्हारा पुत्र तुमसे यह पूछ सकता है
कि ‘यहोवा हमारे परमेश्वर ने हमें जो उपदेश, विधि
और नियम दिये, उनका अर्थ क्या है?’ 21तब तुम अपने
पुत्र से कहोगे, ‘हम मिस्र में फ़िरौन के दास थे, किन्तु
यहोवा हमें बड़ी शक्ति से मिस्र से बाहर लाया। 22यहोवा
ने हमें महान, भयंकर चिन्ह और चमत्कार दिखाए।
हम लोगों ने उनके द्वारा इन घटनाओं को मिस्र के
लोगों, फिरौन और फिरौन के महल के लोगों के साथ
होते देखा 23और यहोवा हम लोगों को मिस्र से इसलिए
लाया कि वह वो देश हमें दे सके जिसके लिए उसने
हमारे पूर्वजों को वचन दिया था। 24यहोवा ने हमें इन
सभी उपदेशों के पालन का आदेश दिया। इस प्रकार
हम लोग यहोवा, अपने परमेश्वर का सम्मान करते हैं।
तब यहोवा सदा हम लोगों को जीवित रखेगा और हम
अच्छा जीवन बिताएंगे जैसा इस समय है। 25यदि हम इस
सारे नियमों का पालन परमेश्वर के निर्देशों के आधार
पर करते हैं तो परमेश्वर हमें अच्छाईयों से भर देगा।’

इस्राएल, परमेश्वर के विशेष लोग

7 “यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें उस देश में ले
जायेगा जिसे अपना बनाने के लिए तुम उसमें जा
रहे हो। यहोवा तुम्हारे लिए बहुत से राष्ट्रों को बलपूर्वक
हटाएगा–हित्ती, गिर्गाशी, एमोरी, कनानी, परिज्जी, हिब्बी
और यबूसी, सात तुमसे बड़े और अधिक शक्तिशाली
राष्ट्रों को। 2यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर इन राष्ट्रों को
तुम्हारे अधीन करेगा और तुम उन्हें हराओगे। तुम्हें
उन्हें पूरी तरह नष्ट कर देना चाहिए। उनके साथ कोई
सन्धि न करो। उन पर दया न करो। 3उन लोगों में से
किसी के साथ विवाह न करो, और उन राष्ट्रों के
किसी व्यक्ति के साथ अपने पुत्र और पुत्रियों का विवाह
न करो। 4क्यों? क्योंकि वे लोग तुम्हें परमेश्वर से दूर
ले जायेगें, इसलिये तुम्हारे बच्चे दूसरे देवताओं की सेवा
करेंगे और यहोवा तुम पर बहुत क्रोधित होगा। वह
शीघ्रता से तुम्हें नष्ट कर देगा।

बनावटी देवताओं को नष्ट करने का आदेश

5“तुम्हें इन राष्ट्रों के साथ यह करना चाहिए: तुम्हें
उनकी वेदियाँ नष्ट करनी चाहिए और विशेष पत्थरों
को टुकड़ों में तोड़ डालना चाहिए। उनके अशेरा स्तम्भों
को काट डालो और उनकी मूर्तियों को जला दो! 6क्यों?
क्योंकि तुम यहोवा के अपने लोग हो। तुम यहोवा की
निज सम्पत्ति हो। संसार के सभी लोगों में से यहोवा
तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें विशेष लोग, ऐसे लोग जो
उसके अपने हैं, चुना। 7यहोवा तुमसे क्यों प्रेम करता है
और तुम्हें उसने क्यों चुना? इसलिए नहीं कि अन्य
लोगों की तुलना में तुम्हारी संख्या बहुत अधिक है। तुम
सभी लोगों में सबसे कम थे। 8किन्तु यहोवा तुमको
अपनी बड़ी शक्ति के द्वारा मिस्र के बाहर लाया। उसने
तुम्हें दासता से मुक्त किया। उसने मिस्र के सम्राट फ़िरौन
की अधीनता से तुम्हें स्वतन्त्र किया। क्यों? क्योंकि
यहोवा तुमसे प्रेम करता है और तुम्हारे पूर्वजों को दिए
गए वचन को पूरा करना चाहता था।

9“इसलिए याद रखो कि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर ही
एकमात्र परमेश्वर है, और वही विश्वसनीय है! वह
अपनी वाचा को पूरा करता है। वह उन सभी लोगों से
प्रेम करता तथा उन पर दया करता है जो उससे प्रेम
करते और उसके आदेशों का पालन करते हैं। वह
हजारों पीढ़ियों तक प्रेम और दया करता रहता है।
10किन्तु यहोवा उन लोगों को दण्ड देता है जो उससे
घृणा करते हैं। वह उनको नष्ट करेगा। वह उस व्यक्ति
को दण्ड देने में देर नहीं करेगा जो उससे घृणा करता
है। 11इसलिए तुम्हें उन आदेशों, विधियों और नियमों के
पालन में सावधान रहना चाहिए जिन्हें मैं आज तुम्हें दे
रहा हूँ।

12“यदि तुम मेरे इन नियमों पर ध्यान दोगे और
उनके पालन में सावधान रहोगे तो यहोवा तुम्हारा
परमेश्वर तुमसे प्रेम की वाचा का पालन करेगा। उसने
यह वचन तुम्हारे पूर्वजों को दिया था। 13वह तुमसे प्रेम
करेगा और तुम्हें आशीर्वाद देगा। तुम्हारे राष्ट्र में लोग
बराबर बढ़ते जाएंगे। वह तुम्हें बच्चे होने का आशीर्वाद
देगा। वह तुम्हारे खेतों में अच्छी फसल का आशीर्वाद
देगा वह तुम्हें अन्न, नई दाखमधु और तेल देगा। वह
तुम्हारी गायों को बछड़े और तुम्हारी भेड़ों को मेमने
पैदा करने का आशीर्वाद देगा। तुम वे सभी आशीर्वाद
उस देश में पाओगे जिसे तुम्हें देने का वचन यहोवा ने
तुम्हारे पूर्वजों को दिया था। 14तुम अन्य लोगों से
अधिक आशीर्वाद पाओगे। हर एक पति-पत्नी बच्चे
उत्पन्न करने योग्य होंगे। तुम्हारे पशु बछड़े उत्पन्न
करने योग्य होंगे। 15और यहोवा तुमसे सभी बीमारियों
को दूर करेगा। यहोवा तुमको उन भयंकर बीमारियों से
बचायेगा तथा उन भयंकर बीमारियों को उन सभी
लोगों को देगा जो तुमसे घृणा करते हैं। 16तुम्हें उन सभी
लोगों को नष्ट करना चाहिए जिन्हें हराने में यहोवा
तुम्हारा परमेश्वर सहायता करता है। उन पर दया न
करो। उनके देवताओं की सेवा न करो! क्यों? क्योंकि
यदि तुम उनके देवताओं की सेवा करोगे तो तुम्हें
दण्ड भुगतना होगा।

यहोवा अपने लोगों को सहायता का वचन देता है

17“अपने मन में यह न सोचो, ‘ये राष्ट्र हम लोगों से
अधिक शक्तिशाली हैं। हम उन्हें बलपूर्वक कैसे भगा
सकते हैं?’ 18तुम्हें उनसे डरना नहीं चाहिए। तुम्हें वह
याद रखना चाहिए जो परमेश्वर, तुम्हारे यहोवा ने फ़िरौन
और मिस्र के लोगों के साथ किया। 19जो बड़ी विपत्तियाँ
उसने दीं तुमने उन्हें देखा। तुमने उसके किये चमत्कार
और आश्चर्यों को देखा। तुमने यहोवा की बड़ी शक्ति
और दृढ़ता को, तुम्हें बाहर लाने में उपयोग करते देखा।
यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर उसी शक्ति का उपयोग उन
लोगों के विरुद्ध करेगा जिनसे तुम डरते हो।

20“यहोवा तुम्हारा परमेश्वर, बड़ी बर्रों को उन सभी
लोगों का पता लगाने के लिए भेजेगा जो तुमसे भागे हैं
और अपने को छिपाया है। यहोवा उन सभी लोगों को
नष्ट करेगा। 21तुम उनसे डरो नहीं, क्योंकि यहोवा
तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे साथ है। वह महान और
विस्मयकारी परमेश्वर है। 22यहोवा तुम्हारा परमेश्वर
उन राष्ट्रों को तुम्हारा देश थोड़ा-थोड़ा करके छोड़ने
को विवश करेगा। तुम उन्हें एक ही बार में सभी को
नष्ट नहीं कर पाओगे। यदि तुम ऐसा करोगे तो जंगली
जानवरों की संख्या तुम्हारी तुलना में अधिक हो जाएगी।
23किन्तु यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उन राष्ट्रों को तुमको
देगा। यहोवा उनको युद्ध में भ्रमित कर देगा, जब तक
वे नष्ट नहीं होते। 24यहोवा तुम्हें उनके राजाओं को
हराने में सहायता करेगा। तुम उन्हें मार डालोगे और
संसार भूल जाएगा कि वे कभी थे। कोई भी तुम लोगों
को रोक नहीं सकेगा। तुम उन सभी को नष्ट करोगे!

25“तुम्हें उनके देवताओं की मूर्तियों को जला देना
चाहिए। तुम्हें उन मूर्तियों पर मढ़े सोने या चाँदी को लेने
की इच्छा नहीं रखनी चाहिए। तुम्हें उस सोने और चाँदी
को अपने लिए नहीं लेना चाहिए। यदि तुम उसे लोगे तो
दण्ड पाओगे। क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर
उन मूर्तियों से घृणा करता है 26और तुम्हें अपने घर में
उन मूर्तियों में से कोई लानी नहीं चाहिए जिनसे यहोवा
घृणा करता है। यदि तुम उन मूर्तियों को अपने घर में
लाते हो तो तुम मूर्तियों की तरह नष्ट हो जाओगे। तुम्हें
उन मूर्तियों से घृणा करनी चाहिए। तुम्हें उनसे तीव्र
घृणा करनी चाहिए! यहोवा ने उन मूर्तियों को नष्ट
करने की प्रतिज्ञा की है!

यहोवा को याद रखो

8 “तुम्हें आज जो आदेश दे रहा हूँ उसे ध्यान से
सुनना और उनका पालन करना चाहिए। क्योंकि
तब तुम जीवित रहोगे। तुम्हारी संख्या अधिक से अधिक
होती जाएगी। तुम उस देश में जाओगे और उसमें रहोगे
जिसे यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों को देने का वचन दिया है
2और तुम्हें उस लम्बी यात्रा को याद रखना है जिसे
यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने मरुभूमि में चालीस वर्ष तक
कराई है। यहोवा तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। वह तुम्हें
विनम्र बनाना चाहता था। वह चाहता था कि वह तुम्हारे
हृदय की बात जाने कि तुम उसके आदेशों का पालन
करोगे या नहीं। 3यहोवा ने तुमको विनम्र बनाया और
तुम्हें भूखा रहने दिया। तब उसने तुम्हें मन्ना खिलाया,
जिसे तुम पहले से नहीं जानते थे, जिसे तुम्हारे पूर्वजों ने
कभी नहीं देखा था। यहोवा ने यह क्यों किया? क्योंकि
वह चाहता था कि तुम जानो कि केवल रोटी ही ऐसी
नहीं है जो लोगों को जीवित रखती है। लोगों का जीवन
यहोवा के वचन पर आधारित है। 4इन पिछले चालीस

वर्षों में तुम्हारे वस्त्र फटे नहीं और यहोवा ने तुम्हारे
पैरों की रक्षा सूजन से भी की। 5इसलिए तुम्हें जानना
चाहिए कि यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें शिक्षित
करने और सुधारने के लिए वह सब वैसे ही किया जैसे
कोई पिता अपने पुत्र की शिक्षा के लिए करता है।
6"तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर के आदेशों को पालन
करना चाहिए। उसके बताए मार्ग पर जीवन बिताओ
और उसका सम्मान करो। 7यहोवा तुम्हारा परमेश्वर
तुम्हें एक अच्छे देश में ले जा रहा है, ऐसे देश में जिसमें
नदियाँ और पानी के ऐसे सोते हैं जिनसे जमीन से पानी
घाटियों और पहाड़ियों में बहता है। 8यह ऐसा देश है
जिसमें गेहूँ, जौ, अंगूर की बेलें, अंजीर के पेड़ और
अनार होते हैं। यह ऐसा देश है जिसमें जैतून का तेल
और शहद होता हैं। 9वहाँ तुम्हें बहुत अधिक भोजन
मिलेगा। तुम्हें वहाँ किसी चीज़ की कमी नहीं होगी। यह
ऐसा देश है जहाँ लोहे की चट्टाने हैं। तुम पहाड़ियों से
तांबा खोद सकते हो। 10तुम्हारे खाने के लिये पर्याप्त
होगा और तुम संतुष्ट होगे । तब तुम यहोवा अपने
परमेश्वर की प्रशंसा करोगे कि उसने तुम्हें ऐसा अच्छा
देश दिया।

यहोवा के कार्यों को मत भूलो

11"सावधान रहो, यहोवा अपने परमेश्वर को न भूलो।
सावधान रहो कि आज मैं जिन आदेशों, विधियों और
नियमों को दे रहा हूँ उनका पालन हो। 12तुम्हारे खाने
के लिए बहुत अधिक होगा और तुम अच्छे मकान
बनाओगे और उनमें रहोगे। 13तुम्हारे गाय, मवेशी और
भेड़ों के झुण्ड बहुत बड़े होंगे, तुम अधिक से अधिक
सोना और चाँदी पाओगे और तुम्हारे पास बहुत सी चीज़ें
होंगी।
14जब ऐसा होगा तो तुम्हें सावधान रहना चाहिए कि
तुम्हें घमण्ड न हो। तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर को
नहीं भूलना चाहिए। वह तुमको मिस्र से लाया, जहाँ तुम
दास थे। 15यहोवा तुम्हें विशाल और भंयकर मरुभूमि से
लाया। जहरीले साँप और बिच्छू उस मरुभूमि में थे।
जमीन शुष्क थी और कहीं पानी नहीं था। किन्तु यहोवा
ने चट्टान के नीचे से पानी दिया। 16मरुभूमि में यहोवा
ने तुम्हें मन्ना खिलाया, ऐसी चीज जिसे तुम्हारे पूर्वज
कभी नहीं जान सके। यहोवा ने तुम्हारी परीक्षा ली।
क्यों? क्योंकि यहोवा तुमको विनम्र बनाना चाहता था।
वह चाहता था कि अन्तत: तुम्हारा भला हो। 17अपने
मन में कभी ऐसा न सोचो, 'मैंने यह सारी सम्पत्ति अपनी
शक्ति और योग्यता से पाई है।' 18यहोवा अपने परमेश्वर
को याद रखो। याद रखो कि वह ही एक है जो तुम्हें ये
कार्य करने की शक्ति देता है। यहोवा ऐसा क्यों करता
है? क्योंकि इन दिनों वह तुम्हारे पूर्वजों के साथ की गई
वाचा को पूरा कर रहा है।
19"यहोवा अपने परमेश्वर को कभी न भूलो।तुम
किसी दूसरे देवता की पूजा या सेवा के लिए उसका
अनुसरण न करो! यदि तुम ऐसा करोगे तो मैं तुम्हें
आज चेतावनी देता हूँ: तुम निश्चय ही नष्ट कर दिये
जाओगे! 20यहोवा तुम्हारे लिये अन्य राष्ट्रों को नष्ट
कर रहा है। तुम भी उन्हीं राष्ट्रों की तरह नष्ट हो
जाओगे जिन्हें यहोवा तुम्हारे सामने नष्ट कर रहा है।
यह होगा क्योंकि तुमने यहोवा अपने परमेश्वर की
आज्ञा का पालन नहीं किया।

यहोवा इस्राएल के लोगों का साथ देगा!

9 "ध्यान दो, इस्राएल के लोगों! आज तुम यरदन नदी
को पार करोगे। तुम उस देश में अपने से बड़े और
शक्तिशाली राष्ट्रों को बलपूर्वक हटाने के लिए जाओगे।
उनके नगर बड़े और उनकी दीवारें आकाश को छूती
हैं। 2वहाँ के लोग लम्बे और बलवान हैं। वे अनाकी
लोग हैं। तुम इन लोगों के बारे में जानते हो। तुम लोगों
ने अपने गुप्तचरों को यह कहते हुए सुना, 'कोई व्यक्ति
अनाकी लोगों को नहीं हरा सकता।' 3किन्तु तुम पूरा
विश्वास कर सकते हो कि यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर
भस्म करने वाली आग की तरह तुम्हारे आगे नदी के
पार जा रहा है। यहोवा उन राष्ट्रों को नष्ट करेगा। वह
उन्हें तुम्हारे सामने पराजित करायेगा। तुम उन राष्ट्रों
को बलपूर्वक निकाल बाहर करोगे। तुम शीघ्र ही उन्हें
नष्ट करोगे। यहोवा ने यह प्रतिज्ञा की है कि ऐसा होगा।
4"यहोवा तुम्हारा परमेश्वर जब उन राष्ट्रों को बलपूर्वक
तुमसे दूर हटा दे तो अपने मन में यह न कहना कि,'यहोवा
हम लोगों को इस देश में रहने के लिए इसलिए लाया
कि हम लोगों के रहने का ढंग उचित है।' यहोवा ने
उन राष्ट्रों को तुम लोगों से दूर बलपूर्वक क्यों हटाया?
क्योंकि वे बुरे ढंग से रहते थे। 5तुम उनका देश लेने के
लिए जा रहे हो, किन्तु इसलिए नहीं कि तुम अच्छे हो
और उचित ढंग से रहते हो। तुम उस देश में जा रहे हो
और यहोवा तुम्हारा परमेश्वर चाहता है कि जो वचन
उसने तुम्हारे पूर्वजों–इब्राहीम, इसहाक और याकूब को
दिया वह पूरा हो। 6यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उस अच्छे
देश को तुम्हें रहने के लिए दे रहा है, किन्तु तुम्हें यह
जानना चाहिए कि ऐसा तुम्हारी जिन्दगी के अच्छे ढंग
के होने के कारण नहीं हो रहा है। सच्चाई यही है कि
तुम अड़ियल लोग हो!

यहोवा का क्रोध याद रखो

7"यह मत भूलो कि तुमने यहोवा अपने परमेश्वर
को मरुभूमि में क्रोधित किया! तुमने उसी दिन से जिस
दिन से मिस्र से बाहर निकले और इस स्थान पर आने
के दिन तक यहोवा के आदेश को मानने से इन्कार
किया है। 8तुमने यहोवा को होरेब (सीनै) पर्वत पर भी

क्रोधित किया। यहोवा तुम्हें नष्ट कर देने की सीमा
तक क्रोधित था! 9मैं पत्थर की शिलाओं को लेने के
लिए पर्वत के ऊपर गया, जो वाचा यहोवा ने तुम्हारे
साथ किया, उन शिलाओं में लिखे थे। मैं वहाँ पर्वत पर
चालीस दिन और चालीस रात ठहरा। मैंने न रोटी खाई,
न ही पानी पिया। 10तब यहोवा ने मुझे पत्थर की
शिलाएँ दी। यहोवा ने उन शिलाओं पर अपनी उंगलियों
से लिखा है। उसने उस हर एक बात को लिखा है जिन्हें
उसने आग में से कहा था। जब तुम पर्वत के चारों ओर
इकट्ठे थे। 11"इसलिए, चालीस दिन और चालीस रात
के अन्त में यहोवा ने मुझे साक्षीपत्र की दो शिलाएँ दी।
12तब यहोवा ने मुझसे कहा, 'उठो और शीघ्रता से यहाँ
से नीचे जाओ। जिन लोगों को तुम मिस्र से बाहर लाए
हो उन लोगों ने अपने को बरबाद कर लिया है। वे उन
बातों से शीघ्रता से हट गए हैं, जिनके लिए मैंने आदेश
दिया था। उन्होंने सोने को पिघला कर अपने लिए एक
मूर्ति बना ली है।'
13"यहोवा ने मुझसे यह भी कहा, 'मैंने इन लोगों पर
अपनी निगाह रखी है। वे बहुत अड़ियल हैं! 14मुझे इन
लोगों को पूरी तरह नष्ट कर देने दो, कोई व्यक्ति
उनका नाम कभी याद नहीं करेगा। तब मैं तुमसे दूसरा
राष्ट्र बनाऊँगा जो उन के राष्ट्र से बड़ा और अधिक
शक्तिशाली होगा।'

सोने का बछड़ा

15"तब मैं मुड़ा और पर्वत से नीचे आया। पर्वत आग
से जल रहा था। साक्षीपत्र की दोनों शिलाएँ मेरे हाथ में
थीं। 16जब मैंने नजर डाली तो देखा कि तुमने यहोवा
अपने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है, तुमने अपने
लिए पिघले सोने से एक बछड़ा बनाया है। यहोवा ने जो
आदेश दिया है उससे तुम शीघ्रता से दूर हट गए हो।
17इसलिए मैंने दोनों शिलाएँ लीं और उन्हें नीचे डाल
दिया। वहाँ तुम्हारी आँखों के सामने शिलाओं के टुकड़े
कर दिए। 18तब मैं यहोवा के सामने झुका और अपने
चेहरे को जमीन पर करके चालीस दिन और चालीस
रात वैसे ही रहा। मैंने न रोटी खाई, न पानी पिया। मैंने
यह इसलिए किया कि तुमने इतना बुरा पाप किया था।
तुमने वह किया जो यहोवा के लिए बुरा है और तुमने
उसे क्रोधित किया। 19मैं यहोवा के भयंकर क्रोध से
डरा हुआ था। वह तुम्हारे विरुद्ध इतना क्रोधित था कि
तुम्हें नष्ट कर देता। किन्तु यहोवा ने मेरी बात फिर
सुनी। 20यहोवा हारून पर बहुत क्रोधित था, उसे नष्ट
करने के लिए उतना क्रोध काफी था! इसलिए उस
समय मैंने हारून के लिए भी प्रार्थना की। 21मैंने उस
पापपूर्ण तुम्हारे बनाए सोने के बछड़े को लिया और उसे
आग में जला दिया। मैंने उसे छोटे–छोटे टुकड़ों में तोड़ा
और मैंने बछड़े के टुकड़ों को तब तक कुचला जब
तक वे धूलि नहीं बन गए और तब मैंने उस धूलि को
पर्वत से नीचे बहने वाली नदी में फेंका।

मूसा यहोवा से इस्राएल के लिये क्षमा माँगता है

22"मस्सा में तबेरा और किब्रोतहतावा पर तुमने फिर
यहोवा को क्रोधित किया 23और जब यहोवा ने तुमसे
कादेशबर्ने छोड़ने को कहा तब तुमने उसकी आज्ञा का
पालन नहीं किया। उसने कहा, 'आगे बढ़ो और उस
देश में रहो जिसे मैंने तुम्हें दिया है।' किन्तु तुमने उस
पर विश्वास नहीं किया। तुमने उसके आदेश की अनसुनी
की। 24पूरे समय जब से मैं तुम्हें जानता हूँ तुम लोगों ने
यहोवा की आज्ञा पालन करने से इन्कार किया है।
25"इसलिए मैं चालीस दिन और चालीस रात यहोवा
के सामने झुका रहा। क्यों? क्योंकि यहोवा ने कहा कि
वह तुम्हें नष्ट करेगा। 26मैंने यहोवा से प्रार्थना की। मैंने
कहा: यहोवा मेरे स्वामी, अपने लोगों को नष्ट न करो।
वे तुम्हारे अपने हैं। तूने अपनी बड़ी शक्ति और दृढ़ता से
उन्हें स्वतन्त्र किया और मिस्र से लाया। 27तू अपने
सेवक इब्राहीम, इसहाक और याकूब को दी गई अपनी
प्रतिज्ञा को याद कर। तू यह भूल जा कि ये लोग कितने
हठीले हैं। तू उनके बुरे ढंग और पाप को न देख।
28यदि तू अपने लोगों को दण्ड देगा तो मिस्री कह सकते
हैं, 'यहोवा अपने लोगों को उस देश में ले जाने में समर्थ
नहीं था जिसमें ले जाने का उसने वचन दिया था और
वह उनसे घृणा करता था। इसलिए वह उन्हें मारने के
लिए मरुभूमि में ले गया।' 29किन्तु वे लोग तेरे लोग हैं,
यहोवा वे तेरे अपने हैं। तू अपनी बड़ी शक्ति और दृढ़ता
से उन्हें मिस्र से बाहर लाया।

नई पत्थर की शिलाएँ

10 "उस समय, यहोवा ने मुझसे कहा, 'तुम पहली
शिलाओं की तरह पत्थर काटकर दो शिलाएँ
बनाओ। तब तुम मेरे पास पर्वत पर आना। अपने लिए
एक लकड़ी का सन्दूक भी बनाओ। 2मैं पत्थर की
शिलाओं पर वे ही शब्द लिखूँगा जो तुम्हारे द्वारा तोड़ी
गई पहली शिलाओं पर थे। तब तुम्हें इन नयी शिलाओं
को सन्दूक में रखना चाहिए।'
3"इसलिए मैंने देवदार का एक सन्दूक बनाया। मैंने
पहली शिलाओं की तरह पत्थर काटकर दो शिलाएँ
बनाई। तब मैं पर्वत पर गया। मेरे हाथ में दोनों शिलाएँ
थीं 4और यहोवा ने उन्हीं शब्दों को लिखा जिन्हें उसने
तब लिखा था जब दस आदेशों को उसने आग में से
तुम्हें दिया था और तुम पर्वत के चारों ओर इकट्ठे थे।
तब यहोवा ने पत्थर की शिलाएँ मुझे दीं। 5मैं मुड़ा और
पर्वत के नीचे आया। मैंने अपने बनाएँ सन्दूक में शिलाओं
को रखा। यहोवा ने मुझे उसमें रखने को कहा और
शिलाएँ अब भी उसी सन्दूक में हैं।"

(6इस्राएल के लोगों ने याकान के लोगों के कुँए से
मोसेरा की यात्रा की। वहाँ हारून मरा और दफनाया
गया। हारून के पुत्र एलीआज़र ने हारून के स्थान पर
याजक के रूप में सेवा आरम्भ की। 7तब इस्राएल के
लोग मोसेरा से गुदगोदा गए और वे गुदगोदा से नदियों के
प्रदेश योतबाता को गए। 8उस समय यहोवा ने लेवी के
परिवार समूह को अपने विशेष काम के लिए अन्य
परिवार समूहों से अलग किया। उन्हें यहोवा के साक्षीपत्र
के सन्दूक को ले चलने का कार्य करना था। वे याजक
की सहायता भी यहोवा के मन्दिर में करते थे और
यहोवा के नाम पर, वे लोगों को आशीर्वाद देने का
काम भी करते थे। वे अब भी यह विशेष काम करते
हैं। 9यही कारण है कि लेवीवंश के लोगों को भूमि का
कोई भाग अन्य परिवार समूहों की भांति नहीं मिला।
लेवीवंशियों के हिस्से में यहोवा पड़ा। यही यहोवा तुम्हारे
परमेश्वर ने उन्हें दिया।)

10"मैं पर्वत पर पहली बार की तरह चालीस दिन
और चालीस रात रुका रहा। यहोवा ने उस समय भी
मेरी बातें सुनी। यहोवा ने तुम लोगों को नष्ट न करने
का निश्चय किया। 11यहोवा ने मुझसे कहा, 'जाओ
और लोगों को यात्रा पर ले जाओ। वे उस देश में जाएंगे
और उसमें रहेंगे जिसे मैंने उनके पूर्वजों को देने का
वचन दिया है।'

यहोवा वास्तव में क्या चाहता है

12"इस्राएल के लोगों, अब सुनो! यहोवा, तुम्हारा
परमेश्वर चाहता है कि तुम ऐसा करो: यहोवा अपने
परमेश्वर का सम्मान करो और वह जो कुछ तुमसे
कहे, करो। यहोवा अपने परमेश्वर से प्रेम करो और
उसकी सेवा हृदय और आत्मा से करो। 13आज मैं जिस
यहोवा के नियमों और आदेशों को बता रहा हूँ, उसका
पालन करो। ये आदेश और नियम तुम्हारी अपनी
भलाई के लिए हैं।

14"हर एक चीज़, यहोवा तुम्हारे परमेश्वर की है।
स्वर्ग, सबसे ऊँचा भी उसी का है। पृथ्वी और उस पर
की सारी चीज़ें यहोवा तुम्हारे परमेश्वर की हैं। 15यहोवा
तुम्हारे पूर्वजों से बहुत प्रेम करता था। वह उनसे इतना
प्रेम करता था कि उनके वंशज, तुमको, उसने अपने
लोग बनाया। उसने किसी अन्य राष्ट्र के स्थान पर
तुम्हें चुना और आज भी तुम उसके चुने हुये लोग हो।

इस्राएलियों को यहोवा को याद रखना चाहिए

16"तुम्हें अड़ियल होना छोड़ देना चाहिए और अपने
हृदय को यहोवा पर लगाना चाहिए। 17क्यों? क्योंकि
यहोवा तुम्हारा परमेश्वर है। वह देवताओं का परमेश्वर,
और ईश्वरों का ईश्वर है। वह महान परमेश्वर है। वह
आश्चर्यजनक और शक्तिशाली योद्धा है। यहोवा की
दृष्टि में सभी मनुष्य बराबर है। यहोवा अपने इरादे को
बदलने के लिए धन नहीं लेता। 18वह अनाथ बच्चों की
सहायता करता है। वह विधवाओं की सहायता करता
है। वह हमारे देश में अजनबियों से भी प्रेम करता है।
वह उन्हें भोजन और वस्त्र देता है। 19इसलिए तुम्हें भी
इन अजनबियों से प्रेम करना चाहिए। क्यों? क्योंकि तुम
स्वयं भी मिस्र मे अजनबी थे।

20"तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर का सम्मान करना
चाहिए और केवल उसी की उपासना करनी चाहिए।
उसे कभी न छोड़ो। जब तुम वचन दो तो केवल उसके
नाम का उपयोग करो। 21तुम्हें एकमात्र यहोवा की
प्रशंसा करनी चाहिए। उसने तुम्हारे लिए महान और
आश्चर्यजनक काम किया है। इन कामों को तुमने
अपनी आँखों से देखा है। 22जब तुम्हारे पूर्वज मिस्र गए
थे तो केवल सत्तर थे। अब यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने
तुम्हें बहुत अधिक लोगों के रूप में इतना बढ़ा दिया है
जितने आकाश में तारे हैं।

यहोवा का स्मरण रखो

11 "इसलिए तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा से प्यार
करना चाहिए। तुम्हें वही करना चाहिए जो वह
करने के लिए तुमसे कहता है। तुम्हें उसके विधियों,
नियमों और आदेशों का सदैव पालन करना चाहिए।
2उन बड़े चमत्कारों को आज तुम याद करो जिन्हें
यहोवा ने तुम्हें शिक्षा देने के लिए दिखाया। वे तुम लोग
थे तुम्हारे बच्चे नहीं, जिन्होंने उन घटनाओं को होते
देखा और उनके बीच जीवन बिताया। तुमने देखा है कि
यहोवा कितना महान है। तुमने देखा है कि वह कितना
शक्तिशाली है और तुमने उसके पराक्रमपूर्ण किये गए
कार्यों को देखा है। 3तुम्हारे बच्चों ने नहीं, तुमने उसके
चमत्कार देखे हैं। तुमने वह सब देखा जो उसने मिस्र के
सम्राट फ़िरौन और उसके पूरे देश के साथ किया।
4तुम्हारे बच्चों ने नहीं, तुमने मिस्र की सेना, उनके घोड़ों
और रथों के साथ यहोवा ने जो किया, देखा। वे तुम्हारा
पीछा कर रहे थे, किन्तु तुमने देखा यहोवा ने उन्हें
लालसागर के जल में डुबा दिया। तुमने देखा कि यहोवा
ने उन्हें पूरी तरह नष्ट कर दिया। 5वे तुम थे, तुम्हारे
बच्चे नहीं, जिन्होंने यहोवा अपने परमेश्वर को अपने
लिए मरुभूमि में सब कुछ तब तक करते देखा जब तक
तुम इस स्थान पर आ न गए। 6तुमने देखा कि यहोवा ने
रूबेन के परिवार के एलिआब के पुत्रों दातान और
अबीराम के साथ क्या किया। इस्राएल के सभी लोगों ने
पृथ्वी को मुँह की तरह खुलते और उन आदमियों को
निगलते देखा और पृथ्वी ने उनके परिवार, खेमे, सारे
सेवकों और उनके सभी जानवरों को निगल लिया। 7वे
तुम थे तुम्हारे बच्चे नहीं, जिन्होंने यहोवा द्वारा किये गए
इन बड़े चमत्कारों को देखा।

8"इसलिए तुम्हें आज जो आदेश मैं दे रहा हूँ, उन
सबका पालन करना चाहिए। तब तुम शक्तिशाली बनोगे
और तुम नदी को पार करने योग्य होगे और उस देश
को लोगे जिसमें प्रवेश करने के लिए तुम तैयार हो।
9उस देश में तुम्हारी उम्र लम्बी होगी। यह वही देश है
जिसे यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों और उनके वंशजों को
देने का वचन दिया था। इस देश में दूध तथा शहद
बहता है। **10**जो देश तुम पाओगे वह मिस्र की तरह नहीं
है जहाँ से तुम आए। मिस्र में तुम बीज बोते थे और
अपने पौधों को सींचने के लिए नहरों से अपने पैरों का
उपयोग कर पानी निकालते थे। तुम अपने खेतों को
वैसे ही सींचते थे जैसे तुम सब्जियों के बागों की सिंचाई
करते थे। **11**लेकिन जो प्रदेश तुम शीघ्र ही पाओगे, वैसा
नहीं है। इस्राएल में पर्वत और घाटियाँ हैं। यहाँ की भूमि
वर्षा से जल प्राप्त करती है जो आकाश से गिरती है।
12यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उस देश की देख–रेख करता
है! यहोवा तुम्हारा परमेश्वर वर्ष के आरम्भ से अन्त
तक उसकी देख–रेख करता है।

13'तुम्हें जो आदेश मैं आज दे रहा हूँ, उसे तुम्हें
सावधानी से सुनना चाहिए: यहोवा से प्रेम और उसकी
सेवा पूरे हृदय और आत्मा से करनी चाहिए। यदि तुम
वैसा करोगे **14**तो मैं ठीक समय पर तुम्हारी भूमि के
लिए वर्षा भेजूँगा। मैं पतझड़ और बसंत के समय की भी
वर्षा भेजूँगा। तब तुम अपना अन्न, नया दाखमधु और
तेल इकट्ठा करोगे **15**और मैं तुम्हारे खेतों में तुम्हारे
मवेशियों के लिए घास उगाऊँगा। तुम्हारे भोजन के
लिए बहुत अधिक होगा।'

16"किन्तु सावधान रहो कि मूर्ख न बनाए जाओ!
दूसरे देवताओं की पूजा और सेवा के लिए उनकी ओर
न मुड़ो। **17**यदि तुम ऐसा करोगे तो यहोवा तुम पर बहुत
क्रोधित होगा। वह आकाश को बन्द कर देगा और वर्षा
नहीं होगी। भूमि से फसल नहीं उगेगी और तुम उस
अच्छे देश में शीघ्र मर जाओगे जिसे यहोवा तुम्हें दे रहा
है। **18**जिन आदेशों को मैं दे रहा हूँ, याद रखो, उन्हें
हृदय और आत्मा में धारण करो। इन आदेशों को
लिखो और याद दिलाने वाले चिन्ह के रूप में इन्हें
अपने हाथों पर बांधों तथा ललाट पर धारण करो।
19इन नियमों की शिक्षा अपने बच्चों को दो। इनके बारे
में अपने घर में बैठे, सड़क पर टहलते, लेटते और
जागते हुए बताया करो। **20**इन आदेशों को अपने घर के
द्वार स्तम्भों और फाटकों पर लिखो। **21**तब तुम और
तुम्हारे बच्चे उस देश में लम्बे समय तक रहेंगे जिसे
यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों को देने का वचन दिया है। तुम
तब तक रहोगे जब तक धरती के ऊपर आकाश
रहेगा।

22"सावधान रहो कि तुम उस हर एक आदेश का
पालन करते रहो जिसे पालन करने के लिए मैंने तुमसे
कहा है: अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करो, उसके
बताये सभी मार्गों पर चलो और उसके ऊपर विश्वास
रखने वाले बनो। **23**जब, तुम उस देश में जाओगे तब
यहोवा उन सभी दूसरे राष्ट्रों को बलपूर्वक बाहर करेगा।
तुम उन राष्ट्रों से भूमि लोगे जो तुम से बड़े और शक्तिशाली
हैं। **24**वह सारा प्रदेश जिस पर तुम चलोगे, तुम्हारा होगा।
तुम्हारा देश दक्षिण में मरुभूमि से लेकर लगातार उत्तर
में लबानोन तक होगा। यह पूर्व में फरात नदी से लेकर
लगातार भूमध्य सागर तक होगा। **25**कोई व्यक्ति तुम्हारे
विरुद्ध खड़ा नहीं होगा। यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उन
लोगों को तुमसे भयभीत करेगा जहाँ कहीं तुम उस देश
में जाओगे। यह वही है जिसके लिए यहोवा ने पहले
तुमको वचन दिया था।

इस्राएलियों के लिए चुनाव: आशीर्वाद या अभिशाप

26"आज मैं तुम्हें आशीर्वाद या अभिशाप में से एक
को चुनने दे रहा हूँ। **27**तुम आशीर्वाद पाओगे, यदि तुम
यहोवा अपने परमेश्वर के उन आदेशों पर ध्यान दोगे
और उनका पालन करोगे। **28**किन्तु तुम उस समय
अभिशाप पाओगे जब तुम यहोवा अपने परमेश्वर के
आदेशों के पालन से इन्कार करोगे, अर्थात् जिस मार्ग
पर चलने का आदेश मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ, उससे
मुड़ोगे और उन देवताओं का अनुसरण करोगे जिन्हें
तुम जानते नहीं।

29"जब यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें उस देश में
पहुँचा देगा जहाँ तुम रहोगे, तब तुम्हें गरीज्जीम पर्वत की
चोटी पर जाना चाहिए और वहाँ से आशीर्वादों को
पढ़कर लोगों को सुनाना चाहिए। तुम्हें एबाल पर्वत की
चोटी पर भी जाना चाहिए और वहाँ से अभिशापों को
लोगों को सुनाना चाहिए। **30**ये पर्वत यरदन नदी की
दूसरी ओर कनानी लोगों के प्रदेश में है जो यरदन घाटी
में रहते हैं। ये पर्वत गिल्गाल नगर के समीप मोरे के
बांज के पेड़ों के निकट पश्चिम की ओर हैं। **31**तुम
यरदन नदी को पार करके जाओगे। तुम उस प्रदेश को
लोगे जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुमको दे रहा है।
यह देश तुम्हारा होगा। जब तुम इस देश में रहने लगो तो
32उन सभी विधियों और नियमों का पालन सावधानी से
करो जिन्हें आज मैं तुम्हें दे रहा हूँ।

परमेश्वर की उपासना का स्थान

12 "ये विधियाँ और नियम हैं जिनका जीवन भर
पालन करने के लिए तुम्हें सावधान रहना
चाहिए। तुम्हें इन नियमों का पालन तब तक करना
चाहिए जब तक तुम उस देश में रहो जिसे यहोवा तुम्हारे
पूर्वजों का परमेश्वर, तुमको दे रहा है। **2**तुम उस प्रदेश
को उन राष्ट्रों से लोगे जो अब वहाँ रह रहे हैं। तुम्हें उन
सभी जगहों को पूरी तरह नष्ट कर देना चाहिए जहाँ ये

राष्ट्र अपने देवताओं की पूजा करते हैं। ये स्थान ऊँचे
पहाड़ों, पहाड़ियों और हरे वृक्षों के नीचे हैं। 3तुम्हें
उनकी वेदियों को नष्ट करना चाहिए और उनके
विशेष पत्थरों को टुकड़े–टुकड़े कर देना चाहिए। तुम्हें
उनके अशेरा स्तम्भों को जलाना चाहिए। उनके देवताओं
की मूर्तियों को काट डालना चाहिए और उनके नाम
वहाँ से मिटा देना चाहिये।

4"किन्तु तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर की उपासना
उस प्रकार नहीं करनी चाहिए जिस प्रकार वे लोग
अपने देवताओं की पूजा करते हैं। 5यहोवा तुम्हारा
परमेश्वर अपने मन्दिर के लिए तुम्हारे परिवार समूह
से विशेष स्थान चुनेगा। वह वहाँ अपना नाम प्रतिष्ठित
करेगा। तुम्हें उसकी उपासना करने के लिए उस स्थान
पर जाना चाहिए। 6वहाँ तुम्हें अपनी होमबलि, अपनी
बलियाँ, दशमांश, अपनी विशेष भेंट, यहोवा को वचन
दी गई कोई भेंट, अपनी स्वेच्छा भेंट और अपने मवेशियों
के झुण्ड एवं रेवड़ के पहलौठे बच्चे लाने चाहिए। 7तुम
और तुम्हारे परिवार वहाँ भोजन करेंगे और यहोवा
तुम्हारा परमेश्वर वहाँ तुम्हारे साथ होगा। जिन अच्छी
चीज़ों के लिये तुमने काम किया है उसका भोग तुम
करोगे, क्योंकि यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुमको
आशीर्वाद दिया है।

8"उस समय तुम्हें उसी प्रकार उपासना करते नहीं
रहना चाहिए जिस प्रकार हम उपासना करते आ रहे
हैं। अभी तक हममें से हर एक जैसा चाहे परमेश्वर की
उपासना कर रहा था। 9क्यों? क्योंकि अभी तक हम
उस शान्त देश में नहीं पहुँचे थे जिसे यहोवा तुम्हारा
परमेश्वर तुम्हें दे रहा है। 10लेकिन तुम यरदन नदी को
पार करोगे और उस देश में रहोगे जिसे यहोवा तुम्हारा
परमेश्वर तुम्हें दे रहा है। वहाँ यहोवा तुम्हें सभी शत्रुओं
से चैन से रहने देगा और तुम सुरक्षित रहोगे। 11तब
यहोवा अपने लिये विशेष स्थान चुनेगा वह वहाँ अपना
नाम प्रतिष्ठित करेगा और तुम उन सभी चीज़ों को वहीं
लाओगे जिनके लिए मैं आदेश दे रहा हूँ। वहीं तुम
अपनी होमबलि, अपनी बलियाँ, दशमांश, अपनी विशेष
भेंट यहोवा को वचन दी गई भेंट, अपनी स्वेच्छा भेंट
और अपने मवेशियों के झुण्ड एवं रेवड़ का पहलौठा
बच्चा लाओ। 12उस स्थान पर तुम अपने सभी लोगों,
अपने बच्चों, सभी सेवकों और अपने नगर में रहने
वाले सभी लेवीवंशियों के साथ इकट्ठे होओ। (ये लेवीवंशी
अपने लिए भूमि का कोई भाग नहीं पाएंगे) यहोवा
अपने परमेश्वर के साथ वहाँ आनन्द मनाओ।
13सावधानी बरतो कि तुम अपनी होमबलियों को जहाँ
देखो वहाँ न चढ़ा दो। 14तुम्हारे परिवार समूहों में से
किसी एक के क्षेत्र में यहोवा अपना विशेष स्थान
चुनेगा। वहाँ अपनी होमबलि चढ़ाओ और तुम्हें बताए
गए सभी अन्य काम वहीं करो।

15"जिस किसी जगह तुम रहो तुम नीलगाय या हिरन
जैसे अच्छे जानवरों को मारकर खा सकते हो। तुम
उतना माँस खा सकते हो जितना तुम चाहो, जितना
यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें दे। कोई भी व्यक्ति इस
माँस को खा सकता है, चाहे वह पवित्र हो या अपवित्र।
16लेकिन तुम्हें खून नहीं खाना चाहिए। तुम्हें ख़ून को
पानी की तरह जमीन पर बहा देना चाहिए।

17"कुछ ऐसी चीज़ें है जिन्हें तुम्हें उन जगहों पर नहीं
खाना चाहिए जहाँ तुम रहते हो। वे चीज़ें ये हैं: परमेश्वर
के हिस्से के तुम्हारे अन्न का कोई भाग, उसके हिस्से
की नई दाखमधु और तेल का कोई भाग, तुम्हारे
मवेशियों के झुण्ड या रेवड़ का पहलौठा बच्चा, परमेश्वर
को वचन दी गई कोई भेंट, कोई स्वेच्छा भेंट या कोई
भी परमेश्वर की अन्य भेंट। 18तुम्हें उन भेंटों को
केवल उसी स्थान पर खाना चाहिए जहाँ यहोवा तुम्हारा
परमेश्वर तुम्हारे साथ हो। अर्थात् यहोवा तुम्हारा
परमेश्वर जिस स्थान को चुने। तुम्हें वहीं जाना चाहिए
और अपने पुत्रों, पुत्रियों, सभी सेवकों और तुम्हारे नगर
में रहने वाले लेवीवंशियों के साथ मिलकर खाना चाहिए।
यहोवा अपने परमेश्वर के साथ वहाँ आनन्द मनाओ।
जिन चीज़ों के लिए काम किया है उनका आनन्द लो।
19ध्यान रखो कि इन भोजनों को लेवीवंशियों के साथ
बाँटकर खाओ। यह तब तक करो जब तक अपने देश
में रहो।

20-21"यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने यह वचन दिया है
कि वह तुम्हारे देश की सीमा को और बढ़ाएगा। जब
यहोवा ऐसा करेगा तो तुम उसके चुने हुए विशेष निवास
से दूर रह सकते हो। यदि यह अत्यधिक दूर हो और
तुम्हें माँस की भूख है तो तुम किसी भी प्रकार के माँस
को, जो तुम्हारे पास है खा सकते हो। तुम यहोवा के
दिये झुण्ड और रेवड़ में से किसी भी जानवर को मार
सकते हो। यह वैसे ही करो जैसा करने का आदेश मैंने
दिया है। यह माँस, तुम जब चाहो जहाँ भी रहो, खा
सकते हो। 22तुम इस माँस को वैसे ही खा सकते हो जैसे
नीलगाय और हिरन का माँस खाते हो। कोई भी व्यक्ति
यह कर सकता है चाहे वे लोग पवित्र हो या अपवित्र
हो। 23किन्तु निश्चय ही खून न खाओ। क्यों? क्योंकि
ख़ून में जीवन है और तुम्हें वह माँस नहीं खाना चाहिए
जिसमें अभी जीवन हो। 24खून मत खाओ। तुम्हें खून
को पानी की तरह जमीन पर डाल देना चाहिए। 25तुम्हें
वह सब कुछ करना चाहिए जिसे परमेश्वर उचित
ठहराता है। इसलिए ख़ून मत खाओ। तब तुम्हारा और
तुम्हारे वंशजों का भला होगा।

26"जिन चीज़ों को तुमने अर्पित किया है और जो
तुम्हारी वचन दी गई भेंटें हैं उन्हें उस विशेष स्थान पर
ले जाना जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर चुनेगा। 27तुम्हें
अपनी होमबलि वहीं चढ़ानी चाहिए। अपनी होमबलि

का माँस और रक्त यहोवा अपने परमेश्वर की वेदी पर चढ़ाओ। तब तुम माँस खा सकते हो। **28**जो आदेश मैं दे रहा हूँ उनके पालन में सावधान रहो। जब तुम वह सब कुछ करते हो जो अच्छा है और ठीक है, जो यहोवा तुम्हारे परमेश्वर को प्रसन्न करता है तब हर चीज़ तुम्हारे लिए तथा तुम्हारे वंशजों के लिए सदा भला रहेगा।

29"जब तुम दूसरे राष्ट्रों के पास अपनी धरती को लेने जाओगे तो, यहोवा उन्हें हटने के लिए विवश करेगा तथा उन्हें नष्ट करेगा। तुम वहाँ जाओगे और उनसे भूमि लोगे। तुम उनकी भूमि पर रहोगे। **30**किन्तु ऐसा हो जाने के बाद सावधान रहो! वे राष्ट्र जिन देवताओं की पूजा करते हैं उन देवताओं के पास सहायता के लिए मत जाओ! यह सीखने की कोशिश न करो कि वे अपने देवताओं की पूजा कैसे करते हैं। वे जैसे पूजा करते हैं वैसे पूजा करने के बारे में न सोचो। **31**तुम यहोवा अपने परमेश्वर की वैसे उपासना नहीं करोगे जैसे वे अपने देवताओं की करते हैं। क्यों? क्योंकि वे अपने पूजा में सब तरह की बुरी चीज़ें करते हैं जिनसे यहोवा घृणा करता है। वे अपने देवताओं की बलि के लिए अपने बच्चों को भी जला देते हैं।

32"तुम्हें उन सभी कामों को करने के लिए सावधान रहना चाहिए जिनके लिए मैं आदेश देता हूँ। जो मैं तुमसे कह रहा हूँ उसमें न तो कुछ जोड़ो, न ही उसमें से कुछ कम करो।

झूठे नबियों का क्या किया जाए

13 "कोई नबी या स्वप्न फल ज्ञाता तुम्हारे पास आ सकता है। वह यह कह सकता है कि वह कोई दैवी चिन्ह या आश्चर्यकर्म दिखाएगा। **2**वह दैवी चिन्ह या आश्चर्यकर्म, जिसके बारे में उसने तुम्हें बताया है, वह सही हो सकता है। तब वह तुमसे कह सकता है कि तुम उन देवताओं का अनुसरण करो (जिन्हें तुम नहीं जानते।) वह तुमसे कह सकता है, 'आओ हम उन देवताओं की सेवा करें!' **3**उस व्यक्ति की बातों पर ध्यान मत दो। क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारी परीक्षा ले रहा है। वह यह जानना चाहता है कि तुम पूरे हृदय और आत्मा से उस से प्रेम करते हो अथवा नहीं। **4**तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर का अनुसरण करना चाहिए। तुम्हें उसका सम्मान करना चाहिए। यहोवा के आदेशों का पालन करो और वह करो जो वह कहता है। यहोवा की सेवा करो और उसे कभी न छोड़ो! **5**वह नबी या स्वप्न फल ज्ञाता मार दिया जाना चाहिए। क्यों? क्योंकि वह ही है जो तुमसे यहोवा तुम्हारे परमेश्वर की आज्ञा मानने से रोक रहा है। यहोवा एक ही है जो तुमको मिस्र से बाहर लाया। उसने तुमको वहाँ की दासता के जीवन से स्वतन्त्र किया। वह व्यक्ति यह कोशिश कर रहा है कि तुम यहोवा अपने परमेश्वर के आदेश के अनुसार जीवन मत बिताओ। इसलिए अपने लोगों से बुराई को दूर करने के लिए उस व्यक्ति को अवश्य मार डालना चाहिए।

6"कोई तुम्हारे निकट का व्यक्ति गुप्त रूप से दूसरे देवताओं की पूजा के लिए तुम्हें सहमत कर सकता है। यह तुम्हारा अपना भाई, पुत्र, पुत्री, तुम्हारी प्रिय पत्नी या तुम्हारा प्रिय दोस्त हो सकता है। वह व्यक्ति कह सकता है, 'आओ चलें, दूसरे देवताओं की सेवा करें।' (ये वैसे देवता हैं जिन्हें तुमने और तुम्हारे पूर्वजों ने कभी नहीं जाना। **7**वे उन लोगों के देवता हैं जो तुम्हारे चारों ओर अन्य देशों में रहते हैं, कुछ समीप और कुछ बहुत दूर।) **8**तुम्हें उस व्यक्ति के साथ सहमत नहीं होना चाहिए। उसकी बात मत सुनो। उस पर दया न दिखाओ। उसे छोड़ना नहीं। उसकी रक्षा मत करो। **9–10**तुम्हें उसे मार डालना चाहिए। तुम्हें उसे पत्थरों से मार डालना चाहिए! पत्थर उठाने वालों में तुम्हें पहला होना चाहिए और उसे मारना चाहिए। तब सभी लोगों को उसे मार देने के लिए उस पर पत्थर फेंकना चाहिए। क्यों? क्योंकि उस व्यक्ति ने तुम्हें यहोवा तुम्हारे परमेश्वर से दूर हटाने का प्रयास किया। यहोवा केवल एक है जो तुम्हें मिस्र से लाया, जहाँ तुम दास थे। **11**तब इस्राएल के सभी लोग सुनेंगे और भयभीत होंगे और वे तुम्हारे बीच और अधिक इस प्रकार के बुरे काम नहीं करेंगे।

नगर, जिन्हें नष्ट किया जाना चाहिए

12"यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुमको रहने के लिए नगर दिये हैं। कभी–कभी तुम नगरों में से किसी के बारे में बुरी खबर सुन सकते हो। तुम सुन सकते हो कि **13**तुम्हारे अपने राष्ट्रों में ही कुछ बुरे लोग अपने नगर के लोगों को बुरी बातों के लिए तैयार कर रहे हैं। वे अपने नगर के लोगों से कह सकते हैं, 'आओ चलें, दूसरे देवताओं की सेवा करें।' (ये ऐसे देवता होंगे जिन्हें तुमने पहले नहीं जाना होगा।) **14**यदि तुम ऐसी सूचना सुनो तो तुम्हें जहाँ तक हो सके यह जानने का प्रयत्न करना चाहिए कि यह सत्य है अथवा नहीं। यदि तुम्हें मालूम होता है कि यह सत्य है, यदि प्रमाणित कर सको कि सचमुच ऐसी भयंकर बात हुई, **15**तब तुम्हें उस नगर के लोगों को अवश्य दण्ड देना चाहिए। वे सभी जान से मार डाले जाने चाहिए और उनके सभी मवेशियों को भी मार डालो। तुम्हें उस नगर के लोगों को पूरी तरह नष्ट कर देना चाहिए। **16**तब तुम्हें सभी कीमती चीज़ों को इकट्ठा करना चाहिए और उसे नगर के बीच ले जाना चाहिए और सब चीज़ों को नगर के साथ जला देना चाहिए। यह तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के लिये होमबलि होगी। नगर को सदा के लिए राख का ढेर हो जाना चाहिए यह दुबारा नहीं बनाया जाना चाहिए। **17**उस

नगर की हर एक चीज़ परमेश्वर को, नष्ट करने के
लिए दी जानी चाहिए। इसलिए तुम्हें कोई चीज़ अपने
लिए नहीं रखनी चाहिए। यदि तुम इस आदेश का पालन
करते हो तो यहोवा तुम पर उतना अधिक क्रोधित होने
से अपने को रोक लेगा। यहोवा तुम पर दया करेगा
और तरस खायेगा। वह तुम्हारे राष्ट्र को वैसा बड़ा
बनाएगा जैसा उसने तुम्हारे पूर्वजों को वचन दिया था।
18यह तब होगा जब तुम यहोवा अपने परमेश्वर की
बात सुनोगे अर्थात् यदि तुम उन आदेशों का पालन
करोगे जिन्हें मैं तुम्हें आज दे रहा हूँ। तुम्हें वही करना
चाहिए जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उचित बताता है।

इस्राएली, यहोवा के विशेष लोग

14 "तुम यहोवा अपने परमेश्वर के बच्चे हो। यदि
कोई मरे तो तुम्हें अपने को शोक में पड़ा
दिखाने के लिए स्वयं को काटना नहीं चाहिए। तुम्हें
अपने सिर के अगले भाग के बाल नहीं कटवाने चाहिए।*
2क्यों? क्योंकि तुम अन्य लोगों से भिन्न हो। तुम यहोवा
अपने परमेश्वर के विशेष लोग हो। उसने संसार के
सभी लोगों में से, तुम्हें अपने विशेष लोगों के रूप में
चुना है।

इस्राएलियों का भोजन, जिसे खाने की अनुमति थी

3"ऐसी कोई चीज़ न खाओ, यहोवा जिसे खाना बुरा
कहता है। 4तुम इन जानवरों को खा सकते हो: गाय,
भेड़, बकरी, 5हिरन, नीलगाय, मृग, जंगली भेड़, जंगली
बकरी, चीतल और पहाड़ी भेड़। 6तुम ऐसे किसी जानवर
को खा सकते हो जिसके खुर दो भागों मे बंटे हों और
जो जुगाली करते हों। 7किन्तु ऊँटों, खरगोश या चहानी
बिज्जू को न खाओ। ये जानवर जुगाली करते हैं किन्तु
इनके खुर फटे नहीं होते। इसलिए ये जानवर तुम्हारे
लिए शुद्ध भोजन नहीं हैं। 8तुम्हें सूअर नहीं खाना चाहिए।
उनके खुर फटे होते हैं, किन्तु वे जुगाली नहीं करते।
इसलिए सूअर तुम्हारे लिए स्वच्छ भोजन नहीं है। सूअर
का कोई माँस न खाओ और न ही मरे हुए सूअर को
छुओ। 9तुम ऐसी कोई मछली खा सकते हो जिसके डैने
और चोइटें हों। 10किन्तु जल में रहने वाले किसी ऐसे
प्राणी को न खाओ जिसके डैने और चोइटें न हों। ये
तुम्हारे लिए शुद्ध भोजन नहीं हैं।

11"तुम किसी शुद्ध पक्षी को खा सकते हो।

12-18किन्तु इन पक्षियों में से किसी को न खाओ:
चील, किसी भी तरह के गिद्ध, बज्जर्द, किसी प्रकार का
बाज, कौवे, तीतर, समुद्री बत्तख, किसी प्रकार का
उल्लू, पेलिकन, काँरमाँरॅन्त सारस, किसी प्रकार का
बगुला, नौवा या चमगादड़। 19पंख वाले कीड़े तुम्हारे
लिए शुद्ध भोजन नहीं हैं। तुम्हें उनको नहीं खाना
चाहिए। 20किन्तु तुम किसी शुद्ध पक्षी को खा सकते
हो। 21अपने आप मरे जानवर को न खाओ। तुम मरे
जानवर को अपने नगर के विदेशी को दे सकते हो
और वह उसे खा सकता है अथवा तुम मरे जानवर को
विदेशी के हाथ बेच सकते हो। किन्तु तुम्हें मरे जानवर
को स्वयं नहीं खाना चाहिए। क्यों? क्योंकि तुम यहोवा
अपने परमेश्वर के हो। तुम उसके विशेष लोग हो।
बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में न पकाओ।

मन्दिर को दिया जानेवाला दशमांश

22"तुम्हें हर वर्ष अपने खेतों मे उगाई गई फसल का
दसवाँ भाग निश्चयपूर्वक बचाना चाहिए। 23तब तुम्हें
उस स्थान पर जाना चाहिए जिसे यहोवा अपना विशेष
निवास चुनता है। वहाँ यहोवा अपने परमेश्वर के साथ
अपनी फसल का दशमांश, अन्न का दसवाँ भाग, तुम्हारा
नया दाखमधु, तुम्हारा तेल, झुण्ड और रेवड़ में उत्पन्न
पहला बच्चा, खाना चाहिए। तब तुम यहोवा अपने परमेश्वर
का सदा सम्मान करना सीखोगे। 24किन्तु वह स्थान
इतना दूर हो सकता है कि तुम वहाँ तक की यात्रा न
कर सको। यह सम्भव है कि यहोवा ने फसल का जो
वरदान दिया है उसका दसवाँ भाग तुम वहाँ न पहुँचा
सको। यदि ऐसा होता है तो यह करो: 25अपनी फसल
का वह भाग बेच दो। तब उस धन को लेकर यहोवा
द्वारा चुने गए विशेष स्थान पर जाओ। 26उस धन का
उपयोग जो कुछ तुम चाहो उसके खरीदने में करो—गाय,
भेड़, दाखमधु या अन्य स्वादिष्ट पेय या कोई अन्य चीज़
जो तुम चाहते हो। तब तुम्हें और तुम्हारे परिवार को
खाना चाहिए और यहोवा अपने परमेश्वर के साथ वहाँ
उस स्थान पर आनन्द मनाना चाहिए। 27किन्तु अपने
नगर में रहने वाले लेवीवंशियों की उपेक्षा न करो, क्यों
कि उनके पास तुम्हारी तरह भूमि का हिस्सा नहीं हैं।

28"हर तीन वर्ष के अन्त में अपनी उस साल की
फसल का दशमांश एक जगह इकट्ठा करो। इस भोजन
को अपने नगर में उस स्थान पर जमा करो जहाँ दूसरे
लोग उसका उपयोग कर सकें। 29यह भोजन लेवीवंशियों
के लिए है, क्योंकि उनके पास अपनी कोई भूमि नहीं
है। यह भोजन तुम्हारे नगर में उन लोगों के लिये भी है
जिन्हें इसकी आवश्यकता है—विदेशी, अनाथ बच्चे और
विधवायें। यदि तुम यह करते हो तो यहोवा तुम्हारा
परमेश्वर सभी काम तुम जो कुछ करोगे उसके लिए
आशीर्वाद देगा।

कर्ज को समाप्त करने के विशेष वर्ष

15 "हर सात वर्ष के अन्त में, तुम्हें ऋण को
खत्म कर देना चाहिए। 2ऋण को तुम्हें इस

तुम्हें अपने … कटवाने चाहिये जैसा मूसा के समय में किसी के
मरने पर शोक प्रकट करने के लिए अपने को काट लेते थे या
अपने सिर के बाल उतरवा लेते थे।

प्रकार खत्म करना चाहिए: हर एक व्यक्ति जिसने
किसी इस्राएली को ऋण दिया है अपना ऋण खत्म
कर दे। उसे अपने भाई (इस्राएली) से ऋण लौटाने को
नहीं कहना चाहिए। क्यों? क्योंकि यहोवा ने कहा है
कि उस वर्ष ऋण खत्म कर दिये जाते हैं। 3तुम विदेशी
से अपना ऋण वापस ले सकते हो। किन्तु उस ऋण
को खत्म कर दोगे जो किसी दूसरे इस्राएली पर है।
4किन्तु तुम्हारे बीच कोई गरीब व्यक्ति नहीं रहना चाहिए।
क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें सभी चीज़ों
का वरदान उस देश में देगा जिसे वह तुम्हें रहने को दे
रहा है। 5यही होगा, यदि तुम यहोवा अपने परमेश्वर की
आज्ञा का पालन पूरी तरह करोगे। तुम्हें उस हर एक
आदेश का पालन करने में सावधान रहना चाहिए जिसे
आज मैंने तुम्हें दिया है। 6यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें
आशीर्वाद देगा, जैसा कि उसने वचन दिया है और
तुम्हारे पास बहुत से राष्ट्रों को ऋण देने के लिए पर्याप्त
धन होगा। किन्तु तुम्हें किसी से ऋण लेने की आवश्यकता
नहीं होगी। तुम बहुत से राष्ट्रों पर शासन करोगे। किन्तु
उन राष्ट्रों में से कोई राष्ट्र तुम पर शासन नहीं करेगा।

7"जब तुम उस देश में रहोगे जिसे यहोवा तुम्हारा
परमेश्वर तुम्हें दे रहा है तब तुम्हारे लोगों में कोई भी
गरीब हो सकता है। तुम्हें स्वार्थी नहीं होना चाहिए। तुम्हें
उस गरीब व्यक्ति को सहायता देने से इन्कार नहीं
करना चाहिए। 8तुम्हें उसका हाथ बँटाने की इच्छा
रखनी चाहिए। तुम्हें उस व्यक्ति को जितने ऋण की
आवश्यकता हो, देना चाहिए।

9"किसी को सहायता देने से इसलिए इन्कार न करो,
क्योंकि ऋण को खत्म करने का सातवाँ वर्ष समीप है।
इस प्रकार का बुरा विचार अपने मन में न आने दो।
तुम्हें उस व्यक्ति के प्रति बुरे विचार नहीं रखने चाहिए
जिसे सहायता की आवश्यकता है। तुम्हें उसकी सहायता
करने से इन्कार नहीं करना चाहिए। यदि तुम उस
गरीब व्यक्ति को कुछ नहीं देते तो वह यहोवा से तुम्हारे
विरुद्ध शिकायत करेगा और यहोवा तुम्हें पाप करने
का उत्तरदायी पाएगा।

10"गरीब को तुम जितना दे सको, दो और उसे देने
का बुरा न मानो। क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर
इस अच्छे काम के लिए तुम्हें आशीष देगा। वह तुम्हारे
सभी कामों और जो कुछ तुम करोगे उसमें तुम्हारी
सहायता करेगा। 11देश में सदा गरीब लोग भी होंगे। यही
कारण है कि मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि तुम अपने
लोगों, जो लोग तुम्हारे देश में गरीब और सहायता चाहते
हैं, उन को सहायता देने के लिए तैयार रहो।

सातवें वर्ष में दासों को स्वतन्त्र करने के नियम

12"यदि तुम्हारे लोगों में से कोई, हिब्रू स्त्री व पुरुष,
तुम्हारे हाथ बेचा जाए तो उस व्यक्ति को तुम्हारी सेवा
छ: वर्ष करनी चाहिए। तब सातवें वर्ष तुम्हें उसे अपने
से स्वतन्त्र कर देना चाहिए। 13किन्तु जब तुम अपने
दास को स्वतन्त्र करो तो उसे बिना कुछ लिए मत जाने
दो। 14तुम्हें उस व्यक्ति को अपने रेवड़ों का एक बड़ा
भाग, खलिहान से एक बड़ा भाग और दाखमधु से एक
बड़ा भाग देना चाहिए। यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें
बहुत अच्छी चीज़ों की प्राप्ति का आशीर्वाद दिया है।
उसी तरह तुम्हें भी अपने दास को बहुत सारी अच्छी
चीज़ें देनी चाहिए। 15तुम्हें याद रखना चाहिए कि तुम
मिस्र में दास थे। यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें मुक्त
किया है। यही कारण है कि मैं तुमसे आज यह करने
को कह रहा हूँ।

16"किन्तु तुम्हारे दासों में से कोई कह सकता है, 'मैं
आपको नहीं छोड़ूँगा।' वह ऐसा इसलिए कह सकता है
कि वह तुमसे, तुम्हारे परिवार से प्रेम करता है और
उसने तुम्हारे साथ अच्छा जीवन बिताया है। 17इस सेवक
को अपने द्वार से कान लगाने दो और एक सूए* का
उपयोग उसके कान में छेद करने के लिए करो। तब
वह सदा के लिए तुम्हारा दास हो जाएगा। तुम दासियों के
लिए भी यही करो जो तुम्हारे यहाँ रहना चाहती हैं।

18"तुम अपने दास को मुक्त करते समय दु:ख का
अनुभव मत करो। याद रखो, छ: वर्ष तक तुम्हारी
सेवा, उससे आधी रकम पर उसने की जितनी मजदूरी
पर रखे गए व्यक्ति को देनी पड़ती है। यहोवा तुम्हारा
परमेश्वर तुम जो करोगे उसके लिए आशीष देगा।

पहलौठे जानवर के सम्बन्ध में नियम

19"तुम अपने झुण्ड या रेवड़ में सभी पहलौठे बच्चों
को यहोवा का विशेष जानवर बना देना। उनमें से
किसी जानवर का उपयोग तुम अपने काम के लिए न
करो। इन भेड़ों में से किसी का ऊन न काटो। 20हर
वर्ष मवेशियों के झुण्ड या रेवड़ में पहलौठे जानवर को
लेकर उस स्थान पर आओ जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर
चुने। वहाँ तुम और तुम्हारे परिवार के लोग उन जानवरों
को खायेंगे।

21"किन्तु यदि जानवर में कोई दोष हो, या लंगड़ा,
अन्धा हो या इसमें कोई अन्य दोष हो, तो तुम्हें उसे
यहोवा अपने परमेश्वर को भेंट नहीं चढ़ानी चाहिए।
22किन्तु तुम उसका माँस वहाँ खा सकते हो जहाँ तुम
रहते हो। इसे कोई व्यक्ति खा सकता है, चाहे वह पवित्र
हो चाहे अपवित्र हो। नीलगाय या हिरन का माँस खाने
पर वही नियम लागू होगा, जो इस माँस पर लागू होता
है। 23किन्तु तुम्हें जानवर का खून नहीं खाना चाहिए।
तुम्हें खून को पानी की तरह जमीन पर बहा देना
चाहिए।

सूए एक औजार जो बड़ी सूई की तरह होता है और एक सिरे पर मूठी होती है।

फसह पर्व

16 "यहोवा अपने परमेश्वर का फसह पर्व आबीब
के महीने में मनाओ। क्यों? क्योंकि आबीब के
महीने में तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें रात में मिस्र से बाहर
ले आया था। 2तुम्हें उस स्थान पर जाना चाहिए जिसे
यहोवा अपना विशेष निवास बनाएगा। वहाँ तुम्हें एक
गाय या बकरी को यहोवा अपने परमेश्वर के सम्मान
में, फसह पर्व के लिए भेंट के रूप में चढ़ाना चाहिए।
3इस भेंट के साथ खमीर वाली रोटी मत खाओ। तुम्हें
सात दिन तक अखमीरी रोटी खानी चाहिए। इस रोटी
को 'विपत्ति की रोटी' कहते हैं। यह तुम्हें मिस्र में जो
विपत्तियाँ तुम पर पड़ी उसे याद दिलाने में सहायता
करेंगे। याद करो कि कितनी शीघ्रता से तुम्हें वह देश
छोड़ना पड़ा। तुम्हें उस दिन को तब तक याद रखना
चाहिए जब तक तुम जीवित रहो। 4सात दिन तक देश
में किसी के घर में कहीं खमीर नहीं होनी चाहिए। जो
माँस पहले दिन की शाम को भेंट में चढ़ाओ उसे सवेरा
होने के पहले खा लेना चाहिए।

5"तुम्हें फसह पर्व के जानवरों की बलि उन नगरों में
से किसी में नहीं चढ़ानी चाहिए जिन्हें यहोवा तुम्हारे
परमेश्वर ने तुमको दिए हैं। 6तुम्हें फसह पर्व के जानवर
की बलि केवल उस स्थान पर चढ़ानी चाहिए जिसे
यहोवा तुम्हारा परमेश्वर अपने लिये विशेष निवास के
रूप में चुने। वहाँ तुम फसह पर्व के जानवर को जब
सूर्य डूबे तब शाम को बलि चढ़ानी चाहिए। तुम इसे साल
के उसी समय करोगे जिस समय तुम मिस्र से बाहर
निकले थे। 7और तुम्हें फसह पर्व का माँस यहोवा
तुम्हारा परमेश्वर जिस स्थान को चुनेगा वहीं पकाओगे
और खाओगे। तब सवेरे तुम्हें अपने खेमों में चले जाना
चाहिए। 8तुम्हें अखमीरी रोटी छ: दिन तक खानी चाहिए।
सातवें दिन तुम्हें कोई भी काम नहीं करना चाहिए। उस
दिन यहोवा अपने परमेश्वर के लिए विशेष सभा में
सभी एकत्रित होंगे।

सप्ताहों का पर्व (पिन्तेकुस्त)

9"जब तुम फसल काटना आरम्भ करो तब से तुम्हें
सात हफ्ते गिनने चाहिए। 10तब यहोवा अपने परमेश्वर
के लिए सप्ताहों का पर्व करो। इसे एक स्वेच्छा बलि
उसे लाकर करो। तुम्हें कितना देना है, इसका निश्चय
यह सोचकर करो कि यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें
कितना आशीर्वाद दिया है। 11उस स्थान पर जाओ जिसे
यहोवा अपने विशेष निवास के रूप में चुनेगा। वहाँ तुम
और तुम्हारे लोग, यहोवा अपने परमेश्वर के साथ
आनन्द का समय बिताएंगे। अपने सभी लोगों, अपने
पुत्रों, अपनी पुत्रियों और अपने सभी सेवकों को वहाँ ले
जाओ और अपने नगर में रहने वाले लेवीवंशियों,
विदेशियों, अनाथों और विधवाओं को भी साथ में ले
जाओ। 12यह मत भूलो, कि तुम मिस्र में दास थे। तुम्हें
निश्चय करना चाहिए कि तुम इन नियमों का पालन
करोगे।

खेमों का पर्व

13"जब तुम अपने खलिहान और दाखमधुशाला से
सात दिन तक अपनी फ़सलें एकत्रित कर लो तब खेमों
का पर्व करो। 14तुम, तुम्हारे पुत्र, तुम्हारी पुत्रियाँ, तुम्हारे
सभी सेवक तथा तुम्हारे नगर में रहने वाले लेवीवंशी,
विदेशी, अनाथ बालक और विधवाऐं सभी इस दावत में
आनन्द मनायें। 15तुम्हें इस दावत को सात दिन तक उस
विशेष स्थान पर मनाना चाहिए जिसे यहोवा चुनेगा। यह
तुम यहोवा अपने परमेश्वर के सम्मान में करो। आनन्द
मनाओ! क्योंकि यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें तुम्हारी
फसल के लिए तथा तुमने जो कुछ भी किया है उसके
लिए आशीष दी है।

16"तुम्हारे सभी लोग वर्ष में तीन बार यहोवा अपने
परमेश्वर से मिलने के लिए उस विशेष स्थान पर
आएंगे जिसे वह चुनेगा। यह अखमीरी रोटी के पर्व के
समय, सप्ताहों के पर्व के समय तथा खेमों के पर्व के
समय होगा। हर एक व्यक्ति जो यहोवा से मिलने जाएगा
कोई भेंट लाएगा। 17हर एक व्यक्ति उतना देगा जितना
वह दे सकेगा। कितना देना है, उसका निश्चय वह यह
सोचकर करेगा कि उसे यहोवा ने कितना दिया है।

लोगों के लिए न्यायाधीश और अधिकारी

18"यहोवा तुम्हारा परमेश्वर जिन नगरों को तुम्हें दे
रहा है उनमें से हर एक नगर में तुम्हें अपने परिवार
समूह के लिए न्यायाधीश और अधिकारी बनाना चाहिए।
इन न्यायाधीशों और अधिकारियों को जनता के साथ
सही और ठीक न्याय करना चाहिए। 19तुम्हें ठीक न्याय
को बदलना नहीं चाहिए। तुम्हें किसी के सम्बन्ध में
अपने इरादे को बदलने के लिए धन नहीं लेना चाहिए।
धन बुद्धिमान लोगों को अन्धा करता है और उसे
बदलता है जो भला आदमी कहेगा। 20तुम्हें हर समय
निष्पक्ष तथा न्याय संगत होने का पूरा प्रयास करना
चाहिए। तब तुम जीवित रहोगे और तुम उस देश को
पाओगे जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें दे रहा है
और तुम उसमें रहोगे।

परमेश्वर मूर्तियों से घृणा करता है

21"जब तुम यहोवा अपने परमेश्वर के लिए वेदी
बनाओ तो तुम वेदी के सहारे कोई लकड़ी का स्तम्भ
न बनाओ जो अशेरा देवी के सम्मान में बनाए जाते हैं।
22और तुम्हें विशेष पत्थर झूठे देवताओं की पूजा के
लिए नहीं खड़े करने चाहिए। यहोवा तुम्हारा परमेश्वर
इनसे घृणा करता है!

बलियों के लिए जानवर निर्दोष होने चाहिए

17 “तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर को कोई ऐसी
गाय, भेड़, बलि में नहीं चढ़ानी चाहिए जिसमें
कोई दोष या बुराई हो। क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा
परमेश्वर इससे घृणा करता है!

मूर्ति पूजक को दण्ड

2“तुम उन नगरों में कोई बुरी बात होने की सूचना पा
सकते हो जिन्हें यहोवा परमेश्वर तुम्हें दे रहा है। तुम
यह सुन सकते हो कि तुम में से किसी स्त्री या पुरुष ने
यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। तुम यह सुन सकते हो
कि उन्होंने यहोवा से वाचा तोड़ी है 3अर्थात् उन्होंने दूसरे
देवताओं की पूजा की है। या यह हो सकता है कि
उन्होंने सूर्य, चन्द्रमा या तारों की पूजा की हो। यह
यहोवा के आदेश के विरुद्ध है जिसे मैंने तुम्हें दिया है।
4यदि तुम ऐसी बुरी खबर सुनते हो तो तुम्हें उसकी जाँच
सावधानी से करनी चाहिए। तुम्हें यह जान लेना चाहिए
कि क्या यह सत्य है कि यह भयंकर काम सचमुच
इस्राएल में हो चुका है। यदि तुम इसे प्रमाणित कर सको
कि यह सत्य है, 5तब तुम्हें उस व्यक्ति को अवश्य दण्ड
देना चाहिए जिसने यह बुरा काम किया है। तुम्हें उस
पुरुष या स्त्री को नगर के द्वार के पास सार्वजनिक
स्थान पर ले जाना चाहिए और उसे पत्थरों से मार
डालना चाहिए। 6किन्तु यदि एक ही गवाह यह कहता है
कि उसने बुरा काम किया है तो उसे मृत्यु दण्ड नहीं
दिया जाएगा। किन्तु यदि दो या तीन गवाह यह कहते हैं
कि यह सत्य है तो उस व्यक्ति को मार डालना चाहिए।
7गवाह को पहला पत्थर उस व्यक्ति को मारने के लिये
फेंकना चाहिए। तब अन्य लोगों को उसकी मृत्यु पूरी
करने के लिए पत्थर फेंकना चाहिए। इस प्रकार तुम्हें
उस बुराई को अपने मध्य से दूर करना चाहिए।

जटिल मुकदमें

8“कभी ऐसी समस्या आ सकती है जो तुम्हारे न्यायालयों
के लिए निर्णय देने में इतनी कठिन हो कि वे निर्णय ही
न दे सकें। यह हत्या का मुकदमा या दो लोगों के बीच
का विवाद हो सकता है अथवा यह झगड़ा हो सकता है
जिसमें किसी को चोट आई हो। जब इन मुकदमों पर
तुम्हारे नगरों में बहस होती है तो तुम्हारे न्यायाधीश
सम्भव है, निर्णय न कर सकें कि ठीक क्या है? तब
तुम्हें उस विशेष स्थान पर जाना चाहिए जो यहोवा
तुम्हारे परमेश्वर द्वारा चुना गया हो। 9तुम्हें लेवी परिवार
समूह के याजकों और उस समय के न्यायाधीश के पास
जाना चाहिए। वे लोग उस मुकदमें का फैसला करेंगे।
10यहोवा के विशेष स्थान पर वे अपना निर्णय तुम्हें
सुनाएंगे। जो भी वे कहें उसे तुम्हें करना चाहिए। 11तुम्हें
उनके फैसले स्वीकार करने चाहिए और उनके निर्देश
का ठीक-ठीक पालन करना चाहिए। तुम्हें उससे भिन्न
कुछ भी नहीं करना चाहिए जो वे तुम्हें करने को
कहते हैं।

12“तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर की सेवा करने वाले
उस समय के याजक और न्यायाधीश की आज्ञा का
पालन करने से इन्कार करने वाले किसी व्यक्ति को
भी दण्ड देना चाहिए। उस व्यक्ति को मरना चाहिए।
तुम्हें इस्राएल से इस बुरे व्यक्ति को हटाना चाहिए।
13सभी लोग इस दण्ड के विषय में सुनेंगे और डरेंगे और
वे इस कुकर्म को नहीं करेंगे।

राजा कैसे चुनें

14“तुम उस प्रदेश में जाओगे जिसे यहोवा तुम्हारा
परमेश्वर तुम्हें दे रहा है। तुम उस देश पर अधिकार
करोगे और उसमें रहोगे। तब तुम कहोगे, ‘हम लोग
अपने ऊपर एक राजा वैसा ही प्रतिष्ठित करेंगे जैसा
हमारे चारों ओर के राष्ट्रों में है।’ 15जब ऐसा हो तब
तुम्हें यह पक्का निश्चय होना चाहिए कि तुमने उसे ही
राजा चुना है जिसे यहोवा चुनता है। तुम्हारा राजा तुम्हीं
लोगों में से होना चाहिए। तुम्हें विदेशी को अपना राजा
नहीं बनाना चाहिए। 16राजा को अत्यधिक घोड़े अपने
लिए नहीं रखने चाहिए और उसे लोगों को अधिक घोड़े
लाने के लिए मिस्र नहीं भेजना चाहिए। क्यों? क्योंकि
तुमसे यहोवा ने कहा है, ‘तुम्हें उस रास्ते पर कभी नहीं
लौटना है।’ 17राजा को बहुत पत्नियाँ भी नहीं रखनी
चाहिए। क्यों? क्योंकि यह काम उसे यहोवा से दूर
हटायेगा और राजा को सोने, चाँदी से अपने को सम्पन्न
नहीं बनाना चाहिए।

18“और जब राजा शासन करने लगे तो उसे एक
पुस्तक में अपने लिए नियमों की नकल कर लेनी
चाहिए। उसे याजकों और लेवीवंशियों की पुस्तकों से
नकल करनी चाहिए। 19राजा को उस पुस्तक को
अपने साथ रखना चाहिए। उसे उस पुस्तक को जीवन
भर पढ़ना चाहिए। क्योंकि तब राजा यहोवा अपने
परमेश्वर का सम्मान करना सीखेगा और वह नियम
के आदेशों का पूरा पालन करना सीखेगा। 20तब राजा
यह नहीं सोचेगा कि वह अपने लोगों में से किसी से भी
अधिक अच्छा है। वह नियम के विरुद्ध नहीं जाएगा
बल्कि इसका ठीक-ठीक पालन करेगा। तब वह राजा
और उसके वंशज इस्राएल के राज्य पर लम्बे समय
तक शासन करेंगे।

याजकों तथा लेवीवंशियों की सहायता

18 “लेवी का परिवार समूह इस्राएल में कोई भूमि
का भाग नहीं पाएगा। वे लोग याजक के रूप
में सेवा करेंगे। वे अपना जीवन यापन उस भेंट को
खाकर करेंगे जो आग पर पकेगी और यहोवा को

चढ़ाई जाएगी। लेवी के परिवार समूह के हिस्से में वही
है। 2वे लेवीवंशी लोग भूमि का कोई हिस्सा अन्य परिवार
समूहों की तरह नहीं पाएंगे। लेवीवंशियों के हिस्से में
स्वयं यहोवा है। यहोवा ने इसके लिए उनको वचन दिया
है।

3"जब तुम कोई बैल, या भेड़ बलि के लिए मारो तो
तुम्हें याजकों को ये भाग देने चाहिए: कंधा, दोनों गाल
और पेट। 4तुम्हें याजकों को अपना अन्न, अपनी नयी
दाखमधु और अपनी पहली फ़सल का तेल देना चाहिए।
तुम्हें लेवीवंशियों को अपनी भेड़ों का पहला कटा ऊन
देना चाहिए। 5क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर
तुम्हारे सभी परिवार समूहों की देखभाल करता था
और उसने लेवी और उनके वंशजों को सदा के लिए
याजक के रूप में सेवा करने के लिये चुना है। 6लेवीवंशी
जो इस्राएल में तुम्हारे नगरों में से किसी में रहता है,
अपना घर छोड़ सकता है और यहोवा के विशेष स्थान
पर जा सकता है। 7तब यह लेवीवंशी यहोवा अपने
परमेश्वर के नाम पर सेवा कर सकता है। उसे परमेश्वर
के विशेष स्थान में वैसे ही सेवा करनी चाहिए जैसे
उसके भाई अन्य लेवीवंशी करते हैं। 8वह लेवीवंशी,
अपने परिवार को सामान्य रूप से मिलने वाले हिस्से के
अतिरिक्त अन्य लेवीवंशियों के साथ बराबर का हिस्सेदार
होगा।

इस्राएलियों को अन्य राष्ट्रों की नकल नहीं करनी चाहिए

9"जब तुम उस राष्ट्र में पहुँचो, जो यहोवा तुम्हारा
परमेश्वर तुमको दे रहा है, तब उस राष्ट्र के लोग जो
भयंकर काम वहाँ कर रहें हों उन्हें मत सीखो। 10अपने
पुत्रों और पुत्रियों की बलि अपनी वेदी पर आग में न दो।
किसी ज्योतिषी से बात करके या किसी जादूगर, डायन
या सयाने के पास जाकर यह न सीखो कि भविष्य में
क्या होगा? 11किसी भी व्यक्ति को किसी पर जादू-टोना
चलाने का प्रयत्न न करने दो और तुम में से कोई
व्यक्ति ओझा या भूतसिद्धक नहीं बनेगा। और कोई
व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति से बात करने का प्रयत्न न
करेगा जो मर चुका है। 12यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उन
लोगों से घृणा करता है जो ऐसा करते हैं। यही कारण है
कि वह तुम्हारे सामने इन लोगों को देश छोड़ने को
विवश करेगा। 13तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर पर पूर्ण
विश्वास करना चाहिए और उसके प्रति निष्ठावान
होना चाहिए।

यहोवा का विशेष नबी :

14"तुम्हें उन राष्ट्रों के लोगों को बलपूर्वक अपने देश
से हटा देना चाहिए। उन राष्ट्रों के लोग ज्योतिषियों और
जादूगरों की बात मानते हैं। किन्तु यहोवा तुम्हारा परमेश्वर
तुम्हें वैसा नहीं करने देगा। 15यहोवा तुम्हारा परमेश्वर
तुम्हारे पास अपना नबी भेजेगा। यह नबी तुम्हारे अपने
ही लोगों में से आएगा। वह मेरी तरह ही होगा। तुम्हें इस
नबी की बात माननी चाहिए। 16यहोवा तुम्हारे पास इस
नबी को भेजेगा क्योंकि तुमने ऐसा करने के लिए उससे
कहा है। उस समय जब तुम होरेब (सीनै) पर्वत के चारों
ओर इकट्ठे हुए थे, तुम यहोवा की आवाज और पहाड़
पर भीषण आग को देखकर भयभीत थे। इसलिए तुमने
कहा था, 'हम लोग यहोवा अपने परमेश्वर की आवाज
फिर न सुनें। हम लोग उस भीषण आग को फिर न
देखें। हम मर जाएंगे!'

17"यहोवा ने मुझसे कहा, 'वे जो चाहते हैं, वह ठीक
है। 18मैं तुम्हारी तरह का एक नबी उनके लिए भेज
दूँगा। यह नबी उन्हीं लोगों में से कोई एक होगा। मैं उसे
वह सब बताऊँगा जो उसे कहना होगा और वह लोगों से
वही कहेगा जो मेरा आदेश होगा। 19यह नबी मेरे नाम
पर बोलेगा और जब वह कुछ कहेगा तब यदि कोई
व्यक्ति मेरे आदेशों को सुनने से इन्कार करेगा तो मैं
उस व्यक्ति को दण्ड दूँगा।'

झूठे नबियों को कैसे जाना जाये

20"किन्तु कोई नबी कुछ ऐसा कह सकता है जिसे
करने के लिए मैंने उसे नहीं कहा है और वह लोगों से
कह सकता है कि वह मेरे स्थान पर बोल रहा है। यदि
ऐसा होता है तो उस नबी को मार डालना चाहिए या
कोई ऐसा नबी हो सकता है जो दूसरे देवताओं के नाम
पर बोलता है। उस नबी को भी मार डालना चाहिए।
21तुम सोच सकते हो, 'हम कैसे जान सकते हैं कि नबी
का कथन, यहोवा का नहीं है?' 22यदि कोई नबी कहता
है कि वह यहोवा की ओर से कुछ कह रहा है, किन्तु
उसका कथन सत्य घटित नहीं होता, तो तुम्हें जान लेना
चाहिए कि यहोवा ने वैसा नहीं कहा। तुम समझ जाओगे
कि यह नबी अपने ही विचार प्रकट कर रहा था। तुम्हें
उससे डरने की आवश्यकता नहीं।

सुरक्षा के लिए तीन नगर

19 "यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुमको वह देश दे
रहा है जो दूसरे राष्ट्रों का है। यहोवा उन राष्ट्रों
को नष्ट करेगा। तुम वहाँ रहोगे जहाँ वे लोग रहते हैं।
तुम उनके नगर और घरों को लोगे। जब ऐसा हो,
2-3तब तुम्हें भूमि को तीन भागों में बाँटना चाहिए। तब
तुम्हें हर एक भाग में सभी लोगों के समीप पड़ने वाला
नगर उस क्षेत्र में चुनना चाहिए और तुम्हें उन नगरों
तक सड़कें बनानी चाहिए तब कोई भी व्यक्ति जो किसी
दूसरे व्यक्ति को मारता है वहाँ भागकर जा सकता है।

4"जो व्यक्ति किसी को मारता है और सुरक्षा के लिए
इन तीन नगरों में से कहीं भागकर पहुँचता है उस

व्यक्ति के लिए नियम यह है: यह व्यक्ति वही हो जो संयोगवश किसी व्यक्ति को मार डाले। यह वही व्यक्ति हो जो मारे गए व्यक्ति से घृणा न करता हो। 5एक उदाहरण है: कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के साथ जंगल में लकड़ी काटने जाता है। उस में से एक व्यक्ति लकड़ी काटने के लिए कुल्हाड़ी को एक पेड़ पर चलाता है, किन्तु कुल्हाड़ी दस्ते से निकल जाती है। कुल्हाड़ी दूसरे व्यक्ति को लग जाती है और उसे मार डालती है। वह व्यक्ति, जिसने कुल्हाड़ी चलाई, उन नगरों में भाग सकता है और अपने को सुरक्षित कर सकता है। 6किन्तु यदि नगर बहुत दूर होगा तो वह काफी तेज भाग नहीं सकेगा। मारे गए व्यक्ति का कोई सम्बन्धी उसका पीछा कर सकता है और नगर में उसके पहुँचने से पहले ही उसे पकड़ सकता है। सम्बन्धी बहुत क्रोधित हो सकता है और उस व्यक्ति की हत्या कर सकता है। किन्तु उस व्यक्ति को प्राण–दण्ड उचित नहीं है। वह उस व्यक्ति से घृणा नहीं करता था जो उसके हाथों मारा गया। 7इसलिए मैं आदेश देता हूँ कि तीन विशेष नगरों को चुनो। यह नगर सबके लिये बन्द रहेंगे।

8यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हारे पूर्वजों को यह वचन दिया कि मैं तुम लोगों की सीमा का विस्तार करूँगा। वह तुम लोगों को सारा देश देगा जिसे देने का वचन उसने तुम्हारे पूर्वजों को दिया। 9वह यह करेगा, यदि तुम उन आदेशों का पालन पूरी तरह करोगे जिन्हें मैं तुम्हें आज दे रहा हूँ अर्थात् यदि तुम यहोवा अपने परमेश्वर से प्रेम करोगे और उसके मार्ग पर चलते रहोगे। तब यदि यहोवा तुम्हारे देश को बड़ा बनाता है तो तुम्हें तीन अन्य नगर सुरक्षा के लिए चुनने चाहिए। वे प्रथम तीन नगरों के साथ जोड़े जाने चाहिए। 10तब निर्दोष लोग उस देश में नहीं मारे जाएंगे जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें अपना बनाने के लिये दे रहा है और तुम किसी भी मृत्यु के लिये अपराधी नहीं होगे।

11"किन्तु एक व्यक्ति किसी व्यक्ति से घृणा कर सकता है। वह व्यक्ति उस व्यक्ति को मारने के लिए प्रतीक्षा में छिपा रह सकता है जिसे वह घृणा करता है। वह उस व्यक्ति को मार सकता है और सुरक्षा के लिए चुने इन नगरों में भागकर पहुँच सकता है। 12यदि ऐसा होता है तो उस व्यक्ति के नगर के बुजुर्ग किसी को उसे पकड़ने और सुरक्षा के नगर से उसे बाहर लाने के लिये भेज सकते हैं। नगर के मुखिया तथा वरिष्ठ व्यक्ति उसे उस सम्बन्धी को देंगे जिसका कर्तव्य उसको दण्ड देना है। हत्यारा अवश्य मारा जाना चाहिए।

13उसके लिए तुम्हें दु:खी नहीं होना चाहिए। तुम्हें निर्दोष लोगों को मारने के अपराध से इस्राएल को स्वच्छ रखना चाहिए। तब सब कुछ तुम्हारे लिए अच्छा रहेगा।

सीमा चिन्ह

14"तुम्हें अपने पड़ोसी के सीमा–चिन्हों को नहीं हटाना चाहिए। बीते समय में लोग यह सीमा–चिन्ह उस भूमि पर बनाते थे जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें रहने के लिए देगा और जो तुम्हारी होगी।

गवाह

15"यदि किसी व्यक्ति पर नियम के खिलाफ कुछ करने का मुकदमा हो तो एक गवाह इसे प्रमाण करने के लिए काफी नहीं होगा कि वह दोषी है। उसने निश्चय ही बुरा किया है इसे प्रमाणित करने के लिए दो या तीन गवाह होने चाहिए।

16"कोई गवाह किसी व्यक्ति को झूठ बोलकर और यह कहकर कि उसने अपराध किया है उसे हानि पहुँचाने की कोशिश कर सकता है। 17यदि ऐसा होता है तो आपस में वाद करने वाले व्यक्तियों को यहोवा के आवास पर जाना चाहिए और उनके मुकदमे का निर्णय याजकों एवं उस समय के मुख्य न्यायाधीशों द्वारा होना चाहिए। 18न्यायाधीशों को सावधानी के साथ प्रश्न पूछने चाहिए। वे पता लगा सकते हैं कि गवाह ने दूसरे व्यक्ति के खिलाफ झूठ बोला है। यदि गवाह ने झूठ बोला है तो, 19तुम्हें उसे दण्ड देना चाहिए। तुम्हें उसे वही हानि पहुँचानी चाहिए जो वह दूसरे व्यक्ति को पहुँचाना चाहता था। इस प्रकार तुम अपने बीच से कोई भी बुरी बात निकाल बाहर कर सकते हो। 20दूसरे सभी लोग इसे सुनेंगे और भयभीत होंगे और कोई भी फिर वैसी बुरी बात नहीं करेगा।

21"तुम उस पर दया–दृष्टि न करना जिसे बुराई के लिए तुम दण्ड देते हो। जीवन के लिये जीवन, आँख के लिये आँख, दाँत के लिये दाँत, हाथ के लिये हाथ और पैर के लिये पैर लिया जाना चाहिए।

युद्ध के लिये नियम

20 "जब तुम अपने शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध में जाओ, और अपनी सेना से अधिक घोड़े, रथ, व्यक्तियों को देखो, तो तुम्हें भयभीत नहीं होना चाहिए। क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे साथ है और वही एक है जो तुम्हें मिस्र से बाहर निकाल लाया। 2जब तुम युद्ध के निकट पहुँचो, तब याजक को सैनिकों के पास जाना चाहिए और उनसे बात करनी चाहिए। 3याजक कहेगा, 'इस्राएल के लोगों, मेरी बात सुनो! आज तुम लोग अपने शत्रुओं के विरुद्ध युद्ध में जा रहे हो। अपना साहस न छोड़ो! परेशान न हो या घबराहट में न पड़ो! शत्रु से डरो नहीं! 4क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर शत्रुओं के विरुद्ध लड़ने के लिये तुम्हारे साथ जा रहा है। यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारी रक्षा करेगा!'

5“वे लेवीवंशी अधिकारी सैनिकों से यह कहेंगे, ‘क्या
यहाँ कोई ऐसा व्यक्ति है जिसने अपना नया घर बना
लिया है, किन्तु अब तक उसे अर्पित नहीं किया है?
उस व्यक्ति को अपने घर लौट जाना चाहिए। वह युद्ध में
मारा जा सकता है और तब दूसरा व्यक्ति उसके घर
को अर्पित करेगा। 6क्या कोई व्यक्ति यहाँ ऐसा है जिसने
अंगूर के बाग लगाये हैं, किन्तु अभी तक उससे कोई
अंगूर नहीं लिया है? उस व्यक्ति को घर लौट जाना
चाहिए। यदि वह व्यक्ति युद्ध में मारा जाता है तो दूसरा
व्यक्ति उसके बाग के फल का भोग करेगा। 7क्या यहाँ
कोई ऐसा व्यक्ति है जिसके विवाह की बात पक्की हो
चुकी है। उस व्यक्ति को घर लौट जाना चाहिए। यदि
वह युद्ध में मारा जाता है तो दूसरा व्यक्ति उस स्त्री से
विवाह करेगा जिसके साथ उसके विवाह की बात
पक्की हो चुकी है।’

8“वे लेवीवंशी अधिकारी, लोगों से यह भी कहेंगे,
‘क्या यहाँ कोई ऐसा व्यक्ति है जो साहस खो चुका है
और भयभीत है। उसे घर लौट जाना चाहिए। तब वह
दूसरे सैनिकों को भी साहस खोने में सहायक नहीं
होगा।’ 9जब अधिकारी सैनिकों से बात करना समाप्त
कर ले तब वे सैनिकों को युद्ध में ले जाने वाले नायकों
को चुनें।

10“जब तुम नगर पर आक्रमण करने जाओ तो वहाँ
के लोगों के सामने शान्ति का प्रस्ताव रखो। 11यदि वे
तुम्हारा प्रस्ताव स्वीकार करते हैं और अपने फाटक
खोल देते हैं तब उस नगर में रहने वाले सभी लोग
तुम्हारे दास हो जाएँगे और तुम्हारा काम करने के लिए
विवश किये जाएँगे। 12किन्तु यदि नगर शान्ति प्रस्ताव
स्वीकार करने से इन्कार करता है और तुमसे लड़ता है
तो तुम्हें नगर को घेर लेना चाहिए 13और जब यहोवा
तुम्हारा परमेश्वर नगर पर तुम्हारा अधिकार कराता
है तब तुम्हें सभी पुरुषों को मार डालना चाहिए। 14तुम
अपने लिए स्त्रियाँ, बच्चे, पशु तथा नगर की हर एक
चीज़ ले सकते हो। तुम इन सभी चीज़ों का उपयोग कर
सकते हो। यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने ये चीज़ें तुमको दी
हैं। 15जो नगर तुम्हारे प्रदेश में नही हैं और बहुत दूर हैं,
उन सभी के साथ तुम ऐसा व्यवहार करोगे।

16“किन्तु जब तुम वह नगर उस प्रदेश में लेते हो
जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें दे रहा है तब तुम्हें
हर एक को मार डालना चाहिए। 17तुम्हें हित्ती, एमोरी,
कनानी, परिज्जी, हिब्बी और यबूसी सभी लोगों को पूरी
तरह नष्ट कर देना चाहिए। यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने,
यह करने का तुम्हें आदेश दिया है। 18क्यों? क्योंकि तब
वे तुम्हें यहोवा तुम्हारे परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने
की शिक्षा नहीं दे सकते। वे उन भयंकर बातों में से
किसी की शिक्षा तुमको नहीं दे सकते जो वे अपने
देवताओं की पूजा के समय करते हैं।

19“जब तुम किसी नगर के विरुद्ध युद्ध कर रहे होगे
तो तुम लम्बे समय तक उसका घेरा डाले रह सकते हो।
तुम्हें नगर के चारों ओर के फलदार पेड़ों को नहीं
काटना चाहिए। तुम्हें इनसे फल खाना चाहिए किन्तु
काटकर गिराना नहीं चाहिए। ये पेड़ शत्रु नहीं हैं अतः
उनके विरुद्ध युद्ध मत छेड़ो! 20किन्तु उन पेड़ों को काट
सकते हो जिन्हें तुम जानते हो कि ये फलदार नहीं हैं।
तुम इनका उपयोग उस नगर के विरुद्ध घेराबन्दी में
कर सकते हो, जब तक कि उसका पतन न हो जाए।

यदि कोई व्यक्ति मारा हुआ पाया जाए

21 “उस देश में जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर
तुम्हें रहने के लिए दे रहा है, कोई व्यक्ति
मैदान में मरा हुआ पाया जा सकता है। किन्तु किसी को
यह पता नहीं चल सकता कि उसे किसने मारा। 2तब
तुम्हारे मुखिया और न्यायाधीशों को मारे गए व्यक्ति के
चारों ओर से नगरों की दूरी को नापना चाहिए। 3जब
तुम यह जान जाओ कि मरे व्यक्ति के समीपतम कौन
सा नगर है तब उस नगर के मुखिया अपने झुण्डों में से
एक गाय लेंगे। यह ऐसी गाय हो जिसने कभी बछड़े को
जन्म न दिया हो। जिसका उपयोग कभी भी किसी काम
करने में न किया गया हो। 4उस नगर के मुखिया उस
गाय को बहुत जल वाली घाटी में लाएंगे। यह ऐसी घाटी
होनी चाहिए जिसे कभी जोता न गया हो और न उसमें
पेड़ पौधे रोपे गये हों। तब मुखियाओं को उस घाटी में
वहीं उस गाय की गर्दन तोड़ देनी चाहिए। 5लेवीवंशी
याजकों को वहाँ जाना चाहिए। (यहोवा तुम्हारे परमेश्वर
ने इन याजकों को अपनी सेवा के लिए और अपने नाम
पर आशीर्वाद देने के लिए चुना है।) याजक यह निश्चित
करेंगे कि झगड़े के विषय में कौन सच्चा है। 6मारे गये
व्यक्ति के समीपतम नगर के मुखिया अपने हाथों को
उस गाय के ऊपर धोएंगे जिसकी गर्दन घाटी में तोड़ दी
गई है। 7ये मुखिया अवश्य कहेंगे, ‘हमने इस व्यक्ति को
नहीं मारा और हमने इसका मारा जाना नहीं देखा।
8यहोवा, इस्राएल के लोगों को क्षमा कर, जिनका तूने
उद्धार किया है। अपने लोगों में से किसी निर्दोष व्यक्ति
को दोषी न ठहराने दे।’ तब वे हत्या के लिये दोषी नहीं
ठहराए जाएंगे। 9इन मामलों में वह करना ही तुम्हारे
लिये ठीक है। ऐसा करके तुम किसी निर्दोष की हत्या
करने के दोषी नहीं रहोगे।

युद्ध में प्राप्त स्त्रियाँ

10“तुम अपने शत्रुओं से युद्ध करोगे और यहोवा
तुम्हारा परमेश्वर उन्हें तुमसे पराजित करायेगा। तब
तुम शत्रुओं को बन्दी के रूप में लाओगे। 11और तुम
युद्ध में बन्दी किसी सुन्दर स्त्री को देख सकते हो। तुम
उसे पाना चाह सकते हो और अपनी पत्नी के रूप में

रखने की इच्छा कर सकते हो। 12तुम्हें उसे अपने
परिवार में अपने घर लाना चाहिए। उसे अपने बाल
मुड़वाना चाहिए और अपने नाखून काटने चाहिए। 13उसे
अपने पहने हुए कपड़ों को उतारना चाहिए। उसे तुम्हारे
घर में रहना चाहिए और एक महीने तक अपने माता–
पिता के लिए रोना चाहिए। उसके बाद तुम उसके साथ
यौन सम्बन्ध स्थापित कर सकते हो और उसके पति
हो सकते हो। और वह तुम्हारी पत्नी बन जाएगी। 14किन्तु
यदि तुम उससे प्रसन्न नहीं हो तो तुम उसे जहाँ वह चाहे
जाने दे सकते हो। किन्तु तुम उसे बेच नहीं सकते। तुम
उसके प्रति दासी की तरह व्यवहार नहीं कर सकते।
क्यों? क्योंकि तुम्हारा उसके साथ यौन सम्बन्धथा।

एक व्यक्ति की दो पत्नियों के बच्चे

15"एक व्यक्ति की दो पत्नियाँ हो सकती हैं और वह
एक पत्नी से दूसरी पत्नी की अपेक्षा अधिक प्रेम कर
सकता है। दोनों पत्नियों से उसके बच्चे हो सकते हैं
और पहला बच्चा उस पत्नी का हो सकता है जिससे वह
प्रेम न करता हो। 16जब वह अपनी सम्पत्ति अपने बच्चों
में बाँटेगा तो अधिक प्रिय पत्नी के बच्चे को वह विशेष
वस्तु नहीं दे सकता जो पहलौठे बच्चे की होती है। 17उस
व्यक्ति को तिरस्कृत पत्नी के बच्चे को ही पहलौठा
बच्चा स्वीकार करना चाहिए। उस व्यक्ति को अपनी
चीज़ों के दो भाग पहलौठा पुत्र को देना चाहिए। क्यों?
क्योंकि वह पहलौठा बच्चा है।

आज्ञा न मानने वाले पुत्र

18"किसी व्यक्ति का ऐसा पुत्र हो सकता है जो हठी
और आज्ञापालन न करने वाला हो। यह पुत्र अपने
माता–पिता की आज्ञा नहीं मानेगा। माता–पिता उसे
दण्ड देते हैं किन्तु पुत्र फिर भी उनकी कुछ नहीं
सुनता। 19उसके माता–पिता को उसे नगर की बैठक
वाली जगह पर नगर के मुखियों के पास ले जाना
चाहिए। 20उन्हें नगर के मुखियों से कहना चाहिए:
'हमारा पुत्र हठी है और आज्ञा नहीं मानता। वह कोई
काम नहीं करता जिसे हम करने के लिये कहते हैं।
वह आवश्यकता से अधिक खाता और शराब पीता है।'
21तब नगर के लोगों को उस पुत्र को पत्थरों से मार
डालना चाहिए। ऐसा करके तुम अपने में से इस बुराई
को खत्म करोगे। इस्राएल के सभी लोग इसे सुनेंगे और
भयभीत होंगे।

अपराधी मारे और पेड़ पर लटकाये जाते हैं

22"कोई व्यक्ति ऐसे पाप करने का अपराधी हो सकता
है जिसे मृत्यु का दण्ड दिया जाए। जब वह मार डाला
जाए तब उसका शरीर पेड़ पर लटकाया जा सकता है।
23जब ऐसा होता है तो उसका शरीर पूरी रात पेड़ पर
नहीं रहना चाहिए। तुम्हें उसे उसी दिन निश्चय ही
दफ़ना देना चाहिए। क्यों? क्योंकि जो व्यक्ति पेड़ पर
लटकाया जाता है वह परमेश्वर से अभिशाप पाया हुआ
होता है। तुम्हें उस देश को अपवित्र नहीं करना चाहिए
जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें रहने के लिए दे
रहा है।

विभिन्न नियम

22 "यदि तुम देखो कि तुम्हारे पड़ोसी की गाय या
भेड़ खुली है, तो तुम्हें इससे लापरवाह नहीं
होना चाहिए। तुम्हें निश्चय ही इसे मालिक के पास
पहुँचा देना चाहिए। 2यदि इसका मालिक तुम्हारे पास न
रहता हो या तुम उसे नहीं जानते कि वह कौन है तो
तुम उस गाय या भेड़ को अपने घर ले जा सकते हो
और तुम इसे तब तक रख सकते हो जब तक मालिक
इसे ढूँढता हुआ न आए। तब तुम्हें उसे उसको लौटा देना
चाहिए। 3तुम्हें यही तब भी करना चाहिए जब तुम्हें
पड़ोसी का गधा मिले, उसके कपड़े मिलें या कोई चीज़
जो पड़ोसी खो देता है। तुम्हें अपने पड़ोसी की सहायता
करनी चाहिए।

4"यदि तुम्हारे पड़ोसी का गधा या उसकी गाय सड़क
पर पड़ी हो तो उससे आँख नहीं फेरनी चाहिए। तुम्हें
उसे फिर उठाने में उसकी सहायता करनी चाहिए।

5"किसी स्त्री को किसी पुरुष के वस्त्र नहीं पहनने
चाहिए और किसी पुरुष को किसी स्त्री के वस्त्र नहीं
पहनने चाहिए। यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उससे घृणा
करता है जो ऐसा करता है।

6"किसी रास्ते से टहलते समय तुम पेड़ पर या ज़मीन
पर चिड़ियों का घोंसला पा सकते हो। यदि मादा पक्षी
अपने बच्चों के साथ बैठी हो या अपने अण्डों पर बैठी
हो तो तुम्हें मादा पक्षी को बच्चों के साथ नहीं पकड़ना
चाहिए। 7तुम बच्चों को अपने लिए ले सकते हो। किन्तु
तुम्हें माँ को छोड़ देना चाहिए। यदि तुम इन नियमों का
पालन करते हो तो तुम्हारे लिए सब कुछ अच्छा रहेगा
और तुम लम्बे समय तक जीवित रहोगे।

8"जब तुम कोई नया घर बनाओ तो तुम्हें अपनी छत
के चारों ओर दीवार खड़ी करनी चाहिए। तब तुम
किसी व्यक्ति की मृत्यु के अपराधी नहीं होओगे यदि
वह उस छत पर से गिरता है।

कुछ चीज़ें जिन्हें एक साथ नहीं रखा जाना चाहिए

9"तुम्हें अपने अंगूर के बाग मे अनाज के बीजों को
नहीं बोना चाहिए। क्यों? क्योंकि बोये गए बीज और
तुम्हारे बाग के अंगूर दोनों फसलें उपयोग में नहीं आ
सकती। 10तुम्हें बैल और गधे को एक साथ हल चलाने
में नहीं जोतना चाहिए। 11तुम्हें उस कपड़े को नहीं
पहनना चाहिए जिसे ऊन और सूत से एक साथ बुना

गया हो। 12तुम्हे अपने पहने जाने वाले चोगे के चारों
कोनों पर फुंदने* लगाने चाहिए।

विवाह के नियम

13“कोई व्यक्ति किसी लड़की से विवाह करे और
उससे शारीरिक सम्बन्ध करे। तब वह निर्णय करता है
कि वह उसे पसन्द नहीं है। 14वह झूठ बोल सकता है
और कह सकता है, ‘मैंने उस स्त्री से विवाह किया,
किन्तु जब हमने शारीरिक सम्बन्ध किया तो मुझे मालूम
हुआ कि वह कुवाँरी नहीं है।’ उसके विरुद्ध ऐसा कहने
पर लोग उस स्त्री के सम्बन्ध में बुरा विचार रख सकते
हैं। 15यदि ऐसा होता है तो लड़की के माता–पिता को
इस बात का प्रमाण नगर की बैठकवाली जगह पर
नगर–प्रमुखों के सामने लाना चाहिए कि लड़की कुवाँरी
थी। 16लड़की के पिता को नगर प्रमुखों से कहना
चाहिए, ‘मैंने अपनी पुत्री को उस व्यक्ति की पत्नी होने
के लिए दिया, किन्तु वह अब उसे नहीं चाहता। 17इस
व्यक्ति ने मेरी पुत्री के विरुद्ध झूठ बोला है। उसने कहा,
‘मुझे इसका प्रमाण नहीं मिला कि तुम्हारी पुत्री कुवाँरी
है।’ किन्तु यहाँ यह प्रमाण है कि मेरी पुत्री कुवाँरी थी।’
तब वे उस कपड़े* को नगर–प्रमुखों को दिखाएंगे।
18तब वहाँ के नगर–प्रमुख उस व्यक्ति को पकड़ेंगे
और उसे दण्ड देंगे। 19वे उस पर चालीस चाँदी के
सिक्के जुर्माना करेंगे। वे उस रूपये को लड़की के पिता
को देंगे क्योंकि उसके पति ने एक इस्राएली लड़की को
कलंकित किया है और लड़की उस व्यक्ति की पत्नी
बनी रहेगी। वह अपनी पूरी जिन्दगी उसे तलाक नहीं दे
सकता। 20किन्तु जो बातें पति ने अपनी पत्नी के विषय
में कहीं वे सत्य हो सकती है। पत्नी के माता–पिता के
पास यह प्रमाण नहीं हो सकता कि लड़की कुवाँरी थी।
यदि ऐसा होता है तो 21नगर–प्रमुख उस लड़की को
उसके पिता के द्वार पर लाएँगे। तब नगर–प्रमुख उसे
पत्थर से मार डालेंगे। क्यों? क्योंकि उसने इस्राएल में
लज्जाजनक बात की। उसने अपने पिता के घर में
वेश्या जैसा व्यवहार किया है। तुम्हें अपने लोगों में से
हर बुराई को दूर करना चाहिए।

व्यभिचार का पाप दण्डित होना चाहिए

22“यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे की पत्नी के साथ
शारीरिक सम्बन्ध करता हुआ पाया जाता है तो दोनों
शारीरिक सम्बन्ध करने वाले स्त्री–पुरुष को मारा जाना
चाहिए। तुम्हें इस्राएल से यह बुराई दूर करनी चाहिए।

23“कोई व्यक्ति किसी उस कुवाँरी लड़की से मिल
सकता है जिसका विवाह दूसरे से पक्का हो चुका है।
वह उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध भी कर सकता है।
यदि नगर में ऐसा होता है तो 24तुम्हें उन दोनों को उस
नगर के बाहर फाटक पर लाना चाहिए और तुम्हें उन
दोनों को पत्थरों से मार डालना चाहिए। तुम्हें पुरुष को
इसलिए मार देना चाहिए कि उसने दूसरे की पत्नी के
साथ शारीरिक सम्बन्ध किया और तुम्हें लड़की को
इसलिए मार डालना चाहिए कि वह नगर में थी और
उसने सहायता के लिये पुकार नहीं की। तुम्हें अपने
लोगों में से यह बुराई भी दूर करनी चाहिए।

25“किन्तु यदि कोई व्यक्ति मैदानों में, विवाह पक्की
की हुई लड़की को पकड़ता है और उससे बलपूर्वक
शारीरिक सम्बन्ध करता है तो पुरुष को ही मारना
चाहिए। 26तुम्हें लड़की के साथ कुछ भी नहीं करना
चाहिए क्योंकि उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया जो उसे
प्राण–दण्ड का भागी बनाता है। यह मामला वैसा ही है
जैसा किसी व्यक्ति का निर्दोष व्यक्ति पर आक्रमण और
उसकी हत्या करना। 27उस व्यक्ति ने विवाह पक्की की
हुई लड़की को मैदान में पकड़ा। लड़की ने सहायता के
लिए पुकारा, किन्तु उसकी कोई सहायता करने वाला
नहीं था।

28“कोई व्यक्ति किसी कुवाँरी लड़की जिसकी सगाई
नहीं हुई है, को पकड़ सकता है और उसे अपने साथ
बलपूर्वक शारीरिक सम्बन्ध करने को विवश कर
सकता है। यदि लोग ऐसा होता देखते हैं तो 29उसे लड़की
के पिता को बीस औंस चाँदी देनी चाहिए और लड़की
उसकी पत्नी हो जाएगी। क्यों? क्योंकि उसने उसके
साथ शारीरिक सम्बन्ध किया वह उसे पूरी जिन्दगी
तलाक नहीं दे सकता।

30“किसी व्यक्ति को अपने पिता की पत्नी के साथ
शारीरिक सम्बन्ध करके अपने पिता को कलंक नहीं
लगाना चाहिए।

वे लोग जो उपासना में सम्मलित हो सकते हैं

23 “ये लोग इस्राएल के लोगों के साथ यहोवा की
उपासना करने के लिये नहीं आ सकते: वह
व्यक्ति जिसने अपने को बधिया करा लिया है, वह
व्यक्ति जिसने अपना यौन अंग कटवा लिया है 2या वह
व्यक्ति जो अविवाहित माता–पिता की सन्तान हो। इस
व्यक्ति के परिवार का कोई व्यक्ति दसवीं पीढ़ी तक भी
यहोवा के लोगों में यहोवा की उपासना करने के लिये
नहीं गिना जा सकता।

3“कोई अम्मोनी या मोआबी यहोवा के लोगों से
सम्बन्धित नहीं हो सकता और दस पीढ़ियों तक उनका

फुंदने धागों को एक साथ मिलाकर बने गोले जिसके एक सिरे पर धागे लटकते रहते हैं। इससे लोगों को परमेश्वर और उसके आदेशों का स्मरण कराने में सहायता मिलती है।

कपड़ा प्राय: स्त्री के साथ प्रथम शारीरिक सम्बन्ध के समय भीतर की झिल्ली के फटने से थोड़ा खून आता है। दुल्हन अपने विवाह की रात के बिछौने के कपड़े को यह प्रमाणित करने के लिए रखती थी कि वह विवाह के समय कुवाँरी थी।

कोई वंशज भी यहोवा के लोगों का भाग यहोवा की
उपासना करने के लिये नहीं बन सकता। 4क्यों? क्योंकि
अम्मोनी और मोआबी लोगों ने मिस्र से बाहर आने की
यात्रा के समय तुम लोगों को रोटी और पानी देने से
इन्कार किया था। वे यहोवा के लोगों के भाग इसलिए
भी नहीं हो सकते क्योंकि उन्होंने बिलाम को तुम्हें
अभिशाप देने के लिए नियुक्त किया था। (बिलाम
अरम्नहरैम में पतोर नगर के बोर का पुत्र था।) 5किन्तु
यहोवा परमेश्वर ने बिलाम की एक न सुनी। यहोवा ने
अभिशाप को तुम्हारे लिये वरदान में बदल दिया। क्यों?
क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुमसे प्रेम करता है।
6तुम्हें अम्मोनी और मोआबी लोगों के साथ शान्ति
रखने का प्रयत्न कभी नहीं करना चाहिए। जब तक
तुम लोग रहो, उनसे मित्रता न रखो।

ये लोग जिन्हें इस्राएलियों को अपने में मिलाना चाहिए

7"तुम्हें एदोमी से घृणा नहीं करनी चाहिए। क्यों?
क्योंकि वह तुम्हारा सम्बन्धी हैं। तुम्हें किसी मिस्री से
घृणा नहीं करनी चाहिए। क्यों? क्योंकि उनके देश में
तुम अजनबी थे। 8एदोमी और मिस्री लोगों से उत्पन्न
तीसरी पीढ़ी के बच्चे यहोवा के लोगों के भाग बन
सकते हैं।

सेना के डेरे को स्वच्छ रखना

9"जब तुम्हारी सेना शत्रु के विरुद्ध जाए, तब तुम उन
सभी चीज़ों से दूर रहो जो तुम्हें अपवित्र बनाती हैं।
10यदि कोई ऐसा व्यक्ति है जो इस कारण अपवित्र है कि
उसे रात में स्वप्नदोष हो गया है तो उसे डेरे के बाहर
चले जाना चाहिए। उसे डेरे से दूर रहना चाहिए 11किन्तु
जब शाम हो तब उस व्यक्ति को पानी से नहाना चाहिए
और जब सूरज डूबे तो उसे डेरे में जाना चाहिए।

12"तुम्हें डेरे के बाहर शौच के लिए जगह बनानी
चाहिए 13और तुम्हें अपने हथियार के साथ खोदने के
लिए एक खन्ती रखनी चाहिए। इसलिए जब तुम मलत्याग
करो तब तुम एक गड्ढा खोदो और उसे ढक दो।
14क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे डेरे में
शत्रुओं को हराने में तुम्हारी सहायता करने के लिए
तुम्हारे साथ है। इसलिए डेरा पवित्र रहना चाहिए। तब
यहोवा तुम में कुछ भी घृणित नहीं देखेगा। और तुम से
आँखें नहीं फेरेगा।

विभिन्न नियम

15"यदि कोई दास अपने मालिक के यहाँ से भागकर
तुम्हारे पास आता है तो तुम्हें उस दास को उसके
मालिक को नहीं लौटाना चाहिए। 16यह दास तुम्हारे
साथ जहाँ चाहे वहाँ रह सकता है। वह जिस भी नगर
को चुने उसमें रह सकता है। तुम्हें उसे परेशान नहीं
करना चाहिए। 17कोई इस्राएली स्त्री या पुरुष को कभी
देवदासी या देवदास नहीं बनना चाहिए। 18देवदास या
देवदासी का कमाया हुआ धन यहोवा तुम्हारे परमेश्वर
के मन्दिर में नहीं लाया जाना चाहिए। कोई व्यक्ति दिये
गए वचन के कारण यहोवा को दी जाने वाली चीज़ के
लिए इस धन का उपयोग नहीं कर सकता। यहोवा
तुम्हारा परमेश्वर सभी मन्दिरों के देवदास–देवदासियों
से घृणा करता है।

19"यदि तुम किसी इस्राएली को कुछ उधार दो तो तुम
उस पर ब्याज न लो। तुम सिक्कों, भोजन या कोई ऐसी
चीज जिस पर ब्याज लिया जा सके ब्याज न लो। 20तुम
विदेशी से ब्याज ले सकते हो। किन्तु तुम्हें दूसरे इस्राएली
से ब्याज नहीं लेना चाहिए। यदि तुम इन नियमों का
पालन करोगे तो यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उस देश में,
जहाँ तुम रहने जा रहे हो, जो कुछ तुम करोगे उसमें
आशीष देगा।

21"जब तुम यहोवा अपने परमेश्वर को वचन दो, तो
जो तुम देने को कहो उन सबको देने में ढीले न पड़ो।
यदि तुम वचन दी गई चीज़ों को नहीं दोगे तो पाप
करोगे। 22यदि तुम वचन नहीं देते हो तो तुम पाप नहीं
कर रहे हो। 23किन्तु तुम्हें वह चीज़ें करनी चाहिए जिसे
करने के लिए तुमने कहा है कि तुम करोगे। जब तुम
स्वतन्त्रता से यहोवा अपने परमेश्वर को वचन दो तो,
तुम्हें वचन दी गई बात पूरी करनी चाहिए! 24यदि तुम
दूसरे व्यक्ति के अंगूर के बाग से होकर जाते हो, तो तुम
जितने चाहो उतने अंगूर खा सकते हो। किन्तु तुम कोई
अंगूर अपनी टोकरी में नहीं रख सकते। 25जब तुम
दूसरे की पकी अन्न की फसल के खेत से होकर जा
रहे हो तो तुम अपने हाथ से जितना उखाड़ा, खा सकते
हो। किन्तु तुम हँसिये का उपयोग दूसरे के अन्न को
काटने और लेने के लिये नहीं कर सकते।

24 "कोई व्यक्ति किसी स्त्री से विवाह करता है,
और वह कुछ ऐसी गुप्त चीज़ उसके बारे में
जान सकता है जिसे वह पसन्द नहीं करता। यदि वह
व्यक्ति प्रसन्न नहीं है तो वह तलाक पत्रों को लिख
सकता है और उन्हें स्त्री को दे सकता है। तब उसे
अपने घर से उसको भेज देना चाहिए। 2जब उसने
उसका घर छोड़ दिया है तो वह दूसरे व्यक्ति के पास
जाकर उसकी पत्नी हो सकती है। 3-4किन्तु मान लो
कि नया पति भी उसे पसन्द नहीं करता और उसे विदा
कर देता है। यदि वह व्यक्ति उसे तलाक देता है तो
पहला पति उसे पत्नी के रूप में नहीं रख सकता या
यदि नया पति मर जाता है तो पहला पति उसे फिर
पत्नी के रूप में नहीं रख सकता। वह अपवित्र हो चुकी
है। यदि वह फिर उससे विवाह करता है तो वह ऐसा
काम करेगा जिससे यहोवा घृणा करता है। तुम्हें उस
देश में ऐसा नहीं करना चाहिए जिसे यहोवा तुम्हारा

परमेश्वर तुम्हें रहने के लिए दे रहा है। 5नवविवाहितों
को सेना में नहीं भेजना चाहिए और उसे कोई अन्य
विशेष काम भी नहीं देना चाहिए। क्योंकि एक वर्ष तक
उसे घर पर रहने को स्वतन्त्र होना चाहिए और अपनी
नयी पत्नी को सुखी बनाना चाहिए।

6"यदि किसी व्यक्ति को तुम कर्ज दो तो गिरवी* के
रूप में उसकी आटा पीसने की चक्की का कोई पाट न
रखो। क्यों? क्योंकि ऐसा करना उसे भोजन से वंचित
करना होगा।

7"यदि कोई व्यक्ति अपने लोगो (इस्राएलियों) में से
किसी का अपहरण करता हुआ पाया जाये और वह
उसका उपयोग दास के रूप में करता हो या उसे बेचता
हो तो वह अपहरण करने वाला अवश्य मारा जाना
चाहिए। इस प्रकार तुम अपने बीच से इस बुराई को दूर
करोगे। 8यदि तुम्हें कुष्ठ जैसी बीमारी हो जाय तो तुम्हें
लेवीवंशी याजकों की दी हुई सारी शिक्षा स्वीकार करने
में सावधान रहना चाहिए। तुम्हें सावधानी से उन सब
आदेशों का पालन करना चाहिए जिन्हें देने के लिये मैंने
याजकों से कहा है। 9यह याद रखो कि यहोवा तुम्हारे
परमेश्वर ने मरियम के साथ क्या किया जब तुम मिस्र
से बाहर निकलने की यात्रा पर थे।

10"जब तुम किसी व्यक्ति को किसी प्रकार का कर्ज
दो तो उसके घर में गिरवी रखी गई चीज़ लेने के लिए
मत जाओ। 11तुम्हें बाहर ही खड़ा रहना चाहिए। तब वह
व्यक्ति, जिसे तुमने कर्ज दिया है, तुम्हारे पास गिरवी
रखी गई चीज़ लाएगा। 12यदि वह गरीब है तो वह अपने
कपड़े को दे दे, जिससे वह अपने को गर्म रख सकता
है। तुम्हें उसकी गिरवी रखी गई चीज़ रात को नहीं
रखनी चाहिये। 13तुम्हें प्रत्येक शाम को उसकी गिरवी
रखी गई चीज़ लौटा देनी चाहिए। तब वह अपने वस्त्रों में
सो सकेगा। वह तुम्हारा आभारी होगा और यहोवा तुम्हारा
परमेश्वर यह देखेगा कि तुमने यह अच्छा काम किया।

14"तुम्हें किसी मजदूरी पर रखे गए गरीब और
जरूरतमन्द सेवक को धोखा नहीं देना चाहिए। इसका
कोई महत्व नहीं कि वह तुम्हारा साथी इस्राएली है या
वह कोई विदेशी है जो तुम्हारे नगरों में से किसी एक में
रह रहा है। 15सूरज डूबने से पहले प्रतिदिन उसकी
मजदूरी दे दो। क्यों? क्योंकि वह गरीब है और उसी धन
पर आश्रित है। यदि तुम उसका भुगतान नहीं करते तो
वह यहोवा से तुम्हारे विरुद्ध शिकायत करेगा और तुम
पाप करने के अपराधी होगे।

16"बच्चों द्वारा किये गए किसी अपराध के लिए पिता
को मृत्यु दण्ड नहीं दिया जा सकता और बच्चे को पिता
द्वारा किये गए अपराध के लिये मृत्यु दण्ड नहीं दिया जा
सकता। किसी व्यक्ति को उसके स्वयं के अपराध के
लिये ही मृत्यु दण्ड दिया जा सकता है। 17तुम्हें यह
अच्छी तरह से देख लेना चाहिए कि विदेशियों और
अनाथों के साथ अच्छा व्यवहार किया जाए। तुम्हें
विधवा से उसके वस्त्र कभी गिरवी में रखने के लिये
नहीं लेने चाहिए। 18तुम्हें सदा याद रखना चाहिए कि
तुम मिस्र में दास थे। यह मत भूलो कि यहोवा तुम्हारा
परमेश्वर तुम्हें वहाँ से बाहर लाया। यही कारण है कि
मैं तुम्हें यह करने का आदेश देता हूँ।

19"तुम अपने खेत की फसल इकट्ठी करते रह
सकते हो और तुम कोई पूली भूल से वहाँ छोड़ सकते
हो। तुम्हें उसे लेने नहीं जाना चाहिए। यह विदेशियों,
अनाथों और विधवाओं के लिए होगा। यदि तुम उनके
लिये कुछ अन्न छोड़ते हो तो यहोवा तुम्हारा परमेश्वर
तुम्हें उन सभी कामों में आशीष देगा जो तुम करोगे।
20जब तुम अपने जैतून के पेड़ों से फली झाड़ोगे तब
तुम्हें शाखाओं की जाँच करने फिर नहीं जाना चाहिए।
जो जैतून तुम उसमें छोड़ दोगे वह विदेशियों, अनाथों
और विधवाओं के लिये होगा। 21जब तुम अपने अंगूर
के बागों से अंगूर इकट्ठा करो तब तुम्हें उन अंगूरों
को लेने नहीं जाना चाहिए जिन्हें तुमने छोड़ दिया था। वे
अंगूर विदेशियों, अनाथों और विधवाओं के लिये होंगे।
22याद रखो कि तुम मिस्र में दास थे। यही कारण है कि
मैं तुम्हें यह करने का आदेश दे रहा हूँ।

25 "यदि दो व्यक्तियों में झगड़ा हो तो उन्हें अदालत
में जाना चाहिये। न्यायाधीश उनके मुकदमें
का निर्णय करेंगे और बताएंगे कि कौन व्यक्ति सच्चा है
तथा कौन अपराधी। 2यदि अपराधी व्यक्ति पीटे जाने
योग्य है तो न्यायाधीश उसे मुँह के बल लेटाएगा। कोई
व्यक्ति उसे न्यायाधीश की आँखों के सामने पीटेगा। वह
व्यक्ति उतनी बार पीटा जाएगा जितनी बार के लिए
उसका अपराध उपयुक्त होगा। 3कोई व्यक्ति चालीस
बार तक पीटा जा सकता है, किन्तु उससे अधिक नहीं।
यदि वह उससे अधिक बार पीटा जाता है तो इससे यह
पता चलेगा कि उस व्यक्ति का जीवन तुम्हारे लिये
महत्वपूर्ण नहीं।

4"जब तुम अन्न को अलग करने के लिये पशुओं
का उपयोग करो तब उन्हें खाने से रोकने के लिए
उनके मुँह को न बांधो। 5यदि दो भाई एक साथ रह रहे
हों और उनमें एक पुत्रहीन मर जाए तो मृत भाई की
पत्नी का विवाह परिवार के बाहर के किसी अजनबी
के साथ नहीं होना चाहिए। उसके पति के भाई को
उसके प्रति पति के भाई का कर्तव्य पूरा करना चाहिए।
6तब जो पहलौठा पुत्र उससे उत्पन्न होगा वह व्यक्ति के
मृत भाई का स्थान लेगा। तब मृत–भाई का नाम इस्राएल
से बाहर नहीं किया जाएगा। 7यदि वह व्यक्ति अपने भाई
की पत्नी को ग्रहण करना नहीं चाहता, तब भाई की

गिरवी कोई चीज़ जिसे व्यक्ति इसलिए देता है कि वह अपना कर्ज लौटा देगा। यदि वह व्यक्ति अपना कर्ज नहीं लौटाता तो कर्ज देने वाला उस चीज़ को अपने पास रख सकता है।

पत्नी को बैठकवाली जगह पर नगर-प्रमुखों के पास
जाना चाहिए। उसके भाई की पत्नी को नगर प्रमुखों से
कहना चाहिए, 'मेरे पति का भाई इस्राएल में अपने
भाई का नाम बनाए रखने से इन्कार करता है। वह मेरे
प्रति अपने भाई के कर्तव्य को पूरा नहीं करेगा।' 8तब
नगर-प्रमुखों को उस व्यक्ति को बुलाना और उससे
बात करनी चाहिए। यदि वह व्यक्ति हठी है और
कहता है, 'मैं उसे नहीं ग्रहण करना चाहता।' 9तब
उसके भाई की पत्नी नगर प्रमुखों के सामने उसके
पास आए। वह उसके पैर से उसके जूते निकाल ले
और उसके मुँह पर थूके। उसे कहना चाहिए, 'यह उस
व्यक्ति के साथ किया जाता है जो अपने भाई का
परिवार नहीं बसाएगा।' 10तब उस भाई का परिवार,
इस्राएल में, 'उस व्यक्ति का परिवार कहा जाएगा जिसने
अपने जूते उतार दिये।'

11"दो व्यक्ति परस्पर झगड़ा कर सकते हैं। उनमें
एक की पत्नी अपने पति की सहायता करने आ सकती
है। किन्तु उसे दूसरे व्यक्ति के गुप्त अंगों को नहीं
पकड़ना चाहिये। 12यदि वह ऐसा करती है तो उसके
हाथ काट डालो, उसके लिये दुःखी मत होओ।

क्रय-विक्रय में ईमानदारी

13"लोगों को धोखा देने के लिये जाली बाट न रखो।
उन बाटों का उपयोग न करो जो असली वजन से बहुत
कम या बहुत ज्यादा हो। 14अपने घर में उन मापों को
न रखो जो सही माप से बहुत बड़े या बहुत छोटे हों।
15तुम्हें उन बाटों और मापों का उपयोग करना चाहिए
जो सही और ईमानदारी के परिचायक है। तुम उस देश
में लम्बी आयु वाले होगे जिसे यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर
तुमको दे रहा है। 16यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उनसे घृणा
करता है जो जाली बाट और माप का उपयोग करके
धोखा देते हैं। हाँ, वे उन सभी लोगों से घृणा करता है जो
बेईमानी करते हैं।

अमालेक के लोगों को नष्ट कर देना चाहिए

17"याद रखो कि जब तुम मिस्र से आ रहे थे तब
अमालेक के लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया। 18अमालेक
के लोगों ने परमेश्वर का सम्मान नहीं किया था।
उन्होंने तुम पर तब आक्रमण किया जब तुम थके हुए
और कमजोर थे। उन्होंने तुम्हारे उन सब लोगों को मार
डाला जो पीछे चल रहे थे। 19इसलिये तुम लोगों को
अमालेक के लोगों की याद को संसार से मिटा देना
चाहिए। यह तुम लोग तब करोगे जब उस देश में जाओगे
जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें दे रहा है। वहाँ वे
तुम्हें तुम्हारे चारों ओर के शत्रुओं से छुटकारा दिलाएगा।
किन्तु अमालेकियों को नष्ट करना मत भूलो!

प्रथम फसल के बारे में नियम

26 "तुम शीघ्र ही उस देश में प्रवेश करोगे जिसे
यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें रहने के लिये
दे रहा है। जब तुम वहाँ अपने घर बना लो 2तब तुम्हें
अपनी थोड़ी सी प्रथम फसल लेनी चाहिए और उसे एक
टोकरी में रखना चाहिये। वह प्रथम फसल होगी जिसे
तुम उस देश से पाओगे जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर
तुम्हें दे रहा है। थोड़ी प्रथम फ़सल वाली टोकरी को लो
और उस स्थान पर जाओ जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर
चुनेगा। 3उस समय सेवा करने वाले याजक के पास तुम
जाओगे। तुम्हें उससे कहना चाहिए, 'आज मैं यहोवा
अपने परमेश्वर के सामने यह घोषित करता हूँ कि हम
उस देश में आ गए हैं जिसे यहोवा ने हम लोगों को देने
के लिये हमारे पूर्वजों को वचन दिया था।'

4"तब याजक टोकरी को तुम्हारे हाथ से लेगा। वह
इसे यहोवा तुम्हारे परमेश्वर की वेदी के सामने रखेगा।
5तब तुम यहोवा अपने परमेश्वर के सामने यह कहोगे:
'मेरा पूर्वज घुमक्कड़ अरामी था। वह मिस्र पहुँचा और
वहाँ रहा। जब वह वहाँ गया तब उसके परिवार में बहुत
कम लोग थे। किन्तु मिस्र में वह एक शक्तिशाली बहुत
से व्यक्तियों वाला महान राष्ट्र बन गया। 6मिस्रियों ने हम
लोगों के साथ बुरा व्यवहार किया। 7तब हम लोगों ने
यहोवा अपने पूर्वजों के परमेश्वर से प्रार्थना की और
उसके बारे में शिकायत की। यहोवा ने हमारी सुनी
उसने हम लोगों की परेशानियाँ, हमारे कठोर कार्य
और कष्ट देखे। 8तब यहोवा हम लोगों को अपनी प्रबल
शक्ति और दृढ़ता से मिस्र से बाहर लाया। उसने महान
चमत्कारों और आश्चर्यों का उपयोग किया। उसने
भंयकर घटनाएँ घटित होने दीं। 9इस प्रकार वह हम
लोगों को इस स्थान पर लाया। उसने अच्छी चीज़ों से
भरा-पूरा* देश हमें दिया। 10यहोवा, अब मैं उस देश
की प्रथम फ़सल तेरे पास लाया हूँ जिसे तूने हमें दिया
है।'

"तब तुम्हें फ़सल को यहोवा अपने परमेश्वर के
सामने रखना चाहिए और तुम्हें उसकी उपासना करनी
चाहिए। 11तब तुम उन सभी चीज़ों का आनन्द से उपभोग
कर सकते हो जिसे यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें
और तुम्हारे परिवार को दिया है। लेवीवंशी और वे
विदेशी जो तुम्हारे बीच रहते हैं तुम्हारे साथ इन चीज़ों
का आनन्द ले सकते हैं।

12"जब तुम सारा दशमांश जो तीसरे वर्ष (दशमांश
का वर्ष) तुम्हारी फ़सल का दिया जाना है, दे चुको तब
तुम्हें लेवीवंशियों, विदेशियों, अनाथों और विधवाओं को
इसे देना चाहिए। तब हर एक नगर में वे खा सकते हैं
और सन्तुष्ट किये जा सकते हैं। 13तुम यहोवा अपने

भरा-पूरा दूध तथा शहद बहता था।

परमेश्वर से कहोगे, 'मैंने अपने घर से अपनी फ़सल का पवित्र भाग दशमांश बाहर निकाल दिया है। मैंने इसे उन सभी लेवीवंशियों, विदेशियों, अनाथों और विधवाओं को दे दिया है। मैंने उन सभी आदेशों का पालन करने से इन्कार नहीं किया है। मैं उन्हें भूला नहीं हूँ। 14मैंने यह भोजन तब नहीं किया जब मैं शोक मना रहा था। मैंने इस अन्न को तब अलग नहीं किया जब मैं अपवित्र था। मैंने इस अन्न में से कोई भाग मरे व्यक्ति के लिये नहीं दिया है। मैंने यहोवा, मेरे परमेश्वर, तेरी आज्ञाओं का पालन किया है। मैंने वह सब कुछ किया है जिसके लिये तूने आदेश दिया है। 15तू अपने पवित्र आवास स्वर्ग से नीचे निगाह डाल और अपने लोगों, इस्राएलियों को आशीर्वाद दे और तू उस देश को आशीर्वाद दे जिसे तूने हम लोगों को वैसा ही दिया है जैसा तूने हमारे पूर्वजों को अच्छी चीज़ों से भरा-पूरा देश देने का वचन दिया था।'

यहोवा के आदेशों पर चलो

16"आज यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुमको आदेश देता है कि तुम इन सभी विधियों और नियमों का पालन करो। अपने पूरे हृदय और अपनी पूरी आत्मा से इनका पालन करने के लिये सावधान रहो। 17आज तुमने यह कहा है कि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर है। तुम लोगों ने वचन दिया है तुम उसके मार्ग पर चलोगे, उसके उपदेशों को मानोगे, और उसके नियमों और आदेशों को मानोगे। तुमने कहा है कि तुम वह सब कुछ करोगे जिसे करने के लिये वह कहता है। 18आज यहोवा ने तुम्हें अपने लोग चुन लिया और अपना मूल्यवान आश्रय प्रदान करने का वचन भी दिया है। यहोवा ने यह कहा है कि तुम्हें उसके सभी आदेशों का पालन करना चाहिए। 19यहोवा तुम्हें उन सभी राष्ट्रों से महान बनाएगा जिन्हें उसने बनाया है। वह तुमको प्रशंसा, यश और गौरव देगा और तुम उसके विशेष लोग होगे, जैसा उसने वचन दिया है।"

नियम पत्थरों पर लिखे जाने चाहिए

27 मूसा ने इस्राएल के प्रमुखों के साथ लोगों को आदेश दिया। उसने कहा, "उन सभी आदेशों का पालन करो जिन्हें मैं तुम्हें आज दे रहा हूँ। 2जिस दिन तुम यरदन नदी पार करके उस देश में प्रवेश करो जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें दे रहा है उस दिन, विशाल शिलायें तैयार करो। इन शिलाओं को चूने के लेप से ढक दो। 3तब इन नियमों की सारी बातें इन पत्थरों पर लिख दो। तुम्हें यह तब करना चाहिये जब तुम यरदन नदी के पार पहुँच जाओ। तब तुम उस देश में जा सकोगे जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें अच्छी चीज़ों से भरा-पूरा दे रहा है। यहोवा तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने इसे देकर अपने वचन को पूरा किया है।

4"यरदन नदी के पार जाने के बाद तुम्हें इन शिलाओं को एबाल पर्वत पर आज के मेरे आदेश के अनुसार स्थापित करना चाहिए। तुम्हें इन पत्थरों को चूने के लेप से ढक देना चाहिए। 5वहाँ पर यहोवा अपने परमेश्वर की वेदी बनाने के लिये भी कुछ शिलाओं का उपयोग करो। पत्थरों को काटने के लिये लोहे के औजारों का उपयोग मत करो। 6जब तुम यहोवा अपने परमेश्वर के लिये वेदी पर होमबलि चढ़ाओ। 7और तुम्हें वहाँ मेलबलि के रूप में बलि देनी चाहिए और उन्हें खाना चाहिए। खाओ और यहोवा अपने परमेश्वर के साथ उल्लास का समय बिताओ। 8तुम्हें इन सारे नियमों को अपनी स्थापित की गई शिलाओं पर साफ-साफ लिखवाना चाहिए।"

नियम के अभिशाप

9मूसा ने लेवीवंशी याजकों के साथ इस्राएल के सभी लोगों से बात की। उसने कहा, "इस्राएलियों, शान्त रहो और सुनो! आज तुम लोग, यहोवा अपने परमेश्वर के लोग हो गए हो। 10इसलिए तुम्हें वह सब कुछ करना चाहिए जो यहोवा तुम्हारा परमेश्वर कहता है। तुम्हें उसके उन आदेशों और नियमों का पालन करना चाहिए जिन्हें मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ।"

11उसी दिन, मूसा ने लोगों से कहा, 12"जब तुम यरदन नदी के पार जाओगे उसके बाद ये परिवार समूह गिरिज्जीम पर्वत पर खडे होकर लोगों को आशीर्वाद देंगे: शिमोन, लेवी, यहूदा, इस्साकार, यूसुफ और बिन्यामीन। 13और ये परिवार समूह एबाल पर्वत पर से अभिशाप पढ़ेंगे: रूबेन, गाद, आशेर, जबूलून, दान और नप्ताली।

14"और लेवीवंशी इस्राएल के सभी लोगों से तेज स्वर में कहेंगे: 15वह व्यक्ति अभिशप्त है जो असत्य देवता बनाता है और उसे अपने गुप्त स्थान में रखता है। असत्य देवता केवल वे मूर्तियाँ हैं जिसे कोई कारीगर लकड़ी, पत्थर या धातु की बनाता है। यहोवा उन चीज़ों से घृणा करता हैं!

"तब सभी लोग उत्तर देंगे, 'आमीन!'

16"लेवीवंशी कहेंगे: 'वह व्यक्ति अभिशप्त है जो ऐसा कार्य करता है जिससे पता चलता है कि वह अपने माता-पिता का अपमान करता है!' इस्राएल के सभी लोग उत्तर देंगे, 'आमीन!'

17"लेवीवंशी कहेंगे: 'वह व्यक्ति अभिशप्त है जो अपने पड़ोसी के सीमा चिन्ह को हटाता है!' तब सभी लोग कहेंगे, 'आमीन!'

18"लेवीवंशी कहेंगे: 'वह व्यक्ति अभिशप्त है जो अन्धे को कुमार्ग पर चलाता है!' तब सभी लोग कहेंगे, 'आमीन!'

19"लेवीवंशी कहेंगे: 'वह व्यक्ति अभिशप्त है जो विदेशियों, अनाथों और विधवाओं के साथ न्याय नहीं करता!' तब सभी लोग कहेंगे, 'आमीन!'

20"लेवीवंशी कहेंगे: 'वह व्यक्ति अभिशप्त है जो अपने
पिता की पत्नी के साथ शारीरिक सम्बन्ध रखता है
क्योंकि वह अपने पिता को नंगा सा करता है!' तब
सभी लोग कहेंगे, 'आमीन!'
21"लेवीवंशी कहेंगे: 'वह व्यक्ति अभिशप्त है जो किसी
प्रकार के जानवर के साथ शारीरिक सम्पर्क करता
है!' तब सभी लोग कहेंगे, 'आमीन!'
22'लेवीवंशी कहेंगे: 'वह व्यक्ति अभिशप्त है जो अपनी
माता या अपने पिता की पुत्री, अपनी बहन के साथ
शारीरिक सम्पर्क करता है!' तब सभी लोग कहेंगे,
'आमीन!'
23"लेवीवंशी कहेंगे: 'वह व्यक्ति अभिशप्त है जो अपनी
सास के साथ शारीरिक सम्पर्क रखता है!' तब सभी
लोग कहेंगे, 'आमीन!'
24"लेवीवंशी कहेंगे: 'वह व्यक्ति अभिशप्त है जो दूसरे
व्यक्ति की गुप्त रूप से हत्या करता है!'तब सभी लोग
कहेंगे, 'आमीन!'
25"लेवीवंशी कहेंगे: 'वह व्यक्ति अभिशप्त है जो निर्दोष
की हत्या के लिये धन लेता है!' तब सभी कहेंगे,
'आमीन!'
26"लेवीवंशी कहेंगे: 'वह व्यक्ति अभिशप्त है जो इन
नियमों का समर्थन नहीं करता और पालन करना
स्वीकार नहीं करता!' तब सभी लोग कहेंगे, 'आमीन!'"

आशीर्वाद

28 "यदि तुम यहोवा अपने परमेश्वर के इन आदेशों
के पालन में सावधान रहोगे जिन्हें मैं आज
तुम्हें बता रहा हूँ तो यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें पृथ्वी
के सभी राष्ट्रों के ऊपर श्रेष्ठ करेगा। 2यदि तुम यहोवा
अपने परमेश्वर के आदेशों का पालन करोगे तो ये
वरदान तुम्हारे पास आएंगे और तुम्हारे होंगे:
3"यहोवा, तुम्हारे नगरों और खेतों को आशीष प्रदान
करेगा।
4यहोवा तुम्हारे बच्चों को आशीर्वाद देगा। वह तुम्हारी
भूमि को अच्छी फसल का वरदानदेगा और वह तुम्हारे
जानवरों को बच्चे देने का वरदान देगा। तुम्हारे पास
बहुत से मवेशी और भेड़ें होंगी।
5यहोवा तुम्हें अच्छे अन्न की फसल और बहुत
अधिक भोजन पाने का आशीर्वाद देगा।
6यहोवा तुम्हें तुम्हारे आगमन और प्रस्थान पर
आशीर्वाद देगा।
7"यहोवा तुम्हें उन शत्रुओं पर विजयी बनाएगा जो
तुम्हारे विरुद्ध होंगे। तुम्हारे शत्रु तुम्हारे विरुद्ध एक
रास्ते से आएंगे किन्तु वे तुम्हारे सामने सात मार्गों में
भाग खड़ें होंगे।
8"यहोवा तुम्हें भरे कृषि-भंडार का आशीर्वाद देगा।
तुम जो कुछ करोगे वह उसके लिये आशीर्वाद देगा
जिसे वह तुमको दे रहा है। 9यहोवा तुम्हें अपने विशेष
लोग बनाएगा। यहोवा ने तुम्हें यह वचन दिया है बशर्ते
कि तुम यहोवा अपने परमेश्वर के आदेशों का पालन
करो और उनके मार्ग पर चलें। 10तब पृथ्वी के सभी
लोग देखेंगे कि तुम यहोवा के नाम से जाने जाते हो
और वे तुमसे भयभीत होंगे।
11"और यहोवा तुम्हें बहुत सी अच्छी चीजें देगा। वह
तुम्हें बहुत से बच्चे देगा। वह तुम्हें मवेशी और बहुत से
बछड़े देगा। वह उस देश में तुम्हें बहुत अच्छी फसल
देगा जिसे उन्होंने तुम्हारे पूर्वजों को देने का वचन दिया
था।
12"यहोवा अपने भण्डार खोल देगा जिनमें वह अपना
कीमती वरदान रखता है तथा तुम्हारी भूमि के लिये
ठीक समय पर वर्षा देगा। यहोवा जो कुछ भी तुम
करोगे उसके लिए आशीर्वाद देगा और बहुत से राष्ट्रों
को कर्ज देने के लिए तुम्हारे पास धन होगा। किन्तु
तुम्हें उनसे कुछ उधार लेने की आवश्यकता नहीं
होगी।
13"यहोवा तुम्हें सिर बनाएगा, पूँछ नहीं। तुम चोटी
पर होगे, तलहटी पर नहीं। यह तब होगा जब तुम
यहोवा अपने परमेश्वर के उन आदेशों पर ध्यान दोगे
जिन्हें मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ। 14तुम्हें उन शिक्षाओं में से
किसी की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये जिन्हें मैं आज
तुम्हें दे रहा हूँ। तुम्हें इनसे दाँयी या बाँयी ओर नहीं जाना
चाहिए। तुम्हें उपासना के लिये अन्य देवताओं का
अनुसरण नहीं करना चाहिए।

अभिशाप

15"किन्तु यदि तुम यहोवा अपने परमेश्वर द्वारा कही
गई बातों पर ध्यान नहीं देते और आज मैं जिन आदेशों
और नियमों को बता रहा हूँ , पालन नहीं करते तो ये
सभी अभिशाप तुम पर आयेंगे:
16"यहोवा तुम्हारे नगरों और गाँवों को अभिशाप देगा।
17यहोवा तुम्हारी टोकरियों व बर्तनों को अभिशाप
देगा और तुम्हें पर्याप्त भोजन नहीं मिलेगा।
18 तुम्हारे बच्चे अभिशप्त होंगे। तुम्हारी भूमि की
फसलें तुम्हारे मवेशियों के बछड़े और तुम्हारी रेवड़ों के
मेमनें अभिशप्त होंगे।
19तुम्हारा आगमन और प्रस्थान अभिशप्त होगा।
20"यदि तुम बुरे काम करोगे और अपने यहोवा से
मुँह फेरोगे, तो तुम अभिशप्त होगें। तुम जो कुछ करोगे
उसमें तुम्हें अव्यवस्था और फटकार का सामना करना
होगा। वह यह तब तक करेगा जब तक तुम शीघ्रता से
और पूरी तरह से नष्ट नहीं हो जाते। 21यदि तुम यहोवा
की आज्ञा नहीं मानते तो वह तुम्हें तब तक महामारी से
पीड़ित करता रहेगा जब तक तुम उस देश में पूरी तरह
नष्ट नहीं हो जाते जिसमें तुम रहने के लिये प्रवेश कर

रहे हो। 22यहोवा तुम्हें रोग से पीड़ित और दुर्बल होने का दण्ड देगा। तुम्हें ज्वर और सूजन होगी। यहोवा तुम्हारे पास भंयकर गर्मी भेजेगा और तुम्हारे यहाँ वर्षा नहीं होगी। तुम्हारी फसलें गर्मी या रोग से नष्ट हो जाएगी। तुम पर ये आपत्तियाँ तब तक आएँगी जब तक तुम मर नहीं जाते! 23आकाश में कोई बादल नहीं रहेगा और आकाश काँसा जैसा होगा। और तुम्हारे नीचें पृथ्वी लोहें की तरह होगी। 24वर्षा के बदले यहोवा तुम्हारे पास आकाश से रेत और धूलि भेजेगा। यह तुम पर तब तक आयेगी जब तक तुम नष्ट नहीं हो जाते।

शत्रुओं से पराजित होने का अभिशाप

25"यहोवा तुम्हारे शत्रुओं द्वारा तुम्हें पराजित करायेगा। तुम अपने शत्रुओं के विरुद्ध एक रास्ते से जाओगे और उनके सामने से सात मार्ग से भागोगे। तुम्हारे ऊपर जो आपत्तियाँ आएँगी वे सारी पृथ्वी के लोगों को भयभीत करेंगी। 26तुम्हारे शव सभी जंगली जानवरों और पक्षियों का भोजन बनेंगे। कोई व्यक्ति उन्हें डराकर तुम्हारी लाशों से भगाने वाला न होगा।

अन्य रोगों का अभिशाप

27"यदि तुम यहोवा की आज्ञा का पालन नहीं करते तो वह तुम्हें वैसे फोड़े होने का दण्ड देगा जैसे फोड़े उसने मिस्रियों पर भेजा था। वह तुम्हें भयंकर फोड़ों और खुजली से पीड़ित करेगा। 28यहोवा तुम्हें पागल बनाकर दण्ड देगा। वह तुम्हें अन्धा और कुण्ठित बनाएगा। 29तुम्हें दिन के प्रकाश मे अन्धे की तरह अपना रास्ता टटोलना पड़ेगा। तुम जो कुछ करोगे उसमें तुम असफल रहोगे। लोग तुम पर बार–बार प्रहार करेंगे और तुम्हारी चीज़ें चुराएंगे। तुम्हें बचाने वाला वहाँ कोई भी न होगा।

चीज़ें खोने का अभिशाप

30"तुम्हारा विवाह किसी स्त्री के साथ पक्का हो सकता है, किन्तु दूसरा व्यक्ति उसके साथ सोयेगा। तुम कोई घर बना सकते हो, किन्तु तुम उसमें रहोगे नहीं। तुम अंगूर का बाग लगा सकते हो, किन्तु इससे कुछ भी इकट्ठा नहीं कर सकते। 31तुम्हारी बैल तुम्हारी आँखों के सामने मारी जाएगी किन्तु तुम उसका कुछ भी माँस नहीं खा सकते। तुम्हारा गधा तुमसे बलपूर्वक छीन कर ले जाया जाएगा यह तुम्हें लौटाया नहीं जाएगा। तुम्हारी भेड़ें तुम्हारे शत्रुओं को दे दी जाएँगी। तुम्हारा रक्षक कोई व्यक्ति नहीं होगा। 32तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रियाँ दूसरी जाति के लोगों को दे दी जाएँगी। तुम्हारी आँखे सारे दिन बच्चों को देखने के लिये टकटकी लगाए रहेंगी क्योंकि तुम बच्चों को देखना चाहोगे। किन्तु तुम प्रतीक्षा करते–करते कमजोर हो जाओगे, तुम असहाय हो जाओगे।

अन्य अभिशाप

33"वह राष्ट्र जिसे तुम नहीं जानते, तुम्हारे पसीने की कमाई की सारी फसल खाएगा। तुम सदैव परेशान रहोगे। तुम सदैव छिन्न–भिन्न होगे। 34तुम्हारी आँखें वह देखेंगी जिससे तुम पागल हो जाओगे। 35यहोवा तुम्हें दर्द वाले फोड़ों का दण्ड देगा। ये फोड़े तुम्हारे घुटनों और पैरों पर होंगे। वे तुम्हारे तलवे से लेकर सिर के ऊपर तक फैल जाएंगे और तुम्हारे ये फोड़े भरेंगे नहीं। 36यहोवा तुम्हें और तुम्हारे राजा को ऐसे राष्ट्र में भेजेगा जिसे तुम नहीं जानते होगें। तुमने और तुम्हारे पूर्वजों ने उस राष्ट्र को कभी नहीं देखा होगा। वहाँ तुम लकड़ी और पत्थर के बने अन्य देवताओं को पूजोगे। 37जिन देशों में यहोवा तुम्हें भेजेगा उन देशों के लोग तुम लोगों पर आई विपत्तियों को सुनकर स्तब्ध रह जाएंगे। वे तुम्हारी हँसी उड़ायेंगे और तुम्हारी निन्दा करेंगे।

असफलता का अभिशाप

38"तुम अपने खेतों में बोने के लिये आवश्यकता से बहुत अधिक बीज ले जाओगे। किन्तु तुम्हारी उपज कम होगी। क्यों? क्योंकि टिड्डियाँ तुम्हारी फसलें खा जाएंगी। 39तुम अंगूर के बाग लगाओगे और उनमें कड़ा परिश्रम करोगे। किन्तु तुम उनमें से अंगूर इकट्ठे नहीं करोगे और न ही उन से दाखमधु पीओगे। क्यों? क्योंकि उन्हें कीड़े खा जाएंगे। 40तुम्हारी सारी भूमि में जैतून के पेड़ होंगे। किन्तु तुम उसके कुछ भी तेल का उपयोग नहीं कर सकोगे। क्यों? क्योंकि तुम्हारे जैतून के पेड़ अपने फलों को नष्ट होने के लिये गिरा देंगे। 41तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रियाँ होंगी, किन्तु तुम उन्हें अपने पास नहीं रख सकोगे। क्यों? क्योंकि वे पकड़कर दूर ले जाए जाएंगे। 42टिड्डियाँ तुम्हारे पेड़ों और खेतों की फसलों को नष्ट कर देंगी। 43तुम्हारे बीच रहने वाले विदेशी अधिक से अधिक शक्ति बढ़ाते जाएँगे और तुममें जो भी तुम्हारी शक्ति है उसे खोते जाओगे। 44विदेशियों के पास तुम्हें उधार देने योग्य धन होगा लेकिन तुम्हारे पास उन्हें उधार देने योग्य धन नहीं होगा। वे तुम्हारा वैसा ही नियन्त्रण करेंगे जैसा मस्तिष्क शरीर का करता है। तुम पूँछ के समान बन जाओगे।

अभिशाप इस्राएलियों को नष्ट करेंगे

45"ये सारे अभिशाप तुम पर पड़ेंगे। वे तुम्हारा पीछा तब तक करते रहेंगे और तुमको ग्रसित करते रहेंगे जब तक तुम नष्ट नहीं हो जाते। क्यों? क्योंकि तुमने यहोवा अपने परमेश्वर की कही हुई बातों की परवाह नहीं की। तुमने उसके उन आदेशों और नियमों का पालन नहीं किया जिसे उसने तुम्हें दिया। 46ये अभिशाप लोगों को बताएंगे कि परमेश्वर ने तुम्हारे वंशजों के साथ सदैव न्याय किया है। ये अभिशाप संकेत और

चेतावनी के रूप में तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को हमेशा
याद रहेंगे।
47“यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें बहुत से वरदान
दिये। किन्तु तुमने उसकी सेवा प्रसन्नता और उल्लास
भरे हृदय से नहीं की। **48**इसलिए तुम अपने उन
शत्रुओं की सेवा करोगे जिन्हें यहोवा, तुम्हारे विरुद्ध
भेजेगा। तुम भूखे, प्यासे और नंगे रहोगे। तुम्हारे पास
कुछ भी न होगा। यहोवा तुम्हारी गर्दन पर एक लोहे
का जुवा तब तक रखेगा जब तक वह तुम्हें नष्ट
नहीं कर देता।

शत्रु राष्ट्र का अभिशाप

49“यहोवा तुम्हारे विरुद्ध बहुत दूर से एक राष्ट्र को
लाएगा। यह राष्ट्र पृथ्वी की दूसरी ओर से आएगा। यह
राष्ट्र तुम्हारे ऊपर आकाश से उतरते उकाब की तरह
शीघ्रता से आक्रमण करेगा। तुम इस राष्ट्र की भाषा नहीं
समझोगे। **50**इस राष्ट्र के लोगों के चेहरे कठोर होंगे। वे
बूढ़े लोगों की भी परवाह नहीं करेंगे। वे छोटे बच्चों पर
भी दयालु नहीं होंगे। **51**वे तुम्हारे मवेशियों के बछड़े
और तुम्हारी भूमि की फसल तब तक खायेंगे जब तक
तुम नष्ट नहीं हो जाओगे। वे तुम्हारे लिये अन्न, नयी
दाखमधु, तेल, तुम्हारे मवेशियों के बछड़े अथवा तुम्हारे
रेवड़ों के मेमने नहीं छोड़ेंगे। वे यह तब तक करते रहेंगे
जब तक तुम नष्ट नहीं हो जाओगे।
52“यह राष्ट्र तुम्हारे सभी नगरों को घेर लेगा। तुम
अपने नगरों के चारों ओर ऊँची और दृढ़ दीवारों पर
भरोसा रखते हो। किन्तु तुम्हारे देश में ये दीवारें सर्वत्र
गिर जाएंगी। हाँ, वह राष्ट्र तुम्हारे उस देश के सभी
नगरों पर आक्रमण करेगा जिसे यहोवा तुम्हारा परमेश्वर
तुम्हें दे रहा है। **53**जब तक तुम्हारा शत्रु तुम्हारे नगर का
घेरा डाले रहेगा तब तक तुम्हारी बड़ी हानि होगी। तुम
इतने भूखे होगें कि अपने बच्चों को भी खा जाओगे।
तुम अपने पुत्र और पुत्रियों का माँस खाओगे जिन्हें
यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने तुम्हें दिया है। **54**तुम्हारा
बहुत विनम्र सज्जन पुरुष भी अपने बच्चों, भाईयों, अपनी
प्रिय पत्नी तथा बचे हुये बच्चों के साथ बहुत क्रूरता का
बर्ताव करेगा।
55उसके पास कुछ भी खाने को नहीं होगा क्योंकि
तुम्हारे नगरों के विरुद्ध आने वाले शत्रु इतनी अधिक
हानि पहुँचा देंगे। इसलिए वह अपने बच्चों को खायेगा।
किन्तु वह अपने परिवार के शेष लोगों को कुछ भी
नहीं देगा!
56“तुम्हारे बीच सबसे अधिक विनम्र और कोमल
स्त्री भी वही करेगी। ऐसी सम्पन्न और कोमल स्त्री भी
जिसने कहीं जाने के लिये ज़मीन पर कभी पैर भी न
रखा हो। वह अपने प्रिय पति या अपने पुत्र–पुत्रियों के
साथ हिस्सा बँटाने से इन्कार करेगी। **57**वह अपने ही
गर्भ की झिल्ली* को खायेगी और उस बच्चे को भी
जिसे वह जन्म देगी। वह उन्हें गुप्त रूप से खायेगी।
क्यों? क्योंकि वहाँ कोई भी भोजन नहीं बचा है। यह
तब होगा जब तुम्हारा शत्रु तुम्हारे नगरों के विरुद्ध
आयेगा और बहुत अधिक कष्ट पहुँचायेगा।
58“इस पुस्तक में जितने आदेश और नियम लिखे गए
हैं उन सबका पालन तुम्हें करना चाहिए और तुम्हें
यहोवा अपने परमेश्वर के आश्चर्य और आतंक उत्पन्न
करने वाले नाम का सम्मान करना चाहिए। यदि तुम
इनका पालन नहीं करते **59**तो यहोवा तुम्हें भयंकर
आपत्ति में डालेगा और तुम्हारे वंशज बड़ी परेशानियाँ
उठायेंगे और उन्हें भयंकर रोग होंगे जो लम्बे समय
तक रहेंगे **60**और यहोवा मिस्र से वे सभी बीमारियाँ
लाएगा जिनसे तुम डरते हो। ये बीमारियाँ तुम लोगों में
रहेंगी। **61**यहोवा उन बीमारियों और परेशानियों को भी
तुम्हारे बीच लाएगा जो इस व्यवस्था की किताब में नहीं
लिखी गई हैं। वह यह तब तक करता रहेगा जब तक
तुम नष्ट नहीं हो जाते। **62**तुम इतने अधिक हो सकते
हो जितने आकाश में तारे हैं। किन्तु तुममें से कुछ ही
बचे रहेंगे। तुम्हारे साथ यह क्यों होगा? क्योंकि तुमने
यहोवा अपने परमेश्वर की बात नहीं मानी।
63“पहले यहोवा तुम्हारी भलाई करने और तुम्हारे
राष्ट्र को बढ़ाने में प्रसन्न था। उसी तरह यहोवा तुम्हें
नष्ट और बरबाद करने में प्रसन्न होगा। तुम उस देश से
बाहर ले जाए जाओगे जिसे तुम अपना बनाने के लिये
उसमें प्रवेश कर रहे हो। **64**यहोवा तुम्हें पृथ्वी के एक
छोर से दूसरी छोर तक संसार के सभी लोगों मे बिखेर
देगा। वहाँ तुम दूसरे लकड़ी और पत्थर के देवताओं
को पूजोगे जिन्हें तुमने या तुम्हारे पूर्वजों ने कभी नहीं
पूजा।
65“तुम्हें इन राष्ट्रों के बीच तनिक भी शान्ति नहीं
मिलेगी। तुम्हें आराम की कोई जगह नहीं मिलेगी।
यहोवा तुम्हारे मस्तिष्क को चिन्ताओं से भर देगा।
तुम्हारी आँखें पथरा जाएंगी। तुम अपने को ऊखड़ा
हुआ अनुभव करोगे। **66**तुम संकट में रहोगे। तुम दिन–रात
भयभीत रहोगे। सदैव सन्देह में पड़े रहोगे। तुम अपने
जीवन के बारे में कभी निश्चिन्त नहीं रहोगे। **67**सवेरे
तुम कहोगे, ‘अच्छा होता, यह शाम होती!’ शाम को तुम
कहोगे, ‘अच्छा होता, यह सवेरा होता!’ क्यों? क्योंकि
उस भय के कारण जो तुम्हारे हृदय में होगा और उन
आपत्तियों के कारण जो तुम देखोगे। **68**यहोवा तुम्हें
जहाजों में मिस्र वापस भेजेगा। मैंने यह कहा कि तुम
उस स्थान पर दुबारा कभी नहीं जाओगे। किन्तु यहोवा
तुम्हें वहाँ भेजेगा। और वहाँ तुम अपने को अपने शत्रुओं

गर्भ की झिल्ली गर्भ की झिल्ली और नाभि जो बच्चे के जन्म के समय बाहर आते हैं।

के हाथ दास के रूप में बेचने की कोशिश करोगे, किन्तु कोई व्यक्ति तुम्हें खरीदेगा नहीं।"

मोआब में वाचा

29 ये बातें उस वाचा का अंग है जिस वाचा को यहोवा ने मोआब प्रदेश में इस्राएल के लोगों के साथ मूसा से करने को कहा। यहोवा ने इस वाचा को उस साक्षीपत्र से अतिरिक्त किया जिसे उसने इस्राएल के लोगों के साथ होरेब (सीनै) पर्वत पर किया था।

2मूसा ने सभी इस्राएली लोगों को इकट्ठा बुलाया। उसने उनसे कहा, "तुमने वह सब कुछ देखा जो यहोवा ने मिस्र देश में किया। तुमने वह सब भी देखा जो उसने फ़िरौन, फ़िरौन के प्रमुखों और उसके पूरे देश के साथ किया। 3तुमने उन बड़ी मुसीबतों को देखा जो उसने उन्हें दीं। तुमने उसके उन चमत्कारों और बड़े आश्चर्यों को देखा जो उसने किये। 4किन्तु आज भी तुम नहीं समझते कि क्या हुआ। यहोवा ने सचमुच तुमको नहीं समझाया जो तुमने देखा और सुना। 5यहोवा तुम्हें चालीस वर्ष तक मरुभूमि से होकर ले जाता रहा और उस लम्बे समय के बीच तुम्हारे वस्त्र और जूते फटकर खत्म नहीं हुए। 6तुम्हारे पास कुछ भी भोजन नहीं था। तुम्हारे पास कुछ भी दाखमधु या कोई अन्य पीने की चीज नहीं थी। किन्तु यहोवा ने तुम्हारी देखभाल की। उसने यह इसलिए किया कि तुम समझोगे कि वह यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर है।

7"जब तुम इस स्थान पर आए तब हेशबोन का राजा सीहोन और बाशान का राजा ओग हम लोगों के विरुद्ध लड़ने आए। किन्तु हम लोगों ने उन्हें हराया। 8तब हम लोगों ने ये प्रदेश रूबेनियों, गादियों और मनश्शे के आधे लोगों को उनके कब्जे में दे दिया। 9इसलिए, इस वाचा के आदेशों का पालन पूरी तरह करो। तब जो कुछ तुम करोगे उसमें सफल होगे।

10"आज तुम सभी यहोवा अपने परमेश्वर के सामने खड़े हो। तुम्हारे प्रमुख, तुम्हारे अधिकारी, तुम्हारे बुजुर्ग (प्रमुख) और सभी अन्य लोग यहाँ हैं। 11तुम्हारी पत्नियाँ और बच्चे यहाँ है तथा वे विदेशी भी यहाँ हैं जो तुम्हारे बीच रहते हैं एवं तुम्हारी लकड़ियाँ काटते और पानी भरते हैं। 12तुम सभी यहाँ यहोवा अपने परमेश्वर के साथ एक वाचा करने वाले हो। यहोवा तुम लोगों के साथ यह वाचा आज कर रहा है। 13इस वाचा द्वारा यहोवा तुम्हें अपने विशेष लोग बना रहा है और वह स्वयं तुम्हारा परमेश्वर होगा। उसने यह तुमसे कहा है। उसने तुम्हारे पूर्वजों इब्राहीम, इसहाक और याकूब को यह वचन दिया था। 14यहोवा अपना वचन देकर केवल तुम लोगों के साथ ही वाचा नहीं कर रहा है। 15वह यह वाचा हम सभी के साथ कर रहा है जो यहाँ आज यहोवा अपने परमेश्वर के सामने खड़े हैं। किन्तु यह वाचा हमारे उन वंशजों के लिये भी है जो यहाँ आज हम लोगों के साथ नहीं हैं। 16तुम्हें याद है कि हम मिस्र में कैसे रहे और तुम्हें याद है कि हमने उन देशों से होकर कैसे यात्रा की जो यहाँ तक आने वाले हमारे रास्ते पर थे। 17तुमने उनकी घृणित चीजें अर्थात् लकड़ी, पत्थर, चाँदी, और सोने की बनी देवमूर्तियाँ देखीं। 18निश्चय कर लो कि आज यहाँ हम लोगों में कोई ऐसा पुरुष, स्त्री, परिवार या परिवार समूह नहीं है जो यहोवा, अपने परमेश्वर के विपरीत जाता हो। कोई भी व्यक्ति उन राष्ट्रों के देवताओं की सेवा करने नहीं जाना चाहिए। जो लोग ऐसा करते हैं वे उस पौधे की तरह हैं जो कड़वा, जहरीला फल पैदा करता है।

19"कोई व्यक्ति इन अभिशापों को सुन सकता है और अपने को संतोष देता हुआ कह सकता है, 'मैं जो चाहता हूँ करता रहूँगा। मेरा कुछ भी बुरा नहीं होगा।' वह व्यक्ति अपने ऊपर ही आपत्ति नहीं बुलाएगा अपितु वह सबके ऊपर,अच्छे लोगों पर भी बुलाएगा।* 20-21यहोवा उस व्यक्ति को क्षमा नहीं करेगा। नहीं, यहोवा उस व्यक्ति पर क्रोधित होगा और बौखला उठेगा। इस पुस्तक में लिखे सभी अभिशाप उस पर पड़ेंगे। यहोवा उसे इस्राएल के सभी परिवार समूहों से निकाल बाहर करेगा। यहोवा उसको पूरी तरह नष्ट करेगा। सभी आपत्तियाँ जो इस पुस्तक में लिखी गई हैं, उस पर आयेंगी। वे सभी बातें उस वाचा का अंश है जो व्यवस्था की पुस्तक में लिखी गईहैं।

22"भविष्य में, तुम्हारे वंशज और बहुत दूर के देशों से आने वाले विदेशी लोग देखेंगे कि देश कैसे बरबाद हो गया है। वे उन लोगों को देखेंगे जिन्हें यहोवा उनमें लायेगा। 23सारा देश जलते गन्धक और नमक से ढका हुआ बेकार हो जाएगा। भूमि में कुछ भी बोया हुआ नहीं रहेगा। कुछ भी, यहाँ तक कि खर–पतवार भी यहाँ नहीं उगेंगे। यह देश उन नगरों–सदोम, अमोरा, अदमा और सबोयीम, की तरह नष्ट कर दिया जाएगा। जिन्हें यहोवा, ने तब नष्ट किया था जब वह बहुत क्रोधित था।

24"सभी दूसरे राष्ट्र पूछेंगे, 'यहोवा ने इस देश के साथ ऐसा क्यों किया? वह इतना क्रोधित क्यों हुआ?' 25उत्तर होगा: 'यहोवा इसलिए क्रोधित हुआ कि इस्राएल के लोगों ने यहोवा, अपने पूर्वजों के परमेश्वर की वाचा तोड़ी। उन्होंने उस वाचा का पालन करना बन्द कर दिया जिसे यहोवा ने उनके साथ तब किया था जब वह उन्हें मिस्र देश से बाहर लाया था। 26इस्राएल के लोगों ने ऐसे अन्य देवताओं की सेवा करनी आरम्भ की जिनकी पूजा का ज्ञान उन्हें पहले कभी नहीं था। यहोवा ने अपने लोगों से उन देवताओं की पूजा करना मना किया

वह व्यक्ति ... बुलाएगा शाब्दिक "उसके द्वारा तृप्त और प्यासे दोनों नष्ट किये जाएंगे।"

था। 27यही कारण है कि यहोवा इस देश के लोगों के
विरुद्ध बहुत क्रोधित हो गया। इसलिए उसने इस पुस्तक
में लिखे गए सभी अभिशापों को इन पर लागू किया।
28यहोवा उन पर बहुत क्रोधित हुआ और उन पर
बौखला उठा। इसलिए उसने उनके देश से उन्हें बाहर
किया। उसने उन्हें दूसरे देश में पहुँचाया जहाँ वे आज
हैं।’ 29कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें यहोवा हमारे परमेश्वर ने
गुप्त रखा है। उन बातों को केवल वह ही जानता है।
किन्तु यहोवा ने हमें अपने नियमों की जानकारी दी है!
वह व्यवस्था हमारे लिये और हमारे वंशजों के लिये है।
हमें इसका पालन सदैव करना चाहिए!

इस्राएलियों की वापसी का वचन

30 “जो मैंने कहा है वह तुम पर घटित होगा। तुम
आशीर्वाद से अच्छी चीज़ें पाओगे और अभिशाप
से बुरी चीज़ें पाओगे। यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें
दूसरे राष्ट्रों में भेजेगा। तब तुम इनके बारे में सोचोगे।
2उस समय तुम और तुम्हारे वंशज यहोवा, अपने परमेश्वर
के पास लौटेंगे। तुम पूरे हृदय और आत्मा से उन
आदेशों का पालन करोगे जो आज हमने दिये हैं उनका
पूरा पालन करोगे। 3तब यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम
पर दयालु होगा। यहोवा तुम्हें फिर स्वतन्त्र करेगा। वह
उन राष्टों से तुम्हें लौटाएगा जहाँ उसने तुम्हें भेजा था।
4चाहे तुम पृथ्वी के दूरतम स्थान पर भेज दिये गये हो,
यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर तुमको इकट्ठा करेगा और
तुम्हें वहाँ से वापस लाएगा। 5यहोवा तुम्हें उस देश में
लाएगा जो तुम्हारे पूर्वजों का था और वह देश तुम्हारा
होगा। यहोवा तुम्हारा भला करेगा और तुम्हारे पास
उससे अधिक होगा, जितना तुम्हारे पूर्वजों के पास था
और तुम्हारे राष्ट्र में उससे अधिक लोग होंगे जितने
उनके पास कभी थे। 6यहोवा तुम्हारा परमेश्वर, तुम्हें
और तुम्हारे वंशजों को परिशुद्ध करेगा कि वे उसकी
आज्ञा का पालन करना चाहेंगे।* तब तुम यहोवा को
सम्पूर्ण हृदय से प्रेम करोगे और तुम जीवित रहोगे!

7“और यहोवा तुम्हारा परमेश्वर इन अभिशापों को
तुम्हारे उन शत्रुओं पर उतारेगा जो तुमसे घृणा करते हैं
तथा तुम्हें परेशान करते हैं 8और तुम फिर यहोवा की
आज्ञा का पालन करोगे। तुम उन सभी आदेशों का
पालन करोगे जिन्हें मैंने आज तुम्हें दिये है। 9यहोवा
तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें उन सब में सफल बनाएगा जो
तुम करोगे। वह तुम्हें बहुत से बच्चों के लिये, तुम्हारे
मवेशियों को बहुत बछड़े और तुम्हारे खेतों को अच्छी
फ़सल होने का वरदान देगा। यहोवा तुम्हारे लिए भला
होगा। यहोवा तुम्हारा भला करने में वैसा ही आनन्दित
होगा जैसा आनन्दित वह तुम्हारे पूर्वजों का भला करने
में होता था। 10किन्तु तुम्हें वह सब कुछ करना चाहिए
जो यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुमसे करने को कहता है।
तुम्हें उसके आदेशों को मानना और व्यवस्था की इस
पुस्तक में लिखे गए नियमों का पालन करना चाहिए।
तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर की ओर अपने पूरे हृदय
और आत्मा से हो जाना चाहिए। तब ये सभी अच्छी बातें
तुम्हारे लिये होंगी।

जीवन या मरण

11“आज जो आदेश मैं तुम्हें दे रहा हूँ, वह तुम्हारे लिये
बहुत कठिन नहीं है। यह तुम्हारी पहुँच के बाहर नहीं
है। 12यह आदेश स्वर्ग में नहीं है जिससे तुम्हें कहना पड़े,
‘हम लोगों के लिये स्वर्ग में कौन जाएगा और उसे हम
लोगों के पास लाएगा जिससे हम उसे सुन सकें और
उसका अनुसरण कर सकें?’ 13यह आदेश समुद्र के
दूसरे पार नहीं है जिससे तुम यह कहो कि ‘हमारे लिये
समुद्र कौन पार करेगा और इसे लाएगा जिससे हम इसे
सुन सकें और कर सकें?’ 14नहीं, यहोवा का वचन
तुम्हारे पास है। यह तुम्हारे मुँह और तुम्हारे हृदय में है
जिससे तुम इसे कर सको।

15“मैंने आज तुम्हारे सम्मुख जीवन और मृत्यु, समृद्धि
और विनाश रख दिया है। 16मैं आज तुम्हें आदेश देता
हूँ कि यहोवा अपने परमेश्वर से प्रेम करो, उसके मार्ग
पर चलो और उसके आदेशों, विधियों और नियमों का
पालन करो। तब तुम जीवित रहोगे और तुम्हारा राष्ट्र
अधिक बड़ा होगा। और यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें
उस देश में आशीर्वाद देगा जिसे अपना बनाने के लिए
तुम वहाँ जा रहे हो। 17किन्तु यदि तुम यहोवा से मुँह
फेरते हो और उसकी अनसुनी करते हो तथा दूसरे
देवताओं की सेवा और पूजा में बहकाये जाते हो 18तब
तुम नष्ट कर दिये जाओगे। मैं चेतावनी दे रहा हूँ, तुम
यरदन नदी के पार के उस देश में लम्बे समय तक नहीं
रहोगे जिसमें जाने के लिये तुम तैयार हो और जिसे तुम
अपना बनाओगे।

19“आज मैं तुम्हें दो मार्ग को चुनने की छूट दे रहा हूँ।
मैं धरती-आकाश को तुम्हारे चुनाव का साक्षी बना
रहा हूँ। तुम जीवन को चुन सकते हो, या तुम मृत्यु को
चुन सकते हो। जीवन का चुनना वरदान लाएगा और
मृत्यु को चुनना अभिशाप। इसलिए जीवन को चुनो।
तब तुम और तुम्हारे बच्चे जीवित रहेंगे।

20“तुम्हें यहोवा अपने परमेश्वर को प्रेम करना चाहिए
और उसकी आज्ञा माननी चाहिए। उससे कभी विमुख
न हो। क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा जीवन है, और
यहोवा तुम्हें उस देश में लम्बा जीवन देगा जिसे उसने
तुम्हारे पूर्वजों इब्राहीम, इसहाक और याकूब को देने
का वचन दिया था।”

यहोवा ... करना चाहेंगे शाब्दिक “तुम्हारे और तुम्हारी सन्तानों के हृदयों का खतना करेगा।”

यहोशू नया नेता होगा

31 तब मूसा आगे बढ़ा और इस्राएलियों से ये बात
कही। 2मूसा ने उनसे कहा, "अब मैं एक सौ
बीस वर्ष का हूँ। मैं अब आगे तुम्हारा नेतृत्व नहीं कर
सकता। यहोवा ने मुझसे कहा है: 'तुम यरदन नदी के
पार नहीं जाओगे।' 3यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे
आगे चलेगा! वह इन राष्ट्रों को तुम्हारे लिए नष्ट करेगा।
तुम उनका देश उससे छीन लोगे। यहोशू उस पार तुम
लोगों के आगे चलेगा। यहोवा ने यह कहा है।

4"यहोवा इन राष्ट्रों के लोगों के साथ वही करेगा जो
उसने एमोरियों के राजाओं सीहोन और ओग के साथ
किया। उन राजाओ के देश के साथ उसने जो किया
वही यहाँ करेगा। यहोवा ने उनके प्रदेशों को नष्ट
किया! 5और यहोवा तुम्हें उन राष्ट्रों को पराजित करने
देगा और तुम उनके साथ वह सब करोगे जिसे करने
के लिये मैंने कहा है। 6दृढ़ और साहसी बनो। इन राष्ट्रों
से डरो नहीं। क्यों? क्योंकि यहोवा तुम्हारा परमेश्वर
तुम्हारे साथ जा रहा है। वह तुम्हें न छोड़ेगा और न
त्यागेगा।"

7तब मूसा ने यहोशू को बुलाया। जिस समय मूसा
यहोशू से बातें कर रहा था उस समय इस्राएल के सभी
लोग देख रहे थे। जब मूसा ने यहोशू से कहा, "दृढ़ और
साहसी बनो। तुम इन लोगों को उस देश में ले जाओगे
जिसे यहोवा ने इनके पूर्वजों को देने का वचन दिया था।
तुम इस्राएल के लोगों की सहायता उस देश को लेने
और अपना बनाने में करोगे। 8यहोवा आगे चलेगा। वह
स्वयं तुम्हारे साथ है। वह तुम्हें न सहायता देना बन्द
करेगा, न ही तुम्हें छोड़ेगा। तुम न ही भयभीत न ही
चिंतित हो!"

मूसा व्यवस्था लिखता है

9तब मूसा ने इन नियमों को लिखा और लेवी के
वंशज याजकों को दे दिया। उनका काम यहोवा के
साक्षीपत्र के सन्दूक को ले चलना था। मूसा ने इस्राएल
के सभी प्रमुखों को नियम दिए। 10तब मूसा ने प्रमुखों
को आदेश दिया। उसने कहा, "हर एक सात वर्ष बाद,
स्वतन्त्रता के वर्ष में डेरों के पर्व में इन नियमों को पढ़ो।
11उस समय इस्राएल के सभी लोग यहोवा, अपने परमेश्वर
से मिलने के लिये उस विशेष स्थान पर आएंगे जिसे वे
चुनेंगे। तब तुम लोगों में इन नियमों को ऐसे पढ़ना
जिससे वे इसे सुन सकें। 12सभी लोगों, पुरुषों, स्त्री, छोटे
बच्चों और अपने नगरों में रहने वाले सभी विदेशियों
को इकट्ठा करो। वे नियम को सुनेंगे, और वे यहोवा
तुम्हारे परमेश्वर का आदर करना सीखेंगे और वे इस
नियम व आदेशों के पालन में सावधान रहेंगे 13और
तब उनके वंशज जो नियम नहीं जानते, इसे सुनेंगे और
वे यहोवा तुम्हारे परमेश्वर का सम्मान करना सीखेंगे।
वे तब तक सम्मान करेंगे जब तक तुम उस देश में
रहोगे जिसे तुम यरदन नदी के उस पार लेने के लिये
तैयार हो।"

यहोवा मूसा और यहोशू को बुलाता है

14यहोवा ने मूसा से कहा, "अब तुम्हारे मरने का
समय निकट है। यहोशू को लो और मिलापवाले तम्बू में
जाओ। मैं यहोशू को बताऊँगा कि वह क्या करे।"
इसलिए मूसा और यहोशू मिलापवाले तम्बू में गए।

15यहोवा बादलों के एक स्तम्भ के रूप में प्रकट
हुआ। बादल का स्तम्भ तम्बू के द्वार पर खड़ा था।
16यहोवा ने मूसा से कहा, "तुम शीघ्र ही मरोगे और जब
तुम अपने पूर्वजों के साथ चले जाओगे तो ये लोग मुझ
पर विश्वास करने वाले नहीं रह जायेंगे। वे उस वाचा
को तोड़ देंगे जो मैंने इनके साथ की है। वे मुझे छोड़ देंगे
और अन्य देवताओं की पूजा करना आरम्भ करेंगे,
उन प्रदेशों के बनावटी देवताओं की जिनमें वे जायेंगे।
17उस समय, मैं इन पर बहुत क्रोधित होऊँगा और इन्हें
छोड़ दूँगा। मैं उनकी सहायता करना बन्द करूँगा और
वे नष्ट हो जाएँगे। उनके साथ भयंकर घटनायें होंगी
और वे विपत्ति में पड़ेंगे। तब वे कहेंगे, 'ये बुरी घटनायें
हम लोगों के साथ इसलिए हो रही हैं कि हमारा परमेश्वर
हमारे साथ नहीं है।' 18तब मैं उनसे अपना मुँह छिपाऊँगा
क्योंकि वे बुरा करेंगे और दूसरे देवताओं की पूजा
करेंगे।

19"इसलिए इस गीत को लिखो और इस्राएली लोगों
को सिखाओ। उन्हें इसे गाना सिखाओ। तब इस्राएल के
लोगों के विरुद्ध मेरे लिये यह गीत साक्षी रहेगा। 20मैं
उन्हें उस देश में जो अच्छी चीज़ों से भरा–पूरा है तथा
जिसे देने का वचन मैंने उनके पूर्वजों को दिया है, ले
जाऊँगा और वे जो खाना चाहेंगे, सब पाएंगे। वे सम्पन्नता
से भरा जीवन बिताएंगे। किन्तु तब वे दूसरे देवताओं की
ओर जाएंगे और उनकी सेवा करेंगे, वे मुझसे मुँह फेर
लेंगे तथा मेरी वाचा को तोड़ेंगे, 21तब उन पर भयंकर
आपत्तियाँ आएंगी और वे बड़ी मुसीबत में होंगे। उस
समय उनके लोग इस गीत को तब भी जानेंगे और यह
उन्हें बताएगा कि वे कितनी बड़ी गलती पर हैं। मैंने
अभी तक उनको उस देश में नहीं पहुँचाया है जिसे उन्हें
देने का वचन मैंने दिया है। किन्तु मैं पहले से ही जानता
हूँ कि वे वहाँ क्या करने वाले हैं, क्योंकि मैं उनकी
प्रकृति से परिचित हूँ।"

22इसलिए मूसा ने उसी दिन गीत लिखा और उसने
गीत को इस्राएल के लोगों को सिखाया।

23तब यहोवा ने नून के पुत्र यहोशू से बातें की।
यहोवा ने कहा, "दृढ़ और साहसी बनो। तुम इस्राएल के
लोगों को उस देश में ले चलोगे जिसे उन्हें देने का मैंने
वचन दिया है और मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।"

मूसा इस्राएल के लोगों को चेतावनी देता है

24मूसा ने ये सारे नियम एक पुस्तक में लिखे। जब
उसने इसे पूरा कर लिया तब 25उसने लेवीवंशियों को
आदेश दिया (ये लोग यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक की
देखभाल करते थे।) मूसा ने कहा, 26"इस व्यवस्था की
किताब को लो और यहोवा, अपने परमेश्वर के साक्षीपत्र
के सन्दूक की बगल में रखो। तब यह वहाँ तुम्हारे
विरुद्ध साक्षी होगी। 27मैं जानता हूँ कि तुम बहुत अड़ियल
हो। मैं जानता हूँ तुम मनमानी करना चाहते हो। ध्यान
दो, आज जब मैं तुम्हारे साथ हूँ तब भी तुमने यहोवा की
आज्ञा मानने से इन्कार किया है। मेरे मरने के बाद तुम
यहोवा की आज्ञा मानने से और अधिक इन्कार करोगे।
28अपने सभी परिवार समूहों के प्रमुखों और अधिकारियों
को एक साथ बुलाओ। मैं उन्हें यह सब कुछ बताऊँगा
और मैं पृथ्वी और आकाश को उनके विरुद्ध साक्षी
होने के लिये बुलाऊँगा। 29मैं जानता हूँ कि मेरी मृत्यु
के बाद तुम लोग कुकर्म करोगे। तुम उस मार्ग से हट
जाओगे जिस पर चलने का आदेश मैंने दिया है। तब
भविष्य में तुम पर आपत्तियाँ आएंगी। क्यों? क्योंकि तुम
वह करना चाहते हो जिसे यहोवा बुरा बताता है। तुम
उसे उन कामों को करने के कारण क्रोधित करोगे।"

30तब मूसा ने इस्राएल के सभी लोगों को यह गीत
सुनाया। वह तब तक नहीं रुका जब तक उसने इसे पूरा
न कर लिया:

मूसा का गीत

32 "हे गगन, सुन मैं बोलूँगा, पृथ्वी मेरे मुख से
सुने बात।

2बरसेंगे वर्षा सम मेरे उपदेश, हिम-बिन्दु सम बहेगी
पृथ्वी पर वाणी मेरी, कोमल घासों पर वर्षा की मन्द
झड़ी सी, हरे पौधों पर वर्षा सी।

3परमेश्वर का नाम सुनाएगी मैं कहूँगा, कहो यहोवा
महान है।

4वह (यहोवा) हमारी चट्टान है– उसके सभी कार्य
पूर्ण हैं! क्यों? क्योंकि उसके सभी मार्ग सत्य हैं! वह
विश्वसनीय निष्पाप परमेश्वर, करता जो उचित और
न्याय है।

5तुम लोगों ने दुर्व्यवहार किया उससे अत: नहीं उसके
जन तुम सच्चे। आज्ञा भंजक बच्चों से तुम हो, तुम एक
दुष्ट और भ्रष्ट पीढ़ी हो।

6चाहिए न वह व्यवहार तुम्हारा यहोवा को, तुम मूर्ख
और बुद्धिहीन जन हो। यहोवा परम पिता तुम्हारा है,
उसने तुमको बनाया, उसने निज जन के दृढ़ बनाया
तुमको।

7याद करो बीते हुए दिनों को सोचो बीती पीढ़ियों के
वर्षों को, पूछो वृद्ध पिता से; वही कहेंगे पूछो अपने
प्रमुखों से; वही कहेंगे।

8सर्वोच्च परमेश्वर ने राष्ट्रों को अपने देश दिए,
निश्चित यह किया कहाँ ये लोग रहेंगे, तब अन्यों का
देश दिया इस्राएल-जन को।

9यहोवा की विरासत है उसके लोग; याकूब (इस्राएल)
यहोवा का अपना है

10यहोवा ने याकूब (इस्राएल) को पाया मरू में, सप्त,
झंझा-स्वरित उजड़ मरुभूमि में यहोवा ने याकूब को
लिया अंक में, रक्षा की उसकी, यहोवा ने रक्षा की,
मानों वह आँखों की पुतली हो।

11यहोवा ने फैलाए पर, उठा लिया इस्राएलियोंको,
उस उकाब-सा जो जागा हो अपनी नीड़ में, और उड़ता
हो अपने बच्चे के ऊपर, उनको लाया यहोवा अपने
पंखों पर।

12अकेले यहोवा ले आया याकूब को, कोई देवता
विदेशी उसके पास न थे।

13यहोवा ने चढ़ाया याकूब को पृथ्वी के ऊँचे स्थानों
पर, याकूब ने खेतों की फसलें खायीं, यहोवा ने याकूब
को पुष्ट किया चट्टानों के मधु से; दिया तेल उसको
वज्र-चट्टानों से,

14मक्खन दिया झुण्डों से, दूध दिया रेवड़ों से माँस
दिया मेमनों का, मेढ़ों का और बाशान जाति के बकरों
का अच्छे-से-अच्छा गेहूँ, लाल अंगूरी पीने को दी
अंगूरों की मादकता।

15किन्तु यशूरून मोटा हो, सांड सा लात मारता, वह
बड़ा हुआ और भारी भी वह था। अभिजात, सुपोषित
छोड़ा उसने अपने कर्ता यहोवा को अस्वीकार किया
अपने रक्षक शिला (परमेश्वर) को,

16ईर्ष्यालु बनाया यहोवा को, अन्य देव पूजा कर!
उसके जन ने; क्रुद्ध किया परमेश्वर को निज मूर्तियों
से जो घृणित थीं परमेश्वर को,

17बलि दी दानवों को जो सच्चे देव नहीं उन देवों को
बलि दी उसने जिसका उनको ज्ञान नहीं। नये-नये थे
देवता वे जिन्हें न पूजा कभी तुम्हारे पूर्वजों ने,

18तुमने छोड़ा अपने शैल यहोवा को भुलाया तुमने
अपने परमेश्वर को, दी जिसने जिन्दगी।

19यहोवा ने देखा यह, इन्कार किया जन कोअपना
कहने से, क्रोधित किया उसे उसके पुत्रों और पुत्रियों
ने! 20तब यहोवा ने कहा, 'मैं इनसे मुँह मोड़ूँगा! मैं देख
सकूँगा-अन्त होगा क्या उनका। क्यों? क्योकि भ्रष्ट
सभी उनकी पीढ़ियाँ हैं। वे हैं ऐसी सन्तान जिन्हें विश्वास
नहीं है!

21मूर्तियों की पूजा करके उन्होंने मुझमें ईर्ष्या उत्पन्न
की वे मूर्तियाँ ईश्वर नहीं हैं। तुच्छ मूर्तियों को पूज कर
उन्होंने मुझे क्रुद्ध किया है! अब मैं इस्राएल को बनाऊँगा
ईर्ष्यालु। मैं उन लोगों का उपयोग करूँगा, जो गठित
नहीं हुये हैं राष्ट्र में। मैं करूँगा प्रयोग मूर्ख राष्ट्र का
और लोगों से उन पर क्रोध बरसाऊँगा।

22क्रोध हमारा सुलगा चुका आग कहीं, मेरा क्रोध जल रहा निम्नतम शेओल तक, मेरा क्रोध नष्ट करता फसल सहित भूमि को, मेरा क्रोध लगाता आग पर्वतों की जड़ों में!

23मैं इस्राएलियों पर विपत्ति लाऊँगा, मैं अपने बाण इन पर चलाऊँगा।

24वे भूखे, क्षीण और दुर्बल होंगे, जल जायेंगे जलती गर्मी में वे और होगा भंयकर विनाश भेजूँगा मैं वन–पशुओं को भक्षण करने उनका धूलि रेंगते विषधर भी उनके संग होंगे

25तलवारें सड़कों पर उनको सन्तति मिटा देगी, घर के भीतर रहेगा आतंक का राज्य, सैनिक मारेंगे युवकों और कुमारियों को ये शिशुओं और श्वेतकेशी वृद्धों को मारेंगे,

26मैं कहूँगा, इस्राएलयों को दूर उड़ाऊँगा। विस्मृत करवा दूँगा इस्राएलियों को लोगोंसे!

27मुझे भय था कि, शत्रु कहेंगे उनके क्या इस्राएल के शत्रु कह सकते हैं: समझ फेर से हमने जीता है अपनी शक्ति से, यहोवा ने किया नहीं इसको।'

28इस्राएल के शत्रु मूर्ख राष्ट्र हैं वे समझ न पाते कुछ भी।

29यदि शत्रु समझदार होते तो इसे समझ पाते, और देखते अपना अन्त भविष्य में

30एक कैसे पीछा करता सहस्र को? कैसे दो भगा देते दस सहस्र को? यह तब होता जब शैल यहोवा देता उनको, उनके शत्रुओं को, और परमेश्वर उन्हें बेचता गुलामों सा। 31शैल शत्रुओं को नहीं हमारे शैल यहोवा सदृश हमारे शत्रु स्वयं देख सकते इस सत्य को।

32सदोम और अमोरा की दाखलताओं के समान कड़वे हैं उनकें गुच्छे अंगूर के। उनके अंगूर विषैले होते हैं उनके अंगूरों के गुच्छे कड़वे होते।

33उनकी दाखमधु साँपों के विष जैसी है और क्रूर कालकूट अस्प नाम का।

34'मैं उस दण्ड से रक्षा करता हूँ– अपने वस्तु भण्डार में बन्द हुआ!

35केवल मैं हूँ देने वाला दण्ड मैं ही देता लोगों को अपराधों का बदला, जब उनका पग फिसल पड़ेगा अपराधों में, क्यों? क्योंकि विपत्ति समय उनका समीप है और दण्ड समय उनका दौड़ा आएगा।'

36यहोवा न्याय करेगा अपने जन का। वे उसके सेवक हैं, वह दयालु होगा। वह उसके बल को मिटा देगा वह उन सभी स्वतन्त्र और दासों को होता देखेगा असहाय।

37पूछेगा वह तब, 'लोगों के देवता कहाँ हैं? वह है चट्टान कहाँ, जिसकी शरण गए वे?

38लोगों के ये देव, बलि की चर्बी खाते थे, और पीते थे मदिरा, मदिरा की भेंट की। अत: उठें ये देव, मदद करें तेरी करें तुम्हारी ये रक्षा!

39देखो, अब केवल मैं ही परमेश्वर हूँ। नहीं अन्य कोई भी परमेश्वर मैं ही निश्चय करता लोगों को जीवित रखूँ या मारूँ। मैं लोगों को दे सकता हूँ चोट और ठीक भी रख सकता हूँ। और न बचा सकता कोई किसी को मेरी शक्ति के बाहर।

40आकाश को हाथ उठा मैं वचन देता हूँ। यदि यह सत्य है कि मैं शाश्वत हूँ। तो यह भी सत्य कि सब कुछ होगा यही!

41मैं तेज करूँगा अपनी बिजली की तलवार। उपयोग करूँगा इसका मैं शत्रुओं को दण्डित करने को। मैं दूँगा वह दण्ड उन्हें जिसके वे पात्र हैं।

42मेरे शत्रु मारे जाएंगे, बन्दी होंगे। रंग जाएंगे बाण हमारे उनके रक्त से। तलवार मेरी पार करेगी उनके सैनिक सिर को।'

43"होगा हर्षित सब संसार परमेश्वर के लोगों से क्यों? क्योंकि वह उनकी करता है सहायता सेवकों के हत्यारों को वह दण्ड दिया करता है। देगा वह दण्ड शत्रु को जिसके वे पात्र हैं। और वह पवित्र करेगा अपने धरती जन को।"

मूसा लोगों को अपना गीत सिखाता है

44मूसा आया और इस्राएल के सभी लोगों को सुनने
के लिये यह गीत पूरा गाया। नून का पुत्र यहोशू मूसा के
साथ था। 45जब मूसा ने लोगों को यह उपदेश देना
समाप्त किया 46तब उसने उनसे कहा, "तुम्हें निश्चय
करना चाहिए कि तुम उन सभी आदेशों को याद रखोगे
जिसे मैं आज तुम्हें बता रहा हूँ और तुम्हें अपने बच्चों
को यह बताना चाहिए कि इन व्यवस्था के आदेशों का
वे पूरी तरह पालन करें। 47यह मत समझो कि ये
उपदेश महत्वपूर्ण नहीं हैं! ये तुम्हारा जीवन है! इन
उपदेशों से तुम उस यरदन नदी के पार के देश में लम्बे
समय तक रहोगे जिसे लेने के लिये तुम तैयार हो।"

मूसा नबो पर्वत पर

48यहोवा ने उसी दिन मूसा से बातें कीं। यहोवा ने
कहा, 49"अबारीम पर्वत पर जाओ। यरीहो नगर से
होकर मोआब प्रदेश में नबो पर्वत पर जाओ। तब तुम
उस कनान प्रदेश को देख सकते हो जिसे मैं इस्राएल के
लोगों को रहने के लिए दे रहा हूँ। 50तुम उस पर्वत पर
मरोगे। तुम वैसे ही अपने उन लोगों से मिलोगे जो मर
गए है जैसे तुम्हारा भाई हारून होर पर्वत पर मरा और
अपने लोगों में मिला। 51क्यों? क्योंकि जब तुम सीन की
मरुभूमि में कादेश के निकट मरीबा के जलाशयों के
पास थे तब मेरे विरुद्ध पाप किया था और इस्राएल के
लोगों ने उसे वहाँ देखा था। तुमने मेरा सम्मान नहीं
किया और तुमने यह लोगों को नहीं दिखाया कि मैं
पवित्र हूँ। 52इसलिए अब तुम अपने सामने उस देश को

देख सकते हो किन्तु तुम उस देश में जा नहीं सकते जिसे मैं इस्राएल के लोगों को दे रहा हूँ।"

मूसा इस्राएल के लोगों को आशीर्वाद देता है

33 मरने के पहले परमेश्वर के व्यक्ति मूसा ने इस्राएल के लोगों को यह आशीर्वाद दिया। 2मूसा ने कहा: "परमेश्वर सीनै से आया, यहोवा सेईर पर प्रात: कालीन प्रकाश सा था। वह पारान पर्वत से ज्योतित प्रकाश–सम था। यहोवा दस सहस्त्र पवित्र लोगों (स्वर्गदूतों) के साथ आया। उसकी दांयी ओर बलिष्ठ सैनिक थे।

3हाँ, यहोवा प्रेम करता है लोगों से सभी पवित्र जन उसके हाथों में हैं और चलते हैं वह उसके पदचिन्हों पर हर एक व्यक्ति स्वीकारता उपदेश उसका!

4मूसा ने दिये नियम हमें वे–जो हैं याकूब के सभी लोगों के। 5यशूरुन ने राजा पाया जब लोग और प्रमुख इकट्ठे थे। यहोवा ही उसका राजा था!

रूबेन को आशीर्वाद

6"रूबेन जीवित रहे, न मरे वह। उसके परिवार समूह में जन अनेक हों!"

यहूदा को आशीर्वाद

7मूसा ने यहूदा के परिवार समूह के लिए ये बातें कहीं: "यहोवा, सुने यहूदा के प्रमुख की जब वह मांगे सहायता लाए उसे अपने जनों में शक्तिशाली बनाए उसे, करे सहायता उसकी शत्रु को हराने में!"

लेवी को आशीर्वाद

8मूसा ने लेवी के बारे में कहा: "तेरा अनुयायी सच्चा लेवी धारण करता ऊरीम–तुम्मीम, मस्सा पर तूने लेवी की परीक्षा की, तेरा विशेष व्यक्ति रखता उन्हें। लड़ा तू था उसके लिये मरीबा के जलाशयों पर।

9लेवी ने बताया निज माता–पिता के विषय में : मैं न करता उनकी परवाह, स्वीकार न किया उसने अपने भाई को, या जाना ही अपने बच्चों को; लेवीवंशियों ने पाला आदेश तेरा, और निभायी वाचा तुझसे जो।

10वे सिखायेंगे याकूब को नियम तेरे। और इस्राएल को व्यवस्था जो तेरे। वे रखेंगे सुगन्धि सम्मुख तेरे सारी होमबलि वेदी के ऊपर,

11यहोवा, लेवीवंशियों का जो कुछ हो, आशीर्वाद दे उसे,जो कुछ करे वह स्वीकार करे उसको। नष्ट करे उसको जो आक्रमण करे उन पर।"

बिन्यामीन को आशीर्वाद

12बिन्यामीन के विषय में मूसा ने कहा: "यहोवा का प्यारा उसके साथ सुरक्षित होगा। यहोवा अपने प्रिय की रक्षा करता सारे दिन, और बिन्यामीन की भूमि पर यहोवा रहता।"

यूसुफ को आशीर्वाद

13मूसा ने यूसुफ के बारे में कहा: "यहोवा दे आशीर्वाद उसके देश को स्वर्ग की उत्तम वस्तुऐं जहाँ हों; वह सम्पत्ति वहाँ हो जो धरती कर रही प्रतीक्षा।

14सूरज का दिया उत्तम फल उसका हो महीनों की उत्तम फ़सलें उसकी हों।

15प्राचीन पर्वतों की उत्तम उपज उसकी हो–शाश्वत पहाड़ियों की उत्तम चीज़ें भी।

16आशीर्वाद सहित धरती की उत्तम भेंटे उसकी हों। जलती झाड़ी का यहोवा उसका पक्षधर हो यूसुफ के सिर पर वरदानों की वर्षा हो यूसुफ के सिर के ऊपर भी जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण उसके भ्राताओं में।

17यूसुफ के झुण्ड का प्रथम सांड़ गौरव पाएगा। इसकी सींगे सांड़ सी लम्बी होंगी। यूसुफ का झुण्ड भगाएगा लोगों को। पृथ्वी की अन्तिम छोर जहाँ तक जाती है। हाँ, वे हैं दस सहस्त्र एप्रैम से हाँ वे हैं एक सहस्त्र मनश्शे से।"

जबूलून को आशीर्वाद

18जबूलून के बारे में मूसा ने कहा: "जबूलून, खुश होओ, जाओ जब बाहर, और इस्साकार रहे तुम्हारे डेरों में। 19वे लोगों का आहवान करेंगे अपने गिरि पर, वहाँ करेंगे भेंट सभी सच्ची बलि क्यों? क्योंकि वे लोग सागर से निकालते हैं धन और पाएंगे बालू में छिपा हुआ जो धन है।"

गाद को आशीर्वाद

20मूसा ने गाद के बारे में कहा: "स्तुति करो परमेश्वर की जो बढ़ाता है गाद को! गाद लेटा करता सिंह सदृश, वह उखाड़ता भुजा, भंग करता खोपड़ियां।

21अपने लिए चुनता है वह, सबसे प्रमुख हिस्सा और आता वह लोगों के प्रमुखों के संग करता वह इस्राएल के संग जो यहोवा की इच्छा होती है और यहोवा के लिए न्याय करता है।"

दान को आशीर्वाद

22दान के बारे में मूसा ने कहा: "दान सिंह का बच्चा है जो बाशान में उछला करता।"

नप्ताली को आशीर्वाद

23नप्ताली के बारे में मूसा ने कहा: "नप्ताली , तुम लोगे बहुत सी अच्छी चीज़ों को, यहोवा का आशीर्वाद तुम्हें पूरा है, ले लो पश्चिम और दक्षिण प्रदेश।"

आशेर को आशीर्वाद

24मूसा ने आशेर के बारे में कहा: "आशेर को पुत्रों
में सर्वाधिक है आशीर्वाद, उसे निज भ्राताओं में प्रिय
होने दो और उसे अपने चरण तेल से धोने दो।
25तुम्हारी अर्गलाएँ लोहे–काँसे होंगे शक्ति तुम्हारी
आजीवन रहेगी बनी।"

मूसा परमेश्वर की स्तुति करता है

26"यशूरुन, परमेश्वर सम नहीं दूसरा कोई परमेश्वर
अपने गौरव में चलता है चढ़ बादल पर, आसमान से
होकर आता करने मदद तुम्हें।
27शाश्वत परमेश्वर तुम्हारी शरण सुरक्षित है। और
तुम्हारे नीचे शाश्वत भुजाऐं हैं परमेश्वर जो बल से
दूर हटाता शत्रु तुम्हारे, कहता है वह 'नष्ट करो शत्रु
को!'
28ऐसे इस्राएल रक्षित रहता है जो केवल याकूब का
जलस्रोत धरती में सुरिक्षत है। अन्न और दाखमधु की
सुभूमि में हाँ उसका स्वर्ग वहाँ हिम–बिन्दु भेजता।
29इस्राएलियों, तुम आशीषित हो यहोवा रक्षित राष्ट्र
तुम, न कोई तुम सम अन्य राष्ट्र। यहोवा है तलवार
विजय* तुम्हारी करने वाली। तेरे शत्रु सभी तुझसे
डरेगें, और तुम रौंद दोगे उनके झूठे देवों की जगहों
को।"

मूसा की मृत्यु

34 मूसा मोआब के निचले प्रदेश से नबो पर्वत
पर गया जो यरीहो के पार पिसगा की चोटी
पर था। यहोवा ने उसे गिलाद से दान तक का सारा
प्रदेश दिखलाया। 2यहोवा ने उसे सारा नप्ताली, जो एप्रैम
और मनश्शे का था, दिखाया। उसने भूमध्य सागर
तक यहूदा के प्रदेश को दिखाया। 3यहोवा ने मूसा को
खजूर के पेड़ों के नगर सोअर से यरीहो तक फैली
घाटी और नेगेव दिखाया। 4यहोवा ने मूसा से कहा, "यह
वह देश है जिसे मैंने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब को
वचन दिया था कि, 'मैं इस देश को तुम्हारे वंशजों को
दूँगा।' मैंने तुम्हें इस देश को दिखाया। किन्तु तुम वहाँ
जा नहीं सकते।"
5तब यहोवा का सेवक मूसा मोआब देश में वहीं मरा।
यहोवा ने मूसा से कहा था कि ऐसा होगा। 6यहोवा ने
बेतपोर के पार मोआब प्रदेश की घाटी में मूसा को
दफनाया। किन्तु आज भी कोई नहीं जानता कि मूसा
की कब्र कहाँ है। 7मूसा जब मरा वह एक सौ बीस वर्ष
का था। उसकी आँखें कमजोर नहीं थीं। वह तब भी
बलवान था। 8इस्राएल के लोग मूसा के लिए मोआब के
निचले प्रदेश में तीस दिन तक रोते चिल्लाते रहे। यह
शोक मनाने का पूरा समय था।

यहोशू मूसा का स्थान लेता है

9तब नून का पुत्र यहोशू बुद्धिमानी की आत्मा से
भरपूर था क्योंकि मूसा ने उस पर अपना हाथ रख
दिया था। इस्राएल के लोगों ने यहोशू की बात मानी।
उन्होंने वैसा ही किया जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश
दिया था।
10किन्तु उस समय के बाद, मूसा की तरह कोई नबी
नहीं हुआ। यहोवा परमेश्वर मूसा को प्रत्यक्ष जानता
था। 11किसी दूसरे नबी ने वे सारे चमत्कार और आश्चर्य
नहीं दिखाए जिन्हें दिखाने के लिये यहोवा परमेश्वर ने
मूसा को मिस्र में भेजा था। वे चमत्कार और आश्चर्य,
फ़िरौन, उसके सभी सेवकों और मिस्र के सभी लोगों
को दिखाए गए थे। 12किसी दूसरे नबी ने कभी उतने
शक्तिशाली और आश्चर्यजनक चमत्कार नहीं किए जो
मूसा ने किए और जिन्हें इस्राएल के सभी लोगों ने देखा।

विजय शाब्दिक "महामहिमता।"

यहोशू

परमेश्वर यहोशू को इस्राएल का नेतृत्व करने के लिये चुनता है

1 मूसा यहोवा का सेवक था। नून का पुत्र यहोशू मूसा
का सहायक था। मूसा के मरने के बाद, यहोवा ने
यहोशू से बातें कीं। यहोवा ने यहोशू से कहा, 2"मेरा
सेवक मूसा मर गया। अब ये लोग और तुम यरदन नदी
के पार जाओ। तुम्हें उस देश में जाना चाहिए जिसे मैं
इस्राएल के लोगों को अर्थात् तुम्हें दे रहा हूँ। 3मैंने मूसा
को यह वचन दिया था कि यह देश मैं तुम्हें दूँगा।
इसलिए मैं तुम्हें वह हर एक प्रदेश दूँगा, जिस किसी
स्थान पर भी तुम जाओगे। 4हित्तियों का पूरा देश,
मरुभूमि और लबानोन से लेकर बड़ी नदी तक (परात
नदी तक) तुम्हारा होगा और यहाँ से पश्चिम में
भूमध्यसागर तक (सूर्य के डूबने के स्थान तक) का
प्रदेश तुम्हारी सीमा के भीतर होगा। 5मैं मूसा के साथ था
और मैं उसी तरह तुम्हारे साथ रहूँगा। तुम्हारे पूरे जीवन
में, तुम्हें कोई भी व्यक्ति रोकने में समर्थ नहीं होगा। मैं
तुम्हें छोड़ूँगा नहीं। मैं कभी तुमसे दूर नहीं होऊँगा।

6"यहोशू, तुम्हें दृढ़ और साहसी होना चाहिये! तुम्हें
इन लोगों का अगुवा होना चाहिये जिससे वे अपना देश
ले सकें। यह वही देश है जिसे मैंने उन्हें देने के लिये
उनके पूर्वजों को वचन दिया था। 7किन्तु तुम्हें एक
दूसरी बात के विषय में भी दृढ़ और साहसी रहना होगा।
तुम्हें उन आदेशों का पालन निश्चय के साथ करना
चाहिए, जिन्हें मेरे सेवक मूसा ने तुम्हें दिया। यदि तुम
उसकी शिक्षाओं का ठीक–ठीक पालन करोगे, तो तुम
जो कुछ करोगे उसमें सफल होगे। 8उस व्यवस्था की
किताब में लिखी गई बातों को सदा याद रखो। तुम उस
किताब का अध्ययन दिन–रात करो, तभी तुम उसमें
लिखे गए आदेशों के पालन के विषय में विश्वस्त रह
सकते हो। यदि तुम यह करोगे, तो तुम बुद्धिमान बनोगे
और जो कुछ करोगे उसमें सफल होगे। 9याद रखो, कि
मैंने तुम्हें दृढ़ और साहसी बने रहने का आदेश दिया
था। इसलिए कभी भयभीत न होओ, क्योंकि तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा तुम्हारे साथ सभी जगह रहेगा, जहाँ
तुम जाओगे।" 10इसलिए यहोशू ने लोगों के प्रमुखों को
आदेश दिया। उसने कहा, 11"डेरे से होकर जाओ
और लोगों को
तैयार होने को कहो। लोगों से कहो, 'कुछ भोजन तैयार
कर लें। अब से तीन दिन बाद, हम लोग यरदन नदी
पार करेंगे। हम लोग जाएंगे और उस देश को लेंगे जिसे
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुमको दे रहा है।'"

12तब यहोशू ने रूबेन के परिवार समूह, गाद और
मनश्शे के परिवार समूह के आधे लोगों से बातें कीं।
यहोशू ने कहा, 13"उसे याद रखो, जो परमेश्वर के
सेवक मूसा ने तुमसे कहा था। उसने कहा था कि
परमेश्वर, तुम्हारा यहोवा तुम्हें आराम के लिये स्थान
देगा। परमेश्वर यह देश तुम्हें देगा। 14अब परमेश्वर ने
यरदन नदी के पूर्व में यह देश तुम्हें दिया है। तुम्हारी
पत्नियाँ, तुम्हारे बच्चे और तुम्हारे जानवर इस प्रदेश में
रह सकते हैं। किन्तु तुम्हारे योद्धा तुम्हारे भाइयों के
साथ यरदन नदी को अवश्य पार करेंगे। तुम्हें युद्ध के
लिये तैयार रहना चाहिए और अपना देश लेने में अपने
भाइयों की सहायता करनी चाहिये। 15यहोवा ने तुम्हें
आराम करने की जगह दी है, और वह तुम्हारे भाइयों
के लिये भी वैसा ही करेगा। किन्तु तुम्हें अपने भाइयों
की सहायता तब तक करनी चाहिये जब तक वे उस
देश को नहीं ले लेते जिसे परमेश्वर, उनका यहोवा
उन्हें दे रहा है। तब तुम यरदन नदी के पूर्व अपने देश में
लौट सकते हो। वही वह प्रदेश है जिसे यहोवा के सेवक
मूसा ने तुम्हें दिया था।"

16तब लोगों ने यहोशू को उत्तर दिया, "जो भी करने
के लिये तुम आदेश दोगे, हम लोग करेंगे! जिस स्थान
पर भेजोगे, हम लोग जाएंगे! 17हम लोगों ने पूरी तरह
मूसा की आज्ञा मानी। उसी तरह हम लोग वह सब
मानेंगे जो तुम कहोगे। हम लोग यहोवा से केवल एक
बात चाहते हैं। हम लोग परमेश्वर यहोवा से यही माँग
करते हैं कि वह तुम्हारे साथ वैसा ही रहे जैसे वह मूसा
के साथ रहा। 18तब, यदि कोई व्यक्ति तुम्हारी आज्ञा
मानने से इन्कार करता है या कोई व्यक्ति तुम्हारे
विरुद्ध खड़ा होता है, वह मार डाला जाएगा। केवल दृढ़
और साहसी रहो!"

यरीहो में गुप्तचर

2 नून का पुत्र यहोशू और सभी लोगों ने शित्तीम में
डेरा डाला था। यहोशू ने दो गुप्तचरों को भेजा।

किसी दूसरे व्यक्ति को यह पता नहीं चला कि यहोशू ने
इन लोगों को भेजा था। यहोशू ने इन लोगों से कहा,
"जाओ और प्रदेश की जाँच करो, यरीहो नगर को
सावधानी से देखो।"
इसलिए वे व्यक्ति यरीहो गए। वे एक वेश्या के घर
गए और वहाँ ठहरे। इस स्त्री का नाम राहाब था।
2किसी ने यरीहो के राजा से कहा, "इस्राएल के कुछ
व्यक्ति आज रात हमारी धरती पर गुप्तचरी करने आए
हैं।"
3इसलिए यरीहो के राजा ने राहाब के यहाँ यह खबर
भेजी: "उन व्यक्तियों को छिपाओ नहीं जो आकर तुम्हारे
घर में ठहरे हैं। उन्हें बाहर लाओ। वे भेद लेने अपने
देश में आए हैं।"
4स्त्री ने दोनों व्यक्तियों को छिपा रखा था। किन्तु स्त्री
ने कहा, "वे दो व्यक्ति आए तो थे, किन्तु मैं नहीं जानती
कि वे कहाँ से आए थे। 5नगर द्वार बन्द होने के समय
वे व्यक्ति शाम को चले गए। मैं नहीं जानती कि वे कहाँ
गए। किन्तु यदि तुम जल्दी जाओगे, तो शायद तुम उन्हें
पकड़ लोगे।"
6(राहाब ने वह सब कहा, लेकिन वास्तव में स्त्री ने
उन्हें छत पर पहुँचा दिया था, और उन्हें उस चारे में
छिपा दिया था, जिसका ढेर उसने ऊपर लगाया था।)
7इसलिए इस्राएल के दो आदमियों की खोज में राजा
के व्यक्ति चले गए। राजा के व्यक्तियों द्वारा नगर छोड़ने
के तुरन्त बाद नगर द्वार बन्द कर दिये गए। वे उन स्थानों
पर गए जहाँ से लोग यरदन नदी को पार करते थे ।
8दोनों व्यक्ति रात में सोने की तैयारी में थे। किन्तु
स्त्री छत पर गई और उसने उनसे बात की। 9राहाब ने
कहा, "मैं जानती हूँ कि यह देश यहोवा ने तुम्हारे लोगों
को दिया है। तुम हम लोगों को भयभीत करते हो। इस
देश में रहने वाले सभी तुम लोगों से भयभीत हैं। 10हम
लोग डरे हुए हैं क्योंकि हम सुन चुके हैं कि यहोवा ने
तुम लोगों की सहायता कैसे की है। हमने सुना है कि
तुम मिस्र से बाहर आए तो यहोवा ने लाल सागर के
पानी को सुखा दिया। हम लोगों ने यह भी सुना है कि
तुम लोगों ने दो एमोरी राजाओं सीहोन और ओग के
साथ क्या किया। हम लोगों ने सुना कि तुम लोगों ने
यरदन नदी के पूर्व में रहने वाले उन दोनों राजाओं को
कैसे नष्ट किया। 11हम लोगों ने उन घटनाओं को सुना
और बहुत अधिक डर गए और अब हम में से कोई
व्यक्ति इतना साहसी नहीं कि तुम लोगों से लड़ सके।
क्यों? क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा ऊपर स्वर्ग और
नीचे धरती पर शासन करता है 12तो अब, मैं चाहती हूँ
कि तुम मुझे वचन दो। मैंने तुम्हारी सहायता की है और
तुम पर दया की है। इसलिए यहोवा के सामने वचन दो
कि तुम हमारे परिवार पर दया करोगे। कृपया मुझे
कहो कि तुम ऐसा करोगे। 13मुझसे तुम यह कहो कि
तुम मेरे परिवार को जीवित रहने दोगे जिसमें मेरे पिता,
माँ, भाई, बहनें, और उनके परिवार होंगे। तुम प्रतिज्ञा
करो कि तुम हमें मृत्यु से बचाओगे।"
14उन व्यक्तियों ने उसे मान लिया। उन्होंने कहा,
"हम तुम्हारे जीवन के लिये अपने जीवन की बाजी लगा
देंगे। किसी व्यक्ति से न बताओ कि हम क्या कर रहे
हैं। तब जब यहोवा हम लोगों को हमारा देश देगा, तब
हम तुम पर दया करेंगे। तुम हम लोगों पर विश्वास कर
सकतेहो।"
15उस स्त्री का घर नगर की दीवार के भीतर बना
था। यह दीवार का एक हिस्सा था। इसलिए स्त्री ने
उनके खिड़की में से उतरने के लिये रस्सी का उपयोग
किया। 16तब स्त्री ने उनसे कहा, "पश्चिम की पहाड़ियों
में जाओ, जिससे राजा के व्यक्ति तुम्हें अचानक न
पकड़ें। वहाँ तीन दिन छिपे रहो। राजा के व्यक्ति जब
लौट आएं तब तुम अपने रास्ते जा सकते हो।"
17व्यक्तियों ने उससे कहा, "हम लोगों ने तुमको वचन
दिया है। किन्तु तुम्हें एक काम करना होगा, नहीं तो
हम लोग अपने वचन के लिये उत्तरदायी नहीं होंगे।
18तुम इस लाल रस्सी का उपयोग हम लोगों के बचकर
भाग निकलने के लिये कर रही हो। हम लोग इस देश
में लौटेंगे। उस समय तुम्हें इस रस्सी को अपनी खिड़की
से अवश्य बांधना होगा। तुम्हें अपने पिता, अपनी माँ,
अपने भाई, और अपने पूरे परिवार को अपने साथ इस
घर में रखना होगा। 19हम लोग हर एक व्यक्ति को
सुरक्षित रखेंगे जो इस घर में होगा। यदि तुम्हारे घर के
भीतर किसी को चोट पहुँचता है, तो उसके लिए हम
लोग उत्तरदायी होंगे। यदि तुम्हारे घर से कोई व्यक्ति
बाहर जाएगा, तो वह मार डाला जा सकता है। उस
व्यक्ति के लिए हम उत्तरदायी नहीं होंगे। यह उसका
अपना दोष होगा। 20हम यह वादा तुम्हारे साथ कर रहे
हैं। किन्तु यदि तुम किसी को बताओगी कि हम क्या
कर रहे हैं, तो हम अपने इस वचन से स्वतन्त्र होंगे।"
21स्त्री ने उत्तर दिया, "मैं इसे स्वीकार करती हूँ।"
स्त्री ने नमस्कार किया और व्यक्तियों ने उसका घर
छोड़ा। स्त्री ने खिड़की से लाल रस्सी बांधी।
22वे उसके घर को छोड़कर पहाड़ियों में चले गए।
जहाँ वे तीन दिन रुके। राजा के व्यक्तियों ने पूरी सड़क
पर उनकी खोज की। तीन दिन बाद राजा के व्यक्तियों
ने खोज बन्द कर दी। वे उन्हें नहीं ढूँढ पाए, सो वे नगर
में लौट आए। 23तब दोनों व्यक्तियों ने यहोशू के पास
लौटना आरम्भ किया। व्यक्तियों ने पहाड़ियाँ छोड़ी और
नदी को पार किया। वे नून के पुत्र यहोशू के पास गए।
उन्होंने जो कुछ पता लगाया था, यहोशू को बताया।
24उन्होंने यहोशू से कहा, "यहोवा ने सचमुच सारा देश
हम लोगों को दे दिया है। उस देश के सभी लोग हम
लोगों से भयभीत हैं।"

यरदन नदी पर आश्चर्यकर्म

3 दूसरे दिन सवेरे यहोशू और इस्राएल के सभी लोग
उठे और शित्तीम को उन्होंने छोड़ दिया। उन्होंने
यरदन नदी तक यात्रा की। उन्होंने पार करने के पहले
यरदन नदी पर डेरे लगाए। 2तीन दिन बाद प्रमुख लोग
डेरों के बीच से होकर निकले। 3प्रमुखों ने लोगों को
आदेश दिये। उन्होंने कहा, "तुम लोग याजक और
लेवीवंशियों को अपने परमेश्वर यहोवा के साक्षीपत्र
का सन्दूक ले जाते हुए देखोगे। उस समय तुम जहाँ हो,
उसे छोड़ोगे और उनके पीछे चलोगे। 4किन्तु उनके
बहुत निकट न रहो। लगभग एक हजार गज दूर उनके
पीछे रहो। तुमने पहले इस ओर की यात्रा कभी नहीं की
है। इसलिए यदि तुम उनके पीछे चलोगे, तो तुम जानोगे
कि तुम्हे कहाँ जाना है।"

5तब यहोशू ने लोगों से कहा, "अपने को पवित्र
करो। कल यहोवा तुम लोगों का उपयोग चमत्कार
दिखाने के लिये करेगा।"

6तब यहोशू ने याजकों से कहा, "साक्षीपत्र के सन्दूक
को उठाओ और लोगों से पहले नदी के पार चलो।"
इसलिए याजकों ने सन्दूक को उठाया और उसे लोगों
के सामने ले गए। 7तब यहोवा ने यहोशू से कहा, "आज
मैं इस्राएल के लोगों की दृष्टि में तुम्हें महान व्यक्ति
बनाना आरम्भ करूँगा। तब लोग जानेंगे कि मैं तुम्हारे
साथ वैसे ही हूँ जैसे मैं मूसा के साथ था। 8याजक
साक्षीपत्र का सन्दूक ले चलेंगे। याजकों से यह कहो,
'यरदन नदी के किनारे तक जाओ और ठीक इसके
पहले कि तुम्हारा पैर पानी में पड़े रूक जाओ।'"

9तब यहोशू ने इस्राएल के लोगों से कहा, "आओ
और अपने परमेश्वर यहोवा का आदेश सुनो। 10यह
इस बात का प्रमाण है कि साक्षात् परमेश्वर सचमुच
तुम्हारे साथ है। यह इस बात का प्रमाण है कि वह
तुम्हारे शत्रु कनान के लोगों हित्तियों, हिव्वियों, परिज्जियों,
गिर्गाशियों, एमोरी लोगों तथा यबूसी लोगों को हराएगा
और उन्हें उस देश को छोड़ने के लिए विवश करेगा।
11प्रमाण यहाँ है। सारे संसार के स्वामी के साक्षीपत्र का
सन्दूक उस समय तुम्हारे आगे चलेगा जब तुम यरदन
नदी को पार करोगे। 12अपने बीच से बारह व्यक्तियों
को चुनो। इस्राएल के बारह परिवार समूहों में से हर
एक से एक व्यक्ति चुनो। 13याजक सारे संसार के
स्वामी, यहोवा के सन्दूक को लेकर चलेंगे। वे उस
सन्दूक को तुम्हारे सामने यरदन नदी में ले जाएंगे। जब
वे पानी में घुसेंगे, तो यरदन के पानी का बहना रूक
जायेगा। पानी रूक जाएगा और उस स्थान के पीछे बाँध
की तरह खड़ा हो जाएगा।"

14याजक लोगों के सामने साक्षीपत्र का सन्दूक लेकर
चले और लोगों ने यरदन नदी को पार करने के लिए
डेरे को छोड़ दिया। 15(फसल पकने के समय यरदन
नदी अपने तटों को डुबा देती है। अतः नदी पूरी तरह
भरी हुई थी।) सन्दूक ले चलने वाले याजक नदी के
किनारे पहुँचे। उन्होंने पानी में पाँव रखा। 16और उस
समय पानी का बहना बन्द हो गया। पानी उस स्थान के
पीछे बांध की तरह खड़ा हो गया। नदी के चढ़ाव की
ओर लम्बी दूरी तक पानी लगातार आदाम तक (सारतान
के समीप एक नगर) ऊँचा खड़ा होता चला गया। लोगों
ने यरीहो के पास नदी को पार किया। 17उस जगह की
धरती सूख गई याजक यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक
को नदी के बीच ले जाकर रूक गये। जब इस्राएल के
लोग यरदन नदी को सूखी धरती से होते हुए चल कर
पार कर रहे थे, तब याजक वहाँ उनकी प्रतीक्षा में थे।

लोगों को स्मरण दिलाने के लिये शिलायें

4 जब सभी लोगों ने यरदन नदी को पार कर लिया
तब यहोवा ने यहोशू से कहा, 2"लोगों में से बारह
व्यक्ति चुनों। हर एक परिवार समूह से एक व्यक्ति
चुनों। 3लोगों से कहो कि वे वहाँ नदी में देखे जहाँ
याजक खड़े थे। उनसे वहाँ बारह शिलायें ढूँढ निकालने
के लिए कहो। उन बारह शिलाओं को अपने साथ ले
जाओ। उन बारह शिलाओं को उस स्थान पर रखो
जहाँ तुम आज रातठहरो।"

4इसलिए यहोशू ने हर एक परिवार समूह से एक
व्यक्ति चुना। तब उसने बारह व्यक्तियों को एक साथ
बुलाया। 5यहोशू ने उनसे कहा, "नदी में वहाँ तक जाओ
जहाँ तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के पवित्र वाचा का सन्दूक
है। तुममें से हर एक को एक शिला की खोज करनी
चाहिये। इस्राएल के बारह परिवार समूहों में से हर एक
के लिए एक शिला होगी। उस शिला को अपने कंधे पर
लाओ। 6ये शिलायें तुम्हारे बीच चिन्ह होंगी। भविष्य में
तुम्हारे बच्चे यह पूछेंगे, 'इन शिलाओं का क्या महत्व
है?' 7बच्चों से कहो कि यहोवा ने यरदन नदी में पानी
का बहना बन्द कर दिया था। जब यहोवा के साथ
साक्षीपत्र के पवित्र सन्दूक ने नदी को पार किया तब
पानी का बहना बन्द हो गया। ये शिलायें इस्राएल के
लोगों को इस घटना की सदैव याद बनाये रखने में
सहायता करेंगे।"

8इस प्रकार, इस्राएल के लोगों ने यहोशू की आज्ञा
मानी। वे यरदन नदी के बीच से बारह शिलायें ले गए।
इस्राएल के बारह परिवार समूहों में से हर एक के लिये
एक शिला थी। उन्होंने यह वैसे ही किया जैसा यहोवा ने
यहोशू को आदेश दिया। वे व्यक्ति शिलाओं को अपने
साथ ले गए। तब उन्होंने उन शिलाओं को वहाँ रखा
जहाँ उन्होंने अपने डेरे डाले। 9(यहोशू ने भी यहोवा के
पवित्र सन्दूक को ले चलने वाले याजक जहाँ खड़े थे,
वहीं यरदन नदी के बीच में बारह शिलाये डाले। वे
शिलाये आज भी उस स्थान पर हैं।)

10यहोवा ने यहोशू को आदेश दिया था कि वह लोगों
से कहे कि उन्हें क्या करना है। वे वही बातें थीं, जिन्हें
अवश्य कहने के लिये मूसा ने यहोशू से कहा था।
इसलिए पवित्र सन्दूक को ले चलने वाले याजक नदी के
बीच में तब तक खड़े ही रहे, जब तक ये सभी काम पूरे
न हो गए। लोगों ने शीघ्रता की और नदी को पार कर
गए। 11जब लोगों ने नदी को पार कर लिया, तब याजक
यहोवा का सन्दूक लेकर लोगों के सामने आये।

12रूबेन के परिवार समूह, गादी तथा मनश्शे परिवार
समूह के आधे लोगों ने, मूसा ने उन्हें जो करने को
कहा था, किया। इन लोगों ने अन्य लोगों के सामने नदी
को पार किया। ये लोग युद्ध के लिये तैयार थे। ये लोग
इस्राएल के अन्य लोगों को उस देश को लेने में सहायता
करने जा रहे थे, जिसे यहोवा ने उन्हें देने का वचन
दिया था। 13लगभग चालीस हजार सैनिक, जो युद्ध के
लिये तैयार थे, यहोवा के सामने से गुजरे। वे यरीहो के
मैदान की ओर बढ़ रहे थे।

14उस दिन यहोवा ने इस्राएल के सभी लोगों की दृष्टि
में यहोशू को एक महान व्यक्ति बना दिया। उस समय से
आगे लोग यहोशू का सम्मान करने लगे। वे यहोशू का
सम्मान जीवन भर वैसे ही करने लगे जैसा मूसा का
करते थे।

15जिस समय सन्दूक ले चलने वाले याजक अभी नदी
में ही खड़े थे, यहोवा ने यहोशू से कहा, 16"याजकों को
नदी से बाहर आने का आदेश दो।"

17इसलिए यहोशू ने याजकों को आदेश दिया। उसने
कहा, "यरदन नदी के बाहर आओ।"

18याजकों ने यहोशू की आज्ञा मानी। वे सन्दूक को
अपने साथ लेकर बाहर आए। जब याजकों के पैर ने
नदी के दूसरी ओर की भूमि को स्पर्श किया, तब नदी
का जल फिर बहने लगा। पानी फिर तटों को वैसे ही
डुबाने लगा जैसा इन लोगों द्वारा नदी पार करने के
पहले था।

19लोगों ने यरदन नदी को पहले महीने के दसवें दिन
पार किया। लोगों ने यरीहो के पूर्व गिलगाल में डेरा
डाला। 20लोग उन शिलाओं को अपने साथ ले चल रहे
थे जिन्हें उन्होंने यरदन नदी से निकाला था और यहोशू
ने उन शिलाओं को गिलगाल में स्थापित किया। 21तब
यहोशू ने लोगों से कहा, "भविष्य में तुम्हारे बच्चे अपने
माता–पिता से पूछेंगे, 'इन शिलाओं का क्या महत्व है?'
22तुम बच्चों को बताओगे, 'ये शिलाएं हम लोगों को यह
याद दिलाने में सहायता करती हैं कि इस्राएल के लोगों
ने किस तरह सूखी भूमि पर से यरदन नदी को पार
किया। 23तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने नदी के जल का
बहना रोक दिया। नदी तब तक सूखी रही जब तक
लोगों ने नदी को पार नहीं कर लिया। यहोवा ने यरदन
नदी पर लोगों के लिये वही किया, जो उन्होंने लोगों के
लिये लाल सागर पर किया था। याद करो कि यहोवा ने
लाल सागर पर पानी का बहना इसलिए रोका था कि
लोग उसे पार कर सकें। 24यहोवा ने यह इसलिए किया
कि इस देश के सभी लोग जानें कि यहोवा महान शक्ति
रखता है। जिससे लोग सदैव ही यहोवा तुम्हारे परमेश्वर
से डरते रहें।'"

5 इस प्रकार, यहोवा ने यरदन नदी को तब तक
सूखी रखा जब तक इस्राएल के लोगों ने उसे पार
नहीं कर लिया। यरदन नदी के पश्चिम में रहने वाले
एमोरी राजाओं और भूमध्य सागर के तट पर रहने वाले
कनानी राजाओं ने इसके विषय में सुना और वे बहुत
अधिक भयभीत हो गए। उसके बाद वे इस्राएल के लोगों
के विरुद्ध युद्ध में खड़े रहने योग्य साहसी नहीं रह गए।

इस्राएलियों का खतना

2उस समय, यहोवा ने यहोशू से कहा, "वज्रप्रस्तर के
चाकू बनाओ और इस्राएल के लोगों का खतना फिर
करो।"

3इसलिए यहोशू ने कठोर पत्थर के चाकू बनाए।
तब उसने इस्राएल के लोगों का खतना गिबआत हाअरलोत
में किया।

4-7यही कारण है कि यहोशू ने उन सभी पुरुषों का
खतना किया, जो इस्राएल के लोगों द्वारा मिस्र छोड़ने के
बाद सेना में रहने की आयु के हो गए थे। मरुभूमि में
रहते समय उन सैनिकों में से कई ने यहोवा की बात
नहीं मानी थी। इसलिए यहोवा ने उन व्यक्तियों को
अभिशाप दिया था कि वे "दूध और शहद की नदियों
वाले देश" को नहीं देख पाएंगे। यहोवा ने हमारे पूर्वजों
को वह देश देने का वचन दिया था, किन्तु इन व्यक्तियों
के कारण लोगों को चालीस वर्ष तक मरुभूमि में भटकना
पड़ा और इस प्रकार वे सब सैनिक समाप्त हो गए। वे
सभी सैनिक नष्ट हो गए, और उनका स्थान उनके
पुत्रों ने लिया। किन्तु मिस्र से होने वाली यात्रा में जितने
बच्चे मरुभूमि में उत्पन्न हुए थे, उनमें से किसी का भी
खतना नहीं हो सका था। इसलिए यहोशू ने उनका
खतना किया।

8यहोशू ने सभी पुरुषों का खतना पूरा किया। वे तब
तक डेरे में रहे, जब तक स्वस्थ नहीं हुए।

कनान में पहला फसह पर्व

9उस समय यहोवा ने यहोशू से कहा, "जब तुम मिस्र
में दास थे तब तुम लज्जित थे। किन्तु आज मैंने तुम्हारी
वह लज्जा दूर कर दी है।" इसलिए यहोशू ने उस स्थान
का नाम गिलगाल रखा और वह स्थान आज भी गिलगाल
कहा जाता है।

10जिस समय इस्राएल के लोग यरीहो के मैदान में
गिलगाल के स्थान पर डेरा डाले थे, वे फसह पर्व मना

रहे थे। यह महीने के चौदहवें दिन की सन्ध्या को था।
11फसह पर्व के बाद, अगले दिन लोगों ने वह भोजन
किया जो उस भूमि पर उगाया गया था। उन्होंने अखमीरी
रोटी और भुने अन्न खाए। **12**उस दिन जब लोगों ने वह
भोजन कर लिया, उसके बाद स्वर्ग से विशेष भोजन
आना बन्द हो गया। उसके बाद, इस्राएल के लोगों ने
स्वर्ग से विशेष भोजन न पाया। उसके बाद उन्होंने वही
भोजन खाया जो कनान में पैदा किया गया था।

13जब यहोशू यरीहो के निकट था तब उसने ऊपर
आँख उठायी और उसने अपने सामने एक व्यक्ति को
देखा। उस व्यक्ति के हाथ में तलवार थी। यहोशू उस
व्यक्ति के पास गया और उससे पूछा, “क्या तुम हमारे
मित्रों में से कोई हो या हमारे शत्रुओं में से?”

14उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, “मैं शत्रु नहीं हूँ। मैं
यहोवा की सेना का एक सेनापति हूँ। मैं अभी–अभी
तुम्हारे पास आया हूँ।”

तब यहोशू ने अपना सिर भूमि तक झुकाया। यह
उसने सम्मान प्रकट करने के लिए किया। उसने पूछा,
“क्या मेरे स्वामी का मुझ दास के लिए कोई आदेश
है?”

15यहोवा की सेना के सेनापति ने उत्तर दिया, “अपने
जूते उतारो। जिस स्थान पर तुम खड़े हो वह स्थान
पवित्र है।” इसलिए यहोशू ने उसकी आज्ञा मानी।

यरीहो पर कब्जा

6 यरीहो नगर के द्वार बन्द थे। उस नगर के लोग
भयभीत थे क्योंकि इस्राएल के लोग निकट थे।
कोई नगर में नहीं जा रहा था और कोई नगर से बाहर
नहीं आ रहा था।

2तब यहोवा ने यहोशू से कहा, “देखो, मैंने यरीहो
नगर को तुम्हारे अधिकार में दे दिया है। इसका राजा
और इसके सारे सैनिक तुम्हारे अधीन हैं। **3**हर एक
दिन अपनी सेना के साथ नगर के चारों ओर अपना
बल प्रदर्शन करो। यह छः दिन तक करो। **4**बकरे के
सींगों की बनी तुरहियों को लेकर सात याजकों को
चलने दो। याजकों से कहो कि वे पवित्र सन्दूक के
सामने चलें। सातवें दिन नगर के चारों ओर सात फेरे
करो, याजकों से कहो कि वे चलते समय तुरही बजाएं।
5याजक तुरहियों से प्रचन्ड ध्वनि करेंगे। जब तुम वह
ध्वनि सुनो तो तुम सब लोगों से गर्जन आरम्भ करने
को कहो। जब तुम ऐसा करोगे तो नगर की दीवारें गिर
जाएंगी। तब तुम्हारे लोग सीधे नगर में जाएंगे।”

6इस प्रकार नून के पुत्र यहोशू ने याजकों को इकट्ठा
किया। यहोशू ने उनसे कहा, “यहोवा के पवित्र सन्दूक
को ले चलो और सात याजकों को तुरही ले चलने को
कहो। उन याजकों को सन्दूक के सामने चलना
चाहिए।”

7तब यहोशू ने लोगों को आदेश दिया, “जाओ! और
नगर के चारों ओर बल परिक्रमा करो। अस्त्र–शस्त्र
वाले सैनिक यहोवा के पवित्र सन्दूक के आगे चलें।”

8जब यहोशू ने लोगों से बोलना पूरा किया तो यहोवा
के सामने सात याजकों ने चलना आरम्भ किया। वे
सात तुरहियाँ लिए हुए थे। चलते समय वे तुरहियाँ बजा
रहे थे। यहोवा के सन्दूक को लेकर चलने वाले याजक
उनके पीछे चल रहे थे। **9**अस्त्र–शस्त्र धारी सैनिक
याजकों के आगे चल रहे थे। पवित्र सन्दूक के पीछे
चलने वाले लोग तुरही बजा रहे थे तथा कदम मिला रहे
थे। **10**किन्तु यहोशू ने लोगों से कहा था कि युद्ध की
ललकार न दें। उसने कहा, “ललकारो नहीं। उस दिन
तक तुम कोई ललकार न दो, जिस दिन तक मैं न
कहूँ। मेरे कहने के समय तुम ललकार सकते हो!”

11इसलिए यहोशू ने याजकों को यहोवा के पवित्र
सन्दूक को नगर के चारों ओर ले जाने का आदेश
दिया। तब वे अपने डेरे में लौट गए और रात भर वहीं
ठहरे।

12दूसरे दिन, सवेरे यहोशू उठा। याजक फिर यहोवा
के पवित्र सन्दूक को लेकर चले **13**और सातों याजक
सात तुरहियाँ लेकर चले। वे यहोवा के पवित्र सन्दूक के
सामने तुरहियाँ बजाते हुए कदम से कदम मिला रहे थे।
उनके सामने अस्त्र–शस्त्र धारी सैनिक चल रहे थे।
यहोवा के सन्दूक के पीछे चलने वाले सैनिक याजक
तुरहियाँ बजाते हुए कदम मिला रहे थे।

14इसलिए दूसरे दिन, उन सब ने एक बार नगर के
चारों ओर चक्कर लगाया और तब वे अपने डेरों मे
लौट गए। उन्होंने लगातार छः दिन तक यह किया।
15सातवें दिन वे भोर में उठे और उन्होंने नगर के चारों
ओर सात चक्कर लगाए। उन्होंने उसी प्रकार नगर का
चक्कर लगाया जिस तरह वे उसके पहले लगा चुके थे,
किन्तु उस दिन उन्होंने सात चक्कर लगाए।

16सातवीं बार जब उन्होंने नगर का चक्कर लगाया
तो याजकों ने अपनी तुरहियाँ बजाई। उस समय यहोशू
ने आदेश दिया:

“अब निनाद करो! यहोवा ने यह नगर तुम्हें दिया है!
17नगर और इसमें की हर एक चीज़ यहोवा की हैं।*
केवल वेश्या राहाब और उसके घर में रहने वाले लोग
ही जीवित रहेंगे। ये मारे नहीं जाने चाहिए क्योंकि राहाब
ने उन दो गुप्तचरों की सहायता की थी, जिन्हें हमने
भेजा था।

18“यह भी याद रखो कि हमें इसके अतिरिक्त सभी
चीज़ों को नष्ट करनी हैं। उन चीज़ों को मत लो। यदि
तुम उन चीज़ों को लेते हो और अपने डेरों में लाते हो

हर एक चीज़ यहोवा की है इसका प्राय: यह अर्थ होता था कि ये चीज़ें मन्दिर के कोषागार में जमा होती थीं या नष्ट कर दी जाती थीं ताकि अन्य लोग उनका प्रयोग न करें।

तो तुम स्वयं नष्ट हो जाओगे और तुम अपने सभी
इस्राएली लोगों पर भी मुसीबत लाओगे **19**सभी चाँदी,
सोने, काँसे तथा लोहे की बनी चीज़ें यहोवा की हैं। ये
चीज़ें यहोवा के खजाने में ही रखी जानी चाहिए।"

20याजकों ने तुरहियाँ बजाई। लोगों ने तुरहियों की
आवाज सुनी और ललकार लगानी आरम्भ की। दीवारें
गिरीं और लोग सीधे नगर में दौड़ पड़े। इस प्रकार
इस्राएल के लोगों ने नगर को हराया। **21**लोगों ने नगर
की हर एक चीज़ नष्ट की। उन्होंने वहाँ के हर एक
जीवित प्राणी को नष्ट किया। उन्होंने युवक, वृद्ध, युवतियों,
वृद्धाओं, भेड़ों और गधों को मार डाला।

22यहोशू ने उन व्यक्तियों से बातें की जिन्हें उसने
प्रदेश के विषय में पता लगाने भेजा था। यहोशू ने कहा,
"उस वेश्या के घर जाओ। उसे बाहर लाओ और उन
लोगों को भी बाहर लाओ जो उसके साथ हैं। यह तुम
इसलिए करो कि तुमने उसे वचन दिया है।"

23दोनों व्यक्ति घर में गए और राहाब को बाहर लाए।
उन्होंने उसके पिता, माँ, भाईयों, उसके समूचे परिवार
और उसके साथ के अन्य सभी को बाहर निकाला।
उन्होंने इस्राएल के डेरे के बाहर इन सभी लोगों को
सुरक्षित रखा।

24तब इस्राएल के लोगों ने सारे नगर को जला दिया।
उन्होंने सोना, चाँदी, काँसा, और लोहे से बनी चीज़ों के
अतिरिक्त सभी चीज़ों को जला दिया। ये चीज़ें यहोवा के
ख़जाने के लिए बचा ली गई। **25**यहोशू ने राहाब, उसके
परिवार और उसके साथ के व्यक्तियों को बचा लिया।
यहोशू ने उन्हें जीवित रहने दिया क्योंकि राहाब ने उन
लोगों की सहायता की थी, जिन्हें उसने यरीहो में जासूसी
करने के लिए भेजा था। राहाब अब भी इस्राएल के
लोगों में अपने वंशजों के रूप में रहती है।

26उस समय, यहोशू ने शपथ के साथ महत्वपूर्ण बातें
कहीं उसने कहा:

"कोई व्यक्ति जो यरीहो नगर के पुन:निर्माण का
प्रयत्न करेगा यहोवा की ओर से खतरे में पड़ेगा। जो
व्यक्ति नगर की नींव रखेगा, अपने पहलौठे पुत्र को
खोएगा। जो व्यक्ति फाटक लगाएगा वह अपने सबसे
छोटे पुत्र को खोएगा।"

27यहोवा, यहोशू के साथ था और इस प्रकार यहोशू
पूरे देश में प्रसिद्ध हो गया।

आकान का पाप

7 किन्तु इस्राएल के लोगों ने यहोवा की आज्ञा नहीं
मानी। यहूदा परिवार समूह का एक व्यक्ति कर्म्मी
का पुत्र और जब्दी का पौत्र जिसका नाम आकान था।
आकान ने वे कुछ चीज़ें रख ली जिन्हें नष्ट करना था।
इसलिए यहोवा इस्राएल के लोगों पर बहुत क्रोधित
हुआ।

2जब वे यरीहो को पराजित कर चुके तब यहोशू ने
कुछ लोगों को ऐ भेजा। ऐ, बेतेल के पूर्व बेतावेन के
पास था। यहोशू ने उनसे कहा, "ऐ जाओ और उस क्षेत्र
की कमजोरियों को देखो।" इसलिए लोग उस देश में
जासूसी करने गए।

3बाद में वे व्यक्ति यहोशू के पास लौटकर आए।
उन्होंने कहा, "ऐ कमजोर क्षेत्र है। हम लोगों को उन्हें
हराने के लिए अपने सभी लोगों की आवश्यकता नहीं
पड़ेगी। वहाँ लड़ने के लिए दो हजार या तीन हजार
व्यक्तियों को भेजो। अपने सभी लोगों को उपयोग करने
की आवश्यकता वहाँ नहीं है। वहाँ पर थोड़े ही व्यक्ति
हम लोगों के विरुद्ध लड़ने वाले हैं।"

4-5इसलिए लगभग तीन हजार व्यक्ति ऐ गए। किन्तु ऐ
के लोगों ने लगभग छत्तीस इस्राएल के व्यक्तियों को मार
गिराया और इस्राएल के लोग भाग खड़े हुए। ऐ के लोगों
ने नगर–द्वार से लगातार पत्थर की खदानों तक पीछा
किया। इस प्रकार ऐ के लोगों ने उन्हें बुरी तरह पीटा।

जब इस्राएल के लोगों ने यह देखा तो वे बहुत भयभीत
हो उठे और साहस छोड़ बैठे। **6**जब यहोशू ने इसके बारे
में सुना तो उसने अपने वस्त्र फाड़ डाले। वह पवित्र
सन्दूक के सामने जमीन पर लेट गया। यहोशू वहाँ शाम
तक पड़ा रहा। इस्राएल के नेताओं ने भी यही किया।
उन्होंने अपने सिरों पर धूलि डाली।

7तब यहोशू ने कहा, "यहोवा, मेरे स्वामी! तू हमारे
लोगों को यरदन नदी के पार लाया। किन्तु तू हमें इतनी
दूर क्यों लाया और तब एमोरी लोगों द्वारा हमें क्यों नष्ट
होने देता है? हम लोग यरदन नदी के दूसरे तट पर
ठहरे रहते और सन्तुष्ट रहते। **8**मेरे यहोवा, मैं शपथ
पूर्वक कहता हूँ कि अब ऐसा कुछ नहीं है जिसे मैं
तुझसे कह सकूँ। इस्राएल ने शत्रुओं के सामने सर्मपण
कर दिया है। **9**कनानी और इस देश के सभी लोग वह
सुनेंगे जो हुआ, तब वे हम लोगों के विरुद्ध आएंगे और
हम सभी को मार डालेंगे। तब तू अपने महान नाम की
रक्षा के लिये क्या करेगा?"

10यहोवा ने यहोशू से कहा, "खड़े हो जाओ। तुम मुँह
के बल क्यों गिरे हो? **11**इस्राएल के लोगों ने मेरे विरुद्ध
पाप किया। उन्होंने मेरी उस वाचा को तोड़ा, जिसके
पालन का आदेश मैंने दिया था। उन्होंने वे कुछ चीज़ें
लीं जिन्हें नष्ट करने का आदेश मैंने दिया है। उन्होंने
मेरी चोरी की है। उन्होंने झूठी बात कही है। उन्होंने वे
चीज़ें अपने पास रखी हैं। **12**यही कारण है कि इस्राएल
की सेना युद्ध से मुँह मोड़ कर भाग खड़ी हुई। यह
उनकी बुराई के कारण हुआ। उन्हें नष्ट कर देना
चाहिए। मैं तुम्हारी सहायता नहीं करता रहूँगा। मैं तब
तक तुम्हारे साथ नहीं रहसकूँगा जब तक तुम यह नहीं
करते। तुम्हें उस हर चीज़ को नष्ट करना चाहिए, जिसे
मैंने नष्ट करने का आदेश दिया है।

13"अब तुम जाओ और लोगों को पवित्र करो। लोगों
से कहो, 'वे अपने को पवित्र करें। कल के लिये तैयार
हो जाओ। इस्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है कि
कुछ लोगों ने वे चीज़ें अपने पास रखी हैं, जिन्हें मैंने
नष्ट करने का आदेश दिया था। तुम तब तक अपने
शत्रुओं को पराजित करने योग्य नहीं होओगे, जब तक
तुम उन चीज़ों को फेंक नहीं देते। 14कल प्रात: तुम
सभी को यहोवा के सामने खड़ा होना होगा। सभी परिवार
समूह यहोवा के सामने पेश होंगे। यहोवा एक परिवार
समूह को चुनेगा। तब केवल वही परिवार समूह यहोवा
के सामने खड़ा होगा। तब उस परिवार समूह में से
यहोवा एक वंश को चुनेगा। तब बस वही वंश यहोवा
के सामने खड़ा होगा। तब यहोवा उस वंश के प्रत्येक
परिवार की परख करेगा। तब यहोवा उस वंश में से
एक परिवार को चुनेगा। तब वह परिवार अकेले यहोवा
के सामने खड़ा होगा। तब यहोवा उस परिवार के हर
पुरुष की जाँच करेगा।

15वह व्यक्ति जो इन चीज़ों के साथ पाया जाएगा जिन्हें
हमें नष्ट कर देना चाहिए था, पकड़ लिया जाएगा। तब
वह व्यक्ति आग में झोंककर नष्ट कर दिया जाएगा
और उसके साथ उसकी हर एक चीज़ नष्ट कर दी
जाएगी। उस व्यक्ति ने यहोवा के उस वाचा को तोड़ा है।
उसने इस्राएल के लोगों के प्रति बहुत ही बुरा काम
किया है।'"

16अगली सुबह यहोशू इस्राएल के सभी लोगों को
यहोवा के सामने ले गया। सारे परिवार समूह यहोवा के
सामने खड़े हो गए। यहोवा ने यहूदा परिवार समूह को
चुना। 17तब सभी यहूदा परिवार समूह यहोवा के सामने
खड़े हुए। यहोवा ने जेरह वंश को चुना। तब जेरह वंश
के सभी लोग यहोवा के सामने खड़े हुए। इन में से जब्दी
का परिवार चुना गया। 18तब यहोशू ने इस परिवार के
सभी पुरुषों को यहोवा के सामने आने को कहा। यहोवा
ने कर्म्मी के पुत्र आकान को चुना। (कर्म्मी जब्दी का
पुत्र था और जब्दी जेरह का पुत्र था।)

19तब यहोशू ने आकान से कहा, "पुत्र, तुम्हें अपनी
प्रार्थना करनी चाहिए। इस्राएल के यहोवा परमेश्वर का
सम्मान करना चाहिए और उससे तुम्हें अपने पापों को
स्वीकार करना चाहिए। मुझे बताओ कि तुमने क्या
किया? मुझसे कुछ छिपाने की कोशिश न करो!"

20आकान ने उत्तर दिया, "यह सत्य है! मैंने इस्राएल
के यहोवा परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है। मैंने जो
किया है वह यह है: 21हम लोगों ने यरीहो नगर को
इसकी सभी चीज़ों के साथ अपने अधिकार में लिया।
उन चीज़ों में मैंने शिनार का एक सुन्दर ओढ़ना और
लगभग पाँच पौण्ड चाँदी और एक पौण्ड सोना देखा। मैं
इन चीज़ों को अपने लिए रखने का बहुत इच्छुक था।
इसलिए मैंने उनको लिया। तुम उन चीज़ों को मेरे तम्बू
के नीचे जमीन में गड़ा हुआ पाओगे। चाँदी ओढ़ने के
नीचे है।"

22इसलिए यहोशू ने कुछ व्यक्तियों को तम्बू में भेजा।
वे दौड़कर पहुँचे और उन चीज़ों को तम्बू में छिपा
पाया। चाँदी ओढ़ने के नीचे थी। 23वे व्यक्ति उन चीज़ों
को तम्बू से बाहर लाए। वे उन चीज़ों को यहोशू और
इस्राएल के सभी लोगों के पास ले गए। उन्होंने उसे
यहोवा के सामने जमीन पर ला पटका।

24तब यहोशू और सभी लोग जेरह के पुत्र आकान
को आकोर की घाटी में ले गए। उन्होंने चाँदी, ओढ़ना,
सोना, आकान के पुत्रियों–पुत्रों, उसके मवेशियों, उसके
गधों, भेड़ों, तम्बू और उसकी सभी चीज़ों को भी लिया।
इन सभी चीज़ों को वे आकान के साथ आकोर की
घाटी में ले गए। 25तब यहोशू ने कहा, "तुमने हमारे
लिये ये सब मुसीबतें क्यों की? अब यहोवा तुम पर
मुसीबत लाएगा!" तब सभी लोगों ने आकान और उसके
परिवार पर तब तक पत्थर फेंके जब तक वे मर नहीं
गए। उन्होंने उसके परिवार को भी मार डाला। तब
लोगों ने उन्हें और उसकी सभी वस्तुओं को जला दिया।
26आकान को जलाने के बाद उसके शरीर पर उन्होंनें
कई शिलायें रखीं। वे शिलायें आज भी वहाँ हैं। इस
तरह यहोवा ने आकान पर विपत्ति ढाई। यही कारण है
कि वह स्थान आकोर घाटी कहा जाता है। इसके बाद,
यहोवा लोगों से अप्रसन्न नहीं रहा।

ऐ नष्ट हुआ

8 तब यहोवा ने यहोशू से कहा, "डरो नहीं। साहस न
छोड़ो। अपने सभी सैनिकों को ऐ ले जाओ। मैं ऐ
के राजा को हराने में तुम्हारी सहायता करूँगा। मैं
उसकी प्रजा को, उसके नगर को और उसकी धरती
को तुम्हें दे रहा हूँ। 2तुम ऐ और उसके राजा के साथ
वही करोगे, जो तुमने यरीहो और उसके राजा के साथ
किया। केवल इस बार तुम नगर की सारी सम्पत्ति और
पशु–धन लोगे और अपने पास रखोगे। फिर तुम अपने
लोगों के साथ उसका बँटवारा करोगे। अब तुम अपने
कुछ सैनिकों को नगर के पीछे छिपने का आदेश दो।"

3इसलिए यहोशू अपनी पूरी सेना को ऐ की ओर ले
गया। तब यहोशू ने अपने सर्वोत्तम तीस हजार सैनिक
चुने। उसने इन्हें रात को बाहर भेज दिया। 4यहोशू ने
उनको यह आदेश दिया: "मैं जो कह रहा हूँ, उसे
सावधानी से सुनो। तुम्हें नगर के पीछे के क्षेत्र में छिपे
रहना चाहिए। आक्रमण के समय की प्रतीक्षा करो।
नगर से बहुत दूर न जाओ। सावधानी से देखते रहो
और तैयार रहो। 5मैं सैनिकों को अपने साथ नगर की
ओर आक्रमण के लिये ले जाऊँगा। हम लोगों के विरुद्ध
लड़ने के लिये नगर के लोग बाहर आएंगे। हम लोग
मुड़ेंगे और पहले की तरह भाग खड़े होंगे। 6वे लोग

नगर से दूर तक हमारा पीछा करेंगे। वे लोग यह सोचेंगे
कि हम लोग उनसे पहले की तरह भाग रहे हैं। इसलिए
हम लोग भागेंगे वे तब तक हमारा पीछा करते रहेंगे,
जब तक हम उन्हें नगर से बहुत दूर न ले जायेंगे। 7तब
तुम अपने छिपने के स्थान से आओगे और नगर पर
अधिकार कर लोगे। तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें
जीतने की शक्ति देगा। 8तुम्हें वही करना चाहिये, जो
यहोवा कहता है। मुझ पर दृष्टि रखो। मैं तुम्हें आक्रमण
का आदेश दूँगा। तुम जब नगर पर अधिकार कर लो
तब उसे जला दो।"

9तब यहोशू ने उन सैनिकों को उनके छिपने की
जगहों पर भेज दिया और प्रतीक्षा करने लगा। वे बेतेल
और ऐ के बीच की एक जगह गए। यह जगह ऐ के
पश्चिम में थी। यहोशू अपने लोगों के साथ रात भर
वहीं रुका रहा।

10अगले सवेरे यहोशू ने सभी को इकट्ठा किया।
तब यहोशू और इस्राएल के प्रमुख सैनिकों को ऐ ले
गए। 11यहोशू के सभी सैनिकों ने ऐ पर आक्रमण
किया। वे नगर द्वार के सामने रुके। सेना ने अपना डेरा
नगर के उत्तर में डाला। सेना और ऐ के बीच में एक
घाटी थी।

12यहोशू ने लगभग पाँच हजार हजार सैनिकों को
चुना। यहोशू ने इन्हें नगर के पश्चिम में छिपने के लिये
उस जगह भेजा, जो बेतेल और ऐ के बीच में थी। 13इस
प्रकार यहोशू ने सैनिकों को युद्ध के लिये तैयार किया
था। मुख्य डेरा नगर के उत्तर में था। दूसरे सैनिक
पश्चिम में छिपे थे। उस रात यहोशू घाटी में उतरा।

14बाद मे, ऐ के राजा ने इस्राएल की सेना को देखा।
राजा और उसके लोग उठे और जल्दी से इस्राएल की
सेना से लड़ने के लिये आगे बढ़े। ऐ का राजा नगर के
पूर्व यरदन घाटी की ओर बाहर गया। इसीलिए वह यह
न जान सका कि नगर के पीछे सैनिक छिपे थे।

15यहोशू और इस्राएल के सभी सैनिकों ने ऐ की सेना
द्वारा अपने को पीछे धकेलने दिया। यहोशू और उसके
सैनिकों ने पूर्व में मरुभूमि की ओर दौड़ना आरम्भ
किया। 16नगर के लोगों ने शोर मचाना आरम्भ किया
और उन्होंने यहोशू और उसके सैनिकों का पीछा करना
आरम्भ किया। सभी लोगों ने नगर छोड़ दिया। 17ऐ और
बेतेल के सभी लोगों ने इस्राएल की सेना का पीछा
किया। नगर खुला छोड़ दिया गया, कोई भी नगर की
रक्षा के लिए नहीं रहा।

18यहोवा ने यहोशू से कहा, "अपने भाले को ऐ नगर
की ओर किये रहो। मैं यह नगर तुमको दूँगा।" इसलिए
यहोशू ने अपने भाले को ऐ नगर की ओर किया।
19इस्राएल के छिपे सैनिकों ने इसे देखा। वे शीघ्रता से
अपने छिपने के स्थानों से निकले और नगर की ओर
तेजी से चल पड़े। वे नगर में घुस गए और उस पर
अधिकार कर लिया। तब सैनिकों ने नगर को जलाने
के लिये आग लगानी आरम्भ की।

20ऐ के लोगों ने मुड़कर देखा और अपने नगर को
जलता पाया। उन्होंने धुआँ आकाश में उठते देखा।
इसलिए उन्होंने अपना बल और साहस खो दिया। उन्होंने
इस्राएल के लोगों का पीछा करना छोड़ा। इस्राएल के
लोगों ने भागना बन्द किया। वे मुड़े और ऐ के लोगों से
लड़ने चल पड़े। ऐ के लोगों के लिये भागने की कोई
सुरक्षित जगह न थी। 21यहोशू और उसके सैनिकों ने
देखा कि उसकी सेना ने नगर पर अधिकार कर लिया
है। उन्होंने नगर से धुआँ उठते देखा। इस समय ही
उन्होंने भागना बन्द किया। वे मुड़े और ऐ के सैनिकों से
युद्ध करने के लिये दौड़ पड़े। 22तब वे सैनिक जो छिपे
थे, युद्ध में सहायता के लिये नगर से बाहर निकल
आए। ऐ के सैनिकों के दोनों ओर इस्राएल के सैनिक
थे, ऐ के सैनिक जाल में फँस गए थे। इस्राएल ने उन्हें
पराजित किया। वे तब तक लड़ते रहे जब तक ऐ का
कोई भी पुरुष जीवित न रहा, उनमें से कोई भाग न
सका। 23किन्तु ऐ का राजा जीवित छोड़ दिया गया।
यहोशू के सैनिक उसे उसके पास लाए।

युद्ध का विवरण

24युद्ध के समय, इस्राएल की सेना ने ऐ के सैनिकों
को मैदानों और मरुभूमि में धकेल दिया और इस
प्रकार इस्राएल की सेना ने ऐ से सभी सैनिकों को मारने
का काम मैदानों और मरुभूमि में पूरा किया। तब
इस्राएल के सभी सैनिक ऐ को लौटे। तब उन्होंने उन
लोगों को जो नगर में जीवित थे, मार डाला। 25उस दिन
ऐ के सभी लोग मारे गए। वहाँ बारह हजार स्त्री पुरुष
थे। 26यहोशू ने अपने भाले को, ऐ की ओर अपने लोगों
को नगर नष्ट करने का संकेत को बनाये रखा और
यहोशू ने संकेत देना तब तक नहीं बन्द किया जब तक
नगर के सभी लोग नष्ट नहीं हो गए। 27इस्राएल के
लोगों ने जानवरों और नगर की चीज़ों को अपने पास
रखा। यह वही बात थी जिसे करने को यहोवा ने यहोशू
को आदेश देते समय,कहा था।

28तब यहोशू ने ऐ नगर को जला दिया। वह नगर सूनी
चट्टानों का ढेर बन गया। यह आज भी वैसा ही है।
29यहोशू ने ऐ के राजा को एक पेड़ पर फाँसी देकर
लटका दिया। उसने उसे शाम तक पेड़ पर लटके रहने
दिया। सूरज ढले यहोशू ने राजा के शव को पेड़ से
उतारने की आज्ञा दी। उन्होंने उसके शरीर को नगर
द्वार पर फेंक दिया और उसके शरीर को कई शिलाओं
से ढक दिया। शिलाओं का वह ढेर आज तक वहाँ है।

आशीर्वादों तथा अभिशापों का पढ़ा जाना

30तब यहोशू ने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के लिए
एक वेदी बनाई। उसने यह वेदी एबाल पर्वत पर बनायी।

31यहोवा के सेवक मूसा ने इस्राएल के लोगों को बताया
था कि वेदियाँ कैसे बनाई जायें। इसलिए यहोशू ने वेदी
को वैसे ही बनाया जैसा मूसा के व्यवस्था की किताब में
समझाया गया था। वेदी बिना कटे पत्थरों से बनी थी।
उन पत्थरों पर कभी किसी औजार का उपयोग नहीं
हुआ था। उन्होंने उस वेदी पर यहोवा को होमबलि और
मेलबलि चढ़ाई।

32उस स्थान पर यहोशू ने मूसा के नियमों को पत्थरों
पर लिखा। उसने यह इस्राएल के सभी लोगों के देखने
के लिये किया। 33अग्रज (नेता), अधिकारी, न्यायाधीश
और इस्राएल के सभी लोग पवित्र सन्दूक के चारों ओर
खड़े थे। वे उन लेवीवंशी याजकों के सामने खड़े थे, जो
यहोवा के साक्षीपत्र के पवित्र सन्दूक को ले चलते थे।
इस्राएली और गैर इस्राएली सभी लोग वहाँ खड़े थे। आधे
लोग एबाल पर्वत के सामने खड़े थे और अन्य आधे
लोग गिरिज्जीम पर्वत के सामने खड़े थे। यहोवा के
सेवक मूसा ने उनसे ऐसा करने को कहा था। मूसा ने
उनसे ऐसा करने को इस आशीर्वाद के लिए कहा था।

34तब यहोशू ने व्यवस्था के सब वचनों को पढ़ा।
यहोशू ने आशीर्वाद और अभिशाप पढ़े। उसने सभी
कुछ उस तरह पढ़ा, जिस तरह वह व्यवस्था की किताब
में लिखा था। 35इस्राएल के सभी लोग वहाँ इकट्ठे थे।
सभी स्त्रियाँ, बच्चे और इस्राएल के लोगों के साथ रहने
वाले सभी विदेशी वहाँ इकट्ठे थे और यहोशू ने मूसा
द्वारा दिये गये हर एक आदेश को पढ़ा।

गिबोनियों द्वारा यहोशू को छला जाना

9 यरदन नदी के पश्चिम के हर एक राजा ने इन
घटनाओं के विषय में सुना। ये हित्ती, एमोरी, कनानी,
परिज्जी, हिव्वी, यबूसी लोगों के राजा थे। वे पहाड़ी
प्रदेशों और मैदानों में रहते थे। वे लबानोन तक भूमध्य
सागर के तटों के साथ भी रहते थे। 2वे सभी राजा
इकट्ठे हुए। उन्होंने यहोशू और इस्राएल के लोगों के
साथ युद्ध की योजना बनाई।

3गिबोन के लोगों ने उस ढंग के बारे में सुना, जिससे
यहोशू ने यरीहो और ऐ को हराया था। 4इसलिये उन्होंने
इस्राएल के लोगों को धोखा देने का निश्चय किया।
उनकी योजना यह थी: उन्होंने दाखमधु के उन चमड़े
के पुराने पीपों को अपने जानवरों पर लादा। उन्होंने
अपने जानवरों के ऊपर पुरानी बोरियाँ डालीं, जिससे वे
ऐसे दिखाई पड़ें मानों वे बहुत दूर की यात्रा करके आये
हों। 5लोगों ने पुराने जूते पहन लिये। उन पुरुषों ने पुराने
वस्त्र पहन लिये। पुरुषों ने कुछ बासी, सूखी, खराब
रोटियाँ भी ले लीं। इस तरह वे पुरुष ऐसे लगते थे मानों
उन्होंने बहुत दूर के देश से यात्रा की हो। 6तब ये पुरुष
इस्राएल के लोगों के डेरों के पास गए। यह डेरा गिलगाल
के पास था। वे पुरुष यहोशू के पास गए और उन्होंने
उससे कहा, "हम लोग एक बहुत दूर के देश से आए
हैं। हम लोग तुम्हारे साथ शान्ति की सन्धि करना
चाहते हैं।"

7इस्राएल के लोगों ने इन हिव्वी लोगों से कहा, "संभव
है तुम लोग हमें धोखा दे रहे हो। संभव है तुम हमारे
करीब के ही रहने वाले हो। हम तब तक शान्ति की
सन्धि नहीं कर सकते जब तक हम यह नहीं जान लेते
कि तुम कहाँ से आए हो।"

8हिव्वी लोगों ने यहोशू से कहा, "हम आपके सेवक
हैं।" किन्तु यहोशू ने पूछा, "तुम कौन हो? तुम कहाँ से
आए हो?"

9पुरुषों ने उत्तर दिया, "हम आपके सेवक हैं। हम
एक बहुत दूर के देश से आए हैं। हम इसलिए आए कि
हमने तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की महान शक्ति के
विषय में सुना है। हम लोगों ने वह भी सुना है, जो उसने
किया है। हम लोगों ने वह सब कुछ सुना है, जो उसने
मिस्र में किया। 10और हम लोगों ने यह भी सुना कि
उसने यरदन नदी के पूर्व दो एमोरी लोगों के राजाओं
को हराया। हेश्बोन के राजा सीहोन और अशतारोत के
देश में बाशान के राजा ओग थे। 11इसलिए हमारे अग्रज
(नेताओं) और हमारे लोगों ने हमसे कहा, 'अपनी यात्रा
के लिये काफी भोजन ले लो। जाओ और इस्राएल के
लोगों से बातें करो। उनसे कहो, "हम आपके सेवक हैं।
हम लोगों के साथ शान्ति की सन्धि करो।"'

12"हमारी रोटियाँ देखो! जब हम लोगों ने घर छोड़ा
तब ये गरम और ताजी थीं। किन्तु अब आप देखते हैं
कि ये सूखी और पुरानी हैं। 13हम लोगों के मशकों को
देखो! जब हम लोगों ने घर छोड़ा तो ये नयी और
दाखमधु से भरी थीं। आप देख सकते हैं कि ये फटी
और पुरानी हैं। हमारे कपड़ों और चप्पलों को देखो!
आप देख सकते है कि लम्बी यात्रा ने हमारी चीज़ों को
खराब कर दिया है।"

14इस्राएल के लोग जानना चाहते थे कि ये व्यक्ति
क्या सच बोल रहे हैं। इसलिए उन्होंने रोटियों को चखा,
किन्तु उन्होंने यहोवा से नहीं पूछा कि उन्हें क्या करना
चाहिये। 15यहोशू उनके साथ शान्ति–सन्धि करने के
लिये तैयार हो गया। वह उनको जीवित छोड़ने को
तैयार हो गया। इस्राएल के प्रमुखों ने यहोशू के वचन
का समर्थन करदिया। 16तीन दिन बाद, इस्राएल के
लोगों को पता चला कि वे लोग उनके डेरे के बहुत
करीब रहते हैं। 17इसलिए इस्राएल के लोग वहाँ गये,
जहाँ वे लोग रहते थे। तीसरे दिन, इस्राएल के लोग
गिबोन, कपीरा, बेरोत और किर्यत्यारीम नगरों को
आए। 18किन्तु इस्राएल की सेना ने इन नगरों के विरुद्ध
लड़ने का प्रयत्न नहीं किया। वे उन लोगों के साथ
शान्ति–सन्धि कर चुके थे। उन्होंने उन लोगों के साथ
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के सामने प्रतिज्ञा की थी।

सभी लोग उन प्रमुखों के विरुद्ध शिकायत कर रहे
थे, जिन्होंने सन्धि की थी। 19किन्तु प्रमुखों ने उत्तर
दिया, "हम लोगों ने प्रतिज्ञा की है। हम लोगों ने इस्राएल
के परमेश्वर यहोवा के सामने प्रतिज्ञा की है। हम
उनके विरुद्ध अब लड़ नहीं सकते। 20हम लोगों को
केवल इतना ही करना चाहिये। हम उन्हें जीवित अवश्य
रहने दें। हम उन्हें चोट नहीं पहुँचा सकते क्योंकि
उनके साथ की गई प्रतिज्ञा को तोड़ने पर यहोवा का
क्रोध हम लोगों के विरुद्ध होगा। 21इसलिए इन्हें जीवित
रहने दो। यह हमारे सेवक होंगे। वे हमारे लिये लकड़ियाँ
काटेंगे और हम सबके लिए पानी लाएंगे।" इस प्रकार
प्रमुखों ने इन लोगों के साथ की गई अपनी शान्ति-सन्धि
को नहीं तोड़ा।

22यहोशू ने गिबोनी लोगों को बुलाया। उसने कहा,
"तुम लोगों ने हमसे झूठ क्यों बोला? तुम्हारा प्रदेश हम
लोगों के डेरे के पास था। किन्तु तुम लोगों ने कहा कि
हम लोग बहुत दूर देश के हैं। 23अब तुम्हारे लोगों को
बहुत कष्ट होगा। तुम्हारे सभी लोग दास होंगे उन्हें
परमेश्वर के निवास* के लिये लकड़ी काटनी और
पानी लाना पड़ेगा।"

24गिबोनी लोगों ने उत्तर दिया, "हम लोगों ने आपसे
झूठ बोला क्योंकि हम लोगों को डर था कि आप कहीं
हमें मार न डालें। हम लोगों ने सुना कि परमेश्वर ने
अपने सेवक मूसा को यह आदेश दिया था कि वे तुम्हें
यह सारा प्रदेश दे दे और परमेश्वर ने तुमसे उस प्रदेश
में रहने वाले सभी लोगों को मार डालने के लिये कहा।
यही कारण है कि हम लोगों ने आपसे झूठ बोला।
25अब हम आपके सेवक हैं। आप हमारा उपयोग जैसा
ठीक समझें, कर सकते हैं।"

26इस प्रकार गिबोन के लोग दास हो गए। किन्तु
यहोशू ने उनका जीवन बचाया। यहोशू ने इस्राएल के
लोगों को उन्हें मारने नहीं दिया। 27यहोशू ने गिबोन के
लोगों को इस्राएल के लोगों का दास बनने दिया। वे
इस्राएल के लोगों और यहोवा के चुने गए जिस किसी
भी स्थान की वेदी के लिए लकड़ी काटते और पानी
लाते थे। वे लोग अब तक दास हैं।

वह दिन जब सूर्य स्थिर रहा

10 इस समय अदोनीसेदेक यरूशलेम का राजा था।
इस राजा ने सुना कि यहोशू ने ऐ को जीता है
और इसे पूरी तरह नष्ट कर दिया है। राजा को यह पता
चला कि यहोशू ने यरीहो और उसके राजा के साथ भी
यही किया है। राजा को यह भी जानकारी मिली कि
गिबोन ने इस्राएल के साथ, शान्ति-सन्धि कर ली है
और वे लोग यरूशलेम के बहुत निकट रहते थे। 2अत:
अदोनीसेदेक और उसके लोग इन घटनाओं के कारण
बहुत भयभीत थे। गिबोन ऐ की तरह छोटा नगर नहीं
था। गिबोन एक शाही नगर जैसा बहुत बड़ा नगर* था।
और नगर के सभी पुरुष अच्छे योद्धा थे। अत: राजा
भयभीत था। 3यरूशलेम के राजा अदोनीसेदेक ने हेब्रोन
के राजा होहाम से बातें की। उसने यर्मूत के राजा
पिराम, लाकीश के राजा यापी, एग्लोन के राजा दबीर
से भी बातचीत की। यरूशलेम के राजा ने इन व्यक्तियों
से प्रार्थना की, 4"मेरे साथ आएं और गिबोन पर आक्रमण
करने में मेरी सहायता करें। गिबोन ने यहोशू और
इस्राएल के लोगों के साथ शान्ति-सन्धि कर ली है।"

5इस प्रकार पाँच एमोरी राजाओं ने सेनाओं को मिलाया।
(ये पाँचों यरूशलेम के राजा, हेब्रोन के राजा, यर्मूत के
राजा, लाकीश के राजा, और एग्लोन के राजा थे।) वे
सेनायें गिबोन गईं। सेनाओं ने नगर को घेर लिया और
इसके विरुद्ध युद्ध करना आरम्भ किया।

6गिबोन नगर में रहने वाले लोगों ने गिलगाल के डेरे
में यहोशू को खबर भेजी: "हम तुम्हारे सेवक हैं! हम
लोगों को अकेले न छोड़ो। आओ और हमारी रक्षा
करो! शीघ्रता करो! हमें बचाओ! पहाड़ी प्रदेशों के सभी
एमोरी राजा अपनी सेनायें एक कर चुके हैं। वे हमारे
विरुद्ध युद्ध कर रहे हैं।"

7इसलिए यहोशू गिलगाल से अपनी पूरी सेना के साथ
युद्ध के लिये चला। यहोशू के उत्तम योद्धा उसके साथ
थे। 8यहोवा ने यहोशू से कहा, "उन सेनाओं से डरो
नहीं। मैं तुम्हें उनको पराजित करने दूँगा। उन सेनाओं
में से कोई भी तुमको हराने में समर्थ नहीं होगा।"

9यहोशू और उसकी सेना रात भर गिबोन की ओर
बढ़ती रही। शत्रु को पता नहीं था कि यहोशू आ रहा है।
इसलिए जब उसने आक्रमण किया तो वे चौंक पड़े।

10यहोवा ने उन सेनाओं को, इस्राएल की सेनाओं
द्वारा आक्रमण के समय, किंकर्तव्य-विमूढ़ कर दिया।
इसलिये इस्राएलियों ने उन्हें हरा कर भारी विजय पायी।
इस्राएलियों ने पीछा करके उन्हें गिबोन से खदेड़ दिया।
उन्होंने बेथोरोन तक जाने वाली सड़क तक उनका
पीछा किया। इस्राएल की सेना ने अजेका और मक्केदा
तक के पूरे रास्ते में पुरुषों को मारा। 11इस्राएल की
सेना ने बेथोरोन अजेका को जाने वाली सड़क तक
शत्रुओं का पीछा किया। जब वे शत्रु का पीछा कर रहे
थे तो यहोवा ने भारी ओलों की वर्षा आकाश से की।
बहुत से शत्रु इन भारी ओलों से मर गए। इन ओलों से
उससे अधिक शत्रु मारे गए जितने इस्राएलियों ने अपनी
तलवारों से मारे थे।

12उस दिन यहोवा ने इस्राएलियों द्वारा एमोरी लोगों को
पराजित होने दिया और उस दिन यहोशू इस्राएल के

परमेश्वर का निवास इसका अर्थ परमेश्वर का परिवार (इस्राएल) या पवित्र तम्बू या मन्दिर हो सकता है।

बड़ा नगर दृढ़ और अच्छी प्रकार सुरक्षित नगर जो समीप के छोटे नगरों पर शासन करते थे।

सभी लोगों के सामने खड़ा हुआ और उसने यहोवा से
कहा: "हे सूर्य, गिबोन के आसमान में खड़े रह और हट
नहीं। हे चन्द्र, तू अय्यालोन की घाटी के ऊपर आसमान
में खड़े रह और हट नहीं।"
13सूर्य स्थिर हो गया और चन्द्रमा ने भी तब तक
चलना छोड़ दिया जब तक लोगों ने अपने शत्रुओं को
पराजित नहीं कर दिया। यह सचमुच हुआ, यह कथा
याशार की किताब में लिखी है। सूर्य आसमान के मध्य
रुका। यह पूरे दिन वहाँ से नहीं हटा। 14ऐसा उस दिन
के पहले किसी भी समय कभी नहीं हुआ था और तब
से अब तक कभी नहीं हुआ है। वही दिन था, जब
यहोवा ने मनुष्य की प्रार्थना मानी। वास्तव में यहोवा
इस्राएलियों के लिये युद्ध कर रहा था!
15इसके बाद, यहोशू और उसकी सेना गिलगाल के
डेरे में वापस हुई। 16युद्ध के समय पाँचों राजा भाग गए।
वे मक्केदा के निकट गुफा में छिप गए। 17किन्तु किसी
ने पाँचों राजाओं को गुफा में छिपे पाया। यहोशू को इस
बारे में पता चला। 18यहोशू ने कहा, "गुफा को जाने
वाले द्वार को बड़ी शिलाओं से ढक दो। कुछ पुरुषों को
गुफा की रखवाली के लिये वहाँ रखो। 19किन्तु वहाँ
स्वयं न रहो। शत्रु का पीछा करते रहो। उन पर पीछे से
आक्रमण करते रहो। शत्रुओं को अपने नगर तक
सुरक्षित न पहुँचने दो। तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें
उन पर विजय दी है।"
20इस प्रकार यहोशू और इस्राएल के लोगों ने शत्रु को
मार डाला। किन्तु शत्रुओं में से जो कुछ अपने सुदृढ़
परकोटों से घिरे नगरों में पहुँच जाने में सफल हो गए
और छिप गए। वे व्यक्ति नहीं मारे गए। 21युद्ध के बाद,
यहोशू के सैनिक मक्केदा में उनके पास आए। उस
प्रदेश में किसी भी जाति के लोगों में से कोई भी इतना
साहसी नहीं था कि वह लोगों के विरूद्ध कुछ कह
सके।
22यहोशू ने कहा, "गुफा के द्वार को रोकने वाली
शिलाओं को हटाओ। उन पाँचों राजाओं को मेरे पास
लाओ।" 23इसलिए यहोशू के लोग पाँचों राजाओं को
गुफा से बाहर लाए। ये पाँचों यरूशलेम, हेब्रोन, यर्मूत,
लाकीश और एग्लोन के राजा थे। 24अत: वे उन पाँचों
राजाओं को यहोशू के पास लाए। यहोशू ने अपने सभी
लोगों को वहाँ आने के लिये कहा। यहोशू ने सेना के
अधिकारियों से कहा, "यहाँ आओ! इन राजाओं के
गले पर अपने पैर रखो।" इसलिए यहोशू की सेना के
अधिकारी निकट आए। उन्होंने राजाओं के गले पर
अपने पैर रखे।
25तब यहोशू ने अपने सैनिकों से कहा, "दृढ़ और
साहसी बनो! डरो नहीं! मैं दिखाऊँगा कि यहोवा उन
शत्रुओं के साथ क्या करेगा, जिनसे तुम भविष्य में युद्ध
करोगे।"
26तब यहोशू ने पाँचों राजाओं को मार डाला। उसने
उनके शव पाँच पेड़ों पर लटकाया। यहोशू ने उन्हें सूरज
ढलने तक वहीं लटकते छोड़े रखा। 27सूरज ढले को
यहोशू ने अपने लोगों से शवों को पेड़ों से उतारने को
कहा। तब उन्होंने उन शवों को उस गुफा में फेंक दिया
जिसमें वे छिपे थे। उन्होंने गुफा के द्वार को बड़ी शिलाओं
से ढक दिया। जो आज तक वहाँ हैं। 28उस दिन यहोशू
ने मक्केदा को हराया। यहोशू ने राजा और उस नगर
के लोगों को मार डाला। वहाँ कोई व्यक्ति जीवित न
छोड़ा गया। यहोशू ने मक्केदा के राजा के साथ भी वही
किया जो उसने यरीहो के राजा के साथ किया था।

दक्षिणी नगरों का लिया जाना

29तब यहोशू और इस्राएल के सभी लोगों ने मक्केदा
से यात्रा की। वे लिब्ना गए और उस नगर पर आक्रमण
किया। 30यहोवा ने इस्राएल के लोगों को उस नगर और
उसके राजा को पराजित करने दिया। इस्राएल के लोगों
ने उस नगर के हर एक व्यक्ति को मार डाला। कोई
व्यक्ति जीवित नहीं छोड़ा गया और लोगों ने राजा के
साथ वही किया जो उन्होंने यरीहो के राजा के साथ
किया था।
31तब यहोशू और इस्राएल के सभी लोगों ने लिब्ना
को छोड़ा और उन्होंने लाकीश तक की यात्रा की।
यहोशू और उसकी सेना ने लिब्ना के चारों ओर डेरे
डाले और तब उन्होंने नगर पर आक्रमण किया। 32यहोवा
ने इस्राएल के लोगों द्वारा लाकीश नगर को पराजित
करने दिया। दूसरे दिन उन्होंने उस नगर को हराया।
इस्राएल के लोगों ने इस नगर के हर एक व्यक्ति को
मार डाला। यह वैसा ही था जैसा उसने लिब्ना में किया
था। 33इसी समय गेजेर का राजा होरोम लाकीश की
सहायता करने आया। किन्तु यहोशू ने उसे और उसकी
सेना को भी हराया। कोई व्यक्ति जीवित नहीं छोड़ा
गया।
34तब यहोशू और इस्राएल के सभी लोग लाकीश से
एग्लोन गए। उन्होंने एग्लोन के चारों ओर डेरे डाले
और उस पर आक्रमण किया। 35उस दिन उन्होंने नगर
पर अधिकार किया और नगर के सभी लोगों को मार
डाला। यह वैसा ही किया जैसा उन्होंने लाकीश मे किया
था।
36तब यहोशू और इस्राएल के सभी लोगों ने एग्लोन से
हेब्रोन की यात्रा की। उन्होंने हेब्रोन पर आक्रमण किया।
37उन्होंने नगर तथा हेब्रोन के निकट के सभी छोटे
उपनगरों पर अधिकार कर लिया। इस्राएल के लोगों ने
नगर के हर एक व्यक्ति को मार डाला। वहाँ कोई भी
जीवित नहीं छोड़ा गया। यह वैसा ही था जैसा उन्होंने
एग्लोन में किया था। उन्होंने नगर को नष्ट किया और
उसके सभी व्यक्तियों को मार डाला।

38तब यहोशू और इस्राएल के सभी लोग दबीर को
गए और उस नगर पर आक्रमण किया। 39उन्होंने उस
नगर, उसके राजा और दबीर के निकट के सभी
उपनगरों को जीता। उन्होंने उस नगर के सभी लोगों
को मार डाला वहाँ कोई जीवित नहीं छोड़ा गया। इस्राएल
के लोगों ने दबीर और उसके राजा के साथ वही किया
जो उन्होंने हेब्रोन और उसके राजा के साथ किया था।
यह वैसा ही था जैसा उन्होंने लिब्ना और उसके राजा
के साथ कियाथा।

40इस प्रकार यहोशू ने पहाड़ी प्रदेश नेगेव पश्चिमी
और पूर्वी पहाड़ियों और तराई के नगरों के राजाओं को
हराया। इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने यहोशू से सभी
लोगों को मार डालने को कहा था। इसलिए यहोशू ने
उन स्थानों पर किसी को जीवित नहीं छोड़ा।

41यहोशू ने कादेशबर्ने से अज्जा तक के सभी नगरों
पर अधिकार कर लिया। उसने मिस्र में गोशेन की
धरती से लेकर गिबोन तक के सभी नगरों पर कब्जा
कर लिया। 42यहोशू ने एक अभियान में उन नगरों
और उनके राजाओं को जीत लिया। यहोशू ने यह
इसलिए किया कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इस्राएल
के लिये लड़ रहा था। 43तब यहोशू और इस्राएल के
सभी लोग गिलगाल के अपने डेरे में लौट आए।

उत्तरी नगरों को हराना

11 हासोर के राजा, याबीन ने जो कुछ हुआ उसके
बारे में सुना। इसलिये उसने कई राजाओं की
सेनाओं को एक साथ बुलाने का निर्णय लिया। याबीन
ने मादोन के राजा योबाब, शिम्रोन के राजा, अक्षाप के
राजा और 2उत्तर के पहाड़ी एवं मरुभूमि प्रदेश के सभी
राजाओं के पास सन्देश भेजा। याबीन ने किन्नेरेत के
राजा, नेगेव और पश्चिमी नीची पहाड़ियों के राजाओं
को सन्देश भेजा। याबीन ने पश्चिम में नफोथ दोर के
राजा को भी सन्देश भेजा। 3याबीन ने पूर्व और पश्चिम
के कनानी लोगों के राजाओं के पास सन्देश भेजा।
उसने पहाड़ी प्रदेशों मे रहने वाले एमोरी, हित्तियों, परिज्जियों
और यबूसियों के पास सन्देश भेजा। उसने मिस्पा क्षेत्र
के हेर्मोन पहाड़ के नीचे रहने वाले हिव्वी लोगों को भी
सन्देश भेजा। 4इसलिये इन सभी राजाओं की सेनायें एक
साथ आई। वहाँ अनेक योद्धा, घोड़े और रथ थे। वह
अत्यन्त विशाल सेना थी, वह ऐसी दिखाई पड़ती थी
मानों उसमें इतने सैनिक थे जितने समुद्र तट पर बालू
के कण। 5ये सभी राजा छोटी नदी मेरोम के निकट
इकट्ठे हुए। उन्होंने अपनी सेनाओं को एक डेरे में
एकत्र किया। उन्होंने इस्राएल के विरुद्ध युद्ध करने की
योजना बनाई।

6तब यहोवा ने यहोशू से कहा, "उस सेना से डरो
नहीं। कल इसी समय, मैं तुम्हें उनको हराने दूँगा। तुम
उन सभी को मार डालोगे। तुम घोड़ों की टांगे काट
डालोगे और उनके सारे रथों को जला डालोगे।"

7यहोशू और उसकी पूरी सेना ने अचानक आक्रमण
करके उन्हें चौंका दिया। उन्होंने मेरोम नदी पर शत्रु
पर आक्रमण किया। 8यहोवा ने इस्राएलियों को उन्हें
हराने दिया। इस्राएल की सेना ने उनको हराया और
उनका पूर्व में वृहत्तर सीदोन, मिस्रपोत-मैम और मिस्पा
की घाटी तक पीछा किया। इस्राएल की सेना उनसे तब
तक युद्ध करती रही जब तक शत्रुओं में से कोई भी
व्यक्ति जीवित न बचा। 9यहोशू ने वही किया जो यहोवा
ने कहा था कि वह करेगा अर्थात् यहोशू ने उनके
घोड़ों की टाँगे काटीं और उनके रथों को जलाया।

10तब यहोशू लौटा और हासोर नगर पर अधिकार
किया। यहोशू ने हासोर के राजा को मार डाला। (हासोर
उन सभी राज्यों में प्रमुख था जो इस्राएल के विरुद्ध लड़े
थे।) 11इस्राएल की सेना ने उस नगर के हर एक को
मार डाला। उन्होंने सभी लोगों को पूरी तरह नष्ट कर
दिया। वहाँ कुछ भी जीवित नहीं रहने दिया गया। तब
उन्होंने नगर को जला दिया।

12यहोशू ने इन सभी नगरों पर अधिकार किया।
उसने उनके सभी राजाओं को मार डाला। यहोशू ने इन
नगरों की हर एक चीज़ को पूरी तरह नष्ट कर दिया।
उसने यह यहोवा के सेवक मूसा ने जैसा आदेश दिया
था वैसा ही किया। 13किन्तु इस्राएल की सेना ने किसी
भी ऐसे नगर को नहीं जलाया जो पहाड़ी पर बना था।
उन्होंने पहाड़ी पर बने एकमात्र हासोर नगर को ही
जलाया। यह वह नगर था, जिसे यहोशू ने जलाया।
14इस्राएल के लोगों ने वे सभी चीज़ें अपने पास रखी, जो
उन्हें उन नगरों में मिलीं। उन्होंने उन जानवरों को
अपने पास रखा, जो उन्हें नगर में मिले। किन्तु उन्होंने
वहाँ के सभी लोगों को मार डाला। उन्होंने किसी व्यक्ति
को जीवित नहीं छोड़ा। 15यहोवा ने बहुत पहले अपने
सेवक मूसा को यह करने का आदेश दिया था। तब
मूसा ने यहोशू को यह करने का आदेश दिया था। इस
प्रकार यहोशू ने यहोवा की आज्ञा पूरी की। यहोशू ने
वही सब किया, जो मूसा को यहोवा का आदेश था।

16इस प्रकार यहोशू ने इस पूरे देश के सभी लोगों को
पराजित किया। पहाड़ी प्रदेश, नेगेव-क्षेत्र, सारा गोशेन
क्षेत्र, पश्चिमी नीची पहाड़ियों का प्रदेश, यरदन घाटी,
इस्राएल के पर्वत और उनके निकट की पहाड़ियों पर
उसका अधिकार हो गया था। 17यहोशू का अधिकार
सेईर के निकट हालाक पर्वत से लेकर हेर्मोन पर्वत के
नीचे लबानोन की घाटी में बालगाद तक के प्रदेश पर
हो गया था। 18यहोशू उन राजाओं से कई वर्ष लड़ा।
19उस पूरे देश में केवल एक नगर ने शान्ति-सन्धि
की। वह हिव्वी लोगों का नगर गिबोन था। सभी अन्य
नगर युद्ध में पराजित हुए। 20यहोवा चाहता था कि वे

लोग सोचें कि वे शक्तिशाली थे। तब वे इस्राएल के
विरुद्ध लड़ेंगे। इस प्रकार वे उन्हें बिना दया के नष्ट
कर सकते थे। वह उन्हें उस तरह नष्ट कर सकता
था, जिस तरह यहोवा ने मूसा को करने का आदेश
दिया था।

21अनाकी लोग हेब्रोन, दबीर, अनाब और यहूदा और
इस्राएल के क्षेत्रों के पहाड़ी प्रदेश में रहते थे। यहोशू इन
अनाकी लोगों के विरुद्ध लड़ा। यहोशू ने इन लोगों और
इनके नगरों को पूरी तरह नष्ट कर दिया। 22वहाँ कोई
भी अनाकी व्यक्ति इस्राएल में जीवित न छोड़ा गया। जो
अनाकी लोग जीवित छोड़ दिये गये थे, वे अज्जा, गत
और अशदोद में थे। 23यहोशू ने पूरे इस्राएल प्रदेश पर
अधिकार कर लिया। इस बात को यहोवा ने मूसा से
बहुत पहले ही कह दिया। यहोवा ने वह देश इस्राएल को
इसलिए दिया क्योंकि उसने इसके लिये वचन दिया था।
तब यहोशू ने इस्राएल के परिवार समूहों में उस प्रदेश
को बाँटा तब युद्ध बन्द हुआ और अन्तिम रूप में शान्ति
स्थापित हो गई।

इस्राएल के द्वारा राजा हराये गये

12 इस्राएल के लोगों ने यरदन नदी के पूर्व की
भूमि पर अधिकार कर लिया। उनके अधिकार
में अब अर्नोन की संकरी घाटी से हेर्मोन पर्वत तक की
भूमि और यरदन घाटी के पूर्व का सारा प्रदेश था। इस
देश को लेने के लिये इस्राएल के लोगों ने जिन राजाओं
को हराया उनकी सूची यह है:

2हेशबोन नगर में रहने वाला एमोरी लोगों का राजा
सीहोन। वह अर्नोन की संकरी घाटी पर अरोएर से
लेकर यब्बोक नदी तक के प्रदेश पर शासन करता
था। उसका प्रदेश उस दर्रे के मध्य से आरम्भ होता था।
अम्मोनी लोगों के साथ यह उनकी सीमा थी। सीहोन
गिलाद के आधे प्रदेश पर शासन करता था। 3वह
गिलगाल से मृत सागर (खारा सागर) तक यरदन के
पूर्व के प्रदेश पर भी शासन करता था और बेत्यशीमोत
से दक्षिण पिसगा की पहाड़ियों तक शासन करता था।

4बाशान का राजा ओग रपाई लोगों में से था। ओग
अशतारोत और एद्रेई में शासन कर रहा था। 5ओग
हेर्मोन पर्वत, सलका नगर और बाशान के सारे क्षेत्र पर
शासन करता था। उसके प्रदेश की सीमा वहाँ तक
जाती थी जहाँ गशूर और माका लोग रहते थे। ओग
गिलाद के आधे भाग पर भी शासन करता था। इस
प्रदेश की सीमा का अन्त हेशबोन के राजा सीहोन के
प्रदेश पर होता था।

6यहोवा के सेवक मूसा और इस्राएल के लोगों ने इन
सभी राजाओं को हराया और मूसा ने उस प्रदेश को
रूबेन के परिवार समूह, गाद के परिवार समूह और
मनश्शे के परिवार समूह के आधे लोगों को दिया। मूसा
ने यह प्रदेश उनको अपने अधिकार में रखने को
दिया।

7इस्राएल के लोगों ने उस प्रदेश के राजाओं को भी
हराया, जो यरदन नदी के पश्चिम में था। यहोशू लोगों
को इस प्रदेश में ले गया। यहोशू ने लोगों को यह प्रदेश
दिया और इसे बारह परिवार समूहों में बाँटा। यह वह
देश था जिसे उन्हें देने के लिये यहोवा ने वचन दिया
था। यह प्रदेश लबानोन की घाटी में बालगात और सेईर
के निकट हालाक पर्वत के बीच था। 8इसमें पहाड़ी
प्रदेश, पश्चिम का तराई प्रदेश, यरदन घाटी, पूर्वी पर्वत,
मरुभूमि और नेगेव सम्मिलित थे। यह वह प्रदेश था
जिसमें हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिव्वी और यबूसी लोग
रहते थे। जिन लोगों को इस्राएल के लोगों ने हराया
उनकी यह सूची है:

9 यरीहो का राजा	(एक राजा)
ऐ का राजा (बेतेल के निकट)	(एक राजा)
10 यरूशलेम का राजा	(एक राजा)
हेब्रोन का राजा	(एक राजा)
11यर्मूत का राजा	(एक राजा)
लाकीश का राजा	(एक राजा)
12एग्लोन का राजा	(एक राजा)
गेजेर का राजा	(एक राजा)
13दबीर का राजा	(एक राजा)
गेदेर का राजा	(एक राजा)
14होर्मा का राजा	(एक राजा)
अराद का राजा	(एक राजा)
15 लिब्ना का राजा	(एकराजा)
अदुल्लाम का राजा	(एक राजा)
16 मक्केदा का राजा	(एक राजा)
बेतेल का राजा	(एक राजा)
17 तप्पूह का राजा	(एक राजा)
हेपेर का राजा	(एक राजा)
18 अपेक का राजा	(एक राजा)
लश्शारोन का राजा	(एक राजा)
19 मादोन का राजा	(एक राजा)
हासोर का राजा	(एक राजा)
20 शिम्रोन मरोन का राजा	(एक राजा)
अक्षाप का राजा	(एक राजा)
21 तानाक का राजा	(एक राजा)
मगिद्दो का राजा	(एक राजा)
22 केदेश का राजा	(एक राजा)
कर्मेल मे योकनाम का राजा	(एक राजा)
23 दोर के पर्वतों मे दोर का राजा	(एक राजा)
गिलगाल में गोयीम का राजा	(एक राजा)
24 तिर्सा का राजा	(एक राजा)

सब मिलाकर इकतीस राजा थे।

प्रदेश जो अभी तक नहीं लिये गये

13 जब यहोशू बहुत बूढ़ा हो गया तो यहोवा ने
उससे कहा, "यहोशू तुम बूढ़े हो गए हो, लेकिन
अभी तुम्हें बहुत सी भूमि पर अधिकार करना है।
2तुमने अभी तक गशूर लोगों की भूमि और पलिश्तियों
की भूमि नहीं ली है। 3तुमने मिस्र की सीमा पर शिहोर
नदी से लेकर उत्तर में एक्रोन की सीमा तक का क्षेत्र
नहीं लिया है। वह अभी तक कनानी लोगों का है। तुम्हें
राजा, अशदोद अशकलोन, गत तथा एक्रोन पाँचों पलिश्ती
के प्रमुखों को हराना है। तुम्हें उन अब्बी लोगों को
हराना चाहिये। 4जो कनानी प्रदेश के दक्षिण में रहते हैं।
5तुमने अभी गबाली लोगों के क्षेत्र को नहीं हराया है
और अभी बालगाद के पूर्व और हेर्मोन पर्वत के नीचे
लबानोन का क्षेत्र भी है।

6"सिदोन के लोग लबानोन से मिस्रपोतमैम तक पहाड़ी
प्रदेश में रह रहे हैं। किन्तु मैं इस्राएल के लोगों के लिये
इन सभी को बलपूर्वक निकाल बाहर करूँगा। जब तुम
इस्राएल के लोगों में भूमि बाटों, तो इस प्रदेश को निश्चय
ही याद रखो। इसे वैसे ही करो जैसा मैंने कहा है। 7अब,
तुम भूमि को नौ परिवार समूह और मनश्शे के परिवार
समूह के आधे में बाँटों।"

प्रदेशों का बटवारा

8मैंने मनश्शे के परिवार समूह के दूसरे आधे लोगों
को पहले ही भूमि दे दी है। मैंने रूबेन के परिवार समूह
तथा गाद के परिवार समूह को भी पहले ही भूमि दे दी
है। यहोवा के सेवक मूसा ने यरदन नदी के पूर्व का
प्रदेश उन्हें दिया। 9मूसा ने जो भूमि यरदन नदी के पूर्व
में उन्हें दी थी, वह यह है: इस भूमि के अन्तर्गत दीबोन
से मेदबा तक का पूरा मैदान आता है। यह भूमि अर्नोन
संकरी घाटी पर अरोएर से आरम्भ होती है। यह भूमि
घाटी के बीच नगर तक लगातार फैली है। 10एमोरी
लोगों का राजा सीहोन जिन नगरों पर शासन करता
था, वे इस भूमि में थे। वह राजा हेशबोन नगर में शासन
करता था। वह भूमि लगातार उस क्षेत्र तक थी जिसमें
एमोरी लोग रहते थे। 11गिलाद नगर भी उसी भूमि में
था। गशूर और माका लोग जिस क्षेत्र में रहते थे वह
उसी भूमि में था। सारा हेर्मोन पर्वत और सल्का तक
सारा बाशान उस भूमि में था। 12राजा ओग का सारा
राज्य उसी भूमि में था। राजा ओग बाशान में शासन
करता था। पहले वह आशतारोत और एद्रेई में शासन
करता था। ओग रपाइ लोगों में से था। पहले ही मूसा ने
उन लोगों को हराया था और उनका प्रदेश ले लिया
था।

13इस्राएल के लोग गशूर और माका लोगों को बलपूर्वक
निकाल बाहर नहीं कर सके। वे लोग अब तक आज
भी इस्राएल के लोगों के साथ रहते हैं।

14केवल लेवी का परिवार समूह ही ऐसा था जिसे
कोई भूमि नहीं मिली। उसके बदले उन्हें वे सभी खाद्य
भेंटें मिलीं जो इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को भेंट के
रूप में चढ़ाई जाती थीं। यहोवा ने लेवीवंशियों को इसका
वचन दिया था।

15मूसा ने रूबेन के परिवार समूह से हर एक परिवार
समूह को कुछ भूमि दी। यह भूमि है जिसे उन्होंने पाया:
16अर्नोन की संकरी घाटी के निकट अरोएर से लेकर
मेदबा नगर तक की भूमि। इसमें सारा मैदान और दर्रे
के बीच का नगर सम्मिलित था। 17यह भूमि हेशबोन
तक लगातार थी। इस भूमि में मैदान के सभी नगर थे।
ये नगर दीबोन, बामोतबाल, बेतबाल्मोन, 18 यहसा,
कदेमोत, मेपात, 19किर्यातैम, सिबमा और घाटी में पहाड़ी
पर सेरेथशहर, 20बेतपोर, पिसगा की पहाड़ियाँ और
बेत्यशीमोत थे। 21इस भूमि में मैदान के सभी नगर और
एमोरी लोगों के राजा सीहोन ने जिस पर शासन किया
था, वह क्षेत्र था। उस राजा ने हेशबोन, पर शासन
किया था। किन्तु मूसा ने उसे तथा मिद्यानी लोगों को
हराया था। वे लोग एवी, रेकेम, सूर, हूर और रेबा थे।
(ये सभी प्रमुख सीहोन के साथ युद्ध में लड़े थे।) ये सभी
प्रमुख उसी देश में रहते थे। 22इस्राएल के लोगों ने बोर
के पुत्र बिलाम को हराया। (बिलाम ने भविष्यवाणी के
लिये जादू का उपयोग करने का प्रयत्न किया।) इस्राएल
के लोगों ने युद्ध में अनेक लोगों को मारा। 23जो प्रदेश
रूबेन को दिया गया था, उसका अन्त यरदन नदी के
किनारे पर होता था। इसलिये यह भूमि रूबेन के परिवार
समूहों को दी गई, इसमें ये सभी नगर और सूची में
लिखे सभी खेत सम्मिलित थे। 24यह वह भूमि है जिसे
मूसा ने गाद के परिवार समूह को दी। मूसा ने यह भूमि
प्रत्येक परिवार समूहों को दिया।

25याजेर का प्रदेश और गिलाद के सभी नगर। मूसा
ने उन्हें अम्मोनी लोगों की भूमि का आधा भाग रब्बा
के निकट अरोएर तक भी दिया था। 26इस प्रदेश में
हेशबोन से रामतमिस्पे और बेतोनीम के क्षेत्र सम्मिलित
थे। इस प्रदेश में महनैम से दबीर तक के क्षेत्र सम्मिलित
थे। 27इसमें बेथारम की घाटी, बेत्रिम्रा, सुक्कोत और
सापोन सम्मिलित थे। बाकी का वह सारा प्रदेश जिस
पर हेशबोन के राजा सीहोन ने शासन किया था, इसमें
सम्मिलित था। यह भूमि यरदन नदी के पूर्व की ओर
है। यह भूमि लगातार गलील झील के अन्त तक फैली
है। 28यह सारा प्रदेश वह है जिसे मूसा ने गाद के
परिवार समूह को दिया था। इस भूमि में ये सारे नगर थे
जो सूची में हैं। मूसा ने वह भूमि हर एक परिवार समूह
को दी।

29यह वह भूमि है जिसे मूसा ने मनश्शे परिवार समूह
के आधे लोगों को दिया। मनश्शे के परिवार समूह के
लोगों ने यह भूमि पाई: 30भूमि महनैम से आरम्भ हुई।

इसमें वह पूरा बाशान अर्थात् जिस सारे प्रदेश पर बाशान
का राजा ओग शासन करता था और बाशान में याइर
के सभी नगर सम्मिलित थे। (सब मिलाकर साठ नगर
थे।) 31इस भूमि में आधा गिलाद, अश्तारोत और एद्रेई
सम्मिलित थे। (गिलाद, अश्तारोत और एद्रेई वे नगर थे
जिसमें ओग रहता था।) यह सारा प्रदेश मनश्शे के पुत्र
माकीर के परिवार को दिये गए। इन आधे पुत्रों ने यह
प्रदेश पाया।

32मूसा ने मोआब के मैदान में इन परिवार समूह को
यह पूरी भूमि दी। यह यरीहो के पूर्व में यरदन नदी के
पार थी। 33किन्तु मूसा ने लेवी परिवार समूह को कोई
भूमि नहीं दी। इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने यह वचन
दिया कि वह स्वयं लेवी के परिवार समूह की भेंट के
रूप में होगा।

14 याजक एलीआज़ार, नून के पुत्र यहोशू और
इस्राएल के परिवार समूह के प्रमुखों ने निश्चय
किया कि वे किस भूमि को किन लोगों को दें। 2यहोवा
ने वह ढंग मूसा को बहुत पहले बता दिया था, जिस ढंग
से वह चाहता था कि लोग अपनी भूमि चुनें। साढ़े नौ
परिवार समूह के लोगों ने कौन सी भूमि वे पाएंगे
इसका निश्चय करने के लिये गोटे डालीं। 3मूसा ने ढाई
परिवार समूहों को उनकी भूमि उन्हें यरदन नदी के
पूर्व में दे दी थी। किन्तु लेवी के परिवार समूह को अन्य
लोगों की तरह कोई भी भूमि नहीं मिली। 4बारह परिवार
समूहों को अपनी निजी भूमि दी गई। यूसुफ के पुत्र दो
परिवार समूहों–मनश्शे और एप्रैम में बँट गए थे और
हर एक परिवार समूह ने कुछ भूमि प्राप्त की। किन्तु
लेवी के परिवार समूह के लोगों को कोई भूमि नहीं दी
गई। उनकों रहने के लिये कुछ नगर दिए गए थे और
ये नगर प्रत्येक परिवार समूह की भूमि में थे। उन्हें
जानवरों के लिए खेत भी दियें गये थे। 5यहोवा ने मूसा
को बता दिया था कि वह किस ढंग से इस्राएल के
परिवार समूहों को भूमि दे। इस्राएल के लोगों ने उसी
ढंग से भूमि को बाँटा, जिस ढंग से बाँटने के लिये यहोवा
का आदेश था।

कालेब को उसका प्रदेश मिलता है

6एक दिन यहूदा परिवार समूह के लोग गिलगाल में
यहोशू के पास गए। उन लोगों में कनजी यपुन्ने का पुत्र
कालेब था। कालेब ने यहोशू से कहा, "कादेशबर्ने में
यहोवा ने जो बातें कही थी। तुम्हें याद है। यहोवा अपने
सेवक* मूसा से बातें कर रहा था। यहोवा तुम्हारे और
हमारे बारे में बातें कर रहा था। 7 यहोवा के सेवक
मूसा ने मुझे उस प्रदेश की जाँच के लिये भेजा जहाँ हम
लोग जा रहे थे। उस समय मैं चालीस वर्ष का था। जब
मैं लौटा तो मूसा को मैंने वह बताया, जो मैं उस प्रदेश
के बारे में सोचता था। 8किन्तु जो अन्य व्यक्ति मेरे साथ
गए थे उन्होंने उनसे ऐसी बातें कीं जिससे लोग डर गए।
किन्तु मैं ठीक–ठीक विश्वास कर रहा था, कि यहोवा
हम लोगों को वह देश लेने देगा। 9इसलिए मूसा ने वचन
दिया, 'जिस देश में तुम गए थे वह तुम्हारा होगा। वह
प्रदेश सदैव तुम्हारे बच्चों का रहेगा। मैं वह प्रदेश तुम्हें
दूँगा, क्योंकि तुमने यहोवा मेरे परमेश्वर पर पूरा विश्वास
किया है।'

10"अब, सोचो कि उस समय से यहोवा ने जैसा कहा
था उसी प्रकार मुझे पैंतालीस वर्ष तक जीवित रखा है।
उस समय हम सब मरुभूमि में भटकते रहे। अब, मैं
पचासी वर्ष का हो गया हूँ। 11मैं अब भी उतना ही
शक्तिशाली हूँ जितना शक्तिशाली मैं उस समय था, जब
मूसा ने मुझे भेजा था। मैं उन दिनों की तरह अब भी
युद्ध करने को तैयार हूँ। 12इसलिये वह पहाड़ी प्रदेश
मुझको दे दो जिसे यहोवा ने बहुत पहले उस दिन मुझे
देने का वचन दिया था। उस समय तुमको पता चला था
कि वहाँ शक्तिशाली अनाकी लोग रहते हैं और नगर
बहुत बड़े और अच्छी प्रकार सुरक्षित थे। किन्तु अब
संभव है, यहोवा मेरे साथ है और मैं उस प्रदेश को वैसे
ही ले सकूँ जैसा यहोवा ने कहा है।"

13यहोशू ने यपुन्ने के पुत्र कालेब को आशीर्वाद दिया।
यहोशू ने हेब्रोन नगर को उसके अधिकार में दे दिया
14और वह नगर अब भी कनजी यपुन्ने के पुत्र कालेब
के परिवार का है। वह प्रदेश अब तक उसके लोगों का
है क्योंकि, उसने इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की
आज्ञा मानी और उस पर पूर्ण विश्वास किया। 15पहले
इस नगर का नाम किर्यतर्बा था। नगर का नाम अनाकी
लोगों के महानतम अर्बा नामक व्यक्ति के नाम पर
रखा गया था। इसके बाद, उस देश में शान्ति रही।

यहूदा के लिये प्रदेश

15 यहूदा को जो प्रदेश दिया गया वह हर एक
परिवार समूह में बँटा। वह प्रदेश एदोम की
सीमा तक और दक्षिण में सीन के सिरे पर सीन मरुभूमि
तक लगातार फैला हुआ था। 2यहूदा के प्रदेश की
दक्षिणी सीमा मृत सागर के दक्षिणी छोर से आरम्भ होती
थी। 3यह सीमा बिच्छू दर्रा के दक्षिण तक जाती थी और
सीन तक बढ़ी हुई थी। तब यह सीमा कादेशबर्ने के
दक्षिण तक लगातार गई थी। यह सीमा हेस्रोन के परे
अद्दार तक चलती चली गई थी। अद्दार से सीमा मुड़ी थी
और कर्काआ तक गई थी। 4यह सीमा मिस्र के अम्मोन
से होती हुई मिस्र की नहर तक लगातार चल कर
भूमध्य सागर तक पहुँचती थी। वह प्रदेश उनकी दक्षिणी
सीमा थी।

5पूर्वी सीमा मृत सागर (खारा समुद्र) के तट से लेकर
उस क्षेत्र तक थी, जहाँ यरदन नदी समुद्र में गिरती थी।

अपने सेवक शाब्दिक "परमेश्वर का व्यक्ति।"

उत्तरी सीमा उस क्षेत्र से आरम्भ होती थी जहाँ यरदन
नदी मृत सागर में गिरती थी। 6तब उत्तरी सीमा बेथोग्ला
से होती हुई और बेतराबा तक चली गई थी। यह सीमा
लगातार बोहन की चट्टान तक गई थी। (बोहन रूबेन
का पुत्र था।) 7तब उत्तरी सीमा आकोर की घाटी से
होकर दबीर तक गई थी। वहाँ सीमा उत्तर को मुड़ती
थी और गिलगाल तक जाती थी। गिलगाल उस सड़क
के पार है जो अदुम्मीम पर्वत से होकर जाती है। अर्थात्
स्रोत के दक्षिण की ओर। यह सीमा एनशेमेश जलाशयों
के साथ लगातार गई थी। एन रोगेल पर सीमा समाप्त
थी। 8तब यह सीमा यबूसी नगर की दक्षिण की ओर से
बेन हिन्नोम घाटी से होकर गई थी। उस यबूसी नगर
को यरूशलेम कहा जाता था। (उस स्थान पर सीमा
हिन्नोम घाटी की उत्तरी छोर पर थी।) 9उस स्थान से
सीमा नेप्तोह के पानी के सोते के पास जाती थी। उसके
बाद सीमा एप्रोन पर्वत के निकट के नगरों तक जाती
थी। उस स्थान पर सीमा मुड़ती थी और बाला को जाती
थी। (बाला को किर्यत्यारीम भी कहते हैं।) 10बाला से
सीमा पश्चिम को मुड़ी और सेईर के पहाड़ी प्रदेश को
गई। यारीम पर्वत के उत्तर के छोर के साथ सीमा चलती
रही (इसको कसालोन भी कहा जाता है) और बेतशमेश
तक गई। वहाँ से सीमा तिम्ना के पार गई। 11तब
सिवाना के उत्तर में पहाड़ियों को गई। उस स्थान से
सीमा शिक्करोन को मुड़ी और बाला पर्वत के पार गई।
यह सीमा लगातार यब्नेल तक गई और भूमध्य सागर
पर समाप्त हुई। 12भूमध्य सागर यहूदा प्रदेश की पश्चिमी
सीमा था। इस प्रकार, यहूदा का प्रदेश इन चारों सीमाओं
के भीतर था। यहूदा का परिवार समूह इस प्रदेश में
रहता था।

13यहोवा ने यहोशू को आदेश दिया था कि वह यपुन्ने
के पुत्र कालेब को यहूदा की भूमि में से हिस्सा दे।
इसलिए यहोशू ने कालेब को वह प्रदेश दिया जिसके
लिये परमेश्वर ने आदेश दिया था। यहोशू ने उसे किर्यतर्बा
का नगर दिया (जो हेब्रोन भी कहा जाता था)। (अर्बा
अनाक का पिता था।) 14कालेब ने तीन अनाक परिवारों
को हेब्रोन, जहाँ वे रह रहे थे, छोड़ने को विवश किया।
वे परिवार शेशै, अहीमन और तल्मै थे। वे अनाक के
परिवार के थे।

15कालेब दबीर में रहने वाले लोगों से लड़ा। (भूतकाल
में दबीर भी किर्यत्सेपेर कहा जाता था)। 16कालेब ने
कहा, "कोई व्यक्ति जो किर्यत्सेपेर पर आक्रमण करेगा
और उस नगर को हरायेगा, वही मेरी पुत्री अकसा से
विवाह कर सकेगा। मैं उसे अपनी पुत्री को भेंट के रूप
में दूँगा।"

17कालेब के भाई कनजी के पुत्र ओत्नीएल ने उस
नगर को हराया। इसलिये कालेब ने अपनी पुत्री अकसा
को उसे उसकी पत्नी होने के लिये प्रदान की। 18ओत्नीएल
ने अकसा से कहा कि वह अपने पिता से कुछ अधिक
भूमि माँगे। अकसा अपने पिता के पास गई। जब वह
अपने गधे से उतरी तो उसके पिता ने उससे पूछा, "तुम
क्या चाहती हो?"

19अकसा ने उत्तर दिया, "मैं आपसे एक आशीर्वाद
पाना चाहूँगी। मैं पानी वाली भूमि चाहती हूँ जो भूमि हमें
आपने नेगेव में दी है, वह बहुत सूखी है, इसलिए मुझे
ऐसी भूमि दें जिस में पानी के सोते हों।" इसलिए कालेब
ने उसे भूमि के ऊपरी और निचले भाग में सोतों के
साथ भूमि दी।

20यहूदा के परिवार समूह ने उस भूमि को पाया जिसे
परमेश्वर ने उन्हें देने का वचन दिया था। हर एक
परिवार समूह ने भूमि का भाग पाया। 21यहूदा के
परिवार समूह ने नेगेव के दक्षिणी भाग के सभी नगरों
को पाया। ये नगर एदोम की सीमा के पास थे। यह उन
नगरों की सूची है: कबसेल, एदेर, यागूर, 22कीना,
दीमोना, अदादा, 23केदेश, हासोर, यित्नान, 24जीप, तेलेम,
बालोत, 25हासोर्हदत्ता, करिय्योत-हेस्रोन (हासोर भी कहा
जाता था।), 26अमाम, शमा, मोलादा, 27हसर्गद्दा, हेशमोन,
बेत्पालेत, 28हसर्शूआल, बेर्शेबा, बिज्योत्या, 29बाला,
इय्यीम, एसेम 30एलतोलद, कसील, होर्मा, 31सिकलग,
मदमन्ना, सनसन्ना, 32लबाओत, शिल्हीम, ऐन तथा
रिम्मोन। सब मिलाकर उन्तीस नगर और उनके सभी
खेत थे।

33यहूदा के परिवार समूह ने पश्चिमी पहाड़ियों की
तलहटी में भी नगर पाए। उन नगरों की सूची यहाँ है:
एशताओल, सोरा, अशना, 34जानोह, एनगन्नीम, तप्पूह,
एनाम, 35यर्मूत, अदुल्लाम, सोको, अजेका, 36शारैम,
अदीतैम और गदेरा (गदेरोतैम भी कहा जाता था)। सब
मिलाकर वहाँ चौदह नगर और उनके सारे खेत थे।

37यहूदा के परिवार को ये नगर भी दिये गये थे:
सनान, हदाशा, मिगदलगाद, 38दिलान, मिस्पे, योक्तेल,
39लाकीश, बोस्कत, एग्लोन, 40कब्बोन, लहमास,
कितलीश, 41गेदेरोत, बेतदागोन, नामा, और मक्केदा।
सब मिलाकर वहाँ सोलह नगर और उनके सारे खेत
थे।

42अन्य नगर जो यहूदा के लोग पाए वे ये थे: लिब्ना,
एतेर, आशान, 43यिप्ताह, अशना, नसीब, 44कीला,
अकजीब और मारेशा। सब मिलाकर ये नौ नगर और
उनके सारे खेत थे।

45यहूदा के लोगों ने एक्रोन नगर और निकट के
छोटे नगर तथा सारे खेत भी पाए। 46उन्होंने एक्रोन के
पश्चिम के क्षेत्र, सारे खेत और अशदोद के निकट के
नगर भी पाए। 47अशदोद की चारों ओर के क्षेत्र और
वहाँ के छोटे नगर यहूदा प्रदेश के भाग थे। यहूदा के
लोगों ने गाजा के चारों ओर के क्षेत्र, खेत और नगर
प्राप्त किये। उनका प्रदेश मिस्र की सीमा पर बहने वाली

नदी तक था और उनका प्रदेश भूमध्य सागर के तट के सहारे लगातार था।

48यहूदा के लोगों को पहाड़ी प्रदेश में भी नगर दिये गए। यहाँ उन नगरों की सूची है: शामीर, यत्तीर, सोको, 49दन्ना, किर्यत्सन्ना (इसे दबीर भी कहते थे), 50अनाब, एशतमो, आनीम, 51गोशेन, होलोन और गीलो सब मिलाकर ग्यारह नगर और उनके खेत थे।

52यहूदा के लोगों को ये नगर भी दिये गये थे: अराब, दूमा, एशान, 53यानीम, बेत्तप्पूह, अपेका, 54हुमता, किर्यतर्बा (हेब्रोन) और सीओर ये नौ नगर और इनके सारे खेत थे:

55यहूदा के लोगों को ये नगर भी दिये गये थे: माओन, कर्मेल, जीप, यूता, 56यिज्रेल, योकदाम, जानोह, 57कैन, गिबा और तिम्ना। ये सभी दस नगर और उनके सारे खेत थे।

58यहूदा के लोगों को ये नगर भी दिए गए थे। हलहूल, बेतसूर, गदोर, 59मरात, बेतनोत और एलतकोन सभी छ: नगर और उनके सारे खेत थे।

60यहूदा के लोगों के दो नगर रब्बा और किर्यतबाल (इसे किर्यत्यारीम भी कहा जाता था) दिए गए थे।

61यहूदा के लोगों को मरुभूमि में नगर दिये गये थे। उन नगरों की सूची यह है। बेतराबा, मिद्दीन, सकाका, 62निबशान, लवण नगर और एनगदी। सब मिलाकर छ: नगर और उनके सारे खेत थे।

63यहूदा की सेना यरूशलेम में रहने वाले यबूसी लोगों को बलपूर्वक बाहर करने में समर्थ नहीं हुई। इसलिए अब तक यबूसी लोग यरूशलेम में यहूदा लोगों के बीच रहते हैं।

एप्रैम तथा मनश्शे के लिये प्रदेश

16 यह वह प्रदेश है जिसे यूसुफ के परिवार ने पाया। यह प्रदेश यरदन नदी के निकट यरीहो से आरम्भ हुआ और यरीहो के पूर्वी जलाशयों तक पहुँचा। (यह ठीक यरीहो के पूर्व था) सीमा यरीहो से बेतेल के मरू पहाड़ी प्रदेश तक चली गई थी। 2सीमा लगातार बेतेल (लूज) से लेकर अतारोत पर एरेकी सीमा तक चली गई थी। 3तब सीमा पश्चिम में यपलेतियों लोगों की सीमा तक चली गई थी। यह सीमा लगातार निचले बेथोरोन तक चली गई थी। यह सीमा गेजेर तक गई और समुद्र तक चलती चली गई।

4इस प्रकार मनश्शे और एप्रैम ने अपना प्रदेश पाया। (मनश्शे और एप्रैम यूसुफ के पुत्र थे।)

5यह वह प्रदेश है जिसे एप्रैम के लोगों को दिया गया: उनकी पूर्वी सीमा ऊपरी बेथोरोन के निकट अत्रोतदार पर आरम्भ हुई थी। 6और यह सीमा वहाँ से सागर तक जाती थी। सीमा पूर्व की ओर मिकमतात उनके उत्तर में था, तानतशीलो को मुड़ी और लगातार यानोह तक चली गई थी। 7तब सीमा यानोह से अतारोत और नारा तक चली गई। यह सीमा लगातार चलती हुई यरीहो छूती है और यरदन नदी पर समाप्त हो जाती है। यह सीमा तप्पूह से काना खाड़ी के पश्चिम की ओर जाती है और सागर पर समाप्त हो जाती है। 8यह सीमा तप्पूह से काना नदी के पश्चिम की ओर सागर पर समाप्त होती है। यह वह प्रदेश है जो एप्रैम के लोगों को दिया गया। उस परिवार समूह के हर एक परिवार ने इस भूमि का भाग पाया। 9एप्रैम के बहुत से सीमा के नगर वस्तुत: मनश्शे की सीमा में थे किन्तु एप्रैम के लोगों ने उन नगरों और अपने खेतों को प्राप्त किया। 10किन्तु एप्रैमी लोग कनानी लोगों को गेजेर नगर छोड़ने को विवश करने में समर्थ न हो सके। इसलिए कनानी लोग अब तक एप्रैमी लोगों के बीच रहते हैं।* किन्तु कनानी लोग एप्रैमी लोगों के दास हो गए थे।

17 तब मनश्शे के परिवार समूह को भूमि दी गई। मनश्शे यूसुफ का प्रथम पुत्र था। मनश्शे का प्रथम पुत्र माकीर था जो गिलाद का पिता* था। माकीर महान योद्धा था, अत: गिलाद और बाशान माकीर के परिवार को दिये गए। 2मनश्शे के परिवार समूह के अन्य परिवारों को भी भूमि दी गई। वे परिवार अबीएजेर, हेलेक, अस्त्रीएल, शेकेम, हेपेर और शमीदा थे। ये सभी मनश्शे के अन्य पुत्र थे, जो यूसुफ का पुत्र था। इन व्यक्तियों के परिवारों ने कुछ भूमि प्राप्त की।

3सलोफाद हेपेर का पुत्र था। हेपेर गिलाद का पुत्र था। गिलाद माकीर का पुत्र था और माकीर मनश्शे का पुत्र था। किन्तु सलोफाद को कोई पुत्र न था। उसकी पाँच पुत्रियाँ थीं। पुत्रियों के नाम महला, नोआ, होग्ला, मिल्का और तिर्सा थे। 4पुत्रियाँ याजक एलीआज़र, नून के पुत्र यहोशू और सभी प्रमुखों के पास गई। पुत्रियों ने कहा, "यहोवा ने मूसा से कहा कि वे हमें वैसे ही भूमि दें जैसे पुरुषों को दी जाती है।" इसलिए एलीआज़र ने, यहोवा का आदेश मानते हुए इन पुत्रियों को भी वैसे ही भूमि मिले, जैसे अन्य पुरुषों को मिली थी।

5इस प्रकार मनश्शे के परिवार के पास यरदन नदी के पश्चिम में भूमि के दस क्षेत्र थे और यरदन नदी के दूसरी ओर दो अन्य क्षेत्र गिलाद और बाशान थे। 6मनश्शे की पौत्रियों को वैसे ही भूमि दी गई जैसे मनश्शे के अन्य पुरुष सन्तानों को दी गई थी। गिलाद प्रदेश मनश्शे के शेष परिवार को दिया गया।

7मनश्शे की भूमि आशेर और मिकमतात के क्षेत्र के बीच थी। यह शकेम के निकट है। इसकी सीमा दक्षिण में एनतप्पूह क्षेत्र तक जाती थी। 8तप्पूह की भूमि

कनानी लोग ... रहते हैं अर्थात् जब यहोशू सर्ग लिखा गया, कनानी लोग गेजेर में तब तक रहते थे।

गिलाद का पिता "या गिलाद क्षेत्र का प्रमुख।"

मनश्शे की थी किन्तु तप्पूह नगर उसका नहीं था।
तप्पूह नगर मनश्शे के प्रदेश की सीमा पर था और यह
एप्रैम के पुत्रों का था। 9मनश्शे की सीमा काना नाले के
दक्षिण में था। मनश्शे के इस क्षेत्र के नगर एप्रैम के थे।
मनश्शे की सीमा नदी के उत्तर में थी और यह पश्चिम
में लगातार भूमध्य सागर तक चली गई थी। 10दक्षिण
की भूमि एप्रैम की थी और उत्तर की भूमि मनश्शे की
थी। भूमध्य सागर पश्चिम सीमा बनाता था। यह सीमा
उत्तर में आशेर के प्रदेश को छूती थी और पूर्व में
इस्साकार के प्रदेश को।

11इस्साकार और आशेर के क्षेत्र के बेतशान और
इसके छोटे नगर तथा यिबलाम और इसके छोटे नगर
मनश्शे के थे। मनश्शे के अधिकार में दोर तथा इसके
छोटे नगरों में रहने वाले लोग तथा एनदोर और इसके
छोटे नगर भी थे। मनश्शे का अधिकार तानाक और
उसके छोटे नगरों में रहने वाले लोगों, और नापेत के
तीन नगरों पर भी था। 12मनश्शे के लोग उन नगरों
को नहीं हरा सके थे। इसलिए कनानी लोग वहाँ रहते
रहे। 13किन्तु इस्राएल के लोग शक्तिशाली हुए। जब ऐसा
हुआ तो उन्होंने कनान के लोगों को काम करने के
लिये विवश किया। किन्तु वे कनानी लोगों को उस
भूमि को छोड़ने के लिए विवश न कर सके।

14यूसुफ के परिवार समूहों ने यहोशू से बातें की और
कहा, "तुमने हमें भूमि का केवल एक क्षेत्र दिया।
किन्तु हम बहुत से लोग हैं। तुमने हम लोगों को उस
देश काएक भाग ही क्यों दिया जिसे यहोवा ने अपने
लोगों को दिया?"

15और यहोशू ने उनको उत्तर दिया, "यदि तुम लोग
संख्या में अधिक हो तो पहाड़ी प्रदेश के जंगलों में ऊपर
चढ़ो और वहाँ अपने रहने के लिये स्थान बनाओ। यह
प्रदेश परिज्जयों और रपाइ लोगों का है। यदि एप्रैम का
पहाड़ी प्रदेश तुम लोगों की आवश्यकता से बहुत छोटा
है तो उस भूमि को ले लो।"

16यूसुफ के लोगों ने कहा, "यह सत्य है कि एप्रैम का
पहाड़ी प्रदेश हम लोगों के लिए पर्याप्त नहीं है किन्तु यह
प्रदेश जहाँ कनानी लोग रहते हैं खतरनाक है। वे कुशल
योद्धा हैं तथा उनके पास शक्तिशाली, अस्त्र–शस्त्र हैं,
लोहे के रथ हैं, तथा वे बेतशान के उस क्षेत्र के सभी
छोटे नगरों तथा यिज्रेल की घाटी में भी नियंत्रण रखते
हैं।"

17तब यहोशू ने यूसुफ, एप्रैम और मनश्शे के लोगों
को कहा, "किन्तु तुम लोगों की संख्या अत्याधिक है।
और तुम लोग बड़ी शक्ति रखते हो। तुम लोगों को
अधिक भूमि मिलनी चाहिए। 18तुम लोगों को पहाड़ी
प्रदेश लेना होगा। यह जंगल है, किन्तु तुम लोग पेड़ों को
काट सकते हो और रहने योग्य अच्छा स्थान बना
सकते हो। यह सारा तुम्हारा होगा। तुम लोग कनानी
लोगों को उस प्रदेश को छोड़ने के लिए बलपूर्वक
विवश करोगे। तुम लोग उन्हें उनके शक्तिशाली
अस्त्र–शस्त्र और शक्ति के होते हुए भी पराजित करोगे।"

बचे हुये प्रदेश का विभाजन

18 इस्राएल के सभी लोग शीलो नामक स्थान पर
इकट्ठा हुए। उस स्थान पर उन्होंने मिलापवाले
तम्बू को खड़ा किया। इस्राएल के लोग उस प्रदेश पर
शासन करते थे। उन्होंने उस प्रदेश के सभी शत्रुओं को
हराया था। 2किन्तु उस समय भी इस्राएल के सात परिवार
समूह ऐसे थे, जिन्हें परमेश्वर के द्वारा वचन दिये जाने
पर भी उन्हें दी गई भूमि नहीं मिली थी।

3इसलिए यहोशू ने इस्राएल के लोगों से कहा, "तुम
लोग अपने प्रदेश लेने में इतनी देर प्रतीक्षा क्यों करते
हो? यहोवा, तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर ने यह प्रदेश
तुम्हें दिया है। 4इसलिए तुम्हारे प्रत्येक परिवार समूह को
तीन व्यक्ति चुनने चाहिए। मैं उन व्यक्तियों को उन
प्रदेशों की जाँच के लिए भेजूँगा। वे उस प्रदेश का
विवरण तैयार करेंगे तब वे मेरे पास लौटेंगे। 5वे देश को
सात भागों में बाँटेंगे। यहूदा के लोग अपना प्रदेश दक्षिण
में रखेंगे। यूसुफ के लोग अपना प्रदेश उत्तर में रखेंगे।
6किन्तु तुम लोगों को विवरण तैयार करना चाहिए और
प्रदेश को सात भागों मे बाँटना चाहिए। विवरण मेरे पास
लाओ हम लोग अपने यहोवा परमेश्वर को यह निर्णय
करने देंगे कि किस परिवार को कौन सा प्रदेश मिलेगा।*
7किन्तु लेवीवंशी लोग इन प्रदेशों का कोई भी भाग नहीं
पाएंगे। वे याजक हैं और उनका कार्य यहोवा की सेवा
करना है। गाद, रूबेन और मनश्शे के परिवार समूहों
के आधे लोग पहले ही वचन के अनुसार दिया गया
अपना प्रदेश पा चुके हैं। ये प्रदेश यरदन नदी के पूर्व में
हैं। यहोवा के सेवक मूसा ने उस प्रदेश को उन्हें पहले
ही दे दिया था।"

8इसलिए चुने गये व्यक्ति उस भूमि को देखने और
उस का विवरण लिखने चले गये। यहोशू ने उनसे
कहा, "जाओ, और उस प्रदेश की जाँच करो तथा
उसके विवरण तैयार करो। तब मेरे पास लौटो। उस
समय मैं यहोवा से कहूँगा कि जो देश तुम्हें मिलेगा उसे
चुनने में वे मेरी सहायता करे।"

9इसलिए उन पुरुषों ने वह स्थान छोड़ा और उस देश
में वे गए। उन्होंने देश की जाँच की और यहोशू के लिए
विवरण तैयार किए। उन्होंने हर नगर की जाँच की
और पाया कि प्रदेश के सात भाग हैं। उन्होंने अपने
विवरणों को तैयार किया और यहोशू के पास आए।
यहोशू तब भी शीलो के डेरे में था। 10उस समय यहोशू

हम लोग ... प्रदेश मिलेगा शाब्दिक "मैं यहोवा, अपने परमेश्वर के सामने शीलो में गोटें डालूंगा।"

ने यहोवा से सहायता माँगी। यहोशू ने हर एक परिवार
समूह को देने के लिए एक प्रदेश चुना। यहोशू ने प्रदेश
को बाँटा और हर एक परिवार समूह को उसके हिस्से
का प्रदेश दिया।

बिन्यामीन के लिये प्रदेश

11बिन्यामीन के परिवार समूह को वह प्रदेश दिया
गया जो यूसुफ और यहूदा के क्षेत्रों के बीच था। बिन्यामीन
परिवार समूह के हर एक परिवार ने कुछ भूमि पाई।
बिन्यामीन के लिए चुना गया प्रदेश यह था: 12इसकी
उत्तरी सीमा यरदन नदी से आरम्भ हुई। यह सीमा
यरीहो के उत्तरी छोर से गई थी। तब यह सीमा पश्चिम
के पहाड़ी प्रदेश में गई थी। यह सीमा लगातार बेतावेन
के ठीक पूर्वी ढलान तक थी। 13तब यह सीमा लूज
(यानी बेतेल) के दक्षिणी ढलान तक गई। फिर यह
सीमा अत्रोतद्दार तक नीचे गई। अत्रोतद्दार निचले बेथोरोन
की दक्षिणी पहाड़ी के ढलान पर है। 14बेथोरोन दक्षिण
में एक पहाड़ी है। यहाँ सीमा इस पहाडी पर मुड़ी और
उस पहाड़ी की पश्चिमी ओर के निकट से दक्षिण को
गई थी। यह सीमा किर्यतबाल (किर्यत्यारीम) को गई।
यह एक नगर है, जहाँ यहूदा के लोग रहते थे। यह
पश्चिमी सीमा थी।

15दक्षिण की सीमा किर्यत्यारीम से आरम्भ हुई और
नेप्तोह प्रपात को गई। 16तब सीमा हिन्नोम की घाटी के
निकट की पहाड़ी की तलहटी में उतरी। यह रपाईम
घाटी का उत्तरी छोर था। यह सीमा यबूसी नगर के
ठीक दक्षिण हिन्नोम घाटी में चलती चली गई। तब सीमा
एनरोगेल तक चली गई। 17वहाँ, सीमा उत्तर की ओर
मुड़ी और एन शेमेश को गई। यह सीमा लगातार गलीलोत
तक जाती है। (गलीलोत, पर्वतों में अदुम्मीम दर्रे के पास
है।) यह सीमा उस बड़ी चट्टान तक गई जिसका नाम
रूबेन के पुत्र, बोहन के लिए रखा गया था। 18यह सीमा
बेतअराबा के उत्तरी भाग तक लगातार चली गई। तब
सीमा अराबा में नीचे उतरी। 19तब यह सीमा बेथोग्ला
के उत्तरी भाग को जाकर, लवण सागर के उत्तरी तट
पर समाप्त हुई। यह वही स्थान है जहाँ यरदन नदी
समुद्र में गिरती है। यह दक्षिणी सीमा थी।

20पूर्व की ओर यरदन की नदी सीमा थी। इस प्रकार
यह भूमि थी जो बिन्यामीन के परिवार समूह को दी
गई। ये चारों ओर की सीमाएँ थीं। 21बिन्यामीन के हर
एक परिवार समूह को, इस प्रकार, यह भूमि मिली।
उनके अधिकार में ये नगर थे। यरीहो, बेथोग्ला,
एमेक्कसीस, 22बेतराबा, समारैम, बेतेल, 23अव्वीम, पारा,
ओप्रा, 24कपरम्मोनी, ओप्नी और गेबा। ये बारह नगर,
उस छोटे क्षेत्र में, उनके आसपास खेतों सहित थे।
25बिन्यामीन के परिवार समूह के पास गिबोन, रामाबेरोत,
26मिस्पा, कपीरा, मोसा, 27रेकेम, यिर्पेल, तरला, 28सेला,
एलेप, यबूस (यरूशलेम), गिबत और किर्येत नगर भी
थे। ये चौदह नगर, उस छोटे क्षेत्र में उनके आसपास के
खेतों के साथ थे। ये क्षेत्र बिन्यामीन के परिवार समूह ने
पाया था।

शिमोन के लिये प्रदेश

19 यहोशू ने शिमोन के परिवार के हर एक परिवार
समूह को उनकी भूमि दी। यह भूमि, जो उन्हें
मिली, यहूदा के अधिकार–क्षेत्र के भीतर थी। 2यह वह
भूमि थी जो उन्हें मिली: बेर्शेबा(शेबा),मोलादा,
3हसर्शूआल, बाला, एसेम, 4एलतोलद, बतूल, होर्मा,
5सिक्लग, बेत्मर्काबोत, हसर्शूसा, 6बेतलबाओत और
शारूहने। ये तेरह नगर और उनके सारे खेत शिमोन
के थे।

7उनको ऐन, रिम्मोन, एतेर और आशान नगर भी
मिले। ये चार नगर अपने सभी खेतों के साथ थे।
8उन्होंने वे सारे खेत नगरों के साथ पाए जो बालत्बेर
तक फैले थे। (यह नेगव क्षेत्र में रामा ही है।) इस
प्रकार यह वह प्रदेश था, जो शिमोनी लोगों के परिवार
समूह को दिया गया। हर एक ने इस भूमि को प्राप्त
किया। 9शिमोनी लोगों की भूमि यहूदा के प्रदेश के भाग
से ली गई थी। यहूदा के पास उन लोगों की आवश्यकता
से अधिक भूमि थी। इसलिए शिमोनी लोगों को उनकी
भूमि का भाग मिला।

जबूलूनी के लिए प्रदेश

10दूसरा परिवार समूह जिसे अपनी भूमि मिली वह
जबूलून था। जबूलून के हर एक परिवार समूह ने दिये
गए वचन के अनुसार भूमि पाई। जबूलून की सीमा
सारीद तक जाती थी। 11फिर वह पश्चिम में मरला से
होती हुई गई और दब्बेशेत के क्षेत्र के निकट तक
पहुँचती थी। तब यह सीमा संकरी घाटी से होते हुए
योकनाम के क्षेत्र तक जाती थी। 12तब यह सीमा पूर्व
की ओर मुड़ी थी। यह सारीद से किसलोत्ताबोर के क्षेत्र
तक पहुँचती थी। तब यह सीमा दाबरत और यापी तक
चलती गई थी। 13तब सीमा पूर्व में गथेपेर और इत्कासीन
तक लगातार थी। यह सीमा रिम्मोन पर समाप्त हुई।
तब सीमा मुड़ी और नेआ तक गई। 14नेआ पर फिर
सीमा मुड़ी और उत्तर की ओर गई। यह सीमा हन्नातोन
तक पहुँची और लगातार यिप्तहेल की घाटी तक गई।
15इस सीमा के भीतर कत्तात, नहलाल, शिम्रोन यिदला
और बेतलेहेम नगर थे। सब मिलाकर ये बारह नगर
अपने खेतों के साथ थे।

16अत: ये नगर और क्षेत्र हैं जो जबूलून को दिये गए।
जबूलून के हर एक परिवार समूह ने इस भूमि को प्राप्त
किया।

इस्साकार के लिये प्रदेश

17इस्साकार के परिवार समूह को चौथे हिस्से की
भूमि दी गई। उस परिवार समूह में हर एक परिवार ने
कुछ भूमि पाई। 18उस परिवार समूह को जो भूमि दी
गई थी वह यह है: यिज्रेल, कसुल्लोत, शूनेम 19हपारैम,
सीओन, अनाहरत, 20रब्बीत, किश्योन, एबेस, 21रेमेत,
एनगन्नीम, एन हद्दा और बेतपस्सेस।
22उनके प्रदेश की सीमा ताबोरशहसूमा और बेतशेमेश
को छूती थी। यह सीमा यरदन नदी पर समाप्त होती थी।
सब मिलाकर सोलह नगर और उनके खेत थे। 23ये
नगर और कस्बे इस्साकार परिवार समूह को दिये गए
प्रदेश के भाग थे। हर एक परिवार ने इस प्रदेश का
भाग प्राप्त किया।

आशेर के लिये प्रदेश

24आशेर के परिवार समूह को पाँचवें भाग का प्रदेश
दिया गया। इस परिवार समूह के प्रत्येक परिवार को
कुछ भूमि मिली। 25उस परिवार समूह को जो भूमि दी
गई वह यह है: हेल्कत, हली, बेतेन, अक्षाप,
26अलाम्मेल्लेक, अमाद और मिशाल।
पश्चिमी सीमा लगातार कर्म्मेल पर्वत और
शीहोलिब्नात तक थी। 27तब सीमा पूर्व की ओर मुड़ी।
यह सीमा बेतदागोन तक गई। यह सीमा जबूलून और
यिप्तहेल की घाटी को छू रही थी। तब यह सीमा बेतेमेक
और नीएल के उत्तर को गई थी। यह सीमा काबूल के
उत्तर से गई थी। 28तब यह सीमा एब्रोन, रहोब, हम्मोन
और काना को गई थी। यह सीमा लगातार बड़े सीदोन
क्षेत्र तक चली गई थी। 29तब यह सीमा दक्षिण की ओर
मुड़ी और रामा तक गई। यह सीमा लगातार शक्तिशाली
नगर सोर तक गई थी। तब यह सीमा मुड़ती हुई होसा
तक जाती थी। यह सीमा अकजीब, 30उम्मा, अपेक
और रहोब के क्षेत्र में सागर पर समाप्त होती थी।
सब मिलाकर वहाँ बाईस नगर और उनके खेत थे।
31ये नगर व उनके खेत आशेर परिवार समूह को दिये
गए प्रदेश के भाग थे। उस परिवार समूह में हर एक
परिवार ने इस भूमि का कुछ भाग पाया।

नप्ताली के लिये प्रदेश

32नप्ताली के परिवार समूह को इस प्रदेश के छठे
भाग की भूमि मिली। इस परिवार समूह के हर एक
परिवार ने उस प्रदेश की कुछ भूमि पाई। 33उनके
प्रदेश की सीमा सानन्नीम के क्षेत्र में विशाल वृक्ष से
आरम्भ हुई। यह हेलेप के निकट है। तब यह सीमा
अदामीनेकेब और यब्नेल से होकर गई। यह सीमा
लक्कूम पर समाप्त हुई। 34तब यह सीमा पश्चिमी को
अजनोत्ताबोर होकर गई। यह सीमा हुक्कोक पर समाप्त
हुई। यह सीमा दक्षिण को जबूलून क्षेत्र तक गई थी। यह
सीमा पश्चिम में आशेर के क्षेत्र तक पहुँचती थी। यह
सीमा पूर्व में यरदन नदी पर यहूदा को जाती थी। 35इस
सीमा के भीतर कुछ बहुत शक्तिशाली नगर थे। ये नगर
सिद्दीम, सेर, हम्मत, रक्कत, किन्नेरेत, 36अदामा, रामा,
हासोर, 37केदेश, एद्रेई, अन्हासेर, 38यिरोन, मिगदलेल,
होरेम, बेतनात और बेतशेमेश थे। सब मिलाकर वहाँ
उन्नीस नगर और उनके खेत थे।
39 ये नगर और उनकी चारों ओर के कस्बे उस
प्रदेश में थे, जो नप्ताली के परिवार समूह को दिया गया
था। उस परिवार समूह के हर एक परिवार ने इस भूमि
का कुछ भाग पाया।

दान के लिये प्रदेश

40तब दान के परिवार समूह को भूमि दी गई। उस
परिवार समूह के हर एक परिवार ने इस भूमि का कुछ
भाग पाया। 41उनको जो प्रदेश दिया गया वह यह है:
सोरा, एशताओल, ईरशेमेश, 42शालब्बीन, अय्यालोन,
यितला, 43एलोन, तिम्ना, एक्रोन, 44एलतके, गिब्बतोन,
बालात, 45यहूद, बेनेबराक,गत्रिम्मोन, 46मेयर्कोन,
रक्कोन और यापो के निकट का क्षेत्र।
47किन्तु दान के लोगों को अपना प्रदेश लेने में
परेशानी उठानी पड़ी। वहाँ शक्तिशाली शत्रु थे और दान
के लोग उन्हें सरलता से पराजित नहीं कर सकते थे।
इसलिए दान के लोग गए और लेशेम के विरुद्ध लड़े।
उन्होंने लेशेम को पराजित किया तथा जो लोग वहाँ
रहते थे, उन्हें मार डाला। इसलिए दान के लोग लेशेम
नगर में रहे। उन्होंने उसका नाम बदल कर दान कर
दिया क्योंकि यह नाम उनके परिवार समूह के पूर्वज
का था। 48ये सभी नगर और खेत उस प्रदेश में थे जो
दान के परिवार समूह को दिया गया था। हर एक
परिवार को इस भूमि का भाग मिला।

यहोशू के लिये प्रदेश

49इस प्रकार प्रमुखों ने प्रदेश का बँटवारा करना
और विभिन्न परिवार समूहों को उन्हें देना पूरा किया।
जब उन्होंने वह पूरा कर लिया तब इस्राएल के सब
लोगों ने नून के पुत्र यहोशू को भी कुछ प्रदेश देने का
निश्चय किया। ये वही प्रदेश थे जिन्हें उसको देने का
वचन दिया गया था। 50यहोवा ने आदेश दिया कि उसे
यह प्रदेश मिले। इसलिए उन्होंने एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में
यहोशू को तिम्नत्सेरह नगर दिया। यही वह नगर था,
जिसके लिये यहोशू ने कहा था कि मैं उसे चाहता हूँ।
इसलिए यहोशू ने उन नगर को अधिक दृढ़ बनाया
और वह उसमें रहने लगा। 51इस प्रकार ये सारे प्रदेश
इस्राएल के विभिन्न परिवार समूह को दिये गए। प्रदेश
का बँटवारा करने के लिये शिलो में याजक एलीआज़र,
नून का पुत्र यहोशू और हर एक परिवार समूह के

प्रमुख एकत्र हुए। वे यहोवा के सामने मिलापवाले तम्बू के द्वार पर इकट्ठे हुए थे। इस प्रकार उन्होंने प्रदेश का विभाजन पूरा कर लिया था।

सुरक्षा के नगर

20 तब यहोवा ने यहोशू से कहा: 2“मैंने मूसा का उपयोग तुम लोगों को आदेश देने के लिये किया। मूसा ने तुम लोगों से सुरक्षा के विशेष नगर बनाने के लिये कहा था। सो सुरक्षा के लिए उन नगरों का चुनाव करो। 3यदि कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को मार डालता है, किन्तु ऐसा संयोगवश होता है और उसका इरादा उसे मार डालने का नहीं होता तो वह मृत व्यक्ति के उन सम्बन्धियों से जो बदला लेने के लिए उसे मार डालना चाहते हैं, आत्मरक्षा के लिए सुरक्षा नगर में शरण ले सकता है। 4उस व्यक्ति को यह करना चाहिये। जब वह भागे और उन नगरों में से किसी एक में पहुँचे तो उसे नगर द्वार पर रूकना चाहिये। उसे नगर द्वार पर खड़ा रहना चाहिए और नगर प्रमुखों को बताना चाहिए कि क्या घटा है। तब नगर प्रमुख उसे नगर में प्रवेश करने दे सकते हैं। वे उसे अपने बीच रहने का स्थान देंगे। 5किन्तु वह व्यक्ति जो उसका पीछा कर रहा है वह नगर तक उसका पीछा कर सकता है। यदि ऐसा होता है तो नगर प्रमुखों को उसे यूँ ही नहीं छोड़ देना चाहिए, बल्कि उन्हें उस व्यक्ति की रक्षा करनी चाहिए जो उनके पास सुरक्षा के लिये आया है। वे उस व्यक्ति की रक्षा इसलिए करेंगे कि उसने जिसे मार डाला है, उसे मार डालने का उसका इरादा नहीं था। यह संयोगवश हो गया। वह क्रोधित नहीं था और उस व्यक्ति को मारने का निश्चय नहीं किया था। यह कुछ ऐसा था, जो हो ही गया। 6उस व्यक्ति को तब तक नगर में रहना चाहिये जब तक उस नगर के न्यायालय द्वारा उसके मुकदमे का निर्णय नहीं हो जाता और उसे तब तक उसी नगर में रहना चाहिये जब तक महायाजक नहीं मर जाता। तब वह अपने घर उस नगर में लौट सकता है, जहाँ से वह भागता हुआ आया था।”

7इसलिए इस्राएल के लोगों ने “सुरक्षा नगर” नामक नगरों को चुना। वे नगर ये थे: नप्ताली के पहाड़ी प्रदेश मे गलील के केदेश; एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में शकेम; किर्य्यतर्बा (हेब्रोन) जो यहूदा के पहाड़ी प्रदेश में था।

8रूबेन के प्रदेश की मरुभूमि में, यरीहो के निकट यरदन नदी के पूर्व में बेसेर; गाद के प्रदेश में गिलाद में रमोत; मनश्शे के प्रदेश में बाशान में गोलान।

9कोई इस्राएली व्यक्ति या उनके बीच रहने वाला कोई भी विदेशी, यदि किसी को मार डालता है, किन्तु यह संयोगवश हो जाता है, तो वह उन सुरक्षा नगरों में से किसी एक में सुरक्षा के लिये भागकर जा सकता था। तब वह व्यक्ति वहाँ सुरक्षित हो सकता था और पीछा करने वाले किसी के द्वारा नहीं मारा जा सकता था। उस नगर में उस व्यक्ति के मुकदमे का निबटारा उस नगर के न्यायालय द्वारा होगा।

याजको तथा लेवीवंशियों के नगर

21 लेवीवंशी परिवार समूह के शासक बातें करने के लिये याजक एलीआज़र, नून के पुत्र यहोशू और इस्राएल के अन्य परिवार समूहों के शासकों के पास गए। 2यह कनान प्रदेश मे शीलो नगर में हुआ। लेवी शासकों ने उनसे कहा, “यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था। उसने आदेश दिया था कि तुम हम लोगों को रहने के लिये नगर दोगे और तुम हम लोगों को मैदान दोगे जिसमें हमारे जानवर चर सकेंगे।” 3इसलिए लोगों ने यहोवा के इस आदेश को माना। उन्होंने लेवीवंशियों को ये नगर और क्षेत्र उनके पशुओं को दिये:

4कहात परिवार लेवी परिवार समूह से था। कहात परिवार के एक भाग को तेरह नगर दिये गये। ये नगर उस क्षेत्र में थे जो यहूदा, शिमोन और बिन्यामीन का हुआ करता था। ये नगर उन कहातियों को दिये गये थे जो याजक हारून के वंशज थे।

5कहात के दूसरे परिवार समूह को दस नगर दिये गए थे। ये दस नगर एप्रैम, दान और मनश्शे परिवार के आधे क्षेत्रों मे थे। 6गेर्शोन समूह के लोगों को तेरह नगर दिये गये थे। ये नगर उस प्रदेश में थे जो इस्साकार, आशेर, नप्ताली और बाशान में मनश्शे के आधे परिवार के थे।

7मरारी समूह के लोगों को बारह नगर दिये गए। ये नगर उन क्षेत्रों में थे जो रूबेन, गाद और जबूलून के थे। 8इस प्रकार इस्राएल के लोगों ने लेवीवंशियों को ये नगर और उनकेचारों ओर के खेत दिये। उन्होंने यह यहोवा द्वारा मूसा को दिये गए आदेश को पूरा करने के लिये किया।

9यहूदा और शिमोन के प्रदेश के नगरों के नाम ये थे। 10नगर के चुनाव का प्रथम अवसर कहात परिवार समूह को दिया गया। (लेवीवंशी लोग) 11उन्होंने उन्हें किर्यतर्बा हेब्रोन और इसके सब खेत दिये (यह हेब्रोन है जो एक व्यक्ति अरबा के नाम पर रखा गया है। अरबा अनाक का पिता था।) उन्हें वे खेत भी मिले जिनमें उनके जानवर उनके नगरों के समीप चर सकते थे। 12किन्तु खेत और किर्यतर्बा नगर के चारों ओर के छोटे नगर यपुन्ने के पुत्र कालेब के थे। 13इस प्रकार उन्होंने हेब्रोन नगर को हारून के परिवार के लोगों को दे दिया। (हेब्रोन सुरक्षा नगर था।) उन्होंने हारून के परिवार समूह को लिब्ना, 14यत्तीर, एशतमो, 15होलोन, दबीर, 16ऐन, युत्ता और बेतशेमेश भी दिया। उन्होंने इन नगरों के चारों ओर के खेतों को भी दिया। इन दोनों समूहों को यहूदा और शिमोन द्वारा नौ नगर दिये गए थे।

17उन्होंने हारून के लोगों को वे नगर भी दिये जो
बिन्यामीन परिवार समूह के थे। ये नगर गिबोन, गेबा,
18अनातोत और अल्मोन थे। उन्होंने ये चार नगर और
इनके चारों ओर के सब खेत दिये। 19इस प्रकार ये
नगर याजकों को दिये गये। (ये याजक, याजक हारून
के वंशज थे।) सब मिलाकर तेरह नगर और उनके
सब खेत उनके जानवरों के लिये थे। 20कहाती समूह
के अन्य लोगों को ये नगर दिये गए। ये नगर एप्रैम
परिवार समूह के थे: 21शकेम नगर जो एप्रैम के पहाड़ी
प्रदेश में था। (शकेम सुरक्षा नगर था।) उन्होंने गेजेर,
22किबसैम, बेथोरोन भी उन्हें दिये। सब मिलाकर ये
चार नगर और उनके सारे खेत उनके जानवरों के
लिये थे।

23दान के परिवार समूह ने उन्हें एलतके, गिब्बतोन,
24अय्यालोन और गत्रिम्मोन दिये। सब मिलाकर ये चार
नगर और उनके सारे खेत उनके जानवरों के लिये थे।

25मनश्शे के आधे परिवार समूह ने उन्हें तानाक
और गत्रिम्मोन दिये। उन्हें वे सारे खेत भी दिये गए जो
इन दोनों नगरों के चारों ओर थे।

26इस प्रकार ये दस अधिक नगर और इन नगरों के
चारों ओर की भूमि उनके जानवरों के लिये कहाती
समूह को दी गई थी।

27लेवीवंशी परिवार समूह के गेर्शोनी समूह को ये
नगर दिये गए थे।

मनश्शे परिवार समूह के आधे परिवार ने उन्हें
बाशान में गोलान दिया। (गोलान एक सुरक्षा नगर था)।
मनश्शे ने उन्हें बेशतरा भी दिया। इन दोनों नगरों के
चारों ओर की भूमि भी उनके जानवरों के लिये गेर्शोनी
समूह को दी गई। 28इस्साकार के परिवार समूह ने उन्हें
किश्योन, दाबरत, 29यरमूत और एनगन्नीम दिये।
इस्साकार ने इन चारों नगरों के चारों ओर जो भूमि
थी, उसे भी उन्हें उनके जानवरों के लिये दिया। 30आशेर
के परिवार समूह ने उन्हें मिशाल, अब्दोन,31हेल्कात
और रहोब दिये। इन चारों नगरों के चारों ओर की
भूमि भी उन्हें उनके जानवरों के लिये दी गई।

32नप्ताली के परिवार समूह ने उन्हें गलील में केदेश
दिया। (केदेश एक सुरक्षा नगर था।) नप्ताली ने उन्हें
हम्मोतदोर और कर्तान भी दिया। इन तीनों नगरों के
चारों ओर की भूमि भी उनके जानवरों के लिये गेर्शोनी
समूह को दी गई। 33सब मिलाकर गेर्शोनी समूह ने तेरह
नगर और उनके चारों ओर की भूमि अपने जानवरों
के लिये पाई।

34अन्य लेवीवंशी समूह मरारी समूह था। मरारी लोगों
को यह नगर दिये गए: जबूलून के परिवार समूह ने
उन्हें योक्नाम, कर्त्ता, 35दिम्ना और नहलाल दिये। इन
नगरों के चारों ओर की भूमि भी उनके जानवरों के
लिये मरारी परिवार समूह को दी गई।

36रूबेन के परिवार समूह ने उन्हें यरदन के पूर्व में
बेसेर, यहसा, 37केदमोत और मेपात नगर दिये। सारी
भूमि, जो इन चारों नगरों के चारों ओर थी , मरारी
लोगों को उनके जानवरों के लिये दी गई।

38गाद के परिवार समूह ने उन्हें गिलाद में रामोत
नगर दिया। (रामोत सुरक्षा नगर था।) उन्होंने उन्हें
महनैम, 39हेश्बोन और याजेर भी दिया। गाद ने इन
चारों नगरों के चारों ओर की सारी भूमि भी उनके
जानवरों के लिये दी। 40सब मिलाकर लेवियों के आखिरी
परिवार मरारी समूह को बारह नगर दिये गए।

41सब मिलाकर लेवी परिवार समूह ने अड़तालीस
नगर पाए और प्रत्येक नगर के चारों ओर की भूमि
उनके जानवरों के लिये मिली। ये नगर उस प्रदेश में थे,
जिसका शासन इस्राएल के अन्य परिवार समूह के लोग
करते थे। 42हर एक नगर के साथ उनके चारों ओर
ऐसी भूमि और खेत थे, जिन पर जानवर जीवन बिता
सकते थे। यही बात हर नगर के साथ थी।

43इस प्रकार यहोवा ने इस्राएल के लोगों को जो वचन
दिया था, उसे पूरा किया। उसने वह सारा प्रदेश दे दिया
जिसे देने का उसने वचन दिया था। लोगों ने वह प्रदेश
लिया और उसमें रहने लगे 44और यहोवा ने उनके
प्रदेश को चारों ओर से शान्ति प्राप्त करने दी। उनके
किसी शत्रु ने उन्हें नहीं हराया। यहोवा ने इस्राएल के
लोगों को हर एक शत्रु को पराजित करने दिया। 45यहोवा
ने इस्राएलियों को दिये गए अपने सभी वचनों को पूरा
किया। कोई ऐसा वचन नहीं था, जो पूरा न हुआ हो।
हर एक वचन पूरा हुआ।

तीन परिवार समूह घर लौटते हैं

22 तब यहोशू ने रूबेन, गाद और मनश्शे के
परिवार समूह के सभी लोगों की एक सभा
की। 2यहोशू ने उनसे कहा, "तुमने मूसा के दिये सभी
आदेशों का पालन किया है। मूसा यहोवा का सेवक था।
और तुमने मेरे भी सभी आदेशों का पालन किया।
3और इस पूरे समय में तुम लोगों ने इस्राएल के अन्य
लोगों की सहायता की है। तुम लोग यहोवा के उन सभी
आदेशों का पालन करने में सावधान रहे, जिन्हें तुम्हारे
परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया था। 4तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा ने इस्राएल के लोगों को शान्ति देने का वचन
दिया था। अत: अब यहोवा ने अपना वचन पूरा कर
दिया है। इस समय तुम लोग अपने घर लौट सकते हो।
तुम लोग, अपने उस प्रदेश में जा सकते हो जो तुम्हें दिया
गया है। यह प्रदेश यरदन नदी के पूर्व में है। यह वही
प्रदेश है जिसे यहोवा के सेवक मूसा ने तुम्हें दिया।
5किन्तु याद रखो कि जो व्यवस्था मूसा ने तुम्हें दिया है,
उसका पालन होता रहे। तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा से
प्रेम करना और उसके आदेशों का पालन करना है।

तुम्हें उसका अनुसरण करते रहना चाहिये, और पूरी
आस्था के साथ उसकी सेवाकरो।"
6तब यहोशू ने उनको आशीर्वाद दिया और वे विदा
हुए। वे अपने घर लौट गए। 7मूसा ने आधे मनश्शे
परिवार समूह को बाशान प्रदेश दिया था। यहोशू ने
दूसरे आधे मनश्शे परिवार समूह को यरदन नदी के
पश्चिम में प्रदेश दिया। यहोशू ने उनको वहाँ अपने घर
भेजा। यहोशू ने उन्हें आशीर्वाद दिया। 8उसने कहा,
"तुम बहुत सम्पन्न हो। तुम्हारे पास चाँदी, सोने और
अन्य बहुमूल्य आभूषणों के साथ बहुत से जानवर हैं।
तुम लोगों के पास अनेक सुन्दर वस्त्र हैं। तुमने अपने
शत्रुओं से भी बहुत सी चीज़ें ली हैं। इन चीजों को तुम्हें
आपस में बाँट लेना चाहिए। अब अपने अपने घर
जाओ।"
9अत: रूबेन, गाद और मनश्शे के परिवार समूह के
आधे लोगों ने इस्राएल के अन्य लोगों से विदा ली। वे
कनान में शीलो में थे। उन्होंने उस स्थान को छोड़ा
और वे गिलाद को लौटे। यह उनका अपना प्रदेश था।
मूसा ने उनको यह प्रदेश दिया था, क्योंकि यहोवा ने
उसे ऐसा करने का आदेश दिया था।
10रूबेन, गाद और मनश्शे के लोगों ने गोत्र नामक
स्थान की यात्रा की। यह यरदन नदी के किनारे कनान
प्रदेश में था। उस स्थान पर लोगों ने एक सुन्दर वेदी
बनाई। 11किन्तु इस्राएल के लोगों के अन्य समूहों ने,जो
तब तक शीलो में थे, उस वेदी के विषय में सुना जो इन
तीनों परिवार समूहों ने बनायी थीं। उन्होंने यह सुना कि
यह वेदी कनान की सीमा पर गोत्र नामक स्थान पर
थी। यह यरदन नदी के किनारे इस्राएल की ओर थी।
12इस्राएल के सभी परिवार समूह इन तीनों परिवार
समूहों पर बहुत क्रोधित हुए। वे एकत्र हुए और उन्होंने
उनके विरुद्ध युद्ध करने का निश्चय किया।
13अत: इस्राएल के लोगों ने कुछ व्यक्तियों को रूबेन,
गाद और मनश्शे के लोगों से बातें करने के लिये भेजा।
इनका प्रमुख याजक एलीआज़र का पुत्र पीनहास था।
14उन्होंने वहाँ के परिवार समूहों के दस प्रमुखों को भी
भेजा। शीलो में ठहरे इस्राएल के परिवार समूहों में हर
एक परिवार से एक व्यक्ति था।
15इस प्रकार ये ग्यारह व्यक्ति गिलाद गये। वे रूबेन,
गाद और मनश्शे के लोगों से बातें करने गये। ग्यारह
व्यक्तियों ने उनसे कहा: 16"इस्राएल के सभी लोग तुमसे
पूछते हैं: तूने इस्राएल के परमेश्वर के विरुद्ध यह क्यों
किया? तुम यहोवा के विपरीत कैसे हो गये? तुम लोगों
ने अपने लिये वेदी क्यों बनाई? तुम जानते हो कि यह
परमेश्वर की शिक्षा के विरुद्ध है! 17पोर नामक स्थान
को याद करो।* हम लोग उस पाप के कारण अब भी
कष्ट सहते हैं। इस बड़े पाप के लिये परमेश्वर ने
इस्राएल के बहुत से लोगों को बुरी तरह बीमार कर
दिया था और हम लोग अब भी उस बीमारी के कारण
कष्ट सह रहे हैं। 18और अब तुम वही कर रहे हो! तुम
यहोवा के विरुद्ध जा रहे हो! क्या तुम यहोवा का
अनुसरण करने से मना करोगे? यदि तुम जो कर रहे
हो, बन्द नहीं करते तो यहोवा इस्राएल के हर एक
व्यक्ति पर क्रोधित होगा।
19"यदि तुम्हारा प्रदेश उपासना के लिये उपयुक्त नहीं
है तो हमारे प्रदेश में आओ। यहोवा का तम्बू हमारे
प्रदेश में है। तुम हमारे कुछ प्रदेश ले सकते हो और
उनमें रह सकते हो। किन्तु यहोवा के विरुद्ध मत होओ।
अन्य वेदी मत बनाओ। हम लोगों के पास पहले से ही
अपने परमेश्वर यहोवा की वेदी मिलापवाले तम्बू में है।
20"जेरह के पुत्र आकान को याद करो। आकान
अपने पाप के कारण मरा। उसने उन चीज़ों के सम्बन्ध
में आदेश का पालन करने से इन्कार किया, जिन्हें नष्ट
किया जाना था। उस एक व्यक्ति ने परमेश्वर के नियम
को तोड़ा, किन्तु इस्राएल के सभी लोगों को दण्ड मिला।
आकान अपने पाप के कारण मरा। किन्तु बहुत से
अन्य लोग भी मरे।"
21रूबेन, गाद और मनश्शे के परिवार समूह के
लोगों ने ग्यारह व्यक्तियों को उत्तर दिया। उन्होंने यह
कहा, 22"हमारा परमेश्वर यहोवा है! हम लोग फिर
दुहराते हैं कि हमारा परमेश्वर यहोवा है* और परमेश्वर
जानता है कि हम लोगों ने यह क्यों किया। हम लोग
चाहते हैं कि तुम लोग भी यह जानो। तुम लोग उसका
निर्णय कर सकते हो जो हम लोगों ने किया है। यदि तुम
लोगों को यह विश्वास है कि हम लोगों ने पाप किया है
तो तुम लोग हमें अभी मार सकते हो। 23यदि हम ने
परमेश्वर के नियम को तोड़ा है तो हम कहेंगे कि
यहोवा स्वयं हमें सजा दे। क्या तुम लोग यह सोचते हो
कि हम लोगों ने इस वेदी को होमबलि चढ़ाने और
अन्नबलि तथा मेलबलि चढ़ाने के लिये बनाया है?
24नहीं! हम लोगों ने इसे इस उद्देश्य से नहीं बनाया है।
हम लोगों ने ये वेदी क्यों बनाई है? हम लोगों को भय
था कि भविष्य में तुम्हारे लोग हम लोगों को अपने
राष्ट्र का एक भाग नहीं समझेंगे। तब तुम्हारे लोग यह
कहेंगे, तुम लोग इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की उपासना
नहीं कर सकते। 25परमेश्वर ने हम लोगों को यरदन
नदी की दूसरी ओर का प्रदेश दिया है। इसका अर्थ यह
हुआ कि यरदन नदी को सीमा बनाया है। हमें डर है कि
जब तुम्हारे बच्चे बड़े होकर इस प्रदेश पर शासन करेंगे
तब वे हमें भूल जाएंगे, कि हम भी तुम्हारे लोग हैं। वे

पोर ... याद करो देखें गिनती 25:1–18

हमारा ... परमेश्वर यहोवा है या "यहोवा सच्चा परमेश्वर है! यहोवा सच्चा परमेश्वर हैं!" शाब्दिक, "अल इलाहिम यहवा, अल इलाहिम यहवा।"

हम से कहेंगे, 'हे रूबेन और गाद के लोगों तुम इस्राएल के भाग नहीं हो!' तब तुम्हारे बच्चे हमारे बच्चों को यहोवा की उपासना करने से रोकेंगे। इसलिये तुम्हारे बच्चे हम लोगों के बच्चों को यहोवा की उपासना करने से रोक देंगे।

26"इसलिए हम लोगों ने इस वेदी को बनाया। किन्तु हम लोग यह योजना नहीं बना रहे हैं कि इस पर होमबलि चढ़ाएँगे और बलियाँ देंगे। 27हम लोगों ने जिस सच्चे उद्देश्य के लिये वेदी बनाई थी, वह अपने लोगों को यह दिखाना मात्र था कि हम उस परमेश्वर की उपासना करते हैं जिसकी तुम लोग उपासना करते हो। यह वेदी तुम्हारे लिये, हम लोगों के लिये और भविष्य में हम लोगों के बच्चों के लिये इस बात का प्रमाण होगा कि हम लोग परमेश्वर की उपासना करते हैं। हम लोग यहोवा को अपनी बलियाँ, अन्नबलि और मेलबलि चढ़ाते हैं। हम चाहते थे कि तुम्हारे बच्चे बढें और जानें कि हम लोग भी तुम्हारी तरह इस्राएल के लोग है। 28भविष्य में यदि ऐसा होता है कि तुम्हारे बच्चे कहें कि हम लोग इस्राएल से सम्बन्ध नहीं रखते तो हमारे बच्चे तब कह सकेंगे कि ध्यान दें! हमारे पूर्वजों ने, जो हम लोगों से पहले थे, एक वेदी बनाई थी। यह वेदी ठीक वैसी ही है जैसी पवित्र तम्बू के सामने यहोवा की वेदी है। हम लोग इस वेदी का उपयोग बलि देने के लिये नहीं करते–यह इस बात का संकेत करता है कि हम लोग इस्राएल के एक भाग हैं।'

29"सत्य तो यह है, कि हम लोग यहोवा के विरुद्ध नहीं होना चाहते। हम लोग अब उसका अनुसरण करना छोड़ना नहीं चाहते। हम लोग जानते हैं कि एक मात्र सच्ची वेदी वही है जो पवित्र तम्बू के सामने है। वह वेदी, हमारे परमेश्वर यहोवा की है।"

30याजक पीनहास और दस प्रमुखों ने रूबेन, गाद और मनश्शे के लोगों द्वारा कही गई यह बात सुनी। वे इस बात से सन्तुष्ट थे कि लोग सच बोल रहे थे। 31इसलिए याजक एलीआज़र के बारे में पीनहास ने कहा, "अब हम लोग समझते हैं कि यहोवा हमारे साथ है और हम लोग जानते हैं कि तुम में से कोई भी उसके विपरीत नहीं गए हो। हम लोग प्रसन्न हैं कि इस्राएल के लोगों को यहोवा से दण्ड नहीं मिलेगा।"

32तब पीनहास और प्रमुखों ने उस स्थान को छोड़ा और वे अपने घर चले गए। उन्होंने रूबेन और गाद के लोगों को गिलाद प्रदेश में छोड़ा और कनान को लौट गये। वे लौटकर इस्राएल के लोगों के पास गये और जो कुछ हुआ था, उनसे कहा। 33इस्राएल के लोग भी सन्तुष्ट हो गए। वे प्रसन्न थे और उन्होंने परमेश्वर को धन्यवाद दिया। उन्होंने निर्णय लिया कि वे रूबेन, गाद और मनश्शे के लोगों के विरुद्ध जाकर नहीं लड़ेंगे। उन्होंने उन प्रदेशों को नष्ट न करने का निर्णय किया।

34और रूबेन और गाद के लोगों ने कहा, "यह वेदी सभी लोगों को यह बताती है कि हमें यह विश्वास है कि यहोवा परमेश्वर है और इसलिए उन्होंने वेदी का नाम 'प्रमाण' रखा।"

यहोशू लोगों को उत्साहित करता है

23 यहोवा ने इस्राएल को उसके चारों ओर के उनके शत्रुओं से शान्ति प्रदान की। यहोवा ने इस्राएल को सुरक्षित बनाया। वर्ष बीते और यहोशू बहुत बूढ़ा हो गया। 2इस समय यहोशू ने इस्राएल के सभी प्रमुखों, शासकों और न्यायाधीशों की बैठक बुलाई। यहोशू ने कहा, "मैं बुहत बूढ़ा हो गया हूँ। 3तुमने वह देखा जो यहोवा ने हमारे शत्रुओं के साथ किया। उसने यह हमारी सहायता के लिये किया। तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हारे लिये युद्ध किया। 4याद रखो मैंने तुम्हें यह कहा था कि तुम्हारे लोग उस प्रदेश को पा सकते हैं, जो यरदन नदी और पश्चिम के बड़े सागर के मध्य है। यह वही प्रदेश है जिसे देने का वचन मैंने दिया था, किन्तु अब तक तुम उस प्रदेश का थोड़ा सा भाग ही ले पाए हो। 5तुम्हारा परमेश्वर यहोवा वहाँ के निवासियों को उस स्थान को छोड़ने के लिये विवश करेगा। तुम उस प्रदेश में प्रवेश करोगे और यहोवा वहाँ के निवासियों को उस प्रदेश को छोड़ने के लिए विवश करेगा। तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुमको यह वचन दिया है।

6"तुम्हें उन सब बातों का पालन करने में सावधान रहना चाहिए जो यहोवा ने हमे आदेश दिया है। उस हर बात, का पालन करो जो मूसा के व्यवस्था की किताब में लिखा है। उस व्यवस्था के विपरीत न जाओ। 7हम लोगों के बीच कुछ ऐसे लोग भी हैं जो इस्राएल के लोग नहीं हैं। वे लोग अपने देवताओं की पूजा करते हैं। उन लोगों केमित्र मत बनो। उन देवताओं की सेवा, पूजा न करो 8तुम्हें सदैव अपने परमेश्वर यहोवा का अनुसरण करना चाहिये। तुमने यह भूतकाल में किया है और तुम्हें यह करते रहना चाहिये।

9"यहोवा ने अनेक शक्तिशाली राष्ट्रों को हराने में तुम्हारी सहायता की है। यहोवा ने उन लोगों को अपना देश छोड़ने को विवश किया है। कोई भी राष्ट्र तुमको हराने में समर्थ न हो सका। 10यहोवा की सहायता से इस्राएल का एक व्यक्ति एक हजार व्यक्तियों को हरा सकता है। इसका कारण यह है कि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे लिये युद्ध करता है। यहोवा ने यह करने का वचन दिया है। 11इसलिए तुम्हें अपने परमेश्वर यहोवा की भक्ति करते रहना चाहिए। अपनी पूरी आत्मा से उससे प्रेम करो।

12"यहोवा के मार्ग से कभी दूर न जाओ। उन अन्य लोगों से मित्रता न करो जो अभी तक तुम्हारे बीच तो हैं किन्तु जो इस्राएल के अंग नहीं हैं। उनमें से किसी के

साथ विवाह न करो। किन्तु यदि तुम इन लोगों के मित्र
बनोगे, 13तब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे शत्रुओं
को हराने में तुम्हारी सहायता नहीं करेगा। इस प्रकार ये
लोग तुम्हारे लिये एक जाल बन जायेंगे। परन्तु वे तुम्हारी
पीठ के लिए कोड़े और तुम्हारी आँख के लिए काँटा
बन जायेंगे। और तुम इस अच्छे देश से विदा हो जाओगे।
यह वही प्रदेश है जिसे तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें
दिया है, किन्तु यदि तुम इस आदेश को नहीं मानोगे तो
तुम अच्छे देश को खो दोगे।

14"यह करीब–करीब मेरे मरने का समय है। तुम
जानते हो और सचमुच विश्वास करते हो कि यहोवा ने
तुम्हारे लिये बहुत बड़े काम किये हैं। तुम जानते हो कि
वह अपने दिये वचनों में से किसी को पूरा करने में
असफल नहीं रहा है। यहोवा ने उन सभी वचनों को
पूरा किया है, जो उसने हमें दिये है। 15वे सभी अच्छे
वचन जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने हमको दिये हैं,
पूरी तरह सच हुए हैं। किन्तु यहोवा, उसी तरह अन्य
वचनों को भी सत्य बनाएगा। उसने चेतावनी दी है कि
यदि तुम पाप करोगे तब तुम्हारे ऊपर विपत्तियाँ आएंगी।
उसने चेतावनी दी है कि वह तुम्हें उस देश को छोड़ने
के लिये विवश करेगा जिसे उसने तुमको दिया है।
16यह घटित होगा, यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा के
साथ की गई वाचा का पालन करने से इन्कार करोगे।
यदि तुम अन्य देवताओं के पास जाओगे और उनकी
सेवा करोगे तो तुम इस देश को खो दोगे। यदि तुम ऐसा
करोगे तो यहोवा तुम पर बहुत क्रोधित होगा। तब तुम
इस अच्छे देश से शीघ्रता से चले जाओगे जिसे उसने
तुमको दिया है।"

यहोशू अलविदा कहता है

24 तब इस्राएल के सभी परिवार समूह शकेम में
इकट्ठे हुए। यहोशू ने उन सभी को वहाँ एक
साथ बुलाया। तब यहोशू ने इस्राएल के प्रमुखों, शासकों
और न्यायाधीशों को बुलाया। ये व्यक्ति परमेश्वर के
सामने खड़े हुए।

2तब यहोशू ने सभी लोगों से बातें की। उसने कहा,
"मैं वह कह रहा हूँ जो यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर
तुमसे कह रहा है:

बहुत समय पहले तुम्हारे पूर्वज परात नदी की
दूसरी ओर रहते थे। मैं उन व्यक्तियों के विषय में
बात कर रहा हूँ, जो इब्राहीम और नाहोर के पिता
तेरह की तरह थे। उन दिनों तुम्हारे पूर्वज अन्य
देवताओं की पूजा करते थे। 3किन्तु मैं अर्थात् यहोवा,
तुम्हारे पूर्वज इब्राहीम को नदी की दूसरी ओर के
प्रदेश से बाहर लाया। मैं उसे कनान प्रदेश से होकर
ले गया और उसे अनेक सन्तानें दीं। मैंने इब्राहीम
को इसहाक नामक पुत्र दिया 4और मैंने इसहाक
को याकूब और एसाव नामक दो पुत्र दिये। मैंने
सेईर पर्वत के चारों ओर के प्रदेश को एसाव को
दिया। किन्तु याकूब और उसकी सन्तानें वहाँ नहीं
रहीं। वे मिस्र देश में रहने के लिए चले गए।

5तब मैंने मूसा और हारून को मिस्र भेजा। मैं
उनसे यह चाहता था कि मेरे लोगों को मिस्र से
बाहर लाएँ। मैंने मिस्र के लोगों पर भयंकर विपत्तियाँ
पड़ने दीं। तब मैं तुम्हारे लोगों को मिस्र से बाहर
लाया। 6इस प्रकार मैं तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र के
बाहर लाया। वे लाल सागर तक आए और मिस्र के
लोग उनका पीछा कर रहे थे। उनके साथ रथ
और घुड़सवार थे। 7इसलिये लोगों ने मुझसे अर्थात्
यहोवा से सहायता माँगी और मैंने मिस्र के लोगों पर
बहुत बड़ी विपत्ति आने दी। मैंने अर्थात् यहोवा ने
समुद्र में उन्हें डुबा दिया। तुम लोगों ने स्वयं देखा कि
मैंने मिस्र की सेना के साथ क्या किया। उसके बाद
तुम मरुभूमि में लम्बे समय तक रहे। 8तब मैं तुम्हे
एमोरी लोगों के प्रदेश में लाया। यह यरदन नदी के
पूर्व में था। वे लोग तुम्हारे विरुद्ध लड़े, किन्तु मैंने
तुम्हे उनको पराजित करने दिया। मैंने तुम्हें उन
लोगों को नष्ट करने के लिए शक्ति दी। तब तुमने
उस देश पर अधिकार किया।

9तब सिप्पोर के पुत्र मोआब के राजा बालाक ने
इस्राएल के लोगों के विरुद्ध लड़ने की तैयारी की।
राजा ने बोर के पुत्र बिलाम को बुलाया। उसने
बिलाम से तुमको अभिशाप देने को कहा। 10किन्तु
मैंने अर्थात् तुम्हारे यहोवा ने बिलाम की एक न
सुनी। इसलिए बिलाम ने तुम लोगों के लिये अच्छी
चीज़ें होने की याचना की! उसने तुम्हें मुक्त भाव से
आशीर्वाद दिये। इस प्रकार मैंने तुम्हें बालाक से
बचाया।

11तब तुमने यरदन नदी के पार तक यात्रा की।
तुम लोग यरीहो प्रदेश में आए। यरीहो नगर में रहने
वाले लोग तुम्हारे विरुद्ध लड़े। एमोरी, परिज्जी, कनानी,
हित्ती, गिर्गाशी, हिव्वी, और यबूसी लोग भी तुम्हारे
विरुद्ध लड़े। किन्तु मैंने तुम्हें उन सबको हराने
दिया। 12जब तुम्हारी सेना आगे बढ़ी तो मैंने उनके
आगे बर्रे भेजी। इन बर्रों के समूह ने लोगों को
भागने के लिये विवश किया। इसलिये तुम लोगों नें
अपनी तलवारों और धनुष का उपयोग किये बिना
ही उन पर अधिकार कर लिया।

13यह मैं, ही था, जिसने तुम्हें वह प्रदेश दिया! मैंने
तुम्हें वह प्रदेश दिया जहाँ तुम्हें कोई काम नहीं
करना पड़ा। मैंने तुम्हें नगर दिये जिन्हें तुम्हें बनाना
नहीं पड़ा। अब तुम उस प्रदेश और उन नगरों में
रहते हो। तुम्हारे पास अंगूर की बेलें और जैतून के
बाग हैं, किन्तु उन बागों को तुम ने नहीं लगाया था।

14तब यहोशू ने लोगों से कहा, "अब तुम लोगों ने यहोवा का कथन सुन लिया है। इसलिये तुम्हें यहोवा का सम्मान करना चाहिए और उसकी सच्ची सेवा करनी चाहिए। उन असत्य देवताओं को फेंक दो जिन्हें तुम्हारे पूर्वज पूजते थे। यह सब कुछ बहुत समय पहले फरात नदी की दूसरी ओर, मिस्र में भी हुआ था। अब तुम्हें यहोवा की सेवा करनी चाहिये।

15"किन्तु संभव है कि तुम यहोवा की सेवा करना नहीं चाहते। तुम्हें स्वयं ही आज यह चुन लेना चाहिए। तुम्हें आज निश्चय कर लेना चाहिये कि तुम किसकी सेवा करोगे। तुम उन देवताओं की सेवा करोगे जिनकी सेवा तुम्हारे पूर्वज उस समय करते थे जब वे नदी की दूसरी ओर रहते थे? या तुम उन एमोरी लोगों के देवताओं की सेवा करना चाहते हो जो यहाँ रहते थे? किन्तु मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं क्या करूँगा। जहाँ तक मेरी और मेरे परिवार की बात है, हम यहोवा की सेवा करेंगे!"

16तब लोगों ने उत्तर दिया, "नहीं, हम यहोवा का अनुसरण करना कभी नहीं छोड़ेंगे। नहीं, हम लोग कभी अन्य देवताओं की सेवा नहीं करेंगे! 17हम जानते हैं कि वह परमेश्वर यहोवा था जो हमारे लोगों को मिस्र से लाया। हम लोग उस देश में दास थे। किन्तु यहोवा ने हम लोगों के लिये वहाँ बड़े-बड़े काम किये। वह उस देश से हम लोगों को बाहर लाया और उस समय तक हमारी रक्षा करता रहा जब तक हम लोगों ने अन्य देशों से होकर यात्रा की। 18तब यहोवा ने उन एमोरी लोगों को हराने में हमारी सहायता की जो उस प्रदेश में रहते थे जिसमें आज हम रहते हैं। इसलिए हम लोग यहोवा की सेवा करते रहेंगे। क्यों? क्योंकि वह हमारा परमेश्वर है।"

19तब यहोशू ने कहा, "तुम यहोवा की पर्याप्त सेवा अच्छी तरह नहीं कर सकोगे। यहोवा, पवित्र परमेश्वर है और परमेश्वर अपने लोगों द्वारा अन्य देवताओं की पूजा से घृणा करता है। यदि तुम उस तरह परमेश्वर के विरुद्ध जाओगे तो परमेश्वर तुमको क्षमा नहीं करेगा। 20तुम यहोवा को छोड़ोगे और अन्य देवताओं की सेवा करोगे तब यहोवा तुम पर भंयकर विपत्तियाँ लायेगा। यहोवा तुमको नष्ट करेगा। यहोवा तुम्हारे लिये अच्छा रहा है, किन्तु यदि तुम उसके विरुद्ध चलते हो तो वह तुम्हें नष्ट कर देगा।"

21किन्तु लोगों ने यहोशू से कहा, "नहीं! हम यहोवा की सेवा करेंगे।"

22तब यहोशू ने कहा, "स्वयं अपने और अपने साथ के लोगों के चारों ओर देखो। क्या तुम जानते हो और स्वीकार करते हो कि तुमने यहोवा की सेवा करना चुना है? क्या तुम सब इसके गवाह हो?"

लोगों ने उत्तर दिया, "हाँ, यह सत्य है! हम लोग ध्यान रखेंगे कि हम लोगों ने यहोवा की सेवा करना चुना है।"

23तब यहोशू ने कहा, "इसलिए अपने बीच जो असत्य देवता रखते हो उन्हें फेंक दो। अपने पूरे हृदय से इस्राएल के परमेश्वर यहोवा से प्रेम करो।"

24तब लोगों ने यहोशू से कहा, "हम लोग यहोवा, अपने परमेश्वर की सेवा करेंगे। हम लोग उसकी आज्ञा का पालन करेंगे।"

25इसलिये यहोशू ने लोगों के लिये उस दिन एक वाचा की। यहोशू ने इस वाचा को उन लोगों द्वारा पालन करने के लिये एक नियम बना दिया। यह शकेम नामक नगर में हुआ। 26यहोशू ने इन बातों को परमेश्वर के व्यवस्था की किताब में लिखा। तब यहोशू एक बड़ी शिला लाया। यह शिला इस वाचा का प्रमाण थी। उसने उस शिला को यहोवा के पवित्र तम्बू के निकट बांज के पेड़ के नीचेरखा। 27तब यहोशू ने सभी लोगों से कहा, "यह शिला तुम्हें उसे याद दिलाने में सहायक होगी जो कुछ हम लोगों ने आज कहा है। यह शिला तब यहाँ थी जब परमेश्वर हम लोगों से बात कर रहा था। इसलिये यह शिला कुछ ऐसी रहेगी जो तुम्हें यह याद दिलाने में सहायता करेगी कि आज के दिन क्या हुआ था। यह शिला तुम्हारे प्रति एक साक्षी बनी रहेगी। यह तुम्हें तुम्हारे परमेश्वर यहोवा के विपरीत जाने से रोकेगी।"

28तब यहोशू ने लोगों से अपने घरों को लौट जाने को कहा तो हर एक व्यक्ति अपने प्रदेश को लौट गया।

यहोशू की मृत्यु

29उसके बाद नून का पुत्र यहोशू मर गया। वह एक सौ दस वर्ष का था। 30यहोशू अपनी भूमि तिम्नत्सेरह में दफनाया गया। यह गाश पर्वत के उत्तर में एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में था।

31इस्राएल के लोगों ने यहोशू के जीवन काल में यहोवा की सेवा की और यहोशू के मरने के बाद भी, लोग यहोवा की सेवा करते रहे। इस्राएल के लोग तब तक यहोवा की सेवा करते रहे जब तक उनके नेता जीवित रहे। ये वे नेता थे, जिन्होंने वह सब कुछ देखा था जो यहोवा ने इस्राएल के लिये किया था।

यूसुफ दफनाया गया

32जब इस्राएल के लोगों ने मिस्र छोड़ा तब वे यूसुफ के शरीर की हड्डियाँ अपने साथ लाए थे। इसलिए लोगों ने यूसुफ की हड्डियाँ शकेम में दफनाई। उन्होंने हड्डियों को उस प्रदेश के क्षेत्र में दफनाया जिसे याकूब ने शकेम के पिता हमोर के पुत्रों से खरीदा था। याकूब ने उस भूमि को चाँदी के सौ सिक्कों से खरीदा था। यह प्रदेश यूसुफ की सन्तानों का था। 33हारून का पुत्र एलीआज़ार मर गया। वह गिबा में दफनाया गया। गिबा एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में एक नगर था। वह नगर एलीआज़र के पुत्र पीनहास को दिया गया था।

न्यायियों

यहूदा के लोग कनानियों से युद्ध करते हैं

1 यहोशू मर गया। तब इस्राएल के लोगों ने यहोवा से
प्रार्थना की। उन्होंने कहा, “हमारे परिवार समूह में
से कौन प्रथम जाने वाला तथा कनानी लोगों से हम
लोगों के लिये युद्ध करने वाला होगा?”
2यहोवा ने इस्राएली लोगों से कहा, “यहूदा का परिवार
समूह जाएगा। मैं उनको इस प्रदेश को प्राप्त करने
दूँगा।”
3यहूदा के लोगों ने शिमोन परिवार समूह के अपने
भाइयों से सहायता मांगी। यहूदा के लोगों ने कहा, “भाइयों,
यहोवा ने हम सभी को कुछ प्रदेश देने का वचन दिया
है। यदि तुम लोग हम लोगों के प्रदेश के लिए युद्ध करने
में हमारे साथ आओगे और सहायता करोगे तो हम लोग
तुम्हारे प्रदेश के लिये तुम्हारे साथ जायेंगे और युद्ध
करेंगे।” शिमोन के लोग यहूदा के अपने भाइयों के युद्ध
में सहायता करने को तैयार हो गए।
4यहोवा ने यहूदा के लोगों को कनानियों और परिज्जी
लोगों को हराने में सहायता की। यहूदा के लोगों ने
बेजेक नगर में दस हजार व्यक्तियों को मार डाला।
5बेजेक नगर में यहूदा के लोगों ने अदोनीबेजेक के
शासक को पाया* और उससे युद्ध किया। यहूदा के
लोगों ने कनानियों और परिज्जी लोगों को हराया।
6अदोनीबेजेक के शासक ने भाग निकलने का प्रयत्न
किया। किन्तु यहूदा के लोगों ने उसका पीछा किया
और उसे पकड़ लिया। जब उन्होंने उसे पकड़ा तब
उन्होंने उसके हाथ और पैर के अंगूठों को काट डाला।
7तब अदोनीबेजेक के शासक ने कहा, “मैंने सत्तर
राजाओं के हाथ और पैर के अंगूठे काटे और उन
राजाओं को वही भोजन करना पड़ा जो मेरी मेज से
टुकड़ों में गिरा। अब यहोवा ने मुझे उसका बदला दिया
है जो मैंने उन राजाओं के साथ किया था।” यहूदा के
लोग बेजेक के शासक को यरूशलेम ले गए और वह
वहीं मरा। 8यहूदा के लोग यरूशलेम के विरुद्ध लड़े
और उस पर अधिकार कर लिया। यहूदा के लोगों ने
यरूशलेम के लोगों को मारने के लिये तलवार का
उपयोग किया। उन्होंने नगर को जला दिया। 9उसके
बाद यहूदा के लोग कुछ अन्य कनानी लोगों से युद्ध
करने के लिए गए। वे कनानी पहाड़ी प्रदेशों, नेगेव और
समुद्र के किनारे की पहाड़ियों में रहते थे।
10तब यहूदा के लोग उन कनानी लोगों के विरुद्ध
लड़ने गए जो हेब्रोन नगर में रहते थे। (हेब्रोन को
किर्यतर्बा कहा जाता था।) यहूदा के लोगों ने शेशै,
अहीमन और तल्मै कहे जाने वाले लोगों को हराया।

कालेब और उसकी पुत्री

11यहूदा के लोगों ने उस स्थान को छोड़ा। वे दबीर
नगर, वहाँ के लोगों के विरुद्ध युद्ध करने गए। (दबीर
को किर्यत्सेपेर कहा जाता था।) 12यहूदा के लोगों द्वारा
युद्ध आरम्भ करने के पहले कालेब ने लोगों से एक
प्रतिज्ञा की। कालेब ने कहा, “मैं अपनी पुत्री अकसा
को उस व्यक्ति को पत्नी के रूप में दूँगा जो किर्यत्सेपेर
नगर पर आक्रमण करता है और उस पर अधिकार
करता है।”
13कालेब का एक छोटा भाई था जिसका नाम कनज
था। कनज का एक पुत्र ओत्नीएल नाम का था।
(ओत्नीएल कालेब का भतीजा था।) ओत्नीएल ने
किर्यत्सेपेर नगर को जीत लिया। इसलिए कालेब ने
अपनी पुत्री अकसा को पत्नी के रूप में ओत्नीएल को
दिया।
14जब अकसा ओत्नीएल के पास आई तब ओत्नीएल
ने उससे कहा* कि वह अपने पिता से कुछ भूमि मांगे।
अकसा अपने पिता के पास गई। अत: वह अपने गधे से
उतरी और कालेब ने पूछा, “क्या कठिनाई है?”
15अकसा ने कालेब को उत्तर दिया, “आप मुझे
आशीर्वाद दें।* आपने मुझे नेगेव की सूखी मरुभूमि दी
है। कृपया मुझे कुछ पानी के सोते वाली भूमि दें।” अत:
कालेब ने उसे वह दिया जो वह चाहती थी। उसने उसे
उस भूमि के ऊपर और नीचे के पानी के सोते दे दिये।
16केनी लोगों ने ताड़वृक्षों के नगर (यरीहो) को छोड़ा
और यहूदा के लोगों के साथ गए। वे लोग यहूदा की

अदोनीबेजेक के शासक को पाया इसे व्यक्ति का नाम भी समझा जा सकता है।

ओत्नीएल ... कहा या “अकसा ने ओत्नीएल से कहा।”

आप ... आशीर्वाद दें या “कृपया मेरा सत्कार करें” या “मुझे जल की एक धारा दें।”

मरुभूमि में वहाँ के लोगों के साथ रहने गए। यह नेगेव
में अराद नगर के पास था। (केनी लोग मूसा के ससुर
के परिवार से थे।)
17कुछ कनानी लोग सपत नगर में भी रहते थे।
इसलिए यहूदा के लोग और शिमोन के परिवार समूह
के लोगों ने उन कनानी लोगों पर आक्रमण किया।
उन्होंने नगर को पूर्णत: नष्ट कर दिया। इसलिये उन्होंने
नगर का नाम होर्मा रखा।
18यहूदा के लोगों ने अज्जा के नगर और उसके चारों
ओर के छोटे नगरों पर भी अधिकार किया। यहूदा के
लोगों ने अशकलोन और एक्रोन नगरों और उनके
चारों ओर के छोटे नगरों पर भी अधिकार किया।
19यहोवा उस समय यहूदा के लोगों के साथ था, जब
वे युद्ध कर रहे थे। उन्होंने पहाड़ी प्रदेश की भूमि पर
अधिकार किया। किन्तु यहूदा के लोग घाटियों की
भूमि लेने में असफल रहे क्योंकि वहाँ के निवासियों के
पास लोहे के रथ थे।
20मूसा ने कालेब को हेब्रोन के पास की भूमि देने
का वचन दिया था। अत: वह भूमि कालेब के परिवार
समूह को दी गई। कालेब के लोगों ने अनाक के तीन
पुत्रों को वह स्थान छोड़ने को विवश किया।
बिन्यामीन लोग यरूशलेम में बसते हैं।
21बिन्यामीन परिवार के लोग यबूसी लोगों को यरूशलेम
छोड़ने के लिये विवश न कर सके। उस समय से लेकर
अब तक यबूसी लोग यरूशलेम में बिन्यामीन लोगों के
साथ रहते आए हैं।

यूसुफ के लोग बेतेल पर अधिकार जमाते हैं

22-23यूसुफ के परिवार समूह के लोग भी बेतेल नगर
के विरुद्ध लड़ने गए। (बेतेल, लूज कहा जाता था।)
यहोवा यूसुफ के परिवार समूह के लोगों के साथ था।
यूसुफ के परिवार के लोगों ने कुछ जासूसों को बेतेल
नगर को भेजा। (इन व्यक्तियों ने बेतेल नगर को हराने
के उपाय का पता लगाया।) **24**जब वे जासूस बेतेल नगर
को देख रहे थे तब उन्होंने एक व्यक्ति को नगर से
बाहर आते देखा। जासूसों ने उस व्यक्ति से कहा, "हम
लोगों को नगर में जाने का गुप्त मार्ग बताओ। हम लोग
नगर पर आक्रमण करेंगे। किन्तु यदि तुम हमारी सहायता
करोगे तो हम तुम्हें चोट नहीं पहुँचायेंगे।"
25उस व्यक्ति ने जासूसों को नगर में जाने का गुप्त
मार्ग बताया। यूसुफ के लोगों ने बेतेल के लोगों को
मारने के लिये अपनी तलवार का उपयोग किया। किन्तु
उन्होंने उस व्यक्ति को चोट नहीं पहुँचाई जिसने उन्हें
सहायता दी थी और उन्होंने उसके परिवार के लोगों
को चोट नहीं पहुँचाई। उस व्यक्ति और उसके परिवार
को स्वतन्त्र जाने दिया गया। **26**वह व्यक्ति उस प्रदेश में
गया जहाँ हित्ती लोग रहते थे और वहाँ उसने एक नगर
बसाया। उसने उस नगर का नाम लूज रखा और वह
आज भी वहाँ है।

अन्य परिवार समूह कनानियों से युद्ध करते हैं

27 कनानी लोग बेतशान, तानाक, दोर, यिबलाम,
मगिद्दो और उनके चारों ओर के छोटे नगरों में रहते
थे। मनश्शे के परिवार समूह के लोग उन लोगों को
उन नगरों को छोड़ने के लिये विवश नहीं कर सके थे।
इसलिए कनानी लोग वहाँ टिके रहे। उन्होंने अपना घर
छोड़ने से इन्कार कर दिया। **28**बाद में इस्राएल के लोग
अधिक शक्तिशाली हुए और कनानी लोगों को दासों
की तरह अपने लिए काम करने के लिये विवश किया।
किन्तु इस्राएल के लोग सभी कनानी लोगों से उनका
प्रदेश न छुड़वा सके। **29**यही बात एप्रैम के परिवार समूह
के साथ हुई। कनानी लोग गेजेर में रहते थे और एप्रैम
के लोग सभी कनानी लोगों से उनका देश न छुड़वा
सके। इसलिए कनानी लोग एप्रैम के लोगों के साथ
गेजेर में रहते चले आए।
30जबूलून के परिवार समूह के साथ भी यही बात
हुई। कित्रोन और नहलोल नगरों मे कुछ कनानी लोग
रहते थे। जबूलून के लोग उन लोगों से उनका देश न
छुड़वा सके। वे कनानी लोग टिके रहे और जबूलून
लोगों के साथ रहते चले आए। किन्तु जबूलून के लोगों
ने उन लोगों को दासों की तरह काम करने को विवश
किया।
31आशेर के परिवार समूह के साथ भी यही बात हुई।
आशेर के लोग उन लोगों से अक्को, सीदोन, अहलाब,
अकजीब, हेलबा, अपीक और रहोब नगरों को न
छुड़वा सके। **32**आशेर के लोग कनानी लोगों से अपना
देश न छुड़वा सके। इसलिए कनानी लोग आशेर के
लोगों के साथ रहते चले आए।
33नप्ताली के परिवार समूह के साथ भी यही बात
हुई। नप्ताली परिवार के लोग उन लोगों से बेतशेमेश
और बेतनात नगरों को न छुड़वा सके। इसलिए नप्ताली
के लोग उन नगरों में उन लोगों के साथ रहते चले
आए। वे कनानी लोग नप्ताली लोगों के लिए दासों की
तरह काम करते रहे।
34एमोरी लोगो ने दान के परिवार समूह के लोगों
को पहाड़ी प्रदेश में रहने के लिये विवश कर दिया।
दान के लोगों को पहाड़ियों में ठहरना पड़ा क्योंकि
एमोरी लोग उन्हें घाटियों में उतर कर नहीं रहने देते
थे। **35**एमोरी लोगों ने हेरेस पर्वत, अय्यलोन तथा शालबीम
में ठहरने का निश्चय किया। बाद में, यूसुफ का परिवार
समूह शक्तिशाली हो गया। तब उन्होंने एमोरी लोगों से
दासों की तरह काम लिया। **36**एमोरी लोगों का प्रदेश
बिच्छू दर्रे से सेला और सेला के परे पहाड़ी प्रदेश तक
था।

बोकीम में यहोवा का दूत

2 यहोवा का दूत गिलगाल नगर से बोकीम नगर को
गया। दूत ने यहोवा का एक सन्देश इस्राएल के
लोगों को दिया। सन्देश यह था: "तुम मिस्र में दास थे।
किन्तु मैंने तुम्हें स्वतन्त्र किया और मैं तुम्हें मिस्र से
बाहर लाया। मैं तुम्हें इस प्रदेश में लाया जिसे तुम्हारे
पूर्वजों को देने के लिये मैंने प्रतिज्ञा की थी। मैंने कहा,
मैं तुमसे अपना वाचा कभी नहीं तोड़ूँगा। 2किन्तु इसके
बदले में तुम्हें इस प्रदेश के निवासियों के साथ समझौता
नहीं करना होगा। तुम्हें इन लोगों की वेदियाँ नष्ट
करनी चाहिए। यह मैंने तुमसे कहा किन्तु तुम लोगों ने
मेरी आज्ञा नहीं मानी। तुम ऐसा कैसे कर सकते हो?

3"अब मैं तुमसे यह कहता हूँ, 'मैं इस प्रदेश से अब
और लोगों को बाहर नहीं हटाऊँगा। ये लोग तुम्हारे
लिये समस्या बनेंगे। वे तुम्हारे लिए बनाया गया जाल
बनेंगे। उनके असत्य देवता तुम्हें फँसाने के लिए जाल
बनेंगे।'"

4स्वर्गदूत इस्राएल के लोगों को यहोवा का सन्देश जब
दे चुका, तब लोग जोर से रो पड़े। 5इसलिए इस्राएल के
लोगों ने उस स्थान को बोकीम नाम दिया जहाँ वे रो पड़े
थे। बोकीम में इस्राएल के लोगों ने यहोवा को भेंट
चढ़ाई।

आज्ञा का उल्लंघन और पराजय

6तब यहोशू ने लोगों से कहा कि वे अपने घर लौट
सकते हैं। इसलिए हर एक परिवार समूह अपनी भूमि
का क्षेत्र लेने गया और उसमें रहे। 7इस्राएल के लोगों ने
तब तक यहोवा की सेवा की जब तक यहोशू जीवित
रहा। उन बुर्जुगों (नेताओं) के जीवन काल में भी वे
यहोवा की सेवा करते रहे जो यहोशू के मरने के बाद
भी जीवित रहे। इन वृद्ध लोगों ने इस्राएल के लोगों के
लिए जो यहोवा ने महान कार्य किये थे, उन्हें देखा था।
8नून का पुत्र यहोशू, जो यहोवा का सेवक था, एक सौ
दस वर्ष की अवस्था में मरा। 9अत: इस्राएल के लोगों ने
यहोशू को दफनाया। यहोशू को भूमि के उस क्षेत्र में
दफनाया गया जो उसे दिया गया था। वह भूमि तिम्नथेरेस
में थी जो हेरेस के पहाड़ी क्षेत्र में गाश पर्वत के उत्तर में
था।

10इसके बाद वह पूरी पीढ़ी मर गई तथा नयी पीढ़ी
उत्पन्न हुई। यह नयी पीढ़ी यहोवा के विषय में न तो
जानती थी और न ही उसे, यहोवा ने इस्राएल के लोगों
के लिये क्या किया था, इसका ज्ञान था। 11इसलिये
इस्राएल के लोगों ने पाप किये और बाल की मूर्तियों की
सेवा की। यहोवा ने मनुष्यों को यह पाप करते देखा।
12यहोवा इस्राएल के लोगों को मिस्र से बाहर लाया था
और इन लोगों के पूर्वजों ने यहोवा की उपासना की
थी। किन्तु इस्राएल के लोगों ने यहोवा का अनुसरण
करना छोड़ दिया। इस्राएल के लोगों ने उन लोगों के
असत्य देवताओं की पूजा करना आरम्भ की, जो उनके
चारों ओर रहते थे। इस काम ने यहोवा को क्रोधित
कर दिया। 13इस्राएल के लोगों ने यहोवा का अनुसरण
करना छोड़ दिया और बाल एवं अश्तोरेत की पूजा
करने लगे।

14यहोवा इस्राएल के लोगों पर बहुत क्रोधित हुआ।
इसलिए यहोवा ने शत्रुओं को इस्राएल के लोगों पर
आक्रमण करने दिया और उनकी सम्पत्ति लेने दी।
उनके चारों ओर रहने वाले शत्रुओं को यहोवा ने उन्हें
पराजित करने दिया। इस्राएल के लोग अपनी रक्षा अपने
शत्रुओं से नहीं कर सके। 15जब इस्राएल के लोग युद्ध
के लिये निकले तो वे पराजित हुए। वे पराजित हुए
क्योंकि यहोवा उनके साथ नहीं था। यहोवा ने पहले से
इस्राएल के लोगों को चेतावनी दी थी कि वे पराजित
होंगे, यदि वे उन लोगों के देवताओं की सेवा करेंगे जो
उनके चारों ओर रहते हैं। इस्राएल के लोगों की बहुत
अधिक हानि हुई।

16तब यहोवा ने न्यायाधीश कहे जाने वाले प्रमुखों को
चुना। इन प्रमुखों ने इस्राएल के लोगों को उन शत्रुओं से
बचाया जिन्होंने इनकी सम्पत्ति ले ली थी। 17किन्तु इस्राएल
के लोगों ने अपने न्यायाधीशों की एक न सुनी। इस्राएल
के लोग यहोवा के प्रति वफादार नहीं थे, वे अन्य
देवताओं का अनुसरण कर रहे थे।* अतीतकाल में
इस्राएल के लोगों के पूर्वज यहोवा के आदेशों का पालन
करते थे किन्तु अब इस्राएल के लोग बदल गये थे और
वे यहोवा की आज्ञा का पालन करना छोड़ चुके थे।

18इस्राएल के शत्रुओं ने कई बार लोगों के साथ बुरा
किया। इसलिए इस्राएल के लोग सहायता के लिये चिल्लाते
थे और हर बार यहोवा को लोगों के लिए दु:ख होता
था। हर बार वह शत्रुओं से लोगों की रक्षा के लिये एक
न्यायाधीश भेजता था। इस प्रकार हर बार इस्राएल के
लोग अपने शत्रुओं से बच जाते थे। 19किन्तु जब हर
एक न्यायाधीश मर गया, तब इस्राएल के लोगों ने फिर
पाप किया और असत्य देवताओं की पूजा आरम्भ की।
इस्राएल के लोग बहुत हठी थे, उन्होंने अपने पाप के
व्यवहार को बदलने से इन्कार कर दिया।

20इस प्रकार यहोवा इस्राएल के लोगों पर बहुत क्रोधित
हुआ और उसने कहा, "इस राष्ट्र ने उस वाचा को तोड़ा
है जिसे मैंने उनके पूर्वजों के साथ की थी। उन्होंने मेरी
नहीं सुनी। 21इसलिए मैं और अधिक राष्ट्रों को पराजित
नहीं करूँगा, और न ही इस्राएल के लोगों का रास्ता
साफ करूँगा। वे राष्ट्र उन दिनों भी उस प्रदेश में थे जब
यहोशू मरा था और मैं उन राष्ट्रों को उस प्रदेश में रहने

यहोवा के ... रहे थे "दूसरे देवताओं के वेश्या की तरह व्यवहार कर रहे थे।"

दूँगा। 22मैं उन राष्ट्रों का उपयोग इस्राएल के लोगों की परीक्षा के लिये करूँगा। मैं यह देखूँगा कि इस्राएल के लोग अपने यहोवा का आदेश वैसे ही मानते हैं अथवा नहीं जैसे उनके पूर्वज मानते थे।" 23बीते समय में, यहोवा ने उन राष्ट्रों को उन प्रदेशों में रहने दिया था। यहोवा ने शीघ्रता से उन राष्ट्रों को अपना देश छोड़ने नहीं दिया। उसने उन्हें हराने में यहोशू की सेना की सहायता नहीं की।

3 यहाँ उन राष्ट्रों के नाम हैं जिन्हें यहोवा ने बलपूर्वक अपना देश नहीं छुड़वाया। यहोवा इस्राएल के उन लोगों की परीक्षा लेना चाहता था, जो कनान प्रदेश को लेने के लिये होने वाले युद्धों में लड़े नहीं थे। यही कारण था कि उसने उन राष्ट्रों को उस प्रदेश में रहने दिया। 2(उस प्रदेश में यहोवा द्वारा उन राष्ट्रों को रहने देने का कारण केवल यह था कि इस्राएल के लोगों के उन वंशजों को शिक्षा दी जाय जो उन युद्धों में नहीं लड़े थे।) 3पलिश्ती लोगों के पाँच शासक, सभी कनानी लोग, सीदोन के लोग और हिव्वी लोग जो लबानोन के पहाड़ों में बालहेर्मोन पर्वत से लेकर हमात तक रहते थे। 4यहोवा ने उन राष्ट्रों को इस्राएल के लोगों की परीक्षा के लिये उस प्रदेश में रहने दिया। वह यह देखना चाहता था कि इस्राएल के लोग यहोवा के उन आदेशों का पालन करेंगे अथवा नहीं, जिन्हें उसने मूसा द्वारा उनके पूर्वजों को दिया था।

5इस्राएल के लोग कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिव्वी और यबूसी लोगों के साथ रहते थे। 6इस्राएल के लोगों ने उन लोगों की पुत्रियों के साथ विवाह करना आरम्भ कर दिया। इस्राएल के लोगों ने अपनी पुत्रियों को उन लोगों के पुत्रों के साथ विवाह करने दिया और इस्राएल के लोगों ने उन लोगों के देवताओं की सेवा की।

पहला न्यायाधीश ओत्नीएल

7यहोवा ने देखा कि इस्राएल के लोग पाप कर रहे हैं। इस्राएल के लोग यहोवा अपने परमेश्वर को भूल गए और बाल की मूर्तियों एवं अशेरा की मूर्तियों की सेवा करने लगे। 8यहोवा इस्राएल के लोगों पर क्रोधित हुआ।यहोवा ने कुशन रिश्आतइम को जो मेसोपोटामिया का राजा था, इस्राएल के लोगों को हराने और उन पर शासन करने दिया। इस्राएल के लोग उस राजा के शासन में आठ वर्ष तक रहे। 9किन्तु इस्राएल के लोगों ने यहोवा को रोकर पुकारा। यहोवा ने एक व्यक्ति को उनकी रक्षा के लिए भेजा। उस व्यक्ति का नाम ओत्नीएल था। वह कनजी का पुत्र था । कनजी कालेब का छोटा भाई था। ओत्नीएल ने इस्राएल के लोगों को बचाया। 10यहोवा की आत्मा ओत्नीएल पर उतरी और वह इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश हो गया। ओत्नीएल ने इस्राएल के लोगों का युद्ध में संचालन किया। यहोवा ने मेसोपोटामिया के राजा कूशत्रिशातैम को हराने में ओत्नीएल की सहायता की। 11इस प्रकार वह प्रदेश चालीस वर्ष तक शान्त रहा, जब तक कनजी नामक व्यक्ति का पुत्र ओत्नीएल नहीं मरा।

न्यायाधीश एहूद

12यहोवा ने फिर इस्राएल के लोगों को पाप करते देखा। इसलिए यहोवा ने मोआब के राजा एग्लोन को इस्राएल के लोगों को हराने की शक्ति दी। 13एग्लोन ने इस्राएल के लोगों पर आक्रमण करते समय अम्मोनियों और अमालेकियों को अपने साथ लिया। एग्लोन और उसकी सेना ने इस्राएल के लोगों को हराया और ताड़ के पेंड़ो वाले नगर (यरीहो) से उन्हें निकाल बाहर किया। 14इस्राएल के लोग अट्ठारह वर्ष तक मोआब के राजा एग्लोन के शासन में रहे।

15तब लोगों ने यहोवा से प्रार्थना की और रोकर उसे पुकारा। यहोवा ने इस्राएल के लोगों की रक्षा के लिए एक व्यक्ति को भेजा। उस व्यक्ति का नाम एहूद था। एहूद वामहस्त व्यक्ति था। एहूद बिन्यामीन के परिवार समूह के गेरा नामक व्यक्ति का पुत्र था। इस्राएल के लोगों ने एहूद को मोआब के राजा एग्लोन के लिये कर के रूप में कुछ धन देने को भेजा। 16एहूद ने अपने लिये एक तलवार बनाई। वह तलवार दोधारी थी और लगभग अट्ठारह इंच लम्बी थी। एहूद ने तलवार को अपनी दायीं जांघ से बांधा और अपने वस्त्रों में छिपा लिया।

17इस प्रकार एहूद मोआब के राजा एग्लोन के पास आया और उसे भेंट के रूप में धन दिया। (एग्लोन बहुत मोटा आदमी था।) 18एग्लोन को धन देने के बाद एहूद ने उन व्यक्तियों को घर भेज दिया, जो धन लाए थे। 19जब एग्लोन गिलगाल नगर की मूर्तियों के पास से वापस मुड़ा, तब एहूद ने एग्लोन से कहा, "राजा, मैं आपके लिए एक गुप्त सन्देश लाया हूँ।" राजा ने कहा, "चुप रहो।" तब उसने सभी नौकरों को कमरे से बाहर भेज दिया। 20एहूद राजा एग्लोन के पास गया। एग्लोन एकदम अकेला अपने ग्रीष्म महल के ऊपरी कमरे में बैठा था। तब एहूद ने कहा, "मैं परमेश्वर के यहाँ से आपके लिये सन्देश लाया हूँ।" राजा अपने सिंहासन से उठा, वह एहूद के बहुत पास था। 21ज्योंही राजा अपने सिंहासन से उठा,* एहूद ने अपने बांये हाथ को बढ़ाया और उस तलवार को निकाला जो उसकी दायीं जांघ में बंधी थी। तब एहूद ने तलवार को राजा के पेट में घुसेड़ दिया। 22तलवार एग्लोन के पेट में इतनी भीतर गई कि उसकी मूठ भी उसमें समा गई। राजा की चर्बी ने पूरी

ज्योंही राजा ... उठा पाठ का यह अंश प्राचीन यूनानी अनुवाद में है, किन्तु यह संयोगवश हिब्रू पाठ से छूट गया था।

तलवार को छिपा लिया। इसलिए एहूद ने तलवार को
एग्लोन के अन्दर छोड़ दिया। 23एहूद कमरे से बाहर
गया और उसने अपने पीछे दरवाजों को ताला लगाकर
बन्द कर दिया।

24एहूद के चले जाने के ठीक बाद नौकर आए।
नौकरों ने कमरे के दरवाजों में ताला लगा पाया। इसलिए
नौकरों ने कहा, "राजा आराम कक्ष में आराम कर रहे
होंगे।" 25इसलिए नौकरों ने लम्बे समय तक प्रतीक्षा
की। अन्त में वे चिन्तित हुए। उन्होंने चाभी ली और
दरवाजें खोले। जब नौकर घुसे तो उन्होंने राजा को
फर्श पर मरा पड़ा देखा। 26जब तक नौकर राजा की
प्रतीक्षा करते रहे तब तक एहूद को भाग निकलने का
समय मिल गया। एहूद मूर्तियों के पास से होकर सेइरे
नामक स्थान की ओर गया। 27एहूद सेइरे नामक स्थान
पर पहुँचा। तब उसने एप्रैम के पहाड़ी क्षेत्र मे तुरही
बजाई। इस्राएल के लोगों ने तुरही की आवाज सुनी और
वे पहाड़ियों से उतरे। एहूद उनका संचालक था। 28एहूद
ने इस्राएल के लोगों से कहा, "मेरे पीछे चलो। यहोवा ने
मोआब के लोगों अर्थात् हमारे शत्रुओं को हराने में
हमारी सहायता की है।"

इसलिए इस्राएल के लोगों ने एहूद का अनुसरण किया।
वे एहूद का अनुसरण उन स्थानों पर अधिकार करने
के लिए करते रहे जहाँ से यरदन नदी सरलता से पार
की जा सकती थी। वे स्थान मोआब के प्रदेश तक
पहुँचाते थे। इस्राएल के लोगों ने किसी को यरदन नदी
के पार नहीं जाने दिया। 29इस्राएल के लोगों ने मोआब
के लगभग दस हजार बलवान और साहसी व्यक्तियों को
मार डाला। एक भी मोआबी भागकर बच न सका।
30इसलिए उस दिन मोआब के लोग बलपूर्वक इस्राएल
के लोगों के शासन में रहने को विवश किये गए और
वहाँ उस प्रदेश में अस्सी वर्ष तक शान्ति रही!

न्यायाधीश शमगर

31एहूद द्वारा इस्राएल के लोगों की रक्षा हो जाने के
बाद एक अन्य व्यक्ति ने इस्राएल को बचाया। उस व्यक्ति
का नाम शमगर था और वह अनात नामक व्यक्ति
का पुत्र था। शमगर ने चाबुक का उपयोग छ: सौ
पलिश्ती व्यक्तियों को मार डालने के लिये किया।

स्त्री न्यायाधीश दबोरा

4 एहूद के मरने के बाद यहोवा ने इस्राएली लोगों
को फिर पाप करते देखा। 2इसलिए यहोवा ने
कनान प्रदेश के राजा याबीन को इस्राएली लोगों को
पराजित करने दिया। याबीन हासोर नामक नगर में
शासन करता था। राजा याबीन की सेना का सेनापति
सीसरा नामक व्यक्ति था। सीसरा हरोशेत हाग्गोयीम
नामक नगर में रहता था। 3सीसरा के पास नौ सौ लोहे
के रथ थे और वह बीस वर्ष तक इस्राएल के लोगों के
प्रति बहुत क्रूर रहा। इस्राएल के लोगों के साथ बहुत
बुरा व्यवहार किया गया। इसलिए उन्होंने यहोवा की
प्रार्थना की और सहायता के लिए रोकर पुकार की।

4एक स्त्री नबी दबोरा नाम की थी। वह लप्पीदोत
नामक व्यक्ति की पत्नी थी। वह उस समय इस्राएल की
न्यायाधीश थी। 5एक दिन दबोरा, ताड़ के पेड़ के नीचे
बैठी थी जिसे "दबोरा का ताड़ वृक्ष" कहा जाता था।
इस्राएल के लोग उसके पास यह पूछने के लिये आए कि
सीसरा के विषय में क्या किया जाय। दबोरा का ताड़
वृक्ष एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में रामा और बेतेल नगरों के
बीच था। 6दबोरा ने बाराक नामक व्यक्ति के पास
संदेश भेजा। उसने उसे उस से मिलने को कहा। बाराक
अबीनोअम नामक व्यक्ति का पुत्र था। बाराक नप्ताली
के क्षेत्र में केदेश नामक नगर में रहता था। दबोरा ने
बाराक से कहा, "यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर तुम्हें
आदेश देता है, 'जाओ और नप्ताली एवं जबूलून के
परिवार समूहों से दस हजार व्यक्तियों को इकट्ठा करो।
7मैं याबीन की सेना के सेनापति सीसरा को तुम्हारे पास
भेजूँगा। मैं सीसरा, उसके रथों और उसकी सेना को
कीशोन नदी पर पहुँचाऊँगा। मैं वहाँ सीसरा को हराने
में तुम्हारी सहायता करूँगा।'"

8तब बाराक ने दबोरा से कहा, "यदि तुम मेरे साथ
चलोगी तो मैं जाऊँगा और यह करूँगा। किन्तु यदि तुम
नहीं चलोगी तो मैं नहीं जाऊँगा।"

9दबोरा ने उत्तर दिया, "निश्चय ही, मैं तुम्हारे साथ
चलूँगी। किन्तु तुम्हारी भावना के कारण जब सीसरा
हराया जाएगा, तुम्हें सम्मान नहीं मिलेगा। यहोवा एक
स्त्री द्वारा सीसरा को हराने देगा।"

इसलिए दबोरा बाराक के साथ केदेश नगर को गई।
10केदेश नगर में बाराक ने जबूलून और नप्ताली के
परिवार समूहों को एक साथ बुलाया। बाराक ने उन
परिवार समूहों से, अपने साथ चलने के लिये दस हजार
व्यक्तियों को इकट्ठा किया। दबोरा भी बाराक के साथ
गई।

11वहाँ हेबेर नामक एक ऐसा व्यक्ति था जो केनी
लोगों में से था। हेबेर अन्य केनी लोगों को छोड़ चुका
था। (केनी लोग होबाब के वंशज थे। होबाब मूसा का
ससुर था।) हेबेर ने अपना घर सानन्नीम स्थान पर
बांज के पेड़ के समीप बनाया था। सानन्नीम केदेश
नगर के पास है।

12तब सीसरा से यह कहा गया कि बाराक जो कि
अबीनोअम का पुत्र है, ताबोर पर्वत तक पहुँच गया है।
13इसलिए सीसरा ने अपने नौ सौ लोहे के रथों को
इकट्ठा किया। सीसरा ने अपने सभी सैनिकों को भी
साथ लिया। हरोशेत हाग्गोयीम नगर से उन्होंने कीशोन
नदी तक यात्रा की।

14तब दबोरा ने बाराक से कहा, "आज के दिन ही यहोवा तुम्हें सीसरा को हराने में सहायता देगा। निश्चय ही, तुम जानते हो कि यहोवा ने पहले से ही तुम्हारे लिये रास्ता साफ कर रखा है।" इसलिए बाराक ने दस हजार सैनिकों को ताबोर पर्वत से उतारा।
15बाराक और उसके सैनिकों ने सीसरा पर आक्रमण कर दिया। युद्ध के दौरान यहोवा ने सीसरा, उसकी सेना और रथों को अस्तव्यस्त कर दिया। उनकी व्यवस्था भंग हो गई। इसलिए बाराक और उसकी सेना ने सीसरा की सेना को हरा दिया। किन्तु सीसरा ने अपने रथ को छोड़ दिया तथा पैदल भाग खड़ा हुआ।
16बाराक ने सीसरा की सेना से युद्ध जारी रखा। बाराक और उसके सैनिकों ने सीसरा के रथों और सेना का पीछा हरोशेत हाग्गोयीम तक लगातार किया। बाराक के सैनिकों ने सीसरा के सैनिकों को मारने के लिये अपनी तलवारों का उपयोग किया। सीसरा का कोई सैनिक जीवित न बचा।

17किन्तु सीसरा भाग गया। वह उस तम्बू के पास आया, जहाँ याएल नामक एक स्त्री रहती थी। याएल, हासोर नामक व्यक्ति की पत्नी थी। वह केनी लोगों में से एक था। हेबेर का परिवार हासोर के राजा याबीन से शान्ति–सन्धि किये हुये था। इसलिये सीसरा, याएल के तम्बू में भाग कर गया।
18याएल ने सीसरा को आते देखा, अत: वह उससे मिलने बाहर गई। याएल ने सीसरा से कहा, "मेरे तम्बू मे आओ, मेरे स्वामी, आओ। डरो नहीं।" इसलिए सीसरा याएल के तम्बू में गया और उसने उसे एक कालीन से ढक दिया।

19सीसरा ने याएल से कहा, "मैं प्यासा हूँ। कृपया मुझे पीने को थोड़ा पानी दो।" इसलिए याएल ने एक मशक खोला, जिसमें उसने दूध रखा था और उसने पीने को दिया। तब उसने सीसरा को ढक दिया।

20 तब सीसरा ने याएल से कहा, "तम्बू के द्वार पर जाओ। यदि कोई यहाँ से गुजरता है और पूछता है, 'क्या यहाँ कोई है?', तो तुम कहना–'नहीं'"
21किन्तु हेबेर की पत्नी याएल ने एक तम्बू की खूँटी और हथौड़ा लिया। याएल चुपचाप सीसरा के पास गई। सीसरा बहुत थका था अत: वह सो रहा था। याएल ने तम्बू की खूँटी को सीसरा के सिर की एक ओर रखा और उस पर हथौड़े से चोट की। तम्बू की खूँटी सीसरा के सिर की एक ओर से होकर जमीन में धँस गई और इस तरह सीसरा मर गया।
22ठीक तुरन्त बाद बाराक सीसरा को खोजता हुआ याएल के तम्बू के पास आया। याएल बाराक से मिलने बाहर निकली और बोली, "अन्दर आओ और मैं उस व्यक्ति को दिखाऊँगी जिसे तुम ढूँढ रहे हो।" इसलिए बाराक याएल के साथ तम्बू में घुसा। बाराक ने वहाँ सीसरा को जमीन पर मरा पड़ा पाया, तम्बू की खूँटी उसके सिर की एक ओर से दूसरी ओर निकली हुई थी।

23उस दिन यहोवा ने कनान के राजा याबीन को इस्राएल के लोगों की सहायता से हराया।
24इस प्रकार इस्राएल के लोग क्रमश: अधिक शक्तिशाली होते गए और उन्होंने कनान के राजा याबीन को हरा दिया। इस्राएल के लोगों ने कनान के राजा याबीन को अन्तिम रूप से हराया।

दबोरा का गीत

5 जिस दिन इस्राएल के लोगों ने सीसरा को हरायाउस दिन दबोरा और अबीनोअम के पुत्र बाराक ने इस गीत को गाया: *

2इस्राएल के लोगों ने अपने को युद्ध के लिये तैयार किया।* लोग युद्ध में जाने के लिये स्वयं आए! यहोवा को धन्य कहो!

3राजाओं, सुनो। शासकों, ध्यान दो। मैं गाऊँगी। मैं स्वयं यहोवा के प्रति गाऊँगी। मैं यहोवा, इस्राएल के लोगों के परमेश्वर की स्तुति करूँगी।

4हे यहोवा, अतीत में तू सेईर देश से आया। तू एदोम प्रदेश से चलकर आया, और धरती काँप उठी। गगन ने वर्षा की। मेघों ने जल गिराया।

5पर्वत काँप उठे यहोवा, सीनै पर्वत के परमेश्वर के सामने, यहोवा, इस्राएल के लोगों के परमेश्वर के सामने!

6अनात का पुत्र शमगर के समय में याएल के समय में, मुख्य पथ सूने थे। काफिले* और यात्री गौण पथों से चलते थे।

7कोई योद्धा नहीं था। इस्राएल में कोई योद्धा नहीं था, हे दबोरा, जब तक तुम न खड़ी हुई, जब तक तुम इस्राएल की माँ बन कर न खड़ी हुई।

8परमेश्वर ने नये प्रमुखों को चुना कि वे नगर–द्वार पर युद्ध करे।* इस्राएल के चालीस हजार सैनिकों में–कोई ढाल और भाला नहीं पा सका।

9मेरा हृदय इस्राएल के सेनापतियों के साथ है। ये सेनापति इस्राएल के लोगों में से स्वयं आए! यहोवा को धन्य कहो!

10श्वेत गधों पर सवार होने वाले लोगों तुम, जो कम्बल की काठी पर बैठते हो और तुम जो राजपथ पर चलते हो, ध्यान दो!

अध्याय 5 यह बहुत प्राचीन गीत है और इस गीत की कई पंक्तियों के अर्थ हिब्रू भाषा में समझ पाना कठिन है।

इस्राएल ... तैयार किया इसका अर्थ यह भी हो सकता है, "जन नायकों ने इस्राएल का नेतृत्व किया" अथवा "जब इस्राएल में लोग लम्बे बाल रखते थे।" या सैनिक अपने बालों को परमेश्वर को विशेष उपहार के रूप में अर्पित करते थे।

काफिले व्यापारियों के दल। प्राय: बहुत से व्यापारी अपने सामान को गधों या ऊँटों पर लादकर एक साथ यात्रा करते थे।

परमेश्वर ... युद्ध करे इन दो पंक्तियों का अर्थ बहुत अस्पष्ट है।

11घुंघरूओं की छमछम पर, पशुओं को लिए पानी
वाले कूपों पर, वे यहोवा की विजय की कथाओं को
कहते हैं, इस्राएल में यहोवा और उसके वीरों की
विजय-कथा कहते हैं। उस समय यहोवा के लोग
नगर-द्वारों पर लड़े और विजयी हुये!
12 दबोरा जागो, जागो! जागो, जागो, गीत गाओ जागो,
बाराक! जाओ, हे अबीनोअम के पुत्र अपने शत्रुओं
को पकड़ो!
13उस समय, बचे लोग, सम्मानितों के पास आए।
यहोवा के लोग, मेरे पास योद्धाओं के साथ आए।*
14एप्रैम के कुछ लोग अमालेक के पहाड़ी प्रदेश* में
बसे। ऐ बिन्यामीन, तुम्हारे बाद वे लोग और तुम्हारे
लोग आए। माकीर के परिवार समूह से सेनापति आगे
आए। काँसे के दण्ड सहित नायक आए जबूलून परिवार
समूह से।
15इस्साकर के नेता दबोरा के साथ थे। इस्साकर का
परिवार समूह बाराक के प्रति सच्चा था। वे व्यक्ति
पैदल ही घाटी में भेजे गए। रूबेन के सैनिक बड़बड़ाए,
वे क्या करें।
16भेड़शाले के दीवार* से लगे क्यों तुम सभी बैठे
हो? रूबेन के वीर सैनिकों ने युद्ध का दृढ़ निश्चय
किया। किन्तु वे अपनी भेड़ों के लिए संगीत को सुनते
रहे घर बैठे।*
17गिलाद के लोग* यरदन नदी के पार अपने डेरों
में पड़े रहे। ऐ, दान के लोगों, जहाँ तक बात तुम्हारी
है- तुम जहाजों के साथ क्यों चिपके रहे? आशेर के
लोग सागर तट परपड़े रहे। उन्होंने अपने सुरक्षित
बन्दरगाहों में डेरा डाला।
18किन्तु जबूलून के लोगों ने और नप्ताली के लोगों
ने, मैदान के ऊँचे क्षेत्रों में युद्ध के खतरे में जीवन को
डाला। 19राजा आए, वे लड़े,उस समय कनान का राजा,
तानक शहर में मगिद्दो के जलाशय पर लड़ा किन्तु वे
इस्राएल के लोगों की कोई सम्पत्ति न ले जा सके!
20गगन से नक्षत्रों ने युद्ध किया। नक्षत्रों ने अपने पथ
से, सीसरा से युद्ध किया।
21कीशोन नदी, सीसरा के सैनिकों को बहा ले गई,
वह प्राचीन नदी-कीशोन नदी। मेरी आत्मा, शक्ति से
धावा बोलो!
22उस समय अश्वों की टापों ने भूमि पर हथौड़ा
चलाया। सीसरा के अश्व भागते गए, भागते गए।
23यहोवा के दूत ने कहा, "मेरोज नगर को अभिशाप
दो। इसके लोगों को भीषण अभिशाप दो! योद्धाओं के
साथ वे यहोवा की सहायता करने नहीं आए।"
24केनी हेबेर की पत्नी याएल सभी स्त्रियों में से सबसे
अधिक धन्य होगी।
25सीसरा ने मांगा जल, किन्तु याएल ने दिया दूध,
शासक के लिये उपयुक्त कटोरे में, वह उसे मलाई
लाई।
26याएल बाहर गई, लाई खूँटी तम्बू की। उसके दायें
कर में हथौड़ा आया श्रमिक काम लाते जिसे और
उसने सीसरा पर चलाया हथौड़ा। उसने किया चूर सिर
उसका, उसने उसके सिर को बेधा एक ओर से।
27डूबा वह याएल के पैरों बीच। वह मर गया। वह पड़
गया वहीं। डूबा वह उसके पैरों बीच। वह मर गया जहाँ
सीसरा डूबा। वहीं वह गिरा, मर गया!
28सीसरा की माँ, देखती खिड़की से और पर्दो से
झांकती हुई चीख उठी। "सीसरा के रथ को विलम्ब
क्यों आने में? सीसरा के रथ के अश्वों के हिनहिनाने
में देर क्यों?"
29सबसे चतुर उसकी सेविकायें उत्तर उसे देती, हाँ
सेविका उसे उत्तर देती:
30"निश्चय ही उन्होंने विजय पाई है निश्चय ही
पराजितों की वस्तुएँ वे ले रहे हैं! निश्चय ही वे बाँटते हैं
आपस में वस्तुओं को! एक लड़की या दो, दी जा रही
हर सैनिक को। संभवत: सीसरा ले रहा है, कोई रंगा
वस्त्र। संभवत: एक कढ़े वस्त्र का टुकड़ा हो, या
विजेता सीसरा पहनने के लिए, दे कढे किनारी युक्त
वस्त्र।"
31हे यहोवा! इस तरह तेरे, सब शत्रु मर-मिट जायें।
किन्तु वे लोग सब जो प्यार करते हैं तुझको ज्वलित-दीप्त
सूर्य सम शक्तिशाली बने!
इस प्रकार उस प्रदेश में चालीस वर्ष तक शान्ति रही।

मिद्यानी इस्राएल के लोगों से युद्ध करते हैं

6 यहोवा ने फिर देखा कि इस्राएल के लोग पाप कर
रहे हैं। इसलिए सात वर्ष तक यहोवा ने मिद्यानी
लोगों को इस्राएल को पराजित करने दिया।
2मिद्यानी लोग बहुत शक्तिशाली थे तथा इस्राएल के
लोगों के प्रति बहुत क्रूर थे। इसलिए इस्राएल के लोगों ने
पहाड़ों में बहुत से छिपने के स्थान बनाए। उन्होंने अपना
भोजन भी गुफाओं और कठिनाई से पता लगाए जा
सकने वाले स्थानों में छिपाए। 3उन्होंने यह किया, क्योंकि

उस समय ... साथ आये या "उस समय जो लोग बचे थे सम्मानितों पर शासन करते थे। यहोवा के लोगों ने मेरे लिये योद्धाओं के साथ शासन किया।

अमालेक के पहाड़ी प्रदेश यह क्षेत्र उस प्रदेश का भाग था जिसमें एप्रैम का परिवार समूह बसा था। देखें न्यायियों 12:15

भेड़शाले के दीवार या सम्भवत: "शिविर समारोह" या "काठी के थैले।"

रूबेन के ... घर बैठे यह गीत इन लोगों पर व्यंग्य करने के लिये है क्योंकि इन्होंने सीसरा के विरूद्ध युद्ध में सहायता नहीं की।

गिलाद के लोग वे लोग थे जो यरदन नदी के पूर्व के प्रदेश में थे।

मिद्यानी और अमालेकी लोग पूर्व से सदा आते थे और
उनकी फसलों को नष्ट करते थे। 4वे लोग उस प्रदेश
में डेरे डालते थे और उस फसल को नष्ट करते थे जो
इस्राएल के लोग लगाते थे। अज्जा नगर के निकट तक
के प्रदेश की इस्राएल के लोगों की फसल को वे लोग
नष्ट करते थे। वे लोग इस्राएल के लोगों के खाने के
लिये कुछ भी नही छोड़ते थे। वे उनके लिए भेड़, या
पशु या गधे भी नहीं छोड़ते थे। 5मिद्यानी लोग आए और
उन्होंने उस प्रदेश में डेरा डाला। वे अपने साथ अपने
परिवारों और जानवरों को भी लाए। वे इतने अधिक थे
जितने टिड्डियों के दल। उन लोगों और उनके ऊँटों
की संख्या इतनी अधिक थी कि उनको गिनना संभव
नहीं था। ये सभी लोग उस प्रदेश में आए और उसे रौंद
डाला। 6इस्राएल के लोग मिद्यानी लोगों के कारण बहुत
गरीब हो गए। इसलिए इस्राएल के लोगों ने यहोवा को
सहायता के लिए रो कर पुकारा।

7मिद्यानियों ने वे सभी बुरे काम किये। इसलिये
इस्राएल के लोग यहोवा से सहायता के लिए रो कर
चिल्लाये। 8इसलिए यहोवा ने उनके पास एक नबी
भेजा। नबी ने इस्राएल के लोगों से कहा, "यहोवा, इस्राएल
का परमेश्वर यह कहा है कि, 'तुम लोग मिस्र देश में
दास थे। मैंने तुम लोगों को स्वतन्त्र किया और मैं उस
देश से तुम्हें बाहर लाया। 9मैंने मिस्र के शक्तिशाली
लोगों से तुम्हारी रक्षा की। तब कनान के लोगों ने
तुमको कष्ट दिया। इसलिए मैंने फिर तुम्हारी रक्षा की।
मैंने उन लोगों से उनका देश छुड़वाया और मैंने उनका
देश तुम्हें दिया।' 10तब मैंने तुमसे कहा, 'मैं यहोवा
तुम्हारा परमेश्वर हूँ। तुम लोग एमोरी लोगों के प्रदेश में
रहोगे, किन्तु तुम्हें उनके असत्य देवताओं की पूजा नहीं
करनी चाहिए।' परन्तु तुम लोगों ने मेरी आज्ञा का
पालन नहीं किया।"

यहोवा का दूत गिदोन के पास आता है

11उस समय, यहोवा का दूत गिदोन नामक व्यक्ति के
पास आया। यहोवा का दूत आया और ओप्रा नामक
स्थान पर एक बांज के पेड़ के नीचे बैठा। यह बांज का
पेड़ योआश नामक व्यक्ति का था। योआश अबीएजेरी
लोगों में से एक था। योआश गिदोन का पिता था।
गिदोन कुछ गेहूँ को दाखमधु निकालने के यंत्र में कूट
रहा था। यहोवा का दूत गिदोन के पास बैठा। गिदोन
मिद्यानी लोगों से अपना गेहूँ छिपाने का प्रयत्न कर रहा
था। 12यहोवा का दूत गिदोन के सामने प्रकट हुआ और
उससे कहा, "यहोवा तुम्हारे साथ है, तुम जैसे शक्तिशाली
सैनिकों के साथ है।"

13तब गिदोन ने कहा, "महोदय, मैं शपथ खाकर
कहता हूँ कि यदि यहोवा हमारे साथ है तो हम लोगों
को इतने कष्ट क्यों हैं? हम लोगों ने सुना है कि उसने
हमारे पूर्वजों के लिए अद्भुत कार्य किये थे। हमारे
पूर्वजों ने हम लोगों से कहा कि यहोवा हम लोगों को
मिस्र से बाहर लाया। किन्तु अब यहोवा ने हम लोगों को
छोड़ दिया है। यहोवा ने मिद्यानी लोगों को हम लोगों को
हराने दिया।" 14यहोवा गिदोन की ओर मुड़ा और उससे
बोला, "अपनी शक्ति का प्रयोग करो। जाओ और मिद्यानी
लोगों से इस्राएल के लोगों की रक्षा करो। क्या तुम यह
नहीं समझते कि वह मैं यहोवा हूँ, जो तुम्हें भेज रहा
हूँ?"

15किन्तु गिदोन ने उत्तर दिया और कहा, "महोदय,
क्षमा करें, मैं इस्राएल की रक्षा कैसे कर सकता हूँ?
मेरा परिवार मनश्शे के परिवार समूह में सबसे कमजोर
है और मैं अपने परिवार मे सबसे छोटा हूँ।"

16यहोवा ने गिदोन को उत्तर दिया और कहा, "मैं
निश्चय ही मिद्यानी लोगों को हराने में सहायता करने
के लिये तुम्हारे साथ रहूँगा। यह ऐसा मालूम होगा कि
तुम एक व्यक्ति के विरुद्ध लड़ रहे हो।"

17तब गिदोन ने यहोवा से कहा, "यदि तू मुझ से प्रसन्न
है तो तू प्रमाण दे कि तू सचमुच यहोवा है। 18कृपा
करके तू यहाँ रुक। जब तक मैं लौट न आऊँ तब तक
तू न जा। मुझें मेरी भेंट लाने दे और उसे तेरे सामने
रखने दे।" अत: यहोवा ने कहा, "मैं तब तक प्रतीक्षा
करुँगा जब तक तुम लौटते नहीं।"

19इसलिए गिदोन गया और उसने एक जवान बकरा
खौलते पानी में पकाया। गिदोन ने लगभग एक एपा
आटा भी लिया और अखमीरी रोटियाँ बनाई। तब गिदोन
ने माँस को एक टोकरे में तथा पके माँस के शोरबे को
एक बर्तन में लिया। गिदोन ने माँस, पके माँस के
शोरबा और अखमीरी रोटियों को निकाला। गिदोन ने
वह भोजन बांज के पेड़ के नीचे यहोवा को दिया।

20परमेश्वर के दूत ने गिदोन से कहा, "माँस और
अखमीरी रोटियों को वहाँ चट्टान पर रखो। तब शोरबे
को गिराओ।" गिदोन ने वैसा ही किया जैसा करने को
कहा गया था।

21यहोवा के दूत ने अपने हाथ में एक छड़ी ले रखी
थी। यहोवा के दूत ने माँस और रोटियों को छड़ी के
सिरे से छुआ। तब चट्टान से आग जल उठी। गोश्त
और रोटियाँ पूरी तरह जल गई। तब यहोवा का दूत
अर्न्तध्यान हो गया। 22तब गिदोन ने समझा कि वह
यहोवा के दूत से बातें कर रहा था। इसलिए गिदोन
चिल्ला उठा, "सर्वशक्तिमान यहोवा महान है। मैंने यहोवा
के दूत को आमने–सामने देखा है।"

23किन्तु यहोवा ने गिदोन से कहा, "शान्त रहो।" डरो
नहीं। तुम मरोगे नहीं।*

तुम मरोगे नहीं गिदोन ने सोचा कि वह मर जाएगा क्योंकि उसने यहोवा को प्रत्यक्ष देखा है।

24इसलिए गिदोन ने यहोवा की उपासना के लिए उस
स्थान पर एक वेदी बनाई। गिदोन ने उस वेदी का नाम "यहोवा शान्ति है" रखा। वह वेदी अब तक ओप्रा में खड़ी है। ओप्रा वहीं है जहाँ एज़ेरी लोग रहते हैं।

गिदोन बाल की वेदी को गिरा डालता है

25उसी रात यहोवा ने गिदोन से बातें कीं। यहोवा ने
गिदोन से कहा, "अपने पिता के उस प्रौढ़ बैल को लो जो सात वर्ष का है। तुम्हारे पिता की असत्य देवता बाल की एक वेदी है। उस वेदी की बगल में एक लकड़ी का खम्भा भी है। खम्भा असत्य देवी अशेरा के सम्मान के लिए बनाया गया था। बैल का उपयोग बाल की वेदी को गिराने के लिये करो तथा अशेरा के खम्भे को काट
दो। 26तब यहोवा, अपने परमेश्वर के लिए उचित प्रकार
की वेदी बनाओ। इस ऊँचे स्थान पर वह वेदी बनाओ। तब प्रौढ़ बैल को मारो और इस वेदी पर उसे जलाओ। अशेरा के खम्भे की लकड़ी का उपयोग अपनी भेंट को जलाने के लिए करो।"

27इसलिए गिदोन ने अपने दस नौकरों को लिया और
वही किया जो यहोवा ने करने को कहा था। किन्तु गिदोन डर रहा था कि उसका परिवार और उस नगर के लोग देख सकते हैं कि वह क्या कर रहा है। गिदोन ने वही किया जो यहोवा ने उसे करने को कहा। किन्तु
उसने यह रात में किया, दिन में नहीं। 28अगली सुबह
नगर के लोग सोकर उठे और उन्होंने देखा कि बाल की वेदी नष्ट कर दी गई है। उन्होंने यह भी देखा कि अशेरा का खम्भा काट डाला गया है। अशेरा का खम्भा बाल की वेदी के ठीक पीछे गिरा पड़ा था। उन लोगों ने उस वेदी को भी देखा जिसे गिदोन ने बनाया था और उन्होंने उस वेदी पर बलि दिये गए बैल को भी देखा।

29नगर के लोगों ने एक दूसरे को देखा और कहा,
"हमारी वेदी को किसने गिराया? हमारे अशेरा के खम्भे किसने काटे? इस नयी वेदी पर किसने इस बैल की बलि दी?" उन्होंने कई प्रश्न किये और यह पता लगाना चाहा कि वे काम किसने किये। किसी ने कहा, "योआश के पुत्र गिदोन ने यह काम किया।"

30इसलिए नगर के लोग योआश के पास आए। उन्होंने
योआश से कहा, "तुम्हें अपने पुत्र को बाहर लाना चाहिए। उसने बाल की वेदी को गिराया है और उसने उस अशेरा के खम्भे को काटा है जो उस वेदी की बगल में था। इसलिए तुम्हारे पुत्र को मारा जाना चाहिए।"

31तब योआश ने उस भीड़ से कहा जो उसके चारों
ओर खड़ी थी। योआश ने कहा, "क्या तुम बाल का पक्ष लेने जा रहे हो? क्या तुम बाल की रक्षा करने जा रहे हो? यदि कोई बाल का पक्ष लेता है तो उसे सवेरे मार दिए जाने दो। यदि बाल सचमुच देवता है तो उसे अपनी रक्षा स्वयं करने दो, यदि कोई उस वेदी को गिराता है।"
32योआश ने कहा, "यदि गिदोन ने बाल की वेदी को
गिराया तो बाल को उससे संघर्ष करने दो।" अत: उस दिन योआश ने गिदोन को एक नया नाम दिया। उसने उसे यरुब्बाल कहा।

गिदोन मिद्यान के लोगों को हराता है

33मिद्यानी, अमालेकी एवं पूर्व के अन्य सभी लोग
इस्राएल के लोगों के विरुद्ध युद्ध करने के लिये एक साथ मिले। वे लोग यरदन नदी के पार गए और उन्होंने
यिज्रेल की घाटी* में डेरा डाला। 34किन्तु गिदोन पर
यहोवा का आत्मा उतरा और उसे बड़ी शक्ति प्रदान की। गिदोन ने अबीएज़ेरी लोगों को अपने साथ चलने
के लिए तुरही बजाई। 35गिदोन ने मनश्शे परिवार समूह
के सभी लोगों के पास दूत भेजे। उन दूतों ने मनश्शे के लोगों से अपने हथियार निकालने और युद्ध के लिए तैयार होने को कहा। गिदोन ने आशेर, जबूलून और नप्ताली के परिवार समूहों को भी दूत भेजे। इसलिए वे परिवार समूह भी गिदोन से और उसके आदमियों से मिलने गए।

36तब गिदोन ने यहोवा से कहा, "तूने मुझसे कहा कि
तू इस्राएल के लोगों की रक्षा करने में मेरी सहायता
करेगा। मुझे प्रमाण दे। 37मैं खलिहान* के फर्श पर
एक भेड़ का ऊन रखता हूँ। यदि भेड़ के ऊन पर ओस की बूँदें होंगी, जबकि सारी भूमि सूखी है, तब मैं समझूँगा कि तू अपने कहने के अनुसार मेरा उपयोग इस्राएल की रक्षा करने में करेगा।"

38और यह ठीक वैसा ही हुआ। गिदोन अगली सुबह
उठा और भेड़ के ऊन को निचोड़ा। वह भेड़ के ऊन से प्याला भर पानी निचोड़ सका।

39तब गिदोन ने परमेश्वर से कहा, "मुझ पर क्रोधित
न हो। मुझे केवल एक और प्रश्न करने दे। मुझे भेड़ के ऊन से एक बार और परीक्षण करने दे। इस समय भेड़ के ऊन को उस दशा में सूखा रहने दे जब इसके
चारों ओर की भूमि ओस से भीगी हो।" 40उस रात
परमेश्वर ने वही किया। केवल भेड़ की ऊन ही सूखी थी, किन्तु चारों ओर की भूमि ओस से भीगी थी।

7 सवेरे प्रात:काल, यरुब्बाल (गिदोन) और उसके
सभी लोगों ने अपने डेरे हरोद के झरने पर लगाए। मिद्यानी लोग गिदोन और उसके आदमियों के उत्तर में डेरा डाले थे। मिद्यानी लोग मोरे नामक पहाड़ी के नीचे

यिज्रेल की घाटी इस्साकर के परिवार समूह के क्षेत्र में यह घाटी स्थित थी। यह चौड़ी और उपजाऊ घाटी है। न्यायियों 5:19 में कथित मेगिद्दों और तानक नगरों सहित इसमें कई महत्वपूर्ण नगर थे।

खलिहान वह स्थान जहाँ लोग गेहूँ को उसके डंठल के अन्य भागों से अलग करने के लिये पीटते हैं।

घाटी में डेरा डाले पड़े थे। 2तब यहोवा ने गिदोन से
कहा, “मैं तुम्हारे आदमियों की सहायता मिद्यानी लोगों
को हराने के लिए करने जा रहा हूँ। किन्तु तुम्हारे पास
इस काम के लिए आवश्यकता से अधिक व्यक्ति हैं। मैं
नहीं चाहता कि इस्राएल के लोग मुझे भूल जायें और
शेखी मारें कि उन्होंने स्वयं अपनी रक्षा की। 3इसलिए
अपने लोगों में घोषणा करो। उनसे कहो, ‘जो कोई डर
रहा हो, अपने घर लौट सकता है।’”

इस प्रकार गिदोन ने लोगों की परीक्षा ली।* बाईस
हजार व्यक्तियों ने गिदोन को छोड़ा और वे अपने घर
लौट गए। किन्तु दस हजार फिर भी डटे रहे।

4तब यहोवा ने गिदोन से कहा, “अब भी आवश्यकता
से अधिक लोग हैं। इन लोगों को जल के पास ले जाओ
और वहाँ मैं इनकी परीक्षा तुम्हारें लिये करूँगा। यदि मैं
कहूँगा, ‘यह व्यक्ति तुम्हारे साथ जायेगा’ तो वह जायेगा।
किन्तु यदि मैं कहूँगा, ‘यह व्यक्ति तुम्हारें साथ नहीं
जाएगा।’ तो वह नहीं जाएगा।”

5इसलिए गिदोन लोगों को जल के पास ले गया। उस
जल के पास यहोवा ने गिदोन से कहा, “इस प्रकार
लोगों को अलग करो: जो व्यक्ति कुत्ते की तरह लपलप
करके जल पीएंगे, वे एक वर्ग में होंगे। जो पीने के लिए
झुकेंगे, दूसरे वर्ग में होगें।”

6वहाँ तीन सौ व्यक्ति ऐसे थे जिन्होंने जल मुँह तक
लाने के लिए अपने हाथों का उपयोग किया और उसे
कुत्ते की तरह लपलप करके पिया। बाकी लोग घुटनों
के बल झुके और उन्होंने जल पीया।

7तब यहोवा ने गिदोन से कहा, “मैं तीन सौ व्यक्तियों
का उपयोग करूँगा जिन्होंने कुत्ते की तरह लपलप
करके जल पिया। मैं उन्हीं लोगों का उपयोग तुम्हारी
रक्षा करने के लिए करूँगा और मैं तुम्हें मिद्यानी लोगों
को परास्त करने दूँगा। अन्य लोगों को अपने घर लौट
जाने दो।”

8इसलिए गिदोन ने इस्राएल के शेष व्यक्तियों को
उनके घर भेज दिया। किन्तु गिदोन ने तीन सौ व्यक्तियों
को अपने साथ रखा। उन तीन सौ आदमियों ने अन्य
जाने वाले आदमियों के भोजन, सामग्री और तुरहियों
को रख लिया। अभी मिद्यानी लोग, गिदोन के नीचे
घाटी में डेरा डाले हुए थे। 9रात को यहोवा ने गिदोन से
बातें की। यहोवा ने उससे कहा, “उठो गिदोन, लोगों के
डेरों में जाओ, क्योंकि मैं तुम्हें उन लोगों को हराने
दूँगा। 10किन्तु यदि तुम अकेले वहाँ जाने से डरते हो तो
अपने नौकर फूरा को अपने साथ ले लो। 11जब तुम
मिद्यानी लोगों के डेरे के पास जाओ तो यह सुनो कि वे
लोग क्या कह रहे हैं। जब तुम यह सुन लोगे कि वे क्या
कह रहे हैं तब तुम उस डेरे पर आक्रमण करने से नहीं
डरोगे।” इसलिए गिदोन और उसका नौकर फूरा दोनों
शत्रु के डेरे की छोर पर पहुँचे। 12मिद्यानी, अमालेकी
तथा पूर्व के अन्य सभी लोग उस घाटी में डेरा डाले थे।
वहाँ वे इतनी बड़ी संख्या में थे कि टिड्डी–दल से प्रतीत
होते थे। ऐसा प्रतीत हुआ कि उन लोगों के पास इतने
ऊँट थे, जितने समुद्र के किनारे बालू के कण।

13जब गिदोन शत्रुओं के डेरे में पहुँचा, उसने एक
व्यक्ति को बातें करते सुना। वह व्यक्ति अपने देखे हुए
स्वप्न को उसे बता रहा था। वह व्यक्ति कह रहा था।
“मैंने यह स्वप्न देखा कि मिद्यान के लोगों के डेरे में
एक गोल रोटी चक्कर खाती हुई आई। उस रोटी ने डेरे
पर इतनी कड़ी चोट की कि डेरा पलट गया और चौड़ा
होकर गिर गया।”

14उस व्यक्ति का मित्र उस स्वप्न का अर्थ जानता
था। उस व्यक्ति के मित्र ने कहा, “तुम्हारे स्वप्न का
केवल एक ही अर्थ है। तुम्हारा स्वप्न योआश के पुत्र
गिदोन की शक्ति के बारे में है। वह इस्राएल का है।
इसका अभिप्राय यह है कि परमेश्वर मिद्यानी लोगों की
सारी सेना को गिदोन द्वारा परास्त करायेगा।”

15जब गिदोन ने स्वप्न के बारे में सुना और उसका
अर्थ समझा तो वह परमेश्वर के प्रति झुका। तब गिदोन
इस्राएली लोगों के डेरे में लौट गया। गिदोन ने लोगों को
बाहर बुलाया, “तैयार हो जाओ। यहोवा हम लोगों को
मिद्यानी लोगों को हराने में सहायता करेगा।” 16तब
गिदोन ने तीन सौ व्यक्तियों को तीन दलों में बाँटा।
गिदोन ने हर एक व्यक्ति को एक तुरही और एक
खाली घड़ा दिया। हर एक घड़े में एक जलती मशाल
थी। 17तब गिदोन ने लोगों से कहा, “मुझे देखते रहो
और जो मैं करूँ, वही करो। मेरे पीछे–पीछे शत्रु के
डेरों की छोर तक चलो। जब मैं डेरे की छोर पर पहुँच
जाऊँ, ठीक वही करो जो मैं करूँ। 18तुम सभी डेरों को
घेर लो। मैं और मेरे साथ के सभी लोग अपनी तुरही
बजाएंगे। जब हम लोग तुरही बजाएंगे तो तुम लोग भी
अपनी तुरही बजाना। तब इन शब्दों के साथ घोष करो:
‘यहोवा के लिये, गिदोन के लिये।’”

19इस प्रकार गिदोन और उसके साथ के सौ व्यक्ति
शत्रु के डेरों की छोर पर आए। वे शत्रु के डेरे में उनके
पहरेदारों की बदली के ठीक बाद आए। यह आधी रात
को हुआ। गिदोन और उसके व्यक्तियों ने तुरहियों को
बजाया तथा अपने घड़ों को फोड़ा। 20तब गिदोन के
तीनों दलों ने अपनी तुरहियाँ बजाई और अपने घड़ों को
फोड़ा। उसके लोग अपने बाँये हाथ में मशाल लिये और
दाँये हाथ मे तुरहियाँ लिए हुए थे। जब वे लोग तुरहियाँ
बजाते तो उद्घोष करते, “यहोवा के लिए तलवार,
गिदोन के लिए तलवार।”

21गिदोन का हर एक व्यक्ति डेरे के चारों ओर
अपनी जगह पर खड़ा रहा। किन्तु डेरों के भीतर मिद्यानी

इस प्रकार ... परीक्षा ली हिब्रू में, “वे गिलाद पर्वत छोड़ सकते हैं।”

लोग चिल्लाने और भागने लगे। 22जब गिदोन के तीन
सौ व्यक्तियों ने अपनी तुरहियों को बजाया तो यहोवा ने
मिद्यानी लोगों को परस्पर एक दूसरे को तलवारों से
मरवाया। शत्रु की सेना उस बेतशित्ता नगर को भागी जो
सरेरा नगर की ओर है। वे लोग उस आबेलमहोला
नगर की सीमा तक भागे जो तब्बात नगर के निकट
है।

23तब नप्ताली, आशेर और मनश्शे के परिवारों के
सैनिकों को मिद्यानी लोगों का पीछा करने को कहा
गया। 24गिदोन ने एप्रैम के सारे पहाड़ी क्षेत्र में दूत भेजे।
दूतों ने कहा, "आगे आओ और मिद्यानी लोगों पर
आक्रमण करो। बेतबारा तक नदी पर और यरदन नदी
पर अधिकार करो। यह मिद्यानी लोगों के वहाँ पहुँचने
से पहले करो।" इसलिए उन्होंने एप्रैम के परिवार समूह
से सभी लोगों को बुलाया। उन्होंने बेतबारा तक नदी पर
अधिकार किया।

25एप्रैम के लोगों ने मिद्यानी लोगों के दो प्रमुखों को
पकड़ा। इन दोनों प्रमुखों का नाम ओरेब और जेब था।
एप्रैम के लोगों ने ओरेब को ओरेब की चट्टान नामक
स्थान पर मार डाला। उन्होंने जेब को जब दाखमधु के
कुण्ड नामक स्थान पर मारा। एप्रैम के लोगों ने मिद्यानी
लोगों का पीछा करना जारी रखा। किन्तु पहले उन्होंने
ओरेब और जेब के सिरों को काटा और सिरों को
गिदोन के पास ले गए। गिदोन यरदन नदी को पार
करने वाले घाट पर था।

8 एप्रैम के लोग गिदोन से रुष्ठ थे। जब एप्रैम के
लोग गिदोन से मिले, उन्होंने गिदोन से पूछा, "तुमने
हम लोगों के साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया? जब तुम
मिद्यानी लोगों के विरुद्ध लड़ने गए तो हम लोगों को
क्यों नहीं बुलाया?" एप्रैम के लोग गिदोन पर क्रोधित
थे।

2किन्तु गिदोन ने एप्रैम के लोगों को उत्तर दिया, "मैंने
उतनी अच्छी तरह युद्ध नहीं किया जितनी अच्छी तरह
आप लोगों ने किया। क्या यह सत्य नहीं है कि फसल
लेने के बाद तुम अपनी अंगूर की बेलों में जो अंगूर
बिना तोड़े छोड़ देते हो। वह मेरे परिवार, अबीएजेर के
लोगों की पूरी फसल से अधिक होते हैं। 3इसी प्रकार
इस बार भी तुम्हारी फसल अच्छी हुई है। यहोवा ने तुम
लोगों को मिद्यानी लोगों के राजकुमारों ओरेब और जेब
को पकड़ने दिया। मैं अपनी सफलता को तुम लोगों
द्वारा किये गए काम से कैसे तुलना कर सकता हूँ?"
जब एप्रैम के लोगों ने गिदोन का उत्तर सुना तो वे उतने
क्रोधित न रहे, जितने वे थे।

गिदोन दो मिद्यानी राजाओं को पकड़ता है

4तब गिदोन और उसके तीन सौ व्यक्ति यरदन नदी
पर आए और उसके दूसरे पार गए। किन्तु वे थके और
भूखे* थे। 5गिदोन ने सुक्कोत नगर के लोगों से कहा,
"मेरे सैनिकों को कुछ खाने को दो। मेरे सैनिक बहुत
थके हैं। हम लोग अभी तक जेबह और सल्मुन्ना का
पीछा कर रहे हैं जो मिद्यानी लोगों के राजा हैं।"

6सुक्कोत नगर के प्रमुखों ने गिदोन से कहा, "हम
तुम्हारे सैनिकों को कुछ खाने को क्यों दें? तुमने जेबह
और सल्मुन्ना को अभी तक पकड़ा नहीं है।"

7तब गिदोन ने कहा, "तुम लोग हमें भोजन नहीं
दोगे। यहोवा मुझे जेबह और सल्मुन्ना को पकड़ने में
सहायता करेगा। उसके बाद मैं यहाँ लौटूँगा और मरुभूमि
के काँटो एवं कंटीली झाड़ियों से तुम्हारी चमड़ी उधेड़ूँगा।"

8गिदोन ने सुक्कोत नगर को छोड़ा और पनूएल
नगर को गया। गिदोन ने जैसे सुक्कोत के लोगों से
भोजन माँगा था वैसे ही पनूएल के लोगों से भी भोजन
माँगा। किन्तु पनूएल के लोगों ने उसे वही उत्तर दिया जो
सुक्कोत के लोगों ने उत्तर दिया था।

9इसलिये गिदोन ने पनूएल के लोगों से कहा, "जब मैं
विजय प्राप्त करूँगा तब मैं यहाँ आऊँगा और तुम्हारी
इस मीनार को गिरा दूँगा।"

10जेबह, सल्मुन्ना और उसकी सेनाएं कर्कोर नगर
में थीं। उसकी सेना में पन्द्रह हजार सैनिक थे। पूर्व के
लोगों की सारी सेना के केवल ये ही सैनिक बचे थे।
उस शक्तिशाली सेना के एक लाख बीस हजार वीर
सैनिक पहले ही मारे जा चुके थे। 11गिदोन और उसके
सैनिकों ने खानाबदोशों के मार्ग को अपनाया। वह मार्ग
नोबह और योग्बहा नगरों के पूर्व में है। गिदोन कर्कोर
नगर में आया और उसने शत्रु पर धावा बोला। शत्रु की
सेना को आक्रमण की उम्मीद नहीं थी। 12मिद्यानी लोगों
के राजा जेबह और सल्मुन्ना भाग गए। किन्तु गिदोन ने
पीछा किया और उन राजाओं को पकड़ लिया। गिदोन
और उसके लोगों ने शत्रु सेना को हरा दिया।

13तब योआश का पुत्र गिदोन युद्ध से लौटा। गिदोन
और उसके सैनिक हेरेस दर्रा नामक दर्रे से होकर
लौटे। 14गिदोन ने सुक्कोत के एक युवक को पकड़ा।
गिदोन ने युवक से कुछ प्रश्न पूछे। युवक ने कुछ नाम
गिदोन के लिए लिखे। युवक ने5सुक्कोत के प्रमुखों
और अग्रजों के नाम लिखे। उसने सतहत्तर व्यक्तियों के
नाम दिये।

15तब गिदोन सुक्कोत नगर में आया। उसने नगर के
लोगों से कहा, "जेबह और सल्मुन्ना यहाँ हैं। तुमने मेरा
मजाक यह कहकर उड़ाया, 'हम तुम्हारे थके सैनिकों
के लिए भोजन क्यों दें। तुमने अभी तक जेबह और
सल्मुन्ना को नहीं पकड़ा है।'"

16गिदोन ने सुक्कोत नगर के अग्रजों को लिया और
उन्हें दण्ड देने के लिए मरुभूमि के काँटों और कंटीली

भूखे प्राचीनतम यूनानी अनुवाद के अनुसार हिब्रू पाठ में 'पीछा करते' हैं।

झाड़ियों से पीटा। 17गिदोन ने पनूएल नगर की मीनार
को भी गिरा दिया। तब उसने उन लोगों को मार डाला
जो उस नगर में रहते थे।
18अब गिदोन ने जेबह और सल्मुन्ना से कहा, "तुमने
ताबोर पर्वत पर कुछ व्यक्तियों को मारा। वे व्यक्ति
किस तरह के थे?" जेबह और सल्मुन्ना ने उत्तर दिया,
"वे व्यक्ति तुम्हारी तरह थे। उनमें से हर एक राजकुमार
के समान था।"
19गिदोन ने कहा, "वे व्यक्ति मेरे भाई और मेरी माँ
के पुत्र थे। यहोवा के जीवन की शपथ, यदि तुम उन्हें
नहीं मारते, तो अब मै भी तुम्हें नहीं मारता।"
20तब गिदोन येतेर की ओर मुड़ा। येतेर गिदोन का
सबसे बड़ा पुत्र था। गिदोन ने उससे कहा, "इन राजाओं
को मार डालो।" किन्तु येतेर एक लड़का ही था और
डरता था। इसलिए उसने अपनी तलवार नहीं निकाली।
21तब जेबह और सल्मुन्ना ने गिदोन से कहा, "आगे
बढ़ो और स्वयं हमें मारो। तुम पुरुष हो और यह काम
करने के लिये पर्याप्त बलवान हो।" इसलिए गिदोन
उठा और जेबह तथा सल्मुन्ना को मार डाला। तब
गिदोन ने चाँद की तरह बनी सज्जा को उनके ऊँटों की
गर्दन से उतार दिया।

गिदोन एपोद बनाता है

22इस्राएल के लोगों ने गिदोन से कहा, "तुमने हम
लोगों को मिद्यानी लोगों से बचाया। इसलिए हम लोगों
पर शासन करो। हम चाहते हैं कि तुम, तुम्हारे पुत्र और
तुम्हारे पौत्र हम लोगों पर शासन करें।"
23किन्तु गिदोन ने इस्राएल के लोगों से कहा, "यहोवा
तुम्हारा शासक होगा न तो मैं तुम लोगों के ऊपर
शासन करूँगा और न ही मेरा पुत्र तुम्हारे ऊपर शासन
करेगा।"
24इस्राएल के लोगों ने जिन्हें हराया, उनमें कुछ इश्माएली
लोग थे। इश्माएली लोग सोने की कान की बालियाँ
पहनते थे। इसलिए गिदोन ने इस्राएल के लोगों से कहा,
"मै चाहता हूँ कि तुम मेरे लिये यह काम करो। मैं तुम
में से हर एक से यह चाहता हूँ कि तुम लोगों ने युद्ध में
जो पाया उसमें से एक-एक कान की बाली हमें दो।"
25अत: इस्राएल के लोगों ने गिदोन से कहा, "जो तुम
चाहते हो उसे हम प्रसन्नता से देंगे।" इसलिए उन्होंने
भूमि पर एक अंगरखा बिछाया। हर एक व्यक्ति ने
अंगरखे पर एक कान की बाली फेंकी। 26जब वे बालियाँ
इकट्ठी करके तौली गई तो वे लगभग तैंतालीस पौंड
निकलीं। इस वजन का सम्बन्ध उन चीज़ों के वजन से
नहीं है जिन्हें इस्राएल के लोगों ने गिदोन को अन्य भेंटों
के रूप में दिया था। उन्होंने चाँद के आकार और आँसू
की बूँद के आकार के आभूषण भी उसे दिये और
उन्होंने उसे बैंगनी रंग के चोगे भी दिये। ये वे चीज़ें थीं,
जिन्हें मिद्यानी लोगों के राजाओं ने पहना था। उन्होंने
मिद्यानी लोगों के राजाओं के ऊँटो की जंजीरें भी उसे
दीं। 27गिदोन ने सोने का उपयोग एपोद बनाने के लिये
किया। उसने एपोद को अपने निवास के उस नगर में
रखा जिसे ओप्रा कहा जाता था। इस्राएल के सभी लोग
एपोद को पूजते थे। इस प्रकार इस्राएल के लोग यहोवा
पर विश्वास करने वाले नहीं थे-वे एपोद की पूजा
करते थे। वह एपोद एक जाल बन गया, जिसने गिदोन
और उसके परिवार से पाप करवाया।

गिदोन की मृत्यु

28इस प्रकार मिद्यानी लोग इस्राएल के शासन में रहने
के लिये मजबूर किये गये। मिद्यानी लोगों ने अब आगे
कोई कष्ट नहीं दिया। इस प्रकार गिदोन के जीवन
काल मे चालीस वर्षों तक पूरे देश में शान्ति रही।
29योआश का पुत्र यरुब्बाल (गिदोन) अपने घर रहने
गया। 30गिदोन के अपने सत्तर पुत्र थे। इसके इतने
अधिक पुत्र थे क्योंकि उसकी अनेक पत्नियाँ थीं।
31गिदोन की एक रखैल भी थी। जो शकेम नगर में
रहती थी। उस रखैल से भी उसे एक पुत्र था। उसने उस
पुत्र का नाम अबीमेलेक रखा।
32इस प्रकार योआश का पुत्र गिदोन पर्याप्त बूढ़ा होने
पर मरा। गिदोन उस कब्र में दफनाया गया, जो उसके
पिता योआश के अधिकार में थी। वह कब्र ओप्रा नगर
में है जहाँ अबीएजेरी लोग रहते हैं। 33ज्योंही गिदोन मरा
त्योंही इस्राएल के लोग फिर परमेश्वर के प्रति विश्वास
रखने वाले न रहे। वे बाल का अनुसरण करने लगे।
उन्होंने बालबरीत को अपना देवता बनाया। 34इस्राएल
के लोग यहोवा, अपने परमेश्वर को याद नहीं करते
थे, यद्यपि उसने उन्हें उन सभी शत्रुओं से बचाया जो
इस्राएल के लोगों के चारों ओर रहते थे। 35इस्राएल के
लोगों ने यरुब्बाल (गिदोन) के परिवार के प्रति कोई
भक्ति नहीं दिखाई, यद्यपि उसने उनके लिये बहुत से
अच्छे कार्य किये थे।

अबीमेलेक राजा बना

9 अबीमेलेक यरुब्बाल (गिदोन) का पुत्र था।
अबीमेलेक अपने उन मामाओं के पास गया जो
शकेम नगर में रहते थे। उसने अपने मामाओं और माँ
के परिवार से कहा, 2"शकेम नगर के प्रमुखों से यह
प्रश्न पूछो: 'यरुब्बाल के सत्तर पुत्रों से आप लोगों का
शासित होना अच्छा है या किसी एक ही व्यक्ति से
शासित होना? याद रखो, मैं तुम्हारा सम्बन्धी हूँ।'"
3अबीमेलेक के मामाओं ने शकेम के प्रमुखों से बात
की और उनसे वह प्रश्न किया। शकेम के प्रमुखों ने
अबीमेलेक का अनुसरण करने का निश्चय किया।
प्रमुखों ने कहा, "आखिरकार वह हमारा भाई है।"

4इसलिये शकेम के प्रमुखों ने अबीमेलेक को सत्तर
चाँदी के टुकड़े दिये। वह चाँदी बालबरोत देवता के
मन्दिर की थी। अबीमेलेक ने चाँदी का उपयोग कुछ
व्यक्तियों को काम पर लगाने के लिये किया। ये व्यक्ति
खूँखार और बेकार थे। वे अबीमेलेक के पीछे, जहाँ
कहीं वह गया, चलते रहे। 5अबीमेलेक ओप्रा नगर को
गया। ओप्रा उसके पिता का निवास स्थान था। उस
नगर में अबीमेलेक ने अपने सत्तर भाइयों की हत्या
कर दी। वे सत्तर भाई अबीमेलेक के पिता यरुब्बाल के
पुत्र थे। उसने सभी को एक पत्थर पर मारा* किन्तु
यरुब्बाल का सबसे छोटा पुत्र अबीमेलेक से दूर छिप गया
और भाग निकला। सबसे छोटे पुत्र का नाम योताम था।
6तब शकेम नगर के सभी प्रमुख और बेतमिल्लो के
महल के सदस्य एक साथ आए। वे सभी लोग उस
पाषाण–स्तम्भ के निकट के बड़े पेड़ के पास इकट्ठे
हुए जो शकेम नगर में था और उन्होंने अबीमेलेक को
अपना राजा बनाया।

योताम की कथा

7योताम ने सुना कि शकेम के प्रमुखों ने अबीमेलेक
को राजा बना दिया है। जब उसने यह सुना तो वह गया
और गरिज्जीम पर्वत की चोटी पर खड़ा हुआ। योताम ने
लोगों को यह कथा चिल्लाकर सुनाई।

शकेम के लोगों, मेरी बात सुनों और तब आपकी
बात परमेश्वर सुनेगा।

8एक दिन पेड़ों ने अपने ऊपर शासन करने के
लिए एक राजा चुनने का निर्णय किया। पेड़ों ने
जैतून के पेड़ से कहा, "तुम हमारे ऊपर राजा
बनो।"

9किन्तु जैतून के पेड़ ने कहा, "मनुष्य और
ईश्वर मेरी प्रशंसा मेरे तेल के लिये करते हैं। क्या
मैं जाकर केवल अन्य पेड़ों पर शासन करने के
लिये अपना तेल बनाना बन्द कर दूँ?"

10तब पेड़ों ने अंजीर के पेड़ से कहा, "आओ
और हमारे राजा बनो।"

11किन्तु अंजीर के पेड़ ने उत्तर दिया, "क्या मैं
केवल जाकर अन्य पेड़ों पर शासन करने के
लिये अपने मीठे और अच्छे फल पैदा करना बन्द
करदूँ?"

12तब पेड़ों ने अंगूर की बेल से कहा, "आओ
और हमारे राजा बनो।"

13किन्तु अंगूर की बेल ने उत्तर दिया, "मेरी
दाखमधु मनुष्य और ईश्वर दोनों को प्रसन्न करती
है। क्या मुझे केवल जाकर पेड़ों पर शासन करने
के लिये अपनी दाखमधु पैदा करना बन्द कर देना
चाहिये।"

14अन्त में पेड़ों ने कंटीली झाड़ी से कहा, "आओ
और हमारे राजा बनो।"

15किन्तु कंटीली झाड़ी ने पेड़ों से कहा, "यदि तुम
सचमुच मुझे अपने ऊपर राजा बनाना चाहते हो
तो आओ और मेरी छाया में अपनी शरण बनाओ।
यदि तुम ऐसा करना नहीं चाहते तो इस कंटीली
झाड़ी से आग निकलने दो, और उस आग को
लबानोन के चीड़ के पेड़ों को भी जला देने दो।"

16यदि आप पूरी तरह उस समय ईमानदार थे जब
आप लोगों ने अबीमेलेक को राजा बनाया, तो आप
लोगों को उससे प्रसन्न होना चाहिए। यदि आप लोगों
ने यरुब्बाल और उसके परिवार के लोगों के साथ
उचित व्यवहार किया है तो, यह बहुत अच्छा है। यदि
आपने यरुब्बाल के साथ वही व्यवहार किया है जो
आपको करना चाहिये तो यही अच्छा है। 17किन्तु तनिक
सोचें कि मेरे पिता ने आपके लिये क्या किया है? मेरे
पिता आप लोगों के लिये लड़े। उन्होंने अपने जीवन को
उस समय खतरे में डाला जब उन्होंने आप लोगों को
मिद्यानी लोगों से बचाया। 18किन्तु अब आप लोग मेरे
पिता के परिवार के विरुद्ध हो गए हैं। आप लोगों ने
मेरे पिता के सत्तर पुत्रों को एक पत्थर पर मारा है।
आप लोगों ने अबीमेलेक को शकेम का राजा बनाया
है। वह मेरे पिता की दासी का पुत्र है। आप लोगों ने
अबीमेलेक को केवल इसलिए राजा बनाया है कि
वह आपका सम्बन्धी है। 19इसलिये यदि आज आप
लोग पूरी तरह यरुब्बाल और उसके परिवार के प्रति
ईमानदार रहे हैं, तब अबीमेलेक को अपना राजा
मानकर आप प्रसन्न हो सकते हैं और वह भी आप
लोगों से प्रसन्न हो सकता है। 20किन्तु यदि आपने
उचित नहीं किया है तो, अबीमेलेक शकेम नगर के
सभी प्रमुखों और मिल्लो के महल को नष्ट कर
डाले। शकेम नगर के प्रमुख भी अबीमेलेक को नष्ट
कर डाले।"

21योताम यह सब कहने के बाद भाग खड़ा हुआ। वह
भागकर बेर नगर में पहुँचा। योताम उस नगर में रहता
था, क्योंकि वह अपने भाई अबीमेलेक से भयभीत था।

अबीमेलेक शकेम के विरुद्ध युद्ध करता है

22अबीमेलेक ने इस्राएल के लोगों पर तीन वर्ष तक
शासन किया। 23-24अबीमेलेक ने यरुब्बाल के सत्तर
पुत्रों को मार डाला था। वे अबीमेलेक के अपने भाई
थे। शकेम नगर के प्रमुखों ने उन पुत्रों को मारने में
उसकी सहायता की थी। इसलिए परमेश्वर ने अबीमेलेक
और शकेम के प्रमुखों के बीच झगड़ा उत्पन्न कराया
और शकेम के प्रमुखों ने अबीमेलेक को नुकसान
पहुँचाने के लिये योजना बनाई।

एक पत्थर पर मारा एक ही समय पर मारा।

25शकेम नगर के प्रमुख अबीमेलेक को अब पसन्द नहीं कर रहे थे। उन लोगों ने पहाड़ियों की चोटियों पर से जाने वालों पर आक्रमण करने और उनका सब कुछ लूटने के लिये आदमियों को रखा। अबीमेलेक ने उन आक्रमणों के बारे में पता लगाया।

26गाल नामक एक व्यक्ति और उसके भाई शकेम नगर को आए। गाल, एबेद नामक व्यक्ति का पुत्र था। शकेम के प्रमुखों ने गाल पर विश्वास और उसका अनुसरण करने का निश्चय किया।

27एक दिन शकेम के लोग अपने बागों में अंगूर तोड़ने गए। लोगों ने दाखमधु बनाने के लिये अंगूरों को निचोड़ा और तब उन्होंने अपने देवता के मन्दिर पर एक दावत दी। लोगों ने खाया और दाखमधु पी। तब अबीमेलेक को अभिशाप दिया।

28तब एबेद के पुत्र गाल ने कहा, "हम लोग शकेम के व्यक्ति हैं। हम अबीमेलेक की आज्ञा क्यों माने? वह अपने को क्या समझता है? यह ठीक है कि अबीमेलेक यरुब्बाल के पुत्रों में से एक है और अबीमेलेक ने जबूल को अपना अधिकारी बनाया, यह ठीक है? हमें अबीमेलेक की आज्ञा नहीं माननी चाहिए। हमें हमोर के लोगों की आज्ञा माननी चाहिए। (हमोर शकेम का पिता था।)
29यदि आप मुझे इन लोगों का सेनापति बनाते हैं तो मैं अबीमेलेक से मुक्ति दिला दूँगा। मैं उससे कहूँगा, 'अपनी सेना को तैयार करो और युद्ध के लिये आओ।'"

30जबूल शकेम नगर का प्रशासक था। जबूल ने वह सब सुना जो एबेद के पुत्र गाल ने कहा और जबूल बहुत क्रोधित हुआ।
31जबूल ने अबीमेलेक के पास अरुमा नगर में दूतों को भेजा। सन्देश यह है: एबेद का पुत्र गाल और इस के भाई शकेम नगर में आए हैं और तुम्हारे लिये कठिनाई उत्पन्न कर रहे हैं। गाल पूरे नगर को तुम्हारे विरुद्ध कर रहा है।
32इसलिए अब तुम्हें और तुम्हारे लोगों को रात में उठना चाहिये और नगर के बाहर खेतों मे छिपना चाहिए।
33जब सवेरे सूरज निकले तो नगर पर आक्रमण कर दो। जब वे लोग लड़ने के लिये बाहर आएं तो तुम उनका जो कर सको, करो।

34इसलिए अबीमेलेक और सभी सैनिक रात को उठे और नगर को गए। वे सैनिक चार टुकड़ियों मे बँट गए। वे शकेम नगर के पास छिप गए।
35एबेद का पुत्र गाल बाहर निकल कर शकेम नगर के फाटक के प्रवेश द्वार पर था। जब गाल वहाँ खड़ा था उसी समय अबीमेलेक और उसके सैनिक अपने छिपने के स्थानों से बाहर आए।

36गाल ने सैनिकों को देखा। गाल ने जबूल से कहा, "ध्यान दो, पर्वतों से लोग नीचे उतर रहे हैं।" किन्तु जबूल ने कहा, "तुम केवल पर्वतों की परछाइयाँ देख रहे हो। परछाइयाँ लोगों की तरह दिखाई दे रही हैं।"

37किन्तु गाल ने फिर कहा, "ध्यान दो प्रदेश की नाभि नामक स्थान से लोग बढ़ रहे हैं, और जादूगर के पेड़ से एक टुकड़ी आ रही है।"*

38तब जबूल ने उससे कहा, "अब तुम्हारी वह बड़ी–बड़ी बातें कहाँ गई, जो तुम कहते थे, 'अबीमेलेक कौन होता है, जिसकी अधीनता में हम रहें?' क्या वे वही लोग नहीं हैं जिनका तुम मजाक उड़ाते थे? जाओ और उनसे लड़ो।"

39इसलिए गाल शकेम के प्रमुखों को अबीमेलेक से युद्ध करने के लिये ले गया।
40अबीमेलेक और उसके सैनिकों ने गाल और उसके आदमियों का पीछा किया। गाल के लोग शकेम नगर के फाटक की ओर पीछे भागे। गाल के बहुत से लोग फाटक पर पहुँचने से पहले मार डाले गए।

41तब अबीमेलेक अरुमा नगर को लौट गया। जबूल ने गाल और उसके भाइयों को शकेम नगर छोड़ने को विवश किया।
42अगले दिन शकेम के लोग अपने खेतों में काम करने को गए। अबीमेलेक ने उसके बारे में पता लगाया।
43इसलिए अबीमेलेक ने अपने सैनिकों को तीन टुकड़ियों मे बाँटा। वह शकेम के लोगों पर अचानक आक्रमण करना चाहता था। इसलिये उसने अपने आदमियों को खेतों में छिपाया। जब उसने लोगों को नगर से बाहर आते देखा तो वह टूट पड़ा और उन पर आक्रमण कर दिया।
44अबीमेलेक और उसके लोग शकेम नगर के फाटक के पास दौड़ कर आए। अन्य दो टुकड़ियाँ खेत में लोगों के पास दौड़कर गई और उन्हें मार डाला।
45अबीमेलेक और उसके सैनिक शकेम नगर के साथ पूरे दिन लड़े। अबीमेलेक और उसके सैनिकों ने शकेम नगर पर अधिकार कर लिया और उस नगर के लोगों को मार डाला। तब अबीमेलेक ने उस नगर को ध्वस्त किया और उस ध्वंस पर नमक फेंकवा दिया।

46कुछ लोग शकेम की मीनार के पास रहते थे। जब उस स्थान के लोगों ने सुना कि शकेम के साथ क्या हुआ है तब वे सबसे अधिक सुरक्षित उस कमरे में इकट्ठे हो गए जो एलबरीत देवता का मन्दिर था।
47अबीमेलेक ने सुना कि शकेम की मीनार के सभी प्रमुख एक साथ इकट्ठे हो गए हैं।
48इसलिए अबीमेलेक और उसके सभी लोग सलमोन पर्वत पर गए। अबीमेलेक ने एक कुल्हाड़ी ली और उसने कुछ शाखाएँ काटीं। उसने उन शाखाओं को अपने कंधों पर रखा। तब उसने अपने साथ केआदमियों से कहा "जल्दी करो, जो मैंने किया है, वही करो।"

49इसलिए उन लोगों ने शाखाएँ काटीं और अबीमेलेक का अनुसरण किया। उन्होंने शाखाओं की ढेर एलबरीत देवता के मन्दिर के सबसे अधिक सुरक्षित कमरे के

प्रदेश की … रही है शकेम के करीब की पहाड़ियाँ।

साथ लगाई। तब उन्होंने शाखाओं में आग लगा दी और
कमरे में लोगों को जला दिया। इस प्रकार लगभग
शकेम की मीनार के निवासी एक हजार स्त्री–पुरुष
मर गए।

अबीमेलेक की मृत्यु

50तब अबीमेलेक और उसके साथी तेबेस नगर को
गए। अबीमेलेक और उसके साथियों ने तेबेस नगर पर
अधिकार कर लिया। 51किन्तु तेबेस नगर में एक दृढ़
मीनार थी। उस नगर के सभी स्त्री–पुरुष और उस
नगर के प्रमुख उस मीनार के पास भागकर पहुँचे। जब
नगर के लोग मीनार के भीतर घुस गए तो उन्होंने
अपने पीछे मीनार का दरवाजा बन्द कर दिया। तब वे
मीनार की छत पर चढ़ गए। 52अबीमेलेक और उसके
साथी मीनार के पास उस पर आक्रमण करने के लिये
पहुँचे। अबीमेलेक मीनार की दीवार तक गया। वह
मीनार को आग लगाना चाहता था। 53जब अबीमेलेक
द्वार पर खड़ा था, उसी समय एक स्त्री ने एक चक्की
का पत्थर उसके सिर पर फेंका। चक्की के पाट ने
अबीमेलेक की खोपड़ी को चूर–चूर कर डाला।
54अबीमेलेक ने शीघ्रता से अपने उस नौकर से कहा
जो उसके शस्त्र ले चल रहा था, "अपनी तलवार निकालो
और मुझे मार डालो। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे मार
डालो जिससे लोग यह न कहें, कि 'एक स्त्री ने अबीमेलेक
को मार डाला।'" इसलिए नौकर ने अबीमेलेक में अपनी
तलवार घुसेड़ दी और अबीमेलेक मर गया। 55इस्राएल
के लोगों ने देखा कि अबीमेलेक मर गया। इसलिए वे
सभी अपने घरों को लौट गए।

56इस प्रकार परमेश्वर ने अबीमेलेक को उसके
सभी किये पापों के लिये दण्ड दिया। अबीमेलेक ने
अपने सत्तर भाइयों को मारकर अपने पिता के विरुद्ध
पाप किया था। 57परमेश्वर ने शकेम नगर के लोगों
को भी उनके द्वारा किए गए पाप का दण्ड दिया। इस
प्रकार योताम ने जो कहा, सत्य हुआ। (योताम यरुब्बाल
का सबसे छोटा पुत्र था। यरुब्बाल गिदोन था।)

न्यायाधीश तोला

10 अबीमेलेक के मरने के बाद इस्राएल के लोगों
की रक्षा के लिये परमेश्वर द्वारा दूसरा न्यायाधीश
भेजा गया। उस व्यक्ति का नाम तोला था। तोला पुआ
नामक व्यक्ति का पुत्र था। पुआ दोदो नामक व्यक्ति का
पुत्र था। तोला इस्साकार के परिवार समूह का था।
तोला शामीर नगर में रहता था। शामीर नगर एप्रैम के
पहाड़ी प्रदेश में था। 2तोला इस्राएल के लोगों के लिये
तेईस वर्ष तक न्यायाधीश रहा। तब तोला मर गया और
शामीर नगर में दफनाया गया।

न्यायाधीश याईर

3तोला के मरने के बाद, परमेश्वर द्वारा एक और
न्यायाधीश भेजा गया। उस व्यक्ति का नाम याईर था।
याईर गिलाद के क्षेत्र में रहता था। याईर इस्राएल के
लोगों के लिये बाईस वर्ष तक न्यायाधीश रहा। 4याईर
के तीस पुत्र थे। वे तीस पुत्र तीस गधों पर सवार होते थे।
वे तीस पुत्र गिलाद क्षेत्र के तीस नगरों की व्यवस्था
करते थे। वे नगर "याईर के ग्राम" आज तक कहे जाते
हैं। 5याईर मरा और कामोन नगर मे दफनाया गया।

अम्मोनी लोग इस्राएल के लोगों के विरुद्ध लड़ते हैं

6यहोवा ने इस्राएल के लोगों को फिर पाप करते हुए
देखा। वे बाल एवं अश्तोरेत की मूर्तियों की पूजा करते
थे। वे आराम, सीदोन, मोआब, अम्मोन और पलिश्तियों
के देवताओं की पूजा करते थे। इस्राएल के लोगों ने
यहोवा को छोड़ दिया और उसकी सेवा बन्द कर दी।
7इसलिए यहोवा इस्राएल के लोगों पर क्रोधित हुआ।
यहोवा ने पलिश्तियों और अम्मोनियों को उन्हें पराजित
करने दिया। 8उसी वर्ष उन लोगों ने इस्राएल के उन
लोगों को नष्ट किया जो गिलाद क्षेत्र में यरदन नदी के
पूर्व रहते थे। यह वही प्रदेश है जहाँ अम्मोनी लोग रह
चुके थे। इस्राएल के वे लोग अट्ठारह वर्ष तक कष्ट
भोगते रहे। 9तब अम्मोनी लोग यरदन नदी के पार गए।
वे लोग यहूदा, बिन्यामीन और एप्रैम लोगों के विरुद्ध
लड़ने गए। अम्मोनी लोगों ने इस्राएल के लोगों पर
अनेक विपत्तियाँ ढाईं।

10इसलिए इस्राएल के लोगों ने यहोवा को रोकर
पुकारा, "हम लोगों ने, परमेश्वर, तेरे विरुद्ध पाप किया
है। हम लोगों ने अपने परमेश्वर को छोड़ा और बाल
की मूर्तियों की पूजा की।"

11यहोवा ने इस्राएल के लोगों को उत्तर दिया, "तुम
लोगों ने मुझे तब रोकर पुकारा जब मिस्री, एमोरी,
अम्मोनी तथा पलिश्ती लोगों ने तुम पर प्रहार किये।
मैंने तुम्हें इन लोगों से बचाया। 12तुम लोग तब चिल्लाए
जब सीदोन के लोगों, अमालेकियों और मिद्यानियों ने
तुम पर प्रहार किया। मैंने उन लोगों से भी तुम्हें बचाया।
13किन्तु तुमने मुझको छोड़ा है। तुमने अन्य देवताओं
की उपासना की है। इसलिए मैंने तुम्हें फिर बचाने से
इन्कार किया है। 14तुम उन देवताओं की पूजा करना
पसन्द करते हो। इसलिए उनके पास सहायता के लिये
पुकारने जाओ। विपत्ति में पड़ने पर उन देवताओं को
रक्षा करने दो।"

15किन्तु इस्राएल के लोगों ने यहोवा से कहा, "हम
लोगों ने पाप किया है। तू हम लोगों के साथ जो चाहता
है, कर। किन्तु आज हमारी रक्षा कर।" 16तब इस्राएल
के लोगों ने अपने पास के विदेशी देवताओं को फेंक
दिया। उन्होंने फिर से यहोवा की उपासना आरम्भ की।

इसलिए जब यहोवा ने उन्हें कष्ट उठाते देखा, तब वह उनके लिए दु:खी हुआ।

यिप्तह प्रमुख चुना गया

17अम्मोनी लोग युद्ध करने के लिये एक साथ इकट्ठे
हुए, उनका डेरा गिलाद क्षेत्र में था। इस्राएल के लोग
एक साथ इकट्ठे हुए, उनका डेरा मिस्पा नगर में था।
18गिलाद क्षेत्र में रहने वाले लोगों के प्रमुखों ने कहा,
"अम्मोन के लोगों पर आक्रमण करने में जो व्यक्ति
हमारा नेतृत्व करेगा, वही व्यक्ति, उन सभी लोगों का
प्रमुख हो जाएगा जो गिलाद क्षेत्र में रहते हैं।"

11 यिप्तह गिलाद के परिवार समूह से था। वह
एक शक्तिशाली योद्धा था। किन्तु यिप्तह एक
वेश्या का पुत्र था। उसका पिता गिलाद नाम का व्यक्ति
था। 2गिलाद की पत्नी के अनेक पुत्र थे। जब वे पुत्र बड़े
हुए तो उन्होंने यिप्तह को पसन्द नहीं किया। उन पुत्रों ने
यिप्तह को अपने जन्म के नगर को छोड़ने के लिये
विवश किया। उन्होंने उससे कहा, "तुम हमारे पिता की
सम्पत्ति में से कुछ भी नहीं पा सकते। तुम दूसरी स्त्री के
पुत्र हो।" 3इसलिये यिप्तह अपने भाइयों के कारण दूर
चला गया। वह तोब प्रदेश में रहता था। तोब प्रेदश में
कुछ उपद्रवी लोग यिप्तह का अनुसरण करने लगे।

4कुछ समय बाद अम्मोनी लोग इस्राएल के लोगों से
लड़े। 5अम्मोनी लोग इस्राएल के लोगों के विरुद्ध लड़
रहे थे। इसलिये गिलाद प्रदेश के अग्रज (प्रमुख) यिप्तह
के पास आए। वे चाहते थे कि यिप्तह तोब प्रदेश को
छोड़ दे और गिलाद प्रदेश में लौट आए।

6प्रमुखों ने यिप्तह से कहा, "आओ, हमारे प्रमुख
बनों, जिससे हम लोग अम्मोनियों के साथ लड़ सकें।"

7किन्तु यिप्तह ने गिलाद प्रदेश के अग्रजों (प्रमुखों) से
कहा, "क्या यह सत्य नहीं कि तुम लोग मुझसे घृणा
करते हो? तुम लोगों ने मुझें अपने पिता का घर छोड़ने
के लिये विवश किया। अत: जब तुम विपत्ति में हो तो
मेरे पास क्यों आ रहे हो?"

8गिलाद प्रदेश के अग्रजों ने यिप्तह से कहा, "यही
कारण है जिससे हम अब तुम्हारे पास आए हैं। कृपया
हम लोगों के साथ आओ और अम्मोनी लोगों के विरुद्ध
लड़ों। तुम उन सभी लोगों के सेनापति होगे जो गिलाद
प्रदेश में रहते हैं।"

9तब यिप्तह ने गिलाद प्रदेश के अग्रजों से कहा, "यदि
तुम लोग चाहते हो कि मैं गिलाद को लौटूँ और अम्मोनी
लोगों के विरुद्ध लड़ूँ तो यह बहुत अच्छी बात है। किन्तु
यदि यहोवा मुझे विजय पाने में सहायता करे तो मैं
तुम्हारा नया प्रमुख बनूँगा।"

10गिलाद प्रदेश के अग्रजों ने यिप्तह से कहा, "हम
लोग जो बातें कर रहे हैं, यहोवा वह सब सुन रहा है।
हम लोग यह सब करने की प्रतिज्ञा कर रहे हैं जो तुम
हमें करने को कह रहे हो।" 11अत: यिप्तह गिलाद के
अग्रजों के साथ गया। उन लोगों ने यिप्तह को अपना
प्रमुख तथा सेनापति बनाया। यिप्तह ने मिस्पा नगर में
यहोवा के सामने अपनी सभी बातें दुहरायी।

यिप्तह अम्मोनी राजा के पास सन्देश भेजता है

12यिप्तह ने अम्मोनी राजा के पास दूत भेजा। दूत ने
राजा को यह सन्देश दिया: "अम्मोनी और इस्राएल के
लोगों के बीच समस्या क्या है? तुम हमारे प्रदेश में लड़ने
क्यों आए हो?"

13अम्मोनी लोगों के राजा ने यिप्तह के दूत से कहा,
"हम लोग इस्राएल के लोगों से इसलिए लड़ रहे हैं
क्योंकि इस्राएल के लोगों ने हमारी भूमि तब ले ली जब
वे मिस्र से आए थे। उन्होंने हमारी भूमि अर्नोन नदी से
यब्बोक नदी और वहाँ से यरदन नदी तक ले ली और
अब इस्राएल के लोगों से कहो कि वे हमारी भूमि हमें
शान्तिपूर्वक वापस दे दें।"

14अत: यिप्तह का दूत यह सन्देश यिप्तह के पास
वापस ले गया।* तब यिप्तह ने अम्मोनी लोगों के राजा
के पास फिर दूत भेजे। 15वे यह सन्देश ले गए:

"यिप्तह यह कह रहा है। इस्राएल ने मोआब के
लोगों या अम्मोन के लोगों की भूमि नहीं ली।
16जब इस्राएल के लोग मिस्र देश से बाहर आए तो
इस्राएल के लोग मरूभूमि में गए थे। इस्राएल के
लोग लाल सागर को गए। तब वे उस स्थान पर गए
जिसे कादेश कहा जाता है। 17इस्राएल के लोगों ने
एदोम प्रदेश के राजा के पास दूत भेजे थे। दूतों ने
कृपा की याचना की थी। उन्होंने कहा था, 'इस्राएल
के लोगों को अपने प्रदेश से गुजर जाने दो।' किन्तु
एदोम के राजा ने अपने देश से हमें नहीं जाने
दिया। हम लोगों ने वही सन्देश मोआब के राजा के
पास भेजा। किन्तु मोआब के राजा ने भी अपने
प्रदेश से होकर नहीं जाने दिया। इसलिए इस्राएल
के लोग कादेश में ठहरे रहे।

18तब इस्राएल के लोग मरूभूमि में गए और
एदोम प्रदेश तथा मोआब प्रदेश की छोरों के चारों
ओर चक्कर काटते रहे। इस्राएल के लोगों ने
मोआब प्रदेश के पूर्व की तरफ से यात्रा की।
उन्होंने अपना डेरा अर्नोन नदी की दूसरी ओर
डाला। उन्होंने मोआब की सीमा को पार नहीं
किया। (अर्नोन नदी मोआब के प्रदेश की सीमा
थी।)

19तब इस्राएल के लोगों ने एमोरी लोगों के राजा
सीहोन के पास दूत भेजे। सीहोन हेश्बोन नगर का
राजा था। दूतों ने सीहोन से माँग की, "इस्राएल के

अत: यिप्तह ... गया यह वाक्य प्राचीन यूनानी अनुवाद से हैं। हिब्रू पाठ में यह वाक्य नहीं है।

लोगों को अपने प्रदेश से गुजर जाने दो। हम लोग
अपने प्रदेश में जाना चाहते हैं। 20किन्तु एमोरी
लोगों के राजा सीहोन ने इस्राएल के लोगों को
अपनी सीमा पार नहीं करने दी। सीहोन ने अपने
सभी लोगों को इकट्ठा किया और यहस पर
अपना डेरा डाला। तब एमोरी लोग इस्राएल के
लोगों के साथ लड़े। 21किन्तु यहोवा इस्राएल के
लोगों का परमेश्वर ने, इस्राएल के लोगों की सहायता,
सीहोन और उसकी सेना को हराने में, की। एमोरी
लोगों की सारी भूमि इस्राएल के लोगों की सम्पत्ति
बन गई। 22इस प्रकार इस्राएल के लोगों ने एमोरी
लोगों का सारा प्रदेश पाया। यह प्रदेश अर्नोन नदी
से यब्बोक नदी तक था। यह प्रदेश मरूभूमि से
यरदन नदी तक था।

23यह यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर था जिसने
एमोरी लोगों को अपना देश छोड़ने के लिये बलपूर्वक
विवश किया और यहोवा ने वह प्रदेश इस्राएल के
लोगों को दिया। क्या तुम सोचते हो कि तुम इस्राएल
के लोगों से यह छुड़वा दोगे? 24निश्चय ही, तुम
उस प्रदेश में रह सकते हो जिसे तुम्हारे देवता
कमोश ने तुम्हें दिया है। इसलिये हम लोग उस
प्रदेश में रहेंगे, जिसे यहोवा, हमारे परमेश्वर ने
हमें दिया है। 25क्या तुम सिप्पोर नामक व्यक्ति के
पुत्र बालाक से अधिक अच्छे हो? वह मोआब
प्रदेश का राजा था। क्या उसने इस्राएल के लोगों से
बहस की? क्या वह सचमुच इस्राएल के लोगों से
लड़ा? 26इस्राएल के लोग हेश्बोन और उसके चारों
ओर के नगरों में तीन सौ वर्ष तक रह चुके हैं।
इस्राएल के लोग अरोएर नगर और उसके चारों
ओर के नगर में तीन सौ वर्ष तक रह चुके हैं।
इस्राएल के लोग अर्नोन नदी के किनारे के सभी
नगरों में तीन सौ वर्ष तक रह चुके हैं। तुमने इस
समय में, इन नगरों को वापस लेने का प्रयत्न क्यों
नहीं किया? 27इस्राएल के लोगों ने किसी के विरुद्ध
कोई पाप नहीं किया है। किन्तु तुम इस्राएल के
लोगों के विरुद्ध बहुत बड़ी बुराई कर रहे हो।
यहोवा को, जो सच्चा न्यायाधीश है, निश्चय करने
दो कि इस्राएल के लोग ठीक रास्ते पर हैं या
अम्मोनी लोग।"

28अम्मोनी लोगों के राजा ने यिप्तह के इस सन्देश
को अनसुना किया।

यिप्तह की प्रतिज्ञा

29तब यहोवा का आत्मा यिप्तह पर उतरा। यिप्तह
गिलाद प्रदेश और मनश्शे के प्रदेश से गुजरा। वह
गिलाद प्रदेश में मिस्पे नगर को गया। गिलाद प्रदेश के
मिस्पे नगर को पार करता हुआ यिप्तह, अम्मोनी लोगों
के प्रदेश में गया। 30यिप्तह ने यहोवा को वचन दिया।
उसने कहा, "यदि तू एमोरी लोगों को मुझे हराने देता
है। 31तो मैं उस पहली चीज को तुझे भेंट करूँगा जो
मेरी विजय से लौटने के समय मेरे घर से बाहर आएगी।
मैं इसे यहोवा को होमबलि के रूप में दूँगा।"

32तब यिप्तह अम्मोनी लोगों के प्रदेश में गया। यिप्तह
अम्मोनी लोगों से लड़ा। यहोवा ने अम्मोनी लोगों को
हराने में उसकी सहायता की। 33उसने उन्हें अरोएर
नगर से मिन्नीत के क्षेत्र की छोर तक हराया। यिप्तह
ने बीस नगरों पर अधिकार किया। उसने अम्मोनी
लोगों से आबेलकरामीम नगर तक युद्ध किया। यह
अम्मोनी लोगों के लिये बड़ी हार थी। अम्मोनी लोग
इस्राएल के लोगों द्वारा हरा दिये गए।

34यिप्तह मिस्पा को लौटा और अपने घर गया। उसकी
पुत्री उससे घर से बाहर मिलने आई। वह एक तम्बूरा
बजा रही थी और नाच रही थी। वह उसकी एकलौती
पुत्री थी। यिप्तह उसे बहुत प्यार करता था। यिप्तह के
पास कोई अन्य पुत्री या पुत्र नहीं थे। 35जब यिप्तह ने
देखा कि पहली चीज़ उसकी पुत्री ही थी, जो उसके घर
से बाहर आई तब उसने दुःख को अभिव्यक्त करने के
लिये अपने वस्त्र फाड़ डाले और यह कहा, "आह! मेरी
बेटी तूने मुझे बरबाद कर दिया। तूने मुझे बहुत दुःखी
कर दिया! मैंने यहोवा को वचन दिया था, मैं उसे वापस
नहीं ले सकता।"

36तब उसकी पुत्री ने यिप्तह से कहा, "पिता, आपने
यहोवा से प्रतिज्ञा की है। अतः वही करें जो आपने
करने की प्रतिज्ञा की है। अन्त में यहोवा ने आपके
शत्रुओं अम्मोनी लोगों को हराने में सहायता की।"

37तब उसकी पुत्री ने अपने पिता यिप्तह से कहा,
"किन्तु मेरे लिये पहले एक काम करो। दो महीने तक
मुझे अकेली रहने दो। मुझे पहाड़ों पर जाने दो। मैं
विवाह नहीं करूँगी, मेरा कोई बच्चा नहीं होगा। अतः
मुझे और मेरी सहेलियों को एक साथ रोने-चिल्लाने
दो।"

38यिप्तह ने कहा, "जाओ और वैसा ही करो," यिप्तह
ने उसे दो महीने के लिये भेज दिया। यिप्तह की पुत्री
और उसकी सहेलियाँ पहाड़ों में रहे। वे उसके लिए
रोये- चिल्लाये, क्योंकि वह न तो विवाह करेगी और
न ही बच्चे उत्पन्न करेगी।

39दो महीने के बाद यिप्तह की पुत्री अपने पिता के
पास लौटी। यिप्तह ने वही किया जो उसने यहोवा से
प्रतिज्ञा की थी। यिप्तह की पुत्री का कभी किसी के
साथ कोई शारीरिक सम्बन्ध नहीं रहा। इसलिए इस्राएल
में यह रिवाज बन गया। 40इस्राएल की स्त्रियाँ हर वर्ष
गिलाद के यिप्तह की पुत्री को याद करती थीं। स्त्रियाँ
यिप्तह की पुत्री के लिये हर एक वर्ष चार दिन तक
रोती थीं।

यिप्तह और एप्रैम

12 एप्रैम के परिवार समूह के लोगों ने अपने सैनिकों
को इकट्ठा किया। तब वे नदी पार करके
सापोन नगर गए। उन्होंने यिप्तह से कहा, "तुमने अम्मोनी
लोगों से लड़ने में सहायता के लिये हमें क्यों नहीं बुलाया?
हम लोग तुमको और तुम्हारे घर को जला देंगे।"

2यिप्तह ने उन्हें उत्तर दिया, "अम्मोनी लोग हम लोगों
के लिये अनेक समस्यायें उत्पन्न कर रहे थे। इसलिए
मैं और हमारे लोग उनके विरुद्ध लड़े। मैंने तुम लोगों
को बुलाया, किन्तु तुम लोग हम लोगों की सहायता
करने नहीं आए। 3मैंने देखा कि तुम लोग सहायता नहीं
करोगे। इसलिए मैंने अपना जीवन खतरे में डाला। मैं
अम्मोनी लोगों से लड़ने के लिये नदी के पार गया।
यहोवा ने उन्हें हराने में मेरी सहायता की। अब आज
तुम मेरे विरुद्ध लड़ने क्यों आए हो?"

4तब यिप्तह ने गिलाद के लोगों को एक साथ बुलाया।
वे एप्रैम के परिवार समूह के लोगों के साथ लड़े। वे
एप्रैम के लोगों के विरुद्ध इसलिए लड़े, क्योंकि उन
लोगों ने गिलाद के लोगों का अपमान किया था। उन्होंने
कहा था, "गिलाद के लोगों, तुम लोग एप्रैम के बचे हुए
लोगों के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं हो। तुम लोगों के
पास अपना प्रदेश भी नहीं है। तुम लोगों का एक भाग
एप्रैम में से है तथा दूसरा भाग मनश्शे में से है।" गिलाद
के लोगों ने एप्रैम के लोगों को हराया।

5गिलाद के लोगों ने यरदन नदी के घाटों पर अधिकार
कर लिया। वे घाट एप्रैम प्रदेश तक ले जाते थे। एप्रैम में
से बचा हुआ जो कोई भी नदी पर आता, वह कहता,
"मुझे पार करने दो" तो गिलाद के लोग उससे पूछते,
"क्या तुम एप्रैम में से हो?" यदि वह "नहीं" कहता तो,
6वे कहते, 'शिब्बोलेत शब्द का उच्चारण करो।'" एप्रैम
के लोग उस शब्द का शुद्ध उच्चारण नहीं कर सकते
थे। वे उसे "सिब्बोलेत" शब्द उच्चारण करते थे। यदि
एप्रैम में से बचा व्यक्ति "सिब्बोलेत" का उच्चारण करता
तो गिलाद के लोग उसे घाट पर मार देते थे। इस प्रकार
उस समय एप्रैम में से बयालीस हजार व्यक्ति मारे गए थे।

7यिप्तह इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश छः वर्ष तक
रहा। तब गिलाद का निवासी यिप्तह मर गया। उसे
गिलाद में उसके अपने नगर में दफनाया गया।

न्यायाधीश इबसान

8यिप्तह के मरने के बाद इस्राएल के लोगों का
न्यायाधीश इबसान नामक व्यक्ति हुआ। इबसान बेतलेहेम
नगर का निवासी था। 9इबसान के तीस पुत्र और तीस
पुत्रियाँ थीं। उसने अपनी पुत्रियों को उन लोगों के साथ
विवाह करने दिया, जो उसके रिश्तेदार नहीं थे। वह
ऐसी तीस स्त्रियों को अपने पुत्रों की पत्नियों के रूप में
लाया जो उसकी रिश्तेदार नहीं थीं। इबसान इस्राएल के
लोगों का न्यायाधीश सात वर्ष तक रहा। 10तब इबसान
मर गया। वह बेतलेहेम नगर में दफनाया गया।

न्यायाधीश एलोन

11इबसान के मरने के बाद इस्राएल के लोगों का
न्यायाधीश एलोन नामक व्यक्ति हुआ। एलोन जबूलून
के परिवार समूह से था। वह इस्राएल के लोगों का
न्यायाधीश दस वर्ष तक रहा। 12तब जबूलून के परिवार
समूह का व्यक्ति एलोन मर गया। वह जबूलून के प्रदेश
में अय्यालोन नगर में दफनाया गया।

न्यायाधीश अब्दोन

13एलोन के मरने के बाद इस्राएल के लोगों का
न्यायाधीश अब्दोन नामक व्यक्ति हुआ। अब्दोन हिल्लेल
नामक व्यक्ति का पुत्र था। अब्दोन पिरातोन नगर का
निवासी था। 14अब्दोन के चालीस पुत्र और तीस पौत्र
थे। वे सत्तर गधों पर सवार होते थे। अब्दोन इस्राएल के
लोगों का न्यायाधीश आठ वर्ष तक रहा। 15तब हिल्लेल
का पुत्र अब्दोन मर गया। वह पिरातोन नगर में दफनाया
गया। पिरातोन एप्रैम प्रदेश में है। यह वह पहाड़ी प्रदेश है
जहाँ अमालेकी लोग रहते हैं।

शिमशोन का जन्म

13 यहोवा ने इस्राएल के लोगों को फिर पाप करते
हुए देखा। इसलिए यहोवा ने पलिश्ती लोगों को
उन पर चालीस वर्ष तक शासन करने दिया।

2एक व्यक्ति सोरा नगर का निवासी था। उस व्यक्ति
का नाम मानोह था। वह दान के परिवार समूह से था।
मानोह की एक पत्नी थी। किन्तु वह कोई सन्तान
उत्पन्न नहीं कर सकती थी। 3यहोवा का दूत मानोह
की पत्नी के सामने प्रकट हुआ और उसने कहा, "तुम
सन्तान उत्पन्न नहीं कर सकती हो। किन्तु तुम गर्भवती
होगी और तुम्हें एक पुत्र होगा। 4तुम दाखमधु या कोई
नशीली पीने की चीज न पीओ। किसी भी अशुद्ध जानवर
को न खाओ। 5क्यों? क्योंकि तुम सचमुच गर्भवती होगी
और तुम्हें एक पुत्र होगा। वह विशेष रूप से परमेश्वर
के प्रति एक विशेष रूप में समर्पित होगा। वह एक
नाज़ीर होगा। इसलिये तुम्हें उसके बाल कभी नहीं काटने
चाहिये। वह पैदा होने से पहले परमेश्वर का व्यक्ति
होगा। वह इस्राएल के लोगों को पलिश्ती लोगों की शक्ति
से मुक्त करायेगा।"

6तब वह स्त्री अपने पति के पास गई और जो कुछ
हुआ था, बताया। उसने कहा, "परमेश्वर के पास से
एक व्यक्ति मेरे पास आया। वह परमेश्वर के दूत की
तरह ज्ञात होता था। वह बहुत भयानक दिखाई पड़ता
था और मैं डर गई थी। मैंने उससे यह नहीं पूछा कि,
तुम कहाँ से आये हो। उसने मुझे अपना नाम नहीं

बताया। 7किन्तु उसने मुझसे कहा, 'तुम गर्भवती हो
और तुम्हें एक पुत्र होगा। कोई दाखमधु या नशीली पीने
की चीज़ मत पीओ। कोई ऐसा जानवर न खाओ जो
अशुद्ध हो, क्योंकि वह लड़का विशेष रूप से परमेश्वर
को समर्पित होगा। वह लड़का जन्म के पहले से लेकर
मरने के दिन तक परमेश्वर का विशेष व्यक्ति होगा।'"
8तब मानोह ने यहोवा से प्रार्थना की, "हे यहोवा, मैं
तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि तू परमेश्वर के व्यक्ति को
हम लोगों के पास फिर भेज। हम चाहते हैं कि वह हमें
सिखाए कि हम लोगों के यहाँ जन्म लेने वाले बच्चे के
साथ हमें क्या करना चाहिए।"
9परमेश्वर ने मानोह की प्रार्थना सुनी। परमेश्वर का
दूत फिर उस स्त्री के पास, तब आया जब वह खेत में
बैठी थी। किन्तु उसका पति मानोह उसके साथ नहीं
था। 10इसलिये वह स्त्री अपने पति से यह कहने के
लिये दौड़ी, "वह व्यक्ति लौटा है। पिछले दिन जो व्यक्ति
मेरे पास आया था, वह यहाँ है।"
11मानोह उठा और अपनी पत्नी के पीछे चला। जब
वह उस व्यक्ति के पास पहुँचा तो उसने कहा, "क्या तुम
वही व्यक्ति हो जिसने मेरी पत्नी से बातें की थीं?" दूत ने
कहा, "मैं ही हूँ।" 12अत: मानोह ने कहा, "मुझे आशा
है कि जो तुम कहते हो वह होगा। यह बताओ कि वह
लड़का कैसा जीवन बिताएगा? वह क्या करेगा?"
13यहोवा के दूत ने मानोह से कहा, "तुम्हारी पत्नी
को वह सब करना चाहिए, जो मैंने उसे करने को कहा
है। 14उसे अंगूर की बेल पर उगी कोई चीज़ नहीं खानी
चाहिए। उसे दाखमधु या कोई नशीली पीने की चीज़
नहीं पीनी चाहिए। उसे किसी ऐसे जानवर को नहीं
खाना चाहिए जो अशुद्ध हो। उसे वह सब करना चाहिये,
जो करने का आदेश मैंने उसे दिया है।"
15तब मानोह ने यहोवा के दूत से कहा, "हम यह
चाहते हैं कि तुम थोड़ी देर और रुको। हम लोग तुम्हारे
भोजन के लिये नया बकरा पकाना चाहते हैं।" 16तब
यहोवा के दूत ने मानोह से कहा, "यदि तुम यहाँ से जाने
से मुझे रोकोगे तो भी मैं तुम्हारा भोजन ग्रहण नहीं
करूँगा। किन्तु यदि तुम कुछ तैयार करना चाहते हो तो
यहोवा को होमबलि दो।" (मानोह ने नहीं समझा कि
वह व्यक्ति सचमुच यहोवा का दूत था।) 17तब मानोह ने
यहोवा के दूत से पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है? हम लोग
इसलिये जानना चाहते हैं कि हम तुम्हारा सम्मान तब
कर सकेंगे, जब वह सचमुच होगा जो तुम कह रहे हो।"
18यहोवा के दूत ने कहा, "तुम मेरा नाम क्यों पूछते
हो? यह इतना आश्चर्यजनक है कि तुम विश्वास नहीं
कर सकते।"*

यह इतना ... कर सकते या "यह पेलेई है। जिसका अर्थ आश्चर्यजनक और अद्भुत है।" यह नाम यशा 9:6 में अद्भुत युक्ति करने वाले की तरह हैं।

19तब मानोह ने चट्टान पर एक बकरे की बलि दी।
उसने यहोवा तथा उस व्यक्ति को, कुछ अन्न भी भेंट
के रूप में दिया, जो अद्भुत चीज़ें करता है। 20मानोह
और उसकी पत्नी उसे ध्यान से देख रहे थे, जो हो रहा
था। जैसे ही लपटें वेदी से आकाश तक उठीं, वैसे ही
यहोवा का दूत अग्नि में आकाश को चला गया। जब
मानोह और उसकी पत्नी ने यह देखा तो वे धरती पर
गिर गए। उन्होंने अपने सिर को धरती से लगाया।
21मानोह अन्त में समझा कि वह व्यक्ति सचमुच यहोवा
का दूत था। यहोवा का दूत फिर मानोह के सामने
प्रकट नहीं हुआ। 22मानोह ने कहा, "हम लोगों ने
परमेश्वर को देखा है। निश्चय ही इस कारण से हम
लोग मरेंगे।"
23लेकिन उसकी पत्नी ने उससे कहा, "यहोवा हम
लोगों को मारना नहीं चाहता। यदि यहोवा हम लोगों को
मारना चाहता तो वह हम लोगों की होमबलि और
अन्नबलि स्वीकार न करता। उसने हम लोगों को वह
सब न दिखाया होता, और वह हम लोगों से ये बातें न
कहा होता।" 24अत: स्त्री को एक पुत्र हुआ। उसने
उसका नाम शिमशोन रखा। शिमशोन बड़ा हुआ और
यहोवा ने उसे आशीर्वाद दिया। 25यहोवा का तेज शिमशोन
में तभी कार्यशील हो गया जब वह महनेदान नगर में
था। वह नगर सोरा और एशताओल नगरों के मध्य है।

शिमशोन का विवाह

14 शिमशोन तिम्ना नगर को गया। उसने वहाँ
एक पलिश्ती युवती को देखा। 2जब वह वापस
लौटा तो उसने अपने माता-पिता से कहा, "मैंने एक
पलिश्ती लड़की को तिम्ना में देखा है। मैं चाहता हूँ तुम
उसे मेरे लिये लाओ। मैं उससे विवाह करना चाहता
हूँ।"
3उसके पिता और माता ने उत्तर दिया, "किन्तु इस्राएल
के लोगों में से एक लड़की है जिससे तुम विवाह कर
सकते हो। क्या तुम पलिश्ती लोगों में से एक लड़की से
विवाह करोगे? उन लोगों का खतना भी नहीं होता।"
किन्तु शिमशोन ने कहा, "मेरे लिये वही लड़की
लाओ। मैं उसे ही चाहता हूँ।" 4(शिमशोन के माता-पिता
नहीं समझते थे कि यहोवा ऐसा ही होने देना चाहता है।
यहोवा कोई रास्ता ढूँढ रहा था, जिससे वह पलिश्ती
लोगों के विरुद्ध कुछ कर सके। उस समय पलिश्ती
लोग इस्राएल के लोगों पर शासन कर रहे थे।)
5शिमशोन अपने माता-पिता के साथ तिम्ना नगर
को गया। वे नगर के निकट अंगूर के खेतों तक गए।
उस स्थान पर एक जवान सिंह गरज उठा और शिमशोन
पर कूदा। 6यहोवा की आत्मा बड़ी शक्ति से शिमशोन
पर उतरी। उसने अपने खाली हाथों से ही सिंह को चीर
डाला। यह उसके लिये सरल मालूम हुआ। यह वैसा

सरल हुआ जैसा एक बकरी के बच्चे को चीरना। किन्तु
शिमशोन ने अपने माता–पिता को नहीं बताया कि
उसने क्या किया है।
7इसलिए शिमशोन नगर में गया और उसने पलिश्ती
लड़की से बातें की। उसने उसे प्रसन्न किया। 8कई दिन
बाद शिमशोन उस पलिश्ती लड़की के साथ विवाह
करने के लिये वापस आया। आते समय रास्ते में वह
मरे सिंह को देखने गया। उसने मरे सिंह के शरीर में
मधुमक्खियों का एक छत्ता पाया। उन्होंने कुछ शहद
तैयार कर लिया था। 9शिमशोन ने अपने हाथ से कुछ
शहद निकाला। वह शहद चाटता हुआ रास्ते पर चल
पड़ा। जब वह अपने माता–पिता के पास आया तो उसने
उन्हें कुछ शहद दिया। उन्होंने भी उसे खाया किन्तु
शिमशोन ने अपने माता–पिता को नहीं बताया कि
उसने मरे सिंह के शरीर से शहद लिया है।
10शिमशोन का पिता पलिश्ती लड़की को देखने गया।
दूल्हे के लिये यह रिवाज था कि उसे एक दावत देनी
होती थी। इसलिए शिमशोन ने दावत दी। 11जब लोगों ने
देखा कि वह एक दावत दे रहा है तो उन्होंने उसके
साथ तीस व्यक्ति भेजे।
12तब शिमशोन ने उन तीस व्यक्तियों से कहा, "मैं
तुम्हें एक पहेली सुनाना चाहता हूँ। यह दावत सात दिन
तक चलेगी। उस समय उत्तर ढूँढने की कोशिश करना।
यदि तुम पहेली का उत्तर उस समय के अन्दर दे सके
तो मैं तुम्हें तीस सूती कमीजें, तीस वस्त्रों के जोड़े दूँगा।
13किन्तु यदि तुम इसका उत्तर न निकाल सके तो तुम्हें
तीस सूती कमीजें और तीस जोड़े वस्त्र मुझे देने होंगे।"
अत: तीस व्यक्तियों ने कहा, "पहले अपनी पहेली सुनाओ,
हम इसे सुनना चाहते हैं।"

14शिमशोन ने यह पहेली सुनाई: खाने वाले में से
खाद्य वस्तु। और शक्तिशाली में से मधुर वस्तु
निकली।

अत: तीस व्यक्तियों ने तीन दिन तक इसका उत्तर
ढूँढने का प्रयत्न किया, किन्तु वे कोई उत्तर न पा सके।
15चौथे दिन* वे व्यक्ति शिमशोन की पत्नी के पास
आए। उन्होंने कहा, "क्या तुमने हमें गरीब बनाने के
लिये यहाँ बुलाया है? तुम अपने पति को, हम लोगों को
पहेली का उत्तर देने के लिये फुसलाओ। यदि तुम हम
लोगों के लिये उत्तर नहीं निकालती तो हम लोग तुम्हें
और तुम्हारे पिता के घर में रहने वाले सभी लोगों को
जला देंगे।"
16इसलिए शिमशोन की पत्नी उसके पास गई और
रोने–चिल्लाने लगी। उसने कहा, "तुम मुझसे घृणा करते
हो। तुम मुझसे सच्चा प्रेम नहीं करते हो। तुमने मेरे लोगों
को एक पहेली सुनाई है और तुम उसका उत्तर मुझे
नहीं बता सकते।"
17शिमशोन की पत्नी दावत के शेष सात दिन तक
रोती चिल्लाती रही। अत: अन्त में उसने सातवें दिन
पहेली का उत्तर उसे दे दिया। उसने बता दिया क्योंकि
वह उसे बराबर परेशान कर रही थी। तब वह अपने
लोगों के बीच गई और उन्हें पहेली का उत्तर दे दिया।
18इस प्रकार दावत वाले सातवें दिन सूरज के डूबने से
पहले पलिश्ती लोगों के पास पहेली का उत्तर था। वे
शिमशोन के पास आए और उन्होंने कहा,

"शहद से मीठा क्या है? सिंह से अधिक शक्तिशाली
कौन है?" तब शिमशोन ने उनसे कहा, "यदि तुम
ने मेरी गाय को न जोता होता तो, मेरी पहेली का
हल नहीं निकाल पाए होते!"

19शिमशोन बहुत क्रोधित हुआ। यहोवा की आत्मा
उसके ऊपर बड़ी शक्ति के साथ आई। वह आश्कलोन
नगर को गया। उस नगर में उसने उनके तीस व्यक्तियों
को मारा। तब उसने सारे वस्त्र और शवों से सारी
सम्पत्ति ली। वह उन वस्त्रों को लेकर लौटा और उन
व्यक्तियों को दिया, जिन्होंने पहेली का उत्तर दिया था।
तब वह अपने पिता के घर लौटा। 20शिमशोन अपनी
पत्नी को नहीं ले गया। विवाह समारोह में उपस्थित
सबसे अच्छे व्यक्ति ने उसे रख लिया।

शिमशोन पलिश्तियों के लिये विपत्ति उत्पन्न करता है

15 गेहूँ की फसल तैयार होने के समय शिमशोन
अपनी पत्नी से मिलने गया। वह अपने साथ
एक जवान बकरा ले गया। उसने कहा, "मैं अपनी
पत्नी के कमरे में जा रहा हूँ।" किन्तु उसका पिता उसे
अन्दर जाने देना नहीं चाहता था। 2उसके पिता ने
शिमशोन से कहा, "मैंने सोचा कि तुम सचमुच अपनी
पत्नी से घृणा करते हो अत: विवाह में सम्मिलित सबसे
अच्छे व्यक्ति को मैंने उसे पत्नी के रूप में दे दिया।
उसकी छोटी बहन उससे अधिक सुन्दर है। उसकी
छोटी बहन को ले लो।"
3किन्तु शिमशोन ने उससे कहा, "तुम पलिश्ती लोगों
पर प्रहार करने का मेरे पास अब उचित कारण है।
अब कोई मुझे दोषी नहीं बताएगा।"
4इसलिए शिमशोन बाहर निकला और तीन सौ
लोमड़ियों को पकड़ा। उसने दो लोमड़ियों को एक बार
एक साथ लिया और उनका जोड़ा बनाने के लिये
उनकी पूँछ एक साथ बांध दी। तब उसने लोमड़ियों के
हर जोड़ों की पूँछो के बीच एक–एक मशाल बाँधी।
5शिमशोन ने लोमड़ियों की पूँछ के बीच के मशालों को
जलाया। तब उसने पलिश्ती लोगों के खेतों में लोमड़ियों

चौथे दिन यह ग्रीक अनुवाद में है। हिब्रू पाठ कहता है "सातवें दिन।"

को छोड़ दिया। इस प्रकार उसने उनकी खड़ी फसलों
और उनकी कटी ढेरों को जला दिया। उसने उनके
अंगूर के खेतों और जैतून के पेड़ों को भी जला डाला।
6पलिश्ती लोगों ने पूछा, “यह किसने किया?” किसी
ने उनसे कहा, “तिम्ना के व्यक्ति के दामाद शिमशोन ने
यह किया है। उसने यह इसलिए किया कि उसके ससुर
ने शिमशोन की पत्नी को उसके विवाह के समय
उपस्थित सबसे अच्छे व्यक्ति को दे दी।” अत: पलिश्ती
लोगों ने शिमशोन की पत्नी और उसके ससुर को
जलाकर मार डाला।
7तब शिमशोन ने पलिश्ती के लोगों से कहा, “तुम
लोगों ने यह बुरा किया अत: मैं तुम लोगों पर भी प्रहार
करूँगा। मैं तब तक तुम लोगों पर विपत्ति ढाता रहूँगा
जब तक मैं विपत्ति ढा सकूँगा।”
8तब शिमशोन ने पलिश्ती लोगों पर आक्रमण किया।
उसने उनमें से बहुतों को मार डाला। तब वह गया और
एक गुफा में ठहरा। वह गुफा ‘एताम की चट्टान’
नामक स्थान पर थी।
9तब पलिश्ती लोग यहूदा के प्रदेश में गये। वे लही
नामक स्थान पर रुके। उनकी सेना ने वहाँ डेरा डाला
और युद्ध के लिये तैयारी की। 10यहूदा परिवार समूह के
लोगों ने उनसे पूछा, “तुम पलिश्तियों, हम लोगों से युद्ध
करने क्यों आए हो?”
उन्होंने उत्तर दिया, “हम लोग शिमशोन को पकड़ने
आए हैं। हम लोग उसे अपना बन्दी बनाना चाहते हैं। हम
लोग उसे उसका बदला चुकाना चाहते हैं जो उसने
हमारे लोगों के साथ किया है।”
11तब यहूदा के परिवार समूह के तीन हजार व्यक्ति
शिमशोन के पास गये। वे एताम की चट्टान की गुफा
में गए। उन्होंने उससे कहा, “तुमने हम लोगों के लिए
क्या विपत्ती खड़ी कर दी है? क्या तुम्हें पता नहीं है कि
पलिश्ती लोग वे लोग हैं जो हम पर शासन करते हैं?”
शिमशोन ने उत्तर दिया, “उन्होंने मेरे साथ जो किया
उसका मैंने केवल बदला दिया।”
12तब उन्होंने शिमशोन से कहा, “हम तुम्हें बन्दी
बनाने आए हैं। हम लोग तुम्हें पलिश्ती लोगों को दे
देंगे।”
शिमशोन ने यहूदा के लोगों से कहा, “प्रतिज्ञा करो
कि तुम लोग स्वयं मुझ पर प्रहार नहीं करोगे।”
13तब यहूदा के व्यक्तियों ने कहा, “हम स्वीकार
करते हैं। हम लोग केवल तुमको बांधेंगे और तुम्हें
पलिश्ती लोगों को दे देंगे। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि हम
तुमको जान से नहीं मारेंगे।” अत: उन्होंने शिमशोन को
दो नयी रस्सियों से बांधा। वे उसे चट्टान की गुफा से
बाहर ले गए।
14जब शिमशोन लही नामक स्थान पर पहुँचा तो
पलिश्ती लोग उससे मिलने आए। वे प्रसन्नता से शोर
मचा रहे थे। तब यहोवा की आत्मा बड़ी शक्ति से
शिमशोन में आई। उसके ऊपर की रस्सियाँ ऐसी कमजोर
हो गई जैसे मानो वे जल गई हों। रस्सियाँ उसके हाथों से
ऐसे गिरीं मानों वे गल गई हो। 15शिमशोन को उस गधे
के जबड़े की हड्डी मिली जो मरा पड़ा था। उसने जबड़े
की हड्डी ली और उससे एक हजार पलिश्ती लोगों को
मार डाला।
16तब शिमशोन ने कहा,

एक गधे के जबड़े की हड्डी से मैंने ढेर किया है
उनका– एक बहुत ऊँचा ढेर। एक गधे के जबड़े
की हड्डी से मैंने मार डाला है हजार व्यक्तियों को!

17जब शिमशोन ने बोलना समाप्त किया तब उसने
जबड़े की हड्डी को फेंक दिया। इसलिए उस स्थान का
नाम रामत लही पड़ा।
18 शिमशोन को बहुत प्यास लगी थी। इसलिए उसने
यहोवा को पुकारा। उसने कहा, “मैं तेरा सेवक हूँ। तूने
मुझे यह बड़ी विजय दी है। क्या अब मुझे प्यास से मरना
पड़ेगा? क्या मुझे उनसे पकड़ा जाना होगा जिनका खतना
नहीं हुआ है?”
19लही में भूमि के अन्दर एक गड्ढा है। परमेश्वर ने
उस गड्ढे को फट जाने दिया और पानी बाहर आ गया।
शिमशोन ने पानी पीया और अपने को स्वस्थ अनुभव
किया। उसने फिर अपने को शक्तिशाली अनुभव किया।
इसलिए उसने उस पानी के सोते का नाम एनहक्कोरे
रखा। यह अब तक आज भी लही नगर में है।
20इस प्रकार शिमशोन इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश
बीस वर्ष तक रहा। वह पलिश्ती लोगों के समय में था।

शिमशोन अज्जा नगर को जाता है

16 एक दिन शिमशोन अज्जा नगर को गया। उसने
वहाँ एक वेश्या को देखा। वह उसके साथ रात
बिताने के लिये अन्दर गया। 2किसी ने अज्जा के लोगों
से कहा, “शिमशोन यहाँ आया है।” वे उसे जान से मार
डालना चाहते थे। इसलिए उन्होंने नगर को घेर लिया।
वे छिपे रहे और वे नगर–द्वार के पास छिप गये और
सारी रात शिमशोन की प्रतीक्षा किया। वे पूरी रात
एकदम चुप रहे। उन्होंने आपस में कहा, “जब सवेरा
होगा, हम लोग शिमशोन को मार डालेंगे।”
3किन्तु शिमशोन वेश्या के साथ आधी रात तक ही
रहा। शिमशोन आधी रात में उठा और नगर के फाटक
के किवाड़ों को पकड़ लिया और उसने उन्हें खींच कर
दीवार से अलग कर दिया। शिमशोन ने किवाड़ों, दो
खड़ी चौखटों और अबेड़ों को जो किवाड़ को बन्द
करती थी, पकड़ कर अलग उखाड़ लिया। तब शिमशोन
ने उन्हें अपने कंधों पर लिया और उस पहाड़ी की चोटी
पर ले गया जो हेब्रोन नगर के समीप है।

शिमशोन और दलीला

4इसके बाद शिमशोन दलीला नामक एक स्त्री से प्रेम करने लगा। वह सोरेक घाटी की थी।

5पलिश्ती लोगों के शासक दलीला के पास गए। उन्होंने कहा, "हम जानना चाहते हैं कि शिमशोन उतना अधिक शक्तिशाली कैसे है? उसे फुसलाने की कोशिश करो कि वह अपनी गुप्त बात बता दे। तब हम लोग जान जाएंगे कि उसे कैसे पकड़ें और उसे कैसे बांधें। तब हम लोग उस पर नियन्त्रण कर सकते हैं। यदि तुम ऐसा करोगी तो हम में से हर एक तुमको एक हजार एक सौ शेकेल*देगा।"

6अत: दलीला ने शिमशोन से कहा, "मुझे बताओ कि तुम इतने अधिक शक्तिशाली क्यों हो? तुम्हें कोई कैसे बांध सकता है और तुम्हें कैसे असहाय कर सकता है?"

7शिमशोन ने उत्तर दिया, "कोई व्यक्ति मुझे सात नयी धनुष की उन डोरियों से बांध सकता है जो अब तक सूखी न हो। यदि कोई ऐसा करेगा तो मैं अन्य आदमियों की तरह दुर्बल हो जाऊँगा।"

8तब पलिश्ती के शासक सात नयी धनुष की डोरियाँ दलीला के लिये लाए। वे डोरियाँ अब तक सूखी नहीं थीं। उसने शिमशोन को उससे बांध दिया।
9कुछ व्यक्ति दूसरे कमरे में छिपे थे। दलीला ने शिमशोन से कहा, "शिमशोन पलिश्ती के लोग तुम्हें पकड़ने आ रहे हैं।" किन्तु शिमशोन ने धनुष–डोरियों को सरलता से तोड़ दिया। वे दीपक से जली ताँत की राख की तरह टूट गई। इस प्रकार पलिश्ती के लोग शिमशोन की शक्ति का राज न पा सके।

10तब दलीला ने शिमशोन से कहा, "तुमने मुझे बेवकूफ बनाया है। तुमने मुझसे झूठ बोला है। कृपया मुझे सच–सच बताओ कि तुम्हें कोई कैसे बांध सकता है।"

11शिमशोन ने कहा, "कोई व्यक्ति मुझे नयी रस्सियों से बांध सकता है। वे मुझे उन रस्सियों से बांध सकते हैं जिनका उपयोग पहले न हुआ हो। यदि कोई ऐसा केरगा तो मैं इतना कमजोर हो जाऊँगा, जितना कोई अन्य व्यक्ति होता है।"

12इसलिये दलीला ने कुछ नयी रस्सियाँ ली और शिमशोन को बांध दिया। कुछ व्यक्ति अगले कमरे में छिपे थे। तब दलीला ने उसे आवाज दी, "शिमशोन, पलिश्ती लोग तुम्हें पकड़ने आ रहे हैं।" किन्तु उसने रस्सियों को सरलता से तोड़ दिया। उसने उन्हें धागे की तरह तोड़ डाला।

13तब दलीला ने शिमशोन से कहा, "तुमने मुझे बेवकूफ बनाया है। तुमने मुझसे झूठ बोला है। अब तुम मुझे बताओ कि तुम्हें कोई कैसे बांध सकता है।" उसने कहा, "यदि तुम उस करघे का उपयोग करो। जो मेरे सिर के बालों के बटों को एक में बनाए और इसे एक काँटे से कस दे तो मैं इतना कमजोर हो जाऊँगा, जितना कोई अन्य व्यक्ति होता है।" तब शिमशोन सोने चला गया। इसलिए दलीला ने करघे का उपयोग उसके सिर के बालों के सात बट बुनने के लिये किया।

14तब दलीला ने जमीन में खेमे की खूँटी गाड़कर, करघे को उससे बांध दिया। फिर उसने शिमशोन को आवाज दी, "शिमशोन, पलिश्ती के लोग तुम्हें पकड़ने जा रहे हैं।" शिमशोन ने खेमे की खूँटी करघा तथा ढरकी को उखाड़ दिया।
15तब दलीला ने शिमशोन से कहा, "तुम मुझसे कैसे कह सकते हो, 'मैं तुमसे प्रेम करता हूँ,' जबकि तुम मुझ पर विश्वास तक नहीं करते।* तुम अपना राज बताने से इन्कार करते हो। यह तीसरी बार तुमने मुझे बेवकूफ बनाया है। तुमने अपनी भीषण शक्ति का राज नहीं बताया है।"
16वह शिमशोन को दिन पर दिन परेशान करती गई। उसके राज के बारे में उसके पूछने से वह इतना थक गया कि उसे लगा कि वह मरने जा रहा है।
17इसलिये उसने दलीला को सब कुछ बता दिया। उसने कहा, "मैंने अपने बाल कभी कटवाये नहीं हैं। मैं जन्म के पहले विशेष रूप से परमेश्वर को समर्पित था। यदि कोई मेरे बालों को काट दे तो मेरी शक्ति चली जाएगी। मैं वैसा ही कमजोर हो जाऊँगा, जितना कोई अन्य व्यक्ति होता है।"

18दलीला ने देखा कि शिमशोन ने अपने हृदय की सारी बात कह दी है। उसने पलिश्ती के लोगों के शासकों के पास दूत भेजा। उसने कहा, "फिर वापस लौटो। शिमशोन ने सब कुछ कह दिया है।" अत: पलिश्ती लोगों के शासक दलीला के पास लौटे। वे वह धन साथ लाए जो उन्होंने उसे देने की प्रतिज्ञा की थी।

19दलीला ने शिमशोन को उस समय सो जाने दिया, जब वह उसकी गोद में सिर रख कर लेटा था। तब उसने एक व्यक्ति को अन्दर बुलाया और शिमशोन के बालों की सात लटों को कटवा दिया। इस प्रकार उसने उसे शक्तिहीन बना दिया। शिमशोन की शक्ति ने उसे छोड़ दिया।
20तब दलीला ने उसे आवाज दी। "शिमशोन पलिश्ती के लोग तुमको पकड़ने जा रहे हैं।" वह जाग पड़ा और सोचा, "मैं पहले की तरह भाग निकलूँ और अपने को स्वतन्त्र रखूँ।" किन्तु शिमशोन को यह नहीं मालूम था कि यहोवा ने उसे छोड़ दिया है।

21पलिश्ती के लोगों ने शिमशोन को पकड़ लिया। उन्होंने उसकी आँखे निकाल लीं और उसे अज्जा नगर को ले गए। तब उसे भागने से रोकने के लिए उसके

एक हजार एक सौ शेकेल लगभग तेरह किलो चाँदी के बराबर होता है।

तुम ... करते "तुम्हारा हृदय मेरे साथ नहीं है।"

पैरों में उन्होंने बेड़ियाँ डाल दीं। उन्होंने उसे बन्दीगृह में
डाल दिया तथा उससे चक्की चलवायी। 22किन्तु शिमशोन
के बाल फिर बढ़ने आरम्भ हो गए।

23पलिश्ती लोगों के शासक उत्सवमनाने के लिए
एक स्थान पर इकट्ठे हुए। वे अपने देवता दागोन को
एक बड़ी भेंट चढ़ाने जा रहे थे। उन्होंने कहा, "हम
लोगों के देवता ने हमारे शत्रु शिमशोन को हराने में
सहायता की है।"

24जब पलिश्ती लोगों ने शिमशोन को देखा तब उन्होंने
अपने देवता की प्रशंसा की। उन्होंने कहा,

"इस व्यक्ति ने हमारे लोगों को नष्ट किया! इस
व्यक्ति ने हमारे अनेक लोगों को मारा! किन्तु
हमारे देवता ने हमारे शत्रु को पकड़वाने में हमारी
मदद की!"

25लोग उत्सव में खुशी मना रहे थे। इसलिए उन्होंने
कहा, "शिमशोन को बाहर लाओ। हम उसका मजाक
उड़ाना चाहते हैं।" इसलिए वे शिमशोन को बन्दीगृह से
बाहर ले आए और उसका मजाक उड़ाया। उन्होंने
शिमशोन को दागोन देवता के मन्दिर के स्तम्भों के
बीच खड़ा किया। 26एक नौकर शिमशोन का हाथ
पकड़ा हुआ था। शिमशोन ने उससे कहा, "मुझें वहाँ
रखो जहाँ मैं उन स्तम्भों को छू सकूँ, जो इस मन्दिर को
ऊपर रोके हुए है। मैं उनका सहारा लेना चाहता हूँ।"

27मन्दिर में स्त्री–पुरूषों की अपार भीड़ थी। पलिश्ती
लोगों के सभी शासक वहाँ थे। वहाँ लगभग तीन हजार
स्त्री–पुरूष मन्दिर की छत पर थे। वे हँस रहे थे और
शिमशोन का मजाक उड़ा रहे थे। 28तब शिमशोन ने
यहोवा से प्रार्थना की। उसने कहा, "सर्वशक्तिमान यहोवा,
मुझे याद कर। परमेश्वर मुझे कृपाकर केवल एक बार
और शक्ति दे। मुझे केवल एक यह काम करने दे कि
पलिश्तियों को अपनी आँखों के निकालने का बदला
चुका दूँ।" 29तब शिमशोन ने मन्दिर के केन्द्र के दोनों
स्तम्भों को पकड़ा। ये दोनों स्तम्भ पूरे मन्दिर को
टिकाए हुए थे। उसने दोनों स्तम्भों के बीच में अपने को
जमाया। एक स्तम्भ उसकी दांयी ओर तथा दूसरा उसकी
बाँयी ओर था। 30शिमशोन ने कहा, "इन पलिश्तयों के
साथ मुझें मरने दे।" तब उसने अपनी पूरी शक्ति से
स्तम्भों को ठेला और मन्दिर शासकों तथा इनमें आए
लोगों पर गिर पड़ा। इस प्रकार शिमशोन ने अपने
जीवन काल में जितने पलिश्ती लोगों को मारा, उससे
कहीं अधिक लोगों को उसने तब मारा, जब वह मरा।

31शिमशोन के भाईयों और उसके पिता का पूरा
परिवार उसके शरीर को लेने गए। वे उसे वापस लाए
और उसे उसके पिता मानोह के कब्र में दफनाया। यह
कब्र सोरा और एश्ताओल नगरों के बीच है। शिमशोन
इस्राएल के लोगों का न्यायाधीश बीस वर्ष तक रहा।

मीका की मूर्तियाँ

17 मीका नामक एक व्यक्ति था जो एप्रैम के
पहाड़ी प्रदेश में रहता था। 2मीका ने अपनी माँ
से कहा, "क्या तुम्हें चाँदी के ग्यारह सौ सिक्के याद हैं
जो तुमसे चुरा लिये गए थे। मैंने तुम्हें उसके बारे में शाप
देते सुना। वह चाँदी मेरे पास हैं। मैंने उसे लिया है।"
उसकी माँ ने कहा, "मेरे पुत्र, तुम्हें यहोवा आशीर्वाद
दे।"

3मीका ने अपनी माँ को ग्यारह सौ सिक्के वापस
दिये। तब उसने कहा, "मैं ये सिक्के यहोवा को एक
विशेष भेंट के रूप में दूँगी। मैं यह चाँदी अपने पुत्र को
दूँगी और वह एक मूर्ति बनाएगा और उसे चाँदी से ढक
देगा। इसलिए पुत्र, अब यह चाँदी मैं तुम्हें लौटाती हूँ।"

4लेकिन मीका ने वह चाँदी अपनी माँ को लौटा दी।
अत: उसने दो सौ शेकेल चाँदी लिये और एक सुनार
को दे दिया। सुनार ने चाँदी का उपयोग चाँदी से ढकी
एक मूर्ति बनाने में किया। मूर्ति मीका के घर में रखी
गई। 5मीका का एक मन्दिर मूर्तियों की पूजा के लिये
था। उसने एक एपोद और कुछ घरेलू मूर्तियाँ बनाई।
तब मीका ने अपने पुत्रों में से एक को अपना याजक
चुना। 6(उस समय इस्राएल के लोगों का कोई राजा नहीं
था। इसलिए हर एक व्यक्ति वह करता था जो उसे
ठीक जँचता था।)

7एक लेवीवंशी युवक था। वह यहूदा प्रदेश में बेतलेहेम
नगर का निवासी था। वह यहूदा के परिवार समूह में
रह रहा था। 8उस युवक ने यहूदा में बेतलेहेम को छोड़
दिया। वह रहने के लिये दूसरी जगह ढूँढ रहा था। जब
वह यात्रा कर रहा था, वह मीका के घर आया। मीका
का घर एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में था। 9मीका ने उससे
पूछा, "तुम कहाँ से आए हो?" युवक ने उत्तर दिया, "मैं
उस बतेलेहम नगर का लेवीवंशी हूँ जो यहूदा प्रदेश में
है। मैं रहने के लिये स्थान ढूँढ रहा हूँ।"

10तब मीका ने उससे कहा, "मेरे साथ रहो। मेरे पिता
और मेरे याजक बनो। मैं हर वर्ष तुम्हें दस चाँदी के
सिक्के दूँगा। मैं तुम्हें वस्त्र और भोजन भी दूँगा।" लेवीवंशी
ने वह किया जो मीका ने कहा। 11लेवीवंशी युवक
मीका के साथ रहने को तैयार हो गया। युवक मीका
के पुत्रों के जैसा हो गया। 12मीका ने युवक को अपना
याजक बनाया। इस प्रकार युवक याजक बन गया और
मीका के घर में रहने लगा। 13मीका ने कहा, "अब मैं
समझता हूँ कि यहोवा मेरे प्रति अच्छा होगा। मैं यह
इसलिए जानता हूँ कि मैंने लेवीवंशी के परिवार के एक
व्यक्ति को याजक रखा है।"

दान लैश नगर पर अधिकार करता है

18 उस समय इस्राएल के लोगों का कोई राजा नहीं
था और उस समय दान का परिवार समूह,

अपना कहे जाने योग्य रहने के लिये, भूमि की खोज में
था। इस्राएल के अन्य परिवार समूहों ने पहले ही अपनी
भूमि प्राप्त कर ली थी। किन्तु दान का परिवार समूह
अभी अपनी भूमि नहीं पा सका था।

2इसलिए दान के परिवार समूह ने पाँच सैनिकों को
कुछ भूमि खोजने के लिये भेजा। वे रहने के लिये
अच्छा स्थान खोजने गए। वे पाँचों व्यक्ति जोरा और
एश्ताओल नगरों के थे। वे इसलिए चुने गए थे कि वे
दान के सभी परिवार समूह में से थे। उनसे कहा गया
था, "जाओ और किसी भूमि की खोज करो।" पाँचों
व्यक्ति एप्रैम प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्र में आए। वे मीका के
घर आए और वहीं रात बिताई।

3"जब पाँचों व्यक्ति मीका के घर के समीप आए तो
उन्होंने लेवीवंश के परिवार समूह के युवक की
आवाज सुनी। उन्होंने उसकी आवाज पहचानी,
इसीलिये वे मीका के घर ठहर गए। उन्होंने लेवीवंशी
युवक से पूछा, "तुम्हें इस स्थान पर कौन लाया है? तुम
यहाँ क्या कर रहे हो? तुम्हारा यहाँ क्या काम है?"

4उसने उनसे कहा, "मीका ने मेरी नियुक्ति की है। मैं
उसका याजक हूँ।"

5उन्होंने उससे कहा, "कृपया परमेश्वर से हम लोगों
के लिये कुछ मांगो हम लोग कुछ जानना चाहते हैं।
क्या हमारे रहने के लिये भूमि की खोज सफल होगी?"

6याजक ने पाँचों व्यक्तियों से कहा, "शान्ति से जाओ।
यहोवा तुम्हारा मार्ग–दर्शन करेगा।"

7 इसलिये पाँचों व्यक्ति वहाँ से चले। वे लैश नगर को
आए। उन्होंने देखा कि उस नगर के लोग सुरक्षित*
रहते हैं। उन पर सीदोन के लोगों का शासन था। सीदोन
भूमध्यसागर के तट पर एक महत्वपूर्ण और शक्तिशाली
नगर था। वे शान्ति और सुरक्षा के साथ रहते थे। लोगों
के पास हर एक चीज़ बहुत अधिक थी और उन पर
प्रहार करनेवाला पास में कोई शत्रु नहीं था और वे
सीदोन नगर के लोगों से बहुत अधिक दूर रहते थे और
अराम के लोगों से भी उनका कोई व्यापार नहीं था।*
8पाँचों व्यक्ति सोरा और एश्ताओल नगर को वापस
लौटे। उनके सम्बन्धियों ने पूछा, "तुमने क्या पता लगाया?"

9पाँचों व्यक्तियों ने उत्तर दिया, "हम लोगों ने प्रदेश
देखा है और वह बहुत अच्छा है। हमें उन पर आक्रमण
करना चाहिये। प्रतीक्षा न करो। हम चलें और उस
प्रदेश को ले लें। 10जब तुम उस प्रेदश मे चलोगे तो
देखोगे कि वहाँ पर बहुत अधिक भूमि है। वहाँ सब
कुछ बहुत अधिक है। तुम यह भी पाओगे कि वहाँ के
लोगों को आक्रमण की आशंका नहीं है। निश्चय ही
परमेश्वर ने वह प्रदेश हमको दिया है।"

11इसलिए दान के परिवार समूह के छः सौ व्यक्तियों
ने सोरा और एश्ताओल के नगरों को छोड़ा। वे युद्ध के
लिये तैयार थे। 12लैश नगर की यात्रा करते समय वे
यहूदा प्रदेश में किर्य्यत्यारीम नगर में रूके। उन्होंने वहाँ
डेरा डाला। यही कारण है किर्य्यत्यारीम के पश्चिम का
प्रदेश आज तक महनेदान कहा जाता है। 13उस स्थान
से छः सौ व्यक्तियों ने एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश की यात्रा
की। वे मीका के घर आए।

14तब उन पाँचों व्यक्तियों ने जिन्होंने लैश की खोज
की थी, अपने भाइयों से कहा, "क्या तुम्हें मालूम है कि
इन घरों में से एक में एपोद, अन्य घरेलू देवता, एक
खुदाईवाली मूर्ति तथा एक ढाली गई मूर्ति है? अब तुम
समझते हो कि तुम्हें क्या करना है। जाओ और उन्हें ले
आओ।" 15इसलिये वे मीका के घर रूके जहाँ लेवीवंशी
युवक रहता था। उन्होंने युवक से पूछा कि वह प्रसन्न
है। 16दान के परिवार समूह के छः सौ लोग फाटक के
द्वार पर खड़े रहे। उनके पास सभी हथियार थे तथा वे
युद्ध के लिये तैयार थे। 17–18पाँचों गुप्तचर घर में गए।
उन्होंने खुदाई वाली मूर्ति, एपोद, घरेलू मूर्तियों और
ढाली गई मूर्ति को लिया। जब वे ऐसा कर रहे थे तब
लेवीवंशी युवक याजक और युद्ध के लिये तैयार छः सौ
व्यक्ति फाटक के द्वार के साथ खड़े थे। लवीवंशी युवक
याजक ने उनसे पूछा, "तुम क्या कर रहे हो?"

19पाँचों व्यक्तियों ने कहा, "चुप रहो, एक शब्द भी न
बोलो। हम लोगों के साथ चलो। हमारे पिता और याजक
बनो। तुम्हें स्वयं चुनना चाहिये कि तुम किसे अधिक
अच्छा समझते हो? क्या यह तुम्हारे लिये अधिक अच्छा
है कि तुम एक व्यक्ति के याजक रहो? या उससे कहीं
अधिक अच्छा यह है कि तुम इस्राएल के लोगों के एक
पूरे परिवार समूह के याजक बनो?"

20इससे लेवीवंशी प्रसन्न हुआ। इसलिये उसने एपोद,
घरेलू मूर्तियों तथा खुदाई वाली मूर्ति को लिया। वह दान
के परिवार समूह के उन लोगों के साथ गया।

21तब दान परिवार समूह के छः सौ व्यक्ति लेवीवंशी
के साथ मुड़े और उन्होंने मीका के घर को छोड़ा।
उन्होंने अपने छोटे बच्चों, जानवरों और अपनी सभी
चीज़ों को अपने सामने रखा।

22दान के परिवार समूह के लोग उस स्थान से बहुत
दूर गए और तब मीका के पास रहने वाले लोग चिल्लाने
लगे। तब उन्होंने दान के लोगों का पीछा किया और
उन्हें जा पकड़ा। 23मीका के लोग दान के लोगों पर
बरस पड़ रहे थे। दान के लोग मुड़े। उन्होंने मीका से
कहा, "समस्या क्या है? तुम चिल्ला क्यों रहे हो?"

24मीका ने उत्तर दिया, "दान के तुम लोग, तुमने मेरी
मूर्तियाँ ली है। मैंने उन मूर्तियों को अपने लिये बनाया

सुरक्षित सीदोन लोगों की तरह "सुरक्षा।" "वे सीदोन के तौर–तरीके पर चलते थे।"

अराम ... था प्राचीन ग्रीक अनुवाद के अनुसार । हिब्रू पाठ में "वे कहीं के लोगों से व्यापार सम्बन्ध नहीं रखते थे।

है। तुमने हमारे याजक को भी ले लिया है। तुमने छोड़ा
ही क्या है? तुम मुझे कैसे पूछ सकते हो, 'समस्या क्या
है?'"

25दान के परिवार समूह के लोगों ने उत्तर दिया,
"अच्छा होता, तुम हमसे बहस न करते। हममें से कुछ
व्यक्ति गर्म स्वभाव के हैं। यदि तुम हम पर चिल्लाओगे
तो वे गर्म स्वभाव वाले लोग तुम पर प्रहार कर सकते
हैं। तुम और तुम्हारा परिवार मार डाला जा सकता है।"

26तब दान के लोग मुड़े और अपने रास्ते पर आगे
बढ़ गए। मीका जानता था कि वे लोग उसके लिये बहुत
अधिक शक्तिशाली हैं। इसलिए वह घर लौट गया।

27इस प्रकार दान के लोगों ने वे मूर्तियाँ ले लीं जो
मीका ने बनाई थी। उन्होंने मीका के साथ रहने वाले
याजक को भी ले लिया। तब वे लैश पहुँचे। उन्होंने लैश
में शान्तिपूर्वक रहने वाले लोगों पर आक्रमण किया।
लैश के लोगों को आक्रमण की आशंका नहीं थी। दान
के लोगों ने उन्हें अपनी तलवारों के घाट उतारा। तब
उन्होंने नगर को जला डाला। 28लैश में रहने वालों की
रक्षा करने वाला कोई नहीं था। वे सीदोन के नगर से
इतने अधिक दूर थे कि वे लोग इनकी सहायता नहीं
कर सकते थे और लैश के लोग अराम के लोगों से
कोई व्यवहारिक सम्बन्ध नहीं रखते थे। लैश नगर
बेत्रहोब प्रदेश के अधिकार में एक घाटी में था। दान के
लोगों ने उस स्थान पर एक नया नगर बसाया और वह
नगर उनका निवास स्थान बना। 29दान के लोगों ने
लैश नगर का नया नाम रखा। उन्होंने उस नगर का
नाम दान रखा। उन्होंने अपने पूर्वज दान के नाम पर
नगर का नाम रखा। दान इस्राएल नामक व्यक्ति का
पुत्र था। पुराने समय में इस नगर का नाम लैश था।

30दान के परिवार समूह के लोगों ने दान नगर में
मूर्तियों की स्थापना की। उन्होंने गेर्शोम के पुत्र योनातान
को अपना याजक बनाया। गेर्शोम मूसा* का पुत्र था।
योनातान और उसके पुत्र दान के परिवार समूह के तब
तक याजक रहे, जब तक इस्राएल के लोगों को बन्दी
बना कर बाबेल नहीं ले जाया गया। 31दान के लोगों ने
उन मूर्तियों की पूजा की जिन्हें मीका ने बनाया था। वे
उस पूरे समय उन मूर्तियों को पूजते रहे जब तक शिलो
में परमेश्वर का स्थान रहा।

लेवीवंशी और उसकी रखैल

19 उन दिनों इस्राएल के लोगों का कोई राजा नहीं
था। एक लेवीवंशी व्यक्ति एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश
के बहुत दूर के क्षेत्र में रहता था। उस व्यक्ति ने एक
स्त्री को अपनी दासी बना रखा था जो उसकी पत्नी की
तरह थी। वह यहूदा प्रदेश के बेतलेहेम नगर की निवासी
थी। 2किन्तु उस दासी का लेवीवंशी के साथ वाद-विवाद
हो गया था। उसने उसे छोड़ दिया और यहूदा प्रदेश के
बेतलेहेम नगर में अपने पिता के घर चली गई। वह वहाँ
चार महीने रही। 3तब उसका पति उसके पास गया। वह
उससे प्रेम से बात करना चाहता था, जिससे वह उसके
पास लौट जाये। वह अपने साथ अपने नौकर और दो
गधों को ले गया। लेवीवंशी व्यक्ति उस स्त्री के पिता के
घर आया। उसके पिता ने लेवीवंशी व्यक्ति को देखा
और उसका स्वागत करने के लिये प्रसन्नता से बाहर
आया। 4युवती के पिता ने उसे ठहरने के लिये आमन्त्रित
किया। इसलिये लेवीवंशी तीन दिन ठहरा। उसने खाया,
पिया और वह अपने ससुर के घर सोया।

5चौथे दिन बहुत सवेरे वह उठा। लेवीवंशी चल पड़ने
की तैयारी कर रहा था। किन्तु युवती के पिता ने अपने
दामाद से कहा, "पहले कुछ खाओ। जब तुम भोजन
कर लो तो तुम जा सकते हो।" 6इसलिये लेवीवंशी
व्यक्ति और उसका ससुर एक साथ खाने और मदिरा
पीने के लिये बैठे। उसके बाद युवती के पिता ने उस
लेवीवंशी से कहा, "कृपया आज भी ठहरे। आराम करो
और आनन्द मनाओ। दोपहर के बाद तक जाने के
लिये प्रतीक्षा करो।" इस प्रकार दोनों व्यक्तियों ने एक
साथ खाया। 7जब लेवी पुरुष जाने को तैयार हुआ तो
उसके ससुर ने उसे वहाँ रात भर रुकने का आग्रह
किया।

8लेवी पुरुष पाँचवे दिन जाने के लिये सवेरे उठा। वह
जाने को तैयार था कि उस जवान लड़की के पिता ने
कहा, "पहले कुछ खा पी लो, फिर आराम करो और
दोपहर तक रूक जाओ।" अत: दोनों ने फिर से एक
साथ भोजन किया।

9तब लेवीवंशी व्यक्ति, उसकी रखैल और उसका
नौकर चलने के लिये उठे। किन्तु युवती के पिता,
उसके ससुर ने कहा, "लगभग अंधेरा हो गया है। दिन
लगभग बीत चुका है। रात यहीं बिताओ और आनन्द
मनाओ। कल बहुत सवेरे तुम उठ सकते हो और
अपना रास्ता पकड़ सकते हो।" 10किन्तु लेवीवंशी व्यक्ति
एक और रात वहाँ ठहरना नहीं चाहता था। उसने
अपने काठीवाले दो गधों और अपनी रखैल को लिया।
वह यबूस नगर तक गया। (यबूस यरूशलेम का ही
दूसरा नाम है।) 11दिन लगभग छिप गया, वे यबूस नगर
के पास थे। इसलिए नौकर ने अपने स्वामी लेवीवंशी से
कहा, "हम लोग इस नगर में रूक जायें। यह यबूसी
लोगों का नगर है। हम लोग यहीं रात बितायें।"

12किन्तु उसके स्वामी लेवीवंशी ने कहा, "नहीं हम
लोग अपरिचित नगर में नहीं जाएंगे। वे लोग इस्राएल के
लोगों में से नहीं हैं। हम लोग गिबा नगर तक जाएंगे।"
13लेवीवंशी ने कहा, "आगे बढ़ो। हम लोग गिबा या रामा

मूसा हिब्रू ग्रन्थ में यहाँ दो पाठ हैं–या तो "मूसा" या "मनश्शे"।
मूसा स्वीकार करने योग्य पाठ ज्ञात होता है।

तक पहुँचने की कोशिश करें। हम उन नगरों में से
किसी एक में रात बिता सकते हैं।"
14इसलिए लेवीवंशी और उसके साथ के लोग आगे
बढ़े। जब वे गिबा नगर के पास आए तो सूरज डूब रहा
था। गिबा बिन्यामीन के परिवार समूह के प्रदेश में है।
15इसलिये वे गिबा में ठहरे। उन्होंने उस नगर में रात
बिताने की योजना बनाई। वे नगर में मुख्य सार्वजनिक
चौराहे में गए और वहाँ बैठ गए। किन्तु किसी ने उन्हें
रात बिताने के लिये अपने घर आमन्त्रित नहीं किया।
16उस सन्ध्या को एक बूढ़ा व्यक्ति अपने खेतों से नगर
में आया। उसका घर एप्रैम प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्र में था।
किन्तु अब वह गिबा नगर में रह रहा था। (गिबा के
लोग बिन्यामीन के परिवार समूह के थे।) 17बूढ़े व्यक्ति
ने यात्रियों (लेवीवंशी व्यक्ति) को सार्वजनिक चौराहे पर
देखा। बूढ़े व्यक्ति ने पूछा, "तुम कहाँ जा रहे हो? तुम
कहाँ से आये हो?"
18लेवीवंशी व्यक्ति ने उत्तर दिया, "यहूदा प्रदेश के
बेतलेहेम नगर से हम लोग यात्रा कर रहे हैं। हम अपने
घर जा रहे हैं। हम एप्रैम प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्र के दूर के
भाग के निवासी हैं। मैं यहूदा प्रदेश में बेतलेहेम को गया
था। अब मैं अपने घर* जा रहा हूँ। 19हम लोगों के
पास अपने गधों के लिये पुआल और भोजन है। हम
लोगों के पास रोटी और दाखमधु है। हम लोगों में से
कोई–मैं, युवती या मेरा नौकर, कुछ भी नहीं चाहता।"
20बूढे ने कहा, "तुम्हारा स्वागत है। तुम मेरे यहाँ
ठहरो। तुम को आवश्यकता की सभी चीज़ें मैं दूँगा। तुम
सार्वजनिक चौराहे में रात व्यतीत मत करो"। 21तब वह
बूढ़ा व्यक्ति लेवीवंशी व्यक्ति और उसके साथ के व्यक्तियों
को अपने साथ अपने घर ले गया। बूढ़े व्यक्ति ने उसके
गधों को खिलाया। उन्होंने अपने पैर धोए। तब उसने
उन्हें कुछ खाने और कुछ दाखमधु पीने को दिया।
22जब लेवीवंशी व्यक्ति और उसके साथ के व्यक्ति
आनन्द ले रहे थे, तभी उस नगर के कुछ लोगों ने उस
घर को घेर लिया। वे बहुत बुरे व्यक्ति थे। वे जोर से
दरवाजा पीटने लगे। वे उस बूढ़े व्यक्ति से, जिसका वह
घर था, चिल्लाकर बोले, "उस व्यक्ति को अपने घर से
बाहर करो। हम उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध करना
चाहतेहैं।"
23बूढ़ा व्यक्ति बाहर गया और उन दुष्ट लोगों से
कहा, "भाइयों, नहीं, ऐसा बुरा काम न करो। वह व्यक्ति
मेरे घर में अतिथि है।* यह भयंकर पाप न करो।
24सुनो, यहाँ मेरी पुत्री है। उसने पहले कभी शारीरिक
सम्बन्ध नहीं किया है। मैं उसे और इस पुरुष की रखैल
को तुम्हारे पास बाहर लाता हूँ। तुम उसका उपयोग जैसे
चाहो कर सकते हो। किन्तु इस व्यक्ति के विरुद्ध ऐसा
भंयकर पाप न करो।"
25किन्तु उन दुष्ट लोगों ने उस बूढ़े व्यक्ति की एक न
सुनी। इसलिये लेवीवंशी व्यक्ति ने अपनी रखैल को उन
दुष्ट व्यक्तियों के साथ बाहर कर दिया। उन दुष्ट व्यक्तियों
ने पूरी रात उसके साथ कुकर्म किया और बुरी तरह
गालियाँ दीं। तब सवेरे उसे जाने दिया। 26सवेरे वह स्त्री
वहाँ लौटी जहाँ उसका स्वामी ठहरा था। वह सामने
दरवाजे पर गिर पड़ी। वह तब तक पड़ी रही जब तक
पूरा दिन नहीं निकल आया।
27सवेरे लेवीवंशी व्यक्ति उठा और उसने घर का
दरवाजा खोला। वह अपने रास्ते जाने के लिये बाहर
निकला। किन्तु वहाँ उसकी रखैल पड़ी थी।* वह घर
के रास्ते पर पड़ी थी। उसके हाथ दरवाजे की ड्योढी
पर थे। 28तब लेवीवंशी व्यक्ति ने उससे कहा, "उठो,
हम लोग चलें।" किन्तु उसने उत्तर नहीं दिया। इसलिए
उसने उसे अपने गधे पर रखा और घर गया। 29जब
लेवीवंशी व्यक्ति अपने घर आया तब उसने एक छुरी
निकाली और अपनी रखैल को बारह टुकड़ों में काटा।
तब उसने स्त्री के उन बारह भागों को उन सभी क्षेत्रों में
भेजा जहाँ इस्राएल के लोग रहते थे। 30जिसने यह देखा
उन सबने कहा, "ऐसा कभी नहीं हुआ था जब से
इस्राएल के लोग मिस्र से आए, तब से अब तक ऐसा
कभी नहीं हुआ। तय करो कि क्या करना है और हमें
बताओ?

इस्राएल और बिन्यामीन के बीच युद्ध :

20 इस प्रकार इस्राएल के सभी लोग एक हो गए।
वे मिस्पा नगर में यहोवा के सामने खड़े होने
के लिये एक साथ आए। वे पूरे इस्राएल देश से आए।
गिलाद प्रदेश के सभी इस्राएली लोग भी वहाँ थे। 2इस्राएल
के परिवार समूहों के सभी प्रमुख वहाँ थे। वे परमेश्वर
के सारे लोगों की सभा में अपने–अपने स्थानों पर बैठे।
उस स्थान पर तलवार के साथ चार लाख सैनिक थे।
3बिन्यामीन के परिवार समूह के लोगों ने सुना कि
इस्राएल के लोग मिस्पा नगर में पहुँचे हैं। इस्राएल के
लोगों ने कहा, "यह बताओ कि यह पाप कैसे हुआ।"
4अत: जिस स्त्री की हत्या हुई थी उसके पति ने
कहा, "मेरी रखैल और मैं बिन्यामीन के प्रदेश में गिबा
नगर में पहुँचे। हम लोगों ने वहाँ रात बिताई। 5किन्तु
रात को गिबा नगर के प्रमुख उस घर पर आए जिसमें
मैं ठहरा था। उन्होंने घर को घेर लिया और वे मुझे

घर प्राचीन ग्रीक अनुवाद के अनुसार। हिब्रू पाठ, "यहोवा का घर" है।

वह ... है इस समय यह रिवाज था कि यदि तुमने किसी को अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया है, तो तुम्हें उसकी रक्षा और देखभाल करनी पड़ती थी।

पड़ी थी वह मर गई थी।

मार डालना चाहते थे उन्होंने मेरी रखैल के साथ कुकर्म
किया और वह मर गई। 6इसलिए मैं अपनी रखैल को
ले गया और उसके टुकड़े कर डाले। तब मैंने हर एक
टुकड़ा इस्राएल के हर एक परिवार समूह को भेजा।
मैंने बारह टुकड़े उन प्रदेशों के भेजे जिन्हें हमने पाया।
मैंने यह इसलिए किया कि बिन्यामीन के परिवार समूह
के लोगों ने इस्राएल के देश में यह क्रूर और भयंकर
काम किया है। 7अब, इस्राएल के सभी लोगों, आप
बोलें। आप अपना निर्णय दें कि हमें क्या करना चाहिये?"

8तब सभी लोग उसी समय उठ खड़े हुए। उन्होंने
आपस में कहा, "हम लोगों में से कोई घर नहीं लौटेगा।
कोई नहीं, हम लोगों में से एक भी घर नहीं लौटेगा।
9हम लोग गिबा नगर के साथ यह करेंगे। हम गोट
डालेंगे। जिससे परमेश्वर बताएगा कि हम लोग उन
लोगों के साथ क्या करें। 10हम लोग इस्राएल के सभी
परिवारों के हर एक सौ में से दस व्यक्ति चुनेगें और हम
लोग हर एक हजार में से सौ व्यक्ति चुनेंगे। हम लोग हर
एक दस हजार में से हजार चुनेंगे। जिन लोगों को हम
चुन लेंगे वे सेना के लिये आवश्यक सामग्री पाएंगे। तब
सेना बिन्यामीन के प्रदेश में गिबा नगर को जाएगी। वह
सेना उन लोगों से बदला चुकाएगी जिन्होंने इस्राएल के
लोगों में यह भयंकर काम किया है।"

11इसलिये इस्राएल के सभी लोग गिबा नगर में एकत्रित
हुए। वे उसके एक मत थे, जो वे कर रहे थे। 12इस्राएल
के परिवार समूह ने एक सन्देश के साथ लोगों को
बिन्यामीन के परिवार समूह के पास भेजा। सन्देश यह
था: "इस पाप के बारे में क्या कहना है जो तुम्हारे कुछ
लोगों ने किया है? 13उन गिबा के पापी मनुष्यों को
हमारे पास भेजो। उन लोगों को हमें दो जिससे हम उन्हें
जान से मार सकें। हम इस्राएल के लोगो में पाप को
अवश्य दूर करेंगे।" किन्तु बिन्यामीन के परिवार समूह
के लोगों ने अपने सम्बन्धी इस्राएल के लोगों के दूतों की
एक न सुनी। 14बिन्यामीन के परिवार समूह के लोगों ने
अपने नगरों को छोड़ा और वे गिबा नगर में पहुँचे। वे
गिबा में इस्राएल के अन्य परिवार समूह के विरुद्ध लड़ने
गए।

15बिन्यामीन परिवार समूह के लोगों ने छब्बीस हजार
सैनिकों को इकट्ठा किया। वे सभी सैनिक युद्ध के
लिये प्रशिक्षित थे। उनके साथ गिबा नगर के सात सौ
प्रशिक्षित सैनिक भी थे। 16उनके सात सौ ऐसे प्रशिक्षित
व्यक्ति भी थे जो बाँया हाथ चलाने में दक्ष थे। उनमें से
हर एक गुलेल का उपयोग दक्षता से कर सकता था। वे
सब एक बाल पर भी पत्थर मार सकते थे और निशाना
नहीं चूकता था। 17इस्राएल के सारे परिवारों ने, बिन्यामीन
को छोड़कर चार लाख योद्धाओं को इकट्ठा किया।
उन चार लाख योद्धाओं के पास तलवारें थीं। उनमें हर
एक प्रशिक्षित सैनिक था। 18इस्राएल के लोग बेतेल
नगर तक गए। बेतेल में उन्होंने परमेश्वर से पूछा,
"कौन सा परिवार समूह बिन्यामीन के परिवार समूह
पर प्रथम आक्रमण करेगा?" यहोवा ने उत्तर दिया,
"यहूदा का परिवार समूह प्रथम जाएगा।"

19अगली सुबह इस्राएल के लोग उठे। उन्होंने गिबा के
निकट डेरा डाला 20तब इस्राएल की सेना बिन्यामीन की
सेना से युद्ध के लिये निकल पड़ी। इस्राएल की सेना ने
गिबा नगर में बिन्यामीन की सेना के विरुद्ध अपना
मोर्चा लगाया। 21तब बिन्यामीन की सेना गिबा नगर के
बाहर निकली। उन्होंने उस दिन की लड़ाई में इस्राएल
की सेना के बाईस हजार लोगों को मार डाला।

22-23इस्राएल के लोग यहोवा के सामने गए। वे शाम
तक रोकर चिल्लाते रहे। उन्होंने यहोवा से पूछा, "क्या
हमें बिन्यामीन के विरुद्ध लड़ने जाना चाहिए? वे लोग
हमारे सम्बन्धी हैं। यहोवा ने उत्तर दिया, "जाओ और
उनके विरुद्ध लड़ो। इस्राएल के लोगों ने एक दूसरे का
साहस बढ़ाया। इसलिए वे पहले दिन की तरह फिर
लड़ने गए।"

24तब इस्राएल की सेना बिन्यामीन की सेना के पास
आई। यह युद्ध का दूसरा दिन था। 25बिन्यामीन की सेना
दूसरे दिन इस्राएल की सेना पर आक्रमण करने के
लिये गिबा नगर से बाहर आई। इस समय बिन्यामीन की
सेना ने इस्राएल की सेना के अन्य अट्ठारह हजार
सैनिकों को मार डाला। इस्राएल की सेना के वे सभी
प्रशिक्षित सैनिक थे।

26तब इस्राएल के सभी लोग बेतेल नगर तक गए।
उस स्थान पर वे बैठे और यहोवा को रोकर पुकारा।
उन्होंने पूरे दिन शाम तक कुछ नहीं खाया। वे होमबलि
और मेल बलि भी यहोवा के लिए लाए। 27इस्राएल के
लोगों ने यहोवा से एक प्रश्न पूछा। (इन दिनों परमेश्वर
का साक्षीपत्र का सन्दूक बेतेल में था। 28पीनहास नामक
एक याजक साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने सेवा करता
था। पीनहास एलीआज़ार नामक व्यक्ति का पुत्र था।
एलीआजार हारून का पुत्र था।) इस्राएल के लोगों ने
पूछा, "क्या हमें बिन्यामीन के लोगों के विरुद्ध फिर
लड़ने जाना चाहिए। वे लोग हमारे सम्बन्धी हैं या हम
युद्ध करना बन्द कर दें?" यहोवा ने उत्तर दिया, "जाओ।
कल मैं उन्हें हराने में तुम्हारी सहायता करूँगा।" 29तब
इस्राएल की सेना ने गिबा नगर के चारों ओर अपने
व्यक्तियों को छिपा दिया। 30इस्राएल की सेना तीसरे दिन
गिबा नगर के विरुद्ध लड़ने गई। उन्होंने जैसा पहले
किया था वैसा ही लड़ने के लिये मोर्चा लगाया। 31बिन्यामीन
की सेना इस्राएल की सेना से युद्ध करने के लिये गिबा
नगर के बाहर निकल आई। इस्राएल की सेना पीछे हटी
और उसने बिन्यामीन की सेना को पीछा करने दिया।
इस प्रकार बिन्यामीन की सेना को नगर को बहुत पीछे
छोड़ देने के लिये धोखा दिया गया। बिन्यामीन की सेना

ने इस्राएल की सेना के कुछ लोगों को वैसे ही मारना
आरम्भ किया जैसे उन्होंने पहले मारा था। इस्राएल के
लगभग तीस व्यक्ति मारे गए। उनमें से कुछ लोग मैदानों
में मारे गए थे। उनमें से कुछ व्यक्ति सड़कों पर मारे गए
थे। एक सड़क बेतेल को जा रही थी। दूसरी सड़क
गिबा को जा रही थी। **32**बिन्यामीन के लोगों ने कहा,
"हम पहले की तरह जीत रहे हैं।" उसी समय इस्राएल
के लोग पीछे भाग रहे थे लेकिन यह एक चाल थी। वे
बिन्यामीन के लोगों को उनके नगर से दूर सड़कों पर
लाना चाहते थे। **33**इस्राएल की सेना के सभी लोग अपने
स्थानों से हटे। वे बालतामार स्थान पर रूके। तब जो
लोग गिबा नगर की ओर छिपे थे, वे अपने छिपने के
स्थानों से गिबा के पश्चिम को दौड़ पड़े। **34**इस्राएल की
सेना के पूरे प्रशिक्षित दस हजार सैनिकों ने गिबा नगर
पर आक्रमण किया। युद्ध बड़ा भीषण था। किन्तु बिन्यामीन
की सेना नहीं जानती थी कि उनके साथ कौन सी
भंयकर घटना होने जा रही है? **35**यहोवा ने इस्राएल की
सेना का उपयोग किया और बिन्यामीन की सेना को
पराजित किया। उस दिन इस्राएल की सेना ने बिन्यामीन
के पच्चीस हजार एक सौ सैनिकों को मार डाला। वे
सभी सैनिक युद्ध के लिये प्रशिक्षित थे।

36इस प्रकार बिन्यामीन के लोगों ने देखा कि वे
पराजित हो गए। इस्राएल की सेना पीछे हटी। वे पीछे हटे
क्योंकि वे उस अचानक आक्रमण पर भरोसा कर रहे
थे जिसके लिये वे गिबा के निकट व्यवस्था कर चुके
थे।

37जो व्यक्ति गिबा के चारों ओर छिपे थे वे गिबा नगर
में टूट पड़े। वे फैल गए और उन्होंने अपनी तलवारों से
नगर के हर एक को मार डाला। **38**इस्राएली सेना के
दल और छिपकर घात लगाने वाले दल के बीच यह
संकेत चिन्ह निश्चित किया गया था कि छिपकर घात
लगाने वाला दल नगर से धुएँ का विशाल बादल उड़ाएगा।

39-41इसलिये युद्ध के समय इस्राएल की सेना पीछे
मुड़ी और बिन्यामीन की सेना ने इस्राएल की सेना के
सैनिकों को मारना आरम्भ किया। उन्होंने लगभग तीस
सैनिक मारे। वे कह रहे थे, "हम वैसे जीत रहे हैं जैसे
पहले युद्ध में जीत रहे थे।" किन्तु तभी धुएँ का विशाल
बादल नगर से उठना आरम्भ हुआ। बिन्यामीन के
सैनिक मुड़े और धुँए को देखा। पूरा नगर आग की
लपटों में था। तब इस्राएल की सेना मुड़ी और लड़ने
लगी। बिन्यामीन के लोग डर गए थे। अब वे समझ गए
थे कि उनके साथ कौन सी भंयकर घटना हो चुकी
थी।

42इसलिये बिन्यामीन की सेना इस्राएल की सेना के
सामने से भाग खड़ी हुई। वे रेगिस्तान की ओर भागे।
लेकिन वे युद्ध से बच न सके। इस्राएल के लोग नगर से
बाहर आए और उन्हें मार डाला। **43**इस्राएल के लोगों ने
बिन्यामीन के लोगों को हराया। उन्होंने बिन्यामीन के
लोगों का पीछा किया। उन्हें आराम नहीं करने दिया।
उन्होंने उन्हें गिबा के पूर्व के क्षेत्र में हराया। **44**इस
प्रकार अट्ठारह हजार वीर और शक्तिशाली बिन्यामीन
की सेना के सैनिक मारे गए।

45बिन्यामीन की सेना मुड़ी और मरुभूमि की ओर
भागी। वे रिम्मोन की चट्टान नामक स्थान पर भाग
कर गए। किन्तु इस्राएल की सेना ने सड़क के सहारे
बिन्यामीन की सेना के पाँच हजार सैनिकों को मार
डाला। वे बिन्यामीन के लोगों का पीछा करते रहे।
उन्होंने उनका पीछा गिदोम नामक स्थान तक किया।
इस्राएल की सेना ने उस स्थान पर बिन्यामीन की सेना
के दो हजार और सैनिकों को मार डाला।

46उस दिन बिन्यामीन की सेना के पच्चीस हजार
सैनिक मारे गए। उन सभी व्यक्तियों के पास तलवारें
थीं। बिन्यामीन के वे लोग वीर योद्धा थे। **47**किन्तु बिन्यामीन
के छः सौ व्यक्ति मुड़े और मरुभूमि में भाग गए। वे
रिम्मोन की चट्टान नामक स्थान पर गए। वे वहाँ चार
महीने तक ठहरे रहे। **48**इस्राएल के लोग बिन्यामीन के
प्रदेश में लौटकर गए। जिन नगरों में वे पहुँचे, उन
नगरों के आदमियों को उन्होंने मार डाला। उन्होंने सभी
जानवरों को भी मार डाला। वे जो कुछ पा सकते थे,
उसे नष्ट कर दिया। वे जिस नगर में गए, उसे जला
डाला।

बिन्यामीन के लोगों के लिये पत्नियाँ प्राप्त करना

21 मिस्पा में इस्राएल के लोगों ने प्रतिज्ञा की।
उनकी प्रतिज्ञा यह थी, "हम लोगों में से कोई
अपनी पुत्री को बिन्यामीन के परिवार समूह के किसी
व्यक्ति से विवाह नहीं करने देगा।"

2इस्राएल के लोग बेतेल नगर को गए। इस नगर में वे
परमेश्वर के सामने शाम तक बैठे रहे। वे बैठे हुए रोते
रहे। **3**उन्होंने परमेश्वर से कहा, "यहोवा, तू इस्राएल के
लोगों का परमेश्वर है। ऐसी भयंकर बात हम लोगों के
साथ कैसे हो गई है? इस्राएल के परिवार समूहों में से
एक परिवार समूह क्यों कम हो जाय!"

4अगले दिन सवेरे इस्राएल के लोगों ने एक वेदी
बनाई। उन्होंने उस वेदी पर परमेश्वर को होमबलि
और मेलबलि चढ़ाई। **5**तब इस्राएल के लोगों ने कहा,
"क्या इस्राएल का कोई ऐसा परिवार समूह है जो यहोवा
के सामने हम लोगों के साथ मिलने नहीं आया है?"
उन्होंने यह प्रश्न इसलिये पूछा कि उन्होंने एक गंभीर
प्रतिज्ञा की थी। उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि जो कोई
मिस्पा में अन्य परिवार समूहों के साथ नहीं आएगा,
मार डाला जाएगा।

6इस्राएल के लोग अपने रिश्तेदारों, बिन्यामीन के
परिवार समूह के लोगों के लिये, बहुत दुःखी थे। उन्होंने

कहा, "आज इस्राएल के लोगों से एक परिवार समूह
कट गया है। 7 हम लोगों ने यहोवा के सामने प्रतिज्ञा की
थी कि हम अपनी पुत्रियों को बिन्यामीन परिवार के
किसी व्यक्ति से विवाह नहीं करने देंगे। हम लोगों को
कैसे विश्वास होगा कि बिन्यामीन परिवार समूह के
लोगों को पत्नियाँ प्राप्त होंगी?"

8तब इस्राएल के लोगों ने पूछा, "इस्राएल के परिवार
समूहों में से कौन मिस्पा में यहाँ नहीं आया है? हम लोग
यहोवा के सामने एक साथ आए हैं। किन्तु एक परिवार
समूह यहाँ नहीं है।" तब उन्हें पता लगा कि इस्राएल के
अन्य लोगों के साथ यावेश गिलाद नगर का कोई व्यक्ति
वहाँ नहीं था। 9इस्राएल के लोगों ने यह जानने के लिये
कि वहाँ कौन था और कौन नहीं था, हर एक को
गिना। उन्होंने पाया कि यावेश गिलाद का कोई भी वहाँ
नहीं था। 10इसलिए इस्राएल के लोगों की परिषद ने
बारह हजार सैनिकों को यावेश गिलाद नगर को भेजा।
उन्होंने उन सैनिकों से कहा, "जाओ और यावेश गिलाद
लोगों को अपनी तलवार के घाट उतार दो। 11तुम्हें यह
अवश्य करना होगा। यावेश गिलाद में हर एक पुरुष
को मार डालो। उस स्त्री को भी मार डालो जो एक पुरुष
के साथ रह चुकी हो। किन्तु उस स्त्री को न मारो
जिसने किसी पुरुष के साथ कभी शारीरिक सम्बन्ध न
किया हो।" सैनिकों ने यही किया। 12उन बारह हजार
सैनिकों ने यावेश गिलाद में चार सौ ऐसी स्त्रियों को
पाया, जिन्होंने किसी पुरुष के साथ शारीरिक सम्बन्ध
नहीं किया था। सैनिक उन स्त्रियों को शीलो नगर के
डेरे पर ले आए। शीलो कनान प्रदेश में है।

13तब इस्राएल के लोगों ने बिन्यामीन के लोगों के
पास एक सन्देश भेजा। उन्होंने बिन्यामीन के लोगों के
साथ शान्ति–सन्धि करने का प्रस्ताव रखा। बिन्यामीन
के लोग रिम्मोन की चट्टान नामक स्थान पर थे।
14इसलिये बिन्यामीन के लोग उस समय इस्राएल के
लोगों के पूरे परिवार के पास लौटे। इस्राएल के लोगों ने
उन्हें उन यावेश गिलाद की स्त्रियों को दिया, जिन्हें
उन्होंने मारा नहीं था। किन्तु बिन्यामीन के सभी लोगों
के लिये पर्याप्त स्त्रियाँ नहीं थीं।

15इस्राएल के लोग बिन्यामीन के लोगों के लिये दुःखी
हुए। उन्होंने उनके लिये इसलिए दुःख अनुभव किया
क्योंकि यहोवा ने इस्राएल के परिवार समूहों को अलग
कर दिया था। 16इस्राएल के लोगों के अग्रजों ने कहा,
"बिन्यामीन परिवार समूह की स्त्रियाँ मार डाली गई हैं।
हम लोग बिन्यामीन के जो लोग जीवित हैं उनके लिये
पत्नियाँ कहाँ पाएंगे। 17बिन्यामीन के जो लोग अभी
जीवित हैं, अपने परिवार को आगे बढ़ाने के लिये उन्हें
बच्चें चाहियें। यह इसलिये करना होगा कि इस्राएल का
एक परिवार समूह नष्ट न हो। 18किन्तु हम लोग अपनी
पुत्रियों को बिन्यामीन लोगों के साथ विवाह करने की
स्वीकृति नहीं दे सकते। हम यह प्रतिज्ञा कर चुके हैं:
'कोई व्यक्ति जो बिन्यामीन के व्यक्ति को पत्नी देगा,
अभिशप्त होगा।' 19हम लोगों के सामने एक उपाय है।
यह शीलो नगर में यहोवा के लिये उत्सव का समय है।
यह उत्सव यहाँ हर वर्ष मनाया जाता है। (शीलो नगर
बेतेल नगर के उत्तर में है और उस सड़क के पूर्व में है
जो बेतेल से शकेन को जाती है। और यह लबोना नगर
के दक्षिण में भी है।)

20इसलिये अग्रजों ने बिन्यामीन लोगों को अपना विचार
बताया। उन्होंने कहा, "जाओ, और अंगूर के बेलो के
खेतों में छिप जाओ। 21उत्सव में उस समय की प्रतिक्षा
करो जब शीलो की युवतियाँ नृत्य में भाग लेने आएं।
तब अंगूर के खेतों में अपने छुपने के स्थान से बाहर
निकल दौड़ो। तुममें से हर एक उस युवतियों को शीलो
नगर से बिन्यामीन के प्रदेश में ले जाओ और उसके
साथ विवाह करो। 22उन युवतियों के पिता और भाई
हम लोगों के पास आएंगे और शिकायत करेंगे। किन्तु
हम लोग उन्हें इस प्रकार उत्तर देंगे:

'बिन्यामीन के लोगों पर कृपा करो। वे अपने लिए
पत्नियाँ इसलिए नहीं पा रहे हैं कि वे लोग तुमसे लड़े
और वे इस प्रकार से स्त्रियों को ले गए हैं, अत: तुमने
अपनी परमेश्वर के सामने की गई प्रतिज्ञा नहीं तोड़ी।
तुमने प्रतिज्ञा की थी कि तुम उन्हें स्त्रियाँ नहीं दोगे,
तुमने बिन्यामिन के लोगों को स्त्रियों नहीं दी परन्तु
उन्होंने तुमसे स्त्रियाँ ले ली। इसलिये तुमने प्रतिज्ञा भंग
नहीं की।'"

23इसलिये बिन्यामीन के परिवार समूह के लोगों ने
वही किया। जब युवतियाँ नाच रही थीं, तो हर एक
व्यक्ति ने उनमें से एक–एक को पकड़ लिया। वे उन
स्त्रियों को दूर ले गए और उनके साथ विवाह किया। वे
उस प्रदेश में लौटे, जो उन्हें उत्तराधिकार में मिला था।
बिन्यामीन के लोगों ने उस प्रदेश में फिर नगर बसाये
और उन नगरों में रहने लगे।

24तब इस्राएल के लोग अपने घर लौटे। वे अपने
प्रदेश और परिवार समूह को गए। 25उन दिनों इस्राएल
के लोगों का कोई राजा नहीं था। हर एक व्यक्ति वही
करता था, जिसे वह ठीक समझता था।

रूत

यहूदा में अकाल

1 बहुत समय पहले, जब न्यायाधीशों का शासन था,
तभी एक इतना बुरा समय आया कि लोगों के पास
खाने के लिये पर्याप्त भोजन तक न रहा। एलीमेलेक
नामक एक व्यक्ति ने तभी यहूदा के बेतलेहेम को छोड़
दिया। वह, अपनी पत्नी और दो पुत्रों के साथ मोआब
के पहाड़ी प्रदेश में चला गया। 2उस की पत्नी का नाम
नाओमी था और उसके पुत्रों के नाम महलोन और
किल्योन थे। ये लोग यहूदा के बेतलेहेम के एप्राती
परिवार से थे। इस परिवार ने मोआब के पहाड़ी प्रदेश
की यात्रा की और वहीं बस गये।
3बाद में, नाओमी का पति, एलीमेलेक मर गया।
अत: केवल नाओमी और उसके दो पुत्र बचे रह गये।
4उसके पुत्रों ने मोआब देश की स्त्रियों के साथ विवाह
किया। एक की पत्नी का नाम ओर्पा और दूसरे की
पत्नी का नाम रूत था। वे मोआब में लगभग दस वर्ष
रहे, 5फिर महलोन और किल्योन भी मर गये। अत:
नाओमी अपने पति और पुत्रों के बिना अकेली हो गई।

नाओमी अपने घर जाती है

6जब नाओमी मोआब के पहाड़ी प्रदेश में रह रही थी
तभी, उसने सुना कि यहोवा ने उसके लोगों की सहायता
की है। उसने यहूदा में अपने लोगों को भोजन दिया है।
इसलिए नाओमी ने मोआब के पहाड़ी प्रदेश को छोड़ने
तथा अपने घर लौटने का निश्चय किया। उसकी पुत्र
वधुओं ने भी उसके साथ जाने का निश्चय किया।
7उन्होंने उस प्रदेश को छोड़ा जहाँ वे रहती थीं और
यहूदा की ओर लौटना आरम्भ किया।
8तब नाओमी ने अपनी पुत्र वधुओं से कहा, “तुम
दोनों को अपने घर अपनी माताओं के पास लौट जाना
चाहिए। तुम मेरे तथा मेरे पुत्रों के प्रति बहुत दयालु रही
हो। सो मैं प्रार्थना करती हूँ कि यहोवा तुम पर ऐसे ही
दयालु हो। 9मैं प्रार्थना करती हूँ कि यहोवा, पति और
अच्छा घर पाने में तुम दोनों की सहायता करे।”
नाओमी ने अपनी पुत्र वधुओं को प्यार किया और वे
सभी रोने लगीं। 10तब पुत्र वधुओं ने कहा, “किन्तु हम
आप के साथ चलना चाहतें हैं और आपके लोगों में
जाना चाहते हैं।”
11किन्तु नाओमी ने कहा, “नहीं, पुत्रियों, अपने घर
लौट जाओ। तुम मेरे साथ किसलिए जाओगी? मैं तुम्हारी
सहायता नहीं कर सकती। मेरे पास अब कोई पुत्र नहीं
जो तुम्हारा पति हो सके। 12अपने घर लौट जाओ! मैं
इतनी वृद्धा हूँ कि नया पति नहीं रख सकती। यहाँ तक
कि यदि मैं पुन: विवाह करने की बात सोचूँ, तो भी मैं
तुम्हारी सहायता नहीं कर सकती। यदि मैं आज की
रात ही गर्भवती हो जाऊँ और दो पुत्रों को उत्पन्न करूँ,
तो भी इससे तुम्हें सहायता नहीं मिलेगी। 13विवाह करने
से पूर्व उनके युवक होने तक तुम्हें प्रतीक्षा करनी
पड़ेगी। मैं तुमसे पति की प्रतीक्षा इतने लम्बें समय तक
नहीं करवाऊँगी। इससे मुझे बहुत दु:ख होगा और मैं तो
पहले से ही बहुत दु:खी हूँ। यहोवा ने मेरे साथ बहुत
कुछ कर दिया है।”
14अत: स्त्रियाँ पुन: बहुत अधिक रोयीं। तब ओर्पा
ने नाओमी का चुम्बन लिया और वह चली गई।
किन्तु रूत ने उसे बाहों में भर लिया और वहाँ
ठहर गई।
15नाओमी ने कहा, “देखो, तुम्हारी जेठानी अपने
लोगों और अपने देवताओं में लौट गई। अत: तुम्हें भी
वही करना चाहिए।”
16किन्तु रूत ने कहा, “अपने को छोड़ने के लिये
मुझे विवश मत करो! अपने लोगों में लौटने के लिये
मुझे विवश मत करो। मुझे अपने साथ चलने दो। जहाँ
कहीं तुम जाओगी, मैं जाऊँगी। जहाँ कहीं तुम सोओगी,
मैं सोऊँगी। तुम्हारे लोग, मेरे लोग होंगे। तुम्हारा परमेश्वर,
मेरा परमेश्वर होगा। 17जहाँ तुम मरोगी, मैं भी वहीं
मरूँगी और मैं वहीं दफनाई जाऊँगी। मैं यहोवा से
याचना करती हूँ कि यदि मैं अपना वचन तोड़ूँ तो
यहोवा मुझे दण्ड दे: केवल मृत्यु ही हम दोनों को अलग
कर सकती है।”*

घर लौटना

18नाओमी ने देखा कि रूत की उसके साथ चलने
की प्रबल इच्छा है। इसलिए नाओमी ने उसके साथ
बहस करना बन्द कर दिया। 19फिर नाओमी और रूत

मैं ... अलग कर सकती है “यहोवा मेरा यह करे और इससे अधिक भी करे, जब तक मृत्यु हमें पृथक न करे!

ने तब तक यात्रा की जब तक वे बेतलेहेम नहीं पहुँच गईं। जब दोनों स्त्रियाँ बेतलेहेम पहुँचीं तो सभी लोग बहुत उत्तेजित हुए। उन्होंने कहना आरम्भ किया, "क्या यह नाओमीहैं?"

20किन्तु नाओमी ने लोगों से कहा, "मुझे नाओमी मत कहो, मुझे मारा कहो। क्योंकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मेरे जीवन को बहुत दुःखी बना दिया है।
21जब मैं गई थी, मेरे पास वे सभी चीज़ें थीं जिन्हें मैं चाहती थी। किन्तु अब, यहोवा मुझे खाली हाथ घर लाया है। यहोवा ने मुझे दुःखी बनाया है अत: मुझे 'प्रसन्न'* क्यों कहते हो? सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने मुझे बहुत अधिक कष्ट दिया है।"

22इस प्रकार नाओमी तथा उसकी पुत्रवधु रूत (मोआबी स्त्री) मोआब के पहाड़ी प्रदेश से लौटीं। ये दोनों स्त्रियाँ जौ की कटाई के समय यहूदा के बेतलेहेम में आईं।

रूत का बोअज़ से मिलना

2 बेतलेहेम में एक धनी पुरुष रहता था। उसका नाम बोअज़ था। बोअज़ एलीमेलेक परिवार से नाओमी के निकट सम्बन्धियों में से एक था।

2एक दिन रूत ने (मोआबी स्त्री) नाओमी से कहा, "मैं सोचती हूँ कि मैं खेतों में जाऊँ। हो सकता है कि कोई ऐसा व्यक्ति मुझे मिले जो मुझ पर दया करके, मेरे लिए उस अन्न को इकट्ठा करने दे जिसे वह अपने खेत में छोड़ रहा हो।"
3नाओमी ने कहा, "पुत्री, ठीक है, जाओ।"

अत: रूत खेतों में गई। वह फसल काटने वाले मजदूरों के पीछे चलती रही और उसने वह अन्न इकट्ठा किया जो छोड़ दिया गया था।* ऐसा हुआ कि उस खेत का एक भाग एलीमेलेक परिवार के व्यक्ति बोअज़ का था।
4बाद में, बेतलेहेम से बोअज़ खेत में आया। बोअज़ ने अपने मज़दूरों का हालचाल पूछा। उसने कहा, "यहोवा तुम्हारे साथ हो!" मजदूरों ने उत्तर दिया, "यहोवा आपको आशीर्वाद दे!"

5तब बोअज़ ने अपने उस सेवक से बातें कीं, जो मजदूरों का निरीक्षक था। उसने पूछा, "वह लड़की किस की है?"
6सेवक ने उत्तर दिया, "यह वही मोआबी स्त्री है जो मोआब के पहाड़ी प्रदेश से नाओमी के साथ आई है।
7वह बहुत सवेरे आई और मुझसे उसने पूछा कि क्या मैं मजदूरों के पीछे चल सकती हूँ और भूमि पर गिरे अन्न को इकट्ठा कर सकती हूँ और यह तब से काम कर रही है। उसका घर वहाँ है।"

8तब बोअज़ ने रूत से कहा, "बेटी, सुनो। तुम अपने लिये अन्न इकट्ठा करने के लिये मेरे खेत में रहो। तुम्हें किसी अन्य व्यक्ति के खेत में जाने की आवश्यकता नहीं है। मेरी दासियों के पीछे चलती रहो।
9यह ध्यान में रखो कि वे किस खेत में जा रही है और उनका अनुसरण करो। मैंने युवकों को चेतावनी दे दी है कि वे तुम्हें परेशान न करें। जब तुम्हें प्यास लगे, तो उसी घड़े से पानी पीओ जिससे मेरे आदमी पीते हैं।"

10तब रूत प्रणाम करने नीचे धरती तक झुकी। उसने बोअज़ से कहा, "मुझे आश्चर्य है कि आपने मुझ पर ध्यान दिया! मैं एक अजनबी हूँ, किन्तु आपने मुझ पर बड़ी दया की।"

11बोअज़ ने उसे उत्तर दिया, "मैं उन सारी सहायताओं को जानता हूँ जो तुमने अपनी सास नाओमी को दी है। मैं जानता हूँ कि तुमने उसकी सहायता तब भी की थी जब तुम्हारा पति मर गया था और मैं जानता हूँ कि तुम अपने माता–पिता और अपने देश को छोड़कर इस देश में यहाँ आई हो। तुम इस देश के किसी भी व्यक्ति को नहीं जानती, फिर भी तुम यहाँ नाओमी के साथ आई।
12यहोवा तुम्हें उन सभी अच्छे कामों के लिये फल देगा जो तुमने किये हैं। तुम्हें इस्राएल का परमेश्वर, यहोवा भरपूर करेगा। तुम उसके पास सुरक्षा के लिये आई हो और वह तुम्हारी रक्षा करेगा।"

13तब रूत ने कहा, "आप मुझ पर बड़े दयालु हैं, महोदय। मैं तो केवल एक दासी हूँ। मैं आपके सेवकों में से भी किसी के बराबर नहीं हूँ। किन्तु आपने मुझसे दयापूर्ण बातें की हैं और मुझे सान्त्वना दी है।"

14दोपहर के भोजन के समय, बोअज़ ने रूत से कहा, "यहाँ आओ! हमारी रोटियों में से कुछ खाओ। इधर हमारे सिरके में अपनी रोटी डुबाओ।"

इस प्रकार रूत मजदूरों के साथ बैठ गई। बोअज़ ने उसे ढेर सारा भुना अनाज दिया। रूत ने भरपेट खाया और कुछ भोजन बच भी गया।
15तब रूत उठी और काम करने लौट गई। तब बोअज़ ने अपने सेवकों से कहा, "रूत को अन्न की ढेरी के पास भी अन्न इकट्ठा करने दो। उसे रोको मत।
16उसके काम को, उसके लिये कुछ दाने से भरी बालें गिराकर, हलका करो। उसे उस अन्न को इकट्ठा करने दो। उसे रूकने के लिये मत कहो।"

नाओमी बोअज़ के बारे में सुनती है

17रूत ने सन्ध्या तक खेत में काम किया। तब उसने भूसे से अन्न को अलग किया। लगभग आधा बुशल जौ निकला।
18रूत उस अन्न को अपनी सास को यह दिखाने के लिये ले गई कि उसने कितना अन्न इकट्ठा किया है। उसने उसे वह भोजन भी दिया जो दोपहर के भोजन में से बच गया था।
19उसकी सास ने उससे पूछा,

प्रसन्न यह "नाओमी" नाम है।

इकट्ठा किया जो छोड़ दिया गया था यह नियम था कि किसान को फसल काटने के समय कुछ अन्न खेत में छोड़ना चाहिए। यह अन्न इसलिये छोड़ा जाता था कि गरीब लोग भोजन के लिये कुछ पा सकें। देखें लैव्य. 19:9; 23:22

“यह अन्न तुमने कहाँ से इकट्‌ठा किया है? तुमने कहाँ
काम किया? उस व्यक्ति को यहोवा का आशीर्वाद
मिले, जिसने तुम पर ध्यान दिया।” तब रूत ने उसे
बताया कि उसने किसके साथ काम किया था। उसने
कहा, “जिस व्यक्ति के साथ मैंने काम किया था, उसका
नाम बोअज़ है।” नाओमी ने अपनी पुत्रवधु से कहा,
“यहोवा उसे आशीर्वाद दे। यहोवा सभी पर दया करता
रहता है चाहे वे जीवित हों या मृत हों। **20**तब नाओमी ने
अपनी पुत्रवधु से कहा, “बोअज़ हमारे सम्बन्धियों में से
एक है। बोअज़ हमारे संरक्षकों में से एक है।” **21**तब
रूत ने कहा, “बोअज़ ने मुझे वापस आने और काम
करने को भी कहा है। बोअज़ ने कहा है कि मैं सेवकों
के साथ तब तक काम करती रहूँ जब तक फ़सल की
कटाई पूरी नहीं हो जाती।”

22तब नाओमी ने अपनी पुत्रवधु रूत से कहा, “यह
अच्छा है कि तुम उसकी दासियों के साथ काम करती
रहो। यदि तुम किसी अन्य के खेत में काम करोगी तो
कोई व्यक्ति तुम्हें कोई नुकसान पहुँचा सकता है।”
23अत: रूत बोअज़ की दासियों के साथ काम करती
रही। उसने तब तक अन्न इकट्‌ठा किया जब तक
फसल की कटाई पूरी नहीं हुई। उसने वहाँ गेहूँ की
कटाई के अन्त तक भी काम किया। रूत अपनी सास,
नाओमी के साथ रहतीरही।

खलिहान

3 तब रूत की सास, नाओमी ने उससे कहा, “मेरी
पुत्री, संभव है कि मैं तेरे लिए एक अच्छा घर पा
सकूँ। यह तेरे लिये अच्छा होगा। **2**बोअज़ उपयुक्त व्यक्ति
हो सकता है। बोअज़ हमारा निकट का सम्बन्धी है।
तुमने उसकी दासियों के साथ काम किया है। आज रात
वह खलिहान में काम कर रहा होगा। **3**जाओ, नहाओ
और अच्छे वस्त्र पहनो। सुगन्ध द्रव्य लगाओं और खलिहान
में जाओ। किन्तु बोअज़ के सामने तब तक न पड़ो जब
तक वह रात्रि का भोजन न कर ले। **4**भोजन करने के
बाद, वह आराम करने के लिये लेटेगा। देखती रहो
जिससे तुम यह जान सको कि वह कहाँ लेटा है। वहाँ
जाओ और उसके पैर के वस्त्र उघाड़ो।* तब बोअज़
के साथ सोओ। वह बताएगा कि तुम्हें विवाह के लिये
क्या करना होगा।

5तब रूत ने उत्तर दिया, “आप जो करने को कहती
हैं, मैं करूँगी।”

6इसलिये रूत खलिहान में गई। रूत ने वह सब किया
जो उसकी सास ने उससे करने को कहा था। **7**खाने
और पीने के बाद बोअज़ बहुत सन्तुष्ट था। बोअज़
अन्न के ढेर के पास लेटने गया। तब रूत बहुत धीरे से
उसके पास गई और उसने उसके पैरों का वस्त्र उघाड़
दिया। रूत उसके पैरों के बगल में लेट गई। **8**करीब
आधी रात को, बोअज़ ने नींद में अपनी करवट बदली
और वह जाग पड़ा। वह बहुत चकित हुआ। उसके पैरों
के समीप एक स्त्री लेटी थी। **9**बोअज़ ने पूछा, “तुम
कौन हो?”

उसने कहा, “मैं तुम्हारी दासी रूत हूँ। अपनी चादर
मेरे ऊपर ओढ़ा दो।* तुम मेरे रक्षक हो।”

10तब बोअज़ ने कहा, “युवती, यहोवा तुम्हें आशीर्वाद
दे। तुमने मुझ पर विशेष कृपा की है। तुम्हारी यह कृपा
मेरे प्रति उससे भी अधिक है जो तुमने आरम्भ में
नाओमी के प्रति दिखाई थी। तुम विवाह के लिये किसी
भी धनी या गरीब युवक की खोज कर सकती थी।
किन्तु तुमने वैसा नहीं किया। **11**युवती, अब डरो नहीं।
मैं वही करूँगा जो तुम चाहती हो। मेरे नगर के सभी
लोग जानते हैं कि तुम एक अच्छी स्त्री हो। **12**और यह
सत्य है, कि मैं तुम्हारे परिवार का निकट सम्बन्धी हूँ।
किन्तु एक अन्य व्यक्ति है जो तुम्हारे परिवार का मुझसे
भी अधिक निकट का सम्बन्धी है। **13**आज की रात
यहीं ठहरो। प्रात: काल हम पता लगायेंगे कि क्या वह
तुम्हारी सहायता करेगा। यदि वह तुम्हें सहायता देने का
निर्णय लेता है तो बहुत अच्छा होगा। यदि वह तुम्हारी
सहायता करने से इन्कार करता है तो यहोवा के अस्तित्व
को साक्षी करके, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं तुमसे
विवाह करूँगा और एलीमेलेक की भूमि को तुम्हारे
लिये खरीद कर लौटाऊँगा। इसलिए सुबह तक यहीं
लेटी रहो!”

14इसलिये रूत बोअज़ के पैर के पास सवेरे तक
लेटी रही। वह अंधेरा रहते ही उठी, इससे पहले की
इतना प्रकाश हो कि लोग एक दूसरे को पहचान सकें।

बोअज़ ने उससे कहा, “हम इसे गुप्त रखेंगे कि तुम
पिछली रात मेरे पास आई थी।” **15**तब बोअज़ ने
कहा, “अपनी ओढ़नी मेरे पास लाओ। अब, इसे खुला
रखो।”

इसलिए रूत ने अपनी ओढ़नी को खुला रखा, और
बोअज़ ने लगभग एक बुशल जौ उसकी सास नाओमी
को उपहार में दिया। तब बोअज़ ने उसे रूत की ओढ़नी
में बाँध दिया और उसे उसकी पीठ पर रख दिया। तब
वह नगर को गया।

16रूत अपनी सास, नाओमी के घर गई। नाओमी
द्वार पर आई और उसने पूछा, “बाहर कौन है?” रूत
घर के भीतर गई और उसने नाओमी को हर बात जो

पैर के वस्त्र उघाड़ों “उसके पैर को वस्त्रहीन करो।” हिब्रू भाषा में ‘पैर’ शब्द का अर्थ यौन अंग भी होता है। इससे यह पता चलता था कि रूत उस व्यक्ति से अपना रक्षक और मुक्तिदाता होने की याचना कर रही थी।

चादर ओढ़ा दो “अपने पंखों को मेरे ऊपर फैलाओ।” यह इस बात का सूचक है कि रूत सहायता और रक्षा चाहती थी। तुम मेरे रक्षक हो। देखें रूत 2:12

बोअज़ ने की थी, बतायी। 17उसने कहा, "बोअज़ ने यह जौ उपहार के रूप में तुम्हें दिया है। बोअज़ ने कहा कि आपके लिए उपहार लिये बिना, मुझे घर नहीं जाना चाहिए।"

18नाओमी ने कहा, "पुत्री, तब तक धैर्य रखो जब तक हम यह सुनें कि क्या हुआ। बोअज़ तब तक विश्राम नहीं करेगा जब तक वह उसे नहीं कर लेता जो उसे करना चाहिए। हम लोगों को दिन बीतने के पहले मालूम हो जायेगा कि क्या होगा।"

बोअज़ तथा अन्य सम्बन्धी

4 बोअज़ उस स्थान पर गया जहाँ नगर द्वार पर लोग इकट्ठे होते हैं। बोअज़ तब तक वहाँ बैठा जब तक वह निकट सम्बन्धी वहाँ से नहीं गुजरा जिसका जिक्र बोअज़ ने रूत से किया था। बोअज़ ने उसे बुलाया, "मित्र, आओ! यहाँ बैठो!"

2तब बोअज़ ने वहाँ गवाहों को इकट्ठा किया। बोअज़ ने नगर के दस अग्रजो (बुजुर्गो) को एकत्र किया। उसने कहा, "यहाँ बैठो!" इसलिये वे वहाँ बैठ गए। 3तब बोअज़ ने उस निकट सम्बन्धी से बातें कीं। उसने कहा, "नाओमी मोआब के पहाड़ी प्रदेश से लौट आई है। वह उस भूमि को बेच रही है जो हमारे सम्बन्धी एलीमेलेक की है। 4मैंने तय किया है कि मैं इस विषय में यहाँ रहने वाले लोगों और अपने लोगों के अग्रजों के सामने तुमसे कहूँ। यदि तुम भूमि को खरीदकर वापस लेना चाहते हो तो खरीद लो! यदि तुम भूमि को ऋणमुक्त करना नहीं चाहते तो मुझे बताओ। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे बाद वह व्यक्ति मैं ही हूँ जो भूमि को ऋणमुक्त कर सकता है। यदि तुम भूमि को वापस नहीं खरीदते हो, तो मैं खरीदूँगा।"

5तब बोअज़ ने कहा, "यदि तुम भूमि नाओमी से खरीदोगे तो तुम्हें मृतक की पत्नी, मोआबी स्त्री रूत भी मिलेगी। जब रूत को बच्चा होगा तो वह भूमि उस बच्चे की होगी। इस प्रकार भूमि मृतक के परिवार में ही रहेगी।"

6निकट सम्बन्धी ने उत्तर दिया, "मैं भूमि को वापस खरीद नहीं सकता। यद्यपि यह भूमि मेरी होनी चाहिए थी किन्तु मैं इसे खरीद नहीं सकता। यदि मैं ऐसा करता हूँ, तो मुझे अपनी सम्पत्ति से हाथ धोना पड़ सकता है। इसलिए तुम उस भूमि को खरीद सकते हो।" 7(इस्राएल में बहुत समय पहले जब कोई व्यक्ति किसी सम्पत्ति को खरीदता या ऋणमुक्त करता था, तो एक व्यक्ति अपने जूते को उतारता था, और दूसरे व्यक्ति को दे देता था। यह उनके खरीदने का प्रमाण था।) 8सो उस निकट सम्बन्धी ने कहा, "भूमि खरीद लो।" तब उस निकट सम्बन्धी ने अपने एक जूते को उतारा और इसे बोअज़ को दे दिया।

9तब बोअज़ ने अग्रजों और सभी लोगों से कहा, "आज आप लोग मेरे गवाह हैं कि मैं नाओमी से वे सभी चीज़ें खरीद रहा हूँ जो एलीमेलेक, किल्योन और महलोन की हैं। 10मैं रूत को भी अपनी पत्नी बनाने के लिये खरीद रहा हूँ। मैं यह इसलिए कर रहा हूँ कि मृतक की सम्पत्ति उसके परिवार के पास ही रहेगी। इस प्रकार मृतक का नाम उसके परिवार और उसकी भूमि से नहीं हटाया जायेगा। आप लोग आज इसके गवाह हैं।"

11इस प्रकार सभी लोग और अग्रज जो नगर द्वार के समीप थे, गवाह हुए। उन्होंने कहा:

यह स्त्री जो तुम्हारे घर जाएगी, यहोवा उसे राहेल और लिआ जैसी करे जिसने इस्राएल वंश को बनाया। हम प्रार्थना करते हैं–तुम एप्राता में शक्तिशाली होओ! तुम बेतलेहेम में प्रसिद्ध होओ!

12जैसे तामार ने यहूदा के पुत्र पेरेस को जन्म दिया और उसका परिवार महान बना। उसी तरह यहोवा तुम्हें भी रूत से कई पुत्र दे और तुम्हारा परिवार भी उसकी तरह महान हो।

13इस प्रकार बोअज़ ने रूत से विवाह किया। यहोवा ने रूत को गर्भवती होने दिया और रूत ने एक पुत्र को जन्म दिया। 14नगर की स्त्रियों ने नाओमी से कहा,

उस यहोवा का आभार मानो जिसने तुम्हें ऐसा पुत्र दिया। यहोवा करे वह, इस्राएल में प्रसिद्ध हो।

15वह तुम्हें फिर देगा एक जीवन! और बुढ़ापे में तुम्हारा वह रखेगा ध्यान। तुम्हारी बहू के कारण घटना घटी है यह गर्भ में धारण किया उसने यह बच्चा तुम्हारे लिए। प्यार वह करती है तुमसे और वह उत्तम है तुम्हारे लिए सात बेटों से अधिक।"

16नाओमी ने लड़के को लिया, उसे अपनी बाहों में उठा लिया, तथा उसका पालन–पोषण किया। 17पड़ोसियों ने बच्चे का नाम रखा। उन स्त्रियों ने कहा, "अब नाओमी के पास एक पुत्र है!" पड़ोसियों ने उसका नाम ओबेद रखा। ओबेद यिशै का पिता था और यिशै, राजा दाऊद का पिता था।

रूत और बोअज़ का परिवार

18पेरेस के परिवार की वंशावली यह है:

हिस्रोन का पिता पेरेस था।
19 एराम का पिता हिस्रोन था।
अम्मीनादाब का पिता एराम था।
20 नहशोन का पिता अम्मीनादाब था।
सल्मोन का पिता नहशोन था।
21 बोअज़ का पिता सल्मोन था।
ओबेद का पिता बोअज़ था।
22 यिशै का पिता ओबेद था।
दाऊद का पिता यिशै था।

1 शमूएल

एल्काना और उसका परिवार शीलो में आराधना करता है

1 एल्काना नामक एक व्यक्ति था। वह एप्रैम के पहाड़ी
प्रदेश के रामातैमसोपीम का निवासी था। एल्काना
सूप परिवार का था। एल्काना यरोहाम का पुत्र था।
यरोहाम एलीहू का पुत्र था। एलीहू तोहू का पुत्र था और
तोहू सूप का पुत्र था, जो एप्रैम के परिवार समूह से था।
2एल्काना की दो पत्नियाँ थीं। एक का नाम हन्ना था
और दूसरी का नाम पनिन्ना था। पनिन्ना के बच्चे थे,
किन्तु हन्ना के कोई बच्चा नहीं था।
3एल्काना हर वर्ष अपने नगर रामातैमसोपीम को
छोड़ देता था और शीलो नगर जाता था। एल्काना
सर्वशक्तिमान यहोवा की उपासना शीलो में करता था
और वहाँ यहोवा को बलि भेंट करता था। शीलो वह
स्थान था, जहाँ होप्नी और पीनहास यहोवा के याजक
के रूप में सेवा करते थे। होप्नी और पीनहास एली के
पुत्र थे। **4**जब कभी एल्काना अपनी बलि भेंट करता
था, वह भेंट का एक अंश अपनी पत्नी पनिन्ना को
देता था। एल्काना भेंट का अंश पनिन्ना के बच्चों को
भी देता था। **5**एल्काना भेंट का एक बराबर का अंश
हन्ना को भी सदा दिया करता था। एल्काना यह तब भी
करता रहा जब यहोवा ने हन्ना को कोई सन्तान नहीं
दी थी। एल्काना यह इसलिये करता था कि हन्ना
उसकी वह पत्नी थी जिससे वह सच्चा प्रेम करता था।

पनिन्ना हन्ना को परेशान करती है

6पनिन्ना हन्ना को सदा खिन्नता और परेशानी का
अनुभव कराती थी। पनिन्ना यह इसलिये करती थी
क्योंकि हन्ना कोई बच्चा पैदा नहीं कर सकती थी। **7**हर
वर्ष जब उनका परिवार शीलो में यहोवा के आराधनालय
में जाता, पनिन्ना, हन्ना को परेशानी में डाल देती थी।
एक दिन जब एल्काना बलि भेंट अर्पित कर रहा था।
हन्ना परेशानी का अनुभव करने लगी और रोने लगी।
हन्ना ने कुछ भी खाने से इन्कार कर दिया। **8**उसके
पति एल्काना ने उससे कहा, "हन्ना, तुम रो क्यों रही
हो? तुम खाना क्यों नहीं खाती? तुम दु:खी क्यों हो? मैं,
तुम्हारा पति, तुम्हारा हूँ। तुम्हें सोचना चाहिए कि मैं
तुम्हारे लिए तुम्हारे दस पुत्रों से अच्छा हूँ।"

हन्ना की प्रार्थना

9खाने और पीने के बाद हन्ना चुपचाप उठी और
यहोवा से प्रार्थना करने गई। यहोवा के पवित्र आराधनालय
के द्वार के निकट कुर्सी पर याजक एली बैठा था।
10हन्ना बहुत दु:खी थी। वह बहुत रोई जब उसने यहोवा
से प्रार्थना की।
11उसने परमेश्वर से विशेष प्रतिज्ञा की। उसने कहा,
"सर्वशक्तिमान यहोवा, देखो मैं कितनी अधिक दु:खी
हूँ। मुझे याद रखो! मुझे भूलो नहीं। यदि तुम मुझे
एक पुत्र दोगे तो मैं पूरे जीवन के लिये उसे तुमको
अर्पित कर दूँगी। यह नाजीर पुत्र होगा: वह दाखमधु या
तेज मदिरा नहीं पीएगा और कोई उसके बाल नहीं
काटेगा।"*
12हन्ना ने बहुत देर तक प्रार्थना की। जिस समय
हन्ना प्रार्थना कर रही थी, एली ने उसका मुख देखा।
13हन्नाअपने हृदय में प्रार्थना कर रही थी। उसके होंठ
हिल रहे थे, किन्तु कोई आवाज नहीं निकल रही थी।
14एली ने समझा कि हन्ना दाखमधु से मत्त है। एली ने
हन्ना से कहा, "तुम्हारे पास पीने को अत्याधिक था!
अब समय है कि दाखमधु को दूर करो।"

15हन्ना ने उत्तर दिया, "मैंने दाखमधु या दाखरस
नहीं पिया है। मैं बहुत अधिक परेशान हूँ। मैं यहोवा से
प्रार्थना करके अपनी समस्याओं का निवेदन कर रही
थी। **16**मत सोचो कि मैं बुरी स्त्री हूँ। मैं इतनी देर तक
इसलिए प्रार्थना कर रही थी कि मुझे अनेक परेशानियाँ
हैं और मैं बहुत दु:खी हूँ।"
17एली ने उत्तर दिया, "शान्तिपूर्वक जाओ। इस्राएल
का परमेश्वर तुम्हें वह दे, जो तुमने मांगा है।"
18हन्ना ने कहा, "मुझे आशा है कि आप मुझसे
प्रसन्न हैं।" तब हन्ना गई और उसने कुछ खाया। वह
अब दु:खी नहीं थी।
19दूसरे दिन सवेरे एल्काना का परिवार उठा। उन्होंने
परमेश्वर की उपासना की और वे अपने घर रामा को
लौट गए।

और कोई ... काटेगा वे लोग जो अपने बाल न काटने और दाखमधु न पीने की प्रतिज्ञा कर 5ते थे, नाजीर कहे जाते थे। देखें गिनती 6:5 ये लोग अपना जीवन परमेश्वर को सौंपते थे।

शमूएल का जन्म

एल्काना ने अपनी पत्नी हन्ना के साथ शारीरिक
सम्बन्ध किया, यहोवा ने हन्ना की प्रार्थना को याद
रखा। 20हन्ना गर्भवती हुई और उसे एक पुत्र हुआ।
हन्ना ने उसका नाम शमूएल रखा। उसने कहा, "इसका
नाम शमूएल है क्योंकि मैंने इसे यहोवा से माँगा है।"

21उस वर्ष एल्काना बलि–भेंट देने और परमेश्वर
के सामने की गई प्रतिज्ञा को पूरा करने शीलो गया।
वह अपने परिवार को अपने साथ ले गया। 22किन्तु
हन्ना नहीं गई। उसने एल्काना से कहा, "जब लड़का
ठोस भोजन करने योग्य हो जायेगा, तब मैं इसे शीलो ले
जाऊँगी। तब मैं उसे यहोवा को दूँगी। वह एक नाज़ीर
बनेगा और वह शीलो में रहेगा।"

23हन्ना के पति एल्काना ने उससे कहा, "वही करो
जिसे तुम उत्तम समझती हो। तुम तब तक घर में रह
सकती हो जब तक लड़का ठोस भोजन करने योग्य
बड़ा नहीं हो जाता। यहोवा वही करे जो तुमने कहा है।"
इसलिये हन्ना अपने बच्चे का पालन पोषण तब तक
करने के लिये घर पर ही रह गई जब तक वह ठोस
भोजन करने योग्य बड़ा नहीं हो जाता।

हन्ना शमूएल को शीलो में एली के पास ले जाती है

24जब लड़का ठोस भोजन करने योग्य बड़ा हो गया,
तब हन्ना उसे शीलो में यहोवा के आराधनालय पर ले
गई। हन्ना अपने साथ तीन वर्ष का एक बैल, बीस पौंड़
आटा और एक मशक दाखमधु भी ले गई।

25वे यहोवा के सामने गए। एल्काना ने यहोवा के
लिए बलि के रूप में बैल को मारा जैसा वह प्राय:
करता था तब हन्ना लड़के को एली के पास ले आई।
26हन्ना ने एली से कहा, "महोदय, क्षमा करें। मैं वही
स्त्री हूँ जो यहोवा से प्रार्थना करते हुए आप के पास
खड़ी थी। मैं वचन देती हूँ कि मैं सत्य कह रही हूँ।
27मैंने इस बच्चे के लिये प्रार्थना की थी। यहोवा ने मुझे
यह बच्चा दिया 28और अब मैं इस बच्चे को यहोवा
को दे रही हूँ। यह पूरे जीवन यहोवा का रहेगा।"

तब हन्ना ने बच्चे को वहीं छोड़ा और यहोवा की
उपासना की।

हन्ना धन्यवाद देती है

2 हन्ना ने कहा: "यहोवा में, मेरा हृदय प्रसन्न है!
मैं अपने परमेश्वर में शक्तिमती* अनुभव करती
हूँ! मैं अपनी विजय से पूर्ण प्रसन्न हूँ! और अपने शत्रुओं
की हँसी उड़ाई हूँ।

2यहोवा के सदृश कोई पवित्र परमेश्वर नहीं। तेरे
अतिरिक्त कोई परमेश्वर नहीं! परमेश्वर के अतिरिक्त
कोई आश्रय शिला* नहीं।

3बन्द करो डीगों का हाँकना! घमण्ड भरी बातें न
करो! क्यों? क्योंकि यहोवा परमेश्वर सब कुछ जानता
है, परमेश्वर लोगों को राह दिखाता है और उनका
न्याय करता है।

4शक्तिशाली योद्धाओं के धनुष टूटते हैं! और दुर्बल
शक्तिशाली बनते हैं!

5जो लोग बीते समय में बहुत भोजन वाले थे, उन्हें
अब भोजन पाने के लिये काम करना होगा। किन्तु
जो बीते समय में भूखे थे, वे अब भोजन पाकर मोटे हो
रहे हैं! जो स्त्री बच्चा उत्पन्न नहीं कर सकती थी अब
सात बच्चों वाली है! किन्तु जो बहुत बच्चों वाली थी,
दु:खी है क्योंकि उसके बच्चे चले गये।

6यहोवा लोगों को मृत्यु देता है, और वह उन्हें जीवित
रहने देता है। यहोवा लोगों को मृत्युस्थल व अधोलोक
को पहुँचाता है, और पुन: वह उन्हें जीवन देकर उठाता
है।

7यहोवा लोगों को दीन बनाता है, और यहोवा ही
लोगों को धनी बनाता है। यहोवा लोगों को नीचा करता
है, और वह लोगों को ऊँचा उठाता है।

8यहोवा कंगालों को धूलि से उठाता है। यहोवा उनके
दु:ख को दूर करता है। यहोवा कंगालों को राजाओं के
साथ बिठाता है। यहोवा कंगालों को प्रतिष्ठित सिंहासन
पर बिठाता है। पूरा जगत अपनी नींव तक यहोवा का
है! यहोवा जगत को उन खम्भों पर टिकाया है!

9यहोवा अपने पवित्र लोगों की रक्षा करता है। वह
उन्हें ठोकर खाकर गिरने से बचाता है। किन्तु पापी
लोग नष्ट किये जाएंगे। वे घोर अंधेरे में गिरेंगे। उनकी
शक्ति उन्हें विजय प्राप्त करने में सहायक नहीं होगी।

10यहोवा अपने शत्रुओं को नष्ट करता है। सर्वोच्च
परमेश्वर लोगों के विरुद्ध गगन में गरजेगा। यहोवा
सारी पृथ्वी का न्याय करेगा। यहोवा अपने राजा को
शक्ति देगा। वह अपने अभीषिक्त राजा को शक्तिशाली
बनायेगा।"

11एल्काना और उसका परिवार अपने घर रामा को
गया। लड़का शीलो में रह गया और याजक एली के
अधीन यहोवा की सेवा करता रहा।

एली के बुरे पुत्र

12एली के पुत्र बुरे व्यक्ति थे। वे यहोवा की परवाह
नहीं करते थे। 13वे इसकी परवाह नहीं करते थे कि
याजकों से लोगों के प्रति कैसे व्यवहार की आशा की

शक्तिमती "यहोवा की उपासना में मेरा सिंगा ऊँचा उठा है।" सिंगा शक्ति का प्रतीक है।

आश्रय शिला परमेश्वर के लिये एक नाम। यह बताता है कि वह किले या सुरक्षा के दृढ़ स्थान की तरह है।

जाती है। याजकों को लोगों के लिये यह करना चाहिए:
जब कभी कोई व्यक्ति बलि–भेंट लाये, तो याजक को
एक बर्तन में माँस को उबालना चाहिये। याजक के
सेवक को अपने हाथ में विशेष काँटा जिसके तीन
नोंक हैं, लेकर आना चाहिए। 14याजक के सेवक को
काँटे को बर्तन या पतीले में डालना चाहिए। काँटें से जो
कुछ बर्तन के बाहर लाये वह माँस याजक का होगा।
यह याजकों द्वारा उन इस्राएलियों के लिये किया जाना
चाहिये जो शीलो में बलि–भेंट करने आयें।

15किन्तु एली के पुत्रों ने यह नहीं किया। चर्बी को वेदी
पर जलाये जाने के पहले ही उनके सेवक लोगों के पास
बलि–भेंट करते जाते थे। याजक के सेवक कहा करते
थे, "याजक को कुछ माँस भूनने के लिये दो। याजक
तुमसे उबला हुआ माँस नहीं लेंगे।"

16बलि–भेंट करने वाला व्यक्ति यह कह सकता था,
"पहले चर्बी जलाओ,* तब तुम जो चाहो ले सकते हो।"
यदि ऐसा होता तो याजक का सेवक उत्तर देता: "नहीं,
मुझे अभी माँस दो, यदि तुम मुझे यह नहीं देते हो तो मैं
इसे तुमसे ले ही लूँगा।"

17इस प्रकार, होप्नी और पीनहास यह दिखाते थे कि
वे यहोवा को भेंट की गई बलि के प्रति श्रद्धा नहीं रखते
थे। यह यहोवा के विरुद्ध बहुत बुरा पाप था! 18किन्तु
शमूएल यहोवा की सेवा करता था। शमूएल सन का
बना एक विशेष एपोद पहनता था। 19हर वर्ष शमूएल
की माँ एक छोटा चोंगा शमूएल के लिये बनाती थी।
वह हर वर्ष जब अपने पति के साथ बलि–भेंट करने
शीलो जाती थी तो वह छोटा चोंगा शमूएल के लिए ले
जाती थी।

20एली, एल्काना और उसकी पत्नी को आशीर्वाद
देता था। एली ने कहा, "यहोवा तुम्हें हन्ना द्वारा सन्तान
देकर बदला दे। ये बच्चे उस लड़के का स्थान लेंगे
जिसके लिये हन्ना ने प्रार्थना की थी और यहोवा को
दिया था।" तब एल्काना और हन्ना घर लौटे, और
21यहोवा ने हन्ना पर दया की। उसके तीन पुत्र और दो
पुत्रियाँ हुई और लड़का शमूएल यहोवा के पास बड़ा
हुआ।

एली अपने पापी पुत्रों पर नियन्त्रण करने में असफल

22एली बहुत बूढ़ा था। वह बार–बार उन बुरे कामों के
बारे में सुनता था जो उसके पुत्र शीलो में सभी इस्राएलियों
के साथ कर रहे थे। एली ने यह भी सुना कि जो स्त्रियाँ
मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सेवा करती थी, उनके
साथ वे सोते थे।

23एली ने अपने पुत्रों से कहा, "तुमने जो कुछ बुरा
किया है उसके बारे में लोगों ने यहाँ मुझे बताया है। तुम
लोग ये बुरे काम क्यों करते हो? 24पुत्रों, इन बुरे कामों
को मत करो। यहोवा के लोग तुम्हारे विषय में बुरी बाते
कह रहे हैं। 25यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के
विरुद्ध पाप करता है, तो परमेश्वर उसकी मध्यस्थता
कर सकता है। किन्तु यदि कोई व्यक्ति यहोवा के ही
विरुद्ध पाप करता है तो उस व्यक्ति की मध्यस्थता कौन
कर सकता है?"

किन्तु एली के पुत्रों ने एली की बात सुनने से इन्कार
कर दिया। इसलिए यहोवा ने एली के पुत्रों को मार
डालने का निश्चय किया।

26बालक शमूएल बढ़ता रहा। उसने परमेश्वर और
लोगों को प्रसन्न किया।

एली के परिवार के विषय में भंयकर भविष्यवाणी

27परमेश्वर का एक व्यक्ति एली के पास आया। उसने
कहा, "यहोवा यह बात कहता है, 'तुम्हारे पूर्वज फ़िरौन
के परिवार के गुलाम थे। किन्तु मैं तुम्हारे पूर्वजों के
सामने उस समय प्रकट हुआ। 28मैंने तुम्हारे परिवार
समूह को इस्राएल के सभी परिवार समूहों में से चुना।
मैंने तुम्हारे परिवार समूह को अपना याजक बनने के
लिये चुना। मैंने उन्हें अपनी वेदी पर बलि–भेंट करने
के लिये चुना। मैंने उन्हें सुगन्ध जलाने और एपोद
पहनने के लिये चुना। मैंने तुम्हारे परिवार समूह को
बलि–भेंट से वह माँस भी लेने दिया जो इस्राएल के लोग
मुझको चढ़ाते हैं। 29इसलिए तुम उन बलि–भेंटों और
अन्नबलियों का सम्मान क्यों नहीं करते। तुम अपने
पुत्रों को मुझसे अधिक सम्मान देते हो। तुम माँस के
उस सर्वोत्तम भाग से मोटे हुए हो जिसे इस्राएल के लोग
मेरे लिये लाते हैं।'

30"इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने यह वचन दिया था
कि तुम्हारे पिता का परिवार ही सदा उसकी सेवा
करेगा। किन्तु अब यहोवा यह कहता है, 'वैसा कभी
नहीं होगा! मैं उन लोगों का सम्मान करूँगा जो मेरा
सम्मान करेंगे। किन्तु उनका बुरा होगा जो मेरा सम्मान
करने से इन्कार करते हैं। 31वह समय आ रहा है जब
मैं तुम्हारे सारे वंशजों को नष्ट कर दूँगा। तुम्हारे
परिवार में कोई बूढ़ा होने के लिये नहीं बचेगा। 32इस्राएल
के लिये अच्छी चीजें होंगी, किन्तु तुम घर में बुरी
घटनाऐं होती देखोगे। तुम्हारे परिवार में कोई भी बूढ़ा
होने के लिये नहीं बचेगा। 33केवल एक व्यक्ति को मैं
अपनी वेदी पर याजक के रूप में सेवा के लिये बचाऊँगा।
वह बहुत अधिक बुढ़ापे तक रहेगा। वह तब तक
जीवित रहेगा जब तक उसकी आँखे और उसकी शक्ति
बची रहेगी। तुम्हारे शेष वंशज तलवार के घाट उतारे
जाएंगे। 34मैं तुम्हें एक संकेत दूँगा जिससे यह ज्ञात होगा

पहले चर्बी जलाओ चर्बी जानवर का वह भाग थी जो परमेश्वर का था। याजकों से आशा की जाती थी कि वे परमेश्वर की भेंट के रूप में उसे वेदी में जलायें।

कि ये बातें सच होंगी। तुम्हारे दोनों पुत्र होप्नी और
पीनहास एक ही दिन मरेंगे।35मैं अपने लिये एक
विश्वसनीय याजक ठहराऊँगा। वह याजक मेरी बात
मानेगा और जो मैं चाहता हूँ, करेगा। मैं इस याजक के
परिवार को शक्तिशाली बनाऊँगा। वह सदा मेरे अभिषिक्त
राजा के सामने सेवा करेगा। 36तब सभी लोग जो तुम्हारे
परिवार में बचे रहेंगे, आएंगे और इस याजक के आगे
झुकेंगे। ये लोग थोड़े धन या रोटी के टुकड़े के लिए
भीख मागेंगे। वे कहेंगे, "कृपया याजक का सेवा कार्य
हमें दे दो जिससे हम भोजन पा सकें।" '"

शमूएल को परमेश्वर का बुलावा

3 बालक शमूएल एली के अधीन यहोवा की सेवा
करता रहा। उन दिनों, यहोवा प्राय: लोगों से सीधे
बातें नहीं करता था। बहुत कम ही दर्शन हुआ करता
था।

2एली की दृष्टि इतनी कमजोर थी कि वह लगभग
अन्धा था। एक रात वह बिस्तर पर सोया हुआ था।
3शमूएल यहोवा के पवित्र आराधनालय में बिस्तर पर
सो रहा था। उस पवित्र आराधनालय में परमेश्वर का
पवित्र सन्दूक था। यहोवा का दीपक अब भी जल रहा
था। 4यहोवा ने शमूएल को बुलाया। शमूएल ने उत्तर
दिया, "मैं यहाँ उपस्थित हूँ।" 5शमूएल को लगा कि उसे
एली बुला रहा है। इसलिए शमूएल दौड़कर एली के
पास गया। शमूएल ने एली से कहा, "मैं यहाँ हूँ। आपने
मुझे बुलाया।"

किन्तु एली ने कहा, "मैंने तुम्हें नहीं बुलाया। अपने
बिस्तर में जाओ।"

शमूएल अपने बिस्तर पर लौट गया। 6यहोवा ने फिर
बुलाया, "शमूएल!" शमूएल फिर दौड़कर एली के पास
गया। शमूएल ने कहा, "मैं यहाँ हूँ। आपने मुझे
बुलाया।"

एली ने कहा, "मैंने तुम्हें नहीं बुलाया, अपने बिस्तर में
जाओ।"

7शमूएल अभी तक यहोवा को नहीं जानता था। यहोवा
ने अभी तक उससे सीधे बात नहीं की थी।

8यहोवा ने शमूएल को तीसरी बार बुलाया। शमूएल
फिर उठा और एली के पास गया। शमूएल ने कहा, "मैं
आ गया। आपने मुझे बुलाया।" तब एली ने समझा कि
यहोवा लड़के को बुला रहा है। 9एली ने शमूएल से
कहा, "बिस्तर में जाओ। यदि वह तुम्हें फिर बुलाता है
तो कहो, 'यहोवा बोल! मैं तेरा सेवक हूँ और सुन रहा
हूँ।'"

सो शमूएल बिस्तर में चला गया। 10यहोवा आया और
वहाँ खड़ा हो गया। उसने पहले की तरह बुलाया। उसने
कहा, "शमूएल, शमूएल!" शमूएल ने कहा, "बोल! मैं
तेरा सेवक हूँ और सुन रहा हूँ।"

11यहोवा ने शमूएल से कहा, " मैं शीघ्र ही इस्राएल में
कुछ करूँगा। जो लोग इसे सुनेंगे उनके कान झन्ना
उठेंगे। 12मैं वह सब कुछ करूँगा जो मैंने एली और
उसके परिवार के विरुद्ध करने को कहा है। मैं आरम्भ
से अन्त तक सब कुछ करूँगा। 13मैंने एली से कहा है
कि मैं उसके परिवार को सदा के लिये दण्ड दूँगा। मैं
यह इसलिए करूँगा कि एली जानता है कि उसके पुत्रों
ने परमेश्वर के विरुद्ध बुरा कहा है, और किया है,
और एली उन पर नियन्त्रण करने में असफल रहा है।
14यही कारण है कि मैंने एली के परिवार को शाप दिया
है कि बलि-भेंट और अन्नबलि उनके पापों को दूर
नहीं कर सकती।"

15शमूएल सवेरा होने तक बिस्तर में पड़ा रहा। वह
तड़के उठाऔर उसने यहोवा के मन्दिर के द्वार को
खोला। शमूएल अपने दर्शन की बात एली से कहने में
डरता था। 16किन्तु एली ने शमूएल से कहा, "मेरे पुत्र,
शमूएल!"

शमूएल ने उत्तर दिया, "हाँ, महोदय।"

17एली ने पूछा, "यहोवा ने तुमसे क्या कहा? उसे
मुझसे मत छिपाओ। परमेश्वर तुम्हें दण्ड देगा, यदि
परमेश्वर ने जो सन्देश तुमको दिया है उसमें से कुछ भी
छिपाओगे।" 18इसलिए शमूएल ने एली को वह हर एक
बात बताई। शमूएल ने एली से कुछ भी नहीं छिपाया।

एली ने कहा, "वह यहोवा है। उसे वैसा ही करने दो
जैसा उसे अच्छा लगता है।"

19शमूएल बड़ा होता रहा और यहोवा उसके साथ
रहा। यहोवा ने शमूएल के किसी सन्देश को असत्य
नहीं होने दिया। 20तब सारा इस्राएल, दान से लेकर
बेर्शबा तक, समझ गया कि शमूएल यहोवा का सच्चा
नबी है। 21शीलो में यहोवा शमूएल के सामने प्रकट
होता रहा। यहोवा ने शमूएल के आगे अपने आपको
वचन* के द्वारा प्रकट किया।

4 शमूएल के विषय में समाचार पूरे इस्राएल में फैल
गया। एली बहुत बूढ़ा हो गया था। उसके पुत्र
यहोवा के सामने बुरा काम करते रहे।

पलिश्तियों ने इस्राएलियों को हराया

उस समय, पलिश्ती इस्राएल के विरुद्ध युद्ध करने के
लिये तैयार हुए। इस्राएली पलिश्तियों के विरुद्ध लड़ने
गए। इस्राएलियों ने अपना डेरा एबेनेज़ेर में डाला। पलिश्तियों
ने अपना डेरा अपेक में डाला। 2पलिश्तियों ने इस्राएल
पर आक्रमण करने की तैयारी की। युद्ध आरम्भ हो

वचन कभी-कभी यहोवा के वचन का अर्थ परमेश्वर का संदेश भी होता है। किन्तु कभी-कभी उसका अर्थ यह भी होता है कि यह परमेश्वर का एक विशेष प्रकार या रूप होता है जिसे वह उस समय काम में लाता है जब वह अपने नबियों के साथ बात करता है।

गया। पलिश्तियों ने इस्राएलियों को हरा दिया। पलिश्तियों
ने इस्राएल की सेना के लगभग चार हजार सैनिकों को
मार डाला। 3इस्राएलियों के बाकी सैनिक अपने डेरे में
लौट गए। इस्राएल के अग्रजों (प्रमुखों) ने पूछा, "यहोवा
ने पलिश्तियों को हमें क्यों पराजित करने दिया? हम
लोग शीलो से वाचा के सन्दूक को ले आयें। इस प्रकार,
परमेश्वर हम लोगों के साथ युद्ध में जायेगा। वह हमें
हमारे शत्रुओं से बचा देगा। "
4इसलिये लोगों ने व्यक्तियों को शीलो में भेजा। वे लोग
सर्वशक्तिमान यहोवा के वाचा के सन्दूक को ले आए।
सन्दूक के ऊपर करूब (स्वर्गदूत) हैं और वे उस
आसन की तरह है जिस पर यहोवा बैठता है। एली के
दोनों पुत्र, होप्नी और पीनहास सन्दूक के साथ आए।
5जब यहोवा के वाचा का सन्दूक डेरे के भीतर
आया, तो इस्राएलियों ने प्रचण्ड उद्घोष किया। उस
उद्घोष से धरती काँप उठी। 6पलिश्तियों ने इस्राएलियों
के उद्घोष को सुना। उन्होंने पूछा, "हिब्रू लोगों के डेरे
में ऐसा उद्घोष क्यों हैं?"
तब पलिश्तियों को ज्ञात हुआ कि इस्राएल के डेरे में
वाचा का सन्दूक आया है। 7पलिश्ती डर गए। पलिश्तियों
ने कहा, "परमेश्वर उनके डेरे में आ गया है! हम लोग
मुसीबत में हैं। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। 8हमें चिन्ता
है! इन शक्तिशाली परमेश्वर से हमें कौन बचा सकता
है? ये वही परमेश्वर है जिसने मिस्रियों को वे बीमारियाँ
और महामारियाँ दी थी। 9पलिश्तियों साहस करो! वीर
पुरुषों की तरह लड़ो! बीते समय में हिब्रू लोग हमारे दास
थे। इसलिए वीरों की तरह लड़ो नहीं तो तुम उनके
दास हो जाओगे।"
10पलिश्ती वीरता से लड़े और उन्होंने इस्राएलियों को
हरा दिया। हर एक इस्राएली योद्धा अपने डेरे में भाग
गया। इस्राएल के लिये यह भयानक पराजय थी। तीस
हजार इस्राएली सैनिक मारे गए। 11पलिश्तियों ने उनसे
परमेश्वर का पवित्र सन्दूक छीन लिया और उन्होंने
एली के दोनों पुत्रों, होप्नी और पीनहास को मार डाला।
12उस दिन बिन्यामीन परिवार का एक व्यक्ति युद्ध से
भागा। उसने अपने शोक को प्रकट करने के लिये
अपने वस्त्रों को फाड़ डाला और अपने सिर पर धूलि
डाल ली। 13जब यह व्यक्ति शीलो पहुँचा तो एली अपनी
कुर्सी पर नगर द्वार के पास बैठा था। उसे परमेश्वर के
पवित्र सन्दूक के लिये चिंता थी, इसीलिए वह प्रतीक्षा में
बैठा हुआ था। तभी बिन्यामीन परिवार समूह का वह
व्यक्ति शीलो में आया और उसने दुःखभरी सूचना दी।
नगर के सभी लोग जोर से रो पड़े। 14–15एली अट्ठानवे
वर्ष का बूढ़ा और अन्धा था, एली ने रोने की आवाज
सुनी तो एली ने पूछा, "यह जोर का शोर क्या है?"
वह बिन्यामीन व्यक्ति एली के पास दौड़ कर गया
और जो कुछ हुआ था उसे बताया। 16बिन्यामीनी व्यक्ति
ने कहा कि "मैं आज युद्ध से भाग आया हूँ!" एली ने
पूछा, "पुत्र, क्या हुआ?"
17बिन्यामीनी व्यक्ति ने उत्तर दिया, "इस्राएली पलिश्तियों
के मुकाबले भाग खड़े हुए हैं। इस्राएली सेना ने अनेक
योद्धाओं को खो दिया है। तुम्हारे दोनों पुत्र मारे गए हैं
और पलिश्ती परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को छीन ले
गये हैं। 18जब बिन्यामीनी व्यक्ति ने परमेश्वर के पवित्र
सन्दूक की बात कही, तो एली द्वार के निकट अपनी
कुर्सी से पीछे गिर पड़ा और उसकी गर्दन टूट गई। एली
बूढ़ा और मोटा था, इसलिये वह वहीं मर गया। एली
बीस वर्ष तक इस्राएल का अगुवा रहा।

गौरव समाप्त हो गया

19एली की पुत्रवधू, पीनहास की पत्नी, उन दिनों
गर्भवती थी। यह लगभग उसके बच्चे के उत्पन्न होने
का समय था। उसने यह समाचार सुना कि परमेश्वर
का पवित्र सन्दूक छीन लिया गया है। उसने यह भी
सुना कि उसके ससुर एली की मृत्यु हो गई है और
उसका पति पीनहास मारा गया है। ज्यों ही उसने यह
समाचार सुना, उसको प्रसव–पीड़ा आरम्भ हो गई और
उसने अपने बच्चे को जन्म देना आरम्भ किया। 20उसके
मरने से पहले जो स्त्रियाँ उसकी सहायता कर रही थीं
उन्होंने कहा, "दुःखी मत हो! तुम्हें एक पुत्र उत्पन्न
हुआ है।"
किन्तु एली की पुत्रवधू ने न तो उत्तर ही दिया, न ही
उस पर ध्यान दिया। 21एली की पुत्रवधू ने कहा, "इस्राएल
का गौरव अस्त हो गया!" इसलिये उसने बच्चे का नाम
ईकाबोद रखा और बस वह तभी मर गई। उसने अपने
बच्चे का नाम ईकाबोद रखा क्योंकि परमेश्वर का
पवित्र सन्दूक चला गया था और उसके ससुर एवं पति
मर गए थे। 22उसने कहा, "इस्राएल का गौरव अस्त
हुआ।" उसने यह कहा, क्योंकि पलिश्ती परमेश्वर का
सन्दूक ले गये।

पवित्र सन्दूक पलिश्तियों को परेशान करता है

5 पलिश्तियों ने परमेश्वर का पवित्र सन्दूक एबनेज़ेर
से उसे अशदोद ले गए। 2पलिश्ती परमेश्वर के
पवित्र सन्दूक को दागोन के मन्दिर में ले गए। उन्होंने
परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को दागोन की मूर्ति के
बगल में रखा। 3अशदोदी के लोग अगली सुबह उठे।
उन्होंने देखा कि दागोन मुँह के बल पड़ा है। दागोन
यहोवा की सन्दूक के सामने गिरा पड़ा था। अशदोद के
लोगों ने दागोन की मूर्ति को उसके पूर्व–स्थान पर
रखा। 4किन्तु अगली सुबह जब अशदोद के लोग उठे
तो उन्होंने दागोन को फिर जमीन पर पाया। दागोन
फिर यहोवा के पवित्र सन्दूक के सामने गिरा पड़ा था।
दागोन के हाथ और पैर टूट गए थे और डेवढ़ी पर पड़े

थे। केवल दागोन का शरीर एक खण्ड के रूप में था।
5यही कारण है, कि आज भी दागोन के याजक या
अशदोद में दागोन के मन्दिर में घुसने वाले अन्य व्यक्ति
डेवढ़ी पर चलने से इन्कार करते हैं।

6यहोवा ने अशदोद के लोगों तथा उनके पड़ोसियों के
जीवन को कष्टपूर्ण कर दिया। यहोवा ने उनको
कठिनाईयों में डाला। उसने उनमें फोड़े उठाए। यहोवा
ने उनके पास चूहे भेजे। चूहे उनके सभी जहाजों और
भूमि पर दौड़ते थे। नगर में सभी लोग बहुत डर गए थे।
7अशदोद के लोगों ने देखा कि क्या हो रहा है। उन्होंने
कहा, "इस्राएल के परमेश्वर का सन्दूक यहाँ नहीं रह
सकता! परमेश्वर हमें और हमारे देवता, दागोन को भी
दण्ड दे रहा है।"

8अशदोद के लोगों ने पाँच पलिश्ती शासकों को एक
साथ बुलाया। अशदोद के लोगों ने शासकों से पूछा, "हम
लोग इस्राएल के परमेश्वर के पवित्र सन्दूक का क्या
करें?" शासकों ने उत्तर दिया, "इस्राएल के परमेश्वर
के पवित्र सन्दूक को गत नगर ले जाओ।" अत: पलिश्तियों
ने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को हटा दिया। 9किन्तु
जब पलिश्तियों ने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को गत
को भेज दिया था, तब यहोवा ने उस नगर को दण्ड
दिया। लोग बहुत भयभीत हो गए। परमेश्वर ने सभी
बच्चों व बूढ़ों के लिये अनेक कष्ट उत्पन्न किये।
परमेश्वर ने गत के लोगों के शरीर में फोड़े उत्पन्न
किये। 10इसलिए पलिश्तियों ने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक
को एक्रोन भेज दिया। किन्तु जब परमेश्वर का पवित्र
सन्दूक एक्रोन आया, एक्रोन के लोगों ने शिकायत की।
उन्होंने कहा, "तुम लोग इस्राएल के परमेश्वर का सन्दूक
हमारे नगर एक्रोन में क्यों ला रहे हो? क्या तुम लोग
हमें और हमारे लोगों को मारना चाहते हो?" 11एक्रोन
के लोगों ने सभी पलिश्ती सेनापतियों को एक साथ
बुलाया। एक्रोन के लोगों ने सेनापतियों से कहा, "इस्राएल
के परमेश्वर के सन्दूक को, उसके पहले कि वह हमें
और हमारे लोगों को मार डाले। इसके पहले के स्थान
पर भेज दो!" एक्रोन के लोग बहुत भयभीत थे। परमेश्वर
ने उस स्थान पर उनके जीवन को बहुत कष्टमय बना
दिया। 12बहुत से लोग मर गए और जो लोग नहीं मरे
उनको फोड़े निकले। एक्रोन के लोगों ने जोर से रोकर
स्वर्ग को पुकारा।

परमेश्वर का पवित्र सन्दूक अपने घर लौटाया गया

6 पलिश्तियों ने पवित्र सन्दूक को अपने देश में सात
महीने रखा। 2पलिश्तियों ने अपने याजक और
जादूगरों को बुलाया। पलिश्तियों ने कहा, "हम यहोवा
के सन्दूक का क्या करें? बताओ कि हम कैसे सन्दूक
को वापस इसके घर भेजें? 3याजकों और जादूगरों ने
उत्तर दिया, "यदि तुम इस्राएल के परमेश्वर के पवित्र
सन्दूक को भेजते हो तो, इसे बिना किसी भेंट के न
भेजो। तुम्हें इस्राएल के परमेश्वर को भेटें चढ़ानी चाहिये।
जिससे इस्राएल का परमेश्वर तुम्हारे पापों को दूर करेगा।
तब तुम स्वस्थ हो जाओगे। तुम पवित्र हो जाओगे। तुम्हें
यह इसलिये करना चाहिए जिससे कि परमेश्वर तुम
लोगों को दण्ड देना बन्द करे।"

4पलिश्तियों ने पूछा, "हम लोगों को कौन सी भेंट,
अपने को क्षमा कराने के लिये इस्राएल के परमेश्वर
को भेजनी चाहिये?"

याजकों और जादूगरों ने कहा, "यहाँ पाँच पलिश्ती
प्रमुख हैं। हर एक नगर के लिये एक प्रमुख है। तुम
सभी लोगों और तुम्हारे प्रमुखों की एक ही समस्या है।
इसलिए तुम्हे पाँच सोने के ऐसे नमूने जो पाँच फोड़ों के
रूप में दिखने वाले बनाने चाहिये और पाँच नमूने पाँच
चूहों के रूप में दिखने वाले बनाने चाहिए। 5इस प्रकार
फोड़ों के नमूने बनाओ और चूहों के नमूने बनाओ जो
देश को बरबाद कर रहे हैं। इस्राएल के परमेश्वर को
इन सोने के नमूनों को भुगतान के रूप में दो। तब यह
संभव है कि इस्राएल के परमेश्वर तुमको, तुम्हारे देवताओं
को, और तुम्हारे देश को दण्ड देना रोक दे। 6फ़िरौन
और मिस्रियों की तरह हठी न बनो। परमेश्वर ने मिस्रियों
को दण्ड दिया। यही कारण था कि मिस्रियों ने इस्राएलियों
को मिस्र छोड़ने दिया।

7"तुम्हें एक नई बन्द गाड़ी बनानी चाहिए और दो
गायें जिन्होंने अभी बछड़े दिये हो लानी चाहिए। ये गायें
ऐसी होनी चाहियें जिन्होंने खेतों में काम न किया हो।
गायों को बन्द गाड़ी में जोड़ो और बछड़ों को घर लौटा
ले जाओ। बछड़ों को गौशाला में रखो। उन्हें अपनी
माताओं के पीछे न जाने दो।* 8यहोवा के पवित्र सन्दूक
को बन्द गाड़ी में रखो। तुम्हें सोने के नमूनों को थैले में
सन्दूक के बगल में रखना चाहिये। तुम्हारे पापों को
क्षमा करने के लिये सोने के नमूने परमेश्वर के लिये
तुम्हारी भेंट हैं। बन्द गाड़ी को सीधे इसके रास्ते पर
भेजो। 9बन्द गाड़ी को देखते रहो। यदि बन्द गाड़ी बेतशेमेश
की ओर इस्राएल की भूमि में जाती है, तो यह संकेत है
कि यहोवा ने हमें यह बड़ा रोग दिया है। किन्तु यदि गायें
बेतशेमेश को नहीं जातीं, तो हम समझेंगे कि इस्राएल के
परमेश्वर ने हमें दण्ड नहीं दिया है। हम समझ जायेंगे
कि हमारी बीमारी स्वत: ही हो गई।"

10पलिश्तियों ने वही किया जो याजकों और जादूगरों
ने कहा। पलिश्तियों ने वैसी दो गायें लीं जिन्होंने शीघ्र ही
बछड़े दिये थे। पलिश्तियों ने गायों को बन्द गाड़ी से जोड़
दिया। पलिश्तियों ने बछड़ों को घर पर गौशाला में रखा

उन्हें ... जाने दो पलिश्तियों ने सोचा कि यदि गायों ने अपने बछड़ों को खोजने की कोशिश नहीं की और बेतशेमेश को सीधे चली गई तो यह सिद्ध हो जायेगा कि परमेश्वर उन्हें ले जा रहा है। यह प्रकट करेगा कि परमेश्वर ने भेंट स्वीकार कर ली।

11तब पलिश्तियों ने यहोवा के पवित्र सन्दूक को बन्द
गाड़ी में रखा। 12गायें सीधे बेतशेमेश को गईं। गायें
लगातार रंभाती हुई सड़क पर टिकीं रहीं। गायें दायें या
बायें नहीं मुड़ीं। पलिश्ती शासक गायों के पीछे बेतशेमेश
की नगर सीमा तक गए।

13बेतशेमेश के लोग घाटी में अपनी गेहूँ की फसल
काट रहे थे। उन्होंने निगाह उठाई और पवित्र सन्दूक
को देखा। वे सन्दूक को फिर देखकर बहुत प्रसन्न
हुए। वे उसे लेने के लिये दौड़े। 14–15 बन्द गाड़ी उस खेत
में आई जो बेतशेमेश के यहोशू का था। इस खेत में बन्द
गाड़ी एक विशाल चट्टान के सामने रूकी। बेतशेमेश
के लोगों ने बन्द गाड़ी को काट दिया। तब उन्होंने गायों
को मार डाला। उन्होंने गायों की बलि यहोवा को दी।
लेवीवंशियों ने यहोवा के पवित्र सन्दूक को उतारा।
उन्होंने उस थैले को भी उतारा जिसमें सोने के नमूने
रखे थे। लेवीवंशियों ने यहोवा के सन्दूक और थैले को
विशाल चट्टान पर रखा। उस दिन बेतशेमेश के लोगों
ने यहोवा को होमबलि चढ़ाई।

16पाँचों पलिश्ती शासकों ने बेतशेमेश के लोगों को
यह सब करते देखा। तब वे पाँचों पलिश्ती शासक उसी
दिन एक्रोन लौट गए।

17इस प्रकार, पलिश्तियों ने यहोवा को अपने पापों के
लिये, अपने फोड़ों के सोने के नमूने भेंट के रूप में
भेजे। उन्होंने हर एक पलिश्ती नगर के लिये फोड़े का
एक सोने का नमूना भेजा। ये पलिश्ती नगर अशदोद ,
अज्जा, अश्कलोन, गत और एक्रोन थे। 18पलिश्तियों ने
चूहों के सोने के नमूने भी भेजे। सोने के चूहे की
संख्या उतनी ही थी जितनी संख्या पाँचों पलिश्ती शासकों
के नगरों की थी। इन नगरों के चारों ओर चहारदीवारी
थी और हर नगर के चारों ओर गाँव थे।

बेतशेमेश के लोगों ने यहोवा के पवित्र सन्दूक को
एक चट्टान पर रखा। वह चट्टान अब भी बेतशेमेश
के यहोशू के खेत में है। 19किन्तु जिस समय बेतशेमेश
के लोगों ने यहोवा के पवित्र सन्दूक को देखा उस समय
वहाँ कोई याजक न था। इसलिये परमेश्वर ने बेतशेमेश
के सत्तर व्यक्तियों को मार डाला। बेतशेमेश के लोग
विलाप करने लगे क्योंकि यहोवा ने उन्हें इतना कठोर
दण्ड दिया। 20इसलिये बेतशेमेश के लोगों ने कहा, "याजक
कहाँ है जो इस पवित्र सन्दूक की देखभाल कर सके?
यहाँ से सन्दूक कहाँ जाएगा?"

21किर्यत्यारीम में एक याजक था। बेतशेमेश के
लोगों ने किर्यत्यारीम के लोगों के पास दूत भेजे। दूतों ने
कहा, "पलिश्तियों ने यहोवा का पवित्र सन्दूक लौटा
दिया है। आओ और इसे अपने नगर में ले जाओ।"

7 किर्यत्यारीम के लोग आए और यहोवा के पवित्र
सन्दूक को ले गए। वे यहोवा के सन्दूक को पहाड़ी
पर अबीनादाब के घर ले गए। उन्होंने अबीनादाब के
पुत्र एलीआज़ार को यहोवा के सन्दूक की रक्षा करने
के लिये तैयार करने हेतु एक विशेष उपासना की।
2सन्दूक किर्यत्यारीम में बुहत समय तक रखा रहा।
यह वहाँ बीस वर्ष तक रहा।

यहोवा इस्राएलियों की रक्षा करता है:

इस्राएल के लोग फिर यहोवा का अनुसरण करने
लगे। 3शमूएल ने इस्राएल के लोगों से कहा, "यदि तुम
सचमुच यहोवा के पास सच्चे हृदय से लौट रहे हो तो
तुम्हें विदेशी देवताओं को फेंक देना चाहिये। तुम्हें
अश्तोरेत की मूर्तियों को फेंक देना चाहिए और तुम्हें
पूरी तरह यहोवा को अपना समर्पण करना चाहिये!
तुम्हें केवल यहोवा की ही सेवा करनी चाहिये। तब
यहोवा तुम्हें पलिश्तियों से बचायेगा।"

4इसलिये इस्राएलियों ने अपने बाल और अश्तोरेत
की मूर्तियों को फेंक दिया। इस्राएली केवल यहोवा की
सेवा करने लगे।

5शमूएल ने कहा, "सभी इस्राएली मिस्पा में इकट्ठे
हों। मैं तुम्हारे लिये यहोवा से प्रार्थना करूँगा।"

6इस्राएली मिस्पा में एक साथ इकट्ठे हुए। वे जल
लाये और यहोवा के सामने वह जल चढ़ाया। इस प्रकार
उन्होंने उपवास का समय आरम्भ किया। उन्होंने उस
दिन भोजन नहीं किया और उन्होंने अपने पापों को
स्वीकार किया। उन्होंने कहा, "हम लोगों ने यहोवा के
विरुद्ध पाप किया है।" इस प्रकार शमूएल ने मिस्पा में
इस्राएल के न्यायाधीश के रूप में काम किया।

7 पलिश्तियों ने यह सुना कि इस्राएली मिस्पा में
इकट्ठा हो रहे हैं। पलिश्ती शासक इस्राएलियों के
विरुद्ध आक्रमण करने गये। इस्राएलियों ने सुना कि
पलिश्ती आ रहे हैं, और वे डर गए। 8इस्राएलियों ने
शमूएल से कहा, "हमारे परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना
हमारे लिये करना बन्द मत करो। यहोवा से माँगों कि
वह पलिश्तियों से हमारी रक्षा करे!"

9शमूएल ने एक मेमना लिया। उसने यहोवा की
होमबलि के रूप में मेमने को जलाया। शमूएल ने यहोवा
से इस्राएल के लिये प्रार्थना की। यहोवा ने शमूएल की
प्रार्थना का उत्तर दिया। 10जिस समय शमूएल बलि जला
रहा था, पलिश्ती इस्राएल से लड़ने आये। किन्तु यहोवा
ने पलिश्तियों के समीप प्रचण्ड गर्जना उत्पन्न की।
इसने पलिश्तियों को अस्त–व्यस्त कर दिया। गर्जना ने
पलिश्तियों को भयभीत कर दिया और वे अस्त–व्यस्त
हो गये। उनके प्रमुख उन पर नियन्त्रण न रख सके।
इस प्रकार पलिश्तियों को इस्राएलियों ने युद्ध में पराजित
कर दिया। 11इस्राएल के लोग मिस्पा से बाहर दौड़े और
पलिश्तियों का पीछा किया। उन्होंने लगातार बेत कर
तक उनका पीछा किया। उन्होंने पूरे रास्ते पलिश्ती
सैनिकों को मारा।

इस्राएल में शान्ति स्थापित हुई

12इसके बाद, शमूएल ने एक विशेष पत्थर स्थापित
किया। उसने यह इसलिये किया कि लोग याद रखें कि
परमेश्वर ने क्या किया। शमूएल ने पत्थर को मिस्पा
और शेन के बीच रखा। शमूएल ने पत्थर का नाम
"सहायता का पत्थर"* रखा। शमूएल ने कहा, "यहोवा
ने लगातार पूरे रास्ते इस स्थान तक हमारी सहायता
की।"

13पलिश्ती पराजित हुए। वे इस्राएल देश में फिर नहीं
घुसे। शमूएल के शेष जीवन में, यहोवा पलिश्तियों के
विरुद्ध रहा। 14पलिश्तियों ने इस्राएल के नगर ले लिये
थे। पलिश्तियों ने एक्रोन से गत तक के क्षेत्र के नगरों
को ले लिया था। किन्तु इस्राएलियों ने इन्हें जीतकर
वापस ले लिया और इस्राएल ने इन नगरों के चारों ओर
की भूमि को भी वापस ले लिया।

15शमूएल ने अपने पूरे जीवन भर इस्राएल का मार्ग
दर्शन किया। 16शमूएल एक स्थान से दूसरे स्थान तक
इस्राएल के लोगों का न्याय करता हुआ गया। हर वर्ष
उसने देश के चारों ओर यात्रा की। वह गिलगाल, बेतेल
और मिस्पा को गया। अत: उसने इन सभी स्थानों पर
इस्राएली लोगों का न्याय और उन पर शासन किया।
17किन्तु शमूएल का घर रामा में था। इसलिए शमूएल
सदा रामा को लौट जाता था। शमूएल ने उसी नगर से
इस्राएल का न्याय और शासन किया और शमूएल ने
रामा में यहोवा के लिये एक वेदी बनाई।

इस्राएल एक राजा की माँग करता है

8 जब शमूएल बूढ़ा हो गया तो उसने अपने पुत्रों को
इस्राएल के न्यायाधीश बनाया। 2शमूएल के प्रथम
पुत्र का नाम योएल रखा गया। उसके दूसरे पुत्र का नाम
अबिय्याह रखा गया था। योएल और अबिय्याह बेर्शेबा
में न्यायाधीश थे। 3किन्तु शमूएल के पुत्र वैसे नहीं रहते
थे जैसे वह रहता था। योएल और अबिय्याह घूस लेते
थे। वे गुप्त रूप से धन लेते थे और न्यायालय में अपना
निर्णय बदल देते थे। वे न्यायालय में लोगों को ठगते थे।
4इसलिये इस्राएल के सभी अग्रज (प्रमुख) एक साथ
इकट्ठे हुए। वे शमूएल से मिलने रामा गये। 5अग्रजों
(प्रमुखों) ने शमूएल से कहा, "तुम बूढ़े हो गए और
तुम्हारे पुत्र ठीक से नहीं रहते। वे तुम्हारी तरह नहीं हैं।
अब, तुम अन्य राष्ट्रों की तरह हम पर शासन करने
के लिये एक राजा दो।"

6इस प्रकार, अग्रजों (प्रमुखों) ने अपने मार्ग दर्शन के
लिये एक राजा माँगा। शमूएल ने सोचा कि यह विचार
बुरा है। इसलिए शमूएल ने यहोवा से प्रार्थना की। 7यहोवा
ने शमूएल से कहा, "वही करो जो लोग तुमसे करने
को कहते हैं। उन्होंने तुमको अस्वीकार नहीं किया है।
उन्होंने मुझे अस्वीकार किया है! वे मुझको अपना
राजा बनाना नहीं चाहते! 8वे वही कर रहे हैं जो सदा
करते रहे। मैंने उनको मिस्र से बाहर निकाला। किन्तु
उन्होंने मुझको छोड़ा, तथा अन्य देवताओं की पूजा की।
वे तुम्हारे साथ भी वैसा ही कर रहे हैं। 9इसलिए लोगों
की सुनों और जो वे कहें, करो। किन्तु उन्हें चेतावनी
दो। उन्हें बता दो कि राजा उनके साथ क्या करेगा।
उनको बता दो कि एक राजा लोगों पर कैसे शासन
करता है।"

10उन लोगों ने एक राजा के लिये माँग की। इसलिये
शमूएल ने लोगों से वे सारी बातें कहीं जो यहोवा ने कही
थी। 11शमूएल ने कहा, "यदि तुम अपने ऊपर शासन
करने वाला राजा रखते हो तो वह यह करेगा: वह
तुम्हारे पुत्रों को ले लेगा। वह तुम्हारे पुत्रों को अपनी
सेवा के लिये विवश करेगा। वह उन्हें सैनिक बनने के
लिये विवश करेगा, उन्हें उसके रथों पर से लड़ना
पड़ेगा और वे उसकी सेना के घुड़सवार होंगें। तुम्हारे
पुत्र राजा के रथ के आगे दौड़ने वाले रक्षक बनेंगे।
12राजा तुम्हारे पुत्रों को सैनिक बनने के लिये विवश
करेगा। उनमें से कुछ हजार व्यक्तियों के ऊपर अधिकारी
होंगे और अन्य पचास व्यक्तियों के ऊपर अधिकारी
होंगे। राजा तुम्हारे पुत्रों में से कुछ को अपने खेत को
जोतने और फसल काटने को विवश करेगा। वह तुम्हारे
पुत्रों में से कुछ को अस्त्र-शस्त्र बनाने को विवश
करेगा। वह उन्हें अपने रथ के लिये चीजें बनाने के
लिये विवश करेगा। 13राजा तुम्हारी पुत्रियों को लेगा।
वह तुम्हारी पुत्रियों में से कुछ को अपने लिये सुगन्धद्रव्य
चीजें बनाने को विवश करेगा और वह तुम्हारी पुत्रियों
में से कुछ को रसोई बनाने और रोटी पकाने को
विवश करेगा।

14"राजा तुम्हारे सर्वोत्तम खेत, अगूंर के बाग और
जैतून के बागों को ले लेगा। वह उन चीजों को तुमसे ले
लेगा और अपने अधिकारियों को देगा। 15वह तुम्हारे
अन्न और अगूंर का दसवाँ भाग ले लेगा। वह इन चीज़ों
को अपने सेवकों और अधिकारियों को देगा। 16वह
राजा तुम्हारे दास-दासियों को ले लेगा। वह तुम्हारे
सर्वोत्तम पशु और गधों को लेगा। वह उनका उपयोग
अपने कामों के लिये करेगा 17और वह तुम्हारी रेवड़ों
का दसवाँ भाग लेगा।

"और तुम स्वयं इस राजा के दास हो जाओगे। 18जब
वह समय आयेगा तब तुम राजा को चुनने के कारण
रोओगे। किन्तु उस समय यहोवा तुमको उत्तर नहीं
देगा।"

19किन्तु लोगों ने शमूएल की एक न सुनी। उन्होंने
कहा, "नहीं! हम लोग अपने ऊपर शासन करने के
लिये एक राजा चाहते हैं। 20तब हम वैसे ही हो जायेंगे

सहायता का पत्थर या "एबेनेजेर।"

जैसे अन्य राष्ट्र। हमारा राजा हम लोगों का मार्ग दर्शन
करेगा। वह हम लोगों के साथ जायेगा और हमारे युद्धों
कोलड़ेगा।"
21शमूएल ने जब लोगों का सारा कहा हुआ सुना तब
उसने यहोवा के सामने उनके कथनों को दुहराया।
22यहोवा ने उत्तर दिया, "उनकी बात सुनों! उनको एक
राजा दो।" तब शमूएल ने इस्राएल के लोगों से कहा,
"ठीक है! तुम्हारा एक नया राजा होगा। अब, आप सभी
लोग घर को जायें।"

शाऊल अपने पिता के गधों की तलाश करता है

9 कीश बिन्यामीन परिवार समूह का एक महत्वपूर्ण
व्यक्ति था। कीश अबीएल का पुत्र था। अबीएल
सरोर का पुत्र था। सरोर बकोरत का पुत्र था। बकोरत
बिन्यामीन के एक व्यक्ति अपीह का पुत्र था। 2कीश
का एक पुत्र शाऊल नाम का था। शाऊल एक सुन्दर
युवक था। वहाँ शाऊल से अधिक सुन्दर कोई न था।
खड़ा होने पर शाऊल का सिर इस्राएल के किसी भी
व्यक्ति से ऊँचा रहता था।

3एक दिन, कीश के गधे खो गए। इसलिए कीश ने
अपने पुत्र शाऊल से कहा, "सेवकों में से एक को साथ
लो और गधों की खोज में जाओ।"

4शाऊल ने गधों की खोज आरम्भ की। शाऊल
एप्रैम की पहाड़ियों में होकर घूमा। तब शाऊल शलीशा
के चारों ओर के क्षेत्र में घूमा। किन्तु शाऊल और
उसका सेवक, कीश के गधों को नहीं पा सके। इसलिए
शाऊल और सेवक शालीम के चारों ओर के क्षेत्र में
गये। किन्तु गधे वहाँ नहीं मिले। इसलिये शाऊल ने
बिन्यामीन के प्रदेश में होकर यात्रा की। किन्तु वह और
उसका सेवक गधों को तब भी न पा सके।

5अन्त में, शाऊल और उसका सेवक सूफ
नामक नगर में आए। शाऊल ने अपने सेवक से कहा,
"चलो, हम लौटें। मेरे पिता गधों के बारे में सोचना
बन्द कर देंगे और हम लोगों के बारे में चिन्तित
होने लगेंगे।"

6किन्तु सेवक ने उत्तर दिया, "इस नगर में परमेश्वर
का एक व्यक्ति है। लोग उसका सम्मान करते हैं। वह
जो कहता है सत्य होता है। इसलिये हम इस नगर में
चले। संभव है कि परमेश्वर का यह व्यक्ति हमें बताये
कि इसके बाद हम लोग कहाँ जायें।"

7शाऊल ने अपने सेवक से कहा, "हम नगर में चल
सकते हैं। किन्तु हम लोग उस व्यक्ति को क्या दे सकते
हैं? हम लोगों के थैले का भोजन समाप्त हो चुका है।
हम लोगों के पास कोई भी भेंट परमेश्वर के व्यक्ति
को देने के लिये नहीं है। हमारे पास उसे देने को क्या
है?"

8सेवक ने शाऊल को फिर उत्तर दिया, "देखों, मेरे
पास थोड़ा सा धन* है। हम परमेश्वर के व्यक्ति को
यही दें। तब वह बतायेगा कि हम लोग कहाँ जायें।"

9-11शाऊल ने अपने सेवक से कहा, "अच्छा सुझाव
है! हम चलें!" वे नगर में वहाँ गए जहाँ परमेश्वर का
व्यक्ति था। शाऊल और उसका सेवक पहाड़ी पर चढ़ते
हुए नगर को जा रहे थे। रास्ते में वे कुछ युवतियों से
मिले। युवतियाँ बाहर से पानी लेने जा रही थी। शाऊल
और उसके सेवक ने युवतियों से पूछा, "क्या भविष्यवक्ता
यहाँ है?" (प्राचीन काल में इस्राएल के निवासी नबियों
को "भविष्यवक्ता" कहते थे। इसलिये यदि वे परमेश्वर
से कुछ माँगना चाहते थे तो वे कहते थे, "हम लोग
भविष्यवक्ता के पास चलें।")

12युवतियों ने उत्तर दिया, "हाँ, भविष्यवक्ता यहीं है।
वह ठीक इसी सड़क पर आगे है। वह आज ही नगर में
आया है। कुछ लोग वहाँ एक साथ इसलिये इकट्ठे हो
रहे हैं कि आराधनालय पर मेलबलि में भाग ले सकें।
13आप लोग नगर में जाएँ, और आप उनसे मिल लेंगे।
यदि आप लोग शीघ्रता करेंगे तो आप उनसे आराधनालय
पर भोजन के लिये जाने के पहले मिल लेंगे। भविष्यवक्ता
बलि–भेंट को आशीर्वाद देते हैं। इसलिये लोग तब वे
तक भोजन करना आरम्भ नहीं करेंगे जब तक वे वहाँ
न पहुँचे। इसलिये यदि आप लोग शीघ्रता करें, तो आप
भविष्यवक्ता को पा सकते हैं।"

14शाऊल और सेवक ने ऊपर पहाड़ी पर नगर की
ओर बढ़ना आरम्भ किया। जैसे ही वे नगर में घुसे
उन्होंने शमूएल को अपनी ओर आते देखा। शमूएल
नगर के बाहर उपासना के स्थान पर जाने के लिये
अभी आ ही रहा था।

15एक दिन पहले यहोवा ने शमूएल से कहा था,
16"कल मैं इसी समय तुम्हारे पास एक व्यक्ति को
भेजूँगा। वह बिन्यामीन के परिवार समूह का होगा। तुम्हें
उसका अभिषेक कर देना चाहिये। तब वह हमारे लोग
इस्राएलियों का नया प्रमुख होगा। यह व्यक्ति हमारे
लोगों को पलिश्तियों से बचाएगा। मैंने अपने लोगों के
कष्टों को देखा है। मैंने अपने लोगों का रोना सुना है।"

17शमूएल ने शाऊल को देखा और यहोवा ने उससे
कहा, "यही वह व्यक्ति है जिसके बारे में मैंने तुमसे
कहा था। यह मेरे लोगों पर शासन करेगा।"

18शाऊल द्वार के पास शमूएल के निकट आया।
शाऊल ने शमूएल से पूछा, "कृपया बतायें भविष्यवक्ता
का घर कहाँ है।"

19शमूएल ने उत्तर दिया, "मैं ही भविष्यवक्ता हूँ। मेरे
आगे उपासना के स्थान पर पहुँचो। तुम और तुम्हारा

थोड़ा सा धन शाब्दिक 1/4 शकेल चाँदी। यह लगभग 1/10 औंस चाँदी थी।

सेवक आज हमारे साथ भोजन करोगे। मैं कल सवेरे
तुम्हें घर जाने दूँगा मैं तुम्हारे सभी प्रश्नों का उत्तर
दूँगा। 20उन गधों की चिन्ता न करो जिन्हें तुमने तीन
दिन पहले खो दिया। वे मिल गये हैं। अब, तुम्हें सारा
इस्राएल चाहता है। वे तुम्हें और तुम्हारे पिता के परिवार
के सभी लोगों को चाहते हैं।"

21शाऊल ने उत्तर दिया, "किन्तु मैं बिन्यामीन परिवार
समूह का एक सदस्य हूँ। यह इस्राएल में सबसे छोटा
परिवार समूह है और मेरा परिवार बिन्यामीन परिवार
समूह में सबसे छोटा है। आप क्यों कहते हैं कि इस्राएल
मुझको चाहता है?"

22तब शमूएल, शाऊल और उसके सेवक को भोजन
के क्षेत्र में ले गया। लगभग तीस व्यक्ति एक साथ भोजन
के लिये और बलि–भेंट में भाग लेने के लिये आमन्त्रित
थे। शमूएल ने शाऊल और उसके सेवक को मेज पर
सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया। 23शमूएल ने रसोइये से
कहा, "वह माँस लाओ जो मैंने तुम्हें दिया था। यह वह
भाग है जिसे मैंने तुमसे सुरक्षित रखने के लिये कहा
था।"

24रसोइये ने जांघ ली और शाऊल के सामने मेज पर
रखी। शमूएल ने कहा, "यही वह माँस है जिसे मैंने
तुम्हारे लिये सुरक्षित रखा था। यह खाओ क्योंकि यह
इस विशेष समय के लिये तुम्हारे लिये सुरक्षित था।" इस
प्रकार उस दिन शाऊल ने शमूएल के साथ भोजन
किया। 25जब उन्होंने भोजन समाप्त कर लिया, वे
आराधनालय से उतरे और नगर को लौटे। शमूएल ने
छत पर शाऊल के लिये बिस्तर लगाया और शाऊल सो
गया।

26अगली सुबह सवेरे, शमूएल ने शाऊल को छत
पर जोर से पुकारा। शमूएल ने कहा, "उठो। मैं तुम्हें
तुम्हारे रास्ते पर भेजूँगा।" शाऊल उठा, और शमूएल
के साथ घर से बाहर चल पड़ा।

27शाऊल, उसका सेवक और शमूएल एक साथ
नगर के सिरे पर चल रहे थे। शमूएल ने शाऊल से
कहा, "अपने सेवक से हम लोगों से कुछ आगे चलने
को कहो। मेरे पास तुम्हारे लिये परमेश्वर का एक
सन्देश है।" इसलिये दास उनसे कुछ आगे चलने लगा।

शमूएल शाऊल का अभिषेक करता है

10 शमूएल ने विशेष तेल की एक कुप्पी ली।
शमूएल ने तेल को शाऊल के सिर पर डाला।
शमूएल ने शाऊल को चुम्बन किया और कहा, "यहोवा
ने तुम्हारा अभिषेक अपने लोगों का प्रमुख बनाने के
लिये किया है। तुम यहोवा के लोगों पर नियन्त्रण करोगे।
तुम उन्हें उन शत्रुओं से बचाओगे जो उनको चारों
ओर से घेरे हैं। यहोवा ने तुम्हारा अभिषेक (चुनाव)
अपने लोगों का शासक होने के लिये किया है। एक
चिन्ह प्रकट होगा जो प्रमाणित करेगा कि यह सत्य है।
2जब तुम मुझसे अलग होगे, तो तुम राहेल के कब्र के
पास दो व्यक्तियों से, बिन्यामीन की धरती के सिवाने
पर, सेलसह में मिलोगे। वे दोनों व्यक्ति तुमसे कहेंगे,
'जिन गधों की खोज तुम कर रहे थे उन्हें किसी
व्यक्ति ने प्राप्त कर लिया है। तुम्हारे पिता ने गधों के
सम्बन्ध में चिन्ता करना छोड़ दिया है। अब उसे तुम्हारी
चिन्ता है। वह कह रहा है: मैं अपने पुत्र के विषय में
क्या करुँ?'"

3शमूएल ने कहा, "अब तुम तब तक चलते रहोगे
जब तक तुम ताबोर में बांज के विशाल पेड़ तक पहुँच
नहीं जाते। वहाँ तुमसे तीन व्यक्ति मिलेंगे। वे तीनों
व्यक्ति बेतेल में परमेश्वर की उपासना के लिये यात्रा
पर होंगे। एक व्यक्ति बकरियों के तीन बच्चों को लिये
होगा। दूसरा व्यक्ति तीन रोटियाँ लिये हुए होगा और
तीसरा व्यक्ति एक मशक दाखमधु लिये हुए होगा। 4ये
तीनों व्यक्ति कहेंगे, 'आपका स्वागत है।' वे तुम्हें दो
रोटियाँ देंगे। तुम उनसे उन दो रोटियों को स्वीकार
करोगे। 5तब तुम गिबियथ–एलोहिम जाओगे। उस स्थान
पर पलिश्तियों का एक किला है। जब तुम उस नगर में
पहुँचोगे तो कई नबी निकल आयेंगे। ये नबी आराधनास्थल
से नीचे उपासना के लिये आयेंगे। वे भविष्यवाणी करेंगे।
वे वीणा, खंजड़ी, और तम्बूरा बजा रहे होंगे। 6तब
तत्काल तुम पर यहोवा की आत्मा उतरेगी। तुम बदल
जाओगे। तुम एक भिन्न ही पुरुष हो जाओगे। तुम इन
भविष्यवक्ताओं के साथ भविष्यवाणी करने लगोगे। 7इन
बातों के घटित होने के बाद, तुम जो चाहोगे, करोगे।
परमेश्वर तुम्हारे साथहोगा।

8"मुझसे पहले गिलगाल जाओ। मैं तुम्हारे पास उस
स्थान पर आऊँगा। तब मैं होमबलि और मेलबलि
चढ़ाऊँगा। किन्तु तुम्हें सात दिन प्रतीक्षा करनी होगी।
तब मैं आऊँगा और बताऊँगा कि तुम्हें क्या करना है।"

शाऊल का नबी जैसा होना

9जैसे ही शाऊल शमूएल को छोड़ने के लिये मुड़ा,
परमेश्वर ने शाऊल का जीवन बदल दिया। ये सभी
घटनायें उस दिन घटीं। 10शाऊल और उसका सेवक
गिबियथ–एलोहिम गए। उस स्थान पर शाऊल
नबियों के एक समूह से मिला। परमेश्वर की आत्मा
शाऊल पर तीव्रता से उतरी और शाऊल ने नबियों के
साथ भविष्यवाणी की। 11जो लोग शाऊल को पहले से
जानते थे उन्होंने नबियों के साथ उसे भविष्यवाणी
करते देखा। वे लोग आपस में पूछ–ताछ करने लगे,
"कीश के पुत्र को क्या हो गया है? क्या शाऊल नबियों
में से एक है?"

12एक व्यक्ति ने जो गिबियथ–एलोहिम में रहता था,
कहा, "हाँ! और ऐसा लगता है कि यह उनका मुखिया

है।"* यही कारण है कि यह प्रसिद्ध कहावत बनी: "क्या शाऊल नबियों में से कोई एक है?"

शाऊल घर पहुँचता है

13अन्तत: उसने नबियों की तरह बोलना बन्द किया और एक उच्च स्थान पर चला गया।

14बाद में शाऊल के चाचा ने उससे और उसके सेवक से कहा, "तुम कहाँ गए थे?" उसने उत्तर दिया, "हम गधों को देखने गए थे और उनकी खोज में चले ही जा रहे थे, किन्तु वे कहीं नहीं मिले। इसलिए हम लोग शमूएल के पास गए।"

15यह सुनकर शाऊल के चाचा ने कहा, "कृपया तुम लोग मुझे बताओ कि शमूएल ने तुम दोनों से क्या
कहा?" 16शाऊल ने अपने चाचा को उत्तर दिया, "उसने पूरी सच्चाई से बताया कि गधे मिल गये हैं।" और उसने राज्य के बारे में जो शमूएल से सुना था उसे नहीं बताया।

शमूएल, शाऊल को राजा घोषित करता है

17शमूएल ने इस्राएल के सभी लोगों से मिस्पा में यहोवा से मिलने के लिये एक साथ इकट्ठा होने को
कहा। 18शमूएल ने कहा, "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'मैंने इस्राएल को मिस्र से बाहर निकाला। मैंने तुम्हें मिस्र की अधीनता से और उन अन्य राष्ट्रों से भी
बचाया जो तुम्हें चोट पहुँचाना चाहते थे।' 19किन्तु आज
तुमने अपने परमेश्वर को अस्वीकार कर दिया है। तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें तुम्हारे सभी कष्टों और समस्याओं से बचाता है। किन्तु तुमने कहा, 'नहीं हम अपने ऊपर शासन करने के लिये एक राजा चाहते हैं।' अब आओ और यहोवा के सामने अपने परिवारों और अपने परिवार समूहों में खड़े हो जाओ।"

20शमूएल इस्राएल के सभी परिवार समूहों को निकट लाया। तब शमूएल ने नया राजा चुनना आरम्भ किया।
प्रथम बिन्यामीन का परिवार समूह चुना गया। 21शमूएल
ने बिन्यामीन के परिवार समूह के हर एक परिवार को एक-एक करके आगे से निकलने को कहा। मत्री का परिवार चुना गया। तब शमूएल ने मत्री के परिवार के हर एक व्यक्ति को एक-एक करके उसके आगे से निकलने को कहा। इस प्रकार कीश का पुत्र शाऊल चुना गया। किन्तु जब लोगों ने शाऊल की खोज की,
तो वे उसे पा नहीं सके। 22तब उन्होंने यहोवा से पूछा,
"क्या शाऊल अभी तक यहाँ नहीं आया है?"

यहोवा ने कहा, "शाऊल भेंट सामग्री के पीछे छिपा है।"

23लोग दौड़ पड़े और शाऊल को भेंट सामग्री के पीछे से ले आये। शाऊल लोगों के बीच खड़ा हुआ। शाऊल इतना लम्बा था कि सभी लोग बस उस के कंधे तक आ रहे थे।

24शमूएल ने सभी लोगों से कहा, "उस व्यक्ति को देखो जिसे यहोवा ने चुना है। लोगों में कोई व्यक्ति शाऊल के समान नहीं है।" तब लोगों ने नारा लगाया, "राजा दीर्घायु हो!"

25शमूएल ने राज्य के नियमों को लोगों को समझाया। उसने उन नियमों को एक पुस्तक में लिखा। उसने पुस्तक को यहोवा के सामने रखा। तब शमूएल ने लोगों को अपने-अपने घर जाने के लिये कहा।

26शाऊल भी गिबा में अपने घर चला गया। परमेश्वर ने वीर पुरुषों के हृदय का स्पर्श किया और ये वीर
व्यक्ति शाऊल का अनुसरण करने लगे। 27 किन्तु
कुछ उत्पातियों ने कहा, "यह व्यक्ति हम लोगों की रक्षा कैसे कर सकता है?" उन्होनें शाऊल की निन्दा की और उसे उपहार देने से इन्कार किया। किन्तु शाऊल ने कुछ नहीं कहा।

अम्मोनियों का राजा नाहाश

अम्मोनियों का राजा नाहाश गिलाद और याबेश के परिवार समूह को कष्ट दे रहा था। नाहाश ने उनके हर एक पुरुष की दायीं आँख निकलवा डाली थी। नाहाश किसी को उनकी सहायता नहीं करने देता था। अम्मोनियों के राजा नाहाश ने यरदन नदी के पूर्व रहने वाले हर एक इस्राएली पुरूष की दायीं आँख निकलवा ली थी। किन्तु सत्तर हजार इस्राएली पुरुष अम्मोनियों के यहाँ से भाग निकले और याबेश गिलाद में आ गये।

11 लगभग एक महीने बाद अम्मोनी नाहाश और उसकी सेना ने याबेश गिलाद को घेर लिया। याबेश के सभी लोगों ने नाहाश से कहा, "यदि तुम हमारे साथ सन्धि करोगे तो हम तुम्हारी प्रजा बनेंगे।"

2किन्तु अम्मोनी नाहाश ने उत्तर दिया, "मैं तुम लोगों के साथ तब सन्धि करूँगा जब मैं हर एक व्यक्ति की दायीं आँख निकाल लूँगा। तब सारे इस्राएली लज्जित होंगे!"

3याबेश के प्रमुखों ने नाहाश से कहा, "हम लोग सात दिन का समय लेंगे। हम पूरे इस्राएल में दूत भेजेंगे। यदि कोई सहायता के लिये नहीं आएगा, तो हम लोग तुम्हारे पास आएंगे और अपने को समर्पित कर देंगे।"

शाऊल याबेश गिलाद की रक्षा करता है:

4सो वे दूत गिबा में आये जहाँ शाऊल रहता था।
उन्होंने लोगों को समाचार दिया। लोग जोर से रो पड़े।
5शाऊल अपनी बैलों के साथ खेतों में गया हुआ था।

हाँ ... मुखिया है "और जो उनका पिता है" प्राय: वह व्यक्ति जो अन्य नबियों को शिक्षा देता और मार्गदर्शन करता था "पिता" कहा जाता था।

शाऊल खेत से लौटा और उसने लोगों का रोना सुना। शाऊल ने पूछा, "लोगों को क्या कष्ट है? वे रो क्यों रहे हैं?" तब लोगों ने याबेश के दूतों ने जो कहा था शाऊल को बताया। 6शाऊल ने उनकी बातें सुनी। तब परमेश्वर का आत्मा शाऊल पर जल्दी से उतरा। शाऊल अत्यन्त क्रोधित हुआ। 7शाऊल ने बैलों की जोड़ी ली और उसके टुकड़े कर डाले। तब उसने उन बैलों के टुकड़ों को उन दूतों को दिया। उसने दूतों को आदेश दिया कि वे इस्राएल के पूरे देश में उन टुकड़ों को ले जाये। उसने उनसे इस्राएल के लोगों को यह सन्देश देने को कहा, "आओ शाऊल और शमूएल का अनुसरण करो। यदि कोई व्यक्ति नहीं आता और उसकी सहायता नहीं करता तो उसके बैलों के साथ यही होगा।" यहोवा की ओर से लोगों में बड़ा भय छा गया। वे एक इकाई के रूप में एक साथ इकट्ठे हो गए। 8शाऊल ने सभी पुरुषों को बेजेक में एक साथ इकट्ठा किया। वहाँ इस्राएल के तीन लाख पुरुष और यहूदा के तीस हजार पुरुष थे।

9शाऊल और उसकी सेना ने याबेश के दूतों से कहा, "गिलाद में याबेश के लोगों से कहो कि कल दोपहर तक तुम लोगों की रक्षा हो जायेगी।" दूतों ने शाऊल का सन्देश याबेश के लोगों को दिया। याबेश के लोग बड़े प्रसन्न हुए। 10तब याबेश के लोगों ने अम्मोनी नाहाश से कहा, "हम लोग कल तुम्हारे पास आएंगे। तब तुम हम लोगों के साथ जो चाहो कर सकते हो।"

11अगली सुबह शाऊल ने अपनी सेना को तीन टुकड़ियों में बाँटा। सूरज निकलते ही शाऊल और उसके सैनिक अम्मोनियों के डेरे में जा घुसे। जब वे उस सुबह रक्षकों को बदल रहे थे, शाऊल ने आक्रमण किया। शाऊल और उसके सैनिकों ने अम्मोनियों को दो पहर से पहले पराजित कर दिया। सभी अम्मोनी सैनिक विभिन्न दिशाओं में भागे –दो सैनिक भी एक साथ नहीं रहें। 12तब लोगों ने शमूएल से कहा, "वे लोग कहाँ हैं जो कहते थे कि हम शाऊल को राजा के रूप में शासन करने देना नहीं चाहते? उन लोगों को लाओ! हम उन्हें मार डालेंगे! 13किन्तु शाऊल ने कहा, "नहीं! आज किसी को मत मारो! आज यहोवा ने इस्राएल की रक्षा की!"

14तब शमूएल ने लोगों से कहा, "आओ हम लोग गिलगाल चले। गिलगाल में हम शाऊल को फिर राजा बनायेंगे।"

15सो सभी लोग गिलगाल चले गये। वहाँ यहोवा के सामने लोगों ने शाऊल को राजा बनाया। उन्होंने यहोवा को मेलबलि दी। शाऊल और सभी इस्राएलियों ने खुशियाँ मनायी।

शमूएल का इस्राएलियों से बात करना

12 शमूएल ने सारे इस्राएलियों से कहा: "मैंने वह सब कुछ कर दिया है जो तुम लोग मुझ से चाहते थे। मैंने तुम लोगों के ऊपर एक राजा रखा है। 2अब तुम्हारे मार्गदर्शन के लिये एक राजा है। मैं श्वेतकेशी बूढ़ा हूँ। मेरे पुत्र तुम्हारे साथ हैं। जब मैं एक छोटा बालक था तब से मैं तुम्हारा मार्ग दर्शक रहा हूँ। 3मैं यहाँ हूँ। यदि मैंने कोई बुरा काम किया है तो तुम्हें उसके बारे में यहोवा से और उनके चुने हुए राजा से कहना चाहिये। क्या मैंने कभी किसी का बैल या गधा चुराया है? क्या मैंने किसी को कभी धोखा दिया है या हानि पहुँचाई है? क्या मैंने किसी का कुछ बुरा करने के लिये कभी किसी से धन या एक जोड़ा जूता भी लिया है? यदि मैंने इनमें से कोई बुरा काम किया है तो मैं उसको ठीक करूँगा।"

4इस्राएलियों ने उत्तर दिया, "नहीं! तुमने हम लोगों के लिये कभी बुरा नहीं किया। तुमने न हम लोगों को ठगा, न ही तुमने हम लोगों से कभी कुछ लिया।"

5शमूएल ने इस्राएलियों से कहा, "जो तुमने कहा, यहोवा उसका गवाह है। यहोवा का चुना राजा भी आज गवाह है। वे दोनों गवाह हैं कि तुमने मुझमें कोई दोष नहीं पाया।" लोगों ने कहा, "हाँ! यहोवा गवाह है।"

6तब शमूएल ने लोगों से कहा, "यहोवा गवाह है। उसने मूसा और हारून को चुना। वह तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर ले आया। 7अब चुपचाप खड़े रहो अब मैं तुम्हें उन अच्छें कामों को बताऊँगा जो यहोवा ने तुम्हारे पूर्वजों और तुम्हारे लिये किये थे। 8याकूब मिस्र गया। बाद में, मिस्रियों ने उसके वंशजों का जीवन कष्टमय बना दिया। इसलिए वे सहायता के लिये यहोवा के सामने रोये। यहोवा ने मूसा और हारून को भेजा। मूसा और हारून तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर निकाल ले आए और इस स्थान में रहने के लिये उनका मार्ग दर्शन किया।

9"किन्तु तुम्हारे पूर्वज, अपने परमेश्वर यहोवा को भूल गये। इसलिए यहोवा ने उन्हें सीसरा का दास होने दिया। सीसरा, हासोर की सेना का सेनापति था। तब यहोवा ने उन्हें पलिश्तियों और मोआब के राजा का दास बनाया। वे सभी तुम्हारे पूर्वजों के विरुद्ध लड़े। 10किन्तु तुम्हारे पूर्वज सहायता के लिये यहोवा के सामने गिड़गिड़ाए। उन्होंने कहा, 'हम लोगों ने पाप किया है। हम लोगों ने यहोवा को छोड़ा है और झूठे देवताओं बाल और अश्तोरेत की सेवा की है। किन्तु अब आप हमें हमारे शत्रुओं से बचायें, हम आपकी सेवा करेंगे।'

11"इसलिए यहोवा ने यरुब्बाल (गिदोन), बदान, बरक, यिप्तह और शमूएल को वहाँ भेजा। यहोवा ने तुम्हारे चारों ओर के शत्रुओं से तुम्हारी रक्षा की और तुम सुरक्षित रहे। 12किन्तु तब तुमने अम्मोनियों के राजा नाहाश को अपने विरुद्ध लड़ने के लिये आते देखा। तुमने कहा, 'नहीं! हम अपने ऊपर शासन करने के लिये एक राजा चाहते हैं।' तुमने यही कहा, यद्यपि

तुम्हारा परमेश्वर यहोवा राजा पहले से ही था। 13अब,
तुम्हारा चुना राजा यहाँ है। यहोवा ने इस राजा को
तुम्हारे ऊपर नियुक्त किया है। 14परमेश्वर यहोवा तुम्हारी
रक्षा करता रहेगा। किन्तु परमेश्वर तुम्हारी रक्षा तभी
करेगा जब तुम ये करोगे तुम्हें यहोवा का सम्मान और
उसकी सेवा करनी चाहिए। तुम्हें उसके आदेशों के
विरुद्ध लड़ना नहीं चाहिए और तुम्हें तथा तुम्हारे ऊपर
शासन करने वाले राजा को, अपने परमेश्वर यहोवा
का अनुसरण करना चाहिये। यदि तुम इन्हें करते
रहोगे तो परमेश्वर तुम्हारी रक्षा करेगा। 15किन्तु यदि
तुम यहोवा की आज्ञा पालन नहीं करते हो और उसके
आदेशों के विरुद्ध लड़ते हो, तो वह तुम्हारे विरुद्ध होगा।
यहोवा तुम्हें और तुम्हारे राजा को नष्ट कर देगा!
16अब चुपचाप खड़े रहो और उस अद्भुत काम को
देखो जिसे यहोवा तुम्हारी आँखों के सामने करेगा।
17यह गेहूँ की फसल कटने का समय है। मैं यहोवा से
प्रार्थना करूँगा। मैं उन से बिजली की कड़क और वर्षा
की याचना करूँगा। तब तुम समझोगे कि तुमने उस
समय यहोवा के विरुद्ध बुरा किया था जब तुमने एक
राजा की माँग की थी।"

18अत: शमूएल ने यहोवा से प्रार्थना की। उसी दिन
यहोवा ने बिजली की कड़क और वर्षा भेजी। इससे
लोग यहोवा तथा शमूएल से बहुत डर गये। 19सभी लोगों
ने शमूएल से कहा, "अपने परमेश्वर यहोवा से तुम
अपने सेवक, हम लोगों के लिये प्रार्थना करो। हम
लोगों को मरने मत दो! हम लोगों ने बहुत पाप किये हैं
और अब एक राजा के लिए माँग करके हम लोगों ने
उन पापों को और बढ़ाया है।"

20शमूएल ने उत्तर दिया, "डरो नहीं। यह सत्य है!
तुमने वे सब बुरे काम किये। किन्तु यहोवा का अनुसरण
करना बन्द मत करो। अपने सच्चे हृदय से यहोवा की
सेवा करो। 21देवमूर्तियाँ मात्र मूर्तियाँ हैं, वे तुम्हारी सहायता
नहीं करेगी। इसलिए उनकी पूजा मत करो। देवमूर्तियाँ
न तुम्हारी सहायता कर सकती है, न ही रक्षा कर
सकती हैं। वे कुछ भी नहीं हैं!

22"किन्तु यहोवा अपने लोगों को छोड़ेगा नहीं। यहोवा
तुम्हें अपने लोग बनाकर प्रसन्न हुआ था। अत:, अपने
अच्छे नाम की रक्षा के लिए वह तुमको छोड़ेगा नहीं।
23यदि मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करना बन्द कर देता हूँ तो
यह मेरे लिए अपमानजनक होगा। यदि मैं तुम्हारे लिये
प्रार्थना करना बन्द करता हूँ तो यह यहोवा के विरुद्ध
पाप करना होगा। मैं तुम्हें वह शिक्षा दूँगा जो तुम्हारे
लिये अच्छी व उचित है। 24किन्तु तुम्हें भी यहोवा का
सम्मान करते रहना चाहिये। तुम्हें पूरे हृदय से यहोवा
की सेवा सच्चाई के साथ करनी चाहिये। उन अद्भुत
कामों को याद रखो जिन्हें उसने तुम्हारे लिये किये।
25किन्तु यदि तुम हठी हो, और बुरा करते हो तो
परमेश्वर तुम्हें और तुम्हारे राजा को ऐसे झाड़ फेकेंगा
जैसे झाड़ू से कूड़े को फेंका जाता है।"

शाऊल अपनी पहली गलती करता है

13 अब तक, शाऊल एक वर्ष तक राज्य कर
चुका था और फिर जब शाऊल इस्राएल पर दो
वर्ष शासन कर चुका, 2उसने इस्राएल से तीन हजार
व्यक्ति चुने। उनमें दो हजार वे व्यक्ति थे जो बेतेल के
पहाड़ी प्रदेश के मिकमाश में उसके साथ ठहरे थे और
एक हजार वे व्यक्ति थे जो बिन्यामीन के अंतर्गत गिबा
में योनातान के साथ ठहरे थे। शाऊल ने सेना के अन्य
सैनिकों को उनके अपने घर भेज दिया।

3योनातान ने गिबा में जाकर पलिश्तियों को उनके
डेरे में हराया। पलिश्तियों ने इसके बारे में सुना।
उन्होनें कहा, "हिब्रुओं ने विद्रोह किया है।" शाऊल ने
कहा, "जो कुछ हुआ है उसे हिब्रू लोगों को सुनाओ।"
अत: शाऊल ने लोगों से कहा कि वे पूरे इस्राएल देश में
तुरही बजायें। 4सभी इस्राएलियों ने वह समाचार सुना।
उन्होंने कहा, "शाऊल ने पलिश्ती सेना प्रमुख को मार
डाला है। अब पलिश्ती सचमुच इस्राएलियों से घृणा करते
हैं!"

इस्राएली लोगों को शाऊल से जुड़ने के लिये गिलगाल
में बुलाया गया। 5पलिश्ती इस्राएल से लड़ने के लिए
इकट्ठे हुए। पलिश्तियों के पास छ: हजार रथ और
तीन हजार* घुड़सवार थे। वहाँ इतने अधिक पलिश्ती
सैनिक थे जितने सागर तट पर बालू के कण। पलिश्तियों
ने मिकमाश में डेरा डाला। (मिकमाश बेतावेन के पूर्व
है।)

6इस्राएलियों ने देखा कि वे मुसीबत में हैं। उन्होंने
अपने को जाल में फँसा अनुभव किया। वे गुफाओं
और चट्टानों के अन्तरालों में छिपने के लिए भाग गये।
वे चट्टानों, कुँओं और जमीन के अन्य गढ्ढों में छिप
गये। 7कुछ हिब्रू यरदन नदी पार कर गाद और गिलाद
प्रदेश में भी भाग गए। शाऊल तब तक गिलगाल में
था। उसकी सेना के सभी सैनिक भय से काँप रहे थे।

8शमूएल ने कहा कि वह शाऊल से गिलगाल में
मिलेगा। शाऊल ने वहाँ सात दिन तक प्रतीक्षा की।
किन्तु शमूएल तब भी गिलगाल नहीं पहुँचा था और
सैनिक शाऊल को छोड़ने लगे। 9इसलिए शाऊल ने
कहा, "मेरे लिए होमबलि और मेलबलि लाओ।" तब
शाऊल ने होमबलि चढ़ायी। 10ज्योंही शाऊल ने बलि-भेंट
चढ़ानी समाप्त की, शमूएल आ गया। शाऊल उससे
मिलने गया।

11शमूएल ने पूछा, "यह तुमने क्या कर दिया?" शाऊल
ने उत्तर दिया, "मैंने सैनिकों को अपने को छोड़ते देखा

तीन हजार हिब्रू पाठ में तीस हजार है।

और तुम तब तक यहाँ नहीं थे, और पलिश्ती मिकमाश
में इकट्ठा हो रहे थे।" 12मैंने अपने मन में सोचा,
"पलिश्ती यहाँ गिलगाल में आकर मुझ पर आक्रमण
करेंगे और मैंने अब तक यहोवा से हमारी सहायता
करने के लिये याचना नहीं की है। अत: मैंने अपने को
विवश किया और मैंने होमबलि चढ़ाई।"

13शमूएल ने कहा, "तुमने मूर्खता का काम किया!
तुमने अपने परमेश्वर यहोवा के आदेश का पालन नहीं
किया। यदि तुमने परमेश्वर के आदेश का पालन किया
होता तो परमेश्वर ने तुम्हारे परिवार को सदा के लिये
इस्राएल पर शासन करने दिया होता। 14किन्तु अब
तुम्हारा राज्य आगे नहीं चलेगा। यहोवा ऐसे व्यक्ति की
खोज में था जो उसकी आज्ञा का पालन करना चाहता
हो। यहोवा ने उस व्यक्ति को पा लिया है और यहोवा
उसे अपने लोगों का नया प्रमुख होने के लिये चुनेगा।
तुमने यहोवा के आदेश का पालन नहीं किया इसलिए
यहोवा नया प्रमुख चुनेगा।" 15तब शमूएल उठा और
उसने गिलगाल को छोड़ दिया।

मिकमाश का युद्ध

शाऊल और उसकी बची सेना ने गिलगाल को छोड़
दिया। वे बिन्यामीन में गिबा को गये। शाऊल ने उन
व्यक्तियों को गिना जो अब तक उसके साथ थे। वहाँ
लगभग छ: सौ पुरुष थे। 16 शाऊल, उसका पुत्र योनातान
और सैनिक बिन्यामीन में गिबा को गए। पलिश्तियों ने
मिकमाश में डेरा डाला था। 17पलिश्तियों ने उस क्षेत्र में
रहने वाले इस्राएलियों को दण्ड देने का निश्चय किया।
अत: उनकी शक्तिशाली सेना ने आक्रमण करने के
लिए अपना स्थान छोड़ दिया। पलिश्ती सेना तीन टुकड़ियों
में बँटी थी। एक टुकड़ी उत्तर को ओप्रा को जाने वाली
सड़क से शुआल के क्षेत्र में गई। 18दूसरी टुकड़ी
दक्षिण–पूर्व बेथोरोन को जाने वाली सड़क पर गई और
तीसरी टुकड़ी पूर्व में सीमा तक जाने वाली सड़क से
गई। यह सड़क सबोईम की घाटी में मरुभूमि की ओर
खुलतीथी।

19इस्राएली लोगों में से कोई भी लोहे की चीजें नहीं
बना सकता था। उन दिनों इस्राएल में लोहार नहीं थे।
पलिश्ती इस्राएलियों को लोहे की चीज़ें बनाना नहीं
सिखाते थे क्योंकि पलिश्ती डरते थे कि इस्राएली कहीं
लोहे की तलवारें और भाले न बनाने लग जायें। 20केवल
पलिश्ती ही लोहे के औजारों पर धार चढ़ा सकते थे।
अत: यदि इस्राएली अपने हल की फली, कुदाली, कुल्हाड़ी
या दँराती पर धार चढ़ाना चाहते तो उन्हें पलिश्तियों के
पास जाना पड़ता था। 21पलिश्ती लोहार एक तिहाई
औंस चाँदी हल की फली और कुदाली पर धार चढ़ाने
के लिये लेते थे और एक छटाई औंस चाँदी फावड़ी,
कुल्हाड़ी और बैलों को चलाने की साँटी के लोहे के
सिरे पर धार चढ़ाने के लिये लेते थे। 22इसलिए युद्ध के
दिन शाऊल के इस्राएली सैनिकों में से किसी के पास
लोहे की तलवार या भाले नहीं थे। केवल शाऊल और
उसके पुत्र योनातान के पास लोहे के शस्त्र थे।

23पलिश्ती सैनिकों की एक टुकड़ी मिकमाश के दर्रे
की रक्षा कर रही थी।

योनातान पलिश्तियों पर आक्रमण करता है

14 उस दिन, शाऊल का पुत्र योनातान उस युवक
से बात कर रहा था, जो उसके शस्त्रों को ले
कर चलता था। योनातान ने कहा, "हम लोग घाटी की
दूसरी ओर पलिश्तियों के डेरे पर चलें।" किन्तु योनातान
ने अपने पिता को नहीं बताया।

2शाऊल एक अनार के पेड़ के नीचे पहाड़ी के
सिरे* पर मिग्रोन में बैठा था। यह उस स्थान पर
खलिहान के निकट था। शाऊल के साथ उस समय
लगभग छ: सौ योद्धा थे। एक व्यक्ति का नाम अहिय्याह
था। 3एली शीलो में यहोवा का याजक रह चुका था।
अब वह अहिय्याह याजक था। अहिय्याह अब एपोद
पहनता था। अहिय्याह ईकाबोद के भाई अहीतूब का
पुत्र था। ईकाबोद पीनहास का पुत्र था। पीनहास एली
का पुत्र था।

4दर्रे के दोनों ओर एक विशाल चट्टान थी। योनातान
ने पलिश्ती डेरे में उस दर्रे से जाने की योजना बनाई।
विशाल चट्टान के एक तरफ बोसेस था और उस
विशाल चट्टान के दूसरी तरफ सेने था। 5एक विशाल
चट्टान उत्तर की मिकमाश को देखती सी खड़ी थी।
दूसरी विशाल चट्टान दक्षिण की तरफ गिबा की ओर
देखती सी खड़ी थी।

6योनातान ने अपने उस युवक सहायक से कहा जो
उस के शस्त्र को ले चलता था, "आओ, हम उन
विदेशियों के डेरे में चले। संभव है यहोवा हम लोगों का
उपयोग इन लोगों को पराजित करने में करे। यहोवा
को कोई नहीं रोक सकता इससे कोई अन्तर नहीं
पड़ता है कि हमारे पास बहुत से सैनिक हैं या थोड़े से
सैनिक।"

7योनातान के शस्त्र वाहक युवक ने उससे कहा,
"जैसा तुम सर्वोत्तम समझो करो। मैं सब तरह से तुम्हारे
साथ हूँ।"

8योनातान ने कहा, "हम चलें! हम लोग घाटी को
पार करेंगे और उन पलिश्ती रक्षकों तक जायेंगे। हम
लोग उन्हें अपने को देखने देंगे। 9यदि वे हमसे कहते हैं
'तुम वहीं रुको जब तक हम तुम्हारे पास आते हैं,' तो
हम लोग वहीं ठहरेंगे, जहाँ हम होंगे। हम उनके पास
नहीं जायेंगे। 10किन्तु यदि पलिश्ती लोग यह कहते हैं,

पहाड़ी का सिरा या "गिबा" का सिरा।"

'हमारे पास आओ' तो हम उनके पास तक चढ़ जायेंगे। क्यों? क्योंकि यह परमेश्वर की ओर से एक संकेत होगा। उसका अर्थ यह होगा कि यहोवा हम लोगों को उन्हें हराने देगा।"

11इसलिये योनातान और उसके सहायक ने अपने को पलिश्ती द्वारा देखने दिया। पलिश्ती रक्षकों ने कहा, "देखो! हिब्रू उन गड्ढों से निकल कर आ रहे हैं जिनमें वे छिपे थे।" 12किले के पलिश्ती योनातान और उसके सहायक के लिये चिल्लाये "हमारे पास आओ। हम तुम्हें अभी पाठ पढ़ाते हैं!" योनातान ने अपने सहायक से कहा, "पहाड़ी के ऊपर तक मेरा अनुसरण करो। यहोवा ने इस्राएल के लिये पलिश्तियों को दे दिया है!"

13-14इसलिये योनातान ने अपने हाथ और पैरों का उपयोग पहाड़ी पर चढ़ने के लिये किया। उसका सहायक ठीक उसके पीछे चढ़ा। योनातान और उसके सहायक ने उन पलिश्तियों को पराजित किया। पहले आक्रमण में उन्होंने लगभग आधे एकड़ क्षेत्र में बीस पलिश्तियों को मारा। योनातान उन लोगों से लड़ा जो सामने से आक्रमण कर रहे थे और योनातान का सहायक उसके पीछे से आया और उन व्यक्तियों को मारता चला गया जो अभी केवल घायल थे।

15सभी पलिश्ती सैनिक, रणक्षेत्र के सैनिक, डेरे के सैनिक और किले के सैनिक आतंकित हो गये। यहाँ तक की सर्वाधिक वीर योद्धा भी आतंकित हो गये। धरती हिलने लगी और पलिश्ती सैनिक भयानक ढंग से डर गये!

16शाऊल के रक्षकों ने बिन्यामीन देश में गिबा के पलिश्ती सैनिकों को विभिन्न दिशाओं में भागते देखा।
17शाऊल ने अपने साथ की सेना से कहा, "सैनिकों को गिनो। मैं यह जानना चाहता हूँ कि डेरे को किसने छोड़ा।" उन्होंने सैनिकों को गिना। योनातान और उसका सहायक चले गये थे।

18शाऊल ने अहिय्याह से कहा, "परमेश्वर की पवित्र सन्दूक लाओ!" (उस समय परमेश्वर का पवित्र सन्दूक इस्राएलियों के साथ था।) 19शाऊल याजक अहिय्याह से बातें कर रहा था। शाऊल परमेश्वर के मार्गदर्शन की प्रतीक्षा कर रहा था। किन्तु पलिश्ती डेरे में शोर और अव्यवस्था लगातार बढ़ती जा रही थी। शाऊल धैर्य खो रहा था। अन्त में शाऊल ने याजक अहिय्याह से कहा, "काफी हो चुका! अपने हाथ को नीचे करो और प्रार्थना करना बन्द करो!"

20शाऊल ने अपनी सेना इकट्ठी की और युद्ध में चला गया। पलिश्ती सैनिक सचमुच घबरा रहे थे! वे अपनी तलवारों से आपस में ही एक दूसरे से युद्ध कर रहे थे।

21वहाँ हिब्रू भी थे जो इसके पूर्व पलिश्तियों की सेवा में थे और जो पलिश्ती डेरे में रुके थे। किन्तु अब उन हिब्रुओं ने शाऊल और योनातान के साथ के इस्राएलों का साथ दिया। 22उन इस्राएलियों ने जो एप्रैम के पहाड़ी क्षेत्र में छिपे थे, पलिश्ती सैनिकों के भागने की बात सुनी। सो इन इस्राएलियों ने भी युद्ध में साथ दिया और पलिश्तियों का पीछा करना आरम्भ किया। 23इस प्रकार यहोवा ने उस दिन इस्राएलियों की रक्षा की। युद्ध बेतावेन के परे पहुँच गया। सारी सेना शाऊल के साथ थी, उसके पास लगभग दस हजार पुरुष थे। एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश के हर नगर में युद्ध का विस्तार हो गया था।

शाऊल दूसरी गलती करता है

24किन्तु शाऊल ने उस दिन एक बड़ी गलती की। इस्राएली भूखे और थके थे। यह इसलिए हुआ कि शाऊल ने लोगों को यह प्रतिज्ञा करने को विवश किया: शाऊल ने कहा, "यदि कोई व्यक्ति सन्ध्या होने से पहले भोजन करता है अथवा मेरे द्वारा शत्रु को पराजित करने के पहले भोजन करता है तो वह व्यक्ति दण्डित किया जाएगा!" इसलिए किसी भी इस्राएली सैनिक ने भोजन नहीं किया।

25-26 युद्ध के कारण लोग जंगलों में चले गए। उन्होंने वहाँ भूमि पर पड़ा एक शहद का छत्ता देखा। इस्राएली उस स्थान पर आए जहाँ शहद का छत्ता था। लोग भूखे थे, किन्तु उन्होंने तनिक भी शहद नहीं पिया। वे उस प्रतिज्ञा को तोड़ने से भयभीत थे। 27किन्तु योनातान उस प्रतिज्ञा के बारे में नहीं जानता था। योनातान ने यह नहीं सुना था कि उसके पिता ने उस प्रतिज्ञा को करने के लिये लोगों को विवश किया है। योनातान के हाथ में एक छड़ी थी। उसने शहद के छत्ते में उसके सिरे को धंसाया। उसने कुछ शहद निकाला और उसे चाटा और उसने अपने को स्वस्थ अनुभव किया।

28सैनिकों में से एक ने योनातान से कहा, "तुम्हारे पिता ने एक विशेष प्रतिज्ञा करने के लिये सैनिकों को विवश किया है। तुम्हारे पिता ने कहा है कि जो कोई आज खायेगा, दण्डित होगा। यही कारण है कि पुरूषों ने कुछ भी खाया नहीं। यही कारण है कि पुरुष कमजोर हैं।"

29योनातान ने कहा, "मेरे पिता ने लोगों के लिये परेशानी उत्पन्न की है! देखो इस जरा से शहद को चाटने से मैं कितना स्वस्थ अनुभव कर रहा हूँ! 30बहुत अच्छा होता कि लोग वह भोजन करते जो उन्होनें आज शत्रुओं से लिया था। हम बहुत अधिक पलिश्तियों को मार सकते थे!"

31उस दिन इस्राएलियों ने पलिश्तियों को हराया। वे उनसे मिकमाश से अय्यालोन तक के पूरे मार्ग पर लड़े। क्योंकि लोग बहुत भूखे और थके हुए थे। 32उन्होंने पलिश्तियों से भेड़ें, गायें और बछड़े लिये थे। उस समय इस्राएल के लोग इतने भूखे थे कि उन्होनें उन जानवरों

को जमीन पर ही मारा और उन्हें खाया। जानवरों में
तब तक खून था!
33एक व्यक्ति ने शाऊल से कहा, “देखो! लोग यहोवा
के विरुद्ध पाप कर रहे हैं। वे ऐसा माँस खा रहे हैं
जिसमें खून है!”
शाऊल ने कहा, “तुम लोगों ने पाप किया है! यहाँ
एक विशाल पत्थर लुढ़काकर लाओ।” **34**तब शाऊल
ने कहा, “लोगों के पास जाओ और कहो कि हर एक
व्यक्ति अपना बैल और भेड़ें मेरे पास यहाँ लाये। तब
लोगों को अपने बैल और भेड़ें यहाँ मारनी चाहिये।
यहोवा के विरुद्ध पाप मत करो। वह माँस न खाओ
जिसमें खून हो।” उस रात हर एक व्यक्ति अपने जानवरों
को लाया और उन्हें वहाँ मारा। **35**तब शाऊल ने यहोवा
के लिये एक वेदी बनाई। शाऊल ने यहोवा के लिये
स्वयं वह वेदी बनानी आरम्भ की!
36शाऊल ने कहा, “हम लोग आज रात को पलिश्तियों
का पीछा करें। हम लोग हर वस्तु ले लेंगे। हम उन
सभी को मार डालेंगे।” सेना ने उत्तर दिया, “वैसे ही
करो जैसे तुम ठीक समझते हो।” किन्तु याजक ने
कहा, “हमें परमेश्वर से पूछने दो।”
37अत: शाऊल ने परमेश्वर से पूछा, “क्या मुझे
पलिश्तियों का पीछा करने जाना चाहिए? क्या तू हमें
पलिश्तियों को हराने देगा?” किन्तु परमेश्वर ने शाऊल
को उस दिन उत्तर नहीं दिया।
38इसलिए शाऊल ने कहा, “मेरे पास सभी प्रमुखों
को लाओ। हम लोग मालूम करें कि आज किसने पाप
किया है। **39**मैं इस्राएल की रक्षा करने वाले यहोवा की
शपथ खा कर यह प्रतिज्ञा करता हूँ। यदि मेरे अपने पुत्र
योनातान ने भी पाप किया हो तो वह अवश्य मरेगा।”
सेना में किसी ने भी कुछ नहीं कहा।
40तब शाऊल ने सभी इस्राएलियों से कहा, “तुम लोग
इस ओर खड़े हो। मैं और मेरा पुत्र योनातान दूसरी ओर
खड़े होगें।” सैनिकों ने उत्तर दिया, “महाराज! आप जैसा
चाहें।”
41तब शाऊल ने प्रार्थना की, “इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा, मैं तेरा सेवक हूँ आज तू मुझे उत्तर क्यों नहीं दे
रहा है? यदि मैंने या मेरे पुत्र योनातान ने पाप किया है
तो इस्राएल के परमेश्वर यहोवा तू उरीम दे और यदि
तेरे लोग इस्राएलियों ने पाप किया है तो तुम्मिम दें।
शाऊल और योनातान धर लिए गए और लोग छूट
गए। **42**शाऊल ने कहा, “उन्हें फिर से फेंको कि कौन
पाप करनेवाला है मैं या मेरा पुत्र योनातान।” योनातान
चुन लिया गया।
43शाऊल ने योनातान से कहा, “मुझे बताओ कि
तुमने क्या किया है?” योनातान ने शाऊल से कहा,
“मैंने अपनी छड़ी के सिरे से केवल थोड़ा सा शहद चाटा
था। क्या मुझे वह करने के कारण मरना चाहिये?”
44शाऊल ने कहा, “यदि मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरा नहीं
करता हूँ तो परमेश्वर मेरे लिये बहुत बुरा करे। योनातान
को मरना चाहिये!”
45किन्तु सैनिकों ने शाऊल से कहा, “योनातान ने
आज इस्राएल को बड़ी विजय तक पहुँचाया। क्या
योनातान को मरना ही चाहिए? कभी नहीं! हम लोग
परमेश्वर की शपथ खाकर वचन देते हैं कि योनातान
का एक बाल भी बाँका नहीं होगा। परमेश्वर ने आज
पलिश्तियों के विरुद्ध लड़ने में योनातान की सहायता
की है!” इस प्रकार लोगों ने योनातान को बचाया। उसे
मृत्युदण्ड नहीं दिया गया।
46शाऊल ने पलिश्तियों का पीछा नहीं किया। पलिश्ती
अपने स्थान को लौट गये।

शाऊल का इस्राएल के शत्रुओं से युद्ध

47शाऊल ने इस्राएल पर पूरा अधिकार जमा लिया
और दिखा दिया कि वह राजा है। शाऊल इस्राएल के
चारों ओर रहने वाले शत्रुओं से लड़ा। शाऊल, अम्मोनी,
मोआबी, सोबा के राजा एदोम, और पलिश्तियों से लड़ा।
जहाँ कहीं शाऊल गया, उसने इस्राएल के शत्रुओं को
पराजित किया। **48**शाऊल बहुत वीर था। उसने
अमालेकियों को हराया। शाऊल ने इस्राएल को
उसके उन शत्रुओं से बचाया जो इस्राएल के लोगों से
उनकी सम्पत्ति छीन लेना चाहते थे। **49**शाऊल के पुत्र
थे योनातान, यिशवी और मलकीश। शाऊल की बड़ी
पुत्री का नाम मेरब था। शाऊल की छोटी पुत्री का नाम
मीकल था। **50**शाऊल की पत्नी का नाम अहीनोअम
था। अहीनोअम अहीमास की पुत्री थी।
शाऊल की सेना के सेनापति का नाम अब्नेर था,
जो नेर का पुत्र था। नेर शाऊल का चाचा था। **51**शाऊल
का पिता कीश और अब्नेर का पिता नेर,अबीएल के
पुत्र थे।
52शाऊल अपने जीवन भर वीर रहा और पलिश्तियों
के विरुद्ध दृढ़ता से लड़ा। शाऊल जब भी कभी किसी
व्यक्ति को ऐसा वीर देखता जो शक्तिशाली होता तो वह
उसे ले लेता और उसे उन सैनिकों की टुकड़ी में रखता
जो उसके समीप रहते और उसकी रक्षा करते थे।

शाऊल का अमालेकियों को नष्ट करना

15 शमूएल ने शाऊल से कहा, “यहोवा ने मुझे
अपने इस्राएली लोगों पर राजा के रूप में तुम्हारा
अभिषेक करने के लिये भेजा था। अब यहोवा का
सन्देश सुनो। **2**सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है: ‘जब इस्राएली
मिस्र से बाहर आये तब अमालेकियों ने उन्हें कनान
पहुँचाने से रोकने का प्रयत्न किया। मैंने देखा कि
अमालेकियों ने उन्हें क्या किया। **3**अब जाओ और
अमालेकियों से युद्ध करो। तुम्हें अमालेकियों और उनकी

सभी चीज़ों को पूरी तरह नष्ट कर देना चाहिये। कुछ
भी जीवित न रहने दो, तुम्हें सभी पुरुषों और स्त्रियों को
मार डालना चाहिये। तुम्हें सभी बच्चों और शिशुओं को
मार डालना चाहिए। तुम्हें उनकी सभी गायों, भेड़ों,
ऊँटों और गधों को मार डालना चाहिये।'"

4शाऊल ने तलाईम में सेना एकत्रित की। उसमें दो
लाख पैदल सैनिक और दस हजार अन्य सैन्य पुरुष थे।
इनमें यहूदा के लोग भी सम्मिलित थे। 5तब शाऊल
अमालेक नगर को गया और वहाँ उसने घाटी में
उनकी प्रतीक्षा की। 6शाऊल ने केनियों से कहा, "चले
जाओ, अमालेकियों को छोड़ दो। तब मैं तुम लोगों
को अमालेकियों के साथ नष्ट नहीं करूँगा। तुम लोगों
ने इस्राएलियों के प्रति दया दिखाई थी जब वे मिस्र से
आये थे।" इसलिए केनी लोगों ने अमालेकियों को
छोड़ दिया।

7शाऊल ने अमालेकियों को हराया। उसने उनसे
हवीला से मिस्र की सीमा शूर तक निरन्तर युद्ध किया।
8शाऊल ने अगाग को जीवित पकड़ लिया। अगाग
अमालेकियों का राजा था। अगाग की सेना के सभी
व्यक्तियों को शाऊल ने मार डाला। 9किन्तु शाऊल
और इस्राएल के सैनिकों ने अगाग को जीवित रहने
दिया। उन्होंने सर्वोत्तम भेड़ों, मोटी तगड़ी गायों और
मेमनों को भी रख लिया। उन्होंने रखने योग्य सभी
चीज़ों को रख लिया और उन्होंने उन सभी चीज़ों को
नष्ट कर दिया जो किसी काम की न थी।

शमूएल का शाऊल को उसके पाप के बारे में बताना

10शमूएल को यहोवा का सन्देश आया। 11यहोवा ने
कहा, "शाऊल ने मेरा अनुसरण करना छोड़ दिया है।
इसलिए मुझे इसका अफसोस है कि मैंने उसे राजा
बनाया। वह उन कामों को नहीं कर रहा है जिन्हें
करने का आदेश मैं उसे देता हूँ।" शमूएल भड़क उठा
और फिर उसने रात भर यहोवा की प्रार्थना की।
12शमूएल अगले सवेरे उठा और शाऊल से मिलने
गया। किन्तु लोगों ने बताया, "शाऊल यहूदा में कर्मेल
नामक नगर को गया है। शाऊल वहाँ अपने सम्मान में
एक पत्थर की यादगार बनाने गया था। तब शाऊल ने
कई स्थानों की यात्रा की और अन्त में गिलगाल को
चला गया।"

इसलिये शमूएल वहाँ गया जहाँ शाऊल था। शाऊल
ने अमालेकियों से ली गई चीज़ों का पहला भाग ही भेंट
में चढ़ाया था। शाऊल उन्हें होम बलि के रूप में यहोवा
को भेंट चढ़ा रहा था। 13शमूएल शाऊल के पास पहुँचा।
शाऊल ने कहा, स्वागत, "यहोवा आपको आशीर्वाद दे!
मैंने यहोवा के आदेशों का पालन किया है।" 14किन्तु
शमूएल ने कहा, "तो मैं ये आवाजें क्या सुन रहा हूँ? मैं
भेड़ और पशुओं की आवाज क्यों सुन रहा हूँ?"

15शाऊल ने उत्तर दिया, "सैनिकों ने उन्हें अमालेकियों
से लिया। सैनिकों ने सर्वोत्तम भेड़ों और पशुओं को
तुम्हारे परमेश्वर यहोवा को बलि के रूप में जलाने के
लिए बचा लिया है। किन्तु हम लोगों ने अन्य सभी चीज़ों
को नष्ट कर दिया है।"

16शमूएल ने शाऊल से कहा, "रुको! मुझे तुमसे वही
कहने दो जिसे पिछली रात यहोवा ने मुझसे कहा है।"
शाऊल ने उत्तर दिया, "मुझे बताओ।"

17शमूएल ने कहा, "बीते समय में, तुमने यही सोचा
था कि तुम महत्वपूर्ण नहीं हो। किन्तु तब भी तुम
इस्राएल के परिवार समूहों के प्रमुख बन गए। यहोवा ने
तुम्हें इस्राएल का राजा चुना। 18यहोवा ने तुम्हें एक
विशेष सेवाकार्य के लिये भेजा। यहोवा ने कहा, 'जाओ
और उन सभी बुरे अमालेकियों को नष्ट करो! उनसे
तब तक लड़ते रहो जब तक वे नष्ट न हो जायें!'
19किन्तु तुमने यहोवा की नहीं सुनी। तुम उन चीजों को
रखना चाहते थे। इसलिये तुमने वह किया जिसे यहोवा
ने बुरा कहा!"

20शाऊल ने कहा, "किन्तु मैंने तो यहोवा की
आज्ञा का पालन किया। मैं वहाँ गया जहाँ यहोवा ने
मुझे भेजा। मैंने सभी अमालेकियों को नष्ट किया।
मैं केवल उनके राजा अगाग को वापस लाया। 21सैनिकों
ने सर्वोत्तम भेड़ें और पशु गिलगाल में तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा को बलि देने के लिये चुने।"

22किन्तु शमूएल ने उत्तर दिया, "यहोवा को इन दो में
से कौन अधिक प्रसन्न करता है: होमबलियाँ और
बलियाँ या यहोवा की आज्ञा का पालन करना? यह
अधिक अच्छा है कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन
किया जाय इसकी अपेक्षा कि उसे बलि–भेंट की जाये।
यह अधिक अच्छा है कि परमेश्वर की बातें सुनी जाये
इसकी अपेक्षा कि मेढों से चर्बी–भेंट की जाय। 23आज्ञा
के पालन से इन्कार करना जादूगरी करने के पाप जैसा
है। हठी होना और मनमानी करना मूर्तियों की पूजा
करने जैसा पाप है। तुमने यहोवा की आज्ञा मानने से
इन्कार किया। इसी कारण यहोवा अब तुम्हें राजा के
रूप में स्वीकार करने से इन्कार करता है।"

24तब शाऊल ने शमूएल से कहा, "मैंने पाप किया
है। मैंने यहोवा के आदेशों को नहीं माना है और मैंने
वह नहीं किया है जो तुमने करने को कहा। मैं लोगों से
डरता था इसलिए मैंने वह किया जो उन्होंने कहा।
25अब मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरे पाप को क्षमा करो।
मेरे साथ लौटो जिससे मैं यहोवा की उपासना कर
सकूँ।"

26किन्तु शमूएल ने शाऊल से कहा, "मैं तुम्हारे साथ
नहीं लौटूँगा। तुमने यहोवा के आदेश को नकारा है
और अब यहोवा तुम्हें इस्राएल के राजा के रूप में
नकार रहा है।"

27जब शमूएल उसे छोड़ने के लिये मुड़ा, शाऊल ने
शमूएल के लबादे को पकड़ लिया। लबादा फट गया।
28शमूएल ने शाऊल से कहा, "तुमने मेरे लबादे को
फाड़ दिया। इसी प्रकार यहोवा ने आज इस्राएल के राज्य
को तुमसे फाड़ दिया है। यहोवा ने राज्य तुम्हारे मित्रों में
से एक को दे दिया है। वह व्यक्ति तुमसे अच्छा है।
29यहोवा इस्राएल का परमेश्वर है। यहोवा शाश्वत है।
यहोवा न तो झूठ बोलता है, न ही अपना मन बदलता
है। यहोवा मनुष्य की तरह नहीं है जो अपने इरादे
बदलते हैं।"

30शाऊल ने उत्तर दिया, "ठीक है, मैंने पाप किया!
किन्तु कृपया मेरे साथ लौटो। इस्राएल के लोगों और
प्रमुखों के सामने मुझे कुछ सम्मान दो। मेरे साथ लौटो
जिससे मैं तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की उपासना कर
सकूँ।" 31शमूएल शाऊल के साथ लौट गया और शाऊल
ने यहोवा की उपासना की।

32शमूएल ने कहा, "अमालेकियों के राजा अगाग,
को मेरे पास लाओ।" अगाग शमूएल के सामने आया।
अगाग जंजीरों में बंधा था। अगाग ने सोचा, "निश्चय ही
यह मुझे मारेगा नहीं।"

33किन्तु शमूएल ने अगाग से कहा, "तुम्हारी तलवारों
ने बच्चों को उनकी माताओं से छीना। अत: अब तुम्हारी
माँ का कोई बच्चा नहीं रहेगा।" और शमूएल ने गिलगाल
में यहोवा के सामने अगाग के टुकड़े-टुकड़े कर डाले।
34तब शमूएल वहाँ से चला और रामा पहुँचा और
शाऊल अपने घर गिबा को गया। 35उसके बाद शमूएल
ने अपने पूरे जीवन में शाऊल को नहीं देखा। शमूएल
शाऊल के लिये बहुत दुःखी रहा और यहोवा को बड़ा
दुःख था कि उसने शाऊल को इस्राएल का राजा बनाया।

शमूएल का बेतलेहेम को जाना

16 यहोवा ने शमूएल से कहा, "तुम शाऊल के
लिये कब तक दुःखी रहोगे? मैंने शाऊल को
इस्राएल का राजा होना अस्वीकार कर दिया है! अपनी
सींग तेल से भरो और चल पड़ो। मैं तुम्हें यिशै नाम के
एक व्यक्ति के पास भेज रहा हूँ। यिशै बेतलेहेम में रहता
है। मैंने उसके पुत्रों में से एक को नया राजा चुना है।"

2किन्तु शमूएल ने कहा, "यदि मैं जाऊँ, तो शाऊल
इस समाचार को सुनेगा। तब वह मुझे मार डालने का
प्रयत्न करेगा।"

यहोवा ने कहा, "बेतलेहेम जाओ। एक बछड़ा अपने
साथ ले जाओ। यह कहो, 'मैं यहोवा को बलि चढ़ाने
आया हूँ।' 3यिशै को बलि के समय आमंत्रित करो। तब
मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम्हें क्या करना है। तुम्हें उस
व्यक्ति का अभिषेक करना चाहिये जिसे मैं दिखाऊँ।"

4शमूएल ने वही किया जो यहोवा ने उसे करने को
कहा था। शमूएल बेतलेहेम गया। बेतलेहेम के बुजुर्ग
भय से काँप उठे। वे शमूएल से मिले और उन्होंने उससे
पूछा, "क्या आप शान्तिपूर्वक आए हैं?"

5शमूएल ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं शान्तिपूर्वक आया हूँ।
मैं यहोवा को बलि-भेंट करने आया हूँ। अपने को
तैयार करो और मेरे साथ बलि-भेंट में आओ।" शमूएल
ने यिशै और उसके पुत्रों को तैयार किया। तब शमूएल
ने उन्हें आने और बलि-भेंट में भाग लेने के लिये
आमन्त्रित किया। 6जब यिशै और उसके पुत्र आए, तो
शमूएल ने एलीआब को देखा। शमूएल ने सोचा, "निश्चय
ही यही वह व्यक्ति है जिसे यहोवा ने चुना है। 7किन्तु
यहोवा ने शमूएल से कहा, "एलीआब लम्बा और सुन्दर
है किन्तु उसके बारे में मत सोचो। एलीआब लम्बा है
किन्तु उसके बारे में मत सोचो। परमेश्वर उस चीज़ को
नहीं देखता जिसे साधारण व्यक्ति देखते हैं। लोग व्यक्ति
के बाहरी रूप को देखते हैं, किन्तु यहोवा व्यक्ति के
हृदय को देखता है। एलीआब उचित व्यक्ति नहीं है।"

8तब यिशै ने अपने दूसरे पुत्र अबीनादाब को बुलाया।
अबीनादाब शमूएल के पास से गुजरा। किन्तु शमूएल ने
कहा, "नहीं, यह भी वह व्यक्ति नहीं है कि जिसे यहोवा
ने चुना है।"

9तब यिशै ने शम्मा को शमूएल के पास से गुजरने
को कहा। किन्तु शमूएल ने कहा, "नहीं, यहोवा ने इस
व्यक्ति को भी नहीं चुना है।"

10यिशै ने अपने सात पुत्रों को शमूएल को दिखाया।
किन्तु शमूएल ने यिशै को कहा, "यहोवा ने इन व्यक्तियों
में से किसी को भी नहीं चुना है।"

11तब शमूएल ने यिशै से पूछा, "क्या तुम्हारे सभी पुत्र
ये ही हैं?" यिशै ने उत्तर दिया,"नहीं, मेरा सबसे छोटा
एक और पुत्र है, किन्तु वह भेड़ों की रखवाली कर रहा
है।" शमूएल ने कहा, "उसे बुलाओ। उसे यहाँ लाओ।
हम लोग तब तक खाने नहीं बैठेंगे जब तक वह आ
नहीं जाता।"

12यिशै ने किसी को अपने सबसे छोटे पुत्र को लाने
के लिये भेजा। यह पुत्र सुन्दर और सुनहरे बालों वाला*
युवक था। यह बहुत सुन्दर था। यहोवा ने शमूएल से
कहा, "उठो, इसका अभिषेक करो। यही है वह।"

13शमूएल ने तेल से भरा सींग उठाया और उस
विशेष तेल को यिशै के सबसे छोटे पुत्र के सिर पर
उसके भाईयों के सामने डाल दिया। उस दिन से यहोवा
की आत्मा दाऊद पर तीव्रता से आती रही। तब शमूएल
रामा को लौट गया।

दुष्टात्मा का शाऊल को परेशान करना

14यहोवा की आत्मा ने शाऊल को त्याग दिया। तब
यहोवा ने शाऊल पर एक दुष्टात्मा भेजी। उसने उसे

सुनहरेबालों वाला अथवा "पीत-रक्त रंग का" हिब्रू शब्द का अर्थ "लाल" है।

बहुत परेशान किया।15सेवकों ने शाऊल से कहा,
“परमेश्वर के द्वारा भेजी एक दुष्टात्मा तुमको परेशान
कर रही है। 16हम लोगों को आदेश दो कि हम लोग
किसी की खोज करे जो वीणा बजायेगा। यदि दुष्टात्मा
यहोवा के यहाँ से तुम्हारे ऊपर आई है तो जब वह
व्यक्ति वीणा बजायेगा तब वह दुष्टआत्मा तुमको अकेला
छोड़ देगी और तुम स्वस्थ अनुभव करोगे।”

17अत: शाऊल ने अपने सेवकों से कहा, “ऐसे
व्यक्ति की खोज करो जो वीणा अच्छी बजाता है और
उसे मेरे पास लाओ।”

18सेवकों में से एक ने कहा, “बेतलेहेम में रहने वाला
यिशै नाम का एक व्यक्ति है। मैंने यिशै के पुत्र को देखा
है। वह जानता है कि वीणा कैसे बजाई जाती है। वह
एक वीर व्यक्ति भी है और अच्छी प्रकार लड़ता है। वह
जागरूक है। वह सुन्दर है और यहोवा उसके साथ है।”

19इसलिये शाऊल ने यिशै के पास दूत भेजा। उन्होंने
यिशै से वह कहा जो शाऊल ने कहा था। “तुम्हारा पुत्र
दाऊद नाम का है। वह तुम्हारी भेड़ों की रखवाली
करता है। उसे मेरे पास भेजो।”

20फिर यिशै ने शाऊल को भेंट करने के लिये कुछ
चीज़ें तैयार की। यिशै ने एक गधा, कुछ रोटियाँ और
एक मशक दाखमधु और एक बकरी का बच्चा लिया।
यिशै ने वे चीज़ें दाऊद को दी, और उसे शाऊल के
पास भेज दिया। 21इस प्रकार दाऊद शाऊल के पास
गया और उसके सामने खड़ा हुआ। शाऊल ने दाऊद
से बहुत स्नेह किया। फिर दाऊद ने शाऊल को अपना
शस्त्रवाहक बना लिया। 22शाऊल ने यिशै के पास
सूचना भेजी, “दाऊद को मेरे पास रहने और मेरी सेवा
करने दो। वह मुझे बहुत पसन्द करता है।”

23जब कभी परमेश्वर की ओर से आत्मा शाऊल
पर आती, तो दाऊद अपनी वीणा उठाता और उसे
बजाने लगता। दुष्ट आत्मा शाऊल को छोड़ देती और
वह स्वस्थ अनुभव करने लगता।

गोलियत का इस्राएल को चुनौती देना

17 पलिश्तियों ने अपनी सेना युद्ध के लिये इकट्ठी
की। वे यहूदा स्थित सोको में युद्ध के लिए
एकत्र हुए। उनका डेरा सोको और अजेका के बीच
एपेसदम्मीम नामक नगर में था।

2शाऊल और इस्राएली सैनिक भी वहाँ एक साथ
एकत्रित हुए। उनका डेरा एला की घाटी में था। शाऊल
के सैनिक मोर्चा लगाये पलिश्तियों से युद्ध करने के
लिये तैयार थे। 3पलिश्ती एक पहाड़ी पर थे और इस्राएली
दूसरी पर। घाटी इन दोनों पहाड़ियों के बीच में थी।

4पलिश्तियों में एक गोलियत नाम का अजेय योद्धा
था। गोलियत गत का था। गोलियत लगभग नौ फीट
ऊँचा था। गोलियत पलिश्ती डेरे से बाहर आया। 5उसके
सिर पर काँसे का टोप था। उसने पट्टीदार कवच का
कोट पहन रखा था। यह कवच काँसे का बना था और
इसका तौल लगभग एक सौ पच्चीस पौंड* था। 6गोलियत
ने अपने पैरों में काँसे के रक्षा कवच पहने थे। उसके
पास काँसे का भाला था जो उसकी पीठ पर बंधा था।
7गोलियत के भाले का फल जुलाहे की छड़ की तरह
था। भाले की फल की तोल पन्द्रह पौंड थी। गोलियत
का सहायक गोलियत की ढाल को लिये हुए उसके
आगे-आगे चल रहा था।

8गोलियत बाहर निकला और उसने इस्राएली सैनिकों
को जोर से पुकार कर कहा, “तुम्हारे सभी सैनिक युद्ध
के लिये मोर्चा क्यों लगाये हुए हैं? तुम शाऊल के सेवक
हो। मैं एक पलिश्ती हूँ। इसलिये किसी एक व्यक्ति को
चुनों और उसे मुझसे लड़ने को भेजो। 9यदि वह व्यक्ति
मुझे मार डालता है तो हम पलिश्ती तुम्हारे दास हो
जाएंगे। किन्तु यदि मैं उसे जीत लूँ और तुम्हारे व्यक्ति
को मार डालूँ तो तुम हमारे दास हो जाना। तब तुम
हमारी सेवा करोगे!”

10पलिश्ती ने यह भी कहा, “आज मैं खड़ा हूँ और
इस्राएल की सेना का मजाक उड़ा रहा हूँ! मुझे अपने में
से एक के साथ लड़ने दो!”

11शाऊल और इस्राएली सैनिकों ने जो गोलियत कहा
था, उसे सुना और वे बहुत भयभीत हो उठे।

दाऊद का युद्ध क्षेत्र को जाना

12दाऊद यिशै का पुत्र था। यिशै एप्राती परिवार के
यहूदा बेतलेहेम से था। यिशै के आठ पुत्र थे। शाऊल
के समय में यिशै एक बूढ़ा आदमी था। 13यिशै के तीन
बड़े पुत्र शाऊल के साथ युद्ध में गये थे। प्रथम पुत्र
एलीआब था। दूसरा पुत्र अबीनादाब था और तीसरा पुत्र
शम्मा था। 14दाऊद सबसे छोटा पुत्र था। तीनों पुत्र शाऊल
की सेना में थे। 15किन्तु दाऊद कभी-कभी बेतलेहेम
में अपने पिता की भेड़ों की रखवाली के लिये शाऊल
के पास से चला जाता था।

16पलिश्ती गोलियत हर एक प्रात: एवं सन्ध्या को
बाहर आता था और इस्राएल की सेना के सामने खड़ा
हो जाता था। गोलियत ने चालीस दिन तक इस प्रकार
इस्राएल का मजाक उड़ाया।

17एक दिन यिशै ने अपने पुत्र दाऊद से कहा, “पके
अन्न की टोकरी और इन दस रोटियों को डेरे में अपने
भाईयों के पास ले जाओ। 18पनीर की इन दस पिंडियों
को भी एक हजार सैनिकों वाली अपने भाई की टुकड़ी
के संचालक अधिकारी के लिये ले जाओ। देखो कि
तुम्हारे भाई कैसे हैं। कुछ ऐसा लाओ जिससे मुझे पता
चले कि तुम्हारे भाई ठीक-ठाक हैं। 19तुम्हारे भाई

एक सौ पच्चीस पौंड शाब्दिक “पाँच हजार शेकेल।”

शाऊल के साथ हैं और इस्राएल के सारे सैनिक एला
घाटी में हैं। वे पलिश्तियों के विरुद्ध लड़ रहे हैं।"
20सवेरे तड़के ही दाऊद, ने भेड़ों की रखवाली दूसरे
गड़रिये को सौंपी। दाऊद ने भोजन लिया और वहाँ के
लिए चल पड़ा जहाँ के लिये यिशै ने कहा था। दाऊद
अपनी गाड़ी को डेरे में ले गया। उस समय सैनिक
लड़ाई में अपने मोर्चे संभालने जा रहे थे जब दाऊद वहाँ
पहुँचा। सैनिक अपना युद्ध उद्घोष करने लगे। 21इस्राएली
और पलिश्ती अपने पुरुषों को युद्ध में एक-दूसरे से
भिड़ने के लिये इकट्ठा कर रहे थे।

22दाऊद ने भोजन और चीजों को उस व्यक्ति के पास
छोड़ा जो सामग्री का वितरण करता था। दाऊद दौड़
कर उस स्थान पर पहुँचा जहाँ इस्राएली सैनिक थे।
दाऊद ने अपने भाईयों के विषय में पूछा। 23दाऊद ने
अपने भाईयों के साथ बात करनी आरम्भ की। उसी
समय वह पलिश्ती वीर योद्धा जिसका नाम गोलियत था
और जो गत का निवासी था, पलिश्ती सेना से बाहर
आया। पहले की तरह गोलियत ने इस्राएल के विरुद्ध
वही बातें चिल्लाकर कहीं। 24इस्राएली सैनिकों ने गोलियत
को देखा और वे भाग खड़े हुए। वे सभी उससे भयभीत
थे।

25इस्राएली व्यक्तियों में से एक ने कहा, "अरे लोगों,
तुममें से किसी ने उसे देखा है! उसे देखो! वह गोलियत
आ रहा है जो बार-बार इस्राएल का मजाक उड़ाता है।
जो कोई उस व्यक्ति को मार देगा, धनी हो जायेगा! राजा
शाऊल उसे बहुत धन देगा। शाऊल अपनी पुत्री का
विवाह भी उस व्यक्ति से कर देगा, जो गोलियत को
मारेगा और शाऊल उस व्यक्ति के परिवार को इस्राएल
में स्वतन्त्र कर देगा।"

26दाऊद ने समीप खड़े आदमी से पूछा, "उसने क्या
कहा? इस पलिश्ती को मारने और इस्राएल के इस
अपमान को दूर करने का पुरस्कार क्या है? अन्तत:
यह गोलियत है ही क्या? यह बस एक विदेशी मात्र है।
गोलियत एक पलिश्ती से अधिक कुछ नहीं। वह क्यों
सोचता है कि वह साक्षात् परमेश्वर की सेना के विरुद्ध
बोल सकता है?"

27इसलिए इस्राएलियों ने गोलियत को मारने के लिये
पुरस्कार के बारे में बताया। 28दाऊद के बड़े भाई
एलीआब ने दाऊद को सैनिकों से बातें करते सुना।
एलीआब दाऊद पर क्रोधित हुआ। एलीआब ने दाऊद से
पूछा, "तुम यहाँ क्यों आये? मरुभूमि में उन थोड़ी सी
भेड़ों को किस के पास छोड़कर आये हो? मैं जानता हूँ
कि तुम यहाँ क्यों आये हो! तुम वह करना नहीं चाहते
जो तुमसे करने को कहा गया था। तुम केवल यहाँ युद्ध
देखने के लिये आना चाहते थे!"

29दाऊद ने कहा, "ऐसा मैंने क्या किया है? मैंने कोई
गलती नहीं की! मैं केवल बातें कर रहा था।" 30दाऊद
दूसरे लोगों की तरफ मुड़ा और उनसे वे ही प्रश्न किये।
उन्होंने दाऊद को वे ही पहले जैसे उत्तर दिये।

31कुछ व्यक्तियों ने दाऊद को बातें करते सुना। उन्होंने
दाऊद के बारे में शाऊल से कहा। शाऊल ने आदेश
दिया कि वे दाऊद को उसके पास लाएं। 32दाऊद ने
शाऊल से कहा, "किसी व्यक्ति को उसके कारण
हतोत्साहित मत होने दो। मैं आपका सेवक हूँ। मैं इस
पलिश्ती से लड़ने जाऊँगा।"

33शाऊल ने उत्तर दिया, "तुम नहीं जा सकते और
इस पलिश्ती गोलियत से नहीं लड़ सकते। तुम सैनिक
भी नहीं हो!* तुम अभी बच्चे हो और गोलियत जब
बच्चा था, तभी से युद्धों में लड़ रहा है।"

34किन्तु दाऊद ने शाऊल से कहा, "मैं आपका सेवक
हूँ और मैं अपने पिता की भेड़ों की रखवाली भी करता
रहा हूँ। यदि कोई शेर या रीछ आता और झुंड से किसी
भेड़ को उठा ले जाता। 35तो मैं उसका पीछा करता था।
मैं उस जंगली जानवर पर आक्रमण करता था और
उसके मुँह से भेड़ को बचा लेता था और उससे युद्ध
करता था तथा उसे मार डालता था। 36मैंने एक शेर
और एक रीछ को मार डाला है! मैं उस विदेशी गोलियत
को वैसे ही मार डालूँगा। गोलियत मरेगा, क्योंकि उसने
साक्षात परमेश्वर की सेना का मजाक उड़ाया है। 37यहोवा
ने मुझे शेर और रीछ से बचाया है। यहोवा इस पलिश्ती
गोलियत से भी मेरी रक्षा करेगा।"

शाऊल ने दाऊद से कहा, "जाओ यहोवा तुम्हारे साथ
हो।" 38शाऊल ने अपने वस्त्र दाऊद को पहनाये। शाऊल
ने एक काँसे का टोप दाऊद के सिर पर रखा और
उसके शरीर पर कवच पहनाया। 39दाऊद ने तलवार
ली और चारों ओर चलने का प्रयत्न किया। इस प्रकार
दाऊद ने शाऊल की वर्दी को पहनने का प्रयत्न किया।
किन्तु दाऊद को उन भारी चीज़ों को पहनने का अभ्यास
नहीं था। दाऊद ने शाऊल से कहा, "मैं इन चीज़ों के
साथ नहीं लड़ सकता। मेरा अभ्यास इनके लिये नहीं
है।" इसलिये दाऊद ने उन सब को उतार दिया। 40दाऊद
ने अपनी छड़ी अपने हाथों में ली। घाटी से दाऊद ने
पाँच चिकने पत्थर चुने। उसने पाँचों पत्थरों को अपने
गड़रिये वाले थैले में रखा। उसने अपना गोफन (गुलेल)
अपने हाथों में लिया और वह पलिश्ती (गोलियत) से
मिलने चल पड़ा।

दाऊद, गोलियत को मार डालता है

41पलिश्ती (गोलियत) धीरे-धीरे दाऊद के समीप
और समीपतर होता गया। गोलियत का सहायक उसकी
ढाल लेकर उसके आगे चल रहा था। 42गोलियत ने

तुम सैनिक ... हो या "तुम केवल लड़के हो।" हिब्रू में प्राय: "लड़का" शब्द का अर्थ "सेवक" है या सैनिक का "शस्त्रवाहक" है।

दाऊद को देखा और हँसा। गोलियत ने देखा कि दाऊद
सैनिक नहीं है। वह तो केवल सुनहरे बालों वाला युवक
है। 43गोलियत ने दाऊद से कहा, "यह छड़ी किस लिये
है? क्या तुम कुत्ते की तरह मेरा पीछा करके मुझे
भगाने आये हो?" तब गोलियत ने अपने देवताओं का
नाम लेकर दाऊद के विरुद्ध अपशब्द कहे। 44गोलियत
ने दाऊद से कहा, "यहाँ आओ, मैं तुम्हारे शरीर को
पक्षियों और पशुओं को खिला दूँगा!"

45दाऊद ने पलिश्ती (गोलियत) से कहा, "तुम मेरे
पास तलवार, बर्छा और भाला चलाने आये हो। किन्तु मैं
तुम्हारे पास इस्राएल की सेना के परमेश्वर सर्वशक्तिमान
यहोवा के नाम पर आया हूँ। तुमने उसके विरुद्ध बुरी
बातें कहीं हैं। 46आज यहोवा तुमको मेरे द्वारा पराजित
कराएगा। मैं तुमको मार डालूँगा। आज मैं तुम्हारा सिर
काट डालूँगा और तुम्हारे शरीर को पक्षियों और जंगली
जानवरों को खिला दूँगा। हम लोग अन्य पलिश्तियों के
साथ भी यही करेंगे। तब सारा संसार जानेगा कि
इस्राएल में परमेश्वर है! 47यहाँ इकट्ठे सभी लोग जानेंगे
कि लोगों की रक्षा के लिये यहोवा को तलवार और
भाले की आवश्यकता नहीं। युद्ध यहोवा का है और
यहोवा तुम सभी पलिश्तियों को हराने में हमारी सहायता
करेगा।"

48पलिश्ती (गोलियत) दाऊद पर आक्रमण करने
उसके पास आया। दाऊद गोलियत से भिड़ने के लिये
तेजी से दौड़ा 49दाऊद ने एक पत्थर अपने थैले से
निकाला। उसने उसे अपने गोफन (गुलेल) पर चढ़ाया
और उसे चला दिया। पत्थर गुलेल से उड़ा और उसने
गोलियत के माथे पर चोट की। पत्थर उसके सिर में
गहरा घुस गया और गोलियत मुँह के बल गिर पड़ा।

50इस प्रकार दाऊद ने एक गोफन और एक पत्थर
से पलिश्ती को हरा दिया। उसने पलिश्ती पर चोट की
और उसे मार डाला। दाऊद के पास कोई तलवार नहीं
थी। 51इसलिए दाऊद दौड़ा और पलिश्ती की बगल में
खड़ा हो गया। दाऊद ने गोलियत की तलवार उसकी
म्यान से निकाली और उससे गोलियत का सिर काट
डाला और इस तरह दाऊद ने पलिश्ती को मार डाला।

जब अन्य पलिश्तियों ने देखा कि उनका वीर मारा
गया तो वे मुड़े और भाग गए। 52इस्राएल और यहूदा के
सैनिकों ने जयघोष किया और पलिश्तियों का पीछा
करने लगे। इस्राएलियों ने लगातार गत की सीमा और
एक्रोन के द्वार तक पलिश्तियों का पीछा किया। उन्होंने
अनेकों पलिश्ती मार गिराए। उनके शव शारैम सड़क
पर गत और एक्रोन तक लगातर बिछ गए। 53पलिश्तियों
का पीछा करने के बाद इस्राएली पलिश्तियों के डेरे में
लौटे। इस्राएली उस डेरे से बहुत सी चीज़ें ले गये। 54दाऊद
पलिश्ती का सिर यरूशलेम ले गया। दाऊद ने पलिश्तियों
के शस्त्रों को अपने पास अपने डेरे मेंरखा।

शाऊल दाऊद से डरने लगता है।

55शाऊल ने दाऊद को गोलियत से लड़ने के लिये
जाते देखा था। शाऊल ने सेनापति अब्नेर से बातें की,
"अब्नेर, उस युवक का पिता कौन है?" अब्नेर ने
उत्तर दिया, "महाराज, मैं शपथ खाकर कहता हूँ–मैं
नहीं जानता।"

56राजा शाऊल ने कहा, "पता लगाओ कि उस युवक
का पिता कौन है?"

57जब दाऊद गोलियत को मारने के बाद लौटा तो
अब्नेर उसे शाऊल के पास लाया। दाऊद तब भी
पलिश्ती का सिर हाथ में पकड़ा हुआ था।

58शाऊल ने पूछा, "युवक तुम्हारा पिता कौन है?"

दाऊद ने उत्तर दिया, "मैं आपके सेवक बेतलेहेम के
यिशै का पुत्र हूँ।"

दाऊद और योनातान की घनिष्ट मित्रता

18 दाऊद ने जब शाऊल से बात पूरी कर ली तब
योनातान दाऊद का बहुत अभिन्न मित्र बन
गया। योनातान दाऊद से उतना ही प्रेम करने लगा
जितना अपने से।

2शाऊल ने उस दिन के बाद से दाऊद को अपने पास
रखा। शाऊल ने दाऊद को उसके घर पिता के पास
नहीं जाने दिया।

3योनातान दाऊद से बहुत प्रेम करता था। योनातान
ने दाऊद से एक सन्धि की। 4योनातान ने जो अंगरखा
पहना हुआ था उसे उतारा और दाऊद को दे दिया।
योनातान ने अपनी सारी वर्दी भी दाऊद को दे दी।
योनातान ने अपना धनुष, अपनी तलवार और अपनी
पेटी भी दाऊद को दी।

शाऊल का दाऊद की सफलता पर ध्यान देना

5शाऊल ने दाऊद को विभिन्न युद्धों में लड़ने भेजा।
दाऊद बहुत सफल रहा। तब शाऊल ने उसे सैनिकों
के ऊपर रख दिया। इससे सभी प्रसन्न हुये, यहाँ तक
कि शाऊल के सभी अधिकारी भी इससे प्रसन्न हुए।
6दाऊद पलिश्तियों के विरुद्ध लड़ने जाया करता था।
युद्ध के बाद वह घर लौटता था। इस्राएल के सभी नगरों
में स्त्रियाँ दाऊद के स्वागत में उससे मिलने आती थी।
वे हँसती नाचतीं और ढोलक एवं सितार बजाती थीं।
वे शाऊल के सामने ही ऐसा किया करती थीं! 7स्त्रियाँ
गाती थीं,

"शाऊल ने हजारों शत्रुओं को मारा।
दाऊद ने दसियों हजार शत्रुओं को मारा!"

8स्त्रियों के इस गीत ने शाऊल को खिन्न कर दिया,
वह बहुत क्रोधित हो गया। शाऊल ने सोचा, "स्त्रियाँ
कहती हैं कि दाऊद ने दसियों हजार शत्रु मारे हैं और

वे कहती हैं कि मैंने केवल हजार शत्रु ही मारे।"
9इसलिये उस समय से आगे शाऊल दाऊद पर निगाह
रखने लगा।

शाऊल दाऊद से भयभीत हुआ

10अगले दिन, परमेश्वर के द्वारा भेजी एक दुष्टात्मा
शाऊल पर बलपूर्वक हावी हो गई। शाऊल अपने घर
में वहशी* हो गया। दाऊद ने पहले की तरह वीणा
बजाई। 11किन्तु शाऊल के हाथ में भाला था। शाऊल
ने सोचा, "मैं दाऊद को दीवार में टाँक दूँगा।" शाऊल ने
दो बार भाला चलाया, किन्तु दाऊद बच गया।

12यहोवा दाऊद के साथ था और यहोवा ने शाऊल
को त्याग दिया था। इसलिए शाऊल दाऊद से भयभीत
था।13शाऊल ने दाऊद को अपने से दूर भेज दिया।
शाऊल ने दाऊद को एक हजार सैनिकों का सेनापति
बना दिया। दाऊद ने युद्ध में सैनिकों का नेतृत्व किया।
14यहोवा दाऊद के साथ था। अत: दाऊद सर्वत्र सफल
रहता था। 15शाऊल ने देखा कि दाऊद को बहुत अधिक
सफलता मिल रही है तो शाऊल दाऊद से और भी
अधिक भयभीत रहने लगा। 16किन्तु इस्राएल और यहूदा
के सभी लोग दाऊद से प्रेम करते थे। वे उससे प्रेम
इसलिये करते थे क्योंकि वह युद्ध में उनका संचालन
करता था और उनके लिये लड़ता था।

शाऊल की अपनी बेटी से दाऊद के विवाह की योजना

17शाऊल दाऊद को मार डालना चाहता था। शाऊल
ने दाऊद को धोखा देने का एक उपाय सोचा। शाऊल
ने दाऊद से कहा, "यह मेरी सबसे बड़ी पुत्री मेरब है। मैं
तुम्हें इससे विवाह करने दूँगा। तब तुम शक्तिशाली
योद्धा हो जाओगे। तुम हमारे पुत्र के समान होओगे। तब
तुम जाना और यहोवा के युद्धों को लड़ना।" यह एक
चाल थी। शाऊल सचमुच अब यह सोच रहा था, "इस
प्रकार दाऊद को मुझे मारना नहीं पड़ेगा। मैं पलिश्तियों
से उसे अपने लिए मरवा दूँगा!"

18किन्तु दाऊद ने कहा, "मैं किसी महत्वपूर्ण परिवार
से नहीं हूँ और मेरी हस्ती ही क्या है? मैं एक राजा की
पुत्री के साथ विवाह नहीं कर सकता हूँ!"

19फिर जब शाऊल की पुत्री मेरब का दाऊद के
साथ विवाह का समय आया तब शाऊल ने महोलाई
अद्रीएल से उसका विवाह कर दिया।

20शाऊल की दूसरी पुत्री मीकल दाऊद से प्रेम करती
थी। लोगों ने शाऊल से कहा कि मीकल दाऊद से प्रेम
करती है। इससे शाऊल को प्रसन्नता हुई। 21शाऊल ने
सोचा, "मैं मीकल का उपयोग दाऊद को फँसाने के
लिये करूँगा। मैं मीकल को दाऊद से विवाह करने दूँगा
और तब मैं पलिश्तियों को इसे मार डालने दूँगा।" अत:
शाऊल ने दाऊद से दूसरी बार कहा, "आज तुम मेरी
पुत्री से विवाह कर सकते हो।"

22शाऊल ने अपने अधिकारियों को आदेश दिया।
उसने उनसे कहा, "दाऊद से अकेले में बातें करो।
कहो, 'देखो, राजा तुमको पसन्द करता है। उसके
अधिकारी तुमको पसन्द करते हैं। तुम्हें उसकी पुत्री से
विवाह कर लेना चाहिये।'"

23शाऊल के अधिकारियों ने वे बात दाऊद से कही।
किन्तु दाऊद ने उत्तर दिया, "क्या तुम लोग समझते हो
कि राजा का दामाद बनना सरल है? मेरे पास इतना
धन नहीं कि राजा की पुत्री के लिये दे सकूँ। मैं तो एक
साधारण गरीब व्यक्ति हूँ।"

24शाऊल के अधिकारियों ने शाऊल को वह सब
बताया जो दाऊद ने कहा था। 25 शाऊल ने उनसे कहा,
"दाऊद से यह कहो, 'दाऊद, राजा यह नहीं चाहता कि
तुम उसकी पुत्री के लिये धन दो!* शाऊल अपने
शत्रुओं से बदला लेना चाहता है। इसलिए विवाह करने
के लिये कीमत के रूप में केवल सौ पलिश्तियों की
खलडियाँ है।'" यह शाऊल की गुप्त योजना थी।
शाऊल ने सोचा कि पलिश्ती इस प्रकार दाऊद को
मार डालेंगे।

26शाऊल के अधिकारियों ने दाऊद से ये बातें कहीं।
दाऊद राजा का दामाद बनना चाहता था, इसलिए उसने
तुरन्त ही कुछ कर दिखाया। 27दाऊद और उसके व्यक्ति
पलिश्तियों से लड़ने गये। उन्होंने दो सौ* पलिश्ती मार
डाले। दाऊद ने इनके खलड़ियों को लिया और शाऊल
को दे दिये। दाऊद ने यह इसलिये किया क्योंकि वह
राजा का दामाद बनना चाहता था। शाऊल ने दाऊद
को अपनी पुत्री मीकल से विवाह करने दिया। 28शाऊल
ने देखा कि यहोवा दाऊद के साथ था। किन्तु शाऊल
ने यह भी ध्यान में रखा कि उसकी पुत्री मीकल दाऊद
को प्यार करती है। 29इसलिये शाऊल दाऊद से और
भी अधिक भयभीत हुआ। शाऊल उस पूरे समय दाऊद
के विरुद्ध रहा।

30इस्राएलियों के विरुद्ध लड़ने के लिये पलिश्ती
सेनापति बाहर निकलते रहे। किन्तु हर बार दाऊद ने
उनको हराया। दाऊद शाऊल के सभी अधिकारियों
में सबसे अधिक सफल था सो दाऊद प्रसिद्ध हो
गया।

वहशी या "शाऊल ने भविष्यवाणी की" हिब्रू शब्द का अर्थ है कि उस व्यक्ति का नियन्त्रण अपने कहे और किये पर न रहा। प्राय: इसका अर्थ यह होता है कि परमेश्वर अन्य लोगों को विशेष संदेश देने के लिये उस व्यक्ति का उपयोग कर रहे है।

उसकी पुत्री के लिये धन बाइबल के समय में जब कोई व्यक्ति विवाह करता था तो वधू के पिता को कुछ अवश्य देता था।

दो सौ प्राचीन ग्रीक अनुवाद में सौ है।

योनातान का दाऊद की सहायता करना

19 शाऊल ने अपने पुत्र योनातान और अपने
अधिकारियों से दाऊद को मार डालने के लिये
कहा। किन्तु योनातान दाऊद को बहुत चाहता था।
2-3योनातान ने दाऊद को सावधान किया, “सावधान
रहो! शाऊल तुमको मार डालने के अवसर की तलाश
में है। सवेरे मैदान में जाकर छिप जाओ। मैं अपने पिता
के साथ मैदान में जाऊँगा। हम मैदान में वहाँ खड़े रहेंगे
जहाँ तुम छिपे होगे। मैं तुम्हारे बारे में अपने पिता स बातें
करूँगा। तब जो मुझे ज्ञात होगा मैं तुमको बताऊँगा।”
4योनातान ने अपने पिता शाऊल से बातें कीं। योनातान
ने दाऊद के बारे में अच्छी बातें कहीं। योनातान ने
कहा, “आप राजा हैं। दाऊद आपका सेवक है। दाऊद
ने आपको कोई हानि नहीं पहुँचाई है। इसलिए उसके
साथ कुछ बुरा न करें। दाऊद सदा आपके प्रति अच्छा
रहा है। 5दाऊद अपने जीवन पर खेला था जब उसने
पलिश्ती (गोलियत) को मारा था। यहोवा ने सारे इस्राएल
के लिये एक बड़ी विजय प्राप्त की थी। आपने उसे देखा
और आप उस पर बड़े प्रसन्न थे। आप दाऊद को हानि
क्यों पहुँचाना चाहते हैं? वह निरपराध है। उसे मार
डालने का कोई कारण नहीं है!”
6शाऊल ने योनातान की बात सुनी। शाऊल ने प्रतिज्ञा
की। शाऊल ने कहा, “यहोवा के अस्तित्व के अटल
सत्य की तरह, दाऊद भी मारा नहीं जाएगा।”
7अत: योनातान ने दाऊद को बुलाया। तब उसने
दाऊद से वह सब कहा जो कहा गया था। तब योनातान,
दाऊद को शाऊल के पास लाया। इस प्रकार शाऊल
के साथ दाऊद पहले की तरह हो गया।

शाऊल, दाऊद को मारने का फिर प्रयत्न करता है

8युद्ध फिर आरम्भ हुआ और दाऊद पलिश्तियों से
युद्ध करने गया। उसने पलिश्तियों को हराया और वे
उसके आगे भाग खड़े हुए। 9किन्तु यहोवा द्वारा शाऊल
पर भेजी दुष्टात्मा उतरी। शाऊल अपने घर में बैठा
था। शाऊल के हाथ में उसका भाला था। दाऊद वीणा
बजा रहा था। 10शाऊल ने अपने भाले को दाऊद के
शरीर पर चला कर उसे दीवार पर टाँक देने का प्रयत्न
किया। दाऊद भाले के रास्ते से कूद कर बच निकला
और भाला दीवार से टकरा कर रह गया। अत: उसी
रात दाऊद वहाँ से भाग निकला।
11शाऊल ने लोगों को दाऊद के घर भेजा। लोगों ने
दाऊद के घर पर निगरानी रखी। वे रात भर वहीं
ठहरे। वे सवेरे दाऊद को मार डालने की प्रतीक्षा कर
रहे थे। किन्तु उसकी पत्नी मीकल ने उसे सावधान
कर दिया। उसने कहा, “तुम्हें आज की रात भाग
निकलना चाहिये और अपने जीवन की रक्षा करनी
चाहिए। यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो कल मार दिये
जाओगे।”
12तब मीकल ने एक खिड़की से उसे नीचे उतार
दिया। दाऊद बच गया और वहाँ से भाग निकला।
13मीकल ने अपने पारिवारिक देवता की मूर्ति को
लिया और उसे बिस्तर पर लिटा दिया। मीकल ने उस
मूर्ति पर कपड़े डाल दिये। उसने उसके सिर पर बकरी
के बाल भी लगा दिये।
14शाऊल ने दाऊद को बन्दी बनाने के लिये दूत
भेजे। किन्तु मीकल ने कहा, “दाऊद बीमार है।”
15सो वे लोग वहाँ से चले गये और उन्होंने शाऊल से
जाकर यह बता दिया, किन्तु उसने दूतों को दाऊद को
देखने के लिये वापस भेजा। शाऊल ने इन लोगों से
कहा, “दाऊद को मेरे पास लाओ। यदि आवश्यकता
पड़े तो उसे अपने बिस्तर पर लेटे हुये ही उठा लाओ। मैं
उसे मार डालूँगा।”
16सो दूत फिर दाऊद के घर गये। वे दाऊद को
पकड़ने भीतर गये, किन्तु वहाँ उन्होंने देखा कि बिस्तर
पर केवल एक मूर्ति थी। उन्होंने देखा कि उसके बाल
तो बस बकरी के बाल थे।
17शाऊल ने मीकल से कहा, “तुमने मुझे इस प्रकार
धोखा क्यों दिया? तुमने मेरे शत्रु को भाग जाने दिया।
दाऊद भाग गया है! मीकल ने शाऊल को उत्तर दिया,
“दाऊद ने मुझसे कहा था कि वह मुझे मार डालेगा यदि
मैं भाग जाने में उसकी सहायता नहीं करूँगी।”

दाऊद का रामा के डेरों में जाना

18दाऊद बच निकला। दाऊद शमूएल के पास रामा
में भागकर पहुँचा। दाऊद ने शमूएल से वह सब बताया
जो शाऊल ने उसके साथ किया था। तब दाऊद और
शमूएल उन डेरों में गये जहाँ भविष्यवक्ता रहते थे।
दाऊद वहीं रुका। 19शाऊल को पता चला कि दाऊद
रामा के निकट डेरों में था। 20शाऊल ने दाऊद को
बन्दी बनाने के लिये लोगों को भेजा। किन्तु जब वे डेरों
में आए तो उस समय नबियों का एक समूह भविष्यवाणी
कर रहा था। शमूएल समूह का मार्ग दर्शन करता हुआ
वहाँ खड़ा था। परमेश्वर की आत्मा शाऊल के दूतों पर
उतरी और वे भविष्यवाणी करने लगे।
21शाऊल ने इस बारे में सुना, अत: उसने वहाँ अन्य
दूत भेजे। किन्तु वे भी भविष्यवाणी करने लगे। इसलिये
शाऊल ने तीसरी बार दूत भेजे और वे भी भविष्यवाणी
करने लगे। 22अन्तत:, शाऊल स्वयं रामा पहुँचा। शाऊल
सेकू में खलिहान के समीप एक बड़े कुँए के पास
आया। शाऊल ने पूछा, “शमूएल और दाऊद कहाँ है?”
लोगों ने उत्तर दिया, “रामा के निकट डेरे में।”
23तब शाऊल रामा के निकट डेरे में गया। परमेश्वर
की आत्मा शाऊल पर भी उतरी और शाऊल ने

भविष्यवाणी करनी आरम्भ की। शाऊल रामा के डेरे
तक अधिकाधिक भविष्यवाणीयाँ लगातार करता गया।
24तब शाऊल ने अपने वस्त्र उतारे। इस प्रकार शाऊल
भी शमूएल के सामने भविष्यवाणी कर रहा था। शाऊल
वहाँ सारे दिन और सारी रात नंगा लेटा रहा।

यही कारण है कि लोग कहते हैं, "क्या शाऊल
नबियों में से कोई एक है?"

दाऊद और योनातान एक सन्धि करते हैं

20 दाऊद रामा के निकट के डेरे से भाग गया।
दाऊद योनातान के पास पहुँचा और उससे
पूछा, "मैंने कौन सी गलती की है? मेरा अपराध क्या
है? तुम्हारा पिता मुझे मारने का प्रयत्न क्यों कर रहा
है?"

2योनातान ने उत्तर दिया, "मेरे पिता तुमको मारने का
प्रयत्न नहीं कर रहे हैं! मेरे पिता मुझसे पहले कहे बिना
कुछ नहीं करते। यह महत्वपूर्ण नहीं कि वह बात बहुत
महत्वपूर्ण हो या तुच्छ, मेरे पिता सदा मुझे बताते हैं। मेरे
पिता मुझसे यह बताने से क्यों इन्कार करेंगे कि वे
तुमको मार डालना चाहते हैं? नहीं, यह सत्य नहीं है!"

3किन्तु दाऊद ने उत्तर दिया, "तुम्हारे पिता अच्छी
तरह जानते हैं कि मैं तुम्हारा मित्र हूँ। तुम्हारे पिता ने
अपने मन में यह सोचा है, 'योनातान को इस विषय में
जानकारी नहीं होनी चाहिये। यदि वह जानेगा तो दाऊद
से कह देगा।' किन्तु जैसे यहोवा का होना सत्य है और
तुम जीवित हो, उसी प्रकार यह भी सत्य है कि मैं मृत्यु
के बहुत निकट हूँ!"

4योनातान ने दाऊद से कहा, "मैं वह सब कुछ करूँगा
जो तुम मुझसे करवाना चाहो।"

5तब दाऊद ने कहा, "देखो, कल नया चाँद का
महोत्सव है और मुझे राजा के साथ भोजन करना है।
किन्तु मुझे सन्ध्या तक मैदान में छिपे रहने दो। 6यदि
तुम्हारे पिता को यह दिखाई दे कि मैं चला गया हूँ, तो
उनसे कहो कि, 'दाऊद अपने घर बेतलेहेम जाना चाहता
था। उसका परिवार इस मासिक बलि के लिए स्वयं ही
दावत कर रहा है। दाऊद ने मुझसे पूछा कि मैं उसे
बेतलेहेम जाने और उसके परिवार से उसे मिलने दूँ'
7यदि तुम्हारे पिता कहते हैं, 'बहुत अच्छा हुआ,' तो मैं
सुरक्षित हूँ। किन्तु यदि तुम्हारे पिता क्रोधित होते हैं तो
समझो कि मेरा बुरा करना चाहते हैं। 8योनातान मुझ
पर दया करो। मैं तुम्हारा सेवक हूँ। तुमने यहोवा के
सामने मेरे साथ सन्धि की है। यदि मैं अपराधी हूँ तो तुम
स्वयं मुझे मार सकते हो! किन्तु मुझे अपने पिता के
पास मत ले जाओ।"

9योनातान ने उत्तर दिया, "नहीं, कभी नहीं! यदि मैं
जान जाऊँगा कि मेरे पिता तुम्हारा बुरा करना चाहते हैं
तो तुम्हें सावधान कर दूँगा।"

10दाऊद ने कहा, "यदि तुम्हारे पिता तुम्हें कठोरता
से उत्तर देते हैं तो उसके बारे में मुझे कौन
बताएगा?"

11तब योनातान ने कहा, "आओ, हम लोग मैदान में
चलें।" सो योनातान और दाऊद एक साथ मैदान में चले
गए।

12योनातान ने दाऊद से कहा, "मैं इस्राएल का
परमेश्वर यहोवा के सामने यह प्रतिज्ञा करता हूँ। मैं
प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं पता लगाऊँगा कि मेरे पिता
तुम्हारे प्रति कैसा भाव रखते हैं। मैं पता लगाऊँगा कि
वे तुम्हारे बारे में अच्छा भाव रखते हैं या नहीं। तब तीन
दिन में, मैं तुम्हें मैदान में सूचना भेजूँगा। 13यदि मेरे पिता
तुम पर चोट करना चाहते हैं तो मैं तुम्हें जानकारी
दूँगा। मैं तुमको यहाँ से सुरक्षित जाने दूँगा। यहोवा मुझे
दण्ड दे यदि मैं ऐसा न करुँ । यहोवा तुम्हारे साथ रहे
जैसे वह मेरे पिता के साथ रहा है। 14जब तक मैं जीवित
रहूँ मेरे ऊपर दया रखना और जब मैं मर जाऊँ तो
15मेरे परिवार पर दया करना बन्द न करना। यहोवा
तुम्हारे सभी शत्रुओं को पृथ्वी पर से नष्ट कर देगा।
16यदि उस समय योनातान का परिवार दाऊद के परिवार
से पृथक किया जाना ही हो, तो उसे हो जाने देना।
दाऊद के शत्रुओं को यहोवा दण्ड दे।"

17तब योनातान ने दाऊद से कहा कि वह उसके प्रति
प्रेम की प्रतिज्ञा को दुहराये। योनातान ने यह इसलिए
किया क्योंकि वह दाऊद से उतना ही प्रेम करता था
जितना अपने आप से।

18योनातान ने दाऊद से कहा, "कल नया चाँद का
उत्सव है। तुम्हारा आसन खाली रहेगा। इसलिए मेरे
पिता समझ जाएंगे कि तुम चले गये हो। 19तीसरे दिन
उसी स्थान पर जाओ जहाँ तुम इस परेशानी के प्रारम्भ
होने के समय छिपे थे। उस पहाड़ी की बगल में प्रतीक्षा
करो। 20तीसरे दिन, मैं उस पहाड़ी पर ऐसे जाऊँगा जैसे
मैं किसी लक्ष्य को बेध रहा हूँ। मैं कुछ बाणों को
छोड़ूँगा। 21तब मैं, बाणों का पता लगाने के लिये, अपने
शस्त्रवाहक लड़के से जाने के लिये कहूँगा। यदि सब
कुछ ठीक होगा तो मैं लड़के से कहूँगा, 'तुम बहुत दूर
निकल गए हो! बाण मेरे करीब ही हैं। लौटो और उन्हें
उठा लाओ।' यदि मैं ऐसा कहूँ तो तुम छिपने के स्थान
से बाहर आ सकते हो। मैं वचन देता हूँ कि जैसे यहोवा
शाश्वत है वैसे ही तुम सुरक्षित हो। कोई भी खतरा नहीं
है।

22किन्तु यदि खतरा होगा तो मैं लड़के से कहूँगा।
'बाण बहुत दूर है, जाओ और उन्हें लाओ।' यदि मैं ऐसा
कहूँ तो तुम्हें चले जाना चाहिये। यहोवा तुम्हें दूर भेज
रहा है। 23तुम्हारे और मेरे बीच की इस सन्धि को याद
रखो। यहोवा सदैव के लिये हमारा साक्षी है!"

24 तब दाऊद मैदान में जा छिपा।

उत्सव में शाऊल के इरादे

नया चाँद के उत्सव का समय आया और राजा
भोजन करने बैठा। 25राजा दीवार के निकट वहीं बैठा
जहाँ वह प्राय: बैठा करता था। योनातान शाऊल के
दूसरी ओर सामने बैठा। अब्नेर शाऊल के बाद बैठा।
किन्तु दाऊद का स्थान खाली था। 26उस दिन शाऊल
ने कुछ नहीं कहा। उसने सोचा, "सम्भव है दाऊद को
कुछ हुआ हो और वह शुद्ध न हो।"

27अगले दिन, महीने के दूसरे दिन, दाऊद का स्थान
फिर खाली था। तब शाऊल ने अपने पुत्र योनातान से
पूछा, "यिशै का पुत्र नया चाँद के उत्सव में कल या
आज क्यों नहीं आया?"

28योनातान ने उत्तर दिया, "दाऊद ने मुझसे बेतलेहेम
जाने देने के लिये कहा था। 29उसने कहा था, 'मुझे
जाने दो। मेरा परिवार बेतलेहेम में एक बलि–भेंट कर
रहा है। मेरे भाई ने वहाँ रहने का आदेश दिया है। अब
यदि मैं तुम्हारा मित्र हूँ तो मुझे जाने दो और भाईयों से
मिलने दो।' यही कारण है कि दाऊद राजा की मेज पर
नहीं आया है।"

30शाऊल योनातान पर बहुत क्रोधित हुआ। उसने
योनातान से कहा, "तुम उस एक दासी के पुत्र हो, जो
आज्ञा पालन करने से इन्कार करती है और तुम ठीक
उसी तरह के हो। मैं जानता हूँ कि तुम दाऊद के पक्ष में
हो। तुम अपनी माँ और अपने लिये लज्जा का कारण
हो। 31जब तक यिशै का पुत्र जीवित रहेगा तब तक तुम
कभी राजा नहीं बनोगे, न तुम्हारा राज्य होगा। अब
दाऊद को हमारे पास लाओ। वह एक मरा व्यक्ति है!"

32योनातान ने अपने पिता से पूछा, "दाऊद को क्यों
मार डाला जाना चाहिये? उसने क्या अपराध किया है?"

33किन्तु शाऊल ने अपना भाला योनातान पर चलाया
और उसे मार डालने का प्रयन्त किया। अत: योनातान
ने समझ लिया कि मेरा पिता दाऊद को निश्चित रूप से
मार डालने का इच्छुक है। 34योनातान क्रोधित हुआ
और उसने मेज छोड़ दी। योनातान इतना घबरा गया
और अपने पिता पर इतना क्रोधित हुआ कि उसने
दावत के दूसरे दिन कुछ भी भोजन करना अस्वीकार
कर दिया। योनातान इसलिये क्रोधित हुआ क्योंकि शाऊल
ने उसे अपमानित किया था और शाऊल दाऊद को
मार डालना चाहता था।

दाऊद और योनातान का विदा लेना

35अगली सुबह योनातान मैदान में गया। वह दाऊद
से मिलने गया, जैसा उन्होंने तय किया था। योनातान
एक शस्त्रवाहक लड़के को अपने साथ लाया। 36योनातान
ने लड़के से कहा, "दौड़ो, और जो बाण मैं चलाता हूँ,
उन्हें लाओ।" लड़के ने दौड़ना आरम्भ किया और
योनातान ने उसके सिर के ऊपर से बाण चलाए। 37लड़का
उस स्थान को दौड़ा, जहाँ बाण गिरा था। किन्तु योनातान
ने पुकारा, "बाण बहुत दूर है!" 38तब योनातान जोर से
चिल्लाया "जल्दी करो! उन्हें लाओ! वहीं पर खड़े न
रहो!" लड़के ने बाणों को उठाया और अपने स्वामी के
पास वापस लाया। 39लड़के को कुछ पता न चला कि
हुआ क्या। केवल योनातान और दाऊद जान सके।
40योनातान ने अपना धनुष बाण लड़के को दिया। तब
योनातान ने लड़के से कहा, "नगर को लौट जाओ।"

41लड़का चल पड़ा, और दाऊद अपने उस छिपने के
स्थान से बाहर आया जो पहाड़ी के दूसरी ओर था।
दाऊद ने भूमि तक अपने सिर को झुकाकर योनातान
के सामने प्रणाम किया। दाऊद तीन बार झुका। तब
दाऊद और योनातान ने एक दूसरे का चुम्बन लिया। वे
दोनों एक साथ रोये, किन्तु दाऊद योनातान से अधिक
रोया।

42योनातान ने दाऊद से कहा, "शान्तिपूर्वक जाओ।
हम लोगों ने यहोवा का नाम लेकर मित्र होने की
प्रतिज्ञा की थी। हम लोगों ने कहा था कि यहोवा हम
लोगों और हमारे वंशजों के बीच सदा साक्षी रहेगा।"

दाऊद का याजक अहीमेलेक से मिलने जाना

21 तब दाऊद चला गया और योनातान नगर को
लौट गया। 2दाऊद नोब नामक नगर में याजक
अहीमेलेक से मिलने गया। अहीमेलेक दाऊद से मिलने
बाहर गया। अहीमेलेक भय से काँप रहा था। अहीमेलेक
ने दाऊद से पूछा, "तुम अकेले क्यों हो? तुम्हारे साथ
कोई व्यक्ति क्यों नहीं है?"

3दाऊद ने अहीमेलेक को उत्तर दिया, "राजा ने मुझको
विशेष आदेश दिया है। उसने मुझसे कहा है, 'इस उद्देश्य
को किसी को न जानने दो। कोई भी व्यक्ति उसे न जाने
जिसे मैंने तुम्हें करने को कहा है।' मैंने अपने व्यक्तियों
से कह दिया है कि वे कहाँ मिलें। 4अब यह बताओ कि
तुम्हारे पास भोजन के लिये क्या है? मुझे पाँच रोटियाँ
या जो कुछ खाने को है, दो।"

5याजक ने दाऊद से कहा, "मेरे पास यहाँ सामान्य
रोटियाँ नहीं हैं। किन्तु मेरे पास कुछ पवित्र रोटी तो है।
तुम्हारे अधिकारी उसे खा सकते हैं, यदि उन्होंने किसी
स्त्री के साथ इन दिनों शारीरिक सम्बन्ध न किया
हो।"*

6दाऊद ने याजक को उत्तर दिया, "हम लोग इन
दिनों किसी स्त्री के साथ नहीं रहे हैं। हमारे व्यक्ति
अपने शरीर को पवित्र रखते हैं जब कभी हम युद्ध
करने जाते हैं, यहाँ तक कि सामान्य उद्देश्य के लिये

किसी स्त्री ... हो यह व्यक्ति को अशुद्ध करने वाला था और ऐसा व्यक्ति परमेश्वर को भेंट में चढ़ाकर पवित्र बनाई गई किसी सामग्री को नहीं खा सकता था। देखें लैव्य. 7:21; 15:1−33

जाने पर भी* और आज के लिए तो यह विशेष रूप से
सच है क्योंकि हमारा काम अति विशिष्ट है।”
7वहाँ पवित्र रोटी के अतिरिक्त कोई रोटी नहीं थी।
अत: याजक ने दाऊद को वही रोटी दी। यह वह रोटी
थी जिसे याजक यहोवा के सामने पवित्र मेज पर रखते
थे। वे हर एक दिन इस रोटी को हटा लेते थे और
उसकी जगह ताजी रोटी रखते थे।
8उस दिन शाऊल के अधिकारियों में से एक वहाँ
था। वह एदोमी दोएग था। दोएग को वहाँ यहोवा के
सामने रखा गया था।* दोएग शाऊल के गड़ेरियों का
मुखिया था।
9दाऊद ने अहीमेलेक से पूछा, “क्या तुम्हारे पास यहाँ
कोई भाला या तलवार है? राजा का कार्य बहुत जरूरी
है। मुझे शीघ्रता से जाना है और मैं अपनी तलवार या
अन्य कोई शस्त्र नहीं ला सका हूँ।”
10याजक ने उत्तर दिया, “एक मात्र तलवार जो यहाँ है
वह पलिश्ती (गोलियत) की है। यह वही तलवार है
जिसे तुमने उससे तब लिया था जब तुमने उसे एला की
घाटी में मारा था। वह तलवार एक कपड़े में लिपटी हुई
एपोद के पीछे रखी है। यदि तुम चाहो तो उसे ले सकते
हो।”
दाऊद ने कहा, “इसे मुझे दो। गोलियत की तलवार
के समान कोई तलवार नहीं है।”

दाऊद का गत को जाना

11उस दिन दाऊद शाऊल के यहाँ से भाग गया।
दाऊद गत के राजा आकीश के पास गया। 12आकीश
के अधिकारियों को यह अच्छा नहीं लगा। उन्होंने
कहा, “यह इस्राएल प्रदेश का राजा दाऊद है। यही वह
व्यक्ति है जिसका गीत इस्राएली गाते हैं। वे नाचते हैं और
यह गीत गाते है:
“शाऊल ने हजारों शत्रुओं को मारा
दाऊद ने दसियों हजार शत्रुओं को मारा!”
13दाऊद को ये बातें याद थीं। दाऊद गत के राजा
आकीश से बहुत भयभीत था। 14इसलिए दाऊद ने आकीश
और उसके अधिकारियों के सामने अपने को विक्षिप्त
दिखाने का बहाना किया। जब तक दाऊद उनके साथ
रहा उसने विक्षिप्तों जैसा व्यवहार किया। वह द्वार के
दरवाजों पर थूक देता था। वह अपने थूक को अपनी
दाढ़ी पर गिरने देता था।
15आकीश ने अपने अधिकारियों से कहा, “इस व्यक्ति
को देखो। यह तो विक्षिप्त है! तुम लोग इसे मेरे पास
क्यों लाए हो?” 16मेरे पास तो वैसे ही बहुत से विक्षिप्त
हैं। मैं तुम लोगों से यह नहीं चाहता कि तुम इस व्यक्ति
को मेरे घर पर विक्षिप्त जैसा काम करने को लाओ।
इस व्यक्ति को मेरे घर में फिर न आने देना।”

दाऊद का विभिन्न स्थानों पर जाना

22 दाऊद ने गत को छोड़ दिया। दाऊद अदुल्लाम
की गुफा में भाग गया। दाऊद के भाईयों और
सम्बन्धियों ने सुना कि दाऊद अदुल्लाम में था। वे
दाऊद को देखने वहाँ गए। 2बहुत से लोग दाऊद के
साथ हो लिये। वे सभी लोग, जो किसी विपत्ति में थे या
कर्ज में थे या असंतुष्ट थे, दाऊद के साथ हो लिए।
दाऊद उनका मुखिया बन गया। दाऊद के पास लगभग
चार सौ पुरुष थे।
3दाऊद ने अदुल्लाम को छोड़ दिया और वह मोआब
मे स्थित मिस्पा को चला गया। दाऊद ने मोआब के
राजा से कहा, “कृपया मेरे माता–पिता को आने दें और
अपने पास तब तक रहने दें जब तक मैं यह न समझ
सकूँ कि परमेश्वर मेरे साथ क्या करने जा रहा है।”
4दाऊद ने अपने माता–पिता को मोआब के राजा के
पास छोड़ा। दाऊद के माता–पिता मोआब के राजा के
पास तब तक ठहरे जब तक दाऊद किले में रहा।
5किन्तु नबी गाद ने दाऊद से कहा, “गढ़ी में मत
ठहरो। यहूदा प्रदेश में जाओ।” इसलिये दाऊद वहाँ से
चल पड़ा और हेरेत के जंगल में गया।

शाऊल का अहीमेलेक के परिवार को नष्ट करना

6शाऊल ने सुना कि लोग दाऊद और उसके लोगों
के बारे में जान गए हैं। शाऊल गिबा में पहाड़ी पर एक
पेड़ के नीचे बैठा था। शाऊल के हाथ में उसका भाला
था। शाऊल के सभी अधिकारी उसके चारों ओर खड़े
थे। 7शाऊल ने अपने उन अधिकारियों से कहा, जो
उसके चारों ओर खड़े थे, “बिन्यामीन के लोगों सुनो!
क्या तुम लोग समझते हो कि यिशै का पुत्र (दाऊद)
तुम्हें खेत और अंगूरों के बाग देगा? क्या तुम समझते
हो कि वह तुमको उन्नति देगा और तुम्हें एक हजार
व्यक्तियों और एक सौ व्यक्तियों के ऊपर अधिकारी
बनाएगा। 8तुम लोग मेरे विरुद्ध षड़यन्त्र रच रहे हो।
तुमने गुप्त योजनायें बनाई हैं। तुम में से किसी ने भी
मेरे पुत्र योनातान के बारे में नहीं बताया है। तुममें से
किसी ने भी यह नहीं बताया है कि उसने यिशै के पुत्र
के साथ क्या सन्धि की है। तुममें से कोई भी मेरी
परवाह नहीं करता। तुममें से किसी ने यह नहीं बताया
कि मेरे पुत्र योनातान ने दाऊद को उकसाया है। योनातान
ने मेरे सेवक दाऊद से कहा कि वह छिप जाए और

हमारे व्यक्ति ... पर भी देखें 2शमू 11:11 और व्यवस्था. 23:9–14 के नियम।

दोएग ... गया था इसका अर्थ यह हो सकता है कि दोएग परमेश्वर के लिये विशेष प्रतिज्ञा के एक भाग के रूप में वहाँ था या किसी अन्य धार्मिक कारण से वहाँ था। या इसका अर्थ यह हो सकता है कि वह वहाँ इसलिये रोका गया था कि उसने कोई अपराध किया था जैसे संयोगवश किसी को मार डालना।

मुझ पर आक्रमण करे और यह वही है जो दाऊद अब
कर रहा है।"
9एदोमी दोएग शाऊल के अधिकारियों के साथ खड़ा
था। दोएग ने कहा, "मैंने यिशै के पुत्र दाऊद को नोब
में देखा है। दाऊद अहितूब के पुत्र अहीमेलेक से मिलने
आया। 10अहीमेलेक ने यहोवा से दाऊद के लिये प्रार्थना
की। अहीमेलेक ने दाऊद को भोजन भी दिया और
अहीमेलेक ने दाऊद को पलिश्ती (गोलियत) की तलवार
भी दी।"
11तब राजा शाऊल ने कुछ लोगों को आज्ञा दी कि वे
याजक को उसके पास लेकर आएं। शाऊल ने उनसे
अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक और उसके सभी सम्बन्धियों
को लाने को कहा। अहीमेलेक के सम्बन्धी नोब में
याजक थे। वे सभी राजा के पास आए। 12शाऊल ने
अहीमेलेक से कहा, "अहीतूब के पुत्र, अब सुन लो।"
अहीमेलेक ने उत्तर दिया, "हाँ, महाराज।"
13शाऊल ने अहीमेलेक से कहा, "तुमने और यिशै
के पुत्र (दाऊद) ने मेरे विरुद्ध गुप्त योजना क्यों बनाई?
तुमने दाऊद को रोटी और तलवार दी! तुमने परमेश्वर
से उसके लिये प्रार्थना की और अब सीधे, दाऊद मुझ
पर आक्रमण करने की प्रतीक्षा कर रहा है!"
14अहीमेलेक ने उत्तर दिया, "दाऊद तुम्हारा बड़ा
विश्वास पात्र है। तुम्हारे अधिकारियों में कोई उतना
विश्वस्त नहीं है जितना दाऊद है। दाऊद तुम्हारा अपना
दामाद है और दाऊद तुम्हारे अंगरक्षकों का नायक है।
तुम्हारा अपना परिवार दाऊद का सम्मान करता है।
15वह पहली बार नहीं था, कि मैंने दाऊद के लिये
परमेश्वर से प्रार्थना की। ऐसी बात बिल्कुल नहीं है।
मुझे या मेरे किसी सम्बन्धी को दोष मत लगाओ। हम
तुम्हारे सेवक हैं। मुझे कुछ भी ज्ञात नहीं है कि यह सब
हो क्या रहा है?"
16किन्तु राजा ने कहा, "अहीमेलेक, तुम्हें और तुम्हारे
सभी सम्बन्धियों को मरना है।" 17तब राजा ने अपने
बगल में खड़े रक्षकों से कहा, "जाओ और यहोवा के
याजकों को मार डालो। यह इसलिए करो क्योंकि वे भी
दाऊद के पक्ष में हैं। वे जानते थे कि दाऊद भागा है,
किन्तु उन्होंने मुझे बताया नहीं।" किन्तु राजा के
अधिकारियों ने यहोवा के याजकों को मारने से इन्कार
कर दिया।
18अत: राजा ने दोएग को आदेश दिया। शाऊल ने
कहा, "दोएग, तुम जाओ और याजकों को मार डालो।"
इसलिए एदोमी दोएग गया और उसने याजकों को मार
डाला। उस दिन दोएग ने पचासी, सन के एपोद धारण
करने वालों को मार डाला।
19नोब याजकों का नगर था। दोएग ने नोब के सभी
लोगों को मार डाला। दोएग ने अपनी तलवार का
उपयोग किया और उसने सभी पुरुषों, स्त्रियों, बच्चों
और छोटे शिशुओं को भी मार डाला। दोएग ने उनकी
गायों, खच्चरों और भेड़ों तक को मार डाला।
20किन्तु एब्यातार वहाँ से बच निकला। एब्यातार
अहीमेलेक का पुत्र था। अहीमेलेक अहीतूब का पुत्र
था। एब्यातार बच निकला और दाऊद से मिल गया।
21एब्यातार ने दाऊद से कहा कि शाऊल ने यहोवा के
याजकों को मार डाला है। 22तब दाऊद ने एब्यातार से
कहा, "मैंने एदोमी दोएग को उस दिन नोब में देखा था
और मैं जानता था कि वह शाऊल से कहेगा। मैं तुम्हारे
पिता के परिवार की मृत्यु के लिये उत्तरदायी हूँ। 23जो
व्यक्ति (शाऊल) तुमको मारना चाहता है वह मुझको
भी मारना चाहता है। मेरे साथ ठहरो। डरो नहीं। तुम
मेरे साथ सुरक्षित रहोगे।"

दाऊद कीला में

23 लोगों ने दाऊद से कहा, "देखो, पलिश्ती कीला
के विरुद्ध युद्ध कर रहे हैं। वे खलिहानों
से अन्न लूट रहे हैं।"
2दाऊद ने यहोवा से पूछा, "क्या मैं जाऊँ और इन
पलिश्तियों से लड़ूँ?" यहोवा ने दाऊद को उत्तर दिया,
"जाओ और पलिश्तियों पर आक्रमण करो। कीला को
बचाओ।"
3किन्तु दाऊद के लोगों ने उससे कहा, "देखो, हम
यहाँ यहूदा में हैं और हम भयभीत हैं। तनिक सोचो तो
सही कि हम तब कितने भयभीत होंगे जब वहाँ जाएंगे
जहाँ पलिश्ती सेना है।"
4दाऊद ने फिर यहोवा से पूछा। यहोवा ने दाऊद को
उत्तर दिया, "कीला को जाओ। मैं तुम्हारी सहायता
पलिश्तियों को हराने में करूँगा।" 5इसलिये दाऊद और
उसके लोग कीला को गये। दाऊद के लोग पलिश्तियों
से लड़े। दाऊद के लोगों ने पलिश्तियों को हराया और
उनकी गायें ले लीं। इस प्रकार दाऊद ने कीला के लोगों
को बचाया। 6(जब एब्यातार दाऊद के पास भाग कर
गया था तब एब्यातार अपने साथ एक एपोद ले गया
था।)
7लोगों ने शाऊल से कहा कि अब दाऊद कीला में
है। शाऊल ने कहा, "परमेश्वर ने दाऊद को मुझे दे
दिया है। दाऊद स्वयं जाल में फँस गया है। वह ऐसे नगर
में गया है जिसके द्वार को बन्द करने के लिये दरवाजे
और छड़ें हैं।" 8शाऊल ने युद्ध के लिये अपनी सारी
सेना को एक साथ बुलाया। उन्होंने अपनी तैयारी कीला
जाने और दाऊद तथा उसके लोगों पर आक्रमण के
लिये की। 9दाऊद को पता लगा कि शाऊल उसके
विरुद्ध योजना बना रहा है। दाऊद ने तब याजक एब्यातार
से कहा, "एपोद लाओ।"
10दाऊद ने प्रार्थना की, "यहोवा इस्राएल के परमेश्वर,
मैंने सुना है कि शाऊल कीला में आने और मेरे कारण

इसे नष्ट करने की योजना बना रहा है। 11क्या शाऊल
कीला में आएगा? क्या कीला के लोग मुझे शाऊल को
दे देंगे? यहोवा इस्राएल के परमेश्वर, मैं तेरा सेवक हूँ!
कृपया मुझे बता!" यहोवा ने उत्तर दिया, "शाऊल आएगा।"
12दाऊद ने फिर पूछा, "क्या कीला के लोग मुझे
और मेरे लोगों को शाऊल को दे देंगे।"

यहोवा ने उत्तर दिया, "वे ऐसा करेंगे।"

13इसलिये दाऊद और उसके लोगों ने कीला को छोड़
दिया। वहाँ लगभग छ: सौ पुरुष थे जो दाऊद के साथ
गए। दाऊद और उसके लोग एक स्थान से दूसरे स्थान
घूमते रहे। शाऊल को पता लग गया कि दाऊद कीला
से बच निकला। इसलिए शाऊल उस नगर को नहीं
गया।

शाऊल दाऊद का पीछा करता है

14दाऊद मरुभूमि में चला गया और वहाँ किलों* में
ठहर गया। दाऊद जीप की मरुभूमि के पहाड़ी देश में
भी गया। शाऊल प्रतिदिन दाऊद की खोज करता था,
किन्तु यहोवा शाऊल को दाऊद को पकड़ने नहीं देता
था।

15दाऊद जीप की मरुभूमि में होरेश में था। वह
भयभीत था क्योंकि शाऊल उसे मारने आ रहा था।
16किन्तु शाऊल का पुत्र योनातान होरेश में दाऊद से
मिलने गया। योनातान ने परमेश्वर पर दृढ़ विश्वास
रखने में दाऊद की सहायता की। 17 योनातान ने दाऊद
से कहा, "डरो नहीं। मेरे पिता शाऊल तुम्हें चोट नहीं
पहुँचा सकते। तुम इस्राएल के राजा बनोगे। मैं तुम्हारे
बाद दूसरे स्थान पर रहूँगा। मेरे पिता भी यह जानते हैं।"
18योनातान और दाऊद दोनों ने यहोवा के सामने
सन्धि की। तब योनातान घर चला गया और दाऊद
होरेश में टिका रहा।

जीप के लोग शाऊल को दाऊद के बारे में बताते हैं

19जीप के लोग गिबा में शाऊल के पास आए। उन्होंने
शाऊल से कहा, "दाऊद हम लोगों के क्षेत्र में छिपा है।
वह होरेश के किले में है। वह हकीला पहाड़ी पर
यशीमोन के दक्षिण में है। 20महाराज आप जब चाहें
आएं। यह हम लोगों का कर्तव्य है कि हम आपको
दाऊद को दें।"

21शाऊल ने उत्तर दिया, "यहोवा आप लोगों को मेरी
सहायता के लिये आशीर्वाद दे। 22जाओ और उसके बारे
में और अधिक पता लगाओ। पता लगाओ कि दाऊद
कहाँ ठहरा है। पता लगाओ कि दाऊद को वहाँ किसने
देखा है। शाऊल ने सोचा, 'दाऊद चतुर है। वह मुझे
धोखा देने की कोशिश कर रहा है।' 23छिपने के जिन
स्थानों का उपयोग दाऊद कर रहा है, उन सभी को
पता लगाओ और मेरे पास वापस लौटो तथा मुझे सब
कुछ बताओ। तब मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। यदि दाऊद
उस क्षेत्र में होगा तो मैं उसका पता लगाऊँगा। मैं उसका
पता तब भी लगा लूँगा यदि मुझे यहूदा के सभी परिवारों
की तलाशी लेनी पड़े।"

24तब जीपी निवासी जीप को लौट गए। शाऊल वहाँ
बाद में गया। दाऊद और उसके लोग माओन की मरुभूमि
में थे। वे यशीमोन के दक्षिण में मरुभूमि क्षेत्र में थे।
25शाऊल और उसके लोग दाऊद की खोज करने गये।
किन्तु लोगों ने दाऊद को सावधान कर दिया। उन्होंने
बताया कि शाऊल उसकी तलाश कर रहा है। दाऊद
तब माओन की मरुभूमि में नीचे की ओर चट्टान पर
गया। शाऊल ने सुना कि दाऊद माओन की मरुभूमि में
गया है। इसलिये शाऊल उस स्थान पर दाऊद को
पकड़ने गया।

26शाऊल पर्वत की एक ओर था। दाऊद और उसके
लोग उसी पर्वत की दूसरी ओर थे। दाऊद शाऊल से
दूर निकल जाने के लिये शीघ्रता कर रहा था। शाऊल
और उसके सैनिक पर्वत के चारों ओर दाऊद और
उसके लोगों को पकड़ने जा रहे थे। 27तभी शाऊल के
पास एक दूत आया। दूत ने कहा, "शीघ्रता करो!
पलिश्ती हम पर आक्रमण कर रहें हैं!"

28इसलिये शाऊल ने दाऊद का पीछा करना छोड़
दिया और पलिश्तियों से लड़ने निकल गया। यही
कारण है कि लोग उस स्थान को "फिसलनी चट्टान'*'
कहते हैं। 29दाऊद ने माओन की मरुभूमि को छोड़ा
और एनगदी के समीप के किले में गया।

दाऊद शाऊल को लज्जित करता है

24 जब शाऊल ने पलिश्तियों को पीछा करके
भगा दिया तब लोगों ने शाऊल से कहा, "दाऊद
एनगदी के पास के मरुभूमि क्षेत्र में है। "

2इसलिये शाऊल ने पूरे इस्राएल में से तीन हजार
लोगों को चुना। शाऊल ने इन व्यक्तियों को साथ लिया
और दाऊद तथा उसके लोगों की खोज आरम्भ की।
उन्होंने "जंगली बकरियों की चट्टान" के समीप खोजा।
3शाऊल सड़क के किनारे भेड़ों के बाड़े के समीप
आया। वहाँ समीप ही एक गुफा थी। शाऊल स्वयं गुफा
में शौच करने गया। दाऊद और उसके लोग बहुत पीछे
उस गुफा में छिपे थे। 4लोगों ने दाऊद से कहा, "आज
वह दिन है जिसके विषय में यहोवा ने बातें की थीं।
यहोवा ने तुमसे कहा था, 'मैं तुम्हारे शत्रु को तुम्हें दूँगा,
तब तुम जो चाहो अपने शत्रु के साथ कर सकोगे।'"

किला कोई भवन या नगर जिसकी दीवारें सुरक्षा के लिये ऊँची और मजबूत हों।

फिसलनी चट्टान या "सेला-हम्महलकोत।"

तब दाऊद रेंगकर शाऊल के पास आया। दाऊद ने
शाऊल के लबादे का एक कोना काट लिया। शाऊल
ने दाऊद को नहीं देखा। 5बाद में, दाऊद को शाऊल के
लबादे के एक कोने के काटने का अफसोस हुआ।
6दाऊद ने अपने लोगों से कहा, "यहोवा मुझे अपने
स्वामी के साथ कुछ भी ऐसा करने से रोके। शाऊल
यहोवा का चुना हुआ राजा है। मुझे शाऊल के विरुद्ध
कुछ नहीं करना चाहिए वह यहोवा का चुना हुआ राजा
है।" 7दाऊद ने ये बातें अपने लोगों को रोकने के लिये
कहीं। दाऊद ने अपने लोगों को शाऊल पर आक्रमण
करने नहीं दिया।

शाऊल ने गुफा छोड़ी और अपने मार्ग पर चल पड़ा।
8दाऊद गुफा से निकला। दाऊद ने शाऊल को जोर से
पुकारा, "मेरे प्रभु महाराज!"

शाऊल ने पीछे मुड़ कर देखा। दाऊद ने अपना सिर
भूमि पर रखकर प्रणाम किया। 9दाऊद ने शाऊल से
कहा, "आप क्यों सुनते हैं जब लोग यह कहते हैं,
'दाऊद आप पर चोट करने की योजना बना रहा है?'
10मैं आपको चोट पहुँचाना नहीं चाहता! आप इसे अपनी
आँखों से देख सकते हैं! यहोवा ने आज आपको गुफा में
मेरे हाथों में दे दिया था। किन्तु मैंने आपको मार डालने
से इन्कार किया। मैंने आप पर दया की। मैंने कहा, 'मैं
अपने स्वामी को चोट नहीं पहुँचाऊँगा। शाऊल यहोवा
का चुना हुआ राजा है!' 11मेरे हाथ में इस कपड़े के
टुकड़े को देखें। मैंने आपके लबादे का टुकड़ा काट
लिया। मैं आपको मार सकता था, किन्तु मैंने यह नहीं
किया। अब मैं चाहता हूँ कि आप इसे समझें। मैं चाहता
हूँ कि आप यह समझें कि मैं आपके विरुद्ध कोई
योजना नहीं बना रहा हूँ। मैंने आपका कोई बुरा नहीं
किया। किन्तु आप मेरा पीछा कर रहे हैं और मुझे
मार डालना चाहते हैं। 12यहोवा को न्याय करने दो।
यहोवा आपको उस अन्याय के लिये दण्ड देगा जो
आपने मेरे साथ किया। किन्तु मैं अपने आप आपसे
युद्ध नहीं करूँगा। 13पुरानी कहावत है: 'बुरी चीजें बुरे
लोगों से आती हैं।'

"मैंने कुछ भी बुरा नहीं किया है! मैं बुरा व्यक्ति नहीं
हूँ। अत: मैं आप पर चोट नहीं करूँगा। 14आप किसका
पीछा कर रहे हैं? इस्राएल का राजा किसके विरुद्ध
लड़ने आ रहा है? आप ऐसे किसी का पीछा नहीं कर
रहे हैं जो आपको चोट पहुँचाएगा। यह ऐसा ही है जैसे
आप एक मृत कुत्ते या मच्छर का पीछा कर रहे हैं।
15यहोवा को न्याय करने दो। उसको मेरे और अपने
बीच निर्णय देने दो। यहोवा मेरा समर्थन करेगा और
दिखायेगा कि मैं सच्चाई पर हूँ। यहोवा आपसे मेरी रक्षा
करेगा।"

16दाऊद ने अपना यह कथन समाप्त किया और
शाऊल ने पूछा, "मेरे पुत्र दाऊद, क्या यह तुम्हारी
आवाज है?" तब शाऊल रोने लगा। शाऊल बहुत रोया।
17शाऊल ने कहा, "तुम सही हो और मैं गलती पर हूँ।
तुम हमारे प्रति अच्छे रहे। किन्तु मैं तुम्हारे प्रति बुरा
रहा। 18तुमने उन अच्छी बातों को बताया जिन्हें तुमने
मेरे प्रति किया। यहोवा मुझे तुम्हारे पास लाया, किन्तु
तुमने मुझे नहीं मार डाला। 19यदि कोई अपने शत्रु को
पकड़ता है तो वह उसे बच निकलने नहीं देता। वह
अपने शत्रु के लिये अच्छे काम नहीं करता। यहोवा
तुमको इसका पुरस्कार दे क्योंकि तुम आज मेरे प्रति
अच्छे रहे। 20मैं जानता हूँ कि तुम नये राजा होगे। तुम
इस्राएल के राज्य पर शासन करोगे। 21अब मुझसे एक
प्रतिज्ञा करो। यहोवा का नाम लेकर यह प्रतिज्ञा करो
कि तुम मेरे वंशजों को मारोगे नहीं। प्रतिज्ञा करो कि
तुम मेरे पिता के परिवार से मेरा नाम मिटाओगे नहीं।"

22इसलिये दाऊद ने शाऊल से प्रतिज्ञा की। दाऊद ने
प्रतिज्ञा की कि वह शाऊल के परिवार को नहीं मारेगा।
तब शाऊल लौट गया। दाऊद और उसके लोग किले
में चले गये।

दाऊद और नाबाल

25 शमूएल मर गया। इस्राएल के सभी लोग इकट्ठे
हुए और उन्होंने शमूएल की मृत्यु पर शोक
प्रकट किया। उन्होंने शमूएल को उसके घर रामा में
दफनाया। तब दाऊद पारान की मरुभूमि में चला गया।
2एक व्यक्ति था जो माओन में रहता था। वह व्यक्ति
बहुत सम्पन्न था। उसके पास तीन हजार भेड़ें और एक
हजार बकरियाँ थीं। वह कर्मेल में अपने धंधे की
देखभाल करता था। वह कर्मेल में अपनी भेड़ों की ऊन
काटता था। 3उस व्यक्ति का नाम नाबाल था। उसकी
पत्नी का नाम अबीगैल था। अबीगैल बुद्धिमती और
सुन्दर स्त्री थी। किन्तु नाबाल क्रूर और नीच था।
नाबाल कालेब के परिवार से था।

4दाऊद मरुभूमि में था और उसने सुना कि नाबाल
अपनी भेड़ों की ऊन काट रहा है। 5इसलिये दाऊद ने
दस युवकों को नाबाल से बातें करने के लिये भेजा।
दाऊद ने कहा, "कर्मेल जाओ। नाबाल से मिलो और
उसको मेरी ओर से 'नमस्ते' कहो।' 6दाऊद ने उन्हें
नाबाल के लिये यह सन्देश दिया, "मुझे आशा है कि
तुम और तुम्हारा परिवार सुखी है। मैं आशा करता हूँ
कि जो कुछ तुम्हारा है, ठीक-ठाक है। 7मैंने सुना है
कि तुम अपनी भेड़ों से ऊन काट रहे हो। तुम्हारे
गड़रिये कुछ समय तक हम लोगों के साथ रहे थे और
हम लोगों ने उन्हें कोई कष्ट नहीं दिया। जब तक
तुम्हारे गड़रिये कर्मेल में रहे हमने उनसे कुछ भी नहीं
लिया। 8अपने सेवकों से पूछो और वे बता देंगे कि यह
सब सच है। कृपया मेरे युवकों पर दया करो। इस
प्रसन्नता के अवसर पर हम तुम्हारे पास पहुँच रहे हैं।

कृपया इन युवकों को तुम जो कुछ चाहो, दो। कृपया
यह मेरे लिये, अपने मित्र* दाऊद के लिये करो।"

9दाऊद के व्यक्ति नाबाल के पास गए। उन्होंने दाऊद
का सन्देश नाबाल को दिया। 10किन्तु नाबाल उनके
प्रति नीचता से पेश आया। नाबाल ने कहा, "दाऊद है
कौन? यह यिशै का पुत्र कौन होता है? इन दिनों बहुत
से दास हैं जो अपने स्वामियों के यहाँ से भाग गये हैं!
11मेरे पास रोटी और पानी है और मेरे पास वह माँस भी
है जिसे मैंने भेड़ों से ऊन काटने वाले सेवकों के लिये
मारा है। किन्तु मैं उसे उन व्यक्तियों को नहीं दे सकता
जिन्हें मैं जानता भी नहीं!"

12दाऊद के व्यक्ति लौट गये और नाबाल ने जो कुछ
कहा था दाऊद को बता दिया। 13तब दाऊद ने अपने
लोगों से कहा, "अपनी तलवार उठाओ!" अत: दाऊद
और उसके लोगों ने तलवारें कस ली। लगभग चार सौ
व्यक्ति दाऊद के साथ गये और दो सौ व्यक्ति साज़ो
सामान के साथ रुके रहे।

अबीगैल आपत्ति को टालती है

14नाबाल के सेवकों में से एक ने नाबाल की पत्नी
अबीगैल से बातें कीं। सेवक ने कहा, "दाऊद ने मरुभूमि
से अपने दूतों को हमारे स्वामी (नाबाल) के पास भेजा।
किन्तु नाबाल दाऊद के दूतों के साथ नीचता से पेश
आया। 15ये लोग हम लोगों के प्रति बहुत अच्छे थे। हम
लोग भेड़ों के साथ मैदानों में जाते थे। दाऊद के लोग
हमारे साथ लगातार रहे और उन्होंने हमारे साथ कुछ
भी बुरा नहीं किया। उन्होंने पूरे समय हमारा कुछ भी
नहीं चुराया। 16 दाऊद के लोगों ने दिन रात हमारी रक्षा
की। वे हम लोगों के लिये रक्षक चहारदीवारी की तरह
थे, उन्होंने हमारी रक्षा तब की जब हम भेड़ों की
रखवाली करते हुए उनके साथ थे। 17अब इस विषय में
सोचो और निर्णय करो कि तुम क्या कर सकती हो।
नाबाल ने जो कुछ कहा वह मूर्खतापूर्ण था। हमारे
स्वामी (नाबाल) और उनके सारे परिवार के लिये
भयंकर आपत्ति आ रही है।"

18अबीगैल ने शीघ्रता की और दो सौ रोटियाँ, दाखमधु
की दो भरी मशकें, पाँच पकी भेड़ें, लगभग एक बुशल
पका अन्न, दो क्वॉट मुनक्के और दो सौ सूखे अंजीर
की टिकिया लीं। उसने उन्हें गधों पर लादा। 19तब
अबीगैल ने अपने सेवकों से कहा, "आगे चलते रहो मैं
तुम्हारे पीछे आ रही हूँ।" किन्तु उसने अपने पति से
कुछ न कहा।

20अबीगैल अपने गधे पर बैठी और पर्वत की दूसरी
ओर पहुँची। वह दूसरी ओर से आते हुए दाऊद और
उसके आदमियों से मिली।

21अबीगैल से मिलने के पहले दाऊद कह रहा था,
"मैंने नाबाल की सम्पत्ति की रक्षा मरुभूमि में की। मैंने
यह व्यवस्था की कि उसकी कोई भेड़ खोए नहीं। मैंने
यह सब कुछ बिना लिये किया। मैंने उसके लिये अच्छा
किया। किन्तु मेरे प्रति वह बुरा रहा। 22परमेश्वर मुझे
दण्डित करे यदि मैं नाबाल के परिवार के किसी व्यक्ति
को कल सवेरे तक जीवित रहने दूँ।"

23किन्तु जब अबीगैल ने दाऊद को देखा वह शीघ्रता
से अपने गधे पर से उतर पड़ी। वह दाऊद के सामने
प्रणाम करने को झुकी। उसने अपना माथा धरती पर
टिकाया। 24अबीगैल दाऊद के चरणों पर पड़ गई। उसने
कहा, "मान्यवर, कृपा कर मुझे कुछ कहने दें। जो मैं
कहूँ उसे सुनें। जो कुछ हुआ उसके लिये मुझे दोष दें।
25मैंने उन व्यक्तियों को नहीं देखा जिन्हें आपने भेजा।
मान्यवर, उस नालायक आदमी (नाबाल) पर ध्यान न
दें। वह ठीक वही है जैसा उसका नाम है। उसके नाम
का अर्थ 'मूर्ख' है और वह सचमुच मूर्ख ही है। 26यहोवा
ने आपको निरपराध व्यक्तियों को मारने से रोका है।
यहोवा शाश्वत है और आप जीवित हैं, इसकी शपथ
खाकर मैं आशा करती हूँ कि आपके शत्रु और जो
आपको हानि पहुँचाना चाहते हैं, वे नाबाल की स्थिति
में होंगे। 27अब, मैं आपको यह भेंट लाई हूँ। कृपया इन
चीज़ों को उन लोगों को दें जो आपका अनुसरण करते
हैं।

28अपराध करने के लिये मुझे क्षमा करें। मैं जानती
हूँ कि यहोवा आपके परिवार को शक्तिशाली बनायेगा,
आपके परिवार से अनेक राजा होंगे। यहोवा यह करेगा
क्योंकि आप उसके लिये युद्ध लड़ते हैं। लोग तब आप
में कभी बुराई नहीं पाएंगे जब तक आप जीवित रहेंगे।
29यदि कोई व्यक्ति आपको मार डालने के लिये आपका
पीछा करता है तो यहोवा आपका परमेश्वर आपके
जीवन की रक्षा करेगा। किन्तु यहोवा आपके शत्रुओं
के जीवन को ऐसे दूर फेंकेगा जैसे गुलेल से पत्थर
फेंका जाता है।

30"यहोवा ने आपके लिये बहुत सी अच्छी चीजों को
करने का वचन दिया है और यहोवा अपने सभी वचनों
को पूरा करेगा। परमेश्वर आपको इस्राएल का शासक
बनाएगा। 31और आप इस जाल में नहीं फँसेंगे। आप
बुरा काम करने के अपराधी नहीं होंगे। आप निरपराध
लोगों को मारने का अपराध नहीं करेंगे। कृपया मुझे
उस समय याद रखें जब यहोवा आपको सफलता प्रदान
करे।"

32दाऊद ने अबीगैल को उत्तर दिया, "इस्राएल के
परमेश्वर, यहोवा की स्तुति करो। परमेश्वर ने तुम्हें
मुझसे मिलने भेजा है। 33तुम्हारे अच्छे निर्णय के लिये
परमेश्वर तुम्हें आशीर्वाद दे। तुमने आज मुझे निरपराध
लोगों को मारने से बचाया। 34निश्चय ही, जैसे इस्राएल

मित्र शाब्दिक "पुत्र।"

का परमेश्वर, यहोवा शाश्वत है, यदि तुम शीघ्रता से
मुझसे मिलने न आई होती तो कल सवेरे तक नाबाल
के परिवार का कोई भी पुरुष जीवित नहीं बच पाता।"
35तब दाऊद ने अबीगैल की भेंट को स्वीकार किया।
दाऊद ने उससे कहा, "शान्ति से घर जाओ। मैंने तुम्हारी
बातें सुनी हैं और मैं वही करूँगा जो तुमने करने को
कहा है।"

नाबाल की मृत्यु

36अबीगैल नाबाल के पास लौटी। नाबाल घर में था।
नाबाल एक राजा की तरह खा रहा था। नाबाल ने छक
कर दाखमधु पी रखी थी और वह प्रसन्न था। इसलिये
अबीगैल ने नाबाल को अगले सवेरे तक कुछ भी नहीं
बताया। 37अगली सुबह नाबाल का नशा उतरा। अत:
उसकी पत्नी ने हर बात बता दी और नाबाल को दिल
का दौरा पड़ गया। वह चट्टान की तरह कड़ा हो गया।
38करीब दस दिन बाद यहोवा ने नाबाल को मर जाने
दिया।

39दाऊद ने सुना कि नाबाल मर गया है। दाऊद ने
कहा, "यहोवा की स्तुति करो! नाबाल ने मेरे विरुद्ध
बुरी बातें कीं, किन्तु यहोवा ने मेरा समर्थन किया।
यहोवा ने मुझे पाप करने से बचाया और यहोवा ने
नाबाल को मर जाने दिया क्योंकि उसने अपराध किया
था।" तब दाऊद ने अबीगैल को एक सन्देश भेजा।
दाऊद ने उसे अपनी पत्नी होने के लिये कहा। 40दाऊद
के सेवक कर्मेल गए और अबीगैल से कहा, "दाऊद ने
हम लोगों को तुम्हें लाने के लिये भेजा है। दाऊद चाहता
है कि तुम उसकी पत्नी बनो।"

41अबीगैल ने धरती तक अपना माथा झुकाया।
उसने कहा, "मैं आपकी दासी हूँ। मैं आपकी सेवा
करने के लिये तैयार हूँ। मैं अपने स्वामी (दाऊद) के
सेवकों के पैरों को धोने को तैयार हूँ।"*

42अबीगैल शीघ्रता से गधे पर बैठी और दाऊद के
दूतों के साथ चल दी। अबीगैल अपने साथ पाँच दासियाँ
ले गई। वह दाऊद की पत्नी बनी।

43दाऊद ने यिज्रेल की अहिनोअम से भी विवाह
किया था। अहिनोअम और अबीगैल दोनों दाऊद की
पत्नियाँ थी। 44शाऊल की पुत्री मीकल भी दाऊद की
पत्नी थी। किन्तु शाऊल ने उसे गल्लीम के निवासी
लैश के पुत्र पलती को दे दिया था।

दाऊद और अबीशै शाऊल के डेरे में प्रवेश करते हैं

26 जीप के लोग शाऊल से मिलने गिबा गये।
उन्होंने शाऊल से कहा, "दाऊद हकीला की
पहाड़ी में छिपा है। यह पहाड़ी यशीमोन के उस पार है।"

2शाऊल जीप की मरुभूमि में गया। शाऊल ने पूरे
इस्राएल से अपने द्वारा चुने गए तीन हजार सैनिकों को
लिया। शाऊल और ये लोग जीप की मरुभूमि में दाऊद
को खोज रहे थे। 3शाऊल ने अपना डेरा हकीला की
पहाड़ी पर डाला। डेरा सड़क के किनारे यशीमोन के
पार था। दाऊद मरुभूमि में रह रहा था। दाऊद को
पता लगा कि शाऊल ने उसका वहाँ पीछा किया है।
4तब दाऊद ने अपने जासूसों को भेजा और दाऊद को
पता लगा कि शाऊल हकीला आ गया है। 5तब दाऊद
उस स्थान पर गया जहाँ शाऊल ने अपना डेरा डाला
था। दाऊद ने देखा कि शाऊल और अब्नेर वहाँ सो
रहे थे। (नेर का पुत्र अब्नेर शाऊल की सेना का
सेनापति था।) शाऊल डेरे के बीच सो रहा था। सारी
सेना शाऊल के चारों ओर थी।

6दाऊद ने हित्ती अहीमेलेक और यरूयाह के पुत्र
अबीशै से बातें की। (अबीशै योआब का भाई था।)
उसने उनसे कहा, "मेरे साथ शाऊल के पास उसके
डेरे में कौन चलेगा?" अबीशै ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हारे
साथ चलूँगा।"

7रात हुई। दाऊद और अबीशै शाऊल के डेरे में गए।
शाऊल डेरे के बीच में सोया हुआ था। उसका भाला
उसके सिर के पास जमीन में गड़ा था। अब्नेर और
दूसरे सैनिक शाऊल के चारों ओर सोए थे। 8अबीशै ने
दाऊद से कहा, "आज परमेश्वर ने तुम्हारे शत्रु को
पराजित करने दिया है। मुझे शाऊल को उसके भाले से
ही जमीन में टाँक देने दो। मैं इसे एक ही बार में कर
दूँगा!"

9किन्तु दाऊद ने अबीशै से कहा, "शाऊल को न
मारो! जो कोई यहोवा के चुने राजा को मारता है वह
अवश्य दण्डित होता है! 10यहोवा शाश्वत है, अत: वह
शाऊल को स्वयं दण्ड देगा। संभव है शाऊल स्वाभाविक
मृत्यु प्राप्त करे या संभव है शाऊल युद्ध में मारा जाये।
11किन्तु मैं प्रार्थना करता हूँ कि यहोवा मुझे अपने चुने
हुए राजा को मुझसे चोट न पहुँचवाये। अब पानी के घड़े
और भाले को उठाओ जो शाऊल के सिर के पास है।
तब हम लोग चलें।"

12इसलिये दाऊद ने भाले और पानी के घड़े को लिया
जो शाऊल के सिर के पास थे। तब दाऊद और अबीशै
ने शाऊल के डेरे को छोड़ दिया। किसी ने यह होते नहीं
देखा। कोई व्यक्ति इसके बारे में न जान सका। कोई भी
व्यक्ति जागा भी नहीं। शाऊल और उसके सैनिक सोते
रहे क्योंकि यहोवा ने उन्हें गहरी नींद में डाल दिया था।

दाऊद शाऊल को फिर लज्जित करता है

13दाऊद दूसरी ओर पार निकल गया। शाऊल के
डेरे से घाटी के पार दाऊद पर्वत की चोटी पर खड़ा था।
दाऊद और शाऊल के डेरे बहुत दूरी पर थे। 14दाऊद

मैं अपने ... हूँ यह दिखाता है कि अबीगैल नम्र थी और दासी की तरह रहने की इच्छा रखती थी।

ने सेना को और नेर के पुत्र अब्नेर को जोर से पुकारा,
“अब्नेर मुझे उत्तर दो!” अब्नेर ने पूछा, “तुम कौन
हो? तुम राजा को क्यों बुला रहे हो?”
15दाऊद ने उत्तर दिया, “तुम पुरुष हो। क्यों क्या तुम
नहीं हो? और तुम इस्राएल में किसी भी अन्य व्यक्ति से
बेहतर हो। क्यों यह ठीक है? तब तुमने अपने स्वामी
राजा की रक्षा क्यों नहीं की? एक साधारण व्यक्ति
तुम्हारे डेरे में तुम्हारे स्वामी राजा को मारने आया।
16तुमने भंयकर भूल की। यहोवा शाश्वत है! अत: तुम्हें
और तुम्हारे सैनिकों को मर जाना चाहिये। क्यों? क्योंकि
तुमने अपने स्वामी यहोवा के चुने राजा की रक्षा नहीं
की। शाऊल के सिर के पास भाले और पानी के घड़े
की खोज करो। वे कहाँ हैं?”
17शाऊल दाऊद की आवाज पहचानता था। शाऊल
ने कहा, “मेरे पुत्र दाऊद, क्या यह तुम्हारी आवाज है?”
दाऊद ने उत्तर दिया, “मेरे स्वामी और राजा, हाँ, यह
मेरी आवाज है।” 18दाऊद ने यह भी पूछा, “महाराज,
आप मेरा पीछा क्यों कर रहे हैं? मैंने कौन सी गलती
की है? मैं क्या करने का अपराधी हूँ ?19मेरे स्वामी
और राजा, मेरी बात सुनें! यदि यहोवा ने आपको मेरे
विरुद्ध क्रोधित किया है तो उन्हें एक भेंट स्वीकार
करने दें। किन्तु यदि लोगों ने मेरे विरुद्ध आपको क्रोधित
किया है तो यहोवा द्वारा उनके लिए कुछ बुरी आपत्ति
आने दें। लोगों ने मुझे इस देश को छोड़ने पर विवश
किया, जिसे यहोवा ने मुझे दिया है। लोगों ने मुझसे
कहा, ‘जाओ विदेशियों के साथ रहो। जाओ अन्य देवताओं
की पूजा करो।’ 20मुझे अब यहोवा की उपस्थिति से दूर
न मरने दो। इस्राएल का राजा एक मच्छर की खोज में
निकला है। आप उस व्यक्ति की तरह हैं जो पहाड़ों में
तीतर का शिकार करने निकलाहो।”*
21तब शाऊल ने कहा, “मैंने पाप किया है। मेरे पुत्र
दाऊद लौट आओ। आज तुमने दिखा दिया कि मेरा
जीवन तुम्हारे लिये महत्व रखता है। इसलिये मैं तुम्हें
चोट पहुँचाने का प्रयत्न नहीं करूँगा। मैंने मूर्खतापूर्ण
काम किया है। मैंने एक भंयकर भूल की है।”
22दाऊद ने उत्तर दिया, “राजा का भाला यह है।
अपने किसी युवक को यहाँ आने दो और वह ले जाए।
23यहोवा मनुष्यों के कर्म का फल देता है,यदि वह
अच्छा करता है तो उसे पुरस्कार देता है, और वह उसे
दण्ड देता है जो बुरा करता है। यहोवा ने आज मुझे
आपको पराजित करने दिया, किन्तु मैं यहोवा के चुने
हुए राजा पर चोट नहीं करूँगा। 24आज मैंने आपको
दिखा दिया कि आपका जीवन मेरे लिये महत्वपूर्ण है।
इसी प्रकार यहोवा दिखायेगा कि मेरा जीवन उसके
लिये महत्वपूर्ण है। यहोवा मेरी रक्षा हर एक आपत्ति से
करेगा।”
25शाऊल ने दाऊद से कहा, “मेरे पुत्र दाऊद, परमेश्वर
तुम्हें आशीर्वाद दे। तुम महान कार्य करोगे और सफल
होओगे।” दाऊद अपनी राह गया, और शाऊल घर लौट
गया।

दाऊद पलिश्तियों के साथ रहता है:

27 किन्तु दाऊद ने अपने मन में सोचा, “शाऊल
मुझे किसी दिन पकड़ लेगा। सर्वोत्तम बात मैं
यही कर सकता हूँ कि पलिश्तियों के देश में बच
निकलूँ। तब शाऊल मेरी खोज इस्राएल में बन्द कर
देगा। इस प्रकार मैं शाऊल से बच निकलूँगा।”
2इसलिए दाऊद और उसके छ: सौ लोगों ने इस्राएल
छोड़ दिया। वे माओक के पुत्र आकीश के पास गए।
आकीश गत का राजा था। 3दाऊद, उसके लोग और
उनके परिवार आकीश के साथ गत में रहने लगे।
दाऊद के साथ उसकी दो पत्नियाँ थीं। वे यिज्रेली की
अहीनोअम और कर्मेल की अबीगैल थी। अबीगैल नाबाल
की विधवा थी। 4लोगों ने शाऊल से कहा कि दाऊद
गत को भाग गया है और शाऊल ने उसकी खोज बन्द
कर दी।
5दाऊद ने आकीश से कहा, “यदि आप मुझ पर
प्रसन्न हैं तो मुझे अपने देश के नगरों में से एक में
स्थान दे दें। मैं आपका केवल सेवक मात्र हूँ। मुझे वहाँ
रहना चाहिये, आपके साथ यहाँ राजधानी नगर में
नहीं।”
6उस दिन आकीश ने दाऊद को सिकलग नगर दिया
और तब से सिकलग सदा यहूदा के राजाओं का रहा है।
7दाऊद पलिश्तियों के साथ एक वर्ष और चार महीने
रहा।

दाऊद का आकीश राजा को बहकाना

8दाऊद और उसके लोग अमालेकी तथा गशूर में
रहने वाले लोगों के साथ युद्ध करने गये। दाऊद के
लोगों ने उनको हराया और उनकी सम्पत्ति ले ली। लोग
उस क्षेत्र में शूर के निकट तेलम से लेकर लगातार
मिस्र तक रहते थे। 9दाऊद उस क्षेत्र में लोगों से लड़ा।
दाऊद ने किसी व्यक्ति को जीवित नहीं छोड़ा। दाऊद ने
उनकी सभी भेड़ें, पशु, गधे, ऊँट और कपड़े लिये। तब
वह इसे वापस आकीश के पास लाया।
10दाऊद ने यह कई बार किया। हर बार आकीश
पूछता कि वह कहाँ लड़ा और उन चीज़ों को कहाँ से
लाया। दाऊद ने कहा, “मैं यहूदा के दक्षिणी भाग में
लड़ा।” या “मैं यरहमेलियों के दक्षिणी भाग में लड़ा या

आप ... निकला हो जब लोग तीतर का शिकार पहाड़ों में करते थे तो वे उनका पीछा इतना करते थे कि पक्षी इतने थक जाते थे कि भाग न सकें। तब वे पक्षियों को मारते थे। शाऊल दाऊद का पीछा वैसे ही कर रहा था। यह श्लेष भी है। हिब्रू शब्द तीतर के लिये उस शब्द की तरह है जिसका अर्थ पद 14 में ‘बुलाना’ है।

मैं केनियों के दक्षिणी भाग में लड़ा।"* **11**दाऊद गत में कभी जीवित स्त्री या पुरुष नहीं लाया। दाऊद ने सोचा, "यदि हम किसी व्यक्ति को जीवित रहने देते हैं तो वह आकीश से कह सकता है कि वस्तुत: मैंने क्या किया है।" दाऊद ने पूरे समय, जब तक पलिश्तियों के देश में रहा, यही किया। **12**आकीश ने दाऊद पर विश्वास करना आरम्भ कर दिया। आकीश ने अपने आप सोचा, "अब दाऊद के अपने लोग ही उससे घृणा करते हैं। इस्राएली दाऊद से बहुत अधिक घृणा करते हैं। अब दाऊद मेरी सेवा करता रहेगा।"

पलिश्ती युद्ध की तैयारी करते हैं:

28 बाद में पलिश्तियों ने अपनी सेना को इस्राएल के विरुद्ध लड़ने के लिये इकट्ठा किया। आकीश ने दाऊद से कहा, "क्या तुम समझते हो कि तुम्हें और तुम्हारे व्यक्तियों को इस्राएलियों के विरुद्ध मेरे साथ लड़ने जाना चाहिये?"

2दाऊद ने उत्तर दिया, "निश्चय ही! तब आप स्वयं ही देखें कि मैं क्या कर सकता हूँ!"

आकीश ने कहा, "बहुत अच्छा, मैं तुम्हें अपना अंगरक्षक बनाऊँगा। तुम सदा मेरी रक्षा करोगे।"

शाऊल और स्त्री एन्दोर में

3शमूएल मर गया था। सभी इस्राएलियों ने शमूएल की मृत्यु पर शोक मनाया था। उन्होंने शमूएल के निवास स्थान रामा में उसे दफनाया था। इसके पहले शाऊल ने ओझाओं और भाग्यफल बताने वालों को इस्राएल छोड़ने को विवश किया था।

4पलिश्तियों ने युद्ध की तैयारी की। वे शूनेम आए और उस स्थान पर उन्होंने अपना डेरा डाला। शाऊल ने सभी इस्राएलियों को इकट्ठा किया और अपना डेरा गिलबो में डाला। **5**शाऊल ने पलिश्ती सेना को देखा और वह भयभीत हो गया। उसका हृदय भय से धड़कने लगा। **6**शाऊल ने यहोवा से प्रार्थना की, किन्तु यहोवा ने उसे उत्तर नहीं दिया। परमेश्वर ने शाऊल से स्वप्न में बातें नहीं की। परमेश्वर ने उसे उत्तर देने के लिये ऊरीम का उपयोग भी नहीं किया और परमेश्वर ने शाऊल से बात करने के लिये भविष्यवक्ताओं का उपयोग नहीं किया। **7**अन्त में शाऊल ने अपने अधिकारियों से कहा, "मेरे लिये ऐसी स्त्री का पता लगाओ जो ओझा हो। तब मैं उससे पूछने जा सकता हूँ कि इस युद्ध में क्या होगा।"

उसके अधिकारियों ने उत्तर दिया, "एन्दोर में एक ओझा है।"

8शाऊल ने भिन्न प्रकार के वस्त्र पहने। शाऊल ने यह इसलिये किया कि कोई व्यक्ति यह न जान सके कि वह कौन है। रात को वह अपने दो व्यक्तियों के साथ उस स्त्री से मिलने गया। शाऊल ने उस स्त्री से कहा, "प्रेत के द्वारा मुझे मेरा भविष्य बताओ। उस व्यक्ति को बुलाओ जिसका मैं नाम लूँ।"

9किन्तु उस स्त्री ने शाऊल से कहा, "तुम जानते ही हो कि शाऊल ने क्या किया है! उसने ओझाओं और भाग्यफल बताने वालों को इस्राएल देश को छोड़ने को विवश किया है। तुम मुझे जाल में फँसाना और मार डालना चाहते हो।"

10शाऊल ने यहोवा का नाम लिया और उस स्त्री से प्रतिज्ञा की, "निश्चय ही यहोवा शाश्वत है, अत: तुमको यह करने के लिये दण्ड नहीं मिलेगा।"

11स्त्री ने पूछा, "तुम किसे चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यहाँ बुलाऊँ?" शाऊल ने उत्तर दिया, "शमूएल को बुलाओ"

12और यह हुआ! स्त्री ने शमूएल को देखा और जोर से चीख उठी। उसने शाऊल से कहा, "तुमने मुझे धोखा दिया! तुम शाऊल हो!"

13राजा ने स्त्री से कहा, "तुम डरो नहीं! तुम क्या देख रही हो?" उस स्त्री ने कहा, "मैं एक आत्मा को जमीन* से निकल कर आती देख रही हूँ।"

14शाऊल ने पूछा, "वह कैसा दिखाई पड़ता है?" स्त्री ने उत्तर दिया, "वह लबादा पहने एक बूढ़े की तरह दिखाई पड़ता है।"

शाऊल ने समझ लिया कि वह शमूएल था। शाऊल ने प्रणाम किया। उसका माथा जमीन से जा लगा। **15**शमूएल ने शाऊल से कहा, "तुमने मुझे क्यों परेशान किया? तुमने मुझे ऊपर क्यों बुलाया?"

शाऊल ने उत्तर दिया, "मैं मुसीबत में हूँ! पलिश्ती मेरे विरुद्ध लड़ने आए हैं और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया है। परमेश्वर अब मुझको उत्तर नहीं देगा। वह मुझे उत्तर देने के लिये नबी या स्वप्न का उपयोग नहीं करेगा। यही कारण है कि मैंने तुमको बुलाया। मैं चाहता हूँ कि तुम बताओ कि मैं क्या करूँ!"

16शमूएल ने कहा, "यहोवा ने तुमको छोड़ दिया। अब वह तुम्हारे पड़ोसी (दाऊद) के साथ है। इसलिये तुम मुझको तंग क्यों करते हो? **17**यहोवा ने वही किया जो उसने करने को कहा था। उसने मेरा उपयोग तुम्हें इन चीजों को बताने के लिये किया। यहोवा तुम से राज्य छीन रहा है और उसने वह तुम्हारा राज्य तुम्हारे पड़ोसियों को दे रहा है। वह पड़ोसी दाऊद है। **18**तुमने यहोवा की आज्ञा का पालन नहीं किया। तुमने अमालेकियों को नष्ट नहीं किया और उन्हें नहीं दिखाया कि यहोवा

मैं यहूदा ... में लड़ा ये सभी स्थान इस्राएल के हैं। दाऊद आकीश को यह विश्वास दिलाता था कि वह अपने ही लोगों इस्राएलियों के विरुद्ध लड़ रहा है।

जमीन या "मृत्यु का स्थान शेओल।"

उन पर कितना क्रोधित है। यही कारण है कि यहोवा
ने तुम्हारे साथ आज यह किया है। 19यहोवा तुम्हें और
इस्राएल को, पलिश्तियों को देगा। यहोवा इस्राएल की
सेना को पलिश्तियों से पराजित करायेगा और कल तुम
और तुम्हारे पुत्र यहाँ मेरे साथ होंगे!"

20शाऊल तेजी से भूमि पर गिर पड़ा और वहाँ पड़ा
रहा। शाऊल, शमूएल द्वारा कही गई बातों से डरा हुआ
था। शाऊल बहुत कमजोर भी था क्योंकि उसने उस
पूरे दिन रात भोजन नहीं किया था।

21स्त्री शाऊल के पास आई। उसने देखा कि शाऊल
सचमुच भयभीत था। उसने कहा, "देखो, मैं आपकी
दासी हूँ। मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया है। मैंने
अपने जीवन को ख़तरे में डाला और जो आपने कहा,
किया। 22अब कृपया मेरी सुनें। मुझे आपको कुछ भोजन
देने दें। आपको अवश्य खाना चाहिये। तब आप में
इतनी शक्ति आयेगी कि आप अपने रास्ते जा सकें।"

23लेकिन शाऊल ने इन्कार किया। उसने कहा, "मैं
खाऊँगा नहीं।"

शाऊल के अधिकारियों ने उस स्त्री का साथ दिया
और उससे खाने के लिये प्रार्थना की। शाऊल ने
उनकी बात सुनीं। वह भूमि से उठा और बिस्तर पर
बैठ गया। 24उस स्त्री के घर में एक मोटा बछड़ा था।
उसने शीघ्रता से बछड़े को मारा। उसने कुछ आटा
लिया और उसे अपने हाथों से गूँदा। तब उसने बिना
खमीर की कुछ रोटियाँ बनाई। 25स्त्री ने भोजन शाऊल
और उसके अधिकारियों के सामने रखा। शाऊल और
उसके अधिकारियों ने खाया। तब वे उसी रात को उठे
और चल पड़े।

"दाऊद हमारे साथ नहीं आ सकता है!"

29 पलिश्तियों ने अपने सभी सैनिकों को आपे में
इकट्ठा किया। इस्राएलियों ने चश्मे के पास
यिज्रेल में डेरा डाला। 2पलिश्ती शासक अपनी सौ एवं
हजार पुरुषों की टुकड़ियों के साथ कदम बढ़ा रहे थे।
दाऊद और उसके लोग आकीश के साथ कदम बढ़ाते
हुए चल रहे थे।

3पलिश्ती अधिकारियों ने पूछा, "ये हिब्रू यहाँ क्या
कर रहे हैं?"

आकीश ने पलिश्ती अधिकारियों से कहा, "यह दाऊद
है। दाऊद शाऊल के अधिकारियों में से एक था।
दाऊद मेरे पास बहुत समय से है। मैं दाऊद में कोई दोष
तब से नहीं देखता जब से इसने शाऊल को छोड़ा और
मेरे पास आया।"

4किन्तु पलिश्ती अधिकारी आकीश पर क्रोधित हुए।
उन्होंने कहा, "दाऊद को वापस भेजो! दाऊद को उस
नगर में वापस जाना चाहिये जिसे तुमने उसको दिया है।
वह हम लोगों के साथ युद्ध में नहीं जा सकता। यदि वह
यहाँ है तो हम अपने डेरे में अपने एक शत्रु को रखे हुए
हैं। वह हमारे अपने आदमियों को मार कर अपने राजा
(शाऊल) को प्रसन्न करेगा। 5दाऊद वही व्यक्ति है
जिसके लिये इस गाने में इस्राएली गाते और नाचते हैं:

"शाऊल ने हजारों शत्रुओं को मारा। किन्तु दाऊद
ने दसियों हजार शत्रुओं को मारा!"

6इसलिये आकीश ने दाऊद को बुलाया। आकीश ने
कहा, "यहोवा शाश्वत है, तुम हमारे भक्त हो। मैं प्रसन्न
होता कि तुम मेरी सेना में सेवा करते। जिस दिन से तुम
मेरे पास आए हो, मैंने तुममें कोई दोष नहीं पाया है।
पलिश्ती शासक भी समझते हैं कि तुम अच्छे व्यक्ति हो
7शान्ति से लौट जाओ। पलिश्ती शासकों के विरुद्ध कुछ
न करो।"

8दाऊद ने पूछा, "मैंने क्या गलती की है? तुमने मेरे
भीतर जब से मैं तुम्हारे पास आया तब से आज तक
कौन सी बुराई देखी? मेरे प्रभु, राजा के शत्रुओं के
विरुद्ध तुम मुझे क्यों नहीं लड़ने देते?"

9आकीश ने उत्तर दिया, "मैं जानता हूँ कि मैं तुम्हें
पसन्द करता हूँ। तुम परमेश्वर के यहाँ से स्वर्गदूत के
समान हो। किन्तु पलिश्ती अधिकारी अब भी कहते हैं,
'दाऊद हम लोगों के साथ युद्ध में नहीं जा सकता।'
10सवेरे भोर होते ही तुम और तुम्हारे लोग वापस जायेंगे।
उस नगर को लौट जाओ जिसे मैंने तुम्हें दिया है। उन
पर ध्यान न दो जो बुरी बातें अधिकारी लोग तुम्हारे बारे
में कहते हैं। अत: ज्योंही सूर्य निकले तुम चल पड़ो।"

11इसलिये दाऊद और उसके लोग सवेरे तड़के उठे।
वे पलिश्तियों के देश में लौट गए और पलिश्ती यिज्रेल
को गये।

अमालेकी सिकलग पर आक्रमण करते हैं

30 तीसरे दिन, दाऊद और उसके लोग सिकलग
पहुँच गए। उन्होंने देखा कि अमालेकियों ने
सिकलग पर आक्रमण कर रखा है। अमालेकियों ने
नेगव क्षेत्र पर आक्रमण कर रखा था। उन्होंने सिकलग
पर आक्रमण किया था और नगर को जला दिया था।
2वे सिकलग की स्त्रियों को बन्दी बना कर ले गये थे।
वे जवान और बूढ़े सभी लोगों को ले गए थे। उन्होंने
किसी व्यक्ति को मारा नहीं। वे केवल उनको लेकर
चले गए थे।

3दाऊद और उसके लोग सिकलग आए और उन्होंने
नगर को जलते पाया। उनकी पत्नियाँ, पुत्र और पुत्रियाँ
जा चुके थे। अमालेकी उन्हें ले गए थे। 4दाऊद और
उसकी सेना के अन्य लोग जोर से तब तक रोते रहे जब
तक वे कमजोरी के कारण रोने के लायक नहीं रह
गये। 5अमालेकी दाऊद की दो पत्नियाँ यिज्रेल की

अहीनोअम तथा कर्मेल के नाबाल की विधवा अबीगैल
को ले गए थे।
6सेना के सभी लोग दु:खी और क्रोधित थे क्योंकि
उनकी पुत्र–पुत्रियाँ बन्दी बना ली गई थीं। वे पुरुष
दाऊद को पत्थरों से मार डालने की बात कर रहे थे।
इससे दाऊद बहुत घबरा गया। किन्तु दाऊद ने अपने
यहोवा परमेश्वर में शक्ति पाई। 7दाऊद ने याजक एब्यातार
से कहा, "एपोद लाओ।"
8तब दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की, "क्या मुझे उन
लोगों का पीछा करना चाहिये जो हमारे परिवारों को ले
गये हैं? क्या मैं उन्हें पकड़ लूँगा।"

यहोवा ने उत्तर दिया, "उनका पीछा करो। तुम उन्हें पकड़ लोगे। तुम अपने परिवारों को बचा लोगे।"

दाऊद और उसके व्यक्ति मिस्री दासों को पकड़ते हैं

9दाऊद ने अपने छ: सौ व्यक्तियों को साथ लिया और
बसोर की घाटियों में गया। उनमें से कुछ लोग उसी
स्थान पर ठहर गये। 10लगभग दो सौ व्यक्ति ठहर गये
क्योंकि वे अत्याधिक थके और कमजोर होने से जा
नहीं सकते थे। इसलिये दाऊद और चार सौ व्यक्तियों
ने अमालेकी का पीछा किया।
11दाऊद के व्यक्तियों ने एक मिस्री को खेत में देखा।
वे मिस्री को दाऊद के पास ले गये। उन्होंने पीने के लिये
थोड़ा पानी और खाने के लिये भोजन दिया। 12उन्होंने
मिस्री को अंजीर की टिकिया और सूखे अगूंर के दो
गुच्छे दिये। भोजन के बाद वह कुछ स्वस्थ हुआ। उसने
तीन दिन और तीन रात से न कुछ खाया था, न ही
पानी पीया था।
13दाऊद ने मिस्री से पूछा, "तुम्हारा स्वामी कौन है?
तुम कहाँ से आये हो?" मिस्री ने उत्तर दिया, "मैं मिस्री
हूँ। मैं एक अमालेकी का दास हूँ। तीन दिन पहले मैं
बीमार पड़ गया और मेरे स्वामी ने मुझे छोड़ दिया।
14हम लोगों ने नेगव पर आक्रमण किया जहाँ करेती*
रहते हैं। हम लोगों ने यहूदा प्रदेश पर आक्रमण किया
और नेगव क्षेत्र पर भी जहाँ कालेब लोग रहते हैं। हम
लोगों ने सिकलग को भी जलाया।"
15दाऊद ने मिस्री से पूछा, "क्या तुम उन लोगों के
पास हमें पहुँचाओगे जो हमारे परिवारों को ले गए हैं?"
मिस्री ने उत्तर दिया, "तुम परमेश्वर के सामने प्रतिज्ञा
करो कि तुम मुझे न मारोगे, न ही मुझे मेरे स्वामी को
दोगे। यदि तुम ऐसा करोगे तो मैं उनको पकड़वाने में
तुम्हारी सहायता करूँगा।"

दाऊद अमालेकी को हराता है

16मिस्री ने दाऊद को अमालेकियों के यहाँ पहुँचाया।
वे चारों ओर जमीन पर मदिरा पीते और भोजन करते
हुए पड़े थे। वे पलिश्तियों और यहूदा के प्रदेश से जो
बहुत सी चीजें लाए थे, उसी से उत्सव मना रहे थे।
17दाऊद ने उन्हें हराया और उनको मार डाला। वे
सूरज निकलने के अगले दिन की शाम तक लड़े।
अमालेकियों में से चार सौ युवकों के अतिरिक्त जो
ऊँटों पर चढ़कर भाग निकले, कोई बच न सका।
18दाऊद को अपनी दोनों पत्नियाँ वापस मिल गई।
दाऊद ने वे सभी चीज़ें वापस पाई जिन्हें अमालेकी ले
आए थे। 19कोई चीज नहीं खोई। उन्होंने सभी बच्चे और
बूढ़ों को पा लिया। उन्होंने अपने सभी पुत्रों और पुत्रियों
को प्राप्त किया। उन्हें अपनी कीमती चीज़ें भी मिल
गई। उन्होंने अपनी हर एक चीज वापस पाई जो अमालेकी
ले गए थे। दाऊद हर चीज़ लौटा लाया। 20दाऊद ने सारी
भेड़ें और पशु ले लिये। दाऊद के व्यक्तियों ने इन
जानवरों को आगे चलाया। दाऊद के लोगो ने कहा, "ये
दाऊद के पुरस्कार हैं।"

सभी लोगों का भाग बराबर होगा

21दाऊद वहाँ आया जहाँ दो सौ व्यक्ति बसोर की
घाटियों में ठहरे थे। ये वे व्यक्ति थे जो अत्याधिक थके
और कमजोर थे। अत: दाऊद के साथ नहीं जा सके
थे। वे लोग दाऊद और उन सैनिकों का स्वागत:
करने बाहर आये जो उसके साथ गये थे। बसोर की
घाटियों में ठहरे व्यक्तियों ने दाऊद और उसकी सेना
को बधाई दी जैसे ही वे निकट आए। 22किन्तु जो
टुकड़ी दाऊद के साथ गई थी उसमें कुछ बुरे और
परेशानी उत्पन्न करने वाले व्यक्ति भी थे। उन परेशानी
उत्पन्न करने वालों ने कहा, "ये दो सौ व्यक्ति हम लोगों
के साथ नहीं गये। इसलिये जो चीजें हम लाये हैं उनमें से
कुछ भी हम इन्हें नहीं देंगे। ये व्यक्ति केवल अपनी
पत्नियाँ और बच्चों को ले सकतेहैं।"
23दाऊद ने उत्तर दिया, "नहीं, मेरे भाईयों ऐसा मत
करो! इस विषय में सोचो कि यहोवा ने हमें क्या दिया
है! यहोवा ने हम लोगों को उस शत्रु को पराजित करने
दिया है जिसने हम पर आक्रमण किया। 24जो तुम
कहते हो उसे कोई नहीं सुनेगा। उन व्यक्तियों का
हिस्सा भी, जो वितरण सामग्री के साथ ठहरे, उतना ही
होगा जितना उनका जो युद्ध में गए। सभी का हिस्सा
एक समान होगा।"
25दाऊद ने इसे इस्राएल के लिये आदेश और नियम
बना दिया। यह नियम अब तक लागू है और चला आ
रहा है।
26दाऊद सिकलग में आया। तब उसने उन चीज़ों में
से, जो अमालेकियों से ली थीं, कुछ को अपने मित्रों
यहूदा नगर के प्रमुखों के लिये भेजा। दाऊद ने कहा,
"ये भेंटे आप लोगों के लिए उन चीज़ों में से है जिन्हें हम
लोगों ने यहोवा के शत्रुओं से प्राप्त कीं।"

करेती या "क्रीट के लोग" ये संभवत: पलिश्ती थे।

27दाऊद ने उन चीजों में से जो अमालेकियों से
प्राप्त हुई थीं। कुछ को बेतेल के प्रमुखों, नेगेव के
रामोत, यत्तीर, 28अरोएर, सिपमोत, एश्तमो, 29राकाल,
यरहमेलियों और केनियों के नगरों, 30होर्मा, बोराशान,
अताक, 31और हेब्रोन को भेजा। दाऊद ने उन चीज़ों में
से कुछ को उन सभी स्थानों के प्रमुखों को भेजा जहाँ
दाऊद और उसके लोग रहे थे।

शाऊल की मृत्यु

31 पलिश्ती इस्राएल के विरुद्ध लड़े, और इस्राएली
पलिश्तियों के सामने से भाग खड़े हुए। बहुत
से इस्राएली गिलबो पर्वत पर मारे गये। 2पलिश्ती शाऊल
और उसके पुत्रों से बड़ी वीरता से लड़े। पलिश्तियों ने
शाऊल के पुत्रों योनातान, अबीनादाब और मल्कीश
को मार डाला।

3युद्ध शाऊल के विरुद्ध बहुत बुरा रहा। धनुर्धारियों
ने शाऊल पर बाण बरसाये और शाऊल बुरी तरह
घायल हो गया। 4शाऊल ने अपने उस नौकर से, जो
कवच ले कर चल रहा था, कहा, "अपनी तलवार
निकालो और मुझे मार डालो। तब वे विदेशी मुझे चोट
पहुँचाने और मेरा मजाक उड़ाने नहीं आएंगे।" किन्तु
शाऊल के कवचवाहक ने ऐसा करना अस्वीकार कर
दिया। शाऊल का सहायक बहुत भयभीत था।

इसलिये शाऊल ने अपनी तलवार ली और अपने को
मार डाला। 5कवचवाहक ने देखा कि शाऊल मर गया।
इसलिये उसने भी अपनी तलवार से अपने को मार
डाला। वह वहीं शाऊल के साथ मर गया। 6इस प्रकार
शाऊल, उसके तीन पुत्र और उसका कवचवाहक सभी
एक साथ उस दिन मरे।

पलिश्ती शाऊल की मृत्यु से प्रसन्न हैं

7इस्राएलियों ने जो घाटी की दूसरी ओर रहते थे,
देखा, कि इस्राएली सेना भाग रही थी। उन्होंने देखा कि
शाऊल और उसके पुत्र मर गए हैं। इसलिये उन
इस्राएलियों ने अपने नगर छोड़े और भाग निकले। तब
पलिश्ती आए और उन्होंने उन नगरों को ले लिया।

8अगले दिन, पलिश्ती शवों से चीज़ें लेने आए। उन्होंने
शाऊल और उसके तीनों पुत्रों को गिलबो पर्वत पर मरा
पाया। 9पलिश्तियों ने शाऊल का सिर काट लिया और
उसका कवच ले लिया। वे इस समाचार को पलिश्ती
लोगों और अपनी देवमूर्तियों के पूजास्थल तक ले गये।
10उन्होंने शाऊल के कवच को आश्तोरेत के पूजास्थल
में रखा। पलिश्तियों ने शाऊल का शव बेतशान की
दीवार पर लटका दिया।

11याबेश गिलाद के लोगों ने उन सभी कारनामों को
सुना जो पलिश्तियों ने शाऊल के साथ किये। 12इसलिये
याबेश के सभी सैनिक बेतशान पहुँचे। वे सारी रात
चलते रहे! तब उन्होंने शाऊल के शव को बेतशान की
दीवार से उतारा। उन्होंने शाऊल के पुत्रों के शवों को
भी उतारा। तब वे इन शवों को याबेश ले आए। वहाँ
याबेश के लोगों ने शाऊल और उसके तीनों पुत्रों के
शवों को जलाया। 13तब इन लोगों ने शाऊल और
उसके पुत्रों की अस्थियाँ लीं और याबेश में पेड़ के नीचे
दफनायीं। तब याबेश के लोगों ने शोक मनाया। याबेश
के लोगों ने सात दिन तक खाना नहीं खाया।

2 शमूएल

दाऊद को शाऊल की मृत्यु का पता चलता है

1 अमालेकियों को पराजित करने के बाद दाऊद
सिकलग लौटा और वहाँ दो दिन ठहरा। यह शाऊल
की मृत्यु के बाद हुआ। **2**तीसरे दिन एक युवक सिकलग
आया। वह व्यक्ति उस डेरे से आया जहाँ शाऊल था।
उस व्यक्ति के वस्त्र फटे थे और उसके सिर पर धूलि
थी। वह व्यक्ति दाऊद के पास आया। उसने दाऊद के
सामने मुँह के बल गिरकर दण्डवत् किया।
3दाऊद ने उस व्यक्ति से पूछा, "तुम कहाँ से आये
हो?"
उस व्यक्ति ने दाऊद को उत्तर दिया, "मैं इस्राएलियों
के डेरे से बच निकला हूँ।"
4दाऊद ने उस से कहा, "कृपया मुझे यह बताओ कि
युद्ध किसने जीता?"
उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, "हमारे लोग युद्ध से भाग
गए। युद्ध में अनेकों लोग गिरे और मर गये हैं। शाऊल
और उसका पुत्र योनातन दोनों मर गये हैं।"
5दाऊद ने युवक से पूछा, "तुम कैसे जानते हो कि
शाऊल और उसका पुत्र योनातन दोनों मर गए हैं?"
6युवक ने दाऊद से कहा, "मैं गिलबो पर्वत पर था। वहाँ
मैंने शाऊल को अपने भाले पर झुकते देखा। पलिश्ती
रथ और घुडसवार उसके निकट से निकट आते जा
रहे थे। **7**शाऊल पीछे मुड़ा और उसने मुझे देखा। उसने
मुझे पुकारा। मैंने उत्तर दिया, मैं यहाँ हूँ। **8**तब शाऊल ने
मुझसे पूछा, 'तुम कौन हो?' मैंने उत्तर दिया, 'मैं अमालेकी
हूँ।' **9**शाऊल ने कहा, 'कृपया मुझे मार डालो। मैं बुरी
तरह घायल हूँ और मैं पहले से ही लगभग मर चुका
हूँ।' **10**इसलिये मैं रुका और उसे मार डाला। वह इतनी
बुरी तरह घायल था कि मैं समझ गया कि वह जीवित
नहीं रह सकता। तब मैंने उसके सिर से मुकुट और
भुजा से बाजूबन्द उतारा और मेरे स्वामी, मैं मुकुट और
बाजूबन्द यहाँ आपके लिये लाया हूँ।
11तब दाऊद ने अपने वस्त्रों को यह प्रकट करने के
लिये फाड़ डाला कि वह बहुत शोक में डूबा है। दाऊद
के साथ सभी लोगों ने यही किया। **12**वे बहुत दुःखी थे
और रोये। उन्होंने शाम तक कुछ खाया नहीं। वे रोये
क्योंकि शाऊल और उसका पुत्र योनातन मर गए थे।
दाऊद और उसके लोग यहोवा से उन लोगों के लिये
रोये जो मर गये थे, और वे इस्राएल के लिये रोये। वे
इसलिये रोये कि शाऊल, उसका पुत्र योनातन और
बहुत से इस्राएली युद्ध मे मारे गये थे।

दाऊद अमालेकी युवक को मार डालने का आदेश देता है

13दाऊद ने उस युवक से बातचीत की जिसने शाऊल
की मृत्यु की सूचना दी। दाऊद ने पूछा, "तुम कहाँ के
निवासी हो?"
युवक ने उत्तर दिया, "मैं एक विदेशी का पुत्र हूँ। मैं
अमालेकी हूँ।"
14दाऊद ने युवक से पूछा, "तुम यहोवा के चुने राजा
को मारने से भयभीत क्यों नहीं हुए?"
15-16तब दाऊद ने अमालेकी युवक से कहा, "तुम
स्वयं अपनी मृत्यु के लिये जिम्मेदार हो। तुमने कहा कि
तुमने यहोवा के चुने हुये राजा को मार डाला। इसलिये
तुम्हारे स्वयं के शब्दों ने तुम्हें अपराधी सिद्ध किया है।"
तब दाऊद ने अपने सेवक युवकों में से एक युवक को
बुलाया और अमालेकी को मार डालने को कहा!"
इस्राएली युवक ने अमालेकी को मार डाला।

शाऊल और योनातन के बारे में दाऊद का शोकगीत

17दाऊद ने शाऊल और उसकेपुत्र योनातन के बारे
में एक शोकगीत गाया। **18**दाऊद ने अपने व्यक्तियों से
इस गीत को यहूदा के लोगों को सिखाने को कहा, "इस
शोकगीत को "धनुष" कहा गया है। यह गीत याशार
की पुस्तक में लिखा है।
19"ओह इस्राएल, तुम्हारा सौन्दर्य तुम्हारे पहाड़ों में
नष्ट हुआ। ओह, कैसे शक्तिशाली पुरुष धराशायी हो
गए!
20इसे गत में न कहो। इसे अश्कलोन की गलियों में
घोषित न करो। इससे पलिश्तियों के नगर प्रसन्न होंगे!
खतनारहित * उत्सव मनायेंगे।
21गिलबो के पर्वत पर ओस और वर्षा न हो, उन
खेतों से आने वाली बलि-भेंटे न हों। शक्तिशाली पुरुषों

खतनारहितं वे व्यक्ति जिनका खतना न हुआ हो। इसका तात्पर्य पलिश्ती था, यहूदी नहीं।

की ढाल वहाँ गन्दी हुई, शाऊल की ढाल तेल से चमकाई
नहीं गई थी।*
22योनातन के धनुष ने अपने हिस्से के शत्रुओं को
मारा, और शाऊल की तलवार ने अपने हिस्से के
शत्रुओं को मारा! उन्होंने उन व्यक्तियों के खून को
छिड़का जो अब मर चुके हैं, उन्होंने शक्तिशाली व्यक्तियों
की चर्बी को नष्ट किया है।
23शाऊल और योनातन, एक दूसरे से प्रेम करते थे।
वे एक दूसरे से सुखी रहे जब तक वे जीवित रहे,
शाऊल–योनातन मृत्यु में भी साथ रहे! वे उकाब से
तेज भी जाते थे, वे सिंह से अधिक शक्तिशाली थे।
24इस्राएल की पुत्रियों, शाऊल के लिये रोओ! शाऊल
ने तुम्हें लाल पहनावे दिये, शाऊल ने तुम्हारे वस्त्रों पर
स्वर्ण आभूषण सजाएं हैं।
25शक्तिशाली पुरुष युद्ध में काम आए। योनातन गिलबो
पर्वत पर मरा।
26मेरे भाई योनातन, मैं तुम्हारे लिये रोता हूँ! मैंने
तुम्हारी मित्रता का सुख इतना पाया, तुम्हारा प्रेम मेरे
प्रति उससे भी अधिक गहरा था, जितना एक स्त्री का
प्रेम होता है।
27शक्तिशाली पुरूष युद्ध में काम आए, युद्ध के शस्त्र
चले गये हैं।"

दाऊद और उसके लोग हेब्रोन जाते हैं

2 बाद में दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की। दाऊद ने
कहा, "क्या मुझे यहूदा के किसी नगर में जाना
चाहिये?"

यहोवा ने दाऊद से कहा, "जाओ।"

दाऊद ने पूछा, "मुझे, कहाँ जाना चाहिये?"

यहोवा ने उत्तर दिया,"हेब्रोन को।"

2इसलिये दाऊद वहाँ गया। उसकी दोनों पत्नियाँ उसके
साथ गई। (वे यिज्रेली की अहीनोअम और कर्मेल के
नाबाल की विधवा अबीगैल थीं।) 3दाऊद अपने लोगों
और उनके परिवारों को भी लाया। वे हेब्रोन तथा पास
के नगर में बस गये।

दाऊद याबेश के लोगों को धन्यवाद देता है

4यहूदा के लोग हेब्रोन आये और उन्होंने दाऊद का
अभिषेक यहूदा के राजा के रूप में किया। तब उन्होंने
दाऊद से कहा, "याबेश गिलाद के लोग ही थे जिन्होंने
शाऊल को दफनाया।"
5दाऊद ने याबेश गिलाद के लोगों के पास दूत भेजे।
इन दूतों ने याबेश के लोगों को दाऊद का सन्देश दिया
"यहोवा तुमको आशीर्वाद दें, क्योंकि तुम लोगों ने अपने
स्वामी शाऊल के प्रति, उसकी दग्ध अस्थियों* को
दफनाकर, दया दिखाई है। 6यहोवा अब तुम्हारे प्रति
दयालु और सच्चा रहेगा। मैं भी तुम्हारे प्रति दयालु रहूँगा
क्योंकि तुम लोगों ने शाऊल की दग्ध अस्थियाँ दफनाई
है। 7अब शक्तिशाली और वीर बनो, तुम्हारे स्वामी
शाऊल मर चुके हैं और यहूदा के परिवार समूह ने
अपने राजा के रूप में मेरा अभिषेक किया है।"

ईशबोशेत राजा होता है

8नेर का पुत्र अब्नेर शाऊल की सेना का सेनापति
था अब्नेर शाऊल के पुत्र ईशबोशेत को महनैम ले
गया। 9उस स्थान पर अब्नेर ने ईशबोशेत को गिलाद,
आशेर, यिज्रेल, एप्रैम और बिन्यामीन का राजा बनाया।
ईशबोशेत सारे इस्राएल का राजा बन गया।
10ईशबोशेत शाऊल का पुत्र था। ईशबोशेत चालीस
वर्ष का था जब उसने इस्राएल पर शासन करना आरम्भ
किया। उसने दो वर्ष तक शासन किया। किन्तु यहूदा
का परिवार समूह दाऊद का अनुसरण करता था।
11दाऊद हेब्रोन में यहूदा के परिवार समूह का राजा
सात वर्ष छ: महीने तक रहा।

प्राणघातक मुकाबला

12नेर का पुत्र अब्नेर और शाऊल के पुत्र ईशबोशेत
के सेवकों ने महनैम को छोड़ा। वे गिबोन को गए।
13सरूयाह का पुत्र योआब और दाऊद के सेवकगण भी
गिबोन गए। वे अब्नेर और ईशबोशेत के सेवकों से,
गिबोन के चश्में पर मिले। अब्नेर की टोली हौज के
एक ओर बैठी थी। योआब की टोली हौज की दूसरी
ओर बैठी थी।
144अब्नेर ने योआब से कहा, "हम लोग युवकों को
खड़े होने दें और यहाँ एक मुकाबला हो जाने दो।"

योआब ने कहा, "हाँ, उनमें मुकाबला हो जाने दो।"

15तब युवक उठे। दोनों टोलियों ने मुकाबले के लिये
अपने युवकों को गिना। दाऊद के सैनिकों में से बारह
युवक चुने गये। 16हर एक युवक ने अपने शत्रु के सिर
को पकड़ा और अपनी तलवार अन्दर भोंक दी। अत:
युवक एक ही साथ गिर पड़े। यही कारण है कि वह
स्थान "तेज चाकुओं का खेत" कहा जाता है। यह स्थान
गिबोन में है।

अब्नेर असाहेल को मार डालता है

17उस दिन मुकाबला भयंकर युद्ध में बदल गया।
दाऊद के सेवकों ने अब्नेर और इस्राएलियों को हरा
दिया। 18सरूयाह के तीन पुत्र थे, योआब, अबीश और

शाऊल की ... नहीं थी या शाऊल की ढाल का अभिषेक तेल से नहीं हुआ था।

उसकी दग्ध अस्थियों शाऊल और योनातन दोनों के शव जलाये गये थे। देखें शमू. 31:12

असाहेल। असाहेल तेज दौड़नेवाला था। वह जंगली हिरन
की तरह तेज दौड़ता था। 19असाहेल ने अब्नेर का
पीछा किया। असाहेल सीधे अब्नेर की ओर दौड़ गया।
20अब्नेर ने मुड़कर देखा और पूछा, "क्या तुम असाहेल
हो?"

असाहेल ने कहा, "मैं हूँ।"

21अब्नेर असाहेल को चोट नहीं पहुँचाना चाहता था।
तब अब्नेर ने असाहेल से कहा, "मेरा पीछा करना
छोड़ो अपनी दायीं या बाई ओर मुड़ो और युवकों में से
किसी एक की कवच अपने लिये ले लो।" किन्तु असाहेल
ने अब्नेर का पीछा करना छोड़ने से इन्कार कर दिया।

22अब्नेर ने असाहेल से फिर कहा,"मेरा पीछा करना
छोड़ो। यदि तुम पीछा करना नहीं छोड़ते तो मैं तुमको
मार डालूँगा। यदि मैं तुम्हें मार डालूँगा तो मैं फिर तुम्हारे
भाई योआब का मुख नहीं देख सकूँगा।"

23किन्तु असाहेल ने अब्नेर का पीछा करना नहीं
छोड़ा। इसलिये अब्नेर ने अपने भाले के पिछले भाग
का उपयोग किया और असाहेल के पेट में उसे घुसेड़
दिया। भाला असाहेल के पेट में इतना गहरा धँसा कि
वह उसकी पीठ से बाहर निकल आया। असाहेल वहीं
तुरन्त मर गया।

योआब और अबीश अब्नेर का पीछा करते हैं

असाहेल का शरीर जमीन पर गिर पड़ा। लोग उस के
पास दौड़कर गये, और रुक गए। 24किन्तु योआब और
अबीश ने अब्नेर का पीछा करना जारी रखा।

जिस समय वे अम्मा पहाड़ी पर पहुँचे सूर्य डूब रहा था।
(अम्मा पहाड़ी गीह के सामने गिबोन मरुभूमि के रास्ते
पर थी।) 25बिन्यामीन परिवार समूह के लोग अब्नेर
के पास आए। वे सभी एक साथ पहाड़ी की चोटी पर
खड़े हो गए।

26अब्नेर ने चिल्लाकर योआब को पुकारा। अब्नेर
ने कहा, "क्या हमें लड़ जाना चाहिये और सदा के लिये
एक दूसरे को मार डालना चाहिये? निश्चय ही तुम
जानते हो कि इसका अन्त केवल शोक होगा। लोगों से
कहो कि अपने ही भाईयों का पीछा करना बन्द करें।"

27तब योआब ने कहा, "यह तुमने जो कहा वह ठीक
है। यहोवा शाश्वत है, यदि तुमने कुछ कहा नहीं होता
तो लोग अपने भाइयों का पीछा सवेरे तक भी करते
रहते।" 28तब योआब ने एक तुरही बजाई और उसके
लोगों ने इस्राएलियों का पीछा करना बन्द किया। उन्होंने
और आगे इस्राएलियों से लड़ने का प्रयत्न नहीं किया।

29अब्नेर और उसके लोग यरदन घाटी से होकर रात
भर चले। उन्होंने यरदन घाटी को पार किया। वे पूरे
दिन चलते रहे और महनैम पहुँचे।

30योआब अब्नेर का पीछा करना बन्द करने के बाद
अपनी सेना में वापस लौट गया। जब योआब ने लोगों
को इकट्ठा किया, दाऊद के उन्नीस सेवक लापता थे।
असाहेल भी लापता था। 31किन्तु दाऊद के सेवकों ने
बिन्यामीन परिवार समूह के तीन सौ साठ सदस्यों को,
जो अब्नेर का अनुसरण कर रहे थे, मार डाला था।
32दाऊद के सेवकों ने असाहेल को लिया और उसे
बेतलेहेम में उसके पिता के कब्रिस्तान में दफनाया।

योआब और उसके व्यक्ति रात भर चलते रहे। जब वे
हेब्रोन पहुँचे तो सूरज निकला।

इस्राएल और यहूदा के बीच युद्ध

3 शाऊल के परिवार और दाऊद के परिवार में
लम्बे समय तक युद्ध चलता रहा।* दाऊद
अधिकाधिक शक्तिशाली होता गया। और शाऊल का
परिवार कमजोर पर कमजोर होता गया।

दाऊद के छः पुत्र हेब्रोन में उत्पन्न हुए

2दाऊद के ये छः पुत्र हेब्रोन में उत्पन्न हुए थे। प्रथम
पुत्र अम्नोन था। अम्नोन की माँ यिज्रेल की अहीनोअम
थी। 3दूसरा पुत्र किलाब था। किलाब की माँ कर्मेल के
नाबाल की विधवा अबीगैल थी। तीसरा पुत्र अबशालोम
था। अबशालोम की माँ गशूर के राजा तल्मैं की पुत्री
माका थी। 4चौथा पुत्र अदोनिय्याह था। अदोनिय्याह की
माँ हग्गीत थी। पाँचवा पुत्र शपत्याह था। शपत्याह की
माँ अबीतल थी। 5छठा पुत्र यित्राम था। यित्राम की माँ
दाऊद की पत्नी एग्ला थी। दाऊद के ये छः पुत्र हेब्रोन में
उत्पन्न हुए।

अब्नेर दाऊद से मिल जाने का निर्णय करता है

6जिस समय शाऊल परिवार तथा दाऊद परिवार में
युद्ध चल रहा था, अब्नेर ने अपने को शाऊल की सेना
में शक्तिशाली बना लिया। 7शाऊल की दासी रिस्पा नाम
की थी। रिस्पा अय्या की पुत्री थी। ईशबोशेत ने अब्नेर
से कहा, "तुम मेरे पिता की दासी के साथ शारीरिक
सम्बन्ध क्यों करते हो?"

8अब्नेर, ईशबोशेत ने जो कुछ कहा, उस से बहुत
क्रोधित हुआ। अब्नेर ने कहा, "मैं शाऊल और उसके
परिवार का भक्त रहा हूँ। मैंने तुम को दाऊद को नहीं
दिया, मैंने तुमको उसे हराने नहीं दिया। मैं यहूदा के
लिये काम करने वाला देशद्रोही नहीं हूँ।* किन्तु अब
तुम कह रहे हो कि मैंने यह बुराई की। 9-10मैं प्रतिज्ञा
करता हूँ कि अब परमेश्वर ने जो कहा है वही होगा।
यहोवा ने कहा कि वह शाऊल के परिवार के राज्य

शाऊल के … रहा यहूदा का परिवार समूह दाऊद का अनुसरण करता था। वे उन दूसरे परिवार समूहों के साथ युद्ध करते थे, जो शाऊल का अनुसरण करते थे।

मैं …. नहीं हूँ शाब्दिक "क्या मैं यहूदा के कुत्ते का सिर हूं?

को ले लेगा और इसे दाऊद को देगा। यहोवा दाऊद को यहूदा और इस्राएल का राजा बनायेगा। वह दान से लेकर बेर्शेबा तक शासन करेगा। परमेश्वर मेरे साथ बुरा करे यदि मैं वैसा होने में सहायता नहीं करता।"
11ईशबोशेत अब्नेर से कुछ भी नहीं कह सका। ईशबोशेत उससे बहुत अधिक भयभीत था।
12अब्नेर ने दाऊद के पास दूत भेजे। अब्नेर ने कहा, "तुम इस देश पर शासन करो। मेरे साथ एक सन्धि करो और मैं तुमको पूरे इस्राएल के लोगों का शासक बनने में सहायता करूँगा।"
13दाऊद ने उत्तर दिया, "ठीक है! मैं तुम्हारे साथ सन्धि करूँगा। किन्तु तुमसे मैं केवल एक बात कहता हूँ कि जब तुम मुझसे मिलने आओ तब शाऊल की पुत्री मीकल को अवश्य लाना।"

दाऊद अपनी पत्नी मीकल को वापस पाता है

14दाऊद ने शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के पास दूत भेजे। दाऊद ने कहा, "मेरी पत्नी मीकल को मुझे वापस करो। मैंने उसे पाने के लिये सौ पलिश्तियों को मारा था।"*
15तब ईशबोशेत ने उन लोगों से कहा कि वह लैश के पुत्र पलतीएल नामक व्यक्ति के पास से मीकल को ले आए। **16**मीकल का पति पलतीएल मीकल के साथ गया। वह बहूरीम नगर तक मीकल के पीछे-पीछे रोता हुआ गया। किन्तु अब्नेर ने पलतीएल से कहा, "घर लौट जाओ।" इसलिये पलतीएल घर लौट गया।

अब्नेर दाऊद की सहायता की प्रतिज्ञा करता है

17अब्नेर ने इस्राएल के प्रमुखों को यह सन्देश भेजा। उसने कहा, "आप लोग दाऊद को अपना राजा बनाने के इच्छुक थे। **18**अब इसे करें! यहोवा दाऊद के बारे में कह रहा था जब उसने कहा था, 'मैं अपने इस्राएली लोगों को पलिश्तियों और उनके अन्य सभी शत्रुओं से बचाऊँगा। मैं यह अपने सेवक दाऊद द्वारा करूँगा।'"
19अब्नेर ने ये बाते बिन्यामीन के परिवार समूह के लोगों से कही। अब्नेर ने जो कुछ कहा वह बिन्यामीन परिवार के लोगों तथा इस्राएल के सभी लोगों को अच्छा लगा। अत: अब्नेर ने हेब्रोन में दाऊद से वे सभी बातें बतायी, जिसे करने में इस्राएल के लोग तथा बिन्यामीन परिवार के लोग सहमत थे।
20जब अब्नेर दाऊद के पास हेब्रोन आया। वह अपने साथ बीस लोगों का लाया। दाऊद ने अब्नेर को और उसके साथ आए सभी लोगों को दावत दी।
21अब्नेर ने दाऊद से कहा, "स्वामी, मेरे राजा, मैं जाऊँगा और सभी इस्राएलियों को आपके पास लाऊँगा। तब वे आपके साथ सन्धि करेंगे, और आप पूरे इस्राएल पर शासन करेंगे जैसा आप चाहते हैं।"
तब दाऊद ने अब्नेर को विदा किया और अब्नेर शान्तिपूर्वक गया।

अब्नेर की मृत्यु

22योआब और दाऊद के अधिकारी युद्ध से लौटकर आए। उनके पास बहुत कीमती सामान थे जो वे शत्रु से लाए थे। दाऊद ने अब्नेर को शान्तिपूर्वक जाने दिया था। इसलिए अब्नेर दाऊद के साथ हेब्रोन में नहीं था।
23योआब और उसकी सारी सेना हेब्रोन पहुँची। सेना ने योआब से कहा कि, "नेर का पुत्र अब्नेर राजा दाऊद के पास आया था और दाऊद ने उसे शान्तिपूर्वक जाने दिया।"
24योआब राजा के पास आया और कहा, "यह आपने क्या किया? अब्नेर आपके पास आया और आपने उसे बिना चोट पहुँचाये जाने दिया। क्यों? **25**आप नेर के पुत्र अब्नेर को जानते हैं। वह आपके साथ चाल चलने आया। वह उन सभी बातों का पता करने आया था जो आप कर रहे हैं।"
26योआब ने दाऊद को छोड़ा और सीरा के कुँएं पर अब्नेर के पास दूत भेजे। दूत अब्नेर को वापस लाये। किन्तु दाऊद को इसका पता न चला। **27**जब अब्नेर हेब्रोन आया तो योआब, प्रवेशद्वार के एक किनारे उसे ले गया और तब योआब न अब्नेन के पेट में प्रहार किया और अब्नेर मर गया। पिछले दिनों में अब्नेर ने योआब केभाई असाहेल को मारा था। अत: अब योआब ने अब्नेर को मारा डाला।

दाऊद अब्नेर के लिये रोता है

28बाद मे दाऊद ने यह समाचार सुना। दाऊद ने कहा, "मैं और मेरा राज्य नेर के पुत्र अब्नेर की मृत्यु के लिये निरपराध है। यहोवा इसे जानता है। **29**योआब और उसका परिवार इसके लिये उत्तरदायी है और उसका पूरा परिवार इसके लिए दोषी है। मुझे आशंका है कि योआब के परिवार पर बहुत विपत्तियाँ आएंगी। मुझे यह आशा है कि उसके परिवार में सदा कोई न कोई जख्म से अथवा भयानक चर्मरोग से पीड़ित होगा, और कोई बैसाखी उपयोग में लाएगा, और कोई युद्ध में मारा जाएगा और कोई बिना भोजन रहेगा!"
30योआब और उसके भाई अबीशै ने अब्नेर को मार डाला क्योंकि अब्नेर ने उसके भाई असाहेल को गिबोन की लड़ाई में मारा था।
31-32दाऊद ने योआब के साथ के सभी व्यक्तियों से कहा, "अपने वस्त्रों को फाड़ो और शोक वस्त्रों पहनो। अब्नेर के लिये रोओ।" उन्होंने अब्नेर को हेब्रोन में दफनाया। दाऊद अंत्येष्टि में दाऊद अर्थी के पीछे गया।

मैने .... मारा था शाब्दिक, "मैने उसके लिये सौ पलिश्तियों के खलडियों में दिया था।"

राजा दाऊद और सभी लोग अब्नेर की कब्र पर रोए।
33दाऊद ने अब्नेर के लिये अपना शोक-गीत गाया:

"क्या अब्नेर को किसी मूर्ख की तरह मरता
था?
34अब्नेर, तुम्हारे हाथ बंधे नहीं थे। तुम्हारे पैर
जंजीरों में कसे नहीं थे। नहीं अब्नेर, तुम्हें दुष्टों ने
मरा!"

तब सभी लोग फिर अब्नेर के लिये रोये। 35सभी
लोग दाऊद को दिन रहते भोजन करने के लिये प्रेरित
करने आए। किन्तु दाऊद ने विशेष प्रतिज्ञा की। उसने
कहा, "परमेश्वर मुझे दण्ड दे और मेरे कष्टों को बढ़ाए
यदि मैं सूरज डूबने के पहले रोटी या कोई अन्य भोजन
करूँ।" 36जो कुछ हुआ सभी लोगों ने देखा और वे उन
सभी कामों से सहमत हुए जो राजा दाऊद कर रहा था।
37उस दिन यहूदा के लोगों और सभी इस्राएलियों ने
समझ लिया कि राजा दाऊद वह व्यक्ति नहीं जिसने नेर
के पुत्र अब्नेर को मारा।
38राजा दाऊद ने अपने सेवकों से कहा, "तुम लोग
जानते हो कि आज इस्राएल में एक बहुत महत्वपूर्ण
व्यक्ति मर गया है। 39ये उसी दिन हुआ जिस दिन मेरा
अभिषेक राजा के रूप में हुआ था किन्तु सरूयाह के
पुत्र मुझसे अधिक उग्र हैं। यहोवा इन व्यक्तियों को
अवश्य दण्ड दे।"

शाऊल के परिवार में परेशानियाँ आती हैं

4 शाऊल के पुत्र (ईशबोशेत) ने सुना कि अब्नेर
की मृत्यु हेब्रोन में हो गई। ईशबोशेत और उसके
सभी लोग बहुत अधिक भयभीत हो गये। 2दो आदमी
शाऊल के पुत्र (ईशबोशेत) को देखने गये। ये दोनों
आदमी सेना के सेनापति थे। एक व्यक्ति का नाम बाना
था और दूसरे का नाम रेकाब था। बाना और रेकाब
बेरोत के रिम्मोन के पुत्र थे। (वे बिन्यामीन परिवार
समूह के थे। बेरोत नगर बिन्यामीन परिवार समूह का
था। 3बेरोत के लोग गित्तैम को भाग गए और वे आज
तक वहाँ रहते हैं।)
4शाऊल के पुत्र योनातन का एक पुत्र मपीबोशेत था
जो लंगड़ा था। योनातन का पुत्र उस समय पाँच वर्ष का
था, जब यह सूचना मिली थी कि शाऊल और योनातन
यिज्रेल में मारे गए। इस पुत्र की धायी ने इस बच्चे को
उठाया और वह भाग गई। किन्तु जब धायी ने भागने में
जल्दी की तो योनातन का पुत्र उसकी बाँहों से गिर
पड़ा। यही कारण था कि योनातन का पुत्र लंगड़ा हो
गया था। इस पुत्र का नाम मपीबोशेत है।
5बेरोत के रिम्मोन के पुत्र रेकाब और बाना दोपहर
को ईशबोशेत के महल में घुसे। ईशबोशेत गर्मी के
कारण आराम कर रहा था। 6-7रेकाब और बाना
महल के बीच में इस प्रकार आये मानों वे कुछ गेहूँ लेने
जा रहे हों। ईशबोशेत अपने बिस्तर में अपने शयनकक्ष
में लेटा हुआ था। रेकाब और बाना ने आघात किया
और ईशबोशेत को मार डाला। तब उन्होंने उसका सिर
काटा और उसे अपने साथ ले गये। वे यरदन घाटी से
होकर रात भर चलते रहे। 8वे हेब्रोन पहुँचे, और उन्होंने
ईशबोशेत का सिर दाऊद को दिया।
रेकाब और बाना ने राजा दाऊद से कहा, "यह आपके
शत्रु शाऊल के पुत्र ईशबोशेत का सिर है। उसने आपको
मारने का प्रयत्न किया। यहोवा ने शाऊल और उसके
परिवार को आपके लिये आज दण्ड दिया है।"
9दाऊद ने रेकाब और उसके भाई बाना को उत्तर
दिया, दाऊद ने कहा, "निश्चय ही, यहोवा शाश्वत है,
उसने मुझे सभी आपत्तियों से बचाया है। 10किन्तु एक
व्यक्ति ने यह सोचा था कि वह मेरे लिये अच्छी खबर
लायेगा। उसने मुझसे कहा, 'देखो! शाऊल मर गया।'
उसने सोचा था कि मैं उसे इस खबर को लाने के
कारण पुरस्कार दूँगा। किन्तु मैंने उस व्यक्ति को पकड़ा
और सिकलग में मार डाला। 11इसलिये मैं तुम लोगों को
मारना चाहूँगा और तुमको धरती से हटाऊँगा क्योंकि
दुष्ट व्यक्तियों ने एक अच्छे व्यक्ति को अपने घर के
शयनकक्ष में बिस्तर पर आराम करते समय मार डाला।"
12दाऊद ने युवकों को आदेश दिया कि वे रेकाब
और बाना को मार डालें। तब युवकों ने रेकाब और
बाना के हाथ-पैर काट डाले और हेब्रोन के चश्मे के
सहारे लटका कर मार डाला। तब उन्होंने ईशबोशेत के
सिर को लिया और उसी स्थान पर उसे दफनाया जिस
स्थान पर हेब्रोन में अब्नेर को दफनाया गया था।

इस्राएली दाऊद को राजा बनाते हैं

5 तब इस्राएल के सारे परिवार समूहों के लोग दाऊद
के पास हेब्रोन में आए। उन्होंने दाऊद से कहा,
"देखो हम सब एक परिवार* के हैं! 2बीते समय में जब
शाऊल हमारा राजा था तो वे आप ही थे जो इस्राएल के
लिये युद्ध में हमारा नेतृत्व करते थे और आप इस्राएल
को युद्धों से वापस लाये। यहोवा ने आपसे कहा, 'तुम
मेरे लोग अर्थात् इस्राएलियों के गड़ेंरिया होगे। तुम इस्राएल
के शासक होगे।'"
3इस्राएल के सभी प्रमुख, राजा दाऊद के पास, हेब्रोन
में आए। राजा दाऊद ने यहोवा के सामने, हेब्रोन में, इन
प्रमुखों के साथ एक सन्धि की। तब प्रमुखों ने इस्राएल
के राजा के रूप में दाऊद का अभिषेक किया।
4दाऊद उस समय तीस वर्ष का था जब उसने शासन
करना आरम्भ किया। उसने चालीस वर्ष शासन किया।

एक परिवार शाब्दिक "आपके रक्त-माँस।"

5उसने हेब्रोन में यहूदा पर सात वर्ष, छ: महीने तक
शासन किया और उसने, सारे इस्राएल और यहूदा पर
यरूशलेम में तैंतीस वर्ष तक शासन किया।

दाऊद यरूशलेम नगर को जीतता है

6राजा और उसके लोग यरूशलेम में यबूसियों के
विरुद्ध गए। यबूसी वे लोग थे जो उस प्रदेश में रहते थे।
यबूसियों ने दाऊद से कहा, "तुम हमारे नगर में नहीं आ
सकते।* यहाँ तक कि अन्धे और लंगडे भी तुमको
रोक सकते हैं।" (वे ऐसा इसलिये कह रहे थे क्योंकि वे
सोचते थे की दाऊद उनके नगर में प्रवेश करने की
क्षमता नहीं रखता। 7किन्तु दाऊद ने सिय्योन का किला
ले लिया। यह किला दाऊद–नगर बना)
8उस दिन दाऊद ने अपने लोगों से कहा, "यदि तुम
लोग यबूसियों को हराना चाहते हो तो जलसुरंग* से
जाओ, और उन 'अन्धे तथा अपाहिज' शत्रुओं पर हमला
करो।" यही कारण है कि लोग कहते हैं "अन्धे और
विकलांग उपासना गृह में नहीं आ सकते।"
9दाऊद किले में रहता था और इसे "दाऊद का नगर"
कहता था। दाऊद ने उस क्षेत्र को बनाया और मिल्लो
नाम दिया। उसने नगर के भीतर अन्य भवन भी बनाये।
10दाऊद अधिकाधिक शक्तिशाली होता गया क्योंकि
सर्वशक्तिमान यहोवा उसके साथ था।
11सोर के राजा हीराम ने दाऊद के पास दूतों को
भेजा। हीराम ने देवदारू के पेड़, बढ़ई और राजमिस्त्री
लोगों को भी भेजा। उन्होंने दाऊद के लिये एक महल
बनाया। 12उस समय दाऊद जानता था कि यहोवा ने
उसे सचमुच इस्राएल का राजा बनाया है, और दाऊद
यह भी जानता था कि यहोवा ने उसके राज्य को
परमेश्वर के लोगों, अर्थात् इस्राएलियों के लिये बहुत
महत्वपूर्ण बनाया है।
13दाऊद हेब्रोन से यरूशलेम चला गया। यरूशलेम में
दाऊद ने और अधिक दासियों तथा पत्नियों को प्राप्त
किया। दाऊद के कुछ दूसरे बच्चे भी यरूशलेम में हुए।
14यरूशलेम में उत्पन्न हुए दाऊद के पुत्रों के नाम ये हैं
: शम्मू, शोबाब, नातान, सुलैमान, 15यिभार, एलोशू,
नेपेग, यापी, 16एलीशामा, एल्यादा तथा एलीपेलेत।

दाऊद पलिश्तयों के विरुद्ध युद्ध में जाता है

17पलिश्तयों ने यह सुना कि इस्राएलियों ने दाऊद का
अभिषेक इस्राएल के राजा के रूप में किया है तब सभी
पलिश्ती दाऊद को मार डालने के लिये उसकी खोज
करने निकले। किन्तु दाऊद को यह सूचना मिल गई।
वह एक किले में चला गया। 18पलिश्ती आए और
रपाईम की घाटी में उन्होंने अपना डेरा डाला।
19दाऊद ने बात करके यहोवा से पूछा, "क्या मुझे
पलिश्तियों के विरुद्ध युद्ध में जाना चाहिये? क्या तू मुझे
पलिश्तियों को हराने देगा?"
यहोवा ने दाऊद से कहा, "जाओं, क्योंकि मैं निश्चय
ही, पलिश्तियों को हराने में तुम्हारी सहायता करूँगा।"
20तब दाऊद बालपरासीम आया। वहाँ उसने पलिश्तियों
को हराया। दाऊद ने कहा, "यहोवा ने मेरे सामने मेरे
शत्रुओं की सेना को इस प्रकार दौड़ भगाया जैसे जल
बांध को तोड़ कर बहता है।" यही कारण है कि दाऊद
ने उस स्थान का नाम "बालपरासीम" रखा। 21पलिश्तियों
ने बालपरासीम में अपनी देवमूर्तियों को पीछे छोड़ दिया।
दाऊद और उसके लोगों ने उन देवमूर्तियों को वहाँ से
हटा दिया।
22पलिश्ती फिर आये और रपाईम की घाटी में उन्होंने
डेरा डाला।
23दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की। इस समय यहोवा ने
कहा, "वहाँ मत जाओ। उनके चारों ओर उनकी सेना
के पीछे से जाओ। तूत वृक्षों के पास उन पर आक्रमण
करो। 24तूत वृक्षों की चोटी से तुम पलिश्तियों के सामरिक
प्रमाण की ध्वनि को सुनोगे। तब तुम्हें शीघ्रता करनी
चाहिये, क्योंकि उस समय यहोवा जायेगा और तुम्हारे
लिये पलिश्तियों को हरा देगा।"
25दाऊद ने वही किया जो करने के लिये यहोवा ने
आदेश दिया था। उसने पलिश्तियों को हराया। उसने
उनका पीछा लगातार गेबा से गेजेर तक किया।

परमेश्वर का पवित्र सन्दूक यरूशलेम लाया गया

6 दाऊद ने फिर इस्राएल के सभी चुने तीस हजार
लोगों को इकट्ठा किया। 2तब दाऊद और उसके
सभी लोग यहूदा के बाले* में गये और परमेश्वर के
पवित्र सन्दूक को यहूदा के बाले से लेकर उसे यरूशलेम
में ले आए। लोग पवित्र सन्दूक के पास यहोवा की
उपासना करने के लिये जाते हैं। पवित्र सन्दूक यहोवा
के सिंहासन की तरह है। पवित्र सन्दूक के ऊपर करूब
की मूर्तियाँ है, और यहोवा इन स्वर्गदूतों पर राजा की
तरह बैठता है। 3उन्होनें परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को
एक नई गाड़ी में रखा। वे गिबियाह में स्थित अबीनादाब
के घर से पवित्र सन्दूक को ले जा रहे थे। उज्जा और
अहह्यो नई गाड़ी चला रहे थे।
4जब वे गिबियाह में अबीनादाब के घर से पवित्र
सन्दूक ले जा रहे थे, तब उज्जा परमेश्वर के पवित्र

तुम ... नहीं आ सकते यरूशलेम का नगर पहाड़ी पर बसा था और नगर के चारों ओर ऊँची दीवार थी। अत: अधिकार करने में कठिनाई थी।

जल सुरंग वहाँ एक जल सुरंग थी जो भूमि में नीचे प्राचीन यरूशलेम नगर में जाती थी। दाऊद और उसके व्यक्तियों ने नगर में पहुंचने के लिये इस सुरंग का उपयोग किया।

यहुदा के बाला किर्यत्यारीम का अन्य नाम देखें 1 इति. 13:6

सन्दूक सहित गाड़ी में बैठा था। अहह्यो पवित्र सन्दूक
वाली गाड़ी के आगे आगे चल कर संचालन कर रहा
था। 5दाऊद और सभी इस्राएली यहोवा के सामने पूरे
उत्साह के साथ नाच और गा रहे थे। ये संगीत वाद्य
सनौवर लकड़ी के बने थे। वे वीणा, सितार, ढोल झांझ,
और मंजीरा बजा रहे थे। 6जब दाऊद के लोग नकोन
खलिहान में आये तो बैल लड़खड़ा पडे। परमेश्वर का
पवित्र सन्दूक बन्द गाड़ी से गिरने लगा। उज्जा ने पवित्र
सन्दूक को पकड़ लिया। 7यहोवा उज्जा पर क्रोधित हुआ
और उसे मार डाला।* उज्जा ने पवित्र सन्दूक को
छूकर परमेश्वर के प्रति अश्रद्धा दिखाई। उज्जा वहाँ
परमेश्वर के पवित्र सन्दूक के बगल में मरा। 8दाऊद
निराश हो गया क्योंकि यहोवा ने उज्जा को मार डाला
था। दाऊद ने उस स्थान को "पेरेसुज्जा" कहा।

9दाऊद उस दिन यहोवा से डर गया। दाऊद ने कहा,
"अब मैं यहोवा का पवित्र सन्दूक यहाँ कैसे ला सकता
हूँ?"

10इसलिये दाऊद यहोवा के पवित्र सन्दूक को दाऊद
नगर में नहीं ले जाना चाहता था। दाऊद ने पवित्र सन्दूक
को गत से आये हुये ओबेद-एदोम के घर में रखा।
दाऊद पवित्र सन्दूक को सड़क से गत के ओबेद-एदोम
के घर ले गया। 11यहोवा का सन्दूक ओबेद-एदोम के
घर में तीन महीने तक रहा। यहोवा ने ओबेद-एदोमऔर
उसके सारे परिवार को आशीर्वाद दिया।

12लोगों ने दाऊद से कहा, "यहोवा ने ओबेद-एदोम के
परिवार और उसकी सारी चीजों को आशीर्वाद दिया
क्योंकि परमेश्वर का पवित्र सन्दूक वहाँ है।" इसलिये
दाऊद गया और ओबेद-एदोम के घर से परमेश्वर के
पवित्र सन्दूक को दाऊद नगर से ले आया। दाऊद ने
इसे प्रसन्नता से किया। 13जब यहोवा के पवित्र सन्दूक
को ले चलने वाले छः कदम चले तो वे रुक गये और
दाऊद ने एक बैल तथा एक मोटे बछड़े की बलि भेंट
की। 14तब दाऊद ने यहोवा के सामने पूरे उत्साह के
साथ नृत्य किया। दाऊद ने एपोद पहन रखा था।

15दाऊद और सभी इस्राएली यहोवा के पवित्र सन्दूक
को नगर लाते समय उल्लास से उद्घोष करने और
तुरही बजाने लगे। 16शाऊल की पुत्री मीकल खिड़की
से देख रही थी। जब यहोवा का पवित्र सन्दूक नगर में
आया तो दाऊद यहोवा के सामने नाच-कूद कर रहा
था। मीकल ने यह देखा और वह दाऊद पर गुस्सा हो
गई। उसने सोचा कि वह अपने आप को मूर्ख सिद्ध
कर रहा है।

17दाऊद ने पवित्र सन्दूक के लिये एक तम्बू लगाया।
इस्राएलियों ने यहोवा के सन्दूक को तम्बू में उसकी
जगह पर रखा। तब दाऊद ने होमबलि और मेलबलि
यहोवा को चढ़ाई।

18जब दाऊद ने होमबलि और मेलबलि चढ़ाना पूरा
किया तब उसने सर्वशक्तिमान यहोवा के नाम पर लोगों
को आशीर्वाद दिया। 19दाऊद ने रोटी, किशमिश का
टुकड़ा, और खजूर की रोटी का हिस्सा इस्राएल के हर
एक स्त्री-पुरुष को दिया। तब सभी लोग अपने घर गये।

मीकल दाऊद को डाँटती है

20दाऊद अपने घर में आशीर्वाद देने गया। किन्तु
शाऊल की पुत्री मीकल उससे मिलने निकल आई।
मीकल ने कहा, "आज इस्राएल के राजा ने अपना ही
सम्मान नहीं किया। तुमने अपनी प्रजा की दासियों के
सामने अपने वस्त्र उतार दिये। तुम उस मूर्ख की तरह थे
जो बिना लज्जा के अपने वस्त्र उतारता है!"

21तब दाऊद ने मीकल से कहा, "यहोवा ने मुझे चुना
है, न कि तुम्हारे पिता और उसके परिवार के किसी
व्यक्ति ने। यहोवा ने मुझे इस्राएल के अपने लोगों का
मार्ग दर्शक बनने के लिये चुना। यही कारण है कि मैं
यहोवा के सामने उत्सव मनाऊँगा और नृत्य करूँगा।
22संभव है, मैं तुम्हारी दृष्टि में अपना सम्मान खो दूँ।
संभव है मैं तुम्हारी निगाह में ही कुछ गिर जाऊँ। किन्तु
जिन लड़कियों के बारे में तुम बात करती हो वे मेरा
सम्मान करती हैं।"

23शाऊल की पुत्री को कभी सन्तान न हुई। वह बिना
सन्तान के मरी।

दाऊद एक उपासना गृह बनाना चाहता है

7 जब राजा दाऊद अपने नये घर गया। यहोवा ने
उसके चारों ओर के शत्रुओं से उसे शान्ति दी।
2राजा दाऊद ने नातान नबी से कहा, "देखो, मैं देवदारू
की लकड़ी से बने महल में रह रहा हूँ। किन्तु परमेश्वर
का पवित्र सन्दूक अब भी तम्बू में रखा हुआ है।"

3नातान ने राजा दाऊद से कहा, "जाओ, और जो
कुछ तुम करना चाहते हो, करो। यहोवा तुम्हारे साथ
होगा। 4किन्तु उसी रात नातान को यहोवा का सन्देश
मिला। 5यहोवा ने कहा, "जाओ, और मेरे सेवक दाऊद
से कहो, 'यहोवा यह कहता है: तुम वह व्यक्ति नहीं हो
जो मेरे रहने के लिये एक गृह बनाये। 6मैं उस समय
गृह में नहीं रहता था जब मैं इस्राएलियों को मिस्र से
बाहर लाया। नहीं, मैं उस समय से चारों ओर तम्बू में
यात्रा करता रहा। मैंने तम्बू का उपयोग अपने घर के
रूप में किया। 7मैंने इस्राएल के किसी भी परिवार समूह
से देवदारू की लकड़ी का सुन्दर घर अपने लिए बनाने
के लिए नहीं कहा।'

8"तुम्हें मेरे सेवक दाऊद से यह कहना चाहिये:
सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है, 'मैं तुम्हें चरागाह से

यहोवा ... मार डाला केवल लेविवंशी परमेश्वर की पवित्र सन्दूक या पवित्र तम्बू से कोई उपासना गृह-सामग्री ले जा सकते थे। उज्जा लेविवंशी नहीं था। देखें गिनती 1:50

लाया। मैंने तुम्हें तब अपनाया जब तुम भेंड़े चरा रहे थे।
मैंने तुमको अपने लोग इस्राएलियों का मार्ग दर्शक
चुना। **9**मैं तुम्हारे साथ तुम जहाँ कहीं गए रहा । मैंने
तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे लिये पराजित किया। मैं तुम्हें
पृथ्वी महान व्यक्तियों में से एक बनाऊँगा **10–11**और मैं
अपने लोग इस्राएलियों के लिये एक स्थान चुनूँगा। मैं
इस्राएलियों को इस प्रकार जमाऊँगा कि वे अपनी भूमि
पर रह सकें। तब वे फिर कभी हटाये नहीं जा सकेंगे।
अतीत में मैंने अपने इस्राएल के लोगों को मार्गदर्शन के
लिये न्यायाधीशों को भेजा था और पापी व्यक्तियों ने
उन्हें परेशान किया। अब वैसा नहीं होगा। मैं तुम्हें
तुम्हारे सभी शत्रुओं से शान्ति दूँगा। मैं तुमसे यह भी
कहता हूँ कि मैं तुम्हारे परिवार को राजाओं का परिवार
बनाऊँगा।*

12"'तुम्हारी उम्र समाप्त होगी और तुम अपने पूर्वजों
के साथ दफनाये जाओगे। उस समय मैं तुम्हारे पुत्रों में
से एक को राजा बनाऊँगा। **13**वह मेरे नाम पर मेरा
एक गृह (मन्दिर) बनवायेगा। मैं उसके राज्य को सदा
के लिये शक्तिशाली बनाऊँगा। **14**मैं उसका पिता बनूँगा
और वह मेरा पुत्र होगा। जब वह पाप करेगा, मैं उसे
दण्ड देने के लिये अन्य लोगों का उपयोग करूँगा। उसे
दंडित करने के लिये वे मेरे सचेतक होंगे। **15**किन्तु मैं
उससे प्रेम करना बन्द नहीं करूँगा। मैं उस पर कृपालु
बना रहूँगा। मैंने अपने प्रेम और अपनी कृपा शाऊल से
हटा ली। मैंने शाऊल को हटा दिया, जब मैं तुम्हारी
ओर मुड़ा। मैं तुम्हारे परिवार के साथ वही नहीं करूँगा।
16तुम्हारे राजाओ का परिवार सदा चलता रहेगा तुम
उस पर निर्भर रह सकते हों तुम्हाला राज्य तुम्हारे लिये
सदा चलता रहेगा। तुम्हारा सिहांसन (राज्य) सदैव बना
रहेगा।'"

17नातान ने दाऊद को हर एक बात बताई। उसने
दाऊद से हर एक बात कही जो उसने दर्शन में सुनी।

दाऊद परमेश्वर से प्रार्थना करता है

18तब राजा दाऊद भीतर गया और यहोवा के सामने
बैठ गया। दाऊद ने कहा, "यहोवा, मेरे स्वामी, मैं तेरे
लिये इतना महत्वपूर्ण क्यों हूँ? मेरा परिवार महत्वपूर्ण
क्यों है? तूने मुझे महत्वपूर्ण क्यों बना दिया। **19**मैं तेरे
सेवक के अतिरिक्त और कुछ नहीं हूँ, और तू मुझ पर
इतना अधिक कृपालु रहा है। किन्तु तूने ये कृपायें मेरे
भविष्य के परिवार के लिये भी करने को कहा है।
यहोवा मेरे स्वामी, तू सदा लोगों के लिये ऐसी ही बातें
नहीं कहता, क्या तू कहता है? **20**मैं तुझसे और अधिक,
क्या कह सकता हूँ? यहोवा, मेरे स्वामी, तू जानता है
कि मैं केवल तेरा सेवक हूँ। **21**तूने ये अद्‌भुत कार्य
इसलिये किया है क्योंकि तूने कहा है कि तू इनको
करेगा और क्योंकि यह कुछ ऐसा है जिसे तू करना
चाहता है, और तूने निश्चय किया है कि मैं इन बड़े
कार्यों को जानूँ। **22**हे यहोवा! मेरे स्वामी यही कारण है
कि तू महान है! तेरे समान कोई नहीं है। तेरी तरह
कोई देवता नहीं है। हम यह जानते हैं क्योंकि हम लोगों
ने स्वयं यह सब सुना है। उन कार्यों के बारे में जो तूने
किये।

23"तेरे इस्राएल के लोगों की तरह पृथ्वी पर कोई
राष्ट्र नहीं है। ये विशेष लोग हैं। वे दास थे। किन्तु तूने
उन्हें मिस्र से निकाला और उन्हें स्वतन्त्र किया। तूने
उन्हें अपने लोग बनाया। तूने इस्राएलियों के लिये महान
और अद्‌भुत काम किये। तूने अपने देश के लिये
आश्चर्यजनक काम किये। **24**तूने इस्राएल के लोगों को
सदा के लिये अपने लोग बनाया, और यहोवा तू उनका
परमेश्वर हुआ।

25"यहोवा परमेश्वर, तूने अभी, मेरे बारे में बाते कीं।
मैं तेरा सेवक हूँ। तूने मेरे परिवार के बारे में भी बातें
की। अपने वचनों को सदा सत्य कर जो तूने करने की
प्रतिज्ञा की है। मेरे परिवार को राजाओं का परिवार
हमेशा के लिये बना। **26**तब तेरा नाम सदा सम्मानित
रहेगा, और लोग कहेंगे, 'सर्वशक्तिमान यहोवा परमेश्वर
इस्राएल पर शासन करता है और होने दे कि तेरे सेवक
दाऊद का परिवार तेरे सामने सदा चलता रहे।'

27"सर्वशक्तिमान यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर, तूने
मुझे बहुत कुछ दिखाया है। तूने कहा, 'मैं तुम्हारे परिवार
को महान बनाऊँगा।' यही कारण है कि मैं तेरे सेवक
ने, तेरे प्रति यह प्रार्थना करने का निश्चय किया।
28यहोवा मेरे स्वामी, तू परमेश्वर है और तेरे कथन
सत्य होते है और तूने इस अपने सेवक के लिये, यह
अच्छी चीज का वचन दिया है। **29**कृपया मेरे परिवार
को आशीष दे। हे यहोवा! हे स्वामी! जिससे वह तेरे
सम्मुख सदैव बना रहे। तूने ये ही वचन दिया था। अपने
आशीर्वाद से मेरे परिवार को सदा के लिये आशीष दे।"

दाऊद अनेक युद्ध जीतता है

8 बाद में दाऊद ने पलिश्तियों को हराया। उसने
उनकी राजधानी पर अधिकार कर लिया। **2**दाऊद
ने मोआब के लोगों को भी हराया। उसने उन्हें भूमि पर
लेटने को विवश किया। तब उसने एक रस्सी का
उपयोग उन्हें नापने के लिये किया। जब दो व्यक्ति नाप
लिये तब दाऊद ने उनको आदेश दिया कि वे मारे
जायेंगे। किन्तु हर एक तीसरा व्यक्ति जीवित रहने दिया
गया। मोआब के लोग दाऊद के सेवक बन गए। उन्होंने
उसे राजस्व दिया।

3रहोब का पुत्र हददेजेर, सोबा का राजा था। दाऊद ने
हददेजेर को उस समय पराजित किया जब उसने महानद

तुम्हारे ... बनाऊँगा शाब्दिक "तुम्हारे लिये एक खानदान बनाऊँगा।

के पास के क्षेत्र पर अधिकार करने का प्रयत्न किया।
4दाऊद ने हददेजेर से सत्रह सौ घुड़सवार सैनिक लिये।
उसने बीस हजार पैदल सैनिक भी लिये। दाऊद ने एक
सौ के अतिरिक्त, सभी रथ के अश्वों को लंगड़ा कर
दिया। उसने इन सौ अश्व रथों को बचा लिया।
5दमिश्क से अरामी लोग सोबा के राजा हददेजेर की
सहायता के लिये आए। किन्तु दाऊद ने उन बाईस
हजार अरामियों को पराजित किया। 6तब दाऊद ने
दमिश्क के अराम में सेना की टुकड़ियाँ रखी। अरामी
दाऊद के सेवक बन गए और राजस्व लाए। यहोवा ने
दाऊद को, जहाँ कहीं वह गया विजय दी।
7दाऊद ने उन सोने की ढालों को लिया जो हददेजेर
के सैनिकों की थीं। दाऊद ने इन ढालों को लिया और
उनको यरूशलेम लाया। 8दाऊद ने तांबे की बनी बहुत
सी चीजें बेतह और बरौते से भी लीं। (बेतह और बरौते
दोनों नगर हददेजेर के थे।)
9हमात के राजा तोई ने सुना कि दाऊद ने हददेजेर
की पूरी सेना को पराजित कर दिया। 10तब तोई ने
अपने पुत्र योराम को दाऊद के पास भेजा। योराम ने
दाऊद का अभिवादन किया और आशीर्वाद दिया क्योंकि
दाऊद ने हददेजेर के विरुद्ध युद्ध किया और उसे पराजित
किया था। (हददेजेर ने, तोई से, पहले युद्ध किये थे।)
योराम चाँदी, सोने और ताँबे की बनी चीजें लाया।
11दाऊद ने इन चीजों को लिया और यहोवा को समर्पित
कर दिया। उसने उसे अन्य सोने-चाँदी के साथ रखा
जिसे उसने पराजित राष्ट्रों से लेकर यहोवा को समर्पित
किया था। 12ये राष्ट्र अराम, मोआब, अम्मोन , पलिश्ती
और अमालेक थे। दाऊद ने सोबा के राजा रेहोब के
पुत्र हददेजेर को भी पराजित किया।
13दाऊद ने अट्ठारह हजार अरामियों को नमक की
घाटी में पराजित किया। वह उस समय प्रसिद्ध था जब
वह घर लौटा। 14दाऊद ने एदोम में सेना की टुकड़ियाँ
रखी। उसने इन सैनिकों की टुकड़ियों को एदोम के पूरे
देश में रखा। एदोम के सभी लोग दाऊद के सेवक हो
गए। जहाँ कहीं दाऊद गया यहोवा ने उसे विजय दी।

दाऊद का शासन

15दाऊद ने सारे इस्राएल पर शासन किया। दाऊद के
निर्णय सभी लोगों के लिये महत्वपूर्ण और उचित होते
थे। 16सरूयाह का पुत्र योआब सेना का सेनापति था।
अहीलूद का पुत्र इतिहासकार था। 17अहीतूब का पुत्र
सादोक और एब्यातर का पुत्र अहीमेलेक दोनों याजक
थे। सरायाह सचिव था। 18यहोयादा का पुत्र बनायाह
करेतियों और पलेतियों* का शासक था, और दाऊद
के पुत्र महत्वपूर्ण प्रमुख थे।

करेतियों और पलेतियों ये दाऊद के विशेष अंगरक्षक थे। एक प्राचीन अर्मेई अनुवाद में "धनुर्धर और पत्थर फेंक है।

दाऊद शाऊल के परिवार पर कृपालु है

9 दाऊद ने पूछा, "क्या शाऊल के परिवार में अब
तक कोई बचा है? मैं योनातन के कारण उस
व्यक्ति पर दया करना चाहता हूँ।"
2शाऊल के परिवार से एक सेवक सीबा नाम का
था। दाऊद के सेवकों ने सीबा को दाऊद के पास
बुलाया। राजा दाऊद ने पूछा, "क्या तुम सीबा हो?"
सीबा ने कहा, "हाँ मैं सीबा, आपका सेवक हूँ।"
3राजा ने पूछा, "क्या शाऊल के परिवार में कोई बचा
है? मैं उस व्यक्ति पर परमेश्वर की कृपा दिखाना
चाहता हूँ।"
सीबा ने राजा दाऊद से कहा, "योनातन का एक पुत्र
अभी तक जीवित है? वह दोनों पैरों से लंगड़ा है।"
4राजा ने सीबा से कहा, "यह पुत्र कहाँ है?"
सीबा ने राजा से कहा, "वह लो-दोबार में अम्मीएल
के पुत्र माकीर के घरन में है।"
5दाऊद ने अपने सेवकों को लो-दोबार के अम्मीएल
के पुत्र माकीर के घर से योनातन के पुत्र को लाने को
कहा। 6योनातन का पुत्र मेपीबोशेत दाऊद के पास
आया और अपना सिर भूमि तक झुकाया।
दाऊद ने कहा, "मेपीबोशेत।"
मेपीबोशेत ने कहा, मैं आपका सेवक हूँ।"
7दाऊद ने मेपीबोशेत से कहा, "डरो नहीं। मैं तुम्हारे
प्रति दयालु रहूँगा। मैं यह तुम्हारे पिता योनातन के लिये
करूँगा। मैं तुम्हारे पितामह शाऊल की सारी भूमि
तुमको दूँगा, और तुम सदा मेरी मेज पर भोजन कर
सकोगे।"
8मेपीबोशेत दाऊद के सामने फिर झुका। मेपीबोशेत
ने कहा, "आप अपने सेवक पर बहुत कृपालु रहे हैं
और मैं एक मृत कुत्ते से अधिक अच्छा नहीं हूँ।"
9तब राजा दाऊद ने शाऊल के सेवक सीबा को
बुलाया। दाऊद ने सीबा से कहा, "मैंने शाऊल के परिवार
और जो कुछ उसका है उसे तुम्हारे स्वामी के पौत्र
(मेपीबोशेत) को दे दिया है। 10तुम मेपीबोशेत के लिये
भूमि पर खेती करोगे। तुम्हारे पुत्र और सेवक मेपीबोशेत
के लिये यह करेंगे। तुम फसल काटोगे। तब तुम्हारे
स्वामी का पौत्र (मेपीबोशेत) खाने के लिये भोजन पाएगा।
किन्तु मेपीबोशेत तुम्हारे स्वामी का पौत्र मेरी मेज पर
खाने का सदा अधिकारी होगा।"
सीबा के पन्द्रह पुत्र और बीस सेवक थे। 11सीबा ने
राजा दाऊद से कहा, "मै आपका सेवक हूँ। मैं वह सब
कुछ करूँगा, जो मेरे स्वामी, मेरे राजा आदेश देंगे।"
अत: मेपीबोशेत ने दाऊद की मेज पर राजा के पुत्रों में
से एक की तरह भोजन किया। 12मेपीबोशेत का एक
छोटा पुत्र मीका नाम का था। सीबा परिवार के सभी
लोग मेपीबोशेत के सेवक हो गए। 13मेपीबोशेत दोनों
पैरो से लंगड़ा था। मेपीबोशेत यरूशलेम में रहता था।

हर एक दिन मेपीबोशेत राजा की मेज पर भोजन करता
था।

हानून दाऊद के व्यक्तियों को लज्जित करता है

10 बाद में, अम्मोनियों का राजा नाहाश मरा।
उसके बाद उसका पुत्र हानून राजा हुआ। 2दाऊद
ने कहा, "नाहाश मेरे प्रति कृपालु रहा। इसलिये मैं
उसके पुत्र हानून के प्रति कृपालु रहूँगा।" इसलिये दाऊद
ने हानून को उसके पिता की मृत्यु पर सांत्वना देने के
लिये अपने अधिकारियों को भेजा। अत: दाऊद के
सेवक अम्मोनियों के देश में गये। 3किन्तु अम्मोनी
प्रमुखों ने अपने स्वामी हानून से कहा, "क्या आप
समझते हैं कि दाऊद कुछ व्यक्तियों को आपके पास
सांत्वना देने के लिये भेजकर आपके पिता को सम्मान
देने का प्रयत्न कर रहा है? नहीं! दाऊद ने इन व्यक्तियो
को आपके नगर के बारे मे गुप्त रूप से जानने और
समझने के लिये भेजा है। वे आपके विरुद्ध युद्ध की
योजना बना रहे हैं।"

4इसलिये हानून ने दाऊद के सेवकों को पकड़ा और
उनकी आधी दाढ़ी कटवा दी। उसने उनके वस्त्रों को
बीच से कमर के नीचे तक कटवा दिया। तब उसने
उन्हें भेज दिया।

5जब लोगों ने दाऊद से कहा, तो उसने अपने
अधिकारियों से मिलने के लिये दूतों को भेजा। उसने
यह इसलिये किया क्योंकि ये लोग बहुत लज्जित थे।
राजा दाऊद ने कहा, "जब तक तुम्हारी दाढ़ियाँ फिर से
न बढ़े तब तक यरीहो में ठहरो। तब यरूशलेम लौट
आओ।"

अम्मोनियों के विरुद्ध युद्ध

6अम्मोनियों ने समझ लिया कि वे दाऊद के शत्रु हो
गये। इसलिये उन्होंने अरामी को बेत्रहोब और सोबा से
पारिश्रमिक पर बुलाया। वहाँ बीस हजार अरामी
पैदल-सैनिक आए थे। अम्मोनियों ने तोब से बारह
हजार सैनिकों और माका के राजा को एक हजार
सैनिकों के साथ पारिश्रमिक पर बुलाया।

7दाऊद ने इस विषय में सुना। इसलिये उसने योआब
और शक्तिशाली व्यक्तियों की सारी सेना भेजी। 8अम्मोनी
बाहर निकले और युद्ध के लिये तैयार हुए। वे नगर द्वार
पर खड़े हुए। योआब और रहोब के अरामी तथा तोब
और माका के व्यक्ति स्वयं खुले मैदान में नहीं खड़े हुये।

9योआब ने देखा कि अम्मोनी उसके विरुद्ध सामने
और पीछे दोनों ओर खड़े हैं। इसलिये उसने इस्राएलियों
में से कुछ उत्तम योद्धाओं को चुना। योआब ने इन उत्तम
सैनिकों को अरामियों के विरुद्ध लड़ने को तैयार किया।
10तब योआब ने अन्य लोगों को अपने भाई अबीशै के
नेतृत्व में अम्मोनी के विरुद्ध भेजा। 11योआब ने अबीशै
से कहा, "यदि अरामी हमसे अधिक शक्तिशाली हों तो
तुम मेरी सहायता करना। यदि अम्मोनी तुमसे अधिक
शक्तिशाली होंगी तो मैं आकर तुम्हे सहायता दूँगा। 12वीर
बनो, और हम अपने लोगों और अपने परमेश्वर के
नगर के लिये वीरता से युद्ध करेंगे। यहोवा वही करेगा
जिसे वह ठीक मानता है।"

13तब योआब और उसके सैनिकों ने अरामियों पर
आक्रमण किया। अरामी योआब और उसके सैनिकों
के सामने भाग खड़े हुए। 14अम्मोनियों ने देखा कि
अरामी भाग रहे हैं, इसलिये वे अबीशै के सामने से भाग
खड़े हुए और अपने नगर में लौट गए।

इस प्रकार योआब अम्मोनियों के साथ युद्ध से लौटा
और यरूशलेम वापस आया।

अरामी फिर लड़ने का निश्चय करते हैं

15अरामियों ने देखा कि इस्राएलियों ने उन्हें हरा दिया।
इसलिये वे एक विशाल सेना के रूप में इकट्ठे हुए।
16हददेजेर ने परात नदी की दूसरी ओर रहने वाले
अरामियों को लाने के लिये दूत भेजे। ये अरामी हेलाम
पहुँचे। उनका संचालक शोबक था, जो हददेजेर की
सेना का सेनापति था।

17दाऊद को इसका पता लगा। इसलिये उसने सारे
इस्राएलियों को एक साथ इकट्ठा किया उन्होंने यरदन
नदी को पार किया और वे हेलाम पहुँचे।

वहाँ अरामियों ने आक्रमण की तैयारी की और धावा
बोल दिया। 18किन्तु दाऊद ने अरामियों को पराजित
किया और वे इस्राएलियों के सामने भाग खड़े हुए।
दाऊद ने बहुत से अरामियों को मार डाला। सात सौ
सारथी तथा चालीस हजार घुड़सवार दाऊद ने अरामी
सेना के सेनापति शोबक को भी मार डाला।

19जो राजा, हददेजेर की सेवा कर रहे थे उन्होंने देखा
कि इस्राएलियों ने उनको हरा दिया। इसलिये उन्होंने
इस्राएलियों से सन्धि की और उनकी सेवा करने लगे।
अरामी अम्मोनियों को फिर सहायता देने से भयभीत
रहने लगे।

दाऊद बतशेबा से मिलता है

11 बसन्त में, जब राजा युद्ध पर निकलते हैं, दाऊद
ने योआब, उसके अधिकारियों और सभी
इस्राएलियों को अम्मोनियों को नष्ट करने के लिये
भेजा। योआब की सेना ने रब्बा (राजधानी) पर भी
आक्रमण किया।

किन्तु दाऊद यरूशलेम में रुका। 2शाम को वह अपने
बिस्तर से उठा। वह राजमहल की छत पर चारों ओर
घूमा। जब दाऊद छत पर था, उसने एक स्त्री को नहाते
देखा। स्त्री बहुत सुन्दर थी। 3इसलिये दाऊद ने अपने
सेवकों को बुलाया और उनसे पूछा कि वह स्त्री कौन

थी? एक सेवक ने उत्तर दिया, "वह स्त्री एलीआम की
पुत्री बतशेबा है। वह हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी है।"
4दाऊद ने बतशेबा को अपने पास बुलाने के लिये दूत
भेजे। जब वह दाऊद के पास आई तो उसने उसके साथ
शारीरिक सम्बन्ध किया। उसने स्नान किया और वह
अपने घर चली गई। 5किन्तु बतशेबा गर्भवती हो गई।
उसने दाऊद को सूचना भेजी। उसने उससे कहा, "मैं
गर्भवती हूँ।"

दाऊद अपने पाप को छिपाना चाहता है

6दाऊद ने योआब को सन्देश भेजा, "हित्ती ऊरिय्याह
को मेरे पास भेजो।"

इसलिये योआब ने ऊरिय्याह को दाऊद के पास भेजा।
7ऊरिय्याह दाऊद के पास आया। दाऊद ने ऊरिय्याह से
बात की। दाऊद ने ऊरिय्याह से पूछा कि योआब कैसा
है, सैनिक कैसे हैं और युद्ध कैसे चल रहा है। 8तब
दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, "घर जाओ और आराम
करो।"

ऊरिय्याह ने राजा का महल छोड़ा। राजा ने ऊरिय्याह
को एक भेंट भी भेजी। 9किन्तु ऊरिय्याह अपने घर
नहीं गया। ऊरिय्याह राजा के महल के बाहर द्वार पर
सोया। वह उसी प्रकार सोया जैसे राजा के अन्य सेवक
सोये। 10सेवकों ने दाऊद से कहा, "उरिय्याह अपने घर
नहीं गया।"

तब दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, "तुम लम्बी यात्रा से
आए। तुम घर क्यों नहीं गए?"

11ऊरिय्याह ने दाऊद से कहा, "पवित्र सन्दूक तथा
इस्राएल और यहूदा के सैनिक डेरों में ठहरे हैं। मेरे
स्वामी योआब और मेरे स्वामी (दाऊद) के सेवक
बाहर मैदानों में खेमा डाले पड़े हैं। इसलिये यह अच्छा
नहीं कि मैं घर जाऊँ, खाऊँ, पीऊँ, और अपनी पत्नी
के साथ सोऊँ।"

12दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, "आज यहीं ठहरो।
कल मैं तुम्हें युद्ध में वापस भेजूँगा।"

ऊरिय्याह उस दिन यरूशलेम में ठहरा। वह अगली
सुबह तक रुका। 13तब दाऊद ने उसे आने और खाने
के लिये बुलाया। ऊरिय्याह ने दाऊद के साथ पीया और
खाया। दाऊद ने उरिय्याह को नशे में कर दिया। किन्तु
ऊरिय्याह, फिर भी घर नहीं गया। उस शाम को ऊरिय्याह
राजा के सेवकों के साथ राजा के द्वार के बाहर सोया।

दाऊद ऊरिय्याह की मृत्यु की योजना बनाता है

14अगले प्रात:काल, दाऊद ने योआब के लिये एक
पत्र लिखा। दाऊद ने ऊरिय्याह को वह पत्र ले जाने को
दिया। 15पत्र में दाऊद ने लिखा: "ऊरिय्याह को अग्रिम
पंक्ति में रखो जहाँ युद्ध भयंकर हो। तब उसे अकेले
छोड़ दो और उसे युद्ध में मारे जाने दो।"

16योआब ने नगर के घेरे बन्दी के समय यह देखा कि
सबसे अधिक वीर अम्मोनी योद्धा कहाँ है। उसने
ऊरिय्याह को उस स्थान पर जाने के लिये चुना। 17नगर
(रब्बा) के आदमी योआब के विरुद्ध लड़ने को आये।
दाऊद के कुछ सैनिक मारे गये। हित्ती ऊरिय्याह उन
लोगों में से एक था।

18तब योआब ने दाऊद को युद्ध में जो हुआ, उसकी
सूचना भेजी। 19योआब ने दूत से कहा कि वह राजा
दाऊद से कहे कि युद्ध में क्या हुआ। 20"सम्भव है कि
राजा क्रुद्ध हो। संभव है कि राजा पूछे, 'योआब की सेना
नगर के पास लड़ने क्यों गई? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि
लोग नगर के प्राचीर से भी बाण चला सकते हैं? 21क्या
तुम नहीं जानते कि यरूब्बेशेत के पुत्र अबीमेलेक को
किसने मारा? वहाँ एक स्त्री नगर-दीवार पर थी जिसने
अबीमेलेक के ऊपर चक्की का ऊपरी पाट फेंका।
उस स्त्री ने उसे तेबेस में मारा डाला। तुम दीवार के
निकट क्यों गये?' (यदि राजा दाऊद यह पूछता है) तो
तुम्हें उत्तर देना चाहिये 'आपका सेवक हित्ती ऊरिय्याह
भी मर गया।'"

22दूत गया और उसने दाऊद को वह सब बताया जो
उसे योआब ने कहने को कहा था। 23दूत ने दाऊद से
कहा, "अम्मोन के लोग जीत रहे थे वे बाहर आये तथा
उन्होंने खुले मैदान में हम पर आक्रमण किया। किन्तु
हम लोग उनसे नगर-द्वार पर लड़े। 24नगर दीवार के
सैनिकों ने आपके सेवकों पर बाण चलाये। आपके
कुछ सेवक मारे गए। आपका सेवक हित्ती ऊरिय्याह
भी मारा गया।"

25दाऊद ने दूत से कहा, "तुम्हें योआब से यह कहना
है: 'इस परिणाम से परेशान न हो। हर युद्ध में कुछ लोग
मारे जाते हैं यह किसी को नहीं मालूम कि कौन मारा
जायेगा। रब्बा नगर पर भीषण आक्रमण करो। तब तुम
उस नगर को नष्ट करोगे।' योआब को इन शब्दों से
प्रोत्साहित करो।"

दाऊद बतशेबा से विवाह करता है

26बतशेबा ने सुना कि उसका पति ऊरिय्याह मर
गया। तब वह अपने पति के लिये रोई। 27जब उसने
शोक का समय पूरा कर लिया, तब दाऊद ने उसे
अपने घर में लाने के लिये सेवकों को भेजा। वह दाऊद
की पत्नी हो गई, और उसने दाऊद के लिये एक पुत्र
उत्पन्न किया। दाऊद ने जो बुरा काम किया यहोवा ने
उसे पसन्द नहीं किया।

नातान दाऊद से बात करता है

12 यहोवा ने नातान को दाऊद के पास भेजा।
नातान दाऊद के पास गया। नातान ने कहा,
"नगर में दो व्यक्ति थे। एक व्यक्ति धनी था। किन्तु

दूसरा गरीब था। 2धनी आदमी के पास बहुत अधिक
भेड़ें और पशु थे। 3किन्तु गरीब आदमी के पास, एक
छोटे मादा मेमने के अतिरिक्त जिसे उसने खरीदा था,
कुछ न था। गरीब आदमी उस मेमने को खिलाता था।
यह मेमना उस गरीब आदमी के भोजन में से खाता था
और उसके प्याले में से पानी पीता था। मेमना गरीब
आदमी की छाती से लग कर सोता था। मेमना उस
व्यक्ति की पुत्री के समान था।

4"तब एक यात्री धनी व्यक्ति से मिलने के लिये वहाँ
आया। धनी व्यक्ति यात्री को भोजन देना चाहता था।
किन्तु धनी व्यक्ति अपनी भेड़ या अपने पशुओं में से
किसी को यात्री को खिलाने के लिये नहीं लेना चाहता
था। उस धनी व्यक्ति ने उस गरीब से उसका मेमना ले
लिया। धनी व्यक्ति ने उसके मेमने को मार डाला और
अपने अतिथि के लिये उसे पकाया।"

5दाऊद धनी आदमी पर बहुत क्रोधित हुआ। उसने
नातान से कहा, "यहोवा शाश्वत है, निश्चय जिस व्यक्ति
ने यह किया वह मरेगा। 6उसे मेमने की चौगुनी कीमत
चुकानी पड़ेगी क्योंकि उसने यह भयानक कार्य किया
और उसमें दया नहीं थी।"

नातान, दाऊद को उसके पाप के बारे में बताता है

7तब नातान ने दाऊद से कहा, "तुम वो धनी पुरुष
हो! यहोवा इस्राएल का परमेश्वर यह कहता है: 'मैंने
तुम्हारा अभिषेक इस्राएल के राजा के रूप में किया।
मैंने तुम्हे शाऊल से बचाया। 8मैंने उसका परिवार और
उसकी पत्नियाँ तुम्हें लेने दीं, और मैंने तुम्हें इस्राएल
और यहूदा का राजा बनाया। जैसे वह पर्याप्त नहीं हो,
मैंने तुम्हें अधिक से अधिक दिया। 9फिर तुमने यहोवा
के आदेश की उपेक्षा क्यों की? तुमने वह क्यों किया
जिसे वह पाप कहता है। तुमने हित्ती ऊरिय्याह को
तलवार से मारा और तुमने उसकी पत्नी को अपनी
पत्नी बनाने के लिये लिया। हाँ, तुमने ऊरिय्याह को
अम्मोनियों की तलवार से मार डाला। 10इसलिये सदैव
तुम्हारे परिवार में कुछ लोग ऐसे होगें जो तलवार से
मारे जायेगें। तुमने ऊरिय्याह हित्ती की पत्नी ली। इस
प्रकार तुमने यह प्रकट किया कि तुम मेरी परवाह नहीं
करते।'

11"यही है जो यहोवा कहता है: 'मैं तुम्हारे विरुद्ध
आपत्तियाँ ला रहा हूँ। यह आपत्ति तुम्हारे अपने परिवार
से आएंगी। मैं तुम्हारी पत्नियों को ले लूँगा और उसे दूँगा
जो तुम्हारे बहुत अधिक समीप है। यह व्यक्ति तुम्हारी
पत्नियों के साथ सोएगा और इसे हर एक जानेगा।
12तुम बतशेबा के साथ गुप्त रूप में सोये। किन्तु मैं यह
करूँगा जिससे इस्राएल के सारे लोग इसे देख सकें।'"

13तब दाऊद ने नातान से कहा, "मैंने यहोवा के
विरुद्ध पाप किया है।"

नातान ने दाऊद से कहा, "यहोवा तुम्हें क्षमा कर
देगा, यहाँ तक की इस पाप के लिये भी तुम मरोगे नहीं।
14किन्तु इस पाप को जो तुमने किया है उससे यहोवा
के शत्रुओ ने यहोवा का सम्मान करना छोड़ दिया है।
अत: इस कारण जो तुम्हारा पुत्र उत्पन्न हुआ है, मर
जाएगा।"

दाऊद और बतशेबा का बच्चा मर जाता है

15तब नातान अपने घर गया और यहोवा ने दाऊद
और ऊरिय्याह की पत्नी से जो पुत्र उत्पन्न हुआ था
उसे बहुत बीमार कर दिया। 16दाऊद ने बच्चे के लिये
परमेश्वर से प्रार्थना की। दाऊद ने खाना-पीना बन्द
कर दिया। वह अपने घर में गया और उसमें ठहरा
रहा। वह रातभर भूमि पर लेटा रहा।

17दाऊद के परिवार के प्रमुख आये और उन्होंने उसे
भूमि से उठाने का प्रयत्न किया। किन्तु दाऊद ने उठना
अस्वीकार किया। उसने इन प्रमुखों के साथ खाना
खाने से भी इन्कार कर दिया।

18सातवें दिन बच्चा मर गया। दाऊद के सेवक दाऊद
से यह कहने से डरते थे कि बच्चा मर गया। उन्होंने
कहा, "देखो, हम लोगों ने दाऊद से उस समय बात
करने का प्रयत्न किया जब बच्चा जीवित था। किन्तु
उसने हम लोगों की बात सुनने से इन्कार कर दिया।
यदि हम दाऊद से कहेंगे कि बच्चा मर गया तो हो
सकता है वह अपने को कुछ हानि कर ले।"

19किन्तु दाऊद ने अपने सेवकों को कानाफूसी करते
देखा। तब उसने समझ लिया कि बच्चा मर गया। इसलिये
दाऊद ने अपने सेवकों से पूछा, "क्या बच्चा मर गया?"

सेवको ने उत्तर दिया, "हाँ वह मर गया।"

20दाऊद फर्श से उठा। वह नहाया। उसने अपने वस्त्र
बदले और तैयार हुआ। तब वह यहोवा के गृह में
उपासना करने गया। तब वह घर गया और कुछ खाने
को माँगा। उसके सेवकों ने उसे कुछ खाना दिया और
उसने खाया।

21दाऊद के नौकरों ने उससे कहा, "आप यह क्यों
कर रहे हैं? जब बच्चा जीवित था तब आपने खाने से
इन्कार किया। आप रोये। किन्तु जब बच्चा मर गया तब
आप उठे और आपने भोजन किया।"

22दाऊद ने कहा, "जब बच्चा जीवित रहा, मैंने भोजन
करना अस्वीकार किया, और मैं रोया क्योंकि मैंने
सोचा, 'कौन जानता है, संभव है यहोवा मेरे लिये दु:खी
हों और बच्चे को जीवित रहने दें।' 23किन्तु अब बच्चा
मर गया। इसलिये मैं अब खाने से क्यों इन्कार करूँ?
क्या मैं बच्चे को फिर जीवित कर सकता हूँ? नहीं!
किसी दिन मैं उसके पास जाऊँगा, किन्तु वह मेरे पास
लौटकर नहीं आ सकता।"

सुलैमान उत्पन्न होता है

24तब दाऊद ने अपनी पत्नी बतशेबा को सान्त्वना दी।
वह उसके साथ सोया और उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध
किया। बतशेबा फिर गर्भवती हुई। उसका दूसरा पुत्र
हुआ। दाऊद ने उस लड़के का नाम सुलैमान रखा।
यहोवा सुलैमान से प्रेम करता था। 25यहोवा ने नबी
नातान द्वारा सन्देश भेजा। नातान ने सुलैमान का नाम
यदीद्याह रखा। नातान ने यह यहोवा के लिये किया।

दाऊद रब्बा पर अधिकार करता है

26रब्बा नगर अम्मोनियों का राजधानी था। योआब
रब्बा के विरुद्ध में लड़ा। उसने नगर को ले लिया।
27योआब ने दाऊद के पास दूत भेजा और कहा, "मैंने
रब्बा के विरुद्ध युद्ध किया है। मैंने जल के नगर को
जीत लिया है। 28अब अन्य लोगों को साथ लायें और
इस नगर (रब्बा) पर आक्रमण करें। इस नगर पर
अधिकार कर लो, इसके पहले की मैं इस पर अधिकार
करूँ। यदि इस नगर पर मैं अधिकार करता हूँ तो उस
नगर का नाम मेरे नाम पर होगा।"

29तब दाऊद ने सभी लोगों को इकट्ठा किया और
रब्बा को गया। वह रब्बा के विरुद्ध लड़ा और नगर पर
उसने अधिकार कर लिया। 30दाऊद ने उनके राजा के
सिर से मुकुट उतार दिया।* मुकुट सोने का था और
वह तौल में लगभग पचहत्तर पौंड था। इस मुकुट में
बहुमूल्य रत्न थे। उन्होंने मुकुट को दाऊद के सिर पर
रखा। दाऊद नगर से बहुत सी कीमती चीजें ले गया।

31दाऊद रब्बा नगर से भी लोगों को बाहर लाया।
दाऊद ने उन्हें आरे, लोहे की गैती और कुल्हाड़ियों से
काम करवाया। उसने उन्हें ईटों से निर्माण करने के
लिये भी विवश किया। दाऊद ने वही व्यवहार सभी
अम्मोनी नगरों के साथ किया। तब दाऊद और उसकी
सारी सेना यरूशलेम लौट गई।

अम्नोन और तामार

13 दाऊद का एक पुत्र अबशालोम था। अबशालोम
की बहन का नाम तामार था। तामार बहुत
सुन्दर थी। दाऊद के अन्य पुत्रों में से एक पुत्र अम्नोन
था 2जो तामार से प्रेम करता था। तामार कुवाँरी थी।
अम्नोन उसके साथ कुछ बुरा करन को नहीं सोचता
था। लेकिन अम्नोन उस बहुत चाहता था। अम्नोन उस
के बाहे मे इतना सोचन लगा कि वह बिमार हो गया।

3अम्नोन का एक मित्र शिमा का पुत्र योनादाब था।
(शिमा दाऊद का भाई था।) योनादाब बहुत चालाक
आदमी था। 4योनादाब ने अम्नोन से कहा, "हर दिन
तुम दुबले-दुबले से दिखाई पड़ते हो! 'तुम राजा के पुत्र
हो! तुम्हें खाने के लिये बहुत अधिक है, तो भी तुम
अपना वजन क्यों खोते जा रहे हो? मुझे बताओ!"

अम्नोन ने योनादाब से कहा, "मैं तामार से प्रेम करता
हूँ। किन्तु वह मेरे सौतेले भाई अबशालोम की बहन
है।"

5योनादाब ने अम्नोन से कहा, "बिस्तर में लेट जाओ।
ऐसा व्यवहार करो कि तुम बीमार हो। तब तुम्हारे पिता
तुमको देखने आऐंगे। उनसे कहो, 'कृपया मेरी बहन
तामार को आने दें और मुझे खाना देने दें। उसे मेरे
सामने भोजन बनाने दें। तब मैं उसे देखूँगा और उसके
हाथ से खाऊँगा।'"

6इसलिये अम्नोन बिस्तर में लेट गया, और ऐसा व्यवहार
किया मानों वह बीमार हो। राजा दाऊद अम्नोन को
देखने आया। अम्नोन ने राजा दाऊद से कहा, "कृपया
मेरी बहन तामार को यहाँ आने दें। मेरे देखते हुए उसे
मेरे लिये दो रोटी बनाने दें। तब मैं उसके हाथों से खा
सकता हूँ।"

7दाऊद ने तामार के घर सन्देशवाहको को भेजा।
संदेशवाहकों ने तामार से कहा, "अपने भाई
अम्नोन के घर जाओ और उसके लिये कुछ भोजन
पकाओ।"

तामार अम्नोन के लिये भोजन बनाती है

8अत: तामार अपने भाई अम्नोन के घर गई। अम्नोन
बिस्तर में था। तामार ने कुछ गूंधा आटा लिया और इसे
अपने हाथों से एक साथ दबाया। उसने अम्नोन के
देखते हुये कुछ रोटियाँ बनाई। तब उसने रोटियों को
पकाया। 9जब तामार ने रोटियाँ को पकाना पूरा किया
तो उसने कढ़ाही में से रोटियों को अम्नोन के लिये
निकाला। किन्तु अम्नोन ने खाना अस्वीकार किया।

अम्नोन ने अपने सेवकों से कहा, "तुम सभी लोग
चले जाओ। मुझे अकला रहते दो!" इसलिये सभी सेवक
अम्नोन के कमरे से बाहर चले गए।

10अम्नोन ने तामार से कहा, "भोजन भीतर वाले
कमरे में ले चलो। तब मैं तुम्हारे हाथ से खाऊँगा।"

अम्नोन तामार के साथ कुकर्म करता है

तामार अपने भाई के पास भीतर वाले कमरे में गई।
वह उन रोटियों को लाई जो उसने बनाए थे। 11वह
अम्नोन के पास गई जिससे वह उसके हाथों से खा
सके। किन्तु अम्नोन ने तामार को पकड़ लिया। उसने
उससे कहा, "बहन, आओ, और मेरे साथ सोओ।"

12तामार ने अम्नोन से कहा, "नहीं, भाई! मुझे मजबूर
न करो! यह इस्राएल में कभी नहीं किया जा सकता।
यह लज्जाजनक काम न करो। 13मैं इस लज्जा से कभी
उबर नहीं सकती! तुम उन मूर्ख इस्राएलियों की तरह

दाऊद ... उतार दिया या "मिल्कम के सिर से" मिल्कम एक
असत्य देवता था, जिसकी पूजा अम्मोनी लोग करते थे।

मत बनों कृपया राजा से बात करो। वह तुम्हें मेरे साथ
विवाह करने देगा।"

14किन्तु अम्नोन ने तामार की एक न सुनी। वह
तामार से अधिक शक्तिशाली था। उसने उसे शारीरिक
सम्बन्ध करने के लिये विवश किया। 15उसके बाद
अम्नोन तामार से घृणा करने लगा। अम्नोन ने उसके
साथ उससे भी अधिक घृणा की जितना वह पहले प्रेम
करता था। अम्नोन ने तामार से कहा, "उठो और चली
जाओ!"

16तामार ने अम्नोन से कहा, "अब मुझे अपने से दूर
कर, तुम पहले से भी बड़ा पाप करने जा रहे हो!"

किन्तु अम्नोन ने तामार की एक न सुनी। 17अम्नोन
ने अपने युवक सेवक से कहा, "इस लड़की को इस
कमरे से अभी बाहर निकालो। उसके जाने पर दरवाजे
में ताला लगा दो।"

18अत: अम्नोन का सेवक तामार को कमरे के
बाहर ले गया और उसके जाने पर ताला लगा दिया।

तामार ने कई रंग का लबादा पहन रखा था। राजा
की कुवाँरी कन्यायें ऐसा ही लबादा पहनती थीं।
19तामार ने राख ली और अपने सिर पर डाल लिया।
उसने अपने बहुरंगे लबादे को फाड़ डाला। उसने
अपना हाथ अपने सिर पर रख लिया और वह जोर से
रोने लगी।

20तामार के भाई अबशालोम ने तामार से कहा, "तो
क्या तुम्हारे भाई अम्नोन ने तुम्हारे साथ सोया। अम्नोन
तुम्हारा भाई है। बहन, अब शान्त रहो। इससे तुम बहुत
परेशान न हो।" अत: तामार ने कुछ भी नहीं कहा। वह
अबशालोम के घर रहने चली गई *

21राजा दाऊद को इसकी सूचना मिली। वह बहुत
क्रोधित हुआ। 22अबशालोम अम्नोन से घृणा करता
था। अबशालोम ने अच्छा या बुरा अम्नोन से कुछ नहीं
कहा । वह अम्नोन से घृणा करता था क्योंकि अम्नोन
ने उसकी बहन के साथ कुकर्म किया था।

अबशालोम का बदला

23दो वर्ष बाद कुछ व्यक्ति एप्रैम के पास बाल्हासोर में
अबशालोम की भेड़ों का ऊन काटने आये। अबशालोम
ने राजा के सभी पुत्रों को आने और देखने के लिये
आमन्त्रित किया। 24अबशालोम राजा के पास गया और
उससे कहा, "मेरे पास कुछ व्यक्ति मेरी भेड़ों से ऊन
काटने आ रहे हैं। कृपया अपने सेवकों के साथ आएँ
और देखें।"

25राजा दाऊद ने अबशालोम से कहा, "पुत्र नहीं। हम
सभी नहीं जाएँगे। इससे तुम्हें परेशानी होगी।" अबशालोम
ने दाऊद से चलने की प्रार्थना की। दाऊद नहीं गया,
किन्तु उसने आशीर्वाद दिया।

26अबशालोम ने कहा, "यदि आप जाना नहीं चाहते
तो, कृपाकर मेरे भाई अम्नोन को मेरे साथ जाने दे।"
राजा दाऊद ने अबशालोम से पूछा, "वह तुम्हारे साथ
क्यों जाये?"

27अबशालोम दाऊद से प्रार्थना करता रहा। अन्त में
दाऊद ने अम्नोन और सभी राजपुत्रों को अबशालोम
के साथ जाने दिया।

अम्नोन की हत्या की गई

28तब अबशालोम ने अपने सेवकों को आदेश दिया।
उसने उनसे कहा, "अम्नोन पर नजर रखो। जब वह
नशे में धुत होगा तब मैं तुम्हें आदेश दूँगा अम्नोन को
जान से मार डालो। सजा पाने से डरो नहीं। आखिकार,
तुम मेरे आदेश का पालन करोगे। अब शक्तिशाली
और वीर बनों।"

29अबशालोम के युवकों ने अबशालोम के आदेश के
अनुसार अम्नोन को मार डाला। किन्तु दाऊद के अन्य
पुत्र बच निकले। हर एक पुत्र अपने खच्चर पर बैठा
और भाग गया।

दाऊद अम्नोन की मृत्यु की सूचना पाता है

30जब राजा के पुत्र मार्ग में थे, दाऊद को सूचना
मिली। सूचना यह थी, "अबशालोम ने राजा के सभी
पुत्रों को मार डाला है! कोई भी पुत्र बचा नहीं है।"

31राजा दाऊद ने अपने वस्त्र फाड़ डाले और धरती
पर लेट गया। दाऊद के पास खड़े उसके सभी सेवकों ने
भी अपने वस्त्र फाड़ डाले।

32किन्तु शिमा (दाऊद के भाई) के पुत्र योनादाब ने
दाऊद से कहा, "ऐसा मत सोचो कि राजा के सभी
युवक पुत्र मार डाले गए है। नहीं, यह केवल अम्नोन है
जो मारा गया हैं। जब से अम्नोन ने उसकी बहन तामार
के साथ कुकर्म किया था तभी से अबशालोम ने यह
योजना बनाई थी। 33मेरे स्वामी राजा यह न सोचें कि
सभी राजपुत्र मारे गए हैं। केवल अम्नोन ही मारा
गया।"

34अबशालोम भाग गया। एक रक्षक नगर-प्राचीर
पर खड़ा था। उसने पहाड़ी की दूसरी ओर से कई
व्यक्तियों को आते देखा। 35इसलिये योनादाब ने राजा
दाऊद से कहा, "देखो, मैं बिल्कुल सही था। राजा के
पुत्र आ रहें हैं।"

36जब योनादाब ने ये बातें कही तभी राजपुत्र आ गए।
वे जोर-जोर से रो रहे थे। दाऊद और उसके सभी
सेवक रोने लगे। वे सभी बहुत विलाप कर रहे थे।
37दाऊद अपने पुत्र (अम्नोन) के लिये बहुत दिनों तक
रोया।

वह ... गई या "तामार एक बरबाद स्त्री जो अपने भाई अबशालोम के घर रहती थी।"

अबशालोम गशूर को भाग गया*

अबशालोम गशूर के राजा अम्मीहूर के पुत्र तल्मै के
पास भाग गया। 38अबशालोम के गशूर भाग जाने के
बाद, वह वहाँ तीन वर्ष तक ठहरा। 39अम्नोन की मृत्यु
के बाद दाऊद शान्त हो गया। लेकिन अभशालोम उसे
बहुत याद आता था।

योआब एक बुद्धिमती स्त्री को दाऊद के पास भेजता है

14 सरूयाह का पुत्र योआब जानता था कि राजा
दाऊद अबशालोम के बारे में सोच रहा है।
2इसलिये योआब ने तकोआ का एक दूत वहाँ से एक
बुद्धिमती स्त्री को लाने के लिये भेजा। योआब ने इस
बुद्धिमती स्त्री से कहा, "कृपया बहुत अधिक शोकग्रस्त
होने का दिखावा करो। शोक-वस्त्र पहन लो, तेल न
लगाओ। वैसी स्त्री का व्यवहार करो जो किसी मृत के
लिये कई दिन से रो रही है। 3राजा के पास जाओ और
जो मैं कहता हूँ, उन्हीं शब्दों का उपयोग करते हुए
उनसे बातें करो।" तब योआब ने उस बुद्धिमती स्त्री को
क्या कहना है, यह बता दिया।

4तब तकोआ की उस स्त्री ने राजा से बातें कीं। वह
फर्श पर गिर पड़ी उसका ललाट फर्श पर जा टिका।
वह झुकी और बोली, "राजा, मुझे सहायता दे!"

5राजा दाऊद ने उससे कहा, "तुम्हारी समस्या क्या
है?"

उस स्त्री ने कहा, "मैं विधवा हूँ। मेरा पति मर चुका
है। 6मेरे दो पुत्र थे। ये दोनों पुत्र बाहर मैदानों में लड़े।
उन्हें कोई रोकने वाला न था। एक पुत्र ने दूसरे पुत्र को
मार डाला। 7अब सारा परिवार मेरे विरुद्ध है। वे मुझसे
कहते थे, 'उस पुत्र को लाओ जिसने अपने भाई को
मार डाला। तब हम उसे मार डालेंगे, क्योंकि उसने
अपने भाई को मार डाला था।' इस प्रकार उसके
उत्तराधिकारी से छुटकारा मिल सकता है। मेरा पुत्र
अग्नि की आखिरी चिनगारी की तरह होगा, और वह
अन्तिम चिनगारी जलेगी और बुझ जाएगी। तब मेरे मृत
पति का नाम और उसकी सम्पत्ति इस धरती से मिट
जायेगी। 8तब राजा ने स्त्री से कहा, "घर जाओ। मैं स्वयं
तुम्हारा मामला निपटाऊँगा।"

9तकोआ की स्त्री ने राजा से कहा, "हे राजा मेरे
स्वामी, दोष मुझ पर आने दें! किन्तु आप और आपका
राज्य निर्दोष है।"

10राजा दाऊद ने कहा, "उस व्यक्ति को लाओ जो
तुम्हें बुरा-भला कहता है। तब वह व्यक्ति तुम्हें फिर
परेशान नहीं करेगा। 11स्त्री ने कहा, "कृपया अपने
यहोवा परमेश्वर के नाम पर शपथ लें कि आप इन
लोगों को रोकेंगे। तब वे लोग जो हत्यारे को दण्ड देना
चाहते हैं मेरे पुत्र को दण्ड नहीं देंगे।"

दाऊद ने कहा, "यहोवा शाश्वत है, तुम्हारे पुत्र को
कोई व्यक्ति चोट नहीं पहुँचायेगा। तुम्हारे पुत्र का एक
बाल भी बाँका नहीं होगा।"

12उस स्त्री ने कहा, "मेरे स्वामी, राजा कृपया मुझे
आपसे कुछ कहने का अवसर दें।"

राजा ने कहा, "कहो"

13तब उस स्त्री ने कहा, "आपने परमेश्वर के लोगों
के विरुद्ध यह योजना क्यों बनाई है? हाँ, जब आप यह
कहते हैं आप यह प्रकट करते हैं कि आप अपराधी हैं।
क्यों? क्योंकि आप अपने पुत्र को वापस नहीं ला सके हैं
जिसे आपने घर छोड़ने को विवश किया था। 14यह
सही है कि हम सभी किसी दिन मरेंगे। हम लोग उस
पानी की तरह हैं जो भूमि पर फेंका गया है। कोई भी
व्यक्ति भूमि से उस पानी को इकट्ठा नहीं कर सकता।
किन्तु परमेश्वर माफ करता है। उसके पास उन लोगों
के लिए एक योजना है जो अपना घर छोड़ने को विवश
किये गए हैं -परमेश्वर उनको अपने से अलग नहीं
करता। 15मेरे प्रभु, राजा मैं यह बात कहने आपके पास
आई। क्यों? क्योंकि लोगों ने मुझे भयभीत किया। मैंने
अपने मन में कहा कि, 'मैं राजा से बात करूंगी। संभव
है राजा मेरी सुनेंगे। 16राजा मेरी सुनेंगे, और मेरी रक्षा
उस व्यक्ति से करेंगे जो मुझे और मेरे पुत्र दोनों को
मारना चाहते हैं और उन चीजों को प्राप्त करने से
रोकना चाहते हैं जिन्हें परमेश्वर ने हमें दी है।' 17मैं
जानती हूँ कि मेरे राजा मेरे प्रभु के शब्द मुझे शान्ति
देंगे क्योंकि आप परमेश्वर के दूत के समान होंगे। आप
समझेंगे कि क्या अच्छा और क्या बुरा है। यहोवा आपका
परमेश्वर, आपके साथ होगा।"

18राजा दाऊद ने उस स्त्री को उत्तर दिया, "तुम्हें उस
प्रश्न का उत्तर देना चाहिये जिसे मैं तुमसे पूछूँगा"

उस स्त्री ने कहा, "मेरे प्रभु, राजा, कृपया अपना प्रश्न
पूछें।"

19राजा ने कहा, "क्या योआब ने ये सारी बातें तुमसे
कहने को कहा है?"

उस स्त्री ने जवाब दिया, मेरे प्रभु राजा, आपके जीवन
की शपथ, आप सही हैं। आपके सेवक योआब ने ये
बातें कहने के लिये कहा। 20योआब ने यह इसलिये
किया जिससे आप तथ्यों को दूसरी दृष्टि से देखेंगे। मेरे
प्रभु आप परमेश्वर के दूत के समान बुद्धिमान हैं। आप
सब कुछ जानते हैं जो पृथ्वी पर होता है।"

अबशालोम यरूशलेम लौटता है

21राजा ने योआब से कहा, "देखो, मैं वह करूँगा
जिसके लिये मैंने वचन दिया है। अब कृपया युवक
अबशालोम को वापस लाओ।"

अबशालोम ... गया तल्मै, अबशालोम का पितामह था। देखे 2शमू. 3:3

22योआब ने भूमि तक अपना माथा झुकाया। उसने राजा दाऊद के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा, “आज मैं समझता हूँ कि आप मुझ पर प्रसन्न हैं। मैं यह समझता हूँ क्योंकि आपने वही किया जो मेरी माँग थी।”

23तब योआब उठा और गशूर गया तथा अबशालोम को यरूशलेम लाया। 24किन्तु राजा दाऊद ने कहा, “अबशालोम अपने घर को लौट सकता है। वह मुझसे मिलने नहीं आ सकता।” इसलिये अबशालोम अपने घर को लौट गया। अबशालोम राजा से मिलने नहीं जा सका।

25अबशालोम की अत्याधिक प्रशंसा उसके सुन्दर रूप के लिये थी। इस्राएल में कोई व्यक्ति इतना सुन्दर नहीं था जितना अबशालोम। अबशालोम के सिर से पैर तक कोई दोष नहीं था। 26हर एक वर्ष के अन्त में अबशालोम अपने सिर के बाल काटता था और उसे तोलता था। बालों का तोल लगभग पाँच पौंड था। 27अबशालोम के तीन पुत्र थे और एक पुत्री। उस पुत्री का नाम तामार था। तामार एक सुन्दर स्त्री थी।

अबशालोम योआब को अपने से मिलने के लिये विवश करता है

28अबशालोम पूरे दो वर्ष तक, दाऊद से मिलने की स्वीकृति के बिना, यरूशलेम में रहा। 29अबशालोम ने योआब के पास दूत भेजे। इन दूतों ने योआब से कहा कि तुम अबशालोम को राजा के पास भेजो। किन्तु योआब अबशालोम से मिलने नहीं आया। अबशालोम ने दूसरी बार सन्देश भेजा। किन्तु योआब ने फिर भी आना अस्वीकार किया।

30तब अबशालोम ने अपने सेवकों से कहा, “देखो, योआब का खेत मेरे खेत से लगा है। उसके खेत में जौ की फसल है। जाओ और जौ को जला दो।”

इसलिये अबशालोम के सेवक गए और योआब के खेत में आग लगानी आरम्भ की। 31योआब उठा और अबशालोम के घर आया। योआब ने अबशालोम से कहा, “तुम्हारे सेवकों ने मेरा खेत को क्यों जलाया?”

32अबशालोम ने योआब से कहा, “मैंने तुमको सन्देश भेजा। मैंने तुमसे यहाँ आने को कहा। मैं तुम्हें राजा के पास भेजना चाहता था। मैं उससे पूछना चाहता था कि उसने गशूर से मुझे घर क्यों बुलाया। मैं उससे मिल नहीं सकता, अत: मेरे लिये गशूर में रहना कहीं अधिक अच्छा था। अब मुझे राजा से मिलने दो। यदि मैंने पाप किया है तो वह मुझे मार सकता है।”

अबशालोम दाऊद से मिलता है

33तब योआब राजा के पास आया और अबशालोम का कहा हुआ सुनाया। राजा ने अबशालोम को बुलाया। तब अबशालोम राजा के पास आया। अबशालोम ने राजा के सामने भूमि पर माथा टेक कर प्रणाम किया, और राजा ने अबशालोम का चुम्बन किया।

अबशालोम बहुत-से मित्र बनाता है

15 इसके बाद अबशालोम ने एक रथ और घोड़े अपने लिए लिये। जब वह रथ चलाता था तो अपने सामने पचास दौड़ते हुये व्यक्तियों को रखता था। 2अबशालोम सवेरे उठ जाता और द्वार* के निकट खड़ा होता। यदि कोई व्यक्ति ऐसा होता जिसकी कोई समस्या होती और न्याय के लिये राजा दाऊद के पास आया होता तो अबशालोम उससे पूछता, “तुम किस नगर के हो?” वह व्यक्ति उत्तर देता, “मैं अमुक हूँ और इस्राएल के अमुक परिवार समूह का हूँ।” 3तब अबशालोम उन व्यक्तियों से कहा करता, “देखो, जो तुम कह रहे हो वह शुभ और उचित है किन्तु राजा दाऊद तुम्हारी एक नहीं सुनेगा।”

4अबशालोम यह भी कहता, “काश! मैं चाहता हूँ कि कोई मुझे इस देश का न्यायाधीश बनाता। तब मैं उन व्यक्तियों में से हर एक की सहायता कर सकता जो न्याय के लिये समस्या लेकर आते।”

5जब कोई व्यक्ति अबशालोम के पास आता और उसके सामने प्रणाम करते को झुकता तो अबशालोम आगे बढ़ता और उस व्यक्ति से हाथ मिलाता। तब वह उस व्यक्ति का चुम्बन करता। 6अबशालोम ऐसा उन सभी इस्राएलियों के साथ करता जो राजा दाऊद के पास न्याय के लिये आते। इस प्रकार अबशालोम ने इस्राएल के सभी लोगों का हृदय जीत लिया।

अबशालोम द्वारा दाऊद के राज्य को लेने की योजना

7चार वर्ष बाद अबशालोम ने राजा दाऊद से कहा, “कृपया मुझे अपनी विशेष प्रतिज्ञा को पूरी करने जाने दें जिसे मैंने हेब्रोन में यहोवा के सामने की थी। 8मैंने यह प्रतिज्ञा तब की थी जब मैं गशूर अराम में रहता था। मैंने कहा था, ‘यदि यहोवा मुझे यरूशलेम लौटायेगा तो मैं यहोवा की सेवा करूँगा।’”

9राजा दाऊद ने कहा, “शान्तिपूर्वक जाओ।”

अबशालोम हेब्रोन गया। 10किन्तु अबशालोम ने इस्राएल के सभी परिवार समूहो में जासूस भेजे। इन जासूसों ने लोगों से कहा, “जब तुम तुरही की आवाज सुनो, तो कहो कि ‘अबशालोम हेब्रोन में राजा हो गया।’”

11अबशालोम ने दो सौ व्यक्तियों को अपने साथ चलने के लिये आमन्त्रित किया। वे व्यक्ति उसके साथ यरूशलेम से बाहर गए। किन्तु वे यह नहीं जानते थे कि उसकी योजना क्या है। 12अहीतोपेल दाऊद के सलाहकारों में

द्वार यह वह स्थान था जहाँ लोग अपने सब कार्य करने आते थे। इसी स्थान पर न्याय की अदालतें होती थी।

से एक था। अहीतोपेल गीलो नगर का निवासी था। जब
अबशालोम बलि-भेंटों को चढ़ा रहा था, उसने अहीतोपेल
को अपने गीलो नगर से आने के लिये कहा। अबशालोम
की योजना ठीक-ठीक चल रही थी और अधिक से
अधिक लोग उसका समर्थन करने लगे।

दाऊद को अबशालोम के योजना की सूचना

13एक व्यक्ति दाऊद को सूचना देने आया। उस व्यक्ति
ने कहा, "इस्राएल के लोग अबशालोम का अनुसरण
करना आरम्भ कर रहे हैं।"
14तब दाऊद ने यरूशलेम में रहने वाले अपने सभी
सेवकों से कहा, "हम लोगों को बच निकलना चाहिये!
यदि हम बच नहीं निकलते तो अबशालोम हम लोगों
को निकलने नहीं देगा। अबशालोम द्वारा पकड़े जाने के
पहले हम लोग शीघ्रता करें। नहीं तो वह हम सभी को
नष्ट कर देगा और वह यरूशलेम के लोगों को मार
डालेगा।"
15राजा के सेवकों ने राजा से कहा, "जो कुछ भी
आप कहेंगे, हम लोग करेंगे।"

दाऊद और उसके आदमी बच निकलते हैं

16राजा दाऊद अपने घर के सभी लोगों के साथ
बाहर निकल गया। राजा ने घर की देखभाल के लिये
अपनी दस पत्नियों को वहाँ छोड़ा। 17राजा अपने सभी
लोगों को साथ लेकर बाहर निकला। वे नगर के अन्तिम
मकान पर रुके। 18उसके सभी सेवक राजा के पास से
गुजरे, और सभी करेती, सभी पलेती और गती (गत से
छ: सौ व्यक्ति) राजा के पास से गुजरे।
19राजा ने गत के इत्तै से कहा, "तुम लोग भी हमारे
साथ क्यों जा रहे हो? लौट जाओ और नये राजा
(अबशालोम) के साथ रहो। तुम विदेशी हो। यह तुम
लोगों का स्वदेश नहीं है। 20अभी कल ही तुम हमारे
साथ जुडे। क्या मैं आज ही विभिन्न स्थानों पर जहाँ भी
जा रहा हूँ, तुम्हें अपने साथ ले जाऊँ। नहीं! लौटो और
अपने भाइयों को अपने साथ लो। मेरी प्रार्थना है कि
तुम्हारे प्रति दया और विश्वास दिखाया जाय।"
21किन्तु इत्तै ने राजा को उत्तर दिया, "यहोवा शाश्वत
है, और जब तक आप जीवित हैं, मैं आपके साथ
रहूँगा। मैं जीवन-मरण में आपके साथ रहूँगा।"
22दाऊद ने इत्तै से कहा, "आओ, हम लोग किद्रोन
नाले को पार करें।"
अत: गत का इत्तै और उसके सभी लोग अपने बच्चों
सहित किद्रोन नाले के पार गए। 23सभी लोग जोर से रो
रहे थे। राजा दाऊद ने किद्रोन नाले को पार किया। तब
सभी लोग मरुभूमि की ओर बढ़े। 24सादोक और उसके
साथ के लेवीवंशी परमेश्वर के साक्षीपत्र के सन्दूक को
ले चल रहे थे। उन्होंने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को
नीचे रखा। एब्यातार ने तब तक प्रार्थना* की जब तक
सभी लोग यरूशलेम से बाहर नहीं निकल गए।
25राजा दाऊद ने सादोक से कहा, "परमेश्वर के
पवित्र सन्दूक को यरूशलेम लौटा ले जाओ। यदि यहोवा
मुझ पर दयालु है तो वह मुझे वापस लौटाएगा, और
यहोवा मुझे अपना पवित्र संदूक, और वह स्थान जहाँ
वह रखा है, देखने देगा। 26किन्तु यदि यहोवा कहता है
कि वह मुझ पर प्रसन्न नहीं है तो वह मेरे विरुद्ध, जो
कुछ भी चाहता है, कर सकता है।"
27राजा ने याजक सादोक से कहा, "तुम एक दुष्टा
हो। शान्तिपूर्वक नगर को जाओ। अपने पुत्र अहीमास
और एब्यातार के पुत्र योनातन को अपने साथ लो।
28मैं उन स्थानों के निकट प्रतीक्षा करूँगा जहाँ से लोग
मरुभूमि में जाते हैं। मैं वहाँ तब तक प्रतीक्षा करूँगा जब
तक तुमसे कोई सूचना नहीं मिलती।"
29इसलिये सादोक और एब्यातार परमेश्वर का पवित्र
सन्दूक वापस यरूशलेम ले गए और वहीं ठहरे।

अहीतोपेल के विरुद्ध दाऊद की प्रार्थना

30दाऊद जैतूनों के पर्वत पर चढ़ा। वह रो रहा था।
उसने अपना सिर ढक लिया और वह बिना जूते के
गया। दाऊद के साथ के सभी व्यक्तियों ने भी अपना
सिर ढक लिया। वे दाऊद के साथ रोते हुए गए।
31एक व्यक्ति ने दाऊद से कहा, "अहीतोपेल लोगों में
से एक है जिसने अबशालोम के साथ योजना बनाई।"
तब दाऊद ने प्रार्थना की, "हे यहोवा, मैं तुझसे प्रार्थना
करता हूँ कि तू अहीतोपेल की सलाह को विफल कर
दे।" 32दाऊद पर्वत की चोटी पर आया। यही वह स्थान
था जहाँ वह प्राय: परमेश्वर से प्रार्थना करता था। उस
समय एरेकी हूशै उसके पास आया। हूशै का अंगरखा
फटा था और उसके सिर पर धूलि थी।*
33दाऊद ने हूशै से कहा, "यदि तुम मेरे साथ चलते हो
तो तुम देख-रेख करने वाले अतिरिक्त व्यक्ति होगे।
34किन्तु यदि तुम यरूशलेम को लौट जाते हो तो तुम
अहीतोपेल की सलाह को व्यर्थ कर सकते हो। अबशालोम
से कहो, 'महाराज, मैं आपका सेवक हूँ। मैंने आपके
पिता की सेवा की, किन्तु अब मैं आपकी सेवा करूँगा।'
35याजक सादोक और एब्यातार तुम्हारे साथ होंगे। तुम्हें
वे सभी बातें उनसे कहनी चाहिए जिन्हें तुम राजमहल
में सुनो। 36सादोक का पुत्र अहीमास और एब्यातार का
पुत्र योनातन उनके साथ होंगे। तुम उन्हें, हर बात जो
सुनो, मुझसे कहने के लिये भेजोगे।"

प्रार्थना शाब्दिक "आगे बढ़े" इसका अर्थ "सुगन्धि जलाना", बलि-भेट करना, या इसका अर्थ यह हो सकता है कि एब्यातार तब तक पवित्र सन्दूक की बगल में खड़ा रहा जब तक सभी लोग वहाँ से नहीं निकले।

हूशै ... धूलि थी यह प्रकट करता था कि वह बहुत दु:खी है।

37तब दाऊद का मित्र हूशै नगर में गया, और अबशालोम
यरूशलेम आया।

सीबा दाऊद से मिलता है

16 दाऊद जैतून पर्वत की चोटी पर थोड़ी दूर चला।
वहाँ मपीबोशेत का सेवक सीबा, दाऊद से मिला।
सीबा के पास काठी सहित दो खच्चर थे। खच्चरो पर दो
सौ रोटियाँ, सौ किशमिश के गुच्छे, सौ ग्रीष्मफल और
दाखमधु से भरी एक मशक थी। 2राजा दाऊद ने सीबा
से कहा, "ये चीजें किसलिये हैं?"

सीबा ने उत्तर दिया, "खच्चर राजा के परिवार की
सवारी के लिये है। रोटी और ग्रीष्म फल सेवकों को
खाने के लिये हैं और यदि कोई व्यक्ति मरुभूमि में
कमजोरी महसूस करे तो वह दाखमधु पी सकेगा।"

3राजा ने पूछा, "मपीबोशेत कहाँ है?"

सीबाने राजा को उत्तर दिया, "मपीबोशेत यरूशलेम में
ठहरा है क्योंकि वह सोचता है, 'आज इस्राएली मेरे
पितामह का राज्य मुझे वापस दे देंगे।"

4तब राजा ने सीबा से कहा, "बहुत ठीक। जो कुछ
मपीबोशेत का है उसे अब मैं तुम्हें देता हूँ।"

सीबा ने कहा, "मैं आपको प्रणाम करता हूँ। मैं आशा
करता हूँ कि मैं आपको सदा प्रसन्न कर सकूँगा।"

शिमी दाऊद को शाप देता है

5दाऊद बहूरीम पहुँचा। शाऊल के परिवार का एक
व्यक्ति बहूरीम से बाहर निकला। इस व्यक्ति का नाम
शिमी था जो गेरा का पुत्र था। शिमी दाऊद को बुरा
कहता हुआ बाहर आया, और वह बुरी-बुरी बातें
बार-बार कहता रहा।

6शिमी ने दाऊद और उसके सेवकों पर पत्थर फैंकना
आरम्भ किया। किन्तु लोग और सैनिक दाऊद के
चारों ओर इकट्ठे हो गए-वे उसके चारों ओर थे।
7शिमी ने दाऊद को शाप दिया। उसने कहा, "ओह
हत्यारे! भाग जाओ, निकल जाओ, निकल जाओ। 8यहोवा
तुम्हें दण्ड दे रहा है। क्यों? क्योंकि तुमने शाऊल के
परिवार के व्यक्तियों को मार डाला। तुमने शाऊल के
राजपद को चुराया। किन्तु अब यहोवा ने राज्य तुम्हारे
पुत्र अबशालोम को दिया है। अब वे ही बुरी घटनायें
तुम्हारे लिये घटित हो रही हैं। क्यों? क्योंकि तुम हत्यारे
हो।"

9सरूयाह के पुत्र अबीशै ने राजा से कहा, "मेरे
प्रभु, राजा! यह मृत कुत्ता आपको शाप क्यों दे रहा
है? मुझें आगे जाने दें और शिमी का सिर काट
लेने दें।"

10किन्तु राजा ने उत्तर दिया, "सरूयाह के पुत्रों। मैं
क्या कर सकता हूँ? निश्चय ही शिमी मुझे शाप दे रहा
है। किन्तु यहोवा ने उसे मुझे शाप देने को कहा।"

11दाऊद ने अबीशै और अपने सभी सेवकों से यह भी
कहा, "देखो मेरा अपना पुत्र ही (अबशालोम) मुझे
मारने का प्रयत्न कर रहा है। यह व्यक्ति (शिमी), जो
बिन्यामीन परिवार समूह का है, मुझको मार डालने का
अधिक अधिकारी है। उसे अकेला छोड़ो। उसे मुझे
बुरा-भला कहने दो। यहोवा ने उसे ऐसा करने को
कहा हैं। 12संभव है कि उन बुराइयों को जो मेरे साथ
हो रही है, यहोवा देखे। तब संभव है कि यहोवा मुझे
आज शिमी द्वारा कही गई हर एक बात के बदले, कुछ
अच्छा दे।"

13इसलिये दाऊद और उसके अनुयायी अपने रास्तें
पर नीचे सड़क से उतर गए। किन्तु शिमी दाऊद के
पीछे लगा रहा। शिमी सड़क की दूसरी ओर चलने
लगा। शिमी अपने रास्ते पर दाऊद को बुरा-भला
कहता रहा। शिमी ने दाऊद पर पत्थर और धूलि भी
फैंकी। 14राजा दाऊद और उसके सभी लोग यरदन
नदी पुहँचे। राजा और उसके लोग थकगए थे। अत:
उन्होंने बहूरीम में विश्राम किया।

15अबशालोम, अहीतोपेल और इस्राएल के सभी लोग
यरूशलेम आए। 16दाऊद का एरेकी मित्र हूशै अबशालोम
के पास आया। हूशै ने अबशालोम से कहा, "राजा
दीर्घायु हो। राजा दीर्घायु हो!"

17अबशालोम ने पूछा, "तुम अपने मित्र दाऊद के
विश्वासपात्र क्यों नहीं हो? तुमने अपने मित्र के साथ
यरूशलेम को क्यों नहीं छोड़ा?"

18उन्होंने कहा, "मैं उस व्यक्ति का हूँ जिसे यहोवा
चुनता है। इन लोगों ने और इस्राएल के लोगों ने आपको
चुना। मैं आपके साथ रहूँगा। 19बीते समय में मैंने आपके
पिता की सेवा की। इसलिये, अब मैं दाऊद के पुत्र की
सेवा करूँगा। मैं आपकी सेवा करूँगा।"

अबशालोम अहीतोपेल से सलाह लेता है

20अबशालोम ने अहीतोपेल से कहा, "कृपया हमें
बताये कि क्या करना चाहिये।"

21अहीतोपेल ने अबशालोम से कहा, "तुम्हारे पिता ने
अपनी कुछ रखैल को घर की देख-भाल के लिये
छोड़ा है। जाओ, और उनके साथ शारीरिक सम्बन्ध
करो। तब सभी इस्राएली यह जानेंगे कि तुम्हारे पिता
तुमसे घृणा करते हैं और तुम्हारे सभी लोग तुमको
अधिक समर्थन देने के लिये उत्साहित होंगे।"

22तब उन लोगों ने अबशालोम के लिये महल की छत
पर एक तम्बू डाला और अबशालोम ने अपने पिता की
रखैलों के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। सभी इस्राएलियों
ने इसे देखा। 23उस समय अहीतोपेल की सलाह दाऊद
और अबशालोम दोनों के लिये बहुत महत्वपूर्ण थी। यह
उतनी ही महत्वपूर्ण थी जितनी मनुष्य के लिये परमेश्वर
की बात।

अहीतोपेल दाऊद के बारे में सलाह देता है

17 अहीतोपेल ने अबशालोम से यह भी कहा, "मुझे अब बारह हजार सैनिक चुनने दो। तब मैं आज की रात दाऊद का पीछा करूँगा 2मैं उसे तब पकड़ूँगा जब वह थका तथा कमजोर होगा। मैं उसे भयभीत करूँगा। और उसके सभी व्यक्ति उसे छोड़ भागेंगे। किन्तु मैं केवल राजा दाऊद को मारुंगा। 3तब मैं सभी लोगों को तुम्हारे पास वापस लाऊँगा। यदि दाऊद मर गया तो शेष सब लोगों को शान्ति प्राप्त होगी।"

4यह योजना अबशालोम और इस्राएल के सभी प्रमुखों को पसन्द आई। 5किन्तु अबशालोम ने कहा, "एरेकी हूशै को अब बुलाओ। मैं उससे भी सुनना चाहता हूँ कि वह क्या कहता है।"

हूशै अहीतोपेल की सलाह नष्ट करता है

6हूशै अबशालोम के पास आया। अबशालोम ने हूशै से कहा, "अहीतोपेल ने यह योजना बताई है। क्या हम लोग इस पर अमल करें? यदि नहीं तो हमें, अपनी बताओ।"

7हूशै ने अबशालोम से कहा, "इस समय अहीतोपेल की सलाह ठीक नहीं है।" 8उसने आगे कहा, "तुम जानते हो कि तुम्हारे पिता और उनके आदमी शक्तिशाली हैं। वे उस रीछनी की तरह खुंखार हैं जिसके बच्चे छीन लिये गये हों। तुम्हारा पिता कुशल योद्धा है। वह सारी रात लोगों के साथ नहीं ठहरेगा। 9वह पहले ही से संभवत: किसी गुफा या अन्य स्थान पर छिपा है। यदि तुम्हारा पिता तुम्हारे व्यक्तियों पर पहले आक्रमण करता है तो लोग इसकी सूचना पांएगे, और वे सोचेंगे, 'अबशालोम के समर्थक हार रहे हैं!' 10तब वे लोग भी जो सिंह की तरह वीर हैं, भयभीत हो जाएँगे। क्यों? क्योंकि सभी इस्राएली जानते हैं कि तुम्हारा पिता शक्तिशाली योद्धा है और उसके आदमी वीर हैं।"

11"मेरा सुझाव यह है: तुम्हें दान से लेकर बेर्शेबा तक के सभी इस्राएलियों को इकट्ठा करना चाहिये। तब बड़ी संख्या में लोग समुद्र की रेत के कणों समान होंगे। तब तुम्हें स्वयं युद्ध में जाना चाहिये। 12हम दाऊद को उस स्थान से, जहाँ वह छिपा है, पकड़ लेंगे। हम दाऊद पर उस प्रकार टूट पड़ेंगे जैसे ओस भूमि पर पड़ती है। हम लोग दाऊद और उसके सभी व्यक्तियों को मार डालेंगे। कोई व्यक्ति जीवित नहीं छोड़ा जायेगा। 13यदि दाऊद किसी नगर में भागता है तो सभी इस्राएली उस नगर में रस्सियाँ लाएंगे और हम लोग उस नगर की दिवारों को घसीट लेगें। उस नगर का एक पत्थर भी नहीं छोड़ा जाएगा।"

14अबशालोम और इस्राएलियों ने कहा, "एरेकी हूशै की सलाह अहीतोपेल की सलाह से अच्छी है।" उन्होंने ऐसा कहा क्योंकि यह यहोवा की योजना थी। यहोवा ने अहीतोपेल की सलाह की व्यर्थ करने की योजना बनाई थी। इस प्रकार यहोवा अबशालोम को दण्ड दे सकता था।

हूशै दाऊद के पास चेतावनी भेजता है

15हूशै ने वे बातें याजक सादोक और एब्यातार से कहीं। हूशै ने उस योजना के बारे में उन्हें बताया जिसे अहीतोपेल ने अबशालोम और इस्राएल के प्रमुखों को सुझाया था। हूशै ने सादोक और एब्यातार को वह योजना भी बताई जिसे उसने सुझाया था। हूशै ने कहा,
16"शीघ्र! दाऊद को सूचना भेजो। उससे कहो कि आज की रात वह उन स्थानों पर न रहे जहाँ से लोग मरुभूमि को पार करते हैं। अपितु यरदन नदी को तुरन्त पार कर ले। यदि वह नदी को पार कर लेता है तो राजा और उसके लोग नहीं पकड़े जायेंगे।"

17याजकों के पुत्र योनातन और अहीमास, एनरोगेल पर प्रतीक्षा कर रहे थे। वे नगर में जाते हुए दिखाई नहीं पड़ना चाहते थे, अत: एक गुलाम लड़की उनके पास आई। उसने उन्हें सन्देश दिया। तब योनातन और अहीमास गए और उन्होंने यह सन्देश राजा दाऊद को दिया।

18किन्तु एक लड़के ने योनातन और अहीमास को देखा। लड़का अबशालोम से कहने के लिये दौड़ा। योनातन और अहीमास तेजी से भाग निकले। वे बहारीम में एक व्यक्ति के घर पहुँचे। उस व्यक्ति के आँगन में एक कुँआ था। योनातन और अहीमास इस कुँए में उत्तर गये।
19उस व्यक्ति की पत्नी ने उस पर एक चादर डाल दी। तब उसने पूरे कुँए को अन्न से ढक दिया। कुँआ अन्न की ढेर जैसा दिखता था, इसलिये कोई व्यक्ति यह नहीं जान सकता था कि योनातन और अहीमास वहाँ छिपे हैं। 20अबशालोम के सेवक उस घर की स्त्री के पास आए। उन्होंने पूछा, "योनातन और अहीमास कहाँ है?"

उस स्त्री ने अबशालोम के सेवकों से कहा, "वे पहले ही नाले को पार कर गए हैं।"

अबशालोम के सेवक तब योनातन और अहीमास की खोज में चले गए। किन्तु वे उनको न पा सके। अत: अबशालोम के सेवक यरूशलेम लौट गए।

21जब अबशालोम के सेवक चले गए , योनातन और अहीमास कुँए से बाहर आए। वे गए और उन्होंने दाऊद से कहा, "शीघ्रता करें, नदी को पार कर जायँ। अहीतोपेल ने ये बातें आपके विरुद्ध कही हैं।"

22तब दाऊद और उसके सभी लोग यरदन नदी के पार चले गए। सूर्य निकलने के पहले दाऊद के सभी लोग यरदन नदी को पार कर चुके थे।

अहीतोपेल आत्महत्या करता है

23अहीतोपेल ने देखा कि इस्राएली उसकी सलाह नहीं मानते। अहीतोपेल ने अपने गधे पर काठी रखी। वह

अपने नगर को घर चला गया। उसने अपने परिवार के
लिये योजना बनाई। तब उसने अपने को फाँसी लगा
ली। जब अहीतोपेल मर गया, लोगों ने उसे उसकी पिता
की कब्र में दफना दिया।

अबशालोम यरदन नदी को पार करता है

24दाऊद महनैम पहुँचा। अबशालोम और सभी इस्राएली
जो उसके साथ थे, यरदन नदी को पार कर गए।
25अबशालोम ने अमासा को सेना का सेनापति बनाया।
अमासा ने योआब का स्थान लिया।* अमासा इस्राएली
यित्रों का पुत्र था। अमासा की माँ, सरूयाह की बहन
और नाहाश की पुत्री, अबीगैल थी* (सरूयाह योआब
की माँ थी।)
26अबशालोम और इस्राएलियों ने अपना डेरा गिलाद
प्रदेश में डाला।

शोबी, माकीर, बर्जिल्लै

27दाऊद महनैम पहुँचा। शोबी, माकीर और बर्जिल्लै
उस स्थान पर थे। (नाहाश का पुत्र शोबी अम्मोनी नगर
रब्बा का था। अम्मीएल का पुत्र माकीर लो-दोबर का
था, और बर्जिल्लै, रेगलीम, गिलाद का था।) **28–29**उन्होंने
कहा, "मरुभूमि में लोग थके, भूखे और प्यासे हैं।"
इसलिये वे दाऊद और उसके आदमियों के खाने के
लिये बहुत-सी चीजें लाये। वे बिस्तर, कटोरे और मिट्टी
के बर्तन ले आए। वे गेंहू, जौ आटा, भूने अन्न फलियाँ,
तिल, सूखे बीज, शहद, मक्खन, भेड़ें और गाय के दूध
का पनीर भी ले आए।

दाऊद युद्ध की तैयारी करता है

18 दाऊद ने अपने लोगों को गिना। उसने हजार
सैनिकों और सौ सैनिकों का संचालन करने
के लिये नायक चुने। **2**दाऊद ने लोगों को तीन टुकड़ियों
में बाँटा, और तब दाऊद ने लोगों को आगे भेजा।
योआब एक तिहाई सेना का नायक था। अबीशै सरूयाह
का पुत्र, योआब का भाई सेना के दूसरे तिहाई भाग का
नायक था, और गत का इत्तै अन्तिम तिहाई भाग का
नायक था।
राजा दाऊद ने लोगों से कहा, "मैं भी तुम लोगों के
साथ चलूँगा।"
3किन्तु लोगों ने कहा, "नहीं! आपको हमारे साथ नहीं
जाना चाहिये। क्यों? क्योंकि यदि हम लोग युद्ध से भागे
तो अबशालोम के सैनिक परवाह नहीं करेंगे। यदि हम
आधे मार दिये जाए तो भी अबशालोम के सैनिक
परवाह नहीं करेंगे। किन्तु आप हम लोगों के दस हजार
के बराबर हैं। आपके लिये अच्छा है कि आप नगर में
रहें। तब, यदि हमें मदद की आवश्यकता पड़े तो आप
सहायता कर सकें।"
4राजा ने अपने लोगों से कहा, "मैं वहीं करूँगा जिसे
आप लोग सर्वोत्तम समझते हैं।"
तब राजा द्वार की बगल में खड़ा रहा। सेना आगे बढ़
गई। वे सौ और हजार की टुकड़ियों में गए।

"युवक अबशालोम के साथ उदार रहो!"

5राजा ने योआब, अबीशै और इत्तै को आदेश दिया।
उसने कहा, "मेरे लिये यह करो: युवक अबशालोम के
प्रति उदार रहना!" सभी लोगों ने अबशालोम के बारे में
नायकों के लिये राजा का आदेश सुना।

दाऊद की सेना अबशालोम की सेना को हराती है

6दाऊद की सेना अबशालोम के इस्राएलियों के विरुद्ध
रणभूमि में गई। उन्होंने एप्रैम के वन में युद्ध किया।
7दाऊद की सेना ने इस्राएलियों को हरा दिया। उस दिन
बीस हजार व्यक्ति मारे गए। **8**युद्ध पूरे देश में फैल गया।
किन्तु उस दिन तलवार से मरने की अपेक्षा जंगल में
व्यक्ति आधिक मरे।
9ऐसा हुआ कि अबशालोम दाऊद के सेवकों से मिला।
अबशालोम बच भागने के लिये अपने खच्चर पर चढ़ा।
खच्चर विशाल बांज के वृक्ष की शाखाओं के नीचे
गया। शाखायें मोटी थीं और अबशालोम का सिर पेड़ में
फँस गया। उसका खच्चर उसके नीचे से भाग निकला
अत: अबशालोम भूमि के ऊपर लटका रहा।
10एक व्यक्ति ने यह होते देखा। उसने योआब से कहा,
"मैंने अबशालोम को एक बांज के पेड़ में लटके देखा
है।"
11योआब ने उस व्यक्ति से कहा, "तुमने उसे मार
क्यों नहीं डाला, और उसे जमीन पर क्यों नहीं गिर
जाने दिया? मैं तुम्हें एक पेटी और चाँदी के दस
सिक्के देता।"
12उस व्यक्ति ने योआब से कहा, "मैं राजा के पुत्र को
तब भी चोट पहुँचाने की कोशिश नहीं करता जहाँ तुम
मुझे हजार चाँदी के सिक्कें देते। क्यों? क्योंकि हम
लोगों ने तुमको, अबीशै और इत्तै को दिये गए राजा के
आदेश को सुना। राजा ने कहा, 'सावधान रहो, युवक
अबशालोम को चोट ने पहुँचे।' **13**यदि मैंने अबशालोम
को मार दिया होता तो राजा स्वयं इसका पता लगा लेता
और तुम मुझे सजा देते।"
14योआब ने कहा, "मै तुम्हारे साथ समय नष्ट नहीं
करूँगा!"

अमासा ... लिया योआब तब भी दाऊद का समर्थन करता था। योआब दाऊद की सेना सेनापतियों में से एक था जब दाऊद अबशालोम से भाग रहा था। देखें 2शमू. 18:2।

अमासा .... थी शाब्दिक यित्री ने सरूयाह की बहन और नाहाश की पुत्री अबीगैल के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया था।

अबशालोम अब भी बांज वृक्ष में लटका हुआ, जीवित
था। योआब ने तीन भाले लिये। उसने भालों को अबशालोम
पर फेंका। भाले अबशालोम के हृदय को बेधते हुये
निकल गये। 15योआब के साथ दस युवक थे जो उसे
युद्ध में सहायता करते थे। वे दस व्यक्ति अबशालोम के
चारों ओर आए और उसे मार डाला।
16योआब ने तुरही बजाई और अबशालोम के इस्राएली
लोगों का पीछा करना बन्द करने को कहा। 17तब
योआब के व्यक्तियों ने अबशालोम का शव उठाया और
उसे जंगल के एक विशाल गड्हे में फेंक दिया। उन्होंने
विशाल गड्हा को बहुत से पत्थरों से भर दिया।
18जब अबशालोम जीवित था, उसने राजा की घाटी में
एक स्तम्भ खड़ा किया था। अबशालोम ने कहा था,
"मेरा कोई पुत्र मेरे नाम को चलाने वाला नहीं है।"
इसलिये उसने स्तम्भ को अपना नाम दिया। वह स्तम्भ
आज भी "अबशालोम का स्मृति-चिन्ह" कहा जाता है।

योआब दाऊद को सूचना देता है

19सादोक के पुत्र अहीमास ने योआब से कहा, "मुझे
अब दौड़ जाने दो और राजा दाऊद को सूचना पहुँचाने
दो। मैं उससे कहूँगा कि यहोवा ने उन्हें उनके शत्रुओं
के हाथ से मुक्त कर दिया है।"
20योआब ने अहीमास को उत्तर दिया, "नहीं, आज
तुम दाऊद को सूचना नहीं दोगे। तुम सूचना किसी अन्य
समय पहुँचा सकते हो, किन्तु आज नहीं, क्यों? क्योंकि
राजा का पुत्र मर गया है।"
21तब योआब ने एक कुशी व्यक्ति से कहा, "जाओ
राजा से वह सब कहो जो तुमने देखा है।" कुशी ने
योआब को प्रणाम किया।
तब कुशी दाऊद को सूचना देने दौड़ पड़ा।
22किन्तु सादोक के पुत्र अहीमास ने योआब से फिर
प्रार्थना की, "जो कुछ भी हो, उसकी चिन्ता नहीं, कृपया
मुझे भी कुशी के पीछे दौड़ जाने दें।"
योआब ने कहा, "बेटे! तुम सूचना क्यों ले जाना चाहते
हो? तुम जो सूचना ले जाओगे उसका कोई पुरस्कार
नहीं मिलेगा।"
23अहीमास ने उत्तर दिया, "चाहे जो हो, चिन्ता नहीं, मैं
दौड़ जाऊँगा।"
योआब ने अहीमास से कहा, "दौड़ो।"
तब अहीमास यरदन की घाटी से होकर दौड़ा। वह
कुशी को पीछे छोड़ गया।

दाऊद सूचना पाता है

24दाऊद दोनों दरवाजों के बीच बैठा था। पहरेदार द्वार
की दीवारों के ऊपर छत पर गया। पहरेदार ने ध्यान से
देखा और एक व्यक्ति को अकेले दौड़ते देखा। 25पहरेदार
ने दाऊद से कहने के लिये जोर से पुकारा।
राजा दाऊद ने कहा, "यदि व्यक्ति अकेला है तो वह
सूचना ला रहा है।"
व्यक्ति नगर के निकट से निकट आता जा रहा था।
26पहरेदार ने दूसरे व्यक्ति को दौड़ते देखा। पहरेदार ने
द्वाररक्षक को बुलाया, "देखो! दूसरा व्यक्ति अकेले दौड़
रहा है।"
राजा ने कहा, "वह भी सूचना ला रहा है।"
27पहरेदार ने कहा, "मुझे लगता है कि पहला व्यक्ति
सादोक का पुत्र अहीमास की तरह दौड़ रहा है।"
राजा ने कहा, "अहीमास अच्छा आदमी है। वह अच्छी
सूचना ला रहा होगा।"
28अहीमास ने राजा को पुकार कर कहा। "सब कुछ
बहुत अच्छा है!" अहीमास राजा केसामने प्रणाम करने
झुका। उसका माथा भूमि के समीप था। अहीमास ने
कहा, अपने यहोवा परमेश्वर की स्तुति करो! मेरे
स्वामी राजा, यहोवा ने उन व्यक्तियों को हरा दिया है जो
आपके विरुद्ध थे।"
29राजा ने पूछा, "क्या युवक अबशालोम कुशल से
है?"
अहीमास ने उत्तर दिया, "जब योआब ने मुझे भेजा तब
मैंने कुछ बड़ी उत्तेजना देखी। किन्तु मैं यह नहीं समझ
सका कि वह क्या था?"
30तब राजा ने कहा, "यहाँ खड़े रहो, और प्रतीक्षा
करो।" अहीमास हटकर खड़ा हो गया और प्रतिक्षा
करने लगा। 31कुशी आया। उसने कहा, "मेरे स्वामी
राजा के लिये सूचना। आज यहोवा ने उन लोगों को
सजा दी है जो आपके विरुद्ध थे!"
32राजा ने कुशी से पूछा, "क्या युवक अबशालोम
कुशल से है?"
कुशी ने उत्तर दिया, "मुझे आशा है कि आपके शत्रु
और सभी लोग जो आपके विरुद्ध चोट करने आयेंगे, वे
इस युवक (अबशालोम) की तरह सजा पायेंगे।"
33तब राजा ने समझ लिया कि अबशालोम मर गया
है। राजा बहुत परेशान हो गया। वह नगर द्वार के ऊपर
के कमरे में चला गया। वह वहाँ रोया। वह अपने कमरे
में गया, और अपने रास्ते पर चलते उसने कहा, "ऐ मेरे
पुत्र अबशालोम! मैं चाहता हूँ कि मैं तुम्हारे लिये मर
गया होता। ऐ अबशालोम, मेरे पुत्र, मेरे पुत्र!"

योआब दाऊद को फटकारता है

19 लोगों ने योआब को सूचना दी। उन्होंने योआब
से कहा, "देखो, राजा अबशालोम के लिये रो
रहा है और बहुत दु:खी है।"
2दाऊद की सेना ने उस दिन विजय पाई थी। किन्तु
वह दिन सभी लोगों के लिये बहुत शोक का दिन हो
गया। यह शोक का दिन था, क्योंकि लोगों ने सुना,
"राजा अपने पुत्र के लिये बहुत दु:खी है।"

3लोग नगर में चुपचाप आए। वे उन लोगों की तरह थे
जो युद्ध में पराजित हो गए हो और भाग आएं हों। 4राजा
ने अपना मुँह ढक लिया था। वह फूट-फूट कर रो
रहा था, "मेरे पुत्र अबशालोम, ऐ अबशालोम। मेरे पुत्र,
मेरे बेटे!"
5योआब राजा के महल में आया। योआब ने राजा से
कहा, "आज तुम अपने सभी सेवकों के मुँह को भी
लज्जा से ढके हो! आज तुम्हारे सेवकों ने तुम्हारा जीवन
बचाया। उन्होंने तुम्हारे पुत्रों, पुत्रियों, पत्नियों, और दासियों
के जीवन को बचाया। 6तुम्हारे सेवक इसलिये लज्जित हैं
कि तुम उनसे प्रेम करते हो जो तुमसे घृणा करते हैं
और तुम उनसे घृणा करते हो जो तुमसे प्रेम करते हैं।
आज तुमने यह स्पष्ट कर दिया है कि तुम्हारे अधिकारी
और तुम्हारे लोग तुम्हारे लिये कुछ नहीं हैं। आज मैं
समझता हूँ कि यदि अबशालोम जीवित रहता और हम
सभी मार दिये गए होते तो तुम्हें बड़ी प्रसन्नता होती।
7अब खड़े होओ तथा अपने सेवकों से बात करो और
उनको प्रोत्साहित करो। मैं यहोवा की शपथ खाकर
कहता हूँ कि यदि तुम यह करने बाहर नहीं निकलते
तो आज की रात तुम्हारे साथ कोई व्यक्ति नहीं रह
जायेगा। बचपन से आज तक तुम पर जितनी विपत्तियँ
आई हैं, उन सबसे यह विपत्ति और बदतर होगी।"
8तब राजा नगर-द्वार पर गया। सूचना फैली कि राजा
नगर-द्वार पर है। इसलिये सभी लोग राजा को देखने
आये।

दाऊद फिर राजा बनता है

सभी अबशालोम के समर्थक इस्राएली अपने घरो को
भाग गए थे। 9इस्राएली के सभी परिवार समूहों के लोग
आपस में तर्क-वितर्क करने लगे। उन्होंने कहा, "राजा
दाऊद ने हमें पलिश्तियों और हमारे अन्य शत्रुओं से
बचाया। दाऊद अबशालोम के सामने भाग खड़ा हुआ।
10हम लोगों ने अबशालोम को अपने ऊपर शासन
करने के लिये चुना था। किन्तु अब वह युद्ध में मर
चुका है। हम लोगों को दाऊद को फिर राजा बनाना
चाहिये।"

11राजा दाऊद ने याजक सादोक और एब्यातार को
सन्देश भेजा। दाऊद ने कहा, "यहूदा के प्रमुखों से बात
करो। कहो, 'तुम लोग अन्तिम परिवार समूह क्यों हो
जो राजा दाऊद को अपने राजमहल में वापस लाना
चाहते हो? देखों, सभी इस्राएली राजा को महल में लाने
के बारे में बातें कर रहे हैं। 12तुम मेरे भाई हो, तुम मेरे
परिवार हो। फिर भी तुम्हारा परिवार समूह राजा को
वापस लाने में अन्तिम क्यों रहा?' 13और अमासा से
कहो, 'तुम मेरे परिवार के अंग हो। परमेश्वर मुझे दण्ड
दे यदि मैं तुमको योआब के स्थान पर सेना का नायक
बनाऊँ।'"

14दाऊद ने यहूदा के लोगों के दिल को प्रभावित
किया, अत: वे एक व्यक्ति की तरह एकमत हो गए।
यहूदा के लोगों ने राजा को सन्देश भेजा। उन्होंने कहा,
"अपने सभी सेवकों के साथ वापस आओ!"
15तब राजा दाऊद यरदन नदी तक आया। यहूदा के
लोग राजा से मिलने गिलगाल आए। वे इसलिये आए कि
वे राजा को यरदन नदी के पार ले जाए।

शिमी दाऊद से क्षमा याचना करता है

16गेरा का पुत्र शिमी बिन्यामीन परिवार समूह का
था। वह बहूरीम में रहता था। शिमी ने राजा दाऊद से
मिलने की शीघ्रता की। शिमी यहूदा के लोगों के साथ
आया। 17शिमी के साथ बिन्यामीन परिवार के एक
हजार लोग भी आए। शाऊल के परिवार का सेवक
सीबा भी आया। सीबा अपने साथ अपने पन्द्रह पुत्रों और
बीस सेवकों को लाया। ये सभी लोग राजा दाऊद से
मिलने के लिये यरदन नदी पर शीघ्रता से पहुँचे।
18लोग यरदन नदी पार करके राजा के परिवार को
यहूदा में वापस लाने के लिये गये। राजा ने जो चाहा,
लोगों ने किया। जब राजा नदी पार कर रहा था, गेरा
का पुत्र शिमी उससे मिलने आया। शिमी राजा के
सामने भूमि तक प्रणाम करने झुका। 19शिमी ने राजा
से कहा, "मेरे स्वामी, जो मैंने अपराध किये उन पर
ध्यान न दे। मेरे स्वामी राजा, उन बुरे कामों को याद न
करे जिन्हें मैंने तब किये जब आपने यरूशलेम को
छोड़ा। 20मैं जानता हूँ कि मैंने पाप किये हैं। मेरे स्वामी
राजा, यही कारण है कि मैं यूसुफ के परिवार* का
पहला व्यक्ति हूँ जो आज आपसे मिलने आया हूँ।"
21किन्तु सरूयाह केपुत्र अबीशै ने कहा, "हमें शिमी
को अवश्य मार डालना चाहिये क्योंकि इसने यहोवा के
चुने राजा के विरुद्ध बुरा होने की याचना की।"
22दाऊद ने कहा, "सरूयाह के पुत्रों, मैं तुम्हारे साथ
क्या करुँ? आज तुम मेरे विरुद्ध हो। कोई व्यक्ति इस्राएल
में मारा नहीं जाएगा। आज मैं जानता हूँ कि मैं इस्राएल
का राजा हूँ। 23तब राजा ने शिमी से कहा, "तुम मरोगे
नहीं।" राजा ने शिमी को वचन दिया कि वह शिमी को
स्वयं नहीं मारेगा।*

मपीबोशेत दाऊद से मिलने जाता है

24शाऊल का पौत्र मपीबोशेत राजा दाऊद से मिलने
आया। मपीबोशेत ने उस सारे समय तक अपने पैरों की

यूसुफ का परिवार संभवत: इसका अर्थ वे इस्राएली हैं जो अबशालोम के समर्थक थे। कई बार एप्रैम यूसुफ का पुत्र नाम उत्तरी इस्राएल के सभी परिवार समूहों के लिये प्रयुक्त हुआ है।

राजा ने ... मारेगा दाऊद ने शिमी को नहीं मारा किन्तु, कुछ वर्ष बाद दाऊद का पुत्र सुलैमान ने उसे वध करने का आदेश दिया। देखो 1राजा 2:44-46

चिन्ता नहीं की, अपनी मूँछों को कतरा नहीं या अपने
वस्त्र नहीं धोए जब तक राजा यरूशलेम छोड़ने के बाद
पुन: शान्ति के साथ वापिस नहीं आ गया। **25**मपीबोशेत
यरूशलेम से राजा के पास मिलने आया। राजा ने मपीबोशेत
से पूछा, "तुम मेरे साथ उस समय क्यों नहीं गए जब मैं
यरूशलेम से भाग गया था?"

26मपीबोशेत ने उत्तर दिया, "हे राजा, मेरे स्वामी! मेरे
सेवक (सीबा) ने मुझे मूर्ख बनाया। मैंने सीबा से कहा,
'मैं विकलांग हूँ। अत: गधे पर काठी लगाओ। तब मैं
गधे पर बैठूंगा, और राजा के साथ जाऊँगा।* किन्तु
मेरे सेवक ने मुझे धोखा दिया। **27**उसने मेरे बारे में
आपसे बुरी बातें कहीं। किन्तु मेरे स्वामी, राजा परमेश्वर
के यहाँ देवदूत के समान हैं। आप वही करें जो आप
उचित समझते हैं। **28**आपने मेरे पितामह के सारे परिवार
को मार दिया होता। किन्तु आपने यह नहीं किया।
आपने मुझे उन लोगों के साथ रखा जो आपकी मेज पर
खाते हैं। इसलिये मैं राजा से किसी बात के लिये शिकायत
करने का अधिकार नहीं रखता।'"

29राजा ने मपीबोशेत से कहा, "अपनी समस्याओं के
बारे में अधिक कुछ न कहो। मैं यह निर्णय करता हूँ!
तुम और सीबा भूमि का बंटवारा कर सकते हो।"

30मपीबोशेत ने राजा से कहा, "सीबा को सारी भूमि
ले लेने दें! क्यों? क्योंकि मेरे स्वामी राजा अपने महल
में शान्तिपूर्वक लौट आये हैं।"

दाऊद बर्जिल्लै से अपने साथ यरूशलेम चलने को कहता है

31गिलाद का बर्जिल्लै रोगलीम से आया। वह राजा
दाऊद के साथ यरदन नदी तक आया। वह राजा के
साथ, यरदन नदी को उसे पार कराने के लिये गया।
32बर्जिल्लै बहुत बूढ़ा आदमी था। वह अस्सी वर्ष का
था। जब दाऊद महनैम में ठहरा था तब उसने उसको
भोजन तथा अन्य चीजें दी थीं। बर्जिल्लै यह सब कर
सकता था क्योंकि वह बहुत धनी व्यक्ति था। **33**दाऊद
ने बर्जिल्लै से कहा, "नदी के पार मेरे साथ चलो। यदि
तुम मेरे साथ यरूशलेम में रहोगे तो वहाँ मैं तुम्हारी
देखभाल करूँगा।"

34किन्तु बर्जिल्लै ने राजा से कहा, "क्या आप जानते
हैं कि मैं कितना बूढ़ा हूँ? क्या आप समझते हैं कि मैं
आपके साथ यरूशलेम को जा सकता हूँ? **35**मैं अस्सी
वर्ष का हूँ। मैं इतना अधिक बूढ़ा हूँ कि मैं यह नहीं
बता सकता कि अच्छा क्या है और बुरा क्या है। मैं
इतना अधिक बूढ़ा हूँ कि मैं जो खाता पीता हूँ उसका
स्वाद नहीं ले सकता। मैं इतना बूढ़ा हूँ कि आदमियों
और स्त्रियों के गाने की आवाज भी नहीं सुन सकता।
आप मेरे साथ परेशान होना क्यों चाहते हैं? **36**मैं आपकी
ओर से पुरस्कार नहीं चाहता। मैं आपके साथ नजदीक
के रास्ते से यरदन नदी को पार करूँगा। **37**किन्तु,
कृपया मुझे वापस लौट जाने दें। तब मैं अपने नगर में
मरूँगा और अपने माता-पिता की कब्र में दफनाया
जाऊँगा। किन्तु यह किम्हाम आपका सेवक हो सकता
है। मेरे प्रभु राजा उसे अपने साथ लौटने दें। जो आप
चाहें, उसके साथ करें।"

38राजा ने उत्तर दिया, "किम्हान मेरे साथ लौटेगा। मैं
तुम्हारे कारण उस पर दयालु रहूँगा। मैं तुम्हारे लिये
कुछ भी कर सकता हूँ।"

दाऊद घर लौटता है

39राजा ने बर्जिल्लै का चुम्बन किया और उसे आशीर्वाद
दिया। बर्जिल्लै घर लौट गया। और राजा तथा सभी लोग
नदी के पार वापस गये।

40राजा यरदन नदी को पार करके गिलगाल गया।
किम्हाम उसके साथ गया, यहूदा के सभी लोगों तथा
आधे इस्राएल के लोगों ने दाऊद को नदी के पार
पहुँचाया।

इस्राएली यहूदा के लोगों से तर्क-वितर्क करते हैं

41सभी इस्राएली राजा के पास आए। उन्होंने राजा से
कहा, "हमारे भाई यहूदा के लोग, आपको चुरा ले गये
और आपको और आपके परिवार को, आपके लोगों
के साथ यरदन नदी के पार ले आए। क्यों?"

42यहूदा के सभी लोगों ने इस्राएलियों को उत्तर दिया,
"क्योंकि राजा हमारा समीपी सम्बन्धी है। इस बात के
लिये आप लोग हमसे क्रोधित क्यों हैं? हम लोगों ने
राजा की कीमत पर भोजन नहीं किया है। राजा ने हम
लोगों को कोई भेंट नहीं दी।"

43इस्राएलियों ने उत्तर दिया, "हम लोग दाऊद के राज्य
के दस भाग हैं।* इसलिये हम लोगों का अधिकार
दाऊद पर तुमसे अधिक है। किन्तु तुम लोगों ने हमारी
उपेक्षा की। क्यों? वे हम लोग थे जिन्होंने सर्वप्रथम
अपने राजा को वापस लाने की बात की।"

किन्तु यहूदा ने लोगों ने इस्राएलियों को बड़ा गन्दा
उत्तर दिया। यहूदा के लोगों के शब्द इस्राएलियों के
शब्दों से अधिक शत्रुतापूर्ण थे।

मैने सीबा ... जाऊँगा संभवत: मपीबोशेत यह कह रहा था कि उसका सेवक गधा ले गया और मपीबोशेत को छोड़ गया। पढ़े 2शमु. 16:1-4

हम लोग ... है बिन्यामीन और यहूदा के दो परिवार समूह थे जो बाद में राज्य के बँटने पर यहूदा का राज्य बने। अन्य दस परिवार समूह इस्राएल राज्य में थे।

शेबा इस्राएलियों को दाऊद से अलग संचालित करता है

20 ऐसा हुआ कि बिक्री का पुत्र शेबा नाम का
एक बुरा आदमी था। शेबा बिन्यामीन परिवार
समूह का था। उसने तुरही बजाई और कहा,
"हम लोगों का कोई हिस्सा दाऊद में नहीं है। यिशै
के पुत्र का कोई अंश हममें नहीं है। पूरे इस्राएली, हम
लोग अपने डेरों में घर चले।"
2तब सभी इस्राएलियों ने दाऊद को छोड़ दिया, और
बिक्री के पुत्र शेबा का अनुसरण किया। किन्तु यहूदा
के लोग अपने राजा के साथ लगातार यरदन नदी से
यरूशलेम तक बने रहे।
3दाऊद अपने घर यरूशलेम को आया। दाऊद ने
अपनी पत्नियों में से दस को घर की देखभाल के लिये
छोड़ा था। दाऊद ने इन स्त्रियों को एक विशेष घरमें
रखा।* लोगों ने इस घर की रक्षा की। स्त्रियाँ उस घर
में तब तक रहीं जब तक वे मरी नहीं। दाऊद ने उन्हें
भोजन दिया, किन्तु उनके साथ शारीरिक सम्बन्ध नहीं
किया। वे मरने के समय तक विधवा की तरह रहीं।
4राजा ने अमासा से कहा, "यहूदा के लोगों से कहो
कि वे मुझसे तीन दिन के भीतर मिले, और तुम्हें भी
यहाँ आना होगा और मेरे सामने खड़ा होना होगा।"
5तब अमासा यहूदा के लोगों को एक साथ बुलाने
गया। किन्तु उसने, जितना समय राजा ने दिया था,
उससे अधिक समय लिया।"

दाऊद अबीशै से शेबा को मारने को कहता है

6दाऊद ने अबीशै से कहा, "बिक्री का पुत्र शेबा हम
लोगों के लिये उससे भी अधिक खतरनाक है जितना
अबशालोम था। इसलिये मेरे सेवकों को लो और शेबा
का पीछा करो। शेबा को प्राचीर वाले नगरो में पहुँचने
से पहले इसे शीघ्रता से मरो। यदि शेबा प्राचीर वाले
नगरो में पहुँच जायेगा तो वह हम लोगों से बच निकलेगा।"
7योआब केव्यक्ति करेती, पलेती और सैनिक यरूशलेम
से बाहर गये। उन्होंने बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा
किया।

योआब अमासा को मार डालता है

8जब योआब और सेना गिबोन की विशाल चट्टान
तक आई, अमासा उनसे मिलने आया। योआब अपने
सैनिक पोशाक में था। योआब ने पेटी बांध रखी थी।
उसकी तलवार उसकी म्यान में थी। योआब अमासा से
मिलने आगे बढ़ा और उसकी तलवार म्यान से गिर
पड़ी। योआब ने तलवार को उठा लिया और उसे अपने
हाथ में रखा। 9योआब ने अमासा से पूछा, "भाई, तुम
हर तरह से कुशल तो हो?"
योआब ने चुम्बन करने के लिये अपने दायें हाथ से,
अमासा को उसकी दाढ़ी से सहारे पकड़ा। 10अमासा ने
उस तलवार पर ध्यान नहीं दिया जो उसके हाथ में थी।
योआब ने अमासा के पेट में तलवार घुसेड़ दी और
उसकी आँतें भूमि पर आ पड़ी। योआब को अमासा पर
दुबारा चोट नहीं करनी पड़ी, वह पहले ही मर चुका
था।

दाऊद के लोग शेबा की खोज में लगे रहे

तब योआब और उसका भाई अबीशै दोनों ने बिक्री
के पुत्र शेबा की खोज जारी रखी। 11योआब के युवकों
में से एक व्यक्ति अमासा के शव के पास खड़ा रहा। इस
युवक ने कहा, "हर एक व्यक्ति जो योआब और दाऊद
का समर्थन करता है, उसे योआब का अनुसरण करना
चाहिये। शेबा का पीछा करने में उसकी सहायता करो।"
12अमासा अपने ही खून में सड़क के बीच पड़ा रहा।
सभी लोग शव को देखने रुकते थे। इसलिये युवक
अमासा के शव को सड़क से ले गया और उसे मैदान में
रख दिया। तब उनसे अमासा के शव पर एक कपड़ा
डाल दिया। 13जब अमासा का शव सड़क से हटा लिया
गया, सभी लोगों ने योआब का अनुसरण किया। वे
बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने योआब के साथ
गए।

शेबा आबेल बेतमाका को बच निकलता है

14बिक्री का पुत्र शेबा सभी इस्राएल के परिवार समूहों
से होता हुआ आबेल बेतमाका पहुँचा। सभी बेरी लोग भी
एक साथ आए और उन्होंने शेबा का अनुसरण किया।
15योआब और उसके लोग आबेल और बेतमाका
आए। योआब की सेना ने नगर को घेर लिया। उन्होंने
नगर दीवार के सहारे मिट्टी के ढेर लगाए। ऐसा करने
के बाद वे दीवार के ऊपर चढ़ सकते थे। तब योआब
के सैनिकों ने दीवार से पत्थरों को तोड़ना प्रारम्भ
किया। वे दीवार को गिरा देना चाहते थे।
16एक बुद्धिमती स्त्री नगर की ओर से चिल्लाई।
उसने कहा, "मेरी सुनो! योआब को यहाँ बुलाओ। मैं
उससे बात करना चाहती हूँ।"
17योआब उस स्त्री के पास बात करने गया। उस स्त्री
ने पूछा, "क्या तुम योआब हो?"
योआब ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं हूँ।"
तब उस स्त्री ने योआब से कहा, "मैं जो कहूँ सुनो।"
योआब ने कहा, "मैं सुन रहा हूँ।"
18तब उस स्त्री ने कहा, "अतीत में लोग कहते थे,
'आबेल में सलाह माँगो तब समस्या सुलझ जाएगी।"

दाऊद ... रखा दाऊद के पुत्र अबशालोम ने दाऊद की इन "रखैलों" को, जिनके साथ शारीरिक सम्बन्ध करके, भ्रष्ट कर दिया था। देखे 2शमू. 16:21-22

19मैं इस्राएल के राजभक्त तथा शान्तिप्रिय लोगों में से एक हूँ। तुम इस्राएल के एक महत्वपूर्ण नगर को नष्ट कर रहे हो। तुम्हें, वह कोई भी चीज, जो यहोवा की है, नष्ट नहीं करनी चाहिये।"

20योआब ने कहा, "नहीं, मैं कुछ भी नष्ट नहीं करना चाहता! 21किन्तु एक व्यक्ति एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश का है। वह बिक्री का पुत्र शेबा है। वह राजा दाऊद के विरुद्ध हो गया है। यदि तुम उसे मेरे पास लाओ तो मैं नगर को शान्त छोड़ दूँगा।"

उस स्त्री ने कहा, "बहुत ठीक, उसका सिर दीवार के ऊपर से तुम्हारे लिये फेंक दिया जायेगा।"

22तब उस स्त्री ने बड़ी बुद्धिमानी से नगर के सभी लोगों से बातें कीं। लोगों ने बिक्री के पुत्र शेबा का सिर काट डाला। तब लोगों ने योआब के लिये शेबा का सिर नगर की दीवार पर से फेंक दिया।

इसलिये योआब ने तुरही बजाई और सेना ने नगर को छोड़ दिया। हर एक व्यक्ति अपने घर में गया, और योआब राजा के पास यरूशलेम लौटा।

दाऊद के सेवक लोग

23योआब इस्राएल की सारी सेना का नायक था। यहोयादा का पुत्र बनायाह, करेतियों और पलेतियों का संचालन करता था। 24अदोराम उन लोगों का संचालन करता था जो कठिन श्रम करने के लिये विवश थे। अहिलूद का पुत्र यहोशापात इतिहासकार था। 25शेवा सचिव था। सादोक और एब्यातार याजक थे। 26और याईरी दाऊद का प्रमुख याजक था।

शाऊल का परिवार दण्डित हुआ

21 दाऊद के समय में भूखमरी का काल आया। इस बार भूखमरी तीन वर्ष तक रही। दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की। यहोवा ने उत्तर दिया, "इस भूखमरी का कारण शाऊल और उसका हत्यारा परिवार हैं। इस समय भूखमरी आई क्योंकि शाऊल ने गिबोनियों को मार डाला।" 2(गिबोनी इस्राएली नहीं थे। वे ऐसे एमोरियों के समूह थे जो अभी तक जीवित छोड़ दिये गये थे। इस्राएलियों ने प्रतिज्ञा की थी कि वे गिबोनी पर चोट नहीं करेंगे।* किन्तु शाऊल को इस्राएल और यहूदा के प्रति गहरा लगाव था। इसलिये उसने गिबोनियों को मारना चाहा।)

राजा दाऊद ने गिबोनी को एक साथ इकट्ठा किया। उसने उनसे बातें कीं। 3दाऊद ने गिबोनी से कहा, "मैं आप लोगों के लिये क्या कर सकता हूँ? इस्राएल के पापों को धोने के लिए मैं क्या कर सकता हूँ जिससे आप लोग यहोवा के लोगों को आशीर्वाद दे सकें?"

4गिबोनी ने दाऊद से कहा, "शाऊल और उसके परिवार के पास इतना सोना-चाँदी नहीं है कि वे उसके बदले उसे दे सकें जो उन्होंने काम किये। किन्तु हम लोगों के पास इस्राएल के किसी व्यक्ति को भी मारने का अधिकार नहीं है।"

दाऊद ने पूछा, "किन्तु मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ?"

5गिबोनी ने दाऊद से कहा, "शाऊल ने हमारे विरुद्ध योजनायें बनाई। उसने हमारे सभी लोगों को, जो इस्राएल में बचे हुए हैं, नष्ट करने का प्रयन्त किया। 6शाऊल यहोवा का चुना हुआ राजा था। इसलिये उसके सात पुत्रों को हम लोगों के सामने लाया जाये। तब हम लोग उन्हें शाऊल के गिबा पर्वत पर यहोवा के सामने फाँसी चढ़ा देंगे।"

राजा दाऊद ने कहा, "मैं उन पुत्रों को तुम्हें दे दूँगा।"
7किन्तु राजा ने योनातन के पुत्र मपीबोशेत की रक्षा की। योनातन शाऊल का पुत्र था। दाऊद ने यहोवा के नाम पर योनातन से प्रतिज्ञा की थी। इसलिये राजा ने मपीबोशेत को उन्हें चोट नहीं पहुँचाने दिया। 8किन्तु राजा ने अर्मोनी, और मपीबोशेत,* रिस्पा और शाऊल के पुत्रों को लिया (रिस्पा अय्या की पुत्री थी)। राजा ने रिस्पा के इन दो पुत्रों और शाऊल की पुत्री मीकल के पाँचों पुत्रों को लिया। महोल नगर का निवासी बर्जिल्लै का पुत्र अद्रीएल मेराब के सभी पाँच पुत्रों का पिता था।
9दाऊद ने इन सात पुत्रों को गिबोनी को दे दिया। तब गिबोनी ने इन सातों पुत्रों को यहोवा के सामने गिबा पर्वत पर फाँसी दे दी। ये सातों पुत्र एक साथ मरे। वे फसल की कटाई के पहले दिन मार डाले गए। (जौ की कटाई आरम्भ होने जा रही थी।)

दाऊद और रिस्पा

10अय्या की पुत्री रिस्पा ने शोक के वस्त्र लिये और उसे चट्टान पर रख दिया। वह वस्त्र फसल की कटाई आरम्भ होने से लेकर जब तक वर्षा हुई चट्टान पर पड़ा रहा। दिन में रिस्पा अपने पुत्रों के शव को आकाश के पक्षियों द्वारा स्पर्श नहीं होने देती थी। रात को रिस्पा खेतों के जानवरों को अपने पुत्रों के शवों को छूने नहीं देती थी।

11लोगों ने दाऊद को बताया, जो कुछ शाऊल की दासी अय्या की पुत्री रिस्पा कर रही थी। 12तब दाऊद ने शाऊल और योनातन की अस्थियाँ याबेश गिलाद के लोगों से लीं। (याबेश के लोगों ने इन अस्थियों को बेतशान के सार्वजनिक रास्ते से चुरा ली थी। यह सार्वजनिक रास्ता बेतशान में वहाँ है जहाँ पलिश्तियों ने

इस्राएलियों ... नहीं करेंगे यह यहोशू के समय में हुआ था जब गिबोनी ने धोखा दिया था। पढ़े यहोशू 9:3-15

मपीबोशेत यह मपीबोशेत नाम का दूसरा व्यक्ति है, योनातन का पुत्र नहीं।

शाऊल और योनातन के शवो को लटकाया था।
पलिश्तियों ने इन शवों को शाऊल को गिलबो में मारने
के बाद लटकाया था।)
13दाऊद, शाऊल और उसके पुत्र योनातन की अस्थियों
को, गिलाद से लाया। तब लोगों ने शाऊल के सात पुत्रों
के शवों को इकट्ठा किया जो फाँसी चढ़ा दिये गये थे।
14उन्होंने शाऊल और उसके पुत्र योनातन की अस्थियों
को बिन्यामीन के जेला स्थान में दफनाया। लोगों ने
शवों को शाऊल के पिता कीश की कब्र में दफनाया।
लोगों ने वह सब किया जो राजा ने आदेश दिया। तब
परमेश्वर ने देश के लिये की गई उनकी प्रार्थना सुनी।

पलिश्तियों के साथ युद्ध

15पलिश्तियों ने इस्राएलियों के विरुद्ध फिर युद्ध छेडा।
दाऊद और उसके लोग पलिश्तियों से लड़ने गए। किन्तु
दाऊद थक गया और कमजोर हो गया। **16**रपाई के
वंश में से यिशबोबनोब एक था। यिशबोबनोब के भाले
का वजन साढ़े सात पौंड था। यिशबोबनोब के पास एक
नयी तलवार थी। उसने दाऊद को मार डालने की
योजना बनाई। **17**किन्तु सरूयाह के पुत्र अबीशै ने उस
पलिश्ती को मार डाला और दाऊद के जीवन को
बचाया।

तब दाऊद के लोगों ने दाऊद से प्रतिज्ञा की। उन्होंने
उससे कहा, "तुम हम लोगों के साथ भविष्य में युद्ध
करने नहीं जा सकते। यदि तुम फिर युद्ध में जाते हो
और मार दिये जाते हो तो इस्राएल अपने सबसे बड़े मार्ग
दर्शक को खो देगा।"

18तत्पश्चात, गोब में पलिश्तियों के साथ दूसरा युद्ध
हुआ। हूशाई सिब्बकै ने सप एक अन्य रपाईवंशी पुरुष
को मार डाला।

19तब गोब में फिर पलिश्तियों से एक अन्य युद्ध
छिड़ा। यारयोरगीम के पुत्र एलहनान ने, जो बेतलेहेम
का था, गती गोल्यत* को मार डाला। गोलयत का
भाला जुलाहे की छड़ के बराबर लम्बा था।

20गत में फिर युद्ध आरम्भ हुआ। वहाँ एक विशाल
व्यक्ति था। उस व्यक्ति के हर एक हाथ में छ: छ:
उंगलियाँ और हर एक पैर में छ:-छ: अंगूठे थे। सब
मिलाकर उसकी चौबीस उंगलियाँ और अंगूठे थे।
यह व्यक्ति भी एक रपाईवंशी था। **21**इस व्यक्ति ने
इस्राएल को ललकारा। किन्तु योनातन ने इस व्यक्ति
को मार डाला। (योनातन दाऊद के भाई शिमी का
पुत्र था।)

22ये चारों व्यक्ति गत के रपाईवंशी थे। वे सभी दाऊद
और उसके लोगों द्वारा मारे गए।

यहोवा की स्तुति के लिये दाऊद का गीत

22 यहोवा ने दाऊद को शाऊल तथा अन्य सभी
शत्रुओं से बचाया था। दाऊद ने उस समय यह
गीत गाया,

2यहोवा मेरी चट्टान, मेरा गढ़, मेरा शरण-स्थल है।
3मैं सहायता पाने को परमेश्वर तक दौड़ूँगा। वह मेरी
सुरक्षा-चट्टान है। परमेश्वर मेरी ढाल है। उसकी शक्ति
मेरी रक्षक है। यहोवा मेरी ऊँचा गढ़ है, और मेरी
सुरक्षा का स्थान है। मेरा रक्षक कष्टों से मेरी रक्षा
करता है।

4उन्होंने मेरा उपहास किया। मैंने सहायता के लिये
यहोवा को पुकारा, यहोवा ने मुझे मेरे शत्रुओं से बचाया!
5मेरे शत्रु मुझे मारना चाहते थे। मृत्यु-तरंगों ने मुझे
लपेट लिया। विपत्तियाँ बाढ़-सी आई, उन्होंने मुझे भयभीत
किया।

6कब्र की रस्सियाँ मेरे चारों ओर लिपटीं, मैं मृत्यु के
जाल में फँसा।

7मैं विपत्ति में था, किन्तु मैंने यहोवा को पुकारा। हाँ,
मैंने अपने परमेश्वर को पुकारावह अपने उपासना गृह
में था,उसने मेरी पुकार सुनी,मेरी सहायता की पुकार
उसके कानों में पड़ी।

8तब धरती में कम्पन हुआ, धरती डोल उठी,आकाश
के आधार स्तम्भ काँप उठे।क्यों? क्योंकि यहोवा क्रोधित
था।

9उसकी नाक से धुआँ निकला, उसके मुख से जलती
चिनगारियाँ छिटकी, उससे दहकते अंगारे निकल पड़े।
10यहोवा ने आकाश को फाड़ कर खोल डाला, और
नीचे आया, वह सघन काले मेघ पर खड़ा हुआ!
11यहोवा करूब (स्वर्गदूत) पर बैठा, और उड़ा, वह
पवन के पंखों पर चढ़ कर उड़ गया।
12यहोवा ने तम्बू-से काले मेघों को अपने चारों ओर
लपेट लिया, उसने सघन मेघों से जल इकट्ठा किया।
13उसका तेज इतना प्रखर था, मानो बिजली की
चमक वहीं से आई हो।
14यहोवा गगन से गरजा! परमेश्वर, अति उच्च, बोला।
15यहोवा ने बाण से शत्रुओं को बिखराया, यहोवा ने
बिजली भेजी, और लोग भय से भागे।
16धरती की नींव का आवरण हट गया, तब लोग
सागर की गहराई देख सकते थे। वे हटे, क्योंकि यहोवा
ने बातें की, उसकी अपनी नाक से तप्त वायु निकलने
के कारण।
17यहोवा गगन से नीचे पहुँचा, यहोवा ने मुझे पकड़
लिया, उसने मुझे गहरे जल (विपत्ति) से निकाल
लिया।
18उसने उन लोगों से बचाया, जो घृणा करते थे,
मुझसे मेरे शत्रु मुझसे अधिक शक्तिशाली थे, अत:
उसने मेरी रक्षा की।

गती गोलियत 1इति. 20:5 में इस पलिश्ती को गोलियत का भाई
लह्मी कहा गया है।

19मैं विपत्ति में था, जब मेरे शत्रुओं का मुझ पर
आक्रमण हुआ, किन्तु मेरे यहोवा ने मेरी सहायता की।
20यहोवा मुझे सुरक्षा में ले आया, उसने मेरी रक्षा की,
क्योंकि वह मुझसे प्रेम करता है।
21यहोवा मुझे पुरस्कार देता है, क्योंकि मैंने उचित
किया। यहोवा मुझे पुरस्कार देता है, क्योंकि मेरे हाथ
पाप रहित हैं।
22क्यों? क्योंकि मैंने यहोवा के नियमों का पालन
किया। मैंने अपने परमेश्वर के विरुद्ध पाप नहीं किया।
23मैं सदा याद करता हूँ यहोवा का निर्णय, मैं उसके
नियमों को मानता हूँ।
24यहोवा जानता है–मैं अपराधी नहीं हूँ, मैं अपने को
पापों से दूर रखता हूँ।
25यही कारण है कि यहोवा मुझे पुरस्कार देता है, मैं
न्यायोचित रहता हूँ। यहोवा देखता है, कि मैं स्वच्छ
जीवन बिताता हूँ।
26यदि कोई व्यक्ति तुझसे प्रेम करेगा तो तू, अपनी
प्रेमपूर्ण दया उस पर करोगा। यदि कोई तेरे प्रति सच्चा
है, तब तू भी उसके प्रति सच्चा होगा!
27यदि कोई तेरे लिये अच्छा जीवन बिताता है, तब तू
भी उसके लिये अच्छा बनेगा। किन्तु यदि कोई व्यक्ति
तेरे विरुद्ध होता है, तब तू भी उसके विरुद्ध होगा।
28तू विपत्ति में विन्रम लोगों को बचायेगा, किन्तु तू
घमण्डी को नीचा करेगा।
29यहोवा तू मेरा दीपक है, यहोवा मेरे चारों ओर के
अंधेरे को प्रकाश में बदलता है।
30तू सैनिकों के दल को हराने में, मेरी सहायता
करता है। परमेश्वर की शक्ति से मैं दीवार के ऊपर
चढ़ सकता हूँ।
31परमेश्वर की शक्ति पूर्ण है। यहोवा के वचन की
जाँच हो चुकी है। यहोवा रक्षा के लिये, अपने पास
भागने वाले हर व्यक्ति की ढाल है।
32यहोवा के अतिरिक्त कोई अन्य परमेश्वर नहीं,
हमारे परमेश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई आश्रय–शिला
नहीं। 33परमेश्वर मेरा दृढ़ गढ़ है वह निर्दोषों की शुद्ध
आत्माओं की सहायता करता है।
34यहोवा मेरे पैरों को हिरन के पैरों–सा तेज बनाता
है, वह उच्च स्थानों पर मुझे दृढ़ करता है।
35यहोवा मुझे युद्ध की शिक्षा देता है, अत: मेरी भुजायें
पीतल के धनुष को चला सकती हैं।
36तू ढाल की तरह, मेरी रक्षा करता है। तेरी सहायता
ने मुझे विजेता बनाया है।
37तूने मेरा मार्ग विस्तृत किया है, जिससे मेरे पैर
फिसले नहीं।
38मैंने अपने शत्रुओं का पीछा किया, मैंने उन्हें नष्ट
किया, मैं तब तक नहीं लौटा, जब तक शत्रु नष्ट न
हुए।
39मैंने अपने शत्रुओं को नष्ट किया है, मैंने उन्हें पूरी
तरह नष्ट किया है। वे फिर उठ नहीं सकते, हाँ मेरे
शत्रु मेरे पैरों के तले गिरे।
40परमेश्वर तूने मुझे युद्ध के लिये, शक्तिशाली बनाया।
तूने मेरे शत्रुओं को हराया है।
41तूने मेरे शुत्रओं को भगाया है, अत: मैं उन लोगों
को हरा सकता हूँ जो मुझसे घृणा करते हैं।
42मेरे शत्रुओं ने सहायता चाही, किन्तु उनका रक्षक
कोई नहीं था। उन्होंने यहोवा से सहायता माँगी, लेकिन
उसने उत्तर नहीं दिया।
43मैं अपने शत्रुओं को कूटकर टुकड़े–टुकड़े करता
हूँ, वे भूमि पर धूलि से हो जाते हैं। मैंने उन्हें सड़क की
कीचड़ की तरह रौंद दिया।
44तूने तब भी मुझे बचाया है, जब मेरे लोगों ने मेरे
विरुद्ध लड़ाई की। तूने मुझे राष्ट्रों का शासक बनाये
रखा, वे लोग भी मेरी सेवा करेंगे, जिन्हें मैं नहीं जानता।
45अन्य देशों के लोग मेरी आज्ञा मानते हैं, जैसे ही
सुनते हैं, तो शीघ्र ही मेरी आज्ञा स्वीकार करते हैं।
46अन्य देशों के लोग भयभीत होंगे, वे अपने छिपने
के स्थानों से भय से काँपते निकलेंगे।
47यहवोा शाश्वत है, मेरी आश्रय चट्टान* की स्तुति
करो! परमेश्वर महान है! वह आश्रय–चट्टान है, जो
मेरा रक्षक है।
48वह परमेश्वर है, जो मेरे शत्रुओं को मेरे लिये दण्ड
देता है। वह लोगों को मेरे अधीन करता है।
49वह मुझे मेरे शत्रुओं से मुक्त करता है। हाँ, तूने मुझे
मेरे शत्रुओं से ऊपर उठाया। तू मुझे, प्रहार करने के
इच्छुकों से बचाता है।
50यहोवा, इसी कारण, हे यहोवा मैंने राष्ट्रों के बीच में
तूझ को धन्यवाद दिया, यही कारण है कि मैं तेरे नाम
की महिमा गाता हूँ।
51यहोवा अपने राजा की सहायता, युद्ध में विजय पाने
में करता है, यहोवा अपने चुने हुये राजा से प्रेम दया
करता है। वह दाऊद और उसकी सन्तान पर सदा
दयालु रहेगा।

दाऊद के अन्तिम शब्द

23 यिशै के पुत्र दाऊद के अन्तिम शब्द हैं, दाऊद
ने यह गीत गाया:
परमेश्वर द्वारा महान बना व्यक्ति कहता है, वह याकूब
के परमेश्वर द्वारा चुना गया राजा है, वह इस्राएल का
मधुर गायक है।
2यहोवा की आत्मा मेरे माध्मम से बोला। उसके शब्द
मेरी जीभ पर थे।

चट्टान परमेश्वर का नाम। इससे ज्ञात होता है कि वह एक गढ़ या सुरक्षा के दृढ़ स्थान की तरह है।

3इस्राएल के परमेश्वर ने बातें कीं। इस्राएल की आश्रय,
चट्टान ने मुझसे कहा, "वह व्यक्ति जो लोगों पर न्यायपूर्ण
शासन करता है, वह व्यक्ति जो परमेश्वर को सम्मान
देकर शासन करता है।
4वह उषाकाल के प्रकाश–सा होगा; वह व्यक्ति मेघहीन
प्रात: की तरह होगा, वह व्यक्ति उस वर्षा के बाद की
धूप सा होगा; वर्षा जो भूमि में कोमल घासें उगाती हैं।"
5परमेश्वर ने मेरे परिवार को शक्तिशाली बनाया था।
परमेश्वर ने मेरे साथ सदैव के लिये एक वाचा की,
परमेश्वर ने यह वाचा पक्की की, और वह इसे नहीं
तोड़ेगा, यह वाचा मेरी मुक्ति है, यह वाचा वह सब है, जो
मैं चाहता हूँ। सत्य ही, यहोवा मेरे परिवार को शक्तिशाली
बनने देगा।
6किन्तु सभी बुरे व्यक्ति काँटो की तरह हैं। लोग काँटो
को धारण नहीं करते, वे उन्हें दूर फेंक देते हैं।
7यदि कोई व्यक्ति उन्हें छूता है, तो वे उस भाले के दंड
की तरह चुभते हैं जो लकड़ी तथा लोहे ले बना हो। वे
लोग काँटो की तरह होंगे। वे आग में फेंक दिये जाएंगे,
और वे पूरी तरह भस्म हो जायेंगे।

तीन महायोद्धा

8दाऊद के सैनिकों के नाम ये हैं: तहकमोनी का
रहने वाला योशेब्यश्शेबेत। योशेब्यश्शेबेत तीन
महायोद्धाओं का नायक था। उसे एस्नी अदीनी भी कहा
जाता था। योशेब्यश्शेबेत ने एक बार में आठ सौ व्यक्तियों
को मारा था। **9**दूसरा, अहोही, दोदै का पुत्र एलीआज़ार
था। एलीआज़ार उन तीन वीरों में से एक था, जो दाऊद
के साथ उस समय थे जब उन्होंने पलिश्तियों को चुनौती
दी थी। पलिश्ती एक साथ युद्ध के लिये तब आये थे जब
इस्राएली दूर चले गये थे। **10**एलीआज़ार पलिश्तियों के
साथ तब तक लड़ता रहा जब तक वह बहुत थक नहीं
गया। किन्तु वह अपनी तलवार को दृढ़ता से पकड़े रहा
और युद्ध करता रहा। उस दिन यहोवा ने इस्राएलियों
को बड़ी विजय दी। लोग तब आए जब एलीआज़ार युद्ध
जीत चुका था। किन्तु वे केवल बहुमूल्य चीजें शत्रुओं से
लेने आए।
11उसके बाद हरार का रहने वाला आगे का पुत्र
शम्मा था। पलिश्ती एक साथ लड़ने लेही में आये थे।
उन्होंने मसूर के खेतों में युद्ध किया था। लोग पलिश्तियों
के सामने भाग खड़े हुए थे। **12**किन्तु शम्मा खेत के
बीच खड़ा था। वह खेत के लिये लड़ा। उसने पलिश्तियों
को मार डाला। उस समय यहोवा ने बड़ी विजय दी।
13एक बार जब दाऊद अदुल्लाम की गुफा में था तीस
योद्धोओं* में से तीन दाऊद के पास आए। ये तीनों
व्यक्ति अदुल्लाम की गुफा तक रेंगते हुये गुफा तक
दाऊद के पास आए। पलिश्ती सेना ने अपना डेरा
रपाईम की घाटी में डाला था।
14उस समय दाऊद किले में था। कुछ पलिश्ती सैनिक
वहाँ बेतलेहेम में थे। **15**दाऊद की बड़ी इच्छा थी कि
उसे उस के नगर का पानी मिले जहाँ उसका घर था।
दाऊद ने कहा, "ओह, मैं चाहता हूँ कि कोई व्यक्ति
बेतलेहेम के नगर–द्वार के पास के कुँए का पानी मुझे
दे!" दाऊद सचमुच यह चाहता नहीं था, वह बातें ही
बना रहा था।
16किन्तु तीनों योद्धा* पलिश्ती सेना को चीरते हुए
निकल गये। इन तीनों वीरों ने बेतलेहेम के नगर–द्वार
के पास के कुँए से पानी निकाला। तब तीनों वीर दाऊद
के पास पानी लेकर आए। किन्तु दाऊद ने पानी पीने से
इन्कार कर किया। उसने यहोवा के सामने उसे भूमि
पर डाल दिया। **17**दाऊद ने कहा, "यहोवा, मैं इसे पी
नहीं सकता। यह उन व्यक्तियों का खून पीने जैसा होगा
जिन्होंने अपने जीवन को मेरे लिये खतरे में डाला।"
यही कारण था कि दाऊद ने पानी पीना अस्वीकार
किया। इन तीनों योद्धाओं ने उस प्रकार के अनेक
कार्य किये।

अन्य बहादुर सैनिक

18सरूयाह का पुत्र, योआब का भाई अबीशै तीनों
योद्धाओं का प्रमुख था। अबीशै ने अपने भाले का
उपयोग तीन सौ शत्रुओं पर किया और उन्हें मार डाला।
वह इतना ही प्रसिद्ध हुआ जितने तीन योद्धा। **19**अबीशै
ने शेष तीन योद्धाओं से अधिक सम्मान पाया। वह
उनका प्रमुख हो गया। किन्तु वह तीन योद्धाओं का
सदस्य नहीं बना।
20यहोयादा का पुत्र बनायाह एक था। वह शक्तिशाली
व्यक्ति का पुत्र था। वह कबसेल का निवासी था। बनायाह
ने अनेक वीरता के काम किये। बनायाह ने मोआब के
अरियल के दो पुत्रों को मार डाला। जब बर्फ गिर रही
थी, बनायाह एक गड्ढे में नीचे गया और एक शेर को
मार डाला। **21**बनायाह ने एक मिस्री को मारा जो
शक्तिशाली योद्धा था। मिस्री के हाथ में एक भाला था।
किन्तु बनायाह के हाथ में केवल एक लाठी थी। बनायाह
ने मिस्री के हाथ के भाले को पकड़ लिया और उससे
छीन लिया। तब बनायाह ने मिस्री के अपने भाले से ही
मिस्री को मार डाला। **22**यहोयादा के पुत्र बनायाह ने उस
प्रकार के अनेक काम किये। बनायाह तीन वीरों में
प्रसिद्ध था। **23**बनायाह ने तीन योद्धाओं से भी अधिक
सम्मान पाया, किन्तु वह तीन योद्धाओं का सदस्य नहीं
हुआ। बनायाह को दाऊद ने अपने रक्षकों का प्रमुख
बनाया।

तीस योद्धाओं ये दाऊद के अत्याधिक वीर सैनिकों का समूह था।

तीनो योद्धा ये दाऊद की सेना के सर्वाधिक वीर योद्धा थे।

तीस महायोद्धा

24तीस योद्धाओं में से एक योआब का भाई असाहेल
था। तीस योद्धाओं के समूह में अन्य व्यक्ति ये थे:
बेतलेहम के दोदो का पुत्र एल्हानन; 25हेरोदी शम्मा,
हेरोदी एलीका, 26पेलेती, हेलेस; तकोई इक्केश का पुत्र
ईरा; 27अनातोती का अबीएज़ेर; हूशाई मबुन्ने; 28अहोही,
सल्मोन; नतोपाही महरै; 29नतोपाही के बाना का पुत्र
हेलेब; गिबा के बिन्यामीन परिवार समूह रीबै का पुत्र
हुत्तै; 30पिरातोनी, बनायाह; गाश के नालों का हिद्दै;
31अराबा अबीअल्बोन; बहूरीमी अजमावेत; 32शालबोनी
एल्यहबा; याशेन के पुत्र योनातन; 33हरारी शम्मा का
पुत्र; अरारी शारार का पुत्र अहीआम; 34माका का
अहसबै का पुत्र एलीपेलेप्त; गीलोई अहीतोपेल का पुत्र
एलीआम; 35कर्म्मेली हेस्रो; अराबी पारै; 36सोबाई के
नातान का पुत्र यिगाल; गादी बानी; 37अम्मोनी सेलेक,
बेरोती का नहरै; (नहरै सरूयाह के पुत्र योआब का
कवच ले जाता था); 38येतेरी ईरा येतेरी गारेब; 39और
हित्ती ऊरिय्याह सब मिलाकर ये सैंतीस थे।

दाऊद अपनी सेना को गिनना चाहता है

24 यहोवा फिर इस्राएल के विरुद्ध क्रोधित हुआ।
यहोवा ने दाऊद को इस्राएलियों के विरुद्ध
कर दिया। दाऊद ने कहा, “जाओ, इस्राएल और यहूदा
के लोगों को गिनो।”
2राजा दाऊद ने सेना के सेनापति योआब से कहा,
“इस्राएल के सभी परिवार समूह में दान से बेर्शेबा तक
जाओ, और लोगों को गिनो। तब मैं जान सकूँगा कि
वहाँ कितने लोग हैं। 3किन्तु योआब ने राजा से कहा,
“यहोवा परमेश्वर आपको सौ गुणा लोग दे, और आपकी
आँखे यह घटित होता हुआ देख सकें। किन्तु आप यह
क्यों करना चाहते हैं?”
4राजा दाऊद ने दृढ़ता से योआब और सेना के नायको
को लोगों की गणना करने का आदेश दिया। अत:
योआब और सेना के नायक दाऊद के यहाँ से इस्राएल
के लोगों को गिनने गए। 5उन्होंने यरदन नदी को पार
किया। उन्होंने अपना डेरा अरोएर में डाला। उनका
डेरा नगर की दाँयी ओर था। (नगर गाद की घाटी के
बीच में है। नगर याजेर जाने के रास्तें में भी है।)
6तब वे तहतीम्होदशी के प्रदेश और गिलाद को गये।
वे दान्यान और सीदोन के चारों ओर गए। 7वे सोर के
किले को गये। वे हिब्बियों और कनानियों के सभी
नगरों को गए। वे दक्षिणी यहूदा में बेर्शेबा को गए। 8नौ
महीने बीस दिन बाद वे पूरे प्रदेश का भ्रमण कर चुके
थे। वे नौ महीने बीस दिन बाद यरूशलेम आए।
9योआब ने लोगों की सूची राजा को दी। इस्राएल में
आठ लाख व्यक्ति थे जो तलवार चला सकते थे और
यहूदा में पाँच लाख व्यक्ति थे।

यहोवा दाऊद को दण्ड देता है

10तब दाऊद गिनती करने के बाद लज्जित हुआ।
दाऊद ने यहोवा से कहा, “मैने यह कार्य कर के बहुत
बड़ा पाप किया! यहोवा, मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू मेरे
पाप को क्षमा कर। मैंने बड़ी मूर्खता की है।”
11जब दाऊद प्रात:काल उठा, यहोवा का सन्देश गाद
नबी को मिला जो कि दाऊद का दृष्टा था। 12यहोवा ने
गाद से कहा, “जाओ, और दाऊद से कहो, ‘यहोवा जो
कहता है वह यह है। मैं तुमको तीन विकल्प देता हूँ।
उनमें से एक को चुनो जिसे मैं तुम्हारे लिये करुँ।’”
13गाद दाऊद के पास गया और उसने बात की। गाद
ने दाऊद से कहा, “तीन में से एक को चुनो:

1 तुम्हारे लिये और तुम्हारे देश के लिये सात वर्ष की भूखमरी।
2 तुम्हारे शत्रु तुम्हारा पीछा तीन महीने तक करें।
3 तुम्हारे देश में तीन दिन तक बीमारी फैले।

इनके बारे में सोचो और निर्णय करो कि मैं इन में से
यहोवा जिसने मुझे भेजा है, को कौन सी चीज बताऊँ।”
14दाऊद ने गाद से कहा, “मैं सचमुच विपत्ति में हूँ!
किन्तु यहोवा बहुत कृपालु है। इसलिये यहोवा को हमें
दण्ड देने दो! मुझे मनुष्यों से दंडित न होने दो।”
15इसलिये यहोवा ने इस्राएल में बीमारी भेजी। यह
प्रात:काल आरम्भ हुई और रुकने के निर्धारित समय
तक रही। दान से बेर्शेबा तक सत्तर हजार लोग मर गए।
16स्वर्गदूत ने अपनी भुजा यरूशलेम की ओर उसे नष्ट
करने के लिये उठाई। किन्तु जो बुरी बातें हुई उनके
लिये यहोवा बहुत दु:खी हुआ। यहोवा ने उस स्वर्गदूत से
कहा जिसने लोगों को नष्ट किया, “बहुत हो चुका!
अपनी भुजा नीचे करो।” यहोवा का स्वर्गदूत यबूसी
अरौना के खलिहान के किनारे था।

दाऊद अरौना के खलिहान को खरीदता है

17दाऊद ने उस स्वर्गदूत को देखा जिसने लोगों को
मारा। दाऊद ने यहोवा से बातें कीं। दाऊद ने कहा,
“मैंने पाप किया है। मैंने गलती की है। किन्तु इन लोगों
ने मेरा अनुसरण भेड़ की तरह किया। उन्होंने कोई
गलती नहीं की। कृपया दण्ड मुझे और मेरे पिता के
परिवार को दें।”
18उस दिन गाद दाऊद के पास आया। गाद ने दाऊद
से कहा, “जाओ और एक वेदी यबूसी अरौना के खलिहान
में यहोवा के लिये बनाओ।” 19तब दाऊद ने वे काम
किये जो गाद ने करने को कहा। दाऊद ने यहोवा के
दिये आदेशों का पालन किया। दाऊद अरौना से मिलने
गया। 20जब अरौना ने निगाह उठाई, उसने राजा (दाऊद)
और उसके सेवकों को अपने पास आते देखा। अरौना
बाहर निकला और अपना माथा धरती पर टेकते हुए

प्रणाम किया। 21अरौना ने कहा, "मेरे स्वामी, राजा,
मेरे पास क्यों आए हैं?"

दाऊद ने उत्तर दिया, "तुमसे खलिहान खरीदने। तब मैं यहोवा के लिये वेदी बना सकता हूँ। तब बीमारी रुक जायेगी।"

22अरौना ने दाऊद से कहा, "मेरे स्वामी राजा, आप
कुछ भी बलि–भेंट के लिये ले सकते हैं। ये कुछ गायें होमबलि के लिये हैं अग्नि की लकड़ी के लिये दंवरी के
औजार तथा बैलों का जूआ भी है। 23हे राजा! मैं आपको
हर एक चीज देता हूँ।" अरौना ने राजा से यह भी कहा, "यहोवा आपका परमेश्वर, आप पर प्रसन्न हो।"

24किन्तु राजा ने अरौना से कहा, "नहीं! मैं तुमसे
सत्य कहता हूँ, मैं तुमसे भूमि को उसकी कीमत देकर खरीदूँगा। मैं यहोवा अपने परमेश्वर को कुछ भी ऐसी होमबलि नहीं चढ़ाऊँगा जिसका कोई मूल्य मैंने न दिया हो।"

इसलिये दाऊद ने खलिहान और गायों को चाँदी के
पचास शेकेल से खरीदा। 25तब दाऊद ने वहाँ यहोवा के
लिये एक वेदी बनाई। दाऊद ने होमबलि और मेलबलि चढ़ाई।

यहोवा ने देश के लिये उसकी प्रार्थना स्वीकार की। यहोवा ने इस्राएल में बीमारी रोक दी।

1 राजा

1 इस समय दाऊद बहुत अधिक बूढ़ा हो गया था। वह अपनी गरमाई खो चुका था। उसके सेवक उसे कम्बल ओढ़ाते थे किन्तु वह फिर भी ठंडा रहता था। **2**इसलिये उसके सेवकों ने उससे कहा, "हम आपकी देखभाल के लिये एक युवती की खोज करेंगे। वह आपके समीप लेटेगी और आपको गरम रखेगी।" **3**इसलिये राजा के सेवकों ने इस्राएल प्रदेश में चारों ओर एक युवती की खोज आरम्भ की। वे राजा को गरम रखने के लिये एक सुन्दर लड़की की खोज कर रहे थे। उन्हें अबीशग नाम की एक लड़की मिली। वह शूनेमिन नगर की थी। वे युवती को राजा के पास ले आए। **4**लड़की बहुत सुन्दर थी। उसने राजा की देख-रेख और सेवा की। किन्तु राजा दाऊद ने उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध नहीं किया।

5-6राजा दाऊद का पुत्र अदोनिय्याह बहुत घमण्डी हो गया। उसने घोषणा की, "मैं राजा बनूँगा।" अदोनिय्याह की माँ का नाम हग्गीत था। अदोनिय्याह राजा बनने का बहुत इच्छुक था। इसलिये वह अपने लिये एक रथ, घोड़े और आगे दौड़ने वाले पाँच सौ व्यक्तियों को लाया। राजा ने अपने पुत्र अदोनिय्याह को कभी सुधारा नहीं। दाऊद ने उससे कभी यह नहीं पूछा, "तुम ये कार्य क्यों कर रहे हो?" अदोनिय्याह वह पुत्र था जो अबशालोम के बाद उत्पन्न हुआ था। अदोनिय्याह एक बहुत सुन्दर व्यक्ति था।

7अदोनिय्याह ने सरुयाह के पुत्र योआब और याजक एब्यातार से बातें कीं। उन्होंने उसकी सहायता की। **8**किन्तु बहुत से लोग उन कामों को ठीक नहीं समझते थे जिन्हें अदोनिय्याह कर रहा था। वे नहीं समझते थे कि वह राजा होने के योग्य हो गया है। ये लोग याजक सादोक, यहोयादा का पुत्र बनायाह, नातान, नबी, शिमी, रेई और राजा दाऊद के विशेष रक्षक थे। इसलिये ये लोग अदोनिय्याह के साथ नहीं हुए।

9तब अदोनिय्याह ने कुछ जानवरों को मेलबलि के लिये मारा। उसने कुछ भेड़ों, कुछ गायों और कुछ मोटे बछड़ों को मारा। अदोनिय्याह ने एनरोगेल के पास जोहेलेत की चट्टान पर ये बलियाँ चढ़ाई। अदोनिय्याह ने इस विशेष उपासना में अपने साथ आने के लिये अनेक व्यक्तियों को आमन्त्रित किया। अदोनिय्याह ने अपने सभी भाईयों, (राजा के अन्य पुत्रों) तथा यहूदा के समस्त राज्य कर्मचारियों को आमन्त्रित किया **10**किन्तु अदोनिय्याह ने नातान नबी, या बनायाह या अपने पिता के विशेष रक्षक या अपने भाई सुलैमान को आमन्त्रित नहीं किया।

11जब नातान ने इसके बारे में सुना, वह सुलैमान की माँ बतशेबा के पास गया। नातान ने उससे पूछा, "क्या तुमने सुना है कि हग्गीत का पुत्र अदोनिय्याह क्या कर रहा है? उसने अपने को राजा बना लिया है और वास्तविक राजा दाऊद इसके बारे में कुछ नहीं जानता। **12**तुम्हारा जीवन और तुम्हारे पुत्र सुलैमान का जीवन खतरे में पड़ सकता है। किन्तु मैं तुम्हें बताऊँगा कि अपने को बचाने के लिए तुम्हें क्या करना चाहिए। **13**राजा दाऊद के पास जाओ और उससे कहो, 'मेरे राजा, आपने मुझे वचन दिया था कि आपके बाद मेरा पुत्र सुलैमान अगला राजा होगा। फिर, अदोनिय्याह राजा क्यों बन गया है?' **14**तब, जब तुम उससे बात कर ही रही होगी, मैं अन्दर आऊँगा। जब तुम चली जाओगी तब मैं जो कुछ घटित हुआ है उसके बारे में राजा को बताऊँगा। इससे यह प्रदर्शित होगा कि तुमने अदोनिय्याह के बारे में जो कुछ कहा है, वह सत्य है।"

15अत: बतशेबा राजा के सोने के कमरे में अन्दर उससे मिलने गई। राजा बहुत अधिक बूढ़ा था। शूनेमिन से आई लड़की अबीशग वहाँ उसकी देख-रेख कर रही थी। **16**बतशेबा राजा के सामने प्रणाम करने झुकी। राजा ने पूछा, "तुम क्या चाहती हो?"

17बतशेबा ने उत्तर दिया, "मेरे राजा, आपने अपने परमेश्वर, यहोवा का नाम लेकर मुझसे प्रतिज्ञा की थी। आपने कहा था, 'तुम्हारा पुत्र सुलैमान मेरे बाद राजा होगा। मेरे सिंहासन पर सुलैमान शासन करेगा।' **18**किन्तु अब अदोनिय्याह राजा हो गया है और आप इसे जानते भी नहीं। **19**अदोनिय्याह ने मेलबलि के लिये कई जानवरों को मार डाला है। उसने बहुत से बैलों, मोटे बछड़ों और भेड़ों को मारा है और उसने आपके सभी पुत्रों को आमन्त्रित किया है। उसने याजक एब्यातार और आपकी सेना के सेनापति योआब को भी आमन्त्रित किया है। किन्तु उसने आपके पुत्र सुलैमान को आमन्त्रित नहीं किया, जो आपकी सेवा करता है। **20**मेरे राजा, इस्राएल

के सभी लोगों की आँखे आप पर लगी हैं। वे आपके
इस निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि आपके बाद कौन
राजा होगा। **21**जब आप मरेंगे तो आप अपने पूर्वजों के
साथ दफनाये जायेंगे। उस समय लोग यहीं कहेंगे कि मैं
और सुलैमान अपराधी हैं।"

22जब बतशेबा राजा से बातें कर रही थी, नातान नबी
उससे मिलने आया। **23**सेवकों ने राजा से कहा, "नातान
नबी आये हैं।" अत: नातान ने प्रवेश किया और राजा
के पास गया। नातान राजा के सामने धरती तक झुका।
24तब नातान ने कहा, "मेरे राजा, क्या आपने यह
घोषणा कर दी है कि आपके बाद अदोनिय्याह नया
राजा होगा? क्या आपने यह निर्णय कर लिया है कि
आपके बाद अदोनिय्याह लोगों पर शासन करेगा। **25**आज
उसने घाटी में विशेष मेलबलियाँ भेंट की हैं। उसने कई
बैलों, मोटे बछड़ों और भेड़ों को मारा है और उसने
आपके अन्य सभी पुत्रों, सेना के सेनापति और याजक
एब्यातार को आमन्त्रित किया है। अब वे उनके साथ
खा रहे हैं और पी रहे हैं और वे कह रहे हैं, 'राजा
अदोनिय्याह दीर्घायु हो!' **26**किन्तु उसने मुझे या याजक
सादोक, यहोयादा के पुत्र बनायाह या आपके पुत्र सुलैमान
को आमन्त्रित नहीं किया। **27**क्या यह आपने किया है?
हम आपकी सेवा और आपकी आज्ञा का पालन करते
हैं। आपने हम लोगों से पहले ही क्यों नहीं कहा कि
आपने उसे अपने बाद होने वाला राजा चुना है?"

28तब राजा दाऊद ने कहा, "बतशेबा से अन्दर आने
को कहो!" अत: बतशेबा अन्दर राजा के सामने आई।

29तब राजा ने एक प्रतिज्ञा की: "यहोवा परमेश्वर ने
मुझे हर एक खतरे से बचाया है और यहोवा परमेश्वर
शाश्वत है। मैं तुम से प्रतिज्ञा करता हूँ। **30**मैं आज वह
कार्य करूँगा जिसका वचन मैंने इसके पूर्व तुम्हें दिया
था। मैंने यह प्रतिज्ञा यहोवा इस्राएल के परमेश्वर की
शक्ति से की थी। मैंने प्रतिज्ञा की थी कि तुम्हारा पुत्र
सुलैमान मेरे बाद राजा होगा और मेरे बाद सिंहासन पर
मेरा स्थान वही लेगा। मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी करूँगा।"

31तब बतशेबा राजा के सामने प्रणाम करने धरती
तक झुकी। उसने कहा, "राजा दाऊद दीर्घायु हों!"

32तब राजा दाऊद ने कहा, "याजक सादोक, नातान
नबी और यहोयादा के पुत्र बनायाह से यहाँ अन्दर आने
को कहो।" अत: तीनों व्यक्ति राजा के सामने आये।
33तब राजा ने उनसे कहा, "मेरे अधिकारियों को अपने
साथ लो और मेरे पुत्र सुलैमान को मेरे निजी खच्चर पर
बिठाओ। उसे गीहोन सोते पर ले जाओ। **34**उस स्थान
पर याजक सादोक और नातान नबी, इस्राएल के राजा
के रूप में उसका अभिषेक करें। तुम लोग तुरही
बजाओगे और यह घोषणा करो, 'यह सुलैमान नया
राजा है।' **35**तब इसके बाद उसके साथ यहाँ लौट आओ।
सुलैमान मेरे सिंहासन पर बैठेगा और हमारे स्थान पर
नया राजा होगा। मैंने सुलैमान को इस्राएल और यहूदा
का शासक होने के लिये चुना है।"

36यहोयादा के पुत्र बनायाह ने राजा को उत्तर
दिया, "आमीन! यहोवा परमेश्वर ने स्वंय यह कहा है!
37मेरे स्वामी राजा, यहोवा ने हमेशा आपकी सहायता
की है। यहोवा सुलैमान की भी सहायता करे और राजा
सुलैमान आपसे भी बड़े राजा बनें।"

38अत: सादोक, नातान, बनायाह और राजा के
अधिकारियों ने राजा दाऊद की आज्ञा का पालन किया।
उन्होंने सुलैमान को राजा दाऊद के खच्चर पर चढ़ाया
और उसके साथ गीहोन के सोते पर गये। **39**याजक
सादोक ने पवित्र तम्बू से तेल लिया। सादोक ने, यह
दिखाने के लिये कि सुलैमान राजा है, उसके सिर पर
तेल डाला। उन्होंने तुरही बजाई और सभी लोगों ने
उद्घोष किया, "राजा सुलैमान दीर्घायु हों!" **40**सभी लोग
नगर में सुलैमान के पीछे आए। वे बीन बजा रहे थे और
उल्लास के नारे लगा रहे थे। वे इतना उद्घोष कर रहे
थे कि धरती काँप उठी।

41इस समय अदोनिय्याह और उसके साथ के सभी
अतिथि अपना भोजन समाप्त कर रहे थे। उन्होंने
तुरही की आवाज सुनी। योआब ने पूछा, "यह शोर
कैसा है? नगर में क्या हो रहा है?"

42जब योआब बोल ही रहा था, याजक एब्यातार का
पुत्र योनातन वहाँ आया। अदोनिय्याह ने कहा, "यहाँ
आओ! तुम अच्छे व्यक्ति हो। अत: तुम मेरे लिये शुभ
सूचना अवश्य लाये होगे।"

43किन्तु योनातन ने उत्तर दिया, "नहीं! यह तुम्हारे
लिये शुभ सूचना नहीं है! हमारे राजा दाऊद ने सुलैमान
को नया राजा बनाया है **44**और राजा दाऊद ने याजक
सादोक, नातान नबी, यहोयादा के पुत्र बनायाह और
राजा के सभी अधिकारियों को उसके साथ भेजा है।
उन्होंने सुलैमान को राजा के निजी खच्चर पर बिठाया।
45तब याजक सादोक और नातान नबी ने गीहोन सोते
पर सुलैमान का अभिषेक किया और तब वे नगर में
गये। लोगों ने उनका अनुसरण किया और अब नगर में
लोग बहुत प्रसन्न हैं। यह शोर जो तुम सुनते हो, उसी
का है। **46**सुलैमान अब राजा के सिंहासन पर बैठा है।
47राजा के सभी सेवक राजा दाऊद से यह कहने आये
हैं कि आपने यह अच्छा कार्य किया है। वे कह रहे हैं,
'राजा दाऊद, आप एक महान राजा हैं और अब हम
प्रार्थना करते हैं कि आपका परमेश्वर, सुलैमान को
भी महान राजा बनाएगा। आपका परमेश्वर सुलैमान
को आपसे भी अधिक प्रसिद्ध राजा बनाए और उसे
आप जितने महान राजा थे उससे भी अधिक महान
राजा होने दे।' यहाँ तक कि राजा दाऊद भी वहाँ थे,
और राजा दाऊद अपने बिस्तर पर लेटे हुए थे। **48**राजा
दाऊद ने कहा, 'इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की स्तुति

करो। यहोवा ने मेरे पुत्रों में से एक को मेरे सिंहासन पर
बिठाया है और इसे मुझे देखने दियाहै।'"

49तब अदोनिय्याह के सभी अतिथि डर गए और
शीघ्रता से चले गए। 50अदोनिय्याह भी सुलैमान से डर
गया था। इसलिये वह वेदी तक गया और वेदी के सींगो
को उसने पकड़ लिया।* 51तब किसी ने सुलैमान से
कहा, "अदोनिय्याह तुमसे बहुत भयभीत है। अदोनिय्याह
वेदी के पास है। उसने वेदी के सीगों को पकड़ रखा है
और छोड़ने से इन्कार करता है। अदोनिय्याह कहता
है, 'राजा सुलैमान से यह प्रतिज्ञा करने को कहो कि
वह मुझे मारेगा नहीं।'"

52इसलिये सुलैमान ने उत्तर दिया, "यदि अदोनिय्याह
यह प्रमाणित करता है कि वह एक अच्छा आदमी है तो
मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि उसके सिर का एक बाल भी
बाँका नहीं होगा। किन्तु यदि वह कुछ बुरा करेगा तो
मार दिया जायेगा।" 53तब राजा सुलैमान ने कुछ व्यक्तियों
को अदोनिय्याह को लाने के लिये भेजा। वे व्यक्ति
अदोनिय्याह को सुलैमान के सामने ले आए। अदोनिय्याह
राजा सुलैमान के सामने आया और झुककर प्रणाम
किया। तब सुलैमान ने कहा, "घर जाओ।"

2 दाऊद के मरने का समय लगभग आ पहुँचा।
इसलिये दाऊद ने सुलैमान से बातें कीं और उससे
कहा, 2"मेरे मरने का समय निकट आ गया है। जैसे
हर एक व्यक्ति का आता है। लेकिन तुम एक शक्तिशाली
पुरुष बन रहे हो। 3उन सभी आदेशों का सावधानीपूर्वक
पालन करो जिन्हें यहोवा परमेश्वर ने हमें दिया है।
सावधानीपूर्वक उसके सभी नियमों का पालन करो,
और वे कार्य करो जो उसने हमें कही है। सावधानी से
उन नियमों का पालन करो जो मूसा की व्यवस्था की
किताब में लिखी है। यदि तुम इन सभी का पालन
करोगे तो तुम जो कुछ करोगे और जहाँ कहीं जाओगे,
सफल होगे 4और यदि तुम यहोवा की आज्ञा का पालन
करते रहोगे तो यहोवा मेरे लिये की गई प्रतिज्ञाओं का
पालन करेगा। मेरे लिये यहोवा ने जो प्रतिज्ञा की, वह
यह है, 'तुम्हारे पुत्रों को मेरी आज्ञा का पालन करना
चाहिये और उन्हें वैसे रहना चाहिये जैसा रहने के लिये
मैं कहूँ। तुम्हारे पुत्रों को पूरे हृदय और आत्मा से मुझमें
विश्वास रखना चाहिये। यदि तुम्हारे पुत्र यह करेंगे तो
तुम्हारे परिवार का एक व्यक्ति सदा इस्राएल के लोगों
का शासक होगा।'"

5दाऊद ने यह भी कहा, "तुम यह भी याद रखो कि
सरुयाह के पुत्र योआब ने मेरे लिये क्या किया। उसने
इस्राएल की सेना के दो सेनापतियों को मार डाला।
उसने नेर के पुत्र अब्नेर और येतेर के पुत्र अमासा को
मारा। तुम्हें याद होगा कि उसने उन्हें बदले की भावना
से प्रेरित होकर शान्ति के समय इसलिये मारा क्योंकि
उन्होंने दूसरों को युद्ध में मारा था। इन व्यक्तियों के
रक्त का दाग उसकी तलवार की मूठ और उसके पहने
हुए सैनिकों के जूतों पर लगा हुआ था। इसलिये मैं उसे
अवश्य दण्ड दूँगा। 6किन्तु अब राजा तुम हो। अत: तुम्हें
उसे इस प्रकार दण्ड देना चाहिये जिसे तुम सबसे अधिक
बुद्धिमत्तापूर्ण समझो। किन्तु तुम्हें यह निश्चय कर लेना
चाहिये कि वह मार डाला जाये। उसे बुढ़ापे की शान्तिपूर्ण
मृत्यु न पाने दो!

7"गिलाद के, बर्जिल्लै के बच्चों पर दयालु रहो। उन्हें
अपना मित्र होने दो और अपनी मेज पर भोजन करने
दो। उन्होंने मेरी तब सहायता की, जब मैं तुम्हारे भाई
अबशालोम से भाग खड़ा हुआ था।

8"और याद रखो गेरा का पुत्र शिमी तुम्हारे साथ यहाँ
है। वह बहूरीम के बिन्यामीन परिवार समूह का है। याद
रखो कि उसने, उस दिन मेरे विरुद्ध बहुत बुरी बातें
की, जिस दिन मैं महनैम को भाग गया था। तब वह
मुझसे मिलने यरदन नदी पर आया था। किन्तु मैंने
यहोवा के सामने प्रतिज्ञा की थी, 'शिमी मैं तुम्हें नहीं
मारूँगा।' 9परन्तु शिमी को दण्ड दिये बिना न रहने दो।
तुम बुद्धिमान व्यक्ति हो, तुम समझ जाओगे कि उसके
साथ क्या करना चाहिये। किन्तु उसे बुढ़ापे की शान्तिपूर्ण
मृत्यु न पानेदो।"

10तब दाऊद मर गया। वह दाऊद नगर में दफनाया
गया। 11दाऊद ने इस्राएल पर चालीस वर्ष तक शासन
किया। उसने हब्रोन में सात वर्ष और यरूशलेम में
तैंतीस वर्ष तक शासन किया। 12अब सुलैमान अपने
पिता दाऊद के सिंहासन पर शासन करने लगा और
इसमें कोई सन्देह नहीं था कि वह राजा है। 13इस समय
हग्गीत का पुत्र अदोनिय्याह सुलैमान की माँ बतशेबा के
पास गया। बतशेबा ने उससे पूछा, "क्या तुम शान्ति के
भाव से आए हो?"

अदोनिय्याह ने उत्तर दिया, "हाँ! यह शान्तिपूर्ण आगमन
है। 14मुझे आपसे कुछ कहना है।" बतशेबा ने कहा, "तो
कहो।" 15अदोनिय्याह ने कहा, "तुम्हें याद है कि एक
समय राज्य मेरा था। इस्राएल के सभी लोग समझते थे
कि मैं उनका राजा हूँ। किन्तु स्थिति बदल गई। अब
मेरा भाई राजा है। यहोवा ने उसे राजा होने के लिये
चुना। 16इसलिये मैं तुमसे एक चीज़ माँगता हूँ। कृपया
इन्कार न करें।"

बतशेबा ने पूछा, "तुम क्या चाहते हो?"

17अदोनिय्याह ने उत्तर दिया, "मैं जानता हूँ कि राजा
सुलैमान वह सब कुछ करेंगे जो तुम कहोगी। अत:
कृपया उनसे शूनेमिन स्त्री अबीशग को मुझे देने को
कहो। मैं उससे विवाह करना चाहता हूँ।"

वेदी के सींगों को पकड़ लिया यह प्रकट करता था कि वह दया की भीख माँग रहा है। यदि कोई व्यक्ति निरपराध होता था और वह पवित्र स्थान में भाग कर जाता था और वेदी के कोनों को पकड़ता था तब उस व्यक्ति को दण्ड नहीं मिलताथा।

18तब बतशेबा ने कहा, “ठीक है, मैं तुम्हारे लिये
राजा से बात करूँगी।”
19अत: बतशेबा राजा सुलैमान के पास उससे बात
करने गई। राजा सुलैमान ने उसे देखा और वह उससे
मिलने के लिये खड़ा हुआ। तब वह उसके सामने प्रणाम
करने झुका और सिंहासन पर बैठ गया। उसने सेवकों
से, अपनी माँ के लिये दूसरा सिंहासन लाने को कहा।
तब वह उसकी दायीं ओर बैठ गई।
20बतशेबा ने उससे कहा, “मैं तुमसे एक छोटी चीज़
माँगती हूँ। कृपया इन्कार न करना।” राजा ने उत्तर
दिया, “माँ तुम जो चाहो, माँग सकती हो। मैं तुम्हें मना
नहीं करूँगा।” 21अत: बतशेबा ने कहा, “शूनेमिन स्त्री
अबीशग को, अपने भाई अदोनिय्याह के साथ विवाह
करन दो।”
22राजा सुलैमान ने अपनी माँ से कहा, “तुम अबीशग
को उसे देने के लिये मुझसे क्यों कहती हो? तुम मुझसे
यह क्यों नहीं कहती कि मैं उसे राजा भी बना दूँ
क्योंकि वह मेरा बड़ा भाई है? याजक एब्यातार और
योआब उसका समर्थन करेंगे।”
23तब सुलैमान ने यहोवा से एक प्रतिज्ञा की। उसने
कहा, “मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मुझसे यह माँग करने
के लिये मैं अदोनिय्याह से भुगतान कराऊँगा। मैं प्रतिज्ञा
करता हूँ कि उसे इसका मूल्य अपने जीवन से चुकाना
पड़ेगा। 24यहोवा ने मुझे इस्राएल का राजा होने दिया है।
उसने वह सिंहासन मुझे दिया है जो मेरे पिता दाऊद का
है। यहोवा ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की है और राज्य मुझे
और मेरे परिवार को दिया है। मैं शाश्वत परमेश्वर के
सामने, प्रतिज्ञा करता हूँ कि अदोनिय्याह आज मरेगा!”
25राजा सुलैमान ने बनायाह को आदेश दिया। बनायाह
बाहर गया और उसने अदोनिय्याह को मार डाला।
26तब राजा सुलैमान ने याजक एब्यातार से कहा,
“मुझे तुमको मार डालना चाहिये, किन्तु मैं तुम्हें अपने
घर अनातोत में लौट जाने देता हूँ। मैं तुम्हें अभी मारूँगा
नहीं क्योंकि मेरे पिता दाऊद के साथ चलते समय तुमने
पवित्र सन्दूक को ले चलने में सहायता की थी जब तुम
मेरे पिता दाऊद के साथ थे और मैं जानता हूँ कि उन
सभी विपत्तियों के समय में मेरे पिता के समान तुमने भी
हाथ बटाया।” 27सुलैमान ने एब्यातार से कहा कि तुम
याजक के रूप में यहोवा की सेवा करते नहीं रह
सकते। यह सब वैसे ही हुआ, जैसा यहोवा ने होने के
लिये कहा था। परमेश्वर ने याजक एली और उसके
परिवार के बारे में शीलो में यह कहा था और एब्यातार
एली के परिवार से था।
28योआब ने इस बारे में सुना और वह डर गया।
उसने अदोनिय्याह का समर्थन किया था, किन्तु
अबशालोम का नहीं। योआब यहोवा के तम्बू की ओर
दौड़ा और वेदी के सींगो को पकड़ लिया। 29किसी ने
राजा सुलैमान से कहा कि योआब यहोवा के तम्बू में
वेदी के पास है। इसलिये सुलैमान ने बनायाह को जाने
और उसे मार डालने का आदेश दिया।
30बनायाह यहोवा के तम्बू में गया और योआब से
कहा, “राजा कहते हैं, ‘बाहर आओ!’”
किन्तु योआब ने उत्तर दिया, “नहीं, मैं यहीं मरूँगा।”
अत: बनायाह राजा के पास वापस गया और उससे
वही कहा जो योआब ने कहा था। 31तब राजा ने
बनायाह को आदेश दिया, “वैसा ही करो जैसा वह
कहता है। उसे वहीं मार डालो। तब उसे दफना दो।
तब हमारा परिवार और हम योआब के दोष से मुक्त
होंगे। यह अपराध इसलिये हुआ कि योआब ने निरपराध
लोगों को मारा था। 32योआब ने दो व्यक्तियों को मार
डाला था जो उससे बहुत अधिक अच्छे थे। ये नेर का
पुत्र अब्नेर और येतेर का पुत्र अमासा थे। अब्नेर
इस्राएल की सेना का सेनापति था और उस समय मेरे
पिता दाऊद यह नहीं जानते थे कि योआब ने उन्हें मार
डाला था। इसलिये यहोवा योआब को उन व्यक्तियों के
लिये दण्ड देगा जिन्हें उसने मार डाला था। 33वह उनकी
मृत्यु के लिये अपराधी होगा और उसका परिवार भी
सदा के लिये दोषी होगा। किन्तु परमेश्वर की ओर से
दाऊद को, उसके वंशजों, उसके राज परिवार और
सिंहासन को सदा के लिये शान्ति मिलेगी।”
34इसलिये यहोयादा के पुत्र बनायाह ने योआब को
मार डाला। योआब मरुभूमि में अपने घर के पास
दफनाया गया। 35सुलैमान ने तब यहोयादा के पुत्र बनायाह
को योआब के स्थान पर सेनापति बनाया। सुलैमान ने
एब्यातार के स्थान पर सादोक को महायाजक बनाया।
36इसके बाद राजा ने शिमी को बुलवाया। राजा ने उससे
कहा, “यहाँ यरूशलेम में तुम अपने लिये एक घर
बनाओ, उसी घर में रहो और नगर को मत छोड़ो।
37यदि तुम नगर को छोड़ोगे और किद्रोन के नाले के
पार जाओगे तो तुम मार डाले जाओगे और यह तुम्हारा
दोष होगा।”
38अत: शिमी ने उत्तर दिया, “मेरे राजा, आपने जो
कहा है, ठीक है। मैं आपके आदेश का पालन करूँगा।”
अत: शिमी यरूशलेम में बहुत समय तक रहा। 39किन्तु
तीन वर्ष बाद शिमी के दो सेवक भाग गए। वे गत के
राजा के पास पहुँचे। उसका नाम आकीश था जो माका
का पुत्र था। शिमी ने सुना कि उसके सेवक गत में है।
40इसलिये शिमी ने अपनी काठी अपने खच्चर पर रखी
और गत में राजा आकीश के पास गया। वह अपने
सेवकों को प्राप्त करने गया। उसने उन्हें ढूँढ लिया और
अपने घर वापस लाया।
41किन्तु किसी ने सुलैमान से कहा, कि शिमी यरूशलेम
से गत गया था और लौट आया है। 42इसलिये सुलैमान
ने उसे बुलवाया। सुलैमान ने कहा, “मैंने यहोवा के नाम

पर तुमसे यह प्रतिज्ञा की थी कि यदि तुम यरूशलेम
छोड़ोगे, तो मारे जाओगे। मैंने चेतावनी दी थी कि यदि
तुम अन्य कहीं जाओगे तो तुम्हारे मारे जाने का दोष
तुम्हारा होगा और मैंने जो कुछ कहा था तुमने उसे
स्वीकार किया था। तुमने कहा कि तुम मेरी आज्ञा का
पालन करोगे। **43**तुमने अपनी प्रतिज्ञा भंग क्यों की?
तुमने मेरे आदेश का पालन क्यों नहीं किया? **44**तुम
जानते हो कि तुमने मेरे पिता दाऊद के विरुद्ध बहुत से
गलत काम किये, अब यहोवा उन गलत कामों के लिये
तुम्हें दण्ड देगा। **45**किन्तु यहोवा मुझे आशीर्वाद देगा। वह
दाऊद के सिंहासन की सदैव सुरक्षा करेगा।”

46तब राजा ने बनायाह को शिमी को मार डालने का
आदेश दिया और उसने इसे पूरा किया। अब सुलैमान
अपने राज्य पर पूर्ण नियन्त्रण कर चुका था।

राजा सुलैमान

3 सुलैमान ने मिस्र के राजा फ़िरौन की पुत्री के साथ
विवाह करके उसके साथ सन्धि की। सुलैमान
उसे दाऊद नगर को ले आया। इस समय अभी भी
सुलैमान अपना महल तथा यहोवा का मन्दिर बनवा
रहा था। सुलैमान यरूशलेम की चहारदीवारी भी बनवा
रहा था। **2**मन्दिर अभी तक पूरा नहीं हुआ था। इसलिये
लोग अभी भी उच्चस्थानों पर जानवरों की बलि भेंट
कर रहे थे।

3सुलैमान ने दिखाया कि वह यहोवा से प्रेम करता है।
उसके अपने पिता दाऊद ने जो कुछ करने को कहा
था, उसने उन सब का पालन किया किन्तु सुलैमान ने
कुछ ऐसा भी किया जिसे करने के लिये दाऊद ने नहीं
कहा था। सुलैमान अभी तक उच्चस्थानों का उपयोग
बलिभेंट और सुगन्धि जलाने के लिये करता रहा।

4राजा सुलैमान बलिभेंट करने गिबोन गया। वह वहाँ
इसलिये गया क्योंकि वह सर्वाधिक महत्वपूर्ण उच्च स्थान
था। सुलैमान ने एक हजार बलियाँ उस वेदी पर भेंट
कीं। **5**जब सुलैमान गिबोन में था उसी रात को उसके
पास स्वप्न में यहोवा आया। परमेश्वर ने कहा, “जो
चाहते हो तुम माँगो, मैं उसे तुम्हें दूँगा।”

6सुलैमान ने उत्तर दिया, “तू अपने सेवक मेरे पिता
दाऊद पर बहुत दयालु रहा। उसने तेरा अनुसरण किया।
वह अच्छा था और सच्चाई से रहा और तूने उसके प्रति
तब सबसे बड़ी कृपा की जब तूने उसके पुत्र को उसके
सिंहासन पर शासन करने दिया। **7**यहोवा मेरा परमेश्वर,
तूने मुझे अपने पिता के स्थान पर राजा होने दिया है।
किन्तु मैं एक छोटे बालक के समान हूँ। मेरे पास, मुझे
जो करना चाहिए उसे करने के लिये बुद्धि नहीं है।
8तेरा सेवक, मैं यहाँ तेरे चुने लोगों, में हूँ। यहाँ बहुत से
लोग हैं। वे इतने अधिक हैं कि गिने नहीं जा सकते।
अत: शासक को उनके बीच अनेकों निर्णय लेने पड़ेंगे।
9इसलिये मैं तुझसे माँगता हूँ कि तू मुझे बुद्धि दे जिससे
मैं सच्चाई से लोगों पर शासन और उनका न्याय कर
सकूँ। इससे मैं सही और गलत के अन्तर को जान
सकूँगा। इस श्रेष्ठ बुद्धि के बिना इन महान लोगों पर
शासन करना असंभव है।”

10यहोवा प्रसन्न हुआ कि सुलैमान ने उससे यह माँगा।
11इसलिये परमेश्वर ने उससे कहा, “तुमने अपने लिये
दीर्घायु नहीं माँगी। तुमने अपने लिये सम्पत्ति नहीं माँगी।
तुमने अपने शत्रुओं की मृत्यु नहीं माँगी। **12**इसलिये मैं
तुम्हें वही दूँगा जो तुमने माँगा। मैं तुम्हें बुद्धिमान और
विवेकी बनाऊँगा। मैं तुम्हारी बुद्धि को इतना महान
बनाऊँगा कि बीते समय में कभी तुम्हारे जैसा कोई
व्यक्ति नहीं हुआ है और भविष्य में तुम्हारे जैसा कभी
कोई नहीं होगा

13और तुम्हें पुरस्कृत करने के लिये मैं तुम्हें वे चीज़ें
भी दूँगा जिन्हें तुमने नहीं माँगी। तुम्हारे पूरे जीवन में
सम्पत्ति और प्रतिष्ठा बनी रहेगी। संसार में तुम्हारे जैसा
महान राजा दूसरा कोई नहीं होगा। **14**मैं तुमसे चाहता हूँ
कि तुम मेरा अनुसरण करो और मेरे नियमों एवं
आदेशों का पालन करो। यह उसी प्रकार करो जिस
प्रकार तुम्हारे पिता दाऊद ने किया। यदि तुम ऐसा
करोगे तो मैं तुम्हें दीर्घायु भी करूँगा।”

15सुलैमान जाग गया। वह जान गया कि परमेश्वर ने
उसके साथ स्वप्न में बातें की है। तब सुलैमान यरुशलेम
गया और यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने खड़ा
हुआ। सुलैमान ने एक होमबलि यहोवा को चढ़ाई और
उसने यहोवा को मेलबलि दी। इसके बाद उसने उन
सभी प्रमुखों और अधिकारियों को दावत दी जो शासन
करने में उसकी सहायता करते थे।

16एक दिन दो स्त्रियाँ जो वेश्यायें थीं, सुलैमान के
पास आईं। वे राजा के सामने खड़ी हुईं। **17**स्त्रियों में से
एक ने कहा, “महाराज, यह स्त्री और मैं एक ही घर में
रहते हैं। हम दोनों गर्भवती हुए और अपने बच्चों को
जन्म देने ही वाले थे। मैंने अपने बच्चे को जन्म दिया
जब यह वहाँ मेरे साथ थी। **18**तीन दिन बाद इस स्त्री ने
भी अपने बच्चे को जन्म दिया। हम लोगों के साथ कोई
अन्य व्यक्ति घर में नहीं था। केवल हम दोनों ही थे।
19एक रात जब यह स्त्री अपने बच्चे के साथ सो रही
थी, बच्चा मर गया। **20**अत: रात को जब मैं सोई थी,
इसने मेरे पुत्र को मेरे बिस्तर से ले लिया। यह उसे
अपने बिस्तर पर ले गई। तब इसने मरे बच्चे को मेरे
बिस्तर पर डाल दिया। **21**अगली सुबह मैं जागी और
अपने बच्चे को दूध पिलाने वाली थी। किन्तु मैंने देखा
कि बच्चा मरा हुआ है। तब मैंने उसे अधिक निकट से
देखा। मैंने देखा कि यह मेरा बच्चा नहीं है।”

22किन्तु दूसरी स्त्री ने कहा, “नहीं! जीवित बच्चा मेरा
है। मरा बच्चा तुम्हारा है!”

किन्तु पहली स्त्री ने कहा, "नहीं! तुम गलत हो! मरा बच्चा तुम्हारा है और जीवित बच्चा मेरा है।" इस प्रकार दोनों स्त्रियों ने राजा के सामने बहस की।

23तब राजा सुलैमान ने कहा, "तुम दोनों कहती हो कि जीवित बच्चा हमारा अपना है और तुम में से हर एक कहती है कि मरा बच्चा दूसरी का है।"

24तब राजा सुलैमान ने अपने सेवक को तलवार
लाने भेजा 25और राजा सुलैमान ने कहा, "हम यही करेंगे। जीवित बच्चे के दो टुकड़े कर दो। हर एक स्त्री को आधा बच्चा दे दो।"

26दूसरी स्त्री ने कहा, "यह ठीक है। बच्चे को दो टुकड़ो में काट डालो। तब हम दोनों में से उसे कोई नहीं पाएगा।" किन्तु पहली स्त्री, जो सच्ची माँ थी, अपने बच्चे के लिये प्रेम से भरी थी। उसने राजा से कहा, "कृपया
बच्चे को न मारें! इसे उसे ही दे दें।" 27तब राजा सुलैमान
ने कहा, "बच्चे को मत मारो! इसे, पहली स्त्री को दे दो। वही सच्ची माँ है।"

28इस्राएल के लोगों ने राजा सुलैमान के निर्णय को सुना। उन्होंने उसका बहुत आदर और सम्मान किया क्योंकि वह बुद्धिमान था। उन्होंने देखा कि ठीक न्याय करने में उसके पास परमेश्वर की बुद्धि थी।

4 राजा सुलैमान इस्राएल के सभी लोगों पर शासन
करता था। 2ये प्रमुख अधिकारियों के नाम हैं जो शासन करने में उसकी सहायता करते थे:

सादोक का पुत्र अजर्याह याजक था। 3शीशा के पुत्र
एलीहोरेप और अहिय्याह उस विवरण को लिखने का कार्य करते थे जो न्यायालय में होता था। अहीलूद का पुत्र यहोशापात, यहोशापात लोगों के इतिहास का विवरण लिखता था। 4यहोयादा का पुत्र बनायाह
सेनापति था, सादोक और एब्यातार याजक थे। 5नातान
का पुत्र अजर्याह जनपद– प्रशासकों का अधीक्षक था। नातान का पुत्र जाबूद याजक और राजा सुलैमान का एक सलाहकार था। 6अहीशार राजा के घर
की हर एक चीज़ का उत्तरदायी था। अब्दा का पुत्र अदोनीराम दासों का अधीक्षक था।

7इस्राएल बारह क्षेत्रों में बँटा था जिन्हें जनपद कहते थे। सुलैमान हर जनपद पर शासन करने के लिये प्रशासकों को चुनता था। इन प्रशासकों को आदेश था कि वे अपने जनपद से भोजन सामग्री इकट्ठा करें और उसे राजा और उसके परिवार को दें। हर वर्ष एक महीने की भोजन सामग्री राजा को देने का उत्तरदायित्व बारह प्रशासकों में से हर एक का था। 8बारह प्रशासकों
के नाम ये हैं:

बेन्हूर, एप्रैम के पर्वतीय प्रदेश का प्रशासक था।
9बेन्देकेर, माकस, शाल्बीम, बेतशेमेश और एलोनबेथानान का प्रशासक था। 10बेन्हेसेद, अरुब्बोत,
सौको और हेपेर का प्रशासक था। 11बेनबीनादाब,
नपोत दोर का प्रशासक था। उसका विवाह सुलैमान की पुत्री तापत से हुआ था। 12अहीलूद का पुत्र बाना,
तानाक, मगिद्दो से लेकर और सारतान से लगे पूरे बेतशान का प्रशासक था। यह यिज्रेल के नीचे, बेतशान से लेकर आबेलमहोला तक योकमाम के
पार था। 13बेनगेबेर, रामोत गिलाद का प्रशासक
था। वह गिलाद में मनश्शे के पुत्र याईर के सारे नगरों और गाँवों का भी प्रशासक था। वह बाशान में अर्गोब के जनपद का भी प्रशासक था। इस क्षेत्र में ऊँची चहारदीवारी वाले साठ नगर थे। इन नगरों के फाटकों में काँसे की छड़ें भी लगी थी। 14इद्दो का
पुत्र अहीनादाब, महनैम का प्रशासक था। 15अहीमास,
नप्ताली का प्रशासक था। उसका विवाह सुलैमान की पुत्री बासमत से हुआ था। 16हूशै का पुत्र बाना,
आशेर और आलोत का प्रशासक था। 17पारूह का
पुत्र यहोशापात, इस्साकार का प्रशासक था। 18एला
का पुत्र शिमी, बिन्यामीन का प्रशासक था। 19ऊरी
का पुत्र गेबेर गिलाद का प्रशासक था। गिलाद वह प्रदेश था जहाँ एमोरी लोगों का राजा सीहोन और बाशान का राजा ओग रहते थे। किन्तु केवल गेबेर ही उस जनपद का प्रशासक था।

20यहूदा और इस्राएल में बहुत बड़ी संख्या में लोग रहते थे। लोगों की संख्या समुद्र तट के बालू के कणों जितनी थी। लोग सुखमय जीवन बिताते थे: वे खाते पीते और आनन्दित रहते थे।

21सुलैमान परात नदी से लेकर पलिश्ती लोगों के प्रदेश तक सभी राज्यों पर शासन करता था। उसका राज्य मिस्र की सीमा तक फैला था। ये देश सुलैमान को भेंट भेजते थे और उसके पूरे जीवन तक उसकी आज्ञा का पालन करते रहे।*

22-23यह भोजन सामग्री है जिसकी आवश्यकता प्रतिदिन सुलैमान को स्वयं और उसकी मेज पर सभी भोजन करने वालों के लिये होती थी:

डेढ़ सौ बुशल महीन आटा, तीन सौ बुशल आटा, अच्छा अन्न खाने वाली दस बैल, मैदानों में पाले गये बीस बैल और सौ भेड़ें, तीन भिन्न प्रकार के हिरन और विशेष पक्षी भी।

24सुलैमान परात नदी के पश्चिम के सभी देशों पर शासन करता था। यह प्रदेश तिप्सह से अज्जा तक था

ये देश ... करते रहें यह प्रकट करता है कि इन देशों ने सुलैमान के साथ, उसकी बड़ी शक्ति के कारण शान्ति–सन्धि की थी।

और सुलैमान के राज्य के चारों ओर शान्ति थी।
25सुलैमान के जीवन काल में इस्राएल और यहूदा के
सभी लोग लगातार दान से लेकर बेर्शेबा तक शान्ति
और सुरक्षा में रहते थे। लोग शान्तिपूर्वक अपने अंजीर
के पेड़ों और अगूंर की बेलों के नीचे बैठते थे।

26सुलैमान के पास उसके रथों के लिये चार हजार
घोड़ों* के रखने के स्थान और उसके पास बारह
हजार घुड़सवार थे। **27**प्रत्येक महीने बारह जनपद शासकों
में से एक सुलैमान को वे सब चीज़ें देता था जिसकी उसे
आवश्यकता पड़ती थी। यह राजा के मेज पर खाने वाले
हर एक व्यक्ति के लिये पर्याप्त होता था। **28**जनपद
प्रशासक राजा को रथों के घोड़ों और सवारी के घोड़ों
के लिये पर्याप्त चारा और जौ भी देते थे। हर एक
व्यक्ति इस अन्न को निश्चित स्थान पर लाता था।

29परमेश्वर ने सुलैमान को उत्तम बुद्धि दी। सुलैमान
अनेकों बातें समझ सकता था। उसकी बुद्धि कल्पना
के परे तीव्र थी। **30**सुलैमान की बुद्धि पूर्व के सभी
व्यक्तियों की बुद्धि से अधिक तीव्र थी और उसकी बुद्धि
मिस्र में रहने वाले सभी व्यक्तियों की बुद्धि से अधिक
तीव्र थी। **31**वह पृथ्वी के किसी भी व्यक्ति से अधिक
बुद्धिमान था। वह एज्रेही एतान से भी अधिक बुद्धिमान
था। वह हेमान, कलकोल तथा दर्दा से अधिक बुद्धिमान
था। ये माहोल के पुत्र थे। राजा सुलैमान इस्राएल और
यहूदा के चारों ओर के सभी देशों में प्रसिद्ध हो गया।
32अपने जीवन काल में राजा सुलैमान ने तीन हजार
बुद्धिमत्तापूर्ण उपदेश लिखे। उसने पन्द्रह सौ गीत भी
लिखे।

33सुलैमान प्रकृति के बारे में भी बहुत कुछ जानता
था। सुलैमान ने लबानोन के विशाल देवदारु वृक्षों से
लेकर दीवारों में उगने वाली जूफा के विभिन्न प्रकार
के पेड़–पौधों में से हर एक के विषय में शिक्षा दी। राजा
सुलैमान ने जानवरों, पक्षियों और रेंगने वाले जन्तुओं
और मछलियों की चर्चा की है। **34**सुलैमान की बुद्धिमत्तापूर्ण
बातों को सुनने के लिये सभी राष्ट्रों से लोग आते थे।
सभी राष्ट्रों के राजा अपने बुद्धिमान व्यक्तियों को राजा
सुलैमान की बातों को सुनने के लिये भेजते थे।

सुलैमान मन्दिर बनाता है

5 हीराम सोर का राजा था। हीराम सदैव दाऊद का
मित्र रहा। अत: जब हीराम को मालूम हुआ कि
सुलैमान दाऊद के बाद नया राजा हुआ है तो उसने
सुलैमान के पास अपने सेवक भेजे। **2**सुलैमान ने
हीराम राजा से जो कहा, वह यह है: **3**"तुम्हें याद है कि
मेरे पिता राजा दाऊद को अपने चारों ओर अनेक युद्ध
लड़ने पड़े थे। अत: वह यहोवा अपने परमेश्वर का
मन्दिर बनवाने में समर्थ न हो सका। राजा दाऊद तब
तक प्रतीक्षा करता रहा जब तक यहोवा ने उसके सभी
शत्रुओं को उससे पराजित नहीं हो जाने दिया। **4**किन्तु
अब यहोवा मेरे परमेश्वर ने मेरे देश के चारों ओर
मुझे शान्ति दी है। अब मेरा कोई शत्रु नहीं है। मेरी प्रजा
अब किसी खतरे में नहीं है।

5"यहोवा ने मेरे पिता दाऊद के साथ एक प्रतिज्ञा की
थी। यहोवा ने कहा था, 'मैं तुम्हारे पुत्र को तुम्हारे बाद
राजा बनाऊँगा और तुम्हारा पुत्र मेरा सम्मान करने के
लिये एक मन्दिर बनाएगा।' अब मैंने, यहोवा अपने
परमेश्वर का सम्मान करने के लिये वह मन्दिर बनाने
की योजना बनाई है **6**और इसलिये मैं तुमसे सहायता
माँगता हूँ। अपने व्यक्तियों को लबानोन भेजो। वहाँ वे
मेरे लिये देवदारु के वृक्षों को काटेंगे। मेरे सेवक तुम्हारे
सेवकों के साथ काम करेंगे। मैं वह कोई भी मजदूरी
भुगतान करूँगा जो तुम अपने सेवकों के लिये तय
करोगे। किन्तु मुझे तुम्हारी सहायता की आवश्यकता
है। मेरे बढ़ई* सीदोन के बढ़ईयों की तरह अच्छे नहीं
हैं।"

7जब हीराम ने, जो कुछ सुलैमान ने माँगा, वह सुना
तो वह बहुत प्रसन्न हुआ। राजा हीराम ने कहा, "आज
मैं यहोवा को धन्यवाद देता हूँ कि उसने दाऊद को इस
विशाल राष्ट्र का शासक एक बुद्धिमान पुत्र दिया है।"
8तब हीराम ने सुलैमान को एक संदेश भेजा। संदेश यह
था, "तुमने जो माँग की है, वह मैंने सुनी है। मैं तुमको
सारे देवदारु के पेड़ और चीड़ के पेड़ दूँगा, जिन्हें तुम
चाहते हो। **9**मेरे सेवक लबानोन से उन्हें समुद्र तक
लाएंगे। तब मैं उन्हें एक साथ बाँध दूँगा और उन्हें समुद्र
तट से उस स्थान की ओर बहा दूँगा जहाँ तुम चाहते हो।
वहाँ मैं लट्ठों को अलग कर दूँगा और पेड़ों को तुम ले
सकोगे।"

10-11सुलैमान ने हीराम को लगभग एक लाख बीस
हजार बुशल* गेहूँ और लगभग एक लाख बीस हजार
गैलन* शुद्ध जैतून का तेल प्रति वर्ष उसके परिवार के
भोजन के लिये दिया।

12यहोवा ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार सुलैमान को
बुद्धि दी और सुलैमान और हीराम के मध्य शान्ति रही।
इन दोनों राजाओं ने आपस में एक सन्धि की।

13राजा सुलैमान ने इस काम में सहायता के लिये
इस्राएल के तीस हजार व्यक्तियों को विवश किया।

चार हजार घोड़ों हिब्रू और लैटिन में चालीस हजार है। किन्तु देखें 2इति. 9:25

बढ़ई वे लोग जो लकड़ी का काम करते हैं। प्राचीन काल में इसका अर्थ यह भी था कि वे पेड़ काटते हैं।

एक लाख बीस हजार बुशल "20,000 कोर्स"

एक लाख बीस हजार गैलन "20,000 बथ" एक बथ लगभग 6 गैलन के बराबर होता है।

14राजा सुलैमान ने अदोनीराम नामक एक व्यक्ति को
उनके ऊपर अधिकारी बनाया। सुलैमान ने उन व्यक्तियों
को तीन टुकड़ियों में बाँटा। हर एक टुकड़ी में दस
हजार व्यक्ति थे। हर समूह एक महीने लबानोन में काम
करता था और तब दो महीने के लिये अपने घर लौटता
था। 15सुलैमान ने अस्सी हजार व्यक्तियों को भी पहाड़ी
प्रदेश में काम करने के लिये विवश किया। इन मनुष्यों
का काम चट्टानों को काटना था और वहाँ सत्तर
हजार व्यक्ति पत्थरों को ढोने वाले थे 16और तीन हजार
तीन सौ व्यक्ति थे जो काम करने वाले व्यक्तियों के
ऊपर अधिकारी थे। 17राजा सुलैमान ने, मन्दिर की
नींव के लिये विशाल और कीमती चट्टानों को काटने
का आदेश दिया। ये पत्थर सावधानी से काटे गये। 18तब
सुलैमान के कारीगरों और हीराम के कारीगरों तथा
गबाली के व्यक्तियों ने पत्थरों पर नक्काशी का काम
किया। उन्होंने मन्दिर को बनाने के लिये पत्थरों और
लट्ठों को तैयार किया।

सुलैमान मन्दिर बनाता है

6 तब सुलैमान ने मन्दिर बनाना आरम्भ किया। यह
इस्राएल के लोगों द्वारा मिस्र छोड़ने के चार सौ
अस्सीवाँ वर्ष* बाद था। यह राजा सुलैमान के इस्राएल
पर शासन के चौथे वर्ष में था। यह वर्ष के दूसरे महीने
जिव के माह में था। 2मन्दिर नब्बे फुट लम्बा, तीस फुट
चौड़ा और पैंतालीस फुट ऊँचा था।

3मन्दिर का द्वार मण्डप तीस फुट लम्बा और पन्द्रह
फुट चौड़ा था। यह द्वारमण्डप मन्दिर के ही मुख्य भाग
के सामने तक फैला था। इसकी लम्बाई मन्दिर की
चौड़ाई के बराबर थी। 4मन्दिर में संकरी खिड़कियाँ
थीं। ये खिड़कियाँ बाहर की ओर संकरी और भीतर
की ओर चौड़ी थीं।

5तब सुलैमान ने मन्दिर के मुख्य भाग के चारों ओर
कमरों की एक पंक्ति बनाई। ये कमरे एक दूसरे की
छत पर बने थे। कमरों की यह पंक्ति तीन मंजिल ऊँची
थी। 6कमरे मन्दिर की दीवार से सटे थे किन्तु उनकी
शहतीरें उसकी दीवार में नहीं घुसी थी। शिखर पर,
मन्दिर की दीवार पतली हो गई थी। इसलिये उन कमरों
की एक ओर की दीवार उसके नीचे की दीवार से
पतली थी। नीचे की मंजिल के कमरे साढे सात फुट
चौड़े थे। बीच की मंजिल के कमरे नौ फुट चौड़े थे।
उसके ऊपर के कमरे दस–बारह फुट चौड़े थे। 7कारीगरों
ने दीवारों को बनाने के लिये बड़े पत्थरों का उपयोग
किया। कारीगरों ने उसी स्थान पर पत्थरों को काटा
जहाँ उन्होंने उन्हें जमीन से निकाला। इसलिये मन्दिर में
हथौड़ी, कुल्हाड़ियों और अन्य किसी भी लोहे के औजार
की खटपट नहीं हुई।

8नीचे के कमरों का प्रवेश द्वार मन्दिर के दक्षिण की
ओर था। भीतर सीढ़ियाँ थीं जो दूसरे मंजिल के कमरों
और तब तीसरे मंजिल के कमरों तक जाती थी।

9इस प्रकार सुलैमान ने मन्दिर बनाना पूरा किया।
मन्दिर का हर एक भाग देवदारु के तख्तों से मढ़ा गया
था। 10सुलैमान ने मन्दिर के चारों ओर कमरों का
बनाना भी पूरा किया। हर एक मंजिल साढ़े सात फुट
ऊँची थी। उन कमरों की शहतीरें मन्दिर को छूती थीं।

11यहोवा ने सुलैमान से कहा, 12“यदि तुम मेरे सभी
नियमों और आदेशों का पालन करोगे तो मैं वह सब
करूँगा जिसके लिये मैंने तुम्हारे पिता दाऊद से प्रतिज्ञा
की थी 13और मैं इस्राएल के लोगों को कभी छोड़ूँगा
नहीं।”

मन्दिर का विस्तृत विवरण

14इस प्रकार सुलैमान ने मन्दिर का निर्माण पूरा
किया। 15मन्दिर के भीतर पत्थर की दीवारें, देवदारु
के तख्तों से मढ़ी गई थीं। देवदारु के तख्ते फर्श से छत
तक थे। पत्थर का फर्श चीड़ के तख्तों से ढका था।
16उन्होंने मन्दिर के पिछले गहरे भाग में एक कमरा
तीस फुट लम्बा बनाया। उन्होंने इस कमरे की दीवारों
को देवदारु के तख्तों से मढ़ा। देवदारु के तख्ते फर्श
से छत तक थे। यह कमरा सर्वाधिक पवित्र स्थान कहा
जाता था। 17सर्वाधिक पवित्र स्थान के सामने मन्दिर
का मुख्य भाग था। यह कमरा साठ फुट लम्बा था।

18उन्होंने इस कमरे की दीवारों को देवदारु के तख्तों
से मढ़ा, दीवार का कोई भी पत्थर नहीं देखा जा सकता
था। उन्होंने फूलों और कद्दू के चित्र देवदारू के तख्तों
में नक्काशी की। 19सुलैमान ने मन्दिर के पीछे भीतर
गहरे कमरे को तैयार किया। यह कमरा यहोवा के
साक्षीपत्र के सन्दूक के लिये था। 20यह कमरा तीस
फुट लम्बा तीस फुट चौड़ा और तीस फुट ऊँचा था।

21सुलैमान ने इस कमरे को शुद्ध सोने से मढ़ा। उसने
इस कमरे के सामने एक सुगन्ध वेदी बनाई। उसने वेदी
को सोने से मढ़ा और इसके चारों ओर सोने की जंजीरें
लपेटीं। 22सारा मन्दिर सोने से मढ़ा था और सर्वाधिक
पवित्र स्थान के सामने वेदी सोने से मढ़ी गई थी।

23कारीगरों ने पंख सहित दो करूब (स्वर्गदूतों) की
मूर्तियाँ बनाई। कारीगरों ने जैतून की लकड़ी से मूर्तियाँ
बनाई। ये करूब (स्वर्गदूत) सर्वाधिक पवित्र स्थान में
रखे गये। हर एक स्वर्गदूत पन्द्रह फुट ऊँचा था। 24–26वे
दोनों करूब (स्वर्गदूत) एक ही माप के थे और एक ही
शैली में बने थे। हर एक करूब (स्वर्गदूत) के दो पंख
थे। हर एक पंख साढ़े सात फुट लम्बा था।

एक पंख के सिरे से दूसरे पंख के सिरे तक पन्द्रह
फुट था और हर एक करूब (स्वर्गदूत) पन्द्रह फुट
ऊँचा था। 27ये करूब (स्वर्गदूत) सर्वाधिक पवित्र स्थान

चार सौ अस्सी वाँ वर्ष यह लगभग ई.पू. 960 था।

में रखे गए थे। वे एक दूसरे की बगल में खड़े थे। उनके
पंख एक दूसरे को कमरे के मध्य में छूते थे। अन्य दो
पंख हर एक बगल की दीवार को छूते थे। 28दोनों
करूब (स्वर्गदूत) सोने से मढ़े गए थे।

29मुख्य कक्ष और भीतरी कक्ष के चारों ओर की
दीवारों पर करूब (स्वर्गदूतों), ताड़ के वृक्षों और फूल
के चित्र उकेरे गए थे। 30दोनों कमरों की फर्श सोने से
मढ़ी गई थीं।

31कारीगरों ने जैतून की लकड़ी के दो दरवाजे बनाये।
उन्होंने उन दोनों दरवाजों को सर्वाधिक पवित्र स्थान
के प्रवेश द्वार में लगाया। दरवाजों के चारों ओर की
चौखट पाँच पहलदार बनी थी। 32उन्होंने दोनों दरवाजों
को जैतून की लकड़ी का बनाया। कारीगरों ने दरवाजों
पर करूब (स्वर्गदूतों), ताड़ के वृक्षों और फूलों के
चित्रों को उकेरा। तब उन्होंने दरवाजों को सोने से मढ़ा।

33उन्होंने मुख्य कक्ष में प्रवेश के लिये भी दरवाजे
बनाये। उन्होंने एक वर्गाकार दरवाजे की चौखट बनाने
के लिये जैतून की लकड़ी का उपयोग किया। 34तब
उन्होंने दरवाजा बनाने के लिये चीड़ की लकड़ी का
उपयोग किया। 35वहाँ दो दरवाजे थे। हर एक दरवाजे
के दो भाग थे, अत: दोनों दरवाजे मुड़कर बन्द होते थे।
उन्होंने दरवाजों पर करूब (स्वर्गदूत) ताड़ के वृक्षों
और फूलों के चित्रों को उकेरा। तब उन्होंने उन्हें सोने
से मढ़ा।

36तब उन्होंने भीतरी आँगन बनाया। उन्होंने इस आँगन
के चारों ओर दीवारें बनाई। हर एक दीवार कटे पत्थरों
की तीन पंक्तियों और देवदारू की लकड़ी की एक
पंक्ति से बनाई गई।

37उन्होंने वर्ष के दूसरे महीने जिब माह में मन्दिर का
निर्माण आरम्भ किया। इस्राएल के लोगों पर सुलैमान के
शासन के चौथे वर्ष में, यह हुआ। 38मन्दिर का निर्माण
वर्ष के आठवें महीने बूल माह में पूरा हुआ। लोगों पर
सुलैमान के शासन के ग्यारहवें वर्ष में यह हुआ था।
मन्दिर के निर्माण में सात वर्ष लगे। मन्दिर ठीक उसी
प्रकार बना था जैसा उसे बनाने की योजना थी।

सुलैमान का महल

7 राजा सुलैमान ने अपने लिये एक महल भी बनवाया।
सुलैमान के महल के निर्माण को पूरा करने में
तेरह वर्ष लगे। 2उसने उस इमारत को भी बनाया जिसे,
"लबानोन का वन" कहा जाता है। यह डेढ़ सौ फुट
लम्बा, पचहत्तर फुट चौड़ा, और पैंतालीस फुट ऊँचा
था। इसमें देवदारु के स्तम्भों की चार पंक्तियाँ थीं। हर
एक पंक्ति के सिरे पर एक देवदारु का शीर्ष था।
3स्तम्भों की पंक्तियों के आर पार जाती हुई देवदारु की
शहतीरें थी। उन्होंने देवदारु के तख्तों को छत के लिये
इन शहतीरों पर रखा था। स्तम्भों के हर एक विभाग
के लिये पन्द्रह शहतीरें थीं। सब मिलाकर पैंतालीस
शहतीरें थीं। 4बगल की हर एक दीवार में खिड़कियों
की तीन पक्तियाँ थीं। खिड़कियाँ परस्पर आमने-सामने
थीं। 5हर एक के अन्त में तीन दरवाजें थे। सभी दरवाजों
के द्वार और चौखटे वर्गाकार थीं।

6सुलैमान ने "स्तम्भों का प्रवेश द्वार मण्डप" भी
बनाया। यह पच्हत्तर फुट लम्बा और पैंतालीस फुट
चौड़ा था। प्रवेश द्वार मण्डप के साथ साथ स्तम्भों पर
टिकी एक छत थी।

7सुलैमान ने एक सिंहासन कक्ष बनाया जहाँ वह
लोगों का न्याय करता था। वह इसे "न्याय महाकक्ष"
कहता था। कक्ष फर्श से लेकर छत तक देवदारु से
मढ़ा था।

8जिस भवन में सुलैमान रहता था, वह न्याय महाकक्ष
के पीछे दूसरे आँगन में था। यह महल वैसे ही बना था
जैसा न्याय महाकक्ष बना था। उसने अपनी पत्नी जो
मिस्र के राजा की पुत्री थी, के लिये भी वैसा ही महल
बनाया।

9ये सभी इमारतें बहुमूल्य पत्थर के टुकड़ों से बनी
थीं। ये पत्थर समुचित आकार में आरे से काटे गये थे।
वे सामने और पीछे की ओर से कटे थे। ये बहुमूल्य
पत्थर नींव से लेकर दीवार की ऊपरी तह तक लगे थे।
आँगन के चारों ओर की दीवार भी बहुमूल्य पत्थर के
टुकड़ों से बनी थी। 10नींव विशाल बहुमूल्य पत्थरों से
बनीं थीं। कुछ पत्थर पन्द्रह फुट लम्बे थे, और अन्य
बारह फुट लम्बे थे। 11उन पत्थरों के शीर्ष पर अन्य
बहुमूल्य पत्थर और देवदारु की शहतीरें थीं। 12महल
के आँगन, मन्दिर के आँगन और मन्दिर के प्रवेश द्वार
मण्डप के चारों ओर दीवारें थीं। वे दीवारें पत्थर की
तीन पंक्तियों और देवदारु लकड़ी की एक पंक्ति से बनीं
थी।

13राजा सुलैमान ने हीराम नामक व्यक्ति के पास सोर
में संदेश भेजा। सुलैमान हीराम को यरूशलेम लाया।
14हीराम की माँ नप्ताली परिवार समूह से इस्राएली थी।
उसका मृत पिता सोर का था। हीराम काँसे से चीज़ें
बनाता था। वह बहुत कुशल और अनुभवी कारीगर
था। अत: राजा सुलैमान ने उसे आने के लिये कहा
और हीराम ने उसे स्वीकार किया। इसलिये राजा सुलैमान
ने हीराम को काँसे के सभी कामों का अधीक्षक बनाया।
हीराम ने काँसे से निर्मित सभी चीज़ों को बनाया।
15हीराम ने काँसे के दो स्तम्भ बनाए। हर एक स्तम्भ
सत्ताईस फुट लम्बा और अट्ठारह फुट गोलाई वाला
था। स्तम्भ खोखले थे और धातु तीन इंच मोटी थी।

16हीराम ने दो काँसे के शीर्ष भी बनाए जो साढ़े सात
फुट ऊँचे थे। हीराम ने इन शीर्षों को स्तम्भों के सिरों
पर रखा। 17तब उसने दोनों स्तम्भों के ऊपर के शीर्षों
को ढकने के लिये जंजीरो के दो जाल बनाए। 18तब

उसने अलंकरण की दो पंक्तियाँ बनाई जो अनार की
तरह दिखते थे। उन्होंने इन काँसे के अनारों को हर
एक स्तम्भ के जालों में, स्तम्भों के सिरों के शीर्षों को
ढकने के लिये रखा। **19**साढ़े सात फुट ऊँचे स्तम्भों के
सिरों के शीर्ष फूल के आकार के बने थे। **20**शीर्ष
स्तम्भों के सिरों पर थे। वे कटोरे के आकार के जाल
के ऊपर थे। उस स्थान पर शीर्षों के चारों ओर पंक्तियों
में बीस अनार थे। **21**हीराम ने इन दोनों काँसे के
स्तम्भों को मन्दिर के प्रवेश द्वार पर खड़ा किया। द्वार
के दक्षिण की ओर एक स्तम्भ तथा द्वार के उत्तर की
ओर दूसरा स्तम्भ खड़ा किया गया। दक्षिण के स्तम्भ
का नाम याकीन रखा गया। उत्तर के स्तम्भ का नाम
बोआज रखा गया। **22**उन्होंने फूल के आकार के शीर्षों
को स्तम्भों के ऊपर रखा। इस प्रकार दोनों स्तम्भों पर
काम पूरा हुआ।

23तब हीराम ने काँसे का एक गोल हौज बनाया।
उन्होंने इस हौज को "सागर" कहा। हौज लगभग पैंतालीस
फुट गोलाई में था। यह आर-पार पन्द्रह फुट और साढ़े
सात फुट गहरा था। **24**हौज के बाहरी सिरे पर एक बारी
थी। इस बारी के नीचे काँसे के कद्दूओं की दो कतारें
हौज को घेरे हुए थी। काँसे के कद्दू हौज के हिस्से के
रूप में एक इकाई में बने थे। **25**हौज बारह काँसे के
बैलों की पीठों पर टिका था। ये बारहों बैल तालाब से
दूर बाहर को देख रहे थे। तीन उत्तर को, तीन पूर्व को,
तीन दक्षिण को और तीन पश्चिम को देख रहे थे।
26हौज की दीवारें चार इंच मोटी थीं। तालाब के चारों
ओर की किनारी एक प्याले की किनारी या फूल की
पंखुड़ियों की तरह थी। तालाब की क्षमता लगभग ग्यारह
हजार गैलन थी।

27तब हीराम ने दस काँसे की गाड़ियाँ बनाई। हर एक
छ: फुट लम्बी, छ: फुट चौड़ी और साढ़े चार फुट ऊँची
थी। **28**गाड़ियाँ वर्गाकार तख्तों को चौखटों में मढ़कर
बनायी गयी थी। **29**तख्तों और चौखटों पर काँसे के
सिंह, बैल और करूब (स्वर्गदूत) थे। सिंह और बैलो के
ऊपर और नीचे फूलों के आकार हथौड़े से काँसे में
उभारे गए थे। **30**हर एक गाड़ी में चार काँसे के पहिये
काँसे की धुरी के साथ थे। कोनों पर विशाल कटोरे के
लिए काँसे के आधार बने थे। आधारों पर हथौड़े से
फूलों के आकार काँसे में उभारे गए थे। **31**कटोरे के
लिये ऊपरी सिरे पर एक ढाँचा बना था। यह कटोरों से
ऊपर को अट्ठारह इंच ऊँचा था। कटोरे का खुला
हुआ गोल भाग सत्ताईस इंच व्यास वाला था। ढाँचे पर
काँसे में आकार उकेरे गए थे। ढाँचा चौकोर था, गोल
नहीं।

32ढाँचे के नीचे चार पहिये थे। पहिये सत्ताईस इंच
व्यास वाले थे। पहिये के मध्य के धुरे गाड़ी के साथ
एक इकाई के रूप में बने थे। **33**पहिये रथ के पहियों
के समान थे। पहियों की हर एक चीज़-धुरे, परिधि,
तीलियाँ और नाभि काँसे की बनीथी।

34हर एक गाड़ी के चारों कोनों पर चार आधार थे।
वे गाड़ी के साथ एक इकाई के रूप में बने थे। **35**हर
एक गाड़ी के ऊपरी सिरे के चारों ओर एक काँसे की
पट्टी थी। यह गाड़ी के साथ एक इकाई में बनीं थी।
36गाड़ी की बगल और ढाँचे पर करूब (स्वर्गदूतों),
सिंहों और ताड़ के वृक्षों के चित्र काँसे में उकेरे गए थे।
ये चित्र गाड़ियों पर सर्वत्र, जहाँ भी स्थान था, उकेरे गए
थे और गाड़ी के चारों ओर के ढाँचे पर फूल उकेरे गए
थे। **37**हीराम ने दस गाड़ियाँ बनाई और वे सभी एक सी
थीं। हर एक गाड़ी काँसे की बनी थी। काँसे को
गलाया गया था और साँचे में ढाला गया था। अत: सभी
गाड़ियाँ एक ही आकार और एक ही रूप की थीं।

38हीराम ने दस कटोरे भी बनाये। एक-एक कटोरा
दस गाड़ियों में से हर एक के लिये था। हर एक कटोरा
छ: फुट व्यास वाला था और हर एक कटोरे में दो सौ
तीस गैलन आ सकता था।

39हीराम ने पाँच गाड़ियों को मन्दिर के दक्षिण और
अन्य पाँच गाड़ियों को मन्दिर के उत्तर में रखा। उसने
विशाल तालाब को मन्दिर के दक्षिण पूर्व कोने में रखा।
40हीराम ने बर्तन, छोटे बेल्चे, और छोटे कटोरे भी
बनाए। हीराम ने उन सारी चीजों को बनाना पूरा किया
जिन्हें राजा सुलैमान उससे बनवाना चाहता था। हीराम
ने यहोवा के मन्दिर के लिये जो कुछ बनाया उसकी
सूची यह है:

41दो स्तम्भ,
स्तम्भों के सिरों के लिये कटोरे के आकार के दो
शीर्ष, शीर्षों के चारों ओर लगाए जाने वाले दो जाल।
42दो जालों के लिये चार सौ अनार स्तम्भों के सिरों
पर शीर्षों के दोनों कटोरों को ढकने के लिये हर
एक जाल के वास्ते अनारों की दो पक्तियाँ थीं।
43वहाँ दस गाडियाँ थी, हर गाड़ी पर एक कटोरा
था, **44**एक विशाल तालाब जो बारह बैलों पर टिका
था, **45**बर्तन, छोटे बेल्चे, छोटे कटोरे, और यहोवा
के मन्दिर के लिये सभी तश्तरियाँ।

हीराम ने वे सभी चीज़ें बनाई जिन्हें राजा सुलैमान
चाहता था। वे सभी झलकाए हुए काँसे से बनी थीं।
46-47सुलैमान ने उस काँसे को कभी नहीं तोला जिसका
उपयोग इन चीज़ों को बनाने के लिये हुआ था। यह
इतना अधिक था कि इसका तौलना सम्भव नहीं था
इसलिये सारे काँसे के तौल का कुल योग कभी मालूम
नहीं हुआ। राजा ने इन चीज़ों को सुक्कोत और सारतान
के बीच यरदन नदी के समीप बनाने का आदेश दिया।
उन्होंने इन चीज़ों को, काँसे को गलाकर और जमीन
में बने साँचो में ढालकर, बनाया।

48-50सुलैमान ने यह भी आदेश दिया कि मन्दिर के
लिये सोने की बुहत सी चीज़ें बनाई जायें। सुलैमान ने
मन्दिर के लिये सोने से जो चीज़ें बनाई, वे ये हैं।

सुनहली वेदी,
सुनहली मेज (परमेश्वर को भेंट चढ़ाई गई विशेष रोटी इस मेज पर रखी जाती थी।)
शुद्ध सोने के दीपाधार (सर्वाधिक पवित्र स्थान के सामने ये पाँच दक्षिण की ओर, और पाँच उत्तर की ओर थे।)
सुनहले फूल, दीपक और चिमटे, प्याले,
दीपक को पूरे प्रकाश से जलता रखने के लिये औज़ार, कटोरे, कड़ाहियाँ,
कोयला ले चलने के लिये उपयोग में आने वाली शुद्ध सोने की तश्तरियाँ और
मन्दिर के प्रवेश द्वार के दरवाजे।

51इस प्रकार सुलैमान ने, यहोवा के मन्दिर के लिये
जो काम वह करना चाहता था, पूरा किया। तब सुलैमान
ने वे सभी चीज़ें ली जिन्हें उसके पिता दाऊद ने इस
उद्देश्य के लिये सुरक्षित रखी थीं। वह इन चीज़ों को
मन्दिर में लाया। उसने चाँदी और सोना यहोवा के
मन्दिर के कोषागारों में रखा।

मन्दिर में साक्षीपत्र का सन्दूक

8 तब राजा सुलैमान ने इस्राएल के सभी अग्रजों,
परिवार समूहों के प्रमुखों तथा इस्राएल के परिवारों
के प्रमुखों को एक साथ यरूशलेम में बुलाया। सुलैमान
चाहता था कि वे साक्षीपत्र के सन्दूक को दाऊद नगर
से मन्दिर में लायें। 2इसलिये इस्राएल के सभी लोग राजा
सुलैमान के साथ आये। यह एतानीम महीने में विशेष
त्यौहार (आश्रयों का त्यौहार) के समय हुआ। (यह वर्ष
का सातवाँ महीना था)।

3इस्राएल के सभी अग्रज उस स्थान पर आए। तब
याजकों ने पवित्र सन्दूक उठाया। 4वे पवित्र तम्बू और
तम्बू में की सभी चीज़ों सहित यहोवा के पवित्र सन्दूक
को ले आए। लेवीवंशियों ने याजकों की सहायता इन
चीजों को ले चलने में की। 5राजा सुलैमान और इस्राएल
के सभी लोग साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने इकट्ठे
हुए। उन्होंने अनेक बलि भेंट कीं। उन्होंने इतनी अधिक
भेड़े और पशु मारे कि कोई व्यक्ति उन सभी को गिनने
में समर्थ नहीं था।

6तब याजकों ने यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक को
उसके उचित स्थान पर रखा। यह मन्दिर के भीतर
सर्वाधिक पवित्र स्थान में था। साक्षीपत्र का सन्दूक
करूब (स्वर्गदूतों) के पंखों के नीचे रखा गया। 7करूब
(स्वर्गदूतों) के पंख पवित्र सन्दूक के ऊपर फैले थे। वे
पवित्र सन्दूक और उसको ले चलने में सहायक बल्लियों
को ढके थे। 8ये सहायक बल्लियाँ बहुत लम्बी थीं। यदि
कोई व्यक्ति पवित्र स्थान में सर्वाधिक पवित्र स्थान के
सामने खड़ा हो, तो वह बल्लियों के सिरों को देख
सकता था। किन्तु बाहर का कोई भी उन्हें नहीं देख
सकता था। वे बल्लियाँ आज भी वहाँ अन्दर हैं। 9पवित्र
सन्दूक के भीतर केवल दो अभिलिखित शिलायें थीं। वे
दो अभिलिखित शिलायें वही थीं, जिन्हें मूसा ने होरेब
नामक स्थान पर पवित्र सन्दूक में रखा था। होरेब वह
स्थान था जहाँ यहोवा ने इस्राएल के लोगों के साथ
उनके मिस्र से बाहर आने के बाद वाचाकी।

10याजकों ने सन्दूक को सर्वाधिक पवित्र स्थान में
रखा। जब याजक पवित्र स्थान से बाहर आए तो बादल*
यहोवा के मन्दिर में भर गया। 11याजक अपना काम
करते न रह सके क्योंकि मन्दिर यहोवा के प्रताप* से
भर गया था। 12तब सुलैमान ने कहा:

"यहोवा ने गगन में सूर्य को चमकाया, किन्तु उसने
काले बादलों में रहना पसन्द किया।

13मैंने तेरे लिए एक अद्भुत मन्दिर बनाया, एक
निवास, जिसमें तू सदैव रहेगा।"

14इस्राएल के सभी लोग वहाँ खड़े थे। इसलिये सुलैमान
उनकी ओर मुड़ा और परमेश्वर ने उन्हें आशीर्वाद देने
को कहा।

15तब राजा सुलैमान ने यहोवा से एक लम्बी प्रार्थना
की। जो उसने प्रार्थना की वह यह है:

"इस्राएल का यहोवा परमेश्वर महान है। यहोवा ने
मेरे पिता दाऊद से जो कुछ कहा– उन्हें उसने स्वयं
पूरा किया है। यहोवा ने मेरे पिता से कहा,

16'मैं अपने लोगों इस्राएलियों को मिस्र से बाहर
लाया। लेकिन मैंने अभी तक इस्राएल परिवार समूह से
किसी नगर को नहीं चुना है, कि मुझे सम्मान देने के
लिये मन्दिर–निर्माण करे। और मैंने अपने लोग,
इस्राएलियों का मार्ग दर्शक कौन व्यक्ति हो, उसे नहीं
चुना है। किन्तु अब मैंने यरूशलेम को चुना है जहाँ मैं
सम्मानित होता रहूँगा। किन्तु अब, दाऊद को मैंने चुना
है। मेरे इस्राएली लोगों पर शासन करने के लिये।'

17"मेरे पिता दाऊद बहुत अधिक चाहते थे कि वे
यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर के सम्मान के लिये मन्दिर
बनाएं। 18किन्तु यहोवा ने मेरे पिता दाऊद से कहा, 'मैं
जानता हूँ कि तुम मेरे सम्मान के लिये मन्दिर बनाने
की प्रबल इच्छा रखते हो और यह अच्छा है कि तुम
मेरा मन्दिर बनाना चाहते हो। 19किन्तु तुम वह व्यक्ति
नहीं हो जिसे मैंने मन्दिर बनाने के लिये चुना है।
तुम्हारा पुत्र मेरा मन्दिर बनाएगा।'

बादल विशेष दृश्य जो यह संकेत करता था कि परमेश्वर इस्राएल के लोगों के साथ है।

यहोवा के प्रताप लोगों के सामने प्रकट होते समय परमेश्वर के रूपों में से एक। यह तेज चमकीले प्रकाश की तरह था।

20“इस प्रकार यहोवा ने जो प्रतिज्ञा की थी उसे पूरी
कर दी है। अब मैं अपने पिता दाऊद के स्थान पर
राजा हूँ। अब मैं यहोवा की प्रतिज्ञा के अनुसार इस्राएल
के लोगों पर शासन कर रहा हूँ और मैंने इस्राएल के
परमेश्वर के लिये मन्दिर बनाया है। 21मैंने मन्दिर में
एक स्थान पवित्र सन्दूक के लिये बनाया है। उस पवित्र
सन्दूक में वह साक्षीपत्र है जो वाचा यहोवा ने हमारे
पूर्वजों के साथ किया था। यहोवा ने वह वाचा तब की
जब वह हमारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर ले आया था।”

22तब सुलैमान यहोवा की वेदी के सामने खड़ा हुआ।
सभी लोग उसके सामने खड़े थे। राजा सुलैमान ने
अपने हाथों को फैलाया और आकाश की ओर देखा।

23उसने कहा: “हे यहोवा इस्राएल के परमेश्वर तेरे
समान धरती पर या आकाश में कोई ईश्वर नहीं है।
तूने अपने लोगों के साथ वाचा की क्योंकि तू उनसे प्रेम
करता है और तूने अपनी वाचा को पूरा किया। तू
उन लोगों के प्रति दयालु और स्नेहपूर्ण है जो तेरा
अनुसरण करते हैं। 24तूने अपने सेवक मेरे पिता दाऊद
से, एक प्रतिज्ञा की थी और तूने वह पूरी की है। तूने
वह प्रतिज्ञा स्वयं अपने मुँह से की थी और तूने अपनी
महान शक्ति से उस प्रतिज्ञा को आज सत्य घटित होने
दिया है। 25अब,यहोवा इस्राएल का परमेश्वर, उन अन्य
प्रतिज्ञाओं को पूरा कर जो तूने अपने सेवक,मेरे पिता
दाऊद से की थीं। तूने कहा था, ‘दाऊद जैसा तुमने
किया वैसे ही तुम्हारी सन्तानों को मेरी आज्ञा का पालन
सावधानी से करना चाहिये। यदि वे ऐसा करेंगे तो सदा
कोई न कोई तुम्हारे परिवार का व्यक्ति इस्राएल के
लोगों पर शासन करेगा’

26और हे यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर, मैं फिर
तुझसे माँगता हूँ कि तू कृपया मेरे पिता के साथ की गई
प्रतिज्ञा को पूरी करतारहे।

27“किन्तु परमेश्वर, क्या तू सचमुच इस पृथ्वी पर
हम लोगों के साथ रहेगा? तुझको सारा आकाश और
स्वर्ग के उच्चतम स्थान भी धारण नहीं कर सकते।
निश्चय ही यह मन्दिर भी, जिसे मैंने बनाया है, तुझको
धारण नहीं कर सकता। 28किन्तु तू मेरी प्रार्थना और
मेरे निवेदन पर ध्यान दे। मैं तेरा सेवक हूँ और तू मेरा
यहोवा परमेश्वर है। इस प्रार्थना को तू स्वीकार कर
जिसे आज मैं तुझसे कर रहा हूँ। 29बीते समय में तूने
कहा था, ‘मेरा वहाँ सम्मान किया जायेगा।’ इसलिये
कृपया इस मन्दिर की देख-रेख दिन-रात कर। उस
प्रार्थना को तू स्वीकार कर, जिसे मैं तुझसे इस समय
मन्दिर में कह रहा हूँ। 30यहोवा, मैं और तेरे इस्राएल के
लोग इस मन्दिर में आएंगे और प्रार्थना करेंगे। कृपया
इन प्रार्थनाओं पर ध्यान दे। हम जानते हैं कि तू स्वर्ग में
रहता है। हम तुझसे वहाँ से अपनी प्रार्थना सुनने और
हमें क्षमा करने की याचना करते हैं।

31“यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के विरुद्ध
कोई अपराध करेगा तो वह यहाँ तेरी वेदी के पास लाया
जायेगा। यदि वह व्यक्ति दोषी नहीं है तो वह एक शपथ
लेगा। वह शपथ लेगा कि वह निर्दोष है। 32उस समय तू
स्वर्ग में सुन और उस व्यक्ति के साथ न्याय कर। यदि
वह व्यक्ति अपराधी है तो कृपया हमें स्पष्ट कर कि
वह अपराधी है और यदि व्यक्ति निरपराध है तो हमें
स्पष्ट कर कि वह अपराधी नहीं है।

33“कभी-कभी तेरे इस्राएल के लोग तेरे विरुद्ध पाप
करेंगे और उनके शत्रु उन्हें पराजित करेंगे। तब लोग
तेरे पास लौटेंगे और वे लोग इस मन्दिर में तेरी प्रार्थना
करेंगे। 34कृपया स्वर्ग से उनकी प्रार्थना को सुन। तब
अपने इस्राएली लोगों के पापों को क्षमा कर और उनकी
भूमि उन्हें फिर से प्राप्त करने दे। तूने यह भूमि उनके
पूर्वजों को दी थी।

35“कभी-कभी वे तेरे विरुद्ध पाप करेंगे, और तू
उनकी भूमि पर वर्षा होना बन्द कर देगा। तब वे इस
स्थान की ओर मुँह करके प्रार्थना करेंगे और तेरे नाम
की स्तुति करेंगे। तू उनको कष्ट सहने देगा और वे
अपने पापों के लिये पश्चाताप करेंगे। 36इसलिये कृपया
स्वर्ग में उनकी प्रार्थना को सुन। तब हम लोगों को
हमारे पापों के लिये क्षमा कर। लोगों को सच्चा जीवन
बिताने की शिक्षा दे। हे यहोवा तब कृपया तू उस भूमि
पर वर्षा कर जिसे तूने उन्हें दिया है।

37“भूमि बहुत अधिक सूख सकती है और उस पर
कोई अन्न उग नहीं सकेगा या संभव है लोगों में महामारी
फैले। संभव है सारा पैदा हुआ अन्न कीड़ें मकोड़ों द्वारा
नष्ट कर दिया जाय या तेरे लोग अपने कुछ नगरों में
अपने शत्रुओं के आक्रमण के शिकार बने या तेरे
अनेक लोग बीमार पड़ जायें। 38जब इनमें से कुछ भी
घटित हो, और एक भी व्यक्ति अपने पापों के लिये
पश्चाताप करे, और अपने हाथों को इस मन्दिर की
ओर प्रार्थना में फैलाये तो 39कृपया उसकी प्रार्थना को
सुन। उसकी प्रार्थना को सुन जब तू अपने निवास स्थान
स्वर्ग में है। तब लोगों को क्षमा कर और उनकी सहायता
कर। केवल तू यह जानता है कि लोगों के मन में
सचमुच क्या है? अत: हर एक के साथ न्याय कर और
उनके प्रति न्यायशील रह। 40यह इसलिये कर कि तेरे
लोग डरें और तेरा सम्मान तब तक सदैव करें जब तक
वे इस भूमि पर रहें जिसे तूने हमारे पूर्वजों को दिया था।

41-42“अन्य स्थानों के लोग तेरी महानता और तेरी
शक्ति के बारे में सुनेंगे। वे बहुत दूर से इस मन्दिर में
प्रार्थना करने आएंगे। 43कृपया अपने निवास स्थान,
स्वर्ग से उनकी प्रार्थना सुन। कृपया तू वह सब कुछ
प्रदान कर जिसे अन्य स्थानों के लोग तुझसे माँगें। तब वे
लोग भी इस्राएली लोगों की तरह ही तुझसे डरेंगे और
तेरा सम्मान करेंगे।

44"कभी–कभी तू अपने लोगों को अपने शत्रुओं के
विरुद्ध जाने और उनसे युद्ध करने का आदेश देगा। तब
तेरे लोग तेरे चुने हुए इस नगर और मेरे बनाये हुए
मन्दिर की ओर अभिमुख होंगे। जिसे मैंने तेरे सम्मान
में बनाया है और वे तेरी प्रार्थना करेंगे। 45उस समय तू
अपने निवास स्थान स्वर्ग से उनकी प्रार्थनाओं को सुन
और उनकी सहायता कर।

46"तेरे लोग तेरे विरुद्ध पाप करेंगे। मैं इसे इसलिये
जानता हूँ क्योंकि हर एक व्यक्ति पाप करता है और तू
अपने लोगों पर क्रोधित होगा। तू उनके शत्रुओं को
उन्हें हराने देगा। उनके शत्रु उन्हें बन्दी बनाएंगे और
उन्हें किसी बहुत दूर के देश में ले जाएंगे। 47उस दूर के
देश में तेरे लोग समझेंगे कि क्या हो गया है। वे अपने
पापों के लिये पश्चाताप करेंगे और तुझसे प्रार्थना करेंगे।
वे कहेंगे, 'हमने पाप और अपराध किया है।' 48वे उस
दूर के देशमें रहेंगे। किन्तु यदि वे इस देश जिसे तूने
उनके पूर्वजों को दिया और तेरे चुने नगर और इस
मन्दिर जिसे मैंने तेरेसम्मान में बनाया है। उसकी ओर
मुख करके तुझसे प्रार्थना करेंगे। 49तो तू कृपया अपने
निवास स्थान स्वर्ग से उनकी सुन। 50अपने लोगों को
सभी पापों के लिये क्षमा कर दे और तू अपने विरोध में
हुए पाप के लिये उन्हें क्षमा कर उनके शत्रुओं को
उनके प्रति दयालु बना। 51याद रख कि वे तेरे लोग हैं,
याद रख कि तू उन्हें मिस्र से बाहर लाया। यह वैसा ही
था जैसा तूने जलती भट्टी से उन्हें पकड़ कर खींच
लिया हो!

52"यहोवा परमेश्वर, कृपया मेरी प्रार्थना और अपने
इस्राएली लोगों की प्रार्थना सुन। उनकी प्रार्थना, जब
कभी वे तेरी सहायता के लिये करें, सुन। 53तूने उन्हें
पृथ्वी के सारे मनुष्यों में से अपना विशेष लोग होने के
लिये चुना है। यहोवा तूने उसे हमारे लिये करने की
प्रतिज्ञा की है। तूने हमारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर लाते
समय यह प्रतिज्ञा अपने सेवक मूसा के माध्यम से की
थी।"

54सुलैमान ने परमेश्वर से यह प्रार्थना की। वह वेदी
के सामने अपने घुटनों के बल था। सुलैमान ने स्वर्ग
की ओर भुजायें उठाकर प्रार्थना की। तब सुलैमान ने
प्रार्थना पूरी की और वह उठ खड़ा हुआ। 55तब उसने
उच्च स्वर में इस्राएल के सभी लोगों को आशीर्वाद देने
के लिये परमेश्वर से याचना की। सुलैमान ने कहा:

56"यहोवा की स्तुति करो! उसने प्रतिज्ञा की, कि वह
अपने इस्राएल के लोगों को शान्ति देगा और उसने हमें
शान्ति दी है! यहोवा ने अपने सेवक मूसा का उपयोग
किया और इस्राएल के लोगों के लिये बहुत सी अच्छी
प्रतिज्ञायें की और यहोवा ने उन हर एक प्रतिज्ञाओं को
पूरा किया है। 57मैं प्रार्थना करता हूँ कि यहोवा, हमारा
परमेश्वर हम लोगों के साथ उसी तरह रहेगा जैसे वह
हमारे पूर्वजों के साथ रहा। मैं प्रार्थना करता हूँ कि
यहोवा हमें कभी नहीं त्यागेगा। 58मैं प्रार्थना करता हूँ
कि हम उसकी ओर अभिमुख होगें और उसका अनुसरण
करेंगे। तब हम लोग उसके सभी नियमों, निर्णयों और
आदेशों का पालन करेंगे जिन्हें उसने हमारे पूर्वजों को
दिया।

59मैं आशा करता हूँ कि यहोवा हमारा परमेश्वर
सदैव इस प्रार्थना को और जिन वस्तुओं की मैंने
याचना की है, याद रखेगा। मैं प्रार्थना करता हूँ कि
यहोवा अपने सेवक राजा और अपने लोग इस्राएल के
लिये ये सब कुछ करेगा। मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह
प्रतिदिन यह करेगा। 60यदि यहोवा इन कामों को
करेगा तो संसार के सभी व्यक्ति यह जानेंगे कि मात्र
यहोवा ही सत्य परमेश्वर है। 61ऐ लोगों, तुम्हें यहोवा,
हमारे परमेश्वर का भक्त और उसके प्रति सच्चा होना
चाहिये। तुम्हें उसके सभी नियमों और आदेशों का
अनुसरण और पालन करना चाहिये। तुम्हें इस समय
की तरह, भविष्य में भी उसकी आज्ञा का पालन
करते रहना चाहिये।"

62तब राजा सुलैमान और उसके साथ के इस्राएल के
लोगों ने यहोवा को बलि–भेंट की। 63सुलैमान ने बाईस
हजार पशुओं और एक लाख बीस हजार भेड़ों को
मारा। ये सहभागिता भेटों के लिये थीं। यही पद्धति थी
जिससे राजा और इस्राएल के लोगों ने मन्दिर का समर्पण
किया अर्थात् उन्होंने यह प्रदर्शित किया कि उन्होंने
मन्दिर को यहोवा को अर्पित किया।

64उसी दिन राजा सुलैमान ने मन्दिर के सामने का
आँगन समर्पित किया। उसने होमबलि, अन्नबलि और
मेलबलि के रूप में काम आये जानवरों की चर्बी की
भेंटें चढ़ाई। राजा सुलैमान ने ये भेंटें आँगन में चढ़ाई।
उसने यह इसलिये किया कि इन सारी भेंटो को धारण
करने के लिये यहोवा के सामने की काँसे की वेदी
अत्याधिक छोटी थी।

65इस प्रकार मन्दिर में राजा सुलैमान और इस्राएल
के सारे लोगों ने पर्व* मनाया। सारा इस्राएल, उत्तर में
हमात दर्रे से लेकर दक्षिण में मिस्र की सीमा तक, वहाँ
था। वहाँ असंख्य लोग थे। उन्होंने खाते–पीते, सात दिन
यहोवा के साथ मिलकर आनन्द मनाया। तब वे अगले
सात दिनों तक वहाँ ठहरे। उन्होंने सब मिलाकर चौदह
दिनों तक उत्सव मनाया। 66अगले दिन सुलैमान ने
लोगों से घर जाने को कहा। सभी लोगों ने राजा को
धन्यवाद दिया, विदा ली और वे घर चले गये। वे प्रसन्न
थे क्योंकि यहोवा ने अपने सेवक दाऊद के लिये और
इस्राएल के लोगों के लिये बहुत सारी अच्छी चीज़ें की
थीं।

पर्व संभवत: "फसह का पर्व।"

परमेश्वर सुलैमान के पास पुन: आता है

9 इस प्रकार सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर और अपने
महल का बनाना पूरा किया। सुलैमान ने उन सभी
को बनाया जिनका निर्माण वह करना चाहता था। 2तब
यहोवा सुलैमान के सामने पुन: वैसे ही प्रकट हुआ जैसे
वह इसके पहले गिबोन में हुआ था। 3यहोवा ने उससे
कहा: "मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुनी। मैंने तुम्हारे निवेदन
भी सुने जो तुम मुझसे करवाना चाहते हो। तुमने इस
मन्दिर को बनाया और मैंने इसे एक पवित्र स्थान
बनाया है। अत: यहाँ मेरा सदैव सम्मान होगा। मैं इस पर
अपनी दृष्टि रखूँगा और इसके विषय में सदैव ध्यान
रखूँगा। 4तुम्हें मेरी सेवा वैसे ही करनी चाहिये जैसी
तुम्हारे पिता दाऊद ने की। वह निष्पक्ष और निष्कपट
था और तुम्हें मेरे नियमों और उन आदेशों का पालन
करना चाहिये जिन्हें मैंने तुम्हें दिया है।

5"यदि तुम यह सब कुछ करते रहोगे तो मैं यह
निश्चित देखूँगा कि इस्राएल का राजा सदैव तुम्हारे
परिवार में से ही कोई हो। यही प्रतिज्ञा है जिसे मैंने
तुम्हारे पिता दाऊद से की थी। मैंने उससे कहा था कि
इस्राएल पर सदैव उसके वंशजों में से एक का शासन
होगा।

6-7"किन्तु यदि तुम या तुम्हारी सन्तानें मेरा अनुसरण
करना छोड़ते हो, मेरे दिये गए नियमों और आदेशों का
पालन नहीं करते और तुम दूसरे देवता की सेवा और
पूजा करते हो तो मैं इस्राएल को वह देश छोड़ने को
विवश करुँगा जिसे मैंने उन्हें दिया है। इस्राएल अन्य
लोगों के लिये उदाहरण होगा। अन्य लोग इस्राएल का
मजाक उड़ाएंगे। मैंने मन्दिर को पवित्र किया है। यह
वह स्थान है जहाँ लोग मेरा सम्मान करते हैं। किन्तु
यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन नहीं करते तो इसे मैं
नष्ट कर दूँगा। 8यह मन्दिर नष्ट कर दिया जायेगा। हर
एक व्यक्ति जो इसे देखेगा चकित होगा। वे पूछेंगे,
'यहोवा ने इस देश के प्रति और इस मन्दिर के लिये
इतना भयंकर कदम क्यों उठाया?' 9अन्य लोग उत्तर
देंगे, 'यह इसलिये हुआ कि उन्होंने यहोवा अपने परमेश्वर
को त्याग दिया। वह उनके पूर्वजों को मिस्र से बाहर
लाया था। किन्तु उन्होंने अन्य देवताओं का अनुसरण
करने का निश्चय किया। उन्होंने उन देवताओं की
सेवा और पूजा करनी आरम्भ की। यही कारण है कि
यहोवा ने उनके लिये इतना भंयकर कार्य किया।'"

10यहोवा का मन्दिर और अपना महल बनाने में
सुलैमान को बीस वर्ष लगे 11और बीस वर्ष के बाद राजा
सुलैमान ने सोर के राजा हीराम को गलील में बीस
नगर दिये। सुलैमान ने राजा हीराम को वे नगर दिये
क्योंकि हीराम ने मन्दिर और महल बनाने में सुलैमान
की सहायता की। हीराम ने सुलैमान को उतने सारे
देवदारु और चीड़ के वृक्ष तथा सोना दिया जितना उसने
चाहा। 12इसलिये हीराम ने सोर से इन नगरों को देखने
के लिये यात्रा की, जिन्हें सुलैमान ने उसे दिये। जब
हीराम ने उन नगरों को देखा तो वह प्रसन्न नहीं हुआ।
13राजा हीराम ने कहा, "मेरे भाई जो नगर तुमने मुझे
दिये हैं वे हैं ही क्या?" राजा हीराम ने उस प्रदेश का
नाम कबूल प्रदेश रखा और वह क्षेत्र आज भी कबूल
कहा जाता है। 14हीराम ने सुलैमान के पास लगभग नौ
हजार पौंड सोना मन्दिर को बनाने में उपयोग करने के
लिये भेजा था।

15राजा सुलैमान ने दासों को अपने मन्दिर और महल
बनाने के लिये काम करने के लिये विवश किया। तब
राजा सुलैमान ने इन दासों का उपयोग बहुत सी चीज़ों
को बनाने में किया। उसने मिल्लो बनाया। उसने यरूशलेम
नगर के चारों ओर चहारदीवारी भी बनाई। तब उसने
हासोर, मगिद्दो और गेजेर नगरों को पुन: बनाया।

16बीते समय में मिस्र का राजा गेजेर नगर के विरुद्ध
लड़ा था और उसे जला दिया था। उसने उन कनानी
लोगों को मार डाला जो वहाँ रहते थे। सुलैमान ने
फिरौन की पुत्री से विवाह किया। इसलिये फ़िरौन ने
उस नगर को सुलैमान के लिये विवाह की भेंट के रूप
में दिया। 17सुलैमान ने उस नगर को पुन: बनाया।
सुलैमान ने निचले बथोरेन नगर को भी बनाया। 18राजा
सुलैमान ने जुदैन मरुभूमि में बालात और तामार नगरों
को भी बनाया। 19राजा सुलैमान ने वे नगर भी बनाये
जहाँ वह अन्य और चीज़ों का भण्डार बना सकता था
और उसने अपने रथों और घोड़ों के लिये भी स्थान
बनाये। सुलैमान ने अन्य बहुत सी चीज़ें भी बनाई जिन्हें
वह यरूशलेम, लबानोन और अपने शासित अन्य सभी
स्थानों में चाहता था।

20देश में ऐसे लोग भी थे जो इस्राएली नहीं थे। वे लोग
एमोरी, हित्ती, परिज्जी, हिब्बी और यबूसी थे। 21इस्राएली
उन लोगों को नष्ट नहीं कर सके थे। किन्तु सुलैमान ने
उन्हें दास के रूप में अपने लिये काम करने को विवश
किया। वे अभी तक दास हैं। 22सुलैमान ने किसी इस्राएली
को अपना दास होने के लिये विवश नहीं किया। इस्राएल
के लोग सैनिक, राज्य कर्मचारी, अधिकारी, नायक
और रथचालक थे।

23सुलैमान की योजनाओं के साढ़े पाँच सौ पर्यवेक्षक
थे। वे उन व्यक्तियों के ऊपर अधिकारी थे जो काम
करते थे। 24फ़िरौन की पुत्री दाऊद के नगर से वहाँ गई
जहाँ सुलैमान ने उसके लिये विशाल महल बनाया। तब
सुलैमान ने मिल्लों बनाया।

25हर वर्ष तीन बार सुलैमान होमबलि और मेलबलि
वेदी पर चढ़ाता था। यह वही वेदी थी जिसे सुलैमान ने
यहोवा के लिये बनाया था। राजा सुलैमान यहोवा के
सामने सुगन्धि भी जलाता था। अत: मन्दिर के लिये
आवश्यक चीज़ें दिया करता था।

26राजा सुलैमान ने एस्योन गेबेर में जहाज भी बनाये।
यह नगर एदोम प्रदेश में लाल सागर के तट पर एलोत
के पास था। 27राजा हीराम के पास कुछ ऐसे व्यक्ति थे
जो समुद्र के बारे में अच्छा ज्ञान रखते थे। वे व्यक्ति
प्राय: जहाज से यात्रा करते थे। राजा हीराम ने उन
व्यक्तियों को सुलैमान के नाविक बेड़े में सेवा करने
और सुलैमान के व्यक्तियों के साथ काम करने के
लिये भेजा। 28सुलैमान के जहाज ओपोर को गए। वे
जहाज एकतीस हजार पाँच सौ पौंड सोना आपोर से
सुलैमान के लिये लेकर लौटे।

शीबा की रानी सुलैमान से मिलने आती है

10 शीबा की रानी ने सुलैमान के बारे में सुना।
अत: वह कठिन प्रश्नों से उसकी परीक्षा लेने
आई। 2उसने सेवकों की विशाल संख्या के साथ यरूशलेम
की यात्रा की। अनेक ऊँट मसाले, रत्न, और बहुत सा
सोना ढो रहे थे। वह सुलैमान से मिली और उसने उन
सब प्रश्नों को पूछा जिन्हें वह सोच सकती थी। 3सुलैमान
ने सभी प्रश्नों के उत्तर दिये। उसका कोई भी प्रश्न
उसके उत्तर देने के लिये अत्याधिक कठिन नहीं था।
4शीबा की रानी ने समझ लिया कि सुलैमान बहुत
बुद्धिमान है। उसने उस सुन्दर महल को भी देखा जिसे
उसने बनाया था। 5रानी ने राजा की मेज पर भोजन भी
देखा। उसने उसके अधिकारियों को एक साथ मिलते
देखा। उसने महल के सेवकों और जिन अच्छे वस्त्रों
को उन्होंने पहन रखा था, उन्हें भी देखा। उसने उसकी
दावतों और मन्दिर में चढ़ाई गई भेंटों को देखा। उन
सभी चीज़ों ने वास्तव में उसे चकित कर दिया। 'उसकी
साँस ऊपर की ऊपर और नीचे की नीचे रह गई!'

6इसलिये रानी ने राजा से कहा, "मैंने अपने देश में
आपकी बुद्धिमानी और बहुत सी बातों के बारे में सुना
जो आपने कीं। वे सभी बातें सत्य हैं! 7मैं इन बातों में
तब तक विश्वास नहीं करती थी जब तक मैं यहाँ नहीं
आई और इन चीजों को अपनी आँखों से नहीं देखा।
अब मैं देखती हूँ कि जितना मैंने सुन रखा था उससे भी
अधिक यहाँ है। आपकी बुद्धिमत्ता और सम्पत्ति उससे
बहुत अधिक है जितनी लोगों ने मुझको बतायी। 8आपकी
पत्नियाँ* और आपके अधिकारी बहुत भाग्यशाली हैं।
वे प्रतिदिन आपकी सेवा कर सकते हैं और आपकी
बुद्धिमत्तापूर्ण बातें सुन सकते हैं। 9आपका यहोवा परमेश्वर
स्तुति योग्य है! आपको इस्राएल का राजा बनाने में उसे
प्रसन्नता हुई। यहोवा परमेश्वर इस्राएल से प्रेम करता
है। इसलिये उसने आपको राजा बनाया। आप नियमों
का अनुसरण करते हैं और लोगों के साथ न्यायपूर्ण
व्यवहार करते हैं।"

10तब शीबा की रानी ने राजा को लगभग नौ
हजार पौंड सोना दिया। उसने उसे अनेक मसाले और
रत्न भी दिये। जितनी मात्रा में शीबा की रानी ने
राजा सुलैमान को मसाले उपहार में दिये, उतनी मात्रा
में मसाले फिर कभी इस्राएल देश में नहीं आए। शीबा
की रानी ने उससे अधिक मसाले सुलैमान को दिये
जितने पहले कभी किसी ने इस्राएल को लाकर दिये
थे।

11हीराम के जहाज ओपोर से सोना ले आए। वे
जहाज बहुत अधिक लकड़ी* और रत्न भी लाए।
12सुलैमान ने लकड़ी का उपयोग मन्दिर और महल को
सम्भालने के लिये किया। उसने लकड़ी का उपयोग
गायकों के लिये वीणा और बीन बनाने में भी किया।
अन्य कोई भी व्यक्ति उस प्रकार की लकड़ी इस्राएल में
कभी नहीं लाया, और किसी भी व्यक्ति ने तब से उस
प्रकार की लकड़ी नहींदेखी।

13तब राजा सुलैमान ने शीबा की रानी को वे भेंटें दीं
जो कोई राजा किसी अन्य देश के शासक को सदैव
देता है। तब उसने उसे वह सब दिया जो कुछ भी उसने
माँगा। इसके बाद रानी सेवकों सहित अपने देश को
वापस लौट गई।

14राजा सुलैमान प्रति वर्ष लगभग उन्नासी हजार नौ
सौ बीस पौंड सोना प्राप्त करता था।

15व्यापारिक जहाजों से सोना लाये जाने के अतिरिक्त
उसने बणिक, व्यापारियों और अरब के राजाओं तथा
देश के प्रशासकों से भी सोना प्राप्त किया।

16राजा सुलैमान ने दो सौ बड़ी ढालें सोने की परतों से
बनाई। हर एक ढाल में लगभग पन्द्रह पौंड सोना लगा
था। 17उसने सोने की पट्टियों की तीन सौ छोटी ढालें
भी बनाई। हर एक ढाल में लगभग चार पौंड सोना लगा
था। राजा ने उन्हें उस भवन में रखा जिसे "लबानोन
का वन" कहा जाता था।

18राजा सुलैमान ने एक विशाल हाथी दाँत का सिंहासन
भी बनाया। उसने उसे शुद्ध सोने से मढ़ा। 19सिंहासन पर
पहुँचने के लिये उसमें छ: पैड़ियाँ थीं। सिंहासन का
पिछला भाग सिरे पर गोल था। कुर्सी के दोनों ओर हत्थे
लगे थे और कुर्सी की बगल में दोनों हत्थों के नीचे
सिंहों की तस्वीरें बनी थी। 20छ: पैड़ियों में से हर एक
पर दो सिहं थे। हर एक के सिरे पर एक सिंह था।
किसी भी अन्य राज्य में इस प्रकार का कुछ भी नहीं
था। 21सुलैमान के सभी प्याले और गिलास सोने के बने
थे और "लबानोन का वन" नामक भवन में सभी
अस्त्र-शस्त्र शुद्ध सोने के बने थे। महल में कुछ भी
चाँदी का नहीं बना था। सुलैमान के समय में सोना

पत्नियाँ यह प्राचीन ग्रीक अनुवाद में है। हिब्रू में "पुरुष" है।

लकड़ी यह विशेष प्रकार की लकड़ी थी जिसे "अल्मुग लकड़ी" कहा जाता है। कोई भी ठीकठीक नहीं जानता कि यह किस प्रकार की लकड़ी थी।

इतना अधिक था कि लोग चाँदी को महत्वपूर्ण नहीं
समझते थे।
22राजा के पास बहुत से व्यापारिक जहाज भी थे
जिन्हें वह अन्य देशों से वस्तुओं का व्यापार करने के
लिये बाहर भेजता था। ये हीराम के जहाज थे। हर
तीसरे वर्ष जहाज सोना, चाँदी, हाथी दाँत और पशु लाते
थे।
23सुलैमान पृथ्वी पर महानतम राजा था। वह सभी
राजाओं से अधिक धनवान और बुद्धिमान था। 24सर्वत्र
लोग राजा सुलैमान को देखना चाहते थे। वे परमेश्वर
द्वारा दी गई उसकी बुद्धिमत्ता की बात सुनना चाहते थे।
25प्रत्येक वर्ष लोग राजा का दर्शन करने आते थे और
प्रत्येक व्यक्ति भेंट लाता था। वे सोने–चाँदी के बने
बर्तन, कपड़े, अस्त्र–शस्त्र, मसाले, घोड़े और खच्चर
लाते थे।
26अत: सुलैमान के पास अनेक रथ और घोड़े थे।
उसके पास चौदह सौ रथ और बारह हजार घोड़े थे।
सुलैमान ने इन रथों के लिये विशेष नगर बनाये। अत:
रथ उन नगरों में रखे जाते थे। राजा सुलैमान ने रथों में
से कुछ को अपने पास यरूशलेम में भी रखा। 27राजा
ने इस्राएल को बहुत सम्पन्न बना दिया। यरूशलेम नगर
में चाँदी इतनी सामान्य थी जितनी चट्टानें, देवदारु की
लकड़ी और पहाड़ों पर उगने वाले असंख्य अंजीर के
पेड़ सामान्य थे। 28सुलैमान ने मिस्र और कुए से घोड़े
मँगाए। उसके व्यापारी उन्हें कुएँ से लाते थे और फिर
उन्हें इस्राएल में लाते थे। 29मिस्र के एक रथ का मूल्य
लगभग पन्द्रह पौंड चाँदी था और एक घोड़े का मूल्य
पौने चार पौंड चाँदी था। सुलैमान घोड़े और रथ हित्ती
और अरामी राजाओं के हाथ बेचता था।

सुलैमान और उसकी बहुत सी पत्नियाँ

11 राजा सुलैमान स्त्रियों से प्रेम करता था। वह
बहुत सी ऐसी स्त्रियों से प्रेम करता था जो इस्राएल
राष्ट्र की नहीं थीं। इनमें फ़िरौन की पुत्री, हित्ती स्त्रियाँ,
और मोआबी, अम्मोनी, एदोमी और सीदोनी स्त्रियाँ
थीं। 2बीतें समय में यहोवा ने इस्राएल के लोगों से कहा
था, "तुम्हें अन्य राष्ट्रों की स्त्रियों से विवाह नहीं करना
चाहिये। यदि तुम ऐसा करोगे तो वे लोग तुम्हें अपने
देवताओं का अनुसरण करने के लिये बाध्य करेंगी।"
किन्तु सुलैमान उन स्त्रियों के प्रेम पाश में पड़ा। 3सुलैमान
की सात सौ पत्नियाँ थीं। (ये सभी स्त्रियाँ अन्य राष्ट्रों के
प्रमुखों की पुत्रियाँ थीं।) उसके पास तीन सौ दासियाँ भी
थीं जो उसकी पत्नियों के समान थीं। उसकी पत्नियों ने
उसे परमेश्वर से दूर हटाया। 4जब सुलैमान बूढ़ा हुआ
तो उसकी पत्नियाँ ने उससे अन्य देवताओं का अनुसरण
कराया। सुलैमान ने उसी प्रकार पूरी तरह यहोवा का
अनुसरण नहीं किया जिस प्रकार उसके पिता दाऊद ने
किया था। 5सुलैमान ने अशतोरेत की पूजा की। यह
सीदोन के लोगों की देवी थी। सुलैमान मिल्कोम की
पूजा करता था। यह अम्मोनियों का घृणित देवता था।
6इस प्रकार सुलैमान ने यहोवा के प्रति अपराध किया।
सुलैमान ने यहोवा का अनुसरण पूरी तरह उस प्रकार
नहीं किया जिस प्रकार उसके पिता दाऊद ने किया था।
7सुलैमान ने कमोश की पूजा के लिये स्थान बनाया।
कमोश मोआबी लोगों की घृणास्पद देवमूर्ति थी। सुलैमान
ने उसके उच्चस्थान को यरूशलेम से लगी पहाड़ी पर
बनाया। सुलैमान ने उसी पहाड़ी पर मोलेक का उच्चस्थान
भी बनाया। मोलेक अम्मोनी लोगों की घृणास्पद देवमूर्ति
थी। 8तब सुलैमान ने अन्य देशों की अपनी सभी पत्नियों
के लिये वही किया। उसकी पत्नियाँ सुगन्धि जलाती थीं
और अपने देवताओं को बलि–भेंट करती थीं।
9सुलैमान यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर का अनुसरण
करने से दूर हट गया। अत: यहोवा, सुलैमान पर क्रोधित
हुआ। यहोवा सुलैमान के पास दो बार आया जब वह
छोटा था। 10यहोवा ने सुलैमान से कहा कि तुम्हें अन्य
देवताओं का अनुसरण नहीं करना चाहिये। किन्तु
सुलैमान ने यहोवा के आदेश का पालन नहीं किया।
11इसलिये यहोवा ने सुलैमान से कहा, "तुमने मेरे साथ
की गई अपनी वाचा को तोड़ना पसन्द किया है। तुमने
मेरे आदेशों का पालन नहीं किया है। अत: मैं प्रतिज्ञा
करता हूँ कि मैं तुमसे तुम्हारा राज्य छीन लूँगा। मैं इसे
तुम्हारे सेवकों में से एक को दूँगा। 12किन्तु मैं तुम्हारे
पिता दाऊद से प्रेम करता था। इसलिये जब तक तुम
जीवित हो तब तक मैं तुम्हारा राज्य नहीं लूँगा। मैं तब
तक प्रतीक्षा करूँगा जब तक तुम्हारा पुत्र राजा नहीं बन
जाता। तब मैं उससे इसे लूँगा। 13तो भी मैं तुम्हारे पुत्र से
सारा राज्य नहीं छीनूँगा। मैं उसे एक परिवार समूह पर
शासन करने दूँगा। यह मैं दाऊद के लिये करूँगा। वह
एक अच्छा सेवक था और यह मैं अपने चुने हुये नगर
यरूशलेम के लिये भी करूँगा।"

सुलैमान के शत्रु

14उस समय यहोवा ने एदोमी हदद को सुलैमान का
शत्रु बनाया। हदद एदोम के राजा के परिवार से था।
15यह इस प्रकार घटित हुआ। कुछ समय पहले दाऊद
ने एदोम को हराया था। योआब दाऊद की सेना का
सेनापति था। योआब एदोम में मरे व्यक्तियों को दफनाने
गया। तब योआब ने वहाँ जीवित सभी व्यक्तियों को मार
डाला। 16योआब और सारे इस्राएली एदोम में छ: महीने
तक ठहरे। उस समय के बीच उन्होंने एदोम के सभी
पुरुषों को मार डाला। 17किन्तु उस समय हदद अभी
एक किशोर ही था। अत: हदद मिस्र को भाग निकला।
उसके पिता के कुछ सेवक उसके साथ गए। 18उन्होंने
मिद्यान को छोड़ा और वे परान को गए। वे मिस्र के

राजा फ़िरौन के पास गये और उससे सहायता माँगी।
फ़िरौन ने हदद को एक घर और कुछ भूमि दी।
फ़िरौन ने उसे सहायता भी दी और उसे खाने के लिये
भोजन दिया।

19फ़िरौन ने हदद को बहुत पसन्द किया। फिरौन ने
हदद को एक पत्नी दी, स्त्री फ़िरौन की साली थी।
(फ़िरौन की पत्नी तहपनेस थी।) **20**अत: तहपनेस की
बहन हदद से ब्याही गई। उनका एक पुत्र गनूबत नाम
का हुआ। रानी तहपनेस ने गनूबत को अपने बच्चों के
साथ फ़िरौन के महल में बड़ा होने दिया।

21मिस्र में हदद ने सुना कि दाऊद मर गया। उसने
यह भी सुना कि सेनापति योआब मर गया। इसलिये
हदद ने फ़िरौन से कहा, "मुझे अपने देश में अपने घर
वापस लौट जाने दे।"

22किन्तु फ़िरौन ने उत्तर दिया, "मैंने तुम्हें सारी चीज़,
जिनकी तुम्हें यहाँ आवश्यकता है, दी है! तुम अपने
देश में वापस क्यों जाना चाहते हो?"

हदद ने उत्तर दिया, "कृपया मुझे घर लौटने दें।"

23यहोवा ने दूसरे व्यक्ति को भी सुलैमान के विरुद्ध
शत्रु बनाया। यह व्यक्ति एल्यादा का पुत्र रजोन था।
रजोन अपने स्वामी के यहाँ से भाग गया था। उसका
स्वामी सोबा का राजा हददेजेर था। **24**दाऊद ने जब
सोबा की सेना को हरा दिया तब उसके बाद रजोन ने
कुछ व्यक्तियों को इकट्ठा किया और एक छोटी सेना
का प्रमुख बन गया। रजोन दमिश्क गया और वहीं
ठहरा। रजोन दमिश्क का राजा हो गया। **25**रजोन अराम
पर शासन करता था। रजोन इस्राएल से घृणा करता था,
इसलिये सुलैमान जब तक जीवित रहा वह पूरे समय
इस्राएल का शत्रु बना रहा। रजोन और हदद ने इस्राएल
के लिये बड़ी परेशानियाँ उत्पन्न कीं।

26नबात का पुत्र यारोबाम सुलैमान के सेवकों में से
एक था। यारोबाम एप्रैम परिवार समूह से था। वह सरेदा
नगर का था। यारोबाम की माँ का नाम सरूयाह था।
उसका पिता मर चुका था। वह राजा के विरुद्ध हो
गया।

27यारोबाम राजा के विरुद्ध क्यों हुआ? इसकी कहानी
यह है: सुलैमान मिल्लो बना रहा था और अपने पिता
दाऊद के नगर की दीवार को दृढ़ कर रहा था।
28यारोबाम एक बलवान व्यक्ति था। सुलैमान ने
देखा कि यह युवक एक अच्छा श्रमिक है। इसलिये
सुलैमान ने उसे यूसुफ के परिवार समूह के श्रमिकों का
अधिकारी बना दिया। **29**एक दिन यारोबाम यरूशलेम
के बाहर यात्रा कर रहा था। शीलो का अहिय्याह नबी
उससे सड़क पर मिला। अहिय्याह एक नया अंगरखा
पहने था। ये दोनों व्यक्ति देश में अकेले थे। **30**अहिय्याह
ने अपना नया अंगरखा लिया और इसे बारह टुकड़ों में
फाड़ डाला।

31तब अहिय्याह ने यारोबाम से कहा, "इस अंगरखा
के दस टुकड़े तुम अपने लिये ले लो। यहोवा इस्राएल का
परमेश्वर कहता है: 'मैं सुलैमान से राज्य को छीन लूँगा
और मैं परिवार समूहों में से दस को, तुम्हे दूँगा **32**और
मैं दाऊद के परिवार को केवल एक परिवार समूह पर
शासन करने दूँगा। मैं उन्हें केवल इस समूह को लेने
दूँगा। मैं यह अपने दाऊद और यरूशलेम के लिये ऐसा
करने दूँगा। यरूशलेम वह नगर है जिसे मैंने सारे इस्राएल
के परिवार समूह से चुना है। **33**मैं सुलैमान से राज्य ले
लूँगा क्योंकि उसने मेरा अनुसरण करना छोड़ दिया।
वह सीदोनी देवमूर्ती अश्तोरेत की पूजा करता है। वह
अश्तोरेत, सीदोनी देवता, मोआबी देवता कमोश और
अम्मोनी देवता मिल्कोम की पूजा करता है। सुलैमान ने
सच्चे और अच्छे कामों को करना छोड़ दिया है। वह
मेरे नियमों और आदेशों का पालन नहीं करता। वह
उस प्रकार नहीं रहता जिस प्रकार उसका पिता दाऊद
रहता था। **34**इसलिये मैं राज्य को सुलैमान के परिवार
से ले लूँगा। किन्तु मैं सुलैमान को उसके शेष जीवन
भर उनका शासक रहने दूँगा। यह मैं अपने सेवक
दाऊद के लिये करूँगा। मैंने दाऊद को इसलिये चुना
था कि वह मेरे सभी आदेशों व नियमों का पालन
करता था। **35**किन्तु मैं उसके पुत्र से राज्य ले लूँगा और
यारोबाम मैं तुम्हें दस परिवार समूह पर शासन करने
दूँगा। **36**मैं सुलैमान के पुत्र को एक परिवार समूह पर
शासन करते हुए रहने दूँगा। मैं इसे इसलिये करूँगा कि
मेरे सेवक दाऊद का शासन यरूशलेम में मेरे सामने
सदैव रहेगा। यरूशलेम वह नगर है जिसे मैंने अपना
निजी नगर चुना है। **37**किन्तु मैं तुम्हें उन सभी पर
शासन करने दूँगा जिसे तुम चाहते हो। तुम पूरे इस्राएल
पर शासन करोगे। **38**मैं यह सब तुम्हारे लिये करूँगा।
यदि तुम सच्चाई के साथ रहोगे और मेरे सारे आदेशों
का पालन करोगे तो मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुम्हारे
परिवार को राजाओं का परिवार वैसे ही बना दूँगा जैसे
मैंने दाऊद को बनाया। मैं तुमको इस्राएल दूँगा। **39**मैं
दाऊद की सन्तानों को उसका दण्ड दूँगा जो सुलैमान ने
किया। किन्तु मैं सदैव के लिये उन्हें दण्ड नहीं दूँगा।'"

सुलैमान की मृत्यु

40सुलैमान ने यारोबाम को मार डालने का प्रयत्न
किया। किन्तु यारोबाम मिस्र भाग गया। वह मिस्र के
राजा शीशक के पास गया। यारोबाम वहाँ तब तक
ठहरा जब तक सुलैमान मरा नहीं।

41सुलैमान ने अपने शासन काल में बहुत बड़े और
बुद्धिमत्तापूर्ण काम किये। जिनका विवरण "सुलैमान के
इतिहास-ग्रन्थ" में लिखा है। **42**सुलैमान ने यरूशलेम में
पूरे इस्राएल पर चालीस वर्ष तक शासन किया। **43**तब
सुलैमान मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया।

वह अपने पिता के दाऊद नगर में दफनाया गया, और उसका पुत्र रहूबियाम उसके स्थान पर राजा बना।

गृह युद्ध

12 1-2नबात का पुत्र यारोबाम तब भी मिस्र में था, जहाँ वह सुलैमान से भागकर पहुँचा था। जब उसने सुलैमान की मृत्यु की खबर सुनी तो वह एप्रैम की पहाड़ियों में अपने जेरदा नगर में वापस लौट आया।

राजा सुलैमान मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया
गया। उसके बाद उसका पुत्र रहूबियाम नया राजा बना।
3इस्राएल के सभी लोग शकेम गए। वे रहूबियाम को
राजा बनाने गये। रहूबियाम भी राजा बनने के लिये
शकेम गया। लोगों ने रहूबियाम से कहा, 4"तुम्हारे पिता
ने हम लोगों को बहुत कठोर श्रम करने के लिये विवश किया। अब तुम इसे हम लोगों के लिये कुछ सरल करो। उस कठिन काम को बन्द करो जिसे करने के लिये तुम्हारे पिता ने हमें विवश किया था। तब हम तुम्हारी सेवा करेंगे।"

5रहूबियाम ने उत्तर दिया, "तीन दिन में मेरे पास वापस लौट कर आओ और मैं उत्तर दूँगा।" अत: लोग चले गये।

6कुछ अग्रज लोग थे जो सुलैमान के जीवित रहते उसके निर्णय करने में सहायता करते थे। इसलिये राजा रहूबियाम ने इन व्यक्तियों से पूछा कि उसे क्या करना चाहिये। उसने कहा, "आप लोग क्या सोचते हैं, मुझे इन लोगों को क्या उत्तर देना चाहिये?"

7अग्रजों ने उत्तर दिया, "यदि आज तुम उनके सेवक की तरह रहोगे तो वे सच्चाई से तुम्हारी सेवा करेंगे। यदि तुम दयालुता के साथ उनसे बातें करोगे तब वे तुम्हारी सदा सेवा करेंगे।"

8किन्तु रहूबियाम ने उनकी यह सलाह न मानी।
उसने उन नवयुवकों से सलाह ली जो उसके मित्र थे।
9रहूबियाम ने कहा, "लोग यह कहते हैं, 'हमें उससे सरल काम दो जो तुम्हारे पिता ने दिया था।' तुम क्या सोचते हो, मुझे लोगों को कैसे उत्तर देना चाहिये? मैं उनसे क्या कहूँ?"

10राजा के युवक मित्रों ने कहा, "वे लोग तुम्हारे पास आए और उन्होंने तुमसे कहा, 'तुम्हारे पिता ने हमें कठिन श्रम करने के लिये विवश किया। अब हम लोगों का काम सरल करें।' अत: तुम्हें डींग मारनी चाहिये और उनसे कहना चाहिये, 'मेरी छोटी उंगली
मेरे पिता के पूरे शरीर से अधिक शक्तिशाली है। 11मेरे
पिता ने तुम्हें कठिन श्रम करने को विवश किया। किन्तु मैं उससे भी बहुत कठिन काम कराऊँगा! मेरे पिता ने तुमसे काम लेने के लिये कोड़ों का उपयोग किया था। मैं तुम्हें उन कोड़ो से पीटूँगा जिनमें धारदार लोहे के टुकड़े हैं, तुम्हें घायल करने के लिये!'"

12रहूबियाम ने लोगों से कहा था, "तीन दिन में मेरे पास वापस आओ।" इसलिये तीन दिन बाद इस्राएल के
सभी लोग रहूबियाम के पास लौटे। 13उस समय राजा
रहूबियाम ने उनसे कठोर शब्द कहे। उसने अग्रजों की
सलाह न मानी। 14उसने वही किया जो उसके मित्रों ने
उसे करने को कहा। रहूबियाम ने कहा, "मेरे पिता ने तुम्हें कठिन श्रम करने को विवश किया। अत: मैं तुम्हें और अधिक काम दूँगा। मेरे पिता ने तुमको कोड़े से पीटा। किन्तु मैं तुम्हें उन कोड़ों से पीटूँगा जिनमें तुम्हें घायल करने के लिये धारदार लोहे के टुकड़े हैं।"
15अत: राजा ने वह नहीं किया जिसे लोग चाहते थे।
यहोवा ने ऐसा होने दिया। यहोवा ने यह अपनी उस प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिये किया जो उसने नाबात के पुत्र यारोबाम के साथ की थी। यहोवा ने अहिय्याह नबी का उपयोग यह प्रतिज्ञा करने के लिये किया था। अहिय्याह शीलो का था।

16इस्राएल के सभी लोगों ने समझ लिया कि नये राजा ने उनकी बात अनसुनी कर दी है। इसलिये लोगों ने राजा से कहा, "क्या हम दाऊद के परिवार के अंग हैं? नहीं! क्या हमें यिशै की भूमि में से कुछ मिला है? नहीं! अत: इस्राएलियों हम अपने घर चलें। दाऊद के पुत्र को अपने लोगों पर शासन करने दो।" अत: इस्राएल के
लोग अपने घर वापस गए। 17किन्तु रहूबियाम फिर भी
उन इस्राएलियों पर शासन करता रहा, जो यहूदा के नगरों में रहते थे।

18अदोराम नामक एक व्यक्ति सब श्रमिकों का अधिकारी था। राजा रहूबियाम ने अदोराम को लोगों से बात चीत करने के लिये भेजा। किन्तु इस्राएल के लोगों ने उस पर तब तक पत्थर बरसाये जब तक वह मर नहीं गया। तब राजा रहूबियाम अपने रथ तक दौड़ा
और यरूशलेम को भाग निकला। 19इस प्रकार इस्राएल
ने दाऊद के परिवार से विद्रोह कर दिया और वे अब भी आज तक दाऊद के परिवार के विरुद्ध हैं।

20इस्राएल के सभी लोगों ने सुना कि यारोबाम वापस लौट आया है। इसलिये उन्होंने उसे एक सभा में आमन्त्रित किया और उसे पूरे इस्राएल का राजा बना दिया। केवल यहूदा का परिवार समूह ही एक मात्र परिवार समूह था जो दाऊद के परिवार का अनुसरण करता रहा।

21रहूबियाम यरूशलेम को वापस गया। उसने यहूदा के परिवार समूह और बिन्यामीन के परिवार समूह को इकट्ठा किया। यह एक लाख अस्सी हजार पुरुषों की सेनाथी। रहूबियाम इस्राएल के लोगों के विरुद्ध युद्ध लड़ना चाहता था। वह अपने राज्य को वापस लेना चाहता था।

22किन्तु यहोवा ने परमेश्वर के एक व्यक्ति से बातें की। उसका नाम शमायाह था। परमेश्वर ने कहा,
23"यहूदा के राजा, सुलैमान के पुत्र, रहूबियाम और

यहूदा तथा बिन्यामीन के सभी लोगों से बात करो।
24उनसे कहो, 'यहोवा कहता है कि तुम्हें अपने भाईयों
इस्राएल के लोगों के विरुद्ध युद्ध में नहीं जाना चाहिये।
तुम सबको घर लौट जाना चाहिये। मैंने इन सभी घटनाओं
को घटित होने दिया है।'" अत: रहूबियाम की सेना के
पुरुषों ने यहोवा का आदेश माना। वे, सभी अपने घर
लौट गए।

25शकेम, एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में एक नगर था।
यारोबाम ने शकेम को एक सुदृढ़ नगर बनाया और
उसमें रहने लगा। इसके बाद वह पनूएल नगर को गया
और उसे भी सुदृढ़ किया।

26-27यारोबाम ने अपने मन में सोचा, "यदि लोग
यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर को जाते रहे तो वे
दाऊद के परिवार द्वारा शासित होना चाहेंगे। लोग फिर
यहूदा के राजा रहूबियाम का अनुसरण करना आरम्भ
कर देंगे। तब वे मुझे मार डालेंगे।" 28इसलिये राजा ने
अपने सलाहकारों से पूछा कि उसे क्या करना चाहिये?
उन्होंने उसे अपनी सलाह दीं। अत: यारोबाम ने दो
सुनहले बछड़े बनाये। राजा यारोबाम ने लोगों से कहा,
"तुम्हें उपासना करने यरूशलेम नहीं जाना चाहिये।
इस्राएलियों, ये देवता हैं जो तुम्हें मिस्र से बाहर ले
आए।"*

29राजा यारोबाम ने एक सुनहले बछड़े को बेतेल में
रखा। उसने दूसरे सुनहले बछड़े को दान में रखा।
30किन्तु यह बहुत बड़ा पाप था। इस्राएल के लोगों ने
बेतेल और दान नगरों की यात्रा बछड़ों की पूजा करने
के लिये की। किन्तु यह बहुत बड़ा पाप था।

31यारोबाम ने उच्च स्थानों, पर पूजागृह भी बनाए।
उसने इस्राएल के विभिन्न परिवार समूहों से याजक भी
चुने। (उसने केवल लेवी परिवार समूह से याजक नहीं
चुने।) 32और राजा यारोबाम ने एक नया पर्व आरम्भ
किया। यह पर्व यहूदा के "फसहपर्व" की तरह था।
किन्तु यह पर्व आठवें महीनें के पन्द्रहवें दिन था—पहले
महीने के पन्द्रहवें दिन नहीं। उस समय राजा बेतेल नगर
की वेदी पर बलि भेंट करता था और वह बलि उन
बछड़ों को भेंट करता था जिन्हें उसने बनवाया था।
राजा यारोबाम ने बेतेल में उन उच्चस्थानों के लिये
याजक भी चुने, जिन्हें उसने बनाया था। 33इसलिये राजा
यारोबाम ने इस्राएलियों के लिये पर्व के लिये अपना ही
समय चुना। यह आठवें महीने का पन्द्रहवाँ दिन था।
उन दिनों वह उस वेदी पर बलि भेंट करता था और
सुगन्धि जलाता था जिसे उसने बनाया था। यह बेतेल
नगर में था।

मिस्र से बाहर ले आए यह ठीक वही कथन है जो हारून ने तब कहा जब उसने मरुभूमि में सुनहला बछड़ा बनाया। देखें निर्गमन 32:4

परमेश्वर बेतेल के विरुद्ध घोषणा करता है

13 यहोवा ने यहूदा के निवासी परमेश्वर के एक
व्यक्ति (नबी) को यहूदा से बेतेल नगर में जाने
का आदेश दिया। राजा यारोबाम उस समय सुगन्धि भेंट
करता हुआ वेदी के पास खड़ा था जिस समय परमेश्वर
का व्यक्ति (नबी) वहाँ पहुँचा। 2यहोवा ने उस परमेश्वर
के व्यक्ति को आदेश दिया था कि तुम वेदी के विरुद्ध
बोलना। उसने कहा, "वेदी, यहोवा तुमसे कहता है:
'दाऊद के परिवार में एक पुत्र योशिय्याह नामक उत्पन्न
होगा। ये याजक अब उच्च स्थानों पर पूजा कर रहे हैं।
किन्तु वेदी, योशिय्याह उन याजकों को तुम पर रखेगा
और वह उन्हें मार डालेगा। अब वे याजक तुम पर
सुगन्धि जलाते हैं। किन्तु योशिय्याह तुम पर नर–अस्थियाँ
जलायेगा। तब तुम्हारा उपयोग दुबारा नहीं हो सकेगा।'"

3परमेश्वर के व्यक्ति ने यह सब घटित होगा, इसका
प्रमाण लोगों को दिया। उसने कहा, यहोवा ने जिसके
विषय में मुझसे कहा है उसका प्रमाण यह है। यहोवा ने
कहा, "यह वेदी दो टुकड़े हो जायेगी और इसकी राख
जमीन पर गिर पड़ेगी।"

4राजा यारोबाम ने परमेश्वर के व्यक्ति से बेतेल में
वेदी के प्रति दिया सन्देश सुना। उसने वेदी से हाथ खींच
लिया और व्यक्ति की ओर संकेत किया। उसने कहा,
"इस व्यक्ति को बन्दी बना लो!" किन्तु राजा ने जब यह
कहा तो उसके हाथ को लकवा मार गया। वह उसे
हिला नहीं सका। 5वेदी के भी टुकड़े–टुकड़े हो गए।
उसकी सारी राख जमीन पर गिर पड़ी। यह इसका
प्रमाण था कि परमेश्वर के व्यक्ति ने जो कहा वह
परमेश्वर की तरफ से था। 6तब राजा यारोबाम ने
परमेश्वर के व्यक्ति से कहा, "कृपया यहोवा अपने
परमेश्वर से मेरे लिये प्रार्थना करें। यहोवा से याचना
करें कि वह मेरी भुजा स्वस्थ कर दे।"

अत: "परमेश्वर के व्यक्ति" ने यहोवा से प्रार्थना की
और राजा की भुजा स्वस्थ हो गई। यह वैसी ही हो गई
जैसी पहले थी। 7तब राजा ने परमेश्वर के व्यक्ति से
कहा, "कृपया मेरे साथ घर चलें। आएं और मेरे साथ
भोजन करें मैं आपको एक भेंट दूँगा।"

8किन्तु परमेश्वर के व्यक्ति ने राजा से कहा, "मैं
आपके साथ घर नहीं जाऊँगा। यदि आप मुझे अपना
आधा राज्य भी दें तो भी मैं नहीं जाऊँगा। मैं इस स्थान
पर न कुछ खाऊँगा, न ही कुछ पीऊँगा। 9यहोवा ने मुझे
आदेश दिया है कि मैं कुछ न तो खाऊँ न ही पीऊँ।
यहोवा ने यह भी आदेश दिया है कि मैं उस मार्ग से
यात्रा न करुँ जिसका उपयोग मैंने यहाँ आते समय
किया।"

10इसलिये उसने भिन्न सड़क से यात्रा की। उसने
उसी सड़क का उपयोग नहीं किया जिसका उपयोग
उसने बेतेल को आते समय किया था।

11बेतेल नगर में एक वृद्ध नबी रहता था। उसके पुत्र आए और उन्होंने उसे बताया कि परमेश्वर के व्यक्ति ने बेतेल में क्या किया। उन्होंने अपने पिता से वह भी कहा जो परमेश्वर के व्यक्ति ने राजा यारोबाम से कहा था। 12वृद्ध नबी ने कहा, "जब वह चला तो किस सड़क से गया?" अत: पुत्रों ने अपने पिता को वह सड़क दिखाई जिससे यहूदा से आने वाला परमेश्वर का व्यक्ति गया था। 13वृद्ध नबी ने अपने पुत्रों से अपने गधे पर काठी रखने के लिये कहा। अत: उन्होंने काठी गधे पर डाली। तब नबी अपने गधे पर चल पड़ा।

14वृद्ध नबी परमेश्वर के व्यक्ति के पीछे गया। वृद्ध नबी ने परमेश्वर के व्यक्ति को एक बांजवृक्ष के नीचे बैठे देखा। वृद्ध नबी ने पूछा, "क्या आप वही परमेश्वर के व्यक्ति हैं जो यहूदा से आए हैं?"

परमेश्वर के व्यक्ति ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं ही हूँ।"

15इसलिये वृद्ध नबी ने कहा, "कृपया घर चलें और मेरे साथ भोजन करें।"

16किन्तु परमेश्वर के व्यक्ति ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हारे साथ घर नहीं जा सकता। मैं इस स्थान पर तुम्हारे साथ खा–पी भी नहीं सकता। 17यहोवा ने मुझसे कहा, 'तुम उस स्थान पर कुछ खाना पीना नहीं और तुम्हें उसी सड़क से वापस लौटना भी नहीं है जिससे तुम वहाँ आए।'"

18तब वृद्ध नबी ने कहा, "किन्तु मैं भी तुम्हारी तरह नबी हूँ।" तब वृद्ध नबी ने एक झूठ बोला। उसने कहा, "यहोवा के यहाँ से एक स्वर्गदूत मेरे पास आया। स्वर्गदूत ने मुझसे तुम्हें अपने घर लाने और तुम्हें मेरे साथ भोजन पानी करने की स्वीकृति दी है।"

19इसलिये परमेश्वर का व्यक्ति वृद्ध नबी के घर गया और उसके साथ खाया–पीया। 20जब वे मेज पर बैठे थे, यहोवा ने वृद्ध नबी से कहा।

21और वृद्ध नबी ने यहूदा के निवासी परमेश्वर के व्यक्ति के साथ बातचीत की। उसने कहा, "यहोवा ने कहा, कि तुमने उसकी आज्ञा का पालन नहीं किया। तुमने वह नहीं किया जिसके लिये यहोवा का आदेश था। 22यहोवा ने आदेश दिया था कि तुम्हें इस स्थान पर कुछ भी खाना या पीना नहीं चाहिये। किन्तु तुम वापस लौटे और तुमने खाया पीया। इसलिये तुम्हारा शव तुम्हारे परिवार की कब्रगाह में नहीं दफनाया जाएगा।"

23परमेश्वर के व्यक्ति ने भोजन करना और पीना समाप्त किया। तब वृद्ध नबी ने उसके लिये गधे पर काठी कसी और वह चला गया। 24घर की ओर यात्रा करते समय सड़क पर एक सिंह ने आक्रमण किया और परमेश्वर के व्यक्ति को मार डाला। नबी का शव सड़क पर पड़ा था। गधा और सिंह शव के पास खड़े थे। 25कुछ अन्य व्यक्ति उस सड़क से यात्रा कर रहे थे। उन्होंने शव को देखा और शव के पास सिंह को खड़ा देखा। वे व्यक्ति उस नगर को आए जहाँ नबी रहता था और वहाँ वह बताया जो उन्होंने सड़क पर देखा था।

26वृद्ध नबी ने उस व्यक्ति को धोखा दिया था और उसे वापस ले गया था। उसने जो कुछ हुआ था वह सुना और उसने कहा, "वह परमेश्वर का व्यक्ति है जिसने यहोवा के आदेश का पालन नहीं किया। इसलिये यहोवा ने उसे मारने के लिये एक सिंह भेजा। यहोवा ने कहा कि उसे यह करना चाहिये।" 27तब नबी ने अपने पुत्रों से कहा, "मेरे गधे पर काठी डालो। अत: उसके पुत्रों ने उसके गधे पर काठी डाली। 28वृद्ध नबी गया और उसके शव को सड़क पर पड़ा पाया। गधा और सिंह तब भी उसके पास खड़े थे। सिंह ने शव को नहीं खाया था और गधे को चोट नहीं पहुँचाई थी। 29वृद्ध नबी ने शव को अपने गधे पर रखा। वह शव को वापस ले गया जिससे उसके लिये रो सके और उसे दफ़ना सके। 30वृद्ध नबी ने उसे अपने परिवार की कब्रगाह में दफनाया। वृद्ध नबी उसके लिये रोया। वृद्ध नबी ने कहा, "ऐ मेरे भाई मैं तुम्हारे लिये दु:खी हूँ।" 31इस प्रकार वृद्ध नबी ने शव को दफनाया। तब उसने अपने पुत्रों से कहा, "जब मैं मरुँ तो मुझे इसी कब्र में दफनाना। मेरी अस्थियों को उसकी अस्थियों के समीप रखना। 32जो बातें यहोवा ने उसके द्वारा कहलवाई है वे निश्चित ही सत्य घटित होगी। यहोवा ने उसका उपयोग बेतेल की वेदी और शोमरोन के अन्य नगरों में स्थित उच्च स्थानों के विरुद्ध बोलने के लिये किया।"

33राजा यारोबाम ने अपने को नहीं बदला। वह पाप कर्म करता रहा। वह विभिन्न परिवार समूहों से लोगों को याजक बनने के लिये चुनता रहा। वे याजक उच्च स्थानों पर सेवा करते थे। जो कोई याजक होना चाहता था याजक बन जाने दिया जाता था। 34यही पाप था जो उसके राज्य की बरबादी और विनाश का कारण बना।

यारोबाम का पुत्र मर जाता है

14 उस समय यारोबाम का पुत्र अबिय्याह बहुत बीमार पड़ा। 2यारोबाम ने अपनी पत्नी से कहा, "शीलो जाओ। जाओ और अहिय्याह नबी से मिलो। अहिय्याह वह व्यक्ति है जिसने कहा था कि मैं इस्राएल का राजा बनूँगा। अपने वस्त्र ऐसे पहनों कि कोई न समझे कि तुम मेरी पत्नी हो। 3नबी को दस रोटियाँ, कुछ पुए और शहद का एक घड़ा दो। तब उससे पूछो कि हमारे पुत्र का क्या होगा। अहिय्याह नबी तुम्हें बतायेगा।"

4इसलिये राजा की पत्नी ने वह किया जो उसने कहा। वह शीलो गई। वह अहिय्याह नबी के घर गई। अहिय्याह बहुत बूढ़ा और अन्धा हो गया था। 5किन्तु यहोवा ने उससे कहा, "यारोबाम की पत्नी तुमसे अपने

पुत्र के बारे में पूछने के लिये आ रही है। वह बीमार है।" यहोवा ने अहिय्याह को बताया कि उसे क्या कहना चाहिये।

यारोबाम की पत्नी अहिय्याह के घर पहुँची। वह प्रयत्न कर रही थी कि लोग न जाने कि वह कौन है।
6अहिय्याह ने उसके द्वार पर आने की आवाज सुनी। अत: अहिय्याह ने कहा, "यारोबाम की पत्नी, यहाँ आओ। तुम क्यों यह प्रयत्न कर रही हो कि लोग यह समझें कि तुम कोई अन्य हो? मेरे पास तुम्हारे लिये कुछ बुरी सूचनायें हैं। 7वापस लौटो और यारोबाम से कहो कि यहोवा इस्राएल का परमेश्वर, जो कहता है, वह यह है। यहोवा कहता है, 'यारोबाम, इस्राएल के सभी लोगों में से मैंने तुम्हें चुना। मैंने तुम्हें अपने लोगों का शासक बनाया। 8दाऊद के परिवार ने इस्राएल पर शासन किया किन्तु मैंने उनसे राज्य ले लिये और उसे तुमको दे दिया। किन्तु तुम मेरे सेवक दाऊद के समान नहीं हो। उसने मेरे आदेशों का सदा पालन किया। उसने पूरे हृदय से मेरा अनुसरण किया। उसने वे ही काम किये जिन्हें मैंने स्वीकार किया। 9किन्तु तुमने बहुत से भीषण पाप किये हैं। तुम्हारे पाप उन सभी के पापों से अधिक हैं जिन्होंने तुमसे पहले शासन किया। तुमने मेरा अनुसरण करना बन्द कर दिया है। तुमने मूर्तियाँ और अन्य देवता बनाये। इसने मुझे बहुत क्रोधित किया। इससे मैं बहुत क्रुद्ध हुआ हूँ। 10अत: यारोबाम, मैं तुम्हारे परिवार पर विपत्ति लाऊँगा। मैं तुम्हारे परिवार के सभी पुरुषों को मार डालूँगा। मैं तुम्हारे परिवार को पूरी तरह वैसे ही नष्ट कर डालूँगा जैसे आग उपलों को नष्ट करती है।
11तुम्हारे परिवार का जो कोई नगर में मरेगा उसे कुत्ते खायेंगे और तुम्हारे परिवार का जो कोई व्यक्ति मैदान में मरेगा उसे पक्षी खायेंगे। यहोवा ने यह कहा है।'"

12तब अहिय्याह नबी यारोबाम की पत्नी से बात करता रहा। उसने कहा, "अब तुम घर जाओ। जैसे ही तुम अपने नगर में प्रवेश करोगी तुम्हारा पुत्र मरेगा।
13सारा इस्राएल उसके लिये रोएगा और उसे दफनाएगा। मात्र तुम्हारा पुत्र ही यारोबाम के परिवार में ऐसा होगा जिसे दफनाया जाएगा। इसका कारण यह है कि यारोबाम के परिवार में केवल वही ऐसा व्यक्ति है जिसने यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर को प्रसन्न किया है। 14यहोवा इस्राएल का एक नया राजा बनायेगा। वह नया राजा यारोबाम के परिवार को नष्ट करेगा। यह बहुत शीघ्र होगा। 15तब यहोवा इस्राएल को चोट पहुँचायेगा। इस्राएल के लोग बहुत डर जायेंगे—वे जल की लम्बी घास की तरह काँपेंगे। यहोवा इस्राएलियों को इस अच्छे प्रदेश से उखाड़ देगा। यह वही भूमि है जिसे उसने उनके पूर्वजों को दिया था। वह उनको फरात नदी की दूसरी ओर बिखेर देगा। यह होगा, क्योंकि यहोवा लोगों पर क्रोधित है। लोगों ने उसको तब क्रोधित किया जब उन्होंने अशेरा की पूजा के लिये विशेष स्तम्भ खड़े किये।
16यारोबाम ने पाप किया और तब यारोबाम ने इस्राएल के लोगों से पाप करवाया। अत: यहोवा इस्राएल के लोगों को पराजित होने देगा।"

17यारोबाम की पत्नी तिरजा को लौट गई। ज्यों ही वह घर में घुसी, लड़का मर गया। 18पूरे इस्राएल ने उसको दफनाया और उसके लिये वे रोये। यह ठीक वैसे ही हुआ जैसा यहोवा ने होने को कहा था। यहोवा ने अपने सेवक अहिय्याह नबी का उपयोग ये बातें कहने के लिये किया।

19राजा यारोबाम ने अन्य बहुत से काम किये। उसने युद्ध किये और लोगों पर शासन करता रहा। उसने जो कुछ किया वह सब "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा हुआ है। 20यारोबाम ने बाईस वर्ष तक राजा के रूप में शासन किया। तब वह मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। उसका पुत्र नादाब उसके बाद नया राजा हुआ।

21उस समय जब सुलैमान का लड़का रहूबियाम यहूदा का राजा बना, वह इकतालीस वर्ष का था। रहूबियाम ने यरूशलेम नगर में सत्रह वर्ष तक शासन किया। यह वही नगर है जिसमें यहोवा ने सम्मानित होना चुना। उसने इस्राएल के अन्य सभी नगरों में से इस नगर को चुना। रहूबियाम की नामा नामक माँ अम्मोन की थी।

22यहूदा के लोगों ने भी पाप किये और उन कामों को किया जिन्हें यहोवा ने बुरा कहा था। लोगों ने अपने ऊपर यहोवा को क्रोधित करने के लिये और अधिक बुरे काम किये। वे लोग अपने उन पूर्वजों से भी बुरे थे जो उनके पहले वहाँ रहते थे। 23लोगों ने उच्च स्थान, पत्थर के स्मारक और पवित्र स्तम्भ बनाए। उन्होंने उन्हें हर एक ऊँचे पहाड़ पर एवं प्रत्येक पेड़ के नीचे बनाये।

24ऐसे भी लोग थे जिन्होंने अपने तन को शारीरिक सम्बन्धों के लिये बेचकर अन्य देवताओं की सेवा की।* इस प्रकार यहूदा के लोगों ने अनेक बुरे काम किये। जो लोग उस देश में उनसे पहले रहते थे उन्होंने भी वे ही पापपूर्ण काम किये थे और परमेश्वर ने उन लोगों से वह देश ले लिया था और इस्राएल के लोगों को दे दिया था।

25रहूबियाम के राज्य काल के पाँचवें वर्ष मिस्र का राजा शीशक यरूशलेम के विरुद्ध लड़ा। 26शीशक ने यहोवा के मन्दिर और राजा के महल से खजाने ले लिये। उसने उन सुनहली ढालों को भी ले लिया जिन्हें दाऊद ने अराम के राजा हददजर के अधिकारियों से

ऐसे ... सेवा की इस प्रकार के शारीरिक सम्बन्धो के पाप कनानी देवताओं की पूजा-पद्धति के अंग थे।

लिया था। दाऊद इन ढालों को यरूशलेम ले गया था।
किन्तु शीशक ने सभी सुनहली ढालें ले लीं। 27अत:
राजा रहूबियाम ने उनके स्थान पर रखने के लिये
अनेक ढालें बनवाई। किन्तु ये ढालें काँसे की थीं, सोने
की नहीं। उसने ये ढालें उन पुरुषों को दीं जो महल के
द्वारों की रक्षा करते थे। 28जब कभी राजा यहोवा के
मन्दिर को जाता था, द्वाररक्षक उसके साथ हर बार
जाते थे। वे ढालें ले जाते थे। जब वे काम पूरा कर लेते
थे तब वे रक्षक कक्ष में ढालों को लटका देते थे।

29राजा रहूबियाम ने जो कुछ किया वह सब, "यहूदा
के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा हुआ
है। 30रहूबियाम और यारोबाम सदैव एक दूसरे के विरुद्ध
युद्ध करते रहे।

31रहूबियाम मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया
गया। उसे उसके पूर्वजों के साथ दाऊद नगर में दफनाया
गया। (उसकी माँ नामा, अम्मोन की थी।) रहूबियाम
का पुत्र अबिय्याम उसके बाद नया राजा बना।

यहूदा का राजा अबिय्याम

15 नाबात का पुत्र यारोबाम इस्राएल पर शासन
कर रहा था। यारोबाम के राज्यकाल के
अट्ठारहवें वर्ष, अबिय्याम यहूदा का नया राजा बना।
2अबिय्याम ने तीन वर्ष तक शासन किया। उसकी माँ
का नाम माका था। वह अबशालोम की पुत्री थी।

3उसने वे सभी पाप किये जो उसके पिता ने उसके
पहले किये थे। अबिय्याम अपने पितामह दाऊद की
तरह यहोवा, अपने परमेश्वर का भक्त नहीं था। 4यहोवा
दाऊद से प्रेम करता था। अत: उसी के लिये यहोवा ने
अबिय्याम को यरूशलेम में राज्य दिया और यहोवा ने
उसे एक पुत्र दिया। यहोवा ने यरूशलेम को सुरक्षित भी
रहने दिया। यह उसने दाऊद के लिये किया। 5दाऊद ने
सदैव ही उचित काम किये जिन्हें यहोवा चाहता था।
उसने सदैव यहोवा के आदेशों का पालन किया था।
केवल एक बार दाऊद ने यहोवा का आदेश नहीं माना
था जब दाऊद ने हित्ती ऊरिय्याह के विरुद्ध पाप किया
था।

6रहूबियाम और यारोबाम हमेशा एक दूसरे के विरुद्ध
युद्ध लड़ते रहे। 7जो कुछ अन्य काम अबिय्याम ने किये
वह "यहूदा के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में
लिखा है। उस सारे समय में जब अबिय्याम राजा था,
यारोबाम और अबिय्याम के बीच युद्ध चलता रहा। 8जब
अबिय्याम मरा तो उसे दाऊद–नगर में दफनाया गया।
अबिय्याम का पुत्र "आसा" उसके बाद नया राजा हुआ।

यहूदा का राजा आसा

9इस्राएल के ऊपर यारोबाम के राजा के रूप में
शासन करने के बीसवें वर्ष में आसा यहूदा का राजा
बना। 10आसा ने यरूशलेम में इकतालीस वर्ष तक
शासन किया। उसकी पितामही का नाम माका था और
माका अबशालोम की पुत्री थी।

11आसा ने अपने पूर्वज दाऊद की तरह उन कामों
को किया जिन्हें यहोवा ने उचित कहा। 12उन दिनों ऐसे
लोग थे जो अपने तन को शारीरिक सम्बन्ध के लिये
बेचकर अन्य देवताओं की सेवा करते थे। आसा ने उन
लोगों को देश छोड़ने के लिये विवश किया। आसा ने
उन देव मूर्तियों को भी दूर किया जो उसके पूर्वजों ने
बनाई थी। 13आसा ने अपनी पितामही माका को रानी
पद से हटा दिया। माका ने देवी अशेरा की उन भंयकर
मूर्तियों में से एक को बनाया था। उसने इस भंयकर
मूर्ति को काट डाला। उसने उसे किद्रोन की घाटी में
जलाया। 14आसा ने उच्च स्थानों को नष्ट नहीं किया,
किन्तु वह पूरे जीवन भर यहोवा का भक्त रहा। 15आसा
के पिता ने कुछ चीजें परमेश्वर को दी थीं। आसा ने भी
परमेश्वर को कुछ भेंटे चढ़ाई थीं। उन्होंने, सोने चाँदी
और अन्य चीजों की भेंटे दीं। आसा ने उन सभी चीजों
को मन्दिर में जमा कर दिया।

16जब तक राजा आसा यहूदा का राजा था, वह सदैव
इस्राएल के राजा बाशा के विरुद्ध युद्ध करता रहा।
17बाशा यहूदा के विरुद्ध लड़ता रहा। बाशा लोगों को,
आसा के देश यहूदा से आने अथवा जाने से रोकना
चाहता था। अत: उसने रामा नगर को बहुत सुदृढ़ बना
दिया। 18अत: आसा ने यहोवा के मन्दिर और राजमहल
के खजानों से सोना और चाँदी निकाला। उसने यह
सोना–चाँदी अपने सेवकों को दिया और उन्हें अराम
के राजा बेन्हदद के पास भेजा। बेन्हदद हेज्योन के पुत्र
तब्रिम्मोन का पुत्र था। उसने दमिश्क नगर में शासन
किया। 19आसा ने यह सन्देश भेजा, "मेरे पिता और
तुम्हारे पिता के मध्य एक शान्ति–सन्धि थी। अब मैं
तुम्हारे और अपने बीच एक शान्ति–सन्धि करना चाहता
हूँ। मैं तुम्हारे पास सोना–चाँदी की भेंट भेज रहा हूँ।
इस्राएल के राजा बाशा के साथ अपनी सन्धि तोड़ दो।
तब बाशा मेरे देश को छोड़ देगा।"

20राजा बेन्हदद ने आसा के सन्देश को स्वीकार
किया। अत: उसने इस्राएल के नगरों के विरुद्ध लड़ने
के लिये अपनी सेना भेजी। बेन्हदद ने इय्योन, दान,
आबेल्वेत्माका और गलीली झील के चारों ओर के
नगरों को पराजित किया। उसने सारे नप्ताली क्षेत्र को
हराया। 21बाशा ने इन आक्रमणों के बारे में सुना।
इसलिये उसने रामा को दृढ़ बनाना बन्द कर दिया।
उसने उस नगर को छोड़ दिया और तिर्सा को लौट
गया। 22तब राजा आसा ने यहूदा के सभी लोगों को
आदेश दिया कि हर एक व्यक्ति को सहायता देनी होगी।
वे रामा को गए और उन्होंने उन पत्थरों और लकड़ियों
को उठा लिया जिनका उपयोग बाशा नगर को दृढ़

बनाने के लिये कर रहा था। वे उन चीजों को बिन्यामीन
प्रदेश में गेबा और मिस्पा को ले गए। तब आसा ने उन
दोनों नगरों को बहुत अधिक दृढ़ बनाया।
23आसा के बारे में अन्य बातें, व महान कार्य जो
उसने किये और नगर जिन्हें उसने बनाया वह,"यहूदा
के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा है।
जब आसा बूढ़ा हुआ तो उसके पैर में एक रोग उत्पन्न
हुआ। 24आसा मरा और उसे उसके पूर्वज दाऊद के
नगर में दफनाया गया। तब आसा का पुत्र यहोशापात
उसके बाद नया राजा बना।

इस्राएल का राजा नादाब

25यहूदा पर आसा के राज्य काल के दूसरे वर्ष में
यारोबाम का पुत्र नादाब इस्राएल का राजा हुआ। नादाब
ने इस्राएल पर दो वर्ष तक शासन किया। 26नादाब ने
यहोवा के विरुद्ध बुरे काम किये। उसने वैसे ही पाप
किये जैसे उसके पिता यारोबाम ने किये थे और यारोबाम
ने इस्राएल के लोगों से भी पाप कराये थे।
27बाशा अहिय्याह का पुत्र था। वे इस्साकार के
परिवार समूह से थे। बाशा ने राजा नादाब को मार
डालने की एक योजना बनाई। यह वह समय था जब
नादाब और सारा इस्राएल गिब्बतोन नगर के विरुद्ध
युद्ध में लड़ रहे थे। यह एक पलिश्ती नगर था। उस
स्थान पर बाशा ने नादाब को मार डाला। 28यह यहूदा
पर आसा के राज्यकाल के तीसरे वर्ष में हुआ और
बाशा इस्राएल का अगला राजा बना।

इस्राएल का राजा बाशा

29जब बाशा नया राजा हुआ तो उसने यारोबाम के
परिवार के हर एक व्यक्ति को मार डाला। बाशा ने
यारोबाम के परिवार में किसी व्यक्ति को जीवित
नहीं छोड़ा। यह वैसे ही हुआ जैसा होने के लिये
यहोवा ने कहा था। यहोवा ने शीलो के अपने सेवक
अहिय्याह द्वारा यह कहा था। 30यह हुआ, क्योंकि
यारोबाम ने अनेक पाप किये थे और यारोबाम ने
इस्राएल के लोगों से अनेक पाप कराये थे। यारोबाम ने
यहोवा इस्राएल के परमेश्वर को बहुत क्रोधित कर
दिया था।
31नादाब ने जो अन्य काम किये वे "इस्राएल के
राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा हुआ
है। 32पूरे समय, जब तक बाशा इस्राएल का शासक
था, वह यहूदा के राजा आसा के विरुद्ध युद्ध में
लड़ता रहा।
33अहिय्याह का पुत्र बाशा, यहूदा पर आसा के राज्य
काल के तीसरे वर्ष में इस्राएल का राजा हुआ था। बाशा
तिर्सा में चौबीस वर्ष तक राजा रहा। 34किन्तु बाशा ने वे
कार्य किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। उसने वे ही
पाप किये जो उसके पूर्वज यारोबाम ने किये थे।
यारोबाम ने इस्राएल के लोगों से पाप कराये थे।

16 तब यहोवा ने हनान के पुत्र येहू से बातें की।
यहोवा राजा बाशा के विरुद्ध बातें कह रहा था।
2"मैंने तुमको एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बनाया। मैंने तुमको
अपने इस्राएल के लोगों के ऊपर राजा बनाया। किन्तु
तुमने यारोबाम का अनुसरण किया है। तुमने मेरे लोगों,
इस्राएलियों से पाप कराया है। उन्होंने अपने पापों से मुझे
क्रोधित किया है। 3इसलिये बाशा, मैं तुझे और तुम्हारे
परिवार को नष्ट करूँगा। मैं तुम्हारे साथ वही करूँगा
जो मैंने नबात के पुत्र यारोबाम के परिवार के साथ
किया। 4तुम्हारे परिवार के लोग नगर की सड़कों पर
मरेंगे और उनके शवों को कुत्ते खायेंगे। तुम्हारे परिवार
के कुछ लोग मैदानों में मरेंगे और उनके शवों को पक्षी
खायेंगे।"
5बाशा के विषय में अन्य बातें और जो महान कार्य
उसने किये सभी "इस्राएल के राजाओं के इतिहास"
नामक पुस्तक में लिखा है। 6बाशा मरा और तिर्सा में
दफनाया गया। उसका पुत्र एला उसके बाद नया राजा
बना।
7अत: यहोवा ने येहू नबी को एक सन्देश दिया। यह
सन्देश बाशा और उसके परिवार के विरुद्ध था। बाशा
ने यहोवा के विरुद्ध बुरे कर्म किये थे। इससे यहोवा
अत्यन्त क्रोधित हुआ। बाशा ने वही किया जो यारोबाम
के परिवार ने उससे पहले किया था। यहोवा इसलिये भी
क्रोधित था कि बाशा ने यारोबाम के पूरे परिवार को
मार डाला था।

इस्राएल का राजा एला

8यहूदा पर आसा के राज्य काल के छब्बीसवें वर्ष में
एला राजा हुआ। एला बाशा का पुत्र था। उसने तिर्सा में
दो वर्ष तक शासन किया।
9राजा एला के अधिकारियों में से जिम्री एक था।
जिम्री एला के आधे रथों को आदेश देता था। किन्तु
जिम्री ने एला के विरुद्ध योजना बनाई। राजा एला तिर्सा
में था। वह अर्सा के घर में दाखमधु पी रहा था और
मत्त हो रहा था। अर्सा, तिर्सा के महल का अधिकारी
था। 10जिम्री उस घर में गया और उसने राजा एला को
मार डाला। यहूदा पर आसा के राज्य काल के सत्ताईसवें
वर्ष में यह हुआ। तब एला के बाद इस्राएल का नया
राजा जिम्री हुआ।

इस्राएल का राजा जिम्री

11जब जिम्री राजा हुआ तो उसने बाशा के पूरे परिवार
को मार डाला। उसने बाशा के परिवार में किसी व्यक्ति
को जीवित नहीं रहने दिया। जिम्री ने बाशा के मित्रों को
भी मार डाला। 12इस प्रकार जिम्री ने बाशा के परिवार

को नष्ट किया। यह वैसे ही हुआ जैसा यहोवा ने, येहू नबी का उपयोग बाशा के विरुद्ध कहने को कहा था।
13यह, बाशा और उसके पुत्र एला के, सभी पापों के कारण हुआ। उन्होंने पाप किया था और इस्राएल के लोगों से पाप कराया था। यहोवा क्रोधित था क्योंकि उन्होंने बहुत सी देवमूर्तियाँ रखी थीं।

14"इस्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में ये अन्य सभी बातें लिखी हैं जो एला ने कीं।

15यहूदा पर आसा के राज्य काल के सत्ताईसवें वर्ष में जिम्री इस्राएल का राजा बना। जिम्री ने तिर्सा में सात दिन शासन किया। जो कुछ हुआ, यह है: इस्राएल की सेना गिब्बतोन के पलिश्तियों के समीप डेरा डाले पड़ी थी। वे युद्ध के लिये तैयार थे।
16पड़ाव में स्थित लोगों ने सुना कि जिम्री ने राजा के विरुद्ध गुप्त षड़यन्त्र रचा है।उन्होंने सुना कि उसने राजा को मार डाला। इसलिये सारे इस्राएल ने डेरे में, उस दिन ओम्री को इस्राएल का राजा बनाया। ओम्री सेनापति था।
17इसलिये ओम्री और सारे इस्राएल ने गिब्बतोन को छोड़ा और तिर्सा पर आक्रमण कर दिया।
18जिम्री ने देखा कि नगर पर अधिकार कर लिया गया है। अत: वह महल के भीतर चला गया और उसने आग लगानी आरम्भ कर दी। उसने महल और अपने को जला दिया।
19इस प्रकार जिम्री मरा क्योंकि उसने पाप किया था। जिम्री ने उन कामों को किया जिन्हें यहोवा ने बुरा कहा था। उसने वैसे ही पाप किये जैसे यारोबाम ने किये थे और यारोबाम ने इस्राएल के लोगों से पाप कराया था।

20"इस्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में जिम्री के गुप्त षड़यन्त्र और अन्य बातें लिखी हैं और जब जिम्री राजा एला के विरुद्ध हुआ, उस समय की घटनायें भी उसमें लिखी हैं।

इस्राएल का राजा ओम्री

21इस्राएली लोग दो दलों में बँट गये थे। आधे लोग गीनत के पुत्र तिब्नी का अनुसरण करते थे और उसे राजा बनाना चाहते थे। अन्य आधे लोग ओम्री के अनुयायी थे।
22किन्तु ओम्री के अनुयायी गीनत के पुत्र तिब्नी के अनुयायियों से अधिक शक्तिशाली थे। अत: तिब्नी मारा गया और ओम्री राजा हुआ।

23यहूदा पर आसा के राज्यकाल के इकतीसवें वर्ष में ओम्री इस्राएल का राजा हुआ। ओम्री ने इस्राएल पर बारह वर्ष तक शासन किया। उन वर्षों में से छ: वर्षों तक उसने तिर्सा नगर में शासन किया।
24किन्तु ओम्री ने शोमरोन की पहाड़ी को खरीद लिया। उसने इसे लगभग डेढ़ सौ पौंड चाँदी शमेर से खरीदा। ओम्री ने उस पहाड़ी पर एक नगर बसाया। उसने इसके स्वामी शमेर के नाम पर इस नगर का नाम शोमरोन रखा।

25ओम्री ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा घोषित किया था। ओम्री उन सभी राजाओं से बुरा था जो उसके पहले हो चुके थे।
26उसने वे ही पाप किये जो नबात के पुत्र यारोबाम ने किये थे। यारोबाम ने इस्राएल के लोगों से पाप कराया था। इसलिये उन्होंने यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर को बहुत क्रोधित कर दिया था। यहोवा क्रोधित था, क्योंकि वे निरर्थक देवमूर्तियों की पूजा करते थे।

27"इस्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में ओम्री के विषय में अन्य बातें और उसके किये महान कार्य लिखे गए हैं।
28ओम्री मरा और शोमरोन में दफनाया गया। उसका पुत्र अहाब उसके बाद नया राजा बना।

इस्राएल का राजा अहाब

29यहूदा पर आसा के राज्य काल के अड़तीसवें वर्ष में ओम्री का पुत्र अहाब इस्राएल का राजा बना।
30अहाब ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था और अहाब उन सभी राजाओं से भी बुरा था जो उसके पहले हुए थे।
31अहाब के लिये इतना ही काफी नहीं था कि वह वैसे ही पाप करे जैसे नबात के पुत्र यारोबाम ने किये थे। अत: अहाब ने एतबाल की पुत्री ईजेबेल से विवाह किया। एतबाल सीदोन के लोगों का राजा था। तब अहाब ने बाल की सेवा और पूजा करनी आरम्भ की।
32अहाब ने बाल की पूजा करने के लिये शोमरोन में पूजागृह बनाया। उसने पूजागृह में एक वेदी रखी।

33अहाब ने अशेरा की पूजा के लिये एक विशेष स्तम्भ भी खड़ा किया। अहाब ने यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर को क्रोधित करने वाले बहुत से काम, उन सभी राजाओं से अधिक किये, जो उसके पहले थे।

34अहाब के राज्य काल में बेतेल के हीएल ने यरीहो नगर को दुबारा बनाया। जिस समय हीएल ने नगर बनाने का काम आरम्भ किया, उसका बड़ा पुत्र अबीराम मर गया और जब हीएल ने नगर द्वार बनाये, उसका सबसे छोटा पुत्र सगूब मर गया। यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने नून के पुत्र यहोशू से बातें करते हुए कहा था।*

एलिय्याह और अनावृष्टि का समय

17 एलिय्याह गिलाद में तिशबी नगर का एक नबी था। एलिय्याह ने राजा अहाब से कहा, "मैं यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर की सेवा करता हूँ। उसकी शक्ति के बल पर मैं भविष्यवाणी करता हूँ कि अगले

जैसे यहोवा ने ... कहा था जिस समय यहोशू ने यरीहो को नष्ट किया उसने कहा था कि जो कोई इस नगर को दुबारा बनायेगा वह अपने जेठे और छोटे पुत्र से हाथ धोएगा।

कुछ वर्षों में न तो ओस गिरेगी, और न ही वर्षा होगी।
वर्षा तभी होगी जब मैं उसके होने का आदेश दूँगा।"
2तब यहोवा ने एलिय्याह से कहा, 3"इस स्थान को
छोड़ दो और पूर्व की ओर चले जाओ। करीत नाले के
पास छिप जाओ। यह नाला यरदन नदी के पूर्व में है।
4तुम नाले से पानी पी सकते हो। मैंने कौवों को आदेश
दिया है कि वे तुमको उस स्थान पर भोजन पहुँचायेंगे।"
5अत: एलिय्याह ने वही किया जो यहोवा ने करने को
कहा। वह यरदन नदी के पूर्व करीत नाले के समीप
रहने चला गया। 6हर एक प्रात: और सन्ध्या को कौवे
एलिय्याह के लिये भोजन लाते थे। एलिय्याह नाले से
पानी पीता था।

7वर्षा नहीं हुई अत: कुछ समय उपरान्त नाला सूख
गया। 8तब यहोवा ने एलिय्याह से कहा, 9"सीदोन में
सारपत को जाओ। वहीं रहो। उस स्थान पर एक विधवा
स्त्री रहती है। मैंने उसे तुम्हें भोजन देने का आदेश दिया
है।"

10अत: एलिय्याह सारपत पहुँचा। वह नगर–द्वार पर
पहुँचा और उसने एक स्त्री को देखा। उसका पति मर
चुका था। वह स्त्री ईंधन के लिये लकड़ियाँ इकट्ठी
कर रही थी। एलिय्याह ने उससे कहा, "क्या तुम एक
प्याले में थोड़ा पानी दोगी जिसे मैं पी सकूँ?" 11वह स्त्री
उसके लिये पानी लाने जा रही थी, तो एलिय्याह ने
कहा, "कृपया मेरे लिये एक रोटी का छोटा टुकड़ा भी
लाओ।"

12उस स्त्री ने उत्तर दिया, "मैं यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर
की शपथ खाकर कहती हूँ कि मेरे पास रोटी नहीं है।
मेरे पास बर्तन में मुट्ठी भर आटा और पीपे में थोड़ा सा
जैतून का तेल है। इस स्थान पर मैं ईंधन के लिये दो
चार लकड़ियाँ इकट्ठी करने आई थी। मैं इसे लेकर
घर लौटूँगी और अपना आखिरी भोजन पकाऊँगी। मैं
और मेरा पुत्र दोनों इसे खायेंगे और तब भूख से मर
जाएंगे।"

13एलिय्याह ने स्त्री से कहा, "परेशान मत हो। घर
लौटो और जैसा तुमने कहा, अपना भोजन पकाओ।
किन्तु तुम्हारे पास जो आटा है उसकी पहले एक
छोटी रोटी बनाना। उस रोटी को मेरे पास लाना। तब
अपने और अपने पुत्र के लिये पकाना। 14इस्राएल का
परमेश्वर, यहोवा कहता है, 'उस आटे का बर्तन कभी
खाली नहीं होगा। पीपे में तेल सदैव रहेगा। ऐसा तब
तक होता रहेगा जिस दिन तक यहोवा इस भूमि पर
पानी नहीं बरसाता।'"

15अत: वह स्त्री अपने घर लौटी। उसने वही किया
जो एलिय्याह ने उससे करने को कहा था। एलिय्याह,
वह स्त्री और उसका पुत्र बहुत दिनों तक पर्याप्त भोजन
पाते रहे। 16आटे का बर्तन और तेल का पीपा दोनों
कभी खाली नहीं हुआ। यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने
होने को कहा था। यहोवा ने एलिय्याह के द्वारा बातें
की थीं।

17कुछ समय बाद उस स्त्री का लड़का बीमार पड़ा।
वह अधिक, और अधिक बीमार होता गया। अन्त में
लड़के ने साँस लेना बन्द कर दिया। 18और उस स्त्री ने
एलिय्याह से कहा, "तुम परमेश्वर के व्यक्ति हो। क्या
तुम मुझे सहायता दे सकते हो? या क्या तुम मुझे सारे
पापों को केवल याद कराने के लिये यहाँ आये हो? क्या
तुम यहाँ मेरे पुत्र को केवल मरवाने आये थे?"

19एलिय्याह ने उससे कहा, "अपना पुत्र मुझे दो।"
एलिय्याह ने उसके लड़के को उससे लिया और सीढ़ियों
से ऊपर ले गया। उसने उसे उस कमरे में बिछौने पर
लिटाया जिसमें वह रुका हुआ था। 20तब एलिय्याह ने
प्रार्थना की, "हे यहोवा, मेरे परमेश्वर, यह विधवा मुझे
अपने घर में ठहरा रही है। क्या तू उसके साथ यह बुरा
काम करेगा? क्या तू उसके पुत्र को मरने देगा?" 21तब
एलिय्याह लड़के के ऊपर तीन बार लेटा। एलिय्याह ने
प्रार्थना की, "हे यहोवा, मेरे परमेश्वर! इस लड़के को
पुनर्जीवित कर।"

22"यहोवा ने एलिय्याह की प्रार्थना स्वीकार की। लड़का
पुन: साँस लेने लगा। वह जीवित हो गया। 23एलिय्याह
बच्चे को सीढ़ियों से नीचे ले गया। एलिय्याह ने उस
लड़के को उसकी माँ को दिया और कहा, "देखो,
तुम्हारा पुत्र जी उठा।"

24उस स्त्री ने उत्तर दिया, "अब मुझे विश्वास हो गया
कि तुम सच में परमेश्वर के यहाँ के व्यक्ति हो। मैं
समझ गई हूँ कि सचमुच में यहोवा तुम्हारे माध्यम से
बोलता है।"

एलिय्याह और बाल के नबी

18 अनावृष्टि के तीसरे वर्ष यहोवा ने एलिय्याह
से कहा, "जाओ, और राजा अहाब से मिलो। मैं
शीघ्र ही वर्षा भेजूँगा।" 2अत: एलिय्याह अहाब के पासगया।
उस समय शोमरोन में भोजन नहीं रह गया था।
3इसलिये राजा अहाब ने ओबद्याह से अपने पास आने
को कहा। ओबद्याह राज महल का अधिकारी था।
(ओबद्याह यहोवा का सच्चा अनुयायी था। 4एक बार
ईज़ेबेल यहोवा के सभी नबियों को जान से मार रही थी।
इसलिये ओबद्याह ने सौ नबियों को लिया और उन्हें दो
गुफाओं में छिपाया। ओबद्याह ने एक गुफा में पचास
नबी और दूसरी गुफा में पचास नबी रखे। तब ओबद्याह
उनके लिये पानी और भोजन लाया।) 5राजा अहाब ने
ओबद्याह से कहा, "मेरे साथ आओ। हम लोग इस प्रदेश
के हर एक सोते और नाले की खोज करेंगे। हम लोग
पता लगायेंगे कि क्या हम अपने घोड़ों और खच्चरों को
जीवित रखने के लिये पर्याप्त घास कहीं पा सकते हैं।
तब हमें अपना कोई जानवर खोना नहीं पड़ेगा।"

6हर एक व्यक्ति ने देश का एक भाग चुना जहाँ वे
पानी की खोज कर सकें। तब दोनों व्यक्ति पूरे देश में
घूमें। अहाब एक दिशा में अकेले गया। ओबद्याह दूसरी
दिशा में अकेले गया। 7जब ओबद्याह यात्रा कर रहा था
तो उस समय वह एलिय्याह से मिला। ओबद्याह ने जब
उसे देखा एलिय्याह को पहचान लिया। ओबद्याह एलिय्याह
के सामने प्रणाम करने झुका उसने कहा, "एलिय्याह!
क्या स्वामी सचमुच आप है?"

8एलिय्याह ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं ही हूँ। जाओ और
अपने स्वामी राजा से कहो कि मैं यहाँ हूँ।"

9तब ओबद्याह ने कहा, "यदि मैं अहाब से कहूँगा कि
मैं जानता हूँ कि तुम कहाँ हो, तो वह मुझे मार डालेगा!
मैंने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा है। तुम क्यों चाहते हो कि
मैं मर जाऊँ? 10यहोवा, तुम्हारे परमेश्वर की सत्ता जैसे
निश्चित है, वैसे ही यह निश्चित है, कि राजा तुम्हारी
खोज कर रहा है। उसने हर एक देश में तुम्हारा पता
लगाने के लिये आदमी भेज रखे हैं। यदि किसी देश के
राजा ने यह कहा कि तुम उसके देश में नहीं हो, तो
अहाब ने उसे यह शपथ खाने को विवश किया कि
तुम उसके देश में नहीं हो। 11अब तुम चाहते हो कि
मैं जाऊँ और उससे कहूँ कि तुम यहाँ हो? 12यदि मैं
जाऊँ और राजा अहाब से कहूँ कि तुम यहाँ हो तो
यहोवा तुम्हें किसी अन्य स्थान पर पहुँचा सकता है।
राजा अहाब यहाँ आयेगा और वह तुम्हें नहीं पा
सकेगा। तब वह मुझे मार डालेगा। मैंने यहोवा का
अनुसरण तब से किया है जब मैं एक बालक था।
13तुमने सुना है कि मैंने क्या किया था। ईज़ेबेल यहोवा
के नबियों को मार रही थी और मैंने सौ नबियों को
गुफाओं में छिपाया था। मैंने एक गुफा में पचास नबियों
और दूसरी गुफा में पचास नबियों को रखा था। मैं
उनके लिये अन्न-पानी लाया। 14अब तुम चाहते हो कि
मैं जाऊँ और राजा से कहूँ कि तुम यहाँ हो। राजा मुझे
मार डालेगा।"

15एलिय्याह ने उत्तर दिया, "जितनी सर्वशक्तिमान यहोवा
की सत्ता निश्चित है उतना ही निश्चित यह है कि मैं
आज राजा के सामने खड़ा होऊँगा।"

16इसलिये ओबद्याह राजा अहाब के पास गया। उसने
बताया कि एलिय्याह वहाँ है। राजा अहाब एलिय्याह से
मिलने गया।

17जब अहाब ने एलिय्याह को देखा तो उसने पूछा,
"क्या एलिय्याह तुम्हीं हो? तुम्हीं वह व्यक्ति हो जो इस्राएल
पर विपत्ति लाते हो।"

18एलिय्याह ने उत्तर दिया, "मैंने इस्राएल पर विपत्ति
नहीं ढाई। तुमने और तुम्हारे पिता के परिवार ने यह
सारी विपत्ति ढाई है। तुमने विपत्ति लानी तब आरम्भ की
जब तुमने यहोवा के आदेशों का पालन करना बन्द
कर दिया और असत्य देवताओं का अनुसरण आरम्भ
किया। 19अब सारे इस्राएलियों को कर्म्मेल पर्वत पर
मुझसे मिलने को कहो। उस स्थान पर बाल के चार सौ
पचास नबियों को भी लाओ और असत्य देवी अशेरा
के चार सौ नबियों को लाओ। रानी* ईज़ेबेल उन
नबियों का समर्थन करतीहै।"

20अत: अहाब ने सभी इस्राएलियों और उन नबियों
को कर्म्मेल पर्वत पर बुलाया। 21एलिय्याह सभी लोगों
के पास आया। उसने कहा, "आप लोग कब निर्णय
करेंगे कि आपको किसका अनुसरण करना है? यदि
यहोवा सच्चा परमेश्वर है तो आप लोगों को उसका
अनुयायी होना चाहिये। किन्तु यदि बाल सत्य परमेश्वर
है तो तुम्हें उसका अनुयायी होना चाहिये।"

लोगों ने कुछ भी नहीं कहा। 22अत: एलिय्याह ने
कहा, "मैं यहाँ यहोवा का एकमात्र नबी हूँ। मैं अकेला
हूँ। किन्तु यहाँ बाल के चार सौ पचास नबी हैं। 23इसलिये
दो बैल लाओ। बाल के नबी को एक बैल लेने दो। उन्हें
उसे मारने दो और उसके टुकड़े करने दो और तब
उन्हें, माँस को लकड़ी पर रखने दो। किन्तु वे आग
लगाना आरम्भ न करें। तब मैं वही काम दूसरे बैल को
लेकर करूँगा और मैं आग लगाना आरम्भ नहीं करूँगा।
24बाल के नबी! बाल से प्रार्थना करेंगे और मैं यहोवा से
प्रार्थना करुँगा। जो ईश्वर प्रार्थना को स्वीकार करे
और अपनी लकड़ी को जलाना आरम्भ कर दे, वही
सच्चा परमेश्वर है।"

सभी लोगों ने स्वीकार किया कि यह उचित विचार
है।

25तब एलिय्याह ने बाल के नबियों से कहा, "तुम बड़ी
संख्या में हो। अत: तुम लोग पहल करो। एक बैल को
चुनो और उसे तैयार करो। किन्तु आग लगाना आरम्भ
न करो।"

26अत: नबियों ने उस बैल को लिया जो उन्हें दिया
गया। उन्होंने उसे तैयार किया। उन्होंने दोपहर तक बाल
से प्रार्थना की। उन्होंने प्रार्थना की, "बाल, कृपया हमें
उत्तर दे!" किन्तु कोई आवाज नहीं आई। किसी ने कोई
उत्तर नहीं दिया। नबी उस वेदी के चारों ओर नाचते रहे
जिसे उन्होंने बनाया था। किन्तु आग फिर भी नहीं
लगी।

27दोपहर को एलिय्याह ने उनका मजाक उड़ाना
आरम्भ किया। एलिय्याह ने कहा, "यदि बाल सचमुच
देवता है तो कदाचित् तुम्हें और अधिक जोर से प्रार्थना
करनी चाहिये! कदाचित् वह सोच रहा हो या कदाचित्
वह बहुत व्यस्त हो, या कदाचित वह किसी यात्रा पर
निकल गया हो। वह सोता रह सकता है। कदाचित् तुम
लोग और अधिक जोर से प्रार्थना करो और जगाओ!"
28उन्होनें और जोर से प्रार्थना की। उन्होंने अपने को

रानी वे नबी ईज़ेबेल के मेज पर भोजन करते हैं।

तलवार और भालों से काटा–छेदा। (यह उनकी
पूजा–पद्धति थी।) उन्होंने अपने को इतना काटा कि
उनके ऊपर खून बहने लगा। 29तीसरा पहर बीता किन्तु
तब तक आग नहीं लगी। नबी उन्मत्त रहे जब तक
सन्ध्या की बलि–भेंट का समय नहीं आ पहुँचा। किन्तु
तब तक भी बाल ने कोई उत्तर नहीं दिया। कोई अवाज
नहीं आई। कोई नहीं सुन रहा था!

30तब एलिय्याह ने सभी लोगों से कहा, "अब मेरे पास
आओ।" अत: सभी लोग एलिय्याह के चारों ओर
इकट्ठे हो गए। यहोवा की वेदी उखाड़ दी गई थी। अत:
एलिय्याह ने इसे जमाया। 31एलिय्याह ने बारह पत्थर
प्राप्त किए। हर एक बारह परिवार समूहों के लिये एक
पत्थर था। इन बारह परिवारों के नाम याकूब के बारह
पुत्रों के नाम पर थे। याकूब वह व्यक्ति था जिसे यहोवा
ने इस्राएल नाम दिया था। 32एलिय्याह ने उन पत्थरों का
उपयोग यहोवा को सम्मान देने के लिये वेदी के निर्माण
में किया। एलिय्याह ने वेदी के चारों ओर एक छोटी
खाई खोदी। यह इतनी चौड़ी और इतनी गहरी थी कि
इसमें लगभग सात गैलन पानी आ सके। 33तब एलिय्याह
ने वेदी पर लकड़ियाँ रखीं। उसने बैल को टुकड़ों में
काटा। उसने टुकड़ों को लकड़ियों पर रखा। 34तब
एलिय्याह ने कहा, "चार घड़ों को पानी से भरो। पानी
को माँस के टुकड़ों और लकड़ियों पर डालो।" तब
एलिय्याह ने कहा, "यही फिर करो।" तब उसने कहा,
"इसे तीसरी बार करो।" 35पानी वेदी से बाहर बहा और
उससे खाई भर गई।

36यह तीसरे पहर की बलि–भेंट का समय था। अत:
एलिय्याह नबी वेदी के पास गया और प्रार्थना की, "हे
यहोवा इब्राहीम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर! मैं
तुझसे याचना करता हूँ कि तू प्रमाणित कर कि तू
इस्राएल का परमेश्वर है और प्रमाणित कर कि मैं तेरा
सेवक हूँ। इन लोगों के सामने यह प्रकट कर कि तूने
यह सब करने का मुझे आदेश दिया है। 37यहोवा मेरी
प्रार्थना का उत्तर दे। इन लोगों के सामने प्रकट कर कि
हे यहोवा तू वास्तव में परमेश्वर है। तब लोग समझेंगे
कि तू उन्हें अपने पास वापस ला रहा है।"

38अत: यहोवा ने नीचे आग भेजी। आग ने बलि,
लकड़ी, पत्थरों और वेदी के चारों ओर की भूमि को
जला दिया। आग ने खाई का सारा पानी भी सूखा दिया।
39सभी लोगों ने यह होते देखा। लोग भूमि पर प्रणाम
करने झुके और कहने लगे, "यहोवा परमेश्वर है!
यहोवा परमेश्वर है!"

40तब एलिय्याह ने कहा, "बाल के नबियों को पकड़
लो! उनमें से किसी को बच निकलने न दो!" अत:
लोगों ने सभी नबियों को पकड़ा। तब एलिय्याह उन
सभी को किशोन नाले तक ले गया। उस स्थान पर
उसने सभी नबियों को मार डाला।

वर्षा पुन: होती है

41तब एलिय्याह ने राजा अहाब से कहा, "अब जाओ,
खाओ, और पिओ। एक घनघोर वर्षा आ रही है।"
42अत: राजा अहाब भोजन करने गया। उसी समय
एलिय्याह कर्म्मेल पर्वत की चोटी पर चढ़ा। पर्वत की
चोटी पर एलिय्याह प्रणाम करने झुका। उसने अपने
सिर को अपने घुटनों के बीच में रखा। 43तब एलिय्याह
ने अपने सेवक से कहा, "समुद्र की ओर देखो।"

सेवक उस स्थान तक गया जहाँ से वह समुद्र को देख
सके। तब सेवक लौट कर आया और उसने कहा,
"मैंने कुछ नहीं देखा।" एलिय्याह ने उसे पुन: जाने और
देखने को कहा। यह सात बार हुआ। 44सातवीं बार
सेवक लौट कर आया और उसने कहा, "मैंने एक
छोटा बादल मनुष्य की मुट्ठीं के बराबर देखा है। बादल
समुद्र से आ रहा था।"

एलिय्याह ने सेवक से कहा, "राजा अहाब के पास
जाओ और उससे कहो कि वह अपना रथ तैयार कर
ले और अब घर वापस जाये। यदि वह अभी नहीं जायेगा
तो वर्षा उसे रोक लेगी।"

45थोड़े समय के बाद आकाश काले मेघों से ढक
गया। तेज हवायें चलने लगीं और घनघोर वर्षा होने
लगी। अहाब अपने रथ में बैठा और यिज्रेल को वापस
यात्रा करनी आरम्भ की। 46एलिय्याह के अन्दर यहोवा
की शक्ति आई। एलिय्याह ने अपने वस्त्रों को अपनी
चारों ओर कसा, जिससे वह दौड़ सके। तब एलिय्याह
यिज्रेल तक के पूरे मार्ग पर राजा अहाब से आगे दौड़ता
रहा।

सीनै पर्वत पर एलिय्याह

19 राजा अहाब ने ईज़ेबेल को वे सभी बातें बताई
जो एलिय्याह ने कीं। अहाब ने उसे बताया कि
एलिय्याह ने कैसे सभी नबियों को एक ही तलवार से
मौत के घाट उतारा। 2इसलिये ईज़ेबेल ने एलिय्याह के
पास एक दूत भेजा। ईज़ेबेल ने कहा, "मैं प्रतिज्ञा करती
हूँ कि इस समय से पहले कल मैं तुमको वैसे ही मारूँगी
जैसे तुमने नबियों को मारा। यदि मैं सफल नहीं होती तो
देवता मुझे मार डालें।"

3जब एलिय्याह ने यह सुना तो वह डर गया। अत: वह
अपनी जान बचाने के लिये भाग गया। वह अपने साथ
अपने सेवक को ले गया। वे बेर्शेबा पहुँचे जो यहूदा में
है। एलिय्याह ने अपने सेवक को बेर्शेबा में छोड़ा। 4तब
एलिय्याह पूरे दिन मरुभूमि में चला। एलिय्याह एक
झाड़ी के नीचे बैठा। उसने मृत्यु की याचना की। एलिय्याह
ने कहा, "यहोवा यह मेरे लिये बहुत है मुझे मरने दे। मैं
अपने पूर्वजों से अधिक अच्छा नहीं हूँ।"

5तब एलिय्याह पेड़ के नीचे लेट गया और सो गया।
एक स्वर्गदूत एलिय्याह के पास आया और उसने उसका

स्पर्श किया। स्वर्गदूत ने कहा, “उठो, खाओ!” 6एलिय्याह
ने देखा कि उसके बहुत निकट कोयले पर पका एक
पुआ और पानी भरा घड़ा है। एलिय्याह ने खाया–पीया।
तब वह फिर सो गया।
7बाद में, यहोवा का स्वर्गदूत उसके पास फिर
आया। स्वर्गदूत ने कहा, “उठो, खाओ!” यदि तुम ऐसा
नहीं करते तो तुम इतने शक्तिशाली नहीं होगे,
जिससे तुम लम्बी यात्रा कर सको।” 8अत: एलिय्याह
उठा। उसने खाया, पिया। भोजन ने उसे इतना शक्तिशाली
बना दिया कि वह चालीस दिन और रात यात्रा कर
सके। वह होरेब पर्वत तक गया जो परमेश्वर का
पर्वत है। 9वहाँ एलिय्याह एक गुफा में घुसा और
सारी रात ठहरा।
तब यहोवा ने एलिय्याह से बातें कीं। यहोवा ने कहा,
“एलिय्याह, तुम यहाँ क्यों आए हो?”
10एलिय्याह ने उत्तर दिया, “यहोवा सर्वशक्तिमान
परमेश्वर, मैंने तेरी सेवा सदैव की है। मैंने तेरी सेवा
सर्वोत्तम रूप में सदैव यथासम्भव की है। किन्तु इस्राएल
के लोगों ने तेरे साथ की गई वाचा तोड़ी है। उन्होंने तेरी
वेदियों को नष्ट किया है। उन्होंने तेरे नबियों को मार
डाला है। मैं एकमात्र ऐसा नबी हूँ जो जीवित बचा हूँ और
अब वे मुझे मार डालना चाहते हैं!”
11तब यहोवा ने एलिय्याह से कहा, “जाओ, मेरे सामने
पर्वत पर खड़े होओ। मैं तुम्हारे बगल से निकलूँगा।”*
तब एक प्रचंड आँधी चली। आँधी ने पर्वतों को तोड़
गिराया। इसने यहोवा के सामने विशाल चट्टानों को
तोड़ डाला। किन्तु वह आँधी यहोवा नहीं था। उस आँधी
के बाद भूकम्प आया। किन्तु वह भूकम्प यहोवा नहीं
था। 12भूकम्प के बाद वहाँ अग्नि था। किन्तु वह आग
यहोवा नहीं थी। आग के बाद वहाँ एक शान्त और
मद्धिम स्वर सुनाई पड़ा।
13जब एलिय्याह ने वह स्वर सुना तो उसने अपने
अंगरखे से अपना मुँह ढक लिया। तब वह गया और
गुफा के द्वार पर खड़ा हुआ। तब एक वाणी ने उससे
कहा, “एलिय्याह, यहाँ तुम क्यों हो?”
14एलिय्याह ने उत्तर दिया, “यहोवा सर्वशक्तिमान
परमेश्वर, मैंने सर्वोत्तम यथासम्भव तेरी सेवा की है।
किन्तु इस्राएल के लोगों ने तेरे साथ की गई अपनी
वाचा तोड़ी है। उन्होंने तेरी वेदियाँ नष्ट कीं। उन्होंने तेरे
नबियों को मारा। मैं एकमात्र ऐसा नबी हूँ जो अभी तक
जीवित है और अब वे मुझे मार डालने का प्रयत्न कर
रहे हैं।”
15यहोवा ने कहा, “दमिश्क के चारों ओर की मरुभूमि
को पहुँचाने वाली सड़क से वापस लौटो। दमिश्क में
जाओ और हजाएल का अभिषेक अराम के राजा के
रुप में करो। 16तब निमशी के पुत्र येहू का अभिषेक
इस्राएल के राजा के रूप में करो। उसके बाद आबेल
महोला के शापात के पुत्र एलीशा का अभिषेक करो।
वह तुम्हारे स्थान पर नबी बनेगा। 17हजाएल अनेक बुरे
लोगों को मार डालेगा। येहू किसी को भी मार डालेगा
जो हजाएल की तलवार से बच निकलता है। 18एलिय्याह!
इस्राएल में तुम ही एक मात्र विश्वासपात्र व्यक्ति नहीं हो।
वे पुरुष बहुत से लोगों को मार डालेंगे, किन्तु उसके
बाद भी वहाँ इस्राएल में सात हजार लोग ऐसे होंगे
जिन्होंने बाल को कभी प्रणाम नहीं किया। मैं उन सात
हजार लोगों को जीवित रहने दूँगा, क्योंकि उन लोगों में
से किसी ने कभी बाल की देवमूर्ति को चूमा तक
नहीं।”

एलीशा एक नबी बनता है

19इसलिये एलिय्याह ने उस स्थान को छोड़ा और
शापात के पुत्र एलीशा की खोज में निकला। एलीशा
बारह एकड़ भूमि में हल चलाता था। एलीशा आखिरी
एकड़ को जोत रहा था जब एलिय्याह वहाँ आया।
एलिय्याह एलीशा के पास गया। तब एलिय्याह ने अपना
अंगरखा* एलीशा को पहना दिया। 20एलीशा ने तुरन्त
अपनी बैलों को छोड़ा और एलिय्याह के पीछे दौड़ गया।
एलिशा ने कहा, “मुझे अपनी माँ को चूमने दो और
पिता से विदा लेने दो। फिर मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।”
एलिय्याह ने उत्तर दिया, “यह अच्छा है। जाओ, मैं
तुम्हें रोकूँगा नहीं।”
21तब एलीशा ने अपने परिवार के साथ विशेष भोजन
किया। एलीशा गया और अपनी बैलों को मार डाला।
उसने हल की लकड़ी का उपयोग आग जलाने के लिये
किया। तब उसने माँस को पकाया और लोगों में बाँट
दिया। लोगों ने माँस खाया। तब एलीशा गया और उसने
एलिय्याह का अनुसरण किया। एलीशा एलिय्याह का
सहायक बना।

बेन्हदद और अहाब युद्ध में उतरते हैं

20 बेन्हदद अराम का राजा था। उसने अपनी
सारी सेना इकट्ठी की। उसके साथ बत्तीस
राजा थे। उनके पास घोड़े और रथ थे। उन्होंने शोमरोन
पर आक्रमण किया और उसके विरुद्ध लड़े। 2राजा ने
नगर में इस्राएल के राजा अहाब के पास दूत भेजे।
3सूचना यह थी, “बेन्हदद कहता है, ‘तुम्हें अपना सोना–
चाँदी मुझे देना पड़ेगा। तुम्हें अपनी पत्नियाँ और बच्चे
भी मुझको देने होंगे।’”

जाओ ... निकलूँगा यह उस समय के समान है जिस समय परमेश्वर मूसा के सामने प्रकट हुआ था।

अंगरखा यह विशेष चोंगा था, जिससे यह पता चलता था कि एलिय्याह नबी है। एलीशा को इस अंगरखा को देना यह प्रकट करता था कि एलीशा एलिय्याह के स्थान पर नबी हो गया है।

4इस्राएल के राजा ने उत्तर दिया, "ऐ मेरे स्वामी राजा!
मैं स्वीकार करता हूँ कि अब मैं आपके अधीन हूँ और
जो कुछ मेरा है वह आपका है।"
5तब दूत अहाब के पास वापस आया। उन्होंने कहा,
"बेन्हदद कहता है, 'मैंने पहले ही तुमसे कहा था कि
तुम्हें सारा सोना चाँदी तथा अपनी स्त्रियों, बच्चों को
मुझको देना पड़ेगा। 6अब मैं अपने व्यक्तियों को भेजना
चाहता हूँ जो महल में सर्वत्र और तुम्हारे आधीन शासन
करने वाले और अधिकारियों के घरों में खोज करेंगे।
मेरे व्यक्ति जो चाहेंगे लेंगे।'"
7अत: राजा अहाब ने अपने देश के सभी अग्रजों
(प्रमुखों) की एक बैठक बुलाई। अहाब ने कहा, "देखो
बेन्हदद विपत्ति लाना चाहता है। प्रथम तो उसने मुझसे
यह माँग की है कि मैं उसे अपनी पत्नियाँ, अपने बच्चे
और अपना सोना-चाँदी दे दूँ। मैंने उसे वे चीजें देनी
स्वीकार कर ली और अब वह सब कुछ लेना चाहता
है।"
8किन्तु अग्रजों (प्रमुखों) और सभी लोगों ने कहा,
"उसका आदेश न मानो। वह न करो जिसे करने को
वह कहता है।"
9इसलिये अहाब ने बेन्हदद को सन्देश भेजा। अहाब
ने कहा, "मैं वह कर दूँगा जो तुमने पहले कहा था।
किन्तु मैं तुम्हारे दूसरे आदेश का पालन नहीं कर
सकता।"
राजा बेन्हदद के दूत सन्देश राजा तक ले गये। 10तब
वे बेन्हदद के अन्य सन्देश के साथ लौटे। सन्देश यह
था, "मैं शोमरोन को पूरी तरह नष्ट करूँगा। मैं प्रतिज्ञा
करता हूँ कि उस नगर का कुछ भी नहीं बचेगा। उस
नगर का इतना कुछ भी नहीं बचेगा कि वह हमारे
व्यक्तियों के लिये नगर की यादगार के रूप में अपने
घर ले जाने को पर्याप्त हो। परमेश्वर मुझे नष्ट कर दे
यदि मैं ऐसा न करूँ।"
11राजा अहाब ने उत्तर दिया, "बेन्हदद से कहो कि
उस व्यक्ति को, जिसने अपना कवच धारण किया हो,
उस व्यक्ति की तरह डींग नहीं हाँकनी चाहिये जो उसे
उतारने के लिये लम्बा जीवन जीता है।"
12राजा बेन्हदद ने अपने अन्य प्रशासकों के साथ
अपने तम्बू में मदिरा पान कर रहा था। उसी समय दूत
आया और उसने राजा अहाब का सन्देश दिया। राजा
बेन्हदद ने अपने व्यक्तियों को नगर पर आक्रमण करने
के लिये तैयार होने को कहा। अत: सैनिक युद्ध के
लिये अपना स्थान लेने बढ़े।
13इसी समय, एक नबी, राजा अहाब के पास पहुँचा।
नबी ने कहा, "राजा अहाब यहोवा तुमसे कहता है,
'क्या तुम उस बड़ी सेना को देखते हो! मैं यहोवा, आज
तुम्हें उस सेना को हराने दूँगा। तब तुम जानोगे कि मैं
यहोवा हूँ।'"
14अहाब ने कहा, "उन्हें पराजित करने के लिये तुम
किसका उपयोग करोगे?"
नबी ने उत्तर दिया, "यहोवा कहता है, "सरकारी
अधिकारियों के युवक सहायक।" तब राजा ने पूछा,
"मुख्य सेना का सेनापतित्व कौन सम्भालेगा?"
नबी ने उत्तर दिया, "तुम सम्भालोगे।"
15अत: अहाब ने सरकारी अधिकारियों के युवक
सहायकों को इकट्ठा किया। सब मिलाकर ये दो सौ
बत्तीस युवक थे। तब राजा ने इस्राएल की सेना को एक
साथ बुलाया। सारी संख्या सात हजार थी।
16दोपहर को, राजा बेन्हदद और उसके सहायक
बत्तीस राजा अपने डेरे में मदिरा पान कर रहे थे और
मद मत्त हो रहे थे। इसी समय राजा अहाब का
आक्रमण आरम्भ हुआ। 17युवक सहायकों ने प्रथम
आक्रमण किया। बेन्हदद के व्यक्तियों ने उससे कहा
कि सैनिक शोमरोन से बाहर निकल आये हैं। 18अत:
बेन्हदद ने कहा, "वे युद्ध करने के लिये आ रहे होंगे
या वे शान्ति-सन्धि करने आ रहे होंगे। उन्हें जीवित
पकड़ लो।"
19राजा अहाब के युवक आक्रमण की पहल कर
रहे थे। इस्राएल की सेना उनके पीछे चल रही थी।
20किन्तु इस्राएल के हर एक व्यक्ति ने उस पुरुष को
मार डाला जो उसके विरुद्ध आया। अत: अराम के
सैनिकों ने भागना आरम्भ किया। इस्राएल की सेना ने
उनका पीछा किया। राजा बेन्हदद अपने रथों के एक
घोड़े पर बैठकर भाग निकला। 21राजा अहाब सेना
को लेकर आगे बढ़ा और उसने अराम की सेना के
सारे घोड़ों और रथों को ले लिया। इस प्रकार राजा
अहाब ने अरामी सेना को भारी पराजय दी।
22तब नबी राजा अहाब के पास पहुँचा और कहा,
"अराम का राजा बेन्हदद अगले बसन्त में तुमसे युद्ध
करने के लिये फिर आयेगा। अत: तुम्हें अब घर लौट
जाना चाहिये और अपनी सेना को पहले से अधिक
शक्तिशाली बनाना चाहिये और उसके विरुद्ध सुरक्षा
की सुनियोजित योजना बनानी चाहिये।"

बेन्हदद पुन: आक्रमण करता है

23राजा बेन्हदद के अधिकारियों ने उससे कहा,
"इस्राएल के देवता पर्वतीय देवता है। हम लोग पर्वतीय
क्षेत्र में लड़े थे। इसलिये इस्राएल के लोग विजयी हुए।
अत:हम लोग उनसे समतल मैदान में युद्ध करें। तब हम
विजय पाएंगे। 24तुम्हें यही करना चाहिए। बत्तीस राजाओं
को सेना का सेनापतित्व करने को अनुमति न दो।
सेनापतियों को ही अपनी सेना का संचालन करने दो ।
25"अब तुम वैसी ही सेना बनाओ जो नष्ट हुई सेना
की तरह हो। उसी सेना की तरह घोड़े और रथ इकट्ठे
करो। तब हम लोग इस्राएलियों से समतल मैदान में युद्ध

करें। तब हम विजय प्राप्त करेंगे।" बेन्हदद ने उनकी
सलाह मान ली। उसने वही किया जो उन्होंने कहा।

26अत: बसन्त में बेन्हदद ने अराम के लोगों को
इकट्ठा किया। वह इस्राएल के विरुद्ध युद्ध करने अपेक
गया।

27इस्राएलियों ने भी युद्ध की तैयारी की। इस्राएल के
लोग अराम की सेना से लड़ने गये। उन्होंने अपने डेरे
अराम के डेरे के सामने डाले। शत्रु की तुलना में
इस्राएली बकरियों के दो छोटे झुण्डों के समान दिखाई
पड़ते थे किन्तु अराम की सेना सारे क्षेत्र को ढकी थी।

28परमेश्वर का एक व्यक्ति इस सन्देश के साथ
इस्राएल के राजा के पास आया: "यहोवा ने कहा है,
'अराम के लोगों ने कहा है कि मैं अर्थात् यहोवा पर्वतों
का परमेश्वर हूँ। वे समझते हैं कि घाटियों का परमेश्वर
मैं नहीं हूँ। इसलिए मैं तुम्हें इस विशाल सेना को पराजित
करने दूँगा। तब तुम समझोगे कि मैं यहोवा सर्वत्र हूँ।'"

29सेनायें सात दिन तक एक दूसरे के आमने सामने
डेरा डाले रहीं। सातवें दिन युद्ध आरम्भ हुआ। इस्राएलियों
ने एक दिन में अराम के एक लाख सैनिकों को मार
डाला। **30**बचे हुए सैनिक अपेक नगर को भाग गए।
नगर प्राचीर उन सत्ताईस हजार सैनिकों पर गिर पड़ी।
बेन्हदद भी नगर को भाग गया। वह एक कमरे में छिप
गया। **31**उसके सेवकों ने उससे कहा, "हम लोगों ने
सुना है कि इस्राएल कुल के राजा लोग दयालु हैं। हम
लोग मोटे

वस्त्र पहने और सिर पर रस्सी डाले।* तब हम लोग
इस्राएल के राजा के पास चलें। सभंव है, वह हमें जीवित
रहने दे।"

32उन्होंने मोटे वस्त्र पहने और रस्सी सिर पर डाली।
वे इस्राएल के राजा के पास आए। उन्होंने कहा, "तुम्हारा
सेवक बेन्हदद कहता है, 'कृपया मुझे जीवित रहने दें।'"

अहाब ने उत्तर दिया, "क्या वह अभी तक जीवित है?
वह मेरा भाई है।"*

33बेन्हदद के व्यक्ति राजा अहाब से ऐसा कुछ कहलवाना
चाहते थे, जिससे यह पता चले कि वह बेन्हदद को नहीं
मारेगा। जब अहाब ने बेन्हदद को भाई कहा तो सलाहकारों
ने तुरन्त कहा, "हाँ! बेन्हदद आपका भाई है।"

अहाब ने कहा, "उसे मेरे पास लाओ।" अत: बेन्हदद
राजा अहाब के पास आया। राजा अहाब ने अपने साथ
उसे अपने रथ में बैठने को कहा।

34बेन्हदद ने उससे कहा, "अहाब मैं उन नगरों को
तुम्हें दे दूँगा जिन्हें मेरे पिता ने तुम्हारे पिता से ले लिये थे
और तुम दमिश्क में वैसे ही दुकाने रख सकते हो जैसे
मेरे पिता ने शोमरोन में रखी थीं।"

अहाब ने उत्तर दिया, "यदि तुम इसे स्वीकार करते
हो तो मैं तुम्हें जाने के लिये स्वतन्त्र करता हूँ।" अत:
दोनों राजाओं ने एक शान्ति-सन्धि की। तब राजा अहाब
ने बेन्हदद को जाने के लिये स्वतन्त्र कर दिया।

एक नबी अहाब के विरुद्ध भविष्यवाणी करता है

35नबियों में से एक ने दूसरे नबी से कहा, "मुझ पर
चोट करो!" उसने उससे यह करने के लिये कहा
क्योंकि यहोवा ने ऐसा आदेश दिया था। किन्तु दूसरे
नबी ने उस पर चोट करने से इन्कार कर दिया।
36इसलिये पहले नबी ने कहा, "तुमने यहोवा के आदेश
का पालन नहीं किया। अत: जब तुम इस स्थान को
छोड़ोगे, एक सिंह तुम्हें मार डालेगा।" दूसरे नबी ने उस
स्थान को छोड़ा और उसे एक सिंह ने मार डाला।

37प्रथम नबी दूसरे व्यक्ति के पास गया और कहा,
"मुझ पर चोट करो।" उस व्यक्ति ने उस पर चोट की।
नबी को चोट आई। **38**अत: नबी ने अपने चेहरे पर एक
वस्त्र लपेट लिया। इस प्रकार कोई यह नहीं समझ सकता
था कि वह कौन है। वह नबी गया और उसने सड़क
के किनारे राजा की प्रतीक्षा आरम्भ की। **39**राजा उधर
से निकला और नबी ने उससे कहा, "मैं युद्ध में लड़ने
गया था। हमारे व्यक्तियों में से मेरे पास शत्रु सैनिक को
लाया। उस व्यक्ति ने कहा, 'इस व्यक्ति की पहरेदारी
करो। यदि यह भाग गया तो इसके स्थान पर तुम्हें
अपना जीवन देना होगा या तुम्हें पचहत्तर पौंड चाँदी
जुर्माने में देनी होगी।' **40**किन्तु मैं अन्य कामों में व्यस्त
हो गया। अत: वह व्यक्ति भाग निकला।"

इस्राएल के राजा ने कहा, "तुमने कहा है कि तुम
सैनिक को भाग जाने देने के अपराधी हो। अत: तुमको
उत्तर मालूम है। तुम्हें वही करना चाहिये जिसे करने
को उस व्यक्ति ने कहा है।"

41तब नबी ने अपने मुख से कपड़े को हटाया। इस्राएल
के राजा ने देखा और यह जान लिया कि वह नबियों में
से एक है। **42**तब नबी ने राजा से कहा, "यहोवा तुमसे
यह कहता है, 'तुमने उस व्यक्ति को स्वतन्त्र किया जिसे
मैंने मर जाने को कहा। अत: उसका स्थान तुम लोगे,
तुम मर जाओगे और तुम्हारे लोग दुश्मनों का स्थान
लेंगे, तुम्हारे लोग मरेंगे।'"

43तब राजा अपने घर शोमरोन लौट गया। वह बहुत
परेशान और घबराया हुआ था।

नाबोत के अंगूर का बाग

21 राजा अहाब का महल शोमरोन में था। महल
के पास एक अंगूरों का बाग था। यिज्रेल नाबोत
नामक व्यक्ति इस फलों के बाग का स्वामी था। **2**एक

हम लोग ... रस्सी डालें यह इस बात को प्रकट करता था कि वे अधीनता स्वीकार करते हैं और आत्मसर्मपण चाहते हैं।

भाई है शान्ति-सन्धि करने वाले लोग प्राय: एक दूसरे को भाई कहते थे। वे मानों एक परिवार के हो।

दिन अहाब ने नाबोत से कहा, "अपना यह फलों का
बाग मुझे दे दो। मैं इसे सब्जियों का बाग बनाना चाहता
हूँ। तुम्हारा बाग मेरे महल के पास है। मैं इसके बदले
तुम्हें इससे अच्छा अंगूर का बाग दूँगा या, यदि तुम
पसन्द करोगे तो इसका मूल्य मैं सिक्कों में चुकाऊँगा।"

3नाबोत ने उत्तर दिया, "मैं अपनी भूमि तुम्हें कभी
नहीं दूँगा। यह भूमि मेरे परिवार की है।"

4अत: अहाब अपने घर गया। वह नाबोत पर क्रोधित
और बिगड़ा हुआ था। उसने उस बात को पसन्द नहीं
किया जो यिज्रेल के व्यक्ति ने कही थी। (नाबोत ने
कहा था, "मैं अपने परिवार की भूमि तुम्हें नहीं दूँगा।")
अहाब अपने बिस्तर पर लेट गया। उसने अपना मुख
मोड़ लिया और खाने से इन्कार कर दिया।

5अहाब की पत्नी ईज़ेबेल उसके पास गई। ईज़ेबेल ने
उससे कहा, "तुम घबराये क्यों हो? तुमने खाने से
इन्कार क्यों किया है?"

6अहाब ने उत्तर दिया, "मैंने यिज्रेल के नाबोत से
उसकी भूमि माँगी। मैंने उससे कहा कि मैं उसकी पूरी
कीमत चुकाऊँगा, या, यदि वह चाहेगा तो मैं उसे दूसरा
बाग दूँगा। किन्तु नाबोत ने अपना बाग देने से इन्कार
कर दिया।"

7ईज़ेबेल ने उत्तर दिया, "किन्तु तुम तो पूरे इस्राएल के
राजा हो अपने बिस्तर से उठो। कुछ भोजन करो, तुम
अपने को स्वस्थ अनुभव करोगे। मैं नाबोत का बाग
तुम्हारे लिये ले लूँगी।"

8तब ईजेबेल ने कुछ पत्र लिखे। उसने पत्रों पर अहाब
के हस्ताक्षर बनाये। उसने अहाब की मुहर पत्रों को
बन्द करने के लिये उन पर लगाई। तब उसने उन्हें
अग्रजों (प्रमुखों) और विशेष व्यक्तियों के पास भेजे जो
उसी नगर में रहते थे जिसमें नाबोत रहता था। **9**पत्र में
यह लिखा था:

यह घोषणा करो कि एक ऐसा दिन होगा जिस दिन
लोग कुछ भी भोजन नहीं करेंगे। तब नगर के सभी
लोगों की एक साथ एक बैठक बुलाओ। बैठक में हम
नाबोत के बारे में बात करेंगे। **10**किसी ऐसे व्यक्ति का
पता करो जो नाबोत के विषय में झूठ बोले। वे लोग यह
कहें कि उन्होंने सुना कि नाबोत ने राजा और परमेश्वर
के विरुद्ध कुछ बातें कहीं। तब नाबोत को नगर के
बाहर ले जाओ और उसे पत्थरों से मार डालो।

11अत: यिज्रेल के अग्रजों (प्रमुखों) और विशेष व्यक्तियों
ने उस आदेश का पालन किया। **12**प्रमुखों ने घोषणा की
कि एक दिन ऐसा होगा जब सभी व्यक्ति कुछ भी भोजन
नहीं करेंगे। उस दिन उन्होंने सभी लोगों की बैठक एक
साथ बुलाई। उन्होंने नाबोत को विशेष स्थान पर लोगों
के सामने रखा।

13तब दो व्यक्तियों ने लोगों से कहा कि उन्होंने नाबोत
को परमेश्वर और राजा के विरुद्ध बातें करते सुना है।
अत: लोग नाबोत को नगर के बाहर ले गए। तब
उन्होंने उसे पत्थरों से मार डाला। **14**तब प्रमुखों ने एक
सन्देश ईज़ेबेल को भेजा। सन्देश था: "नाबोत पत्थरों से
मार डाला गया।"

15जब ईज़ेबेल ने यह सुना तो उसने अहाब से कहा,
"नाबोत मर गया। अब तुम जा सकते हो और उस बाग
को ले सकते हो जिसे तुम चाहते थे।" **16**अत: अहाब
अंगूरों के बाग में गया और उसे अपना बना लिया।

17इस समय यहोवा ने एलिय्याह से बातें की। (एलिय्याह
तिशबी का नबी था।) **18**यहोवा ने कहा, "राजा अहाब
के पास शोमरोन को जाओ। अहाब नाबोत के अगूंरों
के बाग में होगा। वह वहाँ पर उस बाग को अपना
बनाने के लिये होगा। **19**अहाब से कहो, मैं यहोवा उससे
कहता हूँ, 'अहाब! तुमने नाबोत नामक व्यक्ति को मार
डाला है। अब तुम उसकी भूमि ले रहे हो। अत: मैं तुमसे
कहता हूँ, तुम भी उसी स्थान पर मरोगे जिस स्थान पर
नाबोत मरा। जिन कुत्तों ने नाबोत के खून को चाटा, वे
ही तुम्हारा खून उस स्थान पर चाटेंगे।'"

20अत: एलिय्याह अहाब के पास गया। अहाब ने
एलिय्याह को देखा और कहा, "तुमने मुझे फिर पा
लिया है। तुम सदा मेरे विरुद्ध हो।"

एलिय्याह ने उत्तर दिया, "हाँ, मैंने तुम्हें पुन: पा लिया
है। तुमने सदा अपने जीवन का उपयोग यहोवा के
विरुद्ध पाप करने में किया। **21**अत: यहोवा तुमसे कहता
है, 'मैं तुम्हें नष्ट कर दूँगा। **22**मैं तुम्हें और तुम्हारे
परिवार के हर एक पुरुष सदस्य को मार डालूँगा।
तुम्हारे परिवार की वही दशा होगी जो दशा नाबोत के
पुत्र यारोबाम के परिवार की हुई और तुम्हारा परिवार
बाशा के परिवार की तरह होगा। ये दोनों पूरी तरह
नष्ट कर दिये गये थे। मैं तुम्हारे साथ यही करूँगा
क्योंकि तुमने मुझे क्रोधित किया है। तुमने इस्राएल के
लोगों से पाप कराया है' **23**और यहोवा यह भी कहता है,
'तुम्हारी पत्नी ईजेबेल का शव यिज्रेल नगर में कुत्ते
खायेंगे। **24**तुम्हारे परिवार के किसी भी सदस्य को जो
नगर में मरेगा, कुत्ते खायेंगे। जो व्यक्ति मैदानो में मरेगा
वह पक्षियों द्वारा खाया जाएगा।'"

25कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं जिसने उतने बुरे काम या
पाप किये हों जितने अहाब ने किये। उसकी पत्नी
ईज़ेबेल ने उससे ये काम कराये। **26**अहाब ने बहुत बुरा
पाप किया और उसने उन काष्ठ के कुंदों (देव–मूर्तियों)
को पूजा। यह वही काम था जिसे एमोरी लोग करते थे
और यहोवा ने उनसे प्रदेश छीन लिया था और इस्राएल
के लोगों को दे दिया था।

27एलिय्याह के कथन के पूरा होने पर अहाब बहुत
दु:खी हुआ। उसने अपने वस्त्रों को यह दिखाने के लिये
फाड़ डाला कि उसे दु:ख है। तब उसने शोक के विशेष
वस्त्र पहन लिये। अहाब ने खाने से इन्कार कर दिया।

वह उन्हीं विशेष वस्त्रों को पहने हुए सोया। अहाब बहुत
दु:खी और उदास था।
28यहोवा ने एलिय्याह नबी से कहा, 29"मैं देखता हूँ
कि अहाब मेरे सामने विनम्र हो गया है। अत: उसके
जीवन काल में मैं उस पर विपत्ति नहीं आने दूँगा। मैं तब
तक प्रतीक्षा करूँगा जब तक उसका पुत्र राजा नहीं बन
जाता। तब मैं अहाब के परिवार पर विपत्ति आने दूँगा।"

मीकायाह अहाब को चेतावनी देता है

22 अगले दो वर्षों के भीतर इस्राएल और अराम
के बीच शान्ति रही। 2तब तीसरे वर्ष यहूदा का
राजा यहोशापात इस्राएल के राजा अहाब से मिलनेगया।
3इस समय अहाब ने अपने अधिकारियों से पूछा,
"तुम जानते हो कि अराम के राजा ने गिलाद में रामोत
को हम से ले लिया था। हम लोगों ने रामोत वापस लेने
का कुछ भी प्रयत्न क्यों नहीं किया? यह हम लोगों का
नगर होना चाहिये।"
4इसलिये अहाब ने यहोशापात से पूछा, "क्या आप
हमारे साथ होंगे और रामोत में अराम की सेना के
विरुद्ध युद्ध करेंगे?"
यहोशापात ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं तुम्हारा साथ दूँगा।
मेरे सैनिक और मेरे घोड़े तुम्हारी सेना के साथ मिलने
के लिये तैयार हैं। 5किन्तु पहले हम लोगों को यहोवा से
सलाह ले लेनी चाहिये।"
6अत: अहाब ने नबियों की एक बैठक बुलाई। उस
समय लगभग चार सौ नबी थे। अहाब ने नबियों से पूछा,
"क्या मैं जाऊँ और रामोत में अराम की सेना के विरुद्ध
युद्ध करूँ? या मैं किसी अन्य अवसर की प्रतीक्षा करूँ?"
नबियों ने उत्तर दिया, "तुम्हें अभी युद्ध करना चाहिये।
यहोवा तुम्हें विजय पाने देगा।"
7किन्तु यहोशापात ने कहा, "क्या यहाँ यहोवा के
नबियों में से कोई अन्य नबी है? यदि कोई है तो हमें
उससे पूछना चाहिये कि परमेश्वर क्या कहता है।"
8राजा अहाब ने उत्तर दिया, "एक अन्य नबी है। वह
यिम्ला का पुत्र मीकायाह है। किन्तु उससे मैं घृणा
करता हूँ। जब कभी वह यहोवा का माध्यम बनता है
तब वह मेरे लिये कुछ भी अच्छा नहीं कहता। वह सदैव
वही कहता है जिसे मैं पसन्द नहीं करता।"
यहोशापात ने कहा, "राजा अहाब, तुम्हें ये बातें नहीं
कहनी चाहिये!"
9अत: राजा अहाब ने अपने अधिकारियों में से
एक से जाने और मीकायाह को खोज निकालने को
कहा।
10उस समय दोनों राजा अपना राजसी पोशाक पहने
थे। वे सिंहासन पर बैठे थे। यह शोमरोन के द्वार के
पास खुले स्थान पर था। सभी नबी उनके सामने खड़े
थे। नबी भविष्यवाणी कर रहे थे।
11नबियों में से एक सिदकिय्याह नामक व्यक्ति था।
वह कनाना का पुत्र था। सिदकिय्याह ने कुछ लोहे की
सींगे* बनाई। तब उसने अहाब से कहा, "यहोवा कहता
है, 'तुम लोहे की इन सींगों का उपयोग अराम की सेना
के विरुद्ध लड़ने में करोगे। तुम उन्हें हराओगे और उन्हें
नष्ट करोगे।'"
12सभी अन्य नबियों ने उसका समर्थन किया जो
कुछ सिदकिय्याह ने कहा। नबियों ने कहा, "तुम्हारी
सेना अभी कूच करे। उन्हें रामोत में अराम की सेना
के साथ युद्ध करना चाहिये। तुम युद्ध जीतोगे। यहोवा
तुम्हें विजय पाने देगा।"
13जब यह हो रहा था तभी अधिकारी मीकायाह को
खोजने गया। अधिकारी ने मीकायाह को खोज निकाला
और उससे कहा, "सभी अन्य नबियों ने कहा है कि
राजा को सफलता मिलेगी। अत: मैं यह कहता हूँ कि
यही कहना तुम्हारे लिये सर्वाधिक अनुकूल होगा।"
14किन्तु मीकायाह ने उत्तर दिया, "नहीं! मैं प्रतिज्ञा
करता हूँ कि यहोवा की शक्ति से वही कहूँगा जो कहने
के लिये यहोवा कहेगा!"
15तब मीकायाह राजा अहाब के सामने खड़ा हुआ।
राजा ने उससे पूछा, "मीकायाह, क्या मुझे और राजा
यहोशापात को अपनी सेनायें एक कर लेनी चाहिये?
और क्या हमें अराम की सेना से रामोत में युद्ध करने
के लिये अभी कुछ करना चाहिये या नहीं?"
मीकायाह ने उत्तर दिया, "हाँ! तुम्हें जाना चाहिये और
उनसे अभी युद्ध करना चाहिये। यहोवा तुम्हें विजय
देगा।"
16किन्तु अहाब ने पूछा, "तुम यहोवा की शक्ति से
नहीं बता रहे हो। तुम अपनी निजी बात कह रहे हो।
अत: मुझसे सत्य कहो। कितनी बार मुझे तुमसे कहना
पड़ेगा? मुझसे वह कहो जो यहोवा कहता है।"
17अत: मीकायाह ने उत्तर दिया, "मैं जो कुछ होगा,
देख सकता हूँ। इस्राएल की सेना पहाड़ियों में बिखर
जायेगी। वे उन भेड़ों की तरह होंगी जिनका कोई भी
संचालक न हो। यही यहोवा कहता है, 'इन व्यक्तियों का
दिशा निर्देशक कोई नहीं है। उन्हें घर जाना चाहिये
और युद्ध नहीं करना चाहिये।'"
18तब अहाब ने यहोशापात से कहा, "देख लो! मैंने
तुम्हें बताया था! यह नबी मेरे बारे में कभी कोई अच्छी
बात नहीं कहता। यह सदा वही बात कहता है जिसे मैं
सुनना नहीं चाहता।"
19किन्तु मीकायाह यहोवा का माध्यम बना कहता ही
रहा। उसने कहा, "सुनो! ये वे शब्द हैं जिन्हें यहोवा ने
कहा है। मैंने यहोवा को स्वर्ग में अपने सिंहासन पर बैठे
देखा। उसके दूत उसके समीप खड़े थे। 20यहोवा ने
कहा, 'क्या तुममें से कोई राजा अहाब को चकमा दे

लोहे की सींगे ये बड़ी शक्ति का प्रतीक थीं।

सकता है? मैं उसे रामोत में अराम की सेना के विरुद्ध
युद्ध करने के लिये जाने देना चाहता हूँ। तब वह मारा
जाएगा।' स्वर्गदूतों को क्या करना चाहिये, इस पर वे
सहमत न हो सके। 21तब एक स्वर्गदूत यहोवा के पास
गया और उसने कहा, 'मैं उसे चकमा दूँगा!' 22यहोवा ने
पूछा, 'तुम राजा अहाब को चकमा कैसे दोगे?' स्वर्गदूत
ने उत्तर दिया, 'मैं अहाब के सभी नबियों को भ्रमित
कर दूँगा। मैं नबियों को अहाब से झूठ बोलने के लिये
कहूँगा। नबियों के सन्देश झूठे होंगे।' अत: यहोवा ने
कहा, 'बहुत अच्छा! जाओ और राजा अहाब को चकमा
दो। तुम सफल होगे।'"

23मीकायाह ने अपनी कथा पूरी की। तब उसने
कहा, "अत: यहाँ यह सब हुआ। यहोवा ने तुम्हारे
नबियों से तुम्हें झूठ बुलवा दिया है। यहोवा ने स्वयं
निर्णय लिया है कि तुम पर बड़ी भारी विपत्ति लाए।"

24तब सिदकिय्याह नबी मीकायाह के पास गया।
सिदकिय्याह ने मीकायाह के मुँह पर मारा। सिदकिय्याह
ने कहा, "क्या तुम सचमुच विश्वास करते हो कि
यहोवा की शक्ति ने मुझे छोड़ दिया है और वह तुम्हारे
माध्यम से बात कर रहा है।"

25मीकायाह ने उत्तर दिया, "शीघ्र ही विपत्ति आएगी।
उस समय तुम भागोगे और एक छोटे कमरे में छिपोगे
और तब तुम समझोगे कि मैं सत्य कह रहा हूँ।"

26तब राजा अहाब ने अपने अधिकारियों में से एक
को मीकायाह को बन्दी बनाने का आदेश दिया। राजा
अहाब ने कहा, "इसे बन्दी बना लो और इसे नगर के
प्रसाशक आमोन और राजकुमार योआश के पास ले
जाओ। 27उनसे कहो कि मीकायाह को बन्दीगृह में डाल
दे। उसे खाने को केवल रोटी और पानी दो। उसे वहाँ
तब तक रखो जब तक मैं युद्ध से घर न आ जाऊँ।"

28मीकायाह ने जोर से कहा, "आप सभी लोग सुने जो
मैं कहता हूँ। राजा अहाब, यदि तुम युद्ध से घर जीवित
लौट आओगे, तो समझना कि यहोवा ने मेरे मुँह से
अपना वचन नहीं कहा था।।"

29तब राजा अहाब और राजा यहोशापात रामोत में
अराम की सेना से युद्ध करने गए। यह गिलाद नामक
क्षेत्र में था।

30अहाब ने यहोशापात से कहा, "हम युद्ध की
तैयारी करेंगे। मैं ऐसे वस्त्र पहनूँगा जो मुझे ऐसा रूप
देंगे कि मैं ऐसा लगूँगा कि मैं राजा नहीं हूँ। किन्तु तुम
अपने विशेष वस्त्र पहनो जिससे तुम ऐसे लगों कि तुम
राजा हो।" इस प्रकार इस्राएल के राजा ने युद्ध का
आरम्भ उस व्यक्ति की तरह वस्त्र पहनकर किया जो
राजा न हो।

31अराम के राजा के पास बत्तीस रथ-सेनापति थे।
उस राजा ने इन बत्तीस रथ सेनापतियों को आदेश दिया
कि वे इस्राएल के राजा को खोज निकाले। अराम के
राजा ने सेनापतियों से कहा कि उन्हें राजा को अवश्य
मार डालना चाहिये। 32अत: युद्ध के बीच इन सेनापतियों
ने राजा यहोशापात को देखा। सेनापतियों ने समझा कि
वही इस्राएल का राजा है। अत: वे उसे मारने गए।
यहोशापात ने चिल्लाना आरम्भ किया। 33सेनापतियों ने
समझ लिया कि वह राजा अहाब नहीं है। अत: उन्होंने
उसे नहीं मारा। 34किन्तु एक सैनिक ने हवा में बाण
छोड़ा, वह किसी विशेष व्यक्ति को अपना लक्ष्य नहीं
बना रहा था। किन्तु उसका बाण इस्राएल के राजा
अहाब को जा लगा। बाण ने राजा को उस छोटी जगह में
बेधा, जो शरीर का भाग उसके कवच से ढका नहीं
था। अत: राजा अहाब ने अपने सारथी से कहा, "मुझे
एक बाण ने बेध दिया है! इस क्षेत्र से रथ को बाहर ले
चलो। हमें युद्ध से दूर निकल जाना चाहिये।"

35सेनायें युद्ध में लड़ती रहीं। राजा अहाब अपने रथ
में ठहरा रहा। वह रथ के सहारे एक ओर झुका हुआ
था। वह अराम की सेना को देख रहा था। उसका खून
नीचे बहता रहा और उसने रथ के तले को ढक लिया।
बाद में, शाम को राजा मर गया। 36सन्ध्या के समय
इस्राएल की सेना के सभी पुरुषों को अपने नगर और
प्रदेश वापस लौटने का आदेश दिया गया।

37अत: राजा अहाब इस प्रकार मरा। कुछ व्यक्ति
उसके शव को शोमरोन ले आए। उन्होंने उसे वहीं
दफना दिया। 38लोगों ने अहाब के रथ को शोमरोन में
जल के कुंड में धोया। राजा अहाब के खून को रथ से,
कुत्तों ने चाटा और वेश्याओं ने पानी का उपयोग नहाने
के लिये किया। ये बातें वैसे ही हुई जैसा यहोवा ने होने
को कहा था।

39अपने राज्यकाल में अहाब ने जो कुछ किया वह
"इस्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में
लिखा है। उसी पुस्तक में राजा ने अपने महल को
अधिक सुन्दर बनाने के लिये जिस हाथी-दाँत का
उपयोग किया था, उसके बारे में कहा गया है और उस
पुस्तक में उन नगरों के बारे में भी लिखा गया है जिसे
उसने बनाया था। 40अहाब मरा, और अपने पूर्वजों के
पास दफना दिया गया। उसका पुत्र अहज्याह राजा बना।

यहूदा का राजा यहोशापात

41इस्राएल के राजा अहाब के राज्यकाल के चौथे वर्ष
यहोशापात यहूदा का राजा हुआ। यहोशापात आसा का
पुत्र था। 42यहोशापात जब राजा हुआ तब वह पैंतीस वर्ष
का था। यहोशापात ने यरूशलेम में पच्चीस वर्ष तक
राज्य किया। यहोशापात की माँ का नाम अजूबा था।
अजूबा शिल्ही की पुत्री थी। 43यहोशापात अच्छा व्यक्ति
था। उसने अपने पूर्व अपने पिता के जैसे ही काम
किये। वह उन सबका पालन करता था जो यहोवा
चाहता था। किन्तु यहोशापात ने उच्च स्थानों को नष्ट

नहीं किया। लोगों ने उन स्थानों पर बलि–भेंट करना
और सुगन्धि जलाना जारी रखा।
44यहोशापात ने इस्राएल के राजा के साथ एक
शान्ति–सन्धि की। 45यहोशापात बहुत वीर था और
उसने कई युद्ध लड़े। जो कुछ उसने किया वह, "यहूदा
के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक में लिखा है।
46यहोशापात ने उन स्त्री पुरुषों को, जो शारीरिक सम्बन्ध
के लिये अपने शरीर को बेचते थे, पूजास्थानों को
छोड़ने के लिये विवश किया। उन व्यक्तियों ने उन
पूजास्थानों पर तब सेवा की थी जब उसका पिता आसा
राजा था।
47इस समय के बीच एदोम देश का कोई राजा न था।
वह देश एक प्रशासक द्वारा शासित होता था। प्रशासक
यहूदा के राजा द्वारा चुना जाता था।

यहोशापात का समुद्री बेड़ा

48राजा यहोशापात ने ऐसे जहाज बनाए जो महासागर
में चल सकते थे। यहोशापात ने ओपीर प्रदेश में जहाजों
को भेजा। वह चाहता था कि जहाज सोना लाएँ। किन्तु
जहाज एश्योनगेबेर में नष्ट हो गए। जहाज कभी सोना
प्राप्त करने में सफल न हो सके। 49इस्राएल का राजा
अहज्याह यहोशापात को सहायता देने गया। अहज्याह
ने यहोशापात से कहा था कि वह कुछ ऐसे व्यक्तियों
को उनके लिये प्राप्त करेगा जो जहाजी काम में
कुशल हों। किन्तु यहोशापात ने अहज्याह के व्यक्तियों
को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया।
50यहोशापात मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया
गया। वह दाऊद नगर में अपने पूर्वजों के साथ दफनाया
गया। तब उसका पुत्र यहोराम राजा बना।

इस्राएल का राजा अहज्याह

51अहज्याह अहाब का पुत्र था। वह राजा यहोशापात
के यहूदा पर राज्यकाल के सत्रहवें वर्ष में राजा बना।
अहज्याह ने शोमरोन में दो वर्ष तक राज्य किया।
52अहज्याह ने यहोवा के विरुद्ध पाप किये। उसने वे
ही पाप किये जो उसके पिता अहाब उसकी माँ
ईज़ेबेल और नबात के पुत्र यारोबाम ने किये थे। ये
सभी शासक इस्राएल के लोगों को और अधिक पाप
की ओर ले गए। 53अहज्याह ने अपने से पूर्व अपने
पिता के समान असत्य देवता बाल की पूजा और सेवा
की। अत: अहज्याह ने यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर
को बहुत अधिक क्रोधित किया। यहोवा अहज्याह पर
वैसा ही क्रोधित हुआ जैसा उसके पहले वह उसके
पिता पर क्रोधित हुआ था।

2 राजा

अहज्याह के लिये सन्देश

1 अहाब के मरने के बाद मोआब इस्राएल के शासन
से स्वतन्त्र हो गया। 2एक दिन अहज्याह शोमरोन में
अपने घर की छत पर था। अहज्याह अपने घर की छत
के लकड़ी के छज्जे से गिर गया। वह बुरी तरह घायल
हो गया। अहज्याह ने सन्देशवाहकों को बुलाया और
उनसे कहा, "एक्रोन के देवता बालजबूब के याजकों के
पास जाओ। उनसे पूछो कि क्या मैं अपनी चोटों से
स्वस्थ हो सकूँगा।"

3किन्तु यहोवा के दूत ने तिशबी एलिय्याह से कहा,
"राजा अहज्याह ने शोमरोन से कुछ सन्देशवाहक भेजे
हैं। जाओ और इन लोगों से मिलो। उनसे यह कहो,
'इस्राएल में परमेश्वर है! तो भी तुम लोग एक्रोन के
देवता बालजबूब से प्रश्न करने क्यों जा रहे हो? 4राजा
अहज्याह से ये बातें कहो: तुमने बालजबूब से प्रश्न
करने के लिये सन्देशवाहक भेजे। क्योंकि तुमने यह
किया, इस कारण यहोवा कहता है: तुम अपने बिस्तर
से उठ नहीं पाओगे। तुम मरोगे!'" तब एलिय्याह चल
पड़ा और उसने अहज्याह के सेवकों से यही शब्द
कहे।

5सन्देशवाहक अहज्याह के पास लौट आए।
अहज्याह ने सन्देशवाहकों से पूछा, "तुम लोग इतने
शीघ्र क्योंलौटे?"

6सन्देशवाहकों ने अहज्याह से कहा, "एक व्यक्ति
हमसे मिलने आया। उसने हम लोगों से उस राजा के
पास वापस जाने को कहा जिसने हमें भेजा था और
उससे यहोवा ने जो कहा, वह कहने को कहा, 'इस्राएल
में एक परमेश्वर है! तो तुमने एक्रोन के देवता बालजबूब
से प्रश्न करने के लिये सन्देशवाहकों को क्यों भेजा।
क्योंकि तुमने यह किया है इस कारण तुम अपने बिस्तर
से नहीं उठोगे। तुम मरोगे!'"

7अहज्याह ने सन्देशवाहकों से पूछा, "जो व्यक्ति तुमसे
मिला और जिसने तुमसे ऐसा कहा वह कैसा दिखाई
पड़ता था?"

8सन्देशवाहकों ने अहज्याह से कहा, "वह व्यक्ति एक
रोयेंदार अंगरखा पहने था और अपनी कमर में एक
चमड़े की पेटी बांधे था।"

तब अहज्याह ने कहा, "यह तिशबी एलिय्याह है!"

अहज्याह द्वारा भेजे गए सेनापतियों को आग नष्ट करती है

9अहज्याह ने एक सेनापति और पचास पुरुषों को
एलिय्याह के पास भेजा। सेनापति एलिय्याह के पास
गया। उस समय एलिय्याह एक पहाड़ी की चोटी पर बैठा
था। सेनापति ने एलिय्याह से कहा, "परमेश्वर के जन
राजा का आदेश है, 'नीचे आओ।'"

10एलिय्याह ने पचास सैनिकों के सेनापति को उत्तर
दिया, "यदि मैं परमेश्वर का जन हूँ तो स्वर्ग से आग
गिर पड़े और तुमको एवं पचास सैनिकों को नष्ट कर
दे!"

अत: स्वर्ग से आग गिर पड़ी और उसने सेनापति एवं
उसके पचास व्यक्तियों को नष्ट कर दिया।

11अहज्याह ने अन्य सेनापति और पचास सैनिकों को
भेजा। सेनापति ने एलिय्याह से कहा, "परमेश्वर के
जन, राजा का आदेश है 'शीघ्र नीचे आओ!'"

12एलिय्याह ने सेनापति और उसके पचास सैनिकों
से कहा, "यदि मैं परमेश्वर का जन हूँ तो स्वर्ग से
आग गिर पड़े और वह तुमको और तुम्हारे पचास
सैनिकों को नष्ट कर दे!" परमेश्वर की आग स्वर्ग से
गिर पड़ी और सेनापति एवं पचास सैनिकों को नष्ट
कर दिया।

13अहज्याह ने तीसरे सेनापति को पचास सैनिकों के
साथ भेजा। पचास सैनिकों का सेनापति एलिय्याह के
पास आया। सेनापति ने अपने घुटनों के बल झुककर
उसको प्रणाम किया। सेनापति ने उससे यह कहते हुए
प्रार्थना की, "परमेश्वर के जन मैं आपसे प्रार्थना करता
हूँ, कृपया मेरे जीवन और अपने इन पचास सेवकों के
जीवन को अपनी दृष्टि में मूल्यवान मानें! 14स्वर्ग से
आग गिर पड़ी और प्रथम दो सेनापतियों और उनके
पचास सैनिकों को उसने नष्ट कर दिया। किन्तु अब
कृपा करें और हमें जीवित रहने दें!"

15यहोवा के दूत ने एलिय्याह से कहा, "सेनापति के
साथ जाओ। उससे डरो नहीं।"

अत: एलिय्याह सेनापति के साथ राजा अहज्याह को
देखने गया। 16एलिय्याह ने अहज्याह से कहा, "इस्राएल
में परमेश्वर है ही, तो भी तुमने सन्देशवाहकों को
एक्रोन के देवता बालजबूब से प्रश्न करने के लिये क्यों

भेजा? क्योंकि तुमने यह किया है, इस कारण तुम अपने बिस्तर से नहीं उठोगे। तुम मरोगे!"

यहोराम, अहज्याह का स्थान लेता है

17अहज्याह वैसे ही मरा जैसा यहोवा ने एलिय्याह के द्वारा कहा था। अहज्याह का कोई पुत्र नहीं था। अत: अहज्याह के बाद यहोराम नया राजा हुआ। यहोराम ने यहूदा के राजा यहोशापात के पुत्र यहोराम के राज्यकाल के दूसरे वर्ष शासन करना आरम्भ किया।

18अहज्याह ने जो अन्य कार्य किये वे "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे गये हैं।

एलिय्याह को अपने पास लेने की यहोवा की योजना

2 यह लगभग वह समय था जब यहोवा ने एक तूफान के द्वारा एलिय्याह को स्वर्ग में बुला लिया। एलिय्याह एलीशा के साथ गिलगाल गया।

2एलिय्याह ने एलीशा से कहा, "कृपया यहीं रुको, क्योंकि यहोवा ने मुझे बेतेल जाने को कहा है।"

किन्तु एलीशा ने कहा, "जैसा कि यहोवा की सत्ता शाश्वत है और आप जीवित हैं, इसको साक्षी कर मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं आपका साथ नहीं छोड़ूँगा।" इसलिये दोनों लोग बेतेल तक गये।

3बेतेल के नबियों का समूह एलीशा के पास आया और उसने एलीशा से कहा, "क्या तुम जानते हो कि आज तुम्हारे स्वामी को यहोवा तुमसे अलग करके ले जाएगा?"

एलीशा ने कहा, "हाँ, मैं यह जानता हूँ। इस विषय में बातें न करो।"

4एलिय्याह ने एलीशा से कहा, "कृपया यहीं ठहरो क्योंकि यहोवा ने मुझे यरीहो जाने को कहा है।"

किन्तु एलीशा ने कहा, "जैसा कि यहोवा की सत्ता शाश्वत है और आप जीवित हैं, इसको साक्षी करके मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं आपका साथ नहीं छोड़ूँगा!" इसलिये दोनों लोग यरीहो गए।

5यरीहो के नबियों का समूह एलीशा के पास आया और उन्होंने उससे कहा, "क्या तुमको मालूम है कि यहोवा आज तुम्हारे स्वामी को तुमसे दूर ले जाएगा।"

एलीशा ने कहा, "हाँ, मैं इसे जानता हूँ। इस विषय में बातें न करो।"

6एलिय्याह ने एलीशा से कहा, "कृपया यहीं ठहरो क्योंकि यहोवा ने मुझे यरदन नदी तक जाने को कहा है।"

एलीशा ने उत्तर दिया, "जैसा कि यहोवा की सत्ता शाश्वत है और आप जीवित हैं, इसको साक्षी करके प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं आपका साथ नहीं छोड़ूँगा!" अत: दोनों व्यक्ति चलते चले गए।

7नबियों के समूह में से पचास व्यक्तियों ने उनका अनुसरण किया। एलिय्याह और एलीशा यरदन नदी पर रुक गए। पचास व्यक्ति एलिय्याह और एलीशा से बहुत दूर खड़े रहे। 8एलिय्याह ने अपना अंगरखा उतारा, उसे तह किया और उससे पानी पर चोट की। पानी दायीं और बांयी ओर को फट गया। एलिय्याह और एलीशा ने सूखी भूमि पर चलकर नदी को पार किया।

9जब उन्होंने नदी को पार कर लिया तब एलिय्याह ने एलीशा से कहा, "इससे पहले कि परमेश्वर मुझे तुमसे दूर ले जाए, तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ।"

एलीशा ने कहा, "मैं आपके आत्मा का दुगना अपने ऊपर चाहता हूँ।"

10एलिय्याह ने कहा, "तुमने कठिन चीज माँगी है। यदि तुम मुझे उस समय देखोगे जब मुझे ले जाया जाएगा तो वही होगा। किन्तु यदि तुम मुझे नहीं देख पाओगे तो वह नहीं होगा।"

परमेश्वर एलिय्याह को स्वर्ग में ले जाता है

11एलिय्याह और एलीशा एक साथ बातें करते हुए टहल रहे थे। अचानक कुछ घोड़े और एक रथ आया और उन्होंने एलिय्याह को एलीशा से अलग कर दिया। घोड़े और रथ आग के समान थे। तब एलिय्याह एक बवंडर में स्वर्ग को चला गया।

12एलीशा ने इसे देखा और जोर से पुकारा, "मेरे पिता! मेरे पिता! इस्राएल के रथ और उसके अश्वारोही सैनिक! *

एलीशा ने एलिय्याह को फिर कभी नहीं देखा। एलीशा ने अपने वस्त्रों को मुट्ठी में भरा, और अपना शोक प्रकट करने के लिये, उन्हें फाड़ डाला। 13एलिय्याह का अंगरखा भूमि पर गिर पड़ा था अत: एलीशा ने उसे उठा लिया। एलीशा ने पानी पर चोट की और कहा, "एलिय्याह का परमेश्वर यहोवा, कहाँ है?"

14जैसे ही एलीशा ने पानी पर चोट की, पानी दांयी और बांयी ओर को फट गया और एलीशा ने नदी पारकी।

नबी एलिय्याह की माँग करते हैं

15जब यरीहो के नबियों के समूह ने एलीशा को देखा, उन्होंने कहा, "एलिय्याह की आत्मा अब एलीशा पर है।" वे एलीशा से मिलने आए। वे एलीशा के सामने नीचे भूमि तक प्रणाम करने झुके। 16उन्होंने उससे कहा, "देखो, हम अच्छे खासे पचास व्यक्ति हैं। कृपया इनको जाने दो और अपने स्वामी की खोज करने दो। सम्भव है यहोवा की शक्ति ने एलिय्याह को ऊपर ले

इस्राएल के ... सैनिक इसका अर्थ संभवत: "परमेश्वर और उसकी स्वर्गीय सेना (स्वर्गदूत) हैं।"

लिया हो और उसे किसी पर्वत या घाटी में गिरा दिया हो!"

किन्तु एलीशा ने उत्तर दिया, "नहीं, एलिय्याह की खोज के लिये आदमियों को मत भेजो।"

17नबियों के समूह ने एलीशा से इतनी अधिक प्रार्थना की, कि वह उलझन में पड़ गया। तब एलीशा ने कहा, "ठीक है, एलिय्याह की खोज में आदमियों को भेज दो।"

नबियों के समूह ने पचास आदमियों को एलिय्याह की खोज के लिये भेजा। उन्होंने तीन दिन तक खोज
की किन्तु वे एलिय्याह को न पा सके। 18अत: वे लोग
यरीहो गए जहाँ एलीशा ठहरा था। उन्होंने उससे कहा कि वे एलिय्याह को नहीं पा सके। एलीशा ने उनसे कहा, "मैंने तुम्हें जाने को मना किया था।"

एलीशा पानी को शुद्ध करता है

19नगर के निवासियों ने एलीशा से कहा, "महोदय, आप अनुभव कर सकते हैं कि यह नगर सुन्दर स्थान में हैं। किन्तु यहाँ पानी बुरा है। यही कारण है कि भूमि में फसल की उपज नहीं होती।"

20एलीशा ने कहा, "मेरे पास एक नया कटोरा लाओ और उसमें नमक रखो।"

लोग कटोरे को एलीशा के पास ले आए। 21तब
एलीशा उस स्थान पर गया जहाँ पानी भूमि से निकल रहा था। एलीशा ने नमक को पानी में फेंक दिया। उसने कहा, "यहोवा कहता है, 'मैं इस पानी को शुद्ध करता हूँ। अब, मैं इस पानी से किसी को मरने न दूँगा, और न ही भूमि को अच्छी फसल देने से रोकूँगा।'"

22पानी शुद्ध हो गया और पानी अब तक भी शुद्ध है। यह वैसा ही हुआ जैसा एलीशा ने कहा था।

कुछ लड़के एलीशा का मजाक उड़ाते हैं

23उस नगर से एलीशा बेतेल गया। एलीशा नगर की ओर पहाड़ी पर चल रहा था जब कुछ लड़के नगर से नीचे आ रहे थे। वह एलीशा का मजाक उड़ाने लगे और उन्होंने कहा, "हे गन्जे, तू ऊपर चढ़ जा! हे गन्जे तू ऊपर चढ़ जा!"

24एलीशा ने मुड़ कर उन्हें देखा। उसने यहोवा से बिनती की कि उन के साथ बुरा हो। उसी समय जंगल से दो रीछों ने आ कर उन लड़कों पर हमला किया, वहाँ बयालीस लड़के रीछों द्वारा फाड़ दिये गये।

25वहाँ से एलीशा बेतेल होता हुआ कर्म्मेल पर्वत पर गया, उस के बाद वह शोमरोन पहुँचा।

यहोराम इस्राएल का राजा बना

3 अहाब का पुत्र यहोराम इस्राएल में शोमरोन का राजा बना। यहोशापात के अट्ठारहवें वर्ष में यहोराम ने राज्य करना आरम्भ किया। यहोराम बारह वर्ष तक यहूदा का राजा रहा। 2यहोराम ने वह सब किया जो
यहोवा की दृष्टि में बुरा है। परन्तु यहोराम अपने माता पिता की तरह न था क्योंकि उस ने उस स्तम्भ को दूर कर दिया जो उसके पिता ने बाल की पूजा के लिये बनवाई थी। 3परन्तु वह नबात के पुत्र यारोबाम के ऐसे
पापों को, जैसे उस ने इस्राएल से भी कराये, करता रहा और उन से न फिरा।

मोआब इस्राएल से अलग होता है

4मेशा मोआब का राजा था। उसके पास बहुत बकरियाँ थी। मेशा ने एक लाख मेमनें और एक लाख भेढ़ों का ऊन इस्राएल के राजा को भेंट किया। 5किन्तु जब
अहाब मरा तब मोआब इस्राएल के राजा के शासन से स्वतन्त्र हो गया।

6तब राजा यहोराम शोमरोन के बाहर निकला और उसने इस्राएल के सभी पुरुषों को इकट्ठा किया। 7यहोराम
ने यहूदा के राजा यहोशापात के पास सन्देशवाहक भेजे। यहोराम ने कहा, "मोआब का राजा मेरे शासन से स्वतन्त्र हो गया है। क्या तुम मोआब के विरुद्ध युद्ध करने मेरे साथ चलोगे?"

यहोशापात ने कहा, "हाँ, मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। हम दोनों एक सेना की तरह मिल जायेंगे। मेरे लोग तुम्हारे लोगों जैसे होंगे। मेरे घोड़े तुम्हारे घोड़ों जैसे होंगे।"

एलीशा से तीन राजा सलाह माँगते हैं

8यहोशापात ने यहोराम से पूछा, "हमें किस रास्ते से चलना चाहिए?"

यहोराम ने उत्तर दिया, "हमें एदोम की मरुभूमि से होकर जाना चाहिए।"

9इसलिये इस्राएल का राजा यहूदा और एदोम के राजाओं के साथ गया। वे लगभग सात दिन तक चारों ओर घूमते रहे। सेना व उनके पशुओं के लिये पर्याप्त पानी नहीं था। 10अन्त में इस्राएल के राजा (यहोराम) ने
कहा, "ओह, यहोवा ने सत्य ही हम तीनों राजाओं को एक साथ इसलिये बुलाया कि मोआबी हम लोगों को पराजित करें!"

11किन्तु यहोशापात ने कहा, "निश्चय ही यहोवा के नबियों में से एक यहाँ है। हम लोग नबी से पूछे कि यहोवा हमें क्या करने के लिये कहता है।"

इस्राएल के राजा के सेवकों में से एक ने कहा, "शापात का पुत्र एलीशा यहाँ है। एलीशा, एलिय्याह का सेवक*था।"

12यहोशापात ने कहा, "यहोवा की वाणी एलीशा के पास है।"

एलिय्याह का सेवक शाब्दिक, "एलीशा, एलिय्याह का हाथ धुलाता था।"

अत: इस्राएल का राजा (यहोराम), यहोशापात और
एदोम के राजा एलीशा से मिलने गए।
13एलीशा ने इस्राएल के राजा (यहोराम) से कहा,
"तुम मुझ से क्या चाहते हो? अपने पिता और अपनी
माता के नबियों के पास जाओ।"

इस्राएल के राजा ने एलीशा से कहा, "नहीं, हम लोग
तुमसे मिलने आए हैं, क्योंकि यहोवा ने हम तीन राजाओं
को इसलिये एक साथ यहाँ बुलाया है कि मोआबी हम
लोगों को हराए। हम तुम्हारी सहायता चाहते हैं।"
14एलीशा ने कहा, "मैं यहूदा के राजा यहोशापात का
सम्मान करता हूँ और मैं सर्वशक्तिमान यहोवा की सेवा
करता हूँ। उसकी सत्ता निश्चय ही शाश्वत है, मैं यहाँ
केवल राजा यहोशापात के कारण आया हूँ। अत: मै
सत्य कहता हूँ: मैं न तो तुम पर दृष्टि डालता और न
तुम्हारी परवाह करता, यदि यहूदा का राजा यहोशापात
यहाँ न होता।" 15किन्तु अब एक ऐसे व्यक्ति को मेरे
पास लाओ जो वीणा बजाता हो।"

जब उस व्यक्ति ने वीणा बजाई तो यहोवा की शक्ति
एलीशा पर उतरी। 16तब एलीशा ने कहा, "यहोवा यह
कहता है: घाटी में गड्ढे खोदो। 17यहोवा यही कहता है:
तुम हवा का अनुभव नहीं करोगे, तुम वर्षा भी नहीं
देखोगे। किन्तु वह घाटी जल से भर जायेगी। तुम, तुम्हारी
गायें तथा अन्य जानवरों को पानी पीने को मिलेगा।
18यहोवा के लिये यह करना सरल है। वह तुम्हें मोआबियों
को भी पराजित करने देगा। 19तुम हर एक सुदृढ़ नगर
और हर एक अच्छे नगर पर आक्रमण करोगे। तुम हर
एक अच्छे पेड़ को काट डालोगे। तुम सभी पानी के
सोतों को रोक दोगे। तुम हरे खेत, उन पत्थरों से नष्ट
करोगे जिन्हें तुम उन पर फेंकोगे।"
20सवेरे प्रात:कालीन बलि के समय, एदोम से सड़क
पर होकर पानी बहने लगा और घाटी भर गई।
21मोआब के लोगों ने सुना कि राजा लोग उनके
विरुद्ध लड़ने आए हैं। इसलिये मोआब के लोगों ने
कवच धारण करने के उम्र के सभी पुरुषों को इकट्ठा
किया। उन लोगों ने युद्ध के लिये तैयार होकर सीमा पर
प्रतीक्षा की। 22मोआब के लोग भी बहुत सवेरे उठे।
उगता हुआ सूरज घाटी में जल पर चमक रहा था और
मोआब के लोगों को वह खून की तरह दिखायी दे रहा
था। 23मोआब के लोगों ने कहा, "खून को ध्यान से
देखो! राजाओं ने अवश्य ही एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध
किया होगा। उन्होंने एक दूसरे को अवश्य नष्ट कर
दिया होगा। हम चलें और उनके शवों से कीमती चीज़ें
ले लें।"
24मोआबी लोग इस्राएली डेरे तक आए। किन्तु इस्राएली
बाहर निकले और उन्होंने मोआबी सेना पर आक्रमण
कर दिया। मोआबी लोग इस्राएलियों के सामने से भाग
खड़े हुए। इस्राएली मोआबियों से युद्ध करने उनके प्रदेश
में घुस आए। 25इस्राएलियों ने नगरों को पराजित किया।
उन्होंने मोआब के हर एक अच्छे खेत में अपने पत्थर
फेंके।* उन्होंने सभी पानी के सोतों को रोक दिया
और उन्होंने सभी अच्छे पेड़ों को काट डाला। इस्राएली
लगातार कीर्हरेशेत तक लड़ते गए। सैनिकों ने कीर्हरेशेत
का भी घेरा डाला और उस पर भी आक्रमण किया!
26मोआब के राजा ने देखा कि युद्ध उसके लिये
अत्याधिक प्रबल है। इसलिये उसने तलवारधारी सात
सौ पुरुषों को एदोम के राजा का वध करने के लिये
सीधे सेना भेद के लिये भेज दिया। किन्तु वे एदोम के
राजा तक सेना भेद नहीं कर पाए। 27तब मोआब के
राजा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र को लिया जो उसके बाद राजा
होता। नगर के चारों ओर की दीवार पर मोआब के
राजा ने अपने पुत्र की भेंट होमबलि के रूप में दी।
इससे इस्राएल के लोग बहुत घबराये। इसलिये इस्राएल
के लोगों ने मोआब के राजा को छोड़ा और अपने देश
को लौट गए।

एक नबी की विधवा एलीशा से सहायता माँगती है

4 नबियों के समूह में से एक व्यक्ति की पत्नी थी।
यह व्यक्ति मर गया। उसकी पत्नी ने एलीशा के
सामने अपना दुखड़ा रोया, "मेरा पति तुम्हारे सेवक के
समान था। अब मेरा पति मर गया है। तुम जानते हो कि
वह यहोवा का सम्मान करता था। किन्तु उस पर एक
व्यक्ति का कर्ज था और अब वह व्यक्ति मेरे दो लड़कों
को अपना दास बनाने के लिये लेने आ रहा है।"
2एलीशा ने पूछा, "मैं तुम्हारी सहायता कैसे कर सकता
हूँ? मुझे बताओ कि तुम्हारे घर में क्या है?"

उस स्त्री ने कहा, "मेरे घर में कुछ नहीं। मेरे पास
केवल जैतून के तेल का एक घड़ा है।"
3तब एलीशा ने कहा, "जाओ और अपने सब पड़ोसियों
से कटोरे उधार लो। वे खाली होने चाहिये। बहुत से
कटोरे उधार लो। तब अपने घर जाओ और दरवाजे
बन्द कर लो। केवल तुम और तुम्हारे पुत्र घर में रहेंगे।
तब इन सब कटोरों में तेल डालो और उन कटोरों को
भरो और एक अलग स्थान पर रखो।"
5अत: वह स्त्री एलीशा के यहाँ से चली गई, अपने
घर पहुँची और दरवाजे बन्द कर लिए। केवल वह और
उसके पुत्र घर में थे। उसके पुत्र कटोरे उसके पास लाए
और उसने तेल डाला। 6उसने बहुत से कटोरे भरे।
अन्त में उसने अपने पुत्र से कहा, "मेरे पास दूसरा
कटोरा लाओ।"

किन्तु सभी प्याले भर चुके थे। पुत्रों में से एक ने उस
स्त्री से कहा, "अब कोई कटोरा नहीं रह गया है।" उस
समय घड़े का तेल खत्म हो चुका था।

अपने पत्थर फेंके संभवत: ये वे पत्थर थे जिन्हें युद्ध में
सैनिक अपनी गुलेलों से फेकतें थे।

7तब वह स्त्री आई और उसने परमेश्वर के जन (एलीशा) से यह घटना बताई! एलीशा ने उससे कहा, "जाओ, तेल को बेच दो और अपना कर्ज लौटा दो। जब तुम तेल को बेच चुकोगी और अपना कर्ज लौटा चुकोगी तब तुम्हारा और तुम्हारे पुत्रों का गुजारा बची रकम से होगा।"

शूनेम में एक स्त्री एलीशा को कमरा देती है

8एक दिन एलीशा शूनेम को गया। शूनेम में एक महत्वपूर्ण स्त्री रहती थी। इस स्त्री ने एलीशा से कहा कि वह ठहरे और उसके घर भोजन करे। इसलिये जब भी एलीशा उस स्थान से होकर जाता था तब भोजन करने के लिये वहाँ रूकता था।

9उस स्त्री ने अपने पति से कहा, "देखो मैं समझती हूँ कि एलीशा परमेश्वर का जन है। वह सदा हमारे घर होकर जाता है। 10कृपया हम लोग एक कमरा एलीशा के लिये छत पर बनाएं। इस कमरे में हम एक बिछौना लगा दें। उसमें हम लोग एक मेज, एक कुर्सी और एक दीपाधार रख दें। तब जब वह हमारे यहाँ आए तो वह इस कमरे को अपने रहने के लिये रख सकता है।"

11एक दिन एलीशा उस स्त्री के घर आया। वह उस कमरे में गया और वहाँ आराम किया। 12एलीशा ने अपने सेवक गेहजी से कहा, "शूनेमिन स्त्री को बुलाओ।"

सेवक ने शूनेमिन स्त्री को बुलाया और वह उसके सामने आ खड़ी हुई। 13एलीशा ने अपने सेवक से कहा–अब इस स्त्री से कहो, "देखो हम लोगों की देखभाल के लिये तुमने यथासम्भव अच्छा किया है। हम लोग तुम्हारे लिये क्या करें? क्या तुम चाहती हो कि हम लोग तुम्हारे लिये राजा या सेना के सेनापति से बात करें?"

उस स्त्री ने उत्तर दिया, "मैं यहाँ बहुत अच्छी तरह अपने लोगों में रह रही हूँ।"

14एलीशा ने गेहजी से कहा, "हम उसके लिए क्या कर सकते हैं?"

गेहजी ने कहा, "मैं जानता हूँ कि उसका पुत्र नहीं है और उसका पति बूढ़ा है।"

15तब एलीशा ने कहा, "उसे बुलाओ।"

अत: गेहजी ने उस स्त्री को बुलाया। वह आई और उसके दरवाजे के पास खड़ी हो गई। 16एलीशा ने स्त्री से कहा, "अगले बसन्त में इस समय तुम अपने पुत्र को गले से लगा रही होगी।"

उस स्त्री ने कहा, "नहीं महोदय! परमेश्वर के जन, मुझसे झूठ न बोलो।"

शूनेम की स्त्री को पुत्र होता है

17किन्तु वह स्त्री गर्भवती हुई। उसने अगले बसन्त में एक पुत्र को जन्म दिया, जैसा एलीशा ने कहा था।

18लड़का बड़ा हुआ। एक दिन वह लड़का खेतों में अपने पिता और फसल काटते हुए पुरुषों को देखने गया। 19लड़के ने अपने पिता से कहा, "ओह, मेरा सिर! मेरा सिर फटा जा रहा है!"

पिता ने अपने सेवक से कहा, "इसे इसकी माँ के पास ले जाओ!"

20सेवक उस लड़के को उसकी माँ के पास ले गया। लड़का दोपहर तक अपनी माँ की गोद में बैठा। तब वह मर गया।

माँ एलीशा से मिलने जाती है

21उस स्त्री ने लड़के को परमेश्वर के जन (एलीशा) के बिछौने पर लिटा दिया। तब उसने दरवाजा बन्द किया और बाहर चली गई। 22उसने अपने पति को बुलाया और कहा, "कृपया मेरे पास सेवकों में से एक तथा गधों में से एक को भेजें। तब मैं परमेश्वर के जन (एलीशा) से मिलने शीघ्रता से जाऊँगी और लौट आऊँगी।"

23उस स्त्री के पति ने कहा, "तुम आज परमेश्वर के जन (एलीशा) के पास क्यों जाना चाहती हो? यह नवचन्द्र या सब्त का दिन नहीं है।"

उसने कहा, "परेशान मत होओ। सब कुछ ठीक होगा।"

24तब उसने एक गधे पर काठी रखी और अपने सेवक से कहा, "आओ चलें और शीघ्रता करें। धीरे तभी चलो जब मैं कहूँ।"

25वह स्त्री परमेश्वर के जन (एलीशा) से मिलने कर्म्मेल पर्वत पर गई। परमेश्वर के जन (एलीशा) ने शूनेमिन स्त्री को दूर से आते देखा। एलीशा ने अपने सेवक गेहजी से कहा, "देखो, वह शूनेमिन स्त्री है! 26कृपया अब दौड़ कर उससे मिलो। उससे पूछो, 'क्या बुरा घटित हुआ है? क्या तुम कुशल से हो? क्या तुम्हारा पति कुशल से है? क्या बच्चा ठीक है?'"

गेहजी ने उस शूनेमिन स्त्री से यही पूछा। उसने उत्तर दिया, "सब कुशल है।"

27किन्तु शूनेमिन स्त्री पर्वत पर चढ़कर परमेश्वर के जन (एलीशा) के पास पहुँची। वह प्रणाम करने झुकी और उसने एलीशा के पाँव पकड़ लिए। गेहजी शूनेमिन स्त्री को दूर खींच लेने के लिए निकट आया। किन्तु परमेश्वर के जन (एलीशा) ने गेहजी से कहा, "उसे अकेला छोड़ दो! वह बहुत परेशान है और यहोवा ने इसके बारे में मुझसे नहीं कहा। यहोवा ने यह खबर मुझसे छिपाई।"

28तब शूनेमिन स्त्री ने कहा, "महोदय, मैंने आपसे पुत्र नहीं माँगा था। मैंने आपसे कहा था, 'आप मुझे मूर्ख न बनाएं!'"

29तब एलीशा ने गेहजी से कहा, "जाने के लिये तैयार हो जाओ। मेरी टहलने की छड़ी ले लो और जाओ।

किसी से बात करने के लिए न रुको। यदि तुम किसी व्यक्ति से मिलो तो उसे नमस्कार भी न कहो। यदि कोई व्यक्ति नमस्कार करे तो तुम उसका उत्तर भी न दो। मेरी टहलने की छड़ी को बच्चे के चेहरे पर रखो।"

30किन्तु बच्चे की माँ ने कहा, "जैसा कि यहोवा शाश्वत है और आप जीवित हैं मैं इसको साक्षी कर प्रतिज्ञा करती हूँ कि मैं आपके बिना यहाँ से नहीं जाऊँगी।"

अत: एलीशा उठा और शूनेमिन स्त्री के साथ चल पड़ा।

31गेहजी शूनेमिन स्त्री के घर, एलीशा और शूनेमिन से पहले पहुँचा। गेहजी ने टहलने की छड़ी को बच्चे के चेहरे पर रखा। किन्तु बच्चे ने न कोई बात की और न ही कोई ऐसा संकेत दिया जिससे यह लगे कि उसने कुछ सुना है। तब गेहजी एलीशा से मिलने लौटा। गेहजी ने एलीशा से कहा, "बच्चा नहीं जागा!"

शूनेमिन स्त्री का पुत्र पुनःजीवित होता है

32एलीशा घर मे आया और बच्चा अपने बिछौने पर मरा पड़ा था। 33एलीशा कमरे में आया और उसने दरवाजा बन्द कर लिया। अब एलीशा और वह बच्चा कमरे में अकेले थे। तब एलीशा ने यहोवा से प्रार्थना की। 34एलीशा बिछौने पर गया और बच्चे पर लेटा। एलीशा ने अपना मुख बच्चे के मुख पर रखा। एलीशा ने अपनी आँखे बच्चे की आँखों पर रखी। एलीशा ने अपने हाथों को बच्चे के हाथों पर रखा। एलीशा ने अपने को बच्चे के ऊपर फैलाया। तब बच्चे का शरीर गर्म हो गया।

35एलीशा कमरे के बाहर आया और घर में चारों ओर घूमा। तब वह कमरे में लौटा और बच्चे के ऊपर लेट गया। तब बच्चा सात बार छींका और उसने आँखें खोलीं।

36एलीशा ने गेहजी को बुलाया और कहा, "शूनेमिन स्त्री को बुलाओ!"

गेहजी ने शूनेमिन स्त्री को बुलाया और वह एलीशा के पास आई। एलीशा ने कहा, "अपने पुत्र को उठा लो।"

37तब शूनेमिन स्त्री कमरे में गई और एलीशा के चरणों पर झुकी। तब उसने अपने पुत्र को उठाया और वह बाहर गई।

एलीशा और जहरीला शोरवा

38एलीशा फिर गिलगाल आ गया। उस समय देश में भुखमरी का समय था। नबियों का समूह एलीशा के सामने बैठा था। एलीशा ने अपने सेवक से कहा, "बड़े बर्तन को आग पर रखो और नबियों के समूह के लिए कुछ शोरवा बनाओ।

39एक व्यक्ति खेतों में साग सब्जी इकट्ठा करने गया। उसे एक जंगली बेल मिली। उसने कुछ जंगली लौकियाँ इस बेल से तोड़ी और उनसे अपने लबादे की जेब को भर लिया। तब वह आया और उसने जंगली लौकियों को बर्तन में डाल दिया। किन्तु नबियों का समूह नहीं जानता था कि वे कैसी लौकियाँ हैं?

40तब उन्होंने कुछ शोरवा व्यक्तियों को खाने के लिये दिया। किन्तु जब उन्होंने शोरवे को खाना आरम्भ किया, तो उन्होंने एलीशा से चिल्लाकर कहा, "परमेश्वर के जन (नबी)! बर्तन में जहर है!" वे उस बर्तन से कुछ नहीं खा सके क्योंकि भोजन खाना खतरे से रहित नहीं था।

41किन्तु एलीशा ने कहा, "कुछ आटा लाओ।" वे एलीशा के पास आटा ले आए और उसने उसे बर्तन में डाल दिया। तब एलीशा ने कहा, "शोरवे को लोगों के लिये डालो जिससे वे खा सकें।"

तब शोरवे में कोई दोष नहीं था!

एलीशा नबियों के समूह को भोजन कराता है

42एक व्यक्ति बालशालीशा से आया और पहली फसल से परमेश्वर के जन (एलीशा) के लिये रोटी लाया। यह व्यक्ति बीस जौ की रोटियाँ और नया अन्न अपनी बोरी में लाया। तब एलीशा ने कहा, "यह भोजन लोगों को दो, जिसे वे खा सकें।"

43एलीशा के सेवक ने कहा, "आपने क्या कहा? यहाँ तो सौ व्यक्ति हैं। उन सभी व्यक्तियों को यह भोजन मैं कैसे दे सकता हूँ?"

किन्तु एलीशा ने कहा, "लोगों को खाने के लिए भोजन दो। यहोवा कहता है, 'वे भोजन कर लेंगे और भोजन बच भी जायेगा।'"

44तब एलीशा के सेवक ने नबियों के समूह के सामने भोजन परोसा। नबियों के समूह के खाने के लिये भोजन पर्याप्त हुआ और उनके पास भोजन बचा भी रहा। यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था।

नामान की समस्या

5 नामान अराम के राजा की सेना का सेनापति था। नामान अपने राजा के लिए अत्याधिक महत्वपूर्ण था। नामान इसलिये अत्याधिक महत्वपूर्ण था क्योंकि यहोवा ने उसका उपयोग अराम को विजय दिलाने के लिए किया था। नामान एक महान और शक्तिशाली व्यक्ति था, किन्तु वह विकट चर्मरोग से पीड़ित था।

2अरामी सेना ने कई सेना की टुकड़ियों को इस्राएल में लड़ने भेजा। सैनिकों ने बहुत से लोगों को अपना दास बना लिया। एक बार उन्होंने एक छोटी लड़की को इस्राएल देश से लिया। यह छोटी लड़की नामान की पत्नी की सेविका हो गई। 3इस लड़की ने नामान की

पत्नी से कहा, "मैं चाहती हूँ कि मेरे स्वामी (नामान) उस नबी (एलीशा) से मिलें जो शोमरोन में रहता है। वह नबी नामान के विकट चर्मरोग को ठीक कर सकता है।"

4नामान अपने स्वामी (अराम के राजा) के पास गया। नामान ने अराम के राजा को वह बात बताई जो इस्राएली लड़की ने कही थी।

5तब अराम के राजा ने कहा, "अभी जाओ और मैं एक पत्र इस्राएल के राजा के नाम भेजूँगा।"

अत: नामान इस्राएल गया। नामान अपने साथ कुछ भेंट ले गया। नामान साढ़े सात सौ पौंड चाँदी, छ: हजार स्वर्ण मुद्राएं, और दस बार बदलने के वस्त्र ले गया।
6नामान इस्राएल के राजा के लिये अराम के राजा का पत्र भी ले गया। पत्र में यह लिखा था..."यह पत्र यह जानकारी देने के लिये है कि मैं अपने सेवक नामान को तुम्हारे यहाँ भेज रहा हूँ। उसके विकट चर्मरोग को ठीक करो।"

7जब इस्राएल का राजा उस पत्र को पढ़ चुका तो उसने अपनी चिन्ता और परेशानी को प्रकट करने के लिये अपने वस्त्र फाड़ डाले। इस्राएल के राजा ने कहा, "क्या मैं परमेश्वर हूँ? नहीं! जीवन और मृत्यु पर मेरा कोई अधिकार नहीं। तब अराम के राजा ने मेरे पास विकट चर्मरोग के रोगी को स्वस्थ करने के लिये क्यों भेजा? इसे जरा सोचों और तुम देखोगे कि यह एक चाल है। अराम का राजा युद्ध आरम्भ करना चाहता है।"

8परमेश्वर के जन (एलीशा) ने सुना कि इस्राएल का राजा परेशान है और उसने अपने वस्त्र फाड़ डाले हैं। एलीशा ने अपना सन्देश राजा के पास भेजा: "तुमने अपने वस्त्र क्यों फाड़े? नामान को मेरे पास आने दो। तब वह समझेगा कि इस्राएल में कोई नबी भी है।"

9अत: नामान अपने घोड़ों और रथों के साथ एलीशा
के घर आया और द्वार के बाहर खड़ा रहा। 10एलीशा
ने एक सन्देशवाहक को नामान के पास भेजा। सन्देशवाहक ने कहा, "जाओ, और यरदन नदी में सात बार नहाओ। तब तुम्हारा चर्मरोग स्वस्थ हो जाएगा और तुम पवित्र तथा शुद्ध हो जाओगे।"

11नामान क्रोधित हुआ और वहाँ से चल पड़ा। उसने कहा, "मैंने समझा था कि कम से कम एलीशा बाहर आएगा, मेरे सामने खड़ा होगा और यहोवा, अपने परमेश्वर के नाम कुछ कहेगा। मैं समझ रहा था कि वह मेरे शरीर पर अपना हाथ फेरेगा और कुष्ठ को
ठीक कर देगा। 12दमिश्क की नदियाँ अबाना और
पर्पर इस्राएल के सभी जलाशयों से अच्छी हैं! मैं दमिश्क की उन नदियों में क्यों नहीं नहाऊँ और पवित्र हो जाऊँ?" इसलिये नामान वापस चला गया। वह क्रोधित था।

13किन्तु नामान के सेवक उसके पास गए और उससे बातें कीं। उन्होंने कहा, "पिता* यदि नबी ने आपसे कोई महान काम करने को कहा होता तो आप उसे जरुर करते। अत: आपको उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिये यदि वह कुछ सरल काम करने को भी कहता है और उसने कहा, 'नहाओ और तुम पवित्र और शुद्ध हो जाओगे।'"

14इसलिये नामान ने वह काम किया जो परमेश्वर के जन (एलीशा) ने कहा, नामान नीचे उतरा और उसने सात बार यरदन नदी में स्नान किया और नामान पवित्र और शुद्ध हो गया। नामान की त्वचा बच्चे की त्वचा की तरह कोमल हो गई।

15नामान और उसका सारा समूह परमेश्वर के जन (एलीशा) के पास आया। वह एलीशा के सामने खड़ा हुआ और उससे कहा, "देखिये, अब मैं समझता हूँ कि इस्राएल के अतिरिक्त पृथ्वी पर कहीं परमेश्वर नहीं है! अब कृपया मेरी भेंट स्वीकार करें!"

16किन्तु एलीशा ने कहा, "मैं यहोवा की सेवा करता हूँ। यहोवा की सत्ता शाश्वत है, उसकी साक्षी मान कर मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं कोई भेंट नहीं लूँगा।"

नामान ने बहुत प्रयत्न किया कि एलीशा भेंट ले
किन्तु एलीशा ने इन्कार कर दिया। 17तब नामान ने
कहा, "यदि आप इस भेंट को स्वीकार नहीं करते तो कम से कम आप मेरे लिये इतना करें। मुझे इस्राएल की इतनी पर्याप्त धूलि लेने दें जिससे मेरे दो खच्चरों पर रखे टोकरे भर जाये। क्यों? क्योंकि मैं फिर कभी होमबलि या बलि किसी अन्य देवता को नहीं चढ़ाऊँगा।
मैं केवल यहोवा को ही बलि भेंट करूँगा। 18और अब
मैं प्रार्थना करता हूँ कि यहोवा मुझे इस बात के लिये क्षमा करेगा कि भविष्य में मेरा स्वामी (अराम का राजा) असत्य देवता की पूजा करने के लिये, रिम्मोन के मन्दिर में जाएगा। राजा सहारे के लिये मुझ पर झुकना चाहेगा, अत: मुझे रिम्मोन के मन्दिर में झुकना पड़ेगा। अब मैं यहोवा से प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे क्षमा करे जब वैसा हो।"

19तब एलीशा ने नामान से कहा, "शान्तिपूर्वक जाओ।"
अत: नामान ने एलीशा को छोड़ा और कुछ दूर गया।
20किन्तु परमेश्वर के जन एलीशा का सेवक गेहजी
बोला, "देखिये, मेरे स्वामी (एलीशा) ने अरामी नामान को, उसकी लाई हुई भेंट को स्वीकार किये बिना ही जाने दिया है। यहोवा शाश्वत है, इसको साक्षी मान कर मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि नामान के पीछे दौड़ूँगा और
उससे कुछ लाऊँगा।" 21अत: गेहजी नामान की ओर
दौड़ा।

पिता दास प्राय: अपने स्वामियों को पिता कहते थे और स्वामी अपने दासों को 'बच्चे' कहते थे।

नामान ने अपने पीछे किसी को दौड़कर आते देखा। वह गेहजी से मिलने को अपने रथ से उतर पड़ा। नामान ने पूछा, “सब कुशल तो है?”

22गेहजी ने कहा, “हाँ, सब कुशल है। मेरे स्वामी एलीशा ने मुझे भेजा है। उसने कहा, ‘देखो, एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश के नबियों के समूह से दो युवक नबी मेरे पास आये हैं। कृपया उन्हें पच्हत्तर पौंड चाँदी और दो बार बदलने के वस्त्र दे दो।’”

23नामान ने कहा, “कृपया डेढ़ सौ पौंड ले लो!” नामान ने गेहजी को चाँदी लेने के लिये मनाया। नामान ने डेढ़ सौ पौंड चाँदी को दो बोरियों में रखा और दो बार बदलने के वस्त्र लिये। तब नामान ने इन चीज़ों को अपने सेवकों में से दो को दिया। सेवक उन चीज़ों को गेहजी के लिये लेकर आए। **24**जब गेहजी पहाड़ी तक आया तो उसने उन चीज़ों को सेवकों से ले लिया। गेहजी ने सेवकों को लौटा दिया और वे लौट गए। तब गेहजी ने उन चीज़ों को घर में छिपा दिया।

25गेहजी आया और अपने स्वामी एलीशा के सामने खड़ा हुआ। एलीशा ने गेहजी से पूछा, “गेहजी, तुम कहाँ गए थे?”

गेहजी ने कहा, “मैं कहीं भी नहीं गया था।”

26एलीशा ने गेहजी से कहा, “यह सच नहीं है! मेरा हृदय तुम्हारे साथ था जब नामान अपने रथ से तुमसे मिलने को मुड़ा। यह समय पैसा, कपड़े, जैतून, अंगूर, भेड़, गायें या सेवक-सेविकायें लेने का नहीं है। **27** अब तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को नामान की बीमारी लग जाएगी। तुम्हें सदैव विकट चर्मरोग रहेगा!”

जब गेहजी एलीशा से विदा हुआ तो गेहजी की त्वचा बर्फ की तरह सफेद हो गई थी। गेहजी को कुष्ठ हो गया था।

एलीशा और लौह फलक

6 नबियों के समूह ने एलीशा से कहा, “हम लोग वहाँ उस स्थान पर रह रहे हैं। किन्तु वह हम लोगों के लिये बहुत छोटा है। **2** हम लोग यरदन नदी को चलें और कुछ लकड़ियाँ काटें। हम में से प्रत्येक एक लट्ठा लेगा और हम लोग अपने लिये रहने का एक स्थान वहाँ बनायें।”

एलीशा ने कहा, “बहुत अच्छा, जाओ और करो।”

उनमें से एक व्यक्ति ने कहा, “कृपया हमारे साथ चलें।”

एलीशा ने कहा, “बहुत अच्छा, मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।”

4अत: एलीशा नबियों के समूह के साथ गया। जब वे यरदन नदी पर पहुँचे तो उन्होंने कुछ पेड़ काटने आरम्भ किये। **5**किन्तु जब एक व्यक्ति एक पेड़ को काट रहा था तो कुल्हाड़ी का लौह फलक कुल्हाड़ी से निकल गया और पानी में गिर पड़ा। तब वह व्यक्ति चिल्लाया, “हे स्वामी! मैंने वह कुल्हाड़ी उधार ली थी!”

6परमेश्वर के जन (एलीशा) ने कहा, “वह कहाँ गिरी?”

उस व्यक्ति ने एलीशा को वह स्थान दिखाया जहाँ लौह फलक गिरा था। तब एलीशा ने एक डंडी काटी और उस डंडी को पानी में फैंक दिया। उस डंडी ने लौह फलक को तैरा दिया। **7**एलीशा ने कहा, “लौह फलक को पकड़ लो।” तब वह व्यक्ति आगे बढ़ा और उसने लौह फलक को ले लिया।

अराम का राजा इस्राएल के राजा को फँसाने का प्रयत्न करता है

8अराम का राजा इस्राएल के विरुद्ध युद्ध कर रहा था। उसने सेना के अधिकारियों के साथ परिषद बैठक बुलाई। उसने आदेश दिया, “इस स्थान पर छिप जाओ और इस्राएलियों पर तब आक्रमण करो जब यहाँ से होकर निकलें।”

9किन्तु परमेश्वर के जन (एलीशा) ने इस्राएल के राजा को एक संदेश भेजा। एलीशा ने कहा, “सावधान रहो! उस स्थान से होकर मत जाओ। वहाँ अरामी सैनिक छिपे हैं!”

10 इस्राएल के राजा ने उस स्थान पर जिसके विषय में परमेश्वर के जन (एलीशा) ने चेतावनी दी थी, अपने व्यक्तियों को संदेश भेजा और इस्राएल के राजा ने बहुत से पुरुषों को बचा लिया।*

11अराम का राजा इससे बहुत घबराया। अराम के राजा ने अपने सैनिक अधिकारियों को बुलाया, और उनसे पूछा, “मुझे बताओ कि इस्राएल के राजा के लिये जासूसी कौन कर रहा है।”

12अराम के राजा के सैनिक अधिकारियों में से एक ने कहा, “मेरे प्रभु और राजा, हम में से कोई भी जासूस नहीं है! एलीशा, इस्राएल का नबी इस्राएल के राजा को अनेक गुप्त सूचनाएं दे सकता है, यहाँ तक कि आप जो अपने बिस्तर में कहेंगे, उसकी भी!”

13अराम के राजा ने कहा, “एलीशा का पता लगाओ और मैं उसे पकड़ने के लिये आदमियों को भेजूँगा।”

सेवकों ने अराम के राजा से कहा, “एलीशा दोतान में है!”

14तब अराम के राजा ने घोड़े, रथ और विशाल सेना को दोतान को भेजा। वे रात को पहुँचे और उन्होंने नगर को घेर लिया। **15**एलीशा के सेवक उस सुबह को जल्दी उठे। एक सेवक बाहर गया और उसने एक सेना को घोड़ों और रथों के साथ नगर के चारों ओर देखा।

एलीशा के सेवक ने एलीशा से कहा, “ओह, मेरे स्वामी हम क्या कर सकते हैं?”

बहुत से … लिया शाब्दिक, “एक या दो नहीं।”

16एलीशा ने कहा, “डरो नहीं! वह सेना जो हमारे
लिये युद्ध करती है, उस सेना से बड़ी है जो अराम के
लिये युद्ध करती है!”
17तब एलीशा ने प्रार्थना की और कहा, “यहोवा, मैं
तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि तू मेरे सेवक की आँखें
खोल जिससे वह देख सके।”
यहोवा ने युवक की आँखे खोलीं और सेवक ने देखा
कि पूरा पर्वत अग्नि के घोड़ों और रथों से ढका पड़ा
था। वे सभी एलीशा के चारों ओर थे!
18ये आग के घोड़े और रथ एलीशा के पास आए।
एलीशा ने यहोवा से प्रार्थना की और कहा, “मैं प्रार्थना
करता हूँ कि तू इन लोगों को अन्धा कर दे।”
तब यहोवा ने अरामी सेना को अन्धा कर दिया, जैसे
एलीशा ने प्रार्थना की थी। 19एलीशा ने अरामी सेना से
कहा, “यह उचित मार्ग नहीं है। यह उपयुक्त नगर नहीं
है। मेरे पीछे आओ। मैं उस व्यक्ति के पास तुम्हें ले
जाऊँगा जिसकी खोज तुम कर रहे हो।” तब एलीशा
अरामी सेना को शोमरोन ले गया।
20जब वे शोमरोन पहुँचे तो एलीशा ने कहा, “यहोवा,
इन लोगों की आँखे खोल दे जिससे ये देख सकें।”
तब यहोवा ने उनकी आँखें खोल दीं और अरामी
सेना ने देखा कि वह शोमरोन नगर में थे। 21इस्राएल के
राजा ने अरामी सेना को देखा। इस्राएल के राजा ने
एलीशा से पूछा, “मेरे पिता, क्या मैं इन्हें मार डालूँ? क्या
मैं इन्हें मार डालूँ?”
22एलीशा ने उत्तर दिया, “नहीं, इन्हें मारो मत। तुम
उन लोगों को नहीं मारते जिन्हें तुम युद्ध में अपनी
तलवार और धनुष–बाण के बल से पकड़ते हो। अरामी
सेना को कुछ रोटी–पानी दो। उन्हें खाने–पीने दो। तब
इन्हें अपने स्वामी के पास लौट जाने दो।”
23इस्राएल के राजा ने अरामी सेना के लिये बहुत सा
भोजन तैयार कराया। अरामी सेना ने खाया–पीया। तब
इस्राएल के राजा ने अरामी सेना को उनके घर वापस
भेज दिया। अरामी सेना अपने स्वामी के पास घर लौट
गई। अरामी लोगों ने इसके बाद इस्राएल पर आक्रमण
करने के लिये फिर कोई सेना नहीं भेजी।

भयंकर भुखमरी शोमरोन को कष्ट देती है

24जब यह सब हो गया तो अराम के राजा बेन्हदद ने
अपनी सारी सेना इकट्ठा की और वह शोमरोन नगर
पर घेरा डालने और उस पर आक्रमण करने गया।
25सैनिकों ने लोगों को नगर में भोजन सामग्री भी नहीं
लाने दी। इसलिये शोमरोन में भयंकर भूखमरी का
समय आ गया। यह शोमरोन में इतना भयंकर था कि
एक गधे का सिर चाँदी के अस्सी सिक्कों में बिकने
लगा और कबूतर की एक पिन्ट बीट की कीमत पाँच
चाँदी के सिक्के थे।
26इस्राएल का राजा नगर की प्राचीर पर घूम रहा
था। एक स्त्री ने चिल्लाकर उसे पुकारा। उस स्त्री ने
कहा, “मेरे प्रभु और राजा, कृपया मेरी सहायता करें!”
27इस्राएल के राजा ने कहा, “यदि यहोवा तुम्हारी
सहायता नहीं करता तो मैं कैसे तुमको सहायता दे
सकता हूँ? मेरे पास तुमको देने को कुछ भी नहीं है।
खलिहानों से कोई अन्न नहीं आया, या दाखमधु के
कारखाने से कोई दाखमधु नहीं आई।” 28तब इस्राएल
के राजा ने उस स्त्री से पूछा, “तुम्हारी परेशानी क्या
है?” स्त्री ने जवाब दिया, “इस स्त्री ने मुझसे कहा,
‘अपने पुत्र को मुझे दो जिससे हम उसे मार डाले और
उसे आज खा ले। तब हम अपने पुत्र को कल खायेंगे।’
29अत: हम ने अपने पुत्र को पकाया और खाया। तब
दूसरे दिन मैंने इस स्त्री से कहा, ‘अपने पुत्र को दो
जिससे हम उसे मार सकें और खा सकें।’ किन्तु उसने
अपने पुत्र को छिपा दिया है।”
30जब राजा ने उस स्त्री की बातें सुनीं तो उसने अपने
वस्त्रों को अपनी परेशानी व्यक्त करने के लिये फाड़
डाला। जब राजा प्राचीर से होकर चला तो लोगों ने देखा
कि वह अपने पहनावे के नीचे मोटे वस्त्र पहने था
जिससे पता चलता था कि वह बहुत दु:खी और परेशान
है। 31राजा ने कहा, “परमेश्वर मुझे दण्डित करे यदि
शापात के पुत्र एलीशा का सिर इस दिन के अन्त तक
भी उसके धड़ पर रह जाये।”
32राजा ने एलीशा के पास एक सन्देशवाहक भेजा।
एलीशा अपने घर में बैठा था और अग्रज (प्रमुख)
उसके साथ बैठे थे। सन्देशवाहक के आने के पहले
एलीशा ने प्रमुखों से कहा, “देखो, वह हत्यारे का पुत्र
(इस्राएल का राजा) लोगों को मेरा सिर काटने को भेज
रहा है। जब सन्देशवाहक आये तो दरवाजा बन्द कर
लेना। दरवाजे को बन्द रखो और उसे घुसने मत दो। मैं
उसके पीछे उसके स्वामी के आने वाले कदमों की
आवाज सुन रहाहूँ!”
33जिस समय एलीशा अग्रजों (प्रमुखों) से बातें कर ही
रहा था, सन्देशवाहक उसके पास आया। सन्देश यह
था: “यह विपत्ति यहोवा की ओर से आई है! मैं यहोवा
की प्रतीक्षा आगे और क्यों करूँ?”

7 एलीशा ने कहा, “यहोवा की ओर से सन्देश सुनो!
यहोवा कहता है: ‘लगभग इसी समय कल बहुत सी
भोजन सामग्री हो जाएगी और यह फिर सस्ती भी हो
जाएगी। शोमरोन के फाटक के साथ के बाजार में लोग
एक डलिया* अच्छा आटा या दो डलिया जौ एक शेकेल
में खरीद सकेंगें।’”
2तब उस अधिकारी ने जो राजा का विश्वासपात्र था,
परमेश्वर के जन (एलीशा) से बातें कीं। अधिकारी ने

डलिया शाब्दिक, “पूली।”

कहा, "यदि यहोवा आकाश में खिड़कियाँ भी बना दे तो
भी यह नहीं होगा!"

एलीशा ने कहा, "इसे तुम अपनी आँखों से देखोगे।
किन्तु उस भोजन में से तुम कुछ भी नहीं खाओगे।"

कुष्ठ रोगी, अरामी डेरे को खाली पाते हैं

3नगर के द्वार के पास चार व्यक्ति कुष्ठरोग से
पीड़ित थे। उन्होंने आपस में बातें की, "हम यहाँ मरने
की प्रतीक्षा करते हुए क्यों बैठे हैं? 4शोमरोन में कुछ
भी खाने के लिये नहीं है। यदि हम लोग नगर के भीतर
जाएंगे तो वहाँ हम भी मर जाएंगे। इसलिये हम लोग
अरामी डेरे की ओर चलें। यदि वे हमें जीवित रहने देते
हैं तो हम जीवित रहेंगे। यदि वे हमें मार डालते हैं तो मर
जायेगें। 5इसलिये उस शाम को चारों कुष्ठ रोगी अरामी
डेरे को गए। वे अरामी डेरे की छोर तक पहुँचे। वहाँ
लोग थे ही नहीं। 6यहोवा ने अरामी सेना को, रथों,
घोड़ों और विशाल सेना का उद्घोष सुनाया था। अत:
अरामी सैनिकों ने आपस में बातें कीं, "इस्राएल के राजा
ने हित्ती राजाओं और मिस्रियों को हम लोगों के विरुद्ध
किराये पर बुलाया है!"

7अरामी सैनिक उस सन्ध्या के आरम्भ में ही भाग
गए। वे सब कुछ अपने पीछे छोड़ गए। उन्होंने अपने
डेरे, घोड़े, गधे छोड़े और अपना जीवन बचाने को भाग
खड़े हुए।

कुष्ठ रोगी अरामी डेरे में

8जब ये कुष्ठ रोगी उस स्थान पर आए जहाँ से
अरामी डेरा आरम्भ होता था, वे एक डेरे में गए।
उन्होंने खाया और मदिरा पान किया। तब चारों कुष्ठ
रोगी उस डेरे से चाँदी, सोना और वस्त्र ले गए। उन्होंने
चाँदी, सोना और वस्त्रों को छिपा दिया। तब वे लौटे और
दूसरे डेरे में गए। उस डेरे से भी वे चीजें ले आए। वे
बाहर गए और इन चीज़ों को छिपा दिया। 9तब इन
कुष्ठ रोगियों ने आपस में बातें कीं, "हम लोग बुरा कर
रहे हैं। आज हम लोगों के पास शुभ सूचना है। किन्तु
हम लोग चुप हैं। यदि हम लोग सूरज के निकलने तक
प्रतीक्षा करेंगे तो हम लोगों को दण्ड मिलेगा। अब हम
चलें और उन लोगों को शुभ सूचना दें जो राजा के
महल में रहते हैं।"

कुष्ठ रोगी शुभ सूचना देते हैं

10अत: ये कुष्ठ रोगी नगर के द्वारपाल के पास गए।
कुष्ठ रोगियों ने द्वारपालों से कहा, "हम अरामी डेरे में
गए थे। किन्तु हम लोगों ने किसी व्यक्ति को वहाँ नहीं
पाया। वहाँ कोई भी नहीं था। घोड़े और गधे तब भी बंधे
थे और डेरे वैसे के वैसे लगे थे। किन्तु सभी लोग चले
गए थे।"

11तब नगर के द्वारपाल जोर से चीखे और राजमहल
के व्यक्तियों को यह बात बताई। 12रात का समय था,
किन्तु राजा अपने पलंग से उठा। राजा ने अपने
अधिकारियों से कहा, "मैं तुम लोगों को बताऊँगा कि
अरामी सैनिक हमारे साथ क्या कर रहे हैं। वे जानते हैं
कि हम भूखे हैं। वे खेतों में छिपने के लिये, डेरों को
खाली कर गए हैं। वे यह सोच रहे हैं, 'जब इस्राएली
नगर के बाहर आएंगे, तब हम उन्हें जीवित पकड़ लेंगे
और तब हम नगर में प्रवेश करेंगे।'"

13राजा के अधिकारियों में से एक ने कहा, "कुछ
व्यक्तियों को नगर में अभी तक बचे पाँच घोड़ों को लेने
दें। निश्चय ही ये घोड़े भी शीघ्र ही ठीक वैसे ही मर
जाएंगे, जैसे इस्राएल के वे सभी लोग जो अभी तक बचे
रह गए हैं, मरेंगे। इन व्यक्तियों को यह देखने को भेजा
जाय कि क्या घटित हुआ है।"

14इसलिये लोगों ने घोड़ों के साथ दो रथ लिये। राजा
ने इन लोगों को अरामी सेना के पीछे लगाया। राजा ने
उनसे कहा, "जाओ और पता लगाओ कि क्याघटनाघटी।"

15वे व्यक्ति अरामी सेना के पीछे यरदन नदी तक
गए। पूरी सड़क पर वस्त्र और अस्त्र–शस्त्र फैले हुये
थे। अरामी लोगों ने जल्दी में भागते समय उन चीज़ों को
फेंक दिया था। सन्देशवाहक शोमरोन को लौटे और
राजा को बताया।

16तब लोग अरामी डेरे की ओर टूट पड़े, और वहाँ
से उन्होंने कीमती चीज़ें ले लीं। हर एक के लिये वहाँ
अत्याधिक था। अत: वही हुआ जो यहोवा ने कहा था।
कोई भी व्यक्ति एक डलिया अच्छा आटा या दो डलिया
जौ केवल एक शेकेल में खरीद सकता था।

17राजा ने अपने व्यक्तिगत सहायक अधिकारी को
द्वार की रक्षा के लिये चुना। किन्तु लोग शत्रु के डेरे से
भोजन पाने के लिये दौड़ पड़े। लोगों ने अधिकारी को
धक्का देकर गिरा दिया और उसे रौंदते हुए निकल गए
और वह मर गया। अत: वे सभी बातें वैसी ही ठीक
घटित हुई जैसा परमेश्वर के जन (एलीशा) ने तब कहा
था जब राजा एलीशा के घर आया था। 18एलीशा ने
कहा था, "कोई भी व्यक्ति शोमरोन के नगरद्वार के
बाजार में एक शेकेल में एक डलिया अच्छा आटा या दो
डलिया जौ खरीद सकेगा।"

19किन्तु परमेश्वर के जन को उस अधिकारी ने
उत्तर दिया था, "यदि यहोवा स्वर्ग में खिड़कियाँ भी बना
दे, तो भी वैसा नहीं हो सकेगा" और एलीशा ने उस
अधिकारी से कहा था, "तुम ऐसा अपनी आँखों से
देखोगे। किन्तु तुम उस भोजन का कुछ भी नहीं खा
पाओगे।"

20अधिकारी के साथ ठीक वैसा ही घटित हुआ।
लोगों ने नगरद्वार पर उसे धक्का दे गिरा दिया, उसे रौंद
डाला और वह मर गया।

राजा और शूनेमिन स्त्री

8 एलीशा ने उस स्त्री से बातें की जिसके पुत्र को
उसने जीवित किया था। एलीशा ने कहा, "तुम्हें
और तुम्हारे परिवार को किसी अन्य देश में चले जाना
चाहिये। क्यों? क्योंकि यहोवा ने निश्चय किया है कि
यहाँ भुखमरी का समय आएगा। इस देश में यह भूखमरी
का समय सात वर्ष का होगा।"
2अत: उस स्त्री ने वही किया जो परमेश्वर के जन ने
कहा। वह अपने परिवार के साथ सात वर्ष पलिश्तियों
के देश में रहने चली गई। 3जब सात वर्ष पूरे हो गए तो
वह स्त्री पलिश्तियों के देश से लौट आई।

वह स्त्री राजा से बातें करने गई। वह चाहती थी कि वह उसके घर और उसकी भूमि को उसे लौटाने में उसकी सहायता करे।

4राजा परमेश्वर के जन (एलीशा) के सेवक गेहजी
से बातें कर रहा था। राजा ने गेहजी से पूछा, "कृपया वे
सभी महान कार्य हमें बतायें जिन्हें एलीशा ने किए हैं।"
5गेहजी राजा को एलीशा के बारे में एक मृत व्यक्ति
को जीवित करने की बात बता रहा था। उसी समय वह
स्त्री राजा के पास गई जिसके पुत्र को एलीशा ने जिलाया
था। वह चाहती थी कि वह अपने घर और अपनी भूमि
को वापस दिलाने में उससे सहायता माँगे। गेहजी ने
कहा, "मेरे प्रभु राजा, यह वही स्त्री है और यह वही पुत्र
है जिसे एलीशा ने जिलाया था।"
6राजा ने पूछा कि वह क्या चाहती है। उस स्त्री ने
अपनी इच्छा बताई।

तब राजा ने एक अधिकारी को उस स्त्री की सहायता के लिये चुना। राजा ने कहा, "इस स्त्री को वह सब कुछ दो जो इसका है और इसकी भूमि की सारी फसलें जब से इसने देश छोड़ा तब से अब तक की, इसे दो।"

बेन्हदद हजाएल को एलीशा के पास भेजता है

7एलीशा दमिश्क गया। अराम का राजा बेन्हदद बीमार
था। किसी व्यक्ति ने बेन्हदद से कहा, "परमेश्वर का
जन यहाँ आया है।"
8तब राजा बेन्हदद ने हजाएल से कहा, "भेंट साथ में
लो और परमेश्वर के जन से मिलने जाओ। उसको
कहो कि वे यहोवा से पूछे कि क्या मैं अपनी बीमारी से
स्वस्थ हो सकता हूँ।"
9इसलिये हजाएल एलीशा से मिलने गया। हजाएल
अपने साथ भेंट लाया। वह दमिश्क से हर प्रकार की
अच्छी चीजें लाया। इन सबको लाने के लिये चालीस
ऊँटों की आवश्यकता पड़ी। हजाएल एलीशा के पास
गया। हजाएल ने कहा, "तुम्हारे अनुयायी* अराम के
राजा बेन्हदद ने मुझे आपके पास भेजा है। वह पूछता है
कि क्या मैं अपनी बीमारी से स्वस्थ होऊँगा।"
10तब एलीशा ने हजाएल से कहा, "जाओ और बेन्हदद
से कहो, 'तुम जीवित रहोगे।' किन्तु यहोवा ने सचमुच
मुझसे यह कहा है, 'वह निश्चय ही मरेगा।'"

एलीशा हजाएल के बारे में भविष्यवाणी करता है

11एलीशा हजाएल को तब तक देखता रहा जब तक
हजाएल संकोच का अनुभव नहीं करने लगा। तब
परमेश्वर का जन चीख पड़ा।
12हजाएल ने कहा, "महोदय, आप चीख क्यों रहे
हैं?"

एलीशा ने उत्तर दिया, "मैं चीख रहा हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम इस्राएलियों के लिये क्या कुछ बुरा करोगे। तुम उनके दृढ़ नगरों को जलाओगे। तुम उनके युवकों को तलवार के घाट उतारोगे। तुम उनके बच्चों को मार डालोगे। तुम उनकी गर्भवती स्त्रियों के गर्भ को चीर निकालोगे।"

13हजाएल ने कहा, "मैं कोई शक्तिशाली व्यक्ति नहीं
हूँ! मैं इन बड़े कामों को नहीं कर सकता!"
एलीशा ने उत्तर दिया, "यहोवा ने मुझे बताया है कि
तुम अराम के राजा होगे।"
14तब हजाएल एलीशा के यहाँ से चला गया और
अपने राजा के पास गया। बेन्हदद ने हजाएल से पूछा,
"एलीशा ने तुमसे क्या कहा?"

हजाएल ने उत्तर दिया, "एलीशा ने मुझसे कहा कि तुम जीवित रहोगे।"

हजाएल बेन्हदद की हत्या करता है

15किन्तु अगले दिन हजाएल ने एक मोटा कपड़ा
लिया और इसे पानी से गीला कर लिया। तब उसने मोटे
कपड़े को बेन्हदद के मुँह पर डाल कर उसकी साँस
रोक दी। बेन्हदद मर गया। अत: हजाएल नया राजा
बना।

यहोराम अपना शासन आरम्भ करता है

16यहोशापात का पुत्र यहोराम यहूदा का राजा था।
यहोराम ने अहाब के पुत्र योराम के इस्राएल के राज्यकाल
के पाँचवें वर्ष में शासन आरम्भ किया। 17यहोराम
बत्तीस वर्ष का था, जब उसने शासन करना आरम्भ
किया। उसने यरूशलेम में आठ वर्ष शासन किया।
18किन्तु यहोराम इस्राएल के राजाओं की तरह रहा
और उन कामों को किया जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया
था। यहोराम अहाब के परिवार के लोगों की तरह
रहता था। यहोराम इस तरह रहा क्योंकि उसकी पत्नी
अहाब की पुत्री थी। 19किन्तु यहोवा ने उसे नष्ट नहीं
किया क्योंकि उसने अपने सेवक दाऊद से प्रतिज्ञा की
थी कि उसके परिवार का कोई न कोई सदैव राजा
होगा।

अनुयायी शाब्दिक, "पुत्र।"

20यहोराम के समय में एदोम यहूदा के शासन से
स्वतन्त्र हो गया। एदोम के लोगों ने अपने लिये एक
राजा चुन लिया।
21तब यहोराम और उसके सभी रथ साईर को गए।
एदोमी सेना ने उन्हें घेर लिया। यहोराम और उसके
अधिकारियों ने उन पर आक्रमण किया और बच
निकले। यहोराम के सभी सैनिक भाग निकले और
घर पहुँचे। 22इस प्रकार एदोमी यहूदा के शासन से
स्वतन्त्र हो गए और वे आज तक यहूदा के शासन से
स्वतन्त्र हैं।

उसी समय लिब्ना भी यहूदा के शासन से स्वतन्त्र हो
गया।
23यहोराम ने जो कुछ किया वह सब "यहूदा के
राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखा है।
24यहोराम मरा और अपने पूर्वजों के साथ दाऊद
नगर में दफनाया गया। यहोराम का पुत्र अहज्याह नया
राजा हुआ।

अहज्याह अपना शासन आरम्भ करता है

25यहोराम का पुत्र अहज्याह, अहाब के पुत्र इस्राएल
के राजा योराम के राज्यकाल के बारहवें वर्ष में यहूदा
का राजा हुआ। 26शासन आरम्भ करने के समय
अहज्याह बाईस वर्ष का था। उसने यरूशलेम में एक
वर्ष शासन किया। उसकी माँ का नाम अतल्याह था।
वह इस्राएल के राजा ओम्री की पुत्री थी। 27अहज्याह ने
वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। अहज्याह
ने अहाब के परिवार के लोगों की तरह बहुत से बुरे
काम किये। अहज्याह उस प्रकार रहता था क्योंकि
उसकी पत्नी अहाब के परिवार से थी।

योराम हजाएल के विरुद्ध युद्ध में घायल हो जाता है

28योराम अहाब के परिवार से था। अहज्याह योराम
के साथ अराम के राजा हजाएल से गिलाद के रामोत में
युद्ध करने गया। अरामियों नें योराम को घायल कर
दिया। राजा योराम इस्राएल को वापस इसलिये लौट गया
कि उस स्थान पर लगे घावों से वह स्वस्थ हो जाय।
योराम यिज्रेल के क्षेत्र में गया। यहूदा के राजा यहोराम
का पुत्र अहज्याह योराम को देखने यिज्रेल गया।

एलीशा एक युवा नबी को येहू का अभिषेक करने को कहता है

9 एलीशा नबी ने नबियों के समूह में से एक को
बुलाया। एलीशा ने इस व्यक्ति से कहा, "तैयार हो
जाओ और अपने हाथ में तेल की इस छोटी बोतल को
ले लो। गिलाद के रामोत को जाओ। 2जब तुम वहाँ
पहुँचो तो निमशी के पौत्र अर्थात् यहोशापात के पुत्र येहू
से मिलो। तब अन्दर जाओ और उसके भाईयों में से
उसे उठाओ। उसे किसी भीतरी कमरे में ले जाओ।
3तेल की छोटी बोतल ले जाओ और येहू के सिर पर
उस तेल को डालो। यह कहो, 'यहोवा कहता है: मैंने
तुम्हारा अभिषेक इस्राएल का नया राजा होने के लिये
किया है।' तब दरवाजा खोलो और भाग चलो। वहाँ
प्रतीक्षा न करो!"
4अत: यह युवा नबी गिलाद के रामोत गया। 5जब
युवक पहुँचा, उसने सेना के सेनापतियों को बैठे देखा।
युवक ने कहा, "सेनापति, मैं आपके लिये एक सन्देश
लाया हूँ।"

येहू ने कहा, "हम सभी यहाँ है। हम लोगों में से
किसके लिये सन्देश है?"

युवक ने कहा, "सेनापति, सन्देश आपके लिये है।"
6येहू उठा और घर में गया। तब युवा नबी ने उस
तेल को येहू के सिर पर डाल दिया। युवा नबी ने येहू से
कहा, "इस्राएल का परमेश्वर, यहोवा कहता है, 'मैं
यहोवा के लोगों, इस्राएलियों पर नया राजा होने के लिये
तुम्हारा अभिषेक करता हूँ। 7 तुम्हें अपने राजा अहाब
के परिवार को नष्ट कर देना चाहिये। इस प्रकार मैं
ईज़ेबेल को, अपने सेवकों, नबियों तथा यहोवा के उन
सभी सेवकों की मृत्यु के लिये जिनकी हत्या कर दी
गई है, दण्डित करूँगा। 8इस प्रकार अहाब का सारा
परिवार मर जाएगा। मै अहाब के परिवार के किसी
लड़के को जीवित नहीं रहने दूँगा। इसका कोई महत्व
नहीं होगा कि वह लड़का दास है या इस्राएल का स्वतन्त्र
व्यक्ति है। 9मैं अहाब के परिवार को, नबात के पुत्र
यारोबाम या अहिय्याह के पुत्र बाशा के परिवार जैसा
कर दूँगा। 10यिज्रेल के क्षेत्र में ईज़ेबेल को कुत्ते खायेंगे।
ईज़ेबेल को दफनाया नहीं जाएगा।'"

तब युवक नबी ने दरवाजा खोला और भाग गया।

सेवक येहू को राजा घोषित करते हैं

11येहू अपने राजा के अधिकारियों के पास लौटा।
अधिकारियों में से एक ने येहू से कहा, "क्या सब
कुशल तो है? यह पागल आदमी तुम्हारे पास क्यों आया
था?"

येहू ने सेवकों को उत्तर दिया, "तुम उस व्यक्ति को
और जो पागलपन की बातें वह करता है, जानते हो।"
12अधिकारियों ने कहा, "नहीं! हमें सच्ची बात बताओ।
वह क्या कहता है?" येहू ने अधिकारियों को वह बताया
जो युवक नबी ने कहा था। येहू ने कहा, "उसने कहा
'यहोवा यह कहता है: मैंने इस्राएल का नया राजा होने
के लिये तुम्हारा अभिषेक किया है।'"
13तब हर एक अधिकारी ने शीघ्रता से अपने लबादे
उतारे और येहू के सामने पैड़ियों पर उन्हें रखा। तब
उन्होंने तुरही बजाई और यह घोषणा की, "येहू राजा
है!"

येहू यिज्रैल जाता है

14इसलिये येहू ने, जो निमशी का पौत्र और यहोशापात
का पुत्र था योराम के विरुद्ध योजनायें बनाई।

उस समय योराम और इस्राएली, अराम के राजा
हजाएल से, गिलाद के रामोत की रक्षा का प्रयत्न कर
रहे थे। 15किन्तु राजा योराम को अरामियों द्वारा किये
गये घाव से स्वस्थ होने के लिये इस्राएल आना पड़ा था।
अरामियों ने योराम को तब घायल किया था जब उसने
अराम के राजा हजाएल के विरुद्ध युद्ध किया था।

अत: येहू ने अधिकारियों से कहा, "यदि तुम लोग
स्वीकार करते हो कि मैं नया राजा हूँ तो नगर से
किसी व्यक्ति को यिज्रैल में सूचना देने के लिये बचकर
निकलने न दो।"

16योराम यिज्रैल में आराम कर रहा था। अत: येहू
रथ में सवार हुआ और यिज्रैल गया। यहूदा का राजा
अहज्याह भी योराम को देखने यिज्रैल आया था।

17एक रक्षक यिज्रैल में रक्षक स्तम्भ पर खड़ा
था। उसने येहू के विशाल दल को आते देखा। उसने
कहा, "मैं लोगों के एक विशाल दल को देख रहा
हूँ!"

योराम ने कहा, "किसी को उनसे मिलने घोड़े पर
भेजो। इस व्यक्ति से यह कहने के लिये कहो, "क्या
आप शान्ति की इच्छा से आए हैं?"

18अत: एक व्यक्ति येहू से मिलने के लिये घोड़े पर
सवार होकर गया। घुड़सवार ने कहा, "राजा योराम
पूछते हैं, 'क्या आप शान्ति की इच्छा से आए हैं?'"

येहू ने कहा, "तुम्हें शान्ति से कुछ लेना–देना नहीं।
आओ और मेरे पीछे चलो।"

रक्षक ने योराम से कहा, "उस दल के पास सन्देशवाहक
गया, किन्तु वह लौटकर अब तक नहीं आया।"

19तब योराम ने एक दूसरे व्यक्ति को घोड़े पर भेजा।
वह व्यक्ति येहू के दल के पास आया और उसने कहा,
"राजा योराम कहते हैं, 'शान्ति।'"

येहू ने उत्तर दिया, "तुम्हें शान्ति से कुछ भी लेना–देना
नहीं! आओ और मेरे पीछे चलो।"

20रक्षक ने योराम से कहा, "दूसरा व्यक्ति उस दल
के पास गया, किन्तु वह अभी तक लौटकर नहीं आया।
रथचालक रथ को निमशी के पौत्र येहू की तरह चला
रहा है। वह पागलों जैसा चला रहा है।"

21योराम ने कहा, "मेरे रथ को तैयार करो!"

इसलिये सेवक ने योराम के रथ को तैयार किया।
इस्राएल का राजा योराम तथा यहूदा का राजा अहज्याह
निकल गए। हर एक राजा अपने–अपने रथ से येहू से
मिलने गए। वे येहू से यिज्रैली नाबोत की भूमि के पास
मिले।

22योराम ने येहू को देखा और उससे पूछा, "येहू क्या
तुम शान्ति के इरादे से आए हो?"

येहू ने उत्तर दिया, "जब तक तुम्हारी माँ ईज़ेबेल
वेश्यावृत्ति और जादू टोना करती रहेगी तब तक शान्ति
नहीं हो सकेगी।"

23योराम ने भाग निकलने के लिये अपने घोड़ों की
बाग मोड़ी। योराम ने अहज्याह से कहा, "अहज्याह! यह
एक चाल है।"

24किन्तु येहू ने अपनी पूरी शक्ति से अपने धनुष को
खींचा और योराम की पीठ में* बाण चला दिया। बाण
योराम के हृदय को बेधता हुआ पार हो गया। योराम
अपने रथ में मर गया।

25येहू ने अपने सारथी बिदकर से कहा, "योराम के
शव को उठाओ और यिज्रैली नाबोत के खेत में फेंक
दो। याद करो, जब हम और तुम योराम के पिता अहाब
के साथ चले थे। तब यहोवा ने कहा था कि इसके साथ
ऐसा ही होगा। 26यहोवा ने कहा था, 'कल मैंने नाबोत
और उसके पुत्रों का खून देखा था। अत: मैं अहाब को
इसी खेत में दण्ड दूँगा।' यहोवा ने ऐसा कहा था। अत:
जैसा यहोवा ने आदेश दिया है–योराम के शव को खेत
में फेंक दो!"

27यहूदा के राजा अहज्याह ने यह देखा, अत: वह
भाग निकला। वह बारी के भवन के रास्ते से होकर
भागा। येहू ने उसका पीछा किया। येहू ने कहा, "अहज्याह
को भी उसके रथ में मार डालो।"

अत: येहू के लोगों ने यिबलाम के पास गूर को जाने
वाली सड़क पर अहज्याह पर प्रहार किया। अहज्याह
मगिद्दो तक भागा, किन्तु वहाँ वह मर गया। 28अहज्याह
के सेवक अहज्याह के शव को रथ में यरूशलेम ले
गए। उन्होंने अहज्याह को, उसकी कब्र में, उसके पूर्वजों
के साथ दाऊद नगर में दफनाया।

29अहज्याह, इस्राएल पर योराम के राज्यकाल के
ग्यारहवें वर्ष में यहूदा का राजा बना था।

ईज़ेबेल की भयंकर मृत्यु

30येहू यिज्रैल गया और ईज़ेबेल को यह सूचना मिली।
उसने अपनी सज्जा की और अपने केशों को बाँधा। तब
वह खिड़की के सहारे खड़ी हुई और बाहर को देखने
लगी। 31येहू ने नगर में प्रवेश किया। ईज़ेबेल ने कहा,
"नमस्कार ओ जिम्री! तुमने ठीक उसकी ही तरह
अपने स्वामी को मार डाला!"

32येहू ने ऊपर खिड़की की ओर देखा। उसने कहा,
"मेरी तरफ कौन है? कौन?"

दो या तीन खोजो ने खिड़की से येहू को देखा, येहू ने
उनसे कहा, "ईज़ेबेल को नीचे फेंको!"

तब खोजों ने ईज़ेबेल को नीचे फेंक दिया। ईज़ेबेल
का कुछ रक्त दीवार और घोड़ों पर छिटक गया। घोड़ों
ने ईज़ेबेल के शरीर को कुचल डाला। 34येहू महल में

पीठ में शाब्दिक, "दोनों बांहों के बीच।"

घुसा और उसने खाया और दाखमधु पिया। तब उसने
कहा, "अब इस अभिशापित स्त्री के बारे में यह करो।
उसे दफना दो क्योंकि वह एक राजा की पुत्री है।"
35कुछ लोग ईज़ेबेल को दफनाने गए। किन्तु वे उसके
शव को न पा सके। वे केवल उसकी खोपड़ी, उसके
पैर और उसके हाथों की हथेलियाँ पा सके। 36इसलिये
वे लोग लौटे और उन्होंने येहू से कहा। तब येहू ने कहा,
"यहोवा ने अपने सेवक तिशबी एलिय्याह से यह सन्देश
देने को कहा था। एलिय्याह ने कहा था: 'यिज्रैल के क्षेत्र
में ईज़ेबेल के शव को कुत्ते खायेंगे। 37ईज़ेबेल का शव
यिज्रैल के क्षेत्र में खेत के गोबर की तरह होगा। लोग
ईज़ेबेल के शव को पहचान नहीं पाएंगे।'"

येहू शोमरोन के प्रमुखों को लिखता है

10 अहाब के सत्तर पुत्र शोमरोन में थे। येहू ने पत्र
लिखे और उन्हें शोमरोन में यिज्रैल के शासकों
और प्रमुखों को भेजा। उसने उन लोगों को भी पत्र भेजे
जो अहाब के पुत्रों के अभिभावक थे। पत्र में येहू ने
लिखा, 2-3"ज्योंही तुम इस पत्र को पाओ तुम अपने
स्वामी के पुत्रों में से सर्वाधिक योग्य और उत्तम व्यक्ति
को चुनो। तुम्हारे पास रथ और घोड़े हैं और तुम एक
दृढ़ नगर में रह रहे हो। तुम्हारे पास अस्त्र-शस्त्र भी
हैं। जिस पुत्र को चुनो उसे उसके पिता के सिंहासन पर
बिठाओ। तब अपने स्वामी के परिवार के लिये युद्ध
करो।"
4किन्तु यिज्रैल के शासक और प्रमुख बहुत भयभीत
थे। उन्होंने कहा, "दोनो राजा (योराम और अहज्याह)
येहू को रोक नहीं सके। अत: हम भी उसे रोक नहीं
सकते!"
5अहाब के महल का प्रबन्धक, नगर प्रशासक, प्रमुख
वरिष्ठ-जन और अहाब के बच्चों के अभिभावकों ने
येहू के पास एक सन्देश भेजा! "हम आपके सेवक हैं।
हम वह सब करेंगे जो आप कहेंगे। हम किसी व्यक्ति
को राजा नहीं बनाएंगे। वही करें जो आप ठीक समझते
हैं।"

शोमरोन के प्रमुख अहाब के बच्चों को मार डालते हैं

6तब येहू ने एक दूसरा पत्र इन प्रमुखों को लिखा। येहू
ने कहा, "यदि तुम मेरा समर्थन करते हो और मेरा
आदेश मानते हो तो अहाब के पुत्रों का सिर काट डालो
और लगभग इसी समय कल यिज्रैल में मेरे पास उन्हें
लेआओ।"
अहाब के सत्तर पुत्र थे। वे नगर के उन प्रमुखों के
पास थे जो उनकी सहायता करते थे। 7जब नगर के
प्रमुखों ने पत्र प्राप्त किया तब उन्होंने राजा के पुत्रों को
लिया और सभी सत्तर पुत्रों को मार डाला। तब प्रमुखों ने
राजपुत्रों के सिर टोकरियों में रखे। उन्होंने टोकरियों
को यिज्रैल में येहू के पास भेज दिया। 8सन्देशवाहक येहू
के पास आए और उससे कहा, "वे राजपुत्रों का सिर
लेकर आए हैं।"
तब येहू ने कहा, "नगर-द्वार पर, प्रात:काल तक
उन सिरों की दो ढेरें बना कर रखो।"
9सुबह को येहू बाहर निकला और लोगों के सामने
खड़ा हुआ। उसने लोगों से कहा, "तुम लोग निरपराध
लोग हो। देखो, मैंने अपने स्वामी के विरुद्ध योजनाएं
बनाई। मैंने उसे मार डाला। किन्तु अहाब के इन सब
पुत्रों को किसने मारा? तुमने उन्हें मारा! 10तुम्हें समझना
चाहिये कि यहोवा जो कुछ कहता है वह घटित होगा
और यहोवा ने एलिय्याह का उपयोग अहाब के परिवार
के लिये इन बातों को कहने के लिये किया था। अब
यहोवा ने वह कर दिया जिसके लिये उसने कहा था
कि "मैं करूँगा।"
11इस प्रकार येहू ने यिज्रैल में रहने वाले अहाब के
पूरे परिवार को मार डाला। येहू ने सभी महत्वपूर्ण
व्यक्तियों, जिगरी दोस्तों और याजकों को मार डाला।
उसने अहाब के एक भी व्यक्ति को जीवित नहीं छोड़ा।

येहू अहज्याह के सम्बन्धियों को मार डालता है

12येहू यिज्रैल से चला और शोमरोन पहुँचा। रास्ते मे
येहू "गड़रियों का डेरा" नामक स्थान पर रुका। जहाँ
गड़रिये अपनी भेड़ों का ऊन कतरते थे। 13येहू यहूदा
के राजा अहज्याह के सम्बन्धियों से मिला। येहू ने उनसे
पूछा, "तुम कौन हो?"
उन्होंने उत्तर दिया, "हम लोग यहूदा के राजा अहज्याह
के सम्बन्धी है। हम लोग यहाँ राजा के बच्चों और
राजमाता के बच्चों से मिलने आए हैं।"
14तब येहू ने अपने लोगों से कहा, "इन्हें जीवित
पकड़ लो।"
येहू के लोगों ने अहज्याह के सम्बन्धियों को जीवित
पकड़ लिया। वे बयालीस लोग थे। येहू ने उन्हें बेथ-एकद
के पास कुँए पर मार डाला। येहू ने किसी व्यक्ति को
जीवित नहीं छोड़ा।

येहू यहोनादाब से मिलता है

15येहू जब उस स्थान से चला तो रेकाब के पुत्र
यहोनादाब से मिला। येहोनादाब येहू से मिलने आ रहा
था। येहू ने यहोनादाब का स्वागत किया और उससे
पूछा, "क्या तुम मेरे उतने ही विश्वसनीय मित्र हो जितना
मैं तुम्हारा हूँ।"
यहोनादाब ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं तुम्हारा विश्वासपात्र
मित्र हूँ।"
येहू ने कहा, "यदि तुम हो तो, तुम अपना हाथ मुझेदो।"
तब येहू बाहर झुका और उसने यहोनादाब को अपने
रथ में खींच लिया।

16येहू ने कहा, "मेरे साथ आओ। तुम देखोगे कि
यहोवा के लिये मेरी भावनायें कितनी प्रबल हैं।"
इस प्रकार यहोनादाब येहू के रथ में बैठा। 17येहू
शोमरोन में आया और अहाब के उस सारे परिवार को
मार डाला जो अभी तक शोमरोन में जीवित था। येहू ने
उन सभी को मार डाला। येहू ने वही काम किये जिन्हें
यहोवा ने एलिय्याह से कहा था।

येहू बाल के उपासकों को बुलाता है

18तब येहू ने सभी लोगों को एक साथ इकट्ठा किया।
येहू ने उनसे कहा, "अहाब ने बाल की सेवा नहीं के
बराबर की। किन्तु येहू बाल की बहुत अधिक सेवा
करेगा। 19अब बाल के सभी याजकों और नबियों को
एक साथ बुलाओ और उन सभी लोगों को एक साथ
बुलाओ जो बाल की उपासना करते हैं। किसी व्यक्ति
को इस सभा में अनुपस्थित न रहने दो। मैं बाल को
बहुत बड़ी बलि चढ़ाने जा रहा हूँ। मैं उस किसी भी
व्यक्ति को मार डालूँगा जो इसमें उपस्थित नहीं होगा!"
किन्तु येहू उनके साथ चाल चल रहा था। येहू बाल
के पूजकों को नष्ट कर देना चाहता था। 20येहू ने
कहा, "बाल के लिये एक धर्मसभा करो" और याजकों
ने धर्मसभा की घोषणा कर दी। 21तब येहू ने पूरे इस्राएल
देश में सन्देश भेजा। बाल के सभी उपासक आए। कोई
भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जो घर पर रह गया हो। बाल के
उपासक बाल के मन्दिर* में आए। मन्दिर लोगों से
भर गया।
22येहू ने लबादे रखने वाले व्यक्ति से कहा, "बाल के
सभी उपासकों के लिये लबादे लाओ।" अत: वह व्यक्ति
बाल पूजकों के लिये लबादे लाया।
23तब येहू और रेकाब का पुत्र यहोनादाब बाल के
मन्दिर के अन्दर गये। येहू ने बाल के उपासकों से
कहा, "अपने चारों ओर देख लो और यह निश्चय कर
लो कि तुम्हारे साथ कोई यहोवा का सेवक तो नहीं है।
यह निश्चय कर लो कि केवल बालपूजक लोग ही हैं।"
24बाल-पूजक बाल के मन्दिर में बलि और होमबलि
चढ़ाने गए।
किन्तु बाहर येहू ने अस्सी व्यक्तियों को प्रतीक्षा में
तैयार रखा था। येहू ने कहा, "किसी व्यक्ति को बचकर
निकलने न दो। यदि कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को बच
निकलने देगा तो उसका भुगतान उसे अपने जीवन से
करना होगा।"
25येहू ने ज्योंही बलि और होमबलि चढ़ाना पूरा किया
त्योंही उसने रक्षकों और सेनापतियों से कहा, "अन्दर
जाओ और बाल-पूजकों को मार डालो! पूजागृह से
किसी जीवित व्यक्ति को बाहर न आने दो!"
अत: सेनापतियों ने पतली तलवारों का उपयोग किया
और बाल पूजकों को मार डाला। रक्षकों और सेनापतियों
ने बाल पूजकों के शवों को बाहर फेंक दिया। तब
रक्षक और सेनापति बाल के पूजागृह के भीतरी कमरे*
में गए। वे बाल के पूजागृह के स्मृति-पाषाणों को बाहर
ले आए और पूजागृह को जला दिया। 27तब उन्होंने बाल
के स्मृति-पाषाण को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। उन्होंने
बाल के पूजागृह को भी ध्वस्त कर दिया। उन्होंने बाल
के पूजागृह को एक शौचालय में बदल दिया। आज भी
उसका उपयोग शौचालय के लिये होता है।
28इस प्रकार येहू ने इस्राएल में बाल-पूजा को समाप्त
कर दिया। 29किन्तु येहू, नबात के पुत्र यारोबाम के उन
पापों से पूरी तरह अपने को दूर न रख सका, जिन्होंने
इस्राएल से पाप कराया था। येहू ने दान और बेतेल में
सोने के बछड़ों को नष्ट नहीं किया।

इस्राएल पर येहू का शासन

30यहोवा ने येहू से कहा, "तुमने बहुत अच्छा किया
है। तुमने वह काम किया है जिसे मैंने अच्छा बताया है।
तुमने अहाब के परिवार को उस तरह नष्ट किया है
जैसा तुमसे मैं उसको नष्ट कराना चाहता था। इसलिये
तुम्हारे वंशज इस्राएल पर चार पीढ़ी तक शासन करेंगे।"
31किन्तु येहू पूरे हृदय से यहोवा के नियमों का पालन
करने में सावधान नहीं था। येहू ने यारोबाम के उन
पापों को करना बन्द नहीं किया जिन्होंने इस्राएल से पाप
कराए थे।

हजाएल इस्राएल को पराजित करता है

32उस समय यहोवा ने इस्राएल के हिस्सों को अलग
करना आरम्भ किया। अराम के राजा हजाएल ने
इस्राएलियों को इस्राएल की हर एक सीमा पर हराया।
33हजाएल ने यरदन नदी के पूर्व के गिलाद प्रदेश को,
गाद, रूबेन और मनश्शे के परिवार समूह के प्रदेशों
सहित जीत लिया। हजाएल ने अरोएर से लेकर अर्नोन
घाटी के सहारे गिलाद और बाशान तक की सारी भूमि
जीत ली।

येहू की मृत्यु

34वे सभी बड़े कार्य, जो येहू ने किये, "इस्राएल के
राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे गए हैं। 35येहू
मरा और उसे उसके पूर्वजों के साथ दफना दिया गया।
लोगों ने येहू को शोमरोन में दफनाया। उसके बाद येहू
का पुत्र यहोआहाज इस्राएल का नया राजा हुआ। 36येहू
ने शोमरोन में इस्राएल पर अट्ठाईस वर्ष तक शासन
किया।

मन्दिर यहाँ इसका अर्थ वह इमारत है जिसमें लोग बाल की पूजा करने जाते थे।

भीतरी कमरा शाब्दिक, "बाल के मन्दिर का नगर।"

अतल्याह यहूदा के सभी राजपुत्रों को नष्ट कर देती है

11 अहज्याह की माँ अतल्याह ने देखा कि उसका
पुत्र मर गया। तब वह उठी और उसने राजा के
पूरे परिवार को मार डाला।

2यहोशेबा राजा योराम की पुत्री और अहज्याह की
बहन थी। योआश राजा के पुत्रों में से एक था। यहोशेबा
ने योआश को तब छिपा लिया जब अन्य बच्चे मारे जा
रहे थे। यहोशेबा ने योआश को छिपा दिया। उसने
योआश और उसकी धायी को अपने सोने के कमरे में
छिपा दिया। इस प्रकार यहोशेबा और धायी ने योआश
को अतल्याह से छिपा लिया। इस प्रकार योआश मारा
नहीं गया।

3तब योआश और यहोशेबा यहोवा के मन्दिर में जा
छिपे। योआश वहाँ छः वर्ष तक छिपा रहा और अतल्याह
ने यहूदा प्रदेश पर शासन किया।

4सातवें वर्ष प्रमुख याजक यहोयादा ने करीतों के
सेनापतियों और रक्षकों* को बुलाया और वे आए।
यहोयादा ने यहोवा के मन्दिर में उन्हें एक साथ बिठाया।
तब यहोयादा ने उनके साथ एक वाचा की। मन्दिर में
यहोयादा ने उन्हें प्रतिज्ञा करने को विवश किया। तब
उसने राजा के पुत्र (योआश) को उन्हें दिखाया।

5तब यहोयादा ने उनको आदेश दिया। उसने कहा,
"तुम्हें यह करना होगा। प्रत्येक सब्त-दिवस के आरम्भ
होने पर तुम लोगों केएक तिहाई को यहाँ आना चाहिये।
तुम लोगों को राजा की रक्षा उसके घर में करनी होगी।
6दूसरे एक तिहाई को सूर-द्वार पर रहना होगा और
बचे एक तिहाई को रक्षकों के पीछे, द्वार पर रहना
होगा। इस प्रकार तुम लोग योआश की रक्षा में दीवार
की तरह रहोगे 7प्रत्येक सब्त-दिवस के अन्त में तुम
लोगों के दो तिहाई यहोवा के मन्दिर की रक्षा करते हुए
राजा योआश की रक्षा करेंगे। 8जब कभी वह कहीं
जाय तुम्हें राजा योआश के साथ ही रहना चाहिये। पूरे
दल को उसे घेरे रखना चाहिये। प्रत्येक रक्षक को
अपने अस्त्र-शस्त्र अपने हाथ में रखना चाहिये और
तुम लोगों को उस किसी भी व्यक्ति को मार डालना
चाहिये जो तुम्हारे अत्याधिक करीब पहुँचे।"

9सेनापतियों ने याजक यहोयादा के दिये गए सभी
आदेशों का पालन किया। हर एक सेनापति ने अपने
सैनिकों को लिया। एक दल को राजा की रक्षा शनिवार
को करनी थी और अन्य दलों को सप्ताह के अन्य दिनों
में राजा की रक्षा करनी थी। वे सभी पुरुष याजक
यहोयादा के पास गए 10और याजक ने सेनापतियों को
भाले और ढाले दीं। ये वे भाले और ढाले थीं जिन्हें
दाऊद ने यहोवा के मन्दिर में रखा था। 11ये रक्षक
अपने हाथों में अपने शस्त्र लिये मन्दिर के दायें कोने से
लेकर बायें कोने तक खड़े थे। वे वेदी और मन्दिर के
चारों ओर और जब राजा मन्दिर में जाता तो उसके
चारों ओर खड़े होते थे। 12ये व्यक्ति योआश को बाहर
ले आए। उन्होंने योआश के सिर पर मुकुट पहनाया
और परमेश्वर तथा राजा के बीच की वाचा को उसे
दिया।* तब उन्होंने उसका अभिषेक किया और उसे
नया राजा बनाया। उन्होंने तालियाँ बजाई और उद्घोष
किया, "राजा दीर्घायु हों!"

13रानी अतल्याह ने रक्षकों और लोगों का यह उद्घोष
सुना। इसलिये वह यहोवा के मन्दिर में लोगों के पास
गई। 14अतल्याह ने उस स्तम्भ के सहारे राजा को देखा
जहाँ राजा प्रायः खड़े होते थे। उसने प्रमुखों और लोगों
को राजा के लिये तुरही बजाते हुये भी देखा। उसने देखा
कि सभी लोग बहुत प्रसन्न थे। उसने तुरही को बजते
हुए सुना और उसने अपने वस्त्र यह प्रकट करने के
लिये फाड़ डाले कि उसे बड़ी घबराहट है। तब अतल्याह
चिल्ला उठी, "षडयन्त्र! षडयन्त्र!"

15याजक यहोयादा ने सैनिकों की व्यवस्था के
अधिकारी सेनापतियों को आदेश दिया। यहोयादा ने
उनसे कहा, "अतल्याह को मन्दिर के क्षेत्र से बाहर ले
जाओ। उसके किसी भी साथ देने वाले को मार डालो।
किन्तु उन्हें यहोवा के मन्दिर में मत मारो।"

16जैसे ही वह महल के 'अश्व-द्वार' से गई सैनिकों
ने उसे पकड़ लिया और मार डाला । सैनिकों ने अतल्याह
को वहीं मार डाला।

17तब यहोयादा ने यहोवा, राजा और लोगों के बीच
एक सन्धि कराई। इस वाचा से यह पता चलता था कि
राजा और लोग यहोवा के अपने ही हैं। यहोयादा ने
राजा और लोगों के बीच भी एक वाचा कराई। इस
वाचा से यह पता चलता था कि राजा लोगों के लिये
कार्य करेगा और इससे यह पता चलता था कि लोग
राजा का आदेश मानेंगे और उसका अनुसरण करेंगे।

18तब सभी लोग असत्य देवता बाल के पूजागृह को
गए। लोगों ने बाल की मूर्ति और उसकी वेदियों को
नष्ट कर दिया। उन्होंने उनके बहुत से टुकड़े कर
डाले। लोगों ने बाल के याजक मत्तन को भी वेदी के
सामने मार डाला।

तब याजक यहोयादा ने कुछ लोगों को यहोवा के
मन्दिर की व्यवस्था के लिये रखा। 19याजकों, विशेष
रक्षकों और सेनापतियों के अनुरक्षण में राजा यहोवा
के मन्दिर से राजमहल तक गया और अन्य सभी लोग
उनके पीछे-पीछे गए। वे राजा के महल के द्वार तक
गए। तब राजा योआश राजसिंहासन पर बैठा। 20सभी

रक्षकों शाब्दिक, "दौड़ लगाने वाले" या "सन्देशवाहक।"

वाचा ... दिया संभवत: परमेश्वर की सेवा करने के लिए यह राजा की प्रतिज्ञा थीं। देखें पद 17 और 1शमू.10:25

लोग प्रसन्न थे। नगर शान्त था। रानी अतल्याह, राजा के महल के पास तलवार के घाट उतार दी गई थी।

21जब योआश राजा हुआ, वह सात वर्ष का था।

योआश अपना शासन आरम्भ करता है

12 योआश ने इस्राएल में येहू के राज्यकाल के सातवें वर्ष में शासन करना आरम्भ किया। योआश ने चालीस वर्ष तक यरूशलेम में शासन किया। योआश की माँ सिब्या बेर्शेबा की थी। 2योआश ने वे कार्य किये जिन्हें यहोवा ने अच्छा कहा था। योआश ने पूरे जीवन यहोवा की आज्ञा का पालन किया। उसने वे कार्य किये जिनकी शिक्षा याजक यहोयादा ने उसे दी थी। 3किन्तु उसने उच्च स्थानों को नष्ट नहीं किया। लोग तब तक भी उन पूजा के स्थानों पर बलि भेंट करते तथा सुगन्धि जलाते थे।

योआश ने मन्दिर की मरम्मत का आदेश दिया

4-5योआश ने याजकों से कहा, "यहोवा के मन्दिर में बहुत धन है। लोगों ने मन्दिर में चीज़ें दी हैं। लोगों ने गणना के समय मन्दिर का कर दिया है और लोगों ने धन इसलिये दिया है कि वे स्वत: ही देना चाहते थे। याजकों, आप लोग उस धन को ले लें और यहोवा के मन्दिर की मरम्मत करवा दें। हर एक याजक उस धन का इसमें उपयोग करे जो उसे उन लोगों से मिलता है जिनकी वे सेवा करते हैं। उसे उस धन का उपयोग यहोवा के मन्दिर की टूट–फूट की मरम्मत में करना चाहिये।"

6किन्तु याजकों ने मरम्मत नहीं की। योआश के राज्यकाल के तेईसवें वर्ष में भी याजकों ने तब तक मन्दिर की मरम्मत नहीं की थी। 7इसलिये योआश ने याजक यहोयादा और अन्य याजकों को बुलाया। योआश ने यहोयादा और अन्य याजकों से पूछा, "आपने मन्दिर की मरम्मत क्यों नहीं की? आप उन लोगों से धन लेना बन्द करें जिनकी आप सेवा करते हैं। उस धन को उपयोग में लाना बन्द करें। उस धन का उपयोग मन्दिर की मरम्मत में होना चाहिये।"

8याजकों ने लोगों से धन न लेना स्वीकार किया। किन्तु उन्होंने मन्दिर की मरम्मत न करने का भी निश्चय किया। 9इसलिये याजक यहोयादा ने एक सन्दूक लिया और उसके ऊपरी भाग में एक छेद कर दिया। तब यहोयादा ने सन्दूक को वेदी के दक्षिण की ओर रख दिया। यह सन्दूक उस दरवाजे के पास था जिससे लोग यहोवा के मन्दिर में आते थे। कुछ याजक मन्दिर के द्वार–पथ की रक्षा करते थे। वे याजक उस धन को, जिसे लोग यहोवा को देते थे, ले लेते थे और उस सन्दूक में डाल देते थे।

10जब लोग मन्दिर को जाते थे तब वे उस सन्दूक में सिक्केडालते थे। जब भी राजा का सचिव और महायाजक यह जानते कि सन्दूक में बहुत धन है तो वे आते और सन्दूक से धन को निकाल लेते। वे धन को थैलों में रखते और उसे गिन लेते थे। 11तब वे उन मजदूरों का भुगतान करते जो यहोवा के मन्दिर में काम करते थे। वे यहोवा के मन्दिर में काम करने वाले बढ़ईयों और अन्य कारीगरों का भुगतान करते थे। 12वे धन का उपयोग पत्थर के कामगारों और पत्थर तराशों का भुगतान करने में करते थे और वे उस धन का उपयोग लकड़ी, कटे पत्थर, और यहोवा के मन्दिर की मरम्मत के लिये अन्य चीजों को खरीदने में करते थे।

13-14लोगों ने यहोवा के मन्दिर के लिये धन दिया। किन्तु याजक उस धन का उपयोग चाँदी के बर्तन, बत्ती–झाड़नी, चिलमची, तुरही या कोई भी सोने–चाँदी के तश्तरियों को बनाने में नहीं कर सके। वह धन मजदूरों का भुगतान करने में लगा और उन मजदूरों ने यहोवा के मन्दिर की मरम्मत की। 15किसी ने सारे धन का हिसाब नहीं किया या किसी कार्यकर्ता को यह बताने के लिये विवश नहीं किया गया कि धन क्या हुआ? क्यों? क्योंकि उन कार्यकर्ताओं पर विश्वास किया जा सकता था।

16लोगों ने उस समय धन दिया जब उन्होंने दोषबलि या पापबलि चढ़ाई। किन्तु उस धन का उपयोग मजदूर के भुगतान के लिये नहीं किया गया। वह धन याजकों का था।

योआश हजाएल से यरूशलेम की रक्षा करता है

17हजाएल अराम का राजा था। हजाएल गत नगर के विरुद्ध युद्ध करने गया। हजाएल ने गत को हराया। तब उसने यरूशलेम के विरुद्ध युद्ध करने जाने की योजना बनाई।

18यहोशापात, यहोराम और अहज्याह यहूदा के राजा रह चुके थे। वे योआश के पूर्वज थे। उन्होंने यहोवा को बहुत सी चीज़ें भेंट की थीं। वे चीज़ें मन्दिर में रखी थी। योआश ने भी बहुत सी चीज़ें यहोवा को भेंट की थी। योआश ने उन सभी विशेष चीज़ों और मन्दिर और अपने महल में रखे हुये सारे सोने को लिया। तब योआश ने उन सभी कीमती चीज़ों को अराम के राजा हजाएल के पास भेजा। इसी से हजाएल ने अपनी सेना को यरूशलेम से हटा लिया।

योआश की मृत्यु

19योआश ने जो बड़े कार्य किये वे सभी "यहूदा के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे गए है।

20योआश के अधिकारियों ने उसके विरुद्ध योजना बनाई। उन्होंने योआश को सिल्ला तक जाने वाली

सड़क पर स्थित मिल्लो के घर पर मार डाला। 21शिमात
का पुत्र योजाकार और शोमेर का पुत्र यहोजाबाद योआश
के अधिकारी थे। उन व्यक्तियों ने योआश को मार
डाला। लोगों ने दाऊद नगर में योआश को उसके पूर्वजों
के साथ दफनाया। योआश का पुत्र अमस्याह उसके
बाद नया राजा बना।

यहोआहाज अपना शासन आरम्भ करता है

13 येहू का पुत्र यहोआहाज शोमरोन में इस्राएल का
राजा बना। यह अहज्याह के पुत्र योआश के
यहूदा में राज्यकाल के तेईसवें वर्ष में हुआ। यहोआहाज
ने सत्रह वर्ष तक राज्य किया।

2यहोआहाज ने वे कार्य किये जिन्हें यहोवा ने बुरा
बताया था। यहोआहाज ने नबात के पुत्र यारोबाम के
पापों का अनुसरण किया जिसने इस्राएल से पाप कराया।
यहोआहाज ने उन कामों को करना बन्द नहीं किया।
3तब यहोवा इस्राएल पर बहुत क्रोधित हुआ। यहोवा ने
इस्राएल को अराम के राजा हजाएल और हजाएल के
पुत्र बेन्हदद के अधीन कर दिया।

यहोवा ने इस्राएल के लोगों पर कृपा की

4तब यहोआहाज ने यहोवा से सहायता के लिये प्रार्थना
की और यहोवा ने उसकी प्रार्थना सुनी। यहोवा ने
इस्राएल के लोगों के कष्टों और अराम के राजा के
उत्पीड़न को देखा था। 5इसलिये यहोवा ने एक व्यक्ति
को इस्राएल की रक्षा के लिये भेजा। इस्राएली अरामियों
से स्वतन्त्र हो गए। अत: इस्राएली, पहले की तरह अपने
घर लौट गए।

6किन्तु इस्राएलियों ने फिर भी, उस यारोबाम के
परिवार के पापों को करना बन्द नहीं किया। यारोबाम
ने इस्राएल से पाप करवाया, और इस्राएली निरन्तर पाप
कर्म करते रहे। उन्होंने अशेरा के स्तम्भों को भी
शोमरोन में रखा। 7अराम के राजा ने यहोआहाज की
सेना को पराजित किया। अराम के राजा ने सेना के
अधिकांश लोगों को नष्ट कर दिया। उसने केवल
पचास घुड़सवार, दस रथ, और दस हजार पैदल सैनिक
छोड़े। यहोआहाज के सैनिक दायं चलाते समय हवा से
उड़ाये गए भूसे की तरह थे।

8सभी बड़े कार्य जो यहोआहज ने किये “इस्राएल के
राजाओं के इतिहास” की पुस्तक में लिखे हैं। 9यहोआहाज़
मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। लोगों ने
यहोआहाज को शोमरोन में दफनाया। यहोआहाज का
पुत्र यहोआश उसके बाद नया राजा हुआ।

इस्राएल पर यहोआश का शासन

10यहोआहाज का पुत्र यहोआश शोमरोन में इस्राएल
का राजा हुआ। यह योआश के यहूदा में राज्यकाल के
सैंतीसवें वर्ष में हुआ। यहोआश ने इस्राएल पर सोलह
वर्ष तक राज्य किया। 11इस्राएल के राजा यहोआश ने
वे कार्य किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। उसने
नबात के पुत्र यारोबाम के पापों को बन्द नहीं किया
जिसने इस्राएल से पाप कराये। यहोआश उन पापों को
करता रहा। 12सभी बड़े कार्य जो यहोआश ने किये
और यहूदा के राजा अहज्याह के विरुद्ध उसने जो युद्ध
किया वे “इस्राएल के राजाओं के इतिहास” के पुस्तक
में लिखे हैं। 13यहोआश मरा और अपने पूर्वजों के साथ
दफनाया गया। यारोबाम नया राजा बना और यहोआश
के राज सिंहासन पर बैठा। यहोआश शोमरोन में इस्राएल
के राजाओं के साथ दफनाया गया।

यहोआश एलीशा से भेंट करता है

14एलीशा बीमार पड़ा। बाद में एलीशा बीमारी से मर
गया। इस्राएल का राजा यहोआश एलीशा से मिलने गया।
यहोआश एलीशा के लिये रोया। यहोआश ने कहा, “मेरे
पिता! मेरे पिता! क्या यह इस्राएल के रथों और घोड़ों के
लिये समय है?”*

15एलीशा ने यहोआश से कहा, “एक धनुष और
कुछ बाण लो।”

यहोआश ने एक धनुष और कुछ बाण लिये। 16तब
एलीशा ने इस्राएल के राजा से कहा, “अपना हाथ धनुष
पर रखो।” यहोआश ने अपना हाथ धनुष पर रखा। तब
एलीशा ने अपने हाथ राजा के हाथ पर रखे। 17एलीशा
ने कहा, “पूर्व की खिड़की खोलो।” यहोआश ने खिड़की
खोली। तब एलीशा ने कहा, “बाण चलाओ।”

यहोआश ने बाण चला दिया। तब एलीशा ने कहा,
“वह यहोवा के विजय का बाण है! यह अराम पर
विजय का बाण है। तुम अरामियों को अपेक में हराओगे
और तुम उनको नष्ट कर दोगे।”

18एलीशा ने कहा, “बाण लो।” योआश ने बाण लिये।
तब एलीशा ने इस्राएल के राजा से कहा, “भूमि पर
प्रहार करो।”

योआश ने भूमि पर तीन बार प्रहार किया। तब वह
रुक गया। 19परमेश्वर का जन (एलीशा) योआश पर
क्रोधित हुआ। एलीशा ने कहा, “तुम्हें पाँच या छ: बार
धरती पर प्रहार करना चाहिये था। तब तुम अराम को
उसे नष्ट करने तक हराते! किन्तु अब तुम अराम को
केवल तीन बार हराओगे!”

एलीशा की कब्र पर एक अद्‌भुत बात होती है

20एलीशा मरा और लोगों ने उसे दफनाया। एक बार
बसन्त में मोआबी सैनिकों का एक दल इस्राएल आया।

रथों ... समय है इसकी तात्पर्य यह है कि यह समय परमेश्वर के आने और तुमको ले जाने का है (मृत्यु)। देखें 1राजा 2:12

वे युद्ध में सामग्री लेने आए। 21कुछ इस्राएली एक मरे
व्यक्ति को दफना रहे थे और उन्होंने सैनिकों के उस
दल को देखा। इस्राएलियों ने जल्दी में शव को एलीशा
की कब्र में फेंका और वे भाग खड़े हुए। ज्योंही उस मरे
व्यक्ति ने एलीशा की हड्डियों का स्पर्श किया, मरा
व्यक्ति जीवित हो उठा और अपने पैरों पर खड़ा हो
गया।

योआश इस्राएल के नगर वापस जीतता है

22यहोआहाज के पूरे शासन काल में अराम के राजा
हजाएल ने इस्राएल को परेशान किया। 23किन्तु यहोवा
इस्राएलियों पर दयालु था। यहोवा को दया आई और वह
इस्राएलियों की ओर हुआ। क्यों? क्योंकि इब्राहीम, इसहाक
और याकूब के साथ अपनी वाचा के कारण, यहोवा
इस्राएलियों को अभी नष्ट करने के लिये तैयार नहीं
था। उसने अभी तक उन्हें अपने से दूर नहीं फेंका था।

24अराम का राजा हजाएल मरा और उसके बाद
बेन्हदद नया राजा बना। 25मरने के पहले हजाएल ने
योआश के पिता यहोआहाज से युद्ध में कुछ नगर लिये
थे। किन्तु अब यहोआहाज ने हजाएल के पुत्र बेन्हदद से
वे नगर वापस ले लिये। योआश ने बेन्हदद को तीन बार
हराया और इस्राएल के नगरों को वापस लिया।

अमस्याह यहूदा में अपना शासन आरम्भ करता है

14 यहूदा के राजा योआश का पुत्र अमस्याह इस्राएल
के राजा यहोआहाज के पुत्र योआश के शासन
काल के दूसरे वर्ष में राजा हुआ। 2अमस्याह ने जब
शासन करना आरम्भ किया, वह पच्चीस वर्ष का था।
अमस्याह ने उनतीस वर्ष तक यरूशलेम में राज्य किया।
अमस्याह की माँ यरूशलेम की निवासी यहोअद्दीन थी।
3अमस्याह ने वे कार्य किये जिन्हें यहोवा ने अच्छा
बताया था। किन्तु उसने अपने पूर्वज दाऊद की तरह
परमेश्वर का अनुसरण पूरी तरह से नहीं किया। अमस्याह
ने वे सारे काम किये जो उसके पिता योआश ने किये
थे। उसने उच्च स्थानों को नष्ट नहीं किया। लोग उन
पूजा के स्थानों पर तब तक बलि देते और सुगन्धि
जलाते थे।

5जिस समय अमस्याह का राज्य पर दृढ़ नियन्त्रण था,
उसने उन अधिकारियों को मार डाला जिन्होंने उसके
पिता को मारा था। 6किन्तु उसने हत्यारों के बच्चों को,
"मूसा के व्यवस्था" की किताब में लिखे नियमों के
कारण नहीं मारा। यहोवा ने अपना यह आदेश मूसा के
व्यवस्था में दिया था: "माता–पिता बच्चों द्वारा कुछ किये
जाने के कारण मारे नहीं जा सकते और बच्चे अपने
माता–पिता द्वारा कुछ किये जाने के कारण मारे नहीं
जा सकते। कोई व्यक्ति केवल अपने ही किये बुरे कार्य
के लिये मारा जा सकता है।"

7अमस्याह ने नमक घाटी में दस हजार एदोमियों को
मार डाला। युद्ध में अमस्याह ने सेला को जीता और
उसका नाम योक्तेल रखा। वह स्थान आज भी योक्तेल
कहा जाता है।

अमस्याह योआश के विरुद्ध युद्ध छेड़ना चाहता है

8अमस्याह ने इस्राएल के राजा येहू के पुत्र यहोआहाज
के पुत्र योआश के पास सन्देशवाहक भेजा। अमस्याह
के सन्देश में कहा गया, "आओ, हम परस्पर युद्ध करें।
आमने सामने होकर एक दूसरे का मुकाबला करें।"

9इस्राएल के राजा योआश ने यहूदा के राजा अमस्याह
को उत्तर भेजा। योआश ने कहा, "लबानोन की एक
कटीली झाड़ी ने लबानोन के देवदारु पेड़ के पास एक
सन्देश भेजा। सन्देश यह था, 'अपनी पुत्री, मेरे पुत्र के
साथ विवाह के लिये दो।' किन्तु लबानोन का एक
जंगली जानवर उधर से निकला और कटीली झाड़ी को
कुचल गया। 10यह सत्य है कि तुमने एदोम को हराया
है। किन्तु तुम एदोम पर विजय के कारण घमण्डी हो
गए हो। अपनी प्रसिद्धि का आनन्द उठाओ तथा घर पर
रहो। अपने लिये परेशानियाँ मत मोल लो। यदि तुम ऐसा
करोगे तुम गिर जाओगे और तुम्हारे साथ यहूदा भी
गिरेगा!"

11किन्तु अमस्याह ने योआश की चेतावनी अनसुनी
कर दी। अत: इस्राएल का राजा योआश यहूदा के राजा
अमस्याह के विरुद्ध उसके ही नगर बेतशेमेश में लड़ने
गया। 12इस्राएल ने यहूदा को पराजित किया। यहूदा का
हर एक आदमी घर भाग गया। 13बेतशेमेश में इस्राएल
के राजा योआश ने अहज्याह के पौत्र व योआश के पुत्र
यहूदा के राजा अमस्याह को बन्दी बना लिया। योआश
अमस्याह को यरूशलेम ले गया। योआश ने एप्रैम द्वार
से कोने के फाटक तक लगभग छ: सौ फुट यरूशलेम
की दीवार को गिरवाया। 14तब योआश ने सारा सोना–
चाँदी और जो भी बर्तन यहोवा के मन्दिर और राजमहल
के खजाने में थे, उन सब को लूट लिया। योआश ने
कुछ लोगों को बन्दी बना लिया। तब वह शोमरोन को
वापस लौट गया। 15जो सभी बड़े कार्य योआश ने किये,
साथ ही साथ यहूदा के राजा अमस्याह के साथ वह
कैसे लड़ा, "इस्राएल के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक
में लिखे गए हैं। 16योआश मरा और अपने पूर्वजों के
साथ दफनाया गया। योआश शोमरोन में इस्राएल के
राजाओं के साथ दफनाया गया। योआश का पुत्र यारोबाम
उसके बाद नया राजा हुआ।

अमस्याह की मृत्यु

17यहूदा के राजा योआश का पुत्र अमस्याह इस्राएल
के राजा यहोआहाज के पुत्र योआश की मृत्यु के बाद
पन्द्रह वर्ष तक जीवित रहा। 18अमस्याह ने जो बड़े

काम किये वे "यहूदा के राजाओं के इतिहास" की
पुस्तक में लिखे गए हैं। 19लोगों ने यरूशलेम में अमस्याह
के विरुद्ध एक योजना बनाई। अमस्याह लाकीश को
भाग निकला। किन्तु लोगों ने अमस्याह के विरुद्ध,
लाकीश को अपने आदमी भेजे और उन लोगों ने
लाकीश में अमस्याह को मार डाला। 20लोग घोड़ों पर
अमस्याह के शव को वापस ले आए। अमस्याह दाऊद
नगर में अपने पूर्वजों के साथ यरूशलेम में दफनाया
गया।

अजर्याह यहूदा पर अपना शासन आरम्भ करता है

21तब यहूदा के सभी लोगों ने अजर्याह को नया राजा
बनाया। अजर्याह सोलह वर्ष का था। 22इस प्रकार अमस्याह
मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। तब
अजर्याह ने एलत को फिर बनाया और इसे यहूदा को
वापस दे दिया।

यारोबाम द्वितीय इस्राएल पर शासन आरम्भ करता है

23इस्राएल के राजा योआश के पुत्र यारोबाम ने शोमरोन
में यहूदा के राजा योआश के पुत्र अमस्याह के राज्यकाल
के पन्द्रहवें वर्ष में शासन करना आरम्भ किया। यारोबाम
ने इकतालीस वर्ष तक शासन किया। 24यारोबाम ने वे
कार्य किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। यारोबाम ने
उस नबात के पुत्र यारोबाम के पापों को करना बन्द
नहीं किया, जिसने इस्राएल को पाप करने के लिये
विवश किया। 25यारोबाम ने इस्राएल की उस भूमि को
जो सिवाना हमात से अराबा सागर (मृत सागर) तक
जाती थी, वापस लिया। यह वैसा ही हुआ जैसा इस्राएल
के यहोवा ने अपने सेवक गथेपेर के नबी, अमित्तै के
पुत्र योना से कहा था। 26यहोवा ने देखा कि सभी
इस्राएली, चाहे वे स्वतन्त्र हों या दास, बहुत सी परेशानियों
में हैं। कोई व्यक्ति ऐसा नहीं बचा था जो इस्राएल की
सहायता कर सकता। 27यहोवा ने यह नहीं कहा था कि
वह संसार से इस्राएल का नाम उठा लेगा। इसलिये
यहोवा ने योआश के पुत्र यारोबाम का उपयोग इस्राएल
के लोगों की रक्षा के लिये किया।

28यारोबाम ने जो बड़े काम किये वे "इस्राएल के
राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे हैं। उसमें
इस्राएल के लिये दमिश्क और हमात को यारोबाम द्वारा
वापस जीत लेने की कथा सम्मिलित है। (पहले ये नगर
यहूदा के अधिपत्य में थे।) 29यारोबाम मरा और इस्राएल
के राजाओं, अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। यारोबाम
का पुत्र जकर्याह उसके बाद नया राजा हुआ।

यहूदा पर अजर्याह का शासन

15 यहूदा के राजा अमस्याह का पुत्र अजर्याह इस्राएल
के राजा यारोबाम के राज्यकाल के सत्ताईसवें,
वर्ष में राजा बना। 2शासन करना आरम्भ करने के
समय अजर्याह सोलह वर्ष का था। उसने यरूशलेम में
बावन वर्ष तक शासन किया। अजर्याह की माँ यरूशलेम
की यकोल्याह नाम की थी। 3अजर्याह ने ठीक अपने
पिता अमस्याह की तरह वे काम किये जिन्हें यहोवा ने
अच्छा बताया था। अजर्याह ने उन सभी कामों का
अनुसरण किया जिन्हें उसके पिता अमस्याह ने किये
थे। 4किन्तु उसने उच्च स्थानों को नष्ट नहीं किया। इन
पूजा के स्थानों पर लोग अब भी बलि भेंट करते तथा
सुगन्धि जलाते थे।

5यहोवा ने राजा अजर्याह को हानिकारक कुष्ठरोग
का रोगी बना दिया। वह मरने के दिन तक इसी रोग से
पीड़ित रहा। अजर्याह एक अलग महल में रहता था।
राजा का पुत्र योताम राज महल की देखभाल और
जनता का न्याय करता था।

6अजर्याह ने जो बड़े काम किये वे, "यहूदा के राजाओं
के इतिहास" की पुस्तक में लिखे हैं। 7अजर्याह मरा
और अपने पूर्वजों के साथ दाऊद के नगर में दफनाया
गया। अजर्याह का पुत्र योताम उसके बाद नया राजा
हुआ।

इस्राएल पर जकर्याह का अल्पकालीन शासन

8यारोबाम के पुत्र जकर्याह ने इस्राएल में शोमरोन पर
छः महीने तक शासन किया। यह यहूदा के राजा अजर्याह
के राज्यकाल के अड़तीसवें वर्ष में हुआ। 9जकर्याह ने
वे कार्य किये जिन्हें यहोवा ने बुरा कहा था। उसने वे ही
काम किये जो उसके पूर्वजों ने किये थे। उसने नबात
के पुत्र यारोबाम के पापों को करना बन्द नहीं किया
जिसने इस्राएल को पाप करने के लिये विवश किया।

10याबेश के पुत्र शल्लूम ने जकर्याह के विरुद्ध षड़यन्त्र
रचा। शल्लूम ने जकर्याह को इब्लैम में मार डाला।
उसके बाद शल्लूम नया राजा बना। 11जकर्याह ने जो
अन्य कार्य किये वे "इस्राएल के राजाओं के इतिहास"
की पुस्तक में लिखे हैं। 12इस प्रकार यहोवा का कथन
सत्य सिद्ध हुआ। यहोवा ने येहू से कहा था कि उसके
वंशजों की चार पीढ़ियाँ इस्राएल का राजा बनेंगी।

शल्लूम का इस्राएल पर अल्पकालीन शासन

13याबेश का पुत्र शल्लूम यहूदा के राजा उज्जिय्याह
के राज्यकाल के उनतालीसवें वर्ष में इस्राएल का राजा
बना। शल्लूम ने शोमरोन में एक महीने तक शासन
किया। 14गादी का मनहेम तिर्सा से शोमरोन आ पहुँचा।
मनहेम ने याबेश के पुत्र शल्लूम को मार डाला। तब
उसके बाद मनहेम नया राजा हुआ।

15शल्लूम ने जकर्याह के विरुद्ध षड़यन्त्र करने सहित
जो कार्य किये, वे सभी "इस्राएल के राजाओं के इतिहास"
की पुस्तक में लिखे गए हैं।

इस्राएल पर मनहेम का शासन

16शल्लूम के मरने के बाद मनहेम ने तिप्सह और
तिर्सा तक फैले हुये चारों ओर के क्षेत्रों को हरा दिया।
लोगों ने उसके लिये नगर द्वार को खोलना मना कर
दिया। इसलिये मनहेम ने उनको पराजित किया और
नगर की सभी गर्भवतियों के गर्भ को चीर गिराया।

17गादी का पुत्र मनहेम यहूदा के राजा जकर्याह के
राज्यकाल के उनतालीसवें वर्ष में इस्राएल का राजा
हुआ। मनहेम ने शोमरोन में दस वर्ष शासन किया।
18मनहेम ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया
था। मनहेम ने नबात के पुत्र यारोबाम के पापों को
करना बन्द नहीं किया, जिसने इस्राएल को पाप करने
के लिये विवशकिया।

19अश्शूर का राजा पूल इस्राएल के विरुद्ध युद्ध करने
आया। मनहेम ने पूल को पचहत्तर हजार पौंड चाँदी दी।
उसने यह इसलिये किया कि पूल मनहेम को बल प्रदान
करेगा और जिससे राज्य पर उसका अधिकार सुदृढ़ हो
जाये। 20मनहेम ने सभी धनी और शक्तिशाली लोगों से
करों का भुगतान करवा कर धन एकत्रित किया।
मनहेम ने हर व्यक्ति पर पचास शेकेल कर लगाया।
तब मनहेम ने अश्शूर के राजा को धन दिया। अत:
अश्शूर का राजा चला गया और इस्राएल में नहीं ठहरा।

21मनहेम ने जो बड़े कार्य किये वे “इस्राएल के राजाओं
के इतिहास” की पुस्तक में लिखे हैं। 22मनहेम मरा
और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। मनहेम का
पुत्र पकह्याह उसके बाद नया राजा हुआ।

इस्राएल पर पकह्याह का शासन

23मनहेम का पुत्र पकह्याह यहूदा के राजा अजर्याह
के राज्यकाल के पचासवें वर्ष में शोमरोन में इस्राएल
का राजा हुआ। पकह्याह ने दो वर्ष तक राज्य किया।
24पकह्याह ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा कहा
था। पकह्याह ने नबात के पुत्र यारोबाम के पापों का
करना बन्द नहीं किया जिसने इस्राएल को पाप करने
के लिये विवश किया था।

25पकह्याह की सेना का सेनापति रमल्याह का पुत्र
पेकह था। पेकह ने पकह्याह को मार डाला। उसने उसे
शोमरोन में राजा के महल में मारा। पेकह ने जब
पकह्याह को मारा, उसके साथ गिलाद के पचास पुरुष
थे। तब पेकह उसके बाद नया राजा हुआ।

26 पकह्याह ने जो बड़े काम किये वे “इस्राएल के
राजाओं के इतिहास” की पुस्तक में लिखे हैं।

इस्राएल पर पेकह का शासन

27रमल्याह के पुत्र पेकह ने यहूदा के राजा अजर्याह
के राज्यकाल के बावनवें वर्ष में, इस्राएल पर शासन
करना आरम्भ किया। पेकह ने बीस वर्ष तक शासन
किया। 28पेकह ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा
कहा था। पेकह ने इस्राएल को पाप करने के लिये
विवश करने वाले नबात के पुत्र यारोबाम के पाप कर्मों
को करना बन्द नहीं किया।

29अश्शूर का राजा तिग्लत्पिलेसेर इस्राएल के विरुद्ध
लड़ने आया। यह वही समय था जब पेकह इस्राएल का
राजा था। तिग्लत्पिलेसेर ने इय्योन, अबेल्बेत्माका, यानोह,
केदेश, हासोर, गिलाद गालील और नप्ताली के सारे
क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। तिग्लत्पिलेसेर इन स्थानों
से लोगों को बन्दी बनाकर अश्शूर ले गया।

30एला का पुत्र होशे ने रमल्याह के पुत्र पेकह के
विरुद्ध षड़यन्त्र किया। होशे ने पेकह को मार डाला।
तब होशे पेकह के बाद नया राजा बना। यह यहूदा के
राजा उजिय्याह के पुत्र योताम के राज्यकाल के बीसवें
वर्ष में हुआ।

31पेकह ने जो सारे बड़े काम किये वे “इस्राएल के
राजाओं के इतिहास” की पुस्तक में लिखें हैं।

यहूदा पर योताम शासन करता है

32उजिय्याह का पुत्र योताम यहूदा का राजा बना। यह
इस्राएल के राजा रमल्याह के पुत्र पेकह के राज्यकाल
के दूसरे वर्ष में हुआ। 33योताम जब राजा बना, वह
पच्चीस वर्ष का था। योताम ने यरूशलेम में सोलह वर्ष
तक शासन किया। योताम की माँ सादोक की पुत्री
यरुशा थी। 34योताम ने वे काम, जिन्हें यहोवा ने ठीक
बताया था, ठीक अपने पिता उजिय्याह की तरह किये।
35किन्तु उसने उच्च स्थानों को नष्ट नहीं किया। लोग
उन पूजा स्थानों पर तब भी बलि चढ़ाते और सुगन्धि
जलाते थे। योताम ने यहोवा के मन्दिर का ऊपरी द्वार
बनवाया। सभी बड़े काम जो योताम ने किये वे “यहूदा
के राजाओं के इतिहास” की पुस्तक में लिखे हैं।

37उस समय यहोवा ने अराम के राजा रसीन और
रमल्याह के पुत्र पेकह को यहूदा के विरुद्ध लड़ने
भेजा।

38योताम मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया
गया। योताम अपने पूर्वज दाऊद के नगर में दफनाया
गया। योताम का पुत्र आहाज उसके बाद नया राजा
हुआ।

आहाज यहूदा का राजा बनता है

16 योताम का पुत्र आहाज इस्राएल के राजा रमल्याह
के पुत्र पेकह के राज्यकाल के सत्रहवें वर्ष में
यहूदा का राजा बना। 2आहाज जब राजा बना वह बीस
वर्ष का था। आहाज ने यरूशलेम में सोलह वर्ष तक
राज्य किया। आहाज ने वे काम नहीं किये जिन्हें यहोवा
ने अच्छा बताया था। उसने परमेश्वर की आज्ञा का
पालन अपने पूर्वज दाऊद की तरह नहीं किया। 3आहाज

इस्राएल के राजाओं की तरह रहा। उसने अपने पुत्र
तक की बलि आग में दी।* उसने उन राष्ट्रों के घोर
पापों की नकल की जिन्हें यहोवा ने देश छोड़ने को
विवश तब किया था जब इस्राएली आए थे। 4आहाज ने
उच्च स्थानों, पहाड़ियों और हर एक हरे पेड़ के नीचे
बलि चढ़ाई और सुगन्धि जलाई।

5अराम के राजा रसीन और इस्राएल के राजा रमल्याह
का पुत्र पेकह, दोनों यरूशलेम के विरुद्ध लड़ने आए।
रसीन और पेकह ने आहाज को घेर लिया किन्तु वे
उसे हरा नहीं सके। 6उस समय अराम के राजा ने
अराम के लिये एलत को वापस ले लिया। रसीन ने
एलत में रहने वाले सभी यहूदा के निवासियों को जबरदस्ती
निकाला। अरामी लोग एलत में बस गए और वे आज
भी वहाँ रहते हैं।

7अहाज ने अश्शूर के राजा तिग्लत्पिलेसेर के पास
सन्देशवाहक भेजे। सन्देश यह था: "मैं आपका सेवक
हूँ। मैं आपके पुत्र समान हूँ। आएँ, और मुझे अराम के
राजा और इस्राएल के राजा से बचायें। वे मुझसे युद्ध
करने आए हैं!" 8आहाज ने यहोवा के मन्दिर और
राजमहल के खजाने में जो सोना और चाँदी था उसे भी
ले लिया। तब आहाज ने अश्शूर के राजा को भेंट
भेजी। 9अश्शूर के राजा ने उसकी बात मान ली। अश्शूर
का राजा दमिश्क के विरुद्ध लड़ने गया। राजा ने उस
नगर पर अधिकार कर लिया और लोगों को दमिश्क
से बन्दी बनाकर फिर ले गया। उसने रसीन को भी मार
डाला।

10राजा आहाज अश्शूर के राजा तिग्लत्पिलेसेर से
मिलने दमिश्क गया। आहाज ने दमिश्क में वेदी को
देखा। राजा आहाज ने इस वेदी का एक नमूना तथा
उसकी व्यापक रूपरेखा, याजक ऊरिय्याह को भेजी।
11तब याजक ऊरिय्याह ने राजा आहाज द्वारा दमिश्क
से भेजे गए नमूने के समान ही एक वेदी बनाई। याजक
ऊरिय्याह ने इस प्रकार की वेदी राजा आहाज के
दमिश्क से लौटने के पहले बनाई।

12जब राजा दमिश्क से लौटा तो उसने वेदी को देखा।
उसने वेदी पर भेंट चढ़ाई। 13वेदी पर आहाज ने होमबलि
और अन्नबलि चढ़ाई। उसने अपनी पेय भेंट डाली और
अपनी मेलबलि के खून को इस वेदी पर छिड़का।

14आहाज ने उस काँसे की वेदी को जो यहोवा के
सामने थी मन्दिर के सामने के स्थान से हटाया। यह
काँसे की वेदी आहाज की वेदी और यहोवा के मन्दिर
के बीच थी। आहाज ने काँसे की वेदी को अपने वेदी
के उत्तर की ओर रखा। 15आहाज ने याजक ऊरिय्याह
को आदेश दिया। उसने कहा, "विशाल वेदी का उपयोग
सवेरे की होमबलियों को जलाने के लिये, सन्ध्या की
अन्नबलि के लिये और इस देश के सभी लोगों की पेय
भेंट के लिये करो। होमबलि और बलियों का सारा खून
विशाल वेदी पर छिड़को। किन्तु मैं काँसे की वेदी का
उपयोग परमेश्वर से प्रश्न पूछने के लिये करूँगा।"
16याजक ऊरिय्याह ने वह सब किया जिसे करने के
लिये राजा आहाज ने आदेश दिये।

17वहाँ पर काँसे के कवच वाली गाड़ियाँ और याजकों
के हाथ धोने के लिये चिलमचियाँ थी। तब राजा आहाज
ने मन्दिर में प्रयुक्त काँसे की गाड़ियों को काट डाला
और उनसे तख्ते निकाल लिये। उसने गाड़ियों में से
चिलमचियों को ले लिया। उसने विशाल टंकी को भी
काँसे के उन बैलों से हटा लिया जो उसके नीचे खड़ी
थीं। उसने विशाल टंकी को एक पत्थर के चबूतरे पर
रखा। 18कारीगरों ने सब्त की सभा के लिये मन्दिर के
अन्दर एक ढका स्थान बनाया था। आहाज ने सब्त के
लिये ढके स्थान को हटा लिया। आहाज ने राजा के
लिये बाहरी द्वार को भी हटा दिया। आहाज ने ये सभी
चीजें यहोवा के मन्दिर से लीं। यह सब उसने अश्शूर
के राजा को प्रसन्न करने के लिये किया।

19आहाज ने जो बड़े काम किये वे "यहूदा के राजाओं
के इतिहास" की पुस्तक में लिखे है। 20आहाज मरा
और अपने पूर्वजों के साथ दाऊद नगर में दफनाया
गया। आहाज का पुत्र हिजकिय्याह उसके बाद नया
राजा हुआ।

होशे इस्राएल पर शासन करना आरम्भ करता है

17 एला का पुत्र होशे ने शोमरोन में इस्राएल पर
शासन करना आरम्भ किया। यह यहूदा के
राजा आहाज के राज्यकाल के बारहवें वर्ष में हुआ।
होशे ने नौ वर्ष तक शासन किया। 2होशे ने वे काम
किये जिन्हें यहोवा ने बुरा कहा था। किन्तु होशे इस्राएल
का उतना बुरा राजा नहीं था जितने वे राजा थे जिन्होंने
उसके पहले शासन किया था।

3अश्शूर का राजा शल्मनेसेर होशे के विरुद्ध युद्ध
करने आया। शल्मनेसेर ने होशे को हराया और होशे
शल्मनेसेर का सेवक बन गया। होशे शल्मनेसेर को
अधीनस्थ कर* देने लगा।

4किन्तु बाद में अश्शूर के राजा को पता चला कि
होशे ने उसके विरुद्ध षडयन्त्र रचा है। होशे ने मिस्र के
राजा के पास सहायता माँगने के लिये राजदूत भेजे।
मिस्र के राजा का नाम "सो" था। उस वर्ष होशे ने
अश्शूर के राजा को अधीनस्थ कर उसी प्रकार नहीं
भेजा जैसे वह हर वर्ष भेजता था। अत: अश्शूर के
राजा ने होशे को बन्दी बनाया और उसे जेल में डाल
दिया।

उसने ... दी शाब्दिक, "अपने पुत्र को आग से होकर निकाला।"

अधीनस्थ कर वह धन जो विदेशी राजा या राष्ट्र को रक्षित रहने के लिये दिया जाता है।

5तब अश्शूर के राजा ने इस्राएल के विभिन्न प्रदेशों
पर आक्रमण किया। वह शोमरोन पहुँचा। वह शोमरोन
के विरुद्ध तीन वर्ष तक लड़ा। 6अश्शूर के राजा ने,
इस्राएल पर होशे के राज्यकाल के नवें वर्ष में, शोमरोन
पर अधिकार जमाया। अश्शूर का राजा इस्राएलियों को
बन्दी के रूप में अश्शूर को ले गया। उसने उन्हें हलह,
हाबोर नदी के तट पर गोजान और मादियों के नगरों में
बसाया।

7 ये घटनायें घटी क्योंकि इस्राएलियों ने अपने परमेश्वर
यहोवा के विरुद्ध पाप किये थे। यहोवा इस्राएलियों को
मिस्र से बाहर लाया। यहोवा ने उन्हें राजा फ़िरौन के
चंगुल से बाहर निकाला। किन्तु इस्राएलियों ने अन्य
देवताओं को पूजना आरम्भ किया था। 8इस्राएली वही
सब करने लगे थे जो दूसरे राष्ट्र करते थे। यहोवा ने
उन लोगों को अपना देश छोड़ने को विवश किया था
जब इस्राएली आए थे। इस्राएलियों ने भी राजाओं से
शासित होना पसन्द किया, परमेश्वर से शासित होना
नहीं। 9इस्राएलियों ने गुप्त रूप से अपने यहोवा परमेश्वर
के विरुद्ध काम किया। जिसे उन्हें नहीं करना चाहिये
था।

इस्राएलियों ने अपने सबसे छोटे नगर से लेकर सबसे
बड़े नगर तक, अपने सभी नगरों में उच्च स्थान बनाये।
10इस्राएलियों ने प्रत्येक ऊँची पहाड़ी पर हरे पेड़ के नीचे
स्मृति पत्थर तथा अशेरा स्तम्भ लगाये 11इस्राएलियों ने
पूजा के उन सभी स्थानों पर सुगन्धि जलाई। उन्होंने ये
सभी कार्य उन राष्ट्रों की तरह किया जिन्हें यहोवा ने
उनके सामने देश छोड़ने को विवश किया था। इस्राएलियों
ने वे काम किये जिन्होंने यहोवा को क्रोधित किया।
12उन्होंने देवमूर्तियों की सेवा की, और यहोवा ने
इस्राएलियों से कहा था, "तुम्हें यह नहीं करना चाहिये।"

13यहोवा ने हर एक नबी और हर एक दृष्टा का
उपयोग इस्राएल और यहूदा को चेतावनी देने के लिये
किया। यहोवा ने कहा, "तुम बुरे कामों से दूर हटो! मेरे
आदेशों और नियमों का पालन करो। उन सभी नियमों
का पालन करो जिन्हें मैंने तुम्हारे पूर्वजों को दिये हैं।
मैंने अपने सेवक नबियों का उपयोग यह नियम तुम्हें
देने के लिये किया।"

14लेकिन लोगों ने एक न सुनी। वे अपने पूर्वजों की
तरह बड़े हठी रहे। उनके पूर्वज यहोवा, अपने परमेश्वर
में विश्वास नहीं रखते थे। 15लोगों ने, अपने पूर्वजों द्वारा
यहोवा के साथ की गई वाचा और यहोवा के नियमों
को मानने से इन्कार किया। उन्होंने यहोवा की चेतावनियों
को सुनने से इन्कार किया। उन्होंने निकम्मे देवमूर्तियों
का अनुसरण किया और स्वयं निकम्में बन गये। उन्होंने
अपने चारों ओर के राष्ट्रों का अनुसरण किया। ये
राष्ट्र वह करते थे जिसे न करने की चेतावनी इस्राएल
के लोगों को यहोवा ने दी थी।

16लोगों ने यहोवा, अपने परमेश्वर के आदेशों का
पालन करना बन्द कर दिया। उन्होंने बछड़ों की दो सोने
की मूर्तियाँ बनाई। उन्होंने अशेरा स्तम्भ बनाये। उन्होंने
आकाश के सभी नक्षत्रों की पूजा की और बाल की
सेवा की। 17उन्होंने अपने पुत्र-पुत्रियों की बलि आग में
दी। उन्होंने जादू और प्रेत विद्या का उपयोग भविष्य को
जानने के लिये किया। उन्होंने वह करने के लिये
अपने को बेचा, जिसे यहोवा ने बताया था कि वह उसे
क्रोधित करने वाली बुराई है। 18इसलिये यहोवा इस्राएल
पर बहुत क्रोधित हुआ और उन्हें अपनी निगाह से दूर
ले गया। यहूदा के परिवार समूह के अतिरिक्त कोई
इस्राएली बचा न रहा!

यहूदा के लोग भी अपराधी हैं

19किन्तु यहूदा के लोगों ने भी यहोवा, अपने परमेश्वर
के आदेशों का पालन नहीं किया। यहूदा के लोग भी
इस्राएल के लोगों की तरह ही रहते थे।

20यहोवा ने इस्राएल के सभी लोगों को अस्वीकार
किया। उसने उन पर बहुत विपत्तियाँ ढाई। उसने लोगों
को उन्हें नष्ट करने दिया और अन्त में उसने उन्हें
उठा फेंका और अपनी दृष्टि से ओझल कर दिया।
21यहोवा ने दाऊद के परिवार से इस्राएल को अलग
कर डाला और इस्राएलियों ने नबात के पुत्र यारोबाम
को अपना राजा बनाया। यारोबाम ने इस्राएलियों को
यहोवा का अनुसरण करने से दूर कर दिया। यारोबाम
ने इस्राएलियों से एक भीषण पाप कराया। 22इस प्रकार
इस्राएलियों ने उन सभी पापों का अनुसरण किया जिन्हें
यारोबाम ने किया। उन्होंने इन पापों का करना तब
तक बन्द नहीं किया 23जब तक यहोवा ने इस्राएलियों
को अपनी दृष्टि से दूर नहीं हटाया और यहोवा ने कहा
कि यह होगा। लोगों को बताने के लिए कि यह होगा,
उसने अपने नबियों को भेजा। इसलिए इस्राएली अपने
देश से बाहर अश्शूर पहुँचाये गए और वे आज तक
वहीं हैं।

शोमरोनी लोगों का आरम्भ

24अश्शूर का राजा इस्राएलियों को शोमरोन से ले
गया। अश्शूर का राजा बाबेल, कूता, अव्वाहमात और
सपवैम से लोगों को लाया। उसने उन लोगों को शोमरोन
में बसा दिया। उन लोगो ने शोमरोन पर अधिकार
किया और उसके चारों ओर के नगरों में रहने लगे।
25जब ये लोग शोमरोन में रहने लगे तो इन्होंने यहोवा
का सम्मान नहीं किया। इसलिये यहोवा ने सिंहों को इन
पर आक्रमण के लिये भेजा। इन सिंहों ने उनके कुछ
लोगों को मार डाला। 26कुछ लोगों ने यह बात अश्शूर
के राजा से कही। "वे लोग जिन्हें आप ले गए और
शोमरोन के नगरों में बसाया, उस देश के देवता के

नियमों को नहीं जानते। इसलिये उस देवता ने उन लोगों
पर आक्रमण करने के लिये सिंह भेजे। सिहों ने उन
लोगों को मार डाला क्योंकि वे लोग उस देश के देवता
के नियमों को नहीं जानते थे।"

27इसलिए अश्शूर के राजा ने यह आदेश दिया: "तुमने
कुछ याजकों को शोमरोन से लिया था। मैंने जिन
याजकों को बन्दी बनाया था उनमें से एक को शोमरोन
को वापस भेज दो। उस याजक को जाने और वहाँ रहने
दो। तब वह याजक लोगों को उस देश के देवता के
नियम सिखा सकता है।"

28इसलिये अश्शूरियों द्वारा शोमरोन से लाये हुए याजकों
में से एक बेतेल में रहने आया। उस याजक ने लोगों को
सिखाया कि उन्हें यहोवा का सम्मान कैसे करना चाहिये।

29किन्तु उन सभी राष्ट्रों ने अपने निजी देवता बनाए
और उन्हें शोमरोन के लोगों द्वारा बनाए गए उच्च स्थानों
पर पूजास्थलों में रखा। उन राष्ट्रों ने यही किया, जहाँ
कहीं भी वे बसे। 30बाबेल के लोगो ने असत्य देवता
सुक्कोतबनोत को बनाया। कूत के लोगों ने असत्य
देवता नेर्गल को बनाया। हमात के लोगों ने असत्य
देवता अशीमा को बनाया। 31अव्वी लोगों ने असत्य
देवता निभज और तर्त्ताक बनाए और सपवमी लोगों ने
झूठे देवताओं अद्रम्मेलेक और अनम्मेलेक के सम्मान
के लिये अपने बच्चों को आग में जलाया।

32किन्तु उन लोगों ने यहोवा की भी उपासना की।
उन्होंने अपने लोगों में से उच्च स्थानों के लिये याजक
चुने। ये याजक उन पूजा के स्थानों पर लोगों के लिये
बलि चढ़ाते थे। 33वे यहोवा का सम्मान करते थे, किन्तु
वे अपने देवताओं की भी सेवा करते थे। वे लोग अपने
देवता की वैसी ही सेवा करते थे जैसी वे उन देशों में
करते थे जहाँ से वे लाए गए थे।

34आज भी वे लोग वैसे ही रहते हैं जैसे वे भूतकाल
में रहते थे। वे यहोवा का सम्मान नहीं करते थे। वे
इस्राएलियों के आदेशों और नियमों का पालन नहीं
करते थे। वे उन नियमों या आदेशों का पालन नहीं
करते थे जिन्हें यहोवा ने याकूब (इस्राएल) की
सन्तानों को दिया था। 35यहोवा ने इस्राएल के लोगों
के साथ एक वाचा की थी। यहोवा ने उन्हें आदेश
दिया, "तुम्हें अन्य देवताओं का सम्मान नहीं करना
चाहिये। तुम्हें उनकी पूजा या सेवा नहीं करनी
चाहिये या उन्हें बलि भेंट नहीं करनी चाहिये। 36किन्तु
तुम्हें यहोवा का अनुसरण करना चाहिये। यहोवा वही
परमेश्वर है जो तुम्हें मिस्र से बाहर ले आया। यहोवा ने
अपनी महान शक्ति का उपयोग तुम्हें बचाने के लिये
किया। तुम्हें यहोवा की ही उपासना करनी चाहिये
और उसी को बलि भेंट करनी चाहिये। 37तुम्हें उसके
उन नियमों, विधियों, उपदेशों और आदेशों का पालन
करना चाहिये जिन्हें उसने तुम्हारे लिये लिखा। तुम्हें
इनका पालन सदैव करना चाहिये। तुम्हें अन्य देवताओं
का सम्मान नहीं करना चाहिये। 38तुम्हें उस वाचा
को नहीं भूलना चाहिये, जो मैंने तुम्हारे साथ किया।
तुम्हें अन्य देवताओं का आदर नहीं करना चाहिये।
39नहीं! तुम्हें केवल यहोवा, अपने परमेश्वर का ही
सम्मान करना चाहिये। तब वह तुम्हें तुम्हारे सभी
शत्रुओं से बचाएगा।"

40किन्तु इस्राएलियों ने इसे नहीं सुना। वे वही करते
रहे जो पहले करते चले आ रहे थे। 41इसलिये अब तो
वे अन्य राष्ट्र यहोवा का सम्मान करते हैं, किन्तु वे
अपनी देवमूर्तियों की भी सेवा करते हैं। उनके पुत्र-पौत्र
वही करते हैं, जो उनके पूर्वज करते थे। वे आज तक
वही काम करते हैं।

हिजकिय्याह यहूदा पर अपना शासन करना आरम्भ करता है

18 आहाज का पुत्र हिजकिय्याह यहूदा का राजा
था। हिजकिय्याह ने इस्राएल के राजा एला के
पुत्र होशे के राज्यकाल के तीसरे वर्ष में शासन करना
आरम्भ किया। 2हिजकिय्याह ने जब शासन करना
आरम्भ किया, वह पच्चीस वर्ष का था। हिजकिय्याह ने
यरूशलेम में उनतीस वर्ष तक शासन किया। उसकी माँ
जकर्याह की पुत्री अबी थी।

3हिजकिय्याह ने ठीक अपने पूर्वज दाऊद की तरह
वे कार्य किये जिन्हें यहोवा ने अच्छा बताया था।
4हिजकिय्याह ने उच्चस्थानों को नष्ट किया। उसने
स्मृति पत्थरों और अशेरा स्तम्भों को खंडित कर दिया।
उन दिनों इस्राएल के लोग मूसा द्वारा बनाए गए काँसे के
साँप के लिये सुगन्धि जलाते थे। इस काँसे के साँप का
नाम "नहुशतान" था।

हिजकिय्याह ने इस काँसे के साँप के टुकड़े कर
डाले क्योंकि लोग उस साँप की पूजा कर रहे थे।

5हिजकिय्याह यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर में विश्वास
रखता था। यहूदा के राजाओं में से उसके पहले या
उसके बाद हिजकिय्याह के समान कोई व्यक्ति नहीं
था। 6हिजकिय्याह यहोवा का बहुत भक्त था। उसने
यहोवा का अनुसरण करना नहीं छोड़ा। उसने उन
आदेशों का पालन किया जिन्हें यहोवा ने मूसा को दिये
थे। 7यहोवा हिजकिय्याह के साथ था। हिजकिय्याह ने
जो कुछ किया, उसमें वह सफल रहा।

हिजकिय्याह ने अश्शूर के राजा से अपने को स्वतन्त्र
कर लिया। हिजकिय्याह ने अश्शूर के राजा की सेवा
करना बन्द कर दिया। 8हिजकिय्याह ने लगातार गाज्जा
तक और उसके चारों ओर के पलिश्तियों को पराजित
किया। उसने सभी छोटे से लेकर बड़े पलिश्ती नगरों
को पराजित किया।

अश्शूरी शोमरोन पर अधिकार करते हैं

9अश्शूर का राजा शल्मनेसेर शोमरोन के विरुद्ध
युद्ध करने गया। उसकी सेना ने नगर को घेर लिया।
यह हिजकिय्याह के यहूदा पर राज्यकाल के चौथे वर्ष
में हुआ। (यह इस्राएल के राजा एला के पुत्र होशे का भी
सातवाँ वर्ष था।) 10तीन वर्ष बाद शल्मनेसेर ने शोमरोन
पर अधिकार कर लिया। उसने शोमरोन को यहूदा के
राजा हिजकिय्याह के राज्यकाल के छठे वर्ष में शोमरोन
को ले लिया। (यह इस्राएल के राजा होशे के राज्यकाल
का नवाँ वर्ष भी था।) 11अश्शूर का राजा इस्राएलियों
को बन्दी के रूप में अश्शूर ले गया। उसने उन्हें हलह
हाबोर पर (गोजान नदी) और मादियों के नगरों में
बसाया। 12यह हुआ, क्योंकि इस्राएलियों ने यहोवा, अपने
परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया। उन्होंने
यहोवा की वाचा को तोड़ा। उन्होंने उन सभी नियमों को
नहीं माना जिनके लिये यहोवा के सेवक मूसा ने आदेश
दिये थे। इस्राएल के लोगों ने यहोवा की वाचा की
अनसुनी की या उन कामों को नहीं किया जिन्हें करने
की शिक्षा उसमें दी गई थी।

अश्शूर यहूदा को लेने को तैयार होता है

13हिजकिय्याह के राज्यकाल के चौदहवें वर्ष अश्शूर
का राजा सन्हेरीब यहूदा के सभी सुदृढ़ नगरों के विरुद्ध
युद्ध छेड़ने गया। सन्हेरीब ने उन सभी नगरों को पराजित
किया। 14तब यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने अश्शूर के
राजा को लाकीश में एक सन्देश भेजा। हिजकिय्याह ने
कहा, "मैंने बुरा किया है। मुझे शान्ति से रहने दो। तब
मैं तुम्हें वह भुगतान करूँगा जो कुछ तुम चाहोगे।"

तब अश्शूर के राजा ने यहूदा के राजा हिजकिय्याह
से ग्यारह टन चाँदी और एक टन सोना से अधिक
मांगा। 15हिजकिय्याह ने सारी चाँदी जो यहोवा के मन्दिर
और राजा के खजानों में थी, वह सब दे दी। 16उस
समय हिजकिय्याह ने उस सोने को उतार लिया जो
यहोवा के मन्दिर के दरवाजों और चौखटों पर मढ़ा
गया था। राजा हिजकिय्याह ने इन दरवाजों और चौखटों
पर सोना मढ़वाया था। हिजकिय्याह ने यह सोना अश्शूर
के राजा को दिया।

अश्शूर का राजा अपने लोगों को यरूशलेम भेजता है

17अश्शूर के राजा ने अपने तीन अत्यन्त महत्वपूर्ण
सेनापतियों को एक विशाल सेना के साथ यरूशलेम में
राजा हिजकिय्याह के पास भेजा। वे लोग लाकीश से
चले और यरूशलेम को गये। वे ऊपरी स्रोत के पास
छोटी नहर के निकट खड़े हुए। (ऊपरी स्रोत धोबी क्षेत्र
तक ले जाने वाली सड़क पर है।) 18इन लोगों ने राजा
को बुलाया। हिलकिय्याह का पुत्र एल्याकीम (एल्याकीम
राजमहल का अधीक्षक था।) शेब्ना (शास्त्री) और
आसाप का पुत्र योआह (अभिलेखपाल) उनसे मिलने
आए।

19सेनापतियों में से एक ने उनसे कहा, "हिजकिय्याह
से कहो कि महान सम्राट अश्शूर का सम्राट यह कहता
है: किस पर तुम भरोसा करते हो? 20तुमने केवल
अर्थहीन शब्द कहे है। तुम कहते हो, "मेरे पास उपयुक्त
सलाह और शक्ति युद्ध में मदद के लिये है।" किन्तु तुम
किस पर विश्वास करते हो जो तुम मेरे शासन से
स्वतन्त्र हो गए हो? 21तुम टूटे बेंत की छड़ी का सहारा ले
रहे हो। यह छड़ी मिस्र है। यदि कोई व्यक्ति इस छड़ी का
सहारा लेगा तो यह टूटेगी और उसके हाथ को बेधती
हुई उसे घायल करेगी! मिस्र का राजा उन सभी लोगों
के लिये वैसा ही है, जो उस पर भरोसा करते हैं। 22हो
सकता है, तुम कहो, "हम यहोवा, अपने परमेश्वर पर
विश्वास करते हैं।" किन्तु मैं जानता हूँ कि हिजकिय्याह
ने यहोवा के उच्च स्थानों और वेदियों को हटा दिया
और यहूदा और यरूशलेम से कहा, "तुम्हें केवल
यरूशलेम में वेदी के सामने उपासना करनी चाहिये।"

23अब अश्शूर के राजा, हमारे स्वामी से यह वाचा
करो। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं दो हजार घोड़े दूँगा,
यदि आप उन पर चढ़ने वाले घुड़सवारों को प्राप्त कर
सकेंगे। 24मेरे स्वामी के अधिकारियों में से सबसे निचले
स्तर के अधिकारी को भी तुम हरा नहीं सकते! तुमने
रथ और घुड़सवार सैनिक पाने के लिये मिस्र पर
विश्वास किया है। 25मैं यहोवा के बिना यरूशलेम को
नष्ट करने नहीं आया हूँ। यहोवा ने मुझसे कहा है, "इस
देश के विरुद्ध जाओ और इसे नष्ट करो!"

26तब हिलकिय्याह का पुत्र एल्याकीम, शेब्ना और
योआह ने सेनापति से कहा, "कृपया हमसे अरामी में
बातें करें। हम उस भाषा को समझते हैं। यहूदा की
भाषा में हम लोगों से बातें न करें क्योंकि दीवार पर के
लोग हम लोगों की बातें सुन सकते हैं!"

27 किन्तु रबशाके ने उनसे कहा, "मेरे स्वामी ने
मुझे केवल तुमसे और तुम्हारे राजा से बातें करने के
लिये नहीं भेजा है। मैं उन अन्य लोगों के लिये भी कह
रहा हूँ जो दीवार पर बैठते हैं। वे अपना मल और मूत्र
तुम्हारे साथ खायेंगे–पीयेंगे"*

28तब सेनापति हिब्रू भाषा में जोर से चिल्लाया, "महान
सम्राट, अश्शूर के सम्राट का यह सन्देश सुनो। 29सम्राट
कहता है, 'हिजकिय्याह को, अपने को मूर्ख मत बनाने
दो! वह तुम्हें मेरी शक्ति से बचा नहीं सकता।'
30हिजकिय्याह के यहोवा के प्रति तुम आस्थावान न
होना, हिजकिय्याह कहता है, 'हमें यहोवा बचा लेगा!

वे ... पीयेंगे अश्शूर की सेना ने यरूशलेम का घेरा डालने और नगर में अन्न–पानी न आने देने की योजना बनाई थी। वह समझ रहा था कि लोग इतने भूखे होंगे कि अपना मल मूत्र खायेंगे–पीयेंगे।

अश्शूर का सम्राट इस नगर को पराजित नहीं कर
सकता है' 31किन्तु हिजकिय्याह की एक न सुनो।
"अश्शूर का सम्राट यह कहता है: 'मेरे साथ सन्धि
करो और मुझसे मिलो। तब तुम हर एक अपनी अंगूर
की बेलों और अपने अंजीर के पेड़ों से खा सकते हो
तथा अपने कुँए से पानी पी सकते हो। 32यह तुम तब
तक कर सकते हो जब तक मैं न आऊँ और तुम्हारे
देश जैसे देश में तुम्हें ले न जाऊँ। यह अन्न और नयी
दाखमधु, यह रोटी और अंगूर भरे खेत और जैतून एवं
मधु का देश है। तब तुम जीवित रहोगे, मरोगे नहीं।
किन्तु हिजकिय्याह की एक न सुनो! वह तुम्हारे इरादों
को बदलना चाहता है। वह कह रहा है, 'यहोवा हमें
बचा लेगा।' 33क्या अन्य राष्ट्रों के देवताओं ने अश्शूर
के सम्राट से अपने देश को बचाया? नहीं। 34हमात और
अर्पाद के देवता कहाँ हैं? सपवैम, हेना और इव्वा के
देवता कहाँ है? क्या वे मुझसे शोमरोन को बचा सके?
नहीं! 35क्या किसी अन्य देश में कोई देवता अपनी भूमि
को मुझसे बचा सका? नहीं! क्या यहोवा मुझसे यरूशलेम
को बचा लेगा? नहीं!"
36 किन्तु लोग चुप रहे। उन्होंने एक शब्द भी सेनापति
को नहीं कहा क्योंकि राजा हिजकिय्याह ने उन्हें ऐसा
आदेश दे रखा था। उसने कहा था, "उससे कुछ न
कहो।"
37हिलकिय्याह का पुत्र एल्याकीम (एल्याकीम
राजमहल का अधीक्षक था।) शेब्ना (शास्त्री) और
आसाप का पुत्र योआह (अभिलेखपाल) हिजकिय्याह
के पास लौटे। उन्होंने हिजकिय्याह से वह सब कहा जो
अश्शूर के सेनापति ने कहा था।

हिजकिय्याह यशायाह नबी के पास अपने अधिकारियों को भेजता है

19 राजा हिजकिय्याह ने वह सब सुना और यह
दिखाने के लिये कि वह बहुत दुःखी है और
घबराया हुआ है, अपने वस्त्रों को फाड़ डाला और मोटे
वस्त्र पहन लिये। तब वह यहोवा के मन्दिर में गया।
2हिजकिय्याह ने एल्याकीम (एल्याकीम राजमहल
का अधीक्षक था।) शेब्ना (शास्त्री) और याजकों के
अग्रजों को आमोस के पुत्र यशायाह नबी के पास भेजा।
उन्होंने मोटे वस्त्र पहने जिससे पता चलता था कि वे
परेशान और दुःखी हैं। 3उन्होंने यशायाह से कहा,
"हिजकिय्याह यह कहता है, 'यह हमारे लिये संकट,
दण्ड और अपमान का दिन है। यह बच्चों को जन्म देने
जैसा समय है, किन्तु उन्हें जन्म देने के लिये कोई शक्ति
नहीं है। 4सेनापति के स्वामी अश्शूर के राजा ने जीवित
परमेश्वर के विषय में निन्दा करने के लिये उसे भेजा
है। यह हो सकता है कि यहोवा, आपका परमेश्वर उन
सभी बातों को सुन ले। यह हो सकता है कि यहोवा यह
प्रमाणित कर दे कि शत्रु गलती पर है! इसलिये उन
लोगों के लिये प्रार्थना करें जो अभी तक जीवित बचे
हैं।'"
5राजा हिजकिय्याह के अधिकारी यशायाह के पास
गए। 6 यशायाह ने उनसे कहा, "अपने स्वामी हिजकिय्याह
को यह सन्देश दो: 'यहोवा कहता है: उन बातों से डरो
नहीं जिन्हें अश्शूर के राजा के अधिकारियों ने मेरी
मजाक उड़ाते हुए कही है। 7मैं शीघ्र ही उसके मन में
ऐसी भावना पैदा करूँगा जिससे वह एक अफवाह सुनकर
अपने देश वापस जाने को विवश होगा और मैं उसे
उसके देश में एक तलवार के घाट उतरवा दूँगा।'"

हिजकिय्याह को अश्शूर के राजा की पुनः चेतावनी

8सेनापति ने सुना कि अश्शूर का राजा लाकीश से
चल पड़ा है। अतः सेनापति गया और यह पाया कि
उसका सम्राट लिब्ना के विरुद्ध युद्ध कर रहा है।
9अश्शूर के राजा ने एक अफवाह कूश के राजा
तिर्हाका के बारे में सुनी। अफवाह यह थी: "तिर्हाका
तुम्हारे विरुद्ध लड़ने आया है।"
अतः अश्शूर के राजा ने हिजकिय्याह के पास फिर
सन्देशवाहक भेजे। अश्शूर के राजा ने इन सन्देशवाहकों
को यह सन्देश दिया। उसने इसमें यह कहा:
10"यहूदा के राजा हिजकिय्याह से यह कहो: "जिस
परमेश्वर में तुम विश्वास रखते हो उसे तुम अपने को
मूर्ख बनाने मत दो। वह कहता है, 'अश्शूर का राजा
यरूशलेम को पराजित नहीं करेगा।' 11तुमने उन
घटनाओं को सुना है जो अश्शूर के राजाओं ने अन्य
सभी देशों में घटित की है। हमने उन्हें पूरी तरह से नष्ट
किया। क्या तुम बच पाओगे? नहीं। 12उन राष्ट्रों के
देवता अपने लोगों की रक्षा नहीं कर सके। मेरे पूर्वजों
ने उन सभी को नष्ट किया। उन्होंने गोजान, हारान,
रेसेप और तलस्सार में एदेन के लोगों को नष्ट किया।
13हमात का राजा कहाँ है? अर्पाद का राजा? सपवैम
नगर का राजा? हेना और इव्वा का राजा? ये सभी
समाप्त हो गये हैं!"

हिजकिय्याह यहोवा से प्रार्थना करता है

14हिजकिय्याह ने सन्देशवाहकों से पत्र प्राप्त किये
और उन्हें पढ़ा। तब हिजकिय्याह यहोवा के मन्दिर तक
गया और यहोवा के सामने पत्रों को रखा। 15हिजकिय्याह
ने यहोवा के सामने प्रार्थना की और कहा, "यहोवा
इस्राएल का परमेश्वर! तू करूब (स्वर्गदूतों) पर सम्राट
की तरह बैठता है। तू ही केवल सारी पृथ्वी के राज्यों
का परमेश्वर है। तूने पृथ्वी और आकाश को बनाया।
16यहोवा मेरी प्रार्थना सुन। यहोवा अपनी आँखे खोल
और इस पत्र को देख। उन शब्दों को सुन जिन्हें सन्हेरीब
ने शाश्वत परमेश्वर का अपमान करने को भेजा है।

17यहोवा, यह सत्य है। अश्शूर के राजाओं ने इन सभी
राष्ट्रों को नष्ट किया। 18उन्होंने राष्ट्रों के देवताओं को
आग में फेंक दिया। किन्तु वे सच्चे देवता नहीं थे। वे
केवल लकड़ी और पत्थर की मूर्ति थे जिन्हें मनुष्यों ने
बना रखा था। यही कारण था कि

अश्शूर के राजा उन्हें नष्ट कर सके। 19अत: यहोवा,
हमारा परमेश्वर, अब तो अश्शूर के राजा से बचा। तब
पृथ्वी के सारे राज्य समझेंगे कि यहोवा, तू ही केवल
परमेश्वर है।"

20आमोस के पुत्र यशायाह ने हिजकिय्याह को यह
सन्देश भेजा। उसने कहा, "यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर
यह कहता है, 'तुमने मुझसे अश्शूर के राजा सन्हेरीब
के विरुद्ध प्रार्थना की है। मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुन ली
है।'

21"सन्हेरीब के बारे में यहोवा का सन्देश यह है:

'सिय्योन की कुमारी पुत्री (यरूशलेम) तुम्हें तुच्छ
समझती है, वह तुम्हारा मजाक उड़ाती है! यरूशलेम
की पुत्री तुम्हारे पीठ के पीछे सिर झटकती है।

22तुमने किसका अपमान किया? किसका मजाक
उड़ाया? किसके विरुद्ध तुमने बातें की? तुमने ऐसे काम
किये मानों तुम उससे बढ़कर हो। तुम इस्राएल के परम
पावन के विरुद्ध रहे!

23तुमने अपने सन्देशवाहकों को यहोवा का अपमान
करने को भेजा। तुमने कहा, "मैं अपने अनेक रथों
सहित ऊँचे पर्वतों तक आया। मैं लबानोन में भीतर
तक आया। मैंने लबानोन के उच्चतम देवदारु के पेड़ों,
और लबानोन के उत्तम चीड़ के पेड़ों को काटा। मैं
लबानोन के उच्चतम और सघनतम वन में घुसा।

24मैंने कुएँ और नये स्थानों का पानी पीया। मैंने मिस्र
की नदियों को सुखाया और उस देश को रौंदा।"

25किन्तु क्या तुमने नहीं सुना? 'मैंने (परमेश्वर) बहुत
पहले यह योजना बनाई थी, प्राचीनकाल से ही मैंने ये
योजना बना दी थी, और अब मैं उसे ही पूरी होने दे रहा
हूँ। मैंने तुम्हें दृढ़ नगरों को चट्टानों की ढेर बनाने
दिया।

26नगर में रहने वाले व्यक्ति कोई शक्ति नहीं रखते।
ये लोग भयभीत और अस्त-व्यस्त कर दिये गए। लोग
खेतों के जंगली पौधों की तरह हो गए, वे जो बढ़ने के
पहले ही मर जाती है, घर के मुंडेर की घास बन गए।

27तुम उठो और मेरे सामने बैठो, मैं जानता हूँ कि
तुम कब युद्ध करने जाते हो और कब घर आते हो, मैं
जानता हूँ कि तुम अपने को कब मेरे विरुद्ध करते हो।

28तुम मेरे विरुद्ध गए मैंने तुम्हारे गर्वीले अपमान के
शब्द सुने। इसलिये मैं अपना अंकुश तुम्हारी नाक में
डालूँगा। और मैं अपनी लगाम तुम्हारे मुँह में डालूँगा।
तब मैं तुम्हें पीछे लौटाऊँगा और उस मार्ग लौटाऊँगा
जिससे तुम आए थे।

हिजकिय्याह को यहोवा का सन्देश

29"'मैं तुम्हारी सहायता करूँगा, इसका संकेत यह
होगा: इस वर्ष तुम वही अन्न खाओगे जो अपने आप
उगेगा। अगले वर्ष तुम वह अन्न खाओगे जो उस बीज
से उत्पन्न होगा। किन्तु तीसरे वर्ष तुम बीज बोओगे और
अपनी बोयी फसल काटोगे। तुम अंगूर की बेले खेतों में
लगाओगे और उनसे अगूंर खाओगे 30और यहूदा के
परिवार के जो लोग बच गए हैं वे फिर फूले फलेगें
ठीक वैसे ही जैसे पौधा अपनी जड़े मजबूत कर लेने पर
ही फल देता है 31क्यों? क्योंकि कुछ लोग जीवित बचे
रहेंगे। वे यरूशलेम के बाहर चले जायेंगे। जो लोग बच
गये हैं वे सिय्योन पर्वत से बाहर जाएंगे। यहोवा की तीव्र
भावना यह करेगी।'

32"अश्शूर के सम्राट के विषय में यहोवा ऐसा कहता
है:

वह इस नगर में नहीं आएगा। वह इस नगर में एक
भी बाण नहीं चलाएगा। वह इस नगर के विरुद्ध ढाल के
साथ नहीं आएगा। वह इस नगर पर आक्रमण के
मिट्टी के टीले नहीं बनाएगा।

33वह उसी रास्ते लौटेगा जिससे आया। वह इस नगर
में नहीं आएगा। यह यहोवा कहता है!

34मैं इस नगर की रक्षा करूँगा और बचा लूँगा। मैं
इस नगर को बचाऊँगा। मैं यह अपने लिये और अपने
सेवक दाऊद के लिये करूँगा।'"

अश्शूरी सेना नष्ट हो गई

35उस रात यहोवा का दूत अश्शूरी डेरे में गया और
एक लाख पचासी हजार लोगों को मार डाला। सुबह को
जब लोग उठे तो उन्होंने सारे शव देखे।

36 अत: अश्शूर का राजा सन्हेरीब पीछे हटा और
नीनवे वापस पहुँचा, तथा वहीं रूक गया। 37एक दिन
सन्हेरीब निस्रोक के मन्दिर में अपने देवता की पूजा
कर रहा था। उसके पुत्रों अद्रेम्मेलेक और सरेसेर ने
उसे तलवार से मार डाला। तब अद्रेम्मेलेक और सरेसेर
अरारात प्रदेश में भाग निकले और सन्हेरीब का पुत्र
एसर्हद्दोन उसके बाद नया राजा हुआ।

हिजकिय्याह बीमार पड़ा और मरने को हुआ

20 उस समय हिजकिय्याह बीमार पड़ा और लगभग
मर ही गया। आमोस का पुत्र यशायाह (नबी)
हिजकिय्याह से मिला। यशायाह ने हिजकिय्याह से कहा,
"यहोवा कहता है, 'अपने परिवार के लोगों को तुम
अपना अन्तिम निर्देश दो। तुम जीवित नहीं रहोगे।'"

2हिजकिय्याह ने अपना मुँह दीवार* की ओर कर
लिया। उसने यहोवा से प्रार्थना की और कहा, 3"यहोवा

दीवार सम्भवत: यह दीवार मन्दिर के सामने थी।

याद रख कि मैंने पूरे हृदय के साथ सच्चाई से तेरी सेवा
की है। मैंने वह किया है जिसे तूने अच्छा बताया है।"
तब हिजकिय्याह फूट फूट कर रो पड़ा।
4बीच के आँगन को यशायाह के छोड़ने के पहले
यहोवा का सन्देश उसे मिला। यहोवा ने कहा, 5"लौटो
और मेरे लोगों के अगुवा हिजकिय्याह से कहो, 'यहोवा
तुम्हारे पूर्वज दाऊद का परमेश्वर यह कहता है, "मैंने
तुम्हारी प्रार्थना सुन ली है और मैंने तुम्हारे आँसू देखे
हैं। इसलिये मैं तुम्हें स्वस्थ करूँगा। तीसरे दिन तुम
यहोवा के मन्दिर में जाओगे 6और मैं तुम्हारे जीवन के
पन्द्रह वर्ष बढ़ा दूँगा। मैं अश्शूर के सम्राट की शक्ति से
तुम्हें और इस नगर को बचाऊँगा। मैं इस नगर की
रक्षा करूँगा। मैं अपने लिये और अपने सेवक दाऊद
को जो वचन दिया था, उसके लिये यह करूँगा।"'
7तब यशायाह ने कहा, "अंजीर का एक मिश्रण*
बनाओ और इसे घाव के स्थान पर लगाओ।"
इसलिये उन्होंने अंजीर का मिश्रण लिया और हिजकिय्याह के घाव के स्थान पर लगाया। तब हिजकिय्याह स्वस्थ हो गया।

हिजकिय्याह के स्वस्थ होने के संकेत

8हिजकिय्याह ने यशायाह से कहा, "इसका संकेत
क्या होगा कि यहोवा मुझे स्वस्थ करेगा और मैं यहोवा
के मन्दिर में तीसरे दिन जाऊँगा?"
9यशायाह ने कहा, "तुम क्या चाहते हो? क्या छाया
दस पैड़ी आगे जाये या दस पैड़ी पीछे जाये?* यही यहोवा
का तुम्हारे लिये संकेत है जो यह प्रकट करेगा कि जो
यहोवा ने कहा है, उसे वह करेगा।"
10हिजकिय्याह ने उत्तर दिया, "छाया के लिये दस
पैड़ियाँ उतर जाना सरल है। नहीं, छाया को दस पैड़ी
पीछे हटने दो।"
11तब यशायाह ने यहोवा से प्रार्थना की और यहोवा
ने छाया को दस पैड़ियाँ पीछे चलाया। वह उन पैड़ियों पर
लौटी जिन पर यह पहले थी।

हिजकिय्याह और बाबेल के व्यक्ति

12उन दिनों बलदान का पुत्र बरोदक बलदान बाबेल
का राजा था। उसने पत्रों के साथ एक भेंट हिजकिय्याह
को भेजी। बरोदक-बलदान ने यह इसलिये किया क्योंकि
उसने सुना कि हिजकिय्याह बीमार हो गया है।
13हिजकिय्याह ने बाबेल के लोगों का स्वागत किया
और अपने महल की सभी कीमती चीज़ों को उन्हें
दिखाया। उसने उन्हें चाँदी, सोना, मसाले, कीमती इत्र,
अस्त्र-शस्त्र और अपने खजाने की हर एक चीज
दिखायी। हिजकिय्याह के पूरे महल और राज्य में ऐसा
कुछ नहीं था जिसे उसने उन्हें न दिखाया हो।
14तब यशायाह नबी राजा हिजकिय्याह के पास आया
और उससे पूछा, "ये लोग क्या कहते थे? वे कहाँ से
आये थे?"
हिजकिय्याह ने कहा, "वे बहुत दूर के देश बाबेल से आए थे।"
15यशायाह ने पूछा, "उन्होंने तुम्हारे महल में क्या
देखा है?"
हिजकिय्याह ने उत्तर दिया, "उन्होंने मेरे महल की सभी चीजें देखी हैं। मेरे खजानों में ऐसा कुछ नहीं है जिसे मैंने उन्हें न दिखाया हो।"
16तब यशायाह ने हिजकिय्याह से कहा, "यहोवा के
यहाँ से इस सन्देश को सुनो। 17वह समय आ रहा है जब
तुम्हारे महल की सभी चीज़ें और वे सभी चीज़ें जिन्हें
तुम्हारे पूर्वजों ने आज तक सुरक्षित रखा है, बाबेल ले
जाई जाएंगी। कुछ भी नहीं बचेगा। यहोवा यह कहता है।
18बाबेल तुम्हारे पुत्रों को ले लेंगे और तुम्हारे पुत्र बाबेल
के राजा के महल में खोजे बनेंगे।"
19तब हिजकिय्याह ने यशायाह से कहा, "यहोवा के
यहाँ से यह सन्देश अच्छा है।"
हिजकिय्याह ने यह भी कहा, "यह बहुत अच्छा है यदि मेरे जीवनकाल में सच्ची शान्ति रहे।"
20हिजकिय्याह ने जो बड़े काम किये, जिनमें जलकुण्ड
पर किये गये काम और नगर में पानी लाने के लिये
नहर बनाने के काम सम्मिलित हैं "यहूदा के राजाओं
के इतिहास" की पुस्तक में लिखे गये हैं। 21हिजकिय्याह
मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया और
हिजकिय्याह का पुत्र मनश्शे उसके बाद नया राजा
हुआ।

मनश्शे अपना कुशासन यहूदा पर आरम्भ करता है

21 मनश्शे जब शासन करने लगा तब वह बारह
वर्ष का था। उसने पचपन वर्ष तक यरूशलेम
में शासन किया। उसकी माँ का नाम हेप्सीबा था।
2मनश्शे ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया
था। मनश्शे वे भयंकर काम करता था जो अन्य राष्ट्र
करते थे। (और यहोवा ने उन राष्ट्रों को अपना देश
छोड़ने पर विवश किया था जब इस्राएली आए थे।)
3मनश्शे ने फिर उन उच्च स्थानों को बनाया जिन्हें
उसके पिता हिजकिय्याह ने नष्ट किया था। मनश्शे ने
भी ठीक इस्राएल के राजा अहाब की तरह बाल की
वेदी बनाई और अशेरा स्तम्भ बनाया। मनश्शे ने आकाश
में तारों की सेवा और पूजा आरम्भ की। 4मनश्शे ने

अंजीर का एक मिश्रण इसका उपयोग दवा की तरह होता था।

क्या ... जाये इसका तात्पर्य एक बाहर की विषेश इमारत की पौड़ियाँ हो सकती हैं जिन्हें हिजकिय्याह धूपघड़ी की तरह इस्तेमाल करता था। जब धूप पैड़ियों पर पड़ती थी तो उससे पता चलता था कि समय क्या हुआ है।

यहोवा के मन्दिर में असत्य देवताओं की पूजा की
वेदियाँ बनाई। (यह वही स्थान है जिसके बारे में यहोवा
बातें कर रहा था जब उसने कहा था, "मैं अपना नाम
यरूशलेम में रखूँगा।)" 5मनश्शे ने यहोवा के मन्दिर
के दो आँगनों में आकाश के नक्षत्रों के लिये वेदियाँ
बनाई। 6मनश्शे ने अपने पुत्र की बलि दी और उसे वेदी
पर जलाया। मनश्शे ने भविष्य जानने के प्रयत्न में कई
तरीकों का उपयोग किया। वह ओझाओं और भूत
सिद्धियों से मिला।

मनश्शे अधिक से अधिक वह करता गया जिसे
यहोवा ने बुरा कहा था। इसने यहोवा को क्रोधित
किया। 7मनश्शे ने अशेरा की एक खुदी हुई मूर्ति
बनाई। उसने इस मूर्ति को मन्दिर में रखा। यहोवा ने
दाऊद और दाऊद के पुत्र सुलैमान से इस मन्दिर के
बारे में कहा था: "मैंने यरूशलेम को पूरे इस्राएल के
नगरों में से चुना है। मैं अपना नाम यरूशलेम के
मन्दिर में सदैव के लिये रखूँगा। 8मैं इस्राएल के लोगों से
वह भूमि जिसे मैंने उनके पूर्वजों को दी थी, छोड़ने के
लिये नहीं कहूँगा। मैं लोगों को उनके देश में रहने दूँगा,
यदि वे उन सब चीज़ों का पालन करेंगे जिनका आदेश
मैंने दिया है और जो उपदेश मेरे सेवक मूसा ने उनको
दिये हैं।" 9किन्तु लोगों ने परमेश्वर की एक न सुनी।
इस्राएलियों के आने के पहले कनान में रहने वाले सभी
राष्ट्र जितना बुरा करते थे मनश्शे ने उससे भी अधिक
बुरा किया और यहोवा ने उन राष्ट्रों को नष्ट कर दिया
था जब इस्राएल के लोग अपनी भूमि लेने आए थे।

10यहोवा ने अपने सेवक, नबियों का उपयोग यह
कहने के लिये किया: 11"यहूदा के राजा मनश्शे ने इन
घृणित कामों को किया है और अपने से पहले की गई
एमोरियों की बुराई से भी बड़ी बुराई की है। मनश्शे ने
अपने देवमूर्तियों के कारण यहूदा से भी पाप कराया है।
12इसलिये इस्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'देखो!
मैं यरूशलेम और यहूदा पर इतनी विपत्तियाँ ढाऊँगा कि
यदि कोई व्यक्ति इनके बारे में सुनेगा तो उसका हृदय
बैठ जायेगा। 13मैं यरूशलेम तक शोमरोन की माप
पंक्ति और अहाब के परिवार की साहुल को फैलाऊँगा।
कोई व्यक्ति तश्तरी को पोछता है और तब वह उसे
उलट कर रख देता है। मैं यरूशलेम के ऊपर भी ऐसा
ही करूँगा। 14वहाँ मेरे कुछ व्यक्ति फिर भी बचे रह
जायेंगे। किन्तु मैं उन व्यक्तियों को छोड़ दूँगा। मैं उन्हें
उनके शत्रुओं को दे दूँगा। उनके शत्रु उन्हें बन्दी बनायेंगे,
वे उन कीमती चीज़ों की तरह होंगे जिन्हें सैनिक युद्ध में
प्राप्त करते हैं। 15क्यों? क्योंकि हमारे लोगों ने वे काम
किये जिन्हें मैंने बुरा बताया। उन्होंने मुझे उस दिन से
क्रोधित किया है जिस दिन से उनके पूर्वज मिस्र से
बाहर आए 16और मनश्शे ने अनेक निरपराध लोगों
को मारा। उसने यरूशलेम को एक सिरे से दूसरे सिरे
तक खून से भर दिया और वे सारे पाप उन पापों के
अतिरिक्त है जिसे उसने यहूदा से कराया। मनश्शे ने
यहूदा से वह कराया जिसे यहोवा ने बुरा बताया था।'"

17उन पापों सहित और भी जो कार्य मनश्शे ने किये,
वह सभी "यहूदा के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में
लिखे है। 18मनश्शे मरा और अपने पूर्वजों के साथ
दफनाया गया। मनश्शे अपने घर के बाग में दफनाया
गया। इस बाग का नाम उज्जर का बाग था। मनश्शे का
पुत्र आमोन उसके बाद नया राजा हुआ।

आमोन का अल्पकालीन शासन

19आमोन ने जब शासन करना आरम्भ किया तो
वह बाईस वर्ष का था। उसने यरूशलेम में दो वर्ष तक
शासन किया। उसकी माँ का नाम मशुल्लेमेत था, जो
योत्बा के हारूस की पुत्री थी।

20आमोन ने ठीक अपने पिता मनश्शे की तरह के
काम किये, जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। 21आमोन
ठीक अपने पिता की तरह रहता था। आमोन उन्हीं
देवमूर्तियों की पूजा और सेवा करता था जिनकी उसका
पिता करता था। 22आमोन ने अपने पूर्वजों के परमेश्वर
यहोवा को त्याग दिया और उस तरह नहीं रहा जैसा
यहोवा चाहता था।

23आमोन के सेवकों ने उसके विरुद्ध षड़यन्त्र रचा
और उसे उसके महल में मार डाला। 24साधारण जनता
ने उन सभी अधिकारियों को मार डाला जिन्होंने आमोन
के विरुद्ध षडयन्त्र रचा था। तब लोगों ने आमोन के पुत्र
योशिय्याह को उसके बाद नया राजा बनाया।

25जो अन्य काम आमोन ने किये वे "यहूदा के राजाओं
के इतिहास" की पुस्तक में लिखे हैं। 26आमोन उज्जर
के बाग में अपनी कब्र में दफनाया गया। आमोन का
पुत्र योशिय्याह नया राजा बना।

योशिय्याह यहूदा पर अपना शासन आरम्भ करता है

22 योशिय्याह ने जब शासन आरम्भ किया तो
वह आठ वर्ष का था। उसने इकतीस वर्ष तक
यरूशलेम में शासन किया। उसकी माँ बोस्कत के
अदाया की पुत्री यदीदा थी। 2योशिय्याह ने वे काम किये
जिन्हें यहोवा ने अच्छा बताया था। योशिय्याह ने परमेश्वर
का अनुसरण अपने पूर्वज दाऊद की तरह किया।
योशिय्याह ने परमेश्वर की शिक्षाओं को माना, और
उसने ठीक वैसा ही किया जैसा परमेश्वर चाहता था।

योशिय्याह मन्दिर की मरम्मत के लिये आदेश देता है

3योशिय्याह ने अपने राज्यकाल के अट्ठारहवें वर्ष
में अपने मन्त्री, मशुल्लाम के पौत्र व असल्याह के पुत्र
शापान को यहोवा के मन्दिर में भेजा। 4योशिय्याह ने
कहा, "महयाजक हिलकिय्याह के पास जाओ। उससे

कहो कि उसे वह धन लेना चाहिये जिसे लोग यहोवा के
मन्दिर में लाये हैं। द्वारपालों ने उस धन को लोगों से
इकट्ठा किया था। 5याजकों को यह धन उन कारीगरों
को देने में उपयोग करनी चाहिये जो यहोवा के मन्दिर
की मरम्मत करते हैं। याजकों को इस धन को उन
लोगों को देना चाहिये जो यहोवा के मन्दिर की देखभाल
करते हैं। 6बढ़ई, पत्थर की दीवार बनाने वाले मिस्त्री
और पत्थर तराश के लिये धन का उपयोग करो।
मन्दिर में लगाने के लिये इमारती लकड़ी और कटे
पत्थर के खरीदने में धन का उपयोग करो। 7उस धन
को न गिनों जिसे तुम मजदूरों को दो। उन मजदूरों पर
विश्वास किया जा सकता है।"

व्यवस्था की पुस्तक मन्दिर में मिली

8महायाजक हिलकिय्याह ने शास्त्री शापान से कहा,
"देखो! मुझे व्यवस्था की पुस्तक यहोवा के मन्दिर में
मिली है।" हिलकिय्याह ने इस पुस्तक को शापान को
दिया और शापान ने इसे पढ़ा।

9शास्त्री शापान, राजा योशिय्याह के पास आया और
उसे बताया जो हुआ था। शापान ने कहा, "तुम्हारे
सेवकों ने मन्दिर से मिले धन को लिया और उसे उन
कारीगरों को दिया जो यहोवा के मन्दिर की देख–रेख
कर रहे थे।" 10तब शास्त्री शापान ने राजा से कहा,
"याजक हिलकिय्याह ने मुझे यह पुस्तक भी दी है।" तब
शापान ने राजा को पुस्तक पढ़ कर सुनाई।

11जब राजा ने व्यवस्था की पुस्तक के शब्दों को
सुना, उसने अपना दुःख और परेशानी प्रकट करने के
लिये अपने वस्त्रों को फाड़ डाला। 12तब राजा ने याजक
हिलकिय्याह, शापान के पुत्र अहीकाम, मीकायाह के
पुत्र अकबोर,शास्त्री शापान और राजसेवक असाया को
आदेश दिया। 13राजा योशिय्याह ने कहा,"जाओ, और
यहोवा से पूछो कि हमें क्या करना चाहिये। यहोवा से
मेरे लिये, लोगों के लिये और पूरे यहूदा के लिये याचना
करो। इस मिली हुई पुस्तक के शब्दों के बारे में पूछो।
यहोवा हम लोगों पर क्रोधित है। क्यों? क्योंकि हमारे
पूर्वजों ने इस पुस्तक की शिक्षा को नहीं माना। उन्होंने
हम लोगों के लिये लिखी सब बातों को नहीं किया।"

योशिय्याह और नबिया हुल्दा

14अत: याजक हिलकिय्याह, अहीकाम, अकबोर,
शापान और असाया, नबिया हुल्दा के पास गए। हुल्दा
हर्हस के पौत्र व तिकवा के पुत्र शल्लूम की पत्नी थी।
वह याजक के वस्त्रों की देखभाल करता था। हुल्दा
यरूशलेम में द्वितीय खण्ड में रह रही थी। वे गए और
उन्होंने हुल्दा से बातें कीं।

15तब हुल्दा ने उनसे कहा, "यहोवा इस्राएल का
परमेश्वर कहता है: उस व्यक्ति से कहो जिसने तुम्हें
मेरे पास भेजा है: 16'यहोवा यह कहता है: मैं इस स्थान
पर विपत्ति ला रहा हूँ और उन मनुष्यों पर भी जो यहाँ
रहते हैं। ये वे विपत्तियाँ हैं जिन्हें उस पुस्तक में लिखा
गया है जिसे यहूदा के राजा ने पढ़ी है। 17यहूदा के लोगों
ने मुझे त्याग दिया है और अन्य देवताओं के लिये
सुगन्धि जलाई है। उन्होंने मुझे बहुत क्रोधित किया है।
उन्होंने बहुत सी देवमूर्तियाँ बनाई। यही कारण है कि मैं
इस स्थान के विरुद्ध अपना क्रोध प्रकट करूँगा। मेरा
क्रोध उस अग्नि की तरह होगा जो बुझाई न जा
सकेगी।'

18-19"यहूदा के राजा योशिय्याह ने तुम्हें यहोवा से
सलाह लेने को भेजा है। योशिय्याह से यह कहो: 'यहोवा,
इस्राएल के परमेश्वर ने जो कहा उसे तुमने सुना। तुमने
वह सुना जो मैंने इस स्थान और इस स्थान पर रहने
वाले लोगों के बारे में कहा। तुम्हारा हृदय कोमल है
और जब तुमने यह सुना तो तुम्हें दुःख हुआ। मैंने कहा
कि भयंकर घटनायें इस स्थान (यरूशलेम) के साथ
घटित होंगी। और तुमने अपने दुःख को प्रकट करने
के लिये अपने वस्त्रों को फाड़ डाला और तुम रोने लगे।
यही कारण है कि मैंने तुम्हारी बात सुनी।' यहोवा यह
कहता है,

20'मैं तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों के साथ ले आऊँगा। तुम
मरोगे और अपनी कब्र में शान्तिपूर्वक जाओगे। अत:
तुम्हारी आँखे उन विपत्तियों को नहीं देखेंगी जिन्हें मैं इस
स्थान (यरूशलेम) पर ढाने जा रहा हूँ।'"

तब याजक हिलकिय्याह, अहीकाम, अकबोर, शापान
और असाया ने राजा से यह सब कहा।

लोग नियम को सुनते हैं

23 राजा योशिय्याह ने यहूदा और इस्राएल के सभी
प्रमुखों से आने और उससे मिलने के लिये
कहा। 2तब राजा यहोवा के मन्दिर गया। सभी यहूदा के
लोग और यरूशलेम में रहने वाले लोग उसके साथ
गए। याजक, नबी, और सभी व्यक्ति, सबसे अधिक
महत्वपूर्ण से सबसे कम महत्व के सभी उसके साथ
गए। तब उसने "साक्षीपत्र की पुस्तक" पढ़ी। यह वही
"नियम की पुस्तक" थी जो यहोवा के मन्दिर में मिली
थी। योशिय्याह ने उस पुस्तक को इस प्रकार पढ़ा कि
सभी लोग उसे सुन सकें।

3राजा स्तम्भ के पास खड़ा हुआ और उसने यहोवा
के साथ वाचा की। उसने यहोवा का अनुसरण करना,
उसकी आज्ञा, वाचा और नियमों का पालन करना
स्वीकार किया। उसने पूरी आत्मा और हृदय से यह
करना स्वीकार किया। उसने उस पुस्तक में लिखी
वाचा को मानना स्वीकार किया। सभी लोग यह प्रकट
करने के लिये खड़े हुए कि वे राजा की वाचा का
समर्थन करते हैं।

4तब राजा ने महायाजक हिलकिय्याह, अन्य याजकों
और द्वारपालों को बाल, अशेरा और आकाश के नक्षत्रों
के सम्मान के लिये बनी सभी चीज़ों को यहोवा के
मन्दिर के बाहर लाने का आदेश दिया। तब योशिय्याह
ने उन सभी को यरूशलेम के बाहर किद्रोन के खेतों में
जला दिया। तब राख को वे बेतेल ले गए।
5यहूदा के राजाओं ने कुछ सामान्य व्यक्तियों को
याजकों के रूप में सेवा के लिये चुना था। ये लोग
हारून के परिवार से नहीं थे! वे बनावटी याजक यहूदा
के सभी नगरों और यरूशलेम के चारों ओर के नगरों
में उच्च स्थानों पर सुगन्धि जला रहे थे। वे बाल, सूर्य,
चन्द्र, राशियों (नक्षत्रों के समूह) और आकाश के सभी
नक्षत्रों के सम्मान में सुगन्धि जला रहे थे। किन्तु योशिय्याह
ने उन बनावटी याजकों को रोक दिया।
6योशिय्याह ने अशेरा स्तम्भ को यहोवा के मन्दिर से
हटाया। वह अशेरा स्तम्भ को नगर के बाहर किद्रोन
घाटी को ले गया और उसे वहीं जला दिया। तब उसने
जले खण्डों को कूटा तथा उस राख को साधारण लोगों
की कब्रों पर बिखेरा।*
7तब राजा योशिय्याह ने यहोवा के मन्दिर में बने
पुरुषगामियों के कोठों को गिरवा दिया। स्त्रियाँ भी उन
घरों का उपयोग करती थीं और असत्य देवी अशेरा के
सम्मान के लिये डेरे के आच्छादन बनाती थीं।
8-9उस समय याजक बलि यरूशलेम को नहीं लाते थे
और उसे मन्दिर की वेदी पर नहीं चढ़ाते थे। याजक
सारे यहूदा के नगरों में रहते थे और वे उन नगरों में
उच्च स्थानों पर सुगन्धि जलाते तथा बलि भेंट करते थे।
वे उच्च स्थान गेबा से लेकर बेर्शेबा तक हर जगह थे।
याजक अपनी अखमीरी रोटी उन नगरों में साधारण
लोगों के साथ खाते थे, किन्तु यरूशलेम के मन्दिर में
बने याजकों के लिये विशेष स्थान पर नहीं। परन्तु राजा
योशिय्याह ने उन उच्च स्थानों को भ्रष्ट (नष्ट) कर
डाला और याजकों को यरूशलेम ले गया। योशिय्याह ने
उन उच्च स्थानों को भी नष्ट किया था जो यहोशू–द्वार
के पास बायीं ओर थे। (यहोशू नगर का प्रशासक था।)
10तोपेत "हिन्नोम के पुत्र की घाटी" में एक स्थान था
जहाँ लोग अपने बच्चों को मारते थे और असत्य देवता
मोलेक के सम्मान में उन्हें वेदी पर जलाते थे।* योशिय्याह
ने उस स्थान को इतना भ्रष्ट (नष्ट) कर डाला कि
लोग उस स्थान का फिर प्रयोग न कर सकें। 11बीते
समय में यहूदा के राजाओं ने यहोवा के मन्दिर के द्वार
के पास कुछ घोड़े और रथ रख छोड़े थे। यह नतन्मेलेख
नामक महत्वपूर्ण अधिकारी के कमरे के पास था।
घोड़े और रथ सूर्य देव के सम्मान के लिये थे। योशिय्याह
ने घोड़ों को हटाया और रथ को जला दिया।
12बीते समय में यहूदा के राजाओं ने अहाब की
इमारत की छत पर वेदियाँ बना रखी थी। राजा मनश्शे
ने भी यहोवा के मन्दिर के दो आँगनों मे वेदियाँ बना
रखी थीं। योशिय्याह ने उन वेदियों को तोड़ डाला और
उनके टूटे टुकड़ों को किद्रोन की घाटी में फेंक दिया।
13बीते समय में राजा सुलैमान ने यरूशलेम के निकट
विध्वंसक पहाड़ी पर कुछ उच्च स्थान बनाए थे। उच्च
स्थान उस पहाड़ी की दक्षिण की ओर थे। राजा सुलैमान
ने पूजा के उन स्थानों में से एक को, सीदोन के लोग
जिस भयंकर चीज अश्तोरेत की पूजा करते थे, उसके
सम्मान के लिये बनाया था। सुलैमान ने मोआब लोगों
द्वारा पूजित भयंकर चीज़ कमोश के सम्मान के लिये
भी एक वेदी बनाई थी और राजा सुलैमान ने अम्मोन
लोगों द्वारा पूजित भयंकर चीज मिल्कोम के सम्मान के
लिये एक उच्च स्थान बनाया था। किन्तु राजा योशिय्याह
ने उन सभी पूजा स्थानों को भ्रष्ट (नष्ट) कर दिया।
14राजा योशिय्याह ने सभी स्मृति पत्थरों और अशेरा
स्तम्भों को तोड़ डाला। तब उसने उस स्थानों के ऊपर
मृतकों की हड्डियाँ बिखेरीं।*
15योशिय्याह ने बेतेल की वेदी और उच्च स्थानों को
भी तोड़ डाला। नबात के पुत्र यारोबाम ने इस वेदी को
बनाया था। यारोबाम ने इस्राएल से पाप कराया था।*
योशिय्याह ने उच्च स्थानों और वेदी दोनों को तोड़
डाला। योशिय्याह ने वेदी के पत्थर के टुकड़े कर दिये।
तब उसने उन्हें कूट कर धूलि बना दिया और उसने
अशेरा स्तम्भ को जला दिया। 16योशिय्याह ने चारों
ओर नजर दौड़ाई और पहाड़ पर कब्रों को देखा। उसने
व्यक्तियों को भेजा और वे उन कब्रों से हड्डियाँ ले
आए। तब उसने वेदी पर उन हड्डियों को जलाया। इस
प्रकार योशिय्याह ने वेदी को भ्रष्ट (नष्ट) कर दिया।
यह उसी प्रकार हुआ जैसा यहोवा के सन्देश को परमेश्वर
के जन ने घोषित किया था।* परमेश्वर के जन ने
इसकी घोषणा तब की थी जब यारोबाम वेदी की बगल
में खड़ा था।

तब योशिय्याह ने चारों ओर निगाह दौड़ाई और
परमेश्वर के जन की कब्र देखी।
17योशिय्याह ने कहा, "जिस स्मारक को मैं देख रहा
हूँ, वह क्या है?"

तब ... बिखेरा यह इस बात को प्रकट करने की प्रबल पद्धति थी कि अशेरा–स्तम्भ का उपयोग फिर नहीं हो सकता।

मोलेक ... जलाते थे शाब्दिक, "लोग अपने पुत्र या पुत्री को आग से होकर मोलेक तक पहुँचाते थे।"

तब ... बिखेरीं यही तरीका था कि उसने उन स्थानों को इस प्रकार भ्रष्ट (नष्ट) कर दिया जिससे वे पूजा के स्थान के रूप में प्रयोग में न आ सके।

यारोबाम ... कराया था देखें 1राजा 12:26–30

घोषित किया था देखें 1राजा 13:1–3

नगर केलोगों ने उससे कहा, "यह परमेश्वर के उस
जन की कब्र है जो यहूदा से आया था। इस परमेश्वर
के जन ने वह सब बताया था जो आपने बेतेल में वेदी
के साथ किया। उसने ये बातें बहुत पहले बताई थीं।"
18योशिय्याह ने कहा, "परमेश्वर के जन को अकेला
छोड़ दो। उसकी हड्डियों को मत हटाओ।" अत: उन्होंने
हडिड्याँ छोड़ दी, और साथ ही शोमरोन से आये परमेश्वर
के जन की हड्डियाँ भी छोड़ दी।
19योशिय्याह ने शोमरोन नगर के सभी उच्च स्थानों
के पूजागृह को भी नष्ट कर दिया। इस्राएल के राजाओं
ने उन पूजागृहों को बनाया था और उसने यहोवा को
बहुत क्रोधित किया था। योशिय्याह ने उन पूजागृहों को
वैसे ही नष्ट किया जैसे उसने बेतेल के पूजा के स्थानों
को नष्ट किया।
20योशिय्याह ने शोमरोन में रहने वाले उच्च स्थानों
के सभी पुरोहितों को मार डाला। उसने उन्हीं वेदियों पर
पुरोहितों का वध किया। उसने मनुष्यों की हड्डियाँ
वेदियों पर जलाई। इस प्रकार उसने पूजा के उन स्थानों
को भ्रष्ट किया। तब वह यरूशलेम लौट गया।

यहूदा के लोग फसह पर्व मनाते हैं

21तब राजा योशिय्याह ने सभी लोगों को आदेश दिया।
उसने कहा, "यहोवा, अपने परमेश्वर का फसह पर्व
मनाओ। इसे उसी प्रकार मनाओ जैसा "साक्षीपत्र की
पुस्तक" में लिखा है।"
22लोगों ने इस प्रकार फसह पर्व तब से नहीं मनाया
था जब से इस्राएल पर न्यायाधीश शासन करते थे।
इस्राएल के किसी राजा या यहूदा के किसी भी राजा ने
कभी फसह पर्व का इतना बड़ा उत्सव नहीं मनाया था।
23उन लोगों ने यहोवा के लिये यह फसह पर्व योशिय्याह
के राज्यकाल के अट्ठारहवें वर्ष में यरूशलेम में मनाया।
24योशिय्याह ने ओझाओं, भूतसिद्धकों, गृह–देवताओं,
देवमूर्तियों और यहूदा तथा इस्राएल में जिन डरावनी
चीजों की पूजा होती थी, सबको नष्ट कर दिया। योशिय्याह
ने यह यहोवा के मन्दिर में याजक हिलकिय्याह को
मिली पुस्तक में लिखे नियमों का पालन करने के लिये
किया।
25इसके पहले योशिय्याह के समान कभी कोई राजा
नहीं हुआ था। योशिय्याह यहोवा की ओर अपने पूरे
हृदय, अपनी पूरी आत्मा और अपनी पूरी शक्ति से
गया। योशिय्याह की तरह किसी राजा ने मूसा के सभी
नियमों का अनुसरण नहीं किया था और उस समय से
योशिय्याह की तरह का कोई अन्य राजा कभी नहीं
हुआ।
26किन्तु यहोवा ने यहूदा के लोगों पर क्रोध करना
छोड़ा नहीं। यहोवा अब भी उन पर सारे कामों के लिये
क्रोधित था जिन्हें मनश्शे ने किया था। 27यहोवा ने
कहा, "मैंने इस्राएलियों को उनका देश छोड़ने को विवश
किया। मैं यहूदा के साथ वैसा ही करूँगा मैं यहूदा को
अपनी आँखों से ओझल करूँगा। मैं यरूशलेम को
अस्वीकार करूँगा। हाँ, मैंने उस नगर को चुना, और
यह वही स्थान है जिसके बारे में मैं (यरूशलेम के बारे
में) बातें कर रहा था जब मैंने यह कहा था, 'मेरा नाम
वहाँ रहेगा।' किन्तु मैं वहाँ के मन्दिर को नष्ट करूँगा।"
28योशिय्याह ने जो अन्य काम किये वे "यहूदा के
राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे हैं।

योशिय्याह की मृत्यु

29योशिय्याह के समय मिस्र का राजा फिरौन नको
अश्शूर के राजा के विरुद्ध युद्ध करने परात नदी को
गया। राजा योशिय्याह नको से मिलने मगिद्दो गया।
फ़िरौन नको ने योशिय्याह को देख लिया और तब उसे
मार डाला। 30योशिय्याह के अधिकारियों ने उसके शरीर
को एक रथ में रखा और उसे मगिद्दो से यरूशलेम ले
गये। उन्होंने योशिय्याह को उसकी अपनी कब्र में
दफनाया।
तब साधारण लोगों ने योशिय्याह के पुत्र यहोआहाज
को लिया और उसका राज्याभिषेक कर दिया। उन्होंने
यहोआहाज को नया राजा बनाया।

यहोआहाज यहूदा का नया राजा बनता है

31यहोआहाज तेईस वर्ष का था, जब वह राजा बना।
उसने यरूशलेम में तीन महीने शासन किया। उसकी
माँ लिब्ना के यिर्मयाह की पुत्री हमूतल थी। 32यहोआहाज
ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। यहोआहाज
ने वे ही सब काम किये जिन्हें उसके पूर्वजों ने किये थे।
33फ़िरौन नको ने यहोआहाज को हमात प्रदेश में
रिबला में कैद में रखा। अत: यहोआहाज यरूशलेम में
शासन नहीं कर सका। फ़िरौन नको ने यहूदा को सात
हजार पाँच सौ पौंड चाँदी और पचहत्तर पौंड सोना देने
को विवश किया।
34फ़िरौन नको ने योशिय्याह के पुत्र एल्याकीम को
नया राजा बनाया। एल्याकीम ने अपने पिता योशिय्याह
का स्थान लिया। फ़िरौन–नको ने एल्याकीम का नाम
बदलकर यहोयाकीम कर दिया और फ़िरौन–नको
यहोआहाज को मिस्र ले गया। यहोआहाज मिस्र में मरा।
35यहोयाकीम ने फ़िरौन को सोना और चाँदी दिया।
किन्तु यहोयाकीम ने साधारण जनता से कर वसूले और
उस धन का उपयोग फ़िरौन–नको को देने में किया।
अत: हर व्यक्ति ने चाँदी और सोने का अपने हिस्से का
भुगतान किया और राजा यहोयाकीम ने फिरौन को
वह धन दिया।
36यहोयाकीम जब राजा हुआ तो वह पच्चीस वर्ष का
था। उसने ग्यारह वर्ष तक यरूशलेम में राज्य किया।

उसकी माँ रुमा के अदायाह की पुत्री जबीदा थी। 37यहोयाकीम ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। यहोयाकीम ने वे ही सब काम किये जो उसके पूर्वजों ने किये थे।

राजा नबूकदनेस्सर यहूदा आता है

24 यहोयाकीम के समय में बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर यहूदा देश में आया। यहोयाकीम ने नबूकदनेस्सर की सेवा तीन वर्ष तक की। तब यहोयाकीम नबूकदनेस्सर के विरुद्ध हो गया और उसके शासन से स्वतन्त्र हो गया। 2यहोवा ने कसदियों, अरामियों, मोआबियों और अम्मोनियों के दलों को यहोयाकीम के विरुद्ध लड़ने के लिये भेजा। यहोवा ने उन दलों को यहूदा को नष्ट करने के लिये भेजा। यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था। यहोवा ने अपने सेवक नबियों का उपयोग वह कहने के लिये किया था।

3यहोवा ने उन घटनाओं को यहूदा के साथ घटित होने का आदेश दिया। इस प्रकार वह उन्हें अपनी दृष्टि से दूर करेगा। उसने यह उन पापों के कारण किया जो मनश्शे ने किये। 4यहोवा ने यह इसलिये किया कि मनश्शे ने बहुत से निरपराध व्यक्तियों को मार डाला। मनश्शे ने उनके खून से यरूशलेम को भर दिया था और यहोवा उन पापों को क्षमा नहीं कर सकता था।

5यहोयाकीम ने जो अन्य काम किये वे "यहूदा के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में लिखे हैं। यहोयाकीम मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। यहोयाकीम का पुत्र यहोयाकीन उसके बाद नया राजा हुआ।

7 मिस्र का राजा मिस्र से और अधिक बाहर नहीं निकल सका, क्योंकि बाबेल के राजा ने मिस्र के नाले से परात नदी तक सारे देश पर जिस पर मिस्र के राजा का आधिपत्य था, अधिकार कर लिया था।

नबूकदनेस्सर यरूशलेम पर अधिकार करता है

8यहोयाकीन जब शासन करने लगा तब वह अट्ठारह वर्ष का था। उसने यरूशलेम में तीन महीने तक शासन किया। उसकी माँ यरूशलेम के एलनातान की पुत्री नहुश्ता थी। 9यहोयाकीन ने उन कामों को किया जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। उसने वे ही सब काम किये जो उसके पिता ने किये थे।

10उस समय बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर के अधिकारी यरूशलेम आए और उसे घेर लिया। 11तब बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर नगर में आया। 12यहूदा का राजा यहोयाकीन बाबेल के राजा से मिलने बाहर आया। यहोयाकीन की माँ, उसके अधिकारी, प्रमुख और अन्य अधिकारी भी उसके साथ गये। तब बाबेल के राजा ने यहोयाकीन को बन्दी बना लिया। यह नबूकदनेस्सर के शासनकाल का आठवाँ वर्ष था।

13नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम से यहोवा के मन्दिर का सारा खजाना और राजमहल का सारा खजाना ले लिया। नबूकदनेस्सर ने उन सभी स्वर्ण–पात्रों को टुकड़ों में काट डाला जिन्हें इस्राएल के राजा सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर में रखा था। यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था।

14नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम के सभी लोगों को बन्दी बनाया। उसने सभी प्रमुखों और अन्य धनी लोगों को बन्दी बना लिया। उसने दस हजार लोगों को पकड़ा और उन्हें बन्दी बनाया। नबूकदनेस्सर ने सभी कुशल मजदूरों और कारीगरों को ले लिया। कोई व्यक्ति, साधारण लोगों में सबसे गरीब के अतिरिक्त, नहीं छोड़ा गया। 15नबूकदनेस्सर, यहोयाकीन को बन्दी के रूप में बाबेल ले गया। नबूकदनेस्सर राजा की माँ, उसकी पत्नियों, अधिकारी और देश के प्रमुख लोगों को भी ले गया। नबूकदनेस्सर उन्हें यरूशलेम से बाबेल बन्दी के रुप में ले गया। 16बाबेल का राजा सारे सात हजार सैनिक और एक हजार कुशल मजदूर और कारीगर भी ले गया। ये सभी व्यक्ति प्रशिक्षित सैनिक थे और युद्ध में लड़ सकते थे। बाबेल का राजा उन्हें बन्दी के रूप में बाबेल ले गया।

राजा सिदकिय्याह

17बाबेल के राजा ने मत्तन्याह को नया राजा बनाया। मत्तन्याह यहोयाकीन का चाचा था। बाबेल के राजा ने मत्तन्याह का नाम बदलकर सिदकिय्याह रख दिया। 18सिदकिय्याह ने जब शासन करना आरम्भ किया तो वह इक्कीस वर्ष का था। उसने ग्यारह वर्ष यरूशलेम में शासन किया। उसकी माँ लिब्ना के यिर्मयाह की पुत्री हमूतल थी। सिदकिय्याह ने वे काम किये जिन्हें यहोवा ने बुरा बताया था। सिदकिय्याह ने वे ही सारे काम किये जो यहोयाकीम ने किये थे। 20यहोवा यरूशलेम और यहूदा पर इतना क्रोधित हुआ कि उसने उन्हें दूर फेंक दिया।

नबूकदनेस्सर, द्वारा सिदकिय्याह के शासन की समाप्ति

सिदकिय्याह ने बाबेल के राजा के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और उसकी आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया।

25 अत: बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर अपनी सारी सेना के साथ यरूशलेम के विरुद्ध युद्ध करने आया। सिदकिय्याह के राज्य के नौवें वर्ष के दसवें महीने के दसवें दिन यह घटित हुआ। नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम के चारों ओर डेरा डाला। उसने यह कार्य यरूशलेम के लोगों को बाहर से भीतर, और भीतर से बाहर आने जाने से रोकने के लिये किया। तब उन्होंने यरूशलेम के चारों ओर मिट्टी की दीवार खड़ी की।

2नबूकदनेस्सर की सेना यरूशलेम के चारों ओर
सिदकिय्याह के यहूदा में शासनकाल के ग्यारहवें वर्ष
तक बनी रही। 3नगर में भुखमरी की स्थिति बद से
बदतर होती जा रही थी। चौथे महीने के नौवें दिन
साधारण लोगों के लिये कुछ भी भोजन नहीं रह गया
था।

4नबूकदनेस्सर की सेना ने नगर प्राचीर में एक छेद
बनाया। उस रात को राजा सिदकिय्याह और उसके
सारे सैनिक भाग गए। वे राजा के बाग के सहारे दो
दीवारों के द्वार से बच निकले। बाबेल की सेना नगर के
चारों ओर थी। किन्तु सिदकिय्याह और उसकी सेना
मरुभूमि की ओर की सड़क पर भाग निकले। 5बाबेल
की सेना ने सिदकिय्याह का पीछा किया और उसे
यरीहो के पास पकड़ लिया। सिदकिय्याह की सारी सेना
भाग गई और उसे अकेला छोड़ दिया।

6बाबेल सिदकिय्याह को रिबला में बाबेल के राजा
के पास ले गये। बाबेल के राजा ने सिदकिय्याह को
दण्ड देने का निर्णय किया। 7उन्होंने सिदकिय्याह के
सामने उसके पुत्रों को मार डाला। तब उन्होंने सिदकिय्याह
की आँखे निकाल लीं। उन्होंने उसे जंजीर में जकड़ा
और उसे बाबेल ले गए।

यरूशलेम नष्ट कर दिया गया

8नबूकदनेस्सर के बाबेल के शासनकाल के उन्नीसवें
वर्ष के पाँचवें महीने के सातवें दिन नबूजरदान यरूशलेम
आया। नबूकदनेस्सर के अंगरक्षकों का नायक
नबूजरदान था। 9नबूजरदान ने यहोवा का मन्दिर और
राजमहल जला डाला। नबूजरदान ने यरूशलेम के सभी
घरों को भी जला डाला। उसने बड़ी से बड़ी इमारतों को
भी नष्ट किया।

10तब नबूजरदान के साथ जो बाबेल की सेना थी
उसने यरूशलेम के चारों ओर की दीवारों को गिरा
दिया 11और नबूजरदान ने उन सभी लोगों को पकड़ा
जो तब तक नगर में बचे रह गए थे। नबूजरदान ने सभी
लोगों को बन्दी बना लिया और उन्हें भी जिन्होंने
आत्मसमपर्ण करने की कोशिश की। 12नबूजरदान ने
केवल साधारण व्यक्तियों में सबसे गरीब लोगों को वहाँ
रहने दिया। उसने उन गरीब लोगों को वहाँ अंगूर और
अन्य फसलों की देखभाल के लिये रहने दिया।

13बाबेल के सैनिकों ने यहोवा के मन्दिर के काँसे
की वस्तुओं के टुकड़े कर डाले। उन्होंने काँसे के
स्तम्भों, काँसे की गाड़ी को और काँसे के विशाल
सरोवर के भी टुकड़े कर डाले, तब बाबेल के सैनिक
उन काँसे के टुकड़ों को बाबेल ले गए। 14कसदियों ने
बर्तन, बेलचे, दीप-झारु चम्मच और काँसे के बर्तन जो
यहोवा के मन्दिर में काम आती थी, को भी ले लिया।
15नबूजरदान ने सभी कढ़ाहियों और प्यालों को ले
लिया। उसने जो सोने के बने थे उन्हें सोने केलिये और
जो चाँदी के बने थे उन्हें चाँदी के लिये लिया। 16-17जो
चीज़ें उसने लीं उनकी सूची यह है:

दो काँसे के स्तम्भ, एक हौज और वह गाड़ी जिसे
सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर के लिये बनाया था।
इन चीजों में लगा काँसा इतना भारी था कि उसे
तोला नहीं जा सकता था। हर एक स्तम्भ लगभग
सत्ताईस फुट ऊँचा था। स्तम्भों के शीर्ष काँसे के
बने थे। हर एक शीर्ष साढ़े चार फुट ऊँचा था। हर
एक शीर्ष पर जाल और अनार का नमूना बना था।
इसका सब कुछ काँसे का बना था। दोनों स्तम्भों
पर एक ही प्रकार की आकृतियाँ थीं।

बन्दी बनाए गए यहूदा के लोग

18तब नबूजरदान ने मन्दिर से महायाजक सरायाह,
द्वितीय याजक सपन्याह और तीन द्वार रक्षकों को लिया।
19नगर में नबूजरदान ने

एक अधिकारी को लिया। वह सेना का सेनापति
था।

नबूजरदान ने राजा के पाँच सलाहकारों को भी
लिया जो नगर में पाए गए और उसने सेनापति के
सचिव को लिया।
सेनापति का सचिव वह व्यक्ति था जो साधारण लोगों
की गणना करता था और उनमें से कुछ को सैनिक
के रूप में चुनता था।

नबूजरदान ने साठ अन्य लोगों को भी लिया जो
नगर में पाए गए।

20-21तब नबूजरदान इन सभी लोगों को रिबला में
बाबेल के राजा के पास ले गया। बाबेल के राजा ने
हमात देश के रिबला में इन्हें मार डाला। इस प्रकार
यहूदा के लोगों को कैदी बनाकर उन्हें, उनके देश से
निर्वासित किया गया।

नबूकदनेस्सर गदल्याह को यहूदा का शासक बनाता है

22बाबेल के राजा नबूकदनेस्सर ने यहूदा देश में कुछ
लोगों को छोड़ा। उसने अहीकाम के पुत्र गदल्याह को
यहूदा के उन लोगों का शासक बनाया। अहीकाम
शापान का पुत्र था।

23जब सेना के सभी सेनापतियों और आदमियों ने
सुना कि बाबेल के राजा ने गदल्याह को शासक बनाया
है तो वे गदल्याह के पास मिस्पा में आए। ये सेना के
सेनापति नतन्याह का पुत्र इश्माएल, कारेह का पुत्र
योहानान, नतोपाई तन्हूमेत का पुत्र सरायाह तथा माकाई
का पुत्र याजन्याह थे। 24तब गदल्याह ने इन सेना के
सेनापतियों और उनके आदमियों को वचन दिया।

गदल्याह ने उनसे कहा, "बाबेल के अधिकारियों से डरो नहीं। इस देश में रहो और बाबेल के राजा की सेवा करो। तब तुम्हारे साथ सब कुछ ठीक रहेगा।"

25किन्तु सातवें महीने राजा के परिवार का एलीशामा का पौत्र व नतन्याह का पुत्र इश्माएल दस पुरुषों के साथ आया और गदल्याह को मार डाला। इश्माएल और उसके दस आदमियों ने मिस्पा में गदल्याह के साथ जो यहूदी और कसदी थे, उन्हें भी मार डाला। **26**तब सभी लोग सबसे कम महत्वपूर्ण और सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथा सेना के नायक मिस्र को भाग गए। वे इसलिये भागे कि वे कसदियों से भयभीत थे।

27बाद में राजा एवील्मरोदक यहूदा का राजा बना। उसने यहोयाकीन को बन्दीगृह से निकलने दिया। यह यहूदा के राजा यहोयाकीन के बन्दी बनाये जाने के सैंतीसवें वर्ष में हुआ। यह एवील्मरोदक के शासन आरम्भ करने के बारहवें महीने के सत्ताईसवें दिन हुआ। **28**एवीलमेरादक ने यहोयाकीन से दयापूर्वक बातें कीं। एवील्मरोदक ने यहोयाकीन को बाबेल में रहने वाले उसके सभी साथी राजाओं से अधिक उच्च स्थान प्रदान किया। **29**एवील्मरोदक ने यहोयाकीन के बन्दीगृह के वस्त्रों को पहनना बन्द करवाया। यहोयाकीन ने एवील्मरोदक के साथ एक ही मेज पर खाना खाया। उसने अपने शेष जीवन में हर एक दिन ऐसा ही किया। **30**इस प्रकार राजा एवील्मरोदक ने यहोयाकीन को जीवन पर्यन्त नियमित रूप से प्रतिदिन का भोजन प्रदान किया।

1 इतिहास

आदम से नूह तक पारिवारिक इतिहास

1 1-3आदम, शेत, एनोश, केनान, महललेल, येरेद, हनोक, मतूशेलह, लेमेक, नूह।* 4नूह के पुत्र शेम, हाम और येपेत थे।

येपेत के वंशज

5येपेत के पुत्र गोमेर, मागोग, मादै, यावान, तूबल, मेशेक और तीरास थे।

6गोमेर के पुत्र अशकनज, दीपत और तोगर्मा थे।

7यावान के पुत्र एलीशा, तर्शीश, कित्ती और रोदानी थे।

हाम के वंशज

8हाम के पुत्र कूश (मिस्रम), पूत और कनान थे।

9कूश के पुत्र सबा, हबीला, सबाता, रामा और सब्तका थे। रामा के पुत्र शबा और ददान थे।

10कूश का वंशज निम्रोद संसार में सर्वाधिक शक्तिशाली वीर योद्धा हुआ।

11मिस्र लूदी, अनामी, लहावी, नप्तही, 12पत्रूसी, कसलूही और कप्तोरी का पिता था। (पलिश्ती के लोग कसलूही के वंशज थे।)

13कनान सीदोन का पिता था। सीदोन उसका प्रथम पुत्र था। कनान, हित्तियों, 14यबूसी, एमोरी, गिर्गाशी, 15हिव्वी, अर्की, सीनी, 16अर्वदी, समारी और हमाती के लोगों का भी पिता था।

शेम के वंशज

17शेम के पुत्र एलाम, अश्शूर, अर्पक्षद, लूद और अराम थे। अराम के पुत्र ऊस, हूल, गेतेर और मेशेक थे। 18अर्पक्षद शेलह का पिता था। शेलह एबेर का पिता था।

19एबेर के दो पुत्र थे। एक पुत्र का नाम पेलेग था, क्योंकि पृथ्वी के मनुष्य उसके जीवनकाल में कई भाषाओं में बटे थे। पेलेग के भाई का नाम योक्तान था। (20योक्तान से पैदा हुये अल्मोदाद, शुलेप, हसर्मावेत, येरह, 21हदोराम, ऊजाल, दिक्ला, 22एबाल, अबीमाएल, शबा, 23ओपीर, हवीला, और योबाब, ये सब योक्तान की सन्तान थे।)

इब्राहीम का परिवार

24शेम के वंशज: अर्पक्षद, शेलह, 25एबेर, पेलेग, रू, 26सरूग, नाहोर, तेरह 27और अब्राम (अब्राम को इब्राहीम भी कहा जाता है।)

28इब्राहीम के पुत्र इसहाक और इश्माएल थे। 29ये इसके वंशज हैं:

हाजिरा के वंशज

इश्माएल का प्रथम पुत्र नबायोत था। इश्माएल के अन्य पुत्र केदार, अदवेल, मिबसाम, 30मिश्मा, दूमा, मस्सा, हदद, तेमा, 31यतूर, नापीश और केदमा थे। वे इश्माएल के पुत्र थे।

कतूरा के वंशज

32कतूरा इब्राहीम की रखैल थी। उसने जिम्रान, योक्षान, मदान, मिद्यान, यिशबाक और शूह को जन्म दिया।

योक्षान के पुत्र शबा और ददान थे।

33मिद्यान के पुत्र एपा, एपेर, हनोक, अबीदा और एलदा थे। ये सभी कतूरा के पुत्र थे।

सारा के वंशज

34इब्राहीम इसहाक का पिता था। इसहाक के पुत्र एसाव और इस्राएल थे।

35एसाव के पुत्र एलीपज, रूएल, यूश, यालाम और कोरह थे।

36एलीपज के पुत्र तेमान, ओमार, सपी, गाताम और कनज थे। एलीपज और तिम्ना का पुत्र अमालेक नाम का था।

37रूएल के पुत्र नहत, जेरह, शम्मा और मिज्जा थे।

सेईर के एदोमी

38सेईर के पुत्र लोतान, शोबाल, सिबोन, अना, दीशोन, एसेर और दीशान थे।

39लोतान के पुत्र होरी और होमाम थे। लोतान की एक बहन तिम्ना नाम की थी।

आदम ... नूह नामों की इस तालिका में एक व्यक्ति और उसके वंशजों के नाम हैं।

40शोबाल के पुत्र अल्यान, मानहत, एबाल, शपी और
ओनाम थे। सिबोन के पुत्र अय्या और अना थे।
41अना का पुत्र दीशोन था।
दीशोन के पुत्र हम्रान, एशबान, यित्रान और करान थे।
42एसेर के पुत्र बिल्हान, ज़ावान और याकान थे।
दीशोन के पुत्र ऊस और अरान थे।

एदोम के राजा

43इस्राएल में राजाओं के होने के बहुत पहले
एदोम में राजा थे। एदोम के राजाओं के नाम ये हैं:
उनके नाम थे: बोर का पुत्र बेला। बेला के नगर का
नाम दिन्हाबा था।
44जब बेला मरा, तब जेरह का पुत्र योबाब नया राजा
बना। योबाब बोस्रा का था।
45जब योबाब मरा, हूशाम नया राजा हुआ। हूशाम
तेमनी लोगों के देश का था।
46जब हूशाम मरा, बदद का पुत्र हदद नया राजा बना।
हदद ने मिद्यानियों को मोआब देश में हराया। हदद के
नगर का नाम अवीत था।
47जब हदद मरा, सम्ला नया राजा हुआ। सम्ला मस्रेकाई
का था।
48जब सम्ला मरा, शाऊल नया राजा बना। शाऊल
महानद के किनारे के रहोबोत का था।
49जब शाऊल मरा, अकबोर का पुत्र बाल्हानान नया
राजा हुआ।
50जब बाल्हानान मरा, हदद नया राजा बना। हदद के
नगर का नाम पाई था। हदद की पत्नी का नाम महेतबेल
था। महेतबेल मत्रेद की पुत्री थी। मत्रेद, मेज़ाहाब की
पुत्री थी। **51**तब हदद मरा।
एदोम के प्रमुख तिम्ना, अल्या, यतेत, **52**ओहोलीबामा,
एला, पीनोन, **53**कनज, तेमान, मिबसार, **54**मग्दीएल
और ईराम थे। यह एदोम के प्रमुखों की एक सूची है।

इस्राएल के पुत्र

2 इस्राएल के पुत्र रूबेन, शिमोन, लेवी, यहूदा,
इस्साकार, जबूलून, **2**दान, यूसुफ, बिन्यामीन,
नप्ताली, गाद और आशेर थे।

यहूदा के वंशज

3यहूदा के पुत्र एर, ओनान और शेला थे। बतशू
उनकी माँ थी। बतशू कनान की स्त्री थी। यहोवा ने
देखा कि यहूदा का प्रथम पुत्र एर बुरा है। यही कारण
था कि यहोवा ने उसे मार डाला। **4**यहूदा की पुत्रवधू
तामार ने पेरेस और जेरह* को जन्म दिया। इस प्रकार
यहूदा के पाँच पुत्र थे।
5पेरेस के पुत्र हेस्रोन और हामूल थे।
6जेरह के पाँच पुत्र थे। वे: जिम्री, एतान, हेमान, कलकोल
और दारा थे।
7जिम्री का पुत्र कर्मी था। कर्मी का पुत्र आकान था।
आकान वह व्यक्ति था जिसने युद्ध में मिली चीज़ें रख
ली थीं। उससे आशा थी कि वह उन सभी चीजों को
परमेश्वर को देगा।
8एतान का पुत्र अजर्याह था।
9हेस्रोन के पुत्र यरह्मेल राम और कलूबै थे।

राम के वंशज

10राम अम्मीनादाब का पिता था और अम्मीनादाब
नहशोन का पिता था। नहशोन यहूदा के लोगों का
प्रमुख था।* **11**नहशोन सल्मा का पिता था। सल्मा
बोअज़ का पिता था। **12**बोअज़ ओबेद का पिता था।
ओबेद यिशै का पिता था। **13**यिशै एलीआब का पिता
था। एलीआब यिशै का प्रथम पुत्र था। यिशै का दूसरा
पुत्र अबीनादाब था। उसका तीसरा पुत्र शिमा था। **14**नतनेल
यिशै का चौथा पुत्र था। यिशै का पाँचवाँ पुत्र रद्दै था।
15ओसेम यिशै का छठा पुत्र था और दाऊद उसका
सातवाँ पुत्र था। **16**उनकी बहनें सरूयाह और अबीगैल
थीं। सरूयाह के तीन पुत्र अबीशै, योआब और असाहेल
थे। **17**अबीगैल अमासा की माँ थी। अमासा का पिता
येतेर था। येतेर इश्माएली लोगों में से था।

कालेब के वंशज

18कालेब हेस्रोन का पुत्र था। कालेब की पत्नी अजूबा
से सन्तानें हुई। अजूबा यरीओत* की पुत्री थी। अजूबा
के पुत्र येशेर शोबाब, और अर्दोन थे। **19**जब अजूबा
मरी, कालेब ने एप्रात से विवाह किया। कालेब और
एप्रात का एक पुत्र था। उन्होंने उसका नाम हूर रखा।
20हूर ऊरी का पिता था। ऊरी बसलेल का पिता था।
21बाद में, जब हेस्रोन साठ वर्ष का हो गया, उसने
माकीर की पुत्री से विवाह किया। माकीर गिलाद का
पिता था। हेस्रोन ने माकीर की पुत्री के साथ शारीरिक
सम्बन्ध किया और उसने सगूब को जन्म दिया। **22**सगूब
याईर का पिता था। याईर के पास गिलाद देश में तेईस
नगर थे। **23**किन्तु गशूर और अराम ने याईर के गाँवों
को ले लिया। उनके बीच कनत और इसके चारों ओर
के छोटे नगर थे। सब मिलाकर साठ छोटे नगर थे। ये
सभी नगर गिलाद के पिता माकीर, के पुत्रों के थे।

यहूदा ... जेरह यहूदा ने अपनी पुत्रवधू तामार के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया और उसे गर्भवती किया। देखें उत्पत्ति 38:12–30

नहशोन ... था नहशोन यहूदा के परिवार समूह का उस समय प्रमुख था जब इस्राएल के लोग मिस्र से बाहर आए थे। देखें गिनती 1:7; 2:3; 7:12

कालेब ... यरीओत या "कालेब की सन्तानें उसकी पत्नी अजूबा और यरीओत से हुई।"

24हेस्रोन, एप्राता के कालेब नगर में मरा। जब वह मर गया, उसकी पत्नी अबिय्याह ने उसके पुत्र को जन्म दिया। पुत्र का नाम अशहूर था। अशहूर तको का पिताथा।

यरह्मेल की वंशज

25यरह्मेल हेस्रोन का प्रथम पुत्र था। यरह्मेल के पुत्र राम, बूना, ओरेन, ओसेम, और अहिय्याह थे। राम यरह्मेल का प्रथम पुत्र था। 26यरह्मेल की दूसरी पत्नी अतारा थी। अतारा ओनाम की माँ थी।

27यरह्मेल के प्रथम पुत्र, राम के पुत्र मास, यामीन और एकेर थे।

28ओनाम के पुत्र शम्मै और यादा थे। शम्मै के पुत्र नादाब और अबीशूर थे।

29अबीशूर की पत्नी का नाम अबीहैल था। उनके दो पुत्र थे। उनके नाम अहबान और मोलीद थे।

30नादाब के पुत्र सेलेद और अप्पैम थे। सेलेद बिना सन्तान मरा।

31अप्पैम का पुत्र यिशी था। यिशी का पुत्र शेशान था। शेशान का पुत्र अहलै था।

32यादा शम्मै का भाई था। यादा के पुत्र येतेर और योनातान थे। येतेर बिना सन्तान मरा।

33योनातान के पुत्र पेलेत और जाजा थे। यह यरह्मेल की सन्तानों की सूची थी।

34शेशान के पुत्र नहीं थे। उसे केवल पुत्रियाँ थीं। शेशान के पास यर्हा नामक एक मिस्री सेवक था।
35शेशान ने अपनी पुत्री का विवाह यर्हा के साथ होने दिया। उनका एक पुत्र था। उसका नाम अत्तै था।

36अत्तै, नातान का पिता था। नातान जाबाद का पिता
था। 37जाबाद एपलाल का पिता था। एपलाल ओबेद का
पिता था। 38ओबेद येहू का पिता था। येहू अजर्याह का
पिता था। 39अजर्याह हेलैस का पिता था। हेलैस एलासा
का पिता था। 40एलासा सिस्मै का पिता था। सिस्मै
शल्लूम का पिता था। 41शल्लूम यकम्याह का पिता था
और यकम्याह एलीशामा का पिता था।

कालेब का परिवार

42कालेब यरह्मेल का भाई था। कालेब के कुछ पुत्र थे। उसका पहला पुत्र मेशा था। मेशा जीप का पिता था। मारेशा हेब्रोन का पिता था।

43हेब्रोन के पुत्र कोरह, तप्पूह, रेकेम और शेमा थे।
44शेमा, रहम का पिता था। रहम योर्काम का पिता था।
45शम्मै का पुत्र माओन था। माओन बेत्सूर का पिता
था। रेकेम शम्मै का पिता था।

46कालेब की रखैल का नाम एपा था। एपा हारान, मोसा और गाजेज़ की माँ थी। हारान, गाजेज़ का पिता था।

47याहदै के पुत्र रेगेम, योताम, गेशान, पेलेत, एपा और शाप थे।

48माका, कालेब की दूसरी रखैल थी। माका, शेबेर
और तिर्हाना की माँ थी। 49माका, शाप और शबा की
भी माँ थी। शाप, मदमन्ना का पिता था। शबा, मकबेना
और गिबा का पिता था। कालेब की पुत्री अकसा थी।

50यह कालेब वंशजों की सूची है: हूर कालेब का
प्रथम पुत्र था। वह एप्राता से पैदा हुआ था। हूर के पुत्र
शोबाल जो किर्यत्यारीम का संस्थापक था, 51सल्मा, जो
बेतलेहेम का संस्थापक था और हारेप बेतगादेर का
संस्थापक था।

52शोबाल किर्यत्यारीम का संस्थापक था। यह शोबाल
के वंशजों की सूची है: हारोए, मनुहोत के आधे लोग:
53और किर्यत्यारीम के परिवार समूह। ये यित्री, पूती,
शूमाती और मिश्राई लोग हैं। सोराई और एश्ताओली
लोग मिश्राई लोगों से निकले।

54यह सल्मा के वंशजों की सूची है: बेतलेहेम के
लोग, नतोपाई, अत्रोत, बेत्योआब, मानहत के आधे लोग,
सोरी लोग, 55और उन शास्त्रियों के परिवार जो याबेस,
तिराती, शिमाती और सूकाती में रहते थे। ये शास्त्री, वे
कनानी लोग हैं जो हम्मत से आए। हम्मत बेतरेकाब
का संस्थापक था।

दाऊद के पुत्र

3 दाऊद के कुछ पुत्र हेब्रोन नगर में पैदा हुए थे।
दाऊद के पुत्रों की यह सूची है:

दाऊद का प्रथम पुत्र अम्मोन था। अम्मोन की माँ अहीनोअम थी। वह यिज्रेली नगर की थी।

दूसरा पुत्र दानिय्येल था। उसकी माँ अबीगैल–कर्मेल (यहूदा में) की थी।

2तीसरा पुत्र अबशालोम था। उसकी माँ तल्मै की पुत्री माका थी। तल्मै गशूर का राजा था।

चौथा पुत्र ओदानिय्याह था। उसकी माँ हग्गीत थी।

3पाँचवाँ पुत्र शपत्याह था। उसकी माँ अबीतल थी।

छठा पुत्र यित्राम था। उसकी माँ दाऊद की पत्नी एग्ला
थी। 4हेब्रोन में दाऊद के ये छ: पुत्र पैदा हुए थे। दाऊद
ने वहाँ सात वर्ष छ: महीनें शासन किया।

दाऊद, यरूशलेम में तैंतीस वर्ष राजा रहा। 5दाऊद के
यरूशलेम में पैदा हुए पुत्र ये हैं:

चार बच्चे बतशेबा से पैदा हुए। बतशेबा अम्मीएल की
पुत्री थी, शिमा, शोबाब, नातान और सुलैमान। 6-8अन्य
नौ बच्चे ये थे: यिभार, एलीशामा, एलीपेलेत, नेगाह,
नेपेग, यापी, एलीशामा, एल्यादा और एलीपेलेत। 9वे
सभी दाऊद के पुत्र थे। दाऊद के अन्य पुत्र रखैलों से
थे। तामार दाऊद की पुत्री* थी।

दाऊद की पुत्री "उनकी बहन।"

दाऊद के समय के बाद के यहूदा के राजा

10सुलैमान का पुत्र रहबाम था और रहबाम का पुत्र
अबिय्याह था। अबिय्याह का पुत्र आसा था। आसा का
पुत्र यहोशापात था। 11यहोशापात का पुत्र योराम था।
योराम का पुत्र अहज्याह था। अहज्याह का पुत्र योआश
था। 12योआश का पुत्र अमस्याह था। अमस्याह का पुत्र
अजर्याह था। अजर्याह का पुत्र योताम था। 13योताम का
पुत्र आहाज़ था। आहाज का पुत्र हिजकिय्याह था।
हिजकिय्याह का पुत्र मनश्शे था। 14मनश्शे का पुत्र
आमोन था। आमोन का पुत्र योशिय्याह था।
15योशिय्याह के पुत्रों की सूची यह है: प्रथम पुत्र
योहानान था। दूसरा पुत्र यहोयाकीम था। तीसरा पुत्र
सिदकिय्याह था। चौथा पुत्र शल्लूम था।
16यहोयाकीम के पुत्र यकोन्याह, और उसका पुत्र
सिदकिय्याह* थे।

बाबुल द्वारा यहूदा को पराजित करने के बाद दाऊद का वंश-क्रम

17यकोन्याह के बाबुल में बन्दी होने के बाद यकोन्याह
के पुत्रों की यह सूची है। उसकी सन्तानें ये थीं: शालतीएल,
18मल्कीराम, पदायाह, शेनस्सर, यकम्याह, होशामा,
और नदब्याह
19पदायाह के पुत्र जरुब्बाबेल और शिमी थे। जरुब्बाबेल
के पुत्र मशुल्लाम और हनन्याह थे। शलोमीत उनकी
बहन थी। 20जरुब्बाबेल के अन्य पाँच पुत्र भी थे। उनके
नाम हशूबा, ओहेल, बेरेक्याह, हसद्याह, और यूशमेसेद
था।
21हनन्याह का पुत्र पलत्याह था और पलत्याह का पुत्र
यशायाह था। यशायाह का पुत्र रपायाह था और रपायाह
का पुत्र अर्नान था। अर्नान का पुत्र ओबद्याह था और
ओबद्याह का पुत्र शकन्याह था।
22यह सूची तकन्याह के वंशजों शमायाह की है:
शमायाह के छ: पुत्र थे, शमायाह, हत्तूश और यिगाल,
बारीह, नार्याह और शपात।
23नार्याह के तीन पुत्र थे। वे एल्योएनै, हिजकिय्याह
और अज्रीकाम थे।
24एल्योएनै के सात पुत्र थे। वे होदब्याह, एल्याशीब,
पलायाह, अक्कूब, योहानान, दलायाह और अनानी
थे।

यहूदा के अन्य परिवार समूह

4 यह यहूदा के पुत्रों की सूची है: वे पेरेस, हेस्रोन,
कर्मी, हूर और शोबाल थे।
2शोबाल का पुत्र रायाह था। रायाह, यहत का पिता
था। यहत, अहूमै और लहद का पिता था। सोराई लोग
अहूमै और लहद के वंशज हैं।
3एताम के पुत्र यिज्रेल, यिश्मा, और यिद्वाश थे और
उनकी एक बहन हस्सलेलपोनी नाम की थी।
4पनूएल गदोर का पिता था और एजेर हूशा का पिता
था। हूर के ये पुत्र थे: हूर एप्राता का प्रथम पुत्र था और
एप्राता बेतलेहेम का संस्थापक था।
5तको का पिता अशहूर था। तको की दो पत्नियाँ थीं।
उनका नाम हेबा और नारा था। 6नारा के अहुज्जाम,
हेपेर, तेमनी और हाहशतारी पुत्र थे। ये अशहूर से नारा
के पुत्र थे। 7हेला के पुत्र सेरेत, यिसहर और एत्नान
और कोस थे। 8कोस आनूब और सोबेबा का पिता था।
कोस, अहर्हेल परिवार समूह का भी पिता था। अहर्हेल
हारून का पुत्र था।
9याबेस बहुत अच्छा व्यक्ति था। वह अपने भाईयों से
अधिक अच्छा था। उसकी माँ ने कहा, "मैंने उसका
नाम याबेस रखा है क्योंकि मैं उस समय बड़ी पीड़ा में
थी जब मैंने इसे जन्म दिया।" 10याबेस ने इस्राएल के
परमेश्वर से प्रार्थना की। याबेस ने कहा, "मैं चाहता हूँ
कि तू मुझे सचमुच आशीर्वाद दे। मैं चाहता हूँ कि तू
मुझे अधिक भूमि दे। मेरे समीप रहे और किसी को
मुझे चोट न पहुँचाने दे। तब मुझे कोई कष्ट नहीं होगा"
और परमेश्वर ने याबेस को वह दिया, जो उसने माँगा।
11कलूब शूहा का भाई था। कलूब महीर का पिता
था। महीर एशतोन का पिता था। 12एशतोन, बेतरामा,
पासेह और तहिन्ना का पिता था। तहिन्ना ईर्नाहाश का
पिता था। वे लोग रेका से थे।
13कनज के पुत्र ओत्नीएल और सरायाह थे। ओत्नीएल
के पुत्र हतत और मोनोतै थे। 14मोनोतै ओप्रा का पिता
था और सरायाह योआब का पिता था। योआब गेहराशीम
का संस्थापक था। वे लोग इस नाम का उपयोग करते
थे क्योंकि वे कुशल कारीगर थे।
15कालेब यपुन्ने का पुत्र था। कालेब के पुत्र इरु, एला,
और नाम थे। एला का पुत्र कनज था।
16यहल्लेल के पुत्र जीप, जीपा, तीरया और असरेलथे।
17-18एज्रा के पुत्र येतेर, मेरेद, एपेर और यालोन थे।
मेरेद, मिर्य्याम, शम्मै और यिशबह का पिता था। यिशबह,
एशतमो का पिता था। मेरेद की एक पत्नी मिस्र की थी।
उसके पुत्र येरेद, हेबेर, और यकूतीएल थे। येरेद गदोर
का पिता था। हेबेर सोको का पिता था और यकूतीएल
जानोह का पिता था। ये बित्या के पुत्र थे। बित्या फ़िरौन
की पुत्री थी। वह मिस्र के मेरेद की पत्नी थी।
19मेरेद की पत्नी नहम की बहन थी। मेरेद की पत्नी
यहूदा की थी। मेरेद की पत्नी के पुत्र कीला और
एशतमो के पिता थे। कीला गेरेमी लोगों में से था और
एशतमो माकाई लोगों में से था। 20शिमोन के पुत्र अम्नोन,

यहोयाकीम. .. पुत्र सिदकिय्याह इसकी व्याख्या दो प्रकार से की जा सकती है। (1) यह सिदकिय्याह यहोयाकीम का पुत्र और यकोन्याह का भाई था। (2) यह सिदकिय्याह यकोन्याह का पुत्र था और यहोयाकीम का पौत्र था।

रिन्ना बेन्हानान और तोलोन थे। यिशी के पुत्र जोहेत
और बेनजोहेत थे।
21-22शेला यहूदा का पुत्र था। शेला के पुत्र एर, लादा,
योकीम, कोर्जबा के लोग, योआश, और साराप थे। एर
लेका का पिता था। लादा मारेशा और बेतअशबे के सन
कारीगरों के परिवार समूह का पिता था। योआश और
साराप ने मोआबी स्त्रियों से विवाह किया। तब वे बेतलेहेम
को लौट गए।* उस परिवार के विषय में लिखित
सामग्री बहुत प्राचीन है। **23**शेला के वे पुत्र ऐसे कारीगर
थे जो मिट्टी से चीज़ें बनाते थे। वे नताईम और गदेरा में
रहते थे। वे उन नगरों में रहते थे और राजा के लिये
काम करते थे।

शिमोन की सन्तानें

24शिमोन के पुत्र, नमूएल, यामीन, यारीब, जेरह और
शाऊल थे। **25**शाऊल का पुत्र शल्लूम था। शल्लूम का
पुत्र मिबसाम था। मिबसाम का पुत्र मिश्मा था।
26मिश्मा का पुत्र हम्मूएल था। हम्मूएल का पुत्र जक्कूर
था। जक्कूर का पुत्र शिमी था। **27**शिमी के सोलह पुत्र
और छ: पुत्रियाँ थीं। किन्तु शिमी के भाईयों के अधिक
बच्चे नहीं थे। शिमी के भाईयों के बड़े परिवार नहीं थे।
उनके परिवार उतने बड़े नहीं थे जितने बड़े यहूदा के
अन्य परिवार समूह थे।
28शिमी के बच्चे बेर्शबा, मोलादा, हसर्शूआल, **29**बिल्हा,
एसेम, तोलाद, **30**बतूएल, होर्मा, सिकलग, **31**बेत मर्काबोत,
हसर्सूसीम, बेतबिरी, और शारैम में रहते थे। वे उन
नगरों में तब तक रहे जब तक दाऊद राजा नहीं हुआ।
32इन नगरों के समीप के पाँच गाँव एताम, ऐन, रिम्मोन,
तोकेन और आशान थे। **33**अन्य गाँव जैसे बाल बहुत
दूर थे। यहीं वे रहते थे और उन्होंने अपने परिवार का
इतिहास भी लिखा।
34-38यह सूची उन लोगों की है जो अपने परिवार
समूह के प्रमुख थे। वे मशोबाब, यम्लेक, योशा (अमस्याह
का पुत्र), योएल, योशिब्याह का पुत्र येहू, सरायाह का
पुत्र योशिब्याह, असीएल का पुत्र सरायाह, एल्योएनै,
याकोबा, यशोहायाह, असायाह, अदीएल, यसीमीएल,
बनायाह, और जीजा (शिपी का पुत्र) थे। शिपी अल्लोन
का पुत्र था और अल्लोन यदायाह का पुत्र था। यदायाह
शिम्री का पुत्र था और शिम्री शमायाह का पुत्र था।
इन पुरुषों के ये परिवार बहुत विस्तृत हुए। **39**वे गदोर
नगर के बाहर, घाटी के पूर्व के क्षेत्र में गए। वे अपनी
भेड़ों और पशुओं के लिए मैदान खोजने के लिये उस
स्थान पर गए। **40**उन्हें बहुत घासवाले अच्छे मैदान
मिलें। उन्होंने वहाँ बहुत अधिक अच्छी भूमि पाई। प्रदेश
शान्तिपूर्ण और शान्त था। अतीत में यहाँ हाम के वंशज
रहते थे। **41**यह तब हुआ जब हिजकिय्याह यहूदा का
राजा था। वे लोग गदोर पहुँचे और हमीत लोगों से लड़े।
उन्होंने हमीत लोगों के डेरों को नष्ट कर दिया। वे लोग
मूनी लोगों से भी लड़े जो वहाँ रहते थे। इन लोगों ने
सभी मूनी लोगों को नष्ट कर डाला। आज भी इन
स्थानों में कोई मूनी नहीं है। इसलिए उन लोगों ने वहाँ
रहना आरम्भ किया। वे वहाँ रहने लगे, क्योंकि उनकी
भेड़ों के लिये उस भूमि पर घास थी।
42पाँच सौ शिमोनी लोग शिमोनी के पर्वतीय क्षेत्र में
गए। यिशी के पुत्रों ने उन लोगों का मार्ग दर्शन किया।
वे पुत्र पलत्याह, नार्याह, रपायाह और उज्जीएल थे।
शिमोनी लोग उस स्थान पर रहने वाले लोगों से लड़े।
43वहाँ अभी थोड़े से केवल अमेलेकी लोग रहते थे
और इन शिमोनी लोगों ने इन्हें मार डाला। उस समय से
अब तक वे शिमोनी लोग सेईद में रह रहे हैं।

रूबेन के वंशज

5 **1-3**रूबेन इस्राएल का प्रथम पुत्र था। रूबेन को
सबसे बड़े पुत्र होने की विशेष सुविधायें प्राप्त होनी
चाहिए थी। किन्तु रूबेन ने अपने पिता की पत्नी के
साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। इसलिये वे सुविधाएं
यूसुफ के पुत्रों को मिली। परिवार के इतिहास में रूबेन
का नाम प्रथम पुत्र के रूप में लिखित नहीं है। यहूदा
अपने भाईयों से अधिक बलवान हो गया, अत: उसके
परिवार से प्रमुख आए। किन्तु यूसुफ के परिवार ने वे
अन्य सुविधायें पाई, जो सबसे बड़े पुत्र को मिलती थी।
रूबेन के पुत्र हनोक, पल्लू, हेस्रोन और कर्मी थे।
4योएल के वंशजों के नाम ये हैं: शमायाह योएल का
पुत्र था। गोग शमायाह का पुत्र था। शिमी गोग का पुत्र
था। **5**मीका शिमी का पुत्र था। रायाह मीका का पुत्र
था। बाल रायाह का पुत्र था। **6**बेरा बाल का पुत्र था।
अश्शूर के राजा तिलगत पिलनेसेर ने बेरा को अपना
घर छोड़ने को विवश किया। इस प्रकार बेरा राजा का
बन्दी बना। बेरा रूबेन के परिवार समूह का प्रमुख था।
7योएल के भाइयों और उसके सारे परिवार समूहों को
वैसे ही लिखा जा रहा है जैसे वे परिवार के इतिहास में
हैं: यीएल प्रथम पुत्र था, तब जकर्याह **8**और बेला। बेला
अजाज का पुत्र था। अजाज शेमा का पुत्र था। शेमा
योएल का पुत्र था। वे अरोएर से लगातार नबो और
बाल्मोन तक के क्षेत्र में रहते थे। **9**बेला के लोग पूर्व में
परात नदी के पास, मरुभूमि के किनारे तक रहते थे।
वे उस स्थान पर रहते थे क्योंकि गिलाद प्रदेश में उनके
पास बहुत से बैल थे। **10**जब शाऊल राजा था, बेला के
लोगों ने हग्री लोगों के विरुद्ध युद्ध किया। बेला के लोग
उन खेमों में रहे जो हग्री लोगों के थे। वे उन खेमों में
रहे और गिलाद के पूर्व के सारे क्षेत्र से होकर यात्रा
करते रहे।

मोआबी स्त्रियों ... लौट गये या "उन्होंने मोआब और जशुबिलेहम में शासन किया।"

गाद के वंशज

11गाद के परिवार समूह के लोग रूबेन के परिवार
समूह के पास रहते थे। गादी लोग बाशान के क्षेत्र में
लगातार सल्का नगर तक रहते थे। 12बाशान में योएल
प्रथम प्रमुख था। शापाम दूसरा प्रमुख था। तब यानै
प्रमुख हुआ।* 13परिवार के सात भाई ये थे मीकाएल,
मशुल्लाम, शेबा, योरै, याकान, जी और एबेर। 14वे
लोग अबीहैल के वंशज थे। अबीहैल हूरी का पुत्र था।
हूरी योराह का पुत्र था। योराह गिलाद का पुत्र था।
गिलाद मीकाएल का पुत्र था। मीकाएल यशीशै का पुत्र
था। यशीशै यहदो का पुत्र था। यहदो बूज का पुत्र था।
15अही अब्दीएल का पुत्र था। अब्दीएल गूनी का पुत्र
था। अही उनके परिवार का प्रमुख था। 16गाद के
परिवार समूह के लोग गिलाद क्षेत्र में रहते थे। वे
बाशान क्षेत्र में बाशान के चारों ओर के छोटे नगरों में
और शारोन क्षेत्र के चारागाहों में उसकी सीमाओं तक
निवास करते थे।

17योनातन और यारोबाम के समय में, इन सभी लोगों
के नाम गाद के परिवार इतिहास में लिखे थे। योनातन
यहूदा का राजा था और यारोबाम इस्राएल का राजा था।

युद्ध में निपुण कुछ सैनिक

18मनश्शे के परिवार के आधे तथा रूबेन और गाद
के परिवार समूहों से चौवालीस हजार सात सौ साठ वीर
योद्धा युद्ध के लिये तैयार थे। वे युद्ध में निपुण थे। वे
ढाल-तलवार धारण करते थे। वे धनुष-बाण में भी
कुशल थे। 19उन्होंने हग्री और यतूर, नापीश और
नोदाब लोगों के विरुद्ध युद्ध आरम्भ किया। 20मनश्शे,
रूबेन और गाद परिवार समूह के उन लोगों ने युद्ध में
परमेश्वर से प्रार्थना की। उन्होंने परमेश्वर से सहायता
मांगी क्योंकि वे उस पर विश्वास करते थे। अत: परमेश्वर
ने उनकी सहायता की। परमेश्वर ने उन्हें हग्री लोगों
को पराजित करने दिया और उन लोगों ने अन्य लोगों
को हराया जो हग्री के लोगों के साथ थे। 21उन्होंने उन
जानवरों को लिया जो हग्री लोगों के थे। उन्होंने पचास
हजार ऊँट, ढ़ाई लाख भेड़ें, दो हजार गधे और एक
लाख लोग लिये। 22बहुत से हग्री लोग मारे गये क्योंकि
परमेश्वर ने रूबेन के लोगों को युद्ध जीतने में सहायता
की। तब मनश्शे, रूबेन और गाद के परिवार समूह के
लोग हग्री लोगों की भूमि पर रहने लगे। वे वहाँ तब तक
रहते रहे जब तक बाबुल की सेना इस्राएल के लोगों को
नहीं ले गई और जब तक बाबुल में उन्हें बन्दी नहीं
बनाया गया।

23मनश्शे के परिवार समूह के आधे लोग बाशान के
क्षेत्र के लगातार बाल्हेर्मोन, सनीर और हेर्मोन पर्वत
तक रहते थे। वे एक विशाल जन समूह वाले लोग बन
गये। 24मनश्शे के परिवार समूह के आधे के प्रमुख ये
थे: एपेर, यिशी, एलीएल, अज्रीएल, यिर्मयाह, होदब्याह
और यहदीएल। वे सभी शक्तिशाली और वीर पुरुष थे।
वे प्रसिद्ध पुरुष थे और वे अपने परिवार के प्रमुख थे।
25किन्तु उन प्रमुखों ने उस परमेश्वर के विरुद्ध पाप
किया, जिसकी उपासना उनके पूर्वजों ने की थी। उन्होंने
वहाँ रहने वाले उन व्यक्तियों के असत्य देवताओं की
पूजा करनी आरम्भ की जिन्हें परमेश्वर ने नष्ट किया।

26इस्राएल के परमेश्वर ने पूल को युद्ध में जाने का
इच्छुक बनाया। पूल अश्शूर का राजा था। उसका नाम
तिलगत्पिलनेसेर भी था। वह मनश्शे, रूबेन और गाद
के परिवार समूहों के विरुद्ध लड़ा। उसने उनको अपना
घर छोड़ने को विवश किया और उन्हें बन्दी बनाया।
पूल उन्हें हलह, हाबोर, हारा और गोजान नदी के पास
लाया। इस्राएल के वे परिवार समूह उन स्थानों में उस
समय से अब तक रह रहे हैं।

लेवी के वंशज

6 लेवी के पुत्र गेर्शोन, कहात और मरारी थे। 2कहात
के पुत्र अम्राम, यिसहार, हेब्रोन, और उज्जीएल थे।
3अम्राम के बच्चे हारून, मूसा और मरियम थे।

हारून के पुत्र नादाब, अबीहू, एलीआजार और ईतामार
थे। 4एलीआजार, पीनहास का पिता था। पीनहास, अबीशू
का पिता था। 5अबीशू, बुक्की का पिता था। बुक्की,
उज्जी का पिता था। 6उज्जी, जरह्याह का पिता था।
जरह्याह, मरायोत का पिता था। 7मरायोत, अमर्याह का
पिता था। अमर्याह, अहीतूब का पिता था। 8अहीतूब,
सादोक का पिता था। सादोक, अहीमास का पिता था।
9अहीमास, अजर्याह का पिता था। अजर्याह, योहानान
का पिता था। 10योहानान, अजर्याह का पिता था। (अजर्याह
वह व्यक्ति था जिसने यरूशलेम में सुलैमान द्वारा बनाये
गये मन्दिर में याजक के रूप में सेवा की।) 11अजर्याह,
अमर्याह का पिता था। अमर्याह, अहीतूब का पिता था।
12अहीतूब, सादोक का पिता था। सादोक, शल्लूम का
पिता था। 13शल्लूम, हिलकिय्याह का पिता था।
हिलकिय्याह, अजर्याह का पिता था। 14अजर्याह, सरायाह
का पिता था। सरायाह, यहोसादाक का पिता था।

15यहोसादाक तब अपना घर छोड़ने के लिये विवश
किया गया जब यहोवा ने यहूदा और यरूशलेम को दूर
भेज दिया। वे लोग दूसरे देश में बन्दी बनाए गए थे।
यहोवा ने नबूकदनेस्सर को यहूदा और यरूशलेम के
लोगों को बन्दी बनाने दिया।

लेवी के अन्य वंशज

16लेवी के पुत्र गेर्शोन, कहात, और मरारी थे।
17गेर्शोन के पुत्रों के नाम लिब्नी और शिमी थे।

तब ... हुआ या "तब वहाँ यानै था और शापाम, बाशान में था।"

18कहात के पुत्र यिसहार, हेब्रोन और उज्जीएल थे।
19मरारी के पुत्र महली और मूशी थे। लेवी के परिवार
समूहों के परिवारों की यह सूची है। इनकी सूची उनके
पिताओं के नाम को प्रथम रखकर यह है।
20गेर्शोन के वंशज ये थे: लिब्नी, गेर्शोन का पुत्र था।
यहत, लिब्नी का पुत्र था। जिम्मा, यहत का पुत्र था।
21योआह, जिम्मा का पुत्र था। इद्दो, योआह का पुत्र
था। जेरह, इद्दो का पुत्र था। यातरै जेरह का पुत्र था।
22ये कहात के वंशज थे: अम्मीनादाब, कहात का
पुत्र था। कोरह, अम्मीनादाब का पुत्र था। अस्सीर,
कोरह का पुत्र था। 23एल्काना, अस्सीर का पुत्र था।
एब्यासाप, एल्काना का पुत्र था। अस्सीर, एब्यासाप का
पुत्र था। 24तहत, अस्सीर का पुत्र था। ऊरीएल, तहत
का पुत्र था। उज्जिय्याह, ऊरीएल का पुत्र था। शाऊल,
उज्जिय्याह का पुत्र था।
25एल्काना के पुत्र अमासै और अहीमोत थे। 26सोपै,
एल्काना का पुत्र था। नहत, सोपै का पुत्र था। 27एलीआब,
नहत का पुत्र था। यरोहाम, एलीआब का पुत्र था।
एल्काना, यरोहाम का पुत्र था। शमूएल एल्काना का
पुत्र था।
28शमूएल के पुत्रों में सबसे बड़ा योएल और दूसरा
अबिय्याह था।
29मरारी के ये पुत्र थे: महली, मरारी का पुत्र था।
लिब्नी, महली का पुत्र था। शिमी, लिब्नी का पुत्र था।
उज्जा, शिमी का पुत्र था। 30शिमी, उज्जा का पुत्र था।
हग्गिय्याह, शिमा का पुत्र था। असायाह, हग्गिय्याह का
पुत्र था।

मन्दिर के गायक

31ये वे लोग हैं जिन्हें दाऊद ने यहोवा के भवन के
तम्बू में साक्षीपत्र के सन्दूक रखे जाने के बाद संगीत के
प्रबन्ध के लिये चुना। 32ये व्यक्ति पवित्र तम्बू पर गाकर
सेवा करते थे। पवित्र तम्बू को मिलाप वाला तम्बू भी
कहते हैं और इन लोगों ने तब तक सेवा की जब तक
सुलैमान ने यरूशलेम में यहोवा का मन्दिर नहीं बनाया।
उन्होंने अपने काम के लिए दिये गए नियमों का अनुसरण
करते हुए सेवा की।
33ये नाम उन व्यक्तियों और उनके पुत्रों के हैं जिन्होंने
संगीत के द्वारा सेवा की:
कहाती लोगों के वंशज थे: गायक हेमान। हेमान,
योएल का पुत्र था। योएल, शमूएल का पुत्र था। 34शमूएल,
एल्काना का पुत्र था। एल्काना, यरोहाम का पुत्र था।
यरोहाम एलीएल का पुत्र था। एलीएल तोह का पुत्र था।
35तोह, सूप का पुत्र था। सूप, एल्काना का पुत्र था।
एल्काना, महत का पुत्र था। महत, अमासै का पुत्र था।
36अमासै, एल्काना का पुत्र था। एल्काना, योएल का
पुत्र था। योएल, अजर्याह का पुत्र था। अजर्याह, सपन्याह
का पुत्र था। 37सपन्याह, तहत का पुत्र था। तहत, अस्सीर
का पुत्र था। अस्सीर, एब्यासाप का पुत्र था। एब्यासाप,
कोरह का पुत्र था। 38कोरह, यिसहार का पुत्र था।
यिसहार, कहात का पुत्र था। कहात, लेवी का पुत्र था।
लेवी, इस्राएल का पुत्र था।
39हेमान का सम्बन्धी असाप था। असाप ने हेमान के
दाहिनी ओर खड़े होकर सेवा की। असाप बेरेक्याह का
पुत्र था। बेरेक्याह शिमा का पुत्र था। 40शिमा मीकाएल
का पुत्र था। मीकाएल बासेयाह का पुत्र था। बासेयाह
मल्किय्याह का पुत्र था। 41मल्किय्याह एत्नी का पुत्र
था। एत्नी जेरह का पुत्र था। जेरह अदायाह का पुत्र था।
42अदायाह एतान का पुत्र था। एतान जिम्मा का पुत्र था।
जिम्मा शिमी का पुत्र था। 43शिमी यहत का पुत्र था।
यहत गेर्शोन का पुत्र था। गेर्शोन लेवी का पुत्र था।
44मरारी के वंशज हेमान और असाप के सम्बन्धी थे।
वे हेमान के बांये पक्ष के गायक समूह थे। एताव कीशी
का पुत्र था। कीशी अब्दी का पुत्र था। अब्दी मल्लूक
का पुत्र था। 45मल्लूक हशब्याह का पुत्र था। हशब्याह
अमस्याह का पुत्र था। अमस्याह हिलकिय्याह का पुत्र
था। 46हिलकिय्याह अमसी का पुत्र था। अमसी बानी
का पुत्र था। बानी शेमेर का पुत्र था। 47शेमेर महली का
पुत्र था। महली मूशी का पुत्र था। मूशी मरारी का पुत्र
था। मरारी लेवी का पुत्र था।
48हेमान और असाप के भाई लेवी के परिवार समूह
से थे। लेवी के परिवार समूह के लोग "लेवीवंशी" भी
कहे जाते थे। लेवीय पवित्र तम्बू में काम करने के लिये
चुने जाते थे। पवित्र तम्बू परमेश्वर का घर था। 49किन्तु
केवल हारून के वंशजों को होमबलि की वेदी और
सुगन्धि की वेदी पर सुगन्धि जलाने की अनुमति थी।
हारून के वंशज परमेश्वर के घर में सर्वाधिक पवित्र
तम्बू में सारा काम करते थे। वे इस्राएल के लोगों को
शुद्ध करने के लिये उत्सव भी मनाते थे।* वे उन सब
नियमों और विधियों का अनुसरण करते थे जिनके
लिये मूसा ने आदेश दिया था। मूसा परमेश्वर का सेवक
था।

हारून के वंशज

50हारून के पुत्र ये थे: एलीआज़र हारून का पुत्र था।
पीनहास एलीआज़र का पुत्र था। अबीशू पीनहास का
पुत्र था। बुक्की अबीशू का पुत्र था। उज्जी बुक्की का
पुत्र था। 51बुक्की अबीशू का पुत्र था। उज्जी बुक्की का
पुत्र था। जरह्याह उज्जी का पुत्र था। 52मरायोत जरह्याह
का पुत्र था। अमर्याह मरायोत का पुत्र था। अहीतूब
अमर्याह का पुत्र था। 53सादोक अहीतूब का पुत्र था।
अहीमास सादोक का पुत्र था।

शुद्ध करने ... थे या "प्रायश्चित" करना। हिब्रू शब्द का अर्थ "व्यक्ति के पापों को ढकना या हटाना" था।

लेवीवंशी परिवारों के लिये घर

54ये वे स्थान हैं जहाँ हारून के वंशज रहे। वे उस भूमि पर जो उन्हें दी गई थी, अपने डेरों में रहते थे। कहाती परिवार ने उस भूमि का पहला भाग पाया जो लेवीवंश को दी गई थी। **55**उन्हें हेब्रोन नगर और उसके चारों ओर के खेत दिये गये थे। यह यहूदा क्षेत्र में था। **56**किन्तु नगर के दूर के खेत और नगर के समीप के गाँव, यपुन्ने के पुत्र कालेब को दिये गये थे। **57**हारून के वंशजों को हेब्रोन नगर दिया गया था। हेब्रोन एक सुरक्षा नगर था। उन्हें लिब्ना, यत्तीर, एशतमो, **58**हीलेन, दबीर, **59**आशान, जुत्ता, और बेतशेमेश नगर भी दिये गए। उन्होंने उन सभी नगरों और उनके चारों ओर के खेत प्राप्त किये। **60**बिन्यामीन के परिवार समूह के लोगों को गिबोन, गेबा अल्लेमेत, और अनातोत नगर दिये गए। उन्होंने उन सभी नगरों और उनके चारों ओर के खेतों को प्राप्त किया। कहाती परिवार को तेरह नगर दिये गए।

61शेष कहात के वंशजों ने मनश्शे परिवार समूह के आधे से दस नगर प्राप्त किये।

62गेर्शोम के वंशजों के परिवार समूह ने तेरह नगर प्राप्त किये। उन्होंने उन नगरों को इस्साकार, आशेर, नप्ताली और बाशान क्षेत्र में रहने वाले मनश्शे के एक भाग से प्राप्त किये। **63**मरारी के वंशजों के परिवार समूह ने बारह नगर प्राप्त किये। उन्होंने उन नगरों को रूबेन, गाद, और जबूलून के परिवार समूहों से प्राप्त किया। उन्होंने नगरों को गोटें डालकर प्राप्त किया।

64इस प्रकार इस्राएली लोगों ने उन नगरों और खेतों को लेवीवंशी लोगों को दिया। **65**वे सभी नगर, यहूदा, शिमोन और बिन्यामीन के परिवार समूहों से मिले। उन्होंने गोटें डालकर यह निश्चय किया कि कौन सा नगर लेवी का कौन सा परिवार प्राप्त करेगा।

66एप्रैम के परिवार समूह ने कुछ कहाती परिवारों को कुछ नगर दिये। वे नगर गोटें डालकर चुने गए। **67**उन्हें शकेम नगर दिया गया। शकेम सुरक्षा नगर है। उन्हें गेजेर **68**योकमान, बेथोरोन, **69**अय्यालोन, और गत्रिम्मोन भी प्राप्त किये। उन्होंने उन नगरों के साथ के खेत भी पाये। वे नगर एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में थे **70**और इस्राएली लोगों ने, मनश्शे परिवार समूह के आधे से, आनेर और बिलाम नगरों को कहाती परिवारों को दिया। उन कहाती परिवारों ने उन नगरों के साथ खेतों को भी प्राप्त किया।

अन्य लेवीवंशी परिवारों ने घर प्राप्त किये

71गेर्शोमी परिवारों ने मनश्शे परिवार समूह के आधे से, बाशान और अश्तारोत क्षेत्रों में गोलान के नगरों को प्राप्त किया। उन्होंने उन नगरों के पास के खेत भी पाए।

72-73गेर्शोमी परिवार ने केदेश, दाबरात, रामोत और आनेम नगरों को आशेर परिवार समूह से प्राप्त किया। उन्होंने उन नगरों के पास के खेतों को भी प्राप्त किया। **74-75**गेर्शोमी परिवार ने माशाल, अब्दोन, हूकोक और रहोब के नगरों को आशेर परिवार समूह से प्राप्त किया। उन्होंने उन नगरों के पास के खेतों को भी प्राप्त किया।

76गेर्शोमी परिवार ने गालील में केदेश, हम्मोन और किर्यातैम नगरों को भी नप्ताली के परिवार समूह से प्राप्त किया। उन्होंने उन नगरों के पास के खेतों को भी प्राप्त किया।

77लेवीवंशी लोगों में से शेष मरारी परिवार के हैं। उन्होंने जेक्नयम, कर्ता, शिम्मोन और ताबोर नगरों को जबूलून परिवार समूह से प्राप्त किया। उन्होंने उन नगरों के पास के खेत भी प्राप्त किये।

78-79मरारी परिवार ने मरुभूमि में बेसेर के नगरों, यहसा, कदेमोत, और मेपाता को भी रूबेन के परिवार समूह से प्राप्त किया। रूबेन का परिवार समूह यरदन नदी के पूर्व की ओर यरीहो नगर के पूर्व में रहता था। इन मरारी परिवारों ने नगर के पास के खेत भी पाये।

80-81मरारी परिवारों ने गिलाद में रामोत, महनैम, हेशोबोन और याज़ेर नगरों को गाद के परिवार समूह से प्राप्त किया। उन्होंने उन नगरों के पास के खेत भी प्राप्त किये।

इस्साकार के वंशज

7 इस्साकार के चार पुत्र थे। उनके नाम तोला, पूआ, याशूब, और शिम्रोन था।

2तोला के पुत्र उज्जी, रपायाह, यरीएल, यहमै, यिबसाम और शमूएल थे। वे सभी अपने परिवारों के प्रमुख थे। वे व्यक्ति और उनके वंशज बलवान योद्धा थे। उनके परिवार बढ़ते रहे और जब दाऊद राजा हुआ, तब वहाँ बाईस हजार छ: सौ व्यक्ति युद्ध के लिये तैयार थे।

3उज्जी का पुत्र यिज्रह्याह था। यिज्रह्याह के पुत्र मीकाएल, ओबद्याह, योएल, यिश्शिय्याह थे। वे सभी पाँचों अपने परिवारों के प्रमुख थे। **4**उनके परिवार का इतिहास यह बताता है कि उनके पास छत्तीस हजार योद्धा युद्ध के लिये तैयार थे। उनका बड़ा परिवार था क्योंकि उनकी बहुत सी स्त्रियाँ और बच्चे थे।

5परिवार इतिहास यह बताता है कि इस्साकार के सभी परिवार समूहों में सत्तासी हजार शक्तिशाली सैनिक थे।

बिन्यामीन के वंशज

6बिन्यामीन के तीन पुत्र थे। उनके नाम बेला, बेकेर, और यदीएल थे।

7बेला के पाँच पुत्र थे। उनके नाम एसबोन, उज्जी, उज्जीएल, यरीमोत, और ईरी थे। वे अपने परिवारों के

प्रमुख थे। उनका परिवार इतिहास बताता है कि उनके
पास बाईस हजार चौंतीस सैनिक थे।
8बेकेर के पुत्र जमीरा, योआश, एलीएजेर, एल्योएनै,
ओम्री, यरेमोत, अबिय्याह, अनातोत और आलेमेत थे।
वे सभी बेकेर के बच्चे थे। 9उनका परिवार इतिहास
बताता है कि परिवार प्रमुख कौन थे और उनका
परिवार इतिहास यह भी बताता है कि उनके बीस
हजार दो सौ सैनिक थे।
10यदीएल का पुत्र बिल्हान था। बिल्हान के पुत्र यूश,
बिन्यामीन, एहूद, कनाना, जेतान, तर्शीश और अहीशहर
थे। 11यदीएल के सभी पुत्र अपने परिवार के प्रमुख थे।
उनके सत्तरह हजार दो सौ सैनिक युद्ध के लिये तैयार
थे।
12शुप्पीम और हुप्पीम ईर के वंशज थे। हूशी अहेर
का पुत्र था।

नप्ताली के वंशज

13नप्ताली के पुत्र एहसीएल, गूनी, येसेर और शल्लूम
थे और ये बिल्हा के वंशज हैं।

मनश्शे के वंशज

14ये मनश्शे के वंशज हैं। मनश्शे का अस्रीएल नामक
पुत्र था जो उसकी अरामी रखैल (दासी) से था। उनका
माकीर भी था। माकीर गिलाद का पिता था।* 15माकीर
ने हुप्पीम और शुप्पीम लोगों की एक स्त्री से विवाह
किया। माका की दूसरी पत्नी का नाम सलोफाद था।
सलोफाद की केवल पुत्रियाँ थी। माकीर की बहन का
नाम भी माका था।
16माकीर की पत्नी माका को एक पुत्र हुआ। माका
ने अपने पुत्र का नाम पेरेश रखा। पेरेश के भाई का
नाम शेरेश था। शेरेश के पुत्र ऊलाम ओर राकेम थे।
17ऊलाम का पुत्र बदान था।
ये गिलाद के वंशज थे। गिलाद माकीर का पुत्र था।
माकीर मनश्शे का पुत्र था। 18माकीर की बहन
हम्मोलेकेत के पुत्र ईशहोद, अबीएजेर, और महला थे।
19शमीदा के पुत्र अह्यान, शेकेम, लिखी और अनीआम
थे।

एप्रैम के वंशज

20एप्रैम के वंशजों के ये नाम थे। एप्रैम का पुत्र
शूतेलह था। शूतेलह का पुत्र बेरेद था। बेरेद का पुत्र
तहत था। तहत का पुत्र एलादा था। 21एलादा का पुत्र
तहत था। तहत का पुत्र जाबाद था। जाबाद का पुत्र
शूतेलह था।
कुछ व्यक्तियों ने जो गत नगर में बड़े हुए थे, येजेर
और एलाद को मार डाला। यह इसलिये हुआ कि येजेर
और एलाद उन लोगों की गायें और भेड़ें चुराने गत गए
थे। 22एप्रैम येजेर और एलाद का पिता था। वह कई
दिनों तक रोता रहा क्योंकि येजेर और एलाद मर गए
थे। एप्रैम का परिवार उसे सांत्वना देने आया। 23तब
एप्रैम ने अपनी पत्नी के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया।
एप्रैम की पत्नी गर्भवती हुई और उसने एक पुत्र को
जन्म दिया। एप्रैम ने अपने नये पुत्र का नाम बरीआ
रखा क्योंकि उसके परिवार के साथ कुछ बुरा हुआ
था। 24एप्रैम की पुत्री शेरा थी। शेरा ने निम्न बेथोरान
तथा उच्च बेथोरान और निम्न उज्जेनशेरा एवं उच्च
उज्जेनशेरा बसाया।
25रेपा एप्रैम का पुत्र था। रेशेप रेपा का पुत्र था। तेलह
रेशेप का पुत्र था। तहन तेलह का पुत्र था। 26लादान
तहन का पुत्र था। अम्मीहूद लादान का पुत्र था। एलीशामा
अम्मीहूद का पुत्र था। 27नून एलीशामा का पुत्र था।
यहोशू नून का पुत्र था।
28ये वे नगर और प्रदेश हैं जहाँ एप्रैम के वंशज रहते
थे। बेतेल और इसके पास के गाँव पूर्व में नारान, गेजेर
और पश्चिम में इसके निकट के गाँव, तथा शेकेम
तथा अज्जा के रास्ते तक के निकटवर्ती गाँव। 29मनश्शे
की भूमि से लगी सीमा पर बेतशान, तानाक, मगिदो
नगर तथा दोर और उनके पास के छोटे नगर थे।
यूसुफ के वंशज इन नगरों में रहते थे। यूसुफ इस्राएल
का पुत्र था।

आशेर के वंशज

30आशेर के पुत्र यिम्ना, यिश्वा, यिश्वी, और बरीआ
थे। उनकी बहन का नाम सेरह था।
31बरीआ के हेबेर और मल्कीएल थे। मल्कीएल
बिर्जोत का पिता था।
32हेबेर यपलेत, शोमेर, होताम, और उनकी बहन
शूआ का पिता था।
33यपलेत के पुत्र पासक, बिम्हाल और अश्वात थे। ये
यपलेत के बच्चे थे।
34शेमेर के पुत्र अही, रोहगा, यहुब्बा और अराम थे।
35शेमेर के भाई का नाम हेलेम था। हेलेम के पुत्र
सोपह, यिम्ना, शेलेश और आमाल थे।
36सोपह के पुत्र सूह, हर्नेपेर, शूआल, वेरी, इम्रा, 37बेसेर,
होद, शम्मा, शिलसा, यित्रान और बेरा थे।
38येतेर के पुत्र यपुन्ने, पिस्पा और अरा थे।
39उल्ला के पुत्र आरह, हन्नीएल, और रिस्या थे।
40ये सभी व्यक्ति आशेर के वंशज थे। वे अपने परिवारों
के प्रमुख थे। वे उत्तम पुरुष थे। वे योद्धा और महान
प्रमुख थे। उनका पारिवारिक इतिहास बताता है कि
छब्बीस हजार सैनिक युद्ध के लिये तैयार थे।

माकीर गिलाद का पिता था या "माकीर गिलाद को बसाने वाला था।"

राजा शाऊल का परिवार इतिहास

8 बिन्यामीन बेला का पिता था। बेला बिन्यामीन का
प्रथम पुत्र था। अशबेल बिन्यामीन का दूसरा पुत्र
था। अहरह बिन्यामीन का तीसरा पुत्र था। 2नोहा
बिन्यामीन का चौथा पुत्र था और रापा बिन्यामीन का
पाँचवाँ पुत्रथा।
3-5बेला के पुत्र अद्दार, गेरा, अबीहूद, अबीशू, नामान,
अहोह, गेरा, शपूपान और हूराम थे।
6-7एहूद के वंशज ये थे। ये गेबा में अपने परिवारों के
प्रमुख थे। वे अपना घर छोड़ने और मानहत में रहने
को विवश किये गए थे। एहूद के वंशज नामान, अहिय्याह,
और गेरा थे। गेरा ने उन्हें घर छोड़ने को विवश किया।
गेरा उज्जा और अहीलूद का पिता था।
8शहरैम ने अपनी पत्नियों हशीम और बारा को मोआब
में तलाक दिया। जब उसने यह किया, उसके कुछ बच्चे
अन्य पत्नी से उत्पन्न हुए। 9-10शहरैम के योआब,
मेशा, मल्काम, यूस, सोक्या, और मिर्मा उसकी पत्नी
होदेश से हुए। वे अपने परिवारों के प्रमुख थे। 11शहरैम
और हशीम के दो पुत्र अबीतूब और एल्पाल थे।
12-13एल्पाल के पुत्र एबेर, मिशाम, शेमेर, बरीआ
और शेमा थे। शेमेर ने ओनो और लोद नगर तथा
लोद के चारों ओर छोटे नगरों को बनाया। बरीआ
और शेमा अय्यालोन में रहने वाले परिवारों के
प्रमुख थे। उन पुत्रों ने गत में रहने वालों को उसे
छोड़ने को विवश किया।
14बरीआ के पुत्र शासक और यरमोत, 15जबद्याह,
अराद, एदेर, 16मीकाएल, यिस्पा और योहा थे। 17एल्पाल
के पुत्र जबद्याह, मशुल्लाम, हिजकी, हेबर, 18यिशमरै,
यिजलीआ और योबाब थे।
19शिमी के पुत्र याकीम, जिक्री, ज़ब्दी, 20एलीएनै,
सिल्लतै, एलीएल, 21अदायाह, बरायाह और शिम्रात थे।
22शाशक के पुत्र यिशपान, यबेर, एलीएल, 23अब्दोन,
जिक्री, हानान, 24हनन्याह, एलाम, अन्तोतिय्याह,
25यिपदयाह और पनूएल थे।
26यरोहाम के पुत्र शमशरै, शहर्याह, अतल्याह,
27योरेश्याह, एलिय्याह, और जिक्री थे।
28ये सभी व्यक्ति अपने परिवारों के प्रमुख थे। वे
अपने परिवार के इतिहास में प्रमुख के रूप में अंकित
थे। वे यरूशलेम में रहते थे।
29येयील गिबोन का पिता था। वह गिबोन नगर में
रहता था। येयील की पत्नी का नाम माका था। 30येयील
का सबसे बड़ा पुत्र अब्दोन था। अन्य पुत्र शूर, कीश,
बाल, नेर, नादाब, 31गदोर, अह्यो, जेकेर, और मिकोत
थे। 32मिकोत शिमा का पिता था। ये पुत्र भी यरूशलेम
में अपने सम्बन्धियों के निकट रहते थे।
33नेर, कीश का पिता था। कीश शाऊल का पिता था
और शाऊल योनातान, मलकीश, अबीनादाब और
एशबाल का पिता था। 34योनातान का पुत्र मरीब्बाल
था। मरीब्बाल मीका का पिता था।
35मीका के पुत्र पीतोन, मेलेक, तारे और आहाज थे।
36आहाज यहोअद्दा का पिता था। यहोअद्दा आलेमेत,
अजमावेत और जिम्री का पिता था। जिम्री मोसा का
पिता था। 37मोसा बिना का पिता था। रापा बिना का पुत्र
था। एलासा रापा का पुत्र था और आसेल एलासा का
पुत्र था। 38आसेल के छ: पुत्र थे। उनके नाम अज्रीकाम,
बोकरू, यिश्माएल, शार्याह, ओबद्याह और हानान थे। ये
सभी पुत्र आसेल की सन्तान थे।
39आसेल का भाई एशेक था। एशेक के कुछ पुत्र थे।
एशेक के ये पुत्र थे: ऊलाम एशेक का सबसे बड़ा पुत्र
था। यूशा एशेक का दूसरा पुत्र था। एलीपेलेत एशेक का
तीसरा पुत्र था। 40ऊलाम के पुत्र बलवान योद्धा और
धनुष–बाण के प्रयोग में कुशल थे। उनके बहुत से पुत्र
और पौत्र थे। सब मिलाकर डेढ़ सौ पुत्र और पौत्र थे। ये
सभी व्यक्ति बिन्यामीन के वंशज थे

9 इस्राएल के लोगों के नाम उनके परिवार के इतिहास
में अंकित थे। वे परिवार इतिहास इस्राएल के
राजाओं के इतिहास में रखे गए थे।

यरूशलेम के लोग

यहूदा के लोग बन्दी बनाए गए थे और बाबेल को जाने
को विवश किये गये थे। वे उस स्थान पर इसलिये ले
जाए गए, क्योंकि वे परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य
नहीं थे। 2सबसे पहले लौट कर आने वाले और अपने
नगरों और अपने प्रदेश में रहने वाले लोगों में कुछ
इस्राएली, याजक, लेवीवंशी और मन्दिर में सेवा करने
वाले सेवकथे।
3यरूशलेम मे रहने वाले यहूदा, बिन्यामीन, एप्रैमी
और मनश्शे के परिवार समूह के लोग ये हैं:
4ऊतै अम्मीहूद का पुत्र था। अम्मीहूद ओम्री का पुत्र
था। ओम्री इम्री का पुत्र था। इम्री बानी का पुत्र था। बानी
पेरेस का वंशज था। पेरेस यहूदा का पुत्र था।
5शिलोई लोग जो यरूशलेम में रहते थे, ये थे: असायाह,
सबसे बड़ा पुत्र था और असायाह के पुत्र थे।
6जेरह लोग, जो यरूशलेम में रहते थे, ये थे: यूएल
और उसके सम्बन्धी, वे सब मिलाकर छ: सौ नब्बे थे।
7बिन्यामीन के परिवार समूह से जो लोग यरूशलेम में
थे, वे ये हैं: सल्लू मशुल्लाम का पुत्र था। मशुल्लाम
होदव्याह का पुत्र था। होदव्याह हस्सनूआ का पुत्र था।
8यिब्रिय्याह यरोहाम का पुत्र था। एला उज्जी का पुत्र था।
उज्जी मिक्री का पुत्र था। मशुल्लाम शपत्याह का पुत्र
था। शपत्याह रूएल का पुत्र था। रूएल यिब्निय्याह का
पुत्र था। 9बिन्यामीन का परिवार इतिहास बताता है कि
यरूशलेम में उनके नौ सौ छप्पन व्यक्ति रहते थे। वे
सभी व्यक्ति अपने परिवारों के प्रमुख थे।

10ये वे याजक हैं जो यरूशलेम में रहते थे: यदायाह,
यहोयारीब, याकीन और अजर्याह! 11अजर्याह
हिलकिय्याह का पुत्र था। हिलकिय्याह मशुल्लाम का
पुत्र था। मशुल्लाम सादोक का पुत्र था। सादोक मरायोत
का पुत्र था। मरायोत अहीतूब परमेश्वर के मन्दिर के
लिये विशेष उत्तरदायी अधिकारी था। 12वहाँ यरोहाम
का पुत्र अदायाह भी था। यरोहाम पशहूर का पुत्र था।
पशहूर मल्कियाह का पुत्र था और वहाँ अदोएल का
पुत्र मासै था। अदोएल जहजेश का पुत्र था। जेरा मशुल्लाम
का पुत्र था। मशुल्लाम मशिल्लीत का पुत्र था। मशिल्लीत
इम्मेर का पुत्र था।

13वहाँ एक हजार सात सौ साठ याजक थे। वे अपने
परिवारों के प्रमुख थे। वे परमेश्वर के मन्दिर में सेवा
करने के कार्य के लिये उत्तरदायी थे।

14लेवी के परिवार समूह से जो लोग यरूशलेम में
रहते थे, वे ये हैं: हश्शूब का पुत्र शमायाह। हश्शूब
अज्रीकाम का पुत्र था। अज्रीकाम हशब्याह का पुत्र था।
हशब्याह मरारी का वंशज था। 15यरूशलेम में
बकबक्कर, हेरेश, गालाल और मत्तन्याह भी रहे थे।
मत्तन्याह मीका का पुत्र था। मीका जिक्री का पुत्र था।
जिक्री आसाप का पुत्र था। 16ओबद्याह शमायाह का पुत्र
था। शमायाह गालाल का पुत्र था। गालाल यदूतून का
पुत्र था और आसा का पुत्र बेरेक्याह यरूशलेम में रहता
था। आसा एल्काना का पुत्र था। एल्काना तोपा लोगों
के पास एक छोटे नगर में रहता था।

17ये वे द्वारपाल हैं जो यरूशलेम में रहते थे: शल्लूम,
अक्कूब, तल्मोन, अहीमान और उनके सम्बन्धी।
शल्लूम उनका प्रमुख था। 18अब ये व्यक्ति पूर्व की
ओर राजा के द्वार के ठीक बाद में खड़े रहते हैं। वे
द्वारपाल लेवी परिवार समूह से थे। 19शल्लूम कोरे का
पुत्र था। कोरे एब्यासाप का पुत्र था। एब्यासाप कोरह
का पुत्र था। शल्लूम और उसके भाई द्वारपाल थे। वे
कोरे परिवार से थे। उन्हें पवित्र तम्बू के द्वार की रक्षा
करने का कार्य करना था। वे इसे वैसे ही करते थे जैसे
इनके पूर्वजों ने इनके पहले किया था। उनके पूर्वजों
का यह कार्य था कि वे पवित्र तम्बू के द्वार की रक्षा
करें। 20अतीत में, पीनहास द्वारपालों का निरीक्षक था।
पीनहास एलीआज़र का पुत्र था। यहोवा पीनहास के
साथ था। 21जकर्याह पवित्र तम्बू के द्वार का द्वारपाल
था।

22सब मिलाकर दो सौ बारह व्यक्ति पवित्र तम्बू के
द्वार की रक्षा के लिये चुने गए थे। उनके नाम उनके
परिवार इतिहास में उनके छोटे नगरों में लिखे हुए थे।
दाऊद और शमूएल नबी ने उन लोगों को चुना, क्यों
कि उन पर विश्वास किया जा सकता था। 23द्वारपालों
और उनके वंशजों का उत्तरदायित्व यहोवा के मन्दिर,
पवित्र तम्बू की रक्षा करना था। 24वहाँ चारों तरफ द्वार
थे: पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण। 25द्वारपालों के
सम्बन्धियों को, जो छोटे नगर में रहते थे, समय-समय
पर आकर उनको सहायता करनी पड़ती थी। वे आते
थे और हर बार सात दिन तक द्वारपालों की सहायता
करते थे।

26द्वारपालों के चार प्रमुख द्वारपाल वहाँ थे। वे लेवीवंशी
पुरुष थे। उनका कर्तव्य परमेश्वर के मन्दिर के कमरों
और खजाने की देखभाल करना था। 27वे रात भर
परमेश्वर के मन्दिर की रक्षा में खड़े रहते थे और
परमेश्वर के मन्दिर को प्रतिदिन प्रात: खोलने का
उनका काम था।

28कुछ द्वारपालों का काम मन्दिर की सेवा में काम
आने वाली तश्तरियों की देखभाल करना था। वे इन
तश्तरियों को तब गिनते थे जब वे भीतर लाई जाती थीं
वे इन तश्तरियों को तब भी गिनते थे जब वे बाहर जाती
थीं। 29अन्य द्वारपाल सज्जा-सामग्री और उन विशेष
तश्तरियों की देखभाल के लिये चुने जाते थे। वे आटे,
दाखमधु, तेल, सुगन्धि और विशेष तेल की भी देखभाल
करते थे। 30किन्तु केवल याजक ही विशेष तेल को
मिश्रित करने का काम करते थे।

31एक मतित्याह नामक लेवीवंशी था जिसका काम
भेंट में उपयोग के लिये रोटी पकाना था। मतित्याह
शल्लूम का सबसे बड़ा पुत्र था। शल्लूम कोरह परिवार
का था। 32द्वारपालों में से कुछ जो कोरह परिवार के
थे, प्रत्येक सब्त को मेज पर रखी जाने वाली रोटी को
तैयार करने का काम करते थे।

33वे लेवीवंशी जो गायक थे और अपने परिवारों के
प्रमुख थे, मन्दिर के कमरों में ठहरते थे। उन्हें अन्य
काम नहीं करने पड़ते थे क्योंकि वे मन्दिर में दिन-रात
काम के लिये उत्तरदायी थे।

34ये सभी लेवीवंशी अपने परिवारों के प्रमुख थे। वे
अपने परिवार के इतिहास में प्रमुख के रूप में अंकित
थे। वे यरूशलेम में रहते थे।

राजा शाऊल का परिवार इतिहास

35यीएल गिबोन का पिता था। यीएल गिबोन नगर में
रहता था। यीएल की पत्नी का नाम माका था। 36यीएल
का सबसे बड़ा पुत्र अब्दोन था। अन्य पुत्र सूर, कीश,
बाल, नेर, नादाब, 37गदोर, अह्यो, जकर्याह और मिल्कोत
थे। 38मिल्कोत शिमाम का पिता था। यीएल का परिवार
अपने सम्बन्धियों के साथ यरूशलेम में रहता था।

39नेर कीश का पिता था। कीश शाऊल का पिता था
और शाऊल योनातान, मल्कीश, अबीनादाब, और
एशबाल का पिता था। 40योनातान का पुत्र मरीब्बाल
था। मरीब्बाल मीका का पिता था।

41मीका के पुत्र पीतोन, मेलेक, तहरे, और अहाज
थे। 42अहाज जदा का पिता था। जदा यारा का पिता

था* यारा आलेमेत, अजमावेत और जिम्री का पिता
था। जिम्री मोसा का पिता था। 43मोसा बिना का पुत्र था।
रपायाह बिना का पुत्र था। एलासा रपायाह का पुत्र था
और आसेल एलासा का पुत्र था।
44आसेल के छ: पुत्र थे। उनके नाम थे: अज्रीकाम,
बोकरू, यिश्माएल, शार्याह, ओबद्याह, और हनान। वे
आसेल के बच्चे थे।

राजा शाऊल की मृत्यु

10 पलिश्ती लोग इस्राएल के लोगों के विरुद्ध लड़े।
इस्राएल के लोग पलिश्तियों के सामने भाग
खड़े हुए। बहुत से इस्राएली लोग गिलबो पर्वत पर मारे
गए। 2पलिश्ती लोग शाऊल और उसके पुत्रों का पीछा
लगातार करते रहे। उन्होंने उनको पकड़ लिया और
उन्हें मार डाला। पलिश्तियों ने शाऊल के पुत्रों योनातान,
अबीनादाब और मल्कीशू को मार डाला। 3शाऊल के
चारों ओर युद्ध घमासान हो गया। धनुर्धारियों ने शाऊल
पर अपने बाण छोड़े और उसे घायल कर दिया।
4तब शाऊल ने अपने कवच वाहक से कहा, "अपनी
तलवार बाहर खींचो और इसका उपयोग मुझे मारने में
करो। तब वे खतनारहित जब आएंगे तो न मुझे चोट
पहुँचायेंगे न ही मेरी हँसी उड़ायेंगे।"
किन्तु शाऊल का कवच वाहक भयभीत था। उसने
शाऊल को मारना अस्वीकार किया। तब शाऊल ने
अपनी तलवार का उपयोग स्वयं को मारने के लिये
किया। वह अपनी तलवार की नोक पर गिरा। 5कवच
वाहक ने देखा कि शाऊल मर गया। तब उसने स्वयं
को भी मार डाला। वह अपनी तलवार की नोक पर
गिरा और मर गया। 6इस प्रकार शाऊल और उसके
तीन पुत्र मर गए। शाऊल का सारा परिवार एक साथ
मर गया।
7घाटी में रहने वाले इस्राएल के सभी लोगों ने देखा
कि उनकी अपनी सेना भाग गई। उन्होंने देखा कि
शाऊल और उसके पुत्र मर गए। इसलिये उन्होंने अपने
नगर छोड़े और भाग गए। तब पलिश्ती उन नगरों में
आए जिन्हें इस्राएलियों ने छोड़ दिया था और पलिश्ती
उन नगरों में रहने लगे।
8अगले दिन, पलिश्ती लोग शवों की बहुमूल्य वस्तुएँ
लेने आए। उन्होंने शाऊल के शव और उसके पुत्रों के
शवों को गिबोन पर्वत पर पाया। 9पलिश्तियों ने शाऊल
के शव से चीज़ें उतारीं। उन्होंने शाऊल का सिर और
कवच लिया। उन्होंने अपने पूरे देश में अपने असत्य
देवताओं और लोगों को सूचना देने के लिये दूत भेजे।
10पलिश्तियों ने शाऊल के कवच को अपने असत्य
देवता के मन्दिर में रखा। उन्होंने शाऊल के सिर को
दागोन के मन्दिर में लटकाया।
11याबेश गिलाद नगर में रहने वाले सब लोगों ने वह
हर एक बात सुनी जो पलिश्ती लोगों ने शाऊल के साथ
की थी। 12याबेश के सभी वीर पुरुष शाऊल और
उसके पुत्रों का शव लेने गए। वे उन्हें याबेश में वापस ले
आए। उन वीर पुरुषों ने शाऊल और उसके पुत्रों की
अस्थियों को, याबेश में एक विशाल पेड़ के नीचे दफनाया।
तब उन्होंने अपना दु:ख प्रकट किया और सात दिन
तक उपवास रखा।
13शाऊल इसलिये मरा कि वह यहोवा के प्रति
विश्वासपात्र नहीं था। शाऊल ने यहोवा के आदेशों का
पालन नहीं किया। शाऊल एक माध्यम के पास गया
और 14यहोवा को छोड़कर उससे सलाह माँगी। यही
कारण है कि यहोवा ने उसे मार डाला और यिशै के
पुत्र दाऊद को राज्य दिया।

दाऊद इस्राएल का राजा होता है

11 इस्राएल के सभी लोग हेब्रोन नगर में दाऊद के
पास आए। उन्होंने दाऊद से कहा, "हम तुम्हारे
ही रक्त–माँस हैं। 2अतीत में, तुमने युद्ध में हमारा संचालन
किया। तुमने हमारा तब भी संचालन किया जब शाऊल
राजा था। हे दाऊद, यहोवा ने तुझ से कहा, 'तुम मेरे
लोगों अर्थात् इस्राएल के लोगों के गड़रिया हो। तुम मेरे
लोगों के ऊपर शासक होगे।'"
3इस्राएल के सभी प्रमुख दाऊद के पास हेब्रोन नगर में
आए। दाऊद ने हेब्रोन में उन प्रमुखों के साथ यहोवा के
सामने एक वाचा की। प्रमुखों ने दाऊद का अभिषेक
किया। इस प्रकार उसे इस्राएल का राजा बनाया गया।
यहोवा ने वचन दिया था कि यह होगा। यहोवा ने
शमूएल का उपयोग यह वचन देने के लिये किया था।

दाऊद यरूशलेम पर अधिकार करता है

4दाऊद और इस्राएल के सभी लोग यरूशलेम नगर
को गए। यरूशलेम उन दिनों यबूस कहा जाता था। उस
नगर में रहने वाले लोग यबूसी कहे जाते थे। 5उस नगर
के निवासियों ने दाऊद से कहा, "तुम हमारे नगर के
भीतर प्रवेश नहीं कर सकते।" किन्तु दाऊद ने उन
लोगों को पराजित कर दिया। दाऊद ने सिय्योन के
किले पर अधिकार कर लिया। यह स्थान "दाऊद
नगर" बना।
6दाऊद ने कहा, "वह व्यक्ति जो यबूसी लोगों पर
आक्रमण का संचालन करेगा, मेरी पूरी सेना का सेनापति
होगा।" अत: योआब ने आक्रमण का संचालन किया।
योआब सरूयाह का पुत्र था। योआब सेना का सेनापति
हो गया।
7तब दाऊद ने किले में अपना महल बनाया। यही
कारण है उसका नाम दाऊद नगर पड़ा। 8दाऊद ने
किले के चारों ओर नगर बसाया। उसने इसे मिल्लो से

अहाज जदा ... था हिब्रू में केवल "अहाज यारा का पिता था।"

नगर के चारों ओर की दीवार तक बसाया। योआब ने
नगर के अन्य भागों की मरम्मत की। 9दाऊद महान
बनता गया। सर्वशक्तिमान यहोवा उसके साथ था।

दाऊद के विशिष्ठ वीर

10दाऊद के विशिष्ठ वीरों के ऊपर के प्रमुखों की
यह सूची है: ये वीर दाऊद के साथ उसके राज्य में बहुत
शक्तिशाली बन गये। उन्होंने और इस्राएल के सभी लोगों
ने दाऊद की सहायता की और उसे राजा बनाया। यह
ठीक वैसा ही हुआ जैसा परमेश्वर ने वचन दिया था।

11यह दाऊद के विशिष्ठ वीरों की सूची है: यशोबाम
हक्मोनी लोगों में से था। यशोबाम रथ अधिकारियों*
का प्रमुख था। यशोबाम ने अपने भाले का उपयोग तीन
सौ व्यक्तियों से युद्ध करने के लिये किया। उसने एक ही
बार में उन तीन सौ व्यक्तियों को मार डाला।

12एलीआज़ार दाऊद के विशिष्ठ वीरों में दूसरा था।
एलीआज़ार दोदो का पुत्र था। दोदो अहोही से था।
एलीआज़ार तीन वीरों में से एक था। 13एलीआज़ार
पसदम्मीम में दाऊद के साथ था। पलिश्ती लोग उस
स्थान पर युद्ध करने आये। उस स्थान पर एक जौ से
भरा खेत था। वही स्थान, जहाँ इस्राएली लोग पलिश्ती
लोगों से भागे थे। 14किन्तु वे तीन वीर उस खेत के बीच
रुक गए थे और पलिश्तियों से लड़े तथा उन्हें हरा डाला
था और इस प्रकार यहोवा ने इस्राएलियों को बड़ी विजय
दी थी।

15एक बार, दाऊद अदुल्लाम गुफा के पास था और
पलिश्ती सेना नीचे रपाईम की घाटी में थी। तीस वीरों में
से तीन वीर उस गुफा तक, लगातार रेंगते हुए दाऊद
के पास पहुँचे।

16अन्य अवसर पर, दाऊद किले में था, और पलिश्ती
सेना का एक समूह बेतलेहेम में था। 17दाऊद प्यासा
था। अत: उसने कहा, "मैं चाहता हूँ कि मुझे कोई थोड़ा
पानी बेतलेहेम में नगर द्वार के पास के कुएँ से दें।"*
दाऊद सचमुच यह नहीं चाहता था। वह केवल बात
कर रहा था।

18तब तीन वीरों ने पलिश्ती सेना के बीच से युद्ध
करते हुए अपना रास्ता बनाया और नगर-द्वार के
निकट बेतलेहेम के कुएँ से पानी लिया। तीनों वीर
दाऊद के पास पानी ले गए। किन्तु दाऊद ने पानी पीने
से इन्कार कर दिया। उसने पानी को यहोवा के नाम
पर अर्पण कर, उण्डेल दिया। 19दाऊद ने कहा,
"परमेश्वर, मैं इस पानी को नहीं पी सकता। इन व्यक्तियों
ने मेरे लिये इस पानी को लाने में अपने जीवन को
खतरे में डाला। अत: यदि मैं इस पानी को पीता हूँ तो
यह उनका खून पीने के समान होगा।" इसलिये दाऊद
ने उस जल को पीने से इन्कार किया। तीनों वीरों ने
उस तरह के बहुत से वीरता के काम किये।

अन्य वीर योद्धा

20योआब का भाई, अबीशै, तीन वीरों का प्रमुख था।
वह अपने भाले से तीन सौ व्यक्तियों से लड़ा और उन्हें
मार डाला। अबीशै तीन वीरों की तरह प्रसिद्ध हो गया।
21अबीशै तीस वीरों से अधिक प्रसिद्ध था। वह उनका
प्रमुख हो गया, यद्यपि वह तीन प्रमुख वीरों में से नहीं
था।

22यहोयादा का पुत्र बनायाह, कबजेल का एक वीर
योद्धा था। बनायाह ने बड़े पराक्रम किये। उसने मोआब
देश के दो सर्वोत्तम व्यक्तियों को मार डाला। वह जमीन
के अन्दर एक माँद में घुसा और वहाँ एक शेर को भी
मार डाला। वह उस दिन हुआ जब बर्फ गिर रही थी।
23बनायाह ने मिस्र के एक व्यक्ति को मार डाला। वह
व्यक्ति लगभग पाँच हाथ ऊँचा था। उस मिस्र के पुरुष
के पास एक बहुत बड़ा और भारी भाला था। यह
बुनकर के करघे के विशाल डण्डे के समान था और
बनायाह के पास केवल एक लाठी थी। किन्तु बनायाह
ने मिस्री से भाला छीन लिया। बनायाह ने मिस्री के अपने
भाले का उपयोग किया और उसे मार डाला। 24ये कार्य
थे जिन्हें योहयादा के पुत्र बनायाह ने किये। बनायाह
तीन वीरों की तरह प्रसिद्ध हुआ।

25बनायाह तीस वीरों में सबसे अधिक प्रसिद्ध था,
किन्तु वह तीन प्रमुख वीरों में सम्मिलित नहीं किया
गया। दाऊद ने बनायाह को अपने अंगरक्षकों का प्रमुख
चुना।

तीस वीर

26बलिष्ठ वीर (तीस वीर) ये थे: असाहेल, योआब
का भाई, एल्हानान, दोदो का पुत्र एल्हानान बेतलेहेम
नगर का था; 27हरोरी लोगों में से शम्मोत; पलोनी लोगों
में से हेलेस; 28इक्केश का पुत्र, ईरा, ईरा तकोई नगर
का था; अनातोत नगर का अबीएज़ेर; 29होसाती लोगों
में से सिब्बके; अहोही से ईलै; 30नतोपाई लोगों में से
महरै; बाना का पुत्र हेलेद, हेलेद नतोपाई लोगों में से था;
31रीबै का पुत्र इतै, इतै बिन्यामीन के गिबा नगर से था;
पिरातोनी लोगों में से बनायाह; 32गाश घाटियों से हूरै;
अराबा लोगों में से अबीएल; 33बहूरीमी लोगों में से
अजमावेत; शल्बोनी लोगों में से एल्यहबा; 34हाशेम के
पुत्र गीजोई हाशेम लोगों में से था; शागे का पुत्र योनातान,
योनातान हरारी लोगों में से था; 35सकार का पुत्र
अहीआम, अहीआम हरारी लोगों में से था; ऊर का पुत्र

रथ अधिकारियों या इसका अर्थ "तीस" या तीन हो सकता है।
देखें 2शमू. 23:8

बेतलेहेम में ... से दें यह दाऊद का निवास स्थान था। यही
कारण था कि दाऊद ने उस कुँए से पानी पीने की बात सोची।

एलीपाल; 36मेकराई लोगों में से हेपेर; पलोनी लोगों में
से अहिय्याह; 37कर्मेली लोगों में से हेस्रो, एज्बै का पुत्र
नारै; 38नातान का भाई योएल; हग्री का पुत्र मिभार;
39अम्मोनी लोगों में से सेलेक; बेरोती नहरै, (नहरै
योआब का कवचवाहक था। योआब सरूयाह का पुत्र
था।); 40येतेरी लोगों में से ईरा; इथ्री लोगों में से गारेब;
41हित्ती लोगों में से ऊरिय्याह; अहलै का पुत्र जाबाद;
42शीजा का पुत्र अदीना, शीजा रूबेन के परिवार समूह
से था। (अदीना रूबेन के परिवार समूह का प्रमुख था।
परन्तु वह भी अपने साथ के तीस वीरों में से एक था।);
43माका का पुत्र हानान; मेतेनी लोगों में से योशापात;
44अशतारोती लोगों में से उज्जिय्याह; होताम के पुत्र
शामा और यीएल, होताम अरोएरी लोगों में से था;
45शिम्री का पुत्र यदीएल; तीसी लोगों से योहा, योहा
यदीएल का भाई था; 46महवीमी लोगों में से एलीएल;
एलनाम के पुत्र यरीबै और योशव्याह; मोआबी लोगों में
से यित्मा; 47मसोबाई लोगों में से एलीएल; ओबेद; और
यासीएल।

वे वीर पुरुष जो दाऊद के साथ हुए

12 यह उन पुरुषों की सूची है जो दाऊद के पास
आए। जब दाऊद सिकलग नगर में था। दाऊद
तब भी कीश के पुत्र शाऊल से अपने को छिपा रहा
था। इन पुरुषों ने दाऊद को युद्ध में सहायता दी थी। 2ये
व्यक्ति अपने दायें या बायें हाथ से धनुष से बाण द्वारा बेध
सकते थे। अपनी गुलेल से दांये या बांये हाथ से पत्थर
फेंक सकते थे। वे बिन्यामीन परिवार समूह के शाऊल
के सम्बन्धी थे। उनके नाम ये थे:
3उनका प्रमुख अहीएजेर और योआज (अहीएजेर
और योआज शमाआ के पुत्र थे। शमाआ गिबावासी
लोगों में से था।); यजीएल और पेलेत (यजीएल और
पेलेत अजमावेत के पुत्र थे।); अनातोती नगर के बराका
और येहू। 4गिबोनी नगर का यिशमायाह, (यिशमायाह
तीनों वीरों के साथ एक वीर था और वह तीन वीरों का
प्रमुख भी था।); गदेरा लोगों में से यिर्मयाह, यहजीएल,
योहानान और योजाबाद; 5एलूजै, यरीमोत बाल्याह, और
शमर्याह; हारूपी से शपत्याह; 6कोरह परिवार समूह से
एल्काना, यिशिय्याह, अजरेल, योएजेर और याशोबाम
सभी; 7गदोर नगर से यरोहाम के पुत्र योएला और
जबद्याह।

गादी लोग

8गाद के परिवार समूह का एक भाग मरुभूमि में
दाऊद से उसके किले में आ मिला। वे युद्ध के लिये
प्रशिक्षित सैनिक थे। वे भाले और ढाल के उपयोग में
कुशल थे। वे सिंह की तरह भयानक दिखते थे और वे
हिरन की तरह पहाड़ों में दौड़ सकते थे।
9गाद के परिवार समूह की सेना का प्रमुख एजेर था।
ओबद्याह अधिकार में दूसरा था। एलीआब अधिकार में
तीसरा था। 10मिश्मन्ना अधिकार में चौथा था। यिर्मयाह
अधिकार में पाँचवाँ था। 11अत्तै अधिकार में छठा था।
एलीएल अधिकार में सातवाँ था। 12योहानान अधिकार
में आठवाँ था। एलजाबाद अधिकार में नवाँ था।13यिर्मयाह
अधिकार में दसवाँ था। मकबन्नै अधिकार में ग्यारहवाँ
था।

14वे लोग गादी सेना के प्रमुख थे। उस समूह का सबसे
कमजोर सैनिक भी शत्रु के सौ सैनिकों से युद्ध कर
सकता था। उस समूह का सर्वाधिक बलिष्ठ सैनिक
शत्रु के एक हजार सैनिकों से युद्ध कर सकता था।
15गाद के परिवार समूह के वे सैनिक थे जो वर्ष के
पहले महीने में यरदन के उस पार गए। यह वर्ष का वह
समय था, जब यरदन नदी में बाढ़ आयी थी। उन्होंने
घाटियों में रहने वाले सभी लोगों का पीछा करके
भगाया। उन्होंने उन लोगों को पूर्व और पश्चिम में पीछा
करके भगाया।

अन्य योद्धा दाऊद के साथ आते हैं

16बिन्यामीन और यहूदा के परिवार समूह के अन्य
लोग भी दाऊद के पास किले में आए। 17दाऊद उनसे
मिलने बाहर निकला। दाऊद ने उनसे कहा, "यदि तुम
लोग शान्ति के साथ मेरी सहायता करने आए हो तो, मैं
तुम लोगों का स्वागत करता हूँ। मेरे साथ रहो। किन्तु
यदि तुम मेरे विरुद्ध जासूसी करने आए हो, जबकि मैंने
तुम्हारा कुछ भी बुरा नहीं किया है, तो हमारे पूर्वजो का
परमेश्वर देखेगा कि तुमने क्या किया और दण्ड देगा।"
18अमासै तीस वीरों का प्रमुख था। अमासै पर आत्मा
उत्तरी। अमासै ने कहा,
"दाऊद, हम तुम्हारे हैं! यिशै–पुत्र, हम तुम्हारे साथ
हैं! शान्ति, शान्ति हो तुम्हारे साथ! शान्ति उन लोगों को
जो तुम्हारी सहायता करे। क्यों? क्योंकि तुम्हारा परमेश्वर,
तुम्हारा सहायता करता है!"
तब दाऊद ने इन लोगों का स्वागत किया। उसने
अपनी सेना में उन्हें प्रमुख बनाया।
19मनश्शे के परिवार समूह के कुछ लोग भी दाऊद
के साथ हो गये। वे दाऊद के साथ तब हुए जब वह
पलिश्तियों के साथ शाऊल से युद्ध करने गया। किन्तु
दाऊद और उसके लोगों ने वास्तव में पलिश्तियों की
सहायता नहीं की। पलिश्तियों के प्रमुख दाऊद के विषय
में सहायक के रूप में बातें करते रहे, किन्तु तब उन्होंने
उसे भेज देने का निर्णय लिया। उन शासकों ने कहा,
"यदि दाऊद अपने स्वामी शाऊल के पास जाएगा, तो
हमारे सिर काट डाले जाएंगे!" 20ये मनश्शे के लोग थे
जो दाऊद के साथ उस समय मिले जब वह सिकलग:
अदना, योजाबाद, यदीएल, मीकाएल, योजाबाद, एलीहू

और सिल्लतै नगरों को गया। वे सभी मनश्शे के परिवार
समूह के सेनाध्यक्ष थे। 21वे दाऊद की सहायता बुरे
लोगों से युद्ध करने में करते थे। वे बुरे लोग पूरे देश में
घूमते थे और लोगों की चीजें चुराते थे। मनश्शे के ये
सभी वीर योद्धा थे। वे दाऊद की सेना में प्रमुख हुए।
22दाऊद की सहायता के लिये प्रतिदिन अधिकाधिक
व्यक्ति आते रहे। इस प्रकार दाऊद के पास विशाल
और शक्तिशाली सेना हो गई।

हेब्रोन में अन्य लोग दाऊद के साथ आते हैं

23हेब्रोन नगर में जो लोग दाऊद के पास आए, उनकी
संख्या यह है। ये व्यक्ति युद्ध के लिये तैयार थे। वे
शाऊल के राज्य को, दाऊद को देने आए। यही वह
बात थी जिसे यहोवा ने कहा था कि होगा। यह उसकी
संख्या है:
24यहूदा के परिवार समूह से छ: हजार आठ सौ
व्यक्ति युद्ध के लिये तैयार थे। वे भाले और ढाल रखते
थे।
25शिमोन के परिवार समूह से सात हजार एक सौ
व्यक्ति थे। वे युद्ध के लिये तैयार वीर सैनिक थे।
26लेवी के परिवार समूह से चार हजार छ: सौ पुरुष
थे। 27यहोयादा उस समूह में था। वह हारून के परिवार
से प्रमुख था। यहोयादा के साथ तीन हजार सात सौ पुरुष
थे। 28सादोक भी उस समूह में था। वह वीर युवा
सैनिक था। वह अपने परिवार से बाईस अधिकारियों
के साथ आया।
29बिन्यामीन के परिवार समूह से तीन हजार पुरुष थे।
वे शाऊल के सम्बन्धी थे। उस समय तक उनके
अधिकांश व्यक्ति शाऊल परिवार के भक्त रहे।
30एप्रैम के परिवार समूह से बीस हजार आठ सौ पुरुष
थे। वे वीर योद्धा थे। वे अपने परिवार के प्रसिद्ध पुरुष
थे।
31मनश्शे के आधे परिवार समूह से अट्ठारह हजार
पुरुष थे। उनको नाम लेकर आने को बुलाया गया और
दाऊद को राजा बनाने को कहा गया।
32इस्साकार के परिवार से दो सौ बुद्धिमान प्रमुख थे।
वे इस्राएल के लिए उचित समय पर ठीक काम करना
जानते थे। उनके सम्बन्धी उनके साथ थे और उनके
आदेश के पालक थे।
33जबूलून के परिवार समूह से पचास हजार पुरुष थे।
वे प्रशिक्षित सैनिक थे। वे हर प्रकार के अस्त्र-शस्त्र से
युद्ध के लिये तैयार थे। वे दाऊद के बहुत भक्त थे।
34नप्ताली के परिवार समूह से एक हजार अधिकारी
थे। उनके साथ सैंतीस हजार व्यक्ति थे। वे व्यक्ति भाले
और ढाल लेकर चलते थे।
35दान के परिवार समूह से युद्ध के लिये तैयार अट्ठाइस
हजार छ: सौ पुरुष थे।
36आशेर के परिवार समूह से युद्ध के लिये तैयार
चालीस हजार प्रशिक्षित सैनिक थे।
37यरदन नदी के पूर्व से रूबेन, गादी और मनश्शे के
आधे परिवारों से एक लाख बीस हजार पुरुष थे। उन
लोगों के पास हर प्रकार के अस्त्र-शस्त्र थे।
38वे सभी पुरुष वीर योद्धा थे। वे हेब्रोन नगर से दाऊद
को सारे इस्राएल का राजा बनाने की पूरी सलाह करके
आए थे। इस्राएल के अन्य लोगों ने भी सलाह की कि
दाऊद राजा होगा। 39उन लोगों ने दाऊद के साथ हेब्रोन
में तीन दिन बिताए। उन्होंने खाया और पिया, क्योंकि
उनके सम्बन्धियों ने उनके लिये भोजन बनाया था।
40जहाँ इस्साकार, जबूलून, और नप्ताली के समूह रहते
थे, उस क्षेत्र से भी उनके पड़ोसी गधे, ऊँट, खच्चर,
और गायों पर भोजन लेकर आये। वे बहुत सा आटा,
अंजीर-पूड़े, रेशिन, दाखमधु, तेल, गाय-बैल और भेड़ें
लाए। इस्राएल में लोग बहुत खुश थे।

साक्षीपत्र के सन्दूक को वापस लाना

13 दाऊद ने अपनी सेना के सभी अधिकारियों से
बात की। 2तब दाऊद ने इस्राएल के सभी लोगों
को एक साथ बुलाया। उसने उनसे कहा: "यदि तुम
लोग इसे अच्छा विचार समझते हो और यदि यह वही है
जिसे यहोवा चाहता है, तो हम लोग अपने भाईयों को
इस्राएल के सभी क्षेत्रों में सन्देश भेजें। हम लोग उन
याजकों और लेवीवंशियों को भी सन्देश भेजें जो हम
लोगों के भाईयों के साथ नगरों और उनके निकट के
खेतों में रहते हैं। सन्देश में उनसे आने और हमारा साथ
देने को कहा जाये। 3हम लोग साक्षीपत्र के सन्दूक को
यरूशलेम में अपने पास वापस लायें। हम लोगों ने साक्षीपत्र
के सन्दूक की देखभाल शाऊल के शासनकाल में नहीं
की।" 4अत: इस्राएल के सभी लोगों ने दाऊद की सलाह
स्वीकार की। उन सभी ने यही विचार किया कि यही
करना ठीक है। 5अत: दाऊद ने मिस्र की शीहोर नदी
से हमात के प्रवेश द्वार तक के सभी इस्राएल के लोगों
को इकट्ठा किया। वे किर्यत्यारीम नगर से साक्षीपत्र
के सन्दूक को वापस ले जाने के लिये एक साथ आये।
6दाऊद और इस्राएल के सभी लोग उसके साथ यहूदा
के बाला को गये। (बाला किर्यत्यारीम का दूसरा नाम
है।) वे वहाँ साक्षीपत्र के सन्दूक को लाने के लिये गए।
वह साक्षीपत्र का सन्दूक यहोवा परमेश्वर का सन्दूक
है। वह करूब (स्वर्गदूत) के ऊपर बैठता है। यही
सन्दूक है जो यहोवा के नाम से पुकारी जाती है।
7लोगों ने साक्षीपत्र के सन्दूक को अबीनादाब के घर
से हटाया। उन्होंने उसे एक नयी गाड़ी में रखा। उज्जा
और अह्यो गाड़ी को चला रहे थे।
8दाऊद और इस्राएल के सभी लोग परमेश्वर के
सम्मुख उत्सव मना रहे थे। वे परमेश्वर की स्तुति कर

रहे थे तथा गीत गा रहे थे। वे वीणा. तम्बूरा, ढोल,
मंजीरा और तुरही बजा रहे थे।
9वे कीदोन की खलिहान में आए। गाड़ी खींचने वाले
बैलों को ठोकर लगी और साक्षीपत्र का सन्दूक
लगभग गिर गया। उज्जा ने सन्दूक को पकड़ने के
लिये अपने हाथ आगे बढ़ाये। 10यहोवा उज्जा पर बहुत
अधिक क्रोधित हुआ। यहोवा ने उज्जा को मार डाला
क्योंकि उसने सन्दूक को छू लिया। इस तरह उज्जा
परमेश्वर के सामने वहाँ मरा। 11परमेश्वर ने अपना
क्रोध उज्जा पर दिखाया और इससे दाऊद क्रोधित
हुआ। उस समय से अब तक वह स्थान “पेरेसुज्जा”
कहा जाता है।

12उस दिन दाऊद परमेश्वर से डर गया। दाऊद ने
कहा, “मैं साक्षीपत्र के सन्दूक को यहाँ अपने पास नहीं
ला सकता।” 13इसलिये दाऊद साक्षीपत्र के सन्दूक को
अपने साथ दाऊद नगर में नहीं ले गया। उसने साक्षीपत्र
के सन्दूक को ओबेदेदोम के घर पर छोड़ा। ओबेदेदोम
गत नगर से था। 14साक्षीपत्र का सन्दूक ओबेदेदोम के
परिवार में उसके घर में तीन महीने रहा। यहोवा ने
ओबेदेदोम के परिवार और उसके यहाँ जो कुछ था,
को आशीर्वाद दिया।

दाऊद का राज्य-विस्तार

14 हीराम सोर नगर का राजा था। हीराम ने दाऊद
को सन्देश वाहक भेजा। हीराम ने देवदारु के
लट्ठे, संगतराश और बढई भी दाऊद के पास भेजे।
हीराम ने उन्हें दाऊद के लिये एक महल बनाने के
लिये भेजा। 2तब दाऊद समझ सका कि यहोवा ने उसे
सच ही इस्राएल का राजा बनाया है। यहोवा ने दाऊद के
राज्य को बहुत विस्तृत और शक्तिशाली बनाया। परमेश्वर
ने यह इसलिये किया कि वह दाऊद और इस्राएल के
लोगों से प्रेम करता था।

3दाऊद ने यरूशलेम में बहुत सी स्त्रियों के साथ
विवाह किया और उसके बहुत से पुत्र और पुत्रियाँ हुई।
4यरूशलेम में उत्पन्न हुई दाऊद की संतानों के नाम ये
हैं: शम्मू, शोबाब, नातान, सुलैमान, 5यिभार, एलीशू,
एलपेलेत, 6नोगह, नेपेग, यापी, 7एलीशामा, बेल्यादा, और
एलीपेलेद।

दाऊद पलिश्तियों को पराजित करता है

8पलिश्ती लोगों ने सुना कि दाऊद का अभिषेक
इस्राएल के राजा के रूप में हुआ है। अत:, सभी पलिश्ती
लोग दाऊद की खोज में गए। दाऊद ने इसके बारे में
सुना। तब वह पलिश्ती लोगों से लड़ने गया। 9पलिश्तियों
ने रपाईम की घाटी में रहने वाले लोगों पर आक्रमण
किया और उनकी चीजें चुराई। 10दाऊद ने परमेश्वर
से पूछा, “क्या मुझे जाना चाहिये और पलिश्ती लोगों से
युद्ध करना चाहिये? क्या तू मुझे उनको परास्त करने
देगा?”

यहोवा ने दाऊद को उत्तर दिया, “जाओ। मैं तुम्हें
पलिश्ती लोगों को हराने दूँगा।”

11तब दाऊद और उसके लोग बालपरासीम नगर तक
गए। वहाँ दाऊद और उसके लोगों ने पलिश्ती लोगों को
हराया। दाऊद ने कहा, “टूटे बाँध से पानी फूट पड़ता है।
उसी प्रकार, परमेश्वर मेरे शत्रुओं पर फूट पड़ा है!
परमेश्वर ने यह मेरे माध्यम से किया है।” यही कारण
है कि उस स्थान का नाम “बालपरासीम है।” 12पलिश्ती
लोगों ने अपनी मूर्तियों को बालपरासीम में छोड़ दिया।
दाऊद ने उन मूर्तियों को जला देने का आदेश दिया।

पलिश्ती लोगों पर अन्य विजय

13पलिश्तियों ने रपाईम घाटी में रहने वाले लोगों पर
फिर आक्रमण किया। 14दाऊद ने फिर परमेश्वर से
प्रार्थना की। परमेश्वर ने दाऊद की प्रार्थना का उत्तर
दिया। परमेश्वर ने कहा, “दाऊद, जब तुम आक्रमण
करो तो पलिश्ती लोगों के पीछे पहाड़ी पर मत जाओ।
इसके बदले, उनके चारों ओर जाओ। वहाँ छिपो, जहाँ
मोखा के पेड़ हैं। 15एक प्रहरी को पेड़ की चोटी पर
चढ़ने को कहो। जैसे ही वह पेड़ों की चोटी से उनकी
चढाई करने की आवाज को सुनेगा, उसी समय पलिश्तियों
पर आक्रमण करो। मैं (परमेश्वर) तुम्हारे सामने आऊँगा
और पलिश्ती सेना को हराऊँगा!” 16दाऊद ने वही
किया जो परमेश्वर ने करने को कहा। इसलिये दाऊद
और उसकी सेना ने पलिश्ती सेना को हराया। उन्होंने
पलिश्ती सैनिकों को लगातार गिबोन नगर से गेजर
नगर तक मारा। 17इस प्रकार दाऊद सभी देशों में
प्रसिद्ध हो गया। यहोवा ने सभी राष्ट्रों के हृदय में
उसका डर बैठा दिया।

साक्षीपत्र का सन्दूक यरूशलेम में

15 दाऊद ने दाऊद नगर में अपने लिये महल
बनवाया। तब उसने साक्षीपत्र के सन्दूक के
लिए एक स्थान बनाया। उसने इसके लिये एक तम्बू
डाला। 2तब दाऊद ने कहा, “केवल लेवीवंशियों को
साक्षीपत्र का सन्दूक ले चलने की स्वीकृति है। यहोवा
ने उन्हें साक्षीपत्र का सन्दूक ले चलने और उसकी
सदैव सेवा के लिये चुना है।”

3दाऊद ने इस्राएल के सभी लोगों को यरूशलेम में
एक साथ मिलने के लिये बुलाया जब तक लेवीवंशी
साक्षीपत्र के सन्दूक को उस स्थान पर लेकर आये जो
उसने उसके लिये बनाया था। 4दाऊद ने हारून के
वंशजों और लेवीवंशियों को एक साथ बुलाया। 5कहात
परिवार समूह से एक सौ बीस व्यक्ति थे। ऊरीएल उनका
प्रमुख था। 6मरारी के परिवार समूह से दो सौ बीस लोग

थे। असायाह उनका प्रमुख था। 7गेर्शोमियों के परिवार
समूह के एक सौ तीस लोग थे। योएल उनका प्रमुख
था। 8एलीसापान के परिवार समूह के दो सौ लोग थे।
शमायाह उनका प्रमुख था। 9हेब्रोन के परिवार समूह
के अस्सी लोग थे। एलीएल उनका प्रमुख था। 10उज्जीएल
के परिवार समूह के एक सौ बारह लोग थे। अम्मीनादाब
उनका प्रमुख था।

याजकों और लेवीवंशियों से दाऊद बातें करता है

11तब दाऊद ने सादोक और एब्यातार याजकों से
कहा कि वे उसके पास आएं। दाऊद ने ऊरीएल,
असायाह, योएल, शमायाह और अम्मीनादाब लेवीवंशियों
को भी अपने पास बुलाया। 12दाऊद ने उनसे कहा,
"तुम लोग लेवी परिवार समूह के प्रमुख हो। तुम्हें अपने
और अन्य लेवीवंशियों को पवित्र बनाना चाहिये। तब
साक्षीपत्र के सन्दूक को उस स्थान पर लाओ, जिसे मैंने
उसके लिये बनाया है। 13पिछली बार हम लोगों ने
यहोवा परमेश्वर से नहीं पूछा कि साक्षीपत्र के सन्दूक
को हम कैसे ले चलें। लेवीवंशियों, तुम इसे नहीं ले चले,
यही कारण था कि यहोवा ने हमें दण्ड दिया।"
14तब याजक और लेवीवंशियों ने अपने को पवित्र
किया जिससे वे इस्राएल के यहोवा परमेश्वर के सन्दूक
को लेकर चल सकें। 15लेवीवंशियों ने विशेष डंडों का
उपयोग, अपने कन्धों पर साक्षीपत्र के सन्दूक को ले
चलने के लिये किया जैसा मूसा का आदेश था। वे
सन्दूक को उस प्रकार ले चले जैसा यहोवा ने कहा था।

गायक

16दाऊद ने लेवीवंशियों को उनके गायक भाईयों
को लाने के लिये कहा। गायकों को अपनी वीणा,
तम्बूरा और मँजीरा लाना था तथा प्रसन्नता के गीत
गाना था।
17तब लेवीवंशियों ने हेमान और उसके भाईयों आसाप
और एतान को बुलाया। हेमान योएल का पुत्र था।
आसाप बेरेक्याह का पुत्र था। एतान कूशायाह का पुत्र
था। ये व्यक्ति मरारी परिवार समूह के थे। 18वहाँ
लेवीवंशियों का दूसरा समूह भी था। वे जकर्याह, याजीएल,
शमीरामोत, यहीएल, उन्नी, एलीआब, बनायाह, मासेयाह,
मत्तित्याह, एलीपलेह, मिकनेयाह, ओबेदेदोम और पीएल
थे। ये लोग लेवीवंश के रक्षक थे।
19गायक हेमान, आसाप और एतान काँसे का मँजीरा
बजा रहे थे। 20जकर्याह, अजीएल, शमीरामोत, यहीएल,
उन्नी, एलीआब, मासेयाह और बनायाह अलामोत वीणा
बजा रहे थे। 21मत्तित्याह, एलीपलेह, मिकनेयाह,
ओबेदेदोम, यीएल और अजज्याह शेमिनिथ तम्बूरा बजा
रहे थे। यह उनका सदैव का काम था। 22लेवीवंशी
प्रमुख कनन्याह गायन का प्रबन्धक था। कनन्याह को
यह काम मिला था क्योंकि वह गाने में बहुत अधिक
कुशल था।
23बेरेक्याह और एल्काना साक्षीपत्र के सन्दूक के
रक्षकों में से दो थे। 24याजक शबन्याह, योशापात, नतनेल,
अमासै, जकर्याह, बनायाह और एलीएजेर का काम
साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने चलते समय तुरही बजाना
था। ओबेदेदोम और यहिय्याह साक्षीपत्र के सन्दूक के
लिये अन्य रक्षक थे।
25दाऊद, इस्राएल के अग्रज (प्रमुख) और सेनापति
साक्षीपत्र के सन्दूक को लेने गए। वे उसे ओबेदेदोम के
घर से बाहर लाए। हर एक बहुत प्रसन्न था। 26परमेश्वर
ने उन लेवीवंशियों की सहायता की जो यहोवा के
साक्षीपत्र के सन्दूक को लेकर चल रहे थे। उन्होंने सात
बैलों और सात मेढ़ों की बलि दी। 27सभी लेवीवंशी जो
साक्षीपत्र के सन्दूक लेकर चल रहे थे, उत्तम सन के
चोगे पहने थे। गायन का प्रबन्धक कनन्याह और सभी
गायक उत्तम सन के चोगे पहने थे और दाऊद भी
उत्तम सन का बना एपोद पहने था।
28इस प्रकार इस्राएल के सारे लोग यहोवा के साक्षीपत्र
के सन्दूक को ले आए। उन्होंने उद्घोष किया, उन्होंने
मेढ़े की सिंगी और तुरही बजाई और उन्होंने मँजीरे,
वीणा और तम्बूरे बजाए।
29जब साक्षीपत्र का सन्दूक दाऊद नगर में पहुँचा,
मीकल ने खिड़की से देखा। मीकल शाऊल की पुत्री
थी। उसने राजा दाऊद को चारों ओर नाचते और
बजाते देखा। उसने अपने हृदय में दाऊद के प्रति सम्मान
को खो दिया उसने सोचा कि वह मूर्ख बन रहा है।

16 लेवीवंशी साक्षीपत्र का सन्दूक ले आए और
उसे उस तम्बू में रखा जिसे दाऊद ने इसके
लिये खड़ी कर रखी थी। तब उन्होंने परमेश्वर को
होमबलि और मेलबलि चढ़ाई। 2जब दाऊद होमबलि
और मेलबलि देना पूरा कर चुका तब उसने लोगों को
आशीर्वाद देने के लिये यहोवा का नाम लिया। 3तब
उसने हर एक इस्राएली स्त्री-पुरुष को एक-एक रोटी,
खजूर और किशमिश दिया।
4तब दाऊद ने साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने सेवा के
लिये कुछ लेवीवंशियों को चुना। उन लेवीवंशियों को
इस्राएलियों के यहोवा परमेश्वर के लिये उत्सवों को
मनाने, आभार व्यक्त करने और स्तुति करने का
काम सौंपा गया। 5आसाप, प्रथम समूह का प्रमुख था।
आसाप का समूह सारंगी बजाता था। जकर्याह दूसरे
समूह का प्रमुख था। अन्य लेवीवंशी ये थे: यीएल,
शमीरामोत, यहीएल, मत्तित्याह, एलीआब बनायाह,
ओबेदेदोम और यीएल। ये व्यक्ति वीणा और तम्बूरा
बजाते थे। 6बनायाह और यहजीएल ऐसे याजक थे जो
साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने सदैव तुरही बजाते थे।
7यह वही समय था जब दाऊद ने पहली बार आसाप

और उसके भाइयों को यहोवा की स्तुति करने का काम दिया।

दाऊद का आभार गीत

8यहोवा की स्तुति करो उसका नाम लो लोगों में उन महान कार्यों का वर्णन करो– जिन्हें यहोवा ने किया है।
9यहोवा के गीत गाओ, यहोवा की स्तुतियाँ गाओ। उसके सभी अद्‌भुत कामों का गुणगान करो।
10यहोवा के पवित्र नाम पर गर्व करो सभी लोग जो यहोवा की सहायता पर भरोसा करते हैं, प्रसन्न हो!
11यहोवा पर और उसकी शक्ति पर भरोसा करो। सदैव सहायता के लिये उसके पास जाओ।
12उन अद्‌भुत कार्यों को याद करो जो यहोवा ने किये हैं। उसके निर्णयों को याद रखो और शक्तिपूर्ण कार्यों को जो उसने किये।
13इस्राएल की सन्तानें यहोवा के सेवक हैं। याकूब के वंशज, यहोवा द्वारा चुने लोग हैं।
14यहोवा हमारा परमेश्वर है, उसकी शक्ति चारों तरफ है।
15उसकी वाचा को सदैव याद रखो, उसने अपने आदेश– सहस्र पीढ़ियों के लिये दिये हैं।
16यह वाचा है जिसे यहोवा ने इब्राहीम के साथ किया था। यह प्रतिज्ञा है जो यहोवा ने इसहाक के साथ की।
17यहोवा ने इसे याकूब के लोगों के लिये नियम बनाया। यह वाचा इस्राएल के साथ है– जो सदैव बनी रहेगी।
18यहोवा ने इस्राएल से कहा था: "मैं कनान देश तुझे दूँगा। यह प्रतिज्ञा का प्रदेश तुम्हारा होगा।"
19परमेश्वर के लोग संख्या में थोड़े थे। वे उस देश में
अजनबी थे। 20वे एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र को गए। वे
एक राज्य से दूसरे राज्य को गए।
21किन्तु यहोवा ने किसी को उन्हें चोट पहुँचाने न दी। यहवा ने राजाओं को चेतावनी दी कि वे उन्हें चोट न पहुँचायें।
22यहोवा ने उन राजाओं से कहा, "मेरे चुने लोगों को चोट न पहुँचाओ। मेरे नबियों को चोट न पहुँचाओ।"
23यहोवा के लिये पूरी धरती पर गुणगान करो, प्रतिदिन तुम्हें, यहोवा द्वारा हमारी रक्षा के शुभ समाचार बताना चाहिए।
24यहोवा के प्रताप को सभी राष्ट्रों से कहो। यहोवा के अद्‌भुत कार्यों को सभी लोगों से कहो।
25यहोवा महान है, यहोवा की स्तुति होनी चाहिये। यहोवा अन्य देवताओं से–अधिक भय योग्य है।
26क्यों? क्योंकि उन लोगों के सभी देवता मात्र मूर्तियाँ हैं। किन्तु यहोवा ने आकाश को बनाया।
27यहोवा प्रतापी और सम्मानित है। यहोवा एक तेज़ चमकती ज्योति की तरह है।
28परिवार और लोग, यहोवा के प्रताप और शक्ति की स्तुति करते हैं।
29यहोवा के प्रताप की स्तुति करो। उसके नाम को सम्मान दो। यहोवा को अपनी भेंटें चढ़ाओ, यहोवा और उसके पवित्र सौन्दर्य की उपासना करो।
30यहोवा के सामने भय से सारी धरती काँपनी चाहिये। किन्तु उसने धरती को दृढ़ किया, अत: संसार हिलेगा नहीं।
31धरती आकाश को आनन्द में झूमने दो। चारों ओर लोगों को कहने दो, "यहोवा शासन करता है।"
32सागर और इसमें की सभी चीज़ों को चिल्लाने दो! खेतों और उनमें की हर एक चीज़ को अपना आनन्द व्यक्त करने दो।
33यहोवा के सामने वन के वृक्ष आनन्द से गायेंगे। क्यों? क्योंकि यहोवा आ रहा है। वह संसार का न्याय करने आ रहा है।
34अहा! यहोवा को धन्यवाद दो, वह अच्छा है। यहोवा का प्रेम सदा बना रहता है।
35यहोवा से कहो, "हे परमेश्वर, हमारे रक्षक, हमारी रक्षा कर। हम लोगों को एक साथ इकट्ठा करो, और हमें अन्य राष्ट्रों से बचाओ। और तब हम तुम्हारे पवित्र नाम की स्तुति कर सकते हैं। तब हम तेरी स्तुति अपने गीतों से कर सकते हैं।"
36इस्राएल के यहोवा परमेश्वर की सदा स्तुति होती रहे जैसे कि सदैव उसकी प्रशंसा होती रही है।

सभी लोगों ने कहा, "आमीन!" उन्होंने यहोवा की स्तुति की।

37तब दाऊद ने आसाप और उसके भाईयों को वहाँ
यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक के सामने छोड़ा। दाऊद
ने उन्हें उसके सामने प्रतिदिन सेवा करने के लिये
छोड़ा। 38दाऊद ने आसाप और उसके भाईयों के साथ
सेवा करने के लिये ओबेदेदोम और अन्य अड़सठ
लेवीवंशियों को छोड़ा। ओबेदेदोम और यदूतून रक्षक
थे। ओबेदेदोम यदूतून का पुत्र था।

39दाऊद ने याजक सादोक और अन्य याजकों को जो
गिबोन में उच्च स्थान पर यहोवा के तम्बू के सामने
उसके साथ सेवा करते थे, छोड़ा। 40हर सुबह–शाम
सादोक तथा अन्य याजक होमबलि की वेदी पर होमबलि
चढ़ाते थे। वे यह यहोवा के व्यवस्था में लिखे गए उन
नियमों का पालन करने के लिये करते थे जिन्हें यहोवा
ने इस्राएल को दिया था। 41हेमान और यदूतून तथा
सभी अन्य लेवीवंशी यहोवा का स्तुतिगान करने के
लिये नाम लेकर चुने गये थे क्योंकि यहोवा का प्रेम
सदैव बना रहता है!

42हेमान और यदूतून उनके साथ थे। उनका काम
तुरही और मँजीरा बजाना था। वे अन्य संगीत वाद्य
बजाने का काम भी करते थे, जब परमेश्वर की स्तुति

के गीत गाये जाते थे। यदूतून का पुत्र द्वार की रखवाली
करता था।
43उत्सव मनाने के बाद, सभी लोग चले गए। हर
एक व्यक्ति अपने–अपने घर चला गया और दाऊद
भी अपने परिवार को आशीर्वाद देकर अपने घर गया।

परमेश्वर ने दाऊद को वचन दिया

17 दाऊद ने अपने घर चले जाने के बाद नातान
नबी से कहा, "देखो, मैं देवदारू से बने घर में
रह रहा हूँ, किन्तु यहोवा का साक्षीपत्र का सन्दूक तम्बू
में रखा है। मैं परमेश्वर के लिये एक मन्दिर बनाना
चाहता हूँ।"
2नातान ने दाऊद को उत्तर दिया, "तुम जो कुछ
करना चाहते हो, कर सकते हो। परमेश्वर तुम्हारे साथ
है।"
3किन्तु परमेश्वर का सन्देश उस रात नातान को
मिला। 4परमेश्वर ने कहा, "जाओ और मेरे सेवक
दाऊद से यह कहो: यहोवा यह कहता है, 'दाऊद, तुम
मेरे रहने के लिये गृह नहीं बनाओगे। 5–6जब से मैं
इस्राएल को मिस्र से बाहर लाया तब से अब तक, मैं गृह
में नहीं रहा हूँ। मैं एक तम्बू में चारों ओर घूमता रहा हूँ।
मैंने इस्राएल के लोगों का विशेष प्रमुख बनने के लिये
लोगों को चुना। वे प्रमुख मेरे लोगों के लिये गड़रिये के
समान थे। जिस समय मैं इस्राएल में विभिन्न स्थानों पर
चारों ओर घूम रहा था, उस समय मैंने किसी प्रमुख से
यह नहीं कहा: तुमने मेरे लिये देवदारू वृक्ष का गृह क्यों
नहीं बनाया है?'
7"अब, तुम मेरे सेवक दाऊद से कहो: सर्वशक्तिमान
यहोवा तुमसे कहता है, 'मैंने तुमको मैदानों से और भेड़ों
की देखभाल करने से हटाया। मैंने तुमको अपने इस्राएली
लोगों का शासक बनाया। 8तुम जहाँ गए, मैं तुम्हारे साथ
रहा। मैं तुम्हारे आगे–आगे चला और मैंने तुम्हारे शत्रुओं
को मारा। अब मैं तुम्हें पृथ्वी पर सर्वाधिक प्रसिद्ध
व्यक्तियों में से एक बना रहा हूँ। 9मैं यह स्थान अपने
इस्राएल के लोगों को दे रहा हूँ। वे वहाँ अपने वृक्ष
लगायेंगे और वे उन वृक्षों के नीचे शान्ति के साथ
बैठेंगे। वे अब आगे और परेशान नहीं किये जाएंगे। बुरे
लोग उन्हें वैसे चोट नहीं पहुँचाएंगे जैसा उन्होंने पहले
पहुँचाया था। 10वे बुरी बातें हुई, किन्तु मैंने अपने
इस्राएली लोगों की रक्षा के लिये प्रमुख चुने और मैं
तुम्हारे सभी शत्रुओं को भी हराऊँगा।
"'मैं तुमसे कहता हूँ कि यहोवा तुम्हारे लिए एक
घराना बनाएगा।* 11जब तुम मरोगे और अपने पूर्वजों
से जा मिलोगे, तब तुम्हारे निज पुत्र को नया राजा होने
दूँगा। नया राजा तुम्हारे पुत्रों में से एक होगा और मैं
राज्य को शक्तिशाली बनाऊँगा। 12तुम्हारा पुत्र मेरे लिये
एक गृह बनाएगा। मैं तुम्हारे पुत्र के परिवार को सदा के
लिये शासक बनाऊँगा। 13मैं उसका पिता बनूँगा और
वह मेरा पुत्र होगा। शाऊल तुम्हारे पहले राजा था और
मैंने शाऊल से अपनी सहायता हटा ली किन्तु मैं तुम्हारे
पुत्र से प्रेम करना कभी कम नहीं करूँगा। 14मैं उसे
सदा के लिये अपने घर और राज्य का संरक्षक बनाऊँगा।
उसका शासन सदैव चलता रहेगा!'"
15नातान ने अपने इस दर्शन और परमेश्वर ने जो
सभी बातें कही थीं उनके विषय में दाऊद से कहा।

दाऊद की प्रार्थना

16तब दाऊद पवित्र तम्बू में गया और यहोवा के
सामने बैठा। दाऊद ने कहा, "यहोवा परमेश्वर, तूने मेरे
लिए और मेरे परिवार के लिये इतना अधिक किया है
और मैं नहीं समझता कि क्यों? 17उन बातों के अतिरिक्त,
तू मुझे बता कि भविष्य में मेरे परिवार पर क्या घटित
होगा। तूने मेरे प्रति एक अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्ति जैसा
व्यवहार किया है। 18मैं और अधिक क्या कह सकता
हूँ? तूने मेरे लिये इतना अधिक किया है और मैं केवल
तेरा सेवक हूँ। यह तू जानता है। 19यहोवा, तूने यह
अद्भुत कार्य मेरे लिये किया है और यह तूने किया
क्योंकि तू करना चाहता था। 20यहोवा, तेरे समान और
कोई नहीं है। तेरे अतिरिक्त कोई परमेश्वर नहीं है। हम
लोगों ने कभी किसी देवता को ऐसे अद्भुत कार्य करते
नहीं सुना है! 21क्या इस्राएल के समान अन्य कोई राष्ट
है? नहीं! इस्राएल ही पृथ्वी पर एकमात्र राष्ट है जिसके
लिये तू ने यह अद्भुत कार्य किया। तूने हमें मिस्र से
बाहर निकाला और हमें स्वतन्त्र किया। तूने अपने को
प्रसिद्ध किया। तू अपने लोगों के सामने आया और
अन्य लोगों को हमारे लिये भूमि छोड़ने को विवश
किया। 22तूने इस्राएल को सदा के लिये अपना बनाया
और यहोवा तू उसका परमेश्वर हुआ!
23"यहोवा, तूने यह प्रतिज्ञा मुझसे और मेरे परिवार से
की है। अब से तू सदा के लिये इस प्रतिज्ञा को बनाये
रख। वह कर जो तूने करने को कहा! 24अपनी प्रतिज्ञा
को पूरा कर। जिससे लोग तेरे नाम का सम्मान सदा के
लिये कर सकें। लोग कहेंगे, 'सर्वशक्तिशाली यहोवा
इस्राएल का परमेश्वर है!' मैं तेरा सेवक हूँ! कृपया मेरे
परिवार को शक्तिशाली होने दे और वह तेरी सेवा सदा
करता रहे।
25"मेरे परमेश्वर, तूने मुझसे (अपने सेवक) कहा,
कि तू मेरे परिवार को एक राजपरिवार बनायेगा। इसीलिए
मैं तेरे सामने इतना निडर हो रहा हूँ, इसीलिए मैं तुझसे
ये सब चीजें करने के लिये कह रहा हूँ। 26यहोवा, तू
परमेश्वर है और परमेश्वर तूने इन अच्छी चीज़ों की

मैं ... बनाएगा इसका अर्थ कोई यथार्थ घर से सम्बन्ध नहीं रखना। इसका अर्थ है कि यहोवा दाऊद के परिवार से अनेक वर्षों तक व्यक्ति को राजा बनाता रहेगा।

प्रतिज्ञा मेरे लिए की है। 27यहोवा, तू मेरे परिवार को
आशीष देने में इतना अधिक दयालु रहा है। तूने प्रतिज्ञा
की, कि मेरा परिवार तेरी सेवा सदैव करता रहेगा।
यहोवा तूने मेरे परिवार को आशीष दी है, अत: मेरा
परिवार सदा आशीष पाएगा!"

दाऊद विभिन्न राष्ट्रों को जीत लेता है

18 बाद में दाऊद ने पलिश्ती लोगों पर आक्रमण
किया। उसने उन्हें हराया। उसने गत नगर
और उसके चारों ओर के नगरों को पलिश्ती लोगों से
जीत लिया।

2तब दाऊद ने मोआब देश को हराया। मोआबी लोग
दाऊद के सेवक बन गए। वे दाऊद के पास भेंटें लाए।
3दाऊद हदरेजेर की सेना के विरुद्ध भी लड़ा। हदरेजेर
सोबा का राजा था। दाऊद उस सेना के विरुद्ध लड़ा।
दाऊद लगातार हमात नगर तक उस सेना से लड़ा।
दाऊद ने यह इसलिये किया कि हदरेजेर ने अपने राज्य
को लगातार परात नदी तक फैलाना चाहा। 4दाऊद ने
हदरेजेर के एक हजार रथ, सात हजार सारथी और
बीस हजार सैनिक लिये। दाऊद ने हदरेजेर के अधिकांश
घोड़ों को अंग-भंग कर दिया जो रथ खींचते थे। किन्तु
दाऊद ने सौ रथों को खींचने के लिये पर्याप्त घोड़े बचा
लिये।

5दमिश्क नगर से अरामी लोग हदरेजेर की सहायता
करने के लिये आए। हदरेजेर सोबा का राजा था।
किन्तु दाऊद ने बाईस हजार अरामी सैनिकों को पराजित
किया और मार डाला। 6तब दाऊद ने दमिश्क नगर में
किले बनवाए। अरामी लोग दाऊद के सेवक बन गए
और उसके पास भेंटें लेकर आये। अत: यहोवा ने
दाऊद को, जहाँ कहीं वह गया, विजय दी।

7दाऊद ने हदरेजेर के सेनापतियों से सोने की ढालें लीं
और उन्हें यरूशलेम ले आया। 8दाऊद ने तिभत और
कून नगरों से अत्याधिक काँसा प्राप्त किया। वे नगर
हदरेजेर के थे। बाद में, सुलैमान ने इस काँसे का
उपयोग काँसे की होदे, काँसे के स्तम्भ और वे अन्य
चीजें बनाने में किया जो मन्दिर के लिये काँसे से बनी
थी।

9तोऊ हमात नगर का राजा था। हदरेजेर सोबा का
राजा था। तोऊ ने सुना कि दाऊद ने हदरेजेर की सारी
सेना को पराजित कर दिया। 10अत: तोऊ ने अपने पुत्र
हदोराम को राजा दाऊद के पास शान्ति की याचना
करने और आशीर्वाद पाने के लिये भेजा। उसने यह
किया क्योंकि दाऊद ने हदरेजेर के विरुद्ध युद्ध किया
था और उसे हराया था। पहले हदरेजेर ने तोऊ से युद्ध
किया था। हदोराम ने दाऊद को हर एक प्रकार की
सोने, चाँदी और काँसे से बनी चीज़ें दीं। 11राजा दाऊद
ने उन चीज़ों को पवित्र बनाया और यहोवा को दिया।
दाऊद ने ऐसा उस सारे चाँदी, सोने के साथ किया जिसे
उसने एदोमी, मोआबी, अम्मोनी पलिश्ती और अमालेकी
लोगों से प्राप्त कियाथा।

12सरुयाह के पुत्र अबीशै ने नमक की घाटी में अट्ठारह
हजार एदोमी लोगों को मारा। 13अबीशै ने एदोम में
किले बनाए और सभी एदोमी लोग दाऊद के सेवक हो
गए। दाऊद जहाँ कही भी गया, यहोवा ने उसे विजय दी।

दाऊद के महत्वपूर्ण अधिकारी

14दाऊद पूरे इस्राएल का राजा था। उसने वही किया
जो सबके लिये उचित और न्यायपूर्ण था। 15सरूयाह का
पुत्र योआब, दाऊद की सेना का सेनापति था। अहीलूद
के पुत्र यहोशापात ने उन कामों के विषय में लिखा जो
दाऊद ने किये। 16सादोक और अबीमेलेक याजक थे।
सादोक अहीतूब का पुत्र था और अबीमेलेक एब्यातार
का पुत्र था। शबशा शास्त्री था। 17बनायाह करेतियों
और पलेती* लोगों के मार्गदर्शन का उत्तरदायी था
बनायाह यहोयादा का पुत्र था और दाऊद के पुत्र विशेष
अधिकारी थे। वे राजा दाऊद के साथ सेवारत थे।

अम्मोनी दाऊद के लोगों को लज्जित करते हैं

19 नाहाश अम्मोनी लोगों का राजा था। नाहाश
मरा, और उसका पुत्र नया राजा बना। 2तब
दाऊद ने कहा, "नाहाश मेरे प्रति दयालु था, इसलिए मैं
नाहाश के पुत्र हानून के प्रति दयालु रहूँगा।" अत:
दाऊद ने अपने दूतों को उसके पिता की मृत्यु पर
सांत्वना देने भेजे। दाऊद के दूत हानून को सान्तवा देने
अम्मोन देश को गए।

3किन्तु अम्मोनी प्रमुखों ने हानून से कहा, "मूर्ख मत
बनो। दाऊद ने सच्चे भाव से तुम्हें सांत्वना देने के लिये
या तुम्हारे मृत पिता को सम्मान देने के लिये नहीं भेजा
है! नहीं, दाऊद ने अपने सेवकों को तुम्हारी और
तुम्हारे देश की जासूसी करने को भेजा है। दाऊद
वस्तुत: तुम्हारे देश को नष्ट करना चाहता है!" 4इसलिये
हानून ने दाऊद के सेवकों को बन्दी बनाया और उनकी
दाढ़ी मुड़वा दी।* हानून ने कमर तक उनके वस्त्रों की
छोर को कटवा दिया। तब उसने उन्हें विदा कर दिया।

5दाऊद के व्यक्ति इतने लज्जित हुए कि वे घर को
नहीं जा सकते थे। कुछ लोग दाऊद के पास गए और
बताया कि उसके व्यक्तियों के साथ कैसा बर्ताव हुआ।
इसलिये राजा दाऊद ने अपने लोगों के पास यह सूचना
भेजा: "तुम लोग यरीहो नगर में तब तक रहो जब तक
फिर दाढ़ी न उग आए। तब तुम घर वापस आ सकते
हो।"

करेती और पलेती ये लोग राजा के अंगरक्षक थे।

दाढ़ी मुड़वा दी इस्राएली के लिये अपनी दाढ़ी कटवाना मूसा के नियम के विरुद्ध था।

6अम्मोनी लोगों ने देखा कि उन्होंने अपने आपको
दाऊद का घृणित शत्रु बना दिया है। तब हानून और
अम्मोनी लोगों ने पचहत्तर हजार पौंड चाँदी, रथ और
सारथियों को मेसोपोटामियाँ से खरीदने में लगाया। उन्होंने
अराम में अरम्माका और सोबा नगरों से भी रथ और
सारथी प्राप्त किये। 7अम्मोनी लोगों ने बत्तीस हजार रथ
खरीदे। उन्होंने माका के राजा को और उसकी सेना
को भी आने और सहायता करने के लिये भुगतान
किया। माका का राजा और उसके लोग आए और
उन्होंने मेदबा नगर के पास अपना डेरा डाला। अम्मोनी
लोग स्वयं अपने नगरों से बाहर आए और युद्ध के लिये
तैयार हो गये।

8दाऊद ने सुना कि अम्मोनी लोग युद्ध के लिये तैयार
हो रहे हैं। इसलिये उसने योआब और इस्राएल की पूरी
सेना को अम्मोनी लोगों से युद्ध करने के लिये भेजा।
9अम्मोनी लोग बाहर निकले तथा युद्ध के लिये तैयार
हो गए। वे नगर द्वार के पास थे। जो राजा सहायता के
लिये आए थे, वे स्वयं खुले मैदान में खड़े थे।

10योआब ने देखा कि उसके विरुद्ध लड़ने वाली सेना
के दो मोर्चे थे। एक मोर्चा उसके सामने था और दूसरा
उसके पीछे था। इसलिये योआब ने इस्राएल के कुछ
सर्वोत्तम योद्धाओं को चुना। उसने उन्हें अराम की सेना
से लड़ने के लिये भेजा। 11योआब ने इस्राएल की शेष
सेना को अबीशै के सेनापतित्व में रखा। अबीशै योआब
का भाई था। वे सैनिक अम्मोनी सेना के विरुद्ध लड़ने
गये। 12योआब ने अबीशै से कहा, "यदि अरामी सेना
मेरे लिये अत्याधिक शक्तिशाली पड़े तो तुम्हें मेरी सहायता
करनी होगी। किन्तु यदि अम्मोनी सेना तुम्हारे लिये
अत्याधिक शक्तिशाली प्रामाणित होगी तो मैं तुम्हारी
सहायता करूँगा। 13हम अपने लोगों तथा अपने परमेश्वर
के नगरों के लिये युद्ध करते समय वीर और दृढ़ बनें।
यहोवा वह करे जिसे वह उचित मानता है।"

14योआब और उसके साथ की सेना ने अराम की
सेना पर आक्रमण किया। अराम की सेना योआब और
उसकी सेना के सामने से भाग खड़ी हुई। 15अम्मोनी
सेना ने देखा कि अराम की सेना भाग रही है अत: वे
भी भाग खड़े हुए। वे अबीशै और उसकी सेना के
सामने से भाग खड़े हुए। अम्मोनी अपने नगरों को चले
गये, और योआब यरूशलेम को लौट गया।

16अराम के प्रमुखों ने देखा कि इस्राएल ने उन्हें
पराजित कर दिया। इसलिये उन्होंने परात नदी के पूर्व
रहने वाले अरामी लोगों से सहायता के लिए दूत भेजे।
शोपक हदरेजेर की अराम की सेना का सेनापति था।
शोपक ने उन अन्य अरामी सैनिकों का भी संचालन
किया।

17दाऊद ने सुना कि अराम के लोग युद्ध के लिये
इकट्ठा हो रहे हैं। इसलिये दाऊद ने इस्राएल के सभी
सैनिकों को इकट्ठा किया। दाऊद उन्हें यरदन नदी के
पार ले गया। वे अरामी लोगों के ठीक आमने-सामने
आ गए। दाऊद ने अपनी सेना को आक्रमण के लिये
तैयार किया और अरामियों पर आक्रमण कर दिया।
18अरामी इस्राएलियों के सामने से भाग खड़े हुए। दाऊद
और उसकी सेना ने सात हजार सारथी और चालीस
हजार अरामी सैनिकों को मार डाला। दाऊद और
उसकी सेना ने अरामी सेना के सेनापति शोपक को भी
मार डाला।

19जब हदरेजेर के अधिकारियों ने देखा कि इस्राएल
ने उनको हरा दिया तो उन्होंने दाऊद से सन्धि कर ली।
वे दाऊद के सेवक बन गए। इस प्रकार अरामियों ने
अम्मोनी लोगों को फिर सहायता करने से इन्कार कर
दिया।

योआब अम्मोनियों को नष्ट करता है

20 बसन्त में, योआब इस्राएल की सेना को युद्ध
के लिये ले गया। यह वही समय था जब राजा
युद्ध के लिये यात्रा करते थे, किन्तु दाऊद यरूशलेम में
रहा। इस्राएल की सेना अम्मोन देश को गई थी। उसने
उसे नष्ट कर दिया। तब वे रब्बा नगर को गये। सेना ने
लोगों को अन्दर आने और बाहर जाने से रोकने के
लिये नगर के चारों ओर डेरा डाला। योआब और
उसकी सेना ने रब्बा नगर के विरुद्ध तब तक युद्ध
किया जब तक उसे नष्ट नहीं कर डाला।

2दाऊद ने उनके राजा* का मुकुट उतार लिया। वह
सोने का मुकुट तोल में लगभग पचहत्तर पौंड था। मुकुट
में बहुमूल्य रत्न जड़े थे। मुकुट दाऊद के सिर पर रखा
गया। तब दाऊद ने रब्बा नगर से बहुत सी मूल्यवान
वस्तुएँ प्राप्त कीं। 3दाऊद रब्बा के लोगों को साथ लाया
और उन्हें आरों, लोहे की गैंती और कुल्हाड़ियों से
काम करने को विवश किया। दाऊद ने अम्मोनी लोगों
के सभी नगरों के साथ यही बर्ताव किया। तब दाऊद
और सारी सेना यरूशलेम को वापस लौट गई।

पलिश्ती के दैत्य मारे जाते हैं

4बाद में इस्राएल के लोगों का युद्ध गेजेर नगर में
पलिश्तियों के साथ हुआ। उस समय हूशा के सिब्बकै
ने सिप्पै को मार डाला। सिप्पै दैत्यों के पुत्रों में से एक
था। इस प्रकार पलिश्ती के लोग इस्राएलियों के दास के
समान हो गए।

5अन्य अवसर पर, इस्राएल के लोगों का युद्ध फिर
पलिश्तियों के विरुद्ध हुआ। याईर के पुत्र एल्हानान ने
लहमी को मार डाला। लहमी गोल्यत का भाई था।
गोल्यत गत नगर का था। लहमी का भाला बहुत लम्बा
और भारी था। यह करघे के लम्बे हत्थे की तरह था।

उनके राजा या "मिल्काम" अम्मोनी लोगों का परमेश्वर।

6बाद में, इस्राएलियों ने गत नगर के पास पलिश्तियों
के साथ दूसरा युद्ध किया। इस नगर में एक बहुत लम्बा
व्यक्ति था। उसके हाथ और पैर की चौबीस उँगलियाँ
थीं। उस व्यक्ति के हर हाथ में छः उँगलियाँ और हर
पैर की भी छः उँगलियाँ थीं। वह दैत्य का पुत्र भी था।
7इसलिये जब उसने इस्राएल का मज़ाक उड़ाया तो
योनातान ने उसे मार डाला। योनातान शिमा का पुत्र
था। शिमा दाऊद का भाई था।
8वे पलिश्ती लोग गत नगर के दैत्यों के पुत्र थे। दाऊद
और उसके सेवकों ने उन दैत्यों को मार डाला।

इस्राएलियों को गिनकर दाऊद पाप करता है

21 शैतान इस्राएल के लोगों के विरुद्ध था। उसने
दाऊद को इस्राएल के लोगों को गिनने का
प्रोत्साहन दिया। **2**इसलिये दाऊद ने योआब और लोगों
के प्रमुखों से कहा, "जाओ और इस्राएल के सभी
लोगों की गणना करो। बर्शेबा नगर से लेकर लगातार
दान नगर तक देश के हर व्यक्ति को गिनो। तब
मुझे बताओ, इससे मैं जान सकूँगा कि यहाँ कितने
लोग हैं।"
3किन्तु योआब ने उत्तर दिया, "यहोवा अपने राष्ट को
सौ गुना विशाल बनाए। महामहिम इस्राएल के सभी लोग
तेरे सेवक हैं। मेरे स्वामी यहोवा और राजा, आप यह
कार्य क्यों करना चाहते हैं? आप इस्राएल के सभी लोगों
को पाप करने का अपराधी बनाएंगे।"
4किन्तु राजा दाऊद हठ पकड़े था। योआब को वह
करना पड़ा जो राजा ने कहा। इसलिये योआब गया और
पूरे इस्राएल देश में गणना करता हुआ घूमता रहा। तब
योआब यरूशलेम लौटा **5**और दाऊद को बताया कि
कितने आदमी थे। इस्राएल में ग्यारह लाख पुरुष थे और
तलवार का उपयोग कर सकते थे और तलवार का
उपयोग करने वाले चार लाख सत्तर हजार पुरुष यहूदा
में थे। **6**योआब ने लेवी और बिन्यामीन के परिवार
समूह की गणना नहीं की। योआब ने उन परिवार
समूहों की गणना नहीं की क्योंकि वह राजा दाऊद के
आदेशों को पसन्द नहीं करता था। **7**परमेश्वर की दृष्टि
में दाऊद ने यह बुरा काम किया था इसलिये परमेश्वर
ने इस्राएल को दण्ड दिया।

परमेश्वर इस्राएल को दण्ड देता है

8तब दाऊद ने परमेश्वर से कहा, "मैंने एक बहुत
मूर्खतापूर्ण काम किया है। मैंने इस्राएल के लोगों की
गणना करके बुरा पाप किया है। अब, मैं प्रार्थना करता
हूँ कि तू इस सेवक के पापों को क्षमा कर दे।"
9-10गाद दाऊद का दृष्टा था। यहोवा ने गाद से कहा,
"जाओ और दाऊद से कहो: 'यहोवा जो कहता है वह
यह है: मैं तुमको तीन विकल्प दे रहा हूँ। तुम्हें उसमें से
एक चुनना है और तब मैं तुम्हें उस प्रकार दण्डित
करूँगा जिसे तुम चुन लोगे।'"
11-12तब गाद दाऊद के पास गया। गाद ने दाऊद से
कहा, "यहोवा कहता है, 'दाऊद, जो दण्ड चाहते हो उसे
चुनो: पर्याप्त अन्न के बिना तीन वर्ष या तुम्हारा पीछा
करने वाले तलवार का उपयोग करते हुए शत्रुओं से
तीन महीने तक भागना या यहोवा से तीन दिन का
दण्ड। पूरे देश में भंयकर महामारी फैलेगी और यहोवा
का दूत लोगों को नष्ट करता हुआ पूरे देश में जाएगा।'
परमेश्वर ने मुझे भेजा है। अब, तुम्हें निर्णय करना है
कि उसको कौन सा उत्तर दूँ।"
13दाऊद ने गाद से कहा, "मैं विपत्ति में हूँ! मैं नहीं
चाहता कि कोई व्यक्ति मेरे दण्ड का निश्चय करे।
यहोवा बहुत दयालु है, अत: यहोवा को ही निर्णय करने
दो कि मुझे कैसे दण्ड दे।"
14अत: यहोवा ने इस्राएल में भयंकर महामारी भेजी,
और सत्तर हजार लोग मर गए। **15**परमेश्वर ने एक
स्वर्गदूत को यरूशलेम को नष्ट करने के लिये भेजा।
किन्तु जब स्वर्गदूत ने यरूशलेम को नष्ट करना आरम्भ
किया तो यहोवा ने देखा और उसे दुःख हुआ। इसलिये
यहोवा ने इस्राएल को नष्ट न करने का निर्णय किया।
यहोवा ने उस दूत से, जो नष्ट कर रहा था कहा, "रूक
जाओ! यही पर्याप्त है!" यहोवा का दूत उस समय यबूसी
ओर्नान की खलिहान के पास खड़ा था।
16दाऊद ने नज़र उठाई और यहोवा के दूत को
आकाश में देखा। स्वर्गदूत ने यरूशलेम पर अपनी
तलवार खींच रखी थी। तब दाऊद और अग्रजों (प्रमुखों)
ने अपने सिर को धरती पर टेक कर प्रणाम किया।
दाऊद और अग्रज (प्रमुख) अपने दुःख को प्रकट करने
के लिये विशेष वस्त्र पहने थे। **17**दाऊद ने परमेश्वर से
कहा, "वह मैं हूँ जिसने पाप किया है! मैंने लोगों की
गणना के लिये आदेश दिया था! मैं गलती पर था!
इस्राएल के लोगों ने कुछ भी गलत नहीं किया। यहोवा
मेरे परमेश्वर, मुझे और मेरे परिवार को दण्ड दे किन्तु
उस भयंकर महामारी को रोक दे जो तेरे लोगों को मार
रही है!"
18तब यहोवा के दूत ने गाद से बात की। उसने कहा,
"दाऊद से कहो कि वह यहोवा की उपासना के लिये
एक वेदी बनाए। दाऊद को इसे यबूसी ओर्नान की
खलिहान के पास बनाना चाहिये।" **19**गाद ने ये बातें
दाऊद को बताई और दाऊद ओर्नान के खलिहान के
पास गया।
20ओर्नान गेहूँ दांय रहा था।* ओर्नान मुड़ा और
उसने स्वर्गदूत को देखा। ओर्नान के चारों पुत्र छिपने के

दांय … था अन्न को भूसे से अलग करने के लिये उसे पीटना या कुचलना।

लिये भाग गये। **21**दाऊद ओर्नान के पास गया। ओर्नान
ने खलिहान छोड़ी। वह दाऊद तक पहुँचा और उसके
सामने अपना माथा ज़मीन पर टेक कर प्रणाम किया।
22दाऊद ने ओर्नान से कहा, "तुम अपना खलिहान
मुझे बेच दो। मैं तुमको पूरी कीमत दूँगा। तब मैं यहोवा
की उपासना के लिये एक वेदी बनाने के लिये इसका
उपयोग कर सकता हूँ। तब भंयकर महामारी रुक
जायेगी।"
23ओर्नान ने दाऊद से कहा, "इस खलिहान को ले
लें! आप मेरे प्रभु और राजा हैं। आप जो चाहें, करें।
ध्यान रखें, मैं भी होमबलि के लिये पशु दूँगा। मैं आपको
लकड़ी के पर्दे वाले तख्ते दूँगा जिसे आप वेदी पर आग
के लिये जला सकते हैं और मैं अन्नबलि के लिये गेहूँ
दूँगा। मैं यह सब आपको दूँगा!"
24किन्तु राजा दाऊद ने ओर्नान को उत्तर दिया, "नहीं,
मैं तुम्हें पूरी कीमत दूँगा। मैं कोई तुम्हारी वह चीज़ नहीं
लूँगा जिसे मैं यहोवा को दूँगा। मैं वह कोई भेंट नहीं
चढ़ाऊँगा जिसका मुझे कोई मूल्य न देना पड़े।"
25इसलिये दाऊद ने उस स्थान के लिए ओर्नान को
पन्द्रह पौंड सोना दिया। **26**दाऊद ने वहाँ यहोवा की
उपासना के लिए एक वेदी बनाई। दाऊद ने होमबलि
और मेलबलि चढ़ाई। दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की।
यहोवा ने स्वर्ग से आग भेजकर दाऊद को उत्तर दिया।
आग होमबलि की वेदी पर उतरी। **27**तब यहोवा ने
स्वर्गदूत को आदेश दिया कि वह अपनी तलवार को
वापस म्यान में रख ले।
28दाऊद ने देखा कि यहोवा ने उसे ओर्नान की
खलिहान पर उत्तर दे दिया है, अत: दाऊद ने यहोवा को
बलि भेंट की। **29**(पवित्र तम्बू और होमबलि की वेदी
उच्च स्थान पर गिबोन नगर में थी। मूसा ने पवित्र तम्बू
को तब बनाया था जब इस्राएल के लोग मरुभूमि में थे।
30दाऊद पवित्र तम्बू में परमेश्वर से बातें करने नहीं जा
सकता था, क्योंकि वह भयभीत था। दाऊद यहोवा के
दूत और उसकी तलवार से भयभीत था।)
22 दाऊद ने कहा, "यहोवा परमेश्वर का मन्दिर
और इस्राएल के लोगों के लिये भेंटों को जलाने
की वेदी यहाँ बनेगी।"

दाऊद मन्दिर के लिये योजना बनाता है

2दाऊद ने आदेश दिया कि इस्राएल में रहने वाले सभी
विदेशी एक साथ इकट्ठे हों। विदेशियों के उस समूह में
से दाऊद ने संगतराशों को चुना। उनका काम परमेश्वर
के मन्दिर के लिये पत्थरों को काट कर तैयार करना
था। **3**दाऊद ने द्वार के पल्लों के लिये कीलें तथा चूलें
बनाने के लिये लोहा प्राप्त किया। दाऊद ने उतना
काँसा भी प्राप्त किया जो तौला न जा सके **4**और दाऊद
ने इतने अधिक देवदारु के लट्ठे इकट्ठे किये जो गिने
न जा सकें। सीदोन और सोर के लोग बहुत से देवदारु
के लट्ठे लाए।
5दाऊद ने कहा, "हमें यहोवा के लिये एक विशाल
मन्दिर बनाना चाहिए। किन्तु मेरा पुत्र सुलैमान बालक
है और वह उन सब चीज़ों को नहीं सीख सका है जो
उसे जानना चाहिये। यहोवा का मन्दिर बहुत विशाल
होना चाहिये। इसे अपनी विशालता और सुन्दरता के
लिये सभी राष्ट्रों में प्रसिद्ध होना चाहिये। यही कारण है
कि मैं यहोवा का मन्दिर बनाने की योजना बनाऊँगा।"
इसलिये दाऊद ने मरने से पहले मन्दिर बनाने के लिये
बहुत सी योजनायें बनाई।
6तब दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान को बुलाया। दाऊद
ने सुलैमान से इस्राएल के यहोवा परमेश्वर के लिये
मन्दिर बनाने को कहा। **7**दाऊद ने सुलैमान से कहा,
"मेरे पुत्र, मैं अपने परमेश्वर यहोवा के नाम के लिये
एक मन्दिर बनाना चाहता था। **8**किन्तु यहोवा ने मुझसे
कहा, 'दाऊद तुमने बहुत से युद्ध किये हैं और बहुत से
लोगों को मारा है इसलिये तुम मेरे नाम के लिये मन्दिर
नहीं बना सकते **9**किन्तु तुम्हारा एक पुत्र है जो शान्ति
प्रिय है। मैं तुम्हारे पुत्र को शान्ति प्रदान करूँगा। उसके
चारों ओर के शत्रु उसे परेशान नहीं करेंगे। उसका
नाम सुलैमान है और मैं इस्राएल को उस समय सुख
शान्ति दूँगा जिस समय सुलैमान राजा रहेगा। **10**सुलैमान
मेरे नाम का एक मन्दिर बनायेगा। सुलैमान मेरा पुत्र
और मैं उसका पिता रहूँगा और मैं सुलैमान के राज्य
को शक्तिशाली बनाऊँगा और उसके परिवार का कोई
सदस्य सदा इस्राएल पर राज्य करेगा।'"
11दाऊद ने यह भी कहा, "पुत्र, अब यहोवा तुम्हारे
साथ रहे। तुम सफल बनो और जैसा यहोवा ने कहा है,
अपने यहोवा परमेश्वर का मन्दिर बनाओ। **12**यहोवा
तुम्हें इस्राएल का राजा बनाएगा। यहोवा तुम्हें बुद्धि और
समझ दे जिससे तुम लोगों का मार्गदर्शन कर सको और
अपने यहोवा परमेश्वर की व्यवस्था का पालन कर
सको **13**और तुम्हें सफलता तब मिलेगी जब तुम उन
नियमों और व्यवस्था के पालन में सावधान रहोगे जो
यहोवा ने मूसा को इस्राएल के लिये दी थी। तुम शक्तिशाली
और वीर बनो। डरो नहीं।
14"सुलैमान, मैंने यहोवा के मन्दिर की योजना बनाने
में बड़ा परिश्रम किया है। मैंने तीन हजार सात सौ पचास
टन सोना दिया है और मैंने लगभग सैंतीस हजार पाँच
सौ टन चाँदी दी है। मैंने काँसा और लोहा इतना अधिक
दिया है कि वह तौला नहीं जा सकता और मैंने लकड़ी
एवं पत्थर दिये हैं। सुलैमान, तुम उसे और अधिक कर
सकते हो। **15**तुम्हारे पास बहुत से संगतराश और बढ़ई
हैं। तुम्हारे पास हर एक प्रकार के काम करने वाले
कुशल व्यक्ति हैं। **16**वे सोना, चाँदी, काँसा, और लोहे
का काम करने में कुशल हैं। तुम्हारे पास इतने अधिक

कुशल व्यक्ति हैं कि वे गिने नहीं जा सकते। अब काम
आरम्भ करो और यहोवा तुम्हारे साथ है।"
17तब दाऊद ने इस्राएल के सभी प्रमुखों को अपने पुत्र
सुलैमान की सहायता करने का आदेश दिया। **18**दाऊद
ने उन प्रमुखों से कहा, "यहोवा तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे
साथ है। उसने तुम्हें शान्ति का समय दिया है। यहोवा ने
हम लोगों के चारों ओर रहने वाले लोगों को पराजित
करने में सहायता की है। अब यहोवा और उसके लोगों
ने इस भूमि पर पूरा अधिकार किया है। **19**अब तुम
अपने हृदय और आत्मा को अपने यहोवा परमेश्वर
को समर्पित कर दो और वह जो कहे, करो। यहोवा
परमेश्वर का पवित्र स्थान बनाओ। यहोवा के नाम के
लिये मन्दिर बनाओ। तब साक्षीपत्र का सन्दूक तथा
अन्य सभी पवित्र चीज़ें मन्दिर में लाओ।"

मन्दिर में लेवीवंशियों द्वारा सेवा की योजना

23 दाऊद बूढ़ा हो गया, इसलिये उसने अपने पुत्र
सुलैमान को इस्राएल का नया राजा बनाया।
2दाऊद ने इस्राएल के सभी प्रमुखों को इकट्ठा किया।
उसने याजकों और लेवीवंशियों को भी इकट्ठा किया।
3दाऊद ने तीस वर्ष और उससे ऊपर की उम्र के
लेवीवंशियों को गिना। सब मिलाकर अड़तीस हजार
लेवीवंशी थे। **4**दाऊद ने कहा, "चौबीस हजार लेवीवंशी
यहोवा के मन्दिर के निर्माण कार्य की देखभाल करेंगे।
छः हजार लेवीवंशी सिपाही और न्यायाधीश होंगे। **5**चार
हजार लेवीवंशी द्वारपाल होंगे और चार हजार लेवीवंशी
संगीतज्ञ होंगे। मैंने उनके लिये विशेष वाद्य बनाए हैं। वे
उन वाद्यों का उपयोग यहोवा की स्तुति के लिए करेंगे।"
6दाऊद ने लेवीवंशियों को तीन वर्गों में बाँट दिया। वे
लेवी के तीन पुत्रों गेर्शोन, कहात और मरारी के परिवार
समूह थे।

गेर्शोन के परिवार समूह

7गेर्शोन के परिवार समूह से लादान और शिमी थे।
8लादान के तीन पुत्र थे। उसका सबसे बड़ा पुत्र यहीएल
था। उसके अन्य पुत्र जेताम और योएल थे। **9**शिमी के
पुत्र शलोमीत, हजीएल और हारान थे। ये तीनों पुत्र
लादान के परिवारों के प्रमुख थे।
10शिमी के चार पुत्र थे। वे यहत, जीना, यूश और
बरीआ थे। **11**यहत सबसे बड़ा और जीजा दूसरा पुत्र था।
किन्तु यूश और बरीआ के बहुत से पुत्र नहीं थे। इसलिए
यूश और बरीआ एक परिवार के रूप में गिने जाते थे।

कहात का परिवार समूह

12कहात के चार पुत्र थे। वे अम्राम, यिसहार, हेब्रोन
और उज्जीएल थे। **13**अम्राम के पुत्र हारून और मूसा
थे। हारून अति विशेष होने के लिये चुना गया था।
हारून और उसके वंशज सदा-सदा के लिये विशेष
होने को चुने गए थे। वे यहोवा की सेवा के लिये पवित्र
चीज़े बनाने के लिये चुने गए थे। हारून और उसके
वंशज यहोवा के सामने सुगन्धि जलाने के लिये चुने गए
थे। वे यहोवा की सेवा याजक के रूप में करने के लिये
चुने गए थे। वे यहोवा के नाम का उपयोग करने और
लोगों को आशीर्वाद देने के लिये सदा के लिये चुने गए
थे।
14मूसा परमेश्वर का व्यक्ति था। मूसा के पुत्र, लेवी
के परिवार समूह के भाग थे। **15**मूसा के पुत्र गेर्शोम
और एलीएजेर थे। **16**गेर्शोम का बड़ा पुत्र शबूएल था।
17एलीएजेर का बड़ा पुत्र रहब्याह था। एलीएजेर के
और कोई पुत्र नहीं थे। किन्तु रहब्याह के बहुत से पुत्र
थे।
18यिसहार का सबसे बड़ा पुत्र शलोमीत था।
19हेब्रोन का सबसे बड़ा पुत्र यरीय्याह था। हेब्रोन का
दूसरा पुत्र अमर्याह था। यहजीएल तीसरा पुत्र था और
यकमाम चौथा पुत्र था।
20उज्जीएल का सबसे बड़ा पुत्र मीका था और
यिशिय्याह उसका दूसरा पुत्र था।

मरारी का परिवार समूह

21मरारी के पुत्र महली और मूशी थे। महली के पुत्र
एलीआज़र और कीश थे। **22**एलीआज़र बिना पुत्रों के
मरा। उसकी केवल पुत्रियाँ थीं। एलीआज़र की पुत्रियों
ने अपने सम्बन्धियों से विवाह किया। उनके सम्बन्धी
कीश के पुत्र थे। **23**मूशी के पुत्र महली, एदेर और
यरेमोत थे। सब मिला कर तीन पुत्र थे।

लेवीवंशियों के काम

24लेवी के वंशज ये थे। वे अपने परिवार के अनुसार
सूची में अंकित थे। वे परिवारों के प्रमुख थे। हर एक
व्यक्ति का नाम सूची में अंकित था। जो सूची में अंकित
थे, वे बीस वर्ष के या उससे ऊपर के थे। वे यहोवा के
मन्दिर में सेवा करते थे।
25दाऊद ने कहा था, "इस्राएल के यहोवा परमेश्वर ने
अपने लोगों को शान्ति दी है। यहोवा यरूशलेम में सदैव
रहने के लिये आ गया है। **26**इसलिये लेवीवंशियों को
पवित्र तम्बू या इसकी सेवा में काम आने वाली किसी
चीज़ को भविष्य में ढोने की आवश्यकता नहीं है।"
27दाऊद के अन्तिम निर्देश इस्राएल के लोगों के लिये,
लेवी के परिवार समूह के वंशजों को गिनना था।
उन्होंने लेवीवंशियों के बीस वर्ष और उससे ऊपर के
व्यक्तियों को गिना।
28लेवीवंशियों का काम हारून के वंशजों को यहोवा
के मन्दिर में सेवा कार्य करने में सहायता करना था।
लेवीवंशी मन्दिर के आँगन और बगल के कमरों की

भी देखभाल करते थे। उनका काम सभी पवित्र चीज़ों
को शुद्ध करने का था। उनका काम यह भी था कि
परमेश्वर के मन्दिर में सेवा करें। 29मन्दिर में विशेष
रोटी को मेज पर रखने का उत्तरदायित्व उनका ही था।
वे आटा, अन्नबलि और अखमीरी रोटी के लिये भी
उत्तरदायी थे। वे पकाने की कढ़ाईयों और मिश्रित भेंटों
के लिए भी उत्तरदायी थे। वे सारा नाप तौल का काम
करते थे। 30लेवीवंशी हर एक प्रात: खड़े होते थे और
यहोवा का धन्यवाद और स्तुति करते थे। वे इसे हर
सन्ध्या को भी करते थे। 31लेवीवंशी यहोवा को सभी
होमबलियाँ विश्राम के विशेष दिनों, नवचन्द्र उत्सवों
और सभी अन्य विशेष पर्व के दिनों पर तैयार करते
थे। वे यहोवा के सामने प्रतिदिन सेवा करते थे। कितने
लेवीवंशी हर बार सेवा करेंगे इसके लिये विशेष नियम
थे। 32अत: लेवीवंशी वे सब काम करते थे जिनकी
आशा उनसे की जाती थी। वे पवित्र तम्बू की देखभाल
करते थे। वे पवित्र स्थान की देखभाल करते थे और वे
अपने सम्बन्धियों हारून के वंशज याजकों को सहायता
देते थे। लेवीवंशी यहोवा के मन्दिर में सेवा करके
याजकों की सेवा करते थे।

याजकों के समूह

24 हारून के पुत्रों के ये समूह थे: हारून के पुत्र
नादाब, अबीहू, एलीआजर और ईतामार थे।
2किन्तु नादाब और अबीहू अपने पिता की मृत्यु के
पहले ही मर गये और नादाब और अबीहू के कोई पुत्र
नहीं था इसलिये एलीआजर और ईतामार ने याजक के
रूप में कार्य किया। 3दाऊद ने एलीआजर और ईतामार
के परिवार समूह को दो भिन्न समूहों में बाँटा। दाऊद ने
यह इसलिये किया कि ये समूह उनको दिये गए कर्तव्यों
को पूरा कर सकें। दाऊद ने यह सादोक और अहीमेलेक
की सहायता से किया। सादोक एलीआज़र का वंशज था
और अहीमेलेक ईतामार का वंशज था। 4एलीआज़र के
परिवार समूह के प्रमुख ईतामार के परिवार समूह के
प्रमुखों से अधिक थे। एलीआजर के परिवार समूह के
सोलह प्रमुख थे और ईतामार के परिवार समूह से आठ
प्रमुख थे। 5हर एक परिवार से पुरुष चुने गए थे। वे गोट
डालकर चुने गए थे। कुछ व्यक्ति पवित्र स्थान के
अधिकारी चुने गए थे और अन्य व्यक्ति याजक के रूप
में सेवा के लिये चुने गए थे। ये सभी व्यक्ति एलीआजर
और ईतामार के परिवार से चुने गए थे।

6शमायाह सचिव था। वह नतनेल का पुत्र था। शमायाह
लेवी परिवार समूह से था। शमायाह ने उन वंशजों के
नाम लिखे। उसने उन नामों को राजा दाऊद और इन
प्रमुखों के सामने लिखा। याजक सादोक, अहीमेलेक
तथा याजक और लेवीवंशियों के परिवारों के प्रमुख।
अहीमेलेक एब्यातार का पुत्र था। हर एक बार वे गोट
डालकर एक व्यक्ति चुनते थे और शमायाह उस व्यक्ति
का नाम लिख लेता था। इस प्रकार उन्होंने एलीआजर
और ईतामार के परिवारों में काम को बाँटा।

7 पहला समूह यहोयारीब का था।
दूसरा समूह यदायाह का था।
8 तीसरा समूह हारीम का था।
चौथा समूह सोरीम का था।
9 पाँचवाँ समूह मल्किय्याह का था।
छठा समूह मिय्यामीन का था।
10 सातवाँ समूह हक्कोस का था।
आठवाँ समूह अबिय्याह का था।
11 नवाँ समूह येशू का था।
दसवाँ समूह शकन्याह का था।
12 ग्यारहवाँ समूह एल्याशीब का था।
बारहवाँ समूह याकीम का था।
13 तेरहवाँ समूह हुप्पा का था।
चौदहवाँ समूह येसेबाब का था।
14 पन्द्रहवाँ समूह बिल्गा का था।
सोलहवाँ समूह इम्मेर का था।
15 सत्रहवाँ समूह हेजीर का था।
अट्ठारहवाँ समूह हप्पित्सेस का था।
16 उन्नीसवाँ समूह पतह्याह का था।
बीसवाँ समूह यहेजकेल का था।
17 इक्कीसवाँ समूह याकीन का था।
बाईसवाँ समूह गामूल का था।
18 तेईसवाँ समूह दलायाह का था।
चौबीसवाँ समूह माज्याह का था।

19यहोवा के मन्दिर में सेवा करने के लिये ये समूह
चुने गये थे। वे मन्दिर में सेवा के लिये हारून के नियमों
को मानते थे। इस्राएल के यहोवा परमेश्वर ने इन
नियमों को हारून को दिया था।

अन्य लेवीवंशी

20ये नाम शेष लेवी के वंशजों के हैं:

अम्राम के वंशजों से शूबाएल।
शूबाएल के वंशजों से: येहदयाह।
21 रहब्याह से: यिश्शिय्याह (यिश्शिय्याह सबसे
बड़ा पुत्र था।)
22 इसहारी परिवार समूह से: शलोमोत।
शलोमोत के परिवार से: यहत।
23 हेब्रोन का सबसे बड़ा पुत्र यरिय्याह था।
अमर्याह हेब्रोन का दूसरा पुत्र था।
यहजीएल तीसरा पुत्र था,
और यकमाम चौथा पुत्र

24 उज्जीएल का पुत्र मीका था।
मीका का पुत्र शामीर था।
25 यिशिश्य्याह मीका का भाई था।
यिशिश्य्याह का पुत्र जकर्याह था।
26 मरारी के वंशज महली, मूशी
और उसका पुत्र याजिय्याह थे।
27 मरारी के पुत्र याजिय्याह के पुत्र शोहम
और जक्कू नाम के थे।
28 महली का पुत्र एलीआजर था
किन्तु एलीआजर का कोई पुत्र न था।
29 कीश का पुत्र यरह्मेल था।
30 मूशी के पुत्र महली, एदेर और यरीमोत थे।

वे लेवीवंश परिवारों के प्रमुख हैं। वे अपने परिवारों
की सूची में हैं। 31वे विशेष कामों के लिये चुने गए थे।
वे अपने सम्बन्धी याजकों की तरह गोट डालते थे।
याजक हारून के वंशज थे। उन्होंने राजा दाऊद, सादोक,
अहीमेलेक और याजकों तथा लेवी के परिवारों के
प्रमुखों के सामने गोटें डालीं। जब उनके काम चुने गये
पुराने और नये परिवारों के एक सा व्यवहार हुआ।

संगीत समूह

25 दाऊद और सेनापतियों ने आसाप के पुत्रों को
विशेष सेवा के लिये अलग किया। आसाप के
पुत्र हेमान और यदूतून थे। उनका विशेष काम परमेश्वर
के सन्देश की भविष्यवाणी सारंगी, वीणा, मंजीरे का
उपयोग करके करना था। यहाँ उन पुरुषों की सूची है
जिन्होंने इस प्रकार सेवा की।
2आसाप के परिवार से: जक्कूर, योसेप, नतन्याह
और अशरेला थे। राजा दाऊद ने आसाप को भविष्यवाणी
के लिये चुना और आसाप ने अपने पुत्रों का नेतृत्व
किया।
3यदूतून परिवार से: गदल्याह, सरी, यशायाह, शिमी,
हसब्याह और मत्तित्याह। ये छः थे। यदूतून ने अपने पुत्रों
का नेतृत्व किया। यदूतून ने सारंगी का उपयोग
भविष्यवाणी करने और यहोवा को धन्यवाद देने और
उसकी स्तुति के लिये किया।
4हेमान के पुत्र जो सेवा करते थे बुक्किय्याह, मत्तन्याह,
लज्जीएल, शबूएल, और यरीमोत, हनन्याह, हनानी,
एलीआता, गिद्दलती और रोममतीएजेर, योशबकाशा,
मल्लोती, होतीर और महजीओत थे। 5ये सभी व्यक्ति
हेमान के पुत्र थे। हेमान दाऊद का दृष्टा था। परमेश्वर
ने हेमान को शक्तिशाली बनाने का वचन दिया। इसलिए
हेमान के कई पुत्र थे। परमेश्वर ने हेमान को चौदह
पुत्र और तीन पुत्रियाँ दीं। 6हेमान ने अपने सभी पुत्रों का
यहोवा के मन्दिर में गाने में नेतृत्व किया। उन पुत्रों ने
मन्जीरे, वीणा और तम्बूरे का उपयोग किया। उनका
परमेश्वर के मन्दिर में सेवा करने का वही तरीका
था। राजा दाऊद ने उन व्यक्तियों को चुना था। 7वे
व्यक्ति और लेवी के परिवार समूह के उनके सम्बन्धी
गायन में प्रशिक्षित थे। दो सौ अट्ठासी व्यक्तियों ने
यहोवा की प्रशंसा के गीत गाना सीखा। 8हर एक व्यक्ति
जिस भिन्न कार्य को करेगा, उसके चुनाव के लिए वे
गोट डालते थे। हर एक व्यक्ति के साथ समान व्यवहार
होता था। बूढ़े और जवान के साथ समान व्यवहार था
और गुरु के साथ वही व्यवहार था जो शिष्य के साथ।
9पहले, आसाप (यूसुफ) के पुत्रों और सम्बन्धियों में से
बारह व्यक्ति चुने गए थे।
दूसरे, गदल्याह के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह
व्यक्ति चुने गए।
10तीसरे, जक्कूर के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह
व्यक्ति चुने गए।
11चौथे, यिस्री के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह
व्यक्ति चुने गए।
12पाँचवें, नतन्याह के पुत्रों और सम्बन्धियों में से
बारह व्यक्ति चुने गए।
13छठे, बुक्किय्याह के पुत्रों और सम्बन्धियों में से
बारह व्यक्ति चुने गए।
14सातवें, यसरेला के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह
व्यक्ति चुने गए।
15आठवें, यशायाह के पुत्रों और सम्बन्धियों में से
बारह व्यक्ति चुने गए।
16नवें, मत्तन्याह के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह
व्यक्ति चुने गए।
17दसवें, शिमी के पुत्रों और सम्बन्धियों में से बारह
व्यक्ति चुने गए।
18ग्यारहवें, अजरेल के पुत्रों और सम्बन्धियों में से
बारह व्यक्ति चुने गए।
19बारहवें, हशब्याह के पुत्रों और सम्बन्धियों में से
बारह व्यक्ति चुने गए।
20तेरहवें, शूबाएल के पुत्रों और सम्बन्धियों में से
बारह व्यक्ति चुने गए।
21चौदहवें, मत्तिय्याह के पुत्रों और सम्बन्धियों में से
बारह व्यक्ति चुने गए।
22पन्द्रहवें, यरेमोत के पुत्रों और सम्बन्धियों में से
बारह व्यक्ति चुने गए।
23सोलहवें, हनन्याह के पुत्रों और सम्बन्धियों में से
बारह व्यक्ति चुने गए।
24सत्रहवें, योशबकाशा के पुत्रों और सम्बन्धियों में से
बारह व्यक्ति चुने गए।
25अट्ठारहवें, हनानी के पुत्रों और सम्बन्धियों में से
बारह व्यक्ति चुने गए।
26उन्नीसवें, मल्लोती के पुत्रों और सम्बन्धियों में से
बारह व्यक्ति चुने गए।

27बीसवें, इलिय्याता के पुत्रों और सम्बन्धियों में से
बारह व्यक्ति चुने गए।
28इक्कीसवें, होतीर के पुत्रों और सम्बन्धियों में से
बारह व्यक्ति चुने गए।
29बाईसवें, गिद्दलती के पुत्रों और सम्बन्धियों में से
बारह व्यक्ति चुने गए।
30तेईसवें, महजीओत के पुत्रों और सम्बन्धियों में से
बारह व्यक्ति चुने गए।
31चौबीसवें, रोममतीएजेर के पुत्रों और सम्बन्धियों
मेंसे बारह व्यक्ति चुने गए।

द्वारपाल

26 द्वारपालों के समूह: कोरह परिवार से ये द्वारपाल
हैं। मशेलेम्याह और उसके पुत्र। (मशेलेम्याह
कोरह का पुत्र था। वह आसाप परिवार समूह से था।)
2मशेलेम्याह के पुत्र थे। जकर्याह सबसे बड़ा पुत्र था।
यदीएल दूसरा पुत्र था। जबद्याह तीसरा पुत्र था। यतीएल
चौथा पुत्र था। **3**एलाम पाँचवाँ पुत्र था। यहोहानान छठाँ
पुत्र था और एल्यहोएनै सातवाँ पुत्र था।
4ओबेदेदोम और उसके पुत्र। ओबेदेदोम का सबसे
बड़ा पुत्र शमायाह था। यहोजाबाद उसका दूसरा पुत्र था।
योआह उसका तीसरा पुत्र था। साकार उसका चौथा
पुत्र था। नतनेल उसका पाँचवाँ पुत्र था। **5**अम्मीएल
उसका छठाँ पुत्र था। इस्साकार उसका सातवाँ पुत्र था
और पुल्लतै उसका आठवाँ पुत्र था। परमेश्वर ने सचमुच
ओबेदेदोम* को वरदान दिया। **6**ओबेदेदोम का पुत्र
शमायाह था। शमायाह के भी पुत्र थे। शमायाह के पुत्र
अपने पिता के परिवार में प्रमुख थे क्योंकि वे वीर
योद्धा थे। **7**शमायाह के पुत्र ओती, रपाएल, ओबेद,
एलजाबाद, एलीहू और समक्याह थे। एलजाबाद के
सम्बन्धी कुशल कारीगर थे। **8**वे सभी लोग ओबेदेदोम
के वंशज थे। वे पुरुष और उनके पुत्र तथा उनके
सम्बन्धी शक्तिशाली लोग थे। वे अच्छे रक्षक थे। ओबेदेदोम
के बासठ वंशज थे।
9मशेलेम्याह के पुत्र और सम्बन्धी शक्तिशाली लोग
थे। सब मिलाकर अट्ठारह पुत्र और सम्बन्धी थे।
10मरारी के परिवार से ये द्वारपाल थे उनमें एक होसा
था। शिम्री प्रथम पुत्र चुना गया था। शिम्री वास्तव में
सबसे बड़ा नहीं था, किन्तु उसके पिता ने उसे पहलौठा
पुत्र चुन लिया था। **11**हिल्किय्याह उसका दूसरा पुत्र था।
तबल्याह उसका तीसरा पुत्र था और जकर्याह उसका
चौथा पुत्र था। सब मिलाकर होसा के तेरह पुत्र और
सम्बन्धी थे।
12ये द्वारपालों के समूह के प्रमुख थे। द्वारपालों का
यहोवा के मन्दिर में सेवा करने का विशेष ढंग था, जैसा
कि उनके सम्बन्धी करते थे। **13**हर एक परिवार को
एक द्वार रक्षा करने के लिये दिया गया था। एक
परिवार के लिये द्वार चुनने को गोट डाली जाती थी। बुढ़े
और जवानों के साथ एक समान बर्ताव किया जाता था।
14शेलेम्याह पूर्वी द्वार की रक्षा के लिये चुना गया था।
तब शेलेम्याह के पुत्र जकर्याह के लिये गोट डाली गई।
जकर्याह एक बुद्धिमान सलाहकार था। जकर्याह उत्तरी
द्वार के लिये चुना गया। **15**ओबेदेदोम दक्षिण द्वार के
लिये चुना गया और ओबेदेदोम के पुत्र उस गृह की रक्षा
के लिये चुने गए जिसमें कीमती चीज़ें रखी जाती थीं।
16शुप्पीम और होसा पश्चिमी द्वार और ऊपरी सड़क
पर शल्लेकेत द्वार के लिये चुने गए।
द्वारपाल एक दूसरे की बगल में खड़े होते थे। **17**पूर्वी
द्वार पर लेवीवंशी रक्षक हर दिन खड़े होते थे। उत्तरी
द्वार पर हर दिन चार लेवीवंशी रक्षक खड़े होते थे।
दक्षिणी द्वार पर चार लेवीवंशी रक्षक खड़े होते थे और
दो लेवीवंशी रक्षक उस गृह की रक्षा करते थे जिसमें
कीमती चीज़ें रखी जाती थीं। **18**चार रक्षक पश्चिमी
न्यायगृह पर थे और दो रक्षक न्यायगृह तक की सड़क
पर थे। **19**ये द्वारपालों के समूह थे। वे द्वारपाल कोरह
और मरारी के परिवार में से थे।

कोषाध्यक्ष और अन्य अधिकारी

20अहिय्याह लेवी के परिवार समूह से था। अहिय्याह
परमेश्वर के मन्दिर की मूल्यवान चीज़ों की देखभाल
का उत्तरदायी था। अहिय्याह उन स्थानों की रक्षा के
लिये भी उत्तरदायी था जहाँ पवित्र वस्तुएँ रखी जाती थी।
21लादान गेर्शोन परिवार से था। यहोएल लादान परिवार
समूह के प्रमुखों में से एक था। **22**यहोएला के पुत्र जेताम
और जेताम का भाई योएल थे। वे यहोवा के मन्दिर में
बहुमूल्य चीज़ों के लिये उत्तरदायी थे।
23अन्य प्रमुख अम्राम, यिसहार , हेब्रोन ओर उज्जीएल
के परिवार समूह से चुने गए थे। **24**शबूएल यहोवा के
मन्दिर में मूल्यवान चीज़ों की रक्षा का उत्तरदायी प्रमुख
था। शबूएल गेर्शेम का पुत्र था। गेर्शोम मूसा का पुत्र था।
25ये शबूएल के सम्बन्धी थे: एलीआजर से उसके सम्बन्धी
थे: एलीआजर का पुत्र रहब्याह, रहब्याह का पुत्र यशायाह,
यशायाह का पुत्र योराम, योराम का पुत्र जिक्री और
जिक्री का पुत्र शलोमोत। **26**शलोमोत और उसके सम्बन्धी
उन सब चीज़ों के लिये उत्तरदायी थे जिसे दाऊद ने
मन्दिर के लिये इकट्ठा किया था। सेना के अधिकारियों
ने भी मन्दिर के लिये चीज़ें दीं। **27**उन्होंने युद्धों में ली
गयी चीजों में से कुछ चीज़ें दीं। उन्होंने यहोवा के मन्दिर
को बनाने के लिये वे चीज़ें दीं। **28**शलोमोत और उसके
सम्बन्धी दृष्टा शमूएल, कीश के पुत्र शाऊल, नेर के
पुत्र अब्नेर; सरूयाह के पुत्र योआब द्वारा दी गई पवित्र
वस्तुओं की भी रक्षा करते थे। शलोमोत और उसके

ओबेदेदोम परमेश्वर ने ओबेदेदोम को वरदान दिया था जब साक्षीपत्र का सन्दूक उसके घर पर ठहरा था।

सम्बन्धी लोगों द्वारा, यहोवा को दी गई सभी पवित्र चीज़ों की रक्षा करते थे।

29कनन्याह यिसहार परिवार का था। कनन्याह और उसके पुत्र मन्दिर के बाहर का काम करते थे। वे इस्राएल के विभिन्न स्थानों पर सिपाही और न्यायाधीश का कार्य करते थे। 30हशव्याह हेब्रोन परिवार से था। हशव्याह और उसके सम्बन्धी यरदन नदी के पश्चिम में इस्राएल के राजा दाऊद के कामों और यहोवा के सभी कामों के लिये उत्तरदायी थे। हशव्याह के समूह में एक हजार सात सौ शक्तिशाली व्यक्ति थे। 31हेब्रोन का परिवार समूह इस बात पर प्रकाश डालता है कि यरिय्याह उनका प्रमुख था। जब दाऊद चालीस वर्ष तक राजा रह चुका, तो उसने अपने लोगों को परिवार के इतिहासों से शक्तिशाली और कुशल व्यक्तियों की खोज का आदेश दिया। उनमें से कुछ हेब्रोन परिवार में मिले जो गिलाद के याजेर नगर में रहते थे। 32यरिय्याह के पास दो हजार सात सौ सम्बन्धी थे जो शक्तिशाली लोग थे और परिवारों के प्रमुख थे। दाऊद ने उन दो हजार सात सौ सम्बन्धियों को रूबेन, गाद और आधे मनश्शे के परिवार के संचालन और यहोवा एवं राजा के कार्य का उत्तरदायित्व सौंपा।

सेना के समूह

27 यह उन इस्राएली लोगों की सूची है जो राजा की सेना में सेवा करते थे। हर एक समूह हर वर्ष एक महीने अपने काम पर रहता था। उसमें परिवारों के शासक, नायक, सेनाध्यक्ष और सिपाही लोग थे जो राजा की सेवा करते थे। हरएक सेना के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे।

2याशोबाम पहले महीने के पहले समूह का अधीक्षक था। याशोबाम जब्दीएल का पुत्र था। याशोबाम के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे। 3याशोबाम पेरेस के वंशजों में से एक था। याशोबाम पहले महीने के लिये सभी सैनिक अधिकारियों का प्रमुख था।

4दोदै दूसरे महीने के लिये सेना समूह का अधीक्षक था। वह अहोही से था। दोदै के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे।

5तीसरा सेनापति बनायाह था। बनायाह तीसरे महीने का सेनापति था। बनायाह यहोयादा का पुत्र था। यहोयादा प्रमुख याजक था। बनायाह के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे। 6यह वही बनायाह था जो तीस वीरों में से एक वीर सैनिक था। बनायाह उन व्यक्तियों का संचालन करता था। बनायाह का पुत्र अम्मीजाबाद बनायाह के समूह का अधीक्षक था।

7चौथा सेनापति असाहेल था। असाहेल चौथे महीने का सेनापति था। असाहेल योआब का भाई था। बाद में, असाहेल के पुत्र जबद्याह ने उसका स्थान सेनापति के रूप में लिया। असाहेल के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे।

8पाँचवाँ सेनापति शम्हूत था, शम्हूत पाँचवें महीने का सेनापति था। शम्हूत यिज्राही के परिवार से था। शम्हूत के समूह में चौबीस हजार व्यक्ति थे।

9छठाँ सेनापति ईरा था। ईरा छठें महीने का सेनापति था। ईरा इक्केश का पुत्र था। इक्केश तकोई नगर से था। ईरा के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे।

10सातवाँ सेनापति हेलेस था। हेलेस सातवें महीने का सेनापति था। वह पेलोनी लोगों से था और एप्रैम का वंशज था। हेलेस के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे।

11सिब्बकै आठवाँ सेनापति था। सिब्बकै आठवें महीने का सेनापति था। सिब्बकै हूश से था। सिब्बकै जेरह परिवार का था। सिब्बकै के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे।

12नवाँ सेनापति अबीएजेर था। अबीएजेर नवें महीने का सेनापति था। अबीएजेर अनातोत नगर से था। अबीएजेर बिन्यामीन के परिवार समूह का था। अबीएजेर के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे।

13दसवाँ सेनापति महरै था। महरै दसवें महीने का सेनापति था। महरै नतोप से था। वह जेरह परिवार का था। महरै के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे।

14ग्यारहवाँ सेनापति बनायाह था। बनायाह ग्यारहवें महीने का सेनापति था। बनायाह पिरातोन से था। बनायाह एप्रैम के परिवार समूह का था। बनायाह के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे। 15बारहवाँ सेनापति हेल्दै था। हेल्दै बारहवें महीने का सेनापति था। हेल्दै, नतोपा, नतोप से था। हल्दै ओत्नीएल के परिवार का था। हल्दै के समूह में चौबीस हजार पुरुष थे।

परिवार समूह के प्रमुख

16इस्राएल के परिवार समूहों के प्रमुख ये थे:
रूबेन: जिक्री का पुत्र एलीआजर।
शिमोन: माका का पुत्र शपत्याह।
17 लेवी: शमूएल का पुत्र हशव्याह।
हारून: सादोक।
18 यहूदा: एलीहू (एलीहू दाऊद के भाईयों में से एक था।)
इस्साकार: मीकाएल का पुत्र ओम्नी।
19 जबूलून: ओबद्याह का पुत्र यिशमायाह,
नप्ताली: अज्रीएल का पुत्र यरीमोत।
20 एप्रैम: अजज्याह का पुत्र होशे।
पश्चिमी मनश्शे: फ़दायाह का पुत्र योएल।
21 पूर्वी मनश्शे: जकर्याह का पुत्र इद्दो।
बिन्यामीन: अब्नेर का पुत्र यासीएल।
22 दान: यारोहाम का पुत्र अजरेल।
वे इस्राएल के परिवार समूह के प्रमुख थे।

दाऊद इस्राएलियों की गणना करता है

23दाऊद ने इस्राएल के लोगों की गणना का निश्चय किया। वहाँ बहुत अधिक लोग थे क्योंकि परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को आसमान के तारों के बराबर बनाने की प्रतिज्ञा की थी। अत: दाऊद ने बीस वर्ष और उससे ऊपर के पुरुषों की गणना की। 24सरूयाह के पुत्र योआब ने लोगों को गिनना आरम्भ किया। किन्तु उसने गणना को पूरा नहीं किया। परमेश्वर इस्राएल के लोगों पर क्रोधित हो गया। यही कारण है कि लोगों की संख्या "राजा दाऊद के इतिहास" की पुस्तक में नहीं लिखी गई।

राजा के प्रशासक

25यह उन व्यक्तियों की सूची है जो राजा की सम्पत्ति के लिये उत्तरदायी थे:

अदीएल का पुत्र अजमावेत राजा के भण्डारों का अधीक्षक था। उज्जिय्याह का पुत्र यहोनातान छोटे नगरों के भण्डारों, गाँव, खेतों और मीनारों का अधीक्षक था।

26कलूब का पुत्र एज्री कृषि–मजदूरों का अधीक्षक था।

27शिमी अंगूर के खेतों का अधीक्षक था। शिमी रामा नगर का था। जब्दी अंगूर के खेतों से आने वाली दाखमधु की देखभाल और भंडारण करने का अधीक्षक था। जब्दी शापाम का था।

28बाल्हानान पश्चिमी पहाड़ी प्रदेश में जैतून और देवदार वृक्षों का अधीक्षक था।

बाल्हानान गदेर का था। योआश जैतून के तेल के भंडारण का अधीक्षक था।

29शित्रै शारोन क्षेत्र में पशुओं का अधीक्षक था। शित्रै शारोन क्षेत्र का था। अदलै का पुत्र शापात घाटियों में पशुओं का अधीक्षक था।

30ओबील ऊँटों का अधीक्षक था। ओबील इश्माएली था। येहदयाह गधों का अधीक्षक था। येहदयाह एक मेरोनोतवासी था।

31याजीज भेड़ों का अधीक्षक था। याजीज हग्री लोगों में से था।

ये सभी व्यक्ति वे प्रमुख थे जो दाऊद की सम्पत्ति की देखभाल करते थे।

32योनातान एक बुद्धिमान सलाहकार और शास्त्री था। योनातान दाऊद का चाचा था। हक्मोन का पुत्र एहीएल राजा के पुत्रों की देखभाल करता था।
33अहीतोपेल राजा का सलाहकार था। हूशै राजा का मित्र था। हूशै एरेकी लोगों में से था। 34बाद में यहोयादा और एब्यातार ने राजा के सलाहकार के रूप में अहीतोपेल का स्थान लिया। यहोयादा बनायाह का पुत्र था। योआब राजा की सेना का सेनापति था

दाऊद मन्दिर की योजना बनाता है।

28 दाऊद ने इस्राएल के सभी प्रमुखों को इकट्ठा किया। उसने सभी प्रमुखों को यरूशलेम आने का आदेश दिया। दाऊद ने परिवार समूहों के प्रमुखों, राजा की सेवा करने वाली सेना की टुकड़ियों के सेनापतियों, सेनाध्यक्षों राजा और उनके पुत्रों के जानवरों तथा सम्पत्ति की देखभाल करने वाले अधिकारियों, राजा के महत्वपूर्ण अधिकारियों, शक्तिशाली वीरों और सभी वीर योद्धाओं को बुलाया।

2राजा दाऊद खड़ा हुआ और कहा, "मेरे भाईयों और मेरे लोगों, मेरी बात सुनों। मैं अपने हृदय से यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक को रखने के लिये एक स्थान बनाना चाहता हूँ। मैं एक ऐसा स्थान बनाना चाहता हूँ जो परमेश्वर का पद पीठ बन सके और मैंने परमेश्वर के लिये एक मन्दिर बनाने की योजना बनाई। 3किन्तु
परमेश्वर ने मुझसे कहा, 'नहीं दाऊद, तुम्हें मेरे नाम पर मन्दिर नहीं बनाना चाहिये। तुम्हें यह नहीं करना चाहिये क्योंकि तुम एक योद्धा हो और तुमने बहुत से व्यक्तियों को मारा है।'

4"यहोवा इस्राएल के परमेश्वर ने इस्राएल के परिवार समूहों का नेतृत्व करने के लिये यहूदा के परिवार समूह को चुना। तब उस परिवार समूह में से, यहोवा ने मेरे पिता के परिवार को चुना और उस परिवार से परमेश्वर ने मुझे सदा के लिये इस्राएल का राजा चुना। परमेश्वर मुझे इस्राएल का राजा बनाना चाहता था।
5यहोवा ने मुझे बहुत से पुत्र दिये हैं और उन सारे पुत्रों में से, सुलैमान को यहोवा ने इस्राएल का नया राजा चुना। परन्तु इस्राएल सचमुच यहोवा का राज्य है। 6यहोवा
ने मुझसे कहा, 'दाऊद, तुम्हारा पुत्र सुलैमान मेरा मन्दिर और इसके चारों ओर का क्षेत्र बनाएगा। क्यों? क्योंकि मैंने सुलैमान को अपना पुत्र चुना है और मैं उसका पिता रहूँगा।* 7अब सुलैमान मेरे नियमों और आदेशों
का पालन कर रहा है। यदि वह मेरे नियमों का पालन करता रहता है तो मैं सुलैमान के राज्य को सदा के लिये शक्तिशाली बना दूँगा!'

8दाऊद ने कहा, "अब, इस्राएल और परमेश्वर के सामने मैं तुमसे ये बाते कहता हूँ: यहोवा अपने परमेश्वर के सभी आदेशों को मानने में सावधान रहो! तब तुम इस अच्छे देश को अपने पास रख सकते हो और तुम सदा के लिए इसे अपने वंशजों को दे सकते हो।

9"और मेरे पुत्र सुलैमान, तुम, अपने पिता के परमेश्वर को जानते हो। शुद्ध हृदय से परमेश्वर की सेवा करो। परमेश्वर की सेवा करने में अपने हृदय (मस्तिष्क) में प्रसन्न रहो। क्यों? क्योंकि यहोवा जानता है कि हर एक के हृदय (मस्तिष्क) में क्या है। हर बात जो सोचते हो,

---

मैंने ... रहूँगा यह व्यक्त करता है कि परमेश्वर सुलैमान को राजा बना रहा था। देखें भजन 2:7

यहोवा जानता है। यदि तुम यहोवा के पास सहायता के
लिये जाओगे, तो तुम्हें वह मिलेगी। किन्तु यदि उसको
छोड़ते हो, तो वह तुमको सदा के लिये छोड़ देगा।
10सुलैमान, तुम्हें यह समझना चाहिए कि यहोवा ने
तुमको अपना पवित्र स्थान मन्दिर बनाने के लिये चुना
है। शक्तिशाली बनो और कार्य को पूरा करो।"

11तब दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान को मन्दिर बनाने
के लिये योजनाएँ दीं। वे योजनाएँ मन्दिर के चारों ओर
प्रवेश–कक्ष बनाने, इसके भवन, इसके भंडार–कक्ष,
इसके ऊपरी कक्ष, इसके भीतरी कक्ष और दयापीठ के
स्थान के लिये थी। **12**दाऊद ने मन्दिर के सभी भागों
के लिये योजनाएँ बनाई थी। दाऊद ने उन योजनाओं
को सुलैमान को दिया। दाऊद ने यहोवा के मन्दिर के
चारों ओर के आँगन और इसके चारों ओर के कक्षों
की योजनाएँ दी। दाऊद ने मन्दिर के भंडारकक्षों और
उन भंडारकक्षों की योजनाएँ दी जहाँ वे उन पवित्र चीज़ों
को रखते थे जो मन्दिर में काम आती थीं। **13**दाऊद ने
सुलैमान को, याजकों और लेवीवंशियों के समूहों के
बारे में बताया। दाऊद ने सुलैमान को यहोवा के मन्दिर
में सेवा करने के काम के बारे में और मन्दिर में काम
आने वाली वस्तुओं के बारे में बताया। **14**दाऊद ने
सुलैमान को बताया कि मन्दिर में काम आने वाली
चीज़ों को बनाने में कितना सोना और चाँदी लगेगा।
15सोने के दीपकों और दीपाधारों की योजनाएँ थी और
चाँदी के दीपकों और दीपाधारों की योजनाएँ थी। दाऊद
ने बताया कि हर एक दीपाधार और उसके दीपक के
लिये कितनी सोने या चाँदी का उपयोग किया जाये।
विभिन्न दीपाधार, जहाँ आवश्यकता थी, उपयोग में
आने वाले थे। **16**दाऊद ने बताया कि पवित्र रोटी के
लिये काम में आने वाली हर एक मेज के लिये कितना
सोना काम में आएगा। दाऊद ने बताया कि चाँदी की
मेज़ों के लिये कितनी चाँदी काम में आएगी। **17**दाऊद
ने बताया कि कितना शुद्ध सोना, काँटे, छिड़काव की
चिलमची और घड़े बनाने में लगेगा। दाऊद ने बताया
कि हर एक तश्तरी बनाने में कितना सोना लगेगा और
हर एक चाँदी की तश्तरी में कितनी चाँदी लगेगी।
18दाऊद ने बताया कि सुगन्धि की वेदी के लिये कितना
शुद्ध सोना लगेगा। दाऊद ने सुलैमान को परमेश्वर का
रथ, यहोवा के साक्षीपत्र के सन्दूक के ऊपर अपने
पँखों को फैलाये करूब (स्वर्गदूत) के साथ दयापीठ की
योजना भी दी। करूब (स्वर्गदूत) सोने के बने थे।

19दाऊद ने कहा, "ये सभी योजनाएं मुझे यहोवा से
मिले निर्देशों के अनुसार बने हैं। यहोवा ने योजनाओं
की हर एक चीज़ समझने में मुझे सहायता दी।"

20दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान से यह भी कहा, "दृढ़
और वीर बनो और इस काम को पूरा करो। डरो नहीं,
क्योंकि यहोवा, मेरा परमेश्वर तुम्हारे साथ है। वह
तुम्हारी सहायता तब तक करेगा जब तक तुम्हारा यह
काम पूरा नहीं हो जाता। वह तुमको छोड़ेगा नहीं। तुम
यहोवा का मन्दिर बनाओगे। **21**परमेश्वर के मन्दिर का
सभी काम करने के लिये याजकों और लेवीवंशियों के
समूह तैयार हैं। सभी कामों में तुम्हें सहायता देने के
लिये कुशल कारीगर तैयार है जो भी तुम आदेश दोगे
उसका पालन अधिकारी और सभी लोग करेंगे।"

मन्दिर बनाने के लिये भेंट

29 राजा दाऊद ने वहाँ एक साथ इकट्ठे इस्राएल
के सभी लोगों से कहा, "परमेश्वर ने मेरे पुत्र
सुलैमान को चुना। सुलैमान बालक है और वह उन सब
बातों को नहीं जानता जिनकी आवश्यकता उसे इस
काम को करने के लिये है। किन्तु काम बहुत महत्वपूर्ण
है। यह भवन लोगों के लिये नहीं है अपितु यहोवा
परमेश्वर के लिये है। **2**मैंने पूरी शक्ति से अपने परमेश्वर
के मन्दिर को बनाने की योजना पर काम किया है।
मैंने सोने से बनने वाली चीज़ों के लिये सोना दिया है।
मैंने चाँदी से बनने वाली चीज़ों के लिये चाँदी दी है। मैंने
काँसे से बनने वाली चीज़ों के लिये काँसा दिया है। मैंने
लोहे से बनने वाली चीज़ों के लिये लोहा दिया है। मैंने
लकड़ी से बनने वाली चीज़ों के लिये लकड़ी दी है। मैंने
नीलमणि, रत्नजटित फलकों के लिये विभिन्न रंगों के
सभी प्रकार के बहुमूल्य रत्न और श्वेत संगमरमर भी
दिये हैं। मैंने यहोवा के मन्दिर को बनाने के लिये ये
चीज़ें अधिक और बहुत अधिक संख्या में दी हैं। **3**मैं
अपने परमेश्वर के मन्दिर के लिये सोने और चाँदी की
एक विशेष भेंट दे रहा हूँ। मैं यह इसलिये कर रहा हूँ
कि मैं सचमुच अपने परमेश्वर के मन्दिर को बनाना
चाहता हूँ। मैं इस पवित्र मन्दिर को बनाने के लिये इन
सब चीज़ों को दे रहा हूँ। **4**मैंने ओपीर से एक सौ टन
शुद्ध सोना दिया है। मैंने दो सौ साठ टन शुद्ध चाँदी दी है।
चाँदी मन्दिर के भवनों की दीवारों के ऊपर मढ़ने के
लिये है। **5**मैंने सोना और चाँदी उन सब चीजों के लिये
दी हैं जो सोने और चाँदी की बनी होती हैं। मैंने सोना
और चाँदी दिया है जिनसे कुशल कारीगर मन्दिर के
लिये सभी विभिन्न प्रकार की चीज़ें बना सकेंगे। अब
इस्राएल के लोगों, आप लोगों में से कितने आज यहोवा
के लिये अपने को अर्पित करने के लिये तैयार हैं?"

6परिवारों के प्रमुख, इस्राएल के परिवार समूहों के
प्रमुख, सेनाध्यक्ष, राजा के काम करने के लिये उत्तरदायी
अधिकारी, सभी तैयार थे और उन्होंने बहुमूल्य चीज़ें
दीं। **7**ये वे चीज़ें हैं जो उन्होंने परमेश्वर के गृह के लिये
दीं: एक सौ नब्बे टन सोना, तीन सौ पचहत्तर टन चाँदी,
छ:सौ पचहत्तर टन काँसा; तीन हजार सात सौ पचास
टन लोहा; **8**जिन लोगों के पास कीमती रत्न थे उन्होंने
यहोवा के मन्दिर के लिये दिये। यहीएल कीमती रत्नों

का रक्षक बना। यहीएल गेर्शोन के परिवार में से था।
9लोग बहुत प्रसन्न थे क्योंकि उनके प्रमुख उतना अधिक
देने में प्रसन्न थे। प्रमुख स्वतन्त्रता पूर्वक खुले दिल से
देने में प्रसन्न थे। राजा दाऊद भी बहुत प्रसन्न था।

दाऊद की सुन्दर प्रार्थना

10तब दाऊद ने उन लोगों के सामने, जो वहाँ एक
साथ इकट्ठे थे, यहोवा की प्रशंसा की। दाऊद ने कहा:
"यहोवा इस्राएल का परमेश्वर, हमारा पिता, सदा–सदा
के लिये तेरी स्तुति हो! 11महानता, शक्ति, यश, विजय
और प्रतिष्ठा तेरी है! क्यों? क्योंकि हर एक चीज़ धरती
और आसमान की तेरी ही है! हे यहोवा! राज्य तेरा है;
तू हर एक के ऊपर शासक है। 12सम्पत्ति और प्रतिष्ठा
तुझसे आती है। तेरा शासन हर एक पर है। तू शक्ति
और बल अपने हाथ में रखता है! तेरे हाथ में शक्ति है
कि तू किसी को– महान और शक्तिशाली बनाता है!

13अब, हमारे परमेश्वर हम तुझको धन्यवाद देते हैं,
और हम तेरे यशस्वी नाम की स्तुति करते हैं!

14ये सभी चीजें मुझसे और मेरे लोगों से नहीं आई हैं!
ये सभी चीज़ें तुझ से आई और हमने तुझको वे चीज़ें दीं
जो तुझसे आई हैं ।

15हम अजनबी और यात्रियों के समान हैं! हमारे सारे
पूर्वज भी अजनबी हैं, और यात्री रहे। इस धरती पर
हमारा समय जाती हुई छाया सा है और हम इसे नहीं
पकड़ सकते,

16हे यहोवा हमारा परमेश्वर, हमने ये सभी चीज़ें तेरा
मन्दिर बनाने के लिये इकट्ठी की हैं। हम लोग तेरा
मन्दिर तेरे नाम के सम्मान के लिये बनायेंगे किन्तु ये
सभी चीज़ें तुझसे आई हैं हर चीज़ तेरी है।

17मेरे परमेश्वर, मैं यह भी जानता हूँ तू लोगों के
हृदयों की जाँच करता है, और तू प्रसन्न होता है, यदि
लोग अच्छे काम करते हैं मैं सच्चे हृदय से ये सभी चीज़े
देने में प्रसन्न था। अब मैंने तेरे लोगों को वहाँ इकट्ठा
देखा जो ये चीज़ें तुझको देने में प्रसन्न हैं।

18हे यहोवा, तू परमेश्वर है हमारे पूर्वज इब्राहीम,
इसहाक और इस्राएल का। कृपया तू लोगों की सहायता
सही योजना बनाने में कर उन्हें तेरे प्रति विश्वास योग्य
और सच्चा होने में कर।

19और मेरे पुत्र सुलैमान को तेरे प्रति सच्चा होने में
सहायता दे तेरे विधियों, नियमों और आदेशों को सर्वदा
पालन करने में उसकी सहायता कर। उन कामों को
करने में सुलैमान की सहायता कर और उस महल को
बनाने में उसकी सहायता कर जिसकी योजना मैंने
बनाई है।"

20तब दाऊद ने वहाँ एक साथ इकट्ठे सभी समूहों के
लोगों से कहा, "अब यहोवा, अपने परमेश्वर की स्तुति
करो।" अत: सब ने यहोवा परमेश्वर, उस परमेश्वर
को जिसकी उपासना उनके पूर्वजों ने की, स्तुति की।
उन्होंने यहोवा तथा राजा को सम्मान देने के लिये
धरती पर माथा टेक कर प्रणाम किया।

सुलैमान राजा होता है

21अगले दिन लोगों ने यहोवा को बलि भेंट दी। उन्होंने
यहोवा को होमबलि दी। उन्होंने एक हजार बैल, एक
हजार मेढ़ें एक हजार मेमनें भेंट में दिये और उन्होनें
पेय–भेंट भी दी। इस्राएल के लोगों के लिये वहाँ अनेकानेक
बलिदान किये गये। 22उस दिन लोगों ने खाया और
पिया और यहोवा वहाँ उनके साथ था। वे बहुत प्रसन्न
थे और उन्होंने दाऊद के पुत्र सुलैमान को दूसरी बार
राजा बनाया।* उन्होंने सुलैमान का अभिषेक राजा के
रूप में किया और उन्होंने सादोक का अभिषेक याजक
बनाने के लिये किया। उन्होंने यह उस स्थान पर किया
जहाँ यहोवाथा।

23तब सुलैमान राजा के रूप में यहोवा के सिहांसन
पर बैठा। सुलैमान ने अपने पिता का स्थान लिया।
सुलैमान बहुत सफल रहा। इस्राएल के सभी लोग सुलैमान
का आदेश मानते थे। 24सभी प्रमुख, सैनिक और राजा
दाऊद के सभी पुत्रों ने सुलैमान को राजा के रूप में
स्वीकार किया और उसकी आज्ञा का पालन किया।
25यहोवा ने सुलैमान को बहुत महान बनाया। इस्राएल
के सभी लोग जानते थे कि यहोवा सुलैमान को महान
बना रहा है। यहोवा ने सुलैमान को वह सम्मान दिया जो
एक राजा को मिलना चाहिये। सुलैमान के पहले इस्राएल
के किसी राजा को यह सम्मान नहीं मिला।

दाऊद की मृत्यु

26-27यिशै का पुत्र दाऊद पूरे इस्राएल पर चालीस वर्ष
तक राजा रहा। दाऊद हेब्रोन नगर में सात वर्ष तक
राजा रहा। तब दाऊद यरूशलेम में तैंतीस वर्ष तक राजा
रहा। 28दाऊद तब मरा जब वह बूढ़ा था। दाऊद ने एक
अच्छा लम्बा जीवन बिताया था। दाऊद के पास बहुत
सम्पत्ति और प्रतिष्ठा थी और दाऊद का पुत्र सुलैमान
उसके बाद राजा बना।

29वे कार्य, जो आरम्भ से लेकर अन्त तक दाऊद ने
किये, सभी शमूएल दृष्टा की रचनाओं में और नातान
नबी की रचनाओं में तथा गाद दृष्टा की रचनाओं में
लिखे हैं। 30वे रचनायें इस्राएल के राजा के रूप में
दाऊद ने जो काम किये, उन सब की सूचना देती हैं। वे
दाऊद की शक्ति और उसके साथ जो घटा, उसके
विषय में भी बताती हैं और वे इस्राएल और उसके चारों
ओर के राज्यों में जो हुआ, उसके बारे में बताती हैं।

और ... राजा बनाया सुलैमान र ाजा होने के लिये पहली बार तब चुना गया, जब उसके सौतेला भाई अदोनिय्याह ने अपने को राजा बनाने का प्रयत्न किया। देखें 1राजा 1:5–39

2 इतिहास

सुलैमान बुद्धि की याचना करता है

1 सुलैमान एक बहुत शक्तिशाली राजा बन गया क्योंकि
यहोवा उसका परमेश्वर, उसके साथ था। यहोवा ने
सुलैमान को अत्यधिक महान बनाया।
2सुलैमान ने इस्राएल के सभी लोगों से बातें की। उसने
सेना के शतपतियों, सहस्त्रपतियों, न्यायाधीशों, सारे
इस्राएल के सभी प्रमुखों तथा परिवारों के प्रमुखों से बातें
की। 3तब सुलैमान और सभी लोग उसके साथ इकट्ठे
हुए और उस उच्चस्थान को गये जो गिबोन नगर में था।
परमेश्वर का मिलाप का तम्बू वहाँ था। यहोवा के
सेवक मूसा ने उसे तब बनाया था जब वह और इस्राएल
के लोग मरुभूमि में थे। 4दाऊद परमेश्वर के साक्षीपत्र
के सन्दूक को किर्यत्यारीम से यरुशलेम तक लाया था।
दाऊद ने यरुशलेम में इसको रखने के लिये एक स्थान
बनाया था। दाऊद ने यरुशलेम में साक्षीपत्र के सन्दूक
के लिए एक तम्बू लगा दिया था। 5बसलेल ने एक काँसे
की वेदी बनाई थी। बसलेल ऊरी का पुत्र था। वह काँसे
की वेदी गिबोन में पवित्र तम्बू के सामने थी। इसलिए
सुलैमान और वे लोग यहोवा से राय लेने गिबोन गए।
6मिलाप के तम्बू में यहोवा के सामने काँसे की वेदी
तक सुलैमान गया। सुलैमान ने एक हजार होमबलि वेदी
पर चढ़ाई।

7उस रात परमेश्वर सुलैमान के पास आया। परमेश्वर
ने कहा, "सुलैमान, मुझसे तुम वह माँगों जो कुछ तुम
चाहते हो कि मैं तुम्हें दूँ।"

8सुलैमान ने परमेश्वर से कहा, "तू मेरे पिता दाऊद
के प्रति बहुत कृपालु रहा है। तूने मुझे, मेरे पिता के
स्थान पर नया राजा होने के लिये चुना है। 9यहोवा
परमेश्वर, अब, तूने जो वचन मेरे पिता को दिया है उसे
बने रहने दे। तूने मुझे ऐसी प्रजा का शासक बनाया, जो
पृथ्वी के रेतकणों की तरह असंख्य है! 10अब तू मुझे
बुद्धि और ज्ञान दे। तब मैं इन लोगों को सही राह पर ले
चल सकूँगा। कोई भी तेरी सहायता के बिना इन पर
शासन नहीं कर सकता!"

11परमेश्वर ने सुलैमान से कहा, "तुम्हारी भावनायें
बिल्कुल ठीक हैं। तुमने धन या सम्पत्ति या सम्मान नहीं
माँगा है। तुमने यह भी नहीं माँगा है कि तुम्हारे शत्रु मर
जायें। तुमने लम्बी उम्र भी नहीं माँगी है। किन्तु तुमने
अपने लिये बुद्धि और ज्ञान माँगा है। जिससे तुम मेरी
प्रजा के सम्बन्ध में बुद्धिमता से निर्णय ले सको, जिसका
मैंने तुमको राजा बनाया है। 12इसलिये मैं तुम्हें बुद्धि
और ज्ञान दूँगा। मैं तुम्हें धन, वैभव और सम्मान भी
दूँगा। तुम्हारे पहले होने वाले राजाओं के पास इतना धन
और इतना सम्मान कभी नहीं था और तुम्हारे बाद होने
वाले राजाओं के पास भी इतना धन और सम्मान नहीं
होगा।"

13इस प्रकार, सुलैमान आराधना के स्थान गिबोन
को गया। तब सुलैमान ने उस मिलापवाले तम्बू को
छोड़ा और यरूशलेम लौट गया और इस्राएल पर राज्य
करने लगा।

सुलैमान धन-संग्रह और अपनी सेना खड़ी करता है

14सुलैमान ने घोड़े और रथ अपनी सेना के लिये
एकत्रित करना आरम्भ किया। सुलैमान के पास एक
हजार चार सौ रथ और बारह हजार घुड़सवार थे।
सुलैमान ने उनको रथ नगरों में रखा। सुलैमान ने
यरुशलेम में भी उनमें से कुछ को रखा, अर्थात वहाँ
जहाँ राजा का निवास था। 15सुलैमान ने यरुशलेम में
बहुत सा चाँदी और सोना इकट्ठा किया। उसने इतना
अधिक चाँदी और सोना इकट्ठा किया कि वह चट्टानों
सा सामान्य हो गया। सुलैमान ने देवदार की बहुत सी
लकड़ी इकट्ठी की। उसने देवदार की इतनी अधिक
लकड़ी इकट्ठी की, कि वह पश्चिमी पहाड़ी प्रदेश के
गूलर के वृक्ष समान सामान्य हो गयी। 16सुलैमान ने
मिस्र और कुए (या कोये देश से) से घोड़े मँगाए। राजा
के व्यापारियों ने घोड़े कोये में खरीदे। 17सुलैमान के
व्यापारियों ने मिस्र से एक रथ चाँदी के छः सौ शेकेल में
और घोड़ा चाँदी के एक सौ पचास शेकेल में खरीदा।
तब व्यापारियों ने घोड़ों और रथों को हित्ती लोगों के
राजाओं तथा अराम के राजाओं के हाथ बेच दिया।

सुलैमान मन्दिर बनाने की योजना बनाता है

2 सुलैमान ने यहोवा के नाम की प्रतिष्ठा के लिये
एक मन्दिर और अपने लिये एक राजमहल बनाने
का निश्चय किया। 2सुलैमान ने चीज़े लाने के लिए
सत्तर हजार व्यक्तियों को चुना और पहाड़ी प्रदेश में

पत्थर खोदने के लिये अस्सी हजार व्यक्तियों को चुना
और उसने तीन हजार छ: सौ व्यक्ति मज़दूरों की निगरानी
के लिये चुने।
3तब सुलैमान ने हूराम को संदेश भेजा। हूराम सोर
नगर का राजा था। सुलैमान ने संदेश दिया था, "मुझे
वैसे ही सहायता दो जैसे तुमने मेरे पिता दाऊद को
सहायता दी थी। तुमने देवदार के पेड़ों से उनको
लकड़ी भेजी थी जिससे वे अपने रहने के लिए महल
बना सके थे। 4मैं अपने यहोवा परमेश्वर के नाम का
सम्मान करने के लिये एक मन्दिर बनाऊँगा। मैं यह
मन्दिर यहोवा को अर्पित करुँगा जिसमे हमारे लोग
उसकी उपासना कर सकेंगे। मैं उसको इस कार्य के
लिये अर्पित करूँगा कि उसमे इस्राएली जाति के स्थायी
धर्मप्रथा के अनुसार हमारे यहोवा परमेश्वर के पवित्र
विश्राम दिवसों और नवचन्द्र तथा निर्धारित पर्वो पर
सवेरे और शाम सुगन्धित धूप द्रव्य जलाये जायें, भेंट की
रोटियाँ अर्पित की जायें और अग्निबलि चढ़ायी जाये।
5"जो मन्दिर मैं बनाऊँगा वह महान होगा, क्योंकि
हमारा परमेश्वर सभी देवताओं से बड़ा है। 6किन्तु कोई
भी व्यक्ति सही अर्थ में हमारे परमेश्वर के लिये भवन
नहीं बना सकता। स्वर्ग हाँ, उच्चतम स्वर्ग भी परमेश्वर
को अपने भीतर नहीं रख सकता! मैं परमेश्वर के
लिये मन्दिर नहीं बना सकता। मैं केवल एक स्थान
परमेश्वर के सामने सुगन्धि जलाने के लिये बना सकता
हूँ।
7"अब, मेरे पास सोना, चाँदी, काँसा और लोहे के
काम करने में एक कुशल व्यक्ति को भेजो। उस व्यक्ति
को इसका ज्ञान होना चाहिए कि बैंगनी, लाल, और
नीले कपड़ों का उपयोग कैसे किया जाता है। उस
व्यक्ति को यहाँ यहूदा और यरूशलेम में मेरे कुशल
कारीगरों के साथ नक्काशी करनी होगी। मेरे पिता
दाऊद ने इन कुशल कारीगरों को चुना था। 8मेरे पास
लबानोन देश से देवदार, चीड़ और चन्दन और सनोवर
की लकड़ियाँ भी भेजो। मैं जानता हूँ कि तुम्हारे सेवक
लबानोन से पेड़ों को काटने में अनुभवी हैं। मेरे सेवक
तुम्हारे सेवकों की सहायता करेंगे। 9क्योंकि मुझे प्रचुर
मात्रा में इमारती लकड़ी चाहिये। जो मन्दिर मैं बनवाने
जा रहा हूँ वह विशाल और अद्भुत होगा। 10मैंने एक
लाख पच्चीस हजार बुशल गेहूँ भोजन के लिये, एक
लाख पच्चीस हजार बुशल जौ, एक लाख पन्द्रह हजार
गैलन दाखमधु और एक लाख पन्द्रह हजार गैलन तेल
तुम्हारे उन सेवकों के लिये दिया है जो इमारती लकड़ी
के लिए पेड़ों को काटते हैं।"
11तब सोर के राजा हूराम ने सुलैमान को उत्तर दिया।
उसने सुलैमान को एक पत्र भेजा। पत्र में यह कहा गया
था: "सुलैमान, यहोवा अपने लोगों से प्रेम करता है। यही
कारण है कि उसने तुमको उनका राजा चुना।"
12हूराम ने यह भी कहा, "इस्राएल के यहोवा, परमेश्वर
की प्रशंसा करो! उसने धरती और आकाश बनाया।
उसने राजा दाऊद को बुद्धिमान पुत्र दिया। सुलैमान,
तुम्हें बुद्धि और समझ है। तुम एक मन्दिर यहोवा के
लिये बना रहे हो। तुम अपने लिए भी एक राजमहल
बना रहे हो। 13मैं तुम्हारे पास एक कुशल कारीगर
भेजूँगा। उसे विभिन्न प्रकार की बहुत सी कलाओं की
जानकारी है। उसका नाम हूराम–अबी है। 14उसकी माँ
दान के परिवार समूह की थी और उसका पिता सोर
नगर का था। हूराम–अबी सोना, चाँदी, काँसा, लोहा,
पत्थर और लकड़ी के काम में कुशल है। हूराम–अबी
बैंगनी, नीले, तथा लाल कपड़ों और बहुमूल्य मलमल
को काम में लाने में भी कुशल है और हूराम–अबी
नक्काशी के काम में भी कुशल है। हर किसी योजना
को, जिसे तुम दिखाओगे, समझने में वह कुशल है। वह
तुम्हारे कुशल कारीगरों की सहायता करेगा और वह
तुम्हारे पिता राजा दाऊद के कुशल कारीगरों की सहायता
करेगा।
15"तुमने गेहूँ, जौ, तेल और दाखमधु भेजने का जो
वचन दिया था, कृपया उसे मेरे सेवकों के पास भेज दो
16और हम लोग लबानोन देश से लकड़ी काटेंगे। हम
लोग उतनी लकड़ी काटेंगे जितनी तुम्हें आवश्यकता है।
हम लोग समुद्र में लकड़ी के लट्ठों के बेड़े का उपयोग
जापा नगर तक लकड़ी पहुँचाने के लिये करेंगे। तब
तुम लकड़ी को यरूशलेम ले जा सकते हो।"
17तब सुलैमान ने इस्राएल में रहने वाले सभी बाहरी
लोगों को गिनवाया। यह उस समय के बाद हुआ जब
दाऊद ने लोगों को गिना था। दाऊद, सुलैमान का पिता
था। उन्हें एक लाख तिरपन हजार बाहरी लोग देश में
मिले। 18सुलैमान ने सत्तर हजार बाहरी लोगों को चीज़ें
ढोने के लिये चुना। सुलैमान ने अस्सी हजार बाहरी
लोगों को पर्वतों में पत्थर काटने के लिए चुना और
सुलैमान ने तीन हजार छ: सौ बाहरी लोगों को काम
पर लगाये रखने के लिए निरीक्षक रखा।

सुलैमान मन्दिर बनाता है

3 सुलैमान ने यहोवा का मन्दिर मोरिय्याह पर्वत पर
यरूशलेम में बनाना आरम्भ किया। पर्वत मोरिय्याह
वह स्थान है जहाँ यहोवा ने सुलैमान के पिता दाऊद को
दर्शन दिया था। सुलैमान ने उसी स्थान पर मन्दिर
बनाया जिसे दाऊद तैयार कर चुका था। यह स्थान उस
खलिहान में था जो ओर्नान का था। ओर्नान यबूसी लोगों
में से एक था। 2सुलैमान ने इस्राएल में अपने शासन के
चौथे वर्ष के दूसरे महीने में मन्दिर बनाना आरम्भ
किया।
3सुलैमान ने परमेश्वर के मन्दिर की नींव के निर्माण
के लिये जिस माप का उपयोग किया, वह यह है: नींव

साठ हाथ लम्बी और बीस हाथ चौड़ी थी। सुलैमान ने
प्राचीन हाथ की माप का ही उपयोग तब किया जब
उसने मन्दिर को नापा। 4मन्दिर के सामने का द्वार
मण्डप बीस हाथ लम्बा और बीस हाथ ऊँचा था। सुलैमान
ने द्वार मण्डप के भीतरी भाग को शुद्ध सोने से मढवाया
5सुलैमान ने बड़े कमरों की दीवार पर सनोवर लकड़ी
की बनी चौकोर सिल्लियाँ रखीं। तब उसने सनोवर की
सिल्लियों को शुद्ध सोने से मढ़ा और उसने शुद्ध सोने
पर खजूर के चित्र और जंजीरें बनाई। 6सुलैमान ने
मन्दिर की सुन्दरता के लिये उसमें बहुमूल्य रत्न
लगाए। जिस सोने का उपयोग सुलैमान ने किया वह
पर्वैम से आया था। 7सुलैमान ने मन्दिर के भीतरी
भवन को सोने से मढ़ दिया। सुलैमान ने छत की कड़ियाँ,
चौखटों, दीवारों और दरवाजों पर सोना मढ़वाया। सुलैमान
ने दीवारों पर करूब (स्वर्गदूतों) को खुदवाया।

8तब सुलैमान ने सर्वाधिक पवित्र स्थान बनाया।
सर्वाधिक पवित्र स्थान बीस हाथ लम्बा और बीस हाथ
चौड़ा था। यह उतना ही चौड़ा था जितना पूरा मन्दिर
था। सुलैमान ने सर्वाधिक पवित्र स्थान की दीवारों पर
सोना मढ़वाया। सोने का वजन लगभग बीस हजार चार
सौ किलोग्राम था। 9सोने की कीलों का वजन पाँच सौ
पच्हत्तर ग्राम था सुलैमान ने ऊपरी कमरों को सोने से
मढ़ दिया। 10सुलैमान ने दो करूब (स्वर्गदूत) सर्वाधिक
पवित्र स्थान पर रखने के लिये बनाये। कारीगरों ने
करूब स्वर्गदूतों को सोने से मढ़ दिया। 11करूब (स्वर्गदूतों)
का हर एक पँख पाँच हाथ लम्बा था। पंखों की पूरी
लम्बाई बीस हाथ थी। पहले करूब (स्वर्गदूत) का एक
पंख कमरे की एक ओर की दीवार को छूता था। दूसरा
पंख दूसरे करूब (स्वर्गदूत) के पंख को छूता था।
12दूसरे करूब (स्वर्गदूत) का दूसरा पंख कमरे की
दूसरी ओर की दूसरी दीवार को छूता था। 13करूब
(स्वर्गदूत) के पंख सब मिलाकर बीस हाथ फैले थे।
करूब (स्वर्गदूत) भीतर पवित्र स्थान की ओर देखते
हुए खड़े थे।

14उसने नीले, बैंगनी, लाल और कीमती कपड़ों तथा
बहुमूल्य सूती वस्त्रों से मध्यवर्ती पर्दे को बनवाया। परदे
पर करुबों के चित्र काढ़ दिए।

15सुलैमान ने मन्दिर के सामने दो स्तम्भ खड़े किये।
स्तम्भ पैंतिस हाथ ऊँचे थे। दोनों स्तम्भों का शीर्ष भाग
दो पाँच हाथ लम्बा था। 16सुलैमान ने जंजीरों के हार
बनाए। उसने जंजीरों को स्तम्भों के शीर्ष पर रखा।
सुलैमान ने सौ अनार बनाए और उन्हें जंजीरों से
लटकाया। 17तब सुलैमान ने मन्दिर के सामने स्तम्भ
खड़े किये। एक स्तम्भ दायीं ओर था। दूसरा स्तम्भ
बाँयी ओर खड़ा था। सुलैमान ने दायीं ओर के स्तम्भ
का नाम "याकीन" और सुलैमान ने बाँयी ओर के
स्तम्भ का नाम "बोअज़" रखा।

मन्दिर की सज्जा

4 सुलैमान ने वेदी बनाने के लिये काँसे का उपयोग
किया। वह काँसे की वेदी बीस हाथ लम्बी, बीस
हाथ चौड़ी और दस हाथ ऊँची थी। 2तब सुलैमान ने
पिघले काँसे का उपयोग एक विशाल हौज बनाने के
लिये किया। विशाल हौज गोल था और एक सिरे से
दूसरे सिरे तक इसकी नाप दस हाथ थी और यह पाँच
हाथ ऊँचा और दस हाथ घेरे वाला था। 3विशाल काँसे
के तालाब के सिरे के नीचे और चारों ओर तीस हाथ
की बैलों की आकृतियाँ ढाली गई थी। जब तालाब
बनाया गया तब उस पर दो पंक्तियों में बैल बनाए गए।
4वह विशाल काँसे का तालाब बारह बैलों की विशाल
प्रतिमा पर स्थित था। तीन बैल उत्तर की ओर देखते
थे। तीन बैल पश्चिम की ओर देखते थे। तीन बैल
दक्षिण की ओर देखते थे। तीन बैल पूर्व की ओर देखते
थे। विशाल काँसे का तालाब इन बैलों के ऊपर था।
सभी बैल अपने पिछले भागों को एक दूसरे के साथ
तथा केन्द्र के साथ मिलाए हुए खड़े थे। 5विशाल काँसे
का तालाब आठ सेंटीमीटर मोटा था। विशाल तालाब
का सिरा एक प्याले के सिरे की तरह था। सिरा खिली
हुई लिली की तरह था। इसमें छियासठ हजार लीटर आ
सकता था।

6सुलैमान ने दस चिलमचियाँ बनाई। उसने विशाल
काँसे के तालाब की दायीं ओर पाँच चिलमचियाँ रखीं
और सुलैमान ने काँसे के विशाल तालाब की बाँयी ओर
पाँच चिलमचियाँ रखीं। इन दस चिलमचियों का उपयोग
होमबलि के लिए चढ़ाई जाने वाली चीज़ों को धोने के
लिये होना था। किन्तु विशाल तालाब का उपयोग बलि
चढ़ाने के पहले याजकों के नहाने के लिये होना था।

7सुलैमान ने निर्देश के अनुसार सोने के दस दीपाधार
बनाए और उनको मन्दिर में रख दिया: पाँच दाहिनी
ओर और पाँच बाँयी ओर। 8सुलैमान ने दस मेज़ें बनाई
और उन्हें मन्दिर में रखा। मन्दिर में पाँच मेज़े दायीं थीं
और पाँच मेज़ें बाँयी। सुलैमान ने सौ चिलमचियाँ बनाने
के लिये सोने का उपयोग किया। 9सुलैमान ने एक
याजकों का आँगन, महाप्रांगन, और उसके लिए द्वार
बनाए। उसने आँगन में खुलने वाले दरवाज़ों को मढ़ने
के लिए काँसे का उपयोग किया। 10तब उसने विशाल
काँसे के तालाब को मन्दिर के दक्षिण पूर्व की ओर
दायीं ओर रखा।

11हूराम ने बर्तन, बेल्चे और कटोरों को बनाया। तब
हूराम ने परमेश्वर के मन्दिर में सुलैमान के लिये
अपने काम खतम किये। 12हूराम ने दोनों स्तम्भों और
दोनों स्तम्भों के शीर्षभाग के विशाल दोनों कटोरों को
बनाया था। हूराम ने दोनों स्तम्भों के शीर्ष भाग के
विशाल दोनों कटोरों को ढकने के लिये सज्जाओं के
जाल भी बनाए थे। 13हूराम चार सौ अनार दोनों सज्जा

जालों के लिये बनाए। हर एक जाल के लिए अनारों की
दो पक्तियाँ थीं। दोनों स्तम्भों के शीर्षभाग पर के विशाल
कटोरे जाल से ढके थे। 14हूराम ने आधार दण्ड और
उनके ऊपर के प्यालों को भी बनाया। 15हूराम ने एक
विशाल काँसे का तालाब और तालाब के नीचे बारह
बैल बनाए। 16हूराम ने बर्तन, बेल्चे, काँटे और सभी
चीज़ें राजा सुलैमान के यहोवा के मन्दिर के लिये बनाई।
ये चीज़ें कलई चढ़े काँसे की बनी थीं। 17राजा सुलैमान
ने पहले इन चीज़ों को मिट्टी के साँचे में ढाला। ये साँचे
सुक्कोत और सरेदा नगरों के बीच यरदन घाटी में बने
थे। 18सुलैमान ने ये इतनी अधिक मात्रा में बनाई कि
किसी व्यक्ति ने उपयोग में लाए गए काँसे को तोलने का
प्रयत्न नहीं किया।

19सुलैमान ने परमेश्वर के मन्दिर के लिये भी चीज़ें
बनाई। सुलैमान ने सुनहली वेदी बनाई। उसने वे मेज़ें
बनाई जिन पर उपस्थिति की रोटियाँ रखी जाती थीं।
20सुलैमान ने दीपाधार और उनके दीपक शुद्ध सोने के
बनाए। बनी हुई योजना के अनुसार दीपकों को पवित्र
स्थान के सामने भीतर जलना था। 21सुलैमान ने फूलों,
दीपकों और चिमटे को बनाने के लिए शुद्ध सोने का
उपयोग किया। 22सुलैमान ने सलाईयाँ, प्याले, कढ़ाईयाँ
और धूपदान बनाने के लिये शुद्ध सोने का उपयोग
किया। सुलैमान ने मन्दिर के दरवाजों, सर्वाधिक पवित्र
स्थान और मुख्य विशाल कक्ष के भीतरी दरवाजों को
बनाने के लिये शुद्ध सोने का उपयोग किया।

5 तब सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर के लिए किये गए
सभी काम पूरे कर लिए। सुलैमान उन सभी चीज़ों
को लाया जो उसके पिता दाऊद ने मन्दिर के लिये दी
थी। सुलैमान सोने चाँदी की बनी हुई वस्तुएँ तथा और
सभी सामान लाया। सुलैमान ने उन सभी चीज़ों को
परमेश्वर के मन्दिर के कोषागार में रखा।

पवित्र सन्दूक मन्दिर में पहुँचाया गया

2सुलैमान ने इस्राएल के सभी अग्रजों, परिवार समूहों
के प्रमुखों और इस्राएल में परिवार प्रमुखों को इकट्ठा
किया। उसने सभी को यरुशलेम में इकट्ठा किया।
सुलैमान ने यह इसलिये किया कि लेवीवंशी साक्षीपत्र
के सन्दूक को दाऊद के नगर से ला सकें। दाऊद का
नगर सिय्योन है। 3राजा सुलैमान से इस्राएल के सभी
लोग सातवें महीने के पर्व के अवसर पर एक साथ
मिले। 4जब इस्राएल के सभी अग्रज आ गए तब लेवीवंशियों
ने साक्षीपत्र के सन्दूक को उठाया। 5तब याजक और
लेवीवंशी साक्षीपत्र के सन्दूक को मन्दिर में ले गए।
याजक और लेवीवंशी मिलापवाले तम्बू तथा इसमें जो
पवित्र चीज़ें थीं उन्हें भी यरूशलेम ले आए।

6राजा सुलैमान और इस्राएल के सभी लोग साक्षीपत्र
के सन्दूक के सामने मिले। राजा सुलैमान और इस्राएल
के सभी लोगों ने भेड़ों और बैलों की बलि चढ़ाई। वहाँ
इतने अधिक मेढ़े व बैल थे कि कोई व्यक्ति उन्हें गिन
नहीं सकता था। 7तब याजकों ने यहोवा के साक्षीपत्र के
सन्दूक को उस स्थान पर रखा, जो इसके लिये तैयार
किया गया था। वह सर्वाधिक पवित्र स्थान मन्दिर के
भीतर था। साक्षीपत्र के सन्दूक को करुब (स्वर्गदूत) के
पंखों के नीचे रखा गया। 8साक्षीपत्र के सन्दूक के स्थान
के ऊपर करूबों के पंख फैले हुये थे, करूब (स्वर्गदूत)
साक्षीपत्र के सन्दूक के ऊपर खड़े थे। बल्लियाँ सन्दूक
को ले जाने में प्रयोग होती थी। 9बल्लियाँ इतनी लम्बी
थीं कि सर्वाधिक पवित्र स्थान के सामने से उनके सिरे
देखे जा सकें। किन्तु कोई व्यक्ति मन्दिर के बाहर से
बल्लियों को नहीं देख सकता था। बल्लियाँ, अब तक
आज भी वहाँ हैं। 10साक्षीपत्र के सन्दूक में दो शिलाओं
के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं था। मूसा ने दोनों शिलाओं
को होरेब पर्वत पर साक्षीपत्र के सन्दूक में रखा था।
होरेब वह स्थान था जहाँ यहोवा ने इस्राएल के लोगों के
साथ वाचा की थी। यह उसके बाद हुआ जब इस्राएल के
लोग मिस्र से चले आए।

11तब वे सभी याजक पवित्र स्थान से बाहर आए।
सभी वर्ग के याजकों ने अपने को पवित्र कर लिया था
12और सभी लेवीवंशी गायक वेदी के पूर्वी ओर खड़े
थे। सभी आसाप , हेमान और यदूतून के गायक समूह
वहाँ थे और उनके पुत्र तथा उनके सम्बन्धी भी वहाँ
थे। वे लेवीवंशी गायक सफेद बहुमूल्य मलमल के वस्त्र
पहने हुए थे। वे झाँझ, वीणा और सांरगी लिये थे। उन
लेवीवंशी गायकों के साथ वहाँ एक सौ बीस याजक थे।
वे एक सौ बीस याजक तुरही बजा रहे थे। 13जो तुरही
बजा रहे थे और गा रहे थे, वे एक व्यक्ति की तरह थे।
जब वे यहोवा की स्तुति करते थे और उसे धन्यवाद
देते थे तब वे एक ही ध्वनि करते थे। तुरही, झाँझ तथा
अन्य वाद्य यन्त्रों पर वे तीव्र घोष करते थे, उन्होंने
यहोवा की स्तुति में यह गीत गाया

"यहोवा की स्तुति करो क्योंकि वह भला है। उसका
प्रेम शाश्वत है।"

तब यहोवा का मन्दिर मेघ से भर उठा। 14मेघ के
कारण याजक सेवा कर न सके, इसका कारण था–
यहोवा की महिमा मन्दिर में भर गई थी।

6 तब सुलैमान ने कहा, "यहोवा ने कहा कि वह
काले घने बादल में रहेगा। 2हे यहोवा, मैंने एक
भवन तेरे रहने के लिये बनाया है। यह एक भव्य भवन
है। यह तेरे सर्वदा रहने का स्थान है!"

सुलैमान का भाषण

3राजा सुलैमान मुड़ा और उसने अपने सामने खड़े
सभी इस्राएल के लोगों को आशीर्वाद दिया। 4सुलैमान ने
कहा, "इस्राएल के परमेश्वर, यहोवा की प्रशंसा करो!

यहोवा ने वह कर दिया है जो करने का वचन उसने
तब दिया था जब उसने मेरे पिता दाऊद से बातें की थी।
परमेश्वर यहोवा ने यह कहा था: 5'जब से मैं अपने
लोगों को मिस्र से बाहर लाया तब से अब तक मैंने
इस्राएल के किसी परिवार समूह से कोई नगर नहीं चुना
है, जहाँ मेरे नाम का एक भवन बने। मैंने अपने निज
लोगों इस्राएलियों पर शासन करने के लिए भी किसी
व्यक्ति को नहीं चुना है। 6किन्तु अब मैंने यरुशलेम को
अपने नाम के लिये चुना है और मैंने दाऊद को अपने
इस्राएली लोगों का नेतृत्व करने के लिये चुना है।'

7"मेरे पिता दाऊद की यह इच्छा थी कि वह इस्राएली
राष्ट्र के यहोवा परमेश्वर के नाम की महिमा के लिए
एक मन्दिर बनवाये। 8किन्तु यहोवा ने मेरे पिता से
कहा, 'दाऊद, जब तुमने मेरे नाम पर मन्दिर बनाने की
इच्छा की तब तुमने ठीक ही किया। 9किन्तु तुम मन्दिर
बना नहीं सकते। किन्तु तुम्हारा अपना पुत्र मेरे नाम पर
मन्दिर बनाएगा।' 10अब, यहोवा ने वह कर दिया है जो
उसने करने को कहा था। मैं अपने पिता के स्थान पर
नया राजा हूँ। दाऊद मेरे पिता थे। अब मैं इस्राएल का
राजा हूँ। यहोवा ने यही करने का वचन दिया था। मैंने
इस्राएल के यहोवा परमेश्वर के नाम पर मन्दिर बनवाया
है। 11मैंने साक्षीपत्र के सन्दूक को मन्दिर में रखा है।
साक्षीपत्र का सन्दूक वहाँ है जहाँ यहोवा के साथ की
गई वाचा रखी जाती है। यहोवा ने यह वाचा इस्राएल के
लोगों के साथ की।"

सुलैमान की प्रार्थना

12सुलैमान यहोवा की वेदी के सामने खड़ा हुआ।
वह उन इस्राएल के लोगों के सामने खड़ा हुआ जो वहाँ
इकट्ठे हुए थे। तब सुलैमान ने अपने हाथों और अपनी
भुजाओं को फैलाया। 13सुलैमान ने एक काँसे का मंच
पाँच हाथ लम्बा, पाँच हाथ चौड़ा और तीन हाथ ऊँचा
बनाया था और इसे बाहरी आँगन के बीच में रखा था।
तब वह मंच पर खड़ा हुआ और इस्राएल के जो लोग
वहाँ इकट्ठे हुए थे उनकी उपस्थिति में घुटने टेके।
सुलैमान ने आकाश की ओर हाथ फैलाया। 14सुलैमान
ने कहा:

"हे इस्राएल के परमेश्वर, यहोवा, तेरे समान कोई भी
परमेश्वर न तो स्वर्ग में है, न ही धरती पर है। तू प्रेम
करने और दयालु बने रहने की वाचा का पालन करता
है। तू अपने उन सेवकों के साथ वाचा का पालन
करता है जो पूरे हृदय की सच्चाई से रहते हैं और तेरी
आज्ञा का पालन करते हैं। 15तूने अपने सेवक दाऊद
को दिये गए वचन को पूरा किया। दाऊद मेरा पिता था।
तूने अपने मुख से वचन दिया था, और आज तूने
अपने हाथों से इस वचन को पूरा किया है। 16अब, हे
यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर! तू अपने सेवक दाऊद
को दिये गये वचन को बनाये रख। तूने यह वचन दिया
था: तूने कहा था, 'दाऊद, तुम अपने परिवार से, मेरे
सामने इस्राएल के सिंहासन पर बैठने के लिए, एक
व्यक्ति को पाने में कभी असफल नहीं होगे। यही होगा
यदि तुम्हारे पुत्र उन सभी बातों में सावधान रहेंगे जिन्हें
वे करेंगे। उन्हें मेरे नियमों का पालन वैसे ही करना
चाहिए जैसा तुमने मेरे नियमों का पालन किया है।'
17अब, हे यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर अपने वचन को
पूरा होने दे। तूने यह वचन अपने सेवक दाऊद को
दिया था।

18"हे परमेश्वर, हम जानते हैं कि तू यथार्थ में, लोगों
के साथ धरती पर नहीं रहेगा। स्वर्ग, सर्वोच्च स्वर्ग भी
तुझको अपने भीतर रखने की क्षमता नहीं रखता और
हम जानते हैं कि यह मन्दिर जिसे मैंने बनाया है तुझको
अपने भीतर नहीं रख सकता। 19किन्तु हे यहोवा,
परमेश्वर तू हमारी प्रार्थना और कृपा याचना पर ध्यान
दे। हे यहोवा, मेरे परमेश्वर! तेरे लिये की गई मेरी
पुकार तू सुन। मैं तुझसे जो प्रार्थना कर रहा हूँ, सुन। मैं
तेरा सेवक हूँ। 20मैं प्रार्थना करता हूँ कि तेरी आँखे
मन्दिर को देखने के लिये दिन रात खुली रहें। तूने कहा
था कि तू इस स्थान पर अपना नाम अंकित करेगा।
मन्दिर को देखता हुआ जब मैं तुझसे प्रार्थना कर रहा हूँ
तो तू मेरी प्रार्थना सुन। 21मेरी प्रार्थनाएँ सुन और तेरे
इस्राएल के लोग जो प्रार्थना कर रहे हैं, उन्हें भी सुन।
जब हम तेरे मन्दिर को देखते हुए प्रार्थना कर रहे हैं तो
तू हमारी प्रार्थनाएँ सुन। तू स्वर्ग में जहाँ रहता है वहीं
से सुन और जब तू हमारी प्रार्थनाएँ सुने तो तू हमे क्षमा
कर।

22"कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के साथ कुछ
बुरा करने का दोषी हो सकता है। जब ऐसा होगा तो
दोषी व्यक्ति को, यह सिद्ध करने के लिए कि वह
निरपराध है, तेरा नाम लेना पड़ेगा। जब वह तेरी वेदी
के सामने शपथ लेने मन्दिर में आए तो 23स्वर्ग से सुन।
तू अपने सेवकों का फैसला कर और उसे कार्यान्वित
कर। दोषी को दण्ड दे और उसे उतना कष्ट होने दे
जितना कष्ट उसने दूसरे को दिया हो। यह प्रमाणित कर
कि जिस व्यक्ति ने ठीक कार्य किया है, वह निरपराध
है।

24"तेरे इस्राएलियों को किसी भी शत्रुओं से पराजित
होना पड़ सकता है, क्योंकि तेरे लोगों ने तेरे विरुद्ध पाप
किया है तब यदि इस्राएल के लोग तेरे पास लौटें और
तेरे नाम पर पाप स्वीकारें और इस मन्दिर में तुझसे
प्रार्थना और याचना करें 25तो स्वर्ग से सुन और अपने
लोगों, इस्राएल के पापों को क्षमा कर। उन्हें उस देश में
लौटा जिसे तूने उन्हें और उनके पूर्वजों को दिया था।

26"आसमान कभी ऐसे बन्द हो सकता है कि वर्षा न
हो। वह तब होगा जब इस्राएल के लोग तेरे विरुद्ध पाप

करेंगे और यदि इस्राएल के लोगों को इसका पश्चाताप होगा और मन्दिर को देखते हुए प्रार्थना करेंगे, तेरे नाम पर पाप स्वीकार करेंगे और वे पाप करना छोड़ देंगे क्योंकि तू उन्हें दण्ड देता है। 27तो स्वर्ग से तू उनकी सुन। तू उनकी सुन और उनके पापों को क्षमा कर। इस्राएल के लोग तेरे सेवक हैं। तब उन्हें सही मार्ग का उपदेश दे जिस पर वे चलें। तू अपनी भूमि पर वर्षा भेज। वही देश तूने अपने लोगों को दिया था।

28"देश में कोई अकाल या महामारी, या फसलों को बीमारी, या फफूँदी, या टिड्डी, या टिड्डे हो जाये या यदि इस्राएल के लोगों के नगरों में उनके शत्रु घेरा डाल दें, या यदि इस्राएल में किसी प्रकार की बीमारी हो 29और तब तेरे लोग अर्थात इस्राएल का कोई व्यक्ति प्रार्थना या याचना करे तथा हर एक व्यक्ति अपनी आपत्ति और पीड़ा को जानता रहे एवं यदि वह व्यक्ति इस मन्दिर को देखते हुए अपने हाथ और अपनी भुजायें उठाए 30तो तू उनकी स्वर्ग से सुन। स्वर्ग वही है जहाँ तू है। सुन और क्षमा कर। हर एक व्यक्ति को वह दे जो उसे मिलना चाहिये क्योंकि तू जानता है कि हर एक व्यक्ति के हृदय में क्या है। केवल तू ही जानता है कि व्यक्ति के हृदय में क्या है। 31तब लोग तुझसे डरेंगे और तेरी आज्ञा मानेंगे जब तक वे उस देश में रहेंगे जिसे तूने हमारे पूर्वजों को दिया था।

32"कोई ऐसा अजनबी हो सकता है जो इस्राएल के लोगों में से न हो, किन्तु वह उस देश से आया हो जो बहुत दूर हो और वह अजनबी तेरी प्रतिष्ठा, तेरी असीम शक्ति और तेरी दण्ड देने की क्षमता के कारण आया हो। जब वह व्यक्ति आए और इस मन्दिर को देखता हुआ प्रार्थना करे 33तब स्वर्ग से जहाँ तू रहता है, सुन और तू उसकी प्रार्थना का उत्तर दे। तब सारे संसार के राष्ट्र तेरा नाम जानेंगे और तेरा आदर वैसे करेंगे जैसे तेरे लोग अर्थात इस्राएली करते हैं और संसार के सभी लोग जानेंगे कि जिस मन्दिर को मैंने बनवाया है वह तेरे नाम से जाना जाता है।

34"जब तू अपने लोगों को किसी स्थान पर उनके शत्रुओं के साथ लड़ने के लिये भेजे और वे इस नगर की ओर देखकर प्रार्थना करें, जिसे तूने चुना है तथा इस मन्दिर की ओर देखें जिसे मैंने तेरे नाम पर बनाया है। 35तो उनकी प्रार्थना स्वर्ग से सुन। उनकी सहायता कर।

36"लोग तेरे विरुद्ध पाप करेंगे–कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जो पाप न करता हो और तू उन पर क्रोधित होगा। तू किसी शत्रु को उन्हें हराने देगा और उनसे पकड़े जाने देगा तथा बहुत दूर या निकट के देश में जाने पर मजबूर किये जाने देगा। 37किन्तु जब वे अपना विचार बदलेंगे और वे याचना करेंगे जबकि वे बन्दी बनाये जाने वाले देश में ही हैं। वे कहेंगे, 'हम लोगों ने पाप किया है, हम लोगों ने बुरा किया है तथा हम लोगों ने दुष्टता की है।' 38तब वे उस देश में जहाँ वे बन्दी हैं, अपने पूरे हृदय व आत्मा से तेरे पास लौटेंगे और इस देश की ओर जो तूने उनके पूर्वजों को दिया है, इस नगर की ओर जिसको तूने चुना है, और इस मन्दिर की ओर जो मैंने तेरे नाम की महिमा के लिए निर्मित किया है, उसकी ओर मुख करके प्रार्थना करेंगे। 39जब ऐसा हो तो तू स्वर्ग से उनकी सुन। स्वर्ग तेरा आवास है। उनकी प्रार्थना और याचना को स्वीकार कर और उनकी सहायता कर और अपने उन लोगों को क्षमा कर दे जिन्होंने तेरे विरुद्ध पाप किया है। 40अब, मेरे परमेश्वर, मैं तुझसे माँगता हूँ, तू अपने आँख और कान खोल ले। तू हम लोगों की, जो प्रार्थना इस स्थान पर कर रहे हैं उसे सुन और उस पर ध्यान दे।

41"अब, हे यहोवा परमेश्वर उठ और अपने विशेष स्थान पर आ, जहाँ साक्षीपत्र का सन्दूक, तेरी शक्ति प्रदर्शित करता है।अपने याजकों को मुक्ति धारण करने दे। हे यहोवा, परमेश्वर! अपने पवित्र लोगों को अपनी अच्छाई में प्रसन्न होने दे।

42हे यहोवा, परमेश्वर अपने अभिषिक्त राजा को स्वीकार कर। अपने सेवक दाऊद की स्वामी भक्ति को याद रख!"

मन्दिर यहोवा को अर्पित

7 जब सुलैमान ने प्रार्थना पूरी की तो आकाश से आग उतरी और उसने होमबलि और बलियों को जलाया। यहोवा के तेज ने मन्दिर को भर दिया। 2याजक यहोवा के मन्दिर में नहीं जा सकते थे क्योंकि यहोवा के तेज ने उसे भर दिया था। 3इस्राएल के सभी लोगों ने आकाश से आग को उतरते देखा। इस्राएल के लोगों ने मन्दिर पर भी यहोवा के तेज को देखा। उन्होंने अपने चेहरे को चबूतरे की फर्श तक झुकाया। उन्होंने यहोवा की उपासना की तथा उसे धन्यवाद दिया। उन्होंने गाया, "यहोवा भला है, और उसकी दया सदा रहती है।"*

4तब राजा सुलैमान और इस्राएल के सभी लोगों ने बलि यहोवा के सामने चढ़ाई। 5राजा सुलैमान ने बाईस हजार बैल और एक लाख बीस हजार भेड़ें भेंट कीं। राजा और सभी लोगों ने परमेश्वर के मन्दिर को पवित्र बनाया। इसका उपयोग केवल परमेश्वर की उपासना के लिये होता था। 6याजक अपना कार्य करने के लिये तैयार खड़े थे। लेवीवंशी भी यहोवा के संगीत के उपकरणों के साथ खड़े थे। ये उपकरण राजा दाऊद द्वारा यहोवा को धन्यवाद देने के लिये बनाए गए थे। याजक और लेवीवंशी कह रहे थे, "यहोवा का प्रेम सदैव रहता है!"

यहोवा भला ... रहती है देखें भजन. 136

जब लेवीवंशियों के दूसरी ओर याजक खड़े हुए तो
याजकों ने अपनी तुरहियाँ बजाई और इस्राएल के सभी
लोग खड़े थे।
7सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर के सामने वाले आँगन
के मध्य भाग को भी पवित्र किया। यह वही स्थान है
जहाँ सुलैमान ने होमबलि और मेलबलि की चर्बी चढ़ाई।
सुलैमान ने आँगन का मध्य भाग काम में लिया क्योंकि
काँसे की वेदी पर जिसे सुलैमान ने बनाई थी, सारी
होमबलि, अन्नबलि और चर्बी नहीं आ सकती थी वैसी
भेंटें बहुत अधिक थीं।
8सुलैमान और इस्राएल के सभी लोगों ने सात दिनों
तक दावतों का उत्सव मनाया। सुलैमान के साथ लोगों
का एक बहुत बड़ा समूह था। वे लोग उत्तर दिशा के
हमथ नगर के प्रवेश द्वार तथा दक्षिण के मिस्र के झरने
जैसे सुदूर क्षेत्रों से आये थे। 9आठवें दिन उन्होंने एक
धर्मसभा की क्योंकि वे सात दिन उत्सव मना चुके थे।
उन्होंने वेदी को पवित्र किया और इसका उपयोग केवल
यहोवा की उपासना के लिये होना था और उन्होंने सात
दिन दावत का उत्सव मनाया। 10सातवें महीने के तेईसवें
दिन सुलैमान ने लोगों को वापस उनके घर भेज दिया।
लोग बड़े प्रसन्न थे और उनका हृदय आनन्द से भरा
था क्योंकि यहोवा दाऊद, सुलैमान और अपने इस्राएल
के लोगों के प्रति बहुत भला था।

यहोवा सुलैमान के पास आता है

11सुलैमान ने यहोवा का मन्दिर और राजमहल को
पूरा कर लिया। सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर और
अपने आवास में जो कुछ करने की योजना बनाई थी
उसमें उसे सफलता मिली। 12तब यहोवा सुलैमान के
पास रात को आया। यहोवा ने उससे कहा, “सुलैमान,
मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुनी है और मैंने इस स्थान को
अपने लिए बलि के गृह के रूप में चुना है। 13जब मैं
आकाश को बन्द करता हूँ तो वर्षा नहीं होती या मैं
टिड्डियों को आदेश देता हूँ कि वे देश को नष्ट करें या
अपने लोगों में बीमारी भेजता हूँ, 14और मेरे नाम से
पुकारे जाने वाले लोग यदि विनम्र होते तथा प्रार्थना
करते हैं, और मुझे ढूढ़ते हैं और अपने बुरे रास्तों से दूर
हट जाते हैं तो मैं स्वर्ग से उनकी सुनूँगा और मैं उनके
पाप को क्षमा करुँगा और उनके देश को अच्छा कर
दूँगा। 15अब, मेरी आँखे खुली हैं और मेरे कान इस
स्थान पर की गई प्रार्थनाओं पर ध्यान देंगे। 16मैंने इस
मन्दिर को चुना है और मैंने इसे पवित्र किया है जिससे
मेरा नाम यहाँ सदैव रहे। हाँ, मेरी आँखे और मेरा हृदय
इस मन्दिर में सदा रहेगा।
17“अब सुलैमान, यदि तुम मेरे सामने वैसे ही रहोगे
जैसे तुम्हारा पिता दाऊद रहा, यदि तुम उन सभी का
पालन करोगे जिनके लिए मैंने आदेश दिया है और यदि
तुम मेरे विधियों और नियमों का पालन करोगे। 18तब
मैं तुम्हें शक्तिशाली राजा बनाऊँगा और तुम्हारा राज्य
विस्तृत होगा। यही वाचा है जो मैंने तुम्हारे पिता दाऊद
से की है। मैंने उससे कहा था, ‘दाऊद, तुम अपने
परिवार में एक ऐसा व्यक्ति सदा पाओगे जो इस्राएल में
राजा होगा।’
19“किन्तु यदि तुम मेरे नियमों और आदेशों को नहीं
मानोगे जिन्हें मैंने दिया है और तुम अन्य देवताओं की
पूजा और सेवा करोगे, 20तब मैं इस्राएल के लोगों को
अपने उस देश से बाहर करुँगा जिसे मैंने उन्हें दिया है।
मैं इस मन्दिर को अपनी आँखों से दूर कर दूँगा। जिसे
मैंने अपने नाम के लिये पवित्र बनाया है। मैं इस मन्दिर
को ऐसा कुछ बनाऊँगा कि सभी राष्ट्र इसकी बुराई
करेंगे। 21हर एक व्यक्ति जो इस प्रतिष्ठित मन्दिर के
पास से गुजरेगा, आश्चर्य करेगा। वे कहेंगे, ‘यहोवा ने
ऐसा भयंकर काम इस देश और इस मन्दिर के साथ
क्यों किया?’ 22तब लोग उत्तर देंगे, ‘क्योंकि इस्राएल के
लोगों ने यहोवा, परमेश्वर जिसकी आज्ञा का पालन
उनके पूर्वज करते थे, उसकी आज्ञा पालन करने से
इन्कार कर दिया। वह ही परमेश्वर है जो उन्हें मिस्र
देश के बाहर ले आया। किन्तु इस्राएल के लोगों ने अन्य
देवताओं को अपनाया। उन्होंने मूर्ति रूप में देवताओं
की पूजा और सेवा की। यही कारण है कि यहोवा ने
इस्राएल के लोगों पर इतना सब भयंकर घटित कराया
है।’”

सुलैमान के बसाए नगर

8 यहोवा के मन्दिर को बनाने और अपना महल
बनाने में सुलैमान को बीस वर्ष लगे। 2तब सुलैमान
ने पुन: उन नगरों को बनाया जो हूराम ने उसको दिये
और सुलैमान ने इस्राएल के कुछ लोगों को उन नगरों
में रहने की आज्ञा दे दी। 3इसके बाद सुलैमान सोबा के
हमात को गया और उस पर अधिकार कर लिया।
4सुलैमान ने मरुभूमि में तदमोर नगर बनाया। उसने
चीज़ों के संग्रह के लिए हमात में सभी नगर बनाए।
5सुलैमान ने उच्च बेथोरोन और निम्न बेथोरोन के
नगरों को पुन: बनाया। उसने उन नगरों को शक्तिशाली
गढ़ बनाया। वे नगर मजबूत दीवारों, फाटकों और
फाटकों में छड़ों वाले थे। 6सुलैमान ने बालात नगर को
फिर बनाया और अन्य नगरों को भी जहाँ उसने चीजों
का संग्रह किया। उसने सभी नगरों को बनाया जहाँ रथ
रखे गए थे तथा जहाँ सभी नगरों में घुड़सवार रहते थे।
सुलैमान ने यरूशलेम, लबानोन और उन सभी देशों में
जहाँ वह राजा था, जो चाहा बनाया।
7-8जहाँ इस्राएल के लोग रह रहे थे वहाँ बहुत से
अजनबी बचे रह गए थे। वे हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिव्वी
और यबूसी लोग थे। सुलैमान ने उन अजनबियों को

दास–मजदूर होने के लिये विवश किया। वे लोग इस्राएल
के लोगों में से नहीं थे। वे लोग उनके वंशज थे जो देश
में बचे रह गये थे और तब तक इस्राएल के लोगों द्वारा
नष्ट नहीं किये गए थे। यह अब तक चल रहा है।
9सुलैमान ने इस्राएल के किसी भी व्यक्ति को दास
मजदूर बनने को विवश नहीं किया। इस्राएल के लोग
सुलैमान के योद्धा थे। वे सुलैमान की सेना के सेनापति
और अधिकारी थे। वे सुलैमान के रथों के सेनापति
और सारथियों के सेनापति थे 10और इस्राएल के कुछ
लोग सुलैमान के महत्वपूर्ण अधिकारियों के प्रमुख थे।
ऐसे लोगों का निरीक्षण करने वाले ढाई सौ प्रमुख थे।

11सुलैमान दाऊद के नगर से फिरौन की पुत्री को
उस महल में लाया जिसे उसने उसके लिये बनाया था।
सुलैमान ने कहा, "मेरी पत्नी राजा दाऊद के महल में
नहीं रह सकती क्योंकि जिन स्थानों पर साक्षीपत्र का
सन्दूक रहा हो, वे स्थान पवित्र हैं।"

12तब सुलैमान ने यहोवा को होमबलि यहोवा की
वेदी पर चढ़ायी। सुलैमान ने उस वेदी को मन्दिर के द्वार
मण्डप के सामने बनाया। 13सुलैमान ने हर एक दिन
मूसा के आदेश के अनुसार बलि चढ़ाई। यह बलि सब्त
के दिन नवचन्द्र उत्सव को और तीन वार्षिक पर्वों को
दी जानी थीं। ये तीन वार्षिक पर्व अख़मीरी रोटी का पर्व
सप्ताहों का पर्व और आश्रय का पर्व थे। 14सुलैमान ने
अपने पिता दाऊद के निर्देशों का पालन किया। सुलैमान
ने याजकों के वर्ग उनकी सेवा के लिये चुने। सुलैमान
ने लेवीवंशियों को भी उनके कार्य के लिये चुना।
लेवीवंशियों को स्तुति में पहल करनी होती थी और
उन्हें मन्दिर की सेवाओं में जो कुछ नित्य किया जाना
होता था उनमें याजकों की सहायता करना था और
सुलैमान ने द्वारपालों को चुना जिनके समूहों को हर
द्वार पर सेवा करनी थी। इस पद्धति का निर्देश परमेश्वर
के व्यक्ति दाऊद ने दिया था। 15इस्राएल के लोगों ने
सुलैमान द्वारा याजकों और लेवीवंशियों को दिये गए
निर्देशों को न बदला, न ही उनका उल्लघंन किया।
उन्होंने किसी भी निर्देश में वैसे भी परिवर्तन नहीं किये
जैसे वे बहुमूल्य चीजों को रखने में करते थे।

16सुलैमान के सभी कार्य पूरे हो गए। यहोवा के
मन्दिर के आरम्भ होने से उसके पूरे होने के दिन तक
योजना ठीक बनी थी। इस प्रकार यहोवा का मन्दिर
पूरा हुआ।

17तब सुलैमान एस्योनगेबेर और एलोत नगरों को
गया। वे नगर एदोम प्रदेश में लाल सागर के निकट थे।
18हूराम ने सुलैमान को जहाज भेजे। हूराम के अपने
आदमी जहाजों को चला रहे थे। हुराम के व्यक्ति समुद्र
में जहाज चलाने में कुशल थे। हूराम के व्यक्ति सुलैमान
के सेवकों के साथ ओपीर गए और सत्रह टन सोना
लेकर राजा सुलैमान के पास लौटे।

शीबा की रानी सुलैमान के यहाँ आती है

9 शीबा की रानी ने सुलैमान का यश सुना। वह
यरूशलेम में कठिन प्रश्नों से सुलैमान की परीक्षा
लेने आई। शीबा की रानी अपने साथ एक बड़ा समूह
लेकर आई थी। उसके पास ऊँट थे जिन पर मसाले,
बहुत अधिक सोना और बहुमूल्य रत्न लदे थे। वह
सुलैमान के पास आई और उसने सुलैमान से बातें कीं।
उसे सुलैमान से अनेक प्रश्न पूछने थे। 2सुलैमान ने
उसके सभी प्रश्नों के उत्तर दिये। सुलैमान के लिए
व्याख्या करने या उत्तर देने के लिये कुछ भी अति
कठिन नहीं था। 3शीबा की रानी ने सुलैमान की बुद्धि
और उसके बनाए घर को देखा। 4उसने सुलैमान के
मेज के भोजन को देखा और उसके बहुत से महत्वपूर्ण
अधिकारियों को देखा। उसने देखा कि उसके सेवक
कैसे कार्य कर रहे हैं और उन्होंने कैसे वस्त्र पहन रखे
हैं उसने देखा कि उसके दाखमधु पिलाने वाले सेवक
कैसे कार्य कर रहें हैं और उन्होंने कैसे वस्त्र पहने हैं
उसने होमबलियों को देखा जिन्हें सुलैमान ने यहोवा
के मन्दिर में चढ़ाया था। जब शीबा की रानी ने इन
सभी चीजों को देखा तो वह चकित रह गई!

5तब उसने राजा सुलैमान से कहा, "मैंने अपने देश
में तुम्हारे महान कार्यो और तुम्हारी बुद्धिमत्ता के बारे
में जो कहानी सुनी है, वह सच है। 6मुझे इन
कहानियों पर तब तक विश्वास नहीं था जब तक मैं
आई नहीं और अपनी आँखों से देखा नहीं। ओह!
तुम्हारी बुद्धिमत्ता का आधा भी मुझसे नहीं कहा
गया है। तुम उन सुनी कहानियों में कहे गए रूप से
बड़े हो! 7तुम्हारी पत्नियाँ और तुम्हारे अधिकारी
बहुत भाग्यशाली हैं! वे तुम्हारे ज्ञान की बातें तुम्हारी
सेवा करते हुए सुन सकते हैं! 8तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा की प्रशंसा हो! वह तुम पर प्रसन्न है और उसने
तुम्हें अपने सिंहासन पर, परमेश्वर यहोवा के लिये,
राजा बनने के लिये बैठाया है। तुम्हारा परमेश्वर इस्राएल
से प्रेम करता है और इस्राएल की सहायता सदैव करता
रहेगा। यही कारण है कि यहोवा ने उचित और
ठीक–ठीक सब करने के लिये तुम्हें इस्राएल का राजा
बनाया है।"

9तब शीबा की रानी ने राजा सुलैमान को साढ़े चार
टन सोना, बहुत से मसाले और बहुमूल्य रत्न दिये।
किसी ने इतने अच्छे मसाले राजा सुलैमान को नहीं दिये
जितने अच्छे रानी शीबा ने दिये।

10हूराम के नौकर और सुलैमान के नौकर ओपीर
से सोना ले आए। वे चन्दन की लकड़ी और बहुमूल्य
रत्न भी लाए। 11राजा सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर एवं
महल की सीढ़ियों के लिये चन्दन की लकड़ी का
उपयोग किया। सुलैमान ने चन्दन की लकड़ी का उपयोग
गायकों के लिये वीणा और तम्बूरा बनाने के लिये भी

किया। यहूदा देश में चन्दन की लकड़ी से बनी उन
जैसी सुन्दर चीजें किसी ने कभी देखी नहीं थीं।
12जो कुछ भी शीबा देश की रानी ने राजा सुलैमान
से माँगा, वह उसने दिया। जो उसने दिया, वह उससे
अधिक था जो वह राजा सुलैमान के लिए लाई थी।
तत्तपश्चात् वह अपने सेवक सेविकाओं के साथ विदा
हुई। वह अपने देश लौट गई।

सुलैमान की प्रचुर सम्पत्ति

13एक वर्ष में सुलैमान ने जितना सोना पाया, उसका
वजन पच्चीस टन था। 14व्यापारी और सौदागर सुलैमान
के पास और अधिक सोना लाए। अरब के सभी राजा
और प्रदेशों के शासक भी सुलैमान के लिये सोना चाँदी
लाए। 15राजा सुलैमान ने सोने के पत्तर की दो सौ ढालें
बनाईं। लगभग 3.3 किलोग्राम पिटा सोना हर एक ढाल
के बनाने में उपयोग में आया था। 16सुलैमान ने तीन सौ
छोटी ढालें भी सोने के पत्तर की बनाईं। लगभग 1.65
किलोग्राम सोना हर एक ढाल के बनाने में उपयोग में
आया था। राजा सुलैमान ने सोने की ढालों को लबानोन
के वन–महल में रखा।
17राजा सुलैमान ने एक विशाल सिंहासन बनाने के
लिये हाथी–दाँत का उपयोग किया। उसने सिंहासन को
शुद्ध सोने से मढ़ा। 18सिंहासन पर चढ़ने की छः सीढ़ियाँ
थीं और इसका एक पद–पीठ था। वह सोने का बना
था। सिंहासन में दोनों ओर भुजाओं को आराम देने के
लिए बाजू लगे थे। हर एक बाजू से लगी एक–एक सिंह
की मूर्ति खड़ी थी। 19वहाँ छः सीढ़ियों से लगे बगल में
बारह सिंहों की मूर्तियाँ खड़ी थीं। हर सीढ़ी की हर ओर
एक सिंह था। इस प्रकार का सिंहासन किसी दूसरे
राज्य में नहीं बना था। 20राजा सुलैमान के सभी पीने के
प्याले सोने के बने थे। लबानोन वन–महल की सभी
प्रतिदिन की चीज़ें शुद्ध सोने की बनी थीं। सुलैमान के
समय में चाँदी मूल्यवान नहीं समझी जाती थी। 21राजा
सुलैमान के पास जहाज थे जो तर्शीश को जाते थे।
हूराम के आदमी सुलैमान के जहाजों को चलाते थे। हर
तीसरे वर्ष जहाज तर्शीश से सोना, चाँदी, हाथी–दाँत,
बन्दर और मोर लेकर सुलैमान के पास लौटते थे।
22राजा सुलैमान धन और बुद्धि दोनों में संसार के
किसी भी राजा से बड़ा हो गया। 23संसार के सारे राजा
उसको देखने और उसके बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णयों को सुनने
के लिये आए। परमेश्वर ने सुलैमान को वह बुद्धि दी।
24हर वर्ष वे राजा सुलैमान को भेंट लाते थे। वे चाँदी
सोने की चीजें, वस्त्र, कवच, मसाले, घोड़े और खच्चर
लाते थे।
25सुलैमान के पास चार हजार घोड़ों और रथों को
रखने के लिये अस्तबल थे। उसके पास बारह हजार
सारथी थे। सुलैमान उन्हें रथों के लिये विशेष नगरों में
रखता था और यरूशलेम में अपने पास रखता था।
26सुलैमान फरात नदी से लगातार पलिश्ती लोगों के देश
तक और मिस्र की सीमा तक के राजाओं का सम्राट
था। 27राजा सुलैमान ने चाँदी को पत्थर जैसा सस्ता बना
दिया और देवदार लकड़ी को पहाड़ी प्रदेश में गूलर के
पेड़ों जैसा सामान्य। 28लोग सुलैमान के लिये मिस्र और
अन्य सभी देशों से घोड़े लाते थे।

सुलैमान की मृत्यु

29आरम्भ से लेकर अन्त तक सुलैमान ने और जो
कुछ किया वह नातान नबी के लेखों, शीलो के अहिय्याह
की भविष्यवाणियों और इद्दो के दर्शनों में है। इद्दो ने
यारोबाम के बारे में लिखा। यारोबाम नबात का पुत्र था।
30सुलैमान यरुशलेम में पूरे इस्राएल का राजा चालीस
वर्ष तक रहा। 31तब सुलैमान अपने पूर्वजों के साथ
विश्राम करने गया। लोगों ने उसे उसके पिता दाऊद के
नगर में दफनाया। सुलैमान का पुत्र रहूबियाम सुलैमान
की जगह नया राजा हुआ।

रहूबियाम मूर्खतापूर्ण काम करता है

10 रहूबियाम शकेम नगर को गया क्योंकि इस्राएल
के सभी लोग उसे राजा बनाने के लिये वहीं
गए। 2यारोबाम मिस्र में था क्योंकि वह राजा सुलैमान
के यहाँ से भाग गया था। यारोबाम नबात का पुत्र था।
यारोबाम ने सुना कि रहूबियाम नया राजा होने जा रहा
है। इसलिये यारोबाम मिस्र से लौट आया। 3इस्राएल के
लोगों ने यारोबाम को अपने साथ रहने के लिये बुलाया।
तब यारोबाम तथा इस्राएल के सभी लोग रहूबियाम के
यहाँ गए। उन्होंने उससे कहा, "रहूबियाम, 4तुम्हारे पिता
ने हम लोगों के जीवन को कष्टकर बनाया। यह भारी
वजन ले चलने के समान था। उस वजन को हल्का
करो तो हम तुम्हारी सेवा करेंगे।"
5रहूबियाम ने उनसे कहा, "तीन दिन बाद लौटकर
मेरे पास आओ।" इसलिए लोग चले गए।
6तब राजा रहूबियाम ने उन बुजुर्ग लोगों से बातें कीं
जिन्होंने पहले उसके पिता की सेवा की थी। रहूबियाम
ने उनसे कहा, "आप इन लोगों से क्या कहने के लिये
सलाह देते हैं?"
7बुजुर्गों ने रहूबियाम से कहा, "यदि तुम उन लोगों के
प्रति दयालु हो और उन्हें प्रसन्न करते हो तथा उनसे
अच्छी बातें कहते हो तो वे तुम्हारी सेवा सदैव करेंगे।"
8किन्तु रहूबियाम ने बुजुर्गों की दी सलाह को स्वीकार
नहीं किया। रहूबियाम ने उन युवकों से बात की जो
उसके साथ युवा हुए थे और उसकी सेवा कर रहे थे।
9रहूबियाम ने उनसे कहा, "तुम लोग क्या सलाह देते
हो जिसे मैं उन लोगों से कहूँ? उन्होंने मुझसे अपने काम
को हल्का करने को कहा है और वे चाहते हैं कि मैं

अपने पिता द्वारा उन पर डाले गए वजन को कुछ कम करूँ।"

10तब उन युवकों ने जो रहूबियाम के साथ युवा हुए थे, उससे कहा, "जिन लोगों ने तुमसे बातें की उनसे तुम यह कहो। लोगों ने तुमसे कहा, 'तुम्हारे पिता ने हमारे जीवन को कष्टकर बनाया था। यह भारी वजन ले चलने के समान था। किन्तु हम चाहते हैं कि तुम हम लोगों के वजन को कुछ हल्का करो।' किन्तु रहूबियाम, तुम्हें यही उन लोगों से कहना चाहिए। उनसे कहो, 'मेरी छोटी उँगली भी मेरे पिता की कमर से मोटी होगी! 11मेरे पिता ने तुम पर भारी बोझ लादा। किन्तु मैं उस बोझ को बढ़ाऊँगा। मेरे पिता ने तुमको कोड़े लगाने का दण्ड दिया था। मैं ऐसे कोड़े लगाने का दण्ड दूँगा जिसकी छोर पर तेज धातु के टुकड़े हैं।'"

12राजा रहूबियाम ने कहा था: "तीसरे दिन लौटकर आना।" अत: तीसरे दिन यारोबाम और सब इस्राएली जनता राजा रहूबियाम के पास आए। 13तब राजा रहूबियाम ने उनसे नीचता से बात की। राजा रहूबियाम ने बुजुर्ग लोगों की सलाह न मानी। 14राजा रहूबियाम ने लोगों से वैसे ही बात की जैसे युवकों ने सलाह दी थी। उसने कहा, "मेरे पिता ने तुम्हारे बोझ को भारी किया था, किन्तु मैं उसे और अधिक भारी करुँगा। मेरे पिता ने तुम पर कोड़े लगाने का दण्ड दिया था, किन्तु मैं ऐसे कोड़े लगाने का दण्ड दूँगा जिनकी छोर में तेज धातु के टुकड़े होंगे।"

15इस प्रकार राजा रहूबियाम ने लोगों की एक न सुनी। उसने लोगों की एक न सुनी क्योंकि यह परिवर्तन परमेश्वर के यहाँ से आया। परमेश्वर ने ऐसा होने दिया। यह इसलिए हुआ कि यहोवा अपने उस वचन को सत्य प्रमाणित कर सके जो उन्होंने अहिय्याह के द्वारा यारोबाम को कहा था। अहिय्याह शीलो लोगों में से था और यारोबाम नबात का पुत्र था।

16इस्राएल के लोगों ने देखा कि राजा रहूबियाम उनकी एक नहीं सुनता। उन्होंने राजा से कहा, "क्या हम दाऊद के परिवार के अंग हैं? नहीं! क्या हमें यिशै की कोई भूमि मिलनी है? नहीं! इसलिये ऐ इस्राएलियों, हम लोग अपने शिविर में चलें। दाऊद की सन्तान को उसके अपने लोगों पर शासन करने दें!" तब इस्राएल के सभी लोग अपने शिविरों में लौट गए। 17किन्तु इस्राएल के कुछ ऐसे लोग थे जो यहूदा नगर में रहते थे और रहूबियाम उनका राजा था।

18हदोराम काम करने के लिये विवश किये जाने वाले लोगों का अधीक्षक था। रहूबियाम ने उसे इस्राएल के लोगों के पास भेजा। किन्तु इस्राएल के लोगों ने हदोराम पर पत्थर फेंके और उसे मार डाला। तब रहूबियाम भागा और अपने रथ में कूद पड़ा तथा बच निकला। वह भागकर यरूशलेम गया। 19उस समय से लेकर अब तक इस्राएली दाऊद के परिवार के विरुद्ध हो गए हैं।

11 जब रहूबियाम यरुशलेम आया, उसने एक लाख अस्सी हजार सर्वोत्तम योद्धाओं को इकट्ठा किया। उसने इन योद्धाओं को यहूदा और बिन्यामीन के परिवार समूहों से इकट्ठा किया। उसने इन्हें इस्राएल के विरुद्ध लड़ने के लिये तैयार किया जिससे वह राज्य को रहूबियाम को वापस लौटा सके। 2किन्तु यहोवा का सन्देश शमायाह के पास आया। शमायाह परमेश्वर का व्यक्ति था। यहोवा ने कहा, 3"शमायाह यहूदा के राजा, सुलैमान के पुत्र रहूबियाम से बातें करो और यहूदा तथा बिन्यामीन में रहने वाले सभी इस्राएल के लोगों से बातें करो। 4उनसे कहो, यहोवा यह कहता है: 'तुम्हें अपने भाईयों के विरुद्ध नहीं लड़ना चाहिये! हर एक व्यक्ति अपने घर लौट जाये। मैंने ही ऐसा होने दिया है।' इसलिये राजा रहूबियाम और उसकी सेना ने यहोवा का सन्देश माना और वे लौट गए। उन्होंने यारोबाम पर आक्रमण नहीं किया।

रहूबियाम यहूदा को शक्तिशाली बनाता है

5रहूबियाम यरुशलेम में रहने लगा। उसने आक्रमण के विरुद्ध रक्षा के लिये यहूदा में सुदृढ़ नगर बनाए। 6उसने बेतलेहेम, एताम, तकोआ, 7बेत्सूर, सोको, अदुल्लाम, 8गत, मारेशा, जीप, 9अदोरैम, लाकीश, अजेका, 10सोरा, अय्यालोन, और हेब्रोन नगरों की मरम्मत कराई। यहूदा और बिन्यामीन में ये नगर दृढ़ बनाए गए। 11जब रहूबियाम ने उन नगरों को दृढ़ बना लिया तो उनमें सेनापति रखे। उसने उन नगरों में भोजन, तेल और दाखमधु की पूर्ति की व्यवस्था की। 12रहूबियाम ने ढाल और भाले भी हर एक नगर में रखे और उन्हें बहुत शक्तिशाली बनाया। रहूबियाम ने यहूदा और बिन्यामीन के लोगों को अपने अधिकार में रखा।

13पूरे इस्राएल के याजक और लेवीवंशी रहूबियाम से सहमत थे और वे उसके साथ हो गए। 14लेवीवंशियों ने अपनी घास वाली भूमि और अपने खेत छोड़ दिए और वे यहूदा तथा यरूशलेम आ गए। लेवीवंशियों ने यह इसलिए किया कि यारोबाम और उसके पुत्रों ने उन्हें यहोवा के याजक के रूप में सेवा कराने से इन्कार कर दिया। 15यारोबाम ने अपने ही याजकों को वहाँ उच्च स्थानों पर सेवा करने के लिये नियुक्त किया जहाँ उसने बकरे और बछड़े की उन मूर्तियों को स्थापित की जिन्हें उसने बनाया था। 16जब लेवीवंशियों ने इस्राएल को छोड़ दिया तब इस्राएल के परिवार समूह के वे लोग जो इस्राएल के यहोवा परमेश्वर के प्रति विश्वास योग्य थे, यरूशलेम में यहोवा, अपने पूर्वजों के परमेश्वर को बलि चढ़ाने आए। 17उन लोगों ने यहूदा के राज्य को शक्तिशाली बनाया और उन्होंने सुलैमान के पुत्र रहूबियाम

को तीन वर्ष तक समर्थन दिया। वे ऐसा करते रहे
क्योंकि इस समय के बीच वे वैसे रहते रहे जैसे दाऊद
और सुलैमान रहे थे।

रहूबियाम का परिवार

18रहूबियाम ने महलत से विवाह किया। उसका पिता
यरीमोत था। उसकी माँ अबीहैल थी। यरीमोत दाऊद
का पुत्र था। अबीहैल एलीआब की पुत्री थी और एलीआब
यिशै का पुत्र था। 19महलत से रहूबियाम के ये पुत्र
उत्पन्न हुए: यूश, शमर्याह और जाहम। 20तब रहूबियाम
ने माका से विवाह किया। माका अबशलोम की पोती
थी और माका से रहूबियाम के ये बच्चे हुए: अबिय्याह,
अत्ते, जीजा और शलोमीत। 21रहूबियाम माका से सभी
अन्य पत्नियों और दासियों से अधिक प्रेम करता था।
माका अबशलोम की पोती थी। रहूबियाम की अट्ठारह
पत्नियाँ और साठ रखैल थीं। रहूबियाम अट्ठाईस पुत्रों
और साठ पुत्रियों का पिता था।

22रहूबियाम ने अपने भाईयों में अबिय्याह को प्रमुख
चुना। रहूबियाम ने यह इसलिये किया कि उसने अबिय्याह
को राजा बनाने की योजना बनाई। 23रहूबियाम ने
बुद्धिमानी से काम किया और उसने अपने लड़कों को
यहूदा और बिन्यामीन के पूरे देश में हर एक शक्तिशाली
नगर में फैला दिया और रहूबियाम ने अपने पुत्रों को
बहुत अधिक पुत्रियाँ भेजीं। उसने अपने पुत्रों के लिये
पत्नियों की खोज की।

मिस्री राजा शीशक का यरूशलेम पर आक्रमण

12 रहूबियाम एक शक्तिशाली राजा हो गया। उसने
अपने राज्य को भी शक्तिशाली बनाया। तब
रहूबियाम और यहूदा के सभी लोगों ने यहोवा के नियम
का पालन करने से इन्कार कर दिया। 2रहूबियाम के
राज्यकाल के पाँचवें वर्ष शीशक ने यरूशलेम पर
आक्रमण किया। शीशक मिस्र का राजा था। यह इसलिये
हुआ कि रहूबियाम और यहूदा के लोग यहोवा के प्रति
निष्ठावान नहीं थे। 3शीशक के पास बारह हजार रथ,
साठ हजार अश्वारोही, और एक सेना थी जिसे कोई
गिन नहीं सकता था। शीशक की सेना में लूबी, सुक्किय्यी
और कूशी सैनिक थे। 4शीशक ने यहूदा के शक्तिशाली
नगरों को पराजित कर दिया। तब शीशक अपनी सेना
को यरूशलेम लाया।

5तब शमायाह नबी रहूबियाम और यहूदा के प्रमुखों
के पास आया। यहूदा के वे प्रमुख यरूशलेम में इकट्ठे
हुए थे क्योंकि वे सभी शीशक से भयभीत थे। शमायाह
ने रहूबियाम और यहूदा के प्रमुखों से कहा, "यहोवा जो
कहता है वह यह है: 'रहूबियाम, तुम और यहूदा के
लोगों ने मुझे छोड़ दिया है और मेरे नियम का पालन
करने से इन्कार कर दिया है। इसलिए मैं तुमको अपनी
सहायता के बिना शीशक का सामना करने को
छोड़ूँगा।'"

6तब यहूदा के प्रमुखों और राजा रहूबियाम ने ग्लानि
का अनुभव करते हुये अपने को विनम्र किया और
कहा कि, "यहोवा न्यायी है।"

7यहोवा ने देखा कि राजा और यहूदा के प्रमुखों ने
अपने आप को विनम्र बनाया है। तब यहोवा का सन्देश
शमायाह के पास आया। यहोवा ने शमायाह से कहा,
"राजा और लोगों ने अपने को विनम्र किया है, इसलिये
मैं उन्हें नष्ट नहीं करुँगा अपितु मैं उन्हें शीघ्र ही बचाऊँगा।
मैं शीशक का उपयोग यरूशलेम पर अपना क्रोध
उतारने के लिये नहीं करुँगा। 8किन्तु यरुशलेम के लोग
शीशक के सेवक हो जाएंगे। यह इसलिये होगा कि वे
सीख सकें कि मेरी सेवा करना दूसरे राष्ट्रों के राजाओं
की सेवा करने से भिन्न है।"

9शीशक ने यरुशलेम पर आक्रमण किया और यहोवा
के मन्दिर में जो खजाना था, ले गया। शीशक मिस्र का
राजा था और उसने उस खजाने को भी ले लिया जो
राजा के महल में था। शीशक ने हर एक चीज ली और
उनके खजानों को ले गया। उसने सोने की ढ़ालों को
भी लिया जिन्हें सुलैमान ने बनाया था। 10राजा रहूबियाम
ने सोने की ढालों के स्थान पर काँसे की ढालें बनाई।
रहूबियाम ने उन सेनापतियों को जो राजमहल के द्वारों
की रक्षा के उत्तरदायी थे, काँसे की ढालें दीं। 11जब
राजा यहोवा के मन्दिर में जाता था तो रक्षक काँसे की
ढालें बाहर निकालते थे। उसके बाद वे काँसे की ढालों
को रक्षक–गृह में वापस रखते थे।

12जब रहूबियाम ने अपने को विनम्र कर लिया तो
यहोवा ने अपने क्रोध को उससे दूर कर लिया। इसलिये
यहोवा ने रहूबियाम को पूरी तरह नष्ट नहीं किया।
यहूदा में कुछ अच्छाई बची थी।

13राजा रहूबियाम ने यरूशलेम में अपने को शक्तिशाली
राजा बना लिया। वह उस समय इकतालीस वर्ष का था,
जब राजा बना। रहूबियाम यरूशलेम में सत्रह वर्ष तक
राजा रहा। यरूशलेम वह नगर है जिसे यहोवा ने इस्राएल
के सारे परिवार समूह में से चुना। यहोवा ने यरुशलेम में
अपने को प्रतिष्ठित करना चुना। रहूबियाम की माँ
नामा थी। नामा अम्मोन देश की थी। 14रहूबियाम ने
बुरी चीजें इसलिये कीं क्योंकि उसने अपने हृदय से
यहोवा की आज्ञा पालन करने का निश्चय नहीं किया।

15जब रहूबियाम राजा हुआ, अपने शासन के आरम्भ
से अन्त तक, उसने जो कुछ किया वह शमायाह और
इद्दो के लेखों में लिखा गया है। शमायाह एक नबी था
और इद्दो दृष्टा। वे लोग परिवार इतिहास लिखते थे और
रहूबियाम तथा यारोबाम जब तक शासन करते रहे
उनके बीच सदा युद्ध चलता रहा। 16रहूबियाम ने अपने
पूर्वजों के साथ विश्राम किया। रहूबियाम को दाऊद के

नगर में दफनाया गया। रहूबियाम का पुत्र अबिय्याह
नया राजा हुआ।

यहूदा का राजा अबिय्याह

13 जब राजा यारोबाम इस्राएल के राजा के रूप में
अट्ठारहवें वर्ष में था अबिय्याह यहूदा का नया
राजा बना। **2**अबिय्याह यरूशलेम में तीन वर्ष तक राजा
रहा। अबिय्याह की माँ मीकायाह थी। मीकायाह, ऊरीएल
की पुत्री थी। ऊरीएल गिबा नगर का था और वहाँ
अबिय्याह और यारोबाम के बीच युद्ध चल रहा था।
3अबिय्याह की सेना में चार लाख वीर सैनिक थे।
यारोबाम ने अबिय्याह के विरुद्ध युद्ध के लिये तैयारी
की। उसके पास आठ लाख वीर सैनिक थे।

4तब अबिय्याह एप्रैम के पर्वतीय प्रदेश में समारैम
पर्वत पर खड़ा हुआ। अबिय्याह ने कहा, "यारोबाम
और सारे इस्राएली मेरी बात सुनों! **5**तुम लोगों को जानना
चाहिए कि यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर ने दाऊद और
उसकी सन्तानों को इस्राएल का राजा होने का अधिकार
सदैव के लिये दिया है। यहोवा ने दाऊद को यह अधिकार
नमकवाली वाचा के साथ दिया। **6**किन्तु यारोबाम अपने
स्वामी के विरुद्ध हो गया! यारोबाम जो नबात का पुत्र
था, दाऊद के पुत्र सुलैमान के अधिकारियों में से एक
था। **7**तब निकम्मे, बुरे व्यक्ति यारोबाम के मित्र हो गए
तथा यारोबाम और वे बुरे व्यक्ति सुलैमान के पुत्र रहूबियाम
के विरुद्ध हो गये। रहूबियाम युवक था और उसे अनुभव
नहीं था। इसलिये रहूबियाम यारोबाम और उसके बुरे
मित्रों को रोक न सका।

8"तुम लोगों ने परमेश्वर के राज्य, जो दाऊद के पुत्रों
द्वारा शासित है, हराने की योजना बनाई है। तुम लोगों
की संख्या बहुत है और यारोबाम का तुम्हारे लिये
बनाया गया सोने का बछड़ा तुम्हारा ईश्वर है! **9**तुम
लोगों ने हारून के वंशज यहोवा के याजकों और
लेवीवंशियों को निकाल बाहर किया है। तुमने पृथ्वी के
अन्य देशों के समान अपने याजकों को चुना है। तब तो
कोई भी व्यक्ति जो एक युवा बैल और सात मेंढ़े लाये,
उन 'झूठे ईश्वरों' की सेवा करने वाला याजक बन
सकता है।

10"किन्तु जहाँ तक हमारी बात है यहोवा हमारा
परमेश्वर है। हम यहूदा के निवासी लोगों ने यहोवा की
आज्ञा पालन से इन्कार किया नहीं है! हम लोगों ने
उसको छोड़ा नहीं है! जो याजक यहोवा की सेवा करते
हैं, वे हारून की सन्तान हैं और लेवीवंशी यहोवा की
सेवा करने में याजकों की सहायता करते हैं। **11**वे
होमबलि चढ़ाते हैं और धूप की सुगन्धि यहोवा को हर
सुबह-शाम जलाते हैं। वे मन्दिर में विशेष मेज पर
रोटियाँ पंक्तियों में रखते भी हैं और वे सोने के दीपाधार
पर रखे हुए दीपकों की देखभाल करते हैं ताकि हर
संध्या को वह प्रकाश के साथ चले। हम लोग यहोवा,
अपने परमेश्वर की सेवा सावधानी के साथ करते हैं।
किन्तु तुम लोगों ने उसको छोड़ दिया है। **12**स्वयं परमेश्वर
हम लोगों के साथ है। वह हमारा शासक है और उसके
याजक हमारे साथ हैं। परमेश्वर के याजक अपनी
तुरही तुम्हें जगाने और तुम्हें उसके पास आने को
उत्साहित करने के लिये फूँकते हैं! ऐ इस्राएल के लोगों,
अपने पूर्वजों के यहोवा, परमेश्वर के विरुद्ध मत लड़ो!
क्योंकि तुम सफल नहीं होगे!"

13किन्तु यारोबाम ने सैनिकों की एक टुकड़ी को
चुपके-चुपके गुप्त रूप से अबिय्याह की सेना के पीछे
भेजा। यारोबाम की सेना अबिय्याह की सेना के सामने
थी। यारोबाम की सेना के गुप्त सैनिक अबिय्याह की
सेना के पीछे थे। **14**जब अबिय्याह की सेना के यहूदा के
सैनिकों ने चारों ओर देखा तो उन्होंने यारोबाम की सेना
को आगे और पीछे से आक्रमण करते पाया। यहूदा के
लोगों ने यहोवा को जोर से पुकारा और याजकों ने
तुरहियाँ बजाई। **15**तब अबिय्याह की सेना के लोगों ने
उद्घोष किया। जब यहूदा के लोगों ने उद्घोष किया तो
परमेश्वर ने यारोबाम की सेना को हरा दिया। इस्राएल
की सारी यारोबाम की सेना अबिय्याह की यहूदा की
सेना द्वारा हरा दी गई। **16**इस्राएल के लोग यहूदा के लोगों
के सामने भाग खड़े हुए। परमेश्वर ने यहूदा की सेना
द्वारा इस्राएल की सेना को हरवा दिया। **17**अबिय्याह की
सेना ने इस्राएल की सेना को बुरी तरह हराया और
इस्राएल के पाँच लाख उत्तम योद्धा मारे गए। **18**इस
प्रकार उस समय इस्राएल के लोग पराजित और यहूदा
के लोग विजयी हुए। यहूदा की सेना विजयी हुई
क्योंकि वह अपने पूर्वजों के परमेश्वर, यहोवा पर
आश्रित रही।

19अबिय्याह की सेना ने यारोबाम की सेना का पीछा
किया। अबिय्याह की सेना ने यारोबाम से बेतेल, यशाना
तथा एप्रोन नगरों को ले लिया। उन्होंने उन नगरों और
उनके आस पास के छोटे गावों पर अधिकार कर
लिया।

20यारोबाम पर्याप्त शक्तिशाली फिर कभी नहीं
हुआ जब तक अबिय्याह जीवित रहा। यहोवा ने
यारोबाम को मार डाला। **21**किन्तु अबिय्याह शक्तिशाली
हो गया। उसने चौदह स्त्रियों से विवाह किया और वह
बाईस पुत्रों तथा सोलह पुत्रियों का पिता था। **22**अन्य जो
कुछ अबिय्याह ने किया, वह इद्दो नबी की पुस्तकों में
लिखा है।

14 अबिय्याह ने अपने पूर्वजों के साथ विश्राम
लिया। लोगों ने उसे दाऊद के नगर में दफनाया।
तब अबिय्याह का पुत्र आसा अबिय्याह के स्थान पर
नया राजा हुआ। आसा के समय में देश में दस वर्ष
शान्ति रही।

यहूदा का राजा आसा

2आसा ने यहोवा परमेश्वर के सामने अच्छे और
ठीक काम किये। 3आसा ने उन विचित्र वेदियों को
हटा दिया जिनका उपयोग मूर्तियों की पूजा के लिये
होता था। आसा ने उच्च स्थानों को हटा दिया और
पवित्र पत्थरों को नष्ट कर दिया और आसा ने अशेरा
स्तम्भों को तोड़ डाला। 4आसा ने यहूदा के लोगों को
पूर्वजों के यहोवा परमेश्वर का अनुसरण करने का
आदेश दिया। वह वही परमेश्वर है जिसका अनुसरण
उनके पूर्वजों ने किया था और आसा ने लोगों को
यहोवा के नियमों और आदेशों को पालन करने का
आदेश दिया। 5आसा ने उच्च स्थानों को और सुगन्धि
की वेदियों को यहूदा के सभी नगरों से हटाया। इस
प्रकार जब आसा राजा था, राज्य शान्त रहा। 6आसा ने
यहूदा में शान्ति के समय शक्तिशाली नगर बनाए। आसा
इन दिनों युद्ध से मुक्त रहा क्योंकि यहोवा ने उसे शान्ति
दी।

7आसा ने यहूदा के लोगों से कहा, "हम लोग इन
नगरों को बनाएँ और इनके चारों ओर चारदीवारी
बनाऐं। हम गुम्बद, द्वार और द्वारों में छड़ें लगायें। जब
तक हम लोग देश में हैं, यह करें। यह देश हमारा है
क्योंकि हम लोगों ने अपने यहोवा परमेश्वर का अनुसरण
किया है। उसने हम लोगों को सब ओर से शान्ति दी
है।" इसलिये उन्होंने यह सब बनाया और वे सफल हुए।

8आसा के पास यहूदा के परिवार समूह से तीन लाख
और बिन्यामीन के परिवार समूह से दो लाख अस्सी
हजार सेना थी। यहूदा के लोग बड़ी ढालें और भाले ले
चलते थे। बिन्यामीन के लोग छोटी ढालें और धनुष से
चलने वाले बाण ले चलते थे। वे सभी बलवान और
साहसी योद्धा थे।

9तब जेरह आसा की सेना के विरुद्ध आया। जेरह
कूश का था। जेरह की सेना में एक लाख व्यक्ति और
तीन सौ रथ थे। जेरह की सेना मारेशा नगर तक गई।
10आसा जेरह के विरुद्ध लड़ने के लिये गया। आसा की
सेना मारेशा के निकट सापता घाटी में युद्ध के लिये
तैयार हुई।

11आसा ने यहोवा परमेश्वर को पुकारा और कहा,
"यहोवा, केवल तू ही बलवान लोगों के विरुद्ध कमजोर
लोगों की सहायता कर सकता है! हे मेरे यहोवा परमेश्वर
हमारी सहायता कर! हम तुझ पर आश्रित हैं। हम तेरे
नाम पर इस विशाल सेना से युद्ध करते हैं। हे यहोवा, तू
हमारा परमेश्वर है! अपने विरुद्ध किसी को जीतने न
दे!"

12तब यहोवा ने यहूदा की ओर से आसा की सेना का
उपयोग कूश की सेना को पराजित करने के लिये
किया और कूश की सेना भाग खड़ी हुई। 13आसा की
सेना ने कूश की सेना का पीछा लगातार गरार नगर
तक किया। इतने अधिक कूश के लोग मारे गए कि वे
युद्ध करने योग्य एक सेना के रूप में फिर इकट्ठे न
हो सके। वे यहोवा और उसकी सेना के द्वारा कुचल
दिये गये। आसा और उसकी सेना ने शत्रु से अनेक
बहुमूल्य चीज़ें ले ली। 14आसा और उसकी सेना ने
गरार के निकट के सभी नगरों को हराया। उन नगरों
में रहने वाले लोग यहोवा से डरते थे। उन नगरों में
असंख्य बहुमूल्य चीज़ें थीं। आसा की सेना उन नगरों से
इन बहुमूल्य चीज़ों को साथ ले आई। 15आसा की सेना
ने उन डेरों पर भी आक्रमण किया जिनमें गड़रिये रहते
थे। वे अनेक भेड़ें और ऊँट ले आए। तब आसा की
सेना यरूशलेम लौट गई।

आसा के परिवर्तन

15 परमेश्वर का आत्मा अजर्याह पर उतरा।
अजर्याह ओदेद का पुत्र था। 2अजर्याह आसा से
मिलने गया। अजर्याह ने कहा, "आसा तथा यहूदा और
बिन्यामीन के सभी लोगों मेरी सुनो! यहोवा तुम्हारे साथ
तब है जब तुम उसके साथ हो। यदि तुम यहोवा को
खोजोगे तो तुम उसे पाओगे। किन्तु यदि तुम उसे छोड़ोगे
तो वह तुम्हें छोड़ देगा। 3बहुत समय तक इस्राएल सच्चे
परमेश्वर के बिना था और वे शिक्षक याजक और
नियम के बिना थे। 4किन्तु जब इस्राएल के लोग कष्ट
में पड़े तो वे फिर इस्राएल के यहोवा परमेश्वर की ओर
लौटे। उन्होंने यहोवा की खोज की और उसको उन्होंने
पाया। 5उन विपत्ति के दिनों में कोई व्यक्ति सुरक्षित
यात्रा नहीं कर सकता था। सभी राष्ट्र बहुत अधिक
उपद्रव ग्रस्त थे। 6एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को और एक
नगर दूसरे नगर को नष्ट करता था। यह इसलिए हो
रहा था कि परमेश्वर हर प्रकार की विपत्तियों से
उनको परेशान कर रहा था। 7किन्तु आसा, तुम तथा
यहूदा और बिन्यामीन के लोगों, शक्तिशाली बनो। कमजोर
न पड़ो, ढीले न पड़ो क्योंकि तुम्हें अपने अच्छे काम
का पुरस्कार मिलेगा!"

8आसा ने जब इन बातों और ओदेद नबी के सन्देश
को सुना तो वह बहुत उत्साहित हुआ। तब उसने सारे
यहूदा और बिन्यामीन देश से घृणित मूर्तियों को हटा
दिया और उसने एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में अपने अधिकार
में लाए गए नगरों में मूर्तियों को हटाया और उसने
यहोवा की उस वेदी की मरम्मत की जो यहोवा के
मन्दिर के द्वार मण्डप के सामने थी।

9तब आसा ने यहूदा और बिन्यामीन के सभी लोगों
को इकट्ठा किया। उसने एप्रैम, मनश्शे और शिमोन
परिवारों को भी इकट्ठा किया जो इस्राएल देश से
यहूदा–देश में रहने के लिये आ गए थे। उनकी बहुत
बड़ी संख्या यहूदा में आई क्योंकि उन्होंने देखा कि
आसा का यहोवा परमेश्वर, आसा के साथ है।

10आसा के शासन के पन्द्रहवें वर्ष के तीसरे महीने में
आसा और वे लोग यरुशलेम में इकट्ठे हुए। उस समय
उन्होंने यहोवा को सात सौ बैलों और सात हजार भेड़ों
और बकरों की बलि दी। आसा की सेना ने उन जानवरों
और अन्य बहुमूल्य चीजों को अपने शत्रुओं से लिया
था। 12तब उन्होंने पूर्वजों के यहोवा परमेश्वर की सेवा
पूरे हृदय और पूरी आत्मा से करने की वाचा की।
13कोई व्यक्ति जो यहोवा परमेश्वर की सेवा से इन्कार
करता था, मार दिया जाता था। इस बात का कोई
महत्व नहीं था कि वह व्यक्ति महत्त्वपूर्ण या साधारण है
अथवा पुरुष या स्त्री है। 14तब आसा और लोगों ने
यहोवा की शपथ ली। उन्होंने उच्च स्वर में उद्घोष
किया। उन्होंने तुरही और मेढ़ों के सींगे बजाए। 15यहूदा
से सभी लोग प्रसन्न थे क्योंकि उन्होंने पूरे हृदय से
शपथ ली थी। उन्होंने पूरे हृदय से यहोवा का अनुसरण
किया तथा यहोवा की खोज की और उसे पाया। इसलिये
यहोवा ने उनके पूरे देश में शान्ति दी।

16राजा आसा ने अपनी माँ माका को राजमाता के
पद से हटा दिया। आसा ने यह इसलिए किया क्योंकि
माका ने एक भंयकर अशेरा–स्तम्भ बनाया था।
आसा ने इस स्तम्भ को काट दिया और इसे छोटे–छोटे
टुकड़ों में ध्वस्त कर दिया। तब उसने उन छोटे टुकड़ों
को किद्रोन घाटी में जला दिया। 17उच्च स्थानों को
यहूदा से नहीं हटाया गया, किन्तु आसा का हृदय जीवन
भर यहोवा के प्रति श्रद्धालु रहा।

18आसा ने उन पवित्र भेंटों को रखा जिन्हें उसने
और उसके पिता ने यहोवा के मन्दिर में दिये थे। वे
चीजें चाँदी और सोने की बनीं थीं। 19आसा के शासन
के पैंतीस वर्ष तक कोई युद्ध नहीं हुआ।

आसा के अन्तिम वर्ष

16 आसा के राज्यकाल के छत्तीसवें वर्ष* बाशा ने
यहूदा देश पर आक्रमण किया। बाशा इस्राएल
का राजा था। वह रामा नगर में गया और इसे एक
किले के रूप में बनाया। बाशा ने रामा नगर का
उपयोग यहूदा के राजा आसा के पास जाने और उसके
पास से लोगों को आने से रोकने के लिये किया।

2आसाने यहोवा के मन्दिर के कोषागार में रखे हुए
चाँदी और सोने को लिया और उसने राजमहल से चाँदी
सोना लिया। तब आसा ने बेन्हदद को सन्देश भेजा।
बेन्हदद अराम का राजा था और दमिश्क नगर में
रहता था। आसा का सन्देश था: 3"बेन्हदद, मेरे और
अपने बीच एक सन्धि होने दो। इस सन्धि को वैसे ही
होने दो जैसा वह हमारे पिता और तुम्हारे पिता के बीच
की गई थी। ध्यान दो, मैं तुम्हारे पास चाँदी सोना भेज
रहा हूँ। अब तुम इस्राएल के राजा बाशा के साथ की
गई सन्धि को तोड़ दो जिससे वह मुझे मुक्त छोड़ देगा
और मुझे परेशान करना बन्द कर देगा।"

4बेन्हदद ने आसा की बात मान ली। बेन्हदद ने अपनी
सेना के सेनापतियों को इस्राएल के नगरों पर आक्रमण
करने के लिये भेजा। इन सेनापतियों ने इय्योन, दान
और आबेल्मैम नगरों पर आक्रमण किया। उन्होंने
नप्ताली देश में उन सभी नगरों पर आक्रमण किया
जहाँ खजाने रखे थे। 5बाशा ने इस्राएल के नगरों पर
आक्रमण की बात सुनी। इसलिए उसने रामा में किला
बनाने का काम रोक दिया और अपना काम छोड़
दिया। 6तब राजा आसा ने यहूदा के सभी लोगों को
इकट्ठा किया। वे रामा नगर को गये और लकड़ी तथा
पत्थर उठा लाए जिनका उपयोग बाशा ने किला बनाने
के लिये किया था। आसा और यहूदा के लोगों ने पत्थरों
और लकड़ी का उपयोग गेवा और मिस्पा नगरों को
अधिक मजबूत बनाने के लिये किया।

7उस समय दृष्टा हनानी यहूदा के राजा आसा के
पास आया। हनानी ने उससे कहा, "आसा, तुम सहायता
के लिये अराम के राजा पर आश्रित हुए, अपने यहोवा
परमेश्वर पर नहीं। तुम्हें यहोवा पर आश्रित रहना
चाहिए था। तुम यहोवा पर सहायता के लिए आश्रित
नहीं रहे अत: अराम के राजा की सेना तुमसे भाग
निकली। 8कूश और लूबी अति विशाल और शक्तिशाली
सेना रखते थे। उनके पास अनेक रथ और सारथी थे।
किन्तु आसा, तुम उस विशाल शक्तिशाली सेना को
हराने में सहायता के लिये यहोवा पर आश्रित हुए और
यहोवा ने तुम्हें उनको हराने दिया। 9यहोवा की आँखे
सारी पृथ्वी पर उन लोगों को देखती फिरती है जो
उसके प्रति श्रद्धालु हैं जिससे वह उन लोगों को शक्तिशाली
बना सके। आसा, तुमने मूर्खतापूर्ण काम किया। इसलिये
अब से लेकर आगे तक तुमसे युद्ध होंगे।"

10आसा हनानी पर उस बात से क्रोधित हुआ जो
उसने कहा। आसा इतना क्रोध से पागल हो उठा कि
उसने हनानी को बन्दीगृह में डाल दिया। आसा उस
समय कुछ लोगों के साथ नीचता और कठोरता का
व्यवहार करता था।

11आसा ने जो कुछ आरम्भ से अन्त तक किया। वह
इस्राएल और "यहूदा के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक
में लिखा है। 12आसा का पैर उसके राज्यकाल के
उनतालीसवें वर्ष* में रोगग्रस्त हो गया। उसका रोग
बहुत बुरा था किन्तु उसने यहोवा से सहायता नहीं
चाही। आसा ने वैद्यों से सहायता चाही। 13आसा अपने
राज्यकाल के इकतालीसवें वर्ष में मरा और इस प्रकार
आसा ने अपने पूर्वजों के साथ विश्राम किया। 14लोगों ने
आसा को उसकी अपनी कब्र में दफनाया जिसे उसने

राज्यकाल के छत्तीसवें वर्ष लगभग ई.पू. 879

राज्यकाल के उनतालीसवें वर्ष लगभग ई.पू. 875

स्वयं दाऊद के नगर में बनाया था। लोगों ने उसे एक
अन्तिम शैया पर रखा जिस पर सुगन्धित द्रव्य और
विभिन्न प्रकार के मिले इत्र रखे थे। लोगों ने आसा का
सम्मान करने के लिये आग की महाज्वाला की।*

यहूदा का राजा यहोशापात

17 आसा के स्थान पर यहोशापात यहूदा का नया
राजा हुआ। यहोशापात आसा का पुत्र था।
यहोशापात ने यहूदा को शक्तिशाली बनाया जिससे वे
इस्राएल के विरुद्ध लड़ सकते थे। 2उसने यहूदा के उन
सभी नगरों में सेना की टुकड़ियाँ रखीं जो किले बना
दिये गए थे। यहोशापात ने यहूदा और एप्रैम के उन
नगरों में किले बनाए जिन्हें उसके पिता ने अपने अधिकार
में किया था।

3यहोवा यहोशापात के साथ था क्योंकि उसने वे
अच्छे काम किये जिन्हें उसके पूर्वज दाऊद ने किया
था। यहोशापात ने बाल की मूर्तियों का अनुसरण नहीं
किया। 4यहोशापात ने उस परमेश्वर को खोजा जिसका
अनुसरण उसके पूर्वज करते थे। उसने परमेश्वर के
आदेशों का पालन किया। वह उस तरह नहीं रहा जैसा
इस्राएल के अन्य लोग रहते थे। 5यहोवा ने यहोशापात
को यहूदा का शक्तिशाली राजा बनाया। यहूदा के सभी
लोग यहोशापात को भेंट लाए। इस प्रकार यहोशापात के
पास बहुत सी सम्पत्ति और सम्मान दोनों थे। 6यहोशापात
का हृदय यहोवा के मार्ग पर चलने में आनन्दित था।
उसने उच्च स्थानों और अशेरा के स्तम्भों को यहूदा
देश से बाहर किया।

7यहोशापात ने अपने प्रमुखों को यहूदा के नगरों में
उपदेश देने के लिये भेजा। यह यहोशापात के राज्यकाल
के तीसरे वर्ष हुआ। वे प्रमुख बेन्हैल, ओबद्याह, जकर्याह,
नतनेल और मीकायाह थे। 8यहोशापात ने इन प्रमुखों
के साथ लेवीवंशियों को भी भेजा। ये लेवीवंशी शमायाह,
नतन्याह, असाहेल, शमीरामोत, यहोनातान, अदोनिय्याह
और तोबिय्याह थे। यहोशापात ने याजक एलीशामा और
यहोराम को भेजा। 9उन प्रमुखों, लेवीवंशियों और याजकों
ने यहूदा में लोगों को शिक्षा दी। उनके पास “यहोवा के
नियमों की पुस्तक” थी। वे यहूदा के सभी नगरों में गये
और लोगों को उन्होंने शिक्षा दी।

10यहूदा के आसपास के नगर यहोवा से डरते थे।
यही कारण था कि उन्होंने यहोशापात के विरुद्ध युद्ध
नहीं छेड़ा। 11कुछ पलिश्ती लोग यहोशापात के पास भेंट
लाए। वे यहोशापात के पास चाँदी भी लाए क्योंकि वे
जानते थे कि वह बहुत शक्तिशाली राजा है। कुछ अरब
के लोग यहोशापात के पास रेवड़े लाये। वे उसके पास
सात हजार सात सौ भेड़ें और सात हजार सात सौ
बकरियाँ लाए।

12यहोशापात अधिक से अधिक शक्तिशाली होता
गया। उसने किले और भण्डार नगर यहूदा देश में
बनाये। 13उसने बहुत सी सामग्री भण्डार नगरों में रखी
और यहोशापात ने यरुशलेम में प्रशिक्षित सैनिक रखे।
14उन सैनिकों की अपने परिवार समूह में गिनती थी।
यरुशलेम के उन सैनिकों की सूची ये है:

यहूदा के परिवार समूह से ये सेनाध्यक्ष थे: अदना
तीन लाख सैनिकों का सेनाध्यक्ष था। 15यहोहानान दो
लाख अस्सी हजार सैनिकों का सेनाध्यक्ष था। 16अमस्याह
दो लाख सैनिकों का सेनाध्यक्ष था। अमस्याह जिक्री का
पुत्र था। अमस्याह अपने को यहोवा की सेवा में अर्पित
करने में प्रसन्न था।

17बिन्यामीन के परिवार समूह से ये सेनाध्यक्ष थे:
एल्यादा के पास दो लाख सैनिक थे जो धनुष, बाण
और ढाल का उपयोग करते थे। एल्यादा एक साहसी
सैनिक था। 18यहोजाबाद के पास एक लाख अस्सी
हजार व्यक्ति युद्ध के लिये तैयार थे। 19वे सभी सैनिक
यहोशापात की सेवा करते थे। राजा ने पूरे यहूदा देश
के किलों में अन्य व्यक्तियों को भी रखा था।

मीकायाह राजा अहाब को चेतावनी देता है

18 यहोशापात के पास सम्पत्ति और सम्मान था।
उसने राजा अहाब के साथ विवाह द्वारा एक
सन्धि की।* 2कुछ वर्ष बाद, यहोशापात शोमरोन नगर
में अहाब से मिलने गया। अहाब ने बहुत सी भेड़ों और
पशुओं की बलि यहोशापात और उसके साथ के आदमियों
के लिये चढ़ाई। अहाब ने यहोशापात को गिलाद के
रामोत नगर पर आक्रमण के लिये प्रोत्साहित किया।
3अहाब ने यहोशापात से कहा, “क्या तुम मेरे साथ
गिलाद के रामोत पर आक्रमण करने चलोगे?” अहाब
इस्राएल का और यहोशापात यहूदा का राजा था।
यहोशापात ने अहाब को उत्तर दिया, “मैं तुम्हारी तरह हूँ
और हमारे लोग तुम्हारे लोगों की तरह हैं। हम युद्ध में
तुम्हारा साथ देंगे।” 4यहोशापात ने अहाब से यह कहा,
“आओ, पहले हम यहोवा से सन्देश प्राप्त करें।”

5इसलिए अहाब ने चार सौ नबियों को इकट्ठा किया।
अहाब ने उनसे कहा, “क्या हमें गिलाद के रामोत नगर
के विरुद्ध युद्ध में जाना चाहिये या नहीं?” नबियों ने
अहाब को उत्तर दिया, “जाओ, क्योंकि यहोवा गिलाद
के रामोत को तुम्हें पराजित करने देगा।”

6किन्तु यहोशापात ने कहा, “क्या कोई यहाँ यहोवा
का नबी है? हम लोग नबियों में से एक के द्वारा यहोवा
से पूछना चाहते हैं।”

लोगों ने ... महाज्वाला की सम्भवत: इसका तात्पर्य है कि आसा के सम्मान में लोगों ने सुगन्धित द्रव्य जलाए, किन्तु इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि उन्होंने उसके शरीर को जलाया।

यहोशापात के ... सन्धि की यहोशापात के पुत्र यहोराम ने अहाब की पुत्री अतल्याह से विवाह किया। देखें 2 इति. 21:6

7तब राजा अहाब ने यहोशापात से कहा, "यहाँ पर
अभी एक व्यक्ति है। हम उसके माध्यम से यहोवा से
पूछ सकते हैं। किन्तु मैं इस व्यक्ति से घृणा करता हूँ
क्योंकि इसने कभी मेरे बारे में यहोवा से कोई अच्छा
सन्देश नहीं दिया। इसने सदैव बुरा ही सन्देश मेरे लिये
दिया है। इस आदमी का नाम मीकायाह है। यह यिम्ला
का पुत्र है।" किन्तु यहोशापात ने कहा, "अहाब, तुम्हें
ऐसा नहीं कहना चाहिये!"

8तब इस्राएल के राजा अहाब ने अपने अधिकारियों
में से एक को बुलाया और कहा, "शीघ्रता करो, यिम्ला
के पुत्र मीकायाह को यहाँ लाओ!"

9इस्राएल के राजा अहाब और यहूदा के राजा यहोशापात
ने अपने राजसी वस्त्र पहन रखे थे। वे अपने सिंहासनों
पर खलिहान में शोमरोन नगर के सम्मुख द्वार के
निकट बैठे थे। वे चार सौ नबी अपना सन्देश दोनों
राजाओं के सामने दे रहे थे। 10सिदकिय्याह कनाना
नामक व्यक्ति का पुत्र था। सिदकिय्याह ने लोहे की
कुछ सींगे बनाई। सिदकिय्याह ने कहा, "यही है जो
यहोवा कहता है: 'तुम लोग लोहे की सींगों का
उपयोगतबतक अश्शूर के लोगों में घोंपने के लिये
करोगे जब तक वे नष्ट न हो जायें।'"

11सभी नबियों ने वही बात कही। उन्होंने कहा, "गिलाद
के रामोत नगर को जाओ। तुम लोग सफल होंगे और
जीतोगे। यहोवा राजा और अश्शूर के लोगों को हराने
देगा।"

12जो दूत मीकायाह को लाने गया था उसने उससे
कहा, "मीकायाह, सुनो, सभी नबी एक ही बात कह रहे
हैं। वे कह रहे हैं कि राजा को सफलता मिलेगी।
इसलिये वही कहो जो वे कह रहे हैं। तुम भी अच्छी
बात कहो।"

13किन्तु मीकायाह ने उत्तर दिया, "यह वैसे ही सत्य है
जैसा कि यहोवा शाश्वत है अत: मैं वही कहूँगा जो मेरा
परमेश्वर कहता है।"

14तब मीकायाह राजा अहाब के पास आया। राजा ने
उससे कहा, "मीकायाह, क्या हमें युद्ध करने के लिये
गिलाद के रामोत नगर को जाना चाहिये या नहीं?"
मीकायाह ने कहा, "जाओ और आक्रमण करो। यहोवा
तुम्हें उन लोगों को हराने देगा।"

15राजा अहाब ने मीकायाह से कहा, "कई बार मैंने
तुमसे प्रतिज्ञा करवायी थी कि तुम यहोवा के नाम पर
मुझे केवल सत्य बताओ!"

16तब मीकायाह ने कहा, "मैंने इस्राएल के सभी लोगों
को पहाड़ों पर बिखरे हुए देखा। वे गड़रिये के बिना भेड़
की तरह थे। यहोवा ने कहा, 'उनका कोई नेता नहीं है।
हर एक व्यक्ति को सुरक्षित घर लौटने दो।'"

17इस्राएल के राजा अहाब ने यहोशापात से कहा,
"मैंने कहा था कि मीकायाह मेरे लिए यहोवा से अच्छा
सन्देश नहीं पाएगा। वह मेरे लिए केवल बुरे सन्देश
रखता है!"

18मीकायाह ने कहा, "यहोवा के सन्देश को सुनो:
मैंने यहोवा को अपने सिंहासन पर बैठे देखा। स्वर्ग की
पूरी सेना उसके चारों ओर खड़ी थी।* कुछ उसके
दाहिनी ओर और कुछ उसके बाँयीं ओर। 19यहोवा ने
कहा, 'इस्राएल के राजा अहाब को कौन धोखा देगा?
जिससे वह गिलाद के रामोत के नगर पर आक्रमण
करे और वह वहाँ मार दिया जाये?' यहोवा के चारों
ओर खड़े विभिन्न लोगों ने विभिन्न उत्तर दिये। 20तब
एक आत्मा आई और वह यहोवा के सामने खड़ी हुई।
उस आत्मा ने कहा, 'मैं अहाब को धोखा दूँगी।' यहोवा
ने आत्मा से पूछा, 'कैसे?' 21उस आत्मा ने उत्तर दिया,
'मैं बाहर जाऊँगी और अहाब के नबियों के मुँह में झूठ
बोलने वाली आत्मा बनूँगी' और यहोवा ने कहा, 'तुम्हें
अहाब को धोखा देने में सफलता मिलेगी। इसलिये जाओ
और इसे करो।'

22"अहाब, अब ध्यान दो, यहोवा ने तुम्हारे नबियों'
के मुँह में झूठ बोलने बाली आत्मा प्रवेश कराई है।
यहोवा ने कहा है कि तुम्हारे साथ बुरा घटेगा।"

23तब सिदकिय्याह मीकायाह के पास गया और उसके
मुँह पर मारा। कनाना के पुत्र सिदकिय्याह ने कहा,
"मीकायाह, यहोवा की आत्मा मुझे त्याग कर तुझसे
वार्तालाप करने कैसे आई?" 24मीकायाह ने उत्तर दिया,
"सिदकिय्याह, तुम उस दिन इसे जानोगे जब तुम एक
भीतरी घर में छिपने जाओगे!"

25तब राजा अहाब ने कहा, "मीकायाह को लो और
इसे नगर के प्रशासक आमोन और राजा के पुत्र योआश
के पास भेज दो। 26आमोन और योआश से कहो, 'राजा
यह कहते हैं: मीकायाह को बन्दीगृह में डाल दो। उसे
रोटी और पानी के अतिरिक्त तब तक कुछ खाने को न
दो जब तक मैं युद्ध से न लौटूँ।'"

27मीकायाह ने उत्तर दिया, "अहाब, यदि तुम युद्ध से
सुरक्षित लौट आते हो तो यहोवा ने मेरे द्वारा नहीं कहा
है। तुम सभी लोग सुनों और मेरे वचन को याद रखो!"

अहाब गिलाद के रामोत में मारा गया

28इसलिये इस्राएल के राजा अहाब और यहूदा के
राजा यहोशापात ने गिलाद के रामोत नगर पर आक्रमण
किया। 29इस्राएल के राजा अहाब ने यहोशापात से कहा,
"मैं युद्ध में जाने के पहले अपना रूप बदल लूँगा। किन्तु
तुम अपने राजवस्त्र ही पहनो।" इसलिये इस्राएल के
राजा अहाब ने अपना रुप बदल लिया और दोनों राजा
युद्ध में गए।

स्वर्ग की … खड़ी थी हिब्रू पाठ है। स्वर्गों के सभी समूह उनके दायीं और बांयी ओर खड़े थे।

30अराम के राजा ने अपने रथों के रथपतियों को आदेश दिया। उसने उनसे कहा, "चाहे जितना बड़ा या छोटा कोई व्यक्ति हो उससे युद्ध न करो। किन्तु केवल इस्राएल के राजा अहाब से युद्ध करो।" **31**जब रथपतियों ने यहोशापात को देखा उन्होंने सोचा, "वही इस्राएल का राजा अहाब है!" वे यहोशापात पर आक्रमण करने के लिये उसकी ओर मुड़े। किन्तु यहोशापात ने उद्घोष किया और यहोवा ने उसकी सहायता की। परमेश्वर ने रथपतियों को यहोशापात के सामने से दूर मुड़ जाने दिया। **32**जब उन्होंने समझा कि यहोशापात इस्राएल का राजा नहीं है उन्होंने उसका पीछा करना छोड़ दिया।

33किन्तु एक सैनिक से बिना किसी लक्ष्य बेध के धनुष से बाण छूट गया। उस बाण ने इस्राएल के राजा अहाब को बेध दिया। इसने, अहाब के कवच के खुले भाग में बेधा। अहाब ने अपने रथ के सारथी से कहा, "पीछे मुड़ो और मुझे युद्ध से बाहर ले चलो। मैं घायल हो गया हूँ!"

34उस दिन युद्ध अधिक बुरी तरह लड़ा गया। अहाब ने अपने रथ में अरामियों का सामना करते हुए शाम तक अपने को संभाले रखा। तब अहाब सूर्य डूबने पर मर गया।

19 यहूदा का राजा यहोशापात सुरक्षित यरूशलेम अपने घर लौटा। **2**दृष्टा येहू यहोशापात से मिलने गया। येहू के पिता का नाम हनानी था। येहू ने राजा यहोशापात से कहा, "तुम बुरे आदमियों की सहायता क्यों करते हो? तुम उन लोगों से क्यों प्रेम करते हो जो यहोवा से घृणा करते हैं? यही कारण है कि यहोवा तुम पर क्रोधित है। **3**किन्तु तुम्हारे जीवन में कुछ अच्छी बातें हैं। तुमने अशेरा-स्तम्भों को इस देश से बाहर किया और तुमने हृदय से परमेश्वर का अनुसरण करने का निश्चय किया।"

यहोशापात न्यायाधीशों को चुनता है

4यहोशापात यरूशलेम में रहता था। वह एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में बेर्शेबा नगर के लोगों के साथ एक होने के लिये फिर वहाँ गया। यहोशापात ने उन लोगों को उस यहोवा परमेश्वर के पास लौटाया जिसका अनुसरण उनके पूर्वज करते थे। **5**यहोशापात ने यहूदा में न्यायधीश चुने। उसने यहूदा के हर किले में रहने के लिये न्यायाधीश चुने।

6यहोशापात ने इन न्यायाधीशों से कहा, "जो कुछ तुम करो उसमें सावधान रहो क्योंकि तुम, लोगों के लिये न्याय नहीं कर रहे हो अपितु यहोवा के लिये कर रहे हो। जब तुम निर्णय करोगे तब यहोवा तुम्हारे साथ होगा। **7**तुम में से हर एक को अब यहोवा से डरना चाहिए। जो करो उसमें सावधान रहो क्योंकि हमारा यहोवा परमेश्वर न्यायी है। वह किसी व्यक्ति को अन्य व्यक्ति से अधिक महत्वपूर्ण मानकर व्यवहार नहीं करता। वह अपने निर्णय को बदलने के लिये धन नहीं लेता।"

8और यहोशापात ने यरूशलेम में, लेवीवंशियों, याजकों और इस्राएल के परिवार प्रमुखों को न्यायाधीश चुना। उन लोगों को यहोवा के नियमों का उपयोग यरूशलेम के लोगों की समस्याओं को निपटाने के लिये करना था। **9**यहोशापात ने उनको आदेश दिये। यहोशापात ने कहा, "तुम्हें अपने पूरे हृदय से विश्वसनीय काम करना चाहिए। तुम्हें यहोवा से अवश्य डरना चाहिए। **10**तुम्हारे पास हत्या, नियम, आदेश, शासन या किसी अन्य नियमों के मामले आ सकते हैं। ये सभी मामले नगरों में रहने वाले तुम्हारे भाईयों के यहाँ से आएंगे। इन सभी मामलों में लोगों को इस बात की चेतावनी दो कि वे लोग यहोवा के विरुद्ध पाप न करें। यदि तुम विश्वास योग्यता के साथ यहोवा की सेवा नहीं करते तो तुम यहोवा के क्रोध को अपने ऊपर और अपने भाईयों के ऊपर लाने का कारण बनोगे। यह करो, तब तुम अपराधी नहीं होगे। **11**अमर्याह मार्गदर्शक याजक है। वह यहोवा के सम्बन्ध की सभी बातों में तुम्हारे ऊपर रहेगा और राजा सम्बन्धी सभी विषयों में जबद्याह तुम्हारे ऊपर होगा। जबद्याह के पिता का नाम इश्माएल है। जबद्याह यहूदा के परिवार समूह में प्रमुख है। लेवीवंशी शास्त्रियों के रूप में भी तुम्हारी सेवा करेंगे। जो कुछ करो उसमें साहस रखो। यहोवा उन लोगों के साथ हो, जो वही करते हैं जो ठीक है।"

यहोशापात युद्ध का सामना करता है

20 कुछ समय पश्चात मोआबी, अम्मोनी और कुछ मूनी लोग यहोशापात के साथ युद्ध आरम्भ करने आए। **2**कुछ लोग आए और उन्होंने यहोशापात से कहा, "तुम्हारे विरुद्ध एदोम से एक विशाल सेना आ रही है। वे मृत सागर की दूसरी ओर से आ रहे हैं। वे हससोन्तामार में पहले से ही है। (हससोन्तामार को एनगदी भी कहा जाता है)" **3**यहोशापात डर गया और उसने यहोवा से यह पूछने का निश्चय किया कि मैं क्या करूँ? उसने यहूदा में हर एक के लिये उपवास का समय घोषित किया। **4**यहूदा के लोग एक साथ यहोवा से सहायता माँगने आए। वे यहूदा के सभी नगरों से यहोवा की सहायता माँगने आए।

5यहोशापात यहोवा के मन्दिर में नये आँगन के सामने था। वह यरुशलेम और यहूदा से आए लोगों की सभा में खड़ा हुआ। **6**उसने कहा,

"हे हमारे पूर्वजों के यहोवा परमेश्वर, तू स्वर्ग में परमेश्वर है! तू सभी राष्ट्रों में सभी राज्यों पर शासन करता है! तू प्रभुता और शक्ति रखता है! कोई व्यक्ति तेरे विरुद्ध खड़ा नहीं हो सकता! **7**तू हमारा परमेश्वर है। तूने इस प्रदेश में रहने वालों को इसे छोड़ने को

विवश किया। यह तूने अपने इस्राएली लोगों के सामने
किया। तूने यह भूमि इब्राहीम के वंशजों को सदैव के
लिये दे दी। इब्राहीम तेरा मित्र था। 8इब्राहीम के वंशज
इस देश में रहते थे और उन्होंने एक मन्दिर तेरे नाम
पर बनाया।"

9उन्होंने कहा, "यदि हम लोगों पर आपत्ति आएगी
जैसे तलवार, दण्ड, रोग या अकाल तो हम इस मन्दिर
के सामने और तेरे सामने खड़े होंगे। इस मन्दिर पर
तेरा नाम है। जब हम लोगों पर विपत्ति आएगी तो हम
लोग तुझको पुकारेंगे। तब तू हमारी सुनेगा और हमारी
रक्षा करेगा।

10"किन्तु इस समय यहाँ अम्मोन, मोआब और सेईर
पर्वत के लोग चढ़ आए हैं! तूने इस्राएल के लोगों को
उस समय उनकी भूमि में नहीं जाने दिया जब इस्राएल
के लोग मिस्र से आए। इसलिए इस्राएल के लोग मुड़ गए
थे और उन लोगों ने उनको नष्ट नहीं किया था।
11किन्तु देख कि वे लोग हमें उन्हें नष्ट न करने का
किस प्रकार का पुरस्कार दे रहे हैं। वे हमें तेरी भूमि से
बाहर होने के लिए विवश करने आए हैं। यह भूमि तूने
हमें दी है। 12हमारे परमेश्वर, उन लोगों को दण्ड दे!
हम लोग उस विशाल सेना के विरुद्ध कोई शक्ति नहीं
रखते जो हमारे विरुद्ध आ रही है! हम नहीं जानते कि
क्या करें! यही कारण है कि हम तुझसे सहायता की
आशा करते हैं।"

13यहूदा के सभी लोग यहोवा के सामने अपने शिशुओं,
पत्नियों और बच्चों के साथ खड़े थे। 14तब यहोवा की
आत्मा यहजीएल पर उतरी। यहजीएल जकर्याह का पुत्र
था। जकर्याह बनायाह का पुत्र था बनायाह यीएल का
पुत्र था और यीएल मत्तन्याह का पुत्र था। यहजीएल एक
लेवीवंशी था और आसाप का वंशज था। 15उस सभा
के बीच यहजीएल ने कहा, "राजा यहोशापात तथा
यहूदा और यरुशलेम में रहने वाले लोगों, मेरी सुनो!
यहोवा तुमसे यह कहता है: 'इस विशाल सेना से न तो
डरो, न ही परेशान होओ क्योंकि यह तुम्हारा युद्ध नहीं
है। यह परमेश्वर का युद्ध है! 16कल तुम वहाँ जाओ
और उन लोगों से लड़ो। वे सीस के दर्रे से होकर
आएँगे। तुम लोग उन्हें घाटी के अन्त में यरूएल मरुभूमि
की दूसरी ओर पाओगे। 17इस युद्ध में तुम्हें लड़ना नहीं
पड़ेगा। अपने स्थानों पर दृढ़ता से खड़े रहो। तुम देखोगे
कि यहोवा ने तुम्हें बचा लिया। यहूदा और यरूशलेम के
लोगों, डरो नहीं! परेशान मत हो! यहोवा तुम्हारे साथ है
अत: कल उन लोगों के विरुद्ध जाओ।'"

18यहोशापात अति नम्रता से झुका। उसका सिर भूमि
को छू रहा था और यहूदा तथा यरूशलेम में रहने वाले
सभी लोग यहोवा के सामने गिर गए और उन सभी ने
यहोवा की उपासना की। 19कहाती परिवार समूह के
लेवीवंशी और कहाती लोग, इस्राएल के यहोवा परमेश्वर
की स्तुति के लिये खड़े हुए। उन्होंने अत्यन्त उच्च स्वर
में स्तुति की।

20यहोशापात की सेना तकोआ मरुभूमि में बहुत सवेरे
गई। जब वे बढ़ना आरम्भ कर रहे थे, यहोशापात खड़ा
हुआ और उसने कहा, "यहूदा और यरुशलेम के लोगों,
मेरी सुनों। अपने यहोवा परमेश्वर में विश्वास रखो
और तब तुम शक्ति के साथ खड़े रहोगे। यहोवा के
नबियों में विश्वास रखो। तुम लोग सफल होगे!"
21यहोशापात ने लोगों का सुझाव सुना। तब उसने यहोवा
के लिये गायक चुने। वे गायक यहोवा की स्तुति के
लिये चुने गए थे क्योंकि वह पवित्र और अद्भुत है। वे
सेना के सामने कदम मिलाते हुए बढ़े और उन्होंने
यहोवा की स्तुति की। इन गायकों ने गाया, "परमेश्वर
को धन्यवाद दो क्योंकि उसका प्रेम सदैव रहता है!"*
22ज्योंही उन लोगों ने गाना गाकर यहोवा की स्तुति
आरम्भ की, यहोवा ने अज्ञात गुप्त आक्रमण अम्मोन,
मोआब और सेईर पर्वत के लोगों पर कराया। ये वे
लोग थे जो यहूदा पर आक्रमण करने आए थे। वे लोग
पिट गए। 23अम्मोनी और मोआबी लोगों ने सेईर पर्वत
से आये लोगों के विरुद्ध युद्ध आरम्भ किया। अम्मोनी
और मोआबी लोगों ने सेईर पर्वत से आए लोगों को मार
डाला और नष्ट कर दिया। जब वे सेईर के लोगों को
मार चुके तो उन्होंने एक दूसरे को मार डाला।

24यहूदा के लोग मरुभूमि में सामना करने के बिन्दु
पर आए। उन्होंने शत्रु की विशाल सेना को देखा।
किन्तु उन्होंने केवल शवों को भूमि पर पड़े देखा। कोई
व्यक्ति बचा न था। 25यहोशापात और उसकी सेना शवों
से बहुमूल्य चीजें लेने आई। उन्हें बहुत से जानवर, धन,
वस्त्र और कीमती चीजें मिलीं। यहोशापात और उसकी
सेना ने उन्हें अपने लिये ले लिया। चीज़ें उससे अधिक
थीं जितना यहोशापात और उसकी सेना ले जा सकती
थी। उनको शवों से कीमती चीज़ें इकट्ठी करने में
तीन दिन लगे, क्योंकि वे बहुत अधिक थीं। 26चौथे दिन
यहोशापात और उसकी सेना बराका की घाटी में मिले।
उन्होंने उस स्थान पर यहोवा की स्तुति की। यही कारण
है कि उस स्थान का नाम आज तक "बराका की
घाटी" है।

27तब यहोशापात यहूदा और यरूशलेम के लोगों को
यरुशलेम लौटा कर ले गया। यहोवा ने उन्हें अत्यन्त
प्रसन्न किया क्योंकि उनके शत्रु पराजित हो गये थे।
28वे यरुशलेम में वीणा सितार और तुरहियों के साथ
आये और यहोवा के मन्दिर में गए।

29सभी देशों के सारे राज्य यहोवा से भयभीत थे
क्योंकि उन्होंने सुना कि यहोवा इस्राएल के शत्रुओं से
लड़ा। 30यही कारण है कि यहोशापात के राज्य में

परमेश्वर को ... रहता है देखें भजन. 136

शान्ति रही। यहोशापात के परमेश्वर ने उसे चारों ओर
से शान्ति दी।

यहोशापात के शासन का अन्त

31यहोशापात ने यहूदा देश पर शासन किया। यहोशापात
ने जब शासन आरम्भ किया तो वह पैंतीस वर्ष का था।
उसने पच्चीस वर्ष यरूशलेम में शासन किया। उसकी
माँ का नाम अजूबा था। अजूबा शिल्ही की पुत्री थी।
32यहोशापात सच्चे मार्ग पर अपने पिता आसा की तरह
रहा। यहोशापात, आसा के मार्ग का अनुसरण करने से
मुड़ा नहीं। यहोशापात ने यहोवा की दृष्टि में उचित
किया। 33किन्तु उच्च स्थान नहीं हटाये गये और लोगों
ने अपना हृदय उस परमेश्वर का अनुसरण करने में
नहीं लगाया जिसका अनुसरण उनके पूर्वज करते थे।

34यहोशापात ने आरम्भ से अन्त तक जो कुछ किया
वह येहू की रचनाओं में लिखा है। येहू के पिता का नाम
हनानी था। ये बातें "इस्राएल के राजाओं के इतिहास"
नामक पुस्तक में लिखी हुई हैं।

35कुछ समय पश्चात यहूदा के राजा यहोशापात ने
इस्राएल के राजा अहज्याह के साथ सन्धि की। अहज्याह
ने बुरा किया। 36यहोशापात ने अहज्याह का साथ तर्शीश
नगर में जहाज जाने देने में दिया। उन्होंने जहाजों को
एस्योन गेबेर नगर में बनाया। 37तब एलीआजर ने
यहोशापात के विरुद्ध कहा। एलीआजर के पिता का
नाम दोदावाह था। एलीआजर मारेशा नगर का था।
उसने कहा, "यहोशापात, तुम अहज्याह के साथ मिल
गये हो, यही कारण है कि यहोवा तुम्हारे कार्य को नष्ट
करेगा।" जहाज टूट गए, अत: यहोशापात और अहज्याह
उन्हें तर्शीश नगर को न भेज सके।

21 तब यहोशापात मरा और अपने पूर्वजों के
साथ दफनाया गया। उसे दाऊद के नगर में
दफनाया गया। यहोराम यहोशापात के स्थान पर नया
राजा हुआ। यहोराम यहोशापात का पुत्र था। 2यहोराम
के भाई अजर्याह, यहीएल, जकर्याह, अजर्याह, मीकाएल
और शपत्याह थे। वे लोग यहोशापात के पुत्र थे। यहोशापात
यहूदा का राजा था। 3यहोशापात ने अपने पुत्रों को चाँदी,
सोना और कीमती चीजें भेंट में दीं। उसने उन्हें यहूदा में
शक्तिशाली किले भी दिये। किन्तु यहोशापात ने राज्य
यहोराम को दिया क्योंकि यहोराम सबसे बड़ा पुत्र था।

यहूदा का राजा यहोराम

4यहोराम ने अपने पिता का राज्य प्राप्त किया और
अपने को शक्तिशाली बनाया। तब उसने तलवार का
उपयोग अपने सभी भाईयों को मारने के लिये किया।
उसने इस्राएल के कुछ प्रमुखों को भी मार डाला। 5यहोराम
ने जब शासन आरम्भ किया तो वह बत्तीस वर्ष का था।
उसने यरुशलेम में आठ वर्ष तक शासन किया। 6वह
उसी तरह रहा जैसे इस्राएल के राजा रहते थे। वह उसी
प्रकार रहा जिस प्रकार अहाब का परिवार रहता था।
यह इसलिये हुआ कि यहोराम ने अहाब की पुत्री से
विवाह किया और यहोराम ने यहोवा की दृष्टि में बुरा
किया। 7किन्तु यहोवा दाऊद के परिवार को नष्ट नहीं
करना चाहता था क्योंकि उसने दाऊद के साथ वाचा
की थी। यहोवा ने वचन दिया था कि दाऊद और
उसकी सन्तान का एक वंश सदैव चलता रहेगा।

8यहोराम के समय में, एदोम यहूदा के अधिकार क्षेत्र
से बाहर निकल गया। एदोम के लोगों ने अपना राजा
चुन लिया। 9इसलिये यहोराम अपने सभी सेनापतियों
और रथों के साथ एदोम गया। एदोमी सेना ने यहोराम
और उसके रथ के रथपतियों को घेर लिया। किन्तु
यहोराम ने रात में युद्ध करके अपने निकलने का
रास्ता ढूँढ लिया। 10उस समय से अब तक एदोम का
देश यहूदा के विरुद्ध विद्रोही रहा है। लिब्ना नगर के
लोग भी यहोराम के विरुद्ध हो गए। यह इसलिए हुआ
कि यहोराम ने पूर्वजों के, यहोवा परमेश्वर को छोड़
दिया। 11यहोराम ने उच्च स्थान भी यहूदा के पहाड़ियों
पर बनाए। यहोराम ने यरूशलेम के लोगों को, परमेश्वर
जो चाहता है उसे करने से मना किया वह यहूदा के
लोगों को यहोवा से दूर ले गया।

12एलिय्याह नबी से यहोराम को एक सन्देश मिला।
सन्देश में यह कहा गया था: "यह वह है जो परमेश्वर
यहोवा कहता है। यही वह परमेश्वर है जिसका अनुसरण
तुम्हारा पूर्वज दाऊद करता था। यहोवा कहता है, 'यहोराम,
तुम उस प्रकार नहीं रहे जिस प्रकार तुम्हारा पिता
यहोशापात रहा। तुम उस प्रकार नहीं रहे जिस प्रकार
यहूदा का राजा आसा रहा। 13किन्तु तुम उस प्रकार रहे
जिस प्रकार इस्राएल के राजा रहे। तुमने यहूदा और
यरुशलेम के लोगों को वह काम करने से रोका है जो
यहोवा चाहता है। यही अहाब और उसके परिवार ने
किया। वे यहोवा के प्रति विश्वासयोग्य न रहे। तुमने
अपने भाईयों को मार डाला। तुम्हारे भाई तुमसे अच्छे
थे। 14अत: अब यहोवा शीघ्र ही तुम्हारे लोगों को बहुत
अधिक दण्ड देगा। यहोवा तुम्हारे बच्चों, पत्नियों और
तुम्हारी सारी सम्पत्ति को दण्ड देगा। 15तुम्हें आँतों की
भंयकर बीमारी होगी। यह प्रतिदिन अधिक बिगड़ती
जायेगी। तब तुम्हारी भंयकर बीमारी के कारण तुम्हारी
आँतें बाहर निकल आएंगी।'"

16यहोवा ने पलिश्तियों और कूशी लोगों के पास
रहने वाले अरब लोगों को यहोराम से रूष्ट किया।
17उन लोगों ने यहूदा देश पर आक्रमण कर दिया। वे
राजमहल की सारी सम्पत्ति और यहोराम के पुत्रों और
पत्नियों को ले गए। केवल यहोराम का सबसे छोटा पुत्र
छोड़ दिया गया। यहोराम के सबसे छोटे पुत्र का नाम
यहोआहाज था।

18उन चीज़ों के होने के बाद यहोवा ने यहोराम की
आँतों में ऐसा रोग उत्पन्न किया जिसका उपचार न हो
सका। 19तब यहोराम की आँतें, दो वर्ष बाद, उसकी
बीमारी के कारण, बाहर आ गई। वह बहुत बुरी पीड़ा
में मरा। यहोराम के सम्मान में लोगों ने आग की
महाज्वाला नहीं जलाई जैसा उन्होंने उसके पिता के
लिये किया था। 20यहोराम उस समय बत्तीस वर्ष का था
जब वह राजा हुआ था। उसने यरुशलेम में आठ वर्ष
शासन किया। जब यहोराम मरा तो कोई व्यक्ति दु:खी
नहीं हुआ। लोगों ने यहोराम को दाऊद के नगर में
दफनाया किन्तु उन कब्रों में नहीं जहाँ राजा दफनाये
जाते हैं।

यहूदा का राजा अहज्याह

22 यरूशलेम के लोगों ने अहज्याह को यहोराम
के स्थान पर नया राजा होने के लिये चुना।
अहज्याह यहोराम का सबसे छोटा पुत्र था। अरब लोगों
के साथ जो लोग यहोराम के डेरों पर आक्रमण करने
आए थे उन्होंने यहोराम के अन्य पुत्रों को मार डाला
था। अत: यहूदा में अहज्याह ने शासन करना आरम्भ
किया। 2अहज्याह ने जब शासन करना आरम्भ किया
तब वह बाईस वर्ष का था।* अहज्याह ने यरुशलेम में
एक वर्ष शासन किया। उसकी माँ का नाम अतल्याह
था। अतल्याह के पिता का नाम ओम्री था। 3अहज्याह
भी वैसे ही रहा जैसे अहाब का परिवार रहता था। वह
उस प्रकार रहा क्योंकि उसकी माँ ने उसे गलत काम
करने के लिये प्रोत्साहित किया। 4अहज्याह ने यहोवा
की दृष्टि में बुरे काम किये। यही अहाब के परिवार ने
किया था। अहाब के परिवार ने अहज्याह को उसके
पिता के मरने के बाद सलाह दी। उन्होंने अहज्याह को
बुरी सलाह दी। उस बुरी सलाह ने उसे मृत्यु तक पहुँचा
दिया।। 5अहज्याह ने उसी सलाह का अनुसरण किया
जो अहाब के परिवार ने उसे दी। अहज्याह राजा योराम
के साथ अराम के राजा हज़ाएल के विरुद्ध गिलाद के
रामोत नगर में गया। योराम के पिता का नाम अहाब
था जो इस्राएल का राजा था। किन्तु अर्मिया के लोगों ने
योराम को युद्ध में घायल कर दिया। 6योराम लौटकर
यिज्रेल नगर को स्वस्थ होने के लिये गया। वह तब
घायल हुआ था जब वह अराम के राजा हजाएल के
विरुद्ध रामोत में युद्ध कर रहा था।

तब अहज्याह योराम से मिलने यिज्रेल नगर को गया।
अहज्याह के पिता का नाम यहोराम था। वह यहूदा का
राजा था। योराम के पिता का नाम अहाब था। योराम
यिज्रेल नगर में था क्योंकि वह घायल था।

अहज्याह ... वर्ष का था कुछ प्राचीन प्रतियों में है 'बयालिस वर्ष का' 2राजा 8:26 में यह लिखा है कि अहज्याह बाईस वर्ष का था जब उसने शासन करना आरम्भ किया।

7परमेश्वर ने अहज्याह की मृत्यु तब करवा दी जब
वह योराम से मिलने गया। अहज्याह पहुँचा और योराम
के साथ येहू से मिलने गया। येहू के पिता का नाम
निमशी था। यहोवा ने येहू को अहाब के परिवार को
नष्ट करने के लिये चुना। 8येहू अहाब के परिवार को
दण्ड दे रहा था। येहू ने यहूदा के प्रमुखों और अहज्याह
के उन सम्बन्धियों का पता लगाया जो अहज्याह की
सेवा करते थे। येहू ने यहूदा के उन प्रमुखों और अहज्याह
के सम्बन्धियों को मार डाला। 9तब येहू अहज्याह की
खोज में था। येहू के लोगों ने उसे उस समय पकड़ लिया
जब वह शोमरोन नगर में छिपने का प्रयत्न कर रहा
था। वे अहज्याह को येहू के पास लाए। उन्होंने अहज्याह
को मार दिया और उसे दफना दिया। उन्होंने कहा,
"अहज्याह यहोशापात का वंशज है। यहोशापात ने पूरे
हृदय से यहोवा का अनुसरण किया था।" अहज्याह के
परिवार में वह शक्ति नहीं थी कि यहूदा के राज्य को
अखण्ड रख सके।

रानी अतल्याह

10अतल्याह अहज्याह की माँ थी। जब उसने देखा
कि उसका पुत्र मर गया तो उसने यहूदा में राजा के
सभी पुत्रों को मार डाला। 11किन्तु यहोशावत ने अहज्याह
के पुत्र योआश को लिया और उसे छिपा दिया। यहोशावत
ने योआश और उसकी धाय को अपने शयनकक्ष के
भीतर रखा। यहोशावत राजा यहोराम की पुत्री थी। वह
यहोयादा की पत्नी भी थी। यहोयादा एक याजक था
और यहोशावत अहज्याह की बहन थी। अतल्याह ने
योआश को नहीं मारा क्योंकि यहोशावत ने उसे छिपा
दिया था। 12योआश याजक के साथ परमेश्वर के मन्दिर
में छ: वर्ष तक छिपा रहा। उस काल में अतल्याह ने
रानी के रूप में देश पर शासन किया।

23 छ: वर्ष, बाद यहोयादा ने अपनी शक्ति दिखाई।
उसने नायकों के साथ सन्धि की। वे नायक:
यरोहाम का पुत्र अजर्याह यहोहानान का पुत्र इश्माएल,
ओबेद का पुत्र अजर्याह, अदायाह का पुत्र मासेयाह और
जिक्री का पुत्र एलीशापात थे। 2वे यहूदा के चारों ओर
गए और यहूदा के सभी नगरों से उन्होंने लेवीवंशियों
को इकट्ठा किया। उन्होंने इस्राएल के परिवारों के
प्रमुखों को भी इकट्ठा किया। तब वे यरूशलेम गए।
3सभी लोगों ने एक साथ मिलकर राजा के साथ परमेश्वर
के मन्दिर में एक सन्धि की।

यहोयादा ने इन लोगों से कहा, "राजा का पुत्र शासन
करेगा। यही वह वचन है जो यहोवा ने दाऊद के वंशजों
को दिया था। 4अब, तुम्हें यह अवश्य करना चाहिए:
याजकों और लेवीयों सब्त के दिन तुममें से जो काम पर
जाते हैं उनका एक तिहाई द्वार की रक्षा करेगा। 5तुम्हारा
एक तिहाई राजमहल पर रहेगा और तुम्हारा एक तिहाई

प्रारम्भिक फाटक पर रहेगा। किन्तु अन्य सभी लोग
यहोवा के मन्दिर के आँगन में रहेंगे। 6किसी भी व्यक्ति
को यहोवा के मन्दिर में न आने दो। केवल सेवा करने
वाले याजकों और लेवीवंशियों को पवित्र होने के कारण,
यहोवा के मन्दिर में आने की स्वीकृति है। किन्तु अन्य
लोग वह कार्य करेंगे जो यहोवा ने दे रखा है। 7लेवीवंशी
राजा के साथ रहेंगे। हर एक व्यक्ति अपनी तलवार
अपने साथ रखेगा। यदि कोई व्यक्ति मन्दिर में प्रवेश
करने की कोशिश करता है तो उस व्यक्ति को मार
डालो। तुम्हें राजा के साथ रहना है, वह जहाँ कहीं भी
जाये।"

8लेवीवंशी और यहूदा के सभी लोगों ने याजक यहोयादा
ने जो आदेश दिया, उसका पालन किया। याजक यहोयादा
ने याजकों के समूह में से किसी को छूट न दी। इस
प्रकार हर एक नायक और उसके सभी लोग सब्त के
दिन उनके साथ अन्दर आए जो सब्त के दिन बाहर गए
थे। 9याजक यहोयादा ने वे भाले तथा बड़ी और छोटी
ढालें अधिकारियों को दीं जो राजा दाऊद की थीं। वे
हथियार परमेश्वर के मन्दिर में रखे थे। 10तब यहोयादा
ने लोगों को बताया कि उन्हें कहाँ खड़ा होना है। हर
एक व्यक्ति अपने हथियार अपने हाथ में लिये था। पुरुष
मन्दिर की दाँयी ओर से बाँयी ओर तक लगातार खड़े
थे। वे वेदी, मन्दिर और राजा के निकट खड़े थे। 11वे
राजा के पुत्र को बाहर लाए और उसे मुकुट पहना
दिया। उन्होंने उसे व्यवस्था के पुस्तक की एक प्रति
दी।* तब उन्होंने योआश को राजा बनाया। यहोयादा
और उसके पुत्रों ने योआश का अभिषेक किया। उन्होंने
कहा, "राजा दीर्घायु हो!"

12अतल्याह ने मन्दिर की ओर दौड़ते हुए और राजा
की प्रशंसा करते हुए लोगों का शोर सुना। वह यहोवा
के मन्दिर पर लोगों के पास आई। 13उसने नजर दौड़ाई
और राजा को देखा। राजा राज स्तम्भ के साथ सामने
वाले द्वार पर खड़ा था। अधिकारी और लोग जो तुरही
बजाते थे, राजा के पास थे। देश के लोग प्रसन्न थे और
तुरही बजा रहे थे। गायक संगीत वाद्यों को बजा रहे थे।
गायक प्रशंसा के गायन में लोगों का नेतृत्व कर रहे थे।
तब अतल्याह ने अपने वस्त्रों को फाड़ डाला, और
उसने कहा, "षड़यन्त्र! षड़यन्त्र!"

14याजक यहोयादा सेना के नायकों को बाहर लाया।
उसने उनसे कहा, "अतल्याह को, सेना से, बाहर ले
आओ। अपनी तलवार का उपयोग उस व्यक्ति को मार
डालने के लिये करो जो उसके साथ जाता है।" तब
याजक ने सैनिकों को चेतावनी दी, "अतल्याह को
यहोवा के मन्दिर में मत मारो।" 15तब उन लोगों ने
अतल्याह को वश में कर लिया जब वह राजमहल के
अश्व द्वार पर आई। तब उन्होंने उसी स्थान पर उसे
मार डाला।

16तब यहोयादा ने राजा और सभी लोगों के साथ एक
सन्धि की। सभी ने स्वीकार किया कि वे यहोवा के
लोग रहेंगे। 17सभी लोग बाल की मूर्ति के मन्दिर में गए
और उसे उखाड़ डाला। उन्होंने बाल के मन्दिर की
वेदियों और मूर्तियों को तोड़ डाला। उन्होंने बाल की
वेदी के सामने बाल के याजक मत्तान को मार डाला।

18तब यहोयादा ने यहोवा के मन्दिर के लिये उत्तरदायी
याजकों को चुना। वे याजक लेवीवंशी थे और दाऊद ने
उन्हें यहोवा के मन्दिर के प्रति उत्तरदायी होने का कार्य
सौंपा था। उन याजकों को होमबलि मूसा के आदेश के
अनुसार यहोवा को चढ़ानी थी। वे अति प्रसन्नता से
दाऊद के आदेश के अनुसार गाते हुए बलि चढ़ाते थे।
19यहोयादा ने यहोवा के मन्दिर के द्वार पर द्वारपाल
रखे जिससे कोई व्यक्ति जो किसी दृष्टि से शुद्ध नहीं था
मन्दिर में नहीं जा सकता था। 20यहोयादा ने सेना के
नायकों, प्रमुखों, लोगों के प्रशासकों और देश के सभी
लोगों को अपने साथ लिया। तब यहोयादा ने राजा को
यहोवा के मन्दिर से बाहर निकाला और वे ऊपरी द्वार
से राजमहल में गए। उस स्थान पर उन्होंने राजा को
गद्दी पर बिठाया। 21यहूदा के सभी लोग बहुत प्रसन्न थे
और यरूशलेम नगर में शान्ति रही क्योंकि अतल्याह
तलवार से मार दी गई थी।

योआश फिर मन्दिर बनाता है

24 योआश जब राजा बना सात वर्ष का था। उसने
यरूशलेम में चालीस वर्ष तक शासन किया।
उसकी माँ का नाम सिब्या था। सिब्या बेर्शेबा नगर की
थी। 2योआश यहोवा के सामने तब तक ठीक काम
करता रहा जब तक याजक यहोयादा जीवित रहा।
3यहोयादा ने योआश के लिये दो पत्नियाँ चुनीं। योआश
के पुत्र और पुत्रियाँ थीं।

4तब कुछ समय बाद, योआश ने यहोवा का मन्दिर
दुबारा बनाने का निश्चय किया।

5योआश ने याजकों और लेवीवंशियों को एक साथ
बुलाया। उसने उनसे कहा, "यहूदा के नगरों में जाओ
और उस धन को इकट्ठा करो जिसका भुगतान इस्राएल
के लोग हर वर्ष करते हैं। उस धन का उपयोग परमेश्वर
के मन्दिर को दुबारा बनाने में करो। शीघ्रता करो और
इसे पूरा कर लो।" किन्तु लेवीवंशियों ने शीघ्रता नहीं
की।

6इसलिये राजा योआश ने प्रमुख याजक यहोयादा को
बुलाया। राजा ने कहा, "यहोयादा, तुमने लेवीवंशियों को
यहूदा और यरूशलेम से कर का धन लाने को प्रेरित
क्यों नहीं किया? यहोवा के सेवक मूसा और इस्राएल

उन्होंने उसे ... प्रति दी हिब्रू में पाठ हैं "उन्होंने उसे प्रमाण पत्र दिया।" यहाँ शब्द का अर्थ उन नियमों की प्रति है जिनका पालन राजा को करना था। देखें व्यवस्था. 17:18

के लोगों ने पवित्र तम्बू के लिये इस कर के धन का
उपयोग किया था।"
7बीते काल में अतल्याह के पुत्र, परमेश्वर के मन्दिर
में बलपूर्वक घुस गए थे। उन्होंने यहोवा के मन्दिर की
पवित्र चीज़ों का उपयोग अपने बाल देवताओं की पूजा
के लिये किया था। अतल्याह एक दुष्ट स्त्री थी।
8राजा योआश ने एक सन्दूक बनाने और उसे यहोवा
के मन्दिर के द्वार के बाहर रखने का आदेश दिया।
9तब लेवीवंशियों ने यहूदा और यरूशलेम में यह घोषणा
की। उन्होंने लोगों से कर का धन यहोवा के लिये लाने
को कहा। यहोवा के सेवक मूसा ने इस्राएल के लोगों से
मरुभूमि में रहते समय जो कर के रूप में धन माँगा था
उतना ही यह धन है। 10सभी प्रमुख और सभी लोग
प्रसन्न थे। वे धन लेकर आए और उन्होंने उसे सन्दूक
में डाला। वे तब तक देते रहे जब तक सन्दूक भर नहीं
गया। 11तब लेवीवंशियों को राजा के अधिकारियों के
सामने सन्दूक ले जानी पड़ी। उन्होंने देखा कि सन्दूक
धन से भर गया है। राजा के सचिव और प्रमुख याजक
के अधिकारी आए और उन्होंने धन को सन्दूक से
निकाला। तब वे सन्दूक को अपनी जगह पर फिर
वापस ले गए। उन्होंने यह बार-बार किया और बहुत
धन बटोरा। 12तब राजा योआश और यहोयादा ने वह
धन उन लोगों को दिया जो यहोवा के मन्दिर को बनाने
का कार्य कर रहे थे और यहोवा के मन्दिर बनाने में
कार्य करने वालों ने यहोवा के मन्दिर को दुबारा
बनाने के लिये कुशल बढ़ई और लकड़ी पर खुदाई का
काम करने वालों को मजदूरी पर रखा। उन्होंने यहोवा
के मन्दिर को दुबारा बनाने के लिये कांसे और लोहे
का काम करने की जानकारी रखने वालों को भी
मजदूरी पर रखा।
13काम की निगरानी रखने वाले व्यक्ति विश्वसनीय
थे। यहोवा के मन्दिर को दुबारा बनाने का काम सफल
हुआ। उन्होंने परमेश्वर के मन्दिर को जैसा वह पहले
था, वैसा ही बनाया और पहले से अधिक मजबूत बनाया।
14जब कारीगरों ने काम पूरा कर लिया तो वे उस धन
को जो बचा था, राजा योआश और यहोयादा के पास ले
आए। उसका उपयोग उन्होंने यहोवा के मन्दिर के लिये
चीजें बनाने के लिये किया। वे चीज़ें मन्दिर के सेवाकार्य
में और होमबलि चढ़ाने में काम आती थीं। उन्होंने सोने
और चाँदी के कटोरे और अन्य वस्तुएँ बनाई। याजकों
ने यहोवा के मन्दिर में हर एक संध्या को होमबलि तब
तक चढ़ाई जब तक यहोयादा जीवित रहा।
15यहोयादा बूढ़ा हुआ। उसने बहुत लम्बी उम्र बिताई
तब वह मरा। यहोयादा जब मरा, वह एक सौ तीस वर्ष
का था। 16लोगों ने यहोयादा को दाऊद के नगर में वहाँ
दफनाया जहाँ राजा दफनाए जाते हैं। लोगों ने यहोयादा
को वहाँ दफनाया क्योंकि अपने जीवन में उसने परमेश्वर
और परमेश्वर के मन्दिर के लिये इस्राएल में बहुत
अच्छे कार्य किये।
17यहोयादा के मरने के बाद यहूदा के प्रमुख आए
और वे राजा योआश के सामने झुके। राजा ने इन
प्रमुखों की सुनी। 18राजा और प्रमुखों ने उस यहोवा,
परमेश्वर के मन्दिर को अस्वीकार कर दिया जिसका
अनुसरण उनके पूर्वज करते थे। उन्होंने अशेरा-स्तम्भ
और अन्य मूर्तियों की पूजा आरम्भ की। परमेश्वर
यहूदा और यरूशलेम के लोगों पर क्रोधित हुआ क्योंकि
राजा और वे प्रमुख अपराधी थे। 19परमेश्वर ने लोगों
के पास नबियों को उन्हें यहोवा की ओर लौटाने के
लिये भेजा। नबियों ने लोगों को चेतावनी दी। किन्तु
लोगों ने सुनने से इन्कार कर दिया।
20परमेश्वर की आत्मा जकर्याह पर उतरी। जकर्याह
का पिता याजक यहोयादा था। जकर्याह लोगों के सामने
खड़ा हुआ और उसने कहा, "जो यहोवा कहता है वह
यह है: 'तुम लोग यहोवा का आदेश पालन करने से
क्यों इन्कार करते हो? तुम सफल नहीं होगे। तुमने
यहोवा को छोड़ा है। इसलिये यहोवा ने भी तुम्हें छोड़
दिया है!'"
21लेकिन लोगों ने जकर्याह के विरुद्ध योजना बनाई।
राजा ने जकर्याह को मार डालने का आदेश दिया, अत:
उन्होंने उस पर तब तक पत्थर मारे जब तक वह मर
नहीं गया। लोगों ने यह मन्दिर के आँगन में किया।
22राजा योआश ने अपने ऊपर यहोयादा की दयालुता
को भी याद नहीं रखा। यहोयादा जकर्याह का पिता था।
किन्तु योआश ने यहोयादा के पुत्र जकर्याह को मार
डाला। मरने के पहले जकर्याह ने कहा, "यहोवा उस
पर ध्यान दे जो तुम कर रहे हो और तुम्हें दण्ड दे!"
23वर्ष के अन्त में अराम की सेना योआश के विरुद्ध
आई। उन्होंने यहूदा और यरुशलेम पर आक्रमण किया
और लोगों के सभी प्रमुखों को मार डाला। उन्होंने सारी
कीमती चीजें दमिश्क के राजा के पास भेज दीं।
24अराम की सेना बहुत कम समूहों में आई थी किन्तु
यहोवा ने उसे यहूदा की बहुत बड़ी सेना को हराने
दिया। यहोवा ने यह इसलिये किया कि यहूदा के लोगों
ने यहोवा परमेश्वर को छोड़ दिया जिसका अनुसरण
उनके पूर्वज करते थे। इस प्रकार योआश को दण्ड
मिला। 25जब अराम के लोगों ने योआश को छोड़ा, वह
बुरी तरह घायल था। योआश के अपने सेवकों ने
उसके विरुद्ध योजना बनाई। उन्होंने ऐसा इसलिये किया
कि योआश ने याजक यहोयादा के पुत्र जकर्याह को
मार डाला था। सेवकों ने योआश को उसकी अपनी
शैया पर ही मार डाला। योआश के मरने के बाद
लोगों ने उसे दाऊद के नगर में दफनाया। किन्तु लोगों
ने उसे उस स्थान पर नहीं दफनाया जहाँ राजा दफनाये
जाते हैं।

26जिन सेवकों ने योआश के विरुद्ध योजना बनाई, वे
ये हैं जाबाद और यहोजाबाद। जाबाद की माँ का नाम
शिमात था। शिमात अम्मोन की थी। यहोजाबाद की माँ
का नाम शिम्रित था। शिम्रित मोआब की थी। **27**योआश
के पुत्रों की कथा, उसके विरुद्ध बड़ी भविष्यवाणियाँ
और उसने फिर परमेश्वर का मन्दिर कैसे बनाया,
"राजाओं के व्याख्या" नामक पुस्तक में लिखा है।
उसके बाद अमस्याह नया राजा हुआ। अमस्याह योआश
का पुत्र था।

यहूदा का राजा अमस्याह

25 अमस्याह राजा बनने के समय पच्चीस वर्ष
का था। उसने यरूशलेम में उन्तीस वर्ष तक
शासन किया। उसकी माँ का नाम यहोअद्दान था।
यहोअद्दान यरूशलेम की थी। **2**अमस्याह ने वही किया
जो यहोवा उससे करवाना चाहता था। किन्तु उसने उन्हें
पूरे हृदय से नहीं किया। **3**अमस्याह के हाथ में राज्यसत्ता
सुदृढ़ हो गयी। तब उसने उन अधिकारियों को मार
डाला जिन्होंने उसके पिता राजा को मारा था। **4**किन्तु
अमस्याह ने उन अधिकारियों के बच्चों को नहीं मारा।
क्यों? क्योंकि उसने मूसा के पुस्तक में लिखे नियमों
को माना। यहोवा ने आदेश दिया था, "पिताओं को
अपने पुत्रों के पाप के लिये नहीं मारना चाहिए। बच्चों
को अपने पिता के पापों के लिये नहीं मरना चाहिए।
हर एक व्यक्ति को अपने स्वयं के पाप के लिये मरना
चाहिए।"

5अमस्याह ने यहूदा के लोगों को इकट्ठा किया।
उसने उनके परिवारों का वर्ग बनाया और उन वर्गों के
अधिकारी सेनाध्यक्ष और नायक नियुक्त किये। वे प्रमुख
यहूदा और बिन्यामीन के सभी सैनिकों के अधिकारी
हुए। सभी लोग जो सैनिक होने के लिये चुने गए, बीस
वर्ष के या उससे अधिक के थे। वे सब तीन लाख
प्रशिक्षित सैनिक भाले और ढाल के साथ लड़ने वाले
थे। **6**अमस्याह ने एक लाख सैनिकों को इस्राएल से
किराये पर लिया। उसने पौने चार टन चाँदी का भुगतान
उन सैनिकों को किराये पर लेने के लिये किया। **7**किन्तु
परमेश्वर का एक व्यक्ति अमस्याह के पास आया।
परमेश्वर के व्यक्ति ने कहा, "राजा, अपने साथ इस्राएल
की सेना को न जाने दो। परमेश्वर इस्राएल के साथ
नहीं है। परमेश्वर एप्रैम के लोगों के साथ नहीं है।
8सम्भव है तुम अपने को शक्तिशाली बनाओ और युद्ध
की तैयारी करो, किन्तु परमेश्वर तुम्हें जिता या हरा
सकता है। **9**अमस्याह ने परमेश्वर के व्यक्ति से कहा,
"किन्तु हमारे धन का क्या होगा जो मैंने पहले ही
इस्राएल की सेना को दे दिया है?" परमेश्वर के व्यक्ति
ने उत्तर दिया, "यहोवा के पास बहुत अधिक है। वह
उससे भी अधिक तुमको दे सकता है!"

10इसलिए अमस्याह ने इस्राएल की सेना को वापस
घर एप्रैम को भेज दिया। वे लोग राजा और यहूदा के
लोगों के विरुद्ध बहुत क्रोधित हुए। वे बहुत अधिक
क्रोधित होकर अपने घर लौटे।

11तब अमस्याह बहुत साहसी हो गया और वह अपनी
सेना को एदोम देश में नमक की घाटी में ले गया। उस
स्थान पर अमस्याह की सेना ने सेईर के दस हजार
सैनिकों को मार डाला। **12**यहूदा की सेना ने सेईर से दस
हजार आदमी पकड़े। वे उन लोगों को सेईर से एक
ऊँची चट्टान की चोटी पर ले गए। वे लोग तब तक
जीवित थे। तब यहूदा की सेना ने उन व्यक्तियों को उस
ऊँची चट्टान की चोटी से नीचे फेंक दिया और उनके
शरीर नीचे की चट्टानों पर चूर चूर हो गए।

13किन्तु उसी समय इस्राएली सेना यहूदा के कुछ
नगरों पर आक्रमण कर रही थी। वे शोमरोन से बेथोरोन
नगर तक के नगरों पर आक्रमण कर रहे थे। उन्होंने
तीन हजार लोगों को मार डाला और वे बहुत सी कीमती
चीज़ें ले गए। उस सेना के लोग इसलिये क्रोधित थे
क्योंकि अमस्याह ने उन्हें युद्ध में अपने साथ सम्मिलित
नहीं होने दिया।

14अमस्याह एदोमी लोगों को हराने के बाद घर लौटा।
वह सेइर के लोगों की उन देवमूर्तियों को लाया जिनकी
वे पूजा करते थे। अमस्याह ने उन देवमूर्तियों को पूजना
आरम्भ किया। उसने उन देवताओं को प्रणाम किया
और उनको सुगन्धि भेंट की। **15**यहोवा अमस्याह पर
बहुत क्रोधित हुआ। यहोवा ने अमस्याह के पास एक
नबी भेजा। नबी ने कहा, "अमस्याह, तुमने उन देवताओं
की क्यों पूजा की जिन्हें वे लोग पूजते थे? वे देवता तो
अपने लोगों की भी तुमसे रक्षा न कर सके!"

16जब नबी ने यह बोला, अमस्याह ने नबी से कहा,
"हम लोगों ने तुम्हें कभी राजा का सलाहकार नहीं
बनाया! चुप रहो! यदि तुम चुप नहीं रहे तो मार डाले
जाओगे।" नबी चुप हो गया, किन्तु उसने तब कहा,
"परमेश्वर ने सचमुच तुमको नष्ट करने का निश्चय
कर लिया है। क्योंकि तुम वे बुरी बातें करते हो और
मेरी सलाह नहीं सुनते।"

17यहूदा के राजा अमस्याह ने अपने सलाहकार के
साथ सलाह की। तब उसने योआश के पास सन्देश
भेजा। अमस्याह ने योआश से कहा, "हम लोग
आमने-सामने मिलें।" योआश यहोआहाज का पुत्र था।
यहोआहाज येहू का पुत्र था। येहू इस्राएल का राजा था।

18तब योआश ने अपना उत्तर अमस्याह को भेजा।
योआश इस्राएल का राजा था और अमस्याह यहूदा का
राजा था। योआश ने यह कथा सुनाई: "लबानोन की
एक छोटी कंटीली झाड़ी ने लबानोन के एक विशाल
देवदारु के वृक्ष को सन्देश भेजा। छोटी कंटीली झाड़ी ने
कहा, 'अपनी पुत्री का विवाह मेरे पुत्र के साथ कर दो,'

किन्तु एक जंगली जानवर निकला और उसने कंटीली
झाड़ी को कुचला और उसे नष्ट कर दिया। 19तुम
कहते हो, 'मैंने एदोम को हराया है!' तुम्हें उसका घंमड
है और उसकी डींग हाँकते हो। किन्तु तुम्हें घर में घुसे
रहना चाहिए। तुम्हें खतरा मोल लेने की आवश्यकता
नहीं है। यदि तुम मुझसे युद्ध करोगे तो तुम और यहूदा
नष्ट हो जाएंगे।"

20किन्तु अमस्याह ने सुनने से इन्कार कर दिया। यह
परमेश्वर की ओर से हुआ। परमेश्वर ने यहूदा को
इस्राएल द्वारा हराने की योजना बनाई क्योंकि यहूदा के
लोग उन देवताओं का अनुसरण कर रहे थे जिनका
अनुसरण एदोम के लोग करते थे। 21इसलिये इस्राएल
का राजा योआश बेतशेमेश नगर में यहूदा के राजा
अमस्याह से आमने-सामने मिला। बेतशेमेश यहूदा में
है। 22इस्राएल ने यहूदा को हराया। यहूदा का हर एक
व्यक्ति अपने घरों को भाग गया। 23योआश ने अमस्याह
को बेतशेमेश में पकड़ा और उसे यरूशलेम ले गया।
अमस्याह के पिता का नाम योआश था। योआश के
पिता का नाम यहोआहाज था। योआश ने छ: सौ फुट
लम्बी यरूशलेम की उस दीवार को जो एप्रैम फाटक से
कोने के फाटक तक थी, गिरा दिया। 24तब योआश ने
परमेश्वर के मन्दिर का सोना, चाँदी तथा कई अन्य
सामान ले लिया। ओबेदेदोम मन्दिर में उन चीजों की
सुरक्षा का उत्तरदायी था। किन्तु योआश ने उन सभी
चीजों को ले लिया। योआश ने राजमहल से भी कीमती
चीज़ों को लिया। तब योआश ने कुछ व्यक्तियों को
बन्दी बनाया और शोमरोन लौट गया।

25अमस्याह योआश के मरने के बाद पन्द्रह वर्ष
जीवित रहा। अमस्याह का पिता यहूदा का राजा योआश
था। 26अमस्याह ने आरम्भ से अन्त तक अन्य जो कुछ
किया वह सब "इस्राएल और यहूदा के राजा के इतिहास"
नामक पुस्तक में लिखा है। 27जब अमस्याह ने यहोवा
की आज्ञा का पालन करना छोड़ दिया, यरूशलेम के
लोगों ने उसके विरुद्ध एक योजना बनाई। वह लाकीश
नगर को भाग गया। किन्तु लोगों ने लाकीश में व्यक्तियों
को भेजा और उन्होंने अमस्याह को वहाँ मार डाला।
28तब वे अमस्याह के शव को घोड़ों पर ले गए और
उसे उसके पूर्वजों के साथ यहूदा में दफनाया।

यहूदा का राजा उज्जिय्याह

26 तब यहूदा के लोगों ने अमस्याह के स्थान पर
नया राजा होने के लिये उज्जिय्याह को चुना।
अमस्याह उज्जिय्याह का पिता था। जब यह हुआ तो
उज्जिय्याह सोलह वर्ष का था। 2उज्जिय्याह ने एलोत
नगर को दुबारा बनाया और इसे यहूदा को लौटा दिया।
उज्जिय्याह ने यह अमस्याह के मर जाने और पूर्वजों के
साथ उसके दफनाए जाने के बाद किया।

3उज्जिय्याह जब राजा हुआ तो वह सोलह वर्ष का
था। उसने यरुशलेम में बावन वर्ष तक राज्य किया।
उसकी माँ का नाम यकील्याह था। यकील्याह
यरूशलेम की थी। 4उज्जिय्याह ने वह किया जो यहोवा
उससे करवाना चाहता था। उसने यहोवा का अनुसरण
वैसे ही किया जैसे उसके पिता अमस्याह ने किया था।
5उज्जिय्याह ने परमेश्वर का अनुसरण जकर्याह के
जीवन-काल में किया। जकर्याह ने उज्जिय्याह को शिक्षा
दी कि परमेश्वर का सम्मान और उसकी आज्ञा का
पालन कैसे किया जाता है। जब उज्जिय्याह यहोवा की
आज्ञा का पालन कर रहा था तब परमेश्वर ने उसे
सफलता दिलाई।

6उज्जिय्याह ने पलिश्ती लोगों के विरुद्ध एक युद्ध
किया। उसने गत, यब्ने, और अशदोद नगर की दीवारों
को गिरा दिया। उज्जियाह ने अश्दोद नगर के पास और
पलिश्ती लोगों के बीच अन्य स्थानों में नगर बसाये।
7परमेश्वर ने उज्जिय्याह की सहायता पलिश्तियों के
गूर्बाल नगर में रहने वाले अरबों और मूनियों के साथ
युद्ध करने में की। 8अम्मोनी उज्जिय्याह को राज्य कर
देते थे। उज्जिय्याह का नाम मिस्र की सीमा तक प्रसिद्ध
हो गया। वह प्रसिद्ध था क्योंकि वह बहुत शक्तिशाली
था।

9उज्जिय्याह ने यरूशलेम में कोने के फाटक, घाटी
के फाटक और दीवार के मुड़ने के स्थानों पर मीनारें
बनवाई। उज्जिय्याह ने उन मीनारों को दृढ़ बनाया।
10उज्जिय्याह ने मीनारों को मरुभूमि में बनाया। उसने
बहुत से कुँए भी खुदवाए। उसके पास पहाड़ी और
मैदानी प्रदेशों में बहुत से पशु थे। उज्जिय्याह के पास
पर्वतों में और जहाँ अच्छी उपज होती थी, उस भूमि में
किसान थे। वह ऐसे व्यक्तियों को भी रखे हुए था जो
उन खेतों की रखवाली करते थे जिनमें अँगूर होते थे।
उसे कृषि से प्रेम था।

11उज्जिय्याह के पास प्रशिक्षित सैनिकों की एक सेना
थी। वे सैनिक सचिव यीएल और अधिकारी मासेयाह
द्वारा वर्गो में बँटे थे। हनन्याह उनका प्रमुख था। यीएल
और मासेयाह ने उन सैनिकों को गिना और उन्हें वर्गो
में रखा। हनन्याय राजा के अधिकारियों में से एक था।
12सैनिकों के ऊपर दो हजार छ: सौ प्रमुख थे। 13वे
परिवार प्रमुख तीन लाख सात हजार पाँच सौ पुरुषों की
उस सेना के अधिपति थे जो बड़ी शक्ति से लड़ती थी। वे
सैनिक राजा को शत्रुओं के विरुद्ध सहायता करते थे।
14उज्जिय्याह ने सेना को ढाल, भाले, टोप, कवच, धनुष
और गुलेलों के लिये पत्थर दिये थे। 15यरूशलेम में
उज्जियायाह ने जो यन्त्र बनाए वह बुद्धिमानों के अविष्कार
थे। वे यन्त्र मीनारों तथा कोने की दीवारों पर रखे गए
थे। ये यन्त्र बाण और बड़े पत्थर फेंकते थे। उज्जिय्याह
प्रसिद्ध हो गया। लोग उसका नाम दूर-दूर के देशों में

जानते थे। उसके पास बड़ी सहायता थी और वह
शक्तिशाली राजा हो गया।

16किन्तु जब उजिय्याह शक्तिशाली हो गया, उसके
घमण्ड ने उसे नष्ट किया। वह यहोवा परमेश्वर के प्रति
विश्वासयोग्य नहीं रहा। वह यहोवा के मन्दिर में सुगन्धि
जलाने की वेदी पर गया। 17याजक अजर्याह और यहोवा
के अस्सी साहसी याजक सेवक उजिय्याह के पीछे
मन्दिर में गए। 18उन्होंने उजिय्याह से कहा कि तुम
गलती कर रहे हो। उन्होंने उससे कहा, "उजिय्याह,
यहोवा के लिये सुगन्धि जलाना तुम्हारा काम नहीं है।
यह करना तुम्हारे लिये ठीक नहीं है। याजक और
हारून के वंशज ही केवल यहोवा के लिये सुगन्धि
जलाते हैं। इन याजकों को सुगन्धि जलाने की पवित्र
सेवा के लिये प्रशिक्षण दिया गया है। सर्वाधिक पवित्र
स्थान से बाहर निकल जाओ। तुम विश्वासयोग्य नहीं
रहे हो। यहोवा परमेश्वर तुमको इसके लिये सम्मान
नहीं देगा!"

19किन्तु उज्जिय्याह क्रोधित हुआ। उसके हाथ में
सुगन्धि जलाने के लिये एक कटोरा था। जिस समय
उज्जिय्याह याजकों पर बहुत क्रोधित था, उसी समय
उसके माथे पर कुष्ठ हो गया। यह याजकों के सामने
यहोवा के मन्दिर में सुगन्धि जलाने के वेदी के पास
हुआ। 20प्रमुख याजक अजर्याह और सभी याजकों ने
उज्जिय्याह को देखा। वे उसके ललाट पर कुष्ठ देख
सकते थे। याजकों ने शीघ्रता से उज्जियाह को मन्दिर से
बाहर जाने को विवश किया। उज्जिय्याह ने स्वयं शीघ्रता
की, क्योंकि यहोवा ने उसे दण्ड दे दिया था। 21राजा
उज्जिय्याह मृत्यु पर्यन्त कोढ़ी था। वह यहोवा के मन्दिर
में प्रवेश नहीं कर सकता था। उज्जिय्याह के पुत्र योताम
ने राजमहल को व्यवस्थित रखा और लोगों का प्रशासक
बना।

22उज्जिय्याह ने आरम्भ से लेकर अन्त तक जो कुछ
किया वह यशायाह नबी द्वारा लिखा गया। यशायाह का
पिता आमोस था। 23उज्जिय्याह मरा और अपने पूर्वजों
के पास दफनाया गया। उज्जिय्याह को राजाओं के
कब्रिस्तान के पास मैदान में दफनाया गया। क्यों? क्योंकि
लोगों ने कहा, "उज्जिय्याह को कोढ़ है।" योताम उज्जिय्याह
के स्थान पर नया राजा हुआ। योताम उज्जिय्याह का पुत्र
था।

यहूदा का राजा योताम

27 योताम पच्चीस वर्ष का था जब वह राजा हुआ।
उसने सोलह वर्ष तक यरूशलेम में शासन
किया। उसकी माँ का नाम यरूशा था। यरूशा सादोक
की पुत्री थी। 2योताम ने वह किया, जो यहोवा उससे
करवाना चाहता था। उसने परमेश्वर की आज्ञा का
पालन वैसे ही किया जैसे उसके पिता उज्जिय्याह ने
किया था। किन्तु योताम यहोवा के मन्दिर में सुगन्धि
जलाने के लिये उसी प्रकार नहीं घुसा जैसे उसका पिता
घुसा था। किन्तु लोगों ने पाप करना जारी रखा। 3योताम
ने यहोवा के मन्दिर के ऊपरी द्वार को दुबारा बनाया।
उसने ओपेल नामक स्थान में दीवार पर बहुत से निर्माण
कार्य किये। 4योताम ने यहूदा के पहाड़ी प्रदेश में भी
नगर बनाए। योताम ने मीनार और किले जंगलों में
बनाए। 5योताम अम्मोनी लोगों के राजा और उसके सेना
के विरुद्ध लड़ा और उन्हें हराया। इसलिये हर वर्ष तीन
वर्ष तक अम्मोनी लोग योताम को पौने चार टन चाँदी,
बासठ हजार बुशल गेहूँ और बासठ बुशल जौ देते रहे।

6योताम शक्तिशाली हो गया क्योंकि उसने
विश्वासपूर्वक यहोवा, अपने परमेश्वर की आज्ञा का
पालन किया। 7योताम ने अन्य जो कुछ भी किया तथा
उसके सभी युद्ध "यहूदा और इस्राएल के राजाओं के
इतिहास" की पुस्तक में लिखे गए हैं। 8योताम जब राजा
हुआ था, पच्चीस वर्ष का था। उसने यरूशलेम पर
सोलह वर्ष शासन किया। 9तब योताम मरा और अपने
पूर्वजों के साथ दफनाया गया। लोगों ने उसे दाऊद के
नगर में दफनाया। योताम के स्थान पर आहाज राजा
हुआ। आहाज योताम का पुत्र था।

यहूदा का राजा आहाज

28 आहाज बीस वर्ष का था, जब वह राजा हुआ।
उसने यरूशलेम में सोलह वर्ष तक राज्य किया।
आहाज अपने पूर्वज दाऊद की तरह सच्चाई से नहीं
रहा। आहाज ने वह नहीं किया जो कुछ यहोवा चाहता
था कि वह करे। 2आहाज ने इस्राएली राजाओं के बुरे
उदाहरणों का अनुसरण किया। उसने बाल-देवता की
पूजा के लिये मूर्तियों को बनाने के लिये साँचे का
उपयोग किया। 3आहाज ने हिन्नोम की घाटी में सुगन्धि
जलाई। उसने अपने पुत्रों को आग में जलाकर बलि भेंट
की। उसने वे सब भयंकर पाप किये जिसे उस प्रदेश में
रहने वाले व्यक्तियों ने किया था। यहोवा ने उन व्यक्तियों
को बाहर जाने को विवश किया था जब इस्राएल के
लोग उस भूमि में आए थे। 4आहाज ने बलि भेंट की
और सुगन्धि को उच्चस्थानों अर्थात् पहाड़ियों और हर
एक हरे पेड़ के नीचे जलाया।

5-6आहाज ने पाप किया, इसलिये यहोवा, उसके
परमेश्वर ने अराम के राजा को उसे पराजित करने
दिया। अराम के राजा और उसकी सेना ने आहाज को
हराया और यहूदा के अनेक लोगों को बन्दी बनाया।
अराम का राजा उन बन्दियों को दमिश्क नगर को ले
गया। यहोवा ने इस्राएल के राजा पेकह को भी आहाज
को पराजित करने दिया। पेकह के पिता का नाम
रमल्याह था। पेकह और उसकी सेना ने एक दिन में
यहूदा के एक लाख बीस हजार वीर सैनिकों को मार

डाला। पेकह ने यहूदा के उन लोगों को इसलिये हराया
कि उन्होंने उस यहोवा, परमेश्वर की आज्ञा मानना
अस्वीकार कर दिया जिसकी आज्ञा उनके पूर्वज मानते
थे। 7जिक्री एप्रैमी का एक वीर सैनिक था। जिक्री ने
राजा आहाज के पुत्र मासेयाह और राजमहल के संरक्षक
अधिकारी अज्रीकाम और एलकाना को मार डाला।
एलकाना राजा के ठीक बाद द्वितीय शक्ति था।

8इस्राएल की सेना ने यहूदा में रहने वाले दो लाख
अपने निकट सम्बन्धियों को पकड़ा। उन्होंने स्त्रियों,
बच्चे और यहूदा से बहुत कीमती चीज़ें लीं। इस्राएली उन
बन्दियों और उन चीजों को शोमरोन नगर को ले आए।
9किन्तु वहाँ यहोवा का एक नबी था। इस नबी का नाम
ओदेद था। ओदेद इस्राएल की इस सेना से मिला जो
शोमरोन लौट आई। ओदेद ने इस्राएल की सेना से कहा,
"यहोवा, परमेश्वर ने जिसकी आज्ञा तुम्हारे पूर्वजों ने
मानी, तुम्हें यहूदा के लोगों को हराने दिया क्योंकि वह
उन पर क्रोधित था। तुम लोगों ने यहूदा के लोगों को
बहुत नीच ढंग से मारा और दण्डित किया। अब परमेश्वर
तुम पर क्रोधित है। 10तुम यहूदा और यरूशलेम के
लोगों को दास की तरह रखने की योजना बना रहे हो।
तुम लोगों ने भी यहोवा, अपने परमेश्वर के विरुद्ध पाप
किया है। 11अब मेरी सुनो। अपने जिन भाई बहनों को
तुम लोगों ने बन्दी बनाया है उन्हें वापस कर दो। यह
करो क्योंकि यहोवा का भयंकर क्रोध तुम्हारे विरुद्ध
है।"

12तब एप्रैम के कुछ प्रमुखों ने इस्राएल के सैनिकों
को युद्ध से लौटकर घर आते देखा। वे प्रमुख इस्राएल
के सैनिकों से मिले और उन्हें चेतावनी दी। वे प्रमुख
योहानान का पुत्र अजर्याह, मशिल्लेमोत का पुत्र बेरेक्याह,
शल्लूम का पुत्र यहिजकिय्याह और हदलै का पुत्र अमासा
थे। 13उन प्रमुखों ने इस्राएली सैनिकों से कहा, "यहूदा
के बन्दियों को यहाँ मत लाओ। यदि तुम यह करते हो
तो यह हम लोगों को यहोवा के विरुद्ध बुरा पाप करायेगा।
वह हमारे पाप और अपराध को और अधिक बुरा
करेगा तथा यहोवा हम लोगों के विरुद्ध बहुत क्रोधित
होगा!" 14इसलिए सैनिकों ने बन्दियों और कीमती चीजों
को उन प्रमुखों और इस्राएल के लोगों को दे दिया।
15पहले गिनाए गए प्रमुख (अजर्याह, बेरेक्याह,
यहिजकिय्याह और अमास) खड़े हुए और उन्होंने बन्दियों
की सहायता की। इन चारों व्यक्तियों ने उन वस्त्रों को
लिया जो इस्राएली सेना ने लिये थे और इसे उन लोगों
को दिया जो नंगे थे। उन प्रमुखों ने उन लोगों को जूते
भी दिये। उन्होंने यहूदा के बन्दियों को कुछ खाने और
पीने को दिया। उन्होंने उन लोगों को तेल मला। तब
एप्रैम के प्रमुखों ने कमजोर बन्दियों को खच्चरों पर
चढ़ाया और उन्हें उनके घर यरीहो में उनके परिवारों
के पास ले गये। यरीहो का नाम ताड़ के पेड़ का नगर
था। तब वे चारों प्रमुख अपने घर शोमरोन को लौट
गए।

16-17उसी समय, एदोम के लोग फिर आए और उन्होंने
यहूदा के लोगों को हराया। एदोमियों ने लोगों को बन्दी
बनाया और उन्हें बन्दी के रूप में ले गए। इसलिये राजा
आहाज ने अश्शूर के राजा से सहायता माँगी। 18पलिश्ती
लोगों ने भी पहाड़ी के नगरों और दक्षिण यहूदा पर
आक्रमण किया। पलिश्ती लोगों ने बेतशेमेश, अय्यालोन,
गदेरोत, सोको, तिम्ना और गिमजो नामक नगरों पर
अधिकार कर लिया। उन्होंने उन नगरों के पास के
गाँवों पर भी अधिकार कर लिया। तब उन नगरों में
पलिश्ती रहने लगे। 19यहोवा ने यहूदा को कष्ट दिया
क्योंकि यहूदा के राजा आहाज ने यहूदा के लोगों को
पाप करने के लिये प्रोत्साहित किया। वह यहोवा के
प्रति बहुत अधिक अविश्वास योग्य था। 20अश्शूर का
राजा तिलगतपिलनेसेर आया और आहाज को सहायता
देने के स्थान पर उसने कष्ट दिया। 21आहाज ने कुछ
कीमती चीजें यहोवा के मन्दिर, राजमहल और राजकुमार
भवन से इकट्ठा कीं। आहाज ने वे चीजें अश्शूर के
राजा को दीं। किन्तु उसने आहाज को सहायता नहीं दी।

22आहाज की परेशानियों के समय में उसने और
अधिक बुरे पाप किये और यहोवा का और अधिक
अविश्वास योग्य बन गया। 23उसने दमिश्क के लोगों
द्वारा पूजे जाने वाले देवताओं को बलिभेंट की। दमिश्क
के लोगों ने आहाज को पराजित किया था। इसलिए
उसने मन ही मन सोचा था, "अराम के लोगों के
देवताओं की पूजा ने उन्हें सहायता दी। यदि मैं उन
देवताओं को बलिभेंट करूँ तो संभव है, वे मेरी भी
सहायता करें।" आहाज ने उन देवताओं की पूजा की।
इस प्रकार उसने पाप किया और उसने इस्राएल के
लोगों को पाप करने वाला बनाया।

24आहाज ने यहोवा के मन्दिर से चीज़ें इकट्ठी कीं
और उनके टुकड़े कर दिये। तब उसने यहोवा के
मन्दिर का द्वार बन्द कर दिया। उसने वेदियाँ बनाई
और यरूशलेम में सड़क के हर मोड़ पर उन्हें रखा।
25आहाज ने यहूदा के हर नगर में अन्य देवताओं की
पूजा के लिये उच्च स्थान सुगन्धि जलाने के लिये बनाए।
आहाज ने यहोवा, परमेश्वर को बहुत क्रोधित कर
दिया जिसकी आज्ञा का पालन उसके पूर्वज करते थे।

26आहाज ने आरम्भ से अन्त तक जो कुछ अन्य
किया वह "यहूदा और इस्राएल के राजाओं के इतिहास"
नामक पुस्तक में लिखा है। 27आहाज मरा और अपने
पूर्वजों के साथ दफनाया गया। लोगों ने आहाज को
यरूशलेम नगर में दफनाया। किन्तु उन्होंने आहाज को
उसी कब्रिस्तान में नहीं दफनाया जहाँ इस्राएल के राजा
दफनाये गए थे। आहाज के स्थान पर हिजकिय्याह नया
राजा बना। हिजकिय्याह आहाज का पुत्र था।

यहूदा का राजा हिजकिय्याह

29 हिजकिय्याह जब पच्चीस वर्ष का था, राजा
हुआ। उसने उनतीस वर्ष तक यरूशलेम में
शासन किया। उसकी माँ का नाम अबिय्याह था।
अबिय्याह जकर्याह की पुत्री थी। 2हिजकिय्याह ने वही
किया जो यहोवा चाहता था कि वह करे। उसने अपने
पूर्वज दाऊद की तरह, जो उचित था, वही किया।

3हिजकिय्याह ने यहोवा के मन्दिर के दरवाजों को
जोड़ा और उन्हें मजबूत किया। हिजकिय्याह ने मन्दिर
को फिर खोला। उसने राजा होने के बाद, वर्ष के पहले
महीने में यह किया। 4-5हिजकिय्याह ने याजकों और
लेवीवंशियों को एक बैठक में एक साथ बिठाया। वह
मन्दिर के पूर्व की दिशा में खुले आँगन में उनके साथ
बैठक में शामिल हुआ। हिजकिय्याह ने उनसे कहा,
"मेरी सुनों, लेवीवंशियों! पवित्र सेवा के लिये अपने को
तैयार करो। यहोवा, परमेश्वर के मन्दिर को पवित्र
सेवा के लिये तैयार करो। वह परमेश्वर है जिसकी
आज्ञा का पालन तुम्हारे पूर्वजों ने किया। मन्दिर से उन
चीज़ों को बाहर करो जो वहाँ के लिये नहीं हैं। वे चीजें
मन्दिर को शुद्ध नहीं बनाती। 6हमारे पूर्वजों ने यहोवा
को छोड़ा और यहोवा के भवन से मुख मोड़ लिया।
7उन्होंने मन्दिर के स्वागत–कक्ष के दरवाजे को बन्द
कर दिया और दीपकों को बुझा दिया। उन्होंने सुगन्धि
का जलाना और इस्राएल के परमेश्वर को पवित्र स्थान
में होमबलि भेंट करना बन्द कर दिया। 8इसलिये, यहोवा
यहूदा और यरूशलेम के लोगों पर बहुत क्रोधित हुआ।
यहोवा ने उन्हें दण्ड दिया। अन्य लोग भयभीत हुए और
दुःखी हुए जब उन्होंने देखा कि यहोवा ने यहूदा और
यरूशलेम के लोगों के साथ क्या किया। अन्य लोगों ने
यहूदा के लोगों के लिये लज्जा और घृणा से अपने सिर
झुका लिये। तुम जानते हो कि यह सब सच है। तुम
अपनी आँखों से इसे देख सकते हो। 9यही कारण है कि
हमारे पूर्वज युद्ध में मारे गये। हमारे पुत्र, पुत्रियाँ और
पत्नियाँ बन्दी बनाई गई। 10इसलिये मैं हिजकिय्याह ने
यह निश्चय किया है कि मैं यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर
के साथ एक वाचा करूँ। तब वह हम लोगों पर आगे
क्रोधित नहीं होगा। 11इसलिए मेरे पुत्रों तुम लोग सुस्त न
हो या और अधिक समय नष्ट न करो। यहोवा ने तुम
लोगों को अपनी सेवा के लिये चुना है। तुम्हें उसकी
सेवा करनी चाहिए और उसके लिये सुगन्धि जलानी
चाहिए।"

12-14उन लेवीवंशियों की यह सूची है जो वहाँ थे और
जिन्होंने कार्य आरम्भ किया। कहाती परिवार के अमासै
का पुत्र महत और अजर्याह का पुत्र योएल थे। मरारीत
परिवार के अब्दी का पुत्र कीश और यहल्लेलेल का
पुत्र अजर्याह थे। गेर्शोनी परिवार से जिम्मा का पुत्र
योआह और योआह का पुत्र एदेन थे। एलीसापान के
वंशजों में से शिम्री और यूएल थे। आसाप के वंशजों में
जकर्याह और मत्तन्याह थे। हेमान के वंशजों में से
यहूएल और शिमी थे। यदूतून के वंशजों में से शमायाह
और उज्जीएल थे। 15तब इन लेवीवंशियों ने अपने भाइयों
को इकट्ठा किया और मन्दिर में पवित्र सेवा करने
के लिये अपने को तैयार किया। उन्होंने राजा के उन
आदेशों का पालन किया जो यहोवा के पास से आये थे।
वे यहोवा के मन्दिर में उसे स्वच्छ करने गए। 16याजक
यहोवा के मन्दिर के भीतरी भाग में उसे स्वच्छ करने
गए। उन्होंने सभी अशुद्ध चीज़ों को बाहर निकाला
जिन्हें उन्होंने मन्दिर में पाया। वे अशुद्ध चीज़ों को
यहोवा के मन्दिर के आँगन में ले आए। तब लेवीवंशी
अशुद्ध चीजों को किद्रोन की घाटी में ले गए। 17पहले
महीने के पहले दिन लेवीवंशी अपने को पवित्र सेवा के
लिये तैयार करने लगे। महीने के आठवें दिन लेवीवंशी
यहोवा के मन्दिर के द्वार–मण्डप में आए। आठ दिन
और, वे यहोवा के मन्दिर को पवित्र उपयोग के लिये
स्वच्छ करते रहे। उन्होंने पहले महीने के सोलहवें दिन
यह काम पूरा किया।

18तब वे राजा हिजकिय्याह के पास गए। उन्होंने
उससे कहा, "राजा हिजकिय्याह, हम लोगों ने यहोवा
के पूरे मन्दिर और भेंट जलाने के लिये वेदी को स्वच्छ
कर दिया। हम लोगों ने रोटी को पंक्तियों में रखने की
मेज और उस के लिये उपयोग में आने वाली सभी चीज़ों
को स्वच्छ कर दिया। 19उन दिनों जब आहाज राजा था
उसने परमेश्वर के प्रति विरोध किया। उसने बहुत सी
चीज़ें फेंक दी थीं। जो मन्दिर में थीं। किन्तु हम लोगों ने
फिर उन चीज़ों को रख दिया है और उन्हें पवित्र कार्य
के लिये तैयार कर दिया है। वे अब यहोवा की वेदी के
सामने हैं।"

20राजा हिजकिय्याह ने नगर अधिकारियों को इकट्ठा
किया और अगली सुबह वह यहोवा के मन्दिर गया।
21वे सात बैल, सात मेढ़े, सात मेमने और सात छोटे
बकरे लाए। वे जानवर यहूदा के राज्य की पापबलि,
पवित्र स्थान को शुद्ध करने और यहूदा के लोगों के
लिये थे। राजा हिजकिय्याह ने उन याजकों को जो
हारून के वंशज थे, आदेश दिया कि वे उन जानवरों
को यहोवा की वेदी पर चढ़ाऐं। 22इसलिये याजकों ने
बैलों को मार डाला और उनका खून रख लिया। तब
उन्होंने बैलों का खून वेदी पर छिड़का। तब याजकों ने
मेढ़ों को मारा और वेदी पर मेढ़ों का खून छिड़का। तब
याजकों ने मेमनों को मारा और उनका खून वेदी पर
छिड़का। 23-24तब याजक बकरों को राजा और एक
साथ इकट्ठे लोगों के सामने लाए। बकरे पापबलि थे।
याजकों ने अपने हाथ बकरों पर रखे और उन्हें मारा।
याजकों ने बकरों के खून से वेदी पर पापबलि चढ़ाई।
उन्होंने यह इसलिये किया कि यहोवा इस्राएल के लोगों

को क्षमा कर देगा। राजा ने कहा कि होमबलि और
पापबलि इस्राएल के सभी लोगों के लिये होंगी।

25राजा हिजकिय्याह ने लेवीवंशियों को यहोवा के
मन्दिर में मंजीरों, तम्बूरों और वीणा के साथ रखा जैसा
दाऊद, राजा का दृष्टा गाद और नातान नबी ने आदेश
दिया था। यह आदेश नबियों द्वारा यहोवा के यहाँ से
आया था। 26इस प्रकार लेवीवंशी, दाऊद के गीत के
वाद्यों के साथ और याजक अपनी तुरहियों के साथ खड़े
हुए। 27तब हिजकिय्याह ने होमबलि की बलि वेदी पर
चढ़ाने के लिये आदेश दिया। जब होमबलि देना आरम्भ
हुआ, यहोवा के लिये गायन भी आरम्भ हुआ। तुरहियाँ
बजाई गई और इस्राएल के राजा दाऊद के वाद्ययन्त्र
बजे। 28सारी सभा ने दण्डवत किया, गायकों ने गाया
और तुरही वादकों ने अपनी तुरहियाँ तब तक बजाई
जब तक होमबलि का चढ़ाया जाना पूरा नहीं हुआ।

29बलिदानों के पूरे होने के बाद राजा हिजकिय्याह
और उसके साथ के सभी लोग झुके और उन्होनें
उपासना की। 30राजा हिजकिय्याह और उसके
अधिकारियों ने लेवीवंशियों को यहोवा की स्तुति का
आदेश दिया। उन्होंने उन गीतों को गाया जिन्हें दाऊद
और दृष्टा आसाप ने लिखा था। उन्होंने यहोवा की
स्तुति की और प्रसन्न हुए। वे सभी झुके और उन्होंने
यहोवा की उपासना की।

31हिजकिय्याह ने कहा, "यहूदा के लोगों, अब तुम
लोग स्वयं को यहोवा को अर्पित कर चुके हो। निकट
आओ, बलि और धन्यवाद की भेंट यहोवा के मन्दिर में
लाओ।" तब लोग बलि और धन्यवाद की भेंट लाये।
कोई व्यक्ति, जो चाहता था, वह होमबलि भी लाया।
32सभा द्वारा मन्दिर में लाई गई होमबलि ये हैं: सत्तर
बैल, सौ मेढ़े और दो सौ मेमने। ये सभी जानवर यहोवा
को होमबलि के रुप में बलि किये गये। 33यहोवा के
लिये पवित्र भेटें छ: सौ बैल और तीन हजार भेंड़-बकरे
थे। 34किन्तु वहाँ पर्याप्त याजक नहीं थे जो होमबलि के
लिये जानवरों की खाल उतार सकें और सभी जानवरों
को काट सकें। इसलिये उनके सम्बन्धी लेवीवंशियों ने
उनकी सहायता तब तक की जब तक काम पूरा न
हुआ और जब तक दूसरे याजक अपने को पवित्र
सेवा के लिये तैयार न कर सके। लेवीवंशी यहोवा
की सेवा के लिये अपने को तैयार करने में अधिक दृढ़
थे। वे याजकों की अपेक्षा अधिक दृढ़ थे। 35वहाँ
अनेक होमबिल, मेलबलि की चर्बी और पेय भेंट चढ़ीं।
इस प्रकार यहोवा के मन्दिर में सेवा फिर आरम्भ
हुई।

36हिजकिय्याह और सभी लोग उन चीजों के लिये
प्रसन्न थे जिन्हें यहोवा ने अपने लोगों के लिये बनाई
और वे प्रसन्न थे कि उन्होंने उन्हें इतनी शीघ्रता से
किया!

हिजकिय्याह फसहपर्व मनाता है

30 हिजकिय्याह ने इस्राएल और यहूदा के सभी
लोगों को सन्देश भेजा। उसने एप्रैम और मनश्शे
के लोगों को भी पत्र लिखा। हिजकिय्याह ने उन सभी
लोगों को यरुशलेम में यहोवा के मन्दिर में आने के
लिये निमन्त्रित किया जिससे वे सभी फसहपर्व यहोवा,
इस्राएल के परमेश्वर के लिये मना सकें। 2हिजकिय्याह
ने सभी अधिकारियों और यरूशलेम की सभा से यह
सलाह की कि फसह पर्व दूसरे महीने में मनाया जाय।
3वे फसह पर्व को नियमित समय से न मना सके। क्यों?
क्योंकि याजक पर्याप्त संख्या में पवित्र सेवा के लिये
अपने को तैयार न कर सके और दूसरा कारण यह था
कि लोग यरूशलेम में इकट्ठे नहीं हो सके थे। 4इस
सुझाव ने राजा हिजकिय्याह और पूरी सभा को सन्तुष्ट
किया। 5इसलिये उन्होंने इस्राएल में बेर्शेबा नगर से लेकर
लगातार दान नगर तक हर एक स्थान पर घोषणा की।
उन्होंने लोगों से कहा कि वे यरूशलेम में यहोवा, इस्राएल
के परमेश्वर के लिये फसह पर्व मनाने आएं। इस्राएल
के बहुत बड़े समूह ने बहुत समय से फसह पर्व उस
प्रकार नहीं मनाया था, जिस प्रकार मूसा के नियमों ने
इसे मनाने को कहा था। 6इसलिये दूत राजा का पत्र पूरे
इस्राएल और यहूदा में ले गए। उन पत्रों में यह लिखा था:

> इस्राएल की सन्तानों, इब्राहीम, इसहाक और
> इस्राएल (याकूब), जिस यहोवा, परमेश्वर की आज्ञा
> मानते थे उसके पास लौटो। तब यहोवा तुम लोगों
> के पास वापस आयेगा जो अश्शूर के राजा से बच
> गए हैं और अभी तक जीवित हैं। 7अपने पिता
> और भाइयों की तरह न बनो। यहोवा उनका
> परमेश्वर था, किन्तु वे उसके विरुद्ध हो गए।
> इसलिये यहोवा ने उनके प्रति लोगों के हृदय में
> घृणा पैदा की और उनके बारे में बुरा कहलवाया।
> तुम स्वयं अपनी आँखों से देख सकते हो कि यह
> सत्य है। 8अपने पूर्वजों की तरह हठी न बनो।
> अपितु सच्चे हृदय से यहोवा की आज्ञा मानो।
> सर्वाधिक पवित्र स्थान पर आओ। यहोवा ने
> सर्वाधिक पवित्र स्थान को सदैव के लिये पवित्र
> बनाया है। अपने यहोवा, परमेश्वर की सेवा करो।
> तब यहोवा का डरावना क्रोध तुम पर से हट
> जाएगा। 9यदि तुम लौटोगे और यहोवा की आज्ञा
> मानोगे तब तुम्हारे सम्बन्धी और बच्चे उन लोगों
> की कृपा पाएंगे जिन्होंने उन्हें बन्दी बनाया है और
> तुम्हारे सम्बन्धी और बच्चे इस देश में लौटेंगे।
> यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर कृपालु है। यदि तुम उसके
> पास लौटोगे तो वह तुमसे दूर नहीं जायेगा।

10दूत एप्रैम और मनश्शे के क्षेत्रों के सभी नगरों में
गए। वे लगातार पूरे जबूलून देश में गए। किन्तु लोगों ने

दूतों की हँसी उड़ाई और उनका मजाक उड़ाया। 11किन्तु
आशेर, मनश्शे और जबूलून देश के कुछ लोग विनम्र
हुए और यरूशलेम गए। 12 यहूदा में परमेश्वर की
शक्ति ने लोगों को संगठित किया ताकि वे राजा
हिजकिय्याह और उसके अधिकारियों की आज्ञा का
पालन करें। इस तरह उन्होंने यहोवा के आज्ञा का
पालन किया।

13बहुत से लोग एक साथ यरूशलेम, दूसरे महीने में
अखमीरी रोटी का उत्सव मनाने आए। यह बहुत बड़ी
भीड़ थी। 14उन लोगों ने यरूशलेम में असत्य देवताओं
की वेदियों को हटा दिया। उन्होंने असत्य देवताओं के
लिये सुगन्धि भेंट की वेदियों को भी हटा दिया। उन्होंने
उन वेदियों को किद्रोन की घाटी में फेंक दिया। 15तब
उन्होंने फसह पर्व के मेमने को दूसरे महीने के चौदहवें
दिन मारा। याजक और लेवीवंशी लज्जित हुए। उन्होंने
अपने को पवित्र सेवा के लिये तैयार किया। याजक
और लेवीवंशी होमबलि यहोवा के मन्दिर में ले आए।
16मन्दिर में अपने लिए निर्धारित स्थान पर वे वैसे ही
बैठे जैसा परमेश्वर के व्यक्ति मूसा के नियम में कहा
गया था। लेवीवंशियों ने याजकों को खून दिया। तब
याजकों ने खून को वेदी पर छिड़का। 17उस समूह में
बहुत से लोग ऐसे थे जिन्होंने अपने को पवित्र सेवा के
लिये तैयार नहीं किया था अत: वे फसह पर्व के मेमने
को मारने की स्वीकृति नहीं पा सके। यही कारण था
कि लेवीवंशी उन सभी लोगों के लिए फसह पर्व के
मेमने को मारने के उत्तरदायी थे जो शुद्ध नहीं थे।
लेवीवंशी ने हर एक मेमने को यहोवा के लिये पवित्र
बनाया।

18-19एप्रैम, मनश्शे, इस्साकार और जबूलून के बहुत
से लोग फसह पर्व उत्सव के लिये अपने को ठीक
प्रकार से तैयार नहीं किया था। उन्होंने फसह पर्व मूसा
के नियम के अनुसार ठीक ढंग से नहीं मनाया। किन्तु
हिजकिय्याह ने उन लोगों के लिए प्रार्थना की। इसलिये
हिजकिय्याह ने यह प्रार्थना की, "यहोवा, परमेश्वर तू
अच्छा है। ये लोग तेरी उपासना ठीक ढंग से करना
चाहते थे, किन्तु वे अपने को नियम के अनुसार शुद्ध
न कर सके, कृपया उन लोगों को क्षमा कर। तू
परमेश्वर है जिसकी आज्ञा का पालन हमारे पूर्वजों ने
किया। यदि किसी ने सर्वाधिक पवित्र स्थान के नियम
के अनुसार अपने को शुद्ध न किया तो भी क्षमा कर।"
20यहोवा ने राजा हिजकिय्याह की प्रार्थना सुनी। यहोवा
ने लोगों को क्षमा कर दिया। 21इस्राएल की सन्तानों ने
यरूशलेम में अखमीरी रोटी का उत्सव सात दिन तक
मनाया। वे बहुत प्रसन्न थे। लेवीवंशी और याजकों ने
अपनी पूरी शक्ति से हर एक दिन यहोवा की स्तुति की।
22राजा हिजकिय्याह ने उन सभी लेवीवंशियों को उत्साहित
किया जो अच्छी तरह समझ गये थे कि यहोवा की सेवा
कैसे की जाती है। लोगों ने सात दिन तक पर्व मनाया
और मेलबलि चढ़ाई। उन्होंने अपने पूर्वजों के यहोवा
परमेश्वर को धन्यवाद दिया और उसकी स्तुति की।

23सभी लोग सात दिन और ठहरने को सहमत हो
गए। वे फसहपर्व मनाते समय सात दिन तक बड़े प्रसन्न
रहे। 24यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने उस सभा को
एक हजार बैल तथा सात हजार भेड़ें मारने और खाने
के लिये दिये। प्रमुखों ने सभा को एक हजार बैल और
दस हजार भेड़ें दीं। बहुत से याजकों ने पवित्र सेवा के
लिये अपने को तैयार किया। 25यहूदा की पूरी सभा,
याजक, लेवीवंशी, इस्राएल से आने वाली पूरी सभा और
वे यात्री जो इस्राएल से आए थे तथा यहूदा पहुँच गए थे,
सभी लोग अत्यन्त प्रसन्न थे। 26इस प्रकार यरूशलेम में
बहुत आनन्द था। इस पर्व के समान कोई भी पर्व
इस्राएल के राजा, दाऊद के पुत्र सुलैमान के समय के
बाद से नहीं हुआ था। 27याजक और लेवीवंशी खड़े हुए
और यहोवा से लोगों को आशीर्वाद देने को कहा।
परमेश्वर ने उनकी सुनी। उनकी प्रार्थना स्वर्ग में यहोवा
के पवित्र निवास तक पहुँची।

राजा हिजकिय्याह सुधार करता है

31 फसह पर्व का उत्सव पूरा हुआ। इस्राएल के
जो लोग फसह पर्व के लिये यरूशलेम में थे,
वे यहूदा के नगरों को चले गए। तब उन्होंने पत्थर की
उन मूर्तियों को ध्वस्त किया जो उन नगरों में थी। उन
पत्थर की मूर्तियों का पूजन असत्य देवताओं के रूप में
होता था। उन लोगों ने अशेरा के स्तम्भों को भी काट
डाला और उन्होंने उन उच्चस्थानों और वेदियों को भी
तोड़ डाला जो बिन्यामीन और यहूदा के पूरे देशों में थे।
लोगों ने एप्रैम और मनश्शे के क्षेत्र में भी वही किया।
लोगों ने यह तब तक किया जब तक उन्होंने असत्य
देवताओं की पूजा की सभी चीज़ों को नष्ट नहीं कर
दिया। तब सभी इस्राएली अपने नगरों को घर लौट गए।

2राजा हिजकिय्याह ने फिर याजकों और लेवीवंशियों
को समूहों में बाँटा और प्रत्येक समूह को अपना विशेष
कार्य करना होता था। अत: राजा हिजकिय्याह ने उन
समूहों को अपना कार्य फिर से आरम्भ करने को
कहा। अत: याजकों और लेवीवंशियों का फिर से होमबलि
और मेलबलि चढ़ाने का काम था। उन का काम
मन्दिर में सेवा करना, गाना और यहोवा के भवन के
द्वार पर परमेश्वर की स्तुति करना था। 3हिजकिय्याह
ने अपने पशुओं में से कुछ को होमबलि के लिये दिया।
ये पशु प्रतिदिन प्रात: और सन्ध्या को होमबलि के लिये
प्रयोग में आते थे। ये पशु सब्त के दिनों में और नवचन्द्र
के समय और अन्य विशेष उत्सवों पर दी जाती थीं। यह
वैसे ही किया जाता था जैसा यहोवा के व्यवस्था में
लिखा है। 4हिजकिय्याह ने यरूशलेम में रहने वाले लोगों

को आदेश दिया कि जो हिस्सा याजकों और लेवीवंशियों
का है वह उन्हें दें। तभी याजक और लेवीवंशी पूरे
समय अपने को यहोवा के नियम के अनुसार दे सकते
हैं। 5देश के चारों ओर के लोगों ने इस आदेश के बारे
में सुना। अत: इस्राएल के लोगों ने अपने अन्न, अंगूर,
तेल, शहद और जो कुछ भी वे अपने खेतों में उगाते थे
उन सभी फसलों का पहला भाग दिया। वे स्वेच्छा से इन
सभी चीजों का दसवाँ भाग लाए । 6इस्राएल और यहूदा
के लोग जो यहूदा के नगरों में रहते थे, अपने पशुओं
और भेड़ों का दसवाँ भाग भी लाए। वे उन चीज़ों का
दसवाँ भाग भी लाए जो उस विशेष स्थान में रखी जाती
थी जो केवल यहोवा के लिये था। वे उन सभी चीज़ों
को अपने यहोवा, परमेश्वर के लिये ले कर आए।
उन्होंने उन सभी चीज़ों को ढेरों में रखा।

7लोगों ने तीसरे महीने (मई/जून) में अपनी चीज़ों के
संग्रह को लाना आरम्भ किया और उन्होंने संग्रह का
लाना सातवें महीने (सित्मबर/अक्टूबर) में पूरा किया।
8जब हिजकिय्याह और प्रमुख आए तो उन्होंने संग्रह की
गई चीजों के ढेरों को देखा। उन्होंने यहोवा की स्तुति
की और इस्राएल के लोगों अर्थात् यहोवा के लोगों की
प्रशंसा की।

9तब हिजकिय्याह ने याजकों और लेवीवंशियों से ढेरों
के सम्बन्ध में पूछा। 10सादोक परिवार के मुख्य याजक
अजर्याह ने हिजकिय्याह से कहा, "क्योंकि लोगों ने भेंटों
को यहोवा के मन्दिर में लाना आरम्भ कर दिया है
अत: हम लोगों के पास खाने के लिये बहुत अधिक है।
हम लोगों ने पेट भर खाया और अभी तक हम लोगों
के पास बहुत बचा है! यहोवा ने अपने लोगों को सच में
आशीष दी है। इसलिये हम लोगों के पास यह सब बचा
है।"

11तब हिजकिय्याह ने याजकों को आदेश दिया कि वे
यहोवा के मन्दिर में भण्डार गृह तैयार रखें। अत: यह
किया गया। 12तब याजक भेंटे दशमांश और अन्य वस्तुएं
लाए जो केवल यहोवा को दी जानी थीं। वे सभी संग्रह
की गई चीजें मन्दिर के भण्डारगृहों में रख दी गई।
लेवीवंशी कोनन्याह सभी संग्रह की गई चीजों का अधीक्षक
था। शिमी उन चीज़ों का उपाधीक्षक था। शिमी कोनन्याह
का भाई था। 13कोनन्याह और उसका भाई इन व्यक्तियों
के निरीक्षक थे: अहीएल, अजज्याह, नहत, असाहेल,
यरीमेत, योजाबाद, एलीएल, यिस्मक्याह, महत और
बनायाह। राजा हिजकिय्याह और यहोवा के मन्दिर का
अधीक्षक अधिकारी अजर्याह ने उन व्यक्तियों को चुना।
14कोरे उन भेंटों का अधीक्षक था जिन्हें लोग स्वेच्छा
से यहोवा को चढ़ाते थे। वह उन संग्रहों को देने का
उत्तरदायी था जो यहोवा को चढ़ाये जाते थे और वह
उन उपहारों को वितरित करने का उत्तरदायी था जो
यहोवा के लिये पवित्र बनाई जाती थीं। कोरे पूर्वी द्वार
का द्वारपाल था। उसके पिता का नाम यिम्ना था जो
लेवीवंशी था। 15एदेन, मिन्यामीन, येशू, शमायाह, अमर्याह
और शकन्याह कोरे की सहायता करते थे। वे लोग
ईमानदारी से उन नगरों में सेवा करते थे जहाँ याजक
रहते थे। वे संग्रह की गई चीजों को हर एक याजकों के
समूह में उनके सम्बन्धियों को देते थे। वे वही चीजें,
अधिक या कम महत्व के हर व्यक्ति को देते थे। 16ये
लोग संग्रह की हुई चीज़ों को तीन वर्ष के लड़के और
उससे अधिक उम्र के उन लड़कों को भी देते थे
जिनका नाम लेवीवंश के इतिहास में होता था। इन सभी
पुरुषों को यहोवा के मन्दिर में अपनी नित्य सेवाओं को
करने के लिये जाना होता था जिनको करना उनका
उत्तरदायित्व था। लेवीवंशियों के हर एक समूह का
अपना उत्तरदायित्व था। 17याजकों को संग्रह का उनका
हिस्सा दिया जाता था। यह परिवार के क्रम से वैसे ही
किया जाता था जैसे वे अपने परिवार इतिहास में लिखे
रहते थे। बीस वर्ष या उससे अधिक आयु के लेवीवंशियों
को संग्रह का उनका हिस्सा दिया जाता था। यह उनके
उत्तरदायित्व और वर्ग के अनुसार किया जाता था।
18लेवीवंशियों के बच्चे, पत्नियाँ, पुत्र तथा पुत्रियाँ भी
संग्रह का अपना हिस्सा पाते थे। यह उन सभी लेवीवंशियों
के लिये किया जाता था जो परिवार के इतिहास में
अंकित थे। यह इसलिये हुआ कि लेवीवंशी अपने को
पवित्र और सेवा के लिये तैयार रखने में दृढ़ विश्वास
रखते थे। 19याजक हारून के कुछ वंशजों के पास
कुछ कृषि योग्य खेत नगर के समीप वहाँ थे जहाँ
लेवीवंशी रहते थे और हारून के वंशजों में से कुछ
नगरों में भी रहते थे। उन नगरों में से हर एक में
हारून के इन वंशजों को संग्रह का हिस्सा देने के लिये
व्यक्ति नामांकन द्वारा चुने जाते थे। पुरुष तथा वे सभी
जिनका नाम लेवीवंश के इतिहास में था सभी संग्रह का
हिस्सा पाते थे।

20इस प्रकार राजा हिजकिय्याह ने पूरे यहूदा में वे
सब अच्छे कार्य किये। उसने वही किया जो यहोवा,
उसके परमेश्वर की दृष्टि में अच्छा, ठीक और विश्वास
योग्य था। 21उसने जो भी कार्य परमेश्वर के मन्दिर की
सेवा में, नियमों व आज्ञाओं का पालन करने में और
अपने परमेश्वर का अनुसरण करने में किये उसमें
उसे सफलता मिली। हिजकिय्याह ने ये सभी कार्य अपने
पूरे हृदय से किया।

अराम का राजा हिजकिय्याह को परेशान करने का प्रयत्न करता है

32 हिजकिय्याह ने ये सब कार्य जो विश्वासपूर्वक
पूरे किये। अश्शूर का राजा सन्हेरीब यहूदा
देश पर आक्रमण करने आया। सन्हेरीब और उसकी
सेना ने किले के बाहर डेरा डाला। उसने यह इसलिये

किया कि वह नगरों को जीतने की योजना बना सके। सन्हेरीब इन नगरों को अपने लिये जीतना चाहता था।
2हिजकिय्याह जानता था कि वह यरूशलेम, इस पर आक्रमण करने आया है। 3तब हिजकिय्याह ने अपने अधिकारियों और सेना के अधिकारियों से सलाह ली। वे एकमत हो गए कि नगर के बाहर के सोतों का पानी रोक दिया जाये। उन अधिकारियों और सेना के अधिकारियों ने हिजकिय्याह की सहायता की। 4बहुत
से लोग एक साथ आए और उन्होंने सभी सोतों और नालों को जो देश के बीच से होकर बहते थे, रोक दिया। उन्होंने कहा, "अश्शूर के राजा को यहाँ आने पर पर्याप्त पानी नहीं मिलेगा!" 5हिजकिय्याह ने यरूशलेम
को पहले से अधिक मजबूत बनाया। यह उसने इस प्रकार किया: उसने दीवार के टूटे भागों को फिर बनवाया। उसने दीवारों पर मीनारें बनाई। उसने पहली दीवार के बाहर दूसरी दीवार बनाई। उसने फिर पुराने यरूशलेम के पूर्व की ओर के स्थानों को मजबूत किया। उसने अनेकों हथियार और ढालें बनवाई।
6-7हिजकिय्याह ने युद्ध के अधिकारियों को लोगों का अधीक्षक होने के लिये चुना। वह इन अधिकारियों से नगर द्वार के बाहर खुले स्थान में मिला। हिजकिय्याह ने उन अधिकारियों से सलाह की और उन्हें उत्साहित किया। उसने कहा, "दृढ़ और साहसी बनो। अश्शूर के राजा या उसके साथ की विशाल सेना से मत डरना, न ही उससे परेशान होना। अश्शूर के राजा के पास जो शक्ति है उससे भी बड़ी शक्ति हम लोगों के साथ है!
8अश्शूर के राजा के पास केवल व्यक्ति हैं। किन्तु हम लोगों के साथ यहोवा, अपना परमेश्वर है। हमारा परमेश्वर हमारी सहायता करेगा। वह हमारा युद्ध स्वयं लड़ेगा।" इस प्रकार यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने लोगों को उत्साहित किया और उन्हें पहले से अधिक शक्तिशाली होने का अनुभव कराया।

9अश्शूर के राजा सन्हेरीब और उसकी सारी सेना लाकीश नगर के पास डेरा डाले पड़ी थी। ताकि वे इसे हरा सकें तब अश्शूर के राजा सन्हेरीब ने यरूशलेम में यहूदा के राजा हिजकिय्याह के पास और यहूदा के सभी लोगों के पास अपने सेवक भेजे। सन्हेरीब के सेवक हिजकिय्याह और यरूशलेम के सभी लोगों के
लिये एक सन्देश ले गए। 10उन्होंने कहा, "अश्शूर का राजा सन्हेरीब यह कहता है: 'तुम किसमें विश्वास करते हो जो तुम्हें यरूशलेम में युद्ध की स्थिति में ठहरना
सिखाता है? 11हिजकिय्याह तुम्हें मूर्ख बना रहा है। तुम्हें यरूशलेम में ठहरे रखने के लिये धोखा दिया जा रहा है। इस प्रकार तुम भूख–प्यास से मर जाओगे। हिजकिय्याह तुमसे कहता है, "यहोवा, हमारा परमेश्वर हमें अश्शूर
के राजा से बचायेगा।" 12हिजकिय्याह ने स्वयं यहोवा के उच्चस्थानों और वेदियों को हटाया है। उसने यहूदा और इस्राएल के तुम लोगों से कहा कि तुम लोगों को केवल एक वेदी पर उपासना करनी और सुगन्धि चढ़ानी
चाहिए। 13निश्चय ही, तुम जानते हो कि मेरे पूर्वजों और मैंने अन्य देशों के लोगों के साथ क्या किया है? अन्य देशों के देवता अपने लोगों को नहीं बचा सके। वे देवता मुझे उनके लोगों को नष्ट करने से न रोक
सके। 14मेरे पूर्वजों ने उन देशों को नष्ट किया। कोई भी ऐसा देवता नहीं जो मुझसे अपने लोगों को नष्ट होने से बचा ले। फिर भी तुम सोचते हो कि तुम्हारा देवता
तुम्हें मुझसे बचा लेगा? 15हिजकिय्याह को तुम्हें मूर्ख बनाने और धोखा देने मत दो। उस पर विश्वास न करो क्योंकि किसी राष्ट्र या राज्य का कोई देवता कभी हमसे या हमारे पूर्वजों से अपने लोगों को बचाने में समर्थ नहीं हुआ है। इसलिये यह मत सोचो कि तुम्हारा देवता मुझे तुमको नष्ट करने से रोक लेगा।'"

16अश्शूर के राजा के सेवकों ने इससे भी बुरी बातें यहोवा परमेश्वर तथा परमेश्वर के सेवक हिजकिय्याह
के विरुद्ध कहीं। 17अश्शूर के राजा ने ऐसे पत्र भी लिखे जो इस्राएल के यहोवा परमेश्वर का अपमान करते थे। अश्शूर के राजा ने उन पत्रों में जो कुछ लिखा था वह यह है: "अन्य राज्यों के देवता मुझसे नष्ट होने से अपने लोगों को न बचा सके। उसी प्रकार हिजकिय्याह का परमेश्वर अपने लोगों को मेरे द्वारा
नष्ट किये जाने से नहीं रोक सकता।" 18तब अश्शूर के राजा के सेवक यरूशलेम के उन लोगों पर जोर से चिल्लाये जो नगर की दीवार पर थे। उन सेवकों ने उस समय हिब्रू भाषा का प्रयोग किया जब वे दीवार पर के लोगों के प्रति चिल्लाये। अश्शूर के राजा के उन सेवकों ने यह सब इसलिये किया कि यरूशलेम के लोग डर जायें। उन्होंने वे बातें इसलिये कहीं कि यरूशलेम नगर पर अधिकार कर सकें।

19उन सेवकों ने उन देवताओं के विरुद्ध बुरी बातें कहीं जिनकी पूजा संसार के लोग करते थे। वे देवता सिर्फ ऐसी चीजें हैं जिन्हें मनुष्यों ने अपने हाथ से बनाया है। इस प्रकार उन सेवकों ने वे ही बुरी बातें यरूशलेम के परमेश्वर के विरुद्ध कहीं।

20राजा हिजकिय्याह और आमोस के पुत्र यशायाह नबी ने इस समस्या के बारे में प्रार्थना की। उन्होंने जोर
से स्वर्ग को पुकारा। 21तब यहोवा ने अश्शूर के राजा के खेमे में एक स्वर्गदूत को भेजा। उस स्वर्गदूत ने अश्शूर की सेना के सब अधिकारियों, प्रमुखों और सैनिकों को मार डाला। इसलिये अश्शूर का राजा अपने देश में अपने घर लौट गया और उसके लोग उसकी वजह से बहुत लज्जित हुए। वह अपने देवता के मन्दिर में गया और उसी के पुत्रों में से किसी ने उसे वहीं
तलवार से मार डाला। 22इस प्रकार यहोवा ने हिजकिय्याह
और यरूशलेम के लोगों को अश्शूर के राजा सन्हेरीब

और सभी अन्य लोगों से बचाया। यहोवा ने हिजकिय्याह
और यरूशलेम के लोगों की देखभाल की। 23बहुत से
लोग यरूशलेम में यहोवा के लिये भेंट लाए। वे यहूदा के
राजा हिजकिय्याह के पास बहुमूल्य चीजें ले आए। उस
समय के बाद सभी राष्ट्रों ने हिजकिय्याह को सम्मान
दिया।

24उन दिनों हिजकिय्याह बहुत बीमार पड़ा और मृत्यु
के निकट था। उसने यहोवा से प्रार्थना की। यहोवा
हिजकिय्याह से बोला और उसे एक चिन्ह दिया।*
25किन्तु हिजकिय्याह का हृदय घमण्ड से भर गया
इसलिये उसने परमेश्वर की कृपा के लिये परमेश्वर
को धन्यवाद नहीं किया। यही कारण था कि परमेश्वर
हिजकिय्याह और यरूशलेम तथा यहूदा के लोगों पर
क्रोधित हुआ। 26किन्तु हिजकिय्याह और यरूशलेम में
रहने वाले लोगों ने अपने हृदय तथा जीवन को बदल
दिया। वे विनम्र हो गये और घमण्ड करना छोड़ दिया।
इसलिये जब तक हिजकिय्याह जीवित रहा यहोवा का
क्रोध उस पर नहीं उतरा।

27हिजकिय्याह को बहुत धन और सम्मान प्राप्त था।
उसने चाँदी, सोने, कीमती रत्न, मसालें, ढालें और सभी
प्रकार की चीज़ों के रखने के लिये स्थान बनाए।
28हिजकिय्याह के पास लोगों द्वारा भेजे गये अन्न, नया
दाखमधु और तेल के लिये भंडारण भवन थे। उसके
पास पशुओं के लिये पशुशालायें और भेंड़ों के लिये
भेड़शालायें थीं। 29हिजकिय्याह ने बहुत से नगर भी
बनाये और उसे अनेक पशुओं के झुंड और भेड़ों के
रेवड़ें मिलीं। परमेश्वर ने हिजकिय्याह को बहुत अधिक
धन दिया। 30यह हिजकिय्याह ही था जिसने यरूशलेम
में गिहोन सोते की ऊपरी जल धाराओं के उदगर्मो को
रोका और उन जल धाराओं को दाऊद नगर के ठीक
पश्चिम को बहाया और हिजकिय्याह उन सबमें सफल
रहा जो कुछ उसने किया।

31किसी समय बाबुल के प्रमुखों ने हिजकिय्याह के
पास दूत भेजे। उन दूतों ने एक विचित्र दृश्य के विषय में
पूछा जो राष्ट्रों में प्रकट हुआ था। जब वे आए तो
परमेश्वर ने हिजकिय्याह को अकेले छोड़ दिया जिससे
कि वह अपनी जाँच कर सके और वह सब कुछ जान
सके जो हिजकिय्याह के हृदय में था।*

32हिजकिय्याह का शेष इतिहास और कैसे उसने
यहोवा को प्रेम किया, का विवरण आमोस के पुत्र
यशायाह नबी के दर्शन ग्रन्थ और "यहूदा और इस्राएल
के राजाओं के इतिहास" की पुस्तक में मिलता है।
33हिजकिय्याह मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया
गया। लोगों ने हिजकिय्याह को उस पहाड़ी पर दफनाया
जहाँ दाऊद के पुत्रों की कब्रें हैं। जब वह मरा तो यहूदा
के सभी लोगों ने तथा यरूशलेम के रहने वालों ने
हिजकिय्याह को सम्मान दिया। हिजकिय्याह के स्थान
पर मनश्शे नया राजा हुआ। मनश्शे हिजकिय्याह का
पुत्र था।

यहूदा का राजा मनश्शे

33 मनश्शे जब यहूदा का राजा हुआ वह बारह
वर्ष का था। वह यरूशलेम में पचपन वर्ष तक
राजा रहा। 2मनश्शे ने वे सब कार्य किये जिन्हें यहोवा
ने गलत कहा था। उसने अन्य राष्ट्रों के भयंकर और
पापपूर्ण तरीकों का अनुसरण किया। यहोवा ने उन
राष्ट्रों को इस्राएल के लोगों के सामने बाहर निकल
जाने के लिये विवश किया था। 3मनश्शे ने फिर उन
उच्च स्थानों को बनाया जिन्हें उसके पिता हिजकिय्याह
ने तोड़ गिराया था। मनश्शे ने बाल देवताओं की वेदियाँ
बनाई और अशेरा–स्तम्भ खड़े किये। वह नक्षत्र–समूह
को प्रणाम करता था तथा उन्हें पूजता था। 4मनश्शे ने
यहोवा के मन्दिर में असत्य देवताओं के लिये वेदियाँ
बनाई। यहोवा ने मन्दिर के बारे में कहा था, "मेरा नाम
यरूशलेम में सदैव रहेगा।" 5मनश्शे ने सभी नक्षत्र–समूहों
के लिये यहोवा के मन्दिर के दोनों आँगनों में वेदियाँ
बनाई। 6मनश्शे ने अपने बच्चों को भी बलि के लिये
हिन्नोम की घाटी में जलाया। मनश्शे ने शान्तिपाठ,
दैवीकरण और भविष्य कथन के रूप में जादू का
उपयोग किया। उसने ओझाओं और भूत सिद्धि करने
वालों के साथ बातें कीं। मनश्शे ने यहोवा की दृष्टि में
बहुत पाप किया। मनश्शे के पापों ने यहोवा को क्रोधित
किया। 7उसने एक देवता की मूर्ति बनाई और उसे
परमेश्वर के मन्दिर में रखा। परमेश्वर ने दाऊद और
उसके पुत्र सुलैमान से मन्दिर के बारे में कहा था, "मैं
इस भवन तथा यरूशलेम में अपना नाम सदा के लिये
अंकित करता हूँ। मैंने यरूशलेम को इस्राएल के सभी
परिवार समूहों में से चुना। 8मैं फिर इस्राएलियों को उस
भूमि से बाहर नहीं करूँगा जिसे मैंने उनके पूर्वजों को
देने के लिये चुना। किन्तु उन्हें उन नियमों का पालन
करना चाहिए जिनका आदेश मैंने दिया है। इस्राएल के
लोगों को उन सभी विधियों, नियमों और आदेशों का
पालन करना चाहिए जिन्हें मैंने मूसा को उन्हें देने के
लिये दिया।"

9मनश्शे ने यहूदा के लोगों और यरूशलेम में रहने
वाले लोगों को पाप करने के लिये उत्साहित किया।
उसने उन राष्ट्रों से भी बड़ा पाप किया जिन्हें यहोवा ने
नष्ट किया था और जो इस्राएलियों से पहले उस प्रदेश में
थे!

यहोवा ... चिन्ह दिया देखें यशा. 38:1–8 हिजकिय्याह के विषय की कहानी और कैसे यहोवा ने हिजकिय्याह को पन्द्रह वर्ष और जीवित रहने दिया।

हिजकिय्याह के हृदय में देखें 2राजा 20:12–19

10यहोवा ने मनश्शे और उसके लोगों से बातचीत
की। किन्तु उन्होंने सुनने से इन्कार कर दिया। 11इसलिये
यहोवा ने यहूदा पर आक्रमण करने के लिये अश्शूर
के राजा के सेनापतियों को वहाँ पहुँचाया। इन सेनापतियों
ने मनश्शे को पकड़ लिया और उसे बन्दी बना लिया।
उन्होंने उसको बेड़ियाँ पहना दीं और उसके हाथों में
पीतल की जंजीरे डालीं। उन्होंने मनश्शे को बन्दी बनाया
और उसे बाबुल देश ले गए।

12मनश्शे को कष्ट हुआ। उस समय उसने यहोवा
अपने परमेश्वर से याचना की। मनश्शे ने स्वयं को
अपने पूर्वजों के परमेश्वर के सामने विनम्र बनाया।
13मनश्शे ने परमेश्वर से प्रार्थना की और परमेश्वर से
सहायता की याचना की। यहोवा ने मनश्शे की याचना
सुनी और उसे उस पर दया आई। यहोवा ने उसे यरूशलेम
अपने सिंहासन पर लौटने दिया। तब मनश्शे ने समझा
कि यहोवा सच्चा परमेश्वर है।

14जब यह सब हुआ तो मनश्शे ने दाऊद नगर के
लिये बाहरी दीवार बनाई। बाहरी दीवार गिहोन सोते के
पश्चिम की ओर घाटी (किद्रोन) में मछली द्वार के साथ
थी। मनश्शे ने इस दीवार को ओपेल पहाड़ी के चारों
ओर बना दिया। उसने दीवार को बहुत ऊँचा बनाया।
तब उसने अधिकारियों को यहूदा के सभी किलों में
रखा। 15मनश्शे ने विचित्र देवमूर्तियों को हटाया। उसने
यहोवा के मन्दिर से देवमूर्ति को बाहर किया। उसने
उन सभी वेदियों को हटाया जिन्हें उसने मन्दिर की
पहाड़ी पर और यरूशलेम में बनाया था। मनश्शे ने उन
सभी वेदियों को यरूशलेम नगर से बाहर फेंका। 16तब
उसने यहोवा की वेदी स्थापित की और मेलबलि तथा
धन्यवाद भेंट इस पर चढ़ाई। मनश्शे ने यहूदा के सभी
लोगों को इस्राएल के यहोवा परमेश्वर की सेवा करने
का आदेश दिया। 17लोगों ने उच्च स्थानों पर बलि देना
जारी रखा, किन्तु उनकी भेंटे केवल यहोवा उनके
परमेश्वर के लिये थीं।

18मनश्शे ने जो कुछ अन्य किया और उसकी परमेश्वर
से प्रार्थनाऐं और उन दृष्टाओं के कथन जिन्होंने इस्राएल
के यहोवा परमेश्वर के नाम पर उससे बातें की थी, वे
सभी इस्राएल के राजा नामक पुस्तक में लिखी हैं।
19मनश्शे ने कैसे प्रार्थना की और परमेश्वर ने वह
कैसे सुनी और उस पर दया की, यह "दृष्टाओं की
पुस्तक" में लिखा है। मनश्शे के सभी पाप और बुराईयाँ
जो उसने स्वयं को विनम्र करने से पूर्व कीं और वे
स्थान जहाँ उसने उच्च स्थान बनाए और अशेरा–स्तम्भ
खड़े किये, "दृष्टाओं की पुस्तक" में लिखे हैं। 20अन्त
में मनश्शे मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफना दिया
गया। लोगों ने मनश्शे को उसके अपने राजभवन में
दफनाया। मनश्शे के स्थान पर आमोन नया राजा
हुआ। आमोन मनश्शे का पुत्र था।

यहूदा का राजा आमोन

21आमोन जब यहूदा का राजा हुआ, बाईस वर्ष का
था। वह दो वर्ष तक यरूशलेम का राजा रहा। 22आमोन
ने यहोवा के सामने बुरे काम किये। यहोवा उससे जो
कराना चाहता था उन्हें उसने ठीक अपने पिता मनश्शे
की तरह नहीं किया। आमोन ने सभी खुदी हुई मूर्तियों
तथा अपने पिता मनश्शे की बनाई मूर्तियों को बलि
चढ़ाई। आमोन ने उन मूर्तियों की पूजा की। 23आमोन
ने स्वयं को अपने पिता मनश्शे की तरह यहोवा के
सामने विनम्र नहीं बनाया। किन्तु आमोन अधिक से
अधिक पाप करता गया। 24आमोन के सेवकों ने उसके
विरुद्ध योजना बनाई। उन्होंने आमोन को उसके घर में
मार डाला। 25किन्तु यहूदा के लोगों ने उन सभी सेवकों
को मार डाला जिन्होंने राजा आमोन के विरुद्ध योजना
बनाई थी। तब लोगों ने योशिय्याह को नया राजा चुना।
योशिय्याह आमोन का पुत्र था।

यहूदा का राजा योशिय्याह

34 योशिय्याह जब राजा बना, आठ वर्ष का था।
वह यरूशलेम में इकतीस वर्ष तक राजा रहा।
2योशिय्याह ने वही किया जो उचित था। उसने वही
किया जो यहोवा उससे करावाना चाहता था। उसने
अपने पूर्वज दाऊद की तरह अच्छे काम किये। योशिय्याह
उचित काम करने से नहीं हटा। 3जब योशिय्याह आठ
वर्ष तक राजा रह चुका तो वह अपने पूर्वज दाऊद के
अनुसार परमेश्वर का अनुसरण करने लगा। योशिय्याह
बच्चा ही था जब उसने परमेश्वर की आज्ञा माननी
आरम्भ की। जब योशिय्याह राजा के रूप में बारह वर्ष
का हुआ, उसने उच्च स्थानों, अशेरा–स्तम्भों पर खुदी
मूर्तियों और यहूदा और यरूशलेम में ढली मूर्तियों को
नष्ट करना आरम्भ कर दिया। 4लोगों ने बाल देवताओं
की वेदियाँ तोड़ दीं। उन्होंने यह योशिय्याह के सामने
किया। तब योशिय्याह ने सुगन्धि के लिये बनी उन
वेदियों को नष्ट कर डाला जो लोगों से भी बहुत ऊँची
उठी थीं। उसने खुदी मूर्तियों तथा ढली मूर्तियों को तोड़
डाला। उसने उन मूर्तियों को पीटकर चूर्ण बना दिया।
तब योशिय्याह ने उस चूर्ण को उन लोगों की कब्रों पर
डाला जो बाल देवताओं को बलि चढ़ाते थे। 5योशिय्याह
ने उन याजकों की हड्डियों तक को जलाया जिन्होंने
अपनी वेदियों पर बाल–देवताओं की सेवा की थी। इस
प्रकार योशिय्याह ने मूर्तियों और मूर्ति पूजा को यहूदा
और यरूशलेम से नष्ट किया। 6योशिय्याह ने यही काम
मनश्शे, एप्रैम, शिमोन और नप्ताली तक के राज्यों के
नगरों में किया। उसने वही उन सब नगरों के पास के
खंडहरों के साथ किया। 7योशिय्याह ने वेदियों और
अशेरा–स्तम्भों को तोड़ दिया। उसने मूर्तियों को पीटकर
चूर्ण बना दिया। उसने पूरे इस्राएल देश में उन सुगन्धि–

वेदियों को काट डाला जो बाल की पूजा में काम आती
थीं। तब योशिय्याह यरूशलेम लौट गया।
8जब योशिय्याह यहूदा के राजा के रूप में अपने
अट्ठारहवें वर्ष में था, उसने शापान, मासेयाह और
योआह को अपने यहोवा परमेश्वर के मन्दिर की
मरम्मत करने के लिये भेजा। शापान के पिता का नाम
असल्याह था। मासेयाह नगर प्रमुख था और योआह के
पिता का नाम योआहाज था। योआह वह व्यक्ति था
जिसने जो कुछ हुआ उसे लिखा। (वह लेखक था)।
योशिय्याह ने मन्दिर को स्थापित करने का आदेश
दिया जिससे वह यहूदा और मन्दिर दोनों को स्वच्छ
रख सके। 9वे लोग महा याजक हिल्किय्याह के पास
आए। उन्होंने वह धन उसे दिया जो लोगों ने परमेश्वर
के मन्दिर के लिये दिया था। लेवीवंशी द्वारपालों ने यह
धन मनश्शे, एप्रैम और बचे सभी इस्राएलियों से इकट्ठा
किया। उन्होंने यह धन सारे यहूदा, बिन्यामीन और
यरूशलेम में रहने वाले सभी लोगों से भी इकट्ठा
किया। 10तब लेवीवंशियों ने उन व्यक्तियों को यह धन
दिया जो यहोवा के मन्दिर के काम की देख-रेख कर
रहे थे और निरीक्षकों ने उन मज़दूरों को यह धन दिया
जो यहोवा के मन्दिर को फिर बना कर स्थापित कर
रहे थे। 11उन्होंने बढ़ईयों और राजगीरों को पहले से
कटी बड़ी चट्टानों को खरीदने के लिये और लकड़ी
खरीदने के लिये धन दिया। लकड़ी का उपयोग भवनों
को फिर से बनाने और भवन के शहतीरों के लिये
किया गया। भूतकाल में यहूदा के राजा मन्दिरों की
देखभाल नहीं करते थे। वे भवन पुराने और खंडहर हो
गए थे। 12-13लोगों ने विश्वासपूर्वक काम किया। उनके
निरीक्षक यहत और ओबद्याह थे। यहत और ओबद्याह
लेवीवंशी थे और वे मरारी के वंशज थे। अन्य निरीक्षक
जकर्याह और मशुल्लाम थे। वे कहात के वंशज थे। जो
लेवीवंशी संगीत-वाद्य बजाने में कुशल थे, वे भी चीजों
को ढोने वाले तथा अन्य मज़दूरों का निरीक्षण करते
थे। कुछ लेवीवंशी सचिव, अधिकारी और द्वारपाल का
काम करते थे।

व्यवस्था की पुस्तक मिली

14लेवीवंशियों ने उस धन को निकाला जो यहोवा के
मन्दिर में था। उस समय याजक हिल्किय्याह ने यहोवा
के व्यवस्था की वह पुस्तक प्राप्त की जो मूसा द्वारा दी
गई थी। 15हिल्किय्याह ने सचिव शापान से कहा, "मैंने
यहोवा के मन्दिर में व्यवस्था की पुस्तक पाई है!"
हिल्किय्याह ने शापान को पुस्तक दी। 16शापान उस
पुस्तक को राजा योशिय्याह के पास लाया। शापान ने
राजा को सूचना दी, "तुम्हारे सेवक हर काम कर रहे
हैं जो तुमने करने को कहा है। 17उन्होंने यहोवा के
मन्दिर से धन को निकाला और उसे निरीक्षकों एवं
मज़दूरों को दे रहे हैं।" 18तब शापान ने राजा योशिय्याह
से कहा, "याजक हिल्किय्याह ने मुझे एक पुस्तक दी
है।" तब शापान ने पुस्तक से पढ़ा। जब वह पढ़ रहा था,
तब वह राजा के सामने था। 19जब राजा योशिय्याह ने
नियमों को पढ़े जाते हुए सुना, उसने अपने वस्त्र फाड़
लिये। 20तब राजा ने हिल्किय्याह शापान के पुत्र अहीकाम,
मीका के पुत्र अब्दोन, सचिव शापान और सेवक असायाह
को आदेश दिया। 21राजा ने कहा, "जाओ, मेरे लिये
तथा इस्राएल और यहूदा में जो लोग बचे हैं उनके लिये
यहोवा से याचना करो। जो पुस्तक मिली है उसके
कथनों के बारे में पूछो। यहोवा हम लोगों पर बहुत
क्रोधित है क्योंकि हमारे पूर्वजों ने यहोवा के कथनों
का पालन नहीं किया। उन्होंने वे सब काम नहीं किये
जो यह पुस्तक करने को कहती है!"
22हिल्किय्याह और राजा के सेवक नबिया हुल्दा के
पास गए, हुल्दा शल्लूम की पत्नी थी। शल्लूम तोखत
का पुत्र था। तोखत हस्रा का पुत्र था। हस्रा राजा के
वस्त्रों की देखरेख करता था। हुल्दा यरूशलेम के नये
भाग में रहती थी। हिल्किय्याह और राजा के सेवकों ने
हुल्दा को सब कुछ बताया जो हो चुका था। 23हुल्दा ने
उनसे कहा, "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जो कहता है
वह यह है: राजा योशिय्याह से कहो: 24यहोवा जो कहता
है वह यह है, 'मैं इस स्थान और यहाँ के निवासियों पर
विपत्ति डालूँगा। मैं सभी भंयकर विपत्तियों को जो यहूदा
के राजा के सामने पढ़ी पुस्तक में लिखी गई हैं, लाऊँगा।
25मैं यह इसलिये करूँगा कि लोगों ने मुझे छोड़ा और
अन्य देवताओं के लिये सुगन्धि जलाई। उन लोगों ने
मुझे क्रोधित किया क्योंकि उन्होंने सभी बुरी बातें की
हैं। इसलिये मैं अपना क्रोध इस स्थान पर उतारुँगा। मेरा
क्रोध तप्त अग्निज्वाला की तरह बुझाया नहीं जा सकता!'
26"किन्तु यहूदा के राजा योशिय्याह से कहो। उसने
यहोवा से पूछने के लिये तुम्हें भेजा। इस्राएल का यहोवा
परमेश्वर, 'जिन कथनों को तुमने कुछ समय पहले
सुना है, उनके विषय में कहता है: 27योशिय्याह तुमने
पश्चाताप किया और तुमने अपने को विनम्र किया
और अपने वस्त्रों को फाड़ा, तथा तुम मेरे सामने चिल्लाए।
अत: क्योंकि तुम्हारा हृदय कोमल है। 28मैं तुम्हें तुम्हारे
पूर्वजों के पास ले जाऊँगा। तुम अपनी कब्र में शान्तिपूर्वक
जाओगे। तुम्हें उन विपत्तियों में से कोई भी नहीं देखनी
पड़ेंगी जिन्हें मैं इस स्थान और यहाँ रहने वाले लोगों पर
लाऊँगा।'" हिल्किय्याह और राजा के सेवक योशिय्याह
के पास यह सन्देश लेकर लौटे। 29राजा योशिय्याह ने
यहूदा और यरूशलेम के सभी अग्रजों को अपने पास
आने और मिलने के लिये बुलाया। 30राजा, यहोवा के
मन्दिर में गया। यहूदा के सभी लोग, यरूशलेम में रहने
वाले लोग, याजक, लेवीवंशी और सभी साधारण व
असाधारण लोग योशिय्याह के साथ थे। योशिय्याह ने

उन सबके सामने साक्षी की पुस्तक के कथन पढ़े। वह
पुस्तक यहोवा के मन्दिर में मिली थी। **31**तब राजा
अपने स्थान पर खड़ा हुआ। उसने यहोवा के साथ
वाचा की। उसने यहोवा का अनुसरण करने की और
यहोवा के आदेशों, विधियों और नियमों का पालन
करने की वाचा की। योशिय्याह पूरे हृदय और आत्मा
से आज्ञा पालन करने को सहमत हुआ। वह पुस्तक में
लिखे वाचा के कथनों का पालन करने को सहमत
हुआ। **32**तब योशिय्याह ने यरूशलेम और बिन्यामीन के
सभी लोगों से वाचा को स्वीकार करने की प्रतिज्ञा
कराई। यरूशलेम में लोगों ने परमेश्वर की वाचा का
पालन किया, उस परमेश्वर की वाचा का जिसकी
आज्ञा का पालन उनके पूर्वजों ने किया था। **33**योशिय्याह
ने उन सभी स्थानों से मूर्तियों को फेंक दिया जो स्थान
इस्राएल के लोगों के थे। यहोवा उन मूर्तियों से घृणा
करता है। योशिय्याह ने इस्राएल के हर एक व्यक्ति को
अपने यहोवा परमेश्वर की सेवा में पहुँचाया। जब तक
योशिय्याह जीवित रहा, लोगों ने पूर्वजों के यहोवा परमेश्वर
की आज्ञा का पालन करना बन्द नहीं किया।

योशिय्याह फसह पर्व मनाता है

35 यरूशलेम में राजा योशिय्याह ने यहोवा के
लिये फसह पर्व मनाया। पहले महीने के चौदहवें
दिन फसह पर्व का मेमना मारा गया। **2**योशिय्याह ने
अपना अपना कार्य पूरा करने के लिये याजकों को
चुना। उसने याजकों को उत्साहित किया, जब वे यहोवा
के मन्दिर में सेवा कर रहे थे। **3**योशिय्याह ने उन
लेवीवंशियों से बातें की जो इस्राएल के लोगों को उपदेश
देते थे तथा जो यहोवा की सेवा के लिये पवित्र बनाए गए
थे। उसने उन लेवीवंशियों से कहा: "पवित्र सन्दूक को
उस मन्दिर में रखो जिसे सुलैमान ने बनाया। सुलैमान
दाऊद का पुत्र था। दाऊद इस्राएल का राजा था। पवित्र
सन्दूक को अपने कंधों पर फिर एक स्थान से दूसरे
स्थान पर मत ले जाओ। अब अपने यहोवा परमेश्वर
की सेवा करो। परमेश्वर के लोगों अर्थात् इस्राएल के
लोगों की सेवा करो। **4**अपने को, अपने परिवार समूहों
के क्रम में, मन्दिर की सेवा के लिये तैयार करो। उन
कार्यों को करो जिन्हें राजा दाऊद और उसके पुत्र राजा
सुलैमान ने तुम्हें करने के लिये दिया था। **5**पवित्र स्थान
में लेवीवंशियों के समूह के साथ खड़े हो। लोगों के हर
एक भिन्न परिवार समूह के साथ ऐसा ही करो, इस
प्रकार तुम उनकी सहायता कर सकते हो। **6**फसह पर्व
के मेमनों को मारो और यहोवा के प्रति अपने को
पवित्र करो। मेमनों को अपने भाई इस्राएलियों के लिये
तैयार करो। सब कुछ वैसे ही करो जैसा करने का
आदेश यहोवा ने दिया है। यहोवा ने उन सभी आदेशों
को हमें मूसा द्वारा दिया था।"

7योशिय्याह ने इस्राएल के लोगों को तीस हजार
भेड़–बकरियाँ फसह पर्व की बलि के लिये दीं। उसने
लोगों को तीन हजार पशु भी दिये। ये सभी जानवर
राजा योशिय्याह के अपने जानवरों में से थे। **8**योशिय्याह
के अधिकारियों ने भी, स्वेच्छा से लोगों को याजकों
और लेवीवंशियों को फसह पर्व में उपयोग करने के
लिये जानवर और चीजें दीं। प्रमुख याजक हिल्किय्याह,
जकर्याह और यहीएल मन्दिर के उत्तरदायी अधिकारी
थे। उन्होंने याजकों को दो हजार छ: सौ मेमने और
बकरे और तीन सौ बैल फसह पर्व बलि के लिये दिये।
9कोनन्याह ने भी शमायाह, नतनेल, तथा उसके भाईयों
के साथ और हसब्याह, यीएल तथा योजाबाद ने पाँच सौ
भेड़ें–बकरियाँ, पाँच सौ बैल फसह पर्व बलि के लिये
लेवीवंशियों को दिये। वे लोग लेवीवंशियों के प्रमुख थे।

10जब हर एक चीज फसह पर्व की सेवा आरम्भ
करने के लिये तैयार हो गई, तो याजक और लेवीवंशी
स्थानों पर गए। यह वही हुआ जो राजा का आदेश था।
11फसह पर्व के मेमने मारे गए। तब लेवीवंशियों ने
जानवरों के चमड़े उतारे और याजकों को खून दिया।
याजकों ने खून को वेदी पर छिड़का। **12**तब उन्होंने
जानवरों को विभिन्न परिवार समूहों की होमबलि में
उपयोग के लिये दिया। यह इसलिये किया गया कि
होमबलि उस प्रकार दी जा सके जिस प्रकार मूसा के
नियमों ने सिखाया था। **13**लेवीवंशियों ने फसह पर्व
फसह पर्व की बलियों को आग पर इस प्रकार भूना
जैसा उन्हें आदेश दिया गया था और उन्होंने पवित्र भेंटों
को हंडिया, देग और कढ़ाहियों में पकाया। तब उन्होंने
लोगों को शीघ्रता से माँस दिया। **14**जब यह पूरा हुआ तब
लेवीवंशियों को अपने लिये और उन याजकों के लिये
माँस मिला जो हारून के वंशज थे। उन याजकों को
काम करते हुए अंधेरा होने तक काम में बहुत अधिक
लगाए रखा गया। उन्होंने होमबलि और बलिदानों की
चर्बी को जलाते हुए कड़ा परिश्रम किया। **15**आसाप के
परिवार के लेवीवंशी गायक उन स्थानों पर पहुँचे जिन्हें
राजा दाऊद ने उनके खड़े होने के लिये चुना था। वे:
आसाप , हेमान और राजा का नबी यदूतून थे। हर एक
द्वार पर द्वारपाल अपना स्थान नहीं छोड़ सकते थे
क्योंकि उनके लेवीवंशी भाईयों ने हर एक चीज
उनके फसह पर्व के लिये तैयार कर दी थी।

16इस प्रकार उस दिन सब कुछ यहोवा की उपासना
के लिये वैसे ही किया गया था जैसा राजा योशिय्याह ने
आदेश दिया। फसह पर्व का त्यौहार मनाया गया और
होमबलि यहोवा की वेदी पर चढ़ाई गई। **17**इस्राएल के
जो लोग वहाँ थे उन्होंने फसह पर्व मनाया और अखमीरी
रोटी का पर्व सात दिन तक मनाया। **18**शमूएल नबी
जब जीवित था तब से फसह पर्व इस प्रकार नहीं मनाया
गया था। इस्राएल के किसी राजा ने कभी इस प्रकार

फसह पर्व नहीं मनाया था। राजा योशिय्याह, याजक,
लेवीवंशी और इस्राएल और यहूदा के लोगों ने, यरूशलेम
में सभी लोगों के साथ, फसह पर्व को बहुत ही विशेष
रुप में मनाया। 19यह फसह पर्व योशिय्याह के राज्यकाल
के अट्ठारहवें वर्ष मनाया गया।

योशिय्याह की मृत्यु

20योशिय्याह जब मन्दिर के लिये उन अच्छे कामों
को कर चुका, उस समय राजा नको परात नदी पर
स्थित कर्कमीश नगर के विरुद्ध युद्ध करने के लिये
सेना लेकर आया। नको मिस्र का राजा था। राजा
योशिय्याह नको के विरुद्ध लड़ने बाहर निकला। 21किन्तु
नको ने योशिय्याह के पास दूत भेजे। उन्होंने कहा,
"राजा योशिय्याह, यह युद्ध तुम्हारे लिये समस्या नहीं है।
मैं तुम्हारे विरुद्ध लड़ने नहीं आया हूँ। मैं अपने शत्रुओं
से लड़ने आया हूँ। परमेश्वर ने मुझे शीघ्रता करने को
कहा है। परमेश्वर मेरी ओर है अत: मुझे परेशान न
करो। यदि तुम हमारे विरुद्ध लड़ोगे, परमेश्वर तुम्हें
नष्ट कर देगा!" 22किन्तु योशिय्याह हटा नहीं। उसने
नको से युद्ध करने का निश्चय किया, इसलिये उसने
अपना वेश बदला और युद्ध करने गया। योशिय्याह ने
उसे सुनने से इन्कार कर दिया जो नको ने परमेश्वर
के आदेश के बारे में कहा। योशिय्याह मगिद्दो के मैदान
में युद्ध करने गया। 23जिस समय योशिय्याह युद्ध में था,
वह बाणों से बेध दिया गया। उसने अपने सेवकों से
कहा, "मुझे निकाल ले चलो। मैं बुरी तरह घायल हूँ!"

24अत: सेवकों ने योशिय्याह को रथ से बाहर निकाला,
और उसे दूसरे रथ में बैठाया जिसे वह अपने साथ युद्ध
में लाया था। तब वे योशिय्याह को यरूशलेम ले गए।
राजा योशिय्याह यरूशलेम में मरा। योशिय्याह को वहाँ
दफनाया गया जहाँ उसके पूर्वज दफनाये गए थे। यहूदा
और यरूशलेम के सभी लोग योशिय्याह के मरने पर
बहुत दु:खी थे। 25यिर्मयाह ने योशिय्याह के लिये कुछ
बहुत अधिक करुण गीत* लिखे। आज भी सभी
स्त्री-पुरुष गायक उन "करुण गीतों" को गाते हैं। यह
ऐसा हुआ जिसे इस्राएल के लोग सदा करते रहे अर्थात
योशिय्याह के करुण गीत गाते रहे। वे गीत "करुण
गीतों" के संग्रह में लिखे हैं।

26-27अन्य जो कुछ योशिय्याह ने अपने राज्यकाल
में, शासन के आरम्भ से अन्त तक किया, वह यहूदा
और इस्राएल के राजाओं के इतिहास" नामक पुस्तक
में लिखा गया है। वह पुस्तक यहोवा के प्रति उसकी
भक्ति और उसने यहोवा के नियमों का पालन कैसे
किया, बताती है।

यहूदा का राजा यहोआहाज

36 यहूदा के लोगों ने यरूशलेम में नया राजा होने
के लिये यहोआहाज को चुना। यहोआहाज
योशिय्याह का पुत्र था। 2यहोआहाज जब यहूदा का राजा
हुआ, वह तेईस वर्ष का था। वह यरूशलेम में तीन
महीने राजा रहा। 3तब मिस्र के राजा नको ने यहोआहाज
को बन्दी बना लिया। नको ने यहूदा के लोगों को पौने
चार टन चाँदी और पचहत्तर पौंड सोना दण्डराशि देने
को विवश किया। 4नको ने यहोआहाज के भाई को
यहूदा और यरूशलेम का नया राजा होने के लिये चुना।
यहोआहाज के भाई का नाम एल्याकीम था। तब नको
ने एल्याकीम को एक नया नाम दिया। उसने उसका
नाम यहोयाकीम रखा किन्तु नको यहोआहाज को मिस्र
ले गया।

यहूदा का राजा यहोयाकीम

5यहोयाकीम उस समय पच्चीस वर्ष का था जब वह
यहूदा का नया राजा हुआ। वह ग्यारह वर्ष तक यरूशलेम
में राजा रहा। यहोयाकीम ने वह नहीं किया जिसे यहोवा
चाहता था कि वह करे। उसने अपने यहोवा परमेश्वर
के विरुद्ध पाप किया।

6बाबेल से नबूकदनेस्सर ने यहूदा पर आक्रमण किया।
उसने यहोयाकीम को बन्दी बनाया और उसे काँसे की
जंजीरों में डाला। तब नबूकदनेस्सर राजा यहोयाकीम
को बाबेल ले गया। 7नबूकदनेस्सर यहोवा के मन्दिर से
कुछ चीजें ले गया। वह उन चीज़ों को बाबेल ले गया
और अपने घर अर्थात राजमहल में रखा। 8यहोयाकीम
ने जो अन्य काम किये, जो भंयकर पाप उसने किये
तथा हर एक काम जिसे करने का वह अपराधी था, ये
सब "यहूदा और इस्राएल के राजाओं का इतिहास" नाम
पुस्तक में लिखे हैं।

यहोयाकीन, यहोयाकीम के स्थान पर नया राजा
हुआ। यहोयाकीन, यहोयाकीम का पुत्र था।

यहूदा का राजा यहोयाकीन

9यहोयाकीन जब यहूदा का राजा हुआ, अट्ठारह
वर्ष का था। वह यरूशलेम में तीन महीने दस दिन
राजा रहा। उसने वे काम नहीं किये जिसे यहोवा
चाहता था कि वह करे। यहोयाकीन ने यहोवा के
विरुद्ध पाप किया। 10बसन्त में राजा नबूकदनेस्सर ने
कुछ सेवकों को यहोयाकीन को पकड़ने को भेजा।
वे यहोयाकीन और यहोवा के मन्दिर से कुछ
कीमती खजाने बाबेल ले गए। नबूकदनेस्सर ने
सिदकिय्याह को यहूदा और यरूशलेम का नया राजा
होने के लिये चुना। सिदकिय्याह यहोयाकीन का
सम्बन्धीथा।

योशिय्याह ... करुण गीत दूसरा शब्द यिर्मयाह के शोक-गीत
है। देखें यिर्म. 22:10

यहूदा का राजा सिदकिय्याह

11सिदकिय्याह जब यहूदा का राजा बना, इक्कीस वर्ष
का था। वह यरूशलेम में ग्यारह वर्ष तक राजा रहा।
12सिदकिय्याह ने वह नहीं किया जिसे उसका यहोवा
परमेश्वर चाहता था कि वह करे। सिदकिय्याह ने
अपने यहोवा के विरुद्ध पाप किये। यिर्मयाह नबी ने
यहोवा की ओर से सन्देश दिये किन्तु उसने अपने को
विनम्र नहीं बनाया और यिर्मयाह नबी ने जो कहा
उसका पालन नहीं किया।

यरूशलेम ध्वस्त हुआ

13सिदकिय्याह ने नबूकदनेस्सर के विरुद्ध विद्रोह
किया। कुछ समय पहले नबूकदनेस्सर ने सिदकिय्याह
से प्रतिज्ञा कराई थी कि वह नबूकदनेस्सर का
विश्वासपात्र रहेगा। सिदकिय्याह ने परमेश्वर का नाम
लिया और नबूकदनेस्सर के प्रति विश्वासपात्र बने रहने
की प्रतिज्ञा की। किन्तु सिदकिय्याह बहुत अड़ियल था
और उसने अपना जीवन बदलने, इस्राएल के यहोवा
परमेश्वर के पास लौटने तथा उसकी आज्ञा मानने से
इन्कार कर दिया। 14याजकों के सभी प्रमुखों और
यहूदा के लोगों के प्रमुखों ने अधिक पाप किये और
यहोवा के बहुत अधिक अविश्वसनीय हो गए। उन्होंने
अन्य राष्ट्रों के बुरे उदाहरणों की नकल की। उन
प्रमुखों ने यहोवा के मन्दिर को ध्वस्त कर दिया। यहोवा
ने मन्दिर को यरूशलेम में पवित्र बनाया था। 15उनके
पूर्वजों के यहोवा परमेश्वर ने अपने लोगों को चेतावनी
देने के लिये बार बार सन्देशवाहक को भेजा। यहोवा ने
यह इसलिये किया कि उसे उन पर करुणा थी और
मन्दिर के लिये दु:ख था। यहोवा उनको या अपने
मन्दिर को नष्ट नहीं करना चाहता था। 16किन्तु
परमेश्वर के लोगों ने परमेश्वर के संदेशवाहकों
(नबियों) का मजाक उड़ाया। उन्होंने परमेश्वर के
संदेशवाहकों (नबियों) की अनसुनी कर दी। उन्होंने
परमेश्वर के संदेश से घृणा की। अन्त में परमेश्वर
और अधिक अपना क्रोध न रोक सका। परमेश्वर
अपने लोगों पर क्रोधित हुआ और उसे रोकने के लिये
कुछ भी नहीं था जिसे किया जा सके।

17इसलिये परमेश्वर बाबेल के राजा को यहूदा के
लोगों पर आक्रमण करने के लिये लाया। बाबेल के
राजा ने युवकों को मन्दिर में होने पर भी मार डाला।
उसने यहूदा और यरूशलेम के लोगों पर दया नहीं की।
बाबेल के राजा ने युवा और वृद्ध सभी लोगों को मारा।
परमेश्वर ने नबूकदनेस्सर को यहूदा और यरूशलेम
के लोगों को दण्ड देने दिया। 18नबूकदनेस्सर परमेश्वर
के मन्दिर की सभी चीज़ें बाबेल ले गया। उसने परमेश्वर
के मन्दिर, राजा तथा राजा के अधिकारियों की सभी
कीमती चीज़ें ले लीं।

19नबूकदनेस्सर और उसकी सेना ने मन्दिर को
आग लगा दी। उन्होंने यरूशलेम की चहारदीवारी गिरा
दी और राजा तथा उसके अधिकारियों के सभी घरों
को जला दिया। उन्होंने यरूशलेम से हर एक कीमती
चीज़

ली या उसे नष्ट कर दिया। 20नबूकदनेस्सर इसके
बाद भी जीवित बचे लोगों को, बाबुल ले गया और उन्हें
दास होने को विवश किया। वे लोग बाबेल में दास की
तरह तब तक रहे जब तक फारस के सम्राट ने बाबेल
के राज्य को पराजित नहीं किया।

21इस प्रकार यहोवा ने, इस्राएल के लोगों को जो
कुछ यिर्मयाह नबी से कहलवाया, वह सब ठीक घटित
हुआ। यहोवा ने यिर्मयाह द्वारा कहा था: "यह स्थान
सत्तर वर्ष तक सूना उजाड़ देश रहेगा।* यह सब्त
विश्राम* की क्षतिपूर्ति के रूप में होगा जिसे लोग नहीं
करते।"

22यह तब पहले वर्ष हुआ जब फारस का राजा कुस्रू
शासन कर रहा था। यहोवा ने यिर्मयाह नबी के
माध्यम से जो वचन दिये वे सत्य घटित हुए। यहोवा ने
कूस्रू के हृदय को कोमल बनाया जिससे उसने आदेश
लिखा और अपने राज्य में हर एक स्थान पर भेजा:
23फारस का राजा कूस्रू यही कहता है: स्वर्ग का
परमेश्वर यहोवा ने मुझे पूरी पृथ्वी का राजा बनाया
है। उसने मुझे एक मन्दिर यरूशलेम में अपने लिये
बनाने का उत्तरदायित्व दिया है। अब तुम सभी, जो
परमेश्वर के लोग हो, यरूशलेम जाने के लिये स्वतन्त्र
हो। यहोवा परमेश्वर तुम्हारे साथ हो।

यह स्थान ... रहेगा देखे यिर्म. 25:11; 29:10

सब्त विश्राम नियम कहता था कि हर सातवें वर्ष भूमि में खेती नहीं करनी चाहिए। देखें लैव्य. 25:1–7

एज्रा

कुस्रू बन्दियों की वापसी में सहायता करता है

1 कुस्रू के फारस पर राज्य करने के प्रथम वर्ष*
यहोवा ने कुस्रू को एक घोषणा करने के लिये प्रोत्साहित
किया। कुस्रू ने उस घोषणा को लिखवाया और अपने
राज्य में हर एक स्थान पर पढ़वाया। यह इसलिये हुआ
ताकि यहोवा का वह सन्देश जो यिर्मयाह* द्वारा कहा
गया था, सच्चा हो सके। घोषणा यह है:

2"फारस के राजा कुस्रू का सन्देश:
स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा, ने पृथ्वी के सारे
राज्य मुझको दिये हैं और यहोवा ने मुझे यहूदा देश
के यरूशलेम में उसका एक मन्दिर बनाने के
लिए चुना। 3यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर है, वह
परमेश्वर जो यरूशलेम में है। यदि परमेश्वर के
व्यक्तियों में कोई भी व्यक्ति तुम्हारे बीच रह रहा है
तो मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर उसे
आशीर्वाद दे। तुम्हें उसे यहूदा देश के यरूशलेम में
जाने देना चाहिये। तुम्हें यहोवा के मन्दिर को
बनाने के लिये उन्हें जाने देना चाहिये 4और इसलिये
किसी भी उस स्थान में जहाँ इस्राएल के लोग बचे
हो उस स्थान के लोगों को उन बचे हुओं की
सहायता करनी चाहिये। उन लोगों को चाँदी, सोना,
गाय और अन्य चीज़े दो। यरूशलेम में परमेश्वर
के मन्दिर के लिये उन्हें भेंट दो।"

5अत: यहूदा और बिन्यामीन के परिवार समूहों के
प्रमुखों ने यरूशलेम जाने की तैयारी की। वे यहोवा के
मन्दिर को बनाने के लिये यरूशलेम जा रहे थे। परमेश्वर
ने जिन लोगों को प्रोत्साहित किया था वे भी यरूशलेम
जाने को तैयार हो गए। 6उनके सभी पड़ोसियों ने उन्हें
बहुत सी भेंट दी। उन्होंने उन्हें चाँदी, सोना, पशु और
अन्य कीमती चीज़ें दी। उनके पड़ोसियों ने उन्हें वे सभी
चीज़ें स्वेच्छापूर्वक दीं। 7राजा कुस्रू भी उन चीजों को
लाया जो यहोवा के मन्दिर की थीं। नबूकदनेस्सर उन
चीज़ों को यरूशलेम से लूट लाया था। नबूकदनेस्सर ने
उन चीज़ों को अपने उस मन्दिर में रखा, जिसमें वह
अपने असत्य देवताओं को रखता था। 8फारस के राजा
कुस्रू ने अपने उस व्यक्ति से जो उसके धन की देख
रेख करता था, इन चीज़ों को बाहर लाने के लिये
कहा। उस व्यक्ति का नाम मिथ्रदात था। अत: मिथ्रदात
उन चीज़ों को यहूदा के प्रमुख शेशबस्सर के पास
लेकर आया।

9जिन चीज़ों को मिथ्रदात यहोवा के मन्दिर से लाया
था वे ये थीं:

	सोने के पात्र	30
	चाँदी के पात्र	1,000
	चाकू और कड़ाहियाँ	29
10	सोने के कटोरे	30
	सोने के कटोरों जैसे चाँदी के कटोरे,	410
	तथा एक हजार अन्य प्रकार के पात्र	1,000

11सब मिलाकर वहाँ सोने चाँदी की बनी पाँच हजार
चार सौ चीज़ें थीं। शेशबस्सर इन सभी चीज़ों को अपने
साथ उस समय लाया जब बन्दियों ने बाबेल छोड़ा और
यरूशलेम को वापस लौट गये।

छूटकर वापस आने वाले बन्दियों की सूची

2 ये राज्य के वे व्यक्ति हैं जो बन्धुवाई से लौट कर
आये। बीते समय में बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर
उन लोगों को बन्दी के रूप में बाबेल लाया था। ये लोग
यरूशलेम और यहूदा को वापस आए। हर एक व्यक्ति
यहूदा में अपने-अपने नगर को वापस गया। 2ये वे लोग
हैं जो जरूब्बाबेल के साथ वापस आए: येशू, नहेम्याह,
सरायाह, रेलायाह, मौर्दकै, बिलशान, मिस्पार, बिगवै,
रहूम, और बाना। यह इस्राएल के उन लोगों के नाम
और उनकी संख्या है जो वापस लौटे:

3	परोश के वंशज	2,172
4	शपत्याह के वंशज	372
5	आरह के वंशज	775
6	येशू और योआब के परिवार के पहत्मोआब के वंशज	2,812
7	एलाम के वंशज	1,254

प्रथम वर्ष अर्थात् ई. पू. 538

यहोवा का ... यिर्मयाह देखे यिर्म. 25:12-14

8 जत्तू के वंशज 945
9 जक्कै के वंशज 760
10 बानी के वंशज 642
11 बेबै के वंशज 623
12 अजगाद के वंशज 1,222
13 अदोनीकाम के वंशज 666
14 बिगवै के वंशज 2,056
15 आदीन के वंशज 454
16 आतेर के वंशज (हिजकिय्याह के पारिवारिक पीढ़ी से) 98
17 बेसै के वंशज 323
18 योरा के वंशज 112
19 हाशूम के वंशज 223
20 गिब्बार के वंशज 95
21 बेतलेहेम नगर के लोग 123
22 नतोपा के नगर से 56
23 अनातोत नगर से 128
24 अज्मावेत के नगर से 42
25 किर्यतारीम, कपीरा और बेरोत नगरों से 743
26 रामा और गेबा नगर से 621
27 मिकमास नगर से 122
28 बेतेल और ऐ नगर से 223
29 नबो नगर से 52
30 मग्बीस नगर से 156
31 एलाम नामक अन्य नगर से 1,254
32 हारीम नगर से 320
33 लोद, हादीद और ओनो नगरों स 725
34 यरीहो नगर से 345
35 सना नगर से 3,630

36याजकों के नाम और उनकी संख्या की सूची यह है: यदायाह के वंशज (येशू की पारिवारिक पीढ़ी से) 973
37 इम्मेर के वंशज 1,052
38 पशहूर के वंशज 1,247
39 हारीम के वंशज 1,017

40लेवीवंशी कहे जाने वाले लेवी के परिवार की संख्या यह है:
येशू, और कदमिएल (होदव्याह की पारिवारिक पीढ़ी से) 74
41 गायकों की संख्या यह है:
आसाप के वंशज 128
42 मन्दिर के द्वारपालों की संख्या यह है :
शल्लूम, आतेर, तल्मोन, अक्कूब, हतीता और शोबै के वंशज 139

43मन्दिर के विशेष सेवक ये हैं:
ये सीहा, हसूपा, और तब्बाओत के वंशज हैं।
44 केरोस, सीअहा, पादोन,
45 लबाना, हागाब, अक्कूब
46 हागाब, शल्मै, हानान,
47 गिद्दल, गहर, रायाह,
48 रसीन, नकोदा, गज्जाम,
49 उज्जा, पासेह, बेसै,
50 अस्ना, मूनीम, नपीसीम।
51 बकबूक, हकूपा, हर्हूर,
52 बसलूत, महीदा, हर्शा,
53 बर्कोस, सीसरा, तेमह,
54 नसीह और हतीपा।
55ये सुलैमान के सेवकों के वंशज हैं:
सोतै, हस्सोपेरेत और परूदा की सन्तानें।
56 याला, दर्कोन, गिद्देल,
57 शपत्याह, हत्तील, पोकरेतसबायीम।
58 मन्दिर के सेवक और सुलैमान के सेवकों के कुल वंशज 392

59कुछ लोग इन नगरों से यरूशलेम आये: तेल्मेलह,
तेलहर्शा, करूब, अद्दान और इम्मेर। किन्तु ये लोग यह
प्रमाणित नहीं कर सके कि उनके परिवार इस्राएल के
परिवार से हैं।
60 उनके नाम और उनकी संख्या यह है: दलायाह, तोबिय्याह और नकोदा के वंशज 652

61यह याजकों के परिवारों के नाम हैं:
हबायाह, हक्कोस और बर्जिल्लै के वंशज (एक व्यक्ति जिसने गिलादी के बर्जिल्लै की पुत्री से विवाह किया था और बर्जिल्लै के पारिवारिक नाम से ही जाना जाता था।)

62इन लोगों ने अपने पारिवारिक इतिहासों की खोज
की, किन्तु उसे पा न सके। उनके नाम याजकों की
सूची में नहीं सम्मिलित किये गये थे। वे यह प्रमाणित
नहीं कर सके कि उनके पूर्वज याजक थे। इसी कारण
वे याजक नहीं हो सकते थे। 63प्रशासक ने इन लोगों
को आदेश दिया कि ये लोग कोई भी पवित्र भोजन न
करें। वे तब तक इस पवित्र भोजन से नहीं खा सकते
जब तक एक याजक जो ऊरीम और तुम्मीम का
उपयोग करके यहोवा से न पूछे कि क्या किया जाये।
64-65सब मिलाकर बयालीस हजार तीन सौ साठ लोग
उन समूहों में थे जो वापस लौट आए। इसमें उनके सात
हजार तीन सौ सैंतीस सेवक, सेविकाओं की गणना नहीं
है और उनके साथ दो सौ गायक और गायिकाएं भी
थीं। 66-67उनके पास सात सौ छत्तीस घोड़े, दो सौ पैंतालीस

खच्चर, चार सौ पैंतीस ऊँट और छ: हजार सात सौ
बीस गधे थे। 68वह समूह यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर
को पहुँचा। तब परिवार के प्रमुखों ने यहोवा के मन्दिर
को बनाने के लिये अपनी भेंटें दीं। उन्होंने जो मन्दिर
नष्ट हो गया था उसी के स्थान पर नया मन्दिर बनाना
चाहा। 69उन लोगों ने उतना दिया जितना वे दे सकते
थे। ये वे चीज़ें हैं जिन्हें उन्होंने मन्दिर बनाने के लिये
दिया: लगभग पाँच सौ किलो सोना, तीन टन चाँदी, और
याजकों के पहनने वाले सौ चोगे।

70इस प्रकार याजक, लेवीवंशी और कुछ अन्य लोग
यरूशलेम और उसके चारों ओर के क्षेत्र में बस गये।
इस समूह में मन्दिर के गायक, द्वारपाल और मन्दिर के
सेवक सम्मिलित थे। इस्राएल के अन्य लोग अपने निजी
निवास स्थानों में बस गये।

वेदी का फिर से बनना

3 अत, सातवें महीने से इस्राएल के लोग अपने अपने
नगरों में लौट गये। उस समय, सभी लोग यरूशलेम
में एक साथ इकट्ठे हुए। वे सभी एक इकाई के रूप में
संगठित थे। 2तब योसादाक के पुत्र येशू और उसके
साथ याजकों तथा शालतीएल के पुत्र जरूब्बाबेल और
उसके साथ के लोगों ने इस्राएल के परमेश्वर की वेदी
बनाई। उन लोगों ने इस्राएल के परमेश्वर के लिये वेदी
इसलिए बनाई ताकि वे इस पर बलि चढ़ा सकें। उन्होंने
उसे ठीक मूसा के नियमों के अनुसार बनाया। मूसा
परमेश्वर का विशेष सेवक था।

3वे लोग अपने आस पास के रहने वाले अन्य लोगों
से डरे हुए थे। किन्तु यह भय उन्हें रोक न सका और
उन्होंने वेदी की पुरानी नींव पर ही वेदी बनाई और उस
पर यहोवा को होमबलि दी। उन्होंने वे बलियाँ सवेरे
और शाम को दीं। 4तब उन्होंने आश्रयों का पर्व ठीक
वैसे ही मनाया जैसा मूसा के नियम में कहा गया है।
उन्होंने उत्सव के प्रत्येक दिन के लिये उचित संख्या में
होमबलि दी। 5उसके बाद, उन्होंने लगातार चलने वाली
प्रत्येक दिन की होमबलि नया चाँद, और सभी अन्य
उत्सव व विश्राम के दिनों की भेंटे चढ़ानी आरम्भ की
जैसा कि यहोवा द्वारा आदेश दिया गया था। लोग अन्य
उन भेंटों को भी चढ़ाने लगे जिन्हें वे यहोवा को चढ़ाना
चाहते थे। 6अत: सातवें महीने के पहले दिन इस्राएल के
इन लोगों ने यहोवा को फिर भेंट चढ़ाना आरम्भ किया।
यह तब भी किया गया जबकि मन्दिर की नींव अभी
फिर से नहीं बनी थी।

मन्दिर का पुन: निर्माण

7तब उन लोगों ने जो बन्धुवाई से छूट कर आये थे,
संगतराशों और बढ़ईयों को धन दिया और उन लोगों ने
उन्हें भोजन, दाखमधु और जैतून का तेल दिया। उन्होंने
इन चीज़ों का उपयोग सोर और सीदोन के लोगों को
लबानोन से देवदार के लट्ठों को लाने के लिये भुगतान
करने में किया। वे लोग चाहते थे कि जापा नगर के
समुद्री तट पर लट्ठों को जहाजों द्वारा ले आएँ। जैसा कि
सुलैमान ने किया था जब उसने पहले मन्दिर को बनाया
था। फारस के राजा कुस्रू ने यह करने के लिये उन्हें
स्वीकृति दे दी।

8अत: यरूशलेम में मन्दिर पर उनके पहुँचने के
दूसरे वर्ष के दूसरे महीने में शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल
और योसादाक के पुत्र येशू ने काम करना आरम्भ
किया। उनके भाईयों, याजकों, लेवीवंशियों और प्रत्येक
व्यक्ति जो बन्धुवाई से यरूशलेम लौटे थे, सब ने उनके
साथ काम करना आरम्भ किया। उन्होंने यहोवा के
मन्दिर को बनाने के लिये उन लेवीवंशियों को प्रमुख
चुना जो बीस वर्ष या उससे अधिक उम्र के थे। 9ये वे
लोग थे जो मन्दिर के बनने की देखरेख कर रहे थे,
येशू के पुत्र और उसके भाई, कदमीएल और उसके
पुत्र (यहूदा के वंशज थे) हेनादाद के पुत्र और उनके
बन्धु लेवीवंशी। 10कारीगरों ने यहोवा के मन्दिर की
नींव डालनी पूरी कर दी। जब नींव पड़ गई तब याजकों
ने अपने विशेष वस्त्र पहने। तब उन्होंने अपनी तुरही
ली और आसाप के पुत्रों ने अपने झाँझों को लिया।
उन्होंने यहोवा की स्तुति के लिये अपने अपने स्थान ले
लिये। यह उसी तरह किया गया जिस तरह करने के
लिये भूतकाल में इस्राएल के राजा दाऊद ने आदेश
दिया था। 11यहोवा ने जो कुछ किया, उन्होंने, उसके
लिये उसकी प्रशंसा करते हुए तथा धन्यवाद देते हुए,
यह गीत गाया "वह अच्छा है, उसका इस्राएल के लिए
प्रेम शाश्वत है।"* और तब सभी लोग खुश हुए।
उन्होंने बहुत जोर से उद्घोष और यहोवा की स्तुति
की। क्यों? क्योंकि मन्दिर की नींव पूरी हो चुकी थी।

12किन्तु बुजुर्ग याजकों में से बहुत से, लेवीवंशी और
परिवार प्रमुख रो पड़े। क्यों? क्योंकि उन लोगों ने प्रथम
मन्दिर को देखा था, और वे यह याद कर रहे थे कि
वह कितना सुन्दर था। वे रो पड़े जब उन्होंने नये मन्दिर
को देखा। वे रो रहे थे जब बहुत से अन्य लोग प्रसन्न थे
और शोर मचा रहे थे। 13उद्घोष बहुत दूर तक सुना जा
सकता था। उन सभी लोगों ने इतना शोर मचाया कि
कोई व्यक्ति प्रसन्नता के उद्घोष और रोने में अन्तर
नहीं कर सकता था।

मन्दिर के पुन: निर्माण के विरुद्ध शत्रु

4 1-2उस क्षेत्र में रहने वाले बहुत से लोग यहूदा और
बिन्यामीन के लोगों के विरूद्ध थे। उन शत्रुओं ने

वह अच्छा ... शाश्वत है संभवत: इसका अर्थ यह है कि उन्होंने उस भजन को गाया जिसे हम भजन 111–118 और भजन 136 के रूप में जानते हैं।

सुना कि वे लोग जो बन्धुवाई से आये हैं वे, इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा के लिये एक मन्दिर बना रहे हैं।
इसलिये वे शत्रु जरुब्बाबेल तथा परिवार प्रमुखों के पास
आए और उन्होंने कहा, “मन्दिर बनाने में हमें तुमको
सहायता करने दो। हम लोग वही हैं जो तुम हो, हम
तुम्हारे परमेश्वर से सहायता माँगते हैं। हम लोगों ने
तुम्हारे परमेश्वर को तब से बलि चढ़ाई है जब से
अश्शूर का राजा एसर्हद्दोन हम लोगों को यहाँ लाया।”

3किन्तु जरुब्बाबेल, येशू और इस्राएल के अन्य परिवार
प्रमुखों ने उत्तर दिया, “नहीं, तुम जैसे लोग हमारे परमेश्वर
के लिये मन्दिर बनाने में हमें सहायता नहीं कर सकते।
केवल हम लोग ही यहोवा के लिए मन्दिर बना सकते
हैं। वह इस्राएल का परमेश्वर है। फारस के राजा कुस्रू
ने जो करने का आदेश दिया है, वह यही है।”

4इससे वे लोग क्रोधित हो उठे। अत: उन लोगों ने
यहूदियों को परेशान करना आरम्भ किया। उन्होंने
उनको हतोत्साह और मन्दिर को बनाने से रोकने का
प्रयत्न किया। 5उन शत्रुओं ने सरकारी अधिकारियों
को यहूदा के लोगों के विरूद्ध काम करने के लिए
खरीद लिया। उन अधिकारियों ने यहूदियों द्वारा मन्दिर
को बनाने की योजना को रोकने के लिए लगातार
काम किया। यह उस दौरान तब तक लगातार चलता
रहा जब तक कुस्रू फारस का राजा रहा और बाद में
जब तक दारा फारस का राजा नहीं हो गया।

6उन शत्रुओं ने यहूदियों को रोकने के लिये प्रयत्न
करते हुए फ़ारस के राजा को पत्र भी लिखा। उन्होंने
यह पत्र तब लिखा था जब क्षयर्ष* फारस का राजा
बना।

यरूशलेम के पुन: निर्माण के विरुद्ध शत्रु

7बाद में, जब अर्तक्षत्र* फारस का नया राजा हुआ,
इन लोगों में से कुछ ने यहूदियों के विरूद्ध शिकायत
करते हुए एक और पत्र लिखा। जिन लोगों ने वह पत्र
लिखा, वे ये थे: बिशलाम, मिथदात, ताबेल और उसके
दल के अन्य लोग। उन्होंने पत्र राजा अर्तक्षत्र को अरामी
में अरामी लिपि का उपयोग करते हुए लिखा।

8*तब शासनाधिकारी रहूम और सचिव शिलशै ने
यरूशलेम के लोगों के विरूद्ध पत्र लिखा। उन्होंने राजा
अर्तक्षत्र को पत्र लिखा। उन्होंने जो लिखा वह यह था:

9शासनाधिकारी रहूम, सचिव शिमशै, तथा तर्पली,
अफ़ारसी, एरेकी, बाबेली और शूशनी के एलामी
लोगों के न्यायाधीश और महत्वपूर्ण अधिकारियों
की ओर से, 10तथा वे अन्य लोग जिन्हें महान
और शक्तिशाली ओस्नप्पर ने शोमरोन के नगरों
एवं परात नदी के पश्चिमी प्रदेश के अन्य स्थानों
पर बसाया था। 11यह उस पत्र की प्रतिलिपि है
जिसे उन लोगों ने अर्तक्षत्र को भेजा था।

राजा अर्तक्षत्र को, परात नदी के पश्चिमी क्षेत्र में
रहने वाले आप के सेवकों की ओर से है।

12राजा अर्तक्षत्र हम आपको सूचित करना चाहते
हैं कि जिन यहूदियों को आपने–अपने पास से
भेजा है, वे यहाँ आ गये हैं। वे यहूदी उस नगर को
फिर से बनाना चाहते हैं। यरूशलेम एक बुरा नगर
है। उस नगर के लोगों ने अन्य राजाओं के विरूद्ध
सदैव विद्रोह किया है। अब वे यहूदी परकोटे की
नींवों को पक्का कर रहे हैं और दीवारें खड़ी कर
रहे हैं।*

13राजा अर्तक्षत्र आपको यह भी जान लेना चाहिये
कि यदि यरूशलेम और इसके परकोटे फिर बन
गए तो यरूशलेम के लोग कर देना बन्द कर देंगे।
वे आपका सम्मान करने के लिये धन भेजना बन्द
कर देंगे। वे सेवा कर देना भी रोक देंगे और राजा
को उस सारे धन से हाथ धोना पड़ेगा।

14हम लोग राजा के प्रति उत्तरदायी हैं। हम लोग
यह सब घटित होना नहीं देखना चाहते। यही कारण
है कि हम लोग यह पत्र राजा को सूचना के लिये
भेज रहे हैं।

15राजा अर्तक्षत्र हम चाहते हैं कि आप उन राजाओं
के लेखों का पता लगायें जिन्होंने आपके पहले
शासन किये। आप उन लेखों में देखेंगे कि यरूशलेम
ने सदैव अन्य राजाओं के प्रति विद्रोह किया। इसने
अन्य राजाओं और राष्ट्रों के लिये बहुत कठिनाईयाँ
उत्पन्न की है। प्राचीन काल से इस नगर में बहुत
से विद्रोह का आरम्भ हुआ है! यही कारण है कि
यरूशलेम नष्ट हुआ था!

16राजा अर्तक्षत्र हम आपको सूचित करना चाहते
हैं कि यदि यह नगर और इसके परकोटे फिर से
बन गई तो फरात नदी के पश्चिम के क्षेत्र आप
के हाथ से निकल जाएँगे।

17तब अर्तक्षत्र ने यह उत्तर भेजा: शासनाधिकारी
रहूम और सचिव शिमशै और उन के सभी साथियों
को जो शोमरोन और परात नदी के अन्य पश्चिमी
प्रदेश में रहते हैं, को अपना उत्तर भेजा।

अभिवादन,

18तुम लोगों ने जो हमारे पास पत्र भेजा उसका
अनुवाद हुआ और मुझे सुनाया गया। 19मैंने आदेश

क्षयर्ष फ़ारस का राजा, लगभग ई. पू. 485–465

अर्तक्षत्र फ़ारस का राजा लगभग ई. पू. 465– 424यह क्षयर्ष का पुत्र था।

पद्य 4:8 यहाँ मूल भाषा हिब्रू से अरामी भाषा हो गई है।

अब ... रहे हैं यह नगर को सुरक्षित रखने का तरीका था, किन्तु ये लोग राजा को यह विचार करने वाला बनाना चाहते थे कि यहूदी उसके विरूद्ध विद्रोह करने की तैयारी कर रहे हैं।

दिया कि मेरे पहले के राजाओं के लेखों की खोज
की जाये। लेख पढ़े गये और हम लोगों को ज्ञात
हुआ कि यरूशलेम द्वारा राजाओं के विरूद्ध विद्रोह
करने का एक लम्बा इतिहास है। यरूशलेम ऐसा
स्थान रहा है जहाँ प्राय: विद्रोह और क्रान्तियाँ होती
रही हैं। 20यरूशलेम और फरात नदी के पश्चिम
के पूरे क्षेत्र पर शक्तिशाली राजा राज्य करते रहे
हैं। राज्य कर और राजा के सम्मान के लिये धन
और विविध प्रकार के कर उन राजाओं को दिये
गए हैं।
21अब तुम्हें उन लोगों को काम बन्द करने के
लिये एक आदेश देना चाहिए। यह आदेश यरूशलेम
के पुन: निर्माण को रोकने के लिये तब तक है,
जब तक कि मैं वैसा करने की आज्ञा न दूँ। 22इस
आज्ञा की उपेक्षा न हो, इसके लिये सावधान रहना।
हमें यरूशलेम के निर्माण कार्य को जारी नहीं
रहने देना चाहिए। यदि काम चलता रहा तो मुझे
यरूशलेम से आगे कुछ भी धन नहीं मिलेगा।

23सो उस पत्र की प्रतिलिपि, जिसे राजा अर्तक्षत्र ने
भेजा रहूम, सचिव शिमशै और उनके साथ के लोगों
को पढ़कर सुनाई गई। तब वे लोग बड़ी तेज़ी से यरूशलेम
में यहूदियों के पास गए। उन्होंने यहूदियों को निर्माण
कार्य बन्द करने को विवश कर दिया।

मन्दिर का कार्य रुका

24इस प्रकार यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर का
काम रुक गया। फारस के राजा दारा के शासनकाल
के दूसरे वर्ष तक यह कार्य नहीं चला।
5 तब हाग्गै* नबी और इद्दो के पुत्र जकर्याह* ने
इस्राएल के परमेश्वर के नाम पर भविष्यवाणी
करनी आरम्भ की। उन्होंने यहूदा और यरूशलेम में
यहूदियों को प्रोत्साहित किया। 2अत: शालतीएल का पुत्र
जरुब्बाबेल और योसादाक का पुत्र येशू ने फिर यरूशलेम
में मन्दिर का निर्माण करना आरम्भ कर दिया। सभी
परमेश्वर के नबी उनके साथ थे और कार्य में सहायता
कर रहे थे। 3उस समय फरात नदी के पश्चिम के क्षेत्र
का राज्यपाल तत्तनै था। तत्तनै, शतर्बोजनै और उनके
साथ के लोग जरुब्बाबेल और येशू तथा निर्माण करने
वालों के पास गए। तत्तनै और उसके साथ के लोगों ने
जरूब्बाबेल और उसके साथ के लोगों से पूछा, "तुम्हें
इस मन्दिर को फिर से बनाने और इस की छत का
काम पूरा करने का आदेश किसने दिया?" 4उन्होंने
जरुब्बाबेल से यह भी पूछा, "जो लोग इस इमारत को
बनाने का काम कर रहे है उनके नाम क्या हैं?"

5किन्तु परमेश्वर यहूदी प्रमुखों पर दृष्टि रख रहा
था। निर्माण करने वालों को तब तक काम नहीं रोकना
पड़ा जब तक उसका विवरण राजा दारा को न भेज
दिया गया। वे तब तक काम करते रहे जब तक राजा
दारा ने अपना उत्तर वापस नहीं भेजा।
6फ़रात के पश्चिम के क्षेत्रों के शासनाधिकारी तत्तनै,
शतर्बोजनै और उनके साथ के महत्वपूर्ण व्यक्तियों ने
राजा दारा के पास पत्र भेजा। 7यह उस पत्र की प्रतिलिपि
है:

राजा दारा को अभिवादन
8राजा दारा, आपको ज्ञात होना चाहिए कि हम
लोग यहूदा प्रदेश में गए। हम लोग महान परमेश्वर
के मन्दिर को गए। यहूदा के लोग उस मन्दिर को
बड़े पत्थरों से बना रहे हैं। वे दीवारों में लकड़ी की
बड़ी–बड़ी शहतीरें डाल रहे हैं। काम बड़ी सावधानी
से किया जा रहा है, और यहूदा के लोग बहुत
परिश्रम कर रहे हैं। वे बड़ी तेज़ी से निर्माण कार्य
कर रहे हैं और यह शीघ्र ही पूरा हो जाएगा।
9हम लोगों ने उनके प्रमुखों से कुछ प्रश्न उनके
निर्माण कार्य के बारे में पूछा हम लोगों ने उनसे
पूछा, "तुम्हें इस मन्दिर को फिर से बनाने और
इस की छत का काम पूरा करने की स्वीकृति
किसने दी है?" 10हम लोगों ने उनके नाम भी
पूछे। हम लोगों ने उन लोगों के प्रमुखों के नाम
लिखना चाहा जिससे आप जान सकें कि वे कौन
लोग हैं। 11उन्होंने हमें यह उत्तर दिया:
"हम लोग स्वर्ग और पृथ्वी के परमेश्वर के
सेवक हैं। हम लोग उसी मन्दिर को बना रहे हैं
जिसे बहुत वर्ष पहले इस्राएल के एक महान राजा
ने बनाया और पूरा किया था। 12किन्तु हमारे
पूर्वजों ने स्वर्ग के परमेश्वर को क्रोधित किया।
इसलिये परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को बाबेल के
राजा नबूकदनेस्सर को दिया। नबूकदनेस्सर ने
इस मन्दिर को नष्ट किया और उसने लोगों को
बन्दी के रूप में बाबेल जाने को विवश किया।
13किन्तु बाबेल पर कुस्रू के राजा होने के प्रथम
वर्ष में राजा कुस्रू ने परमेश्वर के मन्दिर को फिर
से बनाने के लिए विशेष आदेश दिया। 14कुस्रू ने
बाबेल में अपने असत्य देवता के मन्दिर से उन
सोने चाँदी की चीजों को निकाला जो भूतकाल में
परमेश्वर के मन्दिर से लूट कर ले जाई गई थीं।
नबूकदनेस्सर ने उन चीज़ों को यरूशलेम के मन्दिर
से लूटा और उन्हें बाबेल में अपने असत्य देवताओं
के मन्दिर में ले आया। तब राजा कुस्रू ने उन सोने
चाँदी की चीजों को शेशबस्सर (जरुब्बाबेल) को दे
दिया। कुस्रू ने शेशबस्सर को प्रशासक चुना था।

हाग्गै देखें हाग्गै 1:1

इद्दो ... जकर्याह देखें जकर्याह 1:1

15कुस्रू ने तब शेशबस्सर (जरुब्बाबेल) से कहा
था, "इन सोने चाँदी की चीज़ों को लो और उन्हें
यरूशलेम के मन्दिर में वापस रखो। उसी स्थान
पर परमेश्वर के मन्दिर को बनाओ जहाँ वह
पहले था।" 16अत: शेशबस्सर (जरुब्बाबेल) आया
और उसने यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर की
नींव का काम पूरा किया। उस दिन से आज तक
मन्दिर के निर्माण का काम चलता आ रहा है।
किन्तु यह अभी तक पूरा नहीं हुआ है।"

17अब यदि राजा चाहते हैं तो कृपया वे राजाओं
के लेखों को खोजें। यह देखने के लिए खोज करें
कि क्या राजा कुस्रू द्वारा यरूशलेम में परमेश्वर
के मन्दिर को फिर से बनाने का दिया गया आदेश
सत्य है और तब, महामहिम, कृपया आप हम लोगों
को पत्र भेजें जिससे हम जान सकें कि आपने इस
विषय में क्या करने का निर्णय लिया है।

दारा का आदेश

6 अत: राजा दारा ने अपने पूर्व के राजाओं के लेखों
की जाँच करने का आदेश दिया। वे लेख बाबेल में
वहीं रखे थे जहाँ खज़ाना रखा गया था। 2अहमत्ता के
किले में एक दण्ड में लिपटा गोल पत्रक मिला। एकवतन
मादे प्रान्त में है। उस दण्ड में लिपटे गोल पत्रक पर जो
लिखा था, वह यह है:

सरकारी टिप्पणी: 3कुस्रू के राजा होने के प्रथम
वर्ष में कुस्रू ने यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर
के लिये एक आदेश दिया। आदेश यह था:

परमेश्वर का मन्दिर फिर से बनने दो। यह बलि
भेंट करने का स्थान होगा। इसकी नींव को बनने
दो। मन्दिर साठ हाथ ऊँचा और साठ हाथ चौड़ा
होना चाहिए। 4इसके परकोटे में विशाल पत्थरों
की तीन कतारें और विशाल लकड़ी के शहतीरों
की एक कतार होनी चाहिए। मन्दिर को बनाने
का व्यय राजा के खज़ाने से किया जाना चाहिये।
5साथ ही साथ, परमेश्वर के मन्दिर की सोने और
चाँदी की चीज़ें उनके स्थान पर वापस रखी जानी
चाहिए। नबूकदनेस्सर ने उन चीज़ों को यरूशलेम
के मन्दिर से लिया था और उन्हें बाबेल लाया था।
वे परमेश्वर के मन्दिर में वापस रख दिये जाने
चाहियें।

6इसलिये अब, मैं दारा, फरात नदी के पश्चिम के
प्रदेशों के शासनाधिकारी तत्तनै और शतर्बोजनै और
उस प्रान्त के रहने वाले सभी अधिकारियों, तुम्हें
आदेश देता हूँ कि तुम लोग यरूशलेम से दूर रहो।
7श्रमिकों को परेशान न करो। परमेश्वर के उस
मन्दिर के काम को बन्द करने का प्रयत्न मत
करो। यहूदी प्रशासक और यहूदी प्रमुखों को इन्हें
फिर से बनाने दो। उन्हें परमेश्वर के मन्दिर को
उसी स्थान पर फिर से बनाने दो जहाँ यह पहले था।

8अब मैं यह आदेश देता हूँ, तुम्हें परमेश्वर के
मन्दिर को बनाने वाले यहूदी प्रमुखों के लिये यह
करना चाहिये: इमारत की लागत का भुगतान
राजा के खज़ाने से होना चाहिये। यह धन फ़रात
नदी के पश्चिम के क्षेत्र के प्रान्तों से इकट्ठा
किये गये राज्य कर से आयेगा। ये काम शीघ्रता से
करो, जिससे काम रूके नहीं। 9उन लोगों को वह
सब दो जिसकी उन्हें आवश्यकता हो। यदि उन्हें
स्वर्ग के परमेश्वर को बलि के लिये युवा बैलों,
मेढ़ों या मेमनों की जरूरत पड़े तो उन्हें वह सब
कुछ दो। यदि यरूशलेम के याजक गेहूँ, नमक,
दाखमधु और तेल माँगे तो बिना भूल चूक के
प्रतिदिन ये चीज़ें उन्हें दो। 10उन चीज़ों को यहूदी
याजकों को दो जिससे वे ऐसी बलि भेंट करें कि
जिससे स्वर्ग का परमेश्वर प्रसन्न हो। उन चीज़ों
को दो जिससे याजक मेरे और मेरे पुत्रों के लिये
प्रार्थना करें।11मैं यह आदेश भी देता हूँ कि यदि
कोई व्यक्ति इस आदेश को बदलता है तो उस
व्यक्ति के मकान से एक लकड़ी की कड़ी निकाल
लेनी चाहिए और उस लकड़ी की कड़ी को उस
व्यक्ति की शरीर पर धँसा देना चाहिये और उसके
घर को तब तक नष्ट किया जाना चाहिये जब
तक कि वह पत्थरों का ढेर न बन जाये।

12परमेश्वर यरूशलेम पर अपना नाम अंकित
करे और मुझे आशा है कि परमेश्वर किसी भी
उस राजा या व्यक्ति को पराजित करेगा जो इस
आदेश को बदलने का प्रयत्न करता है। यदि कोई
यरूशलेम में इस मन्दिर को नष्ट करना चाहता है
तो मुझे आशा है कि परमेश्वर उसे नष्ट कर
देगा। मैं (दारा) ने, यह आदेश दिया है। इस आदेश
का पालन शीघ्र और पूर्ण रूप से होना चाहिए!

मन्दिर का पूर्ण और समर्पित होना

13अत: फ़रात नदी के पश्चिम क्षेत्र के प्रशासक
तत्तनै, शतर्बोजनै और उसके साथ के लोगों ने राजा
दारा के आदेश का पालन किया। उन लोगों ने आज्ञा
का पालन शीघ्र और पूर्ण रूप से किया। 14अत: यहूदी
अग्रजों (प्रमुखों) ने निर्माण कार्य जारी रखा और वे
सफल हुए क्योंकि हाग्गै नबी और इद्दो के पुत्र जकर्याह
ने उन्हें प्रोत्साहित किया। उन लोगों ने मन्दिर का
निर्माण कार्य पूरा कर लिया। यह इस्राएल के परमेश्वर
के आदेश का पालन करने के लिये किया गया। यह
फारस के राजाओं, कुस्रू, दारा और अर्तक्षत्र ने जो
आदेश दिये थे उनका पालन करने के लिये किया
गया। 15मन्दिर का निर्माण अदर महीने के तीसरे दिन

पूरा हुआ।* यह राजा दारा के शासन के छठें वर्ष में
हुआ।*

16तब इस्राएल के लोगों ने अत्यन्त उल्लास के साथ
परमेश्वर के मन्दिर का समर्पण उत्सव मनाया। याजक,
लेवीवंशी, और बन्धुवाई से वापस आए अन्य सभी लोग
इस उत्सव में सम्मिलित हुये।

17उन्होंने परमेश्वर के मन्दिर को इस प्रकार समर्पित
किया: उन्होंने एक सौ बैल, दो सौ मेढ़े और चार सौ
मेमने भेंट किये और उन्होंने पूरे इस्राएल के लिये पाप
भेंट के रूप में बारह बकरे भेंट किये अर्थात् इस्राएल
के बारह परिवार समूह में से हर एक के लिए एक
बकरा भेंट किया। 18तब उन्होंने यरूशलेम में मन्दिर में
सेवा करने के लिये याजकों और लेवीवंशियों के समूह
बनाये। यह सब उन्होंने उसी प्रकार किया जिस प्रकार
मूसा की पुस्तक में बताया गया है।

फसह पर्व

19*पहले महीने के चौदहवें दिन उन यहूदियों ने
फसह पर्व मनाया जो बन्धुवाई से वापस लौटेथे। 20याजकों
और लेवीवंशियों ने अपने को शुद्ध किया। उन सभी ने
फसह पर्व मनाने के लिये अपने को स्वच्छ और तैयार
किया। लेवीवंशियों ने बन्धुवाई से लौटने वाले सभी
यहूदियों के लिये फसह पर्व के मेमने को मारा। उन्होंने
यह अपने लिये और अपने याजक बंधुओं के लिये
किया। 21इसलिये बन्धुवाई से लौटे इस्राएल के सभी
लोगों ने फसह पर्व का भोजन किया। अन्य लोगों ने
स्नान किया और अपने आपको को उन अशुद्ध चीज़ों
से अलग हट कर शुद्ध किया जो उस प्रदेश में रहने
वाले लोगों की थीं। उन शुद्ध लोगों ने भी फसह पर्व के
भोजन में हिस्सा लिया। उन लोगों ने यह इसलिये किया,
कि वे यहोवा इस्राएल के परमेश्वर के पास सहायता के
लिये जा सकें। 22उन्होंने अखमीरी रोटी का उत्सव सात
दिन तक बहुत अधिक प्रसन्नता से मनाया। यहोवा ने
उन्हें बहुत प्रसन्न किया क्योंकि उसने अश्शूर के राजा
के व्यवहार को बदल दिया था। अत: अश्शूर के राजा
ने परमेश्वर के मन्दिर को बनाने में उनकी सहायता
की थी।

एज्रा यरूशलेम आता है

7 फारस के राजा अर्तक्षत्र के शासनकाल में इन
सब बातों के हो जाने के बाद* एज्रा बाबेल से
यरूशलेम आया। एज्रा सरायाह का पुत्र था। सरायाह
अजर्याह का पुत्र था। अजर्याह हिल्किय्याह का पुत्र था।
2हिल्किय्याह शल्लूम का पुत्र था। शल्लूम सादोक का
पुत्र था। सादोक अहीतूब का पुत्र था। 3अहीतूब अमर्याह
का पुत्र था। अमर्याह अजर्याह का पुत्र था। अजर्याह
मरायोत का पुत्र था। 4मरायोत जरह्याह का पुत्र था।
जरह्याह उज्जी का पुत्र था। उज्जी बुक्की का पुत्र था।
5बुक्की अबीशू का पुत्र था। अबीशू पीनहास का पुत्र
था। पीनहास एलीआज़र का पुत्र था। एलीआज़र
महायाजक हारून का पुत्र था।

6एज्रा बाबेल से यरूशलेम आया। एज्रा एक शिक्षक
था। वह मूसा के नियमों को अच्छी तरह जानता था।
मूसा का नियम यहोवा इस्राएल के परमेश्वर द्वारा दिया
गया था। राजा अर्तक्षत्र ने एज्रा को वह हर चीज़ दी जिसे
उसने माँगा क्योंकि यहोवा परमेश्वर एज्रा के साथ था।
7इस्राएल के बहुत से लोग एज्रा के साथ आए। वे याजक
लेवीवंशी, गायक, द्वारपाल और मन्दिर के सेवक थे।
इस्राएल के वे लोग अर्तक्षत्र के शासनकाल के सातवें
वर्ष यरूशलेम आए। 8एज्रा यरूशलेम में राजा अर्तक्षत्र
के राज्यकाल के सातवें वर्ष के पाँचवें महीने में आया।
9एज्रा और उसके समूह ने बाबेल को पहले महीने के
पहले दिन छोड़ा। वह पाँचवें महीने के पहले दिन यरूशलेम
पहुँचा। यहोवा परमेश्वर एज्रा के साथ था। 10एज्रा ने
अपना पूरा समय और ध्यान यहोवा के नियमों को
पढ़ने और उनके पालन करने में दिया। एज्रा इस्राएल
के लोगों को यहोवा के नियमों और आदेशों की शिक्षा
देना चाहता था और वह इस्राएल में लोगों को उन
नियमों का अनुसरण करने में सहायता देना चाहता था।

राजा अर्तक्षत्र का एज्रा को पत्र

11एज्रा एक याजक और शिक्षक था। इस्राएल को
यहोवा द्वारा दिये गए आदेशों और नियमों के बारे में वह
पर्याप्त ज्ञान रखता था। यह उस पत्र की प्रतिलिपि है
जिसे राजा अर्तक्षत्र ने उपदेशक एज्रा को दिया था।

12*राजा अर्तक्षत्र की ओर से,
याजक एज्रा को जो स्वर्ग के परमेश्वर के नियमों
का शिक्षक है:

अभिवादन! 13मैं यह आदेश देता हूँ: कोई व्यक्ति,
याजक या इस्राएल का लेवीवंशी जो मेरे राज्य में
रहता है और एज्रा के साथ यरूशलेम जाना चाहता
है, जा सकता है।

14एज्रा, मैं और मेरे सात सलाहकार तुम्हें भेजते
हैं। तुम्हें यहूदा और यरूशलेम को जाना चाहिये।

मन्दिर ... पूरा हुआ यह दिन मार्च के महिने में था। कुछ प्राचीन लेखक इसे "अदर का 23वां दिन" कहते हैं।

यह ... हुआ अर्थात् ई.पू. 515

19 पद्य यहाँ मूल पद्य अरामिक भाषा में है यहाँ से आगे अब फिर हिब्रू भाषा हो गई है।

इन सब ... बाद एज्रा के अध्याय 6और अध्याय 7के बीच 58वर्ष के समय का अन्तर है। एस्तेर की पुस्तक की घटनाएँ इन दोनों अध्यायों के समय के बीच की हैं।

पद्य 12 से इस पुस्तक का मूल पाठ हिब्रू से अरामी भाषा में हो गया है।

यह देखो कि तुम्हारे लोग तुम्हारे परमेश्वर के
नियमों का पालन कैसे कर रहे हैं। तुम्हारे पास
वह नियम है।
15मैं और मेरे सलाहकार इस्राएल के परमेश्वर
को सोना–चाँदी दे रहे हैं। परमेश्वर का निवास
यरूशलेम में है। तुम्हें यह सोना चाँदी अपने साथ
ले जाना चाहिये। **16**तुम्हें बाबेल के सभी प्रान्तों से
होकर जाना चाहिये। अपने लोगों, याजकों और
लेवीवंशियों से भी भेंटें इकट्ठी करो। ये भेंटें उनके
यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर के लिये है।
17इस धन का उपयोग बैल, मेढ़े और नर मेमने
खरीदने में करो। उन बलियों के साथ जो अन्न
भेंट और पेय भेंट चढ़ाई जानी है, उन्हें खरीदो।
तब उन्हें यरूशलेम में अपने परमेश्वर के मन्दिर
की वेदी पर बलि चढ़ाओ। **18**उसके बाद तुम और
अन्य यहूदी बचे हुये सोने चाँदी को जैसे भी चाहो,
खर्च कर सकते हो। इसका उपयोग वैसे ही करो
जो तुम्हारे परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला हो।
19उन सभी चीज़ों को यरूशलेम के परमेश्वर के
पास ले जाओ। वे चीज़ें तुम्हारे परमेश्वर के मन्दिर
में उपासना के लिये हैं। **20**तुम कोई भी अन्य चीज़ें
ले सकते हो जिन्हें तुम अपने परमेश्वर के मन्दिर
के लिये आवश्यक समझते हो। राजा के ख़ज़ाने
के धन का उपयोग जो कुछ तुम चाहते हो उसके
खरीदने के लिये कर सकते हो।
21अब मैं, राजा अर्तक्षत्र यह आदेश देता हूँ: मैं
उन सभी लोगों को जो फरात नदी के पश्चिमी
क्षेत्र में राजा के कोषपाल हैं, आदेश देता हूँ कि वे
एज्रा को जो कुछ भी वह माँगे दें। एज्रा स्वर्ग के
परमेश्वर के नियमों का शिक्षक और याजक है।
इस आदेश का शीघ्र और पूर्ण रूप से पालन करो।
22एज्रा को इतना तक दे दो : पौने चार टन चाँदी,
छ: सौ बुशल गेहूँ, छ: सौ गैलन दाखमधु, छ: सौ
गैलन जैतून का तेल और उतना नमक जितना
एज्रा चाहे। **23**स्वर्ग का परमेश्वर, एज्रा को जिस
चीज़ को पाने के लिये आदेश दे उसे तुम्हें शीघ्र
और पूर्ण रूप से एज्रा को देना चाहिये। स्वर्ग के
परमेश्वर के मन्दिर के लिये ये सब चीज़ें करो।
हम नहीं चाहते कि परमेश्वर मेरे राज्य या मेरे
पुत्रों पर क्रोधित हो।
24मैं चाहता हूँ कि तुम लोगों को ज्ञात हो कि
याजकों, लेवियों, गायकों, द्वारपालों और परमेश्वर
के मन्दिर के अन्य कर्मचारियों तथा सेवकों को
किसी भी प्रकार का कर देने के लिये बाध्य
करना, नियम के विरोध है। **25**एज्रा मैं तुम्हें तुम्हारे
परमेश्वर द्वारा प्राप्त बुद्धि के उपयोग तथा सरकारी
और धार्मिक न्यायाधीशों को चुनने का अधिकार
देता हूँ। ये लोग फरात नदी के पश्चिम में रहने
वाले सभी लोगों के लिये न्यायाधीश होंगे। वे उन
सभी लोगों का न्याय करेंगे जो तुम्हारे परमेश्वर
के नियमों को जानते हैं। यदि कोई व्यक्ति उन
नियमों को नहीं जानता तो वे न्यायाधीश उसे उन
नियमों को बताएंगे। **26**यदि कोई ऐसा व्यक्ति हो जो
तुम्हारे परमेश्वर के नियमों या राजा के नियमों
का पालन नहीं करता हो, तो उसे अवश्य दण्डित
किया जाना चाहिये। अपराध के अनुसार उसे
मृत्यु दण्ड, देश निकाला, उसकी सम्पत्ति को जब्त
करना या बन्दीगृह में डालने का दण्ड दिया जाना
चाहिए।

एज्रा परमेश्वर की स्तुति करता है

27*हमारे पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा की स्तुति
करो। उस ने राजा के मन में ये विचार डाला कि वह
यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर का सम्मान करे।
28यहोवा ने राजा, उसके सलाहकारों और बड़े
अधिकारियों के सामने मुझ पर अपना सच्चा प्रेम प्रकट
किया। यहोवा मेरा परमेश्वर मेरे साथ था, अत: मैं
साहसी रहा और मैंने इस्राएल के प्रमुखों को अपने साथ
यरूशलेम जाने के लिये इकट्ठा किया।

एज्रा के साथ लौटने वाले परिवार प्रमुखों की सूची

8 यह बाबेल से यरूशलेम लौटने वाले परिवार प्रमुखों
और अन्य लोगों की सूची है जो मेरे (एज्रा) के
साथ लौटे। हम लोग राजा अर्तक्षत्र के शासनकाल में
यरूशलेम लौटे। यह नामों की सूची है: **2**पीनहास के
वंशजों में से गेर्शोम था; ईतामार के वंशजों में से दानिय्येल
था; दाऊद के वंशजों में से हत्तूस था; **3**शकन्याह के
वंशजों में से परोश, जकर्याह के वंशज तथा डेढ़ सौ
अन्य लोग; **4**पहत्मोआब के वंशजों में से जरह्याह का
पुत्र एल्यहोएनै और अन्य दो सौ लोग; **5**जत्तु के वंशजों
में से यहजीएल का पुत्र शकन्याह और तीन सौ अन्य
लोग; **6**आदीन के वंशजों में से योनातान का पुत्र एबेद,
और पचास अन्य लोग; **7**एलाम के वंशजों में से अतल्याह
का पुत्र यशायाह और सत्तर अन्य लोग; **8**शपत्याह के
वंशजों में से मीकाएल का पुत्र जबद्याह और अस्सी
अन्य लोग; **9**योआब के वंशजों में से यहीएल का पुत्र
ओबद्याह और दो सौ अट्ठारह अन्य व्यक्ति; **10**शलोमित
के वंशजों में से योसिय्याह का पुत्र शलोमित और एक
सौ साठ अन्य लोग; **11**बेबै के वंशजों में से बेबै का पुत्र
जकर्याह और अट्ठाईस अन्य व्यक्ति; **12**अजगाद के
वंशजों में से हक्कातान का पुत्र योहानान, और एक सौ

पद 27 इस पुस्तक का मूल पाठ अरामी भाषा से हिब्रू भाषा में हो गया है।

दस अन्य लोग; 13अदोनीकाम के अंतिम वंशजों में से
एलीपेलेत, यीएल, समायाह और साठ अन्य व्यक्ति थे;
14बिगवै के वंशजों में से ऊत्तै, जब्बूद और सत्तर अन्य
लोग।

यरूशलेम को वापसी

15मैंने (एज्रा) उन सभी लोगों को अहवा की ओर
बहने वाली नदी के पास एक साथ इकट्ठा होने को
बुलाया। हम लोगों ने वहाँ तीन दिन तक डेरा डाला।
मुझे यह पता लगा कि उस समूह में याजक थे, किन्तु
कोई लेवीवंशी नहीं था। 16सो मैंने इन प्रमुखों को बुलाया:
एलीएजेर, अरीएल, शमायाह, एलनातान, यारीब,
एलनातान, नातान, जकर्याह और मशुल्लाम और मैंने
योयारीब और एलनातान (ये लोग शिक्षक थे) को बुलाया।
17मैंने उन व्यक्तियों को इद्दो के पास भेजा। इद्दो कासिप्या
नगर का प्रमुख है। मैंने उन व्यक्ति को बताया कि वे
इद्दो और उसके सम्बन्धियों से क्या कहें। उसके सम्बन्धी
कासिप्या में मन्दिर के सेवक हैं। मैंने उन लोगों को
इद्दो के पास भेजा जिससे इद्दो परमेश्वर के मन्दिर में
सेवा करने के लिये हमारे पास सेवकों को भेजे। 18क्योंकि
परमेश्वर हमारे साथ था, इद्दो के सम्बन्धियों ने इन
लोगों को हमारे पास भेजा: महली के वंशजों में से
शेरेब्याह नामक बुद्धिमान व्यक्ति। महली लेवी के पुत्रों
में से एक था। लेवी इस्राएल के पुत्रों में से एक था।
उन्होंने हमारे पास शेरेब्याह के पुत्रों और बन्धुओं को
भेजा। ये सब मिलाकर उस परिवार से ये अट्ठारह
व्यक्ति थे।

19उन्होंने मरारी के वंशजों में से हशब्याह और यशायाह
को भी उनके बन्धुओं और उनके पुत्रों के साथ भेजा।
उस परिवार से कुल मिलाकर बीस व्यक्ति थे। 20उन्होंने
मन्दिर के दो सौ बीस सेवक भी भेजे। उनके पूर्वज वे
लोग थे जिन्हें दाऊद और बड़े अधिकारियों ने लेवीवंशियों
की सहायता के लिये चुना था। उन सबके नाम सूची में
लिखे हुए थे।

21वहाँ अहवा नदी के पास, मैंने (एज्रा) घोषणा की
कि हमें उपवास रखना चाहिये। हमें अपने को परमेश्वर
के सामने विनम्र बनाने के लिये उपवास रखना चाहिये।
हम लोग परमेश्वर से अपने लिए, अपने बच्चों के
लिये, और जो चीज़ें हमारी थीं, उनके साथ सुरक्षित
यात्रा के लिये प्रार्थना करना चाहते थे। 22राजा अर्तक्षत्र
से, अपनी यात्रा के समय अपनी सुरक्षा के लिये सैनिक
और घुड़सवारों को माँगने में मैं लज्जित था। सड़क पर
शत्रु थे। मेरी लज्जा का कारण यह था कि हमने राजा से
कह रखा था कि, "हमारा परमेश्वर उस हर व्यक्ति के
साथ है जो उस पर विश्वास करता है और परमेश्वर
उस हर एक व्यक्ति पर क्रोधित होता है जो उससे मुँह
फेर लेता है।"

23इसलिये हम लोगों ने अपनी यात्रा के बारे में उपवास
रखा और परमेश्वर से प्रार्थना की। उसने हम लोगों की
प्रार्थना सुनी।

24तब मैंने याजकों में से बारह को नियुक्त किया जो
प्रमुख थे। मैंने शेरेब्याह, हशब्याह और उनके दस
भाईयों को चुना। 25मैंने चाँदी, सोना और अन्य चीज़ों
को तौला जो हमारे परमेश्वर के मन्दिर के लिये दी गई
थीं। मैंने इन चीज़ों को उन बारह याजकों को दिया
जिन्हें मैंने नियुक्त किया था। राजा अर्तक्षत्र, उसके
सलाहकार, उसके बड़े अधिकारियों और बाबेल में
रहने वाले सभी इस्राएलियों ने परमेश्वर के मन्दिर के
लिये उन चीजों को दिया। 26मैंने इन सभी चीज़ों को
तौला। वहाँ चाँदी पच्चीस टन थी। वहाँ चाँदी के पात्र व
अन्य वस्तुएं थी। जिन का भार पौने चार किलोग्राम था।
वहाँ सोना पौने चार टन था। 27और मैंने उन्हें बीस सोने
के कटोरे दिये। कटोरों का वज़न लगभग उन्नीस पौंड
था और मैंने उन्हें झलकाये गये सुन्दर काँसे के दो पात्र
दिए जो सोने के बराबर ही कीमती थे। 28तब मैंने उन
बारह याजकों से कहा: "तुम और ये चीज़ें यहोवा के
लिये पवित्र हैं। लोगों ने यह चाँदी और सोना यहोवा
तुम्हारे पूर्वजों के परमेश्वर को दिया। 29इसलिये इनकी
रक्षा सावधानी से करो। तुम इसके लिए तब तक उत्तरदायी
हो जब तक तुम इसे यरूशलेम में मन्दिर के प्रमुखों को
नहीं दे देते। तुम इन्हें प्रमुख लेवीवंशियों को और इस्राएल
के परिवार प्रमुखों को दोगे। वे उन चीजों को तौलेंगे
और यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर के कोठरियों में
रखेंगे।"

30सो उन याजकों और लेवियों ने उस चाँदी, सोने
और उन विशेष वस्तुओं को ग्रहण किया जिन्हें एज्रा ने
तौला था और उन्हें यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर में
ये वस्तुएं ले जाने के लिये कहा गया था।

31पहले महीने के बारहवें दिन हम लोगों ने अहवा
नदी को छोड़ा और हम यरूशलेम की ओर चल पड़े।
परमेश्वर हम लोगों के साथ था और उसने हमारी रक्षा
शत्रुओं और डाकुओं से पूरे मार्ग भर की। 32तब हम
यरूशलेम आ पहुँचे। हमने वहाँ तीन दिन आराम किया।
33चौथे दिन हम परमेश्वर के मन्दिर को गए और
चाँदी, सोना और विशेष चीज़ों को तौला। हमने याजक
ऊरीयाह के पुत्र मरेमोत को वे चीज़ें दीं। पीनहास का
पुत्र एलीआजर मरेमोत के साथ था और लेवीवंशी येशू
का पुत्र योजाबाद और बिन्नूई का पुत्र नोअद्याह भी
उनके साथ थे। 34हमने हर एक चीज़ गिनी और उन्हें
तौला। तब हमने उस समय कुल वज़न लिखा।

35तब उन यहूदी लोगों ने जो बन्धुवाई से आये थे,
इस्राएल के परमेश्वर को होमबलि दी। उन्होंने बारह
बैल पूरे इस्राएल के लिए छियानबे मेढ़े, सतहत्तर मेमने
और बारह बकरे पाप भेंट के लिये चढ़ाये। यह सब

यहोवा के लिये होमबलि थी। 36तब उन लोगों ने राजा
अर्तक्षत्र का पत्र, राजकीय अधिपतियों और फरात के
पश्चिम के क्षेत्र के प्रशासकों को दिया। तब उन्होंने
इस्राएल के लोगों और मन्दिर को अपना समर्थन दिया।

विदेशी लोगों से विवाह के विषय में एज्रा की प्रार्थना

9 जब हम लोग यह सब कर चुके तब इस्राएल के
प्रमुख मेरे पास आए। उन्होंने कहा, "एज्रा इस्राएल
के लोगों और याजकों तथा लेवीवंशियों ने अपने चारों
ओर रहने वाले लोगों से अपने को अलग नहीं रखा है।
इस्राएल के लोग कनानियों, हित्तियों, परिज्जियों, यबूसियों,
अम्मोनियों, मोआबियों, मिस्र के लोगों और एमोरियों
द्वारा की जाने वाली बहुत सी बुरी बातों से प्रभावित हुए
हैं 2इस्राएल के लोगों ने अपने चारों ओर रहने वाले
अन्य जाति के लोगों से विवाह किया है। इस्राएल के
लोग विशेष माने जाते हैं। किन्तु अब वे अपने चारों
ओर रहने वाले अन्य लोगों से मिलकर दोगले हो गये
हैं। इस्राएल के लोगों के प्रमुखों और बड़े अधिकारियों
ने इस विषय में बुरे उदाहरण रखे हैं।" 3जब मैंने इस
विषय में सुना, मैंने अपना लबादा और अंगरखा यह
दिखाने के लिये फाड़ डाला कि मैं बहुत परेशान हूँ। मैंने
अपने सिर और दाढ़ी के बाल नोंच डाले। मैं दुःखी और
अस्त व्यस्त बैठ गया। 4तब हर एक व्यक्ति जो इस्राएल
के परमेश्वर के नियमों का आदर करता था, भय से
काँप उठा। वे डर गए क्योंकि जो इस्राएल के लोग
बन्धुवाई से लौटे, वे परमेश्वर के भक्त नहीं थे। मुझे
धक्का लगा और मैं घबरा गया। मैं वहाँ सन्ध्या की
बलि भेंट के समय तक बैठा रहा और वे लोग मेरे चारों
ओर इकट्ठे रहे।

5तब, जब सन्ध्या की बलि भेंट का समय हुआ, मैं
उठा। मैं बहुत लज्जित था। मेरा लबादा और अंगरखा
दोनों फटे थे और मैंने घुटनों के बल बैठकर यहोवा
अपने परमेश्वर की ओर हाथ फैलाये। 6तब मैंने यह
प्रार्थना की: हे मेरे परमेश्वर, मैं इतना लज्जित और
संकोच में हूँ कि तेरी ओर मेरी आँखे नहीं उठतीं, हे
मेरे परमेश्वर! मैं लाज्जित हूँ क्योंकि हमारे पाप हमारे
सिर से ऊपर चले गये हैं। हमारे अपराधों की ढेरी
इतनी ऊँची हो गई है कि वह आकाश तक पहुँच चुकी
है। 7हमारे पूर्वजों के समय से अब तक हम लोगों ने
बहुत अधिक पाप किये हैं। हम लोगों ने पाप किये,
इसलिये हम, हमारे राजा और हमारे याजक दण्डित
हुए। हम लोग विदेशी राजाओं द्वारा तलवार से और
बन्दीखाने में ठूंसे जाने तक दण्डित हुए हैं। वे राजा
हमारा धन ले गए और हमें लज्जित किया। यह स्थिति
आज भी वैसी ही है।

8किन्तु अन्त में अब तू हम पर कृपालु हुआ है। तूने
हम लोगों में से कुछ को बन्धुवाई से निकल आने दिया
है और इस पवित्र स्थान में बसने दिया है। यहोवा, तूने
हमें नया जीवन दिया है और हमारी दासता से मुक्त
किया है। 9हाँ, हम दास थे, किन्तु तू हमें सदैव के लिए
दास नहीं रहने देना चाहता था। तू हम पर कृपालु था।
तूने फारस के राजाओं को हम पर कृपालु बनाया। तेरा
मन्दिर ध्वस्त हो गया था। किन्तु तूने हमें नया जीवन
दिया जिससे हम तेरे मन्दिर को फिर बना सकते हैं
और नये की तरह पक्का कर सकते हैं। परमेश्वर,
तूने हमें यरूशलेम और यहूदा की रक्षा के लिये परकोटे
बनाने में सहायता की।

10हमारे परमेश्वर, अब हम तुझसे क्या कह सकतेहैं?
हम लोगों ने तेरी आज्ञा का पालन करना फिर छोड़
दिया है।

11हमारे परमेश्वर, तूने अपने सेवकों अर्थात् नबियों
का उपयोग किया और उन आदेशों को हमें दिया। तूने
कहा था: "जिस देश में तुम रहने जा रहे हो और जिसे
अपना बनाने जा रहे हो, वह भ्रष्ट देश है। यह उन बहुत
बुरे कामों से भ्रष्ट हुआ है जिन्हें वहाँ रहने वालों ने
किया है। उन लोगों ने इस देश में हर स्थान पर बहुत
अधिक बुरे काम किये हैं। उन्होंने इस देश को अपने
पापों से गंदा कर दिया है। 12अतः इस्राएल के लोगों,
अपने बच्चों को उनके बच्चों से विवाह मत करने दो।
उनके साथ सम्बन्ध न रखो! और उनकी वस्तुओ की
लालसा न करो! मेरे आदेशों का पालन करो जिससे
तुम शक्तिशाली होगे और इस देश की अच्छी चीजों का
भोग करोगे। तब तुम इस देश को अपना बनाये रखोगे
और अपने बच्चों को दोगे।"

13जो बुरी घटनायें हमारे साथ घटीं वे हमारी अपनी
गलतियों से घटीं। हम लोगों ने पाप के काम किये हैं
और हम लोग बहुत अपराधी हैं। किन्तु हमारे परमेश्वर,
तूने हमें उससे बहुत कम दण्ड दिया है जितना हमे
मिलना चाहिये। हम लोगों ने बड़े भयानक काम किये
हैं और हम लोगों को इससे अधिक दण्ड मिलना
चाहिये। ऐसा होते हुए भी तूने हमारे लोगों में से कुछ
को बन्धुवाई से मुक्त हो जाने दिया है। 14अतः हम
जानते हैं कि हमें तेरे आदेशों को तोड़ना नहीं
चाहिये। हमें उन लोगों के साथ विवाह नहीं करना
चाहिए। वे लोग बहुत बुरे काम करते हैं। परमेश्वर
यदि हम लोग उन बुरे लोगों के साथ विवाह करते रहे
तो हम जानते हैं कि तू हमें नष्ट कर देगा। तब
इस्राएल के लोगों में से कोई भी जीवित नहीं बच पा
एगा।

15यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर, तू अच्छा है! और तू
अब भी हम में से कुछ को जीवित रहने देगा। हाँ, हम
अपराधी हैं! और अपने अपराध के कारण हम में
किसी को भी तेरे सामने खड़े होने नहीं दिया जाना
चाहिये।

लोग अपना पाप स्वीकार करते हैं

10 एज्रा प्रार्थना कर रहा था और पापों को स्वीकार
कर रहा था। वह परमेश्वर के मन्दिर के
सामने रो रहा था और झुक कर प्रणाम कर रहा था।
जिस समय एज्रा यह कर रहा था उस समय इस्राएल के
लोगों का एक बड़ा समूह स्त्री पुरुष और बच्चे उसके
चारों ओर इकट्ठे हो गए। वे लोग भी जोर-जोर से रो
रहे थे। 2तब यहीएल के पुत्र शकन्याह ने जो एलाम के
वंशजों में से था, एज्रा से बातें कीं। शकन्याह ने कहा,
"हम लोग अपने परमेश्वर के भक्त नहीं रहे। हम लोगों
ने अपने चारों ओर रहने वाले दूसरी जाति के लोगों के
साथ विवाह किया। किन्तु यद्यपि हम यह कर चुके हैं
तो भी इस्राएल के लिये आशा है। 3अब हम अपने
परमेश्वर के सामने उन सभी स्त्रियों और उनके बच्चों
को वापस भेजने की वाचा करें। हम लोग यह एज्रा की
सलाह मानने के लिए और उन लोगों की सलाह मानने
के लिये करेंगे जो परमेश्वर के नियमों का सम्मान
करते हैं। हम परमेश्वर के नियमों का पालन करेंगें।
4एज्रा खड़े होओ, यह तुम्हारा उत्तरदायित्व है, किन्तु हम
तुम्हारा समर्थन करेंगे। अत: साहसी बनो और इसे
करो।"

5अत: एज्रा उठ खड़ा हुआ। उसने प्रमुख याजक,
लेवीवंशियों और इस्राएल के सभी लोगों से जो कुछ
उसने कहा, उसे करने की, प्रतिज्ञा कराई। 6तब एज्रा
परमेश्वर के भवन के सामने से दूर हट गया। एज्रा
एल्याशीब के पुत्र योहानान के कमरे में गया। जब तक
एज्रा वहाँ रहा उसने भोजन नहीं किया और न ही पानी
पीया। उसने यह किया क्योंकि वह तब भी बहुत दु:खी
था। वह इस्राएल के उन लोगों के लिये दु:खी था जो
यरूशलेम को वापस आए थे। 7तब उसने एक सन्देश
यहूदा और यरूशलेम में हर एक स्थान पर भेजा।
सन्देश में बन्धुवाई से वापस लौटे सभी यहूदी लोगों को
यरूशलेम में एक साथ इकट्ठा होने को कहा। 8कोई
भी व्यक्ति जो तीन दिन के भीतर यरूशलेम नहीं आएगा,
उसे अपनी सारी धन सम्पत्ति दे देनी होगी। बड़े अधिकारियों
और अग्रजों (प्रमुखों) ने यह निर्णय लिया और वह
व्यक्ति उस व्यक्ति समूह का सदस्य नहीं रह जायेगा
जिनके मध्य वह रहता होगा।

9अत: तीन दिन के भीतर यहूदा और बिन्यामीन के
परिवार के सभी पुरूष यरूशलेम में इकट्ठे हुए और
नवें महीने के बीसवें दिन सभी लोग मन्दिर के आँगन
में आ गये। वे सभी इस सभा के विचारणीय विषय के
कारण तथा भारी वर्षा से बहुत परेशान थे। 10तब
याजक एज्रा खड़ा हुआ और उसने उन लोगों से कहा,
"तुम लोग परमेश्वर के प्रति विश्वासी नहीं रहे। तुमने
विदेशी स्त्रियों के साथ विवाह किया है। तुमने वैसा
करके इस्राएल को और अधिक अपराधी बनाया है।
11अब तुम लोगों को यहोवा के सामने स्वीकार करना
होगा कि तुमने पाप किया है। यहोवा तुम लोगों के
पूर्वजों का परमेश्वर है। तुम्हें यहोवा के आदेश का
पालन करना चाहिए। अपने चारों ओर रहने वाले लोगों
तथा अपनी विदेशी पत्नियों से अपने को अलग करो।"

12तब पूरे समूह ने जो एक साथ इकट्ठा था, एज्रा
को उत्तर दिया। उन्होंने ऊँची आवाज़ में कहा: "एज्रा
तुम बिल्कुल ठीक कहते हो! हमें वह करना चाहिये
जो तुम कहते हो। 13किन्तु यहाँ बहुत से लोग हैं और
यह वर्षा का समय है सो हम लोग बाहर खड़े नहीं रह
सकते। यह समस्या एक या दो दिन में हल नहीं होगी
क्योंकि हम लोगों ने बुरी तरह पाप किये हैं। 14पूरे समूह
के सभा की ओर से हमारे प्रमुखों को निर्णय करने दो।
तब निश्चित समय पर हमारे नगरों का हर एक व्यक्ति
जिसने किसी विदेशी स्त्री से विवाह किया है, यरूशलेम
आए। उन्हें अपने अग्रजों (प्रमुखों) और नगरों के
न्यायाधीशों के साथ यहाँ आने दिया जाये। तब हमारा
परमेश्वर हम पर क्रोधित होना छोड़ देगा।"

15केवल थोड़े से व्यक्ति इस योजना के विरूद्ध थे। ये
व्यक्ति थे असाहेल का पुत्र योनातान और तिकवा का
पुत्र यहजयाह थे। लेवीवंशी मशुल्लाम और शब्बतै भी
इस योजना के विरूद्ध थे।

16अत: इस्राएल के वे लोग, जो यरूशलेम में वापस
आए थे, उस योजना को स्वीकार करने को सहमत हो
गए। याजक एज्रा ने परिवार के प्रमुख पुरुषों को चुना।
उसने हर एक परिवार समूह से एक व्यक्ति को चुना।
हर एक व्यक्ति नाम लेकर चुना गया। दसवें महीने के
प्रथम दिन जो लोग चुने गए थे हर एक मामले की जाँच
के लिये बैठे। 17पहले महीने के पहले दिन तक उन्होंने
उन सभी व्यक्तियों पर विचार करना पूरा कर लिया
जिन्होंने विदेशी स्त्रियों से विवाह किया था।

विदेशी स्त्रियों से विवाह करने वालों की सूची

18याजकों के वंशजों में ये नाम हैं जिन्होंने विदेशी
स्त्रियों से विवाह किया: योसादाक के पुत्र येशू के वंशजों,
और येशू के भाईयों में से ये व्यक्ति : मासेयाह, एलीआज़र,
यारीब और गदल्याह। 19इन सभी ने अपनी-अपनी
पत्नियों से सम्बन्ध-विच्छेद करना स्वीकार किया और
तब हर एक ने अपने रेवड़ से एक-एक मेढ़ा अपराध
भेंट के रूप में चढ़ाया। उन्होंने ऐसे अपने-अपने अपराधों
के कारण किया।

20इम्मेर के वंशजों में से ये व्यक्ति: हनानी और
जबद्याह।

21हारीम के वंशजों में से ये व्यक्ति थे: मासेयाह,
एलीयाह, शमायाह, यहीएल और उज्जियाह।

22पशहूर के वंशजों में से ये व्यक्ति थे: एल्योएनै,
मासेयाह, इशमाएल, नतनेल, योजाबाद और एलासा।

23लेवीवंशियों में से इन व्यक्तियों ने विदेशी स्त्रियों
से विवाह किया: योजाबाद, शिमी, केलायाह (इसे
कलीता भी कहा जाता है)। पतह्याह, यहूदा और
एलीआज़र।

24गायकों में केवल यह व्यक्ति है, जिसने विदेशी स्त्री
से विवाह किया:

एल्याशीब द्वारपालों में से ये लोग हैं जिन्होंने विदेशी
स्त्रियों से विवाह किया: शल्लूम, तेलेम और ऊरी।

25इस्राएल के लोगों में से ये लोग हैं जिन्होंने विदेशी
स्त्रियों से विवाह किया:

परोश के वंशजों से ये व्यक्ति: रम्याह, यिज्जियाह,
मल्कियाह, मियामीन, एलीआज़र, मल्कियाह और
बनायाह।

26एलाम के वंशजों में से ये व्यक्ति : मत्तन्याह, जकर्याह,
यहीएल, अब्दी, यरेमोत और एलियाह।

27जत्तू के वंशजों में से ये व्यक्ति एल्योएनै, एल्याशीब,
मत्तन्याह, यरेमोत, जाबाद और अजीज़ा।

28बेबै के वंशजों में से ये व्यक्ति: यहोहानान, हनन्याह,
जब्बै, और अतलै।

29बानी के वंशजों में से ये व्यक्ति: मशुल्लाम, मल्लूक,
अदायाह, याशूब, शाल और यरामोत।

30पहतमोआब के वंशजों में से ये व्यक्ति: अदना,
कलाल, बनायाह, मासेयाह, मत्तन्याह, बसलेल, बिन्नूई
और मनश्शे। **31**हारीम के वंशजो में से ये व्यक्ति:
एलिआज़र, यिश्शियाह, मल्कियाह, शमायाह, शिमोन,
32बिन्यामीन, मल्लूक और शमर्याह।

33हाशूम के वंशजों में से ये व्यक्ति: मत्तनै, मत्तत्ता,
जाबाद, एलीपेलेत, यरेमै, मनश्शे और शिमी।

34बानी के वंशजों में से ये व्यक्ति: मादै, अम्राम,
ऊएल; **35**बनायाह, बेदयाह, कलूही; **36**बन्याह, मरेमोत,
एल्याशीब; **37**मत्तन्याह, मत्तनै, यासू;

38बिन्नूई के वंशजों में से ये व्यक्ति: शिमी **39**शेलेम्याह,
नातान, अदायाह; **40**मक्नदबै, शाशै, शारै; **41**अजरेल,
शेलेम्याह, शेमर्याह; **42**शल्लूम, अमर्याह, और योसेफ।

43नबो के वंशजों में से ये व्यक्ति : यीएल, मत्तित्याह,
जाबाद, जबीना, यद्दो, योएल और बनायाह।

44इन सभी लोगों ने विदेशी स्त्रियों से विवाह किया था
और इनमें से कुछ के इन पत्नियों से बच्चे भी थे।

नहेमायाह

नहेमायाह की विनती

1 ये हकल्याह के पुत्र नहेमायाह के वचन हैं: मैं,
नहेमायाह, किसलवे नाम के महीने में शूशन नाम
की राजधानी नगरी में था। यह वह समय था जब
अर्तक्षत्र नाम के राजा के राज का बीसवाँ वर्ष* चल
रहा था। 2मैं जब अभी शूशन में ही था तो हनानी नाम
का मेरा एक भाई और कुछ अन्य लोग यहूदा से वहाँ
आये। मैंने उनसे वहाँ रह रहे यहूदियों के बारे में पूछा।
ये वे लोग थे जो बंधुआपन से बच निकले थे और अभी
तक यहूदा में रह रहे थे। मैंने उनसे यरूशलेम नगरी के
बारे में भी पूछा था।

3हनानी और उसके साथ के लोगों ने बताया, "हे
नहेमायाह, वे यहूदी जो बंधुआपन से बच निकले थे
और जो यहूदा में रह रहे हैं, गहन विपत्ति में पड़े हैं। उन
लोगों के सामने बहुत सी समस्याएँ हैं और वे बड़े
लज्जित हो रहे हैं। क्यों? क्योंकि यरूशलेम का
नगर-परकोटा ढह गया है और उसके प्रवेश द्वार आग
से जल कर राख हो गये हैं।"

4मैंने जब यरूशलेम के लोगों और नगर परकोटे के
बारे में वे बातें सुनीं तो मैं बहुत व्याकुल हो उठा। मैं बैठ
गया और चिल्ला उठा। मैं बहुत व्याकुल था। बहुत दिन
तक मैं स्वर्ग के परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए उपवास
करता रहा। 5इसके बाद मैंने यह प्रार्थना की:

हे यहोवा, हे स्वर्ग के परमेश्वर, तू महान है तथा तू
शक्तिशाली परमेश्वर है। तू ऐसा परमेश्वर है जो उन
लोगों के साथ अपने प्रेम की वाचा का पालन करता है
जो तुझसे प्रेम करते हैं और तेरे आदेशों पर चलते हैं।

6अपनी आँखे और अपने कान खोल। कृपा करके
तेरे सामने तेरा सेवक रात दिन जो प्रार्थना कर रहा है,
उस पर कान दे। मैं तेरे सेवक, इस्राएल के लोगों के
लिये विनती कर रहा हूँ। मैं उन पापों को स्वीकार
करता हूँ जिन्हें हम इस्राएल के लोगों ने तेरे विरूद्ध
किये हैं। मैंने तेरे विरुद्ध जो पाप किये हैं, उन्हें मैं
स्वीकार कर रहा हूँ तथा मेरे पिता के परिवार के दूसरे
लोगों ने तेरे विरुद्ध जो पाप किये हैं, मैं उन्हें भी स्वीकार
करता हूँ। 7हम इस्राएल के लोग तेरे लिये बहुत बुरे रहे
हैं। हमने तेरे उन आदेशों, अध्यादेशों तथा विधान का
पालन नहीं किया है जिन्हें तूने अपने सेवक मूसा को
दिया था।

8तूने अपने सेवक मूसा को जो शिक्षा दी थी, कृपा
करके उसे याद कर। तूने उससे कहा था, "यदि इस्राएल
के लोगों ने अपना विश्वास नहीं बनाये रखा तो मैं तुम्हें
तितर-बितर करके दूसरे देशों में फैला दूँगा। 9किन्तु
यदि इस्राएल के लोग मेरी ओर लौटे और मेरे आदेशों
पर चले तो मैं ऐसा करूँगा: मैं तुम्हारे उन लोगों को,
जिन्हें अपने घरों को छोड़कर धरती के दूसरे छोरों तक
भागने को विवश कर दिया गया था, वहाँ से मैं उन्हें
इकट्ठा करके उस स्थान पर वापस ले आऊँगा जिस
स्थान को अपनी प्रजा के लिये मैंने चुना है।"

10इस्राएल के लोग तेरे सेवक हैं और वे तेरे ही लोग
हैं। तू अपनी महाशक्ति का उपयोग करके उन लोगों
को बचा कर सुरक्षित स्थान पर ले आया है। 11इसलिए
हे यहोवा, कृपा करके अब मेरी विनती सुन। मैं तेरा
सेवक हूँ और कृपा करके अपने सेवकों की विनती
पर कान दे जो तेरे नाम को मान देना चाहते हैं। कृपा
करके आज मुझे सहारा दे। जब मैं राजा से सहायता
माँगू तब तू मेरी सहायता कर। मुझे सफल बना। मुझे
सहायता दे ताकि मैं राजा के लिए प्रसन्नतादायक बना
रहूँ। मैं राजा को दाखमधु सेवक हूँ।

राजा अर्तक्षत्र का नहेमायाह को यरूशलेम भेजना

2 राजा अर्तक्षत्र के बीसवें वर्ष के नीसान नाम के
महीने* में राजा के लिये थोड़ी दाखमधु लाई गयी।
मैंने उस दाखमधु को लिया और राजा को दे दिया। मैं
जब पहले राजा के साथ था तो दु:खी नहीं हुआ था
किन्तु अब मैं उदास था। 2इस पर राजा ने मुझसे पूछा,
"क्या तू बीमार है? तू उदास क्यों दिखाई दे रहा है? मेरा
विचार है तेरा मन दु:ख से भरा है।"

इससे मैं बहुत अधिक डर गया। 3किन्तु यद्यपि मैं डर
गया था किन्तु फिर भी मैंने राजा से कहा, "राजा
जीवित रहें! मैं इसलिए उदास हूँ कि वह नगर जिसमें
मेरे पूर्वज दफनाये गये थे उजाड़ पड़ा है तथा उस नगर
के प्रवेश द्वार आग से भस्म हो गये हैं।"

किसलवे … बीसवें वर्ष दिसंबर लगभग ई. पू. 444 वर्ष यह
समय रहा होगा।

निसान के महिने अर्थात् मार्च-अप्रेल ईसापूर्व 443

4फिर राजा ने मुझसे कहा, “इसके लिये तू मुझसे
क्या करवाना चाहता है?”
इससे पहले कि मैं उत्तर देता, मैंने स्वर्ग के परमेश्वर
से विनती की। **5**फिर मैंने राजा को उत्तर देते हुए कहा,
“यदि यह राजा को भाये और यदि मैं राजा के प्रति
सच्चा रहा हूँ तो यहूदा के नगर यरूशलेम में मुझे भेज
दिया जाये जहाँ मेरे पूर्वज दफ़नाये हुए हैं। मैं वहाँ जाकर
उस नगर को फिर से बसाना चाहता हूँ।”
6रानी राजा के बराबर बैठी हुई थी, सो राजा और
रानी ने मुझसे पुछा, “तेरी इस यात्रा में कितने दिन
लगेंगे? यहाँ तू कब तक लौट आयेगा?”
राजा मुझे भेजने के लिए राजी हो गया। सो मैंने उसे
एक निश्चित समय दे दिया। **7**मैंने राजा से यह भी कहा,
“यदि राजा को मेरे लिए कुछ करने में प्रसन्नता हो तो
मुझे यह माँगने की अनुमति दी जाये। कृपा करके
परात नदी के पश्चिमी क्षेत्र के राज्यपालों को दिखाने
के लिये कुछ पत्र दिये जायें। ये पत्र मुझे इसलिए चाहिए
ताकि वे राज्यपाल यहूदा जाते हुए मुझे अपने–अपने
इलाकों से सुरक्षापूर्वक निकलने दें। **8**मुझे द्वारों, दीवारों,
मन्दिरों के चारों ओर के प्राचीरों और अपने घर के
लिये लकड़ी की भी आवश्यकता है। इसलिए मुझे आपसे
आसाप के नाम भी एक पत्र चाहिए. आसाप आपके
जंगलात का हाकिम है।”
सो राजा ने मुझे पत्र और वह हर वस्तु दे दी जो मैंने
मांगी थी। क्योंकि परमेश्वर मेरे प्रति दयालु था इसलिए
राजा ने यह सब कर दिया था।
9इस तरह मैं परात नदी के पश्चिमी क्षेत्र के राज्यपालों
के पास गया और उन्हें राजा के द्वारा दिये गये पत्र
दिखाये। राजा ने सेना के अधिकारी और घुड़सवार
सैनिक भी मेरे साथ कर दिये थे। **10**सम्बल्लत और
तोबियाह नाम के दो व्यक्तियों ने मेरे कामों के बारे में
सुना। वे यह सुनकर बहुत बेचैन और क्रोधित हुए कि
कोई इस्राएल के लोगों की मदद के लिये आया है।
सम्बल्लत होरोन का निवासी था और तोबियाह अम्मोनी
का अधिकारी था।

नहेमायाह द्वारा यरूशलेम के परकोटे का निरीक्षण

11-12मैं यरूशलेम जा पहुँचा और वहाँ तीन दिन तक
ठहरा और फिर कुछ लोगों को साथ लेकर मैं रात को
बाहर निकल पड़ा। परमेश्वर ने यरूशलेम के लिये
कुछ करने की जो बात मेरे मन में बसा दी थी उसके
बारे में मैंने किसी को कुछ भी नहीं बताया था। उस
घोड़े के सिवा, जिस पर मैं सवार था, मेरे साथ और
कोई घोड़े नहीं थे। **13**अभी जब अंधेरा ही था तो मैं
तराई द्वार से होकर गुज़रा। अजगर के कुएँ की तरफ़
मैंने अपना घोड़ा मोड़ दिया तथा मैं उस द्वार पर भी घोड़े
को ले गया, जो कूड़ा फाटक की ओर खुलता था। मैं
यरूशलेम के उस परकोटे का निरीक्षण कर रहा था
जो टूटकर ढह चुका था। मैं उन द्वारों को भी देख रहा
था जो जल कर राख हो चुके थे। **14**इसके बाद मैं सोते
के फाटक की ओर अपने घोड़े को ले गया और फिर
राजसरोवर के पास जा निकला। किन्तु जब मैं निकट
पहुँचा तो मैंने देखा कि वहाँ मेरे घोड़े के निकलने के
लिए पर्याप्त स्थान नहीं है। **15**इसलिए अन्धेरे में ही मैं
परकोटे का निरीक्षण करते हुए घाटी की ओर ऊपर
निकल गया और अन्त में मैं लौट पड़ा और तराई के
फाटक से होता हुआ भीतर आ गया। **16**उन अधिकारियों
और इस्राएल के महत्त्वपूर्ण लोगों को यह पता नहीं चला
कि मैं कहाँ गया था। वे यह नहीं जान पाये कि मैं क्या
कर रहा था। मैंने यहूदियों, याजकों, राजा के परिवार,
हाकिमों अथवा जिन लोगों को वहाँ काम करना था,
अभी कुछ भी नहीं बताया था।
17इसके बाद मैंने उन सभी लोगों से कहा, “यहाँ हम
जिन विपत्तियों में पड़े हैं, तुम उन्हें देख सकते हो।
यरूशलेम खण्डहरों का ढेर बना हुआ है तथा इसके
द्वार आग से जल चुके हैं। आओ, हम यरूशलेम के
परकोटे का फिर से निर्माण करें। इससे हमें भविष्य में
फिर कभी लज्जित नहीं रहना पड़ेगा।”
18मैंने उन लोगों को यह भी कहा कि मुझ पर
परमेश्वर की कृपा है। राजा ने मुझसे जो कुछ कहा
था, उन्हें मैंने वे बातें भी बतायी। इस पर उन लोगों ने
उत्तर देते हुए कहा, “आओ, अब हम काम करना शुरु
करें!” सो उन्होंने उस उत्तम कार्य को करना आरम्भ
कर दिया। **19**किन्तु होरोन के सम्बल्लत अम्मोनी के
अधिकारी तोबियाह और अरब के गेशेम ने जब यह
सुना कि फिर से निर्माण कर रहे हैं तो उन्होंने बहुत
भद्दे ढंग से हमारा मजाक उड़ाया और हमारा अपमान
किया। वे बोले, “यह तुम क्या कर रहे हो? क्या तुम
राजा के विरोध में हो रहेहो?”
20किन्तु मैंने तो उन लोगों से बस इतना ही कहा:
“हमें सफल होने में स्वर्ग का परमेश्वर हमारी सहायता
करेगा। हम परमेश्वर के सेवक हैं और हम इस नगर
का फिर से निर्माण करेंगे। इस काम में तुम हमारी
मदद नहीं कर सकते। यहाँ यरूशलेम में तुम्हारा कोई
भी पूर्वज पहले कभी भी नहीं रहा। इस धरती का कोई
भी भाग तुम्हारा नहीं है। इस स्थान में बने रहने का
तुम्हें कोई अधिकार नहीं है!”

परकोटा बनाने वाले

3 वहाँ के महायाजक का नाम था एल्याशीब। एल्याशीब
और उसके साथी (याजक) निर्माण का काम करने
के लिये गये और उन्होंने भेड़ द्वार का निर्माण किया।
उन्होंने प्रार्थनाएँ की और यहोवा के लिये उस द्वार को
पवित्र बनाया। उन्होंने द्वार के दरवाजों को दीवार में

लगाया। उन याजकों ने यरूशलेम के परकोटे पर काम करते हुए हम्मेआ के गुम्बद तथा हननेल के गुम्बद तक उसका निर्माण किया। उन्होंने प्रार्थनाएँ कीं और यहोवा के लिये अपने कार्य को पवित्र बनाया।

2याजकों के द्वारा बनाएँ गए परकोटे से आगे के परकोटे को यरीहों केलोगों ने बनाया और फिर यरीहो के लोगों द्वारा बनाये गये परकोटे के आगे के परकोटे का निर्माण इम्री के पुत्र जक्कूर ने किया।

3फिर हस्सना के पुत्रों ने मछली दरवाजे का निर्माण किया। उन्होंने वहाँ यथास्थान कड़ियाँ बैठायीं। उस भवन में उन्होंने दरवाजे लगाये और फिर दरवाजों पर ताले लगाये और मेखें जड़ीं।

4उरियाह के पुत्र मरेमोत ने परकोटे के आगे के भाग की मरम्मत की (उरियाह हक्कोस का पुत्र था)।

मशूल्लाम, जो बरेक्याह का पुत्र था, उसने परकोटे के उससे आगे के भाग की मरम्मत की। (बरेक्याह मशेजबेल का पुत्र था)।

बाना के पुत्र सादोक ने इससे आगे की दीवार को मज़बूत किया।

5दीवार के आगे का भाग तकोई लोगों द्वारा सुदृढ़ किया गया किन्तु तकोई के मुखियाओं ने अपने स्वामी नहेमायाह की देख रेख में काम करने से मना कर दिया।

6पुराने दरवाज़े की मरम्मत का काम योयादा और मशूल्लाम ने किया। योयादा पासेह का पुत्र था और मशूल्लाम बसोदयाह का पुत्र था। उन्होंने कड़ियों को यथास्थान बैठाया। उन्होंने कब्जों पर जोड़ियाँ चढ़ाई और फिर दरवाज़े पर ताले लगाये तथा मेखें जड़ीं।

7इसके आगे के परकोटे की दीवार की मरम्मत गिबोनी लोगों और मिस्पा के रहने वालों ने बनाई। गिबोन की ओर से मलत्याह और मेरोनोती की ओर से यादोन ने काम किया। गिबोन और मेरोनोती वे प्रदेश है जिनका शासन इफ्रात नदी के पश्चिमी क्षेत्र के राज्यपालों द्वारा किया जाता था।

8परकोटे की दीवार के अगले भाग की मरम्मत हर्हयाह के पुत्र उजीएल ने की। उजीएल सुनार हुआ करता था। हनन्याह सुगन्ध बनाने का काम करता था। इन लोगों ने यरूशलेम के परकोटे की चौड़ी दीवार तक मरम्मत करके उसका निर्माण किया।

9इससे आगे की दीवार की मरम्मत हूर के पुत्र रपायाह ने की। रपायाह आधे यरूशलेम का प्रशासक था।

10परकोटे की दीवार का दूसरा हिस्सा हरुपम के पुत्र यदायाह ने बनाया। यदायाह ने अपने घर के ठीक बाद की दीवार की मरम्मत की। इसके बाद के हिस्से की मरम्मत का काम हशब्नयाह के पुत्र हत्तूश ने किया।
11हारीम के पुत्र मल्कियाह तथा पहत्मोआब के पुत्र हश्शूब ने परकोटे के अगले एक दूसरे हिस्से की मरम्मत की। इन ही लोगों ने भट्टों की मीनार की मरम्मत भी की।

12शल्लूम जो हल्लोहेश का पुत्र था, उसने परकोटे की दीवार के अगले हिस्से को बनाया। इस काम में उसकी पुत्रियों ने भी उसकी मदद की। शल्लूम यरूशलेम के दूसरे आधे हिस्से का राज्यपाल था।

13हानून नाम के एक व्यक्ति तथा जानोह नगर के निवासियों ने तराई फाटक की मरम्मत की। उन ही लोगों ने तराई फाटक का निर्माण किया। उन्होंने कब्जों पर जोड़ियाँ चढ़ाई और फिर दरवाजों पर ताले लगाये तथा मेखें जड़ीं। उन्होंने पाँच सौ गज लम्बी परकोटे की दीवार की मरम्मत की। उन्होंने कुरड़ी–दरवाजे तक इस दीवार का निर्माण किया।

14रेकाब के पुत्र मल्कियाह ने कुरड़ी–दरवाज़े की मरम्मत की। मल्कियाह बेथक्केरेम ज़िले का हाकिम था। उसने दरवाजों की मरम्मत की, कब्जों पर जोड़ियाँ चड़ाई और फिर दरवाज़ों पर ताले लगवा कर मेखें जड़ीं।

15कोल्होज़े के पुत्र शल्लूम ने स्रोत द्वार की मरम्मत की। शल्लूम मिस्पा कस्बे का राज्यपाल था उसने उस दरवाजे को लगवाया और उसके ऊपर एक छत डलवाई। कब्जों पर जोड़ियाँ चढ़ाई और फिर दरवाज़ों पर ताले लगवाकर मेखें जड़ीं। शल्लूम ने शेलह के तालाब की दीवार की मरम्मत भी करवाई। यह तालाब राजा के बगीचे के पास ही था। दाऊद की नगरी को उतरने वाली सीढ़ियों तक समूची दीवार की भी उसने मरम्मत करवाई।

16अजबूक के पुत्र नहेमायाह ने अगले हिस्से की मरम्मत करवाई। यह नहेमायाह बेतसूर नाम के ज़िले के आधे हिस्से का राज्यपाल था। उसने उस स्थान तक भी मरम्मत करवाईं जो दाऊद के कब्रिस्तान के सामने पड़ता था। आदमियों के बनाये हुए तालाब तक, तथा वीरों के निवास नामक स्थान तक भी उसने मरम्मत का यह कार्य करवाया।

17लेवीवंश परिवार सूह के लोगों ने परकोटे के अगले हिस्से की मरम्मत की। लेवीवंश के इन लोगों ने बानी के पुत्र रहूम की देखरेख में काम किया। अगले हिस्से की मरम्मत हशब्याह ने की। हशब्याह कीला नाम कस्बे के आधे भाग का प्रशासक था। उसने अपने ज़िले की ओर से मरम्मत का यह काम करवाया।

18अगले हिस्से की मरम्मत उन के भाइयों ने की। उन्होंने हेनादाद के पुत्र बव्वै की अधीनता में काम किया। बव्वै कीला कस्बे के आधे हिस्से का प्रशासक था।

19इससे अगले हिस्से की मरम्मत का काम येशु के पुत्र एज़ेर ने किया। एज़ेर मिस्पा का राज्यपाल था।

उसने शस्त्रागार से लेकर परकोटे की दीवार के कोने
तक मरम्मत का काम किया। 20इसके बाद बारुक के
पुत्र जब्बै ने उससे अगले हिस्से की मरम्मत की। उसने
उस कोने से लेकर एल्याशीब के घर के द्वार तक
दीवार के इस हिस्से की बड़ी मेहनत से मरम्मत की।
एल्याशीब महायाजक था। 21उरियाह के पुत्र मरेमोत ने
एल्याशीब के घर के दरवाज़े से लेकर उसके घर के
अंत तक परकोटे के अगले हिस्से की मरम्मत की।
उरियाह, हक्कोस का पुत्र था। 22इसके बाद की दीवार
के हिस्से की मरम्मत का काम उन याजकों द्वारा
किया गया जो उस इलाके में रहते थे।

23फिर बिन्यामीन और हश्शूब ने अपने घरों के
आगे के नगर परकोटे के हिस्सों की मरम्मत की।
उसके घर के बाद की दीवार अनन्याह के पोते और
मासेयाह के पुत्र अजर्याह ने बनवाई।

24फिर हेनादाद के पुत्र बिन्नूई ने अजर्याह के घर से
लेकर दीवार के मोड़ और फिर कोने तक के हिस्से
की मरम्मत की।

25इसके बाद ऊजै के पुत्र पालाल ने परकोटे के उस
मोड़ से लेकर बुर्ज तक की दीवार की मरम्मत के लिये
काम किया। यह मीनार राजा के ऊपरी भवन पर थी।
यह राजा के पहरेदारों के आँगन के पास ही था।
पालाल के बाद परोश के पुत्र पदायाह ने इस काम को
अपने हाथों में लिया।

26मन्दिर के जो सेवक ओपेल पहाड़ी पर रहा करते
थे उन्होंने परकोटे के अगले हिस्से की जल-द्वार के
पूर्वी ओर तथा उसके निकट के गुम्बद तक की मरम्मत
का काम किया।

27विशाल गुम्बद से लेकर ओपेल की पहाड़ी से लगी
दीवार तक के समूचे भाग की मरम्मत का काम तकोई
के लोगों ने पूरा किया।

28अश्व-द्वार के ऊपरी हिस्से की मरम्मत का काम
याजकों ने किया। हर याजक ने अपने घर के आगे की
दीवार की मरम्मत की। 29इम्मेर के पुत्र सादोक ने
अपने घर के सामने के हिस्से की मरम्मत की। फिर
उससे अगले हिस्से की मरम्मत का काम शकन्याह के
पुत्र समयाह ने पूरा किया समयाह पूर्वी फाटक का
द्वारपाल था।

30दीवार के बचे हुए हिस्से की मरम्मत का काम
शेलेम्याह के पुत्र हनन्याह और सालाप के पुत्र हानून ने
पूरा किया (हानून सालाप का छठाँ पुत्र था)

बेरेक्याह के पुत्र मशुल्लाम ने अपने घर के आगे की
दीवार की मरम्मत की। 31फिर मल्कियाह ने मन्दिर
के सेवकों के घरों और व्यापारियों के घरों तक की
दीवार की मरम्मत की। यानी निरीक्षण द्वार के सामने
से दीवार के कोने के ऊपरी कक्ष तक के हिस्से की
मरम्मत मल्कियाह ने की। 32मल्कियाह एक सुनार
हुआ करता था। कोने के ऊपरी कमरे से लेकर
भेड़-द्वार तक की बीच की दीवार का समूचा हिस्सा
सुनारों और व्यापारियों ने ठीक किया।

सम्बल्लत और तोबियाह

4 जब सम्बल्लत ने सुना कि हम लोग यरूशलेम के
नगर परकोटे का पुन: निर्माण कर रहे हैं, तो वह
बहुत क्रोधित और व्याकुल हो उठा। वह यहूदियों की
हँसी उड़ाने लगा। 2सम्बल्लत ने अपने मित्रों और सेना
से शोमरोन में इस विषय को लेकर बातचीत की। उसने
कहा, "ये शक्तिहीन यहूदी क्या कर रहे हैं? उनका
विचार क्या है? क्या वे अपनी बलियाँ चढ़ा पायेंगे?
शायद वे ऐसा सोचते हैं कि वे एक दिन में ही इस
निर्माण कार्य को पूरा कर लेंगे। धूल मिट्टी के इस ढेर
में से वे पत्थरों को उठा कर फिर से नया जीवन नहीं दे
पायेंगे। ये तो अब राख और मिट्टी के ढेर बन चुके
हैं!"

3 अम्मोन का निवासी तोबियाह सम्बल्लत के साथ
था। तोबियाह बोला, "ये यहूदी जो निर्माण कर रहे
उसके बारे में ये क्या सोचते हैं? यदि कोई छोटी सी
लोमड़ी भी उस दीवार पर चढ़ जाये तो उनकी वह
पत्थरों की दीवार ढह जायेगी!"

4तब नहेमायाह ने परमेश्वर से प्रार्थना की और वह
बोला, "हे हमारे परमेश्वर, हमारी विनती सुन। वे लोग
हमसे घृणा करते हैं। सम्बल्लत और तोबियाह हमारा
अपमान कर रहे हैं। इन बुरी बातों को तू उन ही के
साथ घटा दे। उन्हें उन व्यक्तियों के समान लज्जित कर
जिन्हें बन्दी के रूप में ले जाया जा रहा हो। 5उनके उस
अपराध को दूर मत कर अथवा उनके उन पापों को
क्षमा मत कर जिन्हें उन्होंने तेरे देखते किया है। उन्होंने
परकोटे को बनाने वालों का अपमान किया है तथा
उनकी हिम्मत तोड़ी है।"

6हमने यरूशलेम के परकोटे का पुन: निर्माण किया
है। हमने नगर के चारों ओर दीवार बनाई है। किन्तु
उसे जितनी ऊँची होनी चाहिये थी, वह उससे आधी ही
रह गयी है। हम यह इसलिए कर पाये कि हमारे लोगों
ने अपने समूचे मन से इस कार्य को किया।

7किन्तु सम्बल्लत, तोबियाह, अरब के लोगों, अम्मोन
के निवासियों और अशदोद के रहने वाले लोगों को
उस समय बहुत क्रोध आया। जब उन्होंने यह सुना कि
यरूशलेम के परकोटे पर लोग निरन्तर काम कर रहे
हैं। उन्होंने सुना था कि लोग उस दीवार की दरारों को
भर रहे हैं। 8सो वे सभी लोग आपस में एकत्र हुए और
उन्होंने यरूशलेम के विरुद्ध योजनाएँ बनाई। उन्होंने
यरूशलेम के विरुद्ध गड़बड़ी पैदा करने का षड़यन्त्र
रचा। उन्होंने यह योजना भी बनाई कि नगर के ऊपर
चढ़ाई करके युद्ध किया जाये। 9किन्तु हमने अपने

परमेश्वर से विनती की और नगर परकोटे की दीवारों
पर हमने पहरेदार बैठा दिये ताकि वे वहाँ दिन–रात
रखवाली करें जिससे हम उन लोगों का मुकाबला करने
के लिए तुरन्त तैयार रहें।

10उधर उसी समय यहूदा के लोगों ने कहा, "कारीगर
लोग थकते जा रहे हैं। वहाँ बहुत सी धूल–मिट्टी और
कूड़ा करकट पड़ा है। सो हम अब परकोटे पर निर्माण
कार्य करते नहीं रह सकते 11और हमारे शत्रु कह रहे
हैं, 'इससे पहले कि यहूदियों को इसका पता चले अथवा
वे हमें देख लें, हम ठीक उनके बीच पहुँच जायेंगे। हम
उन्हें मार डालेगें जिससे उनका काम रुक जायेगा।'"

12इसके बाद हमारे शत्रुओं के बीच रह रहे यहूदी
हमारे पास आये और उन्होंने हमसे दस बार यह कहा,
"हमारे चारों तरफ़ हमारे शत्रु हैं, हम जिधर भी मुड़ें,
हर कहीं हमारे शत्रु फैले हैं।"

13सो मैंने परकोटे की दीवार के साथ–साथ जो स्थान
सबसे नीचे पड़ते थे, उनके पीछे कुछ लोगों को नियुक्त
कर दिया तथा मैंने दीवार में जो नाके पड़ते थे, उन पर
भी लोगों को लगा दिये। मैंने समूची दीवारों को उनकी
तलवारों, भालों और धनुष बाणों के साथ वहाँ लगा
दिया। 14मैंने सारी स्थिति का जायजा लिया और फिर
खड़े होकर महत्त्वपूर्ण परिवारों, हाकिमों तथा दूसरे
लोगों से कहा, "हमारे शत्रुओं से डरो मत। हमारे स्वामी
को याद रखो। यहोवा महान है और शक्तिशाली है!
तुम्हें अपने भाइयों, अपने पुत्रों और अपनी पुत्रियों के
लिए यह लड़ाई लड़नी ही है! तुम्हें अपनी पत्नियों और
अपने घरों के लिए युद्ध करना ही होगा!"

15इसके बाद हमारे शत्रुओं के कान में यह भनक
पड़ गयी कि हमें उनकी योजनाओं का पता चल चुका
है। वे जान गये कि परमेश्वर ने उनकी योजनाओं पर
पानी फेर दिया। इसलिए हम सभी नगर परकोटे की
दीवार पर काम करने को वापस लौट गये। प्रत्येक
व्यक्ति फिर अपने स्थान पर वापस चला गया और
अपने हिस्से का काम करने लगा। 16उस दिन के बाद
से मेरे आधे लोग परकोटे पर काम करने लगे और
मेरे आधे लोग भालों, ढालों, तीरों और कवचों से सुसज्जित
होकर पहरा देते रहे। यहूदा के उन लोगों के पीछे जो
नगर परकोटे की दीवार का निर्माण कर रहे थे, सेना
के अधिकारी खड़े रहते थे। 17सामान ढोनेवाले मजदूर
एक हाथ से काम करते तो उनके दूसरे हाथ में हथियार
रखते थे। 18हर कारीगर की बगल में, जब वह काम
करता हुआ होता, तलवार बंधी रहती थी। लोगों को
सावधान करने के लिये बिगुल बजाने वाला व्यक्ति मेरे
पास ही रहता। 19फिर प्रमुख परिवारों, हाकिमों और
शेष दूसरे लोगों को सम्बोधित करते हुए मैंने कहा,
"यह बहुत बड़ा काम है। हम परकोटे के सहारे–सहारे
फैले हुए हैं। हम एक दूसरे से दूर पड़ गये हैं। 20सो यदि
तुम बिगुल की आवाज़ सुनो, तो उस निर्धारित स्थान
पर भाग आना। वहीं हम सब इकट्ठे होंगे और हमारे
लिये परमेश्वर युद्ध करेगा!"

21इस प्रकार हम यरूशलेम की उस दीवार पर काम
करते रहे और हमारे आधे लोगों ने भाले थामे रखे।
हम सुबह की पहली किरण से लेकर रात में तारे
छिटकने तक काम किया करते थे।

22उस अवसर पर लोगों से मैंने यह भी कहा था:
"रात के समय हर व्यक्ति और उसका सेवक यरूशलेम
के भीतर ही ठहरे ताकि रात के समय में वे पहरेदार
रहें और दिन के समय कारीगर।" 23इस प्रकार हममें
से कोई भी कभी अपने कपड़े नहीं उतारता था न मैं,
न मेरे साथी, न मेरे लोग और न पहरेदार! हर समय
हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने दाहिने हाथ में हथियार
तैयार रखा करताथा।

नहेमायाह द्वारा गरीबों की सहायता

5 बहुत से गरीब लोग अपने यहूदी भाइयों के विरुद्ध
शिकायत करने लगे थे। 2उनमें से कुछ कहा
करते थे, "हमारे बहुत से बच्चे हैं। यदि हमें खाना खाना
है और जीवित रहना है तो हमें थोड़ा अनाज तो मिलना
ही चाहिए!"

3दूसरे लोगों का कहना है, "इस समय अकाल पड़
रहा है। हमें अपने खेत और घर गिरवी रखने पड़ रहे हैं
ताकि हमें थोड़ा अनाज मिल सके।"

4कुछ लोग यह भी कह रहे थे, "हमें अपने खेतों
और अँगूर के बगीचों पर राजा का कर चुकाना पड़ता
है किन्तु हम कर चुका नहीं पाते हैं इसलिए हमें कर
चुकाने के वास्ते धन उधार लेना पड़ता है। 5उन धनवान
लोगों की तरफ़ देखो! हम भी वैसे ही अच्छे हैं जैसे वे
हमारे पुत्र भी वैसे ही अच्छे हैं, जैसे उनके पुत्र। किन्तु
हमें अपने पुत्र–पुत्री दासों के रूप में बेचने पड़ रहे हैं।
हममें से कुछ को तो दासों के रूप में अपनी पुत्रियों को
बेचना भी पड़ा है! ऐसा कुछ भी तो नहीं है जिसे हम
कर सकें! हम अपने खेतों और अँगूर के बगीचों को
खो चुके हैं! अब दूसरे लोग उनके मालिक हैं!"

6जब मैंने उनकी ये शिकायतें सुनीं तो मुझे बहुत
क्रोध आया। 7मैंने स्वयं को शांत किया और फिर धनी
परिवारों और हाकिमों के पास जा पहुँचा। मैंने उनसे
कहा, "तुम अपने ही लोगों को उस धन पर ब्याज
चुकाने के लिये विवश कर रहे हो जिसे तुम उन्हें
उधार देते हो! निश्चय ही तुम्हें ऐसा बन्द कर देना
चाहिए!" फिर मैंने लोगों की एक सभा बुलाई

8और फिर मैंने उन लोगों से कहा, "दूसरे देशों में
हमारे यहूदी भाइयों को दासों के रूप में बेचा जाता था।
उन्हें वापस खरीदने और स्वतन्त्र कराने के लिए हमसे
जो बन पड़ा, हमने किया और अब तुम उन्हें फिर दासों

के रूप में बेच रहे हो और हमें फिर उन्हें वापस लेना
पड़ेगा!"
इस प्रकार वे धनी लोग और वे हाकिम चुप्पी साधे
रहे। कहने को उनके पास कुछ नहीं था। 9सो मैं
बोलता चला गया। मैंने कहा, "तुम लोग जो कुछ कर
रहे हो, वह उचित नहीं है! तुम यह जानते हो कि तुम्हें
परमेश्वर से डरना चाहिए और उसका सम्मान करना
चाहिए। तुम्हें ऐसे लज्जापूर्ण कार्य नहीं करने चाहिए जैसे
दूसरे लोग करते हैं! 10मेरे लोग, मेरे भाई और स्वयं मैं
भी लोगों को धन और अनाज़ उधार पर देते हैं। किन्तु
आओ हम उन कर्जो पर ब्याज चुकाने के लिये उन्हें
विवश करना बन्द कर दें! 11इसी समय तुम्हें उन के
खेत, अँगूर के बगीचें, जैतून के बाग और उनके घर
उन्हें वापस लौटा देने चाहिए और वह ब्याज भी तुम्हें
उन्हें लौटा देना चाहिए जो तुमने उनसे वसूल किया है।
तुमने उधार पर उन्हें जो धन, जो अनाज़, जो नया
दाखमधु और जो तेल दिया है, उस पर एक प्रतिशत
ब्याज वसूल किया है! 12इस पर धनी लोगों और हाकिमों
ने कहा, "हम यह उन्हें लौटा देंगे और उनसे हम कुछ
भी अधिक नहीं माँगेंगे। हे नहेमायाह, तू जैसा कहता है,
हम वैसा ही करेंगे।"
इसके बाद मैंने याजकों को बुलाया। मैंने धनी लोगों
और हाकिमों से यह प्रतिज्ञा करवाई कि जैसा उन्होंने
कहा है, वे वैसा ही करेंगे। 13इसके बाद मैंने अपने
कपड़ों की सलवटें फाड़ते हुए कहा, "हर उस व्यक्ति के
साथ, जो अपने वचन को नहीं निभायेगा, परमेश्वर
तद्नुकूल करेगा। परमेश्वर उन्हें उनके घरों से उखाड़
देगा और उन्होंने जिन भी वस्तुओं के लिये काम किया
हैं वे सभी उनके हाथ से जाती रहेंगी! वह व्यक्ति अपना
सब कुछ खो बैठेगा!"
मैंने जब इन बातों का कहना समाप्त किया तो सभी
लोग इनसे सहमत हो गये। वे सभी बोले, "आमीन!"
और फिर उन्होंने यहोवा की प्रशंसा की और इस
प्रकार जैसा उन्होंने वचन दिया था, वैसा ही किया
14और फिर यहूदा की धरती पर अपने राज्यपाल
काल के दौरान न तो मैंने और न मेरे भाइयों ने उस
भोजन को ग्रहण किया जो राज्यपाल के लिये न्यायपूर्ण
नहीं था। मैंने अपने भोजन को खरीदने के वास्ते कर
चुकाने के लिए कभी किसी पर दबाव नहीं डाला। राजा
अर्तक्षत्र केशासन काल के बीसवें साल से बत्तीसवें साल
तक मैं वहाँ का राज्यपाल रहा। मैं बारह साल तक
यहूदा का राज्यपाल रहा। 15किन्तु मुझ से पहले के
राज्यपालों ने लोगों के जीवन को दूभर बना दिया था।
वे राज्यपाल लोगों पर लगभग एक पौंड चाँदी चालीस
शकेल देने के लिए दबाव डाला करते थे। उन लोगों पर
वे खाना और दाखमधु देने के लिये भी दबाव डालते थे।
उन राज्यपालों के नीचे के हाकिम भी लोगों पर हुकूमत
चलाते थे और जीवन को और अधिक दूभर बनाते
रहते थे। किन्तु मैं क्योंकि परमेश्वर का आदर करता
था, और उससे डरता था, इसलिए मैंने कभी वैसे काम
नहीं किये। 16नगर परकोटे की दीवार को बनाने में
मैंने कड़ी मेहनत की थी। वहाँ दीवार पर काम करने
के लिए मेरे सभी लोग आ जुटे थे!
17मैं, अपने भोजन की चौकी पर नियमित रूप से
हाकिमों समेत एक सौ पचास यहूदियों को खाने पर
बुलाया करता था। मैं चारों ओर के देशों के लोगों को
भी भोजन देता था जो मेरे पास आया करते थे। 18मेरे
साथ मेरी मेज़ पर खाना खाने वाले लोगों के लिये इतना
खाना सुनिश्चित किया गया था: एक बैल, छ: तगड़ी
भेड़ें और अलग-अलग तरीके के पक्षी। इसके अलावा
हर दसों दिन मेरी मेज़ पर हर प्रकार का दाखमधु लाया
जाता था। फिर भी मैंने कभी ऐसे भोजन की मांग नहीं
की, जो राज्यपाल के लिए अनुमोदित नहीं था। मैंने
अपने भोजन का दाम चुकाने के लिये कर चुकाने के
वास्ते, उन लोगों पर कभी दबाव नहीं डाला। मैं यह
जानता था कि वे लोग जिस काम को कर रहे हैं वह
बहुत कठिन है। 19हे परमेश्वर, उन लोगों के लिये मैंने
जो अच्छा किया है, तू उसे याद रख।

अधिक समस्याएँ

6 इसके बाद सम्बल्लत, तोबियाह, अरब के रहने
वाले गेशेम तथा हमारे दूसरे शत्रुओं ने यह सुना
कि मैं परकोटे की दीवार का निर्माण करा चुका हूँ।
हम उस दीवार में दरवाजे बना चुके थे किन्तु तब तक
दरवाजों पर जोड़ियाँ नहीं चढ़ाई गई थीं। 2सो सम्बल्लत
और गेशेम ने मेरे पास यह सन्देश भिजवाया: "नहेमायाह,
तुम आकर हमसे मिलो। हम ओनो के मैदान में कैफरीम
नाम के कस्बे में मिल सकते हैं।" किन्तु उनकी योजना
तो मुझे हानि पहुँचाने की थी।
3सो मैंने उनके पास इस उत्तर के साथ सन्देश भेज
दिया: "मैं यहाँ महत्त्वपूर्ण काम में लगा हूँ। सो मैं नीचे
तुम्हारे पास नहीं आ सकता। मैं सिर्फ इसलिए काम बन्द
नहीं करना चाहूँगा कि तुम्हारे पास आकर तुमसे मिल
सकूँ।"
4सम्बल्लत और गेमेश ने मेरे पास चार बार वैसे ही
सन्देश भेजे और हर बार मैंने भी उन्हें वही उत्तर
भिजवा दिया। 5फिर पाँचवी बार सम्बल्लत ने उसी
सन्देश के साथ अपने सहायक को मेरे पास भेजा।
उसके हाथ में एक पत्र था जिस पर मुहर नहीं लगी थी।
6उस पत्र में लिखा था: "चारों तरफ एक अफ़वाह फैली
हुई है। हर कहीं लोग उसी बात की चर्चा कर रहे हैं
और गेमेश का कहना है कि वह सत्य है। लोगों का
कहना है कि तू और यहूदी, राजा से बगावत की योजना
बना रहे हो और इसी लिए तू यरूशलेम के नगर

परकोटे का निर्माण कर रहे हो। लोगों का यह भी
कहना है कि तू ही यहूदियों का नया राजा बनेगा।

7"और यह अफ़वाह भी है कि तूने यरूशलेम में
अपने विषय में यह घोषणा करने के लिए भविष्यवक्ता
भी चुन लिये हैं: 'यहूदा में एक राजा है!'

"नहेमायाह! अब मैं तुझे चेतावनी देता हूँ। राजा अर्तक्षत्र
इस विषय की सुनवाई करेगा सो हमारे पास आ और
हमसे मिल कर इस बारे में बातचीत कर।"

8सो मैंने सम्बल्लत के पास यह उत्तर भिजवा दिया:
"तुम जैसा कह रहे हो वैसा कुछ नहीं हो रहा है। यह
सब बातें तुम्हारी अपनी खोपड़ी की उपज हैं।"

9हमारे शत्रु बस हमें डराने का जतन कर रहे थे। वे
अपने मन में सोच रहे थे, "यहूदी लोग डर जायेंगे और
काम को चलता रखने के लिये बहुत निर्बल पड़ जायेंगे
और फिर परकोटे की दीवार पूरी नहीं हो पायेगी।"

किन्तु मैंने अपने मन में यह विनती की, "परमेश्वर
मुझे मजबूत बना।"

10मैं एक दिन दलायाह के पुत्र शमायाह के घर गया।
दलायाह महेतबेल का पुत्र था। शमायाह को अपने घर
में ही रुकना पड़ता था। शमायाह ने कहा,

"नहेमायाह आओ हम परमेश्वर के मन्दिर के भीतर
मिले। आओ चले भीतर हम मन्दिर के और बन्द द्वारों
को कर लें आओ, वैसा करें हम क्यों? क्योंकि लोग है
आ रहे मारने को तुझको। वे आ रहे हैं आज रात मार
डालने को तुझको।"

11किन्तु मैंने शमायाह से कहा, "क्या मेरे जैसे किसी
व्यक्ति को भाग जाना चाहिए? तुम तो जानते ही हो कि
मेरे जैसे व्यक्ति को अपने प्राण बचाने के लिये मन्दिर में
नहीं भाग जाना चाहिए। सो मैं वहाँ नहीं जाऊँगा!"

12मैं जानता था कि शमायाह को परमेश्वर ने नहीं
भेजा है। मैं जानता था कि मेरे विरुद्ध वह इस लिये ऐसी
झूठी भविष्यवाणियाँ कर रहा है कि तोबियाह और
सम्बल्लत ने उसे वैसा करने के लिए धन दिया है।
13शमायाह को मुझे तंग करने और डराने के लिये
भाड़े पर रखा गया था। वे यह चाहते थे कि डर कर
छिपने के लिये मन्दिर में भाग कर मैं पाप करू ताकि
मेरे शत्रुओं के पास मुझे लज्जित करने और बदनाम
करने का कोई आधार हो।

14हे परमेश्वर! तोबियाह और सम्बल्लत को याद
रख। उन बुरे कामों को याद रख जो उन्होंने किये हैं।
उस नबिया नोअद्याह तथा उन नबियों को याद रख जो
मुझे भयभीत करने का जतन करते रहे हैं।

परकोटा पूरा हो गया

15इस प्रकार एलूल* नाम के महीने की पच्चीसवीं
तारीख को यरूशलेम का परकोटा बनकर तैयार हो
गया। परकोटे की दीवार को बनकर पूरा होने में बावन
दिन लगे। 16फिर हमारे सभी शत्रुओं ने सुना कि हमने
परकोटा बनाकर तैयार कर लिया है। हमारे आस–पास
के सभी देशों ने देखा कि निर्माण कार्य पूरा हो चुका है।
इससे उनकी हिम्मत टूट गयी क्योंकि वे जानते थे कि
हमने यह कार्य हमारे परमेश्वर की सहायता से पूरा
किया है।

17इसके अतिरिक्त उन दिनों जब वह दीवार बन
कर पूरी हो चुकी थी तो यहूदा के धनी लोग तोबियाह
को पत्र लिख–लिख कर पत्र भेजने लगे, तोबियाह
उनके पत्रों का उत्तर दिया करता। 18वे इन पत्रों को
इसलिए भेजा करते थे कि यहूदा के बहुत से लोगों ने
उसके प्रति वफादार बने रहने की कसम उठाई हुई
थी। इसका कारण यह था कि वह आरह के पुत्र
शकन्याह का दामाद था तथा तोबियाह के पुत्र यहोहानान
ने मशुल्लाम की पुत्री से विवाह किया था। मशुल्लाम
बेरेक्याह का पुत्र था, 19तथा अतीतकाल में उन लोगों
ने तोबियाह को एक विशेष वचन भी दे रखा था। सो वे
लोग मुझसे कहते रहते थे कि तोबियाह कितना अच्छा
है और उधर वे, जो काम मैं किया करता था, उनके
बारे में तोबियाह को सूचना देते रहते थे। तोबियाह मुझे
डराने के लिये पत्र भेजता रहता था।

7 इस प्रकार हमने दीवार बनाने का काम पूरा
किया। फिर हमने द्वार पर दरवाज़े लगाये। फिर
हमने उस द्वार के पहरेदारों, मन्दिर के गायकों तथा
लेवियों को चुना जो मन्दिर में गीत गाते और याजकों
की मदद करते थे। 2इसके बाद मैंने अपने भाई हनानी
को यरूशलेम का हाकिम नियुक्त कर दिया। मैंने हनन्याह
नाम के एक और व्यक्ति को चुना और उसे किलेदार
नियुक्त कर दिया। मैंने हनानी को इसलिए चुना था कि
वह बहुत ईमानदार व्यक्ति था तथा वह परमेश्वर से
आम लोगों से कहीं अधिक डरता था। 3तब मैंने हनानी
और हनन्याह से कहा, "तुम्हें हर दिन यरूशलेम का
द्वार खोलने से पहले घंटों सूर्य चढ़ जाने के बाद तक
इंतजार करते रहना चाहिए और सूर्य छुपने से पहले ही
तुम्हें दरवाजें बन्द करके उन पर ताला लगा देना चाहिए।
यरूशलेम में रहने वाले लोगों में से तुम्हें कुछ और लोग
चुनने चाहिए और उन्हें नगर की रक्षा करने के लिए
विशेष स्थानों पर नियुक्त करो तथा कुछ लोगों को
उनके घरों के पास ही पहरे पर लगा दो।"

लौटे हुए बन्दियों की सूची

4अब देखो, वह एक बहुत बड़ा नगर था जहाँ पर्याप्त
स्थान था। किन्तु उसमें लोग बहुत कम थे तथा मकान
अभी तक फिर से नहीं बनाये गये थे। 5इसलिए मेरे
परमेश्वर ने मेरे मन में एक बात पैदा की कि मैं सभी
लोगों की एक सभा बुलाऊँ सो मैंने सभी महत्त्वपूर्ण

एलूल यह समय लगभग 443 ई.पू. अगस्त–सितंबर है।

लोगों को, हाकिमों को तथा सर्वसाधारण को एक साथ
बुलाया। मैंने यह काम इसलिए किया था कि मैं उन
सभी परिवारों की एक सूची तैयार कर सकूँ। मुझे ऐसे
लोगों की पारिवारिक सूचियाँ मिलीं जो दासता से सबसे
पहले छूटने वालों में से थे। वहाँ जो लिखा हुआ मुझे
मिला, वह इस प्रकार है।

6ये इस क्षेत्र के वे लोग हैं जो दासत्व से मुक्त होकर
लौटे (बाबेल का राजा, नबूकदनेस्सर इन लोगों को
बन्दी बनाकर ले गया था। ये लोग यरूशलेम और यहूदा
को लौटे। हर व्यक्ति अपने-अपने नगर में चला गया।
7ये लोग जरुब्बाबेल, येशू, नहेमायाह, अजर्याह, राम्याह,
नहमानी, मोर्दकै, बिलशान, मिस्पेरेत, बिग्वै, नहूम और
बाना के साथ लौटे थे।)

इस्राएल के लोगों की सूची:

8 पॅरोश के वंशज 2,172
9 सपत्याह के वंशज 372
10 आरह के वंशज 652
11 पहत्मोआब के वंशज (येशू और
योआब के परिवार के संतानें): 2,818
12 एलाम के वंशज 1,254
13 जत्तू के वंशज 845
14 जक्कै के वंशज 760
15 बिन्नूई के वंशज 648
16 बेबै के वंशज 628
17 अजगाद की संतानें 2,322
18 अदोनीकाम के वंशज 667
19 बिग्वै के वंशज 2,067
20 आदीन के वंशज 655
21 आतेर के वंशज
(हिजीकयाह के परिवार से): 98
22 हाशम के वंशज 328
23 बेसै के वंशज 324
24 हारीप के वंशज 112
25 गिबोन के वंशज 95
26 बेतलेहेम और नतोपा नगरों के लोग 188
27 अनातोत नगर के लोग 128
28 बेतजमावत नगर के लोग 42
29 किर्यत्यारीम, कपीर तथा बेरोत
नगरों के लोग 743
30 रामा और गेबा नगरों के लोग 621
31 मिकपास नगर के लोग 122
32 बेतेल और ऐ नगर के लोग 123
33 नबो नाम के दूसरे नगर के लोग 52
34 एलाम नाम के दूसरे नगर के लोग 1,254
35 हरीम नाम के नगर के लोग 320
36 यरीहो नगर के लोग 345
37 लोद, हादीद और ओनो नाम के
नगरों के लोग 721
38 सना नाम के नगर के लोग 3,930

39याजकों की सूची:
यदायाह के वंशज (येशू के परिवार से): 973
40 इम्मेर के वंशज 1,052
41 पशहूर के वंशज 1,247
42 हारीम के वंशज 117

43लेवी परिवार समूह के लोगों की सूची:
येशू के वंशज (कदमीएल के द्वारा होदवा के परिवार
से) 74

44गायकों की सूची:
आसाप के वंशज 148

45द्वारपालों की सूची:
शल्लूम, आतेर, तल्मोन, अक्कूब,
हतीता और शोबै के वंशज 138

46मन्दिर के सेवकों की सूची:
सीहा, हसूपा और तब्बाओत की सन्तानें,
47 केरोस, सीआ और पादोन की सन्तानें,
48 लबाना, हगाबा और शल्मै के वंशज,
49 हानान, गिद्देल, गहर के वंशज,
50 राया, रसीन और नकोदा की संतानें,
51 गज्जाम, उज्जा और पासेह के वंशज,
52 बेसै, मूनीम, नपूशस के वंशज,
53 बकबूक, हकूपा, हर्हूर के वंशज,
54 बसलीत, महीदा और हर्षा के वंशज,
55 बर्कोस, सीसरा और तेमेह की संन्ताने,
56 नसीह और हतीपा के वंशज,

57सुलैमान के सेवकों के वंशज:
सोतै, सोपेरेत और परीदा के वंशज
58 याला दर्कोन और गिद्देल के वंशज,
59 शपत्याह, हत्तील, पोकेरेत-सबायीम और
आमोन की संतानें,
60 मन्दिर के सभी सेवक और सुलैमान के सेवकों
के वंशज थे। 392

61यह उन लोगों की एक सूची है जो तेलमेलह, तेलहर्षा,
करुब अद्दोन तथा इम्मेर नाम के नगरों से यरूशलेम
आये थे। किन्तु ये लोग यह प्रमाणित नहीं कर सके कि
उनके परिवार वास्तव में इस्राएल के लोगों से सम्बन्धित
थे:
62 दलायाह, तोबियाह और नेकोदा के
वंशज थे। 642

63यह एक उनकी सूची है जो याजक थे। ये वे लोग
थे जो यह प्रमाणित नहीं कर सके थे कि उनके पूर्वज
वास्तव में इस्राएल के लोगों के वंशज थे। होबायाह,
हक्कोस और बर्जिल्लै के वंशज (बर्जिलै वह व्यक्ति था
जिस ने गिलाद निवासी बर्जिल्लै की एक पुत्री से विवाह
किया था। इसीलिए उसे यह नाम दिया गया था।)

64जिन लोगों ने अपने परिवारों के ऐतिहासिक दस्तावेजों
को खोजा और वे उन्हें पा नहीं सके, उनका नाम
याजकों की इस सूची में नहीं जोड़ा जा सका। वे शुद्ध
नहीं थे सो याजक नहीं बन सकते थे। 65सो राज्यपाल ने
उन्हें एक आदेश दिया जिसके तहत वे किसी भी अति
पवित्र भोजन को नहीं खा सकते थे। उस भोजन में से
वे उस समय तक कुछ भी नहीं खा सकते थे जब तक
ऊरीम और तुम्मीम का उपयोग करने वाला महायाजक
इस बारे में परमेश्वर की अनुमति न ले ले।

66-67उस समूचे समूह में लोगों की संख्या 42,360
थी और उनके पास 7337 दास और दासियाँ थीं,
उनके पास 245 गायक और गायिकाएँ थीं। 68-69उनके
पास 736 घोड़े थे, 245 खच्चर, 435 ऊँट तथा 6,720
गधे थे।

70परिवार के कुछ मुखियाओं ने उस काम को बढ़ावा
देने के लिए धन दिया था। राज्यपाल के द्वारा निर्माण–कोष
में उन्नीस पौंड सोना दिया गया था। उसने याजकों के
लिये पचास कटोरे और पाँच सौ तीस जोड़ी कपड़े भी
दिये थे। 71परिवार के मुखियाओं ने तीन सौ पचहत्तर
पौंड सोना उस काम को बढ़ावा देने के लिये निर्माण
कोष में दिया और दो हजार दो सौ मीना चाँदी उनके
द्वारा भी दी गयी। 72दूसरे लोगों ने कुल मिला कर बीस
हजार दर्कमोन सोना उस काम को बढ़ावा देने के लिए
निर्माण कोष को दिया। उन्होंने दो हजार मीना चाँदी
और याजकों के लिए सढ़सठ जोड़े कपड़े भी दिये।

73इस प्रकार याजक लेवी परिवार समूह के लोग,
गायक और मन्दिर के सेवक अपने–अपने नगरों में
बस गये और इस्राएल के दूसरे लोग भी अपने–अपने
नगरों में रहने लगे और फिर साल के सातवें महीने
तक इस्राएल के सभी लोग अपने–अपने नगरों में बस
गये।

एज्रा द्वारा व्यवस्था–विधान का पढ़ा जाना

8 फिर साल के सातवें महीने में इस्राएल के सभी
लोग आपस में इकट्ठे हुए। वे सभी एक थे और
इस प्रकार एकमत थे जैसे मानो वे कोई एक व्यक्ति हो।
जलद्वार के सामने के खुले चौक में वे आपस में मिले।
एज्रा नाम के शिक्षक से उन सभी लोगों ने मूसा की
व्यवस्था के विधान की पुस्तक को लाने के लिये
कहा। यह वही व्यवस्था का विधान है जिसे इस्राएल के
लोगों को यहोवा ने दिया था। 2सो याजक एज्रा परस्पर
इकट्ठे हुए। उन लोगों के सामने व्यवस्था के विधान
की पुस्तक को ले आया। उस दिन महीने की पहली
तारीख़ थी और वह महीना वर्ष का सातवाँ महीना था।
उस सभा में पुरुष थे, स्त्रियाँ थीं, और वे सभी थे जो
बातों को सुन और समझ सकते थे। 3एज्रा ने भोर के
तड़के से लेकर दोपहर तक ऊँची आवाज में इस व्यवस्था
के विधान की पुस्तक से पाठ किया। उस समय एज्रा
का मुख उस खुले चौक की तरफ था जो जल–द्वार के
सामने पड़ता था। उसने सभी पुरुषों, स्त्रियों और उन
सभी लोगों के लिये उसे पढ़ा जो सुन–समझ सकते थे।
सभी लोगों ने व्यवस्था के विधान की पुस्तक को
सावधानी के साथ सुना और उस पर ध्यान दिया।

4एज्रा लकड़ी के उस ऊँचे मंच पर खड़ा था जिसे इस
विशेष अवसर के लिये ही बनाया गया था। एज्रा के
दाहिनी ओर मत्तित्याह, शेमा, अनायाह, ऊरिय्याह,
हिल्कियाह और मासेयाह खड़े थे और एज्रा के बायीं
ओर पदायाह, मीशाएल, मल्कियाह, हाशूम, हश्बद्दाना,
जकर्याह और मशुल्लाम खड़े हुए थे।

5फिर एज्रा ने उस पुस्तक को खोला। एज्रा सभी लोगों
को दिखायी दे रहा था क्योंकि वह सब लोगों से ऊपर
एक ऊँचे मंच पर खड़ा था। एज्रा ने व्यवस्था के विधान
की पुस्तक को जैसे ही खोला, सभी लोग खड़े हो गये ।
6एज्रा ने महान परमेश्वर यहोवा की स्तुति की और
सभी लोगों ने अपने हाथ ऊपर उठाते हुए एक स्वर में
कहा, "आमीन! आमीन!" और फिर सभी लोगों ने
अपने सिर नीचे झुका दिये और धरती पर दण्डवत
करते हुए यहोवा की उपासना की।

7लेवीवंश परिवार समूह के इन लोगों ने वहाँ खड़े हुए
सभी लोगों को व्यवस्था के विधान की शिक्षा दी।
लेवीवंश के उन लोगों के नाम थे: येशू, बानी, शेरेब्याह,
यामीन, अक्कूब, शब्बतै, होदियाह, मासेयाह, कलिता,
अजर्याह, योजबाद, हानान, और पलायाह। 8लेवीवंश के
इन लोगों ने परमेश्वर की व्यवस्था के विधान की
पुस्तक का पाठ किया। उन्होंने उसकी ऐसी व्याख्या
की कि लोग उसे समझ सकें। उसका अभिप्राय: क्या
है, इसे खोल कर उन्होंने समझाया। उन्होंने यह इसलिए
किया ताकि जो पढ़ा जा रहा है, लोग उसे समझ सकें।

9इसके बाद राज्यपाल नहेमायाह याजक तथा शिक्षक
एज्रा तथा लेवीवंश के लोग जो लोगों को शिक्षा दे रहे
थे, बोले। उन्होंने कहा, "आज का दिन तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा का विशेष दिन है दु:खी मत होवो, विलाप मत
करो।" उन्होंने ऐसा इसलिये कहा था कि लोग व्यवस्था
के विधान में परमेश्वर का सन्देश सुनते हुए रोने लगे
थे।

10नहेमायाह ने कहा, "जाओ, और जाकर उत्तम
भोजन और शर्बत का आनन्द लो। और थोड़ा खाना
और शर्बत उन लोगों को भी दो जो कोई खाना नहीं

बनाते हैं। आज यहोवा का विशेष दिन है। दु:खी मत
रहो! क्यों? क्योंकि परमेश्वर का आनन्द तुम्हें सुदृढ़
बनायेगा।"
11लेवीवंश परिवार के लोगों ने लोगों को शांत होने
में मदद की। उन्होंने कहा, "चुप हो जाओ, शांत रहो,
यह एक विशेष दिन है। दु:खी मत रहो।"
12इसके बाद सभी लोग उस विशेष भोजन को खाने
के लिये चले गये। अपने खाने पीने की वस्तुओं, को
उन्होंने आपस में बाँटा। वे बहुत प्रसन्न थे और इस तरह
उन्होंने उस विशेष दिन को मनाया और आखिरकार
उन्होंने यहोवा की उन शिक्षाओं को समझ लिया जिन्हें
उनको समझाने का शिक्षक जतन किया करते थे।
13फिर महीने की दूसरी तारीख को सभी परिवारों
के मुखिया, एज्रा, याजकों और लेवी वंशियो, से मिलने
गये और व्यवस्था के विधान के वचनों को समझने के
लिए सभी लोग शिक्षक एज्रा को घेर कर खड़े हो गये।
14-15उन्होंने समझ कर यह पाया कि व्यवस्था के
विधान में यह आदेश दिया गया है कि साल के सातवें
महीने में इस्राएल के लोगों को एक विशेष पवित्र पर्व
मनाने के लिये यरूशलेम जाना चाहिए। उन्हें चाहिए कि
वे अस्थायी झोपड़ियाँ बनाकर वहाँ रहें। लोगों को यह
आदेश यहोवा ने मूसा के द्वारा दिया था। लोगों से यह
अपेक्षा की गयी थी कि वे इसकी घोषणा करें। लोगों
को चाहिए था कि वे अपने नगरों और यरूशलेम से
गुजरते हुए इन बातों की घोषणा करें: "पहाड़ी प्रदेश में
जाओ और वहाँ से तरह तरह के जैतून के पेड़ों की
टहनियाँ ले कर आओ। हिना (मेंहदी), खजूर और
छायादार सघन वृक्षों की शाखाएँ लाओ, फिर उन टहनियों
से अस्थायी आवास बनाओ। वैसा ही करो जैसा व्यवस्था
का विधान बनाता है।"
16सो लोग बाहर गये और उन–उन पेड़ों की टहनियाँ
ले आये और फिर उन टहनियों से उन्होंने अपने लिये
अस्थायी झोपड़ियाँ बना लीं। अपने घर की छतों पर
और अपने–अपने आँगनों में उन्होंने झोपड़ियाँ डाल
लीं। उन्होंने मन्दिर के आँगन जल–द्वार के निकट के
खुले चौक और एप्रैम द्वार के निकट झोपड़ियाँ बना
लीं। 17इस्राएल के लोगों की उस समूची टोली ने जो
बंधुआपन से छूट कर आयी थी, आवास बना लिये और
वे अपनी बनाई झोंपड़ियों में रहने लगे। नून के पुत्र
यहोशू के समय से लेकर उस दिन तक इस्राएल के
लोगों ने झोंपड़ियों के त्यौहार को कभी इस तरह नहीं
मनाया था। हर व्यक्ति आनन्द मग्न था!
18उस पर्व के हर दिन एज्रा उन लोगों के लिये
व्यवस्था के विधान की पुस्तक में से पाठ करता रहा।
उस पर्व के पहले दिन से अंतिम दिन तक एज्रा उन
लोगों को व्यवस्था का विधान पढ़ कर सुनाता रहा।
इस्राएल के लोगों ने सात दिनों तक उस पर्व को मनाया।
फिर व्यवस्था के विधान के अनुसार आठवें दिन लोग
एक विशेष सभा के लिए परस्पर एकत्र हुए।

इस्राएल के लोगों द्वारा अपने पापों का अंगीकार

9 फिर उसी महीने की चौबीसवीं तारीख को एक
दिन के उपवास के लिये इस्राएल के लोग परस्पर
एकत्र हुए। उन्होंने यह दिखाने के लिये कि वे दु:खी
और बेचैन हैं, उन्होंने शोक वस्त्र धारण किये, अपने
अपने सिरों पर राख डाली। 2वे लोग जो सच्चे
इस्राएली थे, उन्होंने बाहर के लोगों से अपने आपको
अलग कर दिया। इस्राएली लोगों ने मन्दिर में खड़े
होकर अपने और अपने पूर्वजों के पापों को स्वीकार
किया। 3वे लोग वहाँ लगभग तीन घण्टे खड़े रहे और
उन्होंने अपने यहोवा परमेश्वर की व्यवस्था के विधान
की पुस्तक का पाठ किया और फिर तीन घण्टे और
अपने यहोवा परमेश्वर की उपासना करते हुए उन्होंने
स्वयं को नीचे झुका लिया तथा अपने पापों को
स्वीकार किया।
4फिर लेवीवंशी येशू, बानी, कदमीएल, शबन्याह, बुन्नी,
शेरेब्याह, बानी और कनानी सीढ़ियों पर खड़े हो गये
और उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा को ऊँचे स्वर में
पुकारा। 5इसके बाद लेवीवंशी येशू, कदमीएल, बानी,
हशबन्याह, शेरेब्याह, होदियाह शबन्याह और पतहयाह
ने फिर कहा। वे बोले: "खड़े हो जाओ और अपने
यहोवा परमेश्वर की स्तुति करो!"

परमेश्वर सदा से जावित था! और सदा ही जीवित
रहेगा! लोगों को चाहिये कि स्तुति करें तेरे महिमावान
नाम की! सभी आशीषों से और सारे गुण–गानों से नाम
ऊपर उठे तेरा!

6तू तो परमेश्वर है! यहोवा, बस तू ही परमेश्वर है!
आकाश को तूने बनाया है! सर्वोच्च आकाशों की रचना
की तूने, और जो कुछ है उनमें सब तेरा बनाया है!
धरती की रचना की तूने ही, और जो कुछ धरती पर
है! सागर को, और जो कुछ है सागर में! तूने बनाया है
हर किसी वस्तु को जीवन तू देता है! सितारे सारे
आकाश के, झुकते हैं सामने तेरे और उपासना करते
हैं तेरी!

7यहोवा परमेश्वर तू ही है, अब्राम को तुने चुना था।
राह उसको तूने दिखाई थी, बाबेल के उर से निकल
जाने की तूने ही बदला था उसका नाम और उसे दिया
नाम इब्राहीम का।

8तूने यह देखा था कि वह सच्चा और निष्ठावान था
तेरे प्रति। कर लिया तूने साथ उसके वाचा एक उसे देने
को धरती कनान की वचन दिया तूने धरती, जो हुआ
करती थी हित्तियों की और एमोरीयों की। धरती, जो
हुआ करती थी परिज्जियों, यबूसियों और गिर्गाशियों
की! किन्तु वचन दिया तूने उस धरती को देने का

इब्राहीम की संतानों को और अपना वचन वह पूरा
किया तूने क्यों? क्योंकि तू उत्तम है।
9यहोवा देखा था तड़पते हुए तूने हमारे पूर्वजों को
मिस्र में। पुकारते सहायता को लाल सागर के तट पर
तूने उनको सुना था!
10फ़िरौन को तूने दिखाये थे चमत्कार। तूने हाकिमों
को उसके और उसके लोगों को दिखाये थे अद्‌भुत
कर्म। तुझको यह ज्ञान था कि सोचा करते थे मिस्री कि
वे उत्तम हैं हमारे पूर्वजों से। किन्तु प्रमाणित कर दिया
तूने कि तू कितना महान है! और है उसकी याद बनी
हुई उनको आज तक भी!
11सामने उनके लाल सागर को विभक्त किया था
तूने, और वे पार हो गये थे सूखी धरती पर चलते हुए!
मिस्र के सैनिक पीछा कर रहे थे उनका। किन्तु डुबो
दिया तूने था शत्रु को सागर में। और वे डूब गये सागर में
जैसे डूब जाता है पानी में पत्थर।
12मीनार जैसे बादल से दिन में उन्हें राह तूने दिखाई
और अग्नि के खंभे का प्रयोग कर रात में उनको तूने
दिखाई राह। मार्ग को तूने उनके इस प्रकार कर दिया
ज्योर्तिमय और दिखा दिया उनको कि कहाँ उन्हें जाना
है।
13फिर तू उतरा सीनै पहाड़ पर और आकाश से तूने
था उनको सम्बोधित किया। उत्तम विधान दे दिया तूने
उन्हें सच्ची शिक्षा को था तूने दिया उनको। व्यवस्था
का विधान उन्हें तूने दिया और तूने दिये आदेश उनको
बहुत उत्तम!
14तूने बताया उन्हें सब्त यानी अपने विश्राम के विशेष
दिन के विषय में। तूने अपने सेवक मूसा के द्वारा
उनको आदेश दिये। व्यवस्था का विधान दिया और दी
शिक्षाएँ।
15जब उनको भूख लगी, बरसा दिया भोजन था तूने
आकाश से। जब उन्हें प्यास लगी, चट्टान से प्रकट
किया तूने था जल को और कहा तूने था उनसे 'आओ,
ले लो इस प्रदेश को।' तूने वचन दिया उन को उठाकर
हाथ यह प्रदेश देने का उनको!
16 किन्तु वे पूर्वज हमारे, हो गये अभिमानी; वे हो गये
हठी थे। कर दिया उन्होंने मना आज्ञाएँ मानने से तेरी।
17कर दिया उन्होंने मना सुनने से। वे भूले उन अचरज
भरी बातों को जो तूने उनके साथ की थी। वे हो गये
जिद्दी! विद्रोह उन्होंने किया, और बना लिया अपना एक
नेता जो उन्हें लौटा कर ले जाये। फिर उनकी उसी
दासता में किन्तु तू तो है दयावान परमेश्वर! तू है दयालू
और करुणापूर्ण तू है। धैर्यवान है तू और प्रेम से भरा है
तू! इसलिये तूने था त्यागा नहीं उनको।
18चाहे उन्होंने बना लिया सोने का बछड़ा और कहा,
'बछड़ा अब देव है तुम्हारा' इसी ने निकाला था तुम्हें
मिस्र से बाहर किन्तु उन्हें तूने त्यागा नहीं!'
19तू बहुत ही दयालु है! इसलिये तूने उन्हें मरुस्थल में
त्यागा नहीं। दूर उनसे हटाया नहीं दिन में तूने बादल के
खम्भें को मार्ग तू दिखाता रहा उनको। और रात में
तूने था दूर किया नहीं उनसे अग्नि के पुंज को! प्रकाशित
तू करता रहा रास्ते को उनके। और तू दिखाता रहा
कहाँ उन्हें जाना है!
20निज उत्तम चेतना, तूने दी उनको ताकि तू विवेकी
बनाये उन्हें। खाने को देता रहा, तू उनको 'मन्ना' और
प्यास को उनकी तू देता रहा पानी!
21तूने रखा उनका ध्यान चालीस बरसों तक मरुस्थल
में। उन्हें मिली हर वस्तु जिसकी उनको दरकार थी।
वस्त्र उनके फटे तक नहीं पैरों में उनके कभी नहीं
आई सूजन कभी किसी पीड़ा में।
22यहोवा तूने दिये उनको राज्य, और उनको दी
जातियाँ और दूर–सुदूर के स्थान थे उनको दिये जहाँ
बसते थे कुछ ही लोग धरती उन्हें मिल गयी सीहोन की
सीहोन जो हशबोन का राजा था धरती उन्हें मिल गयी
ओग की ओग जो बाशान का राजा था।
23वंशज दिये तूने अनन्त उन्हें जितने अम्बर में तारे
हैं। ले आया उनको तू उस धरती पर। जिसके लिये उन
के पूर्वजों को तूने आदेश दिया था कि वे वहाँ जाएँ और
अधिकार करें उस पर।
24धरती वह उन वंशजों ने ले ली। वहाँ रह रहे
कनानियों को उन्होंने हरा दिया। पराजित कराया तूने
उनसे उन लोगों को। साथ उन प्रदेशों के और उन
लोगों के वे जैसा चाहे वैसा करें ऐसा था तूने करा दिया।
25शक्तिशाली नगरों को उन्होंने हरा दिया। कब्जा
किया उपजाँऊ धरती पर उन्होंने। उत्तम वस्तुओं से भरे
हुए ले लिये उन्होंने घर; खुदे हुए कुँओं को ले लिया
उन्होंने। ले लिए उन्होंने थे बगीचे अँगूर के। जैतून के
पेड़ और फलों के पेड़ भर पेट खाया वे करते थे सो वे
हो गये मोटे। तेरी दी सभी अद्‌भुत वस्तुओं का आनन्द
वे लेते थे।
26और फिर उन्होंने मुँह फेर लिया तुझसे था। तेरी
शिक्षाओं को उन्होंने फेंक दिया दूर तेरे नबियों को मार
डाला उन्होंने था। ऐसे नबियों को जो सचेत करते थे
लोगों को। जो जतन करते लोगों को मोड़ने का तेरी
ओर। किन्तु हमारे पूर्वजों ने भयानक कार्य किये तेरे
साथ।
27सो तूने उन्हें पड़ने दिया उनके शत्रुओं के हाथों
में। शत्रु ने बहुतेरे कष्ट दिये उनको जब उन पर विपदा
पड़ी हमारे पूर्वजों ने थी दुहाई दी तेरी। और स्वर्ग में तूने
था सुन लिया उनको। तू बहुत ही दयालु है भेज दिया
तूने था लोगों को उनकी रक्षा के लिये। और उन
लोगों ने छुड़ा कर बचा लिया उनको शत्रुओं से उनके।
28किन्तु, जैसे ही चैन उन्हें मिलता था, वैसे ही वे बुरे
काम करने लग जाते बार बार। सो शत्रुओं के हाथों

उन्हें सौंप दिया तूने ताकि वे करें उन पर राज। फिर
तेरी दुहाई उन्होंने दी और स्वर्ग में तूने सुनी उनकी।
और सहायता उनकी की। तू कितना दयालु है! होता
रहा ऐसा ही अनेकों बार!

29तूने चेताया उन्हें। फिर से लौट आने को तेरे विधान
में किन्तु वे थे बहुत अभिमानी। उन्होंने नकार दिया तेरे
आदेश को। यदि चलता है कोई व्यक्ति नियमों पर तेरे
तो सचमुच जीएगा वह किन्तु हमारे पूर्वजों ने तो तोड़ा
था तेरे नियमों को। वे थे हठीले! मुख फेर, पीठ दी थी
उन्होंने तुझे! तेरी सुनने से ही उन्होंने था मना किया।

30तू था बहुत सहनशील, साथ हमारे पूर्वजों के, तूने
उन्हें करने दिया बर्ताव बुरा अपने साथ बरसों तक।
सजग किया तूने उन्हें अपनी आत्मा से। उनको देने
चेतावनी भेजा था नबियों को तूने। किन्तु हमारे पूर्वजों
ने तो उनकी सुनी ही नहीं। इसलिए तूने था दूसरे देशों
के लोगों को सौंप दिया उनको।

31किन्तु तू कितना दयालु है! तूने किया था नहीं पूरी
तरह नष्ट उन्हें। तूने तजा नहीं उनको था। हे परमेश्वर!
तू ऐसा दयालु और करुणापूर्ण ऐसा है!

32परमेश्वर हमारा है, महान परमेश्वर! तू एक वीर
है ऐसा जिससे भय लगता है और शक्तिशाली है जो
निर्भर करने योग्य तू है। पालता है तू निज वचन को!
यातनाएँ बहुत तेरी भोग हम चुके हैं। और दुःख हमारे
हैं, महत्त्वपूर्ण तेरे लिये। साथ में हमारे राजाओं के और
मुखियाओं के घटी थीं बातें बुरी। याजकों के साथ में
हमारे और साथ में नबियों के और हमारे सभी लोगों के
साथ घटी थीं बातें बुरी। अश्शूर के राजा से लेकर आज
तक वे घटी थीं बातें भयानक!

33किन्तु हे परमेश्वर! जो कुछ भी घटना है साथ
हमारे घटी उसके प्रति न्यायपूर्ण तू रहा। तू तो अच्छा ही
रहा, बुरे तो हम रहे।

34 हमारे राजाओं ने मुखियाओं, याजकों ने और
पूर्वजों ने नहीं पाला तेरी शिक्षाओं को! उन्होंने नहीं
दिया कान तेरे आदेशों, तेरी चेतावनियाँ उन्होंने सुनी ही
नहीं।

35यहाँ तक कि जब पूर्वज हमारे अपने राज्य में रहते
थे, उन्होंने नहीं सेवा की तेरी! छोड़ा उन्होंने नहीं बुरे
कर्मो का करना। जो कुछ भी उत्तम वस्तु उनको तूने
दी थी, उनका रस वे रहे लेते। आनन्द उस धरती का
लेते रहे जो थी सम्पन्न बहुत। और स्थान बहुत सा था
उनके पास! किन्तु उन्होंने नहीं छोड़ी निज बुरी राह।

36और अब हम बने दास हैं; हम दास है उस धरती
पर, जिसको दिया तूने था हमारे पूर्वजों को। तूने यह
धरती थी उनको दी, कि भोगे वे उसका फल और
आनन्द लें उन सभी चीज़ों का जो यहाँ उगती हैं ।

37इस धरती की फसल है भरपूर किन्तु पाप किये
हमने सो हमारी उपज जाती है पास उन राजाओं के
जिनको तूने बिठाया है सिर पर हमारे। हम पर और
पशुओं पर हमारे वे राजा राज करते हैं वे चाहते हैं जैसा
भी वैसा ही करते हैं। हम हैं बहुत कष्ट में।

38सो, सोचकर इन सभी बातों के बारे में हम करते
हैं वाचा एक; जो न बदला जायेगा कभी भी। और इस
वाचा की लिखतम हम लिखते हैं और इस वाचा पर
अंकित करते हैं अपना नाम हाकिम हमारे, लेवी के
वंशज और वे करते हैं हस्ताक्षर लगा कर के उस पर
मुहर।

10 मुहर लगी वाचा पर निम्न लिखित नाम लिखे
थे: हकल्याह का पुत्र राज्यपाल नहेमायाह।
सिदकिय्याह, 2सरायाह, अजर्याह, यिर्मयाह, 3पशहूर,
अमर्याह, मल्किय्याह, 4हत्तूश, शबन्याह, मल्लूक,
5हारीम, मरेमोत, ओबद्याह, 6दानिय्येल, गिन्नतोन, बारुक,
7मशूल्लाम, अबिय्याह, मिय्यामीन, 8माज्याह, बिलगै और
शमायाह। ये उन याजकों के नाम हैं जिन्होंने मुहर लगी
वाचा पर अपने नाम अंकित किये।

9ये उन लेवीवंशियों के नाम हैं जिन्होंने मुहर लगी
वाचा पर अपने नाम अंकित किये: आजन्याह का पुत्र
येशू, हेनादाद का वंशज बिन्नई और कदमिएल 10और
उनके भाइयों के नाम ये थे: शबन्याह, होदियाह, कलीता,
पलायाह, हानान, 11मीका, रहोब, हशब्याह 12जक्कूर,
शेरेब्याह, शकन्याह, 13होदियाह, बानी और बनीन।

14ये नाम उन मुखियाओं के हैं जिन्होंने उस मुहर
लगी वाचा पर अपने नाम अंकित किये: परोश,
पहत-मोआब, एलाम, जत्तू बानी, 15बुन्नी, अजगाद,
बेबै, 16अदोनिय्याह, बिग्वै, आदीन, 17आतेर,
हिजकिय्याह, अज्जूर, 18होदियाह, हाशूम, बेसै, 19हारीफ़,
अनातोत, नोबै, 20मगपिआश, मशूल्लाम, हेजीर,
21मेशजबेल, सादोक, यददू, 22पलत्याह, हानान, अनायाह,
23होशे, हनन्याह, हश्शूब, 24हल्लोहेश, पिलहा, शोबेक,
25रहूम, हशब्ना, माशेयाह, 26अहियाह, हानान, आनान,
27मल्लूक, हारीम, और बाना।

28-29सो अब ये सभी लोग जिनके नाम ऊपर दिये
गये हैं परमेश्वर के सामने यह विशेष प्रतिज्ञा लेतें हैं।
यदि ये अपने वचन का पालन न करें तो उन के साथ
बुरी बातें घटें! ये सभी लोग परमेश्वर के विधान का
पालन करने की प्रतिज्ञा लेते हैं। परमेश्वर का यह
विधान हमें परमेश्वर के सेवक मूसा द्वारा दिया गया
था। ये सभी लोग सभी आदेशों, सभी नियमों और हमारे
यहोवा परमेश्वर के उपदेशों का सावधानीपूर्वक पालन
करने की प्रतिज्ञा लेते हैं। बाकी ये लोग भी प्रतिज्ञा लेते
हैं: याजक लेवीवंशी, द्वारपाल, गायक, यहोवा के भवन
के सेवक, तथा वे सभी लोग जिन्होंने आस-पास रहने
वाले लोगों से, परमेश्वर के नियमों का पालन करने के
लिए, अपने आपको अलग कर लिया था। उन लोगों
की पत्नियाँ, पुत्र-पुत्रियाँ और हर वह व्यक्ति जो सुन

समझ सकता था, अपने भाई बंधुओं, अपने मुखिया के
साथ इस प्रतिज्ञा को अपनाने में सम्मिलित होते हैं कि
परमेश्वर के सेवक मूसा के द्वारा दिये गये विधान का
वे पालन करेंगे। यदि न करें तो उन पर विपत्तियाँ पड़े।
वे सावधानी के साथ अपने स्वामी परमेश्वर के आदेशों,
अध्यादेशों और निर्णयों का पालन करेंगे।

30"हम प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने आस-पास रहने
वाले लोगों के साथ अपनी पुत्रियों का ब्याह नहीं करेगें
और हम यह प्रतिज्ञा भी करते हैं कि उनकी लड़कियों
के साथ अपने लड़कों को नहीं ब्याहेंगे।

31"हम प्रतिज्ञा करते हैं कि सब्त के दिन काम नहीं
करेंगे और यदि हमारे आस-पास रहने वाले लोग सब्त
के दिन बेचने को अनाज या दूसरी वस्तुएँ लायेंगे तो
विश्राम के उस विशेष दिन या किसी भी अन्य विशेष
के दिन, उन वस्तुओं को नहीं खरीदेंगे। हर सातवें बरस
हम न तो अपनी धरती को जोतेंगे और न बोएंगे, तथा
हर सातवें वर्ष चक्र में हम दूसरे लोगों को दिये गये हर
कर्ज को माफ़ कर देंगे।

32"परमेश्वर के भवन का ध्यान रखने के लिये
उसके आदेशों पर चलने के उत्तरदायित्व को हम ग्रहण
करेंगे। हम हर साल एक तिहाई शेकेल हमारे
परमेश्वर के सम्मान में भवन की सेवा, उपासना को
बढ़ावा देने के लिये दिया करेंगे।
33इस धन से उस
विशेष रोटी का खर्च चला करेगा जिसे याजक मन्दिर
की वेदी पर अर्पित करता है। इस धन से ही अन्नबलि
और होमबलि का खर्च उठाया जायेगा। सब्त नये चाँद
के त्यौहार तथा दूसरी सभाओं पर इसी धन से खर्चा
होगा। उन पवित्र चढ़ावों और पापबलियों पर खर्च भी
इस धन से ही किया जायेगा जिनसे इस्राएल के लोग
शुद्ध बनते हैं। इस धन से ही हर उस काम का खर्च
चलेगा जो हमारे परमेश्वर के मन्दिर के लिए आवश्यक
है।

34"हम यानी याजक, लेवीवंशी तथा लोगों ने मिल
कर यह निश्चित करने के लिए पासे फैंके कि हमारे
प्रत्येक परिवार को हर वर्ष एक निश्चित समय हमारे
परमेश्वर के मन्दिर में लकड़ी का उपहार कब लाना
है। वह लकड़ी जिसे हमारे परमेश्वर यहोवा की वेदी
पर जलाया जाता है। हमें इस काम को अवश्य करना
चाहिये क्योंकि यह हमारी व्यवस्था के विधान में लिखा
है।

35"हम अपने फलों के हर पेड़ और अपनी फसल
के पहले फलों को लाने का उत्तरदायित्व भी ग्रहण
करते हैं। हर वर्ष यहोवा के मन्दिर में हम उस फल को
लाकर अर्पित किया करेंगे।

36"क्योंकि व्यवस्था के विधान में यह भी लिखा है
इसलिए हम इसे भी किया करेंगे: हम अपने पहलौठे
पुत्र, पहलौठे गाय के बच्चे, भेड़ों और बकरियों के पहले
छौनो को लेकर परमेश्वर के मन्दिर में आया करेंगे।
उन याजकों के पास हम इन सब को ले जाया करेंगे जो
वहाँ मन्दिर में सेवा आराधना करते हैं।

37"हम परमेश्वर के मन्दिर के भण्डार में याजकों
के पास ये वस्तुएँ भी लाया करेंगे: पहला पिसा खाना,
पहली अन्न-बलियाँ, हमारे सभी पेड़ों के पहले फल,
हमारी नयी दाखमधु और तेल का पहला भाग। हम
लेवीवंशियों के लिये अपनी उपज का दसवाँ हिस्सा भी
दिया करेंगे क्योंकि प्रत्येक नगर में जहाँ हम काम
करते हैं, लेवी वंशी हमसे ये वस्तुएँ लिया करते हैं।

38"लेवीवंशी जब उपज का यह भाग एकत्र करें तो
हारुन के परिवार का एक याजक उनके साथ अवश्य
होना चाहिये, और फिर इन सब वस्तुओं के दसवें
हिस्से को वहाँ से लेकर लेवीवंशियों को चाहिये कि
वे उन्हें हमारे परमेश्वर के मन्दिर में ले आयें और
उन्हें मन्दिर के खजाने की कोठियारों में रख दें।
39इस्राएल के लोगों और लेवीवंशियों को चाहिये कि वे
अपने उपहारों को कोठियारों में ले आयें। उपहार के
अन्न, नयी दाखमधु और तेल को उन्हें वहाँ ले आना
चाहिये। मन्दिर में काम आने वाली सभी वस्तुएँ उन
कोठियारों में रखी जाती हैं और अपने कार्य पर
नियुक्त याजक, गायक और द्वारपालों के कमरे भी
वही थे।

"हम सभी प्रतिज्ञा करते हैं कि हम अपने परमेश्वर
के मन्दिर की देख-रेख किया करेंगे!"

यरूशलेम में नये लोगों का प्रवेश

11 देखो अब इस्राएल के लोगों के मुखिया यरूशलेम
में बस गए। इस्राएल के दूसरे लोगों को यह
निश्चित करना था कि नगर में और कौन लोग बसेंगे।
इसलिए उन्होंने पासे फेंके जिसके अनुसार हर दस
व्यक्तियों में से एक को यरूशलेम के पवित्र नगर में
रहना था और दूसरे नौ व्यक्तियों को अपने-अपने मूल
नगरों में बसना था।
2यरूशलेम में रहने के लिए कुछ
लोगों ने स्वयं अपने आप को प्रस्तुत किया। अपने आप
को स्वयं प्रस्तुत करने के लिए दूसरे व्यक्तियों ने उन्हें
धन्यवाद देते हुए आशीर्वाद दिये।

3ये प्रांतों के वे मुखिया हैं जो यरूशलेम में बस गये।
(कुछ इस्राएल के निवासी कुछ याजक लेवीवंशी मन्दिर
के सेवक और सुलैमान के उन सेवकों के वंशज
अलग-अलग नगरों में अपनी निजी धरती पर यहूदा में
रहा करते थे,
4तथा यहूदा और बिन्यामीन परिवारों के
दूसरे लोग यरूशलेम में ही रह रहे थे।)

यहूदा के वे वंशज जो यरूशलेम में बस गये थे, वे ये
हैं: उज्जियाह का पुत्र अतायाह (उज्जियाह जकर्याह का
पुत्र था, जकर्याह अमर्याह का पुत्र था, और अमर्याह,
शपत्याह का पुत्र था। शपत्याह महललेल का पुत्र था

और महललेल पेरेस का वंशज था)। **5**मासेयाह बारुक
का पुत्र था (और बारुक कोल–होजे का पुत्र था। कोल
होजे हजायाह का पुत्र था। हजायाह योयारीब के पुत्र
अदायाह का पुत्र था। योयारीब का पिता जकर्याह था जो
शिलोई का वंशज था)। **6**पेरेस के जो वंशज यरूशलेम
में रह रहे थे, उनकी संख्या थी चार सौ अड़सठ। वे
सभी लोग शूरवीर थे।

7बिन्यामीन के जो वंशज यरूशलेम में आयें वे ये थे:
सल्लू जो योएद के पुत्र मशूल्लाम का पूत्र था (मशूल्लाम
योएद का पुत्र था। योएद पदायाह का पुत्र था और
पदायाह कोलायाह का पुत्र था। कोलायाह इतीएह के
पुत्र मासेयाह का पुत्र था और इतीएह का पिता यशायाह
था)। **8**जिन लोगों ने यशायाह का अनुसरण किया वे थे
गब्बै और सल्लै। इनके साथ नौ सौ अटठाईस पुरुष थे।
9जिक्री का पुत्र योएल इनका प्रधान था और हस्सनूआ
का पुत्र यहूदा यरूशलेम नगर का उपप्रधान था।

10यरूशलेम में जो याजक बस गए, वे हैं: योयारीब
का पुत्र यदायाह और याकीन, **11**तथा सरायाह जो
हिलकियाह का पुत्र था। (हिल्किय्याह सादोक के पुत्र
मशुल्लाम का पुत्र था और सादोक अहीतूब के पुत्र
मरायोत का पुत्र। अहीतूब परमेश्वर के भवन की
देखभाल करने वाला था)। **12**उनके भाइयों के आठ सौ
बाइस पुरुष, जो भवन के लिये काम किया करते थे।
तथा यरोहाम का पुत्र अदायाह। (यरोहाम, जो अस्सी के
पुत्र पलल्याह का पुत्र था। अस्सी के पिता का नाम
जकर्याह और दादा का नाम पशहूर था। पशहूर जो
मल्किय्याह का पुत्र था) **13**अदायाह और उसके साथियों
की संख्या दो सौ बयालीस थी। ये लोग अपने–अपने
परिवारों के मुखिया थे। अमशै जो अज़रेल का पुत्र था।
(अज़रेल अहजै का पुत्र था। अहजै का पिता मशिल्लेमोत
था। जो इम्मेर का पुत्र था), **14**अमशै और उसके साथी
वीर योद्धा थे। वे संख्या में एक सौ चौबीस थे। हग्गदोलीन
का पुत्र जब्दिएल उनका अधिकारी हुआ करता था।

15ये वे लेवीवंशी हैं, जो यरूशलेम में जा बसे थे:
शमायाह जो हश्शूब का पुत्र था (हश्शूब अज्रीकाम का
पुत्र और हुशब्याह का पोता था। हुशब्याह बुन्नी का पुत्र
था)। **16**शब्बत और योजाबाद (ये दो व्यक्ति लेवीवंशियों
के मुखिया थे। परमेश्वर के भवन के बाहरी कामों के
ये अधिकारी थे)। **17**मत्तन्याह, (मत्तन्याह मीका का पुत्र
था और मीका जब्दी का, तथा जब्दी आसाप का।
आसाप गायक मण्डली का निर्देशक था। आसाप स्तुति
गीत और प्रार्थनाओं के गायन में लोगों की अगुवाई
किया करता था बकबुकियाह (बकबुकियाह अपने
भाइयों के ऊपर दूसरे दर्जे का अधिकारी था)। और
शम्मू का पुत्र अब्दा (शम्मू यदूतून का पोता और गालाल
का पुत्र था)। **18**इस प्रकार दो सौ चौरासी लेवीवंशी
यरूशलेम के पवित्र नगर में जा बसे थे।

19जो द्वारपाल यरूशलेम चले गये थे, उनके नाम ये
थे: अक्कूब, तलमोन, और उनके साथी। ये लोग नगर–
द्वारों पर नजर रखते हुए उनकी रखवाली किया करते
थे। ये संख्या में एक सौ बहत्तर थे।

20इस्राएल के दूसरे लोग, अन्य याजक और लेवीवंशी
यहूदा के सभी नगरों में रहने लगे। हर कोई व्यक्ति उस
धरती पर रहा करता था जो उनके पूर्वजों की थी।
21मन्दिर में सेवा आराधना करने वाले लोग ओपेल की
पहाड़ी पर बस गये। सीहा और गिश्पा मन्दिर के उन
सेवकों के मुखिया थे।

22यरूशलेम में लेवीवंशियों के ऊपर उज्जी को
अधिकारी बनाया गया। उज्जी बानी का पुत्र था। (बानी,
मीका का पड़पोता, मत्तन्याह का पोता, और हशब्याह
का पुत्र था)। उज्जी आसाप का वंशज था। आसाप के
वंशज वे गायक थे जिन पर परमेश्वर के मन्दिर की
सेवा का भार था। **23**ये गायक राजा की आज्ञाओं का
पालन किया करते थे। राजा की आज्ञाएँ इन गायकों
को बताती थीं कि उन्हें प्रतिदिन क्या करना है। **24**वह
व्यक्ति जो राजा को लोगों से सम्बन्धित मामलों में
सलाह दिया करता था वह था पतहियाह (पतहियाह
जेरह के वंशज मशेजबेल का पुत्र था और जेरह यहूदा
का पुत्र था)।

25यहूदा के लोग इन कस्बों में बस गये: किर्यतर्बा
और उसके आस–पास के छोटे–छोटे गाँव, दिबोन और
उसके आसपास के छोटे–छोटे गाँव यकब्सेल और उसके
आसपास के छोटे–छोटे गाँव **26**तथा येशू, मोलादा,
बेतपेलेत, **27**हसर्यूआल बेरशेबा तथा उस के आसपास
के छोटे–छोटे गाँव **28**और सिकलग, मकोना और उसके
आसपास के छोटे गाँव। **29**एन्निम्मोन, सोरा, यर्मूत,
30जानोह और अदुल्लाम तथा उसके आसपास के छोटे
छोटे गाँव। लाकीश और उसके आसपास के खेतो,
अजेका और उसके आसपास के छोटे–छोटे गाँव। इस
प्रकार बरशेबा

से लेकर हिन्नौम की तराई तक के इलाके में यहूदा
के लोग रहने लगे।

31जिन स्थानों में बिन्यामीन के वंशज रहने लगे थे,
वे ये थे: गेबा मिकमश, अय्या, बेतेल, ओर उसके
आस–पास के छोटे –छोटे गाँव, **32**अनातोत, नोब,
अनन्याह **33**हासोर रामा, गित्तैम, **34**हादीद, सबोईम,
नबल्लत, **35**लोद, ओनो तथा कारीगरों की तराई।
36लेवीवंशियों के कुछ समुदाय जो यहूदा में रहा करते
थे बिन्यामीन की धरती पर बस गये थे।

याजक और लेवीवंशी

12 जो याजक और लेवीवंशी यहूदा की धरती पर
लौट कर वापस आये थे, वे ये थे। वे शालतीएल
के पुत्र जरुब्बाबेल तथा येशू के साथ लौटे थे, उनके

नामों की सूची यह है: सरायाह, यिर्मयाह, एज्रा, 2अमर्याह,
मल्लूक, हत्तूश, 3शकन्याह, रहूम, मरेमोत, 4इद्दो,
गिन्तोई, अबियाह, 5मिय्यामीन, माद्याह, बिल्गा, 6शमायाह,
योआरीब, यदायाह, 7सल्लू, आमोक, हिल्किय्याह और
यदायाह। ये लोग याजकों और उनके सम्बन्धियों के
मुखिया थे। येशू के दिनों में ये ही उनके मुखिया हुआ
करते थे।

8लेवीवंशी लोग ये थे: येशु बिन्नुई, कदमिएल, शेरेब्याह,
यहूदा और मत्तन्याह भी। मत्तन्याह के सम्बन्धियों समेत
ये लोग परमेश्वर के स्तुति गीतों के अधिकारी थे।
9बकबुकियाह और उन्नो, इन लेवीवंशियों के सम्बन्धी
थे। ये दोनों सेवा आराधना के अवसरों पर उनके
सामने खड़े रहा करते थे। 10येशू योयाकीम का पिता
था और योयाकीम एल्याशीब का पिता था और एल्याशीब
के योयादा नाम का पुत्र पैदा हुआ। 11फिर योयादा से
योनातान और योनातान से यहूदा पैदा हुआ।

12योयाकीम के दिनों में ये पुरुष याजकों के परिवारों
के मुखिया हुआ करते थे:

शरायाह के घराने का मुखिया मरायाह था
यिर्मयाह के घराने का मुखिया हनन्याह था।
13 मशूलाम एज्रा के घराने का मुखिया था
अर्मयाह के घराने का मुखिया था यहोहानान।
14 योनातान मल्लूक के घराने का मुखिया था
योसेप शबन्याह के घराने का मुखिया था।
15 अदना हारीम के घराने का मुखिया था।
हेलैक मेरेमोत के घराने का मुखिया था।
16 जकर्याह इद्दो के घराने का मुखिया था।
मशुल्लाम गिन्नतोन के घराने का मुखिया था।
17 जिक्री अबियाह के घराने का मुखिया था।
पिलतै मिन्यामीन और मोअद्याह के घराने का
मुखिया था।
18 शम्मू बिल्गा के घराने का शम्मू
बिल्गा के घराने का मुखिया था।
यहोनातान शामायह के घराने का मुखिया था।
19 मतैन योयारीब के घराने का मुखिया था।
उजी, यदायाह के घराने का मुखिया था।
20 कल्लै सल्लै के घराने का मुखिया था।
एबेर आमोक के घराने का मुखिया था।
21 हशब्याह हिल्किय्याह के घराने का मुखियाथा
और नतनेल यदायाह के घराने का मुखिया
था।

22फारस के राजा दारा के शासन काल में लेवी
परिवारों के मुखियाओं और याजक घरानों के
मुखियाओं के नाम एल्याशीब, योयादा, योहानान तथा
यहूदा के दिनों में लिखे गये। 23लेवी परिवार के वंशजों
के बीच जो परिवार के मुखिया थे, उनके नाम
एल्याशीब के पुत्र योहानाम तक इतिहास की पुस्तक
में लिखे गये।

24लेवियों के मुखियाओं के नाम ये थे: हशब्याह,
शेरेब्याह, कदमिएल का पुत्र येशू उसके साथी। उनके
भाई परमेश्वर को आदर देने के लिए स्तुतिगान के
वास्ते उनके सामने खड़ा रहा करते थे। वे आमने–सामने
इस तरह खड़े होते थे कि एक गायक समूह दूसरे
गायक समूह के उत्तर में गीत गाता था। परमेश्वर के
भक्त दाऊद की ऐसी ही आज्ञा थी।

25जो द्वारपाल द्वारों के पास के कोठियारों पर पहरा
देते थे, वे ये थे: मत्तन्याह, बकबुकियाह, ओबाद्याह,
मशुल्लाम, तलमोन और अक्कूब। 26ये द्वारपाल
योयाकीम के दिनों में सेवा कार्य किया करते थे। योयाकीम
योसादाक के पुत्र येशू का पुत्र था। इन द्वारपालों ने ही
राज्यपाल नहेमायाह और याजक और विद्वान एज्रा के
दिनों में सेवा कार्य किया था।

यरूशलेम के परकोटे का समर्पित किया जाना

27लोगों ने यरूशलेम की दीवार का समर्पण किया।
उन्होंने सभी लेवियों को यरूशलेम में बुलाया। सो लेवी
जिस किसी नगर में भी रह रहे थे, वहाँ से वे आये।
यरूशलेम की दीवार के समर्पण को मनाने के लिए वे
यरूशलेम आये। परमेश्वर को धन्यवाद देने और
स्तुतिगीत गाने के लिए लेवीवंशी वहाँ आये। उन्होंने
अपनी झाँझ, सारंगी और वीणाएँ बजाई।

28-29इसके अतिरिक्त जितने भी और गायक थे, वे
भी यरूशलेम आये। वे गायक यरूशलेम के आसपास
के नगरों से आये थे। वे नतोपातियों के गावों से, बेत–
गिलगाल से, गेबा से और अजमाबेत के नगरों से आये
थे। गायको, ने यरूशलेम के इर्द–गिर्द अपने लिए
छोटी–छोटी बस्तियाँ बना रखी थीं।

30इस प्रकार याजकों और लेवियों ने एक समारोह
के द्वारा अपने अपने को शुद्ध किया। फिर एक समारोह
के द्वारा उन्होंने लोगों, द्वारों और यरूशलेम के परकोटे
को भी शुद्ध किया।

31फिर मैंने यहूदा के मुखियाओं से कहा कि वे ऊपर
जा कर परकोटे के शिखर पर खड़े हो जायें। मैंने
परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिये दो बड़ी
गायक–मण्डलियों का चुनाव भी किया। इनमें से एक
गायक मण्डली को कुरडी–द्वार की ओर दाहिनी तरफ
परकोटे के शिखर पर जाना आरम्भ था। 32होशायाह,
और यहूदा के आधे मुखिया उन गायकों के पीछे हो
लिये। 33अजर्याह, एज्रा, मशुल्लाम, 34यहूदा, बिन्यामीन,
शमायाह, और यिर्मयाह भी उनके पीछे हो लिये थे।
35तुरही लिये कुछ याजक भी दीवार पर उनका अनुसरण
करते हुए गये। जकर्याह भी उनके पीछे–पीछे था।
(जकर्याह योहानान का पुत्र था। योहानान शमायाह का

पुत्र था। शमायाह मत्तन्याह का पुत्र था। मत्तन्याह मीकायाह
का पुत्र था। मीकायाह जक्कूर का पुत्र था और जक्कूर
आसाप का पुत्र था।) 36वहाँ जकरिया के भाई शमायाह,
अज़रेल, मिल्लै, गिल्लै, माऐ, नतनेल, यहूदा, और हनानी
भी मौजूद थे। उनके पास परमेश्वर के पुरुष, दाऊद के
बनाये हुए बाजे थे। परकोटे की दीवार को समर्पित
करने के लिए जो लोग वहाँ थे, उनके समूह की
अगुवाई, विद्वान एज्रा ने की। 37और वे स्रोत-द्वार पर
चले गये। फिर वे सामने की सीढ़ियों से होते हुए दाऊद
के नगर पैदल ही गये। फिर वे नगर परकोटे के शिखर
पर जा पहुँचे और इस तरह दाऊद के घर पर से होते
हुए वे पूर्वी जल द्वार पर पहुँच गए।

38गायकों की दूसरी मण्डली बांई ओर दूसरी दिशा में
चल पड़ी। वे जब परकोटे के शिखर की ओर जा रहे
थे, मैं उनके पीछे हो लिया। आधे लोग भी उनके पीछे
हो लिये। भट्ठों के मीनारों को पीछे छोड़ते हुए वे चौड़े
परकोटे पर चले गये। 39इसके बाद वे इन द्वारों पर
गये-एप्रैम द्वार, पुराना दरवाजा और मछली फाटक
और फिर वे हननेल और हम्मेआ के बुर्जो पर गये। वे
भेड़ द्वार तक जा पहुँचे और पहरेदारों के द्वार पर जा
कर रुक गये। 40फिर गायकों की वे दोनों मण्डलियाँ
परमेश्वर के मन्दिर में अपने-अपने स्थानों को चली
गयीं और मैं अपने स्थान पर खड़ा हो गया तथा आधे
हाकिम मन्दिर में अपने-अपने स्थानों पर जा खड़े हुए।
41फिर इसके बाद अपने-अपने स्थानों पर जो याजक
जा खड़े हुए थे, उनके नाम हैं-एल्याकिम, मासेमाह,
मिन्यामीन, मीकायाह, एल्योएनै, जकर्याह और हनन्याह।
उन याजकों ने अपनी-अपनी तुरहियाँ भी ले रखी थीं।
42इसके बाद ये याजक भी मन्दिर में अपने-अपने
स्थानों पर आ खड़े हुए: मासेयाह, शमायाह, एलियाजर,
उज्जी, यहोहानाम, मल्कियाह, एलाम और एजेर।

फिर दोनो, गायक मण्डलियों ने यिज्रहियाह की अगुवाई
में गाना आरम्भ किया। 43सो उस विशेष दिन, याजकों
ने बहुत सी बलियाँ चढ़ाई। हर कोई बहुत प्रसन्न था।
परमेश्वर ने हर किसी को आनन्दित किया था। यहाँ
तक कि स्त्रियाँ और बच्चे तक बहुत उल्लसित और
प्रसन्न थे। दूर दराज के लोग भी यरूशलेम से आते हुए
आनन्दपूर्ण शोर को सुन सकते थे।

44उस दिन मुखियाओं ने कोठियारों के अधिकारियों
की नियुक्ति की। ये कोठियार उन उपहार को रखने
के लिए थे जिन्हें लोग अपने पहले फलों और अपनी
फसल और आय के दसवें हिस्से के रुप में लाया करते
थे। व्यवस्था के विधान के अनुसार लोगों को नगर के
चारों ओर के खेतों और बगीचों से उपज का एक
हिस्सा, याजकों और लेवियों के लिये लाना चाहिये।
यहूदा के लोग जो याजक और लेवी सेवा कार्य करते थे
उनके लिए ऐसा करने में प्रसन्नता का अनुभव करते
थे। 45याजकों और लेवियों ने अपने परमेश्वर के लिये
अपना कर्तव्य पालन किया था। उन्होंने वे समारोह
किये थे जिनसे लोग पवित्र हुए। गायकों और द्वारपालों
ने भी अपने हिस्से का काम किया। दाऊद और उस के
पुत्र सुलैमान ने जो भी आज्ञाएँ दी थीं, उन्होंने सब कुछ
वैसा ही किया था। 46(बहुत दिनों पहले दाऊद और
आसाप के दिनों में वह धन्यवाद के गीतों और परमेश्वर
की स्तुतियों तथा गायकों के मुखिया हुआ करते थे।)

47सो जरुब्बबेल और नहेमायाह के दिनों में गायकों
और द्वारपालों के रखरखाव के लिये इस्राएल के सभी
लोग प्रतिदिन दान दिया करते थे। दूसरे लेवियों के लिए
भी वे विशेष दान दिया करते थे और फिर लेवी उस में
से हारुन के वंशजों याजकों के लिये विशेष योगदान
दिया करते थे।

नहेमायाह के अंतिम आदेश

13 उस दिन मूसा की पुस्तक का ऊँचे स्वर में पाठ
किया गया ताकि सभी लोग उसे सुन लें। मूसा
की पुस्तक में उन्हें यह नियम लिखा हुआ मिला: किसी
भी अम्मोनी व्यक्ति को और किसी भी मोआबी व्यक्ति
को परमेश्वर की सभाओं में सम्मिलित न होने दिया
जाये। 2यह नियम इस लिये लिखा गया था कि वे इस्राएल
के लोगों को भोजन या जल नहीं दिया करते थे, तथा वे
इस्राएल के लोगों को शाप देने के लिए बालाम को धन
दिया17 करते थे। किन्तु हमारे परमेश्वर ने उस शाप
को हमारे लिए वरदान में बदल दिया 3सो इस्राएल के
लोगों ने इस नियम को सुन कर इसका पालन किया
और पराये लोगों के वंशजों को इस्राएल से अलग कर
दिया।

4-5किन्तु ऐसा होने से पहले एल्याशीब ने तोबियाह
को मंदिर में एक बड़ी सी कोठरी दे दी। एल्याशीब
परमेश्वर के मन्दिर के भण्डार घरों का अधिकारी
याजक था, तथा एल्याशीब तोबियाह का घनिष्ठ मित्र
भी था। पहले उस कोठरी का प्रयोग भेंट में चढ़ाये गये
अन्न, सुगन्ध और मन्दिर के बर्तनों तथा अन्य वस्तुओं
के रखने के लिये किया जाता था। उस कोठरी में
लेवियों, गायकों और द्वारपालों के लिये अन्न के दसवें
भाग, नयी दाखमधु और तेल भी रखा करते थे। याजकों
को दिये गये उपहार भी उस कोठरी में रखे जाते थे।
किन्तु एल्याशीब ने उस कोठरी को तोबियाह को दे
दिया था।

6जिस समय यह सब कुछ हुआ था, उस समय मैं
यरूशलेम में नहीं था। मैं बाबेल के राजा के पास वापस
गया हुआ था। जब बाबेल के राजा अर्तक्षत्र के शासन
का बत्तीसवाँ साल था, तब मैं बाबेल गया था। बाद में
मैंने राजा से यरूशलेम वापस लौट जाने की अनुमति
माँगी 7और इस तरह मैं वापस यरूशलेम लौट आया।

यरूशलेम में एल्याशीब के इस दुखद करतब के बारे में
मैंने सुना कि एल्याशीब ने हमारे परमेश्वर के मन्दिर
के दालान की एक कोठरी तोबियाह को दे दी है।
8एल्याशीब ने जो किया था, उससे मैं बहुत क्रोधित था।
सो मैंने तोबियाह की वस्तुएँ उस कोठरी से बाहर निकाल
फेंकी। 9उन कोठरियों को स्वच्छ और पवित्र बनाने के
लिये मैंने आदेश दिये और फिर उन कोठरियों में मैंने
मंदिर के पात्र तथा अन्य वस्तुएँ भेंट में चढ़ाया हुआ
अन्न और सुगन्धित द्रव्य फिर से वापस रखवा दिये।

10मैंने यह भी सुना कि लोगों ने लेवियों को उनका
हिस्सा नहीं दिया है जिससे लेवीवंशी और गायक अपने
खेतों में काम करने के लिये वापस चले गये हैं। 11सो
मैंने उन अधिकारियों से कहा कि वे गलत है। मैंने उन
से पूछा, "तुमने परमेश्वर के मन्दिर की देखभाल क्यों
नहीं की?" मैंने सभी लेवी वंशियों को इकट्ठा किया
और मन्दिर में उनके स्थानों और उनके कामों पर
वापस लौट आने को कहा। 12इसके बाद यहूदा का हर
कोई व्यक्ति उनके दसवें हिस्से का अन्न, नयी दाखमधु
और तेल मन्दिर में लाने लगा। उन वस्तुओं को भण्डार
गृहों में रख दिया जाता था।

13मैंने इन पुरुषों को भण्डार गृहों का कोठियारी
नियुक्त किया: याजक, शेलेम्याह, विद्वान सादोक तथा
पादायाह नाम का एक लेवी। साथ ही मैंने पत्तन्याह के
पोते और जक्कूर के पुत्र हानान को उनका सहायक
नियुक्त कर दिया। मैं जानता था कि उन व्यक्तियों का
विश्वास किया जा सकता था। अपने से सम्बन्धित लोगों
को सामान देना, उनका काम था।

14हे परमेश्वर, मेरे किये कामों के लिये तू मुझे याद
रख और अपने परमेश्वर के मन्दिर तथा उसके सेवा
कार्यों के लिये विश्वास के साथ मैंने जो कुछ किया है,
उस सब कुछ को तू मत भुलाना।

15उन्हीं दिनों यहूदा में मैंने देखा कि लोग सब्त के
दिन भी काम करते हैं। मैंने देखा कि लोग दाखमधु
बनाने के लिए अँगूरों का रस निकाल रहे है। मैंने लोगों
को अनाज लाते और उसे गधों पर लादते देखा। मैंने
लोगों को नगर में अँगूर, अंजीर तथा हर तरह की
वस्तुएँ ले कर आते हुए देखा। वे इन सब वस्तुओं को
सब्त के दिन यरूशलेम में ला रहे थे। सो इसके लिए
मैंने उन्हें चेतावनी दी। मैंने उनसे कह दिया कि उन्हें
सब्त के दिन खाने की वस्तुएँ कदापि नहीं बेचनी
चाहिए।

16यरूशलेम में कुछ सीरी नगर के लोग भी रहा
करते थे। वे लोग मछली और दूसरी तरह की अन्य
वस्तुएँ यरूशलेम में लाया करते और उन्हें सब्त के दिन
बेचा करते और यहूदी उन वस्तुओं के खरीदा करते
थे। 17मैंने यहूदा के महत्त्वपूर्ण लोगों से कहा, कि वे
ठीक नहीं कर रहे हैं। उन महत्त्वपूर्ण लोगों से मैंने
कहा, "तुम यह बहुत बुरा काम कर रहे हो। तुम सब्त
के दिन को भ्रष्ट कर रहे हो। तुम सब्त के दिन को
एक आम दिन जैसा बनाये डाल रहे हो। 18तुम्हें यह
ज्ञान है कि तुम्हारे पूर्वजों ने ऐसे ही काम किये थे।
इसीलिए हमारे परमेश्वर ने हम पर और हमारे नगर
पर विपत्तियाँ भेजी थीं और विनाश ढाया था। अब तुम
लोग तो वैसे काम और भी अधिक कर रहे हो, जिससे
इस्राएल पर वैसी ही बुरी बातें और अधिक घटेंगी क्योंकि
तुम सब्त के दिन को बर्बाद कर रहे हो और इसे ऐसा
बनाये डाल रहे हो जैसे यह कोई महत्त्वपूर्ण दिन ही नहीं
है।"

19सो हर शुक्रवार की शाम को साँझ होने से पहले
ही मैंने यह किया कि द्वारपालों को आज्ञा देकर यरूशलेम
के द्वार बंद करवा कर उन पर ताले डलवा दिये। मैंने
यह आज्ञा भी दे दी कि जब तक सब्त का दिन पूरा न
हो जाये द्वार न खोले जायें। कुछ अपने ही लोग मैंने द्वारों
पर नियुक्त कर दिये। उन लोगों को यह आदेश दे दिया
गया था कि सब्त के दिन यरूशलेम में कोई भी माल
असबाब न आने पाये इसे वे सुनिश्चित कर लें।

20एक आध बार तो व्यापारियों और सौदागरों को
यरूशलेम से बाहर ही रात गुजारनी पड़ी। 21किन्तु मैंने
उन व्यापारियों और सौदागरों को चेतावनी दे दी। मैंने
उनसे कहा, "परकोटे की दीवार के आगे न ठहरा
करो और यदि तुम फिर ऐसा करोगे तो मैं तुम्हें बन्दी
बना लूँगा।" सो उस दिन के बाद से सब्त के दिन अपना
सामान बेचने के लिए वे फिर कभी नहीं आये।

22फिर मैंने लेवीवंशियों को आदेश दिया कि वे स्वयं
को पवित्र करें। ऐसा कर चुकने के बाद ही उन्हें द्वारों
के पहरे पर जाना था। यह इसलिये किया गया कि सब्त
के दिन को एक पवित्र दिन के रुप में रखा गया है, इसे
सुनिश्चित कर लिया जाये।

हे परमेश्वर! इन कामों को करने के लिए तू मुझे
याद रख। मेरे प्रति दयालु हो और मुझ पर अपना महान
प्रेम प्रकट कर!

23उन्हीं दिनों मैंने यह भी देखा कि कुछ यहूदी पुरुषों
ने आशदोद, अम्मोन और मोआब प्रदेशों की स्त्रियों से
विवाह किया हुआ है, 24और उन विवाहों से उत्पन्न हुए
आधे बच्चे तो यहूदी भाषा को बोलना तक नहीं जानते
हैं। वे बच्चे अश्दोद, अम्मोन और मोआब की बोली
बोलते थे। 25सो मैंने उन लोगों से कहा कि वे गलती पर
हैं। उन पर परमेश्वर का कहर बरसा हो। कुछ लोगों
पर तो मैं चोट ही कर बैठा और मैंने उनके बाल
उखाड़ लिये। परमेश्वर के नाम पर एक प्रतिज्ञा करने
के लिए मैंने उन पर दबाव डाला। मैंने उनसे कहा,
"उन पराये लोगों के पुत्रों के साथ तुम्हें अपनी पुत्रियों
को ब्याह नहीं करना है और उन पराये लोगों की
पुत्रियों को भी तुम्हें अपने पुत्रों से ब्याह नहीं करने देना

है। उन लोगों की पुत्रियों के साथ तुम्हें ब्याह नहीं
करना है। 26तुम जानते हो कि सुलैमान से इसी प्रकार
के विवाहों ने पाप करवाया था। तुम जानते हो कि
किसी भी राष्ट्र में सुलैमान जैसा महान कोई राजा नहीं
हुआ। सुलैमान को परमेश्वर प्रेम करता था और
परमेश्वर ने ही सुलैमान को समूचे इस्राएल का राजा
बनाया था। किन्तु इतना होने पर भी विजातीय पत्नियों
के कारण सुलैमान तक को पाप करने पड़े 27और अब
क्या, हम तुम्हारी सुनें और वैसा ही भयानक पाप करें
और विजाति औरतों के साथ विवाह करके अपने
परमेश्वर के प्रति सच्चे नहीं रहे।"

28योयादा का एक पुत्र होरोन के सम्बल्लत का दामाद
था। योयादा महायाजक एल्याशीब का पुत्र था। सो मैंने
योयादा के उस पुत्र पर दबाव डाला कि वह मेरे पास से
भाग जाये। 29हे मेरे परमेश्वर! उन्हें याद रख क्योंकि
उन्होंने याजकपन को भ्रष्ट किया था। उन्होंने याजकपन
को ऐसा बना दिया था जैसे उसका कोई महत्व ही न
हो। तूने याजकों और लेवियों के साथ जो वाचा की थी,
उन्होंने उसका पालन नहीं किया। 30सो मैंने हर किसी
बाहरी वस्तु से याजकों और लेवियों को पवित्र एवं
स्वच्छ बना दिया है तथा मैंने प्रत्येक पुरुष को उसके
अपने कर्तव्य और दायित्व भी सौंपे हैं। 31मैंने लकड़ी
के उपहारों और एक निश्चित समय पर पहले फलों
को लाने सम्बन्धी योजनाएँ भी बना दी हैं।

हे मेरे परमेश्वर! इन अच्छे कामों के लिये तू मुझे याद रख।

एस्तेर

महारानी वशती द्वारा राजा की आज्ञा का उल्लंघन

1 यह उन दिनों की बात है जब क्षयर्ष नाम का राजा
राज्य किया करता था। भारत से लेकर कूश के
एक सौ सत्ताईस प्रांतों पर उसका राज्य था। **2**महाराजा
क्षयर्ष, शूशन नाम की नगरी, जो राजधानी हुआ करती
थी, में अपने सिंहासन से शासन चलाया करता था।
3अपने शासन के तीसरे वर्ष क्षयर्ष ने अपने
अधिकारियों और मुखियाओं को एक भोज दिया।
फारस और मादै के सेना नायक और दूसरे महत्वपूर्ण
मुखिया उस भोज में मौजूद थे। **4**यह भोज एक सौ
अस्सी दिन तक चला। इस समय के दौरान महाराजा
क्षयर्ष अपने राज्य के विपुल वैभव का लगातार प्रदर्शन
करता रहा। वह हर किसी को अपने महल की सम्पत्ति
और उसका भव्य सौन्दर्य दिखाता रहा। **5**उसके बाद
जब एक सौ अस्सी दिन का यह भोज समाप्त हुआ तो,
महाराजा क्षयर्ष ने एक और भोज दिया जो सात दिन
तक चला। इस भोज का आयोजन महल के भीतरी
बगीचे में किया गया था। भोज में शूशन राजधानी नगरी
के सभी लोगों को बुलाया गया था। इनमें महत्वपूर्ण से
महत्वपूर्ण और जिनका कोई भी महत्व नहीं था, ऐसे
साधारण लोग भी बुलाये गये थे।

6उसके भीतरी बगीचे में सफेद और नीले रंग के
कपड़े, कमरे के चारों ओर लगे थे। उन कपड़ों को
सफेद सूत और बैंगनी रंग की डोरियों से चाँदी के
छल्लो और संगमरमर के खम्भों पर टाँका गया था।
वहाँ सोने और चाँदी की चौकियाँ थीं। ये चौकियाँ लाल
और सफेद रंग की ऐसी स्फटिक की भूमितल में जड़ी
हुई थीं जिसमें संगमरमर, प्रकेलास, सीप और दूसरे
मूल्यवान पत्थर जड़े थे। **7**सोने के प्यालों में दाखमधु
परोसा गया था। हर प्याला एक दूसरे से अलग था। वहाँ
राजा का दाखमधु पर्याप्त मात्रा में था। कारण यह था
कि वह राजा बहुत उदार था। **8**महाराजा ने अपने
सेवकों को आज्ञा दे रखी थी कि हर किसी मेहमान
को, जितना दाखमधु वह चाहे, उतनी दिया जाये और
दाखमधु परोसने वालों ने राजा के आदेश का पालन
किया था। **9**राजा के महल में ही महारानी वशती ने भी
स्त्रियों को एक भोज दिया। **10-11**भोज के सातवें दिन
महाराजा क्षयर्ष दाखमधु पीने के कारण मग्न था। उसने
उन सात खोजों को आज्ञा दी जो उसकी सेवा किया
करते थे। इन खोजों के नाम थे: महूमान, बिजता,
हबौना, बिगता, अबगता, जेतेर और कर्कस। उन सातों
खोजों को महाराजा ने आज्ञा दी कि वे राजमुकुट
धारण किये हुए महारानी वशती को उसके पास ले
आयें। उसे इसलिए आना था कि वह मुखियाओं और
महत्वपूर्ण लोगों को अपनी सुन्दरता दिखा सके। वह
सचमुच बहुत सुन्दर थी।

12किन्तु उन सेवकों ने जब राजा के आदेश की बात
महारानी वशती से कही तो उसने वहाँ जाने से मना
कर दिया। इस पर वह राजा बहुत क्रोधित हुआ। **13-14**यह
एक परम्परा थी कि राजा को नियमों और दण्ड के
बारे में विद्वानों की सलाह लेनी होती थी। सो महाराजा
क्षयर्ष ने नियम को समझने वाले बुद्धिमान पुरुषों से
बातचीत की। ये ज्ञानी पुरुष महाराजा के बहुत निकट
थे। इनके नाम थे: कर्शना, शेतार, अदमाता, तर्शीश,
मेरेस, मर्सना और ममूकान। ये सातों फारस और मादै
के बहुत महत्वपूर्ण अधिकारी हुआ करते थे। इनके
पास राजा से मिलने का विशेष अधिकार था। राज्य में
ये अत्यन्त उच्च अधिकारी थे। **15**राजा ने उन लोगों से
पूछा, "महारानी वशती के साथ क्या किया जाये? इस
बारे में नियम क्या कहता है? उसने महाराजा क्षयर्ष की
उस आज्ञा को मानने से मना कर दिया जिसे खोजे
उसके पास ले गये थे।"

16इस पर अन्य अधिकारियों की उपस्थिति में महाराजा
से ममूकान ने कहा, "महारानी वशती ने अपराध किया
है। महारानी ने महाराजा के साथ-साथ सभी मुखियाओं
और महाराजा क्षयर्ष के सभी प्रदेशों के लोगों के विरुद्ध
अपराध किया है। **17**मैं ऐसा इसलिये कहता हूँ कि दूसरी
स्त्रियाँ जो महारानी वशती ने किया है, उसे जब सुनेंगी
तो वे अपने पतियों की आज्ञा मानना बंद कर देंगी। वे
अपने पतियों से कहेंगी, 'महाराजा क्षयर्ष ने महारानी
वशती को अपने पास लाने की आज्ञा दी थी किन्तु
उसने आने से मना कर दिया।'"

18"आज फारस और मादै के मुखियाओं की पत्नियों
ने, रानी ने जो किया था, सुन लिया है और देखो अब वे
स्त्रियाँ भी जो कुछ महारानी ने किया है, उससे प्रभावित
होंगी। वे स्त्रियाँ राजाओं के महत्वपूर्ण मुखियाओं के

साथ वैसा ही करेंगी और इस तरह बहुत अधिक अनादर
और क्रोध फैल जायेगा।
19"सो यदि महाराजा को अच्छा लगे तो एक सुझाव
यह है: महाराजा को एक राज-आज्ञा देनी चाहिए और
उसे फारस तथा मादै के नियम में लिख दिया जाना
चाहिए फारस और मादै का नियम बदला तो जा नहीं
सकता है। राजा की आज्ञा यह होनी चाहिये कि महाराजा
क्षयर्ष के सामने वशती अब कभी न आये। साथ ही
महाराजा को रानी का पद भी किसी ऐसी स्त्री को दे
देना चाहिए जो उससे उत्तम हो। 20फिर जब राजा की
यह आज्ञा उसके विशाल राज्य के सभी भागों में घोषित
की जायेगी तो सभी स्त्रियाँ अपने पतियों का आदर
करने लगेंगी। महत्वपूर्ण से महत्वपूर्ण और साधारण से
साधारण सभी स्त्रियाँ अपने पतियों का आदर करने
लगेंगी।"
21इस सुझाव से महाराजा और उसके बड़े-बड़े
अधिकारी सभी प्रसन्न हुए। सो महाराजा क्षयर्ष ने वैसा
ही किया जैसा ममूकान ने सुझाया था। 22महाराजा
क्षयर्ष ने अपने राज्य के सभी भागों में पत्र भिजवा दिये।
हर प्रांत में जो पत्र भेजा गया, वह उसी प्रांत की भाषा में
लिखा गया था। हर जाति में उसने वह पत्र भिजवा
दिया। यह पत्र उनकी अपनी भाषा में ही लिखे गये थे।
जन सामान्य की भाषा में उन पत्रों में घोषित किया गया
था कि अपने-अपने परिवार का हर व्यक्ति शासक है।

एस्तेर महारानी बनायी गयी

2 आगे चलकर महाराजा क्षयर्ष का क्रोध शांत हुआ
सो उसे वशती और वशती के कार्य याद आने
लगे। वशती के बारे में उसने जो आदेश दिया था, वह
भी उसे याद आया। 2इसके बाद राजा के निजी सेवकों
ने उसे एक सुझाव दी। उन्होंने कहा, "राजा के लिए
सुंदर कुँवारी कन्याओं की खोज करो। 3राजा को अपने
राज्य के हर प्रांत में एक मुखिया का चुनाव करना
चाहिए। फिर उन मुखियाओं को चाहिए कि वे हर
कुँवारी कन्या को शूशन के राजधानी नगर में लेकर
आयें। उन कन्याओं को राजा की स्त्रियों के समूह में
रखा जाये। वे हेगे की देख-रेख में रखी जायेंगी। हेगे
महाराजा का खोजा था, वह स्त्रियों का प्रबंधक था।
फिर उन्हें सौन्दर्य प्रसाधन दिये जायें। 4फिर वह लड़की
जो राजा को भाये, वशती के स्थान पर राजा की नई
महारानी बना दी जाये।" राजा को यह सुझाव बहुत
अच्छा लगा। सो उसने इसे स्वीकार कर लिया।
5अब देखो, बिन्यामीन परिवार समूह का मोर्दकै नाम
का एक यहूदी वहाँ रहा करता था। जो शूशन राजधानी
नगर का निवासी था। मोर्दकै याईर का पुत्र था और
याईर शिमी का पुत्र था और शिमी कीश का पुत्र था।
शूशन राजधानी नगर में रहता था। 6उस को यरूशलेम
से बाबेल का राजा नबूकदनेस्सर बंदी बना कर ले गया
था। वह यहूदा के राजा यकोन्याह के साथ उस दल में
था जिसे बंदी बना लिया गया था। 7मोर्दकै के हदस्सा
नाम की एक रिश्ते में बहन थी। वह अनाथ थी। न
उसके बाप था, न माँ। सो मोर्दकै उसका ध्यान रखता
था। मोर्दकै ने उसके माँ-बाप के मरने के बाद उसे
अपनी बेटी के रूप में गोद ले लिया था। हदस्सा का
नाम एस्तेर भी था। एस्तेर का मुख और उसकी शरीर
रचना बहुत सुंदर थी।
8जब राजा का आदेश सुनाया गया तो शूशन के
राजधानी नगर में बहुत सी लड़कियों को लाया गया
और उन्हें हेगे की देखभाल में रख दिया गया। एस्तेर
इन्हीं लड़कियों में से एक थी। एस्तेर को राजा के महल
में ले जाकर हेगे की देखभाल में रख दिया गया। हेगे
राजा के रनवास का अधिकारी था। 9हेगे को एस्तेर
बहुत अच्छी लगी। वह उसकी कृपा पात्र बन गयी। सो
हेगे ने एस्तेर को शीघ्र ही सौन्दर्य उपचार दिये और उसे
विशेष भोजन प्रदान किया। हेगे ने राजा के महल से
सात दासियाँ चुनीं और उन्हें एस्तेर को दे दिया। और
इसके बाद हेगे ने एस्तेर और उसकी सातों दासियों को
जहाँ राजघराने की स्त्रियाँ रहा करती थी, वहाँ एक
उत्तम स्थान में भेज दिया। 10एस्तेर ने यह बात किसी
को नहीं बताई कि वह एक यहूदी है। क्योंकि मोर्दकै ने
उसे मना कर दिया था, इसलिए उसने अपने परिवार
की पृष्ठभूमि के बारे में किसी को कुछ नहीं बताया।
11मोर्दकै जहाँ रनवास की स्त्रियाँ रहा करती थीं, वहाँ
आसपास और आगे पीछे घूमा करता था। वह यह पता
लगाना चाहता था कि एस्तेर कैसी है और उसके साथ
क्या कुछ घट रहा है? इसीलिये वह ऐसा करता था।
12इससे पहले कि राजा क्षयर्ष के पास ले जाने के
लिये किसी लड़की की बारी आती, उसे यह सब करना
पड़ता था। बारह महीने तक उसे सौन्दर्य उपचार करना
पड़ता था यानी छः महीने तक उसे गंधरस का तेल
लगाया जाता और छः महीने तक सुगंधित द्रव्य और
तरह-तरह की प्रसाधन सामग्रियों का उपयोग करना
होता था। 13राजा के पास जाने के लिये उन्हें यह सब
करना होता था। रनवास से जो कुछ वह चाहती, उसे
दिया जाता। 14शाम के समय वह लड़की राजा के महल
में जाती और प्रातःकाल रनवास के किसी दूसरे क्षेत्र में
वह लौट आती। फिर उसे शाशगज नाम के व्यक्ति की
देखरेख में रख दिया जाता। शाशगज राजा का खोजा था
जो राजा की रखैलों का अधिकारी था। यदि राजा उससे
प्रसन्न न होता, तो वह लड़की फिर कभी राजा के पास
न जाती। और यदि राजा उससे प्रसन्न होता तो उसे
राजा नाम लेकर वापस बुलाता।
15जब एस्तेर की राजा के पास जाने बारी आई तो
उसने कुछ नहीं पूछा। उसने राजा के खोजे, हेगे से, जो

रनवास का अधिकारी था, बस यह चाहा कि वह उसे
बता दे कि वह अपने साथ क्या ले जाये? एस्तेर वह
लड़की थी जिसे मोर्दकै ने गोद ले लिया था और जो
उसके चाचा अबीहैल की पुत्री थी। एस्तेर को जो भी
देखता, उसे पंसद करता था। 16सो एस्तेर को महाराजा
क्षयर्ष के महल में ले जाया गया। यह उस समय हुआ
जब उसके राज्यकाल के सातवें वर्ष का तेबेत नाम का
दसवाँ महीना चल रहा था।

17राजा ने एस्तेर को किसी भी और लड़की से अधिक
प्रेम किया और वह उसकी कृपा पायी। किसी भी दूसरी
लड़की से अधिक, राजा को वह भा गयी। सो राजा
क्षयर्ष ने एस्तेर के सिर पर मुकुट पहना कर वशती के
स्थान पर नयी महारानी बना लिया। 18एस्तेर के लिए
राजा ने एक बहुत बड़ी भोज दी। यह भोज उसके
महत्वपूर्ण व्यक्तियों और मुखियाओं के लिये थी। उसने
सभी प्रांतों में छुट्टी की घोषणा कर दी। उसने लोगों को
उपहार भिजवायें क्योंकि वह बहुत उदार था।

मोर्दकै को एक बुरी योजना का पता चला

19मोर्दकै उस समय राजद्वार के निकट ही बैठा था,
जब दूसरी बार लड़कियों को इकट्ठा किया गया था।
20एस्तेर ने अभी भी इस रहस्य को छुपाया हुआ था कि
वह एक यहूदी थी। अपने परिवार की पृष्ठभूमि के बारे
में उसने किसी को कुछ नहीं बताया था, क्योंकि मोर्दकै
ने उसे ऐसा करने से रोक दिया था। वह मोर्दकै की
आज्ञा का अब भी वैसे ही पालन करती थी, जैसे वह
तब किया करती थी, जब वह मोर्दकै की देख-रेख में
थी।

21उसी समय जब मोर्दकै राजद्वार के निकट बैठा
करता था, यह घटना घटी: बिकतान और तेरेश जो
राजा के द्वार रक्षक अधिकारी थे, राजा से अप्रसन्न हो
गये थे। उन्होंने राजा क्षयर्ष की हत्या का षड़यन्त्र रचना
शुरु कर दिया। 22किन्तु मोर्दकै को उस षड़यन्त्र का
पता चल गया और उसने उसे महारानी एस्तेर को बता
दिया। फिर महारानी एस्तेर ने उसे राजा से कह दिया।
उसने राजा को यह भी बता दिया कि मोर्दकै ही वह
व्यक्ति है, जिसने इस षड़यन्त्र का पता चलाया है। 23इसके
बाद उस सूचना की जाँच की गयी और यह पता चला
कि मोर्दकै की सूचना सही थी और उन दो पहरेदारों
को जिन्होंने राजा को मार डालने का षड़यन्त्र बनाया
था, एक खम्भे पर लटका दिया गया। राजा के सामने
ही ये सभी बातें राजा के इतिहास की पुस्तक में लिख
दी गयीं।

यहूदियों के विनाश के लिये हामान की योजना

3 इन बातों के घटने के बाद महाराजा क्षयर्ष ने
हामान का सम्मान किया। हामान अगागी हम्मदाता
नाम के व्यक्ति का पुत्र था। महाराजा ने हामान की
पदोन्नति कर दी और उसे दूसरे मुखियाओं से अधिक
बड़ा, महत्वपूर्ण और आदर का पद दे दिया। 2राजा के
द्वार पर महाराजा के सभी मुखिया हामान के आगे झुक
कर उसे आदर देने लगे। वे महाराजा की आज्ञा के
अनुसार ही ऐसा किया करते थे। किन्तु मोर्दकै ने
हामान के आगे झुकने अथवा उसे आदर देने को मना
कर दिया। 3इस पर राजा के द्वार के अधिकारियों ने
मोर्दकै से पूछा, "तुम हामान के आगे झुकने की अब
महाराजा की आज्ञा का पालन क्यों नहीं करते?"

4राजा के वे अधिकारी प्रतिदिन मोर्दकै से ऐसा कहते
रहे। किन्तु वह हामान के आगे झुकने के आदेश को
मानने से इन्कार करता रहा। सो उन अधिकारियों ने
हामान से इसके बारे में बता दिया। वे ये देखना चाहते थे
कि हामान मोर्दकै का क्या करता है? मोर्दकै ने उन
अधिकारियों को बता दिया था कि वह एक यहूदी था।
5हामान ने जब यह देखा कि मोर्दकै ने उसके आगे
झुकने और उसे आदर देने को मना कर दिया है तो
उसे बहुत क्रोध आया। 6हामान को यह पता तो चल ही
चुका था कि मोर्दकै एक यहूदी है। किन्तु वह मोर्दकै
की हत्या मात्र से संतुष्ट होने वाला नहीं था। हामान तो
यह भी चाहता था कि वह कोई एक ऐसा रास्ता ढूंढ़
निकाले जिससे क्षयर्ष के समूचे राज्य के उन सभी
यहूदियों को मार डाले जो मोर्दकै के लोग हैं।

7महाराजा क्षयर्ष के राज्य के बारहवें वर्ष में नीसान
नाम के पहले महीनें में विशेष दिन और विशेष महीने
चुनने के लिये हामान ने पासे फेंके और इस तरह
अदार नाम का बारहवाँ महीना चुन लिया गया। (उन
दिनों लाटरी निकालने के ये पासे, "पुर" कहलाया
करते थे।) 8फिर हामान महाराजा क्षयर्ष के पास आया
और उससे बोला, "हे महाराजा क्षयर्ष तुम्हारे राज्य के
हर प्रान्त में लोगों के बीच एक विशेष समूह के लोग
फैले हुए हैं। ये लोग अपने आप को दूसरे लोगों से
अलग रखते हैं। इन लोगों के रीतिरिवाज भी दूसरे लोगों
से अलग हैं और ये लोग राजा के नियमों का पालन भी
नहीं करते हैं। ऐसे लोगों को अपने राज्य में रखने की
अनुमति देना महाराज के लिये अच्छा नहीं है।

9"यदि महाराज को अच्छा लगे तो मेरे पास एक
सुझाव है: उन लोगों को नष्ट कर डालने के लिये
आज्ञा दी जाये। इसके लिये मैं महाराज के कोष में दस
हजार चाँदी के सिक्के जमा कर दूँगा। यह धन उन
लोगों को भुगतान के लिये होगा जो इस काम को
करेंगे।"

10इस प्रकार महाराजा ने राजकीय अंगूठी अपनी
अंगुली से निकाली और उसे हामान को सौंप दिया।
हामान अगागी हम्मदाता का पुत्र था। वह यहूदियों का
शत्रु था। 11इसके बाद महाराजा ने हामान से कहा, "यह

धन अपने पास रखो और उन लोगों के साथ जो चाहते
हो, करो।"
12फिर उस पहले महीने के तेरहवें दिन महाराजा के
सचिवों को बुलाया गया। उन्होंने हामान के सभी आदेशों
को हर प्रांत की लिपि और विभिन्न लोगों की भाषा में
अलग-अलग लिख दिया। साथ ही उन्होंने उन आदेशों
को प्रत्येक कबीले के लोगों की भाषा में भी लिख
दिया। उन्होंने राजा के मुखियाओं, विभिन्न प्रांतों के
राज्यपालों, अलग अलग कबीलों के मुखियाओं के नाम
पत्र लिख दिये। ये पत्र उन्होंने स्वयं महाराजा क्षयर्ष की
ओर से लिखे थे और आदेशों को स्वयं महाराजा की
अपनी अंगूठी से अंकित किया गया था।
13संदेशवाहक राजा के विभिन्न प्रांतों में उन पत्रों को
ले गये। इन पत्रों में सभी यहूदियों के सम्पूर्ण विनाश,
हत्या, और बर्बादी के राज्यादेश थे। इसका आशा था
कि युवा, वृद्ध, स्त्रियाँ और नन्हें बच्चे तक समाप्त कर
दिये जायें। आज्ञा यह थी कि सभी यहूदियों को बस एक
ही दिन मौत के घाट उतार दिया जाये। वह दिन था
अदार नाम के बारहवें महीने की तेरहवीं तारीख़ को
था और यह आदेश भी दिया गया था कि यहूदियों के
पास जो कुछ भी हो, उसे ले लिया जाये।
14इन पत्रों की प्रतियाँ उस आदेश के साथ एक
नियम के रूप में दी जानी थीं। हर प्रांत में इसे एक
नियम बनाया जाना था। राज्य में बसी प्रत्येक जाति के
लोगों में इसकी घोषणा की जानी थी, ताकि वे सभी
लोग उस दिन के लिये तैयार रहें। 15महाराजा की आज्ञा
से संदेश वाहक तुरन्त चल दिये। राजधानी नगरी शूशन
में यह आज्ञा दे दी गयी। महाराजा और हामान तो
दाखमधु पीने के लिए बैठ गये किन्तु शूशन नगर में
घबराहट फैल गयी।

सहायता के लिये एस्तेर से मोर्दकै की विनती

4 मोर्दकै ने, जो कुछ हो रहा था, उसके बारे में सब
कुछ सुना। जब उसने यहूदियों के विरुद्ध राजा की
आज्ञा सुनी तो अपने कपड़े फाड़ लिये। उसने शोक
वस्त्र धारण कर लिये और अपने सिर पर राख डाल
ली। वह ऊँचे स्वर में विलाप करते हुए नगर में निकल
पड़ा। 2किन्तु मोर्दकै बस राजा के द्वार तक ही जा सका
क्योंकि शोक वस्त्रों को पहन कर द्वार के भीतर जाने
की आज्ञा किसी को भी नहीं थी। 3हर किसी प्रांत में
जहाँ कहीं भी राजा का यह आदेश पहुँचा, यहूदियों में
रोना-धोना और शोक फैल गया। उन्होंने खाना छोड़
दिया और वे ऊँचे स्वर में विलाप करने लगे। बहुत से
यहूदी शोक वस्त्रों को धारण किये हुए और अपने सिरों
पर राख डाले हुए धरती पर पड़े थे।
4एस्तेर की दासियों और खोजों ने एस्तेर के पास
जाकर उसे मौर्दकै के बारे में बताया। इससे महारानी
एस्तेर बहुत दुःखी और व्याकुल हो उठी। उसने मोर्दकै
के पास शोक वस्त्रों के बजाय दूसरे कपड़े पहनने को
भेजे। किन्तु उसने वे वस्त्र स्वीकार नहीं किये। 5इसके
बाद एस्तेर ने हताक को अपने पास बुलाया। हताक
एक ऐसा खोजा था जिसे राजा ने उसकी सेवा के लिये
नियुक्त किया था। एस्तेर ने उसे यह पता लगाने का
आदेश दिया कि मोर्दकै को क्या व्याकुल बनाये हुए है
और क्यों? 6सो हताक नगर के उस खुले मैदान में गया
जहाँ राजद्वार के आगे मोर्दकै मौजूद था। 7वहाँ मोर्दकै ने
हताक से, जो कुछ हुआ था, सब कह डाला। उसने
हताक को यह भी बताया कि हामान ने यहूदियों की
हत्या के लिये राजा के कोष में कितना धन जमा
कराने का वादा किया है। 8मोर्दकै ने हताक को
यहूदियों की हत्या के लिये राजा के आदेश पत्र की एक
प्रति भी दी। वह आदेश पत्र शूशन नगर में हर कहीं
भेजा गया था। मोर्दकै यह चाहता था कि वह उस पत्र
को एस्तेर को दिखा दे और हर बात उसे पूरी तरह बता
दे और उसने उससे यह भी कहा कि वह एस्तेर को
राजा के पास जाकर मोर्दकै और उसके अपने लोगों
के लिये दया की याचना करने को प्रेरित करे।
9हताक एस्तेर के पास लौट आया और उसने एस्तेर
से मोर्दकै ने जो कुछ कहने को कहा था, सब बता
दिया।
10फिर एस्तेर ने मोर्दकै को हताक से यह कहला
भेजा: 11"मोर्दकै, राजा के सभी मुखिया और राजा के
प्रांतों के सभी लोग यह जानते हैं कि किसी भी पुरुष
अथवा स्त्री के लिए राजा का बस यही एक नियम है
कि राजा के पास बिना बुलाये जो भी जाता है, उसे प्राण
दण्ड दिया जाता है। इस नियम का पालन बस एक ही
स्थिति में उस समय नहीं किया जाता था जब राजा
अपने सोने के राजदण्ड को उस व्यक्ति की ओर बढ़ा
देता था। यदि राजा ऐसा कर देता तो उस व्यक्ति के प्राण
बच जाते थे किन्तु मुझे तीस दिन हो गये हैं और राजा से
मिलने के लिये मुझे नहीं बुलाया गया है।"
12-13इसके बाद एस्तेर का सन्देश मोर्दकै के पास
पहुँचा दिया गया। उस सन्देश को पा कर मोर्दकै ने उसे
वापस उत्तर भेजा: "एस्तेर, ऐसा मत सोच कि तू बस
राजा के महल में रहती है इसीलिए बच निकलने वाली
एकमात्र यहूदी होगी। 14यदि अभी तू चुप रहती है तो
यहूदियों के लिए सहायता और मुक्ति तो कहीं और से
आ ही जायेगी किन्तु तू और तेरे पिता का परिवार सभी
मार डाले जायेंगे और कौन जानता है कि तू किसी ऐसे
ही समय के लिये महारानी बनाई गयी हो, जैसा समय
यह है।"
15-16इस पर एस्तेर ने मोर्दकै को अपना यह उत्तर
भिजवाया: "मोर्दकै, जाओ और जाकर सभी यहूदियों
को शूशन नगर में इकट्ठा करो और मेरे लिये उपवास

रखो। तीन दिन और तीन रात तक न कुछ खाओ और
न कुछ पिओ। तेरी तरह मैं भी उपवास रखूँगी और
साथ ही मेरी दासियाँ भी उपवास रखेंगी। हमारे उपवास
रखने के बाद मैं राजा के पास जाऊँगी। मैं जानती हूँ
कि यदि राजा मुझे न बुलाए तो उसके पास जाना नियम
के विरुद्ध है किन्तु चाहे मैं मर ही क्यों न जाऊँ, मेरी
हत्या ही क्यों न कर दी जाये, जैसे भी बन पड़ेगा, ऐसा
करूँगी।"
17इस प्रकार मोर्दकै वहाँ से चला गया और एस्तेर ने
उससे जैसा करने को कहा था उसने सब कुछ वैसा ही
किया।

एस्तेर की राजा से विनती

5 तीसरे दिन एस्तेर ने अपने विशेष वस्त्र पहने और
राज महल के भीतरी भाग में जा खड़ी हुई। यह
स्थान राजा की बैठक के सामने था। राजा दरबार में
अपने सिंहासन पर बैठा था। राजा उसी ओर मुँह किये
बैठा था जहाँ से लोग सिंहासन के कक्ष की ओर प्रवेश
करते थे। **2**राजा ने महारानी एस्तेर को वहाँ दरबार में
खड़े देखा। उसे देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने
उसकी ओर अपने हाथ में थामें हुए सोने के
राजदण्ड को आगे बढ़ा दिया। इस प्रकार एस्तेर ने उस
कमरे में प्रवेश किया और वह राजा के पास चली गयी
और उसने राजा के सोने के राजदण्ड के सिर को छू
दिया।
3इसके बाद राजा ने उससे पूछा, "महारानी एस्तेर,
तुम बेचैन क्यों हो? तुम मुझसे क्या चाहती हो? तुम जो
चाहो मैं तुम्हें वही दूँगा। यहाँ तक कि अपना आधा
राज्य तक, मैं तुम्हें दे दूँगा।"
4एस्तेर ने कहा, "मैंने आपके और हामान के लिये
एक भोज का आयोजन किया है। क्या आप और हामान
आज मेरे यहाँ भोज में पधारेंगे?"
5इस पर राजा ने कहा, "हामान को तुरंत बुलाया
जाये ताकि एस्तेर जो चाहती है, हम उसे पूरा कर
सकें।"
महाराजा और हामान एस्तेर ने उनके लिये जो भोज
आयोजित की थी, उसमें आ गये। **6**जब वे दाखमधु पी
रहे थे तभी महाराजा ने एस्तेर से फिर पूछा, "एस्तेर,
कहो अब तुम क्या माँगना चाहती हो? कुछ भी माँग
लो, मैं तुम्हें वही दे दूँगा। कहो तो वह क्या है जिसकी
तुम्हें इच्छा है? तुम्हारी जो भी इच्छा होगी, वही मैं तुम्हें
दूँगा। अपने राज्य का आधा भाग तक।"
7एस्तेर ने कहा, "मैं यह माँगना चाहती हूँ। **8**यदि मुझे
महाराज अनुमति दें और यदि जो मैं चाहूँ, वह मुझे देने
से महाराज प्रसन्न हों तो मेरी इच्छा यह है कि महाराज
और हामान कल मेरे यहाँ आयें। कल मैं महाराजा
और हामान के लिये एक और भोज देना चाहती हूँ
और उसी समय में यह बताऊँगी कि वास्तव में मैं क्या
चाहती हूँ।"

मोर्दकै पर हामान का क्रोध

9उस दिन हामान राजमहल से अत्यधिक प्रसन्नचित्त
हो कर विदा हुआ। किन्तु जब उसने राजा के द्वार पर
मोर्दकै को देखा तो उसे मोर्दकै पर बहुत क्रोध आया।
हामान मोर्दकै को देखते ही क्रोध से पागल हो उठा
क्योंकि जब हामान वहाँ से गुजरा तो मोर्दकै ने उसके
प्रति कोई आदर भाव नहीं दिखाया। मोर्दकै को हामान
का कोई भय नहीं था, और इसी से हामान क्रोधित हो
उठा था। **10**किन्तु हामान ने अपने क्रोध पर काबू
किया और घर चला गया। इसके बाद हामान ने अपने
मित्रों और अपनी पत्नी जेरेश को एक साथ बुला भेजा।
11वह अपने मित्रों के आगे अपने धन और अनेक पुत्रों
के बारे में डींग मारते हुए यह बताने लगा कि राजा
उसका किस प्रकार से सम्मान करता है। वह बढ़ा चढ़ा
कर यह भी बताने लगा कि दूसरे सभी हाकिमों से राजा
ने किस प्रकार उसे और अधिक ऊँचे पद पर पदोन्नति
दी है। **12**"इतना ही नहीं" हामान ने यह भी बताया।
"एक मात्र मैं ही ऐसा व्यक्ति हूँ जिसे महारानी एस्तेर ने
अपने भोज में राजा के साथ बुलाया था और महारानी
ने मुझे कल फिर राजा के साथ बुला भेजा था। **13**किन्तु
मुझे इन सब बातों से सचमुच कोई प्रसन्नता नहीं है।
वास्तव में मैं उस समय तक प्रसन्न नहीं हो सकता जब
तक राजा के द्वार पर मैं उस यहूदी मोर्दकै को बैठे हुए
देखता हूँ।"
14इस पर हामान की पत्नी जेरेश और उसके मित्रों
ने उसे एक सुझाव दिया। वे बोले, "किसी से कह कर
पचहत्तर फुट ऊँचा फाँसी देने का एक खम्भा बनवाओ!
जिस पर उसे लटकाया जाये! फिर प्रात:काल राजा से
कहो कि वह मोर्दकै को उस पर लटका दे। फिर राजा
के साथ तुम भोज पर जाना और आनन्द से रहना।"
हामान को यह सुझाव अच्छा लगा। सो उसने फाँसी
का खम्भा बनवाने के लिए किसी को आदेश दे दिया।

मोर्दकै का सम्मान

6 उस रात राजा सो नहीं पाया। सो उसने अपने एक
दास से इतिहास की पुस्तक लाकर अपने सामने
उसे पढ़ने को कहा। (राजाओं के इतिहास की पुस्तक
में वह सब कुछ अंकित रहता हैं जो एक राजा के
शासनकाल के दौरान घटित होता है।) **2**सो उस दास ने
राजा के लिए वह पुस्तक पढ़ी। उसने महाराजा क्षयर्ष
को मार डालने के षड़यन्त्र के बारे में पढ़ा। बिगताना
और तेरेश के षड़यन्त्रों का पता मोर्दकै को चला था। ये
दोनों ही व्यक्ति द्वार की रक्षा करने वाले राजा के
हाकिम थे। उन्होंने राजा की हत्या की योजना बनाई थी

किन्तु मोर्दकै को इस योजना का पता चल गया था और उसने उसके बारे में किसी को बता दिया था।

3इस पर महाराजा ने प्रश्न किया, "इस बात के लिए मोर्दकै को कौन सा आदर और कौन सी उत्तम वस्तुएं प्रदान की गयी थीं?"

उन दासों ने राजा को उत्तर दिया, "मोर्दकै के लिये कुछ नहीं किया गया था।"

4उसी समय राजा के महल के बाहरी आँगन में हामान ने प्रवेश किया। वह, हामान ने फाँसी का जो खम्भा बनावाया था, उस पर मोर्दकै को लटकवाने के लिये राजा से कहने को आया था। राजा ने उसकी आहट सुन कर पूछा, "अभी अभी आँगन में कौन आया है?"

5राजा के सेवकों ने उत्तर दिया, "आँगन में हामान खड़ा हुआ है।"

सो राजा ने कहा, "उसे भीतर ले आओ।"

6हामान जब भीतर आया तो राजा ने उससे एक प्रश्न पूछा, "हामान, राजा यदि किसी को आदर देना चाहे तो उस व्यक्ति के लिए राजा को क्या करना चाहिए?"

हामान ने अपने मन में सोचा, "ऐसा कौन हो सकता है जिसे राजा मुझसे अधिक आदर देना चाहता होगा? राजा निश्चय ही मुझे आदर देने के लिये ही बात कर रहा होगा।"

7सो हामान ने उत्तर देते हुए राजा से कहा, "राजा जिसे आदर देना चाहता है, उस व्यक्ति के साथ वह ऐसा करे: **8**राजा ने जो वस्त्र स्वयं पहना हो, उसी विशेष वस्त्र को तू अपने सेवकों से मंगवा लिया जाये और उस घोड़े को भी मंगवा लिया जाये जिस पर राजा ने स्वयं सवारी की हो। फिर सेवकों के द्वारा उस घोड़े के सिर पर राजा का विशेष चिन्ह अंकित कराया जाये। **9**इसके बाद राजा के किसी अत्यन्त महत्वपूर्ण मुखिया को उस वस्त्र और घोड़े का अधिकारी नियुक्त किया जाये। फिर वह अधिकारी उस व्यक्ति को, जिसे राजा सम्मानित करना चाहता है, उस वस्त्र को पहनाये और फिर इसके बाद वह अधिकारी उस घोड़े के आगे-आगे चलता हुआ उसे नगर की गलियों के बीच से गुजारे। वह अपनी अगुवाई में घोड़े को ले जाते हुए यह घोषणा करता जाये, 'यह उस व्यक्ति के लिये किया गया है, राजा जिसे आदर देना चाहताहै।'"

10राजा ने हामान को आदेश दिया, "तुम तत्काल चले जाओ तथा वस्त्र और घोड़ा लेकर यहूदी मोर्दकै के लिए वैसा ही करो, जैसा तुमने सुझाव दिया है। मोर्दकै राजद्वार के पास बैठा है। जो कुछ तुमने सुझाया है, सब कुछ वैसा ही करना।"

11सो हामान ने वस्त्र और घोड़ा लिया और वस्त्र मोर्दकै को पहना कर घोड़े पर चढ़ा कर नगर की गलियों से होते हुए घोड़े के आगे आगे चल दिया। मोर्दकै के आगे आगे चलता हुआ हामान घोषणा कर रहा था, "यह सब उस व्यक्ति के लिये किया गया है, जिसे राजा आदर देना चाहता है!"

12इसके बाद मोर्दकै फिर राजद्वार पर चला गया किन्तु हामान तुरन्त अपने घर की ओर चल दिया। उसने अपना सिर छुपाया हुआ था क्योंकि वह परेशान और लज्जित था। **13**इसके बाद हामान ने अपनी पत्नी जेरेश और अपने सभी मित्रों से, जो कुछ घटा था, सब कुछ कह सुनाया। हामान की पत्नी और उसके सलाहकारों ने उससे कहा, "यदि मोर्दकै यहूदी है, तो तुम जीत नहीं सकते। तुम्हारा पतन शुरु हो चुका है। तुम निश्चय ही नष्ट हो जाओगे!"

14अभी वे लोग हामान से बात कर रही रहे थे कि राजा के खोजे हामान के घर पर आये और तत्काल ही हामान को एस्तेर के भोज में बुला ले गये।

हामान को प्राण दण्ड

7 फिर राजा और हामान महारानी एस्तेर के साथ भोजन करने के लिये चले गये। **2**इसके बाद जब वे दूसरे दिन के भोज में दाखमधु पी रहे थे तो राजा ने एस्तेर से फिर एक प्रश्न किया, "महारानी एस्तेर, तुम मुझ से क्या माँगना चाहती हो? जो कुछ तुम मांगोगी, पाओगी। बताओ तुम्हें क्या चाहिए? मैं तुम्हें कुछ भी दे सकता हूँ। यहाँ तक कि मेरा आधा राज्य भी।"

3इस पर महारानी एस्तेर ने जवाब दिया, "हे महाराज! यदि मैं तुम्हें भाती तुम्हारी कृपा पात्र हूँ और यदि यह तुम्हें अच्छा लगता हो तो कृपा करके मुझे जीने दीजिये और मैं तुमसे यह चाहती हूँ कि मेरे लोगों को भी जीने दीजिये! बस मैं यही माँगती हूँ। **4**ऐसा मैं इसलिये चाहती हूँ कि मुझे और मेरे लोगों को विनाश, हत्या और पूरी तरह से नष्ट कर डालने के लिए बेच डाला गया है। यदि हमें दासों के रूप में बेचा जाता, तो मैं कुछ नहीं कहती क्योंकि वह कोई इतनी बड़ी समस्या नहीं होती जिसके लिये राजा को कष्ट दिया जाता।"

5इस पर महाराजा क्षयर्ष ने महारानी एस्तेर से पूछा, "तुम्हारे साथ ऐसा किसने किया? कहाँ है वह व्यक्ति जिसने तुम्हारे लोगों के साथ ऐसा व्यवहार करने की हिम्मत की?"

6एस्तेर ने कहा, "हमारा विरोधी और हमारा शत्रु यह दुष्ट हामान ही है।"

तब हामान राजा और रानी के सामने आतंकित हो उठा। **7**राजा बहुत क्रोधित था। वह खड़ा हुआ। उसने अपना दाखमधु वहीं छोड़ दिया और बाहर बगीचे में चला गया। किन्तु हामान, रानी एस्तेर से अपने प्राणों की भीख माँगने के लिए भीतर ही ठहरा रहा। हामान यह जानता था कि राजा ने उसके प्राण लेने का निश्चय कर लिया है। इसलिये वह अपने प्राणों की भीख माँगता

रहा। 8राजा जैसे ही बगीचे से भोज के कमरे की ओर वापस आ रहा था, तो वह क्या देखता है कि जिस बिछौने पर एस्तेर लेटी है, उस पर हामान झुका हुआ है। राजा ने क्रोध भरे स्वर में कहा, "अरे, क्या तू महल में मेरे रहते हुए ही महारानी पर आक्रमण करेगा?"

जैसे ही राजा के मुख से ये शब्द निकले, राजा के सेवकों ने भीतर आ कर हामान का मुँह ढंक दिया। 9राजा के एक खोजे सेवक ने जिसका नाम हर्बोना था, कहा, "हामान के घर के पास पचहत्तर फुट लम्बा फाँसी देने का एक खम्भा बनाया गया है। हामान ने यह खम्भा मोर्दकै को फाँसी पर चढ़ाने के लिये बनाया था। मोर्दकै वही व्यक्ति है जिसने तुम्हारी हत्या के षड़यन्त्र को बताकर तुम्हारी सहायता की थी।"

राजा बोला, "उस खम्भे पर हामान को लटका दिया जाये!"

10सो उन्होंने उसी खम्भे पर जिसे उसने मोर्दकै के लिए बनाया था हामान को लटका दिया। इसके बाद राजा ने क्रोध करना छोड़ दिया।

यहूदियों की मदद के लिये राजा का आदेश

8 उसी दिन महाराजा क्षयर्ष ने यहूदियों के शत्रु हामान के पास जो कुछ था, वह सब महारानी एस्तेर को दे दिया। एस्तेर ने राजा को बता दिया कि मोर्दकै रिश्ते में उसका भाई लगता है। इसके बाद मोर्दकै राजा से मिलने आया। 2राजा ने हामान से अपनी जो अँगूठी वापस ले ली थी, उसे अपनी अँगुली से निकाल कर मोर्दकै को दे दिया। इसके बाद एस्तेर ने मोर्दकै को हामान की सारी सम्पत्ति का अधिकारी नियुक्त कर दिया।

3तब एस्तेर ने राजा से फिर कहा और वह राजा के पैरों में गिर कर रोने लगी। उसने राजा से प्रार्थना की कि वह अगागी हामान की उस बुरी योजना को समाप्त कर दे जिसे हामान ने यहूदियों के नाश के लिए सोचा था।

4इस पर राजा ने अपने सोने के राजदण्ड को एस्तेर की ओर आगे बढ़ाया। एस्तेर उठी और राजा के आगे खड़ी हो गयी। 5फिर एस्तेर ने कहा, "महाराज, यदि तुम मुझे पसंद करते हो और यह तुम्हें अच्छा लगता है तो कृपा करके मेरे लिए यह कर दीजिये। यदि आपको यह किया जाना ठीक लगे तो इसे पूरा कर दीजिये। यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो कृपा करके एक आदेश पत्र लिखिये, जो उस आदेश पत्र को रद्द कर दे जिसे हामान ने भेजा था। अगागी हामान ने राजा के सभी प्रांतों में बसे यहूदियों को नष्ट करने की एक योजना सोची थी और उस योजना को क्रियान्वित करने के लिए उसने आज्ञा पत्र भिजवा दिये थे। 6मैं महाराज से यह प्रार्थना इसलिए कर रही हूँ कि मैं अपने लोगों के साथ उस भयानक काण्ड को घटते देखना सहन नहीं कर पाऊँगी। मैं अपने परिवार की हत्या को देखना सहन नहीं कर पाऊँगी।"

7महाराजा क्षयर्ष ने महारानी एस्तेर और यहूदी मोर्दकै को उत्तर देते हुए जो कहा था, वह यह है, "हामान, क्योंकि यहूदियों के विरोध में था, इसलिए उसकी सम्पत्ति मैंने एस्तेर को दे दी तथा मेरे सिपाहियों ने उसे फाँसी देने के खम्भे पर लटका दिया। 8अब राजा की ओर से एक और दूसरा आज्ञा पत्र लिखा जाये। इसे तुम्हें यहूदियों की सहायता के लिए जो सबसे अच्छा लगे वैसा ही लिखो। फिर राजा की विशेष अँगूठी से उस आज्ञा पर मुहर लगा दो। राजा की ओर से लिखा गया और राजा की अँगूठी से जिस पर मुहर दी गयी हो, ऐसा कोई भी राजकीय पत्र रद्द नहीं किया जा सकता।"

9राजा के सचिवों को तत्काल बुलाया गया। सीवान नाम के तीसरे महीने की तेईसवीं तारीख को वह आदेश पत्र लिखा गया। यहूदियों के लिये मोर्दकै के सभी आदेशों को सचिवों ने लिखकर यहूदियों, मुखियाओं, राज्यपालों और एक सौ सत्ताईस प्रांतों के अधिकारियों के पास पहुँचा दिया। ये प्रांत भारत से लेकर कूश तक फैले हुए थे। ये आदेश पत्र हर प्रांत की लिपि और भाषा में लिखे गये थे और हर देश के लोगों की भाषा में उसका अनुवाद किया गया था। यहूदियों के लिये ये आदेश उन की अपनी भाषा और उनकी अपनी लिपि में लिखे गये थे। 10मोर्दकै ने ये आदेश महाराजा क्षयर्ष की ओर से लिखे थे और फिर उन पत्रों पर उसने राजा की अँगूठी से मुहर लगा दी थी। फिर उन पत्रों को उसने तीव्र घुड़सवार सन्देश वाहकों के द्वारा भिजवा दिया। ये सन्देश वाहक उन घोड़ों पर सवार थे जिन्हें विशेष राजा के लिए पाला-पोसा गया था।

11उन पत्रों पर राजा के ये आदेश लिखे थे:

यहूदियों को हर नगर में आपस में एक जुट होकर अपनी रक्षा करने का अधिकार है। उन्हें अधिकार है कि वे किसी भी प्रांत और समूह के लोगों की ऐसी किसी भी सेना को छिन्न-भिन्न कर दें, मार डालें अथवा पूरी तरह नष्ट कर दें जो उन पर, उनकी स्त्रियों पर, और उनके बच्चों पर आक्रमण कर रही हो। यहूदियों को अधिकार है कि वे अपने शत्रुओं की सम्पत्ति को ले लें और उसे नष्ट कर डालें।

12जब यहूदियों के लिये ऐसा किया जायेगा, उसके लिये उदार नाम के बारहवें महीने की तेरहवीं तारीख का दिन निश्चित किया गया। महाराजा क्षयर्ष के अपने सभी प्रांतों में यहूदियों को ऐसा करने की अनुमति दे दी गयी। 13इस पत्र की एक प्रति राजा के आदेश के साथ हर प्रांत को बाहर भेजी जानी थी। यह एक नियम बन गया। हर प्रांत में इसने नियम का रुप ले लिया। राज्य में रहने वाली प्रत्येक जाति के लोगों के बीच इसका प्रचार

किया गया। उन्होंने ऐसा इसलिये किया जिससे उस विशेष दिन के लिये यहूदी तैयार हो जायें जब यहूदियों को अपने शत्रुओं से बदला लेने की अनुमति दे दी जाएगी। 14राजा के घोड़ों पर सवार संदेश वाहक जल्दी से बाहर निकल गये। उन्हें राजा ने आज्ञा दी थी कि जल्दी करें। वह आज्ञा शूशन की राजधानी नगरी में भी लगा दी गयी।

15फिर मोर्दकै राजा के पास से चला गया। मोर्दकै ने राजा से प्राप्त वस्त्र धारण किये हुए थे। उसके कपड़े नीले और सफेद रंग के थे। उसने एक लम्बा सोने का मुकुट पहन रखा था। बढ़िया सूत का बना हुआ बैंगनी रंग का चोगा भी उसके पास था। शूशन की राजधानी नगरी में विशेष समारोह हो रहा था। लोग बहुत खुश थे। 16यहूदियों के लिये तो यह विशेष प्रसन्नता का दिन था। यह आनन्द, प्रसन्नता और बड़े सम्मान का दिन था।

17जहाँ कहीं भी किसी प्रांत या किसी भी नगर में राजा का वह आदेश पत्र पहुँचा, यहूदियों में आनन्द और प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। यहूदी भोज दे रहे थे और उत्सव मना रहे थे और दूसरे बहुत से सामान्य लोग यहूदी बन गये। क्योंकि वे यहूदियों से बहुत डरा करते थे, इसीलिए उन्होंने ऐसा किया।

यहूदियों की विजय

9 लोगों को अदार नाम के बारहवें महीने की तेरह तारीख को राजा की आज्ञा को पूरा करना था। यह वही दिन था जिस दिन यहूदियों के विरोधियों को उन्हें पराजित करने की आशा थी। किन्तु अब तो स्थिति बदल चुकी थी। अब तो यहूदी अपने उन शत्रुओं से अधिक प्रबल थे जो उन्हें घृणा किया करते थे। 2महाराजा क्षयर्ष के सभी प्रांतों के नगरों में यहूदी परस्पर एकत्र हुए। यहूदी आपस में इसलिए एकजुट हो गये कि जो लोग उन्हें नष्ट करना चाहते हैं, उन पर आक्रमण करने के लिये वे पर्याप्त सशस्त्र हो जायें। इस प्रकार उनके विरोध में कोई भी अधिक शक्तिशाली नहीं रहा। लोग यहूदियों से डरने लगे। 3प्रांतों के सभी हाकिम, मुखिया, राज्यपाल और राजा के प्रबन्ध अधिकारी यहूदियों की सहायता करने लगे। वे सभी अधिकारी यहूदियों की सहायता इसलिए किया करते थे कि वे मोर्दकै से डरते थे। 4राजा के महल में मोर्दकै एक अति महत्वपूर्ण व्यक्ति बन गया। सभी प्रांतों में हर कोई उसका नाम जानता था और जानता था कि वह कितना महत्वपूर्ण है। सो मोर्दकै अधिक शक्तिशाली होता चला गया।

5यहूदियों ने अपने सभी शत्रुओं को पराजित कर दिया। अपने शत्रुओं को मारने और नष्ट करने के लिए वे तलवारों का प्रयोग किया करते थे। जो लोग यहूदियों से घृणा किया करते थे, उनके साथ यहूदी जैसा चाहते, वैसा व्यवहार करते। 6शूशन की राजधानी नगरी में यहूदियों ने पाँच सौ लोगों को मार कर नष्ट कर दिया। 7यहूदियों ने जिन लोगों की हत्या की थी उनमें ये लोग भी शामिल थे: पर्शन्दाता, दल्पोन, अस्पाता, 8पोराता, अदल्या, अरीदाता, 9पर्मशता, अरीसै, अरीदै और वैजाता। 10ये दस लोग हामान के पुत्र थे। हम्मदाता का पुत्र हामान यहूदियों का बैरी था। यहूदियों ने उन सभी पुरूषों को मार तो दिया किन्तु उन्होंने उनकी सम्पत्ति नहीं ली।

11जब राजा ने शूशन की राजधानी नगरी में मारे गये पाँच सौ व्यक्तियों के बारे में सुना तो 12उसने महारानी एस्तेर से कहा, "शूशन नगर में यहूदियों ने पाँच सौ व्यक्तियों को मार डाला है तथा उन्होंने शूशन में हामान के दस पुत्रों की भी हत्या कर दी है। कौन जाने राजा के अन्य प्रांतों में क्या हो रहा है? अब मुझे बताओ तुम और क्या कराना चाहती हो? जो कहो मैं उसे पूरा कर दूँगा।"

13एस्तेर ने कहा, "यदि ऐसा करने के लिये महाराज प्रसन्न हैं तो यहूदियों को यह करने की अनुमति दी जाये: शूशन में कल भी यहूदियों को राजा की आज्ञा पूरी करने दी जाये, और हामान के दसों पुत्रों को फाँसी के खम्भे पर लटका दिया जाये।"

14सो राजा ने यह आदेश दे दिया कि शूशन में कल भी राजा का यह आदेश लागू रहे और उन्होंने हामान के दसों पुत्रों को फँासी पर लटका दिया। 15आदार महीने की चौदहवीं तारीख को शूशन में यहूदी एकत्रित हुए। फिर उन्होंने वहाँ तीन सौ पुरुषों को मौत के घाट उतार दिया किन्तु उन्होंने उन तीन सौ लोगों की सम्पत्ति को नहीं लिया।

16उसी अवसर पर राजा के अन्य प्रांतों में रहने वाले यहूदी भी परस्पर एकत्र हुए। वे इसलिए एकत्र हुए कि अपना बचाव करने के लिये वे पर्याप्त बलशाली हो जायें और इस तरह उन्होंने अपने शत्रुओं से छुटकारा पा लिया। यहूदियों ने अपने पचहत्तर हजार शत्रुओं को मौत के घाट उतार दिया। किन्तु उन्होंने जिन शत्रुओं की हत्या की थी, उनकी किसी भी वस्तु को ग्रहण नहीं किया। 17यह अदार नाम के महीने की तेरहवीं तारीख को हुआ और फिर चौदहवीं तारीख़ को यहूदियों ने विश्राम किया। यहूदियों ने उस दिन को एक खुशी भरे छुट्टी के दिन के रूप में बना दिया।

पूरीम का त्यौहार

18आदार महीने की तेरहवीं तारीख़ को शूशन में यहूदी परस्पर एकत्र हुए। फिर पन्द्रहवीं तारीख़ को उन्होंने विश्राम किया। उन्होंने पन्द्रहवीं तारीख़ को फिर एक खुशी भरी छुट्टी का दिन बना दिया। 19इसी कारण उस ग्राम्य प्रदेश के छोटे छोटे गाँवों में रहने वाले यहूदियों

ने चौदहवीं तारीख़ को खुशियों भरी छुट्टी के रूप में
रखा। उस दिन उन्होंने आपस में एक दूसरे को भोज
दिये।

20जो कुछ घटा था, उसकी हर बात को मोर्दकै ने
लिख लिया और फिर उसे महाराजा क्षयर्ष के सभी
प्रांतों में बसे यहूदियों को एक पत्र के रूप में भेज दिया।
दूर-पास सब कहीं उसने पत्र भेजें। 21मोर्दकै ने यहूदियों
को यह बताने के लिए ऐसा किया कि वे हर साल
अदार महीने की चौदहवीं और पन्द्रहवीं तारीख़ को
पूरीम का उत्सव मनाया करें। 22यहूदियों को इन दिनों
को पर्व के रुप में इसलिए मनाना था कि उन्हीं दिनों
यहूदियों ने अपने शत्रुओं से छुटकारा पाया था। उन्हें
उस महीने को इसलिए भी मनाना था कि यही वह
महीना था जब उनका दुःख उनके आनन्द में बदल
गया था। वही यह महीना था जब उनका रोना-धोना
एक उत्सव के दिन के रूप में बदल गया था। मोर्दकै ने
सभी यहूदियों को पत्र लिखा। उसने उन लोगों से कहा
कि वे उन दिनों को उत्सव के रुप में मनाएं। यह समय
एक ऐसा समय हो जब लोग आपस में एक दूसरे को
उत्तम भोजन अर्पित करें तथा गरीब लोगों को उपहार
दें।

23इस प्रकार मोर्दकै ने यहूदियों को जो लिखा था, वे
उसे मानने को तैयार हो गये। वे इस बात पर सहमत हो
गये कि उन्होंने जिस उत्सव का आरम्भ किया है, वे
उसे मनाते रहेंगे।

24हम्मदाता अगागी का पुत्र हामान यहूदियों का शत्रु
था। उसने यहूदियों के विनाश के लिए एक षड़यन्त्र
रचा था। हामान ने यहूदियों को नष्ट और बर्बाद कर
डालने के लिए कोई एक दिन निश्चित करने के वास्ते
पासा भी फेंका था। उन दिनों इस पासे को "पुर" कहा
जाता था। इसीलिए इस उत्सव का नाम "पूरीम" रखा
गया। 25किन्तु एस्तेर राजा के पास गयी और उसने
उससे बातचीत की। इसीलिये राजा ने नये आदेश जारी
कर दिये। यहूदियों के विरुद्ध हामान ने जो षड़यन्त्र रचा
था, उसे रोकने के लिये राजा ने अपने आदेश पत्र जारी
किये। राजा ने उन ही बुरी बातों को हामान और उसके
परिवार के साथ घटा दिया। उन आदेशों में कहा गया
था कि हामान और उसके पुत्रों को फाँसी पर लटका
दिया जाये।

26-27इसलिये ये दिन "पूरीम" कहलाये। "पूरीम" नाम
'पुर' शब्द से बना है (जिसका अर्थ है लाटरी) और
इसलिए यहूदियों ने हर वर्ष इन दो दिनों को उत्सव के
रुप में मनाने की शुरुआत करने का निश्चय किया।
उन्होंने यह इसलिए किया ताकि अपने साथ होते हुए जो
बातें उन्होंने देखी थी, उन्हें याद रखने में उनको मदद
मिले। यहूदियों और उन दूसरे सभी लोगों को, जो
यहूदियों में आ मिले थे, हर साल इन दो दिनों को ठीक
उसी रीति और उसी समय मनाना था जिसका निर्देश
मोर्दकै ने अपने आदेश-पत्र में किया था। 28ये दो दिन
हर पीढ़ी को और हर परिवार को याद रखने चाहिए
और मनाये जाना चाहिए। इन्हें हर प्रांत और हर नगर
में निश्चयपूर्वक मनाया जाना चाहिए। यहूदियों को
इन्हें मनाना कभी नहीं छोड़ना चाहिए। यहूदियों के
वंशजों को चाहिए कि वे पूरीम के इन दो दिनों को
मनाना सदा याद रखें।

29पूरीम के बारे में सुनिश्चित करने के लिये महारानी
एस्तेर और यहूदी मोर्दकै ने यह दूसरा पत्र लिखा। एस्तेर
अबीहैल की पुत्री थी। वह पत्र सच्चा था, इसे प्रमाणित
करने के लिये उन्होंने इसे राजा के सम्पूर्ण अधिकार
के साथ लिखा। 30सो महाराजा क्षयर्ष के राज्य के एक
सौ सत्ताईस प्रांतों में सभी यहूदियों के पास मोर्दकै ने पत्र
भिजवाये। मोर्दकै ने शांति और सत्य का एक सन्देश
लिखा। 31मोर्दकै ने पूरीम के उत्सव को शुरु करने के
बारे में लिखा। इन दिनों को उनके निश्चित समय पर
ही मनाया जाना था। यहूदी मोर्दकै और महारानी एस्तेर
ने इन दो दिन के उत्सव को अपने लिये और अपनी
संतानों के लिए निर्धारित किया। उन्होंने ये दो दिन
निश्चित किये ताकि यहूदी उपवास और विलाप करें।
32एस्तेर के पत्र ने पूरीम के विषय में इन नियमों की
स्थापना की और पूरीम के इन नियमों को पुस्तकों में
लिख दिया गया।

मोर्दकै का सम्मान

10 महाराजा क्षयर्ष ने लोगों पर कर लगाये। राज्य
के सभी लोगों, यहाँ तक कि सागर तट के
सुदूर नगरों को भी कर चुकाने पड़ते थे। 2राजा क्षयर्ष
ने जो महान कार्य अपनी शक्ति और सामर्थ्य से किये
थे वे "मादै और फारस के राजाओं की इतिहास" की
पुस्तक में लिखे हैं। उन 'इतिहास की पुस्तकों' में
मोर्दकै ने जो कुछ किया था, वह सब कुछ भी लिखा
है। राजा ने मोर्दकै को एक महान व्यक्ति बना दिया।
3महाराजा क्षयर्ष के यहाँ यहूदी मोर्दकै महत्व की दृष्टि
से दूसरे स्थान पर था। मोर्दकै यहूदियों में अत्यन्त
महत्वपूर्ण पुरुष था। तथा उसके साथी यहूदी उसका
बहुत आदर करते थे। वे मोर्दकै का आदर इसलिए
करते थे कि उसने अपने लोगों के भले के लिए काम
किया था। मोर्दकै सभी यहूदियों के कल्याण की बातें
किया करता था।

अय्यूब

अय्यूब एक उत्तम व्यक्ति

1 ऊज नाम के प्रदेश में एक व्यक्ति रहा करता था।उसका
नाम अय्यूब था। अय्यूब एक बहुत अच्छा और
विश्वासी व्यक्ति था। अय्यूब परमेश्वर की उपासना
किया करता था और अय्यूब बुरी बातों से दूर रहा
करता था। **2**उसके सात पुत्र और तीन पुत्रियाँ थीं।
3अय्यूब सात हजार भेड़ों, तीन हजार ऊँटो, एक हजार
बैलों और पाँच सौ गधियों का स्वामी था। उसके पास
बहुत से सेवक थे। अय्यूब पूर्व का सबसे अधिक धनवान
व्यक्ति था।
4अय्यूब के पुत्र बारी–बारी से अपने घरों में एक
दूसरे को खाने पर बुलाया करते थे और वे अपनी
बहनों को भी वहाँ बुलाते थे। **5**अय्यूब के बच्चे जब
जेवनार दे चुकते तो अय्यूब बड़े तड़के उठता और
अपने हर बच्चे की ओर से होमबलि अर्पित करता। वह
सोचता, "हो सकता है, मेरे बच्चे अपनी जेवनार में
परमेश्वर के विरुद्ध भूल से कोई पाप कर बैठे हों।"
अय्यूब इसलिये सदा ऐसा किया करता था ताकि उसके
बच्चों को उनके पापों के लिये क्षमा मिल जाये।
6फिर स्वर्गदूतों का यहोवा से मिलने का दिन आया
और यहाँ तक कि शैतान भी उन स्वर्गदूतों के साथ
था। **7**यहोवा ने शैतान से कहा, "तू कहाँ रहा?"
शैतान ने उत्तर देते हुए यहोवा से कहा, "मैं धरती पर
इधर उधर घूम रहा था। **8**इस पर यहोवा ने शैतान से
कहा, "क्या तूने मेरे सेवक अय्यूब को देखा? पृथ्वी पर
उसके जैसा कोई दूसरा व्यक्ति नहीं है। अय्यूब एक
खरा और विश्वासी व्यक्ति है। वह परमेश्वर की उपासना
करता है। और बुरी बातों से सदा दूर रहता है।"
9शैतान ने उत्तर दिया, "निश्चय ही! किन्तु अय्यूब
परमेश्वर का एक विशेष कारण से उपासना करता है!
10तू सदा उसकी, उसके घराने की और जो कुछ उसके
पास है, उसकी रक्षा करता है। जो कुछ वह करता है,
तू उसमें उसे सफल बनाता है। हाँ, तूने उसे आशीर्वाद
दिया है। वह इतना धनवान है कि उसके मवेशी और
उसका रेवड़ सारे देश में हैं।
11किन्तु जो कुछ उसके पास है, उस सब कुछ को
यदि तू नष्ट कर दे तो मैं तुझे विश्वास दिलाता हूँ कि
वह तेरे मुँह पर ही तेरे विरुद्ध बोलने लगेगा।"
12यहोवा ने शैतान से कहा, "अच्छा, अय्यूब के पास
जो कुछ है, उसके साथ, जैसा तू चाहता है, कर किन्तु
उसके शरीर को चोट न पहुँचाना"
इसके बाद शैतान यहोवा के पास से चला गया।

अय्यूब का सब कुछ जाता रहा

13एक दिन, अय्यूब के पुत्र और पुत्रियाँ अपने सबसे
बड़े भाई के घर खाना खा रहे थे और दाखमधु पी रहे
थे। **14**तभी अय्यूब के पास एक सन्देशवाहक आया
और बोला, "बैल हल जोत रहे थे और पास ही गधे घास
चर रहे थे **15**कि शबा* के लोगों ने हम पर धावा बोल
दिया और तेरे पशुओं को ले गये! मुझे छोड़ सभी दासों
को शबा के लोगों ने मार डाला। आपको यह समाचार
देने के लिये मैं बच कर भाग निकला हूँ!"
16अभी वह सन्देशवाहक कुछ कह ही रहा था कि
अय्यूब के पास दूसरा सन्देशवाहक आया। दूसरे
सन्देशवाहक ने कहा, "आकाश से बिजली गिरी और
आपकी भेड़ें और दास जलकर राख हो गये हैं। आपको
समाचार देने के लिये केवल मैं ही बच निकल पाया
हूँ!"
17अभी वह सन्देशवाहक अपनी बात कह ही रहा था
कि एक और सन्देशवाहक आ गया। इस तीसरे
सन्देशवाहक ने कहा, "कसदी के लोगों ने तीन टोलियाँ
भेजी थीं जिन्होंने हम पर हमला बोल दिया और ऊँटो
को छीन ले गये और उन्होंने सेवकों को मार डाला।
आपको समाचार देने के लिये केवल मैं ही बच निकल
पाया हूँ!"
18यह तीसरा दूत अभी बोल ही रहा था कि एक और
सन्देशवाहक आगया। इस चौथे सन्देशवाहक ने कहा,
"आपके पुत्र और पुत्रियाँ सबसे बड़े भाई के घर खा रहे
थे और दाखमधु पी रहे थे। **19**तभी रेगिस्तान से अचानक
एक तेज आँधी उठी और उसने मकान को उड़ा कर
ढहा दिया। मकान आपके पुत्र और पुत्रियों के ऊपर आ
पड़ा और वे मर गये। आपको समाचार देने के लिये
केवल मैं ही बच निकल पाया हूँ!"
20अय्यूब ने जब यह सुना तो उसने अपने कपड़े फाड़
डाले और यह दर्शाने के लिये कि वह दु:खी और
व्याकुल है, उसने अपना सिर मुँड़ा लिया। अय्यूब ने तब

धरती पर गिरकर परमेश्वर को दण्डवत किया। 21उसने
कहा: "मेरा जब इस संसार के बीच जन्म हुआ था,
मैं तब नंगा था,मेरे पास तब कुछ भी नहीं था। जब
मैं मरूँगा और यह संसार तजूँगा, मैं नंगा होऊँगा और
मेरे पास में कुछ नहीं होगा। यहोवा ही देता है और
यहोवा ही ले लेता, यहोवा के नाम की प्रशंसा करो!"
22जो कुछ घटित हुआ था, उस सब कुछ के कारण
न तो अय्यूब ने कोई पाप किया और न ही उसने
परमेश्वर को दोष दिया।

शैतान द्वारा अय्यूब को फिर दुःख देना

2 फिर एक दिन, यहोवा से मिलने के लिये स्वर्गदूत
आये। शैतान भी उनके साथ था। शैतान यहोवा से
मिलने आया था। 2यहोवा ने शैतान से पूछा, "तू कहाँ
रहा?"

शैतान ने उत्तर देते हुए यहोवा से कहा, "मैं धरती पर
इधर उधर घूमता रहा हूँ।" 3इस पर यहोवा ने शैतान से
पूछा, "क्या तू मेरे सेवक अय्यूब पर ध्यान देता रहा है?
उसके जैसा विश्वासी धरती पर कोई नहीं है। सचमुच
वह अच्छा और वह बहुत विश्वासी व्यक्ति है। वह
परमेश्वर की उपासना करता है, बुरी बातों से दूर रहता
है। वह अब भी आस्थावान है। यद्यपि तूने मुझे प्रेरित
किया था कि मैं अकारण ही उसे नष्ट कर दूँ।"

4शैतान ने उत्तर दिया, "खाल के बदले खाल! एक
व्यक्ति जीवित रहने के लिये, जो कुछ उसके पास है,
सब कुछ दे डालता है। 5सो यदि तू अपनी शक्ति का
प्रयोग उसके शरीर को हानि पहुँचाने में करे तो तेरे
मुँह पर ही वह तुझे कोसने लगेगा!"

6सो यहोवा ने शैतान से कहा, "अच्छा, मैंने अय्यूब
को तुझे सौंपा, किन्तु तुझे उसे मार डालने की छूट
नहींहै।"

7इसके बाद शैतान यहोवा के पास से चला गया और
उसने अय्यूब को बड़े दुःखदायी फोड़े दे दिये। ये दुःखदायी
फोड़े उसके पाँव के तलवे से लेकर उसके सिर के
ऊपर तक शरीर में फैल गये थे। 8सो अय्यूब कूड़े की
ढेरी के पास बैठ गया। उसके पास एक ठीकरा था,
जिससे वह अपने फोड़ों को खुजलाया करता था। 9अय्यूब
की पत्नी ने उससे कहा, "क्या परमेश्वर में अब भी
तेरा विश्वास है? तू परमेश्वर को कोस कर मर क्यों
नहीं जाता!"

10अय्यूब ने उत्तर देते हुए अपनी पत्नी से कहा, "तू
तो एक मूर्ख स्त्री की तरह बातें करती है! देख, परमेश्वर
जब उत्तम वस्तुएं देता है, हम उन्हें स्वीकार कर लेते हैं।
सो हमें दुःख को भी अपनाना चाहिये और शिकायत
नहीं करनी चाहिए।" इस समूचे दुःख में भी अय्यूब ने
कोई पाप नहीं किया। परमेश्वर के विरोध में वह कुछ
नहींबोला।

अय्यूब के तीन मित्रों का उससे मिलने आना

11अय्यूब के तीन मित्र थे: तेमानी का एलीपज, शूही
का बिलदद और नामाती का सोपर। इन तीनों मित्रों ने
अय्यूब के साथ जो बुरी घटनाएँ घटी थीं, उन सब के
बारे में सुना। ये तीनों मित्र अपना-अपना घर छोड़कर
आपस में एक दूसरे से मिले। उन्होंने निश्चय किया कि
वे अय्यूब के पास जा कर उसके प्रति सहानुभूति प्रकट
करें और उसे ढाढस बँधायें। 12किन्तु इन तीनों मित्रों ने
जब दूर से अय्यूब को देखा तो वे निश्चय नहीं कर पाये
कि वह अय्यूब है क्योंकि वह एकदम अलग दिखाई दे
रहा था। वे दहाड़ मार कर रोने लगे। उन्होंने अपने
कपड़े फाड़ डाले। अपने दुःख और अपनी बेचैनी को
दर्शाने के लिये उन्होंने हवा में धूल उड़ाते हुए अपने
अपने सिरों पर मिट्टी डाली। 13फिर वे तीनों मित्र
अय्यूब के साथ सात दिन और सात रात तक भूमि पर
बैठे रहे। अय्यूब से किसी ने एक शब्द तक नहीं
कहा क्योंकि वे देख रहे थे कि अय्यूब भयानक
पीड़ा में था।

अय्यूब का उस दिन को कोसना जब वह जन्मा था

3 तब अय्यूब ने अपना मुँह खोला और उस दिन को
कोसने लगा जब वह पैदा हुआ था। 2-3उसने कहा:
"काश! जिस दिन मैं पैदा हुआ था, मिट जाये। काश!
वह रात कभी न आई होती जब उन्होंने कहा था कि
'एक लड़का पैदा हुआ है!'

4काश! वह दिन अंधकारमय होता, काश! परमेश्वर
उस दिन को भूल जाता, काश! उस दिन प्रकाश न
चमका होता।

5काश! वह दिन अंधकारपूर्ण बना रहता जितना कि
मृत्यु है। काश! बादल उस दिन को घेरे रहते। काश!
जिस दिन मैं पैदा हुआ काले बादल प्रकाश को डरा कर
भगा सकते।

6उस रात को गहरा अंधकार जकड़ ले, उस रात की
गिनती न हो। उस रात को किसी महीने में सम्मिलित न
करो।

7वह रात कुछ भी उत्पन्न न करे। कोई भी आनन्द
ध्वनि उस रात को सुनाई न दे।

8जादूगरों को शाप देने दो, उस दिन को वे शापित
करें जिस दिन मैं पैदा हुआ। वे व्यक्ति हमेशा लिब्यातान
(सागर का दैत्य) को जगाना चाहतेहैं।

9उस दिन को भोर का तारा काला पड़ जाये। वह
रात सुबह के प्रकाश के लिये तरसे और वह प्रकाश
कभी न आये। वह सूर्य की पहली किरण न देख सके।

10क्यों? क्योंकि उस रात ने मुझे पैदा होने से न
रोका। उस रात ने मुझे ये कष्ट झेलने से न रोका।

11मैं क्यों न मर गया जब मैं पैदा हुआ था? जन्म के
समय ही मैं क्यों न मर गया?

12क्यों मेरी माँ ने गोद में रखा? क्यों मेरी माँ की
छातियों ने मुझे दूध पिलाया।
13अगर मैं तभी मर गया होता जब मैं पैदा हुआथा तो
अब मैं शान्ति से होता। काश! मैं सोता रहता और
विश्राम पाता।
14राजाओं और बुद्धिमान व्यक्तियों के साथ जो पृथ्वी
पर पहले थे। उन लोगों ने अपने लिये स्थान बनायें, जो
अब नष्ट हो कर मिट चुके है।
15काश! मैं उन शासकों के साथ गाड़ा जाता जिन्होंने
सोने–चाँदी से अपने घर भरे थे।
16क्यों नहीं मैं ऐसा बालक हुआ जो जन्म लेते ही मर
गया हो। काश! मैं एक ऐसा शिशु होता जिसने दिन के
प्रकाश को नहीं देखा।
17दुष्ट जन दुःख देना तब छोड़ते हैं जब वे कब्र में
होते हैं और थके जन कब्र में विश्राम पाते हैं।
18यहाँ तक कि बंदी भी सुख से कब्र में रहते है। वहाँ
वे अपने पहरेदारों की आवाज नहीं सुनतेहैं।
19हर तरह के लोग कब्र में रहते हैं चाहे वे महत्वपूर्ण
हो या साधारण। वहाँ दास अपने स्वामी से छुटकारा
पाता है।
20कोई दुःखी व्यक्ति और अधिक यातनाएँ भोगता
जीवित क्यों रहें? ऐसे व्यक्ति को जिस का मन कड़वाहट
से भरा रहता है क्यों जीवन दिया जाता है?
21ऐसा व्यक्ति मरना चाहता है लेकिन उसे मौत नहीं
आती हैं। ऐसा दुःखी व्यक्ति मृत्यु पाने को उसी प्रकार
तरसता है जैसे कोई छिपे खजाने के लिये।
22ऐसे व्यक्ति कब्र पाकर प्रसन्न होते हैं और आनन्द
मनाते हैं।
23परमेश्वर उनके भविष्य को रहस्यपूर्ण बनाये रखता
है और उनकी सुरक्षा के लिये उनके चारों ओर दीवार
खड़ी करता है।
24मैं भोजन के समयप्रसन्न होने के बजाय दुःखी आहें
भरता हूँ। मेरा विलाप जलधारा की भाँति बाहर फूट
पड़ता है।
25मैं जिस डरावनी बात से डरता रहा कि कहीं वहीं
मेरे साथ न घट जाये, वही मेरे साथ घट गई। और
जिस बात से मैं सबसे अधिक डरा, वही मेरे साथ हो
गई।
26न ही मैं शान्त हो सकता हूँ, न ही मैं विश्राम कर
सकता हूँ। मैं बहुत ही विपदा में हूँ।"

एलीपज का कथन

4 1-2फिर तेमान के एलीपज ने उत्तर दिया: "यदि
कोई व्यक्ति तुझसे कुछ कहना चाहे तो क्या उससे
तू बेचैन होगा? मुझे कहना ही होगा!
3"हे अय्यूब, तूने बहुत से लोगों को शिक्षा दीऔर
दुर्बल हाथों को तूने शक्ति दी।
4जो लोग लड़खड़ा रहे थे तेरे शब्दों ने उन्हें ढाढ़स
बंधाया था। तूने निर्बल पैरों को अपने प्रोत्साहन से
सबल किया।
5किन्तु अब तुझ पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा है
और तेरा साहस टूट गया है। विपदा की मार तुझ पर
पड़ी और तू व्याकुल हो उठा।
6तू परमेश्वर की उपासना करता है, सो उस पर
भरोसा रख। तू एक भला व्यक्ति है सो इसी को तू
अपनी आशा बना ले।
7अय्यूब, इस बात को ध्यान में रख कि कोई भी
सज्जन कभी नहीं नष्ट किये गये। निर्दोष कभी भी नष्ट
नहीं किया गया है।
8मैंने ऐसे लोगों को देखा है जो कष्टों को बढ़ाते हैं
और जो जीवन को कठिन करतेहैं। किन्तु वे सदा ही
दण्ड भोगते हैं।
9परमेश्वर का दण्ड उन लोगों को मार डालताहै,
और उसका क्रोध उन्हें नष्ट करता है।
10दुर्जन सिंह की तरह गुर्राते और दहाड़ते हैं, किन्तु
परमेश्वर उन दुर्जनों को चुप कराताहै। परमेश्वर उनके
दाँत तोड़ देता है।
11बुरे लोग उन सिंहों के समान होते हैं जिन के पास
शिकार के लिये कुछ भी नहीं होता। वे मर जाते हैं
और उनके बच्चे इधर–उधर बिखर जाते हैं, और वे
मिट जाते हैं।
12मेरे पास एक सन्देश चुपचाप पहुँचाया गया, और
मेरे कानों में उसकी भनक पड़ी।
13जिस तरह रात का बुरा स्वप्न नींद उड़ा देताहै,
ठीक उसी प्रकार मेरे साथ में हुआ है।
14मैं भयभीत हुआ और काँपने लगा। मेरी सब हड्डियाँ
हिल गई।
15मेरे सामने से एक आत्मा जैसी गुजरी जिससे मेरे
शरीर में रोंगटे खड़े हो गये।
16वह आत्मा चुपचाप ठहर गया किन्तु मैं नहीं जान
सका कि वह क्या था। मेरी आँखों के सामने एक
आकृति खड़ी थी, और वहाँ सन्नाटा सा छाया था। फिर
मैंने एक बहुत ही शान्त ध्वनि सुनी।
17'मनुष्य परमेश्वर से अधिक उचित नहीं हो
सकता। अपने रचयिता से मनुष्य अधिक पवित्र नहीं
हो सकता।
18परमेश्वर अपने स्वर्गीय सेवकों तक पर भरोसा
नहीं कर सकता। परमेश्वर को अपने दूतों तक में दोष
मिल जातें हैं।
19सो मनुष्य तो और भी अधिक गया गुजरा है।
मनुष्य तो कच्चे मिट्टी के घरौंदों में रहते हैं। इन मिट्टी
के घरौंदों की नींव धूल में रखी गई हैं। इन लोगों को
उससे भी अधिक आसानी से मसल कर मार दिया
जाता है, जिस तरह भुनगों को मसल कर मारा जाता है।

20लोग भोर से सांझ के बीच में मर जाते हैं किन्तु उन पर ध्यान तक कोई नहीं देता है। वे मर जाते हैं और सदा के लिये चले जाते हैं।

21उनके तम्बूओं की रस्सियाँ उखाड़ दी जाती हैं, और ये लोग विवेक के बिना मर जाते हैं।'

5 "अय्यूब, यदि तू चाहे तो पुकार कर देख ले किन्तु तुझे कोई भी उत्तर नहीं देगा। तू किसी भी स्वर्गदूत की ओर मुड़ नहीं सकताहै।

2मूर्ख का क्रोध उसी को नष्ट कर देगा। मूर्ख की तीव्र भावनायें उसी को नष्ट कर डालेंगी।

3मैंने एक मूर्ख को देखा जो सोचता था कि वह सुरक्षित है। किन्तु वह एकाएक मर गया।

4ऐसे मूर्ख व्यक्ति की सन्तानों की कोई भी सहायता न कर सका। न्यायालय में उनको बचाने वाला कोई न था।

5उस की फसल को भूखे लोग खा गये। यहाँ तक कि वे भूखे लोग काँटों की झाड़ियों के बीच उगे अन्न कण को भी उठा ले गये। जो कुछ भी उसके पास था उसे लालची लोग उठा ले गये।

6बुरा समय मिट्टी से नहीं निकलता है, न ही विपदा मैदानों में उगती है।

7मनुष्य का जन्म दु:ख भोगने के लिए हुआ है। यह उतना ही सत्य है जितना सत्य है कि आग से चिंगारी ऊपर उठती है।

8किन्तु अय्यूब, यदि तुम्हारी जगह मैं होता तो मैं परमेश्वर के पास जाकर अपना दुखड़ा कह डालता।

9लोग उन अद्भुत भरी बातों को जिन्हें परमेश्वर करता है, नहीं समझते हैं। ऐसे उन अद्भुत कर्मो का जिसे परमेश्वर करता है, कोई अन्त नहीं है।

10परमेश्वर धरती पर वर्षा को भेजता है, और वही खेतों में पानी पहुँचाया करता है।

11परमेश्वर विनम्र लोगों को ऊपर उठाता है, और दु:खी जन को अति प्रसन्न बनाता है।

12परमेश्वर चालाक व दुष्ट लोगों के कुचक्र को रोक देता है। इसलिये उनको सफलता नहीं मिला करती।

13परमेश्वर चतुर को उसी की चतुराई भरी योजना में पकड़ता है। इसलिए उनके चतुराई भरी योजनाएं सफल नहीं होती।

14वे चालाक लोग दिन के प्रकाश में भी ठोकरें खाते फिरते हैं। यहाँ तक कि दोपहर में भी वे रास्ते का अनुभव रात के जैसे करते हैं।

15परमेश्वर दीन व्यक्ति को मृत्यु से बचाता है और उन्हें शक्तिशाली चतुर लोगों की शक्ति से बचाता है।

16इसलिए दीन व्यक्ति को भरोसा है। परमेश्वर बुरे लोगों को नष्ट करेगा जो खरे नहीं हैं।

17वह मनुष्य भाग्यवान है, जिसका परमेश्वर सुधार करता है इसलिए जब सर्वशक्तिशाली परमेश्वर तुम्हें दण्ड दे रहा तो तुम अपना दु:खड़ा मत रोओ।

18परमेश्वर उन घावों पर पट्टी बान्धता है जिन्हें उसने दिया है। वह चोट पहुँचाता है किन्तु उसके ही हाथ चंगा भी करते हैं।

19वह तुझे छ: विपत्तियों से बचायेगा। हाँ! सातों विपत्तियों में तुझे कोई हानि न होगी।

20अकाल के समय परमेश्वर तुझे मृत्यु से बचायेगा और परमेश्वर युद्ध में तेरी मृत्यु से रक्षा करेगा।

21जब लोग अपने कठोर शब्दों से तेरे लिये बुरी बात बोलेंगे, तब परमेश्वर तेरी रक्षा करेगा। विनाश के समय तुझे डरने की आवश्यकता नहीं होगी।

22विनाश और भुखमरी पर तू हँसेगा और तू जंगली जानवरों से कभी भयभीत न होगा।

23तेरी वाचा परमेश्वर के साथ है यहाँ तक कि मैदानों की चट्टाने भी तेरी वाचा में भाग लेती है। जंगली पशु भी तेरे साथ शान्ति रखते हैं।

24तू शान्ति से रहेगा क्योंकि तेरा तम्बू सुरक्षित है। तू अपनी सम्पत्ति को सम्भालेगा और उसमें से कुछ भी खोया हुआ नहीं पायेगा।

25तेरी बहुत सन्तानें होंगी और वे इतनी होंगी जितनी घास की पत्तियाँ पृथ्वी पर हैं।

26तू उस पके गेहूँ जैसा होगा जो कटनी के समय तक पकता रहता है। हाँ, तू पूरी वृद्ध आयु तक जीवित रहेगा।

27अय्यूब, हमने ये बातें पढ़ी हैं और हम जानते हैं कि ये सच्ची है। अत: अय्यूब सुन और तू इन्हें स्वयं अपने आप जान।"

6 1-2फिर अय्यूब ने उत्तर देते हुए कहा, "यदि मेरी पीड़ा को तौला जा सके और सभी वेदनाओं को तराजू में रख दिया जाये, तभी तुम मेरी व्यथा को समझ सकोगे।

3मेरी व्यथा समुद्र की समूची रेत से भी अधिक भारी होंगी। इसलिये मेरे शब्द मूखर्तापूर्ण लगते हैं।

4सर्वशक्तिमान परमेश्वर के बाण मुझ में बिधेहैं और मेरा प्राण उन बाणों के विष को पिया करता है। परमेश्वर के वे भयानक शस्त्र मेरे विरुद्ध एक साथ रखी हुई हैं।

5तेरे शब्द कहने के लिये आसान हैं जब कुछ भी बुरा नहीं घटित हुआ है। यहाँ तक कि बनैला गधा भी नहीं रेंकता यदि उसके पास घास खाने को रहे और कोई भी गाय तब तक नहीं रम्भाती जब तक उस के पास चरने के लिये चारा है।

6भोजन बिना नमक के बेस्वाद होता है और अण्डे की सफेदी में स्वाद नहीं आता है।

7इस भोजन को छूने से मैं इन्कार करता हूँ। इस प्रकार का भोजन मुझे तंग कर डालता है। मेरे लिये तुम्हारे शब्द ठीक उसी प्रकार के हैं।

8काश! मुझे वह मिल पाता जो मैंने माँगा है। काश! परमेश्वर मुझे दे देता जिसकी मुझे कामना है।

9काश! परमेश्वर मुझे कुचल डालता और मुझे आगे बढ़ कर मार डालता।

10यदि वह मुझे मारता है तो एक बात का चैन मुझे रहेगा, अपनी अनन्तत: पीड़ा में भीमुझे एक बात की प्रसन्नता रहेगा कि मैने कभी भी अपने पवित्र के आदेशों पर चलने से इन्कार नहीं किया।

11मेरी शक्ति क्षीण हो चुकी है अत: जीते रहने की आशा मुझे नहीं है। मुझ को पता नहीं कि अंत में मेरे साथ क्या होगा? इसलिये धीरज धरने का मेरे पास कोई कारण नहीं है।

12मैं चट्टान की भाँति सुदृढ़ नहीं हूँ। न ही मेरा शरीर काँसे से रचा गया है।

13अब तो मुझमें इतनी भी शक्ति नहीं कि मैं स्वयं को बचा लूँ। क्यों? क्योंकि मुझ से सफलता छीन ली गई है।

14क्योंकि वह जो अपने मित्रों के प्रति निष्ठा दिखाने से इन्कार करता है। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर का भी अपमान करता है।

15किन्तु मेरे बन्धुओं, तुम विश्वासयोग्य नहीं रहे। मैं तुम पर निर्भर नहीं रह सकता हूँ। तुम ऐसी जलधाराओं के सामान हो जो कभी बहती हैं और कभी नहीं बहती है। तुम ऐसी जलधाराओं के समान हो जो उफनती रहती है।

16जब वे बर्फ से और पिघलते हुए हिम सा रूँध जाती है।

17और जब मौसम गर्म और सूखा होता है तब पानी बहना बन्द हो जाता है, और जलधाराऐं सूख जाती हैं।

18व्यापारियों के दल मरुभूमि में अपनी राहों से भटक जाते हैं और वे लुप्त हो जाते हैं।

19तेमा के व्यापारी दल जल को खोजते रहे और शबा के यात्री आशा के साथ देखतेरहे।

20वे आश्वत थे कि उन्हे जल मिलेगा किन्तु उन्हें निराशा मिली।

21अब तुम उन जलधाराओं के समान हो। तुम मेरी यातानाओं को देखते हो और भयभीतहो।

22क्या मैंने तुमसे सहायता माँगी? नहीं। किन्तु तुमने मुझे अपनी सम्मति स्वतंत्रता पूर्वक दी।

23क्या मैंने तुमसे कहा कि शत्रुओं से मुझे बचा लो और क्रूर व्यक्तियों से मेरी रक्षा करो।

24अत: अब मुझेशिक्षा दो और मैं शान्त हो जाऊँगा। मुझे दिखा दो कि मैंने क्या बुरा किया है।

25सच्चे शब्द सशक्त होते हैं किन्तु तुम्हारे तर्क कुछ भी नहीं सिद्ध करते।

26क्या तुम मेरी आलोचना करने की योजनाऐं बनाते हो? क्या तुम इससे भी अधिक निराशापूर्ण शब्द बोलोगे?

27यहाँ तक कि तुम जुऐ में उन बच्चों की वस्तुओं को छीनना चाहते हो, जिनके पिता नहीं हैं। तुम तो अपने निज मित्र को भी बेच डालोगे।

28किन्तु अब मेरे मुख को पढ़ो। मैं तुमसे झूठ नहीं बोलूँगा।

29अत:, अपने मन को अब परिवर्तित करो। अन्यायी मत बनो, फिर से जरा सोचो कि मैंने कोई बुरा काम नहीं किया है।

30मैं झूठ नहीं कह रहा हूँ। मुझको भले और बुरे लोगों की पहचान है।"

7 अय्यूब ने कहा, "मनुष्य को धरती पर कठिन संघर्ष करना पड़ताहै। उसका जीवन भाड़े के श्रमिक के जीवन जैसा होता है।

2मनुष्य उस भाड़े के श्रमिक जैसा है जो तपते हुए दिन में मेहनत करने के बाद शीतल छाया चाहता है और मजदूरी मिलने के दिन की बाट जोहता रहता है।

3महीने दर महीने बेचैनी के गुजर गये हैं और पीड़ा भरी रात दर रात मुझे दे दी गई है।

4जब मैं लेटता हूँ, मैं सोचा करता हूँ कि अभी और कितनी देर है मेरे उठने का? यह रात घसीटती चली जा रही है। मैं छटपटाता और करवट बदलता हूँ, जब तक सूरज नहीं निकल आता।

5मेरा शरीर कीड़ों और धूल से ढका हुआ है। मेरी त्वचा चिटक गई है और इसमें रिसते हुऐ फोड़े भर गये हैं।

6मेरे दिन जुलाहे की फिरकी से भी अधिक तीव्र गति से बीत रहें हैं। मेरे जीवन का अन्त बिना किसी आशा के हो रहा है।

7हे परमेश्वर, याद रख, मेरा जीवन एक फूँक मात्र है। अब मेरी आँखे कुछ भी अच्छा नहीं देखेंगी।

8अभी तू मुझको देख रहा है किन्तु फिर तू मुझको नहीं देख पायेगा। तू मुझको ढूंढेगा किन्तु तब तक मैं जा चुका होऊँगा।

9एक बादल छुप जाता है और लुप्त हो जाता है। इसी प्रकार एक व्यक्ति जो मर जाता है और कब्र में गाड़ दिया जाता है, वह फिर वापस नहीं आता है।

10वह अपने पुराने घर को वापस कभी भी नहीं लौटेगा। उसका घर उसको फिर कभी भी नहीं जानेगा।

11अत: मैं चुप नहीं रहूँगा। मैं सब कह डालूँगा। मेरी आत्मा दुखित है और मेरा मन कटुता से भरा है, अत: मैं अपना दुखड़ा रोऊँगा।

12हे परमेश्वर, तू मेरी रखवाली क्यों करता है? क्या मैं समुद्र हूँ, अथवा समुद्र का कोई दैत्य?

13जब मुझ को लगता है कि मेरी खाट मुझे शान्ति देगी और मेरा पलंग मुझे विश्राम व चैन देगा।

14हे परमेश्वर, तभी तू मुझे स्वप्न में डराता है, और तू दर्शन से मुझे घबरा देता है।

15इसलिए जीवित रहने से अच्छा मुझे मर जाना ज्यादा पसन्द है।

16मैं अपने जीवन से घृणा करता हूँ। मेरी आशा टूट चुकी है। मैं सदैव जीवित रहना नहीं चाहता। मुझे अकेला छोड़ दे। मेरा जीवन व्यर्थ है।

17हे परमेश्वर, मनुष्य तेरे लिये क्यों इतना महत्वपूर्ण है? क्यों तुझे उसका आदर करना चाहिये? क्यों मनुष्य पर तुझे इतना ध्यान देना चाहिये?

18हर प्रात: क्यों तू मनुष्य के पास आता है और हर क्षण तू क्यों उसे परखा करता है?

19हे परमेश्वर, तू मुझसे कभी भी दृष्टि नहीं फेरता है और मुझे एक क्षण के लिये भी अकेला नहीं छोड़ता है।

20हे परमेश्वर, तू लोगों पर दृष्टि रखता है। यदि मैंने पाप किया, तब मैं क्या कर सकताहूँ? तूने मुझको क्यों निशाना बनाया है? क्या मैं तेरे लिये कोई समस्या बना हूँ?

21क्यों तू मेरी गलतियों को क्षमा नहीं करता और मेरे पापों को क्यों तू माफ नहीं करता है? मैं शीघ्र ही मर जाऊँगा और कब्र में चला जाऊँगा। जब तू मुझे ढूँढेगा किन्तु तब तक मैं जा चुका होऊँगा।"

8 इस के बाद शूह प्रदेश के बिलदद ने उत्तर देते हुए कहा, 2"तू कब तक ऐसी बातें करता रहेगा? तेरे शब्द तेज आँधी की तरह बह रहे हैं।

3परमेश्वर सदा निष्पक्ष है। न्यायपूर्ण बातों को सर्वशक्तिशाली परमेश्वर कभी नहीं बदलता है।

4अत: यदि तेरी सन्तानों ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है तो, उसने उन्हें दण्डित किया है। अपने पापों के लिये उन्हें भुगतना पड़ा है।

5किन्तु अब अय्यूब, परमेश्वर की ओर दृष्टि कर और सर्वशक्तिमान परमेश्वर से उस की दया पाने के लिये विनती कर।

6यदि तू पवित्र है, और उत्तम है तो वह शीघ्र आकर तुझे सहारा और तुझे तेरा परिवार और वस्तुऐं तुझे लौटायेगा।

7जो कुछ भी तूने खोया वह तुझे छोटी सी बात लगेगी। क्यों? क्योंकि तेरा भविष्य बड़ा ही सफल होगा।

8उन वृद्ध लोगों से पूछ और पता कर कि उनके पूर्वजों ने क्या सीखा था।

9क्योंकि ऐसा लगता है जैसे हम तो बस कल ही पैदा हुए हैं, हम कुछ नहीं जानते। परछाई की भाँति हमारी आयु पृथ्वी पर बहुत छोटी है।

10हो सकता है कि वृद्ध लोग तुझे कुछ सिखा सकें। हो सकता है जो उन्होंने सीखा है वे तुझे सिखा सकें।"

11बिलदद ने कहा, "क्या सूखी भूमि में भोजपत्र का वृक्ष बढ़ कर लम्बा हो सकता है? नरकुल बिना जल के बढ़ सकता है?

12नहीं, यदि पानी सूख जाता है तो वे भी मुरझा जायेंगे। उन्हें काटे जाने के योग्य काट कर काम में लाने को वे बहुत छोटे रह जायेंगे।

13वह व्यक्ति जो परमेश्वर को भूल जाता है, नर कुल की भाँति होता है। वह व्यक्ति जो परमेश्वर को भूल जाता है कभी आशावान नहीं होगा।

14उस व्यक्ति का विश्वास बहुत दुर्बल होता है। वह व्यक्ति मकड़ी के जाले के सहारे रहता है।

15यदि कोई व्यक्ति मकड़ी के जाले को पकड़ताहै किन्तु वह जाला उस को सहारा नहीं देगा।

16वह व्यक्ति उस पौधे के समान है जिसके पास पानी और सूर्य का प्रकाश बहुतायात से है। उसकी शाखाऐं बगीचे में हर तरफ फैलती हैं।

17वह पत्थर के टीले के चारों ओर अपनी जड़े फैलाता है और चट्टान में उगने के लिये कोई स्थान ढूँढता है।

18किन्तु जब वह पौधा अपने स्थान से उखाड़ दिया जाता है, तो कोई नहीं जान पाता कि वह कभी वहाँ था।

19किन्तु वह पौधा प्रसन्न था, अब दूसरेपौधे वहाँ उगेंगे, जहाँ कभी वह पौधा था।

20किन्तु परमेश्वर किसी भी निर्दोष व्यक्ति को नहीं त्यागेगा और वह बुरेव्यक्ति को सहारा नहीं देगा।

21परमेश्वर अभी भी तेरे मुख को हँसी से भर देगा और तेरे ओठों को खुशी से चहकायेगा।

22और परमेश्वर तेरे शत्रुओं को लज्जित करेगा और वह तेरे शत्रुओं के घरों को नष्ट करदेगा।"

9 फिर अय्यूब ने उत्तर दिया:
2"हाँ, मैं जानता हूँ कि तू सत्य कहता है किन्तु मनुष्य परमेश्वर के सामने निर्दोष कैसे हो सकता है?

3मनुष्य परमेश्वर से तर्क नहीं कर सकता। परमेश्वर मनुष्य से हजारों प्रश्न पूछ सकता है और कोई उनमें से एक का भी उत्तर नहीं दे सकता है।

4परमेश्वर का विवेक गहन है, उसकी शक्ति महान है। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो परमेश्वर से झगड़े और हानि न उठाये।

5जब परमेश्वर क्रोधित होता है, वह पर्वतों को हटा देता है और वे जान तक नहीं पाते।

6परमेश्वर पृथ्वी को कँपाने के लिये भूकम्प भेजता है। परमेश्वर पृथ्वी की नींव को हिला देता है।

7परमेश्वर सूर्य को आज्ञा दे सकता है और उसे उगने से रोक सकता हैं। वह तारों को बन्द कर सकता है ताकि वे न चमकें।

8केवल परमेश्वर ने आकाशों की रचना की। वह सागर की लहरों पर विचरण कर सकताहै।

9परमेश्वर ने सप्तर्षी, मृगशिरा और कचपचिया तारों को बनाया है। उसने उन ग्रहों को बनाया जो दक्षिण का आकाश पार करते हैं।

10परमेश्वर ऐसे अद्‌भुत कर्म करता है जिन्हें मनुष्य नहीं समझ सकता। परमेश्वर के महान आश्चर्यकर्मो का कोई अन्त नहीं है।

11परमेश्वर जब मेरे पास से निकलता है, मै उसे देख नहीं पाता हूँ। परमेश्वर जब मेरी बगल से निकल जाता है। मै उसकी महानता को समझ नहीं पाता।

12यदि परमेश्वर छीनने लगता है तो कोई भी उसे रोक नहीं सकता। कोई भी उस से कह नहीं सकता कि 'तू क्या कर रहा है?'

13परमेश्वर अपने क्रोध को नहीं रोकेगा। यहाँ तक कि राहाब दानव (सागर का दैत्य) के सहायक भी परमेश्वर से डरते हैं।

14अत: परमेश्वर से मैं तर्क नहीं कर सकता। मैं नहीं जानता कि उससे क्या कहा जाये।

15मैं यद्यपि निर्दोष हूँ किन्तु मैं परमेश्वर को एक उत्तर नहीं दे सकता। मैं बस अपने न्यायकर्ता (परमेश्वर) से दया की याचना कर सकता हूँ।

16यदि मैं उसे पुकारुँ और वह उत्तर दे, तब भी मुझे विश्वास नहीं होगा कि वह सचमुच मेरी सुनता है।

17परमेश्वर मुझे कुचलने के लिये तूफान भेजेगा और वह मुझे अकारण ही और अधिक घावों को देगा।

18परमेश्वर मुझे फिर सांस नहीं लेने देगा। वह मुझे और अधिक यातना देगा।

19मैं परमेश्वर को पराजित नहीं कर सकता। परमेश्वर शक्तिशाली है। मैं परमेश्वर को न्यायालय में नहीं ले जा सकता और उसे अपने प्रति मैं निष्पक्ष नहीं बनासकता। परमेश्वर को न्यायालय में आने के लिये कौन विवश कर सकता है?

20मैं निर्दोष हूँ किन्तु मेरा भयभीत मुख मुझे अपराधी कहेगा। अत: यद्यपि मैं निरपराधी हूँ किन्तु मेरा मुख मुझे अपराधी घोषित करता है।

21मैं पाप रहित हूँ किन्तु मुझे अपनी ही परवाह नहीं है। मैं स्वयं अपने ही जीवन से घृणा करता हूँ।

22मैं स्वयं से कहता हूँ हर किसी के साथ एक सा ही घटित होता है। निरपराध लोग भी वैसे ही मरते हैं जैसे अपराधी मरते हैं। परमेश्वर उन सबके जीवन का अन्त करताहै।

23जब कोई भयंकर बात घटती है और कोई निर्दोष व्यक्ति मारा जाता है तो क्या परमेश्वर उस के दु:ख पर हँसता है?

24जब धरती दुष्ट जन को दी जाती है तो क्या मुखिया को परमेश्वर अंधा कर देता है? यदि यह परमेश्वर ने नहीं किया तो फिर किसने किया है?

25किसी तेज धावक से तेज मेरे दिन भाग रहे हैं। मेरे दिन उड़ कर बीत रहे हैं और उनमें कोई प्रसन्नता नहीं है।

26वेग से मेरे दिन बीत रहे हैं जैसे श्री–पत्र की नाव बही चली जाती है, मेरे दिन टूट पड़तेहै ऐसे जैसे उकाब अपने शिकार पर टूट पड़ताहो!

27यदि मैं कहूँ कि मैं अपना दुखड़ा रोऊँगा, अपना दु:ख भूल जाऊँगा और उदासी छोड़कर हँसने लगूँगा।

28इससे वास्तव में कोई भी परिवर्तन नहीं होताहै। पीड़ा मुझे अभी भी भयभीत करती है।

29मुझे तो पहले से ही अपराधी ठहराया जा चुका है, सो मैं क्यों जतन करता रहूँ? मैं तो कहता हूँ 'भूल जाओ इसे।'

30चाहे मैं अपने आपको हिम से धो लूँ और यहाँ तक की अपने हाथ साबुन से साफ कर लूँ!

31फिर भी परमेश्वर मुझे घिनौने गर्त में धकेल देगा जहाँ मेरे वस्त्र तक मुझसे घृणा करेंगे।

32परमेश्वर, मुझ जैसा मनुष्य नहीं है। इसलिए उस को मैं उत्तर नहीं दे सकता। हम दोनों न्यायालय में एक दूसरे से मिल नहीं सकते।

33काश! कोई बिचौलिया होता जो दोनों तरफ की बातें सुनता। काश! कोई ऐसा होता जो हम दोनों का न्याय निष्पक्ष रूप से करता।

34काश! कोई जो परमेश्वर से उस की दण्ड की छड़ी को ले। तब परमेश्वर मुझे और अधिक भयभीत नहीं करेगा।

35तब मैं बिना डरे परमेश्वर से वह सब कह सकूँगा, जो मैं कहना चाहता हूँ।

10 किन्तु हाय, अब मैं वैसा नहीं कर सकता। मुझ को स्वयं अपने जीवन से घृणा हैं अत: मैं मुक्त भाव से अपना दुखड़ा रोऊँगा। मेरे मन में कड़वाहट भरी है अत: मैं अबबोलूँगा।

2मैं परमेश्वर से कहूँगा 'मुझ पर दोष मत लगा।। मुझे बता दे, मैंने तेरा क्या बुरा किया? मेरे विरुद्ध तेरे पास क्या है?

3हे परमेश्वर, क्या तू मुझे चोट पहुँचा कर प्रसन्न होता है? ऐसा लगता है जैसे तुझे अपनी सृष्टि की चिंता नहीं है। और शायद तू दुष्टों के कुचक्रों का पक्ष लेताहै।

4हे परमेश्वर, क्या तेरी आँखें मनुष्य समान है? क्या तू वस्तुओं को ऐसे ही देखता है, जैसे मनुष्य की आँखे देखा करती हैं।

5तेरी आयु हम मनुष्यों जैसे छोटी नहीं है। तेरे वर्ष कम नहीं हैं जैसे मनुष्य के कम होतेहैं।

6तू मेरी गलतियों को ढूढ़ता है, और मेरे पापों को खोजता है।

7तू जानता है कि मै निरपराध हूँ। किन्तु मुझे कोई भी तेरी शक्ति से बचा नहींसकता।

8परमेश्वर, तूने मुझ को रचा और तेरे हाथों ने मेरी देह को सँवारा, किन्तु अब तू ही मुझ से विमुख हुआ और मुझे नष्ट कर रहा है।

9हे परमेश्वर, याद कर कि तूने मुझे मिट्टी से मढ़ा,
किन्तु अब तू ही मुझे फिर से मिट्टी में मिलायेगा।
10तू दूध के समान मुझ को उडेंलता है, दूध की
तरह तू मुझे उबालता है और तू मुझे दूध से पनीर में
बदलता है।
11तूने मुझे हड्डियों और माँस पेशियों से बुना और
फिर तूने मुझ पर माँस और त्वचा चढ़ा दी।
12तूने मुझे जीवन का दान दिया और मेरे प्रति दयालु
रहा। तूने मेरा ध्यान रखा और तूने मेरे प्राणों की
रखवाली की।
13किन्तु यह वह है जिसे तूने अपने मन में छिपाये
रखा और मैं जानता हूँ, यह वह है जिसकी तूने अपने
मन में गुप्त रूप से योजना बनाई। हाँ, यह मैं जानता हूँ,
यह वह है जो तेरे मन में था।
14यदि मैंने पाप किया तो तू मुझे देखता था। सो मेरे
बुरे काम का दण्ड तू दे सकता था।
15जब मैं पाप करता हूँ तो मैं अपराधी होता हूँ और
यह मेरे लिये बहुत ही बुरा होगा। किन्तु मैं यदि निरपराध
भी हूँ तो भी अपना सिर नहीं उठा पाता क्योंकि मैं
लज्जा और पीड़ा से भरा हुआ हूँ।
16यदि मुझ को कोई सफलता मिल जाये और मैं
अभिमानी हो जाऊँ, तो तू मेरा पीछा वैसे करेगा जैसे
सिंह के पीछे कोई शिकारी पड़ता है। और फिर तू मेरे
विरुद्ध अपनी शक्ति दिखायेगा।
17तू मेरे विरुद्ध सदैव किसी न किसी को नया साक्षी
बनाता है। तेरा क्रोध मेरे विरुद्ध और अधिक भड़केगा
तथा मेरे विरुद्ध तू नई नई शत्रु सेना लायेगा।
18सो हे परमेश्वर, तूने मुझको क्यों जन्म दिया? इससे
पहले की कोई मुझे देखता काश! मैं मर गया होता।
19काश! मैं जीवित न रहता। काश! माता के गर्भ से
सीधे ही कब्र में उतारा जाता।
20मेरा जीवन लगभग समाप्त हो चुका है सो मुझे
अकेला छोड़ दो। मेरा थोड़ा सा समय जो बचा है उसे
मुझे चैन से जी लेने दो।
21इससे पहले कि मैं वहाँ चला जाऊँ जहाँ से कभी
कोई वापस नहीं आता हैं। जहाँ अंधकार है और मृत्यु
का स्थान है। 22जो थोड़ा समय मेरा बचा है उसे मुझ
को जी लेने दो, इससे पहले कि मैं वहाँ चला जाऊँ जिस
स्थान को कोई नहीं देख पाता अर्थात् अंधकार, विप्लव,
और गड़बड़ी का स्थान। उस स्थान में यहाँ तक कि
प्रकाश भी अंधकारपूर्ण होता है।'"

सोपर का अय्यूब से कथन

11 इस पर नामात नामक प्रदेश के सोपर ने अय्यूब
को उत्तर देते हुये कहा,
2"इस शब्दों के प्रवाह का उत्तर देना चाहिये। क्या यह
सब कहना अय्यूब को निर्दोष ठहराता है? नहीं!
3अय्यूब, क्या तुम सोचते हो कि हमारे पास तुम्हारे
लिये उत्तर नहीं है? क्या तुम सोचते हो कि जब तुम
परमेश्वर पर हंसते हो तो कोई तुम्हें चेतावनी नहीं
देगा।
4अय्यूब, तुम परमेश्वर से कहते रहे कि, 'मेरा विश्वास
सत्य है और तू देख सकता है कि मैं निष्कलंक हूँ!'
5अय्यूब, मेरी ये इच्छा है कि परमेश्वर तुझे उत्तर दे,
यह बताते हुए कि तू दोषपूर्ण है!
6काश! परमेश्वर तुझे बुद्धि के छिपे रहस्य बताता
और वह सचमुच तुझे उनको बतायेगा! हर कहानी के
दो पक्ष होते हैं, अय्यूब, मेरी सुन परमेश्वर तुझे कम
दण्डित कर रहा है, अपेक्षाकृत जितना उसे सचमुच
तुझे दण्डित करना चाहिये।
7अय्यूब, क्या तुम सर्वशक्तिमान परमेश्वर के रहस्यपूर्ण
सत्य समझ सकते हो? क्या तुम उसके विवेक की सीमा
मर्यादा समझ सकते हो?
8उसकी सीमायें आकाश से ऊँची हैं, इसलिये तुम
नहीं समझ सकते हो! सीमायें नर्क की गहराईयों से
गहरी है, सो तू उनको समझ नहीं सकता है!
9वे सीमायें धरती से व्यापक हैं, और सागर से विस्तृत
हैं।
10यदि परमेश्वर तुझे बंदी बनाये और तुझको न्यायालय
में ले जाये, तो कोई भी व्यक्ति उसे रोक नहीं सकता है।
11परमेश्वर सचमुच जानता है कि कौन पाखण्डी है।
परमेश्वर जब बुराई को देखता है, तो उसे याद रखता है।
12किन्तु कोई मूढ जन कभी बुद्धिमान नहीं होगा,
जैसे बनैला गधा कभी मनुष्य को जन्म नहीं दे सकता
है।
13सो अय्यूब, तुझको अपना मन तैयार करना चाहिये,
परमेश्वर की सेवा करने के लिये। तुझे अपने निज
हाथों को प्रार्थना करने को ऊपर उठाना चाहिये।
14वह पाप जो तेरे हाथों में बसा है, उसको तू दूर
कर। अपने तम्बू में बुराई को मत रहने दे।
15तभी तू निश्चय ही बिना किसी लज्जा के आँख
ऊपर उठा कर परमेश्वर को देख सकताहै। तू दृढता
से खड़ा रहेगा और नहीं डरेगा।
16अय्यूब, तब तू अपनी विपदा को भूल पायेगा। तू
अपने दुखड़ो को बस उस पानी सा याद करेगा जो तेरे
पास से बह कर चला गया।
17तेरा जीवन दोपहर के सूरज से भी अधिक उज्जवल
होगा। जीवन की अँधेरी घड़ियाँ ऐसे चमकेगी जैसे सुबह
का सूरज।
18अय्यूब, तू सुरक्षित अनुभव करेगा क्योंकि वहाँ
आशा होगी। परमेश्वर तेरी रखवाली करेगा और तुझे
आराम देगा।
19चैन से तू सोयेगा, कोई तुझे नहीं डरायेगा और
बहुत से लोग तुझ से सहायता माँगेंगे!

20किन्तु जब बुरे लोग आसरा ढूढेंगे तब उनको नहीं मिलेगा। उनके पास कोई आस नहीं होगी। वे अपनी विपत्तियों से बच कर निकल नहीं पायेंगे। मृत्यु ही उनकी आशा मात्र होगी।"

सोपर को अय्यूब का उत्तर

12 फिर अय्यूब ने सोपर को उत्तर दिया:
2"नि:सन्देह तुम सोचते हो कि मात्र तुम ही लोग
बुद्धिमान हो, तुम सोचते हो कि जब तुम मरोगे तो विवेक मर जायेगा तुम्हारे साथ।

3किन्तु तुम्हारे जितनी मेरी बुद्धि भी उत्तम है, मैं तुम से कुछ घट कर नहीं हूँ। ऐसी बातों को जैसी तुम कहते हो, हर कोई जानता है।

4अब मेरे मित्र मेरी हँसी उड़ाते हैं, वह कहते है: 'हाँ, वह परमेश्वर से विनती किया करता था, और वह उसे उत्तर देता था। इसलिए यह सब बुरी बातें उसके साथ घटित हो रही है।' यद्यपि मैं दोषरहित और खरा हूँ, लेकिन वे मेरी हँसी उड़ाते हैं।

5ऐसे लोग जिन पर विपदा नहीं पड़ी, विपदा ग्रस्तलोगों की हँसी किया करते हैं। ऐसे लोग गिरते हुये व्यक्ति को धक्का दिया करते हैं।

6डाकुओं के डेरे निश्चिंत रहते हैं, ऐसे लोग जो परमेश्वर को रुष्ट करते हैं, शांति से रहते हैं। स्वयं अपने बल को वह अपना परमेश्वर मानते हैं।

7चाहे तू पशु से पूछ कर देख, वे तुझे सिखादेंगे, अथवा हवा के पक्षियों से पूछ वे तुझे बता देंगे।

8अथवा तू धरती से पूछ ले वह तुझको सिखा देगी या सागर की मछलियों को अपना ज्ञान तुझे बताने दे।

9हर कोई जानता है कि परमेश्वर ने इन सब वस्तुओं को रचा है।

10हर जीवित पशु और हर एक प्राणी जो साँस लेता है, परमेश्वर की शक्ति के आधीन है।

11जैसे जीभ भोजन का स्वाद चखती है, वैसी ही कानों को शब्दों को परखना भाताहै।

12हम कहते है, "ऐसे ही बुढ़ों के पास विवेक रहता है, और लम्बी आयु समझ बूझ देतीहै।"

13विवेक और सामर्थ्य परमेश्वर के साथ रहतेहैं, सम्मत्ति और सूझ-बूझ उसी की ही होती है।

14यदि परमेश्वर किसी वस्तु को ढा गिराये तो, फिर लोग उसे नहीं बना सकते। यदि परमेश्वर किसी व्यक्ति को बन्दी बनाये, तो लोग उसे मुक्त नहीं कर सकते।

15यदि परमेश्वर वर्षा को रोके तो धरती सूख जायेगी।यदि परमेश्वर वर्षा को छूट दे दे, तो वह धरती पर बाढ़ ले आयेगी।

16परमेश्वर समर्थ है और वह सदा विजयी होता है। वह व्यक्ति जो छलता है और वह व्यक्ति जो छला जाता है दोनो परमेश्वर के हैं।

17परमेश्वर मन्त्रियों को बुद्धि से वंचित कर देताहै, और वह प्रमुखों को ऐसा बना देता है कि वे मूर्ख जनों जैसा व्यवहार करने लगते हैं।

18राजा बन्दियों पर जंजीर डालते हैं किन्तु उन्हें परमेश्वर खोल देता है। फिर परमेश्वर उन राजाओं पर एक कमरबन्द बांध देता है।

19परमेश्वर याजको को बन्दी बना कर, पद से हटाता है और, तुच्छ बना कर ले जाता है। वह बलि और शक्तिशाली लोगों को शक्तिहीन कर देता है।

20परमेश्वर विश्वासपात्र सलाह देनेवाले को चुप करा देता है। वह वृद्ध लोगों का विवेक छीन लेता है।

21परमेश्वर महत्वर्पूण हाकिमों पर घृणा उंडेल देता है। वह शासकों की शक्ति छीन लिया करता है।

22परमेश्वर गहन अंधकार से रहस्यपूर्ण सत्य को प्रगट करता है। ऐसे स्थानों में जहाँ मृत्यु सा अंधेरा है वह प्रकाश भेजता है।

23परमेश्वर राष्ट्रों को विशाल और शक्तिशाली होने देता है, और फिर उनको वह नष्ट कर डालता है। वह राष्ट्रों को विकसित कर विशाल बनने देता है, फिर उनके लोगों को वह तितर-बितर कर देता है

24परमेश्वर धरती के प्रमुखों को मूर्ख बना देताहै, और उन्हें नासमझ बना देता है। वह उनको मरुभूमि में जहाँ कोई राह नहीं भटकने को भेज देता है।

25वे प्रमुख अंधकार के बीच टटोलते हैं, कोई भी प्रकाश उनके पास नहीं होता है। परमेश्वर उनको ऐसे चलाता है, जैसे पी कर धुत्त हुये लोग चलते हैं।'

13 अय्यूब ने कहा: "मेरी आँखों ने यह सब पहले
देखा है और पहले ही मैं सुन चुका हूँ जो कुछ
तुम कहा करते हो। इस सब की समझ बूझ मुझे है।2मैं
भी उतना ही जानता हूँ जितना तू जानता है, मैं तुझ से
कम नहीं हूँ। 3किन्तु मुझे इच्छा नहीं है कि मैं तुझ से
तर्क करुँ, मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर से बोलना चाहता
हूँ। अपने संकट के बारे में, मैं परमेश्वर से तर्क करना
चाहता हूँ। 4किन्तु तुम तीनो लोग अपने अज्ञान को
मिथ्या विचारों से ढकना चाहते हो। तुम वो बेकार के
चिकित्सक हो जो किसी को अच्छा नहीं कर सकता।
5मेरी यह कामना है कि तुम पूरी तरह चुप हो जाओ,
यह तुम्हारे लिये बुद्धिमत्ता की बात होगी जिसको तुम
कर सकते हो!

6"अब, मेरी युक्ति सुनो! सुनो जब मैं अपनी सफाई दूँ।

7क्या तुम परमेश्वर के हेतु झूठ बोलोगे? क्या यह तुमको सचमुच विश्वास है कि ये तुम्हारे झूठ परमेश्वर तुम से बुलवाना चाहता है?

8क्या तुम मेरे विरुद्ध परमेश्वर का पक्ष लोगे? क्या तुम न्यायालय में परमेश्वर को बचाने जा रहे हो?

9यदि परमेश्वर ने तुमको अति निकटता से जाँच लिया तो क्या वह कुछ भी अच्छी बातपायेगा? क्या तुम

सोचते हो कि तुम परमेश्वर को छल पाओगे, ठीक
उसी तरह जैसे तुम लोगों को छलते हो?
10यदि तुम न्यायालय में छिपे छिपे किसी का पक्ष लोगे
तो परमेश्वर निश्चय ही तुम को लताड़ेगा।
11उसका भव्य तेज तुमको डरायेगा और तुम भयभीत
हो जाओगे।
12तुम सोचते हो कि तुम चतुराई भरी और
बुद्धिमत्तापूर्ण बातें करते हो, किन्तु तम्हारे कथन राख
जैसे व्यर्थ हैं। तुम्हारी युक्तियाँ माटी सी दुर्बल हैं।
13चुप रहो और मुझको कह लेने दो। फिर जो भी
होना है मेरे साथ हो जाने दो।
14मैं स्वयं को संकट में डाल रहा हूँ और मैं स्वयं
अपना जीवन अपने हाथों में ले रहा हूँ।
15चाहे परमेश्वर मुझे मार दे। मुझे कुछ आशा
नहीं है, तो भी मैं अपना मुकदमा उसके सामने
लड़ूँगा।
16किन्तु सम्भव है कि परमेश्वर मुझे बचा ले,
क्योंकि मैं उसके सामने निडर हूँ। कोई भी बुरा व्यक्ति
परमेश्वर से आमने सामने मिलने का साहस नहीं
कर सकता।
17उसे ध्यान से सुन जिसे मैं कहता हूँ, उस पर कान
दे जिसकी व्याख्या मैं करता हूँ।
18अब मैं अपना बचाव करने को तैयार हूँ। यह मुझे
पता है कि मुझ को निर्दोष सिद्ध किया जायेगा।
19कोई भी व्यक्ति यह प्रमाणित नहीं कर सकता कि
मैं गलत हूँ। यदि कोई व्यक्ति यह सिद्ध कर दे तो मैं चुप
हो जाऊँगा और प्राण दे दूँगा।
20हे परमेश्वर, तू मुझे दो बाते दे दे, फिर मैं तुझ से
नहीं छिपूँगा।
21मुझे दण्ड देना और डराना छोड़ दे, अपने आतंको
से मुझे छोड़ दे।
22फिर तू मुझे पुकार और मै तुझे उत्तर दूँगा, अथवा
मुझको बोलने दे और तू मुझको उत्तरदे।
23कितने पाप मैने किये हैं? कौन सा अपराध मुझसे
बन पड़ा? मुझे मेरे पाप और अपराध दिखा।
24हे परमेश्वर, तू मुझसे क्यों बचता है और मेरे साथ
शत्रु जैसा व्यवहार क्यों करता है?

25क्या तू मुझको डरायेगा? मैं (अय्यूब) एक पत्ता हूँ
जिसको पवन उड़ाती है। एक सूखे तिनके पर तू प्रहार
कर रहा है।
26हे परमेश्वर, तू मेरे विरोध में कड़वी बात बोलता
है। तू मुझे ऐसे पापों के लिये दुःख देता है जो मैंने
लड़कपन में किये थे।
27मेरे पैरों में तूने काठ डाल दिया है, तू मेरे हर
कदम पर आँख गड़ाये रखता है। मेरे कदमों की तूने
सीमायें बाँध दी हैं।
28मैं सड़ी वस्तु सा क्षीण होता जाता हूँ कीड़ें से खाये
हुये कपड़े के टुकड़े जैसा।"

14 अय्यूब ने कहा, "हम सभी मानव हैं हमारा
जीवन छोटा और दुःखमय है!
2मनुष्य का जीवन एक फूल के समान है जो शीघ्र
उगता है और फिर समाप्त हो जाता है। मनुष्य का
जीवन है जैसे कोई छाया जो थोड़ी देर टिकती है और
बनी नहीं रहती।
3हे परमेश्वर,क्या तू मेरे जैसे मनुष्यपरध्यानदेगा?
क्या तू मेरा न्याय करने मुझे सामने लायेगा?
4किसी ऐसी वस्तु से जो स्वयं अस्वच्छ है स्वच्छ वस्तु
कौन पा सकता है? कोई नही।
5मनुष्य का जीवन सीमित है। मनुष्य के महीनों की
संख्या परमेश्वर ने निश्चित कर दी है। तूने मनुष्य के
लिये जो सीमा बांधी है, उसे कोई भी नहीं बदल सकता।
6सो परमेश्वर, तू हम पर आँख रखना छोड़ दे। हम
लोगों को अकेला छोड़ दे। हमें अपने कठिन जीवन का
मजा लेने दे, जब तक हमारा समय नहीं समाप्त हो
जाता।
7किन्तु यदि वृक्ष को काट गिराया जाये तो भी आशा
उसे रहती हैं कि वह फिर से पनप सकता है, क्योंकि
उसमें नई नई शाखाएं निकलती रहेंगी।
8चाहे उस की जड़े धरती में पुरानी क्यों न हो जायें
और उसका तना चाहे मिट्टी में गल जाये।
9किन्तु जल की गंध मात्र से ही वह नई बढ़त देता है
और एक पौधे की तरह उससे शाखाएं फूटती हैं।
10किन्तु जब बलशाली मनुष्य मर जाता है उसकी
सारी शक्ति खत्म हो जाती है। जब मनुष्य मरता है वह
चला जाता है।
11जैसे सागर के तट से जल शीघ्र लौट कर खो जाता
है और जल नदी का उतरता है, और नदी सूख जाती है।
12उसी तरह जब कोई व्यक्ति मर जाता है वह नीचे
लेट जाता है और वह महा निद्रा से फिर खड़ा नहीं
होता। वैसे ही वह व्यक्ति जो प्राण त्यागता है कभी खड़ा
नहीं होता अथवा चिर निद्रा नहीं त्यागता जब तक
आकाश विलुप्त नहीं होंगे।
13काश! तू मुझे मेरी कब्र में मुझे छुपा लेता जब तक
तेरा क्रोध न बीत जाता। फिर कोई समय मेरे लिये
नियुक्त करके तू मुझे याद करता।
14यदि कोई मनुष्य मर जाये तो क्या जीवन कभी
पायेगा? मैं तब तक बाट जोहूँगा, जब तक मेरा कर्तव्य
पूरा नहीं हो जाता और जब तक मैं मुक्त न हो जाऊँ।
15हे परमेश्वर, तू मुझे बुलायेगा और मैं तुझे उत्तर
दूँगा। तूने मुझे रचा है, सो तू मुझे चाहेगा।
16फिर तू मेरे हर चरण का जिसे मैं उठाता हूँ, ध्यान
रखेगा और फिर तू मेरे उन पापों पर आँख रखेगा,
जिसे मैंने किये हैं।

17काश! मेरे पाप दूर हो जाएँ। किसी थैले में उन्हें बन्द कर दिया जाये और फिर तू मेरे पापों को ढक दे।

18जैसे पर्वत गिरा करता है और नष्ट हो जाता है और कोई चट्टान अपना स्थान छोड़ देती है।

19जल पत्थरों के ऊपर से बहता है और उन को घिस डालता है तथा धरती की मिट्टी को जल बहाकर ले जाती है। हे परमेश्वर, उसी तरह व्यक्ति की आशा को तू बहा ले जाता है।

20तू एक बार व्यक्ति को हराता है और वह समाप्त हो जाता है। तू मृत्यु के रूप सा उस का मुख बिगाड़ देता है, और सदा सदा के लिये कहीं भेज देता है।

21यदि उसके पुत्र कभी सम्मान पाते हैं तो उसे कभी उसका पता नहीं चल पाता। यदि उस के पुत्र कभी अपमान भोगतें हैं, जो वह उसे कभी देख नहीं पाता हैं।

22वह मनुष्य अपने शरीर में पीड़ा भोगता है और वह केवल अपने लिये ऊँचे पुकारता है।"

15 इस पर तेमान नगर के निवासी एलीपज ने अय्यूब को उत्तर देते हुए कहा:

2"अय्यूब, यदि तू सचमुच बुद्धिमान होता तो रोते शब्दों से तू उत्तर न देता। क्या तू सोचता है कि कोई विवेकी पुरुष पूर्व की लू की तरह उत्तर देता है?

3क्या तू सोचता है कि कोई बुद्धिमान पुरुष व्यर्थ के शब्दों से और उन भाषणों से तर्क करेगा जिनका कोई लाभ नहीं?

4अय्यूब, यदि तू मनमानी करता है तो कोई भी व्यक्ति परमेश्वर की न तो आदर करेगा, न ही उससे प्रार्थना करेगा।

5तू जिन बातों को कहता है वह तेरा पाप साफ साफ दिखाती हैं। अय्यूब, तू चतुराई भरे शब्दों का प्रयोग करके अपने पाप को छिपाने का प्रयत्न कर रहाहै।

6तू उचित नहीं यह प्रमाणित करने की मुझे आवश्यकता नहीं है। क्योंकि तू स्वयं अपने मुख से जो बातें कहताहै, वह दिखाती हैं कि तू बुरा है और तेरे ओंठ स्वयं तेरे विरुद्ध बोलते हैं।

7अय्यूब, क्या तू सोचता है कि जन्म लेने वाला पहला व्यक्ति तू ही है और पहाड़ों कि रचना से भी पहले तेरा जन्म हुआ।

8क्या तूने परमेश्वर की रहस्यपूर्ण योजनाऐं सुनी थी? क्या तू सोचा करता है कि एक मात्र तू ही बुद्धिमान है?

9अय्यूब, तू हम से अधिक कुछ नहीं जानता है। वे सभी बातें हम समझते हैं, जिनकी तुझको समझ है।

10वे लोग जिनके बाल सफेद हैं और वृद्ध पुरुषहैं वे हमसे सहमत रहते हैं। हाँ, तेरे पिता से भी वृद्ध लोग हमारे पक्ष में हैं।

11परमेश्वर तुझको सुख देने का प्रयत्न करता है, किन्तु यह तेरे लिये पर्याप्त नहीं है। परमेश्वर का सुसन्देश बड़ी नम्रता के साथ हमने तुझे सुनाया।

12अय्यूब, क्यों तेरा हृदय तुझे खींच ले जाता है? तू क्रोध में क्यों हम पर आँखें तरेरता है?

13जब तू इन क्रोध भरे वचनों को कहता है, तो तू परमेश्वर के विरुद्ध होता है।

14सचमुच कोई मनुष्य पवित्र नहीं हो सकता। मनुष्य स्त्री से पैदा हुआ है, और धरती पर रहता है, अत: वह उचित नहीं हो सकता।

15यहाँ तक कि परमेश्वर अपने दूतों तक का विश्वास नहीं करता है। यहाँ तक कि स्वर्ग जहाँ स्वर्गदूत रहते हैं पवित्र नहीं हैं।

16मनुष्य तो और अधिक पापी है। वह मनुष्य मलिन और घिनौना है वह बुराई को जल की तरह गटकता है।

17अय्यूब, मेरी बात तू सुन और मैं उसकी व्याख्या तुझसे करूँगा। मैं तुझे बताऊँगा, जो मैं जानता हूँ।

18मैं तुझको वे बातें बताऊँगा, जिन्हें विवेकी पुरुषों ने मुझ को बताया है और विवेकी पुरुषों को उनके पूर्वजों ने बताई थी। उन विवेकी पुरुषों ने कुछ भी मुझसे नहीं छिपाया।

19केवल उनके पूर्वजों को ही देश दिया गया था। उनके देश में कोई परदेशी नहीं था।

20दुष्ट जन जीवन भर पीड़ा झेलेगा और क्रूर जन उन सभी वर्षों में जो उसके लिये निश्चित किये गये हैं, दु:ख उठाता रहेगा।

21उसके कानों में भयंकर ध्वनियाँ होगी। जब वह सोचेगा कि वह सुरक्षित है तभी उसके शत्रु उस पर हमला करेंगे।

22दुष्ट जन बहुत अधिक निराश रहता है और उसके लिये कोई आशा नहीं है, कि वह अंधकार से बच निकल पाये। कहीं एक ऐसी तलवार है जो उसको मार डालने की प्रतिज्ञा कर रही है।

23वह इधर उधर भटकता हुआ फिरता है किन्तु उसकी देह गिद्धों का भोजन बनेगी। उसको यह पता है कि उसकी मृत्यु बहुत निकट है।

24चिंता और यातनाऐं उसे डरपोक बनाती है और ये बातें उस पर ऐसे वार करती हैं, जैसे कोई राजा उसके नष्ट कर डालने को तत्पर हो।

25क्यों? क्योंकि दुष्ट जन परमेश्वर की आज्ञा मानने से इन्कार करता है, वह परमेश्वर को घूसा दिखाता है और सर्वशक्तिमान परमेश्वर को पराजित करने का प्रयास करता है।

26वह दुष्ट जन बहुत हठी है। वह परमेश्वर पर एक मोटी मजबूत ढाल से वार करना चाहता है।

27दुष्ट जन के मुख पर चर्बी चढ़ी रहती है। उस की कमर माँस भर जाने से मोटी हो जातीहै।

28किन्तु वह उजड़े हुये नगरों में रहेगा। वह ऐसे घरों में रहेगा जहाँ कोई नहीं रहता है। जो घर कमजोर हैं और जो शीघ्र ही खण्डहर बन जायेंगे।

29दुष्ट जन अधिक समय तक धनी नहीं रहेगा उसकी
सम्पत्तियाँ नहीं बढ़ती रहेंगी।
30दुष्ट जन अन्धेरे से नहीं बच पायेगा। वह उस वृक्ष
सा होगा जिसकी शाखाऐं आग से झुलस गई हैं। परमेश्वर
की फूँक दुष्टों को उड़ा देगी।
31दुष्ट जन व्यर्थ वस्तुओं के भरोसे रह कर अपने
को मूर्ख न बनाये क्योंकि उसे कुछ नहीं प्राप्त होगा।
32दुष्ट जन अपनी आयु के पूरा होने से पहले ही
बुढ़ा हो जायेगा और सूख जायेगा। वह एक सूखी हुई
डाली सा हो जायेगा जो फिर कभी भी हरी नहीं होगी।
33दुष्ट जन उस अंगूर की बेल सा होता है जिस के
फल पकने से पहले ही झड़ जाते हैं। ऐसा व्यक्ति जैतून
के पेड़ सा होता है, जिसके फूल झड़ जाते हैं।
34क्यों? क्योंकि परमेश्वर विहीन लोग खाली हाथ
रहेंगे। ऐसे लोग जिनको पैसों से प्यार है, घूस लेते हैं।
उन के घर आग से नष्ट हो जायेंगे।
35वे पीड़ा का कुचक्र रचते हैं और बुरे काम करते
हैं। वे लोगों को छलने के ढंगों की योजना बनातेहैं।"

16 इस पर अय्यूब ने उत्तर देते हुए कहा:
2"मैंने पहले ही ये बातें सुनी हैं। तुम तीनों मुझे
दुःख देते हो, चैन नहीं।
3तुम्हारी व्यर्थ की लम्बी बातें कभी समाप्त नहीं
होती। तुम क्यों तर्क करते ही रहते हो?
4जैसे तुम कहते हो वैसी बातें तो मैं भी कर सकता
हूँ, यदि तुम्हें मेरे दुःख झेलने पड़ते। तुम्हारे विरोध में
बुद्धिमता की बातें मैं भी बना सकता हूँ और अपना
सिर तुम पर नचा सकता हूँ।
5किन्तु मैं अपने वचनों से तुम्हारा साहस बढ़ा सकता
हूँ और तुम्हारे लिये आशा बन्धा सकता हूँ।
6किन्तु जो कुछ मैं कहता हूँ उससे मेरा दुःख दूर
नहीं हो सकता। किन्तु यदि मैं कुछ भी न कहूँ तो भी
मुझे चैन नहीं पड़ता।
7सचमुच हे परमेश्वर तूने मेरी शक्तिको हर लिया है।
तूने मेरे सारे घराने को नष्ट कर दिया है।
8तूने मुझे बांध दिया और हर कोई मुझे देख सकता
है। मेरी देह दुर्बल है, मैं भयानक दिखता हूँ और लोग
ऐसा सोचते हैं जिस का तात्पर्य है किमैं अपराधी हूँ।
9परमेश्वर मुझ पर प्रहार करता है। वह मुझ पर
कुपित है और वह मेरी देह को फाड़ कर अलग कर
देता है, तथा परमेश्वर मेरे ऊपर दाँत पीसता है। मुझे
शत्रु घृणा भरी दृष्टि से घूरते हैं। 10लोग मेरी हँसी करते
हैं। वे सभी भीड़ बना कर मुझे घेरने को और मेरे मुँह
पर थप्पड़ मारने को सहमत हैं।
11परमेश्वर ने मुझे दुष्ट लोगों के हाथ में अर्पित कर
दिया है। उसने मुझे पापी लोगों के द्वारा दुःख दिया है।
12मेरे साथ सब कुछ भला चंगा था किन्तु तभी
परमेश्वर ने मुझे कुचल दिया। हाँ, उसने मुझे पकड़
लिया गर्दन से और मेरे चिथड़े चिथड़े कर डाले। परमेश्वर
ने मुझको निशाना बना लिया।
13परमेश्वर के तीरंदाज मेरे चारों तरफ हैं। वह मेरे
गुर्दों को बाणों से बेधता है। वह दया नहीं दिखाता है। वह
मेरे पित्त को धरती पर बिखेरता है।
14परमेश्वर मुझ पर बार बार वार करता है। वह मुझ
पर ऐसे झपटता है जैसे कोई सैनिक युद्ध में झपटता है।
15मैं बहुत ही दुःखी हूँ इसलिये मैं टाट के वस्त्र
पहनता हूँ। यहाँ मिट्टी और राख में मैं बैठा रहता हूँ
और सोचा करता हूँ कि मैं पराजित हूँ।
16मेरा मुख रोते-बिलखते लाल हुआ। मेरी आँखों के
नीचे काले घेरे हैं।
17मैंने किसी के साथ कभी भी क्रूरता नहीं की।
किन्तु ये बुरी बातें मेरे साथ घटित हुई। मेरी प्रार्थनाऐं
सही और सच्चे हैं।
18हे पृथ्वी, तू कभी उन अत्याचारों को मत छिपाना
जो मेरे साथ किये गये हैं। मेरी न्याय की विनती को तू
कभी रुकने मत देना।
19अब तक भी सम्भव है कि वहाँ आकाश में कोई
तो मेरे पक्ष में हो। कोई ऊपर है जो मुझे दोषरहित सिद्ध
करेगा।
20मेरे मित्र मेरे विरोधी हो गये हैं किन्तु परमेश्वर के
लिये मेरी आँखें आँसू बहाती हैं।
21मुझे कोई ऐसा व्यक्ति चाहिये जो परमेश्वर से मेरा
मुकदमा लड़े। एक ऐसा व्यक्ति जो ऐसे तर्क करे जैसे
निज मित्र के लिये करता हो।
22कुछ ही वर्ष बाद मैं वहाँ चला जाऊँगा जहाँ से फिर
मैं कभी वापस न आऊँगा (मृत्यु)।

17 "मेरा मन टूट चुका है। मेरा मन निराश है।
मेरा प्राण लगभग जा चुका है। कब्र मेरी बाट
जोह रही है।
2लोग मुझे घेरते हैं और मुझ पर हँसते हैं। जब लोग
मुझे सताते हैं और मेरा अपमान करते हैं, मैं उन्हें
देखता हूँ।
3"परमेश्वर, मेरे निरपराध होने का शपथ-पत्र मेरा
स्वीकार कर। मेरी निर्दोषता की साक्षी देने के लिये
कोई तैयार नहीं होगा।
4मेरे मित्रों का मन तूने मूँदा अत: वे मुझे कुछ नहीं
समझते हैं। कृपा कर उन को मत जीतने दे।
5लोगों की कहावत को तू जानता है। मनुष्य जो
ईनाम पाने को मित्र के विषय में गलत सूचना देते हैं,
उन के बच्चे अन्धे हो जाया करते हैं।
6परमेश्वर ने मेरा नाम हर किसी के लिये अपशब्द
बनाया है और लोग मेरे मुँह पर थूका करते हैं।
7मेरी आँख लगभग अन्धी हो चुकी है क्योंकि मैं
बहुत दुःखी और बहुत पीड़ा में हूँ। मेरी देह एक छाया
की भाँति दुर्बल हो चुकी है।

8मेरी इस दुर्दशा से सज्जन बहुत व्याकुल हैं। निरपराधी लोग भी उन लोगों से परेशान हैं जिनको परमेश्वर की चिन्ता नहीं हैं।

9किन्तु सज्जन नेकी का जीवन जीते रहेंगे। निरपराधी लोग शक्तिशाली हो जायेंगे।

10किन्तु तुम सभी आओ और फिर मुझ को दिखाने का यत्न करो कि सब दोष मेरा है। तम में से कोई भी विवेकी नहीं।

11मेरा जीवन यूँ ही बीत रहा है। मेरी योजनाऐं टूटगई हैं और आशा चली गई है।

12किन्तु मेरे मित्र रात को दिन सोचा करते हैं। जब अन्धेरा होता है, वे लोग कहा करते हैं ‘प्रकाश पास ही है।’

13यदि मैं आशा करुँ कि अन्धकारपूर्ण कब्र मेरा घर और बिस्तर होगा।

14यदि मैं कब्र से कहूँ ‘तू मेरा पिता है’ और कीड़े से ‘तू मेरी माता है अथवा तू मेरी बहन है।’

15किन्तु यदि वह मेरी एकमात्र आशा है तब तो कोई आशा मुझे नहीं हैं और कोई भी व्यक्ति मेरे लिये कोई आशा नहीं देख सकता है।

16क्या मेरी आशा भी मेरे साथ मृत्यु के द्वार तक जायेगी? क्या मैं और मेरी आशा एक साथ धूल में मिलेंगे?”

अय्यूब को बिल्दद का उत्तर

18 फिर शूही प्रदेश के बिल्दद ने उत्तर देते हुए
कहा: 2“अय्यूब, इस तरह की बातें करना तू
कबछोड़ेगा? तुझे चुप होना चाहिये और फिर सुनना चाहिये। तब हम बातें कर सकते हैं।

3तू क्यों यह सोचता हैं कि हम उतने मूर्ख हैं जितनी मूर्ख गायें।

4अय्यूब, तू अपने क्रोध से अपनी ही हानि कर रहा है। क्या लोग धरती बस तेरे लिये छोड़ दे? क्या तू यह सोचता है कि बस तुझे तृप्त करने को परमेश्वर धरती को हिला देगा?

5हाँ, बुरे जन का प्रकाश बुझेगा और उसकी आग जलना छोड़ेगी।

6उस के तम्बू का प्रकाश काला पड़ जायेगाऔर जो दीपक उसके पास है वह बुझ जायेगा।

7उस मनुष्य के कदम फिर कभी मजबूत और तेज नहीं होंगे। किन्तु वह धीरे चलेगा और दुर्बल हो जायेगा। अपने ही कुचक्रों से उसका पतन होगा।

8उसके अपने ही कदम उसे एक जाल के फन्दे में गिरा देंगे। वह चल कर जाल में जायेगा और फंस जायेगा।

9कोई जाल उसकी एड़ी को पकड़ लेगा। एक जाल उस को कसकर जकड़ लेगा।

10एक रस्सा उसके लिये धरती में छिपा होगा। कोई जाल राह में उसकी प्रतिक्षा में है।

11उसके तरफ आतंक उसकी टोह में हैं। उसके हर कदम का भय पीछा करता रहेगा।

12भयानक विपत्तियाँ उसके लिये भूखी हैं। जब वह गिरेगा, विनाश और विध्वंस उस के लिये तत्पर रहेंगे।

13महाव्याधिउसके चर्म के भागों को निगलजायेगी। वह उसकी बाहों और उसकी टाँगों को सड़ादेगी।

14अपने घर की सुरक्षा से दुर्जन को दूर किया जायेगा और आतंक के राजा से मिलाने के लिये उसको चलाकर ले जाया जायेगा।

15उसके घर में कुछ भी न बचेगा क्योंकि उसके समूचे घर में धधकती हुई गन्धक बिखेरी जायेगी।

16नीचे गई जड़ें उसकी सूख जायेंगी और उसके ऊपर की शाखाएं मुरझा जायेंगी।

17धरती के लोग उसको याद नहीं करेंगे। बस अब कोई भी उसको याद नहीं करेगा।

18प्रकाश से उसको हटा दिया जायेगा और वह अंधकार में ढकेला जायेगा। वे उसको दुनियां से दूर भगा देंगे।

19उसकी कोई सन्तान नहीं होगी अथवा उसके लोगों के कोई वंशज नहीं होंगे। उसके घर में कोई भी जीवित नहीं बचेगा।

20पश्चिम के लोग सहमें रह जायेंगे जब वे सुनेंगे कि
उस दुर्जन के साथ क्या घटी। लोग पूर्व के आतंकित हो
सुन्न रह जायेंगे। 21सचमुच दुर्जन के घर के साथ ऐसा
ही घटेगा। ऐसा ही घटेगा उस व्यक्ति क साथ जो परमेश्वर की परवाह नहीं करते।”

अय्यूब का उत्तर

19 तब अय्यूब ने उत्तर देते हुए कहा:
2“कब तक तुम मुझे सताते रहोगे और शब्दों से मुझको तोड़ते रहोगे?

3अब देखों, तुमने दसियों बार मुझे अपमानित किया है। मुझ पर वार करते तुम्हें शर्म नहीं आती है।

4यदि मैंने पाप किया तो यह मेरी समस्या है। यह तुम्हें हानि नहीं पहुँचाता।

5तुम बस यह चाहते हो कि तुम मुझसे उत्तमदिखो। तुम कहते हो कि मेरे कष्ट मुझ को दोषी प्रमाणित करते हैं।

6किन्तु वह तो परमेश्वर है जिसने मेरे साथ बुरा किया है और जिसने मेरे चारों तरफअपना फंदा फैलाया है।

7मैं पुकारा करता हूँ ‘मेरे संग बुरा किया है।’ लेकिन मुझे कोई उत्तर नहीं मिलता है। चाहे मैं न्याय की पुकार पुकारा करुँ मेरी कोई नहीं सुनता है।

8मेरा मार्ग परमेश्वर ने रोका है, इसलिये उसको मैं पार नहीं कर सकता। उसने अंधकार में मेरा मार्ग छुपा दिया है।

9मेरा सम्मान परमेश्वर ने छीना है। उसने मेरे सिर से मुकुट छीन लिया है।

10जब तक मेरा प्राण नहीं निकल जाता, परमेश्वर मुझ को करवट दर करवट पटकियाँ देता है। वह मेरी आशा को ऐसे उखाड़ता है जैसे कोई जड़ से वृक्ष को उखाड़ दे।

11मेरे विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध भड़क रहा है। वह मुझे अपना शत्रु कहता है।

12परमेश्वर अपनी सेना मुझ पर प्रहार करने को भेजता है। वे मेरे चारों और बुर्जियाँ बनाते हैं। मेरे तम्बू के चारों ओर वे आक्रमण करने के लिये छावनी बनाते हैं।

13मेरे बन्धुओं को परमेश्वर ने बैरी बनाया। अपने मित्रों के लिये मैं पराया हो गया।

14मेरे सम्बन्धियों ने मुझको त्याग दिया। मेरे मित्रों ने मुझको भुला दिया।

15मेरे घर के अतिथि और मेरी दासियाँ मुझे ऐसे दिखते हैं मानों मैं अन्जाना या परदेशी हूँ।

16मैं अपने दास को बुलाता हूँ पर वह मेरी नहीं सुनता है। यहाँ तक कि यदि मैं सहायता माँगू तो मेरा दास मुझको उत्तर नहीं देता।

17मेरी ही पत्नी मेरे श्वास की गंध से घृणा करतीहै। मेरे अपनी ही भाई मुझ से घृणा करते हैं।

18छोटे बच्चे तक मेरी हँसी उड़ाते है। जब मैं उनके पास जाता हूँ तो वे मेरे विरुद्ध बातें करते हैं।

19मेरे अपने मित्र मुझ से घृणा करते हैं। यहाँ तक कि ऐसे लोग जो मेरे प्रिय हैं, मेरे विरोधी बन गये हैं।

20मैं इतना दुर्बल हूँ कि मेरी खाल मेरी हड्डियों पर लटक गई। अब मुझ में कुछ भी प्राण नहीं बचा है।

21हे मेरे मित्रों मुझ पर दया करो, दया करो मुझ पर क्योंकि परमेश्वर का हाथ मुझ को छू गया है।

22क्यों मुझे तुम भी सताते हो जैसे मुझको परमेश्वर ने सताया है? क्यों मुझ को तुम दुःख देते और कभी तृप्त नहीं होते हो?

23मेरी यह कामना है, कि जो मैं कहता हूँ उसे कोई याद रखे और किसी पुस्तक में लिखे। मेरी यह कामना है, कि काश! मेरे शब्द किसी गोल पत्रक पर लिखी जाती।

24मेरी यह कामना है काश! मैं जिन बातों को कहता उन्हें किसी लोहे की टाँकी से सीसे पर लिखा जाता, अथवा उनको चट्टान पर खोद दिया जाता, ताकि वे सदा के लिय अमर हो जाती।

25मुझको यह पता है कि कोई एक ऐसा है, जो मुझको बचाता है। मैं जानता हूँ अंत में वह धरती पर खड़ा होगा और मुझे बचायेगा।

26यहाँ तक कि मेरी चमड़ी नष्ट हो जाये, किन्तु काश, मैं अपने जीते जी परमेश्वर को देख सकूँ।

27अपने लिये मैं परमेश्वर को स्वयं देखना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि स्वयं उसको अपनी आँखों से देखूँ न कि किसी दूसरे की आँखों से। मेरा मन मुझ में ही उतावला हो रहा है।

28सम्भव है तुम कहो, 'हम अय्यूब को तंग करेंगे। उस पर दोष मढ़ने का हम को कोई कारण मिल जायेगा।'

29किन्तु तुम्हें स्वयं तलवार से डरना चाहिये क्योंकि पापी के विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध दण्ड लायेगा। तुम्हें दण्ड देने को परमेश्वर तलवार काम में लायेगा तभी तुम समझोगे कि वहाँ न्याय का एक समय है।"

20 इस पर नामात प्रदेश के सोपर ने उत्तर दिया:
2"अय्यूब, तेरे विचार विकल हैं, सो मैं तुझे निश्चय ही उत्तर दूँगा। मुझे निश्चय ही जल्दी करनी चाहिये तुझको बताने को कि मैं क्या सोच रहा हूँ।

3तेरे सुधार भरे उत्तर हमारा अपमान करते हैं। किन्तु मैं विवेकी हूँ और जानता हूँ कि तुझे कैसे उत्तर दिया जाना चाहिये।

4-5इसे तू तब से जानता है जब बहुत पहले आदम को धरती पर भेजा गया था, दुष्ट जन का आनन्द बहुत दिनों नहीं टिकता हैं। ऐसा व्यक्ति जिसे परमेश्वर की चिन्ता नहीं है वह थोड़े समय के लिये आनन्दित होता है।

6चाहे दुष्ट व्यक्ति का अभिमान नभ छू जाये, और उसका सिर बादलों को छू जाये,

7किन्तु वह सदा के लिये नष्ट हो जायेगा जैसे स्वयं उसका देहमल नष्ट होगा। वे लोग जो उसको जानते हैं कहेंगे, 'वह कहाँ है?'

8वह ऐसे विलुप्त होगा जैसे स्वप्न शीघ्र ही कहीं उड़ जाता है। फिर कभी कोई उसको देख नहीं सकेगा, वह नष्ट हो जायेगा, उसे रात के स्वप्न की तरह हाँक दिया जायेगा।

9वे व्यक्ति जिन्होंने उसे देखा था फिर कभी नहीं देखेंगे। उसका परिवार फिर कभी उसको नहीं देख पायेगा।

10जो कुछ भी उसने (दुष्ट) गरीबों से लिया था उसकी संताने चुकायेंगी। उनको अपने ही हाथों से अपना धन लौटाना होगा।

11जब वह जवान था, उसकी काया मजबूत थी, किन्तु वह शीघ्र ही मिट्टी हो जायेगी।

12दुष्ट के मुख को दुष्टता बड़ी मीठी लगती है, वह उसको अपनी जीभ के नीचे छुपा लेगा।

13बुरा व्यक्ति उस बुराई को थामे हुये रहेगा, उसका दूर हो जाना उसको कभी नहीं भायेगा, सो वह उसे अपने मुँह में ही थामे रहेगा।

14किन्तु उसके पेट में उसका भोजन जहर बन जायेगा, वह उसके भीतर ऐसे बन जायेगा जैसे किसी नाग के विष सा कड़वा जहर।

15दुष्ट सम्पत्तियों को निगल जाता है किन्तु वह उन्हें बाहर ही उगलेगा। परमेश्वर दुष्ट के पेट से उनको उगलवायेगा।

16दुष्ट जन साँपों के विष को चूस लेगा किन्तु साँपों के विषैले दाँत उसे मार डालेंगे।

17फिर दुष्ट जन देखने का आनन्द नहीं लेंगे ऐसी उन नदियों का जो शहद और मलाई लिये बहा करती हैं।

18दुष्ट को उसका लाभ वापस करने को दबाया जायेगा। उसको उन वस्तुओं का आनन्द नहीं लेने दिया जायेगा जिनके लिये उसने परिश्रम किया है।

19क्योंकि उस दुष्ट जन ने दीन जन से उचित व्यवहार नहीं किया। उसने उनकी परवाह नहीं की और उसने उनकी वस्तुऐं छीन ली थी, जो घर किसी और ने बनाये थे उसने वे हथियाये थे।

20दुष्ट जन कभी भी तृप्त नहीं होता है, उसका धन उसको नहीं बचा सकता है।

21जब वह खाता है तो कुछ नहीं छोड़ता है, सो उसकी सफलता बनी नहीं रहेगी।

22जब दुष्ट जन के पास भरपूर होगा तभी दुःखों का पहाड़ उस पर टूटेगा।

23दुष्ट जन वह सब कुछ खा चुकेगा जिसे वह खाना चाहता है। परमेश्वर अपना धधकता क्रोध उस पर डालेगा। उस दुष्ट व्यक्ति पर परमेश्वर दण्ड बरसायेगा।

24सम्भव है कि वह दुष्ट लोहे की तलवार से बच निकले, किन्तु कहीं से काँसे का बाण उसको मार गिरायेगा।

25वह काँसे का बाण उसके शरीर के आर पार होगा और उसकी पीठ भेद कर निकल जायेगा। उस बाण की चमचमाती हुई नोंक उसके जिगर को भेद जायेगी और वह भय से आतंकित हो जायेगा।

26उसके सब खजाने नष्ट हो जायेंगे, एक ऐसी आग जिसे किसी ने नहीं जलाया उसको नष्ट करेगी, वह आग उनको जो उसके घर में बचे हैं नष्ट कर डालेगी।

27स्वर्ग प्रमाणित करेगा कि वह दुष्ट अपराधी है, यह गवाही धरती उसके विरुद्ध देगी।

28जो कुछ भी उसके घर में है, वह परमेश्वर के क्रोध की बाढ़ में बह जायेगा।

29यह वही है जिसे परमेश्वर दुष्टों के साथ करने की योजना रचता है। यह वही है जैसा परमेश्वर उन्हें देने की योजना रचता है।"

अय्यूब का उत्तर

21 इस पर अय्यूब ने उत्तर देते हुए कहा:
2"तू कान दे उस पर जो मैं कहता हूँ, तेरे सुनने को तू चैन बनने दे जो तू मुझे देता है।

3जब मैं बोलता हूँ तो तू धीरज रख, फिर जब मैं बोल चुकूँ तब तू मेरी हँसी उड़ा सकता है।

4मेरी शिकायत लोगों के विरुद्ध नहीं हैं, मैं क्यों सहनशील हूँ इसका एक कारण नहीं है।

5तू मुझ को देख और तू स्तंभित हो जा, अपना हाथ अपने मुख पर रख और मुझे देख और स्तब्ध हो।

6जब मैं सोचता हूँ उन सब को जो कुछ मेरेसाथ घटा तो मुझको डर लगता है और मेरी देह थर थर काँपती है।

7क्यों बुरे लोगों की उम्र लम्बी होती है? क्यों वे वृद्ध और सफल होते हैं?

8बुरे लोग अपनी संतानों को अपने साथ बढ़ते हुए देखते हैं। बुरे लोग अपनी नाती-पोतों को देखने को जीवित रहा करते हैं।

9उनके घर सुरक्षित रहते हैं और वे नहीं डरतेहैं। परमेश्वर दुष्टों को सजा देने के लिये अपना दण्ड काम में नहीं लाता है।

10उनके सांड कभी भी बिना जोड़ा बांधे नहीं रहे, उनकी गायों के बछेरे होते हैं और उनके गर्भ कभी नहीं गिरते हैं।

11बुरे लोग बच्चों को बाहर खेलने भेजते हैं मेमनों के जैसे, उनके बच्चे नाचते हैं चारों ओर।

12वीणा और बाँसुरी के स्वर पर वे गाते और नाचते हैं।

13बुरे लोग अपने जीवन भर सफलता का आनन्द लेते हैं। फिर बिना दुःख भोगे वे मर जाते हैं और अपनी कब्रों के बीच चले जाते हैं।

14किन्तु बुरे लोग परमेश्वर से कहा करते हैं, 'हमें अकेला छोड़ दे। और इसकी हमें परवाह नहीं कि तू हमसे कैसा जीवन जीना चाहता है।'

15दुष्ट लोग कहा करते हैं, 'सर्वशक्तिमान परमेश्वर कौन है? हमको उसकी सेवा की जरुरत नहीं है। उसकी प्रार्थना करने का कोई लाभ नहीं।'

16दुष्ट जन सोचते है कि उनको अपने ही कारण सफलताऐं मिलती हैं, किन्तु मैं उनके विचारों को नहीं अपना सकता हूँ।

17किन्तु क्या प्राय: ऐसा होता है कि दुष्ट जन का प्रकाश बुझ जाया करता है? कितनी बार दुष्टों को दुःख घेरा करते हैं? क्या परमेश्वर उनसे कुपित हुआ करता है, और उन्हें दण्ड देता है?

18क्या परमेश्वर दुष्ट लोगों को ऐसे उड़ाता है जैसे हवा तिनके को उड़ाती है और तेज हवायें अन्न का भूसा उड़ा देती हैं?

19किन्तु तू कहता है: 'परमेश्वर एक बच्चे को उसके पिता के पापों का दण्ड देता है।' नहीं, परमेश्वर को चाहिये कि बुरे जन को दण्डित करें। तब वह बुरा व्यक्ति जानेगा कि उसे उसके निज पापों के लिये दण्ड मिल रहा है।

20तू पापी को उसके अपने दण्ड को दिखा दे, तब वह सर्वशक्तिशाली परमेश्वर के कोप का अनुभव करेगा।

21जब बुरे व्यक्ति की आयु के महीने समाप्त हो जाते हैं और वह मर जाता है; वह उस परिवार की परवाह नहीं करता जिसे वह पीछे छोड़ जाता है।

22कोई व्यक्ति परमेश्वर को ज्ञान नहीं दे सकता, वह ऊँचे पदों के जनों का भी न्याय करता है।

23एक पूरे और सफल जीवन के जीने के बाद एक व्यक्ति मरता है, उसने एक सुरक्षित और सुखी जीवन जिया है।

24उसकी काया को भरपूर भोजन मिला था अब तक उस की हड्डियाँ स्वस्थ थीं।

25किन्तु कोई एक और व्यक्ति कठिन जीवन के बाद दुःख भरे मन से मरता है, उसने जीवन का कभी कोई रस नहीं चखा।

26ये दोनो व्यक्ति एक साथ माटी में गड़े सोते हैं, कीड़े दोनों को एक जैसे ढक लेंगे।

27किन्तु मैं जानता हूँ कि तू क्या सोच रहा है, और मुझको पता है कि तरे पास मेरा बुरा करने को कुचक्र है।

28मेरे लिये तू यह कहा करता है कि 'अब कहाँ है उस महाव्यक्ति का घर? कहाँ है वह घर जिसमें वह दुष्ट रहता था?'

29किन्तु तूने कभी बटोहियों से नहीं पूछा और उनकी कहानियों को नहीं माना।

30कि उस दिन जब परमेश्वर कुपित हो कर दण्ड देता है दुष्ट जन सदा बच जाता है।

31ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो उसके मुख पर ही उसके कर्मों की बुराई करे, उसके बुरे कर्मों का दण्ड कोई व्यक्ति उसे नहीं देता।

32जब कोई दुष्ट व्यक्ति कब्र में ले जाया जाताहै, तो उसके कब्र के पास एक पहरेदार खड़ा रहता है।

33उस दुष्ट जन के लिये उस घाटी की मिट्टी मधुर होगी, उसकी शव-यात्रा में हजारों लोग होंगे।

34सो अपने कोरे शब्दों से तू मुझे चैन नहीं दे सकता, तेरे उत्तर केवल झूठे हैं।"

एलीपज का उत्तर

22 फिर तेमान नगर के एलीपज ने उत्तर देते हुए कहा:

2"परमेश्वर को कोई भी व्यक्ति सहारा नहीं दे सकता, यहाँ तक की वह भी जो बहुत बुद्धिमान व्यक्ति हो परमेश्वर के लिये हितकर नहीं हो सकता।

3यदि तूने वही किया जो उचित था तो इससे सर्वशक्तिमान परमेश्वर को आनन्द नहीं मिलेगा, और यदि तू सदा खरा रहा तो इससे उसको कुछ नहीं मिलेगा।

4अय्यूब, तुझको परमेश्वर क्यों दण्ड देता है और क्यों तुझ पर दोष लगाता है? क्या इसलिए कि तू उसका सम्मान नहीं करता?

5नहीं, ये इसलिए की तूने बहुत से पाप किये हैं, अय्यूब, तेरे पाप नहीं रुकते हैं।

6अय्यूब, सम्भव है कि तूने अपने किसी भाई को कुछ धन दिया हो, और उसको दबाया हो कि वह कुछ गिरवी रख दे ताकि ये प्रमाणित हो सके कि वह तेरा धन वापस करेगा। सम्भव है किसी दीन के कर्जे के बदले तूने कपड़े गिरवी रख लिये हों, सम्भव है तूने वह व्यर्थ ही किया हो।

7तूने थके-मांदे लोगों को जल नहीं दिया, तूने भूखों के लिये भोजन नहीं दिया।

8अय्यूब, यद्यपि तू शक्तिशाली और धनी था, तूने उन लोगों को सहारा नहीं दिया। तू बड़ा जमींदार और सामर्थी पुरुष था,

9किन्तु तूने विधवाओं को बिना कुछ दिये लौटा दिया। अय्यूब, तूने अनाथ बच्चों को लूट लिया और उनसे बुरा व्यवहार किया।

10इसलिए तेरे चारों तरफ जाल बिछे हुए हैं और तुझ को अचानक आती विपत्तियाँ डराती हैं।

11इसलिए इतना अंधकार है कि तुझे सूझ पड़ताहै और इसलिए बाढ़ का पानी तुझे निगल रहा है।

12परमेश्वर आकाश के उच्चतम भाग में रहताहै, वह सर्वोच्च तारों के नीचे देखता है, तू देख सकता है कि तारे कितने ऊँचे हैं।

13किन्तु अय्यूब, तू तो कहा करता है कि परमेश्वर कुछ नहीं जानता, काले बादलों से कैसे परमेश्वर हमें जाँच सकता है?

14घने बादल उसे छुपा लेते हैं, इसलिये जब वह आकाश के उच्चतम भाग में विचरता है तो हमें ऊपर आकाश से देख नहीं सकता।

15अय्यूब, तू उस ही पुरानी राह पर जिन पर दुष्ट लोग चला करते हैं, चल रहा है।

16अपनी मृत्यु के समय से पहले ही दुष्ट लोग उठा लिये गये, बाढ़ उनको बहा कर ले गयी थी।

17ये वही लोग है जो परमेश्वर से कहते हैं कि हमें अकेला छोड़ दो, सर्वशक्तिमान परमेश्वर हमारा कुछ नहीं कर सकता है।

18किन्तु परमेश्वर ने उन लोगों को सफल बनायाहै और उन्हें धनवान बना दिया। किन्तु मैं वह ढंग से जिससे दुष्ट सोचते हैं, अपना नहीं सकता हूँ।

19सज्जन जब बुरे लोगों का नाश देखते हैं, तो वे प्रसन्न होते है। पापरहित लोग दुष्टों पर हँसते है, और कहा करते हैं,

20हमारे शत्रु सचमुच नष्ट हो गये! आग उनके धन को जला देती है।

21अय्यूब, अब स्वयं को तू परमेश्वर को अर्पित कर दे, तब तू शांति पायेगा। यदि तू ऐसा करे तो तू धन्य और सफल हो जायेगा।

22उसकी सीख अपना ले, और उसके शब्द निज मन में सुरक्षित रख।

23अय्यूब, यदि तू फिर सर्वशक्तिमान परमेश्वरके पास आये तो फिर से पहले जैसा हो जायेगा। तुझको अपने घर से पाप को बहुत दूर करना चाहिए।

24तुझको चाहिये कि तू निज सोना धूल में और निज ओपीर का कुन्दन नदी में चट्टानों पर फेंक दे।

25तब सर्वशक्तिमान परमेश्वर तेरे लिये सोना और चाँदी बन जायेगा।

26तब तू अति प्रसन्न होगा और तुझे सुख मिलेगा। परमेश्वर के सामने तू बिना किसी शर्म के सिर उठा सकेगा।

27जब तू उसकी विनती करेगा तो वह तेरी सुना करेगा, जो प्रतिज्ञा तूने उससे की थी, तू उसे पूरा कर सकेगा।

28जो कुछ तू करेगा उसमें तुझे सफलता मिलेगी, तेरे मार्ग पर प्रकाश चमकेगा।

29परमेश्वर अहंकारी जन को लज्जित करेगा, किन्तु परमेश्वर नम्र व्यक्ति की रक्षा करेगा।

30परमेश्वर जो मनुष्य भोला नहीं है उसकी भी रक्षा करेगा, तेरे हाथों की स्वच्छता से उसको उद्धार मिलेगा।"

23 फिर अय्यूब ने उत्तर देते हुये कहा:
2"मै आज भी बुरी तरह शिकायत करता हूँ कि परमेश्वर मुझे कड़ा दण्ड दे रहा है, इसलिये मैं शिकायत करता रहता हूँ।

3काश! मैं यह जान पाता कि उसे कहाँ खोजूँ!काश! मैं जान पाता की परमेश्वर के पास कैसे जाऊँ!

4मैं अपनी कथा परमेश्वर को सुनाता, मेरा मुँह युक्तियों से भरा होता यह दर्शाने को कि मैं निर्दोष हूँ।

5मैं यह जानना चाहता हूँ कि परमेश्वर कैसे मेरे तर्को का उत्तर देता है, तब मैं परमेश्वर के उत्तर समझ पाता।

6क्या परमेश्वर अपनी महाशक्ति के साथ मेरे विरुद्ध होता? नहीं! वह मेरी सुनेगा।

7मैं एक नेक व्यक्ति हूँ। परमेश्वर मुझे अपनी कहानी को कहने देगा,तब मेरा न्यायकर्ता परमेश्वर मुझे मुक्त कर देगा।

8किन्तु यदि मैं पूरब को जाऊँ तो परमेश्वर वहाँ नहीं है और यदि मैं पश्चिम को जाऊँ, तो भी परमेश्वर मुझे नहीं दिखता है।

9परमेश्वर जब उत्तर में क्रियाशील रहता है तो मैं उसे देख नहीं पाता हूँ। जब परमेश्वर दक्षिण को मुड़ता है, तो भी वह मुझको नहीं दिखता है।

10किन्तु परमेश्वर मेरे हर चरण को देखता है, जिसको मैं उठाता हूँ। जब वह मेरी परीक्षा ले चुकेगा तो वह देखेगा कि मुझमें कुछ भी बुरा नहीं है, वह देखेगा कि मैं खरे सोने सा हूँ।

11परमेश्वर जिस को चाहता है मैं सदा उस पर चला हूँ, मैं कभी भी परमेश्वर की राह पर चलने से नहीं मुड़ा।

12मैं सदा वही बात करता हूँ जिनकी आशा परमेश्वर देता है। मैंने अपने मुख के भोजन से अधिक परमेश्वर के मुख के शब्दों से प्रेम किया है।

13किन्तु परमेश्वर कभी नहीं बदलता। कोई भी व्यक्ति उसके विरुद्ध खड़ा नहीं रह सकता है। परमेश्वर जो भी चाहता है, करता है।

14परमेश्वर ने जो भी योजना मेरे विरोध में बना ली है वही करेगा, उसके पास मेरे लिये और भी बहुत सारी योजनायें है।

15मैं इसलिये डरता हूँ, जब इन सब बातों के बारे में सोचता हूँ। इसलिये परमेश्वर मुझको भयभीत करताहै।

16परमेश्वर मेरे हृदय को दुर्बल करता है और मेरी हिम्मत टूटती है। सर्वशक्तिमान परमेश्वर मुझको भयभीत करता है। 17यद्यपि मेरा मुख सघन अंधकार ढकता है तो भी अंधकार मुझे चुप नहीं कर सकता है।

24 "सर्वशक्तिमान परमेश्वर क्यों नहीं न्याय करने के लिये समय नियुक्त करता है? लोग जो परमेश्वर को मानते हैं उन्हें क्यों न्याय के समय की व्यर्थ बाट जोहनी पड़ती है?"

2"लोग अपनी सम्पत्ति के चिन्हों को, जो उसकी सीमा बताते हैं, सरकाते रहते हैं ताकि अपने पड़ोसी की थोड़ी और धरती हड़प लें! लोग पशु को चुरा लेते हैं और उन्हें अन्य चारागाहों में हाँक ले जाते हैं।

3अनाथ बच्चों के गधे को वे चुरा ले जाते हैं। विधवा की गाय वे खोल ले जाते है। जब तक की वह उनका कर्ज नहीं चुकाती है।

4वे दीन जन को मजबूर करते है कि वह छोड़ कर दूर हट जाने को विवश हो जाता है, इन दुष्टों से स्वयं को छिपाने को।

5वे दीन जन उन जंगली गदहों जैसे हैं जो मरुभूमि में अपना चारा खोजा करते हैं। गरीबों और उनके बच्चों को मरुभूमि भोजन दिया करता है।

6गरीब लोग भूसा और चारा साथ साथ ऐसे उन खेतों से पाते हैं जिनके वे अब स्वामी नहीं रहे। दुष्टों के अंगूरों के बगीचों से बचे फल वे बीना करते हैं।

7दीन जन को बिना कपड़ों के रातें बितानी होंगी, सर्दी में उनके पास अपने ऊपर ओढ़ने को कुछ नहीं होगा। 8वे वर्षा से पहाड़ों में भीगें हैं, उन्हें बड़ी चट्टानों से सटे हुये रहना होगा, क्योंकि उनके पास कुछ नहीं जो उन्हें मौसम से बचा ले।

9बुरे लोग माता से वह बच्चा जिसका पिता नहीं है छीन लेते हैं। गरीब का बच्चा लिया करते हैं, उसके बच्चे को, कर्ज के बदले में वे बन्धुवा बना लेते हैं।

10गरीब लोगों के पास वस्त्र नहीं होते हैं, सो वे काम करते हुये नंगे रहा करते हैं। दुष्टों के गट्ठर का भार वे ढोते है, किन्तु फिर भी वे भूखे रहते हैं।

11गरीब लोग जैतून का तेल पेर कर निकालतेहैं। वे कुंडो में अंगूर रौंदते हैं फिर भी वे प्यासे रहते हैं।

12मरते हुये लोग जो आहें भरते हैं। वे नगर में सुनाई देती हैं। सताये हुये लोग सहारे को पुकारते हैं, किन्तु परमेश्वर नहीं सुनता है।

13कुछ ऐसे लोग हैं जो प्रकाश के विरुद्ध होते हैं। वे नहीं जानना चाहते हैं कि परमेश्वर उनसे क्या करवाना चाहता है। परमेश्वर की राह पर वे नहीं चलते हैं।

14हत्यारा तड़के जाग जाया करता है गरीबों और जरुरत मंद लोगों की हत्या करता है, और रात में चोर बन जाता है।

15वह व्यक्ति जो व्यभिचार करता है, रात आने की बाट जोहा करता है, वह सोचता है उस कोई नहीं देखेगा और वह अपना मुख ढक लेता है।

16दुष्ट जन जब रात में अंधेरा होता है, तो सेंध लगा कर घर में घुसते हैं। किन्तु दिन में वे अपने ही घरों में छुपे रहते हैं, वे प्रकाश से बचते हैं।

17उन दुष्ट लोगों का अंधकार सुबह सा होता हैं, वे आतंक व अंधेरे के मित्र होते है।

18दुष्ट जन ऐसे बहा दिये जाते हैं, जैसे झाग बाढ़ के पानी पर। वह धरती अभिशिप्त है जिसके वे मालिक हैं, इसलिये वे अंगूर के बगीचों में अंगूर बीनने नहीं जाते हैं।

19जैसे गर्म व सूखा मौसम पिघलती बर्फ के जल को सोख लेता है, वैसे ही दुष्ट लोग कब्र द्वारा निगले जायेंगे।

20दुष्ट मरने के बाद उसकी माँ तक उसे भूल जायेगी, दुष्ट की देह को कीड़े खा जायेंगे। उसको थोड़ा भी नहीं याद रखा जायेगा, दुष्ट जन गिरे हुये पेड़ से नष्ट किये जायेंगे।

21ऐसी स्त्री को जिसके बच्चे नहीं हो सकते, दुष्ट जन उन्हें सताया करते हैं, वे उस स्त्री को दु:ख देते हैं, वे किसी विधवा के प्रति दया नहीं दिखाते हैं।

22बुरे लोग अपनी शक्ति का उपयोग बलशाली को नष्ट करने के लिये करते है। बुरे लोग शक्तिशाली हो जायेंगे, किन्तु अपने ही जीवन का उन्हें भरोसा नहीं होगा कि वे अधिक दिन जी पायेंगे।

23सम्भव है थोड़े समय के लिये परमेश्वर शक्तिशाली को सुरक्षित रहने दे, किन्तु परमेश्वर सदा उन पर आँख रखता है।

24दुष्ट जन थोड़े से समय के लिये सफलता पा जाते हैं किन्तु फिर वे नष्ट हो जाते हैं। दूसरे लोगों की तरह वे भी समेट लिये जाते हैं। अन्न की कटी हुई बाल के समान वे गिर जाते हैं।

25यदि ये बातें सत्य नहीं हैं तो कौन प्रमाणित कर सकता है कि मैंने झूठ कहा है? कौन दिखा सकता है कि मेरे शब्द प्रलय मात्र हैं?"

बिल्दद का अय्यूब को उत्तर

25 फिर शूह प्रदेश के निवासी बिल्दद ने उत्तर देते हुये कहा:

2"परमेश्वर शासक है और हर व्यक्ति को चाहिये की परमेश्वर से डरे और उसका मान करे। परमेश्वर अपने स्वर्ग के राज्य में शांति रखताहै।

3कोई उसकी सेनाओं को गिन नहीं सकता है, परमेश्वर का प्रकाश सब पर चमकता है।

4किन्तु सचमुच परमेश्वर के आगे कोई व्यक्ति उचित नहीं ठहर सकता है। कोई व्यक्ति जो स्त्री से उत्पन्न हुआ सचमुच निर्दोष नहीं हो सकता है।

5परमेश्वर की आँखों के सामने चाँद तक चमकीला नहीं है। परमेश्वर की आँखों के सामने तारे निर्मल नहीं हैं।

6मनुष्य तो बहुत कम भले है। मनुष्य तो बस गिंडार है एक ऐसा कीड़ा जो बेकार का होता है।"

अय्यूब का बिल्दद को उत्तर:

26 तब अय्यूब ने कहा:

2"हे बिल्दद, सोपर और एलीपज़ जो लोग दुर्बल हैं तुम सचमुच उनको सहारा दे सकते हो। अरे हाँ! तुमने दुर्बल बाँहों को फिर से शक्तिशाली बनाया है।

3हाँ, तुमने निर्बुद्धि को अद्‌भुत सम्मत्ति दी है। कैसा महाज्ञान तुमने दिखाया है!

4इन बातों को कहने में किसने तुम्हारी सहायता की? किसकी आत्मा ने तुम को प्रेरणा दी?

5जो लोग मर गये है उनकी आत्मायें धरती के नीचे जल में भय से प्रकंपित हैं।

6मृत्यु का स्थान परमेश्वर की आँखों के सामने खुला है, परमेश्वर के आगे विनाश का स्थान ढका नहीं है।

7उत्तर के नभ को परमेश्वर फैलाता है। परमेश्वर ने व्योम के रिक्त पर अधर में धरती लटकायी है।

8परमेश्वर बादलों को जल से भरता है, किन्तु जल के प्रभार से परमेश्वर बादलों को फटने नहीं देता है।

9परमेश्वर पूरे चन्द्रमा को ढकता है, परमेश्वर चाँद पर निज बादल फैलाता है और उसको ढक देता है।

10परमेश्वर क्षितिज को रचता है प्रकाश और अन्धकार की सीमा रेखा के रूप में समुद्र पर।

11जब परमेश्वर डाँटता है तो वे नीवें जिन पर आकाश टिका है भय से काँपने लगती है।

12परमेश्वर की शक्ति सागर को शांत कर देतीहै। परमेश्वर की बुद्धि ने राहब (सागर के दैत्य) को नष्ट किया।

13परमेश्वर का श्वास नभ को साफ कर देता है। परमेश्वर के हाथ ने उस साँप को मार दिया जिसमें भाग जाने का यत्न किया था।

14ये तो परमेश्वर के आश्चर्यकर्मों की थोड़ी सी बातें हैं। बस हम थोड़ा सा परमेश्वर के हल्की-ध्वनि भरे स्वर को सुनते हैं। किन्तु सचमुच कोई व्यक्ति परमेश्वर केशक्ति के गर्जन को नहीं समझ सकता है।"

27 फिर अय्यूब ने आगे कहा:
2"सचमुच परमेश्वर जीता है और यह जितनासत्य है कि परमेश्वर जीता है सचमुच वह वैसै ही मेरे प्रति अन्यायपूर्ण रहा है। हाँ! सर्वशक्तिशाली परमेश्वर ने मेरे जीवन मे कड़वाहट भरी है।

3किन्तु जब तक मुझ में प्राण है और परमेश्वर का साँस मेरी नाक में है।

4तब तक मेरे होंठ बुरी बातें नहीं बोलेंगे, और मेरी जीभ कभी झूठ नहीं बोलेगी।

5मैं कभी नहीं मानूँगा कि तुम लोग सही हो! जब तक मैं मरूँगा उस दिन तक कहता रहूँगा कि मैं निर्दोष हूँ!

6मैं अपनी धार्मिकता को दृढता से थामें रहूँगा। मैं कभी उचित कर्म करना न छोड़ूँगा। मेरी चेतना मुझे तंग नहीं करेगी जब तक मैं जीता हूँ।

7मेरे शत्रुओं को दुष्ट जैसा बनने दे, और उन्हें दण्डित होने दे जैसे दुष्ट जन दण्डित होते हैं।

8ऐसे उस व्यक्ति के लिये मरते समय कोई आशा नहीं है जो परमेश्वर की परवाह नहीं करताहै। जब परमेश्वर उसके प्राण लेगा तब तक उसके लिये कोई आशा नहीं है।

9जब वह बुरा व्यक्ति दुःखी पड़ेगा और उसको पुकारेगा, परमेश्वर नहीं सुनेगा।

10उसको चाहिये था कि वह उस आनन्द कोचाहे जिसे केवल सर्वशक्तिमान परमेश्वर देता है। उसको चाहिए की वह हर समय परमेश्वर से प्रार्थना करता रहा।

11मैं तुमको परमेश्वर की शक्ति सिखाऊँगा। मैं सर्वशक्तिशाली परमेश्वर की योजनायें नहीं छिपाऊँगा।

12स्वयं तूने निज आँखों से परमेश्वर की शक्ति देखी है, सो क्यों तू व्यर्थ बातें बनाता है?

13दुष्ट लोगों के लिये परमेश्वर ने ऐसी योजना बनाई है, दुष्ट लोगों को सर्वशक्तिशाली परमेश्वर से ऐसा ही मिलेगा।

14दुष्ट की चाहे कितनी ही संताने हों, किन्तु उसकी संताने युद्ध में मारी जायेंगी। दुष्ट की संताने कभी भरपेट खाना नहीं पायेंगी।

15और यदि दुष्ट की संताने उसकी मृत्यु के बाद भी जीवित रहें तो महामारी उनको मार डालेंगी! उनके पुत्रों की विधवायें उनके लिये दुःखी नहीं होंगी।

16दुष्ट जन चाहे चाँदी के ढेर इकट्ठा करे, इतने विशाल ढेर जितनी धूल होती है, मिट्टी के ढेरों जैसे वस्त्र हों उसके पास

17जिन वस्त्रों को दुष्ट जन जुटाता रहा उन वस्त्रों को सज्जन पहनेगा, दुष्ट की चाँदी निर्दोषों में बँटेगी।

18दुष्ट का बनाया हुआ घर अधिक दिनों नहीं टिकता है, वह मकड़ी के जाले सा अथवा किसी चौकीदार के छप्पर जैसा अस्थिर होता है।

19दुष्ट जन अपनी निज दौलत के साथ अपने बिस्तर पर सोने जाता है, किन्तु एक ऐसा दिन आयेगा जब वह फिर बिस्तर में वैसे ही नहीं जा पायेगा। जब वह आँख खोलेगा तो उसकी सम्पत्ति जा चुकेगी।

20दुःख अचानक आई हुई बाढ़ सा उसको झपट लेंगे, उसको रातों रात तूफान उड़ा ले जायेगा।

21पुरवाई पवन उसको दूर उड़ा देगी, तूफ़ान उसको बुहार कर उसके घर के बाहर करेगा।

22दुष्ट जन तुफान की शक्ति से बाहर निकलने का जतन करेगा किन्तु तूफान उस पर बिना दया किये हुये चपेट मारेगा।

23जब दुष्ट जन भागेगा, लोग उस पर तालियाँ बजायेंगे, दुष्ट जन जब निकल भागेगा। अपने घर से तो लोग उस पर सीटियाँ बजायेंगे।

28 "वहाँ चाँदी की खान है जहाँ लोग चाँदी पाते है, वहाँ ऐसे स्थान है जहाँ लोग सोना पिघला कर के उसे शुद्ध करते हैं।

2लोग धरती से खोद कर लोहा निकालते हैं, और चट्टानों से पिघला कर ताँबा निकालते हैं।

3लोग गुफाओं में प्रकाश को लाते हैं वे गुफाओं की गहराई में खोजा करते हैं, गहरे अन्धेरे में वे खनिज की चट्टानें खोजते हैं।

4जहाँ लोग रहते है उससे बहुत दूर लोग गहरे गढ़े खोदा करते हैं, कभी किसी और ने इन गढ़ों को नहीं छुआ। जब व्यक्ति गहन गर्तो में रस्से से लटकता है, तो वह दूसरों से बहुत दूर होता है।

5भोजन धरती की सतह से मिला करता है, किन्तु धरती के भीतर वह बढ़त जाया करता है जैसे आग वस्तुओं को बदल देती है।

6धरती के भीतर चट्टानों के नीचे नीलम मिल जाते हैं, और धरती के नीचे मिट्टी अपने आप में सोना रखती है।

7जंगल के पक्षी धरती के नीचे की राहें नहीं जानते हैं न ही कोई बाज यह मार्ग देखता है।

8इस राह पर हिंसक पशु नहीं चले, कभी सिंह इस राह पर नहीं विचरे।

9मजदूर कठिन चट्टानों को खोदते हैं और पहाड़ों को वे खोद कर जड़ से साफ कर देते हैं।

10काम करने वाले सुरंगे काटते हैं, वे चट्टान के खजाने को चट्टानों के भीतर देख लिया करते हैं।

11काम करने वाले बाँध बाँधा करते हैं कि पानी कहीं ऊपर से होकर न बह जाये। वे छुपी हुई वस्तुओं को ऊपर प्रकाश में लातेहैं।

12किन्तु कोई व्यक्ति विवेक कहाँ पा सकता है? और हम कहाँ जा सकते हैं समझ पाने को?

13ज्ञान कहाँ रहता है लोग नहीं जानते हैं, लोग जो धरती पर रहते हैं, उनमें विवेक नहीं रहता है।

14सागर की गहराई कहती है, 'मुझ में विवेक नहीं।' और समुद्र कहता है, 'यहाँ मुझ में ज्ञान नहींहै।'

15विवेक को अति मूल्यवान सोना भी मोल नहीं ले सकता है, विवेक का मूल्य चाँदी से नहीं गिना जा सकता है।

16विवेक ओपीर देश के सोने से अथवा मूल्यवान स्फटिक से अथवा नीलमणियों से नहीं खरीदा जा सकता है।

17विवेक सोने और स्फटिक से अधिक मूल्यवानहै, कोई व्यक्ति अति मूल्यवान सुवर्ण जड़ित रत्नों से विवेक नहीं खरीद सकता है।

18विवेक मूंगे और सूर्यकांत मणि से अति मूल्यवान है। विवेक मानक मणियों से अधिक महंगा है।

19जितना उत्तम विवेक है कूश देश का पद्मराग भी उतना उत्तम नहीं है। विवेक को तुम कुन्दन से मोल नहीं ले सकतेहो।

20तो फिर हम कहाँ विवेक को पाने जायें? हम कहाँ समझ सीखने जायें?

21विवेक धरती के हर व्यक्ति से छुपा हुआ है। यहाँ तक की ऊँचे आकाश के पक्षी भी विवेक को नहीं देख पाते हैं।

22मृत्यु और विनाश कहा करते हैं कि हमने तो बस विवेक की बाते सुनी हैं।

23किन्तु बस परमेश्वर विवेक तक पहुँचने की राह को जानता है। परमेश्वर जानता है विवेक कहाँ रहता है।

24परमेश्वर विवेक को जानता है क्योंकि वह धरती के आखिरी छोर तक देखा करता है। परमेश्वर हर उस वस्तु को जो आकाश के नीचे है देखा करता है।

25जब परमेश्वर ने पवन को उसकी शक्ति प्रदान की और यह निश्चित किया कि समुद्रों को कितना बड़ा बनाना है।

26और जब परमेश्वर ने निश्चय किया कि उसे कहाँ वर्षा को भेजना है, और बवण्डरों को कहाँ की
यात्रा करनी है। 27तब परमेश्वर ने विवेक को देखा था,
और उसको यह देखने के लिये परखा था कि विवेक का कितना मूल्य है, तब परमेश्वर ने विवेक का समर्थन किया था।

28और लोगों से परमेश्वर ने कहा था कि 'यहोवा का भय मानो और उसको आदरदो।' बुराईयों से मुख मोड़ना ही विवेक है, यही समझदारी है।"

अय्यूब अपनी बात जारी रखता है

29 अपनी बात को जारी रखते हुये अय्यूब नेकहा:
2"काश! मेरा जीवन वैसा ही होता जैसा गुजरे महीनों में था। जब परमेश्वर मेरी रखवाली करता था, और मेरा ध्यान रखता था।

3मैं ऐसे उस समय की इच्छा करता हूँ जब परमेश्वर का प्रकाश मेरे शीश पर चमक रहा था। मुझ को प्रकाश दिखाने को उस समय जब मैं अन्धेरे से हो कर चला करता था।

4ऐसे उन दिनों की मैं इच्छा करता हूँ,जब मेरा जीवन सफल था, और परमेश्वर मेरा निकट मित्र था। वे ऐसे दिन थे जब परमेश्वर ने मेरे घर को आशीष दी थी।

5ऐसे समय की मैं इच्छा करता हूँ, जब सर्वशक्तिशाली परमेश्वर अभी तक मेरे साथ में था और मेरे पास मेरे बच्चे थे।

6ऐसा तब था जब मेरा जीवन बहुत अच्छा था, ऐसा लगा करता था कि दूध-दही की नदियाँ बहा करती थी, और मेरे हेतू चट्टाने जैतून के तेल की नदियाँ उँडेल रही हैं।

7ये वे दिन थे जब मैं नगर-द्वार और खुले स्थानों में जाता था, और नगर नेताओं के साथ बैठता था।

8वहाँ सभी लोग मेरा मान किया करते थे। युवा पुरुष जब मुझे देखते थे तो मेरी राह से हट जाया करते थे। और वृद्ध पुरुष मेरे प्रति सम्मान दर्शाने के लिये उठ खड़े होते थे।

9जब लोगों के मुखिया मुझे देख लेते थे, तो बोलना बन्द किया करते थे।

10यहाँ तक की अत्यन्त महत्वपूर्ण नेता भी अपना स्वर नीचा कर लेते थे, जब मैं उनके निकट जाया करता था। हाँ! ऐसा लगा करता था कि उनकी जिहवायें उनके तालू से चिपकी हों।

11जिस किसी ने भी मुझको बोलते सुना, मेरे विषय में अच्छी बात कही, जिस किसी ने भी मुझको देखा था, मेरी प्रशंसा की थी।

12क्यों? क्योंकि जब किसी दीन ने सहायता के लिये पुकारा, मैंने सहायता की। उस बच्चे को मैने सहारा दिया जिसके माँ बाप नहीं और जिसका कोई भी नहीं ध्यान रखने को।

13मुझको मरते हुये व्यक्ति की आशीष मिली, मैंने उन विधवाओं को जो जरुरत में थी, मैंने सहारा दिया और उनको खुश किया।

14मेरा वस्त्र खरा जीवन था, निष्पक्षता मेरे चोगे और
मेरी पगड़ी सी थी।
15मैं अंधो के लिये आँखे बन गया और मैं उनके पैर
बना जिनके पैर नहीं थे।
16दीन लोगों के लिये मैं पिता के तुल्य था, मैं पक्ष
लिया करता था ऐसे अनजानों का जो विपत्ति में पड़े थे।
17मैं दुष्ट लोगों की शक्ति नष्ट करता था। निर्दोष
लोगों को मैं दुष्टों से छुड़ाता था।
18मैं सोचा करता था कि सदा जीऊँगा ओर बहुत
दिनों बाद फिर अपने ही घर में प्राण त्यागूँगा।
19मैं एक ऐसा स्वस्थ वृक्ष बनूँगा जिसकी जड़े सदा
जल में रहती हों और जिसकी शाखायें सदा ओस से
भीगी रहती हों।
20मेरी शान सदा ही नई बनी रहेगी, मैं सदा वैसा ही
बलवान रहूँगा जैसे, मेरे हाथ में एक नया धनुष।
21पहले, लोग मेरी बात सुना करते थे, और वे जब
मेरी सम्मत्ति की प्रतिक्षा किया करतेथे, तो चुप रहा
करते थे।
22मेरे बोल चुकने के बाद, उन लोगों के पास जो मेरी
बात सुनते थे, कुछ भी बोलने को नहीं होता था। मेरे
शब्द धीरे-धीरे उनके कानों में वर्षा की तरह पड़ा
करते थे।
23लोग जैसे वर्षा की बाट जोहते हैं वैसे ही वे मेरे
बोलने की बाट जोहा करते थे। मेरे शब्दों को वे पी
जाया करते थे, जैसे मेरे शब्द बसन्त में वर्षा हों।
24जब मैं दया करने को उन पर मुस्कराता था, तो
उन्हें इसका यकीन नहीं होता था। फिर मेरा प्रसन्न
मुख दु:खी जन को सुख देता था।
25मैंने उत्तरदायित्व लिया और लोगों के लिये निर्णय
किये, मैं नेता बन गया। मैने उनकी सेना के दलों के
बीच राजा जैसा जीवन जिया। मैं ऐसा व्यक्ति था जो उन
लोगों को चैन देता था जो बहुत ही दु:खी है।

30 "अब, आयु में छोटे लोग मेरा मजाक बनातेहैं।
उन युवा पुरुषों के पिता बिलकुल ही निकम्मेंथे।
जिनको मैं उन कुत्तों तक की सहायता नहीं करने देता
था जो भेड़ों के रखवाले हैं।
2उन युवा पुरुषों के पिता मुझे सहारा देने की कोई
शक्ति नहीं रखते हैं, वे बूढे हो चुके हैं और थके हुये हैं।
3वे व्यक्ति मुर्दे जैसे हैं क्योंकि खाने को उनके पास
कुछ नहीं है और वे भूखे हैं, सो वे मरुभूमि के सूखे
कन्द खाना चाहते हैं।
4वे लोग मरुभूमि में खारे पौधों को उखाड़ते हैं और
वे पीले फूल वाले पीलू के पेड़ों की जड़ों को खाते हैं।
5वे लोग, दूसरे लोगों से भगाये गये हैं लोग जैसे चोर
पर पुकारते हैं उन पर पुकारते हैं।
6ऐसे वे बूढ़े लोग सूखी हुई नदी के तलों में चट्टानों
के सहारे और धरती के बिलों में रहने को विवश हैं।
7वे झाड़ियों के भीतर रेंकते हैं। कंटीली झाड़ियों के
नीचे वे आपस में एकत्र होते हैं।
8वे बेकार के लोगों का दल है, जिनके नाम तक
नहीं हैं। उनको अपना गाँव छोड़ने को मजबूर किया
गया है।
9अब ऐसे उन लोगो के पुत्र मेरी हँसी उड़ाने को मेरे
विषय में गीत गाते हैं। मेरा नाम उनके लिये अपशब्द
सा बन गया है।
10वे युवक मुझसे घृणा करते हैं। वे मुझसे दूर खड़े
रहते हैं और सोचते हैं कि वे मुझसे उत्तम हैं। यहाँ तक
कि वे मेरे मुँह पर थूकते हैं।
11परमेश्वर ने मेरे धनुष से उसकी डोर छीन ली है
और मुझे दुर्बल किया है। वे युवक अपने आप नहीं
रुकते हैंबल्कि क्रोधित होते हुये मुझ पर मेरे विरोध में
हो जाते हैं।
12वे युवक मेरी दाहिनी ओर मुझ पर प्रहार करतेहैं।
वे मुझे मिट्टी में गिराते हैं वे ढलुआ चबूतरे बनाते हैं
मेरे विरोध में मुझ पर प्रहार करके मुझे नष्ट करने
को।
13वे युवक मेरी राह पर निगरानी रखते हैं कि मै
बच निकल कर भागने न पाऊँ। वे मुझे नष्ट करने में
सफल हो जाते हैं। उन के विरोध में मेरी सहायता
करने को मेरे साथ कोई नहीं है।
14वे मुझ पर ऐसे वार करते हैं, जैसे वे दिवार में
सूराख निकाल रहें हो। एक के बाद एक आती लहर
के समान वे मुझ पर झपट कर धावा करते हैं।
15मुझको भय जकड़ लेता है। जैसे हवा वस्तुओं को
उड़ा ले जाती है, वैसी ही वे युवक मेरा आदर उड़ा देते
हैं। जैसे मेघ अदृश्य हो जाता है, वैसे ही मेरी सुरक्षा
अदृश्य हो जाती है।
16अब मेरा जीवन बीतने को है और मैं शीघ्र ही मर
जाऊँगा। मुझको संकट के दिनों ने दबोच लिया है।
17मेरी सब हड्डियाँ रात को दुखती हैं, पीड़ा मुझको
चबाना नहीं छोड़ती है।
18मेरे गिरेबान को परमेश्वर बड़े बल से पकड़ताहै,
वह मेरे कपड़ों का रूप बिगाड़ देता है।
19परमेश्वर मुझे कीच में धकेलता है और मैं मिट्टी
व राख सा बनता हूँ।
20हे परमेश्वर, मैं सहारा पाने को तुझको पुकारता
हूँ, किन्तु तू उत्तर नहीं देता है। मैं खड़ा होता हूँ और
प्रार्थना करता हूँ, किन्तु तू मुझ पर ध्यान नहीं देता।
21हे परमेश्वर, तू मेरे लिये निर्दयी हो गया है, तू मुझे
हानि पहुँचाने को अपनी शक्ति का प्रयोग करता है।
22हे परमेश्वर, तू मुझे तीव्र आँधी द्वारा उड़ा देता है।
तूफान के बीच में तू मुझको थपेडे खिलाता है।
23मैं जानता हूँ तू मुझे मेरी मृत्यु की ओर ले जा रहा
है जहाँ अन्त में हर किसी को जाना है।

24किन्तु निश्चय ही कोई मरे हुये को, और उसे जो सहायता के लिये पुकारता है, उसको नहीं मारता।

25हे परमेश्वर, तू तो यह जानता है कि मैं उनके लिये रोया जो संकट में पड़े हैं। तू तो यह जानता है कि मेरा मन गरीब लोगों के लिये बहुत दु:खी रहता था।

26किन्तु जब मैं भला चाहता था, तो बुरा हो जाता था। मैं प्रकाश ढूँढता था और अंधेरा छा जाता था।

27मैं भीतर से फट गया हूँ और यह ऐसा है कि कभी नहीं रुकता मेरे आगे संकट का समयहै।

28मैं सदा ही व्याकुल रहता हूँ। मुझको चैन नहीं मिल पाता है। मैं सभा के बीच में खड़ा होता हूँ, और सहारे को गुहारता हूँ।

29मैं जंगली कुत्तों के जैसा बन गया हूँ, मेरे मित्र बस केवल शतुर्मुर्ग ही हैं।

30मेरी त्वचा काली पड़ गई है। मेरा तन बुखार से तप रहा है।

31मेरी वीणा करुण गीत गाने को सधी है और मेरी बांसुरी से दु:ख के रोने जैसे स्वर निकलते हैं।

31 "मैंने अपनी आँखो के साथ एक सन्धि की है कि वे किसी लड़की पर वासनापूर्ण दृष्टि न डालें।

2सर्वशक्तिमान परमेश्वर लोगों के साथ कैसा करता है? वह कैसे अपने ऊँचे स्वर्ग के घर से उनके कर्मो का प्रतिफल देता है?

3दुष्ट लोगों के लिये परमेश्वर संकट और विनाश भेजता है, और जो बुरा करते हैं, उनके लिये विध्वंस भेजता है।

4मैं जो कुछ भी करता हूँ परमेश्वर जानता है और मेरे हर कदम को वह देखता है।

5यदि मैंने झूठा जीवन जिया हो या झूठ बोल कर लोगों को मूर्ख बनाया हो,

6तो वह मुझको खरी तराजू से तौले, तब परमेश्वर जान लेगा कि मैं निरपराध हूँ।

7यदि मैं खरे मार्ग से हटा होऊँ, यदि मेरी आँखे मेरे मन को बुरे की ओर ले गई हो अथवा मेरे हाथ पाप से गंदे हैं।

8तो मेरी उपजाई फसल अन्य लोग खा जाये और वे मेरी फसलों को उखाड़ कर ले जायें।

9यदि मैं स्त्रियों के लिये कामुक रहा होऊँ, अथवा यदि मैं अपने पड़ोसी के द्वार को उसकी पत्नी के साथ व्यभिचार करने के लिये ताकता रहा होऊँ,

10तो मेरी पत्नी दूसरों का भोजन तैयार करे और उसके साथ पराये लोग सोंये।

11क्यों? क्योंकि यौन पाप लज्जापूर्ण होता है? यह ऐसा पाप है जो निश्चय ही दण्डित होना चाहिये।

12व्यभिचार उस पाप के समान है, जो जलाती और नष्ट कर डालती है। मेरे पास जो कुछ भी है व्यभिचार का पाप उसको जला डालेगा।

13यदि मैं अपने दास-दासियों के सामने उस समय निष्पक्ष नहीं रहा, जब उनको मुझसे कोई शिकायत रहीं।

14तो जब मुझे परमेश्वर के सामने जाना होगा, तो मैं क्या करूँगा? जब वह मुझ को मेरे कर्मो की सफाई माँगने बुलायेगा तो मैं परमेश्वर को क्या उत्तर दूँगा?

15परमेश्वर ने मुझको मेरी माता के गर्भ में बनाया, और मेरे दासों को भी उसने माता के गर्भ में हीं बनाया, उसने हम दोनो ही को अपनी-अपनी माता के भीतर ही रूप दिया है।

16मैंने कभी भी दीन जन की सहायता को मना नहीं किया। मैंने विधवाओं को सहारे बिना नहीं रहने दिया।

17मैं स्वार्थी नहीं रहा। मैंने अपने भोजन के साथ अनाथ बच्चों को भूखा नहीं रहने दिया।

18ऐसे बच्चों के लिये जिनके पिता नहीं हैं, मैं पिता के जैसा रहा हूँ। मैंने जीवन भर विधवाओं का ध्यान रखा है।

19जब मैंने किसी को इसलिये कष्ट भोगते पाया कि उसके पास वस्त्र नहीं हैं, अथवा मैंने किसी दीन को बिना कोट के पाया।

20तो मैं सदा उन लोगों को वस्त्र देता रहा, मैंने उन्हें गर्म रखने को मैंने स्वयं अपनी भेड़ों के ऊन का उपयोग किया, तो वे मुझे अपने समूचे मन से आशीष दिया करते थे।

21यदि कोई मैंने अनाथ को छलने का जतन अदालत में किया हो यह जानकर की मैं जीतूँ,

22तो मेरा हाथ मेरे कंधे के जोड़ से ऊतर जाये और मेरा हाथ कंधे पर से गिर जाये।

23किन्तु मैंने तो कोई वैसा बुरा काम नहीं किया। क्यो? क्योंकि मैं परमेश्वर के दण्ड से डरता रहा था।

24मैंने कभी अपने धन का भरोसा न किया, और मैंने कभी नहीं शुद्ध सोने से कहा कि 'तू मेरी आशा है!'

25मैंने कभी अपनी धनिकता का गर्व नहीं किया अथवा जो मैंने सम्पत्ति कमाई थी, उसके प्रति मैं आनन्दित हुआ।

26मैंने कभी चमकते सूरज की पूजा नहीं की अथवा मैंने सुन्दर चाँद की पूजा नहीं की।

27मैंने कभी इतनी मूर्खता नहीं की कि सूरज और
चाँद को पूजूँ। 28यदि मैंने इनमें से कुछ किया तो वो मेरा पाप हो और मुझे उसका दण्ड मिले। क्योंकि मैं उन बातों को करते हुये सर्वशक्तिशाली परमेश्वर का अविश्वासी हो जाता।

29जब मेरे शत्रु नष्ट हुये तो मैं प्रसन्न नहीं हुआ, जब मेरे शत्रुओं पर विपत्ति पड़ी तो, मैं उन पर नहीं हँसा।

30मैंने अपने मुख को अपने शत्रु से बुरे शब्द बोल
कर पाप नहीं करने दिया और नहीं चाहा कि उन्हें
मृत्यु आ जाये।
31मेरे घर के सभी लोग जानते हैं कि मैंने सदा
अनजानों को खाना दिया।
32मैंने सदा अनजानों को अपने घर में बुलाया, ताकि
उनको रात में गलियों में सोना न पड़े।
33दूसरे लोग अपने पाप को छुपाने का जतन करते
हैं, किन्तु मैंने अपना दोष कभी नहीं छुपाया।
34क्यों? क्योंकि लोग कहा करते हैं कि मैं उससे
कभी नहीं डरा। मैं कभी चुप न रहा और मैने कभी
बाहर जाने से मना नहीं किया क्योंकि उन लोगों से जो
मेरे प्रति बैर रखते हैं कभी नहीं डरा।
35ओह! काश कोई होता जो मेरी सुनता! मुझे अपनी
बात समझाने दो। काश! शक्तिशाली परमेश्वर मुझे
उत्तर देता। काश! वह उन बातों को लिखता जो मैने
गलत किया था उसकी दृष्टि में।
36क्योंकि निश्चय ही मैं वह लिखावट अपने निज
कन्धों पर रख लूँगा और मैं उसे मुकुट की तरह सिर
पर रख लूँगा।
37मैंने जो कुछ भी किया है, मैं उसे परमेश्वर को
समझाऊँगा। मैं परमेश्वर के पास अपना सिर ऊँचा
उठाये हुये जाऊँगा, जैसे मैं कोई मुखिया होऊँ।
38यदि जिस खेत पर मैं खेती करता हूँ उसको मैंने
चुराया हो और उसको उसके स्वामी से लिया हो जिससे
वह धरती अपने ही आँसुओं से गीली हो।
39और यदि मैंने कभी बिना मजदूरों को मजदूरी
दिये हुये, खेत की उपज को खाया हो और मजदूरों को
हताश किया हो,
40हाँ! यदि इनमें से कोई भी बुरा काम मैंने कियाहो,
तो गेहूँ के स्थान पर काँटे और जौ के बजाये खर-पतवार
खेतों में उग आयें।" अय्यूब के शब्द समाप्त हुये!

एलीहू का कथन

32 फिर अय्यूब के तीनों मित्रों ने अय्यूब को
उत्तर देने का प्रयत्न करना छोड़ दिया। क्योंकि
अय्यूब निश्चय के साथ यह मानता था कि वह स्वयं
सचमुच दोष रहित हैं। 2वहाँ एलीहू नाम का एक व्यक्ति
भी था। एलीहू बारकेल का पुत्र था। बारकेल बुज़ नाम
के एक व्यक्ति के वंशज था। एलीहू राम के परिवार से
था। एलीहू को अय्यूब पर बहुत क्रोध आया क्योंकि
अय्यूब कह रहा था कि वह स्वयं नेक है और वह
परमेश्वर पर दोष लगा रहा था। 3एलीहू अय्यूब के
तीनों मित्रों से भी नाराज़ था क्योंकि वे तीनों ही अय्यूब
के प्रश्नों का युक्ति संगत उत्तर नहीं दे पाये थे और
अय्यूब को ही दोषी बता रहे थे। इससे तो फिर ऐसा लगा
कि जैसे परमेश्वर ही दोषी था। 4वहाँ जो लोग थे उनमें
एलीहू सबसे छोटा था इसलिए वह तब तक बाट जोहता
रहा जब तक हर कोई अपनी अपनी बात पूरी नहीं
कर चुका। तब उसने सोचा कि अब वह बोलना शुरु
कर सकता हैं। 5एलीहू ने जब यह देखा कि अय्यूब के
तीनों मित्रों के पास कहने को और कुछ नहीं है तो उसे
बहुत क्रोध आया।
6सो एलीहू ने अपनी बात कहना शुरु किया। वह
बोला:
"मैं छोटा हूँ और तुम लोग मुझसे बड़े हो, मैं इसलिये
तुमको वह बताने में डरता था जो मैं सोचता हूँ।
7मैंने मन में सोचा कि बड़े को पहले बोलना चाहिये,
और जो आयु में बड़े है उनको अपने ज्ञान को बाँटना
चाहिये।
8किन्तु व्यक्ति में परमेश्वर की आत्मा बुद्धि देतीहै
और सर्वशक्तिशाली परमेश्वर का प्राण व्यक्ति को ज्ञान
देता है।
9आयु में बड़े व्यक्ति ही नहीं ज्ञानी होते है। क्या बस
बड़ी उम्र के लोग ही यह जानते हैं कि उचित क्या है?
10सो इसलिये मैं एलीहू जो कुछ मैं जानता हूँ। तुम
मेरी बात सुनों मैं तुम को बताता हूँ कि मैं क्या सोचता
हूँ।
11जब तक तुम लोग बोलते रहे, मैने धैर्य सेप्रतिज्ञा
की, मैने तुम्हारे तर्क सुने जिनको तुमने व्यक्त किया
था, जो तुम ने चुन चुन कर अय्यबू से कहे।
12जब तुम मार्मिक शब्दों से जतन कर रहे थे अय्यूब
को उत्तर देने का तो मैं ध्यान से सुनता रहा। किन्तु तुम
तीनों ही यह प्रमाणित नहीं कर पाये कि अय्यूब बुरा है।
तुममें से किसी ने भी अय्यूब के तर्को का उत्तर नहीं
दिया।
13तुम तीनों ही लोगों को यही नहीं कहना चाहिये था
कि तुमने ज्ञान को प्राप्त कर लिया है। लोग नहीं,
परमेश्वर निश्चय ही अय्यूब के तर्को का उत्तर देगा।
14किन्तु अय्यूब मेरे विरोध में नहीं बोल रहा था,
इसलिये मैं उन तर्को का प्रयोग नहीं करुँगा जिसका
प्रयोग तुम तीनों ने किया था।
15अय्यूब, तेरे तीनो ही मित्र असमंजस में पड़ें हैं,
उनके पास कुछ भी और कहने को नहीं है, उनके
पास और अधिक उत्तर नहीं हैं।
16ये तीनों लोग यहाँ चुप खड़े हैं और उनके पास उत्तर
नहीं है। सो क्या अभी भी मुझको प्रतिक्षा करनी होगी?
17नहीं! मैं भी निज उत्तर दूँगा। मैं भी बताऊँगा तुम
को कि मैं क्या सोचता हूँ।
18क्योंकि मेरे पास सहने को बहुत है मेरे भीतर जो
आत्मा है, वह मुझको बोलने को विवश करती है।
19मैं अपने भीतर ऐसी दाखमधु सा हूँ, जो शीघ्र ही
बाहर उफन जाने को है। मैं उस नयी दाखमधु मशाक
जैसा हूँ जो शीघ्र ही फटने को है।

20सो निश्चय ही मुझे बोलना चाहिये, तभी मुझे अच्छा लगेगा। अपना मुख मुझे खोलना चाहिये और मुझे अय्यूब की शिकायतों का उत्तर देना चाहिये।

21इस बहस में मैं किसी भी व्यक्ति का पक्ष नहीं लूँगा और मैं किसी का खुशामद नहीं करुँगा।

22मैं नहीं जानता हूँ कि कैसे किसी व्यक्ति की खुशामद की जाती है। यदि मैं किसी व्यक्ति की खुशामद करना जानता तो शीघ्र ही परमेश्वर मुझको दण्ड देता।

33 "किन्तु अय्यूब अब, मेरा सन्देश सुन। उन बातों पर ध्यान दे जिनको मैं कहता हूँ।

2मैं अपनी बात शीघ्र ही कहनेवाला हूँ, मैं अपनी बात कहने को लगभग तैयार हूँ।

3मन मेरा सच्चा है सो मैं सच्चा शब्द बोलूँगा। उन बातों के बारे में जिनको मैं जानता हूँ मैं सत्य कहूँगा।

4परमेश्वर की आत्मा ने मुझको बनाया है, मुझे सर्वशक्तिशाली परमेश्वर से जीवन मिलता है।

5अय्यूब, सुन और मुझे उत्तर दे यदि तू सोचता है कि तू दे सकता है। अपने उत्तरों को तैयार रख ताकि तू मुझसे तर्क कर सके।

6परमेश्वर के सम्मुख हम दोनों एक जैसे हैं, और हम दोनों को ही उसने मिट्टी से बनायाहै।

7अय्यूब, तू मुझ से मत डर। मैं तेरे साथ कठोर नहीं होऊँगा।

8किन्तु अय्यूब, मैने सुना है कि तू यह कहा करताहैं,

9तूने कहा था, कि मैं अय्यूब, दोषी नहीं हूँ, मैंने पाप नहीं किया, अथवा मैं कुछ भी अनुचित नहीं करता हूँ, मैं अपराधी नहीं हूँ।

10यद्यपि मैंने कुछ भी अनुचित नहीं किया, तो भी परमेश्वर ने कुछ खोट मुझ में पाया है। परमेश्वर सोचता है कि मैं अय्यूब, उसका शत्रुहूँ।

11इसलिये परमेश्वर मेरे पैरों में काठ डालता है, मैं जो कुछ भी करता हूँ वह देखता रहता है।

12किन्तु अय्यूब, मैं तुझको निश्चय के साथ बताता हूँ कि तू इस विषय में अनुचित है। क्यों? क्योंकि परमेश्वर किसी भी व्यक्ति से अधिक जानता है।

13अय्यूब, तू क्यों शिकायत करता है और क्यों परमेश्वर से बहस करता है? तू क्यों शिकायत करता है कि परमेश्वर तुझे हर उस बात के विषय में जो वह
करता है स्पष्ट क्यों नहीं बताता है? 14किन्तु परमेश्वर
निश्चय ही हर उस बात को जिसको वह करता है स्पष्ट कर देता है। परमेश्वर अलग अलग रीति से बोलता है किन्तु लोग उसको समझ नहीं पाते हैं।

15-16सम्भव है कि परमेश्वर स्वप्न में लोगों के कान में बोलता हो, अथवा किसी दिव्यदर्शन में रात को जब वे गहरी नींद में हों। जब परमेश्वर की चेतावनियाँ सुनते है तो बहुत डर जाते हैं।

17परमेश्वर लोगों को बुरी बातों को करने से रोकने को सावधान करता है, और उन्हें अहंकारी बनने से रोकने को।

18परमेश्वर लोगों को मृत्यु के देश में जाने से बचाने के लिये सावधान करता है। परमेश्वर मनुष्य को नाश से बचाने के लिये ऐसा करता है।

19अथवा कोई व्यक्ति परमेश्वर की वाणी तब सुन सकता है जब वह बिस्तर में पड़ा हों और परमेश्वर के दण्ड से दु:ख भोगता हो। परमेश्वर पीड़ा से उस व्यक्ति को सावधान करता है। वह व्यक्ति इतनी गहन पीड़ा में होता है, कि उसकी हड्डियाँ दु:खती है।

20फिर ऐसा व्यक्ति कुछ खा नहीं पाता, उस व्यक्ति को पीड़ा होती है इतनी अधिक की उसको सर्वोत्तम भोजन भी नहीं भाता।

21उसके शरीर का क्षय तब तक होता जाता है जब तक वह कंकाल मात्र नहीं हो जाता, और उसकी सब हड्डियाँ दिखने नहीं लग जातीं!

22ऐसा व्यक्ति मृत्यु के देश के निकट होता है, और उसका जीवन मृत्यु के निकट होता है। किन्तु हो सकता है कि कोई स्वर्गदूत हो जो उसके उत्तम चरित्र की साक्षी दे।

23परमेश्वर के पास हजारों ही स्वर्गदूत हैं। फिर वह स्वर्गदूत उस व्यक्ति के अच्छे काम बतायेगा।

24वह स्वर्गदूत उस व्यक्ति पर दयालू होगा, वह दूत परमश्वर से कहेगा: इस व्यक्ति की मृत्यु के देश से रक्षा हो! इसका मूल्य चुकाने को एक राह मुझ को मिल गयी है।

25फिर व्यक्ति की देह जवान और सुदृढ़हो जायेगी। वह व्यक्ति वैसा ही हो जायेगा जैसा वह तबथा, जब वह जवान था।

26वह व्यक्ति परमेश्वर की स्तुति करेगा और परमेश्वर उसकी स्तुति का उत्तर देगा। वह फिर परमेश्वर को वैसा ही पायेगा जैसे वह उसकी उपासना करता है, और वह अति प्रसन्न होगा। क्योंकि परमेश्वर उसे निरपराध घोषित कर के पहले जैसा जीवन कर देगा।

27फिर वह व्यक्ति लोगों के सामने स्वीकार करेगा। वह कहेगा: 'मैंने पाप किये थे, भले को बुरा मैंने किया था, किन्तु मुझे इससे क्या मिला!

28परमेश्वर ने मृत्यु के देश में गिरने से मेरी आत्मा को बचाया। मैं और अधिक जीऊँगा और फिर से जीवन का रस लूँगा।'

29परमेश्वर व्यक्ति के साथ ऐसा बार-बार करता है,

30उसको सावधान करने को और उसकी आत्मा को मृत्यु के देश से बचाने को। ऐसा व्यक्ति फिर जीवन का रस लेता है।

31अय्यूब, ध्यान दे मुझ पर, तू बात मेरी सुन, तू चुप रह और मुझे कहने दे।

32अय्यूब, यदि तेरे पास कुछ कहने को है तो मुझको उसको सुनने दे। आगे बढ़ और बता, क्योंकि मैं तुझे निर्दोष देखना चाहता हूँ।

33अय्यूब, यदि तूझे कुछ नहीं कहना है तो तू मेरी बात सुन। चुप रह, मैं तुझको बुद्धिमान बनना सिखाऊँगा।”

34 फिर एलीहू ने बात को जारी रखते हुये कहा:
2“अरे ओ विवेकी पुरुषों तुम ध्यान से सुनो जो बातें मैं कहता हूँ। अरे ओ चतुर लोगों, मुझ पर ध्यान दो।

3कान उन सब को परखता है जिनको वह सुनताहै, ऐसे ही जीभ जिस खाने को छूती है, उसका स्वाद पता करती है।

4सो आओ इस परिस्थिति को परखें और स्वयं निर्णय करें की उचित क्या है। हम साथ साथ सीखेंगें की क्या खरा है।

5अय्यूब ने कहा: ‘मैं निर्दोष हूँ, किन्तु परमेश्वर मेरे लिये निष्पक्ष नहीं है।

6मैं अच्छा हूँ लेकिन लोग सोचते हैं कि मैं बुरा हूँ। वे सोचते हैं कि मैं एक झूठा हूँ और चाहे मैं निर्दोष भी होऊँ फिर भी मेरा घाव नहीं भर सकता।’

7अय्यूब के जैसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसका मुख परमेश्वर की निन्दा से भरा रहता है।

8अय्यूब बुरे लोगों का साथी है और अय्यूब को बुरे लोगों की संगत भाती है।

9क्योंकि अय्यूब कहता है ‘यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर की आज्ञा मानने का जतन करताहै तो इससे उस व्यक्ति का कुछ भी भला न होगा।

10अरे ओं लोगों जो समझ सकते हो, तो मेरीबात सुनो, परमेश्वर कभी भी बुरा नहीं करता है। सर्वशक्तिशाली परमेश्वर कभी भी बुरा नहीं करेगा।

11परमेश्वर व्यक्ति को उसके किये कर्मो का फल देगा। वह लोगों को जो मिलना चाहिये देगा।

12यह सत्य है परमेश्वर कभी बुरा नहीं करता है। सर्वशक्तिशाली परमेश्वर सदा निष्पक्ष रहेगा।

13परमेश्वर सर्वशक्तिशाली है, धरती का अधिकारी, उसे किसी व्यक्ति ने नहीं बनाया। किसी भी व्यक्ति ने उसे इस समूचे जगत का उत्तरदायित्व नहीं दिया।

14यदि परमेश्वर निश्चय कर लेता कि लोगों से आत्मा और प्राण ले ले,

15तो धरती के सभी व्यक्ति मर जाते, फिर सभी लोग मिट्टी बन जाते।

16यदि तुम लोग विवेकी हो तो तुम उसे सुनोगे जिसे मैं कहता हूँ।

17कोई ऐसा व्यक्ति जो न्याय से घृणा रखता है शासक नहीं बन सकता। अय्यूब, तू क्या सोचता है, क्या तू उस उत्तम और सुदृढ़ परमेश्वर को दोषी ठहरा सकता है?

18केवल परमेश्वर ऐसा है जो राजाओं से कहा करता है कि ‘तुम बेकार के हो।’ परमेश्वर मुखियों से कहा करता है कि ‘तुम दुष्ट हो।’

19परमेश्वर प्रमुखों से अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक प्रेम नहीं करता, और परमेश्वर धनिकों की अपेक्षा गरीबों से अधिक प्रेम नहीं करता है। क्योंकि सभी परमेश्वर ने रचा है।

20सम्भव है रात में कोई व्यक्ति मर जाये, परमेश्वर बहुत शीघ्र ही लोगों को रोगी करता है और वे प्राण त्याग देते हैं। परमेश्वर बिना किसी जतन के शक्तिशाली लोगों को उठा ले जाता है, और कोई भी व्यक्ति उन लोगों को मदद नहीं दे सकता है।

21व्यक्ति जो करता है परमेश्वर उसे देखता है। व्यक्ति जो भी चरण उठाता है परमेश्वर उसे जानता है।

22कोई जगह अंधेरे से भरी हुई नहीं है, और कोई जगह ऐसी नहीं है जहाँ इतना अंधेरा हो कि कोई भी दुष्ट व्यक्ति अपने को परमेश्वर से छिपा पाये।

23किसी व्यक्ति के लिये यह उचित नहीं है कि वह परमेश्वर से न्यायालय में मिलने का समय निश्चित करे।

24परमेश्वर को प्रश्नों के पूछने की आवश्यकता नहीं, किन्तु परमेश्वर बलशालियों को नष्ट करेगा और उनके स्थान पर किसी और को बैठायेगा।

25सो परमेश्वर जानता है कि लोग क्या करते हैं। इसलिये परमेश्वर रात में दुष्टों को हरायेगा, और उन्हें नष्ट कर देगा।

26परमेश्वर बुरे लोगों को उनके बुरे कर्मो के कारण नष्ट कर देगा और बुरे व्यक्ति के दण्ड को वह सब को देखनेदेगा।

27क्योंकि बुरे व्यक्ति ने परमेश्वर की आज्ञा मानना छोड़ दिया और वे बुरे व्यक्ति परवाह नहीं करते हैं उन कामों को करने की जिनको परमेश्वर चाहता है।

28उन बुरे लोगों ने गरीबों को दु:ख दिया और उनको विवश किया परमेश्वर को सहायता हेतू पुकारने को। गरीब सहायता के लिये पुकारता है, तो परमेश्वर उसकी सुनता है।

29किन्तु यदि परमेश्वर ने गरीब की सहायता न करने का निर्णय लिया तो कोई व्यक्ति परमेश्वर को दोषी नहीं ठहरा सकता है। यदि परमेश्वर उनसे मुख मोड़ता है तो कोई भी उस को नहीं पा सकता है। परमेश्वर जातियों और समूची मानवता पर शासन करता है।

30तो फिर एक ऐसा व्यक्ति है जो परमेश्वर के विरुद्ध है और लोगों को छलता है, तो परमेश्वर उसे राजा बनने नहीं दे सकता है।

31सम्भव है कि कोई परमेश्वर से कहे कि मैं अपराधी
हूँ और फिर मैं पाप नहीं करूँगा।
32हे परमेश्वर, तू मुझे वे बातें सिखा जो मैं नहीं
जानता हूँ। यदि मैंने कुछ बुरा किया तो फिर, मैं उसको
नहीं करूँगा। 33किन्तु अय्यूब, जब तू बदलने को मना
करताहै, तो क्या परमेश्वर तुझे वैसा प्रतिफल दे, जैसा
प्रतिफल तू चाहता है? यह तेरा निर्णय है यह मेरा नहीं
है। तू ही बता कि तू क्या सोचता है?
34कोई भी व्यक्ति जिसमें विवेक है और जो समझता
है वह मेरे साथ सहमत होगा। कोई भी विवेकी जन जो
मेरी सुनता, वह कहेगा,
35अय्यूब, अबोध व्यक्ति के जैसी बातें करता है, जो
बाते अय्यूब करता है उनमें कोई तथ्य नहीं।
36मेरी यह इच्छा है कि अय्यूब को परखने को और
भी अधिक कष्ट दिये जाये। क्यों? क्योंकि अय्यूब हमें
ऐसा उत्तर देता है, जैसा कोई दुष्ट जन उत्तर देता हो।
37अय्यूब पाप पर पाप किए जाता है और उस पर
उसने बगावत की। तुम्हारे ही सामने वह परमेश्वर को
बहुत बहुत बोल कर कलंकित करता रहता है!"

35 एलीहू कहता चला गया। वह बोला:
2"अय्यूब, यह तेरे लिये कहना उचित नहीं
की 'मैं अय्यूब, परमेश्वर के विरुद्ध न्याय पर है।'
3अय्यूब, तू परमेश्वर से पूछता है कि हे परमेश्वर,
मेरा पाप तुझे कैसे हानि पहुँचाता है? और यदि मैं पाप
न करुँ तो कौन सी उत्तम वस्तु मुझ को मिल जाती है?
4अय्यूब, मैं (एलीहू) तुझको और तेरे मित्रों को जो
यहाँ तेरे साथ हैं उत्तर देना चाहता हूँ।
5अय्यूब! उपर देख आकाश में दृष्टि उठा कि बादल
तुझसे अधिक ऊँचें हैं।
6अय्यूब, यदि तू पाप करें तो परमेश्वर का कुछ नहीं
बिगड़ता, और यदि तेरे पाप बहुत हो जायें तो उससे
परमेश्वर का कुछ नहीं होता।
7अय्यूब, यदि तू भला है तो इससे परमेश्वर का भला
नहीं होता, तुझसे परमेश्वर को कुछ नहीं मिलता।
8अय्यूब,तेरे पाप स्वयं तुझ जैसे मनुष्य को हानि
पहुँचाते हैं, तेरे अच्छे कर्म बस तेरे जैसे मनुष्य का ही
भला करते हैं।
9लोगों के साथ जब अन्याय होता है और बुरा व्यवहार
किया जाता है, तो वे मदद को पुकारते हैं, वे बड़े बड़ों
की सहायता पाने को दुहाई देते हैं।
10किन्तु वे परमेश्वर से सहायता नहीं माँगते। वे नहीं
कहते हैं कि, 'परमेश्वर जिसने हम को रचा है वह
कहाँ हैं? परमेश्वर जो हताश जन को आशा दिया
करता है वह कहाँ है?'
11वे ये नहीं कहा करते कि, 'परमेश्वर जिसने पशु
पक्षियों से अधिक बुद्धिमान मनुष्य को बनाया है वह
कहाँ है?'
12किन्तु बुरे लोग अभिमानी होते है, इसलिये यदि वे
परमेश्वर की सहायता पाने को दुहाई दें तो उन्हें उत्तर
नहीं मिलता है।
13यह सच है कि परमेश्वर उनकी व्यर्थ की दुहाई
को नहीं सुनेगा। सर्वशक्तिशाली परमेश्वर उन पर ध्यान
नहीं देगा।
14अय्यूब, इसी तरह परमेश्वर तेरी नहीं सुनेगा, जब
तू यह कहता है कि वह तुझको दिखाई नहीं देता और
तू उससे मिलने के अवसर की प्रतिज्ञा में है, और यह
प्रमाणित करने की तू निर्दोष है।
15अय्यूब, तू सोचता है कि परमेश्वर दुष्टों को दण्ड
नहीं देता है और परमेश्वर पाप पर ध्यान नहीं देता है।
16इसलिये अय्यूब निज व्यर्थ बातें करता रहता है।
अय्यूब ऐसा व्यवहार कर रहा है कि जैसे वह महत्वपूर्ण
है। किन्तु यह देखना कितना सरल है कि अय्यूब नहीं
जानता कि वह क्या कह रहा है।"

36 एलीहू ने बात जारी रखते हुए कहा:
2"अय्यूब, मेरे साथ थोड़ी देर और धीरज
रख। मैं तुझको दिखाऊँगा की परमेश्वर के पक्ष में
अभी कहने को और है।
3मैं अपने ज्ञान को सबसे बाटूँगा। मुझको परमेश्वर
ने रचा है। मैं जो कुछ भी जानता हूँ मैं उस का प्रयोग
तुझको यह दिखाने के लिये करूँगा कि परमेश्वर
निष्पक्ष है।
4अय्यूब, तू यह निश्चय जान कि जो कुछ मैं
कहता हूँ, वह सब सत्य है। मैं बहुत विवेकी हूँ और मैं
तेरे साथ हूँ।
5परमेश्वर शक्तिशाली है किन्तु वह लोगों से घृणा
नहीं करता है। परमेश्वर सामर्थी है और विवेकपूर्ण है।
6परमेश्वर दुष्ट लोगों को जीने नहीं देगा और परमेश्वर
सदा दीन लोगों के साथ खरा व्यवहार करता है।
7वे लोग जो उचित व्यवहार करते हैं, परमेश्वर
उनका ध्यान रखता है। वह राजाओं के साथ उन्हें
सिंहासन देता है और वे सदा आदर पाते हैं।
8किन्तु यदि लोग दण्ड पाते हों और बेड़ियों में जकड़े
हों। यदि वे पीड़ा भुगत रहे हों और संकट में हों।
9तो परमेश्वर उनको बतायेगा कि उन्होंने कौन सा
बुरा काम किया है। परमेश्वर उन को बतायेगा कि
उन्होंने पाप किये हैं और वे अहंकारी रहे थे।
10परमेश्वर उनको उसकी चेतावनी सुनने को विवश
करेगा। वह उन्हें पाप करने को रोकने का आदेश
देगा।
11यदि वे लोग परमेश्वर की सुनेंगे और उसका
अनुसरण करेंगे तो परमेश्वर उनको सफल बनायेगा।
12किन्तु यदि वे लोग परमेश्वर की आज्ञा नकारेंगे तो
वे मृत्यु के जगत में चले जायेंगे, वे अपने अज्ञान के
कारण मर जायेंगे।

13ऐसे लोग जिनको परवाह परमेश्वर की वे सदा कड़वाहट से भरे रहे है। यहाँ तक कि जब परमेश्वर उनको दण्ड देताहैं, वे परमेश्वर से सहारा पाने को विनती नहीं करते।

14ऐसे लोग जब जवान होंगे तभी मर जायेंगे। वे अभी भ्रष्ट लोगों के साथ शर्म से मरेंगे।

15किन्तु परमेश्वर दु:ख पाते लोगों को विपत्तियों से बचायेगा। परमेश्वर लोगों को जगाने के लिए विपदाएं भेजता है ताकि लोग उसकी सुने।

16अय्यूब, परमेश्वर तुझको तेरी विपत्तियों से दूर करके तुझे सहारा देना चाहता है। परमेश्वर तुझे एक विस्तृत सुरक्षित स्थान देना चाहता है और तेरी मेज पर भरपूर खाना रखना चाहता है।

17किन्तु अब अय्यूब, तुझे वैसा ही दण्ड मिल रहा है, जैसा दण्ड मिला करता है दुष्टों को, तुझको परमेश्वर का निर्णय और खरा न्याय जकड़े हुए है।

18अय्यूब, तू अपनी नकेल धन दौलत के हाथ में न दे कि वह तुझसे बुरा काम करवाये। अधिक धन के लालच से तू मूर्ख मत बन।

19तू ये जान ले कि अब न तो तेरा समूचा धन तेरी सहायता कर सकता है और न ही शक्तिशाली व्यक्ति तेरी सहायता कर सकते हैं।

20तू रात के आने की इच्छा मत कर जब लोग रात में छिप जाने का प्रयास करते हैं। वे सोचते हैं कि वे परमेश्वर से छिप सकते हैं।

21अय्यूब, बुरा काम करने से तू सावधान रह। तुझ पर विपत्तियाँ भेजी गई हैं ताकि तू पाप को ग्रहण न करे।

22देख, परमेश्वर की शक्ति उसे महान बनाती है। परमेश्वर सभी से महानतम शिक्षक है।

23परमेश्वर को क्या करना है, कोई भी व्यक्ति सको बता नहीं सकता। कोई भी उससे नहीं कह सकता कि परमेश्वर तूने बुरा किया है।

24परमेश्वर के कर्मों की प्रशंसा करना तू मत भूल।
लोगों ने गीत गाकर परमेश्वर के कामों की प्रशंसा की
है। 25परमेश्वर के कर्म को हर कोई व्यक्ति देख सकता
है। दूर देशों के लोग उन कर्मों को देख सकते हैं।

26यह सच है कि परमेश्वर महान है। उस की महिमा को हम नहीं समझ सकते हैं। परमेश्वर के वर्षों की संख्या को कोई गिन नहीं सकता।

27परमेश्वर जल को धरती से उपर उठाता है और उसे वर्षा के रूप में बदल देता है।

28परमेश्वर बादलों से जल बरसाता है, और भरपूर वर्षा लोगों पर गिरती हैं।

29कोई भी व्यक्ति नहीं समझ सकता कि परमेश्वर कैसे बादलों को बिखराता है, और कैसे बिजलियाँ आकाश में कड़कती हैं।

30देख, परमेश्वर कैसे अपनी बिजली को आकाश में चारों ओर बिखेरता है और कैसे सागर के गहरे भाग को ढक देता है।

31परमेश्वर राष्ट्रों को नियंत्रण में रखने और उन्हें भरपूर भोजन देने के लिये इन बादलों का उपयोग करता है।

32परमेश्वर अपने हाथों से बिजली को पकड़ लेता है और जहाँ वह चाहता है, वहाँ बिजली को गिरने का आदेश देता है।

33गर्जन, तूफान के आने की चेतावनी देता है। यहाँ तक की पशु भी जानते हैं कि तूफान आ रहा है।

37 "हे अय्यूब, जब इन बातों के विषय में मैं सोचता हूँ, मेरा हृदय बहुत जोर से धड़कताहै।

2हर कोई सुनों, परमेश्वर की वाणी बादल की गर्जन जैसी सुनाई देती हैं। सुनों गरजती हुई ध्वनि को जो परमेश्वर के मुख से आ रही है।

3परमेश्वर अपनी बिजली को सारे आकाश से होकर चमकने को भेजता है। वह सारी धरती के ऊपर चमका करती है।

4बिजली के कौंधने के बाद परमेश्वर की गर्जन भरी वाणी सुनी जा सकती है। परमेश्वर अपनी अद्‌भुत वाणी के साथ गरजता है। जब बिजली कौंधती है तब परमेश्वर की वाणी गरजती है।

5परमेश्वर की गरजती हुई वाणी अद्‌भुत है। वह ऐसे बड़े कर्म करता है, जिन्हें हम समझ नहीं पाते हैं।

6परमेश्वर हिम से कहता है 'तुम धरती पर गिरो' और परमेश्वर वर्षा से कहता है 'तुम धरती पर जोर से बरसो।'

7परमेश्वर ऐसा इसलिये करता है कि सभी व्यक्ति जिनको उसने बनाया है जान जाये कि वह क्या कर सकता है। वह उसका प्रमाण है।

8पशु अपने खोहों में भाग जाते हैं, और वहाँ ठहरे
रहते हैं। 9दक्षिण से तूफान आते हैं, और उत्तर से सर्दी
आया करती है।

10परमेश्वर का श्वास बर्फ को रचता है, और सागरों को जमा देता है।

11परमेश्वर बादलों को जल से भरा करता है, और बिजली को बादल के द्वारा बिखेरता है।

12परमेश्वर बादलों को आने देता है कि वह उड़
कर सब कहीं धरती के ऊपर छा जाये और फिर
बादल वहीं करते हैं जिसे करने का आदेश परमेश्वर
ने उन्हें दिया है। 13परमेश्वर बाढ़ लाकर लोगों को दण्ड
देने अथवा धरती को जल देकर अपना प्रेम दर्शाने के
लिये बादलों को भेजता है।

14अय्यूब, तू क्षण भर के लिये रुक और सुन। रुक जा और सोच उन अद्‌भुत कार्यो के बारे में जिन्हें परमेश्वर किया करता हैं।

15अय्यूब, क्या तू जानता है कि परमेश्वर बादलों पर कैसे काबू रखता है? क्या तू जानता है कि परमेश्वर अपनी बिजली को क्यों चमकाता है?

16क्या तू यह जानता है कि आकाश में बादल कैसे लटके रहते हैं। ये एक उदारहण मात्र हैं। परमेश्वर का ज्ञान सम्पूर्ण है और ये बादल परमेश्वर की अद्‌भुत कृति हैं।

17किन्तु अय्यूब, तुम ये बातें नहीं जानते। तुम बस इतना जानते है कि तुमको पसीना आता है और तेरे वस्त्र तुझ से चिपके रहते हैं, और सब कुछ शान्त व स्थिर रहता है, जब दक्षिण से गर्म हवा आती है।

18अय्यूब, क्या तू परमेश्वर की मदद आकाश को फैलाने में और उसे झलकाये गये दर्पण की तरह चमकाने में कर सकता है?

19अय्यूब, हमें बता कि हम परमेश्वर से क्या कहें। हम उससे कुछ भी कहने को सोच नहीं पाते क्योंकि हम पर्याप्त कुछ भी नहीं जानते।

20क्या परमेश्वर से यह कह दिया जाये कि मैं उस के विरोध में बोलना चाहता हूँ। यह वैसे ही होगा जैसे अपना विनाश माँगना।

21देख, कोई भी व्यक्ति चमकते हुए सूर्य को नहीं देख सकता। जब हवा बादलों को उड़ा देती है उस के बाद वह बहुत उजला और चमचमाता हुआ होता है।

22और परमेश्वर भी उसके समान है। परमेश्वर की सुनहरी महिमा चमकती है। परमेश्वर अद्‌भुत महिमा के साथ उत्तर से आता है।

23सर्वशक्तिमान परमेश्वर सचमुच महान है, हम परमेश्वर को नहीं जान सकते परमेश्वर सदा ही लोगों के साथ न्याय, और निष्पक्षता के साथ व्यवहार करता हैं।

24इसलिए लोग परमेश्वर का आदर करते हैं, किन्तु परमेश्वर उन अभिमानी लोगों को आदर नहीं देता है जो स्वयं को बुद्धिमान समझते हैं"।

38 फिर यहोवा ने तूफान में से अय्यूब को उत्तर
दिया। परमेश्वर ने कहा: 2"यह कौन व्यक्ति
है जो मूर्खतापूर्ण बातें कर रहा है?"

3अय्यूब, तुम पुरुष की भाँति सुदृढ बनों। जो प्रश्न मैं
पूछूँ उस का उत्तर देने को तैयार हो जाओ। 4अय्यूब,
बताओ तुम कहाँ थे, जब मैंने पृथ्वी की रचना की थी?
यदि तू इतना समझदार है तो मुझे उत्तर दे।

5अय्यूब, इस संसार का विस्तार किसने निश्चित किया था? किसने संसार को नापने के फीते से नापा?

6इस पृथ्वी की नींव किस पर रखी गई है? किसने पृथ्वी की नींव के रूप में सर्वाधिक महत्वपूर्ण पत्थर को रखा है?

7जब ऐसा किया था तब भोर के तारों ने मिलकर गाया और स्वर्गदूत ने प्रसन्न होकर जयजयकार किया।

8अय्यूब, जब सागर धरती के गर्भ से फूट पड़ाथा, तो किसने उसे रोकने के लिये द्वार को बन्द किया था।

9उस समय मैंने बादलों से समुद्र को ढक दिया और अन्धकार में सागर को लपेट दिया था(जैसे बालक को चादर में लपेटा जाता है।)

10सागर की सीमाऐं मैंने निश्चित की थीं और उसे ताले लगे द्वारों के पीछे रख दिया था।

11मैंने सागर से कहा 'तू यहाँ तक आ सकता है किन्तु और अधिक आगे नहीं। तेरी अभिमानी लहरें यहाँ पर रुक जायेंगी।'

12अय्यूब, क्या तूने कभी अपनी जीवन में भोर को आज्ञा दी है उग आने और दिन को आरम्भ करने की?

13अय्यूब, क्या तूने कभी प्रात: के प्रकाश को धरती पर छा जाने को कहा है और क्या कभी उससे दुष्टों के छिपने के स्थान को छोड़ने के लिये विवश करने को कहा है?

14प्रात: का प्रकाश पहाड़ों व घाटियों को देखने लायक बना देता है। जब दिन का प्रकाश धरती पर आता है तो उन वस्तुओं के रूप वस्त्र की सलवटों की तरह उभर कर आते हैं। वे स्थान रूप को नम मिट्‌टी की तरह जो दबोई गई मुहर की ग्रहण करते हैं।

15दुष्ट लोगों को दिन का प्रकाश अच्छा नहीं लगता क्योंकि जब वह चमचमाता है, तब वह उनको बुरे काम करने से रोकता है।

16अय्यूब, बता क्या तू कभी सागर के गहरे तल में गया है जहाँ से सागर शुरु होता है? क्या तू कभी सागर के तल पर चला है?

17अय्यूब, क्या तूने कभी उस फाटकों को देखाहै, जो मृत्यु लोक को ले जाते हैं? क्या तूने कभी उस फाटकों को देखा जो उस मृत्यु के अन्धेरे स्थान को ले जाते हैं?

18अय्यूब, तू जानता है कि यह धरती कितनी बड़ी है? यदि तू ये सब कुछ जानता है, तो तू मुझकों बता दे।

19अय्यूब, प्रकाश कहाँ से आता है? और अन्धकार कहाँ से आता है?

20अय्यूब, क्या तू प्रकाश और अन्धकार को ऐसी जगह ले जा सकता है जहाँ से वे आये है? जहाँ वे रहते हैं वहाँ पर जाने का मार्ग क्या तू जानता है?

21अय्यूब, मुझे निश्चय है कि तुझे सारी बातेंमालूम हैं क्योंकि तू बहुत ही बूढ़ा और बुद्धिमान है। जब वस्तुऐं रची गई थी तब तू वहाँ था।

22अय्यूब, क्या तू कभी उन कोठियारों में गया हैं जहाँ मैं हिम और ओलों को रखा करता हूँ?

23मैं हिम और ओलों को विपदा के काल और युद्ध लड़ाई के समय के लिये बचाये रखता हूँ।

24अय्यूब, क्या तू कभी ऐसी जगह गया है, जहाँ से सूरज उगता है और जहाँ से पुरवाई सारी धरती पर छा जाने के लिये आती है?

25अय्यूब, भारी वर्षा के लिये आकाश में किसने नहर खोदी है, और किसने भीषण तूफ़ान का मार्ग बनाया है?

26अय्यूब, किसने वहाँ भी जल बरसाया, जहाँ कोई भी नहीं रहता है?

27वह वर्षा उस खाली भूमि के बहुतायत से जल देता है और घास उगनी शुरु हो जाती है।

28अय्यूब, क्या वर्षा का कोई पिता है? ओस की बूँदे कहाँ से आती हैं?

29अय्यूब, हिम की माता कौन है? आकाश से पाले को कौन उत्पन्न करता है?

30पानी जमकर चट्टान सा कठोर बन जाता है, और सागर की ऊपरी सतह जम जाया करतीहै।

31अय्यूब, सप्तर्षि तारों को क्या तू बाँध सकताहै? क्या तू मृगशिरा का बन्धन खोल सकता है?

32अय्यूब, क्या तू तारा समूहों को उचित समय पर उगा सकता है, अथवा क्या तू भालू तारा समूह की उसके बच्चों के साथ अगुवाई कर सकता है?

33अय्यूब क्या तू उन नियमों को जानता है, जो नभ का शासन करते हैं? क्या तू उन नियमों को धरती पर लागू कर सकता है?

34अय्यूब, क्या तू पुकार कर मेघों को आदेश दे सकता है, कि वे तुझको भारी वर्षा के साथ घेर ले।

35अय्यूब बता, क्या तू बिजली को जहाँ चाहता वहाँ भेज सकता है? और क्या तेरे निकट आकर बिजली कहेगी 'अय्यूब, हम यहाँ है बता तू क्या चाहता है?'

36मनुष्य के मन में विवेक को कौन रखता हैं, और बुद्धि को कौन समझदारी दिया करताहै?

37अय्यूब, कौन इतना बलवान है जो बादलों को गिन ले और उनको वर्षा बरसाने से रोक दे?

38वर्षा धूल को कीचड़ बना देती है और मिट्टी के लौंदे आपस में चिपक जाते हैं।

39अय्यूब, क्या तू सिंहनी का भोजन पा सकताहै? क्या तू भूखे युवा सिंह का पेट भर सकता है?

40वे अपनी खोहों में पड़े रहते हैं अथवा झाड़ियों में छिप कर अपने शिकार पर हमला करने के लिये बैठते हैं।

41अय्यूब, कौवे के बच्चे परमेश्वर की दुहाई देतेहै, और भोजन को पाये बिना वे इधर उधर घूमतें रहते हैं तब उन्हें भोजन कौन देता है?

39 "अय्यूब, क्या तू जानता है कि पहाड़ी बकरी कब ब्याती हैं? क्या तूने कभी देखा जब हिरणी ब्याती है?

2अय्यूब, क्या तू जानता है पहाड़ी बकरियाँ और माता हरिणियाँ कितने महीने अपने बच्चे को गर्भ में रखती हैं? क्या तुझे पता है कि उनका ब्याने का उचित समय क्या है?

3वे लेट जाती हैं और बच्चों को जन्म देती हैं, तब उनकी पीड़ा समाप्त हो जाती है।

4पहाड़ी बकरियों और हरिणी माँ के बच्चे खेतोंमें हृष्ट पृष्ट हो जाते हैं। फिर वे अपनी माँ को छोड़ देते हैं, और फिर लौट कर वापस नहीं आते।

5अय्यूब, जंगली गधों को कौन आजाद छोड़ देता है? किसने उसके रस्से खोले और उनको बन्धन मुक्त किया?

6यह मैं (यहोवा) हूँ जिसने बनैले गधे को घर के रूप में मरुभूमि दिया। मैंने उनको रहने के लिये रेही धरती दी।

7बनैला गधा शोर भरे नगरों के पास नहीं जाताहै और कोई भी व्यक्ति उसे काम करवाने के लिये नहीं साधता है।

8बनैले गधे पहाड़ों में घूमते हैं और वे वहीं घास चरा करते हैं। वे वहीं पर हरी घास चरने को ढूँढते रहते हैं।

9अय्यूब, बता, क्या कोई जंगली सांड़ तेरी सेवा के लिये राजी होगा? क्या वह तेरे खलिहान में रात को रुकेगा?

10अय्यूब, क्या तू जंगली सांड़ को रस्से से बाँध कर अपना खेत जुता सकता है? क्या घाटी में तेरे लिये वह पटेला करेगा?

11अय्यूब, क्या तू किसी जंगली सांड़ के भरोसे रह सकता है? क्या तू उस की शक्ति से अपनी सेवा लेने की अपेक्षा रखता है?

12क्या तू उसके भरोसे है कि वह तेरा अनाज इकट्ठा तेरे और उसे तेरे खलिहान में ले जाये?

13शुतुरमुर्ग जब प्रसन्न होता है वह अपने पंख फड़फड़ाता है किन्तु शुतुरमुर्ग उड़ नहीं सकता। उस के पर और पंख सारस के जैसे नहीं होते।

14शुतुरमुर्ग धरती पर अण्डे देती है, और वे रेत में सेये जाते हैं।

15किन्तु शुतुरमुर्ग भूल जाता है कि कोई उस के अण्डों पर से चल कर उन्हें कुचल सकताहै, अथवा कोई बनैला पशु उनको तोड़ सकता है।

16शुतुरमुर्ग अपने ही बच्चों पर निर्दयता दिखाताहै जैसे वे उसके बच्चे नहीं है। यदि उसके बच्चे मर भी जाये तो भी उसको उसकी चिन्ता नहीं है।

17ऐसा क्यों? क्योंकि मैंने (परमेश्वर) उस शुतुरमुर्ग को विवेक नहीं दिया था। शुतुरमुर्ग मूर्ख होता है, मैंने ही उसे ऐसा बनायाहै।

18किन्तु जब शुतुरमुर्ग दौड़ने को उठती है तब वह घोड़े और उसके सवार पर हँसती है, क्योंकि वह घोड़े से अधिक तेज भाग सकती है।

19अय्यूब, बता क्या तूने घोड़े को बल दिया और क्या तूने ही घोड़े की गर्दन पर अयाल जमाया है?

20अय्यूब, बता जैसे टिड्डी कूद जाती है क्या तूने वैसा घोड़े को कुदाया है? घोड़ा घोर स्वर में हिनहिनाता है और लोग डर जाते हैं।

21घोड़ा प्रसन्न है कि वह बहुत बलशाली है और अपने खुर से वह धरती को खोदा करता है। युद्ध में जाता हुआ घोड़ा तेज दौड़ता है।

22घोड़ा डर की हँसी उड़ाता है क्योंकि वह कभी नहीं डरता । घोड़ा कभी भी युद्ध से मुख नहीं मोड़ता है।

23घोड़े की बगल में तरकस थिरका करते हैं। उसके सवार के भाले और हथियार धूप में चमचमाया करते हैं।

24घोड़ा बहुत उत्तेजित है, मैदान पर वह तीव्र गति से दौड़ता है। घोड़ा जब बिगुल की आवाज सुनता है तब वह शान्त खड़ा नहीं रह सकता।

25जब बिगुल की ध्वनि होती है घोड़ा कहा करताहै 'अहा!' वह बहुत ही दूर से युद्ध को सूँघ लेता है। वह सेना के नायकों के घोष भरे आदेश और युद्ध के अन्य सभी शब्द सुन लेता है।

26अय्यूब, क्या तूने बाज को सिखाया अपने पंखो को फैलाना और दक्षिण की ओर उड़ जाना?

27अय्यूब, क्या तू उकाब को उड़ने की और ऊँचे पहाड़ों में अपना घोंसला बनाने की आज्ञा देता है?

28उकाब चट्टान पर रहा करता है। उसका किला चट्टान हुआ करती है।

29उकाब किले से अपने शिकार पर दृष्टि रखताहै। वह बहुत दूर से अपने शिकार को देख लेताहै।

30उकाब के बच्चे लहू चाटा करते हैं और वे मरी हुई लाशों के पास इकट्ठे होते हैं।"

40 यहोवा ने अय्यूब से कहा:

2"अय्यूब तूने सर्वशक्तिमान परमेश्वर से तर्क किया। तूने बुरे काम करने का मुझे दोषी ठहराया। अब तू मुझको उत्तर दे।"

3इस पर अय्यूब ने उत्तर देते हुए परमेश्वर से कहा:

4"मैं तो कुछ कहने के लिये बहुत ही तुच्छ हूँ। मैं तुझसे क्या कह सकता हूँ? मैं तुझे कोई उत्तर नहीं दे सकता। मैं अपना हाथ अपने मुख पर रख लूँगा।

5मैंने एक बार कहा किन्तु अब मैं उत्तर नहींदूँगा। फिर मैंने दोबारा कहा किन्तु अब और कुछ नहीं बोलूँगा।"

6इस के बाद यहोवा ने आँधी में बोलते हुए अय्यूब से कहा।

7अय्यूब, तू पुरुष की तरह खड़ा हो, मैं तुझ से कुछ प्रश्न पूछूँगा और तू उन प्रश्नों का उत्तर मुझे देगा।

8अय्यूब क्या तू सोचता है कि मैं न्यायपूर्ण नहींहूँ? क्या तू मुझे बुरा काम करने का दोषी मानता है ताकि तू यह दिखा सके कि तू उचित है?

9अय्यूब, बता क्या मेरे शस्त्र इतने शक्तिशाली हैं जितने कि मेरे शस्त्र हैं? क्या तू अपनी वाणी को उतना ऊँचा गरजा सकता है जितनी मेरी वाणी है?

10यदि तू वैसा कर सकता है तो तू स्वयं को आदर और महिमा दे तथा महिमा और उज्वलता को उसी प्रकार धारण कर जैसे कोई वस्त्र धारण करता है।

11अय्यूब, यदि तू मेरे समान है, तो अभिमानी लोगों से घृणा कर। अय्यूब, तू उन अहंकारी लोगों पर अपना क्रोध बरसा और उन्हें तू विनम्र बना दे।

12हाँ, अय्यूब, उन अहंकारी लोगों को देख और तू उन्हें विनम्र बना दे। उन दुष्टों को तू कुचल दे जहाँ भी वे खड़े हों।

13तू सभी अभिमानियों को मिट्टी में गाड़ दे और उनकी देहों पर कफन लपेट कर तू उनको उनकी कब्रों में रख दे।

14अय्यूब, यदि तू इन सब बातों को कर सकताहै तो मैं यह तेरे सामने स्वीकार करूँगा कि तू स्वयं को बचा सकता है।

15अय्यूब, देख तू, उस जलगज को मैंने (परमेश्वर) ने बनाया है और मैंने ही तुझे बनाया है। जलगज उसी प्रकार घास खाती है, जैसे गाय घास खाती है।

16जलगज के शरीर में बहुत शक्तिहोती है। उसके पेट की माँसपेशियाँ बहुत शक्तिशाली होती हैं।

17जलगज की पूँछ दृढ़ता से ऐसी रहती है जैसा देवदार का वृक्ष खड़ा रहता है। उसके पैर की माँसपेशियाँ बहुत सुदृढ़ होती हैं।

18जल गज की हड्डियाँ काँसे की भाँति सुदृढहोतीहैं, और पाँव उसके लोहे की छड़ों जैसे।

19जल गज पहला पशु है जिसे मैंने (परमेश्वर) बनाया है किन्तु मैं उस को हरा सकता हूँ।

20जल गज जो भोजन करता है उसे उसको वे पहाड़ देते हैं जहाँ बनैले पशु विचरते हैं।

21जल गज कमल के पौधे के नीचे पड़ा रहताहै और कीचड़ में सरकण्ड़ों की आड़ में छिपा रहता है।

22कमल के पौधे जलगज को अपनी छाया में छिपाते है। वह बाँस के पेड़ों के तले रहता हैं, जो नदी के पास उगा करते है।

23यदि नदी में बाढ़ आ जाये तो भी जल गज भागता नहीं है। यदि यरदन नदी भी उसके मुख पर थपेड़े मारे तो भी वह डरता नहीं है।

24जल गज की आँखों को कोई नहीं फोड़ सकता हैऔर उसे कोई भी जाल में नहीं फँसा सकता।

41 "अय्यूब, बता, क्या तू लिब्यातान (सागर के
दैत्य) को किसी मछली के काँटे से पकड़
सकता है? 2अय्यूब, क्या तू लिब्यातान की नाक में
नकेल डाल सकता है? अथवा उसके जबड़ों में काँटा
फंसा सकता है?

3अय्यूब, क्या लिब्यातान आजाद होने के लिये तुझसे विनती करेगा? क्या वह तुझसे मधुर बातें करेगा?
4अय्यूब, क्या लिब्यातान तुझसे सन्धि करेगा और सदा तेरी सेवा का तुझे वचन देगा?
5अय्यूब, क्या तू लिब्यातान से वैसे ही खेलेगा जैसे तू किसी चिड़ियाँ से खेलता है? क्या तू उसे रस्से से बांधेगा जिससे तेरी दासियाँ उससे खेल सकें?
6अय्यूब, क्या मछुवारे लिब्यातान को तुझसे खरीदने का प्रयास करेंगे? क्या वे उसको काटेंगे और उन्हें व्यापारियों के हाथ बेच सकेंगे?
7अय्यूब, क्या तू लिब्यातान की खाल में और माथे पर भाले फेंक सकता है?
8अय्यूब, लिब्यातान पर यदि तू हाथ डाले तो जो भयंकर युद्ध होगा, तू कभी भी भूल नहीं पायेगा और फिर तू उससे कभी युद्ध न करेगा।
9और यदि तू सोचता है कि तू लिब्यातान को हरा देगा तो इस बात को तू भूल जा। क्योंकि इसकी कोई आशा नहीं है। तू तो बस उसे देखने भर से ही डर जायेगा।
10कोई भी इतना वीर नहीं है, जो लिब्यातान को जगा कर भड़काये। तो फिर अय्यूब बता, मेरे विरोध में कौन टिक सकता है?
11मुझ को (परमेश्वर को) किसी भी व्यक्ति कुछ नहीं देना है। सारे आकाश के नीचे जो कुछ भी है, वह सब कुछ मेरा ही है।
12अय्यूब, मैं तुझको लिब्यातान के पैरों के विषय में बताऊँगा। मैं उसकी शक्ति और उस के रूप की शोभा के बारे में बताऊँगा।
13कोई भी व्यक्ति उसकी खाल को भेद नहींसकता। उसकी खाल दुहरा कवच के समान हैं।
14लिब्यातान को कोई भी व्यक्ति मुख खोलने के लिये विवश नहीं कर सकता है। उसके जबड़े के दाँत सभी को भयभीत करते हैं।
15लिब्यातान की पीठ पर ढालों की पंक्तियाँ होती हैं, जो आपस में कड़ी छाप से जुड़े होते हैं।
16ये ढ़ाले आपस में इतनी सटी होती हैं कि हवा तक उनमें प्रवेश नहीं कर पाती है।
17ये ढाले एक दूसरे से जुड़ी होती हैं। वे इतनी मजबूती से एक दूसरे से जुडी हुई है कि कोई भी उनको उखाड़ कर अलग नहीं कर सकता।
18लिब्यातान जब छींका करता है तो ऐसा लगता है जैसे बिजली सी कौंध गई हो। आँखे उसकी ऐसी चमकती है जैसे कोई तीव्र प्रकाश हो।
19उसके मुख से जलती हुई मशालें निकलती हैं, और उससे आग की चिंगारियाँ बिखरती हैं।
20लिब्यातान के नथुनों से धुआँ ऐसा निकलताहै, जैसे उबलती हुई हाँडी से भाप निकलता हो।
21लिब्यातान की फूँक से कोपले सुलग उठते हैं और उसके मुख से डर कर दूर भाग जाया करते हैं।
22लिब्यातान की शक्ति उसके गर्दन में रहतीहै, और लोग उससे डर कर दूर भाग जाया करतेहैं।
23उसकी खाल में कही भी कोमल जगह नहीं हैं। वह धातु की तरह कठोर हैं।
24लिब्यातान का हृदय चट्टान की तरह होता है, उसको भय नहीं है। वह चक्की के नीचे के पाट सा सुदृढ़ है।
25लिब्यातान जागता है, बली लोग डर जाते हैं। लिब्यातान जब पूँछ फटकारता है, तो वो लोग भाग जाते हैं।
26लिब्यातान पर जैसे ही भाले, तीर और तलवार पड़ते है वे उछल कर दूर हो जाते है।
27लोहे की मोटी छड़े वह तिनसे सा और काँसे को सड़ी लकड़ी सा तोड़ देता है।
28बाण लिब्यातान को नहीं भगा पाते हैं, उस पर फेंकी गई चट्टानेसूखे तिनके की भाँति हैं।
29लिब्यातान पर जब मुगदर पड़ता है तो उसे ऐसा लगता है मानों वह कोई तिनका हो। जब लोग उस पर भाले फेंकते हैं, तब वह हँसा करता है।
30लिब्यातान की देह के नीचे की खाल टूटे हुऐ बर्तन के कठोर व पैने टुकड़े सा है। वह जब चलता है तो कीचड़ में ऐसे छोड़ता है मानों खलिहान में पाटा लगाया गया हो।
31लिब्यातान पानी को यूँ मथता है, मानों कोई हँड़ियाँ उबलती हो। वह ऐसे बुलबुले बनाता है मानों पात्र में उबलता हुआ तेल हो।
32लिब्यातान जब सागर में तैरता है तो अपने पीछे वह सफेद झागों जैसी राह छोड़ता है, जैसे कोई श्वेत बालों की विशाल पूँछ हो।
33लिब्यातान सा कोई और जन्तु धरती पर नहीं है। वह ऐसा पशु है जिसे निर्भय बनाया गया।
34वह अत्याधिक गर्वीले पशुओं तक को घृणा से देखता है। सभी जंगली पशुओं का वह राजा हैं।" मैने (यहोवा) लिब्यातान को बनाया है।

अय्यूब का यहोवा को उत्तर

42 इस पर अय्यूब ने यहोवा को उत्तर देते हुएकहा:
2"यहोवा, मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है। तू योजनाऐं बना सकता है और तेरी योजनाओं को कोई भी नहीं बदल सकता और न ही उसको रोका जा सकता है।
3यहोवा, तूने यह प्रश्न पूछा कि 'यह अबोध व्यक्ति कौन है? जो ये मूर्खतापूर्ण बातें कह रहा है?' यहोवा, मैंने उन चीज़ों के बारे में बातें की जिन्हें मैं समझता नहीं था। यहोवा, मैंने उन चीज़ों के बारे में बातें की जो मेरे समझ पाने के लिये बहुत अचरज भरी थी।

4यहोवा, तूने मुझसे कहा 'हे अय्यूब सुन और मैं
बोलूँगा। मैं तुझसे प्रश्न पूछूँ गा और तू मुझे उत्तर देगा।'
5यहोवा, बीते हुए काल में मैंने तेरे बारे में सुना था
किन्तु स्वयं अपनी आँखों से मैंने तुझे देख लिया है।
6अत: अब मैं स्वयं अपने लिये लज्जित हूँ। यहोवा
मुझे खेद है धूल और राख में बैठ कर मैं अपने हृदय
और जीवन को बदलने की प्रतिज्ञा करता हूँ।"

यहोवा का अय्यूब की सम्पत्ति को लौटाना

7यहोवा जब अय्यूब से अपनी बात कर चुका तो
यहोवा ने तेमान के निवासी एलीपज से कहा: "मैं तुझसे
और तेरे दो मित्रों से क्रोधित हूँ क्योंकि तूने मेरे बारे में
उचित बातें नहीं कही थीं। किन्तु अय्यूब ने मेरे बारे में
उचित बातें कहीं थीं। अय्यूब मेरा दास है। 8इसलिये अब
एलीपज तुम सात बैल और सात भेड़ें लेकर मेरे दास
अय्यूब के पास जाओ और अपने लिये होमबलि के रुप
में उनकी भेंट चढ़ाओं। मेरा सेवक अय्यूब तुम्हारे लिए
प्रार्थना करेगा। तब निश्चय ही मैं उसकी प्रार्थना का
उत्तर दूँगा। फिर मैं तुम्हें वैसा दण्ड नहीं दूँगा जैसा दण्ड
दिया जाना चाहिये था क्योंकि तुम बहुत मूर्ख थे। मेरे
बारे मैं तुमने उचित बातें नहीं कहीं जबकि मेरे सेवक
अय्यूब ने मेरे बारे में उचित बातें कही थीं।"
9सो तेमान नगर के निवासी एलीपज़ और शूह गाँव
के बिल्दद तथा नामात गाँव के निवासी सोपर ने यहोवा
की आज्ञा का पालन किया। इस पर यहोवा ने अय्यूब
की प्रार्थना सुन ली।
10इस प्रकार जब अय्यूब अपने मित्रों के लिये प्रार्थना
कर चुका तो यहोवा ने अय्यूब की फिर से सफलता
प्रदान की। परमेश्वर ने जितना उसके पास पहले
था, उससे भी दुगुना उसे दे दिया। 11अय्यूब के
सभी भाई और बहनें अय्यूब के घर वापस आ गये
और हर कोई जो अय्यूब को पहले जानता था,
उसके घर आया। अय्यूब के साथ उन सब ने एक बड़ी
दावत में खाना खाया। क्योंकि यहोवा ने अय्यूब को
बहुत कष्ट दिये थे, इसलिये उन्होंने अय्यूब को
सान्त्वना दी। हर किसी व्यक्ति ने अय्यूब को चाँदी
का एक सिक्का और सोने की एक अंगूठी भेंट में
दीं।
12यहोवा ने अय्यूब के जीवन के पहले भाग से भी
अधिक उसके जीवन के पिछले भाग को अपना आशीर्वाद
प्रदान किया। अय्यूब के पास चौदह हजार भेड़ें छ:
हजार ऊँट, दो हजार बैल तथा एक हजार गधियाँ हो
गयीं। 13अय्यूब के सात पुत्र और तीन पुत्रियाँ भी हो
गयीं। 14अय्यूब ने अपनी सबसे बड़ी पुत्री का नाम रखा
यमीमा। दूसरी पुत्री का नाम रखा कसीआ। और तीसरी
का नाम रखा केरेन्हप्पूक। 15सारे प्रदेश में अय्यूब की
पुत्रियाँ सबसे सुन्दर स्त्रियाँ थीं। अय्यूब ने अपने पुत्रों को
साथ अपनी सम्पत्ति का एक भाग अपनी पुत्रियोँ को भी
उत्तराधिकार में दिया।
16इसके बाद अय्यूब एक सौ चालीस साल तक और
जीवित रहा। वह अपने बच्चों, अपने पोतों, अपने परपोतों
और परपोतों की भी संतानों यानी चार पीढ़ियों को
देखने के लिए जीवित रहा।
17जब अय्यूब की मृत्यु हुई, उस समय वह बहुत
बूढ़ा था। उसे बहुत अच्छा और लम्बा जीवन प्राप्त
हुआ था।

भजन संहिता

पहिला भाग
भजन 1

1सचमुच वह जन धन्य होगा यदि वह दुष्टों की सलाह
को न मानें, और यदि वह किसी पापी का सा जीवन न
जीए और यदि वह उन लोगों की संगति न करे जो
परमेश्वर की राह पर नहीं चलते।
2वह नेक मनुष्य है जो यहोवा के उपदेशों से प्रीति
रखता है। वह तो रात दिन उन उपदेशों का मनन
करता है।
3इससे वह मनुष्य उस वृक्ष जैसा सुदृढ़ बनता है जिसको
जलधार के किनारे रोपा गया है। वह उस वृक्ष समान
है, जो उचित समय में फलता और जिसके पत्ते कभी
मुरझाते नहीं। वह जो भी करता है सफल ही होता है।
4किन्तु दुष्ट जन ऐसे नहीं होते। दुष्ट जन उस भूसे के
समान होते हैं जिन्हें पवन का झोका उड़ा ले जाता है।
5इसलिए दुष्ट जन न्याय का सामना नहीं कर पायेंगे।
सज्जनों की सभा में वे दोषी ठहरेंगे और उन पापियों को
छोड़ा नहीं जायेगा।
6ऐसा भला क्यों होगा? क्योंकि यहोवा सज्जनों की
रक्षा करता है और वह दुर्जनों का विनाश करता है।

भजन 2

1दूसरे देशों के लोग क्यों इतनी हुल्लड़ मचाते हैं और
लोग व्यर्थ ही क्यों षड़यन्त्र रचते हैं?
2ऐसे देशों के राजा और नेता यहोवा और उसके चुने
हुए राजा के विरुद्ध होने को आपस में एक हो जाते हैं।
3वे नेता कहते हैं, "आओ परमेश्वर से और उस
राजा से जिसको उसने चुना है, हम सब विद्रोह करें।
आओ उनके बन्धनों को हम उतार फेंके।"
4किन्तु मेरा स्वामी, स्वर्ग का राजा, उन लोगों पर
हँसता है।
5-6परमेश्वर क्रोधित है और वह उन से कहता है,
"मैंने इस पुरुष को राजा बनने के लिये चुना है। वह
सिय्योन पर्वत पर राज्य करेगा। सिय्योन मेरा विशेष
पर्वत है।" यही उन नेताओं को भयभीत करता है।
7अब मैं यहोवा की वाचा के बारे में तुझे बताता हूँ।
यहोवा ने मुझसे कहा था, "आज मैं तेरा पिता बनता हूँ
और तू आज मेरा पुत्र बन गया है।
8यदि तू मुझसे माँगे, तो इन देशों को मैं तुझे दे दूँगा
और इस धरती के सभी जन तेरे हो जायेंगे।
9तेरे पास उन देशों को नष्ट करने की वैसी ही शक्ति
होगी जैसे किसी मिट्टी के पात्र को कोई लौह दण्ड से
चूर चूर कर दे।"
10इसलिए, हे राजाओं, तुम बुद्धिमान बनो। हे शासकों,
तुम इस पाठ को सीखो।
11तुम अति भय से यहोवा की आज्ञा मानों।
12स्वयं को परमेश्वर के पुत्र का विश्वासपात्र दिखाओ।
यदि तुम ऐसा नहीं करते, तो वह क्रोधित होगा और
तुम्हें नष्ट कर देगा। जो लोग यहोवा में आस्था रखते हैं
वे आनन्दित रहते हैं, किन्तु अन्य लोगों को सावधान
रहना चाहिए। यहोवा अपना क्रोध बस दिखाने ही वाला
है।

भजन 3

दाऊद का उस समय का गीत जब वह अपने पुत्र अबशालोम से दूर भागा था।

1हे यहोवा, मेरे कितने ही शत्रु मेरे विरुद्ध खड़े हो
गये हैं।
2कितने ही मेरी चर्चाएं करते हैं, कितने ही मेरे
विषय में कह रहे कि परमेश्वर इसकी रक्षा नहीं
करेगा।
3किन्तु यहोवा, तू मेरी ढाल है। तू ही मेरी महिमा है।
हे यहोवा, तू ही मेरा सिर ऊँचा करता है।
4मैं यहोवा को ऊँचे स्वर में पुकारुँगा। वह अपने
पवित्र पर्वत से मुझे उत्तर देगा।
5मैं आराम करने को लेट सकता हूँ। मैं जानता हूँ
कि मैं जाग जाऊँगा, क्योंकि यहोवा मुझको बचाता और
मेरी रक्षा करता है।
6चाहे मैं सैनिकों के बीच घिर जाऊँ किन्तु उन
शत्रुओं से भयभीत नहीं होऊँगा।
7हे यहोवा, जाग! मेरे परमेश्वर आ, मेरी रक्षा कर!
तू बहुत शक्तिशाली है। यदि मेरे दुष्ट शत्रुओं के मुख
पर तू प्रहार करे, तो उनके सभी दाँतों को तो उखाड़
डालेगा।
8यहोवा अपने लोगों की रक्षा कर सकता है। हे
यहोवा, तेरे लोगों पर तेरी आशीष रहे।

भजन 4

तारवाद्यों वाले संगीत निर्देशक के लिये
दाऊद का एक गीत।

1मेरे उत्तम परमेश्वर, जब मैं तुझे पुकारुँ, मुझे उत्तर
दे। मेरी विनती को सुन और मुझ पर कृपा कर। जब
कभी विपत्तियाँ मुझको घेरें तू मुझ को छुड़ा ले।
2अरे लोगों, कब तक तुम मेरे बारे में अपशब्द
कहोगे? तुम लोग मेरे बारे में कहने के लिये नये झूठ
ढूँढते रहते हो। उन झूठों को कहने से तुम लोग प्रीति
रखते हो।
3तुम जानते हो कि अपने नेक जनों की यहोवा
सुनता है। जब भी मैं यहोवा को पुकारता हूँ, वह मेरी
पुकार को सुनता है।
4यदि कोई वस्तु तुझे झमेले में डाले, तू क्रोध कर
सकता है, किन्तु पाप कभी मत करना। जब तू अपने
बिस्तर में जाये तो सोने से पहले उन बातों पर विचार
कर और चुप रह।
5समुचित बलियाँ परमेश्वर को अर्पित कर और तू
यहोवा पर भरोसा बनाये रख।
6बहुत से लोग कहते हैं, "परमेश्वर की नेकी हमें
कौन दिखायेगा? हे यहोवा, अपने प्रकाशमान मुख का
प्रकाश मुझ पर चमका।"
7हे यहोवा, तूने मुझे बहुत प्रसन्न बना दिया। कटनी
के समय भरपूर फसल और दाखमधु पाकर जब हम
आनन्द और उल्लास मनाते हैं उससे भी कहीं अधिक
प्रसन्न मैं अब हूँ।
8मैं बिस्तर में जाता हूँ और शांति से सोता हूँ। क्योंकि
यहोवा, तू ही मुझको सुरक्षित सोने को लिटाता है।

भजन 5

बाँसुरी वादकों के निर्देशक के लिये दाऊद का गीत।

1हे यहोवा, मेरे शब्द सुन और तू उसकी सुधि ले
जिसको तुझसे कहने का मैं यत्न कर रहा हूँ।
2मेरे राजा, मेरे परमेश्वर मेरी प्रार्थना सुन।
3हे यहोवा, हर सुबह तुझको, मैं अपनी भेंटे अर्पित
करता हूँ। तू ही मेरा सहायक है। मेरी दृष्टि तुझ पर लगी
है और तू ही मेरी प्रार्थनाएँ हर सुबह सुनता है।
4हे यहोवा, तुझ को बुरे लोगों की निकटता नहीं
भाती है। तू नहीं चाहता कि तेरे मन्दिर में कोई भी पापी
जन आये। 5 तेरे निकट अविश्वासी नहीं आ सकते।
ऐसे मनुष्यों को तूने दूर भेज दिया जो सदा ही बुरे कर्म
करते रहते हैं।
6जो झूठ बोलते हैं उन्हें तू नष्ट करता है। यहोवा ऐसे
मनुष्यों से घृणा करता है, जो दूसरों को हानि पहुँचाने
का षड़यन्त्र रचते हैं।
7किन्तु हे यहोवा, तेरी महा करुणा से मैं तेरे मन्दिर
में आऊँगा। हे यहोवा, मुझ को तेरा डर है, मैं सम्मान
तुझे देता हूँ। इसलिए मैं तेरे मन्दिर की ओर झुककर
तुझे दण्डवत करुँगा।
8हे यहोवा, तू मुझको अपनी नेकी का मार्ग दिखा। तू
अपनी राह को मेरे सामने सीधी कर क्योंकि मैं शत्रुओं
से घिरा हुआ हूँ।
9वे लोग सत्य नहीं बोलते। वे झूठे हैं, जो सत्य को
तोड़ते मरोड़ते रहते हैं। उनके मुख खुली कब्र के
समान हैं। वे औरों से उत्तम चिकनी-चुपड़ी बातें करते
किन्तु वे उन्हें बस जाल में फँसाना चाहते हैं।
10हे परमेश्वर, उन्हें दण्ड दे। उनके अपने ही जालों
में उनको उलझने दे। ये लोग तेरे विरुद्ध हो गये हैं, उन्हें
उनके अपने ही बहुत से पापों का दण्ड दे।
11किन्तु जो परमेश्वर के आस्थावान होते हैं, वे सभी
प्रसन्न हों और वे सदा सर्वदा को आनन्दित रहें। हे
परमेश्वर, तू उनकी रक्षा कर और उन्हें तू शक्ति दे जो
जन तेरे नाम से प्रीति रखते हैं।
12हे यहोवा, तू निश्चय ही धर्मी को वरदान देता है।
अपनी कृपा से तू उनको एक बड़ी ढाल बन कर फिर
ढक लेता है।

भजन 6

शौमिनिथ शैली के तारवाद्यों के निर्देशक
के लिये दाऊद का एक गीत।

1हे यहोवा, तू मुझ पर क्रोधित होकर मेरा सुधार मत
कर। मुझ पर कुपित मत हो और मुझे दण्ड मत दे।
2हे यहोवा, मुझ पर दया कर। मैं रोगी और दुर्बल हूँ।
मेरे रोगों को हर ले। मेरी हड्डियाँ काँप-काँप
उठती हैं।
3मेरी समूची देह थर-थर काँप रही है। हे यहोवा,
मेरा भारी दुःख तू कब तक रखेगा।
4हे यहोवा, मुझ को फिर से बलवान कर। तू महा
दयावान है मेरी रक्षा कर।
5मरे हुए लोग तुझे अपनी कब्रों के बीच याद नहीं
करते हैं। मृत्यु के देश में वे तेरी प्रशंसा नहीं करते हैं।
अत: मुझको चँगा कर।
6हे यहोवा, सारी रात मैं तुझको पुकारता रहता हूँ।
मेरा बिछौना मेरे आँसुओं से भीग गया है। मेरे बिछौने
से आँसु टपक रहे हैं। तेरे लिये रोते हुए मैं क्षीण हो
गया हूँ।
7मेरे शत्रुओं ने मुझे बहुतेरे दुःख दिये। इसने मुझे
शोकाकुल और बहुत दुःखी कर डाला और अब मेरी
आँखें रोने बिलखने से थकी हारी, दुर्बल हैं।
8अरे ओ दुर्जनों, तुम मुझ से दूर हटो। क्योंकि यहोवा
ने मुझे रोते हुए सुन लिया है।
9मेरी विनती यहोवा के कान तक पहुँच चुकी है
और मेरी प्रार्थनाओं को यहोवा ने सुनकर उत्तर दे
दिया है।

10मेरे सभी शत्रु व्याकुल और आशाहीन होंगे। कुछ अचानक ही घटित होगा और वे सभी लज्जित होंगे। वे मुझको छोड़ कर लौट जायेंगे।

भजन 7

दाऊद का एक भाव गीत: जिसे उसने यहोवा के लिये गाया। यह भाव गीत बिन्यामीन परिवार समूह के कीश के पुत्र शाऊल के विषय मे है।

1हे मेरे यहोवा परमेश्वर, मुझे तुझ पर भरोसा है। उन व्यक्तियों से तू मेरी रक्षा कर, जो मेरे पीछे पड़े हैं। मुझको तू बचा ले।

2यदि तू मुझे नहीं बचाता तो मेरी दशा उस निरीह पशु की सी होगी, जिसे किसी सिंह ने पकड़ लिया है। वह मुझे घसीट कर दूर ले जायेगा, कोई भी व्यक्ति मुझे नहीं बचा पायेगा।

3हे मेरे यहोवा परमेश्वर, कोई पाप करने का मैं दोषी नहीं हूँ। मैंने तो कोई भी पाप नहीं किया।

4मैंने अपने मित्रों के साथ बुरा नहीं किया और अपने मित्र के शत्रुओं की भी मैंने सहायता नहीं किया।

5किन्तु एक शत्रु मेरे पीछे पड़ा हुआ है। वह मेरी हत्या करना चाहता है। वह शत्रु चाहता है कि मेरे जीवन को धरती पर रौंद डाले और मेरी आत्मा को धूल में मिला दे।

6यहोवा उठ, तू अपना क्रोध प्रकट कर। मेरा शत्रु क्रोधित है, सो खड़ा हो जा और उसके विरुद्ध युद्ध कर। खड़ा हो जा और निष्पक्षता की माँग कर।

7हे यहोवा, लोगों का न्याय कर। अपने चारों ओर राष्ट्रों को एकत्र कर और लोगों का न्याय कर।

8हे यहोवा, न्याय कर मेरा, और सिद्ध कर कि मैं न्याय संगत हूँ। ये प्रमाणित कर दे कि मैं निर्दोष हूँ।

9दुर्जन को दण्ड दे और सज्जन की सहायता कर। हे परमेश्वर, तू उत्तम है। तू अन्तर्यामी है। तू तो लोगों के हृदय में झाँक सकता है।

10जिन के मन सच्चे हैं, परमेश्वर उन व्यक्तियों की सहायता करता है। इसलिए वह मेरी भी सहायता करेगा।

11परमेश्वर उत्तम न्यायकर्ता है। वह कभी भी अपना क्रोध प्रकट कर देगा।

12परमेश्वर जब कोई निर्णय ले लेता है, तो फिर वह अपना मन नहीं बदलता है।

13उसमें लोगों को दण्डित करने की क्षमता है। उसने मृत्यु के सब सामान साथ रखे हैं।

14कुछ ऐसे लोग होते हैं जो सदा कुकर्मों की योजना बनाते रहते हैं। ऐसे ही लोग गुप्त षड़यन्त्र रचते हैं, और मिथ्या बोलते हैं।

15वे दूसरे लोगों को जाल में फँसाने और हानि पहुँचाने का यत्न करते हैं। किन्तु अपने ही जाल में फँस कर वे हानि उठायेंगे।

16वे अपने कर्मों का उचित दण्ड पायेंगे। वे अन्य लोगों के साथ क्रूर रहे। किन्तु जैसा उन्हें चाहिए वैसा ही फल पायेंगे।

17मैं यहोवा का यश गाता हूँ, क्योंकि वह उत्तम है। मैं यहोवा के सर्वोच्च नाम की स्तुति करता हूँ।

भजन 8

गित्तीथ की संगत पर संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1हे यहोवा, मेरे स्वामी, तेरा नाम सारी धरती पर अति अद्‌भुत है। तेरा नाम स्वर्ग में हर कहीं तुझे प्रशंसा देता है।

2बालकों और छोटे शिशुओं के मुख से, तेरे प्रशंसा के गीत उच्चरित होते हैं। तू अपने शत्रुओं को चुप करवाने के लिये ऐसा करता है।

3हे यहोवा, जब मेरी दृष्टि गगन पर पड़ती है, जिसको तूने अपने हाथों से रचा है और जब मैं चाँद तारों को देखता हूँ जो तेरी रचना है, तो मैं अचरज से भर उठता हूँ।

4लोग तेरे लिये क्यों इतने महत्त्वपूर्ण हो गये? तू उनको याद भी किस लिये करता है? मनुष्य का पुत्र तेरे लिये क्यों महत्त्वपूर्ण है? क्यों तू उन पर ध्यान तक देता है?

5किन्तु तेरे लिये मनुष्य महत्त्वपूर्ण है! तूने मनुष्य को ईश्वर का प्रतिरुप बनाया है, और उनके सिर पर महिमा और सम्मान का मुकुट रखा है।

6तूने अपनी सृष्टि का जो कुछ भी तूने रचा लोगों को उसका अधिकारी बनाया।

7मनुष्य भेड़ों पर, पशु धन पर और जंगल के सभी हिंसक जन्तुओं पर शासन करता है।

8वह आकाश में पक्षियों पर और सागर में तैरते जलचरों पर शासन करता है।

9हे यहोवा, हमारे स्वामी, सारी धरती पर तेरा नाम अति अद्‌भुत है।

भजन 9

अलामौथ बैन राग पर आधारित दाऊद का पद: संगीत निर्देशक के लिये।

1मैं अपने सम्पूर्ण मन से यहोवा की स्तुति करता हूँ। हे यहोवा, तूने जो अद्‌भुत कर्म किये हैं, मैं उन सब का वर्णन करूँगा।

2तूने ही मुझे इतना आनन्दित बनाया है। हे परम परमेश्वर, मैं तेरे नाम के प्रशंसा गीत गाता हूँ।

3जब मेरे शत्रु मुझसे पलट कर मेरे विमुख होते हैं, तब परमेश्वर उनका पतन करता और वे नष्ट हो जाते हैं।

4तू सच्चा न्यायकर्ता है। तू अपने सिंहासन पर न्यायकर्ता के रुप में विराजा। तूने मेरे अभियोग की सुनवाई की और मेरा न्याय किया।

5हे यहोवा, तूने उन शत्रुओं को कठोर झिड़की दी और हे यहोवा, तूने उन दुष्टों को नष्ट किया। उनके नाम तूने जीवितों की सूची से सदा सर्वदा के लिये मिटा दिये।

6शत्रु नष्ट हो गया है! हे यहोवा, तूने उनके नगर मिटा दिये हैं! उनके भवन अब खण्डहर मात्र रह गये हैं। उन बुरे व्यक्तियों की हमें याद तक दिलाने को कुछ भी नहीं बचा है।

7किन्तु यहोवा, तेरा शासन अविनाशी है। यहोवा ने अपने राज्य को शक्तिशाली बनाया। उसने जग में न्याय लाने के लिये यह किया।

8यहोवा धरती के सब मनुष्यों का निष्पक्ष होकर न्याय करता है। यहोवा सभी जातियों का पक्षपात रहित न्याय करता है।

9यहोवा दलितों और शोषितों का शरणस्थल है। विपदा के समय वह एक सुदृढ़ गढ़ है।

10जो तुझ पर भरोसा रखते, तेरा नाम जानते हैं। हे यहोवा, यदि कोई जन तेरे द्वार पर आ जाये तो बिना सहायता पाये कोई नहीं लौटता।

11अरे ओ सिय्योन के निवासियों, यहोवा के गीत गाओ जो सिय्योन में विराजता है। सभी जातियों को उन बातों के विषय में बताओ जो बड़ी बातें यहोवा ने की हैं।

12जो लोग यहोवा से न्याय माँगने गये, उसने उनकी सुधि ली। जिन दीनों ने उसे सहायता के लिये पुकारा, उनको यहोवा ने कभी भी नहीं बिसारा।

13यहोवा की स्तुति मैंने गायी है: "हे यहोवा, मुझ पर दया कर। देख, किस प्रकार मेरे शत्रु मुझे दु:ख देते हैं। 'मृत्यु के द्वार' से तू मुझको बचा ले।

14जिससे यहोवा यरुशलेम के फाटक पर मैं तेरी स्तुति गीत गा सकूँ। मैं अति प्रसन्न होऊँगा क्योंकि तूने मुझको बचा लिया।"

15अन्य जातियों ने गड्ढे खोदे ताकि लोग उनमें गिर जायें किन्तु वे अपने ही खोदे गड्ढे में स्वयं समा जायेंगे। दुष्ट जन ने जाल छिपा छिपा कर बिछाया, ताकि वे उसमें दूसरे लोगों को फँसा ले। किन्तु उनमें उनके ही पाँव फँस गये।

16यहोवा ने जो न्याय किया वह उससे जाना गया कि जो बुरे कर्म करते हैं। वे अपने ही हाथों के किये हुए कामों से जाल में फँस गये।

17वे दुर्जन होते हैं, जो परमेश्वर को भूलते हैं। ऐसे मनुष्य मृत्यु के देश को जायेंगे।

18कभी-कभी लगता है जैसे परमेश्वर दुखियों को पीड़ा में भूल जाता है। यह ऐसा लगता जैसे दीन जन आशाहीन हैं। किन्तु परमेश्वर दीनों को सदा-सर्वदा के लिये कभी नहीं भूलता।

19हे यहोवा, उठ और राष्ट्रों का न्याय कर। कहीं वे न सोच बैठें वे प्रबल शक्तिशाली हैं।

20लोगों को पाठ सिखा दे, ताकि वे जान जायें कि वे बस मानव मात्र हैं।

भजन 10

1हे यहोवा, तू इतनी दूर क्यों खड़ा रहता है? कि संकट में पड़े लोग तुझे नहीं देख पाते।

2अहंकारी दुष्ट जन दुर्बल को दु:ख देते हैं। वे अपने षड़यन्त्रों को रचते रहते हैं।

3दुष्ट जन उन वस्तुओं पर गर्व करते हैं, जिनकी उन्हें अभिलाषा है और लालची जन परमेश्वर को कोसते हैं। इस प्रकार दुष्ट दर्शाते हैं कि वे यहोवा से घृणा करते हैं।

4दुष्ट जन इतने अभिमानी होते हैं कि वे परमेश्वर का अनुसरण नहीं कर सकते। वे बुरी-बुरी योजनाएँ रचते हैं। वे ऐसे कर्म करते हैं, जैसे परमेश्वर का कोई अस्तित्व ही नहीं।

5दुष्ट जन सदा ही कुटिल कर्म करते हैं। वे परमेश्वर की विवेकपूर्ण व्यवस्था और शिक्षाओं पर ध्यान नहीं देते। हे परमेश्वर, तेरे सभी शत्रु तेरे उपदेशों की उपेक्षा करते हैं।

6वे सोचते हैं, जैसे कोई बुरी बात उनके साथ नहीं घटेगी। वे कहा करते हैं, "हम मौज से रहेंगे और कभी भी दण्डित नहीं होंगे।"

7ऐसे दुष्ट का मुख सदा शाप देता रहता है। वे दूसरे जनों की निन्दा करते हैं और काम में लाने को सदैव बुरी-बुरी योजनाएँ रचते रहते हैं।

8ऐसे लोग गुप्त स्थानों में छिपे रहते हैं, और लोगों को फँसाने की प्रतीक्षा करते हैं। वे लोगों को हानि पहुँचाने के लिये छिपे रहते हैं और निरपराधी लोगों की हत्या करते हैं।

9दुष्ट जन सिंह के समान होते हैं जो उन पशुओं को पकड़ने की घात में रहते हैं। जिन्हें वे खा जायेंगे। दुष्ट जन दीन जनों पर प्रहार करते हैं। उनके बनाये गये जाल में असहाय दीन फँस जाते हैं।

10दुष्ट जन बार-बार दीन पर घात करता और उन्हें दु:ख देता है।

11अत: दीन जन सोचने लगते हैं, "परमेश्वर ने हमको भुला ही दिया है! हमसे तो परमेश्वर सदा-सदा के लिये दूर हो गया है। जो कुछ भी हमारे साथ घट रहा, उससे परमेश्वर ने दृष्टि फिरा ली है!"

12हे यहोवा, उठ और कुछ तो कर! हे परमेश्वर, ऐसे दुष्ट जनों को दण्ड दे! और इन दीन दुखियों को मत बिसरा!

13दुष्ट जन क्यों परमेश्वर के विरुद्ध होते हैं? क्योंकि वे सोचते हैं कि परमेश्वर उन्हें कभी नहीं दण्डित करेगा।

14हे यहोवा, तू निश्चय ही उन बातों को देखता है, जो क्रूर और बुरी हैं। जिनको दुर्जन किया करते हैं। इन

बातों को देख और कुछ तो कर! दु:खों से घिरे लोग सहायता माँगने तेरे पास आते हैं। हे यहोवा, केवल तू ही अनाथ बच्चों का सहायक है, अत: उन की रक्षा कर!

15हे यहोवा, दुष्ट जनों को तू नष्ट कर दे।

16तू उन्हें अपनी धरती से ढकेल बाहर कर!

17हे यहोवा, दीन दु:खी लोग जो चाहते हैं वह तूने सुन ली। उनकी प्रार्थनाएँ सुन और उन्हें पूरा कर जिनको वे माँगते हैं!

18हे यहोवा, अनाथ बच्चों की तू रक्षा कर। दु:खी जनों को और अधिक दु:ख मत पाने दे। दुष्ट जनों को तू इतना भयभीत कर दे कि वे यहाँ न टिक पायें।

भजन 11

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का पद।

1मैं यहोवा पर भरोसा करता हूँ। फिर तू मुझसे क्यों कहता है कि मैं भाग कर कहीं जाऊँ? तू कहता है मुझसे कि, "पक्षी की भाँति अपने पहाड़ पर उड़ जा!"

2दुष्ट जन शिकारी के समान हैं। वे अन्धकार में छिपते हैं। वे धनुष की डोर को पीछे खींचते हैं। वे अपने बाणों को साधते हैं और वे अच्छे, नेक लोगों के हृदय में सीधे बाण छोड़ते हैं।

3क्या होगा यदि वे समाज की नींव को उखाड़ फेंके? फिर तो ये अच्छे लोग कर ही क्या पायेंगे?

4यहोवा अपने विशाल पवित्र मन्दिर में विराजा है। यहोवा स्वर्ग में अपने सिंहासन पर बैठता है। यहोवा सब कुछ देखता है, जो भी घटित होता है। यहोवा की आँखें लोगों की सज्जनता व दुर्जनता को परखने में लगी रहती हैं।

5यहोवा भले व बुरे लोगों को परखता है, और वह उन लोगों से घृणा करता है, जो हिंसा से प्रीति रखते हैं।

6वह गर्म कोयले और जलती हुई गन्धक को वर्षा की भाँति उन बुरे लोगों पर गिरायेगा। उन बुरे लोगों के भाग में बस झुलसाती पवन आयेगी

7किन्तु यहोवा, तू उत्तम है। तुझे उत्तम जन भाते हैं। उत्तम मनुष्य यहोवा के साथ रहेंगे और उसके मुख का दर्शन पायेंगे।

भजन 12

शौमिनिथ की संगत पर संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1हे यहोवा, मेरी रक्षा कर! खरे जन सभी चले गये हैं। मनुष्यों की धरती में अब कोई भी सच्चा भक्त नहीं बचा है।

2लोग अपने ही साथियों से झूठ बोलते हैं। हर कोई अपने पड़ोसियों की झूठ बोलकर चापलूसी किया करता है।

3यहोवा उन ओंठों को सी दे जो झूठ बोलते हैं। हे यहोवा, उन जीभों को काट जो अपने ही विषय में डींग हाँकते हैं।

4ऐसे जन सोचते है, "हमारी झूठें हमें बड़ा व्यक्ति बनायेंगी। कोई भी व्यक्ति हमारी जीभ के कारण हमें जीत नहीं पायेगा।"

5किन्तु यहोवा कहता है: "बुरे मनुष्यों ने दीन दुर्बलों से वस्तुएँ चुरा ली हैं। उन्होंने असहाय दीन जन से उनकी वस्तुएँ ले ली। किन्तु अब मैं उन हारे थके लोगों की रक्षा खड़ा होकर करुँगा।"

6यहोवा के वचन सत्य हैं और इतने शुद्ध जैसे आग में पिघलाई हुई श्वेत चाँदी। वे वचन उस चाँदी की तरह शुद्ध हैं, जिसे पिघला पिघला कर सात बार शुद्ध बनाया गया है।

7हे यहोवा, असहाय जन की सुधि ले। उनकी रक्षा अब और सदा सर्वदा कर!

8ये दुर्जन अकड़े और बने ठने घूमते हैं। किन्तु वे ऐसे होते हैं जैसे कोई नकली आभूषण धारण करता है। जो देखने में मूल्यवान लगते हैं, किन्तु वास्तव में बहुत ही सस्ते होते हैं।

भजन 13

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1हे यहोवा, तू कब तक मुझ को भूला रहेगा? क्या तू मुझे सदा सदा के लिये बिसरा देगा? कब तक तू मुझको नहीं स्वीकारेगा?

2तू मुझे भूल गया यह कब तक मैं सोचूँ? अपने हृदय में कब तक यह दु:ख भोगूँ? कब तक मेरे शत्रु मुझे जीतते रहेंगे?

3हे यहोवा, मेरे परमेश्वर, मेरी सुधि ले! और तू मेरे प्रश्न का उत्तर दे! मुझको उत्तर दे नहीं तो मैं मर जाऊँगा!

4कदाचित् तब मेरे शत्रु यों कहने लगें, "मैंने उसे पीट दिया!" मेरे शत्रु प्रसन्न होंगे कि मेरा अंत हो गया है।

5हे यहोवा, मैंने तेरी करुणा पर सहायता पाने के लिये भरोसा रखा। तूने मुझे बचा लिया और मुझको सुखी किया!

6मैं यहोवा के लिये प्रसन्नता के गीत गाता हूँ, क्योंकि उसने मेरे लिये बहुत सी अच्छी बातें की हैं।

भजन 14

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का पद।

1मूर्ख अपने मनमें कहता है, "परमेश्वर नहीं है।" मूर्ख जन तो ऐसे कार्य करते हैं जो भ्रष्ट और घृणित होते हैं। उनमें से कोई भी भले काम नहीं करता है।

2यहोवा आकाश से नीचे लोगों को देखता है, कि कोई विवेकी जन उसे मिल जाये। विवेकी मनुष्य परमेश्वर की ओर सहायता पाने के लिये मुड़ता है।

3किन्तु परमेश्वर से मुड़ कर सभी दूर हो गये हैं। आपस में मिल कर सभी लोग पापी हो गये हैं। कोई भी जन अच्छे कर्म नहीं कर रहा है!

4मेरे लोगों को दुष्टों ने नष्ट कर दिया है। वे दुर्जन परमेश्वर को नहीं जानते हैं। दुष्टों के पास खाने के लिये भरपूर भोजन है। ये जन यहोवा की उपासना नहीं करते।

5-6 ये दुष्ट मनुष्य निर्धन की सम्मति सुनना नहीं चाहते। ऐसा क्यों है? क्योंकि दीन जन तो परमेश्वर पर निर्भर है। किन्तु दुष्ट लोगों पर भय छा गया है। क्यों? क्योंकि परमेश्वर खरे लोगों के साथ है।

7सिय्योन पर कौन जो इस्राएल को बचाता है? वह तो यहोवा है, जो इस्राएल की रक्षा करता है! यहोवा के लोगों को दूर ले जाया गया और उन्हें बलपूर्वक बन्दी बनाया गया। किन्तु यहोवा अपने भक्तों को वापस छुड़ा लायेगा। तब याकूब (इस्राएल) अति प्रसन्न होगा।

भजन 15

दाऊद का एक पद।

1हे यहोवा, तेरे पवित्र तम्बू में कौन रह सकता है? तेरे पवित्र पर्वत पर कौन रह सकता है?

2केवल वह व्यक्ति जो खरा जीवन जीता है, और जो उत्तम कर्मों को करता है, और जो हृदय से सत्य बोलता है। वही तेरे पर्वत पर रह सकता है।

3ऐसा व्यक्ति औरों के विषय में कभी बुरा नहीं बोलता है। ऐसा व्यक्ति अपने पड़ोसियों का बुरा नहीं करता। वह अपने घराने की निन्दा नहीं करता है।

4वह उन लोगों का आदर नहीं करता जो परमेश्वर से घृणा रखते हैं। और वह उन सभी का सम्मान करता है, जो यहोवा के सेवक हैं। ऐसा मनुष्य यदि कोई वचन देता है तो वह उस वचन को पूरा भी करता है, जो उसने दिया था।

5वह मनुष्य यदि किसी को धन उधार देता है तो वह उस पर ब्याज नहीं लेता, और वह मनुष्य किसी निरपराध जन को हानि पहुँचाने के लिये घूस नहीं लेता। यदि कोई मनुष्य उस खरे जन सा जीवन जीता है तो वह मनुष्य परमेश्वर के निकट सदा सर्वदा रहेगा।

भजन 16

दाऊद का एक गीत।

1हे परमेश्वर, मेरी रक्षा कर, क्योंकि मैं तुझ पर निर्भर हूँ।

2मेरा यहोवा से निवेदन है, "यहोवा, तू मेरा स्वामी है। मेरे पास जो कुछ उत्तम है वह सब तुझसे ही है।"

3यहोवा अपने लोगों की धरती पर अद्भुत काम करता है। यहोवा यह दिखाता है कि वह सचमुच उनसे प्रेम करता है।

4किन्तु जो अन्य देवताओं के पीछे उन की पूजा के लिये भागते हैं, वे दुःख उठायेंगे। उन मूर्तियों को जो रक्त अर्पित किया गया, उनकी उन बलियों में मैं भाग नहीं लूँगा। मैं उन मूर्तियों का नाम तक न लूँगा।

5नहीं, बस मेरा भाग यहोवा में है। बस यहोवा से ही मेरा अंश और मेरा पात्र आता है। हे यहोवा, मुझे सहारा दे और मेरा भाग दे।

6मेरा भाग अति अद्भुत है। मेरा क्षय अति सुन्दर है।

7मैं यहोवा के गुण गाता हूँ क्योंकि उसने मुझे ज्ञान दिया। मेरे अन्तर्मन से रात में शिक्षाएं निकल कर आती हैं।

8मैं यहोवा को सदैव अपने सम्मुख रखता हूँ, और मैं उसका दक्षिण पक्ष कभी नहीं छोड़ूँगा।

9इसी से मेरा मन और मेरी आत्मा अति आनन्दित होगी और मेरी देह तक सुरक्षित रहेगी।

10क्योंकि, यहोवा, तू मेरा प्राण कभी भी मृत्यु के लोक में न तजेगा। तू कभी भी अपने भक्त लोगों का क्षय होता नहीं देखेगा।

11तू मुझे जीवन की नेक राह दिखायेगा। हे यहोवा, तेरा साथ भर मुझे पूर्ण प्रसन्नता देगा। तेरे दाहिनी ओर होना सदा सर्वदा को आनन्द देगा।

भजन 17

दाऊद का प्रार्थना गीत।

1हे यहोवा, मेरी प्रार्थना न्याय के निमित्त सुन। मैं तुझे ऊँचे स्वर से पुकार रहा हूँ। मैं अपनी बात ईमानदारी से कह रहा हूँ। सो कृपा करके मेरी प्रार्थना सुन।

2यहोवा तू ही मेरा उचित न्याय करेगा। तू ही सत्य को देख सकता है।

3मेरा मन परखने को तूने उसके बीच गहरा झाँक लिया है। तू मेरे संग रात भर रहा तूने मुझे जाँचा, और तुझे मुझ में कोई खोट न मिला। मैंने कोई बुरी योजना नहीं रची थी।

4तेरे आदेशों को पालने में मैंने कठिन यत्न किया जितना कि कोई मनुष्य कर सकता है।

5मैं तेरी राहों पर चलता रहा हूँ। मेरे पाँव तेरे जीवन की रीति से नहीं डिगे।

6हे परमेश्वर, मैंने हर किसी अवसर पर तुझको पुकारा है और तूने मुझे उत्तर दिया है। सो अब भी तू मेरी सुन।

7हे परमेश्वर, तू अपने भक्तों की सहायता करता है। उनकी जो तेरे दाहिने रहते हैं। तू अपने एक भक्त की यह प्रार्थना सुन।

8मेरी रक्षा तू निज आँख की पुतली समान कर। मुझको अपने पंखों के छाया तले तू छुपा ले।

9हे यहोवा, मेरी रक्षा उन दुष्ट जनों से कर जो मुझे नष्ट करने का यत्न कर रहे हैं। वे मुझे घेरे हैं और मुझे हानि पहुँचाने को प्रयत्नशील हैं।

10दुष्ट जन अभिमान के कारण परमेश्वर की बात
पर कान नहीं लगाते हैं। ये अपनी ही ढींग हाँकते
रहते हैं।
11वे लोग मेरे पीछे पड़े हुए हैं, और मैं अब उनके
बीच में घिर गया हूँ। वे मुझ पर वार करने को तैयार
खड़े हैं।
12वे दुष्ट जन ऐसे हैं जैसे कोई सिंह घात में अन्य पशु
को मारने को बैठा हो। वे सिंह की तरह झपटने को
छिपे रहते है
13हे यहोवा, उठ! शत्रु के पास जा, और उन्हें अस्त्र
शस्त्र डालने को विवश कर। निज तलवार उठा और
इन दुष्ट जनों से मेरी रक्षा कर।
14हे यहोवा, जो व्यक्ति सजीव हैं उनकी धरती से दुष्टों
को अपनी शक्ति से दूर कर। हे यहोवा, बहुतेरे तेरे पास
शरण माँगने आते हैं। तू उनको बहुतायत से भोजन दे।
उनकी संतानों को परिपूर्ण कर दे। उनके पास निज
बच्चों को देने के लिये बहुतायत से धन हो।
15मेरी विनय न्याय के लिये है। सो मैं यहोवा के मुख
का दर्शन करुँगा। हे यहोवा, तेरा दर्शन करते ही, मैं
पूरी तरह सन्तुष्ट हो जाऊँगा।

भजन 18

यहोवा के दास दाऊद का एक पद: संगीत निर्देशक के लिये। दाऊद ने यह पद उस अवसर पर गाया था जब यहोवा ने शाऊल तथा अन्य शत्रुओं से उसकी रक्षा की थी।

1उसने कहा, "यहोवा मेरी शक्ति है, मैं तुझ पर
अपनी करुणा दिखाऊँगा!
2यहोवा मेरी चट्टान, मेरा गढ़, मेरा शरणस्थल है।"
मेरा परमेश्वर मेरी चट्टान है। मैं तेरी शरण मे आया
हूँ। उसकी शक्ति मुझको बचाती है। यहोवा ऊँचे पहाड़ों
पर मेरा शरणस्थल है।
3यहोवा को जो स्तुति के योग्य है, मैं पुकारुँगा और
मैं अपने शत्रुओं से बचाया जाऊँगा।
4मेरे शत्रुओं ने मुझे मारने का यत्न किया। मैं चारों
ओर मृत्यु की रस्सियों से घिरा हूँ! मुझ को अधर्म की
बाढ़ ने भयभीत कर दिया।

5मेरे चारों ओर पाताल की रस्सियाँ थी। और मुझ
पर मृत्यु के फँदे थे।
6मैं घिरा हुआ था और यहोवा को सहायता के लिये
पुकारा। मैंने अपने परमेश्वर को पुकारा। परमेश्वर
पवित्र निज मन्दिर में विराजा। उसने मेरी पुकार सुनी
और सहायता की।
7तब पृथ्वी हिल गई और काँप उठी; और पहाड़ों की
नींव कंपित हो कर हिल गई क्योंकि यहोवा अति
क्रोधित हुआ था!
8परमेश्वर के नथनों से धुँआ निकल पड़ा। परमेश्वर
के मुख से ज्वालायें फूट निकली, और उससे चिंगारियाँ
छिटकी।।
9यहोवा स्वर्ग को चीर कर नीचे उतरा! सघन काले
मेघ उसके पाँव तले थे।
10उसने उड़ते करुब स्वर्गदूतों पर सवारी की वायु पर
सवार हो वह ऊँचे उड़ चला।
11यहोवा ने स्वयं को अँधेरे में छिपा लिया, उसको
अम्बर का चँदोबा घिरा था। वह गरजते बादलों के
सघन घटा-टोप में छिपा हुआ था।
12फिर, परमेश्वर का तेज बादल चीर कर निकला।
बरसा और बिजलियाँ कौंधी।
13यहोवा का उद्घोष नाद अम्बर में गूँजा! परम
परमेश्वर ने निज वाणी को सुनने दिया! फिर ओले
बरसे और बिजलियाँ कौंध उठी।
14यहोवा ने बाण छोड़े और शत्रु बिखर गये। उसके
अनेक तड़ित बज्रों ने उनको पराजित किया।
15हे यहोवा, तूने गर्जना की और मुख से आँधी
प्रवाहित की। जल पीछे हट कर दबा और समुद्र का
जल अतल दिखने लगा, और धरती की नींव तक
उधड़ी।
16यहोवा ऊपर अम्बर से नीचे उतरा और मेरी रक्षा
की। मुझको मेरे कष्टों से उबार लिया।
17मेरे शत्रु मुझसे कहीं अधिक सशक्त थे। वे मुझसे
कहीं अधिक बलशाली थे, और मुझसे बैर रखते थे।
सो परमेश्वर ने मेरी रक्षा की।
18जब मैं विपत्ति में था, मेरे शत्रुओं ने मुझ पर प्रहार
किया किन्तु तब यहोवा ने मुझ को संभाला!
19यहोवा को मुझसे प्रेम था, सो उसने मुझे बचाया
और मुझे सुरक्षित ठौर पर ले गया।
20मैं अबोध हूँ, सो यहोवा मुझे बचायेगा। मैंने कुछ
बुरा नहीं किया। वह मेरे लिये उत्तम चीजें करेगा।
21क्योंकि मैंने यहोवा की आज्ञा पालन किया! अपने
परमेश्वर यहोवा के प्रति मैंने कोई भी बुरा काम नहीं
किया।
22मैं तो यहोवा के व्यवस्था विधानों को और आदेशों
को हमेशा ध्यान में रखता हूँ!
23स्वयं को मैं उसके सामने पवित्र रखता हूँ और
अबोध बना रहता हूँ।
24क्योंकि मैं अबोध हूँ! इसलिये मुझे मेरा पुरस्कार
देगा! जैसा परमेश्वर देखता है कि मैंने कोई बुरा नहीं
किया, अत: वह मेरे लिये उत्तम चीजें करेगा।
25हे यहोवा, तू विश्वसनीय लोगों के साथ विश्वसनीय
और खरे लोगों के साथ तू खरा है।
26हे यहोवा शुद्ध के साथ तू अपने को शुद्ध दिखाता
है, और टेढ़ों के साथ तू तिर्छा बनता है। किन्तु, तू नीच
और कुटिल जनों से भी चतुर है।

27हे यहोवा, तू नम्र जनों के लिये सहाय है, किन्तु जिनमें अहंकार भरा है उन मनुष्यों को तू बड़ा नहीं बनने देता।

28हे यहोवा, तू मेरा जलता दीप है। हे मेरे परमेश्वर तू मेरे अधंकार को ज्योति में बदलता है!

29हे यहोवा, तेरी सहायता से, मैं सैनिकों के साथ दौड़ सकता हूँ। तेरी ही सहायता से, मैं शत्रुओं के प्राचीर लाँघ सकता हूँ।

30परमेश्वर के विधान पवित्र और उत्तम हैं और यहोवा के शब्द सत्यपूर्ण होते हैं। वह उसको बचाता है जो उसके भरोसे हैं।

31यहोवा को छोड़ बस और कौन परमेश्वर है? मात्र हमारे परमेश्वर के और कौन चट्टान है?

32मुझको परमेश्वर शक्ति देता है। मेरे जीवन को वह पवित्र बनाता है।

33परमेश्वर मेरे चरणों को हिरण की सी तीव्र गति देता है। वह मुझे स्थिर बनाता और मुझे चट्टानी शिखरों से गिरने से बचाता है।

34हे यहोवा, मुझको सिखा कि युद्ध मैं कैसे लड़ूँ? वह मेरी भुजाओं को शक्ति देता है जिससे मैं काँसे के धनुष की डोरी खींच सकूँ।

35हे परमेश्वर, अपनी ढाल से मेरी रक्षा कर। तू मुझको अपनी दाहिनी भुजा से अपनी महान शक्ति प्रदान करके सहारा दे।

36हे परमेश्वर, तू मेरे पाँवों को और टखनों को दृढ़ बना ताकि मैं तेजी से बिना लड़खड़ाहट के बढ़ चलूँ।

37फिर अपने शत्रुओं का पीछा करुँ, और उन्हें पकड़ सकूँ। उनमें से एक को भी नहीं बच पाने दूँगा।

38मैं अपने शत्रुओं को पराजित करुँगा। उनमें से एक भी फिर खड़ा नहीं होगा। मेरे सभी शत्रु मेरे पाँवों पर गिरेंगे।

39हे परमेश्वर, तूने मुझे युद्ध में शक्ति दी, और मेरे सब शत्रुओं को मेरे सामने झुका दिया।

40तूने मेरे शत्रुओं की पीठ मेरी ओर फेर दी, ताकि मैं उनको काट डालूँ जो मुझ से द्वेष रखते हैं!

41जब मेरे बैरियों ने सहायता को पुकारा, उन्हें सहायता देने आगे कोई नहीं आया। यहाँ तक की उन्होंने यहोवा तक को पुकारा, किन्तु यहोवा से उनको उत्तर न मिला।

42मैं अपने शत्रुओं को कूट कूट कर धूल में मिला दूँगा, जिसे पवन उड़ा देती है। मैंने उनको कुचल दिया और मिट्टी में मिला दिया।

43मुझे उनसे बचा ले जो मुझसे युद्ध करते हैं। मुझे उन जातियों का मुखिया बना दे, जिनको मैं जानता तक नहीं हूँ ताकि वे मेरी सेवा करेंगे।

44फिर वे लोग मेरी सुनेंगे और मेरे आदेशों को पालेंगे, अन्य राष्ट्रों के जन मुझसे डरेंगे।

45वे विदेशी लोग मेरे सामने झुकेंगे क्योंकि वे मुझसे भयभीत होंगे। वे भय से काँपते हुए अपने छिपे स्थानों से बाहर निकल आयेंगे।

46यहोवा सजीव है! मैं अपनी चट्टान के यश गीत गाता हूँ। मेरा महान परमेश्वर मेरी रक्षा करता है।

47धन्य है, मेरा पलटा लेने वाला परमेश्वर जिसने देश-देश के लोगों को मेरे बस में कर दिया है।

48यहोवा, तूने मुझे मेरे शत्रुओं से छुड़ाया है। तूने मेरी सहायता की ताकि मैं उन लोगों को हरा सकूँ जो मेरे विरुद्ध खड़े हुए। तूने मुझे कठोर व्यक्तियों से बचाया है।

49हे यहोवा, इसी कारण मैं देशों के बीच तेरी स्तुति करता हूँ। इसी कारण मैं तेरे नाम का भजन गाता हूँ।

50यहोवा अपने राजा की सहायता बहुत से युद्धों को जीतने में करता है! वह अपना सच्चा प्रेम, अपने चुने हुए राजा पर दिखाता है। वह दाऊद और उसके वंशजों के लिये सदा विश्वास योग्य रहेगा!

भजन 19

संगीत निर्देशक को दाऊद का एक पद।

1अम्बर परमेश्वर की महिमा बखानतें हैं, और आकाश परमेश्वर की उत्तम रचनाओं का प्रदर्शन करते हैं।

2हर नया दिन उसकी नयी कथा कहता है, और हर रात परमेश्वर की नयी नयी शक्तियों को प्रकट करता है।

3न तो कोई बोली है, और न तो कोई भाषा, जहाँ उसका शब्द नहीं सुनाई पड़ता।

4उसकी “वाणी” भूमण्डल में व्यापती है और उसके “शब्द” धरती के छोर तक पहुँचते हैं। उनमें उसने सूर्य के लिये एक घर सा तैयार किया है।

5सूर्य प्रफुल्ल हुए दुल्हे सा अपने शयनकक्ष से निकलता है। सूर्य अपनी राह पर आकाश को पार करने निकल पड़ता है, जैसे कोई खिलाड़ी अपनी दौड़ पूरी करने को तत्पर हो।

6अम्बर के एक छोर से सूर्य चल पड़ता है और उस पार पहुँचने को, वह सारी राह दौड़ता ही रहता है। ऐसी कोई वस्तु नहीं जो अपने को उसकी गर्मी से छुपा ले। यहोवा के उपदेश भी ऐसे ही होते है।

7यहोवा की शिक्षायें सम्पूर्ण होती हैं, ये भक्त जन को शक्ति देती हैं। यहोवा की वाचा पर भरोसा किया जा सकता है। जिनके पास बुद्धि नहीं है यह उन्हें सुबुद्धि देता है।

8यहोवा के नियम न्यायपूर्ण होते हैं, वे लोगों को प्रसन्नता से भर देते हैं। यहोवा के आदेश उत्तम हैं, वे मनुष्यों को जीने की नयी राह दिखाते हैं।

9यहोवा की आराधना प्रकाश जैसी होती है, यह तो सदा सर्वदा ज्योतिमय रहेगी। यहोवा के न्याय निष्पक्ष होते हैं, वे पूरी तरह न्यायपूर्ण होते हैं।

10यहोवा के उपदेश उत्तम स्वर्ण और कुन्दन से भी
बढ़ कर मनोहर है। वे उत्तम शहद से भी अधिक मधुर
हैं, जो सीधे शहद के छत्ते से टपक आता है।
11हे यहोवा, तेरे उपदेश तेरे सेवक को आगाह करते
है, और जो उनका पालन करते हैं उन्हें तो वरदान
मिलते हैं।
12हे यहोवा, अपने सभी दोषों को कोई नहीं देख पाता
है। इसलिए तू मुझे उन पापों से बचा जो एकांत में छुप
कर किये जाते हैं।
13हे यहोवा, मुझे उन पापों को करने से बचा जिन्हें मैं
करना चाहता हूँ। उन पापों को मुझ पर शासन न
करने दे। यदि तू मुझे बचाये तो मैं पवित्र और अपने
पापों से मुक्त हो सकता हूँ।
14मुझको आशा है कि, मेरे वचन और चिंतन तुझको
प्रसन्न करेंगे। हे यहोवा, तू मेरी चट्टान, और मेरा
बचाने वाला है!

भजन 20

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1तेरी पुकार का यहोवा उत्तर दे, और जब तू विपत्ति
में हो तो याकूब का परमेश्वर तेरे नाम को बढ़ाये।
2परमेश्वर अपने पवित्रस्थान से तेरी सहायता करे।
वह तुझको सिय्योन से सहारा देवे।
3परमेश्वर तेरी सब भेंटों को याद रखे, और तेरे सब
बलिदानों को स्वीकार करें।
4परमेश्वर तुझे उन सभी वस्तुओं को देवे जिन्हें तू
सचमुच चाहे। वह तेरी सभी योजनाएँ पूरी करें।
5परमेश्वर जब तेरी सहायता करे हम अति प्रसन्न हों
और हम परमेश्वर की बड़ाई के गीत गायें। जो कुछ भी
तुम माँगों यहोवा तुम्हें उसे दे।
6मैं अब जानता हूँ कि यहोवा सहायता करता है अपने
उस राजा की जिसको उसने चुना। परमेश्वर तो अपने
पवित्र स्वर्ग में विराजा है और उसने अपने चुने हुए
राजा को, उत्तर दिया उस राजा की रक्षा करने के लिये
परमेश्वर अपनी महाशक्ति को प्रयोग में लाता है।
7कुछ को भरोसा अपने रथों पर है, और कुछ को
निज सैनिकों पर भरोसा है किन्तु हम तो अपने यहोवा
परमेश्वर को स्मरण करते हैं।
8किन्तु वे लोग तो पराजित और युद्ध में मारे गये
किन्तु हम जीते और हम विजयी रहे।
9ऐसा कैसा हुआ? क्योंकि यहोवा ने अपने चुने हुए
राजा की रक्षा की उसने परमेश्वर को पुकारा था और
परमेश्वर ने उसकी सुनी।

भजन 21

संगीत निर्देशक को दाऊद का एक पद।

1हे यहोवा, तेरी महिमा राजा को प्रसन्न करती है,
जब तू उसे बचाता है। वह अति आनन्दित होता है।
2तूने राजा को वे सब वस्तुएँ दी जो उसने चाहा, राजा
ने जो भी पाने की विनती की हे यहोवा, तूने मन वांछित
उसे दे दिया।
3हे यहोवा, सचमुच तूने बहुत आशीष राजा को दी।
उसके सिर पर तूने स्वर्ण मुकुट रख दिया।
4उसने तुझ से जीवन की याचना की और तूने उसे
यह दे दिया। परमेश्वर, तूने सदा सर्वदा के लिये राजा
को अमर जीवन दिया।
5तूने रक्षा की तो राजा को महा वैभव मिला। तूने
उसे आदर और प्रशंसा दी।
6हे परमेश्वर, सचमुच तूने राजा को सदा सर्वदा के
लिये, आशीर्वाद दिये। जब राजा को तेरा दर्शन मिलता
है, तो वह अति प्रसन्न होता है।
7राजा को सचमुच यहोवा पर भरोसा है, सो परम
परमेश्वर उसे निराश नहीं करेगा।
8हे परमेश्वर! तू दिखा देगा अपने सभी शत्रुओं को
कि तू सुदृढ़ शक्तिवान है। जो तुझ से घृणा करते हैं
तेरी शक्तिउन्हें पराजित करेगी।
9हे यहोवा, जब तू राजा के साथ होता है तो वह उस
भभकते भाड़ सा बन जाता है, जो सब कुछ भस्म
करता है। उसकी क्रोधाग्नि अपने सभी बैरियों को
भस्म कर देती है।
10परमेश्वर के बैरियों के वंश नष्ट हो जायेंगे, धरती
के ऊपर से वह सब मिटेंगे।
11ऐसा क्यों हुआ? क्योंकि यहोवा, तेरे विरुद्ध उन
लोगों ने षड़यन्त्र रचा था। उन्होंने बुरा करने को योजनाएँ
रची थी, किन्तु वे उसमें सफल नहीं हुए।
12किन्तु यहोवा तूने ऐसे लोगों को अपने अधीन
किया, तूने उन्हें एक साथ रस्से से बाँध दिया, और
रस्सियों का फँदा उनके गलों में डाला। तूने उन्हें उनके
मुँह के बल दासों सा गिराया। 13यहोवा के और उसकी
शक्ति के गुण गाओ आओ हम गायें और उसके गीतों
को बजायें जो उसकी गरिमा से जुड़े हुए हैं।

भजन 22

प्रभात की हरिणी नामक राग पर संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक भजन।

1हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर! तूने मुझे क्यों
त्याग दिया है? मुझे बचाने के लिये तू क्यों बहुत दूर है?
मेरी सहायता की पुकार को सुनने के लिये तू बहुत दूर
है।
2हे मेरे परमेश्वर, मैंने तुझे दिन में पुकारा किन्तु तूने
उत्तर नहीं दिया, और मैं रात भर तुझे पुकारता रहा।
3हे परमेश्वर, तू पवित्र है। तू राजा के जैसे विराजमान
है। इस्राएल की स्तुतियाँ तेरा सिंहासन हैं।
4हमारे पूर्वजों ने तुझ पर विश्वास किया। हाँ! हे
परमेश्वर, वे तेरे भरोसे थे! और तूने उनको बचाया।

5हे परमेश्वर, हमारे पूर्वजों ने तुझे सहायता को पुकारा और वे अपने शत्रुओं से बच निकले। उन्होंने तुझ पर विश्वास किया और वे निराश नहीं हुए।

6तो क्या मैं सचमुच ही कोई कीड़ा हूँ, जो लोग मुझसे लज्जित हुआ करते हैं और मुझसे घृणा करते हैं?

7जो भी मुझे देखता है मेरी हँसी उड़ाता है, वे अपना सिर हिलाते और अपने होंठ बिचकाते हैं।

8वे मुझसे कहते हैं कि, "अपनी रक्षा के लिये तू यहोवा को पुकार ही सकता है। वह तुझ को बचा लेगा। यदि तू उसको इतना भाता है तो निश्चय ही वह तुझ को बचा लेगा।"

9हे परमेश्वर, सच तो यह है कि केवल तू ही है जिसके भरोसे मैं हूँ। तूने मुझे उस दिन से ही सम्भाला है, जब से मेरा जन्म हुआ। तूने मुझे आश्वस्त किया और चैन दिया, जब मैं अभी अपनी माता का दूध पीता था।

10ठीक उसी दिन से जब से मैं जन्मा हूँ, तू मेरा परमेश्वर रहा है। जैसे ही मैं अपनी माता की कोख से बाहर आया था, मुझे तेरी देखभाल में रख दिया गया था।

11सो हे, परमेश्वर! मुझको मत बिसरा, संकट निकट है, और कोई भी व्यक्ति मेरी सहायता को नहीं है।

12मैं उन लोगों से घिरा हूँ, जो शक्तिशाली साँड़ों जैसे मुझे घेरे हुए हैं।

13वे उन सिंहो जैसे हैं, जो किसी जन्तु को चीर रहे हों और दहाड़ते हो और उनके मुख विकराल खुले हुए हो।

14मेरी शक्ति धरती पर बिखरे जल सी लुप्त हो गई। मेरी हड्डियाँ अलग हो गई हैं। मेरा साहस खत्म हो चुका है।

15मेरा मुख सूखे ठीकर सा है। मेरी जीभ मेरे अपने ही तालू से चिपक रही है। तूने मुझे मृत्यु की धूल में मिला दिया है।

16मैं चारों तरफ कुत्तों से घिरा हूँ, दुष्ट जनों के उस समूह ने मुझे फँसाया है। उन्होंने मेरे हाथों और पैरों को सिंह के समान भेदा है।

17मुझको अपनी हड्डियाँ दिखाई देती हैं। ये लोग मुझे घूर रहे हैं। ये मुझको हानि पहुँचाने को ताकते रहते हैं।

18वे मेरे कपड़े आपस में बाँट रहे हैं। मेरे वस्त्रों के लिये वे पासे फेंक रहे हैं।

19हे यहोवा, तू मुझको मत त्याग। तू मेरा बल है, मेरी सहायता कर। अब तू देर मत लगा।

20हे यहोवा, मेरे प्राण तलवार से बचा ले। उन कुत्तों से तू मेरे मूल्यवान जीवन की रक्षा कर।

21मुझे सिंह के मुँह से बचा ले और साँड़ के सींगो से मेरी रक्षा कर।

22हे यहोवा, मैं अपने भाइयों में तेरा प्रचार करूँगा। मैं तेरी प्रशंसा तेरे भक्तों की सभा के बीच करूँगा।

23ओ यहोवा के उपासकों, यहोवा की प्रशंसा करो। इस्राएल के वंशजों यहोवा का आदर करो। ओ इस्राएल के सभी लोगों, यहोवा का भय मानों और आदर करो।

24क्योंकि यहोवा ऐसे मनुष्यों की सहायता करता है जो विपत्ति में होते हैं। यहोवा उन से घृणा नहीं करता है। यदि लोग सहायता के लिये यहोवा को पुकारे तो वह स्वयं को उन से न छिपायेगा।

25हे यहोवा, मेरा स्तुति गान महासभा के बीच तुझसे ही आता है। उन सबके सामने जो तेरी उपासना करते हैं। मैं उन बातों को पूरा करूँगा जिनको करने की मैंने प्रतिज्ञा की है।

26दीन जन भोजन पायेंगे और सन्तुष्ट होंगे। तुम लोग जो उसे खोजते हुए आते हो उसकी स्तुति करो। मन तुम्हारे सदा सदा को आनन्द से भर जायें।

27काश सभी दूर देशों के लोग यहोवा को याद करें और उसकी ओर लौट आयें। काश विदेशों के सब लोग यहोवा की आराधना करें।

28क्योंकि यहोवा राजा है। वह प्रत्येक राष्ट्र पर शासन करता है।

29लोग असहाय घास के तिनकों की भाँति धरती पर बिछे हुए हैं। हम सभी अपना भोजन खायेंगे और हम सभी कब्रों में लेट जायेंगे। हम स्वयं को मरने से नहीं रोक सकते हैं। हम सभी भूमि में गाड़ दिये जायेंगे। हममें से हर किसी को यहोवा के सामने दण्डवत करना चाहिए।

30और भविष्य में हमारे वंशज यहोवा की सेवा करेंगे। लोग सदा सर्वदा उस के बारे में बखानेंगे।

31वे लोग आयेंगे और परमेश्वर की भलाई का प्रचार करेंगे जिनका अभी जन्म ही नहीं हुआ।

भजन 23

दाऊद का एक पद।

1यहोवा मेरा गडेरिया है। जो कुछ भी मुझको अपेक्षित होगा, सदा मेरे पास रहेगा।

2हरी भरी चरागाहों में मुझे सुख से वह रखता है। वह मुझको शांत झीलों पर ले जाता है। 3वह अपने नाम के निमित्त मेरी आत्मा को नयी शक्ति देता है। वह मुझको अगुवाई करता है कि वह सचमुच उत्तम है।

4मैं मृत्यु की अंधेरी घाटी से गुजरते भी नहीं डरुँगा, क्योंकि यहोवा तू मेरे साथ है। तेरी छड़ी, तेरा दण्ड मुझको सुख देते हैं।

5हे यहोवा, तूने मेरे शत्रुओं के समक्ष मेरी खाने की मेज सजाई है। तूने मेरे शीश पर तेल उँडेला है। मेरा कटोरा भरा है और छलक रहा है।

6नेकी और करुणा मेरे शेष जीवन तक मेरे साथ रहेंगी। मैं यहोवा के मन्दिर में बहुत बहुत समय तक बैठा रहूँगा।।

भजन 24

दाऊद का एक पद।

1यह धरती और उस पर की सब वस्तुएँ यहोवा की है। यह जगत और इसके सब व्यक्ति उसी के हैं।

2यहोवा ने इस धरती को जल पर रचा है। उसने इसको जल-धारों पर बनाया।

3यहोवा के पर्वत पर कौन जा सकता है? कौन यहोवा के पवित्र मन्दिर में खड़ा हो सकता और आराधना कर सकता है?

4ऐसा जन जिसने पाप नहीं किया है, ऐसा जन जिसका मन पवित्र है, ऐसा जन जिसने मेरे नाम का प्रयोग झूठ को सत्य प्रतीत करने में न किया हो, और ऐसा जन जिसने न झूठ बोला और न ही झूठे वचन दिए हैं। बस ऐसे व्यक्ति ही वहाँ आराधना कर सकते हैं।

5सज्जन तो चाहते हैं यहोवा सब का भला करे। वे सज्जन परमेश्वर से जो उनका उद्धारक है, नेक चाहते हैं।

6वे सज्जन परमेश्वर के अनुसरण का जतन करते हैं। वे याकूब के परमेश्वर के पास सहायता पाने जाते हैं।

7फाटकों, अपने सिर ऊँचे करो! सनातन द्वारों, खुल जाओ! प्रतापी राजा भीतर आएगा।

8यह प्रतापी राजा कौन है? यहोवा ही वह राजा है, वही सबल सैनिक है, यहोवा ही वह राजा है, वही युद्धनायक है।

9फाटकों, अपने सिर ऊँचे करो! सनातन द्वारों, खुल जाओ! प्रतापी राजा भीतर आएगा।

10वह प्रतापी राजा कौन है? यहोवा सर्वशक्तिमान ही वह राजा है। वह प्रतापी राजा वही है।

भजन 25

दाऊद को समर्पित।

1हे यहोवा, मैं स्वयं को तुझे समर्पित करता हूँ।

2मेरे परमेश्वर, मेरा विश्वास तुझ पर है। मैं तुझसे निराश नहीं होऊँगा। मेरे शत्रु मेरी हँसी नहीं उड़ा पायेंगे।

3ऐसा व्यक्ति, जो तुझमें विश्वास रखता है, वह निराश नहीं होगा। किन्तु विश्वासघाती निराश होंगे और, वे कभी भी कुछ नहीं प्राप्त करेंगे।

4हे यहोवा, मेरी सहायता कर कि मैं तेरी राहों को सीखूँ। तू अपने मार्गो की मुझको शिक्षा दे।

5अपनी सच्ची राह तू मुझको दिखा और उसका उपदेश मुझे दे। तू मेरा परमेश्वर मेरा उद्धारकर्ता है। मुझको हर दिन तेरा भरोसा है।

6हे यहोवा, मुझ पर अपनी दया रख और उस ममता को मुझ पर प्रकट कर, जिसे तू हरदम रखता है।

7अपने युवाकाल में जो पाप और कुकर्म मैंने किए, उनको याद मत रख। हे यहोवा, अपने निज नाम निमित्त, मुझको अपनी करुणा से याद कर।

8यहोवा सचमुच उत्तम है, वह पापियों को जीवन का नेक राह सिखाता है।

9वह दीनजनों को अपनी राहों की शिक्षा देता है। बिना पक्षपात के वह उनको मार्ग दर्शाता है।

10यहोवा की राहें उन लोगों के लिए क्षमापूर्ण और सत्य है, जो उसके वाचा और प्रतिज्ञाओं का अनुसरण करते हैं।

11हे यहोवा, मैंने बहुतेरे पाप किये हैं, किन्तु तूने अपनी दया प्रकट करने को, मेरे हर पाप को क्षमा कर दिया।

12यदि कोई व्यक्ति यहोवा का अनुसरण करना चाहे, तो उसे परमेश्वर जीवन का उत्तम राह दिखाएगा।

13वह व्यक्ति उत्तम वस्तुओं का सुख भोगेगा, और उस व्यक्ति की सन्ताने उस धरती की जिसे परमेश्वर ने वचन दिया था स्थायी रहेंगे।

14यहोवा अपने भक्तों पर अपने भेद खोलता है। वह अपने निज भक्तों को अपने वाचा की शिक्षा देता है।

15मेरी आँखें सहायता पाने को यहोवा पर सदा टिकी रहती हैं। मुझे मेरी विपत्ति से वह सदा छुड़ाता है।

16हे यहोवा, मैं पीड़ित और अकेला हूँ। मेरी ओर मुड़ और मुझ पर दया दिखा।

17मेरी विपत्तियों से मुझको मुक्त कर। मेरी समस्या सुलझाने की सहायता कर।

18हे यहोवा, मुझे परख और मेरी विपत्तियों पर दृष्टि डाल। मुझको जो पाप मैंने किए हैं, उन सभी के लिए क्षमा कर।

19जो भी मेरे शत्रु हैं, सभी को देख ले। मेरे शत्रु मुझसे बैर रखते हैं, और मुझ को दुःख पहुँचाना चाहते हैं।

20हे परमेश्वर, मेरी रक्षा कर और मुझको बचा ले। मैं तेरा भरोसा रखता हूँ। सो मुझे निराश मत कर।

21हे परमेश्वर, तू सचमुच उत्तम है। मुझको तेरा भरोसा है, सो मेरी रक्षा कर।

22हे परमेश्वर, इस्राएल के जनों की उनके सभी शत्रुओं से रक्षा कर।

भजन 26

दाऊद को समर्पित।

1हे यहोवा, मेरा न्याय कर, प्रमाणित कर कि मैंने पवित्र जीवन बिताया है। मैंने यहोवा पर कभी विश्वास करना नहीं छोड़ा।

2हे यहोवा, मुझे परख और मेरी जाँच कर, मेरे हृदय में और बुद्धि को निकटता से देख।

3मैं तेरे प्रेम को सदा ही देखता हूँ, मैं तेरे सत्य के सहारे जिया करता हूँ।

4मैं उन व्यर्थ लोगों में से नहीं हूँ।

5उन पापी टोलियों से मुझको घृणा है, मैं उन धूर्तों के टोलों में सम्मिलित नहीं होता हूँ।

6हे यहोवा, मैं हाथ धोकर तेरी वेदी पर आता हूँ।
7हे यहोवा, मैं तेरे प्रशंसा गीत गाता हूँ, और जो आश्चर्य
कर्म तूने किये हैं, उनके विषय में मैं गीत गाता हूँ।
8हे यहोवा, मुझको तेरा मन्दिर प्रिय है। मैं तेरे पवित्र
तम्बू से प्रेम करता हूँ।
9हे यहोवा, तू मुझे उन पापियों के दल में मत मिला,
जब तू उन हत्यारों का प्राण लेगा तब मुझे मत मार।
10वे लोग सम्भव है, छलने लग जाये। सम्भव है, वे
लोग बुरे काम करने को रिश्वत ले लें।
11लेकिन मैं निश्चल हूँ, सो हे परमेश्वर, मुझ पर
दयालु हो और मेरी रक्षा कर।
12मैं नेक जीवन जीता रहा हूँ। मैं तेरे प्रशंसा गीत, हे
यहोवा, जब भी तेरी भक्त मण्डली साथ मिली, गाता रहा
हूँ।

भजन 27

दाऊद को समर्पित।

1हे यहोवा, तू मेरी ज्योति और मेरा उद्धारकर्ता है।
मुझे तो किसी से भी नहीं डरना चाहिए! यहोवा मेरे
जीवन के लिए सुरक्षित स्थान है। सो मैं किसी भी
व्यक्ति से नहीं डरुँगा।
2सम्भव है, दुष्ट जन मुझ पर चढ़ाई करें। सम्भव है,
वे मेरे शरीर को नष्ट करने का यत्न करे। सम्भव है
मेरे शत्रु मुझे नष्ट करने को मुझ पर आक्रमण का
यत्न करें।
3पर चाहे पूरी सेना मुझको घेर ले, मैं नही डरुँगा।
चाहे युद्धक्षेत्र में मुझ पर लोग प्रहार करे, मैं नहीं डरुँगा।
क्योंकि मैं यहोवा पर भरोसा करता हूँ।
4मैं यहोवा से केवल एक वर माँगना चाहता हूँ, "मैं
अपने जीवन भर यहोवा के मन्दिर में बैठा रहूँ, ताकि
मैं यहोवा की सुन्दरता को देखूँ, और उसके मन्दिर में
ध्यान करुँ।"
5जब कभी कोई विपत्ति मुझे घेरेगी, यहोवा मेरी रक्षा
करेगा। वह मुझे अपने तम्बू में छिपा लेगा। वह मुझे
अपने सुरक्षित स्थान पर ऊपर उठा लेगा।
6मुझे मेरे शत्रुओं ने घेर रखा है। किन्तु अब उन्हें
पराजित करने में यहोवा मेरा सहायक होगा। मैं उसके
तम्बू में फिर भेंट चढ़ाऊँगा। जय जयकार करके बलियाँ
अर्पित करुँगा। मैं यहोवा की अभिवंदना में गीतों को
गाऊँगा और बजाऊँगा।
7हे यहोवा, मेरी पुकार सुन, मुझको उत्तर दे। मुझ पर
दयालु रह।
8हे यहोवा, मैं चाहता हूँ अपने हृदय से तुझसे बात
करुँ। हे यहोवा, मैं तुझसे बात करने तेरे सामने आया हूँ।
9हे यहोवा, अपना मुख अपने सेवक से मत मोड़।
मेरी सहायता कर! मुझे तू मत ठुकरा! मेरा त्याग मत
कर! मेरे परमेश्वर, तू मेरा उद्धारकर्ता है।
10मेरी माता और मेरे पिता ने मुझको त्याग दिया, पर
यहोवा ने मुझे स्वीकारा और अपना बना लिया।
11हे यहोवा, मेरे शत्रुओं के कारण, मुझे अपना मार्ग
सिखा। मुझे अच्छे कामों की शिक्षा दे।
12मुझ पर मेरे शत्रुओं ने आक्रमण किया है। उन्होंने
मेरे लिए झूठ बोले हैं। वे मुझे हानि पहुँचाने के लिए
झूठ बोले।
13मुझे भरोसा है कि मरने से पहले मैं सचमुच यहोवा
की धार्मिकता देखूँगा।
14यहोवा से सहायता की बाट जोहते रहो! साहसी
और सुदृढ़ बने रहो और यहोवा की सहायता की प्रतीक्षा
करते रहो।

भजन 28

1हे यहोवा, तू मेरी चट्टान है, मैं तुझको सहायता
पाने को पुकार रहा हूँ। मेरी प्रार्थनाओं से अपने कान
मत मूँद, यदि तू मेरी सहायता की पुकार का उत्तर नहीं
देगा, तो लोग मुझे कब्र में मरा हुआ जैसा समझेंगे।
2हे यहोवा, तेरे पवित्र तम्बू की ओर मैं अपने हाथ
उठाकर प्रार्थना करता हूँ। जब मैं तुझे पुकारुँ, तू मेरी
सुन और तू मुझ पर अपनी करुणा दिखा।
3हे यहोवा, मुझे उन बुरे व्यक्तियों कि तरह मत सोच
जो बुरे काम करते हैं। जो अपने पड़ोसियों से "सलाम"
(शांति) करते हैं, किन्तु अपने हृदय में अपने पड़ोसियों
के बारे में कुचक्र सोचते हैं।
4हे यहोवा, वे व्यक्ति अन्य लोगों का बुरा करते हैं।
सो तू उनके साथ बुरी घटनाएँ घटा। उन दुर्जनों को तू
वैसे दण्ड दे जैसे उन्हें देना चाहिए।
5दुर्जन उन उत्तम बातों को जो यहोवा करता नहीं
समझते। वे परमेश्वर के उत्तम कर्मों को नहीं देखते। वे
उसकी भलाई को नहीं समझते। वे तो केवल किसी का
नाश करने का यत्न करते हैं।
6यहोवा की स्तुति करो! उसने मुझ पर करुणा करने
की विनती सुनी।
7यहोवा मेरी शक्ति है, वह मेरी ढाल है। मुझे उसका
भरोसा था। उसने मेरी सहायता की। मैं अति प्रसन्न हूँ,
और उसके प्रशंसा के गीत गाता हूँ।
8यहोवा अपने चुने राजा की रक्षा करता है। वह उसे
हर पल बचाता है। यहोवा ही उसका बल है।
9हे परमेश्वर, अपने लोगों की रक्षा कर। जो तेरे हैं
उनको आशीष दे। उनको मार्ग दिखा और सदा सर्वदा
उनका उत्थान कर।

भजन 29

दाऊद का एक गीत।

1परमेश्वर के पुत्रों, यहोवा की स्तुति करो! उसकी
महिमा और शक्ति के प्रशंसा गीत गाओ।

2यहोवा की प्रशंसा करो और उसके नाम को आदर प्रकट करो। विशेष वस्त्र पहनकर उसकी आराधना करो।

3समुद्र के ऊपर यहोवा की वाणी निज गरजती है। परमेश्वर की वाणी महासागर के ऊपर मेघ के गरजन की तरह गरजता है।

4यहोवा की वाणी उसकी शक्ति को दिखाती है। उसकी ध्वनि उसके महिमा को प्रकट करती है।

5यहोवा की वाणी देवदार वृक्षों को तोड़ कर चकनाचूर कर देता है। यहोवा लबानोन के विशाल देवदार वृक्षों को तोड़ देता है।

6यहोवा लबानोन के पहाड़ों को कँपा देता है। वे नाचते बछड़े की तरह दिखने लगता है। हेर्मोन का पहाड़ काँप उठता है और उछलती जवान बकरी की तरह दिखता है।

7यहोवा की वाणी बिजली की कौंधो से टकराती है।

8यहोवा की वाणी मरुस्थलों को कँपा देती है। यहोवा के स्वर से कादेश का मरुस्थल काँप उठता है।

9यहोवा की वाणी से हरिण भयभीत होते हैं। यहोवा दुर्गम वनों को नष्ट कर देता है। किन्तु उसके मन्दिर में लोग उसकी प्रशंसा के गीत गाते हैं।

10जलप्रलय के समय यहोवा राजा था। वह सदा के लिये राजा रहेगा।

11यहोवा अपने भक्तों की रक्षा सदा करे, और अपने जनों को शांति का आशीष दे।

भजन 30

मन्दिर के समर्पण के लिए दाऊद का एक पद।

1हे यहोवा, तूने मेरी विपत्तियों से मेरा उद्धार किया है। तूने मेरे शत्रुओं को मुझको हराने और मेरी हँसी उड़ाने नहीं दी। सो मैं तेरे प्रति आदर प्रकट करूँगा।

2हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैंने तुझसे प्रार्थना की। तूने मुझको चँगा कर दिया।

3कब्र से तूने मेरा उद्धार किया, और मुझे जीने दिया। मुझे मुर्दों के साथ मुर्दों के गर्त में पड़े हुए नहीं रहना पड़ा।

4परमेश्वर के भक्तों, यहोवा की स्तुति करो! उसके शुभ नाम की प्रशंसा करो।

5यहोवा क्रोधित हुआ, सो निर्णय हुआ "मृत्यु।" किन्तु उसने अपना प्रेम प्रकट किया और मुझे "जीवन" दिया। मैं रात को रोते बिलखाते सोया। अगली सुबह मैं गाता हुआ प्रसन्न था।

6मैं अब यह कह सकता हूँ, और मैं जानता हूँ यह निश्चय सत्य है, "मैं कभी नहीं हारुँगा!"

7हे यहोवा, तू मुझ पर दयालु हुआ और मुझे फिर अपने पवित्र पर्वत पर खड़े होने दिया। तूने थोड़े समय के लिए अपना मुख मुझसे फेरा और मैं बहुत घबरा गया।

8हे परमेश्वर, मैं तेरी ओर लौटा और विनती की। मैंने मुझ पर दया दिखाने की विनती की।

9मैंने कहा, "परमेश्वर क्या यह अच्छा है कि मैं मर जाऊँ और कब्र के भीतर नीचे चला जाऊँ? मरे हुए जन तो मिट्टी में लेटे रहते हैं, वे तेरे नेक की स्तुति जो सदा सदा बनी रहती है नहीं करते।

10हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन और मुझ पर करुणा कर! हे यहोवा, मेरी सहायता कर!"

11मैंने प्रार्थना की और तूने सहायता की! तूने मेरे रोने को नृत्य में बदल दिया। मेरे शोक वस्त्र को तूने उतार फेंका, और मुझे आनन्द में सराबोर कर दिया।

12हे यहोवा, मैं तेरा सदा यशगान करुँगा। मैं ऐसा करुँगा जिससे कभी नीरवता न व्यापे। तेरी प्रशंसा सदा कोई गाता रहेगा।

भजन 31

संगीत निर्देशक को दाऊद का एक पद।

1हे यहोवा, मैं तेरे भरोसे हूँ, मुझे निराश मत कर। मुझ पर कृपालु हो और मेरी रक्षा कर।

2हे यहोवा, मेरी सुन, और तू शीघ्र आकर मुझको बचा ले। मेरी चट्टान बन जा, मेरा सुरक्षा बन। मेरा गढ़ बन जा, मेरी रक्षा कर!

3हे परमेश्वर, तू मेरी चट्टान है, सो अपने निज नाम हेतु मुझको राह दिखा और मेरी अगुवाई कर।

4मेरे लिए मेरे शत्रुओं ने जाल फैलाया है। उनके फँदे से तू मुझको बचा ले, क्योंकि तू मेरा सुरक्षास्थल है।

5हे परमेश्वर यहोवा, मैं तो तुझ पर भरोसा कर सकता हूँ। मैं मेरा जीवन तेरे हाथ में सौंपता हूँ। मेरी रक्षा कर!

6जो मिथ्या देवों को पूजते रहते हैं, उन लोगों से मुझे घृणा है। मैं तो बस यहोवा में विश्वास रखता हूँ।

7हे यहोवा, तेरी करुणा मुझको अति आनन्दित करती है। तूने मेरे दुःखों को देख लिया और तू मेरे पीड़ाओं के विषय में जानता है।

8तू मेरे शत्रुओं को मुझ पर भारी पड़ने नहीं देगा। तू मुझे उनके फँदों से छुडाएगा।

9हे यहोवा, मुझ पर अनेक संकट हैं। सो मुझ पर कृपा कर। मैं इतना व्याकुल हूँ कि मेरी आँखें दुःख रही हैं। मेरे गला और पेट पीड़ित हो रहे हैं।

10मेरा जीवन का अंत दुःख में हो रहा है। मेरे वर्ष आहों में बीतते जाते हैं। मेरी वेदनाएँ मेरी शक्ति को निचोड़ रही हैं। मेरा बल मेरा साथ छोड़ता जा रहा है।

11मेरे शत्रु मुझसे घृणा रखते हैं। मेरे पड़ोसी मेरे बैरी बने हैं। मेरे सभी सम्बन्धी मुझे राह में देख कर मुझसे डर जाते हैं और मुझसे वे सब कतराते हैं।

12मुझको लोग पूरी तरह से भूल चुके हैं। मैं तो किसी
खोये औजार सा हो गया हूँ।
13मैं उन भयंकर बातों को सुनता हूँ जो लोग मेरे
विषय में करते हैं। वे सभी लोग मेरे विरुद्ध हो गए हैं। वे
मुझे मार डालने की योजनाएँ रचते हैं।
14हे यहोवा, मेरा भरोसा तुझ पर है। तू मेरा परमेश्वर
है।
15मेरा जीवन तेरे हाथों में है। मेरे शत्रुओं से मुझको
बचा ले। उन लोगों से मेरी रक्षा कर, जो मेरे पीछे पड़े हैं।
16कृपा करके अपने दास को अपना ले। मुझ पर
दया कर और मेरी रक्षा कर!
17हे यहोवा, मैंने तेरी विनती की। इसलिए मैं निराश
नहीं होऊँगा। बुरे मनुष्य तो निराश हो जाएँगे। और वे
कब्र में नीरव चले जाएँगे।
18दुर्जन डींग हाँकते हैं और सज्जनों के विषय में झूठ
बोलते हैं। वे दुर्जन बहुत ही अभिमानी होते हैं। किन्तु
उनके होंठ जो झूठ बोलते रहते हैं, शब्द हीन होंगे।
19हे परमेश्वर, तूने अपने भक्तों के लिए बहुत सी
अद्भुत वस्तुएँ छिपा कर रखी हैं। तू सबके सामने ऐसे
मनुष्यों के लिए जो तेरे विश्वासी हैं, भले काम करता
है।
20दुर्जन सज्जनों को हानि पहुँचाने के लिए जुट जाते
हैं। वे दुर्जन लड़ाई भड़काने का जतन करते हैं। किन्तु
तू सज्जनों को उनसे छिपा लेता है, और उन्हें बचा लेता
है। तू सज्जनों की रक्षा अपनी शरण में करता है।
21यहोवा कि स्तुति करो! जब नगर को शत्रुओं ने
घेर रखा था, तब उसने अपना सच्चा प्रेम अद्भुत रीति
से दिखाया।
22मैं भयभीत था, और मैंने कहा था, "मैं तो ऐसे
स्थान पर हूँ जहाँ मुझे परमेश्वर नहीं देख सकता है।"
किन्तु हे परमेश्वर, मैंने तूझसे विनती की, और तूने
मेरी सहायता की पुकार सुन ली।
23परमेश्वर के भक्तों, तुम को यहोवा से प्रेम करना
चाहिए! यहोवा उन लोगों को जो उसके प्रति सच्चे हैं,
रक्षा करता है। किन्तु यहोवा उनको जो अपनी ताकत
की ढोल पीटते हैं। उनको वह वैसा दण्ड देता है, जैसा
दण्ड उनको मिलना चाहिए।
24अरे ओ मनुष्यों जो यहोवा की सहायता की प्रतीक्षा
करते हो, सुदृढ़ और साहसी बनो!

भजन 32

दाऊद का एक गीत।

1धन्य है वह जन जिसके पाप क्षमा हुए। धन्य है वह
जन जिसके पाप धुल गए।
2धन्य है वह जन जिसे यहोवा दोषी न कहे, धन्य है
वह जन जो अपने गुप्त पापों को छिपाने का जतन न
करे।
3हे परमेश्वर, मैंने तुझसे बार बार विनती की, किन्तु
अपने छिपे पाप तुझको नहीं बताए। जितनी बार मैंने
तेरी विनती की, मैं तो और अधिक दुर्बल होता चला
गया।
4हे परमेश्वर, तूने मेरा जीवन दिन रात कठिन से
कठिनतर बना दिया। मैं उस धरती सा सूख गया हूँ जो
ग्रीष्म ताप से सूख गई है।
5किन्तु फिर मैंने यहोवा के समक्ष अपने सभी पापों
को मानने का निश्चय कर लिया है। हे यहोवा, मैंने
तुझे अपने पाप बता दिये। मैंने अपना कोई अपराध
तुझसे नहीं छुपाया। और तूने मुझे मेरे पापों के लिए
क्षमा कर दिया!
6इसलिए, परमेश्वर, तेरे भक्तों को तेरी विनती करनी
चाहिए। यहाँ तक कि जब विपत्ति जल प्रलय सी उमड़े
तब भी तेरे भक्तों को तेरी विनती करनी चाहिए।
7हे परमेश्वर, तू मेरा रक्षास्थल है। तू मुझको मेरी
विपत्तियों से उबारता है। तू मुझे अपनी ओट में लेकर
विपत्तियों से बचाता है। सो इसलिए मैं, जैस तूने रक्षा की
है, उन्हीं बातों के गीत गाया करता हूँ।
8यहोवा कहता है, "मैं तुझे जैसे चलना चाहिए सिखाऊँगा
और तुझे वह राह दिखाऊँगा। मैं तेरी रक्षा करुँगा और
मैं तेरा अगुवा बनूँगा।
9सो तू घोड़े या गधे सा बुद्धिहीन मत बन। उन पशुओं
को तो मुखरी और लगाम से चलाया जाता है। यदि तू
उनको लगाम या रास नहीं लगाएगा, तो वे पशु निकट
नहीं आयेंगे।"
10दुर्जनों को बहुत सी पीड़ाएँ घेरेंगी। किन्तु उन लोगों
को जिन्हें यहोवा पर भरोसा है, यहोवा का सच्चा प्रेम
ढक लेगा।
11सज्जन तो यहोवा में सदा मगन और आनन्दित रहते
हैं। अरे ओ लोगों, तुम सब पवित्र मन के साथ आनन्द
मनाओ।

भजन 33

1हे सज्जन लोगों, यहोवा में आनन्द मनाओ! सज्जनो
सत पुरुषों, उसकी स्तुति करो!
2वीणा बजाओ और उसकी स्तुति करो! यहोवा के
लिए दस तार वाले सांरगी बजाओ।
3अब उसके लिये नया गीत गाओ। खुशी की धुन
सुन्दरता से बजाओ!
4परमेश्वर का वचन सत्य है। जो भी वह करता है
उसका तुम भरोसा कर सकते हो।
5नेकी और निष्पक्षता परमेश्वर को भाती है। यहोवा
ने अपने निज करुणा से इस धरती को भर दिया है।
6यहोवा ने आदेश दिया और सृष्टि तुरंत अस्तित्व में
आई। परमेश्वर के श्वास ने धरती पर हर वस्तु
रचा।

7परमेश्वर ने सागर में एक ही स्थान पर जल समेटा।
वह सागर को अपने स्थान पर रखता है।
8धरती के हर मनुष्य को यहोवा का आदर करना
और डरना चाहिए। इस विश्व में जो भी मनुष्य बसे हैं,
उनको चाहिए की वे उससे डरें।
9क्योंकि परमेश्वर को केवल बात भर कहनी है,
और वह बात तुरंत घट जाती है। यदि वह किसी को
रुकने का आदेश दे, तो वह तुरंत थम जाती है।
10परमेश्वर चाहे तो सभी सुझाव व्यर्थ करे। वह
किसी भी जन के सब कुचक्रों को व्यर्थ कर सकता है।
11किन्तु यहोवा के उपदेश सदा ही खरे होते हैं।
उसकी योजनाएँ पीढी दर पीढी खरी होती हैं।
12धन्य हैं वे मनुष्य जिनका परमेश्वर यहोवा है।
परमेश्वर ने उन्हें अपने ही मनुष्य होने को चुना है।
13यहोवा स्वर्ग से नीचे देखता रहता है। वह सभी
लोगों को देखता रहता है।
14वह ऊपर ऊँचे पर संस्थापित आसन से धरती पर
रहने वाले सब मनुष्यों को देखता रहता है।
15परमेश्वर ने हर किसी का मन रचा है। सो कोई
क्या सोच रहा है वह समझता है।
16राजा की रक्षा उसके महाबल से नहीं होती है, और
कोई सैनिक अपने निज शक्ति से सुरक्षित नहीं रहता।
17युद्ध में सचमुच अश्वबल विजय नहीं देता। सचमुच
तुम उनकी शक्ति से बच नहीं सकते।
18जो जन यहोवा का अनुसरण करते हैं, उन्हें यहोवा
देखता है और रखवाली करता है। जो मनुष्य उसकी
आराधना करते हैं,उनको उसका महान प्रेम बचाता है।
19परमेश्वर उन लोगों को मृत्यु से बचाता है। वे जब
भूखे होते तब वह उन्हें शक्ति देता है।
20इसलिए हम यहोवा की बाट जोहेंगे। वह हमारी
सहायता और हमारी ढाल है।
21परमेश्वर मुझको आनन्दित करता है। मुझे सचमुच
उसके पवित्र नाम पर भरोसा है।
22हे यहोवा, हम सचमुच तेरी आराधना करते हैं! सो
तू हम पर अपना महान प्रेम दिखा।

भजन 34

जब दाऊद ने अबीमेलेक के सामने पागलपन का आचरण किया। जिससे अबीमेलेक उसे भगा दे, इस प्रकार दाऊद उसे छोड़कर चला गया। उसी अवसर का दाऊद का एक पद।

1मैं यहोवा को सदा धन्य कहूँगा। मेरे होठों पर सदा
उसकी स्तुति रहती है।
2हे नम्र लोगों, सुनो और प्रसन्न होओ। मेरी आत्मा
यहोवा पर गर्व करती है।
3मेरे साथ यहोवा की गरिमा का गुणगान करो। आओ,
हम उसके नाम का अभिनन्दन करें।
4मैं परमेश्वर के पास सहायता माँगने गया। उसने
मेरी सुनी। उसने मुझे उन सभी बातों से बचाया जिनसे
मैं डरता हूँ।
5परमेश्वर की शरण में जाओ। तुम स्वीकारे जाओगे।
तुम लज्जा मत करो।
6इस दीन जन ने यहोवा को सहायता के लिए पुकारा,
और यहोवा ने मेरी सुन ली। और उसने सब विपत्तियों
से मेरी रक्षा की।
7यहोवा का दूत उसके भक्त जनों के चारों ओर डेरा
डाले रहता है। और यहोवा का दूत उन लोगों की रक्षा
करता है।
8चखो और समझो कि यहोवा कितना भला है। वह
व्यक्ति जो यहोवा के भरोसे है सचमुच प्रसन्न रहेगा।
9यहोवा के पवित्र जन को उसकी आराधना करनी
चाहिए। यहोवा के भक्तों के लिए कोई अन्य सुरक्षित
स्थान नहीं है।
10आज जो बलवान हैं दुर्बल और भूखे हो जाएंगे।
किन्तु जो परमेश्वर के शरण आते हैं वे लोग हर उत्तम
वस्तु पाएंगे।
11हे बालकों, मेरी सुनो, और मैं तुम्हें सिखाऊँगा कि
यहोवा की सेवा कैसे करें।
12यदि कोई व्यक्ति जीवन से प्रेम करता है, और
अच्छा और दीर्घायु जीवन चाहता है,
13तो उस व्यक्ति को बुरा नहीं बोलना चाहिए, उस
व्यक्ति को झूठ नहीं बोलना चाहिए।
14बुरे काम मत करो। नेक काम करते रहो। शांति
के कार्य करो। शांति के प्रयासों में जुटे रहो जब तक
उसे पा न लो।
15यहोवा सज्जनों की रक्षा करता है। उनकी प्रार्थनाओं
पर वह कान देता है।
16किन्तु यहोवा, जो बुरे काम करते हैं, ऐसे व्यक्तियों
के विरुद्ध होता है। वह उनको पूरी तरह नष्ट करता है।
17यहोवा से विनती करो, वह तुम्हारी सुनेगा। वह
तुम्हें तुम्हारी सब विपत्तियों से बचा लेगा।
18लोगों को विपत्तियाँ आ सकती है और वे अभिमानी
होना छोड़ते हैं। यहोवा उन लोगों के निकट रहता है।
जिनके टूटे मन हैं उनको वह बचा लेगा।
19सम्भव है सज्जन भी विपत्तियों में घिर जाए। किन्तु
यहोवा उन सज्जनों की उनकी हर समस्या से रक्षा
करेगा।
20यहोवा उनकी सब हड्डियों की रक्षा करेगा। उनकी
एक भी हड्डी नहीं टूटेगी।
21किन्तु दुष्ट की दुष्टता उनको ले डूबेगी। सज्जन के
विरोधी नष्ट हो जायेंगे।
22यहोवा अपने हर दास की आत्मा बचाता है। जो
लोग उस पर निर्भर रहते हैं, वह उन लोगों को नष्ट
नहीं होने देगा।

भजन 35

दाऊद को समर्पित।

1हे यहोवा, मेरे मुकद्दमों को लड़। मेरे युद्धों को लड़!
2हे यहोवा, कवच और ढाल धारण कर, खड़ा हो
और मेरी रक्षा कर।
3बरछी और भाला उठा, और जो मेरे पीछे पड़े हैं
उनसे युद्ध कर। हे यहोवा, मेरी आत्मा से कह, "मैं तेरा
उद्धार करुँगा।"
4कुछ लोग मुझे मारने पीछे पड़े हैं। उन्हें निराश और
लज्जित कर। उनको मोड़ दे और उन्हें भगा दे। मुझे
क्षति पहुँचाने का कुचक्र जो रच रहे हैं उन्हें असमंजस
में डाल दे।
5तू उनको ऐसा भूसे सा बना दे, जिसको पवन उड़ा
ले जाती है। उनके साथ ऐसा होने दे कि, उनके पीछे
यहोवा के दूत पड़ें।
6हे यहोवा, उनकी राह अन्धेरे और फिसलनी हो
जाए। यहोवा का दूत उनके पीछे पड़े।
7मैंने तो कुछ भी बुरा नहीं किया है। किन्तु वे मनुष्य
मुझे बिना किसी कारण के, फँसाना चाहते हैं। वे मुझे
फँसाना चाहते हैं।
8सो, हे यहोवा, ऐसे लोगों को उनके अपने ही जाल में
गिरने दे। उनको अपने ही फंदो में पड़ने दे, और कोई
अज्ञात खतरा उन पर पड़ने दे।
9फिर तो यहोवा मैं तुझ में आनन्द मनाऊँगा। यहोवा
के संरक्षण में मैं प्रसन्न होऊँगा।
10मैं अपने सम्पूर्ण मन से कहूँगा, हे "यहोवा, तेरे
समान कोई नहीं है। तू सबलों से दुर्बलों को बचाता है।
जो जन शक्तिशाली होते हैं, उनसे तू वस्तुओं को छीन
लेता है और दीन और असहाय लोगों को देता है।"
11एक झूठा साक्षी दल मुझको दुःख देने को कुचक्र
रच रहा है। ये लोग मुझसे अनेक प्रश्न पूछेंगे। मैं नहीं
जानता कि वे क्या बात कर रहे हैं।
12मैंने तो बस भलाई ही भलाई की है। किन्तु वे
मुझसे बुराई करेंगे। हे यहोवा, मुझे वह उत्तम फल दे जो
मुझे मिलना चाहिए।
13उन पर जब दुःख पड़ा, उनके लिए मैं दुःखी हुआ।
मैंने भोजन को त्याग कर अपना दुःख व्यक्त किया। जो
मैंने उनके लिए प्रार्थना की, क्या मुझे यही मिलना
चाहिए?
14उन लोगों के लिए मैंने शोक वस्त्र धारण किये।
मैंने उन लोगों के साथ मित्र वरन भाई जैसा व्यवहार
किया। मैं उस रोते मनुष्य सा दुःखी हुआ, जिसकी माता
मर गई हो। ऐसे लोगों से शोक प्रकट करने के लिए
मैंने काले वस्त्र पहन लिए। मैं दुःख में डूबा और सिर
झुका कर चला।
15पर जब मुझसे कोई एक चूक हो गई, उन लोगों ने
मेरी हँसी उड़ाई। वे लोग सचमुच मेरे मित्र नहीं थे। मैं
उन लोगों को जानता तक नहीं। उन्होंने मुझको घेर
लिया और मुझ पर प्रहार किया।
16उन्होंने मुझको गालियाँ दीं और हँसी उड़ायी। अपने
दाँत पीसकर उन लोगों ने दर्शाया कि वे मुझ पर क्रुद्ध
हैं।
17मेरे स्वामी, तू कब तक यह सब बुरा होते हुए
देखेगा? ये लोग मुझे नाश करने का प्रयत्न कर रहे हैं।
हे यहोवा, मेरे प्राण बचा ले। मेरे प्रिय जीवन की रक्षा
कर। वे सिंह जैसे बन गए हैं।
18हे यहोवा, मैं महासभा में तेरी स्तुति करुँगा। मैं
बलशाली लोगों के संग रहते तेरा यश बखानूँगा।
19मेरे मिथ्यावादी शत्रु हँसते नहीं रहेंगे। सचमुच मेरे
शत्रु अपनी छुपी योजनाओं के लिए दण्ड पाएँगे।
20मेरे शत्रु सचमुच शांति की योजनाएँ नहीं रचते हैं।
वे इस देश के शांतिप्रिय लोगों के विरोध में छिपे छिपे
बुरा करने का कुचक्र रच रहे हैं।
21मेरे शत्रु मेरे लिए बुरी बातें कह रहे हैं। वे झूठ
बोलते हुए कह रहे हैं, "अहा! हम सब जानते हैं तुम
क्या कर रहे हो!"
22हे यहोवा, तू सचमुच देखता है कि क्या कुछ घट
रहा है। सो तू छुपा मत रह, मुझको मत छोड़।
23हे यहोवा, जाग! उठ खड़ा हो जा! मेरे परमेश्वर
यहोवा मेरी लड़ाई लड़, और मेरा न्याय कर।
24हे मेरे परमेश्वर यहोवा, अपनी निष्पक्षता से मेरा
न्याय कर, तू उन लोगों को मुझ पर हँसने मत दे।
25उन लोगों को ऐसे मत कहने दे, "अहा! हमें जो
चाहिए था उसे पा लिया!" हे यहोवा, उन्हें मत कहने दे,
"हमने उसको नष्ट कर दिया।"
26मैं आशा करता हूँ कि मेरे शत्रु निराश और लज्जित
होंगे। वे जन प्रसन्न थे जब मेरे साथ बुरी बातें घट रही
थीं। वे सोचा करते कि वे मुझसे श्रेष्ठ हैं! सो ऐसे लोगों
को लाज में डूबने दे।
27कुछ लोग मेरा नेक चाहते हैं। मैं आशा करता हूँ
कि वे बहुत आनन्दित होंगे! वे हमेशा कहते हैं, "यहोवा
महान है! वह अपने सेवक की अच्छाई चाहता है।"
28सो, हे यहोवा, मैं लोगों को तेरी अच्छाई बताऊँगा।
हर दिन, मैं तेरी स्तुति करुँगा।

भजन 36

संगीत निर्देशक के लिए यहोवा के दास
दाऊद का एक पद।

1बुरा व्यक्ति बहुत बुरा करता है जब वह स्वयं से
कहता है, "मैं परमेश्वर का आदर नहीं करता और न
ही डरता हूँ।"
2वह मनुष्य स्वयं से झूठ बोलता है। वह मनुष्य स्वयं
अपने खोट को नहीं देखता। इसलिए वह क्षमा नहीं
माँगता।

3उसके वचन बस व्यर्थ और झूठे होते हैं। वह विवेकी नहीं होता और न ही अच्छे काम सीखता है।

4रात को वह अपने बिस्तर में कुचक्र रचता है। वह जाग कर कोई भी अच्छा काम नहीं करता। वह कुकर्म को छोड़ना नहीं चाहता।

5हे यहोवा, तेरा सच्चा प्रेम आकाश से भी ऊँचा है। हे यहोवा, तेरी सच्चाई मेघों से भी ऊँची है।

6हे यहोवा, तेरी धार्मिकता सर्वोच्च पर्वत से भी ऊँची है। तेरी शोभा गहरे सागर से गहरी है। हे यहोवा, तू मनुष्यों और पशुओं का रक्षक है।

7तेरी करुणा से अधिक मूल्यवान कुछ भी नहीं हैं। मनुष्य और दूत तेरे शरणागत हैं।

8हे यहोवा, तेरे मन्दिर की उत्तम बातों से वे नयी शक्ति पाते हैं। तू उन्हें अपने अद्‌भुत नदी के जल को पीने देता है।

9हे यहोवा, तुझसे जीवन का झरना फूटता है! तेरी ज्योति ही हमें प्रकाश दिखाती है।

10हे यहोवा, जो तुझे सच्चाई से जानते हैं, उनसे प्रेम करता रह। उन लोगों पर तू अपनी निज नेकी बरसा जो तेरे प्रति सच्चे हैं।

11हे यहोवा, तू मुझे अभिमानियों के जाल में मत फँसने दे। दुष्ट जन मुझको कभी न पकड़ पायें।

12उनके कब्रों के पत्थरो पर यह लिख दे: "दुष्ट लोग यहाँ पर गिरे हैं। वे कुचले गए। वे फिर कभी खड़े नहीं हो पायेंगे।"

भजन 37

दाऊद को समर्पित।

1दुर्जनों से मत घबरा, जो बुरा करते हैं ऐसे मनुष्यों से ईर्ष्या मत रख।

2दुर्जन मनुष्य घास और हरे पौधों की तरह शीघ्र पीले पड़ जाते हैं और मर जाते हैं।

3यदि तू यहोवा पर भरोसा रखेगा और भले काम करेगा तो तू जीवित रहेगा और उन वस्तुओं का भोग करेगा जो धरती देती है।

4यहोवा की सेवा में आनन्द लेता रह, और यहोवा तुझे तेरा मन चाहा देगा।

5यहोवा के भरोसे रह। उसका विश्वास कर। वह वैसा करेगा जैसे करना चाहिए।

6दोपहर के सूर्य सा, यहोवा तेरी नेकी और खरेपन को चमकाए।

7यहोवा पर भरोसा रख और उसके सहारे की बाट जोह। तू दुष्टों की सफलता देखकर घबराया मत कर। तू दुष्टों की दुष्ट योजनाओं को सफल होते देख कर मत घबरा।

8तू क्रोध मत कर! तू उन्मादी मत बन! उतना मत घबरा जा कि तू बुरे काम करना चाहे।

9क्योंकि बुरे लोगों को तो नष्ट किया जायेगा। किन्तु वे लोग जो यहोवा पर भरोसे हैं, उस धरती को पायेंगे जिसे देने का परमेश्वर ने वचन दिया।

10थोड़े ही समय बाद कोई दुर्जन नहीं बचेगा। ढूँढने से भी तुमको कोई दुष्ट नहीं मिलेगा!

11नम्र लोग वह धरती पाएंगे जिसे परमेश्वर ने देने का वचन दिया है। वे शांति का आनन्द लेंगे।

12दुष्ट लोग सज्जनों के लिये कुचक्र रचते हैं। दुष्ट जन सज्जनों के ऊपर दाँत पीसकर दिखाते हैं कि वे क्रोधित हैं।

13किन्तु हमारा स्वामी उन दुर्जनों पर हँसता है। वह उन बातों को देखता है जो उन पर पड़ने को है।

14दुर्जन तो अपनी तलवारें उठाते हैं और धनुष साधते हैं। वे दीनों, असहायों को मारना चाहते हैं। वे सच्चे, सज्जनों को मारना चाहते हैं।

15किन्तु उनके धनुष चूर चूर हो जायेंगे। और उनकी तलवारें उनकेअपने ही हृदयों में उतरेंगी।

16थोड़े से भले लोग, दुर्जनों की भीड़ से भी उत्तम है।

17क्योंकि दुर्जनों को तो नष्ट किया जायेगा। किन्तु भले लोगों का यहोवा ध्यान रखता है।

18शुद्ध सज्जनों को यहोवा उनके जीवन भर बचाता है। उनका प्रतिफल सदा बना रहेगा।

19जब संकट होगा, सज्जन नष्ट नहीं होंगे। जब अकाल पड़ेगा, सज्जनों के पास खाने को भरपूर होगा।

20किन्तु बुरे लोग यहोवा के शत्रु हुआ करते हैं। सो उन बुरे जनों को नष्ट किया जाएगा, उनकी घाटियाँ सूख जाएंगी और जल जाएंगी। उनको तो पूरी तरह से मिटा दिया जायेगा।

21दुष्ट तो तुरंत ही धन उधार माँग लेता है, और उसको फिर कभी नहीं चुकाता। किन्तु एक सज्जन औरों को प्रसन्नता से देता रहता है।

22यदि कोई सज्जन किसी को आशीर्वाद दे, तो वे मनुष्य उस धरती को जिसे परमेश्वर ने देने का वचन दिया है, पाएंगे। किन्तु यदि वह शाप दे मनुष्यों को तो वे मनुष्य नाश हो जाएंगे।

23यहोवा, सैनिक की सावधानी से चलने में सहायता करता है। और वह उसको पतन से बचाता है।

24सैनिक यदि दौड़ कर शत्रु पर प्रहार करें, तो उसके हाथ को यहोवा सहारा देता है, और उसको गिरने से बचाता है।

25मैं युवक हुआ करता था पर अब मैं बूढ़ा हूँ। मैंने कभी यहोवा को सज्जनों को असहाय छोड़ते नहीं देखा। मैंने कभी सज्जनों की संतानों को भीख माँगते नहीं देखा।

26सज्जन सदा मुक्त भाव से दान देता है। सज्जनों के बालक वरदान हुआ करते हैं।

27यदि तू कुकर्मों से अपना मुख मोड़े, और यदि तू
अच्छे कामों को करता रहे, तो फिर तू सदा सर्वदा
जीवित रहेगा।
28यहोवा खरेपन से प्रेम करता है, वह अपने निज
भक्तों को असहाय नहीं छोड़ता। यहोवा अपने निज
भक्तों की सदा रक्षा करता है, और वह दुष्ट जन को
नष्ट कर देता है।
29सज्जन उस धरती को पायेंगे जिसे देने का परमेश्वर
ने वचन दिया है, वे उस में सदा सर्वदा निवास करेंगे।
30भला मनुष्य तो खरी सलाह देता है। उसका न्याय
सबके लिये निष्पक्ष होता है।
31सज्जन के हृदय (मन) में यहोवा के उपदेश बसे हैं।
वह सीधे मार्ग पर चलना नहीं छोड़ता।
32किन्तु दुर्जन सज्जन को दुःख पहुँचाने का रास्ता
ढूँढता रहता है, और दुर्जन सज्जन को मारने का यत्न
करते हैं।
33किन्तु यहोवा दुर्जनों को मुक्त नहीं छोड़ेगा। वह
सज्जन को अपराधी नहीं ठहरने देगा।
34यहोवा की सहायता की बाट जोहते रहो। यहोवा
का अनुसरण करते रहो। दुर्जन नष्ट होंगे। यहोवा तुझको
महत्त्वपूर्ण बनायेगा। तू वह धरती पाएगा जिसे देने का
यहोवा ने वचन दिया है।
35मैंने दुष्ट को बलशाली देखा है। मैंने उसे मजबूत
और स्वस्थ वृक्ष की तरह शक्तिशाली देखा।
36किन्तु वे फिर मिट गए। मेरे ढूँढने पर उनका पता
तक नहीं मिला।
37सच्चे और खरे बनो, क्योंकि इसी से शांति मिलती
है।
38किन्तु जो लोग व्यवस्था नियम तोड़ते हैं नष्ट किये
जायेंगे।
39यहोवा नेक मनुष्यों की रक्षा करता है। सज्जनों पर
जब विपत्ति पड़ती है तब यहोवा उनकी शक्ति बन जाता
है।
40यहोवा नेक जनों को सहारा देता है, और उनकी
रक्षा करता है। सज्जन यहोवा की शरण में आते हैं और
यहोवा उनको दुर्जनों से बचा लेता है।

भजन 38

1हे यहोवा, क्रोध में मेरी आलोचना मत कर।
मुझको अनुशासित करते समय मुझ पर क्रोधित मत
हो।
2हे यहोवा, तूने मुझे चोट दिया है। तेरे बाण मुझमें
गहरे उतरे हैं।
3तूने मुझे दण्डित किया और मेरी सम्पूर्ण काया दुःख
रही है, मैंने पाप किये और तूने मुझे दण्ड दिया। इसलिए
मेरी हड्डी दुःख रही है।
4मैं बुरे काम करने का अपराधी हूँ, और वह
अपराध एक बड़े बोझे सा मेरे कन्धे पर चढ़ा है।
5मैं बना रहा मूर्ख, अब मेरे घाव दुर्गन्धिपूर्ण रिसते हैं
और वे सड़ रहे हैं।
6मैं झुका और दबा हुआ हूँ। मैं सारे दिन उदास रहता
हूँ।
7मुझको ज्वर चढ़ा है, और समूचे शरीर में वेदना
भर गई है।
8मैं पूरी तरह से दुर्बल हो गया हूँ। मैं कष्ट में हूँ
इसलिए मैं कराहता और विलाप करता हूँ।
9हे यहोवा, तूने मेरा कराहना सुन लिया। मेरी आहें
तो तुझसे छुपी नहीं।
10मुझको ताप चढ़ा है। मेरी शक्ति निचुड़ गयी है। मेरी
आँखों की ज्योति लगभग जाती रही।
11क्योंकि मैं रोगी हूँ, इसलिए मेरे मित्र और मेरे
पड़ोसी मुझसे मिलने नहीं आते। मेरे परिवार के लोग तो
मेरे पास तक नहीं फटकते।
12मेरे शत्रु मेरी निन्दा करते हैं। वे झूठी बातों और
प्रतिवादों को फैलाते रहते हैं। मेरे ही विषय में वे हरदम
बात चीत करते रहते हैं।
13किन्तु मैं बहरा बना कुछ नहीं सुनता हूँ। मैं गूँगा हो
गया, जो कुछ नहीं बोल सकता।
14मैं उस व्यक्ति सा बना हूँ, जो कुछ नहीं सुन सकता
कि लोग उसके विषय क्या कह रहे हैं। और मैं यह
तर्क नहीं दे सकता और सिद्ध नहीं कर सकता की मेरे
शत्रु अपराधी हैं।
15सो, हे यहोवा, मुझे तू ही बचा सकता है। मेरे
परमेश्वर और मेरे स्वामी मेरे शत्रुओं को तू ही सत्य
बता दे।

16यदि मैं कुछ भी न कहूँ, तो मेरे शत्रु मुझ पर हँसेंगे।
मुझे खिन्न देखकर वे कहने लगेंगे कि मैं अपने कुकर्मों
का फल भोग रहा हूँ।
17मैं जानता हूँ कि मैं अपने कुकर्मों के लिए पापी हूँ।
मैं अपनी पीड़ा को भूल नहीं सकता हूँ।
18हे यहोवा, मैंने तुझको अपने कुकर्म बता दिये। मैं
अपने पापों के लिए दुःखी हूँ।
19मेरे शत्रु जीवित और पूर्ण स्वस्थ हैं। उन्होंने
बहुत-बहुत झूठी बातें बोली हैं।
20मेरे शत्रु मेरे साथ बुरा व्यवहार करते हैं, जबकि
मैंने उनके लिये भला ही किया है। मैं बस भला करने
का जतन करता रहा, किन्तु वे सब लोग मेरे विरुद्ध हो
गये हैं।
21हे यहोवा, मुझको मत बिसरा! मेरे परमेश्वर, मुझसे
तू दूर मत रह!
22देर मत कर, आ और मेरी सुधि ले! हे मेरे परमेश्वर,
मुझको तू बचा ले!

भजन 39

संगीत निर्देशक को यदूतून के लिये दाऊद का एक पद।

1मैंने कहा, "जब तक ये दुष्ट मेरे सामने रहेंगे, तब तक मैं अपने कथन के प्रति सचेत रहूँगा। मैं अपने वाणी को पाप से दूर रखूँगा। और मैं अपने मुँह को बंद कर लूँगा।"

2सो इसलिए मैंने कुछ नहीं कहा। मैंने भला भी नहीं कहा! किन्तु मैं बहुत परेशान हुआ।

3मैं बहुत क्रोधित था। इस विषय में मैं जितना सोचता चला गया, उतना ही मेरा क्रोध बढ़ता चला गया। सो मैंने अपना मुख तनिक नहीं खोला।

4हे यहोवा, मुझको बता कि मेरे साथ क्या कुछ घटित होने वाला है? मुझे बता, मैं कब तक जीवित रहूँगा? मुझको जानने दे सचमुच मेरा जीवन कितना छोटा है।

5हे यहोवा, तूने मुझको बस एक क्षणिक जीवन दिया। तेरे लिये मेरा जीवन कुछ भी नहीं है। हर किसी का जीवन एक बादल सा है। कोई भी सदा नहीं जीता!

6वह जीवन जिसको हम लोग जीते हैं, वह झूठी छाया भर होता है। जीवन की सारी भाग दौड़ निरर्थक होती है। हम तो बस व्यर्थ ही चिन्ताएँ पालते हैं। धन दौलत वस्तुएँ हम जोड़ते रहते हैं, किन्तु नहीं जानते उन्हें कौन भोगेगा।

7सो, मेरे यहोवा, मैं क्या आशा रखूँ? तू ही बस मेरी आशा है!

8हे यहोवा, जो कुकर्म मैंने किये हैं, उनसे तू ही मुझको बचाएगा। तू मेरे संग किसी को भी किसी अविवेकी जन के संग जैसा व्यवहार नहीं करने देगा।

9मैं अपना मुँह नहीं खोलूँगा। मैं कुछ भी नहीं कहूँगा। यहोवा तूने वैसे किया जैसे करना चाहिए था।

10किन्तु परमेश्वर, मुझको दण्ड देना छोड़ दे। यदि तूने मुझको दण्ड देना नहीं छोड़ा, तो तू मेरा नाश करेगा!

11हे यहोवा, तू लोगों को उनके कुकर्मों का दण्ड देता है। और इस प्रकार जीवन की खरी राह लोगों को सिखाता है। हमारी काया जीर्ण शीर्ण हो जाती है। ऐसे उस कपड़े सी जिसे कीड़ा लगा हो। हमारा जीवन एक छोटे बादल जैसे देखते देखते विलीन हो जाती है।

12हे यहोवा, मेरी विनती सुन! मेरे उन शब्दों को सुन जो मैं तुझसे पुकार कर कहता हूँ। मेरे आँसुओं को देख। मैं बस राहगीर हूँ, तुझको साथ लिये इस जीवन के मार्ग से गुजरता हूँ। इस जीवन मार्ग पर मैं अपने पूर्वजों की तरह कुछ समय मात्र टिकता हूँ।

13हे यहोवा, मुझको अकेला छोड़ दे, मरने से पहले मुझे आनन्दित होने दे, थोड़े से समय बाद मैं जा चुका होऊँगा।

भजन 40

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद पुकारा मैंने यहोवा को।

1यहोवा को मैंने पुकारा। उसने मेरी सुनी। उसने मेरे रुदन को सुन लिया।

2यहोवा ने मुझे विनाश के गर्त से उबारा। उसने मुझे दलदली गर्त से उठाया, और उसने मुझे चट्टान पर बैठाया। उसने ही मेरे कदमों को टिकाया।

3यहोवा ने मेरे मुँह में एक नया गीत बसाया। परमेश्वर का एक स्तुति गीत। बहुतेरे लोग देखेंगे जो मेरे साथ घटा है। और फिर परमेश्वर की आराधना करेंगे। वे यहोवा का विश्वास करेंगे।

4यदि कोई जन यहोवा के भरोसे रहता है, तो वह मनुष्य सचमुच प्रसन्न होगा। और यदि कोई जन मूर्तियों और मिथ्या देवों की शरण में नहीं जायेगा, तो वह मनुष्य सचमुच प्रसन्न होगा।

5हमारे परमेश्वर यहोवा, तूने बहुतेरे अद्भुत कर्म किये हैं! हमारे लिये तेरे पास अद्भुत योजनाएँ हैं। कोई मनुष्य नहीं जो उसे गिन सके! मैं तेरे किये हुए कामों को बार बार बखानूँगा।

6हे यहोवा, तूने मुझको यह समझाया है: तू सचमुच कोई अन्नबलि और पशुबलि नहीं चाहता था। कोई होमबलि और पापबलि तुझे नहीं चाहिए।

7सो मैंने कहा, "देख मैं आ रहा हूँ! पुस्तक में मेरे विषय में यही लिखा है।"

8हे मेरे परमेश्वर, मैं वही करना चाहता हूँ जो तू चाहता है। मैंने मन में तेरी शिक्षाओं को बसा लिया।

9महासभा के मध्य मैं तेरी धार्मिकता का सुसन्देश सुनाऊँगा। यहोवा तू जानता है कि मैं अपने मुँह को बंद नहीं रखूँगा।

10हे यहोवा, मैं तेरे भले कर्मों को बखानूँगा। उन भले कर्मों को मैं रहस्य बनाकर मन में नहीं छिपाए रखूँगा। हे यहोवा, मैं लोगों को रक्षा के लिए तुझ पर आश्रित होने को कहूँगा। मैं महासभा में तेरी करुणा और तेरी सत्यता नहीं छिपाऊँगा।

11इसलिए हे यहोवा, तू अपनी दया मुझसे मत छिपा! तू अपनी करुणा और सच्चाई से मेरी रक्षा कर।

12मुझको दुष्ट लोगों ने घेर लिया, वे इतने अधिक हैं कि गिने नहीं जाते। मुझे मेरे पापों ने घेर लिया है, और मैं उनसे बच कर भाग नहीं पाता हूँ। मेरे पाप मेरे सिर के बालों से अधिक हैं। मेरा साहस मुझसे खो चुका है।

13हे यहोवा, मेरी ओर दौड़ और मेरी रक्षा कर! आ, देर मत कर, मुझे बचा ले!

14वे दुष्ट मनुष्य मुझे मारने का जतन करते हैं। हे यहोवा, उन्हें लज्जित कर और उनको निराश कर दे। वे मनुष्य मुझे दुःख पहुँचाना चाहते हैं। तू उन्हें अपमानित होकर भागने दे!

15वे दुष्ट जन मेरी हँसी उड़ाते हैं। उन्हें इतना लज्जित कर कि वे बोल तक न पायें!

16किन्तु वे मनुष्य जो तुझे खोजते हैं, आनन्दित हो। वे मनुष्य सदा यह कहते रहें, "यहोवा के गुण गाओ!" उन लोगों को तुझ ही से रक्षित होना भाता है।

17हे मेरे स्वामी, मैं तो बस दीन,असहाय व्यक्ति हूँ। मेरी रक्षा कर, तू मुझको बचा ले। हे मेरे परमेश्वर, अब अधिक देर मत कर!

भजन 41

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1दीन का सहायक बहुत पायेगा। ऐसे मनुष्य पर जब विपत्ति आती है, तब यहोवा उस को बचा लेगा।

2यहोवा उस जन की रक्षा करेगा और उसका जीवन बचायेगा। वह मनुष्य धरती पर बहुत वरदान पायेगा। परमेश्वर उसके शत्रुओं द्वारा उसका नाश नहीं होने देगा।

3जब मनुष्य रोगी होगा और बिस्तर में पड़ा होगा, उसे यहोवा शक्ति देगा। वह मनुष्य बिस्तर में चाहे रोगी पड़ा हो। किन्तु यहोवा उसको चँगा कर देगा!

4मैंने कहा, "यहोवा, मुझ पर दया कर। मैंने तेरे विरुद्ध पाप किये हैं, किन्तु मुझे और अच्छा कर।"

5मेरे शत्रु मेरे लिये अपशब्द कह रहे हैं, वे कह रहे हैं, "यह कब मरेगा और कब भुला दिया जायेगा?"

6कुछ लोग मेरे पास मिलने आते हैं। पर वे नहीं कहते जो सचमुच सोच रहे हैं। वे लोग मेरे विषय में कुछ पता लगाने आते और जब वे लौटते अफवाह फैलाते।

7मेरे शत्रु छिपे छिपे मेरी निन्दायें कर रहे हैं। वे मेरे विरुद्ध कुचक्र रच रहे हैं।

8वे कहा करते हैं, "उसने कोई बुरा कर्म किया है, इसी से उसको कोई बुरा रोग लगा है। मुझको आशा है वह कभी स्वस्थ नहीं होगा।

9मेरा परम मित्र मेरे संग खाता था। उस पर मुझको भरोसा था। किन्तु अब मेरा परम मित्र भी मेरे विरुद्ध हो गया है।

10सो हे यहोवा, मुझ पर कृपा कर और मुझ पर कृपालु हो। मुझको खड़ा कर कि मैं प्रतिशोध ले लूँ।

11हे यहोवा, यदि तू मेरे शत्रुओं को बुरा नहीं करने देगा, तो मैं समझूँगा कि तूने मुझे अपना लिया है।

12मैं निर्दोष था और तूने मेरी सहायता की। तूने मुझे खड़ा किया और मुझे तेरी सेवा करने दिया।

13इस्राएल का परमेश्वर, यहोवा धन्य है! वह सदा था, और वह सदा रहेगा। आमीन, आमीन!

दूसरा भाग

भजन 42

संगीत निर्देशक के लिये कोरह परिवार का एक भक्ति गीत।

1जैसे एक हिरण शीतल सरिता का जल पीने को प्यासा है। वैसे ही, हे परमेश्वर, मेरा प्राण तेरे लिये
प्यासा है। 2मेरा प्राण जीवित परमेश्वर का प्यासा है। मैं उससे मिलने के लिये कब आ सकता हूँ?

3रात दिन मेरे आँसू ही मेरा खाना और पीना है! हर समय मेरे शत्रु कहते हैं, "तेरा परमेश्वर कहाँ है?"

4सो मुझे इन सब बातों को याद करने दे। मुझे अपना हृदय बाहर उँडेलने दे। मुझे याद है मैं परमेश्वर के मन्दिर में चला और भीड़ की अगुवाई करता था। मुझे याद है वह लोगों के साथ आनन्द भरे प्रशंसा गीत गाना और वह उत्सव मनाना।

5मैं इतना दुःखी क्यों हूँ? मैं इतना व्याकुल क्यों हूँ? मुझे परमेश्वर के सहारे की बाट जोहनी चाहिए। मुझे अब भी उसकी स्तुति का अवसर मिलेगा। वह मुझे बचाएगा!

6हे मेरे परमेश्वर, मैं अति दुःखी हूँ। इसलिए मैंने तुझे यरदन की घाटी में, हेर्मोन के पहाड़ी पर और मिसगार के पर्वत पर से पुकारा।

7जैसे सागर से लहरे उठ उठ कर आती हैं। मैं सागर तरंगों का कोलाहल करता शब्द सुनता हूँ, वैसे ही मुझको विपत्तियाँ बारम्बार घेरी रहीं। हे यहोवा, तेरी लहरों ने मुझको दबोच रखा है। तेरी तरंगों ने मुझको ढाप लिया है!

8यदि हर दिन यहोवा सच्चा प्रेम दिखाएगा। फिर तो मैं रात में उसका गीत गा पाऊँगा। मैं अपने सजीव परमेश्वर की प्रार्थना कर सकूँगा।

9मैं अपने परमेश्वर, अपनी चट्टान से बातें करता हूँ। मैं कहा करता हूँ, "हे यहोवा, तूने मुझको क्यों बिसरा दिया? हे यहोवा, तूने मुझको यह क्यों नहीं दिखाया कि मैं अपने शत्रुओं से बच कैसे निकलूँ?"

10मेरे शत्रुओं ने मुझे मारने का जतन किया। वे मुझ पर निज घृणा दिखाते हैं जब वे कहते हैं, "तेरा परमेश्वर कहाँ है?"

11मैं इतना दुःखी क्यों हूँ? मैं क्यों इतना व्याकुल हूँ? मुझे परमेश्वर के सहारे की बाट जोहनी चाहिए। मुझे अब भी उसकी स्तुति करने का अवसर मिलेगा। वह मुझे बचाएगा!

भजन 43

1हे परमेश्वर, एक मनुष्य है जो तेरी अनुसरण नहीं करता। वह मनुष्य दुष्ट है और झूठ बोलता है। हे परमेश्वर, मेरा मुकदमा लड़ और यह निर्णय कर कि कौन सत्य है। मुझे उस मनुष्य से बचा ले।

2हे परमेश्वर, तू ही मेरा शरणस्थल है! मुझको तूने
क्यों बिसरा दिया? तूने मुझको यह क्यों नहीं दिखाया
कि मै अपने शत्रुओं से कैसे बच निकलूँ?
3हे परमेश्वर, तू अपनी ज्योति और अपने सत्य को
मुझ पर प्रकाशित होने दे। मुझको तेरी ज्योति और
सत्य राह दिखायेंगे। वे मुझे तेरे पवित्र पर्वत और अपने
घर को ले चलेंगे।
4मैं तो परमेश्वर की वेदी के पास जाऊँगा। परमेश्वर
मैं तेरे पास आऊँगा। वह मुझे आनन्दित करता है। हे
परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, मैं वीणा पर तेरी स्तुति
करुँगा।
5मैं इतना दुःखी क्यों हूँ? मैं क्यों इतना व्याकुल हूँ?
मुझे परमेश्वर के सहारे की बाट जोहनी चाहिए। मुझे
अब भी उसकी स्तुति का अवसर मिलेगा। वह मुझे
बचाएगा!

भजन 44

संगीत निर्देशक के लिए कोरह परिवार का एक भक्ति गीत।

1हे परमेश्वर, हमने तेरे विषय में सुना है। हमारे
पूर्वजों ने उनके दिनों में जो काम तूने किये थे उनके
बारे में हमें बताया। उन्होंने पुरातन काल में जो तूने
किये हैं, उन्हें हमें बताया। 2हे परमेश्वर, तूने यह धरती
अपनी महाशक्ति से पराए लोगों से ली और हमको
दिया। उन विदेशी लोगों को तूने कुचल दिया, और
उनको यह धरती छोड़ देने का दबाव डाला।
3हमारे पूर्वजों ने यह धरती अपने तलवारों के बल
नहीं ली थी। अपने भुजदण्डों के बल पर विजयी नहीं
हुए। यह इसलिए हुआ था क्योंकि तू हमारे पूर्वजों के
साथ था। हे परमेश्वर, तेरी महान शक्ति ने हमारे पूर्वजों
की रक्षा की। क्योंकि तू उनसे प्रेम किया करता था!
4हे मेरे परमेश्वर, तू मेरा राजा है। तेरे आदेशों से
याकूब के लोगों को विजय मिली।
5हे मेरे परमेश्वर, तेरी सहायता से, हमने तेरा नाम
लेकर अपने शत्रुओं को धकेल दिया और हमने अपने
शत्रु को कुचल दिया।
6मुझे अपने धनुष और बाणों पर भरोसा नहीं। मेरी
तलवार मुझे बचा नहीं सकती।
7हे परमेश्वर, तूने ही हमें मिस्र से बचाया। तूने हमारे
शत्रुओं को लज्जित किया।
8हर दिन हम परमेश्वर के गुण गाएंगे! हम तेरे नाम
की स्तुति सदा करेंगे!
9किन्तु, हे यहोवा, तूने हमें क्यों बिसरा दिया? तूने
हमको गहन लज्जा में डाला। हमारे साथ तू युद्ध में नहीं
आया।
10तूने हमें हमारे शत्रुओं को पीछे धकेलने दिया।
हमारे शत्रु हमारे धन वैभव छीन ले गये।
11तूने हमें उस भेड़ की तरह छोड़ा जो भोजन के
समान खाने को होती है। तूने हमें राष्ट्रों के बीच बिखराया।
12हे परमेश्वर, तूने अपने जनों को यूँ ही बेच दिया,
और उनके मूल्य पर भाव ताव भी नहीं किया।
13तूने हमें हमारे पड़ोसियों में हँसी का पात्र बनाया।
हमारे पड़ोसी हमारा उपहास करते हैं, और हमारी
मजाक बनाते हैं।
14लोग हमारी भी कथा उपहास कथाओं में कहते हैं।
यहाँ तक कि वे लोग जिनका अपना कोई राष्ट्र नहीं है,
अपना सिर हिला कर हमारा उपहास करते हैं।
15मैं लज्जा में डूबा हूँ। मैं सारे दिन भर निज लज्जा
देखता रहता हूँ।
16मेरे शत्रु ने मुझे लज्जित किया है। मेरी हँसी उड़ाते
हुए मेरा शत्रु, अपना प्रतिशोध चाहता है।
17हे परमेश्वर, हमने तुझको बिसराया नहीं। फिर भी
तू हमारे साथ ऐसा करता है। हमने जब अपने वाचा पर
तेरे साथ हस्ताक्षर की थी, झूठ नहीं बोला था!
18हे परमेश्वर, हमने तो तुझसे मुख नहीं मोड़ा। और
न ही तेरा अनुसरण करना छोड़ा है।
19किन्तु, हे यहोवा, तूने हमें इस स्थान पर ऐसे ठूँस
दिया है जहाँ गीदड़ रहते हैं। तूने हमें इस स्थान में जो
मृत्यु की तरह अंधेरा है मूँद दिया है।
20क्या हम अपने परमेश्वर का नाम भूले? क्या हम
विदेशी देवों के आगे झुके? नहीं!
21निश्चय ही, परमेश्वर इन बातों को जानता है। वह
तो हमारे गहरे रहस्य तक जानता है।
22हे परमेश्वर, हम तेरे लिये प्रतिदिन मारे जा रहे हैं!
हम उन भेड़ों जैसे बने हैं जो वध के लिये ले जायी जा
रहीं हैं।
23मेरे स्वामी, उठ! नींद में क्यों पड़े हो? उठो! हमें
सदा के लिए मत त्याग!
24हे परमेश्वर, तू हमसे क्यों छिपता है? क्या तू हमारे
दुःख और वेदनाओं को भूल गया है?
25हमको धूल में पटक दिया गया है। हम औंधे मुँह
धरती पर पड़े हुए हैं।
26हे परमेश्वर, उठ और हमको बचा ले! अपने
नित्य प्रेम के कारण हमारी रक्षा कर!

भजन 45

संगीत निर्देशक के लिए शोकन्नीभ की संगत पर कोरह परिवार का एक कलात्मक प्रेम प्रगीत।

1सुन्दर शब्द मेरे मन में भर जाते हैं, जब मैं राजा के
लिये बातें लिखता हूँ। मेरे जीभ पर शब्द ऐसे आने लगते
हैं जैसे वे किसी कुशल लेखक की लेखनी से निकल
रहे हैं।
2तू किसी भी और से सुन्दर है! तू अति उत्तम वक्ता
है। सो तुझे परमेश्वर आशीष देगा!

3तू तलवार धारण कर। तू महिमित वस्त्र धारण कर।
4तू अद्‌भुत दिखता है! जा, धर्म और न्याय का युद्ध
जीत। अद्‌भुत कर्म करने के लिये शक्तिपूर्ण दाहिनी
भुजा का प्रयोग कर।
5तेरे तीर तत्पर हैं। तू बहुतेरों को पराजित करेगा। तू
अपने शत्रुओं पर शासन करेगा।
6हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन अमर है! तेरा धर्म राजदण्ड
है।
7तू नेकी से प्यार और बैर से द्वेष करता है। सो
परमेश्वर तेरे परमेश्वर ने तेरे साथियों के ऊपर तुझे
राजा चुना है।
8तेरे वस्त्र महक रहे हैं जैसे गंध रस, अगर और तेज
पात से मधुर गंध आ रही हो। हाथी दाँत जड़ित राज
महलों से तुझे आनन्दित करने को मधुर संगीत की
झँकारे बिखरती हैं।
9तेरी महिलायें राजाओं की कन्याएँ हैं। तेरी महारानी
ओपीर के सोने से बने मुकुट पहने तेरे दाहिनी ओर
विराजती हैं।
10हे राजपुत्री, मेरी बात को सुन। ध्यानपूर्वक सुन,
तब तू मेरी बात को समझेगी। तू अपने निज लोगों और
अपने पिता के घराने को भूल जा।
11राजा तेरे सौन्दर्य पर मोहित है। यह तेरा नया स्वामी
होगा। तुझको इसका सम्मान करना है।
12सूर नगर के लोग तेरे लिये उपहार लायेंगे। और
धनी मानी तुझसे मिलना चाहेंगे।
13वह राजकन्या उस मूल्यवान रत्न सी है जिसे सुन्दर
मूल्यवान सुवर्ण में जड़ा गया हो।
14उसे रमणीय वस्त्र धारण किये लाया गया है। उसकी
सखियों को भी जो उसके पीछे हैं राजा के सामने लाया
गया।
15वे यहाँ उल्लास में आयी हैं। वे आनन्द में मगन
होकर राजमहल में प्रवेश करेंगी।
16राजा, तेरे बाद तेरे पुत्र शासक होंगे। तू उन्हें समूचे
धरती का राजा बनाएगा।
17मैं तेरे नाम का प्रचार युग युग तक करुँगा। तू
प्रसिद्ध होगा, तेरे यश गीतों को लोग सदा सर्वदा गाते
रहेंगे!

भजन 46

अलामोथ की संगत पर संगीत निर्देशक के लिये कोरह परिवार का एक पद।

1परमेश्वर हमारे पराक्रम का भण्डार है। संकट के
समय हम उससे शरण पा सकते हैं।
2इसलिए जब धरती काँपती है और जब पर्वत समुद्र
में गिरने लगता है, हमको भय नहीं लगता।
3हम नहीं डरते जब सागर उफनते और काले हो
जाते हैं, और धरती और पर्वत काँपने लगते हैं।
4वहाँ एक नदी है, जो परम परमेश्वर के नगरी को
अपनी धाराओं से प्रसन्नता से भर देती है।
5उस नगर में परमेश्वर है, इसी से उसका कभी
पतन नहीं होगा। परमेश्वर उसकी सहायता भोर से
पहले ही करेगा।
6यहोवा के गरजते ही, राष्ट्र भय से काँप उठेंगे।
उनकी राजधानियों का पतन हो जाता है और धरती
चरमरा उठती हैं।
7सर्वशक्तिमान यहोवा हमारे साथ है। याकूब का
परमेश्वर हमारा शरणस्थल है।
8आओ उन शक्तिपूर्ण कर्मों को देखो जिन्हें यहोवा
करता है। वे काम ही धरती पर यहोवा को प्रसिद्ध
करते हैं।
9यहोवा धरती पर कहीं भी हो रहे युद्धों को रोक
सकता है। वे सैनिक के धनुषों को तोड़ सकता है, और
उनके भालों को चकनाचूर कर सकता है, रथों को
वह जलाकर भस्म कर सकता है।
10परमेश्वर कहता है, "शांत बनो और जानो कि मैं
ही परमेश्वर हूँ! राष्ट्रों के बीच मेरी प्रशंसा होगी। धरती
पर मेरी महिमा फैल जायेगी!"
11यहोवा सर्वशक्तिमान हमारे साथ है। याकूब का
परमेश्वर हमारा शरणस्थल है।

भजन 47

संगीत निर्देशक के लिए कोरह परिवार का एक भक्ति गीत।

1हे सभी लोगों, तालियाँ बजाओ, और आनन्द में भर
कर परमेश्वर का जय जयकार करो!
2महिमा महिम यहोवा भय और विस्मय से भरा है।
सारी धरती का वही सम्राट है।
3उसने आदेश दिया और हमने राष्ट्रों को पराजित
किया और उन्हें जीत लिया।
4हमारी धरती उसने हमारे लिये चुनी है। उसने याकूब
के लिये अद्‌भुत धरती चुनी। याकूब वह व्यक्ति है जिसे
उसने प्रेम किया।
5यहोवा परमेश्वर तुरही की ध्वनि और युद्ध की
नरसिंगे के स्वर के साथ ऊपर उठता है।
6परमेश्वर के गुणगान करते हुए गुण गाओ। हमारे
राजा के प्रशंसा गीत गाओ। और उसके यशगीत गाओ।
7परमेश्वर सारी धरती का राजा है। उसके प्रशंसा
गीत गाओ।
8परमेश्वर अपने पवित्र सिंहासन पर विराजता है।
परमेश्वर सभी राष्ट्रों पर शासन करता है।
9राष्ट्रों के नेता, इब्राहीम के परमेश्वर के लोगों के
साथ मिलते हैं। सभी राष्ट्रों के नेता, परमेश्वर के हैं।
परमेश्वर उन सब के ऊपर है।

भजन 48

एक भक्ति गीतः कोरह परिवार का एक पद।

1यहोवा महान है। वह परमेश्वर के नगर, उसके
पवित्र नगर में प्रशंसनीय है।
2परमेश्वर का पवित्र नगर एक सुन्दर नगर है।
धरती पर वह नगर सर्वाधिक प्रसन्न है। सिय्योन पर्वत
सबसे अधिक ऊँचा और सर्वाधिक पवित्र है। यह नगर
महा सम्राट का है।
3उस नगर के महलों में परमेश्वर को सुरक्षास्थल
कहा जाता है।
4एकबार कुछ राजा आपस में आ मिले और उन्होंने
इस नगर पर आक्रमण करने का कुचक्र रचा। सभी
साथ मिलकर चढ़ाई के लिये आगे बढ़े।
5राजा को देखकर वे सभी चकित हुए। उनमें भगदड़
मची और वे सभी भाग गए।
6उन्हें भय ने दबोचा, वे भय से काँप उठे!
7प्रचण्ड पूर्वी पवन ने उनके जलयानों को चकनाचूर
कर दिया।
8हाँ, हमने उन राजाओं की कहानी सुनी है और
हमने तो इसको सर्वशक्तिमान यहोवा के नगर में हमारे
परमेश्वर के नगर में घटते हुए भी देखा। यहोवा उस
नगर को सुदृढ़ बनाएगा।
9हे परमेश्वर, हम तेरे मन्दिर में तेरी प्रेमपूर्ण करुणा
पर मनन करते हैं।
10हे परमेश्वर, तू प्रसिद्ध है, लोग धरती पर हर कहीं
तेरी स्तुति करते हैं। हर मनुष्य जानता है कि तू कितना
भला है।
11हे परमेश्वर, तेरे उचित न्याय के कारण सिय्योन
पर्वत हर्षित है। और यहूदा की नगरियाँ आनन्द मना
रही हैं।
12सिय्योन की परिक्रमा करो। नगरी के दर्शन करो।
तुम बुर्जो (मीनारों) को गिनो।
13ऊँचे प्राचीरों को देखो। सिय्योन के महलों को
सराहो, तभी तुम आने वाली पीढ़ी से इसका बखान कर
सकोगे।
14सचमुच हमारा परमेश्वर सदा सर्वदा परमेश्वर रहेगा।
वह हमको सदा ही राह दिखाएगा। उसका कभी भी
अंत नहीं होगा।

भजन 49

कोरह की संतानो का संगीत निर्देशक के लिए एक पद।

1विभिन्न देशों के निवासियों, यह सुनो। धरती के
वासियों यह सुनो।
2सुनो अरे दीन जनो, अरे धनिकों सुनो।
3मैं तुम्हें ज्ञान और विवेक की बातें बताता हूँ।
4मैंने कथाएँ सुनी है, मैं अब वे कथाएँ तुमको निज
वीणा पर सुनाऊँगा।
5ऐसा कोई कारण नहीं जो मैं किसी भी विनाश से
डर जाऊँ। यदि लोग मुझे घेरे और फँदा फैलाये, मुझे
डरने का कोई कारण नहीं।
6वे लोग मूर्ख हैं जिन्हें अपने निज बल और अपने
धन पर भरोसा है।
7तुझे कोई मनुष्य मित्र नहीं बचा सकता। जो घटा है
उसे तू परमेश्वर को देकर बदलवा नहीं सकता।
8किसी मनुष्य के पास इतना धन नहीं होगा कि
जिससे वह स्वयं अपना निज जीवन मोल ले सके।
9किसी मनुष्य के पास इतना धन नहीं हो सकता कि
वह अपना शरीर कब्र में सड़ने से बचा सके।
10देखो, बुद्धिमान जन, बुद्धिहीन जन और जड़मति
जन एक जैसे मर जाते हैं, और उनका सारा धन दूसरों
के हाथ में चला जाता है।
11कब्र सदा सर्वदा के लिए हर किसी का घर बनेगा,
इसका कोई अर्थ नहीं कि वे कितनी धरती के स्वामी
रहे थे।
12धनी पुरुष मूर्ख जनों से भिन्न नहीं होते। सभी लोग
पशुओं कि तरह मर जाते हैं।
13लोगों कि वास्तविक मूर्खता यह होती है कि वे
अपनी भूख को निर्णायक बनाते हैं, कि उनको क्या
करना चाहिए।
14सभी लोग भेड़ जैसे हैं। कब्र उनके लिये बाडा बन
जायेगी। मृत्यु उनका चरवाहा बनेगी। उनकी काया
क्षीण हो जायेंगी और वे कब्र में सड़ गल जायेंगे।
15किन्तु परमेश्वर मेरा मूल्य चुकाएगा और मेरा
जीवन कब्र की शक्ति से बचाएगा। वह मुझको बचाएगा।
16धनवानों से मत डरो कि वे धनी हैं। लोगों से उनके
वैभवपूर्ण घरों को देखकर मत डरना।
17वे लोग जब मरेंगे कुछ भी साथ न ले जाएंगे। उन
सुन्दर वस्तुओं में से कुछ भी न ले जा पाएंगे।
18लोगों को चाहिए कि वे जब तक जीवित रहें परमेश्वर
की स्तुति करें। जब परमेश्वर उनके संग भलाई करे,
तो लोगों को उसकी स्तुति करनी चाहिए।
19मनुष्यों के लिए एक ऐसा समय आएगा जब वे
अपने पूर्वजों के संग मिल जायेंगे। फिर वे कभी दिन
का प्रकाश नहीं देख पाएंगे।
20धनी पुरुष मूर्ख जनों से भिन्न नहीं होते। सभी लोग
पशु समान मरते हैं।

भजन 50

आसाप के भक्ति गीतों में से एक पद।

1ईश्वरों के परमेश्वर यहोवा ने कहा है। पूर्व से
पश्चिम तक धरती के सब मनुष्यों को उसने
बुलाया।
2सिय्योन से परमेश्वर की सुन्दरता प्रकाशित हो रही
है।

3हमारा परमेश्वर आ रहा है, और वह चुप नहीं रहेगा। उसके सामने जलती ज्वाला है, उसको एक बड़ा तूफ़ान घेरे हुए है।

4हमारा परमेश्वर आकाश और धरती को पुकार कर अपने निज लोगों को न्याय करने बुलाता है।

5"मेरे अनुयायियों, मेरे पास जुटों। मेरे उपासकों आओ हमने आपस में एक वाचा किया है।"

6परमेश्वर न्यायाधीश है आकाश उसकी धार्मिकता को घोषित करता है।

7परमेश्वर कहता है, "सुनों मेरे भक्तों! इस्राएल के लोगों, मैं तुम्हारे विरुद्ध साक्षी दूँगा। मैं परमेश्वर हूँ, तुम्हारा परमेश्वर।

8मुझको तुम्हारी बलियों से शिकायत नहीं। इस्राएल के लोगों, तुम सदा होमबलियाँ मुझे चढ़ाते रहो। तुम मुझे हर दिन अर्पित करो।

9मैं तेरे घर से कोई बैल नहीं लूँगा। मैं तेरे पशु गृहों से बकरें नहीं लूँगा।

10मुझे तुम्हारे उन पशुओं कि आवश्यकता नहीं। मैं ही तो वन के सभी पशुओं का स्वामी हूँ। हजारों पहाड़ों पर जो पशु विचरते हैं, उन सब का मैं स्वामी हूँ।

11जिन पक्षियों का बसेरा उच्चतम पहाड़ पर है, उन सब को मैं जानता हूँ। अचलों पर जो भी सचल है वे सब मेरे ही हैं।

12मैं भूखा नहीं हूँ! यदि मैं भूखा होता, तो भी तुमसे मुझे भोजन नहीं माँगना पड़ता। मैं जगत का स्वामी हूँ और उसका भी हर वस्तु जो इस जगत में है।

13मैं बैलों का माँस खाया नहीं करता हूँ। बकरों का रक्त नहीं पीता।"

14सचमुच जिस बलि की परमेश्वर को अपेक्षा है, वह तुम्हारी स्तुति है। तुम्हारी मनौतियाँ उसकी सेवा की हैं। सो परमेश्वर को निज धन्यवाद की भेंटें चढ़ाओ। उस सर्वोच्च से जो मनौतियाँ की हैं उसे पूरा करो।

15"इस्राएल के लोगों, जब तुम पर विपदा पड़े, मेरी प्रार्थना करो! मैं तुम्हें सहारा दूँगा। तब तुम मेरा मान कर सकोगे।"

16दुष्ट लोगों से परमेश्वर कहता है, "तुम मेरी व्यवस्था की बातें करते हो, तुम मेरे वाचा की भी बातें करते हो।

17फिर जब मैं तुमको सुधारता हूँ, तब भला तुम मुझसे बैर क्यों रखते हो। तुम उन बातों कि उपेक्षा क्यों करते हो जिन्हें मैं तुम्हें बताता हूँ?

18तुम चोर को देखकर उससे मिलने के लिए दौड़ जाते हो, तुम उनके साथ बिस्तर ामें कूद पड़ते हो जो व्यभिचार कर रहे हैं।

19तुम बुरे वचन और झूठ बोलते हो।

20तुम दूसरे लोगों कि यहाँ तक कि अपने भाइयों की निन्दा करते हो।

21तुम बुरे कर्म करते हो, और तुम सोचते हो मुझे चुप रहना चाहिए। तुम कुछ नहीं कहते हो और सोचते हो कि मुझे चुप रहना चाहिए। देखो, मैं चुप नहीं रहूँगा, तुझे स्पष्ट कर दूँगा। तेरे ही मुख पर तेरे दोष बताऊँगा।

22तुम लोग परमेश्वर को भूल गये हो। इसके पहले कि मैं तुम्हें चीर दूँ, अच्छी तरह समझ लो। जब वैसा होगा कोई भी व्यक्ति तुम्हें बचा नहीं पाएगा!

23यदि कोई व्यक्ति मेरी स्तुति और धन्यवादों की बलि चढ़ाये, तो वह सचमुच मेरा मान करेगा। यदि कोई व्यक्ति अपना जीवन बदल डाले तो उसे मैं परमेश्वर की शक्ति दिखाऊँगा जो बचाती है।"

भजन 51

संगीत निर्देशक के लिए दाऊद का एक पद: यह पद उस समय का है जब बतशेबा के साथ दाऊद द्वारा पाप करने के बाद नातान नबी दाऊद के पास गया था।

1हे परमेश्वर, अपनी विशाल प्रेमपूर्ण अपनी करुणा से मुझ पर दया कर। मेरे सभी पापों को तू मिटा दे।

2हे परमेश्वर, मेरे अपराध मुझसे दूर कर। मेरे पाप धो डाल, और फिर से तू मुझको स्वच्छ बना दे।

3मैं जानता हूँ, जो पाप मैंने किये हैं। मैं अपने पापों को सदा अपने सामने देखता हूँ।

4हे परमेश्वर, मैंने वही काम किये जिनको तूने बुरा कहा। तू वही है, जिसके विरुद्ध मैंने पाप किये। मैं स्वीकार करता हूँ इन बातों को, ताकि लोग जान जाये कि मैं पापी हूँ और तू न्यायपूर्ण है, तथा तेरे निर्णय निष्पक्ष होते हैं।

5मैं पाप से जन्मा, मेरी माता ने मुझको पाप से गर्भ में धारण किया।

6हे परमेश्वर, तू चाहता है, हम विश्वासी बनें। और मैं निर्भय हो जाऊँ। इसलिए तू मुझको सच्चे विवेक से रहस्यों की शिक्षा दे।

7तू मुझे विधि विधान के साथ, जूफ़ा के पौधे का प्रयोग कर के पवित्र कर। तब तक मुझे तू धो, जब तक मैं हिम से अधिक उज्जवल न हो जाऊँ।

8मुझे प्रसन्न बना दे। बता दे मुझे कि कैसे प्रसन्न बनूँ? मेरी वे हड्डियाँ जो तूने तोड़ी, फिर आनन्द से भर जायें।

9मेरे पापों को मत देख। उन सबको धो डाल।

10परमेश्वर, तू मेरा मन पवित्र कर दे। मेरी आत्मा को फिर सुदृढ़ कर दे।

11अपनी पवित्र आत्मा को मुझसे मत दूर हटा, और मुझसे मत छीन।

12वह उल्लास जो तुझसे आता है, मुझमें भर जायें। मेरा चित्त अडिग और तत्पर कर सुरक्षित होने को और तेरा आदेश मानने को।

13मैं पापियों को तेरी जीवन विधि सिखाऊँगा, जिससे वे लौट कर तेरे पास आयेंगे।

14हे परमेश्वर, तू मुझे हत्या का दोषी कभी मत बनने दें। मेरे परमेश्वर, मेरे उद्धारकर्ता, मुझे गाने दे कि तू कितना उत्तम है?

15हे मेरे स्वामी, मुझे मेरा मुँह खोलने दे कि मैं तेरे प्रशंसा का गीत गाऊँ।

16जो बलियाँ तुझे नहीं भाती सो मुझे चढ़ानी नहीं है। वे बलियाँ तुझे वाँछित तक नहीं हैं।

17हे परमेश्वर, मेरी टूटी आत्मा ही तेरे लिए मेरी बलि है। हे परमेश्वर, तू एक कुचले और टूटे हृदय से कभी मुख नहीं मोड़ेगा।

18हे परमेश्वर, सिय्योन के प्रति दयालु होकर, उत्तम बन। तू यरुशलेम के नगर के परकोटे का निर्माण कर।

19तू उत्तम बलियों का और सम्पूर्ण होमबलियों का आनन्द लेगा। लोग फिर से तेरी वेदी पर बैलों की बलियाँ चढ़ायेंगे।

भजन 52

संगीत निर्देशक के लिये उस समय का एक भक्ति गीत जब एदोमी दोएग ने शाऊल के पास आकर कहा था, दाऊद अबीमेलेक के घर में है।

1अरे ओ, बड़े व्यक्ति! तू क्यों शेखी बघारता है जिन बुरे कामों को तू करता है? तू परमेश्वर का अपमान करता है। तू बुरे काम करने को दिन भर षड़यन्त्र रचता है।

2तू मूढ़ता भरी कुचक्र रचता रहता है। तेरी जीभ वैसी ही भयानक है, जैसा तेज उस्तरा होता है। क्यों? क्योंकि तेरी जीभ झूठ बोलती रहती है!

3तुझको नेकी से अधिक बदी भाती है। तुझको झूठ का बोलना, सत्य के बोलने से अधिक भाता है।

4तुझको और तेरी झूठी जीभ को, लोगों का हानि पहुँचाना अच्छा लगता है।

5तुझे परमेश्वर सदा के लिए नष्ट कर देगा! वह तुझ पर झपटेगा और तुझे पकड़कर घर से बाहर करेगा। वह तुझे मारेगा और तेरा कोई भी वंशज नहीं रहेगा।

6सज्जन इसे देखेंगे और परमेश्वर से डरना और उसका आदर करना सीखेंगे। वे तुझपर, जो घटा उस पर हँसेंगे और कहेंगे,

7"देखो उस व्यक्ति के साथ क्या हुआ जो यहोवा पर निर्भर नहीं था। उस व्यक्ति ने सोचा कि उसका धन और झूठ इसकी रक्षा करेंगे।"

8किन्तु मैं परमेश्वर के मन्दिर में एक हरे जैतून के वृक्ष सा हूँ। परमेश्वर की करुणा का मुझको सदा-सदा के लिए भरोसा है।

9हे परमेश्वर, मैं उन कामों के लिए जिनको तूने किया, स्तुति करता हूँ। मैं तेरे अन्य भक्तों के साथ, तेरे भले नाम पर भरोसा करुँगा!

भजन 53

महलत राग पर संगीत निर्देशक के लिए दाऊद का एक भक्ति गीत।

1बस एक मूर्ख ही ऐसे सोचता है कि परमेश्वर नहीं होता। ऐसे मनुष्य भ्रष्ट, दुष्ट, द्वेषपूर्ण होते हैं। वे कोई अच्छा काम नहीं करते।

2सचमुच, आकाश में एक ऐसा परमेश्वर है जो हमें देखता और झाँकता रहता है। यह देखने को कि क्या यहाँ पर कोई विवेकपूर्ण व्यक्ति और विवेकपूर्ण जन परमेश्वर को खोजते रहते हैं?

3किन्तु सभी लोग परमेश्वर से भटके हैं। हर व्यक्ति बुरा है। कोई भी व्यक्ति कोई अच्छा कर्म नहीं करता, एक भी नहीं।

4परमेश्वर कहता है, "निश्चय ही, वे दुष्ट सत्य को जानते हैं। किन्तु वे मेरी प्रार्थना नहीं करते। वे दुष्ट लोग मेरे भक्तों को ऐसे नष्ट करने को तत्पर हैं, जैसे वे निज खाना खाने को तत्पर रहते हैं।"

5किन्तु वे दुष्ट लोग इतने भयभीत होंगे, जितने वे दुष्ट लोग पहले कभी भयभीत नहीं हुए! इसलिए परमेश्वर ने इस्राएल के उन दुष्ट शत्रु लोगों को त्यागा है। परमेश्वर के भक्त उनको हरायेंगे और परमेश्वर उन दुष्टों की हड्डियों को बिखेर देगा।

6इस्राएल को, सिय्योन में कौन विजयी बनायेगा? हाँ, परमेश्वर उनकी विजय को पाने में सहायता करेगा। परमेश्वर अपने लोगों को बन्धुआई से वापस लायेगा, याकूब आनन्द मनायेगा। इस्राएल अति प्रसन्न होगा।

भजन 54

तार वाले वाद्यों पर संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का समय का एक भक्ति गीत जब जीपियों में जाकर शाऊल से कहा था, हम सोचते हैं दाऊद हमारे लोगों के बीच छिपा है।

1हे परमेश्वर, तू अपनी निज शक्ति को प्रयोग कर के काम में ले और मुझे मुक्त करने को बचा ले।

2हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन। मैं जो कहता हूँ सुन।

3अजनबी लोग मेरे विरुद्ध उठ खड़े हुए और बलशाली लोग मुझे मारने का जतन कर रहे हैं। हे परमेश्वर, ऐसे ये लोग तेरे विषय में सोचते भी नहीं।

4देखो, मेरा परमेश्वर मेरी सहायता करेगा। मेरा स्वामी मुझको सहारा देगा।

5मेरा परमेश्वर उन लोगों को दण्ड देगा, जो मेरे विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं। परमेश्वर मेरे प्रति सच्चा सिद्ध होगा, और वह उन लोगों को नष्ट कर देगा।

6हे परमेश्वर, मैं स्वेच्छा से तुझे बलियाँ अर्पित
करुँगा। हे परमेश्वर, मैं तेरे नेक भजन की प्रशंसा
करुँगा।
7किन्तु, मैं यह तुझसे विनय करता हूँ, कि मुझको तू
मेरे दु:खों से बचा ले। तू मुझको मेरे शत्रुओं को हारा
हुआ दिखा दे।

भजन 55

वाद्यों की संगीत पर संगीत निर्देशक के लिए दाऊद का एक भक्ति गीत।

1हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन। कृपा करके मुझसे
तू दूर मत हो।
2हे परमेश्वर, कृपा करके मेरी सुन और मुझे उत्तर
दे। तू मुझको अपनी व्यथा तुझसे कहने दे।
3मेरे शत्रु ने मुझसे दुर्वचन बोले हैं। दुष्ट जनों ने मुझ
पर चीखा। मेरे शत्रु क्रोध कर मुझ पर टूट पड़े हैं। वे
मुझे नाश करने विपत्ति ढाते हैं।
4मेरा मन भीतर से चूर-चूर हो रहा है, और मुझको
मृत्यु से बहुत डर लग रहा है।
5मैं बहुत डरा हुआ हूँ। मैं थरथर काँप रहा हूँ। मैं
भयभीत हूँ।
6ओह, यदि कपोत के समान मेरे पंख होते, यदि मैं
पंख पाता तो दूर कोई चैन पाने के स्थान को उड़
जाता।
7मैं उड़कर दूर निर्जन में जाता।
8मैं दूर चला जाऊँगा और इस विपत्ति की आँधी से
बचकर दूर भाग जाऊँगा।
9हे मेरे स्वामी, इस नगर में हिँसा और बहुत दंगे और
उनके झूठों को रोक जो मुझको दिख रही है।
10इस नगर में, हर कहीं मुझे रात-दिन विपत्ति घेरे
है। इस नगर में भयंकर घटनायें घट रही हैं।
11गलियों में बहुत अधिक अपराध फैला है। हर कहीं
लोग झूठ बोल बोल कर छलते हैं।
12यदि यह मेरा शत्रु होता और मुझे नीचा दिखाता तो
मैं इसे सह लेता। यदि ये मेरे शत्रु होते, और मुझ पर
वार करते तो मैं छिप सकता था।
13ओ! मेरे साथी, मेरे सहचर, मेरे मित्र, यह किन्तु तू
है और तू ही मुझे कष्ट पहुँचाता है।
14हमने आपस में राज की बातें बाँटी थी। हमने
परमेश्वर के मन्दिर में साथ-साथ उपासना की।
15काश मेरे शत्रु अपने समय से पहले ही मर जायें।
काश उन्हें जीवित ही गाड़ दिया जायें, क्योंकि वे अपने
घरों में ऐसे भयानक कुचक्र रचा करते हैं।
16मैं तो सहायता के लिए परमेश्वर को पुकारुँगा।
यहोवा उसका उत्तर मुझे देगा।
17मैं तो अपने दु:ख को परमेश्वर से प्रात:, दोपहर
और रात में कहूँगा। वह मेरी सुनेगा!
18मैंने कितने ही युद्धों में लड़ायी लड़ी है। किन्तु
परमेश्वर मेरे साथ है, और हर युद्ध से मुझे सुरक्षित
लौटायेगा।
19वह शाश्वत सम्राट परमेश्वर मेरी सुनेगा और उन्हें
नीचा दिखायेगा।
20मेरे शत्रु अपने जीवन को नहीं बदलेंगे। वे परमेश्वर
से नहीं डरते, और न ही उसका आदर करते।
21मेरे शत्रु अपने ही मित्रों पर वार करते। वे उन
बातों को नहीं करते, जिनके करने को वे सहमत हो
गये थे।
22मेरे शत्रु सचमुच मीठा बोलते हैं, और सुशांति की
बातें करते रहते हैं। किन्तु वास्तव में, वे युद्ध का
कुचक्र रचते हैं। उनके शब्द काट करते छुरी की सी
और फिसलन भरे हैं जैसे तेल होता है।
23अपनी चिंताये तुम यहोवा को सौंप दो। फिर वह
तुम्हारी रखवाली करेगा। यहोवा सज्जन को कभी हार ने
नहीं देगा।
24इससे पहले कि उनकी आधी आयु बीते। हे परमेश्वर,
उन हत्यारों को और उन झूठों को कब्रों में भेज! जहाँ
तक मेरा है, मैं तो तुझ पर ही भरोसा रखूँगा।

भजन 56

संगीत निर्देशक के लिये सुदूर बाँझ वृक्ष का कपोत नामक धुन पर दाऊद का उस समय का एक प्रगीत जब नगर में उसे पलिश्तियों ने पकड़ लिया था।

1हे परमेश्वर, मुझ पर करुणा कर क्योंकि लोगों ने
मुझ पर वार किया है। वे रात दिन मेरा पीछा कर रहे
हैं, और मेरे साथ झगड़ा कर रहे हैं।
2मेरे शत्रु सारे दिन मुझ पर वार करते रहे। वहाँ पर
डटे हुए अनगिनत योद्धा हैं।
3जब भी डरता हूँ, तो मैं तेरा ही भरोसा करता हूँ। 4मैं
परमेश्वर के भरोसे हूँ, सो मैं भयभीत नहीं हूँ। लोग
मुझको हानि नहीं पहुँचा सकते! मैं परमेश्वर के वचनों
के लिए उसकी प्रशंसा करता हूँ जो उसने मुझे दिये।
5मेरे शत्रु सदा मेरे शब्दों को तोड़ते मरोड़ते रहते हैं।
मेरे विरुद्ध वे सदा कुचक्र रचते रहते हैं।
6वे आपस में मिलकर और लुक छिपकर मेरी हर
बात की टोह लेते हैं। मेरे प्राण हरने की कोई राह
सोचते हैं।
7हे परमेश्वर, उन्हें बचकर निकलने मत दे। उनके
बुरे कामों का दण्ड उन्हें दे।
8तू यह जानता है कि मैं बहुत व्याकुल हूँ। तू यह
जानता है कि मैंने तुझे कितना पुकारा है? तूने निश्चय
ही मेरे सब आँसुओं का लेखा जोखा रखा हुआ है।
9सो अब मैं तुझे सहायता पाने को पुकारुँगा। मेरे
शत्रुओं को तू पराजित कर दे। मैं यह जानता हूँ कि तू
यह कर सकता है। क्योंकि तू परमेश्वर है!

10मैं परमेश्वर का गुण उसके वचनों के लिए गाता हूँ। मैं परमेश्वर के गुणों को उसके उस वचन के लिये गाता हूँ जो उसने मुझे दिया है।

11मुझको परमेश्वर पर भरोसा है, इसलिए मैं नहीं डरता हूँ। लोग मेरा बुरा नहीं कर सकते!

12हे परमेश्वर, मैंने जो तेरी मन्नतें मानी है, मैं उनको पूरा करुँगा। मैं तुझको धन्यवाद की भेंट चढ़ाऊँगा।

13क्योंकि तूने मुझको मृत्यु से बचाया है। तूने मुझको हार से बचाया है। सो मैं परमेश्वर की आराधना करुँगा, जिसे केवल जीवित व्यक्ति देख सकते हैं।

भजन 57

संगीत निर्देशक के लिये 'नाश मत कर' नामक धुन पर उस समय का दाऊद का एक भक्ति गीत जब वह शाऊल से भाग कर गुफा में जा छिपा था।

1हे परमेश्वर, मुझ पर करुणा कर। मुझ पर दयालु हो क्योंकि मेरे मन की आस्था तुझमें है। मैं तेरे पास तेरी ओट पाने को आया हूँ। जब तक संकट दूर न हो।

2हे परमेश्वर, मैं सहायता पाने के लिये विनती करता हूँ। परमेश्वर मेरी पूरी तरह ध्यान रखता है!

3वह मेरी सहायता स्वर्ग से करता है, और वह मुझको बचा लेता है। जो लोग मुझको सताया करते हैं, वह उनको हराता है। परमेश्वर मुझ पर निज सच्चा प्रेम दर्शाता है।

4मेरे शत्रुओं ने मुझे चारों ओर से घेर लिया है। मेरे प्राण संकट में हैं। वे ऐसे हैं, जैसे नरभक्षी सिंह और उनके तेज दाँत भालों और तीरों से और उनकी जीभ तेज तलवार की सी है।

5हे परमेश्वर, तू महान है। तेरी महिमा धरती पर छायी है, जो आकाश से ऊँची है।

6मेरे शत्रुओं ने मेरे लिए जाल फैलाया है। मुझको फँसाने का वे जतन कर रहे हैं। उन्होंने मेरे लिए गहरा गड्ढा खोदा है, कि मैं उसमें गिर जाऊँ।

7किन्तु परमेश्वर मेरी रक्षा करेगा। मेरा भरोसा है, कि वह मेरे साहस को बनाये रखेगा। मैं उसके यश गाथा को गाया करुँगा।

8मेरे मन खड़े हो! ओ सितारों और वीणाओं! बजना प्रारम्भ करो। आओ, हम मिलकर प्रभात को जगायें।

9हे मेरे स्वामी, हर किसी के लिए, मैं तेरा यश गाता हूँ। मैं तेरी यश गाथा हर किसी राष्ट्र को सुनाता हूँ।

10तेरा सच्चा प्रेम अम्बर के सर्वोच्च मेघों से भी ऊँचा है!

11परमेश्वर महान है, आकाश से ऊँची, उसकी महिमा धरती पर छा जाये।

भजन 58

'नाश मत कर' धुन पर संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक भक्ति गीत।

1न्यायाधीशों, तुम पक्षपात रहित नहीं रहे। तुम लोगों का न्याय निज निर्णयों में निष्पक्ष नहीं करते हो।

2नहीं, तुम तो केवल बुरी बातें ही सोचते हो। इस देश में तुम हिंसापूर्ण अपराध करते हो।

3वे दुष्ट लोग जैसे ही पैदा होते हैं, बुरे कामों को करने लग जाते हैं। वे पैदा होते ही झूठ बोलने लग जाते हैं।

4वे उस भयानक साँप और नाग जैसे होते हैं, जो सुन नहीं सकता। वे दुष्ट जन भी अपने कान सत्य से मूंद लेते हैं।

5बुरे लोग वैसे ही होते हैं जैसे सपेरों के गीतों को या उनके संगीतों को काला नाग नहीं सुन सकता।

6हे यहोवा! वे लोग ऐसे होते हैं जैसे सिंह। इसलिए हे यहोवा, उनके दाँत तोड़।

7जैसे बहता जल विलुप्त हो जाता है, वैसे ही वे लोग लुप्त हो जायें। और जैसे राह की उगी दूब कुचल जाती है, वैसे वे भी कुचल जायें।

8वे घोंघे के समान हो जो चलने में गल जाते। वे उस शिशु से हो जो मरा ही पैदा हुआ, जिसने दिन का प्रकाश कभी नहीं देखा।

9वे उस बाड़ के काँटों कि तरह शीघ्र ही नष्ट हो, जो आग पर चढ़ी हाँड़ी गर्माने के लिए शीघ्र जल जाते हैं।

10जब सज्जन उन लोगों को दण्ड पाते देखता है जिन्होंने उसके साथ बुरा किया है, वह हर्षित होता है। वह अपना पाँव उन दुष्टों के खून में धोयेगा।

11जब ऐसा होता है, तो लोग कहने लगते है, "सज्जनों को उनका फल निश्चय मिलता है। सचमुच परमेश्वर जगत का न्यायकर्ता है!"

भजन 59

संगीत निर्देशक के लिये 'नाश मत कर' धुन पर दाऊद का उस समय का एक भक्ति गीत जब शाऊल ने लोगों को दाऊद के घर पर निगरानी रखते हुए उसे मार डालने की जुगत करने के लिये भेजा था।

1हे परमेश्वर, तू मुझको मेरे शत्रुओं से बचा ले। मेरी सहायता उनसे विजयी बनने में कर जो मेरे विरुद्ध में युद्ध करने आये हैं।

2ऐसे उन लोगों से, तू मुझको बचा ले। तू उन हत्यारों से मुझको बचा ले जो बुरे कामों को करते रहते हैं।

3देख! मेरी घात में बलवान लोग हैं। वे मुझे मार डालने की बाट जोह रहे हैं। इसलिए नहीं कि मैंने कोई पाप किया अथवा मुझसे कोई अपराध बन पड़ा है।

4वे मेरे पीछे पड़े हैं, किन्तु मैंने कोई भी बुरा काम नहीं किया है। हे यहोवा, आ! तू स्वयं अपने आप देख ले!

5हे परमेश्वर! इस्राएल के परमेश्वर! तू सर्वशक्ति शाली है। तू उठ और उन लोगों को दण्डित कर। उन विश्वासघातियों उन दुर्जनों पर किंचित भी दया मत दिखा।

6वे दुर्जन साँझ के होते ही नगर में घुस आते हैं। वे लोग गुर्राते कुत्तों से नगर के बीच में घूमते रहते है।

7तू उनकी धमकियों और अपमानों को सुन। वे ऐसी क्रूर बातें कहा करते हैं। वे इस बात की चिंता तक नहीं करते कि उनकी कौन सुनता है।

8हे यहोवा, तू उनका उपहास करके उन सभी लोगों को मजाक बना दे।

9हे परमेश्वर, तू मेरी शक्ति है। मैं तेरी बाट जोह रहा हूँ। हे परमेश्वर, तू ऊँचे पहाड़ों पर मेरा सुरक्षा स्थान है।

10परमेश्वर मुझसे प्रेम करता है, और वह जीतने में मेरा सहाय होगा। वह मेरे शत्रुओं को पराजित करने में मेरी सहायता करेगा।

11हे परमेश्वर, बस उनको मत मार डाल। नहीं तो सम्भव है मेरे लोग भूल जायें। हे मेरे स्वामी और संरक्षक, तू अपनी शक्ति से उनको बिखेर दे और हरा दे।

12वे बुरे लोग कोसते और झूठ बोलते रहते हैं। उन बुरी बातों का दण्ड उनको दे, जो उन्होंने कही हैं। उनको अपने अभिमान में फँसने दे।

13तू अपने क्रोध से उनको नष्ट कर। उन्हें पूरी तरह नष्ट कर! लोग तभी जानेंगे कि परमेश्वर, याकूब के लोगों का और वह सारे संसार का राजा है!

14फिर यदि वे लोग शाम को इधर उधर घूमते गुर्राते कुत्तों से नगर में आवें,

15तो वे खाने को कोई वस्तु ढूँढते फिरेंगे, और खाने को कुछ भी नहीं पायेंगे और न ही सोने का कोई ठौर पायेंगे।

16किन्तु मैं तेरी प्रशंसा के गीत गाऊँगा। हर सुबह मैं तेरे प्रेम में आनन्दित होऊँगा। क्यों? क्योंकि तू पर्वतों के ऊपर मेरा शरणस्थल है। मैं तेरे पास आ सकता हूँ, जब मुझे विपत्तियाँ घेरेंगी।
17मैं अपने गीतों को तेरी प्रशंसा में गाऊँगा क्योंकि पर्वतों के उपर तू मेरा शरणस्थल है। तू परमेश्वर है, जो मुझको प्रेम करता है!

भजन 60

संगीत निर्देशक के लिये 'वाचा की कुमुदिनी धुन पर उस समय का दाऊद का एक उपदेश गीत जब दाऊद ने अरमहरैन और अरमसोबा से युद्ध किया तथा जब योआब लौटा और उसने नमक की घाटी में बारह हजार स्वामी सैनिकों को मार डाला।

1हे परमेश्वर, तूने हमको बिसरा दिया। तूने हमको विनष्ट कर दिया। तू हम पर कुपित हुआ। तू कृपा करके वापस आ।

2तूने धरती कँपाई और उसे फाड़ दिया। हमारा जगत बिखर रहा कृपया तू इसे जोड़।

3तूने अपने लोगों को बहुत यातनाएँ दी है। हम दाखमधु पिये जन जैसे लड़खड़ा रहे और गिर रहे हैं।

4तूने उन लोगों को ऐसे चिताया, जो तुझको पूजते हैं। वे अब अपने शत्रु से बच निकल सकते हैं।

5तू अपने महाशक्ति का प्रयोग करके हमको बचा ले! मेरी प्रार्थना का उत्तर दे और उस जन को बचा जो तुझको प्यारा है!

6परमेश्वर ने अपने मन्दिर में कहा: "मेरी विजय होगी और मैं विजय पर हर्षित होऊँगा। मैं इस धरती को अपने लोगों के बीच बाँटूंगा। मैं शकेम और सुक्कोत घाटी का बँटवारा करुँगा।

7गिलाद और मनश्शे मेरे बनेंगे। एप्रैम मेरे सिर का कवच बनेगा। यहूदा मेरा राजदण्ड बनेगा।

8मैं मोआब को ऐसा बनाऊँगा, जैसा कोई मेरे चरण धोने का पात्र। एदोम एक दास सा जो मेरी जूतियाँ उठाता है। मैं पलिश्ती लोगों को पराजित करुँगा और विजय का उद्घोष करूँगा।"

9कौन मुझे उसके विरुद्ध युद्ध करने को सुरक्षित दृढ़ नगर में ले जायेगा? मुझे कौन एदोम तक ले जायेगा?

10हे परमेश्वर, बस तू ही यह करने में मेरी सहायता कर सकता है। किन्तु तूने तो हमको बिसरा दिया! परमेश्वर हमारे साथ में नहीं जायेगा! और वह हमारी सेना के साथ नहीं जायेगा।

11हे परमेश्वर, तू ही हमको इस संकट की भूमि से उबार सकता है! मनुष्य हमारी रक्षा नहीं कर सकते!

12किन्तु हमें परमेश्वर ही ही मजबूत बना सकता है। परमेश्वर हमारे शत्रुओं को पराजित कर सकता है!

भजन 61

तार के वाद्यों के संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1हे परमेश्वर, मेरा प्रार्थना गीत सुन। मेरी विनती सुन।
2जहाँ भी मैं कितनी ही निर्बलता में होऊँ, मैं सहायता पाने को तुझको पुकारुँगा! जब मेरा मन भारी हो और बहुत दु:खी हो, तू मुझको बहुत ऊँचे सुरक्षित स्थान पर ले चल।

3तू ही मेरा शरणस्थल है! तू ही मेरा सुदृढ़ गढ़ है, जो मुझे मेरे शत्रुओं से बचाता है।

4तेरे डेरे में, मैं सदा सदा के लिए निवास करुँगा। मैं वहाँ छिपूँगा जहाँ तू मुझे बचा सके।

5हे परमेश्वर, तूने मेरी वह मन्नत सुनी है, जिसे तुझ पर चढ़ाऊँगा, किन्तु तेरे भक्तों के पास हर वस्तु उन्हें तुझसे ही मिली है।

6राजा को लम्बी आयु दे। उसको चिरकाल तक जीने दे!

7उसको सदा परमेश्वर के साथ में बना रहने दे! तू उसकी रक्षा निज सच्चे प्रेम से कर।

8मैं तेरे नाम का गुण सदा गाऊँगा। उन बातों को करुँगा जिनके करने का वचन मैंने दिया है।

भजन 62

'यदूतून' राग पर संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1मैं धीरज के साथ अपने उद्धार के लिए यहोवा का बाट जोहता हूँ।

2परमेश्वर मेरा गढ़ है। परमेश्वर मुझको बचाता है। ऊँचे पर्वत पर, परमेश्वर मेरा सुरक्षा स्थान है। मुझको महा सेनायें भी पराजित नहीं कर सकतीं।

3तू मुझ पर कब तक वार करता रहेगा? मैं एक झुकी दीवार सा हो गया हूँ, और एक बाड़े सा जो गिरने ही वाला है।

4वे लोग मेरे नाश का कुचक्र रच रहें हैं। मेरे विषय में वे झूठी बातें बनाते हैं। लोगों के बीच में, वे मेरी बड़ाई करते, किन्तु वे मुझको लुके-छिपे कोसते हैं।

5मैं यहोवा की बाट धीरज के साथ जोहता हूँ। बस परमेश्वर ही अपने उद्धार के लिए मेरी आशा है।

6परमेश्वर मेरा गढ़ है। परमेश्वर मुझको बचाता है। ऊँचे पर्वत में परमेश्वर मेरा सुरक्षा स्थान है।

7महिमा और विजय, मुझे परमेश्वर से मिलती है। वह मेरा सुदृढ़ गढ़ है। परमेश्वर मेरा सुरक्षा स्थल है।

8लोगों, परमेश्वर पर हर घड़ी भरोसा रखो! अपनी सब समस्यायें परमेश्वर से कहो। परमेश्वर हमारा सुरक्षा स्थल है।

9सचमुच लोग कोई मदद नहीं कर सकते। सचमुच तुम उनके भरोसे सहायता पाने को नहीं रह सकते! परमेश्वर की तुलना में वे हवा के झोंके के समान हैं।

10तुम बल पर भरोसा मत रखो कि तुम शक्ति के साथ वस्तुओं को छीन लोगे। मत सोचो तुम्हें चोरी करने से कोई लाभ होगा। और यदि धनवान भी हो जाये तो कभी दौलत पर भरोसा मत करो, कि वह तुमको बचा लेगी।

11एक बात ऐसी है जो परमेश्वर कहता है, जिसके भरोसे तुम सचमुच रह सकते हो: 'शक्ति परमेश्वर से
आती है!' 12मेरे स्वामी, तेरा प्रेम सच्चा है। तू किसी जन को उसके उन कामों का प्रतिफल अथवा दण्ड देता है। जिन्हें वह करता है।

भजन 63

दाऊद का उस समय का एक पद जब वह यहूदा की मरुभूमि में था।

1हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है। वैसे कितना मैं तुझको चाहता हूँ। जैसे उस प्यासी क्षीण धरती जिस पर जल न हो वैसे मेरी देह और मन तेरे लिए प्यासा है।

2हाँ, तेरे मन्दिर में मैंने तेरे दर्शन किये। तेरी शक्ति और तेरी महिमा देख ली है।

3तेरी भक्ति जीवन से बढ़कर उत्तम है। मेरे होंठ तेरी बड़ाई करते हैं।

4हाँ, मैं निज जीवन में तेरे गुण गाऊँगा। मैं हाथ उपर उठाकर तेरे नाम पर तेरी प्रार्थना करुँगा।

5मैं तृप्त होऊँगा मानों मैंने उत्तम पदार्थ खा लिए हों। मेरे होंठ तेरे गुण सदैव गायेंगे।

6मैं आधी रात में बिस्तर पर लेटा हुआ तुझको याद करुँगा।

7सचमुच तूने मेरी सहायता की है! मैं प्रसन्न हूँ कि तूने मुझको बचाया है!

8मेरा मन तुझमें समता है। तू मेरा हाथ थामे हुए रहता है।

9कुछ लोग मुझे मारने का जतन कर रहे हैं। किन्तु उनको नष्ट कर दिया जायेगा। वे अपनी कब्रों में समा जायेंगे।

10उनको तलवारों से मार दिया जायेगा। उनके शवों को जंगली कुत्ते खायेंगे।

11किन्तु राजा तो अपने परमेश्वर के साथ प्रसन्न होगा। वे लोग जो उसके आज्ञा मानने के वचन बद्ध हैं, उसकी स्तुति करेंगे। क्योंकि उसने सभी झूठों को पराजित किया।

भजन 64

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक पद।

1हे परमेश्वर, मेरी सुन। मैं अपने शत्रुओं से भयभीत हूँ। मैं अपने जीवन के लिए डरा हुआ हूँ।

2तू मुझको मेरे शत्रुओं के गहरे षड़यन्त्रों से बचा ले। मुझको तू उन दुष्ट लोगों से छिपा ले।

3मेरे विषय में उन्होंने बहुत बुरा झूठ बोला है। उनकी जीभे तेज तलवार सी और उनके कटुशब्द बाणों से हैं।

4वे छिप जाते हैं, और अपने बाणों का प्रहार सरल सच्चे जन पर फिर करते हैं। इसके पहले कि उसको पता चले, वह घायल हो जाता है।

5वे उसको हराने को बुरे काम करते हैं। वे झूठ बोलते और अपने जाल फैलाते हैं। और वे सुनिश्चित हैं कि उन्हें कोई नहीं पकड़ेगा।

6लोग बहुत कुटिल हो सकते हैं। वे लोग क्या सोच रहे हैं? इसका समझ पाना कठिन है।

7किन्तु परमेश्वर निज "बाण" मार सकता है! और इसके पहले कि उनको पता चले, वे दुष्ट लोग घायल हो जाते हैं।

8दुष्ट जन दुसरों के साथ बुरा करने की योजना बनाते हैं। किन्तु परमेश्वर उनके कुचक्रों को चौपट कर सकता है। वह उन बुरी बातों कों स्वयं उनके उपर

घटा देता है। फिर हर कोई जो उन्हें देखता अचरज से
भरकर अपना सिर हिलाता है।
9जो परमेश्वर ने किया है, लोग उन बातों को देखेंगे
और वे उन बातों का वर्णन दूसरो से करेंगे, फिर तो
हर कोई परमेश्वर के विषय में और अधिक जानेगा।
वे उसका आदर करना और डरना सीखेंगे।
10सज्जनों को चाहिए कि वे यहोवा में प्रसन्न हो। वे
उस पर भरोसा रखे। अरे! ओ सज्जनों! तुम सभी यहोवा
के गुण गाओ।

भजन 65

1हे सिय्योन के परमेश्वर, मैं तेरी स्तुति करता हूँ।
मैंने जो मन्नत मानी, तुझपर चढ़ाता हूँ।
2मैं तेरे उन कामों का बखान करता हूँ, जो तूने
किये हैं। हमारी प्रार्थनायें तू सुनता रहता हैं। तू हर
किसी व्यक्ति की प्रार्थनायें सुनता है, जो तेरी शरण में
आता है।
3जब हमारे पाप हम पर भारी पड़ते हैं, हमसे सहन
नहीं हो पाते, तो तू हमारे उन पापों को हर कर ले जाता
है।
4हे परमेश्वर, तूने अपने भक्त चुने हैं। तूने हमको
चुना है कि हम तेरे मन्दिर में आयें और तेरी उपासना
करें। हम तेरे मन्दिर में बहुत प्रसन्न हैं। सभी अद्भुत
वस्तुएं हमारे पास है।
5हे परमेश्वर, तू हमारी रक्षा करता है। सज्जन तेरी
प्रार्थना करते, और तू उनकी विनतियों का उत्तर देता
है। उनके लिए तू अचरज भरे काम करता है। सारे
संसार के लोग तेरे भरोसे हैं।
6परमेश्वर ने अपनी महाशक्ति का प्रयोग किया और
पर्वत रच डाले। उसकी शक्ति हम अपने चारों तरफ
देखते हैं।
7परमेश्वर ने उफनते हुए सागर शांत किया। परमेश्वर
ने जगत के सभी असंख्य लोगों को बनाया है।
8जिन अद्भुत बातों को परमेश्वर करता है, उनसे
धरती का हर व्यक्ति डरता है। परमेश्वर तू ही हर कहीं
सूर्य को उगाता और छिपाता है। लोग तेरा गुणगान
करते हैं।
9पृथ्वी की सारी रखवाली तू करता है। तू ही इसे
सींचता और तू ही इससे बहुत सारी वस्तुएं उपजाता है।
हे परमेश्वर, नदियों को पानी से तू ही भरता है। तू ही
फसलों की बढ़वार करता है। तू यह इस विधि से करता
है।
10तू जुते हुए खेतों पर वर्षा कराता है। तू खेतों को
जल से सराबोर कर देता, और धरती को वर्षा से नरम
बनाता है, और तू फिर पौधों की बढ़वार करता है।
11तू नये साल का आरम्भ उत्तम फसलों से करता है।
तू भरपूर फसलों से गाड़ियाँ भर देता है।
12वन और पर्वत दूब घास से ढक जाते हैं।
13भेड़ों से चरागाहें भर गयी। फसलों से घाटियाँ भरपूर
हो रही हैं। हर कोई गा रहा और आनन्द में ऊँचा
पुकार रहा है।

भजन 66

1हे धरती की हर वस्तु, आनन्द के साथ परमेश्वर
की जय बोलो।
2उसके महिमामय नाम की स्तुति करों! उसका आदर
उसके स्तुति गीतों से करों!
3उसके अति अद्भुत कामों से परमेश्वर को बखानों!
हे परमेश्वर, तेरी शक्ति बहुत बड़ी है। तेरे शत्रु झुक
जाते और वे तुझसे डरते हैं।
4जगत के सभी लोग तेरी उपासना करें और तेरे नाम
का हर कोई गुण गायें।
5तुम उनको देखो जो आश्चर्यपूर्ण काम परमेश्वर ने
किये! वे वस्तुएँ हमको अचरज से भर देती है।
6परमेश्वर ने धरती सूखी होने को सागर को विवश
किया और उसके आनन्दित जन पैदल महानद को पार
कर गये।
7परमेश्वर अपनी महाशक्ति से इस संसार का शासन
करता है। परमेश्वर हर कहीं लोगों पर दृष्टि रखता है।
कोई भी व्यक्ति उसके विरुद्ध नहीं हो सकता।
8लोगों, हमारे परमेश्वर का गुणगान तुम ऊँचे स्वर
में करो।
9परमेश्वर ने हमको यह जीवन दिया है। वह हमारी
रक्षा करता है।
10परमेश्वर ने हमारी परीक्षा ली है। परमेश्वर ने हमें
वैसे ही परखा, जैसे लोग आग में डालकर चाँदी परखते
हैं।
11हे परमेश्वर, तूने हमें फँदों में फँसने दिया। तूने हम
पर भारी बोझ लाद दिया।
12तूने हमें शत्रुओं से पैरों तले रौंदवाया। तूने हमको
आग और पानी में से घसीटा। किन्तु तू फिर भी हमें
सुरक्षित स्थान पर ले आया।
13-14 इसलिए मैं तेरे मन्दिर में बलियाँ चढ़ाने लाऊँगा।
जब मैं विपत्ति में था, मैंने तेरी शरण माँगी और मैंने तेरी
बहुतेरी मन्नत मानी। अब उन सब वस्तुओं को जिनकी
मैंने मन्नत मानी, अर्पित करता हूँ।
15तुझको पापबलि अर्पित कर रहा हूँ, और मेढ़ों के
साथ सुगन्ध अर्पित करता हूँ। तुझको बैलों और बकरों
की बलि अर्पित करता हूँ।
16ओ सभी लोगों, परमेश्वर के आराधकों। आओ, मैं
तुम्हें बताऊँगा कि परमेश्वर ने मेरे लिए क्या किया है।
17मैंने उसकी विनती की। मैंने उसका गुणगान किया।
18मेरा मन पवित्र था, मेरे स्वामी ने मेरी बात सुनी।

19परमेश्वर ने मेरी सुनी। परमेश्वर ने मेरी विनती
सुन ली।
20परमेश्वर के गुण गाओ। परमेश्वर ने मुझसे मुँह
नहीं मोड़ा। उसने मेरी प्रार्थना को सुन लिया। परमेश्वर
ने निज करुणा मुझपर दर्शायी।

भजन 67

तार वाद्यों के संगीत निर्देशक के लिए एक स्तुति गीत।

1हे परमेश्वर, मुझ पर करुणा कर, और मुझे आशीष
दे। कृपा कर के, हमको स्वीकार कर।
2हे परमेश्वर, धरती पर हर व्यक्ति तेरे विषय में
जाने। हर राष्ट्र यह जान जाये कि लोगों की तू कैसे
रक्षा करता है।
3हे परमेश्वर, लोग तेरे गुण गायें! सभी लोग तेरी
प्रशंसा करें।
4सभी राष्ट्र आनन्द मनावें और आनन्दित हो! क्योंकि
तू लोगों का न्याय निष्पक्ष करता। और हर राष्ट्र पर तेरा
शासन है।
5हे परमेश्वर, लोग तेरे गुण गायें! सभी लोग तेरी
प्रशंसा करें।
6हे परमेश्वर, हे हमारे परमेश्वर, हमको आशीष दे।
हमारी धरती हमको भरपूर फसल दें।
7हे परमेश्वर, हमको आशीष दे। पृथ्वी के सभी लोग
परमेश्वर से डरे, उसका आदर करे।

भजन 68

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक स्तुति गीत।

1हे परमेश्वर, उठ, अपने शत्रु को तितर बितर कर।
उसके सभी शत्रु उसके पास से भाग जायें।
2जैसे वायु से उड़ाया हुआ धुँआ बिखर जाता है, वैसे
ही तेरे शत्रु बिखर जायें। जैसे अग्नि में मोम पिघल जाता
है, वैसे ही तेरे शत्रुओं का नाश हो जाये।
3परमेश्वर के साथ सज्जन सुखी होते हैं, और सज्जन
सुखद पल बिताते। सज्जन अपने आप आनन्द मनाते
और स्वयं अति प्रसन्न रहते हैं।
4परमेश्वर के गीत गाओ। उसके नाम का गुणगान
करों। परमेश्वर के निमित्त राह तैयार करों। निज रथ
पर सवार होकर, वह मरुभूमि पार करता। याह के
नाम का गुण गाओ!
5परमेश्वर अपने पवित्र मन्दिर में, पिता के समान
अनाथों का और विधवाओं का ध्यान रखता है।
6जिसका कोई घर नहीं होता, ऐसे अकेले जन को
परमेश्वर घर देता है। निज भक्तों को परमेश्वर बंधन
मुक्त करता है। वे अति प्रसन्न रहते हैं। किन्तु जो
परमेश्वर के विरुद्ध होते, उनको तपती हुयी धरती पर
रहना होगा।
7हे परमेश्वर, तूने निज भक्तों को मिस्र से निकाला,
और मरुभूमि से पैदल ही पार निकाला।
8इस्राएल का परमेश्वर जब सिय्योन पर्वत पर आया
था, धरती काँप उठी थी, और आकाश पिघला था।
9हे परमेश्वर, वर्षा को तूने भेजा था, और पुरानी
तथा दुर्बल पड़ी धरती को तूने फिर सशक्त किया।
10उसी धरती पर तेरे पशु वापस आ गये। हे परमेश्वर,
वहाँ के दीन लोगों को तूने उत्तम वस्तुएँ दी।
11परमेश्वर ने आदेश दिया और बहुत जन सुसन्देश
को सुनाने गये:
12"बलशाली राजाओं की सेनाएं इधर-उधर भाग
गयी! युद्ध से जिन वस्तुओं को सैनिक लातें हैं, उनको
घर पर रुकी स्त्रियाँ बाँट लेंगी। जो लोग घर में रुके हैं,
वे उस धन को बाँट लेंगे।
13वे चाँदी से मढ़े हुए कबूतर के पंख पायेंगे। वे सोने
से चमकते हुए पंखों को पायेंगे।"
14परमेश्वर ने जब सल्मूल पर्वत पर शत्रु राजाओं
को बिखेरा, तो वे ऐसे छितराये जैसे हिम गिरता है।
15बाशान पर्वत महान पर्वत है, जिसकी चोटियाँ बहुत
सी हैं।
16बाशान पर्वत, तुम क्यों सिय्योन पर्वत को छोटा
समझते हो? परमेश्वर उससे प्रेम करता है। परमेश्वर
ने उसे वहाँ सदा रहने के लिए चुना है।
17यहोवा पवित्र पर्वत सिय्योन पर आ रहा है। और
उसके पीछे उसके लाखों ही रथ हैं
18वह ऊँचे पर चढ़ गया। उसने बंदियों कि अगुवाई
की; उसने मनुष्यों से यहाँ तक कि अपने विरोधियों से
भी भेंटे ली। यहोवा परमेश्वर वहाँ रहने गया।
19यहोवा के गुण गाओ! वह प्रति दिन हमारी, हमारे
संग भार उठाने में सहायता करता है। परमेश्वर हमारी
रक्षा करता है!
20वह हमारा परमेश्वर है। वह वही परमेश्वर है जो
हमको बचाता है। हमारा यहोवा परमेश्वर मृत्यु से हमारी
रक्षा करता है।
21परमेश्वर दिखा देगा कि अपने शत्रुओं को उसने
हरा दिया है। ऐसे उन व्यक्तियों को जो उसके विरुद्ध
लड़े, वह दण्ड देगा।
22मेरे स्वामी ने कहा, "मैं बाशान से शत्रु को वापस
लाऊँगा, मैं शत्रु को समुद्र की गहराई से वापस लाऊँगा,
23ताकि तुम उनके रक्त में विचर सको, तुम्हारे कुत्ते
उनका रक्त चाट जायें।"
24लोग देखते हैं, परमेश्वर को विजय अभियान की
अगुवाई करते हुए। लोग मेरे पवित्र परमेश्वर, मेरे राजा
को विजय अभियान का अगुवाई करते देखते हैं।
25आगे-आगे गायकों की मण्डली चलती है, पीछे-पीछे
वादकों की मण्डली आ रही हैं, और बीच में कुमारियाँ
तम्बूरें बजा रही है।

26परमेश्वर की प्रशंसा महासभा के बीच करो! इस्राएल के लोगों, तुम यहोवा के गुण गाओ!

27छोटा बिन्यामीन उनकी अगुवायी कर रहा है। यहूदा का बड़ा परिवार वहाँ है। जबूलून तथा नपताली के नेता वहाँ पर हैं।

28हे परमेश्वर, हमें निज शक्ति दिखा। हमें वह निज शक्ति दिखा जिसका उपयोग तूने हमारे लिए बीते हुए काल में किया था।

29राजा लोग, यरुशलेम में तेरे मन्दिर के लिए निज सम्पत्ति लायेंगे।

30उन "पशुओं" से काम वांछित कराने के लिये निज छड़ी का प्रयोग कर। उन जातियों के "बैलों" और "गायों" को आज्ञा मानने वालें बना। तूने जिन राष्ट्रों को युद्ध में हराया। अब तू उनसे चाँदी मंगवा ले।

31तू उनसे मिस्र से धन मँगवा ले। हे परमेश्वर, तू अपने धन कूश से मँगवा ले।

32धरती के राजाओं, परमेश्वर के लिए गाओं! हमारे स्वामी के लिए तुम यशगान गाओ!

33परमेश्वर के लिये गाओ! वह रथ पर चढ़कर सनातन आकाशों से निकलता है। तुम उसके शक्तिशाली स्वर को सुनों!

34इस्राएल का परमेश्वर, तुम्हारे किसी भी देवों से अधिक बलशाली है। वह जो निज भक्तों को सुदृढ़ बनाता।

35परमेश्वर अपने मन्दिर में अद्भुत है। इस्राएल का परमेश्वर भक्तों को शक्ति और सामर्थ्य देता है। परमेश्वर के गुण गाओ!

भजन 69

'कुमुदिनी' नामक धुन पर संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक भजन।

1हे परमेश्वर, मुझको मेरी सब विपत्तियों से बचा! मेरे मुँह तक पानी चढ़ आया है।

2कुछ भी नहीं है जिस पर मैं खड़ा हो जाऊँ। मैं दलदल के बीच नीचे धँसता ही चला जा रहा हूँ। मैं नीचे धंस रहा हूँ। मैं अगाध जल में हूँ और मेरे चारों तरफ लहरें पछाड़ खा रही है। बस, मैं डूबने को हूँ।

3सहायता को पुकारते मैं दुर्बल होता जा रहा हूँ। मेरा गला दुःख रहा है। मैं बाट जोह रहा हूँ तुझसे सहायता पाने और देखते-देखते मेरी आँखें दुःख रही है।

4मेरे शत्रु! मेरे सिर के बालों से भी अधिक हैं। वे मुझसे व्यर्थ बैर रखते हैं। वे मेरे विनाश की जुगत बहुत करते हैं। मेरे शत्रु मेरे विषय में झूठी बातें बनाते हैं। उन्होंने मुझको झूठे ही चोर बताया। और उन वस्तुओं की भरपायी करने को मुझे विवश किया, जिनको मैंने चुराया नहीं था।

5हे परमेश्वर, तू तो जानता है कि मैंने कुछ अनुचित नहीं किया। मैं अपने पाप तुझसे नहीं छिपा सकता।

6हे मेरे स्वामी, हे सर्वशक्तिमान यहोवा, तू अपने भक्तों को मेरे कारण लज्जित मत होने दें। हे इस्राएल के परमेश्वर, ऐसे उन लोगों को मेरे लिए असमंजस में मत डाल जो तेरी उपासना करते हैं।

7मेरा मुख लाज से झुक गया। यह लाज मैं तेरे लिए ढोता हूँ।

8मेरे ही भाई, मेरे साथ यूँ ही बर्ताव करते हैं। जैसे बर्ताव किसी अजनबी से करते हों। मेरे ही सहोदर, मुझे पराया समझते है।

9तेरे मन्दिर के प्रति मेरी तीव्र लगन ही मुझे जलाये डाल रही है। वे जो तेरा उपहास करते हैं वह मुझ पर आन पडा है।

10मैं तो पुकारता हूँ और उपवास करता हूँ, इसलिए वे मेरी हँसी उड़ाते हैं।

11मैं निज शोक दर्शाने के लिए मोटे वस्त्रों को पहनता हूँ, और लोग मेरा मजाक उड़ाते हैं।

12वे जनता के बीच मेरी चर्चायें करते, और पियक्कड़ मेरे गीत रचा करते हैं।

13हे यहोवा, जहाँ तक मेरी बात है, मेरी तुझसे यह विनती है कि मैं चाहता हूँ: तू मुझे अपना ले! हे परमेश्वर, मैं चाहता हूँ कि तू मुझको प्रेम भरा उत्तर दे। मैं जानता हूँ कि मैं तुझ पर सुरक्षा का भरोसा कर सकता हूँ।

14मुझको दलदल से उबार ले। मुझको दलदल के बीच मत डूबने दे। मुझको मेरे बैरी लोगों से तू बचा ले। तू मुझको इस गहरे पानी से बचा ले।

15बाढ की लहरों को मुझे डुबाने न दे। गहराई को मुझे निगलने न दे। कब्र को मेरे ऊपर अपना मुँह बन्द न करने दे।

16हे यहोवा, तेरी करुणा खरी है। तू मुझको निज सम्पूर्ण प्रेम से उत्तर दे। मेरी सहायता के लिए अपनी सम्पूर्ण कृपा के साथ मेरी ओर मुख कर!

17अपने दास से मत मुख मोड़। मैं संकट में पड़ा हूँ! मुझको शीघ्र सहारा दे।

18आ, मेरे प्राण बचा ले। तू मुझको मेरे शत्रुओं से छुड़ा ले।

19तू मेरा निरादर जानता है। तू जानता है कि मेरे शत्रुओं ने मुझे लज्जित किया है। उन्हें मेरे संग ऐसा करते तूने देखा है।

20निन्दा ने मुझको चकनाचूर कर दिया है! बस निन्दा के कारण मैं मरने पर हूँ। मैं सहानुभूति की बाट जोहता रहा, मैं सान्त्वना की बाट जोहता रहा, किन्तु मुझको तो कोई भी नहीं मिला।

21उन्होंने मुझे विष दिया, भोजन नहीं दिया। सिरका मुझे दे दिया, दाखमधु नहीं दिया।

22उनकी मेज खानों से भरी है वे इतना विशाल सहभागिता भोज कर रहे हैं। मैं आशा करता हूँ कि वे खाना उन्हें नष्ट करें।

23वे अंधे हो जायें और उनकी कमर झुक कर दोहरी हो जाये।

24ऐसे लगे कि उन पर तेरा भरपूर क्रोध टूट पड़ा है।

25उनके घरों को तू खाली बना दे। वहाँ कोई जीवित न रहे।

26उनको दण्ड दे, और वे दूर भाग जायें। फिर उनके पास, उनकी बातों के विषय में उनके दर्द और घाव हो।

27उनके बुरे कर्मों का उनको दण्ड दे, जो उन्होंने किये हैं। उनको मत दिखला कि तू और कितना भला हो सकता है।

28जीवन की पुस्तक से उनके नाम मिटा दे। सज्जनों के नामों के साथ तू उनके नाम उस पुस्तक में मत लिख।

29मैं दु:खी हूँ और दर्द में हूँ। हे परमेश्वर, मुझको उबार ले। मेरी रक्षा कर!

30मैं परमेश्वर के नाम का गुण गीतों में गाऊँगा। मैं उसका यश धन्यवाद के गीतों से गाऊँगा।

31परमेश्वर इससे प्रसन्न हो जायेगा। ऐसा करना एक बैल की बलि या पूरे पशु की ही बलि चढ़ाने से अधिक उत्तम है।

32अरे दीन जनों, तुम परमेश्वर की आराधना करने आये हो। अरे दीन लोगों! इन बातों को जानकर तुम प्रसन्न हो जाओगे।

33यहोवा, दीनों और असहायों की सुना करता है। यहोवा उन्हें अब भी चाहता है, जो लोग बंधन में पड़े हैं।

34हे स्वर्ग और हे धरती, हे सागर और इसके बीच जो भी समाया है। परमेश्वर की स्तुति करो!

35यहोवा सिय्योन की रक्षा करेगा! यहोवा यहूदा के नगर का फिर निर्माण करेगा। वे लोग जो इस धरती के स्वामी हैं, फिर वहाँ रहेंगे!

36उसके सेवकों की संताने उस धरती को पायेगी। और ऐसे वे लोग निवास करेंगे जिन्हें उसका नाम प्यारा है।

भजन 70

लोगों को याद दिलाने के लिये संगीत निर्देशक को दाऊद का एक पद।

1हे परमेश्वर, मेरी रक्षा कर! हे परमेश्वर, जल्दी कर और मुझको सहारा दे!

2लोग मुझे मार डालने का जतन कर रहे हैं। उन्हें निराश और अपमानित कर दे! ऐसा चाहते हैं कि लोग मेरा बुरा कर डाले। उनका पतन ऐसा हो जाये कि वे लज्जित हो।

3लोगों ने मुझको हँसी ठट्टों में उड़ाया। मैं उनकी पराजय की आस करता हूँ और इस बात की कि उन्हें लज्जा अनुभव हो।

4मुझको यह आस है कि ऐसे वे सभी लोग जो तेरी आराधना करते हैं, वह अति प्रसन्न हों। वे सभी लोग तेरी सहायता की आस रहते हैं वे तेरी सदा स्तुति करते रहें।

5हे परमेश्वर, मैं दीन और असहाय हूँ। जल्दी कर! आ, और मुझको सहारा दे! हे परमेश्वर, तू ही बस ऐसा है जो मुझको बचा सकता है,अधिक देर मत कर!

भजन 71

1हे यहोवा, मुझको तेरा भरोसा है, इसलिए मैं कभी निराश नहीं होऊँगा।

2अपनी नेकी से तू मुझको बचायेगा। तू मुझको छुड़ा लेगा। मेरी सुन। मेरा उद्धार कर।

3तू मेरा गढ़ बन। सुरक्षा के लिए ऐसा गढ़ जिसमें मैं दौड़ जाऊँ। मेरी सुरक्षा के लिए तू आदेश दे, क्योंकि तू ही तो मेरी चट्टान है; मेरा शरणस्थल है।

4मेरे परमेश्वर, तू मुझको दुष्ट जनों से बचा ले। तू मुझको क्रूरों कुटिल जनों से छुड़ा ले।

5मेरे स्वामी, तू मेरी आशा है। मैं अपने बचपन से ही तेरे भरोसे हूँ।

6जब मैं अपनी माता के गर्भ में था, तभी से तेरे भरोसे था। जिस दिन से जिस दिन से मैंने जन्म धारण किया, मैं तेरे भरोसे हूँ। मैं तेरी प्रार्थना सदा करता रहा हूँ।

7मैं दूसरे लोगों के लिए एक उदाहरण रहा हूँ। क्योंकि तू मेरा शक्ति स्रोत रहा है।

8उन अद्भुत कर्मो को सदा गाता रहा हूँ, जिनको तू करता है।

9केवल इस कारण की मैं बूढ़ा हो गया हूँ मुझे निकाल कर मत फेंक। मैं कमजोर हो गया हूँ मुझे मत छोड़।

10सचमुच, मेरे शत्रुओं ने मेरे विरुद्ध कुचक्र रच डाले हैं। सचमुच वे सब इकटठे हो गये हैं, और उनकी योजना मुझको मार डालने की है।

11मेरे शत्रु कहते हैं, "परमेश्वर ने उसको त्याग दिया है। जा, उसको पकड़ ला! कोई भी व्यक्ति उसे सहायता न देगा।"

12हे परमेश्वर, तू मुझको मत बिसरा! हे परमेश्वर, जल्दी कर! मुझको सहारा दे!

13मेरे शत्रुओं को तू पूरी तरह से पराजित कर दे! तू उनका नाश कर दे! मुझे कष्ट देने का वे यत्न कर रहे हैं। वे लज्जा अनुभव करें और अपमान भोगें।

14फिर मैं तो तेरे ही भरोसे, सदा रहूँगा। और तेरे गुण मैं अधिक और अधिक गाऊँगा।

15सभी लोगों से, मैं तेरा बखान करूँगा कि तू कितना उत्तम है। उस समय की बातें मैं उनको बताऊँगा, जब

तूने ऐसे मुझको एक नहीं अनगिनित अवसर पर बचाया था।
16हे यहोवा, मेरे स्वामी। मैं तेरी महानता का वर्णन करुँगा। बस केवल मैं तेरी और तेरी ही अच्छाई की चर्चा करुँगा।
17हे परमेश्वर, तूने मुझको बचपन से ही शिक्षा दी। मैं आज तक बखानता रहा हूँ, उन अद्भुत कर्मो को जिनको तू करता है!
18मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ और मेरे केश श्वेत है। किन्तु मैं जानता हूँ कि तू मुझको नहीं तजेगा। हर नयी पीढ़ी से, मैं तेरी शक्ति का और तेरी महानता का वर्णन करुँगा।
19हे परमेश्वर, तेरी धार्मिकता आकाशों से ऊँची है। हे परमेश्वर, तेरे समान अन्य कोई नहीं। तूने अदभुत आश्चर्यपूर्ण काम किये हैं।
20तूने मुझे बुरे समय और कष्ट देखने दिये। किन्तु तूने ही मुझे उन सब से बचा लिया और जीवित रखा है। इसका कोई अर्थ नहीं, मैं कितना ही गहरा डूबा तूने मुझको मेरे संकटों से उबार लिया।
21तू ऐसे काम करने की मुझको सहायता दे जो पहले से भी बड़े हो। मुझको सुख चैन देता रह।
22वीणा के संग, मैं तेरे गुण गाऊँगा। हे मेरे परमेश्वर, मैं यह गाऊँगा कि तुझ पर भरोसा रखा जा सकता है। मैं उसके लिए गीत अपनी सितार पर बजाया करुँगा जो इस्राएल का पवित्र यहोवा है।
23मेरे प्राणों की तूने रक्षा की है। मेरा मन मगन होगा और अपने होंठों से, मैं प्रशंसा का गीत गाऊँगा।
24मेरी जीभ हर घड़ी तेरी धार्मिकता के गीत गाया करेगी। ऐसे वे लोग जो मुझको मारना चाहते हैं, वे पराजित हो जायेंगे और अपमानित होंगे।

भजन 72

दाऊद के लिये।

1हे परमेश्वर, राजा की सहायता कर ताकि वह भी तेरी तरह से विवेकपूर्ण न्याय करे। राजपुत्र की सहायता कर ताकि वह तेरी धार्मिकता जान सके।
2राजा की सहायता कर कि तेरे भक्तों का वह निष्पक्ष न्याय करें। सहायता कर उसकी कि वह दीन जनों के साथ उचित व्यवहार करे।
3धरती पर हर कहीं शांति और न्याय रहे।
4राजा, निर्धन लोगों के प्रति न्यायपूर्ण रहे। वह असहाय लोगों की सहायता करे। वे लोग दण्डित हो जो उनको सताते हो।
5मेरी यह कामना है कि जब तक सूर्य आकाश में चमकता है, और चन्द्रमा आकाश में है। लोग राजा का भय मानें। मेरी आशा है कि लोग उसका भय सदा मानेंगे।
6राजा की सहायता, धरती पर पड़ने वाली बरसात बनने में कर।उसकी सहायता कर कि वह खेतों में पडने वाली बौछार बने।
7जब तक वह राजा है, भलाई फूले-फले। जब तक चन्द्रमा है, शांति बनी रहे।
8उसका राज्य सागर से सागर तक तथा परात नदी से लेकर सुदूर धरती तक फैल जाये।
9मरुभूमि के लोग उसके आगे झुके। और उसके सब शत्रु उसके आगे औंधे मुँह गिरे हुए धरती पर झुकें।
10तर्शीश का राजा और दूर देशों के राजा उसके लिए उपहार लायें। शेबा के राजा और सबा के राजा उसको उपहार दे।
11सभी राजा हमारे राजा के आगे झुके। सभी राष्ट्र उसकी सेवा करते रहें।
12हमारा राजा असहायों का सहायक है। हमारा राजा दीनों और असहाय लोगों को सहारा देता है।
13दीन, असहाय जन उसके सहारे हैं। यह राजा उनको जीवित रखता है।
14यह राजा उनको उन लोगों से बचाता है, जो क्रूर हैं और जो उनको दुःख देना चाहते हैं। राजा के लिये उन दीनों का जीवन बहुत महत्त्वपूर्ण है।
15राजा दीर्घायु हो! और शेबा से सोना प्राप्त करें। राजा के लिए सदा प्रार्थना करते रहो, और तुम हर दिन उसको आशीष दो।
16खेत भरपूर फसल दे। पहाड़ियाँ फसलों से ढक जायें। ये खेत लबानोन के खेतों से उपजाऊँ हो जायें। नगर लोगों की भीड़ से भर जाये, जैसे खेत घनी घास से भर जाते हैं।
17राजा का यश सदा बना रहे। लोग उसके नाम का स्मरण तब तक करते रहें, जब तक सूर्य चमकता है। उसके कारण सारी प्रजा धन्य हो जाये और वे सभी उसको आशीष दे।
18यहोवा परमेश्वर के गुण गाओं, जो इस्राएल का परमेश्वर है! वही परमेश्वर ऐसे आश्चर्यकर्म कर सकता है।
19उसके महिमामय नाम की प्रशंसा सदा करो! उसकी महिमा समस्त संसार में भर जाये! आमीन और आमीन!
20यिशै के पुत्र दाऊद की प्रार्थनाएं समाप्त हुई।

तीसरा भाग

भजन 73

आसाप का स्तुति गीत।

1सचमुच, इस्राएल के प्रति परमेश्वर भला है। परमेश्वर उन लोगों के लिए भला होता है जिनके हृदय स्वच्छ है।
2मैं तो लगभग फिसल गया था और पाप करने लगा।

3जब मैंने देखा कि पापी सफल हो रहे हैं और शांति से रह रहे हैं, तो उन अभिमानी लोगों से मुझको जलन हुयी।

4वे लोग स्वस्थ हैं उन्हें जीवन के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ता है।

5वे अभिमानी लोग पीड़ायें नहीं उठाते है। जैसे हमलोग दुःख झेलते हैं, वैसे उनको औरों की तरह यातनाएँ नहीं होती।

6इसलिए वे अहंकार से भरे रहते हैं। और वे घृणा से भरे हुए रहते हैं। ये वैसा ही साफ दिखता है, जैसे रत्न और वे सुन्दर वस्त्र जिनको वे पहने हैं।

7वे लोग ऐसे है कि यदि कोई वस्तु देखते हैं और उनको पसन्द आ जाती है, तो उसे बढ़कर झपट लेते हैं। वे वैस ही करते हैं, जैसे उन्हें भाता है।

8वे दूसरों के बारें में क्रूर बातें और बुरी बुरी बातें कहते है। वे अहंकारी और हठी है। वे दूसरे लोगों से लाभ उठाने का रास्ता बनाते है।

9अभिमानी मनुष्य सोचते हैं वे देवता हैं! वे अपने आप को धरती का शासक समझते हैं।

10यहाँ तक कि परमेश्वर के जन, उन दुष्टों की ओर मुड़ते और जैसा वे कहते है, वैसा विश्वास कर लेते हैं।

11वे दुष्ट जन कहते हैं, "हमारे उन कर्मो को परमेश्वर नहीं जानता! जिनकों हम कर रहे हैं!"

12वे मनुष्य अभिमान और कुटिल हैं, किन्तु वे निरन्तर धनी और अधिक धनी होते जा रहे हैं।

13सो मैं अपना मन पवित्र क्यों बनाता रहूँ? अपने हाथों को सदा निर्मल क्यों करता रहूँ?

14हे परमेश्वर, मैं सारे ही दिन दुःख भोगा करता हूँ। तू हर सुबह मुझको दण्ड देता है।

15हे परमेश्वर, मैं ये बातें दूसरो को बताना चाहता था। किन्तु मैं जानता था और मैं ऐसे ही तेरे भक्तों के विरुद्ध हो जाता था।

16इन बातों को समझने का, मैंने जतन किया किन्तु इनका समझना मेरे लिए बहुत कठिन था,

17जब तक मैं तेरे मन्दिर में नहीं गया। मैं परमेश्वर के मन्दिर में गया और तब मैं समझा।

18हे परमेश्वर, सचमुच तूने उन लोगों को भयंकर परिस्थिति में रखा है। उनका गिर जाना बहुत ही सरल है। उनका नष्ट हो जाना बहुत ही सरल है।

19सहसा उन पर विपत्ति पड़ सकती है, और वे अहंकारी जन नष्ट हो जाते हैं। उनके साथ भयंकर घटनाएँ घट सकती हैं, और फिर उनका अंत हो जाता है।

20हे यहोवा, वे मनुष्य ऐसे होंगे जैसे स्वप्न जिसको हम जागते ही भूल जाते हैं। तू ऐसे लोगों को हमारे स्वप्न के भयानक जन्तु की तरह अदृश्य कर दे।

21-22 मैं अज्ञान था। मैंने धनिकों और दुष्ट लोगों पर विचारा, और मैं व्याकुल हो गया। हे परमेश्वर, मैं तुझ पर क्रोधित हुआ! मैं निर्बुद्धि जानवर सा व्यवहार किया।

23वह सब कुछ मेरे पास है, जिसकी मुझे अपेक्षा है। मैं तेरे साथ हरदम हूँ। हे परमेश्वर, तू मेरा हाथ थामें है।

24हे परमेश्वर, तू मुझे मार्ग दिखलाता, और मुझे सम्मति देता है। अंत में तू अपनी महिमा में मेरा नेतृत्व करेगा।

25हे परमेश्वर, स्वर्ग में बस तू ही मेरा है, और धरती पर मुझे क्या चाहिए, जब तू मेरे साथ है?

26चाहे मेरा मन टूट जाये और मेरी काया नष्ट हो जाये किन्तु वह चट्टान मेरे पास है, जिसे मैं प्रेम करता हूँ। परमेश्वर मेरे पास सदा है!

27हे परमेश्वर, जो लोग तुझको त्यागते हैं, वे नष्ट हो जाते है। जिनका विश्वास तुझमें नहीं तू उन लोगों को नष्ट कर देगा।

28किन्तु, मैं परमेश्वर के निकट आया। मेरे साथ परमेश्वर भला है, मैंने अपना सुरक्षास्थान अपने स्वामी यहोवा को बनाया है। हे परमेश्वर, मैं उन सभी बातों का बखान करूँगा जिनको तूने किया है।

भजन 74

आसाप का एक प्रगीत।

1हे परमेश्वर, क्या तूने हमें सदा के लिये बिसराया है? क्योंकि तू अभी तक अपने निज जनों से क्रोधित है?

2उन लोगों को स्मरण कर जिनको तूने बहुत पहले मोल लिया था। हमको तूने बचा लिया था। हम तेरे अपने हैं। याद कर तेरा निवास सिय्योन के पहाड़ पर था।

3हे परमेश्वर, आ और इन अति प्राचीन खण्डहरों से हो कर चल। तू उस पवित्र स्थान पर लौट कर आजा जिसको शत्रु ने नष्ट कर दिया है।

4मन्दिर में शत्रुओं ने विजय उद्घोष किया। उन्होंने मन्दिर में निज झंडों को यह प्रकट करने के लिये गाड़ दिया है कि उन्होंने युद्ध जीता है।

5शत्रुओं के सैनिक ऐसे लग रहे थे, जैसे कोई खुरपी खरपतवार पर चलाती हो।

6हे परमेश्वर, इन शत्रु सैनिकों ने निज कुल्हाडे और फरसों का प्रयोग किया, और तेरे मन्दिर की नक्काशी फाड़ फेंकी।

7परमेश्वर इन सैनिकों ने तेरा पवित्र स्थान जला दिया। तेरे मन्दिर को धूल में मिला दिया, जो तेरे नाम को मान देने हेतु बनाया गया था।

8उस शत्रु ने हमको पूरी तरह नष्ट करने की ठान ली थी। सो उन्होंने देश के हर पवित्र स्थल को फूँक दिया।

9कोई संकेत हम देख नहीं पाये। कोई भी नबी बच
नहीं पाया था। कोई भी जानता नहीं था क्या किया
जाये।
10हे परमेश्वर, ये शत्रु कब तक हमारी हँसी उड़ायेंगे?
क्या तू इन शत्रुओं को तेरे नाम का अपमान सदा सर्वदा
करने देगा?
11हे परमेश्वर, तूने इतना कठिन दण्ड हमकों क्यों
दिया? तूने अपनी महाशक्ति का प्रयोग किया और हमें
पूरी तरह नष्ट किया!
12हे परमेश्वर, बहुत दिनों से तू ही हमारा शासक
रहा। इस देश में तूने अनेक युद्ध जीतने में हमारी
सहायता की।
13हे परमेश्वर, तूने अपनी महाशक्ति से लाल सागर
के दो भाग कर दिये।
14तूने विशालकाय समुद्री दानवों को पराजित किया!
तूने लिव्यातान के सिर कुचल दिये, और उसके शरीर
को जंगली पशुओं को खाने के लिये छोड़ दिया।
15तूने नदी, झरने रचे, फोड़कर जल बहाया। तूने
उफनती हुई नदियों को सुखा दिया।
16हे परमेश्वर, तू दिन का शासक है, और रात का
भी शासक तू ही है। तूने ही चाँद और सूरज को बनाया।
17तू धरती पर सब की सीमाएँ बाँधता है। तूने ही गर्मी
और सर्दी को बनाया।
18हे परमेश्वर, इन बातों को याद कर। और याद
कर की शत्रु ने तेरा अपमान किया है। वे मूर्ख लोग तेरे
नाम से बैर रखते हैं!
19हे परमेश्वर, उन जंगली पशुओं को निज कपोत
मत लेने दे! अपने दीन जनों को तू सदा मत बिसरा।
20हमने जो आपस में वाचा की है उसको याद कर,
इस देश में हर किसी अँधेरे स्थान पर हिंसा है।
21हे परमेश्वर, तेरे भक्तों के साथ अत्याचार किये
गये, अब उनको और अधिक मत सताया जाने दे। तेरे
असहाय दीन जन, तेरे गुण गाते है।
22हे परमेश्वर, उठ और प्रतिकार कर! स्मरण कर
की उन मूर्ख लोगों ने सदा ही तेरा अपमान किया है।
23वे बुरी बातें मत भूल जिन्हें तेरे शत्रुओं ने प्रतिदिन
तेरे लिये कही। भूल मत कि वे किस तरह तेरे से युद्ध
करते समय गुर्राये।

भजन 75

'नष्ट मत कर' नामक धुन पर संगीत निर्देशक के लिये आसाप का एक स्तुति गीत।

1हे परमेश्वर, हम तेरी प्रशंसा करते हैं! हम तेरे नाम
का गुणगान करते हैं! तू समीप है और लोग तेरे उन
अद्भुत कर्मों का जिनको तू करता है, बखान करते हैं।
2परमेश्वर कहता है, "मैंने न्याय का समय चुन लिया,
मैं निष्पक्ष होकर के न्याय करुँगा।
3धरती और धरती की हर वस्तु डगमगा सकती है
और गिरने को तैयार हो सकती है, किन्तु मैं ही उसे
स्थिर रखता हूँ।"
4-5"कुछ लोग बहुत ही अभिमानी होते हैं, वे सोचते
रहते है कि वे बहुत शक्तिशाली और महत्त्वपूर्ण है।
लेकिन उन लोगों को बता दो, 'डींग मत हाँकों!' 'इतने
अभिमानी मत बने रह!'"
6इस धरती पर सचमुच, कोई भी मनुष्य नीच को
महान नहीं बना सकता।
7परमेश्वर न्याय करता है। परमेश्वर इसका निर्णय
करता है कि कौन व्यक्ति महान होगा। परमेश्वर ही
किसी व्यक्ति को महत्त्वपूर्ण पद पर बिठाता है। और
किसी दूसरे को नीची दशा में पहुँचाता है।
8परमेश्वर दुष्टों को दण्ड देने को तत्पर है। परमेश्वर
के पास विष मिला हुआ मधु पात्र है। परमेश्वर इस
दाखमधु (दण्ड) को उण्डेलता है और दुष्ट जन उसे
अंतिम बूँद तक पीते हैं।
9मैं लोगों से इन बातों का सदा बखान करुँगा। मैं
इस्राएल के परमेश्वर के गुण गाऊँगा।
10मैं दुष्ट लोगों की शक्ति को छीन लूँगा, और मैं
सज्जनों को शक्ति दूँगा।

भजन 76

तार वाद्यों के संगीत निर्देशक के लिये आसाप का एक गीत।

1यहूदा के लोग परमेश्वर को जानते हैं। इस्राएल
जानता है कि सचमुच परमेश्वर का नाम बड़ा है।
2परमेश्वर का मन्दिर शालेम में स्थित है। परमेश्वर
का घर सिय्योन के पर्वत पर है।
3उस जगह पर परमेश्वर ने धनुष-बाण, ढाल, तलवारे
और युद्ध के दूसरे शस्त्रों को तोड़ दिया।
4हे परमेश्वर, जब तू उन पर्वतों से लौटता है, जहाँ
तूने अपने शत्रुओं को हरा दिया था, तू महिमा से
मण्डित रहता है।
5उन सैनिकों ने सोचा की वे बलशाली है। किन्तु वे
अब रणक्षेत्रों में मरे पड़े हैं। उनके शव जो कुछ भी
उनके साथ था, उस सब कुछ के रहित पड़े हैं। उन
बलशाली सैनिकों में कोई ऐसा नहीं था, जो आप स्वयं
का रक्षा कर पाता।
6याकूब का परमेश्वर उन सैनिकों पर गरजा और
वह सेना रथों और अश्वों सहित गिरकर मर गयी।
7हे परमेश्वर, तू भय विस्मयपूर्ण है! जब तू कुपित
होता है तेरे सामने कोई व्यक्ति टिक नहीं सकता।
8-9न्यायकर्ता के रुप में यहोवा ने खड़े होकर अपना
निर्णय सुना दिया। परमेश्वर ने धरती के नम्र लोगों को
बचाया। स्वर्ग से उसने अपना निर्णय दिया और सम्पूर्ण
धरती शब्द रहित और भयभीत हो गई।

10हे परमेश्वर, जब तू दुष्टों को दण्ड देता है। लोग तेरा
गुण गाते हैं। तू अपना क्रोध प्रकट करता है और शेष
बचे लोग बलशाली हो जाते हैं।
11लोग परमेश्वर की मन्नतें मानेंगे और वे उन वस्तुओं
को जिनकी मन्नतें उन्होंने मानीं हैं, यहोवा को अर्पण
करेंगे। लोग हर किसी स्थान से उस परमेश्वर को
उपहार लायेंगे।
12परमेश्वर बड़े बड़े सम्राटों को हराता है। धरती के
सभी शासकों उसका भय मानों।

भजन 77

यदूतून राग पर संगीत निर्देशक के लिये आसाप का एक पद।

1मैं सहायता पाने के लिये परमेश्वर को पुकारुँगा। हे
परमेश्वर, मैं तेरी विनती करता हूँ, तू मेरी सुन ले!
2हे मेरे स्वामी, मुझ पर जब दु:ख पड़ता है, मैं तेरी
शरण में आता हूँ। मैं सारी रात तुझ तक पहुँचने में
जुझा हूँ। मेरा मन चैन पाने को नहीं माना।
3मैं परमेश्वर का मनन करता हूँ, और मैं जतन
करता रहता हूँ कि मैं उससे बात करुँ और बता दूँ कि
मुझे कैसा लग रहा है। किन्तु हाय मैं ऐसा नहीं कर
पाता।
4तू मुझे सोने नहीं देगा। मैंने जतन किया है कि मैं
कुछ कह डालूँ, किन्तु मैं बहुत घबराया था।
5मैं अतीत की बातें सोचते रहा। बहुत दिनों पहले जो
बातें घटित हुई थी उनके विषय में मैं सोचता ही रहा।
6रात में, मैं निज गीतों के विषय में सोचता हूँ। मैं
अपने आप से बातें करता हूँ, और मैं समझने का यत्न
करता हूँ।
7मुझको यह हैरानी है, "क्या हमारे स्वामी ने हमे
सदा के लिये त्यागा है? क्या वह हमको फिर नहीं
चाहेगा?
8क्या परमेश्वर का प्रेम सदा को जाता रहा? क्या वह
हमसे फिर कभी बात करेगा?
9क्या परमेश्वर भूल गया है कि दया क्या होती है?
क्या उसकी करुणा क्रोध में बदल गयी है?"
10फिर यह सोचा करता हूँ, "वह बात जो मुझे खाये
डाल रही है: 'क्या परम परमेश्वर अपना निज शक्ति
खो बैठा है?'"
11याद करो वे शक्ति भरे काम जिनको यहोवा ने
किये। हे परमेश्वर, जो काम तूने बहुत समय पहले
किये मुझको याद है।
12मैंने उन सभी कामों को जिनको तूने किये है
मनन किया। जिन कामों को तूने किया मैंने सोचा है।
13हे परमेश्वर, तेरी राहें पवित्र हैं। हे परमेश्वर, कोई
भी महान नहीं है, जैसा तू महान है।
14तू ही वह परमेश्वर है जिसने अद्भुत कार्य किये।
तू ने लोगों को अपनी निज महाशक्ति दर्शायी।
15तूने निज शक्ति का प्रयोग किया और भक्तों को
बचा लिया। तूने याकूब और यूसुफ की संताने बचा ली।
16हे परमेश्वर, तुझे सागर ने देखा और वह डर गया।
गहरा समुद्र भय से थर थर काँप उठा।
17सघन मेघों से उनका जल छूट पड़ा था। ऊँचे मेघों
से तीव्र गर्जन लोगों ने सुना। फिर उन बादलों से बिजली
के तेरे बाण सारे बादलों में कौंध गये।
18कौंधती बिजली में झँझावान ने तालियाँ बजायी जगत
चमक-चमक उठा। धरती हिल उठी और थर थर
काँप उठी।
19हे परमेश्वर, तू गहरे समुद्र में ही पैदल चला। तूने
चलकर ही सागर पार किया। किन्तु तूने कोई पद चिन्ह
नहीं छोड़ा।
20तूने मूसा और हारुन का उपयोग निज भक्तों की
अगुवाई भेड़ों के झुण्ड की तरह करने में किया।

भजन 78

आसाप का एक गीत।

1मेरे भक्तों, तुम मेरे उपदेशों को सुनो। उन बातों पर
कान दो जिन्हें मैं बताता हूँ।
2मैं तुम्हें यह कथा सुनाऊँगा। मैं तुम्हें पुरानी कथा
सुनाऊँगा।
3हमने यह कहानी सुनी है, और इसे भली भाँति
जानते हैं। यह कहानी हमारे पूर्वजों ने कही।
4इस कहानी को हम नहीं भूलेंगे। हमारे लोग इस
कथा को अगली पीढ़ी को सुनाते रहेंगे। हम सभी
यहोवा के गुण गायेंगे। हम उन का अद्भुत कर्मों का
जिनको उसने किया है बखान करेंगे।
5यहोवा ने याकूब से वाचा किया। परमेश्वर ने इस्राएल
को व्यवस्था का विधान दिया, और परमेश्वर ने हमारे
पूर्वजों को आदेश दिया। उसने हमारे पूर्वजों को व्यवस्था
का विधान अपने संतानों को सिखाने को कहा।
6इस तरह लोग व्यवस्था के विधान को जानेंगे। यहाँ
तक कि अन्तिम पीढ़ी तक इसे जानेगी। नयी पीढ़ी जन्म
लेगी और पल भर में बढ़ कर बड़े होंगे, और फिर वे
इस कहानी को अपनी संतानों को सुनायेंगे।
7अत: वे सभी लोग यहोवा पर भरोसा करेंगे। वे उन
शक्तिपूर्ण कामों को नहीं भूलेंगे जिनको परमेश्वर ने
किया था। वे ध्यान से रखवाली करेंगे और परमेश्वर
के आदेशों का अनुसरण करेंगे।
8अत: लोग अपनी संतानों को परमेश्वर के आदेशों
को सिखायेंगे, तो फिर वे संतानें उनके पूर्वजों जैसे नहीं
होंगे। उनके पूर्वजों ने परमेश्वर से अपना मुख मोड़ा
और उसका अनुसरण करने से इन्कार किया, वे लोग
हठी थे। वे परमेश्वर के आत्मा के भक्त नहीं थे।

9एप्रैम के लोग शस्त्र धारी थे, किन्तु वे युद्ध से पीठ दिखा गये।

10उन्होंने जो यहोवा से वाचा किया था पाला नहीं। वे परमेश्वर के सीखों को मानने से मुकर गये।

11एप्रैम के वे लोग उन बड़ी बातों को भूल गए जिन्हें परमेश्वर ने किया था। वे उन अद्‌भुत बातों को भूल गए जिन्हें उसने उन्हें दिखायी थी।

12परमेश्वर ने उनके पूर्वजों को मिस्र के सोअन में निज महाशक्ति दिखायी।

13परमेश्वर ने लाल सागर को चीर कर लोगों को पार उतार दिया। पानी पक्की दीवार सा दोनों ओर खड़ा रहा।

14हर दिन उन लोगों को परमेश्वर ने महा बादल के साथ अगुवाई की। हर रात परमेश्वर ने आग के लाट के प्रकाश से राह दिखाया।

15परमेश्वर ने मरुस्थल में चट्टान को फाड़ कर गहरे धरती के नीचे से जल दिया।

16परमेश्वर चट्टान से जलधारा वैसे लाया जैसे कोई नदी हो!

17किन्तु लोग परमेश्वर के विरोध में पाप करते रहे। वे मरुस्थल तक में, परम परमेश्वर के विरुद्ध हो गए।

18फिर उन लोगों ने परमेश्वर को परखने का निश्चय किया। उन्होंने बस अपनी भूख मिटाने के लिये परमेश्वर से भोजन माँगा।

19परमेश्वर के विरुद्ध वे बतियाने लगे, वे कहने लगे, "क्या मरुभूमि में परमेश्वर हमें खाने को दे सकता है?

20परमेश्वर ने चट्टान पर चोट की और जल का एक रेला बाहर फूट पड़ा। निश्चय ही वह हमको कुछ रोटी और माँस दे सकता है।"

21यहोवा ने सुन लिया जो लोगों ने कहा था। याकूब से परमेश्वर बहुत ही कुपित था। इस्राएल से परमेश्वर बहुत ही कुपित था।

22क्यों? क्योंकि लोगों ने उस पर भरोसा नहीं रखा था, उन्हें भरोसा नहीं था, कि परमेश्वर उन्हें बचा सकता है।

23-24किन्तु तब भी परमेश्वर ने उन पर बादल को उघाड़ दिया, उनके खाने के लिये नीचे मन्ना बरसा दिया। यह ठीक वैसे ही हुआ जैसे अम्बर के द्वार खुल जाये और आकाश के कोठे से बाहर अन्न उँडेला हो।

25लोगों ने वह स्वर्गदूत का भोजन खाया। उन लोगों को तृप्त करने के लिये परमेश्वर ने भरपूर भोजन भेजा।

26-27फिर परमेश्वर ने पूर्व से तीव्र पवन चलाया और उन पर बटेरे वर्षा जैसे गिरने लगे। तिमान की दिशा से परमेश्वर की महाशक्ति ने एक आँधी उठायी और नीला आकाश काला हो गया क्योंकि वहाँ अनगिनत पक्षी छाए थे।

28वे पक्षी ठीक डेरे के बीच में गिरे थे। वे पक्षी उन लोगों के डेरों के चारों तरफ गिरे थे।

29उनके पास खाने को भरपूर हो गया, किन्तु उनकी भूख ने उनसे पाप करवाये।

30उन्होंने अपनी भूख पर लगाम नहीं लगायी। सो उन्होंने उन पक्षियों को बिना ही रक्त निकाले, बटेरो को खा लिया।

31सो उन लोगों पर परमेश्वर अति कुपित हुआ और उनमें से बहुतों को मार दिया। उसने बलशाली युवकों को मृत्यु का ग्रास बना दिया।

32फिर भी लोग पाप करते रहे! वे उन अद्‌भुत कर्मों के भरोसे नहीं रहे, जिनको परमेश्वर कर सकता है।

33सो परमेश्वर ने उनके व्यर्थ जीवन को किसी विनाश से अंत किया।

34जब कभी परमेश्वर ने उनमें से किसी को मारा। वे बाकि परमेश्वर की ओर लौटने लगे। वे दौड़कर परमेश्वर की ओर लौट गये।

35वे लोग याद करेंगे कि परमेश्वर उनकी चट्टान रहा था। वे याद करेंगे की परम परमेश्वर ने उनकी रक्षा की।

36वैसे तो उन्होंने कहा था कि वे उससे प्रेम रखते हैं। उन्होंने झूठ बोला था। ऐसा कहने में वे सच्चे नहीं थे।

37वे सचमुच मन से परमेश्वर के साथ नहीं थे। वे वाचा के लिये सच्चे नहीं थे।

38किन्तु परमेश्वर करुणापूर्ण था। उसने उन्हें उनके
पापों के लिये क्षमा किया, और उसने उनका विनाश
नहीं किया। परमेश्वर ने अनेकों अवसर पर अपना
क्रोध रोका। परमेश्वर ने अपने को अति कुपित होने
नहीं दिया। 39परमेश्वर को याद रहा कि वे मात्र मनुष्य
हैं। मनुष्य केवल हवा जैसे है जो बह कर चली जाती है
और लौटती नहीं।

40हाय, उन लोगों ने मरुभूमि में परमेश्वर को कष्ट दिया! उन्होंने उसको बहुत दु:खी किया था!

41परमेश्वर के धैर्य को उन लोगों ने फिर परखा, सचमुच इस्राएल के उस पवित्र को उन्होंने कष्ट दिया।

42वे लोग परमेश्वर की शक्ति को भूल गये। वे लोग भूल गये कि परमेश्वर ने उनको कितनी ही बार शत्रुओं से बचाया।

43वे लोग मिस्र की अद्‌भुत बातों को और सोअन के क्षेत्रों के चमत्कारों को भूल गये।

44उनकी नदियों को परमेश्वर ने खून में बदल दिया था! जिनका जल मिस्र के लोग पी नहीं सकते थे।

45परमेश्वर ने भिड़ों के झुण्ड भेजे थे जिन्होंने मिस्र के लोगों को डसा। परमेश्वर ने उन मेढकों को भेजा जिन्होंने मिस्रियों के जीवन को उजाड़ दिया।

46परमेश्वर ने उनके फसलों को टिड्डों को दे डाला। उनके दूसरे पौधे टिड्डियों को दे दिये।

47परमेश्वर ने मिस्रियों के अंगूर के बाग ओलों से नष्ट किये, और पाला गिरा कर के उनके वृक्ष नष्ट कर दिये।

48परमेश्वर ने उनके पशु ओलों से मार दिये और बिजलियाँ गिरा कर पशु धन नष्ट किये।

49परमेश्वर ने मिस्र के लोगों को अपना प्रचण्ड क्रोध दिखाया। उनके विरोध में उसने अपने विनाश के दूत भेजे।

50परमेश्वर ने क्रोध प्रकट करने के लिये एक राह पायी। उनमें से किसी को जीवित रहने नहीं दिया। हिंसक महामारी से उसने सारे ही पशुओं को मर जाने दिया।

51परमेश्वर ने मिस्र के हर पहले पुत्र को मार डाला। हाम के घराने के हर पहले पुत्र को उसने मार डाला।

52फिर उसने इस्राएल की चरवाहे के समान अगुवाई की। परमेश्वर ने अपने लोगों को ऐसे राह दिखाई जैसे जंगल में भेड़ों कि अगुवाई की है।

53वह अपने निज लोगों को सुरक्षा के साथ ले चला। परमेश्वर के भक्तों को किसी से डर नहीं था। परमेश्वर ने उनके शत्रुओं को लाल सागर में डुबाया।

54परमेश्वर अपने निज भक्तों को अपनी पवित्र धरती पर ले आया। उसने उन्हें उस पर्वत पर लाया जिसे उसने अपनी ही शक्ति से पाया।

55परमेश्वर ने दूसरी जातियों को वह भूमि छोड़ने को विवश किया। परमेश्वर ने प्रत्येक घराने को उनका भाग उस भूमि में दिया। इस तरह इस्राएल के घराने अपने ही घरों में बस गये।

56इतना होने पर भी इस्राएल के लोगों ने परम परमेश्वर को परखा और उसको बहुत दु:खी किया। वे लोग परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं करते थे।

57इस्राएल के लोग परमेश्वर से भटक कर विमुख हो गये थे। वे उसके विरोध में ऐसे ही थे, जैसे उनके पूर्वज थे। वे इतने बुरे थे जैसे मुड़ा धनुष।

58इस्राएल के लोगों ने ऊँचे पूजा स्थल बनाये और परमेश्वर को कुपित किया। उन्होंने देवताओं की मूर्तियाँ बनाई और परमेश्वर को ईर्ष्यालु बनाया।

59परमेश्वर ने यह सुना और बहुत कुपित हुआ। उसने इस्राएल को पूरी तरह नकारा!

60परमेश्वर ने शिलोह के पवित्र तम्बू को त्याग दिया। यह वही तम्बू था जहाँ परमेश्वर लोगों के बीच में रहता था।

61फिर परमेश्वर ने उसके निज लोगों को दूसरी जातियों को बंदी बनाने दिया। परमेश्वर के "सुन्दर रत्न" को शत्रुओं ने छीन लिया।

62परमेश्वर ने अपने ही लोगों (इस्राएली) पर निज क्रोध प्रकट किया। उसने उनको युद्ध में मार दिया।

63उनके युवक जलकर राख हुए, और वे कन्याएँ जो विवाह योग्य थीं, उनके विवाह गीत नहीं गाये गए।

64याजक मार डाले गए, किन्तु उनकी विधवाएँ उनके लिए नहीं रोई।

65अंत में, हमारा स्वामी उठ बैठा जैसे कोई नींद से जागकर उठ बैठता हो। या कोई योद्धा दाखमधु के नशे से होश में आया हो।

66फिर तो परमेश्वर ने अपने शत्रुओं को मारकर भगा दिया और उन्हें पराजित किया। परमेश्वर ने अपने शत्रुओं को हरा दिया और सदा के लिये अपमानित किया।

67किन्तु परमेश्वर ने यूसुफ के घराने को त्याग दिया। परमेश्वर ने इब्राहीम परिवार को नहीं चुना।

68परमेश्वर ने यहूदा के गोत्र को नहीं चुना और परमेश्वर ने सिय्योन के पहाड़ को चुना जो उसको प्रिय है।

69उस ऊँचे पर्वत पर परमेश्वर ने अपना पवित्र मन्दिर बनाया। जैसे धरती अडिग है वैसे ही परमेश्वर ने निज पवित्र मन्दिर को सदा बने रहने दिया।

70परमेश्वर ने दाऊद को अपना विशेष सेवक बनाने में चुना। दाऊद तो भेड़ों कि देखभाल करता था, किन्तु परमेश्वर उसे उस काम से ले आया।

71परमेश्वर दाऊद को भेड़ों को रखवाली से ले आया और उसने उसे अपने लोगों कि रखवाली का काम सौंपा, याकूब के लोग, यानी इस्राएल के लोग जो परमेश्वर की सम्पती थे।

72और फिर पवित्र मन से दाऊद ने इस्राएल के लोगों की अगुवाई की। उसने उन्हें पूरे विवेक से राह दिखाई।

भजन 79

आसाप का एक स्तुति गीत।

1हे परमेश्वर, कुछ लोग तेरे भक्तों के साथ लड़ने आये हैं। उन लोगों ने तेरे पवित्र मन्दिर को ध्वस्त किया, और यरुशलेम को उन्होंने खण्डहर बना दिया।

2तेरे भक्तों के शवों को उन्होंने गिद्धों को खाने के लिये डाल दिया। तेरे अनुयायिओं के शव उन्होंने पशुओं के खाने के लिये डाल दिया।

3हे परमेश्वर, शत्रुओं ने तेरे भक्तों को तब तक मार जब तक उनका रक्त पानी सा नहीं फैल गया। उनके शव दफनाने को कोई भी नहीं बचा।

4हमारे पड़ोसी देशों ने हमें अपमानित किया है। हमारे आस पास के लोग सभी हँसते हैं, और हमारी हँसी उड़ाते हैं।

5हे परमेश्वर, क्या तू सदा के लिये हम पर कुपित रहेगा? क्या तेरे तीव्र भाव अग्नि के समान धधकते रहेंगे?

6हे परमेश्वर, अपने क्रोध को उन राष्ट्रों के विरोध में जो तुझको नहीं पहचानते मोड़, अपने क्रोध को उन राष्ट्रों के विरोध में मोड़ जो तेरे नाम की आराधना नहीं करते।

7क्योंकि उन राष्ट्रों ने याकूब को नाश किया। उन्होंने याकूब के देश को नाश किया।

8हे परमेश्वर, तू हमारे पूर्वजों के पापों के लिये कृपा करके हमको दण्ड मत दे। जल्दी कर, तू हम पर निज करुणा दर्शा! हम को तेरी बहुत उपेक्षा है!

9हमारे परमेश्वर, हमारे उद्धारकर्ता, हमको सहारा दे! अपने ही नाम की महिमा के लिये हमारी सहायता कर! हमको बचा ले! निज नाम के गौरव निमित्त हमारे पाप मिटा।

10दूसरी जाति के लोगों को तू यह मत कहने दे, "तुम्हारा परमेश्वर कहाँ है? क्या वह तुझको सहारा नहीं दे सकता है?" हे परमेश्वर, उन लोगों को दण्ड दे ताकि उस दण्ड को हम भी देख सकें। उन लोगों को तेरे भक्तों को मारने का दण्ड दे।

11बंदी गृह में पड़े हुओं कि कृपया तू कराह सुन ले! हे परमेश्वर, तू निज महाशक्ति प्रयोग में ला और उन लोगों को बचा ले जिनको मरने के लिये ही चुना गया है।

12हे परमेश्वर, हम जिन लोगों से घिरे हैं, उनको उन अत्यचारों का दण्ड सात गुणा दे। हे परमेश्वर, उन लोगों को इतनी बार दण्ड दे जितनी बार वे तेरा अपमान किये है।

13हम तो तेरे भक्त हैं। हम तेरे रेवड़ की भेड़ हैं। हम तेरा गुणगान सदा करेंगे। हे परमेश्वर अंत काल तक तेरा गुण गायेंगे।

भजन 80

वाचा की कुमुदिनी धुन पर संगीत निर्देशक के लिये आसाप का एक स्तुति गीत।

1हे इस्राएल के चरवाहे, तू मेरी सुन ले। तूने यूसुफ के भेड़ों (लोगों)की अगुवाई की। तू राजा सा करुब पर विराजता है। हमको निज दर्शन दे।

2हे इस्राएल के चरवाहे, एप्रैम, बिन्यामीन और मनश्शे के सामने तू अपनी महिमा दिखा, और हमको बचा ले।

3हे परमेश्वर, हमको स्वीकार कर। हमको स्वीकार कर और हमारी रक्षा कर!

4सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा , क्या तू सदा के लिये हम पर कुपित रहेगा? हमारी प्रार्थनाओं को तू कब सुनेगा?

5अपने भक्तों को तूने बस खाने को आँसू दिये है। तूने अपने भक्तों को पीने के लिये आँसुओं से लबालब प्याले दिये।

6तूने हमें हमारे पड़ोसियों के लिये कोई ऐसी वस्तु बनने दिया जिस पर वे झगड़ा करे। हमारे शत्रु हमारी हँसी उड़ाते हैं।

7हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर, फिर हमको स्वीकार कर। हमको स्वीकार कर और हमारी रक्षा कर।

8प्राचीन काल में, तूने हमें एक अति महत्त्वपूर्ण पौधे सा समझा। तू अपनी दाखलता मिस्र से बाहर लाया। तूने दूसरे लोगों को यह धरती छोड़ने को विवश किया और यहाँ तूने अपनी निज दाखलता रोप दी।

9तूने दाखलता रोपने को धरती को तैयार किया, उसकी जड़ों को पक्की करने के लिये तूने सहारा दिया और फिर शीघ्र ही दाखलता धरती पर हर कहीं फैल गई।

10उसने पहाड़ ढक लिया। यहाँ तक कि उसके पत्तों ने विशाल देवदार वृक्ष को भी ढक लिया।

11इसकी दाखलताएँ भूमध्य सागर तक फैल गई। इसकी जड़ परात नदी तक फैल गई।

12हे परमेश्वर, तूने वे दीवारें क्यों गिरा दी, जो तेरी दाखलता की रक्षा करती थी। अब वह हर कोई जो वहाँ से गुजरता है, वहाँ से अंगूर को तोड़ लेते हैं।

13बनैले सुअर आते हैं, और तेरी दाखलता को रौंदते हुए गुजर जाते हैं। जंगली पशु आते हैं, और उसकी पत्तियाँ चर जाते हैं।

14सर्वशक्तिमान परमेश्वर, वापस आ। अपनी दाखलता पर स्वर्ग से नीचे देख, और इसकी रक्षा कर।

15हे परमेश्वर, अपनी उस दाखलता को देख जिसको तूने स्वयं निज हाथों से रोपा था। इस बच्चे पौधे को देख जिसे तूने बढ़ाया।

16तेरी दाखलता को सूखे हुए उपलों सा आग में जलाया गया। तू इससे क्रोधित था और तूने उजाड़ दिया।

17हे परमेश्वर, तू अपना हाथ उस पुत्र पर रख जो तेरे दाहिनी ओर खड़ा है। उस पुत्र पर हाथ रख जिसे तूने उठाया।

18फिर वह कभी तुझको नहीं त्यागेगा। तू उसको जीवित रख, और वह तेरे नाम की आराधना करेगा।

19सर्वशक्तिमान यहोवा परमेश्वर, हमारे पास लौट आ हमको अपना ले, और हमारी रक्षा कर।

भजन 81

गित्तीथ क संगत पर संगीत निर्देशक के लिये आसाप का एक पद।

1परमेश्वर जो हमारी शक्ति है आनन्द के साथ तुम उसके गीत गाओ, तुम उसका जो इस्राएल का परमेश्वर है, जय जयकार जोर से बोलो।

2संगीत आरम्भ करो। तम्बूरे बजाओ। वीणा सारंगी से मधुर धुन निकालो।
3नये चाँद के समय में तुम नरसिंगा फूँको। पूर्णमासी के अवसर पर तुम नरसिंगा फूँको। यह वह काल है जब हमारे विश्राम के दिन शुरु होते हैं।
4इस्राएल के लोगों के लिये ऐसा ही नियम है। यह आदेश परमेश्वर ने याकूब को दिये है।
5परमेश्वर ने यह वाचा यूसुफ के साथ तब किया था जब परमेश्वर उसे मिस्र से दूर ले गया। मिस्र में हमने वह भाषा सुनी थी जिसे हम लोग समझ नहीं पाये थे।
6परमेश्वर कहता है, "तुम्हारे कन्धों का बोझ मैंने ले लिया है। मजदूर की टोकरी मैं उतार फेंकने देता हूँ।
7जब तुम विपत्ति में थे तुमने सहायता को पुकारा और मैंने तुम्हें छुड़ाया। मैं तूफानी बादलों में छिपा हुआ था और मैंने तुमको उत्तर दिया। मैंने तुम्हें मरिबा के जल के पास परखा।
8अरे मेरे लोगों, तुम मेरी बात सुनों। और मैं तुमको अपना वाचा दूँगा। इस्राएल, तू मुझ पर अवश्य कान दे!
9तू किसी मिथ्या देव जिनको विदेशी लोग पूजते हैं, पूजा मत कर।
10मैं, यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर हूँ। मैं वही परमेश्वर जो तुम्हें मिस्र से बाहर लाया था। हे इस्राएल, तू अपना मुख खोल, मैं तुझको निवाला दूँगा।
11किन्तु मेरे लोगों ने मेरी नहीं सुनी। इस्राएल ने मेरी आज्ञा नहीं मानी।
12इसलिए मैंने उन्हें वैसा ही करने दिया, जैसा वे करना चाहते थे। इस्राएल ने वो सब किया जो उन्हें भाता था।
13भला होता मेरे लोग मेरी बात सुनते, और काश! इस्राएल वैसा ही जीवन जीता जैसा मैं उससे चाहता था।
14तब मैं फिर इस्राएल के शत्रुओं को हरा देता। मैं उन लोगों को दण्ड देता जो इस्राएल को दु:ख देते।
15यहोवा के शत्रु डर से थर थर काँपते हैं। वे सदा सर्वदा को दण्डित होंगे।
16परमेश्वर निज भक्तों को उत्तम गेहूँ देगा। चट्टान उन्हें शहद तब तक देगी जब तक तृप्त नहीं होंगे।"

भजन 82

आसाप का एक स्तुति गीत।

1परमेश्वर देवों की सभा के बीच विराजता है। उन देवों की सभा का परमेश्वर न्यायाधीश है।
2परमेश्वर कहता है, "कब तक तुम लोग अन्यायपूर्ण न्याय करोगे? कब तक तुम लोग दुराचारी लोगों को यूँ ही बिना दण्ड दिए छोड़ते रहोगे?
3अनाथों और दीन लोगों की रक्षा कर। जिन्हें उचित व्यवहार नहीं मिलता तू उनके अधिकारों कि रक्षा कर।
4दीन और असहाय जन की रक्षा कर। दुष्टों के चंगुल से उनको बचा ले।
5इस्राएल के लोग नहीं जानते क्या कुछ घट रहा है। वे समझते नहीं! वे जानते नहीं वे क्या कर रहे हैं। उनका जगत उनके चारों ओर गिर रहा है।"
6मैंने (परमेश्वर) कहा, "तुम लोग ईश्वर हो, तुम परम परमेश्वर के पुत्र हो।
7किन्तु तुम भी वैसे ही मर जाओगे जैसे निश्चय ही सब लोग मर जाते हैं। तुम वैसे मरोगे जैसे अन्य नेता मर जाते हैं।"
8हे परमेश्वर, खड़ा हो! तू न्यायाधीश बन जा! हे परमेश्वर, तू सारे ही राष्ट्रों का नेता बन जा!

भजन 83

आसाप का एक स्तुति गीत।

1हे परमेश्वर, तू मौन मत रह! अपने कानों को बंद मत कर! हे परमेश्वर, कृपा करके कुछ बोल।
2हे परमेश्वर, तेरे शत्रु तेरे विरोध में कुचक्र रच रहे हैं। तेरे शत्रु शीघ्र ही वार करेंगे।
3वे तेरे भक्तों के विरुद्ध षड़यन्त्र रचते हैं। तेरे शत्रु उन लोगों के विरोध में जो तुझको प्यारे हैं योजनाएँ बना रहे हैं।
4वे शत्रु कह रहे हैं, "आओ, हम उन लोगों को पूरी तरह मिटा डाले, फिर कोई भी व्यक्ति 'इस्राएल' का नाम याद नहीं करेगा।"
5हे परमेश्वर, वे सभी लोग तेरे विरोध में और तेरे उस वाचा के विरोध में जो तूने हमसे किया है। युद्ध करने के लिये एक जुट हो गए।
6 ये शत्रु हमसे युद्ध करने के लिये एक जुट हुए हैं: एदोमी, इश्माएली, मोआबी और हाजिरा की संताने, गबाली और
7अम्मोनी, अमालेकी और पलिश्ती के लोग, और सूर के निवासी लोग। ये सभी लोग हमसे युद्ध करने जुट आये।
8यहाँ तक कि अश्शूरी भी उन लोगों से मिल गये। उन्होंने लूत के वंशजों को अति बलशाली बनाया।
9हे परमेश्वर, तू शत्रु वैसे हरा जैसे तूने मिद्यानी लोगों, सिसरा, याबीन को किशोन नदी के पास हराया।
10तूने उन्हें एन्दोर में हराया। उनकी लाशें धरती पर पड़ी सड़ती रहीं।
11हे परमेश्वर, तू शत्रुओं के सेनापति को वैसे पराजित कर जैसे तूने ओरेब और जायेब के साथ किया था, कर जैसे तूने जेबह और सलमुन्ना के साथ किया।
12हे परमेश्वर, वे लोग हमको धरती छोड़ने के लिये दबाना चाहते थे!

13उन लोगों को तू उखड़े हुए पौधा सा बना जिसको पवन उड़ा ले जाता है। उन लोगों को ऐसे बिखेर दे जैसे भूसे को आँधी बिखेर देती है।

14शत्रु को ऐसे नष्ट कर जैसे वन को आग नष्ट कर देती है, और जंगली आग पहाड़ों को जला डालती है।

15हे परमेश्वर, उन लोगों का पीछा कर भगा दे, जैसे आँधी से धूल उड़ जाती है। उनको कँपा और फूँक में उड़ा दे जैसे चक्रवात करता है।

16हे परमेश्वर, उनको ऐसा पाठ पढ़ा दे, कि उनको अहसास हो जाये कि वे सचमुच दुर्बल हैं। तभी वे तेरे काम को पूजना चाहेंगे!

17हे परमेश्वर, उन लोगों को भयभीत कर दे और सदा के लिये अपमानित करके उन्हें नष्ट कर दे।

18वे लोग तभी जानेंगे कि तू परमेश्वर है। तभी वे जानेंगे तेरा नाम यहोवा है। तभी वे जानेंगे तू ही सारे जगत का परम परमेश्वर है!

भजन 84

मित्तिथ की संगत पर संगीत निर्देशक के लिये कोरह वंशियों का एक स्तुति गीत।

1सर्वशक्तिमान यहोवा, सचमुच तेरा मन्दिर कितना मनोहर है।

2हे यहोवा, मैं तेरे मन्दिर में रहना चाहता हूँ। मैं तेरी बाट जोहते थक गया हूँ! मेरा अंग अंग जीवित यहोवा के संग होना चाहता है।

3सर्वशक्तिमान यहोवा, मेरे राजा, मेरे परमेश्वर, गौरेया और शूपाबेनी तक के अपने घोंसले होते हैं। ये पक्षी तेरी वेदी के पास घोंसले बनाते हैं और उन्हीं घोंसलों में उनके बच्चे होते हैं।

4जो लोग तेरे मन्दिर में रहते हैं, अति प्रसन्न रहते हैं। वे तो सदा ही तेरा गुण गाते हैं।

5वे लोग अपने हृदय में गीतों के साथ जो तेरे मन्दिर में आते हैं, बहुत आनन्दित हैं।

6वे प्रसन्न लोग बाका घाटी जिसे परमेश्वर ने झरने सा बनाया है गुजरते हैं। गर्मी की गिरती हुई वर्षा की बूँदे जल के सरोवर बनाती है।

7लोग नगर नगर होते हुए सिय्योन पर्वत की यात्रा करते हैं जहाँ वे अपने परमेश्वर से मिलेंगे।

8सर्वशक्तिमान यहोवा परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन! याकूब के परमेश्वर तू मेरी सुन ले।

9हे परमेश्वर, हमारे संरक्षक की रक्षा कर। अपने चुने हुए राजा पर दयालु हो।

10हे परमेश्वर, कहीं और हजार दिन ठहरने से तेरे मन्दिर में एक दिन ठहरना उत्तम है। दुष्ट लोगों के बीच वास करने से, अपने परमेश्वर के मन्दिर के द्वार के पास खड़ा रहूँ यही उत्तम है।

11यहोवा हमारा संरक्षक और हमारा तेजस्वी राजा है। परमेश्वर हमें करुणा और महिमा के साथ आशीर्वाद देता है। जो लोग यहोवा का अनुसरण करते हैं और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, उनको वह हर उत्तम वस्तु देता है।

12सर्वशक्तिमान यहोवा, जो लोग तेरे भरोसे हैं वे सचमुच प्रसन्न हैं!

भजन 85

संगीत निर्देशक के लिये कोरह वंशियों का एक स्तुति गीत।

1हे यहोवा, तू अपने देश पर कृपालु हो। विदेश में याकूब के लोग कैदी बने हैं। उन बंदियों को छुड़ाकर उनके देश में वापस ला।

2हे यहोवा, अपने भक्तों के पापों को क्षमा कर। तू उनके पाप मिटा दे।

3हे यहोवा, कुपित होना त्याग। आवेश से उन्मत मत हो।

4हमारे परमेश्वर, हमारे संरक्षक, हम पर तू कुपित होना छोड़ दे और फिर हमको स्वीकार कर ले।

5क्या तू सदा के लिये हमसे कुपित रहेगा?

6कृपा करके हमको फिर जिला दे! अपने भक्तों को तू प्रसन्न कर दे।

7हे यहोवा, तू हमें दिखा दे कि तू हमसे प्रेम करता है। हमारी रक्षा कर।

8जो परमेश्वर ने कहा, मैंने उस पर कान दिया। यहोवा ने कहा कि उसके भक्तों के लिये वहाँ शांति होगी। यदि वे अपने जीवन की मूर्खता की राह पर नहीं लौटेंगे तो वे शांति को पायेंगे।

9परमेश्वर शीघ्र अपने अनुयायियों को बचाएगा। अपने स्वदेश में हम शीघ्र ही आदर के साथ वास करेंगे।

10परमेश्वर का सच्चा प्रेम उनके अनुयायियों को मिलेगा। नेकी और शांति चुम्बन के साथ उनका स्वागत करेंगी।

11धरती पर बसे लोग परमेश्वर पर विश्वास करेंगे, और स्वर्ग का परमेश्वर उनके लिये भला होगा।

12यहोवा हमें बहुत सी उत्तम वस्तुएँ देगा। धरती अनेक उत्तम फल उपजायेगी।

13परमेश्वर के आगे आगे नेकी चलेगी, और वह उसके लिये राह बनायेगी।

भजन 86

दाऊद की प्रार्थना।

1मैं एक दीन, असहाय जन हूँ। हे यहोवा, तू कृपा करके मेरी सुन ले, और तू मेरी विनती का उत्तर दे।

2हे यहोवा, मैं तेरा भक्त हूँ। कृपा करके मुझको बचा ले। मैं तेरा दास हूँ। तू मेरा परमेश्वर है। मुझको तेरा भरोसा है, सो मेरी रक्षा कर।

3मेरे स्वामी, मुझ पर दया कर। मैं सारे दिन तेरी विनती करता रहा हूँ।

4हे स्वामी, मैं अपना जीवन तेरे हाथ सौंपता हूँ। मुझको तू सुखी बना मैं तेरा दास हूँ।

5हे स्वामी, तू दयालु और खरा है। तू सचमुच अपने उन भक्तों को प्रेम करता है, जो सहारा पाने को तुझको पुकारते हैं।

6हे यहोवा, मेरी विनती सुन। मैं दया के लिये जो प्रार्थना करता हूँ, उस पर तू कान दे।

7हे यहोवा, अपने संकट की घड़ी में मैं तेरी विनती कर रहा हूँ। मैं जानता हूँ तू मुझको उत्तर देगा।

8हे परमेश्वर, तेरे समान कोई नहीं। जैसे काम तूने किये हैं वैसा काम कोई भी नहीं कर सकता।

9हे स्वामी, तूने ही सब लोगों को रचा है। मेरी कामना यह है कि वे सभी लोग आयें और तेरी आराधना करें! वे सभी तेरे नाम का आदर करें!

10हे परमेश्वर, तू महान है! तू अद्‌भुत कर्म करता है! बस तू ही परमेश्वर है!

11हे यहोवा, अपनी राहों की शिक्षा मुझको दे,। मैं जीऊँगा और तेरे सत्य पर चलूँगा। मेरी सहायता कर। मेरे जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण यही है, कि मैं तेरे नाम की उपासना करुँ।

12हे परमेश्वर, मेरे स्वामी, मैं सम्पूर्ण मन से तेरे गुण गाता हूँ। मैं तेरे नाम का आदर सदा सर्वदा करुँगा।

13हे परमेश्वर, तू मुझसे कितना अधिक प्रेम करता है। तूने मुझे मृत्यु के गर्त से बचाया।

14हे परमेश्वर, मुझ पर अभिमानी वार कर रहे हैं। क्रूर जनों का दल मुझे मार डालने का यत्न कर रहे हैं, और वे मनुष्य तेरा आदर नहीं करते हैं।

15हे स्वामी, तू दयालु और कृपापूर्ण परमेश्वर है। तू धैर्यपूर्ण, विश्वासी और प्रेम से भरा हुआ है।

16हे परमेश्वर, दिखा दे कि तू मेरी सुनता है, और मुझ पर कृपालु बन। मैं तेरा दास हूँ। तू मुझको शक्ति दे। मैं तेरा सेवक हूँ, मेरी रक्षा कर।

17हे परमेश्वर, कुछ ऐसा कर जिससे यह प्रमाणित हो कि तू मेरी सहायता करेगा। फिर इससे मेरे शत्रु निराश हो जायेंगे। क्योंकि यहोवा इससे यह प्रकट होगा तेरी दया मुझ पर है और तूने मुझे सहारा दिया।

भजन 87

कोरह वंशियों का एक स्तुति गीत।

1परमेश्वर ने यरुशलेम के पवित्र पहाड़ियों पर अपना मन्दिर बनाया।

2यहोवा को इस्राएल के किसी भी स्थान से सिय्योन के द्वार अधिक भाते हैं।

3हे परमेश्वर के नगर, तेरे विषय में लोग अद्‌भुत बातें बताते है।

4परमेश्वर अपने लोगों की सूची रखता है। परमेश्वर के कुछ भक्त मिस्र और बाबेल में रहते है। कुछ लोग पलिश्ती, सोर और कूश तक में रहते हैं।

5परमेश्वर हर एक जन को जो सिय्योन में पैदा हुए जानता है। इस नगर को परम परमेश्वर ने बनाया है।

6परमेश्वर अपने भक्तों कि सूची रखता है। परमेश्वर जानता है कौन कहाँ पैदा हुआ।

7परमेश्वर के भक्त उत्सवों को मनाने यरुशलेम जाते हैं। परमेश्वर के भक्त गाते, नाचते और अति प्रसन्न रहते हैं। वे कहा करते हैं, "सभी उत्तम वस्तुएं यरुशलेम से आई।"

भजन 88

कोरह वंशियों के ओर से संगीत निर्देशक के लिये यातना पूर्ण व्याधि के विषय में एज्रा वंशी हेमान का एक कलापूर्ण स्तुति गीत।

1हे परमेश्वर यहोवा, तू मेरा उद्धारकर्ता है। मैं तेरी रात दिन विनती करता रहा हूँ।

2कृपा करके मेरी प्रार्थनाओं पर ध्यान दे। मुझ पर दया करने को मेरी प्रार्थनाएँ सुन।

3मैं अपनी पीड़ाओं से तंग आ चुका हूँ। बस मैं जल्दी ही मर जाऊँगा।

4लोग मेरे साथ मुर्दे सा व्यवहार करने लगे हैं। उस व्यक्ति की तरह जो जीवित रहने के लिये अति बलहीन हैं।

5मेरे लिये मरे व्यक्तियों में ढूँढ़। मैं उस मुर्दे सा हूँ जो कब्र में लेटा है, और लोग उसके बारे में सबकुछ ही भूल गए।

6हे यहोवा, तूने मुझे धरती के नीचे कब्र में सुला दिया। तूने मुझे उस अँधेरी जगह में रख दिया।

7हे परमेश्वर, तुझे मुझ पर क्रोध था, और तूने मुझे दण्डित किया।

8मुझको मेरे मित्रों ने त्याग दिया है। वे मुझसे बचते फिरते हैं जैसा मैं कोई ऐसा व्यक्ति हूँ जिसको कोई भी छूना नहीं चाहता। घर के ही भीतर बंदी बन गया हूँ। मैं बाहर तो जा ही नहीं सकता।

9मेरे दु:खों के लिये रोते रोते मेरी आँखे सूज गई हैं। हे यहोवा, मैं तुझसे निरतंर प्रार्थना करता हूँ। तेरी ओर मैं अपने हाथ फैला रहा हूँ।

10हे यहोवा, क्या तू अद्‌भुत कर्म केवल मृतकों के लिये करता है? क्या भूत (मृत आत्माएँ) जी उठा करते हैं और तेरी स्तुति करते हैं? नहीं।

11मरे हुए लोग अपनी कब्रों के बीच तेरे प्रेम की बातें नहीं कर सकते। मरे हुए व्यक्ति मृत्युलोक के भीतर तेरी भक्ति की बातें नहीं कर सकते।

12अंधकार में सोये हुए मरे व्यक्ति उन अद्‌भुत बातों को जिनको तू करता है, नहीं देख सकते हैं। मरे हुए

व्यक्ति भूले बिसरों के जगत में तेरे खरेपन की बातें नहीं
कर सकते।
13हे यहोवा, मेरी विनती है, मुझको सहारा दे! हर
अलख सुबह मैं तेरी प्रार्थना करता हूँ।
14हे यहोवा, क्या तूने मुझको त्याग दिया? तूने मुझ
पर कान देना क्यों छोड़ दिया?
15मैं दुर्बल और रोगी रहा हूँ। मैंने बचपन से ही तेरे
क्रोध को भोगा है। मेरा सहारा कोई भी नहीं रहा।
16हे यहोवा, तू मुझ पर क्रोधित है और तेरा दण्ड
मुझको मार रहा है।
17मुझे ऐसा लगता है, जैसे पीड़ा और यातनाएँ सदा
मेरे संग रहती हैं। मै अपनी पीड़ाओं और यातनाओं में
डूबा जा रहा हूँ।
18हे यहोवा, तूने मेरे मित्रों और प्रिय लोगों को मुझे
छोड़ चले जाने को विवश कर दिया। मेरे संग बस
केवल अंधकार रहता है।

भजन 89

एज्रा वंश के एतान का एक भक्ति गीत।

1मैं यहोवा, की करुणा के गीत सदा गाऊँगा। मैं
उसके भक्ति के गीत सदा अनन्त काल तक गाता
रहूँगा।
2हे यहोवा, मुझे सचमुच विश्वास है, तेरा प्रेम अमर
है। तेरी भक्ति फैले हुए अम्बर से भी विस्तृत है।
3परमेश्वर ने कहा था, "मैंने अपने चुने हुए राजा के
साथ एक वाचा किया है। अपने सेवक दाऊद को मैंने
वचन दिया है।
4दाऊद तेरा वंश को मैं सतत् अमर बनाऊँगा। मैं तेरे
राज्य को सदा सर्वदा के लिये अटल बनाऊँगा।"
5हे यहोवा, तेरे उन अद्भुत कर्मों की अम्बर स्तुति
करते हैं। स्वर्गदूतों की सभा तेरी निष्ठा के गीत गाते हैं।
6स्वर्ग में कोई व्यक्ति यहोवा का विरोध नहीं कर
सकता। कोई भी देवता यहोवा के समान नहीं।
7परमेश्वर पवित्र लोगों के साथ एकत्रित होता है। वे
स्वर्गदूत उसके चारो ओर रहते हैं। वे उसका भय और
आदर करते हैं। वे उसके सम्मान में खड़े होते हैं।
8सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा, जितना तू समर्थ है
कोई नहीं है। तेरे भरोसे हम पूरी तरह रह सकते हैं।
9तू गरजते समुद्र पर शासन करता है। तू उसकी
कुपित तरंगों को शांत करता है।
10हे परमेश्वर, तूने ही राहाब को हराया था। तूने
अपने महाशक्ति से अपने शत्रु बिखरा दिये।
11हे परमेश्वर, जो कुछ भी स्वर्ग और धरती पर
जन्मी है तेरी ही है। तूने ही जगत और जगत में की हर
वस्तु रची है।
12तूने ही सब कुछ उत्तर दक्षिण रचा है। ताबोर और
हर्मोन पर्वत तेरे गुण गाते हैं।
13हे परमेश्वर, तू समर्थ है। तेरी शक्ति महान है। तेरी
ही विजय है।
14तेरा राज्य सत्य और न्याय पर आधारित है। प्रेम
और भक्ति तेरे सिंहासन के सैनिक हैं।
15हे परमेश्वर, तेरे भक्त सचमुच प्रसन्न है। वे तेरी
करुणा के प्रकाश में जीवित रहते हैं।
16तेरा नाम उनको सदा प्रसन्न करता है। वे तेरे
खरेपन की प्रशंसा करते हैं।
17तू उनकी अद्भुत शक्ति है। उनको तुमसे बल
मिलता है।
18हे यहोवा, तू हमारा रक्षक है। इस्राएल का वह
पवित्र हमारा राजा है।
19इसलिए तूने निज सच्चे भक्तों को दर्शन दिये और
कहा, "फिर मैंने लोगों के बीच से एक युवक को चुना,
और मैंने उस युवक को महत्त्वपूर्ण बना दिया, और मैंने
उस युवक को बलशाली बना दिया।
20मैंने निज सेवक दाऊद को पा लिया, और मैंने
उसका अभिषेक अपने निज विशेष तेल से किया।
21मैंने निज दाहिने हाथ से दाऊद को सहारा दिया,
और मैंने उसे अपने शक्ति से बलवान बनाया।
22शत्रु चुने हुए राजा को नहीं हरा सका। दुष्ट जन
उसको पराजित नहीं कर सके।
23मैंने उसके शत्रुओं को समाप्त कर दिया। जो लोग
चुने हुए राजा से बैर रखते थे, मैंने उन्हें हरा दिया।
24मैं अपने चुने हुए राजा को सदा प्रेम करुँगा और
उसे समर्थन दूँगा। मैं उसे सदा ही शक्तिशाली बनाऊँगा।
25मैं अपने चुने हुए राजा को सागर का अधिकारी
नियुक्त करुँगा। नदियों पर उसका ही नियन्त्रण होगा।
26वह मुझसे कहेगा, 'तू मेरा पिता है। तू मेरा परमेश्वर,
मेरी चट्टान मेरा उद्धारकर्ता है।'
27मैं उसको अपना पहलौठा पुत्र बनाऊँगा। वह धरती
पर महानतम राजा बनेगा।
28मेरा प्रेम चुने हुए राजा की सदा सर्वदा रक्षा करेगा।
मेरी वाचा उसके साथ कभी नहीं मिटेगी।

29उसका वंश सदा अमर बना रहेगा। उसका राज्य
जब तक स्वर्ग टिका है, तब तक टिका रहेगा।
30यदि उसके वंशजों ने मेरी व्यवस्था का पालन छोड़
दिया है और यदि उन्होंने मेरे आदेशों को मानना छोड़
दिया है, तो मैं उन्हें दण्ड दूँगा।
31यदि मेरे चुने हुए राजा के वंशजों ने मेरे विधान
को तोड़ा और यदि मेरे आदेशो की उपेक्षा की,
32तो मैं उन्हें दण्ड दूंगा, जो बहुत बड़ा होगा।
33किन्तु मैं उन लोगों से अपना निज प्रेम दूर नहीं
करुँगा। मैं सदा ही उनके प्रति सच्चा रहूँगा।
34जो वाचा मेरी दाऊद के साथ है, मैं उसको नहीं
तोड़ूँगा। मैं अपनी वाचा को नहीं बदलूँगा।

35अपनी पवित्रता को साक्षी कर मैंने दाऊद से एक
विशेष प्रतिज्ञा की थी, सो मैं दाऊद से झूठ नहीं बोलूँगा!
36दाऊद का वंश सदा बना रहेगा, जब तक सूर्य
अटल है उसका राज्य भी अटल रहेगा।
37यह सदा चन्द्रमा के समान चलता रहेगा। आकाश
साक्षी है कि यह वाचा सच्ची है। इस प्रमाण पर भरोसा
कर सकता है।"
38किन्तु हे परमेश्वर, तू अपने चुने हुए राजा पर
क्रोधित हो गया। तूने उसे एक दम अकेला छोड़ दिया।
39तूने अपनी वाचा को रद्द कर दिया। तूने राजा का
मुकुट धूल में फेंक दिया।
40तूने राजा के नगर का परकोटा ध्वस्त कर दिया,
तूने उसके सभी दुर्गों को तहस नहस कर दिया।
41राजा के पड़ोसी उस पर हँस रहे हैं, और वे लोग जो
पास से गुजरते हैं, उसकी वस्तुओं को चुरा ले जाते हैं।
42तूने राजा के शत्रुओं को प्रसन्न किया। तूने उसके
शत्रुओं को युद्ध में जिता दिया।
43हे परमेश्वर, तूने उन्हें स्वयं को बचाने का सहारा
दिया, तूने अपने राजा की युद्ध को जीतने में सहायता
नहीं की।
44तूने उसे जीतने नहीं दिया, उसका पवित्र सिंहासन
तूने धरती पर पटक दिया।
45तूने उसके जीवन को कम कर दिया, और उसे
लज्जित किया।
46हे यहोवा, तू हमसे क्या सदा छिपा रहेगा? क्या तेरा
क्रोध सदा आग सा धधकेगा?
47याद कर मेरा जीवन कितना छोटा है। तूने ही हमें
छोटा जीवन जीने और फिर मर जाने को रचा है।
48ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो सदा जीवित रहेगा और
कभी मरेगा नहीं। कब्र से कोई व्यक्ति बच नहीं पाया।
49हे परमेश्वर, वह प्रेम कहाँ है जो तूने अतीत में
दिखाया था? तूने दाऊद को वचन दिया था कि तू
उसके वंश पर सदा अनुग्रह करेगा।
50–51हे स्वामी, कृपा करके याद कर कि लोगों ने
तेरे सेवकों को कैसे अपमानित किया। हे यहोवा, मुझको
सारे अपमान सुनने पड़े हैं। तेरे चुने हुए राजा को
उन्होंने अपमानित किया।
52यहोवा, सदा ही धन्य है! आमीन, आमीन!

चौथा भाग

भजन 90

परमेश्वर के भक्त मूसा की प्रार्थना।

1हे स्वामी, तू अनादि काल से हमारा घर (सुरक्षास्थल)
रहा है।
2हे परमेश्वर, तू पर्वतों से पहले, धरती से पहले था,
कि इस जगत के पहले ही परमेश्वर था। तू सर्वदा ही
परमेश्वर रहेगा।
3तू ही इस जगत में लोगों को लाता है। फिर से तू ही
उनको धूल में बदल देता है।
4तेरे लिये हजार वर्ष बीते हुए कल जैसे है, व पिछली
रात जैसे हैं।
5तू हमारा जीवन सपने जैसा बुहार देता है और सुबह
होते ही हम चले जाते है। हम ऐसे घास जैसे है,
6जो सुबह उगती है और वह शाम को सूख कर
मुरझा जाती है।
7हे परमेश्वर, जब तू कुपित होता है हम नष्ट हो जाते
हैं। हम तेरे प्रकोप से घबरा गये हैं।
8तू हमारे सब पापों को जानता है। हे परमेश्वर, तू
हमारे हर छिपे पाप को देखा करता है।
9तेरा क्रोध हमारे जीवन को खत्म कर सकता है।
हमारे प्राण फुसफुसाहट की तरह विलीन हो जाते है।
10हम सत्तर साल तक जीवित रह सकते हैं। यदि हम
शक्तिशाली हैं तो अस्सी साल। हमारा जीवन परिश्रम
और पीड़ा से भरा है। अचानक हमारा जीवन समाप्त
हो जाता है! हम उड़कर कहीं दूर चले जाते हैं।
11हे परमेश्वर, सचमुच कोई भी व्यक्ति तेरे क्रोध की
पूरी शक्ति नहीं जानता। किन्तु हे परमेश्वर, हमारा भय
और सम्मान तेरे लिये उतना ही महान है, जितना
क्रोध।
12तू हमको सिखा दे कि हम सचमुच यह जाने कि
हमारा जीवन कितना छोटा है। ताकि हम बुद्धिमान बन
सकें।
13हे यहोवा, तू सदा हमारे पास लौट आ। अपने
सेवकों पर दया कर।
14प्रति दिन सुबह हमें अपने प्रेम से परिपूर्ण कर,
आओ हम प्रसन्न हो और अपने जीवन का रस लें।
15तूने हमारे जीवनों में हमें बहुत पीड़ा और यातना दी
है, अब हमें प्रसन्न कर दे।
16तेरे दासों को उन अद्भुत बातों को देखने दे जिनको
तू उनके लिये कर सकता है, और अपनी सन्तानों को
अपनी महिमा दिखा।
17हमारे परमेश्वर, हमारे स्वामी, हम पर कृपालु हो।
जो कुछ हम करते हैं तू उसमें सफलता दे।

भजन 91

1तुम परम परमेश्वर की शरण में छिपने के लिये जा
सकते हो। तुम सर्वशक्तिमान परमेश्वर की शरण में
संरक्षण पाने को जा सकते हो।
2मैं यहोवा से विनती करता हूँ, "तू मेरा सुरक्षा स्थल
है मेरा गढ़ हे परमेश्वर, मैं तेरे भरोसे हूँ।"
3परमेश्वर तुझको सभी छिपे खतरों से बचाएगा।
परमेश्वर तुझको सब भयानक व्याधियों से बचाएगा।
4तुम परमेश्वर की शरण में संरक्षण पाने को जा
सकते हो। और वह तुम्हारी ऐसे रक्षा करेगा जैसे एक

पक्षी अपने पंख फैला कर अपने बच्चों कि रक्षा करता
है। परमेश्वर तुम्हारे लिये ढाल और दीवार सा तुम्हारी
रक्षा करेगा।
5रात में तुमको किसी का भय नहीं होगा, और शत्रु
के बाणों से तू दिन में भयभीत नहीं होगा।
6तुझको अंधेरे में आने वाले रोगों और उस भयानक
रोग से जो दोपहर में आता है भय नहीं होगा।
7तू हजार शत्रुओं को पराजित कर देगा। तेरा स्वयं
दाहिना हाथ दस हजार शत्रुओं को हरायेगा। और तेरे
शत्रु तुझको छू तक नहीं पायेंगे।
8जरा देख, और तुझको दिखाई देगा कि वे कुटिल
व्यक्ति दण्डित हो चुके हैं।
9क्यों? क्योंकि तू यहोवा के भरोसे है। तूने परम
परमेश्वर को अपना शरणस्थल बनाया है।
10तेरे साथ कोई भी बुरी बात नहीं घटेगी। कोई भी
रोग तेरे घर में नहीं होगा।
11क्योंकि परमेश्वर स्वर्गदूतों को तेरी रक्षा करने
का आदेश देगा। तू जहाँ भी जाएगा वे तेरी रक्षा
करेंगे।
12परमेश्वर के दूत तुझको अपने हाथों पर ऊपर
उठायेंगे। ताकि तेरा पैर चट्टान से न टकराए।
13तुझमें वह शक्ति होगी जिससे तू सिंहों को पछाडेगा
और विष नागों को कुचल देगा।
14यहोवा कहता है, "यदि कोई जन मुझ में भरोसा
रखता है तो मैं उसकी रक्षा करुँगा। मैं उन भक्तों को
जो मेरे नाम की आराधना करते हैं, संरक्षण दूँगा।"
15मेरे भक्त मुझको सहारा पाने को पुकारेंगे और मैं
उनकी सुनूँगा। वे जब कष्ट में होंगे मैं उनके साथ
रहूँगा। मैं उनका उद्धार करुँगा और उन्हें आदर दूँगा।
16मैं अपने अनुयायियों को एक लम्बी आयु दूँगा और
मैं उनकी रक्षा करुँगा।

भजन 92

सब्त के दिन के लिये एक स्तुति गीत।

1यहोवा का गुण गाना उत्तम है। हे परम परमेश्वर,
तेरे नाम का गुणगान उत्तम है।
2भोर में तेरे प्रेम के गीत गाना और रात में तेरे भक्ति
के गीत गाना उत्तम है।
3हे परमेश्वर, तेरे लिये वीणा, दस तार वाद्य और
सांरगी पर संगीत बजाना उत्तम है।
4हे यहोवा, तू सचमुच हमको अपने किये कर्मों से
आनन्दित करता है। हम आनन्द से भर कर उन गीतों
को गाते हैं, जो कार्य तूने किये हैं।
5हे यहोवा, तूने महान कार्य किये, तेरे विचार हमारे
लिये समझ पाने में गंभीर हैं।
6तेरी तुलना में मनुष्य पशुओं जैसे हैं। हम तो मूर्ख
जैसे कुछ भी नहीं समझ पाते।
7दुष्ट जन घास की तरह जीते और मरते हैं। वे जो भी
कुछ व्यर्थ कार्य करते हैं, उन्हें सदा सर्वदा के लिये
मिटाया जायेगा।
8किन्तु हे यहोवा, अनन्त काल तक तेरा आदर
रहेगा।
9हे यहोवा, तेरे सभी शत्रु मिटा दिये जायेंगे। वे सभी
व्यक्ति जो बुरा काम करते हैं, नष्ट किये जायेंगे।
10किन्तु तू मुझको बलशाली बनाएगा। मैं शक्तिशाली
मेढ़े सा बन जाऊँगा जिसे कड़े सींग होते हैं। तूने मुझे
विशेष काम के लिए चुना है। तूने मुझ पर अपना तेल
ऊँडेला है जो शीतलता देता है।
11मैं अपने चारों ओर शत्रु देख रहा हूँ। वे ऐसे हैं जैसे
विशालकाय सांड़ मुझ पर प्रहार करने को तत्पर है। वे
जो मेरे विषय में बाते करते हैं उनको मैं सुनता हूँ।
12-13सज्जन लोग तो लबानोन के विशाल देवदार वृक्ष
की तरह है जो यहोवा के मन्दिर में रोपे गए हैं। सज्जन
लोग बढ़ते हुऐ ताड़ के पेड़ की तरह हैं, जो यहोवा के
मन्दिर के आँगन में फलवन्त हो रहे हैं।
14वे जब तक बूढ़े होंगे तब तक वे फल देते रहेंगे। वे
हरे भरे स्वस्थ वृक्षों जैसे होंगे।
15वे हर किसी को यह दिखाने के लिये वहाँ है कि
यहोवा उत्तम है। वह मेरी चट्टान है! वह कभी बुरा
नहीं करता।

भजन 93

1यहोवा राजा है। वह सामर्थ्य और महिमा का वस्त्र
पहने है। वह तैयार है, सो संसार स्थिर है। वह नहीं
टलेगा।
2हे परमेश्वर, तेरा साम्राज्य अनादि काल से टिका
हुआ है। तू सदा जीवित है।
3हे यहोवा, नदियों का गर्जन बहुत तीव्र है। पछाड़
खाती लहरों का शब्द घनघोर है।
4समुद्र की पछाड़ खाती लहरे गरजती हैं, और वे
शक्तिशाली हैं। किन्तु ऊपर वाला यहोवा अधिक
शक्तिशाली है।
5हे यहोवा, तेरा विधान सदा बना रहेगा। तेरा पवित्र
मन्दिर चिरस्थायी होगा।

भजन 94

1हे यहोवा, तू ही एक परमेश्वर है जो लोगों को दण्ड
देता है। तू ही एक परमेश्वर है जो आता है और लोगों
के लिये दण्ड लाता है।
2तू ही समूची धरती का न्यायकर्ता है। तू अभिमानी
को वह दण्ड देता है जो उसे मिलना चाहिए।
3हे यहोवा, दुष्ट जन कब तक मजे मारते रहेंगे? उन
बुरे कर्मों की जो उन्होंने किये हैं।
4वे अपराधी कब तक डींग मारते रहेंगे उन बुरे
कर्मो को जो उन्होंने किये हैं।

5हे यहोवा, वे लोग तेरे भक्तों को दु:ख देते हैं। वे तेरे
भक्तों को सताया करते हैं।
6वे दुष्ट लोग विधवाओं और उन अतिथियों की जो
उनके देश में ठहरे हैं, हत्या करते हैं। वे उन अनाथ
बालकों की जिनके माता पिता नहीं हैं हत्या करते हैं।
7वे कहा करते हैं, यहोवा उनको बुरे काम करते
हुए देख नहीं सकता। और कहते हैं, इस्राएल का परमेश्वर
उन बातों को नहीं समझता है, जो घट रही हैं।
8अरे ओ दुष्ट जनों तुम बुद्धिहीन हो। तुम कब अपना
पाठ सीखोगे? अरे ओ दुर्जनों तुम कितने मूर्ख हो! तुम्हें
समझने का जतन करना चाहिए।
9परमेश्वर ने हमारे कान बनाएँ हैं, और निश्चय ही
उसके भी कान होंगे। सो वह उन बातों को सुन सकता
है, जो घटित हो रहीं हैं। परमेश्वर ने हमारी आँखें
बनाई हैं, सो निश्चय ही उसके भी आँख होंगे। सो वह
उन बातों को देख सकता है, जो घटित हो रही है।
10परमेश्वर उन लोगों को अनुशासित करेगा।
परमेश्वर उन लोगों को उन सभी बातों की शिक्षा देगा
जो उन्हें करनी चाहिए।
11सो जिन बातों को लोग सोच रहे हैं, परमेश्वर
जानता है, और परमेश्वर यह जानता है कि लोग हवा
की झोंके हैं।
12वह मनुष्य जिसको यहोवा सुधारता, अति प्रसन्न
होगा। परमेश्वर उस व्यक्ति को खरी राह सिखायेगा।
13हे परमेश्वर, जब उस जन पर दु:ख आयेंगे तब तू
उस जन को शांत होने में सहायक होगा। तू उसको
शांत रहने में सहायता देगा जब तक दुष्ट लोग कब्र में
नहीं रख दिये जायेंगे।
14यहोवा निज भक्तों को कभी नहीं त्यागेगा। वह बिन
सहारे उसे रहने नहीं देगा।
15न्याय लौटेगा और अपने साथ निष्पक्षता लायेगा,
और फिर लोग सच्चे होंगे और खरे बनेंगे।
16मुझको दुष्टों के विरुद्ध युद्ध करने में किसी व्यक्ति
ने सहारा नहीं दिया। कुकर्मियों के विरुद्ध युद्ध करने में
किसी ने मेरा साथ नहीं दिया।
17यदि यहोवा मेरा सहायक नहीं होता, तो मुझे शब्द
हीन (चुपचुप) होना पड़ता।
18मुझको पता है मैं गिरने को था, किन्तु यहोवा ने
भक्तों को सहारा दिया।
19मैं बहुत चिंतित और व्याकुल था, किन्तु यहोवा
तूने मुझको चैन दिया और मुझको आनन्दित किया।
20हे यहोवा, तू कुटिल न्यायाधीशों की सहायता नहीं
करता। वे बुरे न्यायाधीश नियम का उपयोग लोगों का
जीवन कठिन बनाने में करते हैं।
21वे न्यायाधीश सज्जनों पर प्रहार करते हैं। वे कहते
हैं कि निर्दोष जन अपराधी हैं। और वे उनको मार
डालते हैं।
22किन्तु यहोवा ऊँचे पर्वत पर मेरा सुरक्षास्थल है,
परमेश्वर मेरी चट्टान और मेरा शरणस्थल है।
23परमेश्वर उन न्यायाधीशों को उनके बुरे कामों
का दण्ड देगा। परमेश्वर उनको नष्ट कर देगा। क्योंकि
उन्होंने पाप किया है। हमारा परमेश्वर यहोवा उन दुष्ट
न्यायाधीशों को नष्ट कर देगा।

भजन 95

1आओ हम यहोवा के गुण गाएं! आओ हम उस
चट्टान का जय जयकार करें जो हमारी रक्षा करता
है।
2आओ हम यहोवा के लिये धन्यवाद के गीत गाएं।
आओ हम उसके प्रशंसा के गीत आनन्दपूर्वक गायें।
3क्यों? क्योंकि यहोवा महान परमेश्वर है। वह महान
राजा सभी अन्य "देवताओं" पर शासन करता है।
4गहरी गुफाएँ और ऊँचे पर्वत यहोवा के हैं।
5सागर उसका है, उसने उसे बनाया है। परमेश्वर ने
स्वयं अपने हाथों से सूखी धरती को बनाया है।
6आओ, हम उसको प्रणाम करें और उसकी उपासना
करें। आओ हम परमेश्वर के गुण गाये जिसने हमें
बनाया है।
7वह हमारा परमेश्वर और हम उसके भक्त हैं। यदि
हम उसकी सुने तो हम आज उसकी भेड़ हैं।
8परमेश्वर कहता है, "तुम जैसे मरिबा और मरुस्थल
के मस्सा में कठोर थे वैसे कठोर मत बनो।
9तेरे पूर्वजों ने मुझको परखा था। उन्होंने मुझे परखा,
पर तब उन्होंने देखा कि मैं क्या कर सकता हूँ।
10मैं उन लोगों के साथ चालीस वर्ष तक धीरज
बनाये रखा। मैं यह भी जानता था कि वे सच्चे नहीं हैं।
उन लोगों ने मेरी सीख पर चलने से नकारा।
11सो मैं क्रोधित हुआ और मैंने प्रतिज्ञा की वे मेरे
विशाल कि धरती पर कभी प्रवेश नहीं कर पायेंगे।"

भजन 96

1उन नये कामों के लिये जिन्हें यहोवा ने किया है
नया गीत गाओ। अरे ओ समूचे जगत यहोवा के लिये
गीत गा।
2यहोवा के लिये गाओ! उसके नाम को धन्य कहो!
उसके सुसमाचार को सुनाओ! उन अद्‌भुत बातों का
बखान करो जिन्हें परमेश्वर ने किया है।
3अन्य लोगों को बताओ कि परमेश्वर सचमुच ही
अद्‌भुत है। सब कहीं के लोगों में उन अद्‌भुत बातों का
जिन्हें परमेश्वर करता है बखान करो।
4यहोवा महान है और प्रशंसा योग्य है। वह किसी भी
अधिक "देवताओं" से डरने योग्य है।
5अन्य जातियों के सभी "देवता" केवल मूर्तियाँ हैं,
किन्तु यहोवा ने आकाशों को बनाया।

6उसके सम्मुख सुन्दर महिमा दीप्त है। परमेश्वर के
पवित्र मन्दिर सामर्थ्य और सौन्दर्य हैं।
7अरे! ओ वंशों, और हे जातियों यहोवा के लिये
महिमा और प्रशंसा के गीत गाओ।
8यहोवा के नाम के गुणगान करो। अपनी भेंटे उठाओ
और मन्दिर में जाओ।
9यहोवा का उसके भव्य, मन्दिर में उपासना करो।
अरे ओ पृथ्वी के मनुष्यों, यहोवा की उपासना करो।
10राष्ट्रों को बता दो कि यहोवा राजा है! सो इससे
जगत का नाश नहीं होगा। यहोवा मनुष्यों पर न्याय से
शासन करेगा।
11अरे आकाश, प्रसन्न हो! हे धरती, आनन्द मना! हे
सागर, और उसमें कि सब वस्तुओं आनन्द से ललकारो।
12अरे ओ खेतों और उसमें उगने वाली हर वस्तु
आनन्दित हो जाओ! हे वन के वृक्षो गाओ और आनन्द
मनाओ!
13आनन्दित हो जाओ क्योंकि यहोवा आ रहा है,
यहोवा जगत का शासन (न्याय) करने आ रहा है, वह
खरेपन से न्याय करेगा।

भजन 97

1यहोवा शासन करता है, और धरती प्रसन्न हैं। और
सभी दूर के देश प्रसन्न हैं।
2यहोवा को काले गहरे बादल घेरे हुए हैं। नेकी और
न्याय उसके राज्य को दृढ़ किये हैं।
3यहोवा के सामने आग चला करती है, और वह
उसके बैरियों का नाश करती है।
4उसकी बिजली गगन में कौंधा करती है। लोग उसे
देखते हैं और भयभीत रहते हैं।
5यहोवा के सामने पहाड़ ऐसे पिघल जाते हैं, जैसे मोम
पिघल जाता है। वे धरती के स्वामी के सामने पिघल
जाते हैं।
6अम्बर उसकी नेकी का बखान करते हैं। हर कोई
परमेश्वर की महिमा देख ले।
7लोग उनके मूर्तियों का पूजा करते हैं। वे अपने
“देवताओं” की डींग हाँकते हैं। लेकिन वे लोग लज्जित
होंगे। उनके “देवता” यहोवा के सामने झुकेंगे और
उपासना करेंगे।
8हे सिय्योन, सुन और प्रसन हो! यहूदा के नगरों,
प्रसन्न हो! क्यों? क्योंकि यहोवा विवेकपूर्ण न्याय करता
है।
9हे सर्वोच्च यहोवा, सचमुच तू ही धरती पर शासन
करता है। तू दूसरे “देवताओं” से अधिक उत्तम है।
10जो लोग यहोवा से प्रेम रखते हैं, वे पाप से घृणा
करते हैं। इसलिए परमेश्वर अपने अनुयायियों की रक्षा
करता है। परमेश्वर अपने अनुयायियों को दुष्ट लोगों से
बचाता है।
11ज्योति और आनन्द सज्जनों पर चमकते हैं।
12हे सज्जनों परमेश्वर में प्रसन्न रहो! उसके पवित्र
नाम का आदर करते रहो!

भजन 98

एक स्तुति गीत।

1यहोवा के लिये एक नया गीत गाओ, क्योंकि उसने
नयी और अद्भुत बातों को किया है।
2उसकी पवित्र दाहिनी भुजा उसके लिये फिर विजय
लाई।
3यहोवा ने राष्ट्रों के सामने अपनी वह शक्ति प्रकटायी
है जो रक्षा करती है। यहोवा ने उनको अपनी धार्मिकता
दिखाई है।
4परमेश्वर के भक्तों ने परमेश्वर का अनुराग याद
किया, जो उसने इस्राएल के लोगों से दिखाये थे। सुदूर
देशो के लोगों ने हमारे परमेश्वर की महाशक्ति देखी।
5हे धरती के हर व्यक्ति, प्रसन्नता से यहोवा का जय
जयकार कर। स्तुति गीत गाना शीघ्र आरम्भ करो।
6हे वीणाओं, यहोवा की स्तुति करो! हे वीणा, के
मधुर संगीत उसके गुण गाओ!
7बाँसुरी बजाओ और नरसिंगों को फूँको। आनन्द से
यहोवा, हमारे राजा का जय जयकार करो।
8हे सागर और धरती, और उनमें की सब वस्तुओं
ऊँचे स्वर में गाओ।
9हे नदियों, ताली बजाओ! हे पर्वतो, अब सब साथ
मिलकर गाओ!
10तुम यहोवा के सामने गाओ, क्योंकि वह जगत का
शासन (न्याय) करने जा रहा है, वह जगत का न्याय
नेकी और सच्चाई से करेगा।

भजन 99

1यहोवा राजा है। सो हे राष्ट्र, भय से काँप उठो।
परमेश्वर राजा के रुप में करुब दूतों पर विराजता है।
सो हे विश्व भय से काँप उठो।
2यहोवा सिय्योन में महान है। सारे मनुष्यों का वही
महान राजा है।
3सभी मनुष्य तेरे नाम का गुण गाएं। परमेश्वर का
नाम भय विस्मय है। परमेश्वर पवित्र है।
4शक्तिशाली राजा को न्याय भाता है। परमेश्वर तूने
ही नेकी बनाया है। तू ही याकूब (इस्राएल) के लिये
खरापन और नेकी लाया।
5यहोवा हमारे परमेश्वर का गुणगान करो, और
उसके पवित्र चरण चौकी की आराधना करो।
6मूसा और हारुन परमेश्वर के याजक थे। शमूएल
परमेश्वर का नाम लेकर प्रार्थना करने वाला था।
उन्होंने यहोवा से विनती की और यहोवा ने उनको
उसका उत्तर दिया।

7परमेश्वर ने ऊँचे उठे बादल में से बातें कीं। उन्होंने उसके आदेशों को माना। परमेश्वर ने उनको व्यवस्था का विधान दिया।

8हमारे परमेश्वर यहोवा, तूने उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया। तूने उन्हें यह दर्शाया कि तू क्षमा करने वाला परमेश्वर है, और तू लोगों को उनके बुरे कर्मों के लिये दण्ड देता है।

9हमारे परमेश्वर यहोवा के गुण गाओ। उसके पवित्र पर्वत की ओर झुककर उसकी उपासना करो। हमारा परमेश्वर यहोवा सचमुच पवित्र है।

भजन 100

धन्यवाद का एक गीत।

1हे धरती, तुम यहोवा के लिये गाओ।

2आनन्दित रहो जब तुम यहोवा की सेवा करो। प्रसन्न गीतों के साथ यहोवा के सामने आओ।

3तुम जान लो कि यह यहोवा ही परमेश्वर है। उसने हमें रचा है और हम उसके भक्तहैं। हम उसकी भेड़ हैं।

4धन्यवाद के गीत संग लिये यहोवा के नगर में आओ, गुणगान के गीत संग लिये यहोवा के मन्दिर में आओ। उसका आदर करो और नाम धन्य करो।

5यहोवा उत्तम है। उसका प्रेम सदा सर्वदा है। हम उस पर सदा सर्वदा के लिये भरोसा कर सकते हैं!

भजन 101

दाऊद का एक गीत।

1मैं प्रेम और खरेपन के गीत गाऊँगा। यहोवा मैं तेरे लिये गाऊँगा।

2मैं पूरी सावधानी से शुद्ध जीवन जीऊँगा। मैं अपने घर में शुद्ध जीवन जीऊँगा। हे यहोवा तू मेरे पास कब आयेगा?

3मैं कोई भी प्रतिमा सामने नहीं रखूँगा। जो लोग इस प्रकार तेरे विमुख होते हैं, मुझे उनसे घृणा है। मैं कभी भी ऐसा नहीं करुँगा।

4मैं सच्चा रहूँगा। मैं बुरे काम नहीं करुँगा।

5यदि कोई व्यक्ति छिपे छिपे अपने पड़ोसी के लिये दुर्वचन कहे, मैं उस व्यक्ति को ऐसा करने से रोकूँगा। मैं लोगों को अभिमानी बनने नहीं दूँगा और मैं उन्हें सोचने नहीं दूँगा, कि वे दूसरे लोगों से उत्तम हैं।

6मैं सारे ही देश में उन लोगों पर दृष्टि रखूँगा। जिन पर भरोसा किया जा सकता और मैं केवल उन्हीं लोगों को अपने लिये काम करने दूँगा। बस केवल ऐसे लोग मेरे सेवक हो सकते जो शुद्ध जीवन जीते हैं।

7मैं अपने घर में ऐसे लोगों को रहने नहीं दूँगा जो झूठ बोलते हैं। मैं झूठों को अपने पास भी फटकने नहीं दूँगा।

8मैं उन दुष्टों को सदा ही नष्ट करुँगा, जो इस देश में रहते है। मैं उन दुष्ट लोगों को विवश करुँगा, कि वे यहोवा के नगर को छोड़े।

भजन 102

एक पीड़ित व्यक्ति की उस समय की प्रार्थना। जब वह अपने को टूटा हुआ अनुभव करता है और अपनी वेदनाओं कष्ट यहोवा से कह डालना चाहता है।

1यहोवा मेरी प्रार्थना सुन! तू मेरी सहायता के लिये मेरी पुकार सुन।

2यहोवा जब मैं विपत्ति में होऊँ मुझ से मुख मत मोड़। जब मैं सहायता पाने को पुकारुँ तू मेरी सुन ले, मुझे शीघ्र उत्तर दे।

3मेरा जीवन वैसे बीत रहा जैसा उड़ जाता धुँआ। मेरा जीवन ऐसे है जैसे धीरे धीरे बुझती आग।

4मेरी शक्ति क्षीण हो चुकी है। मैं वैसा ही हूँ जैसा सूखी मुरझाती घास। अपनी वेदनाओं में मुझे भूख नहीं लगती।

5निज दुःख के कारण मेरा भार घट रहा है।

6मैं अकेला हूँ जैसे कोई एकान्त निर्जन में उल्लू रहता हो। मैं अकेला हूँ जैसै कोई पुराने खण्डर भवनों में उल्लू रहता हो।

7मैं सो नहीं पाता। मैं उस अकेले पक्षी सा हो गया हूँ, जो छत पर हो।

8मेरे शत्रु सदा मेरा अपमान करते है, और लोग मेरा नाम लेकर मेरी हँसी उड़ाते हैं।

9मेरा गहरा दुःख बस मेरा भोजन है। मेरे पेयों में मेरे आँसू गिर रहे हैं।

10क्यों? क्योंकि यहोवा तू मुझसे रुठ गया है। तूने ही मुझे ऊपर उठाया था, और तूने ही मुझको फेंक दिया।

11मेरे जीवन का लगभग अंत हो चुका है। वैसे ही जैसे शाम को लम्बी छायाएँ खो जाती है। मैं वैसा ही हूँ जैसे सूखी और मुरझाती घास।

12किन्तु हे यहोवा, तू तो सदा ही अमर रहेगा। तेरा नाम सदा और सर्वदा बना ही रहेगा।

13तेरा उत्थान होगा और तू सिय्योन को चैन देगा। वह समय आ रहा है, जब तू सिय्योन पर कृपालु होगा।

14तेरे भक्त, उसके (यरुशलेम के) पत्थरों से प्रेम करते हैं। वह नगर उनको भाता है।

15लोग यहोवा के नाम कि आराधना करेंगे। हे परमेश्वर, धरती के सभी राजा तेरा आदर करेंगे।

16क्यों? क्योंकि यहोवा फिर से सिय्योन को बनायेगा। लोग फिर उसके (यरुशलेम के) वैभव को देखेंगे।

17जिन लोगों को उसने जीवित छोड़ा है, परमेश्वर उनकी प्रार्थनाएँ सुनेगा। परमेश्वर उनकी विनतियों का उत्तर देगा।

18उन बातों को लिखो ताकि भविष्य के पीढ़ी पढ़े।
और वे लोग आने वाले समय में यहोवा के गुण गायेंगे।
19यहोवा अपने ऊँचे पवित्र स्थान से नीचे झाँकेगा
यहोवा स्वर्ग से नीचे धरती पर झाँकेगा।
20वह बंदी की प्रार्थनाएँ सुनेगा। वह उन व्यक्तियों को
मुक्त करेगा जिनको मृत्युदण्ड दिया गया।
21फिर सिय्योन में लोग यहोवा का बखान करेंगे।
यरुशलेम में लोग यहोवा का गुण गायेंगे।
22ऐसा तब होगा जब यहोवा लोगों को फिर एकत्र
करेगा, ऐसा तब होगा जब राज्य यहोवा की सेवा करेंगे।
23मेरी शक्ति ने मुझको बिसार दिया है। यहोवा ने
मेरा जीवन घटा दिया है।
24इसलिए मैंने कहा, "मेरा प्राण छोटी उम्र में मत
हरा। हे परमेश्वर, तू सदा और सर्वदा अमर रहेगा।
25बहुत समय पहले तूने संसार रचा! तूने स्वयं अपने
हाथों से आकाश रचा।
26यह जगत और आकाश नष्ट हो जायेंगे, किन्तु तू
सदा ही जीवित रहेगा! वे वस्त्रों के समान जीर्ण हो
जायेंगे। वस्त्रों के समान ही तू उन्हें बदलेगा। वे सभी
बदल दिये जायेंगे।
27हे परमेश्वर, किन्तु तू कभी नहीं बदलता; तू सदा
के लिये अमर रहेगा।
28आज हम तेरे दास है, हमारी संतान भविष्य में यही
रहेंगी और उनके संताने यहीं तेरी उपासना करेंगी।"

भजन 103

दाऊद का एक गीत।

1हे मेरी आत्मा, तू यहोवा का गुण गा! हे मेरी
अंग-प्रत्यंग, उसके पवित्र नाम की प्रशंसा कर।
2हे मेरी आत्मा, यहोवा को धन्य कह और मत भूल
की वह सचमुच कृपालु है!
3उन सब पापों के लिये परमेश्वर हमको क्षमा करता
है जिनको हम करते हैं। हमारी सब व्याधि को वह
ठीक करता है।
4परमेश्वर हमारे प्राण को कब्र से बचाता है, और
वह हमे प्रेम और करुणा देता है।
5परमेश्वर हमें भरपूर उत्तम वस्तुएँ देता है। वह हमें
फिर उकाब सा युवा करता है।
6यहोवा खरा है। परमेश्वर उन लोगों को न्याय देता
है, जिन पर दूसरे लोगों ने अत्याचार किये।
7परमेश्वर ने मूसा को व्यवस्था का विधान सिखाया।
परमेश्वर जो शक्तिशाली काम करता है, वह इस्राएलियों
के लिये प्रकट किये।
8यहोवा करुणापूर्ण और दयालु है। परमेश्वर सहनशील
और प्रेम से भरा है।
9यहोवा सदैव ही आलोचना नहीं करता। यहोवा हम
पर सदा को कुपित नहीं रहता है।
10हम ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किये, किन्तु
परमेश्वर हमें दण्ड नहीं देता जो हमें मिलना चाहिए।
11अपने भक्तों पर परमेश्वर का प्रेम वैसे महान है
जैसे धरती पर है ऊँचा उठा आकाश।
12परमेश्वर ने हमारे पापों को हमसे इतनी ही दूर
हटाया जितनी पूरब कि दूरी पश्चिम से है।
13अपने भक्तों पर यहोवा वैसे ही दयालु है, जैसे पिता
अपने पुत्रों पर दया करता है।
14परमेश्वर हमारा सब कुछ जानता है। परमेश्वर
जानता है कि हम मिट्टी से बने हैं।
15परमेश्वर जानता है कि हमारा जीवन छोटा सा है।
वह जानता है हमारा जीवन घास जैसा है।
16परमेश्वर जानता है कि हम एक तुच्छ बनफूल से
हैं। वह फूल जल्दी ही उगता है। फिर गर्म हवा चलती है
और वह फूल मुरझाता है। और फिर शीघ्र ही तुम देख
नहीं पाते कि वह फूल कैसे स्थान पर उग रहा था।
17किन्तु यहोवा का प्रेम सदा बना रहता है। परमेश्वर
सदा-सर्वदा निज भक्तों से प्रेम करता है। परमेश्वर की
दया उसके बच्चों से बच्चों तक बनी रहती है।
18परमेश्वर ऐसे उन लोगों पर दयालु है, जो उसकी
वाचा को मानते हैं। परमेश्वर ऐसे उन लोगों पर दयालु
है जो उसके आदेशों का पालन करते हैं।
19परमेश्वर का सिंहासन स्वर्ग में संस्थापित है। हर
वस्तु पर उसका ही शासन है।
20हे स्वर्गदूत, यहोवा के गुण गाओ। हे स्वर्गदूतों, तुम
वह शक्तिशाली सैनिक हो जो परमेश्वर के आदेशों पर
चलते हो। परमेश्वर की आज्ञाएँ सुनते और पालते हो।
21हे सब उसके सैनिकों, यहोवा के गुण गाओ, तुम
उसके सेवक हो। तुम वही करते हो जो परमेश्वर
चाहता है।
22हर कहीं हर वस्तु यहोवा ने रची है। परमेश्वर
का शासन हर कहीं वस्तु पर है। सो हे समूची सृष्टि,
यहोवा को तू धन्य कह। ओ मेरे मन यहोवा की प्रशंसा
कर।

भजन 104

1हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह! हे यहोवा, हे मेरे
परमेश्वर, तू है अतिमहान! तूने महिमा और आदर के
वस्त्र पहने हैं।
2तू प्रकाश से मण्डित है जैसे कोई व्यक्ति चोंगा पहने।
तूने व्योम जैसे फैलाये चंदोबा हो।
3हे परमेश्वर, तूने उनके ऊपर अपना घर बनाया,
गहरे बदलों को तू अपना रथ बनाता है, और पवन के
पंखों पर चढ़ कर आकाश पार करता है।
4हे परमेश्वर, तूने निज दूतों को वैसा बनाया जैसा
पवन होता है। तूने निज दासों को अग्नि के समान
बनाया।

5हे परमेश्वर, तूने ही धरती का उसकी नीवों पर
निर्माण किया। इसलिए उसका नाश कभी नहीं होगा।
6तूने जल की चादर से धरती को ढका। जल ने
पहाड़ों को ढक लिया।
7तूने आदेश दिया और जल दूर हट गया। हे परमेश्वर,
तू जल पर गरजा और जल दूर भागा।
8पर्वतों से नीचे घाटियों में जल बहने लगा, और फिर
उन सभी स्थानों पर जल बहा जो उसके लिये तूने रचा
था।
9तूने सागरों की सीमाएँ बाँध दी और जल फिर कभी
धरती को ढकने नहीं जाएगा।
10हे परमेश्वर, तूने ही जल बहाया। सोतों से नदियों से
नीचे पहाड़ी नदियों से पानी बह चला।
11सभी वन्य पशुओं को धाराएँ जल देती हैं, जिनमें
जंगली गधे तक आकर के प्यास बुझाते हैं।

12वन के परिंदे तालाबों के किनारे रहने को आते हैं
और पास खड़े पेड़ों की डालियों में गाते हैं।
13परमेश्वर पहाड़ों के ऊपर नीचे वर्षा भेजता है।
परमेश्वर ने जो कुछ रचा है, धरती को वह सब देता है
जो उसे चाहिए।
14परमेश्वर, पशुओं को खाने के लिये घास उपजाई,
हम श्रम करते हैं और वह हमें पौधे देता है। ये पौधे वह
भोजन है जिसे हम धरती से पाते हैं।
15परमेश्वर, हमें दाखमधु देता है, जो हमको प्रसन्न
करती है। हमारा चर्म नर्म रखने को तू हमें तेल देता है।
हमें पुष्ट करने को वह हमें खाना देता है।
16लबानोन के जो विशाल वृक्ष हैं वह परमेश्वर के
हैं। उन विशाल वृक्षों हेतु उनकी बढ़वार को बहुत जल
रहता है।
17पक्षी उन वृक्षों पर निज घोंसले बनाते। सनोवर के
वृक्षों पर सारस का बसेरा है।
18बनैले बकरों के घर ऊँचे पहाड़ में बने हैं। बिच्छुओं
के छिपने के स्थान बड़ी चट्टान है।
19हे परमेश्वर, तूने हमें चाँद दिया जिससे हम जान
पायें कि छुट्टियाँ कब है। सूरज सदा जानता है कि
उसको कहाँ छिपना है।
20तूने अंधेरा बनाया जिससे रात हो जाये और देखो
रात में बनैले पशु बाहर आ जाते और इधर-उधर
घूमते हैं।
21वे झपटते सिंह जब दहाड़ते हैं तब ऐसा लगता जैसे
वे यहोवा को पुकारते हों, जिसे माँगने से वह उनको
आहार देता।
22और पौ फटने पर जीवजन्तु वापस घरों को लौटते
और आराम करते हैं।
23फिर लोग अपना काम करने को बाहर निकलते
हैं। साँझ तक वे काम में लगे रहते हैं।
24हे यहोवा, तूने अचरज भरे बहुतेरे काम किये।
धरती तेरी वस्तुओं से भरी पड़ी है। तू जो कुछ करता
है, उसमें निज विवेक दर्शाता है।
25यह सागर देखो! यह कितना विशाल है! बहुतेरे
वस्तुएँ सागर में रहती हैं! उनमें कुछ विशाल है और
कुछ छोटी हैं! सागर में जो जीवजन्तु रहते हैं, वे अगणित
असंख्य हैं।
26सागर के ऊपर जलयान तैरते हैं, और सागर के
भीतर महामत्स्य जो सागर के जीव को तूने रचा था,
क्रीड़ा करता है।
27यहोवा, यह सब कुछ तुझपर निर्भर है। हे परमेश्वर,
उन सभी जीवों को खाना तू उचित समय पर देता है।
28हे परमेश्वर, खाना जिसे वे खाते है, वह तू सभी
जीवों को देता है। तू अच्छे खाने से भरे अपने हाथ
खोलता है, और वे तृप्त हो जाने तक खाते हैं।
29फिर जब तू उनसे मुख मोड़ लेता तब वे भयभीत
हो जाते हैं। उनकी आत्मा उनको छोड़ चली जाती है। वे
दुर्बल हो जाते और मर जाते हैं और उनकी देह फिर
धूल हो जाती है।
30हे यहोवा, निज आत्मा का अंश तू उन्हें दे। और
वह फिर से स्वस्थ हो जायेंगे। तू फिर धरती को नयी
सी बना दे।
31यहोवा की महिमा सदा सदा बनी रहे! यहोवा अपनी
सृष्टि से सदा आनन्दित रहे!
32यहोवा कि दृष्टि से यह धरती काँप उठेगी। पर्वतों से
धुआँ उठने लग जायेगा।
33मैं जीवन भर यहोवा के लिये गाऊँगा। मैं जब तक
जीता हूँ यहोवा के गुण गाता रहूँगा।
34मुझको यह आज्ञा है कि जो कुछ मैंने कहा है
वह उसे प्रसन्न करेगा। मैं तो यहोवा के संग में
प्रसन्न हूँ!
35धरती से पाप का लोप हो जाये और दुष्ट लोग सदा
के लिये मिट जाये। ओ मेरे मन यहोवा कि प्रशंसा कर।
यहोवा के गुणगान कर!

भजन 105

1यहोवा का धन्यवाद करो! तुम उसके नाम कि
उपासना करो। लोगों से उनका बखान करो जिन अद्भुत
कामों को वह किया करता है।

2यहोवा के लिये तुम गाओ। तुम उसके प्रशंसा गीत
गाओ। उन सभी आश्चर्यपूर्ण बातों का वर्णन करो
जिनको वह करता है।
3यहोवा के पवित्र नाम पर गर्व करो। ओ सभी लोगों
जो यहोवा के उपासक हो, तुम प्रसन्न हो जाओ।
4सामर्थ्य पाने को तुम यहोवा के पास जाओ। सहारा
पाने को सदा उसके पास जाओ।

5उन अद्‌भुत बातों को स्मरण करो जिनको यहोवा करता है। उसके आश्चर्य कर्म और उसके विवेकपूर्ण निर्णयों को याद रखो।

6तुम परमेश्वर के सेवक इब्राहीम के वंशज हो। तुम याकूब के संतान हो, वह व्यक्ति जिसे परमेश्वर ने चुना था।

7यहोवा ही हमारा परमेश्वर है। सारे संसार पर यहोवा का शासन है।

8परमेश्वर की वाचा सदा याद रखो। हजार पीढ़ियों तक उसके आदेश याद रखो।

9इब्राहीम के साथ परमेश्वर ने वाचा बाँधा था! परमेश्वर ने इसहाक को वचन दिया था।

10परमेश्वर ने याकूब (इस्राएल) को व्यवस्था विधान दिया। परमेश्वर ने इस्राएल के साथ वाचा किया। यह सदा सर्वदा बना रहेगा।

11परमेश्वर ने कहा था, "कनान की भूमि मैं तुमको दूँगा। वह धरती तुम्हारी हो जायेगी।"

12परमेश्वर ने वह वचन दिया था, जब इब्राहीम का परिवार छोटा था और वे बस यात्री थे जब कनान में रह रहे थे।

13वे राष्ट्र से राष्ट्र में, एक राज्य से दूसरे राज्य में घूमते रहे।

14किन्तु परमेश्वर ने उस घराने को दूसरे लोगों से हानि नहीं पहुँचने दी। परमेश्वर ने राजाओं को सावधान किया कि वे उनको हानि न पहुँचाये।

15परमेश्वर ने कहा था, "मेरे चुने हुए लोगों को तुम हानि मत पहुँचाओ। तुम मेरे कोई नबियों का बुरा मत करो।"

16परमेश्वर ने उस देश में अकाल भेजा। और लोगों के पास खाने को पर्याप्त खाना नहीं रहा।

17किन्तु परमेश्वर ने एक व्यक्ति को उनके आगे जाने को भेजा जिसका नाम यूसुफ था। यूसुफ को एक दास के समान बेचा गया था।

18उन्होंने यूसुफ के पाँव में रस्सी बाँधी। उन्होंने उसकी गर्दन में एक लोहे का कड़ा डाल दिया।

19यूसुफ को तब तक बंदी बनाये रखा जब तक वे बातें जो उसने कहीं थी सचमुच घट न गयी। यहोवा ने सुसन्देश से प्रमाणित कर दिया कि यूसुफ उचित था।

20मिस्र के राजा ने इस तरह आज्ञा दी कि यूसुफ के बंधनों से मुक्त कर दिया जाये। उस राष्ट्र के नेता ने कारागार से उसको मुक्त कर दिया।

21यूसुफ को अपने घर बार का अधिकारी बना दिया।यूसुफ राज्य में हर वस्तु का ध्यान रखने लगा।

22यूसुफ अन्य प्रमुखों को निर्देश दिया करता था। यूसुफ ने वृद्ध लोगों को शिक्षा दी।

23फिर जब इस्राएल मिस्र में आया। याकूब हाम के देश में रहने लगा।

24याकूब के वंशज बहुत से हो गये। वे मिस्र के लोगों से अधिक बलशाली बन गये।

25इसलिए मिस्री लोग याकूब के घराने से घृणा करने लगे। मिस्र के लोग अपने दासों के विरुद्ध कुचक्र रचने लगे।

26इसलिए परमेश्वर ने निज दास मूसा और हारुन जो नबी चुना हुआ था, भेजा।

27परमेश्वर ने हाम के देश में मूसा और हारुन से अनेक आश्चर्य कर्म कराये।

28परमेश्वर ने गहन अंधकार भेजा था, किन्तु मिस्रियों ने उनकी नहीं सुनी थी।

29सो फिर परमेश्वर ने पानी को खून में बदल दिया, और उनकी सब मछलियाँ मर गयी।

30और फिर बाद में मिस्रियों का देश मेढ़कों से भर गया। यहाँ तक की मेढ़क राजा के शयन कक्ष तक भरे।

31परमेश्वर ने आज्ञा दी मक्खियाँ और पिस्सू आये। वे हर कहीं फैल गये।

32परमेश्वर ने वर्षा को ओलों में बदल दिया। मिस्रियों के देश में हर कहीं आग और बिजली गिरने लगी।

33परमेश्वर ने मिस्रियों की अंगूर की बाड़ी और अंजीर के पेड़ नष्ट कर दिये। परमेश्वर ने उनके देश के हर पेड़ को तहस नहस किया।

34परमेश्वर ने आज्ञा दी और टिड्डी दल आ गये। टिड्डे आ गये और उनकी संख्या अनगिनत थी।

35टिड्डी दल और टिड्डे उस देश के सभी पौधे चट कर गये। उन्होंने धरती पर जो भी फसलें खड़ी थी, सभी को खा डाली।

36फिर परमेश्वर ने मिस्रियों के पहलौठी सन्तान को मार डाला। परमेश्वर ने उनके सबसे बड़े पुत्रों को मारा।

37फिर परमेश्वर निज भक्तों को मिस्र से निकाल लाया। वे अपने साथ सोना और चाँदी ले आये। परमेश्वर का कोई भी भक्त गिरा नहीं, न ही लड़खड़ाया।

38परमेश्वर के लोगों को जाते हुए देख कर मिस्र आनन्दित था, क्योंकि परमेश्वर के लोगों से वे डरे हुए थे।

39परमेश्वर ने कम्बल जैसा एक मेघ फैलाया। रात में निज भक्तों को प्रकाश देने के लिये परमेश्वर ने अपने आग के स्तम्भ को काम में लाया।

40लोगों ने खाने की माँग की और परमेश्वर उनके लिये बटेरों को ले आया। परमेश्वर ने आकाश से उनको भरपूर भोजन दिया।

41परमेश्वर ने चट्टान को फाड़ा और जल उछलता हुआ बाहर फूट पड़ा। उस मरुभूमि के बीच एक नदी बहने लगी।

42परमेश्वर ने अपना पवित्र वचन याद किया। परमेश्वर ने वह वचन याद किया जो उसने अपने दास इब्राहीम को दिया था।

43परमेश्वर अपने विशेष को मिस्र से बाहर निकाल लाया। लोग प्रसन्न गीत गाते हुए और खुशियाँ मनाते हुए बाहर आ गये!

44फिर परमेश्वर ने निज भक्तों को वह देश दिया जहाँ और लोग रह रहे थे। परमेश्वर के भक्तों ने वे सभी वस्तु पा ली जिनके लिये औरों ने श्रम किया था।

45परमेश्वर ने ऐसा इसलिए किया ताकि लोग उसकी व्यवस्था माने। परमेश्वर ने ऐसा इसलिए किया ताकि वे उसकी शिक्षाओं पर चलें। यहोवा के गुण गाओ!

भजन 106

1यहोवा की प्रशंसा करो! यहोवा का धन्यवाद करो क्योंकि वह उत्तम है! परमेश्वर का प्रेम सदा ही रहता है!

2सचमुच यहोवा कितना महान है, इसका बखान कोई व्यक्ति कर नहीं सकता। परमेश्वर की पूरी प्रशंसा कोई नहीं कर सकता।

3जो लोग परमेश्वर का आदेश पालते हैं, वे प्रसन्न रहते हैं। वे व्यक्ति हर समय उत्तम कर्म करते हैं।

4यहोवा, जब तू निज भक्तों पर कृपा करे। मुझको याद कर। मुझको भी उद्धार करने को याद कर।

5यहोवा, मुझको भी उन भली बातों में हिस्सा बँटाने दे जिन को तू अपने लोगों के लिये करता है। तू अपने भक्तों के साथ मुझको भी प्रसन्न होने दे। तुझ पर तेरे भक्तों के साथ मुझको भी गर्व करने दे।

6हमने वैसे ही पाप किये हैं जैसे हमारे पूर्वजों ने किये। हम अधर्मी हैं, हमने बुरे काम किये है!

7हे यहोवा, मिस्र में हमारे पूर्वजों ने आश्चर्य कर्मों से कुछ भी नहीं सीखा। उन्होंने तेरे प्रेम को और तेरी करुणा को याद नहीं रखा। हमारे पूर्वज वहाँ लाल सागर के किनारे तेरे विरुद्ध हुए।

8किन्तु परमेश्वर ने निज नाम के हेतु हमारे पूर्वजों को बचाया था। परमेश्वर ने अपनी महान शक्ति दिखाने को उनको बचाया था।

9परमेश्वर ने आदेश दिया और लाल सागर सूखा। परमेश्वर हमारे पूर्वजों को उस गहरे समुद्र से इतनी सूखी धरती से निकाल ले आया जैसे मरुभूमि हो।

10परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को उनके शत्रुओं से बचाया! परमेश्वर उनको उनके शत्रुओं से बचा कर निकाल लाया।

11और फिर उनके शत्रुओं को उसी सागर के बीच ढाँप कर डुबा दिया। उनका एक भी शत्रु बच निकल नहीं पाया।

12फिर हमारे पूर्वजों ने परमेश्वर पर विश्वास किया। उन्होंने उसके गुण गाये।

13किन्तु हमारे पूर्वज उन बातों को शीघ्र भूले जो परमेश्वर ने की थी। उन्होंने परमेश्वर की सम्मति पर कान नहीं दिया।

14हमारे पूर्वजों को जंगल में भूख लगी थी। उस मरुभूमि में उन्होंने परमेश्वर को परखा।

15किन्तु हमारे पूर्वजों ने जो कुछ भी माँगा परमेश्वर ने उनको दिया। किन्तु परमेश्वर ने उनको एक महामारी भी दे दी थी।

16लोग मूसा से डाह रखने लगे और हारुन से वे डाह रखने लगे जो यहोवा का पवित्र याजक था।

17सो परमेश्वर ने उन ईर्ष्यालु लोगों को दण्ड दिया। धरती फट गयी और दातान को निगला और फिर धरती बन्द हो गयी। उसने अविराम के समुह को निगल लिया।

18फिर आग ने उन लोगों की भीड़ को भस्म किया। उन दुष्ट लोगों को आग ने जला दिया।

19उन लोगों ने होरब के पहाड़ पर सोने का एक बछड़ा बनाया और वे उस मूर्ति की पूजा करने लगे!

20उन लोगों ने अपने महिमावान परमेश्वर को एक बहुत जो घास खाने वाले बछड़े का था उससे बेच दिया!

21हमारे पूर्वज परमेश्वर को भूले जिसने उन्हें बचाया था। वे परमेश्वर के विषय में भुले जिसने मिस्र में आश्चर्य कर्म किये थे।

22परमेश्वर ने हाम के देश में आश्चर्य कर्म किये थे। परमेश्वर ने लाल सागर के पास भय विस्मय भरे काम किये थे।

23परमेश्वर उन लोगों को नष्ट करना चाहता था, किन्तु परमेश्वर के चुने दास मूसा ने उनको रोक दिया। परमेश्वर बहुत कुपित था किन्तु मूसा आड़े आया कि परमेश्वर उन लोगों का कहीं नाश न करे।

24फिर उन लोगों ने उस अद्भुत देश कनान में जाने से मना कर दिया। लोगों को विश्वास नहीं था कि परमेश्वर उन लोगों को हराने में सहायता करेगा जो उस देश में रह रहे थे।

25अपने तम्बूओं में वे शिकायत करते रहे! हमारे पूर्वजों ने परमेश्वर की बात मानने से नकारा।

26सो परमेश्वर ने शपथ खाई कि वे मरुभूमि में मर जायेंगे।

27परमेश्वर ने कसम खाई कि उनकी सन्तानों को अन्य लोगों को हराने देगा। परमेश्वर ने कसम उठाई कि वह हमारे पूर्वजों को देशों में छितरायेगा।

28फिर परमेश्वर के लोग 'बालपोर' में 'बाल' के पूजने में सम्मिलित हो गये। परमेश्वर के लोग वह माँस खाने लगे जिस को निर्जीव देवताओं पर चढ़ाया गया था।

29परमेश्वर अपने जनों पर अति कुपित हुआ। और परमेश्वर ने उनको अति दुर्बल कर दिया।

30किन्तु पीनहास ने विनती की और परमेश्वर ने उस व्याधि को रोका

31किन्तु परमेश्वर जानता था कि पीनहास ने अति उत्तम कर्म किया है। और परमेश्वर उसे सदा सदा याद रखेगा।

32मरीबा में लोग भड़क उठे और उन्होंने मूसा से बुरा काम कराया।

33उन लोगों ने मूसा को अति व्याकुल किया। सो मूसा बिना ही विचारे बोल उठा।

34यहोवा ने लोगों से कहा कि कनान में रह रहे अन्य लोगों को वे नष्ट करें। किन्तु इस्राएली लोगों ने परमेश्वर की नहीं मानी।

35इस्राएल के लोग अन्य लोगों से हिल मिल गये, और वे भी वैसे काम करने लगे जैसे अन्य लोग किया करते थे।

36वे अन्य लोग परमेश्वर के जनों के लिये फँदा बन गये। परमेश्वर के लोग उन देवों को पूजने लगे जिनकी वे अन्य लोग पूजा किया करते थे।

37यहाँ तक कि परमेश्वर के जन अपने ही बालकों की हत्या करने लगे। और वे उन बच्चों को उन दानवों की प्रतिमा को अर्पित करने लगे।

38परमेश्वर के लोगों ने अबोध भोले जनों की हत्या की। उन्होंने अपने ही बच्चों को मार डाला और उन झूठे देवों को उन्हें अर्पित किया।

39इस तरह परमेश्वर के जन उन पापों से अशुद्ध हुए जो अन्य लोगों के थे। वे लोग अपने परमेश्वर के अविश्वासपात्र हुए। और वे लोग वैसे काम करने लगे जैसे अन्य लोग करते थे।

40परमेश्वर अपने उन लोगों पर कुपित हुआ। परमेश्वर उनसे तंग आ चुका था!

41फिर परमेश्वर ने अपने उन लोगों को अन्य जातियों को दे दिया। परमेश्वर ने उन पर उनके शत्रुओं का शासन करा दिया।

42परमेश्वर के जनों के शत्रुओं ने उन पर अधिकार किया और उनका जीना बहुत कठिन कर दिया।

43परमेश्वर ने निज भक्तों को बहुत बार बचाया, किन्तु उन्होंने परमेश्वर से मुख मोड़ लिया। और वे ऐसी बातें करने लगे जिन्हें वे करना चाहते थे। परमेश्वर के लोगों ने बहुत बहुत बुरी बातें की।

44किन्तु जब कभी परमेश्वर के जनों पर विपद पड़ी उन्होंने सदा ही सहायता पाने को परमेश्वर को पुकारा। परमेश्वर ने हर बार उनकी प्रार्थनाएँ सुनी।

45परमेश्वर ने सदा अपनी वाचा को याद रखा। परमेश्वर ने अपने महा प्रेम से उनको सदा ही सुख चैन दिया।

46परमेश्वर के भक्तों को उन अन्य लोगों ने बंदी बना लिया, किन्तु परमेश्वर ने उनके मन में उनके लिये दया उपजाई।

47यहोवा हमारे परमेश्वर, ने हमारी रक्षा की। परमेश्वर उन अन्य देशों से हमको एकत्र करके ले आया, ताकि हम उसके पवित्र नाम का गुण गान कर सके; ताकि हम उसके प्रशंसा गीत गा सकें।

48इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को धन्य कहो। परमेश्वर सदा ही जीवित रहता आया है। वह सदा ही जीवित रहेगा। और सब जन बोले, "आमीन।" यहोवा के गुण गाओ।

पाँचवाँ भाग
भजन 107

1यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह उत्तम है। उसका प्रेम अमर है।

2हर कोई ऐसा व्यक्ति जिसे यहोवा ने बचाया है, इन राष्ट्रों को कहे। हर कोई ऐसा व्यक्ति जिसे यहोवा ने अपने शत्रुओं से छुड़ाया उसके गुण गाओ।

3यहोवा ने निज भक्तों को बहुत से अलग अलग देशों से इकट्ठा किया है। उसने उन्हें पूर्व और पश्चिम से, उत्तर और दक्षिण से जुटाया है।

4कुछ लोग निर्जन मरुभूमि में भटकते रहे। वे लोग ऐसे एक नगर की खोज में थे जहाँ वे रह सकें। किन्तु उन्हें कोई ऐसा नगर नहीं मिला।

5वे लोग भूखे थे और प्यासे थे और वे दुर्बल होते जा रहे थे।

6ऐसे उस संकट में सहारा पाने को उन्होंने यहोवा को पुकारा। यहोवा ने उन सभी लोगों को उनके संकट से बचा लिया।

7परमेश्वर उन्हें सीधा उन नगरों में ले गया जहाँ वे बसेंगे।

8परमेश्वर का धन्यवाद करो उसके प्रेम के लिये और उन अद्भुत कर्मों के लिये जिन्हें वह अपने लोगों के लिये करता है।

9प्यासी आत्मा को परमेश्वर सन्तुष्ट करता है। परमेश्वर उत्तम वस्तुओं से भूखी आत्मा का पेट भरता है।

10परमेश्वर के कुछ भक्त बन्दी बने ऐसे बन्दीगृह में, वे तालों में बंद थे, जिसमें घना अंधकार था।

11क्यों? क्योंकि उन लोगों ने उन बातों के विरुद्ध लड़ाईयाँ की थी जो परमेश्वर ने कहीं थी, परम परमेश्वर की सम्मति को उन्होंने सुनने से नकारा था।

12परमेश्वर ने उनके कर्मों के लिये जो उन्होंने किये थे उन लोगों के जीवन को कठिन बनाया। उन्होंने ठोकर खाई और वे गिर पड़े, और उन्हें सहारा देने कोई भी नहीं मिला।

13वे व्यक्ति संकट में थे, इसलिए सहारा पाने को
यहोवा को पुकारा। यहोवा ने उनके संकटों से उनकी
रक्षा की।
14परमेश्वर ने उनको उनके अंधेरे कारागारों से
उबार लिया। परमेश्वर ने वे रस्से काटे जिनसे उनको
बाँधा गया था।
15यहोवा का धन्यवाद करो। उसके प्रेम के लिये
और उन अद्भुत कामों के लिये जिन्हें वह लोगों के
लिये करता है उसका धन्यवाद करो।

16परमेश्वर हमारे शत्रुओं को हराने में हमें सहायता
देता है। उनके काँसें के द्वारों को परमेश्वर तोड़ गिरा
सकता है। परमेश्वर उनके द्वारों पर लगी लोहे कि
आगलें छिन्न-भिन्न कर सकता है।
17कुछ लोग अपने अपराधों और अपने पापों से
जड़मति बने।
18उन लोगों ने खाना छोड़ दिया और वे मरे हुए से हो
गये।
19वे संकट में थे सो उन्होंने सहायता पाने को यहोवा
को पुकारा। यहोवा ने उन्हें उनके संकटों से बचा
लिया।
20परमेश्वर ने आदेश दिया और लोगों को चँगा
किया। इस प्रकार वे व्यक्ति कब्रों से बचाये गये।
21उसके प्रेम के लिये यहोवा का धन्यवाद करो उसके
वे अद्भुत कामों के लिये उसका धन्यवाद करो जिन्हें
वह लोगों के लिये करता है।
22यहोवा को धन्यवाद देने बलि अर्पित करो, सभी
कामों को जो उसने किये हैं। यहोवा ने जिनको किया
है, उन बातों को आनन्द के साथ बखानो।
23कुछ लोग अपने काम करने को अपनी नावों से
समुद्र पार कर गये।
24उन लोगों ने ऐसी बातों को देखा है जिनको यहोवा
कर सकता है। उन्होंने उन अद्भुत बातों को देखा है
जिन्हें यहोवा ने सागर पर किया है।
25परमेश्वर ने आदेश दिया, फिर एक तीव्र पवन
तभी चलने लगी। बड़ी से बड़ी लहरे आकार लेने लगी।
26लहरे इतनी ऊपर उठीं जितना आकाश हो तूफान
इतना भयानक था कि लोग भयभीत हो गये।
27लोग लड़खड़ा रहे थे, गिरे जा रहे थे जैसे नशे में
धुत्त हो। खिवैया उनकी बुद्धि जैसे व्यर्थ हो गयी हो।
28वे संकट में थे सो उन्होंने सहायता पाने को यहोवा
को पुकारा। तब यहोवा ने उनको संकटों से बचा लिया।
29परमेश्वर ने तूफान को रोका और लहरें शांत हो
गयी।
30खिवैया प्रसन्न थे कि सागर शांत हुआ था।। परमेश्वर
उनको उसी सुरक्षित स्थान पर ले गया जहाँ वे जाना
चाहते थे।
31यहोवा का धन्यवाद करो उसके प्रेम के लिये धन्यवाद
करो उन अद्भुत कामों के लिये जिन्हें वह लोगों के
लिये करता है।
32महासभा के बीच उसका गुणगान करो। जब बुजुर्ग
नेता आपस में मिलते हों उसकी प्रशंसा करों।
33परमेश्वर ने नदियाँ मरुभूमि में बदल दीं। परमेश्वर
ने झरनों के प्रवाह को रोका।
34परमेश्वर ने उपजाऊँ भूमि को व्यर्थ की रेही भूमि
में बदल दिया। क्यों? क्योंकि वहाँ बसे दुष्ट लोगों ने बुरे
कर्म किये थे।
35और परमेश्वर ने मरुभूमि को झीलों की धरती में
बदला। उसने सूखी धरती से जल के स्रोत बहा दिये।
36परमेश्वर भूखे जनों को उस अच्छी धरती पर ले
गया और उन लोगों ने अपने रहने को वहाँ एक नगर
बसाया।
37फिर उन लोगों ने अपने खेतों में बीजों को रोप
दिया। उन्होंने बगीचों में अंगूर रोप दिये, और उन्होंने
एक उत्तम फसल पा ली।
38परमेश्वर ने उन लोगों को आशीर्वाद दिया। उनके
परिवार फलने फूलने लगे। उनके पास बहुत सारे पशु
हुए।
39उनके परिवार विनाश और संकट के कारण छोटे
थे और वे दुर्बल थे।
40परमेश्वर ने उनके प्रमुखों को कुचला और
अपमानित किया था। परमेश्वर ने उनको पथहीन
मरुभूमि में भटकाया।
41किन्तु परमेश्वर ने तभी उन दीन लोगों को उनकी
याचना से बचा कर निकाल लिया। अब तो उनके
घराने बड़े हैं, उतने बड़े जितनी भेड़ों के झुण्ड।
42भले लोग इसको देखते हैं और आनन्दित होते हैं,
किन्तु कुटिल इसको देखते हैं और नहीं जानते कि वे
क्या कहें।
43यदि कोई व्यक्ति विवेकी है तो वह इन बातों को
याद रखेगा। यदि कोई व्यक्ति विवेकी है तो वह समझेगा
कि सचमुच परमेश्वर का प्रेम कैसा है।

भजन 108

दाऊद का एक स्तुति गीत।

1हे परमेश्वर, मैं तैयार हूँ। मैं तेरे स्तुति गीतों को गाने
बजाने को तैयार हूँ।
2हे वीणाओं, और हे सारंगियों! आओ हम सूरज को
जगाये।
3हे यहोवा, हम तेरे यश को राष्ट्रों के बीच गायेंगे और
दूसरे लोगों के बीच तेरी स्तुति करेंगे।
4हे परमेश्वर, तेरा प्रेम आकाश से बढ़कर ऊँचा है,
तेरा सच्चा प्रेम ऊँचा, सबसे ऊँचे बादलों से बड़कर है।

5हे परमेश्वर, आकाशों से ऊपर उठ! ताकि सारा जगत तेरी महिमा का दर्शन करे।

6हे परमेश्वर, निज प्रियों को बचाने ऐसा कर मेरी विनती का उत्तर दे, और हमको बचाने को निज महाशक्ति का प्रयोग कर।

7यहोवा अपने मन्दिर से बोला और उसने कहा, "मैं युद्ध जीतूँगा। मैं अपने भक्तों को शोकेम प्रदान करुँगा। मैं उनको सुक्कोत की घाटी दूँगा।

8गिलाद और मनश्शे मेरे हो जायेंगे। एप्रैम मेरा शिरबाण होगा और यहूदा मेरा राजदण्ड बनेगा।

9मोआब मेरा चरण धोने का पात्र बनेगा। एदोम वह दास होगा जो मेरा पादूका लेकर चलेगा, मैं पलिश्तियों को पराजित करके विजय का जयघोष करुँगा।"

10मुझे शत्रु के दुर्ग में कौन ले जायेगा? एदोम को हराने कौन मेरी सहायता करेगा?

11हे परमेश्वर, क्या यह सत्य है कि तूने हमें बिसारा है? और तू हमारी सेना के साथ नहीं चलेगा!

12हे परमेश्वर, कृपा कर, हमारे शत्रु को हराने में हमको सहायता दे! मनुष्य तो हमको सहारा नहीं दे सकते।

13बस केवल परमेश्वर हमको सुदृढ़ कर सकता है। बस केवल परमेश्वर हमारे शत्रुओं को पराजित कर सकता है!

भजन 109

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का एक स्तुति गीत।

1हे परमेश्वर, मेरी विनती कि ओर से अपने कान तू मत मूँद!

2दुष्ट जन मेरे विषय में झूठी बातें कर रहे हैं। वे दुष्ट लोग ऐसा कह रहें जो सच नहीं है।

3लोग मेरे विषय में घिनौनी बातें कह रहे हैं। लोग मुझ पर व्यर्थ ही बात कर रहे हैं।

4मैंने उन्हें प्रेम किया, वे मुझसे बैर करते हैं। इसलिए, परमेश्वर अब मैं तुझ से प्रार्थना कर रहा हूँ।

5मैंने उन व्यक्तियों के साथ भला किया था। किन्तु वे मेरे लिये बुरा कर रहे हैं। मैंने उन्हें प्रेम किया, किन्तु वे मुझसे बैर रखते हैं।

6मेरे उस शत्रु ने जो बुरे काम किये हैं उसको दण्ड दे। ऐसा कोई व्यक्ति ढूँढ जो प्रमाणित करे कि वह सही नहीं है।

7न्यायाधीश न्याय करे कि शत्रु ने मेरा बुरा किया है, और मेरे शत्रु जो भी कहे वह अपराधी है और उसकी बातें उसके ही लिये बिगड़ जायें।

8मेरे शत्रु को शीघ्र मर जाने दे। मेरे शत्रु का काम किसी और को लेने दे।

9मेरे शत्रु की सन्तानों को अनाथ कर दे और उसकी पत्नी को तू विधवा कर दे।

10उनका घर उनसे छुट जायें और वे भिखारी हो जायें।

11जो कुछ मेरे शत्रु का हो उसका लेनदार छीन कर ले जायें। उसके मेहनत का फल अनजाने लोग लूट कर ले जायें।

12मेरी यही कामना है, मेरे शत्रु पर कोई दया न दिखाये, और उसके सन्तानों पर कोई भी व्यक्ति दया नहीं दिखलाये।

13पूरी तरह नष्ट कर दे मेरे शत्रु को। आने वाली पीढ़ी को हर किसी वस्तु से उसका नाम मिटने दे।

14मेरी कामना यह है कि मेरे शत्रु के पिता और माता के पापों को यहोवा सदा ही याद रखे।

15यहोवा सदा ही उन पापों को याद रखे और मुझे आशा है कि वह मेरे शत्रु की याद मिटाने को लोगों को विवश करेगा।

16क्यों? क्योंकि उस दुष्ट ने कोई भी अच्छा कर्म कभी भी नहीं किया। उसने किसी को कभी भी प्रेम नहीं किया। उसने दीनों असहायों का जीना कठिन कर दिया।

17उस दुष्ट लोगों को शाप देना भाता था। सो वही शाप उस पर लौट कर गिर जाये। उस बुरे व्यक्ति ने कभी आशीष न दी कि लोगों के लिये कोई भी अच्छी बात घटे। सो उसके साथ कोई भी भली बात मत होने दे।

18वह शाप को वस्त्रों सा ओढ़ लें। शाप ही उसके लिये पानी बन जाये वह जिसको पीता रहे। शाप ही उसके शरीर पर तेल बनें।

19शाप ही उस दुष्ट जन का वस्त्र बने जिनको वह लपेटे, और शाप ही उसके लिये कमर बन्द बने।

20मुझको यह आशा है कि यहोवा मेरे शत्रु के साथ इन सभी बातों को करेगा। मुझको यह आशा है कि यहोवा इन सभी बातों को उनके साथ करेगा जो मेरी हत्या का जतन कर रहे है।

21यहोवा तू मेरा स्वामी है। सो मेरे संग वैसा बर्ताव कर जिससे तेरे नाम का यश बढ़े। तेरी करुणा महान है, सो मेरी रक्षा कर।

22मैं बस एक दीन, असहाय जन हूँ। मैं सचमुच दुःखी हूँ। मेरा मन टूट चुका है।

23मुझे ऐसा लग रहा जैसे मेरा जीवन साँझ के समय की लम्बी छाया की भाँति बीत चुका है। मुझे ऐसा लग रहा जैसे किसी खटमल को किसी ने बाहर किया।

24क्योंकि मैं भूखा हूँ इसलिए मेरे घुटने दुर्बल हो गये हैं। मेरा भार घटता ही जा रहा है, और मैं सूखता जा रहा हूँ।

25बुरे लोग मुझको अपमानित करते। वे मुझको घूरते और अपना सिर मटकाते हैं।।

26यहोवा मेरा परमेश्वर, मुझको सहारा दे! अपना सच्चा प्रेम दिखा और मुझको बचा ले!

27फिर वे लोग जान जायेंगे कि तूने ही मुझे बचाया है। उनको पता चल जायेगा कि वह तेरी शक्ति थी जिसने मुझको सहारा दिया।
28वे लोग मुझे शाप देते रहे। किन्तु यहोवा मुझको आशीर्वाद दे सकता है। उन्होंने मुझ पर वार किया, सो उनको हरा दे। तब मैं, तेरा दास, प्रसन्न हो जाऊँगा।
29मेरे शत्रुओं को अपमानित कर! वे अपने लाज से ऐसे ढक जायें जैसे परिधान का आवरण ढक लेता।
30मैं यहोवा का धन्यवाद करता हूँ। बहुत लोगों के सामने मैं उसके गुण गाता हूँ।
31क्यों? क्योंकि यहोवा असहाय लोगों का साथ देता है। परमेश्वर उनको दूसरे लोगों से बचाता है, जो प्राणदण्ड दिलवाकर उनके प्राण हरने का यत्न करते हैं।

भजन 110

दाऊद का एक स्तुति गीत।

1यहोवा ने मेरे स्वामी से कहा, "तू मेरे दाहिने बैठ जा, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पाँव की चौकी नहीं कर दूँ।"
2तेरे राज्य के विकास में यहोवा सहारा देगा। तेरे राज्य का आरम्भ सिय्योन पर होगा, और उसका विकास तब तक होता रहेगा, जब तक तू अपने शत्रुओं पर उनके अपने ही देश में राज करेगा।
3तेरे पराक्रम के दिन तेरी प्रजा के लोग स्वेच्छा वलि बनेंगे। तेरे जवान पवित्रता से सुशोभित भोर के गर्भ से जन्मी ओस के समान तेरे पास है।
4यहोवा ने एक वचन दिया, और यहोवा अपना मन नहीं बदलेगा। "तू नित्य याजक है। किन्तु हारुन के परिवार समूह से नहीं। तेरी याजकी भिन्न है। तू मेल्कीसेदेक के समूह की रीति का याजक है।"
5मेरे स्वामी, तूने उस दिन अपना क्रोध प्रकट किया था। अपने महाशक्ति को काम में लिया था और दूसरे राजाओं को तूने हरा दिया था।
6परमेश्वर राष्ट्रों का न्याय करेगा। परमेश्वर ने उस महान धरती पर शत्रुओं को हरा दिया। उनकी मृत देहों से धरती फट गयी थी।
7राह के झरने से जल पी के ही राजा अपना सिर उठायेगा और सचमुच बलशाली होगा!

भजन 111

1यहोवा के गुण गाओ! यहोवा का अपने सम्पूर्ण मन से ऐसी उस सभा में धन्यवाद करता हूँ जहाँ सज्जन मिला करते हैं।
2यहोवा ऐसे कर्म करता है, जो आश्चर्यपूर्ण होते हैं। लोग हर उत्तम वस्तु चाहते हैं, वही जो परमेश्वर से आती है।
3परमेश्वर ऐसे कर्म करता है जो सचमुच महिमावान और आश्चर्यपूर्ण होते हैं। उसका खरापन सदा–सदा बना रहता है।
4परमेश्वर अद्भुत कर्म करता है ताकि हम याद रखें कि यहोवा करुणापूर्ण और दया से भरा है।
5परमेश्वर निज भक्तों को भोजन देता है। परमेश्वर अपनी वाचा को याद रखता है।
6परमेश्वर के महान कार्य उसके प्रजा को यह दिखाया कि वह उनकी भूमि उन्हें दे रहा है।
7परमेश्वर जो कुछ करता है वह उत्तम और पक्षपात रहित है। उसके सभी आदेश पूरे विश्वास योग्य हैं।
8परमेश्वर के आदेश सदा ही बने रहेंगे। परमेश्वर के उन आदेशों को देने के प्रयोजन सच्चे थे और वे पवित्र थे।
9परमेश्वर निज भक्तों को बचाता है। परमेश्वर ने अपनी वाचा को सदा अटल रहने को रचा है, परमेश्वर का नाम आश्चर्यपूर्ण है और वह पवित्र है।
10विवेक भय और यहोवा के आदर से उपजता है। वे लोग बुद्धिमान होते हैं जो यहोवा का आदर करते हैं। यहोवा की स्तुति सदा सदा गायी जायेगी।

भजन 112

1यहोवा की प्रशंसा करो! ऐसा व्यक्ति जो यहोवा से डरता है। और उसका आदर करता है। वह अति प्रसन्न रहेगा। परमेश्वर के आदेश ऐसे व्यक्ति को भाते हैं।
2धरती पर ऐसे व्यक्ति की संतानें महान होंगी। अच्छे व्यक्तियों कि संतानें सचमुच धन्य होंगी।
3ऐसे व्यक्ति का घराना बहुत धनवान होगा और उसकी धार्मिकता सदा सदा बनी रहेगी।
4सज्जनों के लिये परमेश्वर ऐसा होता है जैसे अंधेरे में चमकता प्रकाश हो। परमेश्वर खरा है, और करुणापूर्ण है और दया से भरा है।
5मनुष्य को अच्छा है कि वह दयालु और उदार हो। मनुष्य को यह उत्तम है कि वह अपने व्यापार में खरा रहे।

6ऐसा व्यक्ति का पतन कभी नहीं होगा। एक अच्छे व्यक्ति को सदा याद किया जायेगा।
7सज्जन को विपद से डरने की जरुरत नहीं। ऐसा व्यक्ति यहोवा के भरोसे है और आश्वस्त रहता है।
8ऐसा व्यक्ति आश्वस्त रहता है। वह भयभीत नहीं होगा। वह अपने शत्रुओं को हरा देगा।
9ऐसा व्यक्ति दीन जनों को मुक्त दान देता है। उसके पुण्य कर्म जिन्हें वह करता रहता है वह सदा सदा बने रहेंगे।
10कुटिल जन उसको देखेंगे और कुपित होंगे। वे क्रोध में अपने दाँतों को पीसेंगे और फिर लुप्त हो जायेंगे। दुष्ट लोग उसको कभी नहीं पायेंगे जिसे वह सब से अधिक पाना चाहते हैं।

भजन 113

1हे यहोवा के सेवकों यहोवा की स्तुति करो! उसका
गुणगान करो! यहोवा के नाम की प्रशंसा करो।
2यहोवा का नाम आज और सदा सदा के लिये और
अधिक धन्य हो। यह मेरी कामना है।
3मेरी यह कामना है, यहोवा के नाम का गुण पूरब से
जहाँ सूरज उगता है, पश्चिम तक उस स्थान में जहाँ
सूरज डूबता है गाया जाये।
4यहोवा सभी राष्ट्रों से महान है। उसकी महिमा आकाशों
तक उठती है।
5हमारे परमेश्वर के समान कोई भी व्यक्ति नहीं है।
परमेश्वर ऊँचे अम्बर में विराजता है।
6ताकि परमेश्वर अम्बर और नीचे धरती को देख
पाये।
7परमेश्वर दीनों को धूल से उठाता है। परमेश्वर
भिखारियों को कूड़े के घूरे से उठाता है।
8परमेश्वर उन्हें महत्त्वपूर्ण बनाता है। परमेश्वर उन
लोगों को महत्त्वपूर्ण मुखिया बनाता है।
9चाहे कोई निपूती बाँझ स्त्री हो, परमेश्वर उसे बच्चे
दे देगा और उसको प्रसन्न करेगा। यहोवा का गुणगान
करो!

भजन 114

1इस्राएल ने मिस्र छोड़ा। याकूब (इस्राएल) ने उस
अनजान देश को छोड़ा।
2उस समय यहूदा परमेश्वर का विशेष व्यक्ति बना,
इस्राएल उसका राज्य बन गया।
3इसे लाल सागर देखा, वह भाग खड़ा हुआ। यरदन
नदी उलट कर बह चली।
4पर्वत मेढ़े के समान नाच उठे! पहाड़ियाँ मेमनों जैसी
नाची।
5हे लाल सागर, तू क्यों भाग उठा? हे यरदन नदी, तू
क्यों उलटी बही?
6पर्वतों, क्यों तुम मेढ़े के जैसे नाचे? और पहाड़ियों,
तुम क्यों मेमनों जैसी नाची?
7याकूब के परमेश्वर, स्वामी यहोवा के सामने धरती
काँप उठी।
8परमेश्वर ने ही चट्टानों को चीर के जल को बाहर
बहाया। परमेश्वर ने पक्की चट्टान से जल का झरना
बहाया था।

भजन 115

1यहोवा! हमको कोई गौरव ग्रहण नहीं करना चाहिये।
गौरव तो तेरा है। तेरे प्रेम और निष्ठा के कारण गौरव
तेरा है।
2राष्ट्रों को क्यों अचरज हो कि हमारा परमेश्वर
कहाँ है?
3परमेश्वर स्वर्ग में है। जो कुछ वह चाहता है वही
करता रहता है।
4उन जातियों के "देवता" बस केवल पुतले हैं जो सोने
चाँदी के बने है। वह बस केवल पुतले हैं जो किसी
मानव ने बनाये।
5उन पुतलों के मुख है, पर वे बोल नहीं पाते। उनकी
आँखे हैं, पर वे देख नहीं पाते।
6उनके कान हैं, पर वे सुन नहीं सकते। उनके पास
नाक है, किन्तु वे सूँघ नहीं पाते।
7 उनके हाथ हैं, पर वे किसी वस्तु को छू नहीं
सकते, उनके पास पैर हैं, पर वे चल नहीं सकते।
उनके कंठो से स्वर फूटते नहीं हैं।
8जो व्यक्ति इस पुतले को रखते और उनमें विश्वास
रखते हैं बिल्कुल इन पुतलों से बन जायेंगे!
9ओ इस्राएल के लोगों, यहोवा में भरोसा रखो! यहोवा
इस्राएल को सहायता देता है और उसकी रक्षा करता
है।
10ओ हारुन के घराने, यहोवा में भरोसा रखो! हारुन
के घराने को यहोवा सहारा देता है, और उसकी रक्षा
करता है।
11यहोवा की अनुयायिओं, यहोवा में भरोसा रखो!
यहोवा सहारा देता है और अपने अनुयायिओं की रक्षा
करता है।
12यहोवा हमें याद रखता है। यहोवा हमें वरदान देगा,
यहोवा इस्राएल को धन्य करेगा। यहोवा हारुन के घराने
को धन्य करेगा।
13यहोवा अपने अनुयायिओं को, बड़ों को और छोटों
को धन्य करेगा।
14मुझे आशा है यहोवा तुम्हारी बढ़ोतरी करेगा और
मुझे आशा है, वह तुम्हारी संतानों को भी अधिकाधिक
देगा।
15यहोवा तुझको वरदान दिया करता है! यहोवा ने ही
स्वर्ग और धरती बनाये हैं!
16स्वर्ग यहोवा का है। किन्तु धरती उसने मनुष्यों को
दे दिया।
17मरे हुए लोग यहोवा का गुण नहीं गाते। कब्र में पड़े
लोग यहोवा का गुणगान नहीं करते।
18किन्तु हम यहोवा का धन्यवाद करते हैं, और हम
उसका धन्यवाद सदा सदा करेंगे! यहोवा के गुण गाओ!

भजन 116

1जब यहोवा मेरी प्रार्थनाएँ सुनता है यह मुझे भाता है।
2जब मैं सहायता पाने उसको पुकारता हूँ वह मेरी
सुनता है; यह मुझे भाता है।
3मैं लगभग मर चुका था। मेरे चारों तरफ मौत के
रस्से बंध चुके थे। कब्र मुझको निगल रही थी। मैं
भयभीत था और मैं चिंतित था।

4तब मैंने यहोवा के नाम को पुकारा, मैंने कहा, “यहोवा, मुझको बचा ले।”
5यहोवा खरा है और दयापूर्ण है। परमेश्वर करुणापूर्ण है।
6यहोवा असहाय लोगों की सुध लेता है। मैं असहाय था और यहोवा ने मुझे बचाया।
7हे मेरे प्राण, शांत रह। यहोवा तेरी सुधि रखता है।
8हे परमेश्वर, तूने मेरा प्राण मृत्यु से बचाये। मेरे आँसुओं को तूने रोका और गिरने से मुझको तूने थाम लिया।
9जीवितों की धरती में मैं यहोवा की सेवा करता रहूँगा।
10यहाँ तक मैंने विश्वास बनाये रखा जब मैंने कह दिया था, “मैं बर्बाद हो गया!”
11मैंने यहाँ तक विश्वास सम्भाले रखा जब कि मैं भयभीत था और मैंने कहा, “सभी लोग झूठे हैं!”
12मैं भला यहोवा को क्या अर्पित कर सकता हूँ? मेरे पास जो कुछ है वह सब यहोवा का दिया है!
13मैं उसे पेय भेंट दूँगा क्योंकि उसने मुझे बचाया है। मैं यहोवा के नाम को पुकारुँगा।
14जो कुछ मन्नतें मैंने मागी हैं वे सभी मैं यहोवा को अर्पित करुँगा, और उसके सभी भक्तों के सामने अब जाऊँगा।
15किसी एक की भी मृत्यु जो यहोवा का अनुयायी है, यहोवा के लिये अति महत्त्वपूर्ण है। हे यहोवा, मैं तो तेरा एक सेवक हूँ!
16मैं तेरा सेवक हूँ। मैं तेरी किसी एक दासी का सन्तान हूँ। यहोवा, तूने ही मुझको मेरे बंधनों से मुक्त किया!
17मैं तुझको धन्यवाद बलि अर्पित करुँगा। मैं यहोवा के नाम को पुकारुँगा।
18मैं यहोवा को जो कुछ भी मन्नतें मानी है वे सभी अर्पित करुँगा, और उसके सभी भक्तों के सामने अब जाऊँगा।
19मैं मन्दिर में जाऊँगा जो यरुशलेम में है। यहोवा के गुण गाओ!

भजन 117

1अरे ओ सब राष्ट्रों यहोवा कि प्रशंसा करो। अरे ओ सब लोगों यहोवा के गुण गाओ।
2परमेश्वर हमें बहुत प्रेम करता है! परमेश्वर हमारे प्रति सदा सदा सच्चा रहेगा! यहोवा के गुण गाओ!

भजन 118

1यहोवा का मान करो क्योंकि वह परमेश्वर है।
उसका सच्चा प्रेम सदा ही अटल रहता है! 2इस्राएल यह
कहता है, “उसका सच्चा प्रेम सदा ही अटल रहता है!”
3याजक ऐसा कहते हैं, “उसका सच्चा प्रेम सदा ही अटल रहता है!”
4तुम लोग जो यहोवा की उपासना करते हो, कहा करते हो, “उसका सच्चा प्रेम सदा ही अटल रहता है!”
5मैं संकट में था सो सहारा पाने को मैंने यहोवा को पुकारा। यहोवा ने मुझको उत्तर दिया और यहोवा ने मुझको मुक्त किया।
6यहोवा मेरे साथ है सो मैं कभी नहीं डरुँगा। लोग मुझको हानि पहुँचाने कुछ नहीं कर सकते।
7यहोवा मेरा सहायक है। मैं अपने शत्रुओं को पराजित देखूँगा।
8मनुष्यों पर भरोसा रखने से यहोवा पर भरोसा रखना उत्तम है।
9अपने मुखियाओं पर भरोसा रखने से यहोवा पर भरोसा रखना उत्तम है।
10मुझको अनेक शत्रुओं ने घेर लिया है। यहोवा की शक्ति से मैंने अपने बैरियों को हरा दिया।
11शत्रुओं ने मुझको फिर घेर लिया। यहोवा की शक्ति से मैंने उनको हराया।
12शत्रुओं ने मुझे मधु मक्खियों के झुण्ड सा घेरा। किन्तु, वे एक शीघ्र जलती हुई झाड़ी के समान नष्ट हुआ। यहोवा की शक्ति से मैंने उनको हराया।
13मेरे शत्रुओं ने मुझ पर प्रहार किया और मुझे लगभग बर्बाद कर दिया किन्तु यहोवा ने मुझको सहारा दिया।
14यहोवा मेरी शक्ति और मेरा विजय गीत है। यहोवा मेरी रक्षा करता है।
15सज्जनों के घर में जो विजय पर्व मन रहा तुम उसको सुन सकते हो। देखो, यहोवा ने अपनी महाशक्ति फिर दिखाई है।
16यहोवा की भुजाये विजय में उठी हुई हैं। देखो यहोवा न अपनी महाशक्ति फिर से दिखाई।
17मैं जीवित रहूँगा, मैं मरुँगा नहीं, और जो कर्म यहोवा ने किये हैं, मैं उनका बखान करुँगा।
18यहोवा ने मुझे दण्ड दिया किन्तु मरने नहीं दिया।
19हे पुण्य के द्वारों तुम मेरे लिये खुल जाओ ताकि मैं भीतर आ पाऊँ और यहोवा की आराधना करुँ।
20वे यहोवा के द्वार है। बस केवल सज्जन ही उन द्वारों से होकर जा सकते हैं।
21हे यहोवा, मेरी विनती का उत्तर देने के लिये तेरा धन्यवाद। मेरी रक्षा के लिये मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ।
22जिसको राज मिस्त्रियों ने नकार दिया था वही पत्थर कोने का पत्थर बन गया।
23यहोवा ने इसे घटित किया और हम तो सोचते हैं यह अद्भुत है!
24यहोवा ने आज के दिन को बनाया है। आओ हम हर्ष का अनुभव करें और आज आनन्दित हो जाये!

25लोग बोले, "यहोवा के गुण गाओ! यहोवा ने हमारी
रक्षा की है!
26उस सब का स्वागत करो जो यहोवा के नाम में आ
रहे हैं।" याजकों ने उत्तर दिया, "यहोवा के घर में हम
तुम्हारा स्वागत करते हैं!
27यहोवा परमेश्वर है, और वह हमें अपनाता है।
बलि के लिये मेमने को बाँधों और वेदी के कंगूरों पर
मेमने को ले जाओ।"
28हे यहोवा, तू हमारा परमेश्वर है, और मैं तेरा
धन्यवाद करता हूँ। मैं तेरे गुण गाता हूँ!
29यहोवा की प्रशंसा करो क्योंकि वह उत्तम है। उसकी
सत्य करुणा सदा सदा बनी रहती है।

भजन 119

1जो लोग पवित्र जीवन जीते हैं, वे प्रसन्न रहते हैं। ए
ेसे लोग यहोवा का शिक्षाओं पर चलते हैं।
2लोग जो यहोवा की विधान पर चलते हैं, वे प्रसन्न
रहते हैं। अपने समग्र मन से वे यहोवा की मानते हैं।
3वे लोग बुरे काम नहीं करते। वे यहोवा की आज्ञा
मानते हैं।
4हे यहोवा, तूने हमें अपने आदेश दिये, और तूने
कहा कि हम उन आदेशों का पूरी तरह पालन करें।
5हे यहोवा, यदि मैं सदा तेरे नियमों पर चलूँ,
6जब मैं तेरे आदेशों को विचारुँगा तो मुझे कभी भी
लज्जित नहीं होना होगा।
7जब मैं तेरे खरेपन और तेरी नेकी को विचारता हूँ
तब सचमुच तुझको मान दे सकता हूँ।
8हे यहोवा, मैं तेरे आदेशों का पालन करुँगा। सो
कृपा करके मुझको मत बिसरा!
9एक युवा व्यक्ति कैसे अपना जीवन पवित्र रख पाये?
तेरे निर्देशों पर चलने से।
10मैं अपने पूर्ण मन से परमेश्वर कि सेवा का जतन
करता हूँ। परमेश्वर, तेरे आदेशों पर चलने में मेरी
सहायता कर।
11मैं बड़े ध्यान से तेरे आदेशों का मनन किया करता
हूँ। क्यों ताकि मैं तेरे विरुद्ध पाप पर न चलूँ।
12हे यहोवा, तेरा धन्यवाद! तू अपने विधानों की
शिक्षा मुझको दे।
13तेरे सभी निर्णय जो विवेकपूर्ण हैं। मैं उनका बखान
करुँगा।
14तेरे नियमों पर मनन करना, मुझको अन्य किसी
भी वस्तु से अधिक भाता है।
15मैं तेरे नियमों की चर्चा करता हूँ, और मैं तेरे
समान जीवन जीता हूँ।
16मैं तेरे नियमों में आनन्द लेता हूँ। मैं तेरे वचनों को
नहीं भूलूँगा।
17तेरे दास को योग्यता दे और मैं तेरे नियमों पर
चलूँगा।
18हे यहोवा, मेरी आँख खोल दे और मैं तेरी शिक्षाओं
के भीतर देखूँगा। मैं उन अद्भुत बातों का अध्ययन
करुँगा जिन्हें तूने किया है।
19मैं इस धरती पर एक अनजाना परदेशी हूँ। हे
यहोवा, अपनी शिक्षाओं को मुझसे मत छिपा।
20मैं हर समय तेरे निर्णयों का पाठ करना चाहता हूँ।
21हे यहोवा, तू अहंकारी जन की आलोचना करता
है। उन अहंकारी लोगों पर बुरी बातें घटित होंगी। वे तेरे
आदेशों पर चलना नकारते हैं।
22मुझे लज्जित मत होने दे, और मुझको असमंजस में
मत डाल। मैंने तेरी वाचा का पालन किया है।
23यहाँ तक कि प्रमुखों ने भी मेरे लिये बुरी बातें की
हैं। किन्तु मैं तो तेरा दास हूँ। मैं तेरे विधान का पाठ
किया करता हूँ।
24तेरी वाचा मेरा सर्वोत्तम मित्र है। यह मुझको अच्छी
सलाह दिया करता है।
25मैं शीघ्र मर जाऊँगा। हे यहोवा, तू आदेश दे और
मुझे जीने दे।
26मैंने तुझे अपने जीवन के बारे में बताया है, तूने
मुझे उत्तर दिया है। अब तू मुझको अपना विधान सिखा।
27हे यहोवा, मेरी सहायता कर ताकि मैं तेरी व्यवस्था
का विधान समझूँ। मुझे उन अद्भुत कर्मों का चिंतन
करने दे जिन्हें तूने किया है।
28मैं दुःखी और थका हूँ। मुझको आदेश दे और
अपने वचन के अनुसार मुझको तू फिर सुदृढ़ बना दे।
29हे यहोवा, मुझे कोई झूठ मत जीने दे। अपनी
शिक्षाओं से मुझे राह दिखा दे।
30हे यहोवा, मैंने चुना है कि तेरे प्रति निष्ठावान रहूँ।
मैं तेरे विवेकपूर्ण निर्णयों का सावधानी से पाठ किया
करता हूँ।
31हे यहोवा, तेरी वाचा के संग मेरी लगन लगी है। तू
मुझको निराश मत कर।
32मैं तेरे आदेशों का पालन प्रसन्नता के संग किया
करुँगा। हे यहोवा, तेरे आदेश मुझे अति प्रसन्न करते हैं।
33हे यहोवा, तू मुझे अपनी व्यवस्था सिखा तब मैं
उनका अनुसरण करुँगा।
34मुझको सहारा दे कि मैं उनको समझूँ और मैं तेरी
शिक्षाओं का पालन करुँगा। मैं पूरी तरह उनका पालन
करुँगा।
35हे यहोवा, तू मुझको अपने आदेशों की राह पर ले
चल। मुझे सचमुच तेरे आदेशों से प्रेम है। मेरा भला कर
और मुझे जीने दे।
36मेरी सहायता कर कि मैं तेरे वाचा का मनन करुँ,
बजाय उसके कि यह सोचता रहूँ कि कैसे धनवान
बनूँ।

37हे यहोवा, मुझे अद्‌भुत वस्तुओं पाने को कठिन
जतन मत करने दे।
38हे यहोवा, मैं तेरा दास हूँ। सो उन बातों को कर
जिनका वचन तूने दिये है। तूने उन लोगों को जो पूर्वज
हैं उन बातों को वचन दिया था।
39हे यहोवा, जिस लाज से मुझको भय उसको तू दूर
कर दे। तेरे विवेकपूर्ण निर्णय अच्छे होते हैं।
40देख मुझको तेरे आदेशों से प्रेम है। मेरा भला कर
और मुझे जीने दे।
41हे यहोवा, तू सच्चा निज प्रेम मुझ पर प्रकट कर।
मेरी रक्षा वैसे ही कर जैसे तूने वचन दिया।
42तब मेरे पास एक उत्तर होगा। उनके लिये जो लोग
मेरा अपमान करते हैं। हे यहोवा, मैं सचमुच तेरी उन
बातों के भरोसे हूँ जिनको तू कहता है।

43तू अपनी शिक्षाएँ जो भरोसे योग्य है,मुझसे मत
छीन। हे यहोवा, तेरे विवेकपूर्ण निर्णयों का मुझे भरोसा
है।
44हे यहोवा, मैं तेरी शिक्षाओं का पालन सदा और
सदा के लिये करुँगा।
45सो मैं सुरक्षित जीवन जीऊँगा। क्यों? मैं तेरी व्यवस्था
को पालने का कठिन जतन करता हूँ।
46यहोवा के वाचा की चर्चा मैं राजाओं के साथ
करुँगा और वे मुझे संकट में कभी न डालेंगे।
47हे यहोवा, मुझे तेरी व्यवस्थाओं का मनन भाता है।
तेरी व्यवस्थाओं से मुझको प्रेम है।
48हे यहोवा, मैं तेरी व्यवस्थाओं के गुण गाता हूँ, वे
मुझे प्यारी हैं और मैं उनका पाठ करुँगा।
49हे यहोवा, अपना वचन याद कर जो तूने मुझको
दिया। वही वचन मुझको आज्ञा दिया करता है।
50मैं संकट में पड़ा था, और तूने मुझे चैन दिया। तेरे
वचनो ने फिर से मुझे जीने दिया।
51लोग जो स्वयं को मुझसे उत्तम सोचते हैं, निरन्तर
मेरा अपमान कर रहे हैं। किन्तु हे यहोवा मैंने तेरी
शिक्षाओं पर चलना नहीं छोड़ा।
52मैं सदा तेरे विवेकपूर्ण निर्णयों का ध्यान करता हूँ।
हे यहोवा तेरे विवेकपूर्ण निर्णय से मुझे चैन है।
53जब मैं ऐसे दुष्ट लोगों को देखता हूँ, जिन्होंने तेरी
शिक्षाओं पर चलना छोड़ा है, तो मुझे क्रोध आता है।
54तेरी व्यवस्थायें मुझे ऐसी लगती है, जैसे मेरे घर के
गीत।
55हे यहोवा, रात में मैं तेरे नाम का ध्यान और तेरी
शिक्षाएँ याद रखता हूँ।
56इसलिए यह होता है कि मैं सावधानी से तेरे आदेशों
को पालता हूँ।
57हे यहोवा, मैंने तेरे उपदेशों पर चलना निश्‍चित
किया यह मेरा कर्तव्य है।
58हे यहोवा, मैं पूरी तरह से तुझ पर निर्भर हूँ, जैसा
वचन तूने दिया मुझ पर दयालु हो।
59मैंने ध्यान से अपनी राह पर मनन किया और मैं
तेरी वाचा पर चलने को लौट आया।
60मैंने बिना देर लगाये तेरे आदेशों पर चलने कि
शीघ्रता की।
61बुरे लोगों के एक दल ने मेरे विषय में बुरी बातें
कहीं। किन्तु यहोवा मैं तेरी शिक्षाओं को भूला नहीं।
62तेरे सत निर्णयों का तुझे धन्यवाद देने मैं आधी रात
के बीच उठ बैठता हूँ।
63जो कोई व्यक्ति तेरी उपासना करता मैं उसका
मित्र हूँ। जो कोई व्यक्ति तेरे आदेशों पर चलता है, मैं
उसका मित्र हूँ।
64हे यहोवा, यह धरती तेरी सत्य करुणा से भरी हुई
है। मुझको तू अपने विधान की शिक्षा दे।
65हे यहोवा, तूने अपने दास पर भलाईयाँ की है। तूने
ठीक वैसा ही किया जैसा तूने करने का वचन दिया था।
66हे यहोवा, मुझे ज्ञान दे कि मैं विवेकपूर्ण निर्णय लूँ,
तेरे आदशों पर मुझको भरोसा है।
67संकट में पड़ने से पहले, मैंने बहुत से बुरे काम
किये थे। किन्तु अब, सावधानी के साथ मैं तेरे आदेशों
पर चलता हूँ।
68हे परमेश्वर, तू खरा है, और तू खरे काम करता
है, तू अपनी विधान की शिक्षा मुझको दे।
69कुछ लोग जो सोचते हैं कि वे मुझ से उत्तम हैं, मेरे
विषय में बुरी बातें बनाते हैं। किन्तु यहोवा मैं अपने पूर्ण
मन के साथ तेरे आदेशों को निरन्तर पालता हूँ।
70वे लोग महा मूर्ख हैं। किन्तु मैं तेरी शिक्षाओं को
पढ़ने में रस लेता हूँ।
71मेरे लिये संकट अच्छा बन गया था। मैंने तेरी
शिक्षाओं को सीख लिया।
72हे यहोवा, तेरी शिक्षाएँ मेरे लिए भली है। तेरी
शिक्षाएँ हजार चाँदी के टुकड़ों और सोने के टुकड़ों से
उत्तम हैं।
73हे यहोवा, तूने मुझे रचा है और निज हाथों से तू
मुझे सहारा देता है। अपने आदेशों को पढ़ने समझने में
तू मेरी सहायता कर।
74हे यहोवा, तेरे भक्त मुझे आदर देते हैं और वे
प्रसन्न हैं क्योंकि मुझे उन सभी बातों का भरोसा है
जिन्हें तू कहता है।
75हे यहोवा, मैं यह जानता हूँ कि तेरे निर्णय खरे
हुआ करते हैं। यह मेरे लिये उचित था कि तू मुझको
दण्ड दे।
76अब, अपने सत्य प्रेम से तू मुझ को चैन दे। तेरी
शिक्षाएँ मुझे सचमुच भाती हैं।
77हे यहोवा, तू मुझे सुख चैन दे और जीवन दे। मैं
तेरी शिक्षाओं में सचमुच आनन्दित हूँ।

78उन लोगों को जो सोचा करते है कि वे मुझसे उत्तम हैं, उनको निराश कर दे। क्योंकि उन्होंने मेरे विषय में झूठी बातें कही है। हे यहोवा, मैं तेरे आदेशों का पाठ किया करुँगा।

79अपने भक्तों को मेरे पास लौट आने दे। ऐसे उन लोगों को मेरे पास लौट आने दे, जिनको तेरी वाचा का ज्ञान है।

80हे यहोवा, तू मुझको पूरी तरह अपने आदेशों को पालने दे ताकि मैं कभी लज्जित न होऊँ।

81मैं तेरी प्रतिज्ञा में मरने को तत्पर हूँ कि तू मुझको बचायेगा। किन्तु यहोवा, मुझको उसका भरोसा है, जो तू कहा करता था।

82जिन बातों का तूने वचन दिया था, मैं उनकी बाँट जोहता रहता हूँ। किन्तु मेरी आँखे थकने लगी है। हे यहोवा, मुझे कब तू आराम देगा?

83यहाँ तक जब मैं कूड़े के ढेर पर दाखमधु की सूखी मशक सा हूँ, तब भी मैं तेरे विधान को नहीं भूलूँगा।

84मैं कब तक जीऊँगा? हे यहोवा, कब दण्ड देगा तू ऐसे उन लोगों को जो मुझ पर अत्याचार किया करते हैं?

85कुछ अहंकारी लोग ने अपनी झूठों से मुझ पर प्रहार किया था। यह तेरी शिक्षाओं के विरुद्ध है।

86हे यहोवा, सब लोग तेरी शिक्षाओं के भरोसे रह सकते हैं। झूठे लोग मुझको सता रहे है। मेरी सहायता कर!

87उन झूठे लोगों ने मुझको लगभग नष्ट कर दिया है। किन्तु मैंने तेरे आदेशों को नहीं छोड़ा।

88हे यहोवा, अपनी सत्य करुणा को मुझ पर प्रकट कर। तू मुझको जीवन दे मैं तो वही करुँगा जो कुछ तू कहता है।

89हे यहोवा, तेरे वचन सदा अचल रहते हैं। स्वर्ग में तेरे वचन सदा अटल रहते हैं।

90सदा सर्वदा के लिये तू ही सच्चा है। हे यहोवा, तूने धरती रची, और यह अब तक टिकी है।

91तेरे आदेश से ही अब तक सभी वस्तु स्थिर हैं, क्योंकि वे सभी वस्तुएँ तेरे दास हैं।

92यदि तेरी शिक्षाएँ मेरी मित्र जैसी नहीं होती, तो मेरे संकट मुझे नष्ट कर डालते।

93हे यहोवा, तेरे आदेशों को मैं कभी नहीं भूलूँगा। क्योंकि वे ही मुझे जीवित रखते हैं।

94हे यहोवा, मैं तो तेरा हूँ, मेरी रक्षा कर। क्यों? क्योंकि तेरे आदेशों पर चलने का मैं कठिन जतन करता हूँ।

95दुष्ट जन मेरे विनाश का यतन किया करते हैं, किन्तु तेरी वाचा ने मुझे बुद्धिमान बनाया।

96सब कुछ की सीमा है, तेरी व्यवस्था की सीमा नहीं।

97आ हा, यहोवा तेरी शिक्षाओं से मुझे प्रेम है। हर घड़ी मैं उनका ही बखान किया करता हूँ।

98हे यहोवा, तेरे आदेशों ने मुझे मेरे शत्रुओं से अधिक बुद्धिमान बनाया। तेरा विधान सदा मेरे साथ रहता है।

99मैं अपने सब शिक्षाओं से अधिक बुद्धिमान हूँ क्योंकि मैं तेरी वाचा का पाठ किया करता हूँ।

100मैं बुजुर्ग प्रमुखों से भी अधिक समझता हूँ। क्योंकि मैं तेरे आदेशों को पालता हूँ।

101हे यहोवा, तू मुझे राह में हर कदम बुरे मार्ग से बचाता है, ताकि जो तू मुझे बताता है वह मैं कर सकूँ।

102यहोवा, तू मेरा शिक्षक है। सो मैं तेरे विधान पर चलना नहीं छोड़ूँगा।

103तेरे वचन मेरे मुख के भीतर शहद से भी अधिक मीठे हैं।

104 तेरी शिक्षाएँ मुझे बुद्धिमान बनाती है। सो मैं झूठी शिक्षाओं से घृणा करता हूँ।

105हे यहोवा, तेरा वचन मेरे पाँव के लिये दीपक और मार्ग के लिये उजियाला है।

106तेरे नियम उत्तम हैं। मैं उन पर चलने का वचन देता हूँ, और मैं अपने वचन का पालन करुँगा।

107हे यहोवा, बहुत समय तक मैंने दुःख झेले हैं, कृपया मुझे अपना आदेश दे और तू मुझे फिर से जीवित रहने दे!

108हे यहोवा, मेरी विनती को तू स्वीकार कर, और मुझ को अपनी विधान कि शिक्षा दे।

109मेरा जीवन सदा जोखिम से भरा हुआ है। किन्तु यहोवा मैं तेरे उपदेश भूला नहीं हूँ।

110दुष्ट जन मुझको फँसाने का यत्न करते हैं किन्तु तेरे आदेशों को मैंने कभी नहीं नकारा है।

111हे यहोवा, मैं सदा तेरी वाचा का पालन करुँगा। यह मुझे अति प्रसन्न किया करता है।

112मैं सदा तेरे विधान पर चलने का अति कठोर यत्न करुँगा।

113हे यहोवा, मुझको ऐसे उन लोगों से घृणा है, जो पूरी तरह से तेरे प्रति सच्चे नहीं हैं। मुझको तो तेरी शिक्षाएँ भाती हैं।

114मुझको ओट दे और मेरी रक्षा कर। हे यहोवा, मुझको उस हर बात का सहारा है जिसको तू कहता है।

115हे यहोवा, दुष्ट मनुष्यों को मेरे पास मत आने दे। मैं अपने परमेश्वर के आदेशों का पालन करुँगा।

116हे यहोवा, मुझको ऐसे ही सहारा दे जैसे तूने वचन दिया, और मैं जीवित रहूँगा। मुझको तुझमें विश्वास है, मुझको निराश मत कर।

117हे यहोवा, मुझको सहारा दे कि मेरा उद्धार हो। मैं सदा तेरी आदेशों का पाठ किया करुँगा।

118हे यहोवा, तू हर ऐसे व्यक्ति से विमुख हो जाता है, जो तेरे नियम तोड़ता है। क्यों? क्योंकि उन लोगों ने झूठ बोले जब वे तेरे अनुसरण करने को सहमत हुए।

119हे यहोवा, तू इस धरती पर दुष्टों के साथ ऐसा बर्ताव करता है जैसे वे कूड़ा हो। सो मैं तेरी वाचा से सदा प्रेम करुँगा।

120हे यहोवा, मैं तुझ से भयभीत हूँ, मैं डरता हूँ, और तेरे विधान का आदर करता हूँ।

121मैंने वे बातें की हैं जो खरी और भली हैं। हे यहोवा, तू मुझको ऐसे उन लोगों को मत सौंप जो मुझको हानि पहुँचाना चाहते हैं।

122मुझे वचन दे कि तू मुझे सहारा देगा। मैं तेरा दास हूँ। हे यहोवा, उन अहंकारी लोगों को मुझको हानि मत पहुँचाने दे।

123हे यहोवा, तूने मेरे उद्धार का एक उत्तम वचन दिया था, किन्तु अपने उद्धार को मेरी आँख तेरी राह देखते हुए थकी गई।

124तू अपना सच्चा प्रेम मुझ पर प्रकट कर। मैं तेरा दास हूँ। तू मुझे अपने विधान की शिक्षा दे।

125मैं तेरा दास हूँ। अपनी वाचा को पढ़ने समझने में तू मेरी सहायता कर।

126हे यहोवा, यही समय है तेरे लिये कि तू कुछ कर डाले। लोगों ने तेरे विधान को तोड़ा है।

127हे यहोवा, उत्तम सुवर्ण से भी अधिक मुझे तेरे आदेश भाते हैं।

128तेरे सब आदेशों का बहुत सावधानी से मैं पालन करता हूँ। मैं झूठे उपदेशों से घृणा करता हूँ।

129हे यहोवा, तेरी वाचा बहुत अद्भुत है। इसलिए मैं उसका अनुसरण करता हूँ।

130कब शुरु करेंगे लोग तेरा वचन समझना? यह एक ऐसे प्रकाश सा है जो उन्हें जीवन की खरी राह दिखाया करता है। तेरा वचन मूर्ख तक को बुद्धिमान बनाता है।

131हे यहोवा, मैं सचमुच तेरे आदेशों का पाठ करना चाहता हूँ। मैं उस व्यक्ति जैसा हूँ जिस की साँस उखड़ी हो और जो बड़ी तीव्रता से बाट जोह रहो हो।

132हे परमेश्वर, मेरी ओर दृष्टि कर और मुझ पर दयालु हो। तू उन जनों के लिये ऐसे उचित काम कर जो तेरे नाम से प्रेम किया करते हैं?

133तेरे वचन के अनुसार मेरी अगुवाई कर, मुझे कोई हानी न होने दे।

134हे यहोवा, मुझको उन लोगों से बचा ले जो मुझको दु:ख देते हैं। और मैं तेरे आदेशों का पालन करुँगा।

135हे यहोवा, अपने दास को तू अपना ले और अपना विधान तू मुझे सिखा।

136रो-रो कर आँसुओं की एक नदी मैं बहा चुका हूँ। क्योंकि लोग तेरी शिक्षाओं का पालन नहीं करते हैं।

137हे यहोवा, तू भला है और तेरे नियम खरे हैं।

138वे नियम उत्तम है जो तूने हमें वाचा में दिये। हम सचमुच तेरे विधान के भरोसे रह सकते हैं।

139मेरी तीव्र भावनाएँ मुझे शीघ्र ही नष्ट कर देंगी। मैं बहुत बेचैन हूँ, क्योंकि मेरे शत्रुओं ने तेरे आदेशों को भुला दिया।

140हे यहोवा, हमारे पास प्रमाण है, कि हम तेरे वचन के भरोसे रह सकते हैं, और मुझे इससे प्रेम है।

141मैं एक तुच्छ व्यक्ति हूँ और लोग मेरा आदर नहीं करते हैं। किन्तु मैं तेरे आदेशों को भूलता नहीं हूँ।

142हे यहोवा, तेरी धार्मिकता अनन्त है। तेरे उपदेशों के भरोसे में रहा जा सकता है।

143मैं संकट में था, और कठिन समय में था। किन्तु तेरे आदेश मेरे लिये मित्र से थे।

144तेरी वाचा नित्य ही उत्तम है। अपनी वाचा को समझने में मेरी सहायता कर ताकि मैं जी सकूँ।

145सम्पूर्ण मन से यहोवा मैं तुझको पुकारता हूँ, मुझको उत्तर दे। मैं तेरे आदेशों का पालन करता हूँ।

146हे यहोवा, मेरी तुझसे विनती है। मुझको बचा ले! मैं तेरी वाचा का पालन करुँगा।

147यहोवा, मैं तेरी प्रार्थना करने को भोर के तड़के उठा करता हूँ। मुझको उन बातों पर भरोसा है, जिनको तू कहता है।

148देर रात तक तेरे वचनों का मनन करते हुए बैठा रहता हूँ।

149हे यहोवा, तू अपने पूर्ण प्रेम से मुझ पर कान दे। तू वैसा ही कर जिसे तू ठीक कहता है, और मेरा जीवन बनाये रख।

150लोग मेरे विरुद्ध कुचक्र रच रहे हैं। हे यहोवा, ऐसे ये लोग तेरी शिक्षाओं पर चला नहीं करते हैं।

151हे यहोवा, तू मेरे पास है। तेरे आदेशों पर विश्वास किया जा सकता है।

152तेरी वाचा से बहुत दिनों पहले ही मैं जान गया था कि तेरी शिक्षाएँ सदा ही अटल रहेंगी।

153हे यहोवा, मेरी यातना देख और मुझको बचा ले, मैं तेरे उपदेशों को भूला नहीं हूँ।

154हे यहोवा, मेरे लिये मेरी लड़ाई लड़ और मेरी रक्षा कर। मुझको वैसे जीने दे जैसे तूने वचन दिया।

155दुष्ट विजयी नहीं होंगे। क्यों? क्योंकि वे तेरे विधान पर नहीं चलते हैं।

156हे यहोवा, तू बहुत दयालु है। तू वैसा ही कर जिसे तू अच्छा कहे, और मेरा जीवन बनाये रख।

157मेरे बहुत से शत्रु हैं जो मुझे हानि पहुँचाने का जतन करते; किन्तु मैंने तेरी वाचा का अनुसरण नहीं छोड़ा।

158मैं उन कृतघ्नों को देख रहा हूँ। हे यहोवा, तेरे वचन का पालन वे नहीं करते। मुझको उनसे घृणा है।

159देख, तेरे आदेशों का पालन करने का मैं कठिन जतन करता हूँ। हे यहोवा, तेरे सम्पूर्ण प्रेम से मेरा जीवन बनाये रख।

160हे यहोवा, सनातन काल से तेरे सभी वचन विश्वास योग्य रहे हैं। तेरा उत्तम विधान सदा ही अमर रहेगा।

161शक्तिशाली नेता मुझ पर व्यर्थ ही वार करते हैं, किन्तु मैं डरता हूँ और तेरे विधान का बस मैं आदर करता हूँ।

162हे यहोवा, तेरे वचन मुझ को वैसे आनन्दित करते हैं, जैसा वह व्यक्ति आनन्दित होता है, जिसे अभी-अभी कोई महाकोश मिल गया हो।

163मुझे झूठ से बैर है! मैं उससे घृणा करता हूँ! हे यहोवा, मैं तेरी शिक्षाओं से प्रेम करता हूँ।

164मैं दिन में सात बार तेरे उत्तम विधान के कारण तेरी स्तुति करता हूँ।

165वे व्यक्ति सच्ची शांति पायेंगे, जिन्हें तेरी शिक्षाएँ भाती हैं। उसको कुछ भी गिरा नहीं पायेगा।

166हे यहोवा, मैं तेरी प्रतीक्षा में हूँ कि तू मेरा उद्धार करे। मैंने तेरे आदेशों का पालन किया है।

167मैं तेरी वाचा पर चलता रहा हूँ। हे यहोवा, मुझको तेरे विधान से गहन प्रेम है।

168मैंने तेरी वाचा का और तेरे आदेशों का पालन किया है। हे यहोवा, तू सब कुछ जानता है जो मैंने किया है।

169हे यहोवा, सुन तू मेरा प्रसन्न गीत है। मुझे बुद्धिमान बना जैसा तूने वचन दिया है।

170हे यहोवा, मेरी विनती सुन। तूने जैसा वचन दिया मेरा उद्धार कर।

171मेरे अन्दर से स्तुति गीत फूट पड़े क्योंकि तूने मुझको अपना विधान सिखाया है।

172मुझको सहायता दे कि मैं तेरे वचनों के अनुसार कार्य कर सकूँ, और मुझे तू अपना गीत गाने दे। हे यहोवा, तेरे सभी नियम उत्तम हैं।

173तू मेरे पास आ, और मुझको सहारा दे क्योंकि मैंने तेरे आदेशों पर चलना चुन लिया है।

174हे यहोवा, मैं यह चाहता हूँ कि तू मेरा उद्धार करे, तेरी शिक्षाएँ मुझे प्रसन्न करती है।

175हे यहोवा, मेरा जीवन बना रहे और मैं तेरी स्तुति करूँ। अपने विधान से तू मुझे सहारा मिलने दे।

176एक भटकी हुई भेड़ सा, मैं इधर-उधर भटका हूँ। हे यहोवा, मुझे ढूँढते आ। मैं तेरा दास हूँ, और मैं तेरे आदेशों को भूला नहीं हूँ।

भजन 120

मन्दिर का आरोहण गीत।

1मैं संकट में पड़ा था, सहारा पाने के लिए मैंने यहोवा को पुकारा और उसने मुझे बचा लिया।

2हे यहोवा, मुझे तू उन ऐसे लोगों से बचा ले जिन्होंने मेरे विषय में झूठ बोला है।

3अरे ओ झूठों, क्या तुम यह जानते हो कि परमेश्वर तुमको कैसे दण्ड देगा?

4तुम्हें दण्ड देने के लिए परमेश्वर योद्धा के नुकीले तीर और धधकते हुए अंगारे काम में लाएगा।

5झूठों, तुम्हारे निकट रहना ऐसा है, जैसे की मेशेक के देश में रहना। यह रहना ऐसा है जैसे केवार के खेतों में रहना है।

6जो शांति के बैरी है ऐसे लोगों के संग मैं बहुत दिन रहा हूँ।

7मैंने यह कहा था मुझे शांति चाहिए क्यों वे लोग युद्ध को चाहते हैं।

भजन 121

मन्दिर का आरोहण गीत।

1मैं ऊपर पर्वतों को देखता हूँ। किन्तु सचमुच मेरी सहायता कहाँ से आएगी?

2मुझको तो सहारा यहोवा से मिलेगा जो स्वर्ग और धरती का बनाने वाला है।

3परमेश्वर तुझको गिरने नहीं देगा। तेरा बचानेवाला कभी भी नहीं सोएगा।

4इस्राएल का रक्षक कभी भी ऊँघता नहीं है। यहोवा कभी सोता नहीं है।

5यहोवा तेरा रक्षक है। यहोवा अपनी महाशक्ति से तुझको बचाता है।

6दिन के समय सूरज तुझे हानि नहीं पहुँचा सकता। रात में चाँद तेरी हानि नहीं कर सकता।

7यहोवा तुझे हर संकट से बचाएगा। यहोवा तेरी आत्मा की रक्षा करेगा।

8आते और जाते हुए यहोवा तेरी रक्षा करेगा। यहोवा तेरी सदा सर्वदा रक्षा करेगा!

भजन 122

दाऊद का एक आरोहणगीत।

1जब लोगों ने मुझसे कहा, "आओ, यहोवा के मन्दिर में चलें तब मैं बहुत प्रसन्न हुआ।"

2यहाँ हम यरुशलेम के द्वारों पर खड़े हैं।

3यह नया यरुशलेम है। जिसको एक संगठित नगर के रुप में बनाया गया।

4ये परिवार समूह थे जो परमेश्वर के वहाँ पर जाते हैं। इस्राएल के लोग वहाँ पर यहोवा का गुणगान करने जाते हैं। वे वह परिवार समूह थे जो यहोवा से सम्बन्धित थे।

5यही वह स्थान है जहाँ दाऊद के घराने के राजाओं ने अपने सिंहासन स्थापित किये। उन्होंने अपना सिंहासन लोगों का न्याय करने के लिये स्थापित किया।

6तुम यरुशलेम में शांति हेतू विनती करो। "ऐसे लोग जो तुझसे प्रेम रखते हैं, वहाँ शांति पावें यह मेरी कामना है। तुम्हारे परकोटों के भीतर शांति का वास है। यह मेरी कामना है। तुम्हारे विशाल भवनों में सुरक्षा बनी रहे यह मेरी कामना है।"

7मैं प्रार्थना करता हूँ अपने पड़ोसियों के और अन्य इस्राएलवासियों के लिए वहाँ शांति का वास हो।

8हे यहोवा, हमारे परमेश्वर के मन्दिर के भले हेतू मैं प्रार्थना करता हूँ, कि इस नगर में भली बाते घटित हों।

भजन 123

आरोहण गीत।

1हे परमेश्वर, मैं ऊपर आँख उठाकर तेरी प्रार्थना करता हूँ। तू स्वर्ग में राजा के रूप में विराजता है।

2दास अपने स्वामियों के ऊपर उन वस्तुओं के लिए निर्भर रहा करते हैं। जिसकी उनको आवश्यकता है। दासियाँ अपनी स्वामिनियों के ऊपर निर्भर रहा करती हैं।

3इसी तरह हमको यहोवा का, हमारे परमेश्वर का भरोसा है। ताकि वह हम पर दया दिखाए, हम परमेश्वर की बाट जोहते हैं।

4हे यहोवा, हम पर कृपालु है। दयालु हो क्योंकि बहुत दिनों से हमारा अपमान होता रहा है।

5अहंकारी लोग बहुत दिनों से हमें अपमानित कर चुके हैं। ऐसे लोग सोचा करते है कि वे दूसरे लोगों से उत्तम हैं।

भजन 124

दाऊद का एक मन्दिर का आरोहण गीत।

1यदि बीते दिनों में यहोवा हमारे साथ नहीं होता तो हमारे साथ क्या घट गया होता? इस्राएल तू मुझको उत्तर दे?

2यदि बीते दिनों में यहोवा हमारे साथ नहीं होता तो हमारे साथ क्या घट गया होता? जब हम पर लोगों ने हमला किया था तब हमारे साथ क्या बीतती।

3जब कभी हमारे शत्रु ने हम पर क्रोध किया, तब वे हमें जीवित ही निगल लिये होते।

4तब हमारे शत्रुओं की सेनाएँ बाढ़ सी हमको बहाती हुई उस नदी के जैसी हो जाती जो हमें डूबा रहीं हो।

5तब वे अभिमानी लोग उस जल जैसे हो जाते जो हमको डुबाता हुआ हमारे मुँह तक चढ़ रहा हो।

6यहोवा के गुण गाओ। यहोवा ने हमारे शत्रुओं को हमको पकड़ने नहीं दिया और न ही मारने दिया।

7हम जाल में फँसे उस पक्षी के जैसे थे जो फिर बच निकला हो। जाल छिन्न भिन्न हुआ और हम बच निकले।

8हमारी सहायता यहोवा से आयी थी। यहोवा ने स्वर्ग और धरती को बनाय है।

भजन 125

आरोहण गीत।

1जो लोग यहोवा के भरोसे रहते हैं, वे सिय्योन पर्वत के जैसे होंगे। उनको कभी कोई भी डिगा नहीं पाएगा। वे सदा ही अटल रहेंगे।

2यहोवा ने निज भक्तों को वैसे ही अपनी ओट में लिया है, जैसे यरुशलेम चारों ओर पहाड़ों से घिरा है। यहोवा सदा और सर्वदा निज भक्तों की रक्षा करेगा।

3बुरे लोग सदा धरती पर भलों के ऊपर शासन नहीं करेंगे, यदि बुरे लोग ऐसा करने लग जायें तो संभव है सज्जन भी बुरे काम करने लगें।

4हे यहोवा, तू भले लोगों के संग, जिनके मन पवित्र हैं तू भला हो।

5हे यहोवा, दुर्जनों को दण्ड दे, जिन लोगों ने तेरा अनुसरण छोड़ा तू उनको दण्ड दे। इस्राएल में शांति हो।

भजन 126

आरोहण गीत।

1जब यहोवा हमें पुन: मुक्त करेगा तो यह ऐसा होगा जैसे कोई सपना हो!

2हम हँस रहे होंगे और खुशी के गीत गा रहे होंगे! तब अन्य राष्ट्र के लोग कहेंगे, "यहोवा ने इनके लिए महान कार्य किये है।"

3दूसरे देशों के लोग ये बातें करेंगे इस्राएल के लोगों के लिए यहोवा ने एक अद्‌भुत काम किया है। अगर यहोवा ने हमारे लिए वह अद्‌भुत काम किया तो हम प्रसन्न होंगे।

4हे यहोवा, हमें तू स्वतंत्र कर दे, अब तू हमें मरुस्थल के जल से भरे हुए जलधारा जैसा बना दे।

5जब हमने बीज बोये, हम रो रहे थे, किन्तु कटनी के समय हम खुशी के गीत गायेंगे!

6हम बीज लेकर रोते हुए खेतों में गये। सो आनन्द मनाने आओ क्योंकि हम उपज के लिए हुए आ रहे हैं।

भजन 127

सुलैमान का मन्दिर का आरोहण गीत।

1यदि घर का निर्माता स्वयं यहोवा नहीं है, तो घर को बनाने वाला व्यर्थ समय खोता है। यदि नगर का रखवाला स्वयं यहोवा नहीं है, तो रखवाले व्यर्थ समय खोते हैं।

2यदि सुबह उठ कर तुम देर रात गए तक काम करो। इसलिए कि तुम्हें बस खाने के लिए कमाना है, तो तुम व्यर्थ समय खोते हो। परमेश्वर अपने भक्तों का उनके सोते तक में ध्यान रखता है।

3बच्चे यहोवा का उपहार है, वे माता के शरीर से मिलने वाले फल हैं।

4जवान के पुत्र ऐसे होते हैं जैसे योद्धा के तरकस के बाण।

5जो व्यक्ति बाण रुपी पुत्रों से तरकस को भरता है वह अति प्रसन्न होगा।

6वह मनुष्य कभी हारेगा नहीं। उसके पुत्र उसकी शत्रुओं से सार्वजनिक स्थानों पर उसकी रक्षा करेंगे।

भजन 128

आरोहण गीत।

1यहोवा के सभी भक्त आनन्दित रहते हैं। वे लोग परमेश्वर जैसा चाहता, वैसा गाते हैं।

2तूने जिनके लिये काम किया है, उन वस्तुओं का तू आनन्द लेगा। उन ऐसी वस्तुओं को कोई भी व्यक्ति तुझसे नहीं छिनेगा। तू प्रसन्न रहेगा और तेरे साथ भली बातें घटेंगी।

3घर पर तेरी घरवाली अंगूर की बेल सी फलवती होगी। मेज के चारों तरफ तेरी संतानें ऐसी होंगी, जैसे जैतून के वे पेड़ जिन्हें तूने रोपा है।

4इस प्रकार यहोवा अपने अनुयायिओं को सचमुच आशीष देगा।

5यहोवा सिय्योन से तुझ को आशीर्वाद दे यह मेरी कामना है। जीवन भर यरुशलेम में तुझको वरदानों का आनन्द मिले।

6तू अपने नाती पोतों को देखने के लिये जीता रहे यह मेरी कामना है। इस्राएल में शांति रहे।

भजन 129

मन्दिर का आरोहण गीत।

1पूरे जीवन भर मेरे अनेक शत्रु रहे हैं। इस्राएल हमें उन शत्रुओं के बारे में बता।

2सारे जीवन भर मेरे अनेक शत्रु रहे हैं। किन्तु वे कभी नहीं जीते।

3उन्होंने मुझे तब तक पीटा जब तक मेरी पीठ पर गहरे घाव नहीं बने। मेरे बड़े-बड़े और गहरे घाव हो गए थे।

4किन्तु भले यहोवा ने रस्से काट दिये और मुझको उन दुष्टों से मुक्त किया।

5जो सिय्योन से बैर रखते थे, वे लोग पराजित हुए। उन्होंने लड़ना छोड़ दिया और कहीं भाग गये।

6वे लोग ऐसे थे, जैसे किसी घर की छत पर की घास जो उगने से पहले ही मुरझा जाती है।

7उस घास से कोई श्रमिक अपनी मुट्ठी तक नहीं भर पाता और वह पूली भर अनाज भी पर्याप्त नहीं होती।

8ऐसे उन दुष्टों के पास से जो लोग गुजरते हैं। वे नहीं कहेंगे, "यहोवा तेरा भला करे।" लोग उनका स्वागत नहीं करेंगे और हम भी नहीं कहेंगे, "तुम्हें यहोवा के नाम पर आशीष देते हैं।"

भजन 130

आरोहण गीत।

1हे यहोवा, मैं गहन कष्ट में हूँ सो सहारा पाने को मैं तुम्हें पुकारता हूँ।

2मेरे स्वामी, तू मेरी सुन ले। मेरी सहायता की पुकार पर कान दे।

3हे यहोवा, यदि तू लोगों को उनके सभी पापों का सचमुच दण्ड दे तो फिर कोई भी बच नहीं पायेगा।

4हे यहोवा, निज भक्तों को क्षमा कर। फिर तेरी अराधना करने को वहाँ लोग होंगे।

5मैं यहोवा की बाट जोह रहा हूँ कि वह मुझको सहायता दे। मेरी आत्मा उसकी प्रतीक्षा में है। यहोवा जो कहता है उस पर मेरा भरोसा है।

6मैं अपने स्वामी की बाट जोहता हूँ। मैं उस रक्षक सा हूँ जो उषा के आने की प्रतीक्षा में लगा रहता है।

7इस्राएल, यहोवा पर विश्वास कर। केवल यहोवा के साथ सच्चा प्रेम मिलता है। यहोवा हमारी बार-बार रक्षा किया करता है। यहोवा इस्राएल को उनके सारे पापों के लिए क्षमा करेगा।

भजन 131

आरोहण गीत।

1हे यहोवा, मैं अभिमानी नहीं हूँ। मैं महत्वपूर्ण होने का जतन नहीं करता हूँ। मैं वो काम करने का जतन नहीं करता हूँ। जो मेरे लिये बहुत कठिन हैं। ऐसी उन बातों की मुझे चिंता नहीं है।

2मैं निश्चल हूँ, मेरी आत्मा शांत है।

3मेरी आत्मा शांत और अचल है, जैसे कोई शिशु अपनी माता की गोद में तृप्त होता है।

4इस्राएल, यहोवा पर भरोसा रखो। उसका भरोसा रखो, अब और सदा सदा ही उसका भरोसा रखो!

भजन 132

मन्दिर का आरोहण गीत।

1हे यहोवा, जैसे दाऊद ने यातनाएँ भोगी थी, उसको याद कर।

2किन्तु दाऊद ने यहोवा की एक मन्नत मानी थी। दाऊद ने इस्राएल के पराक्रमी परमेश्वर की एक मन्नत मानी थी।

3-4 दाऊद ने कहा था: "मैं अपने घर में तब तक न जाऊँगा, अपने बिस्तर पर न ही लेटूँगा, न ही सोऊँगा। अपनी आँखों को मैं विश्राम तक न दूँगा।

5इसमें से मैं कोई बात भी नहीं करूँगा जब तक मैं यहोवा के लिए एक भवन न प्राप्त कर लूँ। मैं इस्राएल के शक्तिशाली परमेश्वर के लिए एक मन्दिर पा कर रहूँगा!"

6एप्राता में हमने इसके विषय में सुना, हमें किरीयथ योरीम के वन में वाचा की सन्दूक मिली थी।

7आओ, पवित्र तम्बू में चलो। आओ, हम उस चौकी पर आराधना करें, जहाँ पर परमेश्वर अपने चरण रखता है।

8हे यहोवा, तू अपनी विश्राम की जगह से उठ बैठ, तू और तेरी सामर्थ्यवान सन्दूक उठ बैठ।

9हे यहोवा, तेरे याजक धार्मिकता धारण किये रहते हैं। तेरे जन बहुत प्रसन्न रहते हैं।

10तू अपने चुने हुये राजा को अपने सेवक दाऊद के भले के लिए नकार मत।

11यहोवा ने दाऊद को एक वचन दिया है कि दाऊद के प्रति वह सच्चा रहेगा। यहोवा ने वचन दिया है कि दाऊद के वंश से राजा आयेंगे।

12यहोवा ने कहा था, "यदि तेरी संतानें मेरी वाचा पर और मैंने उन्हें जो शिक्षाएं सिखाई उन पर चलेंगे तो फिर तेरे परिवार का कोई न कोई सदा ही राजा रहेगा।"

13अपने मन्दिर की जगह के लिए यहोवा ने सिय्योन को चुना था। यह वह जगह है जिसे वह अपने भवन के लिये चाहता था।

14यहोवा ने कहा था, "यह मेरा स्थान सदा सदा के लिये होगा। मैंने इसे चुना है ऐसा स्थान बनने को जहाँ पर मैं रहूँगा।

15भरपूर भोजन से मैं इस नगर को आशीर्वाद दूँगा, यहाँ तक कि दीनों के पास खाने को भर पूर होगा।

16याजकों को मैं उद्धार का वस्त्र पहनाऊँगा, और यहाँ मेरे भक्त बहुत प्रसन्न रहेंगे।

17इस स्थान पर मैं दाऊद को सुदृढ करुँगा। मैं अपने चुने राजा को एक दीपक दूँगा।

18मैं दाऊद के शत्रुओं को लज्जा से ढक दूँगा और दाऊद का राज्य बढाऊँगा।"

भजन 133

दाऊद का आरोहण गीत।

1परमेश्वर के भक्त मिल जुलकर शांति से रहे। यह सचमुच भला है, और सुखदायी है।

2यह वैसा सुगंधित तेल जैसा होता है जिसे हारून के सिर पर उँडला गया है। यह, हारून की दाढ़ी से नीचे जो बह रहा हो उस तेल सा होता है। यह, उस तेल जैसा है जो हारुन के विशेष वस्त्रों पर ढुलक बह रहा।

3यह वैसा है जैसे धुंध भरी ओस हेर्मोन की पहाड़ी से आती हुई। सिय्योन के पहाड पर उतर रही हो।

4यहोवा ने अपने आशीर्वाद सिय्योन के पहाड़ पर ही दिये थे। यहोवा ने अमर जीवन की आशीष दी थी।

भजन 134

आरोहण का गीत।

1ओ, उसके सब सेवकों, यहोवा का गुण गान करो। सेवकों सारी रात मन्दिर में तुमने सेवा की।

2सेवकों, अपने हाथ उठाओ और यहोवा को धन्य कहो।

3और सिय्योन से यहोवा तुम्हें धन्य कहे। यहोवा ने स्वर्ग और धरती रचे हैं।

भजन 135

1यहोवा की प्रशंसा करो। यहोवा के सेवकों यहोवा के नाम का गुणगान करो।

2तुम लोग यहोवा के मन्दिर में खड़े हो। उसके नाम की प्रशंसा करो। तुम लोग मन्दिर के आँगन में खडे हो। उसके नाम के गुण गाओ।

3यहोवा की प्रशंसा करो क्योंकि वह खरा है। उसके नाम के गुण गाओ क्योंकि वह मधुर है।

4यहोवा ने याकूब को चुना था। इस्राएल परमेश्वर का है।

5मैं जानता हूँ, यहोवा महान है। अन्य भी देवों से हमारा स्वामी महान है।

6यहोवा जो कुछ वह चाहता है स्वर्ग में, और धरती पर, समुद्र में अथवा गहरे महासागरों में, करता है।

7परमेश्वर धरती पर सब कहीं मेघों को रचता है। परमेश्वर बिजली और वर्षा को रचता है। परमेश्वर हवा को रचता है।

8परमेश्वर मिस्र में मनुष्यों और पशुओं के सभी पहलौठों को नष्ट किया था।

9परमेश्वर ने मिस्र में बहुत से अद्भुत और अचरज भरे काम किये थे। उसने फिरौन और उसके सब कर्मचारियों के बीच चिन्ह और अदभुत कार्य दिखाये।

10परमेश्वर ने बहुत से देशों को हराया। परमेश्वर ने बलशाली राजा मारे।

11उसने एमोरियों के राजा सीहोन को पराजित किया। परमेश्वर ने बाशान के राजा ओग को हराया। परमेश्वर ने कनान की सारी प्रजा को हराया।

12परमेश्वर ने उनकी धरती इस्राएल को दे दी। परमेश्वर ने अपने भक्तों को धरती दी।

13हे यहोवा, तू सदा के लिये प्रसिद्ध होगा। हे यहोवा, लोग तुझे सदा सर्वदा याद करते रहेंगे।

14यहोवा ने राष्ट्रों को दण्ड दिया किन्तु यहोवा अपने निज सेवकों पर दयालु रहा।

15दूसरे लोगों के देवता बस सोना और चाँदी के देवता थे। उनके देवता मात्र लोगों द्वारा बनाये पुतले थे।

16पुतलों के मुँह हैं, पर बोल नहीं सकते। पुतलों की आँख हैं, पर देख नहीं सकते।

17पुतलों के कान हैं, पर उन्हें सुनाई नहीं देता। पुतलों के नाक हैं, पर वे सूंघ नहीं सकते।

18वे लोग जिन्होंने इन पुतलों को बनाया, उन पुतलों के समान हो जायेंगे। क्यों? क्योंकि वे लोग मानते हैं कि वे पुतले उनकी रक्षा करेंगे।

19इस्राएल की संतानों, यहोवा को धन्य कहो! हारून की संतानों, यहोवा को धन्य कहो!

20लेवी की संतानों, यहोवा को धन्य कहो! यहोवा के अनुयायियों, यहोवा को धन्य कहो!

21सिय्योन का यहोवा धन्य है। यरूशलेम में जिसका घर है यहोवा का गुणगान करो।

भजन 136

1यहोवा की प्रशंसा करो, क्योंकि वह उत्तम है। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

2ईश्वरों के परमेश्वर की प्रशंसा करो! उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

3प्रभुओं के प्रभु की प्रशंसा करो। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

4परमेश्वर के गुण गाओ। बस वही एक है जो अद्‌भुत कर्म करता है। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

5परमेश्वर के गुण गाओ जिसने अपनी बुद्धि से आकाश को रचा है। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

6परमेश्वर ने सागर के बीच में सूखी धरती को स्थापित किया। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

7परमेश्वर ने महान ज्योतियाँ रची। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

8परमेश्वर ने सूर्य को दिन पर शासन करने के लिये बनाया। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

9परमेश्वर ने चाँद तारों को बनाया कि वे रात पर शासन करें। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

10परमेश्वर ने मिस्र में मनुष्यों और पशुओं के पहलौठों को मारा। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

11परमेश्वर इस्राएल को मिस्र से बाहर ले आया। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

12परमेश्वर ने अपना सामर्थ्य और अपनी महाशक्ति को प्रकटाया। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

13परमेश्वर ने लाल सागर को दो भागों में फाड़ा। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

14परमेश्वर ने इस्राएल को सागर के बीच से पार उतारा। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

15परमेश्वर ने फ़िरौन और उसकी सेना को लाल सागर में डूबा दिया। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

16परमेश्वर ने अपने निज भक्तों को मरुस्थल में राह दिखाई। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

17परमेश्वर ने बलशाली राजा हराए। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

18परमेश्वर ने सुदृढ़ राजाओं को मारा। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

19परमेश्वर ने एमोरियों के राजा सीहोन को मारा। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

20परमेश्वर ने बाशान के राजा ओग को मारा। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

21परमेश्वर ने इस्राएल को उसकी धरती दे दी। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

22परमेश्वर ने उस धरती को इस्राएल को उपहार के रूप में दिया। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

23परमेश्वर ने हमको याद रखा, जब हम पराजित थे। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

24परमेश्वर ने हमको हमारे शत्रुओं से बचाया था। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

25परमेश्वर हर एक को खाने को देता है। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

26स्वर्ग के परमेश्वर का गुण गाओ। उसका सच्चा प्रेम सदा ही बना रहता है।

भजन 137

1बाबुल की नदियों के किनारे बैठकर हम सिय्योन को याद करके रो पड़े।

2हमने पास खड़े बेंत के पेड़ों पर निज वीणाएँ टाँगी।

3बाबुल में जिन लोगों ने हमें बन्दी बनाया था, उन्होंने हमसे गाने को कहा। उन्होंने हमसे प्रसन्नता के गीत गाने को कहा। उन्होंने हमसे सिय्योन के गीत गाने को कहा।

4किन्तु हम यहोवा के गीतों को किसी दूसरे देश में कैसे गा सकते हैं!

5हे यरूशलेम, यदि मैं तुझे कभी भूलूँ। तो मेरी कामना है कि मैं फिर कभी कोई गीत न बजा पाऊँ।

6हे यरूशलेम, यदि मैं तुझे कभी भूलूँ। तो मेरी कामना है कि मैं फिर कभी कोई गीत न गा पाऊँ। मैं तुझको कभी नहीं भूलूँगा।

7हे यहोवा, याद कर एदोमियों ने उस दिन जो किया था। जब यरूशलेम पराजित हुआ था, वे चीख कर बोले थे, इसे चीर डालो और नींव तक इसे विध्वस्त करो।

8अरी ओ बाबुल, तुझे उजाड़ दिया जायेगा। उस व्यक्ति को धन्य कहो, जो तुझे वह दण्ड देगा,जो तुझे मिलना चाहिए। उस व्यक्ति को धन्य कहो जो तुझे वह क्लेश देगा जो तूने हमको दिये।

9उस व्यक्ति को धन्य कहो जो तेरे बच्चों को चट्टान पर झपट कर पछाड़ेगा।

भजन 138

दाऊद का एक पद।

1हे परमेश्वर, मैं अपने पूर्ण मन से तेरे गीत गाता हूँ।
मैं सभी देवों के सामने मैं तेरे पद गाऊँगा।
2हे परमेश्वर, मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत
करुँगा। मैं तेरे नाम, तेरा सत्य प्रेम, और तेरी भक्ति
बखानूँगा। तू अपने वचन की शक्ति के लिये प्रसिद्ध है।
अब तो उसे तूने और भी महान बना दिया।
3हे परमेश्वर, मैंने तुझे सहायता पाने को पुकारा।
तूने मुझे उत्तर दिया! तूने मुझे बल दिया।
4हे यहोवा, मेरी यह इच्छा है कि धरती के सभी राजा
तेरा गुण गायें। जो बातें तूने कहीं हैं उन्होंने सुनीं हैं।
5मैं तो यह चाहता हूँ, कि वे सभी राजा यहोवा की
महान महिमा का गान करें।
6परमेश्वर महान है, किन्तु वह दीन जन का ध्यान
रखता है। परमेश्वर को अहंकारी लोगों के कामों का
पता है किन्तु वह उनसे दूर रहता है।
7हे परमेश्वर, यदि मैं संकट में पड़ूँ तो मुझको जीवित
रख। यदि मेरे शत्रु मुझ पर कभी क्रोध करे तो उन से
मुझे बचा ले।
8हे यहोवा, वे वस्तुएँ जिनको मुझे देने का वचन दिया
है मुझे दे। हे यहोवा, तेरा सच्चा प्रेम सदा ही
बना रहता है। हे यहोवा, तूने हमको रचा है सो तू
हमको मत बिसरा।

भजन 139

संगीत निर्देशक के लिये दाऊद का स्तुति गीत।

1हे यहोवा, तूने मुझे परखा है। मेरे बारे में तू सब
कुछ जानता है।
2तू जानता है कि मैं कब बैठता और कब खड़ा होता
हूँ। तू दूर रहते हुए भी मेरी मन की बात जानता है।
3हे यहोवा, तुझको ज्ञान है कि मैं कहाँ जाता और
कब लेटता हूँ। मैं जो कुछ करता हूँ सब को तू जानता
है।
4हे यहोवा, इसे पहले की शब्द मेरे मुख से निकले
तुझको पता होता है कि मैं क्या कहना चाहता हूँ।
5हे यहोवा, तू मेरे चारों ओर छाया है। मेरे आगे और
पीछे भी तू अपना निज हाथ मेरे ऊपर हौले से रखता है।
6मुझे अचरज है उन बातों पर जिनको तू जानता है।
जिनका मेरे लिये समझना बहुत कठिन है।
7हर जगह जहाँ भी मैं जाता हूँ, वहाँ तेरी आत्मा रची
है। हे यहोवा, मैं तुझसे बचकर नहीं जा सकता।
8हे यहोवा, यदि मैं आकाश पर जाऊँ वहाँ पर तू ही
है। यदि मैं मृत्यु के देश पाताल में जाऊँ वहाँ पर भी तू
है।
9हे यहोवा, यदि मैं पूर्व में जहाँ सूर्य निकलता है जाऊँ
वहाँ पर भी तू है।
10वहाँ तक भी तेरा दायाँ हाथ पहुँचाता है। और हाथ
पकड़ कर मुझको ले चलता है।
11हे यहोवा, सम्भव है, मैं तुझसे छिपने का जतन
करुँ और कहने लगूँ, "दिन रात में बदल गया है तो
निश्चय ही अंधकार मुझको ढक लेगा।"
12किन्तु यहोवा अन्धेरा भी तेरे लिये अंधकार नहीं
है। तेरे लिये रात भी दिन जैसी उजली है।
13हे यहोवा, तूने मेरी समूची देह को बनाया। तू मेरे
विषय में सबकुछ जानता था जब मैं अभी माता की
कोख ही में था।
14हे यहोवा, तुझको उन सभी अचरज भरे कामों के
लिये मेरा धन्यवाद, और मैं सचमुच जानता हूँ कि तू जो
कुछ करता है वह आश्चर्यपूर्ण है।
15मेरे विषय में तू सब कुछ जानता है। जब मैं अपनी
माता की कोख में छिपा था, जब मेरी देह रूप ले रही
थी तभी तूने मेरी हड्डियों को देखा।
16हे यहोवा, तूने मेरी देह को मेरी माता के गर्भ में
विकसते देखा। ये सभी बातें तेरी पुस्तक में लिखीं हैं।
हर दिन तूने मुझ पर दृष्टी की। एक दिन भी तुझसे नहीं
छूटा।
17हे परमेश्वर, तेरे विचार मेरे लिये कितने महत्त्वपूर्ण
हैं। तेरा ज्ञान अपरंपार है।
18तू जो कुछ जानता है, उन सब को यदि मैं गिन
सकूँ तो वे सभी धरती के रेत के कणों से अधिक होंगे।
किन्तु यदि मैं उनको गिन पाऊँ तो भी मैं तेरे साथ में
रहूँगा।
19हे परमेश्वर, दुर्जन को नष्ट कर। उन हत्यारों को
मुझसे दूर रख।
20वे बुरे लोग तेरे लिये बुरी बातें कहते हैं। वे तेरे
नाम की निन्दा करते हैं।
21हे यहोवा, मुझको उन लोगों से घृणा है। जो तुझ से
घृणा करते हैं मुझको उन लोगों से बैर है जो तुझसे मुड़
जाते हैं।
22मुझको उनसे पूरी तरह घृणा है! तेरे शत्रु मेरे भी
शत्रु हैं।
23हे यहोवा, मुझ पर दृष्टि कर और मेरा मन जान
ले। मुझ को परख ले और मेरा इरादा जान ले।
24मुझ पर दृष्टि कर और देख कि मेरे विचार बुरे
नहीं है। तू मुझको उस पथ पर ले चल जो सदा बना
रहता है।

भजन 140

संगीत निर्देशकके लिये दाऊद की एक स्तुति।

1हे यहोवा, दुष्ट लोगों से मेरी रक्षा कर। मुझको क्रूर
लोगों से बचा ले।
2वे लोग बुरा करने को कुचक्र रचते हैं। वे लोग सदा
ही लड़ने लग जाते हैं।

3उन लोगों की जीभें विष भरे नागों सी हैं। जैसे
उनकी जीभों के नीचे सर्प विष हो।
4हे यहोवा, तू मुझको दुष्ट लोगों से बचा ले। मुझको
क्रूर लोगों से बचा ले। वे लोग मेरे पीछे पड़े हैं और दुःख
पहुँचाने का जतन कर रहे हैं।
5उन अहंकारी लोगों ने मेरे लिये जाल बिछाया। मुझको
फँसाने को उन्होंने जाल फैलाया है। मेरी राह में उन्होंने
फँदा फैलाया है।
6हे यहोवा, तू मेरा परमेश्वर है। हे यहोवा, मेरी
प्रार्थना सुन।
7हे यहोवा, तू मेरा बलशाली स्वामी है। तू मेरा उद्धारकर्ता
है। तू मेरा सिर का कवच जैसा है। जो मेरा सिर युद्ध में
बचाता है।
8हे यहोवा, वे लोग दुष्ट हैं। उन की मनोकामना पूरी
मत होने दे। उनकी योजनाओं को परवान मत चढने दे।
9हे यहोवा, मेरे बैरियों को विजयी मत होने दे। वे बुरे
लोग कुचक्र रच रहे हैं। उनके कुचक्रों को तू उन्ही पर
चला दे।
10उन के सिर पर धधकते अंगारों को ऊँडेल दे। मेरे
शत्रुओं को आग में धकेल दे। उनको गड्ढे (कब्रों) में
फेंक दे। वे उससे कभी बाहर न निकल पाये।
11हे यहोवा, उन मिथ्यावादियों को तू जीने मत दे। बुरे
लोगों के साथ बुरी बातें घटा दे।
12मैं जानता हूँ यहोवा कंगालों का न्याय खराई से
करेगा। परमेश्वर असहायों की सहायता करेगा।
13हे यहोवा, भले लोग तेरे नाम की स्तुति करेंगे। भले
लोग तेरी अराधना करेंगे।

भजन 141

दाऊद का एक स्तुति पद।

1हे यहोवा, मैं तुझको सहायता पाने के लिये पुकारता
हूँ। जब मैं विनती करुँ तब तू मेरी सुन ले। जल्दी कर
और मुझको सहारा दे।
2हे यहोवा, मेरी विनती तेरे लिये जलती धूप के
उपहार सी हो मेरी विनती तेरे लिये दी गयी साँझ कि
बलि सी हो।
3हे यहोवा, मेरी वाणी पर मेरा काबू हो। अपनी वाणी
पर मैं ध्यान रख सकूँ, इसमें मेरा सहायक हो।
4मुझको बुरी बात मत करने दे। मुझको रोके रह
बुरों की संगती से उनके सरस भोजन से और बुरे कामों
से। मुझे भाग मत लेने दे ऐसे उन कामों में जिन को
करने में बुरे लोग रख लेते हैं।
5सज्जन मेरा सुधार कर सकता है। तेरे भक्त जन मेरे
दोष कहे, यह मेरे लिये भला होगा। मैं दुर्जनों कि प्रशंसा
ग्रहण नहीं करूँगा। क्यों? क्योंकि मैं सदा प्रार्थना किया
करता हूँ। उन कुकर्मो के विरुद्ध जिनको बुरे लोग
किया करते हैं।
6उनके राजाओं को दण्डित होने दे और तब लोग
जान जायेंगे कि मैंने सत्य कहा था।
7लोग खेत को खोद कर जोता करते हैं और मिट्टी
को इधर-उधर बिखेर देते हैं। उन दुष्टों कि हड्डियाँ
इसी तरह कब्रों में इधर-उधर बिखरेंगी।
8हे यहोवा, मेरे स्वामी, सहारा पाने को मेरी दृष्टि तुझ
पर लगी है। मुझको तेरा भरोसा है। कृपा कर मुझको
मत मरने दे।
9मुझको दुष्टों के फँदों में मत पड़ने दे। उन दुष्टों के
द्वारा मुझ को मत बंध जाने दे।
10वे दुष्ट स्वयं अपने जालों में फँस जायें जब मैं
बचकर निकल जाऊँ। बिना हानि उठाये।

भजन 142

दाऊद का एक कला गीत।

1मैं सहायता पाने के लिये यहोवा को पुकारुँगा। मैं
यहोवा से प्रार्थना करुँगा।
2मैं यहोवा के सामने अपना दुःख रोऊँगा। मैं यहोवा
से अपनी कठिनाईयाँ कहूँगा।
3मेरे शत्रुओं ने मेरे लिये जाल बिछाया है। मेरी आशा
छूट रही है किन्तु यहोवा जानता है। कि मेरे साथ क्या
घट रहा है।
4मैं चारों ओर देखता हूँ और कोई अपना मित्र मुझको
दिख नहीं रहा मेरे पास जाने को कोई जगह नहीं है।
कोई व्यक्ति मुझको बचाने का जतन नहीं करता है।
5इसलिये मैंने यहोवा को सहारा पाने को पुकारा है।
हे यहोवा, तू मेरी ओट है। हे यहोवा, तू ही मुझे जिलाये
रख सकता है।
6हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन। मुझे तेरी बहुत अपेक्षा
है। तू मुझको ऐसे लोगों से बचा ले जो मेरे लिये मेरे पीछे
पड़े हैं।
7मुझको सहारा दे कि इस जाल से बच भागूँ। फिर
यहोवा, मैं तेरे नाम का गुणगान करुँगा। मै वचन देता
हूँ। भले लोग आपस में मिलेंगे और तेरा गुणगान करेंगे
क्योंकि तूने मेरी रक्षा की है।

भजन 143

दाऊद का एक स्तुति गीत।

1हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन। मेरी विनती को सुन
और फिर तू मेरी प्रार्थना का उत्तर दे। मुझको दिखा दे
कि तू सचमुच भला और खरा है।
2तू मुझ अपने दास पर मुकदमा मत चला। क्योंकि
कोई भी जीवित व्यक्ति तेरे सामने नेक नहीं ठहर
सकता।
3किन्तु मेरे शत्रु मेरे पीछे पड़े हैं। उन्होंने मेरा जीवन
चकनाचूर कर धूल में मिलाया। वे मुझे अंधेरी कब्र में
ढकेल रहे हैं। उन व्यक्तियों की तरह जो बहुत पहले
मर चुके हैं।

4मैं निराश हो रहा हूँ। मेरा साहस छूट रहा है।
5किन्तु मुझे वे बातें याद हैं, जो बहुत पहले घटी थी।
हे यहोवा, मैं उन अनेक अद्भुत कामों का बखान कर
रहा हूँ। जिनको तूने किया था।
6हे यहोवा, मैं अपना हाथ उठाकर के तेरी विनती
करता हूँ। मैं तेरी सहायता कि बाट जोह रहा हूँ जैसे
सूखी वर्षा कि बाट जोहती है।

7हे यहोवा, मुझे शीघ्र उत्तर दे। मेरा साहस छूट गया;
मुझसे मुख मत मोड़। मुझको मरने मत दे और वैसा
मत होने दे, जैसा कोई मरा व्यक्ति कब्र में लेटा हो।
8हे यहोवा, इस भोर के फूटते ही मुझे अपना सच्चा
प्रेम दिखा। मैं तेरे भरोसे हूँ। मुझको वे बाते दिखा
जिनको मुझे करना चाहिये।
9हे यहोवा, मेरे शत्रुओं से रक्षा पाने को मैं तेरे शरण
में आता हूँ। तू मुझको बचा ले।
10दिखा मुझे जो तू मुझसे करवाना चाहता है। तू मेरा
परमेश्वर है।
11हे यहोवा, मुझे जीवित रहने दे, ताकि लोग तेरे नाम
का गुण गायें। मुझे दिखा कि सचमुच तू भला है, और
मुझे मेरे शत्रुओं से बचा ले।
12हे यहोवा, मुझ पर अपना प्रेम प्रकट कर। और
उन शत्रुओं को हरा दे, जो मेरी हत्या का यत्न कर रहे
हैं। क्योंकि मैं तेरा सेवक हूँ।

भजन 144

दाऊद को समर्पित।

1यहोवा मेरी चट्टान है। यहोवा को धन्य कहो! यहोवा
मुझको लड़ाई के लिये प्रशिक्षित करता है। यहोवा मुझको
युद्ध के लिये प्रशिक्षित करता है।
2यहोवा मुझसे प्रेम रखता है और मेरी रक्षा करता
है। यहोवा पर्वत के ऊपर, मेरा ऊँचा सुरक्षा स्थान है।
यहोवा मुझको बचा लाता है। यहोवा मेरी ढाल है। मैं
उसके भरोसे हूँ। यहोवा मेरे लोगों का शासन करने में
मेरा सहायक है।
3हे यहोवा, तेरे लिये लोग क्यों महत्त्वपूर्ण बने हैं? तू
हम पर क्यों ध्यान देता है?
4मनुष्य का जीवन एक फूँक के समान होता है।
मनुष्य का जीवन ढलती हुई छाया सा होता है।
5हे यहोवा, तू अम्बर को चीर कर नीचे उतर आ। तू
पर्वतो को छू ले कि उनसे धुँआ उठने लगे।
6हे यहोवा, बिजलियाँ भेज दे और मेरे शत्रुओ को
कही दूर भगा दे। अपने बाणों को चला और उन्हें
विवश कर कि वे कहीं भाग जायें।
7हे यहोवा, अम्बर से नीचे उतर आ और मुझ को
उबार ले। इन, शत्रुओं के सागर में मुझे मत डूबने दे।
मुझको इन परायों से बचा ले।
8ये शत्रु झूठे हैं। ये बात ऐसी बनाते हैं जो सच नहीं
होती है। 9हे यहोवा, मैं नया गीत गाऊँगा तेरे उन अद्भुत
कर्मो का तू जिन्हें करता है। मैं तेरा यश दस तार वाली
वीणा पर गाऊँगा।
10हे यहोवा, राजाओं की सहायता उनके युद्ध जीतने
में करता है। यहोवा ने अपने सेवक दाऊद को उसके
शत्रुओं के तलवारों से बचाया।
11मुझको इन परदेशियों से बचा ले। ये शत्रु झूठे हैं, ये
बातें बनाते हैं जो सच नहीं होती।
12यह मेरी कामना है: पुत्र जवान हो कर विशाल
पेड़ों जैसे मजबूत हों। और मेरी यह कामना है हमारी
पुत्रियाँ महल की सुन्दर सजावटों सी हों।
13यह मेरी कामना है कि हमारे खेत हर प्रकार की
फसलों से भरपूर रहें। यह मेरी कामना है कि हमारी
भेड़े चारागाहों में हजारों हजार मेमनें जनती रहें।
14मेरी यह कामना है कि हमारे पशुओं के बहुत से
बच्चे हों। यह मेरी कामना है कि हम पर आक्रमण
करने कोई शत्रु नहीं आए। यह मेरी कामना है कभी
हम युद्ध को नहीं आएं। और मेरी यह कामना है कि
हमारी गलियों में भय की चीखें नहीं उठें।
15जब ऐसा होगा लोग अति प्रसन्न होंगे। जिनका
परमेश्वर यहोवा है, वे लोग अति प्रसन्न रहते हैं।

भजन 145

दाऊद की एक प्रार्थना।

1हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे राजा, मैं तेरा गुण गाता हूँ!
मैं सदा–सदा तेरे नाम को धन्य कहता हूँ।
2मैं हर दिन तुझको सराहता हूँ। मैं तेरे नाम की
सदा–सदा प्रशंसा करता हूँ। 3यहोवा महान है। लोग
उसका बहुत गुणगान करते हैं। वे अनगिनत महाकार्य
जिनको वह करता है हम उनको नहीं गिन सकते।
4हे यहोवा, लोग उन बातों की गरिमा बखानेंगे जिनको
तू सदा और सर्वदा करता है। दूसरे लोग, लोगों से उन
अद्भुत कर्मो का बखान करेंगे जिनको तू करता है।
5तेरे लोग अचरज भरे गौरव और महिमा को बखानेंगे।
मैं तेरे आश्चर्यपूर्ण कर्मों को बखानूँगा।
6हे यहोवा, लोग उन अचरज भरी बातों को कहा
करेंगे जिनको तू करता है। मैं उन महान कर्मो को
बखानूँगा जिनको तू करता है।
7लोग उन भली बातों के विषय में कहेंगे जिनको तू
करता है। लोग तेरी धार्मिकता का गान किया करेंगे।
8यहोवा दयालु है और करुणापूर्ण है। यहोवा तू धैर्य
और प्रेम से पूर्ण है।
9यहोवा सब के लिये भला है। परमेश्वर जो कुछ भी
करता है उसी में निज करुणा प्रकट करता है।
10हे यहोवा, तेरे कर्मो से तुझे प्रशंसा मिलती है।
तुझको तेरे भक्त धन्य कहा करते हैं।

11वे लोग तेरे महिमामय राज्य का बखान किया
करते हैं। तेरी महानता को वे बताया करते हैं।
12ताकि अन्य लोग उन महान बातों को जाने जिनको
तू करता है। वे लोग तेरे महिमामय राज्य का मनन
किया करते हैं।
13हे यहोवा, तेरा राज्य सदा–सदा बना रहेगा। तू
सर्वदा शासन करेगा।
14यहोवा गिरे हुए लोगों को ऊपर उठाता है। यहोवा
विपदा में पड़े लोगों को सहारा देता है।
15हे यहोवा, सभी प्राणी तेरी ओर खाना पाने को
देखते हैं। तू उनको ठीक समय पर उनका भोजन दिया
करता है।
16हे यहोवा, तू निज मुट्ठी खोलता है, और तू सभी
प्राणियों को वह हर एक वस्तु जिसकी उन्हें आवश्यकता
देता है।
17यहोवा जो भी करता है, अच्छा ही करता है। यहोवा
जो भी करता, उसमें निज सच्चा प्रेम प्रकट करता है।
18जो लोग यहोवा की उपासना करते हैं, यहोवा उनके
निकट रहता है। सचमुच जो उसकी उपासना करते हैं,
यहोवा हर उस व्यक्ति के निकट रहता है।
19यहोवा के भक्त जो उससे करवाना चाहते हैं, वह
उन बातों को करता है। यहोवा अपने भक्तों की सुनता
है। वह उनकी प्रार्थनाओ का उत्तर देता है और उनकी
रक्षा करता है।
20जिसका भी यहोवा से प्रेम है, यहोवा हर उस व्यक्ति
को बचाता है, किन्तु यहोवा दुष्ट को नष्ट करता है।
21मैं यहोवा के गुण गाऊँगा! मेरी यह इच्छा है कि हर
कोई उसके पवित्र नाम के गुण सदा और सर्वदा गाये।

भजन 146

1यहोवा का गुण गान कर! मेरे मन, यहोवा की
प्रशंसा कर।
2मैं अपने जीवन भर यहोवा के गुण गाऊँगा। मैं
अपने जीवन भर उसके लिये यश गीत गाऊँगा।
3अपने प्रमुखों के भरोसे मत रहो। सहायता पाने को
व्यक्ति के भरोसे मत रहो, क्योंकि तुमको व्यक्ति बचा
नहीं सकता है।
4लोग मर जाते हैं और गाड़ दिये जाते है। फिर उनकी
सहायता देने की सभी योजनाएँ यूँ ही चली जाती है।
5जो लोग, याकूब के परमेश्वर से अति सहायता
माँगते, वे अति प्रसन्न रहते हैं। वे लोग अपने परमेश्वर
यहोवा के भरोसे रहा करते हैं। 6यहोवा ने स्वर्ग और
धरती को बनाया है। यहोवा ने सागर और उसमें की
हर वस्तु बनाई है। यहोवा उनकी सदा रक्षा करेगा।
7जिन्हें दु:ख दिया गया, यहोवा ऐसे लोगों के संग
उचित बात करता है। यहोवा भूखे लोगों को भोजन देता
है। यहोवा बन्दी लोगों को छुड़ा दिया करता है।
8यहोवा के प्रताप से अंधे फिर देखने लग जाते हैं।
यहोवा उन लोगों को सहारा देता जो विपदा में पड़े हैं।
यहोवा सज्जन लोगों से प्रेम करता है।
9यहोवा उन परदेशियों की रक्षा किया करता है जो
हमारे देश में बसे हैं। यहोवा अनाथों और विधवाओं का
ध्यान रखता है किन्तु यहोवा दुर्जनों के कुचक्र को नष्ट
करता हैं।
10यहोवा सदा राज करता रहे! सिय्योन तुम्हारा
परमेश्वर पर सदा राज करता रहे! यहोवा का गुणगान
करो!

भजन 147

1यहोवा की प्रशंसा करो क्योंकि वह उत्तम है। हमारे
परमेश्वर के प्रशंसा गीत गाओ। उसका गुणगान भला
और सुखदायी है।
2यहोवा ने यरुशलेम को बनाया है। परमेश्वर इस्राएली
लोगों को वापस छुड़ाकर ले आया जिन्हें बंदी बनाया
गया था।
3परमेश्वर उनके टूटे मनों को चँगा किया करता
और उनके घावों पर पट्टी बांधता है।
4परमेश्वर सितारों को गिनता है और हर एक तारे
का नाम जानता है।
5हमारा स्वामी अति महान है। वह बहुत ही शक्तिशाली
है। वे सीमाहीन बातें है जिनको वह जानता है।
6यहोवा दीन जन को सहारा देता है। किन्तु वह दुष्ट
को लज्जित किया करता है।
7यहोवा को धन्यवाद करो। हमारे परमेश्वर का
गुणगान वीणा के संग करो।
8परमेश्वर मेघों से अम्बर को भरता है। परमेश्वर
धरती के लिये वर्षा कराता है। परमेश्वर पहाड़ों पर
घास उगाता है।
9परमेश्वर पशुओं को चारा देता है, छोटी चिड़ियों
को चुग्गा देता है।
10उनको युद्ध के घोड़े और शक्तिशाली सैनिक नहीं
भाते हैं।
11यहोवा उन लोगों से प्रसन्न रहता है। जो उसकी
आराधना करते हैं। यहोवा प्रसन्न हैं, ऐसे उन लोगों से
जिनकी आस्था उसके सच्चे प्रेम में है।
12हे यरूशलेम, यहोवा के गुण गाओ! सिय्योन, अपने
परमेश्वर की प्रशंसा करो!
13हे यरूशलेम, तेरे फाटको को परमेश्वर सुदृढ़ करता
है। तेरे नगर के लोगों को परमेश्वर आशीष देता है।
14परमेश्वर तेरे देश में शांति को लाया है। सो युद्ध में
शत्रुओं ने तेरा अन्न नहीं लूटा। तेरे पास खाने को बहुत
अन्न है।
15परमेश्वर धरती को आदेश देता है, और वह तत्काल
पालन करती है।

16परमेश्वर पाला गिराता जब तक धरातल वैसा श्वेत नहीं होता जाता जैसा उजला ऊन होता है। परमेश्वर तुषार की वर्षा करता है, जो हवा के साथ धूल सी उड़ती है।

17परमेश्वर हिम शिलाएँ गगन से गिराता है। कोई व्यक्ति उस शीत को सह नहीं पाता है।

18फिर परमेश्वर दूसरी आज्ञा देता है, और गर्म हवाएँ फिर बहने लग जाती हैं। बर्फ पिघलने लगती, और जल बहने लग जाता है।

19परमेश्वर ने निज आदेश याकूब को (इस्राएल को) दिये थे। परमेश्वर ने इस्राएल को निज विधि का विधान और नियमों को दिया।

20यहोवा ने किसी अन्य राष्ट्र के हेतु ऐसा नहीं किया। परमेश्वर ने अपने नियमों को, किसी अन्य जाति को नहीं सिखाया। यहोवा का यश गाओ।

भजन 148

1यहोवा के गुण गाओ! स्वर्ग के स्वर्गदूतों, यहोवा की प्रशंसा स्वर्ग से करो!

2हे सभी स्वर्गदूतों, यहोवा का यश गाओ! ग्रहों और नक्षत्रों, उसका गुण गान करो!

3सूर्य और चाँद, तुम यहोवा के गुण गाओ! अम्बर के तारों और ज्योतियों, उसकी प्रशंसा करो!

4यहोवा के गुण सर्वोच्च अम्बर में गाओ। हे जल आकाश के ऊपर, उसका यशगान कर!

5यहोवा के नाम का बखान करो। क्यों? क्योंकि परमेश्वर ने आदेश दिया, और हम सब उसके रचे थे।

6परमेश्वर ने इन सबको बनाया कि सदा-सदा बने रहें। परमेश्वर ने विधान के विधि को बनाया, जिसका अंत नहीं होगा।

7ओ हर वस्तु, धरती की यहोवा का गुण गान करो! ओ विशालकाय जल जन्तुओं, सागर के यहोवा के गुण गाओ।

8परमेश्वर ने अग्नि और ओले को बनाया, बर्फ और धुआँ तथा सभी तूफानी पवन उसने रचे।

9परमेश्वर ने पर्वतों और पहाड़ों को बनाया, फलदार पेड़ और देवदार के वृक्ष उसी ने रचे हैं।

10परमेश्वर ने सारे बनैले पशु और सब मवेशी रचे हैं। रेंगने वाले जीव और पक्षियों को उसने बनाया।

11परमेश्वर ने राजा और राष्ट्रों की रचना धरती पर की। परमेश्वर ने प्रमुखों और न्यायधीशों को बनाया।

12परमेश्वर ने युवक और युवतियों को बनाया। परमेश्वर ने बूढ़ों और बच्चों को रचा है।

13यहोवा के नाम का गुण गाओ! सदा उसके नाम का आदर करो! हर वस्तु, ओ धरती और व्योम, उसका गुणगान करो!

14परमेश्वर अपने भक्तों को दृढ़ करेगा। लोग परमेश्वर के भक्तों की प्रशंसा करेंगे। लोग इस्राएल के गुण गायेंगे। वे लोग है जिनके लिये परमेश्वर युद्ध करता है। यहोवा की प्रशंसा करो।

भजन 149

1यहोवा के गुण गाओ। उन नयी बातों के विषय में एक नया गीत गाओ जिनको यहोवा ने किया है। उसके भक्तों की मण्डली में उसका गुण गान करो।

2परमेश्वर ने इस्राएल को बनाया। यहोवा के संग इस्राएल हर्ष मनाए। सिय्योन के लोग अपने राजा के संग में आनन्द मनाएँ।

3वे लोग परमेश्वर का यशगान नाचते बजाते अपने तम्बुरों, वीणाओ से करें।

4यहोवा निज भक्तों से प्रसन्न है। परमेश्वर ने एक अद्‌भुत कर्म अपने विनीत जन के लिये किया। उसने उनका उद्धार किया।

5परमेश्वर के भक्तों, तुम निज विजय मनाओं! यहाँ तक कि बिस्तर पर जाने के बाद भी तुम आनन्दित रहो।

6लोग परमेश्वर का जयजयकार करें और लोग निज तलवारें अपने हाथों में धारण करें।

7वे अपने शत्रुओं को दण्ड देने जायें। और दूसरे लोगों को वे दण्ड देने को जायें,

8परमेश्वर के भक्त उन शासकों और उन प्रमुखों को जंजीरो से बांधे।

9परमेश्वर के भक्त अपने शत्रुओं को उसी तरह दण्ड देंगे, जैसा परमेश्वर ने उनको आदेश दिया। परमेश्वर के भक्तो यहोवा का आदरपूर्ण गुणगान करो।

भजन 150

1यहोवा की प्रशंसा करो! परमेश्वर के मन्दिर में उसका गुणगान करो! उसकी जो शक्ति स्वर्ग में है, उसके यशगीत गाओ!

2उन बड़े कामों के लिये परमेश्वर की प्रशंसा करो, जिनको वह करता है! उसकी गरिमा समूची के लिये उसका गुणगान करो!

3तुरही फूँकते और नरसिंगे बजाते हुए उसकी स्तुति करो! उसका गुणगान वीणा और सारंगी बजाते हुए करो!

4परमेश्वर की स्तुति तम्बुरों और नृत्य से करो! उसका यश उन पर जो तार से बजाते हैं और बांसुरी बजाते हुए गाओ!

5तुम परमेश्वर का यश झंकारते झाँझे बजाते हुए गाओ! उसकी प्रशंसा करो!

6हे जीवों! यहोवा की स्तुति करो! यहोवा की प्रशंसा करो!

नीतिवचन

1 दाऊद के पुत्र और इस्राएल के राजा सुलैमान के
नीतिवचन। यह शब्द इसलिये लिखे गये हैं,
2ताकि मनुष्य बुद्धि को पाये, अनुशासन को ग्रहण
करे, जिनसे समझ भरी बातों का ज्ञान हो, 3ताकि
मनुष्य विवेकशील, अनुशासित जीवन पाये, और
धर्म–पूर्ण, न्याय–पूर्ण, पक्षपातरहित कार्य करे, 4सरल
सीधे जन को विवेक और ज्ञान तथा युवकों को अच्छे
बुरे का भेद सिखा (बता) पायें। 5बुद्धिमान उन्हें सुन
कर निज ज्ञान बढ़ावें और समझदार व्यक्ति दिशा निर्देश
पायें, 6ताकि मनुष्य नीतिवचन, ज्ञानी के दृष्टाँतो को
और पहेली भरी बातों को समझ सकें।
7यहोवा का भय मानना ज्ञान का आदि है किन्तु मूर्ख
जन तो बुद्धि और अनुशासन को तुच्छ मानते हैं।

विवेकपूर्ण बनो चेतावनी: प्रलोभन से बचो

8हे मेरे पुत्र, अपने पिता की शिक्षा पर ध्यान दे और
अपनी माता की नसीहत को मत भूल। 9वे तेरा सिर
सजाने को मुकुट और शोभायमान करने तेरे गले का
हार बनेंगे।

चेतावनी: बुरी संगत से बचो

10हे मेरे पुत्र, यदि पापी तुझे बहलाने फुसलाने आयें
उनकी कभी मत मानना। 11और यदि वे कहें, "आजा
हमारे साथ! आ, हम किसी के घात में बैठे! आ निर्दोष
पर छिपकर वार करें! 12आ, हम उन्हें जीवित ही सारे
का सारा निगल जायें वैसे ही जैसे कब्र निगलती हैं। जैसे
नीचे पाताल में कहीं फिसलता चला जाता है। 13हम
सभी बहुमूल्य वस्तुयें पा जायेंगे और अपने इस लूट से
घर भर लेंगे। 14अपने भाग्य का पासा हमारे साथ फेंक,
हम एक ही बटुवे के सहभागी होंगे!"
15हे मेरे पुत्र, तू उनकी राहों पर मत चल, तू अपने
पैर उन पर रखने से रोक। 16क्योंकि उनके पैर पाप
करने को शीघ्र बढ़ते, वे लहू बहाने को अति गतिशील
हैं। 17कितना व्यर्थ है, जाल का फैलाना जबकि सभी
पक्षी तुझे पूरी तरह देखते हैं। 18जो किसी का खून
बहाने प्रतीक्षा में बैठे हैं वे अपने आप उस जाल में फँस
जायेंगे! 19जो ऐसे बुरे लाभ के पीछे पड़े रहते हैं उन सब
ही का यही अंत होता है। उन सब के प्राण हर ले जाता
है; जो इस बुरे लाभ को अपनाता है।

चेतावनी: बुद्धिहीन मत बनो

20बुद्धि! तो मार्ग में ऊँचे चढ़ पुकारती है, चौराहों पर
अपनी आवाज़ उठाती है। 21शोर भरी गलियों के मनुक्कड़
पर पुकारती है, नगर के फाटक पर निज भाषण देती
है:

22"अरे भोले लोगों! तुम कब तक अपना मोह सरल
राहों से रखोगे? उपहास करनेवालों, तुम कब तक
उपहासों में आनन्द लोगे? अरे मूर्खो, तुम कब तक ज्ञान
से घृणा करोगे? 23यदि मेरी फटकार तुम पर प्रभावी
होती तो मैं तुम पर अपना हृदय उंडेल देती और तुम्हें
अपने सभी विचार जना देती।
24"किन्तु क्योंकि तुमने तो मुझको नकार दिया जब
मैंने तुम्हें पुकारा, और किसी ने ध्यान न दिया,जब मैंने
अपना हाथ बढ़ाया था। 25तुमने मेरी सब सम्मत्तियाँ
उपेक्षित कीं और मेरी फटकार कभी नहीं स्वीकारीं!
26इसलिए, बदले में, मैं तेरे नाश पर हसूँगी। मैं उपहास
करूँगी जब तेरा विनाश तुझे घेरेगा!
27जब विनाश तुझे वैसे ही घेरेगा जैसे भीषण बबूले सा
बवण्डर घेरता है, जब विनाश जकडेगा, और जब विनाश
तथा संकट तुझे डुबो देंगे।
28"तब, वे मुझको पुकारेंगे किन्तु मैं कोई भी उत्तर
नहीं दूँगी। वे मुझे ढूँढते फिरेंगे किन्तु नहीं पायेंगे। 29क्योंकि
वे सदा ज्ञान से घृणा करते रहे, और उन्होंनें कभी नहीं
चाहा कि वे यहोवा से डरें। 30क्योंकि वे, मेरा उपदेश
कभी नहीं धारण करेंगे, और मेरी ताड़ना का तिरस्कार
करेंगे। 31वे अपनी करनी का फल अवश्य भोगेंगे, वे
अपनी योजनाओं के कुफल से अघायेंगे!
32"सीधों की मनमानी उन्हें ले डूबेगी, मूर्खो का आत्म
सुख उन्हें नष्ट कर देगा। 33किन्तु जो मेरी सुनेगा वह
सुरक्षित रहेगा, वह बिना किसी हानि के भय से रहित
वह सदा चैन से रहेगा।"

बुद्धि के नैतिक लाभ

2 हे मेरे पुत्र, यदि तू मेरे बोध वचनों को ग्रहण करे
और मेरे आदेश मन में संचित करे, 2और तू बुद्धि

की बातों पर कान लगाये, मन अपना समझदारी में
लगाते हुए 3और यदि तू अर्न्तदृष्टि के हेतु पुकारे, और
तू समझबूझ के निमित्त चिल्लाये, 4यदि तू इसे ऐसे ढूँढे
जैसे कोई मूल्यवान चाँदी को ढूँढता है, और तू इसे ऐसे
ढूँढ, जैसे कोई छिपे हुए कोष को ढूँढता है 5तब तू
यहोवा के भय को समझेगा और परमेश्वर का ज्ञान
पायेगा।

6क्योंकि यहोवा ही बुद्धि देता है और उसके मुख से
ही ज्ञान और समझदारी की बाते फूटता है। 7उसके
भंडार में खरी बुद्धि उनके लिये रहती जो खरे हैं, और
उनके लिये जिनका चाल चलन विवेकपूर्ण रहता है।
वह जैसे एक ढाल है। 8न्याय के मार्ग की रखवाली
करता है और अपने भक्तों की वह राह संवारता है।

9तभी तू समझेगा की नेक क्या है, न्यायपूर्ण क्या है,
और पक्षपात रहित क्या है, यानी हर भली राह। 10बुद्धि
तेरे मन में प्रवेश करेगी और ज्ञान तेरी आत्मा को भाने
लगेगा।

11तुझको अच्छे–बुरे का बोध बचायेगा, समझ बूझ
भरी बुद्धि तेरी रखवाली करेगी, 12बुद्धि तुझे कुटिलों
की राह से बचायेगी, बुद्धि तुझे ऐसे उन लोगों से
बचाएगी जो बुरी बात बोलते हैं। 13अंधेरी गलियों में
आगे बढ़ जाने को वे सरल–सीधी राहों को तजते रहते
हैं। 14वे बुरे काम करने में सदा आनन्द मनाते हैं, वे
पापपूर्ण कर्मो में सदा मग्न रहते हैं। 15उन लोगों पर
विश्वास नहीं कर सकते। वे झूठे है और छल करने
वाले है। किन्तु तेरी बुद्धि और समझ तुझे इन बातों से
बचायेगी। 16यह बुद्धि तुझको वेश्या और उसकी
फुसलाती हुई मधुर वाणी से बचायेगी। 17जिसने अपने
यौवन का साथी त्याग दियाजिससे वाचा कि उपेक्षा
परमेश्वर के समक्ष किया था। 18क्योंकि उसका
निवास मृत्यु के गर्त में गिराता है और उसकी राहें
नरक में ले जाती हैं। 19जो भी निकट जाताहै कभी
नहीं लौट पाता और उसे जीवन की राहें कभी नहीं
मिलती! 20अत: तू तो भले लोगों के मार्ग पर चलेगा
और तू सदा नेक राह पर बना रहेगा। 21क्योंकि खरे
लोग ही धरती पर बसे रहेंगे और जो विवेकपूर्ण हैं वे ही
टिक पायेंगे। 22किन्तु जो दुष्ट है वे तो उस देश से काट
दियेजायेगें।

उत्तम जीवन से संपन्नता

3 हे मेरे पुत्र, मेरी शिक्षा मत भूल, बल्कि तू मेरे
आदेश अपने हृदय में बसा ले। 2क्योंकि इनसे तेरी
आयु वर्षों वर्ष बढ़ेगी और ये तुझको सम्पन्न कर देगें।
3प्रेम, विश्वसनीयता कभी तुझको छोड़ न जाये, तू
इनका हार अपने गले में डाल, इन्हें अपने मन के पटल
पर लिख ले। 4फिर तू परमेश्वर और मनुज की दृष्टि
में उनकी कृपा और यश पायेगा।

यहोवा में विश्वास रख

5अपने पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रख! तू अपनी
समझ पर भरोसा मत रख। 6उसको तू अपने सब कामों
में याद रख। वहीं तेरी सब राहों को सीधी करेगा।
7अपनी ही आँखों में तू बुद्धिमान मत बन, यहोवा से
ड़रता रह और पाप से दूर रह। 8इससे तेरा शरीर पूर्ण
स्वस्थ रहेगा और तेरी अस्थियाँ पुष्ट हो जायेंगी।

यहोवा को अर्पित कर

9अपनी सम्पत्ति से, और अपनी उपज के पहले फलों
से यहोवा का मान कर। 10तेरे भण्डार ऊपर तक भर
जायेंगे, और तेरे मधुपात्र नये दाखमधु से उफनते रहेंगे।

यहोवा का दण्ड स्वीकार ले

11हे मेरे पुत्र, यहोवा के अनुशासन का तिरस्कार
मत कर, उसकी फटकार का बुरा कभी मत मान।
12क्यों? क्योंकि यहोवा केवल उन्हीं को डाँटता है जिनसे
वह प्यार करता है। वैसे ही जैसे पिता उस पुत्र को डाँटे
जो उसको अति प्रिय है।

विवेक का महत्व

13धन्य है वह मनुष्य, जो बुद्धि पाता है। वह मनुष्य
धन्य है जो समझ प्राप्त करें। 14बुद्धि, मूल्यवान चाँदी से
अधिक लाभदायक है, और वह सोने से उत्तम प्रतिदान
देती है! 15बुद्धि मणि माणिक से अधिक मूल्यवान है।
उसकी तुलना कभी किसी उस वस्तु से नहीं हो सकती
है जिसे तू चाह सके!

16बुद्धि के दाहिने हाथ में सुदीर्घ जीवन है, उसके बायें
हाथ में सम्पत्ति और सम्मान है। 17उसके मार्ग मनोहर
हैं और उसके सभी पथ शांति के रहते हैं। 18बुद्धि
उनके लिये जीवन वृक्ष है जो इसे अपनाते हैं, वे सदा
धन्य रहेंगे जो दृढता से बुद्धि को थामे रहते हैं!

19यहोवा ने धरती की नींव बुद्धि से धरी, उसने समझ
से आकाश को स्थिर किया। 20उसके ही ज्ञान से गहरे
सोते फूट पड़े और बादल ओस कण बरसाते हैं।

21हे मेरे पुत्र, तू अपनी दृष्टि से भले बुरे का भेद और
बुद्धि के विवेक को ओझल मत होने दे। 22वे तो तेरे
लिये जीवन बन जायेंगे, और तेरा कंठ को सजाने एक
आभूषण। 23तब तू सुरक्षित बना निज मार्ग विचरेगा
और तेरा पैर कभी ठोकर नहीं खायेगा। 24तुझको सोने
पर कभी भय नहीं व्यापेगा और सो जाने पर तेरी नींद
मधुर होगी। 25आकस्मिक नाश से तू कभी मत डर, या
उस विनाश से जो दुष्टों पर आ पड़ता है। 26क्योंकि तेरा
विश्वास यहोवा बन जायेगा और वह ही तेरे पैर को
फंदे में फँसने से बचायेगा।

27जब तक ऐसा करना तेरी शक्ति में हो अच्छे को
उनसे बचा कर मत रख जो जन अच्छा फल पाने योग्य

है। 28जब अपने पड़ोसी को देने तेरे पास रखा हो तो उससे ऐसा मत कह कि “बाद में आना कल तुझे दूँगा।”

29तेरा पड़ोसी विश्वास से तेरे पास रहता हो तो उसके विरुद्ध उसको हानि पहुँचाने के लिये कोई षड़यंत्र मतरच।

30बिना किसी कारण के किसी को मत कोस, जबकि उस जन ने तुझे क्षति नहीं पहुँचाई है।

31किसी बुरे जन से तू द्वेष मत रख और उसकी सी चाल मत चल। तू अपनी चल। 32क्यों? क्योंकि यहोवा कुटिल जन से घृणा करता है और सच्चरित्र जन को अपनाता है।

33दुष्ट के घर पर यहोवा का शाप रहता है, वह नेक के घर को आर्शीवाद देता है।

34वह गर्वीले उच्छृंखल की हंसी उड़ाता है किन्तु दीन जन पर वह कृपा करता है।

35विवेकी जन तो आदर पायेंगे, किन्तु वह मूर्खो को, लज्जित ही करेगा।

विवेक का महत्व

4 हे मेरे पुत्रों, एक पिता की शिक्षा को सुनों उस पर ध्यान दो और तुम समझ बूझ पा लो! 2मैं तुम्हें गहन–गम्भीर ज्ञान देता हूँ। मेरी इस शिक्षा का त्याग तुम मत करना।

3जब मैं अपने पिता के घर एक बालक था और माता का अति कोमल एक मात्र शिशु था, 4मुझे सिखाते हुये उसने कहा था– मेरे वचन अपने पूर्ण मन से थामे रह। मेरे आदेश पाल तो तू जीवित रहेगा। 5तू बुद्धि प्राप्त कर और समझ बूझ प्राप्त कर! मेरे वचन मत भूल और उनसे मत ड़िग। 6बुद्धि मत त्याग वह तेरी रक्षा करेगी, उससे प्रेम कर वह तेरा ध्यान रखेगी।

7बुद्धि का आरम्भ ये है: तू बुद्धि प्राप्त कर,चाहे सब कुछ दे कर भी तू उसे प्राप्त कर! तू समझबूझ प्राप्त कर। 8तू उसे महत्व दे, वह तुझे ऊँचा उठायेगी, उसे तू गले लगा ले वह तेरा मान बढायेगी। 9वह तेरे सिर पर शोभा की माला धरेगी और वह तुझे एक वैभव का मुकुट देगी।

10सुन, हे मेरे पुत्र। जो कुछ मैं कहता हूँ तू उसे ग्रहण कर! तू अनगिनत सालों साल जीवित रहेगा। 11मैं तुझे बुद्धि के मार्ग की राह दिखाता हूँ, और सरल पथों पर अगुवाई करता हूँ। 12जब तू आगे बढेगा तेरे चरण बाधा नहीं पायेंगे, और जब तू दौड़ेगा ठोकर नहीं खायेगा। 13शिक्षा को थामे रह, उसे तू मत छोड़। इसकी रखवाली कर। यही तेरा जीवन है।

14तू दुष्टों के पथ पर चरण मत रख या पापी जनों की राह पर मत चल। 15तू इससे बचता रह, इसपर कदम मत बढ़ा। इससे तू मुड़ जा। तू अपनी राह चल। 16वे बुरे काम किये बिना सो नहीं पाते। वे नींद खो बैठते हैं जब तक किसी को नहीं गिराते। 17वे तो बस सदा नीचता की रोटी खाते हैं और हिंसा का दाखमधु पीते हैं।

18किन्तु धर्मी का पथ वैसा होता है जैसी प्रात: किरण होती है। जो दिन की परिपूर्णता तक अपने प्रकाश में बढ़ती ही चली जाती है। 19किन्तु पापी का मार्ग सघन, अन्धकार जैसा होता है। वे नहीं जान पाते कि किससे टकरातेहैं।

20हे मेरे पुत्र, जो कुछ मैं कहता हूँ उस पर तू ध्यान दे। मेरे वचनों को तू कान लगा कर सुन। 21उन्हें अपनी दृष्टि से ओझल मत होने दे। अपने हृदय पर तू उन्हें धरे रह। 22क्योंकि जो उन्हें पाते हैं उनके लिये वे जीवन बन जाते हैं और वे एक पुरुष की सम्पूर्ण काया का स्वास्थ्य बनते हैं।

23सबसे बडी बात यह है कि तू अपने विचारों के बारे में सावधान रह। क्योंकि तेरे विचार जीवन को नियंत्रण में रखते हैं।

24तू अपने मुख से कुटिलता को दूर रख। तू अपने होठों से भ्रष्ट बात दूर रख। 25तेरी आँखों के आगे सदा सीधा मार्ग रहे और तेरी चकचकी आगे ही लगी रहें। 26अपने पैरों के लिये तू सीधा मार्ग बना। बस तू उन राहों पर चल जो निश्चित सुरक्षित हैं। 27दाहिने को अथवा बायें को मत डिग। तू अपने चरणों को बुराई से रोके रह।

पराई स्त्री से बचे रह

5 हे मेरे पुत्र, तू मेरी बुद्धिमता की बातों पर ध्यान दे। मेरे अर्न्तदृष्टि के वचन को लगन से सुन। 2जिससे तेरा भले बुरे का बोध बना रहे और तेरे होठों पर ज्ञान संरक्षित रहे। 3क्योंकि व्यभिचारिणी केहोंठ मधु टपकाते हैं और उसकी वाणी तेल सी फिसलन भरी है। 4किन्तु परिणाम में यह जहर सी कड़ुवी और दुधारी तलवार सी तेज धार है! 5उसके पैर मृत्यु के गर्त कि तरफ बढ़ते हैं और वे सीधे कब्र तक ले जाते हैं! 6वह कभी भी जीवन के मार्ग की नहीं सोचती! उसकी रोहें खोटी हैं! किन्तु, हाय, उसे ज्ञात नहीं!

व्यभिचार विनाश का मूल है

7अब मेरे पुत्रों, तुम मेरी बात सुनों। जो कुछ भी मैं कहता हूँ, उससे मुँह मत मोड़ो। 8तुम ऐसी राह चलों, जो उससे सुदूर हो। उसके घर–द्वार के पास तक मत जाना। 9नहीं तो तुम अपनी उत्तम शक्ति को दूसरों के हाथों में दे बैठोगे और अपने जीवन वर्ष किसी ऐसे को जो क्रूर है। 10ऐसा न हो, तुम्हारे धन पर अजनबी मौज करें। तुम्हारा परिश्रम औरों का घर भरे। 11जब तेरा माँस और काया चूक जायेंगे तब तुम अपने जीवन के आखिरी छोर पर रोते बिलखाते यूँ ही रह जाओगे। 12और तुम कहोगे, “हाय! अनुशासन से मैंने क्यों बैर

किया? क्यों मेरा मन सुधार की उपेक्षा करता रहा?
13मैंने अपने शिक्षकों की बात नहीं मानी अथवा मैंने
अपने प्रशिक्षकों पर ध्यान नहीं दिया। 14मैं सारी मण्डली
के सामने, महानाश के किनारे पर आ गया हूँ।"

अपनी पत्नी के संग आनन्द मना

15-16तू अपने जल–कुंड से ही पानी पिया कर और तू
अपने ही कुँए से स्वच्छ जल पिया कर। तू ही कह, क्या
तेरे जलस्रोत राहों में इधर उधर फैल जायें? और तेरी
जलधारा चौराहों पर फैंले? 17ये तो बस तेरी हो, एकमात्र
तेरी ही। उनमे कभी किसी अजनबी का भाग न हो।
18तेरा स्रोत धन्य रहे और अपने जवानी की पत्नी के
साथ ही तू आनन्दित रह। का रसपान 19तेरी वह पत्नी,
प्रियतमा, प्राणप्रिया, मनमोहक हिरणी सी तुझे सदा तृप्त
करे। उसकेमाँसल उरोज और उसका प्रेम पाश तुझको
बाँधे रहे। 20हे मेरे पुत्र, कोई व्यभिचारिणी तुझको क्यों
बान्ध पाये? और किसी दूसरे की पत्नी को तू क्यों गले
लगाये?

21यहोवा तेरी राहें पूरी तरह देखता है और वह तेरी
सभी राहें परखता रहता है। 22दुष्ट के बुरे कर्म उसको
बान्ध लेते हैं। उसका ही पाप जाल उसको फँसा लेता है।
23वह बिना अनुशासन के मर जाता है। उसके ये बड़े
दोष उसको भटकाते हैं।

कोई चूक मत कर

6 हे मेरे पुत्र, बिना समझे बूझे यदि किसी की जमानत
दी है अथवा किसी के लिये वचनबद्ध हुआ है,
2यदि तू अपने ही कथन के जाल में फँस गया है, तू
अपने मुख के ही शब्दों के पिंजरे में बन्द हो गया है 3तो
मेरे पुत्र, क्योंकि तू औरों के हाथों में पड़ गया है, तू
स्वंय को बचाने को ऐसा कर: तू उसके निकट जा
और विनम्रता से अपने पड़ोसो से अनुनय विनम्र कर।
4निरन्तर जागता रह, आँखों में नींद न हो और तेरी
पलकों में झपकी तक न आये। 5स्वंय को चंचल हिरण
शिकारी के हाथ से और किसी पक्षी सा उसके जाल से
छुड़ा ले।

आलसी मत बनों

6अरे ओ आलसी, चींटी के पास जा। उसकी कार्य
विधि देख और उससे सीख ले। 7उसका न तो कोई
नायक है, न ही कोई निरीक्षक न ही कोई शासक है।
8फिर भी वह ग्रीष्म में भोजन बटोरती है और कटनी
के समय खाना जुटाती है।

9अरे ओ दीर्घ सूत्री, कब तक तुम यहाँ पड़े ही रहोगे?
अपनी निद्रा से तुम कब जाग उठोगे? 10तुम कहते
रहोगे–"थोड़ा सा और सो लूँ, एक झपकी ले लूँ, थोड़ा
सुस्ताने को हाथों पर हाथ रख लूँ।" 11और बस तुझको
दरिद्रता एक बटमार सी आ घेरेगी और अभाव शस्त्रधारी
सा घेर लेगा।

दुष्ट जन

12नीच और दुष्ट वह होता है जो बुरी बातें बोलता
हुआ फिरता रहता है। 13जो आँखों द्वारा इशारा करता
है और अपने पैरों से संकेत देता है और अपनी उगंलियो
से इशारे करता है। 14जो अपने मन में षड़यन्त्र रचता है
और जो सदा अनबन उपजाता रहता है। 15अत: उस पर
अचानक महानाश गिरेगा और तत्काल वह नष्ट हो
जायेगा। उस के पास बचने का उपाय भी नहीं होगा।

वे सात बातें जिन्हें यहोवा घृणा करता है

16ये हैं छ: बातें वे जिनसे यहोवा घृणा रखता और ये
ही सात बातें जिनसे है उसको बैर:

17गर्वीली आँखें, झूठ से भरी वाणी, वे हाथ जो अबोध
के हत्यारे हैं।

18ऐसा हृदय जो कुचक्र भरी योजनाएँ रचता रहताहै,
ऐसे पैर जो पाप के मार्ग पर तुरन्त दौड़ पड़तेहैं।

19वह झूठा गवाह, जो निरन्तर झूठ उगलता है और
ऐसा व्यक्ति जो भाईयों के बीच फूट डाले।

दुराचार के विरुद्ध चेतावनी

20हे मेरे पुत्र, अपने पिता की आज्ञा का पालन कर
और अपनी माता की सीख को कभी मत त्याग। 21अपने
हृदय पर उनको सदैव बाँध रह और उन्हें अपने गले
का हार बना ले। 22जब तू आगे बढ़ेगा, वे राह दिखायेंगे।
जब तू सो जायेगा, वे तेरी रखवाली करेंगे और जब तू
जागेगा, वे तुझसे बातें करेंगे।

23क्योंकि ये आज्ञाएँ दीपक हैं और यह शिक्षा एक
ज्योति है। अनुशासन के सुधार तो जीवन का मार्ग है।
24जो तुझे चरित्रहीन स्त्री से और भटकी हुई कुलटा की
फुसलाती बातों से बचाते हैं। 25तू अपने मन को उसकी
सुन्दरता पर कभी वासना सक्त मत होने दे और उसकी
आँखों का जादू मत चढ़ने दे। 26क्योंकि वह वेश्या तो
तुझको रोटी–रोटी का मुहताज कर देगी किन्तु वह
कुलटा तो तेरा जीवन ही हर लेगी!

27क्या यह सम्भव है कि कोई किसी के गोद में आग
रख दे और उसके वस्त्र फिर भी जरा भी न जलें?
28दहकते अंगारों पर क्या कोई जन अपने पैरों को
बिना झुलसाये हुए चल सकता है? 29वह मनुष्य ऐसा ही
है जो किसी अन्य की पत्नी से समागम करता है। ऐसी
पर स्त्री के जो भी कोई छूएगा, वह बिना दण्ड पाये नहीं
रह पायेगा।

30-31यदि कोई चोर कभी भूखों मरता हो, यदि यह
भूख को मिटाने के लिये चोरी करे तो लोग उस से घृणा
नहीं करेंगे। फिर भी यदि वह पकड़ा जाये तो उसे सात

गुणा भरना पड़ता है चाहे उससे उसके घर का समूचा
धन चुक जाये।
32किन्तु जो पर स्त्री से समागम करता है उसके पास
तो विवेक का अभाव है। ऐसा जो करता है वह स्वयं
को मिटाता है। 33प्रहार और अपमान उसका भाग्य है।
उसका कलंक कभी नहीं धुल पायेगा। 34ईर्ष्या किसी
पति का क्रोध जगाती है और जब वह इसका बदला
लेगा तब वह उस पर दया नहीं करेगा। 35वह कोई क्षति
पूर्ति स्वीकार नहीं करेगा और कोई उसे कितना ही
बड़ा प्रलोभन दे, उसे वह स्वीकारे बिना ठुकरायेगा!

विवेक दुराचार से बचाता है

7 हे मेरे पुत्र, मेरे वचनों को पाल और अपने मन में
मेरे आदेश संचित कर। 2मेरे आदेशों का पालन
करता रहा तो तू जीवन पायेगा। तू मेरे उपदेशों को
अपनी आँखों की पुतली सरीखा सम्भाल कर रख।
3उनको अपनी उंगलियों पर बाँध ले, तू अपने हृदय
पटल पर उनको लिख ले। 4बुद्धि से कह– "तू मेरी
बहन है" और तू समझ बूझ को अपनी कुटुम्बी जन
कह। 5वे ही तुझको उस कुलटा से और स्वेच्छाचारिणी
पत्नी के लुभावनें वचनों से बचायेंगे।
6एक दिन मैंने अपने घर की खिड़की के झरोखे से
झाँका, 7सरल युवकों के बीच एक ऐसा नवयुवक देखा
जिसको भले–बुरे की पहचान नहीं थी। 8वह उसी गली
से होकर, उसी कुलटा के नुक्कड़ के पास से जा रहा
था। वह उसके ही घर की तरफ बढ़ता जा रहा था।
9सूरज शाम के धुंधलके में डूबता था, रात के अन्धेरे
की तहें जमती जाती थी। 10तभी कोई कामिनी उससे
मिलने के लिये निकल कर बाहर आई। वह वेश्या के
वेश में सजी हुई थी। उसकी इच्छाओ में कपट छुपा था।
11वह वाचाल और निरंकुश थी। उसके पैर कभी घर
में नहीं टिकते थे। 12वह कभी–कभी गलियों में, कभी
चौराहों पर, और हर किसी नुक्कड़ पर घात लगाती
थी। 13उसने उसे रोक लिया और उसे पकड़ा। उसने
उसे निर्लज्ज मुख से चूम लिया, फिर उससे बोली, 14"आज
मुझे मैत्री भेंट अर्पित करनी थी। मैंने अपनी मन्नत पूरी
कर ली है। मैंने जो प्रतिज्ञा की थी, दे दिया है। उसका
कुछ भाग मैं घर ले जा रही हूँ। अब मेरे पास बहुतेरे
खाने के लिये है! 15इसलिये मैं तुझसे मिलने बाहर
आई। मैं तुझे खोजती रही और तुझको पा लिया। 16मैंने
मिस्र के मलमल की रंगों भरी चादर से सेज सजाई है।
17मैंने अपनी सेज को गंधरस, दालचीनी और अगर गंध
से सुगन्धित किया है। 18तू मेरे पास आ जा। भोर की
किरण चूर हुए, प्रेम की दाखमधु पीते रहे। आ, हम
परस्पर प्रेम से भोग करें। 19मेरे पति घर पर नहीं है।
वह दूर यात्रा पर गया है। 20वह अपनी थैली धन से भर
कर ले गया है और पूर्णमासी तक घर पर नहीं होगा।"
21उसने उसे लुभावने शब्दों से मोह लिया। उसको
मीठी मधुर वाणी से फुसला लिया। 22वह तुरन्त उसके
पीछे ऐसे हो लिया जैसे कोई बैल वध के लिये खिंचा
चला जाये। जैसे कोई निरा मूर्ख जाल में पैर धरे। 23जब
तक एक तीर उसका हृदय नहीं बेधेगा तब तक वह
उस पक्षी सा जाल पर बिना यह जाने टूट पडेगा कि
जाल उसके प्राण हर लेगा।
24सो मेरे पुत्रों, अब मेरी बात सुनो और जो कुछ मैं
कहता हूँ उस पर ध्यान धरो। 25अपना मन कुलटा की
राहों में मत खिंचने दो अथवा उसे उसके मार्गो पर मत
भटकने दो। 26कितने ही शिकार उसने मार गिरायें है।
उसने जिनको मारा उनका जमघट बहुत बड़ा है। 27उस
का घर वह राजमार्ग है जो कब्र को जाता है और नीचे
मृत्यु की कालकोठरी में उतरता है!

सुबुद्धि की पुकार

8 क्या सुबुद्धि तुझको पुकारती नहीं है? क्या समझबूझ
ऊँची आवाज नहीं देती?
2वह राह के किनारे ऊँचे स्थानों पर खड़ी रहती है
जहाँ मार्ग मिलते हैं।
3वह नगर को जाने वाले द्वारों के सहारे उपर सिंह
द्वार के ऊपर पुकार कर कहतीहै,
4"हे लोगों, मैं तुमको पुकारती हूँ, मैं सारी मानव
जाति हेतु आवाज़ उठाती हूँ।
5अरे भोले लोगों! दूर दृष्टि प्राप्त करो, तुम, जो मूर्ख
बने हो, समझ बूझ अपनाओ।
6सुनो! क्योंकि मेरे पास कहने को उत्तम बातें है,
अपना मुख खोलती हूँ, जो कहने को उचितहै।
7मेरे मुख से तो वही निकलता है जो सत्य है, क्योंकि
मेरे होंठों को दुष्टता से घृणा है।
8मेरे मुख के सभी शब्द न्यायापूर्ण होते है कोई भी
कुटिल, अथवा भ्रान्त नहीं है ।
9विचारशील जन के लिए वे सब साफ़ साफ़ है और
ज्ञानी जन के लिए वे सब दोष रहित है।
10चाँदी नहीं बल्कि तू मेरी शिक्षा ग्रहण कर उत्तम
स्वर्ण नहीं बल्कि तू ज्ञान ले।
11सुबुद्धि, रत्नों, मणि माणिकों से अधिक मूल्यवानहै।
तेरी ऐसी मनचाही कोई वस्तु जिससे उसकी तुलना हो।"
12"मैं सुबुद्धि, विवेक के संग रहती हूँ मैं ज्ञान रखती
हूँ, और भले–बुरे का भेद जानती हूँ।
13यहोवा का डरना, पाप से घृणा करना है। गर्व और
अहंकार, कुटिल व्यवहार और पतनोन्मुख बातों से मैं
घृणा करती हूँ ।
14मेरे परामर्श और न्याय उचित होते हैं। मेरे पास
समझ–बूझ और सामर्थ्य है।
15मेरे ही सहारे राजा राज्य करते हैं, और शासक
नियम रचते है, जो न्याय पूर्ण है।

16मेरी ही सहायता से धरती के सब महानुभाव शासक राज चलाते है।

17जो मुझसे प्रेम करते हैं, मैं भी उन्हें प्रेम करतीहूँ, मुझे जो खोजते हैं, मुझको पा लेते हैं।

18सम्पत्तियाँ और आदर मेरे साथ हैं। मैं खरी सम्पत्ति और यश देती हूँ।

19मेरा फल स्वर्ण से उत्तम है। मैं जो उपजाती हूँ, वह शुद्ध चाँदी से अधिक है।

20मैं न्याय के मार्ग के सहारे नेकी की राह पर चलती रहती हूँ।

21मुझसे जो प्रेम करते उन्हें मैं धन देती हूँ, और उनके भण्डार भर देती हूँ।

22यहोवा ने मुझे अपनी रचना के प्रथमअपने पुरातन कर्मो से पहले ही रचा है

23मेरी रचना सनातन काल से हुई। आदि से, जगत की रचना के पहले से हुई।

24जब सागर नहीं थे, जब जल से लबालब सोते नहीं थे, मुझे जन्म दिया गया।

25मुझे पर्वतों-पहाड़ियों की स्थापना से पहले ही जन्म दिया गया।

26धरती की रचना, या उसके खेत अथवा जब धरती के, धूल कण रचे गये।

27मेरा अस्तित्व उससे भी पहले वहाँ था। जब उसने आकाश का वितान ताना था और उसने सागर के दूसरे छोर पर क्षितिज को रेखांकित किया था।

28उसने जब आकाश में सघन मेघ टिकाये थे , और गहन सागर के स्रोत निर्धारित किये,

29उसने समुद्र की सीमा बांधी थी जिससे जल उसकी आज्ञा कभी न लाँघे, धरती की नीवों का सूत्रपात उसने किया,

30तब मैं उसके साथ कुशल शिल्पी सी थी। मैं दिन-प्रतिदिन आनन्द से परिपूर्ण होती चली गयी।उसके सामने सदा आनन्द मनाती ।

31उसकी पूरी दुनिया से मैं आनन्दित थी। मेरी खुशी समूची मानवता थी।

32तो अब, मेरे पुत्रों, मेरी बात सुनो। वो धन्य है! जो जन मेरी राह पर चलते है।

33मेरे उपदेश सुनो और बुद्धिमान बनो । इनकी उपेक्षा मत करो।

34वही जन धन्य है, जो मेरी बात सुनता और रोज मेरे द्वारों पर दृष्टि लगाये रहता एंव मेरी ड्योढ़ी पर बाट जोहता रहता है।

35क्योंकि जो मुझको पा लेता वही जीवन पाता और वह यहोवा का अनुग्रह पाता है।

36किन्तु जो मुझको, पाने में चूकता, वह तो अपनी ही हानि करता है। मुझसे जो भी जन सतत बैर रखते हैं, वे जन तो मृत्यु के प्यारे बन जाते है!"

सुबुद्धि और दुर्बुद्धि

9 सुबुद्धि ने अपना घर बनाया है। उसने अपने सात
खम्भे गढ़े हैं। 2उसने अपना भोजन तैयार किया
और मिश्रित किया अपना दाखमधु अपनी खाने की
मेज पर सजा ली है। 3और अपनी दासियों को नगर के
सर्वोच्च स्थानों से बुलाने को भेजा है। 4"जो भी भोले
भाले है, यहाँ पर पधारे।" जो विवेकी नहीं, वह उनसे
यह कहती है, 5"आओ, मेरा भोजन करो, और मिश्रित
किया हुआ मेरा दाखमधु पिओ। 6तुम अपनी दुर्बुद्धि के
मार्ग को छोड़ दो, तो जीवित रहोगे। तुम समझ-बूझ के
मार्ग पर आगे बढ़ो।"

7जो कोई उपहास करने वाले को, सुधारता है, अपमान
को बुलाता है, और जो किसी नीच को समझाने डांटे
वह गाली खाता हैं। 8हँसी उड़ानेवाले को तुम कभी मत
डाँटों, नहीं तो वह तुमसे ही घृणा करने लगेगा। किन्तु
यदि तुम किसी विवेकी को डाँटो, तो वह तुमसे प्रेम ही
करेगा। 9बुद्धिमान को प्रबोधो, वह अधिक बुद्धिमान
होगा, किसी धर्मी को सिखाओ, वह अपनी ज्ञान वृद्धि
करेगा।

10यहोवा का आदर करना सुबुद्धि को हासिल करना
का पहिला कदम है, यहोवा का ज्ञान प्राप्त करना
समझबूझ को पाने का पहले कदम है। 11क्योंकि मेरे
द्वारा ही तेरी आयु बढ़ेगी, तेरे दिन बढ़ेंगे, और तेरे
जीवन में वर्ष जुड़ते जायेंगे। 12"यदि तू बुद्धिमान है,
सदबुद्धि तुझे प्रतिफल देगी। यदि तू उच्छृंखल है, तो
अकेला कष्ट पायेगा।

13दुर्बुद्धि ऐसी स्त्री है जो बाते बनाती और अनुशासन
नहीं मानती। उसके पास ज्ञान नहीं है। 14अपने घर के
दरवाजे पर वह बैठी रहती है, नगर के सर्वोच्च बिंदु पर
वह आसन जमाती है। 15वहाँ से जो गुज़रते वह उनसे
पुकार कहती, जो सीधे-सीधे अपनी ही राह पर जा
रहे; 16"अरे निर्बुद्धियों! तुम चले आओ भीतर" वह
उनसे यह कहती है जिनके पास भले बुरे का बोध नहीं
है, 17"चोरी का पानी तो, मीठा-मीठा होता है, छिप कर
खाया भोजन, बहुत स्वाद देता है।"

18किन्तु वे यह नहीं जानते कि वहाँ मृतकों का वास होता है और उसके मेहमान कब्र में समाये हैं!

सुलैमान की सूक्तियाँ

10 एक बुद्धिमान पुत्र अपने पिता को आनन्द देताहै किन्तु एक मूर्ख पुत्र, माता का दुःख होता है।

2बुराई से कमाये हुए धन के कोष सदा व्यर्थ रहते हैं! जबकि धार्मिकता मौत से छुड़ाती है।

3किसी नेक जन को यहोवा भूखा नहीं रहने देगा, किन्तु दुष्ट की लालसा पर पानी फेर देता है।

4सुस्त हाथ मनुष्य को दरिद्र कर देते हैं, किन्तु परिश्रमी हाथ सम्पत्ति लाते हैं।

5गर्मियों में जो उपज को बटोर रखता है, वही पुत्र
बुद्धिमान है; किन्तु जो कटनी के समय में सोता है वह
पुत्र शर्मनाक होता है।
6धर्मी जनों के सिर आशीषों का मुकुट होता किन्तु
दुष्ट के मुख से हिंसा ऊफन पड़ती।
7धर्मी का वरदान स्मरण मात्र बन जाय; किन्तु दुष्ट
का नाम दुर्गन्ध देगा।
8वह आज्ञा मानेगा जिसका मन विवेकशील है, जबकि
बकवासी मूर्ख नष्ट हो जायेगा।
9विवेकशील व्यक्ति सुरक्षित रहता है, किन्तु टेढ़ी
चाल वाले का भण्डा फूटेगा।
10जो बुरे इरादे से आंख से इशारा करे, उसको तो
उससे दु:ख ही मिलेगा। और बकवासी मूर्ख नष्ट हो
जायेगा।
11धर्मी का मुख तो जीवन का स्रोत होता है, किन्तु
दुष्ट के मुख से हिंसा ऊफन पड़ती है।
12दुष्ट के मुख से घृणा भेद–भावों को उत्तेजित करती
है जबकि प्रेम सब दोषों को ढक लेता है।
13 बुद्धि का निवास सदा समझदार होठों पर होता है,
किन्तु जिसमें भले बुरे का बोध नहीं होता, उसके पीठ
पर डंडा होता है।
14बुद्धिमान लोग, ज्ञान का संचय करते रहते, किन्तु
मूर्ख की वाणी विपत्ति को बुलाती है ।
15धनिक का धन, उनका मज़बूत किला होता, दीन
की दीनता पर उसका विनाश है।
16नेक की कमाई, उन्हें जीवन देती है, किन्तु दुष्ट
की आय दण्ड दिलवाती।
17ऐसे अनुशासन से जो जन सीखता है, जीवन के
मार्ग की राह वह दिखाता है। किन्तु जो सुधार की
उपेक्षा करता है ऐसा मनुष्य तो भटकाया करता है।
18जो मनुष्य बैर पर परदा डाले रखता है, वह मिथ्यावादी
है और वह जो निन्दा फैलाता है, मूढ़ है।
19अधिक बोलने से, कभी पाप नहीं दूर होता
किन्तु जो अपनी जुबान को लगाम देता है, वही
बुद्धिमान है।
20धर्मी की वाणी विशुद्ध चाँदी है, किन्तु दुष्ट के हृदय
का कोई नहीं मोल।
21धर्मी के मुख से अनेक का भला होता, किन्तु मूर्ख
समझ के अभाव में मिट जाते।
22यहोवा के वरदान से जो धन मिलता है, उसके
साथ वह कोई दु:ख नहीं जोड़ता।
23बुरे आचार में मूढ़ को सुख मिलता, किन्तु एक
समझदार विवेक में सुख लेता है।
24जिससे मूढ़ भयभीत होता, वही उस पर आ पड़ेगी,
धर्मी की कामना तो पूरी की जायेगी।
25आंधी जब गुजरती है, दुष्ट उड़ जाते हैं, किन्तु धर्मी
जन तो, निरन्तर टिके रहते हैं।
26काम पर जो किसी आलसी को भेजता है, वह बन
जाता है जैसे अम्ल सिरका दांतों को खटाता है, और
धुंआ आँखों को तड़पाता दु:ख देता है।
27यहोवा का भय आयु का आयाम बढ़ाता है, किन्तु
दुष्ट की आयु तो घटती ही रहती है।
28धर्मी का भविष्य आनन्द–उल्लास है। किन्तु दुष्ट
की आशा तो व्यर्थ रह जाती है।
29धर्मी जन के लिये यहोवा का मार्ग शरण स्थल है
किन्तु जो दुराचारी है, उनका यह विनाश है।
30धर्मी जन को कभी उखाड़ा न जायेगा, किन्तु दुष्ट
धरती पर टिक नहीं पायेगा।
31धर्मी के मुख से बुद्धि प्रवाहित होती है, किन्तु
कुटिल जीभ को तो काट फेंका जायेगा।
32धर्मी के अधर जो उचित है जानते हैं, किन्तु दुष्ट
का मुख बस कुटिल बातें बोलता।

11 यहोवा छल के तराजू से घृणा करता है, किन्तु
उसका आनन्द सही नाप–तौल है।
2अभिमान के संग ही अपमान आता है, किन्तु नम्रता
के साथ विवेक आता है।
3नेकों की नेकी उनकी अगुवाई करती है, किन्तु
दुष्टों को दुष्टता ही ले डूबेगी।
4कोप के दिन धन व्यर्थ रहता, काम नहीं आता है;
किन्तु तब नेकी लोगों को मृत्यु से बचाती है।
5नेकी निर्दोषों के हेतु मार्ग सरल–सीधा बनाती है,
किन्तु दुष्ट जन को उसकी अपनी ही दुष्टता धूलें चटा
देती। 6नेकी सज्जनों को छुड़वाती है, किन्तु विश्वासहीन
बुरी इच्छाओं के जाल में फँस जाते है।
7जब दुष्ट मरता है, उसकी आशा मर जाती है। अपनी
शक्ति से जो कुछ अपेक्षा उसे थी, व्यर्थ चली जाती है।
8धर्मी जन तो विपत्ति से छुटकारा पा लेता है, जबकि
उसके बदले वह दुष्ट पर आ पड़ती है।
9भक्तिहीन की वाणी अपने पड़ौसी को ले डूबती है,
किन्तु ज्ञान द्वारा धर्मी जन तो बच निकलता है।
10धर्मी का विकास नगर को आनन्दित करता जबकि
दुष्ट का नाश हर्ष–नाद उपजाता।
11सच्चे जन की आशीष नगर को ऊँचा उठा देती
किन्तु दुष्टों की बातें नीचे गिरा देती हैं।
12ऐसा जन जिसके पास विवेक नहीं होता, वह अपने
पड़ोसी का अपमान करता है, किन्तु समझदार व्यक्ति
चुप चाप रहता है।
13जो चतुरायी करता फिरता है, वह भेद प्रकट करता
है, किन्तु विश्वासी जन भेद को छिपाता है।
14जहाँ मार्ग दर्शन नहीं वहाँ राष्ट्र पतित होता, किन्तु
बहुत सलाहकार विजय को सुनिश्चित करते हैं।
15 जो अनजाने का जामिन बनता है, वह निश्चय ही
पीड़ा उठायेगा, किन्तु अपने हाथों को बंधक बनाने से
जो मना कर देता है, वह सुरक्षित रहता है।

16दयालु स्त्री तो आदर पाती है जबकि क्रूर जन का लाभ केवल धन है।

17दयालु मनुष्य स्वयं अपना भला करता है, जबकि दया हीन स्वयं पर विपत्ति लाता है।

18दुष्ट जन कपट भरी रोजी कमाता है, किन्तु जो नेकी को बोता रहता है, उसको तो सुनिश्चित प्रतिफल का पाना है।

19सच्चा धर्मी जन जीवन पाता है, किन्तु जो बुराई को साधता रहता वह तो बस अपनी मृत्यु को पहुँचता है।

20कुटिल जनों से, यहोवा घृणा करता है किन्तु वह उनसे प्रसन्न होता है जिनके मार्ग सर्वदा सीधे होते है।

21यह जानो निश्चित है, दुष्ट जन कभी दंड से नहीं बचेगा। किन्तु जो नेक है वे छूट जायेंगे।

22जो भले बुरे में भेद नहीं करती, उस स्त्री की सुन्दरता ऐसी है जैसे किसी सुअर की थुथनी में सोने की नथ।

23नेक की इच्छा का भलाई में अंत होता है, किन्तु दुष्ट की आशा रोष में फैलती है।

24जो उदार मुक्त भाव से दान देता है, उसका लाभ तो सतत बढ़ता ही जाता है, किन्तु जो अनुचित रूप से सहेज रखते, उनका तो अंत बस दरिद्रता होता ।

25उदार जन तो सदा, फूलेगा फलेगा और जो दूसरों की प्यास बुझायेगा उसकी तो प्यास अपने आप ही बुझेगी।

26अन्न का जमाखोर लोगों की गाली खाता, किन्तु जो उसे बेचने को राजी होता है उसके सिर वरदान का मुकुट से सजता है।

27जो भलाई पाने को जतन करता है वही यश पाता है किन्तु जो बुराई के पीछे पड़ा रहता उसके तो हाथ बस बुराई ही लगती है।

28जो कोई निज धन का भरोसा करता है, झड़ जायेगा वह निर्जीव सूखे पत्ते सा; किन्तु धर्मी जन नयी हरी कोपल सा हरा–भरा ही रहेगा।

29जो अपने घराने पर विपत्ति लायेगा, दान में उसे वायु मिलेगा और मूर्ख, बुद्धिमान का दास बनकर रहेगा।

30धर्मी का कर्म–फल "जीवन का वृक्ष" है, और जो जन मनों को जीत लेता है, वही बुद्धिमान है।

31यदि इस धरती पर धर्मी जन अपना उचित प्रतिफल पाते हैं, तो फिर पापी और परमेश्वर विहीन लोग कितना अपने कुकर्मो का फल यहाँ पायेंगे।

12 जो शिक्षा और अनुशासन से प्रेम करता है, वह तो ज्ञान से प्रेम यूँ ही करता है। किन्तु जो सुधार से घृणा करता है, वह तो निरा मूर्ख है।

2सज्जन मनुष्य यहोवा की कृपा पाता है, किन्तु छल छंदी को यहोवा दण्ड देता है।

3दुष्टता, किसी जन को स्थिर नहीं कर सकती किन्तु धर्मी जन कभी उखड़ नहीं पाता है।

4एक उत्तम पत्नी के साथ पति खुश और गर्वीला होता है। किन्तु वह पत्नी जो अपने पति को लजाती है वह उसको शरीर की बीमारी जैसे होती है।

5धर्मी की योजनाएँ न्याय संगत होती हैं जबकि दुष्ट की सलाह कपटपूर्ण रहती है।

6दुष्ट के शब्द घात में झपटने की रहते है। किन्तु सज्जन की वाणी उनको बचाती है।

7जो खोटे होते हैं उखाड़ फेंके जाते हैं, किन्तु खरे जन का घराना टिका रहता है।

8व्यक्ति अपनी भली समझ के अनुसार प्रशंसा पाता है, किन्तु ऐसे जन जिनके मन कुपथ गामी हों घृणा के पात्र होते हैं।

9सामान्य जन बनकर परिश्रम करना उत्तम है इसके की भूखे रहकर महत्वपूर्ण जन सा स्वांग भरना।

10धर्मी अपने पशु तक की जरूरतों का ध्यान रखता है, किन्तु दुष्ट के सर्वाधिक दया भरे काम भी कठोर क्रूर रहते हैं।

11जो अपने खेत में काम करता है उसके पास खाने की बहुतायत होंगी; किन्तु पीछे भागता रहता जो ना समझ के उसके पास विवेक का अभाव रहता है।

12दुष्ट जन पापियों की लूट को चाहते हैं, किन्तु धर्मी जन की जड़ हरी रहती है।

13पापी मनुष्य को पाप उसका अपना ही शब्द–जाल में फँसा लेता है। किन्तु खरा व्यक्ति विपत्ति से बच निकलता।

14अपनी वाणी के सुफल से व्यक्ति श्रेष्ठ वस्तुओ से भर जाता है। निश्चय यह उतना ही जितना अपने हाथों का काम करके उसको सफलता देता है।

15मूर्ख को अपना मार्ग ठीक जान पड़ता है, किन्तु बुद्धिमान व्यक्ति सन्मति सुनता है।

16मूर्ख जन अपनी झुंझलाहट झटपट दिखाता है किन्तु बुद्धिमान अपमान की उपेक्षा करता है।

17सत्यपूर्ण साक्षी खरी गवाही देता है, किन्तु झूठा साक्षी झूठी बातें बनाता है।

18अविचारित वाणी तलवार सी छेदती, किन्तु विवेकी की वाणी घावों को भरती है।

19सत्यपूर्ण वाणी सदा सदा टिकी रहती है, किन्तु झूठी जीभ बस क्षण भर को टिकती है।

20उनके मनों में छल–कपट भरा रहता है, जो कुचक्र भरी योजना रचा करते है। किन्तु जो शान्ति को बढ़ावा देते हैं, आनन्द पाते है।

21धर्मी जन पर कभी विपत्ति नहीं गिरेगी, किन्तु दुष्टों को तो विपत्तियाँ घेरेंगी।

22ऐसे होठों को यहोवा घृणा करता है जो झूठ बोलते हैं किन्तु उन लोगों से जो सत्य से पूर्ण है, वह प्रसन्न रहता है।

23ज्ञानी अधिक बोलता नहीं है, चुप रहता है किन्तु मूर्ख अधिक बोल बोलकर अपने अज्ञान को दर्शाता है।

24परिश्रमी हाथ तो शासन करेंगे, किन्तु आलस्य का परिणाम बेगार होगा।

25चिंतापूर्ण मन व्यक्ति को दबोच लेता है; किन्तु भले वचन उसे हर्ष से भर देते हैं।

26धर्मी मनुष्य मित्रता में सतर्क रहता है, किन्तु दुष्टों की चाल उन्हीं को भटकाती है।

27आलसी मनुष्य निज शिकार ढूँढ नहीं पाता किन्तु परिश्रमी जो कुछ उसके पास है, उसे आदर देता है।

28नेकी के मार्ग में जीवन रहता है, और उस राह के किनारे अमरता बसती है।

13 समझदार पुत्र निज पिता की शिक्षा पर कान देता, किन्तु उच्छृंखल झिड़की पर भी ध्यान नहीं देता।

2सज्जन अपनी वाणी के सुफल का आनन्द लेता हैं किन्तु दुर्जन तो सदा हिंसा चाहता है।

3जो अपनी वाणी के प्रति चौकस रहता है, वह अपने जीवन की रक्षा करता है। पर जो गाल बजाता रहता है, अपने विनाश को प्राप्त करता है।

4आलसी मनोरथ पालता है पर कुछ नहीं पाता, किन्तु परिश्रमी की जितनी भी इच्छा है, पूर्ण हो जाती है।

5धर्मी उससे घृणा करता है, जो झूठ है जबकि दुष्ट लज्जा और अपमान लाते हैं।

6सच्चरित्र जन की रक्षक नेकी है जबकि बदी पापी को, उलट फेंक देती है।

7एक व्यक्ति जो धनिक का दिखावा करता है; किन्तु उसके पास कुछ भी नहीं होता है। और एक अन्य जो दरिद्र का सा आचरण करता किन्तु उसके पास बहुत धन होता है।

8धनवान को अपना जीवन बचाने उसका धन फिरौती में लगाना पड़गा किन्तु दीन जन ऐसे किसी धमकी के भय से मुक्त है।

9धर्मी का तेज बहुत चमचमाता किन्तु दुष्ट का दीया* बुझा दिया जाता है।

10अहंकार केवल झगड़ों को पनपाता है किन्तु जो सम्मति की बात मानते है, उनमें ही विवेक पाया जाता है।

11बेइमानी का धन यूँ ही धूल हो जाता है किन्तु जो बूँद–बूँद करके धन संचित करता है, उसका धन बढ़ता है।

12आशा हीनता मन को उदास करती है, किन्तु कामना की पूर्ति प्रसन्नता होती है।

13जो जन शिक्षा का अनादर करता है, उसको इसका मूल्य चुकाना पड़ेगा। किन्तु जो शिक्षा का आदर करता है, वह तो इसका प्रतिफल पाता है।

14विवेक की शिक्षा जीवन का उद्गम स्रोत है, वह लोगों को मौत के फंदे से बचाती है।

15अच्छी भली समझ बूझ कृपा दृष्टि अर्जित करती, पर विश्वास हीन का जीवन कठिन होता है।

16हर एक विवेकी ज्ञानपूर्वक काम करता, किन्तु एक मूर्ख निज मूर्खता प्रकट करता है।

17कुटिल सन्देशवाहक विपत्ति में पड़ता है, किन्तु विश्वसनीय दूत शांति देता है।

18 ऐसा मनुष्य जो शिक्षा की उपेक्षा करता है, उसपर लज्जा और दरिद्रता आ पड़ती है, किन्तु जो शिक्षा पर कान देता है, वह आदर पाता है।

19किसी इच्छा का पूरा हो जाना मन को मधुर लगता है किन्तु दोष का त्याग, मूर्खो को नहीं भाता है।

20बुद्धिमान की संगति, व्यक्ति को बुद्धिमान बनाता है। किन्तु मूर्खो का साथी नाश हो जाता है।

21दुर्भाग्य पापियों का पीछा करता रहता है किन्तु नेक प्रतिफल में खुशहाली पाते है।

22सज्जन अपने नाती–पोतों को धन सम्पति छोड़ता है जबकि पापी का धन धर्मियों के निमित्त संचित होता रहता है।

23दीन जन का खेत भरपूर फसल देता है, किन्तु अन्याय उसे बुहार ले जाता है।

24जो अपने पुत्र को कभी नहीं दण्डित करता, वह अपने पुत्र से प्रेम नहीं रखता है। किन्तु जो प्रेम करता निज पुत्र से, वह तो उसे यत्न से अनुशासित करता है।

25धर्मी जन, मन से खाते और पूर्ण तृप्त होते है किन्तु दुष्ट का पेट तो कभी नहीं भरता है।

14 बुद्धिमान स्त्री अपना घर बनाती है किन्तु मूर्ख स्त्री अपने ही हाथों से अपना घर उजाड़ देती है।

2जिसकी राह सीधी–सच्ची हो, आदर के साथ वह यहोवा से डरता है, किन्तु वह जिसकी राह कुटिल है, यहोवा से घृणा करता है।

3मूर्ख की बातें उसकी पीठ पर डँडे पड़वाती है। किन्तु बुद्धिमान की वाणी रक्षा करती है।

4जहां बैल नहीं होते, खलिहान खाली रहते है, बैल के बल पर ही भरपूर फसल होती है।

5एक सच्चा साक्षी कभी नहीं छलता है किन्तु झूठा गवाह, झूठ उगलता रहता है ।

6उच्छृंखल बुद्धि को खोजता रहता है फिर भी नहीं पाता है; किन्तु भले–बुरे का बोध जिसको रहता है, उसके पास ज्ञान सहज में ही आता है।

7मूर्ख की संगत से दूरी बनाये रख, क्योंकि उसकी वाणी में तू ज्ञान नहीं पायेगा।

दुष्ट का दीया यह एक हिब्रू मुहावरा है जिसका अर्थ है अकाल मृत्यु। देखें निर्गमन 20:12

8ज्ञानी जनों का ज्ञान इसी में है, कि वे अपनी राहों का चिंतन करें, मूर्खता मूर्ख की छल में बसती है।

9पाप के विचारों पर मूर्ख लोग हँसते है, किन्तु सज्जनों में सद्‌भाव बना रहता है।

10हर मन अपनी निजी पीड़ा को जानता है, और उसका दुःख कोई नहीं बांट पाता है।

11दुष्ट के भवन को ढहा दिया जायेगा, किन्तु सज्जन का डेरा फूलेगा फलेगा।

12ऐसी भी राह होती है जो मनुष्य को उचित जान पड़ती है; किन्तु परिणाम में वह मृत्यु को ले जाती।

13हँसते हुए भी मन रोता रह सकता है, और आनन्द दुःख में बदल सकता है।

14विश्वासहीन को, अपने कुमार्गो का फल भुगतना पड़ेगा; और सज्जन सुमार्गो का प्रतिफल पायेगा ।

15सरल जन सब कुछ का विश्वास कर लेता है। किन्तु विवेकी जन सोच-समझकर पैर रखता है।

16बुद्धिमान मनुष्य यहोवा से डरता है और पाप से दूर रहता है। किन्तु मूर्ख मनुष्य बिना विचार किये उतावला होता है- वह सावधान नहीं रहता।

17ऐसा मनुष्य जिसे शीघ्र क्रोध आता है, वह मूर्खतापूर्ण काम कर जाता है और वह मनुष्य जो छल-छंदी होता है वह तो घृणा सब ही की पाता है।

18सीधे जनों को बस मूढ़ता मिल पाती किन्तु बुद्धिमान के सिर ज्ञान का मुकुट होता है।

19दुर्जन सज्जनों के सामने सिर झुकायेंगे, और दुष्ट सज्जन के द्वार माथा नवायेंगे।

20गरीब को उसके पड़ोसी भी दूर रखते हैं; किन्तु धनी जन के मित्र बहुत होते हैं।

21जो अपने पड़ोसी को तुच्छ मानता है वह पाप करता है किन्तु जो गरीबों पर दया करता है वह जन धन्य है।

22ऐसे मनुष्य जो षड़यन्त्र रचते है क्या भटक नहीं जाते? किन्तु जो भली योजनाएँ रचते हैं, वे जन तो प्रेम और विश्वास पाते हैं।

23परिश्रम के सभी काम लाभ देते है, किन्तु कोरी बकवाद बस हानि पहुँचाती है।

24विवेकी को प्रतिफल में धन मिलता है पर मूर्खो की मूर्खता मूढ़ता देती है।

25एक सच्चा साक्षी अनेक जीवन बचाता है , पर झूठा गवाह, कपट पूर्ण होता है।

26ऐसा मनुष्य जो यहोवा से डरता है, उसके पास, एक संरक्षित गढ़ी होती है। और वहीं उसके बच्चों को शरण मिलती है।

27यहोवा का भय जीवन स्रोत होता है, वह व्यक्ति को मौत के फंदे से बचाता है।

28विस्तृत विशाल प्रजा राजा की महिमा हैं, किन्तु प्रजा बिना राजा नष्ट हो जाता है।

29धैर्यपूर्ण व्यक्ति बहुत समझ बूझ रखता है, किन्तु ऐसा व्यक्ति जिसे जल्दी से क्रोध आये वह तो अपनी ही मूर्खता दिखाता है।

30शान्त मन शरीर को जीवन देता है किन्तु ईर्ष्या हड्डियों तक को सड़ा देती है।

31जो गरीब को सताता है, वह तो सबके सृजनहार का अपमान करता है। किन्तु वह जो भी कोई गरीब पर दयालु रहता है, वह परमेश्वर का आदर करता है।

32जब दुष्ट जन पर विपदा पड़ती है तब वह हार जाते
है किन्तु धर्मी जन तो मृत्यु में भी विजय हासिल करते
है। **33**बुद्धिमान के मन में बुद्धि का निवास होता है, और
मूर्खो के बीच भी वह निज को जनाती है।

34नेकी से राष्ट्र का उत्थान होता है; किन्तु पाप हर जाति का कलंक होता है।

35विवेकी सेवक, राजा की प्रसन्नता है, किन्तु वह सेवक जो मूर्ख होता है वह उसका क्रोध जगाता है।

15 कोमल उत्तर से क्रोध शांत होता है किन्तु कठोर वचन क्रोध को भड़काता है।

2बुद्धिमान की वाणी ज्ञान की प्रशंसा करती है, किन्तु मूर्ख का मुख मूर्खता उगलता है।

3यहोवा की आँख हर कहीं लगी हुयी है। वह भले और बुरे को देखती रहती है।

4जो वाणी मन के घाव भर देती है, जीवन-वृक्ष होती है; किन्तु कपटपूर्ण वाणी मन को कुचल देती है।

5मूर्ख अपने पिता की प्रताड़ना कातिरस्कार करता है किन्तु जो कान सुधार पर देता है बुद्धिमानी दिखाता है।

6धर्मो के घर का कोना भरा पूरा रहता है दुष्ट की कमाई उस पर कलेश लाती है ।

7बुद्धिमान की वाणी ज्ञान फैलाती है, किन्तु मूर्खो का मन ऐसा नहीं करता है।

8यहोवा दुष्ट के चढ़ावे से घृणा करता है किन्तु उसको सज्जन की प्रार्थना ही प्रसन्न कर देती है।

9दुष्टों की राहों से यहोवा घृणा करता है। किन्तु जो नेकी की राह पर चलते हैं, उनसे वह प्रेम करता है।

10उसकी प्रतीक्षा में कठोर दण्ड रहता है जो पथ-भ्रष्ट हो जाता, और जो सुधार से घृणा करता है, वह निश्चय मर जाता है।

11जबकि यहोवा के समक्ष मृत्यु और विनाश के रहस्य खुले पड़े है। सो निश्चित रूप से वह जानता है कि लोगों के दिलों में क्या हो रहा है।

12उपहास करने वाला सुधार नहीं अपनाता है। वह विवेकी से परामर्श नहीं लेता।

13मन की प्रसन्नता मुख को चमकाती, किन्तु मन का दर्द आत्मा को कुचल देता है।

14जिस मन को भले बुरे का बोध होता है वह तो ज्ञान की खोज में रहता है किन्तु मूर्ख का मन, मूढ़ता पर लगता है।

15कुछ गरीब सदा के लिये दु:खी रहते है, किन्तु
प्रफुल्लित चित उत्सव मनाता रहता है।
16बेचैनी के साथ प्रचुर धन उत्तम नहीं, यहोवा का
भय मानते रहने से थोड़ा भी धन उत्तम है।
17घृणा के साथ अधिक भोजन से, प्रेम के साथ थोड़ा
भोजन उत्तम है।
18क्रोधी जन मतभेद भड़काता रहता है, जबकि
सहनशील जन झगड़े को शांत करता।
19आलसी की राह कांटों से रूधी रहती, जबकि
सज्जन का मार्ग राजमार्ग होता है।
20विवेकी पुत्र निज पिता को आनन्दित करता है,
किन्तु मूर्ख व्यक्ति निज माता से घृणा करता।
21भले-बुरे का ज्ञान जिसको नहीं होता है ऐसे मनुष्य
को तो मूढ़ता सुख देती है, किन्तु समझदार व्यक्ति सीधी
राह चलता है ।
22बिना परामर्श के योजनायें विफल होती है। किन्तु
वे अनेक सलाहकारों से सफल होती है।
23मनुष्य उचित उत्तर देने से आनन्दित होता है। यथोचित
समय का वचन कितना उत्तम होता है।
24विवेकी जन को जीवन-मार्ग ऊँचे से ऊँचा ले
जाता है,जिससे वह मृत्यु के गर्त में नीचे गिरने से
बचारहे।
25यहोवा अभिमानी के घर को छिन्न-भिन्न करता
है; किन्तु वह विवश विधवा के घर की सीमा बनाये
रखता।
26दुष्टों के विचारों से यहोवा को घृणा है, पर सज्जनों
के विचार उसको सदा भाते हैं।
27लालची मनुष्य अपने घराने पर विपदा लाता है
किन्तु वही जीवित रहता है जो जन घूस से घृणा भाव
रखता है।
28धर्मी जन का मन तौल कर बोलता है किन्तु दुष्ट
का मुख, बुरी बात उगलता है।
29यहोवा दुष्टों से दूर रहता है, अति दूर; किन्तु वह
धर्मी की प्रार्थना सुनता है।
30 आनन्द भरी मन को हर्षाती, अच्छा समाचार
हड्डियों तक हर्ष पहुँचाता है।
31जो जीवनदायी डाँट सुनता है, वही बुद्धिमान जनों
के बीच चैन से रहेगा।
32ऐसा मनुष्य जो प्रताड़ना की उपेक्षा करता, वह तो
विपत्ति को स्वयं अपने आप पर बुलाता है; किन्तु जो
ध्यान देता है सुधार पर, समझ-बूझ पाता है।
33 यहोवा का भय लोगों को ज्ञान सिखाता है। आदर
प्राप्त करने से पहले नम्रता आती है।

16 मनुष्य तो निज योजना को रचता है, किन्तु
उन्हें यहोवा ही कार्य रूप देता है।
2मनुष्य को अपनी राहें पाप रहित लगती है किन्तु
यहोवा उसकी नियत को परखता है।
3जो कुछ तू यहोवा को समर्पित करता है तेरी सारी
योजनाएँ सफल होंगी।
4यहोवा ने अपने उद्देश्य से हर किसी वस्तु को रचा
है यहाँ तक कि दुष्ट को भी नाश के दिन के लिये ।
5जिनके मन में अंहकार भरा हुआ है, उनसे यहोवा
घृणा करता है। इसे तू सुनिश्चित जान, कि वे बिना
दण्ड पाये नहीं बचेगें।
6खरा प्रेम और विश्वास शुद्ध बनाती है, यहोवा का
आदर करने से तू बुराई से बचेगा।
7यहोवा को जब मनुष्य की राहें भाती हैं, वह उसके
शत्रुओं को भी साथ शांति से रहने को मित्र बना देता।
8अन्याय से मिले अधिक की अपेक्षा, नेकी के साथ
थोड़ा मिला ही उत्तम है।
9मन में मनुष्य निज राहें रचता है, किन्तु प्रभु उसके
चरणों को सुनिश्चित करता है ।
10राजा जो बोलता नियम बन जाता है उसे चाहिए वह
न्याय से नहीं चूके।
11खरे तराजू और माप यहोवा से मिलते है, उसी ने ये
सब थैली के बट्टे रचे हैं। ताकि कोई किसी को छले
नहीं।
12विवेकी राजा, बुरे कर्मो से घृणा करता है क्योंकि
नेकी पर ही सिंहासन टिकता है।
13राजाओं को न्याय पूर्ण वाणी भाती है, जो जन सत्य
बोलता है, वह उसे ही मान देता है।
14राजा का कोप मृत्यु का दूत होता है किन्तु ज्ञानी
जन से ही वह शांत होगा।
15राजा जब आनन्दित होता है तब सब का जीवन
उत्तम होता है, अगर राजा तुझ से खुश है तो वह वासंती
के वर्षा सी है।
16विवेक सोने से अधिक उत्तम है, और समझ बूझ
पाना चाँदी से उत्तम है।
17सज्जनों का राजमार्ग बदी से दूर रहता है। जो अपने
राह की चौकसी करता है, वह अपने जीवन की रखवाली
करता है।
18नाश आने से पहले अहंकार आ जाता और पतन
से पहले चेतना हठी हो जाती।
19धनी और स्वाभिमानी लोगों के साथ सम्पत्ति बाँट
लेने से, दीन और गरीब लोगों के साथ रहने उत्तम है।
20जो भी सुधार संस्कार पर ध्यान देगा फूलेगा-फलेगा;
और जिसका भरोसा यहोवा पर है वही धन्य है।
21बुद्धिशील मन वाले समझदार कहलाते, और ज्ञान
को मधुर शब्दों से बढ़ावा मिलता है।
22जिनके पास समझ बूझ है, उनके लिए समझ बूझ
जीवन स्रोत होती है, किन्तु मूर्खो की मूढ़ता उनको दण्ड
दिलवाती।
23बुद्धिमान का हृदय उसकी वाणी को अनुशासित
करता है, और उसके होंठ शिक्षा को बढ़ावा देते है।

24मीठी वाणी छत्ते के शहद सी होती है, एक नयी चेतना भीतर तक भर देती है।

25मार्ग ऐसा भी होता जो उचित जान पड़ता है, किन्तु परिणाम में वह मृत्यु को जाता है।

26काम करने वाले की भूख भरी इच्छाएँ उससे काम करवाती रहती हैं। यह भूख ही उस को आगे धकेलती है।

27बुरा मनुष्य षड़यन्त्र रचता है, और उसकी वाणी ऐसी होती है जैसी झुलसाती आग।

28उत्पाती मनुष्य मतभेद भड़काता है, और बेपैर बातें निकट मित्रों को फोड देती है।

29अपने पड़ोसी को वह हिंसक फँ सा लेता है और कुमार्ग पर उसे खींच ले जाता है।

30जब भी मनुष्य आँखों से इशारा करके मुस्कुराता है, वह गलत और बुरी योजनाऐं रचता रहता है।

31श्वेत केश महिमा मुकुट होते है जो धर्मी जीवन से प्राप्त होते है।

32धीर जन किसी योद्धा से भी उत्तम हैं, और जो क्रोध पर नियन्त्रण रखता है, वह ऐसे मनुष्य से उत्तम होता है जो पूरे नगर को जीत लेता है।

33पासा तो झोली में फेंक दिया जाता है, किन्तु उसका हर निर्णय यहोवा ही करता है।

17 झंझट झमेलों भरे घर की दावत से चैन और शांति का सूखा रोटी का टुकड़ा उत्तम है।

2बुद्धिमान दास एक ऐसे पुत्र पर शासन करेगा जो घर के लिए लज्जाजनक होता है। बुद्धिमान दास वह पुत्र के जैसा ही उत्तराधिकार पानें मे सहभागी होगा।

3जैसे चाँदी और सोने को परखने शोधने कुठाली और आग की भट्टी होती है वैसे ही यहोवा हृदय को परखता शोधता है।

4दुष्ट जन, दुष्ट की वाणी को सुनता है, मिथ्यावादी बैर भरी वाणी पर ध्यान देता।

5ऐसा मनुष्य जो गरीब की हंसी उडाता, उसके सृजनहार से वह घृणा दिखाता है। वह दुःख में खुश होता है।

6नाती–पोते वृद्ध जन का मुकुट होते हैं, और माता–पिता उनके बच्चों का मान हैं।

7मूर्ख को जैसे अधिक बोलना नहीं सजता है वैसे ही गरिमापूर्ण व्यक्ति को झूठ बोलना नहीं सजता।

8घूँस देने वाले की घूँस महामंत्र जैसे लगती है, जिससे वह जहाँ भी जायेगा, सफल ही हो जायेगा।

9वह जो बुरी बात पर पर्दा डाल देता है, उघाड़ता नहीं है, प्रेम को बढ़ाता है। किन्तु जो बात को उघाड़ता ही रहता है, गहरे दोस्तों में फूट डाल देता है।

10विवेकी को धमकाना उतना ही प्रभावित करता है जितना मूर्ख को सौ–सौ कोड़े भी नहीं करते।

11दुष्ट जन तो बस सदा विद्रोह करता रहता, उसके लिये दया हीन अधिकारी भेजा जायेगा।

12अपनी मूर्खता में चूर किसी मूर्ख से मिलने से अच्छा है, उस रीछनी से मिलना जिससे उसके बच्चों को छीन लिया गया हो।

13भलाई के बदले में यदि कोई बुराई करे तो उसके घर को बुराई नहीं छोड़ेगी।

14झगड़ा शुरू करना ऐसा है जैसे बांध का टूटना है, सो, इसके पहले कि तकरार शुरू हो जाय बात खत्मकरो।

15यहोवा इन दोनों ही बातों से घृणा करता है, दोषी को छोड़ना, और निर्दोष को दण्ड देना।

16मूर्ख के हाथों में धन का क्या प्रयोजन! क्योंकि, उसको चाह नहीं कि बुद्धि को मोल ले।

17मित्र तो सदा–सर्वदा प्रेम करता है बुरे दिनों को काम आने का बंधु बन जाता है।

18विवेक हीन जन ही शपथ से हाथ बंधा लेता और अपने पड़ोसी का ऋण ओढ़ लेता है।

19 जिसको लड़ाई–झगड़ा भाता है, वह तो केवल पाप से प्रेम करता है और जो डींग हांकता रहता है वह तो अपना ही नाश बुलाता है।

20कुटिल हृदय जन कभी फूलता फलता नहीं है और जिस की वाणी छल से भरी हुई है, विपद में गिरता है।

21मूर्ख पुत्र पिता के लिए पीड़ा लाता है, मूर्ख के पिता कभी आनन्द नहीं होता।

22प्रसन्न चित्त रहना सबसे बड़ी दवा है, किन्तु बुझा मन हड्डियों को सुखा देता है।

23दुष्ट जन, उसके मार्ग से न्याय को डिगाने एकांत में घूंस लेता है।

24बुद्धिमान जन बुद्धि को सामने रखता है, किन्तु मूर्ख की आँखें धरती के छोरों तक भटकती हैं।

25मूर्ख पुत्र पिता को तीव्र व्यथा देता है, और माँ के प्रति जिसने उसको जन्म दिया, कड़ुवाहट भर देता।

26किसी निर्दोष को दण्ड देना उचित नहीं, ईमानदार नेता को पीटना उचित नहीं है।

27ज्ञानी जन शब्दों को तोल कर बोलता है, समझ–बूझ वाला जन स्थित प्रज्ञ होता है।

28मूर्ख भी जब तक नहीं बोलता शोभता है। और यदि निज वाणी रोके रखे तो ज्ञानी जाना जाता है।

18 मित्रता रहित व्यक्ति अपने स्वार्थ साधता है। वह समझदारी की बातें नकार देता है।

2मूर्ख सुख वह शेखचिल्ली बनने में लेता है। सोचता नहीं है कभी वे पूर्ण होंगी या नहीं। सुख उसे समझदारी की बातें नहीं देती।

3दुष्टता के साथ–साथ घृणा भी आती है और निन्दा के साथ अपमान।

4बुद्धिमान के शब्द गहरे जल से होते है, वे बुद्धि के स्रोत से उछलते हुए आते हैं।

5दुष्ट जन का पक्ष लेना और निर्दोष को न्याय से वंचित रखना उचित नहीं होता।

6मूर्ख की वाणी झंझटों को जन्म देती है और उसका मुख झगड़ों को न्योता देता है।

7मूर्ख का मुख उसका काम को बिगाड़ देता है और उसके अपने ही होठों के जाल में उसका प्राण फँस जाता है।

8लोग हमेशा कानाफूसी करना चाहते है, यह उत्तम भोजन के समान है जो पेट के भीतर उतरता चला जाता है।

9जो अपना काम मंद गति से करता है, वह उसका भाई है, जो विनाश करता है ।

10यहोवा का नाम एकगढ़ सुदृढ़ है। उस ओर धर्मी बढ़ जाते है और सुरक्षित रहते है।

11धनिक समझते है कि उनका धन उन्हें बचा लेगा– वह समझते है कि वह एक सुरक्षित किला है।

12पतन से पहले मन अहंकारी बन जाता, किन्तु सम्मान से पूर्व विनम्रता आती है।

13बात को बिना सुने ही, जो उत्तर में बोल पड़ता है, वह उसकी मूर्खता और उसका अपयश है।

14मनुष्य का मन उसे व्याधि में थामें रखता किन्तु टूटे मन को भला कोई कैसे थामे।

15बुद्धिमान का मन ज्ञान को प्राप्त करता है। बुद्धिमान के कान इसे खोज लेते हैं।

16उपहार देने वाले का मार्ग उपहार खोलता है और उसे महापुरुषों के सामने पहुँचा देता।

17पहले जो बोलता है ठीक ही लगता है किन्तु बस तब तक ही जब तक दूसरा उससे प्रश्न नहीं करताहै।

18यदि दो शक्तिशाली आपस में झगड़ते हों, उत्तम हैं कि उनके झगड़े को पासे फेंक कर निपटाना।

19किसी दृढ़ नगर को जीत लेने से भी रूठे हुए बन्धु को मनाना कठिन है, और आपसी झगड़े होते ऐसे जैसे गढ़ी के मुंदे द्वार होते है।

20मनुष्य का पेट उसके मुख के फल से ही भरता है, उसके होठों की खेती का प्रतिफल उसे मिला है।

21वाणी जीवन, मृत्यु की शक्ति रखती है, और जो वाणी से प्रेम रखते है, वे उसका फल खाते हैं।

22जिसको पत्नी मिली है, वह उत्तम पदार्थ पाया है। उसको यहोवा का अनुग्रह मिलता है।

23गरीब जन तो दया की मांग करता है, किन्तु धनी
जन तो कठोर उत्तर देता है। 24कुछ मित्र ऐसे होते हैं
जिनका साथ मन कोभाता है किन्तु अपना घनिष्ठ मित्र
भाई से भी उत्तम हो सकता है।

19 वह गरीब श्रेष्ठ है, जो निष्कलंक रहता; न कि वह मूर्ख जिसकी कुटिलतापूर्ण वाणी है।

2ज्ञान रहित उत्साह रखना अच्छा नहीं है इससे उतावली में गलती हो जाती है।

3मनुष्य अपनी ही मुर्खता से अपना जीवन बिगाड़ लेता है, किन्तु वह यहोवा को दोषी ठहराता है।

4धन से बहुत सारे मित्र बन जाते हैं, किन्तु गरीब जन को उसका मित्र भी छोड़ जाता है।

5झूठा गवाह बिना दण्ड पाये नहीं बचेगा और जो झूठ उगलता रहता है, छूटने नहीं पायेगा।

6उसके बहुत से मित्र बन जाना चाहते हैं, जो उपहार देता रहता है।

7निर्धन के सभी सम्बन्धी उससे कतराते हैं। उसके मित्र उससे कितना बचते फिरते हैं, यद्यपि वह उन्हें अनुनय– विनय से मनाता रहता है किन्तु वे उसे कहीं मिलते हीनहींहैं।

8जो ज्ञान पाता है वह अपने ही प्राण से प्रीति रखता, वह जो समझ बूझ बढ़ाता रहता है फलता और फूलता है।

9झूठा गवाह दण्ड पाये बिना नहीं बचेगा, और वह, जो झूठ उगलता रहता है ध्वस्त हो जायेगा।

10मूर्ख धनी नहीं बनना चाहिये। वह ऐसे होगा जैसे कोई दास युवराजाओं पर राज करें।

11अगर मनुष्य बुद्धिमान हो उसकी बुद्धि उसे धीरज देती है। जब वह उन लोगों को क्षमा करता है जो उसके विरुद्ध हो, तो अच्छा लगता है।

12राजा का क्रोध सिंह की दहाड़ सा है, किन्तु उसकी कृपा घास पर की ओस की बूंद सी होती।

13मूर्ख पुत्र विनाश का बाढ़ होता है; अपने पिता के लिए और पत्नी के नित्य झगड़े हर दम का टपका है।

14भवन और धन दौलत माँ बाप से दान में मिल जाते; किन्तु बुद्धिमान पत्नी यहोवा से मिलती है।

15आलस्य गहन घोर निद्रा देता है किन्तु वह आलसी भूखा मरता है।

16ऐसा मनुष्य जो निर्देशों पर चलता वह अपने जीवन की रखवाली करता है। किन्तु जो सदुपदेशों उपेक्षा करता है वह मृत्यु अपनाता है।

17गरीब पर कृपा दिखाना यहोवा को उधार देना है, यहोवा उसे, उसके इस कर्म का प्रतिफल देगा।

18तू अपने पुत्र को अनुशासित कर और उस दण्ड दे, जब वह अनुचित हो। बस यही आशा है। यदि तू ऐसा करने को मना करे, तब तो तू उसके विनाश में उसका सहायक बनता है।

19यदि किसी मनुष्य को तुरंत क्रोध आयेगा, उसको इसका मूल्य चुकाना होगा। यदि तू उसकी रक्षा करता है, तो कितनी ही बार तुझे उसको बचाना होगा।

20सुमति पर ध्यान दे और सुधार को अपना ले तू जिससे अंत में तू बुद्धिमान बन जाये।

21मनुष्य अपने मन में क्या–क्या! करने की सोचता है किन्तु यहोवा का उद्देश्य पूरा होता है।

22लोग चाहते है व्यक्ति विश्वास योग्य और सच्चा हो, इसलिए गरीबी में विश्वासयोग्य बनकर रहना अच्छा है। ऐसा व्यक्ति बनने से जिस पर कोई विश्वास न करे।

23यहोवा का भय सच्चे जीवन की राह दिखाता, इससे
व्यक्ति शांति पाता है और कष्ट से बचता है।
24आलसी का हाथ चाहे थाली में रखा हो किन्तु वह
उसको मुँह तक नहीं ला सकता।
25उच्छृंखल को पीट, जिससे सरल जन बुद्धि पाये
बुद्धिमान को डाँट, वह और ज्ञान पायेगा।
26ऐसा पुत्र जो निन्दनीय कर्म करता है घर का
अपमान होता है, वह ऐसा होता है जैसे पुत्र कोई निजपिता
से छीने और घर से असहाय माँ कोनिकाल बाहर करे।
27मेरे पुत्र यदि तू अनुशासन पर ध्यान देना छोड़ देगा,
तो तू ज्ञान के वचनों से भटक जायेगा।
28भ्रष्ट गवाह न्याय की हँसी उड़ाता है, और दुष्ट का
मुख पाप को निगल जाता। 29उच्छृंखल दण्ड पायेगा,
और मूर्ख जन की पीठ कोड़े खायेगी।

20 मदिरा और यवसुरा लोगों को काबू में नहीं
रहने देते। वह मजाक उडवाती है और झगड़े
करवाती है। वह मदमस्त हो जाते है और बुद्धिहीन
कार्य करते है।
2राजा का सिंह की दहाड़ सा कोप होता है, जो उसे
कुपित करता प्राण से हाथ धोता है।
3झगड़ों से दूर रहना मनुष्य का आदर है; किन्तु मूर्ख
जन तो सदा झगड़े को तत्पर रहते।
4ऋतु आने पर अदूरदर्शी आलसी हल नहीं डालता है
सो कटनी के समय वह ताकता रह जाता है और कुछ
भी नहीं पाता है।
5जन के मन प्रयोजन, गहन जल से छिपे होते किन्तु
समझदार व्यक्ति उन्हें बाहर खींच लाता है।
6लोग अपनी विश्वास योग्यता का बहुत ढोल पीटते
है, किन्तु विश्वसनीय जन किसको मिल पाता है?
7धर्मी जन निष्कलंक जीवन जीता है उसके बाद
आने वाली संताने धन्य हैं।
8जब राजा न्याय को सिंहासन पर विराजता अपनी
दृष्टि मात्र से बुराई को फटक छांटता है।
9कौन कह सकता है? "मैंने अपना हृदय पवित्र रखा
है, मैं विशुद्ध, और पाप रहित हूँ"
10इन दोनों से, खोटे बाटों और खोटी नापों से यहोवा
घृणा करता है।
11बालक भी अपने कर्मो से जाना जाता है, कि
उसका चालचलन शुद्ध है, या नही।
12यहोवा ने कान बनाये हैं कि हम सुनें! यहोवा ने
आँखें बनाई हैं कि हम देखे! यहोवा ने इन दोनों को
इसलिये हमारे लिए बनाया।
13निद्रा से प्रेम मत कर दरिद्र हो जायेगा; तू जागता रह
तेरे पास भरपूर भोजन होगा।
14ग्राहक खरीदते समय कहता है "अच्छा नहीं, बहुत
महंगा!" किन्तु जब वहाँ से वह दूर चला जाता है अपनी
खरीद की शेखी बघारता है।
15सोना बहुत हैऔर मणि माणिक बहुत सारे है, किन्तु
ऐसे अधर जो बातें ज्ञान की बताते दुर्लभ रत्न होतें है।
16जो किसी अजनबी के ऋण की जमानत देता है वह
अपने वस्त्र तक गंवा बैठता है।
17छल से कमाई रोटी मीठी लगती है पर अंत में
उसका मुंह कंकड़ों से भर जाता।
18योजनाएं बनाने से पहले तू उत्तम सलाह पा लिया
कर। यदि युद्ध करना हो तो उत्तम लोगों से आगुवा लें।
19बकवादी विश्वास को धोखा देता है सो, उस व्यक्ति
से बच जो बहुत बोलता हो।
20कोई मनुष्य यदि निज पिता को अथवा निज माता
को कोसे, उसका दीया बुझ जायेगा और गहन अंधकार
हो जायेगा।
21यदि तेरी सम्पत्ति तुझे आसानी से मिल गई हो तो
वह तुझे अधिक मूल्यवान नहीं लगेगा।
22इस बुराई का बदला मैं तुझसे लूँगा। ऐसा तू मत
कह; यहोवा की बाट जोह तुझे वही मुक्त करेगा।
23यहोवा खोटे-झूठे बाटों से घृणा करता है और
उसको खोटे नाप नहीं भाते हैं।
24यहोवा निर्णय करता है कि हर एक मनुष्य के
साथ क्या घड़ना चाहिये। कोई मनुष्य कैसा समझ सकता
है कि उसके जीवन में क्या घड़ने वाला है।
25यहोवा को कुछ अर्पण करने की प्रतिज्ञा से पूर्व ही
विचार ले; भली भांति विचार ले। सम्भव है यदि तू बाद
में ऐसा सोचे, 'अच्छा होता मैं वह मन्नत न मानता।'
26विवेकी राजा यह निर्णय करता है कि कौन बुरा
जन है। और वह राजा उस जन को दण्ड देगा।
27यहोवा का दीपकजन की आत्मा को जाँच लेता,
और उसके अन्तरात्मा स्वरूप को खोज लेता है।
28राजा को सत्य और निष्ठा सुरक्षित रखते, किन्तु
उसका सिंहासन करुणा पर टिकता है ।
29युवकों की महिमा उनके बल से होती है और वृद्धों
का गौरव उनके पके बाल हैं।
30यदि हमे दण्ड दिया जाय तो हम बुरा करना छोड
देते है। दर्द मनुष्य का परिवर्तन कर सकता है।

21 राजाओं का मन यहोवा के हाथ होता, जहाँभी
वह चाहता उसको मोड़ देता है वैसे ही जैसे
कोई कृषक पानी खेत का।
2सबको अपनी-अपनी राहें उत्तम लगती हैं किन्तु
यहोवा तो मन को तौलता है।
3तेरा उस कर्म का करना जो उचित और नेक है
यहोवा को अधिक चढ़ावा चढ़ाने से ग्राह्य है ।
4गर्वीली आँखें और दर्पीला मन पाप हैं ये दुष्ट की
दुष्टता को प्रकाश में लाते हैं।
5परिश्रमी की योजनाएँ लाभ देती हैं यह वैसे ही निश्चित
है जैसे उतावली से दरिद्रता आती है।

6झूठ बोल–बोल कर कमाई धन दौलत भाप सी अस्थिर है, और वह घातक फंदा बन जाती है।

7दुष्ट की हिंसा उन्हें खींच ले डूबेगी क्योंकि वे उचित कर्म करना नहीं चाहते।

8अपराधी का मार्ग कुटिलता–पूर्ण होता है किन्तु जो सज्जन हैं उसकी राह सीधी होती है।

9झगड़ालू पत्नी के संग घर में निवास से, छत के किसी कोने पर रहना अच्छा है।

10दुष्ट जन सदा पाप करने को इच्छुक रहता, उसका पड़ोसी उससे दया नहीं पाता।

11जब उच्छृंखल दण्ड पाता है तब सरल जन को बुद्धि मिल जाती है; किन्तु बुद्धिमान तो सुधारे जाने पर ही ज्ञान को पाता है।

12न्यायपूर्ण परमेश्वर दुष्ट के घर पर आँख रखता है, और दुष्ट जन का वह नाश कर देता है।

13यदि किसी गरीब की, करुण पुकार पर कोई मनुष्य निज कान बंद करता है, तो वह जब पुकारेगा उसकी पुकार भी नहीं सुनी जायेगी।

14गुप्त रुप से दिया गया उपहार क्रोध को शांत करता, और छिपा कर दी गई घूंस भंयकर क्रोध शांत करती है।

15न्याय जब पूर्ण होता धर्मी को सुख होता, किन्तु कुकर्मियों को महा भय होता है।

16जो मनुष्य समझ–बूझ के पथ से भटक जाता है, वह विश्राम करने के लिए मृतकों का साथी बनता है।

17जो सुख भोगों से प्रेम करता रहता वह दरिद्र हो जायेगा, और जो मदिरा का प्रेमी है, तेल का कभी धनी नहीं होगा।

18दुर्जन को उन सभी बुरी बातों का फल भुगतना ही पडेगा, जो सज्जन के विरुद्ध करते हैं। बेईमान लोगों को उनके किये का फल भुगतना पड़ेगा जो इमानदार लोगों के विरुद्ध करते है।

19चिड़चिड़ी झगड़ालू पत्नी के संग रहने से निर्जन बंजर में रहना उत्तम है।

20विवेकी के घर में मन चीते भोजन और प्रचुर तेल के भंडार भरे होते है किन्तु मूर्ख व्यक्ति जो उसके पास होता है, सब चट कर जाता है।

21जो जन नेकी और प्रेम का पालन करता है, वह जीवन, सम्पन्नता और समादर को प्राप्त करता है।

22बुद्धिमान जन को कुछ भी कठिन नहीं है। वह ऐसे नगर पर भी चढ़ायी कर सकता है जिसकी रखवाली

शूरवीर करते हो, वह उस परकोटे को ध्वस्त कर सकता है जिसके प्रति वे अपनी सुरक्षा को विश्वस्त थे।

23वह जो निज मुख को और अपनी जीभ को वश में रखता वह अपने आपको विपत्ति से बचाता है।

24ऐसे मनुष्य अहंकारी होता, जो निज को औरों से श्रेष्ठ समझता है, उस का नाम ही "अभिमानी" होता है। अपने ही कर्मो से वह दिखा देता है कि वह दुष्ट होता है।

25आलसी पुरूष के लिये उसकी ही लालसाएँ उसके मरण का कारण बन जाती है क्योंकि उसके हाथ कर्म को नहीं अपनाते।

26दिन भर वह चाहता ही रहता यह उसको और मिले, और किन्तु धर्मी जन तो बिना हाथ खींचे देता ही रहता है।

27दुष्ट का चढ़ावा यूं ही घृणापूर्ण होता है फिर कितना बुरा होगा जब वह उसे बुरे भाव से चढ़ावे?

28झूठे गवाह का नाश हो जायेगा; और जो उसकी झूठी बातों को सुनेगा वह भी उस ही के संग सदा सर्वदा के लिए नष्ट हो जायेगा।

29सज्जन तो निज कर्मो पर विचार करता है किन्तु दुर्जन का मुख अकड़ कर दिखाता है।

30यदि यहोवा न चाहें तो, न ही कोई बुद्धि और न ही कोई अर्न्तदृष्टि, न ही कोई योजना पूरी हो सकती है।

31युद्ध के दिन को घोड़ा तैयार किया है, किन्तु विजय तो बस यहोवा पर निर्भर है।

22 अच्छा नाम अपार धन पाने से योग्य है। चाँदी, सोने से, प्रशंसा का पात्र होना अधिक उत्तम है।

2धनिकों में निर्धनों में यह एक समता है, यहोवा ही इन सब ही का सिरजन हार है।

3कुशल जन जब किसी विपत्ति को देखता है, उससे बचने के लिए इधर उधर हो जाता किन्तु मूर्ख उसी राह पर बढ़ता ही जाता है। और वह इसके लिए दु:ख ही उठाता है।

4जब व्यक्तिविनम्र होता है यहोवा का भय धन दौलत, आदर और जीवन उपजता है।

5कुटिल की राहें काँटो से भरी होती है और वहाँ पर फंदे फैले होते हैं; किन्तु जो निज आत्मा की रक्षा करता है वह तो उनसे दूर ही रहता है।

6 बच्चे को यहोवा की राह पर चलाओ वह बुढ़ापे में भी उस से भटकेगा नहीं।

7धनी दरिद्रों पर शासन करते हैं। उधार लेने वाला, देने वालें का दास होता है।

8ऐसा मनुष्य जो दुष्टता के बीज बोता वह तो संकट की फसल काटेगा; और उसकी क्रोध की लाठी नष्ट हो जायेगी।

9उदार मन का मनुष्य स्वयं ही धन्य होगा, क्योंकि वह गरीब जन के साथ बाँट कर खाता है।

10निन्दक को दूर कर तो कलह दूर होगा। इससे झगड़े और अपमान मिट जाते है।

11वह जो पवित्र मन को प्रेम करता है और जिसकी वाणी मनोहर होती है उसका तो राजा भी मित्र बन जाता है।

12यहोवा सदा ज्ञान का ध्यान रखता है; किन्तु वह
विश्वासघाती के वचन विफल करता।
13काम नहीं करने के बहाने बनाता हुआ आलसी
कहता है, "बाहर बैठा है सिंह" या "गलियों में मुझे मार
डाला जायेगा।"
14व्यभिचार का पाप ऐसा होता है जैसे हो कोई जाल।
यहोवा उससे बहुत कुपित होगा जो भी इस जाल में
गिरेगा।
15बच्चे शैतानी करते रहते हैं किन्तु अनुशासन की
छड़ी ही उनको दूर कर देती। 16ऐसा मनुष्य जो अपना
धन बढ़ाने गरीब को दबाता है; और वह, जो धनी को
उपहार देता, दोनों ही ऐसे जन निर्धन हो जाते हैं।

तीस विवेकपूर्ण कहावतें

17बुद्धिमान की कहावतें सुनों और ध्यान दो। उस पर
ध्यान लगाओं जो मैं सिखाता हूँ। 18तू यदि उनको अपने
मन में बसा ले तो बहुत अच्छा होगा; तू उन्हें हरदम
निज होठों पर तैयार रख। 19मैं तुझे आज उपदेश देता हूँ
ताकि तेरा यहोवा पर विश्वास पैदा हो। 20ये तीस शिक्षाएं
मैंने तेरे लिए रची, ये वचन सन्मति के और ज्ञान के है।
21वे बातें जो महत्वपूर्ण होती, ये सत्य वचन तुझको
सिखायेगें ताकि तू उसको उचित उत्तर दे सके, जिसने
तुझे भेजा है।

-1-

22 तू गरीब का शोषण मत कर। इसलिए कि वे बस
दरिद्र हैं; और अभावग्रस्त को कचहरी में मत खींच।
23क्योंकि परमेश्वर उनकी सुनवाई करेगा और जिन्होंने
उन्हें लूटा है वह उन्हें लूट लेगा।

-2-

24तू क्रोधी स्वभाव के मनुष्यों के साथ कभी मित्रता
मत कर और उसके साथ, अपने को मत जोड़ जिसको
शीघ्र क्रोध आ जाता है। 25नहीं तो तू भी उसकी राह
चलेगा और अपने को जाल में फँसा बैठेगा।

-3-

26तू ज़मानत किसी के ऋण की देकर अपने हाथ
मत कटा। 27यदि उसे चुकाने में तेरे साधन चुकेंगे तो
नीचे का बिस्तर तक तुझसे छिन जायेगा।

-4-

28तेरी धरती की सम्पत्ति जिसकी सीमाएँ तेरे पूर्वजों ने
निर्धारित कीं उस सीमा रेखा को कभी भी मत हिला।

-5-

29यदि कोई व्यक्ति अपने कार्य में कुशल है, तो वह
राजा की सेवा के योग्य है। ऐसे व्यक्तियों के लिये
जिनका कुछ महत्व नहीं उसको कभी काम नहीं करना
पड़ेगा।

-6-

23 जब तू किसी अधिकारी के साथ भोजन पर बैठे
तो इसका ध्यान रख, कि कौन तेरे सामने है।
2यदि तू पेटू है तो खाने पर नियन्त्रण रख। 3उसके
पकवानों की लालसा मत कर क्योंकि वह भोजन तो
कपटपूर्ण होता है।

-7-

4धनवान बनने का काम कर करके निज को मत
थका। तू संयम दिखाने को, बुद्धि अपना ले। 5ये धन
सम्पत्तियाँ देखते ही देखते लुप्त हो जायेंगी निश्चय ही
अपने पंखों को फैलाकर वे गरूड़ के समान आकाश
में उड़ जायेंगी।

-8-

6ऐसे मनुष्य का जो सूम भोजन होता है तू मत कर;
तू उसके पकवानों को मत ललचा। 7क्योंकि वह ऐसा
मनुष्य है जो मन में हरदम उसके मूल्य का हिसाब
लगाता रहता है; तुझसे तो वह कहता–"तुम खाओ और
पियो" किन्तु वह मन से तेरे साथ नहीं है। 8जो कुछ
थोड़ा बहुत तू उसका खा चुका है, तुझको तो वह भी
उलटना पड़ेगा और वे तेरे कहे हुएआदर पूर्ण वचन
व्यर्थ चले जायेंगे।

-9-

9 तू मूर्ख के साथ बातचीत मत कर, क्योंकि वह तेरे
विवेकपूर्ण वचनों से घृणा ही करेगा।

-10-

10पुरानी सम्पत्ति की सीमा जो चली आ रही हो,
उसको कभी मत हड़प। ऐसी जमीन को जो किसी
अनाथ की हो। 11क्योंकि उनका संरक्षक सामर्थ्यवान
है, तेरे विरुद्ध उनका मुकदमा वह लड़ेगा।

-11-

12तू अपना मन सीख की बातों में लगा। तू ज्ञानपूर्ण
वचनों पर कान दे।

-12-

13तू किसी बच्चे को अनुशासित करने से कभी मत
रूक यदि तू कभी उसे छड़ी से दण्ड देगा तो वह इससे
कभी नहीं मरेगा।
14तू छड़ी से पीट उसे और उसका जीवन नरक से
बचा ले।

-13-

15हे मेरे पुत्र, यदि तेरा मन विवेकपूर्ण रहता है तो
मेरा मन भी आनन्दपूर्ण रहेगा। **16**और तेरे होंठ जब जो
उचित बोलते हैं, उससे मेरा अन्र्तमन खिल उठता है।

-14-

17तू अपने मन को पापपूर्ण व्यक्तियों से ईर्ष्या मत
करने दे, किन्तु तू यहोवा से डरने का जितना प्रयत्न
कर सके, कर।
18एक आशा है, जो सदा बनी रहती है और वह
आशा कभी नहीं मरती।

-15-

19मेरे पुत्र, सुन! और विवेकी बनजा और अपनी मन
को नेकी की राह पर चला। **20**तू उनके साथ मत रह
जो बहुत पियक्कड़ हैं, अथवा ऐसे, जो ठूंस–ठूंस माँस
खातेहैं।
21क्योंकि ये पियक्कड़ और ये पेटू दरिद्र हो जायेंगे,
और यह उनकी खुमारी, उन्हें चिथड़े पहनायेगी।

-16-

22अपनो पिता की सुन जिसने तुझे जीवन दिया है,
अपनी माता का निरादर मत कर जब वह वृद्ध हो
जाये।
23वह वस्तु सत्य है, तू इसको किसी भी मोल पर
खरीद ले। ऐसे ही विवेक, अनुशासन और समझ भी
प्राप्त कर; तू इनकों कभी भी किसी मोल पर मत बेच।
24नेक जन का पिता महा आनन्दित रहता और
जिसका पुत्र विवेक पूर्ण होता है वह तो उसमें ही हर्षित
रहता है।
25सो तेरी माता और तेरे पिता को आनन्द प्राप्त हो
और जिसने तुझ को जन्म दिया, उसको हर्ष मिलता ही
रहे।

-17-

26मेरे पुत्र, मुझमें मन लगा और तेरी आँखें मुझ पर
टिकी रहें। मुझे आदर्श मान। **27**क्योंकि एक वेश्या
गहन गर्त होती है। और मन मौजी पत्नी एक संकरा
कुँआ। **28**वह घात में रहती जैसे कोई डाकू और वह
लोगों में विश्वास हीनों की संख्या बढ़ाती है।

-18-

29-30कौन विपत्ति में है? कौन दुःख में पड़ा है? कौन
झगड़ें–टंटों में? किसकी शिकायतें है? कौन व्यर्थ चकना
चूर? किसकी आँखे लाल है? वे जो निरन्तर दाखमधु
पीते रहते हैं और जिसमे मिश्रित मधु की ललक होती
है!
31जब दाखमधु लाल हो, और प्यालें में झिलमिलाती
हो और धीरे–धीरे डाली जा रही हो, उसको ललचायी
आँखों से मत देखो। **32**सर्प के समान वह डसती, अन्त में
जहर भर देती है जैसे नाग भर देता है।
33तेरी आँखों में विचित्र दृष्य तैरने लगेगें, तेरा मन
उल्टी–सीधी बातों में उलझेगा। **34**तू ऐसा हो जायेगा, जैसे
उफनते सागर पर सो रहा हो और जैसे मस्तूल की
शिखर लेटा हो। **35**तू कहेगा, "उन्होंने मुझे मारा पर
मुझे तो लगा ही नहीं। उन्होंने मुझे पीटा, पर मुझ को
पता ही नहीं। मुझ से आता नहीं मुझे उठा दो और मुझे
पीने को और दो।"

-19-

24 दुष्ट जन से तू कभी मत होड़कर। उनकी
संगत की तू चाहत मत कर। **2**क्योंकि उनके
मन हिंसा की योजनाएँ रचते और उनके होंठ दुःख देने
की बातें करते है।

-20-

3बुद्धि से घर का निर्माण हो जाता है, और समझ–बूझ
से ही वह स्थिर रहता है। **4**ज्ञान के द्वारा उसके कक्ष
अद्भुत और सुन्दर खजानों से भर जाते हैं।

-21-

5बुद्धिमान जन में महाशक्ति होती है और ज्ञानी पुरुष
शक्ति को बढ़ाता है। **6**युद्ध लड़ने केलिए परामर्श चाहिए
और विजय पाने को बहुत से सलाहकार।

-22-

7मूर्ख बुद्धि को नहीं समझता। लोग जब महत्वपूर्ण
बातों कि चर्चा करते है तो मूर्ख समझ नहीं पाता।

-23-

8षड़यन्त्रकारी वही कहलाता है, जो बुरी योजनाएँ
बनाता रहता है। **9**मूर्ख की योजनायें पाप बन जाती है
और निन्दक जन को लोग छोड़ जाते है।

-24-

10यदि तू विपत्ति में हिम्मत छोड़ बैठेगा, तो तेरी शक्ति
कितनी थोड़ी सी है।

-25-

11यदि किसी की हत्या का कोई षड़यन्त्र रचे तो
उसको बचाने का तुझे यत्न करना चाहिए। **12**तू ऐसा
नहीं कह सकता, "मुझे इससे क्या लेना।" यहोवा जानता
है सब कुछ और यह भी वह जानता है कि काम
किसलिए तू काम करता है? यहोवा तुझ को देखता

रहता है। तेरे भीतर की जानता है और वह तुझ को
यहोवा तेरे कर्मो का प्रतिदान देगा।

-26-

13हे मेरे पुत्र, तू शहद खाया कर क्योंकि यह उत्तम
है। यह तुझे मीठा लगेगा।
14इसी तरह यह भी तू जान ले कि आत्मा को तेरी
बुद्धि मीठी लगेगी, यदि तू इसे प्राप्त करे तो उसमें
निहित है तेरी भविष्य की आशा और वह तेरी आशा
कभी भंग नहीं होगी।

-27-

15धर्मी मनुष्य के घर के विरोध में लुटेरे के समान
घात में मत बैठ और उसके निवास पर मत छापा मार।
16क्योंकि एक नेक चाहे सात बार गिरे, फिर भी उठ
बैठेगा। किन्तु दुष्ट जन विपत्ति में डूब जाता है।

-28-

17शत्रु के पतन पर आनन्द मत कर। जब उसे ठोकर
लगे, तो अपना मन प्रसन्न मत होने दे। 18यदि तू ऐसा
करेगा, तो यहोवा देखेगा और वह यहोवा की आँखों में
आ जायेगा एंव वह तुझसे प्रसन्न नही रहेगा। फिर
सम्भव है कि वह तेरे उस शत्रु की ही सहायता करे।

-29-

19तू दुर्जनों के साथ कभी ईर्ष्या मत रख, कही तुझे
उनके संग विवाद न करना पड़ जाये। 20क्योंकि दुष्ट
जन का कोई भविष्य नहीं है। दुष्ट जन का दीप बुझा
दिया जायेगा।

-30-

21हे मेरे पुत्र, यहोवा का भय मान और विद्रोहियों के
साथ कभी मत मिल। 22क्योंकि वे दोनों अचानक नाश
ढाह देंगे उन पर; और कौन जानता है कितनी भयानक
विपत्तियाँ वे भेज दें।

कुछ अन्य सुक्तियाँ

23ये सुक्तियाँ भी बुद्धिमान जनों की है:न्याय में पक्षपात
करना उचित नहीं है।
24ऐसा जन जो अपराधी से कहता है, "तू निरपराध
है" लोग उसे कोसेंगे और जातियाँ त्याग देंगी। 25किन्तु
जो अपराधी को दण्ड देंगे, सभी जन उनसे हर्षित रहेगे
और उनपर आर्शीवाद की वर्षा होगी।
26निर्मल उत्तर से मन प्रसन्न होता है, जैसे अधरों पर
चुम्बन अंकित कर दे।
27पहले बाहर खेतों का काम पूरा कर लो इसके बाद
में तुम अपना घर बनाओ।
28अपने पड़ोसी के विरुद्ध बिना किसी कारण साक्षी
मत दो। अथवा तुम अपनी वाणी का किसी को छलने
में मत प्रयोग करो। 29मत कहे ऐसा, "उसके साथ मैं भी
ठीक वैसा ही करूँगा, मेरे साथ जैसा उसने किया है; मैं
उसके साथ जैसे को तैसा करूँगा।"
30मैं आलसी के खेत से होते हुए गुजरा जो अंगूर के
बाग के निकट था जो किसी ऐसे मनुष्य का था, जिसको
उचित-अनुचित का बोध नहीं था। 31कंटीली झाड़ियाँ
निकल आयीं थी हर कहीं खरपतवार से खेत ढक गया
था। और बाड़ पत्थर की खंडहर हो रही थी। 32जो कुछ
मैंने देखा, उस पर मन लगा कर सोचने लगा। जो कुछ
मैंने देखा, उससे मुझको एक सीख मिली। 33जरा एक
झपकी, और थोड़ी सी नींद, थोड़ा सा सुस्ताना, धर कर
हाथों पर हाथ। (दरिद्रता को बुलाना है) 34वह तुझ पर
टूट पड़ेगी जैसे कोई लुटेरा टूट पड़ता है, और अभाव
तुझ पर टूट पड़ेगा जैसे कोई शस्त्र धारी टूट पड़ता है।

सुलैमान की कुछ और सूक्तियाँ

25 सुलैमान की ये कुछ अन्य सूक्तियाँ है जिनका
प्रतिलेख यहूदा के राजा हिजकिय्याह के लोगों
ने तैयार किया था:
2किसी विषय-वस्तु को रहस्यपूर्ण रखने में परमेश्वर
की गरिमा है किन्तु किसी बात को ढूँढ निकालने में
राजा की महिमा है।
3जैसे ऊपर अन्तहीन आकाश है और नीचे अटल
धरती है, वैसे ही राजाओं के मन होते हैं जिनके ओर-छोर
का कोई अता पता नहीं। उसकी थाह लेना कठिन है।
4जैसे चाँदी से खोट का दूर करना, सुनार को उपयोगी
होता है,
5वैसी ही, राजा के सामने से दुष्ट को दूर करना
नेकी उसके सिहांसन को अटल करता है।
6राजा के सामने अपने बड़ाई मत बखानो और महापुरुषों
के बीच स्थान मत चाहो। 7उत्तम वह है जो तुझसे कहे,
"आ यहाँ, आ जा" अपेक्षा इसके कि कुलीन जन के
समक्ष वह तेरा निरादर करे।
8तू किसी को जल्दी में कचहरी में मत घसीट। क्योंकि
अंत में वह लज्जित करें तो तू क्या कहेगा?
9यदि तू अपने पड़ोंसी के संग में किसी बात पर
विवाद करे, तो किसी जन का विश्वास जो तुझमें
निहित है, उसको तू मत तोड़। 10ऐसा न हो जाये कहीं
तेरी जो सुनता हो, लज्जित तुझे ही करे। और तू ऐसे
अपयश का भागी बने जिसका अंत न हो।
11अवसर पर बोला वचन होता है ऐसा जैसे हों चाँदी
में स्वर्णिम सेब जड़े हुए।
12जो कान बुद्धिमान की झिड़की सुनता है, वह उसके
कान के लिए सोने की बाली या कुन्दन की आभूषण
बन जाता है।

13एक विश्वास योग्य दूत, जो उसे भेजते हैं उनके
लिये कटनी के समय की शीतल बयार सा होता है हृदय
में निज स्वामियों के वह स्फूर्ति भर देता है।

14वह मनुष्य वर्षा रहित पवन और रीतें मेघों सा होता
है, जो बड़ी–बड़ी कोरी बातें देने की बनाता है; किन्तु
नहीं देता है।

15धैर्यपूर्ण बातों से राजा तक मनाये जाते और नम्र
वाणी हड्डी तक तोड़ सकती हैं।

16यद्यपि शहद बहुत उत्तम है, पर तू बहुत अधिक मत
खा और यदि तू अधिक खायेगा, तो उल्टी आ जायेगी
और रोगी हो जायेगा।

17वैसे ही तू पड़ोसी के घर में बार–बार पैर मत रख।
अधिक आना जाना निरादर करता है।

18वह मनुष्य, जो झूठी साक्षी अपने साथी के विरोध
में देता है वह तो है हथौडा सा अथवा तलवार सा या
तीखे बाण सा। 19विपत्ति के काल में भरोसा विश्वास–घाती
पर होता है ऐसा जैसे दुःख देता दाँत अथवा लँगड़ाता
पैर।

20जो कोई उसके सामने खुशी के गीत गाता है जिसका
मन भारी है। वह उसको वैसा लगता है जैसे जोड़े में
कोई कपड़े उतार लेता अथवा कोई फोड़े के सफफ पर
सिरका उंडेला हो।

21यदि तेरा शत्रु भी कभी भूखा हो, उसके खाने के
लिए, तू भोजन दे दे, और यदि वह प्यासा हो, तू उसके
लिए पानी पीने को दे दे। 22यदि तू ऐसा करेगा वह
लज्जित होगा, वह लज्जा उसके चिंतन में अंगारों सी
धधकेगी, और यहोवा तुझे उसका प्रतिफल देगा।

23उत्तर का पवन जैसे वर्षा लाता है वैसे ही धूर्त–वाणी
क्रोध उपजाती है।

24झगड़ालू पत्नी के साथ घर में रहने से छत के
किसी कोने पर रहना उत्तम है।

25किसी दूर देश से आई कोई अच्छी खबर ऐसी
लगती है जैसे थके मादे प्यासे को शीतल जल।

26गाद भरे झरने अथवा किसी दूषित कुँए सा होता
वह धर्मी पुरुष जो किसी दुष्ट के आगे झुक जाता है।

27जैसे बहुत अधिक शहद खाना अच्छा नहीं वैसे
अपना मान बढ़ाने का यत्न करना अच्छा नहीं है।

28ऐसा जन जिसको स्वयं पर नियन्त्रण नहीं, वह उस
नगर जैसा है, जिसका परकोटा ढह कर बिखर गया
हो।

मूर्खों के सम्बन्ध में विवेकपूर्ण सूक्तियाँ

26 जैसे असंभव है बर्फ का गर्मी में पड़ना और
जैसे वांछित नहीं है कटनी के वक्त पर वर्षा
का आना वैसे ही मूर्ख को मान देना अर्थहीन है।

2यदि तूने किसी का कुछ भी बिगाड़ा नहीं और
तुझको वह शाप दे, तो वह शाप व्यर्थ ही रहेगा। उसका
शाप पूर्ण वचन तेरे ऊपर से यूँ उड़ निकल जायेगा जैसे
चंचल चिड़िया जो टिककर नहीं बैठती।

3घोड़े को चाबुक सधाना पड़ता है। और खच्चर को
लगाम से। ऐसे ही तुम मूर्ख को डंडे से सधाओ।

4मूर्ख को उत्तर मत दो नहीं तो तुम भी स्वयं मूर्ख से
दिखोगे। 5मूर्ख की मूर्खता का तुम उचित उत्तर दो, नहीं
तो वह अपनी ही आँखों में बुद्धिमान बन बैठेगा।

6मूर्ख के हाथों सन्देशा भेजना वैसा ही होता है जैसे
अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारना, या विपत्तिको बुलाना।

7बिना समझी युक्ति किसी मूर्ख के मुख पर ऐसी
लगती है, जैसे किसी लंगड़े की लटकती मरी टाँग।

8मूर्ख को मान देना वैसा ही होता है जैसे कोई गुलेल
में पत्थर रखना।

9मूर्ख के मुख में सूक्ति ऐसे होती है जैसे शराबी के
हाथ में काँटेदार झाड़ी हो।

10किसी मूर्ख को या किसी अनजाने व्यक्ति को काम
पर लगााना खतरनाक हो सकता है। तुम नहीं जानते
कि किसे दुःख पहुँचेगा।

11जैसे कोई कुत्ता कुछ खा करके बीमार हो जाता है
और उल्टी करके फिर उसको खाता है वैसे ही मूर्ख
अपनी मूर्खता बार बार दोहराता है।

12वह मनुष्य जो अपने को बुद्धिमान मानता है, किन्तु
होता नहीं है वह तो किसी मूर्ख से भी बुरा होता है।

आलसियों से सम्बन्धित सूक्तियाँ

13आलसी करता रहता है, काम नहीं करने के बहाने
कभी वह कहता है सड़क पर सिंह है।

14जैसे अपनी चूल पर चलता रहता किवाड़। वैसे ही
आलसी बिस्तर पर अपने ही करवटें बदलता है।

15आलसी अपना हाथ थाली में डालता है किन्तु
उसका आलस, उसके अपने ही मुँहतक उसे भोजन
नहीं लाने देता।

16आलसी मनुष्य, निज को मानता महाबुद्धिमान! सातों
ज्ञानी पुरुषों से भी बुद्धिमान।

17ऐसे पथिक जो दूसरों के झगड़े में टांग अड़ाता है
जैसे कुत्ते पर काबू पाने के लिए कोई उसके कान
पकड़े।

18-19उस उन्मादी सा जो मशाल उछालता है या मनुष्य
जो घातक तीर फेकता है वैसे ही वह भी होता है जो
अपने पड़ोसी छलता है और कहता है– मैं तो बस यूँ ही
मजाक कर रहा था।

20जैसे इन्धन बिना आग बुझ जाती है वैसे ही कानाफूसी
बिना झगड़े मिट जाते हैं।

21कोयला अंगारों को और आग की लपट को लकड़ी
जैसे भड़काती है, वैसे ही झगड़ालू झगड़ो को भड़काता।

22जन प्रवाद भोजन से स्वादिष्ट लगते हैं। वे मनुष्य
के भीतर उतरते चले जाते हैं।

23दुष्ट मन वाले की चिकनी चुपड़ी बातें होती है ऐसी,
जैसे माटी के बर्तन पर चिपके चांदी के वर्क। 24द्वेषपूर्ण
व्यक्ति अपने मधुर वाणि में द्वेष को ढकता हैं। किन्तु
अपने हृदय में वह छल को पालता है। 25उसकी मोहक
वाणी से उसका भरोसा मत कर, क्योंकि उसके मन में
सात घृणित बातें भरी हैं। 26छल से किसी का दुर्भाव
चाहे छुप जाय किन्तु उसकी दुष्टता सभा के बीच उघड़ेगी।

27यदि कोई गढ़ा खोदता है किसी के लिये तो वह
स्वयं ही उसमें गिरेगा; यदि कोई व्यक्ति कोई पत्थर
लुढ़काता है तो वह लुढ़क कर उसी पर पड़ेगा।

28ऐसा व्यक्ति जो झूठ बोलता है, उनसे घृणा करता है
जिनको हानि पहुँचाता और चापलूस स्वयं का नाश
करता।

27 कल के विषय में कोई बड़ा बोल मत बोलो।
कौन जानता है कल क्या कुछ घटने को है।

2अपने ही मुँह से अपनी बड़ाई मत करों दूसरों को
तुम्हारी प्रशंसा करने दो।

3कठिन है पत्थर ढोना, और ढोना रेत का, किन्तु
इन दोनों से कहीं अधिक कठिन है मूर्ख के द्वारा
उपजाया गया कष्ट।

4क्रोध निर्दय और दर्दम्य होता है। वह नाश कर देती
है। किन्तु ईर्ष्या बहुत ही बुरी है।

5छिपे हुए प्रेम से, खुली घुड़की उत्तम है।

6हो सकता है मित्र कभी दुःखी करें, किन्तु ये उसका
लक्ष्य नहीं है। इससे शत्रु भिन्न है। वह चाहे तुम पर दया
करे किन्तु वह तुम्हें हानि पहुँचाना चाहता है।

7पेट भरजाने पर शहद भी नहीं भाता किन्तु भूख में
तो हर चीज भाती है।

8अपना घर छोड़कर भटकता मनुष्य ऐसा, जैसे कोई
चिड़िया भटकी निज घोंसले से।

9इत्र और सुगंधित धूप मन को आनन्द से भरते है
और मित्र की सच्ची सम्मति से मन उल्लास से भर
जाता है।

10अपने मित्र को मत भूलों न ही अपने पिता के मित्र
को। और विपत्ती में सहायता के लिये दूर अपने भाई के
घर मत जाओं। दूर के भाई से पास का पड़ोसी अच्छा है।

11हे मेरे पुत्र, तू बुद्धिमान बन जा और मेरा मन
आनन्द से भर दे। ताकि मेरे साथ जो घृणा से व्यवहार
करे, मैं उसको उत्तर दे सकूँ।

12विपत्ति को आते देखकर बुद्धिमान जन दूर हट
जाते हैं, किन्तु मूर्खजन बिना राह बदले चलते रहते हैं
और फंस जाते है।

13जो किसी पराये पुरुष का जमानत भरता है उसे
अपने वस्त्र भी खोना पड़ेगा।

14ऊँचे स्वर में 'सुप्रभात' कह कर के अलख सवेरे
अपने पड़ोसी को जगया मत कर। वह एक शाप के रूप
में झेलेगा आर्शीवाद में नहीं।

15झगड़ालू पत्नी होती है ऐसी जैसी दुर्दिन की निरन्तर
वर्षा।

16रोकना उसको होता है वैसा ही जैसे कोई रोके
पवन को और पकड़े मुट्ठी में तेल को।

17जैसे धार धरता है लोहे से लोहा, वैसी ही जन एक
दूसरे की सीख से सुधरते है।

18जो कोई अंजीर का पेड़ सिंचता है, वह उसका
फल खाता है। वैसे ही जो निज स्वामी की सेवा करता,
वह आदर पा लेता है।

19जैसे जल मुखड़े को प्रतिबिम्बित करता है, वैसे ही
हृदय मनुष्य को प्रतिबिम्बित करता है।

20मृत्यु और महानाश कभी तृप्त नहीं होते और
मनुष्य की आँखें भी तृप्त नहीं होती।

21 चांदी और सोने को भट्ठी–कुठाली में परख
लिया जाता है। वैसे ही मनुष्य उस प्रशंसा से परखा जाता
है जो वह पाता है।

22तू किसी मूर्ख को चूने में पीस–चाहे जितना महीन
करे और उसे पीस कर अनाज सा बना देवे उसका
चूर्ण

किन्तु उसकी मूर्खता को, कभी भी उससे तू दूर न
कर पायेगा।

23अपने रेवड़ की हालत तू निश्चित जानता है। अपने
रेवड़ की ध्यान से देखभाल कर। 24क्योंकि धन दौलत
तो टिकाऊ नहीं होते हैं। यह राजमुकुट पीढ़ी–पीढ़ी तक
बना नहीं रहता है।

25जब चारा कट जाता है, तो नई घास उग आती हे।
वह घास पहाड़ियों पर से फिर इकट्ठी कर ली जाती है।

26तब तब ये मेमनें ही तुझे वस्त्र देंगे और ये बकरियाँ
खेतों की खरीद का मूल्य बनेगीं। 27तेरे परिवार को,
तेरे दास दासियों को और तेरे अपने लिए भरपूर बकरी
का दूध होगा।

28 दुष्ट के मन में सदा भय समाया रहता है और
इसी कारण वह भागता फिरता है। किन्तु धर्मी
जन सदा निर्भय रहता है वैसे हो जैसे सिंह निर्भय
रहताहै।

2देश में जब अराजकता उभर आती है बहुत से
शासक बन बैठते है। किन्तु जो समझता है और ज्ञानी
होता है, ऐसा मनुष्य ही व्यवस्था स्थिर करता है।

3 वह राजा जो गरीब को दबाता है, वह वर्षा की बाढ़
सा होता है जो फसल नहीं छोड़ती।

4व्यवस्था के विधान को जो त्याग देते है, दुष्टों की
प्रशंसा करते, किन्तु जो व्यवस्था के विधान को पालते
उनका विरोध करते।

5दुष्ट जन न्याय को नहीं समझते है। किन्तु जो यहोवा
की खोज में रहते है, उसे पूरी तरह जानते हैं।

6वह निर्धन उत्तम है जिसकी राह खरी है। न कि वह
धनी पुरुष जो टेढ़ी चाल चलता है।

7जो व्यवस्था के विधानों का पालन करता है, वही है विवेकी पुत्र; किन्तु जो व्यर्थ के पेटुओं को बनाता साथी, वह पिता का निरादर करता है।

8वह जो मोटा ब्याज वसूल कर निज धन बढ़ाता है, वह तो यह धन जोड़ता है किसी ऐसे दयालु के लिए जो गरीबों पर दया करता है।

9यदि व्यवस्था के विधान पर कोई कान नहीं देता तो उसको विनतियाँ भी घृणा के योग्य होगी।

10वह तो अपने ही जाल में फंस जायेगा जो सीधे लोगों को बुरे मार्ग पर भटकाता है। किन्तु दोषरहित लोग उत्तम आशीष पायेगा।

11धनी पुरुष निज आँखों में बुद्धिमान हो सकता है किन्तु वह गरीबजन जो बुद्धिमान होता है सत्य को देखता।

12सज्जन जब जीतते है, तो सब प्रसन्न होते है। किन्तु जब दुष्ट को शक्ति मिल जाती है तो लोग छिप-छिप कर फिरते है।

13जो निज पापों पर पर्दा डालता है, वह तो कभी नहीं फूलता-फलता है किन्तु जो निज दोषों को स्वीकार करता और त्यागता है, वह दया पाता है।

14धन्य है, वह पुरुष जो यहोवा से सदा डरता है, किन्तु जो अपना मन कठोर कर लेता है, विपत्ति में गिरता है।

15दुष्ट लोग असहाय जन पर शासन करते हैं। ऐसे जैसे दहाड़ता हुआ सिंह अथवा झपटता हुआ रीछ।

16एक क्रूर शासक में न्याय को कमी होती है। किन्तु जो बुरे मार्ग से आये हुए धन से घृणा करता है, दीर्घ आयु भोगता है।

17किसी व्यक्ति को दूसरे की हत्या का दोषी ठहराया हो तो उस व्यक्ति को शांति नहीं मिलेगी। उसे सहायता मत कर।

18यदि कोई व्यक्ति निष्कलंक हो तो वह सुरक्षित है। यदि वह बुरा व्यक्ति हो तो वह अपना सामर्थ खो बैठेगा।

19जो अपनी धरती जोतता-बोता है और परिश्रम करता है, उसके पास सदा भर पूर खाने को होगा। किन्तु जो सदा सपनों में खोया रहता है, सदा दरिद्र रहेगा।

20परमेश्वर निज भक्त पर आशीष बरसाता है, किन्तु वह मनुष्य जो सदा धन पाने को लालायित रहता है, बिना दण्ड के नहीं बचेगा।

21किसी धनवान व्यक्ति का पक्षपात करना अच्छा नहीं होता तो भी कुछ न्यायाधीश कभी कर जाते पक्षपात मात्र छोटे से रोटी के ग्रास के लिए।

22सूम सदा धन पाने को लालायित रहता है और नहीं जानता कि उसकी ताक में दरिद्रता है।

23वह जो किसी जन को सुधारने को डांटता है, वह आधिक प्रेम पाता है, अपेक्षा उसके जो चापलूसी करताहै।

24कुछ लोग होते है जो अपने पिता और माता से चुराते है। वह कहते है, "यह बुरा नहीं है।" यह उस बुरा व्यक्ति जैसा है जो घर के भीतर आकर सभी वस्तुओं को तोड़ फोड़ कर देते हैं।

25लालची मनुष्य तो मतभेद भड़काता, किन्तु वह मनुष्य जिसका भरोसा यहोवा पर है फूलेगा-फलेगा।

26मूर्ख को अपने पर बहुत भरोसा होता है। किन्तु जो ज्ञान की राह पर चलता है, सुरक्षित रहता है।

27जो गरीबों को दान देता रहता है उसको किसी बात का अभाव नहीं रहता। किन्तु जो उनसे आँख मूँद लेता है, वह शाप पाता है।

28जब कोई दुष्ट शक्ति पा जाता है तो सज्जन छिप जाने को दूर चले जाते है। किन्तु जब दुष्ट जन का विनाश होता है तो सज्जनों को वृद्धि प्रकट होने लगती है।

29 जो घुड़कियाँ खाकर भी अकड़ा रहता है, वह अचानक नष्ट हो जायेगा। उसका उपाय तक नहीं बचेगा।

2जब धर्मी जन का विकास होता है, तो लोग आनन्द मनाते है। जब दुष्ट शासक बन जाता है तो लोग कराहतेहै।

3ऐसा जन जो विवेक से प्रेम रखता है, पिता को आनन्द पहुँचाता है। किन्तु जो वेश्याओं की संगत करता है, अपना धन खो देता है।

4न्याय से राजा देश को स्थिरता देता है। किन्तु राजा लालची होता तो लोग उसे घूँस देते है अपना काम करवाने के लिये। तब देश दुर्बल हो जाता है।

5जो अपने साथी की चापलूसी करता है वह अपने पैरों के लिए जाल पसारता है।

6पापी स्वयं अपने जाल में फंसता है। किन्तु एक धर्मी गाता और प्रसन्न होता है।

7सज्जन चाहते है कि गरीबों को न्याय मिले किन्तु दुष्टों को उनकी तनिक चिन्ता नहीं होती।

8जो ऐसा सोचतें है कि हम दूसरों से उत्तम है, वे विपत्ति उपजाते और सारे नगर को अस्त-व्यस्त कर देते है। किन्तु जो जन बुद्धिमान होते है, शांति को स्थापित करते है।

9बुद्धिमान जन यदि मूर्ख के साथ में वाद-विवाद सुलझाना चाहता है, तब मूर्ख कुतर्क करता और उल्टी-सीधी बातें करता जिससे दोनों के बीच सन्धि नहीं हो पाती।

10खून के प्यासे लोग, सच्चे लोगों से घृणा करते है। और वे उन्हें मार डालना चाहते है।

11मूर्ख मनुष्य को तो बहुत शीघ्र क्रोध आता है। किन्तु बुद्धिमान धीरज धरके अपने पर नियंत्रण रखता है।

12यदि एक शासक झूठी बातों को महत्व देता है तो उसके अधिकारी सब भ्रष्ट हो जाते है।

13एक हिसाब से गरीब और जो व्यक्ति को लूटता है, वह समान है। यहोवा ने ही दोनों को बनाया है।

14यदि कोई राजा गरीबों पर न्यायपूर्ण रहता है तो
उसका शासन सुदीर्घ काल बना रहेगा।
15दण्ड और डाँट से सुबुद्धि मिलती है किन्तु यदि
माता-पिता मनचाहा करने को खुला छोड़ दे, तो वह
निज माता का लज्जा बनेगा।
16दुष्ट के राज्य में पाप, पनप जाते है किन्तु अन्तिम
विजय तो सज्जन की होती है।
17पुत्र को दण्डित कर जब वह अनुचित करे, फिर
तो तुझे उस पर सदा ही गर्व रहेगा। वह तेरी लज्जा का
कारण कभी नहीं होगा।
18यदि कोई देश परमेश्वर की राह पर नहीं चलता
तो उस देश में शांति नहीं होगी। वह देश जो परमेश्वर
की व्यवस्था पर चलता, आनन्दित रहेगा।
19केवल शब्द मात्र से दास नहीं सुधरता है। चाहें
वह तेरे बात को समझ ले, किन्तु उसका पालन नहीं
करेगा।
20यदि कोई बिना विचारे हुए बोलता है तो उसके लिए
कोई आशा नहीं। अधिक आशा होती है एक मूर्ख के
लिये अपेक्षा उस जन के जो विचारे बिना बोले।
21यदि तू अपने दास को सदा वह देगा जो भी वह
चाहे, तो अंत में-वह तेरा एक उत्तम दास नहीं रहेगा।
22क्रोधी मनुष्य मतभेद भड़काता है, और ऐसा जन
जिसको क्रोध आता हो, बहुत से पापों का अपराधी
बनता है।
23मनुष्य को अहंकार नीचा दिखाता है, किन्तु वह
व्यक्ति जिसका हृदय विनम्र होता आदर पाता है।
24जो चोर का संग पकड़ता है वह अपने से शत्रुता
करता है; क्योंकि न्यायालय में जब उस पर सच उगलने
को जो़र पड़ता है तो वह कुछ भी कहने से बहुत डरा
रहता है।
25भय मनुष्य के लिये फँदा प्रमाणित होता है, किन्तु
जिसकी आस्था यहोवा पर रहती है, सुरक्षित रहता
है।
26बहुत लोग राजा के मित्र होना चाहते हैं, किन्तु वह
यहोवा ही है जो जन का सच्चा न्याय करता।
27सज्जन घृणा करते हैं ऐसे उन लोगों से जो सच्चे नहीं
होते; और दुष्ट सच्चे लोगों से घृणा रखते हैं।

याके के पुत्र आगूर की सूक्तियाँ

30 ये सूक्ति आगूर की हैं, जो याके का पुत्र था
यह पुरुष ईतीएलऔर उक्काल से:*कहता है
2मैं महाबुद्धिहीन हूँ। मुझमें मनुष्य की समझदारी
बिल्कुल नहीं है।
3मैंने बुद्धि नहीं पायी और मेरे पास उस पवित्र का
ज्ञान नहीं है।
4स्वर्ग से कोई नहीं आया और वहाँ के रहस्य ला
सका पवन को मुट्ठी में कोई नहीं बाँध सका। कोई
नहीं बाँध सका पानी को कपड़े में और कोई नहीं जान
सका धरती का छोर। और यदि कोई इन बातों को कर
सका है, तो मुझसे कहो, उसका नाम और नाम उसके
पुत्र का मुझको बता, यदि तू उसको जानता हो।
5वचन परमेश्वर का दोष रहित होता है, जो उसकी
शरण जाते वह उनकी ढाल होता। 6तू उसके वचनों में
कुछ घट-बढ़ मत कर। नहीं तो वह तुझे डांटे फटकारेगा
और झूठा ठहराएगा।
7हे यहोवा, मैं तुझसे दो बातें माँगता हूँ: जब तक मैं
जीऊँ, तू मुझको देता रह। 8तू मुझसे मिथ्या को, व्यर्थ
को दूर रख। मुझे दरिद्र मत कर और न ही मुझको
धनी बना। मुझको बस प्रतिदिन खाने को देता रह।
9कहीं ऐसा न हो जाये बहुत कुछ पा कर के मैं तुझको
त्याग दूँ: और कहने लगूँ 'कौन परमेश्वर है?' और यदि
निर्धन बनूँ और चोरी करूँ, और इस प्रकार मैं अपने
परमेश्वर के नाम को लजाऊँ।
10तू स्वामी से सेवक की निन्दा मत कर नहीं तो
तुझको, वह अभिशाप देगा और तुझे उसकी भरपाई
करनी होगी।
11ऐसे भी होते हैं जो अपने पिता को कोसते है, और
अपनी माता को धन्य नहीं कहते हैं।
12होते हैं ऐसे भी, जो अपनी आँखों में तो पवित्र बने
रहते किन्तु अपवित्रता से अपनी नहीं धुले होते हैं।
13ऐसे भी होते हैं जिनकी आँखें सदा तनी ही रहती,
और जिनकी आँखों में घृणा भरी रहती है।

14ऐसे भी होते हैं जिनके दांत कटार हैं और जिनके
जबड़ों में खंजर जड़े रहते हैं जिससे वे इस धरती के
गरीबों को हड़प जायें, और जो मानवों में से अभावग्रस्त
है उनको वे निगल लें।
15जोंक की दो पुत्र होती हैं वे सदा चिल्लाती रहती,
"देओ, देओ।" तीन वस्तु ऐसी हैं जो तृप्त कभी न होती
और चार ऐसी जो कभी बस नहीं कहती। 16कब्र,
बांझ-कोख और धरती जो जल से कभी तृप्त नहीं,
और वह अग्नि जो कभी 'बस' नहीं कहती।
17जो आँख अपने ही पिता पर हँसती है, और माँ की
बात मानने से घृणा करती है, घाठी के कौवे उसे नोंच
लेंगे और उसको गिद्ध खा जायेंगे।
18तीन बातें ऐसी हैं जो मुझे अति विचित्र लगती, और
चौथी ऐसी जिसे मैं समझ नहीं पाता। 19आकाश में उड़ते
हुए गरुड़ का मार्ग, और लीक नाग की जो चट्टान पर
चला; और महासागर पर चलते जहाज़ की राह और
उस पुरुष का मार्ग जो किसी कामिनी के प्रेमपाश में
बंधा हो।
20चरित्र हीन स्त्री की ऐसी गति होती है, वह खाती
रहती और अपना मुख पोंछ लेती, और कहा करती है,
मैंने तो कुछ भी बुरा नहीं किया।

21तीन बातें ऐसी हैं जिनसे धरा काँपती है और एक
चौथी है जिसे वह सह नहीं कर पाती। 22दास जो बन
जाता राजा, मूर्ख जो सम्पन्न,23ब्याह किसी ऐसी से जिससे
प्रेम नहीं हो; और ऐसी दासी जो स्वामिनी का स्थान ले
ले। 24चार जीव धरती के, जो यद्यपि बहुत क्षुद्र हैं किन्तु
उनमें अत्याधिक विवेक भरा हुआ है। 25चीटियाँ जिनमें
शक्ति नहीं होती है फिर भी वे गर्मी में अपना खाना
बटोरती हैं; 26बिज्जू दुर्बल प्राणी हैं फिर भी वे खड़ी
चट्टानों में घर बनाते; 27टिड्डियों का कोई भी राजा
नहीं होता है फिर भी वे पंक्ति बांध साथ आगे बढ़ती हैं।
28और वह छिपकली जो बस केवल हाथ से ही पकड़ी
जा सकती है, फिर भी वह राजा के महलों में पायी
जाती। 29तीन प्राणी ऐसे हैं जो लगते महत्वपूर्ण जब वे
चलते हैं, दरअसल वे चार हैं: 30एक सिंह, जो सभी
पशुओं में शक्तिशाली होता है, जो कभी किसी से नहीं
डरता; 31गर्वीली चाल से चलता हुआ मुर्गा और एक
बकरा और वह राजा जो अपनी सेना के मध्य है।

32तूने यदि कभी कोई आचरण किया मूर्खता का, और अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बना हो अथवा तूने कभी रचा हो कुचक्र कोई तो तू अपना मुँह अपने हाथों से ढक ले।

33जैसे मथने से दूध निकलता है मक्खन और नाक मरोड़ने से लहू निकल आता है वैसे ही जगाना क्रोध का होता है झगड़ों का भड़काना।

राजा लमुएल की सूक्तियाँ

31 ये सूक्तियाँ राजा लमूएल की, जिन्हें उसे उसकी माता ने सिखाया था।

2तू मेरा पुत्र है वह पुत्र जो मुझ को प्यारा है। जिसके
पाने को मैंने मन्नत मानी थी। 3तू व्यर्थ अपनी शक्ति
स्त्रियों पर मत व्यय करो स्त्री ही राजाओं का विनाश
करती हैं। इसलिए तू उन पर अपना क्षय मत कर। 4हे
लमूएल! राजा को मधुपान शोभा नहीं देता, और न ही
यह कि शासक को यवसुरा ललचाये। 5नहीं तो, वे
मदिरा का बहुत अधिक पान करके, विधान की व्यवस्था
को भूल जायेगें और वे सारे दीन दलितों के अधिकारों
को छीन लेंगे। 6वे जो मिटे जा रहे हैं उन्हें यवसुरा,
मदिरा उनको दे जिन पर दारूण दुःख पड़ा हो। 7उनको
पीने दे और भूलने दे उन्हें उनके अभावों को। उनका
वह दारुण दुःख उन्हें नहीं याद रहे।

8तू बोल उनके लिये जो कभी भी अपने लिये बोल
नहीं पाते हैं; और उन सब के, अधिकारों के लिये बोल
जो अभागे हैं। 9तू डट करके खड़ा रह उन बातों के हेतू
जिनको तू जानता हैं कि वे उचित, न्यायपूर्ण, और बिना
पक्ष-पात के सबका न्याय कर। तू गरीब जन के
अधिकारों की रक्षा कर और उन लोगों के जिनको
तेरी अपेक्षा हो।

आर्दश पत्नी

10गुणवंती पत्नी कौन पा सकता है? वह जो मणि-माणिको से कही अधिक मूल्यवान।

11जिसका पति उसका विश्वास कर सकता है। वह तो कभी भी गरीब नहीं होगा।

12सद्पत्नी पति के संग उत्तम व्यवहार करती। अपने जीवन भर वह उसके लिए कभी विपत्ति नहीं उपजाती।

13वह सदा ऊनी और सूती कपड़े बनाने में व्यस्त रहती।

14वह जलयान जो दूर देश से आता है वह हर कहीं से घर पर भोज्य वस्तु लाती।

15तड़के उठकर वह भोजन पकाती है। अपने परिवार का और दासियों का भाग उनको देती है।

16वह देखकर एंव परख कर खेत मोल लेती है जोड़े धन से वह दाख की बारी लगाती है।

17वह बड़ा श्रम करती है। वह अपने सभी काम करने को समर्थ है।

18जब भी वह अपनी बनायी वस्तु बेचती है, तो लाभ ही कमाती है। वह देर रात तक काम करती है।

19वह सूत कातती और निज वस्तु बुनती है।

20वह सदा ही दीनदुखी को दान देती है, और अभाव ग्रस्त जन की सहायता करती।

21जब शीत पड़ती तो वह अपने परिवार हेतु चिंतित नहीं होती है। क्योंकि उसने सभी को उत्तम गरम वस्त्र दे रख है।

22वह चादर बनाती है और गद्दी पर फैलाती है। वह सन से बने कपड़े पहनती है।

23लोग उसके पति का आदर करते हैं वह स्थान पाता है नगर प्रमुखों के बीच।

24वह अति उत्तम व्यापारी बनती है। वह वस्त्रों और कमरबंदों को बनाकर के उन्हें व्यापारी लोगों को बेचती है।

25वह शक्तिशाली है, और लोग उसको मान देते हैं।

26जब वह बोलती है, वह विवेकपूर्ण रहती है। उसकी जीभ पर उत्तम शिक्षायें सदा रहती है।

27वह कभी भी आलस नहीं करती है और अपने घर बार का ध्यान रखती है।

28उसके बच्चे खड़े होते और उसे आदर देते है। उसका पति उसकी प्रशंसा करता है।

29उसका पति कहता है, "बहुत सी स्त्रियाँ होती हैं। किन्तु उन सब में तू ही सर्वोत्तम अच्छी पत्नीहै।"

30मिथ्या आकर्षण और सुन्दरता दो पल की है, किन्तु वह स्त्री जिसे यहोवा का भय है, प्रशंसा पायेगी।

31उसे वह प्रतिफल मिलना चाहिए जिसके वह योग्य है, और जो काम उसने किये हैं, उनके लिए चाहिए कि सारे लोग के बीच में उसकी प्रशंसा करें।

सभोपदेशक

1 ये उपदेशक के शब्द हैं। उपदेशक दाऊद का पुत्र
था और यरुशलेम का राजा था।
2उपदेशक का कहना हैं कि हर वस्तु अर्थहीन है
और अकारथ है!* मतलब यह कि हर बात व्यर्थ हैं!
3इस जीवन में लोग जो कड़ी मेहनत करते हैं, उससे
उन्हें सचमुच क्या कोई लाभ होता हैं? नहीं!

वस्तुएँ अपरिवर्तनशील हैं

4एक पीढ़ी आती है और दूसरी चली जाती है किन्तु
संसार सदा यूँ ही बना रहता हैं। 5सूरज उगता है और
फिर ढल जाता है और फिर सूरज शीघ्र ही उसी स्थान
से उदय होने की शीघ्रता करता है।
6वायु दक्षिण दिशा की ओर बहती है और वायु उत्तर
की ओर बहने लगती है। वायु एक चक्र में घूमती रहती
है और फिर वायु जहाँ से चली थी वापस वहीं बहने
लगतीहै।
7सभी नदियाँ एक ही स्थान की ओर बार बार बहा
करती है। वे सभी समुद्र से आ मिलती हैं, किन्तु फिर
भी समुद्र कभी नहीं भरता।
8शब्द वस्तुओं का पूरा पूरा वर्णन नहीं कर सकते।
लेकिन लोग अपने विचार को व्यक्त नहीं कर पाते,
सदा बोलते ही रहते हैं। शब्द हमारे कानों में बार बार
पड़ते हैं किन्तु उनसे हमारे कान कभी भी भरते नहीं
है। हमारीआँखे भी, जो कुछ वे देखती है, उससे कभी
अघाती नहीं हैं।

कुछ भी नया नहीं है

9प्रारम्भ से ही वस्तुएँ जैसी थी वैसी ही बनी हुई हैं।
सब कुछ वैसे ही होता रहेगा, जैसे सदा से होता आ रहा
है। इस जीवन में कुछ भी नया नहीं है।
10कोई व्यक्ति कह सकता है, "देखों, यह बात नई
है!" किन्तु वह बात तो सदा से हो रही थी। वह तो हमसे
भी पहले से हो रही थी!
11वे बातें जो बहुत पहले घट चुकी हैं, उन्हें लोग याद
नहीं करते और आगे भी लोग उन बातों को याद नहीं
करेंगे जो अब घट रही हैं और उसके बाद भी अन्य
लोग उन बातों को याद नही रखेंगे जिन्हें उनके पहले
के लोगों ने किया था।

क्या बुद्धि से आनन्द मिलता है?

12मैं, जो कि एक उपदेशक हूँ, यरुशलेम में इस्राएल
का राजा हुआ करता था। और आज भी हूँ। 13मैंने
निश्चय किया कि मैं इस जीवन में जो कुछ होता है उसे
जानने के लिए अपनी बुद्धि का उपयोग करते हुए
उसका अध्ययन करूँ। मैंने जाना कि परमेश्वर ने हमें
करने के लिये जो यह काम दिया हैं वह बहुत कठिन
है। 14इस पृथ्वी पर की सभी वस्तुओं पर मैंने दृष्टि
डाली और देखा कि यह सब कुछ व्यर्थ है। यह वैसा ही
है जैसे वायु को पकड़ना।* 15तुम उन बातों को बदल
नहीं सकते। यदि कोई बात टेढ़ी है तो तुम उसे सीधी
नहीं कर सकते और यदि किसी वस्तु का अभाव है तो
तुम यह नहीं कह सकते कि वह वस्तु वहाँ हैं।
16मैंने अपने आप से कहा, "मैं बहुत बुद्धिमान हूँ।
मुझ से पहले यरुशलेम में जिन राजाओं ने राज्य किया
है, मैं उन सब से अधिक बुद्धिमान हूँ। मैं जानता हूँ कि
वास्तव में बुद्धि और ज्ञान क्या हैं!"
17मैंने यह जानने का निश्चय किया कि मूर्खतापूर्ण
चिन्तन से विवेक और ज्ञान किस प्रकार श्रेष्ठ हैं।
किन्तु मुझे ज्ञात हुआ कि विवेकी बनने का प्रयास वैसा
ही है जैसे वायु को पकड़ने का प्रयत्न। 18क्योंकि अधिक
ज्ञान के साथ हताशा भी उपजती है। वह व्यक्ति जो
अधिक ज्ञान प्राप्त करता है वह अधिक दु:ख भी प्राप्त
करता है।

क्या "मनो-विनोद" से सच्चा आनन्द मिलता है?

2 मैंने अपने मन में कहा, "मुझे मनो विनोद करना
चाहिए। मुझे हर वस्तु का जितना रस मैं ले सकूँ,
उतना लेना चाहिए।" किन्तु मैंने जाना कि यह भी
व्यर्थ है। 2हर समय हँसते रहना भी मूर्खता है। मनो
विनोद से मेरा कोई भला नहीं हो सका।
3सो मैंने निश्चय किया कि मैं अपनी देह को दाखमधु
से भर लूँ यद्यपि मेरा मस्तिष्क मुझे अभी ज्ञान की राह
दिखा रहा था। मैंने यह मूर्खता पूर्ण आचरण किया,

अर्थहीन ... अकारथ है मूल में जो हिब्रू शब्द है उसका अर्थ है भाप या साँस या कोई ऐसी वस्तु जिसका कोई उपयोग नहीं है। जो खाली है, गलत है या समय की बर्बादी हैं।

क्योंकि मैं आनन्द का कोई मार्ग ढूँढना चाहता था। मैं
चाहता था कि लोगों के लिये अपने जीवन के थोड़े से
दिनों में क्या करना उत्तम है, इसे खोज लूँ।

क्या कड़ी मेहनत से सच्चा आनन्द मिलता है?

4फिर मैंने बड़े बड़े काम करने शुरु किये। मैंने अपने
लिए भवन बनवाएँ और अँगूर के बाग लगवाए। 5मैंने
बगीचे लगवाए और बाग बनवाए। मैंने सभी तरह के
फलों के पेड़ लगवाये। 6मैंने अपने लिए पानी के तालाब
बनवाए और फिर इन तालाबों के पानी को मैं अपने
बढ़ते पेड़ों को सींचने के काम में लाने लगा। 7मैंने दास
और दासियाँ खरीदीं और फिर मेरे घर में उत्पन्न हुए
दास भी थे। मैं बड़ी बड़ी वस्तुओं का स्वामी बन गया।
मेरे पास झुँड के झुँड पशु और भेड़ों के रेवड़ थे।
यरूशलेम में किसी भी व्यक्ति के पास जितनी वस्तुएँ
थीं, मेरे पास उससे भी अधिक वस्तुएँ थीं।

8मैंने अपने लिए चाँदी सोना भी जमा किया। मैंने
राजाओं और उनके देशों से भी खजाने एकत्र किये।
मेरे पास बहुत सी वेशयाएं थीं।

9मैं बहुत धनवान और प्रसिद्ध हो गया। मुझसे पहले
यरुशलेम में जो भी कोई रहता था, मैं उससे अधिक
महान था। मेरी बुद्धि सदा मेरी सहायता किया करती
थी। 10मेरी आँखों ने जो कुछ देखा और चाहा उसे मैंने
प्राप्त किया। मैं जो कुछ करता, मेरा मन सदा उससे
प्रसन्न रहा करता और यह प्रसन्नता मेरे कठिन परिश्रम
का प्रतिफल थीं।

11किन्तु मैंने जो कुछ किया था जब उस पर दृष्टि
डाली और अपने किये कठिन परिश्रम के बारे में
विचार किया तो मुझे लगा यह सब समय की बर्बादी थी!
यह ऐसा ही था जैसा वायु को पकड़ना। इस जीवन में
हम जो कुछ श्रम करते हैं उस सबकुछ का उचित
परिणाम हमें नहीं मिलता।

हो सकता है इसका उत्तर बुद्धि हो

12जितना एक राजा कर सकता है, उससे अधिक
कोई भी व्यक्ति नहीं कर सकता। तुम जो भी कुछ
करना चाह सकते हो, वह सबकुछ कोई राजा अब
तक कर भी चुका होगा। मेरी समझ में आ गया कि
एक राजा तक जिन कामों को करता है, वे सब भी
व्यर्थ हैं। सो मैंने फिर बुद्धिमान बनने, मूर्ख बनने और
सनकीपन के कामों को करने के बारे में सोचना
आरम्भ किया। 13मैंने देखा कि बुद्धि मूर्खता से उसी
प्रकार उत्तम है जिस प्रकार अँधेरे से प्रकाश उत्तम होता
हैं। 14यह वैसे ही है जैसे: एक बुद्धिमान व्यक्ति, वह कहाँ
जा रहा है, उसे देखने के लिए अपनी बुद्धि का उपयोग,
अपनी आँखों की तरह करता हैं। किन्तु एक मूर्ख
व्यक्ति उस व्यक्ति के समान है जो अंधेरे में चल रहा है।
किन्तु मैंने यह भी देखा कि मूर्ख और बुद्धिमान दोनों
का अंत एक ही प्रकार से होता है। दोनों ही अंत में मृत्यु
को प्राप्त करते हैं। 15अपने मन में मैंने सोचा, "किसी
मूर्ख व्यक्ति के साथ जो घटता है वह मेरे साथ भी घटेगा
सो इतना बुद्धिमान बनने के लिये इतना कठिन परिश्रम
मैंने क्यों किया?" अपने आपसे मैंने कहा, "बुद्धिमान
बनना भी बेकार है।"16बुद्धिमान व्यक्ति और मूर्ख व्यक्ति
दोनों ही मर जायेंगे और लोग सदा के लिये न तो
बुद्धिमान व्यक्ति को यादरखेंगे और न ही किसी मूर्ख
व्यक्ति को। उन्होंने जो कुछ कियाथा, लोग उसे आगे
चल कर भुला देंगे। इस प्रकार बुद्धिमान व्यक्ति और
मूर्ख व्यक्ति वास्तव में एक जैसे ही हैं।

क्या सच्चा आनन्द जीवन में है?

17इसके कारण मुझे जीवन से घृणा हो गई। इस
विचार से मैं बहुत दुःखी हुआ कि इस जीवन में जो कुछ
है सब व्यर्थ हैं। बिल्कुल वैसा ही जैसे वायु को पकड़ने
की कोशिश करना।

18मैंने जो कठिन परिश्रम किया था, उससे घृणा
करना आरम्भ कर दिया। मैंने देखा कि वे लोग जो मेरे
बाद जीवित रहेंगे उन वस्तुओं को ले लेंगे जिनके लिए
मैंने कठोर परिश्रम किया था। मैं अपनी उन वस्तुओं
को अपने साथ नहीं ले जा सकूँगा। 19जिन वस्तुओं के
लिये मैंने मन लगाकर कठिन परिश्रम किया था उन
सभी वस्तुओं पर किसी दूसरे ही व्यक्ति का नियन्त्रण
होगा और मैं तो यह भी नहीं जानता कि वह व्यक्ति
बुद्धिमान होगा या मूर्ख। पर यह सब भी तो अर्थहीन ही
हैं।

20इसलिए मैंने जो भी कठिन परिश्रम किया था, उस
सब के विषय में मैं बहुत दुःखी हुआ। 21एक व्यक्ति
अपनी बुद्धि, अपने ज्ञान और अपनी चतुराई का प्रयोग
करते हुए कठिन परिश्रम कर सकता है। किन्तु वह
व्यक्ति तो मर जायेगा और जिन वस्तुओं के लिये उस
व्यक्ति ने कठिन परिश्रम किया था, वे किसी दूसरे ही
व्यक्ति को मिल जायेंगी। उन व्यक्तियों ने उन वस्तुओं
के लिये कोई काम तो नहीं किया था, किन्तु उन्हें वह
सभी कुछ हाल हो जायेगा। इससे मुझे बहुत दुःख होता
हैं। यह न्यायपूर्ण तो नहीं हैं। यह तो विवेकपूर्ण नहीं है।
22अपने जीवन में सारे परिश्रम और संघर्ष के बाद
आखिर एक मनुष्य को वास्तव में क्या मिलता है?
23अपने सारे जीवन वह कठिन परिश्रम करता रहा
किन्तु पीड़ा और निराशा के अतिरिक्त उसके हाथ
कुछ भी नहीं लगा। रात के समय भी मनुष्य का मन
विश्राम नहीं पाता। यह सब भी अर्थहीन ही हैं।

24-25जीवन का जितना आनन्द मैंने लिया है क्या
कोई भी ऐसा व्यक्ति और है जिसने मुझसे अधिक
जीवन का आनन्द लेने का प्रयास किया हो? नहीं! मुझे

जो ज्ञान हुआ है वह यह है: कोई व्यक्ति जो अच्छे से
अच्छा कर सकता हैं वह है खाना, पीना और उस कर्म
का आनन्द लेना जो उसे करना चाहिये। मैंने यह भी
समझा है कि यह सब कुछ परमेश्वर से ही प्राप्त होता
हैं। 26यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर को प्रसन्न करता है तो
परमेश्वर उसे बुद्धि, ज्ञान और आनन्द प्रदान करता है।
किन्तु वह व्यक्ति जो उसे अप्रसन्न करता है, वह तो बस
वस्तुओं के संचय और उन्हें ढोने का ही काम करता
रहेगा। परमेश्वर बुरे व्यक्तियों से लेकर अच्छे व्यक्तियों
को देता रहता है। इस प्रकार यह समग्र कर्म व्यर्थ हैं।
यह वैसा ही है जैसे वायु को पकड़ने का प्रयत्न करना।

एक समय है...

3 हर बात का एक उचित समय होता हैं। और इस
धरती पर हर बात एक उचित समय पर ही घटित
होगी।

2जन्म लेने का एक उचित समय निश्चित है, और
मृत्यु का भी। एक समय होता है पेड़ों के रोपने का,
और उनको उखाड़ने का।

3घात करने का होता है एक समय, और एक समय
होता है उसके उपचार का। एक समय होता है जब ढहा
दिया जाता, और एक समय होता है करने का निर्माण।

4एक समय होता है रोने-विलपने का, और एक
समय होता है करने का अट्टहास। एक समय होता है
होने का दु:ख मग्न, और एक समय होता है उल्लास
भरे नाचका।

5एक समय होता है जब हटाए जाते हैं पत्थर, और
एक समय होता हैउनके एकत्र करनेका। एक समय
होता है बाध आलिंगन में किसी के स्वागत का, और
एक समय होता है, जब स्वागत उन्हीं का किया नहीं
जाता है।

6एक समय होता है जब होती है किसी की खोज,
और आता है एक समय जब खोज रूक जातीहै। एक
समय होता हैं वस्तुओं के रखने का,और एक समय
होता है दूर फेंकने का चीजोंको।

7होता है एक समय वस्त्रों को फाड़ने का, फिर एक
समय होता जब उन्हें सिया जाता है। एक समय होता है
साधने का चुप्पी, और होता है एक समय फिर बोल
उठने का।

8एक समय होता है प्यार को करने का, और एक
समय होता जब घृणा करी जाती हैं। एक समय होता है
करने का लड़ाई, और होता है एक समय मेल का
मिलाप का।

परमेश्वर अपने संसार का नियन्त्रण करता है

9क्या किसी व्यक्ति को अपने कठिन परिश्रम से
वास्तव में कुछ मिल पाता है? नहीं। क्योंकि जो होना है
वह तो होगा ही। 10मैंने वह कठिन परिश्रम देखा है जिसे
परमेश्वर ने हमें करने के लिये दिया है। 11अपने संसार
के बारे में सोचने के लिये परमेश्वर ने हमें क्षमता
प्रदान की है। परन्तु परमेश्वर जो करता है, उन बातों
को पूरी तरह से हम कभी नहीं समझ सकते। फिर भी
परमेश्वर हर बात, उचित और उपयुक्त समय पर करता
है।

12मैंने देखा है कि लोगों के लिये सबसे उत्तम बात यह
है कि वे प्रयत्न करते रहें और जब तक जीवित रहें
आनन्द करते रहें। 13परमेश्वर चाहता है कि हर व्यक्ति
खाये पीये और अपने कर्म का आनन्द लेता रहे। ये बातें
परमेश्वर की ओर से प्राप्त उपहार हैं।

14मैं जानता हूँ कि परमेश्वर जो कुछ भी घटित
करता है वह सदा घटेगा ही। लोग परमेश्वर के काम में
कुछ भी वृद्धि नहीं कर सकते और इसी तरह लोग
परमेश्वर के काम में से कुछ घटी भी नहीं कर सकते
हैं। परमेश्वर ने ऐसा इसलिए किया कि लोग उसका
आदर करें। 15जो अब हो रहा है पहले भी हो चुका हैं।
जो कुछ भविष्य में होगा वह पहले भी हुआ था। परमेश्वर
घटनाओं को बार बार घटित करता है।

16इस जीवन में मैंने ये बातें भी देखी हैं। मैंने देखा है
कि न्यायालय जहाँ न्याय और अच्छाई होनी चाहिये,
वहाँ आज बुराई भर गई है। 17इसलिए मैंने अपने मन से
कहा, "हर बात के लिये परमेश्वर ने एक समय निश्चित
किया है। मनुष्य जो कुछ करते हैं उसका न्याय करने
के लिये भी परमेश्वर ने एक समय निश्चित किया है।
परमेश्वर अच्छे लोगों और बुरे लोगों का न्याय करेगा।"

क्या मनुष्य पशुओं जैसे ही हैं?

18लोग एक दूसरे के प्रति जो कुछ करते हैं उनके
बारे में मैंने सोचा और अपने आप से कहा, "परमेश्वर
चाहता है कि लोग अपने आपको उस रुप में देखें जिस
रूप में वे पशुओं को देखतें हैं।" 19क्या एक व्यक्ति एक
पशु से उत्तम है? नहीं। क्यों? क्योंकि हर वस्तु नाकारा
हैं। मृत्यु जैसे पशुओं को आती है उसी प्रकार मनुष्यों
को भी। मनुष्य और पशु एक ही श्वास लेते हैं। क्या
एक मरा हुआ पशु एक मरे हुए मनुष्य से भिन्न होता
है? 20मनुष्यों और पशुओं की देहों का अंत एक ही
प्रकार से होता है। वे मिट्टी से पैदा होते हैं और अंत में
वे मिट्टी में ही समा जाते हैं। 21कौन जानता है कि
मनुष्य की आत्मा का क्या होता है? क्या कोई जानता है
कि एक मनुष्य की आत्मा परमेश्वर के पास जाती है
जबकि एक पशु की आत्मा नीचे उतरकर धरती में जा
समाती है?

22सो मैंने यह देखा कि मनुष्य जो सबसे अच्छी बात
कर सकता है वह यह है कि वह अपने कर्म में आनन्द
लेता रहे। बस उसके पास यही है। किसी व्यक्ति को

भविष्य की चिन्ता भी नहीं करनी चाहिये। क्योंकि
भविष्य में क्या होगा उसे देखने में कोई भी उसकी
सहायता नहीं कर सकता।

क्या मर जाना श्रेष्ठ है?

4 मैंने फिर यह भी देखा है कि कुछ लोगों के साथ
बुरा व्यवहार किया जाता है। मैंने उनके आँसू देखे
हैं और फिर यह भी देखा है कि उन दु:खी लोगों को
ढाढ़स बँधाने वाला भी कोई नहीं हैं। मैंने देखा है कि
कठोर लोगों के पास समूची शक्ति है और ये लोग जिन
लोगों को क्षति पहुँचाते हैं उन्हें ढाढ़स बँधाने वाला भी
कोई नहीं हैं। 2मैं इस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि ये बातें
उन व्यक्तियों के लिये ज्यादा अच्छे हैं जो मर चुके है
बजाये उनके लिये जो अभी तक जी रहे हैं। 3उन लोगों
के लिये तो ये बातें और भी अच्छे है जो जन्म लेते ही
मर गए! क्यों? क्योंकि, उन्होंने इस संसार में जो बुराइयाँ
हो रही हैं, उन्हें देखा ही नहीं।

इतना कठिन परिश्रम क्यों?

4फिर मैंने सोचा, "लोग इतनी कड़ी मेहनत क्यों
करते हैं?" मैंने देखा है कि लोग सफल होने और दूसरे
लोगों से और अधिक ऊँचा होने के प्रयत्न में लगे रहते
हैं। ऐसा इसलिये होता है कि लोग ईष्यालु हैं। वे नहीं
चाहते कि जितना उनके पास है, दूसरे के पास उससे
अधिक हो। यह सब अर्थहीन है। यह वैसा ही है जैसे
वायु को पकड़ना।

5कुछ लोग कहा करते है कि हाथ पर हाथ रखकर
बैठे रहना और कुछ नहीं करना मूर्खता है। यदि तुम
काम नहीं करोगे तो भूखों मर जाओगे। 6जो कुछ मुट्ठी
भर तुम्हारे पास है उसमें संतुष्ट रहना अच्छा है बजाय
इसके

कि अधिकाधिक पाने की ललक में जूझते हुए वायु
के पीछे दौड़ा जाता रहे।

7फिर मैंने एक और बात देखी, जिसका कोई अर्थ
नहीं है: 8एक व्यक्ति परिवार विहीन हो सकता है। हो
सकता है उसके कोई पुत्र और यहाँ तक कि कोई भाई
भी न हो किन्तु वह व्यक्ति कठिन से कठिन परिश्रम
करने में लगा रहता है और जो कुछ उसके पास होता
है, उससे कभी संतुष्ट नहीं होता। सो मैं भी इतनी कड़ी
मेहनत क्यों करता हूँ? मैं स्वयं अपने जीवन का आनन्द
क्यों नहीं लेता हूँ? अब देखो यह भी एक दु:ख भरी
और व्यर्थ का बात हैं।

मित्रों और परिवार से शक्ति मिलती है

9एक व्यक्ति से दो व्यक्ति उत्तम होते हैं। जब दो व्यक्ति
मिलकर साथ साथ काम करते है तो जिस काम को वे
करते हैं, उस काम से उन्हें अधिक लाभ मिलता है।

10यदि एक व्यक्ति गिर जाये तो दूसरा व्यक्ति उसकी
मदद कर सकता है। किन्तु किसी व्यक्ति के लिये
अकेला रहना अच्छा नहीं है क्योंकि जब वह गिरता है
तो उसकी सहायता के लिए वहां कोई और नहीं होता।

11यदि दो व्यक्ति एक साथ सोते हैं तो उनमें गरमाहट
रहती है किन्तु अकेला सोता हुआ व्यक्ति कभी गर्म
नहीं हो सकता।

12अकेले व्यक्ति को शत्रु हरा सकता हैं किन्तु वही
शत्रु दो व्यक्तियों को नहीं हरा सकता और तीन व्यक्तियों
की शक्ति तो और भी अधिक होती है। वे एक ऐसे रस्से
के समान होते है, जिसकी तीन लटें आपस में गुंथी हुई
होती है, जिसे तोड़ पाना बहुत कठिन है।

लोग, राजनीति और प्रसिद्धि

13एक गरीब किन्तु बुद्धिमान युवा नेता, एक वृद्ध
किन्तु मूर्ख राजा से अच्छा है। वह वृद्ध राजा चेतावनियों
पर कान नहीं देता। 14हो सकता है वह युवा शासक
उस राज्य में गरीबी में पैदा हुआ हो और हो सकता है
वह कारागर से छूटकर देश पर शासन करने के लिये
आया हो। 15किन्तु इस जीवन में मैंने लोगों को देखा है
और मैं यह जानता हूँ कि लोग उस दूसरे युवानेता का
ही अनुसरण करते हैं और वही नया राजा बन जाता है।
16बहुत से लोग इस युवक के पीछे हो लेते हैं। किन्तु
आगे चलकर वे लोग भी उसे पसन्द नहीं करते इसलिये
यह सब भी व्यर्थ हैं। यह वैसा ही है जैसा कि वायु को
पकड़ने का प्रयत्न करना।

मनौती मानने में सावधानी

5 जब परमेश्वर की उपासना के लिये जाओ तो
बहुत अधिक सावधान रहो। अज्ञानियों के समान
बलियां चढ़ाने की अपेक्षा परमेश्वर की आज्ञा मानना
अधिक उत्तम है। अज्ञानी लोग प्राय: बुरे काम किया
करते हैं और उसे जानते तक नहीं है। 2परमेश्वर के
मन्नत मानते समय सावधान रहो। परमेश्वर से जो कुछ
कहो उन बातों के लिये सावधान रहो। भावना के
आवेश में, जल्दी में कुछ मत कहो। परमेश्वर स्वर्ग में
है और तुम धरती पर हो। इसलिये तुम्हें परमेश्वर से
बहुत थोड़ा बोलने की आवश्यकता हैं। यह कहावत
सच्ची है:

3अति चिंता से बुरे स्वप्न आया करते हैं। और
अधिक बोलने से मूर्खता उपजती है।

4यदि तुम परमेश्वर से कोई मनौती माँगते हो तो उसे
पूरा करो। जिस बात की तुमने मनौती मानी है उसे पूरा
करने में देर मत करो। परमेश्वर मूर्ख व्यक्तियों से
प्रसन्न नहीं रहता। तुमने परमेश्वर को जो कुछ अर्पित
करने का वचन दिया है उसे अर्पित करो। 5यह अच्छा
है कि तुम कोई मनौती मानो ही नहीं बजाय इसके कि

कोई मनौती मानो और उसे पूरा न कर पाओ। 6इसलिए
अपने शब्दों को तुम स्वयं को पाप में मत ढकेलने दो।
याजक से ऐसा मत बोलो कि, “जो कुछ मैंने कहा था
उसका यह अर्थ नहीं है!” यदि तुम ऐसा करोगे तो
परमेश्वर तुम्हारे शब्दों से रूष्ट होकर जिन वस्तुओं के
लिये तुमने कर्म किया है, उन सबको नष्ट कर देगा।
7अपने बेकार के सपनों और डींग मारने से विपत्तियों में
मत पड़ों। तुम्हें परमेश्वर का सम्मान करना चाहिये।

प्रत्येक अधिकारी के ऊपर एक अधिकारी है

8कुछ देशों में तुम ऐसे दीन-हीन लोगों को देखोगे
जिन्हें कड़ी मेहनत करने को विवश किया जाता है।
तुम देख सकते हो कि निर्धन लोगों के साथ यह व्यवहार
उचित नहीं है। यह गरीब लोगों के अधिकारों के विरुद्ध
है। किन्तु आश्चर्य मत करो। जो अधिकारी उन व्यक्तियों
को कार्य करने के लिये विवश करता है, और वे दोनों
अधिकारी किसी अन्य अधिकारी द्वारा विवश किये
जाते है। 9इतना होने पर भी किसी खेती योग्य भूमि पर
एक राजा का होना देश के लिए लाभदायक हैं।

धन से प्रसन्नता खरीदी नहीं जा सकती

10वह व्यक्ति जो धन को प्रेम करता है वह उस धन
से जो उसके पास है कभी संतुष्ट नहीं होता। वह व्यक्ति
जो धन को प्रेम करता है, जब अधिक से अधिक धन
प्राप्त कर लेता है तब भी उसका मन नहीं भरता। सो
यह भी व्यर्थ है।

11किसी व्यक्ति के पास जितना अधिक धन होगा
उसे खर्च करने के लिये उसके पास उतने ही अधिक
मित्र होंगे। सो उस धनी मनुष्य को वास्तव में प्राप्त कुछ
नहीं होता है। वह अपने धन को बस देखता भर रह
सकता है।

12एक ऐसा व्यक्ति जो सारे दिन कड़ी मेहनत करता
है, अपने घर लौटने पर चैन के साथ सोता है। यह
महत्व नहीं रखता है कि उसके पास खाने को कम है
या अधिक है। एक धनी व्यक्ति अपने धन की चिंताओं
में डूबा रहता है और सो तक नहीं पाता।

13बहुत बड़े दु:ख की बात है एक जिसे मैंने इस
जीवन में घटते देखा हैं। देखो एक व्यक्ति भविष्य के
लिये अपना धन बचाकर रखता है। 14और फिर कोई
बुरी बात घट जाती है और उसका सब कुछ जाता रहता
है और व्यक्ति के पास अपने पुत्र को देने के लिये कुछ
भी नहीं रहता।

हम खाली हाथ आते है और खाली हाथ चले जाते हैं

15एक व्यक्ति संसार में अपनी मां के गर्भ से खाली
हाथ आता हैं और जब उस व्यक्ति की मृत्यु होती है तो
वह बिना कुछ अपने साथ लिए सब यहीं छोड़ चला
जाता हैं। वस्तुओं को प्राप्त करने के लिये वह कठिन
परिश्रम करता है। किन्तु जब वह मरता है तो अपने
साथ कुछ नहीं ले जा पाता। 16यह बड़े दु:ख की बात हैं।
यह संसार उसे उसी प्रकार छोड़ना होता है जिस प्रकार
वह आया था। इसलिए “हवा को पकड़ने की कोशिश”
करने से किसी व्यक्ति के हाथ क्या लगता है? 17उसे
यदि कुछ मिलता है तो वह है दु:ख और शोक से भरे
हुए दिन। सो आखिरकार वह हताश, रोगी और चिड़चिड़ा
हो जाता है!

अपने जीवन के कर्म का रस लो

18मैंने तो यह देखा है कि मनुष्य जो कर सकता है
उसमें सबसे उत्तम यह है-एक व्यक्ति को चाहिये कि वह
खाए-पीए और जिस काम को वह इस धरती पर अपने
छोटे से जीवन के दौरान करता है उसका आनन्द ले।
परमेश्वर ने ये थोड़े से दिन दिए हैं और बस यही तो
उसके पास है।

19यदि परमेश्वर किसी को धन, सम्पत्ति, और उन
वस्तुओं का आनन्द लेने की शक्ति देता है तो उस
व्यक्ति को उनका आनन्द लेना चाहिए। उस व्यक्ति को
जो कुछ उसके पास है उसे स्वीकार करना चाहिए
और अपने काम को जो परमेश्वर की ओर से एक
उपहार है उसका रस लेना चाहिए। 20सो ऐसा व्यक्ति
कभी यह सोचता ही नहीं कि जीवन कितना छोटा सा
है। क्योंकि परमेश्वर उस व्यक्ति को उन कामों में ही
लगाये रखता है, जिन कामों के करने में उस व्यक्ति
की रूचि होती है।

धन से प्रसन्नता नहीं मिलती

6 मैंने जीवन में एक और बात देखी है जो ठीक नहीं
हैं। यह समझना बहुत कठिन है कि 2परमेश्वर
किसी व्यक्ति को बहुत सा धन देता है, सम्पत्तियाँ देता है
और आदर देता है। उस व्यक्ति के पास उसकी
आवश्यकता की वस्तु होती है और जो कुछ भी वह
चाह सकता है वह भी होता है। किन्तु परमेश्वर उस
व्यक्ति को उन वस्तुओं का भोग नहीं करने देता। तभी
कोई अजनबी आता है और उन सभी वस्तुओं को छीन
लेता है। यह एक बहुत बुरी और व्यर्थ बात है।

3कोई व्यक्ति बहुत दिनों तक जीता है और हो सकता
है उसके सौ बच्चे हो जाये। किन्तु यदि वह व्यक्ति उन
अच्छी वस्तुओं से सन्तुष्ट नहीं होता और यदि उसकी
मृत्यु के बाद कोई उसे याद नहीं करता तो मैं कहता हूँ
कि 4उस व्यक्ति से तो वह बच्चा ही अच्छा है जो जन्म
लेते ही मर जाता हैं। उस बच्चे को कोई नाम नहीं दिया
जाता और तत्काल ही उसे एक अँधेरी कब्र में दफना
दिया जाता है। 5उस बच्चे ने कभी सूरज तो देखा ही
नहीं। उस बच्चे ने कभी कुछ नहीं जाना किन्तु उस

व्यक्ति की किस्मत जिसने परमेश्वर की दी हुई वस्तुओं का कभी आनन्द नहीं लिया, उस बच्चे को अधिक चैन मिलता है। 6वह व्यक्ति चाहे दो हजार वर्ष जिए किन्तु वह जीवन का आनन्द नहीं उठाता तो वह बच्चा जो मरा ही पैदा हुआ हो, उस एक जैसे अंत अर्थात् मृत्यु को आसानी से पाता है।

7एक व्यक्ति निरन्तर काम करता ही रहता है क्यों? क्योंकि उसे अपनी इच्छाएं पूरी करनी है। किन्तु वह सन्तुष्ट तो कभी नहीं होता। 8इस प्रकार से एक बुद्धिमान व्यक्ति भी एक मूर्ख मनुष्य से किसी प्रकार उत्तम नहीं है। ऐसे दीन हीन मनुष्य होने का भी क्या फायदा हो सकता। 9वे वस्तुएँ जो तुम्हारे पास है, उनमें सन्तोष करना अच्छा है बजाय इसके कि और लगन लगी रहे। सदा अधिक की कामना करते रहना निरर्थक है। यह वैसे ही है जैसे वायु को पकड़ने का प्रयत्न करना।

10-11जो कुछ घट रहा है उसकी योजना बहुत पहले बन चुकी होती है। एक व्यक्ति बस वैसा ही होता है जैसा होने के लिए उसे बनाया गया है। हर कोई जानता है कि लोग कैसे होते हैं। सो इस विषय में परमेश्वर से तर्क करना बेकार हैं क्योंकि परमेश्वर किसी भी व्यक्ति से अधिक शक्तिशाली है।

12कौन जानता है कि इस धरती पर मनुष्य के छोटे से जीवन में उसके लिए सबसे अच्छा क्या है? उसका जीवन तो छाया के समान ढल जाता है। बाद में क्या होगा कोई नहीं बता सकता।

सूक्ति संग्रह

7 सुयश, अच्छी सुगन्ध से उत्तम है। वह दिन जन्म के दिन से सदा उत्तम है जब व्यक्ति मरता है। उत्तम है वह दिन व्यक्ति जब मरता हैं।

2उत्सव में जाने से जाना गर्मी में, सदा उत्तम हुआ करता है। क्योंकि सभी लोगों की मृत्यु तो निश्चित हैं। हर जीवित व्यक्ति को सोचना चाहिए इसे।

3हंसी के ठहाकेसे शोक उत्तम है। क्योंकि जब हमारें मुख पर उदासी का वास होता है, तो हमारे हृदय शुद्ध होते है।।

4विवेकी मनुष्य तो सोचता है मृत्यु की किन्तु मूर्ख जन तो बस सोचते रहते हैं कि गुजरे समय अच्छा।

5विवेकी से निन्दित होना उत्तम होता है, अपेक्षाकृत इसके कि मूर्ख से प्रशंसित हो।

6मूर्ख का ठहाका तो बेकार होता है। यह वैसे ही होता है जैसे कोई काँटो को नीचे जलाकर पात्र तपाये।

7लोगों को सताकर लिया हुआ धन विवेकी को भी मूर्ख बना देता है, और घूस में मिला धन उसकी मति को हर लेता है।

8बात को शुरु करने से अच्छा उसका अन्त करना है। उत्तम है नम्रता और धैर्य धीरज के खोने और अंहकार से। 9क्रोध में जल्दी से मत आओ क्योंकि क्रोध में आना मूर्खता है।

10मत कहो, "बीते दिनों में जीवन अच्छा क्यों था?" विवेकी हमें यह प्रश्न पूछनें को प्ररित नही करता है। विवेकी हमें प्रेरित नहीं करता है पूछने यह प्रश्न।

11जैसे उत्तराधिकार में सम्पत्ति का प्राप्त करना अच्छा है वैसे ही बुद्धि को पाना भी उत्तम है। जीवन के लिए यह लाभदायक है। 12धन के समान बुद्धि भी रक्षा करती है। बुद्धि के ज्ञान का लाभ यह है कि यह विवेकी जन को जीवित रखता है।

13परमेश्वर की रचना को देखो। देखो तुम एक बात भी बदल नहीं सकते। चाहे तुम यही क्यों न सोचो कि वह गलत है। 14जब जीवन उत्तम है तो उसका रस लो किन्तु जब जीवन कठिन है तो याद रखो कि परमेश्वर हमें कठिन समय देता है और अच्छा समय भी देता है और कल क्या होगा यह तो कोई भी नहीं जानता।

लोग सचमुच अच्छे नहीं हो सकते

15अपने छोटे से जीवन में मैंने सब कुछ देखा है। मैंने देखा है अच्छे लोग जवानी में ही मर जाते हैं। मैंने देखा है कि बुरे लोग लम्बी आयु तक जीते रहते हैं। 16-17सो अपने को हलकान क्यों करते हो? न तो बहुत अधिक धर्मी बनो और न ही बुद्धिमान अन्यथा तुम्हें ऐसी बातें देखने को मिलेगी जो तुम्हें आघात पहुँचाएगी न तो बहुत अधिक दुष्ट बनो और न ही मूर्ख अन्यथा समय से पहले ही तुम मर जाओगे।

18थोड़ा यह बनों और थोड़ा वह।6यहाँ तक कि परमेश्वर के अनुयायी भी कुछ अच्छा करेंगे तो बुरा भी। 19-20निश्चय ही इस धरती पर कोई ऐसा अच्छा व्यक्ति नहीं है जो सदा अच्छा ही अच्छा करता है और बुरा कभी नहीं करता।

बुद्धि व्यक्ति को शक्ति देती है। किसी नगर के दस मूर्ख मुखियाओं से एक साधारण बुद्धिमान पुरुष अधिक शक्तिशाली होता है।

21लोग जो बातें कहते रहते हैं उन सब पर कान मत दो। हो सकता है तुम अपने सेवक को ही तुम्हारे विषय में बुरी बातें कहते सुनो 22और तुम जानते हो कि तुमने भी अनेक अवसरों पर दूसरों के बारे में बुरी बातें कही हैं।

23इन सब बातों के बारे में मैंने अपनी बुद्धि और विचारों का प्रयोग किया है। मैंने सच्चे अर्थ में बुद्धिमान बनना चाहा है। किन्तु यह तो असम्भव था। 24मैं समझ नहीं पाता कि बातें वैसी क्यों है जैसी वे हैं। किसी के लिये भी यह समझना बहुत मुश्किल है। 25मैंने अध्ययन किया और सच्ची बुद्धि को पाने के लिये बहुत कठिन प्रयत्न किया। मैंने हर वस्तु का कोई हेतु ढूँढने का प्रयास किया किन्तु मैंने जाना क्या? मैंने जाना कि बुरा

होना बेवकूफी है और मूर्ख व्यक्ति का सा आचरण
करना पागलपन हैं।
26मैंने यह भी पाया कि कुछ स्त्रियाँ एक फन्दे के
समान खतरनाक होती हैं। उनके हृदय जाल के जैसे
होते हैं और उनकी बाहें जंजीरों की तरह होती हैं। इन
स्त्रियों की पकड़ में आना मौत की पकड़ में आने से भी
बुरा हैं। वे लोग जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं, ऐसी
स्त्रियों से बच निकलते हैं किन्तु वे लोग जो परमेश्वर
को अप्रसन्न करते हैं उनके द्वारा फाँस लिये जाते हैं।
27-28गुरू का कहना है, "इन सभी बातों को एक
साथ इकट्ठी करके मैंने सामने रखा, यह देखने के
लिये कि मैं क्या उत्तर पा सकता हूँ? उत्तरों की खोज में
तो मैं आज तक हूँ। किन्तु मैंने इतना तो पा ही लिया है
कि हजारों में कोई एक अच्छा पुरुष तो मुझे मिला भी
किन्तु अच्छी स्त्री तो कोई एक भी नहीं मिली।
29"एक बात और जो मुझे पता चली है। परमेश्वर ने
तो लोगों को नेक ही बनाया था किन्तु लोगों ने बुराई के
अनेकों रास्ते ढूँढ लिये।"

बुद्धि और शक्ति

8 वस्तुओं को जिस प्रकार एक बुद्धिमान व्यक्ति समझ
सकता है और उनकी व्याख्या कर सकता है, वैसे
कोई भी नहीं कर सकता। उसकी बुद्धि उसे प्रसन्न
रखती है। बुद्धि एक दुःखी मुख को प्रसन्न मुख में बदल
देती है।
2मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम्हें सदा ही राजा की आज्ञा
माननी चाहिये। ऐसा इसलिए करो क्योंकि तुमने परमेश्वर
को वचन दिया था। 3राजा के आगे जल्दी मत करो।
उसके सामने से हट जाओ। यदि हालात प्रतिकूल हो तो
उसके ईर्द-गिर्द मत रहो क्योंकि वह तो वही करेगा जो
उसे अच्छा लगेगा। 4आज्ञाएँ देने का राजा को अधिकार
हैं, कोई नहीं पूछ सकता कि वह क्या कर रहा है।
5यदि राजाज्ञा का पालन करता है तो वह सुरक्षित
रहेगा। किन्तु एक बुद्धिमान व्यक्ति ऐसा करने का
उचित समय जानता है और वह यह भी जानता है कि
समुचित बात कब करनी चाहिए।
6उचित कार्य करने का किसी व्यक्ति के लिए एक
ठीक समय होता है और एक ठीक प्रकार। प्रत्येक
व्यक्ति को एक अवसर लेना चाहिये और उसे निश्चित
करना चाहिए कि उसे क्या करना है? और फिर
अनेक विपत्तियों के होने पर भी उसे वह करना चाहिये।
7आगे चलकर क्या होगा, यह निश्चित नहीं होने पर
भी उसे वह करना चाहिये। क्योंकि भविष्य में क्या
होगा यह तो उसे कोई बता ही नहीं सकता।
8आत्मा को इस देह को छोड़कर जाने से कोई नहीं
रोके रख सकता है। अपनी मृत्यु को रोक दें, ऐसी
शक्ति तो किसी भी व्यक्ति में नहीं है। जब युद्ध चल रहा
हो तो किसी भी सैनिक को यह स्वतन्त्रता नहीं है कि
वह जहाँ चाहे वहाँ चला जाये। इसी प्रकार यदि कोई
व्यक्ति पाप करता है तो वह पाप उस व्यक्ति को स्वतंन्त्र
नहीं रहनेदेता।
9मैंने ये सब बातें देखी हैं। इस जगत में जो कुछ घटता
है उन बातों के बारे में मैंने बड़ी तीव्रता से सोचा है और
मैंने देखा है कि लोग दूसरे व्यक्तियों पर शासन करने
की शक्ति पाने के लिये सदा संघर्ष करते रहते हैं और
लोगों को कष्ट पहुँचाते रहते हैं।
10मैंने उन बुरे व्यक्तियों के बहुत सजे धजे और
विशाल शव-यात्रायें देखी हैं जो पवित्र स्थानों में आया
जाया करते थे। शव-यात्राओं की क्रियाओं के बाद लोग
जब घर लौटते हैं तो वे जो बुरा व्यक्ति मर चुका है
उसके बारे में अच्छी अच्छी बातें कहा करते हैं और
ऐसा उसी नगर में हुआ करता है जहाँ उस बुरे व्यक्ति ने
बहुत बहुत से बुरे काम किये हैं। यह अर्थहीन हैं।

न्याय प्रतिदान और दण्ड

11कभी कभी लोगों ने जो बुरे काम किये है, उनके
लिये उन्हें तुरतं दण्ड नहीं मिलता। उन पर दण्ड धीरे
धीरे पड़ता है और इसके कारण दूसरे लोग भी बुरे कर्म
करना चाहने लगते हैं।
12कोई पापी चाहे सैकड़ों पाप करे और चाहे उसकी
आयु कितनी ही लम्बी हो किन्तु मैं यह जानता हूँ कि
तो भी परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना और
उसका सम्मान करना उत्तम है। 13बुरे लोग परमेश्वर
का सम्मान नहीं करते। सो ऐसे लोग वास्तव में अच्छी
वस्तुओं को प्राप्त नहीं करते। वे बुरे लोग अधिक समय
तक जीवित नहीं रहेंगे। उनके जीवन डूबते सूरज में
लम्बी से लम्बी होती जाती छायाओं के समान बड़े नहीं
होंगे।
14इस धरती पर एक बात और होती है जो मुझे न्याय
संगत नहीं लगती। बुरे लोगों के साथ बुरी बातें घटनी
चाहियें और अच्छे लोगों के साथ अच्छी बातें। किन्तु
कभी कभी अच्छे लोगों के साथ बुरी बातें घटती हैं
और बुरे लोगों के साथ अच्छी बातें। यह तो न्याय नहीं
है। 15सो मैंने निश्चय किया कि जीवन का आनन्द
लेना अधिक महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि इस जीवन में एक
व्यक्ति जो सबसे अच्छी बात कर सकता है वह है खाना,
पीना और जीवन का रस लेना। इससे कम से कम
व्यक्ति को इस धरती पर उसके जीवन के दौरान परमेश्वर
ने करने के लिये जो कठिन काम दिया है उसका
आनन्द लेने में सहायतामिलेगी।
16इस जीवन में लोग जो कुछ करते हैं उसका मैंने
बड़े ध्यान के साथ अध्ययन किया है। मैंने देखा हैं कि
लोग कितने व्यस्त हैं। वे प्राय: बिना सोए रात दिन काम
में लगे रहते हैं। 17परमेश्वर जो करता है उन बहुत सी

बातों को भी मैंने देखा है कि इस धरती पर परमेश्वर
जो कुछ करता है, लोग उसे समझ नहीं सकते। उसे
समझने के लिये मनुष्य बार बार प्रयत्न करता है।
किन्तु फिर भी समझ नहीं पाता। यदि कोई बुद्धिमान
व्यक्ति भी यह कहे कि वह परमेश्वर के कामों को
समझता है तो यह भी सत्य नहीं है। उन सब बातों को
तो कोई भी व्यक्ति समझ ही नहीं सकता।

क्या मृत्यु उचित है?

9 मैंने इन सभी बातों के बारे में बड़े ध्यान से सोचा है
और देखा है कि अच्छे और बुद्धिमान लोगों के
साथ जो घटित होता है और वे जो काम करते हैं
उनका नियन्त्रण परमेश्वर करता है। लोग नहीं जानते
कि उन्हें प्रेम मिलेगा या घृणा और लोग नहीं जानते हैं
कि कल क्या होने वाला हैं।
2किन्तु, एक बात ऐसी है जो हम सब के साथ घटती
है-हम सभी मरते हैं! मृत्यु अच्छे लोगों को भी आती है
और बुरे लोगों को भी। पवित्र लोगों को भी मृत्यु आती
है और जो पवित्र नहीं है, वे भी मरते हैं। लोग जो
बलियाँ चढ़ाते हैं, वे भी मरते हैं, और वे भी जो बलियाँ
नहीं चढ़ाते हैं। धर्मी जन भी वैसे ही मरता है, जैसे एक
पापी। वह व्यक्ति जो परमेश्वर को विशेष वचन देता है,
वह भी वैसे ही मरता है जैसे वह व्यक्ति जो उन वचनों
को देने से घबराता है।
3इस जीवन में जो भी कुछ घटित होता है उसमें सबसे
बुरी बात यह है कि सभी लोगों को अंत एक ही तरह से
होता है। साथ ही यह भी बहुत बुरी बात है कि लोग
जीवन भर सदा ही बुरे और मूर्खतापूर्ण विचारों में पड़े
रहते हैं और अन्त में मर जाते हैं। 4हर उस व्यक्ति के
लिये जो अभी जीवित है, एक आशा बची है। इससे कोई
अंतर नहीं पड़ता कि वह कौन है? यह कहावत सच्ची
है:

"किसी मरे हुए सिंह से एक जीवित कुता अच्छा
है।"

5जीवित लोग जानते हैं कि उन्हें मरना है। किन्तु मरे
हुए तो कुछ भी नहीं जानते। मरे हुओं को कोई और
प्रतिदान नहीं मिलता। लोग उन्हें जल्दी ही भूल जाते हैं।
6किसी व्यक्ति के मर जाने के बाद उसका प्रेम, घृणा
और ईर्ष्या सब समाप्त हो जाते हैं। मरा हुआ व्यक्ति
संसार में जो कुछ हो रहा है, उसमें कभी हिस्सा नहीं
बँटाता।

जीवन का आनन्द लो जबकि तुम ले सकते हो

7सो अब तुम जाओ और अपना खाना खाओ और
उसका आनन्द लो। अपना दाखमधु पिओ और खुश
रहो। यदि तुम ये बातें करते हो तो ये बाते परमेश्वर से
समर्थित है। 8उत्तम वस्त्र पहनो और सुन्दर दिखो। 9जिस
पत्नी को तुम प्रेम करते हो उसके साथ जीवन का भोग
करो। अपने छोटे से जीवन के प्रत्येक दिन का आनन्द
लो। 10हर समय करने के लिये तुम्हारे पास काम है।
इसे तुम जितनी उत्तमता से कर सकते हो करो। कब्र में
तो कोई काम होगा ही नहीं। वहाँ न तो चिन्तन होगा, न
ज्ञान और न विवेक और मृत्यु के उस स्थान को हम
सभी तो जा रहेहैं।

सौभाग्य? दुर्भाग्य? हम कर क्या सकते हैं?

11मैंने इस जीवन में कुछ और बातें भी देखी हैं जो
न्याय संगत नहीं हैं। सबसे अधिक तेज दौड़ने वाला सदा
ही दौड़ में नहीं जीतता, शक्तिशाली सेना ही युद्ध में सदा
नहीं जीतती। सबसे अधिक बुद्धिमान व्यक्ति ही सदा
अर्जित किये को नहीं खाता। सबसे अधिक चुस्त व्यक्ति
ही सदा धन दौलत हासिल नहीं करता है और एक पढ़ा
लिखा व्यक्ति ही सदा वैसी प्रशंसा प्राप्त नहीं करता जैसी
प्रशंसा के वह योग्य है। जब समय आता हैं तो हर किसी
के साथ बुरी बातें घट जाती हैं!
12कोई भी व्यक्ति यह नहीं जानता है कि इसके बाद
उसके साथ क्या होने वाला है। वह जाल में फँसी उस
मछली के समान होता है जो यह नहीं जानती कि आगे
क्या होगा। वह उस जाल में फँसी चिड़िया के समान
होता है जो यह नहीं जानती कि क्या होने वाला है? इसी
प्रकार एक व्यक्ति उन बुरी बातों में फाँस लिया जाता है
जो उसके साथ घटती हैं।

विवेक की शक्ति

13इस जीवन में मैंने एक व्यक्ति को एक विवेकपूर्ण
कार्य करते देखा है और मुझे यह बहुत महत्वपूर्ण लगा
है। 14एक छोटा सा नगर हुआ करता था। उसमें थोड़े से
लोग रहा करते थे। एक बहुत बड़े राजा ने उसके
विरुद्ध युद्ध किया और नगर के चारों ओर अपनी सेना
लगा दी। 15उसी नगर में एक बुद्धिमान पुरुष रहता था।
वह बहुत निर्धन था। किन्तु उसने उस नगर को बचाने
के लिये अपनी बुद्धि का उपयोग किया। जब नगर की
विपत्ति टल गयी और सब कुछ समाप्त हो गया तो लोगों
ने उस गरीब व्यक्ति को भुला दिया। 16किन्तु मेरा
कहना है कि बल से बुद्धि श्रेष्ठ है। यद्यपि लोग उस
गरीब व्यक्ति की बुद्धि के बारे में भूल गये और जो कुछ
उसने कहा था, उस पर भी उन लोगों ने कान देना बन्द
कर दिया। किन्तु मेरा तो अभी भी यही विश्वास है कि
बुद्धि ही श्रेष्ठ होतीहै।
17धीरे से बोले गये, विवेकी के थोड़े से शब्द अधिक
उत्तम होते है, अपेक्षाकृत उन ऐसे शब्दों को जिन्हें मूर्ख
शासक ऊँची आवाज में बोलता है।

18बुद्धि, उन भोलों से और ऐसी तलवारों से उत्तम है जो युद्ध में काम आते हैं। बुद्धिहीन व्यक्ति, बहुत सी उत्तम बातें नष्ट कर सकता है।

10 कुछ मरी हुई मक्खियाँ सर्वोत्तम सुगंध तक को दुर्गंधित कर सकती हैं। इसी प्रकार छोटी सी मूर्खता से समूची बुद्धि और प्रतिष्ठा नष्ट हो सकती है।

2बुद्धिमान के विचार उसे उचित मार्ग पर ले चलाते हैं। किन्तु मूर्ख के विचार उसे बुरे रास्ते पर ले जाते हैं। 3मूर्ख जब रास्ते में चलता हुआ होता है तो उसके चलने मात्र से उसकी मूर्खता व्यक्त होती हैं। जिससे हर व्यक्ति देख लेता है कि वह मूर्ख हैं।

4तुम्हारा अधिकारी तुमसे रुष्ट है, बस इसी कारण से अपना काम कभी मत छोड़ो। यदि तुम शांत और सहायक बने रहो तो तुम बड़ी से बड़ी गलतियों को सुधार सकतेहो।

5और देखो यह बात कुछ अलग ही है जिसे मैंने इस जीवन में देखा है। यह बात न्यायोचित भी नहीं है। यह वैसी भूल है जैसी शासक किया करते हैं। 6मूर्ख व्यक्तियों को महत्वपूर्ण पद दे दिये जाते हैं और सम्पन्न व्यक्ति ऐसे कामों को प्राप्त करते है जिनका कोई महत्व नहीं होता। 7मैंने ऐसे व्यक्ति देखे हैं जिन्हें दास होना चाहिए था। किन्तु वह घोड़ों पर चढ़े रहते हैं। जबकि वे व्यक्ति जिन्हें शासक होना चाहिये था, दासों के समान उनके आगे पीछे घूमते रहते हैं।

हर काम के अपने खतरे हैं

8वह व्यक्ति जो कोई गढ़ा खोदता है उसमें गिर भी सकता है। वह व्यक्ति जो किसी दीवार को गिराता है, उसे साँप डस भी सकता हैं। 9एक व्यक्ति जो बड़े-बड़े पत्थरों को धकेलता है, उनसे चोट भी खा सकता है और वह व्यक्ति जो पेड़ों को काटता है, उसके लिए यह खतरा भी बना रहता है कि पेड़ उसके उपर ही न गिर जायें।

10किन्तु बुद्धि के कारण हर काम आसान हो जाता है। भोंटे, बेधार चाकू से काटना बहुत कठिन होता हैं किन्तु यदि वह अपना चाकू पैना कर ले तो काम आसान हो जाता है। बुद्धि इसी प्रकार की है।

11कोई व्यक्ति यह जानता है कि सांपों को वश में कैसे किया जाता है किन्तु जब वह व्यक्ति आस पास नहीं है और साँप किसी को काट लेता है तो वह बुद्धि बेकार हो जाती है। बुद्धि इसी प्रकार की है।

12बुद्धिमान के शब्द प्रशंसा दिलाते हैं। किन्तु मूर्ख के शब्दों से विनाश होता है।

13एक मूर्ख व्यक्ति मूर्खतापूर्ण बातें कहकर ही शुरुआत करता है। और अंत में वह पागलपन से भरी हुई स्वयं को ही हानि पहुँचाने वाली बातें कहता है। 14एक मूर्ख व्यक्ति हर समय जो उसे करना होता है, उसी की बातें करता रहता है। किन्तु भविष्य में क्या होगा यह तो कोई नहीं जानता। भविष्य में क्या होने जा रहा है, यह तो कोई बता ही नहीं सकता।

15मूर्ख इतना चतुर नहीं कि अपने घर का मार्ग पा जाये। इसलिए उसको तो जीवन भर कठोर काम करना है।

कर्म का मूल्य

16किसी देश के लिये यह बहुत बुरा है कि उसका राजा किसी बच्चे जैसा हो और किसी देश के लिये यह बहुत बुरा है कि उसके अधिकारी अपना सारा समय खाने में ही गुजारते हों। 17किन्तु किसी देश के लिये यह बहुत अच्छा है कि उसका राजा किसी उत्तम वंश का हो। किसी देश के लिये यह बहुत उत्तम है कि उसके अधिकारी अपने खाने और पीने पर नियन्त्रण रखते हैं। वे अधिकारी बलशाली होने के लिये खाते पीते हैं न कि मतवाले हो जाने के लिये।

18यदि कोई व्यक्ति काम करने में बहुत सुस्त है, तो उसका घर टपकना शुरु कर देगा और उसके घर की छत गिरने लगेगी।

19लोग भोजन का आनन्द लेते हैं और दाखमधु जीवन को और अधिक खुशियों से भर देती हैं। किन्तु धन के चक्कर में सभी पड़े रहते हैं।

निन्दा पूर्ण बातें

20राजा के विषय में बुरी बातें मत करो। उसके बारे में बुरी बातें सोचो तक मत। सम्पन्न व्यक्तियों के विषय में भी बुरी बातें मत करो। चाहे तुम अपने घर में अकेले ही क्यों न हो। क्योंकि हो सकता है कि कोई एक छोटी सी चिड़ियाँ उड़कर तुमने जो कुछ कहा है, वह हर बात उन्हें बता दे।

निर्भीक होकर भविष्य का सामना करो

11 तुम जहाँ भी जाओ, वहाँ उत्तम कार्य करो। थोड़े समय बाद तुम्हारे उत्तम कार्य वापस लौट कर तुम्हारे पास आएंगे। 2जो कुछ तुम्हारे पास है उसका कुछ भाग सात आठ लोगों को दे दो। तुम जान ही नहीं सकते कि इस धरती पर कब क्या बुरा घट जाएं?

3कुछ बातें ऐसी हैं जिनके बारे में तुम निश्चित हो सकते हो। जैसे बादल वर्षा से भरे है तो वे धरती पर पानी बरसाएंगे ही। यदि कोई पेड़ गिरता है चाहे दाहिनी तरफ गिरे, चाहे बायीं तरफ गिरता है। वह वहीं पड़ा रहेगा जहाँ वह गिरा है।

4किन्तु कुछ बातें ऐसी होती हैं जिनके बारे में तुम निश्चित नहीं हो सकते। फिर भी तुम्हें एक अवसर तो लेना ही चाहिए। जैसे यदि कोई व्यक्ति पूरी तरह से उत्तम मौसम का इंतजार करता रहता है तो वह अपने बीज बो ही नहीं सकता है और इसी तरह कोई व्यक्ति

इस बात से डरता रहता है कि हर बादल बरसेगा ही तो
वह अपनी फसल कभी नहीं काट सकेगा।
5हवा का रूख कहाँ होगा तुम नहीं जान सकते। तुम
नहीं जानते कि मां के गर्भ में बच्चा प्राण कैसे पाता है?
इसी प्रकार तुम यह भी नहीं जान सकते कि परमेश्वर
क्या करेगा? सबकुछ को घटित करने वाला तो वही है।
6इसलिए सुबह होते ही रूपाई शुरु कर दो और दिन
ढले तक काम मत रोको। क्योंकि तुम नहीं जानते कि
कौन सी बात तुम्हें धनवान बना देगी। हो सकता है तुम
जो कुछ करो सब में सफल हो।
7जीवित रहना उत्तम है। सूर्य का प्रकाश देखना अच्छा
है। 8तुम्हें अपने जीवन के हर दिन का आनन्द उठाना
चाहिये! तुम चाहे कितनी ही लम्बी आयु पाओ। पर याद
रखना कि तुम्हें मरना है और तुम जितने समय तक
जिए हो उससे कहीं अधिक समय तक तुम्हें मृत रहना
है और मर जाने के बाद तो तुम कुछ कर नहीं सकते।

युवावस्था में ही परमेश्वर की सेवा करो

9सो हे युवको! जब तक तुम जवान हो, आनन्द
मनाओ। प्रसन्न रहो! और जो तुम्हारा मन चाहे, वही
करो। जो तुम्हारी इच्छा हो वह करो। किन्तु याद रखों
तुम्हारे प्रत्येक कार्य के लिए परमेश्वर तुम्हारा न्याय
करेगा। 10क्रोध को स्वयं पर काबू मत पाने दो और
अपने शरीर को भी कष्ट मत दो। तुम अधिक समय
तक जवान नहीं बने रहोगे।

बुढ़ापे की समस्याएँ

12 बचपन से ही अपने बनाने वाले का स्मरण
करो। इससे पहले कि बुढ़ापे के बुरे दिन तुम्हें
आ घेरें। पहले इसके कि तुम्हें यह कहना पड़े कि
"हाय, मैं जीवन का रस नहीं ले सका।"
2बचपन से ही अफने बनाने वाले का समरण कर।
जब तुम बुढ़े होंगे तो सूर्य चन्द्रमा और सितारों की
रोशनी तुम्हें अंधेरी लगेंगीं। तुम्हारा जीवन विपत्तियों से
भर जाएगा। ये विपत्तियाँ उन बादलों की तरह ही होंगीं
जो आकाश में वर्षा करते हैं और फिर कभी नहीं
छँटते।
3उस समय तुम्हारी बलशाली भुजाएं निर्बल हो जायेंगी।
तुम्हारे सुदृढ़ पैर कमजोर हो जायेंगे और तुम अपना
खाना तक चबा नहीं सकोगे। आँखों से साफ दिखाई तक
नहीं देगा। 4तुम बहरे हो जाओगे। बाजार का शोर भी
तुम सुन नहीं पाओगे। चलती चक्की भी तुम्हें बहुत शांत
दिखाई देगी। तुम बड़ी मुश्किल से लोगों को गाते सुन
पाओगे। तुम्हें अच्छी नींद तो आएगी ही नहीं। जिससे
चिड़ियाँ की चहचहाहट भोर के तड़के ही तुम्हें जगादेगी।
5चढ़ाई वाले स्थानों से तुम डरने लगोगे। रास्तें की
हर छोटी से छोटी वस्तु से तुम डरने लगोगे कि तुम
कहीं उस पर लड़खड़ा न जाओ। तुम्हारे बाल बादाम के
फूलों के जैसे सफेद हो जायेंगे। तुम जब चलोगे तो उस
प्रकार घिसटते चलोगे जैसे कोई टिड्डा हो। तुम इतने
बूढ़े हो जाओगे कि तुम्हारी भूख जाती रहेगी। फिर तुम्हें
अपने नए घर यानि कब्र में नित्य निवास के लिये जाना
होगा और तुम्हारी मुर्दनी में शामिल लोगों की भीड़ से
गलियाँ भर जायेगीं।

मृत्यु

6अभी जब तू युवा है, अपने बनानेवालें को यादरख।
इसके पहले कि चांदी की जीवन डोर टूट जाये और
सोने का पात्र टूटकर बिखर जाये। इसके पहले कि तेरा
जीवन बेकार हो जाये जैसे किसी कुएँ पर पात्र टूट पड़ा
हो। इसके पहले कि तेरा जीवन बेकार हो जाये ऐसे,
जैसे टूटा पत्थर जो किसी को ढ़कता है और उसी में
टूटकर गिर जाता है।
7तेरी देह मिट्टी से उपजी है और जब मृत्यु होगा तो
तेरी वह देह वापस मिट्टी हो जायेगी। किन्तु यह प्राण
तेरा परमेश्वर से आया है और जब तू मरेगा, तेरा यह
प्राण वापस परमेश्वर के पास जायेगा। 8सब कुछ बेकार
है, उपदेशक कहता है कि सबकुछ व्यर्थ है!

निष्कर्ष

9उपदेशक बहुत बुद्धिमान था। वह लोगों को शिक्षा
देने में अपनी बुद्धि का प्रयोग किया करता था। उपदेशक
ने बड़ी सावधानी के साथ अध्ययन किया और अनेक
सूक्तियों को व्यवस्थित किया। 10उपदेशक ने उचित
शब्दों के वचन के लिये कठिन परिश्रम किया और
उसने उन शिक्षाओं को लिखा जो सच्ची है और जिन
पर भरोसा किया जा सकता है।
11विवेकी पुरुषों के वचन उन नुकीली छड़ियों के
जैसे होते हैं जिनका उपयोग पशुओं को उचित मार्ग पर
चलाने के लिये किया जाता हैं। ये उपदेशक उन मज़बूत
खूंटों के समान होते हैं जो कभी टूटते नहीं। जीवन का
उचित मार्ग दिखाने के लिये तुम इन उपदेशकों पर
विश्वास कर सकते हो। वे सभी विवेक पूर्ण शिक्षायें
उसी गड़रिये (परमेश्वर) से आतीं हैं। 12सो पुत्र! एक
चेतावनी और लोग तो सदा पुस्तकें लिखते ही रहते हैं।
बहुत ज्यादा अध्ययन तुझे बहुत थका देगा।
13-14इस सबकुछ को सुन लेने के बाद अब एक
अन्तिम बात यह बतानी है कि परमेश्वर का आदर
करो और उसके आदेशों पर चलो क्योंकि यह नियम
हर व्यक्ति पर लागू होता है। क्योंकि लोग जो करते हैं,
उसे यहाँ तक कि उनकी छिपी से छिपी बातों को भी
परमेश्वर जानता है। वह उनकी सभी अच्छी बातों और
बुरी बातों के विषय में जानता है। मनुष्य जो कुछ भी
करते हैं उस प्रत्येक कर्म का वह न्याय करेगा।

श्रेष्ठगीत

1 सुलैमान का श्रेष्ठगीत।

प्रेमिका का अपने प्रेमी के प्रति

2तू मुझ को अपने मुख के चुम्बनों से ढक ले।
क्योंकि तेरा प्रेम दाखमधु से भी उत्तम है।
3तेरा नाम मूल्यवान इत्र से उत्तम है, और तेरी गंध
अद्‌भुत है। इसलिए कुमारियाँ तुझ से प्रेम करती हैं।
4हे मेरे राजा तू मुझे अपने संग ले ले! और हम कहीं
दूर भाग चलें! राजा मुझे अपने कमरे में ले गया।

पुरुष के प्रति यरूशलेम की स्त्रियाँ

हम तुझ में आनन्दित और मगन रहेंगे। हम तेरी बड़ाई करते हैं। क्योंकि तेरा प्रेम दाखमधु से उत्तम है। इसलिए कुमारियाँ तुझ से प्रेम करती है।

स्त्री का वचन स्त्रियों के प्रति

5हे यरुशलेम की पुत्रियों, मैं काली हूँ किन्तु सुन्दर हूँ।
मैं तैमान और सलमा के तम्बूओं के जैसे काली हूँ।
6मुझे मत घूर कि मैं कितनी साँवली हूँ। सूरज ने मुझे
कितना काला कर दिया है। मेरे भाई मुझ से क्रोधित थे। इसलिए दाख के बगीचों की रखवाली करायी। इसलिए मैं अपना ध्यान नहीं रख सकी।

स्त्री का वचन पुरुष के प्रति

7मैं तुझे अपनी पूरी आत्मा से प्रेम करती हूँ! मेरे प्रिये मुझे बता; तू अपनी भेड़ों को कहाँ चराता है? दोपहर में उन्हें कहाँ बिठाया करता है? मुझे ऐसी एक लड़की के पास नहीं होना जो घूंघट काढ़ती है, जब वह तेरे मित्रों की भेड़ों के पास होती है!

पुरुष का वचन स्त्री के प्रति

8तू निश्चय ही जानती है कि स्त्रियों में तू ही सुन्दर है!
जा, पीछे पीछे चली जा, जहाँ भेड़ें और बकरी के बच्चे जाते हैं। निज गड़रियों के तम्बूओं के पास चरा।
9मेरी प्रिये, मेरे लिए तू उस घोड़ी से भी बहुत अधिक
उत्तेजक है जो उन घोड़ों के बीच फिरौन के रथ को खींचा करते हैं। वे घोड़े मुख के किनारे से गर्दन तक सुन्दर सुसज्जित हैं।
10-11तेरे लिये हम ने सोने के आभूषण बनाए हैं।
जिनमें चाँदी के दाने लगें हैं। तेरे सुन्दर कपोल कितने अलंकृत हैं। तेरी सुन्दर गर्दन मनकों से सजी हैं।

स्त्री का वचन

12मेरे इत्र की सुगन्ध, गद्दी पर बैठे राजा तक फैलती
है।
13मेरा प्रियतम रस गन्ध के कुप्पे सा है। वह मेरे वक्षों
के बीच सारी रात सोयेगा।
14मेरा प्रिय मेरे लिये मेंहदी के फूलों के गुच्छों जैसा है
जो एनगदी के अंगूर के बगीचे में फलता है।

पुरुष का वचन

15मेरी प्रिये, तुम रमणीय हो! ओह, तुम कितनी सुन्दर
हो! तेरी आँखे कपोतों की सी सुन्दर हैं।

स्त्री का वचन

16हे मेरे प्रियतम, तू कितना सुन्दर है! हाँ, तू मनमोहक
है! हमारी सेज कितनी रमणीय है!
17कड़ियाँ जो हमारे घर को थामें हुए हैं वह देवदारु
की हैं। कड़ियाँ जो हमारी छत को थामा हुआ है, सनोवर की लकड़ी का है।

2 मैं शारोन के केसर के पाटल सी हूँ। मैं घाटियों की कुमुदिनी हूँ।

पुरुष का वचन

2हे मेरी प्रिये, अन्य युवतियों के बीच तुम वैसी ही हो
मानों काँटों के बीच कुमुदिनी हो!

स्त्री का वचन

3मेरे प्रिय, अन्य युवकों के बीच तुम ऐसे लगते हो
जैसे जंगल के पेड़ों में कोई सेब का पेड़!

स्त्री का वचन स्त्रियों के प्रति

मुझे अपने प्रियतम की छाया में बैठना अच्छा लगता है; उसका फल मुझे खाने में अति मीठा लगता है।
4मेरा प्रिय मुझको मधुशाला में ले आया; मेरा प्रेम
उसका संकल्प था।

5मैं प्रेम की रोगी हूँ अत: मुनक्का मुझे खिलाओ
और सेबों से मुझे ताजा करो।
6मेरे सिर के नीचे प्रियतम का बाँया हाथ है, और
उसका दाँया हाथ मेरा आलिंगन करता है।
7यरूशलेम की कुमारियों, कुरंगों और जंगली हिरणियों
को साक्षी मान कर मुझ को वचन दो, प्रेम को मत
जगाओ, प्रेम को मत उकसाओ, जब तक मैं तैयार न
हो जाऊँ।

स्त्री ने फिर कहा

8मैं अपने प्रियतम की आवाज सुनती हूँ। यह पहाड़ों
से उछलती हुई और पहाड़ियों से कूदती हुई आती है।
9मेरा प्रियतम सुन्दर कुरंगअथवा हरिण जैसा है। देखो
वह हमारी दीवार के उस पार खड़ा है, वह झंझरी से
देखते हुए खिड़कियों को ताक रहा है।
10मेरा प्रियतम बोला और उसने मुझसे कहा, “उठो,
मेरी प्रिये, हे मेरी सुन्दरी, आओ कहीं दूर चलें!
11देखो, शीत ऋतु बीत गई है, वर्षा समाप्त हो गई
और चली गई है।
12धरती पर फूल खिलें हुए हैं। चिड़ियों के गाने का
समय आ गया है! धरती पर कपोत की ध्वनि गुंजित है।
13अंजीर के पेड़ों पर अंजीर पकने लगे हैं। अंगूर की
बेलें फूल रही हैं और उनकी भीनी गन्ध फैल रही है।
मेरे प्रिय उठ, हे मेरे सुन्दर, आओ कहीं दूर चलें!”
14हे मेरे कपोत, जो ऊँचे चट्टानों के गुफाओं में
और पहाड़ों में छिपे हो, मुझे अपना मुख दिखा, मुझे
अपनी ध्वनि सुना क्योंकि तेरी ध्वनि मधुर और तेरा
मुख सुन्दर है!”

स्त्री का वचन स्त्रियों के प्रति

15जो छोटी लोमड़ियाँ दाख के बगीचों को बिगाड़ती हैं,
हमारे लिये उनको पकड़ो! हमारे अंगूर के बगीचे अब
फूल रहे हैं।
16मेरा प्रिय मेरा है और मैं उसकी हूँ! मेरा प्रिय
अपनी भेड़ बकरियों को कुमुदिनियों के बीच चराता
है,
17जब तक दिन नहीं ढलता है और छाया लम्बी नहीं
हो जाती है। लौट आ, मेरे प्रिय, कुरंग सा बन अथवा
हरिण सा बेतेर के पहाड़ों पर!

स्त्री का वचन

3 हर रात अपनी सेज पर मैं अपने मन में उसे ढूँढती
हूँ। जो पुरुष मेरा प्रिय है, मैंने उसे ढूँढा है, किन्तु
मैंने उसे नहीं पाया!
2अब मैं उठूँगी! मैं नगर के चारों गलियों, बाजारों में
जाऊँगी। मैं उसे ढूढूँगी जिसको मैं प्रेम करती हूँ। मैंने
वह पुरुष ढूँढा पर वह मुझे नहीं मिला!
3मुझे नगर के पहरेदार मिले। मैंने उनसे पूछा, “क्या
तूने उस पुरुष को देखा जिसे मैं प्यार करती हूँ?”
4पहरेदारों से मैं अभी थोड़ी ही दूर गई कि मुझको
मेरा प्रियतम मिल गया! मैंने उसे पकड़ लिया और तब
तक जाने नहीं दिया जब तक मैं उसे अपनी माता के
घर में न ले आई अर्थात् उस स्त्री के कक्ष में जिसने
मुझे गर्भ में धरा था।

स्त्री का वचन स्त्रियों के प्रति

5यरूशलेम की कुमारियों, कुरंगों और जंगली हिरणियों
को साक्षी मान कर मुझको वचन दो, प्रेम को मत
जगाओ, प्रेम को मत उकसाओ, जब तक मैं तैयार न
हो जाऊँ।

वह और उसकी दुल्हिन

6यह कुमारी कौन है जो मरुभूमि से लोगों की इस
बड़ी भीड़ के साथ आ रही है? धूल उनके पीछे से यूँ
उठ रही है मानों कोई धुएँ का बादल हो। जो धूआँ
जलते हुए गन्ध रस, धूप और अन्य गंध मसाले से
निकल रही हो।
7सुलैमान की पालकी को देखो! उसकी यात्रा की
पालकी को साठ सैनिक घेरे हुए हैं। इस्राएल के शक्तिशाली
सैनिक!
8वे सभी सैनिक तलवारों से सुसज्जित हैं जो युद्ध में
निपुण हैं; हर व्यक्ति की बगल में तलवार लटकती है,
जो रात के भयानक खतरों के लिये तत्पर हैं!
9राजा सुलैमान ने यात्रा हेतु अपने लिये एक पालकी
बनवाई है, जिसे लबानोन की लकड़ी से बनाया गया है।
10उसने यात्रा कीपालकी के बल्लों को चाँदी से बनाया
और उसकी टेक सोने से बनायी गई। पालकी की गद्दी
को उसने बैंगनी वस्त्र से ढँका और यह यरूशलेम की
पुत्रियों के द्वारा प्रेम से बुना गया था।
11सिय्योन के पुत्रियों, बाहर आ कर राजा सुलैमान
को उसके मुकुट के साथ देखो जो उसको उसकी माता
ने उस दिन पहनाया था जब वह ब्याहा गया था, उस
दिन वह बहुत प्रसन्न था!

पुरुष का वचन स्त्री के प्रति

4 मेरी प्रिये, तुम अति सुन्दर हो! तुम सुन्दर हो!
घूँघट की ओट में तेरी आँखें कपोत की आँखों
जैसी सरल हैं। तेरे केश लम्बे और लहराते हुए हैं जैसे
बकरी के बच्चे गिलाद के पहाड़ के ऊपर से नाचते
उतरते हों।
2तेरे दाँत उन भेड़ों जैसे सफेद हैं जो अभी अभी
नहाकर के निकली हों। वे सभी जुड़वा बच्चों को जन्म
दिया करती हैं; और उनके बच्चे नहीं मरे हैं।

3तेरा अधर लाल रेशम के धागे सा है। तेरा मुख सुन्दर है। अनार के दो फाँकों की जैसी तेरे घूंघट के नीचे तेरी कनपटियाँ हैं।

4तेरी गर्दन लम्बी और पतली है जो खास सजावट के लिये दाऊद की मीनार जैसी की गई। उस की दीवारों पर हजारों छोटी छोटी ढाल लटकती हैं। हर एक ढाल किसी वीर योद्धा का है।

5तेरे दो स्तन जुड़वा बाल मृग जैसे हैं, जैसे जुड़वा कुरंग कुमुदों के बीच चरता हो।

6मैं गंधरस के पहाड़ पर जाऊँगा और उस पहाड़ी पर जो लोबान की है, जब दिन अपनी अन्तिम साँस लेता है और उसकी छाया बहुत लम्बी हो कर छिप जाती है।

7मेरी प्रिये, तू पूरी की पूरी सुन्दर हो। तुझ पर कहीं कोई धब्बा नहीं है!

8ओ मेरी दुल्हिन, लबानोन से आ, मेरे साथ आजा। लबानोन से मेरे साथ आजा, अमाना की चोटी से, शनीर की ऊँचाई से, सिंह की गुफाओं से और चीतों के पहाड़ों से आ!

9हे मेरी संगिनी, हे मेरी दुल्हिन, तुम मुझे उत्तेजित करती हो। आँखों की चितवन मात्र से और अपने कंठहार के बस एक ही रत्न से तुमने मेरा मन मोह लिया है।

10मेरी संगिनी, हे मेरी दुल्हिन, तेरा प्रेम कितना सुन्दर है! तेरा प्रेम दाखमधु से अधिक उत्तम है; तेरी इत्र की सुगन्ध किसी भी सुगन्ध से उत्तमहै!

11मेरी दुल्हिन, तेरे अधरों से मधु टपकता है। तेरी वाणी में शहद और दूध की खुशबू है। तेरे वस्त्रों की गंध इत्र जैसी मोहक है।

12मेरी संगिनी, हे मेरी दुल्हिन, तुम ऐसी हो जैसे किसी उपवन पर ताला लगा हो। तुम ऐसी हो जैसे कोई रोका हुआ सोता हो या बन्द किया झरना हो।

13तेरे अंग उस उपवन जैसे हैं जो अनार और मोहक फलों से भरा हो, जिसमें मेहंदी और जटामासी के फूल भरे हों;

14जिसमें जटामासी का, केसर, अगर और दालचीनी का इत्र भरा हो। जिसमें देवदार के गंधरस और अगर व उत्तम सुगन्धित द्रव्य साथ में भरे हों।

15तू उपवन का सोता है जिस का स्वच्छ जल नीचे लबानोन की पहाड़ी से बहता है। स्त्री का वचन

16जागो, हे उत्तर की हवा! आ, तू दक्षिण पवन! मेरे उपवन पर बह। जिससे इस की मीठी, गन्ध चारों ओर फैल जाये। मेरा प्रिय मेरे उपवन में प्रवेश करे और वह इसका मधुर फल खाये।

पुरुष का वचन

5 मेरी संगिनी, हे मेरी दुल्हिन, मैंने अपने उपवन में अपनी सुगंध सामग्री के साथ प्रवेश किया। मैंने अपना रसगंध एकत्र किया है। मैं अपना मधु छत्ता समेत खा चुका। मैं अपना दाखमधु और अपना दूध पी चुका।

स्त्रियों का वचन प्रेमियों के प्रति

हे मित्रों, खाओ, हाँ प्रेमियों, पियो! प्रेम के दाखमधु से मस्त हो जाओ!

स्त्री का वचन

2मैं सोती हूँ किन्तु मेरा हृदय जागता है। मैं अपने हृदय-धन को द्वार पर दस्तक देते हुए सुनती हूँ। "मेरे लिये द्वार खोलो मेरी संगिनी, ओ मेरी प्रिये! मेरी कबूतरी, ओ मेरी निर्मल! मेरे सिर पर ओस पड़ी है मेरे केश रात की नमी से भीगें हैं।

3मैंने निज वस्त्र उतार दिया है। मैं इसे फिर से नहीं पहनना चाहती हूँ। मैं अपने पाँव धो चुकी हूँ, फिर से मैं इसे मैला नहीं करना चाहती हूँ।"

4मेरे प्रियतम ने कपाट की झिरी में हाथ डाल दिया, मुझे उसके लिये खेद है।

5मैं अपने प्रियतम के लिये द्वार खोलने को उठ जाती हूँ। रसगंध मेरे हाथों से और सुगंधित रस गंध मेरी उंगलियों से ताले के हत्थे पर टपकता है।

6अपने प्रियतम के लिये मैंने द्वार खोल दिया, किन्तु मेरा प्रियतम तब तक जा चुका था! जब वह चला गया तो जैसे मेरा प्राण निकल गया। मैं उसे ढूँढती फिरी किन्तु मैंने उसे नहीं पाया; मैं उसे पुकारती फिरी किन्तु उसने मुझे उत्तर नहीं दिया!

7नगर के पहरुओं ने मुझे पाया। उन्होंने मुझे मारा और मुझे क्षति पहुँचायी। नगर के परकोटे के पहरुओं ने मुझसे मेरा दुपट्टा छीन लिया।

8यरुशलेम की पुत्रियों, मेरी तुमसे विनती है कि यदि तुम मेरे प्रियतम को पा जाओ तो उसको बता देना कि मैं उसके प्रेम की भूखी हूँ।

यरुशलेम की पुत्रियों का उसको उत्तर

9क्या तेरा प्रिय, औरों के प्रियों से उत्तम है? स्त्रियों में तू सुन्दरतम स्त्री है। क्या तेरा प्रिय, औरों से उत्तम है? क्य इसलिये तू हम से ऐसा वचन चाहती है?

यरुशलेम की पुत्रियों को उसका उत्तर

10मेरा प्रियतम गौरवर्ण और तेजस्वी है। वह दसियों हजार पुरुषों में सर्वोत्तम है।

11उसका माथा शुद्ध सोने सा, उसके घुँघराले केश कौवे से काले अति सुन्दर हैं।

12ऐसी उसकी आँखे है जैसे जल धार के किनारे कबूतर बैठे हों। उसकी आँखें दूध में नहाये कबूतर जैसी हैं। उसकी आँखें ऐसी हैं जैसे रत्न जड़े हों।

13गाल उसके मसालों की क्यारी जैसे लगते हैं,
जैसे कोई फूलों की क्यारी जिससे सुगंध फैल रही
हो। उसके होंठ कुमुद से हैं जिनसे रसगंध टपका
करता है।
14उसकी भुजायें सोने की छड़ जैसी है जिनमें रत्न
जड़े हों। उसकी देह ऐसी है जिसमें नीलम जड़े हों।
15उसकी जाँघे संगमरमर के खम्बों जैसी है जिनको
उत्तम स्वर्ण पर बैठाया गया हो। उसका ऊँचा कद
लबानोन के देवदार जैसा है जो देवदार वृक्षों में उत्तम
है!
16हाँ, यरुशलेम की पुत्रियों, मेरा प्रियतम बहुत ही
अधिक कामनीय है, सबसे मधुरतम उसका मुख है।
ऐसा है मेरा प्रियतम, मेरा मित्र।

यरुशलेम की पुत्रियों का उससे कथन

6 स्त्रियों में सुन्दरतम स्त्री, बता तेरा प्रियतम कहाँ
चला गया? किस राह से तेरा प्रियतम चला गया
है? हमें बता ताकि हम तेरे साथ उसको ढूँढ सके।

यरुशलेम की पुत्रियों को उसका उत्तर

2मेरा प्रिय अपने उपवन में चला गया, सुगंधित क्यारियों
में, उपवन में अपनी भेड़ चराने को और कुमुदिनियाँ
एकत्र करने को।
3मैं हूँ अपने प्रियतम की और वह मेरा प्रियतम है।
वह कुमुदिनियों के बीच चराया करता है।

पुरुष का वचन स्त्री के प्रति

4मेरी प्रिय, तू तिर्सा सी सुन्दर है, तू यरुशलेम सी
मनोहर है, तू इतनी अद्‌भुत है जैसे कोई दिवारों से घिरा
नगर हो।
5मेरे ऊपर से तू आँखें हटा ले! तेरे नयन मुझको
उत्तेजित करते हैं! तेरे केश लम्बे हैं और वे ऐसे लहराते
हैं जैसे गिलाद की पहाड़ी से बकरियों का झुण्ड उछलता
हुआ उतरता आता हो।

6तेरे दाँत ऐसे सफेद हैं जैस मेढ़े जो अभी अभी नहा
कर निकली हों। वे सभी जुड़वा बच्चों को जन्म दिया
करती हैं और उनमें से किसी का भी बच्चा नहीं मराहै।
7घूँघट के नीचे तेरी कनपटियाँ ऐसी हैं जैसे अनार
की दो फाँके हों।
8वहाँ साठ रानियाँ, अस्सी सेविकायें और नयी असंख्य
कुमारियाँहैं।
9किन्तु मेरी कबूतरी, मेरी निर्मल, उनमें एक मात्रहै।
जिस माँ ने उसे जन्म दिया वह उस माँ की प्रिय है।
कुमारियों ने उसे देखा और उसे सराहा। हाँ, रानियों
और सेविकाओं ने भी उसको देखकर उसकी प्रशंसा
की थी।

स्त्रियों द्वारा उसकी प्रशंसा

10वह कुमारियाँ कौन है? वह भोर सी चमकती है।
वह चाँद सी सुन्दर है, वह इतनी भव्य है जितना सूर्य,
वह ऐसी अद्‌भुत है जैसे आकाश में सेना।

स्त्री का वचन

11मैं गिरीदार पेड़ों के बगीचे में घाटी की बहार को
देखने को उतर गयी, यह देखने कि अंगूर की बेले
कितनी बड़ी हैं और अनार की कलियाँ खिली हैं कि
नहीं।
12इससे पहले कि मैं यह जान पाती, मेरे मन ने
मुझको राजा के व्यक्तियों के रथ में पहुँचा दिया।

यरुशलेम की पुत्रियों को उसको बुलावा

13वापस आ, वापस आ, ओ शुलेम्मिन! वापस आ,
वापस आ, ताकि हम तुझे देख सके। क्यों ऐसे
शुलेम्मिन को घूरती हो जैसे वह महनैम के नृत्य की
नर्तकी हो?

पुरुष द्वारा स्त्री सौन्दर्य का वर्णन

7 हे राजपुत्र की पुत्री, सचमुच तेरे पैर इन जूतियों
के भीतर सुन्दर हैं। तेरी जंघाएँ ऐसी गोल हैं जैसे
किसी कलाकार के ढाले हुए आभूषण हों।
2तेरी नाभि ऐसी गोल है जैसे कोई कटोरा, इसमें तू
दाखमधु भर जाने दे। तेरा पेट ऐसा है जैसे गेहूँ की ढेरी
जिसकी सीमाएं घिरी हों कुमुदिनी की पंक्तियों से।
3तेरे उरोज ऐसे हैं जैसे किसी जवान कुरंगी के दो
जुड़वा हिरण हो।
4तेरी गर्दन ऐसी है जैसे किसी हाथी दाँत की मीनार
हो। तेरे नयन ऐसे हैं जैसे हेशबोन के वे कुण्ड जो
बत्रब्बीम के फाटक के पास है। तेरी नाक ऐसी लम्बी है
जैसे लबानोन की मीनार जो दमिश्क की ओर मुख
किये है।
5तेरा सिर ऐसा है जैसे कर्मेल का पर्वत, और तेरे
सिर के बाल रेशम के जैसे हैं। तेरे लम्बे सुन्दर केश
किसी राजा तक को वशीभूत कर लेते हैं!
6तू कितनी सुन्दर और मनमोहक है, ओ मेरी प्रिय!
तू मुझे कितना आनन्द देती है!
7तू खजूर के पेड़ सी लम्बी है। तेरे उरोज ऐसे हैं जैसे
खजूर के गुच्छे।
8मैं खजूर के पेड़ पर चढ़ूँगा, मैं इसकी शाखाओं को
पकड़ूँगा, तू अपने उरोजों को अंगूर के गुच्छों सा बनने
दे। तेरी श्वास की गंध सेब की सुवास सी है।
9तेरा मुख उत्तम दाखमधु सा हो, जो धीरे से मेरे प्रणय
के लिये नीचे उतरती हो, जो धीरे से निद्रा में अलसित
लोगों के होंठो तक बहती हो।

स्त्री के वचन पुरुष के प्रति

10मैं अपने प्रियतम की हूँ और वह मुझे चाहताहै।
11आ, मेरे प्रियतम, आ! हम खेतों में निकल चलें,
हम गाँवों में रात बितायें।
12हम बहुत शीघ्र उठें और अंगूर के बागों में निकल
जायें। आ, हम वहाँ देखें क्या अंगूर की बेलों पर कलियाँ
खिल रही हैं। आ, हम देखें क्या बहारें खिल गयी हैं
और क्या अनार की कलियाँ चटक रही हैं। वहीं पर मैं
अपना प्रेम तुझे अर्पण करुँगी।
13प्रणय के वृक्ष निज मधुर सुगंध दिया करते हैं, और
हमारे द्वारों पर सभी सुन्दर फूल, वर्तमान, नये और
पुराने−मैंने तेरे हेतु, सब बचा रखें हैं, मेरी प्रिय!
8 काश, तुम मेरे शिशु भाई होते, मेरी माता की
छाती का दूध पीते हुए! यदि मैं तुझसे वहीं बाहर
मिल जाती तो तुम्हारा चुम्बन मैं ले लेती, और कोई
व्यक्ति मेरी निन्दा नहीं कर पाता! 2मैं तुम्हारी अगुवाई
करती और तुम्हें मैं अपनी माँ के भवन में ले आती,
उस माता के कक्ष में जिसने मुझे शिक्षा दी। मैं तुम्हें
अपने अनार की सुगंधित दाखमधु देती, उसका रस
तुम्हें पीने को देती।

स्त्री का वचन स्त्रियों के प्रति

3मेरे सिर के नीचे मेरे प्रियतम का बाँया हाथ है और
उसका दाँया हाथ मेरा आलिंगन करताहै।
4यरुशलेम की कुमारियों, मुझ को वचन दो, प्रेम को
मत जगाओ, प्रेम को मत उकसाओ, जब तक मैं तैयार
न हो जाऊँ।

यरुशलेम की पुत्रियों का वचन

5कौन है यह स्त्री अपने प्रियतम पर झुकी हुई जो
मरुभूमि से आ रही है?

स्त्री का वचन पुरुष के प्रति

मैंने तुम्हें सेब के पेड़ तले जगाया था, जहाँ तेरी माता
ने तुझे गर्भ में धरा और यही वह स्थान था जहाँ तेरा
जन्म हुआ।
6अपने हृदय पर तू मुद्रा सा धर। जैसी मुद्रा तेरी बाँह
पर है। क्योंकि प्रेम भी उतना ही सबल है जितनी मृत्यु
सबल है। भावना इतनी तीव्र है जितनी कब्र होती है।
इसकी धदक धधकती हुई लपटों सी होती है!
7प्रेम की आग को जल नहीं बुझा सकता। प्रेम को
बाढ़ बहा नहीं सकती। यदि कोई व्यक्ति प्रेम को घर का
सब दे डाले तो भी उसकी कोई नहीं निन्दा करेगा!

उसके भाईयों का वचन

8 हमारी एक छोटी बहन है, जिसके उरोज अभी फूटे
नहीं। हमको क्या करना चाहिए जिस दिन उसकी सगाई
हो? 9यदि वह नगर का परकोटा हो तो हम उसको
चाँदी की सजावट से मढ़ देंगे। यदि वह नगर हो तो हम
उसको मूल्यवान देवदारु काठ से जड़ देंगे।

उसका अपने भाईयों को उत्तर

10मैं परकोट हूँ और मेरे उरोज गुम्बद जैसे हैं। सो मैं
उसके लिये शांति का दाता हूँ!

पुरुष का वचन

11बाल्हामोन में सुलैमान का अंगूर का उपवनथा।
उसने अपने बाग को रखवाली के लिए दे दिया। हर
रखवाला उसके फलों के बदले में चाँदी के एक हजार
शेकेल लाता था।
12किन्तु सुलैमान, मेरा अपना अंगूर का बाग मेरे
लिये है। हे सुलैमान, मेरे चाँदी के एक हजार शेकेल
सब तू ही रख ले, और ये दो सौ शेकेल उन लोगों के
लिये हैं जो खेतों में फलों की रखवाली करते हैं!

पुरुष का वचन स्त्री के प्रति

13तू जो बागों में रहती है, तेरी ध्वनि मित्र जन सुन
रहे हैं। तू मुझे भी उसको सुनने दे!

स्त्री का वचन पुरुष के प्रति

14ओ मेरे प्रियतम, तू अब जल्दी कर। सुगंधित द्रव्यों
के पहाड़ों पर तू अब चिकारे या युवा मृग सा बन जा!

यशायाह

1 यह आमोस के पुत्र यशायाह का दर्शन है। यहूदा और
यरूशलेम में जो घटने वाला था, उसे परमेश्वर ने
यशायाह को दिखाया। यशायाह ने इन बातों को उज्जिय्याह,
योताम, आहाज और हिजकिय्याह के समय में देखा था।
ये यहूदा के राजा थे।

अपने लोगों के विरुद्ध परमेश्वर का शिकायत

2स्वर्ग और धरती, तुम यहोवा की वाणी सुनो! यहोवा
कहता है,

"मैंने अपने बच्चों का विकास किया। मैंने उन्हें बढ़ाने
में अपनी सन्तानों की सहायता की। किन्तु मेरी सन्तानों
ने मुझ से विद्रोह किया।

3बैल अपने स्वामी को जानता है और गधा उस जगह
को जानता है जहाँ उसका स्वामी उसको चारा देता है।
किन्तु इस्राएल के लोग मुझे नहीं पहचानते। वे मेरे
अपने हैं किन्तु मुझे नहीं समझते हैं।"

4इस्राएल देश पाप से भर गया है। यह पाप एक ऐसे
भारी बोझ के समान है जिसे लोगों को उठाना ही है। वे
लोग बुरे और दुष्ट बच्चों के समान हैं। उन्होंने यहोवा
को त्याग दिया। उन्होंने इस्राएल के पवित्र (परमेश्वर)
का अपमान किया। उन्होंने उसे छोड़ दिया और उसके
साथ अजनबी जैसा व्यवहार किया।

5परमेश्वर कहता है, "मैं तुम लोगों को दण्ड क्यों
देता रहूँ? मैंने तुम्हें दण्ड दिया किन्तु तुम नहीं बदले।
तुम मेरे विरुद्ध विद्रोह करते ही रहे। अब हर सिर और
हर हृदय रोगी है। 6तुम्हारे पैर के तलुओं से लेकर सिर
के ऊपरी भाग तक तुम्हारे शरीर का हर अंग घावों से
भरा है। उनमें चोटें लगी हैं और फूटे हुए फोड़े हैं। तुमने
अपने फोड़ों की कोई परवाह नहीं की। तुम्हारे घाव न
तो साफ किये हीं गये है और न ही उन्हें ढका गया है।

7"तुम्हारी धरती बर्बाद हो गयी है। तुम्हारे नगर आग
से जल गये हैं। तुम्हारी धरती तुम्हारे शत्रुओं ने हथिया
ली है। तुम्हारी भूमि ऐसे उजाड़ दी गयी है कि जैसे
शत्रुओं के द्वारा उजाड़ा गया कोई प्रदेश हो। 8सिय्योन
की पुत्री (यरूशलेम) अब अँगूर के बगीचे में किसी
छोड़ दी गयी झोपड़ी जैसी हो गयी है। यह एक ऐसी
पुरानी झोपड़ी जैसी दिखती है जिसे ककड़ी के खेत में
वीरान छोड़ दिया गया हो। यह उस नगरी के समान है
जिसे शत्रुओं द्वारा हरा दिया गया हो।" 9यह सत्य है
किन्तु फिर भी सर्वशक्तिशाली यहोवा ने कुछ लोगों को
वहाँ जीवित रहने के लिये छोड़ दिया था। सदोम और
अमोरा नगरों के समान हमारा पूरी तरह विनाश नहीं
किया गया था।

परमेश्वर सच्ची सेवा चाहता है

10हे सदोम के मुखियाओं, यहोवा के सन्देश को सुनो!
हे अमोरा के लोगों, परमेश्वर के उपदेशों पर ध्यान दो।
11परमेश्वर कहता है, "मुझे ये सभी बलियाँ नहीं चाहिये।
मैं तुम्हारे भेड़ों और पशुओं की चर्बी की पर्याप्त होमबलियाँ
ले चुका हूँ। बैलों, मेमनों, बकरों के खून से मैं प्रसन्न
नहीं हूँ।

12"तुम लोग जब मुझसे मिलने आते हो तो मेरे आँगन
की हर वस्तु रौंद डालते हो। ऐसा करने के लिए तुमसे
किसने कहा है?

13"बेकार की बलियाँ तुम मुझे मत चढ़ाते रहो। जो
सुगंधित सामग्री तुम मुझे अर्पित करते हो, मुझे उससे
घृणा है। नये चाँद की दावतें, विश्राम और सब्त मुझ से
सहन नहीं हो पाते। अपनी पवित्र सभाओं के बीच जो
बुरे कर्म तुम करते हो, मुझे उनसे घृणा है। 14तुम्हारी
मासिक बैठकों और सभाओं से मुझे अपने सम्पूर्ण मन
से घृणा है। ये सभाएँ मेरे लिये एक भारी भरकम बोझ
सी बन गयी है और इन बोझों को उठाते उठाते अब मैं
थक चुका हूँ।

15"तुम लोग हाथ उठाकर मेरी प्रार्थना करोगे किन्तु
मैं तुम्हारी ओर देखूँगा तक नहीं। तुम लोग अधिकाधिक
प्रार्थना करोगे, किन्तु मैं तुम्हारी सुनने तक को मना
कर दूँगा क्योंकि तुम्हारे हाथ खून से सने हैं।

16"अपने को धो कर पवित्र करो। तुम जो बुरे कर्म
करते हो, उनका करना बन्द करो। मैं उन बुरी बातों
को देखना नहीं चाहता। बुरे कामों को छोड़ो। 17अच्छे
काम करना सीखो। दूसरे लोगों के साथ न्याय करो। जो
लोग दूसरों को सताते हैं, उन्हें दण्ड दो। अनाथ बच्चों के
अधिकारों के लिए संघर्ष करो। जिन स्त्रियों के पति मर
गये हैं, उन्हें न्याय दिलाने के लिए उनकी पैरवी करो।"

18यहोवा कहता है, "आओ, हम इन बातों पर विचार
करें। तुम्हारे पाप यद्यपि रक्त रंजित हैं, किन्तु उन्हें धोया

जा सकता है। जिससे तुम बर्फ के समान उज्जवल हो
जाओगे। तुम्हारे पाप लाल सुर्ख हैं। किन्तु वे सन के
समान श्वेत हो सकते हो।
19"यदि तुम मेरी कही बातों पर ध्यान देते हो, तो तुम
इस धरती की अच्छी वस्तुएँ प्राप्त करोगे। 20किन्तु यदि
तुम सुनने से मना करते हो तुम मेरे विरुद्ध होते हो,
और तुम्हारे शत्रु तुम्हें नष्ट कर डालेंगे।" यहोवा ने ये
बातें स्वयं ही कहीं थीं।

यरूशलेम परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य नहीं है

21परमेश्वर कहता है, "यरूशलेम की ओर देखो।
यरूशलेम एक ऐसी नगरी थी जो मुझमें विश्वास रखती
थी और मेरा अनुसरण करती थी। वह वेश्या की जैसी
किस कारण बन गई? अब वह मेरा अनुसरण नहीं
करती। यरूशलेम को न्याय से परिपूर्ण होना चाहिये।
यरूशलेम के निवासियों को, जैसे परमेश्वर चाहता है,
वैसे ही जीना चाहिये। किन्तु अब तो वहाँ हत्यारे रहते हैं।
22"तुम्हारी नेकी चाँदी के समान है। किन्तु अब
तुम्हारी चाँदी खोटी हो गयी है। तुम्हारी दाखमधु में पानी
मिला दिया गया है। सो अब यह कमजोर पड़ गयी है।
23तुम्हारे शासक विद्रोही है और चोरों के साथी हैं।
तुम्हारे सभी शासक घूस लेना चाहते हैं। गलत काम
करने के लिए वे घूस का धन ले लेते हैं। तुम्हारे सभी
शासक लोगों को ठगने के लिये मेहनताना लेते हैं।
तुम्हारे शासक अनाथ बच्चों को सहारा देने का यत्न
नहीं करते। तुम्हारे शासक अनाथ बच्चों को सहारा देने
का जतन नहीं करते। तुम्हारे शासक उन स्त्रियों की
आवश्यकताओं पर कान नहीं देते जिनके पति मर
चुके हैं।"
24इन सब बातों के कारण, स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा
इस्राएल का सर्वशक्तिमान कहता है, "हे मेरे बैरियो मैं
तुम्हें दण्ड दूँगा। तुम मुझे अब और अधिक नहीं सता
पाओगे। 25जैसे लोग चाँदी को साफ़ करने के लिए खार
मिले पानी का प्रयोग करते हैं, वैसे ही मैं तुम्हारे सभी
खोट दूर करूँगा। सभी निरर्थक वस्तुओं को तुमसे ले
लूँगा। 26जैसे न्यायकर्ता तुम्हारे पास प्रारम्भ में थे अब
वैसे ही न्यायकर्ता मैं फिर से वापस लाऊँगा। जैसे
सलाहकार बहुत पहले तुम्हारे पास हुआ करते थे, वैसे
ही सलाहकार तुम्हारे पास फिर होंगे। तुम तब फिर
'नेक और विश्वासी नगरी' कहलाओगी।"
27परमेश्वर नेक है और वह उचित करता है। इसलिये
वह सिय्योन की रक्षा करेगा और वह उन लोगों को
बचायेगा जो उसकी ओर वापस मुड़ आयेंगे। 28किन्तु
सभी अपराधियों और पापियों का नाश कर दिया जायेगा।
(ये वे लोग हैं जो यहोवा का अनुसरण नहीं करते हैं।)
29भविष्य में, तुम लोग उन बांजवृक्षों के पेड़ों के लिए
और उन विशेष उद्यानों के लिए, जिन्हें पूजने के लिए
तुमने चुना था, लज्जित होंगे। 30यह इसलिए घटित होगा
क्योंकि तुम लोग ऐसे बांजवृक्ष के पेड़ों जैसे हो जाओगे
जिनकी पत्तियाँ मुरझा रही हो। तुम एक ऐसे बगीचे के
समान हो जाओगे जो पानी के बिना मर रहा होगा।
31बलशाली लोग सूखी लकड़ी के छोटे–छोटे टुकड़ों जैसे
हो जायेंगे और वे लोग जो काम करेंगे, वे ऐसी चिँगारियों
के समान होंगे जिनसे आग लग जाती है। वे बलशाली
लोग और उनके काम जलने लगेंगे और कोई भी ऐसा
व्यक्ति नहीं होगा जो उस आग को रोक सकेगा।

2 आमोस के पुत्र यशायाह ने यहूदा और यरूशलेम
के बारे में यह सन्देश देखा।
2यहोवा का मन्दिर पर्वत पर है। भविष्य में, उस पर्वत
को अन्य सभी पर्वतों में सबसे ऊँचा बनाया जायेगा। उस
पर्वत को सभी पहाड़ियों से ऊँचा बनाया जायेगा। सभी
देशों के लोग वहाँ जाया करेंगे। 3बहुत से लोग वहाँ जाया
करेंगे। वे कहा करेंगे, "हमे यहोवा के पर्वत पर जाना
चाहिये। हमें याकूब के परमेश्वर के मन्दिर में जाना
चाहिये। तभी परमेश्वर हमें अपनी जीवन विधि की
शिक्षा देगा और हम उसका अनुसरण करेंगे।"
सिय्योन पर्वत पर यरूशलेम में, परमेश्वर यहोवा के
उपदेशों का सन्देश का आरम्भ होगा और वहाँ से वह
समूचे संसार में फैलेगा। 4तब परमेश्वर सभी देशों का
न्यायी होगा। परमेश्वर बहुत से लोगों के लिये विवादों
का निपटारा कर देगा और वे लोग लड़ाई के लिए
अपने हथियारों का प्रयोग करना बन्द कर देंगे। अपनी
तलवारों से वे हल के फाले बनायेंगे तथा वे अपने भालों
को पौधों को काटने की दँराती के रुप में काम में
लायेंगे। लोग दूसरे लोगों के विरुद्ध लड़ना बन्द कर देंगे।
लोग युद्ध के लिये फिर कभी प्रशिक्षित नहीं होंगे।
5हे याकूब के परिवार, तू यहोवा का अनुसरण कर।
6हे यहोवा! तूने अपने लोगों का त्याग कर दिया है। तेरे
लोग पूर्व के बुरे विचारों से भर गये हैं। तेरे लोग
पलिश्तियों के समान भविष्य बताने का यत्न करने लगे
हैं। तेरे लोगों ने पूरी तरह से उन विचित्र विचारों को
स्वीकार कर लिया है। 7तेरे लोगों की धरती दूसरे देशों
के सोने चाँदी से भर गयी है। वहाँ अनगिनत खजाने हैं।
तेरे लोगों की धरती घोड़ों से भरपूर हैं। वहाँ बहुत सारे
रथ भी हैं। 8उनकी धरती पर मूर्तियाँ भरी पड़ी हैं, लोग
जिनकी पूजा करते हैं। लोगों ने ही इन मूर्तियों को
बनाया है और वे ही उन की पूजा करते हैं। 9लोग बुरे
से बुरे हो गये हैं। लोग बहुत नीच हो गये है। हे परमेश्वर,
निश्चय ही तू उन्हें क्षमा नहीं करेगा, क्या तू ऐसा करेगा?

परमेश्वर के शत्रु भयभीत होंगे

10जा, कहीं किसी गड्ढ़े में या किसी चट्टान के पीछे
छुप जा! तू परमेश्वर से डर और उसकी महान शक्ति
के सामने से ओझल हो जा!

11अहंकारी लोग अहंकार करना छोड़ देंगे। अहंकारी
लोग धरती पर लाज से सिर नीचे झुका लेंगे। उस समय
केवल यहोवा ही ऊँचे स्थान पर विराजमान होगा।

12यहोवा ने एक विशेष दिन की योजना बनायी है।
उस दिन, यहोवा अहंकारियों और बड़े बोलने वाले
लोगों को दण्ड देगा। तब उन अहंकारी लोगों को साधारण
बना दिया जायेगा। 13वे अहंकारी लोग लबानोन के
लम्बे देवदार वृक्षों के समान है। वे बासान के बांजवृक्षों
जैसे हैं किन्तु परमेश्वर उन लोगों को दण्ड देगा। 14वे
अहंकारी लोग ऊँची पहाड़ियों जैसे लम्बे और पहाड़ों
जैसे ऊँचे हैं। 15वे अहंकारी लोग ऐसे हैं जैसे लम्बी
मीनारें और ऊँचा तथा मजबूत नगर परकोटा हो। किन्तु
परमेश्वर उन लोगों को दण्ड देगा। 16वे अहंकारी लोग
तर्शीश के विशाल जहाजों के समान है। इन जहाज़ों में
महत्वपूर्ण वस्तुएँ भरी हैं। किन्तु परमेश्वर उन अहंकारी
लोगों को दण्ड देगा।

17उस समय, लोग अहंकार करना छोड़ देंगे। वे लोग
जो अब अहंकारी हैं, धरती पर नीचे झुका दिए जायेंगे।
फिर उस समय केवल यहोवा ही ऊँचे विराजमान होगा।
18सभी मूर्तियाँ झूठे देवता समाप्त हो जायेंगी। 19लोग
चट्टानों, गुफाओं और धरती के भीतर जा छिपेंगे। वे
यहोवा और उसकी महान शक्ति से डर जायेंगे। ऐसा उस
समय होगा जब यहोवा धरती को हिलाने के लिए खड़ा
होगा।

20उस समय, लोग अपनी सोने चाँदी की मूर्तियों को
दूर फेंक देंगे। (इन मूर्तियों को लोगों ने इसलिये बनाया
था कि लोग उनको पूज सकें।) लोग उन मूर्तियों को
धरती के उन बिलों में फेंक देंगे जहाँ चमगादड़ और
छछूंदर रहते हैं। 21फिर लोग चट्टानों की गुफाओं मे
छुप जायेंगे। वे यहोवा और उसकी महान शक्ति से
डरकर ऐसा करेंगे। ऐसा उस समय घटित होगा जब
यहोवा धरती को हिलाने के लिये खड़ा होगा।

इस्राएल को परमेश्वर का विश्वास करना चाहिये

22ओ इस्राएल के लोगों तुम्हें अपनी रक्षा के लिये
अन्य लोगों पर निर्भर रहना छोड़ देना चाहिये। वे तोमनुष्य
मात्र है और मनुष्य मर जाता है। इसलिये, तुझे यह नहीं
सोचना चाहिये कि वे परमेश्वर के समान शक्तिशाली
है।

3 ये बातें मैं तुझे बता रहा हूँ, तू समझ ले। सर्वशक्तिशाली
यहोवा स्वामी, उन सभी वस्तुओं को छीन लेगा
जिन पर यहूदा और यरूशलेम निर्भर रहते हैं। परमेश्वर
समूचा भोजन और जल भी छीन लेगा। 2परमेश्वर सभी
नायकों और महायोद्धाओं को छीन लेगा। सभी न्यायाधीशों,
भविष्यवक्ताओं, ज्योतिषियों और बुजुर्गो को परमेश्वर
छीन लेगा। 3परमेश्वर सेना नायकों और प्रशासनिक
नेताओं को छीन लेगा। परमेश्वर सलाहकारों और उन
बुद्धिमान को छीन लेगा जो जादू करते हैं और भविष्य
बताने का प्रयत्न करते हैं।

4परमेश्वर कहता है, "मैं जवान बच्चों को उनका
नेता बना दूँगा। बच्चें उन पर राज करेंगे। 5हर व्यक्ति
आपस में एक दूसरे के विरुद्ध हो जायेगा। नवयुवक बड़े
बूढ़ों का आदर नहीं करेंगे। साधारण लोग महत्वपूर्ण
लोगों को आदर नहीं देंगे।"

6उस समय, अपने ही परिवार से कोई व्यक्ति अपने
ही किसी भाई को पकड़ लेगा। वह व्यक्ति अपने भाई से
कहेगा, "क्योंकि तेरे पास एक वस्त्र है, सो तू हमारा
नेता होगा। इन सभी खण्डहरों का तू नेता बन जा।"

7किन्तु वह भाई खड़ा हो कर कहेगा, "मैं तुम्हें
सहारा नहीं दे सकता। मेरे घर पर्याप्त भोजन और वस्त्र
नहीं हैं। तू मुझे अपना मुखिया नहीं बनायेगा।"

8ऐसा इसलिये होगा क्योंकि यरूशलेम ने ठोकर खायी
और उसने बुरा किया। यहूदा का पतन हो गया और
उसने परमेश्वर का अनुसरण करना त्याग दिया। वे जो
कहते हैं और जो करते हैं वह यहोवा के विरुद्ध है।
उन्होंने यहोवा की महिमा के प्रति विद्रोह किया।

9लोगों के चेहरों पर जो भाव हैं उनसे साफ़ दिखाई
देता है कि वे बुरे कर्म करने के अपराधी हैं। किन्तु वे
इन अपराधों को छुपाते नहीं है, बल्कि उन पर गर्व
करते हुए अपने पापों की डोंडी पीटते हैं। वे ढीठ हैं। वे
सदोम नगरी के लोगों के जैसे हैं। उन्हें इस बात की
परवाह नहीं हैं कि उनके पापों को कौन देख रहा है।
यह उनके लिये बहुत बुरा होगा। अपने ऊपर इतनी
बड़ी विपत्ति उन्होनें स्वयं बुलाई है।

10अच्छे लोगों को बता दो कि उनके साथ अच्छी
बातें घटेंगी। जो अच्छे कर्म वे करते हैं, उनका सुफल
वे पायेंगे। 11किन्तु बुरे लोगों के लिए यह बहुत बुरा
होगा। उन पर बड़ी विपत्ति टूट पड़ेगी। जो बुरे काम
उन्होंने किये हैं, उन सब के लिये उन्हें दण्ड दिया
जायेगा। 12मेरे लोगों को बच्चे निर्दयतापूर्वक सताएँगे।
उन पर स्त्रियाँ राज करेंगी। हे मेरे लोगों, तुम्हारे अगुआ
तुम्हें बुरे रास्ते पर ले जायेंगे। सही मार्ग से वे तुम्हें
भटका देंगे।

अपने लोगों के बारे मे परमेश्वर का निर्णय

13यहोवा अपने लोगों के विरोध में मुकदमा लड़ने के
लिए खड़ा होगा। वह अपने लोगों का न्याय करने के
लिए खड़ा होगा। 14बुजुर्गो और अगुवाओं ने जो काम
किये हैं यहोवा उनके विरुद्ध अभियोग चलाएगा।

यहोवा कहता है, "तुम लोगों ने अँगूर के बागों को
(यहूदा को) जला डाला है। तुमने गरीब लोगों की वस्तुएँ
ले लीं और वे वस्तुएँ अभी भी तुम्हारे घरों में हैं। 15मेरे
लोगों को सताने का अधिकार तुम्हें किसने दिया?
गरीब लोगों को मुँह के बल धूल में धकेलने का अधिकार

तुम्हें किसने दिया?" मेरे स्वामी, सर्वशक्तिशाली यहोवा
ने यें बातें कहीं थीं।
16यहोवा कहता है, "सिय्योन की स्त्रियाँ बहुत घमण्डी
हो गयी हैं। वे सिर उठाये हुए और ऐसा आचरण करते
हुए, जैसे वे दूसरे लोगों से उत्तम हों, इधर–उधर घूमती
रहती हैं। वे स्त्रियाँ अपनी आँखें मटकाती रहती हैं तथा
अपने पैरों की पाजेब झंकारती हुई इधर उधर ठुमकती
फिरती हैं।"
17सिय्योन की ऐसी स्त्रियों के सिरों पर मेरा स्वामी
फोड़े निकालेगा। यहोवा उन स्त्रियों को गंजा कर देगा।
18उस समय, यहोवा उनसे वे सब वस्तुएँ छीन लेगा जिन
पर उन्हें नाज़ था: पैरों के सुन्दर पाजेब, सूरज और चाँद
जैसे दिखने वाले कंठहार, 19बुन्दे, कंगन तथा ओढ़नी,
20माथापट्टी, पैर की झाँझर, कमरबंद, इत्र की शीशियाँ
और ताबीज़ जिन्हें वे अपने कण्ठहारों में धारण करती
थीं। 21मुहरदार अंगूठियाँ, नाक की बालियाँ, 22उत्तम
वस्त्र, टोपियाँ, चादरें, बटुए, 23दर्पण, मलमल के कपड़े,
पगड़ीदार टोपियाँ और लम्बे दुशाले।
24वे स्त्रियाँ जिनके पास इस समय सुगंधित इत्र हैं,
उस समय उनकी वह सुगंध फफूंद और सड़ाहट से भर
जायेगी। अब वे तगड़ियाँ पहनती है। किन्तु उस समय
पहनने को बस उनके पास रस्से होंगे। इस समय वे
सुशोभित जूड़े बाँधती है। किन्तु उस समय उनके सिर
मुड़वा दिये जायेंगे। उनके एक बाल तक नहीं होगा।
आज उनके पास सुन्दर पोशाकें हैं। किन्तु उस समय
उनके पास केवल शोक वस्त्र होंगे। जिनके मुख आज
खूबसूरत हैं उस समय वे शर्मनाक होंगे।
25उस समय, तेरे योद्धा युद्धों में मार दिये जायेंगे। तेरे
बहादुर युद्ध में मारे जायेंगे। 26नगर द्वार के निकट सभा
स्थलों में रोना बिलखना और दु:ख ही फैला होगा।
यरूशलेम उस स्त्री के समान हर वस्तु से वंचित हो
जायेगी जिसका सब कुछ चोर और लुटेरे लूट गये हों।
वह धरती पर बैठेगी और बिलखेगी।

4 उस समय, सात सात स्त्रियाँ एक पुरूष को दबोच
लेंगी और उससे कहेंगी, "अपने खाने के लिये
हम, अपनी रोटियों का जुगाड़ स्वयं कर लेंगी, अपने
पहनने के लिए कपड़े हम स्वयं बनायेंगी। बस तू हमसे
विवाह कर ले! ये सब काम हमारे लिए हम खुद ही
कर लेंगी। बस तू हमें अपना नाम दे। कृपा कर के
हमारी शर्म पर पर्दा डाल दे।"
2उस समय, यहोवा का पौधा (यहूदा) बहुत सुन्दर
और बहुत विशाल होगा। वे लोग, जो उस समय इस्राएल
में रह रहे होंगे उन वस्तुओं पर बहुत गर्व करेंगे जिन्हें
उनकी धरती उपजाती है। 3उस समय वे लोग जो अभी
भी सिय्योन और यरूशलेम में रह रहे होंगे, पवित्र लोग
कहलाएँगे। यह उन सभी लोगों के साथ घटेगा जिनका
एक विशेष सूची में नाम अंकित है। यह सूची उन लोगों
की होगी जिन्हें जीवित रहने की अनुमति दे दी
जायेगी।
4यहोवा सिय्योन की स्त्रियों की अशुद्धता को धो
देगा। यहोवा यरूशलेम से खून को धो कर बहा देगा।
यहोवा न्याय की चेतना का प्रयोग करेगा और बिना
किसी पक्षपात के निर्णय लेगा। वह दाहक चेतना का
प्रयोग करेगा और हर वस्तु को शुद्ध (उत्तम) कर देगा।
5उस समय, परमेश्वर यह प्रमाणित करेगा कि वह
अपने लोगों के साथ है। दिन के समय, वह धुएँ के एक
बादल की रचना करेगा और रात के समय एक चमचमाती
लपट युक्त अग्नि। सिय्योन पर्वत पर, लोगों की हर सभा
के ऊपर, उसके हर भवन के ऊपर आकाश में यें
संकेत प्रकट होंगे। सुरक्षा के लिये हर व्यक्ति के ऊपर
मण्डप का एक आवरण छा जायेगा। 6मण्डप का यह
आवरण एक सुरक्षा स्थल होगा। यह आवरण लोगों को
सूरज की गर्मी से बचाएगा। मण्डप का यह आवरण सब
प्रकार की बाढ़ों और वर्षा से बचने का एक सुरक्षित
स्थान होगा।

इस्राएल परमेश्वर का विशेष उपवन

5 अब मैं अपने मित्र (परमेश्वर) के लिए गीत गाऊँगा।
अपने अंगूर के बगीचे (इस्राएल के लोग) के विषय
में यह मेरे मित्र का गीत है। मेरे मित्र का बहुत उपजाऊँ
पहाड़ी पर एक अंगूर का बगीचा है।
2मेरे मित्र ने धरती खोदी और कंकड़ पत्थर हटा
कर उसे साफ किया और वहाँ पर अंगूर की उत्तम बेलें
रोप दी। फिर खेत के बीच में उसने अंगूर के रस
निकालने को कुंड बनाये। मित्र को आशा थी कि वहाँ
उत्तम अंगूर होंगे किन्तु वहाँ जो अंगूर लगे थे वे बुरे थे।
3सो परमेश्वर ने कहा: "हे यरूशलेम के लोगों, और
ओ यहूदा के वासियों, मेरे और मेरे अंगूर के बाग के
बारे में निर्णय करो।
4मैं और क्या अपने अंगूर के बाग के लिये कर
सकता था? मैंने वह सब किया जो कुछ भी मैं कर
सकताथा। मुझे उत्तम अंगूरों के लगने की आशा थी
किन्तु वहाँ अंगूर बुरे ही लगे। यह ऐसा क्यों हुआ?
5अब मैं तुझको बताऊँगा कि अपने अंगूर के बगीचे
के लिये मैं क्या कुछ करूँगा:
वह कंटीली झाड़ी जो खेत की रक्षा करती है मैं
उखाड़ दूँगा, और उन झाड़ियों को आग में जला दूँगा।
पत्थर का परकोटा तोड़ कर गिरा दूँगा। बगीचे को रौंद
दिया जायेगा।
6अंगूर के बगीचे को मैं खाली खेत में बदल दूँगा।
कोई भी पौधे की रखवाली नहीं करेगा। उस खेत में
कोई भी व्यक्ति काम नहीं करेगा। वहाँ केवल काँटे
और खरपतवार उगा करेंगे। मैं बादलों को आदेश दूँगा
कि वे वहाँ न बरसें।"

7सर्वशक्तिशाली यहोवा का अँगूर का बगीचा इस्राएल
का राष्ट्र है और अंगूर की बेलें जिन्हें यहोवा प्रेम
करता है, यहूदा के लोग है।

यहोवा ने न्याय की आशा की थी, किन्तु वहाँ हत्या
बस रही। यहोवा ने निष्पक्षता की आशा की, किन्तु
वहाँ बस सहायता माँगने वालों का रोना रहा जिनके
साथ बुरा किया गया था।

8बुरा हो उनका जो मकान दर मकान लेते ही चले
जाते हैं और एक खेत के बाद दूसरा और दूसरे के बाद
तीसरा खेत तब तक घेरते ही चले जाते हैं जब तक
किसी और के लिए कुछ भी जगह नहीं बच रहती।
ऐसे लोगों को इस प्रदेश में अकेले ही रहना पड़ेगा।
9सर्वशक्तिशाली यहोवा को मैंने मुझसे यह कहते
हुए सुना है, "अब देखो वहाँ बहुत सारे भवन हैं किन्तु
मैं तुमसे शपथपूर्वक कहता हूँ कि वे सभी भवन नष्ट
कर दिये जायेंगे। अभी वहाँ बड़े-बड़े भव्य भवन हैं
किन्तु वे भवन उजड़ जायेंगे। 10उस समय, दस एकड़
की अँगूरों की उपज से थोडी सी दाखमधु तैयार
होगी। और कई बोरी बीजों से थोड़ा सा अनाज पैदा
हो पायेगा।"

11तुम्हें धिक्कार है, तुम लोग अलख सुबह उठते हो
और अब सुरा पीने की ताक में रहते हो। रात को देर
तक जागते हुए दाखमधु पी कर धुत होते हो। 12तुम
लोग दाखमधु, वीणा, ढोल, बाँसुरी और ऐसे ही दूसरे
बाजों के साथ दावतें उड़ाते रहते हो और तुम उन बातों
पर दृष्टि नहीं डालते जिन्हें यहोवा ने किया है। यहोवा
के हाथों ने अनेकानेक वस्तुएँ बनायी है किन्तु तुम उन
वस्तुओं पर ध्यान ही नहीं देते। सो यह तुम्हारे लिये
बहुत बुरा होगा।

13यहोवा कहता है, "मेरे लोगों को बंदी बना कर
कहीं दूर ले जाया जायेगा। क्योंकि सचमुच वे मुझे नहीं
जानते। इस्राएल के कुछ निवासी, आज बहुत महत्वपूर्ण
है और अपने आराम भरे जीवन से प्रसन्न हैं, किन्तु वे
सभी बड़े लोग बहुत मूर्ख हो जाएँगे और इस्राएल के
आम लोग बहुत प्यासे हो जायेंगे। 14फिर उनकी मृत्यु हो
जायेगी और शियोल, (मृत्यु का प्रदेश), अधिक से
अधिक लोगों को निगल जाएगा। मृत्यु का वह प्रदेश
अपना असीम मुख पसारेगा और वे सभी महत्वपूर्ण
और साधारण लोग और हुल्लड़ मचाते वे सभी खुशियाँ
मनाते लोग शियोल मे धस जायेंगे।"

15उन लोगों को नीचा दिखाया जायेगा। वे बड़े लोग
अपना सिर नीचे लटकाये धरती की ओर देखेंगे।
16सर्वशक्तिशाली यहोवा न्याय के साथ निर्णय देगा, और
लोग जान लेंगे कि वह महान है। पवित्र परमेश्वर उन
बातों को करेगा जो उचित हैं, और लोग उसे आदर
देंगे। 17इस्राएल के लोगों से परमेश्वर उनका अपना देश
छुड़वा देगा। धरती वीरान हो जायेगी। भेड़ें जहाँ चाहेगी,
चली जायेंगी। वह धरती जो कभी धनवान लोगों की थी,
उस पर भेड़ें घूमा करेंगी।

18उन लोगों का बुरा हो, वे अपने अपराध और
अपने पापों को अपने पीछे ऐसे ढो रहे हैं जैसे लोग रस्सों
से छकड़े खींचते हैं। 19वे लोग कहा करते हैं, "काश!
परमेश्वर, जो उसकी योजना है, उसे जल्दी ही पूरा कर
दे। ताकि हम जान जायें कि क्या घटने वाला है। हम तो
यह चाहते हैं कि परमेश्वर की योजनाएँ जल्दी ही घटित
हो जायें ताकि हम यह जान लें कि उसकी योजना क्या
है।"

20उन लोगों का बुरा हो जो कहा करते कि अच्छी
बातें बुरी हैं, और बुरी बातें अच्छी हैं। वे लोग सोचा
करते हैं कि प्रकाश अन्धेरा हैं, और अन्धेरा प्रकाश
हैं। उन लोगों का विचार हैं कि कड़वा, मीठा है और
मीठा, कड़वा है। 21बुरा हो उन अभिमानियों का जो
स्वयं को बहुत चतुर मानते हैं। वे सोचा करते हैं कि वे
बहुत बुद्धिमान है। 22बुरा हो उनका जो दाखमधु पीने
के लिए जाने माने जाते हैं। दाखमधु के मिश्रण में जिन्हें
कुशलता हासिल है। 23और यदि तुम उन लोगों को
रिश्वत दे दो तो वे एक अपराधी को भी छोड़ देंगे।
किन्तु वे अच्छे व्यक्ति का भी निष्पक्षता से न्याय नहीं
होने देते। 24ऐसे लोगों के साथ बुरी बातें घटेंगी। उनके
वंशज पूरी तरह वैसे ही नष्ट हो जायेंगे जैसे घास फूस
आग में जला दिये जाते हैं। उनके वंशज उस कंद मूल
की तरह नष्ट हो जायेंगे जो मर कर धूल बन जाता है।
उनके वंशज ऐसे नष्ट कर दिये जायेंगे जैसे आग फूलों
को जला डालती है और उसकी राख हवा में उड़ जाती
है।

ऐसे लोगों ने सर्वशक्तिशाली यहोवा के उपदेशों का
पालन करने से इन्कार कर दिया है। उन लोगों ने
इस्राएल के पवित्र (परमेश्वर) के कथन से बैर किया
है। 25इसलिए यहोवा अपने लोगों से बहुत अधिक कुपित
हुआ है। यहोवा ने अपना हाथ उठाया और उन्हें दण्ड
दिया। यहाँ तक कि पर्वत भी भयभीत हो उठे थे।
गलियों में कूड़े की तरह लाशें बिछी पड़ी थी। किन्तु
यहोवा अभी भी कुपित है। उसका हाथ लोगों को दण्ड
देने के लिए अभी भी उठा हुआ है।

इस्राएल को दण्ड देने के लिए परमेश्वर सेनाएँ लायेगा

26देखो! परमेश्वर दूर देश के लोगों को संकेत दे रहा
है। परमेश्वर एक झण्डा उठा रहा है, और उन लोगों
को बुलाने के लिये सीटी बजा रहा है। किसी दूर देश से
शत्रु आ रहा है। वह शत्रु शीघ्र ही देश में घुस आयेगा। वे
बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। 27शत्रु कभी थका नहीं
करता अथवा कभी नीचे नहीं गिरता। शत्रु कभी न तो
ऊँघता है और न ही सोता है। उनके हथियारों के
कमर बंद सदा कसे रहते हैं। उनके जूतों के तस्में कभी

टूटते नहीं हैं। **28**शत्रु के बाण पैने हैं। उनके सभी धनुष बाण छोड़ने के लिये तैयार हैं। उनके घोड़ों के खुर चट्टानों जैसे कठोर हैं। उनके रथों के पीछे धूल के बादल उठा करते हैं।

29शत्रु गरजता है, और उनका गर्जन सिंह की दहाड़ के जैसा है। वह इतना तीव्र है जितना जवान सिंह का गर्जन। शत्रु जिनके विरुद्ध युद्ध कर रहा है उनके ऊपर गुर्राता है और उन पर झपट पड़ता है। वह उन्हें वहाँ से घसीट ले जाता है और वहाँ उन्हें बचाने वाला कोई नहीं होता। किन्तु उनके बच पाने की कोई वजह नहीं। **30**सो, उस दिन वह 'सिंह' समुद्र की तरंगों के समान दहाड़े मारेगा और बंदी बनाये गये लोग धरती ताकते रह जायेंगे, और फिर वहाँ बस अन्धेरा और दु:ख ही रह जाएगा। इस घने बादल में समूचा प्रकाश अंधेरे में बदल जाएगा।

यशायाह को नबी बनने के लिये परमेश्वर का बुलावा

6 जिस वर्ष राजा उज्जिय्याह की मृत्यु हुई, मैंने अपने अद्‌भुत स्वामी के दर्शन किये। (वह एक बहुत ऊँचे सिंहासन पर विराजमान था। उसके लम्बे चोगे से मन्दिर भर गया था। **2**यहोवा के चारों ओर साराप स्वर्गदूत खड़े थे। हर साराप (स्वर्गदूत) के छ: छ: पंख थे। इनमें से दो पंखों का प्रयोग वे अपने मुखों को ढकने के लिए किया करते थे तथा दो पंखों का प्रयोग अपने पैरों को ढकने के लिये करते थे और दो पंखों को वे उड़ने के काम में लाते थे। **3**हर स्वर्गदूत दूसरे स्वर्गदूत से पुकार–पुकार कर कह रहे थे, "पवित्र, पवित्र, पवित्र, सर्वशक्तिशाली यहोवा परम पवित्र है! यहोवा की महिमा सारी धरती पर फैली है।" स्वर्गदूतों की वाणी के स्वर बहुत ऊँचे थे। **4**स्वर्गदूतों की आवाज़ से द्वार की चौखटें हिल उठीं और फिर मन्दिर धुएँ* से भरने लगा।

5मैं बहुत डर गया था। मैंने कहा, "अरे, नहीं! मैं तो नष्ट हो जाऊँगा। मैं उतना शुद्ध नहीं हूँ कि परमेश्वर से बातें करूँ और मैं ऐसे लोगों के बीच रहता हूँ जो उतने शुद्ध नहीं है कि परमेश्वर से बातें कर सकें। किन्तु फिर भी मैंने उस राजा, सर्वशक्तिमान यहोवा, के दर्शन कर लिये है।"

6वहाँ वेदी पर आग जल रही थी। उन साराप (स्वर्गदूतों) में से एक ने उस आग में से चिमटे से एक दहकता हुआ कोयला उठा लिया और **7**उस दहकते हुए कोयले से मेरे मुख को छूआ दिया। फिर उस साराप (स्वर्गदूत) ने कहा! "देख! क्योंकि इस दहकते कोयले ने तेरे होठों को छू लिया हैं, सो तूने जो बुरे काम किये है, वे अब तुझ में से समाप्त हो गये हैं। अब तेरे पाप धो दिये गये हैं।"

8इसके बाद मैंने अपने यहोवा की आवाज सुनी। यहोवा ने कहा, "मैं किसे भेज सकता हूँ? हमारे लिए कौन जायेगा?"

सो मैंने कहा, "मैं यहाँ हूँ। मुझे भेज!"

9फिर यहोवा बोला, "जा और लोगों से कह: 'ध्यान से सुनो, किन्तु समझो मत! निकट से देखो, किन्तु बूझो मत!' **10**लोगों को उलझन में डाल दे। लोगों की जो बातें वे सुनें और देखें, वे समझ न सके। यदि तू ऐसा नहीं करेगा तो लोग उन बातों को जिन्हें वे अपने कानों से सुनते हैं सचमुच समझ जायेंगे। हो सकता है लोग अपने–अपने मन में सचमुच समझ जायें। यदि उन्होंने ऐसा किया तो सम्भव है लोग मेरी ओर मुड़े और चंगे हो जायें (क्षमा पा जायें।)!"

11मैंने फिर पूछा, "स्वामी, मैं ऐसा कब तक करता रहूँ?"

यहोवा ने उत्तर दिया, "तू तब तक ऐसा करता रह, जब तक नगर उजड़ न जायें ओर लोग नष्ट न हो जायें। तू तब तक ऐसा करता रह जब तक सभी घर खाली न हो जायें। ऐसा तब तक करता रह जब तक धरती नष्ट होकर उजड़ न जायें।"

12यहोवा लोगों को दूर चले जाने पर विवश करेगा। इस देश में बड़े–बड़े क्षेत्र उजड़ जायेंगे। **13**उस प्रदेश में दस प्रतिशत लोग फिर भी बचे रह जायेंगे किन्तु उनको भी फिर से नष्ट कर दिया जायेगा क्योंकि ये लोग बांजवृक्ष के उस पेड़ के समान होंगे जिसके काट दिये जाने के बाद भी उसका तना बचा रह जाता है और ये (बचे हुए लोग) उसी तने के समान होंगे जो फिर से फुटाव ले लेता है।

आराम पर विपत्ति

7 आहाज, योताम का पुत्र था। योताम उज्जिय्याह का पुत्र था। उन्हीं दिनों रसीन आराम का राजा हुआ करता था और इस्राएल पर रमल्याह के पुत्र पेकह राजा था। जिन दिनों यहूदा पर आहाज शासन कर रहा था, रसीन और पेकह युद्ध के लिये यरूलेम पर चढ़ बैठे। किन्तु वे इस नगर को हरा नहीं सके।

2दाऊद के घराने को एक सन्देश मिला। सन्देश के अनुसार, "आराम और इस्राएल की सेनाओं में परस्पर सन्धि हो गयी है। वे दोनों सेनाएँ आपस में एक हो गयीहैं।"

राजा आहाज ने जब यह समाचार सुना तो वह और उसकी प्रजा बहुत भयभीत हुए। वे आँधी में हिलते हुए वन के वृक्षों के समान भय से काँपने लगे।

3तभी यशायाह से यहोवा ने कहा, "तुझे और तेरे पुत्र शार्याशूब को आहाज के पास जाकर बात करनी चाहिये।

फिर मन्दिर धुएँ यह दिखाता है कि परमेश्वर मन्दिर के भीतर था। निर्गमन 40–35

तू उस स्थान पर आ, जहाँ ऊपर के तालाब में पानी गिरा करता है। यह उस गली में है जो धोबी-घाट की तरफ जाती है।

4"आहाज से जाकर कहना, 'सावधान रह किन्तु साथ ही शांत भी रह। डर मत। उन दोनों व्यक्तियों रसीन और रमल्याह के पुत्रों से मत डर। वे दो व्यक्ति तो जली हुई लकड़ियों के समान हैं। पहले वे दहका करते थे किन्तु अब वे, बस धुआं मात्र रह गये हैं। रसीन, आराम और रमल्याह का पुत्र कुपित है। **5**आराम, एप्रैम के प्रदेशों और रमल्याह के पुत्र ने तुम्हारे विरुद्ध योजनाएँ बना रखी हैं। उन्होंने कहा: **6**"हमें यहूदा पर चढ़ाई करनी चाहिये। हम अपने लिये उसे बाँट लेंगे। हम ताबेल के पुत्र को यहूदा का नया राजा बनायेंगे।'"

7मेरे स्वामी यहोवा का कहना है, "उनकी योजना सफल नहीं होगी। वह कभी पूरी नहीं होंगी। **8**जब तक दमिश्क का राजा रसीन है, तब तक यह नहीं घटेगी। इस्राएल अब एक राष्ट्र है किन्तु पैंसठ वर्ष के भीतर यह एक राष्ट्र नहीं रहेगा। **9**जब तक इस्राएल की राजधानी शोमरोन है और जब तक शोमरोन का राजा रमल्याह का पुत्र है तब तक उनकी योजनाएँ सफल नहीं होंगी। यदि इस सन्देश पर तू विश्वास नहीं करेगा तो लोग तुझ पर विश्वास नहीं करेंगे।"

इम्मानुएल-परमेश्वर हमारे साथ है

10यहोवा ने आहाज से अपनी बात जारी रखते हुए कहा, **11**यहोवा बोला, "ये बातें सच्ची हैं, इसे स्वयं प्रमाणित करने के लिए कोई संकेत माँग ले। तू जैसा भी चाहे वैसा संकेत माँग सकता है। वह संकेत चाहे गहरे मृत्यु के प्रदेश से हो और चाहे आकाशों से भी ऊँचे किसी स्थान से।"

12किन्तु आहाज़ ने कहा, "प्रमाण के रूप में मैं कोई संकेत नहीं मागूँगा। मैं यहोवा की परीक्षा नहीं लूँगा।"

13तब यशायाह ने कहा, "हे, दाऊद के वंशजो, सावधान हो कर सुनो! तुम लोगों के धैर्य की परीक्षा लेते हो। क्या यह तुम्हारे लिए काफी नहीं है जो, अब तुम मेरे परमेश्वर के धैर्य की परीक्षा ले रहे हो? **14**किन्तु, मेरा स्वामी परमेश्वर तुम्हें एक संकेत दिखायेगा:

देखो, एक कुवाँरी गर्भवती होगी और वह एक पुत्र को जन्म देगी। वह इस पुत्र का नाम इम्मानुएल रखेगी।

15इम्मानुएल दही और शहद खायेगा। वह इसी तरह रहेगा जब तक वह यह नहीं सीख जाता उत्तम को चुनना और बुरे को नकारना।

16किन्तु जब तक वह भले का चुनना और बुरे का त्यागना जानेगा एप्रैम और अराम की धरती उजाड़ हो जायेगी।

"आज तुम उन दो राजाओं से डर रहे हो। **17**किन्तु तुम्हें यहोवा से डरना चाहिये। क्यों? क्योंकि यहोवा तुम पर विपत्ति का समय लाने वाला है। वे विपत्तियाँ तुम्हारे लोगों पर और तुम्हारे पिता के परिवार के लोगों पर आयेंगी। विपत्ति का यह समय उन सभी बातों में अधिक बुरा होगा जो जब से एप्रैम (इस्राएल) यहूदा से अलग हुआ है, तब से अब तक घटी है। इसके लिये परमेश्वर क्या करेगा? परमेश्वर अश्शूर के राजा को तुम से लड़ाने के लिये लायेगा।

18"उस समय, यहोवा 'मक्खियों' को बुलायेगा। फिलहाल वे मक्खियाँ मिस्र की जलधाराओं के निकट हैं। और यहोवा 'मधुमक्खियों' को बुलायेगा। (फिलहाल वें मधुमक्खियाँ अश्शूर देश में रहती हैं।) ये शत्रु तुम्हारे देश में आयेंगे। **19**ये शत्रु चट्टानी क्षेत्रों में, रेगिस्तान में जल धाराओं के निकट झाड़ियों के आस-पास और पानी पीने की जगहों के इर्द-गिर्द अपने डेरे डालेंगे। **20**यहोवा यहूदा को दण्ड देने के लिये अश्शूर का प्रयोग करेगा। अश्शूर को भाड़े पर लेकर किसी उस्तरे की तरह काम में लाया जायेगा। यह ऐसा होगा जैसे यहोवा यहूदा के सिर और टाँगों के बालों का मुंडन कर रहा हो। यह ऐसा होगा जैसे यहोवा यहूदा की दाढ़ी मूंड रहा हो।

21"उस समय, एक व्यक्ति बस एक जवान गाय और दो भेंड़े ही जीवित रख पायेगा। **22**वे सब इतना दूध देंगी जो उस व्यक्ति को दही खाने के लिए पर्याप्त होगा। उस देश में बाकी बचा हर व्यक्ति दही और शहद ही खाया करेगा। **23**आज इस धरती पर हर खेत में एक हज़ार अँगूर की बेलें है। अँगूर के हर बगीचे की कीमत एक हज़ार चाँदी के सिक्कों के बराबर हैं। किन्तु इन खेतों में खरपतवार और काँटे भर जायेंगे। **24**यह धरती जंगली हो जाएगी और उसका इस्तेमाल एक शिकारगाह के रूप में ही हो सकेगा। **25**एक समय था जब इन पहाड़ियों पर लोग काम किया करते थे और अनाज उपजाया करते थे। किन्तु उस समय लोग वहाँ नहीं जाया करेंगे। वह धरती खरपतवारों और काँटों से भर जायेगी। उन स्थानों पर बस भेड़ें और मवेशी ही घूमा करेंगे।"

अश्शूर शीघ्र ही आयेगा

8 यहोवा ने मुझसे कहा, "लिखने के लिये मिटटी की बड़ी सी तख्ती ले और उस पर सुए से यह लिख: 'महेर्शालाल्हाशबज' (अर्थात् 'यहाँ जल्दी ही लूटमार और चोरियाँ होंगी।')

2मैंने कुछ ऐसे लोग एकत्र किये जिन पर साक्षी होने के लिये विश्वास किया जा सकता था। ये लोग थे नबी ऊरिय्याह और जकर्याह जो जेबेरेक्याह का पुत्र था। उन लोगों ने मुझे इन बातों को लिखते हुए देखा था। **3**फिर मैं उस नबिया के पास गया। मेरे उसके साथ साथ रहने के बाद, वह गर्भवती हो गयी और उसका एक पुत्र हुआ। तब यहोवा ने मुझसे कहा, "तू लड़के का

नाम महेर्शालाल्हशबज रख। 4क्योंकि इससे पहले कि बच्चा 'माँ' और 'पिता' कहना सीखेगा, उससे पहले ही परमेश्वर दमिश्क और शोमरोन की समूची धनसम्पत्ति को छीन लेगा और उन वस्तुओं को अश्शूर के राजा को दे देगा।"

5यहोवा ने मुझ से फिर कहा। 6मेरे स्वामी ने कहा, "ये लोग शीलोह की नहर के धीरे-धीरे बहते पानी को लेने से मना करते हैं। ये लोग रसीन और रमल्याह के पुत्र (पिकाह) के साथ प्रसन्न रहते हैं। 7किन्तु इसलिये मैं, यहोवा, अश्शूर के राजा और उसकी समूची शक्ति को तुम्हारे विरोध में लेकर आऊँगा। वे परात नदी की भयंकर बाढ़ की तरह आयेंगे। यह ऐसा होगा जैसे किनारों को तोड़ती डुबोती नदी उफ़न पड़ती है। 8जो पानी उस नदी से उफन कर निकलेगा, वह यहूदा में भर जायेगा और यहूदा को प्राय: डुबो डालेगा।

"इम्मानूएल, यह बाढ़ तब तक फैलती चली जायेगी जब तक वह तुम्हारे समूचे देश को ही न डुबो डाले।"

यहोवा अपने सेवकों की रक्षा करता है

9हे जातियों, तुम सभी युद्ध के लिये तैयार रहो! तुम को पराजित किया जायेगा। अरे, सुदूर के देशों, सुनों, तुम सभी युद्ध के लिये तैयार रहो! तुमको पराजित किया जायेगा। 10अपने युद्ध की योजनाएँ रचो! तुम्हारी योजनाएँ पराजित हो जायेंगी। तुम अपनी सेना को आदेश दो! तुम्हारे वे आदेश व्यर्थ हो जायेंगे। क्यों? क्योंकि परमेश्वर हमारे साथ है।

यशायाह को चेतावनी

11यहोवा ने अपनी महान शक्ति के साथ मुझ से कहा। यहोवा ने मुझे चेतावनी दी कि मैं इन अन्य लोगों के समान न बनूँ। यहोवा ने कहा, 12"हर कोई कह रहा है कि वे दूसरे लोग उसके विरुद्ध षड़यन्त्र रच रहे हैं। तुम्हें उन बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिये। जिन बातों से वे डरते हैं, तुम्हें उन बातों से नहीं डरना चाहिये। तुम्हें उनके प्रति निर्भय रहना चाहिए!"

13तुम्हें बस सर्वशक्तिमान यहोवा से ही डरना चाहिये। तुम्हें बस उसी का आदर करना चाहिये। तुम्हें उसी से डरना चाहिये। 14यदि तुम यहोवा के प्रति आदर रखोगे और उसे पवित्र मानोगे तो वह तुम्हारे लिये एक सुरक्षित स्थान होगा। किन्तु तुम उसका आदर नहीं करते। इसलिए परमेश्वर एक ऐसी चट्टान हो गया है जिसके उपर तुम लोग गिरोगे। वह एक ऐसी चट्टान हो गया है जिस पर इस्राएल के दो परिवार ठोकर खायेंगे। यरूशलेम के सभी लोगों को फँसाने के लिये वह एक फँदा बन गया है। 15(इस चट्टान पर बहुत से लोग गिरेंगे। वे गिरेंगे ओर चकनाचूर हो जायेंगे। वे जाल में पड़ेंगे और पकड़ें जायेंगे।)

16यशायाह ने कहा, "एक वाचा कर और उस पर मुहर लगा दे। भविष्य के लिये, मेरे उपदेशों की रक्षा कर। मेरे अनुयायियों के देखते हुए ही ऐसा कर। 17वह वाचा यह है:

मैं सहायता पाने के लिये यहोवा की प्रतीक्षा करुँगा। यहोवा याकूब के घराने से लज्जित है। वह उनको देखना तक नहीं चाहता है। किन्तु मैं यहोवा की प्रतिक्षा करुँगा। वह हमारी रक्षा करेगा।

18"मैं और मेरे बच्चे इस्राएल के लोगों के लिये संकेत और प्रमाण हैं। हम उस सर्वशक्तिमान यहोवा के द्वारा भेजे गये हैं, जो सिय्योन पर्वत पर रहता है।"

19कुछ लोग कहा करते हैं, "भविष्य बतानेवालों और जादूगरों से पूछो, क्या करना है?" (ये भविष्य बताने वाले और जादूगर फुस-फुसाकर बोलते हैं। ये लोगों पर यह प्रभाव डालने के लिये कि उनके पास अन्तर्दृष्टि हैं, वे चुपचाप बातें करते हैं।) किन्तु मैं तुम्हें बताता हूँ कि लोगों को अपने परमेश्वर से सहायता माँगनी चाहिये! वे भविष्य बताने वाले और जादूगर मरे हुए लोगों से पूछ कर बताते हैं कि क्या करना चाहिये? किन्तु भला जीवित लोग मरे हुओं से कोई बात क्यों पूछें।

20तुम्हें शिक्षाओं और वाचा के अनुसार चलना चाहिये। यदि तुम इन आज्ञाओं का पालन नहीं करोगे तो हो सकता है तुम ग़लत आज्ञाओं का पालन करने लगो। (ये गलत आज्ञाएँ वे हैं जो जादूगरों और भविष्य बताने वालों के द्वारा मिलती है। ये आज्ञाएँ बेकार हैं। उन आज्ञाओं पर चल कर तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा।)

21यदि तुम उन गलत आज्ञाओं पर चलोगे, तो तुम्हारे देश पर विपत्ति आयेगी और भूखमरी फैलेगी। लोग भूखे मरेंगे। फिर वे क्रोधित होंगे और अपने राजा और अपने देवताओं के विरुद्ध बाते कहेंगे। इसके बाद वे सहायता के लिये परमेश्वर की ओर निहारेंगे। 22यदि अपने देश में वे चारों तरफ़ देखेंगे तो उन्हें चारों ओर विपत्ति और चिन्ता जनक अन्धेरा ही दिखाई देगा। लोगों का वह अंधकारमय दु:ख उन्हें देश छोड़ने पर विवश करेगा और वे लोग जो उस अन्धेरे में फँसे होंगे, अपने आपको उससे मुक्त नहीं करा पायेंगे।

एक नया दिन आने को है

9 पहले लोग सोचा करते थे कि जबूलून और नप्ताली की धरती महत्वपूर्ण नहीं है। किन्तु बाद में परमेश्वर उस धरती को महान बनायेगा। समुद्र के पास की धरती पर, यरदन नदी के पार और गालील में गैर यहूदी लोग रहते हैं।

2यद्यपि आज ये लोग अन्धकार में निवास करते हैं, किन्तु इन्हें महान प्रकाश का दर्शन होगा। ये लोग एक ऐसे अन्धेरे स्थान में रहते हैं जो मृत्यु के देश के समान है। किन्तु वह "अद्‌भुत ज्योति" उन पर प्रकाशित होगा।

3हे परमेश्वर! तू इस जाति की बढ़ौतरी कर। तू लोगों
को खुशहाल बना। ये लोग तुझे अपनी प्रसन्नता दर्शायेंगे।
यह प्रसन्नता वैसी ही होगी जैसी कटनी के समय पर
होती है। यह प्रसन्नता वैसी ही होगी जैसी युद्ध में जीतने
के बाद लोग जब विजय की वस्तुओं को आपस में
बाँटते हैं, तब उन्हें होती है। 4ऐसा क्यों होगा? क्योंकि
तुम पर से भारी बोझ उतर जायेगा। लोगों की पीठों पर
रखे हुए भारी बल्लों को तुम उतरवा दोगे। तुम उस
दण्ड को छीन लोगे जिससे शत्रु तुम्हारे लोगों को दण्ड
दिया करता है। यह वैसा समय होगा जैसा वह समय था
जब तुमने मिद्यानियों को हराया था।

5हर वह कदम जो युद्ध में आगे बढ़ा, नष्ट कर दिया
जायेगा। हर वह वर्दी जिस पर लहू के धब्बे लगे हुए हैं,
नष्ट कर दी जायेगी। ये वस्तुएँ आग में झोंक दी जायेंगी।
6यह सब कुछ तब घटेगा जब उस विशेष बच्चे का जन्म
होगा। परमेश्वर हमें एक पुत्र प्रदान करेगा। यह पुत्र
लोगों की अगुवाई के लिये उत्तरदायी होगा। उसका नाम
होगा: "अद्भुत, उपदेशक, सामर्थी परमेश्वर, पिता–चिर
अमर और शांति का राजकुमार।" 7उसके राज्य में
शक्ति और शांति का निवास होगा। दाऊद के वंशज,
उस राजा के राज्य का निरन्तर विकास होता रहेगा।
वह राजा नेकी और निष्पक्ष न्याय का अपने राज्य के
शासन में सदा–सदा उपयोग करता रहेगा।

वह सर्वशक्तिशाल यहोवा अपनी प्रजा से गहरा प्रेम
रखता है और उसका यह गहरा प्रेम ही उससे ऐसे काम
करवाता है।

परमेश्वर इस्राएल को दण्ड देगा

8याकूब (इस्राएल) के लोगों के विरुद्ध मेरे यहोवा ने
एक आज्ञा दी। इस्राएल के विरुद्ध दी गयी उस आज्ञा का
पालन होगा। 9तब एप्रैम के हर व्यक्ति को और यहाँ
तक कि शोमरोन के मुखियाओं तक को यह पता चल
जायेगा कि परमेश्वर ने उन्हें दण्ड दिया था।

आज वे लोग बहुत अभिमानी और बड़बोला हैं। वे
लोग कहा करते हैं, 10"हो सकता है ये ईंटें गिर जायें
किन्तु हम इसका और अधिक मजबूत पत्थरों से निर्माण
लेंगे। सम्भव है ये छोटे–छोटे पेड़ काट गिराये जायें।
किन्तु हम वहाँ नये पेड़ खड़े कर देंगे और ये नये पेड़
विशाल तथा मजबूत पेड़ होंगे।"

11सो यहोवा लोगों को इस्राएल के विरुद्ध युद्ध करने
के लिए उकसाएगा। यहोवा रसीन के शत्रुओं को उनके
विरोध ले आयेगा। 12यहोवा पूर्व से आराम के लोगों को
और पश्चिम से पलिश्तियों को लायेगा। वे शत्रु अपनी
सेना से इस्राएल को हरा देंगे। किन्तु परमेश्वर इस्राएल
से तब भी कुपित रहेगा। यहोवा तब भी लोगों को दण्ड
देने को तत्पर रहेगा। 13परमेश्वर यद्यपि लोगों को दण्ड
देगा, किन्तु वे फिर भी पाप करना नहीं छोड़ेंगे। वे
परमेश्वर की ओर नहीं मुड़ेंगे। वे सर्वशक्तिमान यहोवा
का अनुसरण नहीं करेंगे। 14सो यहोवा इस्राएल का सिर
और पूँछ काट देगा। एक ही दिन में यहोवा उसकी
शाखा और उसके तने को ले लेगा। 15(यहाँ सिर का
अर्थ है अग्रज तथा महत्वपूर्ण अगुवा लोग और पूँछ से
अभिप्राय है ऐसे नबी जो झूठ बोला करते हैं।)

16वे लोग जो लोगों की अगुवाई करते हैं, उन्हें बुरे
मार्ग पर ले जाते हैं। सो ऐसे लोग जो उनके पीछे चलते
हैं, नष्ट कर दिये जायेंगे। 17ये सभी लोग दुष्ट हैं। इसलिये
यहोवा इन युवकों से प्रसन्न नहीं है। यहोवा उनकी
विधवाओं और उनके अनाथ बच्चों पर दया नहीं करेगा।
क्यों? क्योंकि ये सभी लोग दुष्ट हैं। ये लोग ऐसे काम
करते हैं जो परमेश्वर के विरुद्ध हैं। यें लोग झूठ बोलते
हैं। सो परमेश्वर इन लोगों के प्रति कुपित बना रहेगा
और उन्हें दण्ड देता रहेगा।

18बुराई एक छोटी सी आग है, आग पहले घास फूस
और काँटों को जलाती है, फिर वह बड़ी–बड़ी झाड़ियों
और जंगल को जलाने लगती है और अंत में जाकर वह
व्यापक आग का रूप ले लेती है और हर वस्तु धुआँ
बन कर ऊपर उड़ जाती है।

19सर्वशक्तिमान यहोवा कुपित है। इसलिए यह प्रदेश
भस्म हो जायेगा। उस आग में सभी लोग भस्म हो
जायेंगें। कोई व्यक्ति अपने भाई तक को बचाने का
जतन नहीं करेगा। 20तब उनके आस पास, जो भी कुछ
होगा, वे उसे जब दाहिनी ओर से लेंगे, या बाईं ओर से
लेंगे, भूखे ही रहेंगे। फिर वे लोग आपस में अपने ही
परिवार के लोगों को खाने लगेंगे। 21(अर्थात् मनश्शे,
एप्रैम के विरुद्ध लड़ेगा और एप्रैम मनश्शे के विरुद्ध
लड़ाई करेगा और फिर दोनों ही यहूदा के विरुद्ध हो
जायेंगे।)

यहोवा इस्राएल से अभी भी कुपित है। यहोवा उसके
लोगों को दण्ड देने के लिये अभी भी तत्पर है।

10 उन नियम बनाने वालों को देखो जो अन्यायपूर्ण
नियम बना कर लिखते हैं। ऐसे नियम बनाने
वाले ऐसे नियम बना कर लिखते हैं जिससे लोगों का
जीवन दूभर होता है। 2वे नियम बनाने वाले गरीब लोगों
के प्रति सच्चे नहीं हैं। वे गरीबों के अधिकार छीनते हैं।
वे लोगों को विधवाओं और अनाथों के यहाँ चोरी
करने की अनुमति देते हैं।

3अरे ओ, नियम को बनाने वालों, जब तुम्हें, जो
काम तुमने किये हैं, उनका हिसाब देना होगा तब तुम
क्या करोगे? सुदूर देश से तुम्हारा विनाश आ रहा है।
सहायता के लिये तुम किस के पास दौड़ोगे? तुम्हारा धन
और तुम्हारी सम्पत्ति तुम्हारी रक्षा नहीं कर पायेंगे।
4तुम्हें एक बंदी के समान नीचे झुकना ही होगा। तुम
मुर्दे के समान धरती में गिर कर दण्डवत प्रणाम करोगे
किन्तु उससे तुम्हें कोई सहायता नहीं मिलेगी। परमेश्वर

तब भी कुपित रहेगा। परमेश्वर तुम्हें दण्ड देने के लिए
तब भी तत्पर रहेगा।
5परमेश्वर कहेगा, "मैं एक छड़ी के रुप में अश्शूर
का प्रयोग करुँगा। मैं क्रोध में भर कर इस्राएल को दण्ड
देने के लिए अश्शूर का प्रयोग करुँगा। 6ऐसे लोगों के
विरुद्ध, जो पाप कर्म करते हैं युद्ध करने के लिये मैं
अश्शूर को भेजूँगा। मैं उन लोगों से कुपित हूँ और उन
लोगों से युद्ध करने के लिये मैं अश्शूर को आदेश दूँगा।
अश्शूर उन लोगों को हरा देगा और फिर उनसे उनकी
कीमती वस्तुएँ छीन लेगा। अश्शूर के लिए इस्राएल
गलियों में पड़ी उस धूल जैसा होगा जिसे वह अपने पैरों
तले रौंदेगा।
7"किन्तु अश्शूर यह नहीं समझता है कि मैं उसका
प्रयोग करुँगा। वह यह नहीं सोचता कि वह मेरा एक
साधन है। अश्शूर तो बस दूसरे लोगों को नष्ट करना
चाहता है। अश्शूर की तो मात्र यह योजना है कि वह
बहुत सी जातियों को नष्ट कर दे। 8अश्शूर अपने मन
में कहता है, 'मेरे सभी व्यक्ति राजाओं के समान हैं।
9कलनो नगरी कर्कमीश के जैसी है और हमात नगर
अर्पद नगर के जैसा है। शोमरोन की नगरी दमिश्क
नगर के जैसी है। 10मैंने इन सभी बुरे राज्यों को पराजित
कर दिया है और अब इन पर मेरा अधिकार है। जिन
मूर्तियों की वे लोग पूजा करते हैं, वे यरूशलेम और
शोमरोन की मूर्तियों से अधिक हैं। 11मैंने शोमरोन और
उसकी मूर्तियों को पराजित कर दिया। मैं यरूशलेम
और उसकी मूर्तियों को भी जिन्हें उसके लोगों ने बनाया
है पराजित कर दूँगा।'"
12मेरा स्वामी जब यरूशलेम और सिय्योन पर्वत के
लिये, जो उसकी योजना है, उसकी बातों को करना
समाप्त कर देगा, तो यहोवा अश्शूर को दण्ड देगा।
अश्शूर का राजा बहुत अभिमानी हैं। उसके अभिमान
ने उससे बहुत से बुरे काम करवाये हैं। सो परमेश्वर
उसे दण्ड देगा।
13अश्शूर का राजा कहा करता है, "मैं बहुत बुद्धिमान
हूँ। मैंने स्वयं अपनी बुद्धि और शक्ति से अनेक महान
कार्य किये हैं। मैंने बहुत सी जातियों को हराया है। मैंने
उनका धन छीन लिया है और उनके लोगों को दास
बना लिया है। मैं एक बहुत शक्तिशाली व्यक्ति हूँ। 14मैंने
स्वयं अपने हाथों से उन सब लोगों की धन दौलत ऐसे
ले ली है जैसे कोई व्यक्ति चिड़ियाँ के घोंसले से अण्डे
उठा लेता है। चिड़ियाँ जो प्राय: अपने घोंसले और अण्डों
को छोड़ जाती है और उस घोंसले की रखवाली करने
के लिये कोई भी नहीं रह जाता। वहाँ अपने पंखों और
अपनी चोंच से शोर मचाने और लड़ाई करने के लिये
कोई पक्षी नहीं होता। इसीलिए लोग अण्डों को उठा लेते
हैं। इसी प्रकार धरती के सभी लोगों को उठा ले जाने से
रोकने के लिए कोई भी व्यक्ति वहाँ नहीं था।"

शोमरोन की शक्ति पर परमेश्वर का नियंत्रण

15कुल्हाड़ा उस व्यक्ति से अच्छा नहीं होता, जो कुल्हाड़ें
को चलाता है। कोई आरा उस व्यक्ति से अच्छा नहीं
होता, जो उस आरे से काटता है। किन्तु अश्शूर का
विचार है कि वह परमेश्वर से भी अधिक महत्वपूर्ण
और बलशाली है। उसका यह विचार ऐसा ही है जैसे
किसी छड़ी का यह सोचना कि वह उस व्यक्ति से
अधिक बली और महत्वपूर्ण है जो उसे उठाता है और
किसी को दण्ड देने के लिए उसका प्रयोग करता है।
16अश्शूर का विचार है कि वह महान है किन्तु
सर्वशक्तिमान यहोवा अश्शूर को दुर्बल कर डालने
वाली महामारी भेजेगा और अश्शूर अपने धन और
अपनी शक्ति को वैसे ही खो बैठेगा जैसे कोई बीमार
व्यक्ति अपनी शक्ति गवाँ बैठता है। फिर अश्शूर का
वैभव नष्ट हो जायेगा। यह उस अग्नि के समान होगा
जो उस समय तक जलती रहती है जब तक सब कुछ
समाप्त नहीं हो जाता। 17इस्राएल का प्रकाश (परमेश्वर)
एक अग्नि के समान होगा। वह पवित्रतम लपट के
जैसा प्रकाशमान होगा। वह उस अग्नि के समान होगा
जो खरपतवार और काँटों को तत्काल जला डालती है
18और फिर बढ़कर बड़े बड़े पेड़ों और अँगूर के बगीचों
को जला देती है और अंत में सब कुछ नष्ट हो जाता है
यहाँ तक कि लोग भी। ऐसा उस समय होगा जब परमेश्वर
अश्शूर को नष्ट करेगा। अश्शूर सड़ते–गलते लट्ठे
के जैसा हो जायेगा। 19जंगल में हो सकता है थोड़े से पेड़
खड़े रह जायें। पर वे इतने थोड़े से होंगे कि उन्हें कोई
बच्चा तक गिन सकेगा।
20उस समय, वे लोग जो इस्राएल में जीवित बचेंगे,
यानी याकूब के वंश के ये लोग उस व्यक्ति पर निर्भर
नहीं करते रहेंगे जो उन्हें मारता पीटता है। वे सचमुच
उस यहोवा पर निर्भर करना सीख जायेंगे जो इस्राएल
का पवित्र (परमेश्वर) है। 21याकूब के वंश के वे बाकी
बचे लोग शक्तिशाली परमेश्वर का फिर अनुसरण करने
लगेंगे।
22तुम्हारे व्यक्ति असंख्य है। वे सागर के रेत कणों के
समान है; किन्तु उनमें से कुछ ही यहोवा की ओर फिर
वापस मुड़ आने के लिये बचे रहेंगे। वे लोग परमेश्वर
की ओर मुड़ेंगे किन्तु उससे पहले तुम्हारे देश का
विनाश हो जायेगा। परमेश्वर ने घोषणा कर दी है कि
वह उस धरती का विनाश करेगा और उसके बाद उस
धरती पर नेकी का आगमन इस प्रकार होगा जैसे कोई
भरपूर नदी बहती है। 23मेरा स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा,
इस प्रदेश को निश्चय ही नष्ट करेगा।
24मेरा स्वामी सर्वशक्तिशाली यहोवा कहता है, "हे!
सिय्योन में रहने वाले मेरे लोगों, अश्शूर से मत डरो!
वह भविष्य में तुम्हें अपनी छड़ी से इस तरह पीटेगा जैसे
पहले मिस्र ने तुम्हें पीटा था। यह ऐसा होगा जैसे मानो

तुम्हें हानि पहुँचाने के लिये अश्शूर किसी लाठी का
प्रयोग कर रहा हो। 25किन्तु थोड़े ही समय बाद मेरा
क्रोध शांत हो जायेगा, मुझे संतोष हो जायेगा कि अश्शूर
ने तुम्हें काफी दण्ड दे दिया है।"

26इसके बाद सर्वशक्तिमान यहोवा अश्शूर को कोड़ों
से मारेगा। जैसा पहले यहोवा ने जब ओरेब की चट्टान
पर मिद्यानियों को पराजित किया था, तब हुआ था।
वैसा ही उस समय होगा जब यहोवा अश्शूर पर आक्रमण
करेगा। पहले यहोवा ने मिस्र को दण्ड दिया था। उसने
सागर के ऊपर छड़ी उठायी थी* और मिस्र से अपने
लोगों को ले गया था। यहोवा जब अश्शूर से अपने लोगों
की रक्षा करेगा, तब भी ऐसा ही होगा।

27अश्शूर तुम पर विपत्तियाँ लायेगा। वे विपत्तियाँ ऐसे
बोझों के समान होंगी, जिन्हें तुम्हें अपने ऊपर एक जुए
के रूप में उठाना ही होगा। किन्तु फिर तुम्हारी गर्दन
पर से उस जुए को उतार फेंका जायेगा। वह जुआ
तुम्हारी शक्ति (परमेश्वर) द्वारा तोड़ दिया जायेगा।

इस्राएल पर अश्शूर की सेना का आक्रमण

28'अय्यात' के निकट सेनाओं का प्रवेश होगा। मिग्रोन
यानी 'खलिहानो' को सेनाएँ रौंद डालेंगी। सेनाएँ इसके
खाने की सामग्री को 'कोठियारों' (मिकमाश) में रख
देंगी। 29'पार करने के स्थान' (माबरा) से सेनाएँ नदी
पार करेंगी। वे सेनाएँ जेबा में रात बिताएंगी। रामा डर
जायेगा। शाऊल के गिबा के लोग निकल भागेंगे।

30हे गल्लीम की पुत्री चिल्ला! हे लैशा सुन! हे, अनातोत
मुझे उत्तर दे! 31मदमेना के लोग भाग रहे हैं। गेबीम के
लोग छिपे हुए हैं। 32आज सेना नोब में टिकेगी और
यरूशलेम के पर्वत सिय्योन पर चढ़ाई करने की तैयारी
करेंगी।

33देखो! हमारा स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा विशाल
वृक्ष (अश्शूर) को काट गिरायेगा। यहोवा अपनी महान
शक्ति से ऐसा करेगा। बड़े और महत्वपूर्ण लोग काट
गिराये जायेंगे। वे महत्वहीन हो जायेंगे। 34यहोवा अपने
कुल्हाड़े से वन को काट डालेगा और लबानोन के
विशाल वृक्ष (मुखिया लोग) गिर पड़ेंगे।

शांति का राजा आ रहा है

11 यिशै के तने (वंश) से एक छोटा अंकुर (पुत्र)
फूटना शुरु होगा। यह अब शाखा यिशै के मूल
से फूटेगी। 2उस पुत्र में यहोवा की आत्मा होगी। वह
आत्मा विवेक, समझबूझ, मार्ग दर्शन और शक्ति की
आत्मा होगी। वह आत्मा इस पुत्र को यहोवा को समझने
और उसका आदर करने में सहायता देगी। 3यह पुत्र
यहोवा का आदर करेगा और इससे वह प्रसन्न होगा।
यह पुत्र वस्तुएँ जैसी दिखाई दे रही होगी, उसके अनुसार
लोगों का न्याय नहीं करेगा। वह सुनी, सुनाई के आधार
पर ही न्याय नहीं करेगा। 4–5वह गरीब लोगों का न्याय
ईमानदारी और सच्चाई के साथ करेगा। धरती के दीन
जनों के लिये जो कुछ करने का निर्णय वह लेगा, उसमें
वह पक्षपात रहित होगा। यदि वह यह निर्णय करता है
कि लोगों पर मार पड़े तो वह आदेश देगा और उन
लोगों पर मार पड़ेगी। यदि वह निर्णय करता है कि उन
लोगों की मृत्यु होनी चाहिये तो वह आदेश देगा और
उन दुष्टों को मौत के घाट उतार दिया जाएगा। नेकी
और सच्चाई इस पुत्र को शक्ति प्रदान करेंगी। उसके
लिए नेकी और सच्चाई एक ऐसे कमर बंद के समान
होंगे जिसे वह अपनी कमर के चारों ओर लपेटता हैं।

6उसके समय में, भेड़ और भेड़िये शांति से साथ–साथ
रहेंगे, सिंह और बकरी के बच्चों के साथ शांति से पड़े
रहेंगे। बछड़े, सिंह और बैल आपस में शांति के साथ
रहेंगे। एक छोटा सा बच्चा उनकी अगुवाई करेगा। 7गायें
और रीछनियां शांति से साथ–साथ अपना खाना खाएंगी।
उनके बच्चे साथ–साथ बैठा करेंगे और आपस में एक
दूसरे को हानि नहीं पहुँचायेंगे। सिंह गायों के समान
घास चरेंगे 8और यहाँ तक कि साँप भी लोगों को हानि
नहीं पहुँचायेंगे। काले नाग के बिल के पास एक बच्चा
तक खेल सकेगा। कोई भी बच्चा विषधर नाग के बिल
में हाथ डाल सकेगा।

9ये सब बातें दिखाती हैं कि वहाँ सब कहीं शांति
होगी। कोई व्यक्ति किसी दूसरे को हानि नहीं पहुँचायेगा।
मेरे पवित्र पर्वत के लोग वस्तुओं को नष्ट नहीं करना
चाहेंगे। क्यों? क्योंकि लोग यहोवा को सचमुच जान
लेंगे। वे उसके ज्ञान से ऐसे परिपूर्ण होंगे जैसे सागर जल
से परिपूर्ण होता है।

10उस समय यिशै के परिवार में एक विशेष व्यक्ति
होगा। यह व्यक्ति एक ध्वजा के समान होगा। यह 'ध्वजा'
दर्शायेगी कि समस्त राष्ट्रों को उसके आसपास इकट्ठा
हो जाना चाहिये। ये राष्ट्र उससे पूछा करेंगे कि उन्हें
क्या करना चाहिये? और वह स्थान, जहाँ वह होगा,
भव्यता से भर जायेगा।

11ऐसे अवसर पर, मेरा स्वामी परमेश्वर फिर आयेगा
और उसके जो लोग बच गये थे उन्हें वह ले जायेगा।
यह दूसरा अवसर होगा जब परमेश्वर ने वैसा किया।
(ये परमेश्वर के ऐसे लोग है जो अश्शूर, उत्तरी मिस्र,
दक्षिणी मिस्र, कूश, एलाम, बाबुल, हमात तथा समस्त
संसार के ऐसे ही सुदूर देशों में छूट गये हैं।)

12परमेश्वर सब लोगों के लिये संकेत के रूप में झंडा
उठायेगा। इस्राएल और यहूदा के लोग अपने–अपने
देशों को छोड़ने के लिये विवश किये गये थे। वे लोग
धरती पर दूर–दूर फैल गये थे किन्तु परमेश्वर उन्हें
परस्पर एकत्र करेगा।

उसने ... उठायी थी **निर्गमन** 14:1–15:21

13उस समय एप्रैम (इस्राएल) यहूदा से जलन नहीं
रखेगा। यहूदा का कोई शत्रु नहीं बचेगा। यहूदा एप्रैम के
लिये कोई कष्ट पैदा नहीं करेगा। 14बल्कि एप्रैम और
यहूदा पलिश्तियों पर आक्रमण करेंगे। ये दोनों देश
उड़ते हुए उन पक्षियों के समान होंगे जो किसी छोटे से
जानवर को पकड़ने के लिए झपट्टा मारते हैं। एक
साथ मिल कर वे दोनों पूर्व की धन दौलत को लूट
लेंगे। एप्रैम और यहूदा एदोम, मोआब और अम्मोनी के
लोगों पर नियन्त्रण कर लेंगे।

15यहोवा कुपित होगा और जैसे उसने मिस्र के सागर
को दो भागों में बाँट दिया था, उसी प्रकार परात नदी
पर वह अपना हाथ उठायेगा और उस पर प्रहार करेगा।
जिससे वह नदी सात छोटी धाराओं में बट जायेगी। ये
छोटी जल धाराएँ गहरी नहीं होंगी। लोग अपने जूते पहने
हुए ही पैदल चल कर उन्हें पार कर लेंगे। 16परमेश्वर
के वे लोग जो वहाँ छूट गये थे अश्शूर को छोड़ देने के
लिए रास्ता पा जायेंगे। यह वैसा ही होगा, जैसा उस समय
हुआ था, जब परमेश्वर लोगों को मिस्र से बाहर निकाल
कर लाया था।

परमेश्वर का स्तुति गीत

12 उस समय तुम कहोगे: "हे यहोवा, मैं तेरे गुण
गाता हूँ! तू मुझ से कुपित रहा है किन्तु अब
मुझ पर क्रोध मत कर! तू मुझ पर अपना प्रेम दिखा।"

2परमेश्वर मेरी रक्षा करता है। मुझे उसका भरोसा
है। मुझे कोई भय नहीं है। वह मेरी रक्षा करता है।
यहोवा याह मेरी शक्ति है। वह मुझको बचाता है, और
मैं उसका स्तुति गीत गाता हूँ।

3तू अपना जल मुक्ति के झरने से ग्रहण कर। तभी तू
प्रसन्न होगा।

4फिर तू कहेगा, "यहोवा की स्तुति करो! उसके
नाम की तुम उपासना किया करो! उसने जो कार्य
किये हैं उसका लोगों से बखान करो। तुम उनको
बताओ कि वह कितना महान है!"

5तुम यहोवा के स्तुति गीत गाओ! क्यों? क्योंकि
उसने महान कार्य किये हैं! इस शुभ समाचार को जो
परमेश्वर का है, सारी दुनियाँ में फैलाओ ताकि सभी
लोग ये बातें जान जायें।

6हे सिय्योन के लोगों, इन सब बातों का तुम उद्घोष
करो! वह इस्राएल का पवित्र (शक्तिशाली) ढंग से
तुम्हारे साथ है। इसलिए तुम प्रसन्न हो जाओ!

बाबुल को परमेश्वर का सन्देश

13 आमोस के पुत्र यशायाह को परमेश्वर ने बाबुल
के बारे में यह शोक सन्देश प्रकट किया।

2परमेश्वर ने कहा: "पर्वत पर ध्वजा उठाओ जिस
पर्वत पर कुछ नहीं है। उन लोगों को पुकारो। सिपाहियों,
अपने हाथ संकेत के रुप में हिलाओ उन लोगों से
कहो कि वे उन द्वार से प्रवेश करे जो बड़े लोगों के हैं।"

3परमेश्वर ने कहा: "मैंने लोगों से उन पुरुषों को
अलग किया है, और मैं स्वयं उन को आदेश दूँगा। मैं
क्रोधित हूँ। मैंने अपने उत्तम पुरुषों को लोगों को दण्ड
देने के लिये एकत्र किये हैं। मुझको इन प्रसन्न लोगों
पर गर्व है!

4पहाड़ में एक तीव्र शोर हुआ है। तुम उस शोर को
सुनो! ये शोर ऐसा लगता है जैसे बहुत ढेर सारे लोगों
का। बहुत सारे देशों के लोग आकर इकट्ठे हुए हैं।
सर्वशक्तिमान यहोवा अपनी सेना को एक साथ बुला
रहा है।

5यहोवा और यह सेना किसी दूर के देश से आतेहैं। ये
लोग क्षितिज के पार से क्रोध प्रकट करने आ रहे हैं।
यहोवा इस सेना का उपयोग ऐसे करेगा जैसे कोई
किसी शस्त्र का उपयोग करता है। यह सेना सारे देश
को नष्ट कर देगी।

6यहोवा का न्याय का विशेष दिन आने को है। इसलिये
रोओ! और स्वयं अपने लिये दु:खी होओ! समय आ
रहा है जब शत्रु तुम्हारी सम्पत्ति चुरा लेगा। सर्वशक्तिमान
परमेश्वर वैसा करवाएगा। 7लोग अपना साहस छोड़
बैठेंगे और भय लोगों को दुर्बल बना देगा। 8हर कोई
भयभीत होगा। डर से लोगों के ऐसे दुखने लगेंगे जैसे
किसी बच्चे को जन्म देने वाली माँ का पेट दुखने लगता
है। उनके मुँह लाल हो जायेंगे, जैसे कोई आग हो। लोग
अचरज में पड़ जायेंगे क्योंकि उनके सभी पड़ोसियों के
मुखों पर भी भय दिखाई देगा।

बाबुल के विरुद्ध परमेश्वर का न्याय

9देखो यहोवा का विशेष दिन आने को है। वह एक
भयानक दिन होगा। परमेश्वर बहुत अधिक क्रोध करके
इस देश का विनाश कर देगा। वह पापियों को विवश
करेगा कि वे उस देश को छोड़ दें। 10आकाश काले
पड़ जायेंगे; सूरज, चाँद और तारे नहीं चमकेंगे।

11परमेश्वर कहता है, "मैं इस दुनिया पर बुरी-बुरी
बातें घटित करूँगा। मैं दुष्टों को उनकी दुष्टता का दण्ड
दूँगा। मैं अभिमानियों के अभिमान को मिटा दूँगा। ऐसे
लोग जो दूसरे के प्रति नीच हैं, मैं उनके बड़े बोल को
समाप्त कर दूँगा। 12वहाँ बस थोड़े से लोग ही बचेंगे।
जैसे सोने का मिलना दुर्लभ होता है, वैसे ही वहाँ लोगों
का मिलना दुर्लभ हो जायेगा। किन्तु जो लोग मिलेंगे, वे
शुद्ध सोने से भी अधिक मूल्यवान होंगे। 13अपने क्रोध
से मैं आकाश को हिला दूँगा। धरती अपनी धुरी से डिगा
दी जायेगी।"

यह सब उस समय घटेगा जब सर्वशक्तिमान यहोवा
अपना क्रोध दर्शायेगा। 14तब बाबुल के निवासी ऐसे
भागेंगे जैसे घायल हरिण भागता है। वे ऐसे भागेंगे जैसे

बिना गड़ेरिये की भेड़ भागती हैं। हर कोई व्यक्ति भाग
कर अपने देश और अपने लोगों की तरफ़ मुड़ आयेगा।
15किन्तु बाबुल के लोगों का पीछा उनके शत्रु नहीं
छोड़ेंगे और जब शत्रु किसी व्यक्ति को धर पकड़ेगा तो
वह उसे तलवार के घाट उतार देगा। 16उनके घरों की
हर वस्तु चुरा ली जायेगी। उनकी पत्नियों के साथ
कुकर्म किया जायेगा और उनके छोटे–छोटे बच्चों को
लोगों के देखते पीट पीटकर मार डाला जायेगा।

17परमेश्वर कहता है, "देखो, मैं मादी की सेनाओं से
बाबुल पर आक्रमण कराऊँगा। मादी की सेनाएँ यदि
सोने और चाँदी का भुगतान ले भी लेंगी तो भी वे उन
पर आक्रमण करना बंद नहीं करेंगी। 18बाबुल के
युवकों को सैनिक आक्रमण करके मार डालेंगे। वे
बच्चों तक पर दया नहीं दिखायेंगे। छोटे बालकों तक
के प्रति वे करुणा नहीं करेंगे। बाबुल का विनाश होगा
और यह विनाशसदोम और अमोरा के विनाश के
समान ही होगा। इस विनाश को परमेश्वर करायेगा
और वहाँ कुछ भी नहीं बचेगा।

19"बाबुल सबसे सुन्दर राजधानी है। बाबुल के निवासियों
को अपने नगर पर गर्व है। 20किन्तु बाबुल का सौन्दर्य
बना नहीं रहेगा। भविष्य में वहाँ लोग नहीं रहेंगे। अराबी
के लोग वहाँ अपने तम्बू नहीं गाड़ेंगे। गड़ेरिये चराने के
लिये वहाँ अपनी भेड़ों को नहीं लायेंगे। 21जो पशु वहाँ
रहेंगे वे बस मरुभूमि के पशु ही होंगे। बाबुल में अपने
घरों में लोग नहीं रह पायेंगे। घरों में जंगली कुत्ते और
भेड़िए चिल्लाएंगे। घरों के भीतर जंगली बकरे विहार
करेंगे। 22बाबुल के विशाल भवनों में कुत्ते और गीदड़
रोयेंगे। बाबुल बरबाद हो जायेगा। बाबुल का अंत निकट
है। अब बाबुल के विनाश की मैं और अधिक प्रतीक्षा
नहीं करता रहूँगा।"

इस्राएल घर लौटेगा

14 आगे चल कर, यहोवा याकूब पर फिर अपना
प्रेम दर्शायेगा। यहोवा इस्राएल के लोगों को फिर
चुनेगा। उस समय यहोवा उन लोगों को उनकी धरती
देगा। फिर गैर यहूदी लोग, यहूदी लोगों के साथ अपने
को जोड़ेंगे। दोनों ही जातियों के लोग एकत्र हो कर
याकूब के परिवार के रूप में एक हो जायेंगे। 2वे
जातियाँ इस्राएल की धरती के लिये इस्राएल के लोगों
को फिर वापस ले लेंगी। दूसरी जातियों के वे स्त्री पुरुष
इस्राएल के दास हो जायेंगे। बीते हुए समय में उन लोगों
ने इस्राएल के लोगों को बलपूर्वक अपना दास बनाया
था। इस्राएल के लोग उन जातियों को हरायेंगे और फिर
इस्राएल उन पर शासन करेगा।

3यहोवा तुम्हारे श्रम को समाप्त करेगा और तुम्हें
आराम देगा। पहले तुम दास हुआ करते थे, लोग तुम्हें
कड़ी मेहनत करने को विवश करते थे किन्तु
यहोवा तुम्हारी इस कड़ी मेहनत को अब समाप्त
कर देगा।

बाबुल के राजा के विषय में एक गीत

4उस समय बाबुल के राजा के बारे में तुम यह गीत
गाने लगोगे:

वह राजा दुष्ट था जब वह हमारा शासक था किन्तु
अब उसके राज्य का अन्त हुआ।

5यहोवा दुष्ट शासकों का राज दण्ड तोड़ देता है।
यहोवा उनसे उनकी शक्ति छीन लेता है।

6बाबुल का राजा क्रोध में भरकर लोगों को पीटा
करता है। उस दुष्ट शासक ने लोगों को पीटना कभी
बंद नहीं किया। उस दुष्ट राजा ने क्रोध में भरकर
लोगों पर राज किया। उसने लोगों के साथ बुरे कामों
का करना नहीं छोड़ा।

7किन्तु अब सारा देश विश्राम में है। देश में शान्ति
है। लोगों ने अब उत्सव मनाना शुरु किया है।

8तू एक बुरा शासक था, और अब तेरा अन्त हुआ
है। यहाँ तक की चीड़ के वृक्ष भी प्रसन्न है। लबानोन
में देवदार के वृक्ष मगन हैं। वृक्ष यह कहते हैं, "जिस
राजा ने हमें गिराया था। आज उस राजा का ही पतन हो
गया है, और अब वह राजा कभी खड़ा नहीं होगा।"

9अधोलोक, यानी मृत्यु का प्रदेश उत्तेजित है क्योंकि
तू आ रहा है। धरती के प्रमुखों की आत्माएँ जगा रहा
है। तेरे लिये अधोलोक है। अधोलोक तेरे लिये सिंहासन
से राजाओं को खड़ा कर रहा है। तेरे अगुवायी के वे
सब तैयार होंगे।

10ये सभी प्रमुख तेरी हँसी उड़ायेंगे। वे कहेंगे, "तू भी
अब हमारी तरह मरा हुआ है। तू अब ठीक हम लोगों
जैसा है।"

11तेरे अभिमान को मृत्यु के लोक में नीचे उतारा
गया। तेरे अभिमानी आत्मा की आने की घोषणा तेरी
वीणाओं का संगीत करता है। तेरे शरीर को मक्खियाँ
खा जायेंगी। तू उन पर ऐसे लेटेगा मानों वे तेरा बिस्तर
हो। कीड़े ऐसे तेरी देह को ढक लेंगे मानों कोई कम्बल
हों।

12तेरा स्वरुप भोर के तारे सा था, किन्तु तू आकाश
के ऊपर से गिर पड़ा। धरती के सभी राष्ट्र पहले तेरे
सामने झुका करते थे। किन्तु तुझको तोअब काट कर
गिरा दिया गया।

13तू सदा अपने से कहा करता था कि, "मैं सर्वोच्च
परमेश्वर सा बनूँगा। मैं आकाशों के ऊपर जीऊँगा। मैं
परमेश्वर के तारों के ऊपर अपना सिंहासन स्थापित
करुँगा। मैं जफोन के पवित्र पर्वत पर बैठूँगा। मैं उस
छिपे हुए पर्वत पर देवों से मिलूँगा।

14मैं बादलों के वेदी तक जाऊँगा। मैं सर्वोच्च परमेश्वर
सा बनूँगा।"

15किन्तु वैसा नहीं हुआ। तू परमेश्वर के साथ ऊपर
आकाश में नहीं जा पाया। तुझे अधोलोक के नीचे गहरे
पाताल में ले आया गया।

16लोग जो तुझे टकटकी लगा कर देखा करते हैं, वे
तुझे तेरे लिये सोचा करते हैं। लोगों को आज यह
दिखता है कि तू बस मरा हुआ है, और लोग कहा
करते हैं, "क्या यही वह व्यक्ति है जिसने धरती के सारे
राज्यों में भय फैलाया हुआ है?

17क्या यह वही व्यक्ति है जिसने नगर नष्ट किये और
जिसने धरती को उजाड़ में बदल दिया? क्या यह वही
व्यक्ति है जिसने लोगों को युद्ध में बन्दी बनाया और
उनको अपने घरों में नहीं जाने दिया?"

18धरती का हर राजा शान से मृत्यु को प्राप्तकिया।
हर किसी राजा का मकबरा (घर) बना है।

19किन्तु हे बुरे राजा, तुझको तेरी कब्र से निकाल
फेंका दिया गया है। तू उस शाखा के समान है जो वृक्ष
से कट गयी और उसे काट कर दूर फेंक दिया गया। तू
एक गिरी हुई लाश है जिसे युद्ध में मारा गया, और दूसरे
सैनिक उसे रौंदते चले गये। अब तू ऐसा दिखता है जैसे
अन्य मरे व्यक्ति दिखते हैं। तुझको कफन में लपेटा गया
है।

20बहुत से और भी राजा मरे। उनके पास अपनी
अपनी कब्र हैं। किन्तु तू उनमें नहीं मिलेगा। क्योंकि
तूने अपने ही देश का विनाश किया। अपने ही लोगों
का तूने वध किया है। जैसा विनाश तूने मचाया था।

21उसकी सन्तानों के वध की तैयारी करो। तुम उन्हें
मृत्यु के घाट उतारो क्योंकि उनका पिता अपराधी है।
अब कभी उसके पुत्र नहीं होंगे। उसकी सन्तानों अब
कभी भी संसार को अपने नगरों से नहीं भरेंगी। तेरी
संताने वैसा करती नहीं रहेगी। तेरी संतानों को वैसा
करने से रोक दिया जायेगा।

22सर्वशक्तिमान यहोवा ने कहा, "मैं खड़ा होऊँगा
और उन लोगों के विरुद्ध लड़ूँगा। मैं प्रसिद्ध नगर बाबुल
को उजाड़ कर दूँगा। बाबुल के सभी लोगों को मैं नष्ट
कर दूँगा। मैं उनकी संतानों, पोते-पोतियों और वंशजों
को मिटा दूँगा।" ये सब बातें यहोवा ने स्वयं कही थी।

23यहोवा ने कहा था, "मैं बाबुल को बदल डालूँगा।
उस स्थान में पशुओं का वास होगा, न कि मनुष्यों का।
वह स्थान दलदली प्रदेश बन जायेगा। मैं 'विनाश की
झाड़ू' से बाबुल को बाहर कर दूँगा।" सर्वशक्तिमान
यहोवा ने यें बातें कही थी।

परमेश्वर अश्शूर को भी दण्ड देगा

24सर्वशक्तिमान यहोवा ने एक वचन दिया था। यहोवा
ने कहा था, "मैं वचन देता हूँ, कि यें बातें ठीक वैसे ही
घटेंगी, जैसे मैंने इन्हें सोचा है। ये बातें ठीक वैसे ही
घटेंगी जैसी कि मेरी योजना है। 25मै अपने देश में
अश्शूर के राजा का नाश करुँगा अपने पहाड़ों पर मैं
अश्शूर के राजा को अपने पावों तले कुचलूँगा। उस
राजा ने मेरे लोगों को अपना दास बनाकर उनके
कन्धों पर एक जूआ रख दिया है। यहूदा की गर्दन से
वह जूआ उठा लिया जायेगा। उस विपत्ति को उठाया
जायेगा। 26मैं अपने लोगों के लिये ऐसी ही योजना बना
रहा हूँ। सभी जातियों को दण्ड देने के लिए, मैं अपनी
शक्ति का प्रयोग करुँगा।"

27यहोवा जब कोई योजना बनाता है तो कोई भी
व्यक्ति उस योजना को रोक नहीं सकता! यहोवा लोगों
को दण्ड देने के लिये जब अपना हाथ उठाता है तो
कोई भी व्यक्ति उसे रोक नहीं सकता।

पलिश्तियों को परमेश्वर का सन्देश

28यह दुखद सन्देश उस वर्ष दिया गया था जब राजा
आहाज की मृत्यु हुई थी।

29हे, पलिश्तियों के प्रदेशों! तू बहुत प्रसन्न है क्योंकि
जो राजा तुझे मार लगाया करता था, आज मर चुका
है। किन्तु तुझे वास्तव में प्रसन्न नहीं होना चाहिये। यह
सच है कि उसके शासन का अंत हो चुका है। किन्तु
उस राजा का पुत्र अभी आकर राज करेगा और वह
एक ऐसे साँप के समान होगा जो भयानक नागों को
जन्म दिया करता है। यह नया राजा तुम लोगों के लिये
एक बड़े फुर्तीले भयानक नाग के जैसा होगा। 30किन्तु
मेरे दीन जन सुरक्षा पूर्वक खाते पीते रह पायेंगे। उनकी
संतानें भी सुरक्षित रहेंगी। मेरे दीन जन, सो सकेंगे और
सुरक्षित अनुभव करेंगे। किन्तु तुम्हारे परिवार को मैं
भूख से मार डालूँगा और तुम्हारे सभी बचे हुए लोग मर
जायेंगे।

31 हे नगर द्वार के वासियों, रोओ! नगर में रहने वाले
तुम लोग, चीखो-चिल्लाओ! पलिश्ती के तुम सब लोगों
भयभीत होंगे। तुम्हारा साहस गर्म मोम की भाँति पिघल
कर ढल जायेगा। उत्तर दिशा की ओर देखो! वहाँ धूल
का एक बादल है! देखो, अश्शूर से एक सेना आ रही
है! उस सेना के सभी लोग बलशाली हैं!

32वह सेना अपने नगर में दूत भेजेंगे। दूत अपने लोगों
से क्या कहेंगे? वे घोषणा करेंगे: पलिश्ती पराजित हुआ,
किन्तु यहोवा ने सिय्योन को सुदृढ़ बनाया है, और
उसके दीन जन वहाँ रक्षा पाने को गये।

मोआब को परमेश्वर का सन्देश

15 यह बुरा सन्देश मोआब के विषय में है। एक
रात मोआब में स्थित आर के नगर का धन
सेनाओं ने लूटा। उसी रात नगर को तहस नहस कर
दिया गया। एक रात मोआब का किर नाम का नगर
सेनाओं ने लूटा। उसी रात वह नगर तहस नहस किया
गया। 2राजा का घराना और दिबोन के निवासी अपना

दु:ख रोने को ऊँचे पर पूजास्थलों में चलेगये। मोआब
के निवासी नबो और मेदबा के लिये रोते हैं। उन सभी
लोगों ने अपनी दाढ़ी और सिर अपना शोक दर्शाने के
लिये मुड़ाये थे।
3मोआब मे सब कहीं घरो और गलियों में, लोग शोक
वस्त्र पहनकर हाय हाय करते हैं।
4हेशबोन और एलाले नगरों के निवासी बहुत ऊँचे
स्वर में विलाप कर रहे हैं। बहूत दूर यहस की नगरी
तक वह विलाप सुना जा सकता है। यहाँ तक कि
सैनिक भी डर गये हैं। वे सैनिक भय से काँप रहे हैं।
5मेरा मन दु:ख से मोआब के लिये रोता है। लोग
कहीं शरण पाने को दौड़ रहे हैं। वे सुदूर जोआर में
जाने को भाग रहे हैं। लोग दूर के देश एग्लतशलीशिय्या
को भाग रहे हैं। लोग लूहीत की पहाड़ी चढ़ाई पर रोते
बिलखाते हुए भाग रहे हैं। लोग होरोनैम के मार्ग पर
और वे बहुत ऊँचे स्वर में रोते बिलखते हुए जा रहे हैं।
6किन्तु निम्रीम का नाला ऐसे सूख गया जैसे रेगिस्तान
सूखा होता है। वहाँ सभी वृक्ष सूख गये। कुछ भी हरा
नहीं हैं।
7सो लोग जो कुछ उनके पास है उसे इकटठा करते
हैं, और मोआब को छोड़ते हैं। उन वस्तुओं को लेकर
वे नाले (पाप्लर या अराबा) से सीमा पार कर रहे हैं।
8मोआब में हर कहीं विलाप ही सुनाई देता है। दूर के
नगर एगलैम में लोग बिलख रहे हैं। बेरेलीम नगर के
लोग विलाप कर रहे हैं।
9दीमोन नगर का जल खून से भर गया है, और मैं
(यहोवा) दीमोन पर अभी और विपत्तियाँ ढाऊँगा। मोआब
के कुछ निवासी शत्रु से बच गये हैं। किन्तु उन लोगों
को खा जाने को मैं सिंहों को भेजूँगा।

16 उस प्रदेश के राजा के लिये तुम लोगों को एक
उपहार भेजना चाहिये। तुम्हें रेगिस्तान से होते
हुए सिय्योन की पुत्री के पर्वत पर सेला नगर से एक
मेमना भेजना चाहिये।
2अरी ओ मोआब की स्त्रियों, अर्नोन की नदी को
पार करने का प्रयत्न करो। वे सहारे के लिये इधर–उधर
दौड़ रही हैं। वे ऐसी उन छोटी चिड़ियों जैसी है जो धरती
पर पड़ी हुई है जब उनका घोंसला गिर चुका।
3वे पुकार रही हैं, "हमको सहारा दो! बताओ हम
क्या करें! हमारे शत्रुओं से तुम हमारी रक्षा करो। तुम
हमें ऐसे बचाओ जैसे दोपहर की धूप से धरती बचाती है।
हम शत्रुओं से भाग रहे हैं,तुम हमको छुपा लो। हम को
तुम शत्रुओं के हाथों में मत पड़ने दो।"
4उन मोआब वासियों को अपना घर छोड़ने को विवश
किया गया था। अत: तुम उनको अपनी धरती पर रहने
दो। तुम उनके शत्रुओं उनको छुपा लो। यह लूट रुक
जायेगी। शत्रु हार जायेंगे और ऐसे पुरुष जो दूसरों की
हानि करते हैं, इस धरती से उखड़ेंगे।
5फिर एक नया राजा आयेगा। यह राजा दाऊद के
घराने से होगा। वह सत्यपूर्ण, करुण और दयालु होगा।
यह राजा न्यायी और निष्पक्ष होगा। वह खरे और नेक
काम करेगा।
6हमने सुना है कि मोआब के लोग बहुत अभिमानी
और गर्वीले हैं। ये लोग हिंसक हैं और बड़ा बोले भी।
इनका बड़ा बोल सच्चा नहीं है। 7समूचा मोआब देश
अपने अभिमान के कारण कष्ट उठायेगा। मोआब के
सारे लोग विलाप करेंगे। वे लोग बहुत दु:खी रहेंगे। वे
ऐसी वस्तुओं की इच्छा करेंगे जैसी उनके पास पहले
हुआ करती थीं। वे कीरहरासत में बने हुए अंजीर के
पूड़ों की इच्छा करेंगे। 8वे लोग बहुत दु:खी रहा करेंगे
क्योंकि हेशबोन के खेत और सिबमा की अँगूर की
बेलों में अँगूर नहीं लगा पा रहे हैं। बाहर के शासकों ने
अँगूर की बेलों को काट फेंका है। याजेर की नगरी से
लेकर मरुभूमि में दूर–दूर तक शत्रु की सेनाएँ फैल
गयी हैं। वे समुद्र के किनारे तक जा पहुँची हैं।

मोआब के विषय में एक शोक–गीत

9"मैं उन लोगों के साथ विलाप करूँगा जो याजेर और
सिबमा के निवासी हैं क्योंकि अंगूर नष्ट किये गये। मैं
हेशबोन और एलाले के लोगों के साथ शोक करूँगा
क्योंकि वहाँ फसल नहीं होगी। वहाँ गर्मी का कोई फल
नहीं होगा। वहाँ पर आनन्द के ठहाके भी नहीं होगे।
10अंगूर के बगीचे में आनन्द नहीं होगा और न ही
वहाँ गीत गाये जायेंगे। मैं कटनी के समय की सारी
खुशी समाप्त कर दूँगा। दाखमधु बनने के लिये अंगूर
तो तैयार है, किन्तु वे सब नष्ट हो जायेंगे।
11इसलिए मैं मोआब के लिये बहुत दु:खी हूँ। मैं
कीरहैरेम के लिये बहुत दु:खी हूँ। मैं उन नगरों के लिये
अत्याधिक दु:खी हूँ।
12मोआब के निवासी अपने ऊँचे पूजा के स्थानों पर
जायेंगे। वे लोग प्रार्थना करने का प्रयत्न करेंगे। किन्तु
वे उन सभी बातों को देखेंगे जो कुछ घट चुकी है,और
वे प्रार्थना करने को दुर्बल हो जायेंगे।"
13यहोवा ने मोआब के बारे में पहले अनेक बार यें
बातें कही थीं 14और अब यहोवा कहता है, "तीन वर्ष में
(उस रीति से जैसे किराये का मजदूर समय गिनता है)
वे सभी व्यक्ति और उनकी वे वस्तुएँ जिन पर उन्हें गर्व
था, नष्ट हो जायेंगी। वहाँ बहुत थोड़े से लोग ही बचेंगे,
बहुत से नहीं।"

आराम के लिए परमेश्वर का सन्देश

17 यह दमिश्क के लिये दु:खद सन्देश है। यहोवा
कहता है कि दमिश्क के साथ में बातें घटेंगी:
"दमिश्क जो आज नगर है किन्तु कल यह उजड़
जायेगा। दमिश्क में बस टूटे फूटे भवन ही बचेंगे।

2अरोएर के नगरों को लोग छोड़ जायेंगे। उन उजड़े
हुए नगरों में भेड़ों की रेवड़ें खुली घूमेंगी। वहाँ कोई
उनको डराने वाला नहीं होगा।
3एप्रैम (इस्राएल) के गढ़ नगर ध्वस्त हो जायेंगे। दमिश्क
के शासन का अन्त हो जायेगा। जैसे घटनाएँ इस्राएल में
घटती हैं वैसी ही घटनाएँ अराम में भी घटेंगी। सभी
महत्त्वपूर्ण व्यक्ति उठा लिये जायेंगे।" सर्वशक्तिमान यहोवा
ने बताया कि ये बातें घटेंगी।
4उन दिनों याकूब की (इस्राएल की) सारी सम्पति
चली जायेगी। याकूब वैसा हो जायेगा जैसा व्यक्ति रोग से
दुबला हो।
5वह समय ऐसा होगा जैसे रपाईम घाटी में फसल
काटने के समय होता है। मजदूर उन पौधों को इकट्ठा
करते हैं जो खेत में उपजते हैं। फिर वे उन पौधों की
बालों को काटते हैं और उनसे अनाज के दाने निकालते
हैं।
6वह समय उस समय के भी समान होगा जब लोग
जैतून की फसल उतारते हैं। लोग जैतून के पेड़ों से
जैतून झाड़ते हैं। किन्तु पेड़ की चोटी पर प्राय: कुछ
फल तब भी बचे रह जाते हैं। चोटी की कुछ शाखाओं
पर चार पाँच जैतून के फल छूट जाते हैं। उन नगरों में
भी ऐसा ही होगा। सर्वशक्तिमान यहोवा ने यें बातें कही
थीं।
7उस समय लोग परमेश्वर की ओर निहारेंगे।
परमेश्वर, जिसने उनकी रचना की है। वे इस्राएल के
पवित्र की ओर सहायता के लिये देखेगें। 8लोग उन
वेदियों पर विश्वास करना समाप्त कर देंगे जिनको
उन्होंने स्वयं अपने हाथों से बनाया था। अशेरा देवी के
जिन खम्भों और धूप जलाने की वेदियों को उन्होंने
अपनी उँगलियों से बनाया था, वे उन पर भरोसा करना
बंद कर देंगे।
9उस समय, सभी गढ़–नगर उजड़ जायेंगे। वे नगर
ऐसे पर्वत और जंगलों के समान हो जायेंगे, जैसे वे
इस्राएलियों के आने से पहले हुआ करते थे। बीते हुए
दिनों में वहाँ से सभी लोग दूर भाग गये थे क्योंकि
इस्राएल के लोग वहाँ आ रहे थे। भविष्य में यह देश
फिर उजड़ जायेगा। 10ऐसा इसलिये होगा क्योंकि तुमने
अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर को भुला दिया है। तुमने
यह याद नहीं रखा कि परमेश्वर ही तुम्हारा शरण
स्थल है।
तुम सुदूर स्थानों से कुछ बहुत अच्छी अँगूर की बेलें
लाये थे। तुम अंगूर की बेलों को रोप सकते हो किन्तु
उन पौधों में बढ़वार नहीं होगी। 11एक दिन तुम अपनी
अँगूर की उन बेलों को रोपोगे और उनकी बढ़वार
का जतन करोगे। अगले दिन, वे पौधे बढ़ने भी लगेंगे
किन्तु फसल उतारने के समय जब तुम उन बेलों के
फल इकट्ठे करने जाओगे तब देखोगे कि सब कुछ
सूख चुका है। एक बीमारी सभी पौधों का अंत कर
देगी।
12बहुत सारे लोगों का भीषणा नाद सुनो! यह नाद
सागर के नाद जैसा भयानक है। लोगों का शोर सुनो। ये
शोर ऐसा है जैसे सागर की लहरे टकरा उठती हो।
13लोग उन्ही लहरों जैसे होंगे। परमेश्वर उन लोगों
को झिड़की देगा, और वे दूर भाग जायेंगे। लोग उस
भूसे के समान होंगे जिस की पहाड़ी पर हवा उड़ाती
फिरती है। लोग वैसे हो जायेंगे जैसे आँधी उखाड़े जा रही
है। आँधी उसे उड़ाती है और दूर ले जाती है।
14उस रात लोग बहुत ही डर जायेंगे। सुबह होने से
पहले, कुछ भी नहीं बच पायेगा। सो शत्रुओं को वहाँ
कुछ भी हाथ नहीं आयेगा। वे हमारी धरती की ओर
आयेंगे, किन्तु वहाँ भी कुछ नहीं होगा।

कूश के लिये परमेश्वर का सन्देश

18 उस धरती को देखो जो कूश की नदियों के
साथ–साथ फैली है। इस धरती में कीड़े–मकोड़े
भरे पड़े हैं। तुम उनके पंखों की भिन्नाहट सुन सकते
हो। 2यह धरती लोगों को सरकण्डों की नावों से सागर
के पार भेजती है।
हे तेज़ चलने वाले हरकारो, एक ऐसी जाति के लोगों
के पास जाओ जो लम्बे और शक्तिशाली हैं! (इन लम्बें
शक्तिशाली लोगों से सब कहीं के लोग डरते हैं। वे एक
बलवान जाति के लोग हैं। उनकी जाति दूसरी जातियों
को पराजित कर देती हैं। वे एक ऐसे देश के हैं जिसे
नदियाँ विभाजित करती हैं।) 3ऐसे उन लोगों को सावधान
कर दो कि उनके साथ कोई बुरी घटना घटने को है।
उस जाति के साथ घटती हुई इस घटना को दुनिया के
सब लोग देखेंगे। लोग इसे इस तरह साफ–साफ़ देखेंगे,
जैसे पहाड़ पर लगे हुए झण्डे को लोग देखते हैं। इन
लम्बे और शक्तिशाली व्यक्तियों के साथ जो बातें घटेंगी,
उनके बारे में इस धरती के सभी निवासी सुनेंगे। इसको
वे इतनी स्पष्टता से सुनेंगे जितनी स्पष्टता से युद्ध से
पहले बजने वाले नरसिंगे की आवाज़ सुनाई देती हैं।
4यहोवा ने कहा, "जो स्थान मेरे लिये तैयार किया
गया है, मैं उस स्थान पर होऊँगा। मैं चुपचाप इन बातों
को घटते हुए देखूँगा। गर्मी के एक सुहावने दिन दोपहर
के समय जब लोग आराम कर रहे होंगे (यह तब होगा
जब कटनी का गर्म समय होगा, वर्षा नहीं होगी, बस
अलख सुबह की ओस ही पड़ेगी।) 5सभी कोई बहुत
भयानक बात घटेगी। यह वह समय होगा जब फूल
खिल चुके होंगे। नये अँगूर फूट रहे होंगे और उनकी
बढ़वार हो रही होगी। किन्तु फसल उतारने के समय से
पहले ही शत्रु आयेगा और इन पौधों को काट डालेगा।
शत्रु आकर अँगूर की लताओं को तोड़ डालेगा और
उन्हें कहीं दूर फेंक देगा। 6अँगूर की यें बेलें शिकारी

पहाड़ी पक्षियों और जंगली जानवरों के खाने के लिये छोड़ दी जायेंगी। गर्मियो में पक्षी इन दाख लताओं में बसेरा करेंगे और उस सदी में जंगली पशु इन दाख लताओं को चरेंगे।"

7उस समय, सर्वशक्तिमान यहोवा को एक विशेष भेंट चढ़ाई जायेगी। यह भेंट उन लोगों की ओर से आयेगी, जो लम्बे और शक्तिशाली हैं। (सब कहीं के लोग इन लोगों से डरते हैं। ये एक शक्तिशाली जाति के लोग हैं। यह जाति दूसरी जाति के लोगों को पराजित कर देती है। ये एक ऐसे देश के हैं, जो नदियों से विभाजित हैं।)

यह भेंट यहोवा के स्थान सिय्योन पर्वत पर लायी जायेगी।

मिस्र के लिए परमेश्वर का सन्देश

19 मिस्र के बारे में दु:खद सन्देश: देखो! एक उड़ते हुए बादल पर यहोवा आ रहा है। यहोवा मिस्र में प्रवेश करेगा और मिस्र के सारे झूठे देवता भय से थर-थर काँपने लगेंगे। मिस्र वीर था किन्तु उसकी वीरता गर्म मोम की तरह पिघल कर बह जायेगी।

2परमेश्वर कहता है, "मैं मिस्र के लोगों को आपस में ही एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध करने के लिये उकसाऊँगा। लोग अपने ही भाइयों से लड़ेंगे। पड़ोसी, पड़ोसी के विरोध में हो जायेगा। नगर, नगर के विरोध में और राज्य, राज्य के विरोध में हो जायेंगे।
3मिस्र के लोग चक्कर में पड़ जायेंगे। वे लोग अपने झूठे देवताओं और बुद्धिमान लोगों से पूछेंगे कि उन्हें क्या करना चाहिये। वे लोग अपने ओझाओं और जादूगरों से पूछताछ करेंगे किन्तु उनकी सलाह व्यर्थ होगी।"

4सर्वशक्तिमान यहोवा स्वामी का कहना है: "मैं (परमेश्वर) मिस्र को एक कठोर स्वामी को सौंप दूँगा। एक शक्तिशाली राजा लोगों पर राज करेगा।
5नील नदी का पानी सूख जायेगा। नदी के तल में पानी नहीं रहेगा।
6सभी नदियों से दुर्गन्ध आने लगेगी। मिस्र की नहरें सूख जायेंगी। उनका पानी जाता रहेगा। पानी के सभी पौधे सड़ जायेंगे।
7वे सभी पौधे जो नदी के किनारे उगे होंगे, सूख कर उड़ जायेंगे। यहाँ तक कि वे पौधे भी, जो नदी के सबसे चौड़े भाग में होंगे, व्यर्थ हो जायेंगे।

8"मछुआरे, और वे सभी लोग जो नील नदी से मछलियाँ पकड़ा करते हैं, दु:खी होकर त्राहि-त्राहि कर उठेंगे। वे अपने भोजन के लिए नील नदी पर आश्रित हैं किन्तु वह सूख जायेगी।
9वे लोग जो कपड़ा बनाया करते हैं, अत्यधिक दु:खी होंगे। इन लोगों को सन का कपड़ा बनाने के लिए पटसन की आवश्यकता होगी किन्तु नदी के सूख जाने से सन के पौधों की बढ़वार नहीं हो पायेगी।
10पानी इकट्ठा करने के लिये बाँध बनाने वाले लोगों के पास काम नहीं रह जायेगा। सो वे बहुत दु:खी होंगे।

11"सोअन नगर के मुखिया मूर्ख हैं। फिरौन के बुद्धिमान मन्त्री गलत सलाह देते हैं। वे मुखिया लोग कहते हैं कि वे बुद्धिमान हैं। उनका कहना है कि वे पुराने राजाओं के वंशज हैं। किन्तु जैसा वे सोचते हैं, वैसे बुद्धिमान नहीं हैं।"

12हे मिस्र, तेरे बुद्धिमान पुरुष कहाँ हैं? उन बुद्धिमान लोगों को सर्वशक्तिमान यहोवा ने मिस्र के लिये जो योजना बनाई है, उसका पता होना चाहिये। उन लोगों को, जो होने वाला है, तुम्हें बताना चाहिये।

13सोअन के मुखिया मूर्ख बना दिये गये हैं। नोप के मुखियाओं ने झूठी बातों पर विश्वास किया है। सो मुखिया लोग मिस्र को ग़लत रास्ते पर ले जाते हैं।
14यहोवा ने मुखियाओं को उलझन में डाल दिया है। वे भटक गये हैं और मिस्र को गलत रास्ते पर ले जा रहे हैं। वे नशे में धुत ऐसे लोगों के समान हैं जो बीमारी के कारण धरती में लोट रहे हैं।
15मिस्र के लिए कोई कुछ नहीं कर पाएगा। (फिर चाहे वे सिर हो अथवा पूँछ, "खजूर की शाखायें हो या सरकंडे" (अर्थात् "महत्वपूर्ण हो या महत्वहीन लोग।")

16उस समय, मिस्र के निवासी भयभीत स्त्रियों के समान हो जायेंगे। वे सर्वशक्तिमान यहोवा से डरेंगे। यहोवा लोगों को दण्ड देने के लिए अपना हाथ उठायेगा और लोग डर जायेंगे।
17मिस्र में सब लोगों के लिये यहूदा का प्रदेश भय का कारण होगा। मिस्र में कोई भी यहूदा का नाम सुन कर डर जायेगा। ऐसा इसलिये होगा क्योंकि सर्वशक्तिमान यहोवा ने भयानक घटनायें घटाने की योजना बनायी है।
18उस समय, मिस्र में ऐसे पाँच नगर होंगे जहाँ लोग कनान की भाषा (यहूदी भाषा) बोलेंगे। इन नगरों में एक नगर का नाम होगा "नाश की नगरी।"

लोग सर्वशक्तिमान यहोवा के अनुसरण की प्रतिज्ञा करेंगे।
19उस समय मिस्र के बीच में यहोवा के लिये एक वेदी होगी। मिस्र की सीमापर यहोवा को आदर देने के लिए एक स्मारक होगा।
20यह इस बात का प्रतीक होगा कि सर्वशक्तिमान यहोवा शक्तिमान कार्य करता है। जब कभी लोग सहायता के लिए यहोवा को पुकारेंगे, यहोवा सहायता भेजेगा। यहोवा लोगों को बचाने और उनकी रक्षा करने के लिये एक व्यक्ति को भेजेगा। वह व्यक्ति उन व्यक्तियों को उन दूसरे लोगों से बचायेगा जो उनके साथ बुरी बातें करते हैं।

21सचमुच उस समय, मिस्र के लोग यहोवा को जानेंगे। वे लोग परमेश्वर से प्रेम करेंगे। वे लोग परमेश्वर की सेवा करेंगे और बहुत सी बलियाँ चढ़ायेंगे। वे लोग यहोवा की मनौतियाँ मानेंगे और उन मनौतियों का पालन करेंगे।

22यहोवा मिस्र के लोगों को दण्ड देगा। फिर यहोवा उन्हें (चंगा) क्षमा कर देगा और वे यहोवा की ओर

लौट आयेंगे। यहोवा उनकी प्रार्थनाएँ सुनेगा और उन्हें क्षमा कर देगा।

23उस समय, वहाँ एक ऐसा राजमार्ग होगा जो मिस्र से अश्शूर जायेगा। फिर अश्शूर से लोग मिस्र में जायेंगे और मिस्र से अश्शूर में। मिस्र अश्शूर के लोगों के साथ परमेश्वर की उपासना करेगा।

24उस समय, इस्राएल, अश्शूर और मिस्र आपस में एक हो जायेंगे और पृथ्वी पर शासन करेंगे। यह शासन धरती के लिये वरदान होगा। 25सर्वशक्तिमान यहोवा इन देशों को आशीर्वाद देगा। वह कहेगा, "हे मिस्र के लोगों, तुम मेरे हो। अश्शूर, तुझे मैंने बनाया है। इस्राएल, मैं तेरा स्वामी हूँ। तुम सब धन्य हो!"

अश्शूर मिस्र और कूश को हरायेगा

20 सर्गोन अश्शूर का राजा था। सर्गोन ने तर्तान को नगर के विरुद्ध युद्ध करने के लिए अशदोद भेजा। तर्तान ने वहाँ जा कर नगर पर कब्जा कर लिया। 2उस समय आमोस के पुत्र यशायाह के द्वारा यहोवा ने कहा, "जा, और अपनी कमर से शोक वस्त्र उतार फेंक। अपने पैरों की जूतियाँ उतार दे।" यशायाह ने यहोवा की आज्ञा का पालन किया और वह बिना कपड़ों और बिना जूतों के इधर-उधर घूमा।

3फिर यहोवा ने कहा, "यशायाह तीन साल तक बिना कपड़ों और बिना जूतियाँ पहने इधर-उधर घूमता रहा है। मिस्र और कूश के लिए यह एक संकेत है कि 4अश्शूर का राजा मिस्र और कूश को हरायेगा। अश्शूर वहाँ के बंदियों को लेकर, उनके देशों से दूर ले जायेगा। बूढ़े व्यक्ति और जवान लोग बिना कपड़ों और नंगे पैरों ले जाये जायेंगे। वे पूरी तरह से नंगे होंगे। मिस्र के लोग लज्जित होंगे। 5जो लोग सहायता के लिये कूश की ओर देखा करते थे, वे टूट जायेंगे। जो लोग मिस्र की महिमा से चकित थे वे लज्जित होंगे।"

6समुद्र के पास रहने वाले, वे लोग कहेंगे, "हमने सहायता के लिये उन देशों पर विश्वास किया। हम उनके पास दौड़े गये ताकि वे हमे अश्शूर के राजा से बचा लें किन्तु उन देशों को देखो कि उन देशों पर ही जब कब्जा कर लिया गया तब हम कैसे बच सकते थे?"

परमेश्वर का बाबुल को सन्देश

21 सागर के मरुप्रदेश के बारे में दुःखद सन्देश। मरुप्रदेश से कुछ आने वाला है। यह नेगव से आती हवा जैसा आ रही है। यह किसी भयानक देश से आ रही है।

2मैंने कुछ देखा है जो बहुत ही भयानक है और घटने ही वाला है। मुझे गद्दार तुझे धोखा देते हुए दिखते हैं। मैं लोगों को तुम्हारा धन छीनते हुए देखता हूँ। एलाम, तुम जाओ और लोगों से युद्ध करो! मादै, तुम अपनी सेनाएँ लेकर नगर को घेर लो तथा उसको पराजित करो! मैं उस बुराई का अन्त करूँगा जो उस नगर में है। 3मैंने ये भयानक बातें देखीं और अब मैं बहुत डर गया हूँ। डर के मारे पेट में दर्द हो रहा है। यह दर्द प्रसव की पीड़ा जैसा है। जो बातें मैं सुनता हूँ, वे मुझे बहुत डराती है। जो बातें मैं देख रहा हूँ, उनके कारण मैं भय के मारे काँपने लगता हूँ। 4मैं चिन्तित हूँ और भय से थर-थर काँप रहा हूँ। मेरी सुहावनी शाम भय की रात बन गयी है।

5लोग सोचते हैं, सब कुछ ठीक है। लोग कहते हैं, "चौकी तैयार करो और उस पर आसन बिछाओ, खाओ, पिओ!" किन्तु मेरा कहना है, "मुखियाओं! खडे होओ और युद्ध की तैयारी करो।" उसी समय सैनिक कह रहे हैं, "पहरेदारों को तैनात करो! अधिकारियों, खड़े हो जाओ और अपनी ढालों को झलकाओ!"

6मेरे स्वामी ने मुझे ये बातें बतायी हैं, "जा और नगर की रक्षा के लिए किसी व्यक्ति को ढूँढ। 7यदि वह रखवाला घुड़सवारों की, गधों की अथवा ऊँटों की पंक्तियों को देखें तो उसे सावधानी के साथ सुनना चाहिये।"

8सो फिर वह पहरेदार जोर से बोला पहरेदार ने कहा, "मेरे स्वामी, मैं हर दिन चौकीदार के बुर्ज पर चौकीदारी करता आया हूँ। हर रात मैं खड़ा हुआ पहरा देता रहा हूँ।

किन्तु... 9देखो! वे आ रहे हैं! मुझे घुड़सवारो की पंक्तियाँ दिखाई दे रही हैं।"

फिर सन्देशवाहक ने कहा, "बाबुल पराजित हुआ, बाबुल धरती पर ध्वस्त किया गया। उसके मिथ्या देवों की सभी मूर्तियाँ धरती पर लुढ़का दी गई और वे चकनाचूर हो गई हैं।"

10यशायाह ने कहा, "हे खलिहान में अनाज की तरह रौंदे गए मेरे लोगों, मैंने सर्वशक्तिमान यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर से जो कुछ सुना है, सब तुम्हें बता दिया है।"

एदोम को परमेश्वर का सन्देश

11दूमा के लिये दुःखद सन्देश। सेईर से मुझको किसी ने पुकारा। उसने मुझ से कहा, "हे पहरेदार, रात अभी कितनी शेष बची है? अभी और कितनी देर यह रात रहेगी!"

12पहरेदार ने कहा, "भोर होने को है किन्तु रात फिर से आयेगी। यदि तुझे कोई बात पूछनी है तो लौट आ और मुझसे पूछ ले।"

अरब के लिये परमेश्वर का सन्देश

13अरब के लिये दुःखद सन्देश। हे ददानी के काफिले, तू रात अरब के मरुभूमि में कुछ वृक्षों के पास गुजार ले।

14कुछ प्यासे यात्रियों को पीने को पानी दो। तेमा के
लोगों, उन लोगों को भोजन दो जो यात्रा कर रहे हैं।
15वे लोग ऐसी तलवारों से भाग रहे थे जो उनको
मारने को तत्पर थे।। वे लोग उन धनुषो से बचकर
भाग रहे थे जो उन पर छूटने के लिये तने हुए थे। वे
भीषण लड़ाई से भाग रहे थे।
16मेरे स्वामी यहोवा ने मुझे बताया था कि ऐसी बातें
घटेंगी। यहोवा ने कहा था, "एक वर्ष में (एक ऐसा ढँग
जिससे मजदूर किराये का समय को गिनता है।) केदार
का वैभव नष्ट हो जायेगा। 17उस समय केदार के थोड़े
से धनुषधारी, प्रतापी सैनिक ही जीवित बच पायेंगे।"
इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने मुझे ये बातें बताई थीं।

यरूशलेम के लिये परमेश्वर का सन्देश

22 दिव्य दर्शन की घाटी के बारे में दुःखद
सन्देश:
तुम लोगों के साथ क्या हुआ है? क्यों तुम अपने घरों
की छतों पर छिप रहे हो?
2बीते समय में यह नगर बहुत व्यस्त नगर था। यह
नगर बहुत शोरगुल से भरा और बहुत प्रसन्न था।
किन्तु अब बातें बदल गई। तुम्हारे लोग मारे गये किन्तु
तलवारों से नहीं, और वे मारे गये किन्तु युद्ध में लड़ते
समय नहीं।
3तुम्हारे सभी अगुवे एक साथ कहीं भाग गये किन्तु
उन्हें पकड़ कर बन्दी बनाया गया, जब वे बिना धनुष
के थे। तुम्हारे सभी अगुवे कहीं दूर भाग गये किन्तु
उन्हें पकड़ा और बन्दी बनाया गया।
4मैं इसलिए कहता हूँ, "मेरी तरफ मत देखो, बस
मुझको रोने दो! यरूशलेम के विनाश पर मुझे सान्त्वना
देने के लिये मेरी ओर मत लपको।"
5यहोवा ने एक विशेष दिन चुना है। उस दिन वहाँ
बलवा और भगदड़ मच जायेगा। दिव्य दर्शन की घाटी
में लोग एक दूसरे को रौंद डालेंगे। नगर की चार
दीवारी उखाड़ फेंकी जायेगी। घाटी के लोग पहाड़ पर
के लोगों के ऊपर चिल्लायेंगे। 6एलाम के घुड़सवार
सैनिक अपनी अपनी तरकसें लेकर घोड़ों पर चढ़े युद्ध
को प्रस्थान करेंगे। किर के लोग अपनी ढालों से ध्वनि
करेंगे। 7तुम्हारी इस विशेष घाटी में सेनाएँ आ जुटेंगी।
घाटी रथों से भर जायेगी। घुड़सवार सैनिक नगर द्वारों
के सामने तैनात किये जायेंगे। 8उस समय यहूदा के लोग
उन हथियारों का प्रयोग करना चाहेंगे जिन्हें वे जंगल
के महल में रखा करते हैं।
यहूदा की रक्षा करने वाली चहारदीवारी को शत्रु
उखाड़ फेंकेगा। 9-11दाऊद के नगर की चहारदीवारी
तड़कने लगेगी और उसकी दरारें तुम्हें दिखाई देंगी। सो
तुम मकानों को गिनने लगोगे और दीवार की दरारों
को भरने के लिये तुम उन मकानों के पत्थरों का
उपयोग करोगे। उन दुहरी दीवारों के बीच 'पुराने तालाब'
का जल बचा कर रखने के लिये तुम एक स्थान
बनाओगे, और वहाँ पानी को एकत्र करोगे।
यह सब कुछ तुम अपने आपको बचाने के लिये
करोगे। फिर भी उस परमेश्वर पर तुम्हारा भरोसा नहीं
होगा जिसने इन सब वस्तुओं को बनाया है। तुम उसकी
ओर (परमेश्वर) नहीं देखोगे जिसने बहुत पहले इन
सब वस्तुओं की रचना की थी।
12सो, मेरा स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा लोगों से उनके
मरे हुए मित्रों के लिए विलाप करने और दुःखी होने के
लिये कहेगा। लोग अपने सिर मुँड़ा लेंगे और शोक
वस्त्र धारण करेंगे।
13किन्तु देखो! अब लोग प्रसन्न हैं। लोग खुशियाँ मना
रहे हैं। वे लोग कह रहे हैं: मवेशियों को मारो, भेड़ों का
वध करो। हम उत्सव मनायेंगे। तुम अपना खाना खाओ
और अपना दाखमधु पियो। खाओ और पियो क्योंकि
कल तो हमें मर जानाहै।
14सर्वशक्तिमान यहोवा ने ये बातें मुझसे कही थीं और
मैंने उन्हें अपने कानों सुना था: "तुम बुरे काम करने
के अपराधी हो और मैं निश्चय के साथ कहता हूँ कि
इस अपराध के क्षमा किये जाने से पहले ही तुम मर
जाओगे।" मेरे स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा ने ये बातें
कही थीं।

शेबना के लिये परमेश्वर का सन्देश:

15मेरे स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा ने मुझसे ये बातें
कहीं: "उस शेबना नाम के सेवक के पास जाओ। वह
महल का प्रबन्ध–अधिकारी है। 16उस से पूछना, 'तू यहाँ
क्या कर रहा है? क्या यहाँ तेरे परिवार का कोई व्यक्ति
गड़ा हुआ है? यहाँ तू एक कब्र क्यों बना रहा है?'"
यशायाह ने कहा, "देखो इस आदमी को! एक ऊँचे
स्थान पर यह अपनी कब्र बना रहा है। अपनी कब्र
बनाने के लिये यह चट्टान को काट रहा है।
17-18"हे पुरुष, यहोवा तुझे कुचल डालेगा। यहोवा तुझे
बाँध कर एक छोटी सी गेंद की तरह गोल बना कर
किसी विशाल देश में फेंक देगा और वहाँ तेरी मौत हो
जायेगी।"
यहोवा ने कहा, "तुझे अपने रथों पर बड़ा अभिमान
था। किन्तु उस दूर देश में तेरे नये शासक के पास और
भी अच्छे रथ हैं। उसके महल में तेरे रथ महत्वपूर्ण
नहीं दिखाई देंगे। 19यहाँ मैं तुझे तेरे महत्त्वपूर्ण काम से
धकेल बाहर करुँगा। तेरे महत्त्वपूर्ण काम से तेरा नया
मुखिया तुझे दूर कर देगा। 20उस समय मैं अपने सेवक
एल्याकीम को जो हिल्कियाह का पुत्र है, बुलाऊँगा
21और तेरा चोगा लेकर उस सेवक को पहना दूँगा।
तेरा राजदण्ड भी मैं उसे दे दूँगा। जो महत्त्वपूर्ण काम तेरे
पास हैं, मैं उसे भी उस ही को दे दूँगा। वह सेवक

यरूशलेम के लोगों और यहूदा के परिवार के लिए पिता
के समान होगा।
22"यहूदा के भवन की चाबी मैं उस पुरुष के गले में
डाल दूँगा। यदि वह किसी द्वार को खोलेगा तो वह द्वार
खुला ही रहेगा। कोई भी व्यक्ति उसे बंद नहीं कर
पायेगा। यदि वह किसी द्वार को बंद करेगा तो वह द्वार
बंद हो जायेगा। कोई भी व्यक्ति उसे खोल नहीं पायेगा।
वह सेवक अपने पिता के घर में एक सिंहासन के
समान होगा। 23मैं उसे एक ऐसी खूँटी के समान सुदृढ़
बनाऊँगा जिसे बहुत सख़्त तख्ते में ठोका गया है।
24उसके पिता के घर की सभी माननीय और महत्त्वपूर्ण
वस्तुएँ उसके ऊपर लटकेंगी। सभी वयस्क और छोटे
बच्चे उस पर निर्भर करेंगे। वे लोग ऐसे होंगे जैसे
छोटे–छोटे पात्र और बड़ी–बड़ी सुराहियाँ उसके ऊपर
लटक रही हों।
25"उस समय, वह खूँटी (शेबना) जो अब एक बड़े
कठोर तख्ते में गाड़ी हुई खूँटी है, दुर्बल हो कर टूट
जायेगी। वह खूँटी धरती पर गिर पड़ेगी और उस खूँटी
पर लटकी हुई सभी वस्तुएँ नष्ट हो जायेंगी। तब वह
प्रत्येक बात जो मैंने उस सन्देश में बताई थी, घटित
होगी।" (ये बातें घटेंगी क्योंकि इन्हें यहोवा ने कहा है।)

लबानोन को परमेश्वर का सन्देश

23 सोर के विषय में दु:खद सन्देश:
हे तर्शीश के जहाजों, दु:ख मनाओ! तुम्हारा
बन्दरगाह उजाड़ दिया गया है। (इन जहाज़ों पर जो लोग
थे, उन्हें यह समाचार उस समय बताया गया था जब वे
कित्तियों के देश से अपने रास्ते जा रहे थे।)
2हे समुद्र के निकट रहने वाले लोगों, रुको और
शोक मनाओ! हे, सीदोन के सौदागरों शोक मनाओं।
सिदोन तेरे सन्देशवाहक समुद्र पार जाया करते थे। उन
लोगों ने तुझे धन दौलत से भर दिया। 3वे लोग अनाज
की तलाश में समुद्रों में यात्रा करते थे। सोर के वे लोग
नील नदी के आसपास जो अनाज पैदा होता था, उसे
मोल ले लिया करते थे और फिर उस अनाज को दूसरे
देशों में बेचा करते थे। 4हे सीदोन, तुझे शर्म आनी
चाहिए। क्योंकि अब सागर और सागर का किला कहता
है: मैं सन्तान रहित हूँ। मुझे प्रसव की वेदना का ज्ञान
नहीं है। मैंने किसी बच्चे को जन्म नहीं दिया। मैंने युवती
व युवक को पाल कर बड़े नहीं किया।
5मिस्र सोर का समाचार सुनेगा और यह समाचार
मिस्र को दु:ख देगा।
6तेरे जलयान तर्शीश को लौट जाने चाहिए। हे सागरतट
वासियों! दु:ख में डूब जाओ।
7बीते दिनों में तुमने सोर नगर का रस लिया। यह
नगरी शुरु से ही विकसित होती रही। उस नगर के
कुछ लोग कहीं दूर बसने को चले गये।
8सोर के नगर ने बहुत सारे नेता पैदा किये। वहाँ के
व्यापारी राजपुत्रों के समान होते हैं और वे लोग वस्तुएँ
खरीदते व बेचते हैं। वे हर कहीं आदर पाते हैं। सो
किसने सोर के विरुद्ध योजनाएँ रची हैं।
9हाँ, सर्वशक्तिमान यहोवा ने वे योजनाएँ बनायीथी।
उसने ही उन्हें महत्त्वपूर्ण न बनाने का निश्चय किया
था।
10हे तर्शीश के जहाजों तुम अपने देश को लौट
जाओ। तुम सागर को ऐसे पार करो जैसे वह छोटी सी
नदी हो। कोई भी व्यक्ति अब तुम्हें नहीं रोकेगा।
11यहोवा ने अपना हाथ सागर के ऊपर फैलाया है
और राज्यों को कँपा दिया। यहोवा ने कनान (फिनिसियाँ)
के बारे में आदेश दे दिया है कि उसके गढ़ियों को नष्ट
कर दिया जाये।
12यहोवा कहता है, हे! सीदोन की कुँवारी पुत्री, तुझे
नष्ट किया जायेगा। अब तू और अधिक आनन्द न मना
पायेगी।" किन्तु सोर के निवासी कहते हैं, "हमको
कित्ती बचायेगा।" किन्तु यदि तुम सागर को पार कर
कित्तीमजाओ वहाँ भी तुम चैन का स्थान नहीं
पाओगे।
13अत: सोर के निवासी कहा करते हैं, "बाबुल के
लोग हम को बचायेंगे!" किन्तु तुम बाबुल के लोगों को
धरती पर देखो। एक देश के रुप में आज बाबुल का
कोई अस्तित्व नहीं है। बाबुल के ऊपर अश्शूर ने
चढ़ाई की और उस के चारों ओर बुर्जियाँ बनाईं। सैनिकों
ने सुन्दर घरों का सब धन लूट लिया। अश्शूर ने बाबुल
को जंगली पशुओं का घर बना दिया। उन्होंने बाबुल को
खण्डहरों में बदल दिया।
14सो तर्शीश के जलयानों तुम विलाप करो। तुम्हारा
सुरक्षा स्थान (सोर) नष्ट हो जायेगा।
15सत्तर वर्ष तक लोग सोर को भूल जायेंगे। (यह
समय, किसी राजा के शासन काल के बराबर समय
माना जाता था।) सत्तर वर्ष के बाद, सोर एक वेश्या के
समान हो जायेगा। इस गीत में:
16हे वेश्या! जिसे पुरुषों ने भुला दिया। तू अपनी वीणा
उठा और इस नगर में घूम। तू अपने गीत को अच्छी
तरह से बजा। तू अक्सर अपना गीत गाया कर। तभी
तुझको लोग फिर से याद करेंगे।
17सत्तर वर्ष के बाद, परमेश्वर सोर के विषय में फिर
विचार करेगा और वह उसे एक निर्णय देगा। सोर में
फिर से व्यापार होने लगेगा। धरती के सभी देशों के
लिये सोर एक वेश्या के समान हो जायेगा। 18किन्तु
सोर जिस धन को कमायेगा, उसको रख नहीं पायेगा।
सोर का अपने व्यापार से हुआ लाभ यहोवा के लिये
बचाकर रखा जायेगा। सोर उस लाभ को उन लोगों को
दे देगा जो यहोवा की सेवा करते हैं। इसलिये यहोवा के
सेवक भर पेट खाना खायेंगे और अच्छे कपड़े पहनेंगे।

परमेश्वर इस्राएल को दण्ड देगा

24 देखो! यहोवा इस धरती को नष्ट करेगा। यहोवा
भूचालों के द्वारा इस धरती को मरोड़ देगा।
यहोवा लोगों को कहीं दूर जाने को विवश करेगा।
2उस समय, हर किसी के साथ एक जैसी घटनाएँ
घटेंगी, साधारण मनुष्य और याजक एक जैसे हो जायेंगे।
स्वामी और सेवक एक जैसे हो जायेंगे। दासियाँ और
उनकी स्वामिनियाँ एक समान हो जायेंगी। मोल लेने
वाले और बेचने वाले एक जैसे हो जायेंगे। कर्जा लेने
वाले और कर्जा देने वाले लोग एक जैसे हो जायेंगे।
धनवान और ऋणी लोग एक जैसे हो जायेंगे। 3सभी
लोगों को वहाँ से धकेल बाहर किया जायेगा। सारी
धन–दौलत छीन ली जायेंगी। ऐसा इसलिये घटेगा क्योंकि
यहोवा ने ऐसा ही आदेश दिया है। 4देश उजड़ जायेगा
और दुःखी होगा। दुनिया ख़ाली हो जायेगी और वह
दुर्बल हो जायेगी। इस धरती के महान नेता शक्तिहीन हो
जायेंगे।

5इस धरती के लोगों ने इस धरती को गंदा कर दिया
है। ऐसा कैसा हो गया? लोगों ने परमेश्वर की शिक्षा के
विरोध में गलत काम किये। (इसलिये ऐसा हुआ) लोगों
ने परमेश्वर के नियमों का पालन नहीं किया। बहुत
पहले लोगों ने परमेश्वर के साथ एक वाचा की थी।
किन्तु परमेश्वर के साथ किये उस वाचा को लोगों ने
तोड़ दिया। 6इस धरती के रहने वाले लोग अपराधी हैं।
इसलिये परमेश्वर ने इस धरती को नष्ट करने का
निश्चय किया। उन लोगों को दण्ड दिया जायेगा और
वहाँ थोड़े से लोग ही बच पायेंगे।

7अँगूर की बेलें मुरझा रही हैं। नयी दाखमधु की
कमी पड़ रही है। पहले लोग प्रसन्न थे। किन्तु अब वे
ही लोग दुःखी हैं। 8लोगों ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करना
छोड़ दिया है। प्रसन्नता की सभी ध्वनियाँ रुक गयी हैं।
खंजरिओं और वीणाओं का आनन्दपूर्ण संगीत समाप्त
हो चुका है। 9अब लोग जब दाखमधु पीते है, तो प्रसन्नता
के गीत नहीं गाते। अब जब व्यक्ति दाखमधु पीते है, तब
वह उसे कड़वी लगती है।

10इस नगर का एक अच्छा सा नाम है, “गड़बड़ से
भरा”, इस नगर का विनाश किया गया। लोग घरों में
नहीं घुस सकते। द्वार बंद हो चुके हैं। 11गलियों में
दुकानों पर लोग अभी भी दाखमधु को पूछते हैं किन्तु
समूची प्रसन्नता जा चुकी है है। आनन्द तो दूर कर दिया
गया है। 12नगर के लिए बस विनाश ही बच रहा है। द्वार
तक चकनाचूर हो चुके हैं।

13“फसल के समय लोग जैतून के पेड़ से जैतून को
गिराया करेंगे। किन्तु केवल कुछ ही जैतून पेड़ों पर
बचेंगे। जैसे अंगूर की फसल उतारने के बाद थोड़े से
अंगूर बचे रह जाते हैं। यह ऐसा ही इस धरती के राष्ट्रों
के साथ होगा।

14बचे हुए लोग चिल्लाने लग जायेंगे। पश्चिम से लोग
यहोवा की महानता की स्तुति करेंगे और वे, प्रसन्न
होंगे।

15वे लोग कहा करेंगे, “पूर्व के लोगों, यहोवा की
प्रशंसा करो!” दूर देश के लोगों, इस्राएल के परमेश्वर
यहोवा के नाम का गुणगान करो।”

16इस धरती पर हर कहीं हम परमेश्वर के स्तुति
गीत सुनेंगे। इन गीतों में परमेश्वर की स्तुति होगी।
किन्तु मैं कहता हूँ, “मैं बरबाद हो रहा हूँ। मैं जो कुछ
भी देखता हूँ सब कुछ भयंकर है। गद्दार लोग, लोगों के
विरोधी हो रहे हैं, और उन्हें चोट पहुँचा रहे हैं।

17मैं धरती के वासियों पर खतरा आते देखता हूँ। मैं
उनके लिये भय, गड्ढे और फँदे देख रहा हूँ।

18लोग खतरे की सुनकर डर से काँप जायेंगे। कुछ
लोग भाग जायेंगे किन्तु वे गड्ढे और फँदों में जा गिरेंगे
और उन गड्ढों से कुछ चढ़कर बच निकल आयेंगे।
किन्तु वे फिर दूसरे फँदों में फँसेंगे। ऊपर आकाश की
छाती फट जायेगी जैसे बाढ़ के दरवाजे खुल गये हो।”
बाढ़े आने लगेंगी और धरती की नींव डगमग हिलने
लगेंगी।”

19भूचाल आयेगा और धरती फटकर खुल जायेगी।
20संसार के पाप बहुत भारी हैं। उस भार से दबकर
यह धरती गिर जायेगी। यह धरती किसी झोपड़ी सी
काँपेगी और नशे में धुत्त किसी व्यक्ति की तरह धरती
गिर जायेगी। यह धरती बनी न रहेगी।

21उस समय यहोवा सबका न्याय करेगा। उस समय
यहोवा आकाश में स्वर्ग की सेनाएँ और धरती के राजा
उस न्याय का विषयहोंगे।

22इन सबको एक साथ एकत्र किया जायेगा। उनमें से
कुछ काल कोठरी में बन्द होंगे और कुछ कारागार में
रहेंगे। कन्तु अन्त में बहुत समय के बाद इन सबका
न्याय होगा।

23यरूशलेम में सिय्योन के पहाड़ पर यहोवा राजा के
रूप में राज्य करेगा। अग्रजों के सामने उसकी महिमा
होगी। उसकी महिमा इतनी भव्य होगी कि चाँद घबरा
जायेगा, सूरज लज्जित होगा।

परमेश्वर का एक स्तुति–गीत

25 हे यहोवा, तू मेरा परमेश्वर है। मैं तेरे नाम
की स्तुति करता हूँ और मैं तुझे सम्मान देता
हूँ। तूने अनेक अद्भुत कार्य किये हैं। जो भी शब्द तूने
बहुत पहले कहे थे वे पूरी तरह से सत्य हैं। हर बात
वैसी ही घटी जैसे तूने बतायी थी।

2तूने नगर को नष्ट किया। वह नगर सुदृढ़ प्राचीरों से
संरक्षित था। किन्तु अब वह मात्र पत्थरों का ढेर रह
गया। परदेसियों का महल नष्ट कर दिया गया। अब
उसका फिर से निर्माण नहीं होगा।

3सामर्थी लोग तेरी महिमा करेंगे। क्रूर जातियों के
नगर तुझसे डरेंगे।
4यहोवा निर्धन लोगों के लिये जो जरुरतमंद हैं, तू
सुरक्षा का स्थान है। अनेक विपत्तियाँ उनको पराजित
करने को आती हैं किन्तु तू उन्हें बचाता है। तू एक ऐसा
भवन है जो उनको तूफानी वर्षा से बचाता है और तू
एक ऐसी हवा है जो उनको गर्मी से बचाता है। विपत्तियाँ
भयानक आँधी और घनघोर वर्षा जैसी आती हैं। वर्षा
दीवारों से टकराती हैं और नीचे बह जाती है किन्तु
मकान में जो लोग हैं, उनको हानि नहीं पहुँचती है।
5नारे लगाते हुए शत्रु ने ललकारा। घोर शत्रु ने चुनौतियाँ
देने को ललकारा। किन्तु तूने हे परमेश्वर, उनको
रोक लिया। वे नारे ऐसे थे जैसे गर्मी किसी खुश्क
जगहपर। तूने उन क्रूर लोगों के विजय गीत ऐसे रोक
दिये थे जैसे सघन मेघों की छाया गर्मी को दूर करती है।

अपने सेवकों के लिए परमेश्वर का भोज

6उस समय, सर्वशक्तिमान यहोवा इस पर्वत के सभी
लोगों के लिये एक भोज देगा। भोज में उत्तम भोजन
और दाखमधु होगा। दावत में नर्म और उत्तम माँस होगा।
7किन्तु अब देखो, एक ऐसा पर्दा है जो सभी जातियों
और सभी व्यक्तियों को ढके है। इस पर्दे का नाम है,
"मृत्यु।"
8किन्तु मृत्यु का सदा के लिये अंत कर दिया
जायेगा और मेरा स्वामी यहोवा हर आँख का हर आँसू
पोंछ देगा। बीते समय में उसके सभी लोग शर्मिन्दा थे।
यहोवा उन की लज्जा का इस धरती पर से हरण करलेगा।
यह सब कुछ घटेगा क्योंकि यहोवा ने कहा था, ऐसा हो।
9उस समय लोग ऐसा कहेंगे, "देखो यह हमारा परमेश्वर
है! यह वही है जिसकी हम बाट जोह रहे थे। यह हमको
बचाने को आया है। हम अपने यहोवा की प्रतीक्षा करते
रहे। अत: हम खुशियाँ मनायेंगे और प्रसन्न होंगे कि
यहोवा ने हमको बचाया है।"
10इस पहाड़ पर यहोवा की शक्ति है और मोआब
पराजित होगा। यहोवा शत्रु को ऐसे कुचलेगा जैसे भूसा
कुचला जाता है जो खाद के ढेर में होता है।
11यहोवा अपने हाथ ऐसे फैलायेगा जैसे कोई तैरता
हुआ व्यक्ति फैलाता है। तब यहोवा उन सभी वस्तुओं
को एकत्र करेगा जिन पर लोगों को गर्व है। यहोवा उन
सभी सुन्दर वस्तुओं को बटोर लेगा जिन्हें उन्होंने बनाये
थे और वह उन वस्तुओं को फेंक देगा।
12यहोवा लोगों की ऊँची दीवारों को नष्ट करदेगा।
यहोवा उनके सुरक्षा स्थानों को नष्ट कर देगा। यहोवा
उनको धरती की धूल में पटक देगा।

परमेश्वर का एक स्तुति–गीत

26 उस समय, यहूदा के लोग यह गीत गायेंगे:
यहोवा हमें मुक्ति देता है। हमारी एक सुदृढ़
नगरी है। हमारे नगर का सुदृढ़ परकोटा और सुरक्षा है।
2उसके द्वारों को खोलो ताकि भले लोग उसमें प्रवेश
करें। वे लोग परमेश्वर के जीवन की खरी राह का
पालन करते हैं।
3हे यहोवा, तू हमें सच्ची शांति प्रदान करता है। तू
उनको शान्ति दिया करता है, जो तेरे भरोसे हैं और
तुझ पर विश्वास रखते हैं।
4अत: सदैव यहोवा पर विश्वास करो। क्यों? क्योंकि
यहोवा याह ही तुम्हारा सदा सर्वदा के लिये शरणस्थल
होगा!
5किन्तु अभिमानी नगर को यहोवा ने झुकाया है
और वहाँ के निवासियों को उसने दण्ड दियाहै। यहोवा
ने उस ऊँचे बसी नगरी को धरती पर गिराया। उसने
इसे धूल में मिलाने गिराया है।
6तब दीन और नम्र लोग नगरी के खण्डहरों को
अपने पैर तले रौंदेंगे।
7खरापन खरे लोगों के जीने का ढंग है। खरे लोग
उस राह पर चलते हैं जो सीधी और सच्ची होती है।
परमेश्वर, तू उस राह को चलने के लिये सुखद व
सरल बनाता है।
8किन्तु हे परमेश्वर! हम तेरे न्याय के मार्ग की बाट
जोह रहे हैं। हमारा मन तुझे और तेरे नाम को स्मरण
करना चाहता है।
9मेरा मन रात भर तेरे साथ रहना चाहता है और
मेरे अन्दर की आत्मा हर नये दिन की प्रात: में तेरे
साथ रहना चाहता है। जब धरती पर तेरा न्याय आयेगा,
लोग खरा जीवन जीना सीख जायेंगे।
10यदि तुम केवल दुष्ट पर दया दिखाते रहो तो वह
कभी भी अच्छे कर्म करना नहीं सीखेगा। दुष्ट जन चाहे
भले लोगों के बीच में रहे लेकिन वह तब भी बुरे कर्म
करता रहेगा। वह दुष्ट कभी भी यहोवा की महानता
नहीं देख पायेगा।
11हे यहोवा तू उन्हें दण्ड देने को तत्पर है किन्तु वे
इसे नहीं देखते। हे यहोवा तू अपने लोगों पर अपना
असीम प्रेम दिखाता है जिसे देख दुष्ट जन लज्जित हो रहे
हैं। तेरे शत्रु अपने ही पापों की आग में जलकर भस्म
होंगे।
12हे यहोवा, हमको सफलता तेरे ही कारण मिलीहै।
सो कृपा करके हमें शान्ति दे।

यहोवा अपने लोगों को नया जीवन देगा

13हे यहोवा, तू हमारा परमेश्वर है किन्तु पहले हम
पर दूसरे देवता राज करते थे। हम दूसरे स्वामियों से
जुड़े हुए थे किन्तु अब हम यह चाहते हैं कि लोग बस
एक ही नाम याद करें वह है तेरा नाम।
14अब वे पहले स्वामी जीवित नहीं हैं। वे भूत अब
अपनी कब्रों सेकभी भी नहीं उठेंगे। तूने उन्हें नष्ट

करने का निश्चय किया था और तूने उनकी याद तक
को मिटा दिया।

15हे यहोवा, तूने जाति को बढ़ाया। जाति को बढ़ाकर
तूने महिमा पायी। तूने प्रदेश की सीमाओं को बढ़ाया।

16हे यहोवा, तुझे लोग दुःख में याद करते हैं, और
जब तू उनको दण्ड दिया करता है तब लोग तेरी मूक
प्रार्थनाएँ किया करते हैं।

17हे यहोवा, हम तेरे कारण ऐसे होते हैं जैसे प्रसव
पीड़ा को झेलती स्त्री हो जो बच्चे को जन्म देते समय
रोती–बिलखाती और पीड़ा भोगती है।

18इसी तरह हम भी गर्भवान होकर पीड़ा भोगतेहैं।
हम जन्म देते हैं किन्तु केवल वायु को। हम संसार को
नये लोग नहीं दे पाये। हम धरती पर उद्धार को नहीं ला
पाये।

19यहोवा कहता है, मरे हुए तेरे लोग फिर से जी
जायेंगे! मेरे लोगों की देह मृत्यु से जी उठेगी। हे मरे हुए
लोगों, हे धूल में मिले हुओं, उठो और तुम प्रसन्न हो
जाओ। वह ओस जो तुझको घेरे हुए है, ऐसी है जैसे
प्रकाश में चमकती हुई ओस। धरती उन्हें फिर जन्म
देगी जो अभी मरे हुए हैं।

न्याय पुरस्कार या दण्ड

20हे मेरे लोगों, तुम अपने कोठरियों में जाओ। अपने
द्वारों को बन्द करो और थोड़े समय के लिये अपने
कमरों में छिप जाओ। तब तक छिपे रहो जब तक
परमेश्वर का क्रोध शांत नहीं होता।

21यहोवा अपने स्थान को तजेगा और वह संसार के
लोगों के पापों का न्याय करेगा।

उन लोगों के खून को धरती दिखायेगी जिनको मारा
गया था। धरती मरे हुए लोगों को और अधिक ढके
नहीं रहेगी।

27 उस समय, यहोवा लिब्यातान का न्याय करेगा
जो एक दुष्ट सर्प है। हे यहोवा अपनी बड़ी
तलवार, अपनी सुदृढ़ और शक्तिशाली तलवार, कुंडली
मारे सर्प लिब्यातान को मारने में उपयोग करेगा। यहोवा
सागर के विशालकाय जीव को मार डालेगा।

2उस समय, वहाँ खुशियों से भरा अंगूर का एक बाग
होगा। तुम उसके गीत गाओ।

3"मैं यहोवा, उस बाग का ध्यान रखूँगा। मैं बाग को
उचित समय पर सींचूँगा। मैं बगीचे की रात दिन रखवाली
करुँगा ताकि कोई भी उस को हानि न पहुँचा पाये।

4मैं कुपित नहीं होऊँगा। यदि काँटे कँटेली मुझे वहाँ
मिले तो मैं वैसे रौंदूगा जैसे सैनिक रौंदता चला जाता है
और उनको फूँक डालूँगा।

5लेकिन यदि कोई व्यक्ति मेरी शरण में आये और
मुझसे मेल करना चाहे तो वह चला आये और मुझ से
मेल कर ले।

6आने वाले दिनों में याकूब (इस्राएल) के लोग उस
पौधे के समान होंगे जिसकी जड़े उत्तम होती हैं। याकूब
का विकास उस पनपते पौधे सा होगा जिस पर बहार
आई हो। फिर धरती याकूब के वंशजों से भर जायेगी
जैसे पेड़ों के फलों से वह भर जाती है।"

परमेश्वर इस्राएल को खोज निकालता है

7यहोवा ने अपने लोगों को उतना दण्ड नहीं दिया है
जितना उसने उनके शत्रुओं को दिया है। उसके लोग
उतने नहीं मरे हैं जितने वे लोग मरे हैं जो इन लोगों को
मारने के लिए प्रयत्नशील थे।

8यहोवा इस्राएल को दूर भेज कर उसके साथ अपना
विवाद सुलझा लेगा। यहोवा ने इस्राएल को उस तेज हवा
के झोंके सा उड़ा दिया जो रेगिस्तान की गर्म लू के
समान होता है।

9याकूब का अपराध कैसे क्षमा किया जायेगा? उसके
पापों को कैसे दूर किया जाएगा? ये बातें घटेंगी: वेदी की
शिलाएँ चकनाचूर हो कर धूल में मिल जायेंगी; झूठे
देवताओं के स्तम्भ और उनकी पूजा की वेदियाँ तहस–
नहस कर दी जायेंगी।

10यह सुरक्षित नगरी उजड़ गई है। सब लोग कहीं दूर
भाग गए हैं। वह नगर एक खुली चरागाह जैसा हो गया
है। जवान मवेशी यहाँ घास चर रहे हैं। मवेशी अँगूर
की बेलों की शाखों से पत्तियाँ चर रहे हैं। 11अँगूर की
बेलें सूख रही हैं। शाखाएँ कट कर गिर रही हैं और
स्त्रियाँ उन शाखाओं से धन का काम ले रही हैं।

लोग इसे समझ नहीं रहे हैं। इसीलिए उनका स्वामी
परमेश्वर उन्हें चैन नहीं देगा। उनका रचयिता उनके
प्रति दयालु नहीं होगा।

12उस समय, यहोवा दूसरे लोगों से अपने लोगों को
अलग करने लगेगा। परात नदी से वह इस कार्य का
आरम्भ करेगा। परात नदी से लेकर मिस्र की नदी तक
यहोवा तुम इस्राएलियों को एक एक करके इकट्ठा
करेगा।

13अश्शूर में अभी मेरे बहुत से लोग खोये हुए हैं। मेरे
कुछ लोग मिस्र को भाग गये हैं। किन्तु उस समय एक
विशाल भेरी बजाई जायेगी और वे सभी लोग वापस
यरूशलेम आ जायेंगे और उस पवित्र पर्वत पर यहोवा
के सामने वे सभी लोग झुक जायेंगे।

उत्तर इस्राएल को चेतावनी

28 शोमरोन को देखो! एप्रैम के मदमस्त लोग
उस नगर पर गर्व करते हैं। वह नगर पहाड़ी
पर बसा है जिसके चारों तरफ एक सम्पन्न घाटी है।
शोमरोन के वासी यह सोचा करते हैं कि उनका नगर
फूलों के मुकुट सा है। किन्तु वे दाखमधु से धुत्त हैं और
यह "सुन्दर मुकुट" मुरझाये पौधे सा है।

2देखो, मेरे स्वामी के पास एक व्यक्ति है जो सुदृढ़
और वीर है। वह व्यक्ति इस देश में इस प्रकार आयेगा
जैसे ओलों और वर्षा का तूफान आता है। वह देश में
इस प्रकार आयेगा जैसे बाढ़ आया करती है। वह शोमरोन
के मुकुट को धरती पर उतार फेंकेगा।
3नशे में धुत्त एप्रैम के लोग अपने "सुन्दर मुकुट" पर
गर्व करते हैं किन्तु वह नगरी पाँव तले रौंदी जायेगी।
4वह नगर पहाड़ी पर बसा है जिस के चारों तरफ
एक सम्पन्न घाटी है किन्तु वह "फूलों का सुन्दर मुकुट"
बस एक मुरझाता हुआ पौधा है। वह नगर गर्मी में
अंजीर के पहले फल के समान होगा। जब कोई उस
पहली अंजीर को देखता है तो जल्दी से तोड़कर उसे
चट कर जाता है।
5उस समय, सर्वशक्तिमान यहोवा "सुन्दर मुकुट"
बनेगा। वह उन बचे हुए अपने लोगों के लिये "फूलों का
शानदार मुकुट" होगा। 6फिर यहोवा उन न्यायाधीशों
को बुद्धि प्रदान करेगा जो उसके अपने लोगों का शासन
करते हैं। नगर द्वारों पर युद्धों में लोगों को यहोवा शक्ति
देगा। 7किन्तु अभी वे मुखिया लोग मदमत्त हैं। याजक
और नबी सभी दाखमधु और सुरा से धुत्त हैं। वे लड़खड़ाते
हैं और नीचे गिर पड़ते हैं। नबी जब अपने सपने देखते
हैं तब वे पिये हुए होते हैं। न्यायाधीश जब न्याय करते हैं
तो वे नशे में डूबे हुए होते हैं। 8हर खाने की मेज उल्टी
से भरी हुई है। कहीं भी कोई स्वच्छ स्थान नहीं रहा है।

परमेश्वर अपने लोगों की सहायता करना चाहता है

9वे कहा करते हैं, यह व्यक्ति कौन है? यह किसे
शिक्षा देने की कोशिश कर रहा है? वह अपने सन्देश
किसे समझा रहा है? क्या उन बच्चों को जिनका
अभी-अभी दूध छुड़ाया गया है? क्या उन बच्चों को
जिन्हें अभी-अभी अपनी माताओं की छाती से दूर
किया गया है? 10इसीलिए यहोवा उन से इस प्रकार
बोलता है जैसे वे दूध मुँहे बच्चे हों। सौ लासौ सौ लासौ
काव लाकाव काव लाकाव ज़ेईर शाम ज़ेईर शाम।
11फिर यहोवा उन लोगों से बात करेगा उसके होंठ
काँपते हुए होंगे और वह उन लोगों से बातें करने में
दूसरी विचित्र भाषा का प्रयोग करेगा।
12यहोवा ने पहले उन लोगों से कहा था, "यहाँ विश्राम
का एक स्थान है। थके मांदे लोगों को यहाँ आने दो
और विश्राम पाने दो। यह शांति का ठौर है।"
किन्तु लोगों ने परमेश्वर की सुननी नहीं चाही। 13सो
परमेश्वर के वचन किसी विचित्र भाषा के जैसे हो
जाएँगे। सौ लासौ सौ लासौ काव लाकाव काव लाकाव
ज़ेईर शाम ज़ेईर शाम।"
सो लोग जब चलेंगे तो पीछे की ओर लुढ़क जाएँगे
और जख्मी होंगे। लोगों को फँसा लिया जाएगा और वे
पकड़े जाएँगे।

परमेश्वर के न्याय से कोई नहीं बच सकता

14हे, यरूशलेम के आज्ञा नहीं माननेवाले अभिमानी
मुखियाओं, तुम यहोवा का सन्देश सुनो। 15तुम लोग
कहते हो, "हमने मृत्यु के साथ एक वाचा किया है।
शेओल (मृत्यु का प्रदेश) के साथ हमारा एक अनुबन्ध
है। इसलिए हम दण्डित नहीं होंगे। दण्ड हमें हानि पहुँचाये
बिना हमारे पास से निकल जायेगा। अपनी चालाकियों
और अपनी झूठों के पीछे हम छिप जायेंगे।"
16इन बातों के कारण मेरा स्वामी यहोवा कहता है:
"मैं एक पत्थर-एक कोने का पत्थर-सिय्योन में धरती
पर गाड़ूँगा। यह एक अत्यन्त मूल्यवान पत्थर होगा। इस
अति महत्त्वपूर्ण पत्थर पर ही हर किसी वस्तु का
निर्माण होगा। जिसमें विश्वास होगा, वह कभी
घबराएगा नहीं।
17"लोग दीवार की सीध देखने के लिये जैसे सूत डाल
कर देखते हैं, वैसे ही मैं जो उचित है उसके लिए न्याय
और खरेपन का प्रयोग करूँगा।
"तुम दुष्ट लोग अपनी झूठों और चालाकियों के पीछे
अपने को छुपाने का जतन कर रहे हो, किन्तु तुम्हें
दण्ड दिया जायेगा। यह दण्ड ऐसा ही होगा जैसे तुम्हारे
छिपने के स्थानों को नष्ट करने के लिए कोई तूफान
या कोई बाढ़ आ रही हो। 18मृत्यु के साथ तुम्हारे वाचा
को मिटा दिया जायेगा। अधोलोक के साथ हुआ तुम्हारा
सन्धि भी तुम्हारी सहायता नहीं करेगा।
"जब भयानक दण्ड तुम पर पड़ेगा तो तुम कुचले
जाओगे। 19वह हर बार जब आएगा तुम्हें वहाँ ले जाएगा।
तुम्हारा दण्ड भयानक होगा। तुम्हें सुबह दर सुबह और
दिन रात दण्ड मिलेगा।
20"तब तुम इस कहानी को समझोगे: कोई पुरुष एक
ऐसे बिस्तर पर सोने का जतन कर रहा था जो उसके
लिये बहुत छोटा था। उसके पास एक कंबल था जो
इतना चौड़ा नहीं था कि उसे ढक ले। सो वह बिस्तर
और वह कम्बल उसके लिए व्यर्थ रहे और देखो
तुम्हारा वाचा भी तुम्हारे लिये ऐसा ही रहेगा।"
21"यहोवा वैसे ही युद्ध करेगा जैसे उसने पराजीम
नाम के पहाड़ पर किया था। यहोवा वैसे ही कुपित
होगा जैसे वह 'गिबोन की घाटी' में हुआ था। तब यहोवा
उन कामों को करेगा जो उसे निश्चय ही करने हैं।
यहोवा कुछ विचित्र काम करेगा। किन्तु वह अपने
काम को पूरा कर देगा। उसका काम किसी एक
अजनबी का काम है। 22अब तुम्हें इन बातों का मजाक
नहीं उड़ाना चाहिए। यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम्हारे
बन्धन की रस्सियाँ और अधिक कस जायेंगी।
सर्वशक्तिमान यहोवा ने इस समूचे प्रदेश को नष्ट
करने की ठान ली है। जो शब्द मैंने सुने थे, अटल हैं।
सो वे बातें अवश्य घटित होंगी।

यहोवा खरा दण्ड देता है

23जो सन्देश मैं तुम्हें सुना रहा हूँ, उसे ध्यान से सुनो।
24क्या कोई किसान अपने खेत को हर समय जोतता
रहता है? नहीं! क्या वह माटी को हर समय संवारता
रहता है? नहीं! 25किसान अपनी धरती को तैयार करता
है, और फिर उसमें बीज अलग अलग डालता है।
किसान अलग–अलग बीजों की रुपाई, ढंग से करता
है। किसान सौंफ के बीज बिखेरता है। किसान अपने
खेत पर जीरे के बीज बिखेरता है और एक किसान
कठिये गेंहूँ को बोता है। एक किसान खास स्थान पर
जौ लगाता है। एक किसान कठिये गेंहूँ के बीजों को
खेत की मेंड़ पर लगाता है।

26उसका परमेश्वर उसको शिक्षा देता है और अच्छे
प्रकार से उसे निर्देश देता है। 27क्या कोई किसान तेज़
दाँतदार तख़्तों का प्रयोग सौंफ के दानों को गहाने के
लिये करता है? नहीं! क्या कोई किसान जीरे को गहाने
के लिए किसी छकड़े का प्रयोग करता है? नहीं! एक
किसान इन मसालों के बीजों के छिलके उतारने के
लिये एक छोटे से डण्डे का प्रयोग ही करता है।

28रोटी के लिए अनाज को पीसा जाता है, पर लोग
उसे सदा पीसते ही तो नहीं रहते। अनाज को दलने के
लिए कोई घोड़ों से जुती गाड़ी का पहिया अनाज पर
फिरा सकता है किन्तु वह अनाज को पीस–पीस कर
एक दम मैदा जैसा तो नहीं बना देता। 29सर्वशक्तिमान
यहोवा से यह पाठ मिलता है। यहोवा अद्भुत सलाह देता
है। यहोवा सचमुच बहुत बुद्धिमान है।

यरूशलेम के प्रति परमेश्वर का प्रेम

29 परमेश्वर कहता है, "अरीएल को देखो!अरीएल
वह स्थान हैं जहाँ दाऊद ने छावनी डाली थी।
वर्ष दो वर्ष साथ उत्सवों के पूरे चक्र तक गुजर जाने
दो। 2तब मैं अरीएल को दण्ड दूँगा। वह नगरी दु:ख और
विलाप से भर जायेगी। वह एक ऐसी मेरी बलि वेदी होगी
जिस पर इस नगरी के लोग बलि चढ़ायेंगे! 3अरीएल तेरे
चारों तरफ मैं सेनाएँ लगाऊँगा। मैं युद्ध के लिये तेरे
विरोध में बुर्ज बनाऊँगा। 4मैं तुझ को हरा दूँगा और
धरती पर गिरा दूँगा। तू धरती से बोलेगा। मैं तेरी आवाज
ऐसे सुनूँगा जैसे धरती से किसी भूत की आवाज उठ
रही हो। धूल से मरी–मरी तेरी दुर्बल आवाज आयेगी।"
5तेरे शत्रु धूल के कण की भाँति नगण्य होंगे। वहाँ बहुत
से क्रूर व्यक्ति भूसे की तरह आँधी में उड़ते हुए होंगे।
6सर्वशक्तिमान यहोवा मेघों के गर्जन से, धरती की
कम्पन से, और महाध्वनियों से तेरे पास आयेगा। यहोवा
दण्डित करेगा। यहोवा तूफान, तेज आँधी और अग्नि
का प्रयोग करेगा जो जला कर सभी नष्ट कर देगी।
7फिर बहुत बहुत देशों का अरीएल के साथ नगर और
उसके किले के विरोध में लड़ना रात के स्वप्न सा
होगा। जो अचानक विलीन होता है। 8किन्तु उन सेनाओं
को भी यह एक स्वप्न जैसा होगा। वे सेनाएँ वे वस्तु न
पायेंगी जिनको वे चाहते हैं। यह वैसा ही होगा जैसे भूखा
व्यक्ति भोजन का स्वप्न देखे और जागने पर वह अपने
को वैसा ही भूखा पाये। यह वैसा ही होगा जैसे कोई
प्यासा पानी का स्वप्न देखे और जब जागे तो वह अपने
को प्यासा का प्यासा ही पाये। सिय्योन के विरोध में
लड़ते हुए सभी देश सचमुच ऐसे ही होंगे। यह बात उन
पर खरी उतरेगी। देशों को वे वस्तु नहीं मिलेगी जिनकी
उन्हें चाह है।

9आश्चर्यचकित हो जाओ और अचरज मे भर जाओ।
तुम सभी धुत्त होगे किन्तु दाखमधु से नहीं। देखो और
अचरज करो! तुम लड़खड़ाओगे और गिर जाओगे किन्तु
सुरा से नहीं।

10यहोवा ने तुमको सुलाया है। यहोवा ने तुम्हारी
आँखें बन्द कर दी। (तुम्हारी आँखें नहीं है) तुम्हारी
बुद्धि पर यहोवा ने पर्दा डाल दिया है। (नबी तुम्हारी बुद्धि
हैं।)

11मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि ये बातें घटेंगी। किन्तु तुम
मुझे नहीं समझ रहे। मेरे शब्द उस पुस्तक के समान है,
जो बन्द हैं और जिस पर एक मुहर लगी है। 12तुम उस
पुस्तक को एक ऐसे व्यक्ति को दे सकते हो जो पढ़
पुस्तक है और उस व्यक्ति से कह सकते हो कि वह
उस पुस्तक को पढ़े। किन्तु वह व्यक्ति कहेगा, "मैं
पुस्तक को पढ़ नहीं सकता क्योंकि यह बन्द है और मैं
इसे खोल नहीं सकता।" अथवा तुम उस पुस्तक को
किसी भी ऐसे व्यक्ति को दे सकते हो जो पढ़ नहीं
सकता, और उस व्यक्ति से कह सकते हो कि वह उस
पुस्तक को पढ़े। तब वह व्यक्ति कहेगा, "मैं इस किताब
को नहीं पढ़ सकता क्योंकि मैं पढ़ना नहीं जानता।"

13मेरा स्वामी कहता है, "ये लोग कहते हैं कि वे
मुझे प्रेम करते हैं। अपने मुख के शब्दों से वे मेरे प्रति
आदर व्यक्त करते हैं। किन्तु उनके मन मुझ से बहुत
दूर है। वह आदर जिसे वे मेरे प्रति दिखाते हैं, बस कोरे
मानव नियम हैं जिन्हें उन्होंने कंठ कर रखा हैं। 14सो
मैं इन लोगों को शक्ति से पूर्ण और अचरज भरी बातें
करते हुए आश्चर्यचकित करता रहूँगा। उनके बुद्धिमान
पुरुष अपना विवेक छोड़ बैठेंगे। उनके बुद्धिमान पुरुष
समझने में असमर्थ हो जायेंगे।"

15धिक्कार है उन लोगों को जो यहोवा से बातें छिपाने
का जतन करेंगे। वे सोचते हैं कि यहोवा तो समझेगा
नहीं। वे लोग अन्धेरे में पाप करते हैं। वे लोग अपने
मन में कहा करते हैं, "हमें कोई देख नहीं सकता। हम
कौन हैं, इसे कोई व्यक्ति नहीं जानेगा।"

16तुम भ्रम में पड़े हो। तुम सोचा करते हो, कि मिट्टी
कुम्हार के बराबर है। तुम सोचा करते हो कि कृति
अपने कर्ता से कह सकती है "तुने मेरी रचना नहीं की

है!" यह वैसा ही है, जैसे घड़े का अपने बनाने वाले कुम्हार से यह कहना, "तू समझता नहीं है तू क्या कर रहा है।"

एक उत्तम समय आ रहा है

17यह सच है: कि लबानोन थोड़े दिनों बाद, अपने विशाल ऊँचे पेड़ों को लिये सपाट जुते खेतों में बदल जायेगा और सपाट खेत ऊँचे-ऊँचे पेड़ों वाले सघन वनों का रुप ले लेंगे। 18पुस्तक के शब्दों को बहरे सुनेंगे, अन्धे अन्धेरे और कोहरे में से भी देख लेंगे। 19यहोवा दीन जनों को प्रसन्न करेगा। दीन जन इस्राएल के उस पवित्रतम में आनन्द मनायेंगे।

20ऐसा तब होगा जब नीच और क्रूर व्यक्ति समाप्त हो जायेंगे। ऐसा तब होगा जब बुरा काम करने में आनन्द लेने वाले लोग चले जायेंगे। 21(वे लोग दूसरे लोगों के बारे में झूठ बोला करते हैं। वे न्यायालय में लोगों को फँसाने का यत्न करते हैं। वे भोले भाले लोगों को नष्ट करने में जुटे रहते हैं।)

22सो यहोवा ने याकूब के परिवार से कहा। (यह वही यहोवा है जिसने इब्राहीम को मुक्त किया था।) यहोवा कहता है, "अब याकूब (इस्राएल के लोग) को लज्जित नहीं होना होगा। अब उसका मुँह कभी पीला नहीं पड़ेगा। 23वह अपनी सभी संतानों को देखेगा और कहेगा कि मेरा नाम पवित्र है। इन संतानो को मैंने अपने हाथों से बनाया है और ये संतानें मानेंगी कि याकूब का पवित्र (परमेश्वर) वास्तव में पवित्र है और यें सन्ताने इस्राएल के परमेश्वर को आदर देंगी। 24वे लोग जो गलतियाँ करते रहे हैं, अब समझ जायेंगे। वे लोग जो शिकायत करते रहे हैं अब निर्देशों को स्वीकार करेंगे।"

इस्राएल को परमेश्वर पर विश्वास रखना चाहिये, मिस्र पर नहीं

30 यहोवा ने कहा, "मेरे इन बच्चों को देखो, ये मेरी बात नहीं मानते। ये योजनाएँ बनाते हैं किन्तु मेरी सहायता नहीं लेना चाहते। ये दूसरी जातियों के साथ समझौता करते हैं जबकि मेरी आत्मा उन समझौतों को नहीं चाहती। ये लोग अपने सिर पर पाप का बोझ बढ़ाते चले जा रहे हैं। 2ये बच्चे सहायता के लिये मिस्र की ओर चले जा रहे हैं, किन्तु ये मुझ से कुछ नहीं पूछते कि क्या ऐसा करना उचित है। उन्हें उम्मीद हैं कि फिरौन उन्हें बचा लेगा। वे चाहते हैं कि वे मिस्र उन्हें बचा ले।

3"किन्तु मैं तुम्हें बताता हूँ कि मिस्र में शरण लेने से तुम्हारा बचाव नहीं होगा। मिस्र तुम्हारी रक्षा करने में समर्थ नहीं होगा। 4तुम्हारे अगुआ सोअन में गये हैं और तुम्हारे राजदूत हानेस को चले गये हैं। 5किन्तु उन्हें निराशा ही हाथ लगेगी। वे एक ऐसे राष्ट्र पर विश्वास कर रहे हैं जो उन्हें नहीं बचा पायेगी। मिस्र बेकार है, मिस्र कोई सहायता नहीं देगा। मिस्र के कारण उन्हें अपमानित और लज्जित होना पड़ेगा।"

यहूदा को परमेश्वर का सन्देश

6दक्षिण के पशुओं के लिए दु:खद सन्देश:

नेगव विपत्तियों और खतरों से भरा एक देश है। यह प्रदेश सिंहों, नागों और उड़ने वाले साँपों से भरा पड़ा है। किन्तु कुछ लोग नेगव से होते हुए यात्रा कर रहे हैं-वे मिस्र की ओर जा रहे हैं। उन लोगों ने गधों की पीठों पर अपनी धन दौलत लादी हुई है। उन लोगों ने अपना खज़ाना ऊँटों की पीठों पर लाद रखा है अर्थात् ये लोग एक ऐसे देश पर भरोसा रखे हैं जो उन्हें नहीं बचा सकता। 7मिस्र ही वह बेकार का देश है। मिस्र की सहायता बेकार है। इसलिये मैं मिस्र को एक ऐसा रहाब कहता हूँ जो निठल्ला पड़ा रहता है।"

8अब इसे एक चिन्ह पर लिख दो ताकि सभी लोग इसे देख सकें। इसे एक पुस्तक में लिख दो। इन्हे अन्तिम दिनों के लिये लिख दो। ये बातें सुदूर भविष्य के साक्षी होंगी:

9ये लोग उन बच्चों के जैसे हैं जो अपने माता-पिता की बात नहीं मानते। वे झूठे हैं और यहोवा की शिक्षाओं को सुनना तक नहीं चाहते। 10वे नबियों से कहा करते हैं, "हमें जो करना चाहिये, उनके बारे में दर्शन मत किया करो! हमें सच्चाई मत बताओ! हमसे ऐसी अच्छी अच्छी बातें कहो, जो हमें अच्छी लगे! हमारे लिये केवल अच्छी बातें ही देखो। 11जो बातें सचमुच घटने को हैं, उन्हें देखना बन्द करो! हमारे रास्ते से हट जाओ! इस्राएल के उस पवित्र परमेश्वर के बारे में हमें बताना बन्द करो।"

यहूदा की सहायता केवल परमेश्वर से आती है

12इस्राएल का पवित्र (परमेश्वर) कहता है, "तुम लोगों ने यहोवा से इस सन्देश को स्वीकार करने से मना कर दिया है। तुम लोग सहायता के लिये लड़ाई-झगड़ों और झूठ पर निर्भर रहना चाहते हो। 13तुम क्योंकि इन बातों के लिए अपराधी हो, इसलिए तुम एक ऐसी ऊँची दीवार के समान हो जिसमें दरारें आ चुकी हैं। वह दीवार ढह जायेगी और छोटे-छोटे टुकड़ों में टूट कर ढेर हो जायेगी। 14तुम मिट्टी के उस बड़े बर्तन के समान हो जाओगे जो टूट कर छोटे-छोटे टुकड़ों में बिखर जाता है। ये टुकड़ें बेकार होते हैं। इन टुकड़ों से तुम न तो आग से जलता कोयला ही उठा सकते हो और न ही किसी जोहड़ से पानी।"

15इस्राएल का वह पवित्र, मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "यदि तुम मेरी ओर लौट आओ तो तुम बच जाओगे।

यदि तुम मुझ पर भरोसा रखोगे तभी तुम्हें तुम्हारा बल
प्राप्त होगा किन्तु तुम्हें शांत रहना होगा।"

किन्तु तुम तो वैसा करना ही नहीं चाहते! 16तुम
कहते हो, "नहीं, हमें घोड़ों की आवश्यकता है जिन पर
चढ़ कर हम दूर भाग जायें!" यह सच है–तुम घोड़ों पर
चढ़ कर दूर भाग जाओगे किन्तु शत्रु तुम्हारा पीछा करेगा
और वह तुम्हारे घोड़ों से अधिक तेज़ होगा। 17एक शत्रु
ललकारेगा और तुम्हारे हज़ारों लोग भाग खड़े होंगे।
पाँच शत्रु ललकारेंगे और तुम्हारे सभी लोग उनके
सामने से भाग जायेंगे। वहाँ तुम ऐसे ही अकेले बचे रह
जाओगे, जैसे पहाड़ी पर लगा तुम्हारे झण्डे का डण्डा।

18यहोवा तुम पर अपनी करुणा दर्शाना चाहता है।
यहोवा बाट जोह रहा है। यहोवा तुम्हें सुख चैन देने के
लिए तैयार खड़ा है। यहोवा खरा परमेश्वर है और हर
वह व्यक्ति जो यहोवा की सहायता की प्रतीक्षा में है,
धन्य (आनन्दित) होगा।

19हाँ, हे सिय्योन पर्वत पर रहने वालो, हे यरूशलेम
के निवासियों, तुम लोग रोते बिलखते नहीं रहोगे। यहोवा
तुम्हारे रोने को सुनेगा और वह तुम पर दया करेगा।
यहोवा तुम्हारी सुनेगा और वह तुम्हारी सहायता करेगा।

परमेश्वर अपने लोगों की सहायता करेगा

20यद्यपि मेरा यहोवा परमेश्वर तुम्हें दुःख और कष्ट
दे सकता है ऐसे ही जैसे मानों वह ऐसा रोटी–पानी हो,
जिसे तुम हर दिन खाते–पीते हो। किन्तु वास्तव में
परमेश्वर तो तुम्हारा शिक्षक है, और वह तुमसे छिपा
नहीं रहेगा। तुम स्वयं अपनी आँखों से अपने उस शिक्षक
को देखोगे। 21तब यदि तुम बुरे काम करोगे और बुरा
जीवन जीओगे (दाहिनी ओर अथवा बायीं ओर) तो तुम
अपने पीछे एक आवाज़ को कहते सुनोगे, "खरी राह
यह है। तुझे इसी राह में चलना है।"

22तुम्हारे पास चाँदी सोने से मढ़े मूर्ति हैं। उन झूठे देवों
ने तुमको बुरा (पापपूर्ण) बना दिया है। लेकिन तुम उन
झूठे देवों की सेवा करना छोड़ दोगे। तुम उन देवों को
कूड़े कचरे और मैले चिथड़ों के समान दूर फेंक दोगे।

23उस समय, यहोवा तुम्हारे लिये वर्षा भेजेगा। तुम
खेतों में बीज बोओगे, और धरती तुम्हारे लिये भोजन
उपजायेगी। तुम्हें भरपूर उपज मिलेगा। तुम्हारे पशुओं
के लिए खेतों में भरपूर चारा होगा। तुम्हारे पशुओं के
लिये वहाँ बड़ी–बड़ी चरागाहें होंगी। 24तुम्हारे मवेशियों
और तुम्हारे गधों को जैसे चारे की आवश्यकता होगी,
वह सब उन्हें मिलेगा। खाने की इतनी बहुतायत होगी
कि तुम्हें अपने पशुओं के खाने के लिए भी फावड़ों
और पंजों से चारा को फैलाना होगा। 25हर पर्वत और
पहाड़ियों पर पानी से भरी जलधाराएँ होंगी। ये बातें तब
घटेंगी जब बहुत से लोग मर चुकेंगे और मीनारें ढह
चुकेंगी।

26उस समय चाँद की चाँदनी सूरज की धूप सी उजली
हो जायेगी। सूर्य का प्रकाश आज से सात गुणा अधिक
उज्ज्वल हो जायेगा। सूर्य एक दिन में उतना प्रकाश देने
लगेगा जितना वह पूरे सप्ताह में देता है। ये बातें उस
समय घटेंगी जब यहोवा अपने टूटे लोगों की मरहम
पटटी करेगा और सजा के कारण जो चोटें उन्हें आई
हैं, उन्हें अच्छा करेगा।

27देखो! दूर से यहोवा का नाम आ रहा है। उसका
क्रोध एक ऐसी अग्नि के समान है जो धुएँ के काले
बादलों से युक्त है। यहोवा का मुख क्रोध से भरा हुआ
है। उसकी जीभ एक जलती हुई लपट जैसी है। 28यहोवा
की साँस (आत्मा) एक ऐसी विशाल नदी के समान है
जो तब तक चढ़ती रहती है, जब तक वह गले तक नहीं
पहुँच जाती। यहोवा सभी राष्ट्रों का न्याय करेगा। यह
वैसा ही होगा जैसे वह उन्हें विनाश की छलनी से छान
डाले। यहोवा उनका नियन्त्रण करेगा। यह नियन्त्रण
वैसा ही होगा, जैसे पशु पर नियन्त्रण पाने के लिए लगाम
लगायी जाती है। वह उन्हें उनके विनाश की ओर ले
जाएगा।

29उस समय, तुम खुशी के गीत गाओगे। वह समय
उन रातों के जैसा होगा जब तुम अपने उत्सव मनाना
शुरु करते हो। तुम उन व्यक्तियों के समान प्रसन्न
होओगे जो इस्राएल की चट्टान यहोवा के पर्वत पर जाते
समय बांसुरी को सुनते हुए प्रसन्न होते हैं।

30यहोवा सभी लोगों को अपनी महान वाणी सुनने
को विवश करेगा। यहोवा लोगों को क्रोध के साथ नीचे
आती हुई अपनी शक्तिशाली भुजा देखने को विवश
करेगा। यह भुजा उस महा अग्नि के समान होगी जो
सब कुछ भस्म कर डालती है। यहोवा की शक्ति उस
आंधी के जैसी होगी जो तेज़ वर्षा और ओलों के साथ
आता है। 31अश्शूर जब यहोवा की आवाज़ सुनेगा तो
वह डर जायेगा। यहोवा लाठी से अश्शूर पर वार करेगा।
32यहोवा अश्शूर को पीटेगा और यह पिटाई ऐसी होगी
जैसे कोई नगाड़ों और वीणाओं पर संगीत बजा रहा हो।
यहोवा अपने शक्तिशाली भुजा (शक्ति) से अश्शूर को
पराजित करेगा।

33तोपेत को बहुत पहले से ही तैयार कर लिया गया
है। राजा के लिये यह तैयार है। यह भट्टी बहुत गहरी
और बहुत चौड़ी बनायी गयी है। वहाँ लकड़ी का एक
बहुत बड़ा ढेर और आग मौजूद है। यहोवा की आत्मा
जलती हुई गंधक की नदी के रुप में आयेगी और इसे
भस्म कर के नष्ट कर देगी।

इस्राएल को परमेश्वर की शक्ति पर भरोसा रखना चाहिये

31 उन लोगों को धिक्कार है जो सहायता पाने के
लिये मिस्र की ओर उतर रहे हैं। ये लोग घोड़े

चाहते हैं। उनका विचार है, घोड़े उन्हें बचा लेंगे। लोगों
को आशा है कि मिस्र के रथ और घुड़सवार सैनिक
उन्हें बचा लेंगे। लोग सोचते हैं कि वे सुरक्षित इसलिये हैं
कि वह एक विशाल सेना है। लोग इस्राएल के पवित्र
(परमेश्वर) पर भरोसा नहीं रखते। लोग यहोवा से
सहायता नहीं माँगते।

2किन्तु, यहोवा ही बुद्धिमान है और वह यहोवा ही है
जो उन पर विपत्तियाँ ढायेगा। लोग यहोवा के आदेश को
नहीं बदल पायेंगे। यहोवा बुरे लोगों (यहूदा) के विरुद्ध
खड़ा होगा और युद्ध करेगा। यहोवा उन लोगों (मिस्र)
के विरुद्ध युद्ध करेगा, जो उन्हें सहायता पहुँचाने का
यत्न करते हैं।

3मिस्र के लोग मात्र मनुष्य हैं परमेश्वर नहीं। मिस्र
के घोड़े मात्र पशु हैं, आत्मा नहीं। यहोवा अपना हाथ
आगे बढ़ायेगा और सहायक (मिस्र) पराजित हो जायेगा
और सहायता चाहने वाले लोगों (यहूदा) का पतन होगा।
वे सभी लोग साथ साथ मिट जायेंगे।

4यहोवा ने मुझ से यह कहा, "जब कोई सिंह अथवा
सिंह का कोई बच्चा किसी पशु को खाने के लिये
पकड़ता है तो वह मरे हुए पशु पर खड़ा हो जाता है और
दहाड़ता है। उस समय उस शक्तिशाली सिंह को कोई भी
डरा नहीं पाता। यदि चरवाहे आयें और उस सिंह का
हाँका करने लगे तो भी वह सिंह डरेगा नहीं। लोग
कितना ही शोर करते रहें, किन्तु वह सिंह नहीं भागेगा।"

इसी प्रकार सर्वशक्तिमान यहोवा सिय्योन पर्वत पर
उतरेगा। उस पर्वत पर यहोवा युद्ध करेगा। 5सर्वशक्तिमान
यहोवा वैसे ही यरूशलेम की रक्षा करेगा जैसे अपने
घोंसलों के ऊपर उड़ती हुई चिड़ियाँ। यहोवा उसे बचायेगा
और उसकी रक्षा करेगा। यहोवा ऊपर से होकर निकल
जायेगा और यरूशलेम की रक्षा करेगा।

6हे, इस्राएल के वंशज! तुमने परमेश्वर से विद्रोह
किया। तुम्हें परमेश्वर की ओर मुड़ आना चाहिये। 7तब
लोग उन सोने चाँदी की मूर्तियों को पूजना छोड़ेंगे जिन्हें
तुमने बनाया है। उन मूर्तियों को बनाकर तुमने सचमुच
पाप किया था। 8यह सच है कि तलवार केद्वारा अश्शूर
को हरा दिया जायेगा। किन्तु वह तलवार किसी मनुष्य
की तलवार नहीं होगी। अश्शूर नष्ट हो जायेगा किन्तु
वह विनाश किसी मनुष्य की तलवार के द्वारा नहीं
किया जायेगा। अश्शूर परमेश्वर की तलवार से भाग
निकलेगा। वह उस तलवार से भागेगा। किन्तु उसके
जवान पुरुषों को पकड़कर दास बना लिया जायेगा।
9घबराहट में उनका शरण दाता गायब हो जायेगा। उनके
नेता पराजित कर दिये जायेंगे और वे अपने झण्डे को
छोड़ देंगे।

ये सभी बातें यहोवा ने कही थी। यहोवा की अग्नि
स्थल (वेदी) सिय्योन पर है और यहोवा की भट्टी
(वेदी) यरूशलेम में है।

मुखियाओं को खरा और सच्चा होना चाहिए

32 मैं जो बातें बता रहा हूँ, उन्हें सुनो! किसी राजा
को ऐसे राज करना चाहिये जिससे भलाई
आये। मुखियाओं को लोगों का नेतृत्व करते समय
निष्पक्ष निर्णय लेने चाहिये। 2यदि ऐसा होगा तो राजा
उस स्थान के समान हो जायेगा जहाँ लोग आँधी और
वर्षा से बचने के लिये आश्रय लेते हैं। यह सूखी धरती में
जलधाराओं के समान होगा। यह ऐसा ही होगा जैसे गर्म
प्रदेश में किसी बड़ी चट्टान की ठण्डी छाया। 3फिर
लोगों की वे आँखे जो देख सकती हैं, वे बंद नहीं रहेगी।
उन के कान जो सुनते हैं, वे वास्तव में उस पर ध्यान
देंगे। 4वे लोग जो उतावले हैं, वे सही फैसले लेंगे। वे लोग
जो अभी साफ़ साफ़ नहीं बोल पाते हैं, वे साफ़ साफ़
और जल्दी जल्दी बोलने लगेंगे। 5मूर्ख लोग महान व्यक्ति
नहीं कहलायेंगे। लोग षड़यन्त्र करने वालों को सम्मान
योग्य नहीं कहेंगे।

6एक मूर्ख व्यक्ति तो मूर्खतापूर्ण बातें ही कहता है
और वह अपने मन में बुरी बातों की ही योजनाएँ बनाता
है। मूर्ख व्यक्ति अनुचित कार्य करने की ही सोचता है।
मूर्ख व्यक्ति यहोवा के बारे में ग़लत बातें कहता है। मूर्ख
व्यक्ति भूखों को भोजन नहीं करने देता। मूर्ख व्यक्ति
प्यासे लोगों को पानी नहीं पीने देता। 7वह मूर्ख व्यक्ति
बुराई को एक हथियार के रुप में इस्तेमाल करता है।
वह निर्धन लोगों से झूठ के जरिए बरबाद करने के
लिये बुरे बुरे रास्ते बताता रहता है। उसकी यें झूठी बातें
गरीब लोगों को निष्पक्ष न्याय मिलने से दूर रखती हैं।

8किन्तु एक अच्छा मुखिया अच्छे काम करने की
योजना बनाता है और उसकी वे अच्छी बातें ही उसे
एक अच्छा नेता बनाती हैं।

बुरा समय आ रहा है

9तुममें से कुछ स्त्रियाँ अभी खुश हैं।तुम सुरक्षित
अनुभव करती हो। किन्तु तुम्हें खड़े होकर जो वचन मैं
बोल रहा उन्हें सुनना चाहिये। 10स्त्रियों तुम अभी सुरक्षित
अनुभव करती हो किन्तु एक वर्ष बाद तुम पर विपत्ति
आने वाली है। क्यों? क्योंकि तुम अगले वर्ष अँगूर
इकट्ठे नहीं करोगी–इकट्ठे करने के लिये अँगूर होंगे
ही नहीं।

11स्त्रियों, अभी तुम चैन से हो, किन्तु तुम्हें डरना
चाहिये! स्त्रियों, अभी तुम सुरक्षित अनुभव करती हो,
किन्तु तुम्हें चिन्ता करनी चाहिये! अपने सुन्दर वस्त्रों
को उतार फेंको और शोक वस्त्रों को धारण कर लो।
उन वस्त्रों को अपनी कमर पर लपेट लो। 12अपनी
शोक से भरी छातियों पर उन शोक वस्त्रों को पहन
लो।

विलाप करो क्योंकि तुम्हारे खेत उजड़े हुए हैं। तुम्हारे
अँगूर के बगीचे जो कभी अँगूर दिया करते थे, अब

खाली पड़े हैं। 13मेरे लोगों की धरती के लिये विलाप
करो। विलाप करो, क्योंकि वहाँ बस काँटे और
खरपतवार ही उगा करेंगे। विलाप करो इस नगर के
लिये और उन सब भवनों के लिये जो कभी आनन्द से
भरे हुए थे।

14लोग इस प्रमुख नगर को छोड़ जायेंगे। यह महल
और ये मिनारें वीरान छोड़ दिये जायेंगे। वे जानवरों की
माँद जैसे हो जाएँगे। नगर में जंगली गधे विहार करेंगे।
वहाँ भेड़े घास चरती फिरेंगी।

15-16तब तक ऐसा ही होता रहेगा, जब तक परमेश्वर
ऊपर से हमें अपनी आत्मा नहीं देगा। अब धरती पर
कोई अच्छाई नहीं है। यह रेगिस्तान सी बनी हुई हैं
किन्तु आने वाले समय में यह रेगिस्तान उपजाऊ मैदान
हो जायेगा और यह उपजाऊ मैदान एक हरे भरे वन
जैसा बन जायेगा। चाहे जंगल हो चाहे उपजाऊ धरती,
हर कहीं न्याय और निष्पक्षता मिलेगी। 17वह नेकी
सदा-सदा के लिये शांति और सुरक्षा को लायेगी। 18मेरे
लोग शांति के इस सुन्दर क्षेत्र में निवास करेंगे। मेरे लोग
सुरक्षा के तम्बुओं में रहा करेंगे। वे निश्चिंतता के साथ
शांतिपूर्ण स्थानों में निवास करेंगे।

19किन्तु ये बातें घटें इससे पहले उस वन को गिरना
होगा। उस नगर को पराजित होना होगा। 20तुममें से
कुछ लोग हर जलधारा के निकट बीज बोते हो। तुम
अपने मवेशियों और अपने गधों को इधर-उधर चरने
के लिए खुला छोड़ देते हो। तुम लोग बहुत प्रसन्न
रहोगे।

बुराई से और अधिक बुराई ही पैदा होती है

33 देखो, तुम लोग लड़ाई करते हो और उन लोगों
की वस्तुएँ लूटते हो और वह भी ऐसे लोगों कि
जिन्होंने कभी कोई तुम्हारी वस्तु नहीं चोरी की। तुम
ऐसे लोगों को धोखा देते रहे जिन्होंने कभी तुम्हें धोखा
नहीं दिया। इसलिये जब तुम चोरी करना बन्द कर दोगे
तो दूसरे लोग तुम्हारी वस्तुऐं चोरी करना शुरु कर देंगे।
जब तुम लोगों को धोखा देना बंद कर दोगे तो लोग तुम्हें
धोखा देना आरम्भ कर देंगे। तब तुम कहोगे,

2हे यहोवा, हम पर दया कर। हमने तेरे सहारे की
बाट जोही है। हे यहोवा, हर सुबह तू हमको शक्ति दे।
जब हम विपत्ति में हो, तू हम को बचा ले।

3तेरी शक्तिशाली ध्वनि से लोग डरा करते हैं और वे
तुझ से दूर भाग जाते हैं। तेरी महानता के कारण राष्ट्र
दूर भाग जाते हैं।

4तुम लोग युद्ध में चोरी किया करते हो। वे सभी
वस्तुएँ तुमसे ले ली जायेंगी। अनगिनत लोग आयेंगे और
तुम्हारी धन-दौलत तुमसे छीन लेंगे। यह उस समय का
जैसा होगा जब टिड्डी दल आता है और तुम्हारी सभी
फसलों को चट कर जाता है।

5यहोवा बहुत महान है। वह बहुत ऊँचे स्थान पर
रहता है। यहोवा सिय्योन को खरेपन और सच्चाई से
परिपूर्ण करताहै।

6हे यरूशलेम, तू सम्पन्न है। तू परमेश्वर के ज्ञान
और विवेक से सम्पन्न है। तू मुक्ति से भरपूर है। तू
यहोवा का आदर करता है और वही आदर तुझे सम्पन्न
बनाता है। इसीलिए तू जान सकता है कि तू सदा बना
रहेगा।

7किन्तु सुनो! वीर पुरुष बाहर पुकार रहे हैं और
सन्देशवाहक जो शांति लाते हैं, ज़ोर-जोर से बोल रहे
हैं। 8रास्ते नष्ट हो गये हैं। गलियों में कोई नहीं चल
फिर रहा है। लोगों ने जो सन्धियाँ की थी, वे उन्होंने
तोड़ दिये हैं। लोग साक्षियों के प्रमाण पर विश्वास करने
से मना करते हैं। कोई भी किसी दूसरे व्यक्ति का आदर
नहीं करता। 9धरती बीमार है और मर रही है। लबानोन
मर रहा है और शारोन की घाटी सूखी और उजाड़ है।
बाशान और कर्मेल जो कभी एक सुन्दर वृक्ष के समान
विकसित हो रहे थे, अब उन वृक्षों का विकास रुक
गया है।

10यहोवा कहता है, "मैं अब खड़ा होऊँगा और अपनी
महानता दर्शाऊँगा। अब मैं लोगों के लिए महत्त्वपूर्ण
बनूँगा। 11तुम लोगों ने बेकार के काम किये हैं। वे चीजें
भूसे और सूखी घास के जैसे हैं। वे बेकार हैं। तुम्हारी
आत्मा अग्नि के समान हो जायेगी और तुम्हें जला
डालेगी। 12लोग तब तक जलते रहेंगे जब तक उनकी
हड्डिया जल कर चूने जैसी नहीं हो जातीं। लोग काँटों
और सूखी झाड़ियों के समान जल्दी ही जल जायेंगे।

13"दूर देशों के लोगों, जो काम मैंने किये हैं, तुम
उनके बारे में सुनते हो। हे मेरे पास के लोगों, तुम मेरी
शक्ति को समझते हो।"

14सिय्योन में पापी डरे हुए हैं। वे लोग जो बुरे काम
किया करते हैं, डर से थर-थर काँप रहे हैं। वे कहते
है, "क्या इस विनाशकारी आग से हम में से कोई बच
सकता है? कौन रह सकता है इस आग के निकट जो
सदा-सदा के लिये जलती रहती है?"

15वे लोग ही इस आग में से बच पायेंगे जो अच्छे हैं,
सच्चे हैं। वे लोग पैसे के लिये दूसरों को हानि नहीं
पहुँचाना चाहते। वे लोग घूस नहीं लेते। दूसरे लोगों की
हत्याओं की योजना को वे सुनने तक से मना कर देते
हैं। बुरे काम करने की योजनाओं को वे देखना भी
नहीं चाहते। 16ऐसे लोग ऊँचे स्थानों पर सुरक्षा पूर्वक
निवास करेंगे। ऊँची चट्टान की गढ़ियों में वे सुरक्षित
रहेंगे। ऐसे लोगों के पास सदा ही खाने को भोजन और
पीने को जल रहेगा। 17तुम्हारी आँखें उस राजा (परमेश्वर)
का, उसकी सुंदरता में दर्शन करेंगी। तुम उस महान
धरती को देखोगे। 18-19बीते हुए दिनों में तुमने जो कष्ट
उठाये हैं, तुम उनके बारे में सोचोगे। तुम सोचोगे, "दूसरे

देशों के वे लोग कहाँ हैं? वे लोग ऐसी बोली बोला करते
थे, जिसे हम समझ नहीं सकते थे। दूसरे देशों के वे
सेवक और कर एकत्र करने वाले कहाँ हैं? वे गुप्तचर
जिन्होंने हमारी सुरक्षा मिनारों का लेखा जोखा लिया
था, कहाँ हैं? वे सब समाप्त हो गये!"

परमेश्वर यरूशलेम को बचायेगा

20हमारे धार्मिक उत्सवों की नगरी, सिय्योन को देखो।
विश्राम निवास के उस सुन्दरस्थान यरूशलेम को देखो।
यरूशलेम उस तम्बू के समान है जिसे कभी उखाड़ा
नहीं जायेगा। वे खूँटे जो उसे अपने स्थान पर थामे
रखते हैं, कभी उखाड़े नहीं जायेंगें। उसके रस्से कभी
टूटेंगे नहीं। **21–23**वहाँ हमारे लिए शक्तिशाली यहोवा
विस्तृत झरनों और नदियों वाले एक स्थान के समान
होगा। किन्तु उन नदियों पर कभी शत्रु की नौकाएँ
अथवा शक्तिशाली जहाज़ नहीं होंगे। उन नौकाओं पर
काम करने वाले तुम लोग रस्सियों को नहीं थामे रख
सके। तुम मस्तूल को मजबूत नहीं बनाये रख सके। सो
तुम अपनी पालों को भी नहीं खोल पाओगे। क्यों?
क्योंकि यहोवा हमारा न्यायकर्ता है। यहोवा हमारे लिए
नियम बनाता है। यहोवा हमारा राजा है। वह हमारी रक्षा
करता है। इसी से यहोवा हमें बहुत सा धन देगा। यहाँ
तक कि अपाहिज लोग भी युद्ध में बहुत सा धन जीत
लेंगे। **24**वहाँ रहने वाला कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं
कहेगा, "मैं रोगी हूँ।" वहाँ रहने वाले लोग ऐसे लोग हैं
जिनके पाप क्षमा कर दिये गये हैं।

परमेश्वर अपने शत्रुओं को दण्ड देगा

34 हे सभी देशों के लोगों, पास आओ और सुनो!
तुम सब लोगों को ध्यान से सुनना चाहिये। हे
धरती और धरती पर के सभी लोगों, हे जगत और
जगत की सभी वस्तुओं, तुम्हें इन बातों पर कान देना
चाहिये। **2**यहोवा सभी देशों और उनकी सेनाओं पर
कुपित है। यहोवा उन सबको नष्ट कर देगा। वह उन
सभी को मरवा डालेगा। **3**उनकी लाशें बाहर फेंक दी
जायेंगी। लाशों से दुर्गन्ध उठेगी और पहाड़ के ऊपर से
खून नीचे को बहेगा। **4**आकाश चर्म पत्र के समान
लपेट कर मूंद दिये जायेंगे। ग्रह–तारे मर कर किसी
अँगूर की बेल या अंजीर के पत्तों के समान गिरने
लगेंगे। आकाश के सभी तारे पिघल जायेंगे। **5**यहोवा
कहता है, "ऐसा उस समय होगा जब आकाश में मेरी
तलवार खून में सन जायेगी।"

देखो! यहोवा की तलवार एदोम को काट डालेगी।
यहोवा ने उन लोगों को अपराधी ठहराया है सो उन
लोगों को मरना ही होगा। **6**क्यों? क्योंकि यहोवा ने
निश्चय किया कि बोस्रा और एदोम के नगरों में मार
काट का एक समय आएगा। **7**सो मेढ़े, मवेशी और हट्टे
कट्टे जंगली बैल मारे जायेंगे। धरती उनके खून से भर
जायेगी। मिट्टी उनकी चर्बी से पट जायेगी।

8ऐसी बातें घटेंगी क्योंकि यहोवा ने दण्ड देने का एक
समय निश्चित कर लिया है। यहोवा ने एक वर्ष ऐसा
चुन लिया है जिसमें लोग अपने उन बुरे कामों के लिये
जो उन्होंने सिय्योन के विरुद्ध किये हैं, अवश्य ही
भुगतान कर देंगे। **9**एदोम की नदियाँ ऐसी हो जायेंगी जैसे
मानो वे गर्म तारकोल की हों। एदोम की धरती जलती
हुई गंधक और तारकोल के समान हो जायेगी। **10**वे
आगे रात दिन जला करेंगी। कोई भी व्यक्ति उस आग
को रोक नहीं पायेगा। एदोम से सदा धुँआ उठा करेगा।
वह धरती सदा–सदा के लिये नष्ट हो जायेगी। उस
धरती से होकर फिर कभी कोई नहीं गुज़रा करेगा।
11वह धरती परिंदों और छोटे–छोटे जानवरों की हो
जायेंगी। वहाँ उल्लू और कौवों का वास होगा। परमेश्वर
उस धरती को सूनी उजाड़ भूमि में बदल देगा। यह वैसी
ही हो जायेगी जैसी यह सृष्टि से पहले थी। **12**स्वतन्त्र
व्यक्ति और मुखिया लोग समाप्त हो जायेंगे। उन लोगों
को शासन करने के लिए वहाँ कुछ भी नहीं बचेगा।

13वहाँ के सभी सुन्दर भवनों में काँटे और जंगली
झाड़ियाँ उग आयेंगी। जंगली कुत्ते और उल्लू उन मकानों
में वास करेंगे। परकोटों से युक्त नगरों को जंगली जानवर
अपना निवास बना लेंगे। वहाँ जो घास उगेगी उसमें
बड़े–बड़े पक्षी रहेंगे। **14**वहाँ जंगली बिल्लियाँ और
लकड़बघ्घे साथ रहा करेंगे तथा जंगली बकरियाँ वहाँ
अपने मित्रों को बुलायेंगी। रात के जीव जन्तु वहाँ अपने
लिए आश्रय खोजते फिरेंगे और वहीं विश्राम करने के
लिए अपनी जगह बना लेंगे। **15**साँप वहाँ अपने घर बना
लेंगे। वहाँ साँप अपने अण्डे दिया करेंगें। अण्डे फूटेंगे
और उन अन्धकारपूर्ण स्थानों से रेंगते हुए साँप के
बच्चे बाहर निकलेंगे। वहाँ मरी वस्तुओं को खाने वाले
पक्षी एक के बाद एक इकट्ठे होते चले जाएँगे।

16यहोवा के चर्म पत्र को देखो। पढ़ो उसमें क्या लिखा
है। कुछ भी नहीं छुटा है। उस चर्म पत्र में लिखा है कि
वे सभी पशु पक्षी इकट्ठे हो जायेंगे। इसलिए परमेश्वर
के मुख ने यह आदेश दिया और उसकी आत्मा ने उन्हें
एक साथ इकट्ठा कर दिया। परमेश्वर की आत्मा
उन्हें परस्पर एकत्र करेगा। **17**परमेश्वर उनके साथ
क्या करेगा, यह उसने निश्चय कर लिया है। इसके
बाद परमेश्वर ने उनके लिए एक जगह चुनी। परमेश्वर
ने एक रेखा खींची और उन्हें उनकी धरती दिखा दी।
इसलिए वह धरती सदा सदा पशुओं की हो जायेगी। वे
वहाँ वर्ष दर वर्ष रहते चले जायेंगे।

परमेश्वर अपने लोगों को सुख देगा

35 सूखा रेगिस्तान बहुत खुशहाल हो जायेगा।
रेगिस्तान प्रसन्न होगा और एक फूल के समान

विकसित होगा। 2वह रेगिस्तान खिलते हुये फूलों से भर
उठेगा और अपनी प्रसन्नता दर्शाने लगेगा। ऐसा लगेगा
जैसे रेगिस्तान आनन्द में भरा नाच रहा है। यह रेगिस्तान
ऐसा सुन्दर हो जायेगा जैसा लबानोन का वन है, कर्मेल
का पहाड़ है और शारोन की घाटी है। ऐसा इसलिए
होगा क्योंकि सभी लोग यहोवा की महिमा का दर्शन
करेंगे। लोग हमारे परमेश्वर की महानता को देखेंगे।

3दुर्बल बाँहों को फिर से शक्तिपूर्ण बनाओ। दुर्बल
घुटनों को मज़बूत करो। 4लोग डरे हुए हैं और असमंजस
में पड़े हैं। उन लोगों से कहो, "शक्तिशाली बनो! डरो
मत!" देखो, तुम्हारा परमेश्वर आयेगा और तुम्हारे शत्रुओं
को जो उन्होंने किया है, उसका दण्ड देगा। वह आयेगा
और तुम्हें तुम्हारा प्रतिफल देगा और तुम्हारी रक्षा
करेगा। 5फिर तो अन्धे देखने लगेंगे। उनकी आँखें खुल
जायेंगी। फिर तो बहरे लोग सुन सकेंगे। उन के कान
खुल जायेंगे। 6लूले-लंगड़े लोग हिरन की तरह नाचने
लगेंगे और ऐसे लोग जो अभी गूंगे हैं, प्रसन्न गीत गाने में
अपनी वाणी का उपयोग करने लगेंगे। ऐसा उस समय
होगा जब मरुभूमि में पानी के झरने बहने लगेंगे। सूखी
धरती पर झरने बह चलेंगे। 7लोग अभी जल के रूप में
मृग मरीचिका को देखते हैं किन्तु उस समय जल के
सच्चे सरोवर होंगे। सूखी धरती पर कुएँ हो जायेंगे।
सूखी धरती से जल फूट बहेगा। जहाँ एक समय जंगली
जानवरों का राज था, वहाँ लम्बे लम्बे पानी के पौधे उग
आयेंगे।

8उस समय, वहाँ एक राह बन जायेगी और इस
राजमार्ग का नाम होगा 'पवित्र मार्ग'। उस राह पर
अशुद्ध लोगों को चलने की अनुमति नहीं होगी। कोई
भी मूर्ख उस राह पर नहीं चलेगा। बस परमेश्वर के
पवित्र लोग ही उस पर चला करेंगे। 9उस सड़क पर
कोई खतरा नहीं होगा। लोगों को हानि पहुँचाने के लिये
उस सड़क पर शेर नहीं होंगे। कोई भी भयानक जन्तु
वहाँ नहीं होगा। वह सड़क उन लोगों के लिए होगी
जिन्हें परमेश्वर ने मुक्त किया है।

10परमेश्वर अपने लोगों को मुक्त करेगा और वे
लोग फिर लौट कर वहाँ आयेंगे। लोग जब सिय्योन पर
आयेंगे तो वे प्रसन्न होंगे। वे सदा सदा के लिए प्रसन्न हो
जायेंगे। उनकी प्रसन्नता उनके माथों पर एक मुकुट के
समान होगी। वे अपनी प्रसन्नता और आनन्द से पूरी
तरह भर जायेंगे। शोक और दु:ख उनसे दूर बहुत दूर
चले जायेंगे।

अश्शूर का यहूदा पर आक्रमण

36 हिजकिय्याह यहूदा का राजा था और सन्हेरीब
अश्शूर का राजा था। हिजकिय्याह के शासन
केचौदहवें वर्ष में सन्हेरीब ने यहूदा के किलाबन्द नगरों
से युद्ध किया और उसने उन नगरों को हरा दिया।
2सन्हेरीब ने अपने सेनापति को यरूशलेम से लड़ने को
भेजा। वह सेनापति लाकीश को छोड़कर यरूशलेम में
राजा हिजकिय्याह के पास गया। वह अपने साथ एक
शक्तिशाली सेना को भी ले गया था। वह सेनापति अपनी
सेना के साथ नहर के पास वाली सड़क पर गया। (यह
सड़क उस नहर के पास है जो ऊपर वाले पोखर से
आती है।)

3यरूशलेम के तीन व्यक्ति सेनापति से बात करने के
लिये बाहर निकल कर गये। ये लोग थे हिल्किय्याह
का पुत्र एल्याकीम, आसाप का पुत्र योआह और शेब्ना।
एल्याकीम महल का सेवक था। योआह कागज़ात को
संभाल कर रखने का काम करता था और शेब्ना
राजा का सचिव था।

4सेनापति ने उनसे कहा, "तुम लोग, राजा हिजकिय्याह
से जाकर ये बातें कहो: महान राजा, अश्शूर का राजा
कहता है:

"तुम अपनी सहायता के लिये किस पर भरोसा रखते
हो? 5मैं तुम्हें बताता हूँ कि यदि युद्ध में तुम्हारा विश्वास
शक्ति और कुशल योजनाओं पर है तो वह व्यर्थ है। वे
कोरे शब्दों के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं। इसलिए तुम मुझ
से युद्ध क्यों कर रहे हो? 6अब मैं तुमसे पूछता हूँ, तुम
सहायता पाने के लिये किस पर भरोसा करते हो? क्या
तुम सहायता के लिये मिस्र पर निर्भर हो? मिस्र तो एक
टूटी हुई लाठी के समान है। यदि तुम सहारा पाने को
उस पर टिकोगे तो वह तुम्हें बस हानि ही पहुँचायेगी
और तुम्हारे हाथ में एक छेद बना देगी। मिस्र के राजा
फिरौन पर किसी भी व्यक्ति के द्वारा सहायता पाने के
लिये भरोसा नहीं किया जा सकता।

7"किन्तु हो सकता है तुम कहो, 'हम सहायता पाने
के लिये अपने यहोवा परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं।'
किन्तु मेरा कहना है कि हिजकिय्याह ने यहोवा की
वेदियों को और पूजा के ऊँचे स्थानों को नष्ट कर
दिया है। यह सत्य है, सही है? यह सत्य है कि यहूदा और
यरूशलेम से हिजकिय्याह ने ये बातें कही थीं: 'तुम यहाँ
यरूशलेम में बस एक इसी वेदी पर उपासना किया
करोगे।'

8"यदि तुम अब भी मेरे स्वामी से युद्ध करना चाहते
हो तो अश्शूर का राजा तुमसे यह सौदा करना चाहेगा:
राजा का कहना है, 'यदि युद्ध में तुम्हारे पास घुड़सवार
पूरे हैं तो मैं तुम्हें दो हजार घोड़े दे दूँगा।' 9किन्तु इतना
होने पर भी तुम मेरे स्वामी के एक सेवक तक को नहीं
हरा पाओगे। उसके किसी छोटे से छोटे अधिकारी तक
को तुम नहीं हरा पाओगे। इसलिए तुम मिस्र के घुड़सवार
और रथों पर अपना भरोसा क्यों बनाये रखते हो।

10"और अब देखो जब मैं इस देश में आया था और
मैंने युद्ध किया था, यहोवा मेरे साथ था। जब मैंने नगरों
को उजाड़ा, यहोवा मेरे साथ था। यहोवा मुझसे कहा

करता था, 'खड़ा हो। इस नगरी में जा और इसे ध्वस्त कर दे।'"

11यरूशलेम के तीनों व्यक्तियों, एल्याकीम, शेब्ना और योआह ने सेनापति से कहा, "कृपा करके हमारे साथ अरामी भाषा में ही बात कर। क्योंकि इसे हम समझ सकते हैं। तू यहूदी भाषा में हमसे मत बोल। यदि तू यहूदी भाषा का प्रयोग करेगा तो नगर परकोटे पर के सभी लोग तुझे समझ जायेंगे।"

12इस पर सेनापति ने कहा, "मेरे स्वामी ने मुझे ये बातें बस तुम्हें और तुम्हारे स्वामी हिजकिय्याह को ही सुनाने के लिए नहीं भेजा है। मेरे स्वामी ने मुझे इन बातों को उन्हें बताने के लिए भेजा है जो लोग नगर परकोटे पर बैठे हैं। उन लोगों को न तो पूरा खाना मिलता है और न पानी। सो उन्हें अपने मलमूत्र को तुम्हारी ही तरह खाना–पीना होगा।"

13फिर सेनापति ने खड़े हो कर ऊँचे स्वर में कहा। वह यहूदी भाषा में बोला। 14सेनापति ने कहा, "महासम्राट अश्शूर के राजा के शब्दों को सुनो:

तुम अपने आप को हिजकिय्याह के द्वारा मूर्ख मत बनने दो, वह तुम्हें बचा नहीं पायेगा। 15हिजकिय्याह जब यह कहता है, 'यहोवा में विश्वास रखो! यहोवा अश्शूर के राजा से हमारी रक्षा करेगा। यहोवा अश्शूर के राजा को हमारे नगर को हराने नहीं देगा तो उस पर विश्वास मत करो।'

16हिजकिय्याह के इन शब्दों की अनसुनी करो। अश्शूर के राजा की सुनो! अश्शूर के राजा का कहना है, 'हमे एक सन्धि करनी चाहिये। तुम लोग नगर से बाहर निकल कर मेरे पास आओ। फिर हर व्यक्ति अपने घर जाने को स्वतन्त्र होगा। हर व्यक्ति अपने अँगूर की बेलों से अँगूर खाने को स्वतन्त्र होगा और हर व्यक्ति अपने अंजीर के पेड़ों के फल खाने को स्वतन्त्र होगा। स्वयं अपने कुँए का पानी पीने को हर व्यक्ति स्वतन्त्र होगा। 17जब तक मैं आकर तुम्हें तुम्हारे ही जैसे एक देश में न ले जाऊँ, तब तक तुम ऐसा करते रह सकते हो। उस नये देश में तुम अच्छा अनाज और नया दाखमधु पाओगे। उस धरती पर तुम्हें रोटी और अँगूर के खेत मिलेंगे।"

18हिजकिय्याह को तुम अपने को मूर्ख मत बनाने दो। वह कहता है, 'यहोवा हमारी रक्षा करेगा।' किन्तु मैं तुमसे पूछता हूँ क्या किसी दूसरे देश का कोई भी देवता वहाँ के लोगों को अश्शूर के राजा की शक्ति से बचा पाया? नहीं! हमने वहाँ के हर व्यक्ति को हरा दिया। 19हमात और अर्पाद के देवता आज कहाँ हैं? उन्हें हरा दिया गया है। सपर्वेम के देवता कहाँ हैं? वे हरा दिये गये हैं और क्या शोमरोन के देवता वहाँ के लोगों को मेरी शक्ति से बचा पाये? नहीं। 20किसी भी देश अथवा जाति के ऐसे किसी भी एक देवता का नाम मुझे बताओ जिसने वहाँ के लोगों को मेरी शक्ति से बचाया है। मैंने उन सब को हरा दिया। इसलिए देखो मेरी शक्ति से यरूशलेम को यहोवा नहीं बचा पायेगा।"

21यरूशलेम के लोग एक दम चुप रहे। उन्होंने सेनापति को कोई उत्तर नहीं दिया। हिजकिय्याह ने लोगों को आदेश दिया था कि वे सेनापति को कोई उत्तर न दें।

22इसके बाद महल के सेवक (हिल्किय्याह के पुत्र एल्याकीम) राजा के सचिव (शेब्ना) और दफतरी (आसाप के पुत्र योआह) ने अपने वस्त्र फाड़ डाले। इससे यह प्रकट होता है कि वे बहुत दुःखी थे वे तीनों व्यक्ति हिजकिय्याह के पास गये और सेनापति ने जो कुछ उनसे कहा था, वह सब उसे कह सुनाया।

हिजकिय्याह की परमेश्वर से प्रार्थना

37 हिजकिय्याह ने जब सेनापति का सन्देश सुना तो उसने अपने वस्त्र फाड़ लिये। फिर विशेष शोक वस्त्र धारण करके वह यहोवा के मन्दिर में गया। 2हिजकिय्याह ने महल के सेवक एल्याकीम को राजा के सचिव शेब्ना को और याजकों के अग्रजों को आमोस के पुत्र यशायाह नबी के पास भेजा। इन तीनों ही लोगों ने विशेष शोक–वस्त्र पहने हुए थे।

3इन लोगों ने यशायाह से कहा, "राजा हिजकिय्याह ने कहा है कि आज का दिन शोक और दुःख का एक विशेष दिन होगा। यह दिन एक ऐसा दिन होगा जैसे जब एक बच्चा जन्म लेता है। किन्तु बच्चे को जन्म देने वाली माँ में जितनी शक्ति होनी चाहिये उसमें उतनी ताकत नहीं होती। 4सम्भव है तुम्हारा परमेश्वर यहोवा, सेनापति द्वारा कही बातों को सुन ले। अश्शूर के राजा ने सेनापति को साक्षात परमेश्वर को अपमानित करने भेजा है। हो सकता है तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने उन बुरी अपमानपूर्ण बातों को सुन लिया है और वह उन्हें इसका दण्ड देगा। कृपा करके इस्राएल के उन थोड़े से लोगों के लिये प्रार्थना करो जो बचे हुए हैं"

5-6हिजकिय्याह के सेवक यशायाह के पास गये। यशायाह ने उनसे कहा, "अपने मालिक को यह बता देना: 'यहोवा कहता है तुमने सेनापति से जो सुना है, उन बातों से मत डरना। अश्शूर के राजा के लड़कों ने मेरा अपमान करने के लिये जो बुरी बातें कही हैं, उन से मत डरना। 7देखो अश्शूर के राजा को मैं एक अफवाह सुनावाऊँगा। अश्शूर के राजा को एक ऐसी रपट मिलेगी जो उसके देश पर आने वाले खतरे के बारे मे होगी। इससे वह अपने देश वापस लौट जायेगा। उस समय मैं उसे, उसके अपने ही देश में तलवार से मौत के घाट उतार दूँगा।' "

अश्शूर की सेना का यरूशलेम को छोड़ना

8-9अश्शूर के राजा को एक सूचना मिली, सूचना में कहा गया था, "कूश का राजा तिर्हाका तुझसे युद्ध

करने आ रहा है।" सो अश्शूर का राजा लाकीश को
छोड़ कर लिबना चला गया। सेनापति ने यह सुना और
वह लिबना नगर को चला गया जहाँ अश्शूर का राजा
युद्ध कर रहा था। फिर अश्शूर के राजा ने हिजकिय्याह
के पास दूत भेजे। राजा ने उन दूतों से कहा, 10"यहूदा
के राजा हिजकिय्याह से तुम ये बातें कहना:

जिस देवता पर तुम्हारा विश्वास है, उससे तुम मूर्ख
मत बनो। ऐसा मत कहो कि अश्शूर के राजा से
परमेश्वर यरूशलेम को पराजित नहीं होने देगा।

11देखो, तुम अश्शूर के राजाओं के बारे में सुन ही
चुके हो। उन्होंने हर किसी देश में लोगों के साथ क्या
कुछ किया है। उन्हें उन्होंने बुरी तरह हराया है। क्या
तुम उनसे बच पाओगे? नहीं, कदापि नहीं! 12क्या उन
लोगों के देवताओं ने उनकी रक्षा की थी? नहीं! मेरे
पूर्वजों ने उन्हें नष्ट कर दिया था। मेरे लोगों ने गोजान,
हारान और रेसेप के नगरों को हरा दिया था और
उन्होंने एदेन के लोगों जो तलस्सार में रहा करते थे,
उन्हें भी हरा दिया था। 13हमात और अर्पाद के राजा
कहाँ गये? सपर्वैम का राजा आज कहाँ है? हेना और
इव्वा के राजा अब कहाँ हैं? उनका अंत कर दिया
गया! वे सभी नष्ट कर दिये गये!"

हिजकिय्याह की परमेश्वर से प्रार्थना

14हिजकिय्याह ने उन लोगों से वह सन्देश ले लिया
और उसे पढ़ा। फिर हिजकिय्याह यहोवा के मन्दिर में
चला गया। हिजकिय्याह ने उस सन्देश को खोला और
यहोवा के सामने रख दिया। 15फिर हिजकिय्याह यहोवा
से प्रार्थना करने लगा। हिजकिय्याह बोला:

16"इस्राएल के परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा, तू राजा
के समान करुब (स्वर्गदूतों) पर विराजता है। तू और
बस केवल तू ही परमेश्वर है, जिसका धरती के सभी
राज्यों पर शासन है। तूने स्वर्गो और धरती की रचना
की है। 17मेरी सुन! अपनी आँखें खोल और देख, कान
लगाकर सुन इस सन्देश के शब्दों को, जिसे सन्हेरीब ने
मुझे भेजा है। इसमें तुझ साक्षात परमेश्वर के बारे में
अपमानपूर्ण बुरी–बुरी बातें कही हैं।

18हे यहोवा, अश्शूर के राजाओं ने वास्तव में सभी
देशों और वहाँ की धरती को तबाह कर दिया है।
19अश्शूर के राजाओं ने उन देशों के देवताओं को
जला डाला है किन्तु वे सच्चे देवता नहीं थे। वे तो केवल
ऐसे मूर्ति थे जिन्हें लोगों ने बनाया था। वे तो कोरी
लकड़ी थे, कोरे पत्थर थे। इसलिये वे समाप्त हो गये।
वे नष्ट हो गये। 20सो अब हे हमारे परमेश्वर यहोवा।
अब कृपा करके अश्शूर के राजा की शक्ति से हमारी
रक्षा कर। ताकि धरती के सभी राज्यों को भी पता चल
जाये कि तू यहोवा है और तू ही हमारा एकमात्र परमेश्वर
है!

हिजकिय्याह को परमेश्वर का उत्तर

21फिर आमोस के पुत्र यशायाह ने हिजकिय्याह के
पास यह सन्देश भेजा, "यह वह है जिसे इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा ने कहा है, 'अश्शूर के राजा सन्हेरीब
के बारे में तूने मुझसे प्रार्थना की है।'

22सो मुझे यहोवा ने जो सन्हेरीब विरोध में कहा, वह
यह है: सिय्योन की कुवाँरी पुत्री (यरूशलेम के लोग)
तुझे तुच्छ जानती है। वह तेरी हँसी उड़ाती है।
यरूशलेम की पुत्री तेरी हँसी उड़ाती है।

23तूने मेरे लिये मेरे विरोध में बुरी बातें कही। तू
बोलता रहा। तू अपनी आवाज मेरे विरोध में उठायी
थी! तूने मुझ इस्राएल के पवित्र (परमेश्वर) को अभिमान
भी आँखों से घूरा था।

24मेरे स्वामी यहोवा के विषय में तूने बुरी बातें कहलवाने
के लिये तूने अपने सेवकों का प्रयोग किया। तूने कहा,
"मैं बहुत शक्तिशाली हूँ! मेरे पास बहुत से रथ हैं। मैंने
अपनी शक्ति से लबानोन को हराया जब मैं अपने रथों
को लबानोन के महान पर्वत के ऊँचे शिखरों के ऊपर
ले आया। मैंने लबानोन के सभी महान पेड़ काट डाले।
मैं उच्चतम शिखर से लेकर गहरे जंगलों तक प्रवेश
कर चुका हूँ।

25मैंने विदेशी धरती पर कुँए खोदे और पानी पिया।
मैंने मिस्र की नदियाँ सुखा दी और उस देश पर चल
कर गया है!"

26ये वह जो तूने कहा। क्या तूने यह नहीं सुना कि
परमेश्वर ने क्या कहा? मैंने (परमेश्वर ने) बहुत
बहुत पहले ही यह योजना बना ली थी। बहुत–बहुत
पहले ही मैंने इसे तैयार कर लिया था अब इसे मैंने
घटित किया है। मैंने ही तुम्हें उन नगरों को नष्ट करने
दिया और मैंने ही तुम्हें उन नगरों को पत्थरों के ढेर में
बदलने दिया।

27उन नगरों के निवासी कमजोर थे। वे लोग भयभीत
और लज्जित थे। वे खेत के पौधे के जैसे थे, वे नई घास
के जैसे थे। वे उस घास के समान थे जो मकानों की
छतों पर उगा करती है। वह घास लम्बी होने से पहले ही
रेगिस्तान की गर्म हवा से झुलसा दी जाती है।

28तेरी सेना और तेरे युद्धों के बारे में मैं सब कुछ
जानता हूँ। मुझे पता है जब तूने विश्राम किया था। जब
तू युद्ध के लिये गया था, मुझे तब का भी पता है। तू
युद्ध से घर कब लौटा, मैं यह भी जानता हूँ। मुझे
इसका भी ज्ञान है कि तू मुझ पर क्रोधित है।

29तू मुझसे खुश नहीं है और मैंने तेरे अहंकारपूर्ण
अपमानों को सुना है। सो मैं तुझे दण्ड दूँगा। मैं तेरी
नाक में नकेल डालूँगा। मैं तेरे मुँह पर लगाम लगाऊँगा
और तब मैं तुझे विवश करुँगा कि तू जिस मार्ग से
आया था, उसी मार्ग से मेरे देश को छोड़ कर वापस
चला जा!"

30इस पर यहोवा ने हिजकिय्याह से कहा,“हिजकिय्याह,
तुझे यह दिखाने के लिये कि ये शब्द सच्चे हैं, मैं तुझे
एक संकेत दूँगा। इस वर्ष तू खाने के लिए कोई अनाज
नहीं बोयेगा। सो इस वर्ष तू पिछले वर्ष की फसल से यूँ
ही उग आये अनाज को खायेगा। अगले वर्ष भी ऐसी ही
होगा किन्तु तीसरे वर्ष तू उस अनाज को खायेगा जिसे
तूने उगाया होगा। तू अपनी फसलों को काटेगा। तेरे
पास खाने को भरपूर होगा। तू अँगूर की बेलें रोपेगा
और उनके फल खायेगा।

31यहूदा के परिवार के कुछ लोग बच जायेंगे। वे ही
लोग बढ़ते हुए एक बहुत बड़ी जाति का रूप ले लेंगे। वे
लोग उन वृक्षों के समान होंगे जिनकी जड़ें धरती में
बहुत गहरी जाती हैं और जो बहुत तगड़े हो जाते हैं और
बहुत से फल (संतानें) देते हैं। 32यरूशलेम से कुछ ही
लोग जीवित बचकर बाहर जा पाएँगे। सिय्योन पर्वत से
बचे हुए लोगों का एक समूह ही बाहर जा पाएगा।
सर्वशक्तिमान यहोवा का सुदृढ़ प्रेम ही ऐसा करेगा।

33सो यहोवा ने अश्शूर के राजा के बारे में यह कहा,
वह इस नगर में नहीं आ पायेगा, वह इस नगर पर एक
भी बाण नहीं छोड़ेगा, वह अपनी ढालों का मुहँ इस
नगर की ओर नहीं करेगा। इस नगर के परकोटे पर
हमला करने के लिए वह मिट्टी का टीला खड़ा नहीं
करेगा।

34उसी रास्ते से जिससे वह आया था, वह वापस
अपने नगर को लौट जायेगा। इस नगर में वह प्रवेश
नहीं करेगा।” यह सन्देश यहोवा की ओर से है।

35यहोवा कहता है, मैं बचाऊँगा और इस नगर की
रक्षा करुँगा। मैं ऐसा स्वयं अपने लिये और अपने सेवक
दाऊद के लिए करुँगा।

36सो यहोवा के दूत ने अश्शूर की छावनी में जा कर
एक लाख पचासी हजार सैनिकों को मार डाला। अगली
सुबह जब लोग उठे, तो उन्होंने देखा कि उनके चारों
ओर मरे हुए सैनिकों की लाशें बिखरी हैं। 37इस पर
अश्शूर का राजा सन्हेरीब वापस लौट कर अपने घर
नीनवे चला गया और वहीं रहने लगा।

38एक दिन, जब सन्हेरीब अपने देवता निस्रोक के
मन्दिर में उसकी पूजा कर रहा था, उसी समय उसके
पुत्र अद्रम्मेलेक और शरेसेर ने तलवार से उसकी हत्या
कर दी और फिर वे अरारात को भाग खड़े हुए। इस
प्रकार सन्हेरीब का पुत्र एसर्हद्दोन अश्शूर का नया राजा
बन गया।

हिजकिय्याह की बीमारी

38 उस समय के आसपास हिजकिय्याह बहुत
बीमार पड़ा। इतना बीमार कि जैसे वह मर ही
गया हो। सो आमोस का पुत्र यशायाह उससे मिलने
गया।

यशायाह ने राजा से कहा, “यहोवा ने तुम्हें ये बातें
बताने के लिये कहा है: ‘शीघ्र ही तू मर जायेगा। सो जब
तू मरे, परिवार वाले क्या करें, यह तुझे उन्हें बता देना
चाहिये। अब तू फिर कभी अच्छा नहीं होगा।’ ”

2हिजकिय्याह ने उस दीवार की तरफ करवट ली
जिसका मुँह मन्दिर की तरफ था। उसने यहोवा की
प्रार्थना की, उसने कहा, 3“हे यहोवा, कृपा कर, याद
कर कि मैंने सदा तेरे सामने विश्वासपूर्ण और सच्चे
हृदय के साथ जीवन जिया है। मैंने वे बातें की हैं जिन्हें
तू उत्तम कहता है।” इसके बाद हिजकिय्याह ने ऊँचे
स्वर में रोना शुरु कर दिया।

4यशायाह को यहोवा से यह सन्देश मिला:
5“हिजकिय्याह के पास जा और उससे कह दे: ये बातें वे
हैं जिन्हें तुम्हारे पिता दाऊद का परमेश्वर यहोवा कहता
है, ‘मैंने तेरी प्रार्थना सुनी है और तेरे दुःख भरे आँसू
देखे हैं। तेरे जीवन में मैं पन्द्रह वर्ष और जोड़ रहा हूँ।
6अश्शूर के राजा के हाथों से मैं तुझे छुड़ा डालूँगा और
इस नगर की रक्षा करुँगा।’ ”

22*किन्तु हिजकिय्याह ने यशायाह से पूछा, “यहोवा
की ओर से ऐसा कौन सा संकेत है जो प्रमाणित करता
है कि मैं अच्छा हो जाऊँगा? कौन सा ऐसा संकेत है जो
प्रमाणित करता है कि मैं यहोवा के मन्दिर में जाने
योग्य हो जाऊँगा?”

7तुझे यह बताने के लिए कि जिन बातों को वह
कहता है, उन्हें वह पूरा करेगा। यहोवा की ओर से यह
संकेत है:

8“देख, आहाज़ की धूप घड़ी की वह छाया जो अंशों
पर पड़ी हैं, मैं उसे दस अंश पीछे हटा दूँगा। सूर्य की वह
छाया दस अंश तक पीछे चली जायेगी।”

21*फिर इस पर यशायाह ने कहा, “अंजीरों को
आपस में मसलवा कर उसके फोड़ों पर बाँध। इससे वह
अच्छा हो जायेगा।”

9यह हिजकिय्याह का वह पत्र है जो उसने बीमारी से
अच्छा होने के बाद लिखी थी:

10मैंने अपने मन में कहा कि मैं तब तक जीऊँगा
जब तक बूढ़ा होऊँगा। किन्तु मेरा काल आ गया था
कि मैं मृत्यु के द्वार से गुजरुँ। अब मैं अपना समय यहीं
पर बिताऊँगा।

11इसलिए मैंने कहा, “मैं यहोवा याह को फिर कभी
जीवितों की धरती पर नहीं देखूँगा। धरती पर जीते हुए
लोगों को मैं नहीं देखूँगा।

12मेरा घर, चरवाहे के अस्थिर तम्बू सा उखाड़ कर
गिराया जा रहा है और मुझसे छीना जा रहा है। अब

वचन 22 यह बाइसवां पद छपे हुए हिब्रू पाठ में अंत में दिया गया हैं।

वचन 21 छपे हूए हिब्रू पाठ में पद 21 अंत में दी गयी है।

मेरा वैसा ही अन्त हो गया है जैसे करघे से कपड़ा लपेट
कर काट लिया जाता है। क्षणभर में तूने मुझ को इस
अंत तक पहुँचा दिया!
13मैं भोर तक अपने को शान्त करता रहा। वह
सिंह की नाई मेरी हड्डियों को तोड़ता है। एक ही दिन
में तू मेरा अन्त कर डालता है!
14मैं कबूतर सा रोता रहा। मैं एक पक्षी जैसा रोता
रहा। मेरी आँखें थक गयी तो भी मैं लगातार आकाश
की तरफ निहारता रहा। मेरे स्वामी, मैं विपत्ति में हूँ
मुझको उबारने का वचन दे।"
15मैं और क्या कह सकता हूँ? मेरे स्वामी ने मुझ को
बताया है जो कुछ भी घटेगा, और मेरा स्वामी ही उस
घटना को घटित करेगा। मैंने इन विपत्तियों को अपनी
आत्मा में झेला है इसलिए मैं जीवन भर विनम्र रहूँगा।
16हे मेरे स्वामी, इस कष्ट के समय का उपयोग फिर
से मेरी चेतना को सशक्त बनाने में कर। मेरे मन को
सशक्त और स्वस्थ होने में मेरी सहायता कर! मुझको
सहारा दे कि मैं अच्छा हो जाऊँ! मेरी सहायता कर कि
मैं फिर से जी उठूँ!
17देखो! मेरी विपत्तियाँ समाप्त हुई! अब मेरे पास
शांति है। तू मुझ से बहुत अधिक प्रेम करता है! तूने
मुझे कब्र में सड़ने नहीं दिया। तूने मेरे सब पाप क्षमा
किये! तूने मेरे सब पाप दूर फेंक दिये।
18तेरी स्तुति मरे व्यक्ति नहीं गाते! मृत्यु के देश में
पड़े लोग तेरे यशगीत नहीं गाते। वे मरे हुए व्यक्ति जो
कब्र में समायें हैं, सहायता पाने को तुझ पर भरोसा नहीं
रखते।
19वे लोग जो जीवित हैं जैसा आज मैं हूँ तेरा यश गाते
हैं। एक पिता को अपनी सन्तानों को बताना चाहिए कि
तुझ पर भरोसा किया जा सकता है।
20इसलिए मैं कहता हूँ: "यहोवा ने मुझ को बचाया है
सो हम अपने जीवन भर यहोवा के मन्दिर में गीत
गायेंगे और बाजे बजायेंगे।"

बाबुल के सन्देश वाहक

39 उस समय, बलदान का पुत्र मरोदक बलदान
बाबुल का राजा हुआ करता था। मरोदक ने
हिजकिय्याह के पास पत्र और उपहार भेजे। मरोदक ने
उसके पास इसलिये उपहार भेजे थे कि उसने सुना था
कि हिजकिय्याह बीमार था और फिर अच्छा हो गया
था। 2इन उपहारों को पाकर हिजकिय्याह बहुत प्रसन्न
हुआ। इसलिये हिजकिय्याह ने मरोदक के लोगों को
अपने खज़ाने की मूल्यवान वस्तुएँ दिखाई। हिजकिय्याह
ने उन लोगों को अपनी सारी सम्पत्ति दिखाई। चाँदी,
सोना, मूल्यवान तेल और इत्र उन्हें दिखाये। हिजकिय्याह
ने उन्हें युद्ध में काम आने वाली तलवारें और ढालें भी
दिखाई। हिजकिय्याह ने उन्हें वे सभी वस्तुएँ दिखाई जो
उसने जमा कर रखी थीं। हिजकिय्याह ने अपने घर
की और अपने राज्य की हर वस्तु उन्हें दिखायी।
3यशायाह नबी राजा हिजकिय्याह के पास गया और
उससे बोला, "ये लोग क्या कह रहे हैं? ये लोग कहाँ से
आये हैं?"
हिजकिय्याह ने कहा, "ये लोग दूर देश से मेरे पास
आये हैं। ये लोग बाबुल से आये हैं।"
4इस पर यशायाह ने उससे पूछा, "उन्होंने तेरे महल
में क्या देखा?"
हिजकिय्याह ने कहा, "मेरे महल की हर वस्तु उन्होंने
देखी। मैंने अपनी सारी सम्पत्ति उन्हें दिखाई थी।"
5यशायाह ने हिजकिय्याह से यह कहा: "सर्वशक्तिमान
यहोवा के शब्दों को सुनो। 6"भविष्य में जो कुछ तेरे घर
में है, वह सब कुछ बाबुल ले जाया जायेगा। और तेरे
बुजुर्गों की वह सारी धन दौलत जो अचानक उन्होंने
एकत्र की है, ले ली जायेगी। तेरे पास कुछ नहीं छोड़ा
जायेगा। सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह कहा है। 7बाबुल
का राजा तेरे पुत्रों को ले जायेगा। वे पुत्र जो तुझसे पैदा
होंगे। तेरे पुत्र बाबुल के राजा के महल में हाकिम
बनेंगे।"
8हिजकिय्याह ने यशायाह से कहा, "यहोवा के इन
वचनों का सुनना मेरे लिये बहुत उत्तम होगा।"
(हिजकिय्याह ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उसका
विचार था, "जब मैं राजा होऊँगा, तब शांति रहेगी और
कोई उत्पात नहीं होगा।")

इस्राएल के दण्ड का अंत

40 तुम्हारा परमेश्वर कहता है, "चैन दे, चैन दे
मेरे लोगों को!
2तू दया से बातें कर यरूशलेम से! यरूशलेम को बता
दे, 'तेरी दासता का समय अब पूरा हो चुका है। तूने
अपने अपराधों की कीमत दे दी है।'" यहोवा ने यरूशलेम
के किये हुए पापों का दुगना दण्ड उसे दिया है!
3सुनो! एक व्यक्ति का जोर से पुकारता हुआस्वर:
"यहोवा के लिये बियाबान में एक राह बनाओ! हमारे
परमेश्वर के लिये बियाबान में एक रास्ता चौरस करो!
4हर घाटी को भर दो। हर एक पर्वत और पहाड़ी को
समतल करो। टेढ़ी–मेढ़ी राहों को सीधा करो।
उबड़–खाबड़ को चौरस बना दो।
5तब यहोवा की महिमा प्रगट होगी। सब लोग इकट्ठे
यहोवा के तेज को देखेंगे। हाँ, यहोवा ने स्वयं ये सब
कहा है।"
6एक वाणी मुखरित हुई, उसने कहा, "बोलो!" सो
व्यक्ति ने पूछा, "मैं क्या कहूँ?" वाणी ने कहा, "लोग
सर्वदा जीवित नहीं रहेंगे। वे सभी रेगिस्तान के घास के
समान है। उनकी धार्मिकता जंगली फूल के समान
है।

7एक शक्तिशाली आँधी यहोवा की ओर से उस घास
पर चलती है, और घास सूख जाती है, जंगली फूल नष्ट
हो जाता है। हाँ सभी लोग घास के समान हैं।
8घास मर जाती है और जंगली फूल नष्ट हो जाता है।
किन्तु हमारे परमेश्वर के वचन सदा बने रहते हैं।"

मुक्ति: परमेश्वर का सुसन्देश

9हे, सिय्योन, तेरे पास सुसन्देश कहने को है, तू पहाड़
पर चढ़ जा और ऊँचे स्वर से उसे चिल्ला! यरूशलेम,
तेरे पास एक सुसन्देश कहने को है। भयभीत मत हो, तू
ऊँचे स्वर में बोल! यहूदा के सारे नगरों को तू ये बातें
बता दे: "देखो, ये रहा तुम्हारा परमेश्वर!
10मेरा स्वामी यहोवा शक्ति के साथ आ रहाहै। वह
अपनी शक्ति का उपयोग लोगों पर शासन करने में
लगायेगा। यहोवा अपने लोगों को प्रतिफल देगा। उसके
पास देने को उनकी मजदूरी होगी।
11यहोवा अपने लोगों की वैसे ही अगुवाई करेगा जैसे
कोई गड़ेरिया अपने भेड़ों की अगुवाई करता है। यहोवा
अपने बाहु को काम में लायेगा और अपनी भेड़ों को
इकट्ठा करेगा। यहोवा छोटी भेड़ों को उठाकर गोद में
थामेगा, और उनकी माताऐं उसके साथ-साथ चलेंगी।

संसार परमेश्वर ने रचा: वह इसका शासक है

12किसने अँजली में भर कर समुद्र को नाप दिया?
किसने हाथ से आकाश को नाप दिया? किसने कटोरे
में भर कर धरती की सारी धूल को नाप दिया? किसने
नापने के धागे से पर्वतो और चोटियों को नाप दिया?
यह यहोवा ने किया था!
13यहोवा की आत्मा को किसी व्यक्ति ने यह नहीं
बताया कि उसे क्या करना था। यहोवा को किसी ने
यह नहीं बताया कि उसे जो उसने किया है, कैसे करना
था।
14क्या यहोवा ने किसी से सहायता माँगी? क्या यहोवा
को किसी ने निष्पक्षता का पाठ पढ़ाया है? क्या किसी
व्यक्ति ने यहोवा को ज्ञान सिखायाहै? क्या किसी व्यक्ति
ने यहोवा को बुद्धि से काम लेना सिखाया है? नहीं! इन
सभी बातों का यहोवा को पहले ही से ज्ञान है!
15देखो, जगत के सारे देश घड़े में एक छोटी बूंद
जैसे हैं। यदि यहोवा सुदूरवर्ती देशों तक को लेकर
अपनी तराजू पर धर दे, तो वे छोटे से रजकण जैसे
लगेंगे।
16लबानोन के सारे वृक्ष भी काफी नहीं है कि उन्हें
यहोवा के लिये जलाया जाये। लबानोन के सारे पशु
काफी नहीं हैं कि उनको उसकी एक बलि के लिये
मारा जाये।
17परमेश्वर की तुलना में विश्व के सभी राष्ट्र कुछ
भी नहीं हैं। परमेश्वर की तुलना में विश्व के सभी राष्ट्र
बिल्कुल मूल्यहीन हैं।

परमेश्वर क्या है लोग कल्पना भी नहीं कर सकते

18क्या तुम परमेश्वर की तुलना किसी भी वस्तु से
कर सकते हो? नहीं! क्या तुम परमेश्वर का चित्र बना
सकते हो?नहीं!
19किन्तु कुछ लोग ऐसे हैं जो पत्थर और लकड़ी की
मूर्तियाँ बनाते हैं और उन्हें देवता कहते हैं। एक कारीगर
मूर्ति को बनाता है। फिर दूसरा कारीगर उस पर सोना
मढ़ देता है और उसके लिये चाँदी की जंजीरे बनता है!
20सो वह व्यक्ति आधार के लिये एक विशेष प्रकार
की लकड़ी चुनता है जो सड़ती नहीं है। तब वह एक
अच्छे लकड़ी के कारीगर को ढूँढता है। वह कारीगर
एक ऐसा "देवता" बनाता है जो ढुलकता नहीं है!
21निश्चय ही, तुम सच्चाई जानते हो, बोलो? निश्चय
ही तुमने सुना है! निश्चय ही बहुत पहले किसी ने तुम्हें
बतायाहै! निश्चय ही तुम जानते हो कि धरती को
किसने बनाया है!
22यहोवा ही सच्चा परमेश्वर है! वही धरती के चक्र
के ऊपर बैठता है! उसकी तुलना में लोग टिड्डी से
लगते हैं। उसने आकाशों को किसी कपड़े के टुकड़े
की भाँति खोल दिया। उसने आकाश को उसके नीचे
बैठने को एक तम्बू की भाँति तान दिया।
23सच्चा परमेश्वर शासकों को महत्त्वहीन बना देता
है। वह इस जगत के न्यायकर्ताओं को पूरी तरह व्यर्थ
बना देता है!
24वे शासक ऐसे हैं जैसे वे पौधे जिन्हें धरती में रोपा
गया हो, किन्तु इससे पहले की वे अपनी जड़े धरती में
जमा पाये, परमेश्वर उन को बहा देता है और वे सूख
कर मर जाते हैं। आँधी उन्हें तिनके सा उड़ा कर ले
जाती है।
25"क्या तुम किसी से भी मेरी तुलना कर सकते हो?
नहीं! कोई भी मेरे बराबर का नहीं है।
26ऊपर आकाशों को देखो। किसने इन सभी तारों
को बनाया? किसने वे सभी आकाश की सेना बनाई?
किसको सभी तारे नाम-बनाम मालूम हैं? सच्चा परमेश्वर
बहुत ही सुदृढ़ और शक्तिशाली है इसलिए कोई तारा
कभी निज मार्ग नहीं भूला।"
27हे याकूब, यह सच है! हे इस्राएल, तुझको इसका
विश्वास करना चाहिए! सो तू क्यों ऐसा कहता है कि
"जैसा जीवन मैं जीता हूँ उसे यहोवा नहीं देख सकता।
परमेश्वर मुझको पकड़ नहीं पायेगा और न दण्ड दे
पायेगा।"
28सचमुच तूने सुना है और जानता है कि यहोवा
परमेश्वर बुद्धिमान है। जो कुछ वह जानता है उन सभी
बातों को मनुष्य नहीं सीख सकता। यहोवा कभी थकता
नहीं, उसको कभी विश्राम की आवश्यकता नहीं होती।
यहोवा ने ही सभी दूरदराज के स्थान धरती पर बनाये।
यहोवा सदा जीवित है।

29यहोवा शक्तिहीनों को शक्तिशाली बनने में सहायता
देता है। वह ऐसे उन लोगों को जिनके पास शक्ति नहीं
है, प्रेरित करता है कि वह शक्तिशाली बने। 30युवक
थकते हैं और उन्हें विश्राम की जरुरत पड़ जाती है।
यहाँ तक कि किशोर भी ठोकर खाते हैं और गिरते हैं।
31किन्तु वे लोग जो यहोवा के भरोसे हैं फिर से
शक्तिशाली बन जाते हैं। जैसे किसी गरुड़ के फिर से
पंख उग आते हैं। ये लोग बिना विश्राम चाहे निरंतर
दौड़ते रहतेहैं। ये लोग बिना थके चलते रहते हैं।

यहोवा सृजनहार है : वह अमर है

41 यहोवा कहा करता है, "सुदूरवर्ती देशों, चुप
रहो और मेरे पास आओ! जातियों, फिर से
सुदृढ़ बनों। मेरे पास आओ और मुझसे बातें करो। आपस
में मिल कर हम निश्चय करें कि उचित क्या है।
2किसने उस विजेता को जगाया है, जो पूर्व से आयेगा?
कौन उससे दूसरे देशों को हरवाता और राजाओं को
अधीन कर देता? कौन उसकी तलवारों को इतना बढ़ा
देता है कि वे इतनी असंख्य हो जाती जितनी रेत–कण
होते है? कौन उसके धनुषों को इतना असंख्य कर देता
जितना भूसे के छिलके होते हैं?
3यह व्यक्ति पीछा करेगा और उन राष्ट्रों का पीछा
बिना हानि उठाये करता रहेगा और ऐसे उन स्थानों
तक जायेगा जहाँ वह पहले कभी गया ही नहीं।
4कौन ये सब घटित करता है? किसने यह किया?
किसने आदि से सब लोगों को बुलाया? मैं यहोवा ने इन
सब बातों को किया! मैं यहोवा ही सबसे पहला हूँ। आदि
के भी पहले से मेरा अस्तित्व रहा है, और जब सब
कुछ चला जायेगा तो भी मैं यहाँ रहूँगा।
5"सुदूरवर्ती देश इसको देखें और भयभीत हों। दूर
धरती के छोर के लोग फिर आपस में एक जुट होकर
भय से काँप उठें!"
6"एक दूसरे की सहायता करेंगें। देखो! अब वे अपनी
शक्ति बढ़ाने के लिए एक दूसरे की हिम्मत बढ़ा रहे हैं।
7मूर्ति बनानें के लिए एक कारीगर लकड़ी काट रहा
है। फिर वह व्यक्ति सुनार को उत्साहित कर रहा है।
एक कारीगर हथौड़ें से धातु का पतरा बना रहा है।
फिर वह कारीगर निहायी पर काम करनेवाले व्यक्ति
को प्रेरित कर रहा है। यह आखिरी कारीगर कह रहा
है, काम अच्छा है किन्तु यह धातु पिंड कहीं उखड़ न
जाये। इसलिए इस मूर्ति को आधार पर कील से जड़ दों!
उससे मूर्ति गिरेगा नहीं, वह कभी हिलडुल तक नहीं
पायेगा।"

यहोवा ही हमारी रक्षा कर सकता है

8यहोवा कहता है: "किन्तु तू इस्राएल, मेरा सेवक है।
याकूब, मैंने तुझ को चुना है तू मेरे मित्र इब्राहीम का
वंशज है।
9मैंने तुझे धरती के दूर देशों से उठाया। मैंने तुम्हें उस
दूर देश से बुलाया। मैंने कहा, 'तू मेरा सेवक है।' मैंने
तुझे चुना है और मैंने तुझे कभी नहीं तजा है।
10तू चिंता मत कर, मैं तेरे साथ हूँ। तू भयभीत मत
हो, मैं तेरा परमेश्वर हूँ। मैं तुझे सुदृढ़ करुँगा। मैं तुझे
अपने नेकी के दाहिने हाथ से सहारा दूँगा।
11देख, कुछ लोग तुझ से नाराज हैं किन्तु वे लजायेंगे।
जो तेरे शत्रु हैं वे नहीं रहेंगे, वे सब खो जायेंगे।
12तू ऐसे उन लोगों की खोज करेगा जो तेरे विरुद्ध
थे। किन्तु तू उनको नहीं पायेगा। वे लोग जो तुझ से लड़े
थे, पूरी तरह लुप्त हो जायेंगे।
13मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ। मैंने तेरा सीधा हाथ
थाम रखा है। मैं तुझ से कहता हूँ कि मत डर! मैं तुझे
सहारा दूँगा।
14मूल्यवान यहूदा, तू निर्भय रह! हे मेरे प्रिय इस्राएल
के लोगों! भयभीत मत रहो।" सचमुच मैं तुझको सहायता
दूँगा। स्वयं यहोवा ही ने यें बातें कहीं थी। इस्राएल के
पवित्र (परमेश्वर) ने जो तुम्हारी रक्षा करता है, कहा
था:
15"देख, मैंने तुझे एक नये दाँवने के यन्त्र सा बनाया
है। इस यन्त्र में बहुत से दाँते हैं जो बहुत तीखे हैं।
किसान इसको अनाज के छिलके उतारने के काम में
लाते है। तू पर्वतों को पैरों तले मसलेगा और उनको धूल
में मिला देगा। तू पर्वतों को ऐसा कर देगा जैसे भूसा होता
है।
16तू उनको हवा में उछालेगा और हवा उनको उड़ा
कर दूर ले जायेगी और उन्हें कहीं छितरा देगी। तब तू
यहोवा में स्थित हो कर आनन्दित होगा। तुझको इस्राएल
के पवित्र (परमेश्वर) पर बहुत गर्व होगा।
17गरीब जन, और जरुरत मंद जल ढूँढ़ते हैं किन्तु
उन्हें जल नहीं मिलता है। वे प्यासे हैं और उनकी जीभ
सूखी है। मैं उनकी विनतियों का उत्तर दूँगा। मैं उनको
न ही तजूँगा और न ही मरने दूँगा।
18मैं सूखे पहाड़ों पर नदियाँ बहा दूँगा। घाटियों में से मैं
जलस्रोत बहा दूँगा। मैं रेगिस्तान को जल से भरी झील में
बदल दूँगा। उस सूखी धरती पर पानी के सोते मिलेंगे।
19मरुभूमि में देवदार के, कीकर के, जैतून के,
सनावर के, तिघारे के, चीड़ के पेड़ उगेंगे!
20लोग ऐसा होते हुए देखेंगे और वे जानेंगे कि यहोवा
की शक्ति ने यह सब किया है। लोग इनको देखेंगे और
समझना शुरु करेंगे कि इस्राएल के पवित्र (परमेश्वर)
ने यह बातें की हैं।"

यहोवा की झूठे देवताओं को चेतावनी

21याकूब का राजा यहोवा कहता है, "आ, और मुझे
अपनी युक्तियाँ दे। अपना प्रमाण मुझे दिखा और फिर
हम यह निश्चय करेंगे कि उचित बातें क्या हैं? 22तुम्हारे

मूर्तियों को हमारे पास आकर, जो घट रहा है, वह बताना चाहिये।

"प्रारम्भ में क्या कुछ घटा था और भविष्य में क्या घटने वाला है। हमें बताओं हम बड़े ध्यान से सुनेंगे। जिससे हम यह जान जायें कि आगे क्या होने वाला है।
23हमें उन बातों को बताओ जो घटनेवाली हैं। जिन्हें जानने का हमें इन्तज़ार है ताकि हम विश्वास करें कि सचमुच तुम देवता हो। कुछ करो! कुछ भी करो। चाहे भला चाहे बुरा ताकि हम देख सकें और जान सके कि तुम जीवित हो और तुम्हारा अनुसरण करें।

24"देखो झूठे देवताओं, तुम बेकार से भी ज्यादा बेकार हो! तुम कुछ भी तो नहीं कर सकते। केवल बेकार के भ्रष्ट लोग ही तुम्हें पूजना चाहते हैं!"

बस यहोवा ही परमेश्वर है

25"उत्तर में मैंने एक व्यक्ति को उठाया है। वह पूर्व से जहाँ सूर्य उगा करता है, आ रहा है। वह मेरे नाम की उपासना किया करता है। जैसे कुम्हार मिट्टी रौंदा करता है वैसे ही वह विशेष व्यक्ति राजाओं को रौंदेगा।"

26यह सब घटने से पहले ही हमें जिसने बताया है, हमें उसे परमेश्वर कहना चाहिए। क्या हमें ये बातें तुम्हारे किसी मूर्ति ने बतायी?नहीं! किसी भी मूर्ति ने कुछ भी हमको नहीं बताया था। वे मूर्ति तो एक भी शब्द नहीं बोल पाते हैं। वे झूठे देवता एक भी शब्द जो तुम बोला करते हो नहीं सुन पाते हैं।

27मैं यहोवा सिय्योन को इन बातों के विषय में बताने वाला पहला था। मैंने एक दूत को इस सन्देश के साथ यरूशलेम भेजा था कि: "देखो, तुम्हारे लोग वापस आ रहे हैं!

28मैंने उन झूठे देवों को देखा था, उनमें से कोई भी इतना बुद्धिमान नहीं था जो कुछ कह सके। मैंने उनसे प्रश्न पूछे थे वे एक भी शब्द नहीं बोल पाये थे।

29वे सभी देवता बिल्कुल ही व्यर्थ हैं! वे कुछ नहीं कर पाते वे पूरी तरह मूल्यहीन हैं!

यहोवा का विशेष सेवक

42 "मेरे दास को देखो! मैं ही उसे सम्भाला हूँ। मैंने उसको चुना है, मैं उससे अति प्रसन्न हूँ। मैं अपनी आत्मा उस पर रखता हूँ। वह ही सब देशों में न्याय खरेपन से लायेगा।

2वह गलियों में जोर से नहीं बोलेगा। वह नहीं चिल्लायेगा और न चीखेगा।

3वह कोमल होगा। कुचली हुई घास का तिनका तक वह नहीं तोड़ेगा। वह टिमटिमाती हुई लौ तक को नहीं बुझायेगा। वह सच्चाई से न्याय स्थापित करेगा।

4वह कमजोर अथवा कुचला हुआ तब तक नहीं होगा जब तक वह न्याय को दुनियाँ में न ले आये। दूर देशों के लोग उसकी शिक्षाओं पर विश्वास करेंगे।"

यहोवा जगत का सृजन हार और शासक है

5सच्चे परमेश्वर यहोवा ने ये बातें कही हैं: (यहोवा ने आकाशों को बनाया है। यहोवा ने आकाश को धरती पर ताना है। धरती पर जो कुछ है वह भी उसी ने बनाया है। धरती पर सभी लोगों में वही प्राण फूँकता है। धरती पर जो भी लोग चल फिर रहे हैं, उन सब को वही जीवन प्रदान करता है।):

6"मैं यहोवा ने तुझ को खरे काम करने को बुलाया है। मैं तेरा हाथ थामूँगा और तेरी रक्षा करुँगा। तू एक चिन्ह यह प्रगट करने को होगा कि लोगों के साथ मेरी एक वाचा है। तू सब लोगों पर चमकने को एक प्रकाश होगा।

7तू अन्धो की आँखो को प्रकाश देगा और वे देखने लगेंगे। ऐसे बहुत से लोग जो बन्दीगृह में पड़े हैं, तू उन लोगों को मुक्त करेगा। तू बहुत से लोगों को जो अन्धेरे में रहते हैं उन्हें उस कारागर से तू बाहर छुड़ा लायेगा।"

8"मैं यहोवा हूँ! मेरा नाम यहोवा है। मैं अपनी महिमा दूसरे को नहीं दूँगा। मैं उन मूर्तियों (झूठे देवों) को वह प्रशंसा, जो मेरी है, नहीं लेने दूँगा।

9प्रारम्भ में मैंने कुछ बातें जिनको घटना था, बतायी थी और वे घट गयीं। अब तुझको वे बातें घटने से पहले ही बताऊँगा जो आगे चल कर घटेंगी।"

परमेश्वर की स्तुति

10यहोवा के लिये एक नया गीत गाओ, तुम जो दूर दराज के देशों में बसे हो, तुम जो सागर पर जलयान चलाते हो, तुम समुद्र के सभी जीवों, दूरवर्ती देशों के सभी लोगों, यहोवा का यशगान करो!

11हे मरुभूमि एवं नगरों और केदार के गाँवों, यहोवा की प्रशंसा करो! सेला के लोगों, आनन्द के लिये गाओ! अपने पर्वतों की चोटी से गाओ।

12यहोवा को महिमा दो। दूर देशों के लोगों उसका यशगान करो!

13यहोवा वीर योद्धा सा बाहर निकलेगा उस व्यक्ति सा जो युद्ध के लिये तत्पर है। वह बहुत उत्तेजित होगा। वह पुकारेगा और जोर से ललकारेगा और अपने शत्रुओं को पराजित करेगा।

परमेश्वर धीरज रखता है

14"बहुत समय से मैंने कुछ भी नहीं कहा है। मैंने अपने ऊपर नियन्त्रण बनाये रखा है और मैं चुप रहा हूँ। किन्तु अब मैं उतने जोर से चिल्लाऊँगा जितने जोर से बच्चे को जनते हुए स्त्री चिल्लाती है! मैं बहुत तीव्र और जोर से साँस लूँगा।

15मैं पर्वतों–पहाड़ियों को नष्ट कर दूँगा। मैं जो पौधे वहाँ उगते हैं। उनको सुखा दूँगा। मैं नदियों को सूखी धरती में बदल दूँगा। मैं जल के सरोवरों को सुखा दूँगा।
16फिर मैं अन्धों को ऐसी राह दिखाऊँगा जो उनको कभी नहीं दिखाई गयी। नेत्रहीन लोगों को मैं ऐसी राह दिखाऊँगा जिन पर उनका जाना कभी नहीं हुआ। अन्धेरे को मैं उनके लिये प्रकाश में बदल दूँगा। ऊँची नीची धरती को मैं समतल बनाऊँगा। मैं उन कामों को करुँगा जिनका मैंने वचन दिया है! मैं अपने लोगों को कभी नहीं त्यागूँगा।
17किन्तु कुछ लोगों ने मेरा अनुसरण करना छोड़ दिया। उन लोगों के पास वे मूर्तियाँ हैं जो सोने से मढ़ी हैं। उन से वे कहा करते हैं कि 'तुम हमारे देवता हो।' वे लोग अपने झूठे देवताओं के विश्वासी हैं। किन्तु ऐसे लोग बस निराश ही होंगे!"

इस्राएल ने परमेश्वर की नहीं सुनी

18तुम बहरे लोगों को मेरी सुनना चाहिए! तुम अंधे लोगों को इधर दृष्टि डालनी चाहिए और मुझे देखना चाहिए!
19कौन है उतना अन्धा जितना मेरा दास है? कोई नहीं। कौन है उतना बहरा जितना मेरा दूत है जिसे को मैंने इस संसार में भेजा है? कोई नहीं! यह अन्धा कौन है जिस के साथ मैंने वाचाकी? ये इतना अन्धा है जितना अन्धा यहोवा का दास है।
20वह देखता बहुत है, किन्तु मेरी आज्ञा नहीं मानता। वह अपने कानों से साफ साफ सुन सकता है किन्तु वह मेरी सुनने से इन्कार करता है।"
21यहोवा अपने सेवक के साथ सच्चा रहना चाहता है। इसलिए वह लोगों के लिए अद्भुत उपदेश देता है।
22किन्तु दूसरे लोगों की ओर देखो। दूसरे लोगों ने उनको हरा दिया और जो कुछ उनका था, छीन लिया। काल कोठरियों में वे सब फँसे हैं, कारागरों के भीतर वे बन्दी हैं। लोगों ने उनसे उनका धन छीन लिया है और कोई व्यक्ति ऐसा नहीं जो उनको बचा ले। दूसरे लोगों ने उनका धन छीन लिया और कोई व्यक्ति ऐसा नहीं जो कहे "इसको वापस करो!"
23तुममें से क्या कोई भी इसे सुनता है? क्या तुममें से किसी को भी इस बात की परवाह है और क्या कोई सुनता है कि भविष्य में तुम्हारे साथ क्या होनेवाला है?
24याकूब और इस्राएल की सम्पत्ति लोगों को किसने लेने दी? यहोवा ने ही उन्हें ऐसा करने दिया! हमने यहोवा के विरुद्ध पाप किया था। सो यहोवा ने लोगों को हमारी सम्पत्ति छीनने दी। इस्राएल के लोग उस ढंग से जीना नहीं चाहते थे जिस ढंग से यहोवा चाहता था। इस्राएल के लोगों ने उसकी शिक्षा पर कान नहीं दिया।
25सो यहोवा उन पर क्रोधित हो गया। यहोवा ने उनके विरुद्ध भयानक लड़ाईयाँ भड़कवा दीं। यह ऐसे हुआ जैसे इस्राएल के लोग आग में जल रहे हों और वे जान ही न पाये हों कि क्या हो रहा है। यह ऐसा था जैसे वे जल रहे हों। किन्तु उन्होंने जो वस्तुएँ घट रही थीं, उन्हें समझने का जतन ही नहीं किया।

परमेश्वर सदा अपने लोगों के साथ रहता है

43 याकूब, तुझको यहोवा ने बनाया था! इस्राएल, तेरी रचना यहोवा ने की थी और अब यहोवा का कहना है: "भयभीत मत हो! मैंने तुझे बचा लिया है। मैंने तुझे नाम दिया है। तू मेरा है।
2जब तुझ पर विपत्तियाँ पड़ती हैं, मैं तेरे साथ रहता हूँ। जब तू नदी पार करेगा, तू बहेगा नहीं। तू जब आग से होकर गुज़रेगा, तो तू जलेगा नहीं। लपटें तुझे हानि नहीं पहुँचायेंगी।
3क्यों? क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ। मैं इस्राएल का पवित्र तेरा उद्धारकर्ता हूँ। तेरी बदले में मैंने मिस्र को दे कर तुझे आजाद कराया है। मैंने कूश और सबा को तुझे अपना बनाने को दे डाला है।
4तू मेरे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसलिये मैं तेरा आदर करुँगा। मैं तुझे प्रेम करता हूँ, ताकि तू जी सके, और मेरा हो सके। इसके लिए मैं सभी मनुष्यों और जातियों को बदले में दे दूँगा।"

परमेश्वर अपनी संतानों को घर लायेगा

5"इसलिये डर मत! मैं तेरे साथ हूँ। तेरे बच्चों को इकट्ठा करके मैं उन्हें तेरे पास लाऊँगा। मैं तेरे लोगों को पूर्व और पश्चिम से इकट्ठा करुँगा।
6मैं उत्तर से कहूँगा: मेरे बच्चे मुझे लौटा दे।" मैं दक्षिण से कहूँगा: "मेरे लोगों को बंदी बना कर मत रख। दूर–दूर से मेरे पुत्र और पुत्रियों को मेरे पास ले आ!
7उन सभी लोगों को, जो मेरे हैं, मेरे पास ले आ अर्थात उन लोगों को जो मेरा नाम लेते हैं। मैंने उन लोगों को स्वयं अपने लिये बनाया है। उनकी रचना मैंने की है और वे मेरे हैं।"

जगत के लिए इस्राएल परमेश्वर की साक्षी है

8"ऐसे लोगों को जिनकी आँखे तो हैं किन्तु फिर भी वे अन्धे हैं, उन्हें निकाल लाओ। ऐसे लोगों को जो कानों के होते हुए भी बहरे हैं, उन्हें निकाल लाओ।
9सभी लोगों और सभी राष्ट्रों को एक साथ इकट्ठा करो। यदि किसी भी मिथ्या देवता ने कभी इन बातों के बारे में कुछ कहा है और भूतकाल में यह बताया था कि आगे क्या कुछ होगा तो उन्हें अपने गवाह लाने दो और उन (मिथ्या देवताओं)

को प्रमाणित सिद्ध करने दो। उन्हें सत्य बताने दो और उन्हें सुनो।"
10यहोवा कहता है, "तुम ही लोग तो मेरे साक्षी हो। तू मेरा वह सेवक है जिसे मैंने चुना है। मैंने तुझे इसलिए चुना है ताकि तू समझ ले कि 'वह मैं ही हूँ' और मुझ में

विश्वास करे। मैं सच्चा परमेश्वर हूँ। मुझसे पहले कोई
परमेश्वर नहीं था और मेरे बाद भी कोई परमेश्वर
नहीं होगा। 11मैं स्वयं ही यहोवा हूँ। मेरे अतिरिक्त और
कोई दूसरा उद्धारकर्ता नहीं है, बस केवल मैं ही हूँ।
12वह मैं ही हूँ जिसने तुझसे बात की थी। तुझे मैंने
बचाया है। वे बातें तुझे मैंने बतायी थीं। जो तेरे साथ था,
वह कोई अनजाना देवता नहीं था। तू मेरा साक्षी है और
मैं परमेश्वर हूँ।" (ये बातें स्वयं यहोवा ने कही थीं) 13मैं
तो सदा से ही परमेश्वर रहा हूँ। जब मैं कुछ करता हूँ
तो मेरे किये को कोई भी व्यक्ति नहीं बदल सकता और
मेरी शक्ति से कोई भी व्यक्ति किसी को बचा नहीं
सकता।"

14इस्राएल का पवित्र यहोवा तुझे छुड़ाता है। यहोवा
कहता है, "मैं तेरे लिये बाबुल में सेनाएँ भेजूँगा। सभी
ताले लगे दरवाजों को मैं तोड़ दूँगा। कसदियों के विजय
के नारे दु:खभरी चीखों में बदल जाएँगे। 15मैं तेरा पवित्र
यहोवा हूँ। इस्राएल को मैंने रचा है। मैं तेरा राजा हूँ।"

यहोवा फिर अपने लोगों की रक्षा करेगा

16यहोवा सागर में राहें बनायेगा। यहाँ तक कि पछाड़ें
खाते हुए पानी के बीच भी वह अपने लोगों के लिए राह
बनायेगा। यहोवा कहता है, 17"वे लोग जो अपने रथों,
घोड़ों और सेनाओं को लेकर मुझसे युद्ध करेंगे, पराजित
हो जायेंगे। वे फिर कभी नहीं उठ पायेंगे। वे नष्ट हो
जायेंगे। वे दीये की लौ की तरह बुझ जायेंगे। 18सो उन
बातों को याद मत करो जो प्रारम्भ में घटी थीं। उन
बातों को मत सोचो जो कभी बहुत पहले घटी थीं।
19क्यों? क्योंकि मैं नयी बातें करने वाला हूँ! अब एक
नये वृक्ष के समान तुम्हारा विकास होगा। तुम जानते हो
कि यह सत्य है। मैं मरुभूमि में सचमुच एक मार्ग
बनाऊँगा। मैं सचमुच सूखी धरती पर नदियाँ बहा दूँगा।
20यहाँ तक कि बनैले पशु और उल्लू भी मेरा आदर
करेंगे। विशालकाय पशु और पक्षी मेरा आदर करेंगे।
जब मरुभूमि में मैं पानी रख दूँगा तो वे मेरा आदर
करेंगे। सूखी धरती में जब मैं नदियों की रचना कर
दूँगा तो वे मेरा आदर करेंगे। मैं ऐसा अपने लोगों को
पानी देने केलिये करुँगा। उन लोगों को जिन्हें मैंने चुना
है। 21ये वे लोग हैं जिन्हें मैंने बनाया है और ये लोग मेरी
प्रशंसा के गीत गाया करेंगे।

22"याकूब, तूने मुझे नहीं पुकारा। क्यों? क्योंकि हे
इस्राएल, तेरा मन मुझसे भर गया था। 23तुम लोग भेड़
की अपनी बलियाँ मेरे पास नहीं लाये। तुमने मेरा मान
नहीं रखा। तुमने मुझे बलियाँ नहीं अर्पित कीं। मुझे
अन्न बलियाँ अर्पित करने के लिए मैं तुम पर ज़ोर नहीं
डालता। तुम मेरे लिए धूप जलाते-जलाते थक जाओ,
इसके लिए मैं तुम पर दबाव नहीं डालता। 24तुम अपनी
बलियों की चर्बी से मुझे तृप्त नहीं करते मुझे आदर देने
के लिये वस्तुएँ मोल लेने के लिए अपने धन का
उपयोग नहीं करते। अपनी बलियों की चर्बी से मुझे
तृप्त नहीं करते। किन्तु तुम मुझ पर दबाव डालते हो
कि मैं तुम्हारे दास का सा आचरण करुँ। तुम तब तक
पाप करते चले गये जब तक मैं तुम्हारे पापों से पूरी
तरह तंग नहीं आ गया।

25"मैं वही हूँ जो तुम्हारे पापों को धो डालता हूँ। स्वयं
अपनी प्रसन्नता के लिये ही मैं ऐसा करता हूँ। मैं
तुम्हारे पापों को याद नहीं रखूँगा। 26मेरे विरोध में
तुम्हारें जो आक्षेप हैं, उन्हें लाओ, आओ, हम दोनों
न्यायालय को चलें। तुमने जो कुछ किया है, वह तुम्हें
बताना चाहिये और दिखाना चाहिये कि तुम उचित
हो। 27तुम्हारे आदि पिता ने पाप किया था और तुम्हारे
हिमायतियों ने मेरे विरुद्ध काम किये थे। 28मैंने तुम्हारे
पवित्र शासकों को अपवित्र बना दिया। मैंने याकूब के
लोगों को अभिशप्त बनाया। मैंने इस्राएल का अपमान
कराया।"

केवल यहोवा ही परमेश्वर है

44 "याकूब, तू मेरा सेवक है। इस्राएल, मेरी बात
सुन! मैंने तुझे चुना है। जो कुछ मैं कहता हूँ
उस पर ध्यान दे! 2मैं यहोवा हूँ और मैंने तुझे बनाया
है। तू जो कुछ है, तुझे बनाने वाला मैं ही हूँ। जब तू माता
की देह में ही था, मैंने तभी से तेरी सहायता की है। मेरे
सेवक याकूब! डर मत! यशूरून (इस्राएल) तुझे मैंने
चुना है।

3"प्यासे लोगों के लिये मैं पानी बरसाऊँगा। सूखी
धरती पर मैं जलधाराएँ बहाऊँगा। तेरी संतानों में मैं
अपनी आत्मा डालूँगा। तेरे परिवार पर वह एक बहती
जलधारा के समान होगी। 4वे संसार के लोगों के बीच
फलेंगे-फूलेंगे। वे जलधाराओं के साथ-साथ लगे बढ़ते
हुए चिनार के पेड़ों के समान होंगे।

5"लोगों में कोई कहेगा, 'मैं यहोवा का हूँ।' तो दूसरा
व्यक्ति याकूब का नाम लेगा। कोई व्यक्ति अपने हाथ
पर लिखेगा, 'मैं यहोवा का हूँ' और दूसरा व्यक्ति 'इस्राएल'
नाम का उपयोग करेगा।"

6यहोवा इस्राएल का राजा है। सर्वशक्तिमान यहोवा
इस्राएल की रक्षा करता है। यहोवा कहता है, "परमेश्वर
केवल मैं ही हूँ। अन्य कोई परमेश्वर नहीं है। मैं ही
आदि हूँ। मैं ही अंत हूँ। 7मेरे जैसा परमेश्वर कोई दूसरा
नहीं है और यदि कोई है तो उसे अब बोलना चाहिये।
उसको आगे आ कर कोई प्रमाण देना चाहिये कि वह
मेरे जैसा है। भविष्य में क्या कुछ होने वाला है उसे
बहुत पहले ही किसने बता दिया था? तो वे हमें अब
बता दें कि आगे क्या होगा? 8डरो मत, चिंता मत करो!
जो कुछ घटने वाला है, वह मैंने तुम्हें सदा ही बताया है।
तुम लोग मेरे साक्षी हो। कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है।

केवल मैं ही हूँ। कोई अन्य 'शरणस्थान' नहीं है। मैं
जानता हूँ केवल मैं ही हूँ।"

झूठे देवता बेकार हैं

9कुछ लोग मूर्ति (झूठे देवता) बनाया करते हैं। किन्तु
वे बेकार हैं। लोग उन बुतों से प्रेम करते हैं किन्तु वे बुत
बेकार हैं। वे लोग उन बुतों के साक्षी हैं किन्तु वे देख
नहीं पाते। वे कुछ नहीं जानते। वे लज्जित होंगे।

10इन झूठे देवताओं को कोई क्यों गढ़ेगा? इन बेकार
के बुतों को कोई क्यों ढ़ालेगा? 11उन देवताओं को
कारीगरों ने गढ़ा है और वे कारीगर तो मात्र मनुष्य हैं,
न कि देवता। यदि वे सभी लोग एकजुट हो पंक्ति में
आयें और इन बातों पर विचार विनिमय करें तो वे
सभी लज्जित होंगे और डर जायेंगे।

12कोई एक कारीगर कोयलों पर लोहे को तपाने के
लिए अपने औजारों का उपयोग करता है। यह व्यक्ति
धातु को पीटने के लिए अपना हथौड़ा काम में लाता है।
इसके लिए वह अपनी भुजाओं की शक्ति का प्रयोग
करता है। किन्तु उसी व्यक्ति को जब भूख लगती है,
उसकी शक्ति जाती रहती है। वही व्यक्ति यदि पानी
न पिये तो कमज़ोर हो जाता है।

13दूसरा व्यक्ति अपने रेखा पटकने के सूत का उपयोग
करता है। वह तख्ते पर रेखा खींचने के लिए परकार
को काम में लाता है। यह रेखा उसे बताती है कि वह
कहाँ से काटे। फिर वह व्यक्ति निहानी का प्रयोग
करता है और लकड़ी में मूर्तियों को उभारता है। वह
मूर्तियों को नापने के लिए अपने नपाई के यन्त्र का
प्रयोग करता है और इस तरह वह कारीगर लकड़ी को
ठीक व्यक्ति का रुप दे देता है और फिर व्यक्ति का
सा यह मूर्ति मठ में बैठा दिया जाता है।

14कोई व्यक्ति देवदार, सनोवर, अथवा बांज के वृक्ष
को काट गिराता है। (किन्तु वह व्यक्ति उन पेड़ों को
उगाता नहीं। ये पेड़ वन में स्वयं अपने आप उगते हैं।
यदि कोई व्यक्ति चीड़ का पेड़ उगाये तो उसकी बढ़वार
वर्षा करती है।) 15फिर वह मनुष्य उस पेड़ को अपने
जलाने के काम में लाता है। वह मनुष्य उस पेड़ को
काट कर लकड़ी की मुढ्ढियाँ बनाता है और उन्हें
खाना बनाने और खुद को गरमाने के काम में लाता है।
व्यक्ति थोड़ी सी लकड़ी की आग सुलगा कर अपनी
रोटियाँ सेंकता है। किन्तु तो भी मनुष्य उसी लकड़ी से
देवता की मूर्ति बनाता है और फिर उस देवता की पूजा
करने लगता है। यह देवता तो एक मूर्ति है जिसे उस
व्यक्ति ने बनाया है! किन्तु वही मनुष्य उस मूर्ति के
आगे अपना माथा नवाता है! 16वही मनुष्य आधी लकड़ी
को आग में जला देता है और उस आग पर माँस पका
कर भर पेट खाता है और फिर अपने आप को गरमाने
के लिए मनुष्य उसी लकड़ी को जलाता है और फिर
वही कहता है, "बहुत अच्छे! अब मैं गरम हूँ और इस
आग की लपटों को देख सकता हूँ।" 17किन्तु थोड़ी
बहुत लकड़ी बच जाती है। सो उस लकड़ी से व्यक्ति
एक मूर्ति बना लेता है और उसे अपना देवता कहने
लगता है। वह उस देवता के आगे माथा नवाता है और
उसकी पूजा करता है। वह उस देवता से प्रार्थना करते
हुए कहता है, "तू मेरा देवता है, मेरी रक्षा कर!"

18ये लोग यह नहीं जानते कि यें क्या कर रहे हैं? ये
लोग समझते ही नहीं। ऐसा है जैसे इनकी आँखें बंद हो
और ये कुछ देख ही न पाते हों। इनका मन समझने का
जतन ही नहीं करता। 19इन वस्तुओं के बारे में ये लोग
कुछ सोचते ही नहीं है। ये लोग नासमझ हैं। इसलिए इन
लोगों ने अपने मन में कभी नहीं सोचा: "आधी लकड़ियाँ
मैंने आग में जला डालीं। दहकते कोयलों का प्रयोग मैंने
रोटी सेंकने और माँस पकाने में किया। फिर मैंने माँस
खाया और बची हुई लकड़ी का प्रयोग मैंने इस भ्रष्ट
वस्तु (मूर्ति) को बनाने में किया। अरे, मैं तो एक
लकड़ी के टुकड़े की पूजा कर रहा हूँ!"

20यह तो बस उस राख को खाने जैसा ही है। वह
व्यक्ति यह नहीं जानता कि वह क्या कर रहा है? वह
भ्रम में पड़ा हुआ है। इसीलिए उसका मन उसे गलत
राह पर ले जाता है। वह व्यक्ति अपना बचाव नहीं कर
पाता है और वह यह देख भी नहीं पाता है कि वह गलत
काम कर रहा है। वह व्यक्ति नहीं कहेगा, "यह मूर्ति
जिसे मैं थामे हूँ एक झूठा देवता है।"

सच्चा परमेश्वर यहोवा इस्राएल का सहायक है

21"हे याकूब, ये बातें याद रख! इस्राएल, याद रख कि
तू मेरा सेवक है। मैंने तुझे बनाया। तू मेरा सेवक है।
इसलिए इस्राएल, मैं तुझको नहीं भूलाऊँगा।

22तेरे पाप एक बड़े बादल जैसे थे। किन्तु मैंने तेरे
पापों को उड़ा दिया। तेरे पाप बादल के समान वायु में
विलीन हो गये। मैंने तुझे बचाया और तेरी रक्षा की।
इसलिए मेरे पास लौट आ!"

23आकाश प्रसन्न है, क्योंकि यहोवा ने महान काम
किये। धरती और यहाँ तक कि धरती के नीचे बहुत
गहरे स्थान भी प्रसन्न हैं! पर्वत परमेश्वर को धन्यवाद
देते हुए गाओ। वन के सभी वृक्ष, तुम भी खुशी गाओ!
क्यों? क्योंकि यहोवा ने याकूब को बचा लिया है।
यहोवा ने इस्राएल के लिये महान कार्य किये हैं।

24जो कुछ भी तू है वह यहोवा ने तुझे बनाया। यहोवा
ने यह किया जब तू अभी माता के गर्भ में ही था।
यहोवा तेरा रखवाला कहता है। "मैं यहोवा ने सब कुछ
बनाया! मैंने ही वहाँ आकाश ताना है, और अपने
सामने धरती को बिछाया!"

25झूठे नबी शगुन दिखाया करते हैं किन्तु यहोवा
दर्शाता है कि उनके शगुन झूठे हैं। जो लोग जादू टोना

कर के भविष्य बताते हैं, यहोवा उन्हें मूर्ख सिद्ध करेगा।
यहोवा तथाकथित बुद्धिमान मनुष्यों तक को भ्रम में
डाल देता है। वे सोचते हैं कि वे बहुत कुछ जानते हैं
किन्तु यहोवा उन्हें ऐसा बना देता है कि वे मूर्ख दिखाई
दें। 26यहोवा अपने सेवकों को लोगों को सन्देश सुनाने
के लिए भेजता है और फिर यहोवा उन सन्देशों को सच
कर देता है। यहोवा लोगों को क्या करना चाहियें उन्हें
यह बताने के लिए दूत भेजता है और फिर यहोवा दिखा
देता है कि उनकी सम्मति अच्छी हैं।

परमेश्वर कुस्रू को यहूदा के पुन: निर्माण के लिये चुनता है

यहोवा यरुशलेम से कहता हैं, "लोग तुझ में आकर फिर बसेंगे!" "यहोवा यहूदा के नगरों से कहताहै, "तुम्हारा फिर से निर्माण होगा!" यहोवा ध्वस्त हुए नगरों से कहताहै, "मैं तुम नगरों को फिर से उठाऊँगा!"

27यहोवा गहरे सागर से कहता है, "सूख जा!' मैंने
तेरी जलधाराओं को सूखा बना दूँगा!"

28यहोवा कुस्रू से कहता है, "तू मेरा चरवाहा है। जो
मैं चाहता हूँ तू वही काम करेगा। तू यरुशलेम से
कहेगा, 'तुझको फिर से बनाया जायेगा!' तू मन्दिर से
कहेगा, 'तेरी नीवों का फिर से निर्माण होगा!'"

परमेश्वर कुस्रू को इस्राएल की मुक्ति के लिये चुनता है

45 ये वे बातें हैं जिन्हें यहोवा अपने चुने हुए राजा
कुस्रू से कहता है: "मैं कुस्रू का दाहिना हाथ
थामूँगा। मैं राजाओं की शक्ति छीनने में उसकी सहायता
करुँगा। नगर द्वार कुस्रू को रोक नहीं पायेंगे। मैं नगर
के द्वार खोल दूँगा, और कुस्रू भीतर चला जायेगा।

2"कुस्रू, तेरी सेनाएँ आगे बढ़ेंगी और मैं तेरे आगे
चलूँगा। मैं पर्वतों को समतल कर दूँगा। मैं काँसे के
नगर-द्वारों को तोड़ डालूँगा। मैं द्वार पर लगी लोहे की
आँगल को काट डालूँगा।

3मैं तुझे अन्धेरे में रखी हुई दौलत दूँगा। मैं तुझको
छिपी हुई सम्पत्ति दूँगा। मैं ऐसा करुँगा ताकि तुझको पता
चल जायेकि मैं इस्राएल का परमेश्वर हूँ, और मैं तुझको
तेरे नाम से पुकार रहा हूँ!

4मैं ये बातें अपने सेवक याकूब के लिये करताहूँ। मैं
ये बातें इस्राएल के अपने चुने हुए लोगों के लिये करता
हूँ। कुस्रू, मैं तुझे नाम से पुकार रहा हूँ। तू मुझको नहीं
जानता है, किन्तु मैं तुझको सम्मान की उपाधि दे रहा
हूँ।

5मैं यहोवा हूँ! मैं ही मात्र एक परमेश्वर हूँ। मेरे सिवा
दूसरा कोई परमेश्वर नहीं है। मैं तुझे तेरा कमरबन्ध
पहनाता हूँ, किन्तु फिर भी तू मुझको नहीं पहचानता
है।

6मैं यह काम करता हूँ ताकि सब लोग जान जायें कि
मैं ही मात्र परमेश्वर हूँ। पूर्व से पश्चिम तक सभी लोग
ये जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ और मेरे सिवा दूसरा कोई
परमेश्वर नहीं।

7मैंने प्रकाश को बनाया और मैंने ही अन्धकार को
रचा। मैंने शान्ति को सृजा और विपत्तियाँ भी मैंने ही
बनायीं हैं। मैं यहोवा हूँ। मैं ही ये सब बातें करता हूँ।

8ऊपर आकाश से पुण्य ऐसे बरसता है जैसे मेघ से
वर्षा धरती पर बरसती है! धरती खुल जाती है और पुण्य
कर्म उसके साथ-साथ उग आते हैं जो मुक्ति में फलते
फूलते हैं। मैंने, मुझ यहोवा ने ही यह सब किया है।

परमेश्वर अपनी सृष्टि का नियन्त्रण करता हैं

9"धिक्कार है इन लोगों को, यें उसी से बहस कर
रहे हैं जिसने इन्हें बनाया है। ये किसी टूटे हुए घड़े के
ठीकरों के जैसे हैं। कुम्हार नरम गीली मिट्‌टी से घड़ा
बनाता है पर मिट्‌टी उससे नहीं पूछती 'अरे, तू क्या कर
रहा है?' वस्तुएँ जो बनायी गयी हैं, वे यह शक्ति नहीं
रखतीं कि अपने बनाने वाले से कोई प्रश्न पूछे। ये लोग
भी मिट्‌टी के टूटे घड़े के ठीकरों के जैसे हैं। 10अरे,
एक पिता जब अपने पुत्रों को माता में जन्म दे रहा होता
है तो बच्चे उससे यह नहीं पूछ सकते कि तू हमें जन्म
क्यों दे रहा है? बच्चे अपनी माँ से यह सवाल नहीं कर
सकते हैं कि तू हमें क्यों पैदा कर रही है?'"

11परमेश्वर यहोवा इस्राएल का पवित्र है। उसने इस्राएल
को बनाया। यहोवा कहता है, "क्या तू मुझसे मेरे बच्चों
के बारे में पूछेगा अथवा तू मुझे आदेश देगा उनके ही
बारे में जिस को मैंने अपने हाथों से रचा।

12सो देख, मैंने धरती बनायी और वे सभी लोग जो
इस पर रहते हैं, मेरे बनाये हुए हैं। मैंने स्वयं अपने हाथों
से आकाशों की रचना की, और मैं आकाश के सितारों
को आदेश देता हूँ।

13कुस्रू को मैंने ही उसकी शक्ति दी है ताकि वह भले
कार्य करे। उसके काम को मैं सरल बनाऊँगा। कुस्रू
मेरे नगर को फिर से बनायेगा और मेरे लोगों को वह
स्वतन्त्र कर देगा। कुस्रू मेरे लोगों को मुझे नहीं बेचेगा।
इन कामों को करने के लिये मुझे उसको कोई मोल
नहीं चुकाना पड़ेगा। लोग स्वतन्त्र हो जायेंगे और मेरा
कुछ भी मोल नहीं लगेगा।" सर्वशक्तिमान यहोवा ने ये
बातें कहीं।

14यहोवा कहता हैं, "मिस्र और कूश ने बहुत वस्तुएँ
बनायी थी, किन्तु हे इस्राएल, तुम वे वस्तुएँ पाओगे। सेबा
के लम्बे लोग तुम्हारे होंगे। वे अपने गर्दन के चारों ओर
जंजीर लिये हुए तुम्हारे पीछे पीछे चलेंगे। वे लोग तुम्हारे
सामने झुकेंगे, और वे तुमसे विनती करेंगे।" इस्राएल,
परमेश्वर तेरे साथ है, और उसे छोड़ कोई दूसरा परमेश्वर
नहीं है।

15हे परमेश्वर, तू वह परमेश्वर है जिसे लोग देख
नहीं सकते। तू ही इस्राएल का उद्धारकर्ता है।
16बहुत से लोग मिथ्या देवता बनाया करते हैं। किन्तु
वे लोग तो निराश ही होंगे। वे सभी लोग तो लज्जित हो
जायेंगे।
17किन्तु इस्राएल यहोवा के द्वारा बचा लिया जायेगा।
वह मुक्ति युगों तक बनी रहेगी। फिर इस्राएल कभी भी
लज्जित नहीं होगा।
18यहोवा ही परमेश्वर है। उसने आकाश रचे हैं,
और उसी ने धरती बनायी है। यहोवा ही ने धरती को
अपने स्थान पर स्थापित किया है। जब यहोवा ने धरती
बनाई उसने ये नहीं चाहा कि धरती खाली रहे। उसने
इसको रचा ताकि इसमें जीवन रहे। मैं यहोवा हूँ। मेरे
सिवा कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है।
19मैंने अकेले ये बातें नहीं कीं। मैंने मुक्त भाव से
कहा है। संसार के किसी भी अन्धेरे में मैं अपने वचन
नहीं छुपाता। मैंने याकूब के लोगों से नहीं कहा कि वे
मुझे विरान स्थानों पर ढूँढे। मैं परमेश्वर हूँ, और मैं
सत्य बोलता हूँ। मैं वही बातें कहता हूँ जो सत्य हैं।"

यहोवा सिद्ध करता है कि वह ही परमेश्वर है

20"तुम लोग दूसरी जातियों से बच भागे। सो आपस में
इकट्ठे हो जाओ और मेरे सामने आओ। (यें लोग
अपने साथ मिथ्या देवों के मूर्ति रखते हैं और इन
बेकार के देवताओं से प्रार्थना करते हैं। किन्तु यें लोग
यह नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं? 21इन लोगों को
मेरे पास आने को कहो। इन लोगों को अपने तर्क पेश
करने दो।)
"वे बातें जो बहुत दिनों पहले घटी थीं, उनके बारे में
तुम्हें किसने बताया? बहुत-बहुत दिनों पहले से ही इन
बातों को निरन्तर कौन बताता रहा? वह मैं यहोवा ही हूँ
जिसने ये बातें बतायी थीं। मैं ही एक मात्र यहोवा हूँ। मेरे
अतिरिक्त कोई और परमेश्वर नहीं है? क्या ऐसा कोई
और है जो अपने लोगों की रक्षा करता है? नहीं, ऐसा
कोई अन्य परमेश्वर नहीं है! 22हे हर कहीं के लोगों,
तुम्हें इन झूठे देवताओं के पीछे चलना छोड़ देना चाहिये।
तुम्हें मेरा अनुसरण करना चाहिये और सुरक्षित हो
जाना चाहिये। मैं परमेश्वर हूँ। मुझ से अन्य कोई दूसरा
परमेश्वर नहीं है। परमेश्वर केवल मैं ही हूँ।
23"मैंने स्वयं अपनी शक्ति को साक्षी करके प्रतिज्ञा
की है। यह एक उत्तम वचन है। यह एक आदेश है जो
पूरा होगा ही। हर व्यक्ति मेरे (परमेश्वर के) आगे
झुकेगा और हर व्यक्ति मेरा अनुसरण करने का वचन
देगा। 24लोग कहेंगे, 'नेकी और शक्ति बस यहोवा से
मिलती है।'"
कुछ लोग यहोवा से नाराज़ हैं, किन्तु यहोवा का
साक्षी आयेगा और यहोवा ने जो किया है, उसे बतायेगा।
इस प्रकार वे नाराज़ लोग निराश होंगे। 25यहोवा अच्छे
काम करने के लिए इस्राएल के लोगों को विजयी
बनाएगा और लोग उसकी प्रशंसा करेंगे।

झूठे देव व्यर्थ हैं

46 बेल और नबो तेरे आगे झुका दिए गये हैं।
झूठे देवता तो बस केवल मूर्ति हैं। लोगों ने इन
बुतों को जानवरों की पीठों पर लाद दिया है। ये बुत बस
एक बोझ हैं, जिन्हें ढोना ही है। ये झूठे देवता कुछ नहीं
कर सकते। बस लोगों को थका सकते हैं। 2इन सभी
झूठे देवताओं को झुका दिया जाएगा। ये बच कर कहीं
नहीं भाग सकेंगे। उन सभी को बन्दियों की तरह ले
जाया जायेगा।
3"याकूब के परिवार, मेरी सुन! हे इस्राएल के लोगों
जो अभी जीवित हो, सुनो! मैं तुम्हें तब से धारण किए हूँ
जब अभी तुम माता के गर्भ में ही थे। 4मैं तुम्हें तब से
धारण किए हूँ जब से तुम्हारा जन्म हुआ है और मैं तुम्हें
तब भी धारण करुँगा, जब तुम बूढ़े हो जाओगे। तुम्हारे
बाल सफेद हो जायेंगे, मैं तब भी तुम्हें धारण किए रहूँगा
क्योंकि मैंने तुम्हारी रचना की है। मैं तुम्हें निरन्तर
धारण किए रहूँगा और तुम्हारी रक्षा करुँगा।
5"क्या तुम किसी से भी मेरी तुलना कर सकते हो?
नहीं! कोई भी व्यक्ति मेरे समान नहीं है। मेरे बारे में
तुम हर बात नही समझ सकते। मेरे जैसा तो कुछ है ही
नहीं। 6कुछ लोग सोने और चाँदी से धनवान हैं। सोने
चाँदी के लिए उन्होंने अपनी थैलियों के मुँह खोल दिए
हैं। वे अपनी तराजुओं से चाँदी तौला करते हैं। ये लोग
लकड़ी से झूठे देवता बनाने के लिये कलाकारों को
मजदूरी देते हैं और फिर वे लोग उसी झूठे देवता के
आगे झुकते हैं और उसकी पूजा करते हैं। 7वे लोग झूठे
देवता को अपने कन्धों पर रख कर ले चलते हैं। वह
झूठा देवता तो बेकार है। लोगों को उसे ढोना पड़ता है।
लोग उस झूठे देवता को धरती पर स्थापित करते हैं।
किन्तु वह झूठा देवता हिल-डुल भी नहीं पाता। वह
झूठा देवता अपने स्थान से चल कर कहीं नहीं जाता।
लोग उसके सामने चिल्लाते हैं किन्तु वह कभी उत्तर
नहीं देगा। वह झूठा देवता तो बस मूर्ति है। वह लोगों को
उनके कष्टों से नहीं उबार सकता।
8"तुम लोगों ने पाप किये हैं। तुम्हें इन बातों को फिर
से याद करना चाहिये। इन बातों को याद करो और
सुदृढ़ हो जाओ। 9उन बातों को याद करो जो बहुत पहले
घटी थीं। याद रखो कि मैं परमेश्वर हूँ। कोई दूसरा
अन्य परमेश्वर नहीं है। वे झूठे देवता मेरे जैसे नहीं हैं।
10"प्रारम्भ में मैंने तुम्हें उन बातों के बारे में बता दिया
था जो अंत में घटेगी। बहुत पहले से ही मैंने तुम्हें वे बातें
बता दी हैं, जो अभी घटी नहीं हैं। जब मैं किसी बात की
कोई योजना बनाता हूँ तो वह घटती है। मैं वही करता

हूँ जो करना चाहता हूँ। 11देखो, पूर्व दिशा से मैं एक
व्यक्ति को बुला रहा हूँ। वह व्यक्ति एक उकाब के
समान होगा। वह एक दूर देश से आयेगा और वह उन
कामों को करेगा जिन्हें करने की योजना मैंने बनाई है।
मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि मैं इसे करुँगा और मैं उसे
करुँगा ही। क्योंकि उसे मैंने ही बनाया है। मैं उसे
लाऊँगा ही!

12"तुम में से कुछ सोचा करते हो कि तुम में महान
शक्ति है किन्तु तुम भले काम नहीं करते हो। मेरी सुनो।
13मैं भले काम करुँगा! मैं शीघ्र ही अपने लोगों की रक्षा
करुँगा। मैं अपने सिय्योन और अपने अद्‌भुत इस्राएल
के लिये उद्धार लाऊँगा।"

बाबुल को परमेश्वर का सन्देश

47 "हे बाबुल की कुमारी पुत्री, नीचे धूल में गिर
जा और वहाँ पर बैठजा! अब तू रानी नहीं है!
लोग अब तुझको कोमल और सुन्दर नहीं कहा करेंगे।

2अब तुझको अपना कोमल वस्त्र उतार कर कठिन
परिश्रम करना चाहिए। अब तू चक्की ले और उस पर
आटा पीस। तू अपना घाघरा इतना ऊपर उठा कि लोगों
को तेरी टाँगे दिखने लग जाये और नंगी टाँगों से तू नदी
पार कर। तू अपना देश छोड़ दे!

3लोग तेरे शरीर को देखेंगे और वे तेरा भोग करेंगे।
तू अपमानित होगी। मैं तुझसे तेरे बुरे कर्मों का मोल
दिलवाऊँगा जो तूने किये हैं। तेरी सहायता को कोई भी
व्यक्ति आगे नहीं आयेगा।"

4"मेरे लोग कहते हैं, 'परमेश्वर हम लोगों को बचाता
है। उसका नाम, इस्राएल का पवित्र सर्वशक्तिमान है।'"

5यहोवा कहता है, हे बाबुल, तू बैठ जा और कुछ भी
मत कह। बाबुल की पुत्री, चली जा अन्धेरे में। क्यों?
क्योंकि अब तू और अधिक 'राज्यों की रानी' नहीं
कहलायेगी।

6"मैंने अपने लोगों पर क्रोध किया था। ये लोग मेरे
अपने थे, किन्तु मैं क्रोधित था, इसलिए मैंने उनको
अपमानित किया। मैंने उन्हें तुझको दे दिया, और तूने
उन्हें दण्ड दिया। तूने उन पर कोई करुणा नहीं दर्शायी
और तूने उन बूढ़ों पर भी बहुत कठिन काम का जुआ
लाद दिया।

7तू कहा करती थी, 'मैं अमर हूँ। मैं सदा रानी
रहूँगी।' किन्तु तूने उन बुरी बातों पर ध्यान नहीं दिया
जिन्हें तूने उन लोगों के साथ किया था। तूने कभी नहीं
सोचा कि बाद में क्या होगा।

8इसलिए अब, ओ 'मनोहर स्त्री,' मेरी बात तू सुनले!
तू निज को सुरक्षित जान और अपने आप से कह।'
'केवल मैं ही महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हूँ। मेरे समान कोई
दूसरा बड़ा नहीं है। मुझको कभी भी विधवा नहीं होना
है। मेरे सदैव बच्चे होते रहेंगे।'

9ये दो बातें तेरे साथ में घटित होंगी: प्रथम, तेरे बच्चे
तुझसे छूट जायेंगे और फिर तेरा पति भी तुझसे छूट
जायेगा। हाँ, ये बातें तेरे साथ अवश्य घटेंगी। तेरे सभी
जादू और शक्तिशाली टोने तुझको नहीं बचा पायेंगे।

10तू बुरे काम करती है, फिर भी तू अपने को
सुरक्षित समझती है। तू कहा करती है कि तेरे बुरे काम
को कोई नहीं देखता। तू बुरे काम करती है किन्तु तू
सोचती है कि तेरी बुद्धि और तेरा ज्ञान तुझको बचा
लेंगे। तू स्वयं को सोचती है कि बस एक तू ही महत्त्वपूर्ण
है। तेरे जैसा और कोई भी दूसरा नहीं है।"

11"किन्तु तुझ पर विपत्तियाँ आयेंगी। तू नहीं जानती
कि यह कब हो जायेगा, किन्तु विनाश आ रहा है। तू
उन विपत्तियों को रोकने के लिये कुछ भी नहीं कर
पायेगी। तेरा विनाश इतना शीघ्र होगा कि तुझको पता
तक भी न चलेगा कि क्या कुछ तेरे साथ घट गया।

12जादू और टोने को सीखने में तूने कठिन श्रम
करते हुए जीवन बिता दिया। सो अब अपने जादू और
टोने को चला। सम्भव है, टोने-टोटके तुझको बचा ले।
सम्भव है, उनसे तू किसी को डरा दे।

13तेरे पास बहुत से सलाहकार हैं। क्या तू उनकी
सलाहों से तंग आ चुकी है? तो फिर उन लोगों को जो
सितारे पढ़ते हैं, बाहर भेज। जो बता सकते हैं महीना
कब शुरु होता है। सो सम्भव है वे तुझको बता पाये कि
तुझ पर कब विपत्तियाँ पड़ेंगी।

14किन्तु वे लोग तो स्वयं अपने को भी बचा नहीं
पायेंगे। वे घास के तिनकों जैसे भक से जल जायेंगे। वे
इतने शीघ्र जलेंगे कि अंगार तक कोई नहीं बचेगा
जिसमें रोटी सेकी जा सके। कोई आग तक नहीं बचेगी
जिसके पास बैठ कर वे खुद को गर्मा ले।

15ऐसा ही हर वस्तु के साथ में घटेगा जिनके लिये
तूने कड़ी मेहनत की। तेरे जीवन भर जिन से तेरा
व्यापार रहा, वे ही व्यक्ति तुझे त्याग जायेंगे। हर कोई
अपनी-अपनी राह चला जायेगा। कोई भी व्यक्ति तुझको
बचाने को नहीं बचेगा।"

परमेश्वर अपने जगत पर राज करता है

48 यहोवा कहता है, "याकूब के परिवार, तू मेरी
बात सुन। तुम लोग अपने आप को 'इस्राएल'
कहा करतेहो। तुम यहूदा के घराने से वचन देने के
लिये यहोवा का नाम लेते हो। तुम इस्राएल के परमेश्वर
की प्रशंसा करते हो। किन्तु जब तुम ये बातें करते हो
तो सच्चे नहीं होते हो और निष्ठावान नहीं रहते।

2तुम लोग अपने को पवित्र नगरी के नागरिक कहते
हो। तुम इस्राएल के परमेश्वर के भरोसे रहते हो।
उसका नाम सर्वशक्तिमान यहोवा है।

3मैंने तुम्हें बहुत पहले उन वस्तुओं के बारे में तुम्हें
बताया था जो आगे घटेंगी। मैंने तुम्हें उस वस्तुओं के

बारे में बताया था, और फिर अचानक मैंने बातें घटा
दीं।
4मैंने इसलिए वह किया था क्योंकि मुझको ज्ञात था
कि तुम बहुत जिद्दी हो। मैंने जो कुछ भी बताया था उस
पर विश्वास करने से तुमने मना किया। तुम बहुत जिद्दी
थे, जैसे लोहे की छड़ नहीं झुकती है। यह बात ऐसी थी
जैसे तुम्हारा सिर काँसे का बना हुआ है।
5इसलिए मैंने तुमको पहले ही बता दिया था, उन
सभी ऐसी बातों को जो घटने वाली हैं। जब वे बातें घटी
थी उससे बहुत पहले मैंने तुम्हें वह बात दी थी। मैंने ऐसा
इसलिए किया था ताकि तू कह न सके कि ये काम
हमारे देवताओं ने किये, ये बातें हमारे देवताओं ने,
हमारी मूर्तियों ने घटायी हैं।"

इस्राएल को पवित्र करने के लिए परमेश्वर का ताड़ना

6"तूने उन सभी बातों को जो हो चुकी हैं, देखा और
सुना है। इसलिए तुझको ये समाचार दूसरों को बताना
चाहिए। अब मैं तुझे नयी बातें बताना आरम्भ करता हूँ
जिनको तू अभी नहीं जानता है।
7ये वे बातें नहीं हैं जो पहले घट चुकी है। ये बातें ऐसी
हैं जो अब शुरु हो रही हैं। आज से पहले तूने ये बातें
नहीं सुनी। सो तू नहीं कह सकता, 'हम तो इसे पहले से
ही जानते हैं।'
8किन्तु तूने कभी उस पर कान नहीं दिया जो मैंने
कहा। तूने कुछ नहीं सीखा। तूने मेरी कभी नहीं सुनी,
किन्तु मैंने तुझे उन बातों के बारे में बताया क्योंकि मैं
जानता न था कि तू मेरे विरोध में होगा। अरे! तू तो
विद्रोही रहा जब से तू पैदा हुआ।
9किन्तु मैं धीरज धरुँगा। ऐसा मैं अपने लिये करुँगा।
मुझको क्रोध नहीं आया इसके लिये लोग मेरा यश
गायेंगे। मैं अपने क्रोध पर काबू करुँगा कि तुम्हारा
नाश न करुँ। तुम मेरी बाट जोहते हुए मेरा गुण गाओगे।
10देख, मैं तुझे पवित्र करुँगा। चाँदी को शुद्ध करने
के लिये लोग उसे आँच में डालते हैं! किन्तु मैं तुझे
विपत्ति की भट्टी में डालकर शुद्ध करुँगा।
11यह मैं स्वयं अपने लिये करुँगा! तू मेरे साथ ऐसे
नहीं बरतेगा, जैसे मेरा महत्त्व न हो। किसी मिथ्या देवता
को मैं अपनी प्रशंसा नहीं लेने दूँगा।
12याकूब, तू मेरी सुन! हे इस्राएल के लोगों, मैंने तुम्हें
अपने लोग बनने को बुलाया है। तुम इसलिए मेरी सुनों!
मैं परमेश्वर हूँ, मैं ही आरम्भ हूँ और मैं ही अन्त हूँ।
13मैंने स्वयं अपने हाथों से धरती की रचना की। मेरे
दाहिने हाथ ने आकाश को बनाया। यदि मैं उन्हें पुकारुँ
तो दोनों साथ-साथ मेरे सामने आयेंगे।
14"इसलिए तुम सभी जो आपस में इकट्ठे हुए हो
मेरी बात सुनों! क्या किसी झूठे देव ने तुझसे ऐसा कहा
है कि आगे चल कर ऐसी बातें घटित होंगी? नहीं।"
यहोवा इस्राएल से जिसे, उस ने चुना है, प्रेम करता है।
वह जैसा चाहेगा वैसा ही बाबुल और कसदियों के साथ
करेगा।
15यहोवा कहता है कि मैंने तुझसे कहा था, "मैं
उसको बुलाऊँगा और मैं उसको लाऊँगा और उसको
सफल बनाऊँगा!
16मेरे पास आ और मेरी सुन! मैंने आरम्भ में
साफ-साफ बोला ताकि लोग मुझे सुन ले और मैं उस
समय वहाँ पर था जब बाबुल की नींव पड़ी।"
इस पर यशायाह ने कहा, "अब देखो, मेरे स्वामी
यहोवा ने इन बातों को तुम्हें बताने के लिये मुझे और
अपनी आत्मा को भेजा है। 17यहोवा जो मुक्तिदाता है
और इस्राएल का पवित्र है, कहता है, मैं तेरा यहोवा
परमेश्वर हूँ। मैं तुझको सिखाता हूँ कि क्या हितकर है।
मैं तुझको राह पर लिये चलता हूँ जैसे तुझे चलना
चाहिए।
18यदि तू मेरी मानता तो तुझे उतनी शान्ति मिल जाती
जितनी नदी भर करके बहती है। तुझ पर उत्तम वस्तुएँ
ऐसी छा जाती जैसे समुद्र की तरंग हों।
19यदि तू मेरी मानता तो तेरी सन्तानें बहुत बहुत
होतीं। तेरी सन्तानें वैसे अनगिनत हो जाती जैसे रेत के
असंख्य कण होते हैं। यदि तू मेरी मानता तो तू नष्ट नहीं
होता। तू भी मेरे साथ में बना रहता।"
20हे मेरे लोगों, तुम बाबुल को छोड़ दो! हे मेरे लोगों
तुम कसदियों से भाग जाओ! प्रसन्नता में भरकर तुम
लोगों से इस समाचार को कहो! धरती पर दूर दूर इस
समाचार को फैलाओ! तुम लोगों को बता दो, "यहोवा ने
अपने दास याकूब को उबार लिया है!
21यहोवा ने अपने लोगों को मरुस्थल में राह दिखाई,
और वे लोग कभी प्यासे नहीं रहे! क्यों? क्योंकि उसने
अपने लोगों के लिये चट्टान फोड़कर पानी बहा दिया!
22किन्तु परमेश्वर कहता है, "दुष्टों को शांति नहीं
है!"

अपने विशेष सेवक को परमेश्वर का बुलावा

49 हे दूर देशों के लोगों, मेरी बात सुनों हे धरती
के निवासियों, तुम सभी मेरी बात सुनों! मेरे
जन्म से पहले ही यहोवा ने मुझे अपनी सेवा के लिये
बुलाया। जब मैं अपनी माता के गर्भ में ही था, यहोवा ने
मेरा नाम रख दिया था।
2यहोवा अपने बोलने के लिये मेरा उपयोग करता है।
जैसे कोई सैनिक तेज तलवार को काम में लाता है वैसे
ही वह मेरा उपयोग करता है किन्तु वह अपने हाथ में
छुपा कर मेरी रक्षा करता है। यहोवा मुझको किसी तेज
तीर के समान काम में लेता है किन्तु वह अपने तीरों
के तरकश में मुझको छिपाता भी है।

3यहोवा ने मुझे बताया है, “इस्राएल, तू मेरा सेवक है।
मैं तेरे साथ में अद्भुत कार्य करुँगा।”
4मैंने कहा, “मैं तो बस व्यर्थ ही कड़ी मेहनत करता
रहा। मैं थक कर चूर हुआ। मैं काम का कोई काम
नहीं कर सका। मैंने अपनी सब शक्ति लगा दी। सचमुच,
किन्तु मैं कोई काम पूरा नहीं कर सका। इसलिए
यहोवा निश्चय करे कि मेरे साथ क्या करना है। परमेश्वर
को मेरे प्रतिफल का निर्णय करना चाहिए।
5यहोवा ने मुझे मेरी माता के गर्भ में रचा था। उसने
मुझे बनाया कि मैं उसकी सेवा करुँ। उसने मुझको
बनाया ताकि मैं याकूब और इस्राएल को उसके पास
लौटाकर ले आऊँ। यहोवा मुझको मान देगा। मैं परमेश्वर
से अपनी शक्ति को पाऊँगा।” यह यहोवा ने कहा था।
6“तू मेरे लिये मेरा अति महत्त्वपूर्ण दास है। इस्राएल
के लोग बन्दी बने हुए हैं। उन्हें मेरे पास वापस लौटा
लाया जायेगा और तब याकूब के परिवार समूह मेरे
पास लौट कर आयेंगे। किन्तु तेरे पास एक दूसरा काम
है। वह काम इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है! मैं तुझको
सब राष्ट्रों के लिये एक प्रकाश बनाऊँगा। तू धरती के
सभी लोगों की रक्षा के लिये मेरी राह बनेगा।”
7इस्राएल का पवित्र यहोवा, इस्राएल की रक्षा करता
है और यहोवा कहता है, “मेरा दास विनम्र है। वह
शासकों की सेवा करता है, और लोग उससे घृणा करते
हैं। किन्तु राजा उसका दर्शन करेंगे और उसके सम्मान
में खड़े होंगे। महान नेता भी उसके सामने झुकेंगे।” ऐसा
घटित होगा क्योंकि इस्राएल का वह पवित्र यहोवा ऐसा
चाहता है, और यहोवा के भरोसे रहा जा सकता है। वह
वही है जिसने तुझको चुना।
8यहोवा कहता है, “उचित समय आने पर मैं तुम्हारी
प्रार्थनाओं का उत्तर दूँगा। मैं तुमको सहारा दूँगा। मुक्ति
के दिनों में मैं तुम्हारी रक्षा करुँगा और तुम इसका
प्रमाण होगे कि लोगों के साथ में मेरी वाचा है। अब देश
उजड़ चुका है, किन्तु तुम यह धरती इसके स्वामियों
को लौटवाओगे।
9तुम बन्दियों से कहोगे, ‘तुम अपने कारागार से बाहर
निकल आओ!’ तुम उन लोगों से जो अन्धेरे में हैं,
कहोगे, ‘अन्धेरे से बाहर आ जाओ।’ वे चलते हुए राह में
भोजन कर पायेंगे। वे वीरान पहाड़ों में भी भोजन पायेंगे।
10लोग भूखे नहीं रहेंगे, लोग प्यासे नहीं रहेंगे। गर्म
सूर्य, गर्म हवा उनको दुःख नहीं देंगे। क्यों? क्योंकि वही
जो उन्हें चैन देता है, (परमेश्वर) उनको राह दिखायेगा।
वही लोगों को पानी के झरनों के पास–पास ले जायेगा।
11मैं अपने लोगों के लिये एक राह बनाऊँगा। पर्वत
समतल हो जायेंगे और दबी राहें ऊपर उठ आयेंगी।
12देखो, दूर दूर देशों से लोग यहाँ आ रहे हैं। उत्तर से
लोग आ रहे हैं और लोग पश्चिम से आ रहे हैं। लोग
मिस्र में स्थित असवान से आ रहे हैं।”
13हे आकाशों, हे धरती, तुम प्रसन्न हो जाओ! हे
पर्वतों, आनन्द से जयकारा बोलो! क्यों? क्योंकि यहोवा
अपने लोगों को सुख देता है। यहोवा अपने दीन हीन
लोगों के लिये बहुत दयालु है।

सिय्योनः त्यागी गई स्त्री

14किन्तु अब सिय्योन ने कहा, “यहोवा ने मुझको
त्याग दिया। मेरा स्वामी मुझको भूल गया।”
15किन्तु यहोवा कहता है, “क्या कोई स्त्री अपने ही
बच्चों को भूल सकती है? नहीं! क्या कोई स्त्री उस बच्चे
को जो उसकी ही कोख से जन्मा है, भूल सकती है?
नहीं! सम्भव है कोई स्त्री अपनीसन्तान को भूल जाये।
परन्तु मैं (यहोवा) तुझको नहीं भूल सकता हूँ।
16देखो जरा, मैंने अपनी हथेली पर तेरा नाम खोद
लिया है। मैं सदा तेरे विषय में सोचा करता हूँ।
17तेरी सन्तानें तेरे पास लौट आयेंगी। जिन लोगों ने
तुझको पराजित किया था, वे ही व्यक्ति तुझको अकेला
छोड़ जायेंगे।”

इस्राएलियों की वापसी

18ऊपर दृष्टि करो, तुम चारों ओर देखो! तेरी सन्तानें
सब आपस में इकट्ठी होकर तेरे पास आ रही हैं।
यहोवा का यह कहना है, “अपने जीवन की शपथ
लेकर मैं तुम्हें ये वचन देता हूँ, तेरी सन्तानें उन रत्नों
जैसी होंगी जिनको तू अपने कंठ में पहनता है। तेरी
सन्तानें वैसी ही होंगी जैसा वह कंठहार होता है जिसे
दुल्हिन पहनती है।
19आज तू नष्ट है और आज तू पराजित है। तेरी धरती
बेकार है किन्तु कुछ ही दिनों बाद तेरी धरती पर बहुत
बहुत सारे लोग होंगे और वे लोग जिन्होंने तुझे उजाड़ा
था, दूर बहुत दूर चले जायेंगे।
20जो बच्चे तूने खो दिये, उनके लिये तुझे बहुत दुःख
हुआ किन्तु वही बच्चे तुझसे कहेंगे। ‘यह जगह रहने को
बहुत छोटी है! हमें तू कोई विस्तृत स्थान दे!
21फिर तू स्वयं अपने आप से कहेगा, ‘इन सभी बच्चों
को मेरे लिये किसने जन्माया? यह तो बहुत अच्छा है।
मैं दुःखी था और अकेला था। मैं हारा हुआ था। मैं
अपने लोगों से दूर था। सो ये बच्चे मेरे लिये किसने पाले
हैं? देखो जरा, मैं अकेला छोड़ा गया। ये इतने सब बच्चे
कहाँ से आ गये?’”
22मेरा स्वामी यहोवा कहता है, “देखो, अपना हाथ
उठाकर हाथ के इशारे से मैं सारे ही देशों को बुलावे
का संकेत देता हूँ। मैं अपना झण्डा उठाऊँगा कि सब
लोग उसे देखें। फिर वे तेरे बच्चों को तेरे पास लायेंगे। वे
लोग तेरे बच्चों को अपने कन्धे पर उठायेंगे और वे
उनको अपनी बाहों में उठा लेंगे।
23राजा तेरे बच्चों के शिक्षक होंगे और राजकन्याएँ
उनका ध्यान रखेंगी। वे राजा और उनकी कन्याएँ दोनों

तेरे सामने माथा नवायेंगे। वे तेरे पाँवों भी धूल का
चुम्बन करेंगे। तभी तू जानेगा कि मैं यहोवा हूँ। तभी
तुझको समझ में आयेगा कि हर ऐसा व्यक्ति जो मुझमें
भरोसा रखता है, निराश नहीं होगा।"

24जब कोई शक्तिशाली योद्धा युद्ध में जीतता है तो
क्या कोई उसकी जीती हुई वस्तुओं को उससे ले सकता
है? जब कोई विजेता सैनिक किसी बन्दी पर पहरा देता
है, तो क्या कोई पराजित बन्दी बचकर भाग सकता है?

25किन्तु यहोवा कहता है, "उस बलवान सैनिक से
बन्दियों को छुड़ा लिया जायेगा और जीत की वस्तुएँ
उससे छीन ली जायेंगी। यह भला क्यों कर होगा? मैं
तुम्हारे युद्धों को लड़ूँगा और तुम्हारी सन्तानें बचाऊँगा।

26ऐसे उन लोगों को जो तुम्हें कष्ट देते हैं मैं ऐसा कर
दूँगा कि वे आपस में एक दूसरे के शरीरों को खायें।
उनका खून दाखमधु बन जायेगा जिससे वे धुत्त होंगे।
तब हर कोई जानेगा कि मैं वही यहोवा हूँ जो तुमको
बचाता है। सारे लोग जान जायेंगे कि तुमको बचाने
वाला याकूब का समर्थ है।"

इस्राएल को उसके पापों का दण्ड

50 यहोवा कहता है, "हे इस्राएल के लोगों, तुम
कहा करते थे कि मैंने तुम्हारी माता यरुशलेम
को त्याग दिया। किन्तु वह त्यागपत्र कहाँ है जो प्रमाणित
कर दे कि मैंने उसे त्यागा है। हे मेरे बच्चों, क्या मुझको
किसी का कुछ देना है? क्या अपना कोई कर्ज चुकाने
के लिये मैंने तुम्हें बेचा है? नहीं! देखो जरा, तुम बिके थे
इसलिए कि तुमने बुरे काम किये थे। इसलिए तुम्हारी
माँ (यरुशलेम) दूर भेजी गईथी।

2जब मैं घर आया था, मैंने वहाँ किसी को नहीं पाया।
मैंने बार–बार पुकारा किन्तु किसी ने उत्तर नहीं दिया।
क्या तुम सोचते हो कि तुमको मैं नहीं बचा सकता हूँ?
मैं तुम्हारी विपत्तियों से तुम्हें बचाने की शक्ति रखता हूँ।
देखो, यदि मैं समुद्र को सूखने को आदेश दूँ तो वह सूख
जायेगा। मछलियाँ प्राण त्याग देंगी क्योंकि वहाँ जल न
होगा और उनकी देह सड़ जायेंगी।

3मैं आकाशों को काला कर सकता हूँ। आकाश वैसे
ही काले हो जायेंगे जैसे शोकवस्त्र होते हैं।"

परमेश्वर का सेवक परमेश्वर के भरोसे

4मेरे स्वामी यहोवा ने मुझे शिक्षा देने की योग्यता दी
है। इसी से अब इन दुःखी लोगों को मैं सशक्त बना रहा
हूँ। हर सुबह वह मुझे जगाता है और एक शिष्य के रुप
में शिक्षा देता है। 5मेरा स्वामी यहोवा सीखने में मेरा
सहायक है और मैं उसका विरोधी नहीं बना हूँ। मैं
उसके पीछे चलना नहीं छोड़ूँगा। 6उन लोगों को मैं
अपनी पिटाई करने दूँगा। मैं उन्हें अपनी दाढ़ी के बाल
नोचने दूँगा। वे लोग जब मेरे प्रति अपशब्द कहेंगे और
मुझ पर थूकेंगे तो मैं अपना मुँह नहीं मोड़ूँगा। 7मेरा
स्वामी, यहोवा मेरी सहायता करेगा। इसलिये उनके
अपशब्द मुझे दुःख नहीं पहुँचायेंगे। मैं सुदृढ़ रहूँगा। मैं
जानता हूँ कि मुझे निराश नहीं होना पड़ेगा।

8यहोवा मेरे साथ है। वह दर्शाता है कि मैं निर्दोष हूँ।
इसलिये कोई भी व्यक्ति मुझे अपराधी नहीं दिखा पायेगा।
यदि कोई व्यक्ति मुझे अपराधी प्रमाणित करने का
जतन करना चाहता है तो वह व्यक्ति मेरे पास आये।
हम इसके लिये साथ साथ मुकद्दमा लड़ेंगे। 9किन्तु देख,
मेरा स्वामी यहोवा मेरी सहायता करता है, सो कोई भी
व्यक्ति मुझे दोषी नहीं दिखा सकता। वे सभी लोग
मूल्यहीन पुराने कपड़ों जैसे हो जायेंगे। कीड़े उन्हें चट
कर जायेंगे।

10जो व्यक्ति यहोवा का आदर करता है उसे उसके
सेवक की भी सुननी चाहिये। वह सेवक, आगे क्या
होगा, इसे जाने बिना ही परमेश्वर में पूरा विश्वास
रखते हुए अपना जीवन बिताता है। वह सचमुच यहोवा
के नाम में विश्वास रखता है और वह सेवक अपने
परमेश्वर के भरोसे रहता है।

11"देखो, तुम लोग अपने ही ढंग से जीना चाहते हो।
अपनी अग्नि और अपनी मशालों को तुम स्वयं जलाते
हो। तुम अपने ही ढंग से रहना चाहते । किन्तु तुम्हें दण्ड
दिया जायेगा। तुम अपनी ही आग में गिरोगे और तुम्हारी
अपनी ही मशालें तुम्हें जला डालेंगी। ऐसी घटना मैं
घटवाऊँगा।"

इस्राएल को इब्राहीम के जैसा होना चाहिए

51 "तुममें से कुछ लोग उत्तम जीवन जीने का
कठिन प्रयत्न करते हो। तुम सहायता पाने को
यहोवा के निकट जाते हो। मेरी सुनो। तुम्हें अपने पिता
इब्राहीम की ओर देखना चाहिये। इब्राहीम ही वह पत्थर
की खदान है जिससे तुम्हें काटा गया है। 2इब्राहीम
तुम्हारा पिता है और तुम्हें उसी की ओर देखना चाहिये।
तुम्हें सारा की ओर निहारना चाहिये क्योंकि सारा ही
वह स्त्री है जिसने तुम्हें जन्म दिया है। इब्राहीम को जब
मैंने बुलाया था, वह अकेला था। तब मैंने उसे वरदान
दिया था और उसने एक बड़े परिवार की शुरुआत की
थी। उससे अनगिनत लोगों ने जन्म लिया।"

3सिय्योन पर्वत को यहोवा वैसे ही आशीर्वाद देगा।
यहोवा को यरूशलेम और उसके खंडहरों के लिये खेद
होगा और वह उस नगर के लिये कोई बहुत बड़ा काम
करेगा। यहोवा रेगिस्तान को बदल देगा। वह रेगिस्तान
अदन के उपवन के जैसे एक उपवन में बदल जायेगा।
वह उजाड़ स्थान यहोवा के बगीचे के जैसा हो जाएगा।
लोग अत्याधिक प्रसन्न होंगे। लोग वहाँ अपना आनन्द
प्रकट करेंगे। वे लोग धन्यवाद और विजय के गीत
गायेंगे।

4“हे मेरे लोगों, तुम मेरी सुनो! मेरी व्यवस्थाएँ प्रकाश के समान होंगी जो लोगों को दिखायेंगी कि कैसे जिया जाता है।

5मैं शीघ्र ही प्रकट करुँगा कि मैं न्यायपूर्ण हूँ। मैं शीघ्र ही तुम्हारी रक्षा करुँगा। मैं अपनी शक्ति को काम में लाऊँगा और मैं सभी राष्ट्रों का न्याय करुँगा। सभी दूर–दूर के देश मेरी बाट जोह रहे हैं। उनको मेरी शक्ति की प्रतीक्षा है जो उनको बचायेगी।

6ऊपर आकाशों को देखो। अपने चारों ओर फैली हुई धरती को देखो, आकाश ऐसे लोप हो जायेगा जैसे धुएँ का एक बादल खो जाता है और धरती ऐसे ही बेकार हो जायेगी जैसे पुराने वस्त्र मूल्यहीन होते हैं। धरती के वासी अपने प्राण त्यागेंगे किन्तु मेरी मुक्ति सदा ही बनी रहेगी। मेरी उत्तमता कभी नहीं मिटेगी।

7अरे ओ उत्तमता को समझने वाले लोगों, तुम मेरी बात सुनो। अरे ओ मेरी शिक्षाओं पर चलने वालो, तुम वे बातें सुनों जिनको मैं बताता हूँ। दुष्ट लोगों से तुम मत डरो। उन बुरी बातों से जिनको वे तुमसे कहते हैं, तुम भयभीत मत हो।

8क्यों? क्योंकि वे पुराने कपड़ों के समान होंगे और उनको कीड़े खा जायेंगे। वे ऊन के जैसे होंगे और उन्हें कीड़े चाट जायेंगे, किन्तु मेरा खरापन सदैव ही बना रहेगा और मेरी मुक्ति निरन्तर बनी रहेगी।”

परमेश्वर का सामर्थ्य उसके लोगों का रक्षा करता है

9यहोवा की भुजा (शक्ति) जाग–जाग। अपनी शक्ति को सज्जित कर! तू अपनी शक्ति का प्रयोग कर। तू वैसे जाग जा जैसे तू बहुत बहुत पहले जागा था। तू वही शक्ति है जिसने रहाब के छक्के छुड़ाये थे। तूने भयानक मगरमच्छ को हराया था।

10तूने सागर को सुखाया! तूने गहरे समुद्र को जल हीन बना दिया। तूने सागर के गहरे सतह को एक राह में बदल दिया और तेरे लोग उस राह से पार हुए और बच गये थे।

11यहोवा अपने लोगों की रक्षा करेगा। वे सिय्योन पर्वत की ओर आनन्द मनाते हुए लौट आयेंगे। ये सभी आनन्द मग्न होंगे। सारे ही दुःख उनसे दूर कहीं भागेंगे।

12यहोवा कहता है, “मैं वही हूँ जो तुमको चैन दिया करता है। इसलिए तुमको दूसरे लोगों से क्यों डरना चाहिए? वे तो बस मनुष्य है जो जिया करते हैं और मर जाते हैं। वे बस मानवमात्र हैं। वे वैसे मर जाते हैं जैसे घास मर जाती है।”

13यहोवा ने तुम्हें रचा है। उसने निज शक्ति से इस धरती को बनाया है! उसने निज शक्ति से धरती पर आकाश तान दिया किन्तु तुम उसको और उसकी शक्ति को भूल गये। इसलिए तुम सदा ही उन क्रोधित मनुष्यों से भयभीत रहते हो जो तुम को हानि पहुँचाते हैं। तुम्हारा नाश करने को उन लोगों ने योजना बनाई किन्तु आज वे कहाँ हैं? (वे सभी चले गये!)

14लोग जो बन्दी हैं, शीघ्र ही मुक्त हो जायेंगे। उन लोगों की मृत्यु काल कोठरी में नहीं होगी और न ही वे कारागार में सड़ते रहेंगे। उन लोगों के पास खाने को पर्याप्त होगा।

15“मैं ही यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हूँ। मैं ही सागर को झकोरता हूँ और मैं ही लहरें उठाता हूँ।” (उसका नाम सर्वशक्तिमान यहोवा है।)

16“मेरे सेवक, मैं तुझे वे शब्द दूँगा जिन्हें मैं तुझसे कहलवाना चाहता हूँ। मैं तुझे अपने हाथों से ढक कर तेरी रक्षा करुँगा। मैं तुझसे नया आकाश और नयी धरती बनवाऊँगा। मैं तुम्हारे द्वारा सिय्योन (इस्राएल) को यह कहलवाने के लिए कि ‘तुम मेरे लोग हों,’ तेरा उपयोग करुगा।”

परमेश्वर ने इस्राएल को दण्ड दिया।

17जाग! जाग! यरूशलेम, जाग उठ! यहोवा तुझसे बहुत ही कुपित था। इसलिए तुझको दण्ड दिया गया था। वह दण्ड ऐसा था जैसा जहर का कोई प्याला हो और वह तुझको पीना पड़े और उसे तूने पी लिया।

18यरूशलेम में बहुत से लोग हुआ करते थे किन्तु उनमें से कोई भी व्यक्ति उसकी अगुवाई नहीं कर सका। उसने पाल–पोस कर जिन बच्चों को बड़ा किया
था, उनमें से कोई भी उसे राह नहीं दिखा सका। 19दो
जोड़े विपत्ति यरुशलेम पर टूट पड़ी हैं, लूटपाट और अनाज की परेशानी तथा भयानक भूख और हत्याएँ।

जब तू विपत्ति में पड़ी थी, किसी ने भी तुझे सहारा
नहीं दिया, किसी ने भी तुझ पर तरस नहीं खाया। 20तेरे
लोग दुर्बल हो गये। वे वहाँ धरती पर गिर पड़े हैं और वहीं पड़े रहेंगे। वे लोग वहाँ हर गली के नुक्कड़ पर पड़े हैं। वे लोग ऐसे हैं जैसे किसी जाल में फंसा हिरण हो। उन लोगों पर यहोवा के कोप की मार तब तक पड़ती रही, जब तक वे ऐसे न हो गये कि और दण्ड झेल ही न सकें। परमेश्वर ने जब कहा कि उन्हें और दण्ड दिया जायेगा तो वे बहुत कमज़ोर हो गये।

21हे बेचारे यरूशलेम, तू मेरी सुन। तू किसी धुत्त व्यक्ति के समान दुर्बल है किन्तु तू दाखमधु पी कर धुत्त नहीं हुआ है, बल्कि तू तो ज़हर के उस प्याले को पीकर ऐसा दुर्बल हो गया है।

22तुम्हारा परमेश्वर और स्वामी वह यहोवा अपने लोगों के लिये युद्ध करेगा। वह तुमसे कहता है, “देखो! मैं ‘ज़हर के इस प्याले’ (दण्ड) को तुमसे दूर हटा रहा हूँ। मैं अपने क्रोध को तुम पर से हटा रहा हूँ। अब मेरे क्रोध से तुम्हें और अधिक दण्ड नहीं भोगना होगा।
23अब मैं अपने क्रोध की मार उन लोगों पर डालूँगा जो तुम्हें दुःख पहुँचाते हैं। वे लोग तुम्हें मार डालना चाहते

थे। उन लोगों ने तुमसे कहा था, 'हमारे आगे झुक जाओ। हम तुम्हें कुचल डालेंगे!' अपने सामने झुकाने के लिये उन्होंने तुम्हें विवश किया। फिर उन लोगों ने तुम्हारी पीठ को ऐसा बना डाला जैसे धूल-मिट्टी हो ताकि वे तुम्हें रौंद सकें। उनके लिए चलने के वास्ते तुम किसी राह के जैसे हो गये थे।"

इस्राएल का उद्धार होगा

52 जाग उठो! जाग उठो हे सिय्योन! अपने वस्त्र
को धारण करो! तुम अपनी शक्ति सम्भालो!
हे पवित्र यरूशलेम, तुम खड़े हो जाओ! ऐसे वे लोग
जिनको परमेश्वर का अनुसरण करना स्वीकार्य नहीं
हैं और जो स्वच्छ नहीं हैं, तुझमें फिर प्रवेश नहीं कर
पायेंगे।
2तू धूल झाड़ दे! तू अपने सुन्दर वस्त्र धारण कर! हे
यरूशलेम, हे सिय्योन की पुत्री, तू एक बन्दिनी थी
किन्तु अब तू स्वयं को अपनी गर्दन में बन्धी जंजीरों से
मुक्त कर!
3यहोवा का यह कहना है, "तुझे धन के बदले में नहीं
बेचा गया था। इसलिए धन के बिना ही तुझे बचा लिया
जायेगा।"
4मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मेरे लोग बस जाने के
लिए पहले मिस्र में गये थे, और फिर वे दास बन गये।
बाद में अश्शूर ने उन्हें बेकार में ही दास बना लिया था।
5अब देखो, यह क्या हो गया है! अब किसी दूसरे राष्ट्र ने
मेरे लोगों को ले लिया है। मेरे लोगों को ले जाने के लिए
इस देश ने कोई भुगतान नहीं किया था। यह देश मेरे
लोगों पर शासन करता है और उनकी हँसी उड़ाता है।
वहाँ के लोग सदा ही मेरे प्रति बुरी बातें कहा करते हैं।"
6यहोवा कहता है, "ऐसा इसलिये हुआ था कि मेरे
लोग मेरे बारे में जानें। मेरे लोगों को पता चल जायेगा
कि मैं कौन हूँ? मेरे लोग मेरा नाम जान जायेंगे और
उन्हें यह भी पता चल जायेगा कि वह मैं ही हूँ जो उनसे
बोल रहा हूँ।"
7सुसमाचार के साथ पहाड़ों के ऊपर से आते हुए
सन्देशवाहक को देखना निश्चय ही एक अद्भुत बात
है। किसी सन्देशवाहक को यह घोषणा करते हुए सुनना
कितना अद्भुत है: "वहाँ शांति का निवास है, हम बचा
लिये गये हैं! तुम्हारा परमेश्वर राजा है!"
8नगर के रखवाले जयजयकार करने लगे हैं। वे
आपस में मिलकर आनन्द मना रहे हैं! क्यों? क्योंकि
उनमें से हर एक यहोवा को सिय्योन को लौटकर आते
हुए देख रहा है।
9यरूशलेम, तेरे वे भवन जो बर्बाद हो चुके हैं फिर से
प्रसन्न हो जायेंगे। तुम सभी आपस में मिल कर आनन्द
मनाओगे। क्यों? क्योंकि यहोवा यरूशलेम पर दयालू हो
जायेगा। यहोवा अपने लोगों का उद्धार करेगा।
10यहोवा सभी राष्ट्रों के ऊपर अपनी पवित्र शक्ति
दर्शाएगा और सभी वे देश जो दूर-दूर बसे हैं, देखेंगे कि
परमेश्वर अपने लोगों की रक्षा कैसे करता है।
11तुम लोगों को चाहिए कि बाबुल छोड़ जाओ! वह
स्थान छोड़ दो! हे लोगों, उन वस्तुओं को ले चलने वाले
जो उपासना के काम आती हैं, अपने आप को पवित्र
करो। ऐसी कोई भी वस्तु जो पवित्र नहीं है, उसको मत
छुओ।
12तुम बाबुल छोड़ोगे किन्तु जल्दी में छोड़ने का तुम
पर कोई दबाव नहीं होगा। तुम पर कहीं दूर भाग जाने
का कोई दबाव नहीं होगा। तुम चल कर बाहर जाओगे
और यहोवा तुम्हारे साथ साथ चलेगा। तुम्हारी अगुवाई
यहोवा ही करेगा और तुम्हारी रक्षा के लिये इस्राएल का
परमेश्वर पीछे-पीछे भी होगा।

परमेश्वर का कष्ट सहता सेवक

13"मेरे सेवक की ओर देखो। यह बहुत सफल होगा।
यह बहुत महत्त्वपूर्ण होगा। आगे चल कर लोग उसे
आदर देंगे और उसका सम्मान करेंगे।" 14"किन्तु बहुत
से लोगों ने जब मेरे सेवक को देखा तो वे भौंचक्के रह
गये। मेरा सेवक इतनी बुरी तरह से सताया हुआ था कि
वे उसे एक मनुष्य के रुप में बड़ी कठिनता से पहचान
पाये। 15किन्तु और भी बड़ी संख्या में लोग उसे देख
कर चकित होंगे। राजा उसे देखकर आश्चर्य में पड़
जायेंगे और एक शब्द भी नहीं बोल पायेंगे। मेरे सेवक
के बारे में उन लोगों ने वह कहानी बस सुनी ही नहीं है,
जो कुछ हुआ था, बल्कि उन्होंने तो उसे देखा था। उन
लोगों ने उस कहानी को सुना भर नहीं था, बल्कि उसे
समझा था।"

53 हमने जो बातें बतायी थी; उनका सचमुच किसने
विश्वास किया? यहोवा के दण्ड को सचमुच
किसने स्वीकारा?
2यहोवा के सामने एक छोटे पौधे की तरह उसकी
बढ़वार हुई। वह एक ऐसी जड़ के समान था जो सूखी
धरती में फूट रही थी। वह कोई विशेष, नहीं दिखाई
देता था। न ही उसकी कोई विशेष महिमा थी। यदि हम
उसको देखते तो हमें उसमें कोई ऐसी विशेष बात नहीं
दिखाई देती, जिससे हम उसको चाह सकते। 3उस से
घृणा की गई थी और उसके मित्रों ने उसे छोड़ दिया
था। वह एक ऐसा व्यक्ति था जो पीड़ा को जानता था।
वह बीमारी को बहुत अच्छी तरह पहचानता था। लोग
उसे इतना भी आदर नहीं देते थे कि उसे देख तो लें।
हम तो उस पर ध्यान तक नहीं देते थे।
4किन्तु उसने हमारे पाप अपने ऊपर ले लिए। उसने
हमारी पीड़ा को हमसे ले लिया और हम यही सोचते रहे
कि परमेश्वर उसे दण्ड दे रहा है। हमने सोचा परमेश्वर
उस पर उसके कर्मो के लिये मार लगा रहा है। 5किन्तु

वह तो उन बुरे कामों के लिये बेधा जा रहा था, जो
हमने किये थे। वह हमारे अपराधों के लिए कुचला जा
रहा था। जो कर्ज़ हमें चुकाना था, यानी हमारा दण्ड
था, उसे वह चुका रहा था। उसकी यातनाओं के बदले
में हम चंगे (क्षमा) किये गये थे। 6किन्तु उसके इतना
करने के बाद भी हम सब भेड़ों की तरह इधर-उधर
भटक गये। हममें से हर एक अपनी-अपनी राह चला
गया। यहोवा द्वारा हमें हमारे अपराधों से मुक्त कर दिये
जाने के बाद और हमारे अपराध को अपने सेवक से
जोड़ देने पर भी हमने ऐसा किया।

7उसे सताया गया और दण्डित किया गया। किन्तु
उसने उसके विरोध में अपना मुँह नहीं खोला। वह वध
के लिये ले जायी जाती हुई भेड़ के समान चुप रहा। वह
उस मेमने के समान चुप रहा जिसका ऊन उतारा जा
रहा हो। अपना बचाव करने के लिये उसने कभी
अपना मुँह नहीं खोला। 8लोगों ने उस पर बल प्रयोग
किया और उसे ले गये। उसके साथ खेरपन से न्याय
नहीं किया गया। उसके भावी परिवार के प्रति कोई
कुछ नहीं कह सकता क्योंकि सजीव लोगों की धरती
से उसे उठा लिया गया। मेरे लोगों के पापों का भुगतान
करने के लिये उसे दण्ड दिया गया था।

9उसकी मृत्यु हो गयी और दुष्ट लोगों के साथ उसे
गाड़ा गया। धनवान लोगों के बीच उसे दफ़नाया गया।
उसने कभी कोई हिंसा नहीं की। उसने कभी झूठ नहीं
बोला किन्तु फिर भी उसके साथ ऐसी बातें घटीं।

10यहोवा ने उसे कुचल डालने का निश्चय किया।
यहोवा ने निश्चय किया कि वह यातनाएँ झेले। सो
सेवक ने अपना प्राण त्यागने को खुद को सौंप दिया।
किन्तु वह एक नया जीवन अनन्त-अनन्त काल तक
के लिये पायेगा। वह अपने लोगों को देखेगा। यहोवा
उससे जो करना चाहता है, वह उन बातों को पूरा करेगा।

11वह अपनी आत्मा में बहुत सी पीड़ाएँ झेलेगा किन्तु
वह घटने वाली अच्छी बातों को देखेगा। वह जिन बातों
का ज्ञान प्राप्त करता है, उनसे संतुष्ट होगा। मेरा वह
उत्तम सेवक बहुत से लोगों को उनके अपराधों से
छुटकारा दिलाएगा। वह उनके पापों को अपने सिर ले
लेगा। 12इसलिए मैं उसे बहुतों के साथ पुरस्कार का
सहभागी बनाऊँगा। वह इस पुरस्कार को विजेताओं के
साथ ग्रहण करेगा। क्यों? क्योंकि उसने अपना जीवन
दूसरों के लिए दे दिया।

उसने अपने आपको अपराधियों के बीच गिना जाने
दिया। जबकि उसने वास्तव में बहुतेरों के पापों को दूर
किया और अब वह पापियों के लिए प्रार्थना करता है।

परमेश्वर अपने लोगों को वापस लाता है

54 हे स्त्री, तू प्रसन्न से हो जा! तूने बच्चों को जन्म
नहीं दिया किन्तु फिर भी तुझे अति प्रसन्न
होना है। यहोवा ने कहा, "जो स्त्री अकेली है, उसकी
बहुत सन्तानें होंगी निस्बत उस स्त्री के जिस के पास
उसका पति है।"

2अपने तम्बू विस्तृत कर, अपने द्वार पूरे खोल। अपने
तम्बू को बढ़ने से मत रोक। अपने रस्सियाँ बढ़ा और
खूंटे मजबूत कर।

3क्यों? क्योंकि तू अपनी वंश-बेल दायें और बायें
फैलायेगी। तेरी सन्तानें अनेकानेक राष्ट्रों की धरती को
ले लेंगी और वे सन्तानें उन नगरों में फिर बसेंगी जो
बर्बाद हुए थे।

4तू भयभीत मत हो, तू लज्जित नहीं होगी। अपना मन
मत हार क्योंकि तुझे अपमानित नहीं होना होगा। जब तू
जवान थी, तू लज्जित हुई थी किन्तु उस लज्जा को अब
तू भूलेगी। अब तुझको वो लाज नहीं याद रखनी हैं तूने
जिसे उस काल में भोगा था जब तूने अपना पति खोया
था।

5क्यों? क्योंकि तेरा पति वही था जिसने तुझको रचा
था। उसका नाम सर्वशक्तिमान यहोवा है। वही इस्राएल
की रक्षा करता है, वही इस्राएल का पवित्र है और वही
समूची धरती का परमेश्वर कहलाता है!

6तू एक ऐसी स्त्री के जैसी थी जिसको उसके ही पति
ने त्याग दिया था। तेरा मन बहुत भारी था किन्तु तुझे
यहोवा ने अपना बनाने के लिये बुला लिया। तू उस स्त्री
के समान है जिसका बचपन में ही ब्याह हुआ और जिसे
उसके पति ने त्याग दिया है। किन्तु परमेश्वर ने तुम्हें
अपना बनाने के लिये बुला लिया है।

7तेरा परमेश्वर कहता है, "मैंने तुझे थोड़े समय के
लिये त्यागा था। किन्तु अब मैं तुझे फिर से अपने पास
आऊँगा और अपनी महा करुणा तुझ पर दर्शाऊँगा।

8मैं बहुत कुपित हुआ और थोड़े से समय के लिये
तुझसे छुप गया किन्तु अपनी महाकरुणा से मैं तुझको
सदा चैन दूँगा।" तेरे उद्धारकर्ता यहोवा ने यह कहा है।

परमेश्वर अपने लोगों से सदा प्रेम करता है

9परमेश्वर कहता है, "यह ठीक वैसा ही है जैसे नूह
के काल में मैंने बाढ़ के द्वारा दुनियाँ को दण्ड दिया था।
मैंने नूह को वरदान दिया कि फिर से मैं दुनियाँ पर बाढ़
नहीं लाऊँगा। उसी तरह तुझको, मैं वह वचन देता हूँ,
मैं तुझसे कुपित नहीं होऊँगा और तुझसे फिर कठोर
वचन नहीं बोलूँगा।"

10यहोवा कहता है, "चाहे पर्वत लुप्त हो जाये और ये
पहाड़ियाँ रेत में बदल जायें किन्तु मेरी करुणा तुझे कभी
भी नहीं त्यागेगी। मैं तुझसे मेल करुँगा और उस मेल
का कभी अन्त न होगा।" यहोवा तुझ पर करुणा दिखाता
है और उस यहोवा ने ही ये बातें बतायी हैं।

11"हे नगरी, हे दुखियारी! तुझको तुफानों ने सताया है
और किसी ने तुझको चैन नहीं दिया है। मैं तेरा मूल्यवान

पत्थरों से फिर से निर्माण करुँगा। मैं तेरी नींव फिरोजें और नीलम से धरुँगा।
12मैं तेरी दीवारें चुनने में मणिक को लगाऊँगा। तेरे द्वारों पर मैं दमकते हुए रत्नों को जड़ूँगा। तेरी सभी दीवारें मैं मूल्यवान पत्थरों से उठाऊँगा।
13तेरी सन्तानें यहोवा द्वारा शिक्षित होंगी। तेरी सन्तानों की सम्पन्नता महान होगी।
14मैं तेरा निर्माण खरेपन से करुँगा ताकि तू दमन और अन्याय से दूर रहे। फिर कुछ नहीं होगा जिससे तू डरेगी। तुझे हानि पहुँचाने कोई भी नहीं आयेगा।
15मेरी कोई भी सेना तुझसे कभी युद्ध नहीं करेगी और यदि कोई सेना तुझ पर चढ़ बैठने का प्रयत्न करे तो तू उस सेना को पराजित कर देगा।
16"देखो, मैंने लुहार को बनाया है। वह लोहे को तपाने के लिए धौंकनी धौंकता है। फिर वह तपे लोहे से जैसे चाहता है, वैसे औजार बना लेता है। उसी प्रकार मैंने 'विनाशकर्त्ता' को बनाया है जो वस्तुओं को नष्ट करता है।
17"तुझे हराने के लिए लोग हथियार बनायेंगे किन्तु वे हथियार तुझे कभी हरा नहीं पायेंगे। कुछ लोग तेरे विरोध में बोलेंगे। किन्तु हर ऐसे व्यक्ति को बुरा प्रमाणित किया जायेगा जो तेरे विरोध में बोलेगा।"
यहोवा कहता है, "यहोवा के सेवकों को क्या मिलता है? उन्हें न्यायिक विजय मिलती है। यह उन्हें मुझसे मिलती हैं।"

परमेश्वर ऐसा भोजन देता है जिससे सच्ची तृप्ति मिलती है

55 "हे प्यासे लोगों, जल के पास आओ। यदि तुम्हारे पास धन हीं है तो इसकी चिन्ता मत करो। आओ, खाना लो और खाओ। आओ, भोजन लो। तुम्हें इसकी कीमत देने की आवश्यकता नहीं है। बिना किसी कीमत के दूध और दाखमधु लो।
2व्यर्थ ही अपना धन ऐसी किसी वस्तु पर क्यों बर्बाद करते हो जो सच्चा भोजन नहीं है? ऐसी किसी वस्तु के लिये क्यों श्रम करते हो जो सचमुच में तुम्हें तृप्त नहीं करती? मेरी बात ध्यान से सुनो। तुम सच्चा भोजन पाओगे। तुम उस भोजन का आनन्द लोगे। जिससे तुम्हारा मन तृप्त हो जायेगा।
3जो कुछ मैं कहता हूँ, ध्यान से सुनों। मुझ पर ध्यान दो कि तुम्हारा प्राण सजीव हो। तुम मेरे पास आओ और मैं तुम्हारे साथ एक वाचा करुँगा जो सदा-सदा के लिये बना रहेगा। यह वाचा वैसी ही होगी जैसी वाचा दाऊद के संग मैंने की थी। मैंने दाऊद को वचन दिया था कि मैं उस पर सदा करुणा करुँगा और तुम उस वाचा के भरोसे रह सकते हो।
4मैंने अपनी उस शक्ति का दाऊद को साक्षी बनाया था जो सभी राष्ट्रों के लिये थी। मैंने दाऊद का बहुत देशों का प्रशासक और उनका सेनापति बनाया था।"
5अनेक अज्ञात देशों में अनेक अनजानी जातियाँ हैं। तू उन सभी जातियों को बुलायेगा, जो जातियाँ तुझ से अपरिचित हैं किन्तु वे भागकर तेरे पास आयेंगी। ऐसा घटेगा क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा ऐसा ही चाहता है। ऐसा घटेगा क्योंकि वह इस्राएल का पवित्र तुझको मान देता है।
6सो तुम यहोवा को खोजो। कहीं बहुत देर न हो जाये। अब तुम उसको पुकार लो जब तक वह तुम्हारे पास है।
7हे पापियों! अपने पापपूर्ण जीवन को त्यागो। तुमको चाहिये कि तुम बुरी बातें सोचना त्याग दो। तुमको चाहिये कि तुम यहोवा के पास लौट आओ। जब तुम ऐसा करोगे तो यहोवा तुम्हें सुख देगा। उन सभी को चाहिये कि वे यहोवा की शरण में आयें क्योंकि परमेश्वर हमें क्षमा करता है।

लोग परमेश्वर को नहीं समझ पायेंगे

8यहोवा कहता है, "तुम्हारे विचार वैसे नहीं, जैसे मेरे हैं। तुम्हारी राहें वैसी नहीं जैसी मेरी राहें हैं।
9जैसे धरती से ऊँचे स्वर्ग हैं वैसे ही तुम्हारी राहों से मेरी राहें ऊँची हैं और मेरे विचार तुम्हारे विचारों से ऊँचे हैं।" ये बातें स्वयं यहोवा ने ही कहीं हैं।
10"आकाश से वर्षा और हिम गिरा करते हैं और वे फिर वहीं नहीं लौट जाते जब तक वे धरती को नहीं छू लेते हैं और धरती को गीला नहीं कर देते हैं। फिर धरती पौधों को अंकुरित करती है और उनको बढ़ाती है और वे पौधे किसानों के लिये बीज को उपजाते हैं और लोग उन बीजों से खाने के लिये रोटियाँ बनाते हैं।
11ऐसे ही मेरे मुख में से मेरे शब्द निकलते हैं और जब तक घटनाओं को घटा नहीं लेते, वे वापस नहीं आते हैं। मेरे शब्द ऐसी घटनाओं को घटाते हैं जिन्हें मैं घटवाना चाहता हूँ। मेरे शब्द वे सभी बातें पूरी करा लेते हैं जिनको करवाने को मैं उनको भेजता हूँ।
12जब तुम्हें आनन्द से भरकर शांति और एकता के साथ में उस धरती से छुड़ाकर ले जाया जा रहा होगा जिसमें तुम बन्दी थे, तो तुम्हारे सामने खुशी में पहाड़ फट पड़ेंगे और थिरकने लगेंगे। पहाड़ियाँ नृत्य में फूट पड़ेंगी। तुम्हारे सामने जगंल के सभी पेड़ ऐसे हिलने लगेंगे जैसे तालियाँ पीट रहे हो।
13जहाँ कंटीली झाड़ियाँ उगा करती हैं वहाँ देवदार के विशाल वृक्ष उगेंगे। जहाँ खरपतवार उगा करते थे, वहाँ हिना के पेड़ उगेंगे। ये बातें उस यहोवा को प्रसिद्ध करेंगी। ये बातें प्रमाणित करेंगी कि यहोवा शक्तिपूर्णहै। यह प्रमाण कभी नष्ट नहीं होगा।"

सभी जातियाँ यहोवा का अनुसरण करेंगी

56 यहोवा ने यें बातें कही थीं, “सब लोगों के
साथ वही काम करो जो न्यायपूर्ण हों! क्यों?
क्योंकि मेरा उद्धार शीघ्र ही तुम्हारे पास आने को है।
सारे संसार में मेरा छुटकारा शीघ्र ही प्रकट होगा।”
2ऐसा व्यक्ति जो सब्त के दिन–सम्बन्धी परमेश्वर के
नियम का पालन करता है, धन्य होगा और वह व्यक्ति
जो बुरा नहीं करेगा, प्रसन्न रहेगा। 3कुछ ऐसे लोग जो
यहूदी नहीं हैं, अपने को यहोवा से जोड़ेंगे। ऐसे व्यक्तियों
को यह नहीं कहना चाहिये: “यहोवा अपने लोगों में मुझे
स्वीकार नहीं करेगा।” किसी हिजड़े को यह नहीं कहना
चाहिये: “मैं लकड़ी का एक सूखा टुकड़ा हूँ। मैं किसी
बच्चे को जन्म नहीं दे सकता।”
4-5इन हिजड़ों को एसी बातें नहीं कहनी चाहिये क्योंकि
यहोवा ने कहा है “इनमें से कुछ हिजड़े सब्त के नियमों
का पालन करते हैं और जो मैं चाहता हूँ, वे वैसा ही
करना चाहते हैं। वे सच्चे मन से मेरी वाचा का पालन
करते हैं। इसलिये मैं अपने मन्दिर में उनके लिए यादगार
का एक पत्थर लगाऊँगा। मेरे नगर में उनका नाम याद
किया जायेगा। हाँ! मैं उन्हें पुत्र–पुत्रियों से भी कुछ
अच्छा दूँगा। उन हिजड़ों को मैं एक नाम दूँगा जो
सदा–सदा बना रहेगा। मेरे लोगों से वे काट कर अलग
नहीं किये जायेंगे।”
6कुछ ऐसे लोग जो यहूदी नहीं हैं, अपने आपको
यहोवा से जोड़ेंगे। वे ऐसा इसलिये करेंगे कि यहोवा की
सेवा और यहोवा के नाम को प्रेम कर पायें। यहोवा के
सेवक बनने के लिये वे स्वयं को उससे जोड़ लेंगे। वे
सब्त के दिन को उपासना के एक विशेष दिन के रुप
में माना करेंगे और वे मेरी वाचा (विधान) का गम्भीरता
से पालन करेंगे। 7यहोवा कहता है, “मैं उन लोगों को
अपने पवित्र पर्वत पर लाऊँगा। अपने प्रार्थना भवन में
मैं उन्हें आनन्द से भर दूँगा। वे जो भेंट और बलियाँ मुझे
अर्पित करेंगे, मैं उनसे प्रसन्न होऊँगा। क्यों? क्योंकि
मेरा मन्दिर सभी जातियों का प्रार्थना का गृह कहलायेगा।”
8परमेश्वर ने इस्राएल के देश निकाला दिये इस्राएलियों
को परस्पर इकट्ठा किया। मेरा स्वामी यहोवा जिसने
यह किया, कहता है, “मैंने जिन लोगों को एक साथ
इकट्ठा किया, उन लोगों के समूह में दूसरे लोगों को
भी इकट्ठा करुँगा।

परमेश्वर का अपनी सेवा के लिये सबको बुलावा

9हे वन के पशुओं! तुम सभी खाने पर आओ।
10ये धर्म के रखवाले (नबी) सभी नेत्रहीन हैं। उनको
पता नहीं कि वे क्या कर रहे हैं। वे उस गूँगे कुत्ते के
समान हैं जो नहीं जानता कि कैसे भौंका जाता है? वे
धरती पर लोटते हैं और सो जाते हैं। हाय! उनको नींद
प्यारी है।
11वे लोग ऐसे हैं जैसे भूखें कुत्ते हों। जिनको कभी भी
तृप्ति नहीं होती। वे ऐसे चरवाहे हैं जिनको पता तक नहीं
कि वे क्या कर रहे हैं? वे उस की अपनी उन भेड़ों से
हैं जो अपने रास्ते से भटक कर कहीं खो गयी। वे
लालची हैं उनको तो बस अपना पेट भरना भाता है।
12वे कहा करते हैं, “आओ थोड़ी दाखमधु ले और
उसे पीयें यव सुरा भरपेट पियें। हम कल भी यही करेंगे,
कल थोड़ी और अधिक पियेंगे।

इस्राएल परमेश्वर की नहीं मानता है

57 अच्छे लोग चले गये किन्तु इस पर तो ध्यान
किसी ने नहीं दिया। लोग समझते नहीं हैं कि
क्या कुछ घट रहा है। भले लोग एकत्र किये गये। लोग
समझते नहीं कि विपत्तियाँ आ रही हैं। उन्हें पता तक
नहीं हैं कि भले लोग रक्षा के लिये एकत्र किये गये।
2किन्तु शान्ति आयेगी और लोग आराम से अपने
बिस्तरों में सोयेंगे और लोग उसी तरह जीयेंगे जैसे परमेश्वर
उनसे चाहता हैं।
3“हे चुड़ैलों के बच्चों, इधर आओ। तुम्हारा पिता
व्यभिचार का पापी है। तुम्हारी माता अपनी देह यौन
व्यापार में बेचा करती है। इधर आओ!
4हे विद्रोहियों और झूठी सन्तानों, तुम मेरी हँसी उड़ाते
हो। मुझ पर अपना मुँह चिढ़ाते हो। तुम मुझ पर जीभ
निकालते हो।
5तुम सभी लोग हरे पेड़ों के तले झूठे देवताओं के
कारण कामातुर होते हो। हर नदी के तीर पर तुम बाल
वध करते हो और चट्टानी जगहों पर उनकी बलि देते
हो।
6नदी की गोल बट्टियों को तुम पूजना चाहते हो। तुम
उन पर दाखमधु उनकी पूजा के लिये चढ़ाते हो। तुम
उन पर बलियों को चढ़ाया करते हो किन्तु तुम उनके
बदले बस पत्थर ही पाते हो। क्या तुम यह सोचते हो कि
मैं इससे प्रसन्न होता हूँ? नहीं! यह मुझको प्रसन्न नहीं
करता है। तुम हर किसी पहाड़ी और हर ऊँचे पर्वत
पर अपना बिछौना बनाते हो।
7तुम उन ऊँची जगहों पर जाया करते हो और तुम
वहाँ बलियाँ चढ़ाते हो।
8और फिर तुम उन बिछौने के बीच जाते हो और
मेरे विरुद्ध तुम पाप करते हो। उन देवों से तुम प्रेम
करते हो। वे देवता तुमको भाते हैं। तुम मेरे साथ में थे
किन्तु उनके साथ होने के लिये तुमने मुझको त्याग
दिया। उन सभी बातों पर तुमने परदा डाल दिया जो तुम्हें
मेरी याद दिलाती हैं। तुमने उनको द्वारों के पीछे और
द्वार की चौखटों के पीछे छिपाया और तुम उन झूठे
देवताओं केपास उन के संग वाचा करने को जाते हो।
9तुम अपना तेल और फुलेल लगाते हो ताकि तुम
अपने झूठे देवता मोलक के सामने अच्छे दिखो। तुमने

अपने दूत दूर-दूर देशों को भेजे हैं और इससे ही तुम नरक में,मृत्यु के देश में गिरोगे।

इस्राएल को परमेश्वर का विश्वास करना चाहिये न कि मूर्तियों का

10इन बातों को करने में तूने परिश्रम किया है। फिर भी तू कभी भी नहीं थका। तुझे नई शक्ति मिलती रही क्योंकि इन बातों में तूने रस लिया।

11तूने मुझको कभी नहीं याद किया यहाँ तक कि तूने मुझ पर ध्यान तक नहीं दिया! सो तू किसके विषय में चिन्तित रहा करता था? तू किससे भयभीत रहता था? तू झूठ क्यों कहता था? देख मैं बहुत दिनों से चुप रहता आया हूँ और फिर भी तूने मेरा आदर नहीं किया।

12तेरी 'नेकी' का मैं बखान कर सकता था और तेरे उन धार्मिक कर्मों का जिनको तू करता है, बखान कर सकता था। किन्तु वे बातें अर्थहीन और व्यर्थ हैं!

13जब तुझको सहारा चाहिये तो तू उन झूठे देवों को जिन्हें तूने अपने चारों ओर जुटाया है, क्यों नहीं पुकारता है। किन्तु मैं तुझको बताता हूँ कि उन सब को आँधी उड़ा देगी। हवा का एक झोंका उन्हें तुम से छीन ले जायेगा। किन्तु वह व्यक्ति जो मेरे सहारे है, धरती को पायेगा। ऐसा ही व्यक्ति मेरे पवित्र पर्वत को पायेगा।

यहोवा अपने भक्तों की रक्षा करेगा

14रास्ता साफ कर! रास्ता साफ करो! मेरे लोगों के लिये राह को साफ करो!

15वह जो ऊँचा है और जिसको ऊपर उठाया गया है, वह जो अमर है, वह जिसका नाम पवित्र है, वह यह कहता है: मैं एक ऊँचे और पवित्र स्थान पर रहा करता हूँ किन्तु मैं उन लोगों के बीच भी रहता हूँ जो दुःखी और विनम्र हैं। ऐसे उन लोगों को मैं नया जीवन दूँगा जो मन से विनम्र हैं। ऐसे उन लोगों को मैं नया जीवन दूँगा जो हृदय से दुःखी हैं।

16मैं सदा-सदा ही मुकद्दमा लड़ता रहूँगा। सदा-सदा ही मैं तो क्रोधित नहीं रहूँगा। यदि मैं कुपित ही रहूँ तो मनुष्य की आत्मा यानी वह जीवन जिसे मैंने उनको दिया है, मेरे सामने ही मर जायेगा।

17उन्होंने लालच से हिंसा भरे स्वार्थ साधे थे और उसने मुझको क्रोधित कर दिया था। मैंने इस्राएल को दण्ड दिया। मैंने उसे निकाल दिया क्योंकि मैं उस पर क्रोधित था और इस्राएल ने मुझको त्याग दिया। जहाँ कहीं इस्राएल चाहता था, चला गया।

18मैंने इस्राएल की राहें देख ली थी। किन्तु मैं उसे क्षमा (चंगा) करूँगा। मैं उसे चैन दूँगा और ऐसे वचन बोलूँगा जिस से उसको आराम मिले और मैं उसको राह दिखाऊँगा। फिर उसे और उसके लोगों को दुःख नहीं छू पायेगा।

19उन लोगों को मैं एक नया शब्द शान्ति सिखाऊँगा। मैं उन सभी लोगों को शान्ति दूँगा जो मेरे पास हैं और उन लोगों को जो मुझ से दूर हैं। मैं उन सभी लोगों को चंगा (क्षमा) करूँगा!" यहोवा ने ये सभी बातें बतायी थी।

20किन्तु दुष्ट लोग क्रोधित सागर के जैसे होते हैं। वे चुप या शांत नहीं रह सकते। वे क्रोधित रहते हैं और समुद्र की तरह कीचड़ उछालते रहते हैं। मेरे परमेश्वर का कहना है: 21"दुष्ट लोगों के लिए कहीं कोई शांति नहीं है।"

लोगों से कहो कि वे परमेश्वर का अनुसरण करें

58 जोर से पुकारो, जितना तुम पुकार सको! अपने को मत रोको! जोर से पुकारो जैसे नरसिंगा गरजता है! लोगों को उनके बुरे कामों के बारे में जो उन्होंने किये हैं, बताओ! याकूब के घराने को उनके पापों के बारे में बताओ!

2वे सभी प्रतिदिन मेरी उपासना को आते हैं और वे मेरी राहों को समझना चाहते हैं वे ठीक वैसा ही आचरण करते हैं जैसे वे लोग किसी ऐसी जाति के हों जो वही करती है जो उचित होता है। जो अपने परमेश्वर का आदेश मानते हैं। वे मुझसे चाहते हैं कि उनका न्याय निष्पक्ष हो। वे चाहते हैं कि परमेश्वर उनके पास रहे।

3अब वे लोग कहते हैं, "तेरे प्रति आदर दिखाने के लिये हम भोजन करना बन्द कर देते हैं। तू हमारी ओर देखता क्यों नहीं? तेरे प्रति आदर व्यक्त करने के लिये हम अपनी देह को क्षति पहुँचाते हैं। तू हमारी ओर ध्यान क्यों नहीं देता?"

किन्तु यहोवा कहता है, "उपवास के उन दिनों में उपवास रखते हुए तुम्हें आनन्द आता है किन्तु उन्हीं दिनों तुम अपने दासों का खून चूसते हो। 4जब तुम उपवास करते हो तो भूख की वजह से लड़ते-झगड़ते हो और अपने दुष्ट मुक्कों से आपस में मारा-मारी करते हो। यदि तुम चाहते हो कि स्वर्ग में तुम्हारी आवाज सुनी जाये तो तुम्हें उपवास ऐसे नहीं रखना चाहिये जैसे तुम आज कल रखते हो। 5तुम क्या यह सोचते हो कि भोजन नहीं करने के उन विशेष दिनों में बस मैं लोगों को अपने शरीरों को दुःख देते देखना चाहता हूँ? क्या तुम ऐसा सोचते हो कि मैं लोगों को दुःखी देखना चाहता हूँ? क्या तुम यह सोचते हो कि मैं लोगों को मुरझाये हुए पौधों के समान सिर लटकाये और शोक वस्त्र पहनते देखना चाहता हूँ? क्या तुम यह सोचते हो कि मैं लोगों को अपना दुःख प्रकट करने के लिये राख में बैठे देखना चाहता हूँ? यही तो वह सब कुछ है जो तुम खाना न खाने के दिनों में करते हो। क्या तुम ऐसा सोचते हो कि यहोवा तुमसे बस यही चाहता है?

6“मैं तुम्हें बताऊँगा कि मुझे कैसा विशेष दिन
चाहिये–एक ऐसा दिन जब लोगों को आज़ाद किया
जाये। मुझे एक ऐसा दिन चाहिये जब तुम लोगों के बोझ
को उन से दूर कर दो। मैं एक ऐसा दिन चाहता हूँ जब
तुम दु:खी लोगों को आज़ाद कर दो। मुझे एक ऐसा
दिन चाहिये जब तुम उनके कंधों से भार उतार दो। 7मैं
चाहता हूँ कि तुम भूखे लोगों के साथ अपने खाने की
वस्तुएँ बाँटो। मैं चाहता हूँ कि तुम ऐसे गरीब लोगों को
ढूँढो जिनके पास घर नहीं है और मेरी इच्छा है कि तुम
उन्हें अपने घरों में ले आओ। तुम जब किसी ऐसे व्यक्ति
को देखो, जिसके पास कपड़े न हों तो उसे अपने कपड़े
दे डालो। उन लोगों की सहायता से मुँह मत मोड़ो, जो
तुम्हारे अपने हों।”
8यदि तुम इन बातों को करोगे तो तुम्हारा प्रकाश
प्रभात के प्रकाश के समान चमकने लगेगा। तुम्हारे
जख्म भर जायेंगे। तुम्हारी “नेकी” (परमेश्वर) तुम्हारे
आगे–आगे चलने लगेगी और यहोवा की महिमा तुम्हारे
पीछे–पीछे चली आयेगी। 9तुम तब यहोवा को जब पुकारोगे,
तो यहोवा तुम्हें उसका उत्तर देगा। जब तुम यहोवा को
पुकारोगे तो वह कहेगा, “मैं यहाँ हूँ।”

परमेश्वर के लोगों को नेकी करनी चाहिए

तुम्हें लोगों का दमन करना और लोगों को दु:ख देना
छोड़ देना चाहिये। तुम्हें लोगों से किसी बातों के लिये
कड़वे शब्द बोलना और उन पर लांछन लगाना छोड़
देना चााहिये। 10तुम्हें भूखों की भूख के लिये दु:ख का
अनुभव करते हुए उन्हें भोजन देना चाहिये। दु:खी लोगों
की सहायता करते हुए तुम्हें उनकी आवश्यकताओं
को पूरा करना चाहिये। जब तुम ऐसा करोगे तो अन्धेरे
में तुम्हारी रोशनी चमक उठेगी और तुम्हें कोई दु:ख
नहीं रह जायेगा। तुम ऐसे चमक उठोगे जैसे दोपहर के
समय धूप चमकती है।
11यहोवा सदा तुम्हारी अगुवाई करेगा। मरुस्थल में
भी वह तेरे मन की प्यास बुझायेगा। यहोवा तेरी हड्डियों
को मज़बूत बनायेगा। तू एक ऐसे बाग़ के समान होगा
जिसमें पानी की बहुतायत है। तू एक ऐसे झरने के
समान होगा जिसमें सदा पानी रहता है।
12बहुत वर्षो पहले तुम्हारे नगर उजाड़ दिये गये थे।
इन नगरों को तुम नये सिरे से फिर बसाओगे। इन
नगरों का निर्माण तुम इनकी पुरानी नीवों पर करोगे।
तुम टूटे परकोटे को बनाने वाले कहलाओगे और तुम
मकानों और रास्तों को बहाल करने वाले कहलाओगे।
13ऐसा उस समय होगा जब तू सब्त के बारे में परमेश्वर
के नियमों के विरुद्ध पाप करना छोड़ देगा और ऐसा
उस समय होगा जब तू उस विशेष दिन, स्वयं अपने
आप को प्रसन्न करने के कामों को करना रोक देगा।
सब्त के दिन को तुझे एक खुशी का दिन कहना
चाहिये। यहोवा के इस विशेष दिन का तुझे आदर
करना चाहिये। जिन बातों को तू हर दिन कहता और
करता है, उनको न करते हुए तुझे उस विशेष दिन का
आदर करना चाहिये।
14तब तू यहोवा में प्रसन्नता प्राप्त करेगा, और मैं
यहोवा धरती के ऊँचे–ऊँचे स्थानों पर “मैं तुझको ले
जाऊँगा। मैं तेरा पेट भरुँगा। मैं तुझको ऐसी उन वस्तुओं
को दूँगा जो तेरे पिता याकूब के पास हुआ करतीथीं।”
ये बातें यहोवा ने बतायी थी!

दुष्ट लोगों को अपना जीवन बदलना चाहिये

59 देखो, तुम्हारी रक्षा के लिये यहोवा की शक्ति
पर्याप्त है। जब तुम सहायता के लिये उसे
पुकारते हो तो वह तुम्हारी सुन सकता है। 2किन्तु
तुम्हारे पाप तुम्हें तुम्हारे परमेश्वर से अलग करते हैं
और इसीलिए वह तुम्हारी तरफ से कान बन्द कर लेता
है।
3तुम्हारे हाथ गन्दे हैं, वे खून से सने हुए हैं। तुम्हारी
उँगलियाँ अपराधों से भरी हैं। अपने मुँह से तुम झूठ
बोलते हो। तुम्हारी जीभ बुरी बातें करती है। 4दूसरे
व्यक्ति के बारे में कोई व्यक्ति सच नहीं बोलता। लोग
अदालत में एक दूसरे के खिलाफ़ मुकद्दमा करते हैं।
अपने मुकद्दमे जीतने के लिये वे झूठे तर्कों पर निर्भर
करते हैं। वे एक दूसरे के बारे में परस्पर झूठ बोलते हैं।
वे कष्ट को गर्भ में धारण करते हैं और बुराईयों को
जन्म देते हैं। 5वे साँप के विष भरे अण्डों के समान
बुराई को सेते हैं। यदि उनमें से तुम एक अण्डा भी खा
लो तो तुम्हारी मृत्यु हो जाये और यदि तुम उनमें से
किसी अण्डे को फोड़ दो तो एक ज़हरीला नाग बाहर
निकल पड़े।
लोग झूठ बोलते हैं। यह झूठ मकड़ी के जालों जैसी
कपड़े नहीं बन सकते। 6उन जालों से तुम अपने को
ढक नहीं सकते।
कुछ लोग बदी करते हैं और अपने हाथों से दूसरों
को हानि पहुँचाते हैं। 7ऐसे लोग अपने पैरों का प्रयोग
बदी के पास पहुँचने के लिए करते हैं। ये लोग निर्दोष
व्यक्तियों को मार डालने की जल्दी में रहते हैं। वे बुरे
विचारों में पड़े रहते हैं। वे जहाँ भी जाते हैं विनाश और
विध्वंस फैलाते हैं।
8ऐसे लोग शांति का मार्ग नहीं जानते। उनके जीवन
में नेकी तो होती ही नहीं। उनके रास्ते ईमानदारी के
नहीं होते। कोई भी व्यक्ति जो उनके जैसा जीवन जीता
है, अपने जीवन में कभी शांति नहीं पायेगा।

इस्राएल के पापों से विपत्ति का आना

9इसलिए परमेश्वर का न्याय और मुक्ति हमसे बहुत
दूर है। हम प्रकाश की बाट जोहते हैं। पर बस केवल

अन्धकार फैला है। हमको चमकते प्रकाश की आशा है किन्तु हम अन्धेरे में चल रह हैं।

10हम ऐसे लोग हैं जिनके पास आँखें नहीं है। नेत्रहीन लोगों के समान हम दीवारों को टटोलते चलते हैं। हम ठोकर खाते हैं और गिर जाते हैं जैसे यह रात हो। दिन के प्रकाश में भी हम मुर्दो की भाँति गिर पड़ते हैं।

11हम सब बहुत दुःखी हैं। हम सब ऐसे कराहते हैं जैसे कोई रीछ और कोई कपोत कराहाता है। हम ऐसे उस समय की बाट जोह रहे हैं जब लोग निष्पक्ष होंगे किन्तु अभी तक तो कहीं भी नेकी नहीं है। हम उद्धार की बाट जोह रहे हैं किन्तु उद्धार बहुत–बहुत दूर है।

12क्यों? क्योंकि हमने अपने परमेश्वर के विरोध में बहुत पाप किये हैं। हमारे पाप बताते है कि हम बहुत बुरे हैं। हमें इसका पता है कि हम इन बुरे कर्मों को करने के अपराधी हैं।

13हमने पाप किये थे और हमने अपने यहोवा से मुख मोड़ लिया था। यहोवा से हम विमुख हुए और उसे त्याग दिया। हमने बुरे कर्मों की योजना बनाई थी। हमने ऐसी उन बातों की योजना बनाई थी जो हमारे परमेश्वर के विरोध में थी। हमने वे बातें सोची थी और दूसरों को सताने की योजना बनाई थी।

14हमसे नेकी को पीछे ढकेला गया। निष्पक्षता दूर ही खड़ी रही। गलियों में सत्य गिर पड़ा था मानों नगर में अच्छाई का प्रवेश नहीं हुआ।

15सच्चाई चली गई और वे लोग लूटे गये जो भला करना चाहते थे। यहोवा ने ढूँढा था किन्तु कोई भी, कहीं भी अच्छाई न मिल पायी।

16यहोवा ने खोज देखा किन्तु उसे कोई व्यक्ति नहीं मिला जो लोगों के साथ खड़ा हो और उनको सहारा दे। इसलिये यहोवा ने स्वयं अपनी शक्ति का और स्वयं अपनी नेकी का प्रयोग किया और यहोवा ने लोगों को बचा लिया।

17यहोवा ने नेकी का कवच पहना। यहोवा ने उद्धार का शिरस्त्राण धारण किया। यहोवा ने दण्ड के बने वस्त्र पहने थे। यहोवा ने तीव्र भावनाओं का चोगा पहना था

18यहोवा अपने शत्रु पर क्रोधित है सो यहोवा उन्हें ऐसा दण्ड देगा जैसा उन्हें मिलना चाहिये। यहोवा अपने शत्रुओं से कुपित है सो यहोवा सभी दूर–दूर के देशों के लोगों को दण्ड देगा। यहोवा उन्हें वैसा दण्ड देगा जैसा उन्हें मिलना चाहिये।

19फिर पश्चिम के लोग यहोवा के नाम को आदर देंगे और पूर्व के लोग यहोवा की महिमा से भय विस्मित हो जायेंगे। यहोवा ऐसे ही शीघ्र आ जायेगा जैसे तीव्र नदी बहती हुई आ जाती है। यह उस तीव्र वायु वेग सा होगा जिसे यहोवा उस नदी को तूफान बहाने के लिये भेजता है।

20फिर सिय्योन पर्वत पर एक उद्धार कर्ता आयेगा। वह याकूब के उन लोगों के पास आयेगा जिन्होंने पाप तो किये थे किन्तु जो परमेश्वर की ओर लौट आए थे।

21यहोवा कहता है: "मैं उन लोगों के साथ एक वाचा करुँगा। मैं वचन देता हूँ मेरी आत्मा और मेरे शब्द जिन्हें मैं तेरे मुख में रख रहा हूँ तुझे कभी नहीं छोड़ेंगे। वे तेरी संतानों और तेरे बच्चों के बच्चों के साथ रहेंगे। वे आज तेरे साथ रहेंगे और सदा–सदा तेरे साथ रहेंगे।"

परमेश्वर आ रहा है

60 "हे यरूशलेम, हे मेरे प्रकाश, तू उठ जाग! तेरा प्रकाश (परमेश्वर) आ रहा है! यहोवा की महिमा तेरे ऊपर चमकेगी।

2आज अन्धेरे ने सारा जग और उसके लोगों को ढक रखा है। किन्तु यहोवा का तेज प्रकट होगा और तेरे ऊपर चमकेगा। उसका तेज तेरे ऊपर दिखाई देगा।

3उस समय सभी देश तेरे प्रकाश (परमेश्वर) के पास आयेंगे। राजा तेरे भव्य तेज के पास आयेंगे।

4अपने चारों ओर देख! देख, तेरे चारों ओर लोग इकट्ठे हो रहे हैं और तेरी शरण में आ रहे हैं। ये सभी लोग तेरे पुत्र हैं जो दूर अति दूर से आ रहे हैं और उनके साथ तेरी पुत्रियाँ आ रही हैं।

5ऐसा भविष्य में होगा और ऐसे समय में जब तुम अपने लोगों को देखोगे तब तुम्हारे मुख खुशी से चमक उठेंगे। पहले तुम उत्तेजित होगे किन्तु फिर आनन्दित होवोगे। समुद्र पार देशों की सारी धन दौलत तेरे सामने धरी होगी। तेरे पास देशों की सम्पत्तियाँ आयेंगी।

6मिद्यान और एपा देशों के ऊँटों के झुण्ड तेरी धरती को ढक लेंगे। शिबा के देश से ऊँटों की लम्बी पंक्तियाँ तेरे यहाँ आयेंगी। वे सोना और सुगन्ध लायेंगे। लोग यहोवा के प्रशंसा के गीत गायेंगे।

7केदार की भेड़ें इकट्ठी की जायेंगी और तुझको दे दी जायेंगी। नबायोत के मेढ़े तेरे लिये लाये जायेंगे। वे मेरी वेदी पर स्वीकर करने के लायक बलियाँ बनेंगे और मैं अपने अद्भुत मन्दिर और अधिक सुन्दर बनाऊँगा।

8इन लोगों को देखो! ये तेरे पास ऐसी जल्दी में आ रहे हैं जैसे मेघ नभ को जल्दी पार करते हैं। ये ऐसे दिख रहे हैं जैसे अपने घोंसलों की ओर उड़ते हुए कपोत हों।

9सुदूर देश मेरी प्रतिक्षा में हैं। तर्शीश के बड़े–बड़े जलयान जाने को तत्पर है। ये जलयान तेरे वंशजों को दूर–दूर देशों से लाने को तत्पर हैं और इन जहाजों पर उनका स्वर्ण उनके साथ आयेगा और उनकी चाँदी भी ये जहाज लायेंगे। ऐसा इसलिये होगा कि तेरे परमेश्वर यहोवा का आदर हो। ऐसा इसलिये होगा कि इस्राएल का पवित्र अद्भुत काम करता है।

10दूसरे देशों की सन्तानें तेरी दीवारें फिर उठायेंगी और उनके शासक तेरी सेवा करेंगे। जब मैं तुझसे

क्रोधित हुआ था, मैंने तुझको दुःख दिया किन्तु अब मेरी इच्छा है कि तुझ पर कृपालु बनूँ। इसलिये तुझको मैं चैन दूँगा।

11तेरे द्वार सदा ही खुले रहेंगे। वे दिन अथवा रात में कभी बन्द नहीं होंगे। देश और राजा तेरे पास धन लायेंगे।

12कुछ जाति और कुछ राज्य तेरी सेवा नहीं करेंगे किन्तु वे जातियाँ और राज्य नष्ट हो जायेंगे।

13लबानोन की सभी महावस्तुएं तुझको अर्पित की जायेंगी। लोग तेरे पास देवदार, तालीशपत्र और सरों के पेड़ लायेंगे। यह स्थान मेरे सिहांसन के सामने एक चौकी सा होगा और मैं इसको बहुत मान दूँगा।

14वे ही लोग जो पहले तुझको दुःख दिया करते थे, तेरे सामने झुकेंगे। वे ही लोग जो तुझसे घृणा करते थे, तेरे चरणों में झुक जायेंगे। वे ही लोग तुझको कहेंगे, 'यहोवा का नगर,' 'सिय्योन नगर इस्राएल के पवित्र का है।'"

नया इस्राएल शांति का देश

15"फिर तुझको अकेला नहीं छोड़ा जायेगा। फिर कभी तुझसे घृणा नहीं होगी। तू फिर से कभी भी उजड़ेगी नहीं। तू महान रहेगी, तू सदा और सर्वदा आनन्दित रहेगी।

16तेरी जरुरत की वस्तुएँ तुझको जातियाँ प्रदान करेंगी। यह इतना ही सहज होगा जैसे दूध मुँह बच्चे को माँ का दूध मिलता है। वैसे ही तू शासकों की सम्पत्तियाँ पियेगी। तब तुझको पता चलेगा कि यह मैं यहोवा हूँ जो तेरी रक्षा करता है। तुझको पता चल जायेगा कि वह याकूब का महामहिम तुझको बचाता है।

17फिलहाल तेरे पास ताँबा है परन्तु इसकी जगह मैं तुझको सोना दूँगा। अभी तो तेरे पास लोहा है, पर उसकी जगह तुझे चाँदी दूँगा। तेरी लकड़ी की जगह मैं तुझको ताँबा दूँगा। तेरे पत्थरों की जगह तुझे लोहा दूँगा और तुझे दण्ड देने की जगह मैं तुझे सुख चैन दूँगा। जो लोग अभी तुझको दुःख देते हैं वे ही लोग तेरे लिये ऐसे काम करेंगे जो तुझे सुख देंगे।

18तेरे देश में हिंसा और तेरी सीमाओं में तबाही और बरबादी कभी नहीं सुनाई पड़ेगी। तेरे देश में लोग फिर कभी तेरी वस्तुएँ नहीं चुरायेंगे। तू अपने परकोटों का नाम 'उद्धार' रखेगा और तू अपने द्वारों का नाम 'स्तुति' रखेगा।

19दिन के समय में तेरे लिये सूर्य का प्रकाश नहीं होगा और रात के समय में चाँद का प्रकाश तेरी रोशनी नहीं होगी। क्यों? क्योंकि यहोवा ही सदैव तेरे लिये प्रकाश होगा। तेरा परमेश्वर तेरी महिमा बनेगा।

20तेरा 'सूरज' फिर कभी भी नहीं छिपेगा। तेरा 'चाँद' कभी भी काला नहीं पड़ेगा। क्योंकि यहोवा का प्रकाश सदा सर्वदा तेरे लिये होगा और तेरा दुःख का समय समाप्त हो जायेगा।

21तेरे सभी लोग उत्तम बनेंगे। उनको सदा के लिये धरती मिल जायेगी। मैंने उन लोगों को रचा है। वे अद्भुत पौधे मेरे अपने ही हाथों से लगाये हुए हैं।

22छोटे से छोटा भी विशाल घराना बन जायेगा। छोटे से छोटा भी एक शक्तिशाली राष्ट्र बन जायेगा। जब उचित समय आयेगा, मैं यहोवा शीघ्र ही आ जाऊँगा और मैं ये सभी बातें घटित कर दूँगा।"

यहोवा का मुक्ति सन्देश

61 यहोवा का सेवक कहता है, "मेरे स्वामी यहोवा ने मुझमें अपनी आत्मा स्थापित की है। यहोवा मेरे साथ है, क्योंकि कुछ विशेष काम करने के लिये उसने मुझे चुना है। यहोवा ने मुझे इन कामों को करने के लिए चुना है: दीन दुःखी लोगों के लिए सुसमाचार की घोषणा करना; दुःखी लोगों को सुख देना; जो लोग बंधन में पड़े हैं, उनके लिये मुक्ति की घोषणा करना; बन्दी लोगों को उनके छुटकारे की सूचना देना;
2उस समय की घोषणा करना जब यहोवा अपनी करुणा प्रकट करेगा; उस समय की घोषणा करना जब हमारा परमेश्वर दुष्टों को दण्ड देगा; दुःखी लोगों को पुचकारना;
3सिय्योन के दुःखी लोगों को आदर देना (अभी तो उनके पास बस राख हैं); सिय्योन के लोगों को प्रसन्नता का स्नेह प्रदान करना; (अभी तो उनके पास बस दुःख हैं) सिय्योन के लोगों को परमेश्वर की स्तुति के गीत प्रदान करना (अभी तो उनके पास बस उनके दर्द हैं); सिय्योन के लोगों को उत्सव के वस्त्र देना (अभी तो उनके पास बस उनके दुःख ही हैं।) उन लोगों को 'उत्तमता के वृक्ष' का नाम देना; उन लोगों को यहोवा के अद्भुत वृक्ष की संज्ञा देना।"

4"उस समय, उन पुराने नगरों को जिन्हें उजाड़ दिया गया था, फिर से बसाया जायेगा। उन नगरों को वैसे ही नया बना दिया जायेगा जैसे वे आरम्भ में थे। वे नगर जिन्हें वर्षो पहले हटा दिया गया था, नये जैसे बना दिये जायेंगे।

5"फिर तुम्हारे शत्रु तुम्हारे पास आयेंगे और तुम्हारी भेड़ें चराया करेंगे। तुम्हारे शत्रुओं की संतानें तुम्हारे खेतों और तुम्हारे बगीचों में काम किया करेंगी।
6तुम 'यहोवा के याजक' कहलाओगे। तुम 'हमारे परमेश्वर के सहायक' कहलाओगे। धरती के सभी देशों से आई हुई सम्पत्ति को तुम प्राप्त करोगे और तुम्हें इस बात का गर्व होगा कि वह सम्पत्ति तुम्हारी है।

7"बीते समय में लोग तुम्हें लज्जित करते थे और तुम्हारे बारे में बुरी बुरी बातें बनाया करते थे। तुम इतने लज्जित थे जितना और कोई दूसरा व्यक्ति नहीं था। इसलिए तुम्हें अपनी धरती में दूसरे लोगों से दुगुना

हिस्सा प्राप्त होगा। तुम ऐसी प्रसन्नता पाओगे जिसका
कभी अंत नहीं होगा। 8ऐसा क्यों घटित होगा? क्योंकि
मैं यहोवा हूँ और मुझे नेकी से प्रेम है। मुझे चोरी से
और हर उस बात से, जो अनुचित है, घृणा है। इसलिये
लोगों को, जो उन्हें मिलना चाहिये, वह भुगतान मैं दूँगा।
अपने लोगों के साथ सदा सदा के लिए मैं यह वाचा कर
रहा हूँ कि 9सभी देशों का हर कोई व्यक्ति मेरे लोगों
को जान जायेगा। मेरी जाति के वंशजों को हर कोई
जान जायेगा। हर कोई व्यक्ति जो उन्हें देखेगा, जान
जायेगा कि यहोवा उन्हें आशीर्वाद देता है।”

यहोवा का सेवक उद्धार और उत्तमता लाता है

10“यहोवा मुझको अति प्रसन्न करता है। मेरा सम्पूर्ण
व्यक्तित्व परमेश्वर में स्थिर है और प्रसन्नता में मगन
है। यहोवा ने उद्धार के वस्त्र से मुझको ढक लिया। वे
वस्त्र ऐसे ही भव्य हैं जैसे भव्य वस्त्र कोई पुरूष अपने
विवाह के अवसर पर पहनता है। यहोवा ने मुझे नेकी
के चोगे से ढक लिया है। यह चोगा वैसा ही सुन्दर है
जैसा सुन्दर किसी नारी का विवाह वस्त्र होता है।
11धरती पौधे उगाती है। लोग बगीचों में बीज डालते हैं
और वह बगीचा उन बीजों को उगाता है। वैसे ही यहोवा
नेकी को उगायेगा। इस तरह मेरा स्वामी सभी जातियों
के बीच स्तुति को बढ़ायेगा।”

नया यरूशलेम: नेकी का एक नगर

62 मुझको सिय्योन से प्रेम है अत: मैं उसके लिये
बोलता रहूँगा। मुझको यरूशलेम से प्रेम है
अत: मैं चुप न होऊँगा। मैं उस समय तक बोलता रहूँगा
जब तक नेकी चमकती हुई ज्योति सी नहीं चमकेगी। मैं
उस समय तक बोलता रहूँगा जब तक उद्धार आग की
लपट सा भव्य बन कर नहीं धधकेगा।
2फिर सभी देश तेरी नेकी को देखेंगे। तेरे सम्मान
को सब राजा देखेंगे। तभी तू एक नया नाम पायेगा।
स्वयं यहोवा तुम लोगों के लिये वह नया नाम पायेगा।
3यहोवा को तुम लोगों पर बहुत गर्व होगा। तुम यहोवा
के हाथों में सुन्दर मुकुट के समान होगे।
4फिर तुम कभी ऐसे जन नहीं कहलाओगे,
‘परमेश्वर के त्यागे हुए लोग।’ तुम्हारी धरती कभी
ऐसी धरती नहीं कहलायेगी जिसे परमेश्वर ने उजाड़ा।
तुम लोग परमेश्वर के प्रिय जन कहलाओगे। तुम्हारी
धरती परमेश्वर की दुल्हिन कहलायेगी। क्यों? क्योंकि
यहोवा तुमसे प्रेम करता है और तुम्हारी धरती उसकी
हो जायेगी।
5जैसे एक युवक कुँवारी को ब्याहता है। वैसे ही तेरे
पुत्र तुझे ब्याह लेंगे। और जैसे दुल्हा अपनी दुल्हिन के
संग आनन्दित होता है वैसे ही तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे
संग प्रसन्न होगा।”

परमेश्वर अपना वचन पालेगा

6“यरूशलेम की चारदीवारी मैंने रखवाले (नबी) बैठा
दिये हैं कि उसका ध्यान रखें। ये रखवाले मूक नहीं
रहेंगे। यह रखवाले यहोवा को तुम्हारी जरुरतों की याद
दिलाते हैं। हे रखवालों, तुम्हें चुप नहीं होना चाहिये।
7तुमको यहोवा से प्रार्थना करना बन्द नहीं करना
चाहिये। तुमको सदा उसकी प्रार्थना करते ही रहना
चाहिये। जब तक वह फिर से यरूशलेम का निर्माण न
कर दे, तब तक तुम उसकी प्रार्थना करते रहो। यरूशलेम
एक ऐसा नगर है जिसका धरती के सभी लोग यश
गायेंगे।
8यहोवा ने स्वयं अपनी शक्ति को प्रमाण बनाते हुए
वाचा की और यहोवा अपनी शक्ति के प्रयोग से ही उस
वाचा को पालेगा। यहोवा ने कहा था, “मैं तुम्हें वचन
देता हूँ कि मैं तुम्हारे भोजन को कभी तुम्हारे शत्रु को
न दूँगा। मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि तुम्हारी बनायी दाखमधु
तुम्हारा शत्रु कभी नहीं ले पायेगा।
9जो व्यक्ति खाना जुटाता है, वही उसे खायेगा और
वह व्यक्ति यहोवा के गुण गायेगा। वह व्यक्ति जो अंगूर
बीनता है, वही उन अंगूरों की बनी दाखमधु पियेगा।
मेरी पवित्र धरती पर ऐसी बातें हुआ करेंगी।”
10द्वार से होते हुए आओ! लोगों के लिये राहें साफ
करो! मार्ग को तैयार करो! राह पर के पत्थर हटा दो!
लोगों के लिये संकेत के रूप में झण्डा उठा दो!
11यहोवा सभी दूर देशों के लिये बोल रहा है: “सिय्योन
के लोगों से कह दो: देखो, तुम्हारा उद्धारकर्ता आ रहा
है। वह तुम्हारा प्रतिफल ला रहा है। वह अपने साथ
तुम्हारे लिये प्रतिफल ला रहा है।”
12उसके लोग कहलायेंगे: “पवित्र जन,” “यहोवा के
उद्धार पाये लोग।” यरूशलेम कहलायेगा: “वह नगर
जिसको यहोवा चाहता है,” “वह नगर जिसके साथ
परमेश्वर है।”

यहोवा अपने लोगों का न्याय करता है

63 यह कौन है जो एदोम से आ रहा है? यह बोस्रा
की नगरी से लाल धब्बों से युक्त कपड़े पहने
आ रहा है। वह अपने वस्त्रों में अति भव्य दिखता है।
वह लम्बे डग बढ़ाता हुआ अपनी महाशक्ति के साथ आ
रहा है और मैं सच्चाई से बोलता हूँ।
2“तू ऐसे वस्त्र जो लाल धब्बों से युक्त हैं, क्यों पहनता
है? तेरे वस्त्र ऐसे लाल क्यों हैं जैसे उस व्यक्ति के जो
अंगूर से दाखमधु बनाता है?”
3वह उत्तर देता है, “दाखमधु के कुंडे में मैंने अकेले
ही दाख रौंदी। किसी ने भी मुझको सहायता नहीं दी। मैं
क्रोधित था और मैंने लोगों को रौंदा जैसे अंगूर दाखमधु
बनाने के लिये रौंदे जातेहैं। रस छिटकर मेरे वस्त्रों में
लगा।

4मैंने राष्ट्रों को दण्ड देने के लिये एक समय चुना। मेरा वह समय आ गया कि मैं अपने लोगों को बचाऊँ और उनकी रक्षा करुँ।

5मैं चकित हुआ कि किसी भी व्यक्ति ने मेरा समर्थन नहीं किया। इसलिये मैंने अपनी शक्ति का प्रयोग अपने लोगों को बचाने के लिये किया। स्वयं मेरे अपने क्रोध ने ही मेरा समर्थन किया।

6जब मैं क्रोधित था, मैंने लोगों को रौंद दिया था। जब मैं क्रोध में पागल था, मैंने उनको दण्ड दिया। मैंने उनका लहू धरती पर उंडेल दिया।"

यहोवा अपने लोगों पर दयालू रहा

7यह मैं याद रखूँगा कि यहोवा दयालु है और मैं यहोवा की स्तुति करना याद रखूँगा। यहोवा ने इस्राएल के घराने को बहुत सी वस्तुएँ प्रदान की। यहोवा हमारे प्रति बहुत ही कृपालु रहा। यहोवा ने हमारे प्रति दया दिखाई।

8यहोवा ने कहा था "ये मेरे लोग हैं। ये बच्चें कभी झूठ नहीं कहते हैं" इसलिये यहोवा ने उन लोगों को बचा लिया।

9उनको उनके सब संकटो से किसी भी स्वर्गदूत ने नहीं बचाया था। उसने स्वयं ही अपने प्रेम और अपनी दया से उनको छुटकारा दिलाया था।

10किन्तु वे लोग यहोवा से मुख मोड़ चले। उन्होंने उसकी पवित्र आत्मा को बहुत दुःखी किया। सो यहोवा उनका शत्रु बन गया। यहोवा ने उन लोगों के विरोध में युद्ध किया।

11किन्तु यहोवा अब भी पहले का समय याद करता है। यहोवा मूसा के और उसके लोगों को याद करता हैं। यहोवा वही था जो लोगों को सागर के बीच से निकाल कर लाया। यहोवा ने अपनी भेंड़ों (लोगों) की अगुवाई के लिये अपने चरवाहों (नबियों) का प्रयोग किया। किन्तु अब वह यहोवा कहाँ है जिसने अपनी आत्मा को मूसा में रख दिया था?

12यहोवा ने अपने दाहिने हाथ से मूसा की अगुवाई की। यहोवा ने अपनी अद्‌भुत शक्ति से मूसा को राह दिखाई। यहोवा ने जल को चीर दिया था। जिससे लोग सागर को पैदल पार कर सके थे। इस अद्‌भुत कार्य को करके यहोवा ने अपना नाम प्रसिद्ध किया था

13यहोवा ने लोगों को राह दिखाई। वे लोग गहरे सागर के बीच से बिना गिरे ही पार हो गये थे। वे ऐसे चले थे जैसे मरुस्थल के बीच से घोड़ा चला जाता हैं।

14जैसे मवेशी घाटियों से उतरते और विश्राम का ठौर पाते हैं वैसे ही यहोवा के प्राण ने हमें विश्राम की जगह दी है। हे यहोवा, इस ढंग से तूने अपने लोगों को राह दिखाई और तूने अपना नाम अद्‌भुत कर दिया।

उसके लोगों की सहायता के लिए यहोवा से प्रार्थना

15हे यहोवा, तू आकाश से नीचे देख। उन बातों को देख जो घट रही हैं! तू हमें अपने महान पवित्र घर से जो आकाश मैं है, नीचे देख। तेरा सुदृढ़ प्रेम हमारे लिये कहाँ हैं? तेरे शक्तिशाली कार्य कहाँ हैं? तेरे हृदय का प्रेम कहाँ है? मेरे लिये तेरी कृपा कहाँ है? तूने अपना करुण प्रेम मुझसे कहाँ छिपा रखा है?

16देख, तू ही हमारा पिता है! इब्राहीम को यह पता नहीं है कि हम उसकी सन्तानें हैं। इस्राएल (याकूब) हमको पहचानता नहीं है। यहोवा तू ही हमारा पिता है। तू वही यहोवा है जिसने हमको सदा बचाया है।

17हे यहोवा, तू हमको अपने से दूर क्यों ढकेल रहा है? तू हमारे लिये अपना अनुसरण करने को क्यों कठिन बनाता है? यहोवा तू हमारे पास लौट आ। हम तो तेरे दास हैं। हमारे पास आ और हमको सहारा दे। हमारे परिवार तेरे हैं।

18थोड़े समय के लिये हमारे शत्रुओं ने तेरे पवित्र लोगों पर कब्जा कर लिया था। हमारे शत्रुओं ने तेरे मन्दिर को कुचल दिया था।

19कुछ लोग तेरा अनुसरण नहीं करते हैं। वे तेरे नाम को धारण नहीं करते हैं। जैसे वे लोग हम भी वैसे हुआ करते थे।

64 यदि तू आकाश चीर कर धरती पर नीचे उतर आये तो सब कुछ ही बदल जाये। तेरे सामने पर्वत पिघल जाये।

2पहाड़ों में लपेट उठेंगी। वे ऐसे जलेंगे जैसे झाड़ियाँ जलती हैं। पहाड़ ऐसे उबलेंगे जैसे उबलता पानी आग पर रखा गया हो। तब तेरे शत्रु तेरे बारे में समझेंगे। जब सभी जातियाँ तुझको देखेंगी तब वे भय से थर-थर काँपेंगी।

3किन्तु हम सचमुच नहीं चाहते हैं कि तू ऐसे कामों को करे कि तेरे सामने पहाड़ पिघल जायें।

4सचमुच तेरे ही लोगों ने तेरी कभी नहीं सुनी। जो कुछ भी तूने बात कही सचमुच तेरे ही लोगों ने उन्हें कभी नहीं सुना। तेरे जैसा परमेश्वर किसी ने भी नहीं देखा। कोई भी अन्य परमेश्वर नहीं, बस केवल तू है। यदि लोग धीरज धर कर तेरे सहारे की बाट जोहते रहें, तो तू उनके लिये बड़े काम कर देगा।

5जिनको अच्छे काम करने में रस आता है, तू उन लोगों के साथ है। वे लोग तेरे जीवन की रीति को याद करते हैं। पर देखो, बीते दिनों में हमने तेरे विरुद्ध पाप किये हैं। इसलिये तू हमसे क्रोधित हो गया था। अब भला कैसे हमारी रक्षा होगी?

6हम सभी पाप से मैले हैं। हमारी सब 'नेकी' पुराने गन्दे कपड़ों सी है। हम सूखे मुरझाये पत्तों से हैं। हमारे पापों ने हमें आँधी सा उड़ाया है।
7हम तेरी उपासना नहीं करते हैं। हम को तेरे नाम में विश्वास नहीं है। हम में

से कोई तेरा अनुसरण करने को उत्साही नहीं है। इसलिये तूने हमसे मुख मोड़ लिया है। क्योंकि हम पाप से भरे हैं इसलिये तेरे सामने हम असमर्थ हैं।

8किन्तु यहोवा, तू हमारा पिता है। हम मिट्टी के लौंदे हैं और तू कुम्हार है। तेरे ही हाथों ने हम सबको रचा है।

9हे यहोवा, तू हमसे कुपित मत बना रह! तू हमारे पापों को सदा ही याद मत रख! कृपा करके तू हमारी ओर देख! हम तेरे ही लोग हैं।

10तेरी पवित्र नगरियाँ उजड़ी हुई हैं। आज वे नगरियाँ ऐसी हो गई हैं जैसे रेगिस्तान हों। सिय्योन रेगिस्तान हो गया है! यरूशलेम ढह गया है!

11हमारा पवित्र मन्दिर आग से भस्म हुआ है। वह मन्दिर हमारे लिये बहुत ही महान था। हमारे पूर्वज वहाँ तेरी उपासना करते थे। वे सभी उत्तम वस्तु जिनके हम स्वामी थे, अब बर्बाद हो गई हैं।

12क्या ये वस्तुएँ सदैव तुझे अपना प्रेम हम पर प्रकट करने से दूर रखेंगी? क्या तू कभी कुछ नहीं कहेगा? क्या तू ऐसे ही चुप रह जायेगा? क्या तू सदा हम को दण्ड देता रहेगा?

परमेश्वर के बारे में सभी लोग जानेंगे

65 यहोवा कहता है, "मैंने उन लोगों को भी सहारा दिया है जो उपदेश ग्रहण करने के लिए कभी मेरे पास नहीं आये। जिन लोगों ने मुझे प्राप्त कर लिया, वे मेरी खोज में नहीं थे। मैंने एक ऐसी जाति से बात की जो मेरा नाम धारण नहीं करती थी। मैंने कहा था, 'मैं यहाँ हूँ! मैं यहाँ हूँ!'

2"जो लोग मुझसे मुँह मोड़ गये थे, उन लोगों को अपनाने के लिए मैं भी तत्पर रहा। मैं इस बात की प्रतीक्षा करता रहा कि वे लोग मेरे पास लौट आयें। किन्तु वे जीवन की एक ऐसी राह पर चलते रहे जो अच्छी नहीं है। वे अपने मन के अनुसार काम करते
रहे। 3वे लोग मेरे सामने रहते हैं और सदा मुझे क्रोधित करते रहते हैं। अपने विशेष बागों में वे लोग मिथ्या देवताओं को बलियाँ अर्पित करते हैं और धूप अगरबत्ती
जलाते हैं। 4वे लोग कब्रों के बीच बैठते हैं और मरे हुए लोगों से सन्देश पाने का इतज़ार करते रहते हैं। यहाँ तक कि वे मुर्दों के बीच रहा करते हैं। वे सुअर का माँस खाते हैं। उनके प्यालों में अपवित्र वस्तुओं का शोरवा है।

5"किन्तु वे लोग दूसरे लोगों से कहा करते हैं, 'मेरे पास मत आओ, मुझे उस समय तक मत छुओ, जब तक मैं तुम्हें पवित्र न कर दूँ।' मेरी आँखों में वे लोग धुएँ के जैसे हैं और उनकी आग हर समय जला करती है।"

इस्राएल को दण्डित होना चाहिये

6"देखो, यह एक हुण्डी है। इसका भुगतान तो करना ही होगा। यह हुण्डी बताती है कि तुम अपने पापों के लिये अपराधी हो। मैं उस समय तक चुप नहीं होऊँगा जब तक इस हुण्डी का भुगतान न कर दूँ और देखो तुम्हें दण्ड देकर ही मैं इस हुण्डी का भुगतान करुँगा।

7"तुम्हारे पाप और तुम्हारे पूर्वज एक ही जैसे हैं।" यहोवा ने यह कहा है, "तुम्हारे पूर्वजों ने जब पहाड़ों में धूप अगरबत्तियाँ जलाई थीं, तभी इन पापों को किया था। उन पहाड़ों पर उन्होंने मुझे लज्जित किया था और सबसे पहले मैंने उन्हें दण्ड दिया। जो दण्ड उन्हें मिलना चाहिये था, मैंने उन्हें वही दण्ड दिया।"

परमेश्वर इस्राएल को पूरी तरह नष्ट नहीं करेगा

8यहोवा कहता है, "अँगूरों में जब नयी दाखमधु हुआ करती है, तब लोग उसे निचोड़ लिया करते हैं, किन्तु वे अँगूरों को पूरी तरह नष्ट तो नहीं कर डालते। वे इसलिये ऐसा करते हैं कि अँगूरों का उपयोग तो फिर भी किया जा सकता है। अपने सेवकों के साथ मैं ऐसा
ही करुँगा। मैं उन्हें पूरी तरह नष्ट नहीं करुँगा। 9इस्राएल के कुछ लोगों को मैं बचाये रखूँगा। यहूदा के कुछ लोग मेरे पर्वतों को प्राप्त करेंगे। मेरे सेवकों का वहाँ निवास
होगा। मेरे चुने हुए लोगों को धरती मिलेगी। 10फिर तो शारोन की घाटी हमारी भेड़-बकरियों की चरागाह होगी तथा आकोर की तराई हमारे मवेशियों के आराम करने की जगह बन जायेगी। ये सब बातें मेरे लोगों के लिये होंगी। उन लोगों के लिये जो मेरी खोज में हैं।

11"किन्तु तुम लोग, जिन्होंने यहोवा को त्याग दिया है, दण्डित किये जाओगे। तुम ऐसे लोग हो जिन्होंने मेरे पवित्र पर्वत को भुला दिया है। तुम ऐसे लोग हो जो भाग्य के मिथ्या देवता की पूजा करते हो। तुम भाग्य रुपी झूठे
देवता के सहारे रहते हो। 12किन्तु तुम्हारे भाग्य का निर्धारण तो मैं करता हूँ। मैं तलवार से तुम्हें दण्ड दूँगा। जो तुम्हें दण्ड देगा, तुम सभी उसके आगे मिमिआने लगोगे। मैंने तुम्हें पुकारा किन्तु तुमने कोई उत्तर नहीं दिया। मैंने तुमसे बातें कीं किन्तु तुमने सुना तक नहीं। तुम उन कामों को ही करते रहे जिन्हें मैंने बुरा कहा था। तुमने उन कामों को करने की ही ठान ली जो मुझे अच्छे नहीं लगते थे।"

13सो मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं। "मेरे दास भोजन पायेंगे, किन्तु तुम भूखे मरोगे। मेरे दास पीयेंगे किन्तु अरे दुष्टों, तुम प्यासे मरोगे। मेरे दास प्रसन्न होंगे किन्तु अरे ओ दुष्टों, तुम लज्जित होंगे।

14मेरे दासों के मन खरे हैं इसलिये वे प्रसन्न होंगे। किन्तु अरे ओ दुष्टों, तुम रोया करोगे क्योंकि तुम्हारे मनों में पीड़ा बसेगी। तुम अपने टूटे हुए मन से बहुत दुःखी रहोगे।

15तुम्हारे नाम मेरे लोगों के लिये गालियों के जैसे हो
जायेंगे।" मेरा स्वामी यहोवा तुमको मार डालेगा और
वह अपने दासों को एक नये नाम से बुलाया करेगा।
16अब लोग धरती से आशीषें माँगते हैं किन्तु आगे
आनेवाले दिनों में वे विश्वासयोग्य परमेश्वर से आशीष
माँगा करेंगे। अभी लोग उस समय धरती की शक्ति के
भरोसे रहा करते हैं जब वे कोई वचन देते हैं। किन्तु
भविष्य में वे विश्वसनीय परमेश्वर के भरोसे रहा
करेंगे। क्यों? क्योंकि पिछले दिनों की सभी विपत्तियाँ
भूला दी जायेंगी। मेरे लोग फिर उन पिछली विपत्तियों
को याद नहीं करेंगे।

एक नया समय आ रहा है

17"देखो, मैं एक नये स्वर्ग और नयी धरती की
रचना करूँगा। लोग मेरे लोगों की पिछली बात याद नहीं
रखेंगे। उनमें से कोई बात याद में नहीं रहेगी।
18मेरे लोग दु:खी नहीं रहेंगे। नहीं, वे आनन्द में रहेंगे
और वे सदा खुश रहेंगे। मैं जो बातें रचूँगा, वे उनसे
प्रसन्न रहेंगे। मैं ऐसा यरूशलेम रचूँगा जो आनन्द से
परिपूर्ण होगा और मैं उनको एक प्रसन्न जाति बनाऊँगा।
19फिर मैं यरूशलेम से प्रसन्न रहूँगा। मैं अपने लोगों
से प्रसन्न रहूँगा और उस नगरी में फिर कभी विलाप
और कोई दु:ख नहीं होगा।
20उस नगरी में कोई बच्चा ऐसा नहीं होगा जो पैदा
होने के बाद कुछ ही दिन जियेगा। उस नगरी का कोई
भी व्यक्ति अपनी अल्प आयु में नहीं मरेगा। हर पैदा
हुआ बच्चा लम्बी उम्र जियेगा और उस नगरी का
प्रत्येक बूढ़ा व्यक्ति एक लम्बे समय तक जीता रहेगा।
वहाँ सौ साल का व्यक्ति भी जवान कहलायेगा। किन्तु
कोई भी ऐसा व्यक्ति जो सौ साल से पहले मरेगा उसे
अभिशप्त कहा जायेगा। 21देखो, उस नगरी में यदि कोई
व्यक्ति अपना घर बनायेगा तो वह व्यक्ति अपने घर में
बसेगा। यदि कोई व्यक्ति वहाँ अंगूर का बाग लगायेगा तो
वह अपने बाग के अँगूर खायेगा।
22वहाँ ऐसा नहीं होगा कि कोई अपना घर बनाये
और कोई दूसरा उसमें निवास करे। ऐसा भी नहीं होगा
कि बाग कोई दूसरा लगाये और उस बाग का फल कोई
और खाये। मेरे लोग इतना जियेंगा जितना ये वृक्ष जीते
हैं। ऐसे व्यक्ति जिन्हें मैंने चुना है, उन सभी वस्तुओं का
आनन्द लेंगे जिन्हें उन्होंने बनाया है।
23फिर लोग व्यर्थ का परिश्रम नहीं करेंगे। लोग ऐसे
उन बच्चों को नहीं जन्म देंगे जिनके लिये वे मन में
डरेंगे कि वे किसी अचानक विपत्ति का शिकार न हों।
मेरे सभी लोग यहोवा की आशीष पायेंगे। मेरे लोग और
उनकी संताने आर्शीवाद पायेंगे।
24मुझे उन सभी वस्तुओं का पता हो जायेगा जिनकी
आवश्यकता उन्हें होगी, इससे पहले की वे उन्हें मुझसे
माँगे। इससे पहले कि वे मुझ से सहायता की प्रार्थना पूरी
कर पायेंगे, मैं उनको मदद दूँगा।
25भेड़िये और मेमनें एक साथ चरते फिरेंगे। सिंह भी
मवेशियों के जैसे ही भूसा चरेंगे और भुजंगों का भोजन
बस मिट्टी ही होगी। मेरे पवित्र पर्वत पर कोई किसी
को भी हानि नहीं पहुँचायेगा और न ही उन्हें नष्ट
करेगा।" यह यहोवा ने कहा है।

परमेश्वर सभी जातियों का न्याय करेगा

66 यहोवा यह कहता है, "आकाश मेरा सिंहासन
है। धरती मेरे पाँव की चौकी बनी है। सो क्या
तू यह सोचता है कि तू मेरे लिये भवन बना सकता है?
नहीं, तू नहीं बना सकता। क्या तू मुझको विश्रामस्थल
दे सकता है? नहीं, तू नहीं दे सकता।
2मैंने स्वयं ही ये सारी वस्तुऐं रची हैं। ये सारी वस्तुऐं
यहाँ टिकी हैं क्योंकि उन्हें मैंने बनाया है। यहोवा ने ये
बातें कहीं थी। मुझे बता कि मैं कैसे लोगों की चिन्ता
किया करता हूँ? मुझको दीन हीन लोगों की चिंता है। ये
ही वे लोग हैं जो बहुत दु:खी रहते हैं। ऐसे ही लोगों की
मैं चिंता किया करता हूँ जो मेरे वचनो का पालन किया
करता हैं।
3मुझे बलि के रूप में अर्पित करने को कुछ लोग
बैल का वध किया करता हैं किन्तु वे लोगों से मारपीट
भी करते हैं। मुझे अर्पित करने को ये भेड़ों को मारते
हैं किन्तु ये कुत्तों की गर्दन भी तोड़ते हैं और सुअरों का
लहू ये मुझ पर चढ़ाते हैं। ऐसे लोगों को धूप के जलाने
की याद बनी रहा करती हैं किन्तु वे व्यर्थ की अपनी
प्रतिमाओं से प्रेम करते हैं। ऐसे ये लोग अपनी मनचीती
राहों पर चला करते हैं, मेरी राहों पर नहीं। वे पूरी तरह
से अपने घिनौने मूर्ति के प्रेम में डूबे हैं।
4इसलिये मैंने यह निश्चय किया है कि मैं उनकी
जूती उन्हीं के सिर करूँगा। मेरा यह मतलब है कि मैं
उनको दण्ड दूँगा उन वस्तुओं को काम में लाते हुये
जिनसे वे बहुत ड़रते हैं। मैंने उन लोगों को पुकारा था
किन्तु उन्होंने नहीं सुना। मैंने उनसे बोला था किन्तु
उन्होंने सुना ही नहीं। इसलिये अब मैं भी उनके साथ
ऐसा ही करूँगा। वे लोग उन सभी बुरे कामों को करते
रहे हैं जिनको मैंने बुरा बताया था। उन्होंने ऐसे काम
करने को चुने जो मुझको नहीं भाते थे।"
5हे लोगों, यहोवा का भय विस्मय मानने वालों और
यहोवा के आदेशों का अनुसरण करने वालों, उन बातों
को सुनो। यहोवा कहता है, "तुमसे तुम्हारे भाईयों ने
घृणा की क्योंकि तुम मेरे पीछे चला करते थे, वे तुम्हारे
विरुद्ध हो गये। तुम्हारे बंधु कहा करते थे: 'जब यहोवा
सम्मानित होगा हम तुम्हारे पीछे हो लेंगे। फिर तुम्हारे
साथ में हम भी खुश हो जायेंगे।' ऐसे उन लोगों को दण्ड
दिया जायेगा।

दण्ड और नयी जाति

6"सुनो तो, नगर और मन्दिर से एक ऊँची आवाज़ सुनाई दे रही है। यहोवा द्वारा अपने विरोधियों को, जो दण्ड दिया जा रहा है। वह आवाज उसी की है। यहोवा उन्हें वही दण्ड दे रहा है जो उन्हें मिलना चाहिये।

7-8"ऐसा तो नहीं हुआ करता कि प्रसव पीड़ा से पहले ही कोई स्त्री बच्चा जनती हो। ऐसा तो कभी नहीं हुआ कि किसी स्त्री ने किसी पीड़ा का अनुभव करने से पहले ही अपने पुत्र को पैदा हुआ देखा हो। ऐसा कभी नहीं हुआ। इसी प्रकार किसी भी व्यक्ति ने एक दिन में कोई नया संसार आरम्भ होते हुए नहीं देखा। किसी भी व्यक्ति ने किसी ऐसी नयी जाति का नाम कभी नहीं सुना होगा जो एक ही दिन में आरम्भ हो गयी हो। धरती को बच्चा जनने के दर्द जैसी पीड़ा निश्चय ही पहले सहनी होगी। इस प्रसव पीड़ा के बाद ही वह धरती
अपनी संतानों–एक नयी जाति को जन्म देगी। 9जब मैं
किसी स्त्री को बच्चा जनने की पीड़ा देता हूँ तो वह बच्चे को जन्म दे देती है।"

तुम्हारा यहोवा कहता है, "मैं तुम्हें बच्चा जनने की पीड़ा में डालकर तुम्हारा गर्भद्वार बंद नहीं कर देता। मैं तुम्हें इसी तरह इन विपत्तियों में बिना एक नयी जाति प्रदान किये, नहीं डालूँगा।"

10हे यरूशलेम, प्रसन्न रहो! हे लोगों, यरूशलेम के प्रेमियों, तुम निश्चय ही प्रसन्न रहो। यरूशलेम के संग दुःख की बातें घटी थी इसलिये तुममें से कुछ लोग भी दुःखी हैं। किन्तु अब तुमको चाहिये कि तुम बहुत–बहुत प्रसन्न हो जाओ।

11क्यों? क्योंकि अब तुम को दया ऐसे मिलेगी जैसे छाती से दूध मिल जाया करता है। तुम यरुशलेम के वैभव का सच्चा आनन्द पाओगे।

12यहोवा कहता है, "देखो, मैं तुम्हें शांति दूंगा। यह शांति तुम तक ऐसे पहुँचेगी जैसे कोई महानदी बहती हुई पहुँच जाती है। सब धरती के राष्ट्रों की धन–दौलत बहती हुई तुम तक पहुँच जायेगी। यह धन–दौलत ऐसे बहते हुये आयेगी जैसे कोई बाढ़ की धारा। तुम नन्हें बच्चों से होवोगे, तुम दूध पीओगे, तुम को उठा लिया जायेगा और गोद में थाम लिये जायेगा, तुम्हें घुटनों पर उछाला जायेगा।

13मैं तुमको दुलारुँगा जैसे माँ अपने बच्चे को दुलारती है। तुम यरूशलेम के भीतर चैन पाओगे।

14तुम वे वस्तुऐं देखोगे जिनमें तुम्हें सचमुच रस आता है। तुम स्वतंत्र हो कर घास से बढोगे। यहोवा की शक्ति को उसके लोग देखेंगे, किन्तु यहोवा के शत्रु उसका क्रोध देखेंगे।"

15देखो, अग्नि के साथ यहोवा आ रहा है। धूल के बादलों के साथ यहोवा की सेनाएँ आ रही हैं। यहोवा अपने क्रोध से उन व्यक्तियों को दण्ड देगा। यहोवा जब क्रोधित होगा तो उन व्यक्तियों को दण्ड देने के लिये
आग की लपटों का प्रयोग करेगा। 16यहोवा लोगों का
न्याय करेगा और फिर आग और अपनी तलवार से वह अपराधी लोगों को नष्ट कर डालेगा। यहोवा उन बहुत से लोगों को नष्ट कर देगा। वह अपनी तलवार से लाशों के अम्बार लगा देगा।

17यहोवा का कहना है, "वे लोग जो अपने बगीचों को पूजने के लिए स्नान करके पवित्र होते हैं और एक दूसरे के पीछे परिक्रमा करते हैं, वे जो सुअर का माँस खाते हैं और चूहे जैसे घिनौने जीव जन्तुओं को खाते हैं, इन सभी लोगों का नाश होगा।

18"बुरे विचारों में पड़े हुए वे लोग बुरे काम किया करते हैं। इसलिए उन्हें दण्ड देने को मैं आ रहा हूँ। मैं सभी जातियों और सभी लोगों को इकट्ठा करुँगा। परस्पर एकत्र हुए सभी लोग मेरी शक्ति को देखेंगे।
19कुछ लोगों पर मैं एक चिन्ह लगा दूँगा, मैं उनकी रक्षा
करुँगा। इन रक्षा किये लोगों में से कुछ लोगों को मैं तर्शीश लिव्या और लूदी के लोगों के पास भेजूँगा। (इन देशों के लोग धनुर्धारी हुआ करते हैं।) तुबाल, यूनान और सभी दूर देशों में मैं उन्हें भेजूँगा। दूर देशों के उन लोगों ने मेरे उपदेश कभी नहीं सुने। उन लोगों ने मेरी महिमा का दर्शन भी नहीं किया है। सो वे बचाए गए लोग उन जातियों को मेरी महिमा के बारे में बतायेंगे।
20वे तुम्हारे सभी भाइयों और बहनों को सभी देशों से
यहाँ ले आयेंगे। तुम्हारे भाइयों और बहनों को वे मेरे पवित्र पर्वत पर यरूशलेम में ले आयेंगे। तुम्हारे भाई बहन यहाँ घोड़ों, खच्चरों, ऊँटों, रथों और पालकियों में बैठ कर आयेंगे। तुम्हारे वे भाई– बहन यहाँ उसी प्रकार से उपहार के रुप में लाये जायेंगे जैसे इस्राएल के लोग शुद्ध थालों में रख कर यहोवा के मन्दिर में अपने
उपहार लाते हैं। 21इन लोगों में से कुछ लोगों को मैं
याजकों और लेवियों के रूप में चुन लूँगा। ये बातें यहोवा ने बताई थीं।

नये आकाश और नयी धरती

22"मैं एक नये संसार की रचना करुँगा। ये नये आकाश और नयी धरती सदा–सदा टिके रहेंगे और उसी प्रकार तुम्हारे नाम और तुम्हारे वंशज भी सदा
मेरे साथ रहेंगे। 23हर सब्त के दिन और महीने के
पहले दिन वे सभी लोग मेरी उपासना के लिये आया करेंगे।

24"ये लोग मेरी पवित्र नगरी में होंगे और यदि कभी वे नगर से बाहर जायेंगे, तो उन्हें उन लोगों की लाशें दिखाई देंगी जिन्होंने मेरे विरुद्ध पाप किये हैं। उन लाशों में कीड़े पड़े हुए होंगे और वे कीड़े कभी नहीं मरेंगे। उन देहों को आग जला डालेगी और वह आग कभी समाप्त नहीं होगी।"

यिर्मयाह

1 यिर्मयाह के ये सन्देश हैं। यिर्मयाह हिल्किय्याह नामक
व्यक्ति का पुत्र था। यिर्मयाह उन याजकों के परिवार
से था जो अनातोत नगर में रहते थे। वह नगर उस
प्रदेश में है जो बिन्यामीन परिवार का था। 2यहोवा ने
यिर्मयाह से उन दिनों बातें करनी आरम्भ की। जब
योशिय्याह यहूदा राष्ट्र का राजा था। योशिय्याह आमोन
नामक राजा का पुत्र था। यहोवा ने यिर्मयाह से योशिय्याह
के राज्यकाल के तेरहवें वर्ष में बातें करनी आरम्भ
की। 3यहोवा यिर्मयाह से उस समय बातें करता रहा जब
यहोयाकीम यहूदा का राजा था। यहोयाकीम योशिय्याह
का पुत्र था। यिर्मयाह को सिदकिय्याह के राज्यकाल के
ग्यारह वर्ष पाँच महीने तक, यहोवा की वाणी सुनाई
पड़ती रही। सिदकिय्याह भी योशिय्याह का एक पुत्र
था। सिदकिय्याह के राज्यकाल के ग्यारहवें वर्ष के
पाँचवें महीने में यरूशलेम के निवासियों को देश–निकाला
दिया गया था।

परमेश्वर यिर्मयाह को अपने पास बुलाता है

4यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला। यहोवा का
सन्देश यह था: 5“तुम्हारी माँ के गर्भ में रखने के पहले
मैंने तुमको जान लिया। तुम्हारे जन्म लेने के पहले, मैंने
तुम्हें विशेष कार्य के लिये चुना था। मैंने तुम्हें राष्ट्रों का
नबी होने को चुना था।”

6तब मैंने अर्थात् यिर्मयाह ने कहा, “किन्तु सर्वशक्तिमान
यहोवा, मैं तो बोलना भी नहीं जानता। मैं तो अभी
बालक ही हूँ।”

7किन्तु यहोवा ने मुझसे कहा, “मत कहो, ‘मैं बालक
ही हूँ।’ तुम्हें हर उन स्थानों पर जाना है जहाँ मैं भेजूँ।
तुम्हें वह सब कहना है जिसे मैं कहने को कहूँ।

8किसी से मत डरो। मैं तुम्हारे साथ हूँ, और मैं
तुम्हारी रक्षा करूँगा।” यह सन्देश यहोवा का है।

9तब यहोवा ने अपना हाथ बढ़ाया और मेरे मुँह को
छू लिया। यहोवा ने मुझसे कहा, “यिर्मयाह, मैं अपने
शब्द तेरे मुँह में दे रहा हूँ।

10आज मैंने तुम्हें राज्यों और राष्ट्रों का अधिकारी
बनाया है। तुम इन्हें उखाड़ और उजाड़ सकते हो। तुम
इन्हें नष्ट और उठा फेंक सकते हो। तुम निर्माण और
रोपण कर सकते हो।”

दो अन्तर्दृश्य

11यहोवा का सन्देश मुझे मिला। यह सन्देश यहोवा
का था: “यिर्मयाह, तुम क्या देखते हो?”

मैंने यहोवा को उत्तर दिया और कहा, “मैं बादाम
की लकड़ी की एक छड़ी देखता हूँ।”

12यहोवा ने मुझसे कहा, “तुमने बहुत ठीक देखा
और मैं इस बात की चौकसी कर रहा हूँ कि तुमको
दिया गया मेरा सन्देश ठीक उतरे।”

13यहोवा का सन्देश मुझे फिर मिला। यहोवा के यहाँ
का सन्देश यह था, “यिर्मयाह, तुम क्या देखते हो?”

मैंने यहोवा को उत्तर दिया और कहा, “मैं उबलते
पानी का एक बर्तन देख रहा हूँ। यह बर्तन उत्तर की
ओर से टपक रहा है।”

14यहोवा ने मुझसे कहा, “उत्तर से कुछ भयानक
आएगा। यह उन सब लोगों के लिए होगा जो इस देश में
रहते हैं। 15कुछ समय बाद मैं उत्तर के राज्यों के सभी
लोगों को बुलाऊँगा।” ये बातें यहोवा ने कहीं। “उन देशों
के राजा आएंगे। वे यरूशलेम के द्वार के सामने अपने
सिंहासन जमाएंगे। वे यरूशलेम के सभी नगर दीवारों
पर आक्रमण करेंगे। वे यहूदा प्रदेश के सभी नगरों पर
आक्रमण करेंगे। 16और मैं अपने लोगों के विरुद्ध अपने
निर्णय की घोषणा करूँगा। मैं यह इसलिये करूँगा, क्योंकि
वे बुरे लोग हैं, और वे मेरे विरुद्ध चले गए हैं। मेरे लोगों
ने मुझे छोड़ा। उन्होंने अन्य देवताओं को बलि चढ़ाई।
उन्होंने अपने हाथों से बनाई गई मूर्तियों को पूजा।

17“यिर्मयाह, जहाँ तक तुम्हारी बात है, उठो। तैयार
हो जाओ! उठो और लोगो को सन्देश दो। वह सब कुछ
लोगों से कहो जो मैं कहने को कहूँ। लोगों से मत डरो।
यदि तुम लोगों से डरे तो मैं उनसे डरने का अच्छा
कारण तुम्हें दे दूँगा। 18जहाँ तक मेरी बात है, मैं आज
ही तुझे एक दृढ़ नगर, एक लौह स्तम्भ, एक काँसे की
दीवार बनाने जा रहा हूँ। तुम देश में हर एक के विरुद्ध
खड़े होने योग्य होगे, यहूदा देश के राजाओं के विरुद्ध,
यहूदा के प्रमुखों के विरूद्ध, यहूदा के याजकों के विरुद्ध
और यहूदा देश के लोगों के विरुद्ध भी। 19वे सब लोग
तुम्हारे विरुद्ध लड़ेंगे, किन्तु वे तुझे पराजित नहीं करेंगे।
क्यों? क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ, और मैं तेरी रक्षा
करूँगा।” यह सन्देश यहोवा का है।

यहूदा विश्वासयोग्य नहीं रहा

2 यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला। यहोवा का सन्देश यह था:

2“यिर्मयाह, जाओ और यरूशलेम के लोगों को सन्देश दो। उनसे कहो:

‘जिस समय तुम नव राष्ट्र थे, तुम मेरे विश्वासयोग्य थे। तुमने मेरा अनुगमन नयी दुल्हन सा किया। तुमने मेरा अनुगमन मरुभूमि में से होकर किया, उस प्रदेश में अनुगमन किया जिसे कभी कृषि भूमि न बनाया गया था। 3इस्राएल के लोग यहोवा को एक पवित्र भेंट थे। वे यहोवा द्वारा उतारे गये प्रथम फल थे। इस्राएल को चोट पहुँचाने का प्रयत्न करने वाले हर एक लोग अपराधी निर्णीत किये गए थे। उन बुरे लोगों पर बुरी आपत्तियाँ आई थीं।’” यह सन्देश यहोवा का था।

4याकूब के परिवार, यहोवा का सन्देश सुनो। इस्राएल के तुम सभी परिवार समूहो, सन्देश सुनो।

5जो यहोवा कहता है, वह यह है: “क्या तुम समझते हो कि, मैं तुम्हारे पूर्वजों का हितैषी नहीं था? तब वे क्यों मुझसे दूर हो गए? तुम्हारे पूर्वजों ने निरर्थक देव मूर्तियाँ पूजीं। और वे स्वंय निरर्थक हो गये। 6तुम्हारे पूर्वजों ने यह नहीं कहा, ‘यहोवा ने हमें मिस्र से निकाला। यहोवा ने मरुभूमि में हमारा नेतृत्व किया। यहोवा हमे सूखे चट्टानी प्रदेश से लेकर आया, यहोवा ने हमें अन्धकारपूर्ण और भयपूर्ण देशों में राह दिखाई। कोई भी लोग वहाँ नहीं रहते कोई भी लोग उस देश से यात्रा नहीं करते। लेकिन यहोवा ने उस प्रदेश में हमारा नेतृत्व किया। अत: वह यहोवा अब कहाँ हैं?’”

7“यहोवा कहता है, मैं तुम्हें अनेक अच्छी चीज़ों से भरे उत्तम देश में लाया।मैंने यह किया जिससे तुम वहाँ उगे हुये फल और पैदावार को खा सको। किन्तु तुम आए और मेरे देश को तुमने ‘गन्दा’ किया। मैंने वह देश तुम्हें दिया था, किन्तु तुमने उसे बुरा स्थान बनाया। 8याजकों ने नहीं पूछा, ‘यहोवा कहाँ हैं?’ व्यवस्था को जाननेवाले लोगों ने मुझको जानना नहीं चाहा। इस्राएल के लोगों के प्रमुख मेरे विरुद्ध चले गए। नबियों ने झूठे बाल देवता के नाम भविष्यवाणी की। उन्होंने निरर्थक देव मूर्तियों की पूजाकी।”

9यहोवा कहता है, “अत: मैं अब तुम्हें फिर दोषी करार दूँगा, और तुम्हारे पौत्रों को भी दोषी ठहराऊँगा। 10समुद्र पार कित्तियों के द्वीपों को जाओ और देखो किसी को केदार प्रदेश को भेजो और उसे ध्यान से देखने दो। ध्यान से देखो क्या कभी किसी ने ऐसा काम किया: 11क्या किसी राष्ट्र के लोगों ने कभी अपने पुराने देवताओं को नये देवता से बदला है? नहीं! निसन्देह उनके देवता वास्तव में देवता हैं ही नहीं। किन्तु मेरे लोगों ने अपने यशस्वी परमेश्वर को निरर्थक देव मूर्तियों से बदला हैं।

12“आकाश, जो हुआ है उससे अपने हृदय को आघात पहुँचने दो! भय से काँप उठो!” यह सन्देश यहोवा का था। 13“मेरे लोगों ने दो पाप किये हैं। उन्होंने मुझे छोड़ दिया (मैं ताजे पानी का सोता हूँ।) और उन्होंने अपने पानी के निजी हौज खोदे हैं। (वे अन्य देवताओं के भक्त बने हैं।) किन्तु उनके हौज टूटे हैं। उन हौजों में पानी नहीं रुकेगा।

14“क्या इस्राएल के लोग दास हो गए हैं? क्या वे एक जन्मजात दास से हो गए हैं? इस्राएल के लोगों की सम्पत्ति अन्य लोगों ने क्यों ले ली? 15जवान सिंह (शत्रु) इस्राएल राष्ट्र पर दहाड़ते हैं, गुर्राते हैं। सिंहों ने इस्राएल के लोगों का देश उजाड़ दिया हैं। इस्राएल के नगर जला दिये गए हैं। उनमें कोई भी नहीं रह गया है। 16नोप और तहपन्हेस नगरों के लोगों ने तुम्हारे सिर के शीर्ष को कुचल दिया है। 17यह परेशानी तुम्हारे अपने दोष के कारण है। तुम अपने यहोवा परमेश्वर से विमुख हो गए, जबकि वह सही दिशा में तुम्हें ले जा रहा था। 18यहूदा के लोगों, इसके बारे में सोचो: क्या उसने मिस्र जाने में सहायता की? क्या इसने नील नदी का पानी पीने में सहायता की? नहीं! क्या इसने अश्शूर जाने में सहायता की? क्या इसने परात नदी का जल पीने में सहायता की? नहीं! 19तुमने बुरे काम किये, और वे बुरी चीजें तुम्हें केवल दण्ड दिलाएंगी। विपत्तियाँ तुम पर टूट पड़ेंगी और ये विपत्तियाँ तुम्हें पाठ पढ़ाएंगी। इस विषय में सोचो; तब तुम यह समझोगे कि अपने परमेश्वर से विमुख हो जाना कितना बुरा है। मुझसे न डरना बुरा है।” यह सन्देश मेरे स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा का था।

20“यहूदा बहुत पहले तुमने अपना जुआ फेंक दिया था। तुमने वह रस्सियाँ तोड़ फेंकी जिसे मैं तुम्हें अपने पास रखने में काम में लाता था। तुमने मुझसे कहा, ‘मैं आपकी सेवा नहीं करूँगा!’ सच्चाई यह है कि तुम वेश्या की तरह हर एक ऊँची पहाड़ी पर और हर एक हरे पेड़ के नीचे लेटे और काम किये। 21यहूदा, मैंने तुम्हें विशेष अंगूर की बेल की तरह रोपा। तुम सभी अच्छे बीज के समान थे। तुम उस भिन्न बेल में कैसे बदले जो बुरे फल देती है? 22यदि तुम अपने को ल्ये से भी धोओ, बहुत साबुन भी लगाओ, तो भी मैं तुम्हारे दोष के दाग को देख सकताहूँ।” यह सन्देश परमेश्वर यहोवा का था।

23“यहूदा, तुम मुझसे कैसे कह सकते हो, ‘मैं अपराधी नहीं हूँ। मैंने बाल की मूर्तियों की पूजा नहीं की है?’ उन कामों के बारे में सोचों जिन्हें तुमने घाटी में किये। उस बारे में सोचों, तुमने क्या कर डाला है। तुम उस तेज ऊँटनी के समान हो जो एक स्थान से दूसरे स्थान को दौड़ती है। 24तुम उस जँगली गधी की तरह हो जो मरुभूमि में रहती है और सहभोग के मौसम में जो हवा को सूंघती है (गन्ध लेती है।) कोई व्यक्ति उसे

कामोत्तेजना के समय लौटा कर ला नहीं सकता। सहभोग
के समय हर एक गधा जो उसे चाहता है, पा सकता है।
उसे खोज निकालना सरल है। 25यहूदा, देवमूर्तियों के
पीछे दौड़ना बन्द करो। उन अन्य देवताओं के लिये
प्यास को बुझ जाने दो। किन्तु तुम कहते हो, 'यह व्यर्थ
है! मैं छोड़ नहीं सकता! मैं उन अन्य देवताओं से प्रेम
करता हूँ। मैं उनकी पूजा करना चाहता हूँ।'
26"चोर लज्जित होता है जब उसे लोग पकड़ लेते हैं।
उसी प्रकार इस्राएल का परिवार लज्जित है। राजा और
प्रमुख, याजक और नबी लज्जित हैं। 27वे लोग लकड़ी
के टुकड़ो से बातें करते हैं, वे कहते हैं, 'तुम मेरे पिता
हो।' वे लोग चट्टान से बात करते हैं, वे कहते हैं,
'तुमने मुझे जन्म दिया है।' वे सभी लोग लज्जित होंगे। वे
लोग मेरी ओर ध्यान नहीं देते। उन्होंने मुझसे पीठ फेर
ली है। किन्तु जब यहूदा के लोगों पर विपत्ति आती है
तब वे मुझसे कहते हैं, 'आ और हमें बचा!' 28उन
देवमूर्तियों को आने और तुमको बचाने दो! वे देवमूर्तियाँ
कहाँ हैं जिसे तुमने अपने लिये बनाया है? हमें देखने दो,
क्या वे मूर्तियाँ आती हैं और तुम्हारी रक्षा विपत्ति से
करती हैं? यहूदा के लोगों, तुम लोगों के पास उतनी
मूर्तियाँ हैं जितने नगर।
29"तुम मुझसे विवाद क्यों करते हो? तुम सभी मेरे
विरुद्ध हो गए हो।" यह सन्देश यहोवा का था। 30"यहूदा
के लोगों, मैंने तुम्हारे लोगों को दण्ड दिया, किन्तु इसका
कोई परिणाम न निकला। तुम तब लौट कर नहीं आए
जब दण्डित किये गये। तुमने उन नबियों को तलवार के
घाट उतारा जो तुम्हारे पास आए। तुम खूंखार सिंह की
तरह थे और तुमने नबियों को मार डाला।" 31इस पीढ़ी
के लोगों, यहोवा के सन्देश पर ध्यानदो:
"क्या मैं इस्राएल के लोगों के लिये मरुभूमि सा बन
गया? क्या मैं उनके लिये अंधेरे और भयावने देश सा
बन गया? मेरे लोग कहते हैं, 'हम अपनी राह जाने को
स्वतन्त्र हैं, यहोवा, हम फिर तेरे पास नहीं लौटेंगे!' वे
उन बातों को क्यों कहते हैं? 32क्या कोई युवती अपने
आभूषण भूलती है? नहीं। क्या कोई दुल्हन अपने श्रृंगार
के लिए अपना दुपट्टा भूल जाती है? नहीं। किन्तु मेरे
लोग मुझे अनगिनत दिनों से भूल गए हैं।
33"यहूदा, तुम सचमुच प्रेमियों (झूठे देवताओं) के
पीछे पड़ना जानते हो। अत: तुमने पाप करना स्वयं ही
सीख लिया है। 34तुम्हारे हाथ खून से रंगे हैं! यह गरीब
और भोले लोगों का खून है। तुमने लोगो को मारा और
वे लोग ऐसे चोर भी नहीं थे जिन्हें तुमने पकड़ा हो! तुम
वे बुरे काम करते हो! 35किन्तु तुम फिर भी कहते
रहते हो, 'हम निरपराध हैं। परमेश्वर मुझ पर क्रोधित
नहीं है।' अत: मैं तुम्हें झूठ बोलने वाला अपराधी होने
का भी निर्णय दूँगा। क्यों? क्योंकि तुम कहते हो, 'मैंने
कुछ भी बुरा नहीं किया है।' 36तुम्हारे लिये इरादे को
बदलना बहुत आसान है। अश्शूर ने तुम्हें हताश किया!
अत: तुमने अश्शूर को छोड़ा और सहायता के लिये
मिस्र पहुँचे। मिस्र तुम्हें हताश करेगा। 37ऐसा होगा कि
तुम मिस्र भी छोड़ोगे और तुम्हारे हाथ लज्जा से तुम्हारी
आँखों पर होंगे। तुमने उन देशों पर विश्वास किया।
किन्तु तुम्हें उन देशों में कोई सफलता नहीं मिलेगी।
क्यों? क्योंकि यहोवा ने उन देशों को अस्वीकार कर
दिया है।

3 "यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को तलाक देता है,
और वह पत्नी उसे छोड़ देती है तथा अन्य व्यक्ति से
विवाह कर लेती है तो क्या वहव्यक्ति अपनी पत्नी के
पास फिर आ सकता है?नहीं! यदि वह व्यक्ति उस स्त्री
के पास लौटेगा तो देश पूरी तरह गन्दा हो जाएगा। यहूदा,
तुमने वेश्या की तरह अनेक प्रेमियों (असत्य देवताओं)
के साथ काम किये और अब तुम मेरे पास लौटना
चाहते हो!" यह सन्देश यहोवा का था।
2"यहूदा, खाली पहाड़ी की चोटी को देखो। क्या कोई
ऐसी जगह है जहाँ तुम्हारा अपने प्रेमियों (असत्य देवताओं)
के साथ शारीरिक सम्बन्ध न चला? तुम सड़क के
किनारे प्रेमियों की प्रतीक्षा करती बैठी हो। तुम वहाँ
मरुभूमि में प्रतीक्षा करते अरब की तरह बैठी। तुमने
देश को गन्दा किया है! कैसे? तुमने बहुत से बुरे काम
किये और तुम मेरी अभक्त रही। 3तुमने पाप किये अत:
वर्षा नहीं आई! बसन्त समय की कोई वर्षा नहीं हुई।
किन्तु अभी भी तुम लज्जित होने से इन्कार करती हो
तुम्हारे चेहरे पर वेश्या का वह भाव है जब वह लज्जित
होने से इन्कार करती है। तुम अपने किये कामों पर
लज्जित होने से भी इन्कार करती हो। 4किन्तु अब तुम
मुझे बुलाती हो। 'मेरे पिता, तू मेरे बचपन से मेरे प्रिय
मित्र रहा है।' 5तुमने ये भी कहा 'परमेश्वर सदैव मुझ
पर क्रोधित नहीं रहेगा। परमेश्वर का क्रोध सदैव बना
नहीं रहेगा।'
"यहूदा, तुम यह सब कुछ कहती हो, किन्तु तुम
उतने ही पाप करती हो जितने तुम कर सकती हो।"

दो बुरी बहनें: इस्राएल और यहूदा

6उन दिनों जब योशिय्याह यहूदा राष्ट्र पर शासन कर
रहा था। यहोवा ने मुझसे बातें की। यहोवा ने कहा,
"यिर्मयाह, तुमने उन बुरे कामों को देखा जो इस्राएल ने
किये? तुमने देखा कि उसने कैसे मेरे साथ विश्वासघात
किया। उसने हर एक पहाड़ी के ऊपर और हर एक
हरे पेड़ के नीच झूठी मूर्तियों की पूजा करके व्यभिचार
करने का पाप किया। 7मैंने अपने से कहा, 'इस्राएल मेरे
पास तब लौटेगी जब वह इन बुरे कामों को कर चुकेगी।'
किन्तु वह मेरे पास लौटी नहीं और इस्राएल की अविश्वासी
बहन यहूदा ने देखा कि उसने क्या किया है? 8इस्राएल
विश्वासघातिनी थी और यहूदा जानती थी कि मैंने उसे

क्यों दूर हटाया। यहूदा जानती थी कि मैंने उसको
इसलिए अस्वीकृत किया कि उसने व्यभिचार का पाप
किया था। किन्तु इसने उसकी विश्वासघाती बहन को
डराया नहीं। यहूदा डरी नहीं। यहूदा भी निकल गई और
उसने वेश्या की तरह काम किया। 9यहूदा ने यह ध्यान
भी नहीं दिया कि वह वेश्या की तरह काम कर रही
है। अत: उसने अपने देश को 'गन्दा' किया। उसने
लकड़ी और पत्थर की बनी देवमूर्तियों की पूजा करके
व्यभिचार का पाप किया। 10इस्राएल की अविश्वासी
बहन (यहूदा) अपने पूरे हृदय से मेरे पास नहीं लौटी।
उसने केवल बहानाबनाया कि वह मेरे पास लौटी है।"
यह सन्देश यहोवा का था।

11यहोवा ने मुझसे कहा, "इस्राएल मेरी भक्त नहीं
रही। किन्तु उसके पास कपटी यहूदा की अपेक्षा अच्छा
बहाना था। 12यिर्मयाह, उत्तर की ओर देखो और यह
सन्देश बोलो: 'अविश्वासी इस्राएल के लोगों तुम लौटो।'
यह सन्देश यहोवा का था। 'मैं तुम पर भौंहे चढ़ाना छोड़
दूँगा, मैं दयासागर हूँ।' यह सन्देश यहोवा का था। 'मैं
सदैव तुम पर क्रोधित नहीं रहूँगा।

13तुम्हें केवल इतना करना होगा कि तुम अपने
पापों को पहचानो। तुम यहोवा अपने परमेश्वर के
विरुद्ध गए, यह तुम्हारा पाप है। तुमने अन्य राष्ट्रों के
लोगों की देव मूर्तियों को अपना प्रेम दिया। तुमने देव
मूर्तियों की पूजा हर एक हरे पेड़ के नीचे की। तुमने
मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया।'" यह सन्देश यहोवा
का था।

14"अभक्त लोगों, मेरे पास लौट आओ।" यह सन्देश
यहोवा का था।

"मैं तुम्हारा स्वामी हूँ। मैं हर एक नगर से एक व्यक्ति
लूँगा और हर एक परिवार से दो व्यक्ति और तुम्हें
सिय्योन पर लाऊँगा। 15तब मैं तुम्हें नये शासक दूँगा। वे
शासक मेरे भक्त होंगे। वे तुम्हारा मार्ग दर्शन ज्ञान और
समझ से करेंगे। 16उन दिनों तुम लोग बड़ी संख्या में
देश में होगे।" यह सन्देश यहोवा का है।

"उस समय लोग फिर यह कभी नहीं कहेंगे, 'मैं उन
दिनों को याद करता हूँ जब हम लोगों के पास यहोवा
का साक्षीपत्र का सन्दूक था।' वे पवित्र सन्दूक के बारे
में फिर कभी सोचेंगे भी नहीं। वे न तो इसे याद करेंगे
और न ही उसके लिये अफसोस करेंगे। वे दूसरा पवित्र
सन्दूक कभी नहीं बनाएंगे। 17उस समय, यरूशलेम नगर
'यहोवा का सिंहासन' कहा जाएगा। सभी राष्ट्र एक साथ
यरूशलेम नगर में यहोवा के नाम को सम्मान देने
आएंगे। वे अपने हठी और बुरे हृदय के अनुसार अब
कभी नहीं चलेंगे। 18उन दिनों यहूदा का परिवार इस्राएल
के परिवार के साथ मिल जायेगा। वे उत्तर में एक देश
से एक साथ आएंगे। वे उस देश में आएंगे जिसे मैंने
उनके पूर्वजों को दिया था।

19"मैंने अर्थात् यहोवा ने अपने से कहा, 'मैं तुमसे
अपने बच्चो का सा व्यवहार करना चाहता हूँ, मैं तुम्हें
एक सुहावना देश देना चाहता हूँ। वह देश जो किसी भी
राष्ट्र से अधिक सुन्दर होगा।' मैंने सोचा था कि तुम
मुझे 'पिता' कहोगे। मैंने सोचा था कि तुम मेरा सदैव
अनुसरणकरोगे। 20किन्तु तुम उस स्त्री की तरह हुए जो
पतिव्रता नहीं रही। इस्राएल के परिवार, तुम मेरे प्रति
विश्वासघाती रहे!" यह सन्देश यहोवा का था। 21तुम
नंगी पहाड़ियों पर रोना सुन सकते हो। इस्राएल के लोग
कृपा के लिये रो रहे और प्रार्थना कर रहे हैं। वे बहुत
बुरे हो गए थे। वे अपने परमेश्वर यहोवा को भूल गए
थे।

22यहोवा ने यह भी कहा। "इस्राएल के अविश्वासी
लोगों, तुम मेरे पास लौट आओ। मेरे पास लौटो, और मैं
तुम्हारे अविश्वासी होने के अपराध को क्षमा करूँगा।"
लोगों को कहना चाहिये, "हाँ, हम लोग तेरे पास आएँगे
तू हमारा परमेश्वर यहोवा है। 23पहाड़ियों पर देवमूर्तियों
की पूजा मूर्खता थी। पर्वतों के सभी गरजने वाले दल
केवल थोथे निकले। निश्चय ही इस्राएल की मुक्ति,
यहोवा अपने परमेश्वर से है। 24हमारे पूर्वजों की हर
एक अपनी चीज बलि रूप में उस घृणित ने खाई है। यह
तब हुआ जब हम लोग बच्चे थे। उस घृणित ने हमारे
पूर्वजों के पशु भेड़, पुत्र, पुत्री लिये। 25हम अपनी लज्जा
में गड़ जायँ, अपनी लज्जा को हम कम्बल की तरह
अपने को लपेट लेने दें। हमने अपने परमेश्वर यहोवा
के विरुद्ध पाप किया है। बचपन से अब तक हमने और
हमारे पूर्वजों ने पाप किये हैं। हमने अपने परमेश्वर
यहोवा की आज्ञा नहीं मानी है।"

4 यह सन्देश यहोवा का है। "इस्राएल, यदि तुम लौट
आना चाहो, तो मेरे पास आओ। अपनी देव मूर्तियों
को फेंको। मुझसे दूर न भटको। 2यदि तुम वे काम
करोगे तो प्रतिज्ञा करने के लिये मेरे नाम का उपयोग
करने योग्य बनोगे, तुम यह कहने योग्य होगे, 'जैसा कि
यहोवा शाश्वत है।' तुम इन शब्दों का उपयोग सच्चे,
ईमानदारी भरे और सही तरीके से करने योग्य बनोगे।
यदि तुम ऐसा करोगे तो राष्ट्र यहोवा द्वारा वरदान पाएगा
और वे यहोवा द्वारा किये गए कामों को गर्व से बखान
करेंगे।"

3यहूदा राष्ट्र के मनुष्यों और यरूशलेम नगर से,
यहोवा जो कहता है, वह यह है: "तुम्हारे खेतों में हल
नहीं चले हैं। खेतों में हल चलाओ। काँटो में बीज न
बोओ। 4यहोवा के लोग बनो, अपने हृदय को बदलो।
यहूदा के लोगों और यरूशलेम के निवासियों, यदि तुम
नहीं बदले, तो मैं बहुत क्रोधित होऊँगा। मेरा क्रोध आग
की तरह फैलेगा और मेरा क्रोध तुम्हें जला देगा और
कोई व्यक्ति उस आग को बुझा नहीं पाएगा। यह क्यों
होगा? क्योंकि तुमने बुरे काम किये हैं।"

उत्तर दिशा से विध्वंस

5यहूदा के लोगों में इस सन्देश की घोषणा करो:
यरूशलेम नगर के हर एक व्यक्ति से कहो, 'सारे देश
में तुरही बजाओ।' जोर से चिल्लाओ और कहो, 'एक
साथ आओ, हम सभी रक्षा के लिये दृढ़ नगरों को भाग
निकलें।' 6सिय्योन की ओर सूचक ध्वज उठाओ, अपने
जीवन के लिये भागो, प्रतीक्षा न करो। यह इसलिये
करो कि मैं उत्तर से विध्वंस ला रहा हूँ। मैं भयंकर
विनाश ला रहा हूँ। 7एक सिंह अपनी गुफा से निकला
है, राष्ट्रों का विध्वंसक तेज कदम बढ़ाना आरम्भ कर
चुका है। वह तुम्हारे देश को नष्ट करने के लिये
अपना घर छोड़ चुका है। तुम्हारे नगर ध्वस्त होंगे।
उनमें रहने वाला कोई व्यक्ति नहीं बचेगा। 8अत: टाट
के कपड़े पहनो, रोओ, क्यों? क्योंकि यहोवा हम पर
बहुत क्रोधितहै।" 9यह सन्देश यहोवा का है, ऐसे समय
यह होता है। राजा और प्रमुख साहस खो बैठेंगे, याजक
डरेंगे, नबियों का दिल दहलेगा।"

10तब मैंने अर्थात् यिर्मयाह ने कहा, "मेरे स्वामी
यहोवा, तूने सचमुच यहूदा और यरूशलेम के लोगों को
धोखे में रखा है। तूने उनसे कहा, 'तुम शान्तिपूर्वक
रहोगे।' किन्तु अब उनके गले तर तलवार खिंची हुई
है।"

11उस समय एक सन्देश यहूदा और यरूशलेम के
लोगों को दिया जाएगा: "नंगी पहाड़ियों से गरम आँधी
चल रही है। यह मरुभूमि से मेरे लोगों की ओर आ रही
है। यह वह मन्द हवा नहीं जिसका उपयोग किसान भूसे
से अन्न निकालने के लिये करते हैं। 12यह उससे
अधिक तेज हवा है और मुझसे आ रही है। अब मैं
यहूदा के लोगों के विरुद्ध अपने न्याय की घोषणा
करूँगा।"

13देखो! शत्रु मेघ की तरह उठ रहा है, उसके रथ
चक्रवात के समान है। उसके घोड़े उकाब से तेज हैं।
यह हम सब के लिये बुरा होगा, हम बरबाद हो जाएंगे।

14यरूशलेम के लोगों, अपने हृदय से बुराइयों को धो
डालो। अपने हृदयों को पवित्र करो, जिससे तुम बच
सको। बुरी योजनायें मत बनाते चलो। 15दान देश के दूत
की वाणी, जो वह बोलता है, ध्यान से सुनो। कोई एप्रैम
के पहाड़ी प्रदेश से बुरी खबर ला रहा है। 16"इस राष्ट्र
को इसका विवरण दो। यरूशलेम के लोगों में इस खबर
को फैलाओ। शत्रु दूर देश से आ रहे हैं। वे शत्रु यहूदा
के नगरों के विरुद्ध युद्ध–उद्घोष कर रहे हैं। 17शत्रुओं
ने यरूशलेम को ऐसे घेरा है जैसे खेत की रक्षा करने
वाले लोग हो। यहूदा, तुम मेरे विरुद्ध गए, अत: तुम्हारे
विरुद्ध शत्रु आ रहे हैं!" यह सन्देश यहोवा का है!

18"जिस प्रकार तुम रहे और तुमने पाप किया उसी से
तुम पर यह विपत्ति आई। यह तुम्हारे पाप ही हैं जिसने
जीवन को इतना कठिन बनाया है। यह तुम्हारा पाप ही
है जो उस पीड़ा को लाया जो तुम्हारे हृदय को बेधती
है।"

यिर्मयाह का रुंदन

19आह, मेरा दु:ख और मेरी परेशानी मेरे पेट मे दर्द
कर रही हैं। मेरा हृदय धड़क रहा है। हाय, मैं इतना
भयभीत हूँ। मेरा हृदय मेरे भीतर तड़प रहा है। मैं चुप
नहीं बैठ सकता। क्यों? क्योंकि मैंने तुरही का बजना
सुना है। तुरही सेना को युद्ध के लिये बुला रही है।
20ध्वंस के पीछे विध्वंस आता है। पूरा देश नष्ट हो गया
है। अचानक मेरे डेरे नष्ट कर दिये गये हैं, मेरे परदे
फाड़ दिये गए हैं। 21हे यहोवा, मैं कब तक युद्ध पताकायें
देखूँगा? युद्ध की तुरही को कितने समय सुनूँगा?

22परमेश्वर ने कहा, "मेरे लोग मूर्ख हैं। वे मुझे नहीं
जानते। वे बेवकूफ बच्चे हैं। वे समझते नहीं। वे पाप
करने में दक्ष हैं, किन्तु वे अच्छा करना नहीं जानते।"

विनाश आ रहा है

23मैंने धरती को देखा। धरती खाली थी, इस पर कुछ
नहीं था। मैंने गगन को देखा, और इसका प्रकाश चला
गया था। 24मैंने पर्वतों पर नजर डाली, और वे काँप रहे
थे। सभी पहाड़ियाँ लड़खड़ा रही थीं। 25मैंने ध्यान से
देखा, किन्तु कोई मनुष्य नहीं था, आकाश के सभी
पक्षी उड़ गए थे। 26मैंने देखा कि सुहावना प्रदेश मरुभूमि
बन गया था। उस देश के सभी नगर नष्ट कर दिये गये
थे। यहोवा ने यह कराया। यहोवा और उसके प्रचण्ड
क्रोध ने यह कराया।

27यहोवा ये बातें कहता है: "पूरा देश बरबाद हो
जाएगा। (किन्तु मैं देश को पूरी तरह नष्ट नहीं करुँगा।)
28अत: इस देश के लोग मरे लोगों के लिये रोयेंगे।
आकाश अँधकारपूर्ण होगा। मैंने कह दिया है, और
बदलूँगा नहीं। मैंने एक निर्णय किया है, और मैं अपना
विचार नहीं बदलूँगा।"

29यहूदा के लोग घुड़सवारों और धनुर्धारियों का उद्घोष
सुनेंगे, और लोग भाग जायेंगे। कुछ लोग गुफाओं में
छिपेंगे कुछ झाड़ियों में तथा कुछ चट्टानों पर चढ़
जाएंगे। यहूदा के सभी नगर खाली हैं। उनमें कोई नहीं
रहता।

30हे यहूदा, तुम नष्ट कर दिये गये हो, तुम क्या कर
रहे हो? तुम अपने सुन्दरतम लाल वस्त्र क्यों पहनतेहो?
तुम अपने सोने के आभूषण क्यों पहने हो? तुम अपनी
आँखों में अन्जन क्यों लगाते हो। तुम अपने को सुन्दर
बनाते हो, किन्तु यह सब व्यर्थ है। तुम्हारे प्रेमी तुमसे
घृणा करते हैं, वे मार डालने का प्रयत्न कर रहे हैं।

31मैं एक चीख सुनता हूँ जो उस स्त्री की चीख की
तरह है जो बच्चा जन्म रही हो। यह चीख उस स्त्री की
तरह है जो प्रथम बच्चे को जन्म रही हो। यह सिय्योन

की पुत्री की चीख है। वह अपने हाथ प्रार्थना में यह
कहते हुए उठा रही है, "आह! मैं मूर्छित होने वाली हूँ,
हत्यारे मेरे चारों ओर हैं!"

यहूदा के लोगों के पाप

5 यहोवा कहता है: "यरूशलेम की सड़कों पर ऊपर
नीचे जाओ। चारों ओर देखो और इन चीजों के
बारे में सोचो। नगर के सार्वजनिक चौराहो को खोजो,
पता करो कि क्या तुम किसी एक अच्छे व्यक्ति को पा
सकते हो, ऐसे व्यक्ति को जो ईमानदारी से काम करता
हो, ऐसा जो सत्य की खोज करता हो। यदि तुम एक
अच्छे व्यक्ति को ढूँढ निकालोगे तो मैं यरूशलेम को
क्षमा कर दूँगा! 2लोग प्रतिज्ञा करते हैं और कहते हैं,
'जैसा कि यहोवा शाश्वत है।' किन्तु वे सच्चाई से यही
तात्पर्य नहीं रखते।"

3हे यहोवा, मैं जानता हूँ कि तू लोगों में सच्चाई देखना
चाहता है। तूने यहूदा के लोगों को चोट पहुँचाई, किन्तु
उन्होंने किसी पीड़ा का अनुभव नहीं किया। तूने उन्हें
नष्ट किया, किन्तु उन्होंने अपना सबक सीखने से
इन्कार कर दिया। वे बहुत हठी हो गए। उन्होंने अपने
पापों के लिये पछताने से इन्कार कर दिया।

4किन्तु मैं (यिर्मयाह) ने अपने से कहा, "वे केवल
गरीब लोग ही है जो उतने मूर्ख हैं। ये वही लोग हैं जो
यहोवा के मार्ग को नहीं सीख सके! गरीब लोग अपने
परमेश्वर की शिक्षा को नहीं जानते। 5इसलिये मैं यहूदा
के लोगों के प्रमुखों के पास जाऊँगा। मैं उनसे बातें
करूँगा। निश्चय ही प्रमुख यहोवा के मार्ग को समझते
हैं। मुझे विश्वास है कि वे अपने परमेश्वर के नियमों
को जानते हैं।" किन्तु सभी प्रमुख यहोवा की सेवा
करने से इन्कार करने में एक साथ हो गए। 6वे परमेश्वर
के विरुद्ध हुए, अत जंगल का एक सिंह उन पर आक्रमण
करेगा। मरुभूमि में एक भेड़िया उन्हें मार डालेगा। एक
तेंदुआ उनके नगरों के पास घात लगाये है। नगरों के
बाहर जाने वाले किसी को भी तेंदुआ टुकड़ों में चीर
डालेगा। यह होगा, क्योंकि यहूदा के लोगों ने बार–बार
पाप किये हैं। वे कई बार यहोवा से दूर भटक गए हैं।

7परमेश्वर ने कहा, "यहूदा, मुझे कारण बताओ कि
मुझे तुमको क्षमा क्यों कर देना चाहिये? तुम्हारी सन्तानों
ने मुझे त्याग दिया है। उन्होंने उन देवमूर्तियों से प्रतिज्ञा
की है जो परमेश्वर हैं ही नहीं। मैंने तुम्हारी सन्तानों को
हर एक चीज़ दी जिसकी जरुरत उन्हें थी। किन्तु फिर
भी वे विश्वासघाती रहे! उन्होंने वेश्यालयों में बहुत
समय बिताया। 8वे उन घोड़ों जैसे रहे जिन्हें बहुत खाने
को है, और जो जोड़ा बनाने को हो। वे उन घोड़ों जैसे
रहे जो पड़ोसी की पत्नियों पर हिन हिना रहे हैं। 9क्या
मुझे यहूदा के लोगों को ये काम करने के कारण, दण्ड
देना चाहिए? यह सन्देश यहोवा का है। हाँ! तुम जानते
हो कि मुझे इस प्रकार के राष्ट्र को दण्ड देना चाहिये।
मुझे उन्हें वह दण्ड देना चाहिए जिसके वे पात्रहैं।

10यहूदा की अंगूर की बेलों की कतारों के सहारे से
निकलो। बेलों को काट डालो। (किन्तु उन्हें पूरी तरह
नष्ट न करो।) उनकी सारी शाखायें छाँट दो? क्योंकि
ये शाखाये यहोवा की नहीं हैं। 11इस्राएल और यहूदा के
परिवार हर प्रकार से मेरे विश्वासघाती रहे हैं।" यह
सन्देश यहोवा के यहाँ से है।

12"उन लोगों ने यहोवा के बारे में झूठ कहा है।
उन्होंने कहा हैं, 'यहोवा हमारा कुछ नहीं करेगा। हम
लोगों का कुछ भी बुरा न होगा। हम किसी सेना का
आक्रमण अपने ऊपर नहीं देखेंगे। हम कभी भूखों नहीं
मरेंगे।' 13झूठे नबी मरे प्राण हैं। परमेश्वर का सन्देश
उनमें नहीं उतरा है। विपत्तियाँ उन पर आयेंगी।"
14सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा ने यह सब कहा, "उन
लोगों ने कहा कि मैं उन्हें दण्ड नहीं दूँगा। अत: यिर्मयाह,
जो सन्देश मैं तुझे दे रहा हूँ, वह आग जैसा होगा और वे
लोग लकड़ी जैसे होंगे। आग सारी लकड़ी जला डालेगी।"

15इस्राएल के परिवार, यह सन्देश यहोवा का है, "तुम
पर आक्रमण के लिये मैं एक राष्ट्र को बहुत दूर से
जल्दी ही लाऊँगा। यह एक पुराना राष्ट्र है। यह एक
प्राचीन राष्ट्र है। उस राष्ट्र के लोग वह भाषा बोलते हैं
जिसे तुम नहीं समझते। तुम नहीं समझ सकते कि वे
क्या कहते हैं? 16उनके तरकश खुली कब्र हैं, उनके
सभी लोग वीर सैनिक हैं। 17वे सैनिक तुम्हारी घर लाई
फसल को खा जाएंगे। वे तुम्हारा सारा भोजन खा जाएंगे।
वे तुम्हारे पुत्र–पुत्रियों को खा जाएंगे (नष्ट कर देंगे) वे
तुम्हारे रेवड़ और पशु झुण्ड को चट कर जाएंगे। वे
तुम्हारे अंगूर और अंजीर को चाट जाएंगे। वे तुम्हारे दृढ़
नगरों को अपनी तलवारों से नष्ट कर डालेंगे। जिन
नगरों पर तुम्हारा विश्वास है उन्हें वे नष्ट कर देंगे।"

18यह सन्देश यहोवा का है। "किन्तु कब वे भयानक
दिन आते हैं, यहूदा मैं तुझे पूरी तरह नष्ट नहीं करूँगा।
19यहूदा के लोग तुमसे पूछेंगे, 'यिर्मयाह, हमारे परमेश्वर
यहोवा ने हमारा ऐसा बुरा क्यों किया?' उन्हें यह उत्तर
दो, 'यहूदा के लोगों, तुमने यहोवा को त्याग दियाहै, और
तुमने अपने ही देश में विदेशी देव मूर्तियों की पूजा की
है। तुमने वे काम किये, अत: तुम अब उस देश में जो
तुम्हारा नहीं है, विदेशियों की सेवा करोगे।'"

20यहोवा ने कहा, "याकूब के परिवार में, इस सन्देश
की घोषणा करो। इस सन्देश को यहूदा राष्ट्र में सुनाओ।
21इस सन्देश को सुनो, तुम मूर्ख लोगों, तुम्हें समझ नहीं
हैं: 'तुम लोगों की आँखें है, किन्तु तुम देखते नहीं! तुम
लोगों के कान हैं, किन्तु तुम सुनते नहीं!' 22निश्चय ही
तुम मुझसे भयभीत हो।" यह सन्देश यहोवा का है। "मेरे
सामने तुम्हें भय से काँपना चाहिये। मैं ही वह हूँ, जिसने
समुद्र तटों को समुद्र की मर्यादा बनाई। मैंने बालू की

ऐसी सीमा बनाई जिसे पानी तोड़ नहीं सकता। तरंगे तट
को कुचल सकती हैं, किन्तु वे इसे नष्ट नहीं करेंगी।
चढ़ती हुई तरंगे गरज सकती हैं, किन्तु वे तट की
मर्यादा तोड़ नहीं सकती। 23किन्तु यहूदा के लोग हठी
हैं। वे हमेशा मेरे विरुद्ध जाने की योजना बनाते हैं। वे
मुझसे मुड़े हैं और मुझसे दूर चले गए हैं। 24यहूदा के
लोग कभी अपने से नहीं कहते, 'हमें अपने परमेश्वर
यहोवा से डरना और उसका सम्मान करना चाहिए।
वह हमे ठीक समय पर पतझड़ और बसन्त की वर्षा
देता है। वे यह निश्चित करता है कि हम ठीक समय
पर फसल काट सकें।' 25यहूदा के लोगों, तुमने अपराध
किया है। अत: वर्षा और पकी फसल नहीं आई। तुम्हारे
पापों ने तुम्हें यहोवा की उन अच्छी चीजों का भोग नहीं
करने दिया है।

26मेरे लोगों के बीच पापी लोग हैं। वे पापी लोग
पक्षियों को फँसाने के लिये जाल बनाने वालों के समान
हैं। वे लोग अपना जाल बिछाते हैं, किन्तु वे पक्षी के
बदले मनुष्यों को फँसाते हैं। 27इन व्यक्तियों के घर झूठ
से वैसे भरे होते हैं, जैसे चिड़ियों से भरे पिंजरे हों। उनके
झूठ ने उन्हें धनी और शक्तिशाली बनाया है। 28जिन
पापों को उन्होंने किया है उन्ही से वे बड़े और मोटे हुए
हैं। जिन बुरे कामों को वे करते हैं उनका कोई अन्त
नहीं। वे अनाथ बच्चों के मामले के पक्ष में बहस नहीं
करेंगे, वे अनाथों की सहायता नहीं करेंगे। वे गरीब
लोगों को उचित न्याय नहीं पानें देंगे। 29क्या मुझे इन
कामों के करने के कारण यहूदा को दण्ड देना चाहिये?"
यह सन्देश यहोवा का है। "तुम जानते हो कि मुझे ऐसे
राष्ट्र को दण्ड देना चाहिये। मुझे उन्हें वह दण्ड देना
चाहिए जो उन्हें मिलना चाहिए।"

30यहोवा कहता है, "यहूदा देश में एक भयानक और
दिल दहलाने वाली घटना घट रही है। जो हुआ है वह
यह है कि: 31नबी झूठ बोलते हैं, याजक अपने हाथ में
शक्ति लेते हैं। मेरे लोग इसी तरह खुश हैं। किन्तु लोगों,
तुम क्या करोगे जब दण्ड दिया जायेगा?"

शत्रु द्वारा यरूशलेम का घेराव

6 बिन्यामीन के लोगों, अपनी जान लेकर भागो,
यरूशलेम नगर से भाग चलो! युद्ध की तुरही तकोआ
नगर में बजाओ! बेथक्केरेम नगर में खतरे का झण्डा
लगाओ! ये काम करो क्योंकि उत्तर की ओर से विपत्ति
आ रही है। तुम पर भयंकर विनाश आ रहा है। 2सिय्योन
की पुत्री, तुम एक सुन्दर चरागाह के समान हो। 3गड़ेरिये
यरूशलेम आते हैं, और वे अपनी रेवड़ लाते हैं। वे
उसके चारों ओर अपने डेरे डालते हैं। हर एक गड़ेरिया
अपनी रेवड़ की रक्षा करताहै।

4"यरूशलेम नगर के विरुद्ध लड़ने के लिये तैयार हो
जाओ! उठो, हम लोग दोपहर को नगर पर आक्रमण
करेंगे, किन्तु पहले ही देर हो चुकी है। संध्या की छाया
लम्बी हो रही है, 5अत: उठो! हम नगर पर रात में
आक्रमण करेंगे! हम यरूशलेम के दृढ़ रक्षा-साधनों
को नष्ट करेंगे।"

6सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता है, वह यही है:
"यरूशलेम के चारों ओर के पेड़ों को काट डालो और
यरूशलेम के विरुद्ध घेरा डालने का टीला बनाओ। इस
नगर को दण्ड मिलना चाहिये।" इस नगर के भीतर
दमन करने के अतिरिक्त कुछ नहीं है। 7जैसे कुँआ
अपना पानी स्वच्छ रखता है उसी प्रकार यरूशलेम
अपनी दुष्टता को नया बनाये रखता है। इस नगर में
हिंसा और विध्वंस सुना जाता हैं। मैं सदैव यरूशलेम की
बीमारी और चोटों को देख सकता हूँ। 8यरूशलेम, इस
चेतावनी को सुनो। यदि तुम नहीं सुनोगे तो मैं अपनी
पीठ तुम्हारी ओर कर लूँगा। मैं तुम्हारे प्रदेश को सूनी
मरुभूमि कर दूँगा। कोई भी व्यक्ति वहाँ नहीं रह पायेगा।"

9सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता है, वह यह है: "उन
इस्राएल के लोगों को इकट्ठा करो जो अपने देश में
बच गए थे। उन्हें इस प्रकार इकट्ठे करो, जैसे तुम
अंगूर की बेल से आखिरी अंगूर इकट्ठे करते हो।
अंगूर इकट्ठे करने वाले की तरह हर एक बेल की
जाँच करो।"

10मैं किससे बात करूँ? मैं किसे चेतावनी दे सकता
हूँ? मेरी कौन सुनेगा? इस्राएल के लोगों ने अपने कानो
को बन्द किया है। अत: वे मेरी चेतावनी सुन नहीं
सकते। लोग यहोवा की शिक्षा पसन्द नहीं करते। वे
यहोवा का सन्देश सुनना नहीं चाहते। 11किन्तु मैं
(यिर्मयाह) यहोवा के क्रोध से भरा हूँ। मैं इसे
रोकते-रोकते थक गया हूँ। "सड़क पर खेलते बच्चों
पर यहोवा का क्रोध उंडेलो। एक साथ एकत्रित युवकों
पर इसे उंडेलो। पति और उसकी पत्नी दोनों पकड़े
जाएंगे। बूढ़े और अति बूढ़े लोग पकड़े जाएंगे। 12उनके
घर दूसरे लोगों को दे दिए जाएंगे। उनके खेत और
उनकी पत्नियाँ दूसरों को दे दी जाएंगी। मैं अपने हाथ
उठाऊँगा और यहूदा देश के लोगों को दण्ड दूँगा।" यह
सन्देश यहोवा का था।

13"इस्राएल के सभी लोग धन और अधिक धन
चाहते हैं। छोटे से लेकर बड़े तक सभी लालची हैं। यहाँ
तक कि याजक और नबी झूठ पर जीते हैं। 14मेरे लोग
बहुत बुरी तरह चोट खाये हुये हैं। नबी और याजक मेरे
लोगों के घाव भरने का प्रयत्न ऐसे करते हैं, मानों वे
छोटे से घाव हों। वे कहते हैं, 'यह बहुत ठीक है, यह
बिल्कुल ठीक है।' किन्तु यह सचमुच ठीक नहीं हुआ
है। 15नबियों और याजकों को उस पर लज्जित होना
चाहिये, जो बुरा वे करते हैं। किन्तु वे तनिक भी
लज्जित नहीं। वे तो अपने पाप पर संकोच करना तक
भी नहीं जानते। अत: वे अन्य हर एक के साथ दण्डित

होंगे। जब मैं दण्ड दूँगा, वे जमीन पर फेंक दिये जायेंगे।" यह सन्देश यहोवा का है।

16यहोवा यह सब कहता है: "चौराहों पर खड़े होओ और देखो। पता करो कि पुरानी सड़क कहाँ थी। पता करो कि अच्छी सड़क कहाँ है, और उस सड़क पर चलो। यदि तुम ऐसा करोगे, तुम्हें आराम मिलेगा! किन्तु तुम लोगों ने कहा है, 'हम अच्छी सड़क पर नहीं चलेंगे!' 17मैंने तुम्हारी चौकसी के लिये चौकीदार चुने! मैंने उनसे कहा, 'युद्ध-तुरही की आवाज पर कान रखो।' किन्तु उन्होंने कहा, 'हम नहीं सुनेंगे!' 18अत: तुम सभी राष्ट्रों, उन देशों के तुम सभी लोगों, सुनो ध्यान दो! वह सब सुनो जो मैं यहूदा के लोगों के साथ करूँगा। 19पृथ्वी के लोगों, यह सुनो: मैं यहूदा के लोगों पर विपत्ति ढाने जा रहाहूँ। क्यों? क्योंकि उन लोगों ने सभी बुरे कामों की योजनायें बनाई। यह होगा क्योंकि उन्होंने मेरे सन्देशों की ओर ध्यान नहीं दिया है। उन लोगों ने मेरे नियमों का पालन करने से इन्कार किया है।"

20यहोवा कहता है, "तुम शबा देश से मुझे सुगन्धि की भेंट क्यों लाते हो? तुम भेंट के रूप में दूर देशों से सुगन्धि क्यों लाते हो? तुम्हारी होमबलि मुझे प्रसन्न नहीं करती। तुम्हारी बलि मुझे खुश नहीं करती।" 21अत: यहोवा जो कहता है, वह यह है: "मैं यहूदा के लोगों के सामने समस्यायें रखूँगा। वे लोगों को गिराने वाले पत्थर से होंगे। पिता और पुत्र उन पर ठोकर खाकर गिरेंगे। मित्र और पड़ोसी मरेंगे।"

22यहोवा जो कहता है, वह यह है: "उत्तर के देश से एक सेना आ रही है, पृथ्वी के दूर स्थानों से एक शक्तिशाली राष्ट्र आ रहा है। 23सैनिकों के हाथ में धनुष और भाले हैं, वे क्रूर हैं। वे कृपा करना नहीं जानते। वे बहुत शक्तिशाली हैं। वे सागर की तरह गरजते हैं, जब वे अपने घोड़ों पर सवार होते हैं। वह सेना युद्ध के लिये तैयार होकर आ रही है। हे सिय्योन की पुत्री, सेना तुम पर आक्रमण करने आ रही हैं।" 24हमने उस सेना के बारे मैं सूचना पाई है। हम भय से असहाय हैं। हम स्वंय को विपत्तियों के जाल में पड़ा अनुभव करते हैं। हम वैसे ही कष्ट में हैं जैसे एक स्त्री को प्रसव-वेदना होती है। 25खेतों में मत जाओ, सड़कों पर मत निकलो। क्यों? क्योंकि शत्रु के हाथों में तलवार है, क्योंकि खतरा चारों ओर है। 26हे मेरे लोगों, टाट के वस्त्र पहन लो। राख में लोट लगा लो। मरे लोगों के लिए फूट-फूट कर रोओ। तुम एकमात्र पुत्र के खोने पर रोने सा रोओ। ये सब करो क्योंकि विनाशक अति शीघ्रता से हमारे विरुद्ध आएंगे।

27"यिर्मयाह, मैंने (यहोवा ने) तुम्हें प्रजा की कच्ची धातु का पारखी बनाया है। तुम हमारे लोगों की जाँच करोगे और उनके व्यवहार की चौकसी रखोगे। 28मेरे लोग मेरे विरुद्ध हो गए है, और वे बहुत हठी हैं। वे लोगों के बारे में बुरी बातें कहते घूमते हैं। वे उस काँसे और लोहे की तरह हैं जो चमकहीन और जंग खाये हैं। 29वे उस श्रमिक की तरह हैं जिसने चाँदी को शुद्ध करने की कोशिश की। उसकी धोकनी तेज चली, आग भी तेज जली, किन्तु आग से केवल रांगा निकला। यह समय की बरबादी थी जो शुद्ध चाँदी बनाने का प्रयत्न किया गया। ठीक इसी प्रकार मेरे लोगों से बुराई दूर नहीं की जा सकी। 30मेरे लोग 'खोटी चाँदी' कहे जायेंगे। उनको यह नाम मिलेगा क्योंकि यहोवा ने उन्हें स्वीकार नहीं किया।"

यिर्मयाह का मन्दिर उपदेश

7 यह यहोवा का सन्देश यिर्मयाह के लिये है: 2यिर्मयाह, यहोवा के मन्दिर के द्वार के सामने खड़े हो। द्वार पर यह सन्देश घोषित करो:

"यहूदा राष्ट्र के सभी लोगों, यहोवा के यहाँ का सन्देश सुनो। यहोवा की उपासना करने के लिये तुम सभी लोग जो इन द्वारों से होकर आए हो इस सन्देश को सुनो। 3इस्राएल के लोगों का परमेश्वर यहोवा है। सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता है, वह यह है, 'अपना जीवन बदलो और अच्छे काम करो। यदि तुम ऐसा करोगे तो मैं तुम्हें इस स्थान पर रहने दूँगा। 4इस झूठ पर विश्वास न करो जो कुछ लोग बोलते हैं। वे कहते हैं, "यह यहोवा का मन्दिर है। यहोवा का मन्दिर है! यहोवा का मन्दिर है!" 5यदि तुम अपना जीवन बदलोगे और अच्छा काम करोगे, तो मैं तुम्हें इस स्थान पर रहने दूँगा। तुम्हें एक दूसरे के प्रति निष्ठावान होना चाहिए। 6तुम्हें अजनबियों के साथ भी निष्ठावान होना चाहिये। तुम्हें विधवा और अनाथ बच्चों के लिए उचित काम करना चाहिये। निरपराध लोगों को न मारो। अन्य देवताओं का अनुसरण न करो। क्यों? क्योंकि वे तुम्हारे जीवन को नष्ट कर देंगे। 7यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन करोगे तो मैं तुम्हें इस स्थान पर रहने दूँगा। मैंने यह प्रदेश तुम्हारे पूर्वजों को अपने पास सदैव रखने के लिये दिया।

8"'किन्तु तुम झूठ में विश्वास कर रहे हो और वह झूठ व्यर्थ हैं। 9क्या तुम चोरी और हत्या करोगे? क्या तुम व्यभिचार का पाप करोगे? क्या तुम लोगों पर झूठा आरोप लगाओगे? क्या तुम असत्य देवता बाल की पूजा करोगे और अन्य देवताओं का अनुसरण करोगे जिन्हें तुम नहीं जानते? 10यदि तुम ये पाप करते हो तो क्या तुम समझते हो कि तुम उस मन्दिर में मेरे सामने खड़े हो सकते हो जिसे मेरे नाम से पुकारा जाता हो? क्या तुम सोचते हो कि तुम मेरे सामने खड़े हो सकते हो और कह सकते हो, "हम सुरक्षित हैं?" सुरक्षित इसलिये कि जिससे तुम ये घृणित कार्य कर सको। 11यह मन्दिर मेरे नाम से पुकारा जाता है। क्या यह मन्दिर तुम्हारे लिये डकैतों के छिपने के स्थान के अतिरिक्त अन्य

कुछ नहीं है? मैं तुम्हारी चौकसी रख रहा हूँ।'" यह
सन्देश यहोवा का है।
12"यहूदा के लोगों, तुम अब शीलो नगर को जाओ।
उस स्थान पर जाओ जहाँ मैंने प्रथम बार अपने नाम
का मन्दिर बनाया। इस्राएल के लोगों ने भी पाप कर्म
किये। जाओ और देखो कि उस स्थान का मैंने उन पाप
कर्मो के लिये क्या किया जो उन्होंने किये। 13इस्राएल
के लोगों, तुम लोग ये सब पाप कर्म करते रहे।" यह
सन्देश यहोवा का था! "मैंने तुमसे बार-बार बातें कीं,
किन्तु तुमने मेरी अनसुनी कर दी। मैंने तुम लोगों को
पुकारा पर तुमने उत्तर नहीं दिया। 14इसलिये मैं अपने
नाम से पुकारे जाने वाले यरूशलेम के इस मन्दिर को
नष्ट करूँगा। मैं उस मन्दिर को वैसे ही नष्ट करुँगा जैसे
मैंने शीलो को नष्ट किया और यरूशलेम में वह मन्दिर
जो मेरे नाम पर हैं, वही मन्दिर है जिसमें तुम विश्वास
करते हो। मैंने उस स्थान को तुम्हें और तुम्हारे पूर्वजों
को दिया। 15मैं तुम्हें अपने पास से वैसे ही दूर फेंक दूँगा
जैसे मैंने तुम्हारे सभी भाईयों को एप्रैम से फेंका।
16"यिर्मयाह, जहाँ तक तुम्हारी बात है, तुम यहूदा के
इन लोगों के लिये प्रार्थना मत करो। न उनके लिये
याचना करो और न ही उनके लिये प्रार्थना। उनकी
सहायता के लिये मुझसे प्रार्थना मत करो। उनके लिये
तुम्हारी प्रार्थना को मैं नहीं सुनूँगा। 17मैं जानता हूँ कि
तुम देख रहे हो कि वे यहूदा के नगर में क्या कर रहे
हैं? तुम देख सकते हो कि वे यरूशलेम नगर की
सड़कों पर क्या कर रहे हैं? 18यहूदा के लोग जो कर
रहे हैं वह यह है: "बच्चे लकड़ियाँ इकट्ठी करते हैं।
पिता लोग उस लकड़ी का उपयोग आग जलाने में
करते हैं। स्त्रियाँ आटा गूंधती हैं और स्वर्ग की रानी
की भेंट के लिये रोटियाँ बनाती हैं। यहूदा के वे लोग
अन्य देवताओं की पूजा के लिये पेय भेंट चढ़ाते हैं। वे
मुझे क्रोधित करने के लिये यह करते हैं। 19किन्तु मैं
वह नहीं हूँ जिसे यहूदा के लोग सचमुच चोट पहुँचा रहे
हैं।" यह संदेश यहोवा का है। "वे केवल अपने को ही
चोट पहुँचा रहे हैं। वे अपने को लज्जा का पात्र बना रहे
हैं।"
20अत: यहोवा यह कहता है: "मैं अपना क्रोध इस
स्थान के विरूद्ध प्रकट करुँगा। मैं लोगों तथा जानवरों
को दण्ड दूँगा। मैं खेत में पेड़ों और उस भूमि में उगने
वाली फसलों को दण्ड दूँगा। मेरा क्रोध प्रचण्ड अग्नि
सा होगा और कोई व्यक्ति उसे रोक नहीं सकेगा।"

यहोवा बलि की अपेक्षा, अपनी आज्ञा का पालन अधिक चाहता है

21इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा यह
कहता है, "जाओ और जितनी भी होमबलि और बलि
चाहो, भेंट करो। उन बलियों के माँस स्वयं खाओ। 22मैं
तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर लाया। मैंने उनसे बातें
कीं, किन्तु उन्हें कोई आदेश होमबलि और बलि के
विषय में नहीं दिया। 23मैंने उन्हें केवल यह आदेश दिया,
'मेरी आज्ञा का पालन करो और मैं तुम्हारा परमेश्वर
रहूँगा तथा तुम मेरे लोग होगे। जो मैं आदेश देता हूँ वह
करो, और तुम्हारे लिए सब अच्छा होगा।'
24"किन्तु तुम्हारे पूर्वजों ने मेरी एक न सुनी। उन्होंने
मुझ पर ध्यान नहीं दिया। वे हठी रहे और उन्होंने उन
कामों को किया जो वे करना चाहते थे। वे अच्छे न
बने। वे पहले से भी अधिक बुरे बने, वे पीछे को गए,
आगे नहीं बढ़े। 25उस दिन से जिस दिन तुम्हारे पूर्वजों ने
मिस्र छोड़ा आज तक मैंने अपने सेवकों को तुम्हारे पास
भेजा है। मेरे सेवक नबी हैं। मैंने उन्हें तुम्हारे पास
बारबार भेजा। 26किन्तु तुम्हारे पूर्वजों ने मेरी अनसुनी
की। उन्होंने मुझ पर ध्यान नहीं दिया। वे बहुत हठी रहे,
और उन्होंने अपने पूर्वजों से भी बढ़कर बुराईयाँ कीं।
27"यिर्मयाह, तुम यहूदा के लोगों से ये बातें कहोगे।
किन्तु वे तुम्हारी एक न सुनेंगे। तुम उनसे बातें करोगे
किन्तु वे तुम्हें जवाब भी नहीं देंगे। 28इसलिये तुम्हें उनसे
ये बातें कहनी चाहियें: यह वह राष्ट्र है जिसने यहोवा
अपने परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं किया। इन
लोगों ने परमेश्वर की शिक्षाओं को अनसुनी किया। ये
लोग सच्ची शिक्षा नहीं जानते।

हत्या-घाटी

29"यिर्मयाह, अपने बालों को काट डालो और इसे
फेंक दो। पहाड़ी की नंगी चोटी पर चढ़ो और रोओ
चिल्लाओ। क्यों? क्योंकि यहोवा ने इस पीढ़ी के लोगों
को दुत्कार दिया है। यहोवा ने इन लोगों से अपनी पीठ
मोड़ ली है और वह क्रोध में इन्हें दण्ड देगा। 30ये करो
क्योंकि मैंने यहूदा के लोगों को पाप करते देखा है।"
यह सन्देश यहोवा का है। "उन्होंने अपनी देवमूर्तियाँ
स्थापित की हैं और मैं उन देवमूर्तियों से घृणा करता हूँ।
उन्होंने देवमूर्तियों को उस मन्दिर में स्थापित किया है
जो मेरे नाम से है। उन्होंने मेरे मन्दिर को 'गन्दा' कर
दिया है। 31यहूदा के उन लोगों ने बेन हिन्नोम घाटी में
तोपेत के उच्च स्थान बनाए हैं। उन स्थानों पर लोग
अपने पुत्र-पुत्रियों को मार डालते थे, वे उन्हें बलि के
रुप में जला देते थे। यह ऐसा है जिसके लिये मैंने कभी
आदेश नहीं दिया। इस प्रकार की बात कभी मेरे मन में
आई ही नहीं!" 32अत: मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ। वे दिन
आ रहे हैं।" यह सन्देश यहोवा का है, "जब लोग इस
स्थान को तोपेत या बेन हिन्नोम की घाटी फिर नहीं
कहेंगे। नहीं, वे इसे हत्याघाटी कहेंगे। वे इसे यह नाम
इसलिये देंगे कि वे तोपेत में इतने व्यक्तियों को दफनायेंगे
कि उनके लिये किसी अन्य को दफनाने की जगह
नहीं बचेगी। 33तब लोगों के शव जमीन के ऊपर पड़े

रहेंगे और आकाश के पक्षियों के भोजन होंगे। उन
लोगों के शरीर को जंगली जानवर खायेंगे। वहाँ उन
पक्षियों और जानवरों को भगाने के लिये कोई व्यक्ति
जीवित नहीं बचेगा। 34मैं आनन्द और प्रसन्नता के
कहकहों को यहूदा के नगरों और यरूशलेम की सड़कों
पर समाप्त कर दूँगा। यहूदा और यरूशलेम में दुल्हन
और दुल्हे की हँसी–ठिठोली अब से आगे नहीं सुनाई
पड़ेगी। पूरा प्रदेश सूनी मरुभूमि बन जाएगा।"

8 यह सन्देश यहोवा का है: "उस समय लोग यहूदा
के राजाओं और प्रमुख शासकों की हड्डियों को
उनके कब्रों से निकाल लेंगे। वे याजकों और नबियों
की हड्डियों को उनके कब्रों से ले लेंगे। वे यरूशलेम
के सभी लोगों के कब्रों से हड्डियाँ निकाल लेंगे। 2वे
लोग उन हड्डियों को सूर्य, चन्द्र और तारों की पूजा के
लिये नीचे जमीन पर फैलायेंगे। यरूशलेम के लोग सूर्य,
चन्द्र और तारों की पूजा से प्रेम करते हैं। कोई भी
व्यक्ति उन हड्डियाँ को इकट्ठा नहीं करेगा और न ही
उन्हें फिर दफनायेगा। अत: उन लोगों की हड्डियाँ
गोबर की तरह जमीन पर पड़ी रहेंगी।

3"मैं यहूदा के लोगों को अपना घर और प्रदेश छोड़ने
पर विवश करूँगा। लोग विदेशों में ले जाए जाएंगे। यहूदा
के वे कुछ लोग जो युद्ध में नहीं मारे जा सके, चाहेंगे
कि वे मार डाले गए होते।" यह सन्देश यहोवा का है।

पाप और दण्ड

4यिर्मयाह, यहूदा के लोगों से यह कहो कि यहोवा यह
सब कहता है, "तुम यह जानते हो कि जो व्यक्ति गिरता
है वह फिर उठता है। और यदि कोई व्यक्ति गलत राह
पर चलता है तो वह चारों ओर से घूम कर लौट आता
है। 5यहूदा के लोग गलत राह चले गए हैं। (जीवन
बिताये) किन्तु यरूशलेम के वे लोग गलत राह चलते
ही क्यों जा रहे हैं? वे अपने झूठ में विश्वास रखते हैं।
वे मुड़ने तथा लौटने से इन्कार करते हैं। 6मैंने उनको
ध्यान से सुना है, किन्तु वे वह नहीं कहते जो सत्य है।
लोग अपने पाप के लिये पछताते नहीं। लोग उन बुरे
कामों पर विचार नहीं करते जिन्हें उन्होंने किये हैं।
प्रत्येक अपने मार्ग पर वैसे ही चला जा रहाहै। वे युद्ध में
दौड़ते हुए घोड़ों के समान हैं। 7आकाश के पक्षी भी
काम करने का ठीक समय जानते हैं। सारस, कबूतर,
खन्जन और मैना भी जानते हैं कि कब उनको अपने
नये घर में उड़ कर जाना है। किन्तु मेरे लोग नहीं
जानते कि यहोवा उनसे क्या कराना चाहता है।

8"तुम कहते रहते हो, 'हमे यहोवा की शिक्षा मिली
है। अत: हम बुद्धिमान है!' किन्तु यह सत्य नहीं! क्यों?
क्योंकि शास्त्रियों ने अपनी लेखनी से झूठ उगला है।
9उन 'चतुर लोगों' ने यहोवा की शिक्षा अनसुनी की है
अत: सचमुच वे वास्तव में बुद्धिमान लोग नहींहैं। वे
'चतुर लोग' जाल में फँसाये गए। वे काँप उठे और
लज्जित हुए। 10अत: मैं उनकी पत्नियों को अन्य लोगों
को दूँगा। मैं उनके खेत को नये मालिकों को दे दूँगा।
इस्राएल के सभी लोग अधिक से अधिक धन चाहते हैं।
छोटे से लेकर बड़े से बड़े सभी लोग उसी तरह के हैं।
सभी लोग नबी से लेकर याजक तक सब झूठ बोलते
हैं। 11नबी और याजक हमारे लोगों के घावों को भरने
का प्रयत्न ऐसे करते हैं मानों वे छोटे से घाव हों। वे
कहते हैं, 'यह बिल्कुल ठीक है, यह बिल्कुल ठीक है।'
किन्तु यह बिल्कुल ठीक नहीं। 12उन लोगों को अपने
किये बुरे कामों के लिये लज्जित होना चाहिये। किन्तु वे
बिल्कुल लज्जित नहीं। उन्हें इतना भी ज्ञान नहीं कि
उन्हें अपने पापों के लिये ग्लानि हो सके अत: वे अन्य
सभी के साथ दण्ड पायेंगे। मैं उन्हें दण्ड दूँगा और जमीन
पर फेंक दूँगा।" ये बातें यहोवा ने कहीं।

13"मैं उनके फल और फसलें ले लूँगा जिससे उनके
यहाँ कोई पकी फसल नहीं होगी।" यह सन्देश यहोवा
का है: "अंगूर की बेलों में कोई अंगूर नहीं होंगे। अंजीर
के पेड़ों पर कोई अंजीर नहीं होगा। यहाँ तक कि
पत्तियाँ सूखेंगी और मर जाएंगी। मैं उन चीजों को ले
लूँगा जिन्हें मैंने उन्हें दे दी थी।

14"हम यहाँ खाली क्यों बैठे हैं? आओ, दृढ़ नगरो को
भाग निकले। यदि हमारा परमेश्वर यहोवा हमें मारने
ही जा रहा है, तो हम वहीं मरें। हमने यहोवा के विरुद्ध
पाप किया है अत: परमेश्वर ने हमें पीने को जहरीला
पानी दियाहै। 15हम शान्ति की आशा करते थे, किन्तु
कुछ भी अच्छा न हो सका। हम ऐसे समय की आशा
करते हैं, जब वह क्षमा कर देगा किन्तु केवल विपत्ति
ही आ पड़ी है। 16दान के परिवार समूह के प्रदेश से हम
शत्रु केघोड़ो के नथनों के फड़फड़ाने की आवाज सुनते
हैं, उनकी टापों से पृथ्वी काँप उठी है, वे प्रदेश और
इसमें की सारी चीजों को नष्ट करने आए है। वे नगर
औरइसके निवासी सभी लोगों को जो वहाँ रहते हैं, नष्ट
करने आए हैं।

17यहूदा के लोगों, मैं तुम्हें डसने को विषैले साँप भेज
रहा हूँ। उन साँपों को सम्मोहित नहीं किया जा सकता।
वे ही साँप तुम्हें डसेंगे।" यह सन्देश यहोवा का है।

18परमेश्वर, मैं बहुत दु:खी और भयभीत हूँ। 19मेरे
लोगों की सुन। इस देश में वे चारों ओर सहायता के
लिए पुकार रहे हैं। वे कहते हैं, "क्या यहोवा अब भी
सिय्योन में है? क्या सिय्योन के राजा अब भी वहाँ है?"

किन्तु परमेश्वर कहता है, "यहूदा के लोग, अपनी
देव मूर्तियो की पूजा करके मुझे क्रोधित क्यों करते
हैं? उन्होंने अपने व्यर्थ विदेशी देव मूर्तियों की पूजा
की है।"

20लोग कहते हैं, "फसल काटने का समय गया।
बसन्त गया और हम बचाये न जा सके।"

21मेरे लोग बीमार है, अत: मैं बीमार हूँ। मैं इन
बीमार लोगों की चिन्ता में दु:खी और निराश हूँ। 22निश्चय
ही, गिलाद प्रदेश में कुछ दवा है। निश्चय ही गिलाद
प्रदेश में वैद्य है। तो भी मेरे लोगों के घाव क्यों अच्छे
नहीं होते?

9 यदि मेरा सिर पानी से भरा होता, और मेरी आँखें
आँसू का झरना होतीं तो मैं अपने नष्ट किये गए
लोगों के लिए दिन रात रोता रहता।

2यदि मुझे मरुभूमि में रहने का स्थान मिल गयाहोता
जहाँ किसी घर में यात्री रात बिताते, तो मैं अपने लोगों
को छोड़ सकता था। मैं उन लोगों से दूर चला जा
सकता था। क्यों? क्योंकि वे सभी परमेश्वर के
विश्वासघाती व व्यभिचारी हो गए हैं, वे सभी उसके
विरुद्ध हो रहे हैं। 3"वे लोग अपनी जीभ का उपयोग
धनुष जैसा करते हैं, उनके मुख से झूठ बाण के समान
छूटते हैं। पूरे देश में सत्य नहीं। झूठ प्रबल हो गया है, वे
लोग एक पाप से दूसरे पाप करते जाते हैं। वे मुझे नहीं
जानते।" यहोवा ने ये बातें कहीं।

4"अपने पड़ोसियों से सतर्क रहो, अपने निज भाइयों
पर भी विश्वास न करो। क्यों? क्योंकि हर एक भाई
ठग हो गया है। हर पड़ोसी तुम्हारे पीठ पीछे बात करता
है। 5हर एक व्यक्ति अपने पड़ोसी से झूठ बोलताहै। कोई
व्यक्ति सत्य नहीं बोलता। यहूदा के लोगों ने अपनी जीभ
को झूठ बोलने की शिक्षा दी है। उन्होंने तब तक पाप
किये जब तक कि वे इतने थके कि लौट न सकें।
6एक बुराई के बाद दूसरी बुराई आई। झूठ के बाद झूठ
आया। लोगों ने मुझको जानने से इन्कार कर दिया।"
यहोवा ने ये बातें कहीं। 7अत: सर्वशक्तिमान यहोवा
कहता है, "मैं यहूदा के लोगों की परीक्षा वैसे ही करूँगा
जैसे कोई व्यक्ति आग में तपाकर किसी धातु की परीक्षा
करता है। मेरे पास अन्य विकल्प नहीं है। मेरे लोगों ने
पाप किये हैं। 8यहूदा के लोगों की जीभ तेज बाणों की
तरहहैं। उनके मुँह से झूठ बरसता है। हर एक व्यक्ति
अपने पड़ोसी से अच्छा बोलताहै। किन्तु वह छिपे अपने
पड़ोसी पर आक्रमण करने की योजना बनाता है। 9क्या
मुझे यहूदा के लोगों को इन कामों के करने के लिये
दण्ड नहीं देना चाहिए?" यह सन्देश यहोवा का है। "तुम
जानते हो कि मुझे इस प्रकार के लोगों को दण्ड देना
चाहिए। मैं उनको वह दण्ड दूँगा जिसके वे पात्र हैं।"

10मैं (यिर्मयाह) पर्वतों के लिए फूट फूट कर रोऊँगा।
मैं खाली खेतों के लिये शोक गीत गाऊँगा। क्यों? क्योंकि
जीवित वस्तुएं छीन ली गई। कोई व्यक्ति वहाँ यात्रा नहीं
करता। उन स्थान पर पशु ध्वनि नहीं सुनाई पड़ सकती।
पक्षी उड़ गए हैं और जानवर चले गए हैं।

11"मैं (यहोवा) यरूशलेम नगर को कूड़े का ढेर बना
दूँगा। यह गीदड़ों की माँदे बनेगा। मैं यहूदा देश के नगरों
को नष्ट करुँगा अत: वहाँ कोई भी नहीं रहेगा।"

12क्या कोई व्यक्ति ऐसा बुद्धिमान है जो इन बातों को
समझ सके? क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे यहोवा से
शिक्षा मिली है? क्या कोई यहोवा के सन्देश की व्याख्या
कर सकता है? देश क्यों नष्ट हुआ? यह एक सूनी
मरुभूमि की तरह क्यों कर दिया गया जहाँ कोई भी
नहीं जाता?

13यहोवा ने इन प्रश्नों का उत्तर दिया। उसने कहा,
"यह इसलिये हुआ कि यहूदा के लोगों ने मेरी शिक्षा पर
चलना छोड़ दिया। मैंने उन्हें अपनी शिक्षा दी, किन्तु
उन्होंने मेरी सुनने से इन्कार किया। उन्होंने मेरे उपदेशों
का अनुसरण नहीं किया। 14यहूदा के लोग अपनी राह
चले, वे हठी रहे। उन्होंने असत्य देवता बाल का अनुसरण
किया। उनके पूर्वजों ने उन्हें असत्य देवताओं के अनुसरण
करने की शिक्षा दी।"

15अत: इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा
कहता है, "मैं शीघ्र ही यहूदा के लोगों को कड़वा फल
चखाऊँगा। मैं उन्हें जहरीला पानी पिलाऊँगा। 16मैं यहूदा
के लोगों को अन्य राष्ट्रों में बिखेर दूँगा। वे अजनबी
राष्ट्रों में रहेंगे। उन्होंने और उनके पूर्वजों ने उन देशों
को कभी नहीं जाना। मैं तलवार लिये व्यक्तियों को
भेजूँगा। वे लोग यहूदा के लोगों को मार डालेंगे। वे लोगों
को तब तक मारते जाएंगे जब तक वे समाप्त नहीं हो
जाएंगे।"

17सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता है, वह यह है:
"अब इन सबके बारे में सोचो। अन्त्येष्टि के समय भाड़े
पर रोने वाली स्त्रियों को बुलाओ। उन स्त्रियों को
बुलाओ जो विलाप करने में चतुर हों।"

18लोग कहते हैं, 'उन स्त्रियों को जल्दी से आने और
हमारे लिये रोने दो, तब हमारी आँखे आँसू से भरेंगी
और पानी की धारा हमारी आँखों से फूट पड़ेगी।'

19"जोर से रोने की आवाजें सिय्योन से सुनी जा रही
हैं। 'हम सचमुच बरबाद हो गए। हम सचमुच लज्जित हैं।
हमें अपने देश को छोड़ देना चाहिये, क्योंकि हमारे घर
नष्ट और बरबाद हो गयेहैं। हमारे घर अब केवल
पत्थरों के ढेर हो गयेहैं।'"

20यहूदा की स्त्रियों, अब यहोवा का सन्देश सुनो।
यहोवा के मुख से निकले शब्दों को सुनने के लिये
अपने कानखोल लो। यहोवा कहता है, "अपनी पुत्रियों
को जोर से रोना सिखाओ। हर एक स्त्री को इस शोक
गीत को सीख लेना चाहिये:

21"'मृत्यु हमारी खिड़कियों से चढ़कर आ गई है।
मृत्यु हमारे महलों में घुस गई है। सड़क पर खेलने वाले
हमारे बच्चों की मृत्यु आ गई है। सामाजिक स्थानों में
मिलने वाले युवकों की मृत्यु हो गई है।'

22"यिर्मयाह कहो, 'जो यहोवा कहता है, वह यह है:
मनुष्यों के शव खेतों में गोबर से पड़े रहेंगे। उनके शव
जमीन पर उस फसल से पड़े रहेंगे जिन्हें किसान ने

काट डाला है। किन्तु उनको इकट्ठा करने वाला कोई नहीं होगा।'"

23यहोवा कहता है, "बुद्धिमान को अपनी बुद्धिमानी की डींग नहीं मारनी चाहिए। शक्तिशाली को अपने बल का बखान नहीं करना चाहिए। सम्पत्तिशाली को अपनी सम्पत्ति की हवा नहीं बांधनी चाहिए। 24किन्तु यदि कोई डींग मारना ही चाहता है तो उसे इन चीजों की डींग मारने दो: उसे इस बात की डींग मारने दो कि वह मुझे समझता और जानता है। उसे इस बात की डींग हाँकने दो कि वह यह समझता है कि मैं यहोवा हूँ। उसे इस बात की हवा बांधने दो कि मैं कृपालु और न्यायी हूँ। उसे इस बात का ढींढोरा पीटने दो कि मैं पृथ्वी पर अच्छे काम करताहूँ। मुझे इन कामों को करने से प्रेम है। यह सन्देश यहोवाकाहै।

25वह समय आ रहा है, "यह सन्देश यहोवा का है, "जब मैं उन लोगों को दण्ड दूँगा जो केवल शरीर से खतना कराये हैं। 26मैं मिस्र, यहूदा, एदोम, अम्मोन तथा मोआब के राष्ट्रों और उन सभी लोगों के बारे में बातें कर रहा हूँ जो मरुभूमि में रहते हैं जो दाढ़ी के किनारों के बालों को काटते हैं। उन सभी देशों के लोगों ने अपने शरीर का खतना नहीं करवाया है। किन्तु इस्राएल के परिवार के लोगों ने हृदय से खतना को नहीं ग्रहण किया है, जैसे कि परमेश्वर के लोगों को करना चाहिए।"

यहोवा और देवमूर्तियाँ

10 इस्राएल के परिवार, यहोवा की सुनो। 2जो यहोवा कहता है, वह यह है:

"अन्य राष्ट्रों के लोगों की तरह न रहो। आकाश के विशेष संकेतों से न डरो। अन्य राष्ट्र उन संकेतों से डरते हैं जिन्हें वे आकाश में देखते हैं। किन्तु तुम्हें उन चीजों से नहीं डरना चाहिये। 3अन्य लोगों के रीति रिवाज व्यर्थ हैं। उनकी देव मूर्तियाँ जंगल की लकड़ी के अतिरिक्त कुछ नहीं। उनकी देव मूर्तियाँ कारीगर की छैनी से बनी हैं। 4वे अपनी देव मूर्तियों को सोने चाँदी से सुन्दर बनाते हैं। वे अपनी देव मूर्तियों को हथौड़े और कील से लटकाते हैं जिससे वे लटके रहें, गिर न पड़ें। 5अन्य देशों की देवमूर्तियों, ककड़ी के खेत में खड़े फूस के पुतले के समान हैं। वे न बोल सकती हैं, और न चल सकती हैं। उन्हें उठा कर ले जाना पड़ता है क्योंकि वे चल नहीं सकते। उनसे मतडरो।वे न तो तुमको चोट पहुँचा सकती हैं और न ही कोईलाभ!"

6यहोवा तुझ जैसा कोई अन्य नहीं है! तू महान है! तेरा नाम महान और शक्तिपूर्ण है। 7परमेश्वर, हर एक व्यक्ति को तेरा सम्मान करना चाहिए। तू सभी राष्ट्रों का राजा है। तू उनके सम्मान का पात्र है। राष्ट्रों में अनेक बुद्धिमान व्यक्ति हैं। किन्तु कोई व्यक्ति तेरे समान बुद्धिमान नहीं है।

8अन्य राष्ट्रों के सभी लोग शरारती और मूर्ख हैं। उनकी शिक्षा निरर्थक लकड़ी की मूर्तियों से मिली है। 9वे अपनी मूर्तियों को तर्शीश नगर की चाँदीऔर उफाज नगर के सोने का उपयोग करके बनातेहैं। वे देवमूर्तियाँ बढ़इयों और सुनारों द्वारा बनाई जाती हैं। वे उन देवमूर्तियों को नीले और बैंगनी वस्त्र पहनाते हैं। निपुण लोग उन्हें "देवता" बनाते हैं। 10किन्तु केवल यहोवा ही सच्चा परमेश्वर है। वह एकमात्र परमेश्वर है जो चेतन है। वह शाश्वत शासक है। जब परमेश्वर क्रोध करता है तो धरती काँप जाती है। राष्ट्रों के लोग उसके क्रोध को रोक नहीं सकते।

11यहोवा कहता है, "उन लोगों को यह सन्देश दो: 'उन असत्य देवताओं ने पृथ्वी और स्वर्ग नहीं बनाए और वे असत्य देवता नष्ट कर दिए जाएंगे, और पृथ्वी और स्वर्ग से लुप्त हो जाएंगे।'"

12वह परमेश्वर एक ही है जिसने अपनी शक्ति से पृथ्वी बनाई। परमेश्वर ने अपने बुद्धि का उपयोग किया और संसार की रचना कर डाली। अपनी समझ के अनुसार परमेश्वर ने पृथ्वी के ऊपर आकाश को फैलाया। 13परमेश्वर कड़कती बिजली बनाता है और वह आकाश से बड़े जल की बाढ़ को गिराता है। वह पृथ्वी के हर एक स्थान पर, आकाश में मेघों को उठाता है। वह बिजली को वर्षा के साथ भेजता है। वह अपने गोदामों से पवन को निकालताहै।

14लोग इतने बेवकूफ हैं! सुनार उन देवमूर्तियों से मूर्ख बनाए गये हैं जिन्हें उन्होंने स्वंय बनाया है। ये मूर्तियाँ झूठ के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं, वे निष्क्रिय हैं। 15वे देवमूर्तियाँ किसी काम की नहीं। वे कुछ ऐसी हैं जिनका मजाक उड़ाया जा सके। न्याय का समय आने पर वे देवमूर्तियाँ नष्ट कर दी जाएंगी। 16किन्तु याकूब का परमेश्वर उन देवमूर्तियों के समान नहीं है। परमेश्वर ने सभी वस्तुओं की सृष्टि की, और इस्राएल वह परिवार है जिसे परमेश्वर ने अपने लोग के रूप में चुना। परमेश्वर का नाम "सर्वशक्तिमान यहोवा" है।

विनाश आ रहा है

17अपनी सभी चीजें लो और जाने को तैयार हो जाओ। यहूदा के लोगो, तुम नगर में पकड़ लिये गए हो और शत्रु ने इसका घेरा डाल लिया है। 18यहोवा कहता है, "इस समय मैं यहूदा के लोगों को इस देश से बाहर फेंक दूँगा। मैं उन्हें पीड़ा और परेशानी दूँगा। मैं ऐसा करूँगा जिससे वे सबक सीख सकें।"

19ओह, मैं (यिर्मयाह) बुरी तरह घायल हूँ। घायल हूँ और मैं अच्छा नहीं हो सकता। तो भी मैंने स्वयं से कहा, "यह मेरी बीमारी है, मुझे इससे पीड़ित होना चाहिये।"

20मेरा डेरा बरबाद हो गया। डेरे की सारी रस्सियाँ टूट गई हैं। मेरे बच्चे मुझे छोड़ गये। वे चले गये। कोई

व्यक्ति मेरा डेरा लगाने को नहीं बचा है। कोई व्यक्ति
मेरे लिये शरण स्थल बनाने को नहीं बचा है। **21**गड़ेरिये
(प्रमुख) मूर्ख हैं। वे यहोवा को प्राप्त करने का प्रयत्न
नहींकरते। वे बुद्धिमान नहीं हैं, अत: उनकी रेवड़ें
(लोग) बिखर गई और नष्ट हो गई हैं। **22**ध्यान से सुनो!
एक कोलाहल! कोलाहल उत्तर से आ रहा है। यह
यहूदा के नगरों को नष्ट कर देगा। यहूदा एक सूनी
मरुभूमि बन जायेगा। यह गीदड़ों की माँद बन जायेगा।
23हे यहोवा, मैं जानता हूँ कि व्यक्ति सचमुच अपनी
जिन्दगी का मालिक नहीं है। लोग सचमुच अपने भविष्य
की योजना नहीं बना सकते है। लोग सचमुच नहीं
जानते कि कैसे ठीक जीवित रहा जाय। **24**हे यहोवा,
हमें सुधार! किन्तु न्यायी बन! क्रोध में हमे दण्ड न दे!
अन्यथा तू हमें नष्ट कर देगा! **25**यदि तू क्रोधित है तो
अन्य राष्ट्रों को दण्ड दे। वे, न तूझको जानते हैं न ही
तेरा सम्मान करते हैं। वे लोग तेरी आराधना नहीं
करते। उन राष्ट्रों ने याकूब के परिवार को नष्टकिया।
उन्होंने इस्राएल को पूरी तरह नष्ट कर दिया। उन्होंने
इस्राएल की जन्मभूमि को नष्ट किया।

वाचा टूटी

11 यह वह सन्देश है जो यिर्मयाह को मिला। यहोवा
का यह सन्देश आया:

2"यिर्मयाह इसवाचा के शब्दों को सुनो। इन बातों के
विषय में यहूदा के लोगों से कहो। ये बातें यरूशलेम में
रहने वाले लोगों से कहो।

3यह वह है, जो इस्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता
है, 'जो व्यक्ति इस वाचा का पालन नहीं करेगा उस पर
विपत्ति आएगी।' **4**मैं उस वाचा के बारे में कह रहा हूँ
जिसे मैंने तुम्हारे पूर्वजों के साथ की। मैंने वह वाचा
उनके साथ तब की जब मैं उन्हें मिस्र से बाहर लाया।
मिस्र अनेक मुसीबतों की जगह थी यह लोहे को पिघला
देने वाली गर्म भट्टी की तरह थी। मैंने उन लोगों से
कहा, "मेरी आज्ञा मानो और वह सब करो जिसका मैं
तुम्हे आदेश दूँ। यदि तुम यह करोगे तो तुम मेरे लोग
रहोगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊँगा।"

5"मैंने यह तुम्हारे पूर्वजों को दिये गये वचन को पूरा
करने के लिये किया। मैंने उन्हें बहुत उपजाऊ भूमि
देने की प्रतिज्ञा की, ऐसी भूमि जिसमें दूध और शहद
की नदी बहती हो और आज तुम उस देश में रह रहे
हो।" मैं (यिर्मयाह) ने उत्तर दिया, "यहोवा, आमीन।"

6यहोवा ने मुझसे कहा, "यिर्मयाह, इस सन्देश की
शिक्षा यहूदा के नगरों और यरूशलेम की सड़कों पर
दो। सन्देश यह है, "इस वाचा की बातों को सुनो और
तब उन नियमों का पालन करो। **7**मैंने तुम्हारे पूर्वजों
को मिस्र देश से बाहर लाने के समय एक चेतावनी दी
थी। मैंने बार बार ठीक इसी दिन तक उन्हें चेतावनी
दी। मैंने उनसे अपनी आज्ञा का पालन करने के लिये
कहा। **8**किन्तु तुम्हारे पूर्वजों ने मेरी एक न सुनी। वे
हठी थे और वही किया जो उनके अपने बुरे हृदय ने
चाहा। वाचा में यह कहा गया है कि यदि वे आज्ञा का
पालन नहीं करेंगे तो विपत्तियाँ आएंगे। अत: मैंने उन
सभी विपत्तियों को उन पर आने दिया। मैंने उन्हें वाचा
को मानने का आदेश दिया, किन्तु उन्होंने नहीं माना।"

9यहोवा ने मुझसे कहा, "यिर्मयाह, मैं जानता हूँ कि
यहूदा के लोगों और यरूशलेम के निवासियों ने गुप्त
योजनायें बना रखी हैं। **10**वे लोग वैसे ही पाप कर रहे हैं
जिन्हें उनके पूर्वजों ने किया था। उनके पूर्वजों ने मेरे
सन्देश को सुनने से इन्कार किया। उन्होंने अन्य देवताओं
का अनुसरण किया और उन्हें पूजा। इस्राएल के परिवार
और यहूदा के परिवार ने उस वाचा को तोड़ा है जिसे
मैंने उनके पूर्वजों के साथ की थी।"

11अत: यहोवा कहता है: "मैं यहूदा के लोगों पर शीघ्र
ही भयंकर विपत्ति ढाऊँगा। वे बचकर भाग नहीं पाएंगे
और वे सहायता के लिये मुझे पुकारेंगे। किन्तु मैं उनकी
एक न सुनूँगा। **12**यहूदा के नगरों के लोग और यरूशलेम
नगर के लोग जाएंगे और अपनी देवमूर्तियों से प्रार्थना
करेंगे। वे लोग उन देवमूर्तियों को सुगन्धि धूप जलाते हैं।
किन्तु वे देवमूर्तियाँ यहूदा के लोगों की सहायता नहीं
कर पाएंगी जब वह भयंकर विपत्ति का समय आयेगा।

13"यहूदा के लोगों, तुम्हारे पास बहुत सी देवमूर्तियाँ हैं,
वहाँ उतनी देवमूर्तियाँ हैं जितने यहूदा में नगर हैं। तुमने
उस घृणित बाल की पूजा के लिये बहुत सी वेदियाँ बना
रखी हैं यरूशलेम में जितनी सड़के हैं उतनी ही वेदियाँ
है।

14"यिर्मयाह, जहाँ तक तुम्हारी बात है, यहूदा के इन
लोगों के लिये प्रार्थना न करो। उनके लिये याचना न
करो। उनके लिये प्रार्थनायें न करो। मैं सुनूँगा नहीं। वे
लोग कष्ट उठायेंगे और तब वे मुझे सहायता के लिये
पुकारेंगे। किन्तु मैं सुनूँगा नहीं।

15"मेरी प्रिया (यहूदा) मेरे घर (मन्दिर) में क्यों है?
उसे वहाँ रहने का अधिकार नहीं है। उसने बहुत से बुरे
काम किये हैं, यहूदा, क्या तुम सोचती हो कि विशेष
प्रतिज्ञायें और पशु बलि तुम्हें नष्ट होनें से बचा लेंगी?
क्या तुम आशा करती हो कि तुम मुझे बलि भेंट
करके दण्ड पाने से बच जाओगी?

16यहोवा ने तुम्हें एक नाम दिया था। उन्होंने तुम्हें
हरा भरा जैतून वृक्ष कहा था जिसकी सुन्दरता देखने
योग्य है किन्तु एक प्रबल आँधी के गरज के साथ,
यहोवा उस वृक्ष में आग लगा देगा और इसकी शाखायें
जल जाएंगी।

17सर्वशक्तिमान यहोवा ने तुमको रोपा, और उसने
यह घोषणा की है कि तुम पर बरबादी आएगी। क्यों?
क्योंकि इस्राएल के परिवार और यहूदा के परिवार ने

बुरे काम किये हैं। उन्होंने बाल को बलि भेंट करके
मुझको क्रोधित किया है!"

यिर्मयाह के विरुद्ध बुरी योजनाएं

18यहोवा ने मुझे दिखाया कि अनातोत के व्यक्ति मेरे
विरुद्ध षड़यन्त्र कर रहे हैं। यहोवा ने मुझे वह सब
दिखाया जो वे कर रहे थे। अत: मैंने जाना कि वे मेरे
विरुद्ध थे। 19जब यहोवा ने मुझे दिखाया कि लोग मेरे
विरुद्ध हैं इसके पहले मैं उस भोले मेमने के समान था
जो काट दिये जाने की प्रतीक्षा में हो। मैं नहीं समझता
था कि वे मेरे विरुद्ध हैं। वे मेरे बारे में यह कह रहे थे:
"आओ, हम लोग पेड़ और उसके फल को नष्ट कर
दें। आओ हम उसे मार डालें। तब लोग उसे भूल जाएंगे।"
20किन्तु यहोवा तू एक न्यायी न्यायाधीश है। तू लोगों के
हृदय और मन की परीक्षा करना जानता है। मैं अपने
तर्को को तेरे सामने प्रस्तुत करूँगा और मैं तुझको उन्हें
दण्ड देने को कहूँगा जिसके वे पात्र हैं।

21अनातोत के लोग यिर्मयाह को मार डालने की
योजना बना रहे थे। उन लोगों ने यिर्मयाह से कहा,
"यहोवा के नाम भविष्यवाणी न करो वरना हम तुम्हें
मार डालेंगे।" यहोवा ने अनातोत के उन लोगों के बारे
में एक निर्णय किया। 22सर्वशक्तिमान यहोवा ने कहा,
"मैं शीघ्र ही अनातोत के उन लोगों को दण्ड दूँगा उनके
युवक युद्ध में मारे जाएंगे। उनके पुत्र और उनकी
पुत्रियाँ भूखों मरेंगी। 23अनातोत नगर में कोई भी व्यक्ति
नहीं बचेगा। कोई व्यक्ति जीवित नहीं रहेगा। मैं उन्हें
दण्ड दूँगा। मैं उनके साथ कुछ बुरा घटित होने दूँगा।"

यिर्मयाह परमेश्वर से शिकायत करता है

12 यहोवा यदि मैं तुझसे तर्क करता हूँ, तू सदा ही
सही निकलता है। किन्तु मैं तुझसे उन सब के
बारे में पूछना चाहता हूँ जो सही नहीं लगतीं। दुष्ट लोग
सफल क्यों हैं? जो तुझ पर विश्वास नहीं करते, उनका
उतना जीवन सुखी क्यों है? 2 तूने उन दुष्ट लोगों को
यहाँ बसाया है। वे दृढ़ जड़ वाले पौधे जैसे हैं जो बढते
तथा फल देते हैं। अपने मुँह से वे तुझको अपने समीपी
और प्रिय कहते हैं। किन्तु अपने हृदय से वे वास्तव में
तुझसे बहुत दूर हैं। 3किन्तु मेरे यहोवा, तू मेरे हृदय को
जानता है। तू मुझे और मेरे मन को देखता और परखता
है, मेरा हृदय तेरे साथ है। उन दुष्ट लोगों को मारी जाने
वाली भेड़ के समान घसीट। बलि दिवस के लिये उन्हें
चुन। 4कितने अधिक समय तक भूमि प्यासी पड़ीरहेगी?
घास कब तक सूखी और मरी रहेगी? इस भूमि के
जानवर और पक्षी मर चुके हैं और यह दुष्ट लोगों का
अपराध है। फिर भी वे दुष्ट लोग कहते हैं, "यिर्मयाह
हम लोगों पर आने वाली विपत्ति को देखने को जीवित
नहीं रहेगा।"

परमेश्वर का यिर्मयाह को उत्तर

5"यिर्मयाह, यदि तुम मनुष्यों की पग दौड़ में थक
जाते हो तो तुम घोड़ों के मुकाबले में कैसे दौड़ोगे? यदि
तुम सुरक्षित देश में थक जाते हो तो तुम यरदन नदी के
तटों पर उगी भयंकर कंटीली झाड़ियों में पहुँचकर क्या
करोगे? 6ये लोग तुम्हारे अपने भाई हैं। तुम्हारे अपने
परिवार के सदस्य तुम्हारे विरुद्ध योजना बना रहे हैं।
तुम्हारे अपने परिवार के लोग तुम पर चीख रहे हैं।
यदि वे मित्र सचभी बोलें, उन पर विश्वास न करो।"

यहोवा अपने लोगों अर्थात यहूदा को त्यागता है

7"मैंने (यहोवा) अपना घर छोड़ दिया है। मैंने अपनी
विरासत अस्वीकार कर दी है। मैंने जिससे (यहूदा)
प्यार किया है, उसे उसके शत्रुओं को दे दिया है। 8मेरे
अपने लोग मेरे लिये जंगली शेर बन गयेहैं। वे मुझ पर
गरजते है, अत: मैं उनसे घृणा करता हूँ। 9मेरे अपने
लोग गिद्धों से घिरा, मरता हुआ जानवर बन गये हैं। वे
पक्षी उस पर मंडरा रहे हैं। जंगली जानवरो आओ। आगे
बढ़ो, खाने को कुछ पाओ। 10अनेक गड़ेरियों (प्रमुखों)
ने मेरे अंगूर के खेतों को नष्ट किया है। उन गड़ेरियों
ने मेरे खेत के पौधों को रोंदा है। उन गड़ेरियों ने मेरे
सुन्दर खेत को सूनी मरुभूमि में बदला है। 11उन्होंने मेरे
खेत को मरुभूमि में बदल दिया है। यह सूख गया और
मर गया। कोई भी व्यक्ति वहाँ नहीं रहता। पूरा देश ही
सूनी मरुभूमि है। उस खेत की देखभाल करने वाला
कोई व्यक्ति नहीं बचा है। 12अनेक सैनिक उन सूनी
पहाड़ियों को रौंदतेगएहैं। यहोवा ने उन सेनाओं का
उपयोग उस देश को दण्ड देने के लिए किया। देश के
एक सिरे से दूसरे सिरे तक के लोग दण्डित किये गये
हैं। कोई व्यक्ति सुरक्षित न रहा। 13लोग गेहूँ बोएंगे,
किन्तु वे केवल काँटे ही काटेंगे। वे अत्याधिक थकने
तक काम करेंगे, किन्तु वे अपने सारे कामों के बदले
कुछ भी नहीं पाएंगे। वे अपनी फसल पर लज्जित होंगे।
यहोवा के क्रोध ने यह सब कुछ किया।"

इस्राएल के पड़ोसियों को यहोवा का वचन

14यहोवा जो कहता है, वह यह है: "मैं तुम्हें बताऊँगा
कि मैं इस्राएल देश के चारों ओर रहने वाले सभी लोगों
के लिये क्या करूँगा। वे लोग बहुत दुष्ट हैं। उन्होंने उस
देश को नष्ट किया जिसे मैंने इस्राएल के लोगों को दिया
था। मैं उन दुष्ट लोगों को उखाड़ूँगा और उनके देश से
उन्हें बाहर फेंक दूँगा। मैं उनके साथ यहूदा के लोगों
को भी उखाड़ूँगा। 15किन्तु उन लोगों को उनके देश से
उखाड़ फेंकने के बाद मैं उनके लिए अफसोस करूँगा।
मैं हर एक परिवार को उनकी अपनी सम्पत्ति और
अपनी भूमि पर वापस लाऊँगा। 16मैं चाहता हूँ कि वे
लोग अब मेरे लोगों की तरह रहना सीख लें। बीते समय

में उन लोगों ने हमारे लोगों को शपथ खाने के लिये
बाल के नाम का उपयोग करना सिखाया। अब, मैं
चाहता हूँ कि वे लोग अपना पाठ ठीक वैसे ही अच्छी
तरह पढ़ लें। मैं चाहता हूँ कि वे लोग मेरे नाम का
उपयोग करना सीखें। मैं चाहता हूँ कि वे लोग कहें,
'क्योंकि यहोवा शाश्वत है।' यदि वे लोग वैसा करते हैं
तो मैं उन्हें सफल होने दूँगा और उन्हें अपने लोगों के
बीच रहने दूँगा। **17**किन्तु यदि कोई राष्ट्र मेरे सन्देश को
अनसुना करता है तो मैं उसे पूरी तरह नष्ट कर दूँगा।
मैं उसे सूखे पौधे की तरह उखाड़ डालूँगा।" यह सन्देश
यहोवा का है।

अधोवस्त्र

13 जो यहोवा ने मुझसे कहा वह यह है: "यिर्मयाह,
जाओ और एक सन (बहुमूल्य सूती वस्त्र) का
अधोवस्त्र खरीदो। तब इसे अपनी कमर में लपेटो।
अधोवस्त्र को गीला न होने दो।"

2अत: मैंने एक सन (बहुमूल्य सूती वस्त्र) का अधोवस्त्र
खरीदा, जैसा कि यहोवा ने करने को कहा था और
मैंने इसे अपनी कमर में लपेटा। **3**तब यहोवा का सन्देश
मेरे पास दुबारा आया। **4**सन्देश यह था: "यिर्मयाह, अपने
खरीदे गये और पहने गये अधोवस्त्र को लो और परात
को जाओ। अधोवस्त्र को चट्टानों की दरार में छिपा
दो।"

5अत: मैं परात गया और जैसा यहोवा ने कहा था,
मैंने अधोवस्त्र को वहाँ छिपा दिया। **6**कई दिनों बाद
यहोवा ने मुझसे कहा, "यिर्मयाह, अब तुम परात जाओ।
उस अधोवस्त्र को लो जिसे मैंने छिपाने को कहा था।"

7अत: मैं परात को गया और मैंने खोदकर अधोवस्त्र
को निकाला, मैंने उसे चटटानों की दरार से निकाला
जहाँ मैंने उसे छिपा रखा था। किन्तु अब मैं अधोवस्त्र
को पहन नहीं सकता था क्योंकि वह गल चुका था,
वह किसी भी काम का नहीं रह गया था।

8तब यहोवा का सन्देश मुझे मिला। **9**यहोवा ने जो
कहा, वह यह है: "अधोवस्त्र गल चुका है और किसी
भी काम का नहीं रह गया है। इसी प्रकार मैं यहूदा और
यरूशलेम के घमंडी लोगों को बरबाद करूँगा। **10**मैं उन
घमंडी और दुष्ट यहूदा के लोगों को नष्ट करूँगा।
उन्होंने मेरे सन्देशों को अनसुना किया है। वे हठी हैं
और वे केवल वह करते हैं जो वे करना चाहते हैं। वे
अन्य देवताओं का अनुसरण और उनकी पूजा करते
हैं। वे यहूदा के लोग इस सन के अधोवस्त्र की तरह हो
जाएंगे। वे बरबाद होंगे और किसी काम के नहीं रहेंगे।"
11अधोवस्त्र व्यक्ति के कमर से कस कर लपेटा जाता
है। उसी प्रकार मैंने पूरे इस्राएल और यहूदा के परिवारों
को अपने चारों ओर लपेटा।" यह सन्देश यहोवा के
यहाँ से है। "मैंने वैसा इसलिये किया कि वे लोग मेरे
लोग होंगे। तब मेरे लोग मुझे यश, प्रशंसा और प्रतिष्ठा
प्रदान करेंगे। किन्तु मेरे लोगों ने मेरी एक न सुनी।"

यहूदा को चेतावनियाँ

12"यिर्मयाह, यहूदा के लोगों से कहो: 'इस्राएल का
परमेश्वर यहोवा जो कहता है, वह यह है: 'हर एक
दाखमधु की मशक दाखमधु से भरी जानी चाहिये। वे
लोग हँसेंगे और तुमसे कहेंगे, 'निश्चय ही हम जानते हैं
कि हर एक दाखमधु की मशक दाखमधु से भरी जानी
चाहिए।' **13**तब तुम उनसे कहोगे, 'यहोवा जो कहता है
वह यह है: मैं इस देश के हर एक रहने वाले को
मदमत्त सा असहाय करुँगा। मैं उन राजाओं के बारे में
कह रहा हूँ जो दाऊद के सिंहासन पर बैठते हैं। मैं
यरूशलेम के निवासी याजकों, नबियों और सभी लोगों
के बारे में कह रहा हूँ। **14**मैं यहूदा के लोगों को ठोकर
खाने और एक दूसरे पर गिरने दूँगा। पिता और पुत्र
एक दूसरे पर गिरेंगे।'" यह सन्देश यहोवा का है। "'मैं
उनके लिए अफसोस नहीं करूँगा और न उन पर दया।
मैं करुणा को, यहूदा के लोगों को नष्ट करने से रोकने
नहीं दूँगा।'"

15सुनो और ध्यान दो। यहोवा ने तुम्हें सन्देश दिया है।
घमण्डी मत बनो। **16**अपने परमेश्वर यहोवा का सम्मान
करो, उसकी स्तुति करो नहीं तो वह अंधकार लाएगा।
अंधेरी पहाड़ियों पर लड़खड़ाने और गिरने से पहले
उसकी स्तुति करो। यहूदा के लोगों, तुम प्रकाश की
आशा करतेहो। किन्तु यहोवा प्रकाश को घोर अंधकार
में बदलेगा। यहोवा प्रकाश को अति गहन अधंकार से
बदल देगा। **17**यहूदा के लोगों, यदि तुम यहोवा की अनसुनी
करते हो तो मैं छिप जाऊँगा और रोऊँगा। तुम्हारा
घमण्ड मुझे रूलायेगा। मैं फूट-फूट कर रोऊँगा। मेरी
आँखें आँसुओं से भर जाएंगी। क्यों? क्योंकि यहोवा की
रेवड़ पकड़ी जाएगी। **18**ये बातें राजा और उसकी पत्नी
से कहो, "अपने सिंहासनों से उतरो। तुम्हारे सुन्दर मुकुट
तुम्हारे सिरों से गिर चुके हैं।"

19नेगव मरुभूमि के नगरों में ताला पड़ चुका है, उन्हें
कोई खोल नहीं सकता। यहूदा के लोगों को देश निकाला
दिया जा चुका है। उन सभी को बन्दी के रूप में ले
जाया गया है।

20यरूशलेम, ध्यान से देखो! शत्रुओं को उत्तर से आते
देखो। तुम्हारी रेवड़ कहाँ है? परमेश्वर ने तुम्हें सुन्दर
रेवड़ दी थी। तुमसे उस रेवड़ की देखभाल की आशा
थी। **21**जब यहोवा उस रेवड़ का हिसाब तुमसे माँगेगा तो
तुम उसे क्या उत्तर दोगे? तुमसे आशा थी कि तुम
परमेश्वर के बारे में लोगों को शिक्षा दोगे। तुम्हारे
नेताओं से लोगों का नेतृत्व करने की आशा थी। लेकिन
उन्होंने यह कार्य नहीं किये। अत: तुम्हें अत्यन्त दु:ख व
पीड़ा भुगतनी होगी

22तुम अपने से पूछ सकते हो, “यह बुरी विपत्ति मुझ
पर क्यों आई?” ये विपत्तियाँ तुम्हारे अनेक पापों के
कारणआई। तुम्हारे पापों के कारण तुम्हे निर्वस्त्र किया
गया और जूते ले लिये गए। उन्होंने यह तुम्हें लज्जित
करने को किया। 23एक काला आदमी अपनी चमड़ी
का रंग बदल नहीं सकता। और कोई चीता अपने धब्बे
नहीं बदल सकता। ओ यरूशलेम, उसी तरह तुम भी
बदल नहीं सकते, अच्छा काम नहीं कर सकते। तुम
सदैव बुरा काम करते हो।

24“मैं तुम्हें अपना घर छोड़ने को विवश करूँगा, जब
तुम भागोगे तब हर दिशा में दौड़ोगे। तुम उस भूसे की
तरह होगे जिसे मरुभूमि की हवा उड़ा ले जाती है। 25ये
वे सब चीजें हैं जो तुम्हारे साथ होंगी, यह मेरी योजना
का तुम्हारा हिस्सा है।” यह सन्देश यहोवा का है।

“यह क्यों होगा? क्योंकि तुम मुझे भूल गए, तुमने
असत्य देवताओं पर विश्वास किया। 26यरूशलेम, मैं
तुम्हारे वस्त्र उतारुँगा लोग तुम्हारी नग्नता देखेगें और
तुम लज्जा से गड़ जाओगे। 27मैंने उन भयंकर कामों
को देखा जो तुमने किये। मैंने तुम्हें हँसते और अपने
प्रेमियों के साथ शारीरिक सम्बन्ध करते देखा। मै जानता
हूँ कि तुमने वेश्या की तरह दुष्कर्म किया है। मैंने तुम्हें
पहाड़ियों और खेतों में देखा है। यरूशलेम, यह तुम्हारे
लिये बहुत बुरा होगा। मुझे बताओ कि तुम कब तक
अपने गंदे पापों को करते रहोगे?”

सूखा पड़ना और झूठे नबी

14 यह यिर्मयाह को सूखे के बारे में यहोवा का
सन्देश है:
2“यहूदा राष्ट्र उन लोगों के लिये रो रहा है जो मर
गये हैं। यहूदा के नगर के लोग दुर्बल, और दुर्बल होते
जा रहे हैं। वे लोग भूमि पर लेट कर शोक मनाते हैं।
यरूशलेम नगर से एक चीख परमेश्वर के पास पहुँच
रही है। 3लोगों के प्रमुख अपने सेवकों को पानी लाने
के लिए भेजते हैं। सेवक कुण्डों पर जाते हैं। किन्तु वे
कुछ भी पानी नहीं पाते। सेवक खाली बर्तन लेकर
लौटते हैं। अत: वे लज्जित और परेशान हैं। वे अपने
सिर को लज्जा से ढक लेते हैं। 4कोई भी फसल के
लिए भूमि तैयार नहीं करता। भूमि पर वर्षा नहीं होती,
किसान हताश हैं। अत: वे अपना सिर लज्जा से ढकते
हैं। 5यहाँ तक कि हिरनी भी अपने नये जन्में बच्चे को
खेत में अकेला छोड़ देती है। वह वैसा करती है क्योंकि
वहाँ घास नहीं है। 6जंगली गधे नंगी पहाड़ी पर खड़े होते
हैं। वे गीदड़ की तरह हवा सूंघते हैं। किन्तु उनकी
आँखों को कोई चरने की चीजनहीं दिखाई पड़ती।
क्योंकि चरने योग्य वहाँ कोई पौधेनहीं हैं।

7“हम जानते हैं कि यह सब कुछ हमारे अपराध के
कारण है। हम अब अपने पापों के कारण कष्ट उठा
रहेहैं। हे यहोवा, अपने अच्छे नाम के लिये हमारी कुछ
मदद कर। हम स्वीकार करते हैं कि हम लोगों ने
तुझको कई बार छोड़ा है। हम लोगों ने तेरे विरुद्ध पाप
किये हैं। 8परमेश्वर, तू इस्राएल की आशा है। विपत्ति के
दिनों में तूने इस्राएल को बचाया। किन्तु अब ऐसा लगता
है कि तू इस देश में अजनबी है। ऐसा प्रतीत होता है कि
तू वह यात्री है जो एक रात यहाँ ठहरा हो। 9तू उस
व्यक्ति के समान लगता है जिस पर अचानक हमला
किया गया हो। तू उस सैनिक सा लगता है जिसके पास
किसी को बचाने की शक्ति न हो। किन्तु हे यहोवा, तू
हमारे साथ है। हम तेरे नाम से पुकारे जाते हैं, अत: हमें
असहाय न छोड़।”

10यहूदा के लोगों के बारे में यहोवा जो कहता है, वह
यह है: “यहूदा के लोग सचमुच मुझे छोड़ने में प्रसन्न हैं।
वे लोग मुझे छोड़ना अब भी बन्द नहीं करते। अत: अब
यहोवा उन्हें नहीं अपनायेगा। अब यहोवा उनके बुरे
कामों को याद रखेगा जिन्हें वे करते हैं। यहोवा उन्हें
उनके पापों के लिये दण्ड देगा।”

11तब यहोवा ने मुझसे कहा, “यिर्मयाह, यहूदा के
लोगों के लिये कुछ अच्छा हो, इसकी प्रार्थना न करो।”
12यहूदा के लोग उपवास कर सकते हैं और मुझसे
प्रार्थना कर सकते हैं। किन्तु मैं उनकी प्रार्थनायें नहीं
सुनूँगा। यहाँ तक कि यदि ये लोग होमबलि और अन्न
भेंट चढ़ायेंगे तो भी मैं उन लोगों को नहीं अपनाऊँगा।
मैं यहूदा के लोगों को युद्ध में नष्ट करुँगा। मैं उनका
भोजन छीन लूँगा और यहूदा के लोग भूखों मरेंगे और
मैं उन्हें भयंकर बीमारियों से नष्ट करुँगा।

13किन्तु मैंने यहोवा से कहा, “हमारे स्वामी यहोवा!
नबी लोगों से कुछ और ही कह रहे थे। वे यहूदा के
लोगों से कह रहे थे, ‘तुम लोग शत्रु की तलवार से दु:ख
नहीं उठाओगे। तुम लोगों को कभी भूख से कष्ट नहीं
होगा। यहोवा तुम्हें इस देश में शान्ति देगा।’”

14तब यहोवा ने मुझसे कहा, “यिर्मयाह, वे नबी मेरे
नाम पर झूठा उपदेश दे रहे हैं। मैंने उन नबियों को
नहीं भेजा मैंने उन्हें कोई आदेश या कोई बात नहीं की
वे नबी असत्य कल्पनायें, व्यर्थ जादू और अपने झूठे
दर्शन का उपदेश कर रहे हैं। 15इसलिये उन नबियों के
विषय में जो मेरे नाम पर उपदेश दे रहे हैं, मेरा कहना
यह है। मैंने उन नबियों को नहीं भेजा। उन नबियों ने
कहा, ‘कोई भी शत्रु तलवार से इस देश पर आक्रमण
नहीं करेगा। इस देश में कभी भुखमरी नहीं होगी।’ वे
नबी भूखों मरेंगे और शत्रु की तलवार के घाट उतारे
जाएंगे 16और जिन लोगों से वे नबी बातें करते हैं सड़कों
पर फेंक दिये जाएंगे। वे लोग भूखों मरेंगे और शत्रु की
तलवार के घाट उतारे जाएंगे। कोई व्यक्ति उनको या
उनकी पत्नियों या उनके पुत्रों अथवा उनकी पुत्रियों
को दफनाने को नहीं रहेगा। मैं उन्हें दण्ड दूँगा।

17"यिर्मयाह, यह सन्देश यहूदा के लोगों को दो: 'मेरी
आँखें आँसुओं से भरी हैं। मैं बिना रूके रात–दिन
रोऊँगा। मैं अपनी कुमारी पुत्री के लिये रोऊँगा। मैं
अपने लोगों के लिए रोऊँगा। क्यों? क्योंकि किसी ने
उन पर प्रहार किया और उन्हें कुचल डाला। वे बुरी
तरह घायल किये गए हैं।

18यदि मैं देश में जाता हूँ तो मैं उन लोगों को देखता
हूँ जो तलवार के घाट उतारे गए हैं। यदि मैं नगर में
जाता हूँ, मैं बहुत सी बीमारियाँ देखता हूँ, क्योंकि लोगों
के पास भोजन नहीं है।' याजक और नबी विदेश पहुँचा
दिये गये हैं।'"

19"हे यहोवा, क्या तूने पूरी तरह यहूदा राष्ट्र को
त्याग दिया है? यहोवा, क्या तू सिय्योन से घृणा करता
है? तूने इसे बुरी तरह से चोट की है कि हम फिर से
अच्छे नहीं बनाए जा सकते। तूने वैसा क्यों किया? हम
शान्ति की आशा रखते थे, किन्तु कुछ भी अच्छा नहीं
हुआ। हम लोग घाव भरने के समय की प्रतीक्षा कर
रहे थे, किन्तु केवल त्रास आया।

20 हे यहोवा, हम जानते हैं कि हम बहुत बुरे लोग हैं,
हम जानते हैं कि हमारे पूर्वजों ने बुरे काम किये। हाँ,
हमने तेरे विरुद्ध पाप किये।

21हे यहोवा, अपने नाम की अच्छाई के लिये तू हमें
धक्का देकर दूर न कर। अपने सम्मानीय सिंहासन
के गौरव को न हटा। हमारे साथ की गई वाचा को
याद रख और इसे न तोड़।

22विदेशी देवमूर्तियों में वर्षा लाने की शक्ति नहींहै,
आकाश में पानी बरसाने की शक्ति नहीं है। केवल तू
ही हमारी आशा है, एक मात्र तू ही है जिसने यह सब
कुछ बनाया है।"

15 यहोवा ने मुझसे कहा, "यिर्मयाह, यदि मूसा
और शमूएल भी यहूदा के लोगों के लिये प्रार्थना
करने वाले होते, तो भी मैं इन लोगों के लिये अफसोस
नहीं करता। यहूदा के लोगों को मुझसे दूर भेजो। उनसे
जाने को कहो। 2वे लोग तुमसे पूछ सकते हैं, 'हम लोग
कहाँ जाएंगे?' तुम उनसे यह कहो, यहोवा जो कहता है,
वह यह है:

"'मैंने कुछ लोगों को मरने के लिये निश्चित किया
है। वे लोग मरेंगे। मैंने कुछ लोगों को तलवार के घाट
उतारना निश्चित किया है, वे लोग तलवार के घाट
उतारे जाएंगे। मैंने कुछ को भूख से मरने के लिए
निश्चित किया है। वे लोग भूख से मरेंगे। मैंने कुछ
लोगों का बन्दी होना और विदेश ले जाया जाना निश्चित
किया है। वे लोग उन विदेशों में बन्दी रहेंगे। 3यहोवा
कहता है कि मैं चार प्रकार की विनाशकारी शक्तियाँ
उनके विरुद्ध भेजूँगा।' यह सन्देश यहोवा का है। 'मैं शत्रु
को तलवार के साथ मारने के लिएभेजूँगा। मैं कुत्तों को
उनका शव घसीट ले जाने कोभेजूँगा। मैं हवा में उड़ते
पक्षियों और जंगली जानवरों को उनके शवों को खाने
और नष्ट करने को भेजूँगा। 4मैं यहूदा के लोगों को
ऐसा दण्ड दूँगा कि धरती के लोग इसे देख कर काँप
जायेगें। मैं यहूदा के लोगों के साथ यह, मनश्शे ने
यरूशलेम में जो कुछ किया, उसके कारण करुँगा।
मनश्शे, राजा हिलकिय्याह का पुत्र था। मनश्शे यहूदा
राष्ट्र का एक राजा था।'

5"यरूशलेम नगर, तुम्हारे लिये कोई अफसोस नहीं
करेगा। कोई व्यक्ति तुम्हारे लिए न दुःखी होगा, न
हीरोएगा। कौन तुम्हारा कुशल क्षेम पूछने तुम्हारे पास
आयेगा! 6यरूशलेम, तुमने मुझे छोड़ा।" यह सन्देश यहोवा
का है।

"तुमने मुझे बार बार त्यागा। अत: मैं दण्ड दूँगा और
तुझे नष्ट करूँगा मैं तुम पर दया करते हुए थक गया
हूँ। 7मैं अपने सूप से यहूदा के लोगों को फटकदूँगा। मैं
देश के नगर द्वार पर उन्हें बिखेर दूँगा। मेरे लोग बदले
नहीं हैं। अत: मैं उन्हें नष्ट करूँगा। मैं उनके बच्चों को
ले लूँगा। 8अनेक स्त्रियाँ अपने पतियों को खो देंगी।
सागर के बालू से भी अधिक वहाँ विधवायें होंगी। मैं
एक विनाशक को दोपहरी में लाऊँगा। विनाशक यहूदा
के युवकों की माताओं पर आक्रमण करेगा। मैं यहूदा
के लोगों को पीड़ा और भय दूँगा। मैं इसे अतिशीघ्रता से
घटित कराऊँगा। 9शत्रु तलवार से आक्रमण करेगा
और लोगों को मारेगा। वे यहूदा के बचे लोगों को मार
डालेंगे। एक स्त्री के सात पुत्र हो सकते हैं, किन्तु वे
सभी मरेंगे। वह रोती, और रोती रहेगी, जब तक वह
दुर्बल नहीं हो जाती और वह साँस लेने योग्य भी नहीं
रहेगी। वह लज्जा और अनिश्चयता में होगी, उसके
उजले दिन दुःख से काले होंगे।"

यिर्मयाह फिर परमेश्वर से शिकायत करता है

10हाय माता, तूने मुझे जन्म क्यों दिया? मैं (यिर्मयाह)
वह व्यक्ति हूँ जो पूरे देश को दोषी कहे और आलोचना
करे। मैंने न कुछ उधार दिया है और न ही लिया है।
किन्तु हर एक व्यक्ति मुझे अभिशाप देता है। 11यहोवा
सच ही, मैंने तेरी ठीक सेवा की है। विपत्ति के समय में
मैंने अपने शत्रुओं के बारे में तुझसे प्रार्थना की।

परमेश्वर यिर्मयाह को उत्तर देता हैं

12"यिर्मयाह, तुम जानते हो कि कोई व्यक्ति लोहे के
टुकड़े को चकनाचूर नहीं कर सकता। मेरा तात्पर्य
उस लोहे से है जो उत्तर का है और कोई व्यक्ति काँसे
के टुकड़े को भी चकनाचूर नहीं कर सकता। 13यहूदा
के लोगों के पास सम्पत्ति और खजानेहैं। मैं उस सम्पत्ति
को अन्य लोगों को दूँगा। उन अन्य लोगों को वह
सम्पत्ति खरीदनी नहीं पड़ेगी। मैं उन्हें वह सम्पत्ति दूँगा।
क्यों? क्योंकि यहूदा ने बहुत पाप किये हैं।" यहूदा ने

देश के हर एक भाग में पाप कियाहै। 14यहूदा के लोगों,
मैं तुम्हें तुम्हारे शत्रुओं का दास बनाऊँगा। तुम उस देश
में दास होगे जिसे तुमने कभी जाना नहीं। मैं बहुत
क्रोधित हुआहूँ। मेरा क्रोध तप्त अग्नि सा है और तुम
जला दिये जाओगे।"

15हे यहोवा, तू मुझे समझता है। मुझे याद रख और
मेरी देखभाल कर। लोग मुझे चोट पहुँचाते हैं। उन
लोगों को वह दण्ड दे जिसके वह पात्र हैं। तू उन लोगों
के प्रति सहनशील है। किन्तु उनके प्रति सहनशील
रहते समय मुझे नष्ट न कर दे। मेरे बारे में सोच।
यहोवा उस पीड़ा को सोच जो मैं तेरे लिये सहता हूँ।
16तेरा सन्देश मुझे मिला और मैं उसे निगल गया। तेरे
सन्देश ने मुझे बहुत प्रसन्न कर दिया। मैं प्रसन्न था कि
मुझे तेरे नाम से पुकारा जाताहै। तेरा नाम यहोवा
सर्वशक्तिमान है। 17मैं कभी भीड़ में नहीं बैठा क्योंकि
उन्होंने हँसी उड़ाई और मजा लिया। अपने ऊपर तेरे
प्रभाव के कारण मैं अकेलाबैठा। तूने मेरे चारों ओर
की बुराइयों पर मुझे क्रोध से भर दिया। 18मैं नहीं समझ
पाता कि मैं क्यों अब तक घायल हूँ? मैं नहीं समझ
पाता कि मेरा घाव अच्छा क्यों नहीं होता और भरता
क्यों नहीं? हे यहोवा, मैं समझता हूँ कि तू बदल गया है।
तू सोते के उस पानी की तरह है जो सूख गया हो। तू
उस सोते की तरह है जिसका पानी सूख गया हो।

19तब यहोवा ने कहा, "यिर्मयाह, यदि तुम बदल जाते
हो और मेरे पास आते हो, तो मैं तुम्हें दण्ड नहीं दूँगा।
यदि तुम बदल जाते हो और मेरे पास आते हो तो तुम
मेरी सेवा कर सकते हो। यदि तुम महत्वपूर्ण बात कहते
हो और उन बेकार बातों को नहीं कहते, तो तुम मेरे
लिये कह सकते हो। यिर्मयाह, यहूदा के लोगों को
बदलना चाहिये और तुम्हारे पास उन्हें आना चाहिये।
किन्तु तुम मत बदलो और उनकी तरह न बनो। 20मैं
तुम्हें शक्तिशाली बनाऊँगा। वे लोग सोचेंगे कि तुम
काँसे की बनी दीवार जैसे शक्तिशाली हो यहूदा के लोग
तुम्हारे विरुद्ध लड़ेंगे, किन्तु वे तुम्हें हरायेंगे नहीं। वे
तुमको नहीं हरायेंगे। क्यों? क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ।
मैं तुम्हारी सहायता करूँगा, तुम्हारा उद्धार करूँगा।"

यह सन्देश यहोवा को है। 21"मैं तुम्हारा उद्धार उन
बुरे लोगों से करूँगा। वे लोग तुम्हें डराते हैं। किन्तु मैं
तुम्हें उन लोगों से बचाऊँगा।"

विनाश का दिन

16 यहोवा का सन्देश मुझे मिला। 2"यिर्मयाह, तुम्हें
विवाह नहीं करना चाहिये। तुम्हें इस स्थान पर
पुत्र या पुत्री पैदा नहीं करना चाहिये।"

3यहूदा देश में जन्म लेने वाले पुत्र–पुत्रियों के बारे में
यहोवा यह कहता है, और उन बच्चों के माता–पिता
के बारे में जो यहोवा कहता है, वह यह है:

4"वे लोग भयंकर मृत्यु के शिकार होंगे। उन लोगों
के लिये कोई रोएगा नहीं। कोई भी व्यक्ति उन्हें दफनायेगा
नहीं। उनके शव जमीन पर गोबर की तरह पड़े रहेंगे।
वे लोग शत्रु की तलवार के घाट उतरेंगे या भूखों मरेंगे।
उनके शव आकाश के पक्षियों और भूमि के जंगली
जानवरों का भोजन बनेंगे।"

5अत: यहोवा कहता है, "यिर्मयाह, उन घरों में न
जाओ जहाँ लोग अन्तिम क्रिया की दावत खा रहे हैं।
वहाँ मरे के लिये रोने या अपना शोक प्रकट करने न
जाओ। ये सब काम न करो। क्यों? क्योंकि मैंने अपना
आशीर्वाद वापस ले लिया है। मैं यहूदा के इन लोगों पर
दया नहीं करूँगा। मैं उनके लिये अफसोस नहीं करूँगा।"
यह सन्देश यहोवा का है।

6"यहूदा देश में महत्वपूर्ण लोग और साधारण लोग
मरेंगे। कोई व्यक्ति उन लोगों को न दफनायेगा न ही
उनके लिये रोएगा। इन लोगों के लिए शोक प्रकट
करने को न तो कोई अपने को काटेगा और न ही
अपने सिर के बाल साफ करायेगा। 7कोई व्यक्ति उन
लोगों के लिए भोजन नहीं लाएगा जो मरे के लिए रो रहे
होंगे। जिनके माता पिता मर गए होंगे उन लोगों को
कोई व्यक्ति समझाये बुझायेगा नहीं। जो मरे के लिये रो
रहे होंगे उन्हें शान्त करने के लिये कोई व्यकि दाखमधु
नहीं पिलायेगा।"

8"यिर्मयाह, उस घर में न जाओ जहाँ लोग दावत खा
रहे हो। उस घर में न जाओ और उनके साथ बैठकर
न खाओ न दाखमधु पीओ। 9इस्राएल का परमेश्वर
सर्वशक्तिशाली यहोवा यह कहता है: 'मजा उड़ाने वाले
लोगों के शोर को शीघ्र ही मैं बन्द कर दूँगा। विवाह की
दावत में लोगों के हँसी मजाक की किलकारियों को मैं
बन्द कर दूँगा। यह तुम्हारे जीवनकाल में होगा। मैं ये
काम शीघ्रता से करूँगा।'

10"यिर्मयाह, तुम यहूदा के लोगों को ये बातें बताओगे
और लोग तुमसे पूछेंगे, 'यहोवा ने हम लोगों के लिये
इतनी भयंकर बातें क्यों कही हैं? हमने क्या गलत काम
किया है? हम लोगों ने यहोवा अपने परमेश्वर के
विरुद्ध कौन सा पाप किया है?' 11तुम्हें उन लोगों से यह
कहना चाहिये, 'तुम लोगों के साथ भयंकर घटनायें
घटेंगी क्योंकि तुम्हारे पूर्वजों ने मेरा अनुसरण करना
छोड़ा और अन्य देवताओं का अनुसरण करना तथा
सेवा करना आरम्भ किया। उन्होंने उन अन्य देवताओं
की पूजा की। तुम्हारे पूर्वजों ने मुझे छोड़ा और मेरे
नियमों का पालन करना त्यागा। 12किन्तु तुम लोगों ने
अपने पूर्वजों से भी अधिक बुरे पाप किये हैं। तुम
लोग बहुत हठी हो और तुम केवल वही करते हो
जिसे तुम करना चाहते हो। तुम मेरी आज्ञा का पालन
नहीं कर रहे हो। 13अत: मैं तुम्हें इस देश से बाहर
निकाल फेंकूँगा। मैं तुम्हें विदेश में जाने को विवश

करुँगा। तुम ऐसे देश में जाओगे जिसे तुमने और तुम्हारे पूर्वजों ने कभी नहीं जाना। उस देश में तुम उन सभी असत्य देवताओं की पूजा कर सकते हो जिन्हें तुम चाहते हो। मैं न तो तुम्हारी सहायता करुँगा और न ही तुम्हारे प्रति कोई सहानुभूति दिखाऊँगा।' यह सन्देश यहोवा काहै।

14"लोग प्रतिज्ञा करते हैं और कहते हैं, 'यहोवा निश्चय ही शाश्वत है। केवल वही है जो इस्राएल के लोगों को मिस्र देश से बाहर लाया' किन्तु समय आ रहा है, जब लोग ऐसा नहीं कहेंगे।" यह सन्देश यहोवा का है।

15लोग कुछ नया कहेंगे। वे कहेंगे, 'निश्चय ही यहोवा शाश्वत है। वह ही केवल ऐसा है जो इस्राएल के लोगों को उत्तरी देश से ले आया। वह उन्हें उन सभी देशों से लाया जिनमें उसने उन्हें भेजा था।' लोग ये बातें क्यो कहेंगे? क्योंकि मैं इस्राएल के लोगों को उस देश में वापस लाऊँगा जिसे मैंने उनके पूर्वजों को दिया था।

16"मैं शीघ्र ही अनेकों मछुवारों को इस देश में आने के लिये बुलाऊँगा।" यह सन्देश यहोवा का है। "वे मछुवारे यहूदा के लोगों को पकड़ लेंगे। यह होने के बाद मैं बहुत से शिकारियों को इस देश में आने के लिये बुलाऊँगा। वे शिकारी यहूदा के लोगों का शिकार हर एक पहाड़, पहाड़ी और चट्टानों की दरारों में करेंगे।
17मैं वह सब जो वे करते हैं, देखता हूँ। यहूदा के लोग उन कामों को मुझसे छिपा नहीं सकते जिन्हें वे करते हैं। उनके पाप मुझसे छिपे नहीं हैं। 18मैं यहूदा के लोगों ने जो बुरे काम किये हैं, उसका बदला चुकाऊँगा। मैं हर एक पाप के लिये दो बार उनको दण्ड दूँगा। मैं यह करुँगा क्योंकि उन्होंने मेरे देश को 'गन्दा' बनाया है। उन्होंने मेरे देश को भंयकर मूर्तियों से गन्दा किया है। मैं उन देवमूर्तियों से घृणा करता हूँ। किन्तु उन्होंने मेरे देश को अपनी देवमूर्तियों से भर दिया है।"

19हे यहोवा, तू मेरी शक्ति और गढ़ है। विपत्ति के समय भाग कर बचने की तू सुरक्षित शरण है। सारे संसार से राष्ट्र तेरे पास आएंगे। वे कहेंगे, "हमारे पिता असत्य देवता रखते थे। उन्होंने उन व्यर्थ देवमूर्तियों की पूजा की, किन्तु उन देवमूर्तियों ने उनकी कोई सहायता नहीं की।"

20क्या लोग अपने लिये सच्चे देवता बना सकतेहैं? नहीं, वे मूर्तियाँ बना सकते हैं, किन्तु वे मूर्तियाँ सचमुच देवता नहीं हैं।

21अत: मैं उन लोगों को सबक सिखाऊँगा, जो देवमूर्तियों को देवता बनाते हैं। अब मै सीधे अपनी शक्ति और प्रभुता के बारे में शिक्षा दूँगा। तब वे समझेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ। वे जानेंगे कि मेरा नाम यहोवा है।"

हृदय पर लिखा अपराध

17 "यहूदा के लोगों का पाप वहाँ लिखा है जहाँ से उसे मिटाया नहीं जा सकता। वे पाप लोहे की कलम से पत्थरों पर लिखे गये थे। उनके पाप हीरे की नोकवाली कलम से लिखे गए थे, और वह पत्थर उनका हृदय है। वे पाप उनकी वेदी के सींगों के बीच काटे गए थे। 2उनके बच्चे असत्य देवताओं को अर्पित की गई वेदी को याद रखते हैं। वे अशेरा को अर्पित किये गए लकड़ी के खंभे को याद रखते हैं। वे उन चीजों को हरे पेड़ों के नीचे और पहाड़ियों पर याद करते हैं। 3वे उन चीजों को खुले स्थान के पहाड़ों पर याद करते हैं। यहूदा के लोगों के पास सम्पत्ति और खजानेहैं। मैं उन चीजों को दूसरे लोगों को दूँगा। मैं तुम्हारे देश के सभी उच्च स्थानों को नष्ट करूँगा। तुमने उन स्थानों पर पूजा करके पाप कियाहै। 4तुम उस भूमि को खोओगे जिसे मैंने तुम्हें दी। मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हें उनके दास की तरह उस भूमि में ले जाने दूँगा जिसके बारे में तुम नहीं जानते। क्यों? क्योंकि मैं बहुत क्रोधित हूँ। मेरा क्रोध तप्त अग्नि सा है, और तुम सदैव के लिये जल जाओगे।"

जनता में विश्वास एवं परमेश्वर में विश्वास

5यहोवा यह सब कहता है, "जो लोग केवल दूसरे लोगों में विश्वास करते हैं उनका बुरा होगा। जो शक्ति के लिये केवल दूसरों के सहारे रहते हैं उनका बुरा होगा। क्यों? क्योंकि उन लोगों ने यहोवा पर विश्वास करना छोड़ दिया है। 6वे लोग मरुभूमि की झाड़ी की तरह हैं। वह झाड़ी उस भूमि पर है जहाँ कोई नहीं रहता। वहझाड़ी गर्म और सूखी भूमि में है। वह झाड़ी खराब मिट्टी में है। वह झाड़ी उन अच्छी चीजों को नहीं जानती जिन्हें परमेश्वर दे सकता हैं 7किन्तु जो व्यक्ति यहोवा में विश्वास करताहैं, आशीर्वाद पाएगा। क्यों? क्योंकि यहोवा उसको ऐसा दिखायेगा कि उनपर विश्वास किया जा सके। 8वह व्यक्ति उस पेड़ की तरह शक्तिशाली होगा जो पानी के पास लगाया गया हो। उस पेड़ की लम्बी जड़ें होती हैं जो पानी पाती हैं। वह पेड़ गर्मी के दिनों से नहीं डरता इसकी पत्तियाँ सदा हरी रहती हैं। यह वर्ष के उन दिनों में परेशान नहीं होता जब वर्षा नहीं होती। उस पेड़ में सदा फल आते हैं।

9"व्यक्ति का दिमाग बड़ा कपटी होता है। दिमाग बहुत बीमार भी हो सकता है और कोई भी व्यक्ति दिमाग को ठीक ठीक नहीं समझता। 10किन्तु मैं यहोवा हूँ और मैं व्यक्ति के हृदय को जान सकता हूँ। मैं व्यक्ति के दिमाग की जाँच कर सकता हूँ। अत: मैं निर्णय कर सकता हूँ कि हर एक व्यक्ति को क्या मिलना चाहिये? मैं हर एक व्यक्ति को उसके लिये ठीक भुगतान कर सकता हूँ जो वह करता है। 11कभी कभी एक चिड़िया

उस अंडे से बच्चा निकालती है जिसे उसने नहीं दिया। वह व्यक्ति जो धन के लिये ठगता है, उस चिड़िया के समान है। जब उस व्यक्ति की आधी आयु समाप्त होगी तो वह उस धन को खो देगा। अपने जीवन के अन्त में यह स्पष्ट हो जाएगा कि वह एक मूर्ख व्यक्ति था।"

12आरम्भ ही से हमारा मन्दिर परमेश्वर के लिये एक गौरवशाली सिंहासन था। यह एक बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। 13हे यहोवा, तू इस्राएल की आशा है। हे यहोवा, तू अमृत जल के सोते के समान है। यदि कोई तेरा अनुसरण करना छोड़ेगा तो उसका जीवन बहुत घट जाएगा।

यिर्मयाह की तीसरी शिकायत

14हे यहोवा, यदि तू मुझे स्वस्थ करता है, मैं सचमुच स्वस्थ हो जाऊँगा। मेरी रक्षा कर, और मेरी सचमुच रक्षा हो जायेगी। हे यहोवा, मैं तेरी स्तुति करता हूँ!
15यहूदा के लोग मुझसे प्रश्न करते रहते हैं। वे पूछते रहते हैं, "यिर्मयाह, यहोवा के यहाँ का सन्देश कहाँहै? हम लोग देखें कि सन्देश सत्य प्रामाणित होता है?"

16हे यहोवा, मैं तुझसे दूर नहीं भागा, मैंने तेरा अनुसरण किया है। तूने जैसा चाहा वैसा गड़ेरिया मैं बना। मैं नहीं चाहता कि भंयकर दिन आएं। यहोवा तू जानता है जो कुछ मैंने कहा। जो हो रहा है, तू सब देखता है। 17हे
यहोवा, तू मुझे नष्ट न कर। मैं विपत्ति के दिनों मे तेरा आश्रित हूँ। 18लोग मुझे चोट पहुँचा रहे हैं। उन लोगों को लज्जित कर। किन्तु मुझे निराश न कर। उन लोगों को भयभीत होने दे। किन्तु मुझे भयभीत न कर। मेरे शत्रुओं पर भयंकर विनाश का दिन ला उन्हें तोड़ और उन्हें फिर तोड़।

सब्त दिवस को पवित्र रखना

19यहोवा ने मुझसे ये बातें कहीं, "यिर्मयाह, जाओ और यरूशलेम के जन–द्वार पर खड़े हो जाओ, जहाँ से यहूदा के राजा अन्दर आते और बाहर जाते हैं। मेरे लोगों को मेरा सन्देश दो और तब यरूशलेम के अन्य सभी द्वारों पर जाओ और यही काम करो।"

20उन लोगों से कहो: "यहोवा के सन्देश को सुनो। यहूदा के राजाओं, सुनो। यहूदा के तुम सभी लोगों, सुनो। इस द्वार से यरूशलेम में आने वाले सभी लोगों, मेरी बात सुनो। 21यहोवा यह बात कहता है: इस बात में
सावधान रहो कि सब्त के दिन सिर पर बोझ ले कर न चलो और सब्त के दिन यरूशलेम के द्वारों से बोझ न लाओ। 22सब्त के दिन अपने घरों से बोझ बाहर न ले
जाओ। उस दिन कोई काम न करो। मैंने यही आदेश तुम्हारे पूर्वजों को दिया था। 23किन्तु तुम्हारे पूर्वजों ने
मेरे इस आदेश का पालन नहीं किया। उन्होंने मेरी ओर ध्यान नहीं दिया। तुम्हारे पूर्वज बहुत हठी थे। मैंने उन्हें दण्ड दिया किन्तु इसका कोई अच्छा फल नहीं निकला। उन्होंने मेरी एक न सुनी। 24किन्तु तुम्हें मेरी आज्ञा का
पालन करने में सावधान रहना चाहिये।" यह सन्देश यहोवा का है। "तुम्हें सब्त के दिन यरूशलेम के द्वारों से बोझ नहीं लाना चाहिये। तुम्हें सब्त के दिन को पवित्र दिन बनाना चाहिये। तुम, उस दिन कोई भी काम नेहीं करोगे।

25"यदि तुम इस आदेश का पालन करोगे तो राजा जो दाऊद के सिंहासन पर बैठेंगे, यरूशलेम के द्वारों से आएंगे। वे राजा अपने रथों और घोड़ों पर सवार होकर आएंगे। यहूदा और इस्राएल के लोगों के प्रमुख उन राजाओं के साथ होंगे। यरूशलेम नगर में सदैव रहने वाले लोग यहाँ होंगे। 26यहूदा के नगरों से लोग यरूशलेम
आएंगे। लोग यरूशलेम को उन छोटे गाँवों से आएंगे जो इसके चारों ओर हैं। लोग उस प्रदेश से आएंगे जहाँ बिन्यामीन का परिवार समूह रहता है। लोग पश्चिमी पहाड़ की तराइयों तथा पहाड़ी प्रदेशों से आएंगे और लोग नेगव से आएंगे। वे सभी लोग होमबलि, बलि, अन्नबलि, सुगन्धि और धन्यवाद भेंट लेकर आएंगे। वे उन भेंटों और बलियों को यहोवा के मन्दिर को लाएंगे।

27"किन्तु यदि तुम मेरी बात नहीं सुनते और मेरे आदेश को नहीं मानते तो बुरी घटनायें होंगी। यदि तुम सब्त के दिन यरूशलेम के द्वार से बोझ ले जाते हो तब तुम उसे पवित्र दिन नहीं रखते। इस दशा में मैं ऐसे आग लगाऊँगा जो बुझाई नहीं जा सकती। वह आग यरूशलेम के द्वारों से आरम्भ होगी और महलों को भी जला देगी।"

कुम्हार और मिट्टी

18 यह यहोवा का वह सन्देश है जो यिर्मयाह को
मिला: 2"यिर्मयाह, कुम्हार के घर जाओ। मैं अपना सन्देश तुम्हें कुम्हार के घर पर दूँगा।"

3अत: मैं कुम्हार के घर गया। मैंने कुम्हार को चाक पर मिट्टी से बर्तन बनाते देखा। 4वह एक बर्तन मिट्टी
से बना रहा था। किन्तु बर्तन में कुछ दोष था। इसलिये कुम्हार ने उस मिट्टी का उपयोग फिर किया और उसने दूसरा बर्तन बनाया। उसने अपने हाथों का उपयोग बर्तन को वह रूप देने के लिये किया जो रुप वह देना चाहता था।

5तब यहोवा से सन्देश मेरे पास आया, 6"इस्राएल के
परिवार, तुम जानते हो कि मैं (परमेश्वर) वैसा ही तुम्हारे साथ कर सकता हूँ। तुम कुम्हार के हाथ की मिट्टी के समान हो और मैं कुम्हार की तरह हूँ। 7ऐसा
समय आ सकता है, जब मैं एक राष्ट्र या राज्य के बारे में बाते करूँ। मैं यह कह सकता हूँ कि मैं उस राष्ट्र को उखाड़ फेंकूँगा या यह भी हो सकता है कि मैं यह कहूँ कि मैं उस राष्ट्र को उखाड़ गिराऊँगा और उस राष्ट्र

या राज्य को नष्ट कर दूँगा। 8किन्तु उस राष्ट्र के लोग
अपने हृदय और जीवन को बदल सकते हैं। उस राष्ट्र
के लोग बुरे काम करना छोड़ सकते हैं। तब मैं अपने
इरादे को बदल दूँगा। मैं उस राष्ट्र पर विपत्ति ढाने की
अपनी योजना का अनुसरण करना छोड़ सकता हूँ।
9कभी ऐसा अन्य समय आ सकता है जब मैं किसी
राष्ट्र के बारे में बातें करूँ। मैं यह कह सकता हूँ कि मैं
उस राष्ट्र का निर्माण करूँगा और उसे स्थिर करूँगा।
10किन्तु मैं यह देख सकता हूँ कि मेरी आज्ञा का पालन
न करके वह राष्ट्र बुरा काम कर रहा है। तब मैं उस
अच्छाई के बारे में फिर सोचूँगा जिसे देने की योजना
मैंने उस राष्ट्र के लिये बना रखी है।

11"अत: यिर्मयाह, यहूदा के लोगों और यरूशलेम में
जो लोग रहते हैं उनसे कहो, 'यहोवा जो कहता है वह
यह है: अब मैं सीधे तुम लोगों के लिये विपत्ति का
निर्माण कर रहा हूँ। मैं तुम लोगों के विरुद्ध योजना बना
रहा हूँ। अत: उन बुरे कामों को करना बन्द करो जो
तुम कर रहे हो। हर एक व्यक्ति को बदलना चाहिये
और अच्छा काम करना आरम्भ करना चाहिये।' 12किन्तु
यहूदा के लोग उत्तर देंगे, 'ऐसी कोशिश करने से कुछ
नहीं होगा। हम वही करते रहेंगे जो हम करना चाहते
हैं। हम लोगों में हर एक वही करेगा जो हठी और बुरा
हृदय करना चाहताहै।'"

13उन बातों को सुनो जो यहोवा कहता है, "दूसरे
राष्ट्र के लोगों से यह प्रश्न करो: 'क्या तुमने कभी
किसी की वे बुराई करते हुये सुना है जो इस्राएल ने
किया है।' अन्य के बारे में इस्राएल द्वारा की गई बुराई
का करना सुना है? इस्राएल परमेश्वर की दुल्हन के
समान विशेषहै। 14तुम जानते हो कि चट्टानों कभी
स्वत: मैदान नहीं छोड़तीं। तुम जानते हो कि लबानोन
के पहाड़ों के ऊपर की बर्फ कभी नहीं पिघलती। तुम
जानते हो कि शीतल बहने वाले झरने कभी नहीं सूखते।
15किन्तु हमारे लोग हमें भूल चुके हैं, वे व्यर्थ देवमूर्तियों
की बलि चढ़ाते हैं। मेरे लोग जो कुछ करते हैं उनसे
ठोकर खाकर गिरते हैं। वे अपने पूर्वजों की पुरानी
राहों में ठोकर खाकर गिरते फिरते हैं। मेरे लोगों को
ऊबड़ खाबड़ सड़कों और तुच्छ राजमार्गो पर चलना
शायद अधिक पसन्द है, इसकी अपेक्षा कि वे मेरा
अनुसरण अच्छी सड़क पर करें। 16अत: यहूदा देश
एक सूनी मरुभूमि बनेगा। इसके पास से गुजरते लोग
हर बार सीटी बजाएंगे और सिर हिलायेंगे। इस बात से
चकित होगें कि देश कैसे बरबाद किया गया। 17मैं
यहूदा के लोगों को उनके शत्रुओं के सामने बिखेरुँगा।
प्रबल पूर्वी आँधी जैसे चीजों के चारों ओर उड़ती है वैसे
ही मैं उनको बिखेरुँगा। मैं उन लोगों को नष्ट करूँगा।
उस समय वे मुझे अपनी सहायता के लिये आता नहीं
देखेंगे। नहीं, वे मुझे अपने को छोड़ता देखेंगे।"

यिर्मयाह की चौथी शिकायत

18तब यिर्मयाह के शत्रुओं ने कहा, "आओ, हम
यिर्मयाह के विरूद्ध षड़यन्त्र रचे। निश्चय ही, याजक
द्वारा दी गई व्यवस्था की शिक्षा मिटेगी नहीं और बुद्धिमान
लोगों की सलाह अब भी हम लोगों को मिलेगी। हम
लोगों को नबियों के सन्देश भी मिलेंगे। अत: हम लोग
उसके बारे में झूठ बोलें। उससे वह बरबाद होगा। वह
जो कुछ कहता है, हम किसी पर ध्यान नहीं देंगे।"

19हे यहोवा, मेरी सुन और मेरे विरोधियों की सुन,
तब तय कर कि कौन ठीक है? 20मैंने यहूदा के लोगों
के लिये अच्छा किया है। किन्तु अब वे उल्टे बदले में
बुराई दे रहे हैं। वे मुझे फँसा रहे हैं। वे मुझे धोखा देकर
फँसाने और मार डालने का प्रयत्न कर रहे हैं। 21अत:
अब उनके बच्चों को अकाल में भूखों मरने दे। उनके
शत्रुओं को उन्हें तलवार से हरा डालनेदे। उनकी पत्नियों
को शिशु रहित होने दे। यहूदा के लोगों को मृत्यु के
घाट उतारे जाने दे। उनकी पत्नियों को विधवा होने दे।
यहूदा के लोगों को मृत्यु के घाट उतारे जानेदें। युवकों
को युद्ध में तलवार के घाट उतार दिये जाने दे। 22उनके
घरों में रूदन मचनें दे। उन्हें तब रोने दे जब तू अचानक
उनके विरुद्ध शत्रु को लाए। इसे होने दे क्योंकि हमारे
शत्रुओं ने मुझे धोखा दे कर फँसाने की कोशिश की
है। उन्होंने मेरे फँसने के लिये गुप्त जाल डाला है। 23हे
यहोवा, मुझे मार डालने की उनकी योजना को तू
जानता है। उनके अपराधों को तू क्षमा न कर। उनके
पापों को मत धो। मेरे शत्रुओं को नष्ट कर। क्रोधित
रहते समय ही उन लोगों को दण्ड दे।

टूटी सुराही

19 यहोवा ने मुझसे कहा: "यिर्मयाह, जाओ और
किसी कुम्हार से एक मिट्टी का सुराही खरीदो।
2ठीकरा–द्वार के सामने के पास बेन हिन्नोम घाटी को
जाओ। अपने साथ लोगों के अग्रजों (प्रमुखों) और कुछ
याजकों को लो। उस स्थान पर उनसे वह कहो जो मैं
तुमसे कहता हूँ। 3अपने साथ के लोगों से कहो, 'यहूदा
के राजाओं और इस्राएल के लोगों, यहोवा के यहाँ से
यह सन्देश सुनो। इस्राएल के लोगों का परमेश्वर
सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता है, वह यह है: 'मैं इस
स्थान पर शीघ्र ही एक भयंकर घटना घटित कराऊँगा।
हर एक व्यक्ति जो इसे सुनेगा, चकित और भयभीत
होगा। 4मैं ये काम करुँगा क्योंकि यहूदा के लोगों ने
मेरा अनुसरण करना छोड़ दिया है। उन्होंने इसे विदेशी
देवताओं का स्थान बना दिया है। यहूदा के लोगों ने इस
स्थान पर अन्य देवताओं के लिये बलियाँ जलाई हैं।
बहुत पहले लोग उन देवताओं को नहीं पूजते थे। उनके
पूर्वज उन देवताओं को नहीं पूजते थे। ये अन्य देशों के
नये देवता हैं। यहूदा के राजाओं ने भोले बच्चों के खून

से इस स्थान को रंगा है। 5यहूदा के राजाओं ने बाल
देवता के लिये उच्च स्थान बनाए हैं। उन्होंने उन स्थानों
का उपयोग अपने पुत्रों को आग में जलाने के लिये
किया। उन्होंने अपने पुत्रों को बाल के लिये होमबलि
के रुप में जलाया। मैंने उन्हें यह करने को नहीं कहा।
मैंने तुमसे यह नहीं माँगा कि तुम अपने पुत्रों को बलि
के रूप में भेंट करो। मैंने कभी इस सम्बन्ध में सोचा भी
नहीं। 6अब लोग उस स्थान का हिन्नोम की घाटी तोपेत
कहते हैं। किन्तु मैं तुम्हें यह चेतावनी देता हूँ, वे दिन
आ रहे हैं।'" यह सन्देश यहोवा का है, "'जब लोग इस
स्थान को वध की घाटी कहेंगे। 7इस स्थान पर मैं यहूदा
और यरूशलेम के लोगों की योजनाओं को नष्ट करूँगा।
शत्रु इन लोगों का पीछा करेगा और मैं इस स्थान पर
यहूदा के लोगों को तलवार के घाट उतर जाने दूँगा
और मैं उनके शवों को पक्षियों और जंगली जानवरों
का भोजन बनाऊँगा। 8मैं इस नगर को पूरी तरह नष्ट
करुँगा। जब लोग यरूशलेम से गुजरेंगे तो सीटी बजाएंगे
और सिर हिलायेंगे। उन्हें विस्मय होगा जब वे देखेंगे कि
नगर किस प्रकार ध्वस्त किया गया है। 9शत्रु अपनी
सेना को नगर के चारों ओर लाएगा। वह सेना लोगों को
भोजन लेने बाहर नहीं आने देगी। अत: नगर में लोग
भूखों मरने लगेंगे। वे इतने भूखे हो जाएंगे कि अपने पुत्र
और पुत्रियों के शरीर को खाने लगेंगे और तब वे एक
दूसरे को खाने लगेंगे।'

10"यिर्मयाह, तुम ये बातें लोगों से कहोगे और जब वे
देख रहे हों तभी तुम उस सुराही को तोड़ना। 11उस
समय, तुम यह कहना, सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है,
'मैं यहूदा राष्ट्र और यरूशलेम नगर को वैसे ही तोडूँगा
जैसे कोई मिट्टी का सुराही तोड़ता है। यह सुराही फिर
जोड़कर बनाया नहीं जा सकता। यहूदा राष्ट्र के लिये
भी यही सब होगा। मरे लोग इस तोपेत में तब तक
दफनाए जाएंगे जब तक यहाँ जगह नहीं रह जाएगी। 12मैं
यह इन लोगों और इस स्थान के साथ ऐसा करूँगा। मैं
इस नगर को तोपेत की तरह कर दूँगा।' यह सन्देश
यहोवा का है। 13'यरूशलेम के घर तथा राजा के महल
इतने गन्दे होंगे जितना यह स्थान तोपेत है। राजा के
महल इस स्थान तोपेत की तरह बरबाद होंगे। क्यों?
क्योंकि लोगों ने उन घरों की छत पर असत्य देवताओं
की पूजा की। उन्होंने ग्रह–नक्षत्रों की पूजा की और
उनके सम्मान में बलि जलाई। उन्होंने असत्य देवताओं
को पेय भेंट दी।'"

14तब यिर्मयाह ने तोपेत को छोड़ा जहाँ यहोवा ने
उपदेश देने को कहा था। यिर्मयाह यहोवा के मन्दिर
को गया और उसके आँगन में खड़ा हुआ। यिर्मयाह ने
सभी लोगों से कहा, 15"इस्राएल का परमेश्वर
सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है: 'मैंने कहा है कि मैं
यरूशलेम और उसके चारों ओर के गाँवों पर अनेक
विपत्तियाँ ढाऊँगा। मैं इन्हें शीघ्र घटित कराऊँगा। क्यों?
क्योंकि लोग बहुत हठी हैं वे मेरी सुनने और मेरी आज्ञा
का पालन करने से इन्कार करते हैं।'"

यिर्मयाह और पशहूर

20 पशहूर नामक एक व्यक्ति याजक था। वह
यहोवा के मन्दिर में उच्चतम अधिकारी था।
पशहूर इम्मेर नामक व्यक्ति का पुत्र था। पशहूर ने
यिर्मयाह को मन्दिर के आँगन में उन बातों का उपदेश
करते सुना। 2इसलिये उसने यिर्मयाह नबी को पिटवा
दिया और उसने यिर्मयाह के हाथ और पैरों को विशाल
काष्ठ के लट्ठों के बीच बन्द कर दिया। यह मन्दिर के
ऊपरी बिन्यामीन द्वार पर था। 3अगले दिन पशहूर ने
यिर्मयाह को काष्ठ के लट्ठों के बीच से निकाला। तब
यिर्मयाह ने पशहूर से कहा, "यहोवा का दिया तुम्हारा
नाम पशहूर नहीं है। अब यहोवा की ओर से तुम्हारा
नाम सर्वत्र आतंक है। 4यही तुम्हारा नाम है, क्योंकि
यहोवा कहता है, 'मैं शीघ्र ही तुमको अपने आपके लिये
आतंक बनाऊँगा। मैं शीघ्र ही तुम्हें तुम्हारे सभी मित्रों
के लिये आतंक बनाऊँगा। तुम शत्रुओं द्वारा अपने मित्रों
को तलवार के घाट उतारते देखोगे। मैं यहूदा के सभी
लाोगों को बाबुल के राजा को दे दूँगा। वह यहूदा के
लोगों को बाबुल देश को ले जाएगा और उसकी सेना
यहूदा के लोगों को अपनी तलवार के घाट उतारेगी।
5यहूदा के लोगों ने चीजों को बनाने में कठिन परिश्रम
किया और धनी हो गए। किन्तु मैं वे सारी चीजें उनके
शत्रुओं को दे दूँगा। यरूशलेम के राजा के पास बहुत से
धन भन्डार हैं। किन्तु मैं उन सभी धन भन्डारों को शत्रु
को दें दूँगा। शत्रु उन चीजों को लेगा और उन्हें बाबुल
देश को ले जाएगा। 6और पशहूर तुम और तुम्हारे घर
में रहने वाले सभी लोग यहाँ से ले जाए जाओगे। तुमको
जाने को और बाबुल देश में रहने को विवश किया
जायेगा। तुम बाबुल में मरोगे और तुम उस विदेश में
दफनाए जाओगे। तुमने अपने मित्रों को झूठा उपदेश
दिया। तुमने कहा कि ये घटनायें नहीं घटेंगीं । किन्तु
तुम्हारे सभी मित्र भी मरेंगे और बाबुल में दफनाए
जायेंगे।'"

यिर्मयाह की पाँचवीं शिकायत

7हे यहोवा, तूने मुझे धोखा दिया और मैं निश्चय ही
मूर्ख बनाया गया। तू मुझसे अधिक शक्तिशाली है अत:
तू विजयी हुआ। मैं मजाक बन कर रह गया हूँ। लोग
मुझ पर हँसते हैं और सारा दिन मेरा मजाक उड़ाते हैं।
8जब भी मैं बोलता हूँ, चीख पड़ता हूँ। मैं लगातार हिंसा
और तबाही के बारे में चिल्ला रहा हूँ। मैं लोगों को उस
सन्देश के बारे में बताता हूँ जिसे मैंने यहोवा से प्राप्त
किया। किन्तु लोग केवल मेरा अपमान करते हैं और

मेरा मजाक उड़ाते हैं। 9कभी–कभी मैं अपने से कहता
हूँ: "मैं यहोवा के बारे में भूल जाऊँगा। मैं अब आगे
यहोवा के नाम पर नहीं बोलूँगा।" किन्तु यदि मैं ऐसा
कहता हूँ तो यहोवा का सन्देश मेरे भीतर भड़कती
ज्वाला सी हो जाती है। मुझे ऐसा लगता है कि यह अन्दर
तक मेरी हड्डियों को जला रही है। मैं अपने भीतर
यहोवा के सन्देश को रोकने के प्रयत्न में थक जाता हूँ
और अन्तत: मैं इसे अपने भीतर रोकने में समर्थ नहीं
होपाता। 10मैं अनेक लोगों को दबी जुबान अपने विरुद्ध
बातें करता सुनता हूँ। सर्वत्र मैं वह सब सुनता हूँ जो मुझे
भयभीत करते हैं। यहाँ तक कि मेरे मित्र भी मेरे विरुद्ध
बातें करते है। चलो हम अधिकारियों को इसके बारे में
सूचित करे। लोग केवल इस प्रतीक्षा में हैं कि मैं कोई
गलती करुँ। वे कह रहे हैं, "आओ हम झूठ बोलें और
कहें कि उसने कुछ बुरे काम किए हैं। सम्भव है हम
यिर्मयाह को धोखा दे सकें। तब वह हमारे साथ होगा।
अन्तत: हम उससे छुटकारा पायेंगे। तब हम उसे दबोच
लेंगे और उससे अपना बदला ले लेंगे।"

11किन्तु यहोवा मेरे साथ है। यहोवा एक दृढ़ सैनिक
सा है। अत: जो लोग मेरा पीछा करते हैं मुँह की खायेंगे।
वे लोग मुझे पराजित नहीं कर सकेंगे। वे लोग असफल
होंगे। वे निराश होंगे। वे लोग लज्जित होंगे और लोग
उस लज्जा को कभी नहीं भूलेंगे।

12सर्वशक्तिमान यहोवा तू अच्छे लोगों की परीक्षा
लेता है। तू व्यक्ति के दिल और दिमाग को गहराई से
देखता है। मैंने उन व्यक्तियों के विरुद्ध तूझे अनेकों
तर्क दिये हैं। अत: मुझे यह देखना है कि तू उन्हें वह
दण्ड देता है कि नहीं जिनके वे पात्र हैं। 13यहोवा के
लिये गाओ! यहोवा की स्तुति करो! यहोवा दीनों के
जीवन की रक्षा करता है! वह उन्हें दुष्ट लोगों की
शक्ति से बचाता है!

यिर्मयाह की छठी शिकायत

14उस दिन को धिक्कार है जिस दिन मेरा जन्महुआ।
उस दिन को बधाई न दो जिस दिन मैं माँ की कोख में
आया। 15उस व्यक्ति को अभिशाप दो जिसने मेरे पिताको
यह सूचना दी कि मेरा जन्म हुआ है। उसने कहा था,
"तुम्हारा लड़का हुआ है, वह एक लड़का है।" उसने
मेरे पिता को बहुत प्रसन्न किया था जब उसने उनसे
यह कहा था। 16उस व्यक्ति को वैसा ही होने दो जैसे वे
नगर जिन्हें यहोवा ने नष्ट किया। यहोवा ने उन नगरों
पर कुछ भी दया नहीं की। उस व्यक्ति को सवेरे युद्ध
का उदघोष सुननेदो, और दोपहर को युद्ध की चीख
सुनने दो। 17तूने मुझे माँ के पेट में ही, क्यों न मार
डाला? तब मेरी माँ की कोख कब्र बन जाती, और मैं
कभी जन्म नहीं ले सका होता। 18मुझे माँ के पेट से
बाहर क्यों आना पड़ा? जो कुछ मैंने पाया है वह परेशानी
और दु:ख है और मेरे जीवन का अन्त लज्जाजनक
होगा।

राजा सिदकिय्याह के निवेदन को परमेश्वर अस्वीकार करता है

21 यह यहोवा का वह सन्देश है जो यिर्मयाह को
मिला। यह सन्देश तब आया जब यहूदा के
राजा सिदकिय्याह ने पशहूर नामक एक व्यक्ति तथा
सपन्याह नामक एक याजक को यिर्मयाह के पास भेजा।
पशहूर मल्किय्याह नामक व्यक्ति का पुत्र था। सपन्याह
मासेयाह नामक व्यक्ति का पुत्र था। पशहूर और सपन्याह
यिर्मयाह के लिये एक सन्देश लेकर आए। 2पशहूर और
सपन्याह ने यिर्मयाह से कहा, "यहोवा से हम लोगों के
लिए प्रार्थना करो। यहोवा से पूछो कि क्या होगा? हम
जानना चाहते हैं क्योंकि बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर
हम लोगों पर आक्रमण कर रहा है। सम्भव है यहोवा
हम लोगों के लिए वैसे ही महान कार्य करे जैसा उसने
बीते समय में किया। सम्भव है कि यहोवा नबूकदनेस्सर
को आक्रमण करने से रोक दे या उसे चले जाने दे।"

3तब यिर्मयाह ने पशहूर और सपन्याह को उत्तर
दिया। उसने कहा, "राजा सिदकिय्याह से कहो, 4इस्राएल
का परमेश्वर यहोवा जो कहता है, यह वह है: 'तुम्हारे
हाथों में युद्ध के अस्त्र शस्त्र हैं। तुम उन अस्त्र शस्त्रों
का उपयोग अपनी सुरक्षा के लिए बाबुल के राजा और
कसदियों के विरुद्ध कर रहे हो। किन्तु मैं उन अस्त्रों
को व्यर्थ करदूँगा।

"'बाबुल की सेना नगर के चारों ओर दीवार के
बाहर है। वह सेना नगर के चारों ओर है। शीघ्र ही मैं
उस सेना को यरूशलेम में ले आऊँगा। 5मैं स्वयं यहूदा
तुम लोगों के विरुद्ध लड़ूँगा। मैं अपने शक्तिशाली हाथों
से तुम्हारे विरुद्ध लड़ूँगा। मैं तुम पर बहुत अधिक क्रोधित
हूँ, अत: मैं अपनी शक्तिशाली भुजाओं से तुम्हारे विरुद्ध
लड़ूँगा। मैं तुम्हारे विरुद्ध घोर युद्ध करुँगा और दिखाऊँगा
कि मैं कितना क्रोधित हूँ। 6मैं यरूशलेम में रहने वाले
लोगो को मार डालूँगा। मैं लोगों और जानवरों को मार
डालूँगा। वे उस भयंकर बीमारी से मरेंगे जो पूरे नगर में
फैल जाएगी।

7जब यह हो जायेगा तब उसके बाद,'" यह सन्देश
यहोवा का है। "'मैं यहूदा के राजा सिदकिय्याह को
बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को दूँगा। मैं सिदकिय्याह
के अधिकारियों को भी नबूकदनेस्सर को दूँगा। यरूशलेम
के कुछ लोग भयंकर बीमारी से नहीं मरेंगे। कुछ लोग
तलवार के घाट नहीं उतारे जाएँगे। उनमें से कुछ भूखों
नहीं मरेंगे किन्तु मैं उन लोगों को नबूकदनेस्सर को
दूँगा। मैं यहूदा के शत्रु को विजयी बनाऊँगा। नबूकदनेस्सर
की सेना यहूदा के लोगों को मार डालना चाहती है।
इसलिये यहूदा और यरूशलेम के लोग तलवार के घाट

उतार दिए जाएंगे। नबूकदनेस्सर कोई दया नहीं दिखायेगा।
वह उन लोगों के लिए अफसोस नहीं करेगा।'
8"यरूशेलम के लोगों से ये बातें भी कहो। यहोवा ये
बातें कहता है, 'समझ लो कि मैं तुम्हें जीने और मरने
में से एक को चुनने दूँगा। 9कोई भी व्यक्ति जो यरूशलेम
में ठहरेगा, मरेगा। वह व्यक्ति तलवार, भूख या भयंकर
बीमारी से मरेगा किन्तु जो व्यक्ति यरूशलेम के बाहर
जायेगा और बाबुल की सेना को आत्म समर्पण करेगा,
जीवित रहेगा। उस सेना ने नगर को घेर लिया है। अत:
कोई व्यक्ति नगर में भोजन नहीं ला सकता। किन्तु जो
कोई नगर को छोड़ देगा, वह अपने जीवन को बचा
लेगा। 10मैंने यरूशलेम नगर पर विपत्ति ढाने का निश्चय
कर लिया है। मैं नगर की सहायता नहीं करूँगा।'" यह
सन्देश यहोवा का है। "'मैं यरूशलेम के नगर को बाबुल
के राजा को दूँगा। वह इसे आग से जलायेगा।'
11"यहूदा के राज परिवार से यह कहो, यहोवा के
सन्देश को सुनो।
12दाऊद के परिवार यहोवा यह कहता है, 'तुम्हें
प्रतिदिन लोगों का निष्पक्ष न्याय करना चाहिए।
अपराधियों से उनके शिकारों की रक्षा करो। यदि तुम
ऐसा नहीं करते तो मैं बहुत क्रोधित होऊँगा। मेरा क्रोध
ऐसे आग की तरह होगा जिसे कोई व्यक्ति बुझा नहीं
सकता। यह घटित होगा क्योंकि तुमने बुरे काम कियेहैं।'
13यरूशलेम, मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ। तुम पर्वत की चोटी
पर बैठी हो। तुम इस घाटी के ऊपर एक रानी की
तरह बैठी हो। यरूशलेम के लोगों, तुम कहते हो, 'कोई
भी हम पर आक्रमण नहीं कर सकता। कोई भी हमारे
दृढ़ नगर में घुस नहीं सकता।' किन्तु यहोवा के यहाँ से
उस सन्देश को सुनो:
14'तुम वह दण्ड पाओगे जिसके पात्र तुम हो। मैं
तुम्हारे वनों में आग लगाऊँगा। वह आग तुम्हारे चारों
ओर की हर एक चीज जला देगी।'"

बुरे राजाओं के विरुद्ध न्याय

22 यहोवा ने कहा, "यिर्मयाह राजा के महल को
जाओ। यहूदा के राजा के पास जाओ और
वहाँ उसे इस सन्देश का उपदेश दो। 2'यहूदा के राजा,
यहोवा के यहाँ से सन्देश सुनो। तुम दाऊद के सिंहासन
से शासन करते हो, अत: सुनो। राजा, तुम्हें और तुम्हारे
अधिकारियों को यह अच्छी तरह सुनना चाहिये।
यरूशलेम के द्वारों से आने वाले सभी लोगों को यहोवा
का सन्देश को सुनना चाहिये। 3यहोवा कहता है: वे
काम करो जो अच्छे और न्यायपूर्ण हों। उस व्यक्ति की
रक्षा जिसकी चोरी की गई हो उस व्यक्ति से करो
जिसने चोरी की है। विदेशी अनाथ बच्चों और विधवाओं
को मत मारो। 4"यदि तुम इन आदेशों का पालन करते
हो तो जो घटित होगा वह यह है: जो राजा दाऊद के
सिंहासन पर बैठेंगे, वे यरूशलेम नगर में नगर द्वारों से
आते रहेंगे। वे राजा नगर द्वारों से अपने अधिकारियों
सहित आएंगे। वे राजा, उनके उत्तराधिकारी और उनके
लोग रथों और घोड़ों पर चढ़कर आएंगे। 5किन्तु यदि
तुम इन आदेशों का पालन नहीं करोगे तो यहोवा यह
कहता है: मैं अर्थात यहोवा प्रतिज्ञा करता हूँ कि राजा
का महल ध्वस्त कर दिया जायेगा यह चट्टानों का एक
ढेर रह जायेगा।'"
6यहोवा उन महलों के बारे में यह कहता है जिनमें
यहूदा के राजा रहते हैं:
"गिलाद वन की तरह यह महल ऊँचा है। यह लबानोन
पर्वत के समान ऊँचा है। किन्तु मैं इसे सचमुच मरुभूमि
सा बनाऊँगा। यह महल उस नगर की तरह सूना होगा
जिसमें कोई व्यक्ति न रहता हो। 7मैं लोगों को महल
को नष्ट करने भेजूँगा। हर एक व्यक्ति के पास वे
औजार होंगे जिनसे वह इस महल को नष्ट करेगा। वे
लोग तुम्हारी देवदार की मजबूत और सुन्दर कड़ियों को
काट डालेंगे। वे लोग उन कड़ियों को आग में फेंक
देंगे।"
8"अनेक राष्ट्रों से लोग इस नगर से गुजरेंगे। वे एक
दूसरे से पूछेंगे, 'यहोवा ने यरूशलेम के साथ ऐसा भयंकर
काम क्यों किया? यरूशलेम कितना महान नगर था।'
9उस प्रश्न का उत्तर यह होगा, 'परमेश्वर ने यरूशलेम
को नष्ट किया, क्योंकि यहूदा के लोगों ने यहोवा अपने
परमेश्वर के साथ की गई वाचा को मानना छोड़ दिया।
उन लोगों ने अन्य देवताओं की पूजा और सेवाए की।'"

राजा यहोशाहाज (शल्लूम) के विरुद्ध न्याय

10उस राजा के लिये मत रोओ जो मर गया। उसके
लिये मत रोओ। किन्तु उस राजा के लिये फूट–फूट
कर रोओ जो यहाँ से जा रहा है। उसके लिये रोओ,
क्योंकि वह फिर कभी वापस नहीं आएगा। शल्लूम
(यहोशाहाज) अपनी जन्मभूमि को फिर कभी नहीं
देखेगा।
11यहोवा योशिय्याह के पुत्र शल्लूम (यहोशाहाज) के
बारे में जो कहता है, वह यह है (शल्लूम अपने पिता
योशिय्याह की मृत्यु के बाद यहूदा का राजा हुआ।)
"शल्लूम (यहोशाहाज) यरूशलेम से दूर चला गया। वह
फिर यरूशलेम को वापस नहीं लौटेगा। 12शल्लूम
(यहोशाहाज) वहीं मरेगा जहाँ उसे मिस्री ले जाएँगे। वह
इस भूमि को फिर नहीं देखेगा।"

राजा यहोयाकीम के विरुद्ध न्याय

13राजा यहोयाकीम के लिये यह बहुत बुरा होगा। वह
बुरे कर्म कर रहा है अत: वह अपना महल बना लेगा।
वह लोगों को ठग रहा है, अत: वह ऊपर कमरे बना
सकता है। वह अपने लोगों से बेगार ले रहा है। वह

उनके काम की मजदूरी नहीं दे रहा है। 14यहोयाकीम
कहता है, 'मैं अपने लिये एक विशाल महल बनाऊँगा।
मैं दूसरी मंजिल पर विशाल कमरे बनाऊँगा।' अत: वह
विशाल खिड़कियों वाला महल बना रहा है। वह देवदार
के फलकों को दीवारों पर मढ़ रहा है और इन पर
लाल रंग चढ़ा रहा है। 15यहोयाकीम, अपने घर में
देवदार की अधिक लकड़ी का उपयोग तुम्हें महान
सम्राट नहीं बनाता। तुम्हारा पिता योशिय्याह भोजन पान
पाकर ही सन्तुष्ट था। उसने वह किया जो ठीक और
न्यायपूर्ण था। योशिय्याह ने वह किया, अत: उसके लिये
सब कुछ अच्छा हुआ। 16योशिय्याह ने दीन-हीन लोगों
को सहायता दी। योशिय्याह ने वह किया, अत: उसके
लिये सब कुछ अच्छा हुआ। यहोयाकीम "परमेश्वर को
जानने" का अर्थ क्या होता है? मुझको जानने का अर्थ,
ठीक रहना और न्यायपूर्ण होना है।" यह सन्देश यहोवा
का है। 17"यहोयाकीम, तुम्हारी आँखें केवल तुम्हारे
अपने लाभ को देखती हैं, तुम सदैव अपने लिये अधिक
से अधिक पाने की सोचते हो। तुम निरपराध लोगों को
मारने के लिये इच्छुक रहते हो। तुम अन्य लोगों की
चीजों की चोरी करने के इच्छुक रहते हो।" 18अत:
योशिय्याह के पुत्र यहोयाकीम से यहोवा जो कहता है,
वह यह है: "यहूदा के लोग यहोयाकीम के लिए रोएंगे
नहीं। वे आपस में यह नहीं कहेंगे, 'हे मेरे भाई, मैं
यहोयाकीम के बारे में इतना दु:खी हूँ। हे मेरी बहन, मैं
यहोयाकीम के बारे में इतना दु:खी हूँ।' यहूदा के लोग
यहोयाकीम के लिए रोएंगे नहीं। वे उसके बारे में नहीं
कहेंगे, 'हे स्वामी, हम इतने दु:खी है। हे राजा, हम इतने
दु:खी हैं।' 19यरूशलेम के लोग यहोयाकीम को एक मरे
गधे की तरह दफनायेंगे। वे उसके शव को केवल दूर
घसीट ले जाएंगे और वे उसके शव को यरूशलेम के
द्वार के बाहर फेंक देंगे।

20"यहूदा, लबानोन के पर्वतों पर जाओ और चिल्लाओ।
बाशान के पर्वतों में अपना रोना सुनाई पड़नेदो। अबारीम
के पर्वतों में जाकर चिल्लाओ। क्यों? क्योंकि तुम्हारे
सभी 'प्रेमी' नष्ट कर दिये जायेंगे।

21"हे यहूदा, तुमने अपने को सुरक्षित समझा, किन्तु
मैंने तुम्हें चेतावनी दी मैंने तुम्हें चेतावनी दी, परन्तु तुमने
सुनने से इन्कार किया तुमने यह तब से किया जब तुम
युवती थी और यहूदा जब से तुम युवती थी, तुमने मेरी
आज्ञा का पालन नहीं किया। 22हे यहूदा, मेरा दण्ड
आँधी की तरह आएगा और यह तुम्हारे सभी गड़ेरियों
(प्रमुखों) को उड़ा ले जाएगा। तुमने सोचा था कि अन्य
कुछ राष्ट्र तुम्हारी सहायता करेंगे। किन्तु वे राष्ट्र भी
पराजित होंगे। तब तुम सचमुच निराश होओगी। तुमने
जो सब बुरे काम किये, उनके लिये लज्जित होओगी।

23"हे राजा, तुम देवदार से बने अपने महल में ऊँचे
पर्वत पर रहते हो। तुम उसी तरह रह रहे हो, जैसा कि
पहले लबानोन में रहे हो, जहाँ से यह लकड़ी लाई गई
हैं। तुम समझते हो कि ऊँचे पर्वत पर अपने विशाल
महल में तुम सुरक्षित हो। किन्तु तुम सचमुच तब कराह
उठोगे जब तुम्हें तुम्हारा दण्ड मिलेगा। तुम प्रसव करती
स्त्री की तरह पीड़ित होगे।"

राजा कोन्याह के विरुद्ध न्याय

24यह सन्देश यहोवा का है, "मैं निश्चय ही शाश्वत हूँ
अत: यहोयाकीम के पुत्र यहूदा के राजा कोन्याह मैं
तुम्हारे साथ ऐसा करूँगा। चाहे तुम मेरे दायें हाथ की
राजमुद्रा ही क्यों न हो, मैं तुम्हें तब भी बाहर फेकूँगा।
25कोन्याह मैं तुम्हें बाबुल और कसदियों के राजा
नबूकदनेस्सर को दूँगा। वे ही लोग ऐसे हैं जिनसे तुम
डरते हो। वे लोग तुम्हें मार डालना चाहते हैं। 26मैं तुम्हें
और तुम्हारी माँ को ऐसे देश में फेकूँगा कि जहाँ तुम
दोनों में से कोई भी पैदा नहीं हुआ था। तुम और तुम्हारी
माँदोनों उसी देश में मरेंगें। 27कोन्याह तुम अपने देश में
लौटना चाहोगे, किन्तु तुम्हें कभी भी लौटने नहीं दिया
जाएगा।"

28कोन्याह उस टूटे बर्तन की तरह है जिसे किसी ने
फेंक दिया हो। वह ऐसे बर्तन की तरह है जिसे कोईव्यक्ति
नहीं चाहता। कोन्याह और उसकी सन्तानें क्यों बाहर
फेंक दी जायेगी?वे किसी विदेश में क्यों फेकें जाएंगे?
29भूमि, भूमि, यहूदा की भूमि! यहोवा का सन्देश सुनो!
30यहोवा कहता है, "कोन्याह के बारे में यह लिख लो:
'वह ऐसा व्यक्ति है जिसके भविष्य में अब बच्चे नहीं
होंगे। कोन्याह अपने जीवन में सफल नहीं होगा।उसकी
सन्तान में से कोई भी यहूदा पर शासन नहीं करेगा।'"

23 "यहूदा के गड़ेरियों (प्रमुखों) के लिये यह बहुत
बुरा होगा। वे गड़ेरिये भेड़ों को नष्ट कर रहें
हैं। वे भेड़ों को मेरी चरागाह से चारों ओर भगा रहे हैं।"
यह सन्देश यहोवा का है।

2वे गड़ेरिये (प्रमुख) मेरे लोगों के लिये उत्तरदायी हैं
और इस्राएल का परमेश्वर यहोवा उन गड़ेरियों से यह
कहता हैं, "गड़ेरियों (प्रमुखों), तुमने मेरी भेड़ों को चारों
ओर भगाया है। तुमने उन्हें चले जाने को विवश किया
है। तुमने उनकी देख भाल नहीं रखी है। किन्तु मैं तुम
लोगो को देखूँगा, मैं तुम्हें उन बुरे कामों के लिये दण्ड
दूँगा जो तुमने किये हैं।" यह सन्देश यहोवा के यहाँ से
है। 3"मैंने अपनी भेड़ों (लोगों) को विभिन्न देशों में
भेजा। किन्तु मैं अपनी उन भेड़ों (लोगों) को एक साथ
इकट्ठी करुँगा जो बची रह गई हैं और मैं उन्हें उनकी
चरागाह (देश) में लाऊँगा। जब मेरी भेड़ें (लोग) अपनी
चरागाह (देश) में वापस आएंगी तो उनके बहुत बच्चे
होंगे और उनकी संख्या बढ़ जाएगी। 4मैं अपनी भेड़ों के
लिये नये गड़ेरिये (प्रमुख) रखूँगा वे गड़ेरिये (प्रमुख)
मेरी भेड़ों (लोगों) की देखभाल करेंगे और मेरी भेड़ें

(लोग) भयभीत या डरेंगी नहीं। मेरी भेड़ों (लोगों) में से
कोई खोएगी नहीं।" यह सन्देश यहोवा का है।

सच्चा "अंकुर"

5यह सन्देश यहोवा का है: "समय आ रहा है जब मैं
दाऊद के कुल में एक सच्चा 'अंकुर' उगाऊँगा। वह
ऐसा राजा होगा जो बुद्धिमत्ता से शासन करेगा और वह
वही करेगा जो देश में उचित और न्यायपूर्ण होगा।
6उस सच्चे 'अंकुर' के समय में यहूदा के लोग सुरक्षित
रहेंगे और इस्राएल सुरक्षित रहेगा। उसका नाम यह
होगा यहोवा हमारी सच्चाई हैं।"
7यह सन्देश यहोवा का है, "अत: समय आ रहा है
जब लोग भविष्य में यहोवा के नाम पर पुरानी प्रतिज्ञा
फिर नहीं करेंगे। पुरानी प्रतिज्ञा यह है: 'यहोवा जीवित
है, यहोवा ही वह है जो इस्राएल के लोगों को मिस्र देश
से बाहर लाया था।' 8किन्तु अब लोग कुछ नया कहेंगे,
'यहोवा जीवित है, यहोवा ही वह है जो इस्राएल के लोगों
को उत्तर के देश से बाहर लाया। वह उन्हें उन सभी
देशों से बाहर लाया जिनमें उसने उन्हें भेजा था।' तब
इस्राएल के लोग अपने देश में रहेंगे।"

झूठे नबियों के विरुद्ध न्याय

9नबियों के लिये सन्देश है:
"मैं बहुत दु:खी हूँ, मेरा हृदय विदीर्ण हो गया है। मेरी
सारी हड्डियाँ काँप रही हैं। मैं (यिर्मयाह) मतवाले के
समान हूँ। क्यों? यहोवा और उसके पवित्र सन्देश के
कारण। 10यहूदा देश ऐसे लोगों से भरा है जो व्यभिचार
का पाप करते हैं। वे अनेक प्रकार से अभक्त हैं।
यहोवा ने भूमि को अभिशाप दिया और वह बहुत सूख
गई। पौधे चरगाहों में सूख रहे हैं और मर रहे हैं। खेत
मरुभूमि से हो गए हैं। नबी पापी हैं, वे नबी अपने प्रभाव
और अपनी शक्ति का उपयोग गलत ढंग से करते हैं।
11नबी और याजक तक भी पापी हैं। मैंने उन्हें अपने
मन्दिर में पाप करते देखा है।" यह सन्देश यहोवा का है।
12"अत: मैं उन्हें अपना सन्देश देना बन्द करूँगा। यह
ऐसा होगा मानों वे अन्धकार में चलने को विवश किये
गए हों। यह ऐसा होगा मानों नबियों और याजकों के
लिये फिसलन वाली सड़क हो। उस अंधेरी जगह में वे
नबी और याजक गिरेंगे। मैं उन पर आपत्तियाँ ढाऊँगा।
उस समय मैं उन नबियों और याजकों को दण्ड दूँगा।
यह सन्देश यहोवा का है। 13मैंने शोमरोन के नबियों को
कुछ बुरा करतेदेखा। मैंने उन नबियों को झूठे बाल
देवता के नाम भविष्यवाणी करते देखा। उन नबियों ने
इस्राएल के लोगों को यहोवा से दूर भटकाया। 14मैंने
यहूदा के नबियों को यरूशलेम में बहुत भयानक कर्म
करते देखा। इन नबियों ने व्यभिचार करने का पाप
किया। उन्होंने झूठी शिक्षाओं पर विश्वास किया, और
उन झूठे उपदेशों को स्वीकार किया। उन्होंने दुष्ट लोगों
को पाप करते रहने के लिये उत्साहित किया। अत:
लोगों ने पाप करना नहीं छोड़ा। वे सभी लोग सदोम
नगर की तरह हैं। यरूशलेम के लोग मेरे लिये अमोरा
नगर के समान हैं। 15अत: सर्वशक्तिमान यहोवा नबियों
के बारे में ये बातें कहता है, "मैं उन नबियों को दण्ड
दूँगा। वह दण्ड विषैला भोजन पानी खाने पीने जैसा
होगा। नबियों ने आध्यात्मिक बीमारी उत्पन्न की और
वह बीमारी पूरे देश में फैल गई। अत: मैं उन नबियों
को दण्ड दूँगा। वह बीमारी यरूशलेम में नबियों से
आई।"
16सर्वशक्तिमान यहोवा यह सब कहता है: "वे नबी
तुमसे जो कहें उसकी अनसुनी करो। वे तुम्हें मूर्ख
बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। वे नबी अर्न्तदर्शन करने
की बात करते हैं। किन्तु वे अपना अर्न्तदर्शन मुझसे
नहीं पाते। उनका अर्न्तदर्शन उनके मन की उपज है।
17कुछ लोग यहोवा के सच्चे सन्देश से घृणा करते हैं।
अत: वे नबी उन लोगों से भिन्न भिन्न कहते हैं। वे
कहते हैं, 'तुम शान्ति से रहोगे।' कुछ लोग बहुत हठी हैं।
वे वही करते हैं जो वे करना चाहते हैं। अत: वे नबी
कहते हैं, 'तुम्हारा कुछ भी बुरा नहीं होगा।' 18किन्तु इन
नबियों में से कोई भी स्वर्गीय परिषद में सम्मिलित नहीं
हुआ है। उनमें से किसी ने भी यहोवा के सन्देश को न
देखा है न ही सुना है। उनमें से किसी ने भी यहोवा के
सन्देश पर गम्भीरता से ध्यान नहीं दिया है। 19अब
यहोवा के यहाँ से दण्ड आँधी की तरह आएगा। यहोवा
का क्रोध बवंडर की तरह होगा। यह उन दुष्ट लोगों के
सिरों को कुचलता हुआ आएगा। 20यहोवा का क्रोध तब
तक नहीं रूकेगा जब तक वे जो करना चाहते हैं, पूरा
न कर लें। जब वह दिन चला जाएगा तब तुम इसे ठीक
ठीक समझोगे। 21मैंने उन नबियों को नहीं भेजा। किन्तु
वे अपने सन्देश देने दौड़ पड़े। मैंने उनसे बातें नहीं कीं।
किन्तु उन्होंने मेरे नाम के उपदेश दिये। 22यदि वे मेरी
स्वर्गीय परिषद में सम्मिलित हुए होते तो उन्होंने यहूदा
के लोगों को मेरा सन्देश दिया होता। उन्होंने लोगों को
बुरे कर्म करने से रोक दिया होता। उन्होंने लोगों को
पाप कर्म करने से रोक दिया होता।"
23यह सन्देश यहोवा का है। "मैं परमेश्वर हूँ, यहाँ
वहाँ और सर्वत्र। मैं बहुत दूर नहीं हूँ। 24कोई व्यक्ति
किसी छिपने के स्थान में अपने को मुझसे छिपाने का
प्रयत्न कर सकता है। किन्तु उसे देख लेना मेरे लिये
सरल है। क्यों? क्योंकि मैं स्वर्ग और धरती दोनों पर
सर्वत्रहूँ!" यहोवा ने ये बातें कहीं।
25"ऐसे नबी हैं जो मेरे नाम पर झूठा उपदेश देते हैं।
वे कहते हैं, 'मैंने एक स्वप्न देखा है! मैंने एक स्वप्न
देखा है!' मैंने उन्हें वे बातें करते सुना है। 26यह कब
तक चलता रहेगा? वे नबी झूठ ही का चिन्तन करते हैं

और तब वे उस झूठ का उपदेश लोगों को देते हैं। 27ये
नबी प्रयत्न करते हैं कि यहूदा के लोग मेरा नाम भूल
जायँ। वे इस काम को, आपस में एक दूसरे से कल्पित
स्वप्न कहकर कर रहे हैं। ये लोग मेरे लोगों से मेरा
नाम वैसे ही भुलवा देने का प्रयत्न कर रहे हैं जैसे
उनके पूर्वज मुझे भूल गए थे। उनके पूर्वज मुझे भूल
गए और उन्होंने असत्य देवता बाल की पूजा की।
28भूसा वह नहीं है जो गेहूँ है। ठीक उसी प्रकार उन
नबियों के स्वप्न मेरे सन्देश नहीं हैं। यदि कोई व्यक्ति
अपने स्वप्नों को कहना चाहता है तो उसे कहने दो।
किन्तु उस व्यक्ति को मेरे सन्देश को सच्चाई से कहने
दो जो मेरे सन्देश को सुनता है। 29मेरा सन्देश ज्वाला
की तरह है। यह उस हथौड़े की तरह है जो चट्टान को
चूर्ण करता है। यह सन्देश यहोवा का है।

30"इसलिए मैं झूठे नबियों के विरुद्ध हूँ। क्योंकि वे
मेरे सन्देश को एक दूसरे से चुराने में लगे रहते हैं।" यह
सन्देश यहोवा का है। 31"वे अपनी बात कहते हैं और
दिखावा यह करते हैं कि वह यहोवा का सन्देश है। 32मैं
उन झूठे नबियों के विरुद्ध हूँ जो झूठे स्वप्न का उपदेश
देते हैं।" यह सन्देश यहोवा का है। "वे अपने झूठ और
झूठे उपदेशों से मेरे लोगों को भटकाते हैं। मैंने उन
नबियों को लोगों को उपदेश देने के लिये नहीं भेजा।
मैंने उन्हें अपने लिये कुछ करने का आदेश कभी नहीं
दिया। वे यहूदा के लोगों की सहायता बिल्कुल नहीं कर
सकते।" यह सन्देश यहोवा का है।

यहोवा से दुःखपूर्ण सन्देश

33"यहूदा के लोग, नबी अथवा याजक तुमसे पूछ
सकते हैं, 'यिर्मयाह, यहोवा की घोषणा क्या है?' तुम
उन्हें उत्तर दोगे और कहोगे, 'तुम यहोवा के लिये दुर्वह
भार हो और मैं यहोवा उस दुर्वह भार को नीचे पटक
दूँगा।' यह सन्देश यहोवा का है।

34"कोई नबी या कोई याजक अथवा संभवत: लोगों
में से कोई कह सकता है, 'यह यहोवा से घोषणा है।'
उस व्यक्ति ने यह झूठ कहा, अत: मैं उस व्यक्ति और
उसके पूरे परिवार को दण्ड दूँगा। 35जो तुम आपस में
एक दूसरे से कहोगे वह यह है: 'यहोवा ने क्या उत्तर
दिया?' या 'यहोवा ने क्या कहा?' 36किन्तु तुम पुन: इस
भाव को कभी नहीं दुहराओगे। यहोवा की घोषणा
(दुर्वह भार)। यह इसलिये कि यहोवा का सन्देश किसी
के लिये दुर्वह भार नहीं होना चाहिये। किन्तु तुमने
हमारे परमेश्वर के शब्द को बदल दिया। वह सजीव
परमेश्वर है अर्थात सर्वशक्तिमान यहोवा।

37"यदि तुम परमेश्वर के सन्देश के बारे में जानना
चाहते हो तब किसी नबी से पूछो, 'यहोवा ने तुम्हें क्या
उत्तर दिया?' या 'यहोवा ने क्या कहा?' 38किन्तु यह न
कहो, 'यहोवा के यहाँ से घोषणा (दुर्वह भार) क्या हैं?'
यदि तुम इन शब्दों का उपयोग करोगे तो यहोवा तुमसे
यह सब कहेगा, 'तुम्हें मेरे सन्देश को यहोवा के यहाँ से
घोषणा (दुर्वह भार) नहीं कहना चाहिये था।' मैंने तुमसे
उन शब्दों का उपयोग न करने को कहा था। 39किन्तु
तुमने मेरे सन्देश को दुर्वह भार कहा, 'अत: मैं तुम्हें
एक दुर्वह भार की तरह उठाऊँगा और अपने से दूर
पटक दूँगा। मैंने तुम्हारे पूर्वजों को यरूशलेम नगर दिया
था। किन्तु अब मैं तुम्हें और उस नगर को अपने से दूर
फेंक दूँगा। 40मैं सदैव के लिए तुम्हें कलंकित बना दूँगा।
तुम कभी अपनी लज्जा को नहीं भूलोगे।'"

अच्छे अंजीर और बुरे अंजीर

24 यहोवा ने मुझे ये चीजें दिखाई: यहोवा के
मन्दिर के सामने मैंने सजी दो अंजीर की
टोकरियाँ देखीं। (मैंने इस अर्न्तदर्शन को बाबुल के
राजा नबूकदनेस्सर द्वारा यकोन्याह को बन्दी बना लिये
जाने के बाद देखा। यकोन्याह राजा यहोयाकीम का पुत्र
था। यकोन्याह और उसके बड़े अधिकारी यरूशलेम से
दूर पहुँचा दिये गए थे। वे बाबुल पहुँचाये गए थे।
नबूकदनेस्सर यहूदा के सभी बढ़इयों और धातुकारों
को ले गया था।) 2एक टोकरी में बहुत अच्छे अंजीर
थे। वे उन अंजीरों की तरह थे जो मौसम के आरम्भ में
पकते हैं। किन्तु दूसरी टोकरी में सड़े गले अंजीर थे। वे
इतने अधिक सड़े गले थे कि उन्हें खाया नहीं जा
सकता था।

3यहोवा ने मुझसे कहा, "यिर्मयाह, तुम क्या देखते
हो?" मैंने उत्तर दिया, "मैं अंजीर देखता हूँ। अच्छे
अंजीर बहुत अच्छे हैं। और सड़े गले अंजीर बहुत ही
सड़े गले हैं। वे इतने सड़े गले हैं कि खाये नहीं जा
सकते।"

4तब यहोवा का सन्देश मुझे मिला। 5इस्राएल के
परमेश्वर यहोवा, ने कहा, "यहूदा के लोग अपने देश से
ले जाए गए। उनका शत्रु उन्हें बाबुल ले गया। वे लोग
इन अच्छे अंजीरों की तरह होंगे। मैं उन लोगों पर दया
करुँगा। 6मैं उनकी रक्षा करूँगा। मैं उन्हें यहूदा देश में
वापस लाऊँगा। मैं उन्हें चीर कर फेंकूँगा नहीं, मैं फिर
उनका निर्माण करुँगा। मैं उन्हें उखाड़ूँगा नहीं अपितु
रोपूँगा जिससे वे बढ़े। 7मैं उन्हें अपने को समझने की
इच्छा रखने वाला बनाऊँगा। वे समझेंगे कि मैं यहोवा
हूँ। वे मेरे लोग होंगे और मैं उनका परमेश्वर। मैं यह
करूँगा क्योंकि वे बाबुल के बन्दी पूरे हृदय से मेरी
शरण में आएंगे।

8"किन्तु यहूदा का राजा सिदकिय्याह उन अंजीरों
की तरह है जो इतने सड़े गले हैं कि खाये नहीं जा
सकते। सिदकिय्याह उसके बड़े अधिकारी, वे सभी लोग
जो यरूशलेम में बच गए हैं और यहूदा के वे लोग जो
मिस्र में रह रहें हैं उन सड़े गले अंजीरों की तरह होंगे।

9"मैं उन लोगों को दण्ड दूँगा। वह दण्ड पृथ्वी के
सभी लोगों का हृदय दहला देगा। लोग यहूदा के लोगों
का मजाक उड़ायेंगे। लोग उनके विषय में हँसी उड़ाएंगे।
लोग उन्हें उन सभी स्थानों पर अभिशाप देंगे जहाँ उन्हें
मैं बिखेरुँगा। 10मैं उनके विरूद्ध तलवारें, भूखमरी और
बीमारियाँ भेजूँगा। मैं उन पर तब तक आक्रमण करूँगा
जब तक कि वे सभी मर नहीं जाते। तब वे भविष्य में
उस भूमि पर नहीं रहेंगे जिसे मैंने इनको तथा इनके
पूर्वजों को दिया था।"

यिर्मयाह के उपदेश का सार

25 यह वह सन्देश है, जो यहूदा के सभी लोगों से
सम्बन्धित, यिर्मयाह को मिला। यह सन्देश
यहोयाकीम के यहूदा में राज्यकाल के चौथे वर्ष में
आया। यहोयाकीम योशिय्याह का पुत्र था। राजा के रूप
में उसके राज्यकाल का चौथा वर्ष वही था जो बाबुल में
नबूकदनेस्सर का पहला वर्ष था। 2यह वही सन्देश है
जिसे यिर्मयाह नबी ने यहूदा के लोगों और यरूशलेम के
लोगों को दिया।

3मैंने इन गत तेईस वर्षो में यहोवा के सन्देशों को
तुम्हें बार-बार दिया है। मैं यहूदा के राजा आमोन के
पुत्र योशिय्याह के राज्यकाल के तेरहवें वर्ष से नबी हूँ।
मैंने उस समय से आज तक यहोवा के यहाँ से सन्देशों
को तुम्हें दिया है। किन्तु तुमने उसे अनसुना किया है।
4यहोवा ने अपने सेवक नबियों को तुम्हारे पास बार-बार
भेजा है। किन्तु तुमने उन्हें अनसुना किया है। तुमने
उनकी ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया है।

5उन नबियों ने कहा, "अपने जीवन को बदलो। उन
बुरे कामों को करना छोड़ो। यदि तुम बदल जाओगे, तो
तुम उस भूमि पर वापस लौट और रह सकोगे जिसे
यहोवा ने तुम्हें और तुम्हारे पूर्वजों को बहुत पहले दी
थी। उसने यह भूमि तुम्हें सदैव रहने को दी। 6अन्य
देवताओं का अनुसरण न करो। उनकी सेवा या उनकी
पूजा न करो। उन मूर्तियों की पूजा न करो जिन्हें कुछ
लोगों ने बनाया है। वह मुझे तुम पर केवल क्रोधित
करता है। यह करना तुम्हें केवल चोट पहुँचाता है।"

7"किन्तु तुमने मेरी अनसुनी की।" यह सन्देश यहोवा
का है। "तुमने उन मूर्तियों की पूजा की जिन्हें कुछ
लोगों ने बनाया और उसने मुझे क्रोधित किया और
उसने तुम्हें केवल चोट पहुँचाई।"

8अत: सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है, "तुमने मेरे
सन्देश को अनसुना किया है। 9अत: मैं उत्तर के सभी
परिवार समूहों को शीघ्र बुलाऊँगा।" यह सन्देश यहोवा
का है। "मैं शीघ्र ही बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को
भेजूँगा। वह मेरा सेवक है। मैं उन लोगों को यहूदा देश
और यहूदा के लोगों के विरुद्ध बुलाऊँगा। मैं उन्हें
तुम्हारे चारों ओर के पड़ोसी राष्ट्रों के विरुद्ध भी लाऊँगा।
मैं उन सभी देशों को नष्ट करुँगा। मैं उन देशों को
सदैव के लिये सूनी मरुभूमि बना दूँगा। लोग उन देशों
को देखेंगे और जिस बुरी तरह से वे नष्ट हुए हैं उस पर
सीटी बजाएंगे। 10मैं उन स्थानों पर सुख और आनन्द
की किलोलों को बन्द कर दूँगा। वहाँ भविष्य में दुल्हा-
दुल्हनों की उमंग भरी हँसी ठिठोली न होगी। मैं चक्की
चलाने लोगों के गीतों को दूर कर दूँगा। मैं दीपकों का
उजाला खत्म करूँगा। 11वह सारा क्षेत्र ही सूनी मरुभूमि
होगा। वे सारे लोग बाबुल के राजा के सत्तर वर्ष तक
दास होंगे।

12"किन्तु जब सत्तर वर्ष बीत जाएंगे तो मैं बाबुल के
राजा को दण्ड दूँगा। मैं बाबुल राष्ट्र को दण्ड दूँगा।" यह
सन्देश यहोवा का है। "मैं कसदियों के देश को उनके
पाप के लिए दण्ड दूँगा। मैं उस देश को सदैव के लिये
मरुभूमि बनाऊँगा। 13मैंने कहा है कि बाबुल पर अनेक
विपत्तियाँ आएंगी। वे सभी चीजे घटित होंगी। यिर्मयाह ने
उन विदेशी राज्यों के बारे में उपदेश दिया और वे सभी
चेतावनियाँ इस पुस्तक में लिखी हैं। 14हाँ बाबुल के
लोगों को कई राष्ट्रों और कई बड़े राजाओं की सेवा
करनी पड़ेगी। मैं उन्हें उसके लिए उनको उचित दण्ड
दूँगा जो सब वे करेंगे।"

विश्व के राष्ट्रों के साथ न्याय

15इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने यह सब मुझसे कहा,
"यिर्मयाह, यह दाखमधु का प्याला मेरे हाथों से लो। यह
मेरे क्रोध का दाखमधु है। मैं तुम्हें विभिन्न राष्ट्रों में
भेज रहा हूँ। उन सभी राष्ट्रों को इस प्याले से पिलाओ।
16वे इस दाखमधु को पीएंगे। तब वे उलटी करेंगे और
पागलों सा व्यवहार करेंगे। वे यह उन तलवारों के
कारण ऐसा करेंगे जिन्हें मैं उनके विरूद्ध शीघ्र भेजूँगा।"

17अत: मैंने यहोवा के हाथ से प्याला लिया। मैं उन
राष्ट्रों में गया और उन लोगों को उस प्याले से पिलाया।
18मैंने इस दाखमधु को यरूशलेम और यहूदा के लोगों
के लिये ढाला। मैंने यहूदा के राजाओं और प्रमुखों को
इस प्याले से पिलाया। मैंने यह इसलिये किया कि वे
सूनी मरूभूमि बन जायँ। मैंने यह इसलिये किया कि यह
स्थान इतनी बुरी तरह से नष्ट हो जाय कि लोग इसके
बारे में सीटी बजाएं और इस स्थान को अभिशाप दें
और यह हुआ, यहूदा अब उसी तरह का है।

19मैंने मिस्र के राजा फ़िरौन को भी प्याले से पिलाया।
मैंने उसके अधिकारियों, उसके बड़े प्रमुखों और उसके
सभी लोगों को यहोवा के क्रोध के प्याले से पिलाया।

20मैंने सभी अरबों और उस देश के सभी राजाओं
को उस प्याले से पिलाया।

मैंने पलिश्ती देश के सभी राजाओं को उस प्याले से
पिलाया। ये अश्कलोन, अज्जा, एक्रोन नगरों और अशदोद
नगर के बचे भाग के राजा थे।

21तब मैंने एदोम, मोआब और अम्मोन के लोगों को
उस प्याले से पिलाया।
22मैंने सोर और सीदोन के राजाओं को उस प्याले से
पिलाया।
मैंने बहुत दूर के देशों के राजाओं को भी उस प्याले
से पिलाया। 23मैंने ददान, तेमा और बूज के लोगों को
उस प्याले से पिलाया। मैंने उन सबको उस प्याले से
पिलाया जो अपने गाल के बालों को काटते हैं। 24मैंने
अरब के सभी राजाओं को उस प्याले से पिलाया। ये
राजा मरुभूमि में रहते हैं। 25मैंने जिम्री, एलाम और मादै
के सभी राजाओं को उस प्याले से पिलाया। 26मैंने उत्तर
के सभी समीप और दूर के राजाओं को उस प्याले से
पिलाया। मैने एक के बाद दूसरे को पिलाया। मैने पृथ्वी
पर के सभी राज्यों को यहोवा के क्रोध के उस प्याले से
पिलाया। किन्तु बाबुल का राजा इन सभी अन्य राष्ट्रों
के बाद इस प्याले से पीएगा।
27"यिर्मयाह, उन राष्ट्रों से कहो कि इस्राएल के लोगों
का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता है, वह
यह है: 'मेरे क्रोध के इस प्याले को पीओ। उसे पीकर
मत्त हो जाओ और उलटियाँ करो। गिर पड़ो और उठो
नहीं, क्योंकि तुम्हें मार डालने के लिये मैं तलवार भेज
रहा हूँ।'
28"वे लोग तुम्हारे हाथ से प्याला लेने से इन्कार
करेंगे। वे इसे पीने से इन्कार करेंगे। किन्तु तुम उनसे
यह कहोगे, "सर्वशक्तिमान यहोवा यह बातें बताता है:
'तुम निश्चय ही इस प्याले से पियोगे। 29मैं अपने नाम
पर पुकारे जाने वाले यरूशलेम नगर पर पहले ही बुरी
विपत्तियाँ ढाने जा रहा हूँ। सम्भव है कि तुम लोग सोचो
कि तुम्हें दण्ड नहीं मिलेगा। किन्तु तुम गलत सोच रहे
हो। तुम्हें दण्ड मिलेगा। मैं पृथ्वी के सभी लोगों पर
आक्रमण करने के लिए तलवार मंगाने जा रहा हूँ।'"
यह सन्देश यहोवा का है।
30"यिर्मयाह, तुम उन्हें यह सन्देश दोगे: 'यहोवा ऊँचे
और पवित्र मन्दिर से गर्जना कर रहा है! यहोवा अपनी
चरागाह (लोग) के विरुद्ध चिल्लाकर कह रहा है!
उसकी चिल्लाहट वैसी ही ऊँची है, जैसे उन लोगों की,
जो अंगूरों को दाखमधु बनाने के लिये पैरों से कुचलते
हैं। 31वह चिल्लाहट पृथ्वी के सभी लोगों तक जाती है।
यह चिल्लाहट किस बात के लिये है? यहोवा सभी राष्ट्रों
के लोगों को दण्ड दे रहा है। यहोवा ने अपने तर्कपूर्ण
निर्णय लोगों के विरुद्ध दिये। उसने लोगों के साथ
न्याय किया और वह बुरे लोगों को तलवार के घाट
उतार रहा है।'" यह सन्देश यहोवा का है।
32सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है: "एक देश से
दूसरे देश तक शीघ्र ही बरबादी आएगी! वह शक्तिशाली
आँधी की तरह पृथ्वी के सभी अति दूर के देशों में
आएगी!"
33उन लोगों के शव देश के एक सिरे से दूसरे सिरे
को पहुँचेंगे। कोई भी उन मरों के लिये नहीं रोएगा।
कोई भी यहोवा द्वारा मारे गये उनके शवों को इकट्ठा
नहीं करेगा और दफनायेगा नहीं। वे गोबर की तरह
जमीन पर पड़े छोड़ दिये जाएंगे।
34गड़रियों (प्रमुखों), तुम्हें भेड़ों (लोगों) को राह दिखानी
चाहिये। बड़े प्रमुखों, तुम जोर से चिल्लाना आरम्भ
करो। भेड़ों (लोगों) के प्रमुखों, पीड़ा से तड़पते हुए
जमीन पर लेटो। क्यों? क्योंकि अब तुम्हारे मृत्यु के
घाट उतारे जाने का समय आ गया है। मैं तुम्हारी भेड़ें
को बिखेरुँगा। वे टूटे घड़े के ठीकरों की तरह चारों
ओर बिखरेंगे।
35गड़ेरियों (प्रमुखों) के छिपने के लिये कोई स्थान
नहीं होगा। वे प्रमुख बचकर नहीं निकल पाएंगे।
36मैं गड़ेरियों (प्रमुखों) का शोर मचाना सुन रहा हूँ।
मैं भेड़ों (लोगों) के प्रमुखों का रोना सुन रहा हूँ। यहोवा
उनकी चरागाह (देश) को नष्ट कर रहा है।
37वे शान्त चरागाहें सूनी मरूभूमि सी हैं। यह हुआ,
क्योंकि यहोवा बहुत क्रोधित है।
38यहोवा अपनी माद छोड़ते हुए सिंह की तरह
खतरनाक है। यहोवा क्रोधित है! यहोवा का क्रोध उन
लोगों को चोट पहुँचाएगा। उनका देश सूनी मरुभूमि बन
जाएगा।

मन्दिर पर यिर्मयाह की शिक्षा

26 यहोयाकीम के यहूदा में राज्य करने के प्रथम
वर्ष यहोवा का यह सन्देश मिला। यहोयाकीम
राजा योशिय्याह का पुत्र था। 2यहोवा ने कहा, "यिर्मयाह,
यहोवा के मन्दिर के आँगन में खड़े होओ। यहूदा के
उन सभी लोगों को यह सन्देश दो जो यहोवा के मन्दिर
में पूजा करने आ रहे हैं। तुम उनसे वह सब कुछ कहो
जो मैं तुमसे कहने को कह रहा हूँ। मेरे सन्देश के
किसी भाग को मत छोड़ो। 3संभव है वे मेरे सन्देश को
सुनें और उसके अनुसार चलें। संभव है वे ऐसी बुरी
जिन्दगी बिताना छोड़ दें। यदि वे बदल जायँ तो मैं उनको
दण्ड देने की योजना के विषय में, अपने निर्णय को
बदल सकता हूँ। मैं उनको वह दण्ड देने की योजना
बना रहा हूँ क्योंकि उन्होंने अनेक बुरे काम किये हैं।
4तुम उनसे कहोगे, 'यहोवा जो कहता है, वह यह है:
मैंने अपने उपदेश तुम्हें दिये। तुम्हें मेरी आज्ञा का
पालन करना चाहिये और मेरे उपदेशों पर चलना चाहिये।
5तुम्हें मेरे सेवकों की वे बातें सुननी चाहिये जो वे तुमसे
कहें। (नबी मेरे सेवक हैं) मैंने नबियों को बार-बार
तुम्हारे पास भेजा है किन्तु तुमने उनकी अनसुनी की
है। 6यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन नहीं करते तो मैं
अपने यरूशलेम के मन्दिर को शीलो के पवित्र तम्बू
की तरह कर दूँगा। सारे विश्व के लोग अन्य नगरों के

लिये विपत्ति माँगने के समय यरूशलेम के बारे में सोचेंगे।'"

7याजकों, नबियों और सभी लोगों ने यहोवा के मन्दिर में यिर्मयाह को यह सब कहते सुना। 8यिर्मयाह ने वह सब कुछ कहना पूरा किया जिसे यहोवा ने लोगों से कहने का आदेश दिया था। तब याजकों, नबियों और लोगों ने यिर्मयाह को पकड़ लिया। उन्होंने कहा, "ऐसी भयंकर बात करने के कारण तुम मरोगे। 9यहोवा के नाम पर ऐसी बातें करने का साहस तुम कैसे करते हो? तुम यह कैसे कहने का साहस करते हो कि यह मन्दिर शीलो के मन्दिर की तरह नष्ट होगा? तुम यह कहने का साहस कैसे करते हो कि यरूशलेम बिना किसी निवासी के मरुभूमि बनेग!" सभी लोग यिर्मयाह के चारों ओर यहोवा के मन्दिर में इकट्ठे हो गए।

10इस प्रकार यहूदा के शासकों ने उन सारी घटनाओं को सुना जो घटित हो रही थीं। अत: वे राजा के महल से बाहर आए। वे यहोवा के मन्दिर को गए। वहाँ वे नये फाटक के प्रवेश के स्थान पर बैठ गए। नया फाटक वह फाटक है जहाँ से यहोवा के मन्दिर को जाते है।
11तब याजकों और नबियों ने शासकों और सभी लोगों से बातें कीं। उन्होंने कहा, "यिर्मयाह मार डाला जाना चाहिये। इसने यरूशलेम के बारे में बुरा कहा है। तुमने उसे वे बातें कहते सुना।"

12तब यिर्मयाह ने यहूदा के सभी शासकों और अन्य सभी लोगों से बात की। उसने कहा, "यहोवा ने मुझे इस मन्दिर और इस नगर के बारे में बातें कहने के लिये भेजा। जो सब तुमने सुना है वह यहोवा के यहाँ से है।
13तुम लोगों को अपना जीवन बदलना चाहिये! तुम्हें अच्छे काम करना आरम्भ करना चाहिये। तुम्हें अपने यहोवा परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिये। यदि तुम ऐसा करोगे तो यहोवा अपना इरादा बदल देगा। यहोवा वे बुरी विपत्तियाँ नहीं लायेगा, जिनके घटित होने के बारे में उसने कहा। 14जहाँ तक मेरी बात है, मैं तुम्हारे वश में हूँ। मेरे साथ वह करो जिसे तुम अच्छा और ठीक समझतेहो। 15किन्तु यदि तुम मुझे मार डालोगे तो एक बात निश्चित समझो। तुम एक निरपराध व्यक्ति को मारने के अपराधी होगे। तुम इस नगर और इसमें जो भी रहते हैं उन्हें भी अपराधी बनाओगे। सच में, यहोवा ने मुझे तुम्हारे पासभेजा है। जो सन्देश तुमने सुना है वह, सच में, यहोवा का है।"

16तब शासक और सभी लोग बोल पड़े। उन लोगों ने याजकों और नबियों से कहा, "यिर्मयाह, नहीं मारा जाना चाहिये। यिर्मयाह ने जो कुछ कहा है वह हमारे यहोवा परमेश्वर की ही वाणी है।"

17तब अग्रजों (प्रमुखों) में से कुछ खड़े हुए और उन्होंने सब लोगों से बातें कीं। 18उन्होंने कहा, "मीकायाह नबी मोरसेती नगर का था। मीकायाह उन दिनों नबी था जिन दिनों हिजकिय्याह यहूदा का राजा था। मीकाय्याह ने यहूदा के सभी लोगों से यह कहा: सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है:

"सिय्योन एक जुता हुआ खेत बनेगा। यरूशलेम चट्टानों की ढेर होगा। जिस पहाड़ी पर मन्दिर बना है उस पर पेड़ उगेंगे।" *मीका 3:12*

19"हिजकिय्याह यहूदा का राजा था और हिजकिय्याह ने मीकायाह को नहीं मारा। यहूदा के किसी व्यक्ति ने मीकायाह को नहीं मारा। तुम जानते हो हिजकिय्याह यहोवा का सम्मान करता था। वह यहोवा को प्रसन्न करना चाहता था। यहोवा कह चुका था कि वह यहूदा का बुरा करेगा। किन्तु हिजकिय्याह ने यहोवा से प्रार्थना की और यहोवा ने अपना इरादा बदल दिया। यहोवा ने वे बुरी विपत्तियाँ नहीं आने दीं। यदि हम लोग यिर्मयाह को चोट पहुँचायेंगे तो हम लोग अपने ऊपर अनेक विपत्तियाँ बुलाएंगे और वे विपत्तियाँ हम लोगों के अपने दोष के कारण होंगी।"

20अतीत काल में एक दूसरा व्यक्ति था जो यहोवा के सन्देश का उपदेश देता था। उसका नाम ऊरिय्याह था। वह शमाय्याह नामक व्यक्ति का पुत्र था। ऊरिय्याह, किर्यत्यारीम नगर का था। ऊरिय्याह ने इस नगर और देश के विरुद्ध वही उपदेश दिया जो यिर्मयाह ने दिया है।
21राजा यहोयाकीम उसके सेना–अधिकारी और यहूदा के प्रमुखों ने ऊरिय्याह का उपदेश सुना। वे क्रोधित हुए। राजा यहोयाकीम ऊरिय्याह को मार डालना चाहता था। किन्तु ऊरिय्याह को पता लगा कि यहोयाकीम उसे मार डालना चाहता है। ऊरिय्याह डर गया और वह मिस्र देश को भाग निकला। 22किन्तु यहोयाकीम ने एलनातान नामक एक व्यक्ति तथा कुछ अन्य लोगों को मिस्र भेजा। एलनातान अकबोर नामक व्यक्ति का पुत्र था। 23वे लोग ऊरिय्याह को मिस्र से वापस ले आये। तब वे लोग ऊरिय्याह को राजा यहोयाकीम के पास ले गए। यहोयाकीम ने ऊरिय्याह को तलवार के घाट उतार देने का आदेश दिया। ऊरिय्याह का शव उस कब्रिस्तान में फेंक दिया गया जहाँ गरीब लोग दफनाये जाते थे।

24शापान का पुत्र अहीकाम ने यिर्मयाह का समर्थन किया। अत: अहीकाम ने लोगों द्वारा मार डाले जाने से यिर्मयाह को बचा लिया।

यहोवा ने नबूकदनेस्सर को शासक बनाया है

27 यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला। यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्यकाल के चौथे वर्ष यह आया। सिदकिय्याह राजा योशिय्याह का पुत्र था। 2यहोवा ने मुझसे जो कहा, वह यह है: "यिर्मयाह, छड़ और चमड़े की पट्टियों से जुवा बनाओ। उस जुवा

को अपनी गर्दन के पीछे की ओर रखो। 3तब एदोम,
मोआब, अम्मोन, सोर और सीदोन के राजाओं को
सन्देश भेजो। ये सन्देश इन राजाओं के राजदूतों द्वारा
भेजो जो यहूदा के राजा सिदकिय्याह से मिलने यरूशलेम
आए हैं। 4उन राजदूतों से कहो कि वे सन्देश अपने
स्वामियों को दें। उनसे यह कहो कि इस्राएल का परमेश्वर
सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है: 'अपने स्वामियों से
कहो कि 5मैंने पृथ्वी और इस पर रहने वाले सभी
लोगों को बनाया। मैंने पृथ्वी के सभी जानवरों को
बनाया। मैंने यह अपनी बड़ी शक्ति और शक्तिशाली
भुजा से किया। मैं यह पृथ्वी किसी को भी जिसे चाहूँ दे
सकता हूँ। 6इस समय मैंने बाबुल केराजा नबूकदनेस्सर
को तुम्हारे देश दे दिये है। वह मेरा सेवक है। मैं जंगली
जानवरों को भी उसका आज्ञाकारी बनाऊँगा। 7सभी
राष्ट्र नबूकदनेस्सर उसके पुत्र और उसके पौत्र की सेवा
करेंगे। तब बाबुल की पराजय का समय आएगा। कई
राष्ट्र और बड़े सम्राट बाबुल को अपना सेवक बनाएंगे।

8'"किन्तु इस समय कुछ राष्ट्र या राज्य बाबुल के
राजा नबूकदनेस्सर की सेवा करने से इन्कार कर
सकते हैं। वे उसके जुवे को अपनी गर्दन पर रखने से
इन्कार कर सकते हैं। यदि ऐसा होता है तो जो मैं
करूँगा वह यह है: मैं उस राष्ट्र को तलवार, भूख और
भयंकर बीमारी का दण्ड दूँगा।'" यह सन्देश यहोवा का
है। '"मैं वह तब तक करूँगा जब तक मैं उस राष्ट्र को
नष्ट न कर दूँ। मैं नबूकदनेस्सर का उपयोग उस राष्ट्र
को नष्ट करने के लिये करूँगा जो उसके विरुद्ध
करता है। 9अत: अपने नबियों की एक न सुनो। उन
व्यक्तियों की एक न सुनो जो भविष्य की घटनाओं को
जानने के लिये जादू का उपयोग करते हैं। उन लोगों
की एक न सुनो जो यह कहते हैं कि हम स्वप्न का
फल बता सकते हैं। उन व्यक्तियों की एक न सुनो जो
मरों से बात करते हैं या वे लोग जो जादूगर हैं। वे सभी
तुमसे कहते हैं, "तुम बाबुल के राजा के दास नहीं
बनोगे।"

10किन्तु वे लोग तुमसे झूठ बोलते हैं। मैं तुम्हें तुम्हारी
जन्म भूमि से बहुत दूर जाने पर विवश करूँगा और तुम
दूसरे देश में मरोगे।

11'"किन्तु वे राष्ट्र, जो बाबुल के राजा के जुवे को
अपने कंधे पर रखेंगे और उसकी आज्ञा मानेंगे, जीवित
रहेंगे। मैं उन राष्ट्रों को उनके अपने देश में रहने दूँगा
और बाबुल के राजा की सेवा करने दूँगा।'" यह सन्देश
यहोवा का है। '"उन राष्ट्रों के लोग अपनी भूमि पर
रहेंगे और उस पर खेती करेंगे।

12'"मैंने यहूदा के राजा सिदकिय्याह को भी यही
सन्देश दिया। मैंने कहा, सिदकिय्याह, तुम्हें बाबुल के
राजा के जुवे के नीचे अपनी गर्दन देनी चाहिये और
उसकी आज्ञा माननी चाहिये। यदि तुम बाबुल के राजा
और उसके लोगों की सेवा करोगे तो तुम रह सकोगे।
13यदि तुम बाबुल के राजा की सेवा करना स्वीकार
नहीं करते तो तुम और तुम्हारे लोग शत्रु की तलवार
के घाट उतारे जाएंगे, तथा भूख और भयंकर बीमारी से
मरेंगे। यहोवा ने कहा कि ये घटनायें होंगी। 14किन्तु
झूठे नबी कह रहे हैं: तुम बाबुल के राजा के दास कभी
नहीं होगे।

'"उन नबियों की एक न सुनो। क्योंकि वे तुम्हें झूठा
उपदेश दे रहे हैं। 15मैंने उन नबियों को नहीं भेजा है।'"
यह सन्देश यहोवा का है। "वे झूठा उपदेश दे रहे हैं और
कह रहे हैं कि वह सन्देश मेरे यहाँ से है। अत: यहूदा
के लोगों, मैं तुम्हें दूर भेजूँगा। तुम मरोगे और वे नबी
भी जो उपदेश दे रहे हैं मरेंगे।"

16तब मैंने (यिर्मयाह) याजक और उन सभी लोगों से
कहा, "यहोवा कहता है: 'वे झूठे नबी कह रहे हैं,
'कसदियों ने बहुत सी चीजें यहोवा के मन्दिर से ली। वे
चीजें शीघ्र ही वापस लाई जाएंगी।' उन नबियों की एक
न सुनो क्योंकि वे तुम्हें झूठा उपदेश दे रहे हैं। 17उन
नबियों की एक न सुनो। बाबुल के राजा की सेवा करो
और तुम जीवित रहोगे। तुम्हारे लिये कोई कारण नहीं
कि तुम यरूशलेम नगर को नष्ट करवाओ। 18यदि वे
लोग नबी हैं और उनके पास यहोवा का सन्देश है तो
उन्हें प्रार्थना करने दो। उन चीजों के बारे में उन्हें
प्रार्थना करने दो जो अभी तक राजा के महल में हैं
और उन्हें उन चीजों के बारे में प्रार्थना करने दो जो
अब तक यरूशलेम में हैं। उन नबियों को प्रार्थना करने
दो ताकि वे सभी चीजें बाबुल नहीं ले जायी जायें।"

19सर्वशक्तिमान यहोवा उन सब चीजों के बारे में यह
कहता है जो अभी तक यरूशलेम में बची रह गई हैं।
मन्दिर में स्तम्भ, काँसे का बना सागर, हटाने योग्य
आधार, और अन्य चीजें हैं। बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर
ने उन चीजों को यरूशलेम में छोड़ दिया। 20नबूकदनेस्सर
जब यहूदा के राजा यकोन्याह को बन्दी बनाकर ले गया
तब उन चीजों को नहीं ले गया। यकोन्याह राजा यहोयाकीम
का पुत्र था। नबूकदनेस्सर यहूदा और यरूशलेम के
अन्य बड़े लोगों को भी ले गया। 21इस्राएल के लोगों का
परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा मन्दिर में बची, राजमहल
में बची और यरूशलेम में बची चीजों के बारे में यह
कहता है: "वे सभी चीजें भी बाबुल ले जाई जाएंगी। 22वे
चीजें बाबुल में तब तक रहेंगी जब तक वह समय
आएगा कि मैं उन्हें लेने जाऊँगा।" यह सन्देश यहोवा
का है। "तब मैं उन चीजों को वापस लाऊँगा। मैं इन
चीजों को इस स्थान पर वापस रखूँगा।"

झूठा नबी हनन्याह

28 यहूदा में सिदकिय्याह के राज्यकाल के चौथे
वर्ष के पाँचवें महीने में हनन्याह नबी ने मुझसे

बात की। हनन्याह अज्जूर नामक व्यक्ति का पुत्र था।
हनन्याह गिबोन नगर का रहने वाला था। हनन्याह ने
जब मुझसे बातें की, तब वह यहोवा के मन्दिर में था।
याजक और सभी लोग भी वहाँ थे। हनन्याह ने जो कहा
वह यह है: 2"इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान
यहोवा यह कहता है, 'मैं उस जुवे को तोड़ डालूँगा जिसे
बाबुल के राजा ने यहूदा के लोगों पर रखा है। 3दो वर्ष
पूरे होने के पहले मैं उन चीजों को वापस ले आऊँगा
जिन्हें बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर यहोवा के मन्दिर
से ले गया है। नबूकदनेस्सर उन चीजों को बाबुल ले
गया है। किन्तु मैं उन्हें यरूशलेम वापस ले आऊँगा। 4मैं
यहूदा के राजा यकोन्याह को भी वापस यहाँ ले आऊँगा।
यकोन्याह, यहोयाकीम का पुत्र है मैं उन सभी यहूदा के
लोगों को वापस लाऊँगा जिन्हें नबूकदनेस्सर ने अपना
घर छोड़ने और बाबुल जाने को विवश किया।' यह
सन्देश यहोवा का है। 'अत: मैं उस जुवे को तोड़ दूँगा
जिसे बाबुल के राजा ने यहूदा के लोगों पर रखा है!'"

5तब यिर्मयाह नबी ने हनन्याह नबी से यह कहा: वे
यहोवा के मन्दिर में खड़े थे। याजक और वहाँ के सभी
लोग यिर्मयाह का कहा हुआ सुन सकते थे। 6यिर्मयाह
ने हनन्याह से कहा, "आमीन! मुझे आशा है कि यहोवा
निश्चय ही ऐसा करेगा! मुझे आशा है कि यहोवा उस
सन्देश को सच घटित करेगा जो तुम देते हो। मुझे आशा
है कि यहोवा अपने मन्दिर की चीजों को बाबुल से इस
स्थान पर वापस लायेगा और मुझे आशा है कि यहोवा
उन सभी लोगों को इस स्थान पर वापस लाएगा जो
अपने घरों को छोड़ने को विवश किये गए थे।

7"किन्तु हनन्याह वह सुनो जो मुझे कहना चाहिये।
वह सुनो जो मैं सभी लोगों से कहता हूँ। 8हनन्याह हमारे
और तुम्हारे नबी होने के बहुत पहले भी नबी थे।
उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि युद्ध, भूखमरी और
भयंकर बीमारियाँ अनेक देशों और राज्यों में आयेंगी।
9किन्तु उस नबी की जाँच यह जानने के लिये होनी
चाहिये कि उसे यहोवा ने सचमुच भेजा है जो यह
कहता है कि हम लोग शान्तिपूर्वक रहेंगे। यदि उस नबी
का सन्देश सच घटित होता है तो लोग समझ सकते हैं
कि सत्य ही वह यहोवा द्वारा भेजा गया है।"

10यिर्मयाह अपने गर्दन पर एक जुवा रखे था। तब
हनन्याह नबी ने उस जुवे को यिर्मयाह की गर्दन से
उतार लिया। हनन्याह ने उस जुवे को तोड़ डाला। 11तब
हनन्याह सभी लोग के सामने बोला। उसने कहा, "यहोवा
कहता है, 'इसी तरह मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर
के जुवे को तोड़ दूँगा। उसने उस जुवे को विश्व के
सभी राष्ट्रों पर रखा है। किन्तु मैं उस जुवे को दो वर्ष
बीतने से पहले ही तोड़ दूँगा।'"

हनन्याह के वह कहने के बाद यिर्मयाह मन्दिर को
छोड़कर चला गया।

12तब यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला। यह तब
हुआ जब हनन्याह ने यिर्मयाह की गर्दन से जुवे को
उतार लिया था और उसे तोड़ डाला था। 13यहोवा ने
यिर्मयाह से कहा, "जाओ और हनन्याह से कहो, 'यहोवा
जो कहता है, वह यह है: तुमने एक काठ का जुवा तोड़ा
है। किन्तु मैं काठ की जगह एक लोहे का जुवा बनाऊँगा।'
14इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है,
'मैं इन सभी राष्ट्रों की गर्दन पर लोहे का जुवा रखूँगा।
मैं यह बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर की उनसे सेवाकराने
के लिये करूँगा और वे उसके दास होंगे। मैं नबूकदनेस्सर
को जंगली जानवरों पर भी शासन का अधिकार दूँगा।'"

15तब यिर्मयाह नबी ने हनन्याह नबी से कहा, "हनन्याह,
सुनो! यहोवा ने तुझे नहीं भेजा। यहोवा ने तुम्हें नहीं
भेजा किन्तु तुमने यहूदा के लोगों को झूठ में विश्वास
कराया है। 16अत: यहोवा जो कहता है, वह यह है,
'हनन्याह मैं तुम्हें शीघ्र ही इस संसार से उठा लूँगा। तुम
इस वर्ष मरोगे। क्यों? क्योंकि तुमने लोगों को यहोवा के
विरुद्ध जाने की शिक्षा दी है।'"

17हनन्याह उसी वर्ष के सातवें महीने मर गया।

बाबुल में यहूदी बन्दियों के लिये एक पत्र

29 यिर्मयाह ने बाबुल में बन्दी यहूदियों को एक
पत्र भेजा। उसने इसे अग्रजों (प्रमुखों), याजकों,
नबियों और बाबुल में रहने वाले सभी लोगों को भेजा।
ये वे लोग थे जिन्हें नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम में
पकड़ा था और बाबुल ले गया था। 2(यह पत्र, राजा
यकोन्याह, राजमाता, अधिकारी, यहूदा और यरूशलेम
के प्रमुख, बढ़ई, और ठठेरों के यरूशलेम से ले जाए
जाने के बाद भेजा गया था। 3सिदकिय्याह ने एलासा
और गमर्याह को राजा नबूकदनेस्सर के पास भेजा।
सिदकिय्याह यहूदा का राजा था। एलासा शापान का पुत्र
था और गमर्याह हिल्किय्याह का पुत्र था। यिर्मयाह ने
उस पत्र को उन लोगों को बाबुल ले जाने के लिये दिया।
पत्र में जो लिखा था वह यह है:

4इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान
यहोवा ये बातें उन सभी लोगों से कहता है जिन्हें
बन्दी के रुप में उसने यरूशलेम से बाबुल भेजा
था: 5"घर बनाओ और उनमें रहो। उस देश में
बस जाओ। पौधे लगाओ और अपनी उगाई हुई
फसल से भोजन प्राप्त करो। 6विवाह करो तथा
पुत्र-पुत्रियाँ पैदा करो। अपने पुत्रों के लिए पत्नियाँ
खोजो और अपनी पुत्रियों की शादी करो। यह
इसलिये करो जिससे उनके भी लड़के और लड़कियाँ
हो बहुत से बच्चे पैदा करो और बाबुल में अपनी
संख्या बढ़ाओ। अपनी संख्या मत घटाओ। 7मैं
जिस नगर में तुम्हें भेजूँ उसके लिये अच्छा काम

करो। जिस नगर में तुम रहो उसके लिये यहोवा से प्रार्थना करो। क्यों? क्योंकि यदि उस नगर में शान्ति रहेगी तो तुम्हें भी शान्ति मिलेगी।"

8इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "अपने नबियों और जादूगरों को अपने को मूर्ख मत बनाने दो। उनके उन स्वप्नों के बारे में न सुनो जिन्हें वे देखते हैं। **9**वे झूठा उपदेश देते हैं और वे यह कहते हैं कि उनका सन्देश मेरे यहाँ से है। किन्तु मैंने उसे नहीं भेजा।" यह सन्देश यहोवा का है।

10यहोवा जो कहता है, वह यह है: "बाबुल सत्तर वर्ष तक शक्तिशाली रहेगा। उसके बाद बाबुल में रहने वाले लोगों, मैं तुम्हारे पास आऊँगा। मैं तुम्हें वापस यरूशलेम लाने की सच्ची प्रतिज्ञा पूरी करुँगा। **11**मैं यह इसलिये कहता हूँ क्योंकि मैं उन अपनी योजनाओं को जानता हूँ जो तुम्हारे लिये हैं।" यह सन्देश यहोवा का है। "तुम्हारे लिये मेरी अच्छी योजनाए हैं। मैं तुम्हें चोट पहुँचाने की योजना नहीं बना रहा हूँ। मैं तुम्हें आशा और उज्जवल भविष्य देने की योजना बना रहा हूँ। **12**तब तुम लोग मेरा नाम लोगे। तुम मेरे पास आओगे और मेरी प्रार्थना करोगे और मैं तुम्हारी बातों पर ध्यान दूँगा। **13**तुम लोग मेरी खोज करोगे और जब तुम पूरे हृदय से मेरी खोज करोगे तो तुम मुझे पाओगे। **14**मैं अपने को तुम्हें प्राप्त होने दूँगा।" यह सन्देश यहोवा का है। "मैं तुम्हें तुम्हारे बन्दीखाने से वापस लाऊँगा। मैंने तुम्हें यह स्थान छोड़ने को विवश किया। किन्तु मैं तुम्हें उन सभी राष्ट्रों और स्थानों से इकट्ठा करुँगा जहाँ मैंने तुम्हें भेजा है।" यह सन्देश यहोवा का है। "मैं तुम्हें इस स्थान पर वापस लाऊँगा।"

15तुम लोग यह कह सकते हो, "किन्तु यहोवा ने हमें यहाँ बाबुल में नबी दिये है।"

16किन्तु यहोवा तुम्हारे उन सम्बन्धियों के बारे में जो बाबुल नहीं ले जाए गए यह कहता है: मैं उस राजा के बारे में बात कर रहा हूँ जो इस समय दाऊद के राजसिंहासन पर बैठा है और उन सभी अन्य लोगों के बारे में जो अब भी यरूशलेम नगर में रहते हैं। **17**सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "मैं शीघ्र ही तलवार, भूख और भयंकर बीमारी उन लोगों के विरुद्ध भेजूँगा जो अब भी यरूशलेम में हैं और मैं उन्हें वे ही सड़े-गले अंजीर बनाऊँगा जो खाने योग्य नहीं। **18**मैं उन लोगों का पीछा, जो अभी भी यरूशलेम में हैं, तलवार, भूख और भयंकर बीमारी से करूँगा और मैं इसे ऐसा कर दूँगा कि पृथ्वी के सभी राज्य यह देखकर डरेंगे कि इन लोगों के साथ क्या घटित हो गया है। वे लोग नष्ट कर दिए जाएंगे। लोग जब उन घटित घटनाओं को सुनेंगे तो आश्चर्य से सिसकारी भरेंगे और जब लोग किन्हीं लोगों के लिये बुरा होने की मांग करेंगे तो इसे उदाहरण रुप में याद करेंगे। मैं उन लोगों को जहाँ कहीं जाने को विवश करूँगा, लोग वहाँ उनका अपमान करेंगे। **19**मैं उन सभी घटनाओं को घटित कराऊँगा क्योंकि यरूशलेम के उन लोगों ने मेरे सन्देश को अनसुना किया है।" यह सन्देश यहोवा का है। "मैंने अपना सन्देश उनके पास बार-बार भेजा। मैंने अपने सेवक नबियों को उन लोगों को अपना सन्देश देने को भेजा। किन्तु लोगों ने उन्हें अनसुना किया।" यह सन्देश यहोवा का है। **20**"तुम लोग बन्दी हो। मैंने तुम्हें यरूशलेम छोड़ने और बाबुल जाने को विवश किया। अत: यहोवा का सन्देश सुनो।"

21सर्वशक्तिमान यहोवा कोलायाह के पुत्र अहाब और मासेयाह के पुत्र सिदकिय्याह के बारे में यह कहता है: "ये दोनों व्यक्ति तुम्हें झूठा उपदेश दे रहे थे। उन्होंने कहा है कि उनके सन्देश मेरे यहाँ से हैं। किन्तु वे झूठ बोल रहे थे। उन दोनों नबियों को बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को दे दूँगा और नबूकदनेस्सर बाबुल में बन्दी तुम सभी लोगों के सामने उन नबियों को मार डालेगा। **22**सभी यहूदी बन्दी उन लोगों का उपयोग उदाहरण के लिये तब करेंगे जब वे अन्य लोगों का बुरा होने की मांग करेंगे। वे बन्दी कहेंगे, 'यहोवा तुम्हारे साथ सिदकिय्याह और अहाब के समान व्यवहार करे। बाबुल के राजा ने उन दोनों को आग में जला दिया!' **23**उन दोनों नबियों ने इस्राएल के लोगों के साथ घृणित कर्म किया था। उन्होंने अपने पड़ोसी की पत्नी के साथ व्यभिचार किया है। उन्होंने झूठ भी बोला है और कहा है कि वे झूठ मुझ यहोवा के यहाँ से हैं। मैंने उनसे वह सब करने को नहीं कहा। मैं जानता हूँ कि उन्होंने क्या किया है? मैं साक्षी हूँ।" यह सन्देश यहोवा का है।

शमायाह को परमेश्वर का सन्देश

24शमायाह को भी एक सन्देश दो। शमायाह नेहलामी परिवार से है। **25**इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "शमायाह, तुमने यरूशलेम के सभी लोगों को पत्र भेजे और तुमने यासेयाह के पुत्र याजक सपन्याह को पत्र भेजे। तुमने सभी याजकों को पत्र भेजे। तुमने उन पत्रों को अपने नाम से भेजा और यहोवा की सत्ता के नाम पर नहीं। **26**शमायाह, तुमने सपन्याह को अपने पत्र में जो लिखा था वह यह है: 'सपन्याह यहोवा ने यहोयादा के स्थान पर तुम्हें याजक बनाया है। तुम यहोवा के मन्दिर के अधिकारी हो। तुम्हें उस किसी

को कैद कर लेना चाहिये जो पागल की तरह काम करता है और नबी की तरह व्यवहार करता है। तुम्हें उस व्यक्ति के पैरों को लकड़ी के बड़े टुकड़ें के बीच रखना चाहिये और उसके गले में लौह–कटक पहनाना चाहिए। 27इस समय यिर्मयाह नबी की तरह काम कर रहा है। अत: तुमने उसे बन्दी क्यों नहीं बनाया? 28यिर्मयाह ने हम लोगों को यह सन्देश बाबुल में दिया था: बाबुल में रहने वाले लोगों, तुम वहाँ लम्बे समय तक रहोगे। अत: अपने मकान बनाओ और वहीं बस जाओ। बाग लगाओ और वह खाओ, जो उपजाओ।'"

29याजक सपन्याह ने यिर्मयाह नबी को पत्र सुनाया। 30तब यिर्मयाह के पास यहोवा का सन्देश आया। 31"यिर्मयाह, बाबुल के सभी बन्दियों को यह सन्देश भेजो: 'नेहलामी परिवार के शमायाह के बारे में जो यहोवा कहता है, वह यह है: शमायाह ने तुम्हारे सामने भविष्यवाणी की, किन्तु मैंने उसे नहीं भेजा। शमायाह ने तुम्हें झूठ में विश्वास कराया है। शमायाह ने यह किया है। 32अत: यहोवा जो कहता है वह यह है: नेहलामी परिवार के शमायाह को मैं शीघ्र दण्ड दूँगा। मैं उसके परिवार को पूरी तरह नष्ट कर दूँगा और मैं अपने लोगों के लिये जो अच्छा करूँगा उसमें उसका कोई भाग नहीं होगा।'" यह सन्देश यहोवा का है। "'मैं शमायाह को दण्ड दूँगा क्योंकि उसने लोगों को यहोवा के विरुद्ध जाने की शिक्षा दी है।'"

आशा के प्रतिज्ञाएं

30 यह सन्देश यहोवा का है जो यिर्मयाह कोमिले। 2इस्राएल के लोगों के परमेश्वर यहोवा ने यह कहा, "यिर्मयाह, मैंने जो सन्देश दिये हैं, उन्हें एक पुस्तक में लिख डालो। इस पुस्तक को अपने लिये लिखो।" 3यह सन्देश यहोवा का है। "यह करो, क्योंकि वे दिन आएंगे जब मैं अपने लोगों इस्राएल और यहूदा को देश निकाले से वापस लाऊँगा।" यह सन्देश यहोवा का है। "मैं उन लोगों को उस देश में वापस लाऊँगा जिसे मैंने उनके पूर्वजों को दिया था। तब मेरे लोग उस देश को फिर अपना बनायेंगे।"

4यहोवा ने यह सन्देश इस्राएल और यहूदा के लोगों के बारे में दिया। 5यहोवा ने जो कहा, वह यह है:

"हम भय से रोते लोगों का रोना सुनते हैं! लोग भयभीत हैं! कहीं शान्ति नहीं! 6यह प्रश्न पूछो इस पर विचार करो: क्या कोई पुरुष बच्चे को जन्म दे सकता है? निश्चय ही नहीं! तब मैं हर एक शक्तिशाली व्यक्तिको पेट पकड़े क्यों देखता हूँ मानों वे प्रसव करने वाली स्त्री की पीड़ा सह रहे हो? क्यों हर एक व्यक्ति का मुख शव सा सफेद हो रहा है? क्यों? क्योंकि लोग अत्यन्त भयभीत हैं। 7यह याकूब के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण समय है। यह बड़ी विपत्ति का समय है। इस प्रकार का समय फिर कभी नहीं आएगा। किन्तु याकूब बच जायेगा।"

8यह सन्देश सर्वशक्तिमान यहोवा का है: "उस समय, मैं इस्राएल और यहूदा के लोगों की गर्दन से जुवे को तोड़ डालूँगा और तुम्हें जकड़ने वाली रस्सियों को मैं तोड़ दूँगा। विदेशों के लोग मेरे लोगों को फिर कभी दास होने के लिये विवश नहीं करेंगे। 9इस्राएल और यहूदा के लोग अन्य देशों की भी सेवा नहीं करेंगे। नहीं, वे तो अपने परमेश्वर यहोवा की सेवा करेंगे और वे अपने राजा दाऊद की सेवा करेंगे। मैं उस राजा को उनके पास भेजूँगा।

10"अत: मेरे सेवक याकूब डरो नहीं।" यह सन्देश यहोवा का है। "इस्राएल, डरो नहीं। मैं उस अति दूर के स्थान से तुम्हें बचाऊँगा। तुम उस बहुत दूर के देश में बन्दी हो, किन्तु मैं तुम्हारे वंशजों को उस देश से बचाऊँगा। याकूब फिर शान्ति पाएगा। याकूब को लोग तंग नहीं करेंगे। मेरे लोगों को भयभीत करने वाला कोई शत्रु नहीं होगा। 11इस्राएल और यहूदा के लोगों, मैं तुम्हारे साथहूँ।" यह सन्देश यहोवा का है, "और मैं तुम्हें बचाऊँगा। मैंने तुम्हें उन राष्ट्रों में भेजा। किन्तु मैं उन सभी राष्ट्रों को पूरी तरह नष्ट कर दूँगा। यह सत्य है कि मैं उन राष्ट्रों को नष्ट करूँगा। किन्तु मैं तुम्हें नष्ट नहीं करूँगा। तुम्हें उन बुरे कामों का जरूर दण्ड मिलेगा जिन्हें तुमने किये। किन्तु मैं तुम्हें अच्छी प्रकार से अनुशासितकरूँगा।"

12यहोवा कहता है, "इस्राएल और यहूदा के तुम लोगों को एक घाव है जो अच्छा नहीं किया जा सकता। तुम्हें एक चोट है जो अच्छी नहीं हो सकती। 13तुम्हारे घावों को ठीक करने वाला कोई व्यक्ति नहीं है। अत: तुम स्वस्थ नहीं हो सकते। 14तुम अनेक राष्ट्रों के मित्र बने हो, किन्तु वे राष्ट्र तुम्हारी परवाह नहीं करते। तुम्हारे मित्र तुम्हें भूल गये हैं। मैंने तुम्हें शत्रु जैसी चोट पहुँचाई। मैंने तुम्हें कठोर दण्ड दिया। मैंने यह तुम्हारे बड़े अपराध के लिये किया। 15इस्राएल और यहूदा तुम अपने घाव के बारे में क्यों चिल्ला रहे हो? तुम्हारा घाव कष्टकर है और इसका कोई उपचार नहीं है। मैंने अर्थात् यहोवा ने तुम्हारे बड़े अपराधों के कारण तुम्हें यह सब किया। मैंने ये चीजें तुम्हारे अनेक पापों के कारणकीं। 16उन राष्ट्रों ने तुम्हें नष्ट किया। किन्तु अब वे राष्ट्र नष्ट किये जायेगें। इस्राएल और यहूदा तुम्हारे शत्रु बन्दी होंगे। उन लोगों ने तुम्हारी चीजें चुराईं। किन्तु अन्य लोग उनकी चीजें चुराएंगे। उन लोगों ने तुम्हारी चीजें युद्ध में लीं। किन्तु अन्य लोग उनसे चीजें युद्ध में लेंगे। 17मैं तुम्हारे स्वास्थ को लौटाऊँगा और मैं तुम्हारे घावों को भरुँगा।" यह सन्देश यहोवा का है। "क्यों? क्योंकि अन्य लोगों ने कहा कि तुम जाति–बहिष्कृत हो। उन लोगों ने कहा, 'कोई भी सिय्योन की परवाह नहीं करता।'"

18यहोवा कहता है: "याकूब के लोग अब बन्दी हैं।
किन्तु वे वापस आएंगे। और मैं याकूब के परिवारों पर
दया करूँगा। नगर अब बरबाद इमारतों से ढका एक
पहाड़ी मात्र है। किन्तु यह नगर फिर बनेगा और राजा
का महल भी वहाँ फिर बनेगा जहाँ इसे होना चाहिये।19उन
स्थानों पर लोग स्तुतिगान करेंगे। वहाँ हँसी ठट्ठा भी
सुनाई पड़ेगा। मैं उन्हें बहुत सी सन्तानें दूँगा। इस्राएल
और यहूदा छोटे नहीं रहेंगे। मैं उन्हें सम्मान दूँगा। कोई
व्यक्ति उनका अनादर नहीं करेगा। 20याकूब का परिवार
प्राचीन काल के परिवारों सा होगा। मैं इस्राएल और
यहूदा के लोगों को शक्तिशाली बनाऊँगा और मैं उन
लोगों को दण्ड दूँगा जो उन पर चोट करेंगे। 21उन्हीं में
से एक उनका अगुवा होगा। वह शासक मेरे लोगों में से
होगा। वह मेरे नजदीक तब आएंगे जब मैं उनसे ऐसा
करने को कहूँगा। अत: मैं उस अगुवा को अपने पास
बुलाऊँगा और वह मेरे निकट होगा। 22तुम मेरे लोग
होगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊँगा।"

23यहोवा बहुत क्रोधित था। उसने लोगों को दण्ड
दिया और दण्ड प्रचंड आंधी की तरह आया। दण्ड एक
चक्रवात सा, दुष्ट लोगों के विरुद्ध आया। 24यहोवा तब
तक क्रोधित रहेगा जब तक वे लोगों को दण्ड देना पूरा
नहीं करता वह तब तक क्रोधित रहेगा जब तक वह
अपनी योजना के अनुसार दण्ड नहीं दे लेता। जब वह
दिन आएगा तो यहूदा के लोगों, तुम समझ जाओगे।

नया इस्राएल

31 यहोवा ने यह सब कहा: "उस समय मैं इस्राएल
के पूरे परिवार समूहों का परमेश्वर होऊँगा
और वे मेरे लोग होंगे।"

2यहोवा कहता है, "कुछ लोग, जो शत्रु की तलवार
के घाट नहीं उतारे गए, वे लोग मरुभूमि में आराम
पाएंगे। इस्राएल आराम की खोज में आएगा।"

3बहुत दूर से यहोवा अपने लोगों के सामने प्रकट
होगा। यहोवा कहते है लोगों, "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ
और मेरा प्रेम सदैव रहेगा। मैं सदैव तुम्हारे प्रति सच्चा
रहूँगा। 4मेरी दुल्हन, इस्राएल, मैं तुम्हें फिर सवारूँगा।
तुम फिर सुन्दर देश बनोगी। तुम अपना तम्बूरा फिर
संभालोगी। तुम विनोद करने वाले अन्य सभी लोगों
के साथ नाचोगी। 5इस्राएल के किसानों, तुम अंगूर के
बाग फिर लगाओगे। तुम शोमरोन नगर के चारों ओर
पहाड़ी पर उन अंगूरों के बाग लगाओगे और किसान
लोग उन अंगूरों के बागों के फलों का आनन्द लेंगे।
6वह समय आएगा, जब एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश का
चौकीदार यह सन्देश घोषित करेगा: 'आओ, हम अपने
परमेश्वर यहोवा की उपासना करने सिय्योन चलें!
एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश के चौकीदार भी उसी सन्देश की
घोषणा करेंगे।"

7यहोवा कहता है, "प्रसन्न होओ और याकूब के लिये
गाओ। सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र इस्राएल के लिये उद्घोष करो।
अपनी स्तुतियाँ करो। यह उद्घोष करो, 'यहोवा ने
अपने लोगों की रक्षा की है। उसने इस्राएल राष्ट्र के
जीवित बचे लोगों की रक्षा की है!' 8समझ लो कि मैं
उत्तर देश से इस्राएल को लाऊँगा। मैं पृथ्वी के अति दूर
स्थानों से इस्राएल के लोगों को इकट्ठा करूँगा। उन
व्यक्तियों में से कुछ अन्धे और लंगड़े हैं। कुछ स्त्रियाँ
गर्भवती हैं और शिशु को जन्मदेगी। असंख्य लोग वापस
आएंगे। 9लौटते समय वे लोग रो रहे होंगे। किन्तु मैं
उनकी अगुवाई करुँगा और उन्हें आराम दूँगा। मैं उन
लोगों को पानी के नालों के साथ लाऊँगा। मैं उन्हें
अच्छी सड़क से लाऊँगा जिससे वे ठोकर खाकर न
गिरें। मैं उन्हें इस प्रकार लाऊँगा क्योंकि मैं इस्राएल का
पिता हूँ और एप्रैम मेरा प्रथम पुत्र है।

10"राष्ट्रों, यहोवा का यह सन्देश सुनो। सागर के
किनारे के दूर देशों को यह सन्देश दो कहो: 'जिसने
इस्राएल के लोगों को बिखेरा, वही उन्हें एक साथ वापस
लायेगा और वह गड़ेरिये की तरह अपनी झुंड (लोग)
की देखभाल करेगा।' 11यहोवा याकूब को वापस लायेगा
यहोवा अपने लोगों की रक्षा उन लोगों से करेगा जो
उनसे अधिक बलवान हैं। 12इस्राएल के लोग सिय्योन
की ऊँचाइयों पर आएंगे, और वे आनन्द घोष करेंगे।
उनके मुख यहोवा द्वारा दी गई अच्छी चीजों के कारण
प्रसन्नता से झूम उठेंगे। यहोवा उन्हें अन्न, नयी दाखमधु,
तेल, नयी भेड़ें और गायें देगा। वे उस उद्यान की तरह
होंगे जिसमे प्रचुर जलहो और इस्राएल के लोग भविष्य
में तंग नहीं किये जाएंगे। 13तब इस्राएल की युवतियाँ
प्रसन्न होंगी और नाचेंगी। युवा, वृद्ध पुरुष भी उस नृत्य
में भाग लेंगे। मैं उनके दु:ख को सुख में बदल दूँगा। मैं
इस्राएल के लोगों को आराम दूँगा। मैं उनकी खिन्नता
को प्रसन्नता में बदल दूँगा। 14याजकों के लिये आवश्यकता
से अधिक बलि भेंट दी जायेगी और मेरे लोग इससे भरे
पूरे तथा सन्तुष्टहोंगे जो अच्छी चीजें मैं उन्हें दूँगा।" यह
सन्देश यहोवा का है।

15यहोवा कहता है, "रामा में एक चिल्लाहट सुनाई
पड़ेगी। यह कटु रूदन और अधिक उदासी भरी होगी।
राहेल अपने बच्चों के लिए रोएगी राहेल सान्त्वना पाने
से इन्कार करेगी, क्योंकि उसके बच्चे मर गए हैं।"

16किन्तु यहोवा कहता है: "रोना बन्द करो, अपनी
आँखे आँसू से न भरो! तुम्हें अपने काम का पुरस्कार
मिलेगा!" यह सन्देश यहोवा का है। "इस्राएल के लोग
अपने शत्रु के देश से वापस आएंगे। 17अत: इस्राएल,
तुम्हारे लिये आशा है।" यह सन्देश यहोवा का है। "तुम्हारे
बच्चे अपने देश में वापस लौटेंगे। 18मैंने एप्रैम को रोते
सुना है। मैंने एप्रैम को यह कहते सुना है: 'हे यहोवा,
तूने, सच ही, मुझे दण्ड दिया है और मैंने अपना पाठ

सीख लिया। मैं उस बछड़े की तरह था जिसे कभी
प्रशिक्षण नहीं मिला कृपया मुझे दण्ड देना बन्द कर, मैं
तेरे पास वापस आऊँगा। तू सच ही मेरा परमेश्वर
यहोवा है। 19हे यहोवा, मैं तुझसे भटक गया था। किन्तु
मैंने जो बुरा किया उससे शिक्षा ली। अत: मैंने अपने
हृदय और जीवन को बदल डाला। जो मैंने युवाकाल में
मूर्खतापूर्ण काम किये उनके लिये मैं परेशान और
लज्जित हूँ।'"

20परमेश्वर कहता है: "तुम जानते हो कि एप्रैम मेरा
प्रिय पुत्र है। मैं उस बच्चे से प्यार करता हूँ। हाँ, मैं प्राय:
एप्रैम के विरुद्ध बोलता हूँ, किन्तु फिर भी मैं उसे याद
रखता हूँ। मैं उससे बहुत प्यार करता हूँ। मैं सच ही,
उसे आराम पहुँचाना चाहता हूँ।" यह सन्देश यहोवा का
है।

21"इस्राएल के लोगों, सड़कों के संकेतों को लगाओ।
उन संकेतों को लगाओ जो तुम्हें घर का मार्ग बतायें।
सड़क को ध्यान से देखो। उस सड़क पर ध्यान रखो
जिससे तुम यात्रा कर रहे हो। मेरी दुल्हन इस्राएल घर
लौटो, अपने नगरों को लौट आओ। 22अविश्वासी पुत्री
कब तक तुम चारों ओर मंडराती रहोगी? तुम कब घर
आओगी?" यहोवा एक नयी चीज धरती पर बनाता है:
एक स्त्री, पुरुष के चारों तरफ।

23इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता
है: "मैं यहूदा के लोगों के लिये फिर अच्छा काम
करूँगा। उस समय यहूदा देश और उसके नगरों के
लोग इन शब्दों का उपयोग फिर करेंगे। 'ऐ सच्ची
निवास भूमि ये पवित्र पर्वत यहोवा तुम्हें आशीर्वाद दे।'

24"यहूदा के सभी नगरों में लोग एक साथ शान्तिपूर्वक
रहेंगे। किसान और वह व्यक्ति जो अपनी भेड़ों की
रेवड़ों के साथ चारों ओर घूमते हैं, यहूदा में शान्ति से
एक साथ रहेंगे। 25मैं उन लोगों को आराम और शक्ति
दूँगा जो थके और कमजोर हैं।"

26यह सुनने के बाद मैं (यिर्मयाह) जगा और अपने
चारों ओर देखा। वह बड़ी आनन्ददायक नींद थी।

27"वे दिन आ रहे हैं जब मैं यहूदा और इस्राएल के
परिवारों को बढ़ाऊँगा।" यह सन्देश यहोवा का है। "मैं
उनके बच्चों और जानवरों के बढ़ने में भी सहायता
करुँगा। यह पौधे के रोपने और देख भाल करने जैसा
होगा। 28अतीत में, मैंने इस्राएल और यहूदा पर ध्यान
दिया, किन्तु मैंने उस समय उन्हें फटकारने की दृष्टि
से ध्यान दिया। मैंने उन्हें उखाड़ फेंका। मैंने उन्हें नष्ट
किया। मैंने उन पर अनेक विपत्तियाँ ढाई। किन्तु अब
मैं उन पर उनको बनाने तथा उन्हें शक्तिशाली करने
की दृष्टि से ध्यान दूँगा।" यह सन्देश यहोवा का है।"

29"उस समय लोग इस कहावत को कहना बन्द कर
देंगे: पूर्वजों ने खट्टे अंगूर खाये और बच्चों के दाँत खट्टे
हो गये।"

30किन्तु हर एक व्यक्ति अपने पाप के लिये मरेगा।
जो व्यक्ति खट्टे अंगूर खायेगा, वही खट्टे स्वाद के
कारण अपने दाँत घिसेगा।"

नयी वाचा

31यहोवा ने यह सब कहा, "वह समय आ रहा है जब
मैं इस्राएल के परिवार तथा यहूदा के परिवार के साथ
नयी वाचा करूँगा। 32यह उस वाचा की तरह नहीं होगी
जिसे मैंने उनके पूर्वजों के साथ की थी। मैंने वह वाचा
तब की जब मैंने उनके हाथ पकड़े और उन्हें मिस्र से
बाहर लाया। मैं उनका स्वामी था और उन्होंने वाचा
तोड़ी।" यह सन्देश यहोवा का है।

33"भविष्य में यह वाचा मैं इस्राएल के लोगों के साथ
करूँगा।" यह सन्देश यहोवा का है। "मैं अपनी शिक्षाओं
को उनके मस्तिष्क में रखूँगा तथा उनके हृदयों पर
लिखूँगा। मैं उनका परमेश्वर होऊँगा और वे मेरे लोग
होंगे।

34लोगों को यहोवा को जानने के लिए अपने पड़ोसियों
और रिश्तेदारों को, शिक्षा देना नहीं पड़ेगी। क्यों? क्योंकि
सबसे बड़े से लेकर सबसे छोटे तक सभी मुझे जानेंगे।"
यह सन्देश यहोवा का है। "जो बुरा काम उन्होंने कर
दिया उसे मैं क्षमा कर दूँगा। मैं उनके पापों को याद
नहींरखूँगा।"

यहोवा इस्राएल को कभी नहीं छोड़ेगा

35यहोवा यह कहता है: "यहोवा सूर्य को दिन में
चमकाता है और यहोवा चाँद और तारों को रात में
चमकाता है। यहोवा सागर को चंचल करता है जिससे
उसकी लहरे तट से टकराती हैं। उसका नाम सर्वशक्तिमान
यहोवा है।"

36यहोवा यह सब कहता है, "मेरे सामने इस्राएल
के वंशज उसी दशा में एक राष्ट्र न रहेंगे। यदि मैं
सूर्य, चन्द्र, तारे और सागर पर अपना नियन्त्रण खो
दूँगा।"

37यहोवा कहता है: "मैं इस्राएल के वंशजों का कभी
नही त्याग करुँगा। यह तभी संभव है यदि लोग ऊपर
आसमान को नापने लगें और नीचे धरती के सारे
रहस्यों को जान जायँ। यदि लोग वह सब कर सकेंगे
तभी मैं इस्राएल के वंशजों को त्याग दूँगा। तब मैं उनको,
जो कुछ उन्होंने किया, उसके लिये त्यागूँगा।" यह सन्देश
यहोवा का है।

नया यरूशलेम

38यह सन्देश यहोवा का है: "वे दिन आ रहे हैं जब
यरूशलेम नगर यहोवा के लिये फिर बनेगा। पूरा नगर
हननेल के स्तम्भ से कोने वाले फाटक तक फिर

बनेगा। 39नाप की जंजीर कोने वाले फाटक से सीधे
गारेब की पहाड़ी तक बिछेगी और तब गोआ नामक
स्थान तक फैलेगी। 40पूरी घाटी जहाँ शव और राख
फेंकी जाती है, यहोवा के लिये पवित्र होगी और उसमें
किद्रोन घाटी तक के सभी टीले पूर्व में अश्वद्वार के
कोने तक सम्मिलित होंगे। सारा क्षेत्र यहोवा के लिये
पवित्र होगा। यरूशलेम का नगर भविष्य में न ध्वस्त
होगा, न ही नष्ट किया जाएगा।"

यिर्मयाह एक खेत खरीदता है

32 सिदकिय्याह के यहूदा में राज्य काल के दसवें
वर्ष, यिर्मयाह को यहोवा का यह सन्देश मिला।
सिदकिय्याह का दसवाँ वर्ष नबूकदनेस्सर का अट्ठारहवाँ
वर्ष था। 2उस समय बाबुल के राजा की सेना यरूशलेम
नगर को घेरे हुए थी और यिर्मयाह रक्षक प्रांगण में
बन्दी था। यह प्रांगण यहूदा के राजा के महल में था।
3(यहूदा के राजा सिदकिय्याह ने उस स्थान पर यिर्मयाह
को बन्दी बना रखा था। सिदकिय्याह यिर्मयाह की
भविष्यवाणियों को पसन्द नहीं करता था। यिर्मयाह ने
कहा, "यहोवा यह कहता है: 'मैं यरूशलेम को शीघ्र ही
बाबुल के राजा को दे दूँगा। नबूकदनेस्सर इस नगर पर
अधिकार कर लेगा। 4यहूदा का राजा सिदकिय्याह
कसदियों की सेना से बचकर निकल नहीं पाएगा। किन्तु
वह निश्चय ही बाबुल के राजा को दिया जायेगा और
सिदकिय्याह बाबुल के राजा से आमने-सामने बातें
करेगा। सिदकिय्याह उसे अपनी आँखों से देखेगा। 5बाबुल
का राजा सिदकिय्याह को बाबुल ले जाएगा। सिदकिय्याह
तब तक वहाँ ठहरेगा जब तक मैं उसे दण्ड नहीं दे
लेता।' यह सन्देश यहोवा का है। 'यदि तुम कसदियों की
सेना से लड़ोगे, तुम्हें सफलता नहीं मिलेगी।'"

6जिस समय यिर्मयाह बन्दी था, उसने कहा, "यहोवा
का सन्देश मुझे मिला। वह सन्देश यह था: 7यिर्मयाह,
तुम्हारा चचेरा भाई हननेल शीघ्र ही तुम्हारे पास आएगा।
वह तुम्हारे चाचा शल्लूम का पुत्र है। हननेल तुमसे यह
कहेगा, 'यिर्मयाह, अनातोत नगर के पास मेरा खेत
खरीद लो। इसे खरीद लो क्योंकि तुम मेरे सबसे समीपी
रिश्तेदार हो। उस खेत को खरीदना तुम्हारा अधिकार
तथा तुम्हारा उत्तरदायित्व है।'

8"तब यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था। मेरा
चचेरा भाई रक्षक प्रांगण में मेरे पास आया। हननेल ने
मुझसे कहा, 'यिर्मयाह, बिन्यामीन परिवार समूह के
प्रदेश में अनातोत नगर के पास मेरा खेत खरीद लो।
उस भूमि को तुम अपने लिये खरीदो क्योंकि यह तुम्हारा
अधिकार है कि तुम इसे खरीदो और अपना बनाओ।'"

अत: मुझे ज्ञात हुआ कि यह यहोवा का सन्देश है।
9मैंने अपने चचेरे भाई हननेल से अनातोत में भूमि
खरीद ली। मैंने उसके लिये सत्तरह शेकेल चाँदी तौली।
10मैंने पट्टे पर हस्ताक्षर किये और मुझे पट्टे की एक
प्रति मुहरबन्द मिली और जो मैंने किया था उसके
साक्षी के रूप सें कुछ लोगों को बुला लिया तथा मैंने
तराजू पर चाँदी तौली। 11तब मैंने पट्टे की मुहरबन्द
प्रति और मुहर रहित प्रति प्राप्त की 12और मैंने उसे
बारुक को दिया। बारुक नोरिय्याह का पुत्र था। नोरिय्याह
महसेयाह का पुत्र था। मुहरबन्द पट्टे में मेरी खरीद की
सभी शर्तें और सीमायें थीं। मैंने अपने चचेरे भाई हननेल
और अन्य साक्षियों के सामने वह पट्टा बारुक को
दिया। उन साक्षियों ने भी उस पट्टे पर हस्ताक्षर किये।
उस समय यहूदा के बहुत से व्यक्ति प्रांगण में बैठे थे
जिन्होंने मुझे बारुक को पट्टा देते देखा।

13सभी लोगों को साक्षी कर मैंने बारुक से कहा,
14"इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता
है, 'मुहरबन्द और मुहर रहित दोनों पट्टे की प्रतियों
को लो और इसे मिट्टी के घड़े में रख दो। यह तुम
इसलिये करो कि पट्टा बहुत समय तक रहे।' 15इस्राएल
का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, 'भविष्य
में मेरे लोग एक बार फिर घर, खेत और अंगूर के बाग
इस्राएल देश में खरीदेंगे।'"

16नेरिय्याह के पुत्र बारुक को पट्टा देने के बाद मैंने
यहोवा से प्रार्थना की। मैंने कहा:

17"परमेश्वर यहोवा, तूने पृथ्वी और आकाश
बनाया। तूने उन्हें अपनी महान शक्ति से बनाया।
तेरे लिये कुछ भी करना अति कठिन नहीं है।
18यहोवा, तू हजारों व्यक्तियों का विश्वासपात्र और
उन पर दयालु है। किन्तु तू व्यक्तियों को उनके
पूर्वजों के पापों के लिए भी दण्ड देता है। महान
और शक्तिशाली परमेश्वर, तेरा नाम सर्वशक्तिमान
यहोवा है। 19हे यहोवा, तू महान कार्यो की योजना
बनाता और उन्हें करता है। तू वह सब देखता है
जिन्हें लोग करते हैं और उन्हें पुरस्कार देता है जो
अच्छे काम करते हैं तथा उन्हें दण्ड देता है जो बुरे
काम करते हैं, तू उन्हें वह देता है जिनके वे पात्र
हैं। 20हे यहोवा, तूने मिस्र देश में अत्यन्त प्रभावशाली
चमत्कार किया। तूने आज तक भी प्रभावशाली
चमत्कार किया है। तूने ये चमत्कार इस्राएल में
दिखाया और तूने इन्हें वहाँ भी दिखाये जहाँ कहीं
मनुष्य रहते हैं। तू इन चमत्कारों के लिये प्रसिद्ध
है। 21हे यहोवा, तूने प्रभावशाली चमत्कारों का
प्रयोग किया और अपने लोग इस्राएल को मिस्र से
बाहर ले आया। तूने उन चमत्कारों को करने के
लिये अपने शक्तिशाली हाथों का उपयोग किया।
तेरी शक्ति आश्चर्यजनक रही!

22"हे यहोवा, तूने यह धरती इस्राएल के लोगों को
दी। यह वही धरती है जिसे तूने उनके पूर्वजों को

देने का वचन बहुत पहले दिया था। यह बहुत
अच्छी धरती है। यह बहुत सी अच्छी चीजों वाली
अच्छी धरती है। 23इस्राएल के लोग इस धरती में
आये और उन्होंने इसे अपना बना लिया। किन्तु
उन लोगों ने तेरी आज्ञा नहीं मानी। वे तेरे उपदेशों
के अनुसार न चले। उन्होंने वह नहीं किया जिसके
लिये तूने आदेश दिया। अत: तूने इस्राएल के लोगों
पर वे भयंकर विपत्तियाँ ढाईं।

24"अब शत्रु ने नगर पर घेरा डाला है। वे ढाल
बना रहे हैं जिससे वे यरूशलेम की चहारदीवारी
पर चढ़ सकें और उस पर अधिकार कर लें।
अपनी तलवारों का उपयोग करके तथा भूख
और भयंकर बीमारी के कारण बाबुल की सेना
यरूशलेम नगर को हरायेगी। बाबुल की सेना अब
नगर पर आक्रमण कर रही है। यहोवा तूने कहा
था कि यह होगा, और अब तू देखता है कि यह
घटित हो रहा है।

25"मेरे स्वामी यहोवा, वे सभी बुरी घटनायें घटित
हो रही हैं। किन्तु तू अब मुझसे कह रहा है,
'यिर्मयाह, चाँदी से खेत खरीदो और खरीद की
साक्षी के लिये कुछ लोगों को चुनो।' तू यह उस
समय कह रहा है जब बाबुल की सेना नगर पर
अधिकार करने को तैयार है। मैं अपने धन को
उस तरह बरबाद क्यों करुँ?"

26तब यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला:
27"यिर्मयाह, मैं यहोवा हूँ। मैं पृथ्वी के हर एक व्यक्ति
का परमेश्वर हूँ। यिर्मयाह, तुम जानते हो कि मेरे लिये
कुछ भी असंभव नहीं है।"

28यहोवा ने यह भी कहा, "मैं शीघ्र ही यरूशलेम
नगर को बाबुल की सेना और बाबुल के राजा
नबूकदनेस्सर को दे दूँगा। वह सेना नगर पर अधिकार
कर लेगी। 29बाबुल की सेना पहले से ही यरूशलेम
नगर पर आक्रमण कर रही है। वे शीघ्र ही नगर में
प्रवेश करेंगे और आग लगा देंगे। वे इस नगर को जला
कर राख कर देंगे। इस नगर में ऐसे मकान हैं जिनमें
यरूशलेम के लोगों ने असत्य देवता बाल को छतों पर
बलि भेंट दे कर मुझे क्रोधित किया है और लोगों ने
अन्य देवमूर्तियों को मदिरा भेंट चढ़ाई। बाबुल की सेना
उन मकानों को जला देगी। 30मैंने इस्राएल और यहूदा
के लोगों पर नजर रखी है। वे जो कुछ करते हैं, बुरा
है। वे तब से बुरा कर रहे हैं जब से वे युवा थे। इस्राएल
के लोगों ने मुझे बहुत क्रोधित किया। उन्होंने मुझे
क्रोधित किया क्योंकि उन्होंने उन देवमूर्तियों की पूजा
की जिन्हें उन्होंने अपने हाथों से बनाया।" यह सन्देश
यहोवा का है। 31"जब से यरूशलेम नगर बसा तब से
अब तक इस नगर के लोगों ने मुझे क्रोधित किया है।
इस नगर ने मुझे इतना क्रोधित किया है कि मुझे इसे
अपनी नजर के सामने से दूर कर देना चाहिये। 32यहूदा
और इस्राएल के लोगों ने जो बुरा किया है, उसके लिये,
मैं यरूशलेम को नष्ट करूँगा। जनसाधारण उनके राजा,
प्रमुख, उनके याजक और नबी यहूदा के पुरुष और
यरूशलेम के लोग, सभी ने मुझे क्रोधित किया है।

33"उन लोगों को सहायता के लिये मेरे पास आना
चाहिये था। लेकिन उन्होने मुझसे अपना मुँह मोड़ा। मैंने
उन लोगों को बार-बार शिक्षा देनी चाही किन्तु उन्होंने
मेरी एक न सुनी। मैंने उन्हें सुधारना चाहा किन्तु उन्होंने
अनसुनी की। 34उन लोगों ने अपनी देवमूर्तियाँ बनाई हैं
और मैं उन देवमूर्तियों से घृणा करता हूँ। वे उन देवमूर्तियों
को उस मन्दिर में रखते हैं जो मेरे नाम पर है। इस
तरह उन्होंने मेरे मन्दिर को अपवित्र किया है।

35"बेनहिन्नोम की घाटी में उन लोगों ने असत्य देवता
बाल के लिये उच्च स्थान बनाए। उन्होंने वे पूजा स्थान
अपने पुत्र-पुत्रियों को शिशु बलिभेंट के रुप में जला
सकने के लिये बनाए। मैंने उनको कभी ऐसे भयानक
काम करने के लिये आदेश नहीं दिये। मैंने यह कभी
सोचा तक नहीं कि यहूदा के लोग ऐसा भयंकर पाप
करेंगे।

36"तुम सभी लोग कहते हो, 'बाबुल का राजा यरूशलेम
पर अधिकार कर लेगा। वह तलवार, भुखमरी और
भयंकर बीमारी का उपयोग इस नगर को पराजित
करने के लिये करेगा।' किन्तु यहोवा इस्राएल के लोगों
का परमेश्वर कहता है, 37'मैंने इस्राएल और यहूदा के
लोगों को अपना देश छोड़ने को विवश किया है। मैं उन
लोगों पर बहुत क्रोधित था। किन्तु मैं उन्हें इस स्थान
पर वापस लाऊँगा। मैं उन्हें उन देशों से इकट्ठा करूँगा
जिनमें जाने के लिये मैंने उन्हें विवश किया। मैं उन्हें
इस देश में वापस लाऊँगा। मैं उन्हें शान्तिपूर्वक और
सुरक्षित रहने दूँगा। 38इस्राएल और यहूदा के लोग मेरे
अपने लोग होंगे और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा। 39वे
एक उद्देश्य रखेंगे सच ही, जीवन भर मेरी उपासना
करना चाहेंगे। उनके लिये शुभ होगा और उनके बाद
उनके परिवारों के लिये भी शुभ होगा।

40"'मैं इस्राएल और यहूदा के लोगों के साथ एक
वाचा करूँगा। यह वाचा सदैव के लिये रहेगी। इस वाचा
के अनुसार मैं लोगों से कभी दूर नहीं जाऊँगा। मैं
उनके लिये सदैव अच्छा रहूँगा। मैं उन्हें, अपना आदर
करने के लिये इच्छुक बनाऊँगा। तब वे मुझसे कभी
दूर नहीं हटेंगे। 41वे मुझे प्रसन्न करेंगे। मैं उनका भला
करने में आनन्दित होऊँगा और मैं, निश्चय ही, उन्हें
इस धरती में बसाऊँगा और उन्हें बढ़ाऊँगा। यह मैं
अपने पूरे हृदय और आत्मा से करूँगा।'"

42यहोवा जो कहता है, वह यह है, "मैंने इस्राएल और
यहूदा के लोगों पर यह बड़ी विपत्ति ढाई है। इसी तरह मैं

उन्हें अच्छी चीजें दूँगा। मैं उन्हें अच्छी चीजें करने का
वचन देता हूँ। 43तुम लोग यह कहते हो, 'यह देश सूनी
मरूभूमि है। यहाँ कोई व्यक्ति और कोई जानवर नहीं
हैं। बाबुल की सेना ने इस देश को पराजित किया।'
किन्तु भविष्य में लोग फिर इस देश में भूमि खरीदेंगे।
44लोग अपने धन का उपयोग करेंगे और खेत खरीदेंगे।
वे अपनी वाचाओं पर हस्ताक्षर के साक्षी होंगे। लोग
उस प्रदेश में फिर खेत खरीदेंगे जिसमें बिन्यामीन परिवार
समूह के लोग रहते हैं। वे यरूशलेम क्षेत्र के चारों ओर
खेत खरीदेंगे। वे यहूदा प्रदेश के नगरों, पहाड़ी प्रदेश,
पश्चिमी पर्वत चरण, और दक्षिणी मरुभूमि के क्षेत्र में
खेत खरीदेंगे। यह होगा, क्योंकि मैं तुम्हारे लोगों को
वापस लाऊँगा।'" यह सन्देश यहोवा का है।

परमेश्वर की प्रतिज्ञा

33 यिर्मयाह को दूसरी बार यहोवा का सन्देश मिला।
यिर्मयाह अभी भी रक्षक प्रांगण में ताले के
अन्दर बन्दी था। 2यहोवा ने पृथ्वी को बनाया और
उसकी वह रक्षा करता है। उसका नाम यहोवा है।
यहोवा कहता है, 3"यहूदा, मुझसे प्रार्थना करो और मैं
उसे पूरा करुँगा। मैं तुम्हें महत्वपूर्ण रहस्य बताऊँगा।
तुमने उन्हें कभी पहले नहीं सुना है। 4इस्राएल का
परमेश्वर यहोवा है। यहोवा यरूशलेम के मकानों और
यहूदा के राजाओं के महलों के बारे में यह कहता है।
शत्रु उन मकानों को ध्वस्त कर देगा। शत्रु नगर की
चहारदीवारियों के ऊपर तक ढाल बनायेगा। शत्रु तलवार
का उपयोग करेगा और इन नगरों के लोगों के साथ
युद्ध करेगा।

5"यरूशलेम के लोगों ने बहूत बुरे काम किये हैं। मैं
उन लोगों पर क्रोधित हूँ। मैं उनके विरुद्ध हो गया हूँ।
इसलिये वहाँ मैं असंख्य लोगों को मार डालूँगा। बाबुल
की सेना यरूशलेम के विरुद्ध लड़ने के लिये आएगी।
यरूशलेम के घरों में असंख्य शव होंगे।

6"किन्तु उसके बाद मैं उस नगर में लोगों को स्वस्थ
बनाऊँगा। मैं उन लोगों को शान्ति और सुरक्षा का
आनन्द लेने दूँगा। 7मैं इस्राएल और यहूदा में फिर से सब
कुछ अच्छा घटित होने दूँगा। मैं उन लोगों को अतीत
की तरह शक्तिशाली बनाऊँगा। 8उन्होंने मेरे विरुद्ध
पाप किये, किन्तु मैं उस पाप को धो दूँगा। वे मेरे विरुद्ध
लड़े, किन्तु मैं उन्हें क्षमा कर दूँगा। 9तब यरूशलेम
आश्चर्यचकित करने वाला स्थान हो जायेगा। लोग सुखी
होंगे और अन्य राष्ट्रों के लोग इसकी प्रशंसा करेंगे। यह
उस समय होगा जब लोग यह सुनेंगे कि वहाँ सब अच्छा
हो रहा है। वे उन अच्छे कामों को सुनेंगे जिन्हें मैं
यरूशलेम के लिये कर रहा हूँ। 10"तुम लोग यह कह
रहे हो, 'हमारा देश सूनी मरुभूमि हैं। वहाँ कोई व्यक्ति
या कोई जानवर जीवित नहीं रहे।' अब यरूशलेम की
सड़कों और यहूदा के नगरों में निर्जन शान्ति है। किन्तु
वहाँ शीघ्र ही चहल–पहल होगी। 11वहाँ सुख और आनन्द
की किलोलें होंगी। वहाँ वर –वधु की उमंग भरी चुहल
होगी। वहाँ यहोवा के मन्दिर में अपनी भेंट लाने वालें
की मधुर वाणी होगी। वे लोग कहेंगे, सर्वशक्तिमान
यहोवा की स्तुति करो! यहोवा दयालु है! यहोवा की दया
सदा बनी रहती है! लोग ये बातें कहेंगे क्योंकि मैं फिर
यहूदा के लिये अच्छे काम करुँगा। यह वैसा ही होगा
जैसा आरम्भ में था।" ये बातें यहोवा नेकही।

12सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "यह स्थान अब
सूना है। यहाँ कोई लोग या जानवर नहीं रह रहें। किन्तु
अब यहूदा के सभी नगरों में लोग रहेंगे। वहाँ गडरिये
होंगे और चरागाहें होंगी जहाँ वे अपनी रेवड़ों को आराम
करने देंगे। 13गड़ेरिये अपनी भेड़ों को तब गिनते है जब
भेड़ें उनके आगे चलती हैं। लोग अपैनी भेड़ों को पूरे
देश में चारों ओर पहाड़ी प्रदेश, पश्चिमी पर्वत चरण,
नेगव और यहूदा के सभी नगरों में गिनेंगे।"

अच्छी शाखा

14यह सन्देश यहोवा का है: "मैंने इस्राएल और यहूदा
के लोगों को विशेष वचन दिया है। वह समय आ रहा है
जब मैं वह करुँगा जिसे करने का वचन मैंने दिया है।
15उस समय मैं दाऊद के परिवार से एक अच्छी शाखा
उत्पन्न करुँगा। वह अच्छी शाखा वह सब करेगी जो
देश के लिये अच्छा और उचित होगा। 16इस शाखा के
समय यहूदा के लोगों की रक्षा हो जाएगी। लोग यरूशलेम
में सुरक्षित रहेंगे। उस शाखा का नाम 'यहोवा हमारी
धार्मिकता (विजय) हैं।'"

17यहोवा कहता है, "दाऊद के परिवार का कोई न
कोई व्यक्ति सदैव सिंहासन पर बैठेगा और इस्राएल के
परिवार पर शासन करेगा 18और लेवी के परिवार से
याजक सदैव होंगे। वे याजक मेरे सामने सदा रहेंगे और
मुझे होमबलि, अन्नबलि, और बलिभेंट करेंगे।"

19यहोवा का यह सन्देश यिर्मयाह को मिला। 20यहोवा
कहता है, "मैंने रात और दिन से वाचा की है। मैंने
वाचा की कि वह सदैव रहेगी। तुम उस वाचा को बदल
नहीं सकते। दिन और रात सदा ठीक समय पर आएंगे।
यदि तुम उस वाचा को बदल सकते हो 21तो तुम दाऊद
और लेवी के साथ की गई मेरी वाचा को भी बदल
सकते हो। तब दाऊद और लेवी के परिवार के वंशज
राजा और पुरोहित नहीं हो सकेंगे। 22किन्तु मैं अपने
सेवक दाऊद को और लेवी के परिवार समूह को
अनेक वंशज दूँगा। वे उतने होंगे जितने आकाश में तारे
हैं, और आकाश के तारों को कोई गिन नहीं सकता
और वे इतने होंगे जितने सागर तट पर बालू के कण
होते हैं और उन बालू के कणों को कोई गिन नहीं
सकता।"

23यहोवा का यह सन्देश यिर्मयाह ने प्राप्त किया:
24‘यिर्मयाह, क्या तुमने सुना है कि लोग क्या कह रहे
हैं? वे लोग कह रहे हैं: यहोवा ने इस्राएल और यहूदा के
दो परिवारों को अस्वीकार कर दिया है। यहोवा ने उन
लोगों को चुना था, किन्तु अब वह उन्हें राष्ट्र के रूप में
भी स्वीकार नहीं करता।’”

25यहोवा कहता है, “यदि मेरी वाचा दिन और रात
के साथ बनी नहीं रहती, और यदि मैं आकाश और
पृथ्वी के लिये नियम नहीं बनाता, तभी संभव है कि मैं
उन लोगों को छोड़ूँ। 26तभी यह संभव होगा कि मैं
याकूब के वंशजों से दूर हट जाऊँ और तभी यह हो
सकता है कि मैं दाऊद के वंशजों को इब्राहीम, इसहाक
और याकूब के वंशजों पर शासन करने न दूँ। किन्तु
दाऊद मेरा सेवक है और मैं उन लोगों पर दया करूँगा
और मैं फिर उन लोगों को उनकी धरती पर वापस
लौटा लाऊँगा।”

यहूदा के राजा सिदकिय्याह को चेतावनी

34 यहोवा का यह सन्देश यिर्मयाह को मिला। यह
सन्देश उस समय मिला जब बाबुल का राजा
नबूकदनेस्सर यरूशलेम और उसके चारों ओर के
सभी नगरों से युद्ध कर रहा था। नबूकदनेस्सर अपने
साथ अपनी सारी सेना और शासित राज्यों तथा साम्राज्य
के लोगों को मिलाये हुए था।

2सन्देश यह था: “यहोवा इस्राएल के लोगों का परमेश्वर
जो कहता है, वह यह है: “यिर्मयाह, यहूदा के राजा
सिदकिय्याह के पास जाओ और उसे यह सन्देश दो:
‘सिदकिय्याह, यहोवा जो कहता है, वह यह है: मैं यरूशलेम
नगर को बाबुल के राजा को शीघ्र ही दे दूँगा और वह
उसे जला डालेगा। 3सिदकिय्याह, तुम बाबुल के राजा से
बचकर निकल नहीं पाओगे। तुम निश्चय ही पकड़े
जाओगे और उसे दे दिये जाओगे। तुम बाबुल के राजा
को अपनी आँखों से देखोगे। वह तुमसे आमने-सामने
बातें करेगा और तुम बाबुल जाओगे। 4किन्तु यहूदा के
राजा सिदकिय्याह यहोवा के दिये वचन को सुनो। यहोवा
तुम्हारे बारे में जो कहता है, वह यह है: तुम तलवार से
नहीं मारे जाओगे। 5तुम शान्तिपूर्वक मरोगे। तुम्हारे
राजा होने से पहले जो राजा राज्य करते थे तुम्हारे उन
पूर्वजों के सम्मान के लिये लोगों ने अग्नि तैयार की।
उसी प्रकार तुम्हारे सम्मान के लिये लोग अग्नि बनायेंगे।
वे तुम्हारे लिये रोएंगे। वे शोक में डूबे हुए कहेंगे, ‘हे
स्वामी, मैं स्वयं तुम्हें यह वचन देता हूँ। यह सन्देश
यहोवा का है।’”

6अत: यिर्मयाह ने यहोवा का सन्देश यरूशलेम में
सिदकिय्याह को दिया। 7यह उस समय हुआ जब बाबुल
के राजा की सेना यरूशलेम के विरुद्ध लड़ रही थी।
बाबुल की सेना यहूदा के उन नगरों के विरुद्ध भी लड़
रही थी जिन पर अधिकार नहीं हो सका था। वे लाकीश
और अजेका नगर थे। वे ही केवल किलाबन्द नगर थे
जो यहूदा प्रदेश में बचे थे।

लोगों ने वाचाओं में से एक को तोड़ा

8सिदकिय्याह ने यरूशलेम के सभी निवासियों से यह
वाचा की थी कि मैं सभी यहूदी दासों को मुक्त कर
दूँगा। जब सिदकिय्याह ने वह वाचा कर ली, उसके बाद
यिर्मयाह को यहोवा का सन्देश मिला। 9हर व्यक्ति से
आशा की जाती है कि वह अपने यहूदी दासों को
स्वतन्त्र करे। सभी यहूदी दास-दासी स्वतन्त्र किये जाने
थे। यहूदा केपरिवार समूह के किसी भी व्यक्ति को दास
रखने की संभावना किसी भी व्यक्ति से नहीं की जा
सकती थी। 10अत: सभी प्रमुखों और यहूदा के सभी
लोगों ने इस वाचा को स्वीकार किया था। हर एक
व्यक्ति अपने दास-दासियों को स्वतन्त्र कर देगा और
उन्हें और अधिक समय तक दास के रूप में नहीं
रखेगा। हर एक व्यक्ति सहमत था और इस प्रकार सभी
दास स्वतन्त्र कर दिये गये। 11किन्तु उसके बाद उन
लोगों ने जिनके पास दास थे, अपने निर्णय को बदला
दिया। अत: उन्होंने स्वतन्त्र किये गये लोगों को फिर
पकड़ लिया और उन्हें दास बनाया।

12तब यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला: 13यिर्मयाह,
यहोवा इस्राएल के लोगों का परमेश्वर जो कहता है वह
यह है: “मैं तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर लाया जहाँ वे
दास थे। जब मैंने ऐसा किया तब मैंने उनसे एक वाचा
की। 14मैंने तुम्हारे पूर्वजों से कहा, ‘हर एक सात वर्ष के
अन्त में प्रत्येक व्यक्ति को अपने यहूदी दासों को स्वतन्त्र
कर देना चाहिये। यदि तुम्हारे यहाँ तुम्हारा ऐसा यहूदी
साथी है जो अपने को तुम्हारे हाथ बेच चुका है तो तुम्हें
उसे छ: महीने सेवा के बाद स्वतन्त्र कर देना चाहिये।’
किन्तु तुम्हारे पूर्वजों ने न तो मेरी सुनी, न ही उस पर
ध्यान दिया। 15कुछ समय पहले तुमने अपने हृदय को,
जो उचित है, उसे करने के लिये बदला। तुममें से हर
एक ने अपने उन यहूदी साथियों को स्वतन्त्र किया जो
दास थे और तुमने मेरे सामने उस मन्दिर में जो मेरे
नाम पर है एक वाचा भी की। 16किन्तु अब तुमने
अपने इरादे बदल दिये हैं। तुमने यह प्रकट किया है कि
तुम मेरे नाम का सम्मान नहीं करते। तुमने यह कैसे
किया? तुम में से हर एक ने अपने दास दासियों को
वापस ले लिया है जिन्हें तुमने स्वतन्त्र किया था। तुम
लोगों ने उन्हें फिर दास होने के लिये विवश किया है।

17“अत: जो यहोवा कहता है, वह यह है: ‘तुम लोगों
ने मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया है। तुमने अपने
साथी यहूदियों को स्वतन्त्रता नहीं दी है। क्योंकि तुमने
यह वाचा पूरी नहीं की है, इसलिये मैं “स्वतन्त्रता” दूँगा।’
यह यहोवा का सन्देश है। “तलवार से, भयंकर बीमारी

से और भूख से मारे जाने की स्वतन्त्रता मैं दूँगा। मै तुम्हें
कुछ ऐसा कर दूँगा कि जब वे तुम्हारे बारे में सुनेंगे तो
पृथ्वी के सारे राज्य भयभीत हो उठेंगे। 18मैं उन लोगों
को दूसरों के हाथ दूँगा जिन्होंने मेरी वाचा को तोड़ा है
और उस प्रतिज्ञा का पालन नहीं किया है जिसे उन्होंने
मेरे सामने की है। इन लोगों ने मेरे सामने एक बछड़े
को दो टुकड़ों में काटा और वे दोनों टुकड़ों के बीच से
गुजरे। 19ये वे लोग हैं जो उस समय बछड़े के टुकड़ों के
बीच से गुजरे जब उन्होंने मेरे साथ वाचा की थी: यहूदा
और यरूशलेम के प्रमुख, न्यायालयों के बड़े अधिकारी,
याजक और उस देश के लोग। 20अत: मैं उन लोगों को
उनके शत्रुओं और उन व्यक्तियों को दूँगा जो उन्हें मार
डालना चाहते हैं। उन व्यक्तियों के शव हवा में उड़ने
वाले पक्षियों और पृथ्वी पर के जंगली जानवरों के
भोजन बनेंगे। 21मैं यहूदा के राजा सिदकिय्याह और
उसके प्रमुखों को उनके शत्रुओं एवं जो उन्हें मार
डालना चाहते हैं, को दूँगा। मैं सिदकिय्याह और उनके
लोगों को बाबुल के राजा की सेना को तब भी दूँगा जब
वह सेना यरूशलेम को छोड़ चुकी होगी। 22किन्तु मैं
कसदी सेना को यरूशलेम में फिर लौटने का आदेश
दूँगा। यह सन्देश यहोवा का है। वह सेना यरूशलेम के
विरुद्ध लड़ेगी। वे इस पर अधिकार करेंगे, इसमें आग
लगायेंगे तथा इसे जला डालेंगे और मैं यहूदा के नगरों
को नष्ट कर दूँगा। वे नगर सूनी मरुभूमि हो जायेंगे।
वहाँ कोई व्यक्ति नहीं रहेगा।'"

रेकाबी परिवार का उत्तम उदाहरण

35 जब यहोयाकीम यहूदा का राजा था तब यहोवा
का सन्देश यर्मयाह का मिला। यहोयाकीम
राजा योशिय्याह का पुत्र था। यहोवा का सन्देश यह
था: 2"यिर्मयाह, रेकाबी परिवार के पास जाओ। उन्हें
यहोवा के मन्दिर के बगल के कमरों में से एक में
आने के लिये निमन्त्रित करो। उन्हें पीने के लिये
दाखमधु दो।"

3अत: मैं (यिर्मयाह) याजन्याह से मिलने गया। याजन्याह
उस यिर्मयाह नामक एक व्यक्ति का पुत्र था जो हबस्सिन्याह
नामक व्यक्ति का पुत्र था और मैं याजन्याह के सभी
भाइयों और पुत्रों से मिला। मैंने पूरे रेकाबी परिवार को
एक साथ इकट्ठा किया। 4तब मैं रेकाबी परिवार को
यहोवा के मन्दिर में ले आया। हम लोग उस कमरे में
गये जो हानान के पुत्रों का कहा जाता है। हानान
यिग्दल्याह नामक व्यक्ति का पुत्र था। हानान परमेश्वर
का व्यक्ति था। वह कमरा उस कमरे से अगला कमरा
था जिसमें यहूदा के राजकुमार ठहरते थे। यह शल्लूम
के पुत्र मासेयाह के कमरे के ऊपर था। मासेयाह
मन्दिर में द्वारपाल था। 5तब मैंने (यिर्मयाह) रेकाबी
परिवार के सामने कुछ प्यालों के साथ दाखमधु से भरे
कुछ कटोरे रखे और मैंने उनसे कहा, "थोड़ी दाखमधु
पीओ।"

6किन्तु रेकाबी लोगों ने उत्तर दिया, "हम दाखमधु
कभी नहीं पीते। हम इसलिये नहीं पीते क्योंकि हमारे
पूर्वज रेकाबी के पुत्र योनादाब ने यह आदेश दिया था:
'तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को दाखमधु कभी नहीं पीनी
चाहिये 7तुम्हें कभी घर बनाना, पौधे रोपना और अंगूर
की बेल नहीं लगानी चाहिये। तुम्हें उनमे से कुछ भी
नहीं करना चाहिये। तुम्हें केवल तम्बुओं में रहना चाहिये।
यदि तुम ऐसा करोगे तो उस प्रदेश में अधिक समय तक
रहोगे जहाँ तुम एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते
रहते हो।' 8इसलिये हम रेकाबी लोग उन सब चीजों का
पालन करते हैं जिन्हें हमारे पूर्वज योनादाब ने हमें
आदेश दिया है। 9हम दाखमधु कभी नहीं पीते और
हमारी पत्नियाँ पुत्र और पुत्रियाँ दाखमधु कभी नहीं
पीते। हम रहने के लिये घर कभी नहीं बनाते और हम
लोगों के अंगूर के बाग या खेत कभी नहीं होते और
हम फसलें कभी नहीं उगाते। 10हम तम्बूओं में रहे हैं
और वह सब माना है जो हमारे पूर्वज योनादाब ने
आदेश दिया है। 11किन्तु जब बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर
ने यहूदा देश पर आक्रमण किया तब हम लोग यरूशलेम
को गए। हम लोगों ने आपस में कहा, 'आओ हम
यरूशलेम नगर में शरण लें जिससे हम कसदी और
अरामी सेना से बच सकें।' अत: हम लोग यरूशलेम में
ठहर गए।"

12तब यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला: 13इस्राएल
के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है:
"यिर्मयाह, जाओ यहूदा एवं यरूशलेम के लोगों को यह
सन्देश दो: लोगों, तुम्हें सबक सीखना चाहिये और मेरे
सन्देश का पालन करना चाहिये:" यह सन्देश यहोवा
का है।

14"रेकाब के पुत्र योनादाब ने अपने पुत्रों को आदेश
दिया कि वे दाखमधु न पीएं, और उस आदेश का
पालन हुआ है। आज तक योनादाब के वंशजों ने अपने
पूर्वज के आदेश का पालन किया है। वे दाखमधु नहीं
पीते। किन्तु मैं तो यहोवा हूँ और यहूदा के लोगों, मैंने
तुम्हें बार बार सन्देश दिया है, किन्तु तुमने उसका
पालन नहीं किया। 15इस्राएल और यहूदा के लोगों, मैंने
अपने सेवक नबियों को तुम्हारे पास भेजा। मैंने उन्हें
तुम्हारे पास बार बार भेजा। उन नबियों ने तुमसे कहा,
'इस्राएल और यहूदा के लोगों, तुम सब को बुरा करना
छोड़ देना चाहिये। तुम्हें अच्छा होना चाहिये। अन्य देवताओं
का अनुसरण न करो। उन्हें न पूजो, न ही उनकी सेवा
करो। यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन करोगे तो तुम उस
देश में रहोगे जिसे मैंने तुम्हें और तुम्हारे पूर्वजों को
दिया है।' किन्तु तुम लोगों ने मेरे सन्देश पर ध्यान नहीं
दिया। 16योनादाब के वंशजों ने अपने पूर्वज के आदेश

को, जो उसने दिया, माना। किन्तु यहूदा के लोगों ने
मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया।"
17अत: इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान
यहोवा यह कहता है: "मैंने कहा कि यहूदा और यरूशलेम
के लिये बहुत सी बुरी घटनायें घटेंगी। मैं उन बुरी
घटनाओं को शीघ्र ही घटित कराऊँगा। मैंने उन लोगों
को समझाया, किन्तु उन्होंने मेरी एक न सुनी। मैंने
उन्हें पुकारा, किन्तु उन्होंने उत्तर नहीं दिया।"
18तब यिर्मयाह ने रेकाबी परिवार के लोगों से कहा,
"इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है,
'तुम लोगों ने अपने पूर्वज योनादाब के आदेश का
पालन किया है। तुमने योनादाब की सारी शिक्षाओं का
अनुसरण किया है। तुमने वह सब किया है जिसके लिये
उसने आदेश दिया था। 19इसलिये इस्राएल का परमेश्वर
सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है: रेकाब के पुत्र योनादाब
के वंशजों में से एक ऐसा सदैव होगा जो मेरी सेवाकरेगा।'"

राजा यहोयाकीम यिर्मयाह के पत्रकों को जला देता है

36 यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला। यह
योशिय्याह के पुत्र यहोयाकीम के यहूदा में
राज्यकाल के चौथे वर्ष हुआ। यहोवा का सन्देश यह
था: 2"यिर्मयाह, पत्रक लो और उन सन्देशों को उस पर
लिख डालो जिन्हें मैंने तुमसे कहे है। मैंने तुमसे इस्राएल
और यहूदा के राष्ट्रों एवं सभी राष्ट्रों के बारे में बातें की
हैं। जब से योशिय्याह राजा था तब से अब तक मैंने जो
सन्देश तुम्हें दिये हैं, उन्हें लिख डालो। 3संभव है, यहूदा
का परिवार यह सुने कि मैं उनके लिये क्या करने की
योजना बना रहा हूँ और संभव है वे बुरा काम करना
छोड़ दें। यदि वे ऐसा करेंगे तो मैं उन्हें, जो बुरे पाप
उन्होंने किये हैं, उसके लिये क्षमा कर दूँगा।"
4इसलिये यिर्मयाह ने बारुक नामक एक व्यक्ति को
बुलाया। बारुक, नेरिय्याह नामक व्यक्ति का पुत्र था।
यिर्मयाह ने उन सन्देशों को कहा जिन्हें यहोवा ने उसे
दिया था। जिस समय यिर्मयाह सन्देश दे रहा था उसी
समय बारुक उन्हें पत्रक पर लिख रहा था। 5तब यिर्मयाह
ने बारुक से कहा, "मैं यहोवा के मन्दिर में नहीं जा
सकता। मुझे वहाँ जाने की आज्ञा नहीं है। 6इसलिये मैं
चाहता हूँ कि तुम यहोवा के मन्दिर में आओ। वहाँ
उपवास के दिन जाओ और पत्रक से लोगों को सुनाओ।
उन सन्देशों को जिन्हें यहोवा ने तुम्हें दिया और जिनको
तुमने पत्रक में लिखा, उन्हें लोगों के सामने पढ़ो। उन
सन्देशों को यहूदा के सभी लोगों के सामने पढ़ो जो
अपने रहने के नगरों से यरूशलेम में आएं। 7शायद वे
लोग यहोवा से सहायता की याचना करें। कदाचित् हर
एक व्यक्ति बुरा काम करना छोड़ दे। यहोवा ने यह
घोषित कर दिया है कि वह उन लोगों पर बहुत क्रोधित
है।"
8अत: नेरिय्याह के पुत्र बारुक ने वह सब किया जिसे
यिर्मयाह नबी ने करने को कहा। बारुक ने उस पत्रक
को जोर से पढ़ा जिसमें यहोवा के सन्देश लिखे थे।
उसने इसे यहोवा के मन्दिर में पढ़ा।
9यहोयाकीम के राज्यकाल के पाँचवें वर्ष के नवें
महीने में एक उपवास घोषित हुआ। यह आज्ञा थी कि
यरूशलेम में रहने वाले सभी लोग और यहूदा के नगरों
से यरूशलेम में आने वाले लोग यहोवा के सामने उपवास
रखेंगे। 10उस समय बारुक ने उस पत्रक को पढ़ा
जिसमें यिर्मयाह के कथन थे। उसने पत्रक को यहोवा
के मन्दिर में पढ़ा। बारुक ने पत्रक को उन सभी लोगों
के सामने पढ़ा जो यहोवा के मन्दिर में थे। बारुक उस
समय ऊपरी आँगन में यमरिया के कमरे में था। वह
पत्रक को पढ़ रहा था। वह कमरा मन्दिर के नये द्वार
के पास स्थित था। यमरिया शापान का पुत्र था। यमरिया
मन्दिर में एक शास्त्री था।
11मीकायाह नामक एक व्यक्ति ने यहोवा के उन
सारे सन्देशों को सुना जिन्हें बारुक ने पत्रक से पढ़ा।
मीकायाह उस गमर्याह का पुत्र था जो शापान का पुत्र
था। 12जब मीकायाह ने पत्रक से सन्देश को सुना तो
वह राजा के महल में सचिव के कमरे में गया। राजकीय
सभी अधिकारी राजमहल में बैठे थे। उन अधिकारियों
के नाम ये हैं: सचिव एलीशामा, शमायाह का पुत्र दलायाह,
अबबोर का पुत्र एलनातान, शापान का पुत्र गमर्याह,
हनन्याह का पुत्र सिदकिय्याह और अन्य सभी राजकीय
अधिकारी भी वहाँ थे। 13मीकायाह ने उन अधिकारियों
से वह सब कहा जो उसने बारुक को पत्रक से पढ़ते
सुना था।
14तब उन अधिकारियों ने बारुक के पास यहूदी
नामक एक व्यक्ति को भेजा। यहूदी शेलेम्याह के पुत्र
नतन्याह का पुत्र था। शेलेम्याह कूशी का पुत्र था। यहूदी
ने बारुक से कहा, "वह पत्रक तुम लाओ जिसे तुमने
पढ़ा और मेरे साथ चलो"
नेरिय्याह के पुत्र बारुक ने पत्रक को लिया और
यहूदी के साथ अधिकारियों के पास गया।
15तब उन अधिकारियों ने बारुक से कहा, "बैठो
और पत्रक को हम लोगों के सामने पढ़ो।"
अत: बारुक ने उस पत्रक को उन्हें सुनाया।
16उन राजकीय अधिकारियों ने उस पत्रक से सभी
सन्देश सुने। तब वे डर गए और एक दूसरे को देखने
लगे। उन्होंने बारुक से कहा, "हमें पत्रक के सन्देश के
बारे में राजा यहोयाकीम से कहना होगा।"
17तब अधिकारियों ने बारुक से एक प्रश्न किया।
उन्होंने पूछा, "बारुक यह बताओ कि तुमने ये सन्देश
कहाँ से पाए जिन्हें तुमने इस पत्रक पर लिखा? क्या
तुमने उन सन्देशों को लिखा जिन्हें यिर्मयाह ने तुम्हें
बताया?"

18बारुक ने उत्तर दिया, "हाँ, यिर्मयाह ने कहा और मैंने सारे सन्देशों को स्याही से इस पत्रक पर लिखा।"

19तब राजकीय अधिकारियों ने बारुक से कहा, "तुम्हें और यिर्मयाह को कहीं जा कर छिप जाना चाहिये। किसी से न बताओ कि तुम कहाँ छिपे हो।"

20तब राजकीय अधिकारियों ने शास्त्री एलीशामा कमरे में पत्रक को रखा। वे राजा यहोयाकीम के पास गए और पत्रक के बारे में उसे सब कुछ बताया।

21अत: राजा यहोयाकीम ने यहूदी को पत्रक को लेने भेजा। यहूदी शास्त्री एलीशामा के कमरे से पत्रक को लाया। तब यहूदी ने राजा और उसके चारों ओर खड़े सभी सेवकों को पत्रक को पढ़ कर सुनाया। 22यह जिस समय हुआ, नवाँ महीना था, अत: राजा यहोयाकीम शीतकालीन महल– खण्ड में बैठा था। राजा के सामने अंगीठी में आग जल रही थी। 23यहूदी ने पत्रक से पढ़ना आरम्भ किया। किन्तु जब वह दो या तीन पक्तियाँ पढ़ता, राजा यहोयाकीम पत्रक को पकड़ लेता था। तब वह उन पक्तियों को एक छोटे चाकू से पत्रक में से काट डालता था और उन्हें अंगीठी में फेंक देता था। अन्तत: पूरा पत्रक आग में जला दिया गया 24जब राजा यहोयाकीम और उसके सेवकों ने पत्रक से सन्देश सुने तो वे डरे नहीं। उन्होंने अपने वस्त्र यह प्रकट करने के लिए नहीं फाड़े कि उन्हें अपने बुरे किये कामों के लिये दु:ख है।

25एलनातान, दलइया और यिर्मयाह ने राजा यहोयाकीम से पत्रक को न जलाने के लिये बात करने का प्रयत्न किया। किन्तु राजा ने उनकी एक न सुनी 26और राजा यहोयाकीम ने कुछ व्यक्तियों को आदेश दिया कि वे शास्त्री बारुक और यिर्मयाह नबी को बन्दी बनायें। ये व्यक्ति राजा का एक पुत्र अज्राएल का पुत्र सरायाह और अब्देल का पुत्र शेलेम्याह थे। किन्तु वे व्यक्ति बारुक और यिर्मयाह को न ढूंढ सके क्योंकि यहोवा ने उन्हें छिपा दिया था। 27यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला। यह तब हुआ जब यहोयाकीम ने यहोवा के उन सभी सन्देशों वाले पत्रक को जला दिया था, जिन्हें यिर्मयाह ने बारुक से कहा था और बारुक ने सन्देशों को पत्रक पर लिखा था। यहोवा का जो सन्देश यिर्मयाह को मिला, वह यह था:

28"यिर्मयाह, दूसरा पत्रक तैयार करो। इस पर उन सभी सन्देशों को लिखो जो प्रथम पत्रक पर थे। यानि वही पत्रक जिसे यहूदा के राजा यहोयाकीम ने जला दिया था। 29यिर्मयाह, यहूदा के राजा यहोयाकीम से यह भी कहो, यहोवा जो कहता है, वह यह है: 'यहोयाकीम तुमने उस पत्रक को जला दिया। तुमने कहा, "यिर्मयाह ने क्यों लिखा कि बाबुल का राजा निश्चय ही आएगा और इस देश को नष्ट करेगा? वह क्यों कहता है कि बाबुल का राजा इस देश के लोगों और जानवरों दोनों को नष्ट करेगा?"

30अत: यहूदा के राजा यहोयाकीम के बारे में जो यहोवा कहता है, वह यह है: यहोयाकीम के वंशज दाऊद के राज सिंहासन पर नहीं बैठेंगे। जब यहोयाकीम मरेगा उसे राजा जैसे अन्त्येष्टि नहीं दी जाएगी, अपितु उसका शव भूमि पर फेंक दिया जायेगा। उसका शव दिन की गर्मी में और रात के ठंडे पाले में छोड़ दिया जाएगा। 31यहोवा अर्थात मैं यहोयाकीम और उसकी सन्तान को दण्ड दूँगा और मैं उसके अधिकारियों को दण्ड दूँगा। मैं यह करूँगा क्योंकि वे दुष्ट हैं। मैंने उन पर तथा यरूशलेम के सभी निवासियों पर और यहूदा के लोगों पर भयंकर विपत्ति ढाने की प्रतिज्ञा की है। मैं अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार उन पर सभी बुरी विपत्तियाँ ढाऊँगा क्योंकि उन्होंने मेरी अनसुनी की है।'"

32तब यिर्मयाह ने दूसरा पत्रक लिया और उसे नेरिय्याह के पुत्र शास्त्री बारुक को दिया। जैसे यिर्मयाह बोलता जाता था वैसे ही बारुक उन्हीं सन्देशों को पत्रक पर लिखता जाता था जो उस पत्रक पर थे जिसे राजा यहोयाकीम ने आग में जला दिया था और उन्हीं सन्देशों की तरह बहुत सी अन्य बातें दूसरे पत्रक में जोड़ी गईं।

यिर्मयाह बन्दीगृह में डाला गया

37 नबूकदनेस्सर बाबुल का राजा था। नबूकदनेस्सर ने यहोयाकीम के पुत्र यकोन्याह के स्थान पर सिदकिय्याह को यहूदा का राजा नियुक्त किया। सिदकिय्याह राजा योशिय्याह का पुत्र था। 2किन्तु सिदकिय्याह ने यहोवा के उन सन्देशों पर ध्यान नहीं दिया जिन्हें यहोवा ने यिर्मयाह नबी को उपदेश देने के लिये दिया था और सिदकिय्याह के सेवकों तथा यहूदा के लोगों ने यहोवा के सन्देश पर ध्यान नहीं दिया।

3राजा सिदकिय्याह ने यहूकल नामक एक व्यक्ति और याजक सपन्याह को यिर्मयाह नबी के पास एक सन्देश लेकर भेजा। यहूकल शेलेम्याह का पुत्र था। याजक सपन्याह मासेयाह का पुत्र था। जो सन्देश वे यिर्मयाह के लिये लाये थे वह यह है: "यिर्मयाह, हमारे परमेश्वर यहोवा से हम लोगों के लिये प्रार्थना करो।"

4(उस समय तक, यिर्मयाह बन्दीगृह में नहीं डाला गया था, अत: जहाँ कहीं वह जाना चाहता था, जा सकता था। 5उस समय ही फिरौन की सेना मिस्र से यहूदा को प्रस्थान कर चुकी थी। बाबुल सेना ने पराजित करने के लिये, यरूशलेम नगर के चारों ओर घेरा डाल रखा था। तब उन्होंने मिस्र से उनकी ओर कूच कर चुकी हुई सेना के बारे में सुना था। अत: बाबुल की सेना मिस्र से आने वाली सेना से लड़ने के लिये, यरूशलेम से हट गई थी।)

6यहोवा का सन्देश यिर्मयाह नबी को सन्देश मिला: 7"इस्राएल के लोगों का परमेश्वर यहोवा जो कहता है, वह यह है: 'यहूकल और सपन्याह मैं जानता हूँ कि

यहूदा के राजा सिदकिय्याह ने तुम्हें मेरे पास प्रश्न
पूछने को भेजा है। राजा सिदकिय्याह को यह उत्तर दो,
फिरौन की सेना यहाँ आने और बाबुल की सेना के
विरुद्ध, तुम्हारी सहायता के लिये मिस्र से कूच कर
चुकी है। किन्तु फिरौन की सेना मिस्र लौट जाएगी।
8उसके बाद बाबुल की सेना यहाँ लौटेगी। यह यरूशलेम
पर आक्रमण करेगी। तब बाबुल की वह सेना यरूशलेम
पर अधिकार करेगी और उसे जला डालेगी।' **9**यहोवा
जो कहता है, वह यह है: 'यरूशलेम के लोगों, अपने
को मूर्ख मत बनाओ। तुम आपस में यह मत कहो,
बाबुल की सेना निश्चिय ही, हम लोगों को शान्त छोड़
देगी। वह नहीं छोड़ेगी। **10**यरूशलेम के लोगों, यदि तुम
बाबुल की उस सारी सेना को ही क्यों न पराजित कर
डालो जो तुम पर आक्रमण कर रही है, तो भी उनके
डेरों में कुछ घायल व्यक्ति बच जाएंगे। वे थोड़े घायल
व्यक्ति भी अपने डेरों से बाहर निकलेंगे और यरूशलेम
को जलाकर राख कर देंगे।'"

11जब बाबुल सेना ने मिस्र के फिरौन की सेना के
साथ युद्ध करने के लिये यरूशलेम को छोड़ा, **12**तब
यिर्मयाह यरूशलेम से बिन्यामीन प्रदेश की यात्रा करना
चाहता था। वहाँ वह अपने परिवार की कुछ सम्पत्ति के
विभाजन में भाग लेने जा रहा था। **13**किन्तु जब यिर्मयाह
यरूशलेम के बिन्यामीन द्वार पर पहुँचा तब रक्षकों के
अधिकारी कप्तान ने उसे बन्दी बना लिया। कप्तान
का नाम यिरिय्याह था। यिरिय्याह शेलेम्याह का पुत्र
था। शेलेम्याह हनन्याह का पुत्र था। इस प्रकार कप्तान
यिरिय्याह ने यिर्मयाह को बन्दी बनाया और कहा,
"यिर्मयाह, तुम हम लोगों को बाबुल पक्ष में मिलने के
लिये, छोड़ रहे हो।"

14यिर्मयाह ने यिरिय्याह से कहा, "यह सच नहीं है। मैं
कसदियों के साथ मिलने के लिये नहीं जा रहा हूँ।"
किन्तु यिरिय्याह ने यिर्मयाह की एक न सुनी। यिरिय्याह
ने यिर्मयाह को बन्दी बनाया और उसे यरूशलेम के
राजकीय अधिकारियों के पास ले गया। **15**वे अधिकारी
यिर्मयाह पर बहुत क्रोधित थे। उन्होंने यिर्मयाह को
पीटने का आदेश दिया। तब उन्होंने यिर्मयाह को बन्दी
गृह में डाल दिया। बन्दीगृह योनातान नामक व्यक्ति के
घर में था। योनातान यहूदा के राजा का शास्त्री था।
योनातान का घर बन्दीगृह बना दिया गया था। **16**उन
लोगों ने यिर्मयाह को योनातान के घर की एक कोठरी
में रखा। वह कोठरी जमीन के नीचे कूप–गृह थी।
यिर्मयाह उसमें लम्बे समय तक रहा।

17तब राजा सिदकिय्याह ने यिर्मयाह को बुलवाया
और उसे राजमहल में लाया गया। सिदकिय्याह ने यिर्मयाह
से एकान्त में बातें कीं। उसने यिर्मयाह से पूछा, "क्या
यहोवा को कोई सन्देश है?" यिर्मयाह ने उत्तर दिया,
"हाँ, यहोवा का सन्देश है। सिदकिय्याह, तुम बाबुल के
राजा के हाथ में दे दिये जाओगे।" **18**तब यिर्मयाह ने
राजा सिदकिय्याह से कहा, "मैंने कौन सा अपराध
किया है? मैंने कौन सा अपराध तुम्हारे, तुम्हारे
अधिकारियों या यरूशलेम के विरुद्ध किया है? तुमने
मुझे बन्दीगृह में क्यों फेंका? **19**राजा सिदकिय्याह, तुम्हारे
नबी अब कहाँ है? उन नबियों ने तुम्हें झूठा सन्देश
दिया। उन्होंने कहा, 'बाबुल का राजा तुम पर या यहूदा
देश पर आक्रमण नहीं करेगा।' **20**किन्तु अब मेरे यहोवा,
यहूदा के राजा, कृपया मेरी सुन। कृपया मेरा निवेदन
अपने तक पहुँचने दे। मैं आपसे इतना माँगता हूँ। शास्त्री
योनातान के घर मुझे वापस न भेजे। यदि आप मुझे वहाँ
भेजेंगे मैं वहीं मर जाऊँगा। **21**अत: राजा सिदकिय्याह ने
यिर्मयाह के लिये आँगन में रक्षकों के संरक्षण में रहने
का आदेश दिया और उसने यह आदेश दिया कि यिर्मयाह
को सड़क पर रोटी बनाने वालों से रोटियाँ दी जानीं
चाहियें। यिर्मयाह को तब तक रोटी दी जाती रही जब
तक नगर में रोटी समाप्त नहींहुई। इस प्रकार यिर्मयाह
आँगन में रक्षकों के संरक्षण में रहा।

यिर्मयाह हौज में फेंक दिया जाता है

38 कुछ राजकीय अधिकारियों ने यिर्मयाह द्वारा
दिये जा रहे उपदेश को सुना। वे मत्तान के पुत्र
शपन्याह, पशहूर के पुत्र गदल्याह, शेलेम्याह का पुत्र
यहूकल, और मल्किय्याह का पुत्र पशहूर थे। यिर्मयाह
सभी लोगों को यह सन्देश दे रहा था।

2"जो यहोवा कहता है, वह यह है: 'जो कोई भी
यरूशलेम में रहेंगे वे सभी तलवार, भूख, भंयकर बीमारी
से मरेंगे। किन्तु जो भी बाबुल की सेना को आत्मसमर्पण
करेगा, जीवित रहेगा। वे लोग जीवित बचा जाये।' **3**और
यहोवा यही कहता है, 'यह यरूशलेम नगर बाबुल के
राजा की सेना को, निश्चय ही, दिया जाएगा। वह इस
नगर पर अधिकार करेगा।'"

4तब जिन राजकीय अधिकारियों ने यिर्मयाह के उस
कथन को सुना जिसे वह लोगों से कह रहा था, वे राजा
सिदकिय्याह के पास गए। उन्होंने राजा से कहा, "यिर्मयाह
को अवश्य मार डालना चाहिये। वह उन सैनिकों को
भी हतोत्साहित कर रहा है जो अब तक नगर में हैं।
यिर्मयाह जो कुछ कह रहा है उससे वह हर एक का
साहस तोड़ रहा है। यिर्मयाह हम लोगों का भला होता
नहीं देखनाचाहता। वह यरूशलेम के लोगों को बरबाद
करना चाहता है।"

5अत: राजा सिदकिय्याह ने उन अधिकारियों से कहा,
"यिर्मयाह तुम लोगों के हाथ में है। मैं तुम्हें रोकने के
लिये कुछ नहीं कर सकता।"

6अत: उन अधिकारियों ने यिर्मयाह को लिया और
उसे मल्किय्याह के हौज में डाल दिया। (मल्किय्याह
राजा का पुत्र था।) वह हौज मन्दिर के आँगन में था

जहाँ राजा के रक्षक ठहरते थे। उन अधिकारियों ने
यिर्मयाह को हौज में उतारने के लिये रस्सी का उपयोग
किया। हौज में पानी बिल्कुल नहीं था, उसमें केवल
कीचड़ थी और यिर्मयाह कीचड़ में धंस गया।

7किन्तु एबेदमेलेक नामक एक व्यक्ति ने सुना कि
अधिकारियों ने यिर्मयाह को हौज में रखा है। एबेदमेलेक
कूश का निवासी था और वह राजा के महल में खोजा
था। राजा सिदकिय्याह बिन्यामीन द्वार पर बैठा था।
अत: एबेदमेलेक राजमहल से निकला और राजा से
बातें करने उस द्वार पर पहुँचा। **8-9**एबेदमेलेक ने कहा,
"मेरे स्वामी राजा उन अधिकारियों ने दुष्टता का काम
किया है। उन्होंने यिर्मयाह नबी के साथ दुष्टता की है।
उन्होंने उसे हौज में डाल दिया है।" उन्होंने उसे वहाँ
मरने को छोड़ दिया है।"

10तब राजा सिदकिय्याह ने कूशी एबेदमेलेक को
आदेश दिया। आदेश यह था: "एबेदमेलेक राजमहल से
तुम तीन व्यक्ति अपने साथ लो। जाओ और मरने से
पहले यिर्मयाह को हौज से निकालो।"

11अत: एबेदमेलेक ने अपने साथ व्यक्तियों को लिया।
किन्तु पहले वह राजमहल के भंडारगृह के एक कमरे
में गया। उसने कुछ पुराने कम्बल और फटे पुराने
कपड़े उस कमरे से लिये। तब उसने उन कम्बलों को
रस्सी के सहारे हौज में यिर्मयाह के पास पहुँचाया।

12कूशी एबेदमेलेक ने यिर्मयाह से कहा, "इन पुराने
कम्बलों और चिथड़ों को अपनी बगल के नीचे लगाओ।
जब हम लोग तुम्हें खींचेंगे तो ये तुम्हारी बाँहों के नीचे
गदेले बनेंगे। तब रस्सियाँ तुम्हें चुभेंगी नहीं।" अत: यिर्मयाह
ने वही किया जो एबेदमेलेक ने कहा। **13**उन लोगों ने
यिर्मयाह को रस्सियों से ऊपर खींचा और हौज के
बाहर निकाल लिया और यिर्मयाह मन्दिर के आँगन में
रक्षकों के संरक्षण में रहा। सिदकिय्याह यिर्मयाह से
फिर प्रश्न पूछता है

14तब राजा सिदकिय्याह ने किसी को यिर्मयाह नबी
को लाने के लिये भेजा। उसने यहोवा के मन्दिर के
तीसरे द्वार पर यिर्मयाह को मंगवाया। तब राजा ने कहा,
"यिर्मयाह, मैं तुमसे कुछ पूछ रहा हूँ। मुझसे कुछ भी न
छिपाओ, मुझे सब ईमानदारी से बताओ।"

15यिर्मयाह ने सिदकिय्याह से कहा, "यदि मैं आपको
उत्तर दूँगा तो संभव है आप मुझे मार डालें और यदि मैं
आपको सलाह भी दूँ तो आप उसे नहीं मानेंगे।"

16किन्तु राजा सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से शपथ खाई।
सिदकिय्याह ने यह गुप्त रूप से किया। यह वह है जो
सिदकिय्याह ने शपथ ली, "यिर्मयाह जैसा कि यहोवा
शाश्वत है, जिसने हमें प्राण और जीवन दिया है यिर्मयाह।
मैं तुम्हें मारूँगा नहीं और मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं
तुम्हें उन अधिकारियों को नहीं दूँगा जो तुम्हें मार
डालना चाहते हैं।"

17तब यिर्मयाह ने राजा सिदकिय्याह से कहा, "यह
वह है जिसे सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा इस्राएल के
लोगों का परमेश्वर कहता है, 'यदि तुम बाबुल के राजा
के अधिकारियों को आत्मसमर्पण करोगे तो तुम्हारा
जीवन बच जाएगा और यरूशलेम जलाकर राख नहीं
किया जाएगा, तुम और तुम्हारा परिवार जीवित रहेगा।
18किन्तु यदि तुम बाबुल के राजा के अधिकारियों को
आत्मसमर्पण करने से इन्कार करोगे तो यरूशलेम
बाबुल सेना को दे दिया जाएगा। वे यरूशलेम को जलाकर
राख कर देंगे और तुम स्वयं उनसे बचकर नहीं निकल
पाओगे।'"

19तब राजा सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से कहा, "किन्तु
मैं यहूदा के उन लोगों से डरता हूँ जो पहले ही बाबुल
सेना से जा मिले हैं। मुझे भय है कि सैनिक मुझे यहूदा
के उन लोगों को दे देंगे और वे मेरे साथ बुरा व्यवहार
करेंगे और चोट पहुँचायेंगे।"

20किन्तु यिर्मयाह ने उत्तर दिया, "सैनिक तुम्हें यहूदा
के उन लोगों को नहीं देंगे। राजा सिदकिय्याह, जो मैं
कह रहा हूँ उसे करके, यहोवा की आज्ञा का पालन
करो। तब सभी कुछ तुम्हारे भले के लिये होगा और
तुम्हारा जीवन बच जाएगा। **21**किन्तु यदि तुम बाबुल की
सेना के सामने आत्मसमर्पण करने से इन्कार करते हो
तो यहोवा ने मुझे दिखा दिया है कि क्या होगा। यह वह
है जो यहोवा ने मुझसे कहा है: **22**वे सभी स्त्रियाँ जो
यहूदा के राजमहल में रह गई हैं बाहर लाई जाएंगी। वे
बाबुल के राजा के बड़े अधिकारियों के सामने लाई
जायेंगी। तुम्हारी स्त्रियाँ एक गीत द्वारा तुम्हारी खिल्ली
उड़ाएंगी। जो कुछ स्त्रियाँ कहेंगी वह यह है:

'तुम्हारे अच्छे मित्र तुम्हें गलत राह ले गए और वे
तुमसे अधिक शक्तिशाली थे। वे ऐसे मित्र थे जिन पर
तुम्हारा विश्वास था। तुम्हारे पाँव कीचड़ में फँसे है।
तुम्हारे मित्रों ने तुम्हें छोड़ दिया है।'

23तुम्हारी सभी पत्नियाँ और तुम्हारे बच्चे बाहर लाये
जाएंगे। वे बाबुल सेना को दे दिये जाएंगे। तुम स्वयं
बाबुल की सेना से बचकर नहीं निकल पाओगे। तुम
बाबुल के राजा द्वारा पकड़े जाओगे और यरूशलेम
जलाकर राख कर दिया जाएगा।"

24तब सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से कहा, "किसी व्यक्ति
से यह मत कहना कि मैं तुमसे बातें करता रहा। यदि
तुम कहोगे तो तुम मारे जाओगे। **25**वे अधिकारी पता
लगा सकते हैं कि मैंने तुमसे बातें कीं। तब वे तुम्हारे
पास आएंगे और तुमसे कहेंगे, 'यिर्मयाह, यह बताओ कि
तुमने राजा सिदकिय्याह से क्या कहा और हमें यह
बताओ कि राजा सिदकिय्याह ने तुमसे क्या कहा? हम
लोगों के प्रति ईमानदार रहो और हमें सब कुछ बता दो,
नहीं तो हम तुम्हें मार डालेंगे।' **26**यदि वे तुमसे ऐसा कहें
तो उनसे कहना, 'मैं राजा से प्रार्थना कर रहा था कि वे

मुझे योनातान के घर के नीचे कूप–गृह में वापस न
भेजें। यदि मुझे वहाँ वापस जाना पड़ा तो मैं मर जाऊँगा।'"
27ऐसा हुआ कि राजा के वे राजकीय अधिकारी
यिर्मयाह से पूछने उसके पास आ गए। अत: यिर्मयाह ने
वह सब कहा जिसे कहने का आदेश राजा ने दिया था।
तब उन अधिकारियों ने यिर्मयाह को अकेले छोड़
दिया। किसी व्यक्ति को पता न चला कि यिर्मयाह और
राजा ने क्या बातें कीं।
28इस प्रकार यिर्मयाह रक्षकों के संरक्षण में मन्दिर
के आँगन में उस दिन तक रहा जिस दिन यरूशलेम
पर अधिकार कर लिया गया।

यरूशलेम का पतन

39 यरूशलेम पर जिस तरह अधिकार हुआ वह
यह है: यहूदा के राजा सिदकिय्याह के
राज्यकाल के नवें वर्ष के दसवें महीने में बाबुल के
राजा नबूकदनेस्सर ने अपनी पूरी सेना के साथ यरूशलेम
के विरुद्ध कूच किया। उसने हराने के लिये नगर का
घेरा डाला 2और सिदकिय्याह के ग्यारहवें वर्ष के चौथे
महीने के नौवें दिन यरूशलेम की चहारदीवारी टूटी।
3तब बाबुल के राजा के सभी राजकीय अधिकारी
यरूशलेम नगर में घुस आए। वे अन्दर आए और बीच
वाले द्वार पर बैठ गए। उन अधिकारियों के नाम ये हैं:
समगर जिले का प्रशासक नेर्गलसरेसेर एक बहुत उच्च
अधिकारी नेबो–सर्सकीम अन्य उच्च अधिकारी और
बहुत से अन्य बड़े अधिकारी भी वहाँ थे।
4यहूदा के राजा सिदकिय्याह ने बाबुल के उन
पदाधिकारियों को देखा, अत: वह और उसके सैनिक
वहाँ से भाग गये। उन्होंने रात में यरूशलेम को छोड़ा
और राजा के बाग से होकर बाहर निकले। वे उस द्वार
से गए जो दो दीवारों के बीच था। तब वे मरुभूमि की
ओर बढ़े। 5किन्तु बाबुल की सेना ने सिदकिय्याह और
उसके साथ की सेना का पीछा किया। कसदियों की
सेना ने यरीहो के मैदान में सिदकिय्याह को जा पकड़ा
उन्होंने सिदकिय्याह को पकड़ा और उसे बाबुल के
राजा नबूकदनेस्सर के पास ले गए। नबूकदनेस्सर हमात
प्रदेश के रिबला नगर में था। उस स्थान पर नबूकदनेस्सर
ने सिदकिय्याह के लिये निर्णय सुनाया। 6वहाँ रिबला
नगर में बाबुल के राजा ने सिदकिय्याह के पुत्रों को
उसके सामने मार डाला और सिदकिय्याह के सामने ही
नबूकदनेस्सर ने यहूदा के सभी राजकीय अधिकारियों
को मार डाला। 7तब नबूकदनेस्सर ने सिदकिय्याह की
आँखे निकाल लीं। उसने सिदकिय्याह को काँसे की
जंजीर से बाँधा और उसे बाबुल ले गया।
8बाबुल की सेना ने राजमहल और यरूशलेम के
लोगों के घरों में आग लगा दी और उन्होंने यरूशलेम
की दीवारें गिरा दीं। 9नबूजरदान नामक एक व्यक्ति
बाबुल के राजा के विशेष रक्षकों का अधिनायक था।
उसने उन लोगों को लिया जो यरूशलेम में बच गए थे
और उन्हें बन्दी बना लिया। वह उन्हें बाबुल ले गया।
नबूजरदान ने यरूशलेम के उन लोगों को भी बन्दी
बनाया जो पहले ही उसे आत्मसमर्पण कर चुके थे।
उसने यरूशलेम के अन्य सभी लोगों को बन्दी बनाया
और उन्हें बाबुल ले गया। 10किन्तु विशेष रक्षकों के
अधिनायक नबूजरदान ने यहूदा के कुछ गरीब लोगों
को अपने पीछे छोड़ दिया। वे ऐसे लोग थे जिनके पास
कुछ नहीं था। इस प्रकार उस दिन नबूजरदान ने उन
यहूदा के गरीब लोगों को अंगूर के बाग और खेत दिये।
11किन्तु नबूकदनेस्सर ने नबूजरदान को यिर्मयाह के
बारे में कुछ आदेश दिये। नबूजरदान, नबूकदनेस्सर के
विशेष रक्षकों का अधिनायक था। आदेश ये थे:
12"यिर्मयाह को ढूँढो और उसकी देख–रेख करो।
उसे चोट न पहुँचाओ। उसे वह सब दो, जो वह माँगे।"
13अत: राजा के विशेष रक्षकों के अधिनायक
नबूजरदान बाबुल की सेना का एक मुख्य पदाधिकारी
नबूसजबान एक उच्च अधिकारी नेर्गलसरेसेर और बाबुल
की सेना के अन्य सभी अधिकारी यिर्मयाह की खोज में
भेजे गए।
14उन लोगों ने यिर्मयाह को मन्दिर के आँगन से
निकाला जहाँ वह यहूदा के राजा के रक्षकों के संरक्षण
में पड़ा था। कसदी सेना के उन अधिकारियों ने यिर्मयाह
को गदल्याह के सुपुर्द किया। गदल्याह अहीकाम का
पुत्र था। अहीकाम शापान का पुत्र था। गदल्याह को
आदेश था कि वह यिर्मयाह को उसके घर वापस ले
जाये। अत: यिर्मयाह अपने घर पहुँचा दिया गया और
वह अपने लोगों में रहने लगा।

एबेदमेलेक को यहोवा से सन्देश

15जिस समय यिर्मयाह रक्षकों के संरक्षण में मन्दिर
के आँगन में था, उसे यहोवा का एक सन्देश मिला।
सन्देश यह था, 16"यिर्मयाह, जाओ और कूश के
एबेदमेलेक को यह सन्देश दो: यह वह सन्देश है, जिसे
सर्वशक्तिमान यहोवा इस्राएल के लोगों का परमेश्वर
देता है: 'बहुत शीघ्र ही मैं इस यरूशलेम नगर सम्बन्धी
अपने सन्देशों को सत्य घटित करूँगा। मेरा सन्देश
विनाश लाकर सत्य होगा। अच्छी बातों को लाकर
नहीं। तुम सभी इस सत्य को घटित होता हुआ अपनी
आँखों से देखोगे। 17किन्तु एबेदमेलेक उस दिन मैं तुम्हें
बचाऊँगा।' यह यहोवा का सन्देश है। 'तुम उन लोगों को
नहीं दिये जाओगे जिनसे तुम्हें भय है। 18एबेदमेलेख मैं
तुझे बचाऊँगा। तुम तलवार के घाट नहीं उतारे जाओगे,
अपितु बच निकलोगे और जीवित रहोगे। ऐसा होगा,
क्योंकि तुमने मुझ पर विश्वास किया है।'" यह सन्देश
यहोवा का है।

यिर्मयाह स्वतन्त्र किया जाता है

40 रामा नगर में स्वतन्त्र किये जाने के बाद
यिर्मयाह को यहोवा का सन्देश मिला। बाबुल
के राजा के विशेष रक्षकों के अधिनायक नबूज़रदान
को यिर्मयाह रामा में मिला। यिर्मयाह जंजीरों में बंधा था।
वह यरूशलेम और यहूदा के सभी बन्दियों के साथ था।
वे बन्दी बाबुल को बन्धुवाई में ले जाए जा रहे थे। 2जब
अधिनायक नबूज़रदान को यिर्मयाह मिला तो उसने
उससे बातें कीं। उसने कहा, “यिर्मयाह तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा ने यह घोषित किया था कि यह विपत्ति इस
स्थान पर आएगी 3और अब यहोवा ने सब कुछ वह
कर दिया है जिसे उसने करने को कहा था। यह विपत्ति
इसलिये आई कि यहूदा के लोगों, तुमने यहोवा के
विरुद्ध पाप किये। तुम लोगों ने यहोवा की आज्ञा नहीं
मानी। 4किन्तु यिर्मयाह, अब मैं तुम्हें स्वतन्त्र करता हूँ।
मैं तुम्हारी कलाइयों से जंजीर उतार रहा हूँ। यदि तुम
चाहो तो मेरे साथ बाबुल चलो और मैं तुम्हारी अच्छी
देखभाल करुँगा। किन्तु यदि तुम मेरे साथ चलना नहीं
चाहते तो न चलो। देखो पूरा देश तुम्हारे लिये खुला है।
तुम जहाँ चाहो जाओ। 5अथवा शापान के पुत्र अहीकाम
के पुत्र गदल्याह के पास लौट जाओ। बाबुल के राजा ने
यहूदा के नगरों का प्रशासक गदल्याह को चुना है।
जाओ और गदल्याह के साथ लोगों के बीच रहो या तुम
जहाँ चाहो जा सकते हो।”

तब नबूज़रदान ने यिर्मयाह को कुछ भोजन और भेंट
दिया तथा उसे विदा किया। 6इस प्रकार यिर्मयाह अहीकाम
के पुत्र गदल्याह के पास मिस्पा गया। यिर्मयाह गदल्याह
के साथ उन लोगों के बीच रहा जो यहूदा देश में छोड़
दिये गए थे।

गदल्याह का अल्पकालीन शासन

7यहूदा की सेना के कुछ सैनिक, अधिकारी और
उनके लोग, जब यरूशलेम नष्ट हो रहा था, खुले मैदान
में थे। उन सैनिकों ने सुना कि अहीकाम के पुत्र
गदल्याह को बाबुल के राजा ने प्रदेश में बचे लोगों का
प्रशासक नियुक्त किया है। बचे हुए लोगों में वे सभी स्त्री,
पुरुष और बच्चे थे जो बहुत अधिक गरीब थे और
बन्दी बनाकर बाबुल नहीं पहुँचाये गए थे। 8अत: वे
सैनिक गदल्याह के पास मिस्पा में आए। वे सैनिक
नतन्याह का पुत्र इश्माएल, योहानान और उसका भाई
योनातान, कारेह के पुत्र तन्हूसेत का पुत्र सरायाह,
नतोपावासी एपै के पुत्र माकावासी का पुत्र याजन्याह
और उनके साथ के पुरुषथे।

9शापान के पुत्र अहीकाम के पुत्र गदल्याह ने उन
सैनिकों और उनके लोगों को अधिक सुरक्षित अनुभव
कराने की शपथ खाई। गदल्याह ने जो कहा, वह यह
है: “सैनिकों तुम लोग कसदी लोगों की सेवा करने से
भयभीत न हो। इस प्रदेश में बस जाओ और बाबुल के
राजा की सेवा करो। यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम्हारा
सब कुछ भला होगा। 10मैं स्वयं मिस्पा में रहूँगा। मैं उन
कसदी लोगों से तुम्हारे लिये बातें करूँगा जो यहाँ आएंगे।
तुम लोग यह काम मुझ पर छोड़ो। तुम्हें दाखमधु ग्रीष्म
के फल और तेल पैदा करना चाहिये। जो तुम पैदा करो
उसे अपने इकट्ठा करने के घड़ों में भरो। उन नगरों
में रहो जिस पर तुमने अधिकार कर लिया है।”

11यहूदा के सभी लोगों ने, जो मोआब, अम्मोन, एदोम
और अन्य सभी प्रदेशों में थे, सुना कि बाबुल के राजा
ने यहूदा के कुछ लोगों को उस देश में छोड़ दिया है
और उन्होंने यह सुना कि बाबुल के राजा ने शापान के
पौत्र एवं अहीकाम के पुत्र गदल्याह को उनका प्रशासक
नियुक्त किया है। 12जब यहूदा के लोगों ने यह खबर
पाई, तो वे यहूदा प्रदेश में लौट आए । वे गदल्याह के
पास उन सभी देशों से मिस्पा लौटे, जिनमें वे बिखर गए
थे। अत: वे लौटे और उन्होंने दाखमधु और ग्रीष्म फलों
की बड़ी फसल काटी।

13कारेह का पुत्र योहानान और यहूदा की सेना के
सभी अधिकारी, जो अभी तक खुले प्रदेशों में थे, गदल्याह
के पास आए। गदल्याह मिस्पा नगर में था। 14योहानान
और उसके साथ के अधिकारियों ने गदल्याह से कहा,
“क्या तुम्हें मालूम है कि अम्मोनी लोगों का राजा बालीस
तुम्हें मार डालना चाहता है? उसने नतन्याह के पुत्र
इश्माएल को तुम्हें मार डालने के लिये भेजा है।” किन्तु
अहीकाम के पुत्र गदल्याह ने उन पर विश्वास नहीं
किया।

15तब कारेह के पुत्र योहानान ने मिस्पा में गदल्याह
से गुप्त वार्ता की। योहानान ने गदल्याह से कहा, “मुझे
जाने दो और नतन्याह के पुत्र इश्माएल को मार डालने
दो। कोई भी व्यक्ति इस बारे में नहीं जानेगा। हम लोग
इश्माएल को तुम्हें मारने नहीं देंगे। वह यहूदा के उन
सभी लोगों को जो तुम्हारे पास इकट्ठे हुए हैं, विभिन्न
देशों में फिर से बिखेर देगा और इसका यह अर्थ होगा
कि यहूदा के थोड़े से बचे-खुचे लोग भी नष्ट हो
जायेंगे।”

16किन्तु अहीकाम के पुत्र गदल्याह ने कारेह के पुत्र
योहानान से कहा, “इश्माएल को न मारो। इश्माएल के
बारे में जो तुम कह रहे हो, वह सत्य नहीं है।”

41 सातवें महीने में नतन्याह (एलीशामा का पुत्र)
का पुत्र इश्माएल, अहीकाम के पुत्र गदल्याह
के पास आया। इश्माएल अपने दस व्यक्तियों के साथ
आया। वे लोग मिस्पा नगर में आए थे। इश्माएल राजा
के परिवार का सदस्य था। वह यहूदा के राजा के
अधिकारियों में से एक था। इश्माएल और उसके लोगों
ने गदल्याह के साथ खाना खाया। 2जब वे साथ भोजन
कर रहे थे तभी इश्माएल और उसके दस व्यक्ति उठे

और अहीकाम के पुत्र गदल्याह को तलवार से मार
दिया। गदल्याह वह व्यक्ति था जिसे बाबुल के राजा ने
यहूदा का प्रशासक चुना था। 3इश्माएल ने यहूदा के
उन सभी लोगों को भी मार डाला जो मिस्पा में गदल्याह
के साथ थे। इश्माएल ने उन कसदी सैनिकों को भी
मार डाला जो गदल्याह के साथ थे।

4-5गदल्याह की हत्या के एक दिन बाद अस्सी व्यक्ति
मिस्पा आए। वे अन्नबलि और सुगन्धि यहोवा के मन्दिर
के लिये ला रहे थे। उन अस्सी व्यक्तियों ने अपनी दाढ़ी
मुड़ा रखी थी, अपने वस्त्र फाड़ डाले थे और अपने को
काट रखा था। वे शकेम, शीलो और शोमरोन से आए
थे। इनमें से कोई भी यह नहीं जानता था कि गदल्याह
की हत्या कर दी गई है। 6इश्माएल मिस्पा नगर से उन
अस्सी व्यक्तियों से मिलने गया। उनसे मिलने जाते समय
वह रोता रहा। इश्माएल उन अस्सी व्यक्तियों से मिला
और उसने कहा, "अहीकाम के पुत्र गदल्याह से मिलने
मेरे साथ चलो।"

7वे अस्सी व्यक्ति मिस्पा नगर में गए। तब इश्माएल
और उसके व्यक्तियों ने उनमें से सत्तर लोगों को मार
डाला। इश्माएल और उसके व्यक्तियों ने उन सत्तर
व्यक्तियों के शवों को एक गहरे हौज में डाल दिया।

8किन्तु बचे हुए दस व्यक्तियों ने इश्माएल से कहा,
"हमें मत मारो। हमारे पास गेहूँ और जौ हैं और हमारे
पास तेल और शहद है। हम लोगों ने उन चीजों को एक
खेत में छिपा रखा है।" अत: इश्माएल ने उन व्यक्तियों
को छोड़ दिया। उसने अन्य लोगों के साथ उनको नहीं
मारा। 9(वह हौज बहुत बड़ा था। यह यहूदा के आसा
नामक राजा द्वारा बनवाया गया था। राजा आसा ने उसे
इसलिये बनाया था कि युद्ध के दिनों में नगर को उससे
पानी मिलता रहे। आसा ने यह काम इस्राएल के राजा
बाशा से नगर की रक्षा के लिये किया था। इश्माएल ने
उस हौज में इतने शव डाले कि वह भर गया।)

10इश्माएल ने मिस्पा नगर के अन्य सभी लोगों को
भी पकड़ा। (उन लोगों में राजा की पुत्रियाँ और वे अन्य
सभी लोग थे जो वहाँ बच गए थे। वे ऐसे लोग थे जिन्हें
नबूजरदान ने गदल्याह पर नजर रखने के लिये चुना
था। नबूजरदान बाबुल के राजा के विशेष रक्षकों का
अधिनायक था। अत: इश्माएल ने उन लोगों को पकड़ा
और अम्मोनी लोगों के देश में जाने के लिये बढ़ना
आरम्भ किया।)

11कारेह का पुत्र योहानान और उसके साथ के सभी
सैनिक अधिकारियों ने उन सभी दुराचारों को सुना जो
इश्माएल ने किये। 12इसलिये योहानान और उसके
साथ के सैनिक अधिकारियों ने अपने व्यक्तियों को
लिया और नतन्याह के पुत्र इश्माएल से लड़ने गए।
उन्होंने इश्माएल को उस बड़े पानी के हौज के पास
पकड़ा जो गिबोन नगर में है। 13उन बन्दियों ने जिन्हें
इश्माएल ने बन्दी बनाया था, योहानान और सैनिक
अधिकारियों को देखा। वे लोग अति प्रसन्न हुए। 14तब
वे सभी लोग जिन्हें इश्माएल ने मिस्पा में बन्दी बनाया
था, कारेह के पुत्र योहानान के पास दौड़ पड़े। 15किन्तु
इश्माएल और उसके आठ व्यक्ति जोहानान से बच
निकले। वे अम्मोनी लोगों के पास भाग गये।

16अत: कारेह के पुत्र योहानान और उसके सभी
सैनिक अधिकारियों ने बन्दियों को बचा लिया। इश्माएल
ने गदल्याह की हत्या की थी और उन लोगों को मिस्पा
से पकड़लिया था। बचे हुए लोगों में सैनिक, स्त्रियाँ,
बच्चे, और अदालतके अधिकारी थे। योहानान उन्हें
गिबोन नगर से वापस लाया।

मिस्र को बच निकलना

17-18योहानान तथा अन्य सैनिक अधिकारी कसदियों
से भयभीत थे। बाबुल के राजा ने गदल्याह को यहूदा
का प्रशासक चुना था। किन्तु इश्माएल ने गदल्याह की
हत्या कर दी थी और योहानान को भय था कि कसदी
क्रोधित होंगे। अत: उन्होंने मिस्र को भाग निकलने का
निश्चय किया। मिस्र के रास्ते में वे गेरथ किम्हाम में
रुके। गेरथ किम्हाम बेतलेहेम नगर के पास है।

42 जब वे गेरथ किम्हाम में थे योहानान और
होशायाह का पुत्र याजन्याह नामक एक व्यक्ति
यिर्मयाह नबी के पास गए। योहानान और याजन्याह के
साथ सभी सैनिक अधिकारी गए। बड़े से लेकर बहुत
छोटे तक सभी व्यक्ति यिर्मयाह के पास गए। 2उन सभी
लोगों ने उससे कहा, "यिर्मयाह, कृपया सुन जो हम
कहते हैं। अपने परमेश्वर यहोवा से, यहूदा के परिवार
के इन सभी बचे व्यक्तियों के लिये प्रार्थना करो। यिर्मयाह,
तुम देख सकते हो कि हम लोगों में बहुत अधिक नहीं
बचे हैं। किसी समय हम बहुत अधिक थे। 3यिर्मयाह,
अपने परमेश्वर यहोवा से यह प्रार्थना करो कि वह
बताये कि हमें कहाँ जाना चाहिये और हमें क्या करना
चाहिये।"

4तब यिर्मयाह नबी ने उत्तर दिया, "मैं समझता हूँ कि
तुम मुझसे क्या कराना चाहते हो। मैं तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा से वही प्रार्थना करूँगा जो तुम मुझसे करने को
कहते हो। मैं हर एक बात, जो यहोवा कहेगा बताऊँगा।
मैं तुमसे कुछ भी नहीं छिपाऊँगा।"

5तब उन लोगों ने यिर्मयाह से कहा, "यदि तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा जो कुछ कहता है उसे हम नहीं करते
तो हमें आशा है कि यहोवा ही सच्चा और विश्वसनीय
गवाह हमारे विरुद्ध होगा। हम जानते हैं कि तुम्हारे
परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें यह बताने को भेजा कि हम
क्या करे? 6इसका कोई महत्व नहीं कि हम सन्देश को
पसन्द करते हैं या नहीं। हम लोग अपने परमेश्वर,
यहोवा की आज्ञा का पालन करेंगे। हम लोग तुम्हें

यहोवा के यहाँ उससे सन्देश लेने के लिये भेज रहे हैं।
हम उसका पालन करेंगे जो वह कहेगा। तब हम लोगों
के लिए सब अच्छा होगा। हाँ, हम अपने परमेश्वर
यहोवा की आज्ञा का पालन करेंगे।"

7दस दिन बीतने के बाद यहोवा के यहाँ से यिर्मयाह
को सन्देश मिला। 8तब यिर्मयाह ने कारेह के पुत्र योहानान
और उसके साथ के सैनिक अधिकारियों को एक साथ
बुलाया। यिर्मयाह ने बहुत छोटे व्यक्ति से लेकर बहुत बड़े
व्यक्ति तक को भी एक साथ बुलाया। 9तब यिर्मयाह ने
उनसे कहा, "जो इस्राएल के लोगों का परमेश्वर यहोवा
कहता है, यह वह है: "तुमने मुझे उसके पास भेजा। मैंने
यहोवा से वह पूछा, जो तुम लोग मुझसे पूछना चाहते थे।
यहोवा यह कहता है: 10'यदि तुम लोग यहूदा में रहोगे तो
मैं तुम्हारा निर्माण करूँगा मैं तुम्हें नष्ट नहीं करूँगा। मैं
तुम्हें रोपूँगा और मैं तुमको उखाड़ूँगा नहीं। मैं यह
इसलिये करूँगा कि मैं उन भयंकर विपत्तियों के लिये
दु:खी हूँ जिन्हें मैंने तुम लोगों पर घटित होने दीं। 11इस
समय तुम बाबुल के राजा से भयभीत हो। किन्तु उससे
भयभीत न हो। बाबुल के राजा से भयभीत न हो: यही
यहोवा का सन्देश है, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ। मैं तुम्हें
बचाऊँगा। मैं तुम्हें खतरे से निकालूँगा। वह तुम पर
अपना हाथ नहीं रख सकेगा। 12मैं तुम पर दयालु रहूँगा
और बाबुल का राजा भी तुम्हारे साथ दया का व्यवहार
करेगा और वह तुम्हें तुम्हारे देश वापस लायेगा।' 13किन्तु
तुम यह कह सकते हो, हम यहूदा में नहीं ठहरेंगे। यदि
तुम ऐसा कहोगे तो तुम अपने परमेश्वर यहोवा की
आज्ञा का उल्लंघन करोगे। 14तुम यह भी कह सकते
हो, 'नहीं हम लोग जाएंगे और मिस्र में रहेंगे। हमे उस
स्थान पर युद्ध की परेशानी नहीं होगी। हम वहाँ युद्ध
की तुरही नहीं सुनेंगे और मिस्र में हम भूखे नहीं रहेंगे।'
15यदि तुम यह सब कहते हो, तो यहूदा के बचे लोगों
यहोवा के इस सन्देश को सुनो। इस्राएल के लोगों का
परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है: 'यदि तुम
मिस्र में रहने के लिये जाने का निर्णय करते हो तो यह
सब घटित होगा: 16तुम युद्ध की तलवार से डरते हो,
किन्तु यही तुम्हें वहाँ पराजित करेगी और तुम भूख से
परेशान हो, किन्तु तुम मिस्र में भूखे रहोगे। तुम वहाँ
मरोगे। 17हर एक वह व्यक्ति तलवार, भूख और भयंकर
बीमारी से मरेगा जो मिस्र में रहने के लिये जाने का
निर्णय करेगा। जो लोग मिस्र जाएंगे उसमें से कोई भी
जीवित नहीं बचेगा। उनमें से कोई भी उन भयंकर
विपत्तियों से नहीं बचेगा जिन्हें मैं उन पर ढाऊँगा।)'

18"इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान
यहोवा, यह कहता है: 'मैंने अपना क्रोध यरूशलेम के
विरुद्ध प्रकट किया है। मैंने उन लोगों को दण्ड दिया जो
यरूशलेम में रहते थे। उसी प्रकार मैं अपना क्रोध
प्रत्येक उस व्यक्ति पर प्रकट करुँगा जो मिस्र जाएगा।
लोग तुम्हारा उदाहरण तब देंगे जब वे अन्य लोगों के
साथ बुरा घटित होने की प्रार्थना करेंगे। तुम अभिशाप
वाणी के समान होओगे। तुम पर जो हुआ उसे देख कर
लोग भयभीत होंगे। लोग तुम्हारा अपमान करेंगे और
तुम फिर कभी यहूदा को नहीं देख पाओगे।'

19"यहूदा के बचे हुए लोगों, यहोवा ने तुमसे कहा,
'मिस्र मत जाओ।' मैं तुम्हें स्पष्ट चेतावनी देता हूँ। 20तुम
लोग एक बड़ी भूल कर रहे हो, जिसके कारण तुम
मरोगे। तुम लोगों ने यहोवा अपने परमेश्वर के पास
मुझे भेजा। तुमने मुझसे कहा, 'परमेश्वर यहोवा से
हमारे लिये प्रार्थना करो। हर बात हमें बताओ जो यहोवा
करने को कहता है। हम यहोवा की आज्ञा का
पालनकरेंगे।' 21अत: आज मैंने यहोवा का सन्देश तुम्हें
दिया है। किन्तु तुमने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा
का पालन नहीं किया। तुमने वह सब नहीं किया है
जिसे करने के लिये कहने को उसने मुझे भेजा है।
22तुम लोग रहने के लिये मिस्र जाना चाहते हो अब
निश्चय ही तुम यह समझ गये होंगे कि मिस्र में तुम पर
यह घटेगा: तुम तलवार से या भूख से, या भंयकर
बीमारी से मरोगे।"

43 इस प्रकार यिर्मयाह ने लोगों को यहोवा उसके
परमेश्वर का सन्देश देना पूरा किया। यिर्मयाह
ने लोगों को वह सब कुछ बता दिया जिसे लोगों से
कहने के लिये यहोवा ने उसे भेजा था.

2होशाया का पुत्र अजर्याह, कारेह का पुत्र योहानान
और कुछ अन्य लोग घमण्डी और हठी थे। वे लोग
यिर्मयाह पर क्रोधित हो गए। उन लोगों ने यिर्मयाह से
कहा, "यिर्मयाह, तुम झूठ बोलते हो! हमारे परमेश्वर
यहोवा ने तुम से हमें यह कहने को नहीं भेजा, 'तुम
लोगों को मिस्र में रहने के लिये नहीं जाना चाहिये।'
3यिर्मयाह, हम समझते हैं कि नेरिय्याह का पुत्र बारुक
तुम्हें हम लोगों के विरुद्ध होने के लिये उकसा रहा है।
वह चाहता है कि तुम हमें कसदी लोगों के हाथ में दे
दो। वह यह इसलिये चाहता है जिससे वे हमें मार डालें
या वह तुमसे यह इसलिये चाहता है कि वे हमें बन्दी
बना लें और बाबुल ले जाये।"

4इसलिये योहानान सैनिक अधिकारी और सभी लोगों
ने यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन किया। यहोवा ने उन्हें
यहूदा में रहने का आदेश दिया था। 5किन्तु यहोवा की
आज्ञा मानने के स्थान पर योहानान और सैनिक
अधिकारी उन बचे लोगों को यहूदा से मिस्र ले गए। बीते
समय में, शत्रु उन बचे हुओं को अन्य देशों को ले गया
था। किन्तु वे यहूदा वापस आ गए थे। 6अब योहानान
और सभी सैनिक अधिकारी, सभी पुरुषों, स्त्रियों और
बच्चों को मिस्र ले गए। उन लोगों में राजा की पुत्रियाँ
थीं। (नबूजरदान ने गदल्याह को उन लोगों का प्रशासक
नियुक्त किया था। नबूजरदान बाबुल के राजा के विशेष

रक्षकों का अधिनायक था।) योहानान यिर्मयाह नबी
और नेरिय्याह के पुत्र बारुक को भी साथ ले गया।
7उन लोगों ने यहोवा की एक न सुनी। अत: वे सभी
लोग मिस्र गए। वे तहपन्हेस नगर को गए।

8तहपन्हेस नगर में यिर्मयाह ने यहोवा से यह सन्देश
पाया, 9"यिर्मयाह, कुछ बड़े पत्थर लो। उन्हें लो और
उन्हें तहपन्हेस में फिरौन के राजमहल के प्रवेश द्वार के
ईंटें के चबूतरे के पास मिट्टी में गाड़ो। यह तब करो
जब यहूदा के लोग तुम्हें ऐसा करते देख रहे हो। 10तब
यहूदा के उन लोगों से कहो जो तुम्हें देख रहे हो,
'इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता
है, वह यह है: मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को यहाँ
आने के लिये बुलावा भेजूँगा। वह मेरा सेवक है और मैं
उसके राज सिंहासन को इन पत्थरों पर रखूँगा जिन्हें
मैंने यहाँ गाड़ा है। नबूकदनेस्सर अपनी चंदोवा इन
पत्थरों के ऊपर फैलाएगा। 11नबूकदनेस्सर यहाँ आएगा
और मिस्र पर आक्रमण करेगा। वह उन्हें मृत्यु के घाट
उतारेगा जो मरने वाले हैं। जो बन्दी बनाये जाने के योग्य
है वह उन्हें बन्दी बनायेगा और वह उन्हें तलवार के
घाट उतारेगा जिन्हें तलवार से मारना है। 12नबूकदनेस्सर
मिस्र के असत्य देवताओं के मन्दिरों में आग लगा देगा।
वह उन मन्दिरों को जला देगा और उन देवमूर्तियों को
अलग करेगा। गड़ेरिया अपने कपड़ों को स्वच्छ रखने
के लिये उसमें से जूँ और अन्य खटमलों को दूर फेंकता
है। ठीक इसी प्रकार नबूकदनेस्सर मिस्र को स्वच्छ
करने के लिए कुछ को दूर करेगा। तब वह सुरक्षापूर्वक
मिस्र को छोड़ेगा।'"

13नबूकदनेस्सर उन स्मृतिपाषाणों को नष्ट करेगा
जो मिस्र में सूर्य देवता के मन्दिर में है और वह मिस्र के
असत्य देवों के मन्दिरों को जला देगा।

यहूदा और मिस्र के लोगों को यहोवा का सन्देश

44 यिर्मयाह को यहोवा से एक सन्देश मिला। यह
सन्देश मिस्र में रहने वाले यहूदा के सभी लोगों
के लिये था। यह सन्देश यहूदा के उन लोगों के लिए था
जो मिग्दोल, तहपन्हेस, नोप और दक्षिणी मिस्र में रहते
थे। सन्देश यह था: 2इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान
यहोवा कहता है, "तुम लोगों ने उन भयंकर घटनाओं
को देखा जिन्हें मैं यरूशलेम नगर और यहूदा के अन्य
सभी नगर के विरुद्ध लाया। वे नगर आज पत्थरों के
खाली ढेर हैं। 3वे स्थान नष्ट किए गए क्योंकि उनमें
रहने वाले लोगों ने बुरे काम किये। उन लोगों ने अन्य
देवताओं को बलिभेंट की, और इसने मुझे क्रोधित
किया। तुम्हारे लोग और तुम्हारे पूर्वज अतीत काल में
उन देवताओं को नहीं पूजते थे। 4मैंने अपने नबी उन
लोगों के पास बार बार भेजे। वे नबी मेरे सेवक थे। उन
नबियों ने मेरे सन्देश दिये और लोगों से कहा, 'यह
भयंकर काम न करो जिससे मैं घृणा करता हूँ। क्योंकि
तुम देवमूर्तियों की पूजा करते हो' 5किन्तु उन लोगों ने
नबियों की एक न सुनी। उन्होंने उन नबियों पर ध्यान
न दिया। उन लोगों ने दुष्टता भरे काम करने नहीं
छोड़े। उन्होंने अन्य देवताओं को बलि भेंट करना बन्द
नहीं किया। 6इसलिये मैंने अपना क्रोध उन लोगों के
विरुद्ध प्रकट किया। मैंने यहूदा के नगरों और यरूशलेम
की सड़कों को दण्ड दिया। मेरे क्रोध ने यरूशलेम और
यहूदा के नगरों को सूने पत्थरों का ढेर बनाया, जैसे वे
आज है।"

7अत: इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा
यह कहता है, "देवमूर्ति की पूजा करते रह कर तुम
अपने को क्यों चोट पहुँचाते हो, तुम पुरुष, स्त्रियों,
बच्चों और शिशुओं को यहूदा के परिवार से अलग
कर रहे हो। तुममें से कोई भी नहीं जीवित रहेगा।
8लोगों देवमूर्तियाँ बनाकर तुम मुझे क्रोधित करना क्यों
चाहते हो? अब तुम मिस्र में रह रहे हो और अब मिस्र
के असत्य देवताओं को भेंट चढ़ाकर तुम मुझे क्रोधित
कर रहे हो। लोगों तुम अपने को नष्ट कर डालोगे। यह
तुम्हारे अपने दोष के कारण होगा। तुम अपने को कुछ
ऐसा बना लोगे कि अन्य राष्ट्रों के लोग, तुम्हारी बुराई
करेंगे और पृथ्वी के अन्य राष्ट्रों के लोग तुम्हारा
मजाक उड़ायेंगे। 9क्या तुम उन दुष्टता भरे कामों को
भूल चुके हो जिन्हें तुम्हारे पूर्वजों ने किया? क्या तुम
उन दुष्टतापूर्ण कामों को भूल चुके हो जिन्हें यहूदा के
राजा और रानियों ने किया? क्या तुम उन दुष्टतापूर्ण
कामों को भूल चुके हो जिन्हें तुमने और तुम्हारी पत्नियों
ने यहूदा की धरती पर और यरूशलेम की सड़कों पर
किया? 10आज भी यहूदा के लोगों ने अपने को विनम्र
नहीं बनाया। उन्होंने मुझे कोई सम्मान नहीं दिया और
उन लोगों ने मेरी शिक्षाओं का अनुसरण नहीं किया।
उन्होंने उन नियमों का पालन नहीं किया जिन्हें मैंने
तुम्हें और तुम्हारे पूर्वजों को दिया।"

11अत: इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा
जो कहता है, वह यह है: "मैंने तुम पर भयंकर विपत्ति
ढाने का निश्चय किया है। मैं यहूदा के पूरे परिवार को
नष्ट कर दूँगा। 12यहूदा के थोड़े से लोग ही बचे थे। वे
लोग यहाँ मिस्र में आए हैं। किन्तु मैं यहूदा के परिवार
के उन कुछ बचे लोगों को नष्ट कर दूँगा। वे तलवार
के घाट उतरेंगे या भूख से मरेंगे। वे कुछ ऐसे होंगे कि
अन्य राष्ट्रों के लोग उनके बारे में बुरा कहेंगे। अन्य
राष्ट्र उससे भयभीत होंगे जो उन लोगों के साथ घटित
होगा। वे लोग अभिशाप वाणी बन जायेंगे। अन्य राष्ट्र
यहूदा के उन लोगों का अपमान करेंगे। 13मैं उन लोगों
को दण्ड दूँगा जो मिस्र में रहने चले गए हैं। मैं उन्हें दण्ड
देने के लिये तलवार, भूख और भयंकर बीमारी का
उपयोग करूँगा। मैं उन लोगों को वैसे ही दण्ड दूँगा जैसे

मैंने यरूशलेम नगर को दण्ड दिया। 14इन थोड़े बचे
हुओं में से, जो मिस्र में रहने चले गए हैं, कोई भी मेरे
दण्ड से नहीं बचेगा। उनमें से कोई भी यहूदा वापस आने
के लिये नहीं बच पायेगा। वे लोग यहूदा वापस लौटना
और वहाँ रहना चाहते हैं किन्तु उनमें से एक भी व्यक्ति
संभवत: कुछ बच निकलने वालों के अतिरिक्त वापस
नहीं लौटेगा।”

15मिस्र में रहने वाली यहूदा की स्त्रियों में से अनेक
अन्य देवताओं को बलि भेंट कर रही थी। उनके पति
इसे जानते थे, किन्तु उन्हें रोकते नहीं थे। वहाँ यहूदा के
लोगों का एक विशाल समूह एक साथ इकट्ठा होता
था। वे यहूदा के लोग थे जो दक्षिणी मिस्र में रह रहे थे।
उन सभी व्यक्तियों ने यिर्मयाह से कहा,

16“हम यहोवा का सन्देश नहीं सुनेंगे जो तुम दोगे।
17हमने स्वर्ग की रानी को बलि भेंट करने की प्रतिज्ञा
की है और हम वह सब करेंगे जिसकी हमने प्रतिज्ञा की
है। हम उसकी पूजा में बलि चढ़ायेंगे और पेय भेंट देंगे।
यह हमने अतीत में किया और हमारे पूर्वजों, राजाओं
और हमारे पदाधिकारियों ने अतीत में यह किया। हम
सब ने यहूदा के नगरों और यरूशलेम की सड़कों पर
यह किया। जिन दिनों हम स्वर्ग की रानी की पूजा
करते थे हमारे पास बहुत अन्न होता था। हम सफल
होते थे। हम लोगों का कुछ भी बुरा नहीं हुआ। 18किन्तु
तभी हम लोगों ने स्वर्ग की रानी की पूजा छोड़ दी और
हमने उसे पेय भेंट देनी बन्द कर दी। जबसे हमने
उसकी पूजा में वे काम बन्द किये तब से ही समस्यायें
उत्पन्न हुई हैं। हमारे लोग तलवार और भूख से मरे हैं।”

19तब स्त्रियाँ बोल पड़ीं। उन्होंने यिर्मयाह से कहा,
“हमारे पति जानते थे कि हम क्या कर रहे थे। हमने
स्वर्ग की रानी को बलि देने के लिये उनसे स्वीकृति ली
थी। मदिरा भेंट चढ़ाने के लिये हमें उनकी स्वीकृति
प्राप्त थी। हमारे पति यह भी जानते थे कि हम ऐसी
विशेष रोटी बनाते थे जो उनकी तरह दिखाई पड़ती
थी।”

20तब यिर्मयाह ने उन सभी स्त्रियों और पुरुषों से बातें
कीं। उसने उन लोगों से बातें कीं जिन्होंने वे बातें अभी
कही थीं। 21यिर्मयाह ने उन लोगों से कहा, “यहोवा को
याद था कि तुमने यहूदा के नगर और यरूशलेम की
सड़कों पर बलि भेंट की थी। तुमने और तुम्हारे पूर्वजों,
तुम्हारे राजाओं, तुम्हारे अधिकारियों और देश के लोगों
ने उसे किया। यहोवा को याद था और उसने तुम्हारे
किये गये कर्मो के बारे में सोचा। 22अत: यहोवा तुम्हारे
प्रति और अधिक चुप नहीं रह सका। यहोवा ने उन
भयंकर कामों से घृणा की जो तुमने किये। इसीलिये
यहोवा ने तुम्हारे देश को सूनी मरुभूमि बना दिया। अब
वहाँ कोई व्यक्ति नहीं रहता। अन्य लोग उस देश के
बारे में बुरी बातें कहते हैं। 23वे सभी बुरी घटनायें
तुम्हारे साथ घटी क्योंकि तुमने अन्य देवताओं को बलि
भेंट की। तुमने यहोवा के विरुद्ध पाप किये। तुमने
यहोवा की आज्ञा का पालन नहीं किया। तुमने उसके
उपदेशों या उसके दिये नियमों का अनुसरण नहीं किया।
तुमने उसके साथ की गयी वाचा का पालन नहीं किया।”

24तब यिर्मयाह ने उन सभी पुरुष और स्त्रियों से बात
की। यिर्मयाह ने कहा, “मिस्र में रहने वाले यहूदा के
तुम सभी लोगों यहोवा के यहाँ से सन्देश सुनो: 25इस्राएल
के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है:
‘स्त्रियों, तुमने वह किया जो तुमने करने को कहा।
तुमने कहा, “हमने जो प्रतिज्ञा की है उसका पालन हम
करेंगे। हम ने प्रतिज्ञा की है कि हम स्वर्ग की देवी को
बलि भेंट करेंगे और पेय भेंट डालेंगे।” अत: ऐसा करती
रहो। वह करो जो तुमने करने की प्रतिज्ञा की है।
अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करो। 26किन्तु मिस्र में रहने
वाले सभी लोगों यहोवा के सन्देश को सुनो: मैंने अपने
बड़े नाम का उपयोग करते हुए यह प्रतिज्ञा की है: मैं
प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब मिस्र में रहने वाला यहूदा का
कोई भी व्यक्ति प्रतिज्ञा करने के लिये मेरे नाम का
उपयोग कभी नहीं कर पायेगा। वे फिर कभी नहीं
कहेंगे, “जैसा कि यहोवा शाश्वत है।”

27मैं यहूदा के उन लोगों पर नजर रख रहा हूँ। किन्तु
मैं उन पर नजर उनकी देखरेख के लिये नहीं रख रहा
हूँ। मैं उन पर चोट पहुँचाने के लिये नजर रख रहा हूँ।
मिस्र में रहने वाले यहूदा के लोग भूख से मरेंगे और
तलवार से मारे जायेंगे। वे तब तक मरते चले जायेंगे जब
तक वे समाप्त नहीं होंगे। 28यहूदा के कुछ लोग तलवार
से मरने से बच निकलेंगे। वे मिस्र से यहूदा वापस
लौटेंगे। किन्तु बहुत थोड़े से यहूदा के लोग बच निकलेंगे।
तब यहूदा के बचे हुए वे लोग जो मिस्र में आकर रहेंगे
यह समझेंगे कि किसका सन्देश सत्य घटित होता है। वे
जानेंगे कि मेरा सन्देश अथवा उनका सन्देश सच निकलता
है। 29लोगों मैं तुम्हें इसका प्रमाण दूँगा यह यहोवा के
यहाँ से सन्देश है कि मैं तुम्हें मिस्र में दण्ड दूँगा। तब तुम
निश्चय ही समझ जाओगे कि तुम्हें चोट पहुँचाने की
मेरी प्रतिज्ञा, सच ही घटित होगी। 30जो मैं कहता हूँ वह
करूँगा यह तुम्हारे लिये प्रमाण होगा।’ जो यहोवा कहता
है, यह वह है ‘होप्रा फ़िरौन मिस्र का राजा है। उसके
शत्रु उसे मार डालना चाहते हैं। मैं होप्रा फिरौन को
उसके शत्रुओं को दूँगा। सिदकिय्याह यहूदा का राजा
था। नबूकदनेस्सर सिदकिय्याह का शत्रु था और मैंने
सिदकिय्याह को उसके शत्रु को दिया। उसी प्रकार मैं
होप्रा फिरौन को उसके शत्रु को दूँगा।’”

बारुक को सन्देश

45 यहोयाकीम योशिय्याह का पुत्र था। यहोयाकीम
के यहूदा में राज्यकाल के चौथे वर्ष यिर्मयाह

नबी ने नेरिय्याह के पुत्र बारुक से यह कहा। बारुक ने इन तथ्यों को पत्रक पर लिखा। यिर्मयाह ने बारुक से जो कहा, वह यह है:

2"इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जो तुमसे कहता है, वह यह है: 3'बारुक, तुमने कहा है: यह मेरे लिये बहुत बुरा है। यहोवा ने मेरी पीड़ा के साथ मुझे शोक दिया है। मैं बहुत थक गया हूँ। अपने कष्टों के कारण मैं क्षीण हो गया हूँ। मैं आराम नहीं पा सकता।' 4यिर्मयाह, बारुक से यह कहो: 'यहोवा जो कहता है, वह यह है: मैं उसे ध्वस्त कर दूँगा जिसे मैंने बनाया है। मैंने जिसे रोपा है उसे मैं उखाड़ फेंकूँगा। मैं यहूदा में सर्वत्र यही करूँगा। 5बारुक, तुम अपने लिये कुछ बड़ी बात होने की आशा कर रहे हो। किन्तु उन चीजों की आशा न करो। उनकी ओर नजर न रखो क्योंकि मैं सभी लोगों के लिये कुछ भयंकर विपत्ति उत्पन्न करूँगा।' ये बाते यहोवा ने कही, 'तुम्हें अनेकों स्थानों पर जाना पड़ेगा। किन्तु तुम चाहे जहाँ जाओ, मैं तुम्हें जीवित बचकर निकल जाने दूँगा।'"

राष्ट्रों के बारे में यहोवा का सन्देश

46 यिर्मयाह नबी को ये सन्देश मिले। ये सन्देश विभिन्न राष्ट्रों के लिये हैं।

मिस्र के बारे में सन्देश

2यह सन्देश मिस्र के बारे में है। यह सन्देश निको फिरौन की सेना के बारे में है। निको मिस्र का राजा था। उसकी सेना कर्कमीश नगर में पराजित हुई थी। कर्कमीश परात नदी पर है। यहोयाकीम के यहूदा पर राज्य काल के चौथे वर्ष बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने निको फिरौन की सेना को कर्कमीश में पराजित किया। यहोयाकीम राजा योशिय्याह का पुत्र था। मिस्र के लिए यहोवा का सन्देश यह है:

3"अपनी विशाल और छोटी ढालों को तैयार करो। युद्ध के लिये कूच कर दो। 4घोड़ों को तैयार करो। सैनिकों, अपने घोड़ें पर सवार हो। युद्ध के लिये अपनी जगह जाओ। अपनी टोप पहनो। अपने भाले तेज करो। अपने कवच पहन लो। 5मैं यह क्या देखता हूँ? सेना डर गई है। सैनिक भाग रहे हैं। उनके वीर सैनिक पराजित हो गये हैं। वे जल्दी में भाग रहे हैं। वे पीछे मुड़कर नहीं देखते। सर्वत्र भय छाया है।" यहोवा ने ये बातें कहीं।

6"तेज धावक भाग कर निकल नहीं सकते। शक्तिशाली सैनिक बचकर भाग नहीं सकता। वे सभी ठोकर खाएंगे और गिरेंगे। उत्तर में यह परात नदी के किनारे घटित होगा। 7नील नदी सा कौन उमड़ा आ रहा है? उस बलवती और तेज नदी सा कौन बढ़ रहा है? 8यह मिस्र है जो उमड़ते नील नदी सा आ रहाहै। यह मिस्र है जो उस बलवान तेज नदी सा आ रहा है। मिस्र कहता है: 'मैं आऊँगा और पृथ्वी को पाट दूँगा, मैं नगरों और उनके लोगों को नष्ट कर दूँगा।' 9घुड़सवारों, युद्ध में टूट पड़ो। सारथियों, तेज हाँको। वीर सैनिकों, आगे बढ़ो। कूश और पूत के सैनिकों अपनी ढालें लो। लूदीया के सैनिकों, अपने धनुष संभालो।

10"किन्तु उस दिन, हमारा स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा विजयी होगा। उस समय वह उन लोगों को दण्ड देगा जिन्हें दण्ड मिलना है। यहोवा के शत्रु वह दण्ड पाएंगे जो उन्हें मिलना है। तलवार तब तक काटेगी जब तक वह कुंठित नहीं हो जाती। तलवार तब तक मारेगी जब तक इसकी रक्त पिपासा बुझ नहीं जाती। यह होगा, क्योंकि ये हमारे स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा के लिए बलि भेंट होती है। वह बलि मिस्र की सेना है जो परात नदी के किनारे उत्तरी प्रदेश में है।

11"मिस्र, गिलाद को जाओ और कुछ दवायें लाओ। तुम अनेक दवायें बनाओगे, किन्तु वे सहायक नहीं होंगी। तुम स्वस्थ नहीं होगे। 12राष्ट्र तुम्हारी व्यथा की पुकार को सुनेंगे। तुम्हारा रूदन पूरी पृथ्वी पर सुना जाएगा। एक वीर सैनिक दूसरे वीर सैनिक पर टूटपड़ेगा और दोनों वीर सैनिक साथ गिरेंगे।"

13यह वह सन्देश है जिसे यहोवा ने यिर्मयाह नबी को दिया। यह सन्देश नबूकदनेस्सर के बारे में है जो मिस्र पर आक्रमण करने आ रहा है।

14"मिस्र में इस सन्देश की घोषणा करो, इसका उपदेश मिग्दोल नगर में दो। इसका उपदेश नोप और तहपन्हेस नगर मेंभीदो। 'युद्ध के लिये तैयार हो। क्यों? क्योंकि तुम्हारे चारों ओर लोग तलवारों से मारे जा रहे हैं।' 15मिस्र, तुम्हारे शक्तिशाली सैनिक क्यों मारे जाएंगे? वे मुकाबले में नहीं टिकेंगे क्योंकि यहोवा उन्हें नीचे धक्का देगा। 16वे सैनिक बार–बार ठोकर खायेंगे, वे एक दूसरे पर गिरेंगे। वे कहेंगे, 'उठो, हम फिर अपने लोगों में चलें, हम अपने देश चलें। हमारा शत्रु हमें पराजित कर रहा है।' हमें अवश्य भाग निकलना चाहिये।' 17वे सैनिक अपने देश में कहेंगे, 'मिस्र का राजा फिरौन केवल एक नाम की गूंज है। उसके गौरव का समय गया।'"

18राजा का यह सन्देश है। राजा सर्वशक्तिमान यहोवा है। "यदि मेरा जीना सत्य है तो एक शक्तिशाली पथ दर्शक आएगा। वह सागर के निकट ताबोर और कर्मेल पर्वतों सा महान होगा। 19मिस्र के लोगों, अपनी वस्तुओं को बाँधो, बन्दी होने को तैयार हो जाओ। क्यों? क्योंकि नोप एक बरबाद सूना प्रदेश बनेगा नगर नष्ट होंगे और कोई भी व्यक्ति उनमें नहीं रहेगा।

20"मिस्र एक सुन्दर गाय सा है। किन्तु उसे पीड़ित करने को उत्तर से एक गोमक्षी आ रही है। 21मिस्र की सेना में भाड़े के सैनिक मोटे बछड़ों से हैं। वे सभी मुड़कर भाग खड़े होंगे। वे आक्रमण के विरुद्धदृढ़ता से खड़े नहीं रहेंगे। उनकी बरबादी का समय आ रहा है।

वे शीघ्र ही दण्ड पाएंगे। 22मिस्र एक फुंफकारते उस साँप
सा है जो बच निकलना चाहता है। शत्रु निकट से
निकट आता जा रहा है और मिस्री सेना भागने का
प्रयत्न कर रही है। शत्रु मिस्र के विरुद्ध कुल्हाड़ियों के
साथ आएगा,वे उन पुरुषों के समान हैं जो पेड़ काटते
हैं।" 23यहोवा यह सब कहता है, "शत्रु मिस्र के वन को
काट गिरायेगा। वन में असंख्य वृक्ष हैं, किन्तु वे सब
काट डाले जायेंगे। शत्रु के सैनिक टिड्डी दल से भी
अधिक हैं। वे इतने अधिक सैनिक हैं कि उन्हें कोई
गिन नहीं सकता। 24मिस्र लज्जित होगा, उत्तर का शत्रु
उसे पराजित करेगा।"

25इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता
है: "मैं बहुत शीघ्र, थीबिस के देवता आमोन को दण्ड
दूँगा और मैं फिरौन, मिस्र और उसके देवताओं को
दण्ड दूँगा। मैं मिस्र के राजाओं को दण्ड दूँगा। मैं फिरौन
पर आश्रित लोगों को दण्ड दूँगा। 26मैं उन सभी लोगों
को उनके शत्रुओं से पराजित होने दूँगा और वे शत्रु
उन्हें मार डालना चाहते हैं। मैं बाबुल के राजा
नबूकदनेस्सर और उसके सेवकों के हाथ में उन लोगों
को दूँगा। बहुत पहले मिस्र शान्ति से रहा और इन सब
विपत्तियों के समय के बाद मिस्र फिर शान्तिपूर्वक रहेगा।
यहोवा ने ये बातें कहीं।"

उत्तरी इस्राएल के लिए सन्देश

27"मेरे सेवक याकूब, भयभीत न हो। इस्राएल,
आतंकित न हो। मैं निश्चय ही तुम्हें उन दूर देशों से
बचाऊँगा।मैं तुम्हारे बच्चों को वहाँ से बचाऊँगा जहाँ वे
बन्दी हैं। याकूब को पुन: सुरक्षा और शान्ति मिलेगी
और कोई व्यक्ति उसे भयभीत नहीं करेगा।" 28यहोवा
यह सब कहता है: याकूब मेरे सेवक, डरो नहीं। मैं
तुम्हारे साथ हूँ। मैंने तुम्हें विभिन्न स्थानों में दूर भेजा
और मैं उन सभी राष्ट्रों को पूर्णत: नष्ट करूँगा। किन्तु
मैं तुम्हें पूर्णत: नष्ट नहीं करुँगा। तुम्हें उसका दण्ड
मिलना चाहिये जो तुमने बुरे काम किये हैं। अत: मैं
तुम्हें दण्ड से बच निकालने नहीं दूँगा। मैं तुम्हें अनुशासन
में लाऊँगा, किन्तु मैं उचित ही करूँगा!"

पलिश्ती लोगों के बारे में सन्देश

47 यह सन्देश यहोवा का है जो यिर्मयाह नबी को
मिला। यह सन्देश पलिश्ती लोगों के बारे में
है। यह सन्देश, जब फिरौन ने गज्जा नगर पर आक्रमण
किया, उससे पहले आया।

2यहोवा कहता है: "ध्यान दो, शत्रु के सैनिक उत्तर में
एक साथ मोर्चा लगा रहे हैं। वे तटों को डूबाती तेज नदी
की तरह आएंग वे पूरे देश को बाढ़ सा ढक लेंगे। वे
नगरों और उनमें रह रहे निवासियों को ढक लेंगे। उस
देश का हर एक रहने वाला सहायता के लिए चिल्लाएगा।
3"वे दौड़ते घोड़ों की आवाज सुनेंगे, वे रथों की
घरघराहट सुनेंगे। वे पहियों की घरघराहट सुनेंगे। पिता
अपने बच्चों की सुरक्षा करने में सहायता नहीं कर
सकेंगे। वे पिता सहायता करने में एकदम असमर्थ होंगे।

4"सभी पलिश्ती लोगों को नष्ट करने का समय आ
गया है। सोर और सिदोन के बचे सहायकों को नष्ट
करने का समय आ गया है। यहोवा पलिश्ती लोगों को
शीघ्र नष्ट करेगा। कप्तोर द्वीप में बचे लोगों को वह
नष्ट करेगा। 5गज्जा के लोग शोक में डूबेंगे और अपना
सिर मुड़ाएंगे। अश्कलोन के लोग चुप कर दिए जाएंगे।
घाटी के बचे लोगों, कब तक तुम अपने को काटते
रहोगे?

6"ओ! यहोवा की तलवार, तू रुकी नहीं तू कब तक
मार करती रहेगी? अपनी म्यान में लौट जाओ, रूको,
शान्त होओ। 7किन्तु यहोवा की तलवार कैसे विश्राम
लेगी?यहोवा ने इसे आदेश दिया है। यहोवा ने इसे यह
आदेश दिया है कि यह अश्कलोन नगर और समुद्र तट
पर आक्रमण करे।"

मोआब के बारे में सन्देश

48 यह सन्देश मोआब देश के बारे में है। इस्राएल
के लोगों के परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा
ने जो कहा, वह यह है:

"नबो पर्वत का बुरा होगा, नबो पर्वत नष्ट होगा।
किर्यातैम नगर लज्जित होगा। इस पर अधिकार होगा।
शक्तिशाली स्थान लज्जित होगा। यह बिखर जायेगा।
2मोआब की पुन: प्रशंसा नहीं होगी। हेशबोन नगर के
लोग मोआब के पराजय की योजना बनाएंगे। वे कहेंगे,
'आओ, हम उस राष्ट्र का अन्त कर दें।' मदमेन तुम भी
चुप किये जाओगे, तलवार तुम्हारा पीछा करेगी। 3होरोनैम
नगर से रूदन सुनो, वे बहुत घबराहट और विनाश की
चीखे हैं। 4मोआब नष्ट किया जाएगा। उसके छोटे बच्चे
सहायता की पुकार करेंगे। 5मोआब के लोगों लूहीत के
मार्ग तक जाओ। वे जाते हुए फूट फूट कर रो रहे हैं।
होरोनैम के नगर तक जाने वाली सड़क से पीड़ा और
कष्ट का रूदन सुना जा सकता है! 6भाग चलो, जीवन
के लिए भागो! झाड़ी सी उड़ो जो मरुभूमि में उड़ती है।

7तुम अपनी बनाई चीजों और अपने धन पर विश्वास
करते हो। अत: तुम बन्दी बना लिये जाओगे। कमोश
देवता बन्दी बनाया जायेगा और उसके याजक और
पदाधिकारी उसके साथ जाएंगे। 8विध्वंसक हर एक
नगर के विरुद्ध आएगा, कोई नगर नहीं बचेगा। घाटी
बरबाद होगी। उच्च मैदान नष्ट होगा। यहोवा कहता है:
यह होगा अत: ऐसा ही होगा। 9मोआब के खेतों में
नमक फैलाओ। देश सूनी मरुभूमि बनेगा। मोआब के
नगर खाली होंगे। उनमें कोई व्यक्ति भी न रहेगा।
10यदि व्यक्ति वह नहीं करता जिसे यहोवा कहताहै यदि

वह अपनी तलवार का उपयोग उन लोगों को मारने के
लिये नहीं करता, तो उस व्यक्ति का बुरा होगा।
11“मोआब का कभी विपत्ति से पाला नहीं पड़ा। मोआब
शान्त होने के लिये छोड़ी गई दाखमधु सा है। मोआब
एक घड़े से कभी दूसरे घड़े में ढाला नहीं गया। वह
कभी बन्दी नहीं बनाया गया। अत: उसका स्वाद पहले
की तरह है और उसकी गन्ध बदली नहीं है।” 12यहोवा
यह सब कहता है, “किन्तु मैं लोगों को शीघ्र ही तुम्हें
तुम्हारे घड़े से ढालने भेजूँगा। वे लोग मोआब के घड़े
को खाली कर देंगे और तब वे उन घड़ों को चकनाचूर
कर देंगे।”

13तब मोआब के लोग अपने असत्य देवता कमोश
के लिए लज्जित होंगे। इस्राएल के लोगों ने बेतेल में झूठे
देवता पर विश्वास किया था और इस्राएल के लोगों को
उस समय ग्लानि हुई थी जब उस असत्य देवता ने
उनकी सहायता नहीं की थी। मोआब वैसा ही होगा।

14“तुम यह नहीं कह सकते ‘हम अच्छे सैनिक हैं।
हम युद्ध में वीर पुरुष है।’ 15शत्रु मोआब पर आक्रमण
करेगा। शत्रु उन नगरों में आएगा और उन्हें नष्ट करेगा।
नरसंहार में उसके श्रेष्ठ युवक मारे जाएँगे। यह सन्देश
राजा का है। उस राजा का नाम सर्वशक्तिमान यहोवा
है।” 16मोआब का अन्त निकट है। मोआब शीघ्र ही
नष्ट कर दिया जाएगा। 17मोआब के चारों ओर रहने
वाले लोगों, तुम सभी उस देश के लिए रोओगे। तुम लोग
जानते हो कि मोआब कितना प्रसिद्ध है। अत: इसके
लिए रोओ। कहो, ‘शासक की शक्ति भंग हो गई। मोआब
की शक्ति और प्रतिष्ठा चली गई।’

18“दीबोन में रहने वाले लोगों अपने प्रतिष्ठा के स्थान
से बाहर निकलो। धूलि में जमीन पर बैठो। क्यों? क्योंकि
मोआब का विध्वंसक आ रहा है और वह तुम्हारे दृढ़
नगरों को नष्ट कर देगा।

19“अरोएर में रहने वाले लोगों, सड़क के सहारे खड़े
होओ और सावधानी से देखो। पुरुष को भागते देखो,
स्त्री को भागते देखो, उनसे पूछो, क्या हुआ है?

20मोआब बरबाद होगा और लज्जा से गड़ जाएगा।
मोआब रोएगा और रोएगा। अर्नोन नदी पर घोषित करो
कि मोआब नष्ट हो गया। 21उच्च मैदान के लोग दण्ड
पा चुके होलोन, यहसा और मेपात नगरों का न्याय हो
चुका। 22दीबोन, नबो और बेतदिबलातैम, 23किर्य्यातैम,
बेतगामूल और बेतमोन। 24करिय्योत बोस्रा तथा मोआब
के निकट और दूर के सभी नगरों के साथ न्याय हो
चुका। 25मोआब की शक्ति काट दी गई, मोआब की
भुजायें टूट गई।” यहोवा ने यह सब कहा।

26“मोआब ने समझा था वह यहोवा से भी अधिक
महत्वपूर्ण है। अत: मोआब को दण्डित करो कि वह
पागल सा हो जाय। मोआब गिरेगा और अपनी उलटी में
चारों ओर लौटेगा। लोग मोआब का मजाक उड़ाएंगे।

27“मोआब तुमने इस्राएल का मजाक उड़ाया था।
इस्राएल चोरों के गिरोह द्वारा पकड़ा गया था। हर बार
तुम इस्राएल के बारे में कहते थे। तुम अपना सिर हिलाते
थे ऐसा अभिनय करते थे मानो तुम इस्राएल से श्रेष्ठ हो
28मोआब के लोगों, अपने नगरों को छोड़ो। जाओ और
पहाड़ियों पर रहो, उस कबूतर की तरह रहो जो अपने
घोंसले गुफा के मुख पर बनाता है। 29हम मोआब के
गर्व को सुन चुके हैं, वह बहुत घमण्डी था। उसने
समझा था कि वह बहुत बड़ा है। वह सदा अपने मुँह
मियाँ मिटठू बनता रहा। वह अत्याधिक घमण्डी था।”

30यहोवा कहता है, “मैं जानता हूँ कि मोआब शीघ्र ही
क्रोधित हो जाता है और अपनी प्रशंसा के गीत गाता है।
किन्तु उसकी शेखियाँ झूठ है। वह जो करने को कहता
है, कर नहीं सकता। 31अत: मैं मोआब के लिए रोता
हूँ। मैं मोआब में हर एक के लिए रोता हूँ। मैं कीर्हेरेस
के लोगों के लिये रोता हूँ। 32मैं याजेर के लोग के साथ
याजेर के लिये रोता हूँ। सिबमा अतीत में तुम्हारी अंगूर
की बेले सागर तक फैली थीं। वे याजेर नगर तक पहुँच
गई थीं। किन्तु विध्वंसक ने तुम्हारे फल और अंगूर ले
लिये। 33मोआब के विशाल अंगूर के बागों से सुख और
आनन्द विदा हो गये। मैंने दाखमधु निष्कासकों से दाखमधु
का बहना रोक दिया है। अब दाखमधु बनाने के लिये
अंगूरों पर चलने वालों के नृत्य गीत नहीं रह गए हैं।
खुशी का शोर गुल सभी समाप्त हो गयी है।

34“हेशबोन और एलाले नगरों के लोग रो रहे हैं।
उनका रूदन दूर यहस के नगर में भी सुनाई पड़ रहा
है। उनका रूदन सोआर नगर से सुनाई पड़ रहा है
और होरोनैम एवं एग्लथ शेलिशिया के दूर नगरों तक
पहुँच रहा है। यहाँ तक कि निम्रीम का भी पानी सूख
गया है। 35मैं मोआब को उच्च स्थानों पर होम बलि
चढ़ाने से रोक दूँगा। मैं उन्हें अपने देवताओं को बलि
चढ़ाने से रोकूँगा। यहोवा ने यह सब कहा।

36“मुझे मोआब के लिये बहुत दु:ख है। शोक गीत
छेड़ने वाली बाँसुरी की धुन की तरह मेरा हृदय रूदन
कर रहा है। मैं कीर्हेरेस के लोगों के लिये दु:खी हूँ।
उनके धन और सम्पत्ति सभी ले लिये गए हैं। 37हर एक
अपना सिर मुड़ाये है। हर एक की दाढ़ी साफ हो गई है।
हर एक के हाथ कटे हैं और उनसे खून निकल रहा
है। हर एक अपनी कमर में शोक के वस्त्र लपेटे हैं।
38मोआब में लोग घरों की छतों और हर एक सार्वजनिक
चौराहों में सर्वत्र मरे हुओं के लिये रो रहे हैं। वहाँ शोक
है क्योंकि मैंने मोआब को खाली घड़े की तरह फोड़
डाला है।” यहोवा ने यह सब कहा।

39“मोआब बिखर गया है। लोग रो रहे हैं। मोआब ने
आत्म समर्पण किया है। अब मोआब लज्जित है। लोग
मोआब का मजाक उड़ाते हैं, किन्तु जो कुछ हुआ है
वह उन्हें भयभीत कर देता है।”

40यहोवा कहता है, “देखो, एक उकाब आकाश से
नीचे को टूट पड़ रहा है। यह अपने परों को मोआब पर
फैला रहा है। 41मोआब के नगरों पर अधिकार होगा।
छिपने के सुरक्षित स्थान पराजित होंगे। उस समय मोआब
के सैनिक वैसे ही आतंकित होंगे जैसे प्रसव करती
स्त्री। 42मोआब का राष्ट्र नष्ट कर दिया जायेगा।क्यों?
क्योंकि वे समझते थे कि वे यहोवा से भी अधिक
महत्वपूर्ण हैं।”

43यहोवा यह सब कहता है: “मोआब के लोगों, भय
गहरे गड्ढे और जाल तुम्हारी प्रतीक्षा में हैं। 44लोग डरेंगे
और भाग खड़े होंगे, और वे गहरे गड्ढों में गिरेंगे। यदि
कोई गहरे गड्ढे से निकलेगा तो वह जाल में फँसेगा। मैं
मोआब पर दण्ड का वर्ष लाऊँगा।” यहोवा ने यह सब
कहा।

45“शक्तिशाली शत्रु से लोग भाग चले हैं। वे सुरक्षा
के लिये हेशबोन नगर में भागे। किन्तु वहाँ सुरक्षा नहीं
थी। हेशबोन में आग लगी। वह आग सीहोन के नगर से
शुद्ध हुई और यह मोआब के प्रमुखों को नष्ट करने
लगी। यह उन घमण्डी लोगों को नष्ट करने लगी।
46मोआब यह तुम्हारे लिये, बहुत बुरा होगा। कमोश के
लोग नष्ट किये जा रहे हैं। तुम्हारे पुत्र और पुत्रियाँ बन्दी
और कैदी के रुप में ले जाए जा रहे हैं।

47“मोआब के लोग बन्दी के रूप में दूर पहुँचाए
जाएंगे। किन्तु आने वाले दिनों में मैं मोआब के लोगों
को वापस लाऊँगा।” यह सन्देश यहोवा का है।

यहाँ मोआब के साथ न्याय समाप्त होता है।

अम्मोन के बारे में सन्देश

49 यह सन्देश अम्मोनी लोगों के बारे में है। यहोवा
कहता है, “अम्मोनी लोगों, क्या तुम सोचते हो
कि इस्राएली लोगों के बच्चे नहीं हैं? क्या तुम समझते
हो कि वहाँ माता–पिता के मरने के बाद उनकी भूमि
लेने वाले कोई नहीं? शायद ऐसा ही है और इसलिए
मल्काम ने गाद की भूमि ले ली है।”

2यहोवा कहता है, “वह समय आएगा जब रब्बा अम्मोन
के लोग युद्ध का घोष सुनेंगे। रब्बा अम्मोन नष्ट किया
जाएगा। यह नष्ट इमारतों से ढकी पहाड़ी बनेगा और
इसको चारों ओर के नगर जला दिये जाएंगे। उन लोगों
ने इस्राएल के लोगों को वह भूमि छोड़ने को विवश
किया। किन्तु इस्राएल के लोग उन्हें हटने के लिए
विवश करेंगे।” यहोवा ने यह सब कहा। 3“हेशबोन के
लोगों, रोओ। क्योंकि ऐ नगर नष्ट कर दिया गया है।
रब्बा अम्मोन की स्त्रियों, रोओ। अपने शोक वस्त्र
पहनो और रोओ। सुरक्षा के लिये नगर को भागो।
क्यों? क्योंकि शत्रु आ रहा है। वे मल्कान देवता को ले
जाएंगे और वे मल्कान के याजकों और अधिकारियों
को ले जाएंगे। 4तुम अपनी शक्ति की डींग मारते हो।
किन्तु अपना बल खो रहे हो। तुम्हें विश्वास है कि
तुम्हारा धन तुम्हें बचाएगा। तुम समझते हो कि तुम पर
कोई आक्रमण करने की सोच भी नहीं सकता।”

5किन्तु सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है, “मैं हर
ओर से तुम पर विपत्ति ढाऊँगा। तुम सब भाग खड़े होगे,
फिर कोई भी तुम्हें एक साथ लाने में समर्थ न होगा।”

6“अम्मोनी लोग बन्दी बनाकर दूर पहुँचाए जायेंगे।
किन्तु समय आएगा जब मैं अम्मोनी लोगों को वापस
लाऊँगा।” यह सन्देश यहोवा का है।

एदोम के बारे में सन्देश

7यह सन्देश एदोम के बारे में है: सर्वशक्तिमान यहोवा
कहता है, “क्या तेमान नगर में बुद्धि बची नहीं रह
गईहै? क्या एदोम के बुद्धिमान लोग अच्छी सलाह देने
योग्य नहीं रहे? क्या वे अपनी बुद्धिमत्ता खो चुके हैं?
8ददान के निवासियों भागो, छिपो। क्यों? क्योंकि मैं
एसाव को उसके कामों के लिए दण्ड दूँगा।

9“यदि अंगूर तोड़ने वाले आते हैं और अपनेअंगूर के
बागों से अंगूर तोड़ते हैं और बेलों पर कुछ अंगूर छोड़
ही देते हैं। यदि चोर रात को आते हैं तो वे उतना ही ले
जाते हैं जितना उन्हें चाहिये सब नहीं। 10किन्तु मैं एसाव
से हर चीज ले लूँगा। मैं उसके सभी छिपने के स्थान
ढूँढ डालूँगा। वह मुझसे छिपा नहीं रह सकेगा। उसके
बच्चे, सम्बन्धी और पड़ोसी मरेंगे। 11कोई भी व्यक्ति
उनके बच्चों की देख–रेख के लिये नहीं बचेगा। उसकी
पत्नियाँ किसी भी विश्वासपात्र को नहीं पाएंगी।”

12यह वह है, जो यहोवा कहता है, “कुछ व्यक्ति दण्ड
के पात्र नहीं होते, किन्तु उन्हें कष्ट होता है। किन्तु
एदोम तुम दण्ड पाने योग्य हो, अत: सचमुच तुमको दण्ड
मिलेगा। जो दण्ड तुम्हें मिलना चाहिये, उससे तुम बचकर
नहीं निकल सकते। तुम्हें दण्ड मिलेगा।”

13यहोवा कहता है, “मैं अपनी शक्ति से यह प्रतिज्ञा
करता हूँ, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि बोस्रा नगर नष्ट कर
दिया जाएगा। वह नगर बरबाद चट्टानों का ढेर बनेगा।
जब लोग अन्य नगरों का बुरा होना चाहेंगे तो वे इस
नगर को उदाहरण के रूप में याद करेंगे। लोग उस
नगर का अपमान करेंगे और बोस्रा के चारों ओर के
नगर सदैव के लिये बरबाद हो जाएंगे।”

14मैंने एक सन्देश यहोवा से सुना। यहोवा ने राष्ट्रों
को सन्देश भेजा। सन्देश यह है: “अपनी सेनाओं को
एक साथ एकत्रित करो! युद्ध के लिये तैयार हो जाओ।
एदोम राष्ट्र के विरुद्ध कूच करो। 15एदोम, मैं तुम्हें
महत्वहीन बनाऊँगा। हर एक व्यक्ति तुमसे घृणा करेगा।
16एदोम, तुमने अन्य राष्ट्रों को आतंकित किया है।
अत: तुमने समझा कि तुम महत्वपूर्ण हो। किन्तु तुम
मूर्ख बनाए गए थे। तुम्हारे घमण्ड ने तुझे धोखा दिया है।
एदोम, तुम ऊँचे पहाड़ियों पर बसे हो, तुम बड़ी चट्टानों

और पहाड़ियों के स्थानों पर सुरक्षित हो। किन्तु यदि
तुम अपना निवास उकाब के घोंसले की ऊँचाई पर ही
क्यों न बनाओ, तो भी मैं तुझे पा लूँगा और मैं वहाँ से
नीचे ले आऊँगा।" यहोवा ने यह सब कहा।

17"एदोम नष्ट किया जाएगा। लोगों को नष्ट नगरों
को देखकर दुःख होगा। लोग नष्ट नगरों पर आश्चर्य
से सीटी बजाएंगे। 18एदोम, सदोम, अमोरा और उनके
चारों ओर के नगरों जैसा नष्ट किया जाएगा। कोई
व्यक्ति वहाँ नहीं रहेगा।" यह सब यहोवा ने कहा।

19"कभी यरदन नदी के समीप की घनी झाड़ियोंसे
एक सिंह निकलेगा और वह सिंह उन खेतों में जाएगा
जहाँ लोग अपनी भेड़ें और अपने पशु रखते हैं। मैं उस
सिंह के समान हूँ। मैं एदोम जाऊँगा और मैं उन लोगों
को आंतकित करुँगा। मैं उन्हें भगाऊँगा। उनका कोई
युवक मुझको नहीं रोकेगा। कोई भी मेरे समान नहीं
है। कोई भी मुझको चुनौती नहीं देगा। उनके गड़ेरियों
(प्रमुखों) में से कोई भी हमारे विरुद्ध खड़ा नहीं होगा।"

20अत: यहोवा ने एदोम के विरुद्ध जो योजना बनाई है
उसे सुनो। तेमान में लोगों के साथ जो करने का निश्चय
यहोवा ने किया है उसे सुनो। शत्रु एदोम की रेवड़
(लोग) के बच्चों को घसीट ले जाएगा। उन्होंने जो कुछ
किया उससे एदोम के चरागाह खाली हो जायेगें। 21एदोम
के पतन के धमाके से पृथ्वी काँप उठेगी। उनका रूदन
लगातार लाल सागर तक सुनाई पड़ेगा। 22यहोवा उस
उकाब की तरह मंडरायेगा जो अपने शिकार पर टूटता
है। यहोवा बोस्रा नगर पर अपने पंख उकाब के समान
फैलाया है। उस समय एदोम के सैनिक बहुत आतंकित
होंगे। वे प्रसव करती स्त्री की तरह भय से रोएंगे।

दमिश्क के बारे में सन्देश

23यह सन्देश दमिश्क नगर के लिये है: "हमात और
अर्पद नगर भयभीत हैं। वे डरे हैं क्योंकि उन्होंने बुरी
खबर सुनी है। वे साहसहीन हो गए हैं। वे परेशान और
आतंकित हैं। 24दमिश्क नगर दुर्बल हो गया है। लोग
भाग जाना चाहते हैं। लोग भय से घबराने को तैयार बैठे
हैं। प्रसव करती स्त्री की तरह लोग पीड़ा और कष्ट का
अनुभव कर रहे हैं। 25"दमिश्क प्रसन्न नगर है। लोगों
ने अभी उस तमाशे के नगर को नहीं छोड़ा है। 26अत:
युवक इस नगर के सार्वजनिक चौराहे में मरेंगे। उस
समय उसके सभी सैनिक मार डाले जाएंगे।" सर्वशक्तिमान
यहोवा ने यह सब कुछ कहा है। 27मैं दमिश्क की
दीवारों में आग लगा दूँगा। वह आग बेन्नहदद के दृढ़
दुर्गों को पूरी तरह जलाकर राख कर देगी।"

केदार और हासोर के बारे में सन्देश

28यह सन्देश केदार के परिवार समूह और हासोर
के शासकों के बारे में है। बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर
ने उन्हें पराजित किया था।

यहोवा कहता है, "जाओ और केदार के परिवार
समूह पर आक्रमण करो। पूर्व के लोगों को नष्ट कर
दो। 29उनके डेरे और रेवड़ ले लिये जाएंगे। उनके डेरे
और सभी चीजें ले जायी जायेंगी। उनका शत्रु ऊँटों को
ले लेगा। लोग उनके सामने चिल्लाएंगे: 'हमारे चारों
ओर भयंकर घटनायें घट रही है।' 30शीघ्र ही भाग
निकलो! हासोर के लोगों, छिपने का ठीक स्थान ढूँढो।"
यह सन्देश यहोवा का है। "नबूकदनेस्सर ने तुम्हारे
विरुद्ध योजना बनाई है। उसने तुम्हें पराजित करने की
चुस्त योजना बनाई है।

31"एक राष्ट्र है, जो खुशहाल है। उस राष्ट्र को
विश्वास है कि उसे कोई नहीं हरायेगा। उस राष्ट्र के
पास सुरक्षा के लिये द्वार और रक्षा प्राचीर नहीं है। वे
लोग अकेले रहते हैं। यहोवा कहता है, 'उस राष्ट्र पर
आक्रमण करो।' 32शत्रु उनके ऊँटों और पशुओं के
बड़े झुण्डों को चुरा लेगा। शत्रु उनके विशाल जानवरों
के समूह को चुरा लेगा। मैं उन लोगों को पृथ्वी के हर
भाग में भाग जाने पर विवश करूँगा जिन्होंने अपने
बालों के कोनों को कटा रखाहै। और मैं उनके लिये
चारों ओर से भयंकर विपत्तियाँ लाऊँगा।" यह सन्देश
यहोवा का है। 33"हासोर का प्रदेश जंगली कुत्तों के रहने
का स्थान बनेगा। यह सदैव के लिये सूनी मरुभूमि
बनेगा। कोई व्यक्ति वहाँ नहीं रहेगा कोई व्यक्ति उस
स्थान पर नहीं रहेगा।"

एलाम के बारे में सन्देश

34जब सिदकिय्याह यहूदा का राजा था तब उसके
राज्यकाल के आरम्भ में यिर्मयाह नबी ने यहोवा का
एक सन्देश प्राप्त किया। यह सन्देश एलाम राष्ट्र के बारे
में है। 35सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "मैं एलाम का
धनुष बहुत शीघ्र तोड़ दूँगा। धनुष एलाम का सबसे
शक्तिशाली अस्त्र है। 36मैं एलाम पर चतुर्दिक तूफान
लाऊँगा। मैं उन्हें आकाश के चारों दिशाओं से लाऊँगा।
मैं एलाम के लोगों को पृथ्वी पर सर्वत्र भेजूँगा जहाँ
चतुर्दिक आँधिया चलती हैं और एलाम के बन्दी हर
राष्ट्र में जाएंगे। 37मैं एलाम को, उनके शत्रुओं के
देखते, टुकड़ों में बाँट दूँगा। मैं एलाम को उनके सामने
तोड़ूँगा जो उसे मार डालना चाहते हैं। मैं उन पर भयंकर
विपत्तियाँ लाऊँगा। मैं उन्हें दिखाऊँगा कि मैं उन पर
कितना क्रोधित हूँ।" यह सन्देश यहोवा का है। "मैं
एलाम का पीछा करने को तलवार भेजूँगा। तलवार
उनका पीछा तब तक करेगी जब तक मैं उन सबको
मार नहीं डालूँगा। 38मैं एलाम को दिखाऊँगा कि मैं
व्यवस्थापक हूँ और मैं उसके राजाओं तथा पदाधिकारियों
को नष्ट कर दूँगा।" यह सन्देश यहोवा का है। 39"किन्तु
भविष्य में मैं एलाम के लिये सब अच्छा घटित होने
दूँगा।" यह सन्देश यहोवा का है।

बाबुल के बारे में सन्देश

50 यह सन्देश यहोवा का है जिसे उसने बाबुल
राष्ट्र और बाबुल के लोगों के लिये दिया।
यहोवा ने यह सन्देश यिर्मयाह द्वारा दिया।
2"हर एक राष्ट्र को यह घोषित कर दो!झण्डा उठाओ
और सन्देश सुनाओ। पूरा सन्देश सुनाओ और कहो,
'बाबुल राष्ट्र पर अधिकार किया जाएगा। बेल देवता
लज्जा का पात्र बनेगा। मरोदक देवता बहुत डर जाएगा।
बाबुल की देवमूर्तियाँ लज्जा का पात्र बनेंगी उसके मूर्ति
देवता भयभीत हो जाएंगे।' 3उत्तर से एक राष्ट्र बाबुल पर
आक्रमण करेगा। वह राष्ट्र बाबुल को सूनी मरुभूमि सा
बना देगा। कोई व्यक्ति वहाँ नहीं रहेगा मनुष्य और पशु
दोनो वहाँ से भाग जाएंगे।" 4यहोवा कहता है, "उस
समय, इस्राएल के और यहूदा के लोग एक साथ होंगे।
वे एक साथ बराबर रोते रहेंगे और एक साथ ही वे
अपने यहोवा परमेश्वर को खोजने जाएंगे। 5वे लोग
पूछेंगे सिय्योन कैसे जाएँ वे उस दिशा में चलना आरम्भ
करेंगे। लोग कहेंगे, 'आओ, हम यहोवा से जा मिलें, हम
एक ऐसी वाचा करें जो सदैव रहे। हम लोग एक ऐसी
वाचा करे जिसे हम कभी न भूले।'

6"मेरे लोग खोई भेड़ की तरह हो गए हैं। उनके
गड़ेरिए (प्रमुख) उन्हें गलत रास्ते पर ले गए हैं। उनके
मार्गदर्शकों ने उन्हें पर्वतों और पहाड़ियों में चारों ओर
भटकाया है। वे भूल गए कि उनके विश्राम का स्थान
कहाँहै। 7जिसने भी मेरे लोगों को पाया, चोट पहुँचाई
और उन शत्रुओं ने कहा, 'हमने कुछ गलत नहीं किया।'
उन लोगों ने यहोवा के विरुद्ध पाप किये। यहोवा उनका
सच्चा विश्रामस्थल है। यहोवा परमेश्वर है जिस पर
उनके पूर्वजों ने विश्वास किया। 8"बाबुल से भाग निकलो।
कसदी लोगों के देश को छोड़ दो। उन बकरों की तरह
बनो जो झुण्ड को राह दिखाते हैं। 9मैं बहुत से राष्ट्रों को
उत्तर से एक साथ लाऊँगा। राष्ट्रों का यह समूह बाबुल
के विरुद्ध युद्ध के लिये तैयार होगा। बाबुल उत्तर के
लोगों द्वारा अधिकार में लाया जाएगा। वे राष्ट्र बाबुल पर
अनेक बाण चलायेंगे और वे बाण उन सैनिकों के
समान होंगे जो युद्ध भूमि से खाली हाथ नहीं लौटते।
10शत्रु कसदी लोगों से सारा धन लेगा। वे शत्रु सैनिक
जो चाहेंगे, लेंगे।" यह सब यहोवा कहता है।

11"बाबुल, तुम उत्तेजित और प्रसन्न हो। तुमने मेरा
देश लिया। तुम अन्न के चारों ओर नयी गाय की तरह
नाचते हो। तुम्हारी हँसी घोडों की हिनहिनाहट सी है।
12अब तुम्हारी माँ बहुत लज्जित होगी तुम्हें जन्म देने
वाली माँ को ग्लानि होगा बाबुल सभी राष्ट्रो की तुलना
में सबसे कम महत्व का होगा। वह एक सूनी मरुभूमि
होगी। 13यहोवा अपना क्रोध प्रकट करेगा। अत: कोई
व्यक्तिवहाँ नहीं रहेगा। बाबुल नगर पूरी तरह खाली
होगा। बाबुल से गुजरने वाला हर एक व्यक्ति डरेगा।वे
अपना सिर हिलाएंगे जब वे देखेंगे कि यह किस बुरी
तरह नष्ट हुआहै।

14"बाबुल के विरुद्ध युद्ध की तैयारी करो। सभी
सैनिकों अपने धनुष से बाबुल पर बाण चलाओ। अपने
बाणों को न बचाओ। बाबुल ने यहोवा के विरुद्ध पाप
किया है। 15बाबुल के चारों ओर के सैनिकों, युद्ध का
उद्घोष करो। अब बाबुल ने आत्म समर्पण कर दिया
है। उसकी दीवारों और गुम्बदों को गिरा दिया गया है।
यहोवा उन लोगों को वह दण्ड दे रहा है जो उन्हें मिलना
चाहिये। राष्ट्रों तुम बाबुल को वह दण्ड दो जो उसे
मिलना चाहिये। सके साथ वह करो जो उसने अन्य
राष्ट्रों के साथ किया है। 16बाबुल के लोगों को उनकी
फसलें न उगाने दो। उन्हें फसलें न काटने दो। बाबुल
के सैनिक ने अपने नगर में अनेकों बन्दी लाए थे। अब
शत्रु के सैनिक आ गए हैं, अत: वे बन्दी अपने घर लौट
रहे हैं। वे बन्दी अपने देशों को वापस भाग रहे हैं।

17"इस्राएल भेड़ की तरह है जिसे सिंहो ने पीछा करके
भगा दिया है। उसे खाने वाला पहला सिंह अश्शूर का
राजा था। उसकी हड्डियों को चूर करने वाला अंतिमसिंह
बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर था। 18अत: सर्वशक्तिमान
यहोवा,इस्राएल का परमेश्वर कहता है:'मैं शीघ्र ही बाबुल
के राजा और उसके देश को दण्ड दूँगा। मैं उसे वैसे ही
दण्ड दूँगा जैसे मैंने अश्शूर के राजा को दण्ड दिया।'

19"किन्तु इस्राएल को मैं उसके खेतों में वापस लाऊँगा।
वह वही भोजन करेगा जो कर्मेल पर्वत और बाशान
की भूमि की उपज है। वह भोजन करेगा और भरा
पूरा होगा। वह एप्रैम और गिलाद भूमि में पहाड़ियों पर
खायेगा।"

20यहोवा कहता है, "उस समय लोग इस्राएल के अपराध
को जानना चाहेंगे। किन्तु कोई अपराध नहीं होगा। लोग
यहूदा के पापों को जानना चाहेंगे किन्तु कोई पाप नहीं
मिलेगा। क्यों? क्योंकि मैं इस्राएल और यहूदा के कुछबचे
हुओं को बचा रहा हूँ और मैं उनके सभी पापों के लिये
उन्हें क्षमा कर रहा हूँ।" 21यहोवा कहता है, मरातैम
देश पर आक्रमण करो। पकोद के प्रदेश के निवासियों
पर आक्रमण करो। उन पर आक्रमण करो, उन्हें मार
डालो और उन्हें पूरी तरह नष्ट कर दो। वह सब करो
जिसके लिये मैं आदेश दे रहा हूँ!

22"युद्ध का घोष पूरे देश में सुना जा सकता है। यह
बहुत अधिक विध्वंस का शोर है। 23बाबुल पूरी पृथ्वी
का हथौड़ा था। किन्तु अब हथौड़ा टूट गया और बिखर
गया है। बाबुल सच में सबसे अधिक बरबाद राष्ट्रों में से
एक है। 24बाबुल, मैंने तुम्हारे लिए एक जाल बिछाया,
और जानने के पहले ही तुम इसमें आ फँसे। तुम यहोवा
के विरुद्ध लड़े, इसलिये तुम मिल गए और पकड़े गए।
25यहोवा ने अपना भण्डार गृह खोल दिया है। यहोवा ने
भण्डार गृह से अपने क्रोध के अस्त्र शस्त्र निकाले हैं।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा ने उन अस्त्र शस्त्रों को
निकाला हैं क्योंकि उसे काम करना है। उसे कसदी
लोगों के देश में काम करना है।

26“अति दूर से बाबुल के विरुद्ध आओ, उसके अन्न
भरे भण्डार गृहों को तोड़कर खोलो। बाबुल को पूरी
तरह नष्ट करो और किसी को जीवित न छोड़ो। उसके
शवों को अन्न के बड़े ढेर की तरह एक ढेर में
लगाओ। 27बाबुल के सभी युवकों को मार डालो। उनका
नहसंहार होने दो। उनकी पराजय का समय आ गया है।
अत: उनके लिये बहुत बुरा होगा। यह उनके दण्डित
होने का समय है। 28लोग बाबुल देश से भाग रहे हैं, वे
उस देश से बच निकल रहे हैं। वे लोग सिय्योन को आ
रहे हैं और वे सभी से वह सब कह रहे हैं जो यहोवा
कर रहा है। वे कह रहे हैं कि बाबुल को, जो दण्ड
मिलना चाहिये। यहोवा उसे दे रहा है। बाबुल ने यहोवा
के मन्दिर को नष्ट किया, अत: अब यहोवा बाबुल को
नष्ट कर रहा है।

29“धनुर्धारियों को बाबुल के विरुद्ध बुलाओ। उन
लोगों से नगर को घेरने को कहो। किसी को बच
निकलने मत दो। जो उसने बुरा किया है उसका उल्टा
भुगतान करो। उसके साथ वही करो जो उसने अन्य
राष्ट्रों के साथ किया है। बाबुल ने यहोवा का सम्मान
नहीं किया। बाबुल इस्राएल के पवित्रतम के प्रति बड़ा
क्रूर रहा। अत: बाबुल को दण्ड दो। 30बाबुल के युवक
सड़कों पर मारे जाएंगे, उस दिन उसके सभी सैनिक
मर जाएंगे। यह सब यहोवा कहता है। 31“बाबुल, तुम
बहुत गर्वीले हो, और मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ। हमारा स्वामी
सर्वशक्तिमान यहोवा यह सब कहता है। “मैं तुम्हारे
विरुद्ध हूँ और तुम्हारे दण्डित होने का समय आ गया
है। 32गर्वीला बाबुल ठोकर खाएगा और गिरेगा और
कोई व्यक्ति उसे उठाने में सहायता नहीं करेगा। मैं
उसके नगरों में आग लगाऊँगा, वह आग उसके चारों
ओर के सभी को पूरी तरह जला देगी।”

33सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, इस्राएल और यहूदा
के लोग दास हैं। शत्रु उन्हें ले गया, और शत्रु इस्राएल
को निकल जाने नहीं देगा। 34किन्तु परमेश्वर उन
लोगों को वापस लाएगा। उसका नाम सर्वशक्तिमान
परमेश्वर यहोवा है। वह दृढ़ शक्ति से उन लोगों की
रक्षा करेगा। वह उनकी रक्षा करेगा जिससे वह पृथ्वी
को विश्राम दे सके। किन्तु वह बाबुल के निवासियों को
विश्राम नहीं देगा।”

35यहोवा कहता है, “बाबुल के निवासियों को तलवार
के घाट उतर जाने दो। बाबुल के राजकीय अधिकारियों
और ज्ञानियों को भी तलवार से कट जाने दो। 36बाबुल
के याजकों को तलवार के घाट उतरने दो। वे याजक
मूर्ख लोगों की तरह होंगे। बाबुल के सैनिकों को तलवार
से कटने दो, वे सैनिक त्रास से भर जाएंगे। 37बाबुल के
घोड़ों और रथों को तलवार के घाट उतरने दो। अन्य
देशों के भाड़े के सैनिकों को तलवार से कट जाने दो।
वे सैनिक भयभीत अबलाओं की तरह होंगे। बाबुल के
खजाने के विरुद्ध तलवार उठने दो, वे खजाने ले लिये
जाएंगे। 38बाबुल की नदियों के विरुद्ध तलवार उठने दो।
वे नदियाँ सूख जाएंगी। बाबुल देश में असंख्य देव मूर्तियाँ
है। वे मूर्तियाँ प्रकट करती है कि बाबुल के लोग मूर्ख
हैं। अत: उन लोगों के साथ बुरी घटनायें घटेंगी।

39“बाबुल फिर लोगों से नहीं भरेगा, जंगली कुत्ते,
शुतुरमुर्ग और अन्य मरुभूमि के जानवर वहाँ रहेंगे।
किन्तु वहाँ कभी कोई मनुष्य फिर नहीं रहेगा।
40परमेश्वर ने सदोम, अमोरा और उनके चारों ओर
के नगरों को पूरी तरह से नष्ट किया था और अब उन
नगरों में कोई नहीं रहता।इसी प्रकार बाबुल में कोई
नहीं रहेगा और कोई मनुष्य वहाँ रहने कभी नहीं
जायेगा।

41“देखो, उत्तर से लोग आ रहे हैं, वे एक शक्तिशाली
राष्ट्र से आ रहे हैं। पूरे संसार के चारों ओर से एक
साथ बहुत से राजा आ रहे हैं। 42उनकी सेना के पास
धनुष और भाले हैं, सैनिक क्रूर हैं, उनमें दया नहीं है।
सैनिक अपने घोड़ों पर सवार आ रहे हैं, और प्रचण्ड
घोष सागर की तरह गरज रहे हैं। वे अपने स्थानों पर
युद्ध के लिये तैयार खड़े हैं। बाबुल नगर वे तुम पर
आक्रमण करने को तत्पर हैं। 43बाबुल के राजा ने उन
सेनाओं के बारे में सुना, और वह आतंकित हो गया।
वह इतना डर गया है कि उसके हाथ हिल नहीं सकते।
उसके डर से उसके पेट में ऐसे पीड़ा हो रही है, जैसे वह
प्रसव करने वाली स्त्री हो।”

44यहोवा कहता है, “कभी यरदन नदी के पास की
घनी झाड़ियों से एक सिंह निकलेगा। वह सिंह उन खेतों
में आएगा जहाँ लोग अपने जानवर रखते हैं और सब
जानवर भाग जाएंगे। मैं उस सिंह की तरह होऊँगा। मैं
बाबुल को, उसके देश से पीछा करके भगाऊँगा। यह
करने के लिये मैं किसे चुनूँगा? कोई व्यक्ति मेरे समान
नहीं है। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो मुझे चुनौती दे सके।
अत: इसे मैं करूँगा। कोई गड़ेरिया मुझे भगाने नहीं
आएगा। मैं बाबुल के लोगों को पीछा करके भगाऊँगा।”

45बाबुल के साथ यहोवा ने जो करने की योजना
बनाई है, उसे सुनो। बाबुल लोगों के लिये यहोवा ने जो
करने का निर्णय लिया है उसे सुनो। दुश्मन दुध मुँहे
को, बाबुल के समूह (लोगों) से खींच लेगा। बाबुल के
चरागाह, उनके कृत्यों के कारण खाली हो जायेगें।
46बाबुल का पतन होगा, और वह पतन पृथ्वी को
कंपकंपा देगा। सभी राष्ट्रों के लोग बाबुल के विध्वस्त
होने के बारे में सुनेंगे।

51 यहोवा कहता है, “मैं एक प्रचण्ड आँधी
उठाऊँगा। मैं इसे बाबुल और बाबुल के लोगों

के विरुद्ध बहाऊँगा। 2मैं बाबुल को ओसाने के लिए
लोगों को भेजूँगा। वे बाबुल को ओसा देंगे। वे लोग
बाबुल को सूना बना देंगे। सेनायें नगर का घेरा डालेंगी
और भयंकर विध्वंस होगा। 3बाबुल के सैनिक अपने
धनुष–बाण का उपयोग नहीं कर पाएंगे। वे सैनिक
अपना कवच भी नहीं पहन सकेंगे। बाबुल के युवकों
के लिए दु:ख अनुभव न करो। उसकी सेना को पूरी
तरह नष्ट करो। 4बाबुल के सैनिक कसदियों की भूमि
में मारे जाएंगे। वे बाबुल की सड़कों पर बुरी तरह
घायल होंगे।" 5सर्वशक्तिमान यहोवा ने इस्राएल व यहूदा
के लोगों को विधवा सा अनाथ नहीं छोड़ा है। परमेश्वर
ने उन लोगों को नहीं छोड़ा। नहीं वे लोग इस्राएल के
पवित्रतम को छोड़ने के अपराधी है। उन्होंने उसको
छोड़ा किन्तु उसने इनको नहीं छोड़ा।

6बाबुल से भाग चलो। अपना जीवन बचाने के लिये
भागो। बाबुल के पापों के कारण वहाँ मत ठहरो और
मारे न जाओ। यह समय है जब यहोवा बाबुल के लोगों
को उन बुरे कामों का दण्ड देगा जो उन्होंने किये।
बाबुल को दण्ड मिलेगा जो उसे मिलना चाहिए। 7बाबुल
यहोवा के हाथ का सुनहले प्याले जैसा था। बाबुल ने
पूरी पृथ्वी को मतवाला बना डाला। राष्ट्रों ने बाबुल की
दाखमधु पी। अत: वे पागल हो उठे। 8बाबुल का पतन
होगा और वह अचानक टूट जाएगा। उसके लिए रोओ!
उसकी पीड़ा की औषधि लाओ! कदाचित् वह स्वस्थ
हो जाये!

9हमने बाबुल को स्वस्थ करने को प्रयत्न किया,
किन्तु वह स्वस्थ न हुआ। अत: हम उसे छोड़ दे और
अपने अपने देशों को लौट चले। बाबुल का दण्ड आकाश
का परमेश्वर निश्चित करेगा, वह निर्णय करेगा कि
बाबुल का क्या होगा। वह बादलों के समान ऊँचा हो
गया है। 10यहोवा ने हम लोगों के लिये बदला लिया।
आओ इस बारे में सिय्योन में बतायें। हम यहोवा हमारे
परमेश्वर ने जो कुछ किया है उसके बारे में बतायें।

11बाणों को तेज करो! ढाल ओढ़ो। यहोवा ने मादी के
राजाओं को जगा दिया है। उसने उन्हें जगाया है क्योंकि
वह बाबुल को नष्ट करना चाहता है। यहोवा बाबुल के
लोगों को वह दण्ड देगा जिसके वे पात्र हैं। बाबुल की
सेना ने यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर को ध्वस्त किया
था। अत: यहोवा उन्हें वह दण्ड देगा जो उन्हें मिलना
चाहिये। 12बाबुल की दीवारों के विरुद्ध झण्डे उठा लो।
अधिक रक्षक लाओ। चौकीदारों को उनके स्थान पर
रखो। एक गुप्त आक्रमण के लिये तैयार हो जाओ।
यहोवा वह करेगा जो उसने योजना बनाई है। यहोवा वह
करेगा जो उसने बाबुल के लोगों के विरुद्ध करने को
कहा। 13बाबुल तुम प्रभूत जल के पास हो। तुम खजाने
से पूर्ण हो। किन्तु राष्ट्र के रूप में तुम्हारा अन्त आ
गयाहै। यह तुम्हें नष्ट कर देने का समय है। 14सर्वशक्तिमान
यहोवा ने यह प्रतिज्ञा अपना नाम लेकर की है: "बाबुल
मैं तुम्हें निश्चय ही असंख्य शत्रु सेना से भर दूँगा। वे
टिड्डी दल के समान होंगे। वे सैनिक तुम्हारे विरुद्ध
जीतेंगे और वे तुम्हारे ऊपर खड़े होंगे एवं अपना विजय
घोष करेंगे।"

15यहोवा ने अपनी महान शक्ति का उपयोग किया
और पृथ्वी को बनाया। उसने विश्व को बनाने के लिये
अपनी बुद्धि का उपयोग किया। उसने अपनी समझ का
उपयोग आकाश को फैलाने में किया। 16जब वह गरजता
है तब आकाश का जल गरज उठता है। वह सारी पृथ्वी
से मेघों को ऊपर भेजता है। वह वर्षा के साथ बिजली
को भेजता है। वह अपने भण्डार गृह से हवाओं को
लाता है। 17किन्तु लोग इतने बेवकूफ हैं। वें नहीं समझते
कि परमेश्वर ने क्या कर दिया है। कुशल मूर्तिकार
असत्य देवताओं की मूर्तियाँ बनाते हैं। वे देवमूर्तियाँ केवल
असत्य देवता हैं। अत: वे प्रकट करती हैं कि वह
मूर्तिकार कितना मूर्ख है। वे देवमूर्तियाँ सजीव नहीं हैं।
18वे देवमूर्तियाँ व्यर्थ हैं। लोगों ने उन मूर्तियों को बनाया
है और वे मजाक के अलावा कुछ नहीं हैं। उनके न्याय
का समय आएगा और वे देवमूर्तियाँ नष्ट कर दी जाएंगी।
19किन्तु याकूब का अँश (परमेश्वर) उन व्यर्थ देवमूर्तियों
सा नहीं है। लोगों ने परमेश्वर को नहीं बनाया, परमेश्वर
ने लोगों को बनाया। परमेश्वर ने ही सब कुछ बनाया।
उसका नाम सर्वशक्तिमान यहोवा है।

20यहोवा कहता है, "बाबुल तुम मेरा युद्ध का हथियार
हो, मैं तुम्हारा उपयोग राष्ट्रों को कुचलने के लिये
करता हूँ। मैं तुम्हारा उपयोग राज्यों को नष्ट करने के
लिये करता हूँ। 21मैं तुम्हारा उपयोग घोड़े और घुड़सवार
को कुचलने के लिये करता हूँ। मैं तुम्हारा उपयोग रथ
और सारथी को कुचलने के लिये करता हूँ। 22मैं
तुम्हारा उपयोग स्त्रियों और पुरुषों को कुचलने के लिये
करता हूँ। मैं तुम्हारा उपयोग वृद्ध और युवक को
कुचलने के लिये करता हूँ। मैं तुम्हारा उपयोग युवकों
और युवतियों को कुचलने के लिये करता हूँ 23मैं
तुम्हारा उपयोग गड़ेरिये और रेवड़ों को कुचलने के
लिये करता हूँ। मैं तुम्हारा उपयोग किसान और बैलों
को कुचलने के लिये करता हूँ। मैं तुम्हारा उपयोग
प्रशासकों और बड़े अधिकारियों को कुचलने के लिये
करता हूँ। 24किन्तु मैं बाबुल को उल्टा भुगतान करूँगा।
मैं सभी बाबुल के लोगों को उल्टा भुगतान करूँगा। मैं
उन्हें सिय्योन के लिये उन्होंने जो बुरा किया, उन सबका
भुगतान करूँगा। यहूदा मैं उनको उल्टा भुगतान करूँगा
जिससे तुम उसे देख सको।" यहोवा ने यह सब कहा।

25यहोवा कहता है, "बाबुल, तुम पर्वत को गिरा रहे
हो और मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ। बाबुल, तुमने पूरा देश नष्ट
किया है और मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ। मैं तुम्हारे विरुद्ध
अपना हाथ बढ़ाऊँगा। मैं तुम्हें चट्टानों से लुढ़काऊँगा।

मैं तुम्हें जला हुआ पर्वत कर दूँगा। 26लोगों को चक्की
बनाने योग्य बड़ा पत्थर नहीं मिलेगा बाबुल से लोग
इमारतों की नींव के लिये कोई भी चट्टान नहीं ला
सकेंगे। क्यों? क्योंकि तुम्हारा नगर सदैव के लिये चट्टानों
के टुकड़ों का ढेर बन जाएगा।" यह सब यहोवा ने कहा।

27"देश में युद्ध का झण्डा उठाओ! सभी राष्ट्रों में
तुरही बजा दो! राष्ट्रों को बाबुल के विरुद्ध युद्ध के लिये
तैयार करो! अरारात मिन्नी और अश्कनज राज्यों को
बाबुल के विरुद्ध युद्ध के लिए बुलाओ। उसके विरुद्ध
सेना संचालन के लिये सेनापति चुनो। सेना को उसके
विरुद्ध भेजो। इतने अधिक घोड़ों को भेजो कि वे टिड्डी
दल जैसे हो जायँ। 28उसके विरुद्ध राष्ट्रों को युद्ध के
लिये तैयार करो। मादी के राजाओं को तैयार करो।
उनके प्रशासकों और उनके बड़े अधिकारियों को तैयार
करो। उनसे शासित सभी देशों को बाबुल के विरुद्ध
युद्ध के लिये लाओ। 29देश इस प्रकार काँपता है मानों
पीड़ा भोग रहा हो। यह काँपेगा जब यहोवा बाबुल के
लिये बनाई योजना को पूरा करेगा। यहोवा की योजना
बाबुल को सूनी मरुभूमि बनाने की है। कोई व्यक्ति वहाँ
नहीं रहेगा। 30कसदी सैनिकों ने लड़ना बन्द कर दिया
है। वे अपने दुर्गों में ठहरे हैं। उनकी शक्ति क्षीण हो गई
है। वे भयभीत अबला से हो गये हैं। बाबुल के घर जल
रहे हैं। उसके फाटकों के अवरोध टूट गए हैं। 31एक
के बाद दूसरा राजदूत आ रहा है। राजदूत के पीछे
राजदूत आ रहे हैं। वे बाबुल के राजा को खबर सुना
रहे हैं कि उसके पूरे नगर पर अधिकार हो गया। 32वे
स्थान जहाँ से नदियों को पार किया जाता है अधिकार
में कर लिये गये हैं। दलदली भूमि जल रही है बाबुल के
सभी सैनिक भयभीत हैं। 33इस्राएल के लोगों का परमेश्वर
सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है: "बाबुल नगर एक
खलिहान सा है। फसल कटने के समय भूसे से अच्छा
अन्न अलग करने के लिये लोग डंठल को पीटते हैं
और बाबुल को पीटने का समय शीघ्र आ रहा है।

34"बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने अतीत में हमें
नष्ट किया। अतीत में नबूकदनेस्सर ने हमें चोट पहुँचाई।
अतीत में वह हमारे लोगों को ले गया और हम खाली
घड़े से हो गए। उसने हमारी सर्वोत्तम चीजें लीं। वह
विशाल दानव की तरह था जो तब तक सब कुछ खाता
गया जब तक उसका पेट न भरा। वह सर्वोत्तम चीजें ले
गया, और हम लोगो को दूर फेंक दिया। 35बाबुल ने हमें
चोट पहुँचाने के लिये भयंकर काम किये और अब मैं
चाहता हूँ बाबुल के साथ वैसा ही घटित हो।" सिय्योन में
रहने वाले लोगों ने यह कहा, "बाबुल हमारे लोगों को
मारने के अपराधी हैं और अब वे उन बुरे कामों के
लिये दण्ड पा रहे हैं जो उन्होंने किये थे।" यरूशलेम
नगर ने यह सब कहा। 36अत: यहोवा कहता है, "यहूदा
मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। मैं यह निश्चय देखूँगा कि
बाबुल को दण्ड मिले। मैं बाबुल के समुद्र को सुखा दूँगा
और मैं उसके पानी के सोतों को सुखा दूँगा। 37बाबुल
बरबाद इमारतों का ढेर बन जाएगा। बाबुल जंगली कुत्तों
के रहने का स्थान बनेगा। लोग चट्टानों के ढेर को
देखेंगे और चकित होंगे। लोग बाबुल के बारे में अपना
सिर हिलायेंगे। बाबुल ऐसी जगह हो जायेगा जहाँ कोई भी
नहीं रहेगा।

38"बाबुल के लोग गरजते हुए जवान सिंह की तरह
हैं। वे सिंह के बच्चे की तरह गुर्राते हैं। 39वे लोग
उत्तेजित सिंहों का सा काम कर रहे हैं। मैं उन्हें दावत
दूँगा। मैं उन्हें मत्त बनाऊँगा। वे हँसेंगे और आनन्द का
समय बितायेंगे और तब वे सदैव के लिये सो जायेंगे। वे
कभी नहीं जागेंगे।" यहोवा ने यह सब कहा।

40"मैं बाबुल के लोगों को मार डाले जाने के लिये ले
जाऊँगा। बाबुल मारे जाने की प्रतीक्षा करने वाले भेड़,
मेंमने और बकरियों जैसा होगा।

41"शेशक पराजित होगा। सारी पृथ्वी का उत्तम और
सर्वाधिक गर्वीला देश बन्दी होगा। अन्य राष्ट्रों के लोग
बाबुल पर निगाह डालेंगे और जो कुछ वे देखेंगे उससे वे
भयभीत हो उठेंगे। 42बाबुल पर सागर उमड़ पड़ेगा।
उसकी गरजती तरंगे उसे ढक लेंगी। 43तब बाबुल के
नगर बरबाद और सूने हो जायेंगे। बाबुल एक सूखी
मरुभूमि बन जाएगा। यह ऐसा देश बनेगा जहाँ कोई
मनुष्य नहीं रहेगा, लोग बाबुल से यात्रा भी नहीं करेंगे।
44मैं बेल देवता को बाबुल में दण्ड दूँगा। मैं उसके द्वारा
निगले व्यक्तियों को उगलवाऊँगा। अन्य राष्ट्र बाबुल में
नहीं आएंगे और बाबुल नगर की चहारदीवारी गिर
जायेगी। 45मेरे लोगों, बाबुल नगर से बाहर निकलो।
अपना जीवन बचाने को भाग चलो। यहोवा के तेज
क्रोध से बच भागो।

46"मेरे लोगों, दु:खी मत होओ। अफवाहें उड़ेंगी किन्तु
डरो नहीं। इस वर्ष एक अफवाह उड़ती है। अगले वर्ष
दूसरी अफवाह उड़ेगी। देश में भयंकर यद्ध के बारे में
अफवाहें उड़ेंगी। शासकों के दूसरे शासकों के विरुद्ध
युद्ध के बारे में अफवाहें उड़ेंगी। 47निश्चय ही वह समय
आयेगा जब मैं बाबुल के असत्य देवताओं को दण्ड दूँगा
और पूरा बाबुल देश लज्जा का पात्र बनेगा। उस नगर
की सड़कों पर असंख्य मरे व्यक्ति पड़े रहेंगे। 48तब
पृथ्वी और आकाश और उसके भीतर की सभी चीजें
बाबुल पर प्रसन्न होकर गाने लगेंगे, वे जय जयकार
करेंगे, क्योंकि सेना उत्तर से आएगी, और बाबुल के
विरुद्ध लड़ेगी।" यह सब यहोवा ने कहा है।

49"बाबुल ने इस्राएल के लोगों को मारा। बाबुल ने
पृथ्वी पर सर्वत्र लोगों को मारा। अत: बाबुल का पतन
अवश्य होगा। 50लोगों, तुम तलवार के घाट उतरने से
बच निकले, तुम्हें शीघ्रता करनी चाहिये और बाबुल
को छोड़ना चाहिये। प्रतीक्षा न करो। तुम दूर देश में हो।

किन्तु जहाँ कहीं रहो यहोवा को याद करो और यरूशलेम
को याद करो।
51“यहूदा के हम लोग लज्जित हैं। हम लज्जित हैं क्यों
कि हमारा अपमान हुआ। क्यों? क्योंकि विदेशी यहोवा
के मन्दिर के पवित्र स्थानों में प्रवेश कर चुके हैं।”
52यहोवा कहता है, “समय आ रहा है जब मैं बाबुल
की देवमूर्तियों को दण्ड दूँगा। उस समय उस देश में
सर्वत्र घायल लोग पीड़ा से रोएंगे। 53बाबुल उठता चला
जाएगा जब तक वह आकाश न छू ले। बाबुल अपने
दुर्गों को दृढ़ बनायेगा। किन्तु मैं उस नगर के विरुद्ध
लड़ने के लिए लोगों को भेजूँगा और वे लोग उसे नष्ट
कर देंगे।” यहोवा ने यह सब कहा।
54“हम बाबुल में लोगों का रोना सुन सकते हैं। हम
कसदी लोगों के देश में चीजों को नष्ट करने वाले लोगों
का शोर सुन सकते हैं। 55यहोवा बहुत शीघ्र बाबुल को
नष्ट करेगा। वह नगर के उद्घोष को चुप कर देगा।
शत्रु सागर की गरजती तरंगों की तरह टूट पड़ेंगे। चारों
ओर के लोग उस गरज को सुनेंगे। 56सेना आएगी और
बाबुल को नष्ट करेगी। बाबुल के सैनिक पकड़े जाएंगे।
उनके धनुष टूटेंगे। क्यों? क्योंकि यहोवा उन लोगों को
दण्ड देता है जो बुरा करते हैं। यहोवा उन्हें पूरा दण्ड देता
है जिसके वे पात्र हैं। 57मैं बाबुल के बड़े पदाधिकारियों
और बुद्धिमान लोगों को मत्त कर दूँगा। मैं उसके प्रशासकों,
अधिकारियों और सैनिकों को भी मत्त करुँगा। तब वे
सदैव के लिये सो जायेंगे, वे कभी नहीं जागेंगे।” राजा ने
यह कहा उसका नाम सर्वशक्तिमान यहोवा है।
58सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, “बाबुल की मोटी
और दृढ़ दीवार गिरा दी जाएगी। इसके ऊँचे द्वार जला
दिये जायेंगे। बाबुल के लोग कठिन परिश्रम करेंगे
परउसका कोई लाभ न होगा। वे नगर को बचाने के
प्रयत्न में बहुत थक जायेंगे, किन्तु वे लपटों के केवल
ईंधन होंगे।”

यिर्मयाह बाबुल को एक सन्देश भेजता है

59यह वह सन्देश है जिसे यिर्मयाह ने सरायाह नामक
अधिकारी को दिया। सरायाह नेरिय्याह का पुत्र था।
नेरिय्याह महसेयाह का पुत्र था। सरायाह यहूदा के राजा
सिदकिय्याह के साथ बाबुल गया था। यहूदा के राजा
सिदकिय्याह के राज्य काल के चौथे वर्ष में यह हुआ।
उस समय यिर्मयाह ने सरायाह नामक अधिकारी को
यह सन्देश दिया। 60यिर्मयाह ने पत्रक पर उन सब
भयंकर घटनाओं को लिख रखा था जो बाबुल में घटित
होने वाली थीं। उसने यह सब बाबुल के बारे में लिख
रखा था। 61यिर्मयाह ने सरायाह से कहा, “सरायाह,
बाबुल जाओ। निश्चय करो कि यह सन्देश तुम इस
प्रकार पढ़ो कि सभी लोग सुन लें। 62इसके बाद कहो,
‘हे यहोवा तूने कहा है कि तू इस बाबुल नामक स्थान
को नष्ट करेगा। तू इसे ऐसे नष्ट करेगा कि कोई
मनुष्य या जानवर यहाँ नहीं रहेगा। यह सदैव के लिये
सूना और बरबाद स्थान हो जाएगा।’ 63जब तुम पत्रक
को पढ़ चुको तो इससे एक पत्थर बांधो। तब इस पत्रक
को परात नदी में डाल दो। 64तब कहो, ‘बाबुल इसी
प्रकार डूबेगा। बाबुल फिर कभी नहीं उठेगा। बाबुल
डूबेगा क्योंकि मैं वहाँ भयंकर विपत्तियाँ ढाऊँगा।’” यिर्मयाह
के शब्द यहाँ समाप्त हुए।

यरूशलेम का पतन

52 सिदकिय्याह जब यहूदा का राजा हुआ, वह
इक्कीस वर्ष का था। सिदकिय्याह ने यरूशलेम
में ग्यारह वर्ष तक राज्य किया। उसकी माँ का नाम
हमूतल था जो यिर्मयाह की पुत्री थी। हमूतल का परिवार
लिब्ना नगर का था। 2सिदकिय्याह ने बुरे काम किये,
ठीक वैसे ही जैसे यहोयाकीम ने किये थे। यहोवा
सिदकिय्याह द्वारा उन बुरे कामों का करना पसन्द नहीं
करता था। 3यरूशलेम और यहूदा के साथ भयंकर
घटनायें घटीं, क्योंकि यहोवा उन पर क्रोधित था। अन्त
में यहोवा ने अपने सामने से यहूदा और यरूशलेम के
लोगों को दूर फेंक दिया।
सिदकिय्याह बाबुल के राजा के विरुद्ध होगया। 4अत:
सिदकिय्याह के शासनकाल के नौवें वर्ष के दसवें
महीने के दसवें दिन बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने
सेना के साथ यरूशलेम को कूच किया। नबूकदनेस्सर
अपने साथ अपनी पूरी सेना लिये था। बाबुल की सेना
ने यरूशलेम के बाहर डेरा डाला। इसके बाद उन्होंने
नगर-प्राचीर के चारों ओर मिट्टी के टीले बनाये जिससे
वे उन दीवारों पर चढ़ सकें। 5सिदकिय्याह के राज्यकाल
के ग्यारहवें वर्ष तक यरूशलेम नगर पर घेरा पड़ा रहा।
6उस वर्ष के चौथे महीने के नौवें दिन भुखमरी की
हालत बहुत खराब थी। नगर में खाने के लिये कुछ भी
भोजन नहीं रह गया था। 7उस दिन बाबुल की सेना
यरूशलेम में प्रवेश कर गई। यरूशलेम के सैनिक भाग
गए। वे रात को नगर छोड़ भागे। वे दो दीवारों के बीच
के द्वार से गए। द्वार राजा के उद्यान के पास था। यद्यपि
बाबुल की सेना ने यरूशलेम नगर को घेर रखा था तो
भी यरूशलेम के सैनिक भाग निकले। वे मरुभूमि की
ओर भागे।
8किन्तु बाबुल की सेना ने सिदकिय्याह का पीछा
किया। उन्होंने उसे यरीहो के मैदान में पकड़ा। सिदकिय्याह
के सभी सैनिक भाग गए। 9बाबुल की सेना ने राजा
सिदकिय्याह को पकड़ लिया। वे रिबला नगर में उसे
बाबुल के राजा के पास ले गए। रिबला हमात देश में है।
रिबला में बाबुल के राजा ने सिदकिय्याह के बारे में
अपना निर्णय सुनाया। 10वहाँ रिबला नगर में बाबुल के
राजा ने सिदकिय्याह के पुत्रों को मार डाला। सिदकिय्याह

को अपने पुत्रों का मारा जाना देखने को विवश किया
गया। बाबुल के राजा ने यहूदा के राजकीय पदाधिकारियों
को भी मार डाला। 11तब बाबुल के राजा ने सिदकिय्याह
की आँखे निकाल लीं। उसने उसे काँसे की जंजीर
पहनाई। तब वह सिदकिय्याह को बाबुल ले गया। बाबुल
में उसने सिदकिय्याह को बन्दीगृह में डाल दिया।
सिदकिय्याह अपने मरने के दिन तक बन्दीगृह में रहा।

12बाबुल के राजा के विशेष रक्षकों का अधिनायक
नबूजरदान यरूशलेम आया। नबूकदनेस्सर के राज्यकाल
के उन्नीसवें वर्ष के पाँचवें महीने के दसवें दिन यह
हुआ। नबूजरदान बाबुल का महत्वपूर्ण अधिनायक
था। 13नबूजरदान ने यहोवा के मन्दिर को जला डाला।
उसने राजमहल तथा यरूशलेम के अन्य घरों को भी
जला दिया। उसने यरूशलेम की हर एक महत्वपूर्ण
इमारत को जला दिया। 14पूरी कसदी सेना ने यरूशलेम
की चाहरदीवारी को तोड़ गिराया। यह सेना उस समय
राजा के विशेष रक्षकों के अधिनायक के अधीन थी।
15अधिनायक नबूजरदान ने अब तक यरूशलेम में बचे
लोगों को भी बन्दी बना लिया। वह उन्हें भी ले गया
जिन्होंने पहले ही बाबुल के राजा को आत्मसमर्पण कर
दिया था। वह उन कुशल कारीगरों को भी ले गया जो
यरूशलेम में बचे रह गए थे। 16किन्तु नबूजरदान ने
कुछ अति गरीब लोगों को देश में पीछे छोड़ दिया था।
उसने उन लोगों को अंगूर के बागों और खेतों में काम
करने के लिए छोड़ा था।

17कसदी सेना ने मन्दिर के काँसे के स्तम्भों को तोड़
दिया। उन्होंने यहोवा के मन्दिर के काँसे के तालाब
और उसके आधार को भी तोड़ा। वे उस सारे काँसे को
बाबुल ले गए। 18बाबुल की सेना इन चीजों को भी
मन्दिर से ले गई: बर्तन, बेलचे, दीपक जलाने के यन्त्र,
बड़े कटोरे, कड़ाहियाँ और काँसे की वे सभी चीजें
जिनका उपयोग मन्दिर की सेवा में होता था।

19राजा के विशेष रक्षकों का अधिनायक इन चीजों
को ले गया: चिलमची, अंगीठियाँ, बड़े कटोरे, बर्तन,
दीपाधार, कड़ाहियाँ और दाखमधु के लिये काम में
आने वाले बड़े प्याले। वह उन सभी चीजों को जो सोने
और चाँदी की बनी थीं, ले गया। 20दो स्तम्भ सागर तथा
उसके नीचे के बारह काँसे के बैल तथा सरकने वाले
आधार बहुत भारी थे। राजा सुलैमान ने यहोवा के
मन्दिर के लिये ये चीजे बनायी थी। वह काँसा जिससे वे
चीजें बनी थीं, इतना भारी था कि तौला नहीं जा सकता
था।

21काँसे का हर एक स्तम्भ अट्ठारह हाथ ऊँचा था।
हर एक स्तम्भ बारह हाथपरिधि वाला था। हर एक
स्तम्भ खोखला था। हर एक स्तम्भ की दीवार चार ईंच
मोटी थी। 22पहले स्तम्भ के ऊपर जो काँसे का शीर्ष
था वह पाँच हाथ ऊँचा था। यह चारों ओर जाल के
अलंकरण और काँसे के अनार से सजा था। अन्य
स्तम्भों पर भी अनार थे। यह पहले स्तम्भ की तरह
था। 23स्तम्भों की बगल में छियानबे अनार थे। स्तम्भों
के चारों ओर बने जाल के अलंकार पर सब मिला कर
सौ अनार थे।

24राजा के विशेष रक्षकों का अधिनायक सरायाह
और सपन्याह को बन्दी के रूप में ले गया। सरायाह
महायाजक था और सपन्याह उससे दूसरा। तीन चौकीदार
भी बन्दी बनाए गए। 25राजा के विशेष रक्षकों का
अधिनायक लड़ने वाले व्यक्तियों के अधीक्षक को भी
ले गया। उसने राजा के सात सलाहकारों को भी बन्दी
बनाया। वे लोग उस समय तक यरूशलेम में थे। उसने
उस शास्त्री को भी लिया जो व्यक्तियों को सेना में रखने
का अधिकारी था और उसने साठ साधारण व्यक्तियों
को लिया जो तब तक नगर में थे। 26–27अधिनायक
नबूजरदान ने उन सभी अधिकारियों को लिया। वह
उन्हें बाबुल के राजा के सामने लाया। बाबुल का राजा
रिबला नगर में था। रिबला हमात देश में है। वहाँ उस
रिबला नगर में राजा ने उन अधिकारियों को मार
डालने का आदेश दिया। इस प्रकार यहूदा के लोग
अपने देश से ले जाए गए। 28इस प्रकार नबूकदनेस्सर
बहुत से लोगों को बन्दी बनाकर ले गया।

राजा नबूकदनेस्सर के शासन के सातवें वर्ष में:
यहूदा के तीन हजार तेईस पुरुष।
29नबूकदनेस्सर के शासन के अट्ठारहवें वर्ष
में: यरूशलेम से आठ सौ बत्तीस लोग।
30नबूकदनेस्सर के शासन के तेईसवें वर्ष में:
नबूजरदान ने यहूदा के सात सौ पैंतालीस व्यक्ति
बन्दी बनाए। नबूजरदान राजा के विशेष रक्षकों
का अधिनायक था। सब मिलाकर चार हजार छ:
सौ लोग बन्दी बनाए गए थे।

यहोयाकीम स्वतन्त्र किया जाता है

31यहूदा का राजा यहोयाकीम सैंतीस वर्ष, तक बाबुल
के बन्दीगृह में बन्दी रहा। उसके बन्दी रहने के सैंतीसवें
वर्ष, बाबुल का राजा एबीलमरोदक यहोयाकीम पर
बहुत दयालु रहा। उसने यहोयाकीम को उस वर्ष बन्दीगृह
से बाहर निकाला। यह वही वर्ष था जब एबीलमरोदक
बाबुल का राजा हुआ। एबीलमरोदक ने यहोयाकीम को
बारहवें महीने के पच्चीसवें दिन बन्दीगृह से छोड़ दिया।
32एबीलमरोदक ने यहोयाकीम से दयालुता से बातें
कीं। उसने यहोयाकीम को उन अन्य राजाओं से उच्च
सम्मान का स्थान दिया जो बाबुल में उसके साथ थे।
33अत: यहोयाकीम ने अपने बन्दी के वस्त्र उतारे। शेष
जीवन में वह नियम से राजा की मेज पर भोजन करता
रहा। 34बाबुल का राजा प्रतिदिन उसे स्वीकृत धन देता
था। यह तब तक चला जब तक यहोयाकीम मरा नहीं।

विलापगीत

अपने विनाश पर यरूशलेम का विलाप

1 एक समय वह था जब यरूशलेम में लोगों की भीड़ थी। किन्तु आज वही नगरी उजाड़ पड़ी हुई हैं! एक समय वह था जब देशों के मध्य यरूशलेम महान नगरी थी! किन्तु आज वही ऐसी हो गयी है जैसी कोई विधवा होती है! वह समय था जब नगरियों के बीच वह एक राजकुमारी सी दिखती थी। किन्तु आज वही नगरी दासी बना दी गयी है।

2रात में वह बुरी तरह रोती है और उसके अश्रु गालों पर टिके हुए है! उसके पास कोई नहीं है जो उसको ढांढस दे। उसके मित्र देशों में कोई ऐसा देश नहीं है जो उसको चैन दे। उसके सभी मित्रों ने उससे मुख फेर लिया। उसके मित्र उसके शत्रु बन गये।

3बहुत कष्ट सहने के बाद यहूदा बंधुआ बन गयी। बहुत मेहनत के बाद भी यहूदा दूसरे देशों के बीच रहती है, किन्तु उसने विश्राम नहीं पाया है। जो लोग उसके पीछे पड़े थे, उन्होंने उसको पकड़ लिया। उन्होंने उसको संकरी घाटियों के बीच में पकड़ लिया।

4सिय्योन की राहें बहुत दुःख से भरी हैं। वे बहुत दुःखी हैं क्योंकि अब उत्सव के दिनों के हेतु कोई भी व्यक्ति सिय्योन पर नहीं जाता है। सिय्योन के सारे द्वार नष्ट कर दिये गये है। सिय्योन के सब याजक दहाड़ें मारते हैं। सिय्योन की सभी युवा स्त्रियां उससे छीन ली गयी हैं और यह सब कुछ सिय्योन का गहरा दुःख है।

5यरूशलेम के शत्रु विजयी हैं। उसके शत्रु सफल हो गये हैं, ये सब इसलिये हो गया क्योंकि यहोवा ने उसको दण्ड दिया। उसने यरूशलेम के अनगिनत पापों के लिये उसे दण्ड दिया। उसकी संताने उसे छोड़ गयी। वे उनके शत्रुओं के बन्धन मे पड़ गये।

6सिय्योन की पुत्री की सुंदरता जाती रही है। उसकी राजकन्याएं दीन हरिणी सी हुई। वे वैसी हरिणी थीं जिनके पास चरने को चरागाह नहीं होती। बिना किसी शक्ति के वे इधर–उधर भागती हैं। वे ऐसे उन व्यक्तियों से बचती इधर–उधर फिरती हैं जो उनके पीछे पड़े हैं।

7यरूशलेम बीती बात सोचा करती है, उन दिनों की बातें जब उस पर प्रहार हुआ था और वह बेघर–बार हुई थी। उसे बीते दिनों के सुख याद आती थीं। वे पुराने दिनों में जो अच्छी वस्तुएं उसके पास थीं, उसे याद आती थीं। वह ऐसे उस समय को याद करती है जब उसके लोग शत्रुओं के द्वारा बंदी किये गये। वह ऐसे उस समय को याद करती है जब उसे सहारा देने को कोई भी व्यक्ति नहीं था। जब शत्रु उसे देखते थे, वे उसकी हंसी उड़ाते थे। वे उसकी हंसी उड़ाते थे क्योंकि वह उजड़ चुकी थी।

8यरूशलेम ने गहन पाप किये थे। उसने पाप किये थे कि जिससे वह ऐसी वस्तु हो गई कि जिस पर लोग अपना सिर नचाते थे। वे सभी लोग उसको जो मान देते थे, अब उससे घृणा करने लगे। वे उससे घृणा करने लगे क्योंकि उन्होंने उसे नंगा देख लिया है। यरूशलेम दहाड़े मारती है और वह मुख फेर लेती है।

9यरूशलेम के वस्त्र गंदे थे। उसने नहीं सोचा था कि उसके साथ क्या कुछ घटेगा। उसका पतन विचित्र था, उसके पास कोई नहीं था जो उसको शांति देता। वह कहा करती है, "हे यहोवा, देख मैं कितनी दुःखी हूँ! देख मेरा शत्रु कैसा सोच रहा है कि वह कितना महान है!"

10शत्रु ने हाथ बढ़ाया और उसकी सब उत्तम वस्तु लूट लीं। दरअसल उसने वे पराये देश उसके पवित्र स्थान में भीतर प्रवेश करते हुये देखे। हे यहोवा, यह आज्ञा तूने ही दी थी कि वे लोग तेरी सभा में प्रवेश नहीं करेंगे!

11यरूशलेम के सभी लोग कराह रहे हैं, उसके सभी लोग खाने की खोज में है। वे खाना जुटाने कॊ अपने मूल्यवान वस्तुयें बेच रहे हैं। वे ऐसा करते हैं ताकि उनका जीवन बना रहे। यरूशलेम कहता है, "देख यहोवा, तू मुझको देख! देख, लोग मुझको कैसे घृणा करते है।

12मार्ग से होते हुए जब तुम सभी लोग मेरे पास से गुजरते हो तो ऐसा लगता है जैसे ध्यान नहीं देते हो। किन्तु मुझ पर दृष्टि डालो और जरा देखो, क्या कोई ऐसी पीड़ा है जैसी पीड़ा मुझको है? क्या ऐसा कोई दुःख है जैसा दुःख मुझ पर पड़ा है? क्या ऐसा कोई कष्ट है जैसे कष्ट का दण्ड यहोवा ने मुझे दिया है? उसने अपने कठिन क्रोध के दिन पर मुझको दण्डित किया है।

13यहोवा ने ऊपर से आग को भेज दिया और वह आग मेरी हड्डियों के भीतर उतरी। उसने मेरे पैरों के

लिये एक फंदा फेंका। उसने मुझे दूसरी दिशा में मोड़
दिया है। उसने मुझे वीरान कर डाला है। सारे दिन मैं
रोती रहती हूँ।
14"मेरे पाप मुझ पर जुए के समान कसे गये। यहोवा
के हाथों द्वारा मेरे पाप मुझ पर कसे गये। यहोवा का
जुआ मेरे कन्धों पर है। यहोवा ने मुझे दुर्बल बना दिया
है। यहोवा ने मुझे उन लोगों को सौंपा जिनके सामने मैं
खड़ी नहीं हो सकती।
15"यहोवा ने मेरे सभी वीर योद्धा नकार दिये। वे
वीर योद्धा नगर के भीतर थे। यहोवा ने मेरे विरुद्ध में
फिर एक भीड़ भेजी, वह मेरे युवा सैनिक को मरवाने
उन लोगों को लाया था। यहोवा ने मेरे अंगूर गरठ में
कुचल दिये। वह गरठ यरूशलेम की कुमारियों का
होता था।
16"इन सभी बातों को लेकर मैं चिल्लाई। मेरे नयन
जल में डूब गये। मेरे पास कोई नहीं मुझे चैन देने। मेरे
पास कोई नहीं जो मुझे थोड़ी सी शांति दे। मेरे संताने
ऐसी बनी जैसे उजाड़ होता है। वे ऐसे इसलिये हुआ कि
शत्रु जीत गया था।"
17सिय्योन अपने हाथ फैलाये हैं। कोई ऐसा व्यक्ति
नहीं था जो उसको चैन देता। यहोवा ने याकूब के
शत्रुओं को आज्ञा दी थी। यहोवा ने उसे घेर लेने की
आज्ञा दी थी। यरूशलेम ऐसी हो गई जैसी कोई अपवित्र
वस्तु थी।
18यरूशलेम कहा करती है, "यहोवा तो न्यायशील है
क्योंकि मैंने ही उस पर कान देना नकारा था। सो, हे
सभी व्यक्तियों, सुनो! तुम मेरा कष्ट देखो! मेरे युवा स्त्री
और पुरुष बंधुआ बना कर पकड़े गये हैं।
19मैंने अपने प्रेमियों को पुकारा। किन्तु वे आँखें बचा
कर चले गये। मेरे याजक और बुजुर्ग मेरे नगर में मर
गये। वे अपने लिये भोजन को तरसते थे। वे चाहते थे
कि वे जीवित रहें।
20"हे यहोवा, मुझे देख। मैं दुःख में पड़ी हूँ! मेरा
अंतरंग बेचैन है! मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरा ह्रदय
उलट-पलट गया हो! मुझे मेरे मन में ऐसा लगता है
क्योंकि मैं हठी रही थी! गलियों में मेरे बच्चों को
तलवार ने काट डाला है। घरों के भीतर मौत का वास
था।
21"मेरी सुन, क्योंकि मैं कराह रही हूँ! मेरे पास कोई
नहीं है जो मुझको चैन दे, मेरे सब शत्रुओं ने मेरी दुःखों
की बात सुन ली है। वे बहुत प्रसन्न हैं। वे बहुत ही
प्रसन्न हैं क्योंकि तूने मेरे साथ ऐसा किया। अब उस
दिन को ले आ जिसकी तूने घोषणा की थी। उस दिन तू
मेरे शत्रुओं को वैसा ही बना दे जैसी मैं अब हूँ।
22"मेरे शत्रुओं का बंदी तू अपने सामने आने दे। फिर
उनके साथ तू वैसा ही करेगा जैसा मेरे पापों के बदले में
तूने मेरे साथ किया।
ऐसा कर क्योंकि मैं बार बार कराह रहा। ऐसा कर
क्योंकि मेरा ह्रदय दुर्बल है।"

यहोवा द्वारा यरूशलेम का विनाश

2 देखों यहोवा ने सिय्योन की पुत्री को कैसे बादल से
ढक दिया है। उसने इस्राएल की महिमा आकाश से
धरती पर फेंक दी। यहोवा ने उसे याद तक नहीं रखा
कि सिय्योन अपने क्रोध के दिन पर उसके चरणों की
चौकी हुआ करता था।
2यहोवा ने याकूब के भवन निगल लिये। वह दया से
रहित होकर उसको निगल गया। उसने यहूदा की पुत्री
के गढ़ियों को भर क्रोध में मिटाया। यहोवा ने यहूदा के
राजा को गिरा दिया; और यहूदा के राज्य को धरती पर
पटक दिया। उसने राज्य को बर्बाद कर दिया।
3यहोवा ने क्रोध में भर कर के इस्राएल की सारी
शक्ति उखाड़ फेंकी। उसने इस्राएल के ऊपर से अपने
दाहिना हाथ उठा लिया है। उसने ऐसा उस घड़ी में
किया था जब शत्रु उस पर चढा था। वह याकूब में
धधकती हुई आग सा भड़की। वह एक ऐसी आग थी
जो आस-पास का सब कुछ चट कर जाती है।
4यहोवा ने शत्रु के समान अपना धनुष खेंचा था।
उसके दाहिने हाथ में उसके तलवार का मुट्ठा था।
उसने यहूदा के सभी सुन्दर पुरुष मार डाले। यहोवा ने
उन्हें मार दिया मानों जैसे वे शत्रु हों। यहोवा ने अपने
क्रोध को बरसाया। यहोवा ने सिय्योन के तम्बुओं पर
उसको उडेंल दिया जैसे वह आग हो।
5यहोवा शत्रु हो गया था और उसने इस्राएल को
निगल लिया। उसकी सभी महलों को उसने निगल
लिया उसके सभी गढ़ियो को उसने निगल लिया था।
यहूदा की पुत्री के भीतर मरे हुए लोगों के हेतु उसने
हाहाकार और शोक मचा दिया।
6यहोवा ने अपना ही मन्दिर नष्ट किया था जैसे वह
कोई उपवन हो, उसने उस ठांव को नष्ट किया जहाँ
लोग उसकी उपासना करने के लिये मिला करते थे।
यहोवा ने लोगों को ऐसा बना दिया कि वे सिय्योन में
विशेष सभाओं को और विश्राम के विशेष दिनों को
भूल जायें। यहोवा ने याजक और राजा को नकार
दिया। उसने बड़े क्रोध में भर कर उन्हें नकारा।
7यहोवा ने अपनी ही वेदी को नकार दिया और उसने
अपना उपासना का पवित्र स्थान को नकार दिया था।
यरूशलेम के महलों की दिवारें उसने शत्रु को सौंप दी।
यहोवा के मन्दिर में शत्रु शोर कर रहा था। वे ऐसे शोर
करते थे जैसे कोई छुट्टी का दिन हो।
8उसने सिय्योन की पुत्री का परकोटा नष्ट करना
सोचा है। उसने किसी नापने की डोरी से उस पर
निशान डाला था। उसने स्वयं को विनाश से रोका
नहीं। इसलिये उसने दुःख में भर कर के बाहरी फसीलों

को और दूसरे नगर के परकोटों को रूला दिया था। वे दोनों ही साथ–साथ व्यर्थ हो गयीं।

9यरूशलेम के दरवाज़े टूट कर धरती पर बैठ गये। द्वार के सलाखों को तोड़कर उसने तहस–नहस कर दिया। उसके ही राजा और उसकी राजकुमारियाँ आज दूसरे लोगों के बीच है। उनके लिये आज कोई शिक्षा ही नहीं रही। यरूशलेम के नबी भी यहोवा से कोई दिव्य दर्शन नहीं पाते।

10सिय्योन के बुज़ुर्ग अब धरती पर बैठते हैं। वे धरती पर बैठते हैं और चुप रहते हैं। अपने माथों पर धूल मलते हैं और शोक वस्त्र पहनते हैं। यरूशलेम की युवतियाँ दुःख में अपनी माथा धरती पर नवाती हैं।

11मेरे नयन आँसुओं से दुख रहे हैं! मेरा अंतरंग व्याकुल है! मेरे मन को ऐसा लगता है जैसे वह बाहर निकल कर धरती पर गिरा हो! मुझको इसलिये ऐसा लगता है कि मेरे अपने लोग नष्ट हुए हैं। सन्तानें और शिशु मूर्छित हो रहें हैं। वे नगर के गलियों और बाज़ारों में मूर्छित पड़े हैं।

12वे बच्चे बिलखते हुए अपनी माँओं से पूछते हैं, "कहाँ है माँ, कुछ खाने को और पीने को?" वे यह प्रश्न ऐसे पूछते हैं जैसे जख़्मी सिपाही नगर के गलियों में गिरते प्राणों को त्यागते, वे यह प्रश्न पूछते हैं। वे अपनी माँओं की गोद में लेटे हुए प्राणों को त्यागते हैं।

13हे सिय्योन की पुत्री, मैं किससे तेरी तुलना करूँ? तुझको किसके समान कहूँ? हे सिय्योन की कुँवारी कन्या, तुझको किससे तुलना करूँ? तुझे कैसे ढांढस बंधाऊँ? तेरा विनाश सागर सा विस्तृत है! ऐसा कोई भी नहीं जो तेरा उपचार करें।

14तेरे नबियों ने तेरे लिये दिव्य दर्शन लिये थे। किन्तु वे सभी व्यर्थ झूठे सिद्ध हुए। तेरे पापों के विरुद्ध उन्होंने उपदेश नहीं दिये। उन्होंने बातों को सुधारने का जतन नहीं किया। उन्होंने तेरे लिये उपदेशों का सन्देश दिया, किन्तु वे झूठे सन्देश थे। तुझे उनसे मूर्ख बनाया गया।

15बटोही राह से गुजरते हुए स्तब्ध होकर तुझ पर ताली बजाते हैं। यरूशलेम की पुत्री पर वे सीटियाँ बजाते और माथा नचाते हैं। वे लोग पूछते हैं, "क्या यही वह नगरी है जिसे लोग कहा करते थे, 'एक सम्पूर्ण सुन्दर नगर' तथा 'सारे संसार का आनन्द'?"

16तेरे सभी शत्रु तुझ पर अपना मुँह खोलते हैं। तुझ पर सीटियाँ बजाते हैं और तुझ पर दाँत पीसते हैं। वे कहा करते है, "हमने उनको निगल लिया! सचमुच यही वह दिन है जिसकी हमको प्रतीक्षा थी। आखिरकार हमने इसे घटते हुए देख लिया।"

17यहोवा ने वैसा ही किया जैसी उसकी योजना थी। उसने वैसा ही किया जैसा उसने करने के लिये कहा था। बहुत–बहुत दिनों पहले जैसा उसने आदेश दिया था, वैसा ही कर दिया। उसने बर्बाद किया, उसको दया तक नहीं आयी। उसने तेरे शत्रुओं को प्रसन्न किया कि तेरे साथ ऐसा घटा। उसने तेरे शत्रुओं की शक्ति बढ़ा दी।

18हे यरूशलेम की पुत्री परकोटे, तू अपने मन से यहोवा की टेर लगा! आसुँओं को नदी सा बहने दे! रात–दिन अपने आसुँओं को गिरने दे! तू उनको रोक मत! तू अपनी आँखों को थमने मत दे!

19जाग उठ! रात में विलाप कर! रात के हर पहर के शुरु में विलाप कर! आँसुओ में अपना मन बाहर निकाल दे जैसा वह पानी हो! अपना मन यहोवा के सामने निकाल रख! यहोवा की प्रार्थना में अपने हाथ ऊपर उठा। उससे अपनी संतानों का जीवन माँग। उससे तू उन सन्तानों का जीवन माँग ले जो भूख से बेहोश हो रहें है। वे नगर के हर कूँचे गली में बेहोश पड़ी है।

20हे यहोवा, मुझ पर दृष्टि कर! देख कौन है वह जिसके साथ तूने ऐसा किया! तू मुझको यह प्रश्न पूछने दे: क्या माँ उन बच्चों को खा जाये जिनको वह जनती है? क्या माँ उन बच्चों को खा जाये जिनको वे पोसती रही है? क्या यहोवा के मन्दिर में याजक और नबियों के प्राणों को लिया जाये?

21नवयुवक और वृद्ध नगर की गलियों में धरती पर पड़े रहें। मेरी युवा स्त्रियाँ, पुरुष और युवक तलवार के धार उतारे गये थे।

हे यहोवा, तूने अपने क्रोध के दिन पर उनका वध
किया है!तूने उन्हें बिना किसी करुणा के मारा है!22तूने
मुझ पर घिर आने को चारों ओर से आतंक बुलाया। आतंक को तूने ऐसे बुलाया जैसे पर्व के दिन पर बुलाया हो। उस दिन जब यहोवा ने क्रोध किया था ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था जो बचकर भाग पाया हो अथवा उससे निकल पाया हो। जिनको मैंने बढ़ाया था और मैंने पाला–पोसा, उनको मेरे शत्रुओं ने मार डाला है।

एक व्यक्ति द्वारा अपनी यातनाओं पर विचार

3 मैं ऐक ऐसा व्यक्ति हूँ जिसने बहुतेरी यातनाएं भोगी है; यहोवा के क्रोध के तले मैंने बहुतेरी दण्ड यातनाएं भोगी है!

2यहोवा मुझको लेकर के चला और वह मुझे अन्धेरे के भीतर लाया न कि प्रकाश में।

3यहोवा ने अपना हाथ मेरे विरोध में कर दिया। ऐसा उसने बारम्बार सारे दिन किया।

4उसने मेरा मांस, मेरा चर्म नष्ट कर दिया। उसने मेरी हडि्डयों को तोड़ दिया।

5यहोवा ने मेरे विरोध में, कड़वाहट और आपदा फैलायी है। उसने मेरी चारों तरफ़ कड़वाहट और विपत्ति फैलादी।

6उसने मुझे अन्धेरे में बिठा दिया था। उसने मुझको उस व्यक्ति सा बना दिया था जो कोई बहुत दिनों पहले मर चुका हो।

7यहोवा ने मुझको भीतर बंद किया, इससे मैं बाहर
आ न सका। उसने मुझ पर भारी ज़ंजीरें घेरी थीं।
8यहाँ तक कि जब मैं चिल्लाकर दुहाई देता हूँ,
यहोवा मेरी विनती को नहीं सुनता है।
9उसने पत्थर से मेरी राह को मूंद दिया है। उसने
मेरी राह को विषम कर दिया है।
10यहोवा उस भालू सा हुआ जो मुझ पर आक्रमण
करने को तत्पर है। वह उस सिंह सा हुआ हैं जो किसी
ओट में छुपा हुआ हैं।
11यहोवा ने मुझे मेरी राह से हटा दिया। उसने मेरी
धज्जियाँ उड़ा दीं। उसने मुझे बर्बाद कर दिया है।
12उसने अपना धनुष तैयार किया। उसने मुझको
अपने बाणों का निशाना बना दिया था।
13मेरे पेट में बाण मार दिया। मुझ पर अपने बाणों से
प्रहार किया था।
14मैं अपने लोगों के बीच हंसी का पात्र बन गया। वे
दिन भर मेरे गीत गा–गा कर मेरा मज़ाक बनाते है।
15यहोवा ने मुझे कड़वी बातों से भर दिया कि मैं
उनको पी जाऊँ। उसने मुझको कड़वे पेयों से भरा था।
16उसने मेरे दांत पथरीली धरती पर गडा दिये। उसने
मुझको मिट्टी में मिला दिया।
17मेरा विचार था कि मुझको शांति कभी भी नहीं
मिलेगी। अच्छी भली बातों को मैं तो भूल गया था।
18स्वंय अपने आप से मैं कहने लगा था, "मुझे तो बस
अब और आस नहीं है कि यहोवा कभी मुझे सहारादेगा।"
19हे यहोवा, तू मेरे दुखिया पन याद कर, और यह
कि कैसा मेरा घर नहीं रहा। याद कर उस कड़वे पेय
को और उस जहर को जो तूने मुझे पीने को दिया था।
20मुझको तो मेरी सारी यातनाएँ याद हैं और मैं बहुत
ही दुःखी हूँ।
21किन्तु उसी समय जब मैं सोचता हूँ, तो मुझको
आशा होने लगती है। मैं ऐसा सोचा करता हूँ:
22यहोवा के प्रेम और करुणा का तो अंत कभी नहीं
होता। यहोवा की कृपाएं कभी समाप्त नहीं होती।
23हर सुबह वे नये हो जाते हैं! हे यहोवा, तेरी सच्चाई
महान है!
24मैं अपने से कहा करता हूँ, "यहोवा मेरे हिस्से में
है। इसी कारण से मैं आशा रखूंगा।"
25यहोवा उनके लिये उत्तम है जो उसकी बाट जोहते
हैं। यहोवा उनके लिये उत्तम है जो उसकी खोज में रहा
करते हैं।
26यह उत्तम है कि कोई व्यक्ति चुपचाप यहोवा की
प्रतिक्षा करे कि वह उसकी रक्षा करेगा।
27यह उत्तम है कि कोई व्यक्ति यहोवा के जुए को
धारण करे, उस समय से ही जब वह युवक हो।
28व्यक्ति को चाहिये कि वह अकेला चुप बैठे ही रहे
जब यहोवा अपने जुए को उस पर धरता है।
29उस व्यक्ति को चाहिये कि यहोवा के सामने वह
दण्डवत् प्रणाम करे। सम्भव है कि कोई आस बची हो।
30उस व्यक्ति को चाहिये कि वह अपना गाल कर दे,
उस व्यक्ति के सामने जो उस पर प्रहार करता हो। उस
व्यक्ति को चाहिये कि वह अपमान झेलने को तत्पर
रहे।
31उस व्यक्ति को चाहिये वह याद रखे कि यहोवा
किसी को भी सदा–सदा के लिये नहीं बिसराता।
32यहोवा दण्ड देते हुए भी अपनी कृपा बनाये रखता
है। वह अपने प्रेम और दया के कारण अपनी कृपा
रखता है।
33यहोवा कभी भी नहीं चाहता कि लोगों को दण्ड दे।
उसे नहीं भाता कि लोगों को दुःखी करे।
34यहोवा को यह बातें नहीं भाती है: उसको नहीं
भाता कि कोई व्यक्ति अपने पैरों के तले धरती के सभी
बंदियों को कुचल डाले।
35उसको नहीं भाता है कि कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति
को छले। कुछ लोग उसके मुकदमें में परम प्रधान
परमेश्वर के सामने ही ऐसा किया करते है।
36उसको नहीं भाता कि कोई व्यक्ति अदालत में
किसी से छल करे। यहोवा को इन में से कोई भी बात
नहीं भाती है।
37जब तक स्वयं यहोवा ही किसी बात के होने की
आज्ञा नहीं देता, तब तक ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है
कि कोई बात कहे और उसे पूरा करवा ले।
38बुरी–भली बातें सभी परम प्रधान परमेश्वर के
मुख से ही आती हैं।
39कोई जीवित व्यक्ति शिकायत कर नहीं सकता जब
यहोवा उस ही के पापों का दण्ड उसे देता है।
40आओ, हम अपने कर्मों को परखें और देखें, फिर
यहोवा के शरण में लौट आयें।
41आओ, स्वर्ग के परमेश्वर के लिये हम हाथ उठायें
और अपना मन ऊँचा करें।
42आओ, हम उससे कहें, "हमने पाप किये हैं और
हम जिद्दी बने रहे और इसलिये तूने हमको क्षमा नहीं
किया।
43तूने क्रोध से अपने को ढांप लिया, हमारा पीछा तू
करता रहा है, तूने हमें निर्दयतापूर्वक मार दिया! 44तूने
अपने को बादल से ढांप लिया। तूने ऐसा इसलिये किया
था कि कोई भी विनती तुझ तक पहुँचे ही नहीं।
45तूने हमको दूसरे देशों के लिये ऐसा बनाया जैसा
कूड़ा कर्कट हुआ करता हैं।
46हमारे सभी शत्रु हमसे क्रोध भरे बोलते हैं।
47हम भयभीत हुए हैं, हम गर्त में गिर गये हैं। हम
बुरी तरह क्षतिग्रस्त है! हम टूट चुके हैं!"
48मेरी आँखों से आँसुओं की नदियां बही! मैं विलाप
करता हूँ क्योंकि मेरे लोगों का विनाश हुआ है!

49मेरे नयन बिना रूके बहते रहेंगे! मैं सदा विलाप
करता रहूँगा!
50हे यहोवा, मैं तब तक विलाप करता रहूँगा जब
तक तू दृष्टि न करे और हम को देखे! मैं तब तक
विलाप ही करता रहूंगा जब तक तू स्वर्ग से हम पर
दृष्टि न करे!
51जब मैं देखा करता हूँ जो कुछ मेरी नगरी की
युवतियों के साथ घटा तब मेरे नयन मुझको दुःखी
करतेहैं।
52जो लोग व्यर्थ में ही मेरे शत्रु बने हैं, वे घूमते हैं मेरी
शिकार की फिराक में, मानों मैं कोई चिड़िया हूँ।
53जीते जी उन्होंने मुझको घड़े में फेंका और मुझ पर
पत्थर लुढ़काए थे।
54मेरे सिर पर से पानी गुज़र गया था। मैंने मन में
कहाँ, "मेरा नाश हुआ।"
55हे यहोवा, मैंने तेरा नाम पुकारा। उस गर्त के तल
से मैंने तेरा नाम पुकारा।
56तूने मेरी आवाज़ को सुना। तूने कान नहीं मूंद
लिये। तूने बचाने से और मेरी रक्षा करने से नकारा
नहीं। 57जब मैंने तेरी दुहाई दी, उसी दिन तू मेरे पास आ
गया था। तूने मुझ से कहा था, "भयभीत मत हो।"
58हे यहोवा, मेरे अभियोग में तूने मेरा पक्ष लिया। मेरे
लिये तू मेरा प्राण वापस ले आया।
59हे यहोवा, तूने मेरी विपत्तियां देखी हैं, अब मेरे लिये
तू मेरा न्याय कर।
60तूने स्वंय देखा है कि शत्रुओं ने मेरे साथ कितना
अन्याय किया। तूने स्वंय देखा है उन सारे षड़यंत्रों को
जो उन्होंने मुझ से बदला लेने को मेरे विरोध में रचे
थे।
61हे यहोवा, तूने सुना है कि वे मेरा अपमान कैसे
करते हैं। तूने सुना है उन षड़यंत्रों को जो उन्होंने मेरे
विरोध में रचाये।
62मेरे शत्रुओं के वचन और विचार सदा ही मेरे
विरुद्ध रहे।
63देखो यहोवा, चाहे वे बैठे हों, चाहे वे खड़े हों, कैसे
वे मेरी हंसी उड़ाते हैं!
64हे यहोवा, उनके साथ वैसा ही कर जैसा उनके
साथ करना चाहिये! उनके कर्मों का फल तू उनको दे
दे! 65उनका मन हठीला कर दे! फिर अपना अभिशाप
उन पर डाल दे!
66क्रोध में भर कर तू उनका पीछा कर! उन्हें बर्बाद
कर दे! हे यहोवा, आकाश के नीचे से तू उन्हें समाप्त
कर दे!

यरूशलेम पर हमले का आतंक

4 देखों, किस तरह सोना चमक रहित हो गया।
देखों, सारा सोना कैसे खोटा हो गया। चारों ओर
हीरे–जवाहरात बिखरे पड़े हैं। हर गली के सिर पर ये
रत्न फैले हैं।
2सिय्योन के निवासी बहुत मूल्यवान थे, जिनका
मूल्य सोने की तोल में तुलना था। किन्तु अब उनके
साथ शत्रु ऐसे बर्ताव करते हैं जैसे वे मिट्टी के पुराने
घड़े हों। शत्रु उनके साथ ऐसा बर्ताव करता है जैसे वे
कुम्हार के बनाये मिट्टी के पात्र हों।
3यहाँ तक कि गीदड़ी भी अपने बच्चे को थन देती
है, वह अपने बच्चे को दूध पीने देती है। किन्तु मेरे लोग
निर्दय हो गये हैं। वह ऐसे हो गये जैसे मरुभूमि में
निवासी–शुतुर्मुर्ग।
4प्यास के मारे आबोध शिशुओं की जीभ तालू से
चिपक रही है। ये छोटे बच्चे रोटी को तरसते हैं। किन्तु
कोई भी उन्हें कुछ भी खाने को लिये देता नहीं।
5ऐसे लोग जो स्वादिष्ट भोजन खाया करते थे, आज
भूख से गलियों में मर रहें हैं। ऐसे लोग जो उत्तम वस्त्र
पहनते हुए पले बढ़े थे, अब कूड़े के ढेरों पर बीनते
फिरते हैं।
6मेरे लोगों का पाप बहुत बड़ा था। उनका पाप सदोम
और अमोरा के पापों से बड़ा पाप था। सदोम और
अमोरा को अचानक नष्ट किया गया। उनके विनाश
में किसी भी मनुष्य का हाथ नहीं था। यह तो परमेश्वर
ने किया था।
7यहूदा के लोग जो परमेश्वर को समर्पित थे, वे बर्फ
से उजले थे, दूध से धुले थे। उनकी कायाएं मूंग से
अधिक लाल थीं। उनकी दाढ़ियाँ नीलम से श्यामल थी।
8किन्तु उनके मुख अब धुएं से काले हो गये हैं। यहाँ
तक कि गलियों में उनको कोई नहीं पहचानता था।
उनकी ठठरी पर अब झुर्रियां पड़ रही है। उनका चर्म
लकड़ी सा कड़ा हो गया है।
9ऐसे लोग जिन्हें तलवार के घाट उतारे गये उन से
कहीं भाग्यवान थे जो लोग भूख–मरी के मारे मरे।
भूख के सताये लोग बहुत ही दुःखी थे, वे बहुत व्याकुल
थे। वे मरे क्योंकि खेतों का दिया हुआ खाने को उनके
पास नहीं था।
10उन दिनों ऐसी स्त्रियों ने भी जो बहुत अच्छी हुआ
करती थी, अपनी ही बच्चों के मांस को पकाया था। वे
बच्चे अपनी ही माँओं का आहार बने। ऐसा तब हुआ
था जब मेरे लोगों का विनाश हुआ था।
11यहोवा ने अपने सब क्रोध का प्रयोग किया; अपना
समूचा क्रोध उसने उंडेल दिया। सिय्योन में जिसने आग
भड़कायी, सिय्योन की नीवों को नीचे तक जला दियाथा।
12जो कुछ घटा था, धरती के किसी भी राजा को
उसका विश्वास नहीं था। जो कुछ घटा था, धरती के
किसी भी लोगों को उसका विश्वास नहीं था। यरूशलेम
के द्वारों से होकर कोई भी शत्रु भीतर आ सकता है,
इसका किसी को भी विश्वास नहीं था।

13किन्तु ऐसा ही हुआ, क्योंकि यरूशलेम के नबियों
ने पाप किये थे। ऐसा हुआ क्योंकि यरूशलेम के याजक
बुरे काम किया करते थे। यरूशलेम के नगर में वे
बहुत खून बहाया करते थे; वे नेक लोगों का खून
बहाया करते थे।

14याजक और नबी गलियों में अंधे से घुमते थे। खून
से वे गंदे हो गये थे। यहाँ तक कि कोई भी उनका वस्त्र
नहीं छूता था क्योंकि वे गंदे थे।

15लोग चिल्लाकर कहते थे, “दूर हटो! दूर हटो! तुम
अस्वच्छ हो, हमको मत छूओ!” वे लोग इधर-उधर यूं
ही फिरा करते थे। उनके पास कोई घर नहीं था। दूसरी
जातियों के लोग कहते थे, “हम नहीं चाहते कि वे
हमारे पास रहें।”

16वे लोग स्वंय यहोवा के द्वारा ही नष्ट किये गये थे।
उसने उनकी ओर फिर कभी नहीं देखा। उसने याजकों
कों आदर नहीं दिया। यहूदा के मुखिया लोगों के साथ
वह मित्रता से नहीं रहा।

17सहायता पाने की बाट जोहते-जोहते अपनी आँखों
ने काम करना बंद किया, और अब हमारी आँखें थक
गई हैं। किन्तु कोई भी सहायता नहीं आई। हम प्रतीक्षा
करते रहे कि कोई ऐसी जाति आये जो हमको बचा ले।
हम अपनी निगरानी बुर्ज से देखते रह गये। किन्तु किसी
ने भी हम को बचाया नहीं।

18हर समय दुशमन हमारे पीछे पड़े रहे यहाँ तक कि
हम बाहर गली में भी निकल नहीं पाये। हमारा अंत
निकट आया। हमारा समय पूरा हो चुका था। हमारा
अंत आ गया! 19वे लोग जो हमारे पीछे पड़े थे, उनकी
गती आकाश में उकाब की गती से तीव्र थी। उन लोगों
ने पहाड़ों के भीतर हमारा पीछा किया। वे हमको
पकड़ने को मरुभूमि में लुके-छिपे थे।

20वह राजा जो हमारी नाकों के भीतर हमारा प्राण
था, गर्त में फसा लिया गया था; वह राजा ऐसा व्यक्ति था
जिसे यहोवा ने स्वयं चुना था। राजा का बारे में हमने
कहा था, “उसकी छत्र छाया में हम जीवित रहेंगे, उसकी
छाया में हम जातियों के बीच जीवित रहेंगे।”

21एदोम के लोगों, प्रसन्न रहो और आनन्दित रहो! हे
ऊज के निवासियों, प्रसन्न रहो! किन्तु सदा याद रखो,
तुम्हारे पास भी यहोवा के क्रोध का प्याला आयेगा। जब
तुम उसे पिओगे, धुत्त हो जाओगे और स्वंय को नंगा
कर डालोगे। 22सिय्योन, तेरा दण्ड पूरा हुआ। अब फिर
से तू कभी बंधन में नहीं पड़ोगी। किन्तु हे एदोम के
लोगों, यहोवा तुम्हारे पापों का दण्ड देगा। तुम्हारे पापों
को वह उघाड़ देगा।

यहोवा से विनती:

5 हे यहोवा, हमारे साथ जो घटा हैं, याद रख। हे
यहोवा, हमारे तिरस्कार को देख।

2हमारी धरती परायों के हाथों में दे दी गयी। हमारे
घर परदेसियों के हाथों में दिये गये।

3हम अनाथ हो गये। हमारा कोई पिता नहीं। हमारी
माताएं विधवा सी हो गयी हैं।

4पानी पीने तक हमको मोल देना पड़ता है, इंधन की
लकड़ी तक खरीदनी पड़ती हैं।

5अपने कन्धों पर हमें जुए का बोझ उठाना पड़ता है।
हम थक कर चूर होते हैं किन्तु विश्राम तनिक हमको
नहीं मिलता।

6हमने मिस्र के साथ एक वाचा किया; अश्शूर के
साथ भी हमने एक वाचा किया था कि पर्याप्त भोजन
मिले। 7हमारे पूर्वज़ों ने तेरे विरोध में पाप किये थे।
आज वे मर चुके हैं। अब वे विपत्तियां भोग रहे हैं।

8हमारे दास ही स्वामी बने हैं। यहां कोई ऐसा व्यक्ति
नहीं जो हमको उनसे बचा ले।

9बस भोजन पाने को हमें अपना जीवन दांव पर
लगाना पड़ता है। मरुभूमि में ऐसे लोगों के कारण,
जिनके पास तलवार है हमें अपना जीवन दांव पर
लगाना पड़ता है।

10हमारी खाल तन्दूर सी तप रही है, हमारी खाल तप
रही उस भूख के कारण जो हमको लगी हैं।

11सिय्योन की स्त्रियों के साथ कुकर्म किये गये हैं।
यहूदा की नगरियों की कुमारियों के साथ कुकर्म किये
गये हैं।

12हमारे राजकुमार फांसी पर चढ़ाये गये; उन्होंने
हमारे अग्रजों का आदर नहीं किया।

13हमारे वे शत्रुओं ने हमारे युवा पुरुषों के साथ
चक्की में आटा पिसवाया। हमारे युवा पुरुष लकड़ी के
बोझ तले ठोकर खाते हुये गिरे।

14हमारे बुज़ुर्ग अब नगर के द्वारों पर बैठा नहीं
करते। हमारे युवक अब संगीत में भाग नहीं लेते।

15हमारे मन में अब कोई खुशी नहीं है। हमारा हर्ष
मरे हुए लोगों के विलाप में बदल गया है।

16हमारा मुकुट हमारे सिर से गिर गया है। हमारी सब
बातें बिगड़ गयी हैं क्योंकि हमने पाप किये थे।

17इसलिये हमारे मन रोगी हुए है; इन ही बातों से
हमारे आँखें मद्धिम हुई है। 18सिय्योन का पर्वत विरान
हो गया है। सिय्योन के पहाड़ पर अब सियार घूमते है।
19किन्तु हे यहोवा, तेरा राज्य तो अमर हैं। तेरा महिमापूर्ण
सिंहासन सदा-सदा बना रहता है।

20हे यहोवा, ऐसा लगता है जैसे तू हमको सदा के लिये
भूल गया है। ऐसा लगता है जैसे इतने समय के लिये तूने
हमें अकेला छोड़ दिया है। 21हे यहोवा, हमको तू अपनी
ओर मोड़ ले। हम प्रसन्नता से तेरे पास लौट आयेंगे;
हमारे दिन फेर दे जैसे वह पहले थे।

22क्या तूने हमें पूरी तरह बिसरा दिया? तू हम से
बहुत क्रोधित रहा है।

यहेजकेल

प्रस्तावना

1 **1-3**मैं बूजी का पुत्र याजक यहेजकेल हूँ। मैं देश
निष्कासित था। मैं उस समय बाबुल में कबार नदी
पर था जब मेरे लिए स्वर्ग खुला और मैंने परमेश्वर का
दर्शन किया। यह तीसवें वर्ष के चौथे महीने जुलाई का
पाँचवां दिन था।
राजा यहोयाकीम के देश–निष्कासन के पाँचवें वर्ष
और महीने के पाँचवें दिन यहेजकेल को यहोवा कासन्देश
मिला। उस स्थान पर उसके ऊपर यहोवा कीशक्ति
आई।

यहोवा का रथ और उसका सिंहासन

4मैंने (यहेजकेल) एक धूल भरी आंधी उत्तर से आती
देखी। यह एक विशाल बादल था और उसमें से आग
चमक रही थी। इसके चारों ओर प्रकाश जगमगा रहा
था। यह आग में चमकते तप्त धातु सा दिखता था।
5बादल के भीतर चार प्राणी थे। वे मनुष्यों की तरह
दिखते थे। **6**किन्तु हर एक प्राणी के चार मुख और चार
पंख थे। **7**उनके पैर सीधे थे। उनके पैर बछड़े के पैर
जैसे दिखते थे और वे झलकाये हुए पीतल की तरह
चमकते थे। **8**उनके पंखों के नीचे मानवी हाथ थे। वहाँ
चार प्राणी थे और हर एक प्राणी के चार मुख और
चार पंख थे। **9**उनके पंख एक दूसरे को छूते थे। जब वे
चलते थे, मुड़ते नहीं थे। वे उसी दिशा में चलते थे जिसे
देख रहे थे।

10हर एक प्राणी के चार मुख थे। सामने की ओर
उनका चेहरा मनुष्य का था। दायीं ओर सिंह का चेहरा
था। बांयी ओर बैल का चेहरा था और पीछे की ओर
उकाब का चेहरा था। **11**प्राणियों के पंख उनके ऊपर
फैले हुये थे। वे दो पंखों से अपने पास के प्राणी के दो
पंखों को स्पर्श किये थे तथा दो को अपने शरीर को
ढकने के लिये उपयोग में लिया था। **12**वे प्राणी जब
चलते थे तो मुड़ते नहीं थे। वे उसी दिशा में चलते थे
जिसे वे देख रहे थे। वे वहीं जाते थे जहाँ आत्मा उन्हें ले
जाती थी।

13हर एक प्रणी इस प्रकार दिखता था। उन प्राणियों
के बीच के स्थान में जलती हुई कोयले की आग सी
दिख रही थी। यह आग छोटे–छोटे मशालों की तरह
उन प्राणियों के बीच चल रही थी। आग बड़े प्रकाश के
साथ चमक रही थी और बिजली की तरह कौंध रही
थी! **14**वे प्राणी बिजली की तरह तेजी से पीछे को और
आगे को दौड़ते थे!

15-16जब मैंने प्राणियों को देखा तो चार चक्र देखे!
हर एक प्राणी के लिये एक चक्र था। चक्र भूमि को छू
रहे थे और एक समान थे। चक्र ऐसे दिख रहे थे मानों
पीली शुद्ध मणि के बने हों। वे ऐसे दिखते थे मानों एक
चक्र के भीतर दूसरा चक्र हो। **17**वे चक्र किसी भी
दिशा में घूम सकते थे। किन्तु वे प्राणी जब चलते थे तो
घूम नहीं सकते थे। **18**उन चक्रों के घेरे ऊँचे और
डरावने थे! उन चारों चक्रों के घेरे में आँखें ही आँखें
थी।

19चक्र सदा प्राणियों के साथ चलते थे। यदि प्राणी
ऊपर हवा में जाते तो चक्र भी उनके साथ जाते। **20**वे
वहीं जाते, जहाँ “आत्मा” उन्हें ले जाना चाहती और
चक्र उनके साथ जाते थे। क्यों? क्योंकि प्राणियों की
“आत्मा” (शक्ति) चक्र में थी। **21**इसलिये यदि प्राणी
चलते थे तो चक्र भी चलते थे। यदि प्राणी रूक जाते थे
तो चक्र भी रूक जाते थे। यदि चक्र हवा में ऊपर जाते
तो प्राणी उनके साथ जाते थे। क्यों? क्योंकि आत्मा
चक्र में थी।

22प्राणियों के सिर के ऊपर एक आश्चर्यजनक चीज
थी। यह एक उल्टे कटोरे की सी थी। कटोरा बर्फ की
तरह स्वच्छ था! **23**इस कटोरे के नीचे हर एक प्राणी के
सीधे पंख थे जो दूसरे प्राणी तक पहुँच रहे थे। दो पंख
उसके शरीर के एक भाग को ढकते थे और अन्य दो
दूसरे भाग को।

24जब कभी वे प्राणी चलते थे, उनके पंख बड़ी तेज
ध्वनि करते थे। वह ध्वनि समुद्र के गर्जन जैसी उत्पन्न
होती थी। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के समीप से
निकलने के वाणी के समान थी। वह किसी सेना के
जन–समूह के शोर की तरह थी। जब वे प्राणी चलना
बन्द करते थे तो वे अपने पंखों को अपनी बगल में
समेट लेते थे।

25उन प्राणियों ने चलना बन्द किया और अपने पंखों
को समेटा और वहाँ फिर भीषण आवाज हुआ। वह
आवाज उस कटोरे से हुआ जो उनके सिर के ऊपर

था। **26**उस कटोरे के ऊपर वहाँ कुछ था जो एक सिंहासन की तरह दिखता था। यह नीलमणि की तरह नीला था। वहाँ कोई था जो उस सिंहासन पर बैठा एक मनुष्य की तरह दिख रहा था! **27**मैंने उसे उसकी कमर से ऊपर देखा। वह तप्त–धातु की तरह दिखा। उसके चारों ओर ज्वाला सी फूट रही थी! मैंने उसे उसकी कमर के नीचे देखा। यह आग की तरह दिखा जो उसके चारों ओर जगमगा रही थी। **28**उसके चारों ओर चमकता प्रकाश बादलों में मेघ धनुष सा था। यह यहोवा की महिमा सा दिख रहा था। जैसे ही मैंने वह देखा, मैं धरती पर गिर गया। मैंने धरती पर अपना माथा टेका। तब मैंने एक आवाज़ सम्बोधित करते हुए सुनी।

2 उस वाणी ने कहा, "मनुष्य के पुत्र, खड़े हो जाओ और मैं तुमसे बातें करूँगा।"

2तब आत्मा मुझे मेरे पैरों पर सीधे खड़ा कर दिया और मैंने उस को सुना जो मुझसे बातें कर रहा था। **3**उसने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, मैं तुम्हें इस्राएल के परिवार से कुछ कहने के लिये भेज रहा हूँ।" वे लोग कई बार मेरे विरुद्ध हुए। उनके पूर्वज भी मेरे विरुद्ध हुए। उन्होंने मेरे विरुद्ध अनेक बार पाप किये और वे आज तक मेरे विरुद्ध अब भी पाप कर रहे हैं। **4**मैं तुम्हें उन लोगों से कुछ कहने के लिये भेज रहा हूँ। किन्तु वे बहुत हठी हैं। वे बड़े कठोर चित्त वाले हैं। किन्तु तुम्हें उन लोगों से बातें करनी हैं। तुम्हें कहना चाहिए, "हमारा स्वामी यहोवा ये बातें बताता है।" **5**किन्तु वे लोग तुम्हारी सुनेंगे नहीं। वे मेरे विरुद्ध पाप करना बन्द नहीं करेंगे। क्यों? क्योंकि वे बहुत विद्रोही लोग हैं, वे सदा मेरे विरुद्ध हो जाते हैं! किन्तु तुम्हें वे बातें उनसे कहनी चाहिये जिससे वे समझ सकें कि उनके बीच में कोई नबी रह रहा है।

6"मनुष्य के पुत्र उन लोगों से डरो नहीं। जो वे कहें उससे डरो मत। यह सत्य है कि वे तुम्हारे विरुद्ध हो जायेंगे और तुमको चोट पहुँचाना चाहेंगे। वे काँटे के समान होंगे। तुम ऐसा सोचोगे कि तुम बिच्छुओं के बीच रह रहे हो। किन्तु वे जो कुछ कहें उनसे डरो नहीं। वे विद्रोही लोग हैं। किन्तु उनसे डरो नहीं। **7**तुम्हें उनसे वे बातें कहनी चाहिए जो मैं कह रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि वे तुम्हारी नहीं सुनेंगे और वे मेरे विरुद्ध पाप करना बन्द नहीं करेंगे! क्यों? क्योंकि वे विद्रोही लोग हैं।

8"मनुष्य के पुत्र, तुम्हें उन बातों को सुनना चाहिये जिन्हें मैं तुमसे कहता हूँ। उन विद्रोही लोगों की तरह मेरे विरुद्ध न जाओ। अपना मुँह खोलो जो बात मैं तुमसे कहता हूँ, स्वीकार करो और उन वचनों को लोगों से कहो। इन वचनों को खा लो।"

9तब मैंने (यहेजकेल) एक भुजा को अपनी ओर बढ़ते देखा। वह एक गोल किया हुआ लम्बा पत्र जिस पर वचन लिखे थे, पकड़े हुए था। **10**मैंने उस गोल किये हुए पत्र को खोला और उस पर सामने और पीछे वचन लिखे थे। उसमें सभी प्रकार के करूण गीत, कथायें और चेतावनियाँ थीं।

3 परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, जो तुम देखते हो उसे खा जाओ। इस गोल किये पत्र कोखा जाओ और तब जाकर इस्राएल के लोगों से ये बातेंकहो।"

2इसलिये मैंने अपना मुँह खोला और उसने गोल किये पत्र को मेरे मुँह में रखा। **3**तब परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य के पुत्र, मैं तुम्हें इस गोल किये पत्र को दे रहा हूँ। इसे निगल जाओ! इस गोल किये पत्र को अपने शरीर में भर जाने दो।"

इसलिये मैं गोल किये पत्र को खा गया। यह मेरे मुँह में शहद की तरह मीठा था।

4तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के परिवार में जाओ। मेरे कहे हुए वचन उनसे कहो। **5**मैं तुम्हें किन्हीं विदेशियों में नहीं भेज रहा हूँ जिनकी बातें तुम समझ न सको। तुम्हें दूसरी भाषा सीखनी नहीं पड़ेगी। मैं तुम्हें इस्राएल के परिवार में भेज रहा हूँ। **6**मैं तुम्हें कई भिन्न देशों में नहीं भेज रहा हूँ जहाँ लोग ऐसी भाषा बोलते हैं कि तुम समझ नहीं सकते। यदि तुम उन लोगों के पास जाओगे और उनसे बातें करोगे तो वे तुम्हारी सुनेंगे। किन्तु तुम्हें उन कठिन भाषाओं को नहीं समझना है। **7**नहीं! मैं तो तुम्हें इस्राएल के परिवार में भेज रहा हूँ। केवल वे लोग ही कठोर चित्त वाले हैं–वे बहुत ही हठी हैं और इस्राएल के लोग तुम्हारी सुनने से इन्कार कर देंगे। वे मेरी सुनना नहीं चाहते! **8**किन्तु मैं तुमको उतना ही हठी बनाऊँगा जितने वे हैं। तुम्हारा चित्त ठीक उतना ही कठोर होगा जितना उनका! **9**हीरा अग्नि–चट्टान से भी अधिक कठोर होता है। उसी प्रकार तुम्हारा चित्त उनके चित्त से अधिक कठोर होगा। तुम उनसे अधिक हठी होगे अत: तुम उन लोगों से नहीं डरोगे । तुम उन लोगों से नहीं डरोगे जो सदा मेरे विरुद्ध जाते हैं।"

10तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, तुम्हें मेरी हर एक बात, जो मैं तुमसे कहता हूँ, सुनना होगा और तुम्हें उन बातों को याद रखना होगा। **11**तब तुम अपने उन सभी लोगों के बीच जाओ जो देश–निष्कासित हैं। उनके पास जाओ और कहो, 'हमारा स्वामी यहोवा ये बातें कहता है', वे मेरी नहीं सुनेंगे और वे पाप करना बन्द नहीं करेंगे। किन्तु तुम्हें ये बातें कहनी हैं।"

12तब आत्मा ने मुझे ऊपर उठाया। तब मैंने अपने पीछे एक आवाज सुनी। यह बिजली की कड़क की तरह बहुत तेज थी। उसने कहा, "यहोवा की महिमा धन्य है!" **13**तब प्राणियों के पंख हिलने आरम्भ हुए। पंखों ने, जब एक दूसरे को छुआ, तो उन्होंने बड़ी तेज आवाज की और उनके सामने के चक्र बिजली की कड़क की तरह प्रचण्ड घोष करने लगे! **14**आत्मा ने

मुझे उठाया और दूर ले गई। मैंने वह स्थान छोड़ा। मैं
बहुत दु:खी था और मेरी आत्मा बहुत अशान्त थी
किन्तु यहोवा की शक्ति मेरे भीतर बहुत प्रबल थी! 15मैं
इस्राएल के उन लोगों के पास गया जो तेलाबीब में रहने
को विवश किये गए थे। ये लोग कबार नदी के सहारे
रहते थे। मैंने वहाँ के निवासियों को अभिवादन किया।
मैं वहाँ सात दिन ठहरा और उन्हें यहोवा की कही गई
बातों को बताया।

16सात दिन बाद यहोवा का सन्देश मुझे मिला। उसने
कहा, 17"मनुष्य के पुत्र, मैं तुम्हें इस्राएल का सन्तरी
बना रहा हूँ। मैं उन बुरी घटनाओं को बताऊँगा जो
उनके साथ घटित होंगी और तुम्हें इस्राएल को उन
घटनाओं के बारे में चेतावनी देनी चाहिए। 18यदि मैं
कहता हूँ, 'यह बुरा व्यक्ति मरेगा!' तो तुम्हें यह चेतावनी
उसे देनी चाहिए! तुम्हें उससे कहना चाहिये कि वह
अपनी जिन्दगी बदले और बुरे काम करना बन्द करे।
यदि तुम उस व्यक्ति को चेतावनी नहीं दोगे तो वह मर
जायेगा। वह मरेगा क्योंकि उसने पाप किया। किन्तु मैं
तुमको भी उसकी मृत्यु के लिये उत्तरदायी बनाऊँगा!
क्यों? क्योंकि तुम उसके पास नहीं गए और उसके
जीवन को नहीं बचाया।

19"यह हो सकता है कि तुम किसी व्यक्ति को चेतावनी
दोगे, उसे उसके जीवन को बदलने के लिये समझाओगे
और बुरा काम न करने को कहोगे। यदि वह व्यक्ति
तुम्हारी अनसुनी करता है तो मर जायेगा। वह मरेगा
क्योंकि उसने पाप किया था। किन्तु तुमने उसे चेतावनी
दी, अत: तुमने अपना जीवन बचा लिया।

20"या यह हो सकता है कि कोई अच्छा व्यक्ति अच्छा
बने रहना छोड़ दे। मैं उसके सामने कुछ ऐसा लाकर
रख दूँ कि वह उसका पतन (पाप) करे। वह बुरे काम
करना आरम्भ करेगा। इसलिये वह मरेगा। वह मरेगा,
क्योंकि वह पाप कर रहा है और तुमने उसे चेतावनी
नहीं दी। मैं तुम्हें उसकी मृत्यु के लिये उत्तरदायी बनाऊँगा,
और लोग उसके द्वारा किये गए सभी अच्छे कार्यों को
याद नहीं करेंगे।

21"किन्तु यदि तुम उस अच्छे व्यक्ति को चेतावनी देते
हो और उससे पाप करना बन्द करने को कहते हो,
और यदि वह पाप करना बन्द कर देता है, तब वह नहीं
मरेगा। क्यों? क्योंकि तुमने उसे चेतावनी दी और उसने
तुम्हारी सुनी। इस प्रकार तुमने अपना जीवन बचाया।"

22तब यहोवा की शक्ति मेरे ऊपर आई। उसने मुझसे
कहा, "उठो, और घाटी में जाओ। मैं तुमसे उस स्थान
पर बात करूँगा।"

23इसलिये मैं खड़ा हुआ और बाहर घाटी में गया।
यहोवा की महिमा वहाँ प्रकट हुआ ठीक वैसा ही, जैसा
मैंने उसे कबार नदी के सहारे देखा था। इसलिए मैंने
धरती पर अपना सिर झुकाया। 24किन्तु "आत्मा" आयी
और उसने मुझे उठाकर मेरे पैरों पर खड़ा कर दिया।
उसने मुझसे कहा, "घर जाओ और अपने को अपने
घर में ताले के भीतर बंद कर लो। 25मनुष्य के पुत्र,
लोग रस्सी के साथ आएंगे और तुमको बांध देंगे। वे
तुमको लोगों के बीच बाहर जाने नहीं देंगे। 26मैं तुम्हारी
जीभ को तुम्हारे तालू से चिपका दूँगा, तुम बात करने
योग्य नहीं रहोगे। इसलिये कोई भी व्यक्ति उन लोगों को
ऐसा नहीं मिलेगा जो उन्हें शिक्षा दे सके कि वे पाप कर
रहे हैं। क्यों? क्योंकि वे लोग सदा मेरे विरुद्ध जा रहे हैं।
27किन्तु मैं तुमसे बातचीत करुँगा तब मैं तुम्हें बोलने
दूँगा। किन्तु तुम्हें उनसे कहना चाहिए, 'हमारा स्वामी
यहोवा ये बातें कहता है।' यदि कोई व्यक्ति सुनना चाहता
है तो यह बहुत अच्छा है। यदि कोई व्यक्ति इसे नहीं
सुनना चाहता, तो न सुने। किन्तु वे लोग सदा मेरे विरुद्ध
जाते रहे।

4 "मनुष्य के पुत्र, एक ईंट लो। इस पर एक चित्र
खींचो। एक नगर का, अर्थात यरूशलेम का एक
चित्र बनाओ 2और तब उस प्रकार कार्य करो मानो तुम
उस नगर का घेरा डाले हुए सेना हो। नगर के चारों
ओर एक मिट्टी की दीवार इस पर आक्रमण करने में
सहायता के लिये बनाओ। नगर की दीवार तक पहुँचने
वाली एक कच्ची सड़क बनाओ। तोड़ फोड़ करने वाले
लट्ठे लाओ और नगर के चारों ओर सैनिक डेरे खड़े
करो 3और तब तुम एक लोहे की कड़ाही लो और इसे
अपने और नगर के बीच रखो। यह एक लोहे की
दीवार की तरह होगी, जो तुम्हें और नगर को अलग
करेगी। इस प्रकार तुम यह प्रदर्शित करोगे कि तुम उस
नगर के विरुद्ध हो। तुम उस नगर को घेरोगे और उस
पर आक्रमण करोगे। क्यों? क्योंकि यह इस्राएल के
परिवार के लिये एक उदाहरण होगा। यह प्रदर्शित करेगा
कि मैं (परमेश्वर) यरूशलेम को नष्ट करुँगा।

4"तब तुम्हें अपने बायीं करवट लेटना चाहिए। तुम्हें
वह करना चाहिए जो प्रदर्शित करे कि तुम इस्राएल के
लोगों के पापों को अपने ऊपर ले रहे हो। तुम उस पाप
को उतने ही दिनों तक ढोओगे जितने दिन तक तुम
अपनी बायीं करवट लेटोगे। 5तुम इस तरह इस्राएल के
पाप को तीन सौ नब्बे दिनों तक सहोगे। इस प्रकार मैं
तुम्हें बता रहा हूँ कि इस्राएल, एक दिन एक वर्ष के
बराबर के, कितने लम्बे समय तक दण्डित होगा।

6"उस समय के बाद तुम अपनी दायीं करवट चालीस
दिन तक लेटोगे। इस समय यहूदा के पापों को चालीस
दिन तक सहन करोगे। एक दिन एक वर्ष का होगा। मैं
तुम्हें बता रहा हूँ कि यहूदा कितने लम्बे समय के लिये
दण्डित होगा।"

7परमेश्वर फिर बोला। उसने कहा, "अब, अपनी
आस्तीनों को मोड़ लो और अपने हाथों को ईंट के
ऊपर उठाओ। ऐसा दिखाओ मानो तुम यरूशलेम नगर

पर आक्रमण कर रहे हो। इसे यह दिखाने के लिये
करो कि तुम मेरे नबी के रूप में लोगों से बातें कर रहे
हो। 8इस पर ध्यान रखो, मैं तुम्हें रस्सियों से बाँध रहा
हूँ। तुम तब तक एक बगल से दूसरी बगल करवट नहीं
ले सकते जब तक तुम्हारा नगर पर आक्रमण समाप्त
नहीं होता।"*

9परमेश्वर ने यह भी कहा, "तुम्हें रोटी बनाने के
लिये कुछ अन्न लाना चाहिए। कुछ गेहूँ, जौ, सेम,
मसूर, तिल, बाजरा और कठिया गेहूँ लाओ। इस सभी
को एक कटोरे में मिलाओ और उन्हें पीसकर आटा
बनाओ। तुम्हें इस आटे का उपयोग रोटी बनाने के लिये
करना होगा। तुम केवल इसी रोटी को तीन सौ नब्बे
दिनों तक अपनी बगल के सहारे लेटे हुये खाओगे।
10तुम्हें केवल एक प्याला वह आटा रोटी बनाने के
लिये प्रतिदिन उपयोग करना होगा। तुम उस रोटी को
पूरे दिन में समय समय पर खाओगे। 11और तुम केवल
तीन प्याले पानी प्रतिदिन पी सकते हो। 12तुम्हें प्रतिदिन
अपनी रोटी बनानी चाहिए। तुम्हें आदमी का सूखा मल
लाकर उसे जलाना चाहिए। तब तुम्हें उस जलते मल पर
अपनी रोटी पकानी चाहिए। तुम्हें इस रोटी को लोगों के
सामने खाना चाहिए।"

13तब यहोवा ने कहा, "यह प्रदर्शित करेगा कि इस्राएल
का परिवार विदेशों में अपवित्र रोटियाँ खाएगा और मैंने
उन्हें इस्राएल को छोड़ने और उन देशों में जाने को
विवश किया था!"

14तब मैंने (यहेजकेल) आश्चर्य से कहा, "किन्तु मेरे
स्वामी यहोवा, मैंने अपवित्र भोजन कभी नहीं खाया।
मैंने कभी उस जानवर का माँस नहीं खाया, जो किसी
रोग से मरा हो या जिसे जंगली जानवर ने मार डाला हो।
मैंने बाल्यावस्था से लेकर अब तक कभी अपवित्र माँस
नहीं खाया है। मेरे मुँह में कोई भी वैसा बुरा माँस कभी
नहींगया है।"

15तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "ठीक है! मैं तुम्हें
रोटी पकाने के लिये गाय का सूखा गोबर उपयोग में
लाने दूँगा। तुम्हें आदमी के सूखे मल का उपयोग नहीं
करना होगा।"

16तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, मैं
यरूशलेम की रोटी की आपूर्ति को नष्ट कर रहा हूँ।
लोगों के पास खाने के लिये रोटियाँ नहीं के बराबर
होंगी। वे अपनी भोजन–आपूर्ति के लिये बहुत परेशान
होंगे और उनके लिये पीने का पानी नहीं के बराबर है।
वे उस पानी को पीते समय बहुत भयभीत रहेंगे। 17क्यों?
क्योंकि लोगों के लिये पर्याप्त भोजन और पानी नहीं
होगा। लोग एक दूसरे को देखकर भयभीत होंगे क्योंकि
वे अपने पापों के कारण एक दूसरे को नष्ट होता हुआ
देखेंगे।"

5 1-2"मनुष्य के पुत्र अपने उपवास के समय* के
बाद तुम्हें ये काम करने चाहिए। तुम्हें एक तेज
तलवार लेनी चाहिए। उस तलवार का उपयोग नाई के
उस्तरे की तरह करो। तुम अपने बाल और दाढ़ी उससे
काट लो। बालों को तराजू में रखो और तौलो। अपने
बालों को तीन बराबर भागों में बाँटो। अपने बालों का
एक तिहाई भाग उस ईंट पर रखो जिस पर नगर का
चित्र बना है। उस नगर में उन बालों को जलाओ। यह
प्रदर्शित करता है कि कुछ लोग नगर के अन्दर मरेंगे।
तब तलवार का उपयोग करो और अपने बालों के एक
तिहाई को छोटे–छोटे टुकड़ों में काट डालो। उन बालों
को उस नगर (ईंट) के चारों ओर रखो। यह प्रदर्शित
करेगा कि कुछ लोग नगर के बाहर मरेंगे। तब अपने
बालों के एक तिहाई को हवा में उड़ा दो। इन्हें हवा को
दूर उड़ा ले जाने दो। यह प्रदर्शित करेगा कि मैं अपनी
तलवार निकालूँगा और कुछ लोगों का पीछा करके
उन्हें दूर देशों में भगा दूँगा। 3किन्तु तब तुम्हें जाना
चाहिए और उन बालों में से कुछ को लाना चाहिए। उन
बालों को लाओ, उन्हें ढको और उनकी रक्षा करो।
यह प्रदर्शित करेगा कि मैं अपने लोगों में से कुछ को
बचाऊँगा 4और तब उन उड़े हुए बालों में से कुछ और
अधिक बालों को लाओ। उन बालों को आग में फेंक
दो। यह प्रदर्शित करता है कि आग वहाँ शुरु होगी और
इस्राएल के पूरे खानदानको जलाकर नष्ट कर देगी।"

5तब मेरे स्वामी यहोवा ने मुझसे कहा "वह ईंट
यरूशलेम है, मैंने इस यरूशलेम नगर को अन्य राष्ट्रों
के बीच रखा है, इस समय इस्राएल के चारों ओर अन्य
देश हैं। 6यरूशलेम के लोगों ने मेरे आदेशों के प्रति
विद्रोह किया। वे अन्य किसी भी राष्ट्र से अधिक बुरे थे!
उन्होंने मेरे नियमों को उससे भी अधिक तोड़ा जितना
उनके चारों ओर के किसी भी देश के लोगों ने तोड़ा।
उन्होंने मेरे आदेशों को सुनने से इनकार कर दिया।
उन्होंने मेरी व्यवस्था का पालन नहीं किया!"

7इसलिये मेरे स्वामी यहोवा, ने कहा, "मैं तुम लोगों
पर भयंकर विपत्ति लाऊँगा। क्यों? क्योंकि तुमने मेरे
आदेशों का पालन नहीं किया। तुम लोगों ने मेरे नियमों
को अपने चारों ओर रहने वाले लोगों से भी अधिक
तोड़ा! तुम लोगों ने वे काम भी किये जिन्हें वे लोग भी
गलत कहते हैं!" 8इसलिये मेरा स्वामी यहोवा कहता है,
"इसलिए मैं भी तुम्हारे विरुद्ध हूँ, मैं तुम्हें इस प्रकार
दण्ड दूँगा जिससे दूसरे लोग भी देख सकें। 9मैं तुम लोगों
के साथ वह करूँगा जिसे मैंने पहले कभी नहीं किया।
मैं उन भयानक कामों को फिर कभी नहीं करूँगा।

नगर ... नहीं होता हिब्रू में श्लेष है। हिब्रू शब्द का अर्थ "भूखों मरने का समय" "आपत्तिकाल" या "किसी नगर पर उसके विरुद्ध आक्रमण" हो सकता है।

अपने उपवास के समय "नगर पर तुम्हारा आक्रमण।"

क्यों? क्योंकि तुमने इतने अधिक भयंकर काम किये।
10यरूशलेम में लोग भूख से इतने तड़पेंगे कि माता–पिता
अपने बच्चों को खा जाएंगें और बच्चे अपने माता–पिता
को खा जाएंगे। मैं तुम्हें कई प्रकार से दण्ड दूँगा और जो
लोग जीवित बचे हैं, उन्हें मैं हवा में बिखेर दूँगा।”

11मेरे स्वामी यहोवा कहता है, “यरूशलेम, मैं अपने
जीवन की शपथ खाकर कहता हूँ कि मैं तुम्हें दण्ड
दूँगा! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। क्यों?
क्योंकि तुमने मेरे ‘पवित्र स्थान’ के विरुद्ध भयंकर पाप
किया! तुमने वे भयानक काम किये जिन्होंने इसे गन्दा
बना दिया! मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। मैं तुम पर दया नहीं
करुँगा! मैं तुम्हारे लिए दुःख का अनुभव नहीं करुँगा!
12तुम्हारे एक तिहाई लोग नगर के भीतर रोग और
भूख से मरेंगे। तुम्हारे एक तिहाई लोग युद्ध में नगर के
बाहर मरेंगे और तुम्हारे लोगों के एक तिहाई को मैं
अपनी तलवार निकाल कर उन का पीछा कर के
उन्हें दूर देशों में खदेड़ दूँगा। **13**केवल तब मैं तुम्हारे
लोगों पर क्रोधित होना बन्द करूँगा। मैं समझ लूँगा कि
वे उन बुरे कामों के लिए दण्डित हुए हैं जो उन्होंने मेरे
साथ किये थे और वे समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ और मैंने
उनसे बातें उनके प्रति गहरा प्रेम होने के कारण की!”

14परमेश्वर ने कहा, “यरूशलेम मैं तुझे नष्ट करुँगा
तुम पत्थरों के ढेर के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं रह
जाओगे। तुम्हारे चारों ओर के लोग तुम्हारी हँसी उड़ाएंगे।
हर एक व्यक्ति जो तुम्हारे पास से गुजरेगा, तुम्हारी हँसी
उड़ाएगा। **15**तुम्हारे चारों ओर के लोग तुम्हारी हँसी
उड़ाएंगे, किन्तु उनके लिए तुम एक सबक भी बनोगे।
वे देखेंगे कि मैं क्रोधित था और मैंने तुमको दण्ड दिया।
मैं बहुत क्रोधित था। मैंने तुम्हें चेतावनी दी थी। मुझ,
यहोवा ने तुमसे कहा था कि मैं क्या करूँगा! **16**मैंने
कहा था कि मैं तुम्हारे पास भयंकर भुखमरी का समय
भेजूँगा। मैंने तुमसे कहा था, मैं उन चीजों को भेजूँगा जो
तुमको नष्ट करेंगी और तुमसे कहा था कि मैं तुम्हारी
भोजन की आपूर्ति छीन लूँगा, और वह भूखमरी का
वह समय बार–बार आया। **17**मैंने तुमसे कहा था कि मैं
तुझ पर भूख तथा जंगली पशु भेजूँगा, जो तुम्हारे बच्चों
को मार डालेंगे। मैंने तुमसे कहा था कि पूरे नगर में
रोग और मृत्यु का राज्य होगा और मैं उन शत्रु–सैनिकों
को तुम्हारे विरुद्ध लड़ने के लिये लाऊँगा। मुझ यहोवा
ने यह कहा था, ये सभी बातें घटित होंगी और सभी
घटित हुई!”

6 तब यहोवा का वचन मेरे पास फिर आया। **2**उसने
कहा, “मनुष्य के पुत्र’ इस्राएल के पर्वतों की ओर
मुड़ो। उनके विरुद्ध मेरे पक्ष में कहो। **3**उन पर्वतों से यह
कहो:

“‘इस्राएल के पर्वतों, मेरे स्वामी यहोवा की ओर से
यह सन्देश सुनो! मेरे स्वामी यहोवा पहाड़ियों, पर्वतों,
घाटियों और खार–खड्डों से यह कहता है। ध्यान दो!
मैं (परमेश्वर) शत्रु को तुम्हारे विरुद्ध लड़ने के लिये
ला रहा हूँ। मैं तुम्हारे उच्च–स्थानों को नष्ट कर दूँगा।
4तुम्हारी वेदियों को तोड़ कर टुकड़े–टुकड़े कर दिया
जायेगा तुम्हारी सुगन्धि चढ़ाने की वेदियाँ ध्वस्त कर दी
जाएंगी! और मैं तुम्हारे शवों को तुम्हारी गन्दी मूर्तियों
के सामने फेकूँगा। **5**मैं इस्राएल के लोगों के शवों को
उनके देवताओं की गन्दी मूर्तियों के सामने फेंकूँगा। मैं
तुम्हारी हड्डियों को तुम्हारी वेदियों के चारों ओर
बिखेरूँगा। **6**जहाँ कहीं तुम्हारे लोग रहेंगे उन पर विपत्तियाँ
आएंगी। उनके नगर पत्थरों के ढेर बनेंगे। उनके उच्च
स्थान नष्ट किये जाएंगे। क्यों? इसलिये कि उन पूजा–
स्थानों का उपयोग दुबारा न हो सके। वे सभी वेदियाँ
नष्ट कर दी जायेंगी। लोग फिर कभी उन गन्दी मूर्तियों
को नहीं पूजेंगे। उन सुगन्धि–वेदियों को ध्वस्त किया
जाएगा। जो चीजें तुम बनाते हो वे पूरी तरह नष्ट की
जाएंगी। **7**तुम्हारे लोग मारे जाएंगे और तब तुम जानोगे
कि मैं यहोवा हूँ!’”

8परमेश्वर ने कहा, “किन्तु मैं तुम्हारे कुछ लोगों को
बच निकलने दूँगा। वे थोड़े समय तक विदेशों में रहेंगे।
मैं उन्हें बिखेरूँगा और अन्य देशों में रहने के लिये
विवश करुँगा। **9**तब वे बचे हुए लोग बन्दी बनाए जाएंगे।
वे विदेशों में रहने को विवश किये जाएंगे। किन्तु वे बचे
हुए लोग मुझे याद रखेंगे। मैंने उनकी आत्मा (हृदय)
को खण्डित किया। जिन पापों को उन्होंने किया, उसके
लिये वे स्वयं ही घृणा करेंगे। बीते समय में वे मुझसे
विमुख हुए थे और दूर हो गए थे। वे अपनी गन्दी मूर्तियों
के पीछे लगे हुए थे। वे उस स्त्री के समान थे जो अपने
पति को छोड़कर, किसी दूसरे पुरुष के पीछे दौड़ने लगी।
उन्होंने बड़े भंयकर पाप किये। **10**किन्तु वे समझ जाएंगे
कि मैं यहोवा हूँ और वे यह जानेंगे कि यदि मैं कुछ
करने के लिये कहूँगा तो मैं उसे करूँगा। वे समझ जायेंगे
कि वे सब विपत्तियाँ जो उन पर आई हैं, मैंने डाली हैं।”

11तब मेरे स्वामी यहोवा ने मुझसे कहा, “हाथों से
ताली बजाओं और अपने पैर पीटो। उन सभी भयंकर
चीजों के विरुद्ध कहो जिन्हें इस्राएल के लोगों ने किया
है। उन्हें चेतावनी दो कि वे रोग और भूख से मारे
जाएंगे। उन्हें बताओ कि वे युद्ध में मारे जाएंगे। **12**दूर के
लोग रोग से मरेंगे। समीप के लोग तलवार से मारे
जाएंगे। जो लोग नगर में बचे रहेंगे, वे भूख से मरेंगे। मैं
तभी क्रोध करना छोड़ूँगा, **13**और केवल तभी तुम
जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। तुम यह तब समझोगे जब तुम
अपने शवों को गन्दी मूर्तियों के सामने और वेदियों के
चारों ओर देखोगे। तुम्हारे पूजा के उन हर स्थानों के
निकट, हर एक ऊँची पहाड़ी, पर्वत तथा हर एक हरे
वृक्ष और पत्ते वाले हर एक बांज वृक्ष के नीचे, वे शव
होंगे। उन सभी स्थानों पर तुमने अपनी बलि–भेंट की

है। वे तुम्हारी गन्दी मूर्तियों के लिए मधुर गन्ध थी।
14किन्तु मैं अपना हाथ तुम लोगों पर उठाऊँगा और
तुम्हें और तुम्हारे लोगों को जहाँ कही वे रहे, दण्ड दूँगा!
मैं तुम्हारे देश को नष्ट करूँगा! यह दिबला मरूभूमि से
भी अधिक सूनी होगी। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ!"

7 तब यहोवा का वचन मुझे मिला। 2उसने कहा,
"मनुष्य के पुत्र, अब मेरे स्वामी यहोवा का यह
सन्देश है। यह सन्देश इस्राएल देश के लिये है: अन्त!
अन्त आ गया है। पूरा देश नष्ट हो जायेगा।

3अब तुम्हारा अन्त आ गया है! मैं दिखाऊँगा कि मैं
तुम पर कितना क्रोधित हूँ। मैं तुम्हें उन बुरे कामों के
लिये दण्ड दूँगा जो तुमने किये। जो भंयकर काम तुमने
किये उनके लिए मैं तुमसे भुगतान कराऊँगा।

4मैं तुम्हारे ऊपर तनिक भी दया नहीं करूँगा। मैं
तुम्हारे लिये अफसोस नहीं करूँगा। मैं तुम्हें तुम्हारे बुरे
कामों के लिये दण्ड दे रहा हूँ। तुमने भयानक काम
किये हैं। अब तुम समझ जाओगे कि मैं यहोवा हूँ।"

5मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं। "एक के बाद
एक विपत्तियाँ आयेंगी! 6अन्त आ रहा है और यह बहुत
जल्दी आयेगा! 7इस्राएल के तुम लोगों, क्या तुमने सीटी
सुनी है? शत्रु आ रहा है। वह दण्ड का समय शीघ्र आ
रहा है! शत्रुओं का शोरगुल पर्वतों पर अधिकाधिक
बढ़ता जा रहा है। 8मैं शीघ्र ही दिखा दूँगा कि मैं कितना
क्रोधित हूँ। मैं तुम्हारे विरुद्ध अपने पूरे क्रोध को प्रकट
करुँगा। मैं उन बुरे कामों के लिये दण्ड दूँगा जो तुमने
किये। मैं उन सभी भयानक कामों के लिए तुमसे
भुगतान कराऊँगा जो तुमने किये। 9मैं तुम पर तनिक
भी दया नहीं करुँगा मैं तुम्हारे लिये अफसोस नहीं
करुँगा। मैं तुम्हें तुम्हारे बुरे कामों के लिये दण्ड दे रहा
हूँ। तुमने जो भयानक काम किये हैं, अब तुम जानोगे
कि मैं यहोवा हूँ और मैं दण्ड भी देता हूँ।

10"दण्ड का वह समय आ गया। क्या तुम सीटी सुन
रहे हो? परमेश्वर ने संकेत दिया है। दण्ड आरम्भ हो
रहा है। डाली अंकुरित होने लगी है। घमण्डी राजा
(नबूकदनेस्सर) पहले से ही अधिक शक्तिशाली होता
जा रहा था। 11वह हिसंक व्यक्ति उन बुरे लोगों को दण्ड
देने के लिये तैयार है। इस्राएल में लोगों की संख्या बहुत
है, किन्तु वह उनमें से नहीं है। वह उस भीड़ का व्यक्ति
नहीं है। वह उन लोगों में से कोई महत्वपूर्ण प्रमुख नहीं
है।

12"वह दण्ड का समय आ गया है। वह दिन आ
पहुँचा। जो लोग चीजें खरीदते हैं, प्रसन्न नहीं होंगे और
जो लोग चीजें बेचते हैं, वे उन्हें बेचने में बुरा नहीं
मानेंगे। क्यों? क्योंकि वह भंयकर दण्ड हर एक व्यक्ति
के लिये होगा। 13जो लोग अपनी स्थायी सम्पत्ति बेचेंगे वे
उसे कभी नहीं पाएंगे। यदि कोई व्यक्ति जीवित भी बचा
रहेगा तो भी वह अपनी स्थायी सम्पत्ति वापस नहीं पा
सकता। क्यों? क्योंकि यह दर्शन लोगों के पूरे समूह के
लिये है। इसलिए यदि कोई व्यक्ति जीवित भी बच निकलता
है, तो भी लोग इससे अधिक संतुष्ट नहीं होंगे।

14"वे लोगों को चेतावनी देने के लिये तुरही बजाएंगे।
लोग युद्ध के लिये तैयार होंगे। किन्तु वे युद्ध करने के
लिये नहीं निकलेंगे। क्यों? क्योंकि मैं पूरे जन-समूह
को दिखाऊँगा कि मैं कितना क्रोधित हूँ। 15तलवार
लिये हुए शत्रु नगर के बाहर हैं। रोग और भूख नगर
के भीतर हैं। यदि कोई युद्ध के मैदान में जाएगा तो शत्रु
के सैनिक उसे मार डालेंगे। यदि वह नगर में रहता है
तो भूख और रोग उसे नष्ट करेंगे।

16"किन्तु कुछ लोग बच निकलेंगे। वे बचे लोग भाग
कर पहाड़ों में चले जाएंगे। किन्तु वे लोग सुखी नहीं
होंगे। वे अपने पापों के कारण दुःखी होंगे। वे चिल्लायेंगे
और कबूतरों की तरह दुःख-भरी आवाज़ निकालेंगे।
17लोग इतने थके और खिन्न होंगे कि बाहें भी नहीं
उठा पाएंगे। उनके पैर पानी की तरह ढीले होंगे। 18वे
शोक-वस्त्र पहनेंगे और भयभीत रहेंगे। तुम हर मुख
पर ग्लानि पाओगे। वे (शोक प्रदर्शन के लिये) अपने
बाल मुड़वा लेंगे। 19वे अपनी चाँदी की देव मूर्तियों को
सड़कों पर फेक देंगे। वे अपने सोने की देवमूर्तियों को
गन्दे चीथड़ो की तरह समझेंगे! क्यों? क्योंकि जब यहोवा
ने अपना क्रोध प्रकट किया वे मूर्तियाँ उन्हें बचा न
सकीं। वे मूर्तियाँ लोगों के लिये पतन (पाप) के जाल के
अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं थीं। वे मूर्तियाँ लोगों को
भोजन नहीं देंगी वे मूर्तियाँ उनके पेट में अन्न नहीं
पहुँचायेंगी।

20"उन लोगों ने अपने सुन्दर आभूषण का उपयोग
किया और मूर्ति बनाई। उन्हें अपनी मूर्ति पर गर्व था।
उन्होंने अपनी भयानक मूर्तियाँ बनाई। उन लोगों ने उन
गन्दी चीजों को बनाया। इसलिये मैं (परमेश्वर) उन्हें
गन्दें चिथड़े की तरह फेंक दूँगा। 21मैं उन्हें अजनबियों
को लेने दूँगा। वे अजनबी उनका मजाक उड़ाएंगे। वे
अजनबी, उन लोगों में से कुछ को मारेंगे और कुछ को
बन्दी बनाकर ले जाएंगे। 22मैं उनसे अपना मुँह फेर
लूँगा, मैं उनकी ओर नहीं देखूँगा। वे अजनबी मेरे
मन्दिर को नष्ट करेंगे, वे उस पवित्र भवन के गोपनीय
भागों में जाएंगे और उसे अपवित्र करेंगे।

23"बन्दियों के लिये जंजीरें बनाओ! क्यों? क्योंकि
बहुत से लोग दूसरे लोगों को मारने के कारण दण्डित
होंगे। नगर के हर स्थान पर हिंसा भड़केगी। 24मैं अन्य
राष्ट्रों से बुरे लोगों को लाऊँगा और वे लोग इस्राएल के
लोगों के सभी घरों को ले लेंगे। मैं तुम शक्तिशाली लोगों
को गर्वीला होने से रोक दूँगा। दूसरे राष्ट्रों के वे लोग
तुम्हारे पूजा-स्थानों को ले लेंगें।

25"तुम लोग भय से काँप उठोगे। तुम लोग शान्ति
चाहोगे, किन्तु शान्ति नहीं मिलेगी। 26तुम एक के बाद

दूसरी दुःख–कथा सुनोगे। तुम बुरी खबरों के अलावा कुछ नहीं सुनोगे। तुम नबी की खोज करोगे और उससे दर्शन पूछोगे। किन्तु कोई मिलेगा नहीं। याजक के पास तुम्हें शिक्षा देने को कुछ भी नहीं होगा और अग्रजों (प्रमुखों) के पास तुम्हें देने को कोई अच्छी सलाह नहीं होगी। 27तुम्हारा राजा उन लोगों के लिये रोएगा, जो मर गए। प्रमुख शोक–वस्त्र पहनेंगे। साधारण लोग बहुत डर जाएंगे। क्यों? क्योंकि मैं उसका बदला दूँगा जो उन्होंने किया। मैं उनका दण्ड निश्चित करूँगा। और मैं उन्हें दण्ड दूँगा। तब वे लोग समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

8 एक दिन मैं (यहेजकेल) अपने घर में बैठा था और यहूदा के अग्रज (प्रमुख) वहाँ मेरे सामने बैठे थे। यह देश–निकाले के छठे वर्ष के छठे महीने (सितम्बर) के पाँचवें दिन हुआ। अचानक मेरे स्वामी यहोवा की शक्ति मुझमें उतरी। 2मैंने कुछ देखा जो आग की तरह था। यह एक मनुष्य शरीर जैसा दिखाई पड़ता था। कमर से नीचे वह आग–सा था। कमर से ऊपर वह आग में तप्त–धातु की तरह चमकीला और कान्तिवाला था। 3तब मैंने कुछ ऐसा देखा जो बाहु की तरह था। वह बाहु बाहर बढ़ी और उसने मेरे सिर के बालों से मुझे पकड़ लिया। तब आत्मा ने मुझे हवा में उठा लिया और परमेश्वर के दर्शन में वह मुझे यरूशलेम को ले गई। वह मुझे उत्तर की ओर के भीतर फाटक पर ले गई। वह देवमूर्ति, जिससे परमेश्वर को ईर्ष्या होती है, उस फाटक के सहारे है। 4किन्तु इस्राएल के परमेश्वर का तेज वहाँ था। वह तेज वैसा ही दिखता था जैसा दर्शन मैंने घाटी के किनारे कबार नहर के पास देखा था।

5परमेश्वर ने मुझसे कहा। उसने कहा, "मनुष्य के पुत्र, उत्तर की ओर देखो!" इसलिये मैंने उत्तर की ओर देखा। और वहाँ प्रवेश मार्ग के सहारे वेदी–द्वार के उत्तर में वह देवमूर्ति थी जिसके प्रति परमेश्वर को ईर्ष्या होतीथी।

6तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, क्या तुम देखते हो कि इस्राएल के लोग कैसा भंयकर काम कर रहे हैं? यहाँ उन्होंने उस चीज को मेरे मन्दिर के ठीक बगल में बनाया है। यदि तुम मेरे साथ आओगे तो तुम और भी अधिक भंयकर चीजें देखोगे!"

7इसलिये मैं आंगन के प्रवेश–द्वार पर गया और मैंने दीवार में एक छेद देखा। 8परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र! उस दीवार के छेद में से घुसो।" इसलिये मैं दीवार के उस छेद में से होकर गया और वहाँ मैंने एक दरवाजा देखा।

9तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "अन्दर जाओ, और उन भयानक दुष्ट चीजों को देखो जिन्हें लोग यहाँ कर रहे हैं।" 10इसलिये मैं अन्दर गया और मैंने देखा। मैंने हर एक प्रकार के रेंगनेवाले जन्तु और जानवरों की देवमूर्तियों को देखा जिनके बारे में सोचने से तुम्हें घृणा होती है। वे देवमूर्तियाँ गन्दी मूर्तियाँ थीं जिन्हें इस्राएल के लोग पूजते थे। वहाँ उन जानवरों के चित्र हर दीवार पर चारों ओर खुदे हुए थे!

11तब मैंने इस पर ध्यान दिया कि शापान का पुत्र याजन्याह और इस्राएल के सत्तर अग्रज (प्रमुख) उस स्थान पर पूजा करने वालों के साथ थे। वहाँ पर वे, लोगों के ठीक सामने थे, और हर एक प्रमुख के हाथ में अपनी सुगन्धि का थाल था। जलती सुगन्धि का धुँआ हवा में उठ रहा था। 12तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, क्या तुम देखते हो कि इस्राएल के प्रमुख अंधेरे में क्या करते हैं? हर एक व्यक्ति के पास अपने असत्य देवता के लिये एक विशेष कमरा है! वे लोग आपस में बातें करते हैं, 'यहोवा हमें देख नहीं सकता। यहोवा ने इस देश को छोड़ दिया है।'" 13तब परमेश्वर ने मुझसे कहा, "यदि तुम मेरे साथ आओगे तो तुम उन लोगों को और भी अधिक भयानक काम करते देखोगे!"

14तब वह मुझे यहोवा के मन्दिर के प्रवेशद्वार पर ले गया। यह द्वार उत्तर की ओर था। वहाँ मैंने स्त्रियों को बैठे और रोते देखा। वे असत्य देवता तम्मूज के विषय में शोक मना रहीं थीं!

15परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, क्या तुम इन भंयकर चीजों को देखते हो? मेरे साथ आओ और तुम इनसे भी बुरे काम देखोगे!" 16तब वह मुझे मन्दिर के भीतरी आँगन में ले गया। उस स्थान पर मैंने पच्चीस व्यक्तियों को नीचे झुके हुए और पूजा करते देखा। वे बरामदे और वेदी के बीच थे, किन्तु वे गलत दिशा में मुँह किये खड़े थे! उनकी पीठ पवित्र स्थान की ओर थी! वे सूर्य की पूजा करने के लिये नीचे झुके थे!

17तब परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य के पुत्र, क्या तुम इसे देखते हो? यहूदा के लोग मेरे मन्दिर को इतना महत्वहीन समझते हैं कि वे मेरे मन्दिर में यह भंयकर काम करते हैं। यह देश हिंसा से भरा हुआ है। वे लगातार मुझको पागल करने वाला काम करते हैं! देखो, उन्होंने अपने नाकों में असत्य देवता की तरह चन्द्रमा का सम्मान करने के लिये बालियाँ पहन रखी हैं। 18मैं उन पर अपना क्रोध प्रकट करूँगा। मैं उन पर कोई दया नहीं करूँगा। मैं उनके लिये दुःख का अनुभव नहीं करूँगा। वे मुझे जोर से पुकारेंगे, किन्तु मैं उनको सुनने से इन्कार कर दूँगा!"

9 तब परमेश्वर ने नगर को दण्ड देने के लिये उत्तरदायी प्रमुखों को जोर से पुकारा। हर एक प्रमुख के हाथ में उसका अपना विध्वंसक शस्त्र था। 2तब मैंने ऊपरी द्वार से छः व्यक्तियों को सड़क पर आते देखा। यह द्वार उत्तर की ओर है। हर एक व्यक्ति अपने घातक शस्त्र को अपने हाथ में लिये था। उन व्यक्तियों में से एक ने

सूती वस्त्र पहन रखा था। उसके पास कमर में लिपिक
की एक कलम और स्याही थी। वे लोग मन्दिर से काँसे
की वेदी के पास गए और वहाँ खड़े हुए। 3तब इस्राएल
के परमेश्वर का तेज करुब (स्वर्गदूतों) के ऊपर से,
जहाँ वह था, उठा। तब वह तेज मन्दिर के द्वार पर
गया। जब वह डयोढ़ी पर पहुँचा तो वह रूक गया। तब
उस तेज ने उस व्यक्ति को बुलाया जो सूती वस्त्र, कलम
और स्याही धारण किये हुए था।

4तब यहोवा ने उससे कहा, "यरूशलेम नगर से होकर
निकलो। जो लोग उस नगर में लोगों द्वारा की गई
भंयकर चीजों के विषय में दु:खी हैं और घबरायें हुए हैं,
उन हर एक के ललाट पर एक चिन्ह अंकित करो।"

5-6तब मैंने परमेश्वर को अन्य लोगों से कहते सुना,
"मैं चाहता हूँ कि तुम लोग प्रथम व्यक्ति का अनुसरण
करो। तुम उन सभी व्यक्तियों को मार डालो। जिनके
ललाट पर चिन्ह नहीं है। तुम इस पर ध्यान नहीं देना
कि वे अग्रज (प्रमुख) युवक, युवतियाँ, बच्चे, या मातायें
हैं। तुम्हें अपने शस्त्रों का उपयोग करना है, उन हर
एक को मार डालना है जिनके ललाट पर चिन्ह नहीं
है। कोई दया न दिखाओ। किसी व्यक्ति के लिये अफसोस
न करो। यहाँ मेरे मन्दिर से आरम्भ करो।" इसलिये
उन्होंने मन्दिर के सामने के अग्रजों (प्रमुखों) से आरम्भ
किया।

7परमेश्वर ने उनसे कहा, "इस स्थान को अपवित्र
बना दो! इस आंगन को शवों से भर दो!" इसलिए वे गए
और उन्होंने नगर में लोगों को मार डाला।

8जब वे लोग, लोगों को मारने गए, तो मैं वहीं रूका
रहा। मैंने भूमि पर अपना माथा टेकते हुए कहा, "हे
मेरे स्वामी यहोवा, यरूशलेम के विरुद्ध अपना क्रोध
प्रकट करने के लिये, क्या तू इस्राएल में बचे हुये सभी
लोगों को मार रहा है?"

9परमेश्वर ने कहा, "इस्राएल और यहूदा के परिवार
ने अत्याधिक बुरे पाप किये हैं। इस देश में सर्वत्र लोगों
की हत्यायें हो रही हैं और यह नगर अपराध से भरा
पड़ा है। क्यों? क्योंकि लोग स्वयं कहते हैं, 'यहोवा ने
इस देश को छोड़ दिया। वे उन कामों को नहीं देख
सकता जिन्हें हम कर रहे हैं।' 10और मैं दया नहीं
दिखाऊँगा। मैं उन लोगों के लिये अफसोस अनुभव
नहीं करुँगा। उन्होंने स्वयं इसे बुलाया है, मैं इन लोगों
को केवल दण्ड दे रहा हूँ जिसके ये पात्र हैं!"

11तब सूती वस्त्र, लिपिक की कलम और स्याही
धारण करने वाला व्यक्ति बोला। उसने कहा, "मैंने वह
कर दिया जो तेरा आदेश था।"

10 तब मैंने उस कटोरे को देखा जो करुब (स्वर्गदूत)
के सिरों के ऊपर था। कटोरा नीलमणि की
तरह स्वच्छ नीला दिख रहा था। वहाँ कटोरे के ऊपर
कुछ सिंहासन की तरह दिख रहा था। 2तब उस व्यक्ति
ने जो सिंहासन पर बैठा था, सन के वस्त्र पहने हुए
व्यक्ति से कहा, "तुफानी–बादल" में आओ। करुब
(स्वर्गदूत) के क्षेत्र में आओ। करुब (स्वर्गदूतों) के बीच
से कुछ अंगारे अपने हाथ में लो। अपने हाथ में उन
कोयलों को ले जाओ और जाकर उन्हें यरूशलेम नगर
पर फेंक दो।"

वह व्यक्ति मेरे पीछे चला। 3करुब (स्वर्गदूत) उस
समय मन्दिर के दक्षिण के क्षेत्र में खड़े थे, जब वह
व्यक्ति बादल में घुसा। बादल भीतरी आँगन में भर गया।
4तब यहोवा का तेज करुब (स्वर्गदूत) से अलग होकर
मन्दिर के द्वार पर चला गया। तब बादल मन्दिर में भर
गया और यहोवा के तेज़ की प्रखर ज्योति पूरे आँगन में
भर गई। 5तब मैंने करुब (स्वर्गदूतों) के पंखों की
फड़फड़ाहट पूरे बाहरी आँगन में सुनी जा सकती थी।
बाहरी आँगन में फड़फड़ाहट बड़ी प्रचण्ड थी, वैसी ही
जैसी सर्वशक्तिमान परमेश्वर की गरजती वाणी होती है,
जब वह बातें करता है।

6परमेश्वर ने सन के वस्त्र पहने हुए व्यक्ति को
आदेश दिया था। परमेश्वर ने उसे "तुफानी–बादल" में
घुसने के लिये कहा और करुब (स्वर्गदूतों) के बीच से
कुछ अंगारे लेने को कहा। इसलिये वह व्यक्ति
तूफानी–बादल में घुस गया और गोल चक्रों में से एक
के सहारे खड़ा हो गया। 7करुब (स्वर्गदूतों) में से एक ने
अपना हाथ बढ़ाया और करुब (स्वर्गदूतों) के क्षेत्र के
बीच से कुछ अंगारे लिये। उसने अंगारों को उस व्यक्ति
के हाथों में रख दिया और वह व्यक्ति वहाँ से चला
गया। (8करुब (स्वर्गदूतों) के पंखों के नीचे कुछ ऐसा
था जो मनुष्य की भुजाओं की तरह दिखता था।)

9तब मैंने देखा कि वहाँ चार गोल चक्र थे। हर एक
करुब (स्वर्गदूत) की बगल में एक चक्र था, और चक्र
स्वच्छ पीले रत्न की तरह दिखते थे। 10वे चार चक्र थे
और सब चक्र एक से प्रतीत होते थे। वे ऐसे दिखते थे
मानों एक चक्र दूसरे चक्र में हो। 11जब वे चलते थे तो
किसी भी दिशा में जा सकते थे। जब कभी वे चलते थे
वे चारों एक साथ चलते थे। किन्तु उनके चलने के
साथ करुब (स्वर्गदूत) साथ–साथ चक्कर नहीं लगाते
थे। वे उस दिशा में चलते थे, जिधर उनका मुख होता
था। जब वे चलते थे तो वे इधर–उधर नहीं मुड़ते थे।
12उनके पूरे शरीर पर आँखे थीं। उनकी पीठ, उनकी
भुजा, उनके पंख और उनके चक्र में आँखे थीं। हाँ,
चारों चक्रों में आँखे थीं! 13मेरे सुनते हुए इन पहियों को
चक्कर कहा गया, अर्थात् घूमने वाले पहिए।

14-15हर एक करुब (स्वर्गदूत) चार मुखों वाला था।
पहला मुख करुब का था। दूसरा मुख मनुष्य का था।
तीसरा सिंह का मुख था और चौथा उकाब का मुख
था। तब मैंने जाना कि ये करुब (स्वर्गदूत) वे जानवर
थे जिन्हें मैंने कबार नदी के दर्शन में देखा था!

तब करुब (स्वर्गदूत) हवा में उठे। 16उनके साथ
चक्र उठे। चक्रों ने अपनी दिशा उस समय नहीं बदली
जब करुब (स्वर्गदूत) ने पंख खोले और वे हवा में उड़े।
17यदि करुब (स्वर्गदूत) हवा में उड़ते थे तो चक्र उनके
साथ जाते थे। यदि करुब (स्वर्गदूत) शान्त खड़े रहते थे
तो चक्र भी वैसा ही करते थे। क्यों? क्योंकि उनमें
प्राणियों की आत्मा की शक्ति थी।

18तब यहोवा का तेज मन्दिर की देहली से उठा,
करुब (स्वर्गदूतों) के स्थान के ऊपर गया और वहाँ
ठहर गया। 19तब करुब (स्वर्गदूतों) ने अपने पंख खोले
और हवा में उड़ गए। मैंने उन्हें मन्दिर को छोड़ते देखा!
चक्र उनके साथ चले। तब वे यहोवा के मन्दिर के पूर्वी
द्वार पर ठहरे। इस्राएल के परमेश्वर का तेज हवा में
उनके ऊपरथा।

20तब मैंने इस्राएल के परमेश्वर के तेज के नीचे
प्राणियों को कबार नदी के दर्शन में याद किया और
मैंने अनुभव किया कि वे प्राणी करुब (स्वर्गदूत) थे।
21हर एक प्राणी के चार मुख थे, चार पंख थे और पंखों
के नीचे कुछ ऐसा था जो मनुष्य की भुजाओं की तरह
दिखता था। 22करुब (स्वर्गदूतों) के वही चार मुख थे जो
कबार नदी के दर्शन के प्राणियों के थे और वे सीधे
आगे उस दिशा में देखते थे, जिधर वे जा रहे थे।

11 तब आत्मा मुझे यहोवा के मन्दिर के पूर्वी द्वार
पर ले गया। इस द्वार का मुख पूर्व को है जहाँ
सूरज निकलता है। मैंने इस फाटक के प्रवेश द्वार पर
पच्चीस व्यक्ति देखे। अज्जूर का पुत्र याजन्याह उन लोगों
के साथ था और बनायाह का पुत्र पलत्याह वहाँ था।
पलत्याह लोगों का प्रमुख था।

2तब परमेश्वर ने मुझसे कहा। उसने बताया, "मनुष्य
के पुत्र, ये वे व्यक्ति हैं जो इस नगर में बुरी योजना
बनाते हैं। ये सदा लोगों को बुरे काम करने को कहते
हैं। 3वे लोग कहते हैं, 'हम लोग शीघ्र ही फिर से अपने
मकान बनाने लगेंगे। हम लोग पात्र में रखे माँस की
तरह इस नगर में सुरक्षित हैं!' 4वे यह झूठ फैला रहे हैं।
इसलिये तुम्हें मेरे लिये लोगों से बात करनी चाहिए।
मनुष्य के पुत्र! जाओ और लोगों के बीच भविष्यवाणी
करो।"

5तब यहोवा की आत्मा मुझमें आई। उसने मुझसे
कहा, "उनसे कहो कि यहोवा ने यह सब कहा है:
इस्राएल के परिवार, तुम बड़ी योजना बना रहे हो।
किन्तु मैं जानता हूँ कि तुम क्या सोच रहे हो! 6तुमने
इस नगर में बहुत से लोगों को मार डाला है। तुमने
सड़कों को शवों से पाट दिया है। 7अब हमारा स्वामी
यहोवा, यह कहता है, 'वे शव माँस हैं और यह नगर
पात्र है। किन्तु वह (नबूकदनेस्सर) आएगा और तुम्हें
इस सुरक्षित पात्र से निकाल ले जाएगा! 8तुम तलवार से
भयभीत हो। किन्तु मैं तुम्हारे विरुद्ध तलवार ला रहा
हूँ।'" हमारे स्वामी यहोवा ने यह सब कहा है। इसलिये ये
घटित होंगी! 9परमेश्वर ने यह भी कहा, "मैं तुम लोगों
को इस नगर से बाहर ले जाऊँगा और मैं तुम्हें अजनबियों
को सौप दूँगा। मैं तुम लोगों को दण्ड दूँगा! 10तुम तलवार
के घाट उतरोगे। मैं तुम्हें यहाँ इस्राएल में दण्ड दूँगा
जिससे तुम समझोगे कि वह मैं हूँ जो तुम्हें दण्ड दे रहा
हूँ। मैं यहोवा हूँ। 11हाँ, यह स्थान खौलती कड़ाही बनेगा
और तुम इसमें के माँस होंगे, जो भूना जाता है! मैं तुम्हें
यहाँ इस्राएल में दण्ड दूँगा। 12तब तुम जानोगे कि मैं
यहोवा हूँ। वह मेरा नियम था जिसे तुमने तोड़ा है! तुमने
मेरे आदेशों का पालन नहीं किया। तुमने अपने चारों
ओर के राष्ट्रों की तरह रहने का निर्णय किया।"

13जैसे ही मैंने परमेश्वर के लिये बोलना समाप्त
किया, बनायाह का पुत्र पलत्याह मर गया! मैं धरती पर
गिर पड़ा। मैंने धरती पर माथा टेका और कहा, "हे मेरे
स्वामी यहोवा, तू क्या इस्राएल के सभी बचे हुओं को
पूरी तरह नष्ट करने पर तुला हुआ है!"

14किन्तु तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने
कहा, 15"मनुष्य के पुत्र, तुम इस्राएल के परिवार के
अपने उन भाईयों को याद करो जिन्हें अपने देश को
छोड़ने के लिये विवश किया गया था। लेकिन मैं उन्हें
वापस लाऊँगा। किन्तु यहाँ यरूशलेम में रहने वाले लोग
कह रहे हैं, यहोवा हम से दूर रह। यह भूमि हमें दी
गई–यह हमारीहै!"

16इसलिये उन लोगों से यह सब कहो: हमारा स्वामी
यहोवा, कहता है, "यह सत्य है कि मैंने अपने लोगों को
बहुत दूर के देशों में जाने को विवश किया। मैंने ही
उनको बहुत से देशों में बिखेरा और मैं अन्य देशों में
उन के लिये थोड़े समय का पवित्र स्थान ठहरुँगा।
17इसलिये तुम्हें उन लोगों से कहना चाहिए कि उनका
स्वामी यहोवा, उन्हें वापस लाएगा। मैंने तुम्हें, बहुत से
देशों में बिखेर दिया है। किन्तु मैं तुम लोगों को एक
साथ इकट्ठा करुँगा और उन राष्ट्रों से तुम्हें वापस
लाऊँगा। मैं इस्राएल का प्रदेश तुम्हें वापस दूँगा 18और
जब हमारे लोग लौटेंगे तो वे उन सभी भंयकर गन्दी
देवमूर्तियों को, जो अब यहाँ है, नष्ट कर देंगे। 19मैं उन्हें
एक साथ लाऊँगा और उन्हें एक व्यक्ति सा बनाऊँगा।
मैं उनमें नयी आत्मा भरूँगा। मैं उनके पत्थर के हृदय
को दूर करुँगा और उसके स्थान पर सच्चा हृदय दूँगा।
20तब वे मेरे नियमों का पालन करेंगे। वे मेरे आदेशों
का पालन करेंगे, वे वह कार्य करेंगे जिन्हें मैं करने को
कहूँगा। वे सचमुच मेरे लोग होंगे और मैं उनका परमेश्वर
होऊँगा।"

21तब परमेश्वर ने कहा, "किन्तु इस समय उनका
हृदय भयंकर गन्दी देवमूर्तियों का हो चुका है। मुझे उन
लोगों को उन बुरे कर्मों के लिये दण्ड देना चाहिए जो
उन्होंने किया है।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा है।

22तब करुब (स्वर्गदूत) ने अपने पंख खोले और हवा में
उड़ गये। चक्र उनके साथ गए। इस्राएल के परमेश्वर
का तेज उनके ऊपर था। 23यहोवा का तेज ऊपर हवा
में उठा और उसने यरूशलेम को छोड़ दिया। वह क्षण
भर के लिये यरूशलेम के पूर्व की पहाड़ी पर ठहरा।
24तब आत्मा ने मुझे हवा में उठाया और वापस बाबुल
में पहुँचा दिया। उसने मुझे उन लोगों के पास लौटाया,
जो इस्राएल छोड़ने के लिये विवश किये गये थे। तब
दर्शन में परमेश्वर की आत्मा हवा में उठी और मुझे
छोड़ दिया। मैंने उन सभी चीजों को परमेश्वर के दर्शन
में देखा। 25तब मैंने निर्वासित लोगों से बातें की। मैंने वे
सभी बातें बताई जो यहोवा ने मुझे दिखाई थीं।

12 तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
2"मनुष्य के पुत्र, तुम विद्रोही लोगों के साथ
रहते हो। वे सदैव मेरे विरुद्ध गये हैं। देखने के लिये
उनकी आँखें हैं जो कुछ मैंने उनके लिये किया है।
किन्तु वे उन चीजों को नहीं देखते। सुनने के लिये
उनके कान हैं, उन चीजों को जो मैंने उन्हें करने को
कहा है। किन्तु वे मेरे आदेश नहीं सुनते। क्यों? क्योंकि
वे विद्रोही लोग हैं। 3इसलिए, मनुष्य के पुत्र अपना
सामान बांध लो। ऐसा व्यवहार करो मानों तुम किसी
दूर देश को जा रहे हो। यह इस प्रकार करो कि लोग
तुम्हें देखते रहें। संभव है, कि वे लोग तुम पर ध्यान दें,
किन्तु वे लोग बड़े विद्रोही लोग हैं।

4"दिन के समय तुम अपना सामान इस प्रकार बाहर
ले जाओ कि लोग तुम्हें देखते रहें। तब शाम को ऐसा
दिखावा करो, कि तुम दूर देश में एक बन्दी की तरह
जा रहे हो। 5लोगों की आँखों के सामने दीवार में एक
छेद बनाओ और उस दीवार के छेद से बाहर जाओ।
6रात को अपना सामान कन्धे पर रखो और उस स्थान
को छोड़ दो। अपने मुँह को ढक लो जिससे तुम यह न
देख सको कि तुम कहाँ जा रहे हो। इन कामों को तुम्हें
इस प्रकार करना चाहिये, कि लोग तुम्हें देख सकें।
क्यों? क्योंकि मैं तुम्हें इस्राएल के परिवार के लिये एक
उदाहरण के रूप में उपयोग कर रहा हूँ।"

7इसलिये मैंने (यहेजकेल ने) आदेश के अनुसार
किया। दिन के समय मैंने अपना सामान उठाया और
ऐसा दिखावा किया मानों मैं किसी दूर देश को जा रहा
हूँ। उस शाम मैंने अपने हाथों का उपयोग किया और
दीवार में एक छेद बनाया। रात को मैंने अपना सामान
कन्धे पर रखा और चल पड़ा। मैंने यह सब इस प्रकार
किया कि सभी लोग मुझे देख सकें।

8अगली सुबह मुझे यहोवा का वचन मिला। उसने
कहा, 9"मनुष्य के पुत्र, क्या इस्राएल के उन विद्रोही
लोगों ने तुमसे पूछा कि तुम क्या कर रहे हो? 10उनसे
कहो कि उनके स्वामी यहोवा ने ये बातें बताई है। यह
दुःखद वचन यरूशलेम के प्रमुखों और वहाँ रहने वाले
इस्राएल के सभी लोगों के बारे में है। 11उनसे कहो, 'मैं
(यहेजकेल) तुम सभी लोगों के लिये एक उदाहरण हूँ।
जो कुछ मैंने किया है वह तुम लोगों के लिये सत्य
होगा।' तुम सचमुच बन्दी के रूप में दूर देश में जाने के
लिये विवश किये जाओगे। 12तुम्हारा प्रमुख दीवार में
छेद करेगा और रात को गुप्त रूप से निकल भागेगा।
वह अपने मुख को ढक लेगा जिससे लोग उसे पहचानेंगे
नहीं। उसकी आँखें, यह देखने के लायक नहीं होंगी कि
वह कहाँ जा रहा है। 13वह भाग निकलने का प्रयत्न
करेगा। किन्तु मैं (परमेश्वर) उसे पकड़ लूँगा! वह मेरे
जाल में फँस जाएगा और मैं उसे बाबुल लाऊँगा जो
कसदियों के लोगों का देश है। किन्तु वह देख नहीं
पाएगा कि वह कहाँ जा रहा है। शत्रु उसकी आँखे
निकाल लेगा और उसे अन्धा कर देगा। 14मैं राजा के
लोगों को विवश करुँगा कि वे इस्राएल के चारों ओर
विदेशों में रहें। मैं उसकी सेना को तितर-बितर कर
दूँगा और शत्रु के सैनिक उनका पीछा करेंगे। 15तब वे
लोग समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ। वे समझेगें कि मैंने उन्हें
राष्ट्रों में बिखेरा। वे समझ जाएंगे कि मैंने उन्हें अन्य
देशों में जाने के लिये विवश किया।

16"किन्तु मैं कुछ लोगों को जीवित रखूँगा। वे रोग,
भूख और युद्ध से नहीं मरेंगे। मैं उन लोगों को इसलिए
जीवित रहने दूँगा, कि वे अन्य लोगों से उन भंयकर
कामों के बारे में कह सकेंगे, जो उन्होंने मेरे विरुद्ध
किये। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

17तब यहोवा का वचन मेरे पास आया। उसने कहा,
18"मनुष्य के पुत्र! तुम्हें ऐसा करना चाहिये मानों तुम
बहुत भयभीत हो। जब तुम खाना खाओ तब तुम्हें काँपना
चाहिए। तुम्हें पानी पीते समय चिन्तित और भयभीत
होने का दिखावा करना चाहिये। 19तुम्हें यह साधारण
जनता से कहना चाहिए। तुम्हें कहना चाहिये, "हमारा
स्वामी यहोवा यरूशलेम के निवासियों और इस्राएल के
अन्य भागों के लोगों से यह कहता है। लोगों, तुम भोजन
करते समय बहुत परेशान होगे। तुम पानी पीते समय
भयभीत होगे। क्यों? क्योंकि तुम्हारे देश में सभी कुछ
नष्ट हो जाएगा। वहाँ रहने वाले सभी लोगों के प्रति शत्रु
बहुत क्रूर होगा। 20तुम्हारे नगरों में इस समय बहुत लोग
रहते हैं, किन्तु वे नगर नष्ट हो जाएंगे। तुम्हारा पूरा देश
नष्ट हो जाएगा। तब तुम समझोगे कि मैं यहोवा हूँ।"

21तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
22"मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के प्रदेश के बारे में लोग यह
कहावत क्यों सुनाते हैं: विपत्ति शीघ्र न आएगी, दर्शन
कभी न होंगे।

23"उन लोगों से कहो कि तुम्हारा स्वामी यहोवा
तुम्हारी इस कहावत का पढ़ना बन्द कर देगा। वे इस्राएल
के बारे में वे बातें कभी भी नहीं कहेंगे। अब वे यह
कहावत सुनाएंगे: विपत्ति शीघ्र आएगी। दर्शन घटित होंगे।

24"यह सत्य है कि इस्राएल में कभी भी झूठे दर्शन घटित नहीं होंगे। अब ऐसे जादूगर भविष्य में नहीं होंगे जो ऐसी भविष्यवाणी करेंगे जो सच्ची नहीं होगी। 25क्यों? क्योंकि मैं यहोवा हूँ। मैं वही कहूँगा, जो मैं कहना चाहूँगा और वह चीज घटित होगी और मैं घटना–काल को लम्बा खींचने नहीं दूँगा। वे विपत्तियाँ शीघ्र आ रही हैं। तुम्हारे अपने जीवनकाल में ही। विद्रोही लोगों! जब मैं कुछ कहता हूँ तो मैं उसे घटित करता हूँ।" मेरे स्वामी यहोवा ने उन बातों को कहा।

26तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 27"मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के लोग समझते हैं कि जो दर्शन मैं तुझे देता हूँ, वे बहुत दूर के भविष्य में घटित होंगे। वे समझते हैं, कि जिन विपत्तियों के बारे में तुम बातें करते हो, वे आज से बहुत वर्षों बाद घटित होंगी। 28अत: तुम्हें उनसे यह कहना चाहिये, 'मेरा स्वामी यहोवा कहता है: मैं और अधिक विलम्ब नहीं कर सकता। यदि मैं कहता हूँ, कि कुछ घटित होगा तो वह घटित होगा।'" मेरे स्वामी यहोवा ने उन बातों को कहा।

13 तब यहोवा का वचन मुझे मिला। 2"मनुष्य के पुत्र, तुम्हें इस्राएल के नबियों से मेरे लिये बातें करनी चाहिये। वे नबी वास्तव में मेरे लिये बातें नहीं कर रहे हैं। वे नबी वही कुछ कह रहे हैं जो वे कहना चाहते हैं।" इसलिये तुम्हें उनसे बातें करनी चाहियें। उनसे ये बातें कहो, 'यहोवा के यहाँ से मिले इस वचन को सुनो! 3मेरा स्वामी यहोवा यह वचन देता है। मूर्ख नबियों! तुम लोगों पर विपत्तियाँ आएंगी। तुम लोग अपनी आत्मा का अनुसरण कर रहे हो। तुम लोगों से वह नहीं कह रहे हो जो तुम सचमुच दर्शन में देखते हो।

4"'इस्राएलियों, तुम्हारे नबी शून्य खण्डहरों में दौड़ लगाने वाली लोमड़ियों जैसे होंगे। 5तुमने नगर की टूटी दीवारों के निकट सैनिक को नहीं रखा है। तुमने इस्राएल के परिवार की रक्षा के लिये दीवारें नहीं बनाई हैं। इसलिये यहोवा के लिये, जब तुम्हें दण्ड देने का समय आएगा तो तुम युद्ध में हार जाओगे!

6"'झूठे नबियों ने कहा, कि उन्होंने दर्शन देखा है। उन्होंने अपना जादू किया और कहा कि घटनाएँ होंगी, किन्तु उन्होंने झूठ बोला। उन्होंने कहा कि यहोवा ने उन्हें भेजा किन्तु उन्होंने झूठ बोला। वे अपने झूठ के सत्य होने की प्रतीक्षा अब तक कर रहे हैं।

7"'झूठे नबियों, जो दर्शन तुमने देखे, वे सत्य नहीं थे। तुमने अपने जादू किये और कहा कि कुछ घटित होगा, किन्तु तुम लोगों ने झूठ बोला। तुम कहते हो कि यह यहोवा का कथन है, किन्तु मैंने तुम लोगों से बातें नहींकीं!'"

8अत: मेरा स्वामी यहोवा अब सचमुच कुछ कहेगा, वह कहता है, "तुमने झूठ बोला। तुमने वे दर्शन देखे जो सच्चे नहीं थे। इसलिये मैं (परमेश्वर) अब तुम्हारे विरुद्ध हूँ!" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं। 9यहोवा ने कहा, "मैं उन नबियों को दण्ड दूँगा जिन्होंने असत्य दर्शन देखे और जिन्होंने झूठ बोला। मैं उन्हें अपने लोगों से अलग करूँगा। उनके नाम इस्राएल के परिवार की सूची में नहीं रहेंगे। वे फिर इस्राएल प्रदेश में कभी नहीं आएंगे। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा और स्वामी हूँ!

10"उन झूठे नबियों ने बार–बार मेरे लोगों से झूठ बोला। नबियों ने कहा कि शान्ति रहेगी और वहाँ कोई शान्ति नहीं है। लोगों को दीवारें दृढ़ करनी हैं और युद्ध की तैयारी करनी हैं। किन्तु वे टूटी दीवारों पर लेप की एक पतली तह चढ़ा रहे हैं। 11उन लोगों से कहो कि मैं ओले और मूसलाधार वर्षा (शत्रु–सेना) भेजूँगा। प्रचण्ड आँधी चलेगी और चक्रवात आएगा। तब दीवार गिर जाएगी। 12दीवार नीचे गिर जाएगी। लोग नबियों से पूछेंगे, 'उस लेप का क्या हुआ, जिसे तुमने दीवार पर चढ़ाया था?'" 13मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मैं क्रोधित हूँ और मैं तुम लोगों के विरुद्ध एक तूफान भेजूँगा। मैं क्रोधित हूँ और मैं घनघोर वर्षा भेजूँगा। मैं क्रोधित हूँ और मैं आकाश से ओले बरसाऊँगा और तुम्हें पूरी तरह से नष्ट करूँगा! 14तुम लेप दीवार पर चढ़ाते हो। किन्तु मैं पूरी दीवार को नष्ट कर दूँगा। मैं इसे धाराशायी कर दूँगा। दीवार तुम पर गिरेगी और तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। 15मैं, दीवार और उस पर लेप चढ़ाने वालों के विरुद्ध अपना क्रोध दिखाना समाप्त कर दूँगा। तब मैं कहूँगा, 'अब कोई दीवार नहीं है और अब कोई मज़दूर इस पर लेप चढ़ाने वाला नहीं है।'

16"ये सब कुछ इस्राएल के झूठे नबियों के लिये होगा। वे नबी यरूशलेम के लोगों से बातचीत करते हैं। वे नबी कहते हैं कि शान्ति होगी, किन्तु कोई शान्ति नहीं है।" मेरे स्वामी यहोवा ने उन बातों को कहा।

17परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य के पुत्र, इस्राएल में स्त्री नबियों को ढूँढो। वे स्त्री नबी मेरे लिये नहीं बोलतीं। वे वही कहती हैं जो वे कहना चाहती हैं। अत: तुम्हें मेरे लिये उनके विरुद्ध कहना चाहिए। तुम्हें उनसे यह कहना चाहिये। 18'मेरा स्वामी यहोवा कहता है: स्त्रियों, तुम पर विपत्ति आएगी। तुम लोगों की भुजाओं पर पहनने के लिये कपड़े का बाजूबन्द सीती हो। तुम लोगों के सिर पर बांधने के लिये विशेष "दुपट्टा" बनाती हो। तुम कहती हो कि वे चीजें लोगों के जीवन को नियन्त्रित करने की जादुई शक्ति रखती हैं। तुम केवल अपने को जीवित रखने के लिये उन लोगों को जाल में फँसाती हो! 19तुम लोगों को ऐसा समझाती हो कि मैं महत्वपूर्ण नहीं हूँ। तुम उन्हें मुट्ठी भर जौ और रोटी के कुछ टुकड़ों के लिये मेरे विरुद्ध करती हो। तुम मेरे लोगों से झूठ बोलती हो। वे लोग झूठ सुनना पसन्द करते हैं। तुम उन व्यक्तियों को मार डालती हो जिन्हें जीवित रहना चाहिये और तुम ऐसे लोगों को जीवित रहने देना चाहती हो जिन्हें मर

जाना चाहिये! 20इसलिये यहोवा और स्वामी तुमसे यह
कहता है: तुम उन कपड़े के "बाजूबन्दों" को लोगों को
जाल में फँसाने के लिये बनाती हो–किन्तु मैं उन लोगों
को स्वतन्त्र करूँगा। मैं तुम्हारी भुजाओं से उन "बाजूबन्दों"
को फाड़ फेंकूँगा और लोग तुमसे स्वतन्त्र हो जाएंगे। वे
जाल से मुक्त पक्षियों की तरह होंगे! 21मैं उन "बाजूबन्दों"
को फाड़ डालूँगा और अपने लोगों को तुम्हारी शक्ति से
बचाऊँगा। वे लोग तुम्हारे जाल से भाग निकलेंगे और
तुम समझ जाओगी कि मैं यहोवा हूँ।

22"'स्त्री नबियों तुम झूठ बोलती हो। तुम्हारा झूठ
अच्छे लोगों को कष्ट पहुँचाता है, मैं उन अच्छे लोगों
को कष्ट पहुँचाना नहीं चाहता। तुम बुरे लोगों की
सहायता करती हो और उन्हें उत्साहित करती हो। तुम
उन्हें अपना जीवन बदलने के लिये नहीं कहतीं। तुम
उनके जीवन की रक्षा नहीं करना चाहती! 23तुम अब
भविष्य में व्यर्थ दर्शन नहीं देखोगी। तुम भविष्य में जादू
नहीं करोगी। मैं अपने लोगों को तुम्हारी शक्ति से बचाऊँगा
और तुम जान जाओगी कि मैं यहोवा हूँ।'"

14 इस्राएल के कुछ अग्रज (प्रमुख) मेरे पास आए।
वे मुझसे बात करने के लिये बैठ गये। 2यहोवा
का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 3"मनुष्य के पुत्र, ये
व्यक्ति तुमसे बातें करने आए हैं। वे चाहते थे कि तुम
मुझसे राय लो। किन्तु वे व्यक्ति अब तक अपनी गन्दी
देवमूर्तियों को रखे हैं। वे उन चीजों को रखते हैं जो
उनसे पाप कराती हैं। वे अब तक उन मूर्तियों की पूजा
करते हैं। इसलिये वे मेरे पास राय लेने क्यों आते हैं?
क्या मुझे उनके प्रश्नों के उत्तर देने चाहिए? नहीं!
4किन्तु मैं उन्हें उत्तर दूँगा। मैं उन्हें दण्ड दूँगा! तुम्हें उन
लोगों से यह कह देना चाहिये, 'मेरा स्वामी यहोवा कहता
है: यदि कोई इस्राएली व्यक्ति नबी के पास आता है और
मुझसे राय पाने के लिये कहता है तो वह नबी उस
व्यक्ति को उत्तर नहीं देगा। उस व्यक्ति के प्रश्न का
उत्तर मैं स्वयं दूँगा। मैं उसे तब भी उत्तर दूँगा यदि उसने
गन्दी देवमूर्तियाँ रखी हैं, यदि वह उन चीजों को रखता
है जो उससे पाप कराती हैं और यदि वह तब तक उन
मूर्तियों की पूजा करता है। उसकी सारी गन्दी देवमूर्तियों
के होते हुए भी मैं उससे बात करुँगा। 5क्यों? क्योंकि मैं
उनके हृदय को छूना चाहता हूँ। मैं दिखाना चाहता हूँ
कि मैं उनसे प्रेम करता हूँ, यद्यपि उन्होंने मुझे अपनी
गन्दी देवमूर्तियों के लिये छोड़ा।'

6"इसलिये इस्राएल के परिवार से यह सब कहो।
उनसे कहो, 'मेरा स्वामी यहोवा कहता है। मेरे पास
वापस आओ और अपनी गन्दी देवमूर्तियों को छोड़ दो।
उन भयंकर असत्य देवताओं से मुख मोड़ लो। 7यदि
कोई इस्राएली या इस्राएल में रहने वाला विदेशी मेरे पास
राय के लिये आता है, तो मैं उसे उत्तर दूँगा। मैं उसे तब
भी उत्तर दूँगा यदि उसने गन्दी देवमूर्तियाँ रखी हैं, यदि
वह उन चीजों को रखता है जो उससे पाप कराती हैं
और यदि वह तब तक उन मूर्तियों की पूजा करता है
और यह उत्तर है जिसे मैं उसे दूँगा। 8मैं उस व्यक्ति के
विरुद्ध होऊँगा। मैं उसे नष्ट करूँगा। वह अन्य लोगों के
लिये एक उदाहरण बनेगा। लोग उसकी हँसी उड़ाएंगे। मैं
उसे अपने लोगों से निकाल बाहर करूँगा। तब तुम
जानोगे कि मैं यहोवा हूँ! 9यदि नबी इतना अधिक मूर्ख
है कि वह अपना उत्तर देता है तो मैं उसे दिखा दूँगा कि
वह कितना बड़ा मूर्ख है, मैं उसके विरुद्ध अपनी शक्ति
का उपयोग करूँगा। मैं उसे नष्ट करूँगा और अपने
लोगों, इस्राएल से उसे निकाल बाहर करूँगा। 10इस
प्रकार वह व्यक्ति जो राय के लिए आया और नबी
जिसने उत्तर दिया दोनों एक ही दण्ड पाएंगे। 11क्यों?
क्योंकि इस प्रकार वे नबी मेरे लोगों को मुझसे दूर ले
जाना बन्द कर देंगे। इस प्रकार मेरे लोग अपने पापों से
गन्दा होना बन्द कर देंगे। तब वे मेरे विशेष लोग होंगे
और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा।'" मेरे स्वामी यहोवा
ने वह सब बातें कहीं।

12तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
13"मनुष्य के पुत्र, मैं अपने उस राष्ट्र को दण्ड दूँगा जो
मुझे छोड़ता है और मेरे विरुद्ध पाप करता है। मैं उनकी
भोजन आपूर्ति बन्द कर दूँगा। मैं अकाल का समय
उत्पन्न कर सकता हूँ और उस देश से मनुष्यों और
पशुओं को बाहर कर सकता हूँ। 14मैं उस देश को दण्ड
दूँगा चाहे वहाँ नूह, दानिय्येल और अय्यूब रहते हों। वे
लोग अपना जीवन अपनी अच्छाईयों से बचा सकते हैं,
किन्तु वे पूरे देश को नहीं बचा सकते।" मेरे स्वामी
यहोवा ने यह सब कहा।

15परमेश्वर ने कहा, "या, मैं उस पूरे प्रदेश में जंगली
जानवरों को भेज सकता हूँ और वे जानवर सभी लोगों
को मार सकते हैं। जंगली जानवरों के कारण उस देश
से होकर कोई व्यक्ति यात्रा नहीं करेगा। 16यदि नूह,
दानिय्येल और अय्यूब वहाँ रहे होते तो मैं उन तीनों
अच्छे व्यक्तियों को बचा लेता। वे तीनों व्यक्ति स्वयं
अपना जीवन बचा सकते हैं। किन्तु मैं अपने जीवन की
शपथ खाकर कहता हूँ कि वे अन्य लोगों का जीवन
नहीं बचा सकते यहाँ तक कि अपने पुत्र–पुत्रियों का
जीवन भी नहीं। वह बुरा देश नष्ट कर दिया जाएगा!"
मेरे स्वामी यहोवा ने यह सब कहा।

17परमेश्वर ने कहा, "या, उस देश के विरुद्ध लड़ने
के लिये मैं शत्रु की सेना को भेज सकता हूँ। वे सैनिक
उस देश को नष्ट कर देंगे। मैं उस देश से सभी लोगों
और जानवरों को निकाल बाहर करुँगा। 18यदि नूह,
दानिय्येल और अय्यूब वहाँ रहते तो मैं उन तीनों अच्छे
लोगों को बचा लेता। वे तीनों व्यक्ति स्वयं अपना जीवन
बचा सकते हैं। किन्तु मैं अपने जीवन की शपथ खाकर
कहता हूँ कि अन्य लोगों का जीवन वे नहीं बचा सकते

यहाँ तक कि अपने पुत्र-पुत्रियों का जीवन भी नहीं।
वह बुरा देश नष्ट कर दिया जाएगा!" मेरे स्वामी यहोवा
ने यह सब कहा।

19परमेश्वर ने कहा, "या, मैं उस देश के विरुद्ध
महामारी भेज सकता हूँ। मैं उन लोगों पर अपने क्रोध
की वर्षा करूँगा। मैं सभी मनुष्यों और जानवरों को उस
देश से हटा दूँगा। 20यदि नूह, दानिय्येल और अय्यूब वहाँ
रहते तो मैं उन तीन अच्छे लोगों को बचा लेता क्योंकि
वे अच्छे व्यक्ति हैं, वे तीनों व्यक्ति स्वयं अपना जीवन
बचा सकते हैं। किन्तु मैं अपने जीवन की शपथ खाकर
कहता हूँ कि अन्य लोगों का जीवन वे नहीं बचा सकते
थे यहाँ तक कि अपने पुत्र-पुत्रियों का जीवन भी
नहीं!" मेरे स्वामी यहोवा ने यह सब कहा।

21तब मेरे स्वामी यहोवा ने कहा, "इसलिये सोचो कि
यरूशलेम के लिये यह कितना बुरा होगा, मैं उस नगर
के विरुद्ध उन चारों दण्डों को भेजूँगा! मैं शत्रु-सेना,
भूखमरी, महामारी, और जंगली जानवर उस नगर के
विरुद्ध भेजूँगा। मैं उस देश से सभी लोगों और जानवरों
को निकाल बाहर करूँगा! 22उस देश से कुछ लोग बच
निकलेंगे। वे अपने पुत्र-पुत्रियों को लाएंगे और तुम्हारे
पास सहायता के लिये आएंगे। तब तुम जानोगे कि वे
लोग सचमुच कितने बुरे हैं। तुम उन विपत्तियों के
सम्बन्ध में उचित होने की धारणा बनाओगे जिन्हें मैं
यरूशलेम पर लाऊँगा। 23तुम उनके रहने के ढंग और
जो बुरे कार्य वे करते हैं, उन्हें देखोगे। तब तुम समझोगे
कि उन लोगों को दण्ड देने का उचित कारण मेरे लिए
था।" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

15 तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
2"मनुष्य के पुत्र, क्या अंगूर की बेल की लकड़ी
जंगल के किसी पेड़ की कटी छोटी शाखा से अधिक
अच्छी होती है? नहीं! 3क्या तुम अंगूर की बेल की
लकड़ी को किसी उपयोग में ला सकते हो? नहीं! क्या
तुम उससे तश्तरियाँ लटकाने के लिये खूंटियाँ बना
सकते हो? नहीं! 4लोग उस लकड़ी को केवल आग में
डालते हैं। कुछ सूखी लकड़ियाँ सिरों से जलना आरम्भ
करती है, बीच का भाग आग से काला पड़ जाता है।
किन्तु लकड़ी पूरी तरह नहीं जलती। क्या तुम उस जली
लकड़ी से कोई चीज बना सकते हो? 5यदि जलने के
पहले तुम उस लकड़ी से कोई चीज नहीं बना सकते हो,
तो निश्चय ही, उसके जल जाने के बाद उससे कोई
चीज नहीं बना सकते! 6इसलिये अंगूर की बेल की
लकड़ी के टुकड़े जंगल के किसी पेड़ की लकड़ी के
टुकड़ों के समान ही है। लोग उन लकड़ी के टुकड़ों को
आग में डालते हैं, और आग उन्हें जलाती है। उसी
प्रकार, मैं यरूशलेम के निवासियों को आग में फेंकूँगा!"
मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कही। 7"मैं उन लोगों को
दण्ड दूँगा। किन्तु कुछ लोग उन लकड़ियों की तरह
होंगे जो पूरी तरह नहीं जलतीं, उन्हें दण्ड दिया जाएगा,
किन्तु वे पूरी तरह नष्ट नहीं किये जाएंगे। तुम देखोगे
कि मैं इन लोगों को दण्ड दूँगा और तुम समझोगे कि मैं
यहोवा हूँ! 8मैं उस देश को नष्ट करूँगा क्योंकि लोगों
ने मुझको असत्य देवताओं की पूजा के लिये छोड़ा।"
मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

16 तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
2"मनुष्य के पुत्र, यरूशलेम के लोगों को उन
भंयकर बुरे कामों को समझाओ जिन्हें उन्होंने किया
है। 3तुम्हें कहना चाहिए, 'मेरा स्वामी यहोवा यरूशलेम
के लोगों को यह सन्देश देता है: अपना इतिहास देखो।
तुम कनान में उत्पन्न हुए थे। तुम्हारा पिता एमोरी था।
तुम्हारी माँ हित्ती थी। 4यरूशलेम, जिस दिन तुम उत्पन्न
हुए थे, तुम्हारे नाभि-नाल को काटने वाला कोई नहीं
था। किसी ने तुम पर नमक नहीं डाला और तुम्हें
स्वच्छ करने के लिये नहलाया नहीं। किसी ने तुम्हें
वस्त्र में नहीं लपेटा। 5यरूशलेम, तुम सब तरह से अकेले
थे। कोई न तुम्हारे प्रति खेद प्रकट करता था, न ही
ध्यान देता था। यरूशलेम, जिस दिन तुम उत्पन्न हुए,
तुम्हारे माता-पिता ने तुम्हें मैदान में डाल दिया। तुम तब
तक रक्त और झिल्ली में लिपटे थे।

6"'तब मैं (परमेश्वर) उधर से गुजरा। मैंने तुम्हें वहाँ
खून से लथपथ पड़ा पाया। तुम खून में सनी थीं, किन्तु
मैंने कहा, "जीवित रहो!" हाँ, तुम रक्त में सनी थीं,
किन्तु मैंने कहा, "जीवित रहो!" 7मैंने तुम्हारी सहायता
खेत में पौधे की तरह बढ़ने में की। तुम बढ़ती ही गई।
तुम एक युवती बनी, तुम्हारा ऋतु-धर्म आरम्भ हुआ,
तुम्हारे वक्ष-स्थल बढ़े, तुम्हारे केश बढ़ने आरम्भ हुए।
किन्तु तुम तब तक वस्त्रहीन और नंगी थीं। 8मैंने तुम
पर दृष्टि डाली। मैंने देखा कि तुम प्रेम के लिये तैयार
थीं। इसलिये मैंने तुम्हारे ऊपर अपने वस्त्र डाले और
तुम्हारी नग्नता को ढका। मैंने तुमसे विवाह करने का
वचन दिया। मैंने तुम्हारे साथ वाचा की और तुम मेरी
बनीं।'" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

9"मैंने तुम्हें पानी से नहलाया। मैंने तुम्हारे रक्त को
धोया और मैंने तुम्हारी त्वचा पर तेल मला। 10मैंने तुम्हें
एक सुन्दर पहनावा और कोमल चमड़े के जूते दिये।
मैंने तुम्हें एक महीन मलमल और एक रेशमी वस्त्र
दिया। 11तब मैंने तुम्हें कुछ आभूषण दिये। मैंने तुम्हारी
भुजाओं में बाजूबन्द पहनाए और तुम्हारे गले में हार
पहनाया। 12मैंने तुम्हें एक नथ, कुछ कान की बालियाँ
और सुन्दर मुकुट पहनने के लिये दिया। 13तुम अपने
सोने चाँदी के आभूषणों, अपने मलमल और रेशमी
वस्त्रों और कढ़ाई किये पहनावे में सुन्दर दिखती थीं!
तुमने उत्तम भोजन किया। तुम अत्याधिक सुन्दर थी
और तुम रानी बनीं! 14तुम अपनी सुन्दरता के लिये
विख्यात हुई। यह सब कुछ इसलिये हुआ क्योंकि मैंने

तुम्हें इतना अधिक सुन्दर बनाया!” मेरे स्वामी यहोवा ने
ये बातें कहीं।

15परमेश्वर ने कहा, “किन्तु तुमने अपनी सुन्दरता
पर विश्वास करना आरम्भ किया। तुमने अपने यश
का उपयोग किया और मुझसे विश्वासघात किया। तुमने
एक वेश्या की तरह काम किया जो हर गुजरने वाले
की हो। तुमने उन सभी को अपने को अर्पित किया!
16तुमने अपने सुन्दर वस्त्र लिये और उनका उपयोग
अपनी पूजा के स्थानों को सजाने के लिये किया। तुमने
उन स्थानों पर एक वेश्या की तरह काम किया। तुमने
अपने को उस हर व्यक्ति को अर्पित किया जो वहाँ
आया! 17तब मेरा दिया हुआ सुन्दर आभूषण तुमने लिया
और तुमने उस सोने–चाँदी का उपयोग मनुष्यों की
मूर्तियाँ बनाने के लिये किया। तुमने उनके साथ भी
यौन–सम्बन्ध किया! 18तब तुमने सुन्दर वस्त्र लिये और
उन मूर्तियों के लिये पहनावा बनाया। तुमने यह सुगन्धि
और धूप–बत्ती को लिया जो मैंने तुम्हें दी थी तथा उसे
उन देवमूर्तियों के सामने चढ़ाया! 19मैंने तुम्हें रोटी, मधु
और तेल दिये। किन्तु तुमने वह भोजन अपनी देवमूर्तियों
को दिया। तुमने उसे अपने असत्य देवताओं को प्रसन्न
करने के लिये सुगन्धि के रूप में भेंट किया। तुमने उन
असत्य देवताओं के साथ वेश्या जैसा व्यवहार किया!”
मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

20परमेश्वर ने कहा, “तुमने अपने पुत्र–पुत्रियाँ लेकर
जिन्हें तूने मेरे लिए जन्म दिया, उन मूर्तियों को बलि
चढ़ायी। किन्तु ये वे पाप हैं जो तुमने तब किये जब मुझे
धोखा दिया और उन असत्य देवताओं के पास चली
गई। 21तुमने मेरे पुत्रों की हत्या की और उन्हें आग के
द्वारा उन असत्य देवताओं पर चढ़ाया। 22तुमने मुझे
छोड़ा और वे भयानक काम किये और तुमने अपना
वह समय कभी याद नहीं किया जब तुम बच्ची थीं।
तुमने याद नहीं किया कि जब मैंने तुम्हें पाया तब तुम
नंगी थीं और रक्त में छटपटा रही थीं।

23“उन सभी बुरी चीजों के बाद, ओह यरूशलेम, यह
तुम्हारे लिये बहुत बुरा होगा!” मेरे स्वामी यहोवा ने यह
सब बातें कहीं। 24‘उन सब बातों के बाद तुमने उस
असत्य देवता की पूजा के लिये वह टीला बनाया। तुमने
हर एक सड़क के मोड़ पर असत्य देवताओं की पूजा
के लिये उन स्थानों को बनाया। 25तुमने अपने टीले हर
एक सड़क की छोर पर बनाए। तब तुमने अपने सौन्दर्य
का मान घटाया। तुमने इसका उपयोग हर पास से
गुजरने वाले को फँसाने के लिये किया। तुमने अपने
अधोवस्त्र को ऊपर उठाया जिससे वे तुम्हारी टांगे देख
सकें और तब तुम उन लोगों के साथ एक वेश्या के
समान हो गई। 26तब तुम उस पड़ोसी मिस्र के पास गई
जिसका यौन अंग विशाल था। तुमने मुझे क्रोधित करने
के लिये उसके साथ कई बार यौन–सम्बन्ध स्थापित
किया। 27इसलिये मैंने तुम्हें दण्ड दिया। मैंने तुम्हें अनुमोदित
की गई भूमि का एक भाग ले लिया। मैंने तुम्हारे शत्रु
पलिश्तियों की पुत्रियों (नगरों) को वह करने दिया जो
वे तुम्हारा करना चाहती थीं। जो पाप तुमने किये उससे
उनके भी मर्म पर चोट पहुँची। 28तब तुम अश्शूर के
साथ शारीरिक सम्बंध करने गई। किन्तु तुम्हें पर्याप्त न
मिल सका। तुम कभी तृप्त न हुई। 29इसलिए तुम कनान
की ओर मुड़ी और उसके बाद बाबुल की ओर और
तब भी तुम तृप्त न हुई। 30तुम इतनी कमजोर हो। तुमने
उन सभी व्यक्तियों (देशों) को पाप करने में लगने
दिया। तुमने ठीक एक वेश्या की तरह काम किया।” वे
बातें मेरे स्वामी यहोवा ने कहीं।

31“तुमने अपने टीले हर एक सड़क के छोर पर
बनाए और तुमने अपनी पूजा के स्थान हर सड़क की
मोड़ पर बनाए। और कमाई को तुच्छ जाना। इसलिए तू
वेश्या भी न रही। 32तुम व्यभिचारिणी स्त्री। तुमने अपने
पति की तुलना में अजनबियों के साथ शारीरिक सम्बंध
करना अधिक अच्छा माना। 33अधिकांश वेश्यायें
शारीरिक सम्बंध के लिये व्यक्ति को भुगतान करने के
लिये विवश करती हैं। किन्तु तुम अपने प्रेमियों को
लुभाने के लिये स्वयं भेंट देती हो और उन्हें शारीरिक
सम्बन्ध के लिये आमंत्रित करती हो। तुमने अपने चारों
ओर के सभी लोगों को अपने साथ शारीरिक सम्बंध
के लिये आमन्त्रित किया। 34तुम अधिकांश वेश्याओं
के ठीक विपरीत हो। अधिकांश वेश्यायें पुरुषों को
अपने भुगतान के लिये विवश करती हैं। किन्तु तुम
पुरूषों को अपने साथ शारीरिक सम्बन्ध का भुगतान
करती हो।”

35हे वेश्या, यहोवा से आये वचन को सुनो। 36मेरा
स्वामी यहोवा ये बातें कहता है: “तुमने अपनी मुद्रा व्यय
कर दी है और अपने प्रेमियों तथा गन्दें देवताओं को
अपना नंगा शरीर देखने दिया है तथा अपने साथ शारीरिक
सम्बन्ध करने दिया है। तुमने अपने बच्चों को मारा है
और उनका खून बहाया है। वह उन असत्य देवताओं
को तुम्हारी भेंट थीं। 37इसलिये मैं तुम्हारे सभी प्रेमियों
को एक साथ इकट्ठा कर रहा हूँ। मैं उन सभी को
लाऊँगा जिनसे तुमने प्रेम किया तथा जिन मनुष्यों से
घृणा की। मैं सभी को एक साथ ले आऊँगा और उन्हें
तुम्हें नग्न देखने दूँगा। वे तुम्हें पूरी तरह नग्न देखेंगे।
38तब मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। मैं तुम्हें किसी हत्यारिन और
उस स्त्री की तरह दण्ड दूँगा जिसने व्यभिचार का पाप
किया हो। तुम वैसे ही दण्डित होगी मानों कोई क्रोधित
और ईर्ष्यालु पति दण्ड दे रहा हो। 39मैं उन सभी प्रेमियों
को तुम्हें प्राप्त कर लेने दूँगा। वे तुम्हारे टीलों को नष्ट
कर देंगे। वे तुम्हारे पूजा–स्थानों को जला डालेंगे। वे
तुम्हारे वस्त्र फाड़ डालेंगे तथा तुम्हारे सुन्दर आभूषण ले
लेंगे। वे तुम्हें वैसे वस्त्रहीन और नंगी छोड़ देंगे जैसी तुम

तब थीं जब मैंने तुम्हें पाया था। 40वे अपने साथ विशाल
जन-समूह लाएंगे और तुमको मार डालने के लिये
तुम्हारे ऊपर पत्थर फेकेंगे। तब अपनी तलवार से वे
तुम्हें टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे। 41वे तुम्हारा घर (मन्दिर)
जला देंगे। वे तुम्हें इस तरह दण्ड देंगे कि सभी अन्य
स्त्रियाँ देख सकें। मैं तुम्हारा वेश्या की तरह रहना बन्द
कर दूँगा। मैं तुम्हें अपने प्रेमियों को धन देने से रोक
दूँगा। 42तब मैं क्रोधित और ईर्ष्यालु होना छोड़ दूँगा। मैं
शान्त हो जाऊँगा। मैं फिर कभी क्रोधित नहीं होऊँगा।
43ये सारी बातें क्यों होंगी? क्योंकि तुमने वह याद नहीं
रखा कि तुम्हारे साथ बचपन में क्या घटित हुआ था।
तुमने वे सभी बुरे पाप किये और मुझे क्रोधित किया।
इसलिये उन बुरे पापों के लिये मुझे तुमको दण्ड देना
पड़ा। किन्तु तुमने और भी अधिक भंयकर योजनाएँ
बनाई।" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

44"तुम्हारे बारे में बात करने वाले सब लोगों के पास
एक और बात भी कहने के लिये होगी। वे कहेंगे, 'माँ
की तरह ही पुत्री भी है।' 45तुम अपनी माँ की पुत्री हो।
तुम अपने पति या बच्चों का ध्यान नहीं रखती हो। तुम
ठीक अपनी बहन के समान हो। तुम दोनों ने अपने
पतियों तथा बच्चों से घृणा की। तुम ठीक अपने
माता-पिता की तरह हो। तुम्हारी माँ हित्ती थी और
तुम्हारा पिता एमोरी था। 46तुम्हारी बड़ी बहन शोमरोन
थी। वह तुम्हारे उत्तर में अपने पुत्रियों (नगरों) के
साथ रहती थी और तुम्हारी छोटी बहन सदोम की थी।
वह अपनी पुत्रियों (नगरों) के साथ तुम्हारे दक्षिण में
रहती थी! 47तुमने वे सभी भंयकर पाप किये जो
उन्होंने किये। किन्तु तुमने वे काम भी किये जो
उनसे भी बुरे थे! 48मैं यहोवा और स्वामी हूँ। मैं सदा
जीवित हूँ और अपनी जीवन की शपथ खाकर कहता
हूँ कि तुम्हारी बहन सदोम और उसकी पुत्रियों ने कभी
उतने बुरे काम नहीं किये जितने तुमने और तुम्हारी
पुत्रियों ने किये।"

49परमेश्वर ने कहा, "तुम्हारी बहन सदोम और उसकी
पुत्रियाँ घमण्डी थीं। उनके पास आवश्यकता से अधिक
खाने को था और उनके पास बहुत अधिक समय था।
वे दीन-असहाय लोगों की सहायता नहीं करती थीं।
50सदोम और उसकी पुत्रियाँ बहुत अधिक घमण्डी हो
गई और मेरे सामने भंयकर पाप करने लगीं। जब मैंने
उन्हें उन कामों को करते देखा तो मैंने दण्ड दिया।"

51परमेश्वर ने कहा, "शोमरोन ने उन पापों का
आधा किया जो तुमने किये। तुमने शोमरोन की अपेक्षा
बहुत अधिक भंयकर पाप किये! तुमने अपनी बहनों
की अपेक्षा अत्याधिक भंयकर पाप किये हैं! सदोम
और शोमरोन की तुलना करने पर, वे तुमसे अच्छी
लगती हैं। 52इसलिए तुम्हें लज्जित होना चाहिए। तुमने
अपनी बहनों की, तुलना में, अपने से अच्छी लगनेवाली
बनाया है। तुमने भयंकर पाप किये हैं अत: तुम्हें लज्जित
होना चाहिए। 53परमेश्वर ने कहा, "मैंने सदोम और
उसके चारों ओर के नगरों को नष्ट किया। मैंने शोमरोन
और इसके चारों ओर के नगरों को नष्ट किया।
यरूशलेम, मैं तुम्हें नष्ट करूँगा। किन्तु मैं उन नगरों
को फिर से बनाऊँगा। यरूशलेम, मैं तुमको भी फिर से
बनाऊँगा 54मैं तुम्हें आराम दूँगा। तब तुम उन भंयकर
पापों को याद करोगे जो तुमने किये तथा तुम लज्जित
होगे। 55इस प्रकार तुम और तुम्हारी बहनें फिर से
बनाई जाएंगी। सदोम और उसके चारों ओर के नगर,
शोमरोन और उसके चारों ओर के नगर तथा तुम और
तुम्हारे चारों ओर के नगर फिर से बनाए जाएंगे।"

56परमेश्वर ने कहा, "अतीत काल में तुम घमण्डी
थीं और अपनी बहन सदोम की हँसी उड़ाती थीं। किन्तु
तुम वैसा फिर नहीं कर सकोगी। 57तुमने यह दण्डित
होने से पहले अपने पड़ोसियों द्वारा हँसी उड़ाना आरम्भ
किये जाने के पहले, किया था। एदोम की पुत्रियाँ (नगर)
तथा पलिश्ती अब तुम्हारी हँसी उड़ा रही हैं। 58अब
तुम्हें उन भंयकर पापों के लिये कष्ट उठाना पड़ेगा जो
तुमने किये।" यहोवा ने ये बातें कहीं।

59मेरे स्वामी यहोवा, ने ये सब चीजें कहीं, "तुमने
अपने विवाह की प्रतिज्ञा भंग की। तुमने हमारी वाचा
का आदर नहीं किया। 60किन्तु मुझे वह वाचा याद है
जो उस समय की गई थी जब तुम बच्ची थीं। मैंने तुम्हारे
साथ वाचा की थी जो सदैव चलती रहने वाली थी। 61मैं
तुम्हारी बहनों को तुम्हारे पास लाऊँगा और मैं उन्हें
तुम्हारी पुत्रियाँ बनाऊँगा। यह हमारी वाचा में नहीं था,
किन्तु मैं यह तुम्हारे लिये करुँगा। तब तुम उन भंयकर
पापों को याद करोगी, जिन्हें तुमने किया और तुम
लज्जित होगी। 62अत: मैं तुम्हारे साथ वाचा करुँगा, और
तुम जानोगी कि मैं यहोवा हूँ। 63मैं तुम्हारे प्रति अच्छा
रहूँगा जिससे तुम मुझे याद करोगी और उन पापों के
लिये लज्जित होगी जो तुमने किये। मैं तुम्हें शुद्ध करुँगा
और तुम्हें फिर कभी लज्जित नहीं होना पड़ेगा।" मेरे
स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

17 तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
2"मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के परिवार को यह
कहानी सुनाओ। उनसे पूछो कि इसका तात्पर्य क्या है?
3उनसे कहो: एक विशाल उकाब (नबूकदनेस्सर)
विशाल पंख सहित लबानोन में आया। उकाब के
चितकबरे लम्बे पंख थे।

4उस उकाब ने उस विशाल देवदार वृक्ष (लबानोन)
के माथे को तोड़ डाला और उसे कनान ले गया।
उकाब ने व्यापारियों के नगर में उस शाखा को रखा।

5तब उकाब ने बीजों (लोगों) में से कुछ को कनान
से लिया। उसने उन्हें अच्छी भूमि में बोया। उसने एक
अच्छी नदी के सहारे उन्हें बोया।

6बीज उगे और वे अंगूर की बेल बने। यह बेल
अच्छी थी। बेल ऊँची नहीं थी। किन्तु यह एक बड़े क्षेत्र
को ढकने के लिये फैल गई। बेल के तने बने और
छोटी बेलें बहुत लम्बी हो गई।
7तब दूसरे बड़े पंखों वाले उकाब ने अंगूर की बेल
को देखा। उकाब के लम्बे पंख थे। अंगूर की बेल
चाहती थी कि यह नया उकाब उसकी देख–भाल करे।
इसलिये इसने अपनी जड़ों को इस उकाब की ओर
फैलाया। इसकी शाखायें इस उकाब की ओर फैलीं।
इसकी शाखायें उस खेत से दूर फैली जहाँ यह बोई गई
थी। अंगूर की बेल चाहती थी कि नया उकाब इसे पानी
दे।
8अंगूर की बेल अच्छे खेत में बोई गई थी। यह प्रभूत
जल के पास बोई गई थी। यह शाखायें और फल उत्पन्न
कर सकती थी। यह एक बहुत अच्छी अंगूर की बेल हो
सकती थी।"
9मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं, "क्या तुम समझते
हो कि बेल सफल होगी? नहीं! नया उकाब बेल को
जमीन से उखाड़ देगा। और पक्षी बेल की जड़ों को तोड़
देगा। वह सारे अंगूर खा जाएगा। तब नयी पत्तियाँ सूखेंगी
और मर जाएंगी। वह बेल बहुत कमजोर होगी। इस बेल
को जड़ से उखाड़ने के लिए शक्तिशाली अस्त्र–शस्त्र या
शक्तिशाली राष्ट्र की जरूरत नहीं होगी।
10क्या यह बेल वहाँ बढ़ेगी जहाँ बोई गई है? नहीं, गर्म
पुरवाई चलेगी और बेल सूखेगी और मर जाएगी। यह
वहीं मरेगी जहाँ यह बोई गई थी।"
11यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 12"इस
कहानी की व्याख्या इस्राएल के लोगों के बीच करो, वे
सदा मेरे विरुद्ध जाते हैं। उनसे यह कहो: पहला उकाब
(नबूकदनेस्सर) बाबुल का राजा है। वह यरूशलेम आया
और राजा तथा अन्य प्रमुखों को ले गया। वह उन्हें
बाबुल लाया। 13तब नबूकदनेस्सर ने राजा के परिवार
के एक व्यक्ति के साथ सन्धि की। नबूकदनेस्सर ने
उस व्यक्ति को प्रतिज्ञा करने के लिये विवश किया। इस
प्रकार इस व्यक्ति ने नबूकदनेस्सर के प्रति राजभक्त
रहने की प्रतिज्ञा की। नबूकदनेस्सर ने इस व्यक्ति को
यहूदा का नया राजा बनाया। तब उसने सभी शक्तिशाली
व्यक्तियों को यहूदा से बाहर निकाला। 14इस प्रकार
यहूदा एक दुर्बल राज्य बन गया, जो राजा नबूकदनेस्सर
के विरुद्ध नहीं उठ सकता था। यहूदा के नये राजा के
साथ नबूकदनेस्सर ने जो सन्धि की थी उसका पालन
करने के लिये लोग विवश किये गये। 15किन्तु इस नये
राजा ने किसी भी प्रकार नबूकदनेस्सर के विरुद्ध
विद्रोह करने का प्रयत्न किया। उसने सहायता मांगने
के लिये मिस्र को दूत भेजे। नये राजा ने बहुत से घोड़े
और सैनिक मांगे। इस दशा में, क्या तुम समझते हो कि
यहूदा का राजा सफल होगा? क्या तुम समझते हो कि
नये राजा के पास पर्याप्त शक्ति होगी कि वह सन्धि को
तोड़कर दण्ड से बच सकेगा?"
16मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मैं अपने जीवन की
शपथ खाकर वचन देता हूँ कि यह नया राजा बाबुल में
मरेगा! नबूकदनेस्सर ने इस व्यक्ति को यहूदा का नया
राजा बनाया। किन्तु इस व्यक्ति ने नबूकदनेस्सर के
साथ की हुई अपनी प्रतिज्ञा तोड़ी। इस नये राजा ने सन्धि
की उपेक्षा की। 17मिस्र का राजा यहूदा के राजा की
रक्षा करने में समर्थ नहीं होगा। वह बड़ी संख्या में
सैनिक भेज सकता है किन्तु मिस्र की महान शक्ति
यहूदा की रक्षा नहीं कर सकेगी। नबूकदनेस्सर की
सेनायें नगर पर अधिकार के लिये कच्ची सड़कें और
मिट्टी की दीवारें बनाएंगी। बड़ी संख्या में लोग मरेंगे।
18किन्तु यहूदा का राजा बचकर निकल नहीं सकेगा।
क्यों? क्योंकि उसने अपने सन्धि की उपेक्षा की। उसने
नबूकदनेस्सर को दिये अपने वचन को तोड़ा।"
19मेरा स्वामी यहोवा यह वचन देता है, "मैं अपने
जीवन की शपथ खाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं यहूदा
के राजा को दण्ड दूँगा। क्यों? क्योंकि उसने मेरी
चेतावनियों की उपेक्षा की। उसने हमारी सन्धि को
तोड़ा। 20मैं अपना जाल फैलाऊँगा और वह इसमें फंसेगा।
मैं उसे बाबुल लाऊँगा तथा मैं उसे उस स्थान में दण्ड
दूँगा। मैं उसे दण्ड दूँगा क्योंकि वह मेरे विरुद्ध उठा।
21मैं उसकी सेना को नष्ट करूँगा। मैं उसके सर्वोत्तम
सैनिकों को नष्ट करूँगा और बचे हुए लोगों को हवा में
उड़ा दूँगा। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ और मैंने ये
बातें तुमसे कही थीं।"
22मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कही थीं:
"मैं लम्बे देवदार के वृक्ष से एक शाखा लूँगा। मैं वृक्ष
की चोटी से एक छोटी शाखा लूँगा। और मैं स्वयं उसे
बहुत ऊँचे पर्वत पर बोऊँगा।
23मैं स्वयं इसे इस्राएल में ऊँचे पर्वत पर लगाऊँगा।
यह शाखा एक वृक्ष बन जाएगी। इसकी शाखायें निकलेंगी
और इसमें फल लगेंगे। यह एक सुन्दर देवदार का वृक्ष
बन जाएगा। अनेक पक्षी इसकी शाखाओं पर बैठा
करेंगे। अनेक पक्षी इसकी शाखाओं के नीचे छाया में
रहेंगे। 24तब अन्य वृक्ष उसे जानेंगे कि मैं ऊँचे वृक्षों को
भूमि पर गिराता हूँ। और मैं छोटे वृक्षों को बढ़ाता और
उन्हें लम्बा बनाता हूँ। मैं हरे वृक्षों को सुखा देता हूँ।
और मैं सूखे वृक्षों को हरा करता हूँ। मैं यहोवा हूँ। यदि
मैं कहूँगा कि मैं कुछ करूँगा तो मैं उसे अवश्य करूँगा!"
18 यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 2"तुम
लोग इस कहावत को दुहराते रहते हो। क्यों?
तुम कहते हो: पूर्वजों ने खट्टे अंगूर खाये, किन्तु बच्चों
को खट्टा स्वाद मिला। तुम सोचते हो कि तुम पाप कर
सकते हो और भविष्य में कुछ व्यक्ति इसके लिये
दण्डित होंगे।"

3किन्तु मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मैं अपने जीवन
की शपथ खाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि इस्राएल में लोग
अब भविष्य में इस कहावत को कभी सत्य नहीं समझेंगे!
4मैं सभी व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार करूँगा। यह
महत्वपूर्ण नहीं होगा कि वह व्यक्ति माता–पिता है अथवा
सन्तान। जो व्यक्ति पाप करेगा वह व्यक्ति मरेगा!

5"यदि कोई व्यक्ति भला है, तो वह जीवित रहेगा। वह
भला व्यक्ति लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करता है।
6वह भला व्यक्ति पहाड़ों पर नहीं जाता और असत्य
देवताओं को चढ़ाए गए भोजन में कोई हिस्सा नहीं
बंटाता। वह इस्राएल में उन गन्दें देवताओं की मूर्तियों
की स्तुति नहीं करता। वह अपने पड़ोसी की पत्नी के
साथ व्यभिचार का पाप नहीं करता। वह अपनी पत्नी
के साथ, उसके मासिक धर्म के समय, शारीरिक सम्बंध
नहीं करता। 7वह भला व्यक्ति लोगों से अनुचित लाभ
नहीं उठाता। यदि कोई व्यक्ति उससे मुद्रा ऋ ण लेता है
तो वह भला व्यक्ति गिरवी रखकर दूसरे व्यक्ति को मुद्रा
देता है और जब वह व्यक्ति उसे भुगतान कर देता है तो
भला व्यक्ति उसे गिरवी वस्तु वापिस कर देता है। भला
व्यक्ति भूखे लोगों को भोजन देता है और वह उन लोगों
को वस्त्र देता है जिन्हें उनकी आवश्यकता है। 8यदि
कोई मुद्रा ऋ ण लेना चाहता है तो भला व्यक्ति उसे
ऋ ण देता है। वह उस ऋ ण का ब्याज नहीं लेता। भला
व्यक्ति कुटिल होने से इन्कार करता है। वह हर व्यक्ति
के प्रति सदा भला रहता है। लोग उस पर विश्वास कर
सकते हैं। 9वह मेरे नियमों का पालन करता है। वह
मेरे निर्णयों को समझता है और भला एवं विश्वसनीय
होना सीखता है। क्योंकि वह भला व्यक्ति है, अत: वह
जीवित रहेगा।

10"किन्तु उस व्यक्ति का कोई ऐसा पुत्र हो सकता है,
जो उन अच्छे कामों में से कुछ भी न करता हो। पुत्र
चीजें चुरा सकता है तथा लोगों की हत्या कर सकता
है। 11पुत्र इन बुरे कामों में से कोई भी काम कर
सकता है। वह पहाड़ों पर जा सकता है और असत्य
देवताओं को चढ़ाए गए भोजन में हिस्सा बटा सकता है।
वह पापी पुत्र अपने पड़ोसी की पत्नी के साथ व्यभिचार
करने का पाप कर सकता है। 12वह गरीब और असहाय़
लोगों के साथ बुरा व्यवहार कर सकता है। वह लोगों से
अनुचित लाभ उठा सकता है। वह गिरवी चीज को तब
भी न लौटाये जब कोई व्यक्ति अपने ऋ ण का भुगतान
कर चुका हो। वह पापी पुत्र उन गन्दी देवमूर्तियों की
प्रार्थना कर सकता है एवं अन्य भयंकर पाप भी कर
सकता है। 13किसी व्यक्ति को उस पापी पुत्र से ऋ ण
लेने की आवश्यकता हो सकती है। वह पुत्र उसे मुद्रा
ऋण दे सकता है, किन्तु वह उस व्यक्ति को उस ऋ ण
पर ब्याज देने के लिये विवश करेगा। अत: वह पापी
पुत्र जीवित नहीं रहेगा। उसने भंयकर पाप किये अत:
मार दिया जाएगा और अपनी मृत्यु के लिये वह स्वयं ही
उत्तरदायी है।

14"संभवत: उस पापी पुत्र का भी एक पुत्र हो। किन्तु
यह पुत्र अपने पिता द्वारा किये गए पाप–कर्मों को देख
सकता है और वह अपने पिता की तरह रहने से
इन्कार कर सकता है। वह भला व्यक्ति लोगों के साथ
भला व्यवहार करता है। 15वह व्यक्ति पहाड़ों पर नहीं
जाता, न ही असत्य देवताओं को चढ़ाए गए भोजन में
हिस्सा बटाता है। वह इस्राएल में उन गन्दी देवमूर्तियों की
प्रार्थना नहीं करता। वह अपने पड़ोसी की पत्नी के
साथ व्यभिचार का पाप नहीं करता। 16वह भला पुत्र
लोगों से अनुचित लाभ नहीं उठाता। यदि कोई व्यक्ति
उससे ऋ ण लेता है तब भला पुत्र चीज गिरवी रखता है
और उस व्यक्ति को मुद्रा दे देता है और जब वह व्यक्ति
वापस भुगतान करता है तो भला व्यक्ति गिरवी चीज
वापस कर देता है। भला व्यक्ति भूखों को भोजन देता है
और वह उन लोगों को वस्त्र देता है जिन्हें उसकी
आवश्यकता है। 17वह गरीबों की सहायता करता है
यदि कोई व्यक्ति ऋ ण लेना चाहता है तो भला पुत्र उसे
मुद्रा उधार दे देता है और वह उस ऋ ण पर ब्याज नहीं
लेता। भला पुत्र मेरे नियमों का पालन करता है और
मेरे नियम के अनुसार चलता है! वह भला पुत्र अपने
पिता के पापों के कारण मारा नहीं जायेगा! वह भला
पुत्र जीवित रहेगा। 18पिता लोगों को चोट पहुँचा सकता
है और चीजें चुरा सकता है! वह मेरे लोगों के लिये
कभी कुछ अच्छा कार्य नहीं कर सकता। वह पिता
अपने पापों के कारण मरेगा। किन्तु पुत्र अपने पिता के
पापों के लिये दण्डित नहीं होगा।

19"तुम पूछ सकते हो, 'पिता के पाप के लिये पुत्र
दण्डित क्यों नहीं होगा?' इसका कारण यह है कि पुत्र
भला रहा और उसने अच्छे काम किये! उसने बहुत
सावधानी से मेरे नियमों का पालन किया! अत: वह
जीवित रहेगा। 20जो व्यक्ति पाप करता है वही व्यक्ति
मार डाला जाता है। एक पुत्र अपने पिता के पापों के
लिये दण्डित नहीं होगा और एक पिता अपने पुत्र के
पापों के लिये दण्डित नहीं होगा। एक भले व्यक्ति की
भलाई केवल उसकी निजी होती है और बुरे व्यक्ति की
बुराई केवल उसी की होती है।

21"इस स्थिति में यदि कोई बुरा व्यक्ति अपना
जीवन–क्रम परिवर्तित करता है तो वह जीवित रहेगा,
मरेगा नहीं वह व्यक्ति अपने किये पापों को फिर करना
छोड़ सकता है। वह बहुत सावधानी से मेरे सभी नियमों
का पालन करना आरम्भ कर सकता है। वह न्यायशील
और भला हो सकता है। 22परमेश्वर उसके उन सभी
पापों को याद नहीं रखेगा जिन्हें उसने किये। परमेश्वर
केवल उसकी भलाई को याद करेगा, अत: वह व्यक्ति
जीवित रहेगा।"

23मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मैं बुरे लोगों को
मरने देना नहीं चाहता। मैं चाहता हूँ कि वे अपने जीवन
को बदलें, जिससे वे जीवित रह सकें!

24"ऐसा भी हो सकता है, कि भला व्यक्ति भला न रह
जाय। वह अपने जीवन को बदल सकता है और उन
भयंकर पापों का करना आरम्भ कर सकता है जिन्हें
बुरे लोगों ने भूतकाल में किया था। (वह बुरा व्यक्ति
बदल गया अत: वह जीवित रह सकता है।) अत: यदि
वह भला व्यक्ति बदलता है और बुरा बन जाता है तो
परमेश्वर उस व्यक्ति के किये अच्छे कामों को याद
नहीं रखेगा। परमेश्वर यही याद रखेगा कि वह व्यक्ति
उसके विरुद्ध हो गया और उसने पाप करना आरम्भ
किया। इसलिये वह व्यक्ति अपने पापों के कारण मरेगा।"

25परमेश्वर ने कहा, "तुम लोग कह सकते हो,
'परमेश्वर हमारा स्वामी न्यायपूर्ण नहीं है!' किन्तु इस्राएल
के परिवारों, सुनों। मैं उसी प्रकार का हूँ। तुम लोग ऐसे
हो कि जरुर बदलोगे! 26यदि एक भला व्यक्ति बदलता
है और पापी बनता है तो उसे अपने किये गये बुरे कामों
के कारण मरना ही चाहिए। 27यदि कोई पापी व्यक्ति
बदलता है और भला तथा न्याय प्रिय बनता है तो वह
अपने जीवन को बचाएगा। वह जीवित रहेगा! 28उस
व्यक्ति ने देखा कि वह कितना बुरा था और मेरे पास
लौटा। उसने उन बुरे पापों को करना छोड़ दिया जो
उसने भूतकाल में किये थे। अत: वह जीवित रहेगा!
वह मरेगा नहीं!"

29इस्राएल के लोगों ने कहा, "यह न्यायपूर्ण नहीं है!
मेरा स्वामी यहोवा न्यायपूर्ण नहीं है!"

परमेश्वर ने कहा, "मैं उसी प्रकार का हूँ। तुम ऐसे
लोग हो जो बदलोगे ही! 30क्यों? क्योंकि इस्राएल के
परिवार, मैं हर एक व्यक्ति के साथ न्याय केवल उसके
उन कर्मो के लिये करूँगा जिन्हें वह व्यक्ति करता है!"
मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं: "इसलिये मेरे पास
लौटो! पाप करना छोड़ो! उन भयंकर चीजों (मूर्तियों)
को अपने द्वारा पाप मत करने दो! 31उन सभी भयंकर
चीजों (मूर्तियों) को फेंक दो जिन्हें तुमने बनाया, वे
तुमसे केवल पाप करवाते हैं! अपने हृदय और आत्मा
को बदलो! इस्राएल के लोगों, तुम अपने को क्यों मर
जाने देना चाहते हो? 32मैं तुम्हें मारना नहीं चाहता! तुम
हमारे पास आओ और रहो!" वे बातें मेरे स्वामी यहोवा
ने कहीं।

19 यहोवा ने मुझसे कहा, "तुम्हें इस्राएल के प्रमुखों
के विषय में इस करुण-गीत को गाना चाहिये।

2'कैसी सिंहनी है तुम्हारी माँ? वह सिहों के बीच एक
सिंहनी थी। वह जवान सिंहों से घिरी रहती थी और
अपने बच्चों का लालन पालन करती थी।

3उन सिंह-शावकों में से एक उठता है वह एक
शक्तिशाली युवा सिंह हो गया है। उसने अपना भोजन
पाना सीख लिया है। उसने एक व्यक्ति को मारा और
खा गया।

4लोगों ने उसे गरजते सुना और उन्होंने उसे अपने
जाल में फँसा लिया! उन्होंने उसके मुँह में नकेल डालीं
और युवा सिंह को मिस्र ले गये।

5सिंह माता को आशा थी कि सिंह-शावक प्रमुख
बनेगा। किन्तु अब उसकी सारी आशायें लुप्त हो गई।
इसलिये अपने शावकों में से उसने एक अन्य को लिया।
उसे उसने सिंह होने का प्रशिक्षण दिया।

6वह युवा सिंहों के साथ शिकार को निकला। वह
एक बलवान युवा सिंह बना। उसने अपने भोजन को
पकड़ना सीखा। उसने एक आदमी को मारा और उसे
खाया। 7उसने महलों पर आक्रमण किया। उसने नगरों
को नष्ट किया। उस देश का हर एक व्यक्ति तब भय
से अवाक होता था। जब वह उसका गरजना सुनता था।

8तब उसके चारों ओर रहने वाले लोगों ने उसके
लिये जाल बिछाया और उन्होंने उसे अपने जाल में फँसा
लिया।

9उन्होंने उस पर नकेल लगाई और उसे बन्द कर
दिया। उन्होंने उसे अपने जाल में बन्द रखा। इस प्रकार
उसे वे बाबुल के राजा के पास ले गए। अब, तुम इस्राएल
के पर्वतों पर उसकी गर्जना सुन नहीं सकते।

10तुम्हारी माँ एक अंगूर की बेल जैसी थी, जिसे पानी
के पास बोया गया था। उसके पास काफी जल था,
इसलिये उसने अनेक शक्तिशाली बेलें उत्पन्न कीं।

11तब उसने एक बड़ी शाखा उत्पन्न की, वह शाखा
टहलने की छड़ी जैसी थी। वह शाखा राजा के राजदण्ड
जैसी थी। बेल ऊँची, और ऊँची होती गई। इसकी अनेक
शाखायें थीं और वह बादलों को छूने लगी।

12किन्तु बेल को जड़ से उखाड़ दिया गया, और उसे
भूमि पर फेंक दिया गया। गर्म पुरवाई हवा चली और
उसके फलों को सुखा दिया शक्तिशाली शाखायें टूट गई,
और उन्हें आग में फेंक दिया गया।

13 किन्तु वह अंगूर की बेल अब मरूभूमि में बोयी
गई है। यह बहुत सूखी और प्यासी धरती है।

14विशाल शाखा से आग फैली। आग ने उसकी सारी
टहनियों और फलों को जला दिया। अत: कोई सहारे
की शक्तिशाली छड़ी नहीं रही। कोई राजा का राजदण्ड
न रहा।'

यह मृत्यु के बारे में करुण-गीत था और यह मृत्यु
के बारे में करुणगीत के रूप में गाया गया था।"

20 एक दिन इस्राएल के अग्रजों (प्रमुखों) में से
कुछ मेरे पास यहोवा की राय पूछने आए। यह
पाँचवें महीने (अगस्त) का दसवाँ दिन और देश-निकाले
का सातवाँ वर्ष था। अग्रज (प्रमुख) मेरे सामने बैठे।

2तब यहोवा का वचन मेरे पास आया। उसने कहा,
3"मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के अग्रजों (प्रमुखों) से बात

करो। उनसे कहो, 'मेरा स्वामी यहोवा, ये बातें बताता
है: क्या तुम लोग मेरी सलाह मांगने आये हो? यदि तुम
लोग आए हो तो मैं तुम्हें यह नहीं दूँगा। मेरे स्वामी
यहोवा ने यह बात कही।' 4"क्या तुम्हें उनका निर्णय
करना चाहिए? मनुष्य के पुत्र क्या तुम उनका निर्णय
करोगे? तुम्हें उन्हें उन भंयकर पापों के बारे में बताना
चाहिए जो उनके पूर्वजों ने किये थे। 5तुम्हें उनसे कहना
चाहिए, 'मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: जिस दिन मैंने
इस्राएल को चुना, मैंने अपना हाथ याकूब के परिवार
के ऊपर उठाया और मैने मिस्र देश में उनसे एक
प्रतिज्ञा की। मैंने अपना हाथ उठाया और कहा: मैं
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। 6उस दिन मैंने तुम्हें मिस्र
से बाहर लाने का वचन दिया था और मैं तुमको उस
प्रदेश में लाया जिसे मैं तुम्हें दे रहा था। वह एक अच्छा
देश था जो अनेक अच्छी चीजों से भरा था। यह सभी
देशों से अधिक सुन्दर था!

7"मैंने इस्राएल के परिवार से उनकी भंयकर देवमूर्तियों
को फेंकने के लिये कहा। मैंने, उन मिस्र की गन्दी
देवमूर्तियों के साथ उन्हें गन्दा न होने के लिये कहा। मैं
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। 8किन्तु वे मेरे विरुद्ध हो
गये और उन्होंने मेरी एक न सुनी। उन्होंने अपनी
भंयकर देवमूर्तियों को नहीं फेंका। उन्होंने अपनी गन्दी
देवमूर्तियों को मिस्र में नहीं छोड़ा। इसलिये मैंने (परमेश्वर
ने) उन्हें मिस्र में नष्ट करने का निर्णय किया अर्थात्
अपने क्रोध की पूरी शक्ति का अनुभव कराना चाहा।
9किन्तु मैंने उन्हें नष्ट नहीं किया। मैं लोगों से जहाँ वे
रह रहे थे पहले ही कह चुका था कि मैं अपने लोगों
को मिस्र से बाहर ले जाऊँगा। मैं अपने अच्छे नाम को
समाप्त नहीं करना चाहता, इसलिये मैंने उन लोगों के
सामने इस्राएलियों को नष्ट नहीं किया। 10मैं इस्राएल के
परिवार को मिस्र से बाहर लाया। मैं उन्हें मरूभूमि में ले
गया। 11तब मैंने उनको अपने नियम दिये। मैंने उनको
सारे नियम बताये। यदि कोई व्यक्ति उन नियमों का
पालन करेगा तो वह जीवित रहेगा। 12मैंने उनको विश्राम
के सभी विशेष दिनों के बारे में भी बताया। वे पवित्र
दिन उनके और मेरे बीच विशेष प्रतीक थे। वे यह
संकेत करते थे कि मैं यहोवा हूँ और मैं उन्हें अपने
विशेष लोग बना रहा हूँ।

13"किन्तु इस्राएल का परिवार मरूभूमि में मेरे विरुद्ध
उठ खड़ा हुआ। उन्होंने मेरे नियमों का अनुसरण नहीं
किया। उन्होंने मेरे नियमों का पालन करने से इनकार
किया और वे नियम अच्छे हैं। यदि कोई व्यक्ति उनका
पालन करेगा तो वह जीवित रहेगा। उन्होंने मेरे विशेष
विश्राम के दिनों के प्रति ऐसा व्यवहार किया मानो
उनका कोई महत्व न हो। वे उन दिनों में अनेकों बार
काम करते रहे। मैंने मरूभूमि में उन्हें नष्ट करने का
निश्चय किया अर्थात अपने क्रोध की पूरी शक्ति का
अनुभव उन्हें कराना चाहा। 14किन्तु मैंने उन्हें नष्ट
नहीं किया। अन्य राष्ट्रों ने मुझे इस्राएल को मिस्र से
बाहर लाते देखा। मैं अपने अच्छे नाम को समाप्त नहीं
करना चाहता था, इसलिये मैंने उन राष्ट्रों के सामने
इस्राएल को नष्ट नहीं किया। 15मैंने मरूभूमि में उन
लोगों को एक और वचन दिया। मैंने वचन दिया कि मैं
उन्हें उस प्रदेश में नहीं लाऊँगा जिसे मैं उन्हें दे रहा हूँ।
वह अनेक चीजों से भरा एक अच्छा प्रदेश था। यह
सभी देशों से अधिक सुन्दर था।

16"इस्राएल के लोगों ने मेरे नियमों का पालन करने
से इन्कार किया। उन्होंने मेरे नियमों का अनुसरण नहीं
किया। उन्होंने मेरे विश्राम के दिनों को ऐसे लिया मानो
वे महत्व नहीं रखते। उन्होंने ये सभी काम इसलिये
किये कि उनका हृदय उन गन्दी देवमूर्तियों का हो
चुका था। 17किन्तु मुझे उन पर करूणा आई, अत: मैंने
उन्हें नष्ट नहीं किया। मैंने उन्हें मरूभूमि में पूरी तरह
नष्ट नहीं किया। 18मैंने उनके बच्चों से बातें कीं। मैंने
उनसे कहा, 'अपने माता पिता जैसे न बनो। उनकी
गन्दी देवमूर्तियों से अपने को गन्दा न बनाओ। उनके
नियमों का अनुसरण न करो। उनके आदेशों का पालन
न करो। 19मैं यहोवा हूँ। मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ। मेरे
नियमों का पालन करो। मेरे आदेशों को मानो। वह
काम करो जो मैं कहूँ। 20यह प्रदर्शित करो कि मेरे
विश्राम के दिन तुम्हारे लिये महत्वपूर्ण हैं। याद रखो कि
वे तुम्हारे और हमारे बीच विशेष प्रतीक हैं। मैं यहोवा हूँ
और वे पवित्र दिन यह संकेत करते हैं कि मैं तुम्हारा
परमेश्वर हूँ।

21"'किन्तु वे बच्चे मेरे विरुद्ध हो गये। उन्होंने मेरे
नियमों का पालन नहीं किया। उन्होंने मेरे आदेश नहीं
माने। उन्होंने वे काम नहीं किये जो मैंने उनसे कहा वे
अच्छे नियम थे। यदि कोई उनका पालन करेगा तो वह
जीवित रहेगा। उन्होंने मेरे विश्राम के दिनों को ऐसे
लिया मानों वे महत्व न रखते हों। इसलिये मैंने उन्हें
मरूभूमि में पूरी तरह नष्ट करने का निश्चय किया
जिससे वे मेरे क्रोध की पूरी शक्ति का अनुभव कर
सकें। 22लेकिन मैंने अपने को रोक लिया। अन्य राष्ट्रों
ने मुझे इस्राएल को मिस्र से बाहर लाते देखा। जिससे
मेरा नाम अपवित्र न हो। इसलिये मैंने उन अन्य देशों
के सामने इस्राएल को नष्ट नहीं किया। 23इसलिये मैंने
मरुभूमि में उन्हें एक और वचन दिया। मैंने उन्हें विभिन्न
राष्ट्रों में बिखेरने और दूसरे अनेकों देशों में भेजने की
प्रतीज्ञा की।

24"'इस्राएल के लोगों ने मेरे आदेश का पालन नहीं
किया। उन्होंने मेरे नियमों को मानने से इन्कार कर
दिया। उन्होंने मेरे विशेष विश्राम के दिनों को ऐसे लिया
मानो वे महत्व न रखते हों। उन्होंने अपने पूर्वजों की
गन्दी देवमूर्तियों को पूजा। 25इसलिये मैंने उन्हें वे नियम

दिये जो अच्छे नहीं थे। मैंने उन्हें वे आदेश दिये जो उन्हें
सजीव नहीं कर सकते थे। 26मैंने उन्हें अपनी भेंटों से
अपने आप को गन्दा बनाने दिया। उन्होंने अपने प्रथम
उत्पन्न बच्चों तक की बलि चढ़ानी आरम्भ कर दी।
इस प्रकार मैंने उन लोगों को नष्ट करना चाहा। तब वे
समझे कि मैं यहोवा हूँ।' 27अत: मनुष्य के पुत्र, अब
इस्राएल के परिवार से कहो। उनसे कहो कि मेरा
स्वामी यहोवा ये बातें कहता है: इस्राएल के लोगों ने मेरे
विरुद्ध बुरी बातें कहीं और मेरे विरुद्ध बुरी योजनायें
बनाई। 28किन्तु मैं इसके होते हुए भी, उन्हें उस प्रदेश में
लाया जिसे देने का वचन मैंने दिया था। उन्होंने उन
पहाड़ियों और हरे वृक्षों को देखा अत: वे उन सभी
स्थानों पर पूजा करने गये। वे अपनी बलियाँ तथा
क्रोध-भेंटें उन सभी स्थानों को ले गए। उन्होंने अपनी
वे बलियाँ चढ़ाई जो मधुर गन्ध वाली थी और उन्होंने
अपनी पेय-भेंटे उन स्थानों पर चढ़ाई। 29मैंने इस्राएल
के लोगों से पूछा कि वे उन ऊँचे स्थान पर क्यों जा रहे
हैं। लेकिन वे ऊँचे स्थान आज भी वहाँ हैं।'"

30परमेश्वर ने कहा, "इस्राएल के लोगों ने उन सभी
बुरे कामों को किया। अत: इस्राएल के लोगों से बात
करो। उनसे कहो, 'मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:
तुम लोगों ने उन कामों को करके अपने को गन्दा बना
लिया है जिन्हें तुम्हारे पूर्वजों ने किया। तुमने एक वेश्या
की तरह काम किया है। तुमने उन भयंकर देवताओं
के साथ मुझे छोड़ दिया है जिनकी पूजा तुम्हारे पूर्वज
करते थे। 31तुम उसी प्रकार की भेंट चढ़ा रहे हो। तुम
अपने बच्चों को आग में (असत्य देवताओं की भेंट के
रूप में) डाल रहे हो। तुम अपने को आज भी गन्दी
देवमूर्तियों से गन्दा बना रहे हो! क्या तुम सचमुच सोचते
हो कि मैं तुम्हें अपने पास आने दूँगा और अपनी सलाह
मांगने दूँगा? मैं यहोवा और स्वामी हूँ। मैं अपने जीवन
की शपथ खाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं तुम्हारे प्रश्नों
का उत्तर नहीं दूँगा और तुम्हें सलाह नहीं दूँगा! 32तुम
कहते रहते हो कि तुम अन्य राष्ट्रों की तरह होओगे।
तुम उन राष्ट्रों के लोगों की तरह रहते हो। तुम लकड़ी
और पत्थर के खण्डों (देवमूर्तियों) की पूजा करते हो!'"

33मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "अपने जीवन की
शपथ खाकर मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं तुम्हारे ऊपर
राजा की तरह शासन करुँगा। मैं अपनी शक्तिशाली
भुजाओं को उठाऊँगा और तुम्हें दण्ड दूँगा। मैं तुम्हारे
विरुद्ध अपना क्रोध प्रकट करुँगा! 34मैं तुम्हें इन अन्य
राष्ट्रों से बाहर लाऊँगा। मैंने तुम लोगों को उन राष्ट्रों में
बिखेरा। किन्तु मैं तुम लोगों को एक साथ इकट्ठा
करुँगा और इन राष्ट्रों से वापस लौटाऊँगा। किन्तु मैं
अपनी शक्तिशाली भुजाएं उठाऊँगा और तुम्हें दण्ड दूँगा।
मैं तुम्हारे विरुद्ध अपना क्रोध प्रकट करुँगा! 35मैं पहले
की तरह तुम्हें मरूभूमि में ले चलूँगा। किन्तु यह वह
स्थान होगा जहाँ अन्य राष्ट्र रहते हैं। हम आमने-सामने
खड़े होंगे और मैं तुम्हारे साथ न्याय करुँगा। 36मैं तुम्हारे
साथ वैसा ही न्याय करुँगा जैसा मैंने तुम्हारे पूर्वजों के
साथ मिस्र की मरूभूमि में किया था।" मेरे स्वामी
यहोवा ने ये बातें कहीं।

37"मैं तुम्हें अपराधी प्रमाणित करूँगा और साक्षीपत्र
के अनुसार तुम्हें दण्ड दूँगा। 38मैं उन सभी लोगों को दूर
करुँगा जो मेरे विरुद्ध खड़े हुए और जिन्होंने मेरे विरुद्ध
पाप किये। मैं उन लोगों को तुम्हारी जन्मभूमि से दूर
करुँगा। वे इस्राएल देश में फिर कभी नहीं लौटेंगे। तब
तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।"

39इस्राएल के परिवार, अब सुनो, मेरा स्वामी यहोवा
यह कहता है, "यदि कोई व्यक्ति अपनी गन्दी देवमूर्तियों
की पूजा करना चाहता है तो उसे जाने दो और पूजा
करने दो। किन्तु बाद में यह न सोचना कि तुम मुझसे
कोई सलाह पाओगे! तुम मेरे नाम को भविष्य में और
अधिक अपवित्र नहीं कर सकोगे! उस समय नहीं, जब
तुम अपने गन्दी देवमूर्तियों को भेंट देना जारी रखते
हो।"

40मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "लोगों को मेरी सेवा
के लिये मेरे पवित्र पर्वत-इस्राएल के ऊँचे पर्वत पर
आना चाहिए! इस्राएल का सारा परिवार अपनी भूमि
पर होगा वे वहाँ अपने देश में होंगे। यह वह ही स्थान है
जहाँ तुम आ सकते हो और मेरी सलाह मांग सकते हो
और तुम्हें उस स्थान पर मुझे अपनी भेंट चढ़ाने आना
चाहिये। तुम्हें अपनी फसल का पहला भाग वहाँ उस
स्थान पर लाना चाहिये। तुम्हें अपनी सभी पवित्र भेंटें
वहीं लानी चाहिये। 41तब तुम्हारी भेंट की मधुर गन्ध से
मैं प्रसन्न होऊँगा। यह सब होगा जब मैं तुम्हें वापस
लाऊँगा। मैंने तुम्हें विभिन्न राष्ट्रों में बिखेरा था। किन्तु
मैं तुम्हें एक साथ इकट्ठा करुँगा और तुम्हें फिर से
अपने विशेष लोग बनाऊँगा और सभी राष्ट्र यह देखेंगे।
42तब तुम समझोगे कि मैं यहोवा हूँ। तुम यह तब जानोगे
जब मैं तुम्हें इस्राएल देश में वापस लाऊँगा। यह वही देश
है जिसे मैंने तुम्हारे पूर्वजों को देने का वचन दिया था।
43उस देश में तुम उन बुरे पापों को याद करोगे जिन्होंने
तुम्हें दोषी बनाया और तुम लज्जित होगे। 44इस्राएल के
परिवार! तुमने बहुत बुरे काम किये और तुम लोगों को
उन बुरे कामों के कारण नष्ट कर दिया जाना चाहिए।
किन्तु अपने नाम की रक्षा के लिये मैं वह दण्ड तुम
लोगों को नहीं दूँगा जिसके पात्र तुम लोग हो। तब तुम
जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें
कहीं।"

45तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
46"मनुष्य के पुत्र, यहूदा के दक्षिण भाग नेगव की ओर
ध्यान दो। नेगव-वन के विरुद्ध कुछ कहो। 47नेगव-वन
से कहो, 'यहोवा के सन्देश को सुनो। मेरे स्वामी यहोवा

ने ये बातें कहीं: ध्यान दो, मैं तुम्हारे वन में आग लगाने
वाला हूँ। आग हर एक हरे वृक्ष और हर एक सूखे वृक्ष
को नष्ट करेगी। जो लपटें जलेंगी उन्हें बुझाया नहीं जा
सकेगा। दक्षिण से उत्तर तक सारा देश अग्नि से जला
दिया जाएगा। **48**तब लोग जानेंगे कि मैंने अर्थात यहोवा
ने आग लगाई है। आग बुझाई नहीं जा सकेगी!'"

49तब मैंने (यहेजकेल) ने कहा, "हे मेरे स्वामी यहोवा!
यदि मैं इन बातों को कहता हूँ तो लोग कहेंगे कि मैं
उन्हें केवल कहानियाँ सुना रहा हूँ। वे नहीं सोचेंगे कि
यह सचमुच घटित होगा!"

21 इसलिये यहोवा का वचन मुझे फिर मिला।
उसने कहा, **2**"मनुष्य के पुत्र, यरूशलेम की
ओर ध्यान दो और उसके पवित्र स्थानों के विरुद्ध कुछ
कहो। मेरे लिये इस्राएल देश के विरुद्ध कुछ कहो।
3इस्राएल देश से कहो, 'यहोवा ने ये बातें कहीं हैं: मैं
तुम्हारे विरुद्ध हूँ! मैं अपनी तलवार म्यान से बाहर
निकालूँगा! मैं सभी लोगों को तुमसे दूर करूँगा, अच्छे
और बुरे दोनों को! **4**मैं अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के
व्यक्तियों को तुमसे अलग करूँगा। मैं अपनी तलवार
म्यान से निकालूँगा और दक्षिण से उत्तर तक के सभी
लोगों के विरुद्ध उसका उपयोग करूँगा। **5**तब सभी लोग
जानें कि मैं यहोवा हूँ और वे जान जाएंगे कि मैंने
अपनी तलवार म्यान से निकाल ली है। मेरी तलवार
म्यान में फिर तब तक नहीं लौटेगी जब तक यह खत्म
नहीं कर लेती।'"

6परमेश्वर ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, टूटे हृदय
वाले व्यक्ति की तरह सिसको। लोगों के सामने कराहो।
7तब वे तुमसे पूछेंगे, 'तुम कराह क्यों रहे हो?' तब तुम्हें
कहना चाहिये, 'कष्टदायक समाचार मिलने वाला है,
इसलिये। हर एक हृदय भय से पिघल जाएगा। सभी हाथ
कमजोर हो जाएंगे।' हर एक अन्तरात्मा कमजोर हो
जाएगी। हर एक घुटने पानी जैसे हो जाएंगे।' ध्यान दो,
वह बुरा समाचार आ रहा है! ये घटनायें घटित होंगी।
मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।"

तलवार तैयार है

8परमेश्वर का वचन मुझे मिला। उसने कहा, **9**"मनुष्य
के पुत्र, मेरे लिये लोगों से बातें करो। ये बातें कहो, 'मेरा
स्वामी यहोवा यह कहता है: "'ध्यान दो, एक तलवार,
एक तेज तलवार है, और तलवार झलकाई गई है।

10तलवार को जान लेने के लिये तेज किया गया था।
बिजली के समान चकाचौंध करने के लिये इसको
झलकाया गया था। "मेरे पुत्र, तुम उस छड़ी से दूर भाग
गये जिससे मैं तुम्हें दण्ड देता था। तुमने उस लकड़ी की
छड़ी से दण्डित होने से इन्कार किया।

11इसलिये तलवार को झलकाया गया है। अब यह
प्रयोग की जा सकेगी। तलवार तेज की गई और झलकाई
गई थी। अब यह मारने वाले के हाथों में दी जा
सकेगी।

12"'मनुष्य के पुत्र, चिल्लाओ और चीखो। क्यों? क्योंकि
तलवार का उपयोग मेरे लोगों और इस्राएल के सभी
शासकों के विरुद्ध होगा! वे शासक युद्ध चाहते थे,
इसलिये वे हमारे लोगों के साथ तब होंगे जब तलवार
आएगी! इसलिये अपनी जांघे पीटो और अपना दुःख
प्रकट करने के लिये शोर मचाओ! **13**क्यों? क्योंकि यह
परीक्षा मात्र नहीं है! तुमने लकड़ी की छड़ी से दण्डित
होने से इन्कार किया अत: उसके अतिरिक्त तुम्हें दण्डित
करने के लिये मैं क्या उपयोग में लाऊँ? हाँ, तलवार
ही।'" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

14परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य के पुत्र, तालियाँ बजाओ
और मेरे लिये लोगों से ये बातें करो: 'दो बार तलवार
को वार करने दो, हाँ, तीन बार! यह तलवार लोगों को
मारने के लिये है! यह तलवार है, बड़े नर-संहार के
लिये! यह तलवार लोगों को धार पर रखेगी।

15उनके हृदय भय से पिघल जाएंगे और बहुत से
लोग गिरेंगे। बहुत से लोग अपने नगर-द्वार पर मरेंगे।
हाँ, तलवार बिजली की तरह चमकेगी। ये लोगों को
मारने के लिये झलकाई गई है!

16तलवार, धारदार बनो! तलवार दायें काटो, सीधे
सामने काटो, बायें काटो, जाओ हर एक स्थान में जहाँ
तुम्हारी धार, जाने के लिये चुनी गई!

17"तब मैं भी ताली बजाऊँगा और मैं अपना क्रोध
प्रकट करना बन्द कर दूँगा। मैं यहोवा, कह चुका हूँ!'"

यरूशलेम तक के मार्ग को चुनना

18यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, **19**"मनुष्य
के पुत्र, दो सड़कों के नक्शे बनाओ। जिन में से बाबुल
के राजा की तलवार इस्राएल आने के लिये एक को
चुन सके। दोनों सड़कें उसी बाबुल देश से निकलेंगी।
तब नगर को पहुँचने वाली सड़क के सिरे पर एक
चिन्ह बनाओ। **20**चिन्ह का उपयोग यह दिखाने के लिये
करो कि कौन-सी सड़क का उपयोग तलवार करेगी।
एक सड़क अम्मोनी नगर रब्बा को पहुँचाती है। दूसरी
सड़क यहूदा, सुरक्षित नगर, यरूशलेम को पहुँचाती है!
21यह स्पष्ट करता है कि बाबुल का राजा उस सड़क
की योजना बना रहा है जिससे वह उस क्षेत्र पर आक्रमण
करे। बाबुल का राजा उस बिन्दु पर आ चुका है जहाँ
दोनों सड़कें अलग होती हैं। बाबुल के राजा ने जादू के
संकेतों का उपयोग भविष्य को जानने के लिये किया
है। उसने कुछ बाण हिलाये, उसने परिवार की देवमूर्तियों
से प्रश्न पूछे, उसने गुर्दे को देखा जो उस जानवर का
था जिसे उसने मारा था।

22"संकेत उसे बताते हैं कि वह उस दायीं सड़क को
पकड़े जो यरूशलेम पहुँचाती है! उसने अपने साथ

विध्वंसक लट्ठों को लाने की योजना बनाई है। वह
आदेश देगा और उसके सैनिक जान से मारना आरम्भ
करेंगे। वे युद्ध–घोष करेंगे। तब वे एक मिट्टी की
दीवार नगर के चारों ओर बनायेंगे। वे एक मिट्टी की
सड़क दीवार तक पहुँचाने वाली बनाएंगे। वे नगर पर
आक्रमण के लिए लकड़ी की मीनार बनाएंगे। 23वे
जादूई चिन्ह इस्राएल के लोगों के लिये कोई अर्थ नहीं
रखते। वे उन वचनों का पालन करते हैं जो उन्होंने
दिये। किन्तु यहोवा उनके पाप याद रखेगा! तब इस्राएली
लोग बन्दी बनाए जाएंगे।"

24मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "तुमने बहुत से
बुरे काम किये हैं। तुम्हारे पाप पूरी तरह स्पष्ट हैं। तुमने
मुझे यह याद रखने को विवश किया कि तुम दोषी हो।
अत: शत्रु तुम्हें अपने हाथों में कर लेगा 25और इस्राएल
के पापी प्रमुखों, तुम मारे जाओगे। तुम्हारे दण्ड का
समय आ पहुँचा है! अब अन्त निकट है!"

26मेरा स्वामी यहोवा यह सन्देश देता है, "पगड़ी उतारो!
मुकुट उतारो! परिवर्तन का समय आ पहुँचा है! महत्वपूर्ण
प्रमुख नीचे लाए जाएंगे और जो लोग महत्वपूर्ण नहीं हैं,
वे महत्वपूर्ण बनेंगे। 27मैं उस नगर को पूरी तरह नष्ट
करुँगा! किन्तु यह तब तक नहीं होगा जब तक उपयुक्त
व्यक्ति नया राजा नहीं होता। तब मैं उसे (बाबुल के
राजा को) नगर पर अधिकार करने दूँगा।"

अम्मोन के विरुद्ध भविष्यवाणी

28परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य के पुत्र, मेरे लिये लोगों
से कहो। वे बातें कहो, 'मेरा स्वामी यहोवा ये बातें
अम्मोन के लोगों और उनके लज्जाजनक देवता से
कहता है:

"'ध्यान दो, एक तलवार! एक तलवार अपनी म्यान
से बाहर है। तलवार झलकाई गई है! तलवार मारने के
लिये तैयार है। बिजली की तरह चमकने के लिए इसको
झलकाया गया था!

29तुम्हारे दर्शन व्यर्थ हैं। तुम्हारे जादू तुम्हारी सहायता
नहीं करेंगे। यह केवल झूठ का गुच्छा है। अब तलवार
पापियों की गर्दन पर है। वे शीघ्र ही मुर्दा हो जाएंगे।
उनका अन्त समय आ पहुँचा है। उनके पाप की समाप्ति
का समय आ गया है।

बाबुल के विरुद्ध भविष्यवाणी

30"'अब तुम तलवार (बाबुल) को म्यान में वापस
रखो। बाबेल मैं तुम्हारे साथ न्याय, तुम जहाँ बने हो उसी
स्थान पर करूँगा अर्थात् उसी देश में जहाँ तुम उत्पन्न
हुए हो। 31मैं तुम्हारे विरुद्ध अपने क्रोध की वर्षा करूँगा।
मेरा क्रोध तुम्हें तप्त पवन की तरह जलाएगा। मैं तुम्हें
क्रूर व्यक्तियों के हाथों में दूँगा। वे व्यक्ति मनुष्यों को
मार डालने में कुशल हैं। 32तुम आग के लिये ईंधन
बनोगे। तुम्हारा खून भूमि में गहरा बह जाएगा अर्थात्
लोग तुम्हें फिर याद नहीं करेंगे। मैंने अर्थात् यहोवा ने
यह कह दिया है!'"

यहेजकेल यरूशलेम के विरुद्ध बोलता है

22 यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
2"मनुष्य के पुत्र, क्या तुम न्याय करोगे? क्या
तुम हत्यारों के नगर (यरूशलेम) के साथ न्याय करोगे?
क्या तुम उससे उन सब भयंकर बातों के बारे में कहोगे
जो उसने की हैं? 3तुम्हें कहना चाहिये, 'मेरा स्वामी
यहोवा यह कहता है: नगर हत्यारों से भरा है। अत:
उसके लिये दण्ड का समय आएगा। उसने अपने लिये
गन्दी देवमूर्तियों को बनाया और इन देवमूर्तियों ने उसे
गन्दा बनाया!

4"'यरूशलेम के लोगों, तुमने बहुत लोगों को मार
डाला। तुमने गन्दी देवमूर्तियाँ बनाई। तुम दोषी हो और
तुम्हें दण्ड देने का समय आ गया है। तुम्हारा अन्त आ
गया है। अन्य राष्ट्र तुम्हारा मजाक उड़ाएंगे। वे देश तुम
पर हँसेंगे। 5दूर और निकट के लोग तुम्हारा मजाक
उड़ाएंगे। तुमने अपना नाम बदनाम किया है। तुम अट्टहास
सुन सकते हो।

6"'ध्यान दो! यरूशलेम में हर एक शासक ने अपने
को शक्तिशाली बनाया जिससे वह अन्य लोगों को मार
सके। 7यरूशलेम के लोग अपने माता–पिता का सम्मान
नहीं करते। वे उस नगर में विदेशियों को सताते हैं। वे
अनाथों और विधवाओं को उस स्थान पर ठगते हैं।
8तुम लोग मेरी पवित्र चीजों से घृणा करते हो। तुम मेरे
विश्राम के दिनों को ऐसे लेते हो मानों वे महत्वपूर्ण न
हों। 9यरूशलेम के लोग अन्य लोगों के बारें में झूठ
बोलते हैं। वे यह उन भोले लोगों को मार डालने के
लिये करते हैं। लोग पर्वतों पर असत्य देवताओं की पूजा
करने जाते हैं और तब वे यरूशलेम में उनके मैत्री–भोजन
को खाने आते हैं।

"'यरूशलेम में लोग अनेक यौन–सम्बन्धी पाप करते
हैं। 10यरूशलेम में लोग अपने पिता की पत्नी के साथ
व्यभिचार करते हैं। यरूशलेम में लोग मासिक धर्म के
समय में भी नारियों से बलात्कार करते हैं। 11कोई
अपने पड़ोसी की पत्नी के विरुद्ध भी ऐसा भंयकर पाप
करता है। कोई अपनी पुत्रवधू के साथ शारीरिक सम्बन्ध
करता है और उसे अपवित्र करता है और कोई अपने
पिता की पुत्री अर्थात अपनी बहन के साथ शारीरिक
सम्बंध करता है।

12"'यरूशलेम में, तुम लोग, लोगों को मार डालने के
लिये धन लेते हो। तुम लोग ऋण देते हो और उस ऋण
पर ब्याज लेते हो। तुम लोग थोड़े धन को पाने के लिये
अपने पड़ोसी को ठगते हो और तुम लोग मुझे भूल गए
हो।'" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

13परमेश्वर ने कहा, "अब ध्यान दो! मैं अपनी भुजा
को नीचे टिकाकर, तुम्हें रोक दूँगा! मैं तुम्हें लोगों को
धोखा देने और मार डालने के लिये दण्ड दूँगा। 14क्या
तब भी तुम वीर बने रहोगे? क्या तुम पर्याप्त बलवान
रहोगे जब मैं तुम्हें दण्ड देने आऊँगा? नहीं! मैं यहोवा हूँ।
मैंने यह कह दिया है और मैं वह करूँगा जो मैंने करने
को कहा है! 15मैं तुम्हें राष्ट्रों में बिखेर दूँगा। मैं तुम्हें
बहुत-से देशों में जाने को विवश करूँगा। मैं नगर की
गन्दी चीजों को पूरी तरह नष्ट करुँगा। 16किन्तु यरूशलेम
तुम अपवित्र हो जाओगे और अन्य राष्ट्र इन घटनाओं
को होता देखेंगे। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।"

इस्राएल बेकार कचरे की तरह है

17यहोवा का वचन मुझ तक आया। उसने कहा,
18"मनुष्य के पुत्र, काँसा, लोहा, सीसा और टीन चाँदी
की तुलना में बेकार हैं। कारीगर चाँदी को शुद्ध करने
के लिये आग में डालते हैं। चाँदी गल जाती है और
कारीगर इसे कचरे से अलग करता है। इस्राएल राष्ट्र
उस बेकार कचरे की तरह हो गया है। 19इसलिये
यहोवा तथा स्वामी यह कहता है, 'तुम सभी लोग बेकार
कचरे की तरह हो गए हो। इसलिये मैं तुम्हें इस्राएल में
इकट्ठा करुँगा। 20कारीगर चाँदी, काँसा, लोहा, सीसा
और टीन को आग में डालते हैं। वे आग को अधिक
गर्म करने के लिये फूँकते हैं। तब धातुओं का गलना
आरम्भ हो जाता है। इसी प्रकार मैं तुम्हें अपनी आग में
डालूँगा और तुम्हें पिघलाऊँगा। वह आग मेरा गरम
क्रोध है। 21मैं तुम्हें उस आग में डालूँगा और मैं अपने
क्रोध की आग को फूँके मारुँगा और तुम्हारा पिघलना
आरम्भ हो जाएगा। 22चाँदी आग में पिघलती है और
कारीगर चाँदी को ढालते हैं तथा बचाते हैं। इसी प्रकार
तुम नगर में पिघलोगे। तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ
और तुम समझोगे कि मैंने तुम्हारे विरुद्ध अपने क्रोध
को उंड़ेला है।'"

यहेजकेल यरूशलेम के विरुद्ध बोलता है

23यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 24"मनुष्य
के पुत्र, यरूशलेम से बातें करो। उससे कहो कि वह
पवित्र नहीं है। मैं उस देश पर क्रोधित हूँ इसलिये उस
देश ने अपनी वर्षा नहीं पाई है। 25यरूशलेम में नबी बुरे
कार्यक्रम बना रहे हैं। वे उस सिंह की तरह हैं जो उस
समय गरजता है जब वह अपने पकड़े हुए जानवर को
खाता है। उन नबियों ने बहुत से जीवन नष्ट किये हैं।
उन्होंने अनेक कीमती चीजें ली हैं। उन्होंने यरूशलेम में
अनेक स्त्रियों को विधवा बनाया।

26"याजकों ने सचमुच मेरे उपदेशों को हानि पहुँचाई
है। वे मेरी पवित्र चीजों को ठीक-ठीक नहीं बरतते
अर्थात् वे यह प्रकट नहीं करते कि वे महत्वपूर्ण हैं। वे
पवित्र चीजों को अपवित्र चीजों की तरह बरतते हैं। वे
शुद्ध चीजों को अशुद्ध चीजों की तरह बरतते हैं। वे
लोगों को इनके विषय में शिक्षा नहीं देते। वे मेरे विशेष
विश्राम के दिनों का सम्मान करने से इन्कार करते हैं।
वे मुझे इस तरह लेते हैं मानों मैं महत्वपूर्ण नहीं हूँ।

27"यरूशलेम में प्रमुख उन भेड़िये के समान हैं जो
अपने पकड़े जानवर को खा रहा है। वे प्रमुख केवल
सम्पन्न बनने के लिये आक्रमण करते हैं और लोगों
को मार डालते हैं।

28"नबी, लोगों को चेतावनी नहीं देते, वे सत्य को
ढक देते हैं। वे उन कारीगरों के समान हैं जो दीवार को
ठीक-ठीक दृढ़ नहीं बनाते वे केवल छेदों पर लेप कर
देते हैं। उनका ध्यान केवल झूठ पर होता है। वे अपने
जादू का उपयोग भविष्य जानने के लिये करते हैं,
किन्तु वे केवल झूठ बोलते हैं। वे कहते हैं, 'मेरे स्वामी
यहोवा ने ये बातें कहीं। किन्तु वे केवल झूठ बोल रहे
हैं-यहोवा ने उनसे बातें नहीं की!'

29"सामान्य जनता एक दूसरे का लाभ उठाते हैं। वे
एक दूसरे को धोखा देते और चोरी करते हैं। वे गरीब
और असहाय व्यक्ति के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं। वे
विदेशियों को भी धोखा देते थे, मानों उनके विरुद्ध कोई
नियम न हो!

30"मैंने लोगों से कहा कि तुम लोग अपना जीवन
बदलो और अपने देशों की रक्षा करो। मैंने लोगों को
दीवारों को दृढ़ करने के लिये कहा। मैं चाहता था कि
वे दीवारों के छेदों पर खड़े रहें और अपने नगर की
रक्षा करें। किन्तु कोई व्यक्ति सहायता के लिये नहीं
आया! 31अत: मैं अपना क्रोध प्रकट करुँगा, मैं उन्हें
पूरी तरह नष्ट करूँगा! मैं उन्हें उन बुरे कामों के लिये
दण्डित करुँगा जिन्हें उन्होंने किये हैं। यह सब उनका
दोष है!" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

23 यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
2"मनुष्य के पुत्र, शोमरोन और यरूशलेम के
बारें में इस कहानी को सुनो। दो बहनें थीं। वे एक ही
माँ की पुत्रियाँ थीं। 3वे मिस्र में तब वेश्यायें हो गई जब
छोटी लड़कियाँ हीं थीं। मिस्र में उन्होंने प्रथम प्रेम किया
और लोगों को अपने चुचुक और अपने नवोदित स्तनों
को पकड़ने दिया। 4बड़ी लड़की ओहोला नाम की थी
और उसकी बहन का नाम ओहोलीबा था। वे मेरी हो
गयीं और उनके पुत्र-पुत्रियाँ उत्पन्न हुयीं (ओहोला
वस्तुत: शोमरोन है और ओहोलीबा वस्तुत: यरूशलेम
है।)

5"तब ओहोला मेरे प्रति पतिव्रता नहीं रह गई। वह
एक वेश्या की तरह रहने लगी। वह अपने प्रेमियों की
चाह रखने लगी। उसने अश्शूर के सैनिकों को उनकी
6नीली वर्दियों में देखा। वे सभी मन चाहे युवक घुड़सवार
थे। वे प्रमुख और अधिकारी थे 7और ओहोला ने अपने

को उन सभी लोगों को अर्पित किया। वे सभी अश्शूर
की सेना में विशिष्ट चुने सैनिक थे और उसने सभी
को चाहा! वह उनकी गन्दी देवमूर्तियों के साथ गन्दी हो
गई। 8इसके अतिरिक्त उसने मिस्र से अपने प्रेम–व्यापार
को भी बन्द नहीं किया। मिस्र ने उससे तब प्रेम किया
जब वह किशोरी थी। मिस्र पहला प्रेमी था जिसने उसके
नवजात स्तनों का स्पर्श किया। मिस्र ने उस पर अपने
झूठे प्रेम की वर्षा की। 9इसलिये मैंने उसके प्रेमियों को
उसे भोगने दिया। वह अश्शूर को चाहती थी, इसलिये
मैंने उसे उन्हें दे दिया! 10उन्होंने उसके साथ बलात्कार
किया। उन्होंने उसके बच्चों को लिया और उन्होंने
तलवार चलाई और उसे मार डाला। उन्होंने उसे दण्ड
दिया और स्त्रियाँ अब तक उसकी बातें करती हैं।

11“उसकी छोटी बहन ओहोलीबा ने इन सभी घटनाओं
को घटित होते देखा। किन्तु ओहोलीबा ने अपनी बहन
से भी अधिक पाप किये! वह ओहोला की तुलना में
अधिक धोखेबाज थी। 12यह अश्शूर के प्रमुखों और
अधिकारियों को चाहती थी। वह नीली वर्दी में घोड़े पर
सवार उन सैनिकों को चाहती थी। वे सभी चाहने योग्य
युवक थे। 13मैंने देखा कि वे दोनों स्त्रियाँ एक ही गलती
से अपना जीवन नष्ट करने जा रही थीं।

14“ओहोलीबा मेरे प्रति धोखेबाज बनी रही। बाबुल में
उसने मनुष्यों की तस्वीरों को दीवारों पर खुदे देखा। वे
कसदी लोगों की तस्वीरें उनकी लाल पोशाकों में थीं।
15उन्होंने कमर में पेटियाँ बांध रखी थीं और उनके
सिर पर लम्बी पगड़ियाँ थीं। वे सभी रथ के अधिकारियों
की तरह दिखते थे। वे सभी बाबुल की जन्मभूमि में
उत्पन्न पुरूष ज्ञात होते थे। 16ओहोलीबा ने उन्हें चाहा।
उसने उनको आमंत्रित करने के लिये दूत भेजे। 17इसलिये
वे बाबुल के लोग उसकी प्रेम–शैया पर उसके साथ
शारीरिक सम्बंध करने आये। उन्होंने उसका उपयोग
किया और उसे इतना गन्दा कर दिया कि वह उनसे
घृणा करने लगी!

18“ओहोलीबा ने सबको दिखा दिया कि वह धोखेबाज
है। उसने इतने अधिक व्यक्तियों को अपने नंगे शरीर
का उपभोग करने दिया कि मुझे उससे वैसी ही घृणा हो
गई जैसी उसकी बहन के प्रति हो गई थी। 19ओहोलीबा,
बार–बार मुझसे धोखेबाजी करती रही और तब उसने
अपने उस प्रेम–व्यापार को याद किया जो उसने
किशोरावस्था में मिस्र में किया था। 20उसने अपने प्रेमी
के गधे जैसे लिंग और घोड़े के सदृश वीर्य–प्रवाह को
याद किया।

21“ओहोलीबा, तुमने अपने उन दिनों को याद किया
जब तुम युवती थीं, जब तुम्हारे प्रेमी तुम्हारे चुचुक को
छूते थे और तुम्हारे नवजात स्तनों को पकड़ते थे।
22अत: ओहोलीबा, मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:
तुम अपने प्रेमियों से घृणा करने लगीं। किन्तु मैं तुम्हारे
प्रेमियों को यहाँ लाऊँगा। वे तुम्हें घेर लेंगे। 23मैं उन
सभी लोगों को बाबुल से, विशेषकर कसदी लोगों को,
लाऊँगा। मैं पकोद, शो और कोआ से लोगों को लाऊँगा
और मैं उन सभी लोगों को अश्शूर से लाऊँगा। इस
प्रकार मैं सभी प्रमुखों और अधिकारियों को लाऊँगा।
वे सभी चाहने योग्य, रथपति विशेष योग्यता के लिये
चुने घुड़सवार थे। 24उन लोगों की भीड़ तुम्हारे पास
आएगी। वे अपने घोड़ों पर सवार और अपने रथों पर
आएंगे। लोग बड़ी संख्या में होंगे। उनके पास उनके
भाले, उनकी ढालें और उनके सिर के सुरक्षा कवच
होंगे। वे तुम्हारे चारों ओर इकट्ठे होंगे। मैं उन्हें बताऊँगा
कि तुमने मेरे साथ क्या किया और वे अपनी तरह से
तुम्हें दण्ड देंगे। 25मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि मैं कितना
ईर्ष्यालु हूँ। वे बहुत क्रोधित होंगे और तुम्हें चोट पहुँचायेंगे।
वे तुम्हारी नाक और तुम्हारे कान काट लेंगे। वे तलवार
चलाएंगे और तुम्हें मार डालेंगे। तब वे तुम्हारे बच्चों को
ले जाएंगे और तुम्हारा जो कुछ बचा होगा उसे जला देंगे।
26वे तुम्हारे अच्छे वस्त्र–आभूषण ले लेंगे 27और मिस्र
के साथ हुए तुम्हारे प्रेम–व्यापार के सपने को मैं रोक
दूँगा। तुम उनकी प्रतीक्षा कभी नहीं करोगी। तुम फिर
कभी मिस्र को याद नहीं करोगी!”

28मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, “मैं तुमको उन
लोगों को दे रहा हूँ, जिससे तुम घृणा करती हो। मैं
तुमको उन लोगों को दे रहा हूँ जिनसे तुम घृणा करने
लगी थी 29और वे दिखायेंगे कि वे तुमसे कितनी घृणा
करते हैं! वे तुम्हारी हर एक चीज ले लेंगे जो तुमने
कमाई है। वे तुम्हें रिक्त और नंगा छोड़ देंगे! लोग तुम्हारे
पापों को स्पष्ट देखेंगे। वे समझेंगे कि तुमने एक वेश्या
की तरह व्यवहार किया और बुरे सपने देखे। 30तुमने
वे बुरे काम तब किये जब तुमने मुझे उन अन्य राष्ट्रों
का पीछा करने के लिये छोड़ा था। तुमने वे बुरे काम
तब किये जब तुमने उनकी गन्दी देवमूर्तियों की पूजा
करनी आरम्भ की। 31तुमने अपनी बहन का अनुसरण
किया और उसी की तरह रहीं। तुमने अपने आप विष
का प्याला लिया और उसे अपने हाथों में उठाये रखा।
तुमने अपना दण्ड स्वयं कमाया।” 32मेरे स्वामी यहोवा
ने यह कहा “तुम अपनी बहन के विष के प्याले को
पीओगी। यह विष का प्याला लम्बा–चौड़ा है। उस प्याले
में बहुत विष (दण्ड) आता है। लोग तुम पर हँसेंगे और
व्यंग्य करेंगे।

33तुम मदमत्त व्यक्ति की तरह लड़खड़ाओगी। तुम
बहुत अस्थिर हो जाओगी। वह प्याला विनाश और
विध्वंस का है। यह उसी प्याले (दण्ड) की तरह है जिसे
तुम्हारी बहन ने पीया।

34तुम उसी प्याले में विष पीओगी। तुम उसकी अन्तिम
बूंद तक उसे पीओगी। तुम गिलास को फेंकोगी और
उसके टुकड़े कर डालोगी और तुम पीड़ा से अपनी

छाती विदीर्ण करोगी। यह होगा क्योंकि मैं यहोवा और
स्वामी हूँ और मैंने वे बातें कहीं।
35“इस प्रकार, मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं,
‘यरूशलेम, तुम मुझे भूल गए। तुमने मुझे दूर फेंका
और मुझे पीछे छोड़ दिया। इसलिये तुम्हें मुझे छोड़ने
और वेश्या की तरह रहने का दण्ड भोगना चाहिए।
तुम्हें अपने दुष्ट सपनों के लिये कष्ट अवश्य पाना
चाहिए।’”

ओहोला और ओहोलीबा के विरुद्ध निर्णय

36मेरा स्वामी यहोवा कहता है, “मनुष्य के पुत्र, क्या
तुम ओहोला और ओहोलीबा का न्याय करोगे? तब
उनको उन भंयकर बातों को बताओ जो उन्होंने किये।
37उन्होंने व्यभिचार का पाप किया है। वे हत्या करने
के अपराधी हैं। उन्होंने वेश्या की तरह काम किया,
उन्होंने अपनी गन्दी देवमूर्तियों के साथ रहने के लिये
मुझको छोड़ा। मेरे बच्चे उनके पास थे, किन्तु उन्होंने
उन्हें आग से गुजरने के लिये विवश किया। उन्होंने
अपनी गन्दी देवमूर्तियों को भोजन देने के लिये यह
किया। 38उन्होंने मेरे विश्राम के दिनों और पवित्र स्थानों
को ऐसे लिया मानों वे महत्वपूर्ण न हों। 39उन्होंने अपनी
देवमूर्तियों के लिये अपने बच्चों को मार डाला और तब
वे मेरे पवित्र स्थान पर गए और उसे भी गन्दा बनाया।
उन्होंने यह मेरे मन्दिर के भीतर किया!
40“उन्होंने बहुत दूर के स्थानों से मनुष्यों को बुलाया
है। इन व्यक्तियों को तुमने एक दूत भेजा और वे लोग
तुम्हें देखने आए। तुम उनके लिये नहाई, अपनी आँखों
को सजाया और अपने आभूषणों को पहना। 41तुम
सुन्दर बिस्तर पर बैठी, जिसके सामने मेज रखा था।
तुमने मेरी सुगन्ध और मेरे तेल को इस मेज पर रखा।
42“यरूशलेम में शोर ऐसा सुनाई पड़ता था मानों
दावत उड़ाने वाले लोगों का हो। दावत में बहुत लोग
आये। लोग जब मरुभूमि से आते थे तो पहले से पी रहे
होते थे। वे स्त्रियों को बाजूबन्द और सुन्दर मुकुट देते
थे। 43तब मैंने एक स्त्री से बातें कीं, जो व्यभिचार से
शिथिल हो गई थी। मैंने उससे कहा, ‘क्या वे उसके
साथ व्यभिचार करते रह सकते हैं, और वह उनके
साथ करती रह सकती है?’ 44किन्तु वे उसके पास वैसे
ही जाते रहे जैसे वे किसी वेश्या के पास जा रहे हों। हाँ,
वे उन दुष्ट स्त्रियाँ ओहोला और ओहोलीबा के पास
बार-बार गए।
45“किन्तु अच्छे लोग उनका न्याय अपराधी के रूप
में करेंगे। वे उन स्त्रियों का न्याय व्यभिचार का पाप
करने वालियों और हत्यारिनों के रूप में करेंगे। क्यों?
क्योंकि ओहोला और ओहोलीबा ने व्यभिचार का पाप
किया है और उस रक्त से उनके हाथ अब भी रंगे हैं
जिन्हें उन्होंने मार डाला था।”
46मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कही, “लोगों को एक
साथ इकट्ठा करो। तब उन लोगों को ओहोला और
ओहोलीबा को दण्ड देने दो। लोगों का यह समूह उन
दोनों स्त्रियों को दण्डित करेगा तथा इनका मजाक
उड़ाएगा। 47तब वह समूह उन्हें पत्थर मारेगा और उन्हें
मार डालेगा। तब वह समूह अपनी तलवारों से स्त्रियों के
टुकड़े करेगा। वे स्त्रियों के बच्चों को मार डालेंगे और
उनके घर जला डालेंगे। 48इस प्रकार मैं इस देश की
लज्जा को धोऊँगा और सभी स्त्रियों को चेतावनी दी
जाएगी कि वे वह लज्जाजनक काम न करें जो तुमने
किया है। 49वे तुम्हें उन दुष्ट कामों के लिये दण्डित
करेंगे जो तुमने किया और तुम्हें अपनी गन्दी देवमूर्तियों
की पूजा के लिये दण्ड मिलेगा। तब तुम जानोगे कि मैं
यहोवा और स्वामी हूँ।”

पात्र और माँस

24 मेरे स्वामी यहोवा का वचन मुझे मिला। यह
देश-निकाले के नवें वर्ष के दसवें महीने का
दसवाँ दिन था। उसने कहा, 2“मनुष्य के पुत्र, आज की
तिथि और इस टिप्पणी को लिखो: ‘आज बाबुल के
राजा की सेना ने यरूशलेम को घेरा।’ 3यह कहानी उस
परिवार से कहो जो (इस्राएल) आज्ञा मानने से इन्कार
करे। उनसे ये बातें कहो। ‘मेरा स्वामी यहोवा यह कहता
है: “‘पात्र को आग पर रखो, पात्र को रखो और उस में
जल डालो।
4उसमें माँस के टुकड़े डालो, हर अच्छे टुकड़े डालो,
जाँघे और कंधे। पात्र को सर्वोत्तम हड्डियों से भरो।
5झुण्ड के सर्वोत्तम जानवर का उपयोग करो, पात्र के
नीचे ईंधन का ढेर लगाओ, और माँस के टुकड़ों को
पकाओ। शोरवे को तब तक पकाओ जब तक हड्डियाँ
भी न पक जाय!
6इस प्रकार मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:
“‘यह यरूशलेम के लिये बुरा होगा। यह हत्यारों से
भरे नगर के लिये बुरा होगा। यरूशलेम उस पात्र की
तरह है जिस पर जंख के दाग हों, और वे दाग दूर न
किये जा सकें! वह पात्र शुद्ध नहीं है, इसलिये माँस का
हर एक टुकड़ा पात्र से बाहर निकालो! उस माँस को
मत खाओ! याजकों को उस बेकार माँस में से कोई
टुकड़ा मत चुनने दो!
7यरूशलेम एक जंख लगे पात्र की तरह है, क्यों?
क्योंकि हत्याओं का रक्त वहाँ अब तक है! उसने रक्त
को खुली चट्टानों पर डाला है! उसने रक्त को भूमि पर
नहीं डाला और इसे मिट्टी से नहीं ढका।
8मैंने उसका रक्त को खुली चट्टान पर डाला। अत:
यह ढका नहीं जाएगा। मैंने यह किया, जिससे लोग
क्रोधित हो, और उसे निरपराध लोगों की हत्या का
दण्ड दें।’”

9अत: मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: हत्यारों से
भरे इस नगर के लिये यह बुरा होगा! मैं आग के लिए
बहुत सी लकड़ी का ढेर बनाऊँगा
10पात्र के नीचे बहुत सा ईंधन डालो। आग जलाओ।
अच्छी प्रकार माँस को पकाओ! मसाले मिलाओ और
हड्डियों को जल जाने दो।
11तब पात्र को अंगारों पर खाली छोड़ दो। इसे इतना
तप्त होने दो कि इसके दाग चमकने लगे। वे दाग पिघल
जाएंगे। जंख नष्ट होगा।
12यरूशलेम अपने दागों को धोने का कठोर प्रयत्न
कर सकती है। किन्तु वह जंख दूर नहीं होगा! केवल
आग (दण्ड) उस जंख को दूर करेगी!
13तुमने मेरे विरुद्ध पाप किया और पाप से कंलकित
हुई। मैंने तुम्हें नहलाना चाहा और तुम्हें स्वच्छ करना
चाहा! किन्तु दाग छूटे नहीं। मैं तुमको फिर नहलाना
नहीं चाहूँगा। जब तक मेरा तप्त क्रोध तुम्हारे प्रति
समाप्त नहीं होता।
14"मैं यहोवा हूँ। मैंने कहा, तुम्हें दण्ड मिलेगा, और
मैं इसे दिलाऊँगा। मैं दण्ड को रोकूँगा नहीं। मैं तुम्हारे
लिये दु:ख का अनुभव नहीं करूँगा। मैं तुम्हें उन बुरे
पापों के लिये दण्ड दूँगा जो तुमने किये।" मेरे स्वामी
यहोवा ने यह कहा।

यहेजकेल की पत्नी की मृत्यु

15तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
16"मनुष्य के पुत्र, तुम अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करते
हो किन्तु मैं उसे तुमसे दूर कर रहा हूँ। तुम्हारी पत्नी
अचानक मरेगी। किन्तु तुम्हें अपना शोक प्रकट नहीं
करना चाहिए। तुम्हें जोर से रोना नहीं चाहिए। तुम
रोओगे और तुम्हारे आँसू गिरेंगे। 17किन्तु तुम्हें अपना
शोक–रूदन बहुत मन्द रखना चाहिए। अपनी मृत पत्नी
के लिये जोर से न रोओ। तुम्हें सामान्य नित्य के वस्त्र
पहनने चाहिए। अपनी पगड़ी और अपने जूते पहनो।
अपने शोक को प्रकट करने के लिये अपनी मूँछे न
ढको और वह भोजन न करो जो प्राय: किसी के मरने
पर लोग करते हैं।"
18अगली सुबह मैंने लोगों को बताया कि परमेश्वर ने
क्या कहा है। उसी शाम मेरी पत्नी मरी। अगली प्रात:
मैंने वही किया जो परमेश्वर ने आदेश दिया था। 19तब
लोगों ने मुझसे कहा, "तुम यह काम क्यों कर रहे हो?
इसका मतलब क्या है?"
20मैंने उनसे कहा, "यहोवा का वचन मुझे मिला।
उसने मुझसे, 21इस्राएल के परिवार से कहने को कहा।
मेरे स्वामी यहोवा ने कहा, 'ध्यान दो, मैं अपने पवित्र
स्थान को नष्ट करुँगा। तुम लोगों को उस पर गर्व है
और तुम लोग उसकी प्रशंसा के गीत गाते हो। तुम्हें उस
स्थान को देखने का प्रेम है। तुम सचमुच उस स्थान से
प्रेम करते हो। किन्तु मैं उस स्थान को नष्ट करुँगा
और तुम्हारे पीछे छूटे हुए तुम्हारे बच्चे युद्ध में मारे
जाएंगे। 22किन्तु तुम वही करोगे जो मैंने अपनी मृत
पत्नी के बारे में किया है। तुम अपना शोक प्रकट
करने के लिये अपनी मूँछे नहीं ढकोगे। तुम वह भोजन
नहीं करोगे जो लोग प्राय: किसी के मरने पर खाते हैं।
23तुम अपनी पगड़ियाँ और अपने जूते पहनोगे। तुम
अपना शोक नहीं प्रकट करोगे। तुम रोओगे नहीं।
किन्तु तुम अपने पाप के कारण बरबाद होते रहोगे। तुम
चुपचाप अपनी आहें एक दूसरे के सामने भरोगे। 24अत:
यहेजकेल तुम्हारे लिये एक उदाहरण है। तुम वही सब
करोगे जो इसने किया। दण्ड का यह समय आयेगा और
तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ।"
25-26"मनुष्य के पुत्र, मैं उस सुरक्षित स्थान यरूशलेम
को लोगों से ले लूँगा। वह सुन्दर स्थान उनको आनन्दित
करता है। उन्हें उस स्थान को देखने का प्रेम है। वे
सचमुच उस स्थान से प्रेम करते हैं। किन्तु उस समय मैं
नगर और उनके बच्चों को उन लोगों से ले लूँगा। बचने
वालों में से एक यरूशलेम के बारे में बुरा सन्देश लेकर
तुम्हारे पास आएगा। 27उस समय तुम उस व्यक्ति से बातें
कर सकोगे। तुम और अधिक चुप नहीं रह सकोगे।
इस प्रकार तुम उनके लिये उदाहरण बनोगे। तब वे
जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

अम्मोन के विरुद्ध भविष्यवाणी

25 यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
2"मनुष्य के पुत्र, अम्मोन के लोगों पर ध्यान
दो और मेरे लिये उनके विरुद्ध कुछ कहो। 3अम्मोन
के लोगों से कहो: 'मेरे स्वामी यहोवा का कथन सुनो!
मेरा स्वामी यहोवा कहता है: तुम तब प्रसन्न थे जब मेरा
पवित्र स्थान नष्ट हुआ था। तुम लोग तब इस्राएल देश
के विरुद्ध थे जब यह दूषित हुआ था। तुम यहूदा के
परिवार के विरुद्ध थे जब वे लोग बन्दी बनाकर ले जाए
गए। 4इसलिये मैं तुम्हें, पूर्व के लोगों को दूँगा। वे तुम्हारी
भूमि लेंगे। उनकी सेनायें तुम्हारे देश में अपना डेरा
डालेंगी। वे तुम्हारे बीच रहेंगे। वे तुम्हारे फल खाएंगे
और तुम्हारा दूध पीएंगे।
5"'मैं रब्बा नगर को ऊँटों की चरागाह और अम्मोन
देश को भेड़ों का बाड़ा बना दूँगा। तब तुम समझोगे कि
मैं यहोवा हूँ। 6यहोवा यह कहता है: तुम प्रसन्न थे कि
यरूशलेम नष्ट हुआ। तुमने तालियाँ बजाई और पैरों पर
थिरके। तुमने इस्राएल प्रदेश को अपमानित करने वाले
मजाक किये। 7अत: मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। तुम वैसी कीमती
चीजों की तरह होगे जिन्हें सैनिक युद्ध में पाते हैं। तुम
अपना उत्तराधिकार खो दोगे। तुम दूर देशों में मरोगे। मैं
तुम्हारे देश को नष्ट करुँगा! तब तुम जानोगे कि मै
यहोवा हूँ।'"

मोआब और सेईर के विरुद्ध भविष्यवाणी

8मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: "मोआब और
सेईर (एदोम) कहते हैं, 'यहूदा का परिवार ठीक किसी
अन्य राष्ट्र की तरह है। 9मैं मोआब के कन्धे पर प्रहार
करूँगा, मैं इसके उन नगरों को लूँगा जो इसकी सीमा
पर प्रदेश के गौरव, बेत्यशीमोत, बालमोन और किर्यतैम
हैं। 10तब मैं इन नगरों को पूर्व के लोगों को दूँगा। वे
तुम्हारा प्रदेश लेंगे और मैं पूर्व के लोगों को अम्मोन को
नष्ट करने दूँगा। तब हर एक व्यक्ति भूल जाएगा कि
अम्मोन के लोग एक राष्ट्र थे। 11इस प्रकार मैं मोआब
को दण्ड दूँगा। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।'"

एदोम के विरुद्ध भविष्यवाणी

12मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "एदोम के लोग
यहूदा के परिवार के विरुद्ध उठ खड़े हुए और उससे
बदला लेना चाहा। एदोम के लोग दोषी हैं।" 13इसलिये
मेरा स्वामी यहोवा कहता है: "मैं एदोम को दण्ड दूँगा।
मैं एदोम के लोगों और जानवरों को नष्ट करूँगा। मैं
एदोम के पूरे देश को तेमान से ददान तक नष्ट करूँगा।
एदोमी युद्ध में मारे जाएंगे। 14मैं अपने लोगों, इस्राएल का
उपयोग करूँगा और एदोम के विरुद्ध भी होऊँगा। इस
प्रकार इस्राएल के लोग मेरे क्रोध को एदोम के विरुद्ध
प्रकट करेंगे। तब एदोम के लोग समझेंगे कि मैंने उनको
दण्ड दिया।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

पलिश्तियों के विरुद्ध भविष्यवाणी

15मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा, "पलिश्तियों ने भी
बदला लेने का प्रयत्न किया। वे बहुत क्रूर थे। उन्होंने
अपने क्रोध को अपने भीतर अत्याधिक समय तक
जलते रखा।" 16इसलिये मेरे स्वामी यहोवा ने कहा, "मैं
पलिश्तियों को दण्ड दूँगा। हाँ, मैं करेत से उन लोगों को
नष्ट करुँगा। मैं समुद्र-तट पर रहने वाले उन लोगों को
पूरी तरह नष्ट करुँगा। 17मैं उन लोगों को दण्ड दूँगा, मैं
उन से बदला लूँगा। मैं अपने क्रोध द्वारा उन्हें एक
सबक सिखाऊँगा तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ!"

सोर के बारे में दुःखद समाचार

26 देश-निकाले के ग्यारहवें वर्ष में, महीने के
पहले दिन, यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने
कहा, 2"मनुष्य के पुत्र, सोर ने यरूशलेम के विरुद्ध
बुरी बातें कहीं: आहा! लोगों की रक्षा करने वाला
नगर-द्वार नष्ट हो गया है! नगर-द्वार मेरे लिये खुला
है। नगर (यरूशलेम) नष्ट हो गया है, अत: मैं इससे
बहुत सी बहुमूल्य चीजें ले सकता हूँ!"
3इसलिये मेरा स्वामी यहोवा कहता है: "सोर, मैं
तुम्हारे विरुद्ध हूँ! मैं तुम्हारे विरुद्ध लड़ने के लिये कई
राष्ट्रों को लाऊँगा। वे समुद्र तट की लहरों की तरह
बार-बार आएंगे।"
4परमेश्वर ने कहा, "शत्रु के वे सैनिक सोर की
दीवारों को नष्ट करेंगे और उनके स्तम्भों को गिरा
देंगे। मैं भी उसकी भूमि से ऊपर की मिट्टी को खुरच
दूँगा। मैं सोर को चट्टान मात्र बना डालूँगा। 5सोर समुद्र
के किनारे मछलियों के जालों को फैलाने का स्थान
मात्र रह जाएगा। मैंने यह कह दिया है!" मेरा स्वामी
यहोवा कहता है, "सोर उन बहुमूल्य वस्तुओं की तरह
होगा जिन्हें सैनिक युद्ध में पाते हैं। 6मूल प्रदेश में उसकी
पुत्रियाँ (छोटे नगर) युद्ध में मारी जाएंगी। तब वे जानेंगे
कि मैं यहोवा हूँ।"

नबूकदनेस्सर सोर पर आक्रमण करेगा

7मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "मैं सोर के विरुद्ध
उत्तर से एक शत्रु लाऊँगा। बाबुल का महान राजा
नबूकदनेस्सर शत्रु है! वह एक विशाल सेना लाएगा।
उसमें घोड़े, रथ, घुड़सवार सैनिक, और अत्याधिक
संख्या में अन्य सैनिक होंगे। वे सैनिक विभिन्न राष्ट्रों
से होंगे। 8नबूकदनेस्सर मूल-प्रदेश में तुम्हारी पुत्रियों
(छोटे नगर) को मार डालेगा। वह तुम्हारे नगरों पर
आक्रमण करने के लिये मीनारें बनाएगा! वह तुम्हारे
नगर के चारों ओर कच्ची सड़क बनाएगा! वह एक
कच्ची सड़क दीवार तक पहुँचाने वाली बनाएगा। 9वह
तुम्हारी दीवारों को तोड़ने के लिये लट्ठे लाएगा। वह
कुदालियों का उपयोग करेगा और तुम्हारी मीनारों को
तोड़ गिराएगा। 10उसके घोड़े इतनी बड़ी संख्या में होंगे
कि उनकी टापों से उठी धूलि तुम्हें ढक लेगी। तुम्हारी
दीवारें घुड़सवार सैनिकों, बन्द गाड़ियों और रथों की
आवाज से काँप उठेगी। जब बाबुल का राजा नगर-द्वार
से नगर में प्रवेश करेगा। हाँ, वे तुम्हारे नगर में आएंगे
क्योंकि इसकी दीवारें गिराई जाएंगी।
11बाबुल का राजा तुम्हारे नगर से घोड़े पर सवार
होकर निकलेगा। उसके घोड़ों की टाप तुम्हारी सड़कों
को कुचलती हुई आएगी। वह तुम्हारे लोगों को तलवार
से मार डालेगा। तुम्हारे नगर की दृढ़ स्तम्भ-पंक्तियाँ
धराशायी होंगी। 12नबूकदनेस्सर के सैनिक तुम्हारी
सम्पत्ति ले जाएंगे। वे उन चीजों को ले जाएंगे जिन्हें तुम
बेचना चाहते हो। वे तुम्हारी दीवारों को ध्वस्त करेंगे
और तुम्हारे सुन्दर भवनों को नष्ट करेंगें। वे तुम्हारे
पत्थरों और लकड़ियों के घरों को कूड़े की तरह समुद्र
में फेंक देंगे। 13इस प्रकार मैं तुम्हारे आनन्द गीतों के
स्वर को बन्द कर दूँगा। लोग तुम्हारी वीणा को भविष्य
में नहीं सुनेंगे। 14मैं तुमको नंगी चट्टान मात्र कर दूँगा।
तुम समुद्र के किनारे मछलियों के जालों को फैलाने
के स्थान रह जाओगे। तुम्हारा निर्माण फिर नहीं होगा।
क्यों? क्योंकि मैं, यहोवा ने यह कहा है!" मेरे स्वामी
यहोवा ने वे बातें कहीं।

अन्य राष्ट्र सोर के लिये रोयेंगे

15मेरा स्वामी यहोवा सोर से यह कहता है: “भूमध्य
सागर के तट से लगे देश तुम्हारे पतन की ध्वनि से
काँप उठेंगे। यह तब होगा जब तुम्हारे लोग चोट खाएंगे
और मारे जाएंगे। 16तब समुद्र तट के देशों के सभी
प्रमुख अपने सिंहासनों से उतरेंगे और अपना दुःख
प्रकट करेंगे। वे अपनी विशेष पोशाक उतारेंगे। वे
अपने सुन्दर वस्त्रों को उतारेंगे। तब वे अपने काँपने के
वस्त्र (भय) पहनेंगे। वे भूमि पर बैठेंगे और भय से
काँपेंगे। वे इस पर शोकग्रस्त होंगे कि तुम इतने शीघ्र
कैसे नष्ट हो गए। 17वे तुम्हारे विषय में यह करुण गीत
गायेंगे:

‘हे सोर, तुम प्रसिद्ध नगर थे समुद्र पार से लोग तुम
पर बसने आए। तुम प्रसिद्ध थे, किन्तु अब तुम कुछ
नहीं हो। तुम सागर पर शक्तिशाली थे, और वैसे ही तुम
में निवास करने वाले व्यक्ति थे! तुमने विशाल भू–पर
रहने वाले सभी लोगों को भयभीत किया।

18अब जिस दिन तुम्हारा पतन होता है, समुद्र तट से
लगे देश भय से कंपित होंगे। तुमने समुद्र तट के सहारे
कई उपनिवेश बनाए, अब वे लोग भयभीत होंगे, जब
तुम नहीं रहोगे!’”

19मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, “सोर, मैं तुम्हें
नष्ट करूँगा और तुम एक प्राचीन खाली नगर हो
जाओगे। वहाँ कोई नहीं रहेगा। मैं समुद्र को तुम्हारे
ऊपर बहाऊँगा। विशाल समुद्र तुम्हें ढक लेगा। 20मैं
तुम्हें नीचे उस गहरे अधोगर्त में भेजूँगा, जिस स्थान पर
मरे हुए लोग हैं। तुम उन लोगों से मिलोगे जो बहुत पहले
मर चुके। मैं तुम्हें उन सभी प्राचीन और खाली नगरों
की तरह पाताल लोक में भेजूँगा। तुम उन सभी अन्य
लोगों के साथ होगे जो कब्र में जाते हैं। तुम्हारे साथ तब
कोई नहीं रहेगा। तुम फिर कभी जीवितों के प्रदेश में
नहीं रहोगे! 21अन्य लोग उससे डरेंगे जो तुम्हारे साथ
हुआ। तुम समाप्त हो जाओगे! लोग तुम्हारी खोज करेंगे,
किन्तु तुमको फिर कभी पाएंगे नहीं!” मेरा स्वामी
यहोवा यही कहता है।

सोर समुद्र पर व्यापार का महान केन्द्र

27 यहोवा का वचन मुझे फिर मिला। उसने कहा,
2“मनुष्य के पुत्र, सोर के बारे में यह करुण–गीत
गाओ। 3सोर के बारे में यह कहो: ‘सोर, तुम समुद्र के
द्वार हो। तुम अनेक राष्ट्रों के लिये व्यापारी हो, तुम
समुद्र तट के सहारे के अनेक देशों की यात्रा करते हो।
मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है। सोर तुम सोचते हो
कि तुम इतने अधिक सुन्दर हो! तुम सोचते हो कि तुम
पूर्णत: सुन्दर हो!

4भूमध्य सागर तुम्हारे नगर के चारों ओर सीमा
बनाता है। तुम्हारे निर्माताओं ने तुम्हें पूर्णत: सुन्दर बनाया।
तुम उन जहाजों की तरह हो जो तुम्हारे यहाँ से यात्रा पर
जाती हैं।

5तुम्हारे निर्माताओं ने, सनीर पर्वत से सनौवर के
पेड़ों का उपयोग, तुम्हारे सभी तख्तों को बनाने के लिये
किया। उन्होंने लबानोन से देवदार वन का उपयोग,
तुम्हारे मस्तूल को बनाने के लिये किया। 6उन्होंने बाशान
से बांज वृक्ष का उपयोग, तुम्हारे पतवारों को बनाने के
लिये किया। उन्होंने सनौवर से चीड़ वृक्ष का उपयोग,
तुम्हारे जहाजी फर्श के कमरे के लिये किया, और
उन्होंने इस निवास को हाथी–दाँत से सजाया।

7तुम्हारे पाल के लिये उन्होंने मिस्र में बने रंगीन सूती
वस्त्र का उपयोग किया। पाल तुम्हारा झंड़ा था। कमरे
के लिये तुम्हारे पर्दे नीले और बैंगनी थे। वे सनौवर के
समुद्र तट से आते थे।

8सीदोन और अर्वद के निवासियों ने तुम्हारे लिये
तुम्हारी नावों को खेया। सोर तुम्हारे बुद्धिमान व्यक्ति
तुम्हारे जहाजों के चालक थे।

9गबल के अग्रज प्रमुख और बुद्धिमान व्यक्ति जहाज
के तख्तों के बीच कल्किन लगाने में सहायता के लिये
जहाज पर थे। समुद्र के सारे जहाज और उनके चालक
तुम्हारे साथ व्यापार और वाणिज्य करने आते थे।’

10“फारस, लूद और पूत के लोग तुम्हारी सेना में थे।
वे तुम्हारे युद्ध के सैनिक थे। उन्होंने अपनी ढालें और
सिर के कवच तुम्हारी दीवारों पर लटकाये थे। उन्होंने
तुम्हारे नगर के लिये सम्मान और यश कमाया। 11अर्वद
के व्यक्ति तुम्हारे नगर के चारों ओर की दीवार पर
रक्षक के रूप में खड़े थे। गम्मत के व्यक्ति तुम्हारी
मीनारों में थे। उन्होंने तुम्हारे नगर के चारों ओर की
दीवारों पर अपनी ढाले टाँगी। उन्होंने तुम्हारी सुन्दरता
को पूर्ण किया।

12“तर्शीश तुम्हारे सर्वोत्तम ग्राहकों में से एक था। वे
तुम्हारी सभी अद्भुत विक्रय वस्तुओं के बदले चाँदी,
लोहा, टीन और सीसा देते थे। 13यावान, तूबल, मेशेक
और काले सागर के चारों ओर के क्षेत्र के लोग तुम्हारे
साथ व्यापार करते थे। वे तुम्हारी विक्रय चीजों के
बदले गुलाम और काँसा देते थे। 14तोगर्मा राष्ट्र के लोग
घोड़े, युद्ध अश्व और खच्चर उन चीजों के बदले में देते
थे जिन्हें तुम बेचते थे। 15ददान के लोग तुम्हारे साथ
व्यापार करते थे। तुम अपनी चीजों को अनेक स्थानों
पर बेचते थे। लोग तुमको भुगतान करने के लिये हाथी
दाँत और आबनूस की लकड़ी लाते थे। 16एदोम तुम्हारे
साथ व्यापार करता था क्योंकि तुम्हारे पास बहुत सी
अच्छी चीजें थीं। एदोम के लोग नीलमणि, बैंगनी वस्त्र,
बारीक कढ़ाई के काम, बारीक सूती, मूंगा और लाल
तुम्हारी विक्रय चीजों के बदले देते थे।

17“यहूदा और इस्राएल के लोगों ने तुम्हारे साथ व्यापार
किया। उन्होंने तुम्हारी विक्रय चीजों के लिये भुगतान में

गेहूँ, जैतून, अगाती, अंजीर, शहद, तेल और मलहम
दिये। 18दमिश्क एक अच्छा ग्राहक था। वे तुम्हारे पास
की अद्‌भुत चीजों के लिये व्यापार करते थे। वे हेलबोन
से दाखमधु का व्यापार करते थे और उन चीजों के
लिये सफेद ऊन लेते थे। 19जो चीजें तुम बेचते थे उनसे
दमिश्क उजला से दाखमधु मंगाने का व्यापार करता
था। वे उन चीजों के भुगतान में तैयार लोहा, कस्सिय
और गन्ना देते थे। 20ददान अच्छा धन्धा प्रदान करता
था। वे तुम्हारे साथ काठी के वस्त्र और सवारी के
घोड़ों का व्यापार करते थे। 21अरब और केदार के
सभी प्रमुख मेमने, भेड़ और बकरियाँ तुम्हारी विक्रय
की गई वस्तुओं के लिये देते थे। 22शबा और रामा के
व्यापारी तुम्हारे साथ व्यापार करते थे। वे सर्वोत्तम मसाले,
हर प्रकार के रत्न और सोना तुम्हारी विक्रय की गई
चीजों के लिये देते थे। 23हारान, कन्ने, एदेन तथा शबा,
अश्शूर, कलमद के व्यापारी तुम्हारे साथ व्यापार करते
थे। 24उन्होंने सर्वोत्तम कपड़ों, बारीक कढ़े हुए और
नीले वस्त्र, रंग-बिरंगे कालीन, अच्छी बटी रस्सियाँ
और देवदार की लकड़ी से बने सामान भुगतान में दिये।
ये वे चीजें थीं जिनसे उन्होंने तुम्हारे साथ व्यापार किया।
25तर्शीश के जहाज उन चीजों को ले जाते थे जिन्हें तुम
बेचते थे।

'सोर, तुम उन व्यापारी बेड़ों में से एक की तरह हो,
तुम समुद्र पर बहुमूल्य वस्तुओं से लदे हुये हो।

26वे व्यक्ति जो तुम्हारी नावों को खेते थे। तुम्हें विशाल
और शक्तिशाली समुद्रों के पार ले गए। किन्तु शक्तिशाली
पुरवाई तुम्हारे जहाजों को समुद्र में नष्ट करेगी

27और तुम्हारी सारी सम्पत्ति समुद्र में डूब जाएगी।
तुम्हारी सम्पत्ति, तुम्हारा व्यापार, और विक्रय चीजें,
तुम्हारे मल्लाह और तुम्हारे चालक, तुम्हारे व्यक्ति जो,
तुम्हारे जहाज पर तख्तों के बीच में कल्किन लगाते हैं,
तुम्हारे मल्लाह और तुम्हारे नगर के सभी सैनिक और
तुम्हारे नाविक सारे समुद्र में डूब जाएंगे। यह उसी दिन
होगा जिस दिन तुम नष्ट होगे!

28तुमने अपने व्यापारियों को बहुत दूर के स्थानों में
भेजा। वे स्थान भय से काँप उठेंगे, जब वे तुम्हारे
चालकों का चिल्लाना सुनेंगे!

29तुम्हारे सारे नाविक जहाज से कूदेंगे। मल्लाह और
चालक जहाज से कूदेंगे, और तट पर तैर आएंगे।

30वे तुम्हारे बारे में बहुत दुःखी होंगे। वे रो पड़ेंगे। वे
अपने सिरों पर धूली डालेंगे। वे राख में लोटेंगे।

31वे तुम्हारे लिए सिर पर उस्तरा फिरायेंगे। वे
शोक-वस्त्र पहनेंगे। वे तुम्हारे लिये रोये-चिल्लायेंगे। वे
किसी ऐसे रोते हुए के समान होंगे, जो किसी के मरने
पर रोता है।

32"वे अपने फूट-फूट कर रोने के समय तुम्हारे
बारे में यह शोक गीत गायेंगे और रोयेंगे: 'कोई सोर की
तरह नहीं है! सोर नष्ट कर दिया गया, समुद्र के बीच
में!

33तुम्हारे व्यापारी समुद्रों के पार गए। तुमने अनेक
लोगों को, अपनी विशाल सम्पत्ति और विक्रय वस्तुओं
से सन्तुष्ट किया। तुमने भूमि के राजाओं को सम्पन्न
बनाया!

34किन्तु अब तुम समुद्रों द्वारा टूटे हो और गहरे जल
द्वारा भी। सभी चीजें जो तुम बेचते हो, और तुम्हारे सभी
व्यक्ति नष्ट हो चुके हैं!

35समुद्र तट के निवासी सभी व्यक्ति तुम्हारे लिये
शोकग्रस्त हैं। उनके राजा भयानक रूप से डरे हैं।
उनके चेहरे से शोक झांकता है।

36अन्य राष्ट्रों के व्यापारी तुम पर छींटा कसते हैं। जो
घटनायें तुम्हारे साथ घटीं, लोगों को भयभीत करेंगी।
क्यों? क्योंकि तुम अब समाप्त हो। तुम भविष्य में नहीं
रहोगे।'"

सोर अपने को परमेश्वर समझता है

28 यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
2"मनुष्य के पुत्र, सोर के राजा से कहो। मेरा
स्वामी यहोवा यह कहता है:

'तुम बहुत घमण्डी हो! और तुम कहते हो "मैं
परमेश्वर हूँ।! मैं समुद्रों के मध्य में देवताओं के आसन
पर बैठता हूँ।' किन्तु तुम व्यक्ति हो, परमेश्वर नहीं!
तुम केवल सोचते हो कि तुम परमेश्वर हो।

3तुम सोचते हो तुम दानिय्येल से बुद्धिमान हो! तुम
समझते हो कि तुम सारे रहस्यों को जान लोगे!

4अपनी बुद्धि और अपनी समझ से। तुमने सम्पत्ति
स्वयं कमाई है और तुमने अपने कोषागार में सोना-चाँदी
रखा है।

5अपनी तीव्र बुद्धि और व्यापार से तुमने अपनी सम्पत्ति
बढ़ाई है, और अब तुम उस सम्पत्ति के कारण गर्वीले
हो।

6अत: मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: सोर, तुमने
सोचा तुम परमेश्वर की तरह हो।

7मैं अजनबियों को तुम्हारे विरुद्ध लड़ने के लिये
लाऊँगा। वे राष्ट्रों में बड़े भंयकर हैं! वे अपनी तलवारें
बाहर खीचेंगे और उन सुन्दर चीजों के विरुद्ध चलाएंगे
जिन्हें तुम्हारी बुद्धि ने कमाया। वे तुम्हारे गौरव को
ध्वस्त करेंगे। 8वे तुम्हें गिराकर कब्र में पहुँचाएंगे। तुम
उस मल्लाह की तरह होगे जो समुद्र में मरा।

9वह व्यक्ति तुमको मार डालेगा। क्या अब भी तुम
कहोगे, "मैं परमेश्वर हूँ?" उस समय वह तुम्हें अपने
अधिकार में करेगा। तुम समझ जाओगे कि तुम मनुष्य
हो, परमेश्वर नहीं!

10अजनबी तुम्हारे साथ विदेशी जैसा व्यवहार करेंगे,
और तुमको मार डालेंगे। ये घटनाएँ होंगी क्योंकि मेरे

पास आदेश–शक्ति है!'" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें
कहीं। 11यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,

12"मनुष्य के पुत्र, सोर के राजा के बारे में करुण
गीत गाओ। उससे कहो, 'मेरे स्वामी यहोवा यह कहता
है: तुम आदर्श पुरुष थे, तुम बुद्धिमत्ता से परिपूर्ण थे, तुम
पूर्णत: सुन्दर थे,

13तुम एदेन में थे परमेश्वर के उद्यान में तुम्हारे पास
हर एक बहुमूल्य रत्न थे लाल, पुखराज, हीरे, फिरोजा,
गोमेद और जस्पर नीलम, हरितमणि और नीलमणि
और ये हर एक रत्न सोने में जड़े थे। तुमको यह सौन्दर्य
प्रदान किया गया था जिस दिन तुम्हारा जन्म हुआ था।
परमेश्वर ने तुम्हें शक्तिशाली बनाया।

14तुम चुने गए करुब (स्वर्गदूत) थे। तुम्हारे पंख मेरे
सिंहासन पर फैले थे और मैंने तुमको परमेश्वर के
पवित्र पर्वत पर रखा। तुम उन रत्नों के बीच चले जो
अग्नि की तरह कौंधते थे।

15तुम अच्छे और ईमानदार थे जब मैंने तुम्हें बनाया।
किन्तु इसके बाद तुम बुरे बन गए।

16तुम्हारा व्यापार तुम्हारे पास बहुत सम्पत्ति लाता था।
किन्तु उसने भी तुम्हारे भीतर क्रूरता उत्पन्न की और
तुमने पाप किया। अत: मैंने तुम्हारे साथ ऐसा व्यवहार
किया मानों तुम गन्दी चीज हो। मैंने तुम्हें परमेश्वर के
पर्वत से फेंक दिया। तुम विशेष करुब (स्वर्गदूतों) में से
एक थे, तुम्हारे पंख फैले थे मेरे सिंहासन पर किन्तु
मैंने तुम्हें आग की तरह कौंधने वाले रत्नों को छोड़ने
को विवश किया।

17तुम अपने सौन्दर्य के कारण घमण्डी हो गए, तुम्हारे
गौरव ने तुम्हारी बुद्धिमत्ता को नष्ट किया, इसलिये मैंने
तुम्हें धरती पर ला फेंका, और अब अन्य राजा तुम्हें
आँख फाड़ कर देखते हैं।

18तुमने अनेक गलत काम किये, तुम बहुत कपटी
व्यापारी थे। इस प्रकार तुमने पवित्र स्थानों को अपवित्र
किया, इसलिये मैं तुम्हारे ही भीतर से अग्नि लाया,
इसने तुमको जला दिया, तुम भूमि पर राख हो गए। अब
हर कोई तुम्हारी लज्जा देख सकता है।

19अन्य राष्ट्रों में सभी लोग, जो तुम पर घटित हुआ,
उसके बारे में शोकग्रस्त थे। जो तुम्हें हुआ, वह लोगों
को भयभीत करेगा। तुम समाप्त हो गये हो!'"

सीदोन के विरुद्ध सन्देश

20यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 21"मनुष्य
के पुत्र, सीदोन पर ध्यान दो और मेरे लिये उस स्थान
के विरुद्ध कुछ कहो। 22कहो, 'मेरा स्वामी यहोवा यह
कहता है: "'सीदोन, मैं तेरे विरुद्ध हूँ! तुम्हारे लोग मेरा
सम्मान करना सीखेंगे, मैं सीदोन को दण्ड दूँगा, तब
लोग समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ। तब वे समझेंगे कि मैं
पवित्र हूँ और वे मुझको उस रूप में लेंगे।

23मैं सीदोन में रोग और मृत्यु भेजूँगा, नगर के बाहर
तलवार (शत्रु सैनिक) उस मृत्यु को लायेगी। तब वे
समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ!'"

राष्ट्र इस्राएल का मजाक उड़ाना बन्द करेंगे।

24"'अतीत काल में इस्राएल के चारों ओर के देश
उससे घृणा करते थे। किन्तु उन अन्य देशों के लिये
बुरी घटनायें घटेंगी। कोई भी तेज काँटे या कंटीली
झाड़ी इस्राएल के परिवार को घायल करने वाली नहीं
रह जाएगी। तब वे जानेंगे कि मैं उनका स्वामी यहोवा
हूँ।'"

25मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "मैंने इस्राएल के
लोगों को अन्य राष्ट्रों में बिखेर दिया। किन्तु मैं फिर
इस्राएल के परिवार को एक साथ इकट्ठा करूँगा। तब
वे राष्ट्र समझेंगे कि मैं पवित्र हूँ और वे मुझे उसी रूप में
लेंगे। उस समय इस्राएल के लोग अपने देश में रहेंगे
अर्थात जिस देश को मैंने अपने सेवक याकूब को
दिया। 26वे उस देश में सुरक्षित रहेंगे। वे घर बनायेंगे
तथा अंगूर की बेलें लगाएंगे। मैं उसके चारों ओर के
राष्ट्रों को दण्ड दूँगा जिन्होंने उससे घृणा की। तब इस्राएल
के लोग सुरक्षित रहेंगे। तब वे समझेंगे कि मैं उनका
परमेश्वर यहोवा हूँ।"

मिस्र के विरुद्ध सन्देश

29 देश निकाले के दसवें वर्ष के दसवें महीने
(जनवरी) के बारहवें दिन मेरे स्वामी यहोवा
का वचन मुझे मिला। उसने कहा, 2"मनुष्य के पुत्र,
मिस्र के राजा फिरौन की ओर ध्यान दो, मेरे लिये
उसके तथा

मिस्र के विरुद्ध कुछ कहो। 3कहो, 'मेरा स्वामी यहोवा
यह कहता है: मिस्र के राजा फिरौन, मैं तुम्हारे विरुद्ध
हूँ। तुम नील नदी के किनारे विश्राम करते हुए विशाल
दैत्य हो। तुम कहते थे, "यह मेरी नदी है! मैंने यह नदी
बनाई है!"

4-5 किन्तु मैं तुम्हारे जबड़े में आँकड़े दूँगा। नील नदी
की मछलियाँ तुम्हारी चमड़ी से चिपक जाएंगी। मैं
तुमको और तुम्हारी मछलियाँ को तुम्हारी नदियों से
बाहर कर सूखी भूमि पर फेंक दूँगा, तुम धरती पर
गिरोगे, और कोई न तुम्हें उठायेगा, न ही दफनायेगा। मैं
तुम्हें जंगली जानवरों और पक्षियों को दूँगा, तुम उनके
भोजन बनोगे।

6तब मिस्र में रहने वाले सभी लोग–जानेंगे कि मैं
यहोवा हूँ! मैं इन कामों को क्यों करूँगा? क्योंकि
इस्राएल के लोग सहारे के लिये मिस्र पर झुके, किन्तु
मिस्र केवल दुर्बल घास का तिनका निकला।

7इस्राएल के लोग सहारे के लिये मिस्र पर झुके और
मिस्र ने केवल उनके हाथों और कन्धों को विदीर्ण

किया। वे सहारे के लिये तुम पर झुके किन्तु तुमने
उनकी पीठ को तोड़ा और मरोड़ दिया।'"
8इसलिये मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:
"मैं तुम्हारे विरुद्ध तलवार लाऊँगा। मैं तुम्हारे सभी
लोगों और जानवरों को नष्ट करुँगा।
9मिस्र खाली और नष्ट हो जाएगा। तब वे समझेंगे कि
मैं यहोवा हूँ।"
परमेश्वर ने कहा, "मैं वे काम क्यों करूँगा? क्योंकि
तुमने कहा, 'यह मेरी नदी है। मैंने इस नदी को बनाया।'
10अत: मैं (परमेश्वर) तुम्हारे विरुद्ध हूँ। मैं तुम्हारी
नील नदी की कई शाखाओं के विरुद्ध हूँ। मैं मिस्र को
पूरी तरह नष्ट करूँगा। मिग्दोल से सवेन तक तथा जहाँ
तक कूश की सीमा है, वहाँ तक नगर खाली होंगे।
11कोई व्यक्ति या जानवर मिस्र से नहीं गुजरेगा। कोई
व्यक्ति या जानवर मिस्र में चालीस वर्ष तक नहीं रहेगा।
12मैं मिस्त्र देश को उजाड़ कर दूँगा और उसके नगर
चालीस वर्ष तक उजाड़ रहेंगे। मैं मिस्रियों को राष्ट्रों में
बिखेर दूँगा। मैं उन्हें विदेशों में बसा दूँगा।"
13मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "मैं मिस्र के लोगों
को कई राष्ट्रों में बिखेरूँगा। किन्तु चालीस वर्ष के
अन्त में फिर मैं उन लोगों को एक साथ इकट्ठा
करूँगा। **14**मैं मिस्र के बंदियों को वापस लाऊँगा। मैं
मिस्रियों को पत्रास के प्रदेश में, जहाँ वे उत्पन्न हुए थे,
वापस लाऊँगा। किन्तु उनका राज्य महत्वपूर्ण नहीं होगा।
15यह सबसे कम महत्वपूर्ण राज्य होगा। मैं इसे फिर
अन्य राष्ट्रों से ऊपर कभी नहीं उठाऊँगा। मैं उन्हें इतना
छोटा कर दूँगा कि वे राष्ट्रों पर शासन नहीं कर सकेंगे
16और इस्राएल का परिवार फिर कभी मिस्र पर आश्रित
नहीं रहेगा। इस्राएली अपने पाप को याद रखेंगे। वे याद
रखेंगे कि वे सहायता के लिये मिस्र की ओर मुड़े,
परमेश्वर की ओर नहीं और वे समझेंगे कि मैं यहोवा
और स्वामी हूँ।"

बाबुल मिस्र को लेगा

17देश निकाले के सत्ताईसवें वर्ष के पहले महीने
(अप्रैल) के पहले दिन यहोवा का वचन मुझे मिला।
उसने कहा, **18**"मनुष्य के पुत्र, बाबुल के राजा
नबूकदनेस्सर ने सोर के विरुद्ध अपनी सेना को भीषण
युद्ध में लगाया। उन्होंने हर एक सैनिक के बाल कटवा
दिये। भारी वजन ढोने के कारण हर एक कंधा रगड़ से
नंगा हो गया। नबूकदनेस्सर और उसकी सेना ने सोर
को हराने के लिये कठिन प्रयत्न किया। किन्तु वे उन
कठिन प्रयत्नों से कुछ पा न सके।" **19**अत: मेरा स्वामी
यहोवा यह कहता है, "मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर
को मिस्र देश दूँगा और नबूकदनेस्सर मिस्र के लोगों को
ले जाएगा। नबूकदनेस्सर मिस्र की कीमती चीजों को ले
जाएगा। यह नबूकदनेस्सर की सेना का वेतन होगा।
20मैंने नबूकदनेस्सर को मिस्र देश उसके कठिन प्रयत्न
के पुरस्कार के रूप में दिया है। क्यों? क्योंकि उन्होंने
मेरे लिये काम किया!" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।
21"उस दिन मैं इस्राएल के परिवार को शक्तिशाली
बनाऊँगा और तुम्हारे लोग मिस्रियों का मजाक उड़ाएंगे।
तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

बाबुल की सेना मिस्र पर आक्रमण करेगी

30 यहोवा का वचन मुझे फिर मिला। उसने कहा,
2"मनुष्य के पुत्र, मेरे लिए कुछ कहो। कहो,
मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: रोओ और कहो, वह
भंयकर दिन आ रहा है।
3वह दिन समीप है! हाँ, न्याय करने का यहोवा का
दिन समीप है। यह एक दुर्दिन होगा। यह राष्ट्रों के साथ
न्याय करने का समय होगा!
4मिस्र के विरुद्ध तलवार आएगी! कूश के लोग भय
से काँप उठेंगे, जिस समय मिस्र का पतन होगा। बाबुल
की सेना मिस्र के लोगों को बन्दी बना कर ले जाएगी।
मिस्र की नींव उखड़ जाएगी!
5"'अनेक लोगों ने मिस्र से शान्ति–सन्धि की। किन्तु
कूश, पूत, लूद, समस्त अरब, कूब और इस्राएल के
सभी लोग नष्ट होंगे!
6मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: हाँ, जो मिस्र की
सहायता करते हैं उनका पतन होगा! उसकी शक्ति का
गर्व नीचा होगा। मिस्र के लोग युद्ध में मारे जाएंगे मिग्दोल
से लेकर सवेन तक के। मेरे स्वामी यहोवा ने वे बातें
कहीं!
7मिस्र उन देशों में मिल जाएगा जो नष्ट कर दिए गए।
मिस्र उन खाली देशों में से एक होगा।
8मैं मिस्र में आग लगाऊँगा और उसके सभी सहायक
नष्ट हो जायेंगे। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ!
9"'उस समय मैं दूतों को भेजूँगा। वे जहाजों में कूश
को बुरी खबरें पहुँचाने के लिये जाएंगे। कूश अब अपने
को सुरक्षित समझता है। किन्तु कूश के लोग भय से
तब काँप उठेंगे जब मिस्र दण्डित होगा। वह समय आ
रहाहै!'"
10मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है:
"मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर का उपयोग करूँगा
और मैं मिस्र के लोगों को नष्ट करूँगा।
11नबूकदनेस्सर और उसके लोग राष्ट्रों में सर्वाधिक
भंयकर हैं। मैं उन्हें मिस्र को नष्ट करने के लिये
लाऊँगा। वे मिस्र के विरुद्ध अपनी तलवारें निकालेंगे।
वे प्रदेश को शवों से पाट देंगे।
12मैं नील नदी को सूखी भूमि बना दूँगा। तब मैं सूखी
भूमि को बुरे लोगों को बेच दूँगा। मैं अजनबियों का
उपयोग उस देश को खाली करने के लिये करुँगा। मैं
यहोवा ने, यह कहा है!"

मिस्र की देवमूर्तियाँ नष्ट की जाएंगी

13मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: "मैं मिस्र में देवमूर्तियों को नष्ट करुँगा। मैं मूर्तियों को नोप से बाहर करुँगा। मिस्र देश में कोई भी प्रमुख भविष्य के लिये नहीं होगा, और मैं मिस्र में भय भर दूँगा।

14मैं पत्रोस को खाली करा दूँगा। मैं सोअन में आग लगा दूँगा। मैं नो को दण्ड दूँगा

15और मैं सीन नामक मिस्र के किले के विरुद्ध अपने क्रोध की वर्षा करूँगा।! मैं नो के लोगों को नष्ट करूँगा।

16मैं मिस्र में आग लगाऊँगा। सीन नामक स्थान भय से पीड़ित होगा, नो नगर में सैनिक टूट पड़ेंगे और नो को प्रतिदिन नयी परेशानियाँ होंगी।

17आवेन और पीवेसेत के युवक युद्ध में मारे जाएंगे और स्त्रियाँ पकड़ी जाएँगी और ले जाई जाएँगी।

18तहपन्हेस का यह काला दिन होगा, जब मैं मिस्र के अधिकार को समाप्त करूँगा मिस्र की गर्वीली शक्ति समाप्त होगी! मिस्र को दुर्दिन ढक लेगा और उसकी पुत्रियाँ पकड़ी और ले जायी जाएँगी।

19इस प्रकार मैं मिस्र को दण्ड दूँगा। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ!"

मिस्र सदा के लिये दुर्बल होगा

20देश निकाले के ग्यारहवें वर्ष में प्रथम महीने (अप्रैल) के सातवें दिन यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने
कहा, 21"मनुष्य के पुत्र, मैंने मिस्र के राजा फिरौन की भुजा (शक्ति) तोड़ डाली है। कोई भी उसकी भुजा पर पट्टी नहीं लपेटेगा। उसका घाव नहीं भरेगा। अत: उसकी भुजा तलवार पकड़ने योग्य शक्ति वाली नहीं होगी।"

22मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "मैं मिस्र के राजा फिरौन के विरुद्ध हूँ। मैं उसकी दोनों भुजाओं शक्तिशाली भुजा और पहले से टूटी भुजा-को तोड़
डालूँगा। मैं उसके हाथ से तलवार को गिरा दूँगा। 23मैं
मिस्रियों को राष्ट्रों में बिखेर दूँगा। 24मैं बाबुल के राजा की भुजाओं को शक्तिशाली बनाऊँगा। मैं अपनी तलवार उसके हाथ में दूँगा। किन्तु मैं फिरौन की भुजा को तोड़ दूँगा। तब फिरौन पीड़ा से चीखेगा, राजा की चीख एक
मरते हुए व्यक्ति की चीख सी होगी। 25अत: मैं बाबुल के
राजा की भुजाओं को शक्तिशाली बनाऊँगा, किन्तु फिरौन की भुजायें कट गिरेंगी। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।

"मैं बाबुल के राजा के हाथों अपनी तलवार दूँगा। तब वह मिस्र देश के विरुद्ध अपनी तलवार को आगे बढ़ायेगा।
26मैं मिस्रियों को राष्ट्रों में बिखेर दूँगा। तब वे समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ!"

अश्शूर एक देवदार वृक्ष की तरह है

31 देश निकाले के ग्यारहवें वर्ष में तीसरे महीने (जून) के प्रथम दिन यहोवा का संदेश मुझे
मिला। उसने कहा, 2"मनुष्य के पुत्र, मिस्र के राजा फिरौन और उसके लोगों से यह कहो: 'तुम्हारी महानता में कौन तुम्हारे समान है?

3अश्शूर, लबानोन में, सुन्दर शाखाओं सहित एक देवदार का वृक्ष था। वन की छाया-युक्त और अति ऊँचा एक देवदार का वृक्ष था। इसके शिखर जलद भेदी थे!

4जल वृक्ष को उगाता था। गहरी नदियाँ वृक्ष को ऊँचा करती थीं। नदियाँ उन स्थान के चारों ओर बहती थीं, जहाँ वृक्ष लगे थे। केवल इसकी धारायें ही खेत के अन्य वृक्षों तक बहती थीं।

5इसलिये खेत के सभी वृक्षों से ऊँचा वृक्ष वही था और इसने कई शाखायें फैला रखी थीं। वहाँ काफी जल था। अत: वृक्ष-शाखायें बाहर फैली थीं।

6वृक्ष की शाखाओं में संसार के सभी पक्षियों ने घोंसले बनाए थे। वृक्ष की शाखाओं के नीचे खेत के सभी जानवर बच्चों को जन्म देते थे। सभी बड़े राष्ट्र उस वृक्ष की छाया में रहते थे।

7अत: वृक्ष अपनी महानता और अपनी लम्बी शाखाओं में सुन्दर था। क्यों? क्योंकि इसकी जड़ें यथेष्ट जल तक पहुँची थीं!

8परमेश्वर के उद्यान के देवदारु वृक्ष भी, उतने बड़े नहीं थे जितना यह वृक्ष। सनौवर के वृक्ष इतनी अधिक शाखायें नहीं रखते, चिनार-वृक्ष भी ऐसी शाखायें नहीं रखते, परमेश्वर के उद्यान का कोई भी वृक्ष, इतना सुन्दर नहीं था जितना यह वृक्ष।

9मैंने अनेक शाखाओं सहित इस वृक्ष को सुन्दर बनाया और परमेश्वर के उद्यान अदन के सभी वृक्ष इससे ईर्ष्या करते थे!'"

10अत: मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: "वृक्ष ऊँचा हो गया है। इसने अपने शिखरों को बादलों में पहुँचा
दिया है। वृक्ष गर्वीला है क्योंकि यह ऊँचा है! 11इसलिये
मैंने एक शक्तिशाली राजा को इस वृक्ष को लेने दिया। उस शासक ने वृक्ष को उसके बुरे कामों के लिये दण्ड दिया। मैंने उस वृक्ष को अपने उद्यान से बाहर किया है।
12अजनबी अत्याधिक भंयकर राष्ट्रों ने इसे काट डाला और छोड़ दिया। वृक्ष की शाखायें पर्वतों पर और सारी घाटी में गिरीं। उस प्रदेश में बहने वाली नदियों में वे टूटे अंग बह गए। वृक्ष के नीचे कोई छाया नहीं रह गई,
अत: सभी लोगों ने उसे छोड़ दिया। 13अब उस गिरे वृक्ष
में पक्षी रहते हैं और इसकी गिरी शाखाओं पर जंगली
जानवर चलते हैं। 14"अब कोई भी, उस जल का वृक्ष गर्वीला नहीं होगा। वे बादलों तक पहुँचना नहीं चाहेंगे। कोई भी शक्तिशाली वृक्ष, जो उस जल को पीता है,

ऊँचा होने की अपनी प्रशंसा नहीं करेगा। क्यों? क्योंकि उन सभी की मृत्यु निश्चित हो चुकी है। वे सभी मृत्यु के स्थान शेओल नामक पाताल लोक में चले जाएंगे। वे उन अन्य लोगों के साथ हो जाएंगे जो मरे और नीचे नरक में चले गए।"

15मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "उस दिन जब तक वृक्ष शेओल को गया मैंने लोगों से शोक मनवाया। मैंने गहरे जल को, उसके लिये, शोक से ढक दिया। मैंने वृक्ष की नदियों को रोक दिया और वृक्ष के लिये जल का बहना रूक गया। मैंने लबानोन से इसके लिये शोक मनवाया। खेत के सभी वृक्ष इस बड़े वृक्ष के शोक से रोगी हो गए। 16मैंने वृक्ष को गिराया और वृक्ष के गिरने की ध्वनि के भय से राष्ट्र काँप उठे। मैंने वृक्ष को मृत्यु के स्थान पर पहुँचाया। यह नीचे उन लोगों के साथ रहने गया जो उस नरक में नीचे गिरे हुए थे। अतीत में एदेन के सभी वृक्ष अर्थात् लबानोन के सर्वोत्तम वृक्ष उस पानी को पीते थे। उन सभी वृक्षों ने पाताल लोक में शान्ति प्राप्त की। 17हाँ, वे वृक्ष भी बड़े वृक्ष के साथ मृत्यु के स्थान पर गए। उन्होंने उन व्यक्तियों का साथ पकड़ा जो युद्ध में मर गए थे। उस बड़े वृक्ष ने अन्य वृक्षों को शक्तिशाली बनाया। वे वृक्ष, राष्ट्रों में, उस बड़े वृक्ष की छाया में रहते थे।

18"अत: मिस्र, एदेन में बहुत से विशाल और शक्तिशाली वृक्ष है। उनमें से किस वृक्ष के साथ मैं तुम्हारी तुलना करूँगा! तुम एदेन के वृक्षों के साथ पाताल लोक को जाओगे! मृत्यु के स्थान में तुम उन विदेशियों और युद्ध में मारे गए व्यक्तियों के साथ में लेटोगे।

"हाँ, यह फिरौन और उसके सभी लोगों के साथ होगा!" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा था।

फिरौन: एक सिंह या दैत्य?

32 देश–निकाले के बारहवें वर्ष के बारहवें महीने (मार्च) के प्रथम दिन यहोवा का वचन मेरे पास आया। उसने कहा, 2"मनुष्य के पुत्र, मिस्र के राजा के विषय में यह करुणगीत गाओ। उससे कहो:

'तुमने सोचा था तुम शक्तिशाली युवा सिंह हो, राष्ट्रों में गर्व सहित टहलते हुए। किन्तु सचमुच समुद्र के दैत्य जैसे हो। तुम प्रवाह को धकेल कर रास्ता बनाते हो, और अपने पैरों से जल को मटमैला करते हो। तुम मिस्र की नदियों को उद्वेलित करते हो'"

3मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: "मैंने बहुत से लोगों को एक साथ इकट्ठा किया है। अब मैं तुम्हारे ऊपर अपना जाल फेंकूँगा। तब वे लोग तुम्हें खींच लेंगे।

4तब मैं तुम्हें सूखी जमीन पर गिरा दूँगा। मैं तुम्हें खेत में फेंकूँगा। मैं सभी पक्षियों को तुम्हें खाने के लिये बुलवाऊँगा। मैं हर जगह से जंगली जानवरों को तुम्हें खाने और पेट भरने के लिये बुलवाऊँगा।

5मैं तुम्हारे शरीर को पर्वतों पर बिखेरुँगा। मैं तुम्हारे शव से घाटियों को भर दूँगा।

6मैं तुम्हारा रक्त पर्वतों पर डालूँगा और धरती इसे सोखेगी। नदियाँ तुमसे भर जाएंगी।

7मैं तुमको लुप्त कर दूँगा। मैं नभ को ढक दूँगा और नक्षत्रों को काला कर दूँगा। मैं सूर्य को बादल से ढक दूँगा और चन्द्र नहीं चमकेगा।

8मैं सभी चमकती ज्योतियों को नभ में तुम्हारे ऊपर काला बनाऊँगा। मैं तुम्हारे सारे देश में अंधेरा कर दूँगा।

9"बहुत से लोग शोकग्रस्त और व्यग्र होंगे, जब वे सुनेंगे कि तुमको नष्ट करने के लिये मैं एक शत्रु को लाया। राष्ट्र जिन्हें तुम जानते भी नहीं, तिलमिला जायेंगे।
10मैं बहुत से लोगों को तुम्हारे बारे में आघात पहुँचाऊँगा उनके राजा तुम्हारे बारे में उस समय बुरी तरह से भयभीत होंगे जब मैं उनके सामने अपनी तलवार चलाऊँगा। जिस दिन तुम्हारा पतन होगा उसी दिन, हर एक क्षण, राजा लोग भयभीत होंगे। हर एक राजा अपने जीवन के लिये भयभीत होगा।"

11क्यों? क्योंकि मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: "बाबुल के राजा की तलवार तुम्हारे विरुद्ध युद्ध करने आयेगी। 12मैं उन सैनिकों का उपयोग तुम्हारे लोगों को युद्ध में मार डालने में करुँगा। वे सैनिक राष्ट्रों में सबसे भयंकर राष्ट्र से आते हैं। वे उन चीजों को नष्ट कर देंगे जिनका गर्व मिस्र को है। मिस्र के लोग नष्ट कर दिये जायेंगे। 13मिस्र में नदियों के सहारे बहुत से जानवर हैं। मैं इन जानवरों को भी नष्ट करूँगा! लोग भविष्य में, अपने पैरों से पानी को गंदा नहीं करेंगे। गायों के खुर भविष्य में पानी को मैला नहीं करेंगे। 14इस प्रकार मैं मिस्र में पानी को शान्त बनाऊँगा। मैं उनकी नदियों को मन्द बहाऊँगा वे तेल की तरह बहेंगी।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा,

15"मैं मिस्र देश को खाली कर दूँगा। वह हर चीज से रहित होगा। मैं मिस्र में रहने वाले सभी लोगों को दण्ड दूँगा। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा और स्वामी हूँ!

16"यह एक करुणगीत है जिसे लोग मिस्र के लिये गायेंगे। दूसरे राष्ट्रों में पुत्रियाँ (नगर) मिस्र के बारे में इस करुण गीत को गायेंगी। वे इसे, मिस्र और उसके सभी लोगों के बारे में करुण गीत के रूप में गायेंगी।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा था!

मिस्र का नष्ट किया जाना

17देश निकाले के बारहवें वर्ष में, उस महीने के पन्द्रहवें दिन, यहोवा का संदेश मुझे मिला। उसने कहा,
18"मनुष्य के पुत्र, मिस्र के लोगों के लिये रोओ। मिस्र और उन पुत्रियों को, शक्तिशाली राष्ट्र से कब्र तक पहुँचाओ। उन्हें उस पाताल लोक में पहुँचाओ जहाँ वे उन अन्य व्यक्तियों के साथ होंगे जो उस नरक में गए।

19"मिस्र, तुम किसी अन्य से अच्छे नहीं हो। मृत्यु के स्थान पर चले जाओ। जाओ और उन विदेशियों के साथ लेटो।

20"मिस्र को उन सभी अन्य लोगों के साथ रहने जाना पड़ेगा जो युद्ध में मारे गए थे। शत्रु ने उसे और उसके लोगों को उठा फेंका है।

21"मजबूत और शक्तिशाली व्यक्ति युद्ध में मारे गए। वे विदेशी मृत्यु के स्थान पर गए। उस स्थान से वे लोग मिस्र और उसके सहायकों से बातें करेंगे। वे जो युद्ध में मारे गये थे।

22-23"अश्शूर और उसकी सारी सेना वहाँ मृत्यु के स्थान पर हैं। उनकी कब्रें नीचे गहरे नरक में हैं। वे सभी अश्शूर के सैनिक युद्ध में मारे गए। उनकी कब्रे उसकी कब्र के चारों ओर हैं। जब वे जीवित थे तब वे लोगों को भयभीत करते थे। किन्तु अब वे सभी पूर्ण शान्त हैं वे सभी युद्ध में मारे गए थे।

24"एलाम वहाँ है और इसकी सारी सेना उसकी कब्र के चारों ओर हैं। वे सभी युद्ध में मारे गए। वे विदेशी गहरे नीचे धरती में गए। जब वे जीवित थे, वे लोगों को भयभीत करते थे। किन्तु वे अपनी लज्जा को अपने साथ उस गहरे नरक में ले गए।
25उन्होंने एलाम और उसके सैनिकों के लिए, जो युद्ध में मारे गए हैं, बिस्तर लगा दिया है। एलाम की सारी सेना उसकी कब्र के चारों ओर हैं। ये सभी विदेशी युद्ध में मारे गए थे। जब वे जीवित थे, वे लोगों को डराते थे। किन्तु वे अपनी लज्जा को अपने साथ उस गहरे नरक में ले गए। वे उन सभी लोगों के साथ रखे गये, जो मारे गए थे।

26"मेशेक, तूबल और उनकी सारी सेनायें वहाँ है। उनकी कब्रें इनके चारों ओर हैं। वे सभी विदेशी युद्ध में मारे गए थे। जब वे जीवित थे तब वे लोगों को भयभीत करते थे।
27किन्तु अब वे शक्तिशाली व्यक्तियों के साथ लेटे हैं जो बहुत पहले मर चुके थे। वे अपने युद्ध के अस्त्र-शस्त्रों के साथ दफनाए गए। उनकी तलवारें उनके सिर के नीचे रखी जाएंगी। किन्तु उनके पाप उनकी हड्डियों पर हैं। क्यों? क्योंकि जब वे जीवित थे, उन्होंने लोगों को डराया था।

28"मिस्र, तुम भी नष्ट होगे। तुम उन विदेशियों के साथ लेटोगे। तुम उन अन्य सैनिकों के साथ लेटोगे जो युद्ध में मारे जा चुके हैं।

29"एदोम भी वहीं है। उसके राजा और अन्य प्रमुख उसके साथ वहाँ हैं। वे शक्तिशाली सैनिक भी थे। किन्तु अब वे उन अन्य लोगों के साथ लेटे हैं। जो युद्ध में मारे गए थे। वे उन विदेशियों के साथ लेटे हैं। वे उन व्यक्तियों के साथ नीचे नरक में चले गए।

30"उत्तर के सभी शासक वहाँ हैं। वहाँ सीदोन के सभी सैनिक हैं। उनकी शक्ति लोगों को डराती थी। किन्तु वे हक्के-बक्के हैं। वे विदेशी उन अन्य व्यक्तियों के साथ लेटे हैं जो युद्ध में मारे गए थे। वे अपनी लज्जा अपने साथ उस गहरे नरक में ले गए।

31"फिरौन उन लोगों को देखेगा जो मृत्यु के स्थान पर गए। वह और उसके साथ सभी लोगों को पूर्ण शान्ति मिलेगी। हाँ, फिरौन और उसकी सेना युद्ध में मारी जाएगी।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा था।

32"जब फिरौन जीवित था तब मैंने लोगों को उससे भयभीत कराया। किन्तु अब वह उन विदेशियों के साथ लेटेगा। फिरौन और उसकी सेना उन अन्य सैनिकों के साथ लेटेगी जो युद्ध में मारे गए थे।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा था।

परमेश्वर यहेजकेल को इस्राएल का पहरेदार चुनता है

33 यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
2"मनुष्य के पुत्र, अपने लोगों से बातें करो। उनसे कहो, 'मैं शत्रु के सैनिकों को उस देश के विरुद्ध युद्ध के लिये ला सकता हूँ। जब ऐसा होगा तो लोग एक व्यक्ति को पहरेदार के रूप में चुनेंगे।
3यदि पहरेदार शत्रु के सैनिकों को आते देखता है, तो वह तुरही बजाता है और लोगों को सावधान करता है।
4यदि लोग उस चेतावनी को सुनें किन्तु अनसुनी करें तो शत्रु उन्हें पकड़ेगा और उन्हें बन्दी के रूप में ले जायेगा। यह व्यक्ति अपनी मृत्यु के लिये स्वयं उत्तरदायी होगा।
5उसने तुरही सुनी, पर चेतावनी अनसुनी की। इसलिये अपनी मृत्यु के लिये वह स्वयं दोषी है। यदि उसने चेतावनी पर ध्यान दिया होता तो उसने अपना जीवन बचा लिया होता।

6"'किन्तु यह हो सकता है कि पहरेदार शत्रु के सैनिकों को आता देखता है, किन्तु तुरही नहीं बजाता। उस पहरेदार ने लोगों को चेतावनी नहीं दी। शत्रु उन्हें पकड़ेगा और उन्हें बन्दी बनाकर ले जाएगा। वह व्यक्ति ले जाया जाएगा क्योंकि उसने पाप किया। किन्तु पहरेदार भी उस आदमी की मृत्यु का उत्तरदायी होगा।'"

7"अब, मनुष्य के पुत्र, मैं तुमको इस्राएल के परिवार का पहरेदार चुन रहा हूँ। यदि तुम मेरे मुख से कोई सन्देश सुनो तो तुम्हें मेरे लिये लोगों को चेतावनी देनी चाहिए।
8मैं तुमसे कह सकता हूँ, 'यह पापी व्यक्ति मरेगा।' तब तुम्हें उस व्यक्ति के पास जाकर मेरे लिये उसे चेतावनी देनी चाहिए। यदि तुम उस पापी व्यक्ति को चेतावनी नहीं देते और उसे अपना जीवन बदलने को नहीं कहते, तो वह पापी व्यक्ति मरेगा, क्योंकि उसने पाप किया। किन्तु मैं तुम्हें उसकी मृत्यु का उत्तरदायी बनाऊँगा।
9किन्तु यदि तुम उस बुरे व्यक्ति को अपना जीवन बदलने के लिये और पाप करना छोड़ने के लिये चेतावनी देते हो और यदि वह पाप करना छोड़ने से इन्कार करता है तो वह मरेगा क्योंकि उसने पाप किया, किन्तु तुमने अपना जीवन बचा लिया।"

परमेश्वर लोगों को नष्ट करना नहीं चाहता

10“अत: मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के परिवार से मेरे
लिये कहो। वे लोग कह सकते हैं, ‘हम लोगों ने पाप
किया है और नियमों को तोड़ा है। हमारे पाप हमारी
सहनशक्ति के बाहर हैं। हम उन पापों के कारण नाश
हो रहे हैं। हम जीवित रहने के लिये क्या कर सकते
हैं।’

11“तुम्हें उनसे कहना चाहिए, ‘मेरा स्वामी यहोवा
कहता है: मैं अपनी जीवन की शपथ खाकर विश्वास
दिलाता हूँ कि मैं लोगों को मरता देख कर आनन्दित
नहीं होता, पापी व्यक्तियों को भी नहीं। मैं नहीं चाहता
कि वे मरें। मैं उन पापी व्यक्तियों को अपने पास लौटाना
चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि वे अपने जीवन को बदलें
जिससे वे जीवित रह सकें। अत: मेरे पास लौटो! बुरे
काम करना छोड़ो! इस्राएल के परिवार, तुम्हें मरना ही
क्यों चाहिए?”

12“मनुष्य के पुत्र, अपने लोगों से कहो: ‘यदि किसी
व्यक्ति ने अतीत में पुण्य किया है तो उससे उसका
जीवन नहीं बचेगा। यदि वह बच जाये और पाप करना
शुरु करे। यदि किसी व्यक्ति ने अतीत में पाप किया, तो
वह नष्ट नहीं किया जाएगा, यदि वह पाप से दूर हट
जाता है। अत: याद रखो, एक व्यक्ति द्वारा अतीत में
किये गए पुण्य कर्म उसकी रक्षा नहीं करेंगे, यदि वह
पाप करना आरम्भ करता है।

13“यह हो सकता है कि मैं किसी अच्छे व्यक्ति के
लिये कहूँ कि वह जीवित रहेगा। किन्तु यह हो सकता
है कि वह अच्छा व्यक्ति यह सोचना आरम्भ करे कि
अतीत में उसके द्वारा किये गए अच्छे कर्म उसकी रक्षा
करेंगे। अत: वह बुरे काम करना आरम्भ कर सकता
है। किन्तु मैं उसके अतीत के पुण्यों को याद नहीं
रखूँगा! नहीं, वह उन पापों के कारण मरेगा जिन्हें वह
करना आरम्भ करता है।

14“या यह हो सकता है कि मैं किसी पापी व्यक्ति के
लिये कहूँगा कि वह मरेगा। किन्तु वह अपने जीवन को
बदल सकता है। वह पाप करना छोड़ सकता है और
ठीक–ठीक रहना आरम्भ कर सकता है। वह अच्छा
और उचित हो सकता है। **15**वह उस गिरवीं की चीज
को लौटा सकता है जिसे उसने ऋ ण में मुद्रा देते समय
रखा था। वह उन चीजों के लिये भुगतान कर सकता है
जिन्हें उसने चुराया था। वह उन नियमों का पालन कर
सकता है जो जीवन देते हैं। वह बुरे काम करना छोड़
देता है। तब वह व्यक्ति निश्चय ही जीवित रहेगा। वह
मरेगा नहीं। **16**मैं उसके अतीत के पापों को याद नहीं
करुँगा। क्यों? क्योंकि वह अब ठीक–ठीक रहता है
और उचित व्यवहार रखता है। अत: वह जीवित रहेगा!

17“किन्तु तुम्हारे लोग कहते हैं, ‘यह उचित नहीं है!
यहोवा मेरा स्वामी वैसा नहीं हो सकता!’
“परन्तु वे ही लोग हैं जो उचित नहीं हैं! वे ही लोग हैं,
जिन्हें बदलना चाहिए! **18**यदि अच्छा व्यक्ति पुण्य करना
बन्द कर देता है और पाप करना आरम्भ करता है तो
वह अपने पापों के कारण मरेगा। **19**और यदि कोई
पापी पाप करना छोड़ देता है और ठीक–ठीक तथा
उचित रहना आरम्भ करता है तो वह जीवित रहेगा!
20किन्तु तुम लोग अब भी कहते हो कि मैं उचित नहीं
हूँ। किन्तु मैं सत्य कह रहा हूँ। इस्राएल के परिवार, हर
एक व्यक्ति के साथ न्याय, वह जो करता है, उसके
अनुसार होगा!”

यरूशलेम पर अधिकार कर लिया गया

21देश–निकाले के बारहवें वर्ष में, दसवें महीने
(जनवरी) के पाँचवें दिन एक व्यक्ति मेरे पास यरूशलेम
से आया। वह वहाँ के युद्ध से बच निकला था। उसने
कहा, “नगर (यरूशलेम) पर अधिकार हो गया!”

22ऐसा हुआ कि जिस दिन वह व्यक्ति मेरे पास आया
उसकी पूर्व संध्या को, मेरे स्वामी यहोवा की शक्ति मुझ
पर उतरी। परमेश्वर ने मुझे बोलने योग्य नहीं बनाया।
जिस समय वह व्यक्ति मेरे पास आया, यहोवा ने मेरा
मुख खोल दिया था और फिर से मुझे बोलने दिया।
23तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा, **24**“मनुष्य
के पुत्र, इस्राएल के ध्वस्त नगर में इस्राएली लोग रह रहे
हैं। वे लोग कह रहे हैं, ‘इब्राहीम केवल एक व्यक्ति था
और परमेश्वर ने उसे यह सारी भूमि दे दी। अब हम
अनेक लोग हैं अत: निश्चय ही यह भूमि हम लोगों की
है! यह हमारी भूमि है!’

25“तुम्हें उनसे कहना चाहिये कि मेरा स्वामी यहोवा
यह कहता है, ‘तुम लोग रक्त–युक्त माँस खाते हो। तुम
लोग अपनी देवमूर्तियों से सहायता की आशा करते हो।
तुम लोगों को मार डालते हो। अत: मैं तुम लोगों को यह
भूमि क्यों दूँ? **26**तुम अपनी तलवार पर भरोसा करते
हो। तुममें से हर एक भंयकर पाप करता है। तुममें से
हर एक अपने पड़ोसी की पत्नी के साथ व्यभिचार
करता है। अत: तुम भूमि नहीं पा सकते।’

27“तुम्हें कहना चाहिये कि स्वामी यहोवा यह कहता
है, ‘मैं अपने जीवन की शपथ खा कर प्रतिज्ञा करता
हूँ, कि जो लोग उन ध्वस्त नगरों में रहते हैं, वे तलवार
के घाट उतारे जाएंगे। यदि कोई उस देश से बाहर होगा
तो मैं उसे जानवरों से मरवाऊँगा और खिलाऊँगा। यदि
लोग किले और गुफाओं में छिपे होंगे तो वे रोग से
मरेंगे। **28**मैं भूमि को खाली और बरबाद करुँगा। वह
देश उन सभी चीजों को खो देगा जिन पर उसे गर्व था।
इस्राएल के पर्वत खाली हो जाएंगे। उस स्थान से कोई
गुजरेगा नहीं। **29**उन लोगों ने अनेक भंयकर पाप किये
हैं। अत: मैं उस देश को खाली और बरबाद करुँगा। तब
वे लोग जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।’”

30"अब तुम्हारे विषय में, मनुष्य के पुत्र, तुम्हारे लोग
दीवारों के सहारे झुके हुए और अपने दरवाजों में खड़े
हैं और वे तुम्हारे बारे में बात करते हैं। वे एक दूसरे से
कहते हैं, 'आओ, हम जाकर सुनें जो यहोवा कहता है।'
31अत: वे तुम्हारे पास वैसे ही आते हैं जैसे वे मेरे लोग
हों। वे तुम्हारे सामने मेरे लोगों की तरह बैठेंगे। वे
तुम्हारा सन्देश सुनेंगे। किन्तु वे वह नहीं करेंगे जो तुम
कहोगे। वे केवल वह करना चाहते हैं जो अनुभव
करने में अच्छा हो। वे लोगों को धोखा देना चाहते हैं
और अधिक धन कमाना चाहते हैं।

32"तुम इन लोगों की दृष्टि में प्रेमगीत गाने वाले
गायक से अधिक नहीं हो। तुम्हारा स्वर अच्छा है। तुम
अपना वाद्य अच्छा बजाते हो। वे तुम्हारा संदेश सुनेंगे
किन्तु वे वह नहीं करेंगे जो तुम कहते हो। 33किन्तु
जिन चीजों के बारे में तुम गाते हो, वे सचमुच घटित
होंगी और तब लोग समझेंगे कि उनके बीच सचमुच
एक नबी रहता था!"

इस्राएल भेड़ों की एक रेवड़ की तरह है

34 यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
2"मनुष्य के पुत्र, मेरे लिए इस्राएल के गड़ेरियों
(प्रमुखों) के विरुद्ध बातें करो। उनसे मेरे लिये बातें
करो। उनसे कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है:
'इस्राएल के गड़ेरियों (प्रमुखों) तुम केवल अपना पेट
भर रहे हो। यह तुम्हारे लिये बहुत बुरा होगा। तुम
गड़ेरियों, रेवड़ों का पेट क्यों नहीं भरते? 3तुम मोटी
भेड़ों को खाते हो और अपने वस्त्र बनाने के लिये
उनकी ऊन का उपयोग करते हो। तुम मोटी भेड़ को
मारते हो, किन्तु तुम रेवड़ का पेट नहीं भरते। 4तुमने
दुर्बल को बलवान नहीं बनाया। तुमने रोगी भेड़ की
परवाह नहीं की है। तुमने चोट खाई हुई भेड़ों को पट्टी
नहीं बाँधी। कुछ भेड़ें भटक कर दूर चली गईं और तुम
उन्हें खोजने और उन्हें वापस लेने नहीं गए। तुम उन
खोई भेड़ों को खोजने नहीं गए। नहीं, तुम क्रूर और
कठोर रहे, यही मार्ग था जिस पर तुमने भेड़ों को ले
जाना चाहा!

5"'और अब, भेड़ें बिखर गई हैं क्योंकि कोई गड़ेरिया
नहीं था। वे हर एक जंगली जानवर का भोजन बनीं।
अत: वे बिखर गईं। 6मेरी रेवड़ सभी पर्वतों और ऊँची
पहाड़ियों पर भटकी। मेरी रेवड़ धरती की सारी सतह
पर बिखर गई। कोई भी उनकी खोज और देखभाल
करने वाला नहीं था।'"

7अत: तुम गड़ेरियों, यहोवा का वचन सुनों। मेरा
स्वामी यहोवा कहता है, 8"मैं अपने जीवन की शपथ
खाकर तुम्हें यह विश्वास दिलाता हूँ। जंगली जानवरों ने
मेरी भेड़ों को पकड़ा। हाँ, मेरी रेवड़ सभी जंगली जानवरों
का भोजन बन गई। क्यों? क्योंकि उनका कोई ठीक
गड़ेरिया नहीं था। मेरे गड़ेरियों ने मेरे रेवड़ की खोज
नहीं की। उन गड़ेरियों ने भेड़ों को केवल मारा और
स्वयं खाया। उन्होंने मेरी रेवड़ का पेट नहीं भरा।"

9अत: तुम गड़ेरियों, यहोवा के संदेश को सुनो! 10यहोवा
कहता है, "मैं उन गड़ेरियों के विरुद्ध हूँ! मैं उनसे
अपनी भेड़ें मागूँगा! मैं उन पर आक्रमण करूँगा! वे
भविष्य में मेरे गड़ेरिये नहीं रहेंगे! तब गड़ेरिये अपना
पेट भी नहीं भर पाएंगे। मैं उनके मुख से अपनी रेवड़
को बचाऊँगा। तब मेरी भेड़ें उनका भोजन नहीं होंगी।"

11मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मैं स्वयं उनका
गड़ेरिया बनूँगा। मैं अपनी भेड़ों की खोज करूँगा। मैं
उनको ढूँढूंगा। 12यदि कोई गड़ेरिया अपनी भेड़ों के
साथ उस समय है जब उसकी भेड़ें दूर भटकने लगी हों
तो वह उनको खोजने जाएगा। उसी प्रकार मैं अपनी
भेड़ों की खोज करूँगा। मैं अपनी भेड़ों को बचाऊँगा। मैं
उन्हें उन स्थानों से लौटाऊँगा जहाँ वे उस बदली तथा
अंधेरे में भटक गई थीं। 13मैं उन्हें उन राष्ट्रों से वापस
लाऊँगा। मैं उन देशों से उन्हें इकट्ठा करूँगा। मैं उन्हें
उनके अपने देश में लाऊँगा। मैं उन्हें इस्राएल के पर्वतों
पर, जलस्रोतों के सहारे, उन सभी स्थानों में, जहाँ लोग
रहते हैं, खिलाऊँगा। 14मैं उन्हें घास वाले खेतों में ले
जाऊँगा। वे इस्राएल के पर्वतों के ऊँचे स्थानों पर जाएंगी।
वहाँ वे अच्छी धरती पर सोएँगी और घास खाएंगी। वे
इस्राएल के पर्वत पर भरी–पूरी घास वाली भूमि में
चरेंगी। 15हाँ, मैं अपने रेवड़ को खिलाऊँगा और उन्हें
विश्राम के स्थान पर ले जाऊँगा।" मेरे स्वामी यहोवा ने
यह कहा था।

16"मैं खोई भेड़ की खोज करुँगा। मैं उन भेड़ों को
वापस लाऊँगा जो बिखर गई थीं। मैं उन भेड़ों की पट्टी
करुँगा जिन्हें चोट लगी थी। मैं कमजोर भेड़ को मजबूत
बनाऊँगा। किन्तु मैं उन मोटे और शक्तिशाली गड़ेरियों
को नष्ट कर दूँगा। मैं उन्हें वह दण्ड दूँगा जिसके वे पात्र
हैं।"

17मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "और तुम, मेरी
रेवड़, मैं प्रत्येक भेड़ के साथ न्याय करुँगा। मैं मेढ़ों
और बकरों के बीच न्याय करुँगा। 18तुम अच्छी भूमि
पर उगी घास खा सकते हो। अत: तुम उस घास को
क्यों कुचलते हो जिसे दूसरी भेड़ें खाना चाहती हैं। तुम
पर्याप्त स्वच्छ जल पी सकते हो। अत: तुम उस जल को
हिलाकर गन्दा क्यों करते हो, जिसे अन्य भेड़ें पीना
चाहती हैं। 19मेरी रेवड़ उस घास को खाएंगी जिसे तुमने
अपने पैरों से कुचला और वह पानी पीएंगी जिसे तुमने
अपने पैरों से हिलाकर गन्दा कर दिया!"

20अत: मेरा स्वामी यहोवा उनसे कहता है: "मैं स्वयं
मोटी और पतली भेड़ों के साथ न्याय करूँगा! 21तुम
अपनी बगल से और अपने कन्धों से धक्का देकर और
अपनी सींगों से सभी कमजोर भेड़ों को तब तक मार

गिराते हो, जब तक तुम उनको दूर चले जाने के लिये
विवश नहीं करते। 22अत: मैं अपनी रेवड़ को बचाऊँगा।
वे भविष्य में जंगली जानवरों से नहीं पकड़ी जाएंगी। मैं
प्रत्येक भेड़ के साथ न्याय करुँगा। 23तब मैं उनके
ऊपर एक गड़ेरिया अपने सेवक दाऊद को रखूँगा। वह
उन्हें अपने आप खिलाएगा और उनका गड़ेरिया होगा।
24तब मैं यहोवा और स्वामी, उनका परमेश्वर होऊँगा
और मेरा सेवक दाऊद उनके बीच रहने वाला शासक
होगा। मै (यहोवा) ने यह कहा है।

25"मैं अपनी भेड़ों के साथ एक शान्ति-सन्धि करुँगा।
मैं हानिकर जानवरों को देश से बाहर कर दूँगा। तब
भेड़ें मरूभूमि में सुरक्षित रहेंगी और जंगल में सोएंगी।
26मैं भेड़ों को और अपनी पहाड़ी (यरूशलेम) के चारों
ओर के स्थानों को आशीर्वाद दूँगा। मैं ठीक समय पर
वर्षा करुँगा। वे आशीर्वाद सहित वर्षा करेंगे। 27खेतों में
उगने वाले वृक्ष अपने फल देंगे। भूमि अपनी फसल
देगी। अत: भेड़ें अपने प्रदेश में सुरक्षित रहेंगी। मैं उनके
ऊपर रखे जूवों को तोड़ दूँगा। मैं उन्हें उन लोगों की
शक्ति से बचाऊँगा जिन्होंने उन्हें दास बनाया। तब वे
जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ। 28वे जानवरों की तरह भविष्य
में अन्य राष्ट्रों द्वारा बन्दी नहीं बनाये जाएंगे। वे जानवर
उन्हें भविष्य में नहीं खाएंगे। अपितु अब वे सुरक्षित
रहेंगे। कोई उन्हें आतंकित नहीं करेगा। 29मैं उन्हें कुछ
ऐसी भूमि दूँगा जो एक अच्छा उद्यान बनेगी। तब वे उस
देश में भूख से पीड़ित नहीं होंगे। वे भविष्य में राष्ट्रों से
अपमानित होने का कष्ट न पाएंगे। 30तब वे समझेंगे
कि मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ। तब वे समझेंगे कि
मैं उनके साथ हूँ। इस्राएल का परिवार समझेगा कि वे
मेरे लोग हैं!" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा था!

31"तुम मेरी भेड़ों, मेरी चरागाह की भेड़ों, तुम केवल
मनुष्य हो और मैं तुम्हारा परमेश्वर हूँ।" मेरे स्वामी
यहोवा ने यह कहा।

एदोम के विरुद्ध सन्देश

35 मुझे यहोवा का वचन मिला। उसने कहा,
2"मनुष्य के पुत्र, सेईर पर्वत की ओर ध्यान
दो और मेरे लिये इसके विरुद्ध कुछ कहो। 3इससे कहो,
'मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: सेईर पर्वत, मैं तुम्हारे
विरुद्ध हूँ! मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। मैं तुम्हें खाली बरबाद क्षेत्र
कर दूँगा। 4मैं तुम्हारे नगरों को नष्ट करुँगा, और तुम
खाली हो जाओगे। तब तुम समझोगे कि मैं यहोवा हूँ।

5क्यों? क्योंकि तुम सदा मेरे लोगों के विरुद्ध रहे।
तुमने इस्राएल के विरुद्ध अपनी तलवारों का उपयोग
उनकी विपत्ति के समय में किया, उनके अन्तिम दण्ड
के समय में।'"

6अत: मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मैं अपने जीवन
की शपथ खाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुम्हें मैं मृत्यु के
मुँह में भेजूँगा। मृत्यु तुम्हारा पीछा करेगी। तुम्हें व्यक्तियों
के मारने से घृणा नहीं है, अत: मृत्यु तुम्हारा पीछा
करेगी। 7मैं सेईर पर्वत को खाली बरबाद कर दूँगा। मैं
उस हर एक व्यक्ति को मार डालूँगा जो उस नगर से
आएगा और मैं उस हर व्यक्ति को मार डालूँगा जो उस
नगर में जाने का प्रयत्न करेगा। 8मैं उसके पर्वतों को
शवों से ढक दूँगा। वे शव तुम्हारी सारी पहाड़ियों, तुम्हारी
घाटी और तुम्हारे सारे विषम जंगलों में फैले होंगे। 9मैं
तुझे सदा के लिये खाली कर दूँगा। तुम्हारे नगरों में
कोई नहीं रहेगा। तब तुम समझोगे कि मैं यहोवा हूँ।"

10तुमने कहा, "ये दोनों राष्ट्र और देश (इस्राएल और
यहूदा) मेरे होंगे। हम उन्हें अपना बना लेंगे।"

किन्तु यहोवा वहाँ है! 11मेरा स्वामी यहोवा कहता
है, "तुम मेरे लोगों के प्रति ईर्ष्यालु थे। तुम उन पर
क्रोधित थे और तुम मुझसे घृणा करते थे। अत: अपने
जीवन की शपथ खाकर मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं
तुम्हें वैसे ही दण्डित करुँगा जैसे तुमने उन्हें चोट पहुँचाई।
मैं तुझे दण्ड दूँगा और अपने लोगों को समझने दूँगा कि
मैं उनके साथ हूँ। 12तब तुम भी समझोगे कि मैंने
तुम्हारे लिये सभी अपमानों को सुना है। तुमने इस्राएल
पर्वत के विरुद्ध बहुत सी बुरी बातें की हैं। तुमने कहा,
'इस्राएल नष्ट कर दिया गया! हम लोग उसे भोजन की
तरह चबा जाएंगे!" 13तुम गर्वीले थे तथा मेरे विरुद्ध
तुमने बातें कीं। तुमने अनेक बार कहा और जो तुमने
कहा, उसका हर एक शब्द मैंने सुना! हाँ, मैंने तुम्हें
सुना।"

14मेरा स्वामी यहोवा यह कहता हैं, "उस समय सारी
धरती प्रसन्न होगी जब मैं तुम्हें नष्ट करूँगा। 15तुम तब
प्रसन्न थे जब इस्राएल देश नष्ट हुआ था। मैं तुम्हारे
साथ वैसा ही व्यवहार करुँगा। सेईर पर्वत और एदोम
का पूरा देश नष्ट कर दिया जाएगा। तब तुम समझोगे
कि मैं यहोवा हूँ।"

इस्राएल देश का फिर निर्माण किया जाएगा

36 "मनुष्य के पुत्र, मेरे लिए इस्राएल के पर्वतों से
कहो। इस्राएल के पर्वतों को यहोवा का वचन
सुनने को कहो! 2उनसे कहो कि स्वामी यहोवा यह
कहता है, 'शत्रु ने हमें छला है। उन्होंने कहा: अहा!
अब प्राचीन पर्वत हमारा होगा!'"

3"अत: मेरे लिये इस्राएल के पर्वतों से कहो। कहो
कि स्वामी यहोवा यह कहता है, शत्रु ने तुम्हें खाली
किया। उन्होंने तुम्हें चारों ओर से कुचल डाला है।
उन्होंने ऐसा किया अत: तुम अन्य राष्ट्रों के अधिकार
में गए। तब तुम्हारे बारे में लोगों ने बातें और कानाफूसी
की। 4अत: इस्राएल के पर्वतों, मेरे स्वामी यहोवा के
वचन को सुनो। मेरा स्वामी यहोवा पर्वतों, पहाड़ियों,
धाराओं, घाटियों, खाली खण्डहरों और छोड़े गए नगरों

से, जो चारों ओर के अन्य राष्ट्रों द्वारा लूटे और मजाक
उड़ाए गए कहता है। 5मेरा स्वामी यहोवा कहता है: मैं
शपथ खाता हूँ कि मैं अपनी तीव्र अनुभूतियों को अपने
लिये बोलने दूँगा। मैं एदोम और अन्य राष्ट्रों को अपने
क्रोध का अनुभव कराऊँगा। उन राष्ट्रों ने मेरा देश
अपना बना लिया! वे उस देश को लेकर बड़े प्रसन्न
हुए। उन्होंने देश को अपना बना लिया!"
6"इसलिये इस्राएल देश के बारे में ये कहो। पर्वतों,
पहाड़ियों, धाराओं और घाटियों से कहो। यह कहो कि
स्वामी यहोवा यह कहता है, 'मैं अपनी तीव्र अनुभूतियों
और क्रोध को अपने लिये बोलने दूँगा। क्यों? क्योंकि
इन राष्ट्रों से तुम्हें अपमान की पीड़ा मिली है।'" 7अत:
मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "मैं प्रतिज्ञा करता हूँ
कि तुम्हारे चारों ओर के राष्ट्र अपमान का कष्ट
भोगेंगे।"
8"किन्तु इस्राएल के पर्वतों, तुम मेरे इस्राएल के लोगों
के लिये नये पेड़ उगाओगे और फल पैदा करोगे। मेरे
लोग शीघ्र लौटेंगे। 9मैं तुम्हारे साथ हूँ। मैं तुम्हारी सहायता
करुँगा। लोग तुम्हारी भूमि जोतेंगे। लोग बीज बोएंगे।
10तुम्हारे ऊपर असंख्य लोग रहेंगे। इस्राएल का सारा
परिवार और सभी लोग वहाँ रहेंगे। नगरों में, लोग रहने
लगेंगे। नष्ट स्थान नये स्थानों की तरह बनेंगे। 11मैं
तुम्हें बहुत से लोग और जानवर दूँगा। वे बढ़ेंगे और
उनके बहुत बच्चे होंगे। मैं तुम्हारे ऊपर रहने वाले लोगों
को वैसे ही तुम्हें प्राप्त कराऊँगा, जैसे तुमने पहले किया
था। मैं तुम्हें तुम्हारे आरम्भ से भी अच्छा बनाऊँगा। तुम
फिर कभी उनको, उनके सन्तानों से वंचित नहीं करोगे।
तब तुम जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। 12हाँ, मैं अपने लोग,
इस्राएल को तुम्हारी भूमि पर चलाऊँगा। वे तुम पर
अधिकार करेंगे और तुम उनके होगे। तुम उन्हें बिना
बच्चों के फिर कभी नहीं बनाओगे।"
13मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "हे इस्राएल देश
लोग तुमसे बुरी बातें कहते हैं। वे कहते हैं कि तुमने
अपने लोगों को नष्ट किया। वे कहते हैं कि तुम बच्चों
को दूर ले गए। 14अब भविष्य में तुम लोगों को नष्ट
नहीं करोगे। तुम भविष्य में बच्चों को दूर नहीं ले
जाओगे।" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं थीं। 15"मैं
उन अन्य राष्ट्रों को तुम्हें, और अधिक अपमानित नहीं
करने दूँगा। तुम उन लोगों से और अधिक चोट नहीं
खाओगे। तुम उनको बच्चों से रहित फिर कभी नहीं
करोगे।" मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें कहीं।

यहोवा अपने अच्छे नाम की रक्षा करेगा

16तब यहोवा का वचन मुझे मिला। उसने कहा,
17"मनुष्य के पुत्र, इस्राएल का परिवार अपने देश में
रहता था। किन्तु उन्होंने उस देश को उन कामों से
गन्दा बना दिया जो उन्होंने किया। मेरे लिये वे ऐसी स्त्री
के समान थे जो अपने मासिक धर्म से अशुद्ध हो गई
हो। 18उन्होंने जब उस देश में लोगों की हत्या की तो
उन्होंने धरती पर खून फैलाया। उन्होंने अपनी देवमूर्तियों
से देश को गन्दा किया। अत: मैंने उन्हें दिखाया कि मैं
कितना क्रोधित था। 19मैंने उन्हें राष्ट्रों में बिखेरा और
सभी देशों में फैलाया। मैंने उन्हें वही दण्ड उस बुरे काम
के लिये दिया जो उन्होंने किया। 20वे उन अन्य राष्ट्रों
को गये और उन देशों में भी उन्होंने मेरे अच्छे नाम
को बदनाम किया। कैसे? वहाँ राष्ट्रों ने उनके बारे में
बातें कीं। उन्होंने कहा, ये यहोवा के लोग हैं किन्तु
इन्होंने उसका देश छोड़ दिया तो जरुर यहोवा में कुछ
खराबी होगी!
21"इस्राएल के लोगों ने मेरे पवित्र नाम को जहाँ कहीं
वे गये, बदनाम किया। मैंने अपने नाम के लिये दु:ख
अनुभव किया। 22अत: इस्राएल के परिवार से कहो कि
स्वामी यहोवा यह कहता है, 'इस्राएल के परिवार, तुम
जहाँ गए वहाँ तुमने मेरे पवित्र नाम को बदनाम किया।
इसे रोकने के लिये मैं कुछ करने जा रहा हूँ। मैं यह
तुम्हारे लिये नहीं करूँगा। इस्राएल, मैं इसे अपने पवित्र
नाम के लिये करूँगा। 23मैं उन राष्ट्रों को दिखाऊँगा कि
मेरा महान नाम सच में पवित्र है। तब वे राष्ट्र जानेंगे
कि मैं यहोवा हूँ।'" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा था।
24परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम्हें उन राष्ट्रों से बाहर
निकालूँगा, एक साथ इकट्ठा करूँगा और तुम्हें तुम्हारे
अपने देश में लाऊँगा। 25तब मैं तुम्हारे ऊपर शुद्ध जल
छिड़कूँगा और तुम्हें शुद्ध करूँगा। मैं तुम्हारी सारी
गन्दगियों को धो डालूँगा और उन घृणित देवमूर्तियों से
उत्पन्न गन्दगी को धो डालूँगा।"
26परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम में नयी आत्मा भी
भरूँगा और तुम्हारे सोचने के ढंग को बदलूँगा। मैं
तुम्हारे शरीर से कठोर हृदय को बाहर करुँगा और
तुम्हें एक कोमल मानवी हृदय दूँगा। 27मैं तुम्हारे भीतर
अपनी आत्मा प्रतिष्ठित करुँगा। मैं तुम्हें बदलूँगा जिससे
तुम मेरे नियमों का पालन करोगे। तुम सावधानी से मेरे
आदेशों का पालन करोगे। 28तब तुम उस देश में रहोगे
जिसे मैंने तुम्हारे पूर्वजों को दिया था। तुम मेरे लोग
रहोगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर रहूँगा।"
29परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम्हें बचाऊँगा भी और
तुम्हें अशुद्ध होने से रोकूँगा। मैं अन्न को उगने के लिये
आदेश दूँगा। मैं तुम्हारे विरुद्ध भूखमरी का समय नहीं
लाऊँगा। 30मैं तुम्हारे वृक्षों से फलों की बड़ी फसलें और
खेतों से अन्न की फसलें दूँगा। तब तुम अन्य देशों में
भूखे रहने की लज्जा फिर कभी अनुभव नहीं करोगे।
31तुम उन बुरे कामों को याद करोगे जो तुमने किये।
तुम याद करोगे कि वे काम अच्छे नहीं थे। तब तुम
अपने पापों और जो भंयकर काम किये उनके लिये
तुम स्वयं अपने से घृणा करोगे।"

32मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "मैं चाहता हूँ कि तुम
यह याद रखो: मैं तुम्हारी भलाई के लिये ये काम नहीं
कर रहा हूँ! मैं उन्हें अपने अच्छे नाम के लिये कर
रहा हूँ। इस्राएल के परिवार, तुम्हें अपने रहने के ढंग
पर लज्जित और व्याकुल होना चाहिये!"

33मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "जिस दिन मैं
तुम्हारे पापों को धोऊँगा, मैं लोगों को वापस तुम्हारे
नगरों में लाऊँगा। वे नष्ट नगर फिर बनाए जाएंगे।
34खाली पड़ी भूमि फिर जोती जाएगी। यहाँ से गुजरने
वाले हर एक को यह बरबादियों के ढेर के रूप में नहीं
दिखेगा। 35वे कहेंगें, 'अतीत में यह देश नष्ट हो गए थे।
लेकिन अब ये अदन के उद्यान जैसे हैं। नगर नष्ट हो
गये थे। वे बरबाद और खाली थे। किन्तु अब वे सुरक्षित
हैं और उनमें लोग रहते हैं।'"

36परमेश्वर ने कहा, "तब तुम्हारे चारों ओर के राष्ट्र
समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ और मैंने उन नष्ट स्थानों को
फिर बसाया। मैंने इस प्रदेश में, जो खाली पड़ा था पेड़ों
को रोपा। मैं यहोवा हूँ। मैंने यह कहा और मैं इसे घटित
कराऊँगा! 37मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "मैं इस्राएल
के परिवार से उनके लिये यह करने की याचना
कराऊँगा। मैं उनको असंख्य लोग बनाऊँगा। वे भेड़ों
की रेवड़ों की तरह होंगे। 38यरूशलेम में विशेष त्योहार
के अवसर के समय (बकरियों–भेंड़ों की रेवड़ों की
तरह, लोग होंगे।) नगर और बरबाद स्थान, लोगों के
झुण्ड से भर जाएंगे। तब वे समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

सूखी हड्डियों का दर्शन

37 यहोवा की शक्ति मुझ पर उतरी। यहोवा की
आत्मा मुझे नगर के बाहर ले गई और नीचे
एक घाटी के बीच में रखा। घाटी मरे लोगों की हड्डियों
से भरी थी। 2घाटी में असंख्य हड्डियाँ भूमि पर पड़ी
थी। यहोवा ने मुझे हड्डियों के चारों ओर घुमाया। मैंने
देखा कि हड्डियाँ बहुत सूखी हैं।

3तब मेरे स्वामी यहोवा ने मुझसे कहा, "मनुष्य के
पुत्र, क्या यह हड्डियाँ जीवित हो सकती हैं?"

मैंने उत्तर दिया, "मेरे स्वामी यहोवा, उस प्रश्न का
उत्तर केवल तू जानता है।"

4मेरे स्वामी यहोवा ने मुझसे कहा, "उन हड्डियों से
मेरे लिये बातें करो। उन हड्डियों से कहो, 'सूखी हड्डियों,
यहोवा का वचन सुनो! 5मेरा स्वामी यहोवा तुम से यह
कहता है: मैं तुममें आत्मा को आने दूँगा और तुम
जीवित हो जाओगे! 6मैं तुम्हारे ऊपर नसें और माँस
पेशियाँ चढ़ाऊँगा और मैं तुम्हें चमड़ी से ढक दूँगा। तब
मैं तुम में प्राण का संचार करूँगा और तुम फिर जीवित
हो उठोगे। तब तुम समझोगे कि मैं स्वामी यहोवा हूँ।'"

7अत: मैंने यहोवा के लिये उन हड्डियों से वैसे ही
बातें कीं जैसा उसने कहा। मैं जब कुछ कह ही रहा था
तभी मैंने प्रचण्ड ध्वनि सुनी। हड्डियाँ खड़खड़ाने लगीं
और हड्डियाँ हड्डियों से एक साथ जुड़ीं! 8वहाँ मेरी
आँखों के सामने नसों, माँस पेशियों और त्वचा ने
हड्डियों को ढकना आरम्भ किया। किन्तु शरीर हिले
नहीं, उनमें प्राण नहीं था।

9तब मेरे स्वामी यहोवा ने मुझसे कहा, "सांस से मेरे
लिये कहो। मनुष्य के पुत्र, मेरे लिये सांस से बातें करो।
सांस से कहो कि स्वामी यहोवा यह कह रहा है: 'सांस,
हर दिशा से आओ और इन शवों में प्राण संचार करो।
उनमें प्राण संचार करो और वे फिर जीवित हो जाएंगे!'"

10इस प्रकार मैंने यहोवा के लिये सांस से बातें कीं
जैसा उसने कहा और शवों में सांस आई। वे जीवित हुए
और खड़े हो गये। वहाँ बहुत से पुरुष थे, वे एक बड़ी
विशाल सेना थे!

11तब मेरे स्वामी यहोवा ने मुझसे कहा, "मनुष्य के
पुत्र, ये हड्डियाँ इस्राएल के पूरे परिवार की तरह हैं!
इस्राएल के लोग कहते हैं, हमारी हड्डियाँ सूख गई हैं ,
हमारी आशा समाप्त है। हम पूरी तरह नष्ट किये जा
चुके हैं। 12इसलिये उनसे मेरे लिये बातें करो। उनसे
कहो स्वामी यहोवा यह कहता है, 'मेरे लोगों, मैं तुम्हारी
कब्रें खोलूँगा और तुम्हें कब्रों के बाहर लाऊँगा! तब मैं
तुम्हें इस्राएल की भूमि पर लाऊँगा। 13मेरे लोगों, मैं
तुम्हारी कब्रें खोलूँगा और तुम्हारी कब्रों से तुम्हें बाहर
लाऊँगा। तब तुम समझोगे कि मैं यहोवा हूँ। 14मैं अपनी
आत्मा तुममें डालूँगा और तुम फिर से जीवित हो जाओगे।
तब तुमको मैं तुम्हारे देश में वापस लाऊँगा। तब तुम
जानोगे कि मैं यहोवा हूँ। तुम जानोगे कि मैंने ये बातें
कहीं और उन्हें घटित कराया।'" यहोवा ने यह कहा
था।

यहूदा और इस्राएल का फिर एक होना

15मुझे यहोवा का वचन फिर मिला। उसने कहा,
16"मनुष्य के पुत्र, एक छड़ी लो और उस पर यह
सन्देश लिखो: 'यह छड़ी यहूदा और उसकेमित्र इस्राएल
के लोगों की है।' तब दूसरी छड़ी लो और इस पर
लिखो, 'एप्रैम की यह छड़ी, यूसुफ और उसके मित्र
इस्राएल के लोगों की है।' 17तब दोनों छड़ियों को एक
साथ जोड़ दो। तुम्हारे हाथ में वे एक छड़ी होंगी।

18"तुम्हारे लोग यह स्पष्ट करने को कहेंगे कि इसका
अर्थ क्या है। 19उनसे कहो कि स्वामी यहोवा कहता है,
'मैं यूसुफ की छड़ी लूँगा जो इस्राएल के लोगों, जो एप्रैम
और उसके मित्रों के हाथ में है। तब मैं उस छड़ी को
यहूदा की छड़ी के साथ रखूँगा और इन्हें एक छड़ी
बनाऊँगा। मेरे हाथ में वह एक छड़ी होगी!'

20"उनके आँखों के सामने उन छड़ियों को अपने
हाथों में पकड़ो। तुमने वे नाम उन छड़ियों पर लिखे थे।
21लोगों से कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है: 'मैं

इस्राएल के लोगों को उन राष्ट्रों से लाऊँगा, जहाँ वे गए
हैं। मैं उन्हें चारों ओर से एकत्रित करूँगा और उनके
अपने देश में लाऊँगा। 22मैं उन्हें इस्राएल के पर्वतों के
प्रदेश में एक राष्ट्र बनाऊँगा। उन सभी का केवल एक
राजा होगा। वे दो राष्ट्र नहीं बने रहेंगे। वे भविष्य में
राज्यों में नहीं बाँटे जा सकते। 23वे अपनी देवमूर्तियों
और भंयकर मूर्तियों या अपने अन्य किसी अपराध से
अपने आपको गन्दा बनाते नहीं रहेंगे। किन्तु मैं उन्हें
सभी पापों से बचाता रहूँगा, चाहे वे जहाँ कहीं भी हों। मैं
उन्हें नहलाऊँगा और शुद्ध करूँगा। वे मेरे लोग होंगे
और मैं उनका परमेश्वर रहूँगा।

24"'मेरा सेवक दाऊद उनके ऊपर राजा होगा। उन
सभी का केवल एक गड़ेरिया होगा। वे मेरे नियमों के
सहारे रहेंगे और मेरे विधियों का पालन करेंगे। वे वह
काम करेंगे जो मैं कहूँगा। 25वे उस भूमि पर रहेंगे जो
मैंने अपने सेवक याकूब को दी। तुम्हारे पूर्वज उस
स्थान पर रहते थे और मेरे लोग वहाँ रहेंगे। वे, उनके
बच्चे और उनके पौत्र–पौत्रियाँ वहाँ सर्वदा रहेंगी और
मेरा सेवक दाऊद उनका प्रमुख सदा रहेगा। 26मैं उनके
साथ एक शान्ति–सन्धि करूँगा। यह सन्धि सदा बनी
रहेगी। मैं उनको उनका देश देना स्वीकार करता हूँ।
मैं उन्हें बहुसंख्यक लोग बनाना स्वीकार करता हूँ। मैं
अपना पवित्र स्थान वहाँ उनके साथ सदा के लिये
रखना स्वीकार करता हूँ। 27मेरा पवित्र तम्बू वहाँ उनके
बीच रहेगा। हाँ, मैं उनका परमेश्वर और वे मेरे लोग
होंगे। 28तब अन्य राष्ट्र समझेंगे कि मैं यहोवा हूँ और वे
जानेंगे कि मैं इस्राएल को, उनके बीच सदा के लिये
अपना पवित्र स्थान रखकर, अपने विशेष लोग बना
रहा हूँ।'"

गोग के विरुद्ध सन्देश

38 यहोवा का सन्देश मुझे मिला। उसने कहा,
2"मनुष्य के पुत्र, मागोग प्रदेश में गोग पर
ध्यान दो। वह मेशेक और तूबल राष्ट्रों का सर्वाधिक
महत्वपूर्ण प्रमुख है। गोग के विरुद्ध मेरे लिये कुछ
कहो। 3उससे कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है,
गोग तुम मेशेक और तूबल राष्ट्रों के सर्वाधिक महत्वपूर्ण
प्रमुख हो! किन्तु मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ। 4मैं तुम्हें पकड़ूँगा
और तुम्हारी पूरी सेना के साथ वापस लाऊँगा। मैं
तुम्हारी सेना के सभी पुरुषों को वापस लाऊँगा। मैं सभी
घोड़ों और घुड़सवारों को वापस लाऊँगा। मैं तुम्हारे मुँह
में नकेल डालूँगा और तुम सभी को वापस लाऊँगा।
सभी सैनिक अपनी सभी तलवारों और ढालों के साथ
अपनी सैनिक पोशाक में होंगे। 5फारस, कूश और पूत
के सैनिक उनके साथ होंगे। वे सभी अपनी ढालें तथा
सिर के कवच धारण किये होंगे। 6वहाँ अपने सैनिकों
के सभी समूहों के साथ गोमेर भी होगा। वहाँ दूर उत्तर
से अपने सैनिकों के सभी समूहों के साथ तोगर्मा का
राष्ट्र भी होगा। उस बन्दियों की पंक्ति में वहाँ बहु संख्यक
लोग होंगे।

7"तैयार हो जाओ। हाँ, अपने को तैयार करो और
अपने साथ मिलने वाली सेना को भी। तुम्हें निगरानी
रखनी चाहिए और तैयार रहना चाहिए। 8बहुत लम्बे
समय के बाद तुम काम पर बुलाये जाओगे। आगे आने
वाले वर्षों में तुम उस प्रदेश में आओगे जो युद्ध के बाद
पुन: निर्मित होगा। उस देश में लोग इस्राएल के पर्वत पर
आने के लिये बहुत से राष्ट्रों से इकट्ठे किये जाएंगे।
अतीत में इस्राएल का पर्वत बार–बार नष्ट किया गया
था। किन्तु ये लोग उन दूसरे राष्ट्रों से वापस लौटे होंगे। वे
सभी सुरक्षित रहेंगे। 9किन्तु तुम उन पर आक्रमण
करने आओगे। तुम तूफान की तरह आओगे। तुम देश
को ढकते हुए गरजते मेघ की तरह आओगे। तुम और
बहुत से राष्ट्रों के तुम्हारे सैनिकों के समूह, इन लोगों पर
आक्रमण करने आएंगे।"

10मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है: "उस समय तुम्हारे
मस्तिष्क में एक विचार उठेगा। तुम एक बुरी योजना
बनाना आरम्भ करोगे। 11तुम कहोगे, 'मैं उस देश पर
आक्रमण करने जाऊँगा जिसके नगर बिना दीवार के
हैं (इस्राएल)। वे लोग शान्तिपूर्वक रहते हैं। वे समझते हैं
कि वे सुरक्षित हैं। उनकी रक्षा के लिये उनके नगरों
के चारों ओर कोई दीवार नहीं है। उनके दरवाजों में
ताले नहीं हैं, उनके दरवाजे भी नहीं हैं! 12मैं इन लोगों
को हराऊँगा और उनकी सभी कीमती चीजें उनसे ले
लूँगा। मैं उन स्थानों के विरुद्ध लड़ूँगा जो नष्ट हो चुके
थे, किन्तु अब लोग उनमें रहने लगे हैं। मैं उन लोगों
(इस्राएल) के विरुद्ध लड़ूँगा जो दूसरे राष्ट्रों से इकट्ठे हुए
थे। अब वे लोग मवेशी और सम्पत्ति वाले हैं। वे संसार
के चौराहे पर रहते हैं जिस स्थान में से शक्तिशाली देशों
को अन्य शक्तिशाली सभी देशों तक जाने के लिये यात्रा
करनी पड़ती है।'"

13"शबा, ददान और तर्शीश के व्यापारी और सभी
नगर जिनके साथ वे व्यापार करते हैं, तुमसे पूछेंगे,
'क्या तुम कीमती चीजों पर अधिकार करने आये हो?
क्या तुम अपने सैनिकों के समूहों के साथ, उन अच्छी
चीजों को हड़पने और चाँदी, सोना मवेशी तथा सम्पत्ति
ले जाने आए थे? क्या तुम उन सभी कीमती चीजों को
लने आये थे?'"

14परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य के पुत्र, मेरे लिये गोग
से कहो। उससे कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है,
"तुम हमारे लोगों पर तब आक्रमण करने आओगे जब
वे शान्तिपूर्वक और सुरक्षित रह रहे हैं। 15तुम दूर उत्तर
के अपने स्थान से आओगे और तुम बहुसंख्यक लोगों
को साथ लाओगे। वे सभी घुड़सवार होंगे। तुम एक
विशाल और शक्तिशाली सेना होगे। 16तुम मेरे लोग

इस्राएल के विरुद्ध लड़ने आओगे। तुम देश को गरजते
मेघ की तरह ढकने वाले होगे। मैं बाद में, अपने देश
के विरुद्ध लड़ने के लिये तुम्हें लाऊँगा। तब गोग, राष्ट्र
जानेंगे कि मैं कितना शक्तिशाली हूँ। वे मेरा सम्मान
करेंगे और समझेंगे कि मैं पवित्र हूँ। वे देखेंगे कि मैं
तुम्हारे विरुद्ध क्या करुँगा!"

17यहोवा यह कहता है, "उस समय लोग याद करेंगे
कि मैंने अतीत में तुम्हारे बारे में जो कहा। वे याद
करेंगे कि मैने अपने सेवकों इस्राएल के नबियों का
उपयोग किया। वे याद करेंगे कि इस्राएल के नबियों ने
मेरे लिये अतीत में बातें कीं और कहा कि मैं तुमको
उनके विरुद्ध लड़ने के लिये लाऊँगा।"

18मेरे स्वामी यहोवा ने कहा, "उस समय, गोग इस्राएल
देश के विरुद्ध लड़ने आएगा। मैं अपना क्रोध प्रकट
करूँगा। **19**क्रोध और उत्तेजना में मैं यह प्रतिज्ञा करता
हूँ, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि इस्राएल में एक प्रबल भूकम्प
आएगा। **20**उस समय सभी सजीव प्राणी भय से काँप
उठेंगे। समुद्र में मछलियाँ, आकाश में पक्षी, खेतों में
जंगली जानवर और वे सभी छोटे प्राणी जो धरती पर
रेंगते हैं, भय से काँप उठेंगे। पर्वत गिर पड़ेंगे और शिखर
ध्वस्त होंगी। हर एक दीवार धरती पर आ गिरेगी!"

21मेरा स्वामी यहोवा कहता है, "इस्राएल के पर्वतों
पर, मैं गोग के विरुद्ध हर प्रकार का भय उत्पन्न
करुँगा। उसके सैनिक इतने भयभीत होंगे कि वे एक
दूसरे पर आक्रमण करेंगे और अपनी तलवार से एक
दूसरे को मार डालेंगे। **22**मैं गोग को रोग और मृत्यु का
दण्ड दूँगा। मैं गोग और बहुत से राष्ट्रों के सैनिकों के
ऊपर ओले, आग और गंधक की वर्षा करुँगा। **23**तब
मैं दिखाऊँगा कि मैं कितना महान हूँ, मैं प्रमाणित
करुँगा कि मैं पवित्र हूँ। बहुत से राष्ट्र मुझे ये काम
करते देखेंगे और वे जानेंगे कि मैं कौन हूँ। तब वे
जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।"

गोग और उसकी सेना की मृत्यु

39 "मनुष्य के पुत्र, गोग के विरुद्ध मेरे लियेकहो।
उससे कहो कि स्वामी यहोवा यह कहता है,
'गोग, तुम मेशेक और तूबल देशों के सर्वाधिक महत्वपूर्ण
प्रमुख हो! किन्तु मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ। **2**मैं तुम्हें पकडूँगा
और वापस लाऊँगा। मैं तुम्हें सुदूर उत्तर से लाऊँगा। मैं
तुम्हें इस्राएल के पर्वतों के विरुद्ध युद्ध करने के लिये
लाऊँगा। **3**किन्तु मैं तुम्हारा धनुष तुम्हारे बायें हाथ से
झटक कर गिरा दूँगा। मैं तुम्हारे दायें हाथ से तुम्हारे
बाण झटक कर गिरा दूँगा। **4**तुम इस्राएल के पर्वतों पर
मारे जाओगे। तुम, तुम्हारे सैनिक समूह और तुम्हारे
साथ के अन्य सभी राष्ट्र युद्ध में मारे जाएंगे। मैं तुमको
हर एक प्रकार के पक्षियों, जो माँसभक्षी हैं तथा सभी
जंगली जानवरों को भोजन के रूप में दूँगा। **5**तुम नगर
में प्रवेश नहीं करोगे। तुम खुले मैंदानों में मारे जाओगे।
मैंने यह कह दिया है!'" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

6परमेश्वर ने कहा, "मैं मागोग और उन व्यक्तियों
के, जो समुद्र–तट पर सुरक्षित रहते हैं, विरुद्ध आग
भेजूँगा। तब वे जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ। **7**मैं अपना पवित्र
नाम अपने इस्राएल लोगों में विदित करुँगा। भविष्य में,
मैं अपने पवित्र नाम को, लोगों द्वारा और अधिक
बदनाम नहीं करने दूँगा। राष्ट्र जानेंगे कि मैं यहोवा हूँ।
वे समझेंगे कि मैं इस्राएल में परम पवित्र हूँ। **8**वह समय
आ रहा है! यह घटित होगा!" यहोवा ने ये बातें कहीं!
"यह वही दिन है जिसके बारे में मैं कह रहा हूँ।

9"उस समय, इस्राएल के नगरों में रहने वाले लोग
उन खेतों में जाएंगे। वे शत्रु के अस्त्र–शस्त्रों को इकट्ठा
करेंगे और उन्हें जला देंगे। वे सभी ढालों, धनुषों, और
बाणों, गदाओं और भालों को जलाएंगे। वे उन अस्त्र–शस्त्रों
का उपयोग सात वर्ष तक ईंधन के रूप में करेंगे।
10उन्हें मैंदानों से लकड़ी इकट्ठी नहीं करनी पड़ेगी या
जंगलों से ईंधन नहीं काटना पड़ेगा, क्योंकि वे अस्त्र–शस्त्रों
का उपयोग ईंधन के रुप में करेंगे। वे कीमती चीजों को
सैनिकों से छीनेंगे जिसे वे उनसे चुराना चाहते थे। वे
सैनिकों से अच्छी चीजें लेंगे जिन्होंने उनसे अच्छी चीजें
ली थीं।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।"

11परमेश्वर ने कहा, "उस समय में गोग को दफनाने
के लिये इस्राएल में एक स्थान चुनूँगा। वह मृत सागर
के पूर्व में यात्रियों की घाटी में दफनाया जाएगा। यह
यात्रियों के मार्ग को रोकेगा। क्यों? क्योंकि गोग और
उसकी सारी सेना उस स्थान में दफनायी जाएगी। लोग
इसे 'गोग की सेना की घाटी' कहेंगे। **12**इस्राएल का
परिवार देश को शुद्ध करने के लिए सात महीने तक
उन्हें दफनाएगा। **13**देश के साधारण लोग शत्रु के सैनिकों
को दफनाएंगे। इस्राएल के लोग उस दिन प्रसिद्ध होंगे
जिस दिन मैं अपने लिए सम्मान पाऊँगा।" मेरे स्वामी
यहोवा ने यह कहा।

14परमेश्वर ने कहा, "लोग मजदूरों को, उन मरे
सैनिकों को दफनाने के लिये पूरे समय की नौकरी
देंगे। इस प्रकार वे देश को पवित्र करेंगे। वे मज़दूर सात
महीने तक कार्य करेंगे। वे शवों को ढूँढते हुए चारों
ओर जाएंगे। **15**वे मज़दूर चारों ओर ढूँढते फिरेंगे। यदि
उनमें कोई एक हड्डी देखेगा तो वह उसके पास एक
चिन्ह बना देगा। चिन्ह वहाँ तब तक रहेगा जब तक
कब्र खोदने वाला आता नहीं और गोग की सेना की
घाटी में उस हड्डी को दफनाता नहीं। **16**वह मृतक
लोगों का नगर, (कब्रिस्तान) हमोना कहलाएगा। इस
प्रकार वे देश को शुद्ध करेंगे।"

17मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा, "मनुष्य के पुत्र, मेरे
लिये पक्षियों और जंगली जानवरों से कुछ कहो। उनसे
कहो, 'यहाँ आओ! यहाँ आओ! एक स्थान पर इकट्ठे

हो। यह बलि जो मैं तुम्हारे लिये तैयार कर रहा हूँ
उसके लिए आओ, उसे खाओ। इस्राएल के पर्वतों पर
एक विशाल बलिदान होगा। आओ, माँस खाओ और
खून पिओ। **18**तुम शक्तिशाली सैनिकों के शरीर का
माँस खाओगे। तुम संसार के प्रमुखों का खून पीओगे। वे
बाशान के मेढ़ों, मेमनों, बकरों और मोटे बैलों के
समान होंगे। **19**तुम जितनी चाहो, उतनी चर्बी खा सकते
हो और तुम खून तब तक पी सकते हो जब तक तुम्हारे
पेट न भरे। तुम मेरी बलि से खाओगे और पीओगे जिसे
मैंने तुम्हारे लिये मारा। **20**मेरी मेज पर खाने को तुम
बहुत-सा माँस पा सकते हो। वहाँ घोड़े और रथ सारथी,
शक्तिशाली सैनिक और अन्य सभी लड़ने वाले व्यक्ति
होंगे।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

21परमेश्वर ने कहा, "मैं अन्य राष्ट्रों को दिखाऊँगा
कि मैंने क्या किया है। वे राष्ट्र मेरा सम्मान करना
आरम्भ करेंगे! वे मेरी वह शक्ति देखेंगे जो मैंने शत्रु के
विरुद्ध उपयोग की। **22**तब, उस दिन के बाद, इस्राएल
का परिवार जानेगा कि मैं उनका परमेश्वर यहोवा हूँ।
23राष्ट्र यह जान जाएंगे कि इस्राएल का परिवार क्यों
दूसरे देशों में बन्दी बनाकर ले जाया गया था। वे जानेंगे
कि मेरे लोग मेरे विरुद्ध हो उठे थे। इसलिए मैं उनसे
दूर हट गया था। मैंने उनके शत्रुओं को उन्हें हराने
दिया। अत: मेरे लोग युद्ध में मारे गए। **24**उन्होंने पाप
किया और अपने को गन्दा बनाया। अत: मैंने उन्हें उन
कामों के लिये दण्ड दिया जो उन्होंने किये। अत: मैंने
उनसे अपना मुँह छिपाया है और उनको सहायता देने से
इन्कार किया। **25**अत: मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है,
"अब मैं याकूब के परिवार को बन्धुवाई से निकालूँगा।
मैंने पूरे इस्राएल के परिवार पर दया की है। मैं अपने
पवित्र नाम के लिये विशेष भावना प्रकट करुँगा। **26**लोग
अपनी लज्जा और मेरे विरुद्ध विद्रोह के सारे समय को
भूल जायेंगे। वे अपने देश में सुरक्षा के साथ रहेंगे। कोई
भी उन्हें भयभीत नहीं करेगा। **27**मैं अपने लोगों को
अन्य देशों से वापस लाऊँगा। मैं उन्हें उनके शत्रुओं के
देशों से इकट्ठा करुँगा। तब बहुत से राष्ट्र समझेंगे कि
मैं कितना पवित्र हूँ। **28**वे समझेंगे कि मैं यहोवा उनका
परमेश्वर हूँ। क्यों? क्योंकि मैंने उनसे उनका घर
छुड़वाया और अन्य देशों में बन्दी के रूप में भिजवाया
और तब मैंने उन्हें एक साथ इकट्ठा किया और
उनके अपने देश में वापस लाया। **29**मैं इस्राएल के
परिवार में अपनी आत्मा उतारुँगा और उसके बाद, मैं
फिर अपने लोगों से दूर नहीं हटूँगा।" मेरे स्वामी यहोवा
ने यह कहा था।

नया मन्दिर

40 हम लोगों को बन्दी के रूप में ले जाए जाने के
पच्चीसवें वर्ष में, वर्ष के आरम्भ में (अकटूबर)
महीने के दसवें दिन, यहोवा की शक्ति मुझ में आई।
बाबुल वासियों द्वारा इस्राएल पर अधिकार करने के
चौदहवें वर्ष का यह वही दिन था। दर्शन में यहोवा मुझे
वहाँ ले गया।

2दर्शन में परमेश्वर मुझे इस्राएल देश ले गया। उसने
मुझे एक बहुत ऊँचे पर्वत के समीप उतारा। पर्वत पर
एक भवन था जो नगर के समान दिखता था। **3**यहोवा
मुझे वहाँ ले आया। वहाँ एक व्यक्ति था जो झलकाये
गये काँसे की तरह चमकता हुआ दिखता था। वह
व्यक्ति एक कपड़े नापने का फीता और नापने की एक
छड़ अपने हाथ में लिये था। वह फाटक से लगा खड़ा
था। **4**उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, अपनी
आँख और अपने कान का उपयोग करो। इन चीजों पर
ध्यान दो और मेरी सुनो। जो मैं तुम्हें दिखाता हूँ उस पर
ध्यान दो। क्यों? क्योंकि तुम यहाँ लाए गए हो, अत: मैं
तुम्हें इन चीजों को दिखा सकता हूँ। तुम इस्राएल के
परिवार से वह सब बताना जो तुम यहाँ देखो।"

5मैंने एक दीवार देखी जो मन्दिर के बाहर चारों ओर
से घेरती थी। उस व्यक्ति के हाथ में चीजों को नापने
की एक छड़ थी। यह एक बालिश्त और एक हाथ
लम्बी थी। अत: उस व्यक्ति ने दीवार की मोटाई नापी।
वह एक छड़ मोटी थी। उस व्यक्ति ने दीवार की ऊँचाई
नापी। यह एक छड़ ऊँची थी।

6तब व्यक्ति पूर्वी द्वार को गया। वह व्यक्ति उसकी
पैड़ियों पर चढ़ा और फाटक की देहली को नापा। यह
एक छड़ चौड़ी थी। **7**रक्षकों के कमरे एक छड़ लम्बे
और एक छड़ चौड़े थे। कमरों के बीच के दीवारों की
मोटाई पाँच हाथ थी। भीतर की ओर फाटक के प्रवेश
कक्ष के बगल में फाटक की देहली एक छड़ चौड़ी थी।
8तब उस व्यक्ति ने मन्दिर से लगे फाटक के प्रवेश कक्ष
को नापा। **9**यह एक छड़ चौड़ा था। तब उस व्यक्ति ने
फाटक के प्रवेश कक्ष को नापा। यह आठ हाथ था।
उस व्यक्ति ने फाटक के द्वार-स्तम्भों को नापा। हर
एक द्वार स्तम्भ दो हाथ चौड़ा था। प्रवेश कक्ष का
दरवाजा भीतर को था। **10**फाटक के हर ओर तीन छोटे
कमरे थे। ये तीनों छोटे कमरे हर ओर से एक नाप के
थे। दोनों ओर के द्वार स्तम्भ एक नाप के थे। **11**उस
व्यक्ति ने फाटक के दरवाजें की चौड़ाई नापी। यह दस
हाथ चौड़ी और तेरह हाथ चौड़ी थी। **12**हर एक कमरे
के सामने एक नीची दीवार थी। यह दीवार एक हाथ
ऊँची और एक हाथ मोटी थी। कमरे वर्गाकार थे और
हर ओर से छ: हाथ लम्बे थे।

13उस व्यक्ति ने फाटक को एक कमरे की छत से
दूसरे कमरे की छत तक नापा। यह पच्चीस हाथ था।
एक द्वार दूसरे द्वार के ठीक विपरीत था। **14**उस व्यक्ति
ने प्रवेश कक्ष को भी नापा। यह बीस हाथ चौड़ा था।
प्रवेश कक्ष के चारों ओर आँगन था। **15**प्रवेश कक्ष का

फाटक पूरे बाहर की ओर से, फाटक के भीतर तक
नाप में पचास हाथ था। 16रक्षकों के कमरों में चारों
ओर छोटी खिड़कियाँ थीं। छोटे कमरों में द्वार–स्तम्भों
की ओर भीतर को खिड़कियाँ अधिक पतली हो गई
थीं। प्रवेश कक्ष में भी भीतर के चारों ओर खिड़कियाँ
थीं। हर एक द्वार स्तम्भ पर खजूर के वृक्ष खुदे थे।

बाहर का आँगन

17तब वह व्यक्ति मुझे बाहरी आँगन में लाया। मैंने
कमरे और पक्के रास्ते को देखा। वे आँगन के चारों
ओर थे। पक्के रास्ते पर सामने तीस कमरे थे। 18पक्का
रास्ता फाटक की बगल से गया था। पक्का रास्ता
उतना ही लम्बा था जितने फाटक थे। यह नीचे का
रास्ता था। 19तब उस व्यक्ति ने नीचे फाटक के सामने
भीतर की ओर से लेकर आँगन की दीवार के सामने
भीतर की ओर तक नापा। यह सौ हाथ पूर्व और उत्तर
में था।

20उस व्यक्ति ने बाहरी आँगन, जिसका सामना उत्तर
की ओर है, के फाटक की लम्बाई और चौड़ाई को
नापा। 21इसके हर एक ओर तीन कमरे हैं। इसके द्वार
स्तम्भों और प्रवेश कक्ष की नाप वही थी जो पहले
फाटक की थी। फाटक पचास हाथ लम्बा और पच्चीस
हाथ चौड़ा था। 22इसकी खिडकियाँ इसके प्रवेश कक्ष
और इसकी खजूर के वृक्षों की नक्काशी की नाप वही
थी जो पूर्व की ओर मुखवाले फाटक की थी। फाटक
तक सात पैड़ियाँ थीं। फाटक का प्रवेश कक्ष भीतर था।
23भीतरी आँगन में उत्तर के फाटक तक पहुँचने वाला
एक फाटक था। यह पूर्व के फाटक के समान था। उस
व्यक्ति ने एक फाटक से दूसरे तक नापा। यह एक
फाटक से दूसरे फाटक तक सौ हाथ था।

24तब वह व्यक्ति मुझे दक्षिण की ओर ले गया। मैंने
दक्षिण में एक द्वार देखा। उस व्यक्ति ने द्वार–स्तम्भों
और प्रवेश कक्ष को नापा। 25वे नाप में उतने ही थे
जितने अन्य फाटक। मुख्य द्वार पचास हाथ लम्बे और
पच्चीस हाथ चौड़े थे। 26सात पैड़ियाँ इस फाटक तक
पहुँचाती थीं। इसका प्रवेश कक्ष भीतर को था। हर एक
ओर एक–एक द्वार–स्तम्भ पर खजूर की नक्काशी
थी। 27भीतरी आँगन की दक्षिण की ओर एक फाटक
था। उस व्यक्ति ने दक्षिण की ओर एक फाटक से दूसरे
फाटक तक नापा। यह सौ हाथ चौड़ा था।

भीतरी आँगन

28तब वह व्यक्ति मुझे दक्षिण फाटक से होकर भीतरी
आँगन में ले गया। दक्षिण के फाटक की नाप उतनी ही
थी जितनी अन्य फाटकों की। 29दक्षिण फाटक के
कमरे, द्वार–स्तम्भ और प्रवेश कक्ष की नाप उतनी ही
थी जितनी अन्य फाटकों की थी। खिड़कियाँ, फाटक
और प्रवेश कक्ष के चारों ओर थीं। फाटक पचास हाथ
लम्बा और पच्चीस हाथ चौड़ा था। उसके चारों ओर
प्रवेश कक्ष थे। 30प्रवेश कक्ष पच्चीस हाथ लम्बा और
पाँच हाथ चौड़ा था। 31दक्षिण फाटक के प्रवेश कक्ष का
सामना बाहरी आँगन की ओर था। इसके द्वार–स्तम्भों
पर खजूर के पेड़ों की नक्काशी थी। इसकी सीढ़ी की
आठ पैड़ियाँ थीं।

32वह व्यक्ति मुझे पूर्व की ओर के भीतरी आँगन में
लाया। उसने फाटक को नापा। उसकी नाप वही थी जो
अन्य फाटकों की। 33पूर्वी द्वार के कमरे, द्वार–स्तम्भ
और प्रवेश कक्ष के नाप वही थे जो अन्य फाटकों के।
फाटक और प्रवेश कक्ष के चारों ओर खिड़कियाँ थीं।
पूर्वी फाटक पचास हाथ लम्बा और पच्चीस हाथ चौड़ा
था। 34इसके प्रवेश कक्ष का सामना बाहरी आँगन की
ओर था। हर एक ओर के द्वार–स्तम्भों पर खजूर के
पेड़ों की नक्काशी थी। इसकी सीढ़ी में आठ पैड़ियाँ थीं।

35तब वह व्यक्ति मुझे उत्तरी द्वार पर लाया। उसने इसे
नापा। इसकी नाप वह थी जो अन्य फाटकों की अर्थात
36इसके कमरों, द्वार–स्तम्भों और प्रवेश कक्ष की।
फाटक के चारों ओर खिड़कियाँ थीं। यह पचास हाथ
लम्बा और पच्चीस हाथ चौड़ा था। 37द्वार–स्तम्भों का
सामना बाहरी आँगन की ओर था। हर एक ओर के
द्वार–स्तम्भों पर खजूर के पेड़ों की नक्काशी थी और
इसकी सीढ़ी की आठ पैड़ियाँ थीं।

बलियाँ तैयार करने के कमरें

38एक कमरा था जिसका दरवाजा फाटक के प्रवेश
कक्ष के पास था। यह वहाँ था जहाँ याजक होमबलि के
लिये जानवरों को नहलाते हैं। 39फाटक के प्रवेश कक्ष
के दोनों ओर दो मेजें थीं। होमबलि पाप के लिये भेंट
और अपराध के लिये भेंट के जानवर उन्हीं मेजों पर
मारे जाते थे। 40प्रवेश कक्ष के बाहर, जहाँ उत्तरी फाटक
खुलता है, दो मेजें थीं और फाटक के प्रवेश कक्ष के
दूसरी ओर दो मेजें थीं 41फाटक के भीतर चार मेजें
थीं। चार मेजें फाटक के बाहर थीं। सब मिलाकर आठ
मेजें थीं। याजक इन मेजों पर बलि के लिए जानवरों को
मारते थे। 42होमबलि के लिये कटी शिला की चार मेजें
थीं। ये मेजें डेढ़ हाथ लम्बी, डेढ़ हाथ चौड़ी और एक
हाथ ऊँची थीं। याजक होमबलि और बलिदानों के लिये
जिन जानवरों को मारा करते थे, उनको मारने के
औजारों को इन मेजों पर रखते थे। 43एक हाथ की
चौड़ाई के कुन्दें पूरे मन्दिर में लगाए गए थे। भेंट के
लिये माँस मेजों पर रहता था।

याजकों के कमरे

44भीतरी आँगन के फाटक के बाहर दो कमरे थे।
एक उत्तरी फाटक के साथ था। इसका सामना दक्षिण

को था। दूसरा कमरा दक्षिण फाटक के साथ था।
इसका सामना उत्तर को था। 45उस व्यक्ति ने मुझसे
कहा, "यह कमरा, जिसका सामना दक्षिण को है, उन
याजक के लिये है जो अपने काम पर हैं और मन्दिर में
सेवा कर रहे हैं। 46किन्तु वह कमरा जिसका सामना
उत्तर को है, उन याजकों के लिये है जो अपने काम पर
हैं और वेदी पर सेवा कर रहे हैं। ये सभी याजक
सादोक के वंशज हैं। सादोक के वंशज ही लेवीवंश के
एकमात्र व्यक्ति हैं जो यहोवा की सेवा उनके पास बलि
लाकर कर सकते हैं।" 47उस व्यक्ति ने आँगन को
नापा। आँगन पूर्ण वर्गाकार था। यह सौ हाथ लम्बा और
सौ हाथ चौड़ा था। वेदी मन्दिर के सामने थी।

मन्दिर का प्रवेश-कक्ष

48वह व्यक्ति मुझे मन्दिर के प्रवेश कक्ष में लाया
और उनके हर एक द्वार-स्तम्भ को नापा। यह पाँच
हाथ प्रत्येक ओर था। फाटक चौदह हाथ चौड़ा था।
फाटक की बगल की दीवारें तीन हाथ हर ओर थीं।
49प्रवेश कक्ष बीस हाथ लम्बा और बारह हाथ चौड़ा
था। प्रवेश-कक्ष तक दस सीढ़ियाँ पहुँचाती थीं। द्वार-
स्तम्भ के सहारे दोनों ओर स्तम्भ थे।

मन्दिर का पवित्र स्थान

41 वह व्यक्ति मुझे मन्दिर के बीच के कमरे
पवित्र स्थान में लाया। उसने इसके प्रत्येक
द्वार-स्तम्भों को नापा। वे छः हाथ मोटे हर ओर थे।
2दरवाजा दस हाथ चौड़ा था। द्वार की बगलें पाँच हाथ
हर ओर थीं। उस व्यक्ति ने बाहरी पवित्र स्थान को
नापा। यह चालीस हाथ लम्बा और बीस हाथ चौड़ा था।

मन्दिर का परम पवित्र स्थान

3तब वह व्यक्ति अन्दर गया और हर एक द्वार-स्तम्भ
को नापा। हर एक द्वार-स्तम्भ दो हाथ मोटा था। यह
छः हाथ ऊँचा था। द्वार सात हाथ चौड़ा था। 4तब उस
व्यक्ति ने कमरे की लम्बाई नापी। यह बीस हाथ लम्बा
और बीस हाथ चौड़ा था। बीच के कमरे के प्रवेश के
पहले था। उस व्यक्ति ने कहा, "यह परम पवित्र स्थान
है।"

मन्दिर के चारों ओर के बाकी कमरें

5तब उस व्यक्ति ने मन्दिर की दीवार नापी। यह छः
हाथ चौड़ी थी। बगल के कमरे चार हाथ चौड़े मन्दिर
के चारों ओर थे। 6बगल के कमरे तीन विभिन्न मंजिलों
पर थे। वे एक दूसरे के ऊपर थे। हर एक मंजिल पर
तीस कमरे थे। बगल के कमरे चारों ओर की दीवार
पर टिके हुए थे। अतः मन्दिर की दीवार स्वयं कमरों
को टिकाये हुए नहीं थी। 7मन्दिर के चारों ओर बगल
के कमरों की मंजिल नीचे की मंजिल से अधिक चौड़ी
थी। मन्दिर के चारों ओर ऊँचा चबूतरा हर मंजिल पर
मन्दिर की हर एक ओर फैला हुआ था। इसलिए सबसे
ऊपर की मंजिल पर कमरे अधिक चौड़े थे। दूसरी
मंजिल से होकर एक सीढ़ी सबसे नीचे के मंजिल से
सबसे ऊँचे मंजिल तक गई थी।

8मैंने यह भी देखा कि मन्दिर के चारों ओर की नींव
सर्वत्र पक्की थी। बगल के कमरों की नींव एक पूरे
मापदण्ड (10.6 इंच) ऊँची थी। 9बगल के कमरों की
बाहरी दीवार पाँच हाथ मोटी थी। मन्दिर के बगल के
कमरों 10और याजक के कमरों के बीच खुला क्षेत्र
बीस हाथ मन्दिर के चारों ओर था। 11बगल के कमरों
के दरवाजें पक्की फर्श की उस नींव पर खुलते थे जो
दीवार का हिस्सा नहीं थी। एक दरवाजें का मुख उत्तर
की ओर था और दूसरे का दक्षिण की ओर। पक्की
फर्श चारों ओर पाँच हाथ चौड़ी थी।

12पश्चिमी ओर मन्दिर के आँगन के सामने का
भवन सत्तर हाथ चौड़ा था। भवन की दीवार चारों ओर
पाँच हाथ मोटी थी। यह नब्बे हाथ लम्बी थी। 13तब उस
व्यक्ति ने मन्दिर को नापा। मन्दिर सौ हाथ लम्बा था।
भवन और इसकी दीवार के साथ आँगन भी सौ हाथ
लम्बे थे। 14मन्दिर का पूर्वी मुख और आँगन सौ हाथ
चौड़ा था।

15-16उस व्यक्ति ने उस भवन की लम्बाई को नापा
जिसका सामना मन्दिर के पीछे के आँगन की ओर था
तथा जिसकी दीवारें दोनों ओर थीं। यह सौ हाथ लम्बा
था। बीच के कमरे के भीतरी कमरे (पवित्र स्थान)
और आँगन के प्रवेश कक्ष पर चौखटें लगीं थीं। तीनों
पर ही चारों ओर जालीदार खिड़कियाँ थीं। मन्दिर के
चारों ओर देहली से लगे, फर्श से खिड़कियों तक लकड़ी
की चौखटें जड़ी हुई थीं। खिड़कियाँ ढकी हुई थीं।

17द्वार के ऊपर की दीवार, भीतरी कमरे और बाहर
तक, सारी लकड़ी की चौखटों से मढ़ी गई थीं। मन्दिर
के भीतरी कमरे तथा बाहरी कमरे की सभी दीवारों
पर 18करुब (स्वर्गदूतों) और खजूर के वृक्षों की नक्काशी
की गई थी। करुब (स्वर्गदूतों) के बीच एक खजूर का
वृक्ष था। हर एक करुब (स्वर्गदूतों) के दो मुख थे।
19एक मुख मनुष्य का था जो एक ओर खजूर के पेड़
को देख रहा था। दूसरा मुख सिंह का था जो दूसरी ओर
खजूर के वृक्ष को देखता था। वे मन्दिर के चारों ओर
उकेरे गये थे। 20बीच के कमरे पवित्र स्थान की सभी
दीवारों पर करुब (स्वर्गदूत) तथा खजूर के वृक्ष उकेरे
गए थे। 21बीच के कमरे (पवित्र स्थान) के द्वार-स्तम्भ
वर्गाकार थे। सर्वाधिक पवित्र स्थान के सामने ऐसा
कुछ था जो 22वेदी के समान लकड़ी का बना दिखता
था। यह तीन हाथ ऊँचा और दो हाथ लम्बा था। इसके
कोने, नींव और पक्ष लकड़ी के थे। उस व्यक्ति ने
मुझसे कहा, "यह मेज है जो यहोवा के सामने है।"

23बीच का कमरा (पवित्र स्थान) और सर्वाधिक
पवित्र स्थान दो दरवाजों वाले थे। 24एक दरवाजा दो
छोटे दरवाजों से बना था। हर एक दरवाजा सचमुच दो
हिलते हुए दरवाजों सा था। 25बीच के कमरे (पवित्र
स्थान) के दरवाजों पर करुब (स्वर्गदूत) और खजूर के
वृक्ष उकेरे गए थे। वे वैसे ही थे जैसे दीवारों पर उकेरे
गए थे। बाहर की ओर प्रवेश कक्ष के बाहरी हिस्से पर
लकड़ी की नक्काशी थी 26और प्रवेश कक्ष के दोनों
ओर खिड़कियों के दीवारों पर और प्रवेश कक्ष के
ऊपरी छत में तथा मन्दिर के चारों ओर के कमरों
खजूर के वृक्ष अंकित थे।

याजकों के कमरे

42 तब वह व्यक्ति मुझे बाहरी आँगन में ले गया
जिसका सामना उत्तर को था। वह उन कमरों
में ले गया जो मन्दिर से आँगन के आर–पार और उत्तर
के भवनों के आर–पार थे। 2उत्तर की ओर का भवन
सौ हाथ लम्बा और पचास हाथ चौड़ा था। 3वहाँ छज्जों
के तीन मंजिल इन भवनों की दीवारों पर थे। वे एक
दूसरे के सामने थे। भीतरी आँगन और बाहरी आँगन
के पक्के रास्ते के बीच बीस हाथ खुला क्षेत्र था।
4कमरों के सामने एक विशाल कक्ष था। वह भीतर
पहुँचाता था। यह दस हाथ चौड़ा, सौ हाथ लम्बा था।
उनके दरवाजे उत्तर को थे। 5ऊपर के कमरे अधिक
पतले थे क्योंकि छज्जे मध्य और निचली मंजिल से
अधिक स्थान घेरे थे। 6कमरे तीन मंजिलों पर थे।
बाहरी आँगन की तरह के उनके स्तम्भ नहीं थे।
इसलिये ऊपर के कमरे मध्य और नीचे की मंजिल के
कमरों से अधिक पीछे थे। 7बाहर एक दीवार थी। यह
कमरों के समान्तर थी। 8यह बाहरी आँगन को ले जाती
थी। यह कमरों के आर–पार थी। यह पचास हाथ
लम्बी थी। 9इन कमरों के नीचे एक द्वार था जो बाहरी
आँगन से पूर्व को ले जाता था। 10बाहरी दीवार के
आरम्भ में, दक्षिण की ओर मन्दिर के आँगन के
सामने और मन्दिर के भवन की दीवार के बाहर,
कमरे थे। इन कमरों के सामने 11एक विशाल कक्ष
था। वे उत्तर के कमरों के समान थे। दक्षिण के द्वार
लम्बाई–चौड़ाई में उतने ही माप वाले थे जितने उत्तर
के। दक्षिण के द्वार नाप, रूपाकृति और प्रवेश कक्ष की
दृष्टि से उत्तर के द्वारों के समान थे। 12दक्षिण के कमरों
के नीचे एक द्वार था जो पूर्व की ओर जाता था। यह
विशाल–कक्ष में पहुँचाता था। दक्षिण के कमरों के
आर–पार एक विभाजक दीवार थी।

13उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, “आँगन के आर–पार
वाले दक्षिण के कमरे और उत्तर के कमरे पवित्र
कमरे हैं। ये उन याजकों के कमरे हैं जो यहोवा को
बलि–भेंट चढ़ाते हैं। वे याजक इन कमरों में अति
पवित्र भेंट को खाएंगे। वे सर्वाधिक पवित्र भेंट को वहाँ
रखेंगे। क्यों? क्योंकि यह स्थान पवित्र है। सर्वाधिक
पवित्र भेंटे ये हैं: अन्न भेंट, पाप के लिये भेंट और
अपराध के लिये भेंट। 14याजक पवित्र–क्षेत्र में प्रवेश
करेंगे। किन्तु बाहरी आँगन में जाने के पहले वे अपने
सेवा वस्त्र पवित्र स्थान में रख देंगे। क्यों? क्योंकि ये
वस्त्र पवित्र हैं। यदि याजक चाहता है कि वह मन्दिर के
उस भाग में जाए जहाँ अन्य लोग हैं तो उसे उन कमरों
में जाना चाहिए और अन्य वस्त्र पहन लेना चाहिए।”

मन्दिर का बाहरी भाग

15वह व्यक्ति जब मन्दिर के भीतर की नाप लेना
समाप्त कर चुका, तब वह मुझे उस फाटक से बाहर
लाया जो पूर्व को था। उसने मन्दिर के बाहर चारों ओर
नापा। 16उस व्यक्ति ने मापदण्ड से, पूर्व के सिरे को
नापा। यह पाँच सौ हाथ लम्बा था। 17उसने उत्तर के
सिरे को नापा। यह पाँच सौ हाथ लम्बा था। 18उसने
दक्षिण के सिरे को नापा। यह पाँच सौ हाथ लम्बा था।
19वह पश्चिम की तरफ चारों ओर गया और इसे नापा।
यह पाँच सौ हाथ लम्बा था। 20उसने मन्दिर को चारों
ओर से नापा। दीवार मन्दिर के चारों ओर गई थी।
दीवार पाँच सौ हाथ लम्बी और पाँच सौ हाथ चौड़ी थी।
यह पवित्र क्षेत्र को अपवित्र क्षेत्र से अलग करती थी।

यहोवा अपने लोगों के बीच रहेगा

43 वह व्यक्ति मुझे फाटक तक ले गया, उस
फाटक तक जो पूर्व को खुलता था। 2वहाँ पूर्व
से इस्राएल के परमेश्वर की महिमा उतरी। परमेश्वर
का आवाज समुद्र के गर्जन के समान ऊँचा था। परमेश्वर
की महिमा से भूमि प्रकाश से चमक उठी थी। 3दर्शन
वैसा ही था जैसा दर्शन मैंने कबार नदी के किनारे देखा
था। मैने धरती पर अपना माथा टेकते हुए प्रणाम किया।
4यहोवा की महिमा, मन्दिर में उस फाटक से आई जो
पूर्व को खुलता है।

5तब आत्मा ने मुझे ऊपर उठाया और भीतरी आँगन
में ले गई। यहोवा की महिमा ने मन्दिर को भर दिया।
6मैंने मन्दिर के भीतर से किसी को बातें करते सुना।
व्यक्ति मेरी बगल में खड़ा था। 7मन्दिर में एक आवाज
ने मुझसे कहा, “मनुष्य के पुत्र, यही स्थान मेरे सिंहासन
और पदपीठ का है। मैं इस स्थान पर इस्राएल के लोगों
में सदा रहूँगा। इस्राएल का परिवार मेरे पवित्र नाम को
फिर बदनाम नहीं करेगा। राजा और उनके लोग मेरे
नाम को अपवित्र करके या इस स्थान पर अपने राजाओं
का शव दफनाकर लज्जित नहीं करेंगे। 8वे मेरे नाम
को, अपनी देहली को मेरी देहली के साथ बनाकर तथा
अपने द्वार–स्तम्भ को मेरे द्वार–स्तम्भ के साथ बनाकर
लज्जित नहीं करेंगे। अतीत में केवल एक दीवार उन्हें

मुझसे अलग करती थी। अत: उन्होंने हर समय जब
पाप और उन भंयकर कामों को किया तब मेरे नाम
को लज्जित किया। यही कारण था कि मैं क्रोधित हुआ
और उन्हें नष्ट किया। 9अब उन्हें व्यभिचार को दूर
करने दो और अपने राजाओं के शव को मुझसे बहुत
दूर ले जाने दो। तब मैं उनके बीच सदा रहूँगा।

10"अब मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के परिवार से उपासना
के बारे में कहो। तब वे अपने पापों पर लज्जित होंगे। वे
मन्दिर की योजना के बारे में सीखेंगे। 11वे उन बुरे
कामों के लिये लज्जित होंगे जो उन्होंने किये हैं। उन्हें
मन्दिर की आकृति समझने दो। उन्हें यह सीखने दो कि
वह कैसे बनेगा, उसका प्रवेश–द्वार, निकास–द्वार और
इस पर की सारी रूपाकृतियाँ कहाँ होंगी। उन्हें इसके
सभी नियमों और विधियों के बारे में सिखाओ और इन्हें
लिखो जिससे वे सभी इन्हें देख सकें। तब वे मन्दिर के
सभी नियमों और विधियों का पालन करेंगे। तब वे यह
सब कुछ कर सकते हैं। 12मन्दिर का नियम यह है:
पर्वत की चोटी पर सारा क्षेत्र सर्वाधिक पवित्र है। यह
मन्दिर का नियम है।

वेदी

13"वेदी की माप, हाथों और इससे लम्बी माप का
उपयोग करके, यह है। वेदी की नींव के चारों ओर
एक गन्दा नाला था। यह एक हाथ गहरा और हर ओर
एक हाथ चौड़ा था। इसके सिरे के चारों ओर एक
बालिश्त नौ इंच ऊँची किनारी थी। वेदी कितनी ऊँची
थी, वह यह थी। 14भूमि से निचली किनारी तक, नींव
की नाप दो हाथ है। यह एक हाथ चौड़ी थी। छोटी
किनारी से बड़ी किनारी तक इसकी नाप चार हाथ
होगी। यह दो हाथ चौड़ी थी। 15वेदी पर आग का स्थान
चार हाथ ऊँचा था। वेदी के चारों कोने सींगों के आकार
के थे। 16वेदी पर आग का स्थान बारह हाथ लम्बा और
बारह हाथ चौड़ा था। यहपूरी तरह वर्गाकार था। 17किनारी
भी वर्गाकार थी, चौदह हाथ लम्बी और चौदह हाथ
चौड़ी। इसके चारों ओर पट्टी आधा हाथ चौड़ी थी।
(नींव के चारों ओर की गन्दी नाली दो हाथ चौड़ी थी।)
वेदी तक जाने वाली पैड़ियाँ पूर्व दिशा में थीं।"

18तब उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र,
स्वामी यहोवा यह कहता है: 'वेदी के लिये ये नियम हैं।
जिस दिन होमबलि दी जानी होती है और इस पर खून
छिड़कना होता है, 19उस दिन तुम सादोक के परिवार
के लोगों को एक नया बैल पाप बलि के रूप में दोगे। ये
व्यक्ति लेवी परिवार समूह के हैं। वे याजक होते हैं। वे
भेंट उन पुरुषों के पास लाएंगे और इस प्रकार मेरी सेवा
करेंगे। मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।'" 20"तुम बैल
का कुछ खून लोगे और वेदी के चारों सींगों पर, किनारे
के चारों कोनों पर और पट्टी के चारों ओर डालोगे।
इस प्रकार तुम वेदी को पवित्र करोगे। 21तुम बैल को
पाप बलि के रूप में लोगे। बैल, पवित्र क्षेत्र के बाहर,
मन्दिर के विशेष स्थान पर जलाया जाएगा।

22"दूसरे दिन तुम बकरा भेंट करोगे जिसमें कोई दोष
नहीं होगा। यह पाप बलि होगी। याजक वेदी को उसी
प्रकार शुद्ध करेगा जिस प्रकार उसने बैल से उसे शुद्ध
किया। 23जब तुम वेदी को शुद्ध करना समाप्त कर
चुको तब तुम्हें चाहिए कि तुम एक दोष रहित नया बैल
और रेवड़ में से एक दोष रहित मेढ़ा बलि चढ़ाओ।
24तब याजक उन पर नमक छिड़केंगे। तब याजक बैल
और मेढ़े को यहोवा को होमबलि के रूप में बलि
चढ़ाएगे। 25तुम एक बकरा प्रतिदिन सात दिन तक, पाप
बलि के लिये तैयार करोगे। तुम एक नया बैल और
रेवड़ से एक मेढ़ा भी तैयार करोगे। बैल और मेढ़े में
कोई दोष नहीं होना चाहिए। 26सात दिन तक याजक
वेदी को पवित्र करते रहेंगे। तब याजक वेदी को समर्पित
करेंगे। 27इसके साथ ही वेदी को तैयार करने और इसे
परमेश्वर को समर्पित करने के, वे सात दिन पूरे हो
जाएंगे। आठवें दिन और उसके आगे याजक तुम्हारी
होमबलि और मेल बलि वेदी पर चढ़ा सकते हैं। तब मैं
तुम्हें स्वीकार करुँगा।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

बाहरी द्वार

44 तब वह व्यक्ति मुझे मन्दिर के बाहरी फाटक,
जिसका सामना पूर्व को है, वापस लाया। हम
लोग द्वार के बाहर थे और बाहरी द्वार बन्द था। 2यहोवा
ने मुझसे कहा, "यह फाटक बन्द रहेगा। यह खोला नहीं
जाएगा। कोई भी इससे होकर प्रवेश नहीं करेगा। क्यों?
क्योंकि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा इससे प्रवेश कर
चुका है। अत: यह बन्द रहना चाहिए। 3लोगों का शासक
इस स्थान पर तब बैठेगा जब वह मेल बलि को यहोवा
के साथ खाएगा। वह फाटक के साथ के प्रवेश–कक्ष
के द्वार से प्रवेश करेगा तथा उसी रास्ते से बाहर जाएगा।"

मन्दिर की पवित्रता

4तब वह व्यक्ति मुझे उत्तरी द्वार से मन्दिर के सामने
लाया। मैंने दृष्टि डाली और यहोवा की महिमा को
यहोवा के मन्दिर में भरता देखा। मैंने अपने माथे को
धरती पर टेकते हुए प्रणाम किया। 5यहोवा ने मुझसे
कहा, "मनुष्य के पुत्र, बहुत सावधानी से देखो! अपनी
आँखों और कानों का उपयोग करो। इन चीजों को
देखो। मैं तुम्हें मन्दिर के बारे में सभी नियम–विधि
बताता हूँ। सावधानीपूर्वक मन्दिर के प्रवेश–द्वार और
पवित्र स्थान से सभी निकासों को देखो। 6तब इस्राएल
के उन लोगों को यह सन्देश दो जिन्होंने मेरी आज्ञा
पालन करने से इन्कार कर दिया था। उनसे कहो, मेरा
स्वामी यहोवा यह कहता है, 'इस्राएल के परिवार, मैंने

तुम्हारे द्वारा की गई भंयकर चीजों को आवश्यकता से अधिक सहन किया है! 7तुम विदेशियों को मेरे मन्दिर में लाये और उन लोगों का सचमुच खतना नहीं हुआ था। वे पूरी तरह से मेरे प्रति समर्पित नहीं थे। इस प्रकार तुमने मेरे मन्दिर को अपवित्र किया था। तुमने हमारी वाचा को तोड़ा, भंयकर काम किये और तब तुमने मुझे रोटी की भेंट, चर्बी और खून दिया। किन्तु इसने मेरे मन्दिर को गन्दा बनाया। 8तुमने मेरी पवित्र चीजों की देखभाल नहीं की। नहीं, तुमने विदेशियों को मेरे मन्दिर के लिये उत्तरदायी बनाया!'"

9मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "एक विदेशी को जिसका खतना न हुआ हो, मेरे मन्दिर में नहीं आना चाहिए, उन विदेशियों को भी नहीं, जो इस्राएल के लोगों के बीच स्थायी रूप से रहते हैं। उसका खतना अवश्य होना चाहिए और उसे मेरे प्रति पूरी तरह समर्पित होना चाहिए, इसके पूर्व कि वह मेरे मन्दिर में आए। 10अतीत में, लेवीवंशियों ने मुझे तब छोड़ दिया, जब इस्राएल मेरे विरुद्ध गया। इस्राएल ने मुझे अपनी देवमूर्तियों का अनुसरण करने के लिये छोड़ा। लेवीवंशी अपने पाप के लिये दण्डित होंगे। 11लेवीवंशी मेरे पवित्र स्थान में सेवा करने के लिये चुने गये थे। उन्होंने मन्दिर के फाटक की चौकीदारी की। उन्होंने मन्दिर में सेवा की। उन्होंने बलियों तथा होमबलियों के जानवरों को लोगों के लिये मारा। वे लोगों की सहायता करने और उनकी सेवा के लिये चुने गए थे। 12किन्तु उन लेवीवंशियों ने मेरे विरुद्ध पाप करने में लोगों की सहायता की! उन्होंने लोगों को अपनी देवमूर्तियों की पूजा करने में सहायता की। अत: मैं उनके विरुद्ध प्रतिज्ञा कर रहा हूँ, 'वे अपने पाप के लिये दण्डित होंगे।'" मेरे स्वामी यहोवा ने यह बात कही है।

13"अत: लेवीवंशी बलि को मेरे पास याजकों की तरह नहीं लाएंगे। वे मेरी किसी पवित्र चीज के पास या सर्वाधिक पवित्र वस्तु के पास नहीं जाएंगे। वे अपनी लज्जा को, जो बुरे काम उन्होंने किये, उसके कारण, ढोएंगे। 14किन्तु मैं उन्हें मन्दिर की देखभाल करने दूँगा। वे मन्दिर में काम करेंगे और वे सब काम करेंगे जो इसमें किये जाते हैं।

15"सभी याजक लेवी के परिवार समूह से हैं। किन्तु जब इस्राएल के लोग मेरे विरुद्ध मुझसे दूर गए तब केवल सादोक परिवार के याजकों ने मेरे पवित्र स्थान की देखभाल की। अत: केवल सादोक के वंशज ही मुझे भेंट लाएंगे। वे मेरे सामने खड़े होंगे और अपने बलि चढ़ाए गए जानवरों की चर्बी और खून मुझे भेंट करेंगे।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा! 16"वे मेरे पवित्र स्थान में प्रवेश करेंगे। वे मेरी मेज के पास मेरी सेवा करने आएंगे। वे उन चीजों की देखभाल करेंगे जिन्हें मैंने उन्हें दीं। 17जब वे भीतरी आँगन के फाटकों में प्रवेश करेगें तब वे बहुमूल्य सन के वस्त्र पहनेंगे। जब बे भीतरी आँगन के फाटक और मन्दिर में सेवा करेंगे, तब वे ऊनी वस्त्र पहनेंगे।18वे सन की पगड़ी अपने सिर पर धारण करेंगे, और वे सन की जांघिया पहनेंगे। वे ऐसा कुछ नहीं पहनेंगे जिससे पसीना आये। 19वे मेरी सेवा करते समय के वस्त्र को, बाहरी आँगन में लोगों के पास जाने के पहले, उतारेंगे। तब वे इन वस्त्रों को पवित्र कमरों में रखेंगे। तब वे दूसरे वस्त्र पहनेंगे। इस प्रकार वे लोगों को उन पवित्र वस्त्रों को छूने नहीं देंगे।

20"वे याजक अपने सिर के बाल न ही मुड़वायेंगे, न ही अपने बालों को बहुत बढ़ने देंगे। यह इस बात को प्रकट करेगा कि वे शोकग्रस्त हैं और याजकों को यहोवा की सेवा के विषय में प्रसन्न रहना चाहिये। याजक अपने सिर के बालों की केवल छंटाई कर सकते हैं। 21कोई भी याजक उस समय दाखमधु नहीं पी सकता जब वे भीतरी आँगन में जाता है। 22याजक को विधवा से या तलाक प्राप्त स्त्री से विवाह नहीं करना चाहिए। नहीं, वे इस्राएल के परिवार की कन्यायों से विवाह करेंगे, या वे उस स्त्री से विवाह कर सकते हैं जिसका पति याजक रहा हो।

23"याजक मेरे लोगों को, पवित्र चीजों और जो चीजें पवित्र नहीं हैं, के बीच अन्तर के विषय में भी शिक्षा देंगे। वे मेरे लोगों को, जो शुद्ध और जो शुद्ध नहीं है, की जानकारी करने में सहायता देंगे। 24याजक न्यायालय में न्यायाधीश होगा। वे लोगों के साथ न्याय करते समय मेरे नियम का अनुसरण करेंगे। वे मेरी विशेष दावतों के समय मेरे नियम–विधियों का पालन करेंगे। वे मेरे विशेष विश्राम के दिनों का सम्मान करेंगे और उन्हें पवित्र रखेंगे। 25वे व्यक्ति के शव के पास जाकर अपने को अपवित्र करने नहीं जाएंगे। किन्तु वे तब अपने को अपवित्र कर सकते हैं यदि मरने वाला व्यक्ति पिता, माता, पुत्र, पुत्री, भाई या अविवाहिता बहन हो। ये याजक को अपवित्र बनायेगा। 26शुद्ध किये जाने के बाद याजक को सात दिन तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। 27तब यह पवित्र स्थान को लौट सकता है। किन्तु जिस दिन वह भीतरी आँगन के पवित्र स्थान में सेवा करने जाये, उसे पापबलि अपने लिये चढ़ानी चाहिये।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

28"लेवीवंशियों की अपनी भूमि के विषय में: मैं उनकी सम्पत्ति हूँ। तुम लेवीवंशियों को कोई सम्पत्ति (भूमि) इस्राएल में नहीं दोगे। मैं इस्राएल में उनके हिस्से में हूँ। 29वे अन्नबलि, पापबलि, दोषबलि खाने के लिये पाएंगे। जो कुछ इस्राएल के लोग यहोवा को देंगे, वह उनका होगा। 30हर प्रकार की तैयार फसल का प्रथम भाग याजकों के लिये होगा। तुम अपने गूंधे आटे का प्रथम भाग भी याजक को दोगे। यह तुम्हारे परिवार पर आशीर्वाद की वर्षा करेगा। 31याजक को उस पक्षी या जानवर

नहीं खाना चाहिये जिसकी स्वाभाविक मृत्यु हो या जो जंगली जानवर द्वारा टुकड़े–टुकड़े कर दिया गया हो।

पवित्र काम के उपयोग के लिये भूमि का बँटवारा

45 "तुम इस्राएल के परिवार के लिये भूमि का विभाजन गोट डालकर करोगे। उस समय तुम भूमि का एक भाग अलग करोगे। वह यहोवा के लिये पवित्र हिस्सा होगा। भूमि पच्चीस हजार हाथ लम्बी और बीस हजार हाथ चौड़ी होगी। यह पूरी भूमि पवित्र होगी। 2एक वर्गाकार पाँच सौ निनानबे हाथ क्षेत्र मन्दिर के लिये होगा। मन्दिर के चारों ओर एक खुला क्षेत्र पचास हाथ चौड़ा होगा। 3अति पवित्र स्थान में तुम पच्चीस हजार हाथ लम्बा और दस हजार हाथ चौड़ा नापोगे। मन्दिर इस क्षेत्र में होगा। मन्दिर का क्षेत्र सर्वाधिक पवित्र स्थान होगा।

4"यह भूमि का पवित्र भाग मन्दिर के सेवक याजकों के लिये होगा जहाँ वे परमेश्वर के समीप सेवा करने आते हैं। यह याजकों के घरों और मन्दिर के लिये होगा। 5दूसरा क्षेत्र पच्चीस हजार हाथ लम्बा और दस हजार हाथ चौड़ा उन लेवीवंशियों के लिये होगा जो मन्दिर में सेवा करते हैं। यह भूमि भी लेवीवंशियों की, उनके रहने के नगरों के लिये, होगी।

6"तुम नगर को पाँच हजार हाथ चौड़ा और पच्चीस हजार हाथ लम्बा क्षेत्र दोगे। यह पवित्र क्षेत्र के सहारे होगा। यह इस्राएल के पूरे परिवार के लिये होगा। 7शासक पवित्र स्थान और नगर की अपनी भूमि के दोनों ओर की भूमि अपने पास रखेगा। यह पवित्र क्षेत्र और नगर के क्षेत्र के बीच में होगा। यह उसी चौड़ाई का होगा जो चौड़ाई परिवार समूह की भूमि की है। यह लगातार पश्चिमी सीमा से पूर्वी सीमा तक जाएगा। 8यह भूमि इस्राएल में शासक की सम्पत्ति होगी। इस प्रकार शासक को मेरे लोगों के जीवन को भविष्य में कष्टकर बनाने की आवश्यकता नहीं होगी। किन्तु वे भूमि को इस्राएलियों के लिये उनके परिवार समूहों को देंगे।"

9मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा, "इस्राएल के शासकों, बहुत हो चुका! क्रूर होना और लोगों से चीजें चुराना, छोड़ो! न्यायी बनो और अच्छे काम करो। हमारे लोगों को अपने घरों से बाहर जाने के लिये बलपूर्वक विवश न करो!" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

10"लोगों को ठगना बन्द करो। सही बाटों और मापों का उपयोग करो। 11एपा (सूखी चीजों का बाट) और बथ (द्रव का मापक) एक ही समान होने चाहिएं। एक बथ और एपा दोनों 1/10 होमर के बराबर होने चाहिए। वे मापक होमर पर आधारित होंगे। 12एक शेकेल बीस गेरा के बराबर होना चाहिए। एक मिना साठ शेकेल के बराबर होना चाहिए। यह बीस शेकेल जमा पच्चीस शेकेल जमा पन्द्रह शेकेल के बराबर होना चाहिए।

13"यह विशेष भेंट है जिसे तुम्हें देना चाहिए:

1/6 एपा गेहूँ के हर एक होमर छः बुशल गेहूँ के लिये।

1/6 एपा जौ के हर एक होमर छः बुशल जौ के लिये।

14 1/10 बथ जैतून का तेल, हर एक कोर जैतून के तेल के लिये। याद रखें:–

दस बथ का एक होमर

दस बथ का एक कोर

15एक भेड़, दो सौ भेड़ों के लिये–इस्राएल में सिंचाई के लिए बने हर कुँए से।

"ये विशेष भेंटें अन्नबलि, होमबलि और मेलबलि के लिये हैं। ये भेंटें लोगों को पवित्र बनाने के लिये हैं।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा।

16"देश का हर एक व्यक्ति इस्राएल के शासक के लिये यह भेंट देगा। 17किन्तु शासक को विशेष पवित्र दिनों के लिये आवश्यक चीजें देनी चाहिए। शासक को होमबलि, अन्नबलि और पेय भेंट की व्यवस्था दावत के दिन, नवचन्द्र, सब्त और इस्राएल के परिवार के सभी विशेष दावतों के लिये करनी चाहिए। शासकों को सभी पापबलि, अन्नबलि, होमबलि, मेलबलि जो इस्राएल के परिवार को पवित्र करने के लिये उपयोग की जाती हैं, देना चाहिए।"

18मेरे स्वामी यहोवा ने ये बातें बताई, "पहले महीने में, महीने के प्रथम दिन तुम एक दोष रहित नया बैल लोगे। तुम्हें उस बैल का उपयोग मन्दिर को पवित्र करने के लिये करना चाहिए। 19याजक कुछ खून पाप के लिये भेंट से लेगा और इसे मन्दिर के द्वार–स्तम्भों और वेदी के किनारी के चारों कोनों और भीतरी आँगन के फाटक के स्तम्भों पर डालेगा। 20तुम यही काम महीने के सातवें दिन उस व्यक्ति के लिये करोगे जिसने गलती से पाप कर दिया हो, या अनजाने में किया हो। इस प्रकार तुम मन्दिर को शुद्ध करोगे।"

फसह पर्व की दावत के समय भेंट

21"पहले महीने के चौदहवें दिन तुम्हें फसह पर्व मनाना चाहिये। अखमीरी रोटी का यह उत्सव इस समय आरम्भ होता है। उत्सव सात दिन तक चलता है। 22उस समय शासक एक बैल अपने लिए तथा इस्राएल के लोगों के लिए भेंट करेगा। बैल पापबलि के लिये होगा। 23दावत के सात दिन तक शासक दोष रहित सात बैल और सात मेढ़े भेंट करेगा। वे यहोवा को होमबलि होंगे। शासक उत्सव के सात दिन हर रोज एक बैल भेंट करेगा और वह पाप बलि के लिये हर एक दिन एक बकरा भेंट करेगा। 24शासक एक एपा जौ हर एक बैल के साथ अन्नबलि के रूप में, और एक एपा जौ हर एक मेढ़े के साथ भेंट करेगा। शासक को एक गैलन

तेल हर एफा अन्न के लिये देना चाहिए। 25शासक को
यही काम उत्सव (शरण) के सात दिन तक करना
चाहिये। यह उत्सव सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन आरम्भ
होता है। ये भेंटे पापबलि, होमबलि, अन्नबलियाँ और
तेल–भेंटे, होंगी।"

शासक और त्यौहार

46 मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "भीतरी
आँगन का पूर्वी फाटक काम के छ: दिनों में
बन्द रहेगा। किन्तु यही सब्त के दिन और नवचन्द्र के
दिन खुलेगा। 2शासक फाटक के प्रवेश कक्ष से अन्दर
आएगा और उस फाटक के स्तम्भ के सहारे खड़ा
होगा। तब याजक शासक की होमबलि और मेलबलि
चढ़ाएगा। शासक फाटक की देहली पर उपासना करेगा।
तब वह बाहर जाएगा। किन्तु फाटक संध्या होने तक
बन्द नहीं होगा। 3देश के लोग भी यहोवा के सम्मुख
जहाँ फाटक सब्त के दिन और नवचन्द्र के दिन खुलता
है, वहीं उपासना करेंगे।

4"शासक सब्त के दिन होमबलि चढ़ाएगा। उसे दोष
रहित छ: मेमने और दोष रहित एक मेढ़ा देना चाहिए।
5उसे एक एपा अन्नबलि मेढ़े के साथ देनी चाहिए।
शासक उतनी अन्नबलि मेमनों के साथ देगा, जितनी
वह दे सकता है। उसे एक हिन जैतून का तेल हर एक
एपा अन्न के साथ देना चाहिए।

6"नवचन्द्र के दिन उसे एक बैल भेंट करना चाहिए,
जिसमें कोई दोष न हो। वह छ: मेमने और एक मेढ़ा,
जिसमें कोई दोष न हो, भी भेंट करेगा। 7शासक को,
बैल के साथ एक एपा अन्नबलि और एक एपा अन्नबलि
मेढ़े के साथ देनी चाहिए। शासक को मेमनों के साथ
तथा हर एक एपा अन्न के लिये एक हिन तेल के साथ,
जितना हो सके, देना चाहिए।

8"शासक को पूर्वी फाटक के प्रवेश कक्ष से होकर
मन्दिर के क्षेत्र में आना जाना चाहिए।

9"जब देश के निवासी यहोवा से मिलने विशेष त्यौहार
पर आएंगे तो जो व्यक्ति उत्तर फाटक से उपासना करने
को प्रवेश करेगा, वह दक्षिण फाटक से जाएगा। जो
व्यक्ति दक्षिण फाटक से प्रवेश करेगा, वह उत्तर फाटक
से जायेगा। कोई भी उसी मार्ग से नहीं लौटेगा जिससे
उसने प्रवेश किया। हर एक व्यक्ति को सीधे आगे
बढ़ना चाहिए। 10जब लोग अन्दर जाएंगे तो शासक
अन्दर जाएगा। जब वे बाहर आएंगे तब शासक बाहर
जाएगा। 11"दावतों और विशेष बैठकों के अवसर पर
एक एपा अन्नबलि हर नये बैल के साथ चढ़ाई जानी
चाहिए। एक एपा अन्नबलि हर मेढ़े के साथ चढ़ाई
जानी चाहिए और हर एक मेमने के साथ उसे जितना
अधिक वह दे सके देना चाहिए। उसे एक हिन तेल हर
अन्न के एक एपा के लिये देना चाहिए।

12"जब शासक यहोवा को स्वेच्छा भेंट देता है, यह
होमबलि, मेलबलि या स्वेच्छा भेंट हो सकती है, चढ़ायेगा
तो उसके लिये पूर्व का फाटक खुलेगा। तब वह अपनी
होमबलि और अपनी मेलबलि को सब्त के दिन की
तरह चढ़ाएगा। जब वह जाएगा उसके बाद फाटक बन्द
होगा।

नित्य भेंट

13"तुम दोष रहित एक वर्ष का एक मेमना दोगे। यह
प्रतिदिन यहोवा को होम बलि के लिये होगा। प्रत्येक
प्रात: तुम इसे दोगे। 14तुम प्रत्येक प्रात: मेमने के साथ
अन्नबलि भी चढ़ाओगे। तुम 1/6 एपा आटा और 1/3हिन
तेल अच्छे आटे को चिकना करने के लिये, दोगे। यह
यहोवा को नित्य अन्नबलि होगी। 15इस प्रकार वे सदैव
मेमना, अन्नबलि और तेल, होम बलि के लिये हर प्रात:
देते रहेंगे।"

अपनी सन्तान को शासक द्वारा भूमि देने के नियम

16मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "यदि शासक
अपनी भूमि के किसी हिस्से को अपने पुत्रों को पुरस्कार
के रूप में देगा तो वह पुत्रों की होगी। यह उनकी
सम्पत्ति है। 17किन्तु यदि कोई शासक अपनी भूमि के
किसी भाग को अपने दास को पुरस्कार के रूप में देता
है तो वह पुरस्कार उसके स्वतन्त्र होने की तिथि तक
ही उसका रहेगा। तब पुरस्कार शासक को वापस हो
जाएगा। केवल राजा के पुत्र ही उसकी भूमि के पुरस्कार
को अपने पास रख सकते हैं 18और शासक लोगों की
भूमि का कोई भी हिस्सा नहीं लेगा और न ही उन्हें
अपनी भूमि छोड़ने को विवश करेगा। उसे अपनी भूमि
का कुछ भाग अपने पुत्रों को देना चाहिए। इस तरह से
हमारे लोग अपनी भूमि से वंचित होने के लिये विवश
नहीं किये जाएंगे।"

विशेष रसोईघर

19वह व्यक्ति मुझे द्वार से फाटक की बगल में ले
गया। वह मुझे याजकों के उत्तर में पवित्र कमरों की
ओर ले गया। मैंने वहाँ बहुत दूर पश्चिम में एक स्थान
देखा। 20उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, "यही वह स्थान है
जहाँ याजक दोष बलि और पाप बलि को पकायेंगे। यहीं
पर याजक अन्नबलि को पकायेंगे। क्यों? जिससे उन्हें
उन भेंटों को बाहरी आँगन में ले जाने की आवश्यकता
न रहे। इस प्रकार वे उन पवित्र चीजों को बाहर नहीं
लाएंगे जहाँ साधारण लोग होंगे।"

21तब वह व्यक्ति मुझे बाहरी आँगन में लाया। वह
मुझे आँगन के चारों कोनों में ले गया। आँगन के हर
एक कोने में एक छोटा आँगन था। 22आँगन के कोनों
में छोटे आँगन थे। हर एक छोटा आँगन चालीस हाथ

लम्बा और तीस हाथ चौड़ा था। चारों कोनों की नाप
समान थी। 23भीतर इन छोटे आँगनों के चारों ओर ईंटे
की एक दीवार थी। हर एक दीवार में भोजन पकाने के
स्थान बने थे। 24उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, "ये रसोईयाँ
हैं जहाँ वे लोग जो मन्दिर की सेवा करते हैं, लोगों के
लिये बलि पकायेंगे।"

मन्दिर से बहता जल

47 वह व्यक्ति मन्दिर के द्वार पर मुझे वापस ले
गया। मैंने मन्दिर की पूर्वी देहली के नीचे से
पानी आते देखा। (मन्दिर का सामना मन्दिर की पूर्वी
ओर है।) पानी मन्दिर के दक्षिणी छोर के नीचे से वेदी
के दक्षिण में बहता था। 2वह व्यक्ति मुझे उत्तर फाटक
से बाहर लाया और बाहरी फाटक के पूर्व की तरफ
चारों ओर ले गया। फाटक के दक्षिण की ओर पानी
बह रहा था।

3वह व्यक्ति पूर्व की ओर हाथ में नापने का फीता
लेकर बढ़ा। उसने एक हजार हाथ नापा। तब उसने
मुझे उस स्थान से पानी से होकर चलने को कहा। वहाँ
पानी केवल मेरे टखने तक गहरा था। उस व्यक्ति ने
अन्य एक हजार हाथ नापा। तब उसने उस स्थान पर
पानी से होकर चलने को कहा। वहाँ पानी मेरे घुटनों
तक आया। 4तब उसने अन्य एक हजार हाथ नापा और
उस स्थान पर पानी से होकर चलने को कहा। वहाँ
पानी कमर तक गहरा था। 5उस व्यक्ति ने अन्य एक
हजार हाथ नापा। किन्तु वहाँ पानी इतना गहरा था कि
पार न किया जा सके। यह एक नदी बन गया था। पानी
तैरने के लिये पर्याप्त गहरा था। यह नदी इतनी गहरी
थी कि पार नहीं कर सकते थे। 6तब उस व्यक्ति ने
मुझसे कहा, "मनुष्य के पुत्र, क्या तुमने जिन चीजों को
देखा, उन पर गहराई से ध्यान दिया?"

तब वह व्यक्ति नदी के किनारे के साथ मुझे वापस
ले गया। 7जैसे मैं नदी के किनारे से वापस चला, मैंने
पानी के दोनों ओर बहुत अधिक पेड़ देखे। 8उस व्यक्ति
ने मुझसे कहा, "यह पानी पूर्व को अरबा घाटी की
तरफ नीचे बहता है। पानी मृत सागर में पहुँचता है। उस
सागर में पानी स्वच्छ और ताजा हो जाता है। 9इस पानी
में बहुत मछलियाँ हैं और जहाँ यह नदी जाती है वहाँ
बहुत प्रकार के जानवर रहते हैं। 10तुम मछुआरों को
लगातार एनगदी से ऐनेग्लैम तक खड़े देख सकते हो।
तुम उनको अपना मछली का जाल फेंकते और कई
प्रकार की मछलियाँ पकड़ते देख सकते हो। मृत सागर
में उतनी ही प्रकार की मछलियाँ हैं जितनी प्रकार की
भूमध्य सागर में। 11किन्तु दलदल और गड्ढों के प्रदेश
के छोटे क्षेत्र अनुकूल नहीं बनाये जा सकते। वे नमक
के लिये छोड़े जाएंगे। 12हर प्रकार के फलदार वृक्ष नदी
के दोनों ओर उगते हैं। इनके पत्ते कभी सूखते और
मरते नहीं। इन वृक्षों पर फल लगना कभी रूकता
नहीं। वृक्ष हर महीने फल पैदा करते हैं। क्यों? क्योंकि
पेड़ों के लिये पानी मन्दिर से आता है। पेड़ों का फल
भोजन बनेगा, और उनकी पत्तियाँ औषधियाँ होंगी।"

परिवार समूहों के लिए भूमि का बँटवारा

13मेरा स्वामी यहोवा यह कहता है, "ये सीमायें इस्राएल
के बारह परिवार समूहों में भूमि के बाँटने के लिये हैं।
यूसुफ को दो भाग मिलेंगे। 14तुम भूमि को बराबर
बाँटोगे। मैंने इस भूमि को तुम्हारे पूर्वजों को देने का
वचन दिया था। अत: मैं यह भूमि तुम्हें दे रहा हूँ।

15"यहाँ भूमि की ये सीमायें हैं। उत्तर की ओर यह
सीमा भूमध्य सागर से हेतलोन होकर जाती है जहाँ
सड़क हमात और सदाद तक 16बेरोता, सिब्रैम (जो
दमिश्क और हमात की सीमा के बीच है) और
हसर्हत्तीकोन जो हौरान की सीमा पर है, की ओर मुड़ती
है। 17अत: सीमा समुद्र से हसरेनोन तक जायेगी जो
दमिश्क और हमात की उत्तरी सीमा पर है। यह उत्तर
की ओर होगी।

18"पूर्व की ओर, सीमा हसरेनोन से हौरान और
दमिश्क के बीच जाएगी और यरदन नदी के सहारे
गिलाद और इस्राएल की भूमि के बीच पूर्वी समुद्र तक
लगातार, तामार तक जायेगी। यह पूर्वी सीमा होगी।

19"दक्षिण ओर, सीमा तामार से लगातार मरीबोत
कादेश के नखलिस्तान तक जाएगी। तब यह मिस्र के
नाले के सहारे भूमध्य सागर तक जाएगी। यह दक्षिणी
सीमा होगी।

20"पश्चिमी ओर, भूमध्य सागर लगातार हमात के
सामने के क्षेत्र तक सीमा बनेगा। यह तुम्हारी पश्चिमी
सीमा होगी।

21"इस प्रकार तुम इस भूमि को इस्राएल के परिवार
समूहों में बाँटोगे। 22तुम इसे अपनी सम्पत्ति और अपने
बीच रहने वाले विदेशियों की सम्पत्ति के रूप में जिनके
बच्चे तुम्हारे बीच रहते हैं, बाँटोगे। ये विदेशी निवासी
होंगे, ये स्वाभाविक जन्म से इस्राएली होंगे। तुम कुछ
भूमि इस्राएल के परिवार समूहों में से उनको बाँटोगे।
23वह परिवार समूह जिसके बीच वह निवासी रहता है,
उसे कुछ भूमि देगा।" मेरे स्वामी यहोवा ने यह कहा है!

इस्राएल के परिवार समूह के लिये भूमि

48 1-7उत्तरी सीमा भूमध्य सागर से पूर्व हेतलोन
से हमात दर्रा और तब, लगातार हसेरनोन
तक जाती है। यह दमिश्क और हमात की सीमाओं के
मध्य है। परिवार समूहों में से इस समूह की भूमि इन
सीमाओं के पूर्व से पश्चिम को जाएगी। उत्तर से दक्षिण,
इस क्षेत्र के परिवार समूह हैं, दान, आशेर, नप्ताली,
मनश्शे, एप्रैम, रूबेन, यहूदा।

भूमि का विशेष भाग

8भूमि का अगला क्षेत्र विशेष उपयोग के लिये होगा।
यह भूमि यहूदा की भूमि के दक्षिण में है। यह क्षेत्र
पच्चीस हजार हाथ उत्तर से दक्षिण तक लम्बा है और
पूर्व से पश्चिम तक, यह उतना चौड़ा होगा जितना अन्य
परिवार समूहों का होगा। मन्दिर भूमि के इस विभाग
के बीच होगा। 9तुम इस भूमि को यहोवा को समर्पित
करोगे। यह पच्चीस हजार हाथ लम्बा और बीस हजार
हाथ चौड़ा होगा। 10भूमि का यह विशेष क्षेत्र याजकों
और लेवीवंशियों में बँटेगा।

याजक इस क्षेत्र का एक भाग पाएंगे। यह भूमि उत्तर
की ओर पच्चीस हजार हाथ लम्बी, पश्चिम की ओर
दस हजार हाथ चौड़ी, पूर्व की ओर दस हजार हाथ
चौड़ी और दक्षिण की ओर पच्चीस हजार हाथ लम्बी
होगी। भूमि के इस क्षेत्र के बीच में यहोवा का मन्दिर
होगा। 11यह भूमि सादोक के वंशजों के लिये है। ये
व्यक्ति मेरे पवित्र याजक होने के लिये चुने गए थे।
क्यों? क्योंकि इन्होंने तब भी मेरी सेवा करना जारी
रखा जब इस्राएल के अन्य लोगों ने मुझे छोड़ दिया।
सादोक के परिवार ने मुझे लेवी परिवार समूह के अन्य
लोगों की तरह नहीं छोड़ा। 12इस पवित्र भू–भाग का
विशेष हिस्सा विशेष रूप से इन याजकों का होगा। यह
लेवीवंशियों की भूमि से लगा हुआ होगा।

13"याजकों की भूमि से लगी भूमि को लेवीवंशी
अपने हिस्से के रूप में पाएंगे। यह पच्चीस हजार हाथ
लम्बी, दस हजार हाथ चौड़ी होगी। वे इस भूमि की पूरी
लम्बाई और चौड़ाई पच्चीस हजार हाथ लम्बी और बीस
हजार हाथ चौड़ी पाएंगे। 14लवीवंशी इस भूमि का कोई
भाग न तो बेचेंगे, न ही व्यापार करेंगे। वे इस भूमि का
कोई भी भाग बेचने का अधिकार नहीं रखते। वे देश
के इस भाग के टुकड़े नहीं कर सकते। क्यों? क्योंकि
यह भूमि यहोवा की है। यह अति विशेष है। यह भूमि
का सर्वोत्तम भाग है।

नगर सम्पत्ति के लिये हिस्से

15"भूमि का एक क्षेत्र पाँच हजार हाथ चौड़ा और
पच्चीस हजार हाथ लम्बा होगा जो याजकों और लेवीवंशियों
को दी गई भूमि से, अतिरिक्त होगा। यह भूमि नगर,
पशुओं की चरागाह और घर बनाने के लिये हो सकती
है। साधारण लोग इसका उपयोग कर सकते हैं। नगर
इसके बीच में होगा। 16नगर की नाप यह है: उत्तर की
ओर यह साढ़े चार हजार हाथ होगा। पूर्व की ओर यह
साढ़े चार हजार हाथ होगा। दक्षिण की ओर यह साढ़े
चार हजार हाथ होगा। पश्चिम की ओर यह साढ़े चार
हजार हाथ होगा। 17नगर की चरागाह होगी। ये चरागाहें
ढाई सौ हाथ उत्तर की ओर, ढाई सौ हाथ दक्षिण की
ओर होगी। वे ढाई सौ हाथ पूर्व की ओर तथा ढाई सौ
हाथ पश्चिम की ओर होगी। 18पवित्र क्षेत्र के सहारे जो
लम्बाई बचेगी, वह दस हजार हाथ पूर्व में और दस
हजार हाथ पश्चिम में होगी। यह भूमि पवित्र क्षेत्र के
बगल में होगी। यह भूमि नगर के मजदूरों के लिये अन्न
पैदा करेगी। 19नगर के मजदूर इसमें खेती करेंगे। मजदूर
इस्राएल के सभी परिवार समूहों में से होंगे।

20"यह भूमि का विशेष क्षेत्र वर्गाकार होगा। यह
पच्चीस हजार हाथ लम्बा और पच्चीस हजार हाथ चौड़ा
होगा। तुम इस क्षेत्र को विशेष कामों के लिये अलग
रखोगे। एक भाग याजकों के लिये है। एक भाग लेवीवंशियों
के लिये है और एक भाग नगर के लिये है।

21-22"इस विशेष भूमि का एक भाग देश के शासक
के लिये होगा। यह विशेष भूमि का क्षेत्र वर्गाकार है।
यह पच्चीस हजार हाथ लम्बा और पच्चीस हजार हाथ
चौड़ा है। इसका एक भाग याजकों के लिये, एक भाग
लेवीवंशियों के लिये और एक भाग मन्दिर के लिये है।
मन्दिर इस भूमि क्षेत्र के बीच में है। शेष भूमि देश के
शासक की है। शासक बिन्यामीन और यहूदा की भूमि
के बीच की भूमि पाएगा।

23-27"विशेष क्षेत्र के दक्षिण में उस परिवार समूह की
भूमि होगी जो यरदन नदी के पूर्व रहता था। हर परिवार
समूह उस भूमि का एक हिस्सा पाएगा जो पूर्वी सीमा से
भूमध्य सागर तक गई है। उत्तर से दक्षिण के ये परिवार
समूह हैं: बिन्यामीन, शिमोन, इस्साकार, जबूलून औरगाद।
28"गाद की भूमि की दक्षिणी सीमा तामार से
मरीबोत–कादेश के नखलिस्तान तक जाएगी। तब मिस्र
के नाले से भूमध्य सागर तक पहुँचेगी 29और यही वह
भूमि है जिसे तुम इस्राएल के परिवार समूह में बाँटोगे।
वही हर एक परिवार समूह पाएगा।" मेरे स्वामी यहोवा
ने यह कहा!

नगर के फाटक

30"नगर के ये फाटक हैं। फाटकों का नाम इस्राएल
के परिवार समूह के नामों पर होंगे।

"उत्तर की ओर नगर साढ़े चार हजार हाथ लम्बा
होगा। 31उसमें तीन फाटक होंगे। रुबेन का फाटक,
यहूदा का फाटक और लेवी का फाटक।

32"पूर्व की ओर नगर साढ़े चार हजार हाथ लम्बा
होगा। उसमें तीन फाटक होंगे: यूसुफ का फाटक,
बिन्यामीन का फाटक और दान का फाटक।

33"दक्षिण की ओर नगर साढ़े चार हजार हाथ लम्बा
होगा। उसमें तीन फाटक होंगे: शिमोन का फाटक,
इस्साकार का फाटक और जबूलून का फाटक।

34"पश्चिम की ओर नगर साढ़े चार हजार हाथ
लम्बा होगा। इसमें तीन फाटक होंगे: गाद का फाटक,
आशेर का फाटक और नप्ताली का फाटक।

35"नगर के चारों ओर की दूरी अट्ठारह हजार हाथ
होगी। अब से आगे नगर का नाम होगा: यहोवा यहाँ है।

दानिय्येल

दानिय्येल का बाबुल ले जाया जाना

1 नबूकदनेस्सर बाबुल का राजा था। नबूकदनेस्सर ने
यरूशलेम पर आक्रमण किया और अपनी सेना के
साथ उसने यरूशलेम को चारों ओर से घेर लिया। यह
उन दिनों की बात है जब यहूदा के राजा यहोयाकीम के
शासन का तीसरा वर्ष चल रहा था। 2यहोवा ने यहूदा
के राजा यहोयाकीम को नबूकदनेस्सर के द्वारा पराजित
करा दिया। नबूकदनेस्सर ने परमेश्वर के मन्दिर के
साज़ो-सामान को भी हथिया लिया। नबूकदनेस्सर उन
वस्तुओं को शिनार ले गया। नबूकदनेस्सर ने उन वस्तुओं
को उस मन्दिर में रखवा दिया जिसमें उसके देवताओं
की मूर्तिया थी।

3इसके बाद राजा नबूकदनेस्सर ने अशपनज को
एक आदेश दिया। (अशपनज राजा के खोजे सेवकों
का प्रधान था।) राजा ने अशपनज को कुछ यहूदी
पुरुषों को उसके महल में लाने को कहा था।
नबूकदनेस्सर चाहता था कि प्रमुख परिवारों और इस्राएल
के राजा के परिवार के कुछ यहूदी पुरुषों को वहाँ
लाया जाये। 4नबूकदनेस्सर को केवल हट्टे-कट्टे यहूदी
जवान ही चाहिये थे। राजा को बस ऐसे युवक ही चाहिये
थे जिनके शरीर पर कोई खरोंच तक न लगी हो और
उनका शरीर किसी भी तरह के दोष से रहित हो। राजा
सुन्दर, चुस्त और बुद्धिमान नौजवान ही चाहता था।
राजा को ऐसे युवक चाहिये थे जो बातों को शीघ्रता से
और सरलता से सीखने में समर्थ हों। राजा को ऐसे
युवकों की आवश्यकता थी जो उसके महल में सेवा
कार्य कर सकें। राजा ने अशपनज को आदेश दिया कि
उन इस्राएली युवकों को कसदियों की भाषा और लिपि
की शिक्षा दी जाये।

5राजा नबूकदनेस्सर उन युवकों को प्रतिदिन एक
निश्चित मात्रा में भोजन और दाखमधु दिया करता था।
यह भोजन उसी प्रकार का होता था, जैसा स्वयं राजा
खाया करता था। राजा की इच्छा थी कि इस्राएल के
उन युवकों को तीन वर्ष तक प्रशिक्षण दिया जाये और
फिरतीन वर्ष के बाद वे युवक बाबुल के राजा के
सेवक बन जायें। 6उन युवकों में दानिय्येल, हनन्याह,
मीशाएल और अजर्याह शामिल थे। ये युवक यहूदा के
परिवार समूह से थे।

7सो इसके बाद यहूदा के उन युवकों को अशपनज
ने नये नाम रख दिये। दानिय्येल को बेलतशस्सर का
नया नाम दिया गया। हनन्याह का नया नाम था शद्रक।
मीशाएल को नया नाम दिया गया मेशक और अजर्याह
का नया नाम रखा गया अबेदनगो।

8दानिय्येल राजा के उत्तम भोजन और दाखमधु को
ग्रहण करना नहीं चाहता था। दानिय्येल नहीं चाहता था
कि वह उस भोजन और उस दाखमधु से अपने आपको
अशुद्ध कर ले। सो उसने इस प्रकार अपने आपको
अशुद्ध होने से बचाने के लिये अशपनज से विनती की।

9परमेश्वर ने अशपनज को ऐसा बना दिया कि वह
दानिय्येल के प्रति कृपालु और अच्छा विचार करने
लगा। 10किन्तु अशपनज ने दानिय्येल से कहा, "मैं अपने
स्वामी, राजा से डरता हूँ। राजा ने मुझे आज्ञा दी है कि
तुम्हें यह भोजन और यह दाखमधु दी जाये। यदि तू इस
भोजन को नहीं खाता है तो तू दुर्बल और रोगी दिखने
लगेगा। तू अपनी उम्र के दूसरे युवकों से भद्दा दिखाई
देगा। राजा इसे देखेगा और मुझ पर क्रोध करेगा। हो
सकता है, वह मेरा सिर कटवा दे! जबकि यह दोष
तुम्हारा होगा।"

11इसके बाद दानिय्येल ने अपने देखभाल करने वाले
से बातचीत की। अशपनज ने उस रखवाले को दानिय्येल,
हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह के ऊपर ध्यान रखने
को कहा हुआ था। 12दानिय्येल ने उस रखवाले से
कहा, "कृपा करके दस दिन तक तू हमारी परीक्षा ले।
हमे खाने को साग-सब्जी और पीने को पानी के सिवाय
कुछ मत दे। 13फिर दस दिन के बाद उन दूसरे नौजवानों
के साथ तू हमारी तुलना करके देख, जो राजा का
भोजन करते हैं और फिर अपने आप देख कि अधिक
स्वस्थ कौन दिखाई देता है। फिर तू अपने-आप यह
निर्णय करना कि तू हमारे साथ कैसा व्यवहार करना
चाहता है। हम तो तेरे सेवक हैं।"

14सो वह रखवाला दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल और
अजर्याह की दस दिन तक परीक्षा लेते रहने के लिये
तैयार हो गया। 15दस दिनों के बाद दानिय्येल और
उसके मित्र उन सभी नौजवानों से अधिक हट्टे-कट्टे
दिखाई देने लगे जो राजा का खाना खा रहे थे। 16सो
उस रखवाले ने उन्हें राजा का वह विशेष भोजन और

दाखमधु देना बन्द कर दिया और वह दानिय्येल, हनन्याह,
मीशाएल और अजर्याह को उस खाने के स्थान पर
साग सब्जियाँ देने लगा।

17परमेश्वर ने दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल और
अजर्याह को बुद्धि प्रदान की और उन्हें अलग–अलग
तरह की लिपियों और विज्ञानों को सीखने की योग्यता
दी। दानिय्येल तो हर प्रकार के दिव्य दर्शनों और स्वप्नों
को भी समझ सकता था।

18राजा चाहता था कि उन सभी युवकों को तीन वर्ष
तक प्रशिक्षण दिया जाये। प्रशिक्षण का समय पूरा होने
पर अशपनज उन सभी युवकों को राजा नबूकदनेस्सर
के पास ले गया। 19राजा ने उनसे बातें कीं। राजा ने
पाया कि उनमें से कोई भी युवक उतना अच्छा नहीं था
जितने दानिय्येल, हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह थे।
सो वे चारों युवक राजा के सेवक बना दिये गये। 20राजा
हर बार उनसे किसी महत्त्वपूर्ण बात के बारे में पूछता
और वे अपने प्रचुर ज्ञान और समझ बूझ का परिचय
देते। राजा ने देखा कि वे चारों उसके राज्य के सभी
जादूगरों और बुद्धिमान लोगों से दस गुणा अधिक उत्तम
हैं। 21सो राजा कुस्रू के शासन काल के पहले वर्ष तक
दानिय्येल राजा की सेवकाई करता रहा।

नबूकदनेस्सर का स्वप्न

2 नबूकदनेस्सर ने अपने शासन के दूसरे वर्ष के
मध्य एक सपना देखा। उसके सपने ने उसे व्याकुल
कर दिया। जैसे तैसे बहुत देर बाद उसे नींद आई। 2सो
राजा ने अपने समझदार लोगों को अपने पास बुलाया।
वे लोग जादू–टोना किया करते थे, और तारों को देखा
करते थे। सपनों का फल बताने के लिये वे ऐसा किया
करते थे। वे ऐसा इसलिये करते थे कि जो कुछ भविष्य
में घटनेवाला है, वे उसे जान जायें। राजा उन लोगों से
यह चाहता था कि वे, उसके बारे में उसे बतायें जो
सपना उसने देखा है। सो वे भीतर आये और आकर
राजा के आगे खड़े हो गये।

3तब राजा ने उन लोगों से कहा, "मैंने एक सपना
देखा हैं जिससे मैं व्याकुल हूँ। मैं यह जानना चाहता हूँ
कि उस सपने का अर्थ क्या है?"

4इस पर उन कसदियों ने राजा से उत्तर देते हुए
कहा। वे अरामी भाषा में बोल रहे थे। "राजा चिरंजीव
रहे। हम तेरे दास हैं। तू अपना स्वप्न हमें बता। फिर
हम तुझे उसका अर्थ बतायेंगे।"

5इस पर राजा नबूकदनेस्सर ने उन लोगों से कहा,
"नहीं! वह सपना क्या था, यह भी तुम्हें ही बताना है
और उस सपने का अर्थ क्या है, यह भी तुम्हें ही बताना
है और यदि तुम ऐसा नहीं कर पाये तो मैं तुम्हारे
टुकड़े–टुकड़े कर डालने की आज्ञा दे दूँगा। मैं तुम्हारे
घरों को तोड़ कर मलबे के ढ़ेर और राख में बदल
डालने की आज्ञा भी दे दूँगा 6और यदि तुम मुझे मेरा
सपना बता देते हो और उसकी व्याख्या कर देते हो तो
मैं तुम्हें अनेक उपहार, बहुत से प्रतिफल और महान
आदर प्रदान करूँगा। सो तुम मुझे मेरे सपने के बारे में
बताओ और बताओ कि उसका अर्थ क्या है।"

7उन बुद्धिमान पुरुषों ने राजा से फिर कहा, "हे
राजन, कृपा करके हमें सपने के बारे में बताओ और
हम तुम्हें यह बतायेंगे कि उस सपने का फल क्या है।"

8इस पर राजा नबूकदनेस्सर ने कहा, "मैं जानता हूँ,
तुम लोग और अधिक समय लेने का जतन कर रहे
हो। तुम जानते हो कि मैंने जो कहा, वही मेरा अभिप्राय
है। 9तुम यह जानते हो कि यदि तुमने मुझे मेरे सपने के
बारे में नहीं बताया तो तुम्हें दण्ड दिया जायेगा। सो तुम
सब एक मत हो कर मुझसे बातें बना रहे हो। तुम और
अधिक समय लेना चाहते हो। तुम्हें यह आशा है कि मैं
जो कुछ करना चाहता हूँ उसे तुम्हारी बातों में आकर
भूल जाऊँगा। अच्छा अब तुम मुझे मेरा सपना बताओ।
यदि तुम मुझे मेरा सपना बता पाओगे तभी मैं यह जान
पाऊँगा कि वास्तव में उस सपने का अर्थ क्या है। यह
तुम मुझे बता पाओगे!"

10कसदियों ने राजा को उत्तर देते हुए कहा, "हे
राजन, धरती पर कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जैसा, आप
करने को कह रहे हैं, जो वैसा कर सके। बुद्धिमान
पुरुषों अथवा जादूगरों या कसदियों से किसी भी राजा ने
कभी भी ऐसा करने को नहीं कहा। यहाँ तक कि
महानतम और सबसे अधिक शक्तिशाली किसी भी
राजा ने कभी अपने बुद्धिमान पुरुषों से ऐसा करने को
नहीं कहा। 11महाराज, आप वह काम करने को कह
रहे हैं, जो असम्भव है। बस राजा को उसके सपने के
बारे में और उसके फल के बारे में देवता ही बता सकते
हैं। किन्तु देवता तो लोगों के बीच नहीं रहते।"

12जब राजा ने यह सुना तो उसे बहुत क्रोध आया
और उसने बाबुल के सभी विवेकी पुरुषों को मरवा
डालने की आज्ञा दे दी। 13राजा नबूकदनेस्सर के आज्ञा
का ढ़िढोरा पिटवा दिया गया। सभी बुद्धिमान पुरुषों को
मारा जाना था, इसलिए दानिय्येल और उसके मित्रों को
भी मरवा डालने के लिये उनकी खोज में राज–पुरुष
भेज दिये गये।

14अर्योक राजा के रक्षकों का नायक था। वह बाबुल
के बुद्धिमान पुरुषों को मार डालने के लिये जा रहा था,
किन्तु दानिय्येल ने उससे बातचीत की। दानिय्येल ने
अर्योक से बुद्धिमानी के साथ नम्रतापूर्वक बात की।
15दानिय्येल ने अर्योक से पूछा, "राजा ने इतना कठोर
दण्ड देने की आज्ञा क्यों दी है?"

इस पर अर्योक ने राजा के सपने वाली सारी कहानी
कह सुनाई, दानिय्येल उसे समझ गया। 16दानिय्येल ने
जब यह कहानी सुन ली तो वह राजा नबूकदनेस्सर के

पास गया। दानिय्येल ने राजा से विनती की कि वह उसे
थोड़ा समय और दे। उसके बाद वह राजा को उसका
स्वप्न और उस स्वप्न का फल बता देगा।
17 इसके बाद दानिय्येल अपने घर को चल दिया।
उसने अपने मित्र हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह को
वह सारी बात कह सुनाई। 18दानिय्येल ने अपने मित्रों से
स्वर्ग के परमेश्वर से प्रार्थना करने को कहा। दानिय्येल
ने उनसे कहा कि वे परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह
उन पर दयालू हो और इस रहस्य को समझने में
उनकी सहायता करे जिससे बाबुल के दूसरे विवेकी
पुरुषों के साथ दानिय्येल और उसके मित्र भी मौत के
घाट न उतार दिये जायें।
19रात के समय परमेश्वर ने एक दर्शन में दानिय्येल
को वह रहस्य समझा दिया। इस पर स्वर्ग के परमेश्वर
की स्तुति करते हुए 20दानिय्येल ने कहा:
"परमेश्वर के नाम की सदा प्रशंसा करो! शक्ति
और सामर्थ्य उसमें ही होते हैं!
21वह ही समय को बदलता है वह ही वर्ष के ऋतुओं
को बदलता है। वह ही राजाओं को बदलता है। वही
राजाओं को शक्ति देता है और वही छीन लेता है। वही
बुद्धि देता है और लोग बुद्धिमान बन जाते हैं। वही लोगों
को ज्ञान देता है और लोग ज्ञानी बन जाते हैं।
22वह गहन और छिपे रहस्यों का ज्ञाता है जो समझ
पाना कठिन है। उसके संग प्रकाश बना रहता है, सो
इसी से वह जानता है कि अन्धेर में और रहस्य भरे
स्थानों में क्या है!
23हे मेरे पूर्वजों के परमेश्वर, मैं तुझको धन्यवाद
देता हूँ और तेरे गुण गाता हूँ। तूने ही मुझको ज्ञान और
शक्ति दी। जो बातें हमने पूछी थी उनके बारे में तूने हमें
बताया! तूने हमें राजा के सपने के बारे में बताया।"

दानिय्येल द्वारा राजा के स्वप्न की व्याख्या

24इसके बाद दानिय्येल अर्योक के पास गया। राजा
नबूकदनेस्सर ने अर्योक का बाबुल के बुद्धिमान पुरुषों
की हत्या के लिये नियुक्त किया था। दानिय्येल ने अर्योक
से कहा, "बाबुल के बुद्धिमान पुरुषों की हत्या मत
करो। मुझे राजा के पास ले चलो, मैं उसे उसका स्वप्न
और उस स्वप्न का फल बता दूँगा।"
25सो अर्योक दानिय्येल को शीघ्र ही राजा के पास ले
गया। अर्योक ने राजा से कहा, "यहूदा के बन्दियों में
मैंने एक ऐसा पुरुष ढूँढ लिया है जो राजा को उसके
सपने का मतलब बता सकता है।"
26सो राजा ने दानिय्येल (बेलतशस्सर) से एक प्रश्न
पूछा, "क्या तू मुझे मेरे सपने और उसके अर्थ के बारे
में बता सकता है?"
27दानिय्येल ने उत्तर दिया, "हे राजा नबूकदनेस्सर,
तुम जिस रहस्य के बारे में पूछ रहे हो, उसे तुम्हें न तो
कोई पण्डित, न कोई तान्त्रिक और न कोई कसदी बता
सका है। 28किन्तु स्वर्ग में एक परमेश्वर ऐसा है जो भेद
भरी बातों का रहस्य बताता है। परमेश्वर ने राजा
नबूकदनेस्सर को आगे क्या होने वाला है, यह दर्शाने
के लिये सपना दिया है। अपने बिस्तर में सोते हुए तुमने
सपने में जो बातें देखी थीं, वे ये हैं,
29हे राजा! तुम अपने बिस्तर में सो रहे थे। तुमने
भविष्य में घटने वाली बातों के बारे में सोचना आरम्भ
किया। परमेश्वर लोगों को रहस्यपूर्ण बातों के बारे में
बता सकता है। सो उसने भविष्य में जो घटने वाला है,
वह तुम्हें दर्शा दिया। 30परमेश्वर ने वह रहस्य मुझे भी
बता दिया है। ऐसा इसलिये नहीं हुआ कि मेरे पास दूसरे
लोगों से कोई अधिक बुद्धि है। बल्कि मुझे परमेश्वर ने
इस भेद को इसलिए बताया है कि राजा को उसके
सपने का फल पता चल जाये और इस तरह हे राजन,
तुम्हारे मन में जो बातें आ रही थीं, उन्हें तुम समझ
जाओ।
31"हे राजन, सपने में आपने अपने सामने खड़ा एक
विशाल मूर्ति देखा है, वह मूर्ति बहुत बड़ा था, वह
चमकदार था और बहुत अधिक प्रभावपूर्ण था। वह
ऐसा था जिसे देखकर देखने वाले की आँखे फटी की
फटी रह जायें। 32उस मूर्ति का सिर शुद्ध सोने का बना
था। उसकी छाती और भुजाएँ चाँदी की बनी थीं। उसका
पेट और जाँघें काँसे की बनी थीं। 33उस मूर्ति की
पिण्डलियाँ लोहे की बनी थीं। उस मूर्ति के पैर लोहे
और मिट्टी के बने थे। 34जब तुम उस मूर्ति की ओर
देख रहे थे, तुमने एक चट्टान देखी। देखते-देखते,
वह चट्टान उखड़ कर गिर पड़ी किन्तु उस चट्टान
को किसी व्यक्ति ने काट कर नहीं गिराया था। फिर
हवा में लुढ़कती वह चट्टान मूर्ति के लोहे और मिट्टी
के बने पैरों से जा टकराई। उस चट्टान से मूर्ति के पैर
चकनाचूर हो गये। 35फिर तत्काल ही लोहा, मिट्टी,
काँसा, चाँदी और सोना सब चूर-चूर हो गया और वह
चूरा गर्मियों के दिनों में खलिहान के भूसे जैसा हो गया।
उन टुकड़ों को हवा उड़ा ले गयी। वहाँ कुछ भी तो नहीं
बचा। कोई यह कह ही नहीं सकता था कि वहाँ कभी
कोई मूर्ति था भी। फिर वह चट्टान जो उस मूर्ति से
टकराई थी, एक विशाल पर्वत के रुप में बदल गयी
और सारी धरती पर छा गयी।"
36"आपका सपना तो यह था। अब हम राजा को यह
बताते हैं कि इस सपने का फल क्या है? 37हे राजन,
आप अत्यंत महत्त्वपूर्ण राजा हैं। स्वर्ग के परमेश्वर ने
तुम्हें राज्य दिया है। शक्ति दी है। सामर्थ्य और महिमा दी
हैं। 38आपको परमेश्वर ने नियन्त्रण की शक्ति दी हैं
और आप, लोगों पर, वन के पशुओं पर और पक्षियों
पर शासन करते हो। वे चाहे कहीं भी रहते हों, उन सब
पर परमेश्वर ने तुम्हें शासक ठहराया है। हे राजा

नबूकदनेस्सर, उस मूर्ति के ऊपर जो सोने का सिर था,
वह आप ही हैं।
39“आप के बाद जो दूसरा राज आयेगा, वही वह
चाँदी का हिस्सा है। किन्तु वह राज्य तुम्हारे राज्य के
समान विशाल नहीं होगा। इसके बाद धरती पर एक
तीसरे राज्य का शासन होगा। वही वह काँसे वाला
भाग है। **40**इसके बाद फिर एक चौथा राज्य आयेगा, वह
राज्य लोहे के समान मज़बूत होगा। जैसे लोहे से वस्तुएँ
टूट कर चकनाचूर हो जाती हैं, वेसे ही वह चौथा राज्य
दूसरे राज्यों को भंग करके चकनाचूर करेगा।
41“आपने जो यह देखा था कि उस मूर्ति के पैर और
पंजे थोड़े मिट्टी के और थोड़े लोहे के बने हैं, उसका
मतलब यह है कि वह चौथा राज्य एक बटा हुआ राज्य
होगा। इसमें कुछ तो लोहे की शक्ति होगी क्योंकि आपने
मिट्टी मिला लोहा देखा है। **42**उस मूर्ति के पैर के पंजों
के अगले भाग जो थोड़े लोहे और थोड़े मिट्टी के बने
थे, इसका अर्थ यह है कि वह चौथा राज्य थोड़ा तो
लोहे के समान शक्तिशाली होगा और थोड़ा मिट्टी के
समान दुर्बल। **43**आपने लोहे को मिट्टी से मिला हुआ
देखा था किन्तु जैसे लोहा और मिट्टी पूरी तरह कभी
आपस में नही मिलते, उस चौथे राज्य के लोग वैसे ही
मिले जुले होंगे। किन्तु एक जाति के रुप में वे लोग
आपस में एक जुट नहीं होंगे।
44“चौथे राज्य के उन राजाओं के समय में ही स्वर्ग
का परमेश्वर एक दूसरे राज्य की स्थापना कर देगा।
इस राज्य का कभी अंत नहीं होगा और यह सदा–सदा
बना रहेगा! यह एक ऐसा राज्य होगा जो कभी किसी
दूसरे समूह के लोगों के हाथ में नहीं जायेगा। यह राज्य
उन दूसरे राज्य को कुचल देगा। यह उन राज्यों का
विनाश कर देगा। किन्तु वह राज्य अपने आप सदा–सदा
बना रहेगा।
45“हे राजा नबूकदनेस्सर, आपने पहाड़ से उखड़ी हुई
चट्टान तो देखी। किसी व्यक्ति ने उस चट्टान को
उखाड़ा नहीं! उस चट्टान ने लोहे को, काँसे को,
मिट्टी को, चाँदी को ओर सोने को टुकड़े–टुकड़े कर
दिया था। इस प्रकार से महान परमेश्वर ने आपको वह
दिखाया हैं जो भविष्य में होने वाला है। यह सपना सच्चा
है और आप सपने की इस व्याख्या पर भरोसा कर
सकते हैं।”
46इसके बाद राजा नबूकदनेस्सर ने दानिय्येल को
झुक कर नमस्कार किया। राजा ने दानिय्येल की
प्रशंसा की। राजा ने यह आज्ञा दी कि दानिय्येल को
सम्मानित करने के लिये एक भेंट और सुगन्ध प्रदान
की जाये। **47**फिर राजा ने दानिय्येल से कहा, “मुझे
निश्चयपूर्वक ज्ञान हो गया है कि तेरा परमेश्वर सर्वाधिक
महत्त्वपूर्ण और शक्तिशाली परमेश्वर है। वह सभी राजाओं
का यहोवा है। वह लोगों को उन बातों के बारे में बताता
है, जिन्हें वे नहीं जान सकते। मुझे पता है कि यह सच
है। क्योंकि तू मुझे भेद की इन बातों को बता सका।”
48इसके बाद उस राजा ने दानिय्येल को अपने राज्य
में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पद प्रदान किया तथा राजा ने
बहुत से बहुमूल्य उपहार भी दानिय्येल को दिये।
नबूकदनेस्सर ने दानिय्येल को बाबुल के समूचे प्रदेश
का शासक नियुक्त कर दिया। तथा उसने दानिय्येल को
बाबुल के सभी पण्डितों का प्रधान बना दिया। **49**दानिय्येल
ने राजा से विनती की कि वह शद्रक, मेशक और
अबेदनगो को बाबुल प्रदेश के महत्त्वपूर्ण हाकिम बना
दें। सो राजा ने वैसा ही किया जैसा दानिय्येल ने चाहा
था। दानिय्येल स्वयं उन महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों में हो गया
था जो राजा के निकट रहा करते थे।

सोने की प्रतिमा और धधकती भट्टी

3 राजा नबूकदनेस्सर ने सोने की एक प्रतिमा बनवा
रखी थी। वह प्रतिमा साठ हाथ ऊँची और छ: हाथ
चौड़ी थी। नबूकदनेस्सर ने उस प्रतिमा को बाबुल प्रदेश
में दूरा के मैदान में स्थापित कर दिया **2**और फिर राजा
ने प्रांत के राज्यपालों, मुखियाओं, अधिपतियों,
सलाहकारों, खजांचियों, न्यायाधीशों, शासकों तथा दूसरे
सभी क्षेत्रीय अधिकारियों को अपने राज्य में आकर
इकट्ठा होने के लिये बुलवा भेजा। राजा चाहता था कि
वे सभी लोग प्रतिमा के प्रतिष्ठा महोत्सव में सम्मिलित
हों।
3सो वे सभी लोग आये और उस प्रतिमा के आगे खड़े
हो गये जिसे राजा नबुकदनेस्सर ने प्रतिष्ठित कराया
था। **4**फिर उस ढंढोरची ने, जो राजा की घोषनाएँ प्रसारित
किया करता था, ऊँचे स्वर में कहा, “सुनों, सुनों, अरे
ओ अलग अलग जातियों और भाषा समूह के लोगों!
तुम्हें जो करने की आज्ञा दी गयी है, वह यह है, **5**“तुम
जब सभी संगीत वाद्यों की ध्वनि सुनो तो तुम्हें तत्काल
झुक कर प्रणाम करना होगा। तुम जब नरसिगों, बाँसुरियों,
सितारो, सात तारों वाले बाजो, वीणाओ, और
मशक–शहनाई तथा अन्य सभी प्रकार के बाजों की
आवाज़ सुनो तो तुम्हें सोने की इस प्रतिमा की पूजा
करनी है। इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा राजा नबूकदनेस्सर
ने की है। **6**यदि कोई व्यक्ति इस सोने की प्रतिमा को
झुक कर प्रणााम नहीं करेगा और इसे नहीं पूजेगा तो
उस व्यक्ति को तुरंत ही धधकती हुई भट्टी में फेंक
दिया जायेगा।”
7सो, जैसे ही वे लोग नरसिंगों, बाँसुरियों, सितारों, सात
तारों वाले बाजों, मशक शहनाइयों और दूसरी तरह के
संगीत–वाद्यों को सुनते, नीचे झुक जाते और सोने की
उस प्रतिमा की पूजा करते। राजा नबूकदनेस्सर द्वारा
स्थापित सोने की उस प्रतिमा की, सारी प्रजा, सभी
जातियाँ और वहाँ के हर प्रकार की भाषा बोलने वाले

लोग पूजा किया करते थे।
8इसके बाद, कुछ कसदी
लोग राजा के पास आये। उन लोगों ने यहूदियों के
विरोध में राजा के कान भरे।
9राजा नबूकदनेस्सर से
उन्होंने कहा, "हे राजन, आप चिरंजीवी हों!
10हे राजन,
आपने एक आदेश दिया था, आपने कहा था कि हर
वह व्यक्ति जो नरसिंगों, बाँसुरियों, सितारों, सात तारों
वाले बाजों, वीणाओं, मशक शहनाइयों और दूसरे सभी
तरह के वाद्य-यन्त्रों की ध्वनि को सुनता है, उसे सोने
की प्रतिमा के आगे झुक कर उसकी पूजा करनी
चाहिये।
11आपने यह भी कहा था कि यदि कोई व्यक्ति
सोने की प्रतिमा के आगे झुक कर उसकी पूजा नहीं
करेगा तो उसे किसी धधकती भट्टी में झोंक दिया
जायेगा।
12हे राजन, यहाँ कुछ ऐसे यहूदी हैं जो आपके
इस आदेश पर ध्यान नहीं देते। आपने उन यहूदियों को
बाबुल प्रदेश में महत्त्वपूर्ण हाकिम बनाया हुआ है। ऐसे
लोगों के नाम हैं-शद्रक, मेशक और अबेदनगो। ये
लोग आपके देवताओं की पूजा नहीं करते और जिस
सोने की

प्रतिमा को आप ने स्थापित किया है, वे न तो उसके
आगे झुकते हैं और न ही उसकी पूजा करते हैं।"

13इस पर नबूकदनेस्सर क्रोध में आग-बबूला हो
उठा। उसने शद्रक, मेशक और अबेदनगो को बुलवा
भेजा। सो उन लोगों को राजा के सामने लाया गया।
14राजा नबूकदनेस्सर ने उन लोगों से कहा, "अरे शद्रक,
मेशक और अबेदनगो। क्या यह सच है कि तुम मेरे
देवताओं की पूजा नहीं करते? और क्या यह भी सच है
कि तुम मेरे द्वारा स्थापित करायी गयी सोने की प्रतिमा
के आगे न तो झुकते हो, और न ही उसकी पूजा करते
हो?

15अब देखो, तुम जब नरसिंगों, बाँसुरियों, सितारों,
सात तार के बाजों, वीणाओं, मशक-शहनाइयों तथा
हर तरह के दूसरे वाद्य-यन्त्रों की ध्वनि सुनो तो तुम्हें
सोने की प्रतिमा के आगे झुक कर उसकी पूजा करनी
होगी। यदि तुम मेरे द्वारा बनवाई गयी उस मूर्ति की पूजा
करने को तैयार हो, तब तो अच्छा है किन्तु यदि
उसकी पूजा नहीं करते हो तो तुम्हें तत्काल ही धधकती
हुई भट्टी में झोंक दिया जायेगा। फिर तुम्हें कोई भी
देवता मेरी शक्ति से बचा नहीं पायेगा!"

16शद्रक, मेशक और अबेदनगो ने उत्तर देते हुए
राजा से कहा, "हे नबूकदनेस्सर, हमें तुझसे इन बातों
की व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है!
17यदि,
हमारा परमेश्वर जिसकी हम उपासना करते हैं, उसका
अस्तित्व है तो वह इस जलती हुई भट्टी से हमें बचा
लेने में समर्थ है। सो अरे ओ राजा, वह हमें तेरी ताकत
से बचा लेगा।
18किन्तु राजा, हम यह चाहते हैं कि तू
इतना जान ले कि यदि परमेश्वर हमारी रक्षा न भी
करे तो भी हम तेरे देवताओं की सेवा से इन्कार करते
हैं। सोने की जो प्रतिमा तूने स्थापित कराई है हम
उसकी पूजा नहीं करेंगे।"

19इस पर तो नबूकदनेस्सर क्रोध से भड़क उठा।
उसने शद्रक, मेशक और अबेदनगो की ओर घृणा से
देखा। उसने आज्ञा दी कि भट्टी को जितनी वह तपा
करती है, उसे उससे सात गुणा अधिक दहकाया जाये।
20इसके बाद नबूकदनेस्सर ने अपनी सेना के कुछ
बहुत मज़बूत सैनिकों को आज्ञा दी कि वे शद्रक, मेशक
और अबेदनगो को बाँध लें। राजा ने उन सैनिकों को
आज्ञा दी कि वे शद्रक, मेशक और अबेदनगो को
धधकती भट्टी में झोंक दें।

21सो शद्रक, मेशक और अबेदनगो को बाँध दिया
गया और फिर धधकती भट्टी में धकेल दिया गया।
उन्होंने अपने वस्त्र-अंगरखे, पतलूनें और टोप तथा
अन्य कपड़े पहन रखे थे।
22जिस समय राजा ने यह
आज्ञा दी थी उस समय वह बहुत क्रोधित था, इसलिये
उन्होंने तत्काल ही भट्टी को बहुत अधिक तपा लिया!
आग इतनी अधिक भड़क रही थी कि उसकी लपटों से
वे शक्तिशाली सैनिक मर गये! वे सैनिक उस समय
मारे गये जब उन्होंने आग के पास जाकर शद्रक,
मेशक और अबेदनगो को आग में धकेला था।
23शद्रक,
मेशक और अबेदनगो आग में गिर गये थे। उन्हें बहुत
कस कर बाँधा हुआ था।

24इस पर राजा नबूकदनेस्सर उछल कर अपने पैरो,
पर खड़ा हो गया। उसे बहुत आश्चर्य हो रहा था। उसने
अपने मंत्रियों से पूछा, "यह ठीक है न कि हमने तो बस
तीन व्यक्तियों को बंधवाया था और आग में उन्हीं तीन
को डलवाया था?"

उसके मंत्रियों ने उत्तर दिया, "हाँ, महाराज।"

25राजा बोला, "देखो, मुझे तो आग के भीतर
इधर-उधर घूमते हुए चार व्यक्ति दिखाई दे रहे हैं। वे
बंधे हुए नहीं हैं और आग उन का कुछ नहीं बिगाड़
पाई है। देखो, वह चौथा पुरुष तो किसी स्वर्गदूत जैसा
दिखाई दे रहा है!"

26इसके बाद नबूकदनेस्सर उस जलती हुई भट्टी के
मुँह पर गया। उसने ज़ोर से पुकार कर कहा, "शद्रक,
मेशक और अबेदनगो, बाहर आओ! परम प्रधान
परमेश्वर के सेवकों बाहर आओ!

सो शद्रक, मेशक और अबेदनगो आग से बाहर
निकल आये।
27जब वे बाहर आये तो प्रांत के राज्यपालों,
हाकिमों, आधिपतियों और राजा के मंत्रियों ने उनके
चारों तरफ़ भीड़ लगा दी। वे देख पा रहे थे कि उस
आग ने शद्रक, मेशक और अबेदनगो को छुआ तक
नहीं है। उनके शरीर जरा भी नहीं जले थे। उनके बाल
झुलसे तक नहीं थे। उनके कपड़ों को आँच तक नहीं
आई थी। उनके शरीर से ऐसी गंध तक नहीं निकल
रही थी जैसे वे आग के आस-पास भी गए हों।

28फिर नबूकदनेस्सर ने कहा, "शद्रक, मेशक और
अबेदनगो के परमेश्वर की स्तुति करो। उनके परमेश्वर
ने अपने स्वर्गदूत को भेजकर, अपने सेवकों की आग
से रक्षा की हैं! इन तीनों पुरुषों की अपने परमेश्वर में
आस्था थी। इन्होंने मेरे आदेश को मानने से मना कर
दिया और दूसरे किसी देवता की सेवा या पूजा करने के
बजाय उन्होंने मरना स्वीकार किया। 29सो आज से मैं
यह नियम बनाता हूँ: किसी भी देश अथवा किसी भी
भाषा को बोलने वाला कोई व्यक्ति यदि शद्रक, मेशक
और अबेदनगो के परमेश्वर के विरोध में कुछ कहेगा
तो उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायेंगे और उसके
घर को उस समय तक तोड़ा-फोड़ा जायेगा, जब तक
वह मलबे और राख का ढेर मात्र न रह जाये। कोई भी
दूसरा देवता अपने लोगों को इस तरह नहीं बचा सकता।"
30इसके बाद राजा ने शद्रक, मेशक और अबेदनगो को
बाबुल के प्रदेश में और अधिक महत्त्वपूर्ण पद प्रदान
कर दिये।

एक पेड़ के बारे में नबूकदनेस्सर का स्वप्न

4 राजा नबूकदनेस्सर ने बहुत सी जातियों और दूसरी
भाषा बोलने वाले लोगों को, जो सारी दुनिया में
बसे हुए थे, यह पत्र भेजा शुभकामनाएँ:
2परम प्रधान परमेश्वर ने मेरे साथ जो आश्चर्यजनक
अद्‌भुत बातें की हैं, उनके बारे में तुम्हें बताते हुए मुझे
बहुत प्रसन्नता है।

3अद्‌भुत चमत्कार किये हैं! परमेश्वर शक्ति पूर्ण
चमत्कार किये हैं! परमेश्वर का राज्य सदा टिका
रहता है; परमेश्वर का शासन पीढ़ी दर पीढ़ी बना
रहता है।

4मैं, नबूकदनेस्सर, अपने महल में था। मैं प्रसन्न
और सफल था। 5मैंने एक सपना देखा जिसने मुझे
डरा दिया। मैं अपने बिस्तर में सो रहा था। मैंने
दर्शनों को देखा। जो कुछ मैंने देखा था, उसने
मुझे बहुत डरा दिया। 6सो मैंने यह आज्ञा दी कि
बाबुल के सभी बुद्धिमान लोगों को मेरे पास लाया
जाये ताकि वे मुझे मेरे स्वप्न का फल बतायें।
7जब तांत्रिक और कसदी लोग मेरे पास आये तो
मैंने उन्हें अपने सपने के बारे में बताया। किन्तु वे
लोग मुझे मेरे सपने का अर्थ नहीं बता पाये। 8अंत
में दानिय्येल मेरे पास आया (मैंने अपने ईश्वर को
सम्मानित करने के लिए दानिय्येल को बेलतशस्सर
नाम दिया था। पवित्र ईश्वरों की आत्मा का उसमें
निवास है।) दानिय्येल को मैंने अपना सपना कह
सुनाया। 9मैंने उसे कहा,
"हे बेलतशस्सर, तू सभी तांत्रिकों में सबसे बड़ा
है। मुझे पता है कि तुझमें पवित्र ईश्वरों की आत्मा
वास करती है। मैं जानता हूँ कि किसी भी रहस्य
को समझना तेरे लिये कठिन नहीं है। मैंने जो
सपना देखा था, वह यह है। तू मुझे इसका अर्थ
समझा। 10जब मैं अपने बिस्तर में लेटा हुआ था तो
मैंने जो दिव्य दर्शन देखे, वे ये हैं। मैंने देखा कि
मेरे सामने धरती के बीचों-बीच एक वृक्ष खड़ा है।
वह वृक्ष बहुत लम्बा था। 11वृक्ष बड़ा होता हुआ
एक विशाल मज़बूत वृक्ष बन गया। वृक्ष की चोटी
आकाश छूने लगी। उस वृक्ष को धरती पर कहीं
से भी देखा जा सकता था। 12वृक्ष की पत्तियाँ
सुन्दर थीं। वृक्ष पर बहुत अच्छे फल बहुतायात में
लगे थे और उस वृक्ष पर हर किसी के लिए
भरपूर खाने को था। जंगली जानवर वृक्ष के नीचे
आसरा पाये हुए थे और वृक्ष की शाखाओं पर
चिड़ियों का बसेरा था। हर पशु पक्षी उस वृक्ष से
ही भोजन पाता था।
13"अपने बिस्तर पर लेटे-लेटे दर्शन में मैं उन
वस्तुओं को देख रहा था और तभी एक पवित्र
स्वर्गदूत को मैंने स्वर्ग से नीचे उतरते हुए देखा।
14वह बड़े ऊँचे स्वर में बोला। उसने कहा, 'वृक्ष
को काट फेंको। इसकी टहनियों को काट डालो।
इसकी पत्तियों को नोच लो। इसके फलों को चारों
ओर बिखेर दो। इस वृक्ष के नीचे आसरा पाये हुए
पशु कहीं दूर भाग जायेंगे। इसकी शाखाओं पर
बसेरा किये हुए पक्षी कहीं उड़ जायेंगे। 15किन्तु
इसके तने और इसकी जड़ों को धरती में रहने
दो। इसके चारों ओर लोहे और काँसे का एक
बंधेज बांध दो। अपने आस पास उगी घास के साथ
इसका तना और इसकी जड़ें धरती में रहेंगी।
जंगली पशुओं और पेड़ पौधों के बीच यह खेतों में
रहेगा। ओस से वह नम हो जायेगा। 16वह अधिक
समय तक मनुष्य की तरह नहीं सोचेगा। उसका
मन पशु के मन जैसा हो जायेगा। उसके ऐसा ही
रहते हुए सातऋतु चक्र (वर्ष) बीत जायेगा।'
17"एक पवित्र स्वर्गदूत ने इस दण्ड की घोषणा
की थी ताकि धरती के सभी लोगों को यह पता
चल जाये कि मनुष्यों के राज्यों के ऊपर परम
प्रधान परमेश्वर शासन करता है। परमेश्वर जिसे
भी चाहता है। इन राज्यों को दे देता है और
परमेश्वर उन राज्यों पर शासन करने के लिये
विनम्र मनुष्यों को चुनता है।
18"बस मैंने (राजा नबूकदनेस्सर ने) सपने में
यही देखा है। अब हे बेलतशस्सर! तू मुझे यह बता
कि इस सपने का अर्थ क्या है? मेरे राज्य का
कोई भी बुद्धिमान पुरुष मुझे इस सपने का फल
नहीं बता पा रहा है। किन्तु हे बेलतशस्सर, तू मेरे
इस सपने की व्याख्या कर सकता है क्योंकि

तुझमें पवित्र परमेश्वर की आत्मा निवास करती
है।"
19तब दानिय्येल (जिसका नाम बेलतशस्सर भी
था) थोड़ी देर के लिए एक दम चुप हो गया। जिन
बातों को वह सोच रहा था, वे उसे व्याकुल किये
डाल रही थीं। सो राजा ने उससे कहा, "हे बेलतशस्सर
(दानिय्येल), तू उस सपने या उस सपने के फल से
भयभीत मत हो।"

इस पर बेलतशस्सर (दानिय्येल) ने राजा को
उत्तर दिया, "हे मेरे स्वामी, काश यह सपना तेरे
शत्रुओं पर पड़े और इसका फल, जो तेरे विरोधी
हैं, उनको मिले!" **20–21**आपने सपने में एक वृक्ष
देखा था। वह वृक्ष बड़ा हुआ और मज़बूत बन
गया। वृक्ष की चोटी आसमान छू रही थी। धरती में
हर कहीं से वह वृक्ष दिखाई देता था। उसकी
पत्तियाँ सुन्दर थीं और उस पर बहुतायत में फल
लगे थे। उन फलों से हर किसी को पर्याप्त भोजन
मिलता था। जंगली पशुओं का तो वह घर ही था
और उसकी शाखाओं पर चिड़ियों ने बसेरा किया
हुआ था। तुमने सपने में ऐसा वृक्ष देखा था। **22**हे
राजन, वह वृक्ष आप ही हैं। आप महान और
शक्तिशाली बन चुके हैं। आप उस ऊँचे वृक्ष के
समान हैं जिसने आकाश छू लिया है और आपकी
शक्ति धरती के सुदूर भागों तक पहुँची हुई है।

23"हे राजन, आपने एक पवित्र स्वर्गदूत को आकाश
से नीचे उतरते देखा था। स्वर्गदूत ने कहा था वृक्ष को
काट डालो और उसे नष्ट कर दो। वृक्ष के तने पर लोहे
और काँसे का बन्धेज डाल दो और इसके तने और
जड़ों को धरती में ही छोड़ दो। खेत में घास के बीच इसे
रहने दो। ओस से ही यह नमी लेता रहेगा। वह किसी
जंगली पशु के रुप में रहा करेगा। इसके इसी हाल में
सात ऋतु–चक्र (साल) बीत जायेंगे।

24"हे राजा, आपके स्वप्न का फल यही है। परम
प्रधान परमेश्वर ने मेरे स्वामी राजा के प्रति इन बातों
के घटने का आदेश दिया है। **25**हे राजा नबूकदनेस्सर,
प्रजा से दूर चले जाने के लिये आपको विवश किया
जायेगा। जंगली पशुओं के बीच आपको रहना होगा।
मवेशियों के समान आप घास से पेट भरेंगे और ओस से
भीगेंगे। सात ऋतु चक्र (वर्ष) बीत जायेंगे और फिर
उसके बाद तुम यह पाठ पढ़ोगे कि परम प्रधान परमेश्वर
मनुष्यों के साम्राज्यों पर शासन करता है और वह जिसे
भी चाहता है, उसको राज्य दे देता है।

26"वृक्ष के तने और उसकी जड़ों को धरती में छोड़
देने के आदेश का अर्थ यह है–कि आपका साम्राज्य
आपको वापस मिल जायेगा। किन्तु यह उसी समय होगा
जब तुम यह जान जाओगे कि तुम्हारे राज्य पर परम
प्रधान परमेश्वर का ही शासन है। **27**इसलिये हे राजन,
आप कृपा करके मेरी सलाह मानें। मैं आपको यह
सलाह देता हूँ कि आप पाप करना छोड़ दें और जो
उचित है, वही करें। कुकर्मो का त्याग कर दें। गरीबों
पर दयालु हों। तभी आप सफल बने रह सकेंगे।"

28ये सभी बातें राजा नबूकदनेस्सर के साथ घटीं।
29-30इस सपने के बारह महीने बाद जब राजा
नबूकदनेस्सर बाबुल में अपने महल की छत पर घूम
रहा था, तो छत पर खड़े–खड़े ही वह कहने लगा,
"बाबुल को देखो! इस महान नगर का निर्माण मैंने
किया है। यह महल मेरा है! मैंने अपनी शक्ति से इस
विशाल नगर का निर्माण किया है। इस स्थान का
निर्माण मैंने यह दिखाने के लिये किया है कि मैं कितना
बड़ा हूँ!"

31ये शब्द अभी उसके मुँह में ही थे कि एक
आकाशवाणी हुई। आकाशवाणी ने कहा, "राजा
नबूकदनेस्सर, तेरे साथ ये बातें घटेंगी। राजा के रूप में
तुझसे तेरी शक्ति छीन ली गयी है। **32**तुझे प्रजा से दूर
जाना होगा। जंगली पशुओं के साथ तेरा निवास होगा। तू
ढ़ोरों की तरह घास खायेगा। इससे पहले कि तू सबक
सीखे, सात ऋतु चक्र (वर्ष) बीत जायेंगे। तब तू यह
समझेगा कि मनुष्य के राज्यों पर परम प्रधान परमेश्वर
शासन करता है और परम प्रधान परमेश्वर जिसे चाहता
है, उसे राज्य दे देता है।"

33फिर तत्काल ही ये बातें घट गयीं। नबूकदनेस्सर
को लोगों से दूर जाना पड़ा। उसने ढ़ोरों की तरह घास
खाना शुरू कर दिया। वह ओस में भीगा। किसी
उकाब के पंखों के समान उसके बाल बढ़ गये और
उसके नाखून ऐसे बढ़ गये जैसे किसी पक्षी के पंजों के
नाखून होते हैं।

34फिर उस समय के अंत में मैं (नबूकदनेस्सर) ने
ऊपर स्वर्ग की ओर देखा। मैं फिर सही ढ़ंग से सोचने
विचारने लगा। सो मैंने परम प्रधान परमेश्वर की स्तुति
की, जो सदा अमर है, मैंने उसे आदर और महिमा
प्रदान की परमेश्वर शासन सदा करता है! उसका
राज्य पीढ़ी दर पीढ़ी बना रहता है।

35इस धरती के लोग सचमुच बडे नहीं हैं। परमेश्वर
लोगों के साथ जो कुछ चाहता है वह करता है। स्वर्ग
की शक्तियों से कोई भी रोक नहीं पाता है। उसका
सशक्त हाथ जो कुछ वह करता है उस पर कोई नहीं
प्रश्न करता है।

36सो, उस अवसर, पर परमेश्वर ने मुझे मेरी बुद्धि
फिर दे दी और उसने एक राजा के रूप में मेरा बड़ा
मान, सम्मान और शक्ति भी वापस लौटा दी। मेरे मन्त्री
और मेरे राजकीय लोग फिर मेरे पास आने लगे। मैं
फिर से राजा बन गया। मैं पहले से भी अधिक महान
और शक्तिशाली हो गया था **37**और देखो अब मैं,
नबूकदनेस्सर स्वर्ग के राजा की स्तुति करता हूँ तथा

उसे आदर और महिमा देता हूँ। वह जो कुछ करता है, ठीक करता है। वह सदा न्यायपूर्ण है। उसमें अहंकारी लोगों को विनम्र बना देने की क्षमता है!

दीवार पर अभिलेख

5 राजा बेलशस्सर ने अपने एक हजार अधिकारियों
को एक बड़ी दावत दी। राजा उनके साथ दाखमधु
पी रहा था। 2राजा बेलशस्सर ने दाखमधु पीते हुए अपने
सेवकों को सोने और चाँदी के प्याले लाने को कहा। ये
वे प्याले थे जिन्हें उसके दादा नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम
के मन्दिर से लिया था। राजा बेलशस्सर चाहता था कि
उसके शाही लोग, उसकी पत्नियाँ, तथा उसकी दासियाँ
इन प्यालों से दाखमधु पियें। 3सो सोने के वे प्याले लाये
गये जिन्हें यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर से उठाया
गया था। फिर राजा ने और उसके अधिकारियों ने,
उसकी रानियों ने तथा उसकी दासियों ने, उन प्यालों से
दाखमधु पिया किया। 4दाखमधु पीते हुए वे अपने देवताओं
की मूर्तियों की स्तुति कर रहे थे। उन्होंने उन देवताओं
की स्तुति की जो देवता सोने, चाँदी, काँसे, लोहे, लकड़ी
और पत्थर के मूर्ति मात्र थे।

5उसी समय अचानक किसी पुरुष का एक हाथ
प्रकट हुआ और दीवार पर लिखने लगा। उसकी उंगलियाँ
दीवार के लेप को कुरेदती हुई शब्द लिखने लगीं।
दीवार के पास राजा के महल में उस हाथ ने दीवार पर
लिखा। हाथ जब लिख रहा था तो राजा उसे देख रहा
था।

6राजा बेलशस्सर बहुत भयभीत हो उठा। डर से
उसका मुख पीला पड़ गया और उसके घुटने इस प्रकार
काँपने लगे कि वे आपस में टकरा रहे थे। उसके पैर
इतने बलहीन हो गये कि वह खड़ा भी नहीं रह पा रहा
था। 7राजा ने तांत्रिकों और कसदियों को अपने पास
बुलवाया और उनसे कहा, "मुझे जो काई भी इस लिखावट
को पढ़कर बताएगा और मुझे उसका अर्थ समझा देगा,
मैं उसे पुरस्कार दूँगा। उस व्यक्ति को मैं बैंगनी पोशाक
भेंट करूँगा। मैं उसके गले में सोने का हार पहनाऊँगा
और मैं उसे अपने राज्य का तीसरा सबसे बड़ा शासक
बना दूँगा।"

8सो राजा के सभी बुद्धिमान पुरुष वहाँ आ गये किन्तु
वे उस लिखावट को नहीं पढ़ सके। वे समझ ही नहीं
सके कि उसका अर्थ क्या हैं। 9राजा बेलशस्सर के
हाकिम चक्कर में पड़े हुए थे और राजा तो और भी
अधिक भयभीत और चिंतित था। उसका मुख डर से
पीला पड़ा हुआ था।

10तभी जहाँ वह दावत चल रही थी, वहाँ राजा की माँ
आई। उसने राजा और उसके राजकीय अधिकारियों
की आवाज़ें सुन लीं थीं, उसने कहा, "हे राजा, चिरंजीव
रह! डर मत! तू अपने मुँह को डर से इतना पीला मत
पड़ने दे! 11देख, तेरे राज्य में एक ऐसा व्यक्ति है जिसमें
पवित्र ईश्वरों की आत्मा बसती है। तेरे पिता के दिनों में
इस व्यक्ति ने यह दर्शाया था कि वह रहस्यों को समझ
सकता है। उसने यह दिखा दिया था कि वह बहुत चुस्त
और बुद्धिमान है। उसने यह प्रकट कर दिया था कि
इन बातों में वह ईश्वर के समान है। तेरे दादा राजा
नबूकदनेस्सर ने इस व्यक्ति को सभी बुद्धिमान पुरुषों
पर मुखिया नियुक्त किया था। वह सभी तांत्रिकों और
कसदियों पर हुकूमत करता था। 12मैं जिस व्यक्ति के
बारे में बातें कर रही हूँ उसका नाम दानिय्येल है।
किन्तु राजा ने उसे बेलतशस्सर का नाम दे दिया था।
बेलतशस्सर (दानिय्येल) बहुत चुस्त है और वह बहुत
सी बातें जानता है। वह स्वप्नों की व्याख्या कर सकता
है। पहेलियों को समझा सकता है और कठिन से
कठिन हलों को सुलझा सकता है। तू दानिय्येल को
बुला। दीवार पर जो लिखा है, उसका अर्थ तुझे वही
बतायेगा।"

13सो वे दानिय्येल को राजा के पास ले आये। राजा ने
दानिय्येल से कहा, "क्या तेरा नाम दानिय्येल है? मेरे
पिता महाराज यहूदा से जिन लोगों को बंदी बनाकर
लाये थे, क्या तू उन्हीं में से एक है? 14मैंने सुना है, कि
ईश्वरों की आत्मा का तुझमें निवास है और मैंने यह
भी सुना है कि तू रहस्यों को समझता है, तू बहुत चुस्त
और बुद्धिमान है। 15बुद्धिमान पुरुष और तांत्रिकों को
इस दीवार की लिखावट को समझाने के लिए मेरे पास
लाया गया। मैं चाहता था कि वे लोग उस लिखावट का
अर्थ बतायें। किन्तु दीवार पर लिखी इस लिखावट की
व्याख्या वे मुझे नहीं दे पाए। 16मैंने तेरे बारे में सुना है
कि तू बातों के अर्थ की व्याख्या कर सकता है और तू
अत्यंत कठिन समस्याओं के उत्तर भी ढूँढ सकता है।
यदि दीवार की इस लिखावट को तू पढ़ दे और इसका
अर्थ तू मुझे समझा दे तो मैं तुझे ये वस्तुएँ दूँगा। मैं तुझे
बैंगनी रंग की पोशाक प्रदान करूँगा, तेरे गले में सोने
का हार पहनाऊँगा। फिर तो तू इस राज्य का तीसरा
सबसे बड़ा शासक बन जायेगा।"

17इसके बाद दानिय्येल ने राजा को उत्तर देते हुए
कहा, "हे राजा बेलशस्सर, तुम अपने उपहार अपने
पास रखो, अथवा चाहो तो उन्हें किसी और को दे दो।
मैं तुम्हें वैसे ही दीवार की लिखावट पढ़ दूँगा और
उसका अर्थ क्या है, यह तुम्हें समझा दूँगा।

18"हे राजन, परम प्रधान परमेश्वर ने तुम्हारे दादा
नबूकदनेस्सर को एक महान शक्तिशाली राजा बनाया
था। परमेश्वर ने उन्हें अत्याधिक महत्त्वपूर्ण बनाया था।
19बहुत से देशों के लोग और विभिन्न भाषाएँ बोलनेवाले
नबूकदनेस्सर से डरा करते थे क्योंकि परम प्रधान
परमेश्वर ने उसे एक बहुत बड़ा राजा बनाया था। यदि
नबूकदनेस्सर किसी को मार डालना चाहता तो वह

मार दिया जाता और यदि वह चाहता कि कोई व्यक्ति
जीवित रहे तो उसे जीवित रहने दिया जाता। यदि वह
लोगों को बड़ा बनाना चाहता तो वह उन्हें बड़ा बना देता
और यदि वह चाहता कि उन्हें महत्त्वहीन कर दिया
जाये तो वह उन्हें महत्त्वहीन कर देता।

20किन्तु नबूकदनेस्सर को अभिमान हो गया और
वह हठीला बन गया। सो परमेश्वर द्वारा उससे उसकी
शक्ति छीन ली गयी। उसे उसके राज सिंहासन से उतार
फेंका गया और उसे महिमा विहीन बना दिया गया।
21इसके बाद लोगों से दूर भाग जाने के लिये
नबूकदनेस्सर को विवश किया गया। उसकी बुद्धि
किसी पशु की बुद्धि जैसी हो गयी। वह जंगली गधों के
बीच में रहने लगा और ढोरों की तरह घास खाता रहा।
वह ओस में भीगा। जब तक उसे सबक नहीं मिल गया,
उसके साथ ऐसा ही होता गया। फिर उसे यह ज्ञान
हो गया कि मनुष्य के राज्य पर परम प्रधान परमेश्वर
का ही शासन है और साम्राज्यों के ऊपर शासन
करने के लिये वह जिस किसी को भी चाहता है,
भेज देता है।

22"किन्तु हे बेलशस्सर, तुम तो इन बातों को जानते
ही हो! तुम नबूकदनेस्सर के पोते हो किन्तु फिर भी
तुमने अपने आप को विनम्र नहीं बनाया। **23**नहीं! तुम
विनम्र तो नहीं हुए और उलटे स्वर्ग के यहोवा के
विरुद्ध हो गये। तुमने यहोवा के मन्दिर के पात्रों को
अपने पास लाने की आज्ञा दी और फिर तुमने, तुम्हारे
शाही हाकिमों ने, तुम्हारी पत्नियों ने, तुम्हारी दासियों ने
उन पात्रों में दाखमधु पीया। तुमने चाँदी, सोने, काँसे,
लोहे, लकड़ी और पत्थर के देवताओं के गुण गाये। वे
सचमुच के देवता नहीं है। वे देख नहीं सकते, सुन नहीं
सकते तथा वे कुछ समझ भी नहीं सकते हैं। तुमने उस
परमेश्वर को आदर नहीं दिया, जिसका तुम्हारे जीवन
या जो कुछ भी तुम करते हो, उस पर अधिकार है।
24सो इसलिए, परमेश्वर ने उस हाथ को भेजा जिसने
दीवार पर लिखा। **25**दीवार पर जो शब्द लिखे गये हैं,
वे ये हैं: 'मने, मने तकेल, ऊपर्सीन।'

26"इन शब्दों का अर्थ यह है, 'मने' अर्थात् जब तेरे
राज्य का अंत होगा, परमेश्वर ने तब तक के दिन गिन
लिये हैं।

27'तकेल': अर्थात् तराजू पर तुझे तोल लिया गया है
और तू पूरा नहीं उतरा है।

28'ऊपर्सीन': अर्थात् तुझसे तेरा राज्य छीना जा रहा
है और उसका बंटवारा हो रहा है। यह राज्य मादियों
और फारसियों के लोगों को दे दिया जायेगा।"

29इसके बाद बेलशस्सर ने आज्ञा दी कि दानिय्येल
को बैंगनी वेशभूषा पहनायी जाये। उसके गले में सोने
का हार पहना दिया जाय और यह घोषणा कर दी गयी
कि वह राज्य का तीसरा सबसे बड़ा शासक होगा।
30उसी रात बाबुल की प्रजा के स्वामी राजा बेलशस्सर
का वध कर दिया गया। **31**मादे का रहने वाला एक
व्यक्ति जिसका नाम दारा था और जिसकी आयु कोई
बासठ वर्ष की थी, वहाँ का नया राजा बना।

दानिय्येल और सिंह

6 दारा के मन में विचार आया कि कितना अच्छा
रहे यदि एक सौ बीस प्रांत-अधिपतियों के द्वारा
समूचे राज्य की हुकूमत को चलाया जाये **2**और इसके
लिये उसने उन एक सौ बीस प्रांत-अधिपतियों के ऊपर
शासन करने के लिये तीन व्यक्तियों को अधिकारी
नियुक्त कर दिया। इन तीनों देख-रेख करने वालों में
एक था दानिय्येल। इन तीन व्यक्तियों की नियुक्ति राजा
ने इसलिये की थी कि कोई उसके साथ छल न कर
पाये और उसके राज्य की कोई भी हानि न हो। **3**दानिय्येल
ने यह कर दिखाया कि वह दूसरे पर्यवेक्षकों से अधिक
उत्तम है। दानिय्येल ने यह काम अपने अच्छे चरित्र
और बड़ी योग्यताओं के द्वारा सम्पन्न किया। राजा
दानिय्येल से इतना अधिक प्रभावित हुआ कि उसने
दानिय्येल को सारी हुकूमत का हाकिम बनाने की सोची।
4किन्तु जब दूसरे पर्यवेक्षकों और प्रांत-अधिपतियों ने
इसके बारे में सुना तो उन्हें दानिय्येल से ईर्ष्या होने लगी।
वे दानिय्येल को कोसने के लिये कारण ढूँढने का
जतन करने लगे। सो जब दानिय्येल सरकारी कामकाज
से कहीं बाहर जाता तो वे उसके द्वारा किये गये कामों
पर नज़र रखने लगे। किन्तु फिर भी वे दानिय्येल में
कोई दोष नहीं ढूँढ़ पाये। सो वे उस पर कोई गलत काम
करने का दोष नहीं लगा सके। दानिय्येल बहुत ईमानदार
और भरोसेमंद व्यक्ति था। उसने राजा के साथ कभी
कोई छल नहीं किया। वह कठिन परिश्रमी था।

5आखिरकार उन लोगों ने कहा, "दानिय्येल पर कोई
बुरा काम करने का दोष लगाने की कोई वजह हम
कभी नहीं ढूँढ़ पायेंगे। इसलिये हमें शिकायत के लिए
कोई ऐसी बात ढूँढ़नी चाहिये जो उसके परमेश्वर के
नियमों से सम्बन्ध रखती हो।"

6सो वे दोनों पर्यवेक्षक और वे प्रांत-अधिपति टोली
बना कर राजा के पास गये। उन्होंने कहा, "हे राजा
दारा, तुम अमर रहो! **7**हम सभी पर्यवेक्षक, हाकिम,
प्रांत- अधिपति, मंत्री और राज्यपाल किसी एक बात
पर सहमत हैं। हमारा विचार है कि राजा को यह नियम
बना देना चाहिये और हर व्यक्ति को इस नियम का
पालन करना चाहिये। वह नियम यह हैं, 'यदि अगले
तीस दिनों तक कोई भी व्यक्ति हे राजा, आपको छोड़
किसी और देवता या व्यक्ति की प्रार्थना करे तो उस
व्यक्ति को शेरों की माँद में डाल दिया जाये। **8**अब हे
राजा! जिस कागज पर यह नियम लिखा है, तुम उस पर
हस्ताक्षर कर दो। इस तरह से यह नियम कभी बदला

नहीं जा सकेगा। क्योंकि मीदियों और फ़ारसियों के
नियम न तो बदले जा सकते हैं और न ही मिटाए जा
सकते हैं।" **9**सो राजा दारा ने यह नियम बना कर उस
पर हस्ताक्षर कर दिये।

10दानिय्येल तो सदा ही प्रतिदिन तीन बार परमेश्वर
से प्रार्थना किया करता था। हर दिन तीन बार दानिय्येल
अपने घुटनों के बल झुक कर अपने परमेश्वर की
प्रार्थना करता और उसका गुणगान करता था। दानिय्येल
ने जब इस नये नियम के बारे में सुना तो वह अपने घर
चला गया। दानिय्येल अपने मकान की छत के ऊपर,
अपने कमरे में चला गया। दानिय्येल उन खिड़कियों के
पास गया जो यरूशलेम की तरफ़ खुलती थीं। फिर वह
अपने घुटनों के बल झुका और जैसे सदा किया करता
था, उसने वैसे ही प्रार्थना की।

11फिर वे लोग झुण्ड बना कर दानिय्येल के यहाँ जा
पहुँचे। वहाँ उन्होंने दानिय्येल को प्रार्थना करते और
परमेश्वर से दया माँगते पाया। **12**बस फिर क्या था। वे
लोग राजा के पास जा पहुँचे और उन्होंने राजा से उस
नियम के बारे में बात की जो उसने बनाया था। उन्होंने
कहा, "हे राजा दारा, आपने एक नियम बनाया है।
जिसके अनुसार अगले तीस दिनों तक यदि कोई व्यक्ति
किसी देवता से अथवा तेरे अतिरिक्त किसी व्यक्ति से
प्रार्थना करता है तो, राजन, उसे शेरों की माँद में
फेंकवा दिया जायेगा। बताइये क्या आपने इस नियम पर
हस्ताक्षर नहीं किये थे?"

राजा ने उत्तर दिया, "हाँ,' मैंने उस नियम पर हस्ताक्षार
किये थे और मादियों और फारसियों के नियम अटल
होते हैं। न तो वे बदले जा सकते हैं, और नहीं मिटाये,
जा सकते हैं।"

13इस पर उन लोगों ने राजा से कहा, "दानिय्येल नाम
का वह व्यक्ति आपकी बात पर ध्यान नहीं दे रहा है।
दानिय्येल यहूदा के बन्दियों में से एक हैं। जिस नियम
पर आपने हस्ताक्षर किये हैं, दानिय्येल उस पर ध्यान
नहीं दे रहा है। दानिय्येल अभी भी हर दिन तीन बार
अपने परमेश्वर की प्रार्थना करता है।"

14राजा ने जब यह सुना तो वह बहुत दुःखी और
व्याकुल हो उठा। राजा ने दानिय्येल को बचाने की ठान
ली। दानिय्येल को बचाने की कोई उपाय सोचते सोचते
उसे शाम हो गयी।

15इसके बाद वे लोग एक झुण्ड बना कर राजा के
पास पहुँचे। उन्होंने राजा से कहा, "हे राजन, मादियों
और फ़ारसियों की व्यवस्था के अनुसार जिस नियम
अथवा आदेश पर राजा हस्ताक्षर कर दे, वह न तो
कभी बदला जा सकता है और न ही कभी मिटाया जा
सकता है।"

16सो राजा दारा ने आदेश दे दिया। वे लोग दानिय्येल
को पकड़ लाये और उसे शेरों की मांद में फेंक दिया।
राजा ने दानिय्येल से कहा, "मुझे आशा है कि तू जिस
परमेश्वर की सदा उपासना करता है, वह तेरी रक्षा
करेगा।" **17**एक बड़ा सा पत्थर लाया गया और उसे
शेरों की माँद के द्वार पर अड़ा दिया गया। फिर राजा ने
अपनी अंगूठी ली और उस पत्थर पर अपनी मुहर लगा
दी। साथ ही उसने अपने हाकिमों की अंगूठियों की
मुहरें भी उस पत्थर पर लगा दीं। इसका यह अभिप्राय
था कि उस पत्थर को कोई भी हटा नहीं सकता था
और शेरों की उस माँद से दानिय्येल को बाहर नहीं ला
सकता था। **18**इसके बाद राजा दारा अपने महल को
वापस चला गया। उस रात उसने खाना नहीं खाया। वह
नहीं चाहता था कि कोई उसके पास आये और उसका
मन बहलाये। राजा सारी रात सो नहीं पाया। **19**अगली
सुबह जैसे ही सूरज का प्रकाश फैलने लगा, राजा दारा
जाग गया और शेरों की माँद की ओर दौड़ा।

20राजा बहुत चिंतित था। राजा जब शेरों की माँद के
पास गया तो वहाँ उसने दानिय्येल को ज़ोर से आवाज़
लगाई। राजा ने कहा, "हे दानिय्येल, हे जीवित परमेश्वर
के सेवक, क्या तेरा परमेश्वर तुझे शेरों से बचा पाने में
समर्थ हो सका है? तू तो सदा ही अपने परमेश्वर की
सेवा करता रहा है।"

21दानिय्येल ने उत्तर दिया, "राजा, अमर रहे! **22**मेरे
परमेश्वर ने मुझे बचाने के लिए अपना स्वर्गदूत भेजा
था। उस स्वर्गदूत ने शेरों के मुँह बन्द कर दिये। शेरों ने
मुझे कोई हानि नहीं पहुँचाई क्योंकि मेरा परमेश्वर
जानता है कि मैं निरपराध हूँ। मैंने राजा के प्रति कभी
कोई बुरा नहीं किया है।"

23राजा दारा बहुत प्रसन्न था। राजा ने अपने सेवकों
को आदेश दिया कि वे दानिय्येल को शेरों की माँद से
बाहर खींच लें। जब दानिय्येल को शेरों की माँद से
बाहर लाया गया तो उन्हें उस पर कहीं कोई घाव नहीं
दिखाई दिया। शेरों ने दानिय्येल को कोई हानि नहीं
पहुँचाई थी क्योंकि दानिय्येल को अपने परमेश्वर में
विश्वास था। **24**इसके बाद राजा ने उन लोगों को जिन्होंने
दानिय्येल पर अभियोग लगा कर उसे शेरों की माँद में
डलवाया था, बुलवाने का आदेश दिया और उन लोगों
को, उनकी पत्नियों को और उनके बच्चों को शेरों
की मांद में फेंकवा दिया गया। इससे पहले कि वे शेरों
की मांद में धरती पर गिरते, शेरों ने उन्हें दबोच लिया।
शेर उनके शरीरों को खा गये और फिर उनकी हड्डियों
को भी चबा गये।

25इस पर राजा दारा ने सारी धरती के लोगों, दूसरी
जाति के विभिन्न भाषा बोलनेवालों को यह पत्र लिखा:

शुभकामनाएँ।

26मैं एक नया नियम बना रहा हूँ। मेरे राज्य के
हर भाग के लोगों के लिये यह नियम होगा। तुम

सभी लोगों को दानिय्येल के परमेश्वर का भय
मानना चाहिये और उसका आदर करना चाहिये।

दानिय्येल का परमेश्वर जीवित परमेश्वर है। परमेश्वर
सदा–सदा अमर रहता है! साम्राज्य उसका कभी समाप्त
नहीं होगा उसके शासन का अंत कभी नहीं होगा
27परमेश्वर लोगों को बचाता है और रक्षा करता है।
स्वर्ग में और धरती के ऊपर परमेश्वर अद्‌भुत
आश्चर्यपूर्ण कर्म करता है! परमेश्वर ने दानिय्येल को
शेरों से बचा लिया।"

28इस तरह जब दारा का राज था और जिन दिनों
फारसी राजा कुस्रू की हुकूमत थी, दानिय्येल ने सफलता
प्राप्त की।

चार पशुओं के बारे में दानिय्येल का स्वप्न

7 बेलशस्सर के बाबुल पर शासन काल के पहले
वर्ष दानिय्येल को एक सपना आया सपने में अपने
पलंग पर लेटे हुए दानिय्येल ने, ये दर्शन देखे। दानिय्येल
ने जो सपना देखा था, उसे लिख लिया। 2दानिय्येल ने
बताया, "रात में मैंने सपने में एक दर्शन पाया। मैंने
देखा कि चारों दिशाओं से हवा बह रही हैं और उन
हवाओं से सागर उफनने लगा था। 3फिर मैंने तीन
पशुओं को देखा। हर पशु दूसरे पशु से भिन्न था। वे
चारों पशु समुद्र में से उभर कर बाहर निकले थे।

4"उनमें से पहला पशु सिंह के समान दिखाई दे रहा
था और उस सिंह के उकाब के जैसे पंख थे। मैंने उस
पशु को देखा। फिर मैंने देखा कि उसके पंख उखाड़
फेंके गये हैं। धरती पर से उस पशु को इस प्रकार
उठाया गया जिससे वह किसी मनुष्य के समान अपने
दो पैरों पर खड़ा हो गया। इस सिंह को मनुष्य का सा
दिमाग़ दे दिया गया था।

5"और फिर मैंने देखा कि मेरे सामने एक और
दूसरा पशु मौजूद है। यह पशु एक भालू के जैसा था।
वह अपनी एक बगल पर उठा हुआ था। उस पशु के
मुँह मे दांतों के बीच तीन पसलियाँ थीं। उस भालू से
कहा गया था, 'उठ और तुझे जितना चाहिये उतना
माँस खा ले!'

6"इसके बाद, मैंने देखा कि मेरे सामने एक और पशु
खड़ा है। यह पशु चीते जैसे लग रहा था और उस चीते
की पीठ पर चार पंख थे। पंख ऐसे लग रहे थे, जैसे वे
किसी चिड़िया के पंख हों। इस पशु के चार सिर थे,
और उसे शासन का अधिकार दिया गया था।

7"इसके बाद, सपने में रात को मैंने देखा कि मेरे
सामने एक और चौथा जानवर खड़ा है। यह जानवर
बहुत खुँखार और भयानक लग रहा था। वह बहुत
मज़बूत दिखाई दे रहा था। उसके लोहे के लम्बे–लम्बे
दाँत थे। यह जानवर अपने शिकारों को कुचल कर के
खा डाल रहा था और शिकार को खा चुकने के बाद
जो कुछ बच रहता, वह उसे अपने पैरों तले कुचल रहा
था। इस पशु

से पहले मैंने सपने में जो पशु देखे थे, यह चौथा पशु
उन सबसे अलग था। इस पशु के दस सींग थे।

8"अभी मैं उन सींगों के बारे में सोच ही रहा था कि
उन सींगों के बीच एक सींग और उग आया। यह सींग
बहुत छोटा था। इस छोटे सींग पर आँखे थी, और वे
आँखे किसी व्यक्ति की आँखों जैसी थीं। इस छोटे सींग
में एक मुख भी था और वह स्वयं की प्रशंसा कर रहा
था। इस छोटे सींग ने अन्य सींगों में से तीन सींग उखाड़
फेंके।

चौथे पशु का न्याय

9"मेरे देखते ही देखते, उनकी जगह पर सिंहासन रखे
गये और वह सनातन राजा सिंहासन पर विराज गया।
उसके वस्त्र अति धवल थे, वे वस्त्र बर्फ से श्वेत थे।
उनके सिर के बाल श्वेत थे, वे ऊन से भी श्वेत थे।
उसका सिंहासन अग्नि का बना था और उसके पहिए
लपटों से बने थे। 10सनातन राजा के सामने एक आग
की नदी बह रही थी। लाखों करोड़ों लोग उसकी सेवा
में थे। उसके सामने करोड़ों दास खड़े थे। यह दृश्य कुछ
वैसा ही था जैसे दरबार शुरु होने को पुस्तके खोली गयी
हों।

11"मैं देखता का देखता रह गया क्योंकि वह छोटा
सींग डींगे मार रहा था। मैं उस समय तक देखता रहा
जब अंतिम रूप से चौथे पशु की हत्या कर दी गयी।
उसकी देह को नष्ट कर दिया गया और उसे धधकती
हुई आग में डाल दिया गया। 12दूसरे पशुओं की शक्ति
और राजसत्ता उनसे छीन लिये गये। किन्तु एक निश्चित
समय तक उन्हें जीवित रहने दिया गया।

13"रात को मैंने अपने दिव्य स्वप्न में देखा कि मेरे
सामने कोई खड़ा है, जो मनुष्य जैसा दिखाई देता था।
वह आकाश में बादलों पर आ रहा था। वह उस सनातन
राजा के पास आया था। सो उसे उसके सामने ले आया
गया।

14"वह जो मनुष्य के समान दिखाई दे रहा था, उसे
अधिकार, महिमा और सम्पूर्ण शासन सत्ता सौंप दी
गयी। सभी लोग, सभी जातियाँ और प्रत्येक भाषा–भाषी
लोग उसकी आराधना करेंगे। उसका राज्य अमर
रहेगा। उसका राज्य सदा बना रहेगा। वह कभी नष्ट
नहीं होगा।

चौथे पशु के स्वप्न का फल

15"मैं, दानिय्येल बहुत विकल और चिंतित था। वे
दर्शन जो मैंने देखे थे, उन्होंने मुझे विकल बनाया हुआ
था। 16मैं, जो वहाँ खड़े थे, उनमें से एक के पास पहुँचा।

मैंने उससे पूछा, "इस सब कुछ का अर्थ क्या है? "सो
उसने बताया, उसने मुझे समझाया कि इन बातों का
मतलब क्या है। 17उसने कहा, 'वे चार बड़े पशु, चार
राज्य हैं। वे चारों राज्य धरती से उभरेंगे। 18किन्तु
परमेश्वर के पवित्र लोग उस राज्य को प्राप्त करेंगे जो
एक अमर राज्य होगा।'

19"फिर मैंने यह जानना चाहा कि वह चौथा पशु
क्या था और उसका क्या अभिप्राय था? वह चौथा पशु
सभी दूसरे पशुओं से भिन्न था। वह बहुत भयानक था।
उसके दाँत लोहे के थे, और पंजे काँसे के थे। यह वह
पशु था, जिसने अपने शिकार को चकनाचूर करके
पूरी तरह खा लिया था, और अपने शिकार को खाने
के बाद जो कुछ बचा था, उसे उसने अपने पैरों तले
रौंद डाला था। 20उस चौथे पशु के सिर पर जो दस सींग
थे, मैंने उनके बारे में जानना चाहा और मैंने उस सींग
के बारे में भी जानना चाहा जो वहाँ उगा था। उस सींग
ने उन दस सींगों में से तीन सींग उखाड़ फेंके थे। वह
सींग अन्य सींगों से अधिक बड़ा दिखाई देता था। उसके
आँखे थी और वह अपनी डींगे हाँके चला जा रहा था।
21मैं देख ही रहा था कि उस सींग ने परमेश्वर के
पवित्र लोग के विरुद्ध युद्ध और उन पर आक्रमण
करना आरम्भ कर दिया है और वह सींग उन्हें मारे
डाल रहा है। 22परमेश्वर के पवित्र लोग को वह सींग
उस समय तक मारता रहा जब तक सनातन राजा ने
आकर उसका न्याय नहीं किया। सनातन राजा ने उस
सींग के न्याय की घोषणा की। उस न्याय से परम
परमेश्वर के भक्तों को सहारा मिला और उन्हें उनके
अपने राज्य की प्राप्ति हो गयी।

23"और फिर उसने सपने को मुझे इस प्रकार समझाया
कि वह चौथा पशु, वह चौथा राज्य है जो धरती पर
आयेगा। वह राज्य अन्य सभी राज्यों से अलग होगा। वह
चौथा राज्य संसार में सब कहीं लोगों का विनाश करेगा।
संसार के सभी देशों को वह अपने पैरों तले रौंदेगा और
उनके टुकड़े टुकड़े कर देगा।

24वे दस सींग वे दस राजा हैं, जो इस चौथे राज्य में
आयेंगे। इन दसों राजाओं के चले जाने के बाद एक
और राजा आयेगा। वह राजा अपने से पहले के राजाओं
से अलग होगा। वह उन में से तीन दूसरे राजाओं को
पराजित करेगा। 25यह विशेष राजा परम प्रधान परमेश्वर
के विरुद्ध बातें करेगा तथा वह राजा परमेश्वर के
पवित्र लोग को हानि पहुँचायेगा और उनका वध करेगा।
जो पवित्र उत्सव और जो नियम इस समय प्रचलन में है,
वह राजा उन्हें बदलने का जतन करेगा। परमेश्वर के
पवित्र लोग साढ़े तीन साल तक उस राजा की शक्ति के
अधीन रहेंगे।

26"'किन्तु जो कुछ होना है, उसका निर्णय न्यायालय
करेगा और उस राजा से उसकी शक्ति छीन ली जायेगी।
उसके राज्य का पूरी तरह अंत हो जायेगा। 27फिर
परमेश्वर के पवित्र लोग उस राज्य का शासन चलायेंगे।
धरती के सभी राज्यों के सभी लोगों पर उनका शासन
होगा। यह राज्य सदा सदा अटल रहेगा, और अन्य सभी
राज्यों के लोग उन्हें आदर देंगे और उनकी सेवा करेंगे।'

28"इस प्रकार उस सपने का अंत हुआ। मैं, दानिय्येल
तो बहुत डर गया था। डर से मेरा मुँह पीला पड़ गया
था। मैंने जो बातें देखी थीं और सुनी थीं, मैंने उनके
बारे में दूसरे लोगों को नहीं बताया।"

भेड़े और बकरे के बारे में दानिय्येल का दर्शन

8 बेलशस्सर के शासन काल के तीसरे साल मैंने
यह दर्शन देखा। यह उस दर्शन के बाद का दर्शन
है। 2मैंने देखा कि मैं शूशन नगर में हूँ। शूशन, एलाम
प्रांत की राजधानी थी। मैं ऊलै नदी के किनारे पर
खड़ा था। 3मैंने आँखें ऊपर उठाई तो देखा कि ऊलै
नदी के किनारे पर एक मेढ़ा खड़ा है। उस मेढ़े के दो
लम्बे लम्बे सींग थे। यद्यपि उसके दोनों ही सींग लम्बे थे।
पर एक सींग दूसरे से बड़ा था। लम्बा वाला सींग छोटे
वाले सींग के बाद में उगा था। 4मैंने देखा कि वह मेढ़ा
इधर उधर सींग मारता फिरता है। मैंने देखा कि वह
मेढ़ा कभी पश्चिम की ओर दौड़ता हैं तो कभी उत्तर
की ओर, और कभी दक्षिण की ओर उस मेढ़े को
कोई भी पशु रोक नहीं पा रहा है और न ही कोई दूसरे
पशुओं को बचा पा रहा है। वह मेढ़ा वह सब कुछ कर
सकता है, जो कुछ वह करना चाहता है। इस तरह से
वह मेढ़ा बहुत शक्तिशाली हो गया।

5मैं उस मेढ़े के बारे में सोचने लगा। मैं अभी सोच ही
रहा था कि पश्चिम की ओर से मैंने एक बकरे को
आते देखा। यह बकरा सारी धरती पर दौड़ गया। किन्तु
उस बकरे के पैर धरती से छुए तक नहीं। इस बकरे के
एक लम्बा सींग था। जो साफ–साफ दिख रहा था, वह
सींग बकरे की दोनों आँखों के बीचों–बीच था।

6फिर वह बकरा उस दो सींग वाले मेढ़े के पास
आया। यह वही मेढ़ा था जिसे मैंने ऊलै नदी के किनारे
खड़ा देखा था। वह बकरा क्रोध से भरा हुआ था। सो
वह मेढ़े की तरफ लपका। 7बकरे को उस मेढ़े की
तरफ भागते हुए मैंने देखा। वह बकरा गुस्से में आग
बबूला हो रहा था। सो उसने मेढ़े के दोनों सींग तोड़
डाले। मेढ़ा बकरे को रोक नहीं पाया। बकरे ने मेढ़े को
धरती पर पछाड़ दिया और फिर उस बकरे ने उस मेढ़े
को पैरों तले कुचल दिया। वहाँ उस मेढ़े को बकरे से
बचाने वाला कोई नहीं था।

8सो वह बकरा बहुत शक्तिशाली बन बैठा। किन्तु
जब वह शक्तिशाली बना, उसका बड़ा सींग टूट गया
और फिर उस बड़े सींग की जगह चार सींग और निकल

आये। वे चारों सींग आसानी से दिखाई पड़ते थे। वे चार
सींग अलग-अलग चारों दिशाओं की ओर मुड़े हुए थे।
9फिर उन चार सींगों में से एक सींग में एक छोटा
सींग और निकल आया। वह छोटा सींग बढ़ने लगा और
बढ़ते-बढ़ते बहुत बड़ा हो गया। यह सींग दक्षिण-पूर्व
की ओर बढ़ा। यह सींग सुन्दर धरती की ओर बढ़ा।
10वह छोटा सींग बढ़कर बहुत बड़ा हो गया। उसने बढ़ते
बढ़ते आकाश छू लिया। उस छोटे सींग ने, यहाँ तक कि
कुछ तारों को भी धरती पर पटक दिया और उन सभी
तारों को पैरों तले मसल दिया। 11वह छोटा सींग बहुत
मज़बूत हो गया और फिर वह तारों के शासक (परमेश्वर)
के विरुद्ध हो गया। उस छोटे सींग ने उस शासक
(परमेश्वर) को अर्पित की जाने वाली दैनिक बलियों
को रोक दिया। वह स्थान जहाँ लोग उस शासक
(परमेश्वर) की उपासना किया करते थे, उसने उसे
उजाड़ दिया 12और उनकी सेना को भी हरा दिया और
एक विद्रोही कार्य के रुप में वह छोटा सींग दैनिक
बलियों के ऊपर अपने आपको स्थापित कर दिया। वह
सत्य को धरती पर दे पटक दिया। वह छोटा सींग जो
कुछ किया उस सब कुछ में सफल हो गया।
13फिर मैंने किसी पवित्र जन को बोलते सुना और
उसके बाद मैंने सुना कि कोई दूसरा पवित्र जन उस
पहले पवित्र जन को उत्तर दे रहा है। पहले पवित्र जन ने
कहा, "यह दर्शन दर्शाता है कि दैनिक बलियों का क्या
होगा? यह उस भयानक पाप के विषय में है जो विनाश
कर डालता है। यह दर्शाता है कि जब लोग उस शासक
के पूजास्थल को तोड़ डालेंगे तब क्या होगा? यह दर्शन
दर्शाता है कि जब लोग उस समूचे स्थान को पैर तले
रौंदेंगे तब क्या होगा। यह दर्शन दर्शाता है कि जब लोग
तारों के ऊपर पैर धरेंगे तब क्या होगा? किन्तु ये बातें
कब तक होती रहेंगी?"
14दूसरे पवित्र जन ने कहा, "दो हजार तीन सौ दिन
तक ऐसा ही होता रहेगा और फिर उसके बाद पवित्र
स्थान को फिर से स्थापित कर दिया जायेगा।"

दर्शन की व्याख्या

15मैं, दानिय्येल ने यह दर्शन देखा था, और यह
प्रयत्न किया कि उसका अर्थ समझ लूँ। अभी मैं इस
दर्शन के विषय में सोच ही रहा था कि मनुष्य के जैसा
दिखने वाला कोई अचानक आ कर मेरे सामने खड़ा
हो गया। 16इसके बाद मैंने किसी पुरुष की वाणी सुनी।
यह वाणी ऊलै नदी के ऊपर से आ रही थी। उस
आवाज़ ने कहा, "जिब्राएल, इस व्यक्ति को इसके
दर्शन का अर्थ समझा दो।"
17सो जिब्राएल जो किसी मनुष्य के समान दिख रहा
था, जहाँ मैं खड़ा था, वहाँ आ गया। वह जब मेरे पास
आया तो मैं बहुत डर गया। मैं धरती पर गिर पड़ा।
किन्तु जिब्राएल ने मुझसे कहा, "अरे मनुष्य, समझ ले
कि यह दर्शन अंत समय के लिये है।"
18अभी जिब्राएल बोल ही रहा था कि मुझे नींद आ
गयी। नींद बहुत गहरी थी। मेरा मुख धरती की ओर
था। फिर जिब्राएल ने मुझे छुआ और मुझे मेरे पैरों पर
खड़ा कर दिया। 19जिब्राएल ने कहा, "देख, मैं तुझे
अब, उस दर्शन को समझाता हूँ। मैं तुझे बताऊँगा कि
परमेश्वर के क्रोध के समय के बाद में क्या कुछ
घटेगा।
20"तूने दो सींगों वाला मेढ़ा देखा था। वे दो सींग है
मादी और फारस के दो देश। 21वह बकरा यूनान का
राजा है। उसकी दोनों आँखों के बीच का बड़ा सींग वह
पहला राजा है। 22वह सींग टूट गया और उसके स्थान
पर चार सींग निकल आये। वे चार सींग चार राज्य हैं।
वे चार राज्य, उस पहले राजा के राष्ट्र से प्रकट होंगे
किन्तु वे चारों राज्य उस पहले राजा के से मज़बूत नहीं
होंगे।
23"जब उन राज्यों का अंत निकट होगा, तब वहाँ
एक बहुत साहसी और क्रूर राजा होगा। यह राजा बहुत
मक्कार होगा। ऐसा उस समय घटेगा जब पापियों की
संख्या बढ़ जायेगी। 24यह राजा बहुत शक्तिशाली होगा
किन्तु उसकी शक्ति उसकी अपनी नहीं होगी। यह
राजा भयानक तबाही मचा देगा। वह जो कुछ करेगा
उसमें उसे सफलता मिलेगी। वह शक्तिशाली लोगों-यहाँ
तक कि परमेश्वर के पवित्र लोग को भी नष्ट कर
देगा।
25"यह राजा बहुत चुस्त और मक्कार होगा। वह
अपनी कपट और झूठों के बल पर सफलता पायेगा।
वह अपने आप को सबसे बड़ा समझेगा। लोगों को वह
बिना किसी पूर्व चेतावनी के नष्ट करवा देगा। यहाँ
तक कि वह राजाओं के राजा (परमेश्वर) से भी युद्ध
का जतन करेगा किन्तु उस क्रूर राजा की शक्ति का
अंत कर दिया जायेगा और उसका अंत किसी मनुष्य
के हाथों नहीं होगा। 26"उन भक्तों के बारे में यह दर्शन
और वे बातें जो मैंने कही हैं, सत्य हैं। किन्तु इस दर्शन
पर तू मुहर लगा कर रख दे। क्योंकि वे बातें अभी
बहुत सारे समय तक घटने वाली नहीं हैं।"'
27उस दिव्य दर्शन के बाद में मैं दानिय्येल, बहुत
कमज़ोर हो गया और बहुत दिनों तक बीमार पड़ा रहा।
फिर बीमारी से उठकर मैंने लौट कर राजा का कामकाज
करना आरम्भ कर दिया किन्तु उस दिव्य दर्शन के
कारण मैं बहुत व्याकुल रहा करता था। मैं उस दर्शन
का अर्थ समझ ही नहीं पाया था।

दानिय्येल की विनती

9 राजा दारा के शासन के पहले वर्ष के दौरान ये
बातें घटी थीं। दारा क्षयर्ष नाम के व्यक्ति का पुत्र

था। दारा मादी लोगों से सम्बन्धित था। वह बाबुल का
राजा बना। 2दारा के राजा के पहले वर्ष में मैं, दानिय्येल
कुछ किताबें पढ़ रहा था। उन पुस्तकों में मैंने देखा कि
यहोवा ने यिर्मयाह को यह बताया है कि यरूशलेम का
पुन:निर्माण कितने बरस बाद होगा। यहोवा ने कहा था
कि इससे पहले कि यरूशलेम फिर से बसे, सत्तर वर्ष
बीत जायेंगे।

3फिर मैं अपने स्वामी परमेश्वर की ओर मुड़ा और
उससे प्रार्थना करते हुए सहायता की याचना की। मैंने
भोजन करना छोड़ दिया और ऐसे कपड़े पहन लिये
जिनसे यह लगे कि मैं दु:खी हूँ। मैंने अपने सिर पर धूल
डाल ली। 4मैंने अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करते
हुए उसको अपने सभी पाप बता दिये। मैंने कहा, "हे
यहोवा, तू महान और भययोग्य परमेश्वर है। जो व्यक्ति
तुझसे प्रेम करते हैं, तू उनके साथ अपने प्रेम और
दयालुता के वाचा को निभाता है। जो लोग तेरे आदेशों
का पालन करते हैं उनके साथ तू अपना वाचा निभाता
है।

5"किन्तु हे यहोवा, हम पापी हैं! हमने बुरा किया है।
हमने कुकर्म किये हैं। हमने तेरा विरोध किया है। तेरे
निष्पक्ष न्याय और तेरे आदेशों से हम दूर भटक गये हैं।
6हम नबियों की बात नहीं सुनते। नबी तो तेरे सेवक हैं।
नबियों ने तेरे बारे में बताया। उन्होंने हमारे राजाओं,
हमारे मुखियाओं और हमारे पूर्वजों को बताया था।
उन्होंने इस्राएल के सभी लोगों को भी बताया था। किन्तु
हमने उन नबियों की नहीं सुनी!

7"हे यहोवा, तू खरा है, और तुझमें नेकी है! जबकि
हम आज लज्जित हैं। यरूशलेम और यहूदा के लोग
लज्जित हैं–इस्राएल के सभी लोग लज्जित हैं। वे लोग
जो निकट हैं और वे लोग जो बहुत दूर हैं। हे यहोवा!
तूने उन लोगों को बहुत से देशों में फैला दिया। उन सभी
देशों में बसे इस्राएल के लोगों को शर्म आनी चाहिये। हे
यहोवा, उन सभी बुरी बातों के लिये, जो उन्होंने तेरे
विरुद्ध की हैं, उन्हें लज्जित होना चाहिये।

8"हे यहोवा, हम सब को लज्जित होना चाहिये। हमारे
सभी राजाओं और मुखियाओं को लज्जित होना चाहिये,
हमारे सभी पूर्वजों को लज्जित होना चाहिये। ऐसा क्यों?
ऐसा इसलिये कि हे यहोवा, हमने तेरे विरुद्ध पाप कियेहैं।

9"किन्तु हे यहोवा, तू दयालु है। लोग, जो बुरे कर्म
करते तो तू उन्हें, क्षमा कर देता है। हमने वास्तव में
तुझसे मुँह फेर लिया था। 10हमने अपने यहोवा परमेश्वर
की आज्ञा का पालन नहीं किया। यहोवा ने अपने
सेवकों, अपने नबियों के द्वारा हमें व्यवस्था का विधान
प्रदान किया। किन्तु हमने उसकी व्यवस्थाओं को नहीं
माना।

11इस्राएल का कोई भी व्यक्ति तेरी शिक्षाओं पर नहीं
चला। वे सभी भटक गये थे। उन्होंने तेरे आदेशों का
पालन नहीं किया। मूसा, (जो परमेश्वर का सेवक था)
की व्यवस्था के विधान में शापों और वादों का उल्लेख
हुआ है। वे शाप और वादे व्यवस्था के विधान पर नहीं
चलने के दण्ड का बखान करते हैं और वे सभी बातें
हमारे संग घट चुकी हैं क्योंकि हमने यहोवा के विरोध
में पाप किये हैं।

12"परमेश्वर ने बताया था कि हमारे साथ और
हमारे मुखियाओं के साथ वे बातें घटेंगी और उसने
उन्हें घटा दिया। उसने हमारे साथ भयानक बातें घटा
दीं। यरूशलेम को जितना कष्ट उठाना पड़ा, किसी
दूसरे नगर ने नहीं उठाया। 13वे सभी भयानक बातें
हमारे साथ भी घटीं। ये बातें ठीक वैसे हीं घटी, जैसे
मूसा के व्यवस्था के विधान में लिखी हुई हैं। किन्तु
हमने अभी भी परमेश्वर से सहारा नहीं माँगा है! हमने
अभी भी पाप करना नहीं छोड़ा है। हे यहोवा, तेरे सत्य
पर हम अभी भी ध्यान नहीं देते। 14यहोवा ने वे भयानक
बातें तैयार रख छोड़ी थीं और उसने हमारे साथ उन
बातों को घटा दिया। हमारे परमेश्वर यहोवा ने ऐसा
इसलिए किया था कि वह तो जो कुछ भी करता है,
न्याय ही करता है। किन्तु हम अभी भी उसकी नहीं
सुनते।

15"हे हमारे परमेश्वर, यहोवा, तूने अपनी शक्ति का
प्रयोग किया और हमें मिस्र से बाहर निकाल लाया। हम
तो तेरे अपने लोग हैं। आज तक उस घटना के कारण
तू जाना माना जाता है। हे यहोवा, हमने पाप किये हैं।
हमने भयानक काम किये हैं। 16हे यहोवा, यरूशलेम
पर क्रोध करना छोड़ दे। यरूशलेम तेरे पवित्र पर्वतों पर
स्थित है। तू जो करता है, ठीक ही करता है। सो
यरूशलेम पर क्रोधित होना छोड़ दे। हमारे आसपास के
लोग हमारा अपमान करते हैं और हमारे लोगों की हँसी
उड़ाते हैं। हमारे पूर्वजों ने तेरे विरुद्ध पाप किया था। यह
सब कुछ इसलिए हो रहा है।

17"अब, हे यहोवा, तू मेरी प्रार्थना सुन ले। मैं तेरा
दास हूँ। सहायता के लिए मेरी विनती सुन। अपने पवित्र
स्थान के लिए तू अच्छी बातें कर। वह भवन नष्ट कर
दिया गया था। किन्तु हे स्वामी, तू स्वयं अपने भले के
लिए इन भली बातों को कर। 18हे मेरे परमेश्वर, मेरी
सुन! जरा अपनी आँखें खोल और हमारे साथ जो
भयानक बातें घटी हैं, उन्हें देख! वह नगर जो तेरे नाम
से पुकारा जाता था, देख उसके साथ क्या हो गया है! मैं
यह नहीं कह रहा हूँ कि हम अच्छे लोग हैं। इसलिये मैं
इन बातों की याचना कर रहा हूँ। यह याचना तो मैं
इसलिये कर रहा हूँ कि मैं जानता हूँ कि तू दयालु है।
19हे यहोवा मेरी सुन, हे यहोवा, हमें क्षमा कर! हे
यहोवा, हम पर ध्यान दे, और फिर कुछ कर! अब
और प्रतीक्षा मत कर! इसी समय कुछ कर! उसे तू
स्वयं अपने भले के लिये कर! हे परमेश्वर, अब तो

अपने नगर और अपने उन लोगों के लिये, जो तेरे नाम
से पुकारे जाते हैं, कुछ कर।"

सत्तर सप्ताहों के बारे में दर्शन

20मैं परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए ये बातें कह रहा
था। मैं इस्राएल के लोगों के और अपने पापों के बारे में
बता रहा था। मैं परमेश्वर के पवित्र पर्वत पर प्रार्थना
कर रहा था। 21मैं अभी प्रार्थना कर ही रहा था कि
जिब्राएल मेरे पास आया। जिब्राएल वही स्वर्गदूत था जिसे
मैंने दर्शन में देखा था। जिब्राएल शीघ्रता से मेरे पास
आया। वह सांझ की बलि के समय आया था। 22मैं
जिन बातों को समझना चाहता था, उन बातों को समझने
में जिब्राएल ने मेरी सहायता की। जिब्राएल ने कहा, "हे
दानिय्येल, मैं तुझे बुद्धि प्रदान करने और समझने में
तेरी सहायता को आया हूँ।

23जब तूने पहले प्रार्थना आरम्भ की थी, मुझे तभी
आदेश दे दिया गया था और देख मैं तुझे बताने आ गया
हूँ। परमेश्वर तुझे बहुत प्रेम करता है! यह आदेश तेरी
समझ में आ जायेगा और तू उस दर्शन का अर्थ जान
लेगा।

24"हे दानिय्येल, परमेश्वर ने तेरी प्रजा और तेरी
नगरी के लिये सत्तर सप्ताहो का समय निश्चित किया
है। सत्तर सप्ताहो के समय का यह आदेश इसलिए दिया
गया है कि बुरे कर्म करना छोड़ दिया जाये, पाप करना
बन्द कर दिया जाये, सब लोगों को शुद्ध किया जाये,
सदा-सदा बनी रहने वाली नेकी को लाया जाये, दर्शन
और नबियों पर मुहर लगा दी जाये, और एक अत्यंत
पवित्र स्थान को समर्पित किया जाये।

25"दानिय्येल, तू इन बातों को समझ ले। इन बातों को
जान ले! वापस आने और यरूशलेम के पुनर्निर्माण की
आज्ञा को समय से लेकर अभिषिक्त के आने के समय
तक सात सप्ताह बीतेंगे। इसके बाद यरूशलेम फिर से
बसाया जायेगा। यरूशलेम में लोगों के परस्पर मिलने के
स्थान फिर से बन जायेंगे। नगर की रक्षा करने के
लिये नगर के चारों ओर खाई भी होगी। बासठ सप्ताह
तक यरूशलेम को बसाया जायेगा। किन्तु उस समय
बहुत सी विपत्तियाँ आयेंगी। 26बासठ सप्ताह बाद उस
अभिषिक्त पुरुष की हत्या कर दी जायेगी। वह चला
जायेगा। फिर होने वाले नेता के लोग नगर को और
उस पवित्र ठांव को तहस-नहस कर देंगे। वह अंत ऐसे
आयेगा जैसे बाढ़ आती है। अंत तक युद्ध होता रहेगा।
उस स्थान को पूरी तरह तहस-नहस कर देने की
परमेश्वर आज्ञा दे चुका है।

27"इसके बाद वह भावी शासक बहुत से लोगों के
साथ एक वाचा करेगा। वह वाचा एक सप्ताह तक
चलेगा। भेंटे और बलियाँ आधे सप्ताह तक रुकी रहेंगी
और फिर एक विनाश कर्ता आयेगा। वह भयानक
विध्वंसक बातें करेगा। किन्तु परमेश्वर उस विनाश
कर्ता के सम्पूर्ण विनाश की आज्ञा दे चुका है।"

हिद्देकेल नदी के किनारे दानिय्येल का दर्शन

10 कुस्रू फ़ारस का राजा था। कुस्रू के शासन
काल के तीसरे वर्ष दानिय्येल को इन बातों का
पता चला। (दानिय्येल का ही दूसरा नाम बेलतशस्सर
था) ये संकेत सच थे और ये एक बड़े युद्ध के बारे में
थे। दानिय्येल उन्हें समझ गया। वे बातें एक दर्शन में
उसे समझाई गई थीं।

2दानिय्येल का कहना है, "उस समय, मैं, दानिय्येल,
तीन सप्ताहों तक बहुत दुःखी रहा। 3उन तीन सप्ताहों
के दौरान, मैंने कोई भी चटपटा खाना नहीं खाया। मैंने
किसी भी प्रकार का माँस नहीं खाया। मैंने दाखमधु
नहीं पी। किसी भी तरह का तेल मैंने अपने सिर में नहीं
डाला। तीन सप्ताह तक मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया।

4"वर्ष के पहले महीने के अठाईसवें दिन मैं हिद्देकेल
महानदी के किनारे खड़ा था। 5वहाँ खड़े-खड़े जब मैंने
ऊपर की ओर देखा तो वहाँ मैंने एक पुरुष को अपने
सामने खड़े पाया। उसने सन के कपड़े पहने हुए थे।
उसकी कमर में शुद्ध सोने की बनी हुई कमर बांध थी।
6उसका शरीर चमचमाते पत्थर के जैसी थी। उसका
मुख बिजली के समान उज्ज्वल था! उसकी बांहें और
उसके पैर चमकदार पीतल से झिलमिला रहे थे! उसकी
आवाज़ इतनी ऊँची थी जैसे लोगों की भीड़ की आवाज़
होती है!

7"यह दर्शन बस मुझे, दानिय्येल को ही हुआ। जो
लोग मेरे साथ थे, वे यद्यपि उस दर्शन को नहीं देख पाये
किन्तु वे फिर भी डर गये थे। वे इतना डर गये कि भाग
कर कहीं जा छिपे। 8सो मैं अकेला छूट गया। मैं उस
दर्शन को देख रहा था और वह दृश्य मुझे भयभीत कर
डाला था। मेरी शक्ति जाती रही। मेरा मुख ऐसे पीला
पड़ गया जैसे मानो वह किसी मरे हुए व्यक्ति का मुख
हो। मैं बेबस था। 9फिर दर्शन के उस व्यक्ति को मैंने
बात करते सुना। मैं उसकी आवाज़ को सुन ही रहा था
कि मुझे गहरी नींद ने घेर लिया। मैं धरती पर औंधे
मुँह पड़ा था।

10"फिर एक हाथ ने मुझे छू लिया। ऐसा होने पर मैं
अपने हाथों और अपने घुटनों के बल खड़ा हो गया। मैं
डर के मारे थर थर काँप रहा था। 11दर्शन के उस
व्यक्ति ने मुझसे कहा, 'दानिय्येल, तू परमेश्वर का
बहुत प्यारा है। जो शब्द मैं तुझसे कहूँ उस पर तू
सावधानी के साथ विचार कर। खड़ा हो। मुझे तेरे पास
भेजा गया है। जब उसने ऐसा कहा तो मैं खड़ा हो गया।
मैं अभी भी थर-थर काँप रहा था क्योंकि मैं डरा हुआ
था। 12इसके बाद दर्शन के उस पुरुष ने फिर बोलना
आरम्भ किया। उसने कहा, 'दानिय्येल, डर मत। पहले

ही दिन से तूने यह निश्चय कर लिया था कि तू
परमेश्वर के सामने विवेकपूर्ण और विनम्र रहेगा।
परमेश्वर तेरी प्रार्थनाओं को सुनता रहा है। तू प्रार्थना
करता रहा है, मैं इसलिए तेरे पास आया हूँ। 13किन्तु
फारस का युवराज (स्वर्गदूत) इक्कीस दिन तक मेरे
साथ लड़ता रहा और मुझे तंग करता रहा। इसके बाद
मिकाएल जो एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण युवराज (स्वर्गदूत)
था। मेरी सहायता के लिए मेरे पास आया क्योंकि मैं
वहाँ फारस के राजा के साथ उलझा हुआ था।'

14"हे दानिय्येल, अब मैं तेरे पास तुझे वह बताने को
आया हूँ जो भविष्य में तेरे लोगों के साथ घटने वाला है।
कह स्वप्न एक आने वाले समय के बारे में है।'

15"अभी वह व्यक्ति मुझसे बात ही कर रहा था कि
मैंने धरती की तरफ़ नीचे अपना मुँह झुका लिया। मैं
बोल नहीं पा रहा था। 16फिर किसी ने जो मनुष्य के
जैसा दिखाई दे रहा था, मेरे होंठों को छुआ। मैंने
अपना मुँह खोला और बोलना आरम्भ किया। मेरे
सामने जो खड़ा था, उससे मैंने कहा, महोदय, मैंने दर्शन
में जो देखा था, मैं उससे व्याकुल और भयभीत हूँ। मैं
अपने को असहाय समझ रहा हूँ। 17मैं तेरा दास दानिय्येल
हूँ। मैं तुझसे कैसे बात कर सकता हूँ? मेरी शक्ति जाती
रही है। मुझसे तो सांस भी नहीं लिया जा रहा है।"

18"मनुष्य जैसे दिखते हुए उसने मुझे फिर छुआ।
उसके छूते ही मुझे अच्छा लगा। 19फिर वह बोला,
'दानिय्येल, डर मत। परमेश्वर तुझे बहुत प्रेम करता है।
तुझे शांति प्राप्त हो। अब तू सुदृढ़ हो जा! सुदृढ़ हो जा!'

"उसने मुझसे जब बात की तो मैं और अधिक बलशाली
हो गया। फिर मैंने उससे कहा, 'प्रभु! आपने तो मुझे
शक्ति दे दी है। अब आप बोल सकते हैं।'

20"सो उसने फिर कहा, 'दानिय्येल, क्या तू जानता
है, मैं तेरे पास क्यों आया हूँ? फारस के युवराज (स्वर्गदूत)
से युद्ध करने के लिये मुझे फिर वापस जाना है। मेरे
चले जाने के बाद यूनान का युवराज (स्वर्गदूत) यहाँ
आयेगा। 21किन्तु दानिय्येल अपने जाने से पहले तुम को
सबसे पहले मुझे यह बताना है कि सत्य की पुस्तक में
क्या लिखा है। उन बुरे राजकुमारों (स्वर्गदूतों) के विरोध
में मीकाएल स्वर्गदूत के अलावा मेरे साथ कोई नहीं
खड़ा होता। मीकाएल वह राजकुमार है (स्वर्गदूत) जो
तेरे लोगों पर शासन करता है।"

11 मादी राजा दारा के शासन काल के पहले वर्ष
मीकाएल को फारस के युवराज (स्वर्गदूत) के
विरुद्ध युद्ध में सहारा देने और उसे सशक्त बनाने को
मैं उठ खड़ा हुआ।

2"'अब देख, दानिय्येल मैं, तुझे सच्ची बात बताता हूँ।
फारस में तीन राजाओं का शासन और होगा। यह
इसके बाद एक चौथा राजा आयेगा। यह चौथा राजा
अपने पहले के फारस के अन्य राजाओं से कहीं अधिक
धनवान होगा। वह चौथा राजा शक्ति पाने के लिये
अपने धन का प्रयोग करेगा। वह हर किसी को यूनान
के विरोध में कर देगा। 3इसके बाद एक बहुत अधिक
शक्तिशाली राजा आयेगा, वह बड़ी शक्ति के साथ शासन
करेगा। वह जो चाहेगा वही करेगा। 4राजा के आने के
बाद उसके राज्य के टुकड़े हे जायेंगे। उसका राज्य
संसार में चार भागों में बंट जायेगा। उसका राज्य उसके
पुत्र पोतों के बीच नहीं बटेगा। जो शक्ति उसमें थी, वह
उसके राज्य में नहीं रहेगी। ऐसा क्यों होगा? ऐसा इसलिए
होगा कि उसका राज्य उखाड़ दिया जायेगा और उसे
अन्य लोगों को दे दिया जायेगा।

5"'दक्षिण का राजा शक्तिशाली हो जायेगा। किन्तु
इसके बाद उसका एक सेनापति उस से भी अधिक
शक्तिशाली हो जाएगा। वह सेना नायक शासन करने
लगेगा और बहुत बलशाली हो जायेगा।

6"'फिर कुछ वर्षों बाद एक समझौता होगा और दक्षिणी
राजा की पुत्री उत्तरी राजा से ब्याही जायेगी। वह शांति
स्थापना के लिए ऐसा करेगी। किन्तु वह और दक्षिणी
राजा पर्याप्त शक्तिशाली नहीं होंगे। फिर लोग उसके
और उस व्यक्ति के जो उसे उस देश में लाया था, विरुद्ध
हो जायेंगे और वे लोग उसके बच्चे के और उस स्त्री
के हिमायती व्यक्ति के भी विरुद्ध हो जायेंगे।

7"'किन्तु उस स्त्री के परिवार का एक व्यक्ति दक्षिणी
राजा के स्थान को ले लेने के लिए आयेगा। वह उत्तर
के राजा की सेनाओं पर आक्रमण करेगा। वह राजा के
सुदृढ़ किले में प्रवेश करेगा। वह युद्ध करेगा और
विजयी होगा। 8वह उनके देवताओं की मूर्तियों को ले
लेगा। वह उनके धातु के बने मूर्तियों तथा उनकी
चाँदी-सोने की बहुमूल्य वस्तुओं पर कब्जा कर लेगा।
वह उन वस्तुओं को वहाँ से मिस्र ले जायेगा। फिर कुछ
वर्षो तक वह उत्तर के राजा को तंग नहीं करेगा।
9उत्तर का राजा दक्षिण के राज्य पर हमला करेगा।
किन्तु पराजित होगा और फिर अपने देश को लौट
जायेगा।

10"'उत्तर के राजा के पुत्रों ने युद्ध की तैयारियाँ
करेंगे। वे एक विशाल सेना जुटायेंगे। वह सेना एक
शक्तिशाली बाढ़ की तरह बड़ी तेज़ी से धरती पर आगे
बढ़ती चली जायेगी। वह सेना दक्षिण के राजा के सुदृढ़
दुर्ग तक सारे रास्ते युद्ध करती जायेगी। 11फिर दक्षिण
का राजा क्रोध से तिलमिला उठेगा। उत्तर के राजा से
युद्ध करने के लिये वह बाहर निकल आयेगा। उत्तर
का राजा यद्यपि एक बहुत बड़ी सेना जुटायेगा किन्तु युद्ध
में हार जायेगा।

12"उत्तर की सेना पराजित हो जायेगी, और उन
सैनिकों को कहीं ले जाया जायेगा। दक्षिणी राजा को
बहुत अभिमान हो जायेगा और वह उत्तरी सेना के
हजारों सैनिकों को मौत के घाट उतार देगा। किन्तु

वह इसी प्रकार से सफलता नहीं प्राप्त करता रहेगा।
13उत्तर का राजा एक और सेना जुटायेगा। यह सेना
पहली सेना से अधिक बड़ी होगी। कई वर्षो बाद वह
आक्रमण करेगा। वह सेना बहुत विशाल होगी और
उसके पास बहुत से हथियार होंगे। वह सेना युद्ध को
तैयार होगी।

14"'उन दिनों बहुत से लोग दक्षिण के राजा के विरोध
में हो जायेंगे। कुछ तुम्हारे अपने ही ऐसे लोग, जिन्हें युद्ध
प्रिय है, दक्षिण के राजा के विरुद्ध बगावत करेंगे। वे
जीतेंगे तो नहीं किन्तु ऐसा करते हुए वे उस दर्शन को
सत्य सिद्ध करेंगे। 15फिर इसके बाद उत्तर का राजा
आयेगा और वह नगर परकोटे पर ढलवाँ चबूतरे बना
कर उस सुदृढ़ नगर पर कब्जा कर लेगा। दक्षिण के
राजा की सेना युद्ध का उत्तर नहीं दे पायेगी। यहाँ तक
कि दक्षिणी सेना के सर्वोत्तम सैनिक भी इतने शक्तिशाली
नहीं होंगे कि वे उत्तर की सेना को रोक पायें।

16"'उत्तर का राजा जैसा चाहेगा, वैसा करेगा। उसे
कोई भी रोक नहीं पायेगा। इस सुन्दर धरती पर वह
नियन्त्रण करके शक्ति पा लेगा। उसे इस प्रदेश को
नष्ट करने की शक्ति प्राप्त हो जायेगी। 17फिर उत्तर का
राजा दक्षिण के राजा से युद्ध करने के लिये अपनी
सारी शक्ति का उपयोग करने का निश्चय करेगा। वह
दक्षिण के राजा के साथ एक सन्धि करेगा। उत्तर का
राजा दक्षिण के राजा से अपनी एक पुत्री का विवाह
कर देगा। उत्तर का राजा ऐसा इसलिए करेगा कि वह
दक्षिण के राजा को हरा सके। किन्तु उसकी वे योजनाएँ
फलीभूत नहीं होंगी। इन योजनाओं से उसे कोई सहायता
नहीं मिलेगी।

18"'इसके बाद उत्तर का राजा भूमध्य-सागर के तट
से लगते हुए देशों पर अपना ध्यान लगायेगा। वह उन
देशों में से बहुत से देशों को जीत लेगा। किन्तु फिर एक
सेनापति उत्तर के राजा के उस अहंकार और उस
बगावत का अंत कर देगा। वह सेनापति उस उत्तर के
राजा को लज्जित करेगा।

19"'ऐसा घटने के बाद उत्तर का वह राजा स्वयं
अपने देश के सुदृढ़ किलों की ओर लौट जायेगा। किन्तु
वह दुर्बल हो चुका होगा और उसका पतन हो जायेगा।
फिर उसका पता भी नहीं चलेगा।

20"'उत्तर के उस राजा के बाद एक नया शासक
आयेगा। वह शासक किसी कर वसूलने वाले को भेजेगा।
वह शासक ऐसा इसलिए करेगा कि वह सम्पन्नता के
साथ जीवन बिताने के लिए पर्याप्त धन जुटा सके।
किन्तु थोड़े ही वर्षो में उस शासक का अंत हो जायेगा।
किन्तु वह युद्ध में नहीं मारा जायेगा।

21"'उस शासक के बाद एक बहुत क्रूर एवं घृणा
योग्य व्यक्ति आयेगा। उस व्यक्ति को राज परिवार का
वंशज होने का गौरव प्राप्त नहीं होगा। वह चालाकी से
राजा बनेगा। जब लोग अपने को सुरक्षित समझे हुए
होंगे, वह तभी राज्य पर आक्रमण करेगा और उस पर
कब्जा कर लेगा। 22वह विशाल शक्तिशाली सेनाओं
को हरा देगा। वह समझौते के मुखिया के साथ सन्धि
करने पर भी उसे पराजित करेगा। 23बहुत से राष्ट्र उस
क्रूर एवं घृणा योग्य राजा के साथ सन्धि करेंगे किन्तु
वह उनसे मिथ्यापूर्ण चालाकी बरतेगा। वह अत्यधिक
शक्ति प्राप्त कर लेगा किन्तु बहुत थोड़े से लोग ही
उसके समर्थक होंगे।

24"'जब उस प्रदेश के सर्वाधिक धनी क्षेत्र अपने को
सुरक्षित अनुभव कर रहे होंगे, वह क्रूर एवं घृणापूर्ण
शासक उन पर आक्रमण कर देगा। वह ठीक समय
पर आक्रमण करेगा और वहाँ सफलता प्राप्त करेगा
जहाँ उसके पूर्वजों को भी सफलता नहीं मिली थी। वह
जिन देशों को पराजित करेगा उनकी सम्पत्ति छीन कर
अपने पिछलगुओं को देगा। वह सुदृढ़ नगरों को पराजित
करने की योजनाएँ रचेगा। वह सफलता तो पायेगा
किन्तु बहुत थोड़े से समय के लिए।

25"'उस क्रूर एवं घृणा योग्य राजा के पास एक विशाल
सेना होगी। वह उस सेना का उपयोग अपनी शक्ति और
अपने साहस के प्रदर्शन के लिये करेगा और इससे वह
दक्षिण के राजा पर आक्रमण करेगा। सो दक्षिण का
राजा भी एक बहुत बड़ी और शक्तिशाली सेना जुटायेगा
और युद्ध के लिए कूच करेगा किन्तु वे लोग जो उससे
विरोध रखते हैं, छिपे-छिपे योजनाएँ रचेंगे और दक्षिणी
राजा को पराजित कर दिया जायेगा। 26वे ही लोग जो
दक्षिणी राजा के अच्छे मित्र समझे जाते रहे। उसे पराजित
करने का जतन करेंगे। उसकी सेना पराजित कर दी
जायेगी। युद्ध में उसके बहुत से सैनिक मारे जायेंगे।
27उन दोनों राजाओं का मन इसी बात में लगेगा कि
एक दूसरे को हानि पहुँचायी जाये। वे एक ही मेज़ पर
बैठ कर एक दूसरे से झूठ बोलेंगे किन्तु इससे उन दोनों
में से किसी का भी भला नहीं होगा, क्योंकि परमेश्वर
ने उनका अंत आने का समय निर्धारित कर दिया है।

28"'बहुत सी धन दौलत के साथ, वह उत्तर का राजा
अपने देश लौट जायेगा। फिर उस पवित्र वाचा के प्रति
वह बुरे कर्म करने का निर्णय लेगा। वह अपनी
योजनानुसार काम करेगा और फिर अपने देश लौट
जायेगा।

29"'फिर उत्तर का राजा ठीक समय पर दक्षिण के
राजा पर हमला कर देगा किन्तु इस बार वह पहले की
तरह कामयाब नहीं होगा। 30पश्चिम से जहाज़ आयेंगे
और उत्तर के राजा के विरुद्ध युद्ध करेंगे। वह उन
जहाज़ों को आते देखकर डर जायेगा। फिर वापस लौट
कर पवित्र वाचा पर वह अपना क्रोध उतारेगा। वह
लौट कर, जिन लोगों ने पवित्र वाचा पर चलना छोड़
दिया था, उनकी सहायता करेगा। 31फिर उत्तर का वह

राजा यरूशलेम के मन्दिर को अशुद्ध करने के लिये अपनी सेना भेजेगा। वे लोगों को दैनिक बलि समर्पित करने से रोकेंगे। इसके बाद वे वहाँ कुछ ऐसा भयानक घृणित वस्तु स्थापित करेंगे जो सचमुच विनाशक होगा। वे ऐसा भयानक काम शुरु करेंगे जो विनाश को जन्म देता है।

32"'वह उत्तरी राजा झूठी और चिकनी चुपड़ी बातों से उन यहूदियों को छलेगा जो पवित्र वाचा का पालन करना छोड़ चुके हैं। वे यहूदी और बुरे पाप करने लगेंगे किन्तु वे यहूदी, जो परमेश्वर को जानते हैं, और उसका अनुसरण करते हैं, और अधिक सुदृढ़ हो जायेंगे। वे पलट कर युद्ध करेंगे!

33"'वे यहूदी जो विवेकपूर्ण है जो कुछ घट रहा होगा, दूसरे यहूदियों को उसे समझने में सहायता देंगे। किन्तु जो विवेकपूर्ण होंगे, उन्हें तो मृत्यु दण्ड तक झेलना होगा। कुछ समय तक उनमें से कुछ यहूदियों को तलवार के घाट उतारा जायेगा और कुछ को आग में फेंक दिया जायेगा। अथवा बन्दी गृहों में डाल दिया जायेगा। उनमें से कुछ यहूदियों के घर बार और धन दौलत छीन लिये जायेंगे। 34जब वे यहूदी दण्ड भोग रहे होगें तो उन्हें थोड़ी सी सहायता मिलेगी। किन्तु उन यहूदियों में, जो उन विवेकपूर्ण यहूदियों का साथ देंगे, बहुत से केवल दिखावे के होंगे। 35कुछ विवेकपूर्ण यहूदी मार दिए जाएंगे। ऐसा इसलिए होगा कि वे और अधिक सुदृढ़ बनें, स्वच्छ बनें और अंत समय के आने तक निर्दोष रहें। फिर ठीक समय पर अंत होने का समय आ जायेगा।'"

आत्म प्रशंसक राजा

36"'उत्तर का राजा जो चाहेगा, सो करेगा। वह अपने बारे में डींग हांकेगा। वह आत्म प्रशंसा करेगा और सोचेगा कि वह किसी देवता से भी अच्छा है। वह ऐसी बातें करेगा जो किसी ने कभी सुनी तक न होंगी। वह देवताओं का परमेश्वर के विरोध में ऐसी बातें करेगा। वह उस समय तक कामयाब होता चला जायेगा जब तक वे सभी बुरी बातें घट नहीं जाती। किन्तु परमेश्वर ने योजना रची है, वह तो पूरी होगी ही।

37"'उत्तर का वह राजा उन देवताओं की उपेक्षा करेगा जिन्हें उसके पूर्वज पूजा करते थे। उन देवताओं की मूर्तियों की वह परवाह नहीं करेगा जिनकी पूजा स्त्रियाँ किया करती हैं। वह किसी भी देवता की परवाह नहीं करेगा बल्कि वह स्वयं अपनी प्रशंसा करता रहेगा और अपने आपको किसी भी देवता से बड़ा मानेगा। 38वह अपने पूर्वजों के देवता की अपेक्षा किले के देवता की पूजा करेगा वह सोने, चाँदी, बहुमूल्य हीरे जवाहरात और अन्य उपहारों से एक ऐसे देवता की पूजा करेगा जिसे उसके पूर्वज जानते तक नहीं थे।

39"'इस विदेशी देवता की सहायता से वह उत्तर का राजा सुदृढ़ गढ़ियों पर आक्रमण करेगा। वह उन लोगों को सम्मान देगा जिनको वह बहुत पसन्द करेगा। वह बहुत से लोगों को उन के अधीन कर देगा। वे राजा जिस धरती पर राज करते हैं, उसके लिये वह उनसे भुगतान लिया करेगा।

40"'अंत आने के समय उत्तर का राजा, उस दक्षिण के राजा के साथ युद्ध करेगा। उत्तर का राजा उस पर हमला करेगा। वह रथों, घुड़सवारों और बहुत से विशाल जलयानों को लेकर उस पर चढ़ाई करेगा। उत्तर का राजा बाढ़ के से वेग के साथ उस धरती पर चढ़ आयेगा। 41उत्तर का राजा 'सुन्दर धरती' पर आक्रमण करेगा। उत्तरी राजा के द्वारा बहुत से देश पराजित होंगे किन्तु एदोम, मोआब और अम्मोनियों के मुखिया बच जायेंगे। 42उत्तर का राजा बहुत से देशों में अपनी शक्ति दिखायेगा। मिस्र को भी उसकी शक्ति का पता चल जायेगा।

43वह मिस्र के सोने चाँदी के खजानों और उसकी समूची सम्पत्ति को छीन लेगा। लूबी और कूशी लोग भी उसके अधीन हो जायेंगे। 44किन्तु उत्तर के उस राजा को पूर्व और उत्तर से एक समाचार मिलेगा जिससे वह भयभीत हो उठेगा और उसे क्रोध आयेगा। वह बहुत से देशों को तबाह कर देने के लिये उठेगा। 45वह अपने राजकीय तम्बू समुद्र और सुन्दर पवित्र पर्वत के बीच लगवायेगा। किन्तु आखिरकार वह बुरा राजा मर जायेगा। जब उस का अंत आयेगा तो उसे सहारा देने वाला वहाँ कोई नहीं होगा।'"

12 "दर्शन वाले व्यक्ति ने कहा, 'हे दानिय्येल, उस समय मीकाएल नाम का वह प्रधान स्वर्गदूत उठ खड़ा होगा। मीकाएल तुम्हारे यहूदी लोगों का संरक्षक है। फिर एक विपत्तिपूर्ण समय आयेगा। वह समय इतना भयानक होगा, जितना भयानक इस धरती पर, जब से कोई जाति अस्तित्व में आयी है, कभी नहीं आया होगा। किन्तु हे दानिय्येल, उस समय तेरे लोगों में से हर वह व्यक्ति जिसका नाम, जीवन की पुस्तक में लिखा मिलेगा, बच जायेगा। 2धरती के वे असंख्य लोग जो मर चुके हैं और जिन्हें दफ़नाया जा चुका है, उठ खड़े होंगे और उनमें से कुछ अनन्त जीवन जीने के लिए उठ जायेंगे। किन्तु कुछ इसलिए जागेंगे कि उन्हें कभी नहीं समाप्त होने वाली लज्जा और घृणा प्राप्त होगी। 3आकाश की भव्यता के समान बुद्धिमान पुरुष चमक उठेंगे। ऐसे बुद्धिमान पुरुष जिन्होंने दूसरों को अच्छे जीवन की राह दिखाई थी, अनन्त काल के लिये तारों के समान चमकने लगेंगे।

4"'किन्तु हे दानिय्येल! इस सन्देश को तू छिपा कर के रख दे। तुझे यह पुस्तक बन्द कर देनी चाहिये। तुझे

अंत समय तक इस रहस्य को छिपाकर रखना है।
सच्चा ज्ञान पाने के लिए बहुत से लोग इधर-उधर भाग
दौड़ करेंगे और इस प्रकार सच्चे ज्ञान का विकास
होगा।'
5"फिर मैं (दानिय्येल) ने दृष्टि उठाई और दो अन्य
लोगों को देखा। उनमें से एक व्यक्ति नदी के उस
किनारे खड़ा हुआ था जिस किनारे मैं था और दूसरा
व्यक्ति नदी के दूसरे किनारे खड़ा था। 6वह व्यक्ति
जिसने सन के कपड़े पहन रखे थे, नदी में पानी के
बहाव के विरुद्ध खड़ा था। उन दोनों में से किसी एक ने
उससे पूछा, 'इन आश्चर्यपूर्ण बातों को समाप्त होने में
अभी कितना समय लगेगा?'"
7"वह व्यक्ति जिसने सन के वस्त्र धारण किया हुआ
था और जो नदी के जल के बहाव के विरुद्ध खड़ा
हुआ था, उसने अपना दाहिना और बायां-दोनों हाथ
आकाश की ओर उठाये। मैंने उस व्यक्ति को अमर
परमेश्वर के नाम का प्रयोग करके एक शपथ बोलते
हुए सुना। उसने कहा, यह साढ़े तीन साल तक घटेगा।
पवित्र जन की शक्ति टूट जायेगी और फिर ये सभी बातें
अंतिम रूप से समाप्त हो जाएँगी।'
8"मैंने यह उत्तर सुना तो था किन्तु वास्तव में मैंने
उसे समझा नहीं। सो मैंने पूछा, 'हे महोदय, इन सभी
बातों के सच निकलने के बाद क्या होगा?'
9"उसने उत्तर दिया, 'दानिय्येल, तू अपना जीवन जीए
जा। यह संदेश गुप्त है और जब तक अंत समय नहीं
आयेगा, यह गुप्त ही बना रहेगा। 10बहुत से लोगों को
शुद्ध किया जायेगा। वह लोग स्वयं अपने आप को
स्वच्छ करेंगे किन्तु दुष्ट लोग, दुष्ट ही बने रहेंगे और वे
दुष्ट लोग इन बातों को नहीं समझेंगे किन्तु बुद्धिमान
इन बातों को समझ जायेंगे।
11"'जब दैनिक बलियाँ रोक दी जायेंगी तब से अब
तक, जब वहाँ कुछ ऐसा भयानक घृणित वस्तु स्थापित
होगा जो सचमुच विनाशक होगा, एक हजार दो सौ नब्बे
दिनों का समय बीत चुका होगा। 12वह व्यक्ति जो प्रतीक्षा
करते हुए इन एक हजार तीन सौ पैंतीस दिनों के समय
के अंत तक पहुँचेगा, वह बहुत अधिक भाग्यशाली होगा।
13"'हे दानिय्येल। जहाँ तक तेरी बात है, जा और
अंत समय तक अपना जीवन जी। तुझे तेरा विश्राम
प्राप्त होगा और अंत में तू अपना भाग प्राप्त करने के
लिये मृत्यु से फिर उठ खड़ा होगा।'"

होशे

होशे के द्वारा यहोवा परमेश्वर का सन्देश

1 यह यहोवा का वह सन्देश है, जो बेरी के पुत्र होशे
के द्वारा प्राप्त हु आ। यह सन्देश उस समय आया था
जब यहूदा में उज्जियाह, योताम, आहाज और हिजकिय्याह
का राज्य था। यह उन दिनों की बात है जब इस्राएल के
राजा योआश के पुत्र यारोबाम का समय था।
2होशे के लिये यह यहोवा का पहला सन्देश था।
यहोवा ने कहा, "जा, और एक वेश्या से विवाह कर ले
फिर उस वेश्या से संतान पैदा कर। क्यों? क्योंकि इस
देश के लोग वेश्या का सा आचरण कर रहे हैं। वे
यहोवा के प्रति सच्चे नहीं रहे हैं। उन्होंने यहोवा को
त्याग दियाहै।"

यिज्रेल का जन्म

3सो होशे ने दिबलैम की पुत्री गोमेर से विवाह कर
लिया। गोमेर गर्भवती हुई और उसने होशे के लिये एक
पुत्र को जन्म दिया। 4यहोवा ने होशे से कहा, "इसका
नाम यिज्रेल रखो। क्यों? क्योंकि मैं शीघ्र ही यिज्रेल घाटी
में की गई हत्याओं के लिये येहू के परिवार को दण्ड
दूँगा फिर इसके बाद इस्राएल के वंश के राज्य का अंत
कर दूँगा 5उसी समय यिज्रेल घाटी में, मैं इस्राएल के
धनुष को तोड़ दूँगा।"

लोरुहामा का जन्म

6इसके बाद गोमेर फिर गर्भवती हुई और उसने एक
कन्या को जन्म दिया। यहोवा ने होशे से कहा, "इस
कन्या का नाम लोरुहामा रख। क्यों? क्योंकि मैं अब
इस्राएल के वंश पर और अधिक दया नहीं दिखाऊँगा।
मैं उन्हें क्षमा नहीं करूँगा। 7बल्कि मैं तो यहूदा के वंश
पर दया दिखाऊँगा। मैं यहूदा के वंश की रक्षा करूँगा।
किन्तु उनकी रक्षा के लिये मैं न तो धनुष और तलवार
का प्रयोग करूँगा और नहीं युद्ध के घोड़ों और सैनिकों
का, मैं स्वयं अपनी शक्ति से उन्हें बचाऊँगा।"

लोअम्मी का जन्म

8गोमेर ने अभी लोरुहामा को दूध पिलाना छोड़ा ही
था कि वह फिर गर्भवती हो गयी। सो उसने एक पुत्र
को जन्म दिया। 9इसके बाद यहोवा ने कहा, "इसका
नाम लोअम्मी रख। क्यों? क्योंकि तुम मेरी प्रजा नहीं हो
और मैं तुम्हारा परमेश्वर नहीं हूँ।"

परमेश्वर यहोवा का वचन: इस्राएली असंख्य होंगे

10"भविष्य में, इस्राएल की प्रजा इतनी अधिक हो
जायेगी जितने सागर की रेत के कण होते हैं। वह रेत
जो न तो नापी जा सकती है, और न ही जिसकी गिनती
की जा सकती है। फिर उसी स्थान पर जहाँ उनसे यह
कहा गया था, 'तुम मेरी प्रजा नहीं हो,' उनसे यह कहा
जायेगा 'तुम जीवित परमेश्वर की संतानें हो।'
11"इसके बाद यहूदा और इस्राएल के लोग एक साथ
इकट्ठे किये जायेंगे। वे अपने लिये एक शासक का
चुनाव करेंगे। उस धरती के हिसाब से उनकी प्रजा
अधिक हो जायेगी! यिज्रेल का दिन वास्तव में एक
महान दिन होगा।"

2 "फिर तुम अपने भाई-बंधूओं से कहा करोगे, 'तुम
मेरी प्रजा हो' और अपनी बहनों को बताया करोगे,
'उसने मुझ पर दया दिखायी है।'"

इस्राएल की जाति से यहोवा का कथन

2"अपनी माँ के साथ विवाद करो! क्योंकि वह मेरी
पत्नी नहीं है! और नही मैं उसका पति हूँ! उससे कहो
कि वह वेश्या न बनी रहे। उससे कहो कि वह अपने
प्रेमियों को अपनी छातियों के बीच से दूर हटा दे। 3यदि
वह अपने इस व्यभिचार को छोड़ने से मना करे तो मैं
उसे एक दम नंगा कर दूँगा। मैं उसे वैसा करके छोड़ूँगा
जैसा वह उस दिन थी, जब वह पैदा हुई थी। मैं उसके
लोगों को उससे छीन लूँगा और वह ऐसी हो जायेगी जैसे
कोई वीरान रेगिस्तान होता है। मैं उसे प्यासा मार दूँगा।
4मैं उसकी संतानों पर कोई दया नहीं दिखाऊँगा क्योंकि
वे व्यभिचार की संताने होंगी। 5उनकी माँ ने वेश्या का
सा आचरण किया है। उनकी माँ को, जो काम उसने
किये हैं, उनके लिये लज्जित होना चाहिये। उसने कहा
था, 'मैं अपने प्रेमियों के पास चली जाऊँगी। मेरे प्रेमी
मुझे खाने और पीने को देते हैं। वे मुझे ऊन और सन
देते हैं। वे मुझे दाखमधु और जैतून का तेल देते हैं।'
6"इसलिये, मैं (यहोवा) तेरी (इस्राएल) राह काँटों से
भर दूँगा। मैं एक दीवार खड़ी कर दूँगा। जिससे उसे

अपना रास्ता ही नहीं मिल पायेगा। 7वह अपने प्रेमियों
के पीछे भागेगी किन्तु वह उन्हें प्राप्त नहीं कर सकेगी।
वह अपने प्रेमियों को ढूँढती फिरेगी किन्तु उन्हें ढूँढ
नहीं पायेगी। फिर वह कहेगी, 'मैं अपने पहले पति
(परमेश्वर) के पास लौट जाऊँगी। जब मैं उसके साथ
थी, मेरा जीवन बहुत अच्छा था। आज की अपेक्षा, उन
दिनों मेरा जीवन अधिक सुखी था।'

8"वह (इस्राएल) यह नहीं जानती थी कि मैं
(यहोवा) ही उसे अन्न, दाखमधु और तेल दिया करता
था। मैं उसे अधिक से अधिक चाँदी और सोना देता
रहता था। किन्तु इस्राएल के लोगों ने उस चाँदी
और सोने का प्रयोग बाल की मूर्तियाँ बनाने में
किया। 9इसलिये मैं (यहोवा) वापस आऊँगा और अपने
अनाज को उस समय वापस ले लूँगा जब वह पक
कर कटनी के लिये तैयार होगा। मैं उस समय अपने
दाखमधु को वापस ले लूँगा जब अँगूर पक कर तैयार
होंगे। अपनी ऊन और सन को भी मैं वापस ले लूँगा। ये
वस्तुएँ मैंने उसे इसलिये दी थीं कि वह अपने नंगे
तन को ढक ले। 10अब मैं उसे वस्त्र विहीन करके
नंगा कर दूँगा ताकि उसके सभी प्रेमी उसे देख
सकें। कोई भी व्यक्ति उसे मेरी शक्ति से बचा नहीं
पायेगा। 11मैं (परमेश्वर) उससे उसकी सारी हँसी खुशी
छीन लूँगा। मैं उसके वार्षिक उत्सवों, नये चाँद की
दावतों और विश्राम के दिनों के उत्सवों का अंत कर
दूँगा। मैं उसकी सभी विशेष दावतों को रोक दूँगा।
12उसकी अँगूर की बेलों और अंजीर के वृक्षों को मैं
नष्ट कर दूँगा। उसने कहा था, 'ये वस्तुएँ मेरे प्रेमियों
ने मुझे दी थीं।' किन्तु अब मैं उसके बगीचों को
बदल डालूँगा। वे किसी उजड़े जंगल जैसे हो जायेंगे।
उन वृक्षों से जंगली जानवर आकर अपनी भूख
मिटायाकरेंगे।

13"वह बाल की सेवा किया करती थी, इसलिये मैं
उसे दण्ड दूँगा। वह बाल देवताओं के आगे धूप जलाया
करती थी। वह आभूषणों से सजती और नथ पहना
करती थी। फिर वह अपने प्रेमियों के पास जाया करती
और मुझे भूले रहती।" यहोवा ने यह कहा था।

14"इसलिये, मैं (यहोवा) उसकी मनुहार करूँगा। मैं
उसे रेगिस्तान में ले जाऊँगा। मैं उसके साथ दयापूर्वक
बातें करूँगा। 15वहाँ मैं उसे अँगूर के बगीचे दूँगा। आशा
के द्वार के रूप में मैं उसे आकोर की घाटी दे दूँगा।
फिर वह मुझे उसी प्रकार उत्तर देगी जैसे उस समय
दिया करती थी, जब वह मिस्र से बाहर आयी थी।"
16यहोवा ने यह बताया है।

"उस अवसर पर, तू मुझे 'मेरा पति' कह कर पुकारेगी।
तब तू मुझे 'मेरे बाल' नहीं कहेगी। 17मैं बाल देवताओं
के नामों को उसके मुख पर से दूर हटा दूँगा। फिर लोग
बाल देवताओं के नाम नहीं लिया करेंगे।

18"फिर, मैं इस्राएल के लोगों के लिये जंगल के
पशुओं, आकाश के पक्षियों, और धरती पर रेंगने वाले
प्राणियों के साथ एक वाचा करूँगा। मैं धनुष, तलवार
और युद्ध के अस्त्रों को तोड़ फेंकूँगा। कोई अस्त्र-शस्त्र
उस धरती पर नहीं बच पायेगा। मैं उस धरती को
सुरक्षित बना दूँगा जिससे इस्राएल के लोग शांति के साथ
विश्राम कर सकेंगे। 19मैं (यहोवा) तुझे सदा-सदा के
लिये अपनी दुल्हन बना लूँगा। मैं तुझे नेकी, खरेपन,
प्रेम और करुणा के साथ अपनी दुल्हन बना लूँगा। 20मैं
तुझे अपनी सच्ची दुल्हन बनाऊँगा। तब तू सचमुच
यहोवा को जान जायेगी 21उस समय, मैं तुझे उत्तर
दूँगा।" यहोवा ऐसा कहता है:

"मैं आकाशों से कहूँगा और वे धरती को वर्षा देंगे।
22धरती अन्न, दाखमधु और तेल उपजायेगी और वे
यिज्रेल की मांग पूरी करेंगे।

23मैं उसकी धरती पर बहुतेरे बीजों को बोऊँगा। मैं
लोरुहामा पर दया दिखाऊँगा: मैं लोअम्मी से कहूँगा 'तू
मेरी प्रजा है' और वे मुझसे कहेंगे, 'तू हमारा परमेश्वर
है।'"

होशे का गोमेर को दासता से छुड़ाना

3 इसके बाद यहोवा ने मुझसे फिर कहा, "यद्यपि
गोमेर के बहुत से प्रेमी हैं। किन्तु तुझे उससे प्रीत
बनाये रखनी चाहिये। क्यों? क्योंकि यह तेरा यहोवा
कासा आचरण होगा। यहोवा इस्राएल की प्रजा पर अपना
प्रेम बनाये रखता है किन्तु इस्राएल के लोग अन्य देवताओं
की पूजा करते रहते हैं और वे दाख के पुओं को
खानापसंद करते हैं।"

2सो मैंने गामेर को चाँदी के पन्द्रह सिक्कों और नौ
बुशल जौ के बदले खरीद लिया। 3फिर उससे कहा,
"तुझे घर में मेरे साथ बहुत दिनों तक रहना है। तुझे
किसी वेश्या के जैसा नहीं होना चाहिये। किसी पराये
पुरुष के साथ तुझे नहीं रहना है। मैं तभी वास्तव में
तेरा पतिबनूँगा।"

4इसी प्रकार, इस्राएल के लोग बहुत दिनों तक बिना
किसी राजा या मुखिया के रहेंगे। वे बिना किसी
बलिदान अथवा बिना किसी स्मृति पत्थर के रहेंगे।
उनके पास कोई याजकों की पोशाक नहीं होगी या
उनके कोई गृह देवता नहीं होंगे। 5इसके बाद इस्राएल
के लोग वापस लौट आयेंगे और तब वे अपने यहोवा
परमेश्वर और अपने राजा दाऊद की खोज करेंगे।
अंतिम दिनों में वे यहोवा को और उसकी नेकी को
आदर देने आयेंगे।

इस्राएल पर यहोवा का कोप

4 हे इस्राएल के लोगों, यहोवा के सन्देश को सुनो!
यहोवा इस देश में रहने वाले लोगों के विरुद्ध

अपने तर्क बतायेगा। वास्तव में इस देश के लोग परमेश्वर
को नहीं जानते। ये लोग परमेश्वर के प्रति सच्चे और
निष्ठावान नहीं हैं। 2ये लोग कसमें खातें है, झूठ बोलते
हैं, हत्याएँ करते हैं और चोरियाँ करते हैं। वे व्यभिचार
करते हैं और फिर उससे उनके बच्चे होते हैं। ये लोग
एक के बाद एक हत्याएँ करते चले जाते हैं। 3इसलिये
यह देश ऐसा हो गया है जैसा किसी की मृत्यु के ऊपर
रोता हुआ कोई व्यक्ति हो। यहाँ के सभी लोग दुर्बल हो
गये हैं। यहाँ तक कि जंगल के पशु, आकाश के पक्षी
और सागर की मछलियाँ मर रही हैं। 4किसी एक
व्यक्ति को किसी दूसरे पर न तो कोई अभियोग लगाना
चाहिये और न ही कोई दोष मढ़ना चाहिये। हे याजक,
मेरा तर्क तुम्हारे विरुद्ध है! 5हे याजकों, तुम्हारा पतन
दिन के समय होगा और रातके समय तुम्हारे साथ नबी
का भी पतन हो जायेगा और मैं तुम्हारी माता को नष्ट
कर दूँगा। 6"मेरी प्रजा का विनाश हुआ क्योंकि उनके
पास कोई ज्ञान नहीं था किन्तु तुमने तो सीखने से ही
मना कर दिया। सो मैं तुम्हें अपना याजक बनने का
निषेध कर दूँगा। तुमने अपने परमेश्वर के विधान को
भुला दिया हैं। इसलिए मैं तुम्हारी संतानों को भूल जाऊँगा।
7वे अहंकारी हो गये! मेरे विरुद्ध वे पाप करते चले गये।
इसलिए मैं उनकी महिमा को लज्जा में बदल दूँगा।

8"याजकों ने लोगों के पापों में हिस्सा बंटाया। वे उन
पापों को अधिक से अधिक चाहते चले गये। 9इसलिए
याजक लोगों से कोई भिन्न नहीं रह गये थे। मैं उन्हें
उनके कर्मो का दण्ड दूँगा। उन्होंने जो बुरे काम किये
हैं, मैं उनसे उनका बदला चुकाऊँगा। 10वे खाना तो
खायेंगे किन्तु उन्हें तृप्ति नहीं होगी! वे वेश्यागमन तो
करेंगे किन्तु उनके संतानें नहीं होंगी। ऐसा क्यों? क्योंकि
उन्होंने यहोवा को त्याग दिया और वे वेश्याओं के जैसे
हो गये।

11"व्यभिचार, तीव्र मदिरा और नयी दाखमधु किसी
व्यक्ति की सीधी तरह से सोचने की शक्ति को नष्ट
कर देते हैं। 12देखों, मेरे लोग लकड़ी के टुकड़ों से
सम्मति माँगते हैं। वे सोचते हैं कि ये छड़ियाँ उन्हें उत्तर
देंगी। ऐसा क्यों हो गया?ऐसा इसलिए हुआ कि वे वेश्याओं
के समान उन झूठे देवताओं के पीछे पड़े रहे। उन्होंने
अपने परमेश्वर को त्याग दिया और वे वेश्याओं जैसे
बन बैठे। 13वे पहाड़ों की चोटियों पर बलियाँ चढ़ाया
करते हैं। पहाड़ियों के ऊपर बाँज, चिनार तथा बाँज के
पेड़ों के तले धूप जलाते हैं। उन पेड़ों तले की छाया
अच्छी दिखतीहै। इसलिये तुम्हारी पुत्रियाँ वेश्याओं की
तरह उन पेड़ों के नीचे सोती हैं और तुम्हारी बहुएँ वहाँ
पाप पूर्ण यौनाचार करती हैं।

14"मैं तुम्हारी पुत्रियों को वेश्याएँ बनने के लिये अथवा
तुम्हारी बहुओं को पापपूर्ण यौनाचार के लिये दोष नहीं
दे सकता। लोग वेश्याओं के पास जा कर उनके साथ
सोते है और फिर वे मन्दिर की वेश्याओं के पास जा
कर बलियाँ अर्पित कर देते हैं। इस प्रकार वे मूर्ख लोग
स्वयं अपने आप को ही तबाह कर रहे हैं।

इस्राएल के लज्जापूर्ण पाप

15"हे इस्राएल, तू एक वेश्या के समान आचरण करती
है। किन्तु यहूदा को अपराधी मत बनने दे। तू गिलगाल
अथवा बेतावेन के पास मत जा। यहोवा के नाम पर
कसमें मत खा। ऐसा मत कह, 'यहोवा के जीवन की
सौगन्ध!' 16इस्राएल को यहोवा ने बहुत सी वस्तुएँ दी थीं।
यहोवा एक ऐसे गड़ेरिये के समान है जो अपनी भेड़ों को
घास से भरपूर एक बड़े से मैदान की ओर ले जाता है।
किन्तु इस्राएल जिद्दी है। इस्राएल उस जवान बछड़े के
समान है जो बार-बार, इधर-उधर भागता है। 17एप्रैम
भी उसकी मूर्तियों में उसका साथी बन गया। सो उसे
अकेला छोड़ दो।

18"एप्रैम ने उनकी मदमत्तता में हिस्सा बटाया। उन्हें
वेश्याएँ बने रहने दो। रहने दो उन्हें उनके प्रेमियों के
साथ। 19वे उन देवताओं की शरण में गये और उनकी
विचार शक्ति जाती रही। उनकी बलियाँ उनके लिये
शर्मिंदगी ले कर आई।"

मुखियाओं ने इस्राएल और यहूदा से पाप करवाये

5 "हे याजकों, इस्राएल के वंशजो, तथा राजा के
परिवार के लोगों, मेरी बात सुनो।

"तुम मिसपा में जाल के समान हो। तुम ताबोर की
धरती पर फैलाये गये फँदे जैसे हो। 2तुमने अनेकानेक
कुकर्म किये हैं। इसलिए मैं तुम सब को दण्ड दूँगा! 3मैं
एप्रैम को जानता हूँ। मैं उन बातों को भी जानता हूँ जो
इस्राएल ने की हैं। हे एप्रैम, तू अब तक एक वेश्या के
जैसा आचरण करता है। इस्राएल पापों से अपवित्र हो
गया है। 4इस्राएल के लोगों ने बहुत से बुरे कर्म किये हैं
और वे बुरे कर्म ही उन्हें परमेश्वर के पास फिर लौटने
से रोक रहे हैं। वे सदा ही दूसरे देवताओं के पीछे पीछे
दौड़ते रहने के रास्ते सोचते रहते हैं। वे यहोवा को नहीं
जानते।

5इस्राएल का अहंकार ही उनके विरोध में एक साक्षी
बन गया है। इसलिए इस्राएल और एप्रैम का उनके पापों
में पतन होगा किन्तु उनके साथ ही यहूदा भी ठोकर
खायेगा।

6"लोगों के मुखिया यहोवा की खोज में निकल पड़ेंगे।
वे अपनी 'भेड़ों' और 'गायों' को भी अपने साथ ले लेंगे
किन्तु वे यहोवा को नहीं पा सकेंगे। ऐसा क्यों? क्योंकि
यहोवा ने उन्हें त्याग दिया था। 7वे यहोवा के प्रति सच्चे
नहीं रहे थे। उनकी संतानें किसी पराये से थीं। सो अब
वह उनका और उनकी धरती का फिर से विनाश
करेगा।"

इस्राएल के विनाश की भविष्यवाणी

8तुम गिबाह में नरसिंगे को फूँको, रामा में तुम तुरही
बजाओ, बेतावेन में तुम चेतावनी दो। बिन्यामीन, शत्रु
तुम्हारे पीछे पड़ा है।
9एप्रैम दण्ड के समय में उजाड़ हो जायेगा। हे इस्राएल
के घरानो मैं (परमेश्वर) तुम्हें सचेत करता हूँ कि
निश्चय ही वे बातें घटेंगी।
10यहूदा के मुखिया चोर से बन गये हैं। वे किसी और
व्यक्ति की धरती चुराने का जतन करते रहते हैं।
इसलिये मैं (परमेश्वर) उन पर क्रोध पानी सा उंडेलूँगा।
11एप्रैम दण्डित किया जायेगा, उसे कुचला और मसला
जायेगा जैसे अंगूर कुचले जाते हैं। क्योंकि उसने निकम्मे
का अनुसरण करने का निश्चय किया था।
12मैं एप्रैम को ऐसे नष्ट कर दूँगा जैसे कोई कीड़ा
किसी कपड़े के टुकड़े को बिगाड़े। यहूदा को मैं वैसे
नष्ट कर दूँगा जैसे सड़ाहट किसी लकड़ी के टुकड़े को
बिगाड़े। 13एप्रैम अपना रोग देख कर और यहूदा अपना
घाव देख कर अश्शूर की शरण पहुँचेंगे। उन्होने अपने
समस्याए उस महान राजा को बतायी थी। किन्तु वह
राजा तुझे चंगा नहीं कर सकता, वह तेरे घाव को नहीं
भर सकता है।
14क्योंकि मैं एप्रैम के हेतु सिंह सा बनूँगा और मैं
यहूदा की जाति के लिये एक जवान सिंह बनूँगा। मैं–हाँ,
मैं (यहोवा) उनके चिथड़े उड़ा दूँगा। मैं उनको दूर ले
जाऊँगा, मुझसे कोई भी उनको बचा नहीं पायेगा।
15फिर मैं अपनी जगह लौट जाऊँगा जब तक कि वे
लोग स्वंय को अपराधी नहीं मानेंगे, जब तक वे मुझको
खोजते न आयेंगे। हाँ! अपनी विपत्तियों में वे मुझे ढूँढने
का कठिन जतन करेंगे।

यहोवा की ओर लौट आने का प्रतिफल

6 आओ, हम यहोवा के पास लौट आयें। उसने आघात
दिये थे वही हमें चंगा करेगा। उसने हमें आघात
दिये थे वही उन पर मरहम भी लगायेगा।
2दो दिन के बाद वही हमें फिर जीवन की ओर
लौटायेगा। तीसरे दिन वह ही हमें उठा कर खड़ा करेगा,
हम उसके सामने फिर जी पायेंगे।
3आओ, यहोवा के विषय में जानकारी करें। आओ,
यहोवा को जानने का कठिन जतन करे। हमको इसका
पता है कि वह आ रहा है वैसे ही जैसे हम को ज्ञान है
कि प्रभात आ रहा है। यहोवा हमारे पास वैसे ही आयेगा
जैसे कि बसंत की वह वर्षा आती है जो धरती को
सींचती है।

लोग सच्चे नहीं है

4हे एप्रैम, तुम ही बताओ कि मैं (यहोवा) तुम्हारे साथ
क्या करुँ? हे यहूदा, तुम्हारे साथ मुझे क्या करना
चाहिये? तुम्हारी आस्था भोर की धुंध सी है। तुम्हारी
आस्था उस ओस की बूंद सी है जो सुबह होते ही कहीं
चली जाती है।
5मैंने नबियों का प्रयोग किया और लोगों के लिये
नियम बना दिये। मेरे आदेश पर लोगों का वध किया
गया किन्तु इन निर्णयों से भली बातें ऊपजेंगी।
6क्योंकि मुझे सच्चा प्रेम भाता है न कि मुझे बलियाँ
भाती हैं, मुझे भाता है कि परमेश्वर का ज्ञान रखें, न
कि वे यहाँ होमबलियाँ लाया करें।
7किन्तु लोगों ने वाचा तोड़ दी थी जैसे उसे आदम ने
तोड़ा था। अपने ही देश में उन्होंने मेरे संग विश्वासघात
किया।
8गिलाद उन लोगों की नगरी है, जो पाप किया करते
हैं। वहाँ के लोग चाल बाज हैं और वे औरों की हत्या
करते हैं।
9जैसे डाकू किसी की घात में छुपे रहते हैं कि उस
पर हमला करें, वैसे ही शकेम की राह पर याजक घात
में बैठे रहते हैं। जो लोग वहाँ से गुजरते हैं वे उन्हे मार
डालते हैं। उन्होने बुरे काम किये हैं।
10इस्राएल की प्रजा में मैंने भयानक बात देखी है।
एप्रैम परमेश्वर के हेतू सच्चा नहीं रहा था । इस्राएल
पाप से दोषयुक्त हो गया है।
11यहूदा, तेरे लिये भी एक कटनी का समय है। यह
उस समय होगा, जब मैं अपने लोगों को बंधुआयी से
लौटा कर लाऊँगा।
7 मैं इस्राएल को चंगा करूँगा! लोग एप्रैम के पाप
जान जायेंगे, लोगों के सामने शोमरोन के झूठ
उजागर होंगे। लोग उन चोरों के बारें में जान जायेंगे जो
नगर में आते जाते रहते हैं।
2लोगों को विश्वास नहीं है कि मैं उनके अपराधो
की याद करूँगा। वे सब और से अपने किये बुरे कामों
से घिरे हैं। मुझको उनके वे बुरे कर्म साफ–साफ दिख
रहे हैं।
3वे अपने कुकर्मों से निज राजा को प्रसन्न रखते हैं।
वे झूठे देवों की पूजा कर के अपने मुखियाओं को खुश
करते हैं।
4तंदूर पर पकाने वाला रोटी के लिये आटा गूँथता है।
वह तंदूर में रोटी रखा करता है। किन्तु वह आग को
तब तक नहीं दहकाता जब तक की रोटी फूल नहीं
जाती है। किन्तु इस्राएल के लोग उस नान बाई से नहीं
हैं। इस्राएल के लोग हर समय अपनी आग दहकाये
रखते हैं।
5हमारे राजा के दिन वे अपनी आग दहकाते हैं,
अपनी दाखमधु की दावतें वे दिया करते हैं। मुखिया
दाखमधु की गर्मी से दुखिया गये हैं। सो राजाओं न उन
लोगों के साथ हाथ मिलाया है जो परमेश्वर की हँसी
करते हैं।

6लोग षडयंत्र रचा करते हैं। उनके उत्तेजित मन भाड़ से धधकते हैं। उनकी उत्तेजनायें सारी रात धधका करती हैं, और सुबह होते होते वह जलती हुई आग सी तेज हो जाती हैं।

7वे सारे लोग भभकते हुये भाड़ से हैं, उन्होंने अपने राजाओं को नष्ट किया था। उनके सब शासको का पतन हुआ था। उनमें से कोई भी मेरी शरण में नही आया था।"

इस्राएल अपने नाश से बेसुध

8एप्रैम दूसरी जातियों के संग मिला जुला करता है। एप्रैम उस रोटी सा है जिसे दोनो और से वहीं सेंका गया है।

9एप्रैम का बल गैरो ने नष्ट किया है किन्तु एप्रैम को इसका पता नहीं है। सफेद बाल भी एप्रैम पर छिटका दिये गये हैं किन्तु एप्रैम को इसका पता नहीं है।

10एप्रैम का अहंकार उसके विरोध में बोलता है। लोगों ने बहुतेरी यातनायें झेली हैं किन्तु वे अब भी अपने परमेश्वर यहोवा के पास नहीं लौटे हैं। लोग उसकी शरण में नहीं गये थे।

11एप्रैम उस भोले कपोत सा बन गया है जिसके पास कुछ भी समझ नहीं होती है। लोगों ने मिस्र से सहायता मांगी और लोग अश्शूर की शरण में गये।

12वे उन देशों की शरण में जाते हैं किन्तु मैं जाल में उनको फसाऊँगा, मैं अपना जाल उनके ऊपर फेकूँगा। मैं उनको ऐसे नीचे खींच लूँगा जैसे गगन के पक्षी खेंच लिये जाते हैं। मैं उनको उनकी वाचाओं का दण्ड दूँगा।

13यह उनके लिये बुरा होगा उन्होने मुझको मेरी बात मानने से इन्कार किया। इसलिये उनको मिटा दिया जायेगा। मैंने उन लोगों को बचाया था किन्तु वे मेरे विरोध में झूठ बोलते हैं।

14वे कभी मन से मुझे नहीं पुकारते हैं। हाँ, बिस्तर में पड़े हुए वे पुकारा करते हैं। जब वे नया अन्न और नयी दाखमधु मांगते हैं तब पूजा के अंग के रूप में वे अपने अंगों को स्वंय काटा करते हैं। किन्तु वे अपने हृदय में मुझ से दूर हुये हैं।

15मैंने उन्हें सधाया था और उनकी भुजा बलशाली बनायी थी, किन्तु उन्होंने मेरे विरोध में षड़यंत्र रचे।

16वे झूठे देवों की ओर मुड़ गये। वे उस धनुष के समान बने जो झूठे लक्ष्य भेद करता है। उनके मुखियालोग अपनी ही शक्ति की शेखी बघारते थे, किन्तु उन्हें तलवार के घाट उतारा जायेगा। फिर लोग मिस्र में उन पर हँसेंगे।

मूर्ति पूजा से इस्राएल का विनाश

8 तुम अपने होठों से नरसिंगा लगाओ और चेतावनी फूँको। यहोवा के भवन के ऊपर तुम उकाब से बन जाओ। इस्राएल के लोगों ने मेरी वाचा को तोड़ दिया; उन्होने मेरे विधान का पालन न किया।

2वे मुझको आर्त स्वर से पुकारते हैं, "हे मेरे परमेश्वर, हम इस्राएल के वासी तुझ को जानते हैं!"

3किन्तु इस्राएल हाय! उसने भली बातों को नकार दिया। इसी से शत्रु उसके पीछे पड़ गया हैं।

4इस्राएल वासियों ने अपना राजा चुना किन्तु वे मेरे पास सम्मति को नहीं आये। इस्राएल वासियों ने अपने मुखिया चुने थे किन्तु उन्होंने उन्हें नहीं चुना जिनको मैं जानता था। इस्राएल वासियों ने अपने लिये मूर्तियां घड़ने में अपने सोने चांदी का प्रयोग किया, इसलिये उनका नाश होगा।

5-6हे शोमरोन, यहोवा ने तेरे बछड़े का निषेध किया। इस्राएल निवासियों से परमेश्वर कहता है–"मैं बहुत ही कुपित हूँ, इस्राएल के लोगों को उनके पापों के लिये दण्ड दिया जायेगा। कुछ कामगारों ने वे मूर्ति बनाये थे वे परमेश्वर तो नहीं है। शोमरोन के बछड़े को टुकड़े–टुकड़े तोड़ दिया जायेगा।

7"इस्राएल के लोगों ने एक ऐसा काम किया जो मूर्खता से भरा था। वह ऐसा काम था जैसे कोई हवा को बोने लगे। किन्तु उनके हाथ बस विपत्तियाँ लगेंगी – वे केवल एक बवण्ड़र काट पायेंगे। खेतों को बीच में अनाज तो उगेगा नहीं, इससे वे भोजन नहीं पायेंगे, और यदि थोड़ा बहुत उग भी जाये तो उसको पराये खा जायेंगे।

8"इस्राएल निगला गया (नष्ट किया गया) है, इस्राएल एक ऐसा बेकार सा पात्र हो गया है जिसको कोई भी नहीं चाहता है। इस्राएल को दूर फेंक दिया गया–दूसरे लोगों के बीच में उन्हें छिटक दिया गया।

9"एप्रैम अपने 'प्रेमियों' के पास गया था। जैसे कोई जंगली गधा भटके। वैसे ही वह अश्शूर में भटका।

10"इस्राएल अन्यजातियों के बीच निज 'प्रेमियों' के पास गया किन्तु अब आपस में इस्राएल निवासियों को मैं इकट्ठा करूँगा। उस शक्तिशाली राजा से वे कुछ सताये जायेंगे।"

इस्राएल का परमेश्वर को बिसराना और मूर्तियों को पूजना

11एप्रैम ने अधिकाधिक वेदियों बनायी थी किन्तु वह तो एक पाप था। वे वेदियों ही एप्रैम के हेतु पाप की वेदियों बन गई।

12यद्यपि मैंने एप्रैम के हेतू दस हजार नियम लिख दिये थे, किन्तु उसने सोचा था कि वे नियम जैसे किसी अजनबी के लिये हों।

13इस्राएल के लोगों को बलियां भाती थी, वे माँस का चढ़ावा चढ़ाते थे और उसको खाया करते थे। यहोवा उनके बलिदानों को नहीं स्वीकारता है। वह उनके

पापों को याद रखता है, वह उनको दण्डित करेगा,
उनको मिस्र बंदी के रूप में ले जाया जायेगा।
14इस्राएल ने राजमहल बनाये थे किन्तु वह अपने
निर्माता को भूल गया! अब देखो यहूदा ये गढ़ियाँ बनाता
है। किन्तु मैं यहूदा के नगरी पर आग को भेजूँगा और
वह आग यहूदा की गढ़ियाँ नष्ट करेगा!

देश निकाले का दुःख

9 हे इस्राएल, तू उस पुकार का आनन्द मत मना,
जैसे देश–देश के लोग मनाते हैं! तू प्रसन्न मत हो!
तूने तो एक वेश्या के जैसा आचरण किया है और
परमेश्वर को बिसरा दिया है। तूने हर खलिहान की
धरती पर व्यभिचार किया है। 2किन्तु उन खलिहानों से
मिला अन्न इस्राएल को पर्याप्त भोजन नहीं दे पायेगा।
इस्राएल के लिये पर्याप्त दाखमधु भी नहीं रहेगी।
3इस्राएल के लोग यहोवा की धरती पर नहीं रह
पायेंगे। एप्रैम मिस्र को लौट जायेगा। अश्शूर में उन्हें वैसा
खाना खाना पड़ेगा जैसा उन्हें नहीं खाना चाहिये। 4इस्राएल
के निवासी यहोवा को दाखमधु का चढ़ावा नहीं चढ़ायेंगे।
वे उसे बलियाँ अर्पित नहीं कर पायेंगे। ये बलियाँ उनके
लिए विलाप करते हुए की रोटी जैसी होंगी। जो इसे
खाएंगे वैसे भी अपवित्र हो जाएंगे। यहोवा के मन्दिर में
उनकी रोटी नहीं जा पायेगी। उनके पास बस उतनी सी
ही रोटी होगी, जिससे वे मात्र जीवित रह पायेंगे। 5वे
(इस्राएली) यहोवा के अवकाश के दिनों अथवा उत्सवों
को मना नहीं पायेंगे।
6इस्राएल के लोग पूरी तरह से नष्ट होने के डर से
अश्शूर को गये थे किन्तु मिस्र उन्हें इकट्ठा करके ले
लेगा। मोप के लोग उन्हें गाड़ देंगे। चाँदी से भरे उनके
खज़ानों पर खरपतवार उग आयेगा। उनके डेरों में,
कँटीली झाड़ियाँ उग आयेंगी।

इस्राएल ने सच्चे नबियों को नकारा

7नबी कहता है, "हे इस्राएल, इन बातों को जान ले
दण्ड देने का समय आ गया है। जो बुरे काम तूने किये
हैं, तेरे लिये उनके भुगतान का समय आ गया है।"
किन्तु इस्राएल के लोग कहते हैं, "नबी मूर्ख है, परमेश्वर
की आत्मा से युक्त यह पुरुष उन्मादी है।" नबी कहता
है, "तुम्हारे बुरे कामों के लिये तुम्हें दण्ड दिया जायेगा।
तुम्हारी घृणा के लिये तुम्हें दण्ड दिया जायेगा।"
8परमेश्वर और नबी उन पहरेदारों के समान हैं जो
ऊपर से एप्रैम पर ध्यान रखे हुए हैं। किन्तु मार्ग तो
अनेक फँदों से भरा हुआ है। किन्तु लोग तो नबी से
उसके परमेश्वर के घर तक में घृणा करते हैं।
9गिबा के दिनों की तरह इस्राएल के लोग तो बर्बादी
के बीच गहरे उतर चुके हैं। यहोवा इस्राएलियों के पापों
का ध्यान कर के, उन्हें उनके पापों का दण्ड देगा।

मूर्ति पूजा के कारण इस्राएल का विनाश

10जैसे रेगिस्तान में किसी को अँगूर मिल जायें, मेरे
लिये इस्राएल का मिलना वैसा ही था। तुम्हारे पूर्वज मुझे
ऐसे ही मिले जैसे ऋतु के प्रारम्भ में अंजीर के पेड़ पर
किसी को अंजीर के पहले फल मिलते हैं। किन्तु वे तो
बाल–पोर के पास चले गये। वे बदल गये और ऐसे हो
गये जैसे कोई सड़ी–गली वस्तु होती है। वे जिन भयानक
वस्तुओं को (झूठे देवताओं को) प्रेम करते थे, उन्हीं के
जैसे हो गये।

इस्राएलियों का वंश नहीं बढ़ेगा

11इस्राएल का वैभव कहीं वैसे ही उड़ जायेगा, जैसे
कोई पक्षी उड़ जाता है। वहाँ न कोई गर्भ धारण करेगा,
न कोई जन्म लेगा और न ही बच्चे होंगे। 12किन्तु यदि
इस्राएली अपने बच्चे पाल भी लेंगे तो भी सब बेकार
जायेगा। मैं उनसे उनके बच्चे छीन लूँगा। मैं उन्हें त्याग
दूँगा और उन्हें विपदाओं के अलावा कुछ भी नहीं मिल
पायेगा।
13मैं देख रहा हूँ कि एप्रैम अपनी संतानों को एक
फँदें की ओर ले जा रहा है। एप्रैम अपने बच्चों को इस
हत्यारे के पास बाहर ला रहा है। 14हे यहोवा, तुझे
उनको जो देना है, उसे तू उन्हें दे दे। उन्हें एक ऐसा गर्भ
दे, जो गिर जाता है। उन्हें ऐसे स्तन दे जो दूध नहीं पिला
पाते।
15उनकी समूची बुराई गिल्गाल में है। वहीं मैंने उनसे
घृणा करना शुरु किया था। मैं उन्हें मेरे घर से निकल
जाने को विवश करूँगा, उनके उन कुकर्मो के लिये
जिनको वे करते हैं। मैं उनसे अब प्यार नहीं करता
रहूँगा। उनके सभी मुखिया मुझसे बागी हो गये हैं, अब
वे मेरे विरोध में हो गये हैं।
16एप्रैम को दण्ड दिया जायेगा, उनकी जड़ सूख रही
है। उनके और अधिक संताने अब नहीं होंगी। चाहे
उनके संताने होती रहें किन्तु उनके दुलारे शिशुओं को
जो उनके शरीर से पैदा होते हैं मैं मार डालूंगा।
17वे लोग मेरे परमेश्वर की तो नहीं सुनेंगे; सो वह
भी उनकी बात सुनने को नकार देगा और फिर वे
अन्य देशों के बीच बिना किसी घर के भटकते हुये
फिरेंगे।

इस्राएल के वैभव ने इस्राएल से मूर्ति पूजा करवाई

10 इस्राएल एक ऐसी दाखलता है जिस पर बहुतेरे
फल लगते हैं। इस्राएल ने परमेश्वर से
अधिकाधिक वस्तुऐं पाई किन्तु वह झूठे देवताओं के
लिये अनेकानेक वेदियाँ बनाता ही चला गया। उसकी
धरती अधिकाधिक उत्तम होने लगी सो वह अच्छे से
अच्छा पत्थर झूठे देवताओं को मान देने के लिये
पधराता गया।

2इस्राएल के लोग परमेश्वर को धोखा देने का जतन
करते ही रहे। किन्तु अब तो उन्हें निज अपराध मानना
चाहिये। यहोवा उनकी वेदियों को तोड़ फेंकेगा, वह
स्मृति–स्तूपों को तहस–नहस करेगा।

इस्राएलियों के बुरे निर्णय

3अब इस्राएल के लोग कहा करते हैं, "न तो हमारा
कोई राजा है और न ही हम यहोवा का मान करते हैं!
और उसका राजा हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता है!"

4वे वचन तो देते हैं। किन्तु वचन देते हुए बस वे झूठ
ही बोलते हैं। वे उन वचनों का पालन नहीं करते! दूसरे
देशों के साथ वे ऐसी सन्धि करते हैं, जो सन्धि परमेश्वर
को नहीं भाती। न्यायाधीश जोते हुए खेत में उगने वाले
जहरीले खरपतवार के जैसे हो गये हैं।

5शोमरोन के लोग बेतावेन में बछड़ों की पूजा करते
हैं। ऐसे लोगों को वास्तव में विलाप करना होगा। वे
याजक वास्तव में विलाप करेंगे क्योंकि उसकी सुन्दर
मूर्ति कही चली गई है। उसे कहीं उठा ले जाया गया।
6उसे अश्शूर के महान राजा को उपहार देने के लिए
उठा ले जाया गया। एप्रैम की लज्जापूर्ण मूर्ति को वह ले
लेगा। इस्राएल को अपनी मूर्तियों पर लज्जित होना होगा।
7शोमरोन के झूठे देवता को नष्ट कर दिया जायेगा।
वह पानी पर तैरते हुए किसी लकड़ी के टुकड़े जैसा हो
जायेगा।

8इस्राएल ने पाप किये और ऊँचे स्थानों का निर्माण
किया। आवेन के ऊँचे स्थान नष्ट कर दिये जायेंगे।
उनकी वेदियों पर कँटीली झाड़ियाँ और खरपतवार उग
आयेंगे। उस समय वे पर्वतों से कहेंगे, "हमें ढक लो"
और पहाड़ियों से कहेंगे, "हम पर गिर पड़ो!"

इस्राएल को अपने पाप का भुगतान करना होगा

9हे इस्राएल, तू गिबा के समय से ही पाप करता आया
हैं और वे लोग वहाँ पाप करते ही चले गये। गिबा के वे
दुष्ट लोग सचमुच युद्ध की पकड़ में आ जायेंगे। 10उन्हें
दण्ड देने के लिए मैं आऊँगा। उनके विरुद्ध इकट्ठी
होकर सेनाएँ चढ़ आयेंगी। इस्राएलियों को उनके दोनों
पापों के लिए वे दण्ड देंगी।

11एप्रैम उस सुधारी हुई जवान गाय के समान है जिसे
खलिहान में अनाज पर गहाई के लिये चलना अच्छा
लगता है। मैं उसके कन्धों पर एक उत्तम जुवा रखूँगा।
मैं एप्रैम पर रस्सी लगाऊँगा। फिर यहूदा जुताई करेगा
और स्वयं याकूब धरती को फोड़ेगा।

12यदि तुम नेकी को बोओगे तो सच्चे प्रेम की फसल
काटोगे। अपनी धरती को जोतो और यहोवा की शरण
जाओ। यहोवा आयेगा और वह तुम पर वर्षा की तरह
नेकी बरसायेगा!

13किन्तु तुमने तो बदी का बीज बोया है और विपत्ति
की फसल काटी है। तुमने अपने झूठ का फल भोगा
है। ऐसा इसलिये हुआ कि तुमने अपनी शक्ति और
अपने सैनिकों पर विश्वास किया। 14इसलिये तुम्हारी
सेनायें युद्ध का शोर सुनेंगी और तुम्हारी गढ़ियाँ ढह
जायेंगी। यह वैसा ही होगा जैसे बेतर्बेल नगर को युद्ध के
समय शल्मन ने नष्ट कर दिया था। युद्ध के उस समय
अपने बच्चों के साथ माताओं की हत्या कर दी गयी
थी। 15बेतेल में तुम्हारे साथ भी ऐसा ही होगा क्योंकि
तुमने बहुत से कुकर्म किये हैं। उस दिन के शुरु होने
पर इस्राएल के राजा का पूरी तरह विनाश हो जायेगा।

इस्राएल यहोवा को भूल गया

11 "जब इस्राएल अभी बच्चा था, मैंने, (यहोवा ने)
उसको प्रेम किया था। मैंने अपने बच्चे को मिस्र
से बाहर बुला लिया था।

2किन्तु इस्राएलियों को मैंने जितना अधिक बुलाया वे
मुझसे उतने ही अधिक दूर हुए थे। इस्राएल के लोगों ने
बाल देवताओं को बलियाँ चढ़ाई थी। उन्होंने मूर्तियों के
आगे धूप जलाई थी।

3एप्रैम को मैंने ही चलना सिखाया था! इस्राएल को
मैंने गोद में उठाया था! और मैंने उन्हें स्वस्थ किया था!
किन्तु वे इसे नहीं जानते हैं।

4मैंने उन्हें डोर बांध कर राह दिखाई, डोर–वह प्रेम
की डोर थी। मैं उस ऐसे व्यक्ति सा था जिसने उन्हें
स्वतंत्रता दिलाई, मैं नीचे की ओर झुका और मैंने
उनको आहार दिया था।

5किन्तु इस्राएलियों ने परमेश्वर की ओर मुड़ने से
मना कर दिया। सो वे मिस्र चले जायेंगे और अश्शूर का
राजा उनका राजा बन जायेगा। 6उनके नगरों के ऊपर
तलवार लटका करेगी। वह तलवार उनके शक्तिशाली
लोगों का वध कर देगी। वह उनके मुखियाओं का
काम तमाम कर देगी।

7मेरे लोग मेरे लौट आने की बाट जोहेंगे, वे ऊपर
वाले परमेश्वर को पुकारेंगे किन्तु परमेश्वर उनकी
सहायता नहीं करेगा।

यहोवा इस्राएल का विनाश नहीं चाहता

8हे एप्रैम, मैं तुझको त्याग देना नहीं चाहता हूँ। हे
इस्राएल, मैं चाहता हूँ कि मैं तेरी रक्षा करुँ। मैं तुझ को
अदना सा कर देना नहीं चाहता हूँ! मैं नहीं चाहता हूँ
कि तुझ को सबोयीम सा बना दूँ! मैं अपना मन बदल
रहा हूँ तेरे लिये प्रेम बहुत ही तीव्र है।

9मैं निज भीषण क्रोध को जीतने नहीं दूँगा। मैं फिर
एप्रैम को नष्ट नहीं कर दूँगा। मैं तो परमेश्वर हूँ मैं
कोई मनुष्य नहीं। मैं तो वह पवित्र हूँ, मैं तेरे साथ हूँ। मैं
अपने क्रोध को नहीं दिखाऊँगा। 10मैं सिंह की दहाड़ सी

गर्जना करूँगा। मैं गर्जना करूँगा और मेरी संताने पास
आयेंगी और मेरे पीछे चलेंगी। मेरी संताने जो भय से
थर–थर कांप रहीं है, पश्चिम से आयेंगी।
11वे कंपकंपाते पक्षियों सी मिस्र से आयेंगी। वे कांपते
कपोत सी अश्शूर की धरती से आयेंगी और मैं उन्हें
उनके घर वापस ले जाऊँगा।" यहोवा ने यह कहा था।
12एप्रैम ने मुझे झूठे देवताओं से ढक दिया। इस्राएल
के लोगों ने रहस्यमयी योजनायें रच डालीं। किन्तु अभी
भी यहूदा एल के साथ था। यहूदा पवित्रों के प्रति सच्चा
था।

यहोवा इस्राएल के विरुद्ध है

12 एप्रैम अपना समय नष्ट करता रहता है। इस्राएल
सारे दिन, "हवा के पीछे भागता रहता है।" लोग
अधिक से अधिक झूठ बोलते रहते हैं, वे अधिक से
अधिक चोरियाँ करते रहते हैं। अश्शूर के साथ उन्होंने
सन्धि की हुई है और वे अपने जैतून के तेल को मिस्र
ले जा रहे हैं। 2यहोवा कहता है, "इस्राएल के विरोध में
मेरा एक अभियोग है। याकूब ने जो कर्म किये हैं, उसे
उनके लिए दण्ड दिया जाना चाहिये। अपने किये कुकर्मो
के लिये, उसे निश्चय ही दण्ड दिया जाना चाहिये।
3अभी याकूब अपनी माता के गर्भ में ही था कि उसने
अपने भाई के साथ चालबाजियाँ शुरु कर दीं। याकूब
एक शक्तिशाली युवक था और उस समय उसने परमेश्वर
से युद्ध किया। 4याकूब ने परमेश्वर के स्वर्गदूत से
कुश्ती लड़ी और उससे जीत गया। उसने पुकारा और
कृपा करने के लिये विनती की। यह बेतेल में घटा था।
उसी स्थान पर उसने हमसे बातचीत की थी। 5हाँ,
यहोवा सेनाओं का परमेश्वर है। उसका नाम यहोवा है।
6सो अपने परमेश्वर की ओर लौट आओ। उसके प्रति
सच्चे बनो। उचित कर्म करो! अपने परमेश्वर पर सदा
भरोसा रखो!
7"याकूब एक सचमुच का व्यापारी है। वह अपने
मित्रों तक को छलता है! उसकी तराजू तक झूठी है।
8एप्रैम ने कहा, 'मैं धनवान हूँ! मैंने सच्ची सम्पत्ति पा
ली है। मेरे अपराधों का किसी व्यक्ति को पता ही नहीं
चलेगा। मेरे पापों को कोई व्यक्ति जान ही नहीं पायेगा।'
9"किन्तु मैं तो तभी से तुम्हारा परमेश्वर यहोवा रहा
हूँ जब तुम मिस्र की धरती पर हुआ करते थे। मैं तुझे
तम्बुओं में वैसे ही रखूँगा जैसे तू मिलाप के तम्बू के
अवसर पर रहा करता था। 10मैंने नबियों से बात की।
मैंने उन्हें अनेक दर्शन दिये। मैंने नबियों को तुम्हें अपने
पाठ पढ़ाने के बहुत से तरीके दिये। 11किन्तु गिलाद में
फिर भी पाप है। वहाँ व्यर्थ की अनेक वस्तुएँ हैं। गिलाद
में लोग बैलों की बलियाँ अर्पित करते हैं। उनकी बहुत
सी वेदियाँ इस प्रकार की हैं, जैसे जुते हुए खेत में मिट्टी
की पंक्तियाँ हो।
12"याकूब आराम की ओर भाग गया था। इस स्थान
पर इस्राएल (याकूब) ने पत्नी के लिए मजदूरी की थी।
दूसरी पत्नी प्राप्त करने के लिए उसने मेढ़े रखी थीं।
13किन्तु यहोवा एक नबी के द्वारा इस्राएल को मिस्र से
ले आया। यहोवा ने एक नबी के द्वारा इस्राएल को
सुरक्षित रखा। 14किन्तु एप्रैम ने यहोवा को बहुत अधिक
कुपित कर दिया। एप्रैम ने बहुत से लोगों को मार डाला।
सो उसके अपराधों के लिए उसको दण्ड दिया जायेगा।
उसका स्वामी (यहोवा) उससे उसकी लज्जा सहन
करवायेगा।'

इस्राएल ने अपना नाश स्वयं किया

13 "एप्रैम ने स्वयं को इस्राएल में अत्यन्त महत्वपूर्ण
बना लिया। एप्रैम जब बोला करता था, तो लोग
भय से थरथर काँपा करते थे किन्तु एप्रैम ने पाप किये
उसने बाल को पूजना शुरू कर दिया। 2फिर इस्राएल
अधिक से अधिक पाप करने लगा। उन्होंने अपने लियें
मूर्तियाँ बनाई। कारीगर चाँदी से उन सुन्दर मूर्तियों को
बनाने लगे और फिर वे लोग अपने उन मूर्तियों से बातें
करने लगे! वे लोग उन मूर्तियों के आगे बलियाँ चढ़ाते
हैं। सोने से उन बछड़ों को वे चूमा करते हैं। 3इसी
कारण वे लोग शीघ्र ही नष्ट हो जायेंगे। वे लोग सुबह
की उस धुंध के समान होंगे जो आती है और फिर शीघ्र
ही गायब हो जाती है। इस्राएली उस भूसे के समान होंगे
जिसे खलिहान में उड़ाया जाता है। इस्राएली उस धुँए के
समान होंगे जो किसी चिमनी से उठता है और लुप्त हो
जाता है।
4"तुम लोग जब मिस्र में हुआ करते थे, मैं तभी से
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा रहा हूँ। मुझे छोड़ तुम किसी
दूसरे परमेश्वर को नहीं जानते थे। वह मैं ही हूँ जिसने
तुम्हें बचाया था। 5मरुभूमि में मैं तुम्हें जानता था उस
सूखी धरती में मैं तुम्हें जानता था। 6मैंने इस्राएलियों को
खाने को दिया। उन्होंने वह भोजन खाया। अपना पेट
भर कर वे तृप्त हो गये। उन्हें अभिमान हो गया और वे
मुझे भूल गये!
7"मैं इसीलिये उनके लिए सिंह के समान बन जाऊँगा।
मैं राह किनारे घात लगाये चीता जैसा हो जाऊँगा। 8मैं
उन पर उस रींछनी की तरह झपट पड़ूँगा, जिससे
उसके बच्चे छीन लिये गये हों। मैं उन पर हमला
करूँगा। मैं उनकी छातियाँ चीर फाड़ दूँगा। मैं उस सिंह
या किसी दूसरे ऐसे हिंसक पशु के समान हो जाऊँगा जो
अपने शिकार को फाड़ कर खा रहा होता है।"

परमेश्वर के कोप से इस्राएल को कोई नहीं बचा सकता

9"हे इस्राएल, मैंने तेरी रक्षा की थी, किन्तु तूने मुझसे
मुख मोड़ लिया। सो अब मैं तेरा नाश करूँगा! 10कहाँ

है तेरा राजा? तेरे सभी नगरों में वह तुझे नहीं बचा
सकता है! कहाँ हैं तेरे न्यायाधीश? तूने उनसे यह कहते
हुए याचना की थी, 'मुझे एक राजा और अनेक प्रमुख
दो।' 11मैं क्रोधित हुआ और मैंने तुम्हें एक राजा दे
दिया। मैं और अधिक क्रोधित हुआ और मैंने तुम से
उसे छीन लिया।

12"एप्रैम ने निज अपराध छिपाने का जतन किया;
उसने सोचा था कि उसके पाप गुप्त हैं। किन्तु उन बातों
के लिये उसको दण्ड दिया जायेगा।

13"उसका दण्ड ऐसा होगा जैसे कोई स्त्री प्रसव पीड़ा
भोगती है; किन्तु वह पुत्र बुद्धिमान नहीं होगा उसकी
जन्म की बेला आयेगी किन्तु वह पुत्र बच नहीं पायेगा।

14"क्या मैं उन्हें कब्र की शक्ति से बचा लूँ? क्या मैं
उनको मृत्यु से मुक्त करा लूँ? हे मृत्यु, कहाँ है तेरी
व्याधियाँ? हे कब्र, तेरी शक्ति कहाँ है? मेरी दृष्टि से
करुणा छिपा रहेगी!

15"इस्राएल निज बंधुओं के बीच बढ रहा है किन्तु
पवन पुरवाई आयेगी। वह यहोवा को आंधी मरुस्थल से
आयेगी, और इस्राएल के कुएँ सूखेंगे। उसका पानी का
सोता सूख जायेगा। वह आँधी इस्राएल के खजाने से हर
मूल्यवान वस्तु को ले जायेगी।

16"शोमरोन को दण्ड दिया जायेगा क्योंकि उसने
अपने परमेश्वर से मुख फेरा था। इस्राएली तलवारों से
मार दिये जायेंगे उनकी संतानों के चिथड़े उड़ा दिये
जायेंगे। उनकी गर्भवती स्त्रियाँ चीर कर खोल दी जायेंगी।"

यहोवा की ओर मुड़ना

14 हे इस्राएल, तेरा पतन हुआ और तूने परमेश्वर
के विरुद्ध पाप किया। इसलिये अब तू अपने
परमेश्वर यहोवा की ओर लौट आ। 2जो बातें तुझे
कहनी हैं, उनके बारे में सोच और यहोवा की ओर
लौट आ। उससे कह, "हमारे पापों को दूर कर और
उन अच्छी बातों को स्वीकार कर जिन्हें हम कर रहे
हैं। हम अपने मुख से तेरी स्तुति करेंगे।"

3अश्शूर हमें बचा नहीं पायेगा। हम घोड़ों पर सवारी
नहीं करेंगे। हम फिर अपने ही हाथों से बनाई हुई
वस्तुओं को, "अपना परमेश्वर" नहीं कहेंगे। क्यों?
क्योंकि बिना माँ-बाप के अनाथ बच्चों पर दया
दिखानेवाला बस तू ही है।

यहोवा इस्राएल को क्षमा करेगा

4यहोवा कहता है, "उन्होंने मुझे त्याग दिया। मैं उन्हें
इस के लिये क्षमा कर दूँगा। मैं उन्हें मुक्त भाव से प्रेम
करूँगा। मैं अब उन पर क्रोधित नहीं हूँ।

5मैं इस्राएल के निमित्त ओस सा बनूँगा। इस्राएल कुमुदिनी
के फूल सा खिलेगा। उसकी बढ़वार लबानोन के देवदार
वृक्षों सी होगी।

6उसकी शाखायें जैतून के पेड़ सी बढ़ेंगी वह सुन्दर
हो जायेगा। वह उस सुंगध सा होगा जो लबानोन के
देवदार वृक्षों से आती है।

7इस्राएल के लोग फिर से मेरे संरक्षण में रहेंगे।
उनकी बढवार अन्न की होगी, वे अंगूर की बेल से
फलें-फूलेंगे। वे ऐसे सर्वप्रिय होंगे जैसे लबानोन का
दाखमधु है।"

इस्राएल को मूर्तियों के विषय में यहोवा की चेतावनी

8"हे एप्रैम, मुझ यहोवा को इन मूर्तियों से कोई सरोकार
नहीं है। मैं ही ऐसा हूँ जो तुम्हारी प्रार्थनाओं का उत्तर
देता हूँ। मैं ही ऐसा हूँ जो ऊपर से तुम्हारी रखवाली
करता हूँ। मैं हरे-भरे सनोवर के पेड़ सा हूँ। तुम्हारे
फल मुझसे ही आते हैं।"

अन्तिम सम्मति

9ये बातें बुद्धिमान व्यक्ति को समझनी चाहियें, ये बातें
किसी चतुर व्यक्ति को जाननी चाहियें। यहोवा की राहें
उचित है। सज्जन उसी रीति से जीएंगे; और दुष्ट उन्हीं
से मर जायेंगे।

योएल

टिड्डियाँ फसलों को खा जायेंगी

1 पतूएल के पुत्र योएल ने यहोवा से इस संदेश को
प्राप्त किया: 2मुखियों, इस सन्देश को सुनो! हे इस
धरती के निवासियों, तुम सभी मेरी बात सुनो। क्या
तुम्हारे जीवन काल में पहले कभी कोई ऐसी बात घटी
है? नहीं! क्या तुम्हारे पुरखों के समय में कभी कोई
ऐसी बात घटी है? नहीं!

3इन बातों के बारे में तुम अपने बच्चों को बताया
करोगे और तुम्हारे बच्चे ये बातें अपने बच्चों को बतायेंगे
और तुम्हारे नाती पोते ये बातें अगली पीढ़ियों को बतायेंगे।

4कुतरती हुई टिड्डियों से जो कुछ भी बचा, उसको
भिन्नाती हुई टिड्डियों ने खा लिया और भिन्नाती टिड्डियों
से जो कुछ बचा, उसको फुदकती टिड्डियों ने खा लिया
है और फुदकती टिड्डियों से जो कुछ रह गया, उसे
विनाशकारी टिड्डियों ने चट कर डाला है!

टिड्डियों का आना

5ओ मतवालों, जागो, उठो और रोओ! ओ सभी लोगों
दाखमधु पीने वालों, विलाप करो। क्योंकि तुम्हारी मधुर
दाखमधु अब समाप्त हो चुकी है। अब तुम, उसका नया
स्वाद नहीं पाओगे।

6देखो, विशाल शक्तिशाली लोग मेरे देश पर आक्रमण
करने को आ रहे हैं। उनके साथ अनगिनत सैनिक हैं।
वे "टिड्डे" (शत्रु के सैनिक) तुम्हें फाड़ डालनें में समर्थ
होंगे! उनके दाँत सिंह के दाँतों जैसे हैं।

7वे "टिड्डे" मेरे बागों के अंगूर चट कर जायेंगे! वे
मेरे अंजीर के पेड़ नष्ट कर देंगे। वे मेरे पेड़ों को छाल
तक चट कर जायेंगे। उनकी टहनियाँ पीली पड़ जायेंगी
और वे पेड़ सूख जायेंगे।

लोगों का विलाप

8उस युवती सा रोओ, जिसका विवाह होने को है
और जिसने शोक वस्त्र पहने हों जिसका भावी पति
शादी से पहले ही मारा गया हो। 9हे याजकों! हे यहोवा
के सेवकों, विलाप करो! क्योंकि अब यहोवा के मन्दिर
में न तो अनाज होगा और न ही पेय भेंटे चढ़ेंगी।

10खेत उजड़ गये हैं। यहाँ तक कि धरती भी रोती है
क्योंकि अनाज नष्ट हुआ है, नया दाखमधु सूख गया है
और जैतून का तेल समाप्त हो गया है।

11हे किसानो, तुम दु:खी होवो! हे अंगूर के बागवानों,
जोर से विलाप करो! तुम गेहूँ और जौ के लिये भी
विलाप करो! क्योंकि खेत की फसल नष्ट हुई है।

12अंगूर की बेलें सूख गयी हैं और अंजीर के पेड़
मुरझा रहे हैं। अनार के पेड़, खजूर के पेड़ और सेब
के पेड़ –बगीचे के ये सभी पेड़ सूख गये हैं। लोगों के
बीच में प्रसन्नता मर गयी है।

13हे याजकों, शोक वस्त्र धारण करो, जोर से विलाप
करो। हे वेदी के सेवकों, जोर से विलाप करो। हे मेरे
परमेश्वर के दासों, अपने शोक वस्त्रों में तुम सो जाओगे।
क्योंकि अब वहाँ अन्न और पेय भेंटे परमेश्वर के
मन्दिर में नहीं होंगी।

टिड्डियों से भयानक विनाश

14लोगों को बता दो कि एक ऐसा समय आयेगा जब
भोजन नहीं किया जायेगा। एक विशेष सभा के लिए
लोगों को बुला लो। सभा में मुखियाओं और उस धरती
पर रहने वाले सभी लोगों को इकट्ठा करो। उन्हें
अपने यहोवा परमेश्वर के मंदिर में ले आओ और
यहोवा से विनती करो। 15दु:खी रहो क्योंकि यहोवा का
वह विशेष दिन आने को है। उस समय दण्ड इस
प्रकार आयेगा जैसे सर्वशक्तिमान परमेश्वर का कोई
आक्रमण हो। 16हमारा भोजन हमारे देखते–देखते चट
हो गया है। हमारे परमेश्वर के मंदिर से आनन्द और
प्रसन्नता जाती रही है। 17हमने बीज तो बोये थे, किन्तु वे
धरती में पड़े–पड़े सूख कर मर गये हैं। हमारे पौधे सूख
कर मर गये हैं। हमारे खत्ते खाली पड़े हैं और ढह रहे
हैं।

18हमारे पशु भूख से कराह रहे हैं। हमारे मवेशी
खोये–खोये से इधर–उधर घूमते हैं। उनके पास खाने
को घास नहीं हैं। भेड़ें मर रही हैं। 19हे यहोवा, मैं तेरी
दुहाई दे रहा हूँ। क्योंकि हमारी चरागाहों को आग ने
रेगिस्तान बना दिया है। बगीचों के सभी पेड़ लपटों से
झुलस गये हैं। 20जंगली पशु भी तेरी सहायता चाहते हैं।
नदियाँ सूख गयी हैं। कहीं पानी का नाम नहीं! आग ने
हमारी हरी–भरी चरागाहों को मरुभूमि में बदल दिया
है।

यहोवा का दिन जो आने को है

2 सिय्योन पर नरसिंगा फूँको। मेरे पवित्र पर्वत पर
चेतावनी सुनाओ। उन सभी लोगों को जो इस धरती
पर रहते हैं, तुम भय से कँपा दो। यहोवा का विशेष दिन
आ रहा है। यहोवा का विशेष दिन पास ही आ पहुँचा है।
2वह दिन अन्धकार भरा होगा, वह दिन उदासी का
होगा, वह दिन काला होगा और वह दिन दुर्दिन होगा।
भोर की पहली किरण के साथ तुम्हें पहाड़ पर सेना
फैलती हुई दिखाई देगी। वह सेना विशाल और शक्तिशाली
भी होगी। ऐसा पहले तो कभी भी घटा नहीं था और
आगे भी कभी ऐसा नहीं घटेगा, न ही भूत काल में, न
ही भविष्य में।
3वह सेना इस धरती को धधकती आग जैसे तहस–नहस
कर देगी। सेना के आगे की भूमि वैसी हो जायेगी जैसे
एदेन का बगीचा और सेना के पीछे की धरती वैसी हो
जायेगी जैसे उजड़ा हुआ रेगिस्तान हो। उनसे कुछ भी
नहीं बचेगा।
4वे घोड़े की तरह दिखते हैं और ऐसे दौड़ते हैं जैसे
युद्ध के घोड़े हों।
5उन पर कान दो। वह नाद ऐसा है जैसे पहाड़ पर
चढ़ते रथों का घर्र–घर्र नाद हो। वह नाद ऐसा है जैसे
भूसे को चटपटाती हुई लपटें जला रही हों। वे लोग
शक्तिशाली हैं। वे युद्ध को तत्पर हैं।
6इस सेना के आगे लोग भय से काँपते हैं। उनके
मुख डर से पीले पड़ जाते हैं।
7वे सैनिक बहुत तेज दौड़ते हैं। वे सैनिक दीवारों पर
चढ़ते हैं। प्रत्येक सैनिक सीधा ही आगे बढ़ जाता है। वे
अपने मार्ग से जरा भी नहीं हटते हैं।
8वे एक दूसरे को आपस में नहीं धकेलते हैं। हर एक
सैनिक अपनी राह पर चलता है। यदि कोई सैनिक
आघात पा करके गिर जाता है तो भी वे दूसरे सैनिक
आगे ही बढ़ते रहते हैं।
9वे नगर पर चढ़ जाते हैं और बहुत जल्दी ही परकोटा
फलांग जाते हैं। वे भवनों पर चढ़ जाते और खिड़कियों
से होकर भीतर घुस जाते हैं जैसे कोई चोर घुस जाये।
10धरती और आकाश तक उनके सामने काँपते हैं।
सूरज और चाँद भी काले पड़ जाते हैं और तारे चमकना
छोड़ देते हैं। 11यहोवा जोर से अपनी सेना को पुकारता
है। उसकी छावनी विशाल है। वह सेना उसके आदेशों
को मानती है। वह सेना अति बलशाली है। यहोवा का
विशेष दिन महान और भयानक है। कोई भी व्यक्ति
उसे रोक नहीं सकता।

यहोवा लोगों से बदलने को कहता है

12यहोवा का यह सन्देश है: "अपने पूर्ण मन के साथ
अब मेरे पास लौट आओ। तुमने बुरे कर्म किये हैं।
विलाप करो, विलाप करो और निराहार रहो!
13"अरे वस्त्र नहीं, तुम अपने ही मन को फाड़ो। तुम
लौट कर अपने परमेश्वर यहोवा के पास जाओ। वह
दयालु और करुणापूर्ण है। उसको शीघ्र क्रोध नहीं आता
है। उसका प्रेम महान है। सम्भव है जो क्रोध दण्ड उसने
तुम्हारे लिये सोचा है, उसके लिये वह अपना मन बदल
ले।
14"कौन जानता है, सम्भव है यहोवा अपना मन
बदल ले और यह भी सम्भव है कि वह तुम्हारे लिये
कोई वरदान छोड़ जाये। फिर तुम अपने परमेश्वर
यहोवा को अन्नबलि और पेय भेंट अर्पित कर पाओगे।

यहोवा से प्रार्थना करो

15"सिय्योन पर नरसिंगा फूँको। उस विशेष सभा के
लिये बुलावा दो। उस उपवास के विशेष समय का
बुलावा दो।
16"तुम, लोगों को जुटाओ। उस विशेष सभा के लिये
उन्हें बुलाओ। तुम बूढ़े पुरुषों को एकत्र करो और बच्चे
भी साथ एकत्र करो। वे छोटे शिशु भी जो अभी भी
स्तन पीते हो, लाओ। नयी दुल्हिन को और उसके पति
को सीधे उनके शयन–कक्षों से बुलाओ।
17"हे याजकों और यहोवा के दासों, आँगन और वेदी
के बीच में बुहार करो। सभी लोगों ये बातें तुम्हें कहनी
चाहिये: "यहोवा ने तुम्हारे लोगों पर करुणा की। तुम
अपने लोगों को लज्जित मत होने दो। तुम अपने लोगों
को दूसरों के बीच में हँसी का पात्र मत बनने दो। तुम
दूसरे देशों को हँसते हुए कहने का अवसर मत दो कि
उनका परमेश्वर कहाँ है?"

यहोवा तुम्हें तुम्हारी धरती वापस दिलवायेगा

18फिर यहोवा अपनी धरती के बारे में बहुत अधिक
चिन्तित हुआ। उसे अपने लोगों पर दया आयी।
19यहोवा ने अपने लोगों से कहा। वह बोला, "मैं
तुम्हारे लिये अन्न, दाखमधु और तेल भिजवाऊँगा। ये
तुमको भरपूर मिलेंगे। मैं तुमको अब और अधिक
जातियों के बीच में लज्जित नहीं करूँगा।
20"नहीं, मैं तुम्हारी धरती को त्यागने के लिये उन
लोगों (उत्तर अथवा बाबुल) पर दबाव दूँगा। मैं उनको
सूखी और उजड़ी हुई धरती पर भेजूँगा। उनमें से कुछ
पूर्व के सागर में जायेंगे और उनमें से कुछ पश्चिमी
समुद्र में जायेंगे। उन शत्रुओं ने ऐसे भयानक कर्म किये
हैं। वे लोग वैसे हो जायेंगे जैसे सड़ती हुई मृत वस्तुएँ
होती हैं। वहाँ ऐसी भयानक दुर्गन्ध होगी।"

धरती को फिर नया बनाया जायेगा

21हे धरती, तू भयभीत मत हो। प्रसन्न हो जा और
आनन्द से भर जा क्योंकि यहोवा बड़े काम करने को
है।

22ओ मैदानी पशुओं, तुम भय त्यागो। जंगल की
चारागाहें घास उगाया करेंगी। वृक्ष फल देने लगेंगे।
अंजीर के पेड़ और अंगूर की बेलें भरपूर फल देंगे।
23सो, हे सिय्योन के लोगों, प्रसन्न रहो। अपने परमेश्वर
यहोवा में आनन्द से भर जाओ। क्योंकि वह तुम्हारे
साथ भला करेगा और तुम्हें वर्षा देगा। वह तुम्हें अगली
वर्षा देगा और वह तुझे पिछली वर्षा भी देगा जैसे पहले
दिया करता था।
24तुम्हारे ये खलिहान गेहूँ से भर जायेंगे और तुम्हारे
कुप्पे दाखमधु और जैतून के तेल से उफनने लगेंगे।
25मुझ यहोवा ने अपनी सशक्त सेना तुम्हारे विरोध में
भेजी थी। वे भिन्नाती हुई टिड्डियाँ, फुदकती हुई टिड्डियाँ,
विनाशकारी टिड्डियाँ और कुतरती टिड्डियाँ तुम्हारी
वस्तुएँ खा गये। किन्तु मैं, यहोवा उन विपत्तियों के वर्षों
के बदले में फिर से तुम्हें और वर्ष दूँगा।
26फिर तुम्हारे पास खाने को भरपूर होगा। तुम सन्तुष्ट
होओगे। अपने परमेश्वर यहोवा के नाम का तुम गुणगान
करोगे। उसने तुम्हारे लिये अद्भुत बातें की हैं। अब मेरे
लोग फिर कभी लज्जित न होंगे।
27तुमको पता चल जायेगा कि मैं इस्राएली लोगों के
साथ हूँ। तुमको पता चल जायेगा कि मैं तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा हूँ और कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है। मेरे लोग
फिर कभी लज्जित न होंगे।

सभी लोगों पर अपनी आत्मा उंडेलने की यहोवा की प्रतिज्ञा

28इस के बाद मैं तुम सब पर अपनी आत्मा उंडेलूँगा।
तुम्हारे पुत्र-पुत्रियाँ भविष्यवाणी करेंगे। तुम्हारे बूढ़े दिव्य
स्वप्नों को देखेंगे। तुम्हारे युवक दर्शन करेंगे।
29उस समय मैं अपनी आत्मा दास-दासियों पर उंडेलूँगा।
30धरती पर और आकाश में मैं अद्भुत चिन्ह प्रकट
करूँगा। वहाँ खून, आग और गहरा धुआँ होगा।
31सूरज अंधकार में बदल जायेगा। चाँद भी खून के
रंग में बदलेगा और फिर यहोवा का महान और भयानक
दिन आयेगा!
32तब कोई भी ऐसा व्यक्ति जो यहोवा का नाम लेगा,
छुटकारा पायेगा । सिय्योन के पहाड़ पर और यरूशलेम
में वे लोग बसेंगे जो बचाये गये हैं। यह ठीक वैसा ही
होगा जैसा यहोवा ने बताया है। उन बचाये गये लोगों में
बस वे ही लोग होंगे जिन्हें यहोवा ने बुलाया था।

यहूदा के शत्रुओं को यहोवा द्वारा दण्ड दिये जाने का वचन

3 “उन दिनों और उस समय, मैं यहूदा और यरूशलेम
को बंधन मुक्त कराकर देश निकाले से वापस ले
आऊँगा। 2मैं सभी जातियों को भी एकत्र करूँगा। इन
सभी जातियों को मैं यहोशापात की तराई में इकट्ठा
करूँगा और वहीं मैं उनका न्याय करूँगा। उन जातियों
ने मेरे इस्राएली लोगों को तितर-बितर कर दिया था।
दूसरी जातियों के बीच रहने के लिये उन्होंने उन्हें
विवश किया था। इसीलिए मैं उन जातियों को दण्ड
दूँगा। उन जातियों ने मेरी धरती का बँटवारा कर दिया
था। 3मेरे लोगों के लिये उन्होंने पासे फेंके थे। उन्होंने
एक लड़के को बेचकर उसके बदले एक वेश्या खरीदी
और दाखमधु के बदले लड़की बेच डाली
4“हे सोर, सीदोन, और पलिश्तीन के सभी प्रदेशों!
तुम मेरे लिये कोई महत्व नहीं रखते! क्या तुम मुझे मेरे
किसी कर्म के लिए दण्ड दे रहे हो? हो सकता है तुम
यह सोच रहे हो कि तुम मुझे दण्ड दे रहे हो किन्तु शीघ्र
ही मैं ही तुम्हें दण्ड देने वाला हूँ। 5तुमने मेरा चाँदी, सोना
लूट लिया। मेरे बहुमूल्य खजानों को लेकर तुमने अपने
मंदिरों में रख लिया।
6“यहूदा और यरूशलेम के लोगों को तुमने यूनानियों
के हाथ बेच दिया और इस प्रकार तुम उन्हें उनकी
धरती से बहुत दूर ले गये। 7उस सुदूर देश में तुमने मेरे
लोगों को भेज दिया। किन्तु मैं उन्हें लौटा कर वापस
लाऊँगा और तुमने जो कुछ किया है, उसका तुम्हें दण्ड
दूँगा 8मैं यहूदा के लोगों को तुम्हारे पुत्र-पुत्रियाँ बेच
दूँगा। और फिर वे उन्हें शबाइ लोगों को बेच देंगे।” ये
बातें यहोवा ने कहीथीं।

युद्ध की तैयारी करो

9लोगों को यह बता दो-युद्ध को तैयार रहो! शूरवीरों
को जगाओ, सारे योद्धाओं को अपने पास एकत्र करो।
उन्हें उठ खड़ा होने दो!
10अपने हलों की फालियों को पीट कर तलवार
बनाओं और अपनी डांगियों को तुम भालों में बदल लो।
ऐसा करो कि दुर्बल कहने लगे कि “मैं एक शूरवीर
हूँ।”
11हे सभी जातियों के लोगों, जल्दी करो! वहाँ एकत्र
हो जाओ। हे यहोवा, तू भी अपने प्रबल वीरों को ले आ!
12हे जातियों! जागो! यहोशापात की घाटी में आजाओ!
मैं वहाँ बैठकर सभी आसपास के देशों का न्याय
करूँगा।
13तुम हँसुआ ले आओ, क्योंकि पकी फसल खड़ी है।
आओ, तुम अंगूर रौंदो क्योंकि अंगूर का गरठ भरा
हुआ है। घड़े भर जायेंगे और वे बाहर उफनेंगे क्योंकि
उनका पाप बहुत बड़ा है।
14उस न्याय की घाटी में बहुत-बहुत सारे लोग हैं।
उस न्याय की घाटी में यहोवा का दिन आने वाला है।
15सूरज चाँद काले पड़ जायेंगे। तारे चमकना छोड़
देंगे।
16परमेश्वर यहोवा सिय्योन से गरजेगा। वह
यरूशलेम से गरजेगा। आकाश और धरती काँप-काँप

जायेंगे किन्तु अपने लोगों के लिये परमेश्वर यहोवा
शरणस्थल होगा। वह इस्राएल के लोगों का सुरक्षा स्थान
बनेगा।
17तब तुम जान जाओगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा हूँ। मैं सिय्योन पर बसता हूँ जो मेरा पवित्र पर्वत
है। यरूशलेम पवित्र बन जायेगा। फिर पराये कभी भी
उसमें से होकर नहीं जा पायेंगे।

यहूदा के लिए नया जीवन का वचन

18उस दिन मधुर दाखमधु पर्वत से टपकेगा। पहाड़ों से
दूध की नदियाँ और यहूदा की सभी सूखी नदियाँ बहते
हुए जल से भर जायेंगी। यहोवा के मन्दिर से एक फव्वारा
फूटेगा जो शित्तीम की घाटी को पानी से सींचेगा।
19मिस्र खाली हो जायेगा और एदोम एक उजाड़ हो
जायेगा। क्योंकि वे यहूदा के लोगों के संग निर्दयी ही रहे
थे। उन्होंने अपने ही देश में निरपराध लोगों का वध
किया था।
20किन्तु यहूदा में लोग सदा ही बसे रहेंगे और यरूशलेम
में लोग पीढ़ियों तक रहेंगे।
21उन लोगों ने मेरे लोगों का वध किया था इसलिये
निश्चय ही मैं उन्हें दण्ड दूँगा। क्योंकि परमेश्वर यहोवा
का सिय्योन पर निवासस्थान है!

आमोस

प्रस्तावना

1 आमोस का सन्देश। आमोस तकोई नगर का गड़ेरिया था। यहूदा पर राजा उज्जिय्याह के शासन काल और इस्राएल पर योआश के पुत्र राजा यारोबाम के शासन काल में आमोस को इस्राएल के बारे में (अन्त)दर्शन हुआ। यह भूकम्प के दो वर्ष पूर्व हुआ।

अराम के विरुद्ध दण्ड

2आमोस ने कहा: यहोवा सिय्योन में सिंह की तरह दहाड़ेगा। यहोवा की दहाड़ यरूशलेम से होगी। गड़ेरियों के हरे मैदान सूख जायेंगे। यहाँ तक कि कर्म्मेल पर्वत भी सूखेगा।

3यह सब यहोवा कहता है: "मैं दमिश्क के लोगों को उनके द्वारा किये गये अनेक अपराधों का दण्ड अवश्य दूँगा। क्यों? क्योंकि उन्होंने गिलाद को, अन्न को भूसे से अलग करने वाले लोहे के औजारों से पीटा।
4अत: मैं हजाएल के घर (सिरिया) में आग लगाऊँगा, और वह आग बेन्हदद के ऊँचे किलों को नष्ट करेगी।

5"मैं दमिश्क के द्वार की मजबूत छड़ों को भी तोड़ दूँगा। आवेन की घाटी में सिंहासन पर बैठने वाले व्यक्ति को भी मैं नष्ट करूँगा। एदेन में राजदण्ड धारण करने वाले राजा को भी मैं नष्ट करूँगा। अराम के लोग पराजित होंगे। लोग उन्हें बन्दी बनाकर कीर देश में ले जाएंगे।" यहोवा ने वह सब कहा।

पलिश्तियों को दण्ड

6यहोवा यह कहता है: "मैं निश्चय ही अज्जा के लोगों द्वारा किये गए अनेक पापों के लिए उन्हें दण्ड दूँगा। क्यों? क्योंकि उन्होंने लोगों के एक पूरे राष्ट्र को पकड़ा और दास के रूप में एदोम को भेजा था।
7इसलिये मैं अज्जा नगर की दीवार पर आग लगाऊँगा। यह आग अज्जा के महत्त्वपूर्ण किलों को नष्ट करेगी
8मैं अशदोद में राजसिंहासन पर बैठने वाले व्यक्ति को नष्ट करुँगा। मैं अश्कलोन में राजदण्ड धारण करने वाले राजा को नष्ट करुँगा। मैं एक्रोन के लोगों को दण्ड दूँगा। तब अभी तक जीवित बचे पलिश्ती मरेंगे।" परमेश्वर यहोवा ने वह सब कहा।

फनूशिया को दण्ड

9 यहोवा यह सब कहता है: "मैं निश्चय ही सोर के लोगों को उनके द्वारा किये गए अनेक अपराधों के लिए दण्ड दूँगा। क्यों? क्योंकि उन्होंने लोगों के एक पूरे राष्ट्र को पकड़ा और एदोम को दास के रूप में भेजा था। उन्होंने उस वाचा को याद नहीं रखा जिसे उन्होंने अपने भाईयों (इस्राएल) के साथ किया था
10अत: मैं सोर की दीवारों पर आग लगाऊँगा। वह आग सोर की ऊँची मीनारों को नष्ट करेगी।"

एदोमियों को दण्ड

11यहोवा यह सब कहता है: "मैं निश्चय ही एदोम के लोगों को उनके द्वारा किये गए अनेक अपराधों के लिये दण्ड दूँगा। क्यों? क्योंकि एदोम ने अपने भाई (इस्राएल) का पीछा तलवार लेकर किया। एदोम ने तनिक भी दया न दिखाई। एदोम का क्रोध बराबर बना रहा। वह जंगली जानवर की तरह इस्राएल को चीर-फाड़ करता रहा।
12अत: मैं तेमान में आग लगाऊँगा। वह आग बोस्रा के ऊँचे किलों को नष्ट करेगी।"

अम्मोनियों को दण्ड

13यहोवा यह सब कहता है: "मैं निश्चय ही अम्मोन के लोगों को उनके द्वारा किये गये अनेक अपराधों के लिये दण्ड दूँगा। क्यों? क्योंकि उन्होंने गिलाद में गर्भवती स्त्रियों को मार डाला। अम्मोनी लोगों ने यह इसलिये किया कि वे उस देश को ले सकें और अपने देश को बड़ा कर सकें।
14अत: मैं रब्बा की दीवार पर आग लगाऊँगा। यह आग रब्बा के ऊँचे किलों को नष्ट करेगी। युद्ध के दिन यह आग लगेगी। यह आग एक ऐसे दिन लगेगी जब तूफ़ानी दिन में आँधियाँ चल रही होंगी।
15तब इनके राजा और प्रमुख पकड़े जाएंगे। वे सब एक साथ बन्दी बनाकर ले जाए जाएंगे।" यहोवा ने वह सब कहाहै।

मोआब को दण्ड

2 यहोवा यह सब कहता है: "मैं मोआब के लोगों को इनके द्वारा किये गए अपराधों के लिए अवश्य दण्ड दूँगा। क्यों? क्योंकि मोआब ने एदोम के राजा की

हड्डियों को जलाकर चूना बनाया। 2अत: मैं मोआब में
आग लगाऊँगा और वह आग करिय्योत के ऊँचे किलों
को नष्ट करेगी। वहाँ भयंकर चिल्लाहट और तुरही
का घोष होगा, और मोआब मर जाएगा। 3अत: मैं
मोआब के राजाओं को समाप्त कर दूँगा और मैं मोआब
के सभी प्रमुखों को मार डालूँगा।" यहोवा ने वह सब
कहा।

यहूदा को दण्ड

4यहोवा यह कहता है: "मैं यहूदा को उसके द्वारा
किये अनेकों अपराधों के लिये अवश्य दण्ड दूँगा।
क्यों? क्योंकि उन्होंने यहोवा के आदेशों को मानने से
इन्कार किया। उन्होंने उनके आदेशों का पालन नहीं
किया। उनके पूर्वजों ने झूठ पर विश्वास किया और
उन झूठी बातों ने यहूदा के लोगों से परमेश्वर का
अनुसरण करना छुड़ाया। 5इसलिये मैं यहूदा में आग
लगाऊँगा और यह आग यरूशलेम के ऊँचे किलों को
नष्ट करेगी।"

इस्राएल को दण्ड

6यहोवा यह कहता है: "मैं इस्राएल को उनके द्वारा
किये गए अनेकों अपराधों के लिये दण्ड अवश्य दूँगा।
क्यों? क्योंकि उन्होंने चाँदी के चन्द टुकड़ों के लिये
अच्छे और भोले-भाले लोगों को दास के रूप में बेचा।
उन्होंने एक जोड़ी जूते के लिए गरीब लोगों को बेचा।
7उन्होंने उन गरीब लोगों को धक्का दे मुँह के बल
गिराया और वे उनको कुचलते हुये गए। उन्होंने कष्ट
भोगते लोगों की एक न सुनी। पिताओं और पुत्रों ने एक
ही युवती के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। उन्होंने मेरे
पवित्र नाम को अपवित्र किया है। 8उन्होंने गरीब लोगों
के वस्त्रों को लिया और वे उन पर गलीचे की तरह तब
तक बैठे जब तक वे वेदी पर पूजा करते रहे। उन्होंने
गरीबों को उनके वस्त्र गिरवी रखकर सिक्के उधार
दिये। उन्होंने लोगों को जुर्माना देने को मजबूर किया
और उस जुर्माने की रकम से अपने परमेश्वर के
मन्दिर में पीने के लिये दाखमधु खरीदी।

9"किन्तु मैंने ही उनके पहले एमोरियों को नष्ट किया
था। एमोरी ऊँचे बरगद के पेड़ की तरह थे। वे उतने
शक्तिशाली थे जितने बांज के पेड़। किन्तु मैंने उनके
ऊपर के फल तथा उनके नीचे की जड़ें नष्ट कीं।

10"वह मैं ही था जो तुम्हें मिस्र देश से निकाल कर
लाया। चालीस वर्ष तक मैं तुम्हें मरुभूमि से होकर
लाया। मैंने तुम्हें एमोरियों की भूमि पर कब्जा कर लेने
में सहायता दी। 11मैंने तुम्हारे कुछ पुत्रों को नबी बनाया।
मैंने तुम्हारे युवकों में से कुछ को नाजीर बनाया। इस्राएल
के लोगों, यह सत्य है।" यहोवा ने यह सब कहा। 12"किन्तु
तुम लोगों ने नाजीरों को दाखमधु पिलाई। तुमने नबियों
को भविष्यवाणी करने से रोका। 13तुम लोग मेरे लिये
भारी बोझ की तरह हो। मैं उस गाड़ी की तरह हूँ जो
अत्याधिक अनाज से लदी होने के कारण झुकी हो।
14कोई भी व्यक्ति बचकर नहीं निकल पाएगा, यहाँ
तक कि सर्वाधिक तेज दौड़ने वाला भी। शक्तिशाली
पुरुष भी पर्याप्त शक्तिशाली नहीं रहेंगे। सैनिक अपने
को नहीं बचा पाएँगे। 15धनुष और बाण वाले भी नहीं
बच पाएंगे। तेज दौड़ने वाले भी नहीं बच निकलेंगे।
घुड़सवार भी जीवित भाग नहीं पाएंगे। उस समय, बहुत
वीर योद्धा भी नंगे हाथों भाग खड़े होंगे। उन्हें अपने
वस्त्र पहनने तक का समय भी नहीं मिलेगा।" यहोवा ने
यह सब कहा है!

इस्राएल को चेतावनी

3 इस्राएल के लोगों, इस सन्देश को सुनो! यहोवा ने
तुम्हारे बारे में यह सब कहा है! यह सन्देश उन
सभी परिवारों (इस्राएल) के लिये है जिन्हें मैं मिस्र देश
से बाहर लाया हूँ।

2"पृथ्वी पर अनेक परिवार हैं। किन्तु तुम अकेले
परिवार हो जिसे मैंने विशेष ध्यान देने के लिये चुना।
किन्तु तुम मेरे विरुद्ध हो गए। अत: मैं तुम्हारे सभी पापों
के लिये दण्ड दूँगा।"

इस्राएल को दण्ड देने का कारण

3दो व्यक्ति तब तक एक साथ नहीं चल सकते जब
तक वे कोई वाचा न करें! 4जंगल में सिंह अपने
शिकार को पकड़ने के बाद ही गरजता है। यदि कोई
जवान सिंह अपनी माँद में गरज रहा हो तो उसका
संकेत यही है कि उसने अपने शिकार को पकड़ लिया
है। 5कोई चिड़िया भूमि पर जाल में तब तक नहीं पड़ेगी
जब तक उसमें कोई चुग्ग न हो और यदि जाल बन्द हो
जाये तो वह चिड़िया को फँसा लेगा। 6यदि कोई तुरही
खतरे की चेतावनी देगी तो लोग भय से अवश्य काँप
उठेंगे। यदि कोई विपत्ति किसी नगर में आई हो तो उसे
यहोवा ने भेजा। 7मेरा स्वामी यहोवा कुछ भी करने का
निश्चय कर सकता है। किन्तु कुछ भी करने से पहले
वह अपने सेवक नबियों को अपनी छिपी योजना बतायेगा।
8यदि कोई सिंह दहाड़ेगा तो लोग भयभीत होंगे। यदि
यहोवा कुछ भविष्यवक्ता से कहेगा तो वह भविष्यवाणी
करेगा।

9-10अशदोद और मिस्र के ऊँचे किलों पर जाओ
और इस सन्देश की घोषणा करो: "शोमरोन के पर्वतों
पर जाओ। वहाँ तुम बड़ी गड़बड़ी पाओगे। क्यों? क्योंकि
लोग नहीं जानते कि ठीक कैसे रहा जाता है। वे अन्य
लोगों के प्रति क्रूर थे। वे अन्य लोगों से चीजें लेते थे
और उन चीजों को अपने ऊँचे किलों में छिपाते थे।
उनके खजाने युद्ध में ली गई उनकी चीजों से भरे हैं।"

11अत: यहोवा कहता है, "उस देश में एक शत्रु
आएगा। वह शत्रु तुम्हारी शक्ति ले लेगा। वह उन चीजों
को ले लेगा जिन्हें तुमने अपने ऊँचे किलों में छिपा रखा
है।"
12यहोवा यह कहता है, "जैसे जब कोई सिंह किसी
मेमने पर झपटता है तो गड़ेरया उस मेमने का केवल
कोई हिस्सा ही बचा सकता है। वह सिंह के मुँह से
उसके दो पैर, या उसके कान के एक हिस्से को ही
खींच सकता है। ठीक इसी तरह इस्राएल के अधिक
लोग नहीं बचाये जा सकेंगे। सामारिया में रहने वाले
लोग अपने बिछौने का कोई कोना या अपनी चौकी का
कोई पाया ही बचा पाएंगे।"
13मेरे स्वामी सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा, यह
कहता है: "याकूब (इस्राएल) के परिवार के लोगों को
इन बातों की चेतावनी दो। 14इस्राएल ने पाप किया और
मैं उनके पापों के लिये उन्हें दण्ड दूँगा। मैं बेतेल की
वेदी को भी नष्ट करूँगा। वेदी की सींगे काट दी जाएंगी
और वे भूमि पर गिर जाएंगी। 15मैं गर्मी के गृहों के साथ
शीतकालीन गृहों को भी नष्ट करूँगा। हाथी दाँत से
सजे गृह भी नष्ट होंगे। अनेकों गृह नष्ट किये जाएंगे।"
यहोवा यह सब कहता है।

आनन्दप्रिय स्त्री

4 शोमरोन के पर्वत की बाशान की गायों मेरी बात
सुनो। तुम गरीब लोगों को चोट पहुँचाती हो। तुम
उन गरीबों को कुचलती हो। तुम अपने अपने पतियों से
कहती हो,"पीने के लिये हमारे लिये कोई दाखमधु
लाओ!"
2मेरा स्वामी यहोवा ने मुझे एक वचन दिया। उसने
अपनी पवित्रता के नाम प्रतिज्ञा की, कि तुम पर विपत्तियाँ
आएंगी। लोग काँटों का उपयोग करेंगे और तुम्हें बन्दी
बनाकर ले जाएंगे। वे तुम्हारे बच्चों को ले जाने के लिये
मछलियों को फँसाने के काँटों का उपयोग करेंगे। 3तुम्हारा
नगर नष्ट होगा। तुम दीवारों के छेदों से नगर के बाहर
जाओगी। तुम अपने आपको शवों के ढेर पर फेंकोगी।
यहोवा यह कहता है: 4"बेतेल जाओ और पाप करो!
गिल्गाल जाओ तथा और अधिक पाप करो। अपनी
बलियों की भेंट प्रात:काल करो। तीन दिन वाले पवित्र
दिनों में अपनी फसल का दसवाँ भाग लाओ 5और
खमीर के साथ बनी धन्यवाद भेंट चढ़ाओ। हर एक को
स्वेच्छा भेंट के बारे में बताओ। इस्राएल, तुम उन्हें
करना पसन्द करते हो। अत: जाओ और वही करो।"
यहोवा ने यह कहा।
6 "मैंने तुम्हें अपने पास बुलाने के लिये कई काम
किये। मैंने तुम्हें खाने को कुछ भी नहीं दिया। तुम्हारे
किसी भी नगर में भोजन नहीं था। किन्तु तुम मेरे पास
वापस नहीं लौटे।" यहोवा ने यह सब कहा।
7"मैंने वर्षा भी बन्द की और यह फसल पकने के
तीन महीने पहले हुआ। अत: कोई फसल नहीं हुई। तब
मैंने एक नगर पर वर्षा होने दी किन्तु दूसरे नगर पर
नहीं। वर्षा देश के एक हिस्से में हुई। किन्तु देश के
अन्य भागों में भूमि बहुत सूख गई। 8अत: दो या तीन
नगरों से लोग पानी लेने के लिये दूसरे नगरों को
लड़खड़ाते हुए गए किन्तु वहाँ भी हर एक व्यक्ति के
लिये पर्याप्त जल नहीं मिला। तो भी तुम मेरे पास
सहायता के लिये नहीं आए।" यहोवा ने यह सब कहा।
9"मैंने तुम्हारी फसलों को गर्मी और बीमारी से मार
डाला। मैंने तुम्हारे बागों और अंगूर के बगीचों को नष्ट
किया। टिड्डियों ने तुम्हारे अंजीर के पेड़ों और जैतून
के पेड़ों को खा डाला। किन्तु फिर भी तुम मेरे पास
सहायता को नहीं आए।" यहोवा ने यह सब कहा।
10"मैंने तुम्हारे विरुद्ध महामारियाँ वैसे ही भेजीं जैसे
मैंने मिस्र में भेजी थीं। मैंने तुम्हारे युवकों को तलवार
के घाट उतार दिया। मैंने तुम्हारे घोड़े ले लिए। मैंने
तुम्हारे डेरों को शवों की दुर्गन्ध से भरा। किन्तु तब भी
तुम मेरे पास सहायता को वापस नहीं लौटे।" यहोवा ने
यह सब कहा। 11"मैंने तुम्हें वैसे ही नष्ट किया जैसे मैंने
सदोम और अमोरा को नष्ट किया था और वे नगर
पूरी तरह नष्ट किये गये थे। तुम आग से खींची गई
जलती लकड़ी की तरह थे। किन्तु तुम फिर भी सहायता
के लिये मेरे पास नहीं लौटे।" यहोवा ने यह सब कहा।
12"अत: इस्राएल, मैं तुम्हारे साथ यह सब करुँगा। मैं
तुम्हारे साथ यह करुँगा। इस्राएल, अपने परमेश्वर से
मिलने के लिये तैयार हो जाओ! 13मैं कौन हूँ? मैं वही
हूँ जिसने पर्वतों को बनाया। मैंने तुम्हारा प्राण बनाया।
मैंने लोगों को अपने विचार जनाए। मैं ही सुबह को
शाम में बदलता हूँ। मैं पृथ्वी के ऊपर के पर्वतों पर
चलता हूँ। मैं कौन हूँ? मेरा नाम यहोवा, सेनाओं का
परमेश्वर है।"

इस्राएल के लिये शोक सन्देश

5 इस्राएल के लोगों, इस सन्देश को सुनो, यह शोक
सन्देश तुम्हारे विषय में है। 2इस्राएल की कुमारी
गिर गई है। वह अब कभी उठेगी नहीं। वह धूलि में पड़ी
अकेली छोड़ दी गई है। उसे उठाने वाला कोई व्यक्ति
नहीं है।
3मेरे स्वामी यहोवा यह कहता है: "हजार सैनिकों के
साथ नगर से जाने वाले अधिकारी केवल सौ सैनिकों
के साथ लौटेंगे। सौ सैनिकों के साथ नगर छोड़ने वाले
अधिकारी केवल दस सैनिको के साथ लौटेंगे।"

यहोवा इस्राएल को अपने पास लौटने के लिये प्रोत्साहित करता है

4यहोवा इस्राएल के घराने से यह कहता है: "मेरी
खोज करते आओ और जीवित रहो।

5“किन्तु बेतेल में न खोजो। गिल्गाल मत जाओ।
सीमा को पार न करो और बेर्शेबा न जाओ। गिल्गल
के लोग बन्दी के रूप में ले जाए जाएंगे और बेतेल नष्ट
किया जाएगा।

6“यहोवा के पास जाओ और जीवित रहो। यदि तुम
यहोवा के यहाँ नहीं जाओगे, तो यूसुफ के घर में आग
लगेगी। आग यूसुफ के परिवार को नष्ट करेगी और
बेतेल में उसे कोई भी नहीं रोक सकेगा।

7-9“तुम्हें सहायता के लिए यहोवा के पास जाना चाहिये।
ये वही है जिसने कचपचिया और मृगशिरा को बनाया।
वह अन्धकार को प्रात: प्रकाश में बदलता है। वह दिन
को अंधेरी रात में बदलता है। वह समुद्र से जल को उठा
कर उसे पृथ्वी पर बरसाता है। उसका नाम यहोवा है
वह शक्तिशाली नगरों के मजबूत किलों को ढहा देताहै।”

इस्राएलियों द्वारा किये गए बुरे काम

लोगों, यह तुम्हारे लिये बहुत बुरा होगा तुमने अच्छाई
को कड़वाहट में बदला। तुमने औचित्य को मार डाला
और इसे धूलि में मिला दिया। 10नबी सामाजिक स्थानों
पर जाते हैं और उन बुरे कामों के विरुद्ध बोलते हैं
जिन्हें लोग किया करते हैं। किन्तु लोग उन नबियों से
घृणा करते हैं। नबी सत्य कहते हैं, किन्तु लोग उन
नबियों से घृणा करते हैं।

11तुम गरीबों से अनुचित कर वसूलते हो। तुम उनसे
ढेर सारा गेहूँ लेते हो और इस धन का उपयोग तुम
तराशे पत्थरों से सुन्दर महल बनाने में करते हो। किन्तु
तुम उन महलों में नहीं रहोगे। तुम अंगूरों की बेलों के
सुन्दर खेत बनाते हो। किन्तु तुम उनसे प्राप्त दाखमधु
को नहीं पीओगे।

12क्यों? क्योंकि मैं तुम्हारे अनेक पापों को जानता
हूँ। तुमने, सच ही, कुछ बुरे काम किये है। तुमने उचित
काम करने वालों को चोट पहुँचाई। तुमने घूस के रूप
में धन लिया। गरीब लोगों के साथ अनेक मुकद्दमों में
तुमने अन्याय किया।

13उस समय बुद्धिमान चुप रहेंगे। क्यों? क्योंकि यह
बुरा समय है।

14तुम कहते हो कि परमेश्वर हमारे साथ है। अत:
अच्छे काम करो, बुरे नहीं। तब तुम जीवित रहोगे और
सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा सच ही तुम्हारे साथ
होगा। 15बुराई से घृणा करो। अच्छाई से प्रेम करो।
न्यायालयों में न्याय वापस लाओ और तब संभव है कि
सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा यूसुफ परिवार के बचे
लोगों पर दयालु हो।

बड़े शोक का समय आ रहा है

16यही कारण है कि मेरा स्वामी सर्वशक्तिमान परमेश्वर
यह कह रहा है, “लोग सभी सार्वजनिक स्थानों में
रोएंगे, लोग सड़को पर रोएंगे। लोग पेशेवर रोने वालों
को भाड़े पर रखेंगे।

17“लोग अंगूर के सभी खेतों में रोएंगे। क्यों? क्योंकि
मैं वहाँ से निकलूँगा और तुम्हें दण्ड दूँगा।” यहोवा ने यह
सब कहा है।

18तुममे से कुछ यहोवा के न्याय के विशेष दिन को
देखना चाहते हैं। तुम उस दिन को क्यों देखना चाहते
हो? यहोवा का विशेष दिन तुम्हारे लिये अन्धकार
लाएगा, प्रकाश नही।

19तुम किसी सिंह के सामने से बच कर भाग निकलने
वाले ऐसे व्यक्ति के समान होगे जिस पर भागते समय
रीछ आक्रमण कर देता है और फिर जब वह उस रीछ
से भी बच निकलकर किसी घर में जा घुसता है तो वहाँ
दीवार पर हाथ रखते ही, उसे साँप डस लेता है!

20अत: यहोवा का विशेष दिन अन्धकार लाएगा,
प्रकाश नहीं, यह शोक का समय होगा उल्लास का
नहीं।

यहोवा इस्राएलियों की आराधना अस्वीकार कर रहाहै

21मै तुम्हारे पवित्र दिनों से घृणा करता हूँ! मैं उन्हें
स्वीकार नहीं करूँगा! मै तुम्हारी धार्मिक सभाओं का
आनन्द नहीं लेता!

22यदि तुम होमबलि और अन्नबलि भी दोगे तो मैं
स्वीकार नहीं करूँगा। तुम जिन मोटे जानवरों को
शान्ति–भेंट के रूप मे दोगे उन्हें मैं देखूँगा भी नहीं।

23 तुम यहाँ से अपने शोरगुल वाले गीतों को दूर
करो। मैं तुम्हारी वीणा के संगीत को नहीं सुनूँगा।

24तुम्हें अपने सारे देश में न्याय को नदी की तरह
बहने देना चाहिये। अच्छाई को सदा सरिता की धारा
की तरह बहने दो जो कभी सूखती नहीं।

25इस्राएल, तुमने चालीस वर्ष तक मरुभूमि में मुझे
बलि और भेंट चढ़ाई।

26 तुम अपने राजा (देवता) सक्कुथ और नक्षत्र
देवता कैवन की मूर्तियों को लेकर चले। इन देवताओं
की मूर्तियों को स्वयं तुमने अपने लिए बनाया था।

27अत: मैं तुम्हें बन्दी बनाकर दमिश्क के पार
पहुँचाऊँगा यह सब यहोवा कहता है। उसका नाम
सर्वशक्तिमान परमेश्वर है।

इस्राएल से अच्छा समय ले लिया जाएगा

6 सिय्योन के तुम लोगों में से कुछ का जीवन बहुत
आराम का है। सामारिया पर्वत के कुछ लोग अपने
को सुरक्षित अनुभव करते है। किन्तु तुम पर अनेक
विपत्तियाँ आएंगी। राष्ट्रों के सर्वोत्तम नगरों के तुम
“सम्मानित” लोग हो। “इस्राएल के लोग” न्याय पाने के
लिए तुम्हारे पास आते है!

2जाओ और कलने पर ध्यान दो। वहाँ से विशाल
नगर हमात को जाओ। पलिश्ती नगर गत को जाओ।
क्या तुम इन राज्यों से अच्छे हो? नहीं। उनके देश
तुम्हारे से बड़े हैं। 3तुम लोग वह काम कर रहे हो, जो
दण्ड के दिन को समीप लाता है। तुम हिंसा के शासन
को समीप, और समीप ला रहे हो।

4किन्तु तुम सभी विलासों का भोग करते हो। तुम
हाथी दाँत की सेज पर सोते हो और अपने बिछौने पर
आराम करते हो। तुम रेवड़ों में से कोमल मेमने और
बाड़ों में से नये बछड़े खाते हो।

5तुम अपनी वीणायें बजाते हो और राजा दाऊद की
तरह अपन वाद्यों पर अभ्यास करते हो।

6तुम सुन्दर प्यालों में दाखमधु पीया करते हो। तुम
सर्वोत्तम तेलों से अपनी मालिश करते हो और तुम्हें
इसके लिये घबराहट भी नहीं कि यूसुफ का परिवार
नष्ट किया जा रहा है।

7वे लोग अब अपने बिछौने पर आराम कर रहे है।
किन्तु उनका अच्छा समय समाप्त होगा। वे बन्दी के
रूप में विदेशों में पहुँचाये जाएंगे और वे प्रथम पकड़े
जाने वालों में से कुछ होंगे। 8मेरे स्वामी यहोवा ने यह
प्रतिज्ञा की थी। उन्होंने अपना नाम सर्वशक्तिमान
परमेश्वर यहोवा लिया और यह प्रतिज्ञा की: "मै उन
बातों से घृणा करता हूँ, "जिन पर याकूब को गर्व है। मैं
उसकी दृढ़ मीनारों से घृणा करता हूँ। अत: मैं शत्रु
को नगर तथा नगर की हर एक चीज लेने दूँगा।"

थोड़े से इस्राएली जीवित बचेंगे

9उस समय, किसी घर में यदि दस व्यक्ति जीवित
बचेंगे तो वे भी मर जाएंगे। 10जब कोई मर जाएगा तब
कोई सम्बन्धी शव लेने आएगा, जिससे वह उसे बाहर
ले जा सके और जला सके। सम्बन्धी घर में से हड्डियों
लेने आएगा। लोग किसी भी उस व्यक्ति से जो घर के
भीतर छिपा होगा, पूछेंगे, "क्या तुम्हारे पास कोई अन्य
शव है?" वह व्यक्ति उत्तर देगा, "नहीं। तब व्यक्ति के
सम्बन्धी कहेंगे, "चुप! हमें यहोवा का नाम नहीं लेना
चाहिये।"

11देखो, परमेश्वर यहोवा आदेश देगा और विशाल
महल टुकड़े–टुकड़े किये जाएंगे और छोटे घर छोटे–छोटे
टुकड़ों में तोड़े जाएंगे।

12क्या घोड़े शिलाखंड़ो पर दौड़ते हैं? नहीं! क्या लोग
समुद्र को बैलों से जोत सकते है? नहीं।

तो भी तुम हर चीज को उलट–पलट देते हो। तुम
अच्छाई और न्याय को जहर में बदल देते हो।

13तुम लो–देवर में प्रसन्न हो, तुम कहते हो, "हमने
करनैम को अपनी शक्ति से जीता है।"

14"किन्तु इस्राएल, मैं तुम्हारे विरुद्ध एक राष्ट्र को
भेजूँगा। वह राष्ट्र तुम्हारे सारे देश को, लेबो–हमात से
लेकर अराबा नाले तक विपत्ति में डालेंगे।" सर्वशक्तिमान
परमेश्वर यहोवा ने वह सब कहा।

दर्शन में टिड्डियाँ

7 यहोवा ने मुझे यह दिखाया: उसने दूसरी फसल
उगने के समय टिड्डी दलों की रचना आरम्भ
कीं। राजा द्वारा प्रथम फसल काट लिये जाने का बाद
यह दूसरी फसल थी। 2टिड्डियों ने देश की सारी घास
खा डाली। उसके बाद मैंने कहा, "मेरे स्वामी यहोवा, मैं
प्रार्थना करता हूँ, हमें क्षमा कर! याकूब बच नहीं
सकता! वह अत्यन्त छोटा है!"

3तब यहोवा ने इसके बारे में अपने विचार को बदला।
यहोवा ने कहा, "ऐसा नहीं होगा।"

दर्शन में आग

4मेरे स्वामी यहोवा ने मुझे ये चीजें दिखाई: मैंने देखा
कि यहोवा परमेश्वर अग्नि को वर्षा की तरह बरसने
के लिए बुला रहा है। अग्नि ने विशाल गहरे समुद्र को
नष्ट कर दिया। अग्नि भूमि को चट करने लगी। 5
किन्तु मैंने कहा, "हे परमेश्वर यहोवा, मैं तुमसे प्रार्थना
करता हूँ, ठहर। याकूब बच नहीं सकता! वह बहुत
छोटा है!"

6तब यहोवा ने इसके बारे में अपना विचार बदला।
परमेश्वर यहोवा ने कहा, "ऐसा नहीं होगा।"

दर्शन में साहुल

7यहोवा ने मुझे यह दिखाया: यहोवा एक दीवार के
सहारे एक साहुल अपने हाथ में लेकर खड़ा हुआ था।
दीवार साहुल से सीधी की गई थी। 8यहोवा ने मुझसे
कहा, "आमोस, तुम क्या देखते हो?"

मैंने कहा, "साहुल।"

तब मेरे स्वामी ने कहा, "देखो, मैं अपने इस्राएल के
लोगों पर साहुल का उपयोग करूँगा। मैं अब और आगे
उनके टेढ़ेपन को नजरन्दाज नहीं करूँगा। मैं उन बुरे
भागों को काट फेकूँगा। 9इसहाक के उच्च स्थान नष्ट
किये जाएंगे। इस्राएल के पवित्र स्थान चट्टान की ढेरों
में बदल दिये जाएंगे। मैं आक्रमण करूँगा और यारोबाम
के परिवार को तलवार के घाट उतारूँगा।"

अमस्याह आमोस को भविष्यवाणी करने से रोकने का प्रयत्न करता है

10बेतेल के याजक अमस्याह ने इस्राएल के राजा
यारोबाम को यह सन्देश भेजा: "आमोस तुम्हारे विरुद्ध
षड़यन्त्र रच रहा है। वह इस्राएल के लोगों को तुम्हारे
विरुद्ध युद्ध के लिये भड़का रहा है। वह इतना अधिक
कह रहा है कि उसके शब्द पूरे देश में भी समा नहीं
सकते। 11आमोस ने कहा है, 'यारोबाम तलवार के घाट

उतरेगा और इस्राएल के लोगों को बन्दी बनाकर अपने देश से बाहर ले जाए जाएंगे।'"

12अमस्याह ने भी आमोस से कहा, "हे दर्शी, यहूदा जाओ और वहीं खाओ। अपने उपदेश वहीं दो। 13किन्तु यहाँ बेतेल में और अधिक उपदेश मत दो! यह यारोबाम का पवित्र स्थान है। यह इस्राएल का मन्दिर है!"

14तब आमोस ने अमस्याह को उत्तर दिया, "मैं पेशेवर नबी नहीं हूँ और मैं नबी के परिवार का नहीं हूँ। मैं पशु पालता हूँ और गूलर के पेड़ो की देखभाल करता हूँ। 15मैं गड़ेरिया था और यहोवा ने मुझे भेड़ों को चराने से मुक्त किया। यहोवा ने मुझसे कहा, 'जाओ, मेरे लोग इस्राएलियों में भविष्यवाणी करो।' 16इसलिये यहोवा के सन्देश को सुनो। तुम मुझसे कहते हो 'इस्राएल के विरुद्ध भविष्यवाणी मत करो। इसहाक के परिवार के विरुद्ध उपदेश मत दो।' 17किन्तु यहोवा कहता है: 'तुम्हारी पत्नी नगर मे वेश्या बनेगी। तुम्हारे पुत्र और पुत्रियाँ तलवार द्वारा मारे जाएंगे। अन्य लोग तुम्हारी भूमि लेंगे और आपस में बाटेंगे और तुम विदेश में मरोगे। इस्राएल के लोग निश्चय ही, इस देश से बन्दी के रूप में ले जाए जाएंगे।'"

दर्शन में पके फल

8 यहोवा ने मुझे यह दिखाया: मैंने ग्रीष्म के फलों की एक टोकरी देखी: 2यहोवा ने पूछा, "आमोस, तुम क्या देखते हो?"

मैंने कहा, "ग्रीष्म के फलों की एक टोकरी।"

तब यहोवा ने मुझसे कहा, "मेरे लोग इस्राएलियों का अन्त आ गया है। मैं उनके पापों को और अनदेखा नहीं कर सकता। 3मन्दिर के गीत शोक गीत बन जाएंगे। मेरे स्वामी यहोवा ने यह सब कहा। सर्वत्र शव ही होंगे। सन्नाटे में लोग शवों को ले जाएंगे और उनके ढेर लगा देंगे।"

इस्राएल के व्यापारी केवल धन बनाने में लगे रहना चाहते है

4मेरी सुनो! लोगों तुम असहायों को कुचलते हो। तुम इस देश के गरीबों को नष्ट करना चाहते हो।

5व्यापारियों, तुम कहते हो, "नवचन्द्र कब बीतेगा, जिससे हम अन्न बेच सकेंगे? सब्त कब बीतेगा, जिससे हम अपना गेहूँ बेचने को ला सकेंगे? हम कीमते बढ़ा सकेंगे, बाटों को हलका कर सकेंगे, और हम तराजुओं को ऐसा व्यवस्थित कर लेगें कि लोगों को ठग सकें।

6"गरीब अपना ऋण वापस नहीं कर सकते अत: हम उन्हें दास के रूप में खरीदेंगे। हम उन गरीबों को एक जोड़ी जूतों की कीमत में खरीदेंगे। अहो! हम उस खराब गेहूँ को भी बेच सकते हैं, जो फर्श पर बिखर गया हो।"

7यहोवा ने प्रतिज्ञा की। उसने "याकूब गर्व" नामक अपने नाम का उपयोग किया और यह प्रतिज्ञा की: "मैं उन लोगों के किये कामों के लिए उन्हें क्षमा नहीं कर सकता।

8"उन कामों के कारण पूरा देश काँप जाएगा। इस देश का हर एक निवासी मृतकों के लिये रोयेगा। पूरा देश मिस्र में नील नदी की तरह उमड़ेगा और नीचे गिरेगा। पूरा देश चारों ओर उछाल दिया जायेगा।"

9यहोवा ने ये बाते भी कहीं: "उस समय, मैं सूरज दोपहर में ही अस्त करूँगा। मैं प्रकाश भरे दिन में पृथ्वी को अन्धकारपूर्ण करूँगा।

10"मैं तुम्हारे पवित्र दिनों को मृतकों के लिए शोक–दिवस में बदलूँगा। तुम्हारे सभी गीत मृतकों के लिये शोक गीत बनेंगे। मैं हर एक को शोक वस्त्र पहनाऊँगा। मैं हर एक सिर को मुँड़वा दूँगा। मैं ऐसा गहरा शोक भरा रोना बनाऊँगा मानो वह एक मात्र पुत्र के शोक का हो। यह एक अत्यन्त कटु अन्त होगा।'

परमेश्वर के संसार के लिए भयंकर भुखमरी पूर्ण भविष्य

11यहोवा कहता है: "देखो, वे दिन समीप आ रहे हैं, जब मैं देश मे भुखमरी लाऊँगा, लोग रोटी के भूखे और पानी के प्यासे नहीं होंगे, बल्कि लोग यहोवा के वचन के भूखे होंगे।

12"लोग एक सागर से दूसरे सागर तक भटकेंगे। वे उत्तर से दक्षिण तक भटकेंगे। वे लोग यहोवा के सन्देश के लिये आगे बढ़ेंगे, पीछे हटेंगे, किन्तु वे उसे पाएंगे नहीं।

13"उस समय सुन्दर युवतियाँ और युवक प्यास के कारण बेहोश हो जाएंगे। 14उन लोगों ने शोमरोन के पाप के नाम पर प्रतिज्ञायें की। उन्होंने कहा, 'दान तुम्हारे देवता की सत्ता निश्चित सत्य है, इससे हम प्रतिज्ञा करते हैं...,' और बेर्शेबा के देवता की सत्ता निश्चित सत्य है, इससे हम प्रतिज्ञा करते है...,' अत: उन लोगों का पतन होगा और वे फिर कभी उठेंगे नहीं।"

दर्शन में यहोवा का वेदी के सहारे खड़ा होना

9 मैंने अपने स्वामी को वेदी के सहारे खड़ा देखा। उसने कहा, "स्तम्भों के सिरे पर प्रहार करो, और पूरी इमारत की देहली तक काँप उठेगी। स्तम्भों को लोगों के सिर पर गिराओ। यदि कोई जीवित बचेगा, सो उसे तलवार से मारो। कोई व्यक्ति भाग सकता है, किन्तु वह बच नहीं सकेगा। लोगों में से कोई भी व्यक्ति बचकर नहीं निकलेगा।

2"यदि वे नीचे पाताल में खोदकर जाएंगें, मैं उन्हें वहाँ से खींच लूँगा। यदि वे ऊपर आकाश में जाएंगे मैं

उन्हें वहाँ से नीचे लाऊँगा।
3यदि वे कर्म्मेल पर्वत की चोटी पर जा छिपेंगे, मैं उन्हें वहाँ खोज लूँगा और मैं उन्हें उस स्थान से ले आऊँगा। यदि वे मुझसे, समुद्र के तल में छिपना चाहते है, मैं सर्प को आदेश दूँगा और वह उन्हें डस लेगा।

4“यदि वे पकड़े जाएंगे और अपने शत्रु द्वारा ले जाए जाएंगे, मैं तलवार को आदेश दूँगा और वह उन्हें वहीं मारेगी। हाँ, मैं उन पर कड़ी निगाह रखूँगा किन्तु मैं उन्हें कष्ट देने के तरीकों पर निगाह रखूँगा। उनके लिये अच्छे काम करने के तरीकों पर नहीं।”

देश के लोगों को दण्ड नष्ट करेगा

5मेरे स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा, उस प्रदेश को छुएगा और वह पिघल जाएगा तब उस देश के सभी निवासी मृतकों के लिए रोएंगे। यह प्रदेश मिस्र की नील नदी की तरह ऊपर उठेगा और नीचे गिरेगा।

6यहोवा ने अपने ऊपर के निवास आकाश के ऊपर बनाए। उसने अपने आकाश को पृथ्वी पर रखा। वह सागर के जल को बुला लेता है, और देश पर उसकी वर्षा करता है। उसका नाम यहोवा है।

यहोवा इस्राएल को नष्ट करने का प्रतीज्ञा करता है

7यहोवा यह कहता है: “इस्राएल, तुम मेरे लिये कूशियों की तरह हो। मैं इस्राएल को मिस्र से निकाल कर लाया। मैं पलिश्तियों को भी कप्तोर से लाया और अरामियों को कीर से।”

8मेरे स्वामी यहोवा पापपूर्ण राज्य (इस्राएल) पर दृष्टि रखा है। यहोवा यह कहता है, “मैं पृथ्वी पर से इस्राएल को नष्ट कर दूँगा। किन्तु मैं याकूब के परिवार को पूरी तरह नष्ट नहीं करूँगा।

9“मैं इस्राएल के घराने को तितर–बितर करके अन्य राष्ट्रों में बिखेर देने का आदेश देता हूँ। यह उसी प्रकार होगा जैसे कोई व्यक्ति अनाज को छनने से छान देता है। अच्छा आटा उससे निकल जाता है, किन्तु बुरे अंश फँस जाते है। याकूब के परिवार के साथ ऐसा ही होगा।

10“मेरे लोगों के बीच पापी कहते हैं, ‘हम लोगों के साथ कुछ भी बुरा घटित नहीं होगा!’ किन्तु वे सभी लोग तलवार से मार दिये जाएँगे!”

परमेश्वर राज्य की पुनस्थापना की प्रतिज्ञा करता है

11“दाऊद का डेरा गिर गया है, किन्तु उस समय इस डेरे को मैं फिर खड़ा करूँगा। मैं दीवारो के छेदों को भर दूँगा। मैं नष्ट इमारतों को फिर से बनाऊँगा। मैं इसे ऐसा बनाऊँगा जैसा यह पहले था।

12फिर वे एदोम में जो लोग बच गये हैं, उन्हें और उन जातियों को जो मेरे नाम से जानी जाती हैं, ले जायेंगा।” यहोवा ने वे बातें कहीं, और वे उन्हें घटित करायेगा।

13यहोवा कहता है, “वह समय आ रहा है, जब हर प्रकार का भोजन बहुतायत में होगा। अभी लोग पूरी तरह फसल काट भी नहीं पायेंहोंगे कि जुताई का समय आ जायेगा। लोग अभी अंगूरों का रस निकाल ही रहे होंगे की अंगूरों की रुपाई का समय फिरआ पहुँचेगा। पर्वतों से दाखमधु की धार बहेगी और वह पहाड़ियों से बरसेगी।

14मैं अपने लोगों इस्राएलियों को देश निकाले से वापस लाऊँगा। वे नष्ट हुए नगरों को फिर से बनाएंगे और उन नगरों में रहेंगे। वे अंगूर की बेलों के बाग लगाएंगे और वे उन बागों से प्राप्त दाखमधु पीएंगे। वे बाग लगाएंगे और वे उन बागों के फलों को खाएंगे।

15मैं अपने लोगों को उनकी भूमि पर जमाऊँगा और वे पुन: उस देश से उखाड़े नहीं जाएंगे जिसे मैंने उन्हें दिया है।” यहोवा तुम्हारे परमेश्वर ने ये बाते कहीं।

ओबद्याह

एदोम दण्डित होगा

1 यह ओबद्याह का दर्शन है। मेरा स्वामी यहोवा एदोम
के बारे में यह कहता है: हमने यहोवा परमेश्वर से
एक सन्देश प्राप्त किया है। राष्ट्रों को एक दूत भेजा
गया है। उसने कहा, "हम एदोम के विरुद्ध लड़ने चलें।"

यहोवा एदोम से कहता है

2"एदोम, मैं तुम्हें सब से छोटा राष्ट्र बना दूँगा लोग
तुमसे बहुत घृणा करेंगे।
3तुम अपने अभिमान के द्वारा छले गये हो। तुम ऊँची
पहाड़ियों की गुफाओं में रहते हो। तुम्हारा घर पहाड़ियों
में ऊँचे पर है। तुम अपने मन में कहते हो, 'मुझे कोई
भी धूल नहीं चटा सकता।'"

एदोम नीचा किया जाएगा

4परमेश्वर यहोवा यह कहता है: "यद्यपि तुम उकाब
की तरह ऊपर उड़ो, और अपना घोंसला तारों के बीच
बना लो, तो भी मैं तुम्हें वहाँ से नीचे उतारूँगा।"
5तुम सचमुच बरबाद हो जाओगे! देखो! कोई चोर
तुम्हारे यहाँ आता है! जब, रात में डाकू आते है! तो वे
भी उतना ही चुराकर या लूटकर ले जाते हैं जितना ले
जा सकते हैं! तुम्हारे अंगूर के बगीचों में जब अंगूर
तोड़ने वाले आते हैं तो अंगूर तोड़ने के बाद वे भी अपने
पीछे कुछ न कुछ छोड़ ही जाते हैं।
6 किन्तु हे एदोम! तुझसे तेरा सब कुछ छिन जायेगा।
लोग तेरे सभी छिपे खजानों को ढूँढ निकालेंगे और
हथिया लेंगे!
7वे सभी लोग जो तुम्हारे मित्र हैं, तुम्हें देश से बाहर
जाने को विवश करेंगे। तुम्हारे साथ शान्तिपूर्वक रहने
वाले तुम्हें धोखा देंगे और तुमको हराएंगे। वे लोग
तुम्हारी रोटी तुम्हारे साथ खायेंगे। किन्तु वे तुम्हें जाल में
फँसाने की योजना बना रहे हैं। 'किन्तु तुम उसे जान
नहीं पाओगे!"
8यहोवा कहता है: उस दिन, मैं एदोम के बुद्धिमानों
को नष्ट करूँगा और मैं एसाव पर्वत से समझदारी को
नष्ट कर दूँगा।
9तब तेमान, तुम्हारे शक्तिशाली लोग भयभीत होंगे
और एसाव पर्वत का हर व्यक्ति नष्ट होगा।
10तुम शर्म से गड़ जाओगे, और तुम सदैव के लिये
नष्ट हो जाओगे। क्योंकि अपने भाई याकूब के प्रति तुम
इतने अधिक क्रूर निकले।
11उस समय तुम सहायता किये बिना दूसरी ओर खड़े
रहे। अजनबी याकूब का खजाना ले गए। विदेशी इस्राएल
के नगर-द्वार में घुसे। उन विदेशियों ने गोट डालकर
यह निश्चय किया कि वे यरूशलेम का कौन सा भाग
लेंगे। उस समय तुम उन विदेशियों के समान ही थे।
12तुम अपने भाई के विपत्ति काल में उस पर हँसे,
तुम्हें यह नहीं करना चाहिये था। तुम तब प्रसन्न थे जब
लोगों ने यहूदा को नष्ट किया। तुम्हें वैसा नहीं करना
चाहिये था। उनकी विपत्ति के समय तुमने उसकी खिल्ली
उड़ाई। तुम्हें वैसा नहीं करना चाहिये था। 13तुम मेरे
लोगों के नगर-द्वार में घुसे और उनकी समस्याओं पर
हँसे। तुम्हें वह नहीं करना चाहिये था। उनके उस
विपत्ति काल में तुमने उनके खजाने लिये, तुम्हें वह
नहीं करना चाहियेथा।
14 तुम चौराहों पर खड़े हुए और तुमने जान बचाकर
भागने की कोशिश करने वाले लोगों को मार डाला।
तुम्हें वैसा नहीं करना चाहिये था। तुमने उन लोगों को
पकड़ लिया जो जीवित बच निकले थे। तुम्हें वह नहीं
करना चाहिए था।

सभी राष्ट्रों का न्याय होना

15सभी राष्ट्रों पर शीघ्र ही यहोवा का दिन आ रहा है।
तुमने दूसरे लोगों के साथ बुरा किया। वे ही बुराईयाँ
तुम्हारे साथ घटित होंगी। वे सभी बुराईयाँ तुम्हारे ही
सिर पर उतर आएंगी।
16क्योंकि जैसे तुमने मेरे पवित्र पर्वत पर दाखमधु
पीकर विजय की खुशी मनाई। वैसे ही सभी जातियाँ
निरन्तर मेरे दण्ड को पीएंगी और उसे निगलेंगी और
उनका लोप हो जायेगा।
17किन्तु सिय्योन पर्वत पर कुछ बचकर रह जाने
वाले होंगे। यह मेरा पवित्र स्थान होगा। याकूब का राष्ट्र
उन चीजों को वापस पाएगा जो उसकी थीं।
18याकूब का परिवार जलती आग-सा होगा। यूसुफ
का राष्ट्र जलती लपटों जैसा बन जायेगा। किन्तु एसाव

का राष्ट्र राख की तरह होगा। यहूदा के लोग एदोमी
लोगों को नष्ट करेंगे। एसाव के राष्ट्र में कोई जीवित
नहीं रहेगा। क्यों? क्योंकि परमेश्वर यहोव ने ऐसा कहा।
19तब नेगव के लोग एसाव पर्वत पर रहेंगे और पर्वत
की तराईयों के लोग पलिश्ती प्रदेश को लेंगे। परमेश्वर
के वे लोग एप्रैम और शोमरोन की भूमि पर रहेंगे।
गिलाद, बिन्यामीन का होगा।

20इस्राएल के लोग अपने घर छोड़ने को विवश किये
गए थे। किन्तु वे लोग कनानियों का प्रदेश सारपत तक
ले लेंगे। यहूदा के लोग यरूशलेम छोड़ने और सपाराद में
रहने को विवश किये गए थे। किन्तु वे लोग नेगव के
नगरों को लेंगे। 21विजयी सिय्योन पर्वत पर होंगे। वे
लोग एसाव पर्वत के निवासियों पर शासन करेंगे और
राज्य यहोवा का होगा।

योना

परमेश्वर का बुलावा और योना का भागना

1 अमित्तै के पुत्र योना से यहोवा ने कहा। यहोवा ने
कहा, **2**“नीनवे एक बड़ा नगर है। वहाँ के लोग जो
पाप कर्म कर रहे हैं, उनमें बहुत से कुकर्मों के बारे में
मैंने सुना है। इसलिए तू उस नगर में जा और वहाँ के
लोगों को बता कि वे उन बुरे कर्मों का करना त्याग
दें।”

3योना परमेश्वर की बात नहीं मानना चाहता था, सो
योना ने यहोवा से कहीं दूर भाग जाने का प्रयत्न किया।
सो योना यापो की ओर चला गया। योना ने एक नौका
ली जो सुदूर नगर तर्शीश को जा रही थी। योना ने
अपनी यात्रा के लिए धन दिया और वह नाव पर जा
चढ़ा। योना चाहता था कि इस नाव पर वह लोगों के
साथ तर्शीश चला जाये और यहोवा से कहीं दूर भाग
जाये।

भयानक तूफान

4किन्तु यहोवा ने सागर में एक भयानक तूफान उठा
दिया। आँधी से सागर में थपेड़े उठने लगे। तूफान इतना
प्रबल था कि वह नाव जैसे बस टूक टूक होने जा रही
थी। **5**लोग चाहते थे कि नाव को डूबने से बचाने के
लिये उसे कुछ हलका कर दिया जाये। सो वे नाव के
सामान को उठा कर समुद्र में फेंकने लगे। मल्लाह
बहुत डरे हुए थे। हर व्यक्ति अपने अपने देवता से
प्रार्थना करने लगा।

योना सोने के लिये नाव में नीचे चला गया था। योना
सो रहा था। **6**नाव के प्रमुख खिवैया ने योना को इस
रूप में देखकर कहा, “उठ! तू क्यों सो रहा है? अपने
देवता से प्रार्थना कर! हो सकता है, तेरा देवता तेरी
प्रार्थना सुन ले और हमें बचा ले!”

यह तूफान क्यों आया?

7लोग फिर आपस में कहने लगे, “हमें यह जानने के
लिये कि हम पर ये विपत्तियाँ किसके कारण पड़ रही
हैं, हमें पासे फेंकने चाहियें।”

सो लोगों ने पासे फेंके। पासों से यह प्रकट हुआ कि
यह विपत्ति योना के कारण आई है। **8**इस पर लोगों ने
योना से कहा, “यह किसका दोष है, जिसके कारण यह
विपत्ति हम पर पड़ रही है! सो तूने जो किया है, उसे तू
हमें बता। हमें बता तेरा काम धन्धा क्या है? तू कहाँ से
आ रहा है? तेरा देश कौन सा है? तेरे अपने लोग कौन
हैं?”

9योना ने लोगों से कहा, “मैं एक हीब्रू (यहूदी) हूँ और
स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा की उपासना करता हूँ। वह
वही परमेश्वर है, जिसने सागर और धरती को रचा
है।”

10योना ने लोगों से कहा कि, वह यहोवा से दूर भाग
रहा है। जब लोगों को इस बात का पता चला, तो वह
बहुत अधिक डर गये। लोगों ने योना से पूछा, “तूने
अपने परमेश्वर के विरुद्ध क्या बुरी बात की है?”

11उधर आँधी तूफान और समुद्र की लहरें प्रबल से
प्रबलतर होती चली जा रही थीं। सो लोगों ने योना से
कहा, “हमें अपनी रक्षा के लिये क्या करना चाहिये?
समुद्र को शांत करने के लिये हमें तेरे साथ क्या करना
चाहिये?”

12योना ने लोगों से कहा, “मैं जानता हूँ कि मेरे
कारण ही समुद्र में यह तूफान आया है। सो तुम लोग
मुझे समुद्र में फेंक दो। इससे तूफान शांत हो जायेगा।”

13किन्तु लोग योना को समुद्र में फेंकना नहीं चाहते
थे। लोग नाव को तट पर वापस लाने के लिये, उसे खेने
का प्रयत्न करने लगे। किन्तु वे वैसा कर नहीं पाये,
क्योंकि आँधी, तूफान और सागर की लहरें बहुत
शक्तिशाली थीं और वे प्रबल से प्रबल होती चली जा रही
थीं!

योना का दण्ड

14सो लोगों ने यहोवा को पुकारते हुए कहा, “हे
यहोवा, इस पुरुष को हम इसके उन बुरे कामों के लिए
समुद्र में फेंक रहे हैं, जो इसने किये हैं। कृपा कर के,
तू हमें किसी निरपराध व्यक्ति का हत्यारा मत कहना।
इसके वध के लिए तू हमें मत मार डालना। हम जानते
हैं कि तू यहोवा है और तू जैसा चाहेगा, वैसा ही करेगा।
किन्तु कृपा करके हम पर दयालु हो।”

15सो लोगों ने योना को समुद्र में फेंक दिया। तूफान
रुक गया, सागर शांत हो गया! **16**जब लोगों ने यह देखा,
तो वे यहोवा से डरने लगे और उसका सम्मान करने

लगे। लोगों ने एक बलि अर्पित की, और यहोवा से
विशेष मन्नते माँगी।
17योना जब समुद्र में गिरा, तो यहोवा ने योना को
निगल जाने के लिए एक बहुत बड़ी मछली भेजी। योना
तीन दिन और तीन रात तक उस मछली के पेट में
रहा।

2 योना जब मछली के पेट में था, तो उसने अपने
परमेश्वर यहोवा की प्रार्थना की। योना ने कहा,
2"मैं गहरी विपत्ति में था। मैंने यहोवा की दुहाई दी
और उसने मुझको उत्तर दिया! मैं गहरी कब्र के बीच
था हे यहोवा, मैंने तुझे पुकारा और तूने मेरी पुकार
सुनी!
3"तूने मुझको सागर में फेंक दिया था। तेरी शक्तिशाली
लहरों ने मुझे थपेडे मारे मैं सागर के बीच में, मैं गहरे
से गहरा उतरता चला गया। मेरे चारों तरफ बस पानी
ही पानी था। 4फिर मैंने सोचा, 'अब मैं, जाने को विवश
हूँ, जहाँ तेरी दृष्टि मुझे देख नहीं पाएगी।' किन्तु मैं
सहायता पाने को तेरे पवित्र मन्दिर की ओर निहारता
रहूँगा।
5"सागर के जल ने मुझे निगल लिया है। पानी ने मेरा
मुख बन्द कर दिया, और मेरा साँस घुट गया। मैं गहन
सागर के बीच मैं उतरता चला गया मेरे सिर के चारों
ओर शैवाल लिपट गये हैं। 6मैं सागर की तलहटी पर
पड़ा था, जहाँ पर्वत जन्म लेते हैं। मुझको ऐसा लगा, जैसे
इस बन्दीगृह के बीच सदा सर्वदा के लिये मुझ पर ताले
जड़े हैं। किन्तु हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तूने मुझको मेरी
इस कब्र से निकाल लिया! हे परमेश्वर, तूने मुझको
जीवन दिया!
7"जब मैं मूर्छित हो रहा था। तब मैंने यहोवा का
स्मरण किया हे यहोवा, मैंने तुझसे विनती की और तूने
मेरी प्रार्थनाएं अपने पवित्र मन्दिर में सुनी। 8कुछ लोग
व्यर्थ के मूर्तियों की पूजा करते हैं, किन्तु उन मूर्तियों ने
उनको कभी सहारा नहीं दिया। 9मुक्ति तो बस केवल
यहोवा से आती है! हे यहोवा, मैं तुझे बलियाँ अर्पित
करूँगा, और तेरे गुण गाऊँगा। मैं तेरा धन्यवाद करूँगा।
मैं तेरी मन्नते मानूँगा और अपनी मन्नतों को पूरा
करूँगा।"
10फिर यहोवा ने उस मछली से कहा और उसने
योना को सूखी धरती पर अपने पेट से बाहर उगल
दिया।

परमेश्वर का बुलावा और योना का आज्ञापालन

3 इसके बाद यहोवा ने योना से फिर कहा। यहोवा ने
कहा, 2"तू नीनवे के बड़े नगर में जा और वहाँ जा
कर, जो बातें मैं तुझे बताता हूँ, उनकी शिक्षा दे।"
3सो यहोवा की आज्ञा मान कर योना नीनवे को चला
गया। नीनवे एक विशाल नगर था। वह इतना विशाल
था, कि उस नगर में एक किनारे से दूसरे किनारे तक
व्यक्ति को पैदल चल कर जाने में तीन दिन का समय
लगताथा।
4सो योना ने नगर की यात्रा आरम्भ की और सारे
दिन चलने के बाद, उसने लोगों को उपदेश देना आरम्भ
कर दिया। योना ने कहा, "चालीस दिन बाद नीनवे
तबाह हो जायेगा!"
5परमेश्वर की ओर से मिले इस सन्देश पर, नीनवे
के लोगों ने विश्वास किया और उन लोगों ने कुछ
समय के लिए खाना छोड़ कर अपने पापों पर सोच–विचार
करने का निर्णय़ लिया। लोगों ने अपना दुःख व्यक्त
करने के लिये विशेष प्रकार के वस्त्र धारण कर लिये।
नगर के सभी लोगों ने चाहे वे बहुत बड़े या बहुत छोटे
हो, ऐसा ही किया।
6नीनवे के राजा ने ये बातें सुनीं और उसने भी अपने
बुरे कामों का शोक मनाया। इसके लिये राजा ने अपना
सिंहासन छोड़ दिया। उसने अपने राजसी वस्त्र हटा दिये
और अपना दुःख व्यक्त करने के लिए शोकवस्त्र धारण
कर लिये। इसके बाद वह राजा धूल में बैठ गया। 7राजा
ने एक विशेष सन्देश लिखवाया और उस सन्देश की
सारे नगर में घोषणा करवा दी:

राजा और उसके बड़े शासकों की ओर से आदेश
था:
कुछ समय के लिये कोई भी पुरुष अथवा कोई
भी पशु कुछ भी नहीं खायेगा। किसी रेवड़ या
पशुओं के झुण्ड को चरागाहों में नहीं जाने दिया
जायेगा। नीनवे के सजीव प्राणी न तो कुछ खायेंगे
और न ही जल पीयेंगे। 8बल्कि हर व्यक्ति और
हर पशु टाट धारण करेंगे जिससे यह दिखाई दे कि
वे दुःखी हैं। लोग ऊँचे स्वर में परमेश्वर को
पुकारेंगे। हर व्यक्ति को अपना जीवन बदलना
होगा और उसे चाहिये कि वह बुरे कर्म करना
छोड़ दे। 9तब हो सकता है कि परमेश्वर की इच्छा
बदल जाये और उसने जो योजना रच रखी है, वैसी
बातें न करे। हो सकता है परमेश्वर की इच्छा
बदल जाये और कुपित न हो। तब हो सकता है
कि हमें दण्ड न दिया जाये।

10 लोगों ने जो बातें की थी, उन्हें परमेश्वर ने देखा।
परमेश्वर ने देखा कि लोगों ने बुरे कर्म करना बन्द
कर दिया है। सो परमेश्वर ने अपना मन बदल लिया
और जैसा करने की उसने योजना रची थी, वैसा नहीं
किया। परमेश्वर ने लोगों को दण्ड नहीं दिया।

परमेश्वर की करुणा से योना कुपित

4 योना इस बात पर प्रसन्न नहीं था कि परमेश्वर ने
नगर को बचा लिया था। योना क्रोधित हुआ।

2उसने यहोवा से शिकायत करते हुए कहा, "मैं
जानता था कि ऐसा ही होगा! मैं तो अपने देश में था,
और तूने ही मुझसे यहाँ आने को कहा था। उसी समय
मुझे यह पता था कि तू इस पापी नगर के लोगों को
क्षमा कर देगा। मैंने इसलिये तर्शीश भाग जाने की सोची
थी। मैं जानता था कि तू एक दयालु परमेश्वर है! मैं
जानता था कि तू करुणा दर्शाता है और लोगों को दण्ड
देना नहीं चाहता! मुझे पता था कि तू करुणा से पूर्ण है!
मुझे ज्ञान था कि यदि इन लोगों ने पाप करना छोड़
दिया तो तू इनके विनाश की अपनी योजनाओं को
बदल देगा। 3सो हे यहोवा, अब मैं तुझसे यही माँगता हूँ,
कि तू मुझे मार डाल। मेरे लिये जीवित रहने से मर
जाना उत्तम है!"

4इस पर यहोवा ने कहा, "क्या तू सोचता है कि बस
इसलिए कि मैं ने उन लोगों को नष्ट नहीं किया, तेरा
क्रोध करना उचित है?"

5इन सभी बातों से योना अभी भी कुपित था। सो वह
नगर के बाहर चला गया। योना एक ऐसे स्थान पर
चला गया था जो नगर के पूर्वी प्रदेश के पास ही था।
योना ने वहाँ अपने लिये एक पड़ाव बना लिया। फिर
उसकी छाया में वहीं बैठे-बैठे वह इस बात की बाट
जोहने लगा कि देखें इस नगर के साथ क्या घटता है?

रेंड़ का पौधा और कीड़ा

6उधर यहोवा ने रेंड़ का एक ऐसा पौधा लगाया जो
बहुत तेज़ी से बढ़ा और योना पर छा गया। इसने योना
को बैठने के लिए एक शीतल स्थान बना दिया। योना
को इससे और अधिक आराम प्राप्त हुआ। इस पौधे के
कारण योना बहुत प्रसन्न था।

7अगले दिन सुबह उस पौधे का एक भाग खा डालने
के लिये परमेश्वर ने एक कीड़ा भेजा। कीड़े ने उस
पौधे को खाना शुरु कर दिया और वह पौधा मुरझा
गया। 8सूरज जब आकाश में ऊपर चढ़ चुका था,
परमेश्वर ने पुरवाई की गर्म हवाएँ चला दीं। योना के
सिर पर सूरज चमक रहा था, और योना एक दम
निर्बल हो गया था। योना ने परमेश्वर से चाहा कि वह
उसे मौत दे दे। योना ने कहा, "मेरे लिये जीवित रहने से
अच्छा है कि मैं मरजाऊँ।"

9किन्तु परमेश्वर ने योना से कहा, "बता, तेरे विचार
में क्या सिर्फ इसलिए कि यह पौधा सूख गया है, तेरा
क्रोध करना उचित है?"

योना ने उत्तर दिया, "हाँ, मेरा क्रोध करना उचित ही
है! मुझे इतना क्रोध आ रहा है कि जैसे बस मैं अपने
प्राण ही दे दूँ!"

10इस पर यहोवा ने कहा, "देख, उस पौधे के लिये
तूने तो कुछ भी नहीं किया! तूने उसे उगाया तक नहीं।
वह रात में फूटा था और अगले दिन नाश हो गया और
अब तू उस पौधे के लिये इतना दु:खी है। 11यदि तू उस
पौधे के लिए व्याकुल हो सकता है, तो देख नीनवे जैसे
बड़े नगर के लिये जिसमें बहुत से लोग और बहुत से
पशु रहते हैं, जहाँ एक लाख बीस हजार से भी अधिक
लोग रहते हैं और जो यह भी नहीं जानते कि वे कोई
गलत काम कर रहे हैं, उनके लिये क्या मैं तरस न
खाऊँ!"

मीका

शोमरोन और इस्राएल को दण्ड दिया जायेगा

1 यहोवा का वह वचन जो राजा योताम, आहाज और
हिजकिय्याह के समय में मीका को प्राप्त हुआ। ये
पुरुष यहूदा के राजा थे। मीका मोरेशेती से था। मीका
ने शोमरोन और यरूशलेम के बारे में ये दर्शन
देखे।
2हे लोगों, तुम सभी सुनो! हे धरती और जो कुछ
धरती पर है, सुन। मेरा स्वामी यहोवा इस पवित्र मन्दिर
से जायेगा। मेरा स्वामी तुम्हारे विरोध में एक साक्षी के
रूप में आयेगा।
3देखो, यहोवा अपने स्थान से बाहर जा रहा है। वह
धरती के ऊँचे स्थानों पर चलने के लिये उतर कर
नीचे आ रहा है।
4परमेश्वर यहोवा के पांव तले पहाड़ पिघल जायेंगे,
घाटियाँ चरमरा जायेंगी। जैसे आग के सामने मोम पिघल
जाता है, जैसे ढलान से पानी उतरता हुआ बहता है।
5ऐसा क्यों होगा? यह इसलिये होगा कि याकूब ने पाप
किया है। क्योंकि इस्राएल के वंश ने पाप किया है।

शोमरोन, पाप का कारण

याकूब से किसने पाप मानने से मना करवाया है?
वह तो शोमरोन है! यहूदा में और कौन ऊँचा स्थान है?
यह तो यरूशलेम है!
6इसलिये मैं शोमरोन को खाली मैदान के खण्डहरों
का ढ़ेर बनाऊँगा। वह ऐसा स्थान हो जायेगा जिसमें
अंगूर लगाये जाते हैं। मैं शोमरोन के पत्थरों को घाटी में
नीचे उखाड़ फेंकूँगा और मैं उसकी नीवों को बर्बाद
करदूँगा!
7उसके सारे मूर्ति टुकड़ों में तोड़ दिये जायेंगे। सारा
धन, जो भी इसने कमाया है, आग से भस्म होगा और
मैं इसके झूठे देवताओं की मूर्तियों को नष्ट कर दूँगा
क्योंकि शोमरोन से ये वस्तुएँ मेरे प्रति सच्चा न रहकर
के पाई। सो ये सारी वस्तुएँ दूसरों के पास चली जायेंगी।
ऐसे लोगों के पास जो मेरे प्रति सच्चे नहीं हैं।

मीका का महान दुःख

8मैं इस शीघ्र आने वाले विनाश के कारण व्याकुल
होऊँगा और हाय–हाय करूँगा। मैं जूते न पहनूँगा और
न वस्त्र धारण करूँगा। गीदड़ों के जैसे मैं जोर से
चिल्लाऊँगा। मैं विलाप करूँगा जैसे शुतुर्मुर्ग करते हैं।
9शोमरोन का घाव नहीं भर सकता है। उसकी व्याधि
(पाप) यहूदा तक फैल गया है। यह मेरे लोगों के नगर–द्वार
तक पहुँच गया बल्कि यह तो यरूशलेम तक आ गया
है।
10इसकी बात गात की नगरी में मत करो। अको में
मत रोओ। विलाप करो और बेत–आप्रा को मिट्टी में
लोटों। 11हे शापीर की निवासिनी, तू अपनी राह नंगी
चली जा और लज्जाहीन हो कर चली जा। वे लोग, जो
सानान के निवासी हैं, बाहर नही निकलेंगे। बेतेसेल के
लोग रोये बिलखायेगें और तुम से इसका सहारा लेंगे।
12ऐसा वह व्यक्ति जो मारोत का निवासी है, सुसमाचार
आने को बाट जोहता हुआ दुर्बल हुआ जा रहा है। क्यों?
क्योंकि यहोवा से नीचे यरूशलेम के नगर द्वार पर
विपत्ती के उतरी है।
13हे लाकीश की निवासियों, तुम वेगवान घोड़ों को
रथ में जोतो। सिय्योन के पाप लाकीश में शुरु हुए थे।
क्यों? क्योंकि तू इस्राएल के पापों का अनुसरण करती
है।
14सो तुझे गात में मोरेशेत को विदा के उपहार देने
हैं। इस्राएल के राजा को अकजीब के घराने छलेंगे।
15हे मारेशा के निवासियों, तेरे विरुद्ध मैं एक व्यक्ति
को लाऊँगा जो तेरी सब वस्तुओं को छीन लेगा। इस्राएल
की महिमा (परमेश्वर) अदुल्लाम में आयेगी।
16इसलिये तू अपने बाल काट ले और तू गंजा बन
जा। क्यों? क्योंकि तू अपने बच्चों के लिये जिनसे तू
प्यार करता था रोये चिल्लायेगा और तू शोक दर्शाने
के लिये गंजा गिद्ध बन जा। क्यों? क्योंकि वे तुझको
छोड़ने को और बाहर निकल जाने को विवश हो
जायेंगे।

लोगों की बुरी योजनाएँ

2 ऐसे उन लोगों पर विपत्तियाँ गिरेंगी, जो पापपूर्ण
योजना बनाते हैं। ऐसे लोग बिस्तर में सोते हुए
षड़यन्त्र रचते हैं और पौ फटते ही वे अपने षड़यन्त्रों पर
चलने लगते हैं। क्यों? क्योंकि उन के पास उन्हें पूरा
करने की शक्ति है।

2उन्हें खेत चाहिये सो वे उनको ले लेते हैं। उनको
घर चाहिये सो वे उनको ले लेते हैं। वे किसी व्यक्ति को
छलते हैं और उसका घर छीन लेते हैं। वे किसी व्यक्ति
को छलते हैं और वे उससे उसकी वस्तुएँ छीन लेते हैं।

लोगों को दण्ड देने की यहोवा की योजनाएँ

3इसलिये यहोवा ये बातें कहता है, "देखो, मैं इस
परिवार पर विपत्तियाँ ढाने की योजना रच रहा हूँ। तुम
अपनी सुरक्षा नहीं कर पाओगे। इस जुए के बोझ से तुम
सिर ऊँचा करके नहीं चल पाओगे। क्यों? क्योंकि यह
एक बुरा समय होगा।

4उस समय लोग तेरी हँसी उड़ाएँगे। तेरे बारे में लोग
करुण गीत गायेंगे और वे कहेंगे:

'हम बर्बाद हो गये! यहोवा ने मेरे लोगों की धरती
छीन ली है और उसे दूसरे लोगों को दे दिया है। हाँ
उसने मेरी धरती को मुझसे छीन लिया है। यहोवा ने
हमारी धरती हमारे शत्रुओं के बीच बाँट दी है।'

5"तेरी भूमि कोई व्यक्ति नाप नहीं पायेगा। यहोवा के
लोगों में भूमि को बाँटने के लिये लोग पासे नहीं डालेंगे।"

मीका को उपदेश देने को मना करना

6लोग कहा करते हैं, "तू हमको उपदेश मत दे। उन्हें
ऐसे नहीं कहना चाहिये, हम पर कोई भी बुरी बात नहीं
पड़ेगी।" 7हे याकूब के लोगों,किन्तु मुझे ये बातें कहनी
हैं,"जो काम तूने किये हैं, यहोवा उनसे क्रोधित हो रहा
है। यदि तुम लोग उचित रीति से जीवन जीते तो मैं
तुम्हारे लिये अच्छे शब्द कहता।"

परमेश्वर के लोग परमेश्वर के शत्रु हो गये

8किन्तु अभी हाल में, मेरे ही लोग मेरे शत्रु हो गये हैं।
तुम राहगीरों के कपड़े उतारते हो। जो लोग सोचते हैं
कि वे सुरक्षित हैं, किन्तु तुम उनसे ही वस्तुएँ छीनते हो
जैसे वे युद्धबन्दी हो।

9मेरे लोगों की स्त्रियों को तुमने उनके घर से निकल
जाने को विवश किया जो घर सुन्दर और आराम देह
थे। तुमने मेरी महिमा को उनके नन्हे बच्चों से सदा–सदा
के लिये छीन लिया है। 10उठो और यहाँ से भागो! यह
विश्राम का स्थान नहीं है। क्योंकि यह स्थान पवित्र नहीं
है, यह नष्ट हो गया! यह भयानक विनाश है।!

11सम्भव है, कोई झूठा नबी आये और वह झूठ
बोले। सम्भव है, वह कहे, "ऐसा समय आयेगा जब
दाखमधु बहुत होगा, जब मदिरा बहुतायत में होगी और
फिर इस तरह वह उसका नबी बन जायेगा।"

यहोवा अपने लोगों को एकत्र करेगा

12हाँ, हे याकूब के लोगों, मैं तुम सब को ही इकट्ठा
करूँगा। मैं इस्राएल के बचे हुए लोगों को एकत्र करूँगा।
जैसे बाड़े में भेड़े इकट्ठी की जाती हैं, वैसे ही मैं उनको
एकत्र करूँगा जैसे किसी चरागाह में भेंड़ो का झुण्ड।
फिर तो वह स्थान बहुत से लोगों के शोर से भर
जायेगा। 13उनमें से कोई एक मुक्तिदाता उभरेगा। प्राचीर
तोड़ता वहाँ द्वार बनाता, वह अपने लोगों के सामने
आयेगा। वे लोग मुक्त होकर उस नगर को छोड़ निकलेंगे।
उनके सामने उनका राजा चलेगा। लोगों के सामने
उनका यहोवा होगा।

इस्राएल के मुखिया बुराई के अपराधी हैं

3 फिर मैंने कहा, "हे याकूब के मुखियाओं, अब
सुनो। हे इस्राएल के प्रजा के शासकों, अब सुनो।
तुमको जानना चाहिये कि न्याय क्या होता है!

2"किन्तु तुमको नेकी से घृणा है और तुम लोगों की
खाल तक उतार लेते हो। तुम लोगों की हड्डियों से माँस
नोच लेते हो!

3"तुम मेरे लोगों को नष्ट कर रहे हो! तुम उनकी
खाल तक उनसे उतार रहे हो और उनकी हड्डियाँ
तोड़ रहे हो। तुम उनकी हड्डियाँ ऐसे तोड़ रहे हो जैसे
हांडी में माँस चढ़ाने के लिये।

4"तुम यहोवा से विनती करोगे किन्तु वह तुम्हें उत्तर
नहीं देगा। नहीं, यहोवा अपना मुख तुमसे छुपायेगा।
क्यों? क्योंकि तुमने बुरे कर्म किये हैं!"

झूठे नबी

5झूठे नबी यहोवा के लोगों को जीवन की उल्टी
रीति सिखाते हैं। यहोवा उन झूठे नबियों के विषय में
यह कहता है:

"यदि लोग इन नबियों को खाने को देते हैं, तो वे
चिल्लाकर कहते हैं, तुम्हारे संग शान्ति हो, किन्तु यदि
लोग उन्हें खाने को नहीं देते तो वे सेना को उनके
विरुद्ध युद्ध करने को प्रेरित करते हैं।

6"इसलिये यह तुम्हारे लिये रात सा होगा। तुम कोई
दर्शन नहीं देख पाओगे। भविष्य के गर्त में जो छिपा है,
तुम बता नहीं पाओगे। इसलिये यह तुमको अन्धेरे जैसा
लगेगा। नबियों पर सूर्य छिप जायेगा और उनके ऊपर
दिन काला पड़ जायेगा।

7"भविष्य के दृष्टा लज्जित हो जायेंगे। वे लोग, जो
भविष्य देखतें हैं, उनके मुँह काले हो जायेंगे। हाँ, वे
सभी अपना मुँह बन्द कर लेंगे। क्यों? क्योंकि वहाँ
परमेश्वर की ओर से कोई उत्तर नहीं होगा!"

मीका परमेश्वर का सच्चा नबी है

8"किन्तु यहोवा की आत्मा ने मुझको शक्ति, नेकी,
और सामर्थ्य से भर दिया था। मैं याकूब को उसके पाप
बतलाऊँगा। हाँ, मैं इस्राएल को उसके पापों के विषय में
कहूँगा!

इस्राएल के मुखिया दोषी हैं

9हे याकूब के मुखियाओं, इस्राएल के शासकों, तुम
मेरी बात सुनो! तुम खरी राहों से घृणा करते हो! यदि
कोई वस्तु सीधी हो तो तुम उसे टेढ़ी कर देते हो!
10तुमने सिय्योन का निर्माण लोगों की हत्या करके
किया। तुमने यरूशलेम को पाप के द्वारा बनाया
था!11यरूशलेम के न्यायाधीश उनके पक्ष में जो न्यायालय
में जीतेगा, निर्णय देने के लिए घूस लिया करते हैं।
यरूशलेम के याजकों को धन देना पड़ता है, इसके
पहले कि वे लोगों को सीख दें। लोगों को नबियों को
धन देना पड़ता है। इसके पहले कि वे भविष्य में झाँके
और फिर भी वे मुखिया सोचते हैं कि उन पर कोई
दण्ड नहीं पड़ सकता। वे सोचा करते हैं, "यहोवा उनको
बचा लेगा और वे कहते हैं, "यहोवा हमारे बीच रहता
है। इसलिये हमारे साथ कोई बुरी बात घट नहीं सकती
है।"

12हे मुखियाओं, तुम्हारे ही कारण सिय्योन का विनाश
होगा। यह किसी जुते हुए खेत सा सपाट हो जायेगा।
यरुशलेम पत्थरों का टीला बन जायेगा और मन्दिर का
पर्वत झाड़ियों से ढका हुआ एक सूनी पहाड़ी होगा।

व्यवस्था यरूशलेम से आयेगी

4 आगे आने वाले समय में यह घटना घटेगी यहोवा
के मन्दिर का पर्वत सभी पर्वतों में अत्यन्त ही
महत्वपूर्ण हो जायेगा। उसे पहाड़ो के ऊपर उठा दिया
जायेगा। दूसरे देशों के लोग इसकी ओर उमड़ पड़ेंगे।

2अनेक जातियाँ यहाँ आ कर कहेंगी, "आओ! चलो,
यहोवा के पहाड़ पर ऊपर चलें। याकूब के परमेश्वर
के मन्दिर चलें। फिर परमेश्वर हमको अपनी राह
सिखायेगा और फिर हम उसके पथ में बढ़ते चले
जायेंगे।" क्यों? क्योंकि परमेश्वर की शिक्षाएँ सिय्योन से
आयेंगी और यहोवा का वचन यरूशलेम से आयेगा।"

3परमेश्वर बहुत सी जातियों का न्याय करेगा। परमेश्वर
उन सशक्त देशों के फैसले करेगा, जो बहुत–बहुत दूर
हैं और फिर वे देश अपनी तलवारें गलाकर और
पीटकर हल की फाली में बदल लेंगे। वे देश अपने
भालों को पीटकर ऐसे औजारों में बदल लेंगे, जिनसे
पेड़ों की काट–छाँट हुआ करती है। देश तलवारें उठाकर
आपस में नहीं लड़ेंगे। अब वे युद्ध की विद्याएँ और
अधिक नहीं सीखेंगे।

4किन्तु हर कोई अपने अंगूरों की बेलों तले और
अंजीर के पेड़ के नीचे बैठा करेगा। कोई भी व्यक्ति
उन्हें डरा नहीं पायेगा! क्यों? क्योंकि सर्वशक्तिमान यहोवा
ने यह कहा है!

5दूसरे देशों के सभी लोग अपने देवताओं का अनुसरण
करते हैं। किन्तु हम अपने परमेश्वर यहोवा के नाम में
सदा–सर्वदा जिया करेंगे!

वह राज्य जिसे वापस लाना है

6यहोवा कहता है, "यरूशलेम पर प्रहार हुआ और
वह लंगडा हो गया। यरूशलेम को फेंक दिया गया था।
यरूशलेम को हानि पहुँचाई गई और उसको दण्ड़ दिया।
किन्तु मैं उसको फिर अपने पास वापस ले आऊँगा।

7"उस 'ध्वस्त' नगरी के लोग विशेष वंश होंगे। उस
नगर के लोगों को छोड़कर भाग जाने को विवश किया
गया था। किन्तु मैं उनको एक सुदृढ़ जाति के रूप में
बनाऊँगा।" यहोवा उनका राजा होगा और वह सिय्योन
के पहाड़ पर से सदा शासन करेगा।

8"हे रेवड़ के मीनार, हे ओपेल, सिय्योन की पहाड़ी!
जैसा पहले राज्य हुआ करता था, तू वैसा ही राज्य
बनेगी। हाँ, हे सिय्योन की पुत्री! वह राज्य तेरे पास
आयेगा।"

इस्राएलियों को बाबुल के पास निश्चय ही क्यों जाना चाहिए?

9अब तुम क्यों इतने ऊँचे स्वर में पुकार रहे हो?
क्या तुम्हारा राजा जाता रहा है? क्या तुमने अपना
मुखिया खो दिया है? तुम ऐसे तड़प रहे हो जैसे कोई स्त्री
प्रसव के काल में तड़पती है। 10सिय्योन की पुत्री, तू
पीड़ा को झेल। तू उस स्त्री जैसी हो जा जो प्रसव की
घड़ी में बिलखती है। क्योंकि अब तुझको नगर
(यरूशलेम) त्यागना है। तुझको खुले मैदान में रहना है।
तुझे बाबुल जाना पड़ेगा किन्तु उस स्थान से तेरी रक्षा हो
जायेगी। यहोवावहाँ जायेगा और वह तुझ को तेरे शत्रुओं
से वापस ले आयेगा।

दूसरी जातियों को यहोवा नष्ट करेगा

11तुझसे लड़ने के लिये अनेक जातियाँ आयीं। वे
कहती हैं, "सिय्योन को देखो! उस पर हमला करो!"

12लोगों की उनकी अपनी योजनाएँ है किन्तु उन्हें ऐसी
उन बातों का पता नहीं जिन के विषय में यहोवा योजना
बना रहा है। यहोवा उन लोगों को किसी विशेष प्रयोजन
के लिये यहाँ लाया। वे लोग वैसे कुचल दिये जायेंगे जैसे
खलिहान में अनाज की पूलियाँ कुचली जाती हैं।

इस्राएल अपने शत्रुओं को पराजित कर विजयी होगा

13हे सिय्योन की पुत्री, खड़ी हो और तू उन लोगों को
कुचल दे! मैं तुम्हें बहुत शक्तिशाली बनाऊँगा। तू ऐसी
होगी जैसे तेरे लोहे के सींग हो। तू ऐसी होगी जैसे तेरे
काँसे के खुर हो। तू मार–मार कर बहुत सारे लोगों की
धज्जियाँ उड़ा देगी। "तू उनके धन को यहोवा को अर्पित
करेगी। तू उनके खजाने, सारी धरती के यहोवा को
समर्पित करेगी।"

5 हे सुदृढ़ नगर, अब तू अपने सैनिकों को एकत्र
कर। शत्रु आक्रमण करने को हमें घेर रहे हैं! वे

इस्राएल के न्यायाधीश के मुख पर अपने सोंटे से प्रहार
करेंगे।

बेतलेहेम में मसीह जन्म लेगा

2हे बेतलेहेम एप्राता, तू यहूदा का छोटा नगर है और
तेरा वंश गिनती में बहुत कम है। किन्तु पहले तुझसे ही
“मेरे लिए इस्राएल का शासक आयेगा।” बहुत पहले
सुदूर अतीत में उसके घराने की जड़े बहुत पहले से
होंगी।

3यहोवा अपने लोगों को उनके शत्रुओं के हाथ में
सौंप देगा। वे उस समय तक वहीं पर बने रहेंगे जब तक
वह स्त्री अपने बच्चे को जन्म नहीं देती। फिर उसके
बन्धु जो अब तक जीवित हैं, लौटकर आयेंगे। वे इस्राएल
के लोगों के पास लौटकर आयेंगे।

4तब इस्राएल का शासक खड़ा होगा और भेड़ों के
झुण्ड को चरायेगा। यहोवा की शक्ति से वह उनको राह
दिखायेगा। वह यहोवा परमेश्वर के अदभुत नाम की
शक्ति से उनको राहें दिखायेगा। वहाँ शान्ति होगी, क्योंकि
ऐसे उस समय में उसकी महिमा धरती के छोरों तक
पहुँच जायेगी।

5 वहाँ शांति होगी, यदि अश्शूर की सेना हमारे देश
में आयेगी और वह सेना हमारे विशाल भवन तोड़ेगी,
तो इस्राएल का शासक सात गड़ेरिये चुनेगा। नहीं, हम
आठ मुखियाओं को पायेंगे।

6वे अश्शूर के लोगों पर अपनी तलवारों से शासन
करेंगे। नंगी तलवारों के साथ उन का राज्य निम्रोद की
धरती पर रहेगा। फिर इस्राएल का शासक हमको
अश्शूर के लोगों से बचायेगा। वे लोग जो हमारी धरती
पर चढ़ आयेंगे और वे हमारे सीमाएँ रौंद डालेंगे।

7फिर बहुत से लोगों के बीच में याकूब के बचे हुए
वशंज ओस के बूँद जैसे होंगे जो यहोवा की ओर से आई
हो। वे घास के ऊपर वर्षा जैसे होंगे। वे लोगों पर निर्भर
नहीं होंगे। वे किसी जन की प्रतीक्षा नहीं करेंगे। वे
किसी पर भी निर्भर नहीं होंगे।

8बहुत से लोगों के बीच याकूब के बचे हुए लोग उस
सिंह जैसे होंगे जो जंगल के पशुओं के बीच होता है।जब
सिंह बीच से गुजरता है तो वह वहीं जाता है, जहाँ वह
जाना चाहता है। वह पशु पर टूट पड़ता है और उस पशु
को कोई बचा नहीं सकता है। उसके बचे हुए लोग ऐसे
ही होंगे। 9तुम अपने हाथ अपने शत्रुओं पर उठाओगे
और तुम उनका विनाश कर डालोगे।

लोग परमेश्वर के भरोसे रहेंगे

10यहोवा कहता है: “उस समय मैं तुमसे तुम्हारे घोड़े
छीन लूँगा। तुम्हारे रथों को नष्ट कर डालूँगा।

11मैं तुम्हारे देश के नगर उजाड़ दूँगा। मैं तुम्हारे सभी
गढ़ों को गिरा दूँगा।

12फिर तुम जादू चलाने का यत्न नहीं करोगे। फिर
ऐसे उन लोगों को, जो भविष्य बताने का प्रयत्न करते
हैं, तुम नहीं रखोगे।

13मैं तुम्हारे झूठे देवताओं के मूर्तियों को नष्ट करूँगा।
उन झूठे देवों के पत्थर के स्मृति-स्तम्भ मैं उखाड़
फेंकूँगा जिनको तुमने स्वयं अपने हाथों से बनाया है।
तुम उनकी पूजा नहीं कर पाओगे।

14मैं अशेरा की पूजा के खम्भों को नष्ट कर दूँगा।
तुम्हारे झूठे देवताओं को मैं तहस-नहस कर दूँगा।

15कुछ लोग ऐसे होंगे जो मेरी नहीं सुनेंगे। मैं उन पर
क्रोध करूँगा और मैं उन से बदला लूँगा।

यहोवा परमेश्वर की शिकायत

6 जो यहोवा कहता है: उस पर तुम कान दो। तुम
पहाड़ो के सामने खड़े हो जाओ और फिर उनको
कथा का अपना पक्ष सुनाओ, पहाड़ो को तुम
अपनीकहानी सुनाओ।

2यहोवा को अपने लोगों से एक शिकायत है। पर्वतों,
तुम यहोवा की शिकायत को सुनो। धरती की नीवों,
यहोवा की शिकायत को सुनो। वह प्रमाणित करेगा कि
इस्राएल दोषी है!

3यहोवा कहता है: हे मेरे लोगों, क्या मैंने कभी
तुम्हारा कोई बुरा किया है? मैंने कैसे तुम्हारा जीवन
कठिन किया है? मुझे बताओ, मैंने तुम्हारे साथ क्या
किया है?

4मैं तुम को बताता हूँ जो मैंने तुम्हारे साथ किया है,
मैं तुम्हे मिस्र की धरती से निकाल लाया, मैंने तुम्हे
दासता से मुक्ति दिलाई थी। मैंने तुम्हारे पास मूसा, हारून
और मरियम को भेजा था।

5हे मेरे लोगों, मोआब के राजा बालाक के कुचक्र
याद करो। वे बातें याद करो जो बोर के पुत्र बिलाम ने
बालाक से कहीं थी। वे बातें याद करो जो शित्तीमसेगिल्गाल
तक घटी थी। तभी समझ पाओगे की यहोवाउचित है!”

परमेश्वर हमसे क्या चाहता है?

6जब मैं यहोवा के सामने जाऊँ और प्रणाम करुँ, तो
परमेश्वर के सामने अपने साथ क्या लेकर के जाऊँ?
क्या यहोवा के सामने एक वर्ष के बछड़े की होम बलि
लेकर के जाऊँ?

7क्या यहोवा एक हजार मढ़ों से अथवा दसियों हजार
तेल की धारों से प्रसन्न होगा? क्या अपने पाप के बदले
में मुझ को अपनी प्रथम संतान जो अपने शरीर से
उपजी हैं, अर्पित करनी चाहिये?

8हे मनुष्य, यहोवा ने तुझे वे बातें बतायीं हैं जो उत्तम
हैं। ये वे बातें हैं, जिनकी यहोवा को तुझ से अपेक्षा है। ये
वे बातें हैं-तू दूसरे लोगों के साथ में सच्चा रह; तू दूसरो
से दया के साथ प्रेम कर, और अपने जीवन नम्रता से

परमेश्वर के प्रति बिना उपहारों से तुम उसे प्रभावित करने का जतन मत करो।

इस्राएल के लोग क्या रहे थे?

9यहोवा की वाणी यरूशलेम नगर को पुकार रही है। बुद्धिमान व्यक्ति यहोवा के नाम को मान देता हैं। इसलिए सजा के राजदण्ड पर ध्यान दे और उस पर ध्यान दे, जिसके पास राजदण्ड है!

10क्या अब भी दुष्ट अपने चुराये खजाने को छिपा रहे हैं? दुष्ट क्या अब भी लोगों को उन टोकरियों से छला करते हैं जो बहुत छोटी हैं? (यहोवा इस प्रकार से लोगों को छले जाने से घृणा करता है!)

11क्या मैं उन ऐसे बुरे लोगों को नजरअन्दाज कर दूँ जो अब भी खोटे बाँट और खोटी तराजू लोगों को ठगने के काम में लाते हैं? क्या मैं उन ऐसे बुरे लोगों को नजर अन्दाज कर दूँ, जो अब भी ऐसी गलत बोरियाँ रखते हैं, जिनके भार से गलत तौल दी जाती है?

12उस नगर के धनी पुरुष अभी भी क्रूर कर्म करते हैं! उस नगर के निवासी अभी भी झूठ बोला करते हैं। हाँ, वे लोग मनगढ़ंत झूठों को बोला करते हैं!

13सो मैंने तुम्हे दण्ड देना शुरु कर दिया है। मैं तुम्हे तुम्हारे पापों के लिये नष्ट कर दूँगा।

14तुम खाना खाओगे किन्तु तुम्हारा पेट नहीं भरेगा। तुम फिर भी भूखे रहोगे। तुम लोगों को बचाओगे, उन्हे सुरक्षित घर ले आने को किन्तु तुम जिसे भी बचाओगे, मैं उसे तलवार के घाट उतार दूँगा!

15तुम अपने बीज बोओगे किन्तु तुम उनसे भोजन नहीं प्राप्त करोगे। तुम घानी में पेर कर अपने जैतून का तेल निचोड़ोगे किन्तु तुम्हे उतना भी तेल नहीं मिलेगा जो अर्घ्य देने को पर्याप्त हो। तुम अपने अंगूरों को खूंद कर निचोड़ोगे किन्तु तुमको वह दाखमधु पीने को काफी नहीं होगा। 16ऐसा क्यों होगा? क्योंकि तुम ओम्री के नियमों पर चलते हो। तुम उन बुरी बातों को करते हो जिनको आहाब का परिवार करता था। तुम उनकी शिक्षाओं पर चला करते हो इसलिए मैं तुम्हें नष्ट भ्रष्ट कर दूँगा। तुम्हारे नगर के लोग हँसी के पात्र बनेंगे। तुम्हे अन्य राज्यों की घृणा झेलनी होगी।

लोगो के पाप-आचरण पर मीका की व्याकुलता

7 मैं व्याकुल हूँ। क्यों? क्योंकि मैं गर्मी के उस फल सा हूँ जिसे अब तक बीन लिया गया है। मैं उन अंगूरों सा हूँ जिन्हें तोड़ लिया गया है। अब वहाँ कोई अंगूर खाने को नहीं बचे हैं। शुरु की अंजीरे जो मुझको भाती हैं, एक भी नहीं बची है।

2इस का अर्थ यह है कि सभी सच्चे लोग जाते रहे हैं। कोई भी सज्जन व्यक्ति इस प्रदेश में नहीं बचा है। हर व्यक्ति किसी दूसरे को मारने की घात में रहता है। हर व्यक्ति अपने ही भाई को फंदे में फँसाने का जतन करताहै।

3लोग दोनों हाथों से बुरा करने में पारंगत हैं। अधिकारी लोग रिश्वत माँगते हैं। न्यायाधीश अदालतों में फैसला बदलने के लिये धन लिया करते हैं। "महत्वपूर्ण मुखिया" खरे और निष्पक्ष निणर्य नहीं लेते हैं। उन्हें जैसा भाता है, वे वैसा ही काम करते हैं।

4यहाँ तक कि उनका सर्वोच्च काँटों की झाड़ी सा होता है। यहाँ तक कि उनका सर्वोच्च काँटों की झाड़ी से अधिक टेढ़ा होता है।

दण्ड का दिन आ रहा है

तुम्हारे नबियों ने कहा था कि यह दिन आयेगा और तुम्हारे रखवालों का दिन आ पहुँचा है। अब तुमको दण्ड दिया जायेगा! तुम्हारी मति बिगड़ जायेगा! 5तुम अपने पड़ोसी का भरोसा मत करो! तुम मित्र का भरोसा मत करो! अपनी पत्नी तक से खुलकर बात मत करो! 6व्यक्ति के अपने ही घर के लोग उसके शत्रु हो जायेंगे। पुत्र अपने पिता का आदर नहीं करेगा। पुत्री अपनी माँ के विरुद्ध हो जायेगी। बहू अपने सास के विरुद्ध हो जायेगी।

यहोवा बचाने वाला है

7मैं सहायता के लिये यहोवा को निहारुँगा! मैं परमेश्वर की प्रतिक्षा करूँगा कि वह मुझको बचा ले। मेरा परमेश्वर मेरी सुनेगा।

8मेरा पतन हुआ है। किन्तु हे मेरे शत्रु, मेरी हँसी मत उड़ा! मैं फिर से खड़ा हो जाऊँगा। यद्यपि आज अन्धेरे में बैठा हूँ यहोवा मेरे लिये प्रकाश होगा।

यहोवा क्षमा करता है

9यहोवा के विरुद्ध मैंने पाप किया था। अत: वह मुझ पर क्रोधित था। किन्तु न्यायालय में वह मेरे अभियोग का वकालत करेगा। वह, वे ही काम करेगा जो मेरे लिये उचित है। फिर वह मुझको बाहर प्रकाश में ले आयेगा और मैं उसके छुटकारे को देखूँगा।

10फिर मेरी बैरिन यह देखेगी और लज्जित हो जायेगी। मेरे शत्रु ने यह मुझ से कहा था, "तेरा परमेश्वर यहोवा कहाँ है?" उस समय, मैं उस पर हँसूंगी। लोग उसको ऐसे कुचल देंगे जैसे गलियों में कीचड़ कुचली जाती है।

यहूदी लौटने को हैं

11वह समय आयेगा, जब तेरे परकोटे का फिर निर्माण होगा, उस समय तुम्हारा देश विस्तृत होंगे।

12तेरे लोग तेरी धरती पर लौट आयेंगे। वे लोग अश्शूर से आयेंगे और वे लोग मिस्र के नगरों से आयेंगे। तेरे

लोग मिस्र से और परात नदी के दूसरे छोर से आयेंगे। वे
पश्चिम के समुद्र से और पूर्व के पहाड़ों से आयेंगे।
13धरती उन लोगों के कारण जो इसके निवासी थे
बर्बाद हुई थी, उन कर्मो के कारण जिनको वे करते
थे।
14सो अपने राजदण्ड से तू उन लोगों का शासन कर।
तू उन लोगों के झुण्ड का शासन कर जो तेरे अपने हैं।
लोगों का वह झुण्ड जंगलों में और कर्म्मेल के पहाड़ पर
अकेला ही रहता है। वह झुण्ड बाशान में रहता है और
गिलाद में बसता है जैसे वह पहले रहा करता था!

इस्राएल अपने शत्रुओं को हरायेगा

15जब मैं तुमको मिस्र से निकाल कर लाया था, तो
मैंने बहुत से चमत्कार किये थे। वैसे ही और चमत्कार
मैं तुम को दिखाऊँगा।
16वे चमत्कार जातियाँ देखेंगी और लज्जित हो जायेंगी।
वे जातियाँ देखेंगी कि उनकी "शक्ति" मेरे सामने कुछ
नहीं है। वे चकित रह जायेंगे और वे अपने मुखों पर
हाथ रखेंगे! वे कानों को बन्द कर लेंगे और कुछ नहीं
सुनेंगे।
17वे सांप से धूल चाटते हुये धरती पर लोटेंगे, वा भय
से कापेंगे। जैसे कीड़े निज बिलों से रेंगतें हैं, वैसे ही वे
धरती पर रेंगा करेंगे। वे डरे–कांपते हुये हमारे परमेश्वर
यहोवा के पास जायेंगे। परमेश्वर, वे तुम्हारे सामने
डरेंगे!

यहोवा की स्तुति

18तेरे समान कोई परमेश्वर नहीं है। तू पापी जनों को
क्षमा कर देता है। तू अपने बचे हुये लोगों के पापों को
क्षमा करता है। यहोवा सदा ही क्रोधित नहीं रहेंगा,
क्योंकि उसको तो दयालु ही रहना भाता है। **19**हे यहोवा,
हमारे पापों को दूर कर के फिर हमको सुख चैन देगा,
हमारे पापों को तू दूर गहरे सागर में फेंक देगा।
20याकूब के हेतु तू सच्चा होगा। इब्राहीम के हेतु तू
दयालु होगा। तूने ऐसी ही प्रतिज्ञा बहुत पहले हमारे पूर्वजो
के साथ की थी।

नहूम

1 यह नीनवे के विषय में एक दु:खद भविष्यवाणी है।
यह पुस्तक नहूम के दर्शन की पुस्तक है। नहूम
एल्कोश से था।

यहोवा नीनवे से कुपित है

2यहोवा जलन रखने वाला परमेश्वर है। यहोवा
अपराधी लोगों को दण्ड देता है। यहोवा अपराधी लोगों
को दण्ड देता है और यहोवा बहुत कुपित है! यहोवा
अपने शत्रुओं को दण्ड देता है। वह अपने बैरियों पर
क्रोधित रहता है।
3यहोवा धैर्यशील है, किन्तु साथ ही वह बहुत महा
सामर्थी है! और यहोवा अपराधी लोगों को दण्ड देता है।
वह उन्हें ऐसे ही छुट कर नहीं चले जाने देगा। देखों,
यहोवा दुर्जनों को दण्ड देने आ रहा है। वह अपनी शक्ति
दिखाने के लिये बवण्डरों और तूफानों को काम में
लायेगा। मनुष्य तो धरती पर मिट्टी में चलता है, किन्तु
यहोवा मेघों पर विचरता है!
4यदि यहोवा सागर को घुड़के तो सागर भी सूख
जाये। सारी ही नदियों को वह सुखा सकता है!
बाशान और कर्म्मेल की हरी–भरी भूमि सूख कर
मर जाया करती है। लबानोन के फूल मुरझा कर
गिर जात हैं।
5यहोवा का आगमन होगा और पर्वत भय से काँपेंगे
और ये पहाड़ियाँ पिघलकर बह जायेंगी। यहोवा का
आगमन होगा और यह धरती भय से काँप उठेगी।
यहजगत और जो कुछ इसमें है जो जीवित है, भय से
काँपेगा।
6यहोवा के महाकोप का सामना कोई नहीं कर
सकता, कोई भी उसका भयानक कोप नहीं सह सकता।
उसका क्रोध आग सा धधकेगा। जब वह पधारेगा तब
चट्टाने चटकेंगी।
7यहोवा संकट के काल में उत्तम है। वह सुरक्षित
शरण ऐसे उन लोगों का है जो उसके भरोसे हैं। वह
उनकी देख रेख करता है।
8किन्तु वह अपने शत्रुओं को पूरी तरह नष्ट
कर देगा। वह उन्हें बाढ़ के समान बहा कर ले
जायेगा। अंधकार के बीच वह अपने शत्रुओं का
पीछा करेगा।
9क्या तुम यहोवा के विरोध में षड़यंत्र रच रहे हो?
वह तेरा अंत कर देगा। फिर और कोई दूसरी बार
कभी यहोवा का विरोध नहीं करेगा!
10तुम्हारे शत्रु उलझे हुये काँटो से नष्ट होंगे। वे सूखी
घास जैसे शीघ्र जल जायेंगे।
11हे अश्शूर, एक व्यक्ति तुझसे ही आया है। जिसने
यहोवा के विरोध में षड़यंत्र रचे और उसने पाप पूर्ण
सलाहें प्रदान कीं।
12यहोवा ने यहूदा से ये बातें कहीं थी: "अश्शूर की
जनता पूर्ण शक्तिशाली है। उनके पास बहुतेरे सैनिक हैं।
किन्तु उन सब को ही काट फेंका जायेगा। सब का अंत
किया जायेगा। हे मेरे लोगों, मैंने तुमको बहुतेरे कष्ट
दिये किन्तु अब आगे तुम्हें और कष्ट नहीं दूँगा।
13"मैं अब तुम्हें अश्शूर की शक्ति से मुक्त करूँगा।
तुम्हारे कन्धे से मैं वह जुआ उतार दूँगा। तुम्हारी जंजीरे
जिनमें तुम बंधे हो मैं अब तोड़ दूँगा।"
14हे अश्शूर के राजा, तेरे विषय में यहोवा ने यह
आदेश दिया है: "तेरा नाम लेवा कोई भी वंशज न
रहेगा। तेरी खुदी हुई मूर्तियाँ और धातु की मूर्तियाँ मैं
नष्ट कर दूँगा जो तेरे देवताओं के मन्दिरों में रखे हुये
हैं। मैं तेरे लिये कब्र बना रहा हूँ क्योंकि तेरा अंत आ
रहा है!'
15देख यहूदा! देख वहाँ, पहाड़ के ऊपर से कोई आ
रहा है। कोई हरकारा सुसंदेश ले कर आ रहा है! देखो
वह कह रहा है कि यहाँ पर शांति है! यहूदा, तू अपने
विशेष अवकाश दिवस मना ले। यहूदा, तू अपनी मन्नते
मना ले। अब फिर कभी दुर्जन तुझ पर वार न करेंगे
और वे फिर तुझको हरा नहीं पायेंगे। उन सभी दुर्जनों
का अन्त कर दिया गया है!

नीनवे का विनाश होगा

2 नीनवे, तेरे विरुद्ध युद्ध करने को विनाशकारी आ
रहा है। सो तू अपने नगर के स्थान सुरक्षित कर
ले। राहों पर आँख रख, युद्ध को तत्पर रह, लड़ाई की
तैयारी कर! 2क्यों? क्योंकि यहोवा याकूब को महिमा
लौटा रहा है जैसे इस्राएल की महिमा। अश्शूर के लोगों
ने इस्राएल की प्रजा का नाश किया और उनकी अंगूर
की बेलें रौंद ड़ाली हैं।

3उन सैनिकों की ढाल लाल है। उनकी वर्दियाँ सुर्ख
लाल हैं। उनके रथ युद्ध के लिये पंक्तिबद्ध हो गये हैं
और वे ऐसे चमक रहे हैं जैसे वे आग की लपटें हों।
उनके घोड़े चल पड़ने को तत्पर हैं।
4उनके रथ गलियों में भयंकर रीति से भागते हैं। वे
खुले मैदानों में सुलगती मशालों से दिखते हुये वेग से
पीछे और आगे को दौड़ रहे हैं । वे ऐसे लगते हैं जैसे
यहाँ वहाँ बिजली कड़क रही हो!
5अश्शूर का राजा अपने उन सैनिकों को बुला रहा
है जो सर्वश्रेष्ठ हैं। किन्तु वे ठोकर खा रहे हैं और मार्ग
में गिरे जा रहे हें। वे नगर परकोटे पर दौड़ते हैं और वे
भेदक मूसल के लिये प्राचीर रच रहे हैं
6किन्तु वे द्वार जो नदियों के निकट है, खुले हैं। शत्रु
उनमें से जा रहा है और राजा के महल को ध्वस्त कर
रहा है।
7देखो, यह शत्रु रानी को उठा ले जाता है और
उसकी दासियाँ बिलखती हैं जैसे दुःख से भरी कपोती
हों। वे अपना दुःख प्रगट करने को निज छाती पीट रहीं
हैं। 8नीनवे ऐसे तालाब सा हो गया है जिस का पानी बह
कर बाहर निकल रहा हो। वे लोग पुकार कर कह रहे
हैं, "रुको! रुको! ठहरे रहो, कहीं भाग मत जाओ।"
किन्तु कोई न ही रूकता है और न ही कोई उन पर
ध्यान देताहै!
9हे सैनिको, तुम जो नीनवे का विनाश कर रहे हो!
तुम चाँदी ले लो और यह सोना ले लो! यहाँ पर लेने को
बहुतेरी वस्तुऐं हैं। यहाँ पर बहुत से खजाने भी हैं!
10अब नीनवे खाली है, सब कुछ लुट गया है। नगर
बर्बाद हो गया है! लोगों ने निज साहस खो दिया है।
उनके मन डर से पिघल रहे हैं, उनके घुटने आपस में
टकराते हैं। उनके तन काँप रहे हैं, उनके मुख डर से
पीले पड़ गये हैं।
11नीनवे जो कभी सिंह का माँद था, अब वह कहाँहै?
जहाँ सिंह और सिंहनियाँ रहा करते थे। उनके बच्चे
निर्भयथे।
12जिस सिंह ने (नीनवे के राजा ने) अपने बच्चों और
मादाओं को तृप्ति देने के लिये कितने ही शिकार मारे
थे। उसने माँद (नीनवे) भर ली थी। मादाओं और नरों
की देहों से जिनको उसने मारा था।
13सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "नीनवे, मैं तेरे
विरुद्ध हूँ! मैं तेरे रथो को युद्ध में जला दूँगा। मैं तेरे
'जवान सिंहों' की हत्या करूँगा। तू फिर कभी इस
धरती पर कोई भी अपना शिकार नहीं मार पायेगा।
लोग फिर कभी तेरे हरकारों को नहीं सुनेंगे।"

नीनवे के लिये बुरा समाचार

3 उस हत्यारों के नगर को धिक्कार है। नीनवे, ऐसा
नगर है जो झूठों से भरा है। यह दूसरे देशों के लूट
के माल से भरा है। यह उन बहुत सारे लोगों से भरा है
जिनका उसने पीछा किया और जिन्हे इसने मार डाला
है!
2देखो, कोड़ों की फटकार, पहियों का शोर, और
घोड़ों की टापें सुनाई दे रही हैं, और साथ–साथ उछलते
रथों का शब्द सुनाई दे रहा है!
3घुड़सवार हमला कर रहे हैं और उनकी तलवारें
चमक रही हैं, उनके भाले चमचमाते हैं! कितने ही
लोग मरे हुये हैं, लाशों के ढ़ेर लग गये हैं, अनगिनत
लाशें फैली हैं। लोग मुर्दो पर गिर–गिर कर चल रहे हैं!
4यह सब कुछ नीनवे के कारण घटा है। नीनवे उस
वेश्या सी है जो कभी तृप्ति नहीं होती, उसको और
अधिक, और अधिक चाहिए था। उसने अपने को
बहुत सारे देशों को बेच दिया था और उसने उनको
अपना दास बनाने को जादू चलाया था।
5सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "हे नीनवे, मैं तेरे
विरुद्ध हूँ। मैं तेरे वस्त्र तेरे मुँह तक ऊपर उठा दूँगा।
तेरी नग्न देह को मैं सारे देशों को दिखा दूँगा। वे सारे
राज्य तेरी लाज को देखेंगे।
6"मैं तेरे ऊपर घिनौनी वस्तु फेंक दूँगा। मैं तुझ से
घृणा के साथ बर्ताव करूँगा। लोग तुझ को देखेंगे और
तुझ पर हँसेंगे।
7"जो कोई भी तुझ को देखेगा तुझ से दूर भागेगा। हे
नीनवे, मुझ को इसका पता है कि कोई ऐसा नहीं है जो
तुझ को सुख चैन दे।"
8नीनवे, क्या तू नील नदी के तट पर बसी अमोन से
उत्तम है? नहीं! अमोन के चारों ओर भी पानी हुआ
करता था। अमोन इस पानी का इस्तेमाल स्वयं को शत्रु
से बचाने के लिये खाई के रूप में किया करता था। इस
पानी का उपयोग वह एक परकोटे के रूप में भी करता
था। 9कूश और मिस्र ने अमोन को बहुत शक्ति प्रदान
की थी। उसे पूत और लूबी का भी समर्थन प्राप्त था।
10किन्तु अमोन हार गया। उसके लोगों को बंदी बना
कर किसी पराये देश में ले जाया गया। गली के हर
नुक्कड़ पर सैनिकों ने उसके छोटे बच्चों को पीट–पीट
कर मार डाला। उन्होंने पासे फेंक–फेंक कर यह देखा
कि किस महत्वपूर्ण व्यक्ति को कौन अपने यहाँ दास
बना कर रखे। अमोन के सभी महत्वपूर्ण पुरुषों पर
उन्होंने जंजीरें डाल दी थीं।
11"सो नीनवे, तेरा भी किसी नशे में धुत्त व्यक्ति के
समान, पतन होगा! तू छिपता फिरेगा। शत्रु से दूर, तू
कोई सुरक्षित स्थान ढूँढ़ता फिरेगा। 12किन्तु नीनवे,
तेरी सभी मज़बूत गढ़ियाँ अंजीर के पेड़ों सा हो जायेंगी।
नयी अंजीरें पकतीं है, एक व्यक्ति आता है, और पेड़
को झकझोर देता है। अंजीरें उस व्यक्ति के मुख में
गिरती हैं और वे उन्हें खाता है, और वे समाप्त हो जाती
हैं!

13नीनवे, तेरे लोग तो स्त्रियों जैसे हैं और शत्रु के
सैनिक उन्हें ले लेने के लिये तैयार बैठे हैं। तेरी धरती
के द्वार खुले पड़े हैं कि तेरा शत्रु भीतर आ जाये। तेरे
द्वारों में लगी लकड़ी के आँगल को आग ने जलाकर
नष्ट करदिया है।

14तू पानी इकट्ठा कर और उसे अपने नगर के
भीतर जमा कर ले। क्योंकि शत्रु के सैनिक तेरे नगर
को घेर लेंगे। वे नगर के भीतर किसी भी व्यक्ति को
खाना–पीना नहीं लाने देंगे। अपनी सुरक्षा को मज़बूत
बना! और अधिक ईंटें बनाने के लिये मिट्टी ले! गारा
बना और ईंटें बनाने के लिए साँचे ले। 15तू यह सब
काम कर सकता है किन्तु फिर भी आग तुझे पूरी तरह
नष्ट कर देगी और तलवार तुझे मार डालेगी। तेरी
धरती ऐसी दिखाई देगी जैसे उस पर कोई टिड्डी दल
आया हो और सब कुछ चट कर गया हो।

नीनवे, तू बढ़ता ही चला गया। तू एक टिड्डी दल के
जैसा हो गया। तू टिड्डी का झुण्ड बन गया। 16तेरे यहाँ
अनेकानेक व्यापारी हो गये जो अनेक स्थानों पर जा
कर वस्तुएँ खरीदा करते थे। वे इतने अनगिनत हो गये
जितने आकाश में तारे हैं! वे उस टिड्डी दल के जैसे हो
गये, जो खाता है और सब कुछ को उस समय तक
खाता रहता है जब तक वह समाप्त नहीं हो जाती और
फिर छोड़ कर चला जाता है। 17तेरे सरकारी हाकिम
भी टिड्डियों जैसे ही हैं। ये उन टिड्डियों के समान हैं जो
ठण्डे के दिन एक चट्टान पर बैठ जाती है, किन्तु जब
सूरज चढ़ने लगता है और चट्टान गर्म होने लगती है तो
वह कहीं दूर उड़ जाती है। कोई नहीं जानता, वे कहाँ
चली गयीं! तेरे हाकिम भी ऐसे ही होंगे। 18हे अश्शूर के
राजा, तेरे चरवाहे (मुखिया) सो गये। वे शक्तिशाली
पुरुष नींद में पड़े हैं। और तेरी भेड़ें (प्रजा) अब पहाड़ों
पर भटक रही हैं। उन्हें वापस लाने वाला कोई नहीं है।

19नीनवे, तू बुरी तरह घायल हुआ है और ऐसा कुछ
नहीं है जो तेरे घाव को भर सके। हर कोई जो तेरे
विनाश के समाचार को सुनता है, तालियाँ बजाता है। वे
सब प्रसन्न हैं! क्योंकि उन सब ने उस पीड़ा का अनुभव
किया है, जिसे तू सदा उन्हें पहुँचाया करता था!

हबक्कूक

होमबलि के नियम

1 हबक्कूक की परमेश्वर से शिकायत यह वह संदेश
है जो हबक्कूक नबी को दिया गया था। 2हे यहोवा,
मैं निरतंर तेरी दुहाई देता रहता हूँ। तू मेरी कब सुनेगा?
मैं इस हिंसा के बारे में तेरे आगे चिल्लाता रहा हूँ किन्तु
तूने कुछ नहीं किया! 3लोग लूट लेते हैं और दूसरे लोगों
को हानि पहुँचाते हैं। लोग वाद विवाद करते हैं और
झगड़ते हैं। हे यहोवा! तू ऐसी भयानक बातें मुझे क्यों
दिखा रहा है? 4व्यवस्था असहाय हो चुकी है और लोगों
के साथ न्याय नहीं कर पा रही है। दुष्ट लोग सज्जनों के
साथ अपनी लड़ाईयाँ जीत रहे हैं। सो, व्यवस्था अब
निष्पक्ष नहीं रह गयी है!

हबक्कूक को परमेश्वर का उत्तर

5यहोवा ने उत्तर दिया, "दूसरी जातियों को देख! उन्हें
ध्यान से देख, तुझे आश्चर्य होगा। मैं तेरे जीवन काल में
ही कुछ ऐसा करूँगा जो तुझे चकित कर देगा। इस पर
विश्वास करने के लिये तुझे यह देखना ही होगा। यदि
तुझे उसके बारे में बताया जाये तो तू उस पर भरोसा ही
नहीं कर पायेगा। 6मैं बाबुल के लोगों को एक बलशाली
जाति बना दूंगा। वे लोग बड़े दुष्ट और शक्तिशाली योद्धा
हैं। वे आगे बढ़ते हुए सारी धरती पर फैल जायेंगे। वे
उन घरों और उन नगरों पर अधिकार कर लेंगे जो
उनके नहीं है। 7बाबुल के लोग दूसरे लोगों को भयभीत
करेंगे। बाबुल के लोग जो चाहेंगे, सो करेंगे और जहाँ
चाहेंगे, वहाँ जायेंगे। 8उनके घोड़े चीतों से भी तेज़ दौड़ने
वाले होंगे और सूर्य छिप जाने के बाद के भेड़ियों से भी
अधिक खूंखार होंगे। उनके घुड़सवार सैनिक सुदूर
स्थानों से आयेंगे। वे अपने शत्रुओं पर वैसे टूट पड़ेंगे जैसे
आकाश से कोई भूखा गिद्ध झपट्टा मारता है। 9वे सभी
बस युद्ध के भूखे होंगे। उनकी सेनाएँ मरुस्थल की
हवाओं की तरह नाक की सीध में आगे बढ़ेंगी। बाबुल
के सैनिक अनगिनत लोगों को बंदी बनाकर ले जायेंगे।
उनकी संख्या इतनी बड़ी होगी जितनी रेत के कणों की
होती है।

10"बाबुल के सैनिक दूसरे देशों के राजाओं की हँसी
उड़ायेंगे। दूसरे देशों के राजा उनके लिए चुटकुले बन
जायेंगे। बाबुल के सैनिक ऊँचे सुदृढ़ परकोटे वाले नगरों
पर हँसेंगे। वे सैनिक उन अन्धे परकोटों पर मिट्टी के
दमदमे बांध कर उन नगरों को सरलता से हरा देंगे।
11फिर वे दूसरे स्थानों पर युद्ध के लिये उन स्थानों को
छोड़ कर ऐसे ही आगे बढ़ जायेंगे जैसे आंधी आती है
और आगे बढ़ जाती है। बाबुल के वे लोग बस अपनी
शक्ति को ही पूजेंगे।"

परमेश्वर से हबक्कूक के प्रश्न

12फिर हबक्कूक ने कहा, "हे यहोवा, तू अमर
यहोवा है! तू मेरा पवित्र परमेश्वर है जो कभी भी नहीं
मरता! हे यहोवा, तूने बाबुल के लोगों को अन्य लोगों
को दण्ड देने को रचा है। हे हमारी चट्टान, तूने उनको
यहूदा के लोगों को दण्ड देने के लिये रचा है।

13"तेरी भली आँखें कोई दोष नहीं देखती हैं। तू पाप
करते हुए लोगों के नहीं देख सकता है। सो तू उन
पापियों की विजय कैसे देख सकता है? तू कैसे देख
सकता है कि सज्जन को दुर्जन पराजित करे?

14"तूने ही लोगों को ऐसे बनाया है जैसे सागर की
अनगिनत मछलियाँ जो सागर के छुद्र जीव हैं बिना
किसी मुखिया के।

15"शत्रु काँटे और जाल डाल कर उनको पकड़
लेता है। अपने जाल में फँसा कर शत्रु उन्हें खींच ले
जाता है और शत्रु अपनी इस पकड़ से बहुत प्रसन्न होता
है।

16"यह फंदे और जाल उसके लिये ऐसा जीवन जीने
में जो धनवान का होता है और उत्तम भोजन खाने में
उसके सहायक बनते हैं। इसलिये वह शत्रु अपने ही
जाल और फंदों को पूजता है। वह उन्हें मान देने के
लिये बलियाँ देता है और वह उनके लिये धूप जलाता
है।

17"क्या वह अपने जाल से इसी तरह मछलियाँ बटोरता
रहेगा? क्या वह (बाबुल की सेना) इसी तरह निर्दय
लोगों का नाश करता रहेगा?

2 "मैं पहरे की मीनार पर जाकर खड़ा होऊँगा। मैं
वहाँ अपनी जगह लूँगा और रखवाली करूँगा। मैं
यह देखने की प्रतिक्षा करूँगा कि यहोवा मुझसे क्या
कहता है। मैं प्रतिक्षा करूँगा और यह जान लूँगा कि वह
मेरे प्रश्नों का क्या उत्तर देता है।"

परमेश्वर द्वारा हबक्कूक की सुनवाई

2यहोवा ने मुझे उत्तर दिया, "मैं तुझे जो कुछ दर्शाता
हूँ, तू उसे लिख ले। सूचना शिला पर इसे साफ़-साफ़
लिख दे ताकि लोग आसानी से उसे पढ़ सकें। 3यह
संदेश आगे आने वाले एक विशेष समय के बारे में है।
यह संदेश अंत समय के बारे में है और यह सत्य सिद्ध
होगा! ऐसा लग सकता है कि वैसा समय तो कभी
आयेगा ही नहीं। किन्तु धीरज के साथ उसकी प्रतीक्षा
कर। वह समय आयेगा और उसे देर नहीं लगेगी। 4यह
संदेश उन लोगों की सहायता नहीं कर पायेगा जो इस
पर कान देने से इन्कार करते हैं। किन्तु सज्जन इस
संदेश पर विश्वास करेगा और अपने विश्वास के कारण
सज्जन जीवित रहेगा।

5परमेश्वर ने कहा, "दाखमधु व्यक्ति को भरमा सकती
है। इसी प्रकार किसी शक्तिशाली पुरुष को उसका
अहंकार मूर्ख बना देता है। उस व्यक्ति को शांति नहीं
मिलेगी। मृत्यु के समान कभी उसका पेट नहीं भरता,
वह हर समय अधिक से अधिक की इच्छा करता
रहता है। मृत्यु के समान ही उसे कभी तृप्ति नहीं
मिलेगी। वह दूसरे देशों को हराता रहेगा। वह दूसरे देशों
के उन लोगों को अपनी प्रजा बनाता रहेगा। 6निश्चय
ही, ये लोग उसकी हँसी उड़ाते हुये यह कहेंगे, 'उस पर
हाय पड़े जो इतने दिनों तक लूटता रहा है। जो ऐसे उन
वस्तुओं को हथियाता रहा है जो उसकी नहीं थी! जो
कितने ही लोगों को अपने कर्ज के बोझ तले दबाता
रहा है।'

7"हे पुरुष, तूने लोगों से धन ऐंठा है। एक दिन वे लोग
उठ खड़े होंगे और जो कुछ हो रहा है, उन्हें उसका
अहसास होगा और फिर वे तेरे विरोध में खड़े हो
जायेंगे। तब वे तुझसे उन वस्तुओं को छीन लेंगे। तू बहुत
भयभीत हो उठेगा। 8तूने बहुत से देशों की वस्तुएं लूटी
हैं। सो वे लोग तुझसे और अधिक लेंगे। तूने बहुत से
लोगों की हत्या की है। तूने खेतों और नगरों का
विनाश किया है। तूने वहाँ सभी लोगों को मार डाला है।
9हाँ! जो व्यक्ति बुरे कामों के द्वारा धनवान बनता है,
उसका यह धनवान बनना, उसके लिये बहुत बुरा होगा।
ऐसा व्यक्ति सुरक्षापूर्वक रहने के लिये ऐसे काम करता
है। वह सोचा करता है कि वह उसकी वस्तुएं चुराने से
दूसरे व्यक्तियों को रोक सकता है। किन्तु बुरी बातें उस
पर पड़ेंगी ही। 10"तूने बहुत से लोगों के नाश की योजनाएँ
बना रखी हैं। इससे तेरे अपने लोगों की निन्दा होगी
और तुझे भी अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा। 11तेरे
घर की दीवारों के पत्थर तेरे विरोध में चीख-चीख
कर बोलेंगे। यहाँ तक कि तेरे अपने ही घर की छत
की कड़ियाँ यह मानने लगेंगी कि तू बुरा है।

12"हाय पड़े उस बुरे अधिकारी पर जो खून बहाकर
एक नगर का निर्माण करता है और दुष्टता के आधार
पर चहारदीवारी से युक्त एक नगर को सुदृढ़ बनाता है।
13सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह ठान ली है कि उन लोगों
ने जो कुछ बनाया था, उस सब कुछ को एक आग
भस्म कर देगी। उनका समूचा श्रम बेकार हो जायेगा।
14फिर सब कहीं के लोग यहोवा की महिमा को जान
जायेंगे और इसका समाचार ऐसे ही फैल जायेगा जैसे
समुद्र में पानी फैला हो। 15उस पर हाय पड़े जो अपने
क्रोध में लोगों को उन्हें अपमानित करने के लिये
मारता-पीटता है और उन्हें तब तक मारता रहता है
जब तक वे लड़खड़ा न जाये. और फिर दाखमधु में धुत्त
हुए से गिर न जायें।

16"किन्तु उसे यहोवा के क्रोध का पता चल जायेगा।
वह क्रोध विष के एक ऐसे प्याले के समान होगा जिसे
यहोवा ने अपने दाहिने हाथ में लिया हुआ है। उस
व्यक्ति को उस क्रोध के विष को चखना होगा और
फिर वह किसी धुत्त व्यक्ति के समान धरती पर गिर
पड़ेगा।

"ओ दुष्ट शासक, तुझे विष के उसी प्याले में से पीना
होगा। तेरी निन्दा होगी। तुझे आदर नहीं मिलेगा।

17लबानोन में तूने बहुत से लोगों की हत्या की है। तूने
वहाँ बहुत से पशु लूटे हैं। सो तू जो लोग मारे गये थे,
उनसे भयभीत हो उठेगा और तूने उस देश के प्रति जो
बुरी बातें की; उनके कारण तू डर जायेगा। उन नगरों
के साथ और उन नगरों में रहने वाले लोगों के साथ जो
कुछ तूने किया, उससे तू डर जायेगा।"

मूर्तियों की निरर्थकता का सन्देश

18उसका यह झूठा देवता, उसकी रक्षा नहीं कर
पायेगा क्योंकि वह तो बस एक ऐसी मूर्ति है जिसे किसी
मनुष्य ने धातु से मढ़ दिया है। वह मात्र एक मूर्ति है।
इसलिए जो व्यक्ति स्वयं उसका निर्माता है, उससे सहायता
की अपेक्षा नहीं कर सकता। वह मूर्ति तो बोल तक
नहीं सकता! 19धिक्कार है उस व्यक्ति को जो एक
कठपुतली से कहता है-"ओ देवता, जाग उठ!" उस
व्यक्ति को धिक्कार है जो एक ऐसी पत्थर की मूर्ति से
जो बोल तक नहीं पाती, कहता है, "ओ देवता, उठ
बैठ!" क्या वह कुछ बोलेगी और उसे राह दिखाएगी वह
मूर्ति चाहे सोने से मढ़ा हो, चाहे चाँदी से, किन्तु उसमें
प्राण तो है ही नहीं।

20किन्तु यहोवा इससे भिन्न है! यहोवा अपने पवित्र
मन्दिर में रहता है। इसलिए यहोवा के सामने सम्पूर्ण
पृथ्वी धरती को चुप रह कर उसके प्रति आदर प्रकट
करना चाहिए।

हबक्कूक की प्रार्थना

3 हबक्कूक नबी के लिये शिग्योनीत प्रार्थना:
2हे यहोवा, मैंने तेरे विषय में सुना है। हे यहोवा,

बीते समय में जो शक्तिपूर्ण कार्य तूने किये थे, उनपर
मुझको आश्चर्य है। अब मेरी तुझसे विनती है कि हमारे
समय में तू फिर उनसे भी बड़े काम कर। मेरी तुझसे
विनती है कि तू हमारे अपने ही दिनों में उन बातों को
प्रकट करेगा किन्तु जब तू जोश में भर जाये तब भी तू
हम पर दया को दर्शाना याद रख।
3परमेश्वर तेमान की ओर से आ रहा है। वह पवित्र
परान के पहाड़ से आ रहा है। आकाश प्रतिबिंबित तेज
से भर उठा। धरती पर उसकी महिमा छा गई है!
4वह महिमा ऐसी है जैसे कोई उज्जवल ज्योति हो।
उसके हाथ से ज्योति की किरणें फूट रही हैं और
उसके हाथ में उसकी शक्ति छिपी है।
5उसके सामने महामारियाँ चलती हैं और उसके पीछे
विध्वंसक नाश चला करता है।
6यहोवा खड़ा हुआ और उसने धरती को कँपा दिया।
उसने अन्य जातियों के लोगों पर तीखी दृष्टि डाली और
वे भय से काँप उठे। जो पर्वत अनन्त काल से अचल
खड़े थे, वे पर्वत टूट–टूट कर गिरे और चकनाचूर हो
गये। पुराने, अति प्राचीन पहाड़ ढह गये थे। परमेश्वर
सदा से ही ऐसा रहा है!
7मुझको ऐसा लगा जैसे कुशान के नगर दुःख में हैं।
मुझको ऐसा दिखा जैसे मिद्यान के भवन डगमगा गये
हों।
8हे यहोवा, क्या तूने नदियों पर कोप किया? क्या
जलधाराओं पर तुझे क्रोध आया था? क्या समुद्र तेरे
क्रोध का पात्र बन गया? जब तू अपने विजय के घोड़ों
पर आ रहा था और विजय के रथों पर चढ़ा था, क्या
तू क्रोध से भरा था?
9तूने अपना धनुष ताना और तीरों ने अपने लक्ष्य को
बेध दिया। जल की धाराएँ धरती को चीरने के लिए
फूट पड़ी।
10पहाड़ों ने तुझे देखा और वे काँप उठे। जल धरती
को फोड़ कर बहने लगा था। धरती से ऊँचे फव्वारे
गहन गर्जन करते हुए फूट रहे थे।
11सूर्य और चाँद ने अपना प्रकाश त्याग दिया। उन्होंने
जब तेरी भव्य बिजली की कौंधों को देखा, तो चमकना
छोड़ दिया। वे बिजलियाँ ऐसी थी जैसे भाले हों और जैसे
हवा में छुटे हुए तीर हों।
12क्रोध में तूने धरती को पाँव तले रौंद दिया और
देशों को दण्डित किया।
13तू ही अपने लोगों को बचाने आया था। तू ही अपने
चुने राजा को विजय की राह दिखाने को आया था। तूने
प्रदेश के हर बुरे परिवार का मुखिया, साधारण जन से
लेकर अति महत्वपूर्ण व्यक्ति तक मार दिया।
14उन सेना नायकों ने हमारे नगरों पर तूफान की
तरह से आक्रमण किया। उनकी इच्छा थी कि वे हमारे
असहाय लोगों को जो गलियों के भीतर वैसे डर छुपे बैठे
हैं जैसे कोई भिखारी छिपा झुका खाता है खाना कुचल
डाले। किन्तु तूने उनके सिर को मुगदर की मार से
फोड़ दिया।
15किन्तु तूने सागर को अपने ही घोड़ों से पार किया
था और तूने महान जल निधि को उलट–पलट कर
रख दिया।
16मैंने ये बातें सुनी और मेरी देह काँप उठी। जब मैंने
महा–नाद सुना, मेरे होंठ फड़फड़ाने लगे! मेरी हड्डियाँ
दुर्बल हुई। मेरी टाँगे काँपने लगीं। इसीलिये धैर्य के साथ
मैं उस विनाश के दिन की बाट जोहूँगा। ऐसे उन लोगों
पर जो हम पर आक्रमण करते हैं, वह दिन उतर रहा
है।

यहोवा में सदा आनन्दित रहो

17अंजीर के वृक्ष चाहे अंजीर न उपजायें, अंगूर की
बेलों पर चाहे अंगूर न लगें, वृक्षों के ऊपर चाहे जैतून
न मिलें और चाहे ये खेत अन्न पैदा न करें, बाड़ों में
चाहे एक भी भेड़ न रहे और पशुशाला पशुधन से
खाली हों।
18किन्तु फिर भी मैं तो यहोवा में मग्न रहूँगा। मैं
अपने रक्षक परमेश्वर में आनन्द लूँगा।
19यहोवा, जो मेरा स्वामी है, मुझे मेरा बल देता है।
वह मुझ को वेग से हिरण सा भागने में सहायता देता
है। वह मुझ को सुरक्षा के साथ पहाड़ों के ऊपर ले
जाता है।

सपन्याह

1 यह सन्देश है जिसे यहोवा ने सपन्याह को दिया।
सपन्याह ने यह सन्देश तब पाया जब आमोन का पुत्र
योशिय्याह यहूदा का राजा था। सपन्याह कूशी का पुत्र
था। कूशी गदल्याह का पुत्र था। गदल्याह अमर्याह का
पुत्र था। अमर्याह हिजकिय्याह का पुत्र था।

लोगों का न्याय करने का यहोवा का दिन

2यहोवा कहता है, "मैं पृथ्वी की हर चीज़ को नष्ट
कर दूँगा! 3मैं सभी लोगों और सभी जानवरों को नष्ट
करूंगा। मैं आकाश की चिड़ियों और सागर की मछलियों
को नष्ट करूँगा। मैं पापी लोगों को और उन सभी
चीज़ों को, जो उन्हें पापी बनाती है, नष्ट करूँगा। मैं
सभी लोगो का इस धरती पर से नाम निशान मिटा
दूँगा।" यहोवा ने यह सब कहा।
4यहोवा ने कहा, "मैं यहूदा और यरूशलेम के निवासियों
को दण्ड दूँगा: मैं इन चीजों को उस स्थान से हटा दूँगा:
मैं बाल-पूजन के अन्तिम चिन्हों को हटा दूँगा। मैं उन
पुरोहितों और उन सभी लोगों को जो अपनी छतों पर
तारों की पूजा करने जाते हैं, विदा करूँगा। 5लोग
उन झूठे पुरोहितों के बारे में भूल जाएंगे। कुछ लोग
कहते हो कि वे मेरी उपासना करते हैं। उन लोगों ने
मेरी उपासना करने की प्रतिज्ञा की किन्तु अब वे
झूठे देवता मोलेक की पूजा करते हैं। अत: मैं उन
लोगों को उस स्थान से हटाऊंगा। 6कुछ लोग यहोवा
से विमुख हो गये। उन्होंने मेरा अनुसरण करना छोड़
दिया। उन लोगों ने यहोवा से सहायता मांगना भी
बन्द कर दिया। अत: मैं उन लोगों को उस स्थान से
हटाऊंगा।"
7मेरे स्वामी यहोवा के आगे चुप रह! क्योंकि
लोगों के न्याय करने का यहोवा का दिन जल्दी ही आ
रहा है! यहोवा ने अपनी भेंट-बलि (यहूदा के लोग)
तैयार कर ली है और उसने अपने बुलाये हुए मेहमानों
(यहूदा के शत्रुओं) से तैयार रहने के लिए कह दिया
है।
8यहोवा ने कहा, "यहोवा के बलि के दिन, मैं राजपुत्रों
और अन्य प्रमुखों को दण्ड दूँगा। मैं अन्य देशों के वस्त्रों
को पहनने वाले सभी लोगों को दण्ड दूंगा। 9उस समय
मैं उन सभी लोगों को दण्ड दूँगा जो देहली पर कूदते हैं।
मैं उन लोगों को दण्ड दूँगा जो अपने स्वामी के गृह को
कपट और हिंसा से इकट्ठे किए गए धन से भरते हैं।"
10यहोवा ने यह भी कहा, "उस समय, लोग यरूशलेम
में मत्स्य-द्वार पर सहायता के लिये पुकार रहे होंगे।
नगर के अन्य भागों में भी लोग चिल्ला रहे होंगे और
लोग नगर के चारों ओर की पहाड़ियों में चीज़ों के नष्ट
होने की भारी आवाज़े सुन रहे होंगे। 11नगर के निचले
भागों में रहने वाले लोगों, तुम चिल्लाओगे। क्यों? क्योंकि
कारोबारी और धनी व्यापारी नष्ट कर दिये जायेंगे।
12"उस समय, मैं एक दीपक लूंगा और यरूशलेम में
होकर खोज करूँगा। मैं उन सभी लोगों को ढूँढूंगा जो
अपने ही तरीके से रहने में सन्तुष्ट हैं। वे लोग कहते है,
'यहोवा कुछ नहीं करता। वे न सहायता करते हैं न चोट
ही पहुँचाते हैं!' मैं उन लोगो का पता लगाऊंगा और
उन्हें दण्ड दूँगा! 13तब अन्य लोग उनकी सारी सम्पत्ति
लेंगे तथा उनके घरों को नष्ट करेंगे। उस समय जिन
लोगों ने घर बनाए होंगे, वे उनमें नहीं रहेंगे और जिन
लोगों ने अंगूर की बेलें खेतों में रोपी होंगी, वे उन अंगूरों
का दाखमधु नहीं पीएंगे, उन चीजों को अन्य लोग
लेंगे।"
14यहोवा के न्याय का विशेष दिन शीघ्र आ रहा है!
वह दिन निकट है, और तेजी से आ रहा है। यहोवा के
न्याय के विशेष दिन लोग चीखों भरे स्वर सुनेंगे। यहाँ
तक कि वीर योद्धा भी चीख उठेंगे! 15उस समय परमेश्वर
अपना क्रोध प्रकट करेगा। यह भयंकर विपत्तियों का
समय होगा। यह विध्वंस का समय होगा। यह काले, घिरे
हुए बादल और तूफानी दिन के अन्धकार का समय
होगा। 16यह युद्ध के ऐसे समय की तरह होगा जब लोग
सुरक्षा मीनारों और सुरक्षित नगरों से सीगों और तुरही
का नाद सुनेंगे।
17यहोवा ने कहा, "मैं लोगों का जीवन बहुत दूभर
कर दूँगा। लोग उन अन्धों की तरह चारों ओर जाएंगे
जिन्हें यह भी मालूम नहीं कि वे कहाँ जा रहे है? क्यों?
क्योंकि उन लोगों ने यहोवा के विरुद्ध पाप किये।
अनेक लोग मार डाले जाएंगे। उनका खून जमीन पर
बहेगा। उनके शव गोबर की तरह जमीन पर पड़े सड़ते
रहेंगे। 18उनका सोना-चाँदी उनकी सहायता नहीं कर
पाएंगे! उस समय, यहोवा बहुत क्षुब्ध और क्रोधित

होगा। यहोवा पूरे संसार को अपने क्रोध की अग्नि में जलाकर नष्ट कर देगा! यहोवा पूरी तरह पृथ्वी पर सब कुछ नष्ट कर देगा!"

परमेश्वर लोगों से जीवन-पद्धति बदलने को कहता है

2 लज्जाहीन लोगों, मुरझाये और मरते फूलों की तरह
होने के पहले 2अपने जीवन को बदल डालो। दिन की गर्मी में कोई फूल मुरझायेगा और मर जाएगा। तुम वैसे ही होगे जब यहोवा अपना भयंकर क्रोध प्रकट करेगा। अत: अपने जीवन को, यहोवा द्वारा तुम्हारे विरुद्ध क्रोध प्रकट करने के पहले, बदल डालो! 3तुम
सभी विनम्र लोगों, यहोवा के पास आओ! उसके नियमों को मानो। अच्छे काम करना सीखो। विनम्र होना सीखो। संभव है तब तुम सुरक्षित रह सको जब यहोवा अपना क्रोध प्रकट करे।

यहोवा इस्राएल के पड़ोसियों को दण्ड देगा

4अज्जा नगर में कोई भी नहीं बचेगा। अश्कलोन नष्ट किया जायेगा। दोपहर तक लोग अशदोद छोड़ने
को विवश किये जायेंगे। एक्रोन सूना होगा! 5पलिश्ती
लोगों, सागर के तट पर रहने वाले लोगों, यहोवा का यह सन्देश तुम्हारे लिये हैं। कनान देश, पलिश्ती देश, तुम नष्ट कर दिये जाओगे, वहाँ कोई नहीं रहेगा!
6समुद्र के किनारे की तुम्हारी भूमि तुम्हारे गड़ेरियों
और उनकी भेड़ों के लिये खाली खेत हो जाएंगे। 7तब
वह भूमि यहूदा के बचे हुए लोगों के लिये होगी। यहोवा यहूदा के उन लोगों को याद रखेगा। वे लोग विदेश में बन्दी हैं। किन्तु यहोवा उन्हें वापस लाएगा। तब यहूदा के लोग उन खेतों में अपनी भेड़ों को घास चरने देंगे। शाम को वे अश्कलोन के खाली घरों में लेटेंगे।

8यहोवा कहता है, "मैं जानता हूँ कि मोआब और
अम्मोन के लोगों ने क्या किया! उन लोगों ने हमारे लोगों को लज्जित किया। उन लोगों ने अपने देश को और अधिक बड़ा करने के लिये उनकी भूमि ली।
9अत: जैसा कि मैं शाश्वत हूँ, मोआब और अम्मोन के
लोग सदोम और अमोरा की तरह नष्ट किये जाएंगे। मैं सर्वशक्तिमान यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर हूँ। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि वे देश सदैव के लिये पूरी तरह नष्ट किये जाएंगे। उनकी भूमि में जंगली घासें उगेंगी। उनकी भूमि मृत सागर के नमक से ढकी भूमि जैसी होगी। मेरे लोगों में से बचे हुए उस भूमि को तथा इसमें छोड़ी गई हर चीज को लेंगे।"

10वे बातें, मोआब और अम्मोन के लोगों के लिये
घटित होंगी क्योंकि उन्होंने सर्वशक्तिमान यहोवा के लोगों को लज्जित किया। 11वे लोग यहोवा से डरेंगे!
क्यों? क्योंकि यहोवा उनके देवताओं को नष्ट करेगा। तब सभी दूर-दराज़ के देश यहोवा की उपासना करेंगे।
12कूश के लोगों, इसका अर्थ तुम भी हो। यहोवा की
तलवार तुम्हारे लोगों को मार डालेगी 13और यहोवा
उत्तर की ओर अपना हाथ बढ़ाएगा और अश्शूर को दण्ड देगा। वे नीनवे को नष्ट करेगा, वह नगर खाली सूखी मरुभूमि जैसा होगा। 14तब केवल भेड़ें और जंगली
जानवर उस बर्बाद नगर में रहेंगे। उल्लू और कौवे उन स्तम्भों पर बैठेंगे जो खड़े छोड़ दिये गए हैं। उनकी ध्वनि खिड़कियों से आती सुनाई पड़ेगी। कौवे, द्वारों की सीढ़ियों पर बैठेंगे। उन सूने घरों में काले पक्षी बैठेंगे। 15नीनवे
इन दिनों इतना अधिक घमण्डी है। यह ऐसा प्रसन्न नगर है। लोग समझते हैं कि वे सुरक्षित हैं। वे समझते हैं कि नीनवे संसार में सबसे बड़ा स्थान है। किन्तु वह नगर नष्ट किया जाएगा! यह एक सूना स्थान होगा, जहाँ केवल जंगली जानवर आराम करने जाते हैं। जब लोग उधर से गुजरेंगे और देखेंगे कि कितनी बुरी तरह नगर नष्ट किया गया है तब वे सीटियाँ बजाएंगे और सिर हिलायेंगे।

यरूशलेम का भविष्य

3 यरूशलेम, तुम्हारे लोग परमेश्वर के विरुद्ध लड़े!
तुम्हारे लोगों ने अन्य लोगों को चोट पहुँचाई और तुम पाप से कलंकित हो! 2तुम्हारे लोग मेरी एक नहीं
सुनते! वे मेरी शिक्षा को स्वीकार नहीं करते। यरूशलेम यहोवा में विश्वास नहीं रखता। यरूशलेम अपने परमेश्वर तक को नहीं जानती। 3यरूशलेम के प्रमुख
गुर्राते सिंह जैसे है। इसके न्यायाधीश ऐसे भूखे भेड़ियों की तरह हैं जो भेड़ों पर आक्रमण करने शाम को आते हैं, और प्रात: काल कुछ बचा नहीं रहता। 4उसके नबी
अपनी गुप्त योजनायें सदा अधिक से अधिक पाने के लिये बना रहे हैं। उसके याजकों ने पवित्र चीज़ों को अशुद्ध करता है। उन्होंने परमेश्वर की शिक्षा के प्रति बुरे काम किये हैं। 5किन्तु परमेश्वर अब भी उस नगर
में है और वह उनके प्रति लगातार न्यायपूर्ण बना रहा है। परमेश्वर कुछ भी बुरा नहीं करता। वह अपने लोगों की भलाई करता चला आ रहा है। लगातार हर सुबह वह अपने लोगों के साथ न्याय करता है। किन्तु बुरे लोग अपने किये बुरे कामों के लिये लज्जित नहीं हैं।

6परमेश्वर कहता है, "मैंने पूरे राष्ट्रों को नष्ट कर
दिया है। मैंने उनकी रक्षा मीनारों को नष्ट किया है। मैंने उनकी सड़कें नष्ट की हैं और अब वहां कोई नहीं जाता। उनके नगर सूने हैं, उनमें अब कोई नहीं रहता।
7मैं तुमसे यह इसलिए कह रहा हूँ ताकि तुम शिक्षा लो।
मैं चाहता हूँ कि तुम मुझसे डरो और मेरा सम्मान करो। यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम्हारा घर नष्ट नहीं होगा। यदि तुम ऐसा करोगे तो मैं अपनी बनाई योजना के अनुसार तुम्हें दण्ड नहीं दूँगा।" किन्तु वे बुरे लोग

वैसे ही बुरे काम और अधिक करना चाहते हैं जिन्हें
उन्होंने पहले ही कर रखा हैं!

8यहोवा ने कहा, "अत: तनिक प्रतीक्षा करो! मेरे
खड़े होने और अपने न्याय किये जाने के लिये मेरी
प्रतीक्षा करो। अनेक राष्ट्रों से लोगों को लाने और
तुमको दण्ड देने के लिये उनका उपयोग करने का
निर्णय मेरा है। मैं उन लोगों का उपयोग अपना क्रोध
तुम्हारे विरुद्ध प्रकट करने के लिये करूँगा। मैं उनका
उपयोग यह दिखाने के लिये करूँगा कि मैं कितना
क्षुब्ध हूँ, और यहूदा का पूरा प्रदेश नष्ट होगा! 9तब मैं
अन्य राष्ट्रों के लोगों की सहायता साफ–साफ बोलने
के लिये करूँगा और वे यहोवा के नाम की प्रशंसा
करेंगे। वे सभी एक साथ मेरी उपासना करेंगे। 10लोग
कूश में नदी की दूसरी ओर से पूरा रास्ता तय कर के
आएंगे। मेरे बिखरे लोग मेरे पास आएंगे। मेरे उपासक
मेरे पास आएंगे और अपनी भेंटलाएंगे। 11"यरूशलेम,
तब तुम आगे चलकर उन बुरे कामों के लिये लज्जित
होना बन्द कर दोगे। क्यों? क्योंकि मैं यरूशलेम से उन
सभी बुरे लोगों को निकाल बाहर करूँगा। मैं उन सभी
घमण्डी लोगों को दूर कर दूँगा। उन घमण्डी लोगों में से
कोई भी मेरे पवित्र पर्वत पर नहीं रह जाएगा। 12मैं
केवल सीधे और विनम्र लोगों को अपने नगर (यरूशलेम)
में रहने दूँगा और वे यहोवा के नाम में विश्वास करेंगे।
13इस्राएल के बचे लोग बुरा काम नहीं करेंगे। वे झूठ
नहीं बोलेंगे। वे झूठ बोलकर लोगों को ठगना नहीं
चाहेंगे। वे उन भेड़ों की तरह होंगे जो खाती हैं और
शान्त लेटती है, और कोई भी उन्हें तंग नहीं करेगा।"

आनन्द सन्देश

14हे यरूशलेम, गाओ और आनन्दित होओ! हे इस्राएल,
आनन्द से घोष करो! यरूशलेम, प्रसन्न होओ, तमाशे
करो! 15क्यों? क्योंकि यहोवा ने तुम्हारा दण्ड रोक
दिया! उन्होंने तुम्हारे शत्रुओं की दृढ़ मीनारों को नष्ट
कर दिया! इस्राएल के राजा, यहोवा तुम्हारे साथ है।
तुम्हें किसी बुरी घटना के होने के बारे में चिन्ता करने
की आवश्यकता नहीं! 16उस समय, यरूशलेम से कहा
जाएगा, "दृढ़ बनो, डरो नहीं।"

17तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे साथ हैं। वह
शक्तिशाली सैनिक सा हैं। वह तुम्हारी रक्षा करेगा। वह
दिखायेगा कि वह तुम से कितना प्यार करता है। वह
दिखायेगा कि वह तुम्हारे साथ कितने प्रसन्न है। वे
हसेगा और तुम्हारे बारे में ऐसे प्रसन्न होगा।

18जैसे लोग दावत में होता है।" यहोवा ने कहा, "मैं
तुम्हारी लज्जा को दूर करूँगा। मैं तुम्हारे दुर्भाग्य को तुम
से दूर कर दूँगा।

19उस समय, मैं उन लोगों को दण्ड दूँगा जिन्होंने
तुम्हें चोट पहुँचाई। मैं अपने घायल लोगों की रक्षा
करूँगा। मैं उन लोगों को वापस लाऊँगा, जो भागने
को विवश किये गए थे और मैं उन्हें प्रसिद्ध करूँगा।
लोग सर्वत्र उनकी प्रशंसा करेंगे। 20उस समय, मैं तुम्हें
वापस लाऊँगा। मैं तुम्हें एक साथ वापस लाऊँगा। मैं
तुम्हें प्रसिद्ध बनाऊँगा। सर्वत्र लोग तुम्हारी प्रशंसा
करेंगे। यह तब होगा जब मैं तुम्हारी आँखों के सामने
तुम बन्दियों को वापस लाऊँगा!" यहोवा ने यह सब
कहा।

हाग्गै

मंदिर बनाने का समय

1 परमेश्वर यहोवा का सन्देश नबी हाग्गै के द्वारा
शालतीएल के पुत्र यहूदा के शासक जरुब्बाबेल और
यहोसादाक के पुत्र महायाजक यहोशू को मिला। यह
सन्देश फारस के राजा दारा के दूसरे वर्ष के छठें
महीने के प्रथम दिन मिला था। इस सन्देश में कहा गया:
2सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है, "लोग कहते हैं कि
यहोवा का मंदिर बनाने के लिये समय नहीं आया है।"
3तब यहोवा का संदेश नबी हाग्गै के द्वारा आया,
जिसमें कहा गया था: 4"क्या यह तुम्हारे स्वयं के लिये
लकड़ी मढ़े मकानों में रहने का समय है जबकि यह
मंदिर अभी खाली पड़ा है? 5यही कारण है कि
सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है: जो कुछ तुम्हारे साथ
घट रहा हैं उस के बारे में सोचो!
6तुमने बोया बहुत है, पर तुम काटते हो नहीं के
बराबर। तुम खाते हो, पर तुम्हारा पेट नहीं भरता। तुम
पीते हो, पर तुम्हें नशा नहीं होता। तुम वस्त्र पहनते हो,
किन्तु तुम्हें पर्याप्त गरमाहट नहीं मिलती। तुम जो थोड़ा
बहुत कमाते हो पता नहीं कहां चला जाता है; लगता है
जैसे जेबों में छेद हो गए हैं!'
7"सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, 'जो कुछ तुम्हारे
साथ घट रहा है उसके बारें में सोचो! 8पर्वत पर चढ़ो।
लकड़ी लाओ और मंदिर को बनाओ। तब मैं मंदिर से
प्रसन्न होऊँगा, और सम्मानित होऊँगा।'" यहोवा यह
सब कहता है।
9सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "तुम बहुत अधिक
पाने की चाह में रहते हो, किन्तु तुम्हें नहीं के बराबर
मिलता हैं। तुम जो कुछ भी घर पर लाते हो, मैं इसे उड़ा
ले जाता हूँ! क्यो? क्योंकि मेरा मंदिर खंडहर पड़ा है।
किन्तु तुम लोगों में हर एक को अपने अपने घरों की
पड़ी है। 10यही कारण है कि आकाश अपनी ओस तक
रोक लेता है, और इसी कारण भूमि अपनी फसल नहीं
देती। ऐसा तुम्हारे कारण हो रहा हैं।"
11यहोवा कहता है, "मैंने धरती और पर्वतों पर सूखा
पड़ने का आदेश दिया है। अनाज, नया दाखमधु, जैतून
का तेल, या वह सभी कुछ जिसे यह धरती पैदा करती
है, नष्ट हो जायेगा! तथा सभी लोग और सभी मवेशी
कमजोर पड़ जायेंगे।"

नये मंदिर के कार्य का आरम्भ

12तब शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल और यहोसादाक
के पुत्र महायाजक यहोशू ने सब बचे हुये लोगों के साथ
अपने परमेश्वर यहोवा का सन्देश और उसके भेजे हुये
नबी हाग्गै के वचनों को स्वीकार किया और लोग
अपने परमेश्वर यहोवा से भयभीत हो उठे।
13परमेश्वर यहोवा के सन्देशवाहक हाग्गै ने लोगों
को यहोवा का सन्देश दिया। उसने यह कहा, "मैं तुम्हारे
साथ हूँ।"
14तब परमेश्वर यहोवा ने शालतीएल के पुत्र यहूदा
के शासक जरूब्बाबेल को प्रेरित किया और परमेश्वर
यहोवा ने यहोसादाक के पुत्र महायाजक यहोशू को भी
प्रेरित किया और परमेश्वर यहोवा ने बाकी के सभी
लोगों को भी प्रेरित किया। तब वे आये और अपने
सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा के मंदिर के निर्माण में
काम करने लगे। 15उन्होंने यह राजा दारा के दूसरे वर्ष
के छठें महीने के चौबीसवें दिन किया।

यहोवा का लोगों को प्रेरित करना

2 यहोवा का सन्देश सातवें महीनें के इक्कीसवें दिन
हाग्गै को मिला। सन्देश में कहा गया, 2"अब यहूदा
के शासक शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल, यहोसादाक
के पुत्र महायाजक यहोशू और जो लोग बचे हैं उनसे
बातें करो और कहो: 3"क्या तुममे कोई ऐसा बचा हैं
जिसने उस मंदिर को अपने पहले के वैभव में देखा है।
अब तुमको यह कैसा लग रहा है? क्या खण्डहर हुआ
यह मन्दिर उस पहले वैभवशाली मन्दिर की तुलना में
कहीं भी ठहर पाता हैं? 4किन्तु जरुब्बाबेल, अब तुम
साहसी बनों! यहोवा यह कहता है, 'यहोसादाक के पुत्र
महायाजक यहोशू, तुम भी साहसी बनो और देश के
सभी लोगों तुम भी साहसी बनो!' यहोवा यह कहता है,
'काम करो, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ!' सर्वशक्तिमान
यहोवा यह कहता है!"
5यहोवा कहता है, "जहाँ तक मेरी प्रतिज्ञा की बात है,
जो मैंने तुम्हारे मिस्र से बाहर निकलने के समय तुमसे
की है, वह मेरी आत्मा तुममें हैं। डरो नहीं! 6क्यों?
क्योंकि सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है: 'एक बार
फिर मैं शीघ्र ही पृथ्वी और आकाश एवं समुद्र और

सूखी भूमि को कम्पित करूँगा! **7**मैं सभी राष्ट्रों को
कंपा दूंगा और वे सभी राष्ट्र अपनी सम्पत्ति के साथ
तुम्हारे पास आएंगे। तब मैं इस मंदिर को गौरव से भर
दूंगा! सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है। **8**उनकी चाँदी
मेरी हैं और उनका सोना मेरा है।' सर्वशक्तिमान यहोवा
यही कहता है। **9**इस मंदिर का परवर्ती गौरव प्रथम
मंदिर के गौरव से बढ़कर होगा। सर्वशक्तिमान यहोवा
यह कहता है 'और इस स्थान पर मैं शान्ति स्थापित
करूँगा। सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है!"

कार्य आरंभ हो चुका है वरदान प्राप्त होगा

10यहोवा का सन्देश दारा के दूसरे वर्ष के नौवें महीने
के चौबीसवें दिन नबी हाग्गै को मिला। सन्देश में कहा
गया था, **11**सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है, अब
याजक से पूछो कि व्यवस्था क्या है:

12"संभव है कोई व्यक्ति अपने कपड़ों की तहों में
पवित्र मांस ले चले। संभव है कि उस कपड़े की तह से
जिसमें वह पवित्र मांस ले जा रहा हो, रोटी, या पका
भोजन, दाखमधु, तेल या किसी अन्य भोजन का स्पर्श
हो जाय। क्या वह चीज जिसका स्पर्श तह से होता है
पवित्र हो जायेगी?"

याजक ने उत्तर दिया, "नहीं।"

13तब हाग्गै ने कहा, "संभव है कोई व्यक्ति किसी
शव को छूले। तब वह अपवित्र हो जाएगा। किन्तु यदि
वह किसी चीज को छूएगा तो क्या वह अपवित्र हो
जायेगी?"

तब याजक ने उत्तर दिया, "हाँ, वह अपवित्र हो
जाएगी।"

14तब हाग्गै ने उत्तर दिया, "परमेश्वर यहोवा कहता
है, 'मेरे सामने इन लोगों के प्रति वही नियम है, और
वही नियम इस राष्ट्र के प्रति है! उसके हाथों ने जो
कुछ किया वही नियम उसके लिए भी है। जो कुछ वे
अपने हाथों भेंट करेंगे वह भी अपवित्र होगा। **15**किन्तु
अब कृपया सोचें, आज के पहले क्या हुआ, इसके पूर्व
कि यहोवा, परमेश्वर के मंदिर में एक पत्थर पर दूसरा
पत्थर रखा गया था? **16**एक व्यक्ति बीस माप अनाज
की ढेर के पास आता है, किन्तु वहाँ उसे केवल दस ही
मिलते हैं और जब एक व्यक्ति दाखमधु के पीपे के पास
पचास माप निकालने आता है तो वहाँ वह केवल बीस
ही पाता है! **17**मैंने, तुम्हें और तुम्हारे हाथों ने जो कुछ
किया उसे दण्ड दिया। मैंने तुमको उन बीमारियों से, जो
पौधों को मारती है, और फफूंदी एवं ओलो से, दण्डित
किया। किन्तु तुम फिर भी मेरे पास नहीं आए।' यहोवा
यह कहता है।"

18यहोवा कहता है, "इस दिन से आगे सोचो अर्थात
नौवें महीने के चौबीसवें दिन से जिस दिन यहोवा, के
मंदिर की नींव तैयार की गई। सोचो। **19**क्या बीज अब
भी भण्डार–गृह में है? क्या अंगूर की बेलें, अंजीर के
वृक्ष, अनार और जैतून के वृक्ष अब तक फल नहीं दे
रहे है? नहीं! किन्तु आज के दिन से, आगे के लिए मैं
तुम्हे आशीर्वाद दूँगा।"

20तब महीने के चौबीसवें दिन हाग्गै को दूसरी बार
यहोवा का सन्देश मिला। सन्देश में कहा गया, **21**"यहूदा
के प्रशासक जरुब्बाबेल से कहो, 'मैं आकाश और
पृथ्वी को कंपाने जा रहा हूँ **22**और मैं राज्यों के सिंहासनों
को उठा फेंकूंगा और राष्ट्रों के राज्यों की शक्ति को
नष्ट कर दूंगा और मैं रथों और उनके सवारों को नीचे
फेंक दूंगा। तब घोड़े और उनके घुड़सवार गिरेंगे। भाई,
भाई का दुश्मन हो जाएगा। **23**सर्वशक्तिमान यहोवा कहता
है, "मैं उस दिन शालतीएल के पुत्र, अपने सेवक,
जरुब्बाबेल को लूंगा।" यहोवा परमेश्वर यह कहता है
और मैं तुम्हें मुद्रा अंकित करने की अंगूठी बनाऊँगा।
क्यों? क्योंकि मैंने तुम्हें चुना है!"

सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा है।

जकर्याह

यहोवा अपने लोगों की वापसी चाहता है

1 बेरेक्याह के पुत्र जकर्याह ने यहोवा का सन्देश पाया। फारस में दारा के राज्यकाल के दूसरे वर्ष के आठवें महीने में यह हुआ। जकर्याह बेरेक्याह का पुत्र था। बेरेक्याह इद्दो नबी का पुत्र था। सन्देश यह है:
2यहोवा तुम्हारे पूर्वजों पर बहुत क्रोधित हुआ है।
3अत: तुम्हें लोगों से यह सब कहना चाहिये। यहोवा कहता हैं, "मेरे पास वापस आओ तो मैं तुम्हारे पास वापस लौटूंगा।" यह सब सर्वशक्तिमान यहोवा ने कहा।
4यहोवा ने कहा, "अपने पूर्वजों के समान न बनो। बीते समय में, नबी ने उनसे बातें कीं। उन्होंने कहा, 'सर्वशक्तिमान यहोवा चाहता है कि तुम अपने बुरे रहन–सहन को छोड़ दो। बुरे काम बन्द कर दो!' किन्तु तुम्हारे पूर्वजों ने मेरी एक न सुनी।" यहोवा ने ये बातें कही।
5परमेश्वर ने कहा, "तुम्हारे पूर्वज जा चुके और वे नबी सदैव जीवित न रहे।
6नबी मेरे सेवक थे। मैंने उनका उपयोग तुम्हारे पूर्वजों को अपने व्यवस्था और अपनी शिक्षा देने के लिये किया और तुम्हारे पूर्वजों ने अन्त में शिक्षा ग्रहण की। उन्होंने कहा, 'सर्वशक्तिमान यहोवा ने वह किया जिसे करने को उसने कहा था। उसने हमारे बुरे रहन–सहन और सभी बुरे किये गए कामों के लिये दण्ड दिया।' इस प्रकार वे परमेश्वर के पास वापस लौटे।"

घोड़ों का दर्शन

7जकर्याह ने फारस में दारा के राज्यकाल के दूसरे वर्ष के ग्यारहवें महीने के चौबीसवें दिन, (अर्थात् शबात) यहोवा का दूसरा सन्देश पाया। जकर्याह बेरेक्याह का पुत्र था और बेरेक्याह इद्दो नबी का पुत्र था। सन्देश यह है:
8रात को, मैंने एक व्यक्ति को लाल घोड़े पर बैठे देखा। वह घाटी में कुछ मालती की झाड़ियों के बीच खड़ा था। उसके पीछे लाल, भूरे और श्वेत रंग के घोड़े थे।
9मैंने पूछा, "महोदय, ये घोड़े किसलिये हैं?"
तब मुझसे बात करते हुए, स्वर्गदूत ने कहा, "मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि ये घोड़े किसलिये हैं।"
10तब मालती की झाड़ियों के बीच स्थित उस व्यक्ति ने कहा, "यहोवा ने इन घोड़ों को पृथ्वी पर इधर–उधर घूमने के लिये भेजे हैं।"
11तब घोड़ों ने मालती की झाड़ियों में स्थित यहोवा के दूत से बातें कीं। उन्होंने कहा, "हम लोग पृथ्वी पर इधर–उधर घूम चुके है, और सब कुछ शान्त और व्यवस्थित हैं।"
12तब यहोवा के दूत ने कहा, "यहोवा, आप यरूशलेम और यहूदा के नगर को कब तक आराम दिलायेंगे? अब तो आप इन नगरों पर सत्तर वर्ष तक अपना क्रोध प्रकट कर चुके हैं।"
13तब यहोवा ने उस दूत को उत्तर दिया जो मुझसे बाते कर रहा था। यहोवा ने अच्छे शान्तिदायक शब्द कहे।
14तब यहोवा के दूत ने मुझे लोगों से यह सब कहने को कहा:
सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है: "मैं यरूशलेम और सिय्योन से विशेष प्रेम रखता हूँ
15और मैं उन राष्ट्रों पर बहुत क्रोधित हूँ जो अपने को इतना सुरक्षित अनुभव करते हैं। मैं कुछ क्रोधित हो गया था और मैंने उन राष्ट्रों का उपयोग अपने लोगों को दण्ड देने के लिये किया। किन्तु उन राष्ट्रों ने बहुत अधिक विनाश किया।"
16अत: यहोवा कहता है, "मैं यरूशलेम लौटूँगा और उसे आराम दूँगा।" सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "यरूशलेम का निर्माण पुन: होगा। और वहां मेरा मंदिर बनेगा।"
17स्वर्गदूत ने कहा, "लोगों से यह भी कहो: "सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, 'मेरे नगर फिर सम्पन्न होंगे, मैं सिय्योन को आराम दूँगा। मैं यरूशलेम को अपना विशेष नगर चुनूँगा।'"

सींगों का दर्शन

18तब मैंने ऊपर नजर उठाई और चार सींगों को देखा।
19तब मैंने उस दूत से जो मुझसे बातें कर रहा था, पूछा, "इन सींगों का अर्थ क्या हैं?"
उसने कहा, "ये वे सींगे है, जिन्होंने इस्राएल, यहूदा और यरूशलेम के लोगों को विदेशों में जाने को विवश किया।"

20तब यहोवा ने मुझे चार कारीगर दिखाये। 21मैंने
उनसे पूछा, "ये चार कारीगर क्या करने आ रहे हैं?"
उसने कहा, "ये लोग उन सींगों को नष्ट करने आए
हैं। उन सींगों ने यहूदा के लोगों को विदेशों में जाने को
विवश किया। उन सींगों ने किसी पर दया नहीं दिखाई।
ये सींगे उन राष्ट्रों का प्रतीक है जिन्होंने यहूदा के लोगों
पर आक्रमण किया था और उन्हें विदेशों में जाने को
विवश किया था।"

यरूशलेम को मापने का दर्शन

2 तब मैंने ऊपर निगाह उठाई और मैंने एक व्यक्ति
को नापने की रस्सी को लिये हुए देखा। 2मैंने
उससे पूछा, "तुम कहाँ जा रहे हो?"
उसने मुझे उत्तर दिया, "मैं यरूशलेम को नापने जा
रहा हूँ, कि वह कितना लम्बा तथा कितना चौड़ा हैं।"
3तब वह दूत, जो मुझसे बाते कर रहा था, चला गया
और उससे बातें करने को दूसरा दूत बाहर गया। 4उसने
उससे कहा, "दौड़कर जाओ और उस युवक से कहो
कि यरूशलेम इतना विशाल है कि उसे नापा नहीं जा
सकता। उससे यह कहो, 'यरूशलेम बिना चहारदीवारी
का नगर होगा। क्यों? क्योंकि वहाँ असंख्य लोग और
जानवर रहेंगे। 5यहोवा कहता है, 'मैं उसकी चारों ओर
उसकी रक्षा के लिये आग की दीवार बनूँगा और उस
नगर को गौरव देने के लिये वहीं रहूँगा।'"

परमेश्वर अपने लोगों को घर बुलाता है

यहोवा कहता है, 6"जल्दी करो! उत्तर देश से भाग
निकलो! हाँ, यह सत्य है कि मैंने तुम्हारे लोगों को चारों
ओर बिखेरा। 7सिय्योन के लोगों, तुम बाबुल में बन्दी
हो। किन्तु अब भाग निकलो! उस नगर से भाग जाओ!"
सर्वशक्तिमान यहोवा ने मेरे बारे में यह कहा, "उसने
मुझे भेजा है, जिन्होंने उन राष्ट्रों में युद्ध में तुमसे चीज़ें
छीनीं! 8उसने तुझे प्रतिष्ठा देने को मुझे भेजा है।" किन्तु
उसके बाद, यहोवा मुझे उनके विरुद्ध भेजेगा। क्यों?
क्योंकि यदि वे तुम्हें चोट पहुँचायेंगे तो वह यहोवा की
आँख की पुतली को चोट पहुँचाना होगा। उन राष्ट्रों ने
अपना सम्मान पाया 9और मैं उन लोगों के विरुद्ध
अपना हाथ उठाऊँगा और उनके दास उनकी सम्पत्ति
लेंगे। तब तुम समझोगे कि सर्वशक्तिमान यहोवा ने मुझे
भेजा है।
10यहोवा कहता है, "सिय्योन, प्रसन्न हो! क्यों? क्योंकि
मैं आ रहा हूँ और मैं तुम्हारे नगर में रहूँगा। 11उस
समय अनेक राष्ट्रों के लोग मेरे पास आएंगे और वे मेरे
लोग हो जायेंगे। मैं तुम्हारे नगर में रहूँगा और तुम
जानोगे कि सर्वशक्तिमान यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास
भेजा है।" 12यहोवा यरूशलेम को फिर से अपना विशेष
नगर चुनेगा और यहूदा, पवित्र–भूमि का उनका हिस्सा
होगा। 13सभी व्यक्ति, शान्त हो जाओ! यहोवा अपने
पवित्र घर से बाहर आ रहा है।

महायाजक के बारे में दर्शन

3 तब दूत ने मुझे महायाजक यहोशू को दिखाया।
यहोशू यहोवा के दूत के सामने खड़ा था और
शैतान यहोशू की दायीं ओर खड़ा था। शैतान वहाँ
यहोशू द्वारा किये गए बुरे कामों के लिये दोष देने को
था। 2तब यहोवा के दूत ने कहा, "शैतान, यहोवा तुम्हें
फटकारे। यहोवा तुम्हें अपराधी घोषित करे! यहोवा ने
यरूशलेम को अपना विशेष नगर चुना हैं। उन्होंने उस
नगर को बचाया–जैसे जलती लकड़ी को आग से बाहर
निकाल दिया जाये।"
3यहोशू दूत के सामने खड़ा था और यहोशू गन्दे वस्त्र
पहने था। 4तब अपने समीप खड़े अन्य दूतों से दूत ने
कहा, "यहोशू के गन्दे वस्त्रों को उतार लो।" तब दूत ने
यहोशू से बाते कीं। उसने कहा, "मैंने तुम्हारे अपराधों
को हर लिया है और मैं तुम्हें नये वस्त्र बदलने को देता
हूँ।"
5तब मैंने कहा, "उसके सिर पर एक नयी पगड़ी
बाँधो।" अत: उन्होंने एक नयी पगड़ी उसे बांधी। यहोवा
के दूत के खड़े रहते ही उन्होंने उसे नये वस्त्रपहनाये।
6तब यहोवा के दूत ने यहोशू से यह कहा:
7सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा, "वैसे ही रहो
जैसा मैं कहूँ, और जो मैं कहूँ वह सब करो और तुम
मेरे मंदिर के उच्चाधिकारी होगे। तुम इसके आँगन की
देखभाल करोगे और मैं अनुमति दूँगा कि तुम यहाँ खड़े
स्वर्गदूतों के बीच स्वतन्त्रता से घूमो। 8अत: यहोशू, तुम्हें
और तुम्हारे साथ के लोगों को मेरी बातें सुननी होंगी।
तुम महायाजक हो, और तुम्हारे साथ के लोग दूसरों के
समक्ष एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं और
मैं सच ही,अपने विशेष सेवक को लाऊँगा–उसे शाख
कहते हैं। 9देखो, मैं एक विशेष पत्थर यहोशू के सामने
रखता हूँ। उस पत्थर के सात पहलू है और मैं उस
पत्थर पर विशेष सन्देश खोदूँगा। वह इस तथ्य को
प्रकट करेगा कि मैं एक दिन में इस देश के सभी पापों
को दूर कर दूँगा।"
10सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "उस समय, लोग
बैठेंगे और अपने मित्रों एवं पड़ोसियों को अपने उद्यानों
में आमन्त्रित करेंगे। हर व्यक्ति अपने अंजीर के पेड़
तथा अंगूर की बेल के नीचे अमन–चैन से रहेगा।"

दीपाधार और दो जैतून के पेड़

4 तब जो दूत मुझसे बातें कर रहा था, मेरे पास
आया और उसने मुझे जगाया। मैं नींद से जागे
व्यक्ति की तरह लग रहा था। 2तब दूत ने पूछा, "तुम
क्या देखते हो?"

मैंने कहा, “मैं एक ठोस सोने का दीपाधार देखता हूँ।
उस दीपाधार पर सात दीप हैं और दीपाधार के ऊपरी
सिरे पर एक प्याला है। प्याले में से सात नल निकल रहे
हैं। हर एक नल हर एक दीप तक जा रहा हैं। वे नल
तेल को हर एक दीप के प्याले तक लाते हैं” 3और दो
जैतून के पेड़, एक दायीं और दूसरा बायीं ओर प्याले के
सहारे हैं।”
4और तब मैंने, उस दूत से जो मुझसे बातें कर रहा
था, पूछा, “महोदय, इन सबका अर्थ क्या है?”
5मुझसे बातें करने वाले दूत ने कहा, “क्या तुम नहीं
जानते कि ये सब चीजें क्या हैं?”
मैंने कहा, “नहीं महोदय।”
6तब उसने मुझसे कहा, “यह सन्देश यहोवा की ओर
से जरुब्बाबेल को है: ‘तुम्हारी शक्ति और प्रभुता से
सहायता नहीं मिलेगी। वरन, तुम्हें सहायता मेरी आत्मा
से मिलेगी।’ सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा! 7वह
ऊँचा पर्वत जरूब्बाबेल के लिये समतल भूमि–सा होगा।
वह मंदिर को बनायेगा और जब अन्तिम पत्थर उस
स्थान पर रखा जाएगा तब लोग चिल्ला उठेंगे–‘सुन्दर!
अति सुन्दर।’”
8मुझे यहोवा से मिले सन्देश में भी कहा गया,
9“जरुब्बाबेल मेरे मंदिर की नींव रखेगा और जरुब्बाबेल
मंदिर को बनाना पूरा करेगा। लोगों तब तुम समझोगे
कि सर्वशक्तिमान यहोवा ने मुझे तुम लोगों के पास भेजा
है। 10लोग उस सामान्य आरम्भ से लज्जित नहीं होंगे
और वे सचमुच तब प्रसन्न होंगे, जब वे जरुब्बाबेल को
पूरी की गई भवन को साहुल से नापते और जांच करते
देखेंगे। अत: पत्थर के सात पहलू जिन्हें तुमने देखा वे
यहोवा की आँखों के प्रतीक हैं जो हर दिशा में देख रही
हैं। वे पृथ्वी पर सब कुछ देखती हैं।”
11तब मैंने (जकर्याह) उससे कहा, “मैंने एक जैतून
का पेड़ दीपाधार की दायीं ओर और एक बायीं ओर
देखा। उन दोनों जैतून के पेड़ों का तात्पर्य क्या है?”
12मैंने उससे यह भी कहा, “मैंने जैतून की दो शाखायें
सोने के रंग के तेल को ले जाते, सोने के नलों के
सहारे देखीं। इन चीज़ों का तात्पर्य क्या हैं?”
13तब दूत ने मुझसे कहा, “क्या तुम नहीं जानते कि
इन चीज़ों का तात्पर्य क्या है?”
मैंने कहा, “नहीं महोदय।”
14अत: उसने कहा, “वे उन दो व्यक्तियों के प्रतीक
है, जो सारे संसार में यहोवा की सेवा के लिये चुने गए
थे।”

उड़ता हुआ गोल लिपटा पत्रक

5 मैंने फिर निगाह ऊँची की और मैंने एक उड़ता
हुआ गोल लिपटा पत्रक देखा। 2दूत ने मुझसे पूछा,
“तुम क्या देखते हो?”
मैंने कहा, “मैं एक उड़ता हुआ गोल लिपटा पत्रक
देखता हूँ। यह गोल लिपटा पत्रक तीस फुट लम्बा और
पन्द्रह फूट चौड़ा है।”
3तब दूत ने मुझसे कहा, “उस गोल लिपटे पत्रक पर
एक शाप लिखा है। उस गोल लिपटे पत्रक की एक
ओर चोरों को शाप लिखा हैं और दूसरी ओर उन लोगों
को शाप है, जो प्रतिज्ञा करके झूठ बोलते हैं। 4सर्वशक्तिमान
यहोवा कहता है, “मैं इस गोल लिपटे पत्रक को चोरों के
घर और उन लोगों के घर भेजूँगा, जो गलत प्रतिज्ञा
करते समय मेरे नाम का उपयोग करते हैं। वह गोल
लिपटा पत्रक वहीं रहेगा और यह उन घरों को नष्ट
करेगा। यहाँ तक कि पत्थर और लकड़ी के खम्भे भी
नष्ट हो जाएंगे।”

स्त्री और टोकरी

5तब मेरे साथ बात करने वाला दूत बाहर गया। उसने
मुझसे कहा, “देखो! तुम क्या होता हुआ देख रहे हो?”
6मैंने कहा, “मैं नहीं जानता, कि यह क्या हैं?”
उसने कहा, “वह मापक टोकरी हैं।” उसने यह भी
कहा, “यह टोकरी इस देश के लोगों के पापों को नापने
के लिये है।”
7टोकरी का ढक्कन सीसे का था। जब वह खोला
गया, तब उसके भीतर बैठी स्त्री मिली। 8दूत ने कहा,
“स्त्री बुराई का प्रतीक है।” तब दूत ने स्त्री को टोकरी
में धक्का दे डाला और सीसे के ढक्कन को उसके
मुख में रख दिया। इससे यह प्रकट होता था, कि पाप
बहुत भारी (बुरा) है। 9तब मैंने नजर उठाई और दो
स्त्रियों को सारस के समान पंख सहित देखा। वे उड़ी
और अपने पंखों में हवा के साथ उन्होंने टोकरी को
उठा लिया। वे टोकरी को लिये हवा में उड़ती रहीं।
10तब मैंने बातें करने वाले उस दूत से पूछा, “वे टोकरी
को कहाँ ले जा रही हैं?”
11दूत ने मुझसे कहा, “वे शिनार में इसके लिये एक
मंदिर बनाने जा रही हैं। जब वे मंदिर बना लेंगी तो वे
उस टोकरी को वहाँ रखेंगी।”

चार रथ

6 तब मैं चारों ओर घूम गया। मैंने निगाह उठाई
और मैंने चार रथों को चार कांसे के पर्वतों के
बीच से जाते देखा। 2प्रथम रथ को लाल घोड़े खींच रहे
थे। दूसरे रथ को काले घोड़े खींच रहे थे। 3तीसरे रथ
को श्वेत घोड़े खींच रहे थे और चौथे रथ को लाल
धब्बे वाले घोड़े खींच रहे थे। 4तब मैंने बात करने वाले
उस दूत से पूछा, “महोदय, इन चीज़ों का तात्पर्य क्या
है?”
5दूत ने कहा, “ये चारों दिशाओं की हवाओं के
प्रतीक हैं। वे अभी सारे संसार के स्वामी के यहाँ से

आये हैं। 6काले घोड़े उत्तर को जाएंगे। लाल घोड़े पूर्व
को जाएंगे। श्वेत घोड़े पश्चिम को जाएंगे और लाल
धब्बेदार घोड़े दक्षिण को जाएंगे।"
7लाल धब्बेदार घोड़े अपने हिस्से की पृथ्वी को देखते
हुए जाने को उत्सुक थे, अत: दूत ने उनसे कहा,
"जाओ, पृथ्वी का चक्कर लगाओ।" अत:, वे अपने
हिस्से की पृथ्वी पर टहलते हुए गए।
8तब यहोवा ने मुझे जोर से पुकारा। उन्होंने कहा,
"देखो, वे घोड़े, जो उत्तर को जा रहे थे, अपना काम
बाबुल में पूरा कर चुके। उन्होंने मेरी आत्मा को शान्त
कर दिया– अब मैं क्रोधित नहीं हूँ।"

याजक यहोशू एक मुकुट पाता है

9तब मैंने यहोवा का एक अन्य सन्देश प्राप्त किया।
उसने कहा, 10"हेल्दै, तोबिय्याह और यदायाह बाबुल
के बन्दियों में से आ गए हैं। उन लोगों से चाँदी और
सोना लो और तब सपन्याह के पुत्र योशियाह के घर
जाओ। 11उस सोने–चांदी का उपयोग एक मुकुट बनाने
में करो। उस मुकुट को यहोशू के सिर पर रखो।
(यहोशू महायाजक था। यहोशू यहोसादाक का पुत्र था।)
तब यहोशू से ये बातें कहो:
12सर्वशक्तिमान यहोवा यह सब कहता है, "शाख नामक
एक व्यक्ति है। वह शक्तिशाली हो जाएगा। 13वह यहोवा
का मंदिर बनाएगा, और वह सम्मान पाएगा। वह अपने
राजसिंहासन पर बैठेगा, और शासक होगा। उसके
सिंहासन की बगल में एक याजक खड़ा होगा और ये
दोनों व्यक्ति शान्तिपूर्वक एक साथ काम करेंगे।
14"वे मुकुट को मंदिर में रखेंगे जिससे लोगों को याद
रखने में सहायता मिलेगी। वह मुकुट हेल्दै, तोबिय्याह,
यदायाह और सपन्याह के पुत्र योशियाह को सम्मान
प्रदान करेगा। 15दूर के निवासी लोग आएंगे और मंदिर
को बनाएंगे। लोगों, तब तुम समझोगे कि यहोवा ने मुझे
तुम लोगों के पास है। यह सब कुछ घटित होगा, यदि
तुम वह करोगे, जिसे करने को यहोवा कहता है।"

यहोवा दया और करुणा चाहता है

7 फारस में दारा के राज्यकाल के चौथे वर्ष, जकर्याह
को यहोवा का एक सन्देश मिला। यह नौवे महीने
का चौथा दिन था। (अर्थात् किस्लव।) 2बेतेल के लोगों
ने शरेसेर, रेगेम्मेलेक और अपने साथियों को यहोवा से
एक प्रश्न पूछने को भेजा।
3वे सर्वशक्तिमान यहोवा के मंदिर में नबियों और
याजकों के पास गए। उन लोगों ने उनसे यह प्रश्न पूछा:
"हम लोगों ने कई वर्ष तक मंदिर के ध्वस्त होने का
शोक मनाया है। हर वर्ष के पाँचवें महीने में, रोने और
उपवास रखने का हम लोगों का विशेष समय रहा हैं।
क्या हमें इसे करते रहना चाहिये?"
4मैंने सर्वशक्तिमान यहोवा का यह सन्देश पाया है:
5"याजकों और इस देश के अन्य लोगों से यह कहो: जो
उपवास और शोक पिछले सत्तर वर्षों से वर्ष के पाँचवें
और सातवें महीने में तुम करते आ रहे हो, क्या वह
उपवास, सच ही, मेरे लिये था? नहीं! 6और जब तुमने
खाया और दाखमधु पिया तब क्या वह मेरे लिये था?
नहीं! यह तुम्हारी अपनी भलाई के लिये ही था। 7परमेश्वर
ने प्रथम नबियों का उपयोग बहुत पहले यही बात कहने
के लिये किया था। उन्होंने यह बात तब कही थी, जब
यरूशलेम मनुष्यों से भरा–पूरा सम्पत्तिशाली था।
परमेश्वर ने ये बाते तब कही थीं, जब यरूशलेम के
चारों ओर के नगरों में तथा नेगव एवं पश्चिमी पहाड़ियों
की तराईयों में लोग शान्तिपूर्वक रहते थे।"
8जकर्याह को यहोवा का यह सन्देश है:
9सर्वशक्तिमान यहोवा ने ये बातें कहीं, "तुम्हें जो सत्य
और उचित हो, करना चाहिये। तुममें हर एक को एक
दूसरे के प्रति दयालु और करूणापूर्ण होना चाहिये।
10विधवाओं, अनाथों, अजनबियों या दीन लोगों को चोट
न पहुँचाओ। एक दूसरे का बुरा करने का विचार भी
मन में न आने दो! 11किन्तु उन लोगों ने अनसुनी की।
उन्होंने उसे करने से इन्कार किया जिसे वे चाहते थे।
उन्होंने अपने कान बन्द कर लिये, जिससे वे, परमेश्वर
जो कहे, उसे न सुन सकें। 12वे बड़े हठी थे। उन्होंने
परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करना अस्वीकार
कर दिया। अपनी आत्मशक्ति से सर्वशक्तिमान यहोवा ने
नबियों द्वारा अपने लोगों को सन्देश भेजे। किन्तु लोगों
ने उसे नहीं सुना, अत: सर्वशक्तिमान यहोवा बहुत क्रोधित
हुआ। 13अत: सर्वशक्तिमान यहोवा ने कहा, "मैंने उन्हें
पुकारा और उन्होंने उत्तर नहीं दिया। इसलिये अब यदि
वे मुझे पुकारेंगे, तो मैं उत्तर नहीं दूँगा। मैं अन्य राष्ट्रों
को तूफान की तरह उनके विरुद्ध लाऊँगा। वे उन्हें
नहीं जानते, किन्तु जब वे देश से गुजरेंगे, तो वह उजड़
जाएगा। यह सुहावना देश नष्ट हो जाएगा।"

यहोवा यरूशलेम को आशीर्वाद देने की प्रतिज्ञा करताहै

8 यह सन्देश सर्वशक्तिमान यहोवा का है
2सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "मैं सच ही, सिय्योन
से प्रेम करता हूँ। मैं उससे इतना प्रेम करता हूँ कि, जब
वह मेरी विश्वासपात्र न रही, तब मैं उस पर क्रोधित हो
गया।" 3यहोवा कहता है, "मैं सिय्योन के पास वापस आ
गया हूँ। मैं यरूशलेम में रहने लगा हूँ। यरूशलेम विश्वास
नगर कहलाएगा। मेरा पर्वत, पवित्र पर्वत कहा जाएगा।"
4सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "यरूशलेम में फिर
बूढ़े स्त्री–पुरुष सामाजिक स्थलों पर दिखाई पड़ेंगे। लोग
इतनी लम्बी आयु तक जीवित रहेंगे कि उन्हें सहारे की
छड़ी की आवश्यकता होगी 5और नगर सड़को पर

खेलने वाले बच्चों से भरा होगा। 6बचे हुये लोग इसे
आश्चर्यजनक मानेंगे और मैं भी इसे आश्चर्यजनक
मानूँगा!"
7सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "देखो, मैं पूर्व और
पश्चिम के देशों से अपने लोगों को बचा ले चल रहा हूँ।
8मैं उन्हें यहाँ वापस लाऊँगा और वे यरूशलेम में रहेंगे।
वे मेरे लोग होंगे और मैं उनका अच्छा और विश्वसनीय
परमेश्वर होऊँगा!"
9सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "शक्तिशाली बनो!
लोगों, तुम आज वही सन्देश सुन रहे हो, जिसे नबियों ने
तब दिया था जब सर्वशक्तिमान यहोवा ने अपने मंदिर
को फिर से बनाने के लिये नींव डाली। 10उस समय के
पहले लोगों के पास श्रमिकों को मजदूरी पर रखने या
जानवर को किराये पर लेने के लिये धन नहीं था और
मनुष्यों का आवागमन सुरक्षित नहीं था। सारी आपत्तियों
से किसी प्रकार की मुक्ति नहीं थी। मैंने हर एक को
अपने पड़ोसी के विरुद्ध कर दिया था। 11किन्तु अब
वैसा नहीं है। बचे हुओं के लिये अब वैसा नहीं होगा।
सर्वशक्तिमान यहोवा ने ये बातें कहीं।
12"ये लोग शान्ति के साथ फसल लगायेंगे। उनके
अंगूर के बाग अंगूर देंगे। भूमि अच्छी फसल देगी तथा
आकाश वर्षा देगा। मैं ये सभी चीजें अपने इन लोगों को
दूँगा। 13लोग अपने शापों में यरूशलेम और यहूदा का
नाम लेने लगे हैं। किन्तु मैं इस्राएल और यहूदा को
बचाऊँगा और उनके नाम वरदान के रूप में प्रमाणित
होने लगेंगे। अत: डरो नहीं। शक्तिशाली बनो!"
14सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "तुम्हारे पूर्वजों ने
मुझे क्रोधित किया था। अत: मैंने उन्हें नष्ट करने का
निर्णय लिया। मैंने अपने इरादे को न बदलने का निश्चय
किया।" सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा। 15"किन्तु
अब मैंने अपना इरादा बदल दिया है और उसी तरह
मैंने यरूशलेम और यहूदा के लोगों के प्रति अच्छा बने
रहने का निश्चय किया है। अत: डरो नहीं! 16किन्तु
तुम्हें यह करना चाहिए: अपने पड़ोसियों से सत्य बोलो।
जब तुम अपने नगरों में निर्णय लो, तो वह करो जो
सत्य, ठीक और शान्ति लाने वाला हो। 17अपने पड़ोसियों
को चोट पहुँचाने के लिये गुप्त योजनायें न बनाओ!
झूठी प्रतिज्ञायें न करो! ऐसा करने में तुम्हें आनन्द नहीं
लेना चाहिये। क्यों? क्योंकि मैं उन बातों से घृणा करता
हूँ।" यहोवा ने यह सब कहा।
18मैंने सर्वशक्तिमान यहोवा का यह सन्देश पाया।
19सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "तुम्हारे शोक मनाने
और उपवास के विशेष दिन चौथे महीने, पाँचवे महीने,
सातवे महीने और दसवें महीने में हैं। वे शोक के दिन
प्रसन्नता के दिन में बदल जाने चाहिये। वे अच्छे और
प्रसन्नता के पवित्र दिन होंगे और तुम्हें सत्य और शान्ति
से प्रेम करना चाहिए!"
20सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "भविष्य में, अनेक
नगरों से लोग यरूशलेम आएंगे।
21एक नगर के लोग दूसरे नगर के मिलने वाले लोगों
से कहेंगे, "हम सर्वशक्तिमान यहोवा की उपासना करने
जा रहे हैं, 'हमारे साथ आओ!' 22अनेक लोग और अनेक
शक्तिशाली राष्ट्र सर्वशक्तिमान यहोवा की खोज में
यरूशलेम आएंगे। वे वहाँ उनकी उपासना करने आएंगे।
23सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "उस समय, विभिन्न
राष्ट्रों से विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले दस व्यक्ति
एक यहूदी के चादर का पल्ला पकड़ेंगे और कहेंगे,
"हमने सुना है कि परमेश्वर तुम्हारे साथ है। क्या हम
उनकी उपासना करने तुम्हारे साथ आ सकते हैं?'"

अन्य राष्ट्रों के विरुद्ध न्याय

9 एक दु:खपूर्ण सन्देश। यह यहोवा का सन्देश हद्राक
के देश और उसकी राजधानी दमिश्क के बारे में
है: "इस्राएल के परिवार समूह के लोग ही एक मात्र वे
लोग नहीं है जो परमेश्वर के बारे में जानते हैं। हर एक
व्यक्ति सहायता के लिये उनकी ओर देख सकता है।
2हद्राक के देश की सीमा हमात है और सोर तथा
सीदोन भी यही करते हैं। (वे लोग बहुत बुद्धिमान हैं।)
3सोर एक क़िले की तरह बना है। वहाँ के लोगों ने
चाँदी इतनी इकट्ठा की है, कि वह धूलि के समान
सुलभ है और सोना इतना सामान्य है, जितनी मिट्टी।
4किन्तु हमारे स्वामी यहोवा, यह सब ले लेगा। वे उसकी
शक्तिशाली नौसेना को नष्ट करेगा और वह नगर आग
से नष्ट हो जाएगा!
5"अश्कलोन में रहने वाले लोग इन घटनाओं को
देखेंगे और वे डरेंगे। अज्जा के लोग भय से काँप उठेंगे
और एक्रोन के लोग सारी आशाएँ छोड़ देंगे, जब वे उन
घटनाओं को घटित होते देखेंगे। अज्जा में कोई राजा
बचा नहीं रहेगा। कोई भी व्यक्ति अब अश्कलोन में
नहीं रहेगा। 6अश्दाद में लोग यह भी नहीं जानेंगे कि
उनके अपने पिता कौन हैं? मैं गर्वीले पलिश्ती लोगों
को पूरी तरह नष्ट कर दूँगा। 7वे रक्त सहित माँस को
या कोई भी वर्जित भोजन नहीं खायेंगे। कोई भी बचा
पलिश्ती हमारे राष्ट्र का अंग बनेगा। वे यहूदा में एक
नया परिवार समूह होंगे। एक्रोन के लोग हमारे लोगों के
एक भाग होंगे जैसा कि यबूसी लोग बन गए। मैं अपने
देश की रक्षा करूँगा। 8मैं शत्रु की सेनाओं को यहाँ से
होकर नहीं निकलने दूँगा। मैं उन्हें अपने लोगों को
और अधिक चोट नहीं पहुँचाने दूँगा। मैंने अपनी आँखों
से देखा कि अतीत में मेरे लोगों ने कितना कष्ट उठाया।"

भविष्य का राजा

9सिय्योन, आनन्दित हो! यरूशलेम के लोगों आनन्द–
घोष करो! देखो, तुम्हारा राजा तुम्हारे पास आ रहा है!

वह विजय पाने वाला एक अच्छा राजा है। किन्तु वह
विनम्र है। वह गधे पर सवार है, एक गधे के बच्चे पर
सवार है।
10राजा कहता है, "मैंने एप्रैम में रथों को और यरूशलेम
में घुड़सवारों को नष्ट किया। मैंने युद्ध में प्रयोग किये
गये धनुषों को नष्ट किया।" अन्य राष्ट्रों ने शान्ति–संधि
की बातें सुनीं। वह राजा सागर से सागर तक राज्य
करेगा। वह नदी से लेकर पृथ्वी के दूरतम स्थानों पर
राज्यकरेगा।

यहोवा अपने लोगों की रक्षा करेगा

11यरूशलेम हमने अपनी वाचा को खून से मुहरबन्द
किया। अत: मैंने तुम्हारे बन्दियों को स्वतन्त्र कर दिया,
तुम्हारे लोग उस सूने बन्दीगृह में अब नहीं रह गये हैं।
12बन्दियों, अपने घर जाओ! अब तुम्हारे लिये कुछ
आशा का अवसर है। अब मैं तुमसे कह रहा हूँ, मैं
तुम्हारे पास लौट रहा हूँ! 13यहूदा, मैं तुम्हारा उपयोग
एक धनुष–जैसा करूँगा। एप्रैम, मैं तुम्हारा उपयोग बाणों
जैसा करूँगा। इस्राएल, मैं तुम्हारा उपयोग यूनान से
लड़ने के लिए दृढ़ तलवार जैसा करूँगा।
14यहोवा उसके सामने प्रकट होगा और वह अपने
बाण बिजली की तरह चलायेगा। यहोवा, मेरे स्वामी
तुरही बजाएगा और सेना मरुभूमि के तूफान के समान
आगे बढ़ेगी।
15सर्वशक्तिमान यहोवा उनकी रक्षा करेगा। सैनिक
पत्थर और गुलेल का उपयोग शत्रु को पराजित करने
में करेंगे। वे अपने शत्रुओं का खून बहायेंगे, यह दाखमधु
जैसा बहेगा। यह वेदी के कोनों पर फेंके गए खून
जैसाहोगा!
16उस समय, उनके परमेश्वर यहोवा अपने लोगों
को वैसे ही बचाएगा, जैसे गड़ेरिया भेड़ों को बचाता है।
वे उनके लिये बहुत मूल्यवान होंगे। वे उनके हाथों में
जगमगाते रत्न–से होंगे। 17हर एक चीज अच्छी और
सुन्दर होगी!

वहाँ अद्भुत फसल होगी, किन्तु वहाँ केवल अन्न
और दाखमधु नहीं होगी। वहाँ युवक–युवतियाँ होंगी!

यहोवा की प्रतिज्ञायें

10 बसन्त ऋतु में यहोवा से वर्षा के लिये प्रार्थना
करो। यहोवा बिजली भेजेगा और वर्षा होगी।
और परमेश्वर हर एक व्यक्ति के खेत में पौधे उगायेगा।
2ये जादूगर अपनी छोटी मूर्तियों और जादू का उपयोग
भविष्य की घटनाओं को जानने के लिए करते हैं,
किन्तु यह सब व्यर्थ है। वे लोग दर्शन करते है और
अपने स्वप्नों के बारे में कुछ कहते हैं, किन्तु यह सब
व्यर्थ झूठ के अलावा कुछ नहीं हैं। अत: लोग भेड़ों की
तरह इधर–उधर सहायता के लिये पुकारते हुए भटक
रहे हैं। किन्तु उनको रास्ता दिखाने वाला कोई गड़ेरिया
नहीं।
3यहोवा कहता है, "मैं गड़ेरियों (प्रमुखों) पर बहुत
क्रोधित हूँ। मैंने उन प्रमुखों को अपनी भेड़ों (लोगों) की
देखभाल का उत्तरदायित्व सौंपा था।" यहूदा के लोग
परमेश्वर की रेवड़ है और सर्वशक्तिमान यहोवा, सचमुच,
अपनी रेवड़ की देखभाल करता है। वह उनकी ऐसी
देख भाल रखता है, जैसे कोई सैनिक अपने घोड़े की
रखताहै।
4"कोने का पत्थर, डेरे की खूँटी, युद्ध का धनुष
और आगे बढ़ते सैनिक सभी यहूदा से एक साथ आएंगे।
5वे अपने शत्रुओं को पराजित करेंगे, यह कीचड़ में
सड़कों पर आगे बढ़ते सैनिकों जैसा होंगे। वे युद्ध करेंगे,
और यहोवा उनके साथ है। अत: वे शत्रु के घुड़सवारों
को भी हरायेंगे। 6मैं यहूदा के परिवार को शक्तिशाली
बनाऊँगा। मैं यूसुफ के परिवार को युद्ध में विजयी
बनाऊँगा। मैं उन्हें स्वस्थ और सुरक्षित वापस लाऊँगा।
मैं उन्हें आराम दूँगा। यह ऐसा होगा, मानों मैंने उन्हें
कभी नहीं छोड़ा। मैं यहोवा, उनका परमेश्वर हूँ और
मैं उनकी सहायता करूँगा। 7एप्रैम के लोग शक्तिशाली
पुरुष होंगे और ऐसे प्रसन्न होंगे, जैसे वे सैनिक जिन्हें
पीने के लिये बहुत अधिक मिल गया हो। उनकी सन्तानें
आनन्द मनायेंगी और वे भी प्रसन्न रहेंगे। वे सभी एक
साथ यहोवा के साथ आनन्द का अवसर पाएंगे।
8"मैं उनको सीटी दे कर सभी को एक साथ बुलाऊँगा।
मैं, सच ही, उन्हें बचाऊँगा। ये लोग असंख्य हो जाएंगे।
9हाँ, मैं सभी राष्ट्रों में अपने लोगों को बिखेर रहा हूँ।
किन्तु उन देशों में वे मुझे याद करेंगे। वे और उनकी
सन्तानें बची रहेंगी। और वे वापस आएंगे। 10मैं उन्हें
मिस्र और अश्शूर से वापस लाऊँगा। मैं उन्हें गिलाद
क्षेत्र में लाऊँगा और क्योंकि वहाँ काफी जगह नहीं
होगी। अत: मैं उन्हें समीप के लबानोन में भी रहने
दूँगा।" 11(यह वैसा ही होगा, जैसा यह पहले तब था, जब
परमेश्वर उन्हें मिस्र से निकाल लाया था। उसने समुद्र
की तरंगों पर चोट की थी। समुद्र फट गया था और
लोग विपत्ति के समुद्र को पैदल पार कर गए थे। यहोवा
नदियों की धाराओं को सुखा देगा। वे अश्शूर के गर्व
और मिस्र की शक्ति को नष्ट कर देगा।) 12यहोवा
अपने लोगों को शक्तिशाली बनाएगा और वे उनके
और उनके नाम के लिये जीवित रहेंगे। यहोवा ने यह
सब कहा।

परमेश्वर यहूदा के चारों ओर के राष्ट्रों को दण्ड देगा

11 लबानोन, अपने द्वार खोलो, क्योंकि आग भीतर
आएगी और वह तुम्हारे देवदारू के पेड़ों को
जला देगी।

2साइप्रस के पेड़ रोएंगे क्योंकि देवदारू के पेड़ गिर गए। वे विशाल पेड़ उठा लिये गए। बाशान के ओक–वृक्षों, उस वन के लिये रोओ, जो काट डाला गया।

3रोते गड़ेरियों की सुनो। उनके शक्तिशाली प्रमुख दूर कर दिये गए। जवान सिंहों की दहाड़ को सुनो। यरदन नदी के किनारे की उनकी घनी झाड़ियां ले ली गई।

4मेरा परमेश्वर यहोवा कहता है, "उन भेड़ों की रक्षा करो, जिन्हें मारने के लिये पाला गया हैं। 5उनके प्रमुख, स्वामी और व्यापारी के समान है। स्वामी अपनी भेड़ों को मारता है और उन्हें दण्ड नहीं मिलता। व्यापारी भेड़ों को बेचता है और कहता है, 'यहोवा की महिमा से मैं सम्पन्न हूँ।" गड़ेरिये अपनी भेड़ों के लिये दु:खी नहीं होते 6और मैं इस देश में रहने वालों के लिये दु:खी नहीं होता।" यहोवा ने यह सब कहा, "देखो, मैं हर एक को उसके पड़ोसी और राजा के हाथ सौंप दूँगा। मैं उन्हें उनका देश नष्ट करने दूँगा, मैं उन्हें रोकूँगा नहीं!"

7अत: मैंने उन दीन भेड़ों की देखभाल की, जिन्हें मारने के लिये पाला गया था। मुझे दो छड़ियाँ मिलीं। मैंने एक छड़ी का नाम अनुग्रह रखा और दूसरी छड़ी को एकता कहा और तब मैंने भेड़ों की देखभाल आरम्भ की। 8मैंने सभी तीन गड़ेरियों को एक महीने में नष्ट कर दिया। मैं भेड़ों पर क्रोधित हुआ और वे मुझसे घृणा करने लगीं। 9तब मैंने कहा, "मैं तुम्हें छोड़ता हूँ! मैं तुम्हारी देखभाल नहीं करूँगा! मैं उन्हें मर जाने दूँगा, जो मर जाना चाहते हैं। मैं उन्हें नष्ट हो जाने दूँगा, जो नष्ट किया जाना चाहते है। और जो बचेंगे वे एक दूसरे को नष्ट करेंगे।" 10तब मैंने अनुग्रह नामक छड़ी ली और इसे तोड़ दी। मैंने यह इस बात को प्रकट करने के लिये किया कि सभी राष्ट्रों के साथ परमेश्वर की वाचा टूट गई। 11अत: उस दिन वाचा समाप्त हो गई और उन दीन भेड़ों ने जो मेरी ओर देख रही थीं, समझ लिया कि यह सन्देश यहोवा का है।

12तब मैंने कहा, "यदि तुम मुझे भुगतान करना चाहते हो, तो भुगतान करो, यदि नहीं चाहते तो मत करो!" अत: उन्होंने चांदी के तीस टुकड़े दिये। 13तब यहोवा ने मुझसे कहा, "इसका अर्थ है कि वे मेरी कीमत कितनी आंकते हैं। उन अधिक धन को मंदिर के खज़ाने में डाल दो।" इसलिये मैंने चांदी के तीस टुकड़ों को लिया और उन्हें यहोवा के मंदिर के खजाने में डाल दिया। 14तब मैंने एकता नामक छड़ी को दो टुकड़ों में काट डाला। यह, मैंने यह बात प्रकट करने के लिये किया कि इस्राएल और यहूदा के बीच की एकता टूट गई।

15तब यहोवा ने मुझसे कहा, "अब, एक ऐसी छड़ी की खोज करो, जिसका उपयोग वास्तव में भेड़ों को हाँकने के लिये न हो सके। 16यह इस बात को प्रकट करेगा कि मैं इस देश के लिये एक नया गड़ेरिया लाऊँगा। "किन्तु यह युवक उन भेड़ों की देखभाल करने में सक्षम नहीं होगा, जो नष्ट की जा चुकी है। वह चोट खाई भेड़ों को स्वस्थ नहीं कर सकेगा। वह उन्हें खिला नहीं पाएगा जो अभी जीवित बची हैं। और स्वस्थ भेड़ें सारी खा ली जाएंगी, केवल उनकी खुरें बची रहेंगी।"

17हे मेरे नालायक गड़ेरिये। तुमने मेरी भेड़ों को त्याग दिया। उसे दण्ड दो! तलवार से उसकी दायीं भुजा और दायीं आंख पर प्रहार करो। उनकी दायीं भुजा व्यर्थ होगी और उसकी दायीं आंख अन्धी होगी।

यहूदा के चारो ओर के राष्ट्रों के बारे में दर्शन

12 इस्राएल के बारे में यहोवा का दु:खद सन्देश। यहोवा ने पृथ्वी और आकाश को बनाया। उसने मनुष्य की आत्मा को रचा और यहोवा ने ये बातें कहीं, 2"देखो, मैं यरूशलेम को उसके चारों ओर के राष्ट्रों के लिये जहर का प्याला जैसा बनाऊँगा। राष्ट्र आएंगे और उस नगर पर प्रहार करेंगे और सारा यहूदा जाल में जा फंसेगा। 3किन्तु मैं यरूशलेम को भारी चट्टान बनाऊँगा और जो कोई इसे उठाने की कोशिश करेगा स्वयं घायल होगा। वे लोग, सचमुच, कटेंगे और जख्मी हो जाएंगे। किन्तु पृथ्वी के सारे राष्ट्र एक साथ आएंगे और यरूशलेम के विरुद्ध लड़ेंगे। 4किन्तु उस समय, मैं घोड़ों को भयभीत कर दूँगा और घुड़सवार घबरा जाएंगे। मैं शत्रु के सभी घोड़ों को अन्धा कर दूँगा, किन्तु मेरी आंखे खुली होंगी और मैं यहूदा के परिवार की रक्षा करता रहूँगा। 5यहूदा के परिवार प्रमुख लोगों को उत्साहित करेंगे। वे कहेंगे, 'सर्वशक्तिमान यहोवा तुम्हारा परमेश्वर हैं। वह हमें शक्तिशाली बना रहा है।' 6उस समय, मैं यहूदा परिवार के प्रमुखों को जंगल में जलती हुई आग जैसा बनाऊँगा। वह अपने शत्रुओं को तिनके को भस्म करने वाली आग जैसा भस्म कर देगा। वह अपने चारों ओर के शत्रुओं को नष्ट कर देगा और यरूशलेम के निवासी फिर बैठने और आराम करने की स्थिति में होंगे।"

7पहले यहोवा यहूदा के लोगों को बचायेगा, अत: यरूशलेम के निवासी बहुत अधिक डींग नहीं हांकेंगे। दाऊद के परिवार और यरूशलेम में रहने वाले अन्य लोग यह डींग नहीं हांक सकेंगे कि वे यहूदा में रहने वाले अन्य लोगों से अच्छे हैं। 8किन्तु यहोवा यरूशलेम के लोगों की रक्षा करेंगे। यहाँ तक कि कमजोर से कमजोर आदमी दाऊद के समान बड़ा योद्धा बनेगा और दाऊद के परिवार के लोग यहोवा के अपने दूतों की तरह मार्गदर्शक होंगे।

9यहोवा कहता है, "उस समय, मैं उन राष्ट्रों को नष्ट करूँगा जो यरूशलेम के विरुद्ध युद्ध करने आएंगे। 10मैं दाऊद के घर और यरूशलेम के निवासियों के हृदय में दया और करुणा की भावना भरूंगा। वे मेरी ओर

देखेंगे, जिसे उन्होंने छेद डाला था और वे बहुत दुखी होंगे। वे इतने ही दुखी होंगे, जितना अपने इकलौते पुत्र की मृत्यु पर रोनेवाला व्यक्ति, या अपने पहलौठे पुत्र की मृत्यु पर रोनेवाला व्यक्ति। 11यरूशलेम में एक बड़े शोक और रूदन का समय आएगा। यह उस समय की तरह होगा, जब मगिद्दो घाटी में हदद्रिम्मोन की मृत्यु पर लोग रोए थे। 12हर एक परिवार अकेले रोएंगे। दाऊद के परिवार के लोग अकेले रोएंगे और उनकी पत्नियाँ अकेली रोएंगी। नथन के परिवार के पुरुष अकेले रोएंगे, और उनकी पत्नियाँ अकेली रोएंगी। 13लेवी के परिवार के पुरुष अकेले रोएंगे और उनकी पत्नियाँ अकेली रोएंगी। शिमई के परिवार के पुरुष अकेले रोएंगे और उनकी पत्नियां अकेली रोएंगी। 14और यही बात सभी परिवार समूहों में होगी। पुरुष अकेले रोएंगे और स्त्रियाँ अकेली रोएंगी।"

13 किन्तु उस समय, पानी का एक नया स्रोत दाऊद के परिवार तथा यरूशलेम में रहने वाले लोगों के लिये फूट पड़ेगा। वह सोता उनके पापों को धो देगा और लोगों को शुद्ध कर देगा।

झूठे नबी भविष्य में नहीं

2सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "उस समय, मैं पृथ्वी से सभी मूर्तियों को हटा दूँगा। लोग उनका नाम भी याद नहीं रखेंगे और मैं झूठे नबियों और अशुद्ध आत्माओं को भी पृथ्वी से हटा दूँगा। 3यदि कोई व्यक्ति भविष्यवाणी करता रहता है तो उसे दण्ड मिलेगा। यहाँ तक कि उसके माता–पिता, उसकी अपनी माँ और अपने पिता उससे कहेंगे, 'तुमने यहोवा के नाम पर झूठ बोला है। अत: तुम्हें मर जाना चाहिए!' उसकी अपनी माँ और उसके अपने पिता भविष्यवाणी करने के कारण उसे छुरा घोंप देंगे। 4उस समय, नबी अपनी भविष्यवाणी और अपने दर्शन के लिये लज्जित होंगे। वे उस तरह का मोटा वस्त्र नहीं पहनेंगे, जो यह प्रकट करे कि व्यक्ति नबी है। वे उन वस्त्रों को, भविष्यवाणी कहे जाने वाले झूठ से, लोगों को धोखा देने के लिये नहीं पहनेंगे। 5वे लोग कहेंगे, 'मैं नबी नहीं हूँ मैं एक किसान हूँ। मैंने बचपन से किसान के रूप में काम किया हैं।' 6अन्य लोग कहेंगे, 'किन्तु तुम्हारे हाथों पर ये घाव कैसे हैं?' वह कहेगा, 'यह चोट मुझे अपने मित्र के घर लगी।'"

7सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "तलवार, गड़ेरिये पर चोट कर! मेरे मित्र को मार! गड़ेरिये पर प्रहार करो और भेड़ें भाग खड़ी होंगी और मैं उन छोटों को दण्ड दूँगा। 8देश के दो तिहाई लोग चोट खाएंगे और मरेंगे। किन्तु एक तिहाई बचे रहेंगे। 9तब मैं उन बचे हुए लोगों की जाँच करूँगा। मैं उन्हें बहुत से कष्ट दूँगा। वे कष्ट उस आग की तरह होंगे, जिसे एक व्यक्ति चाँदी की शुद्धता की परख के लिये उपयोग करता है। मैं उनकी जाँच वैसे ही करूँगा, जैसे व्यक्ति सोने की जांच करता है। तब वे सहायता के लिये मेरी पुकार करेंगे, और मैं उनकी सहायता करूँगा। मैं कहूँगा, 'तुम मेरे लोग हो।' और वे कहेंगे, 'यहोवा मेरा परमेश्वर है।'"

निर्णय का दिन

14 देखो, यहोवा निर्णय का विशेष दिन रखता है और जो धन तुमने लिया है वह तुम्हारे नगर में बँटेगा। 2मैं सभी राष्ट्रों को यरूशलेम के विरुद्ध लड़ने के लिये एक साथ लाऊँगा। वे नगर पर अधिकार करेंगे तथा घरों को नष्ट करेंगे। स्त्रियों के साथ कुकर्म होगा, और लोगों में से आधे बन्दी बनाए जाएंगे। किन्तु बाकी लोग नगर से नहीं ले जाए जाएंगे। 3तब यहोवा उन राष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध करेगा। यह एक सच्चा युद्ध होगा। 4उस समय, वह जैतून के पर्वत पर खड़े होगा। वह पहाड़ी जो यरूशलेम के पूर्व है। अंजीर का पर्वत फट पड़ेगा। पर्वत का एक भाग उत्तर को जाएगा और दूसरा भाग दक्षिण को। एक गहरी घाटी पूर्व से पश्चिम तक उभर आएगी। 5जैसे–जैसे वह पर्वतीय घाटी तुम्हारे समीप, और समीप आती जाएगी, तुम भाग जाना चाहोगे। तुम उसी समय की तरह भागोगे, जैसे तुम यहूदा के राजा उज्जिय्याह के समय में भूकम्प से भागे थे। किन्तु यहोवा, मेरा परमेश्वर आएगा और उनके सभी पवित्र लोग उनके साथ होंगे।

6–7वह एक बहुत अधिक विशेष दिन होगा। उस दिन प्रकाश, शीत और तुषार कुछ नहीं होगा। केवल यहोवा ही जानता हैं कि यह कैसे होगा, किन्तु कोई दिन–रात नहीं होंगे। तब जब सामान्य रूप से अंधेरा आएगा, तो उस समय उजाला भी होगा। 8उस समय, यरूशलेम से लगातार पानी बहेगा। वह धारा बंट जाएंगी और एक भाग पूर्व को बहेगा और एक भाग पश्चिम को भूमध्य सागर तक जाएगा और यह पूरे वर्ष ग्रीष्म और शीत ऋतु दोनों में बहेगा 9और यहोवा उस समय, पूरे संसार के राजा होगा। यहोवा एक है। उसका नाम "एक" है। 10उस समय यरूशलेम के चारों ओर का क्षेत्र अराबा मरुभूमि की तरह सूना हो जाएगा। गेब से लेकर नेगव में रिम्मोन तक देश मरुभूमि सा हो जाएगा। किन्तु यरूशलेम का पूरा नगर फिर से, बिन्यामीन द्वार से प्रथम द्वार (अर्थात् कोने का द्वार) और हननेल की मीनार से राजा के दाखमधु निष्कासक तक बनेगा। 11प्रतिबन्ध उठ जायेगा और लोग वहाँ अपने घर बनायेंगे। यरूशलेम सुरक्षित होगा।

12किन्तु यहोवा उन राष्ट्रों को दण्ड देगा जो यरूशलेम के विरुद्ध लड़े। वह उन्हें भयंकर बीमारी लगा देगा। खड़े खड़े उनका शरीर गल जायेगा। उनकी आँखें उनके कोटर में गलेंगी तथा उनकी जीभ उनके मुखों में गलेगी। 13-15वह भंयकर बीमारी शत्रुओं के डेरे में

होगी और उनके घोड़ों, खच्चरों, ऊँटों और गधों को
वह भंयकर बीमारी लगजाएगी।

उस समय, वे लोग, सचमुच, यहोवा से डरेंगे। वे एक
दूसरे का गला दबायेंगे। वे एक दूसरे पर प्रहार करने के
लिये हाथ उठाएंगे। यहूदा के लोग यरूशलेम में युद्ध
करेंगे, किन्तु वे नगर के चारों ओर के राष्ट्रों से धन
प्राप्त करेंगे। वे बहुत अधिक सोना, चाँदी, और वस्त्र
प्राप्त करेंगे। **16**कुछ लोग जो यरूशलेम में युद्ध करने
आएंगे। वे बच जाएंगे और हर वर्ष वे राजा, सर्वशक्तिमान
यहोवा की उपासना को आएंगे। वे झोपड़ियों का पर्व
मनाने आएंगे **17**और यदि पृथ्वी के किसी परिवार के
लोग राजा, सर्वशक्तिमान यहोवा की उपासना करने
यरूशलेम नहीं जाएंगे तो यहोवा उन्हें वर्षा से वंचित कर
देगा। **18**यदि मिस्र का कोई परिवार बटोरने का पर्व
मनाने नहीं आएगा, तो उसे वही भंयकर बीमारी होगी,
जो यहोवा ने अन्य शत्रु राष्ट्रों को लगा दी थी। **19**वह
मिस्र के लिये तथा किसी भी राष्ट्र के लिये दण्ड होगा,
जो बटोरने का पर्व मनाने नहीं आएगा।

20उस समय, हर एक चीज परमेश्वर का होगा। यहाँ
तक कि घोड़े के कक्षबन्ध पर भी "यहोवा का
पवित्र'नामक सूचक होगा और यहोवा के मंदिर में
उपयोग में आने वाले सभी बर्तन वैसे ही महत्वपूर्ण होंगे,
जैसे वेदी पर उपयोग में आने वाला प्याला। **21**वस्तुत:,
यहूदा और यरूशलेम की हर एक तश्तरी पर
"सर्वशक्तिमान यहोवा को पवित्र" नामक सूचक होगा।
और हर एक व्यक्ति जो यहोवा की उपासना करेगा,
उन तश्तरियों में भोजन पकाने और भोजन करने का
अधिकारी होगा और उस समय, सर्वशक्तिमान यहोवा
के मंदिर में वस्तुएं क्रय-विक्रय करने वाला कोई
व्यापारी नहीं होगा।

मलाकी

1 परमेश्वर का सन्देश। यह सन्देश यहोवा का है। इस
सन्देश को मलाकी ने इस्राएल को दिया।

परमेश्वर इस्राएल से प्रेम करता है

2यहोवा ने कहा, "लोगों, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।"
किन्तु तुमने कहा, "कैसे पता चले कि तू हमसे प्रेम
करता है?"
यहोवा ने कहा, "एसाव याकूब का भाई था। ठीक?
किन्तु मैंने याकूब को चुना 3और मैंने एसाव को स्वीकार
नहीं किया। मैंने एसाव के पहाड़ी प्रदेश को नष्ट किया।
एसाव का देश नष्ट किया गया और अब वहाँ केवल
जंगली कुत्ते रहते हैं।"
4संभव है एदोम के लोग कहे, "हम नष्ट किये गए।
किन्तु हम अपने नगरों को पुन: बनाएंगे।"
किन्तु सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "यदि वे उन
नगरों को पुन: बनाते हैं तो मैं उन्हें पुन: नष्ट करूँगा!"
इसलिए लोग एदोम को बुरा देश कहते हैं। लोग कहते है
कि यहोवा उन लोगों से सदा के लिये घृणा करता है।
5लोगों, तुमने यह सब देखा और कहा, "इस्राएल के
बाहर भी यहोवा महान है।"

ये याजक परमेश्वर को सम्मान नहीं देते

6सर्वशक्तिमान यहोवा ने कहा, "बच्चे अपने पिता का
सम्मान करते हैं। सेवक अपने स्वामियों का सम्मान
करते हैं। मैं तुम्हारा पिता हूँ, अत: तुम मेरा सम्मान
क्यों नहीं करते? मैं तुम्हारा स्वामी हूँ, अत: तुम मेरा
सम्मान क्यों नहीं करते? याजकों, तुम मेरे नाम का
सम्मान नहीं करते।"
किन्तु तुम कहते हो, "हमने क्या किया है, जो प्रकट
करता है कि हम तेरे नाम का सम्मान नहीं करते?"
7यहोवा ने कहा, "तुम मेरी वेदी पर अशुद्ध रोटी लाते
हो!"
किन्तु तुम कहते हो, "वह रोटी अशुद्ध कैसे हैं?"
यहोवा ने कहा, "तुम मेरी मेज (वेदी) का सम्मान
नहीं करते। 8तुम अन्धे जानवर बलि के लिये लाते हो
और यह गलत है। तुम बलि के लिये रोगी और विकलांग
जानवर लाते हो। यह गलत हैं! तुम अपने शासक को
उन रोगी जानवरों को भेंट देने का प्रयत्न करो। क्या
वह उन जानवरों को भेंट के रूप में स्वीकार करेगा?
नहीं! वह उन भेंटों को स्वीकार नहीं करेगा!"
सर्वशक्तिमान यहोवा यह सब कहता है!
9"याजकों, तुम्हें यहोवा से हमारे लिए अच्छा बने
रहने की प्रार्थना करनी चाहिये। किन्तु वह तुम्हारी
नहीं सुनेगा और यह सारा दोष तुम्हारा है।" सर्वशक्तिमान
यहोवा ने यह सब कहा।
10"निश्चय ही, तुम लोगों में से कोई याजक तो मंदिर
के द्वारों को बन्द करता और आग ठीक-ठीक जलाता।
सो मैं तुम लोगों से प्रसन्न नहीं हूँ। मैं तुम्हारी भेंट
स्वीकार नहीं करूँगा।" सर्वशक्तिमान यहोवा यह सब
कहता है।
11"संसार में सर्वत्र लोग मेरे नाम का सम्मान करते
हैं। संसार में सर्वत्र लोग मेरे लिये अच्छी भेंटे लाते हैं। वे
अच्छी सुगन्धि मेरी भेंट के रूप में जलाते हैं। क्यों?
क्योंकि मेरा नाम उन सभी लोगों के लिये महत्वपूर्ण
है।" सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा।
12"किन्तु लोगों, तुम यह प्रकट करते हो कि तुम
मेरे नाम का सम्मान नहीं करते। तुम कहते हो कि
यहोवा की मेज (वेदी) पवित्र नहीं हैं 13और तुम उस
मेज से भोजन लेना पसन्द नहीं करते। तुम भोजन को
सूंघते हो और उसे खाने से इन्कार करते हो। तुम
कहते हो कि यह बुरा हैं। किन्तु यह सत्य नहीं है।
तुम रोगी, विकलांग और चोट खाये जानवर मेरे लिये
लाते हो। तुम रोगी जानवरों को मुझे बलि के रूप
में भेंट करने का प्रयत्न करते हो। किन्तु मैं तुमसे
उन रोगी जानवरों को स्वीकार नहीं करूँगा। 14कुछ
लोगों के पास अच्छे नर-जानवर हैं, जिसे वे बलि के
रूप में दे सकते हैं। किन्तु वे उन अच्छे जानवरों को
मुझे नहीं देते। कुछ लोग मेरे पास अच्छे जानवर लाते
हैं। वे उन स्वस्थ जानवरों को मुझे देने की प्रतिज्ञा
करते हैं। किन्तु वे गुप्त रूप से उन अच्छे जानवरों
को बदल देते हैं और मुझे रोगी जानवर देते हैं। उन
लोगों के साथ बुरा घटेगा! मैं महान राजा हूँ। तुम्हें मेरा
सम्मान करना चाहिये! संसार में सर्वत्र लोग मेरा
सम्मान करते हैं!" सर्वशक्तिमान यहोवा ने वह सब
कहा!

याजकों के लिये नियम

2 "याजकों, यह नियम तुम्हारे लिये हैं! मेरी सुनो! जो
मैं कहता हूँ उस पर ध्यान दो। मेरे नाम का
सम्मान करो! 2यदि तुम मेरे नाम का सम्मान नहीं
करते तो तुम्हारे साथ बुरा घटित होगा। तुम आशीर्वाद
दोगे, किन्तु वे अभिशाप बनेंगे। मैं बुरा घटित कराऊँगा
क्योंकि तुम मेरे नाम का सम्मान नहीं करते!"
सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा।
3"देखो, मैं तुम्हारे वंशजों को दण्ड दूँगा। याजकों, तुम
पवित्र दिनों को मुझे बलि-भेंट करते हो। तुम गोबर
और मरे जानवर की अंतड़ियों को लेते हो और उन
भागों को फेंक देते हो। किन्तु मैं उस गोबर को तुम्हारे
चेहरों पर मलूंगा और तुम इसके साथ फेंक दिये जाओगे!
4तब तुम समझोगे कि मैं तुम्हें यह आदेश क्यों दे रहा
हूँ? मैं तुमको ये बातें इसलिये बता रहा हूँ कि लेवी के
साथ मेरी वाचा चलती रहेगी।" सर्वशक्तिमान यहोवा ने
यह सब कहा।" 5यहोवा ने कहा, "मैंने यह वाचा लेवी
के साथ की। मैंने उसे शान्तिपूर्ण जीवन देने की प्रतिज्ञा
की और मैंने उसे वह दिया। लेवी ने मुझे सम्मान दिया।
उसने मेरे नाम को सम्मान दिया! 6लेवी ने सच्ची शिक्षा
दी। लेवी ने झूठे उपदेश नहीं दिये! लेवी ईमानदार और
शान्तिप्रिय व्यक्ति था। लेवी ने मेरा अनुसरण किया
और अनेक व्यक्तियों को पाप कर्मों से बचाया। 7याजक
को परमेश्वर के उपदेशों को जानना चाहिए। लोगों को
याजक के पास जाने योग्य होना चाहिये और परमेश्वर
की शिक्षा को सीखना चाहिए। याजक को लोगों के लिये
परमेश्वर का दूत होना चाहिए।"
8यहोवा ने कहा, "याजकों, तुमने मेरा अनुसरण करना
छोड़ दिया! तुमने शिक्षाओं का उपयोग लोगो से बुरा
काम कराने के लिये किया। तुमने लेवी के साथ किए
गए वाचा को भ्रष्ट किया!" सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह
सब कहा! 9"तुम उस तरह नहीं रहे जैसा रहने को मैंने
कहा! तुमने हमारी शिक्षाओं को स्वीकार नहीं किया
हैं! अत: मैं तुम्हें महत्वहीन बनाऊँगा, लोग तुम्हारा
सम्मान नहीं करेंगे!"

यहूदा परमेश्वर के प्रति सच्चा नहीं रहा

10हम सब का एक ही पिता (परमेश्वर) है। उसी
परमेश्वर ने हम सभी को बनाया! अत: लोग अपने
भाईयों को क्यों ठगते हैं? वे लोग प्रकट करते हैं कि वे
वाचा का सम्मान नहीं करते। वे उस वाचा का सम्मान
नहीं करते जिसे हमारे पूर्वजों ने परमेश्वर के साथ
किया। 11यहूदा के लोगों ने अन्य लोगों को ठगा। यरूशलेम
और इस्राएल के लोगों ने भयंकर काम किये! यहूदा के
निवासियों ने यहोवा के पवित्र मंदिर का सम्मान नहीं
किया। परमेश्वर उस स्थान से प्रेम करता है। यहूदा के
लोगों ने उन विदेशी स्त्रियों से विवाह किए जो झूठे देवों
की पूजा किया करती थी! 12यहोवा उन लोगों को
यहूदा के परिवार से दूर कर देगा। वे लोग यहोवा के
पास भेंट ला सकते हैं, किन्तु उससे कोई सहायता नहीं
मिलेगी। 13तुम रो सकते हो और यहोवा की वेदी को
आंसुओं से ढक सकते हो, किन्तु यहोवा तुम्हारी भेंट
स्वीकार नहीं करेगा। यहोवा उन चीजों से प्रसन्न नहीं
होगा, जिन्हें तुम उसके पास लाओगे।
14तुम पूछते हो, "हमारी भेंटे यहोवा द्वारा स्वीकार
क्यों नहीं की जातीं?" क्यों? क्योंकि यहोवा ने तुम्हारे
किये बुरे कामों को देखा, वह तुम्हारे विरुद्ध साक्षी है।
उसने देखा कि तुम अपनी पत्नी को ठगते हो। तुम उस
स्त्री के साथ तब से विवाहित हो जबसे तुम जवान हुए
थे। वह तुम्हारी प्रेयसी थी। तब तुमने परस्पर प्रतिज्ञा की
और वह तुम्हारी पत्नी हो गई। किन्तु तुमने उसे ठगा।
15परमेश्वर चाहता है कि पति और पत्नी एक शरीर
और एक आत्मा हो जायें। क्यों? जिससे उनके बच्चे
पवित्र हों। अत: उस आध्यात्मिक एकता की रक्षा करो।
अपनी पत्नी को न ठगो। वह तुम्हारी पत्नी तब से है
जब से तुम युवक हुए।
16इस्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, "मैं विवाह-
विच्छेद से घृणा करता हूँ। मैं पुरुषों के क्रूर कामों से
घृणा करता हूँ। अत: अपनी आत्मिक एकता की सुरक्षा
करो। अपनी पत्नी को धोखा मत दो।"

न्याय का विशेष समय

17तुमने गलत शिक्षा दी है। और उन गलत शिक्षाओं
ने यहोवा को बहुत अधिक दु:खी किया है। तुमने यह
शिक्षा दी कि परमेश्वर उन्हें पसन्द करता है जो बुरे
काम करते हैं। तुमने कहा कि परमेश्वर उन्हें अच्छे
लोग समझता है और तुमने यह शिक्षा दी कि परमेश्वर
लोगों को बुरा काम करने के लिये दण्ड नहीं देता।
3 सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "देखो मैं अपना
दूत भेज रहा हूँ। वह मेरे लिए मार्ग तैयार करेगा।
यहोवा जिसकी खोज में तुम हो, वह अचानक अपने
मंदिर में आयेगा। वाचा का संदेशवाहक सचमुच आ
रहा है।"
2"कोई व्यक्ति उस समय के लिये तैयारी नहीं कर
सकता। कोई व्यक्ति उसके विरुद्ध खड़ा नहीं हो सकता,
जब वह आयेगा। वह जलती आग के समान होगा। वह
उस अच्छी रेह की तरह होगा जिसे लोग चीजों को
स्वच्छ करने के लिये उपयोग में लाते हैं। 3वह लेवीवंशियों
को पवित्र करेगा। वह उन्हें ऐसे ही शुद्ध करेगा जैसे
आग चांदी को शुद्ध करती है! वह उन्हें शुद्ध सोना और
चाँदी के समान बनाएगा। तब वे यहोवा को भेंट लाएंगे
और वे उन कामों को ठीक ढंग से करेंगे। 4तब यहोवा
यहुदा और यरूशलेम में भेंटे स्वीकार करेगा। यह बीते
काल के समान होगा। यह पुराने लम्बे समय की तरह

होगा। 5तब मैं तुम्हारे पास आऊँगा और तब मैं ठीक
काम करूँगा। मैं उस गवाह की तरह होऊँगा जो लोगों
द्वारा किये गए बुरे कामों के बारे में न्यायाधीश से
कहता है। कुछ लोग बुरे जादू करते हैं। कुछ लोग
व्यभिचार का पाप करते हैं। कुछ लोग झूठी प्रतिज्ञायें
करते हैं। कुछ लोग अपने मजदूरों को ठगते हैं–वे
अपनी वाचा की गई रकम नहीं देते। लोग विधवाओं
और अनाथों की सहायता नहीं करते। लोग अजनबियों
की सहायता नहीं करते। लोग मेरा सम्मान नहीं करते!"
सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कहा।

परमेश्वर के यहाँ से चोरी

6"मैं यहोवा हूँ, और मैं बदलता नहीं। तुम याकूब की
सन्तान हो, और तुम पूरी तरह नष्ट नहीं किये गए।
7किन्तु तुमने मेरे नियमों का कभी पालन नहीं किया।
यहाँ तक कि तुम्हारे पूर्वजों ने भी मेरा अनुसरण करना
बन्द कर दिया। मेरे पास वापस लौटो और मैं तुम्हारे
पास वापस लौटूँगा।" सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब
कहा। तुम कहते हो, "हम वापस कैसे लौट सकते हैं?"

8परमेश्वर को लूटना बन्द करो! लोगों को परमेश्वर
की चीजें नहीं चुरानी चाहियें किन्तु तुमने मेरी चीजेंचुराई!"

तू पूछता हैं, "हमने तेरा क्या चुराया?"

"तुम्हें मुझको अपनी चीज़ों का दसवां भाग देना चाहिये
था। तुम्हें मुझे विशेष भेंट देनी चाहिये थी। किन्तु तुमने
वे चीज़ें मुझे नहीं दीं। 9इस प्रकार तुम्हारे पूरे राष्ट्र ने
मेरी चीज़ें चुराई हैं। इस से बुरी घटनायें तुम्हारे साथ घट
रही हैं।" सर्वशक्तिमान यहोवा यह सब कहता है।

10सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "इस परीक्षा की
जांच करो। अपनी चीजों का दसवां भाग मुझको लाओ।
उन चीजों को खज़ाने में रखो। मेरे घर भोजन लाओ।
मुझे परख कर तो देखो। तुम यदि उन कामों को करोगे
तो मैं, सच ही, तुम्हें आशीर्वाद दूँगा। तुम्हारे पास अच्छी
चीज़ें वैसे ही हो जाएंगी जैसे गगन से वर्षा होती हैं। तुम
हर चीज आवश्यकता से अधिक पाओगे। 11मैं कीड़ों
को तुम्हारी फसलों को नष्ट नहीं करने दूँगा। तुम्हारी
अंगूर की सभी बेलें अंगूर उपजाएंगी।" सर्वशक्तिमान
यहोवा यह सब कहता है।

12"अन्य राष्ट्रों के लोग तुम्हारे प्रति भले रहेंगे। तुम्हारा
देश सचमुच आश्चर्यजनक देश होगा।" सर्वशक्तिमान
यहोवा यह सब सकता है।

न्याय का विशेष समय

13यहोवा कहता है, "तुमने मुझसे ओछी बातें कहीं।"
किन्तु तुम पूछते हो, "हमने तेरे बारे में क्या कहा?"

14"तुमने कहा, 'यहोवा की उपासना व्यर्थ हैं। हमने
वे काम किये जो यहोवा ने करने को कहे, किन्तु हम
लोगों को कुछ भी नहीं मिला। हम अपने पापों के लिये
वैसे ही दुखी रहे जैसे मैयत में रोते लोग। किन्तु इससे
कुछ काम नहीं निकला। 15हम समझते रहे कि गर्वीलें
लोग सुखी रहते हैं। दुष्ट लोग सफल होते हैं। वे परमेश्वर
के धैर्य की परीक्षा करने के लिये बुरे काम करते हैं,
और परमेश्वर उन्हें दण्ड नहीं देता।'" 16परमेश्वर के
भक्तों ने आपस में बातें कीं और यहोवा ने उनकी सुनी।
उसके सामने एक पुस्तक हैं। उस पुस्तक में परमेश्वर
के भक्तों के नाम हैं। वे ही लोग है जो यहोवा के नाम
का सम्मान करते हैं।

17यहोवा ने कहा, "वे लोग मेरे हैं। मैं उन पर कृपालु
रहूंगा। व्यक्ति अपने उन बच्चों पर अधिक कृपालु
रहता है जो उसके आज्ञाकारी होते हैं। उसी प्रकार मैं
अपने भक्तों पर कृपालु रहूंगा। 18लोगों, तुम मेरे पास
वापस लौटोगे और तुम अच्छे और बुरे का अन्तर
समझोगे। तुम परमेश्वर के भक्त और जो भक्त नहीं हैं
उसके बीच के अन्तर को समझोगे।

4 "न्याय का समय आ रहा है। यह गर्म भट्टी–सा
होगा। वे सभी गर्वीलें व्यक्ति दण्डित होंगे। वे सभी
पापी लोग सूखी घास की तरह जलेंगे। उस समय वे आग
में ऐसी जलती झाड़ी–से होंगे जिसकी कोई शाखा याजड़
बची नहीं रहेगी।" सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब
कहा।

2"किन्तु, मेरे भक्तों, तुम पर अच्छाई उगते सूरज के
समान चमकेगी और यह सूरज की किरणों की तरह
स्वास्थ्यवर्धक शक्ति देगी। तुम ऐसे ही स्वतन्त्र और
प्रसन्न होओगे जैसे अपने बाड़े से स्वतन्त्र हुए बछड़े।
3तब तुम उन बुरे लोगों को कुचलोगे, वे तुम्हारे पैरों के
नीचे की राख–से होंगे। मैं न्याय के समय इन घटनाओं
को घटित कराऊँगा।" सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब
कहा!

4"मूसा की व्यवस्था को याद करो और पालन करो।
मूसा मेरा सेवक था। मैंने होरेब (सिनाइ) पर्वत पर उन
विधियों और नियमों को उसे दिया। वे नियम इस्राएल
के सभी लोगों के लिये हैं।"

5यहोवा ने कहा, "देखो, मैं नबी एलिय्याह को तुम्हारे
पास भेजूँगा। वह यहोवा के यहाँ से उस महान और
भयंकर न्याय के समय से पहले आएगा। 6एलिय्याह
माता–पिता को अपने बच्चों के समीप होने में सहायता
करेगा। यह अवश्य घटित होगा, या मैं (परमेश्वर)
आऊँगा और तुम्हारे देश को पूरी तरह नष्ट कर
दूँगा!"

मत्ती

यीशु की वंशावली
(लूका 3:23-38)

1 इब्राहीम के वंशज दाऊद के पुत्र यीशु मसीह की वंशावली इस प्रकार है:

2 इब्राहीम का पुत्र था इसहाक
और इसहाक का पुत्र हुआ याकूब।
फिर याकूब के यहूदा
और उसके भाई उत्पन्न हुए।
3 यहूदा के बेटे थे फिरिस और जोरह।
(उनकी माँ का नाम तामार था।)
फिरिस, हिस्रोन का पिता था।
हिस्रोन राम का पिता था।
4 राम अम्मीनादाब का पिता था।
आम्मीनादाब से नहशोन
और नहशोन से सलमोन का जन्म हुआ।
5 सलमोन से बोअज का जन्म हुआ।
(बोअज की माँ का नाम राहब था।)
बोअज और रूथ से ओबेद पैदा हुआ,
ओबेद यिशै का पिता था।
6 और यिशै से राजा दाऊद पैदा हुआ।
(सुलैमान दाऊद का पुत्र था)
जो उस स्त्री से जन्मा जो पहले
उरिय्याह की पत्नी थी।
7 सुलैमान रहबाम का पिता था
और रहबाम अबिय्याह का पिता था।
अबिय्याह से आसा का जन्म हुआ।
8 और आसा यहोशाफात का पिता बना।
फिर यहोशाफात से योराम
और योराम से उज्जिय्याह का जन्म हुआ।
9 उज्जिय्याह योताम का पिता था
और योताम, आहाज का।
फिर आहाज से हिजकिय्याह।
10 और हिजकिय्याह से मनश्शिह का जन्म हुआ।
मनश्शिह आमोन का पिता बना
और आमोन योशिय्याह का।
11 फिर इस्राएल के लोगों को बंदी बना कर बेबिलोन
ले जाते समय योशिय्याह से
यकुन्याह और उसके भाईयों ने जन्म लिया।
12 बेबिलोन में ले जाये जाने के बाद यकुन्याह
शालतिएल का पिता बना।
और फिर शालतिएल से जरुब्बाबिल।
13 तथा जरुब्बाबिल से अबीहूद पैदा हुए।
अबीहूद इल्याकीम का
और इल्याकीम अजोर का पिता बना।
14 अजोर सदोक का पिता था।
सदोक से अखीम
और अखीम से इलीहूद पैदा हुए।
15 इलीहूद इलियाजार का पिता था
और इलियाजार मत्तान का।
मत्तान याकूब का पिता बना।
16 और याकूब से यूसुफ पैदा हुआ।
जो मरियम का पति था।
मरियम से यीशु का जन्म हुआ
जो मसीह कहलाया।

17इस प्रकार इब्राहीम से दाऊद तक चौदह पीढ़ियाँ
हुई। और दाऊद से लेकर बंदी बना कर बाबुल पहुँचाये
जाने तक की चौदह पीढ़ियाँ, तथा बंदी बना कर बाबुल
पहुँचाये जाने से मसीह के जन्म तक चौदह पीढ़ियाँ और
हुई।

यीशु मसीह का जन्म
(लूका 2:1-7)

18यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ: जब उसकी
माता मरियम की यूसुफ के साथ सगाई हुई तो विवाह
होने से पहले ही पता चला कि वह पवित्र आत्मा की
शक्ति से गर्भवती है। 19किन्तु उसका भावी पति यूसुफ
एक अच्छा व्यक्ति था। और इसे प्रकट करके लोगों में
उसे बदनाम करना नही चाहता था। इसलिये उसने
निश्चय किया कि चुपके से वह सगाई तोड़ दे। 20किन्तु
जब वह इस बारे में सोच ही रहा था, सपने में उसके
सामने प्रभु के दूत ने प्रकट होकर उससे कहा, "ओ!
दाऊद के पुत्र यूसुफ, मरियम को पत्नी बनाने से मत
डर क्योंकि जो बच्चा उसके गर्भ में है, वह पवित्र
आत्मा की ओर से है। 21वह एक पुत्र को जन्म देगी। तू
उसका नाम यीशु रखना क्योंकि वह अपने लोगों को
उनके पापों से उद्धार करेगा।"

22यह सब कुछ इसलिये हुआ है कि प्रभु ने भविष्यवक्ता
द्वारा जो कुछ कहा था, पूरा हो: 23“सुनो, एक कुँवारी
कन्या गर्भवती होकर एक पुत्र को जन्म देगी। उसका
नाम इम्मानुएल रखा जायेगा।” (जिसका अर्थ है ‘परमेश्वर
हमारे साथ है।’)

24जब यूसुफ नींद से जागा तो उसने वही किया जिसे
करने की प्रभु के दूत ने उसे आज्ञा दी थी। वह मरियम
को ब्याह कर अपने घर ले आया। 25किन्तु जब तक
उसने पुत्र को जन्म नही दे दिया, वह उसके साथ नही
सोया। यूसुफ ने बेटे का नाम यीशु रखा।

पूर्व से विद्वानों का आना

2 हेरोदेस जब राज्य कर रहा था, उन्हीं दिनों यहूदिया
के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ। कुछ ही समय
बाद कुछ विद्वान जो सितारों का अध्ययन करते थे, पूर्व
से यरूशलेम आये। 2उन्होंने पूछा, “यहूदियों का नवजात
राजा कहाँ है? हमने उसके सितारे को, आकाश में
देखा है। इसलिए हम पूछ रहे हैं। हम उसकी आराधना
करने आये हैं।” 3जब राजा हेरोदेस ने यह सुना तो वह
बहुत बेचैन हुआ और उसके साथ यरूशलेम के दूसरे
सभी लोग भी चिंता करने लगे। 4सो उसने यहूदी समाज
के सभी प्रमुख याजकों और धर्मशास्त्रियों को इकट्ठा
करके उनसे पूछा कि मसीह का जन्म कहाँ होना है।
5उन्होंने उसे बताया, “यहूदिया के बैतलहम में। क्योंकि
भविष्यवक्ता द्वारा लिखा गया है कि:

6‘ओ, यहूदा की धरती पर स्थित बैतलहम, तू यहूदा
के अधिकारियों में किसी प्रकार भी सबसे छोटा नहीं
क्योंकि तुझ में से एक शासक प्रकट होगा जो मेरे लोगों
इस्राएल की, करेगा देखभाल।” *मीका 5:2*

7तब हेरोदेस ने सितारों का अध्ययन करने वाले उन
विद्वानों को बुलाया और पूछा कि वह सितारा किस
समय प्रकट हुआ था। 8फिर उसने उन्हें बैतलहम भेजा
और कहा “जाओ उस शिशु के बारे में अच्छी तरह से
पता लगाओ और जब वह तुम्हें मिल जाये तो मुझे
बताओ ताकि मैं भी आकर उसकी उपासना कर सकूँ।”

9फिर वे राजा की बात सुनकर चल दिये। वह सितारा
भी जिसे आकाश में उन्होंने देखा था उनके आगे आगे
जा रहा था। फिर जब वह स्थान आया जहाँ वह बालक
था, तो सितारा उसके ऊपर रुक गया। 10जब उन्होंने
यह देखा तो वे बहुत आनन्दित हुए। 11वे घर के भीतर
गये और उन्होंने उसकी माता मरियम के साथ बालक
के दर्शन किये। उन्होंने साष्टांग प्रणाम करके उसकी
उपासना की। फिर उन्होंने बहुमूल्य वस्तुओं की अपनी
पिटारी खोली और सोना, लोबान और गन्धरस के
उपहार उसे अर्पित किये। 12किन्तु परमेश्वर ने एक
स्वप्न में उन्हें सावधान कर दिया, कि वे वापस हेरोदेस
के पास न जायें। सो वे एक दूसरे मार्ग से अपने देश को
लौट गये।

यीशु को लेकर माता-पिता का मिस्र जाना

13जब वे चले गये तो यूसुफ को सपने में प्रभु के एक
दूत ने प्रकट हो कर कहा, “उठ, बालक और उसकी
माँ को लेकर चुपके से मिस्र चला जा और मैं जब तक
तुझ से न कहूँ, वहीं ठहरना। क्योंकि हेरोदेस इस बालक
को मरवा डालने के लिए ढूँढेगा।”

14सो यूसुफ खड़ा हुआ तथा बालक और उसकी
माता को लेकर रात में ही मिस्र के लिए चल पड़ा।
15फिर हेरोदेस के मरने तक वह वहीं ठहरा रहा। यह
इसलिये हुआ कि प्रभु ने भविष्यवक्ता के द्वारा जो कहा
था, पूरा हो सके: “मैंने अपने पुत्र को मिस्र से बाहर
आने को कहा”।*

बैतलहम के सभी बालकों का हेरोदेस के द्वारा मरवाया जाना

16हेरोदेस ने जब यह देखा कि सितारों का अध्ययन
करने वाले विद्वानों ने उसके साथ चाल चली है, तो वह
आग बबूला हो उठा। उसने आज्ञा दी कि बैतलहम और
उसके आसपास में दो वर्ष के या उससे छोटे सभी
बालकों की हत्या कर दी जाये। (सितारों का अध्ययन
करने वाले विद्वानों के बताये समय को आधार बना
कर) 17तब भविष्यवक्ता यिर्मयाह द्वारा कहा गया यह
वचन पूरा हुआ:

18“रामाह में दु:ख भरा एक शब्द सुना गया, शब्द
रोने का, गहरे विलाप का था। राहेल अपने शिशुओं के
लिए रोती थी चाहती नहीं थी कोई उसे धीरज बँधाए,
क्योंकि उसके तो सभी बालक मर चुके थे।”
यिर्मयाह 31:15

यीशु को लेकर यूसुफ और मरियम का मिस्र लौटना

19फिर हेरोदेस की मृत्यु के बाद मिस्र में यूसुफ के
सपने में प्रभु का एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ 20और उससे
बोला, “उठ, बालक और उसकी माँ को लेकर इस्राएल
की धरती पर चला जा क्योंकि वे जो बालक को मार
डालना चाहते थे, मर चुके हैं।”

21तब यूसुफ खड़ा हुआ और बालक तथा उसकी
माता को लेकर इस्राएल जा पहुँचा। 22किन्तु जब यूसुफ
ने यह सुना कि यहूदिया पर अपने पिता हेरोदेस के
स्थान पर अरखिलाउस राज्य कर रहा है तो वह वहाँ
जाने से डर गया किन्तु सपने में परमेश्वर से आदेश
पाकर वह गलील प्रदेश के लिए 23चल पड़ा और वहाँ
नासरत नाम के नगर में घर बना कर रहने लगा ताकि

“मैंने ... कहा” देखें होशे 11:1

भविष्यवक्ताओं द्वारा कहा गया वचन पूरा हो कि: 'वह नासरी* कहलायेगा।'

बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना का कार्य
(मरकुस 1:1-8; लूका 3:1-9, 15-17; यूहन्ना 1:19-28)

3 उन्ही दिनों यहूदिया के बियाबान मरुस्थल में उपदेश देता हुआ बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना वहाँ आया।
2वह प्रचार करने लगा, "मन फिराओ! क्योंकि स्वर्ग
का राज्य आने को है।" 3यह यूहन्ना वही है जिसके
बारे में भविष्यवक्ता यशायाह ने चर्चा करते हुए कहा
था:

"जंगल में एक पुकारने वाले की आवाज है: 'प्रभु के लिए मार्ग तैयार करो और उसके लिए राहें सीधी करो।"'
यशायाह 40:3

4यूहन्ना के वस्त्र ऊँट की ऊन के बने थे और वह
कमर पर चमड़े की पेटी बाँधे था। टिड्डियाँ और
जँगली शहद उसका भोजन था। 5उस समय यरुशलेम,
समूचे यहूदिया क्षेत्र और यर्दन नदी के आसपास के
लोग उसके पासआ इकट्ठे हुए। 6उन्होंने अपने पापों
को स्वीकार किया और यर्दन नदी में उन्हें उसके द्वारा
बपतिस्मा दिया गया।

7जब उसने देखा कि बहुत से फरीसी* और सदूकी*
उसके पास बपतिस्मा लेने आ रहे हैं तो वह उनसे
बोला, "ओ, साँप के बच्चो। तुम्हें किसने चेता दिया है
कि तुम प्रभु के भावी क्रोध से बच निकलो? 8तुम्हें
प्रमाण देना होगा कि तुममें वास्तव में मन फिराव हुआ
है। 9और मत सोचो कि अपने आप से यह कहना ही
काफी होगा कि 'हम इब्राहीम की संतान हैं।' मैं तुमसे
कहता हूँ कि परमेश्वर इब्राहीम के लिये इन पत्थरों से
भी बच्चे पैदा करा सकता है। 10पेड़ों की जड़ों पर
कुल्हाड़ा रखा जा चुका है। और हर वह पेड़ जो उत्तम
फल नही देता काट गिराया जायेगा और फिर उसे आग
में झोंक दिया जायेगा।

11"मैं तो तुम्हें तुम्हारे मन फिराव के लिये जल से
बपतिस्मा देता हूँ किन्तु वह जो मेरे बाद आने वाला है,
मुझसे महान है। मैं तो उसके जूतों के तस्मे खोलने
योग्य भी नही हूँ। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और अग्नि से
बपतिस्मा देगा। 12उसके हाथों में उसका छाज है जिससे
वह अनाज को भूसे से अलग करता है। अपने खलिहान
से वह साफ किये समस्त अनाज को उठा, इकट्ठा
कर, कोठियों में भरेगा और भूसे को ऐसी आग में
झोंक देगा जो कभी बुझाए नही बुझेगी।"

यीशु का यूहन्ना से बपतिस्मा लेना
(मरकुस 1:9-11; लूका 3:21-22)

13उस समय यीशु गलील से चल कर यर्दन के किनारे
यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया। 14किन्तु
यूहन्ना ने यीशु को रोकने का यत्न करते हुए कहा,
"मुझे तो स्वयं तुझ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता
है। फिर तू मेरे पास क्यों आया है?"

15उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "अभी तो इसे इसी
प्रकार होने दो। हमें, जो परमेश्वर चाहता है उसे पूरा
करने के लिए यही करना उचित है।" फिर उसने वैसा
ही होने दिया।

16और तब यीशु ने बपतिस्मा ले लिया। जैसे ही वह
जल से बाहर निकला, आकाश खुल गया। उसने परमेश्वर
के आत्मा को एक कबूतर की तरह नीचे उतरते और
अपने ऊपर आते देखा। 17तभी यह आकाशवाणी हुई:
"यह मेरा प्रिय पुत्र है। जिससे मैं अति प्रसन्न हूँ।"

यीशु की परीक्षा
(मरकुस 1:12-13; लूका 4:1-13)

4 फिर आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि शैतान के द्वारा उसे परखा जा सके। 2चालीस दिन
और चालीस रात भूखा रहने के बाद जब उसे भूख
बहुत सताने लगी 3तो उसे परखने वाला उसके पास
आया और बोला "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो इन
पत्थरों से कह कि ये रोटियाँ बन जायें।"

4यीशु ने उत्तर दिया, "शास्त्र में लिखा है: 'मनुष्य
केवल रोटी से ही नहीं जीता बल्कि वह प्रत्येक उस
शब्द से जीता है जो परमेश्वर के मुख से निकलता है।'"
व्यवस्थाविवरण 8:3

5फिर शैतान उसे यरुशलेम के पवित्र नगर में ले
गया। वहाँ मंदिर की सबसे ऊँची बुर्ज पर खड़ा करके
6उसने उससे कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो
नीचे कूद पड़ क्योंकि शास्त्र में लिखा है:

'वह तेरी देखभाल के लिये अपने दूतों को आज्ञा देगा और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे ताकि तेरे पैरों में कोई पत्थर तक न लगे।'"
भजन संहिता 91:11–12

7यीशु ने उत्तर दिया, "किन्तु शास्त्र यह भी कहता है,
'अपने प्रभु परमेश्वर को परीक्षा में मत डाल।'"
व्यवस्थाविवरण 6:16

नासरी एक व्यक्ति जो नासरत का रहने वाला हो। नासरत का अर्थ संभवत: **"**शाखा**"**। देखें यशा.11:1

फरीसी एक यहूदी धार्मिक समूह, जो 'पुराना धर्म नियम' और दूसरे यहूदी नियमों तथा रीति-रिवाजों का कट्टरता से पालन करने का दावा करता है।

सदूकी एक प्रमुख यहूदी धार्मिक समूह जो 'पुराना धर्म नियम' की केवल पहली पाँच पुस्तकों को ही स्वीकार करता है और किसी के मर जाने के बाद उसका पुनरुत्थान नहीं मानता।

8फिर शैतान यीशु को एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया। और उसे संसार के सभी राज्य और उनका वैभव दिखाया। 9शैतान ने तब उससे कहा, "ये सभी वस्तुएँ मैं तुझे दे दूँगा यदि तू मेरे आगे झुके और मेरी उपासनाकरे।"
10फिर यीशु ने उससे कहा, "शैतान, दूर हो। शास्त्र कहता है:

'अपने प्रभु परमेश्वर की उपासना कर और केवल उसी की सेवा कर।'" *व्यवस्थाविवरण 6:13*

11फिर शैतान उसे छोड़ कर चला गया। और स्वर्गदूत आकर उसकी देखभाल करने लगे।

यीशु के कार्य का आरम्भ

(*मरकुस 1:14-15; लूका 4:14-15*)

12यीशु ने जब सुना कि यूहन्ना पकड़ा जा चुका है तो वह गलील लौट आया। 13परन्तु वह नासरत में नहीं ठहरा और जाकर कफरनहूम में, जो जबूलून और नपताली के क्षेत्र में गलील की झील के पास था, रहने लगा। 14यह इसलिये हुआ कि परमेश्वर ने भविष्यवक्ता यशायाह के द्वारा जो कहा, वह पूरा हो:

15"जबूलून और नपताली के देश सागर के रास्ते पर, यर्दन नदी के पश्चिम में, ग़ैर यहूदियों के देश गलील में
16 जो लोग अँधेरे में जी रहे थे उन्होंने एक महान ज्योति देखी और जो मृत्यु की छाया के देश में रहते थे उन पर, ज्योति के प्रभात का एक प्रकाश फैला।"

यशायाह 9:1–2

यीशु द्वारा शिष्यों का चुना जाना

(*मरकुस 1:16-20; लूका 5:1-11*)

17उस समय से यीशु ने सुसंदेश का प्रचार शुरू कर दिया: "मन फिराओ! क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है।"

18जब यीशु गलील की झील के पास से जा रहा था उसने दो भाइयों को देखा शमौन (जो पतरस कहलाया) और उसका भाई अंद्रियास। वे झील में अपने जाल डाल रहे थे। वे मछुआरे थे। 19यीशु ने उनसे कहा, "मेरे पीछे चले आओ, मैं तुम्हें सिखाऊँगा कि लोगों के लिये मछलियाँ पकड़ने के बजाय मनुष्य रूपी मछलियाँ कैसे पकड़ी जाती हैं।"

20उन्होंने तुरंत अपने जाल छोड़ दिये और उसके पीछे हो लिये।

21फिर वह वहाँ से आगे चल पड़ा और उसने देखा कि जब्दी का बेटा याकूब और उसका भाई यूहन्ना अपने पिता के साथ नाव में बैठे अपने जालों की मरम्मत कर रहे हैं। यीशु ने उन्हें बुलाया। 22और वे तत्काल नाव और अपने पिता को छोड़ कर उसके पीछे चल दिये।

यीशु का लोगों को उपदेश और उन्हें चंगा करना

(*लूका 6:17-19*)

23यीशु समूचे गलील क्षेत्र में यहूदी प्रार्थनालय में स्वर्ग के राज्य के सुसमाचार का उपदेश देता और हर प्रकार के रोगों और संतापों को दूर करता घूमने लगा। 24समस्त सीरिया देश में उसका समाचार फैल गया। इसलिये लोग ऐसे सभी व्यक्तियों को जो संतापी थे, या तरह तरह की बीमारियों और वेदनाओं से पीड़ित थे, जिन पर दुष्टात्माएँ सवार थीं, जिन्हें मिर्गी आती थी और जो लकवे के मारे थे, उसके पास लाने लगे। यीशु ने उन्हें चंगा किया। 25इसलिये गलील, दस नगर, यरुशलेम, यहूदिया और यर्दन नदी–पार के लोगों की बड़ी–बड़ी भीड़ उसका अनुसरण करने लगीं।

यीशु का उपदेश

(*लूका 6:20-23*)

5 यीशु ने जब यह बड़ी भीड़ देखी, तो वह एक पहाड़ पर चला गया। वहाँ वह बैठ गया और उसके अनुयायी उसके पास आ गये। 2तब यीशु ने उन्हें उपदेश देते हुए कहा:

3"धन्य हैं वे जो ह्रदय से दीन हैं, स्वर्ग का राज्य उनके लिए है।

4धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि परमेश्वर उन्हें सांतवना देता है

5धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि यह पृथ्वी उन्हीं की है।

6धन्य हैं वे जो नीति के प्रति भूखे और प्यासे रहते हैं! क्योंकि परमेश्वर उन्हें संतोष देगा, तृप्ति देगा।

7धन्य हैं वे जो दयालू हैं क्योंकि उन पर दया गगन से रसेगी।

8धन्य हैं वे जो हृदय के शुद्ध हैं क्योंकि वे परमेश्वर के दर्शन करेंगे।

9धन्य हैं वे जो शान्ति के काम करते हैं। क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलायेंगे।

10धन्य हैं वे जो नीति के हित यातनाएँ भोगते हैं । स्वर्ग का राज्य उनके लिये ही है।

11"और तुम भी धन्य हो क्योंकि जब लोग तुम्हारा अपमान करें, तुम्हें यातनाएँ दें, और मेरे लिये तुम्हारे विरोध में तरह तरह की झूठी बातें कहें, बस इसलिये कि तुम मेरे अनुयायी हो, 12तब तुम प्रसन्न रहना, आनन्द से रहना, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हें इसका प्रतिफल मिलेगा। यह वैसा ही है जैसे तुमसे पहले के भविष्यवक्ताओं को लोगों ने सताया था।

तुम नमक के समान हो: तुम प्रकाश के समान हो

(*मरकुस 9:50; लूका 14:34-35*)

13"तुम समूची मानवता के लिये नमक हो। किन्तु यदि नमक ही बेस्वाद हो जाये तो उसे फिर नमकीन

नहीं बनाया जा सकता है। वह फिर किसी काम का नही रहेगा। केवल इसके, कि उसे बाहर, लोगों की ठोकरों में फेंकदिया जाये।

14“तुम जगत के लिये प्रकाश हो। एक ऐसा नगर जो पहाड़ की चोटी पर बसा है, छिपाये नहीं छिपाया जा
सकता। 15लोग दीया जलाकर किसी बाल्टी के नीचे उसे नहीं रखते बल्कि उसे दीवट पर रखा जाता है और
वह घर के सब लोगों को प्रकाश देता है। 16लोगों के सामने तुम्हारा प्रकाश ऐसे चमके कि वे तुम्हारे अच्छे कामों को देखें और स्वर्ग में स्थित तुम्हारे परम पिता की महिमा का बखान करें।

यीशु और यहूदी धर्म-नियम

17“यह मत सोचो कि मैं मूसा के धर्म-नियम या भविष्यवक्ताओं के लिखे को नष्ट करने आया हूँ। मैं उन्हें नष्ट करने नहीं बल्कि उन्हें पूर्ण करने आया हूँ।
18मैं तुम से सत्य कहता हूँ कि जब तक धरती और आकाश समाप्त नहीं हो जाते, मूसा की व्यवस्था का एक एक शब्द और एक एक अक्षर बना रहेगा, वह तब तक बना रहेगा जब तक वह पूरा नहीं हो लेता।
19इसलिये जो इन आदेशों में से किसी छोटे से छोटे बिना को भी तोड़ता है और लोगों को भी वैसा ही करना सिखाता है, वह स्वर्ग के राज्य में कोई महत्त्व नहीं पायेगा। किन्तु जो उन पर चलता है और दूसरों को उन पर चलने का उपदेश देता है, वह स्वर्ग के राज्य में
महान समझा जायेगा। 20मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि जब तक तुम व्यवस्था के उपदेशकों और फ़रीसियों से धर्म के आचरणमें आगे न निकल जाओ, तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं पाओगे।

क्रोध

21“तुम जानते हो कि हमारे पूर्वजों से कहा गया था, ‘हत्या मत करो* और यदि कोई हत्या करता है तो
उसे अदालत में उसका जवाब देना होगा।’ 22किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि जो व्यक्ति अपने भाई पर क्रोध करता है, उसे भी अदालत में इसके लिये उत्तर देना होगा। और जो कोई अपने भाई का अपमान करेगा उसे सर्वोच्च संघ के सामने जवाब देना होगा और यदि कोई अपने किसी बन्धु से कहे ‘अरे असभ्य, मूर्ख।’ तो नरक की आग के बीच उस पर इसकी जवाब देही
होगी। 23इसलिये यदि तू वेदी पर अपनी भेंट चढ़ा रहा है और वहाँ तुझे याद आये कि तेरे भाई के मन में तेरे
लिए कोई विरोध है 24तो तू उपासना की भेंट को वहीं छोड़ दे और पहले जा कर अपने उस बन्धु से सुलह कर। और फिर आकर भेंट चढ़ा।

“हत्या मत करो” देखे निर्गमन 20:13; व्यवस्था. 5:17

25“तेरा शत्रु तुझे न्यायालय में ले जाता हुआ जब रास्ते में ही हो, तू झटपट उसे अपना मित्र बना ले कहीं वहतुझे न्यायी को न सौंप दे और फिर न्यायी सिपाही
को। जो तुझे जेल में डाल देगा। 26मैं तुझे सत्य बताता हूँ, तू जेल से तब तक नहीं छूट पायेगा जब तक तू पाई-पाई न चुका दे।

व्यभिचार

27“तुम जानते हो कि यह कहा गया है, ‘व्यभिचार
मत करो।’* 28किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि यदि कोई किसी स्त्री को वासना की आँख से देखता है, तो वह अपने मन में पहले ही उसके साथ व्यभिचार कर चुका
है। 29इसलिये यदि तेरी दाहिनी आँख तुझ से पाप करवाये तो उसे निकाल कर फेंक दे। क्योंकि तेरे लिये यह अच्छा है कि तेरे शरीर का कोई एक अंग नष्ट हो जाये बजाय इसके कि तेरा सारा शरीर ही नरक में
डाल दिया जाये। 30और यदि तेरा दाहिना हाथ तुझ से पाप करवाये तो उसे काट कर फेंक दे। क्योंकि तेरे लिये यह अच्छा है कि तेरे शरीर का एक अंग नष्ट हो जाये बजाय इसके कि तेरा सम्पूर्ण शरीर ही नरक में चला जाये।

तलाक

(मत्ती 19:9; मरकुस 10:11-12; लूका 16:18)

31“कहा गया है,‘जब कोई अपनी पत्नी को तलाक देता है तो अपनी पत्नी को उसे लिखित रूप में तलाक
देना चाहिये।’* 32किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि हर वह व्यक्ति जो अपनी पत्नी को तलाक देता है, यदि उसने यह तलाक उसके व्यभिचारी आचरण के कारण नहीं दिया है तो जब वह दूसरा विवाह करती है, तो मानो वह व्यक्ति ही उससे व्यभिचार करवाता है। और जो कोई उस छोड़ी हुई स्त्री से विवाह रचाता है तो वह भी व्यभिचार करताहै।

शपथ

33“तुमने यह भी सुना है कि हमारे पूर्वजों से कहा गया था, ‘तू शपथ मत तोड़ बल्कि प्रभु से की गयी
प्रतिज्ञाओं को पूरा कर।’* 34किन्तु मैं तुझसे कहता हूँ कि शपथ ले ही मत। स्वर्ग की शपथ मत ले क्योंकि
वह परमेश्वर का सिंहासन है। 35धरती की शपथ मत ले क्योंकि यह उसकी पाँव की चौकी है। यरुशलेम की शपथ मत ले क्योंकि यह महा सम्राट का नगर है।

“व्यभिचार मत करो” देखें निर्गमन 20:14 और व्यवस्था. 5:18

“जब कोई ... देना चाहिए” देखें व्यवस्था. 24:1

“तू शपथ ... पूरा कर” देखें लैव्य. 19:12; गिनती 30:2; व्यवस्था. 23:21

36अपने सिर की शपथ भी मत ले क्योंकि तू किसी
एक बाल तक को सफेद या काला नहीं कर सकता है।
37यदि तू 'हाँ' चाहता है तो केवल 'हाँ' कह और 'ना'
चाहता है तो केवल 'ना'। क्योंकि इससे अधिक जो कुछ
है वह उससे है जो बद है।

बदले की भावना मत रख
(लूका 6:29-30)

38"तुमने सुना है: कहा गया है, 'आँख के बदले आँख
और दाँत के बदले दाँत'।* 39किन्तु मैं तुझ से कहता हूँ
कि किसी बुरे व्यक्ति का भी विरोध मत कर। बल्कि
यदि कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल
भी उसकी तरफ़ कर दे। 40यदि कोई तुझ पर मुकदमा
चला कर तेरा कुर्ता भी उतरवाना चाहे तो तू उसे
अपना चोगा तक दे दे। 41यदि कोई तुझे एक मील
चलाए तो तू उसके साथ दो मील चला जा। 42यदि कोई
तुझसे कुछ माँगे तो उसे वह दे दे। जो तुझसे उधार लेना
चाहे, उसे मना मत कर।

सबसे प्रेम रखो
(लूका 6:27-28, 32-36)

43"तुमने सुना है: कहा गया है 'तू अपने पड़ौसी से प्रेम
कर* और शत्रु से घृणा कर।' 44किन्तु मैं कहता हूँ
अपने शत्रुओं से भी प्यार करो। जो तुम्हें यातनाएँ देते
हैं, उनके लिये भी प्रार्थना करो। 45ताकि तुम स्वर्ग में
रहने वाले अपने पिता की सिद्ध संतान बन सको।
क्योंकि वह बुरों और भलों सब पर सूर्य का प्रकाश
चमकाता है। पापियों और धर्मीयों, सब पर वर्षा कराता
है। 46यह मैं इसलिये कहता हूँ कि यदि तू उन्हीं से प्रेम
करेगा जो तुझसे प्रेम करते हैं तो तुझे क्या फल मिलेगा।
क्या ऐसा तो कर वसूल करने वाले भी नही करते?
47यदि तू अपने भाई बंदों का ही स्वागत करेगा तो तू
औरों से अधिक क्या कर रहा है? क्या ऐसा तो विधर्मी
भी नहीं करते? 48इसलिये परिपूर्ण बनो, वैसे ही जैसे
तुम्हारा स्वर्ग-पिता-परिपूर्ण है।

दान की शिक्षा

6 "सावधान रहो! परमेश्वर चाहता है, उन कामों
का लोगों के सामने दिखावा मत करो नहीं तो तुम
अपने परम-पिता से, जो स्वर्ग में है, उसका प्रतिफल
नहीं पाओगे। 2"इसलिये जब तुम किसी दीन-दुखी को
दान देते हो तो उसका ढोल मत पीटो, जैसा कि
धर्म-सभाओं और गलियों में कपटी लोग औरों से प्रशंसा
पाने के लिए करते हैं। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि उन्हें
तो इसका पूरा फल पहले ही दिया जा चुका है। 3किन्तु
जब तू किसी दीन दुखी को देता है तो तेरा बायाँ हाथ न
जान पाये कि तेरा दाहिना हाथ क्या कर रहा है। 4ताकि
तेरा दान छिपा रहे। तेरा वह परम पिता जो तू छिपाकर
करता है उसे भी देखता है, वह तुझे उसका प्रतिफल
देगा।

प्रार्थना का महत्त्व
(लूका 11:2-4)

5"जब तुम प्रार्थना करो तो कपटियों की तरह मत
करो। क्योंकि वे यहूदी प्रार्थना-सभाओं और गली के
नुक्कड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना चाहते हैं ताकि
लोग उन्हें देख सकें। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि उन्हें
तो उसका फल पहले ही मिल चुका है। 6किन्तु जब तू
प्रार्थना करे, अपनी कोठरी में चला जा और द्वार बन्द
करके गुप्त रूप से अपने परम-पिता से प्रार्थना कर।
फिर तेरा परम-पिता जो तेरे छिपकर किए गए कर्मों
को देखता है, तुझे उन का प्रतिफल देगा।

7"जब तुम प्रार्थना करते हो तो विधर्मियों की तरह यूँ
ही निरर्थक बातों को बार-बार मत दुहराते रहो। वे तो
यह सोचते हैं कि उनके बहुत बोलने से उनकी सुन ली
जायेगी। 8इसलिये उनके जैसे मत बनो क्योंकि तुम्हारा
परम पिता तुम्हारे माँगने से पहले ही जानता है कि
तुम्हारी आवश्यकता क्या है। 9इसलिए इस प्रकार प्रार्थना
करो: 'स्वर्ग धाम में हमारे पिता, तेरा नाम पवित्र रहे।

10जग में तेरा राज्य आवे । जो चाहे तू पूरा हो सब
वैसे ही धरती पर, जैसे वह सदा स्वर्ग में पूरा होता रहता
है।

11दिन प्रतिदिन का आहार तू आज हमें दे,।

12अपराधों को क्षमा दान कर जैसे हमने अपने अपराधी
क्षमा किये।

13भारी कठिन परीक्षा मत ले हमें उससे बचा जो
बुरा है।*

14इसलिये यदि तुम लोगों के अपराध क्षमा करोगे तो
तुम्हारा स्वर्ग-पिता भी तुम्हे क्षमा करेगा। 15किन्तु यदि
तुम लोगों को क्षमा नही करोगे तो तुम्हारा परम पिता
भी तुम्हारे पापों के लिए क्षमा नही देगा।

उपवास की व्याख्या

16"जब तुम उपवास करो तो मुँह लटकाये कपटियों
जैसे मत दिखो। क्योंकि वे तरह तरह से मुँह बनाते हैं
ताकि वे लोगों को जतायें कि वे उपवास कर रहे हैं। मैं
तुमसे सत्य कहता हूँ उन्हें तो पहले ही उनका प्रतिफल
मिल चुका है। 17किन्तु जब तू उपवास रखे तो अपने
सिर पर सुगंध मल और अपना मुँह धो 18ताकि लोग

"आँख के ... दाँत" देखें निर्गमन 21:24; लैव्य. 24:20

"तू अपने पड़ौसी से प्रेम कर" लैव्य. 19:18

पद 13 कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है। क्योंकि राज्य और महिमा सदा तेरी है। आमीन।

यह न जानें कि तू उपवास कर रहा है। बल्कि तेरा
परम पिता जिसे तू देख नहीं सकता, देखे कि तू उपवास
कर रहा है। तब तेरा परम पिता जो तेरे छिपकर किए
गए सब कर्मों को देखता है, तुझे उनका प्रतिफल देगा।

परमेश्वर धन से बड़ा है

(*लूका 12:33-34; 11:34-36; 16:13*)

19"अपने लिये धरती पर भंडार मत भरो। क्योंकि
उसे कीड़े और जंग नष्ट कर देंगे। चोर सेंध लगाकर
उसे चुरा सकते हैं। **20**बल्कि अपने लिये स्वर्ग में भण्डार
भरो जहाँ उसे कीड़े या जंग नष्ट नहीं कर पाते। और
चोर भी वहाँ सेंध लगा कर उसे चुरा नहीं पाते। **21**याद
रखो जहाँ तुम्हारा भंडार होगा वहीं तुम्हारा मन भी
रहेगा।

22"शरीर के लिये प्रकाश का स्रोत आँख हैं। इसलिये
यदि तेरी आँख ठीक है तो तेरा सारा शरीर प्रकाशवान
रहेगा। **23**किन्तु यदि तेरी आँख बुरी हो जाए तो तेरा
सारा शरीर अंधेरे से भर जायेगा। इसलिये वह एकमात्र
प्रकाश जो तेरे भीतर है यदि अंधकारमय हो जाये तो
वह अंधेरा कितना गहरा होगा।

24"कोई भी एक साथ दो स्वामियों का सेवक नहीं हो
सकता क्योंकि वह एक से घृणा करेगा और दूसरे से
प्रेम। या एक के प्रति समर्पित रहेगा और दूसरे का
तिरस्कार करेगा। तुम धन और परमेश्वर दोनों की
एक साथ सेवा नहीं कर सकते।

चिंता छोड़ो

(*लूका 12:22-34*)

25"मैं तुमसे कहता हूँ अपने जीने के लिये खाने–पीने
की चिंता छोड़ दो। अपने शरीर के लिये वस्त्रों की चिंता
छोड़ दो। निश्चय ही जीवन भोजन से और शरीर कपड़ों
से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। **26**देखो! आकाश के पक्षी न तो
बुआई करते हैं और न कटाई, न ही वे कोठारों में
अनाज भरते हैं किन्तु तुम्हारा स्वर्गिय पिता उनका भी
पेट भरता है। क्या तुम उनसे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण
नहीं हो? **27**तुम में से क्या कोई ऐसा है जो चिंता करके
अपने जीवन काल में एक घड़ी भी और बढ़ा सकता
है?

28"और तुम अपने वस्त्रों की क्यों सोचते हो? सोचो
जंगल के फूलों की वे कैसे खिलते हैं। वे न कोई काम
करते हैं और न अपने लिए कपड़े बनाते हैं। **29**मैं तुमसे
कहता हूँ कि सुलेमान भी अपने सारे वैभव के साथ
उनमें से किसी एक के समान भी नहीं सज सका।
30इसलिये जब जँगली पौधो को जो आज जीवित हैं पर
जिन्हें कल ही भाड़ में झोंक दिया जाना है, परमेश्वर
ऐसे वस्त्र पहनाता है तो अरे ओ कम विश्वास रखने
वालो, क्या वह तुम्हें और अधिक वस्त्र नहीं पहनायेगा?
31इसलिये चिंता करते हुए यह मत कहो कि 'हम क्या
खायेंगे या हम क्या पीयेंगे या क्या पहनेंगे?' **32**विधर्मी
लोग इन सब वस्तुओं के पीछे दौड़ते रहते हैं किन्तु स्वर्ग
धाम में रहने वाला तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें इन
सब वस्तुओं की आवश्यकता है। **33**इसलिये सबसे पहले
परमेश्वर के राज्य और तुमसे जो धर्म भावना वह
चाहता है, उसकी चिंता करो। ये सब वस्तुएँ तो तुम्हें
आप ही रूँगे में दे ही दी जायेंगी। **34**कल की चिंता मत
करो, क्योंकि कल की तो अपनी और चिंताएँ होंगी।
हर दिन की अपनी ही परेशानियाँ होती हैं।

यीशु का वचन: दूसरों को दोषी ठहराने के प्रति

(*लूका 6:37-38, 41-42*)

7 "दूसरों पर दोष लगाने की आदत मत डालो ताकि
तुम पर भी दोष न लगाया जाये। **2**क्योंकि तुम्हारा
न्याय उसी फैसले के आधार पर होगा, जो फैसला तुमने
दूसरों का न्याय करते हुए दिया था। और परमेश्वर
तुम्हें उसी नाप से नापेगा जिससे तुमने दूसरों को नापा
है। **3**तू अपने भाई बंदों की आँख का तिनका तक क्यों
देखता है? जबकि तुझे अपनी आँख का लट्ठा भी
दिखाई नहीं देता। **4**जब तेरी अपनी आँख में लट्ठा
समाया है तो तू अपने भाई से कैसे कह सकता है कि तू
मुझे तेरी आँख का तिनका निकालने दे। **5**ओ कपटी!
पहले तू अपनी आँख से लट्ठा निकाल, फिर तू ठीक
तरह से देख पायेगा और अपने भाई की आँख का
तिनका निकाल पायेगा।

6"कुत्तों को पवित्र वस्तु मत दो। और सुअरों के आगे
अपने मोती मत बिखेरो। नहीं तो वे सुअर उन्हें पैरों तले
रौंद डालेंगें। और कुत्ते पलट कर तुम्हारी भी धज्जियाँ
उड़ा देंगे।

जो कुछ चाहते हो, उसके लिये परमेश्वर से प्रार्थना करते रहो

(*लूका 11:9-13*)

7"परमेश्वर से माँगते रहो, तुम्हें दिया जायेगा। खोजते
रहो तुम्हें प्राप्त होगा खटखटाते रहो तुम्हारे लिए द्वार
खोल दिया जायेगा। **8**क्योंकि हर कोई जो माँगता ही
रहता है, प्राप्त करता है। जो खोजता है पा जाता है और
जो खटखटाता ही रहता है उस के लिए द्वार खोल दिया
जाएगा।

9"तुममें से ऐसा पिता कौन सा है जिसका पुत्र उससे
रोटी माँगे और वह उसे पत्थर दे? **10**या जब वह उससे
मछली माँगे तो वह उसे साँप दे दे। बताओ क्या कोई
देगा? ऐसा कोई नहीं करेगा! **11**इसलिये यदि चाहे तुम
बुरे ही क्यों न हो, जानते हो कि अपने बच्चों को अच्छे
उपहार कैसे दिये जाते हैं। सो निश्चय ही स्वर्ग में स्थित
तुम्हारा परम पिता माँगने वालों को अच्छी वस्तुएँ देगा।

व्यवस्था की सबसे बड़ी शिक्षा

12"इसलिये जैसा व्यवहार अपने लिये तुम दूसरे लोगों
से चाहते हो, वैसा ही व्यवहार तुम भी उनके साथ
करो।' व्यवस्था के विधि और भविष्यवक्ताओं के लिखे
का यही सार है।

स्वर्ग और नरक का मार्ग

(लूका 13:24)

13"सूक्ष्म मार्ग से प्रवेश करो। यह मैं तुम्हें इसलिये
बता रहा हूँ क्योंकि चौड़ा द्वार और बड़ा मार्ग तो विनाश
की ओर ले जाता है। बहुत से लोग हैं जो उस पर चल
रहे हैं। 14किन्तु कितना सँकरा है वह द्वार और कितनी
सीमित है वह राह जो जीवन की ओर जाती है। बहुत
थोड़े से हैं वे लोग जो उसे पा रहे हैं।

कर्म ही बताते हैं कि कोई कैसा है

(लूका 6:43-44; 13:25-27)

15"झूठे भविष्यवक्ताओं से बचो! वे तुम्हारे पास सरल
भेड़ों के रूप में आते हैं किन्तु भीतर से वे खूँखार
भेड़िये होते हैं। 16तुम उन्हें उन के कर्मो के परिणामों से
पहचानोगे। कोई कँटीली झाड़ी से न तो अंगूर इकट्ठे
कर पाता है और न ही गोखरु से अंजीर। 17ऐसे ही
अच्छे पेड़ पर अच्छे फल लगते हैं किन्तु बुरे पेड़ पर तो
बुरे फल ही लगते हैं। 18एक उत्तम वृक्ष बुरे फल नहीं
उपजाता और न ही कोई बुरा पेड़ उत्तम फल पैदा कर
सकता है। 19हर वह पेड़ जिस पर अच्छे फल नहीं
लगते हैं, काट कर आग में झोंक दिया जाता है। 20इसलिए
मैं तुम लोगों से फिर दोहरा कर कहता हूँ कि उन लोगों
को तुम उनके कर्मों के परिणामों से पहचानोगे।

21"प्रभु-प्रभु कहने वाला हर व्यक्ति स्वर्ग के राज्य
में नहीं जा पायेगा बल्कि वह जो स्वर्ग में स्थित मेरे
परम पिता की इच्छा पर चलता है, वही उसमें प्रवेश
पायेगा। 22उस महान दिन बहुत से मुझसे पूछेंगे 'प्रभु! हे
प्रभु! क्या हमने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की? क्या
तेरे नाम से हमने दुष्टात्माएँ नहीं निकालीं और क्या
हमने तेरे नाम से बहुत से आश्चर्य कर्म नहीं किये?'
23तब मैं उनसे खुल कर कहूँगा कि मैं तुम्हें नहीं
जानता, 'अरे कुकर्मियों, यहाँ से भाग जाओ।'

एक बुद्धिमान और एक मूर्ख

(लूका 6:47-49)

24"इसलिये जो कोई भी मेरे इन शब्दों को सुनता है
और इन पर चलता है, उसकी तुलना उस बुद्धिमान
मनुष्य से होगी जिसने अपना मकान चट्टान पर बनाया,
25वर्षा हुई, बाढ़ आयी, आँधियाँ चलीं और ये सब उस
मकान से टकराये पर वह गिरा नहीं। क्योंकि उसकी
नींव चट्टान पर रखी गयी थी। 26किन्तु वह जो मेरे
शब्दों को सुनता है पर उन पर आचरण नहीं करता,
उस मूर्ख मनुष्य के समान है जिसने अपना घर रेत पर
बनाया। 27वर्षा हुई, बाढ़ आयी, आँधियाँ चलीं और उस
मकान से टकराईं, जिससे वह मकान पूरी तरह ढह
गया।"

28परिणाम यह हुआ कि जब यीशु ने ये बातें कह
कर पूरी कीं, तो उसके उपदेशों पर भीड़ के लोगों को
बड़ा अचरज हुआ। 29क्योंकि वह उन्हें यहूदी धर्म नेताओं
के समान नहीं बल्कि एक अधिकारी के समान शिक्षा
दे रहा था।

यीशु का कोढ़ी को ठीक करना

(मरकुस 1:40-45; लूका 5:12-16)

8 यीशु जब पहाड़ से नीचे उतरा तो बहुत बड़ा जन
समूह उसके पीछे हो लिया। 2वहीं एक कोढ़ी भी
था। वह यीशु के पास आया और उसके सामने झुक
कर बोला, "प्रभु, यदि तू चाहे तो मुझे ठीक कर सकता
है।"

3इस पर यीशु ने अपना हाथ बढ़ा कर कोढ़ी को
छुआ और कहा, "निश्चय ही मैं चाहता हूँ ठीक हो
जा!" और तत्काल कोढ़ी का कोढ़ जाता रहा। 4फिर
यीशु ने उससे कहा, "देख इस बारे में किसी से कुछ मत
कहना। पर याजक के पास जा कर उसे अपने आप
को दिखा। फिर मूसा के आदेश के अनुसार भेंट चढ़ा
ताकि लोगों को तेरे ठीक होने की साक्षी मिले।"

उससे सहायता के लिये विनती

(लूका 7:1-10; यूहन्ना 4:43-54)

5फिर यीशु जब कफरनहूम पहुँचा, एक रोमी सेना
नायक उसके पास आया और उससे सहायता के लिये
विनती करता हुआ बोला, 6"प्रभु, मेरा एक दास घर में
बीमार पड़ा है। उसे लकवा मार गया है। उसे बहुत पीड़ा
हो रही है।"

7तब यीशु ने सेना नायक से कहा, "मैं आकर उसे
अच्छा करूँगा।"

8सेना नायक ने उत्तर दिया, "प्रभु, मैं इस योग्य नहीं
हूँ कि तू मेरे घर में आये। इसलिये केवल आज्ञा दे दे,
बस मेरा दास ठीक हो जायेगा। 9यह मैं जानता हूँ क्योंकि
मैं भी एक ऐसा व्यक्ति हूँ जो किसी बड़े अधिकारी के
नीचे काम करता हूँ। और मेरे नीचे भी दूसरे सिपाही
हैं। जब मैं एक सिपाही से कहता हूँ 'जा' तो वह चला
जाता है और दूसरे से कहता हूँ 'आ' तो वह आ जाता है।
मैं अपने दास से कहता हूँ कि 'यह कर' तो वह उसे
करता है।"

10जब यीशु ने यह सुना तो चकित होते हुए उसने जो
लोग उसके पीछे आ रहे थे, उनसे कहा, "मैं तुमसे सत्य
कहता हूँ मैंने इतना गहरा विश्वास इस्राएल में भी किसी

में नही पाया। 11मैं तुम्हें यह और बताता हूँ कि, बहुत से
पूर्व और पश्चिम से आयेंगे और वे भोज में इब्राहीम,
इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में
अपना–अपना स्थान ग्रहण करेंगे। 12किन्तु राज्य की
मूलभूत प्रजा बाहर अंधेरे में धकेल दी जायेगी जहाँ वे
लोग चीख –पुकार करते हुए दाँत पीसते रहेंगे।”
13तब यीशु ने उस सेनानायक से कहा, “जा वैसा ही
तेरे लिए हो, जैसा तेरा विश्वास है।” और तत्काल उस
सेनानायक का दास अच्छा हो गया।

यीशु का बहुतों को ठीक करना

(मरकुस 1:29-34; लूका 4:38-41)

14यीशु जब पतरस के घर पहुँचा उसने पतरस की
सास को बुखार से पीड़ित बिस्तर में लेटे देखा। 15सो
यीशु ने उसे अपने हाथ से छुआ और उसका बुखार
उतर गया। फिर वह उठी और यीशु की सेवा करने
लगी।
16जब साँझ हुई, तो लोग उसके पास बहुत से ऐसे
लोगों को लेकर आये जिनमें दुष्टात्माएँ थीं। अपनी एक
ही आज्ञा से उसने दुष्टात्माओं को निकाल दिया। इस
तरह उसने सभी रोगियों को चंगा कर दिया। 17यह
इसलिये हुआ ताकि परमेश्वर ने भविष्यवक्ता यशायाह
द्वारा जो कुछ कहा था, पूरा हो:

“उसने हमारे रोगों को ले लिया और हमारे संतापों
को ओढ़ लिया।” *यशायाह 53:4*

यीशु का अनुयायी बनने की चाह

(लूका 9:57-62)

18यीशु ने जब अपने चारों ओर भीड़ देखी तो उसने
अपने अनुयायियों को आज्ञा दी कि वे झील के परले
किनारे चले जायें। 19तब एक यहूदी धर्मशास्त्री उसके
पास आया और बोला, “गुरु, जहाँ कहीं तू जायेगा, मैं
तेरे पीछे चलूँगा।”
20इस पर यीशु ने उससे कहा, “लोमड़ियों की खोह
और आकाश के पक्षियों के घोंसले होते हैं किन्तु
मनुष्य के पुत्र के पास सिर टिकाने को भी कोई स्थान
नहीं है।”
21और उसके एक शिष्य ने उससे कहा, “प्रभु, पहले
मुझे जा कर अपने पिता को गाड़ने की अनुमति दे।”
22किन्तु यीशु ने उससे कहा, “मेरे पीछे चला आ
और मरे हुवों को अपने मुर्दे आप गाड़ने दे।”

यीशु का तूफान को शांत करना

(मरकुस 4:35-41; लूका 8:22-25)

23तब यीशु एक नाव पर जा बैठा। उसके अनुयायी
भी उसके साथ थे। 24उसी समय झील में इतना भयंकर
तूफान उठा कि नाव लहरों से दबी जा रही थी। किन्तु
यीशु सो रहा था। 25तब उसके अनुयायी उसके पास
पहुँचे और उसे जगाकर बोले, “प्रभु! हमारी रक्षा कर।
हम मरने को हैं!”
26तब यीशु ने उनसे कहा, “अरे अल्प विश्वासियों!
तुम इतने डरे हुए क्यों हो?” तब उसने खड़े होकर
तूफान और झील को डाँटा और चारों तरफ़ शांति छा
गयी।
27लोग चकित थे। उन्होंने कहा, “यह कैसा व्यक्ति
है? आँधी तूफान और सागर तक इसकी बात मानते
हैं!”

दो व्यक्तियों का दुष्टात्माओं से छुटकारा

(मरकुस 5:1-20; लूका 8:26-39)

28जब यीशु झील के उस पार, गदरेनियों के देश
पहुँचा, तो उसे कब्रों से निकल कर आते दो व्यक्ति
मिले, जिन में दुष्टात्माएँ थीं। वे इतने भयानक थे कि
उस राह से कोई निकल तक नहीं सकता था। 29वे
चिल्लाये, “हे परमेश्वर के पुत्र, तू हमसे क्या चाहता है?
क्या तू यहाँ निश्चित समय से पहले ही हमें दंड देने
आया है?”
30वहाँ कुछ ही दूरी पर बहुत से सुअरों का एक रेवड़
चर रहा था। 31सो उन दुष्टात्माओं ने उससे विनती
करते हुए कहा, “यदि तुझे हमें बाहर निकालना ही है,
तो हमें सुअरों के उस झुंड में भेज दे।” 32सो यीशु ने
उनसे कहा, “चले जाओ।” तब वे उन व्यक्तियों में से
बाहर निकल आए और सुअरों में जा घुसे। फिर वह
समूचा रेवड़ ढलान से लुढ़कते, पुढ़कते दौड़ता हुआ
झील में जा गिरा। सभी सुअर पानी में डूब कर मर गये।
33सुअर के रेवड़ों के रखवाले तब वहाँ से दौड़ते हुए
नगर में आये और सुअरों के साथ तथा दुष्ट आत्माओं
से ग्रस्त उन व्यक्तियों के साथ जो कुछ हुआ था, कह
सुनाया। 34फिर तो नगर के सभी लोग यीशु से मिलने
बाहर निकल पड़े। जब उन्होंने यीशु को देखा तो उससे
विनती की कि वह उनके यहाँ से कहीं और चला जाये।

लकवे के रोगी को अच्छा करना

(मरकुस 2:1-12; लूका 5:17-26)

9 फिर यीशु एक नाव पर जा चढ़ा और झील के पार
अपने नगर आ गया। 2लोग लकवे के एक रोगी
को खाट पर लिटा कर उसके पास लाये। यीशु ने जब
उनके विश्वास को देखा तो उसने लकवे के रोगी से
कहा, “हिम्मत रख हे! बालक, तेरे पाप क्षमा हुए।”
3तभी कुछ यहूदी धर्मशास्त्री आपस में कहने लगे,“यह
व्यक्ति (यीशु) अपने शब्दों से परमेश्वर का अपमान
करता है।”
4यीशु, क्योंकि जानता था कि वे क्या सोच रहे हैं,
उनसे बोला, “तुम अपने मन में बुरे विचार क्यों आने

देते हो? 5अधिक सहज क्या है? यह कहना कि 'तेरे
पाप क्षमा हुए' या यह कहना 'खड़ा हो और चल पड़?'
6ताकि तुम यह जान सको कि पृथ्वी पर पापों को क्षमा
करने की शक्ति मनुष्य के पुत्र में है।" यीशु ने लकवे
के मारे से कहा, "खड़ा हो, अपना बिस्तर उठा और
घर चला जा।" 7वह लकवे का रोगी खड़ा हो कर
अपने घर चला गया। 8जब भीड़ में लोगों ने यह देखा तो
वे श्रद्धामय विस्मय से भर उठे। और परमेश्वर की
स्तुति करने लगे जिसने मनुष्य को ऐसी शक्ति दी।

यीशु का मत्ती को चुनना

(मरकुस 2:13-17; लूका 5:27-32)

9यीशु जब वहाँ से जा रहा था तो उसने चुंगी की
चौकी पर बैठे एक व्यक्ति को देखा। उसका नाम मत्ती
था। यीशु ने उससे कहा, "मेरे पीछे चला आ।" इस पर
मत्ती खड़ा हुआ और उसके पीछे हो लिया।

10ऐसा हुआ कि जब यीशु मत्ती के घर बहुत से चुंगी
वसूलने वालों और पापियों के साथ अपने अनुयायियों
समेत भोजन कर रहा था 11तो उसे फ़रीसियों ने देखा।
वे यीशु के अनुयायियों से पूछने लगे, "तुम्हारा गुरु चुंगी
वसूलने वालों और दुष्टों के साथ खाना क्यों खा रहा
है?"

12यह सुनकर यीशु उनसे बोला, "स्वस्थ लोगों को
नहीं बल्कि रोगियों को एक चिकित्सक की आवश्यकता
होती है। 13इसलिये तुम लोग जाओ और समझो कि
शास्त्र के इस वचन का अर्थ क्या है: 'मैं बलिदान नहीं
चाहता बल्कि दया चाहता हूँ।' मैं धर्मीयों को नहीं,
बल्कि पापियों को बुलाने आया हूँ।"

यीशु दूसरे यहूदी धर्म -नेताओं से भिन्न है

(मरकुस 2:18-22; लूका 5:33-39)

14फिर बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना के शिष्य यीशु के
पास गये और उससे पूछा, "हम और फ़रीसी बार-बार
उपवास क्यों करते हैं और तेरे अनुयायी क्यों नहीं
करते?"

15फिर यीशु ने उन्हें बताया, "क्या दूल्हे के साथी,
जब तक दूल्हा उनके साथ है, शोक मना सकते हैं?
किन्तु वे दिन आयेंगे जब दूल्हा उन से छीन लिया जायेगा।
फिर उस समय वे दुखी होंगे और उपवास करेंगे।

16"बिना सिकुड़े नये कपड़े का पैबंद पुरानी पोशाक
पर कोई नहीं लगाता क्योंकि यह पैबंद पोशाक को
और अधिक फाड़ देगा और कपड़े की खींच और बढ़
जायेगी। 17नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरा
जाता नहीं तो मशकें फट जाती हैं और दाखरस बहकर
बिखर जात है। और मशकें भी नष्ट हो जाती हैं। इसलिये
लोग नया दाखरस, नयी मशकों में भरते हैं जिससे
दाखरस और मशक दोनों ही सुरक्षित रहते हैं।"

मृत लड़की को जीवन दान और रोगी स्त्री को चंगा करना

(मरकुस 5:21-43; लूका 8:40-56)

18यीशु उन लोगों को जब ये बातें बता ही रहा था,
तभी यहूदी धर्म-सभा भवन का एक मुखिया उसके
पास आया और उसके सामने झुक कर विनती करते
हुए बोला, "अभी-अभी मेरी बेटी मर गयी है। तू चल
कर यदि उस पर अपना हाथ रख दे तो वह फिर से जी
उठेगी।"

19इस पर यीशु खड़ा हो कर अपने शिष्यों समेत
उसके साथ चल दिया।

20वहीं एक ऐसी स्त्री थी जिसे बारह साल से बहुत
अधिक रक्त बह रहा था। वह पीछे से यीशु के निकट
आयी और उसके वस्त्र की कन्नी छू ली। 21वह मन में
सोच रही थी "यदि मैं तनिक भी इसका वस्त्र छू पाऊँ,
तो ठीक हो जाऊँगी।"

22मुड़कर उसे देखते हुए यीशु ने कहा, "स्त्री, हिम्मत
रख। तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा कर दिया है।" और
वह स्त्री तुरंत उसी क्षण ठीक हो गयी।

23उधर यीशु जब यहूदी धर्म-सभा भवन के मुखिया
के घर पहुँचा तो उसने देखा कि शोक धुन बजाते हुए
बाँसुरी वादक और वहाँ इकट्ठे हुए लोग लड़की की
मृत्यु पर शोर कर रहे हैं। 24तब यीशु ने लोगों से कहा,
"यहाँ से बाहर जाओ। लड़की मरी नहीं है, वह तो सो
रही है।" इस पर लोग उसकी हँसी उड़ाने लगे। 25फिर
जब भीड़ के लोगों को बाहर भेज दिया गया तो यीशु ने
लड़की के कमरे में जा कर उसका हाथ पकड़ा और
वह उठ बैठी। 26इसका समाचार उस सारे क्षेत्र में फैल
गया।

यीशु द्वारा बहुतों का उपचार

27यीशु जब वहाँ से जाने लगा तो दो अन्धे व्यक्ति
उसके पीछे हो लिये। वे पुकार रहे थे "हे दाऊद के पुत्र,
हम पर दया कर।"

28यीशु जब घर के भीतर पहुँचा तो वे अन्धे उसके
पास आये। तब यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुम्हें विश्वास
है कि मैं, तुम्हें फिर से आँखें दे सकता हूँ?" उन्होंने
उत्तर दिया, "हाँ प्रभु।"

29इस पर यीशु ने उन की आँखों को छूते हुए कहा,
"तुम्हारे लिए वैसा ही हो जैसा तुम्हारा विश्वास है।"

30और अंधों को दृष्टि मिल गयी। फिर यीशु ने उन्हें
चेतावनी देते हुए कहा, "इसके विषय में किसी को पता
नहीं चलना चाहिये।" 31किन्तु उन्होंने वहाँ से जाकर
इस समाचार को उस क्षेत्र में चारों ओर फैला दिया।

32जब वे दोनों वहाँ से जा रहे थे तो कुछ लोग यीशु
के पास एक गूँगे को लेकर आये। गूँगे में दुष्ट आत्मा
समाई हुई थी और इसीलिए वह कुछ बोल नहीं पाता

था। 33जब दुष्ट आत्मा को निकाल दिया गया तो वह गूँगा, जो पहले कुछ भी नहीं बोल सकता था, बोलने लगा। तब भीड़ के लोगों ने अचरज से भर कर कहा, "इस्राएल में ऐसी बात पहले कभी नहीं देखी गयी।"

34किन्तु फरीसी कह रहे थे, "वह दुष्टात्माओं को शैतान की सहायता से बाहर निकालता है।"

यीशु को लोगों पर खेद

35यीशु यहूदी धर्म सभाओं में उपदेश देता, परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करता, लोगों के रोगों और हर प्रकार के संतापों को दूर करता उस सारे क्षेत्र में गाँव-गाँव और नगर-नगर घूमता रहा था।

36यीशु जब किसी भीड़ को देखता तो उसके प्रति करुणा से भर जाता था क्योंकि वे लोग वैसे ही सताये हुए और असहाय थे, जैसे वे भेड़ें होतीं हैं जिनका कोई चरवाहा नहीं होता। 37तब यीशु ने अपने अनुयायिओं से कहा, "तैयार खेत तो बहुत हैं किन्तु मज़दूर कम हैं। 38इसलिए फसल के प्रभु से प्रार्थना करो कि, वह अपनी फसल को काटने के लिये मज़दूर भेजे।"

सुसमाचार के प्रचार के लिए शिष्यों को भेजना

(मरकुस 3:13-19; 6:7-13;लूका 6:12-16;9:1-6)

10 सो यीशु ने अपने बारह शिष्यों को पास बुलाकर उन्हें दुष्टात्माओं को बाहर निकालने, और हर तरह के रोगों और संतापों को दूर करने की शक्ति प्रदान की। 2उन बारह प्रेरितों के नाम ये हैं:-सबसे पहला शमौन, जो पतरस कहलाया, और उसका भाई अंद्रियास, जब्दी का बेटा याकूब और उसका भाई यूहन्ना। 3फिलिप्पुस, बरतुल्मै, थोमा, कर वसूलने वाला मत्ती, हलफै का बेटा याकूब और तद्दै। 4शमौन ज़िलौती* और यहूदा इस्करियोती, जिसने उसे धोखे से पकड़वाया था।

5यीशु ने इन बारहों को बाहर भेजते हुए आज्ञा दी कि वे "ग़ैर यहूदियों के क्षेत्र में न जायें तथा किसी भी सामरी-नगर में प्रवेश न करें। 6बल्कि वे इस्राएल के परिवार की खोई हुई भेड़ों के पास ही जायें 7और उन्हें उपदेश दें कि 'स्वर्ग का राज्य निकट है।' 8वे बीमारों को ठीक करें, मरे हुओं को जीवन दें, कोढ़ियों को चंगा करें और दुष्टात्माओं को निकालें। तुमने बिना कुछ दिये प्रभु की आशीष और शक्तियाँ पाई हैं, इसलिये उन्हें दूसरों को बिना कुछ लिये मुक्त भाव से बाँटो। 9अपने पटुके में सोना, चाँदी या ताँबा मत रखो। 10यात्रा के लिए कोई झोला तक मत लो। कोई फालतू कुर्ता, चप्पल और छड़ी मत रखो। क्योंकि मज़दूर का उसके खाने पर अधिकार है।

11"तुम लोग जब कभी किसी नगर या गाँव में जाओ तो पता करो कि वहाँ विश्वासयोग्य कौन है। फिर तब तक वहीं ठहरे रहो जब तक वहाँ से चल न दो। 12जब तुम किसी घर बार में जाओ तो परिवार के लोगों का सत्कार करते हुए कहो, 'तुम्हें शांति मिले।' 13यदि घर बार के लोग योग्य होंगे तो तुम्हारा आशीर्वाद उनके साथ साथ रहेगा और यदि वे इस योग्य न होंगे तो तुम्हारा आशीर्वाद तुम्हारे पास वापस आ जाएगा।

14"यदि कोई तुम्हारा स्वागत न करे या तुम्हारी बात न सुने तो उस घर या उस नगर को छोड़ दो। और अपने पाँव में लगी वहाँ की धूल वहीं झाड़ दो। 15मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि जब न्याय होगा, उस दिन उस नगर की स्थिति से सदोम और अमोरा* नगरों की स्थिति कहीं अच्छी होगी।"

अपने प्रेरितों को यीशु की चेतावनी

(मरकुस 13:9-13; लूका 21:12-17)

16"सावधान! मैं तुम्हें ऐसे ही बाहर भेज रहा हूँ जैसे भेड़ों को भेड़ियों के बीच में भेजा जाये। सो साँपों की तरह चतुर और कबूतरों के समान भोले बनो। 17लोगों से सावधान रहना क्योंकि वे तुम्हें बंदी बनाकर यहूदी पंचायतों को सौंप देंगे और वे तुम्हें अपने धर्म-सभा भवनों में कोड़ों से पिटवायेंगे। 18तुम्हें शासकों और राजाओं के सामने पेश किया जायेगा, क्योंकि तुम मेरे अनुयायी हो। तुम्हें अवसर दिया जायेगा कि तुम उनको और ग़ैरयहूदियों को मेरे बारे में गवाही दो। 19जब वे तुम्हें पकड़ें तो चिंता मत करना कि, तुम्हें क्या कहना है और कैसे कहना है। क्योंकि उस समय तुम्हें बता दिया जायेगा कि तुम्हें क्या बोलना है। 20याद रखो बोलने वाले तुम नहीं हो, बल्कि तुम्हारे परम पिता का आत्मा तुम्हारे भीतर बोलेगा।

21"भाई अपने भाइयों को पकड़वा कर मरवा डालेंगे, माता-पिता अपने बच्चों को पकड़वायेंगे और बच्चे अपने माँ-बाप के विरुद्ध हो जायेंगे। वे उन्हें मरवा डालेंगे। 22मेरे नाम के कारण लोग तुमसे घृणा करेंगे किन्तु जो अंत तक टिका रहेगा उसी का उद्धार होगा। 23वे जब तुम्हें एक नगर में सताएँ तो तुम दूसरे में भाग जाना। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि इससे पहले कि तुम इस्राएल के सभी नगरों का चक्कर पूरा करो, मनुष्य का पुत्र दुबारा आ जाएगा।

24"शिष्य अपने गुरु से बड़ा नहीं होता और न ही कोई दास अपने स्वामी से बड़ा होता है। 25शिष्य को गुरु के बराबर होने में और दास को स्वामी के बराबर होने में ही संतोष करना चाहिये। जब वे घर के स्वामी को ही

ज़िलौत एक कट्टर पंथी राजनीतिक दल का नाम था। जिसका वह सदस्य हुआ करता था।

सदोम और अमोरा ये उन दो नगरों के नाम हैं जिन्हें वहाँ के निवासियों को उनके पापों का दण्ड देने के लिये प्रभु ने नष्ट कर दिया था।

बैल्ज़ाबुल कहते हैं तो, उसके घर के दूसरे लोगों के
साथ तो और भी बुरा व्यवहार करेंगे!"

प्रभु से डरो, लोगों से नहीं
(लूका 12:2-7)

26"इसलिये उनसे डरना मत क्योंकि जो कुछ छिपा
है, सब उजागर होगा। और हर वह वस्तु जो गुप्त है,
प्रकट की जायेगी। 27मैं अँधेरे में जो कुछ तुमसे कहता
हूँ, मैं चाहता हूँ, उसे तुम उजाले में कहो। मैंने जो कुछ
तुम्हारे कानों में कहा है, तुम उसकी मकान की छतों
पर चढ़कर, घोषणा करो। 28उनसे मत डरो जो तुम्हारे
शरीर को नष्ट कर सकते हैं किन्तु तुम्हारी आत्मा को
नहीं मार सकते। बस उस परमेश्वर से डरो जो तुम्हारे
शरीर और तुम्हारी आत्मा को नरक में डाल कर नष्ट
कर सकता है। 29एक पैसे की दो चिड़ियाओं में से भी
एक तुम्हारे परम पिता के जाने बिना और उसकी
इच्छा के बिना धरती पर नहीं गिर सकती। 30अरे
तुम्हारे तो सिर का एक एक बाल तक गिना हुआ है।
31इसलिये डरो मत तुम्हारा मूल्य तो वैसी अनेक
चिड़ियाओं से कहीं अधिक है।"

यीशु में विश्वास
(लूका 12:8-9)

32"जो कोई मुझे सब लोगों के सामने अपनायेगा, मैं
भी उसे स्वर्ग में स्थित अपने परम –पिता के सामने
अपनाऊँगा। 33किन्तु जो कोई मुझे सब लोगों के सामने
नकारेगा, मैं भी उसे स्वर्ग में स्थित अपने परम पिता के
सामने नकारूँगा।

34"यह मत सोचो कि मैं धरती पर शांति लाने आया
हूँ। शांति नहीं बल्कि मैं तलवार का आवाहन करने
आयाहूँ।

35-36 मैं मनुष्य को उसके पिता के विरोध में, पुत्री
को माँ के विरोध में, बहू को सास के विरोध में करने
आया हूँ। मनुष्य के शत्रु, उसके अपने घर के ही लोग
होंगे। *मीका 7:6*

37"जो अपने माता–पिता को मुझ से अधिक प्रेम
करता है, वह मेरा होने के योग्य नहीं है। जो अपने बेटे
बेटी को मुझसे ज्यादा प्यार करता है, वह मेरा होने के
योग्य नहीं है। 38वह जो यातनाओं का अपना क्रूस स्वयं
उठाकर मेरे पीछे नहीं हो लेता, मेरा होने के योग्य नहीं
है। 39वह जो अपनी जान बचाने की चेष्टा करता है,
अपने प्राण खो देगा। किन्तु जो मेरे लिये अपनी जान
देगा, वह जीवन पायेगा। 40जो तुम्हें अपनाता है, वह मुझे
अपनाता है और जो मुझे अपनाता है, वह उस परमेश्वर
को अपनाता है, जिसने मुझे भेजा है। 41जो किसी नबी
को इसलिये अपनाता है कि वह नबी है, उसे वही
प्रतिफल मिलेगा जो कि नबी को मिलता है। और यदि
तुम किसी भले आदमी का इसलिये स्वागत करते हो
कि वह भला आदमी है, उसे सचमुच वही प्रतिफल
मिलेगा जो किसी भले आदमी को मिलना चाहिए। 42और
यदि कोई मेरे इन भोले–भाले शिष्यों में से किसी एक
को भी इसलिये एक गिलास ठंडा पानी तक दे कि वह
मेरा अनुयायी है, तो मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि उसे
इसका प्रतिफल, निश्चय ही, बिना मिले नहीं रहेगा।"

यीशु और बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना
(लूका 7:18-35)

11 अपने बारह शिष्यों को इस प्रकार समझा चुकने
के बाद यीशु वहाँ से चल पड़ा और गलील प्रदेश
के नगरों में उपदेश देता घूमने लगा।

2यूहन्ना ने जब जेल में यीशु के कामों के बारे में सुना
तो उसने अपने शिष्यों के द्वारा संदेश भेजकर 3पूछा कि
"क्या तू वही है 'जो आने वाला था' या हम किसी और
आने वाले की बाट जोहें?"

4उत्तर देते हुए यीशु ने कहा, "जो कुछ तुम सुन रहे
हो, और देख रहे हो, जाकर यूहन्ना को बताओ कि,
5अंधों को आँखें मिल रही हैं, लूले–लंगड़े चल पा रहे
हैं, कोढ़ी चंगे हो रहे हैं, बहरे सुन रहे हैं और मरे हुए
जिलाये जा रहे हैं। और दीन दुखियों में सुसमाचार का
प्रचार किया जा रहा है। 6वह धन्य है जो मुझे अपना
सकता है।"

7जब यूहन्ना के शिष्य वहाँ से जा रहे थे तो यीशु भीड़
में लोगों से यूहन्ना के बारे में कहने लगा, "तुम लोग इस
बियाबान में क्या देखने आये हो? क्या कोई सरकंडा?
जो हवा में थरथरा रहा है। नहीं! 8तो फिर तुम क्या
देखने आये हो? क्या एक पुरुष जिसने बहुत अच्छे वस्त्र
पहने हैं? देखो जो उत्तम वस्त्र पहनते हैं, वे तो राज
भवनों में ही पाये जाते हैं। 9तो तुम क्या देखने आये हो?
क्या कोई नबी? हाँ, मैं तुम्हें बताता हूँ कि जिसे तुमने
देखा है वह किसी नबी से कहीं ज्यादा है। 10यह वही है
जिसके बारे में शास्त्रों में लिखा हैं:

'देख मैं तुझसे पहले ही अपना दूत भेज रहा हूँ। वह
तेरे लिये राह बनायेगा।' *मलाकी 3:1*

11"मैं तुझसे सत्य कहता हूँ बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना
से बड़ा कोई मनुष्य पैदा नहीं हुआ। फिर भी स्वर्ग के
राज्य में छोटे से छोटा व्यक्ति भी यूहन्ना से बड़ा है।
12बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना के समय से आज तक
स्वर्ग का राज्य भयानक आघातों को झेलता रहा है
और हिंसा के बल पर इसे छीनने का प्रयत्न किया
जाता रहा है। 13यूहन्ना के आने तक सभी भविष्यवक्ताओं
और 'मूसा की व्यवस्था' ने भविष्यवाणी की थी, 14और
यदि तुम व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं ने जो कुछ

कहा, उसे स्वीकार करने को तैयार हो तो जिसके
आने की भविष्यवाणी की गयी थी, यह यूहन्ना वही
एलिय्याह है। **15**जो सुन सकता है, सुने!
16“आज की पीढ़ी के लोगों की तुलना मैं किन से
करूँ? वे बाज़ारों में बैठे उन बच्चों के समान हैं जो एक
दूसरे से पुकार कर कह रहे हैं,
17‘हमने तुम्हारे लिए बाँसुरी बजायी, पर तुम नहीं
नाचे। हमने शोकगीत गाये किन्तु तुम नहीं रोये।’
18बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना आया। जो न औरों की
तरह खाता था और न ही पीता था। पर लोगों ने कहा
था कि उस में दुष्टात्मा है। **19**फिर मनुष्य का पुत्र
आया। जो औरों के समान ही खाता-पीता है, पर लोग
कहते हैं ‘इस आदमी को देखो, यह पेटू है, पियक्कड़ है।
यह चुंगी वसूलने वालों और पापियों का मित्र है।’ किन्तु
बुद्धि की उत्तमता उसके कामों से सिद्ध होती है।”

अविश्वासियों को यीशु की चेतावनी

(लूका 10:13-15)

20फिर यीशु ने उन नगरों को धिक्कारा जिनमें
उसने बहुत से आश्चर्यकर्म किये थे। क्योंकि वहाँ के
लोगों ने पाप करना नहीं छोड़ा और अपना मन नहीं
फिराया था। **21**“अरे अभागे खुराजीन, अरे अभागे
बैतसैदा* तुम में जो आश्चर्यकर्म किये गये, यदि वे सूर
और सैदा में किये जाते तो वहाँ के लोग बहुत पहले से
ही टाट के शोक वस्त्र ओढ़ कर और अपने शरीर पर
राख मल* कर खेद व्यक्त करते हुए मन फिरा चुके
होते।’ **22**किन्तु मैं तुम लोगों से कहता हूँ न्याय के दिन
सूर और सैदा* की स्थिति तुमसे अधिक सहने योग्य
होगी। **23**और अरे कफरनहूम, क्या तू सोचता है कि
तुझे स्वर्ग की महिमा तक ऊँचा उठाया जायेगा? तू तो
अधोलोक में नरक को जायेगा। क्योंकि जो आश्चर्यकर्म
तुझमें किये गये, यदि वे सदोम में किये जाते तो वह
नगर आज तक टिका रहता। **24**पर मैं तुम्हें बताता हूँ
कि न्याय के दिन तेरे लोगों की हालत से सदोम की
हालत कहीं अच्छी होगी।”

यीशु को अपनाने वालों को सुख चैन का वचन

(लूका 10:21-22)

25उस अवसर पर यीशु बोला, “परम पिता, तू स्वर्ग
और धरती का स्वामी है, मैं तेरी स्तुति करता हूँ
क्योंकि तूने इन बातों को, उनसे जो ज्ञानी हैं और
समझदार हैं, छिपा कर रखा है। और जो भोले भाले हैं
उनके लिए प्रकट किया है। **26**हाँ परम पिता यह इसलिये
हुआ, क्योंकि तूने इसे ही ठीक जाना।
27“मेरे परम पिता ने सब कुछ मुझे सौंप दिया और
वास्तव में परम पिता के अलावा कोई भी पुत्र को नहीं
जानता। और कोई भी पुत्र के अलावा परम पिता को
नहीं जानता। हर वह व्यक्ति परम पिता को जानता है,
जिसके लिये पुत्र ने उसे प्रकट करना चाहा है।
28“अरे, ओ थके-माँदे, बोझ से दबे लोगों! मेरे पास
आओ, मैं तुम्हें सुख चैन दूँगा। **29**मेरा जुआ लो और उसे
अपने ऊपर सँभालो। फिर मुझ से सीखो क्योंकि मैं
सरल हूँ और मेरा मन कोमल है। तुम्हें भी अपने लिये
सुख-चैन मिलेगा। **30**क्योंकि वह जुआ जो मैं तुम्हें दे
रहा हूँ बहुत सरल है। और वह बोझ जो मैं तुम पर डाल
रहा हूँ, हल्का है।”

यहूदियों द्वारा यीशु और उसके शिष्यों की आलोचना

(मरकुस 2:23-28; लूका 6:1-5)

12 लगभग उसी समय यीशु सब्त के दिन अनाज
के खेतों से होकर जा रहा था। उसके शिष्यों
को भूख लगी और वे गेहूँ की कुछ बालें तोड़ कर खाने
लगे। **2**फरीसियों ने ऐसा होते देख कहा, “देख, तेरे शिष्य
वह कर रहे हैं जिसका सब्त के दिन किया जाना मूसा
की व्यवस्था के अनुसार उचित नहीं है।”
3इस पर यीशु ने उनसे पूछा, “क्या तुमने नहीं पढ़ा
कि दाऊद और उसके साथियों ने, जब उन्हें भूख लगी,
क्या किया था? **4**उसने परमेश्वर के घर में घुस कर
परमेश्वर को चढ़ाई पवित्र रोटियाँ कैसे खाई थीं? यद्यपि
उसको और उसके साथियों को उनका खाना मूसा की
व्यवस्था के विरुद्ध था। उनको केवल याजक ही खा
सकते थे। **5**या मूसा की व्यवस्था में तुमने यह नहीं पढ़ा
कि सब्त के दिन मंदिर के याजक ही वास्तव में सब्त
को बिगाड़ते हैं। और फिर भी उन्हें कोई कुछ नहीं
कहता। **6**किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ, यहाँ कोई है जो
मन्दिर से भी बड़ा है।
7यदि तुम शास्त्रों में जो लिखा है, उसे जानते कि, ‘मैं
लोगों में दया चाहता हूँ, पशुबलि नहीं’, तो तुम उन्हें
दोषी नहीं ठहराते, जो निर्दोष हैं।
8“हाँ, मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी स्वामी
है।”

यीशु द्वारा सूखे हाथ का अच्छा किया जाना

(मरकुस 3:1-6; लूका 6:6-11)

9फिर वह वहाँ से चल दिया और यहूदी धर्म सभागार
में पहुँचा। **10**वहाँ एक व्यक्ति था, जिसका हाथ सूख
चुका था। सो लोगों ने यीशु से पूछा, “मूसा के विधि के

खुराजीन, बैतसैद, कफ़रनहूम झील गलील के किनारे बसे नगर जहाँ यीशु ने उपदेश दिये थे।

“टाट के शोक ... राख मल” उन दिनों लोग शोक व्यक्त करने के लिए इस प्रकार के मोटे कपड़े पहना करते थे, और अपने शरीर पर राख मला करते थे।

सूर और सैदा उन नगरों के नाम हैं जहाँ बहुत बुरे लोग रहा करते थे।

अनुसार सब्त के दिन किसी को चंगा करना, क्या
उचित है?" उन्होंने उससे यह इसलिए पूछा था कि, वे
उस पर दोष लगा सकें।
11किन्तु उसने उन्हें उत्तर दिया, "मानों तुममें से किसी
के पास एक ही भेड़ है, और वह भेड़ सब्त के दिन
किसी गढ़े में गिर जाती है, तो क्या तुम उसे पकड़ कर
बाहर नहीं निकालोगे? 12फिर आदमी तो एक भेड़ से
कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसलिए सब्त के दिन 'मूसा
की व्यवस्था' भलाई करने की अनुमति देती है।"
13तब यीशु ने उस सूखे हाथ वाले आदमी से कहा,
"अपना हाथ आगे बढ़ा" और उसने अपना हाथ आगे
बढ़ा दिया। वह पूरी तरह अच्छा हो गया था। ठीक वैसा
ही जैसा उसका दूसरा हाथ था। 14फिर फरीसी वहाँ से
चले गये और उसे मारने के लिए कोई रास्ता ढूँढने की
तरकीब सोचने लगे।

यीशु वही करता है जिसके लिए परमेश्वर ने उसे चुना

15यीशु यह जान गया और वहाँ से चल पड़ा। बड़ी
भीड़ उसके पीछे हो ली। उसने उन्हें चंगा करते हुए
16चेतावनी दी कि वे उसके बारे में लोगों को कुछ न
बतायें। 17यह इसलिए हुआ कि भविष्यवक्ता यशायाह
द्वारा प्रभु ने जो कहा था, वह पूरा हो:
18"यह मेरा सेवक है, जिसे मैंने चुना है। यह मेरा
प्यारा है, मैं इससे आनन्दित हूँ, अपना 'आत्मा' इस पर
मैं रखूँगा सब देशों के सब लोगों को यही न्याय घोषणा
करेगा
19यह कभी नहीं चीखेगा या झगड़ेगा ही, लोग इसे
गलियों कूचों में नहीं सुनेंगे।
20यह झुके सरकंडे तक को नहीं तोड़ेगा, यह बुझते
दीपक तक को नहीं बुझाएगा, डटा रहेगा, तब तक जब
तक कि न्याय न हो
21तब फिर सभी लोग अपनी आशाएँ उसमें बाँधेंगे
बस केवल उसी नाम में।" *यशायाह 42:1–4*

यीशु में परमेश्वर की शक्ति है

(मरकुस 3:20-30; लूका 11:14-23; 12:10)

22फिर यीशु के पास लोग एक ऐसे अन्धे को लाये जो
गूँगा भी था क्योंकि उस पर दुष्ट आत्मा सवार थी। यीशु
ने उसे चंगा कर दिया और इसीलिये वह गूँगा अंधा
बोलने और देखने लगा। 23इस पर सभी लोगों को बहुत
अचरज हुआ और वे कहने लगे, "क्या यह व्यक्ति
दाऊद का पुत्र हो सकता है?"
24जब फ़रीसियों ने यह सुना तो वे बोले, "यह दुष्टात्माओं
को उनके शासक बैल्ज़ाबुल* के सहारे बाहर निकालता
है।"

25यीशु को उनके विचारों का पता चल गया। वह
उनसे बोला, "हर वह राज्य जिसमें फूट पड़ जाती है,
नष्ट हो जाता है। वैसे ही हर नगर या परिवार जिसमें
फूट पड़ जाये टिका नहीं रहेगा। 26तो यदि शैतान ही
अपने आप को बाहर निकाले फिर तो उसमें अपने ही
विरुद्ध फूट पड़ गयी है। सो उसका राज्य कैसे बना रह
सकेगा। 27और फिर यदि यह सच है कि मैं बैल्ज़ाबुल
के सहारे दुष्ट आत्माओं को निकालता हूँ तो तुम्हारे
अनुयायी किसके सहारे उन्हें बाहर निकालते हैं? सो
तुम्हारे अपने अनुयायी ही सिद्ध करेंगे कि तुम अनुचित
हो। 28मैं दुष्टात्माओं को परमेश्वर के आत्मा की शक्ति
से निकालता हूँ। इससे यह सिद्ध है कि परमेश्वर का
राज्य तुम्हारे निकट ही आ पहुँचा है।
29"फिर कोई किसी बलवान के घर में घुस कर
उसका माल कैसे चुरा सकता है, जब तक कि पहले
वह उस बलवान को बाँध न दे। तभी वह उसके घर
को लूट सकता है।
30"जो मेरे साथ नहीं है, मेरा विरोधी है। और जो
बिखरी हुई भेड़ों को इकट्ठा करने में मेरी मदद नहीं
करता, वह उन्हें बिखरा रहा है। 31इसलिए मैं तुमसे
कहता हूँ कि सभी की हर तरह की निन्दा और पाप
क्षमा कर दिये जायेंगे किन्तु 'आत्मा' की निन्दा करने
वाले को क्षमा नहीं किया जायेगा। 32कोई मनुष्य के पुत्र
के विरोध में यदि कुछ कहता है तो उसे क्षमा किया जा
सकता है, किन्तु 'पवित्र आत्मा' के विरोध में कोई कुछ
कहे तो उसे क्षमा नहीं किया जायेगा। न इस युग में और
न आने वाले युग में।

व्यक्ति अपने कर्मों से जाना जाता है

(लूका 6:43-45)

33"तुम लोग जानते हो कि अच्छा फल लेने के लिए
तुम्हें अच्छा पेड़ ही लगाना चाहिये। और बुरे पेड़ से बुरा
ही फल मिलता है। क्योंकि पेड़ अपने फल से ही जाना
जाता है।
34"अरे ओ साँप के बच्चो! जब तुम बुरे हो तो अच्छी
बातें कैसे कह सकते हो? व्यक्ति के शब्द, जो उसके
मन में भरा है, उसी से निकलते हैं।
35"एक अच्छा व्यक्ति जो अच्छाई उसके मन में
इकट्ठी है, उसी में से अच्छी बातें निकालता है। जबकि
एक बुरा व्यक्ति जो बुराई उसके मन में है, उसी में से
बुरी बातें निकालता है।
36"किन्तु मैं तुम लोगों को बताता हूँ कि न्याय के
दिन प्रत्येक व्यक्ति को अपने हर व्यर्थ बोले शब्द का
हिसाब देना होगा। 37तेरी बातों के आधार पर ही तुझे
निर्दोष और तेरी बातों के आधार पर ही तुझे दोषी
ठहराया जायेगा।"

बैल्ज़ाबुल यह दुष्टात्माओं के राजा 'शैतान' का नाम है।

यीशु से आश्चर्य चिन्ह की माँग
(*मरकुस 8:11-12; लूका 11:29-32*)

38फिर कुछ यहूदी धर्म शास्त्रियों और फ़रीसियों ने
उससे कहा, "गुरु, हम तुझे आश्चर्य चिन्ह प्रकट करते
देखना चाहते हैं।"

39उत्तर देते हुए यीशु ने कहा, "इस युग के बुरे और
दुराचारी लोग ही आश्चर्य चिन्ह देखना चाहते हैं।
भविष्यवक्ता योना के आश्चर्य चिन्ह को छोड़कर, उन्हें
और कोई आश्चर्य चिन्ह नहीं दिया जायेगा।" 40और
जैसे योना तीन दिन और तीन रात उस समुद्री जीव के
पेट में रहा था, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी तीन दिन और
तीन रात धरती के भीतर रहेगा। 41न्याय के दिन नीनेवा
के निवासी आज की इस पीढ़ी के लोगों के साथ खड़े
होंगे और उन्हें दोषी ठहरायेंगे। क्योंकि नीनेवा के वासियों
ने योना के उपदेश से मन फिराया था। और यहाँ तो
कोई योना से भी बड़ा मौजूद है! 42न्याय के दिन दक्षिण
की रानी इस पीढ़ी के लोगों के साथ खड़ी होगी और
उन्हें अपराधी ठहरायेगी, क्योंकि वह धरती के दूसरे
छोर से सुलेमान का उपदेश सुनने आयी थी और यहाँ
तो कोई सुलैमान से भी बड़ा मौजूद है!

लोगों में शैतान
(*लूका 11:24-26*)

43"जब कोई दुष्टात्मा किसी व्यक्ति को छोड़ती है तो
वह आराम की खोज में सूखी धरती ढूँढती फिरती है,
किन्तु वह उसे मिल नहीं पाती। 44तब वह कहती है कि
जिस घर को मैंने छोड़ा था, मैं फिर वहीं लौट जाऊँगी।
सो वह लौटती है और उसे अब तक खाली, साफ सुथरा
तथा सजा-सँवरा पाती है। 45फिर वह लौटती है और
अपने साथ सात और दुष्टात्माओं को लाती है जो उससे
भी बुरी होती हैं। फिर वे सब आकर वहाँ रहने लगती
हैं। और उस व्यक्ति की दशा पहले से भी अधिक
भयानक हो जाती है। आज की इस बुरी पीढ़ी के लोगों
की दशा भी ऐसी ही होगी।"

यीशु के अनुयायी ही उसका परिवार
(*मरकुस 3:31-35; लूका 8:19-21*)

46वह अभी भीड़ के लोगों से बातें कर ही रहा था
कि उसकी माता और भाई-बन्धु वहाँ आकर बाहर
खड़े हो गये। वे उससे बात करने को बाट जोह रहे थे।
47किसी ने यीशु से कहा "सुन तेरी माँ और तेरे भाई-बन्धु
बाहर खड़े हैं और तुझ से बात करना चाहते हैं।"

48उत्तर में यीशु ने बात करने वाले से कहा, "कौन है
मेरी माँ? कौन हैं मेरे भाई-बंधु?" 49फिर उसने हाथ से
अपने अनुयायिओं की तरफ इशारा करते हुए कहा,
"ये हैं मेरी माँ और मेरे भाई-बन्धु। 50हाँ स्वर्ग में स्थित
मेरे पिता की इच्छा पर जो कोई चलता है, वही मेरा
भाई, बहन और माँ है।"

किसान और बीज का दृष्टान्त
(*मरकुस 4:1-9; लूका 8:4-8*)

13 उसी दिन यीशु उस घर को छोड़ कर झील के
किनारे उपदेश देने जा बैठा। 2बहुत से लोग
उसके चारों तरफ़ इकट्ठे हो गये। सो वह एक नाव पर
चढ़ कर बैठ गया। और भीड़ किनारे पर खड़ी रही।
3उसने उन्हें दृष्टान्तों का सहारा लेते हुए बहुत सी बातें
बतायीं। उसने कहा कि: "एक किसान बीज बोने निकला।
4जब वह बुवाई कर रहा था तो कुछ बीज राह के
किनारे जा पड़े। चिड़ियाएँ आयीं और उन्हें चुग गयीं।
5थोड़ें बीज चट्टानी धरती पर जा गिरे। वहाँ मिट्टी
बहुत उथली थी। बीज तुरंत उगे, क्योंकि वहाँ मिट्टी तो
गहरी थी नहीं; 6इसलिए जब सूरज चढ़ा तो वे पौधे
झुलस गये। क्योंकि उन्होंने ज्यादा जड़ें तो पकड़ी नहीं
थीं, इसलिए वे सूख कर गिर गये। 7बीजों का एक
हिस्सा कँटीली झाड़ियों में जा गिरा, झाड़ियाँ बड़ी हुई,
और उन्होंने उन पौधों को दबोच लिया। 8पर थोड़े बीज
जो अच्छी धरती पर गिरे थे, अच्छी फसल देने लगे।
फसल, जितना बोया गया था, उससे कोई तीस गुना,
साठ गुना यासौ गुना से भी ज़्यादा हुई। 9जो सुन सकता
है, वह सुन ले।"

दृष्टान्त-कथाओं का प्रयोजन
(*मरकुस 4:10-12; लूका 8:9-10*)

10फिर यीशु के शिष्यों ने उसके पास जाकर उससे
पूछा, "तू उनसे बातें करते हुए दृष्टान्त कथाओं का
प्रयोग क्यों करता है?"

11उत्तर में उसने उनसे कहा, "स्वर्ग के राज्य के भेदों
को जानने का अधिकार सिर्फ तुम्हें दिया गया है, उन्हें
नहीं। 12क्योंकि जिसके पास थोड़ा बहुत है, उसे और भी
दिया जायेगा और उसके पास बहुत अधिक हो जायेगा।
किन्तु जिसके पास कुछ भी नहीं है, उससे जितना सा
उसके पास है, वह भी छीन लिया जायेगा। 13इसीलिये मैं
उनसे दृष्टान्त कथाओं का प्रयोग करते हुए बात करता
हूँ। क्योंकि यद्यपि वे देखते हैं, पर वास्तव में उन्हें कुछ
दिखाई नहीं देता, वे यद्यपि सुनते हैं पर वास्तव में न वे
सुनते हैं, न समझते हैं। 14इस प्रकार उन पर यशायाह
की यह भविष्यवाणी खरी उतरती है:

'तुम सुनोगे और सुनते ही रहोगे पर तुम्हारी समझ में
कुछ भी न आयेगा, तुम बस देखते ही रहोगे पर तुम्हें
कुछ भी न सूझ पायेगा

15क्योंकि इनके हृदय जड़ता से भर गये। इन्होंने
अपने कान बन्द कर रखे हैं और अपनी आखें मूँद
रखी हैं ताकि वे अपनी आँखों से कुछ भी न देखें और
वे कान से कुछ न सुन पायें या कि अपने हृदय से
कभी न समझें और कभी मेरी ओर मुड़कर आयें और
जिससे मैं उनका उद्धार करूँ।' *यशायाह 6:9–10*

16किन्तु तुम्हारी आँखें और तुम्हारे कान भाग्यवान्
हैं क्योंकि वे देख और सुन सकते हैं। 17मैं तुमसे सत्य
कहता हूँ, बहुत से भविष्यवक्ता और धर्मात्मा जिन बातों
को देखना चाहते थे, उन्हें तुम देख रहे हो। वे उन्हें नहीं
देख सके। और जिन बातों को वे सुनना चाहते थे, उन्हें
तुम सुन रहे हो। वे उन्हें नहीं सुन सके।

बीज बोने की दृष्टान्त-कथा का अर्थ
(*मरकुस 4:13-20; लूका 8:11-15*)

18"तो बीज बोने वाले की दृष्टान्त-कथा का अर्थ
सुनो। 19वह बीज जो राह के किनारे गिर पड़ा था,
उसका अर्थ है कि जब कोई स्वर्ग के राज्य का सुसंदेश
सुनता है और उसे समझता नहीं है तो बदी आकर,
उसके मन में जो उगा था, उसे उखाड़ ले जाती है। 20वे
बीज जो चट्टानी धरती पर गिरे थे, उनका अर्थ है वह
व्यक्ति जो सुसंदेश सुनता है, उसे आनन्द के साथ तत्काल
ग्रहण भी करता है 21किन्तु अपने भीतर उसकी जड़ें
नहीं जमने देता, वह थोड़ी ही देर ठहर पाता है, जब
सुसंदेश के कारण उस पर कष्ट और यातनाएँ आती हैं
तो वह जल्दी ही डगमगा जाता है। 22काँटों में गिरे बीज
का अर्थ है, वह व्यक्ति जो सुसंदेश को सुनता तो है, पर
संसार की चिंताएँ और धन का लोभ सुसंदेश को दबा
देता है और वह व्यक्ति सफल नहीं हो पाता। 23अच्छी
धरती पर गिरे बीज से अर्थ है, वह व्यक्ति जो सुसंदेश
को सुनता है और समझता है। वह सफल होता है। वह
सफलता बोये बीज से तीस गुना, साठ गुना या सौ गुना
तक होती है।"

गेहूँ और खरपतवार का दृष्टान्त

24यीशु ने उनके सामने एक और दृष्टान्त कथा
रखी: "स्वर्ग का राज्य उस व्यक्ति के समान है जिसने
अपने खेत में अच्छे बीज बोये थे। 25पर जब लोग सो रहे
थे, उस व्यक्ति का शत्रु आया और गेहूँ के बीच खरपतवार
बो गया। 26जब गेहूँ में अंकुर निकले और उस पर बालें
आयी तो खरपतवार भी दिखने लगी। 27तब खेत के
मालिक के पास आकर उसके दासों ने उससे कहा,
'मालिक, तूने तो खेत में अच्छा बीज बोया था, बोया था
न? फिर ये खरपतवार कहाँ से आई?'

28"तब उसने उनसे कहा, 'यह किसी शत्रु का काम
है।' उसके दासों ने उससे पूछा, 'क्या तू चाहता है कि
हम जाकर खरपतवार उखाड़ दें?'

29"वह बोला, 'नही, क्योंकि जब तुम खरपतवार
उखाड़ोगे तो उनके साथ, तुम गेहूँ भी उखाड़ दोगे।

30"जब तक फसल पके दोनों को साथ साथ बढ़ने
दो, फिर कटाई के समय में फसल काटने वालों से
कहूँगा कि पहले खरपतवार की पुलियाँ बना कर उन्हें
जला दो और फिर गेहूँ को बटोर कर मेरी खत्ती में रख
दो।'"

कई अन्य दृष्टान्त-कथाएँ
(*मरकुस 4:30-34; लूका 13:18-21*)

31यीशु ने उनके सामने और दृष्टान्त-कथाएँ रखी।
"स्वर्ग का राज्य राई के छोटे से बीज के समान होता है,
जिसे किसी ने लेकर खेत में बो दिया हो। 32यह बीज
छोटे से छोटा होता है, किन्तु बड़ा होने पर यह बाग के
सभी पौधों से बड़ा हो जाता है। यह पेड़ बनता है और
आकाश के पक्षी आकर इसकी शाखाओं पर शरण
लेते हैं।"

33उसने उन्हें एक दृष्टान्त कथा और कही-"स्वर्ग
का राज्य खमीर के समान है, जिसे किसी स्त्री ने तीन
भार आटे में मिलाया और तब तक उसे रख छोड़ा जब
तक वह सब का सब खमीर नहीं हो गया।"

34यीशु ने लोगों से यह सब कुछ दृष्टान्त-कथाओं के
द्वारा कहा। वास्तव में वह उनसे दृष्टान्त कथाओं के
बिना कुछ भी नहीं कहता था। 35ऐसा इसलिये था कि
परमेश्वर ने भविष्यवक्ता के द्वारा जो कुछ कहा था वह
पूरा हो: परमेश्वर ने कहा कि,

"मैं दृष्टान्त कथाओं के द्वारा अपना मुँह खोलूँगा।
सृष्टि के आदिकाल से जो बातें छिपी रही हैं, उन्हें
उजागर करूँगा।" *भजन संहिता 78:2*

गेहूँ और खरपतवार के दृष्टान्त की व्याख्या

36फिर यीशु उस भीड़ को विदा करके घर चला
आया। तब उसके शिष्यों ने आकर उससे कहा, "खेत
के खरपतवार के दृष्टान्त का अर्थ हमें समझा।"

37उत्तर में यीशु बोला, "जिसने उत्तम बीज बोया था,
वह है मनुष्य का पुत्र। 38और खेत यह संसार है। अच्छे
बीज का अर्थ है, स्वर्ग के राज्य के लोग। खरपतवार
का अर्थ है, वे व्यक्ति जो शैतान की संतान हैं। 39वह
शत्रु जिसने खरपतवार बीजे थे, शैतान है और कटाई
का समय है, इस जगत का अंत और कटाई करने वाले
हैं स्वर्गदूत।

40"ठीक वैसे ही जैसे खरपतवार को इकट्ठा करके
आग में जला दिया गया, वैसे ही सृष्टि के अंत में होगा।
41मनुष्य का पुत्र अपने दूतों को भेजेगा और वे उसके
राज्य से सभी पापियों को और उनको, जो लोगों को
पाप के लिये प्रेरित करते हैं, 42इकट्ठा करके धधकते
भाड़ में झोंक देंगे जहाँ बस दाँत पीसना और रोना ही
रोना होगा। 43तब धर्मी अपने परम पिता के राज्य में
सूरज की तरह चमकेंगे। जो सुन सकता है, सुन ले!"

धन का भण्डार और मोती का दृष्टान्त

44"स्वर्ग का राज्य खेत में गड़े धन जैसा है। जिसे
किसी मनुष्य ने पाया और फिर उसे वहीं गाड़ दिया।
वह इतना प्रसन्न हुआ कि उसने जो कुछ उसके पास
था, जाकर बेच दिया और वह खेत मोल ले लिया।

45"स्वर्ग का राज्य एक ऐसे व्यापारी के समान है जो
अच्छे मोतियों की खोज में हो। 46जब उसे एक अनमोल
मोती मिला तो जाकर जो कुछ उसके पास था, उसने
बेच डाला, और मोती मोल ले लिया।

मछली पकड़ने का जाल

47"स्वर्ग का राज्य मछली पकड़ने के लिए झील में
फेंके गए एक जाल के समान भी है। जिसमें तरह तरह
की मछलियाँ पकड़ी गयी। 48जब वह जाल पूरा भर गया
तो उसे किनारे पर खींच लिया गया। और वहाँ बैठ कर
अच्छी मछलियाँ छाँट कर टोकरियों में भर ली गयीं
किन्तु बेकार मछलियाँ फेंक दी गयी। 49सृष्टि के अन्त
में ऐसे ही होगा। स्वर्गदूत आयेंगे और धर्मियों में से
पापियों को छाँट कर 50धधकते भाड़ में झोंक देंगे जहाँ
बस रोना और दाँत पीसना होगा।"
51यीशु ने अपने शिष्यों से पूछा, "तुम ये सब बातें
समझते हो?" उन्होंने उत्तर दिया, "हाँ!"
52यीशु ने उनसे कहा, "देखो, इसीलिये हर धर्मशास्त्री
जो परमेश्वर के राज्य को जानता है, एक ऐसे गृहस्वामी
के समान है, जो अपने कोठार से नई–पुरानी वस्तुओं
को बाहर निकालता है।"

यीशु का अपने देश लौटना

(मरकुस 6:1-6; लूका 4:16-30)

53इन दृष्टान्त कथाओं को समाप्त करके वह वहाँ
से चल दिया 54और अपने देश आ गया। फिर उसने
यहूदी धर्म सभाओं में उपदेश देना आरम्भ कर दिया।
इससे हर कोई अचरज में पड़ कर कहने लगा, "इसे
ऐसी सूझबूझ और चमत्कारी शक्ति कहाँ से मिली?
55क्या यह वही बढ़ई का बेटा नहीं है? क्या इसकी माँ
का नाम मरियम नहीं है? याकूब, यूसुफ, शमौन और
यहूदा इसी के तो भाई हैं न? 56क्या इसकी सभी बहनें
हमारे ही बीच नहीं हैं? तो फिर उसे यह सब कहाँ से
मिला।" 57सो उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया। फिर
यीशु ने कहा, "किसी नबी का अपने गाँव और घर को
छोड़ कर, सब आदर करते हैं।"
58सो उनके अविश्वास के कारण उसने वहाँ अधिक
आश्चर्य कर्म नहीं किये।

हेरोदेस का यीशु के बारे में सुनना

(मरकुस 6:14-29; लूका 9:7-9)

14 उस समय गलील के शासक हेरोदेस ने जब
यीशु के बारे में सुना 2तो उसने अपने सेवकों
से कहा, "यह बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना है जो मरे
हुओं में से जी उठा है। और इसलिए ये शक्तियाँ उसमें
काम कर रही हैं। जिनसे यह इन चमत्कारों को करता
है।"

यूहन्ना की हत्या

3यह वही हेरोदेस था जिसने यूहन्ना को बंदी बना,
जंजीरों में बाँध, जेल में डाल दिया था। यह उसने हिरोदियास
के कहने पर किया था, जो पहले उसके भाई फिलिप्पुस
की पत्नी थी। 4यूहन्ना प्राय: उससे कहा करता था कि
"तुझे इसके साथ नहीं रहना चाहिये।" 5सो हेरोदेस उसे
मार डालना चाहता था, पर वह लोगों से डरता था
क्योंकि लोग यूहन्ना को नबी मानते थे। 6पर जब हेरोदेस
का जन्म दिन आया तो हिरोदियास की बेटी ने हेरोदेस
और उसके मेहमानों के सामने नाच कर हेरोदेस को
इतना प्रसन्न किया 7कि उसने शपथ ले कर, वह जो
कुछ चाहे, उसे देने का वचन दिया।
8अपनी माँ के सिखावे में आकर उसने कहा, "मुझे
थाली में रख कर बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना का शीष
दे।" 9यद्यपि राजा बहुत दुखी था किन्तु अपनी शपथ
और अपने मेहमानों के कारण उसने उसकी माँग पूरी
करने का आदेश दे दिया। 10उसने जेल में यूहन्ना का
सिर काटने के लिये आदमी भेजे। 11सो यूहन्ना का सिर
थाली में रख कर लाया गया और उसे लड़की को दे
दिया गया। वह उसे अपनी माँ के पास ले गयी। 12तब
यूहन्ना के अनुयायी आये और उन्होंने उसके धड़ को
लेकर दफना दिया। और फिर उन्होंने आकर यीशू को
बताया।

यीशु का पाँच हजार से अधिक को खाना खिलाना

(मरकुस 6:30-44; लूका 9:10-17; यूहन्ना 6:1-14)

13जब यीशु ने इसकी चर्चा सुनी तो वह वहाँ से नाव
में किसी एकान्त स्थान पर अकेला चला गया। किन्तु
जब भीड़ को इसका पता चला तो वे अपने नगरों से
पैदल ही उसके पीछे हो लिये। 14यीशु जब नाव से बाहर
निकल कर किनारे पर आया तो उसने एक बड़ी भीड़
देखी। उसे उन पर दया आयी और उसने उनके बीमारों
को अच्छा किया।
15जब शाम हुई तो उसके शिष्यों ने उसके पास
आकर कहा, "यह सुनसान जगह है और बहुत देर भी
हो चुकी है, सो भीड़ को विदा कर, ताकि वे गाँव में जा
कर अपने लिये खाना मोल ले लें।"
16किन्तु यीशु ने उनसे कहा, "इन्हें कहीं जाने की
आवश्यकता नहीं है। तुम इन्हें कुछ खाने को दो।"
17उन्होंने उससे कहा, "हमारे पास पाँच रोटियाँ और
दो मछलियों को छोड़ कर और कुछ नहीं है।"
18यीशु ने कहा, "उन्हें मेरे पास ले आओ।" 19उसने
भीड़ के लोगों से कहा कि वे घास पर बैठ जायें। फिर
उसने वे पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ ले कर स्वर्ग की
ओर देखा और भोजन के लिये परमेश्वर का धन्यवाद
किया। फिर रोटी के टुकड़े तोड़े और उन्हें अपने

शिष्यों को दे दिया। शिष्यों ने वे टुकड़े लोगों में बाँट
दिये। 20सभी ने छक कर खाया। इसके बाद बचे हुए
टुकड़ों से उसके शिष्यों ने बारह टोकरियाँ भरीं। 21स्त्रियों
और बच्चों को छोड़ कर वहाँ खाने वाले कोई पाँच
हज़ार पुरुष थे।

यीशु का झील पर चलना

(मरकुस 6:45-52; यूहन्ना 6:15-21)

22इसके तुरंत बाद यीशु ने अपने शिष्यों को नाव पर
चढ़ाया और जब तक वह भीड़ को विदा करे, उनसे
गलील की झील के पार अपने से पहले ही जाने को
कहा। 23भीड़ को विदा करके वह अकेले में प्रार्थना
करने को पहाड़ पर चला गया। साँझ होने पर वह वहाँ
अकेला था। 24तब तक नाव किनारे से मीलों दूर जा
चुकी थी और लहरों में थपेड़े खाती डगमगा रही थी।
सामने की हवा चल रही थी।

25सुबह कोई तीन और छ: बजे के बीच यीशु झील
पर चलता हुआ उनके पास आया। 26उसके शिष्यों ने
जब उसे झील पर चलते हुए देखा तो वह घबराये हुए
आपस में कहने लगे "यह तो कोई भूत है!" वे डर के
मारे चीखउठे। 27यीशु ने तत्काल उनसे बात करते हुए
कहा, "हिम्मत रखो! यह मैं हूँ! अब और मत डरो।"

28पतरस ने उत्तर देते हुए उससे कहा, "प्रभु, यदि यह
तू है, तो मुझे पानी पर चल कर अपने पास आने
कोकह।" 29यीशु ने कहा, "चला आ।"

पतरस नाव से निकल कर पानी पर यीशु की तरफ
चल पड़ा। 30उसने जब तेज हवा देखी तो वह घबराया।
वह डूबने लगा और चिल्लाया, "प्रभु, मेरी रक्षा कर।"

31यीशु ने तत्काल उसके पास पहुँच कर उसे सँभाल
लिया और उससे बोला, "ओ अल्प विश्वासी, तूने संदेह
क्यों किया?"

32और वे नाव पर चढ़ आये। हवा थम गयी। 33नाव
पर के लोगों ने यीशु की उपासना की और कहा, "तू
सचमुच परमेश्वर का पुत्र है।"

34सो झील पार करके वे गन्नेसरत के तट पर उतर
गये। 35जब वहाँ रहने वालों ने यीशु को पहचाना तो
उन्होंने उसके आने का समाचार आसपास सब कहीं
भिजवा दिया। जिससे लोग–जो रोगी थे, उन सब को
वहाँ ले आये 36और उससे प्रार्थना करने लगे कि वह
उन्हें अपने वस्त्र का बस किनारा ही छू लेने दे। और
जिन्होंने छू लिया, वे सब पूरी तरह चंगे हो गये।

मनुष्य के बनाये नियमों से परमेश्वर का विधान बड़ा है

(मरकुस 7:1-23)

15 फिर कुछ फ़रीसी और यहूदी धर्मशास्त्री
यरुशलेम से यीशु के पास आये और उससे
पूछा, 2"तेरे अनुयायी हमारे पुरखों के रीति –रिवाजों
का पालन क्यों नहीं करते? वे खाना खाने से पहले
अपने हाथ क्यों नहीं धोते?"

3यीशु ने उत्तर दिया, "अपने रीति रिवाजों के कारण
तुम परमेश्वर के विधि को क्यों तोड़ते हो? 4क्योंकि
परमेश्वर ने तो कहा था, 'तू अपने माता–पिता का
आदर कर'* और 'जो कोई अपने पिता या माता का
अपमान करता है, उसे अवश्य मार दिया जाना चाहिये।'*
5किन्तु तुम कहते हो जो कोई अपने पिता या अपनी
माता से कहे, 'क्योंकर मैं अपना सब कुछ परमेश्वर
को अर्पित कर चुका हूँ, इसलिये तुम्हारी सहायता नहीं
कर सकता।' 6इस तरह उसे अपने माता पिता का
आदर करने की आवश्यकता नहीं। इस प्रकार तुम
अपने रीति रिवाजों के कारण परमेश्वर के आदेश को
नकारते हो। 7ओ ढोंगियो, तुम्हारे बारे में यशायाह ने
ठीक ही भविष्यवाणी की थी। उसने कहा था:

8'ये मेरा केवल होठों से आदर करते है; पर इनके
मन मुझ से सदा दूर रहते हैं

9इनकी अर्पित उपासना मुझ को बिना काम की
क्योंकि ये लोगों को कह सिखाते मनुष्य के अपने
सिद्धान्त, बनाये नियम।'" *यशायाह 29:13*

10उसने भीड़ को अपने पास बुलाया और उनसे
कहा, "सुनो और समझो कि 11मनुष्य के मुख के
भीतर जो जाता है वह उसे अपवित्र नहीं करता, बल्कि
उसके मुँह से निकला हुआ शब्द उसे अपवित्र करता
है।"

12तब यीशु के शिष्य उसके पास आये और बोले,
"क्या तुझे पता है कि तेरी बात का फरीसियों ने बहुत
बुरा माना है?"

13यीशु ने उत्तर दिया, "हर वह पौधा जिसे मेरे स्वर्ग
में स्थित पिता की ओर से नहीं लगाया गया है, उखाड़
दिया जायेगा। 14उन्हें छोड़ो, वे तो अन्धों के अंधे नेता हैं।
यदि एक अंधा दूसरे अंधे को राह दिखाता है, तो वे
दोनों ही गढ़े में गिरते हैं।"

15तब पतरस ने उससे कहा, "हमें अपवित्रता सम्बन्धी
दृष्टान्त का अर्थ समझा।"

16यीशु बोला, "क्या तुम अब भी नहीं समझते? 17क्या
तुम नहीं जानते कि जो कुछ किसी के मुँह में जाता है,
वह उस के पेट में पहुँचता है और फिर पखाने में
निकल जाता है? 18किन्तु जो मनुष्य के मुँह से बाहर
आता है, वह उसके मन से निकलता है। यही उस को
अपवित्र करता है। 19क्योंकि बुरे विचार, हत्या, व्यभिचार,
दुराचार, चोरी, झूठ और निन्दा जैसी सभी बुराइयाँ मन

"तू ... कर" देखें निर्गमन 20:12; व्यवस्था. 5:16

"जो कोई ... जाना चाहिये" देखें निर्गमन 21:17

से ही आती हैं। 20ये ही हैं जिनसे कोई अपवित्र बनता है।
बिना हाथ धोए खाने से कोई अपवित्र नहीं होता।"

ग़ैर यहूदी स्त्री की सहायता
(मरकुस 7:24-30)

21फिर यीशु उस स्थान को छोड़ कर सूर और सैदा
की ओर चल पड़ा। 22वहाँ की एक कनानी स्त्री आयी
और चिल्लाने लगी, "हे प्रभु, दाऊद के पुत्र, मुझ पर
दया कर। मेरी पुत्री पर दुष्ट आत्मा बुरी तरह सवार
है।"
23यीशु ने उससे एक शब्द भी नहीं कहा, सो उसके
शिष्य उसके पास आये और विनती करने लगे, "यह
हमारे पीछे चिल्लाती हुई आ रही है, इसे दूर हटा।"
24यीशु ने उत्तर दिया, "मुझे केवल इस्राएल के लोगों
की खोई हुई भेड़ों के अलावा किसी और के लिये नहीं
भेजा गया है।"
25तब उस स्त्री ने यीशु के सामने झुक कर विनती
की, "हे प्रभु, मेरी रक्षा कर!"
26उत्तर में यीशु ने कहा, "यह उचित नहीं है कि
बच्चों का खाना लेकर उसे घर के कुत्तों के आगे डाल
दियाजाये।"
27वह बोली, "यह ठीक है प्रभु, किन्तु अपने स्वामी
की मेज़ से गिरे हुए चूरे में से थोड़ा बहुत तो घर के कुत्ते
भी खा ही लेते हैं।"
28तब यीशु ने कहा, "स्त्री, तेरा विश्वास बहुत बड़ा
है। जो तू चाहती है, पूरा हो।" और तत्काल उसकी बेटी
अच्छी हो गयी।

यीशु का बहुतों को अच्छा करना

29फिर यीशु वहाँ से चल पड़ा और झील गलील के
किनारे पहुँचा। वह एक पहाड़ पर चढ़ कर उपदेश देने
बैठ गया।
30बड़ी-बड़ी भीड़ लँगड़े-लूलों, अंधों, अपाहिजों,
बहरे-गूंगों और ऐसे ही दूसरे रोगियों को लेकर उसके
पास आने लगी। भीड़ ने उन्हें उसके चरणों में धरती पर
डाल दिया। और यीशु ने उन्हें चंगा कर दिया। 31इससे
भीड़ के लोगों को, यह देखकर कि बहरे गूंगे बोल रहे
हैं, अपाहिज अच्छे हो गये, लँगड़े-लूले चल फिर रहे हैं
और अन्धे अब देख पा रहे हैं, बड़ा अचरज हुआ। वे
इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति करने लगे।

चार हज़ार से अधिक को भोजन
(मरकुस 8:1-10)

32तब यीशु ने अपने शिष्यों को पास बुलाया और
कहा, "मुझे इस भीड़ पर तरस आ रहा है क्योंकि ये
लोग तीन दिन से लगातार मेरे साथ हैं और इनके पास
कुछ खाने को भी नहीं है। मैं इन्हें भूखा ही नहीं भेजना
चाहता क्योंकि हो सकता है कहीं वे रास्ते में ही मुर्छित
होकर न गिर पड़ें। 33तब उसके शिष्यों ने कहा, "इतनी
बड़ी भीड़ के लिए ऐसी बियाबान जगह में इतना खाना
हमें कहाँ से मिलेगा?"
34तब यीशु ने उनसे पूछा, "तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ
हैं?" उन्होंने कहा, "सात रोटियाँ और कुछ छोटी
मछलियाँ।"
35यीशु ने भीड़ से धरती पर बैठने को कहा और उन
सात रोटियों और मछलियों को लेकर उसने परमेश्वर
का धन्यवाद किया 36और रोटियाँ तोड़ीं और अपने
शिष्यों को देने लगा। फिर उसके शिष्यों ने उन्हें आगे
लोगों में बाँट दिया। 37लोग तब तक खाते रहे जब तक
थक न गये। फिर उसके शिष्यों ने बचे हुए टुकड़ों से
सात टोकरियाँ भरीं। 38औरतों और बच्चों को छोड़ कर
वहाँ चार हज़ार पुरुषों ने भोजन किया। 39भीड़ को विदा
करके यीशु नाव में आ गया और मगदन को चला
गया।

यहूदी नेताओं की चाल
(मरकुस 8:11-13; लूका 12:54-56)

16 फिर फरीसी और सदूकी यीशु के पास आये।
वे उसे परखना चाहते थे सो उन्होंने उससे
कोई चमत्कार करने को कहा, ताकि पता लग सके
कि उसे परमेश्वर की अनुमति मिली हुई है।
2उस ने उत्तर दिया, "सूरज छुपने पर तुम लोग कहते
हो 'आज मौसम अच्छा रहेगा क्योंकि आसमान लाल है'
3और सूरज उगने पर तुम कहते हो 'आज अंधड़ आयेगा
क्योंकि आसमान धुँधला और लाल है।' तुम आकाश
के लक्षणों को पढ़ना जानते हो, पर अपने समय के
लक्षणों को नहीं पढ़ सकते। 4अरे दुष्ट और दुराचारी
पीढ़ी के लोग कोई चिन्ह देखना चाहते हैं, पर उन्हें
सिवाय योना के चिन्ह के कोई और दूसरा चिन्ह नहीं
दिखाया जायेगा।" फिर वह उन्हें छोड़ कर चला गया।

यीशु की चेतावनी
(मरकुस 8:14-21)

5यीशु के शिष्य झील के पार चले आये, पर वे रोटी
लाना भूल गये। 6इस पर यीशु ने उनसे कहा, "चौकन्ने
रहो! और फरीसियों और सदूकियों के ख़मीर से बचे
रहो।"
7वे आपस में सोच विचार करते हुए बोले, "हो सकता
है, उसने यह इसलिये कहा क्योंकि हम कोई रोटी साथ
नहीं लाये।"
8वे क्या सोच रहे हैं, यीशु यह जानता था, सो वह
बोला, "ओ अल्प विश्वासियों, तुम आपस में अपने पास
रोटी, नहीं होने के बारे में क्यों सोच रहे हो? 9क्या तुम
अब भी नहीं समझते या याद करते कि पाँच हज़ार

लोगों के लिए वे पाँच रोटियाँ और फिर कितनी टोकरियाँ
भर कर तुमने उठाई थी? 10और क्या तुम्हें याद नहीं
चार हज़ार के लिये वे सात रोटियाँ और फिर कितनी
टोकरियाँ भर कर तुमने उठाई थी? 11क्यों नहीं समझते
कि मैंने तुमसे रोटियों के बारे में नहीं कहा? मैंने तो
तुम्हें फ़रीसियों और सदूकियों के ख़मीर से बचने को
कहा है।"

12तब वे समझ गये कि रोटी के ख़मीर से नहीं
बल्कि उसका मतलब फरीसियों और सदूकियों की
शिक्षाओं से बचे रहने से है।

यीशु मसीह है

(*मरकुस 8:27-30; लूका 9:18-21*)

13जब यीशु कैसरिया फिलिप्पी के प्रदेश में आया तो
उसने अपने शिष्यों से पूछा, "लोग क्या कहते हैं, कि मैं
मनुष्य का पुत्र* कौन हूँ?"

14वे बोले, "कुछ कहते हैं कि तू बपतिस्मा देने वाला
यूहन्ना है, और दूसरे कहते हैं कि तू एलिय्याह* है
और कुछ अन्य कहते हैं कि तू यिर्मयाह* या
भविष्यवक्ताओं में से कोई एक है।"

15यीशु ने उनसे कहा, "और तुम क्या कहते हो कि
मैं कौन हूँ?" 16शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "तू मसीह
है, साक्षात परमेश्वर का पुत्र।"

17उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "योना के पुत्र शमौन!
तू धन्य है क्योंकि तुझे यह बात किसी मनुष्य ने नहीं,
बल्कि स्वर्ग में स्थित मेरे परम पिता ने दर्शाई है। 18मैं
कहता हूँ कि तू पतरस है। और इसी चट्टान पर मैं
अपनी कलीसिया बनाऊँगा। मृत्यु की शक्ति* उस पर
प्रबल नहीं होंगी। 19मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दे
रहा हूँ। ताकि धरती पर जो कुछ तू बाँधे, वह परमेश्वर
के द्वारा स्वर्ग में बाँधा जाये और जो कुछ तू धरती पर
छोड़े, वह स्वर्ग में परमेश्वर के द्वारा छोड़ दिया जाये।"
20फिर उसने अपने शिष्यों को कड़ा आदेश दिया कि वे
किसी को यह न बतायें कि वह मसीह है।

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी

(*मरकुस 8:31-9:1; लूका 9:22-27*)

21उस समय यीशु अपने शिष्यों को बताने लगा कि,
उसे यरुशलेम जाना चाहिये। जहाँ उसे यहूदी धर्मशास्त्रियों,
बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं और प्रमुख याजकों द्वारा यातनाएँ
पहुँचा कर मरवा दिया जायेगा। फिर तीसरे दिन वह मरे
हुओं में से जी उठेगा।

22तब पतरस उसे एक तरफ ले गया और उसकी
आलोचना करता हुआ उससे बोला, "हे प्रभु! परमेश्वर
तुझ पर दया करे। तेरे साथ ऐसा कभी न हो!"

23फिर यीशु उसकी तरफ मुड़ा और बोला, "पतरस,
मेरे रास्ते से हट जा। अरे शैतान! तू मेरे लिए एक
अड़चन है। क्योंकि तू परमेश्वर की तरह नहीं लोगों
की तरह सोचता है।"

24फिर यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "यदि कोई मेरे
पीछे आना चाहता है, तो वह अपने आप को भुलाकर,
अपना क्रूस स्वयं उठाये और मेरे पीछे हो ले। 25जो
कोई अपना जीवन बचाना चाहता है, उसे वह खोना
होगा। किन्तु जो कोई मेरे लिये अपना जीवन खोयेगा,
वही उसे बचाएगा। 26यदि कोई अपना जीवन देकर
सारा संसार भी पा जाये तो उसे क्या लाभ? अपने जीवन
को फिर से पाने के लिए कोई भला क्या दे सकता है?
27मनुष्य का पुत्र दूतों सहित अपने परमपिता की महिमा
के साथ आने वाला है। जो हर किसी को उसके कर्मों
का फल देगा। 28मैं तुम से सत्य कहता हूँ यहाँ कुछ ऐसे
हैं जो तब तक नहीं मरेंगे जब तक वे मनुष्य के पुत्र को
उसके राज्य में आते न देखलें।"

तीन शिष्यों को मूसा और एलिय्याह के साथ यीशु का दर्शन

(*मरकुस 9:2-13; लूका 9:28-36*)

17 छः दिन बाद यीशु, पतरस, याकूब, और उसके
भाई यूहन्ना को साथ लेकर एकान्त में ऊँचे
पहाड़ पर गया। 2वहाँ उनके सामने उसका रूप बदल
गया। उसका मुख सूरज के समान दमक उठा और
उसके वस्त्र ऐसे चमचमाने लगे जैसे प्रकाश। 3फिर
अचानक मूसा और एलिय्याह उनके सामने प्रकट हुए
और यीशु से बात करने लगे।

4यह देखकर पतरस यीशु से बोला, "प्रभु, अच्छा है
कि हम यहाँ हैं। यदि तू चाहे तो मैं यहाँ तीन मंडप बना
दूँ–एक तेरे लिए, एक मूसा के लिए और एक एलिय्याह
के लिए।"

5पतरस अभी बात कर ही रहा था कि एक चमकते
हुए बादल ने आकर उन्हें ढक लिया और बादल से
आकाशवाणी हुई कि "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं
बहुत प्रसन्न हूँ। इसकी सुनो!"

6जब शिष्यों ने यह सुना तो वे इतने सहम गये कि
धरती पर औंधे मुँह गिर पड़े। 7तब यीशु उनके पास
गया और उन्हें छूते हुए बोला, "डरो मत, खड़े होवो।"
8जब उन्होंने अपनी आँखें उठाई तो वहाँ बस यीशु को
ही पाया।

मनुष्य का पुत्र यानी यीशु। यीशु परमेश्वर का पुत्र था किन्तु उसके नाम से लगता है कि वह एक मनुष्य भी था। दानि. 7:13–14 में बताया गया है कि यह 'मसीह' का नाम है।

एलिय्याह एक भविष्यवक्ता था जो यीशु से सैकड़ों साल पहले हुआ था और लोगों को परमेश्वर के बारे में बताता था।

यिर्मयाह एक भविष्यवक्ता जो यीशु से सैकड़ों साल पहले लोगों को परमेश्वर के बारे में बताता था।

मृत्यु की शक्ति शाब्दिक 'मृत्यु के द्वार।'

9जब वे पहाड़ से उतर रहे थे तो यीशु ने उन्हें आदेश दिया कि "जो कुछ तुमने देखा है, तब तक किसी को मत बताना जब तक मनुष्य के पुत्र को मरे हुओं में से फिर जिला न दिया जाय।"

10फिर उसके शिष्यों ने उससे पूछा, "यहूदी धर्मशास्त्री फिर क्यों कहते हैं, एलिय्याह का पहले आना निश्चितहै?"

11उत्तर देते हुए उसने उनसे कहा, "एलिय्याह आरहा है, वह हर वस्तु को व्यवस्थित कर देगा। 12किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि एलिय्याह तो अब तक आ चुका है। पर लोगों ने उसे पहचाना नहीं। और उसके साथ जैसा चाहा वैसा किया। उनके द्वारा मनुष्य के पुत्र को भी वैसे ही सताया जाने वाला है।" 13तब उसके शिष्य समझे कि उसने उनसे बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना के बारे में कहाथा।

रोगी लड़के का अच्छा किया जाना

(*मरकुस 9:14-29; लूका 9:37-43*)

14जब यीशु भीड़ में वापस आया तो एक व्यक्ति उसके पास आया और उसे दंडवत प्रणाम करके बोला, 15"हे प्रभु, मेरे बेटे पर दया कर। उसे मिर्गी आती है। वह बहुत तड़पता है। वह आग में या पानी में अक्सर गिरता पड़ता रहता है। 16मैं उसे तेरे शिष्यों के पास लाया, पर वे उसे अच्छा नहीं कर पाये।"

17उत्तर में यीशु ने कहा, "अरे भटके हुए अविश्वासी लोगों! मैं कितने समय तुम्हारे साथ और रहूँगा? कितने समय मैं यूँ ही तुम्हारी सहता रहूँगा? उसे यहाँ मेरे पास लाओ।" 18फिर यीशु ने दुष्टात्मा को आदेश दिया और वह उसमें से बाहर निकल आयी। और वह लड़का तत्काल अच्छा हो गया।

19फिर उसके शिष्यों ने अकेले में यीशु के पास जाकर पूछा, "हम इस दुष्टात्मा को बाहर क्यों नहीं निकालपाये?"

20यीशु ने उन्हें बताया, "क्योंकि तुममें विश्वास की कमी है। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, यदि तुममें राई के बीज जितना भी विश्वास हो तो तुम इस पहाड़ से कह सकते हो 'यहाँ से हट कर वहाँ चला जा' और वह चला जायेगा। तुम्हारे लिये असम्भव कुछ भी नहीं होगा।" 21*

यीशु का अपनी मृत्यु के बारे में बताना

(*मरकुस 9:30-32; लूका 9:43-45*)

22जब यीशु के शिष्य आए और उसके साथ गलील में मिले तो यीशु ने उनसे कहा, "मनुष्य का पुत्र, मनुष्यों के द्वारा ही पकड़वाया जाने वाला है, 23जो उसे मार डालेंगे। किन्तु तीसरे दिन वह फिर जी उठेगा।" इस पर यीशु के शिष्य बहुत व्याकुल हुए।

कर का भुगतान

24जब यीशु और उसके शिष्य कफ़रनहूम में आये तो मंदिर का दो दरम कर वसूल करने वाले पतरस के पास आये और बोले, "क्या तेरा गुरु दो दरम का मंदिर का कर नहीं देता?" 25पतरस ने उत्तर दिया, "हाँ, वह देता है।" और घर में चला आया। पतरस से बोलने के पहले ही यीशु बोल पड़ा, उसने कहा, "शमौन, तेरा क्या विचार है? धरती के राजा किससे चुंगी और कर लेते हैं? स्वयं अपने बच्चों से या दूसरों के बच्चों से?"

26पतरस ने उत्तर दिया, "दूसरे के बच्चों से।" तब यीशु ने उससे कहा, "यानी उसके अपने बच्चों को छूट रहती है। 27पर हम उन लोगों को नाराज़ न करें इसलिये झील पर जा और अपना काँटा फेंक और फिर जो पहली मछली पकड़ में आये उसका मुँह खोलना तुझे चार दरम का सिक्का मिलेगा। उसे लेकर मेरे और अपने लिए उन्हें दे देना।"

सबसे बड़ा कौन

(*मरकुस 9:33-37; लूका 9:46-48*)

18 तब यीशु के शिष्यों ने उसके पास आकर पूछा, "स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा कौन है?"

2तब यीशु ने एक बच्चे को अपने पास बुलाया और उसे उनके सामने खड़ा करके कहा, 3"मैं तुमसे सत्य कहता हूँ जब तक कि तुम लोग बदलोगे नहीं और बच्चों के समान नहीं बन जाओगे, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकोगे। 4इसलिये अपने आपको जो कोई इस बच्चे के समान नम्र बनाता है, वही स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा है।" 5"और जो कोई ऐसे बालक जैसे व्यक्ति को मेरे नाम में स्वीकार करता है वह मुझे स्वीकार करता है। 6किन्तु जो मुझमें विश्वास करने वाले मेरे किसी ऐसे नम्र अनुयायी के रास्ते की बाधा बनता है, अच्छा हो कि उसके गले में एक चक्की का पाट लटका कर उसे समुद्र की गहराई में डुबो दिया जाये।

7"बाधाओं के कारण मुझे संसार के लोगों के लिए खेद है पर, बाधाएँ तो आयेंगी ही किन्तु खेद तो मुझे उस पर है जिसके द्वारा बाधाएँ आती है। 8इसलिए यदि तेरा हाथ या तेरा पैर तेरे लिए बाधा बने तो उसे काट फेंक, क्योंकि स्वर्ग में बिना हाथ या बिना पैर के अनन्त जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए अधिक अच्छा है; बजाय इसके कि दोनों हाथों और दोनों पैरों समेत तुझे नरक की कभी न बुझने वाली आग में डाल दिया जाये।

9"यदि तेरी आँख तेरे लिये बाधा बने तो उसे बाहर निकाल कर फेंक दे, क्योंकि स्वर्ग में काना होकर

पद 21 कुछ यूनानी प्रतियों में पद 21 जोड़ा गया है। 'ऐसी दुष्टात्मा केवल प्रार्थना या उपवास करने से निकलती है'

अनन्त जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये अधिक अच्छा
है; बजाय इसके कि दोनों आँखों समेत तुझे नरक की
आग में डाल दिया जाए।

खोई भेड़ की दृष्टान्त-कथा
(लूका 15:3-7)

10"सो देखो, मेरे इन मासूम अनुयायिओं में से किसी
को भी तुच्छ मत समझना। मैं तुम्हें बताता हूँ कि उनके
रक्षक स्वर्गदूतों की पहुँच स्वर्ग में मेरे परम पिता के
पास लगातार रहती है।**11***
12"बता तू क्या सोचता है? यदि किसी के पास सौ भेड़ें
हों और उनमें से एक भटक जाये तो क्या वह दूसरी
निन्यानवें भेड़ों को पहाड़ी पर ही छोड़ कर उस एक
खोई भेड़ को खोजने नहीं जाएगा? **13**वह निश्चय ही
जाएगा और जब उसे वह मिल जायेगी, मैं तुमसे सत्य
कहता हूँ तो वह दूसरी निन्यानवें की बजाय-जो खोई
नहीं थीं, इसे पाकर अधिक प्रसन्न होगा। **14**इसी तरह
स्वर्ग में स्थित तुम्हारा पिता क्या नहीं चाहता कि मेरे
इन अबोध अनुयायिओं में से कोई एक भी न भटके।

जब कोई तेरा बुरा करे
(लूका 17:3)

15"यदि तेरा बन्धु तेरे साथ कोई बुरा व्यवहार करे
तो अकेले में जाकर आपस में ही उसे उसका दोष बता।
यदि वह तेरी सुन ले, तो तूने अपने बंधु को फिर जीत
लिया। **16**पर यदि वह तेरी न सुने तो दो एक को अपने
साथ ले जा ताकि हर बात की दो तीन गवाही हो सकें।
17यदि वह उन की भी न सुने तो कलीसिया को बता दे।
और यदि वह कलीसिया की भी न माने, तो फिर तू
उस से ऐसे व्यवहार कर जैसे वह विधर्मी हो या कर
वसूलने वाला हो।
18"मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ जो कुछ तुम धरती पर
बाँधोगे स्वर्ग में प्रभु के द्वारा बाँधा जायेगा और जिस
किसी को तुम धरती पर छोड़ोगे स्वर्ग में परमेश्वर के
द्वारा छोड़ दिया जायेगा।
19"मैं तुझे यह भी बताता हूँ कि इस धरती पर यदि
तुम में से कोई दो सहमत हो कर स्वर्ग में स्थित मेरे
पिता से कुछ माँगोगे तो वह तुम्हारे लिए उसे पूरा करेगा
20क्योंकि जहाँ मेरे नाम पर दो या तीन लोग मेरे अनुयायी
के रूप में इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैं उनके साथ हूँ।"

क्षमा न करने वाले दास की दृष्टान्त-कथा

21फिर पतरस यीशु के पास गया और बोला, "प्रभु,
मुझे अपने भाई को कितनी बार अपने प्रति अपराध
करने पर भी क्षमा कर देना चाहिए? यदि वह सात बार
अपराध करे तो भी?"
22यीशु ने कहा, "न केवल सात बार, बल्कि मैं तुझे
बताता हूँ तुझे उसे सात बार के सतत्तर गुना तक क्षमा
करने जाना चाहिये।
23"सो स्वर्ग के राज्य की तुलना उस राजा से की जा
सकती है जिसने अपने दासों से हिसाब चुकता करने
की सोची थी। **24**जब उसने हिसाब लेना शुरू किया तो
उसके सामने एक ऐसे व्यक्ति को लाया गया जिस पर
दसियों लाख रुपया निकलता था। **25**पर उसके पास
चुकाने का कोई साधन नहीं था। उसके स्वामी ने
आज्ञा दी कि उस दास को, उसकी घर वाली, उसके
बाल बच्चों और जो कुछ उसका माल असबाब है, सब
समेत बेच कर कर्ज़ चुका दिया जाये।
26"तब उसका दास उसके पैरों में गिर कर गिड़गिड़ाने
लगा, 'धीरज धरो, मैं सब कुछ चुका दूँगा।' **27**इस पर
स्वामी को उस दास पर दया आ गयी। उसने उसका
कर्ज़ा माफ करके उसे छोड़ दिया।
28"फिर जब वह दास वहाँ से जा रहा था, तो उसे
उसका एक साथी दास मिला जिसे उसे कुछ रुपये देने
थे। उसने उसका गिरहबान पकड़ लिया और उसका
गला घोटते हुए बोला, 'जो तुझे मेरा देना है, लौटा दे!'
29"इस पर उसका साथी दास उसके पैरों में गिर पड़ा
और गिड़गिड़ाकर कहने लगा, 'धीरज धर, मैं चुका
दूँगा।'
30"पर उसने मना कर दिया। इतना ही नहीं उसने
उसे तब तक के लिये, जब तक वह उसका कर्ज न
चुका दे, जेल भी भिजवा दिया। **31**दूसरे दास इस सारी
घटना को देखकर बहुत दुखी हुए। और उन्होंने जो
कुछ घटा था, सब अपने स्वामी को जाकर बता दिया।
32"तब उसके स्वामी ने उसे बुलाया और कहा, 'अरे
नीच दास, मैंने तेरा वह सारा कर्ज़ माफ कर दिया
क्योंकि तूने मुझ से दया की भीख माँगी थी। **33**क्या तुझे
भी अपने साथी दास पर दया नहीं दिखानी चाहिये थी
जैसे मैंने तुझ पर दया की थी?' **34**इसलिए उसका
स्वामी बहुत बिगड़ा और उसे तब तक दण्ड भुगतने के
लिए सौंप दिया जब तक समूचा कर्ज़ चुकता न हो जाये।
35"सो जब तक तुम अपने भाई-बंदों को अपने मन
से क्षमा न कर दो मेरा स्वर्गीय परम पिता भी तुम्हारे
साथ वैसा ही व्यवहार करेगा।"

तलाक
(मरकुस 10:1-12)

19 ये बातें कहने के बाद वह गलील से लौट कर
यहूदिया के क्षेत्र में यर्दन नदी के पार चला
गया। **2**एक बड़ी भीड़ वहाँ उसके पीछे हो ली, जिसे
उसने चंगा किया।

पद 11 कुछ यूनानी प्रतियों में पद 11 जोड़ा गया है। "मनुष्य का
पुत्र भटके हुओं के उद्धार के लिये आया।"

3उसे परखने के जतन में कुछ फरीसी उसके पास पहुँचे और बोले, "क्या यह उचित है कि कोई अपनी पत्नी को किसी भी कारण से तलाक दे सकता है?'

4उत्तर देते हुए यीशु ने कहा, "क्या तुमने शास्त्र में नहीं पढ़ा कि जगत को रचने वाले ने प्रारम्भ में, 'उन्हें एक स्त्री और एक पुरुष के रूप में रचा था?'* 5और कहा था 'इसी कारण अपने माता –पिता को छोड़ कर पुरुष अपनी पत्नी के साथ दो होते हुए भी एक शरीर होकर रहेगा।'*

6"सो वे दो नहीं रहते बल्कि एक रूप हो जाते हैं। इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे किसी भी मनुष्य को अलग नही करना चाहिये।" 7वे बोले, "फिर मूसा ने यह क्यों निर्धारित किया है कि कोई पुरुष अपनी पत्नी को तलाक दे सकता है। शर्त यह है कि वह उसे तलाक नामा लिख कर दे।"

8यीशु ने उनसे कहा, "मूसा ने यह विधान तुम लोगों के मन की जड़ता के कारण दिया था। किन्तु प्रारम्भ में ऐसी रीति नहीं थी। 9तो मैं तुमसे कहता हूँ कि जो व्यभिचार को छोड़कर अपनी पत्नी को किसी और कारण से त्यागता है और किसी दूसरी स्त्री को ब्याहता है तो वह व्यभिचार करता है।"*

10इस पर उसके शिष्यों ने उससे कहा, "यदि एक स्त्री और एक पुरुष के बीच ऐसी स्थिति है तो किसी को ब्याह ही नहीं करना चाहिये।"

11फिर यीशु ने उनसे कहा, "हर कोई तो इस उपदेश को ग्रहण नहीं कर सकता। इसे बस वे ही ग्रहण कर सकते हैं जिनको इसकी क्षमता प्रदान की गयी है।
12कुछ ऐसे हैं जो अपनी माँ के गर्भ से ही नपुंसक पैदा हुए हैं। और कुछ ऐसे हैं जो लोगों द्वारा नपुंसक बना दिये गये हैं। और अंत में कुछ ऐसे हैं जिन्होंने स्वर्ग के राज्य के कारण विवाह नहीं करने का निश्चय किया है। जो इस उपदेश को ले सकता है, ले।"

यीशु की आशीष : बच्चों को

(मरकुस 10:13-16; लूका 18:15-17)

13फिर लोग कुछ बालकों को यीशु के पास लाये कि वह उनके सिर पर हाथ रख कर उन्हें आशीर्वाद दे और उनके लिए प्रार्थना करे। किन्तु उसके शिष्यों ने उन्हें डाँटा। 14उस पर यीशु ने कहा, "बच्चों को रहने दो, उन्हें मत रोको, मेरे पास आने दो क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों का ही है।"

15फिर उसने बच्चों के सिर पर अपना हाथ रखा और वहाँ से चल दिया।

एक महत्वपूर्ण प्रश्न

(मरकुस 10:17-31; लूका 18:18-30)

16वहीं एक व्यक्ति था। वह यीशु के पास आया और बोला, "गुरु अनन्त जीवन पाने के लिए मुझे क्या अच्छा काम करना चाहिये?"

17यीशु ने उससे कहा, "अच्छा क्या है, इसके बारे में तू मुझसे क्यों पूछ रहा है? क्योंकि अच्छा तो केवल एक ही है! फिर भी यदि तू अनन्त जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो तू आदेशों का पालन कर।"

18उसने यीशु से पूछा, "कौन से आदेश?" तब यीशु बोला, "हत्या मत कर। व्यभिचार मत कर। चोरी मत कर। झूठी गवाही मत दे।

19"अपने पिता और अपनी माता का आदर कर'* और 'जैसे तू अपने आप को प्यार करता है, वैसे ही अपने पड़ोसी से भी प्यार कर।'" 20युवक ने यीशु से पूछा, "मैंने इन सब बातों का पालन किया है। अब मुझमें किस बात की कमी है?"

21यीशु ने उससे कहा, "यदि तू संपूर्ण बनना चाहता तो जा और जो कुछ तेरे पास है, उसे बेचकर धन गरीबों में बाँट दे ताकि स्वर्ग में तुझे धन मिल सके। फिर आ और मेरे पीछे हो ले!"

22किन्तु जब उस नौजवान ने यह सुना तो वह दुखी होकर चला गया क्योंकि वह बहुत धनवान था।

23यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि एक धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश कर पाना कठिन है। 24हाँ, मैं तुमसे कहता हूँ कि किसी धनवान व्यक्ति के स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने से एक ऊँट का सूई के नकुए से निकल जाना आसान है।"

25जब उसके शिष्यों ने यह सुना तो अचरज से भरकर पूछा, "फिर किसका उद्धार हो सकता है?"

26यीशु ने उन्हें देखते हुए कहा, "मनुष्यों के लिए यह असम्भव है, किन्तु परमेश्वर के लिए सब कुछ सम्भवहै।"

27उत्तर में तब पतरस ने उससे कहा, "देख, हम सब कुछ त्याग कर तेरे पीछे हो लिये हैं। सो हमें क्या मिलेगा?"

28यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम लोगों से सत्य कहता हूँ कि नये युग में जब मनुष्य का पुत्र अपने प्रतापी सिंहासन पर विराजेगा तो तुम भी, जो मेरे पीछे हो लिये हो, बारह सिंहासनों पर बैठ कर परमेश्वर के लोगों का न्याय करोगे। 29और मेरे लिए जिसने भी घर–बार या भाइयों या बहनों या पिता या माता या बच्चों या खेतों को

"रचने वाले ... रचा था" देखें उत्पत्ति 1:27; 5:2

"इसी कारण ... कर रहेगा" देखें उत्पत्ति 2:24

पद 9 कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है जो इस प्रकार है: "और जो छोड़ी हुई स्त्री को ब्याहता है वह व्यभिचार करता है।"

"अपने पिता ... आदर कर" निर्गमन 20:12–16

त्याग दिया है, वह सौ गुणा अधिक पायेगा और अनन्त
जीवन का भी अधिकारी बनेगा।
30किन्तु बहुत से जो अब पहले हैं, अन्तिम हो जायेंगे
और जो अन्तिम हैं, पहले हो जायेंगे।"

मज़दूरों की दृष्टांत-कथा

20 "स्वर्ग का राज्य एक ज़मींदार के समान है
जो सुबह सवेरे अपने अंगूर के बगीचों के
लिये मज़दूर लाने को निकला। 2उसने चाँदी के एक
रुपए पर मज़दूर रख कर उन्हें अपने अंगूर के बगीचे
में काम करने भेज दिया।
3"नौ बजे के आसपास ज़मींदार फिर घर से निकला
और उसने देखा कि कुछ लोग बाज़ार में इधर उधर यूँ
ही बेकार खड़े हैं। 4तब उसने उनसे कहा, 'तुम भी मेरे
अंगूर के बगीचे में जाओ, मैं तुम्हें जो कुछ उचित होगा,
दूँगा।' 5सो वे भी बगीचे में काम करने चले गये।
"फिर कोई बारह बजे और दुबारा तीन बजे के
आसपास, उसने वैसा ही किया। 6कोई पाँच बजे वह
फिर अपने घर से गया और कुछ लोगों को बाज़ार में
इधर उधर खड़े देखा। उसने उनसे पूछा, 'तुम यहाँ दिन
भर बेकार ही क्यों खड़े रहते हो?'
7"उन्होंने उससे कहा, 'क्योंकि हमें किसी ने मजूरी
पर नहीं रखा।' "उसने उनसे कहा, 'तुम भी मेरे अंगूर
के बगीचे में चले जाओ।'
8"जब साँझ हुई तो अंगूर के बगीचे के मालिक ने
अपने प्रधान कर्मचारी को कहा, 'मज़दूरों को बुलाकर
अंतिम मज़दूर से शुरू करके जो पहले लगाये गये थे
उन तक सब की मज़दूरी चुका दो।'
9"सो वे मज़दूर जो पाँच बजे लगाये थे, आये और
उनमें से हर किसी को चाँदी का एक रुपया मिला।
10फिर जो पहले लगाये गये थे, वे आये। उन्होंने सोचा
उन्हें कुछ अधिक मिलेगा पर उनमें से भी हर एक को
एक ही चाँदी का रुपया मिला। 11रुपया तो उन्होंने ले
लिया पर ज़मींदार से शिकायत करते हुए 12उन्होंने
कहा, 'जो बाद में लगे थे, उन्होंने बस एक घंटा काम
किया और तूने हमें भी उतना ही दिया जितना उन्हें।
जबकि हमने सारे दिन चमचमाती धूप में मेहनत की।'
13"उत्तर में उनमें से किसी एक से जमींदार ने कहा,
'दोस्त, मैंने तेरे साथ कोई अन्याय नहीं किया है। क्या
हमने तय नहीं किया था कि मैं तुम्हें चाँदी का एक
रुपया दूँगा? 14जो तेरा बनता है, ले और चला जा। मैं
सबसे बाद में रखे गये इस को भी उतनी ही मज़दूरी देना
चाहता हूँ जितनी तुझे दे रहा हूँ। 15क्या मैं अपने धन
का जो चाहूँ वह करने का अधिकार नहीं रखता? मैं
अच्छा हूँ क्या तू इससे जलता है?'
16इस प्रकार अंतिम पहले हो जायेंगे और पहले अंतिम
हो जायेंगे।"

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु का संकेत

(मरकुस 10:32-34; लूका 18:31-34)

17जब यीशु अपने बारह शिष्यों के साथ यरुशलेम जा
रहा था तो वह उन्हें एक तरफ़ ले गया और चलते
चलते उनसे बोला, 18"सुनो, हम यरुशलेम पहुँचने को
हैं। मनुष्य का पुत्र वहाँ प्रमुख याजकों और यहूदी धर्म
शास्त्रियों के हाथों सौंप दिया जायेगा। वे उसे मृत्यु दण्ड
के योग्य ठहरायेंगे। 19फिर उसका उपहास करवाने
और कोड़े लगवाने को उसे ग़ैर यहूदियों को सौंप देंगे।
फिर उसे क्रूस पर चढ़ा दिया जायेगा किन्तु तीसरे दिन
वह फिर जी उठेगा।"

एक माँ का अपने बच्चों के लिए आग्रह

(मरकुस 10:35-45)

20फिर जब्दी के बेटों की माँ अपने बेटों समेत यीशु
के पास पहुँची और उसने झुक कर प्रार्थना करते हुए
उससे कुछ माँगा।
21यीशु ने उससे पूछा, "तू क्या चाहती है?"
वह बोली, "मुझे वचन दे कि मेरे ये दोनों बेटे तेरे
राज्य में एक तेरे दाहिनी ओर और दूसरा तेरे बाई ओर
बैठे।"
22यीशु ने उत्तर दिया, "तुम नहीं जानते कि तुम क्या
माँग रहे हो। क्या तुम यातनाओं का वह प्याला पी
सकते हो, जिसे मैं पीने वाला हूँ?"
उन्होंने उससे कहा, "हाँ, हम पी सकते हैं!"
23यीशु उनसे बोला, "निश्चय ही तुम वह प्याला
पीयोगे। किन्तु मेरे दाएँ और बायें बैठने का अधिकार
देने वाला मैं नहीं हूँ। यहाँ बैठने का अधिकार तो
उनका है, जिनके लिए यह मेरे पिता द्वारा सुरक्षित
किया जा चुका है।"
24जब बाकी दस शिष्यों ने यह सुना तो वे उन दोनों
भाइयों पर बहुत बिगड़े। 25तब यीशु ने उन्हें अपने पास
बुलाकर कहा, "तुम जानते हो कि ग़ैर यहूदी राजा,
लोगों पर अपनी शक्ति दिखाना चाहते हैं और उनके
महत्त्वपूर्ण नेता, लोगों पर अपना अधिकार जताना चाहते
हैं। 26किन्तु तुम्हारे बीच ऐसा नहीं होना चाहिये। बल्कि
तुममें जो बड़ा बनना चाहे, तुम्हारा सेवक बने। 27और
तुममें से जो कोई पहला बनना चाहे, उसे तुम्हारा दास
बनना होगा। 28तुम्हें मनुष्य के पुत्र जैसा ही होना चाहिये
जो सेवा कराने नहीं, बल्कि सेवा करने और बहुतों के
छुटकारे के लिये अपने प्राणों की फिरौती देने आया
है।"

अंधों को आँखें

(मरकुस 10:46-52; लूका 18:35-43)

29जब वे यरीहो नगर से जा रहे थे एक बड़ी भीड़
यीशु के पीछे हो ली। 30वहाँ सड़क किनारे दो अंधे बैठे

थे। जब उन्होंने सुना कि यीशु वहाँ से जा रहा है, वे
चिल्लाये, "प्रभु! दाऊद के पुत्र, हम पर दया कर!"
31इस पर भीड़ ने उन्हें धमकाते हुए चुप रहने को
कहा। पर वे और अधिक चिल्लाये, "प्रभु! दाऊद के
पुत्र, हम पर दया कर!"
32फिर यीशु रुका और उनसे बोला। उसने कहा,
"तुम क्या चाहते हो, मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ?"
33उन्होंने उससे कहा, "प्रभु, हम चाहते हैं कि देख
सकें।"
34यीशु को उन पर दया आयी। उसने उनकी आँखों
को छुआ, और तुरंत ही वे फिर देखने लगे। वे उसके
पीछे हो लिए।

यीशु का यरुशलेम में भव्य प्रवेश

(*मरकुस 11:1-11; लूका 19:28-38; यूहन्ना 12:12-19*)

21 यीशु और उसके अनुयायी जब यरुशलेम के
पास जैतून पर्वत के निकट बैतफगे पहुँचे तो
यीशु ने अपने दो शिष्यों को 2यह आदेश देकर भेजा
कि अपने ठीक सामने के गाँव में जाओ और वहाँ जाते
ही तुम्हें एक गधही बँधी मिलेगी। उसके साथ उसका
बछेरा भी होगा। उन्हें बाँध कर मेरे पास ले आओ।
3यदि कोई तुमसे कुछ कहे तो उससे कहना 'प्रभु को
इनकी आवश्यकता है। वह जल्दी ही इन्हें लौटा देगा।'"
4ऐसा इसलिये हुआ कि भविष्यवक्ता का यह वचन
पूरा हो:
5"सिओन की नगरी से कहो, 'देख तेरा राजा तेरे
पास आ रहा है। वह विनयपूर्ण है, वह गधही पर सवार
है, हाँ गधही के बछेरे पर जो एक श्रमिक पशु का
बछेरा है।'" *जकर्याह 9:9*

6सो उसके शिष्य चले गये और वैसा ही किया जैसा
उन्हें यीशु ने बताया था। 7वे गर्धबी और उसके बछेरे
को ले आये। और उन पर अपने वस्त्र डाल दिये
क्योंकि यीशु को बैठना था। 8भीड़ में बहुत से लोगों ने
अपने वस्त्र राह में बिछा दिये और दूसरे लोग पेड़ों से
टहनियाँ काट लाये और उन्हें मार्ग में बिछा दिया। 9जो
लोग उनके आगे चल रहे थे और जो लोग उनके पीछे
चल रहे थे सब पुकार कर कह रहे थे:
"होशन्ना! धन्य है दाऊद का वह पुत्र! जो आ रहा है
प्रभु के नाम पर धन्य है प्रभु जो स्वर्ग में विराजा!"
भजन संहिता 118:26

10सो जब उसने यरूशलेम में प्रवेश किया तो समूचे
नगर में हलचल मच गयी। लोग पूछने लगे, "यह कौन
है?"
11लोग ही जवाब दे रहे थे, "यह गलील के नासरत
का नबी यीशु है।"

यीशु मंदिर में

(*मरकुस 11:15-19; लूका 19:45-48; यूहन्ना 2:13-22*)

12फिर यीशु मंदिर के अहाते में आया और उसने
मन्दिर के अहाते में जो लोग ले–बेच कर रहे थे, उन
सब को बाहर खदेड़ दिया। उसने पैसों की लेन–देन
करने वालों की चौकियाँ उलट दीं और कबूतर बेचने
वालों के तख्त पलट दिये। 13वह उनसे बोला, "शास्त्र
कहते हैं, 'मेरा घर प्रार्थना–गृह कहलायेगा।* किन्तु
तुम इसे डाकुओं का अड्डा बना रहे हो।'"
14मंदिर में कुछ अंधे, लँगड़े लूले उसके पास आये।
जिन्हें उसने चंगा कर दिया। 15जब प्रमुख याजकों और
यहूदी धर्म शास्त्रियों ने उन अद्भुत कामों को देखा जो
उसने किये थे और मंदिर में बच्चों को ऊँचे स्वर में
कहते सुना: "होशन्ना। दाऊद का वह पुत्र धन्य है।"
16तो वे बहुत क्रोधित हुए। और उससे पूछा, "तू
सुनता है ये क्या कह रहे हैं?"
यीशु ने उनसे कहा, "हाँ सुनता हूँ। क्या धर्मशास्त्र में
तुम लोगों ने नहीं पढ़ा–'तूने बालकों और दूध पीते
बच्चों तक से स्तुति करवाई है।'"*
17फिर उन्हें वहीं छोड़ कर वह यरुशलेम नगर से
बाहर बैतनिय्याह को चला गया। जहाँ उसने रात बिताई।

विश्वास की शक्ति

(*मरकुस 11:12-14, 20-24*)

18अगले दिन अलख सुबह जब वह नगर को वापस
लौट रहा था तो उसे भूख लगी। 19राह किनारे उसने
अंजीर का एक पेड़ देखा सो वह उसके पास गया, पर
उसे उस पर पत्तों को छोड़ और कुछ नहीं मिला। सो
उसने पेड़ से कहा, "तुझ पर आगे कभी फल न लगे!"
और वह अंजीर का पेड़ तुरंत सूख गया।
20जब शिष्यों ने यह देखा तो अचरज के साथ पूछा,
"यह अंजीर का पेड़ इतनी जल्दी कैसे सूख गया?"
21यीशु ने उत्तर देते हुए उनसे कहा, "मैं तुमसे सत्य
कहता हूँ। यदि तुम में विश्वास है और तुम संदेह नहीं
करते तो तुम न केवल वह कर सकते हो जो मैंने
अंजीर के पेड़ का किया। बल्कि यदि तुम इस पहाड़ से
कहो, 'उठ और अपने आप को सागर में डुबो दे' तो
वही हो जायेगा। 22और प्रार्थना करते तुम जो कुछ
माँगो, यदि तुम्हें विश्वास है तो तुम पाओगे।"

यहूदी नेताओं का यीशु के अधिकार पर संदेह

(*मरकुस 11:27-33; लूका 20:1-8*)

23जब यीशु मंदिर में जाकर उपदेश दे रहा था तो
प्रमुख याजकों और यहूदी बुज़ुर्गों ने पास जाकर उससे

"मेरा घर ... कहलायेगा" यिर्म. 7:11

"तूने बालकों ... करवाई है" भजन. 8:3

पूछा, "ऐसी बातें तू किस अधिकार से करता है? और
यह अधिकार तुझे किसने दिया?"
24उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे एक प्रश्न
पूछता हूँ, यदि उसका उत्तर तुम मुझे दे दो तो मैं तुम्हें
बता दूँगा कि मैं ये बातें किस अधिकार से करता हूँ।
25बताओ यूहन्ना को बपतिस्मा कहाँ से मिला? परमेश्वर
से या मनुष्य से? वे आपस में विचार करते हुए कहने
लगे, "यदि हम कहते हैं 'परमेश्वर से' तो यह हमसे
पूछेगा 'फिर तुम उस पर विश्वास क्यों नहीं करते?'
26किन्तु यदि हम कहते हैं 'मनुष्य से' तो हमें लोगों का
डर है क्योंकि वे यूहन्ना को एक नबी मानते हैं।"
27सो उत्तर में उन्होंने यीशु से कहा, "हमें नहीं पता।"
इस पर यीशु उनसे बोला, "अच्छा तो फिर मैं भी
तुम्हें नहीं बताता कि ये बातें मैं किस अधिकार से
करता हूँ!"

यहूदियों के लिए एक दृष्टांत-कथा

28"अच्छा बताओ तुम लोग इसके बारे में क्या सोचते
हो? एक व्यक्ति के दो पुत्र थे। वह बड़े के पास गया
और बोला, 'पुत्र आज मेरे अंगूरों के बगीचे में जा और
काम कर।'
29"किन्तु पुत्र ने उत्तर दिया, 'मेरी इच्छा नहीं है' पर
बाद में उसका मन बदल गया और वह चला गया।
30"फिर वह पिता दूसरे बेटे के पास गया और उससे
भी वैसे ही कहा। उत्तर में बेटे ने कहा, 'जी हाँ', मगर
वह गया नहीं।
31"बताओ इन दोनों में से जो पिता चाहता था, किसने
किया?" उन्होंने कहा, "बड़े ने।"
यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कर
वसूलने वाले और वेश्याएँ परमेश्वर के राज्य में तुमसे
पहले जायेंगे। 32यह मैं इसलिये कह रहा हूँ क्योंकि
बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना तुम्हें जीवन का सही रास्ता
दिखाने आया और तुमने उसमें विश्वास नहीं किया।
किन्तु कर वसूलने वालों और वेश्याओं ने उसमें विश्वास
किया। तुमने जब यह देखा तो भी बाद में न मन फिराया
और न ही उस पर विश्वास किया।"

परमेश्वर का अपने पुत्र को भेजना

(मरकुस 12:1-12; लूका 20:9-19)

33"एक और दृष्टान्त सुनो: एक ज़मींदार था। उसने
अंगूरों का एक बगीचा लगाया और उसके चारों ओर
बाड़ लगा दी। फिर अंगूरों का रस निकालने का गरठ
लगाने को एक गढ़ा खोदा और रखवाली के लिए एक
मीनार बनायी। फिर उसे बटाई पर देकर वह यात्रा पर
चला गया। 34जब अंगूर उतारने का समय आया तो
बगीचे के मालिक ने किसानों के पास अपने दास भेजे
ताकि वे अपने हिस्से के अंगूर ले आयें।
35"किन्तु किसानों ने उसके दासों को पकड़ लिया।
किसी की पिटाई की, किसी पर पत्थर फेंके और
किसी को तो मार ही डाला। 36एक बार फिर उसने
पहले से और अधिक दास भेजे। उन किसानों ने उनके
साथ भी वैसा ही बर्ताव किया। 37बाद में उसने उनके
पास अपनेबेटे को भेजा। उसने कहा, 'वे मेरे बेटे का तो
मान रखेंगे ही।'
38"किन्तु उन किसानों ने जब उसके बेटे को देखा
तो वे आपस में कहने लगे, 'यह तो उसका उत्तराधिकारी
है, आओ इसे मार डालें और उसका उत्तराधिकार
हथिया लें।' 39सो उन्होंने उसे पकड़ कर बगीचे के
बाहर धकेल दिया और मार डाला।
40"तुम क्या सोचते हो जब वहाँ अंगूरों के बगीचे का
मालिक आयेगा तो उन किसानों के साथ क्या करेगा?"
41उन्होंने उससे कहा, "क्योंकि वे निर्दय थे इसलिए
वह उन्हें बेरहमी से मार डालेगा और अंगूरों के बगीचे
को दूसरे किसानों को बटाई पर दे देगा जो फसल आने
पर उसे उसका हिस्सा देंगे।"
42यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुमने शास्त्र का यह
वचन नहीं पढ़ा:

'जिस पत्थर को मकान बनाने वालों ने बेकार समझा,
वही कोने का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण पत्थर बन गया?'
'ऐसा प्रभु के द्वारा किया गया जो हमारी दृष्टि में अद्भुत
है।' *भजन संहिता 118:22–23*

43"इसलिये मैं तुमसे कहता हूँ परमेश्वर का राज्य
तुमसे छीन लिया जायेगा और वह उन लोगों को दे दिया
जायेगा जो उसके राज्य के अनुसार बर्ताव करेंगे। 44जो
इस चट्टान पर गिरेगा, टुकड़े टुकड़े हो जायेगा और
यदि यह चट्टान किसी पर गिरेगी तो उसे रौंद डालेगी।"
45जब प्रमुख याजकों और फ़रीसियों ने यीशु की
दृष्टांत-कथाएँ सुनीं तो वे ताड़ गये कि वह उन्हीं के
बारे में कह रहा था। 46सो उन्होंने उसे पकड़ने का
जतन किया किन्तु वे लोगों से डरते थे क्योंकि लोग
यीशु को नबी मानते थे।

विवाह भोज पर लोगों को राजा के बुलावे की दृष्टान्त-कथा

(लूका 14:15-24)

22 एक बार फिर यीशु उनसे दृष्टान्त कथाएँ
कहने लगा। वह बोला, 2"स्वर्ग का राज्य उस
राजा के जैसा है जिसने अपने बेटे के ब्याह पर दावत
दी। 3राजा ने अपने दासों को भेजा कि वे उन लोगों को
बुला लायें जिन्हें विवाह भोज पर न्योता दिया गया है।
किन्तु वे लोग नहीं आये।
4"उसने अपने सेवकों को फिर भेजा, उसने कहा
कि जिन लोगों को विवाह-भोज पर बुलाया गया है

उनसे कहो, 'देखो मेरी दावत तैयार है। मेरे साँड़ों और
मोटे ताजे पशुओं को काटा जा चुका है। सब कुछ तैयार
है। ब्याह की दावत में आ जाओ।'

5"पर लोगों ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया और वे
चले गये। कोई अपने खेतों में काम करने चला गया तो
कोई अपने काम धन्धे पर। 6और कुछ लोगों ने तो
राजा के सेवकों को पकड़ कर उनके साथ मार-पीट
की और उन्हें मार डाला। 7सो राजा ने क्रोधित होकर
अपने सैनिक भेजे। उन्होंने उन हत्यारों को मौत के
घाट उतार दिया और उनके नगर में आग लगा दी।

8"फिर राजा ने सेवकों से कहा, 'विवाह भोज तैयार
है किन्तु जिन्हें बुलाया गया था, वे अयोग्य सिद्ध हुए।
9इसलिये गली के नुक्कड़ों पर जाओ और तुम जिसे भी
पाओ ब्याह की दावत पर बुला लाओ।' 10फिर सेवक
गलियों में गये और जो भी भले बुरे लोग उन्हें मिले वे
उन्हें बुला लाये। और शादी का महल महमानों से भर
गया।

11"किन्तु जब मेहमानों को देखने राजा आया तो वहाँ
उसने एक ऐसा व्यक्ति देखा जिसने विवाह के वस्त्र
नहीं पहने थे। 12राजा ने उससे कहा, 'हे मित्र, विवाह
के वस्त्र पहने बिना तू यहाँ भीतर कैसे आ गया?' पर
वह व्यक्ति चुप रहा। 13इस पर राजा ने अपने सेवकों से
कहा, 'इसके हाथ-पाँव बाँध कर बाहर अन्धेरे में फेंक
दो। जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते होंगे।' 14क्योंकि
बुलाये तो बहुत गये हैं पर चुने हुए थोड़े से हैं।"

यहूदी नेताओं की चाल

(मरकुस 12:13-17; लूका 20:20-26)

15फिर फरीसियों ने जाकर एक सभा बुलाई, जिससे
वे इस बात का गणित कर सकें कि यीशु को उसकी
अपनी ही कही किसी बात में कैसे फँसाया जा सकता
है। 16उन्होंने अपने चेलों को हिरोदियों के साथ उसके
पास भेजा। उन लोगों ने यीशु से कहा, "गुरु, हम जानते
हैं कि तू सच्चा है तू सचमुच परमेश्वर के मार्ग की
शिक्षा देता है। और तू, कोई क्या सोचता है, तू इसकी
चिंता नहीं करता क्योंकि तू किसी व्यक्ति की हैसियत
पर नहीं जाता। 17सो हमें बता तेरा क्या विचार है कि
सम्राट कैसर को कर चुकाना उचित है कि नहीं?"

18यीशु उनके बुरे इरादे को ताड़ गया, सो वह बोला,
"ओ कपटियो! तुम मुझे क्यों परखना चाहते हो? 19मुझे
कोई दीनारी दिखाओ जिससे तुम कर चुकाते हो।" सो
वे उसके पास दीनारी ले आये। 20तब उसने उनसे कहा,
"इस पर किसकी मूरत और लेख खुदे हैं?"

21उन्होंने उससे कहा, "महाराजा कैसर के।"

तब उसने उनसे कहा, "अच्छा तो फिर जो महाराजा
कैसर का है, उसे महाराजा कैसर को दो, और जो
परमेश्वर का है, उसे परमेश्वर को।"

22यह सुनकर वे अचरज से भर गये और उसे छोड़
कर चले गये।

सदूकियों की चाल

(मरकुस 12:18-27; लूका 20:27-40)

23उसी दिन कुछ सदूकी जो पुर्नजीवन को नहीं मानते
थे, उसके पास आये। और उससे पूछा 24कि "गुरु, मूसा
के उपदेश के अनुसार यदि बिना बाल बच्चों के कोई
मर जाये तो उसका भाई, निकट सम्बन्धी होने के नाते
उसकी विधवा से ब्याह करे और अपने भाई का वंश
बढ़ाने के लिये संतान पैदा करे। 25अब मानो हम सात
भाई हैं। पहले का ब्याह हुआ और बाद में उसकी मृत्यु
हो गयी। फिर क्योंकि उसके कोई संतान नहीं हुई,
इसलिये उसके भाई ने उसकी पत्नी को अपना लिया।
26जब तक कि सातों भाई मर नहीं गये दूसरे, तीसरे
भाइयों के साथ भी वैसा ही हुआ 27और सब के बाद
वह स्त्री भी मर गयी। 28अब हमारा पूछना यह है कि
अगले जीवन में उन सातों में से वह किसकी पत्नी होगी
क्योंकि उसे सातों ने ही अपनाया था?"

29उत्तर देते हुए यीशु ने उनसे कहा, "तुम भूल करते
हो क्योंकि तुम शास्त्रों को और परमेश्वर की शक्ति
को नहीं जानते। 30तुम्हें समझना चाहिये कि पुर्नजीवन
में लोग न तो शादी करेंगे और न ही कोई शादी में दिया
जायेगा। बल्कि वे स्वर्ग के दूतों के समान होंगे। 31इसी
सिलसिले में तुम्हारे लाभ के लिए परमेश्वर ने मरे हुओं
के पुनरुत्थान के बारे में जो कहा है, क्या तुमने कभी
नहीं पढ़ा? उसने कहा था, 32'मैं इब्राहीम का
परमेश्वर हूँ, इसहाक का परमेश्वर हूँ, और याकूब
का परमेश्वर हूँ।'* वह मरे हुओं का नहीं बल्कि
जीवितों का परमेश्वर है।" 33जब लोगों ने यह सुना तो
उसके उपदेश पर वे बहुत चकित हो गए।

सबसे बड़ा आदेश

(मरकुस 12:28-34; लूका 10:25-28)

34जब फरीसियों ने सुना कि यीशु ने अपने उत्तर से
सदूकियों को चुप करा दिया है तो वे सब इकट्ठे हुए
35उनमें से एक यहूदी धर्मशास्त्री ने यीशु को फँसाने के
उद्देश्य से उससे पूछा, 36"गुरु, व्यवस्था में सबसे बड़ा
आदेश कौन सा है?"

37यीशु ने उससे कहा, "सम्पूर्ण मन से, सम्पूर्ण आत्मा
से और सम्पूर्ण बुद्धि से तुझे अपने परमेश्वर प्रभु से प्रेम
करना चाहिये।"* 38यह सबसे पहला और सबसे बड़ा
आदेश है। 39फिर ऐसा ही दूसरा आदेश यह है: 'अपने
पड़ोसी से वैसे ही प्रेम कर जैसे तू अपने आप से करता

"मैं ... परमेश्वर हूँ" देखें निर्गमन 3:6

"सम्पूर्ण मन ... करना चाहिये" व्यवस्था. 6:5

है।'* 40सम्पूर्ण व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं के ग्रन्थ
इन्हीं दो आदेशों पर टिके हैं।"

यीशु का फ़रीसियों से एक प्रश्न
(मरकुस 12:35-37; लूका 20:41-44)

41जब फ़रीसी अभी इकट्ठे ही थे, कि यीशु ने उनसे
एक प्रश्न पूछा, 42"मसीह के बारे में तुम क्या सोचते हो
कि वह किसका बेटा है?"

उन्होंने उससे कहा, "दाऊद का।" 43यीशु ने उनसे
पूछा, "फिर आत्मा से प्रेरित दाऊद ने उसे 'प्रभु' कहते
हुए यह क्यों कहा था कि:

44'प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा: 'मेरे दाहिने हाथ बैठ कर
शासन कर जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे अधीन
न कर दूँ।' *भजन संहिता 110:1*

45फिर जब दाऊद ने उसे प्रभु कहा तो वह उसका
बेटा कैसे हो सकता है?" 46उत्तर में कोई भी उससे कुछ
नहीं कह सका। और न ही उस दिन के बाद किसी को
उससे कुछ और पूछने का साहस ही हुआ।

यीशु द्वारा यहूदी धर्म-नेताओं की आलोचना
(मरकुस 12:38-40; लूका 11:37-52, 20:45-47)

23 यीशु ने फिर अपने शिष्यों और भीड़ से कहा।
2उसने कहा, "यहूदी धर्म शास्त्री और फरीसी
मूसा के विधान की व्याख्या के अधिकारी हैं। 3इसलिए
जो कुछ वे कहें उस पर चलना और उसका पालन
करना। किन्तु जो वे करते हैं वह मत करना। मैं यह
इसलिए कहता हूँ क्योंकि वे बस कहते हैं पर करते
नहीं हैं। 4वे लोगों के कंधों पर इतना बोझ लाद देते हैं
कि वे उसे उठा कर चल ही न सकें और लोगों पर
दबाव डालते हैं कि वे उसे लेकर चलें। किन्तु वे स्वयं
उनमें से किसी पर भी चलने के लिए पाँव तक नहीं
हिलाते।

5"वे अच्छे कर्म इसलिए करते हैं कि लोग उन्हें देखें।
वास्तव में वे अपने ताबीज़ों और पोशाकों की झालरों
को इसलिये बड़े से बड़ा करते रहते हैं ताकि लोग उन्हें
धर्मात्मा समझें। 6वे उत्सवों में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान
पाना चाहते हैं। धर्म सभाओं में उन्हें प्रमुख आसन
चाहिये। 7बाज़ारों में वे आदर के साथ नमस्कार कराना
चाहते हैं। और चाहते हैं कि लोग उन्हें रब्बी* कहकर
संबोधित करें।

8"किन्तु तुम लोगों से अपने आप को रब्बी मत
कहलवाना, क्योंकि तुम्हारा सच्चा गुरु तो बस एक है।
और तुम सब केवल भाई बहन हो। 9धरती पर लोगों
को तुम अपने में से किसी को भी 'पिता' मत कहने
देना। क्योंकि तुम्हारा पिता तो बस एक ही है, और वह
स्वर्ग में है। 10न ही लोगों को तुम अपने को स्वामी
कहने देना क्योंकि तुम्हारा स्वामी तो बस एक ही है
और वह मसीह है। 11तुममें सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति वही
होगा जो तुम्हारा सेवक बनेगा। 12जो अपने आपको
उठायेगा उसे नीचा किया जाएगा और जो अपने आपको
नीचा बनाएगा उसे उठाया जायेगा।

13"अरे कपटी धर्मशास्त्रियो और फ़रीसियो! तुम्हें
धिक्कार है। तुम लोगों के लिए स्वर्ग के राज्य का द्वार
बंद करते हो। न तो तुम स्वयं उसमें प्रवेश करते हो
और न ही उनको जाने देते हो जो प्रवेश के लिए प्रयत्न
कर रहे हैं। 14*

15"अरे कपटी धर्मशास्त्रियों और फरीसियों! तुम्हें
धिक्कार है। तुम किसी को अपने पंथ में लाने के लिए
धरती और समुद्र पार कर जाते हो। और जब वह
तुम्हारे पंथ में आ जाता है तो तुम उसे अपने से भी
दुगुना नरक का पात्र बना देते हो!

16"अरे अंधे रहनुमाओं! तुम्हें धिक्कार है जो कहते
हो यदि कोई मंदिर की सौगंध खाता है तो उसे उस
शपथ को रखना आवश्यक नहीं है किन्तु यदि कोई
मंदिर के सोने की शपथ खाता है तो उसे उस शपथ का
पालन आवश्यक है। 17अरे अंधे मूर्खो! बड़ा कौन है?
मन्दिर का सोना या वह मंदिर जिसने उस सोने को
पवित्र बनाया। 18तुम यह भी कहते हो 'यदि कोई वेदी
की सौगंध खाता है तो कुछ नहीं,' किन्तु यदि कोई वेदी
पर रखे चढ़ावे की सौगंध खाता है तो वह अपनी सौगंध
से बँधा है। 19अरे अंधों! कौन बड़ा है? वेदी पर रखा
चढ़ावा या वह वेदी जिससे वह चढ़ावा पवित्र बनता है?
20इसलिये यदि कोई वेदी की शपथ लेता है तो वह वेदी
के साथ वेदी पर जो रखा है, उस सब की भी शपथ
लेता है। 21वह जो मंदिर है, उसकी भी शपथ लेता है
वह मंदिर के साथ जो मंदिर के भीतर है, उसकी भी
शपथ लेता है। 22और वह जो स्वर्ग की शपथ लेता है,
वह परमेश्वर के सिंहासन के साथ जो उस सिंहासन
पर विराजमान है उसकी भी शपथ लेता है।

23"अरे कपटी यहूदी धर्मशास्त्रियो और फरीसियो!
तुम्हारा जो कुछ है, तुम उसका दसवाँ भाग, यहाँ तक
कि अपने पुदीने, सौंफ और जीरे तक के दसवें भाग
को परमेश्वर को देते हो। फिर भी तुम व्यवस्था की
महत्त्वपूर्ण बातों यानी न्याय, दया और विश्वास का
तिरस्कार करते हो। तुम्हें उन बातों की उपेक्षा किये
बिना इनका पालन करना चाहिये था।

"अपने पड़ोसी ... करता है" लैव्य.19:18

रब्बी अर्थात् गुरु।

पद 14 कुछ यूनानी प्रतियों में यह पद 14 जोड़ा गया है। "ओ कपटी, यहूदी धर्मशास्त्रियो और फरीसियो तुम विधवाओं की सम्पत्ति हड़प जाते हो। दिखाने के लिये लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएँ करते हो। इसके लिये तुम्हें कड़ा दण्ड मिलेगा"

24“ओ अंधे रहनुमाओ! तुम अपने पानी से मच्छर तो
छानते हो पर ऊँट को निगल जाते हो।
25“ओ कपटी यहूदी धर्मशास्त्रियो! और फरीसियो!तुम्हें
धिक्कार है। तुम अपनी कटोरियाँ और थालियाँ बाहर
से तो धोकर साफ करते हो पर उनके भीतर जो तुमने
छल कपट या अपने लिये रियायत में पाया है, भरा है।
26अरे अंधे फरीसियो! पहले अपने प्याले को भीतर से
माँजो ताकि भीतर के साथ वह बाहर से भी स्वच्छ हो
जाये।
27“अरे कपटी यहूदी धर्मशास्त्रियों! और फरीसियों!
तुम्हें धिक्कार है। तुम लिपी–पुती समाधि के समान हो
जो बाहर से तो सुंदर दिखती है किन्तु भीतर से मरे हुओं
की हड्डियों और हर तरह की अपवित्रता से भरी होती
है। **28**ऐसे ही तुम बाहर से तो धर्मात्मा दिखाई देते हो
किन्तु भीतर से छलकपट और बुराई से भरे हुए हो।
29“अरे कपटी यहूदी धर्मशास्त्रियो! और फरीसियो!
तुम नबियों के लिये स्मारक बनाते हो और धर्मात्माओं
की क़ब्रों को सजाते हो। **30**और कहते हो कि ‘यदि तुम
अपने पूर्वजों के समय में होते तो नबियों को मारने में
उनका हाथ नहीं बटाते।’ **31**मतलब यह कि तुम मानते
हो कि तुम उनकी संतान हो जो नबियों के हत्यारे थे।
32सो तुम जो तुम्हारे पुरखों ने शुरू किया, उसे पूरा
करो।
33“अरे साँपों और नागों की संतानो! तुम कैसे सोचते
हो कि तुम नरक भोगने से बच जाओगे। **34**इसलिये मैं
तुम्हें बताता हूँ कि मैं तुम्हारे पास नबियों, बुद्धिमानों
और गुरुओं को भेज रहा हूँ। तुम उनमें से बहुतों को
मार डालोगे और बहुतों को क्रूस पर चढ़ाओगे। कुछ
एक को तुम अपनी धर्मसभाओं में कोड़े लगवाओगे
और एक नगर से दूसरे नगर उनका पीछा करते
फिरोगे।
35परिणामस्वरूप निर्दोष हाबील से लेकर बिरिक्याह
के बेटे जकरयाह तक जिसे तुमने मन्दिर के गर्भ गृह
और वेदी के बीच मार डाला था, हर निरपराध व्यक्ति
की हत्या का दण्ड तुम पर होगा। **36**मैं तुम्हें सत्य कहता
हूँ इस सब कुछ के लिये इस पीढ़ी के लोगों को दंड
भोगना होगा।”

यरूशलेम के लोगों पर यीशु को खेद
(लूका 13:34-35)

37“ओ यरूशलेम, यरूशलेम! तू वह है जो नबियों की
हत्या करता है और परमेश्वर के भेजे दूतों को पत्थर
मारता है। मैंने कितनी बार चाहा है कि जैसे कोई मुर्गी
अपने चूज़ों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा कर लेती
है वैसे ही मैं तेरे बच्चों को एकत्र कर लूँ। किन्तु तुम
लोगों ने नहीं चाहा। **38**अब तेरा मंदिर पूरी तरह उजड़
जायेगा। **39**सचमुच मैं तुम्हें बताता हूँ तुम मुझे तब तक
फिर नहीं देखोगे जब तक तुम यह नहीं कहोगे: ‘धन्य है
वह जो प्रभु के नाम पर आ रहा है!’”*

यीशु द्वारा मंदिर के विनाश की भविष्यवाणी
(मरकुस 13:1-31; लूका 21:5-33)

24 मंदिर को छोड़ कर यीशु जब वहाँ से होकर
जा रहा था तो उसके शिष्य उसे मंदिर के
भवन दिखाने उसके पास आये। **2**इस पर यीशु ने उनसे
कहा, “तुम इन भवनों को सीधे खड़े देख रहे हो? मैं
तुम्हें सच बताता हूँ, यहाँ एक पत्थर पर दूसरा पत्थर
टिका नहीं रहेगा। एक एक पत्थर गिरा दिया जायेगा।”
3यीशु जब जैतून पर्वत* पर बैठा था तो एकांत में
उसके शिष्य उसके पास आये और बोले, “हमें बता यह
कब घटेगा? जब तू वापस आयेगा और इस संसार का
अंत होने को होगा तो कैसे संकेत प्रकट होंगे?”
4उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, “सावधान! तुम लोगों
को कोई छलने न पाये। **5**मैं यह इस लिए कह रहा हूँ
कि ऐसे बहुत से हैं जो मेरे नाम से आयेंगे और कहेंगे ‘मैं
मसीह हूँ’ और वे बहुतों को छलेंगे। **6**तुम पास के युद्धों
की बातें या दूर के युद्धों की अफवाहें सुनोगे पर देखो
तुम घबराना मत। ऐसा तो होगा ही किन्तु अभी अंत
नहीं आया है। **7**हर एक जाति दूसरी जाति के विरोध में
और एक राज्य दूसरे राज्य के विरोध में खड़ा होगा।
अकाल पड़ेंगे। हर कहीं भूचाल आयेंगे। **8**किन्तु ये सब
बातें तो केवल पीड़ाओं का आरम्भ ही होगा।
9“उस समय वे तुम्हें दण्ड दिलाने के लिए पकड़वायेंगे,
और वे तुम्हें मरवा डालेंगे। क्योंकि तुम मेरे शिष्य हो,
सभी जातियों के लोग तुमसे घृणा करेंगे। **10**उस समय
बहुत से लोगों का मोह टूट जायेगा और विश्वास डिग
जायेगा। वे एक दूसरे को अधिकारियों के हाथों सौंपेंगे
और परस्पर घृणा करेंगे। **11**बहुत से झूठे नबी उठ खड़े
होंगे और लोगों को ठगेंगे। **12**क्योंकि बदी बढ़ जायेगी सो
बहुत से लोगों का प्रेम ठंडा पड़ जायेगा। **13**किन्तु जो अंत
तक टिका रहेगा उसका उद्धार होगा। **14**स्वर्ग के राज्य
का यह सुसमाचार समस्त विश्व में सभी जातियों को
साक्षी के रूप में सुनाया जाएगा और तभी अन्त आएगा।
15“इसलिए जब तुम लोग भयानक विनाशकारी वस्तु
को, जिसका उल्लेख दानिय्येल नबी द्वारा किया गया
था, मंदिर के पवित्र स्थान पर खड़े देखो,” (पढ़ने वाला
स्वयं समझ ले कि इसका अर्थ क्या है)
16“तब जो लोग यहूदिया में हों उन्हें पहाड़ों पर भाग
जाना चाहिये। **17**जो अपने घर की छत पर हो, वह घर
से बाहर कुछ भी ले जाने के लिए नीचे न उतरे। **18**और

“धन्य है ... आ रहा है” भजन. 118:26

जैतून पर्वत यरूशलेम के निकट का एक पहाड़ जिस पर जैतून के बहुत से पेड़ थे।

जो बाहर खेतों में काम कर रहा हो, वह पीछे मुड़ कर
अपने वस्त्र तक न ले। 19उन स्त्रियों के लिये, जो
गर्भवती होंगी या जिनके दूध पीते बच्चे होंगे, वे दिन
बहुत कष्ट के होंगे। 20प्रार्थना करो कि तुम्हें सर्दियों के
दिनों या सब्त के दिन भागना न पड़े। 21उन दिनों ऐसी
विपत्ति आयेगी जैसी जब से परमेश्वर ने यह सृष्टि रची
है, आज तक कभी नहीं आयी और न कभी आयेगी।
22और यदि परमेश्वर ने उन दिनों को घटाने का
निश्चय न कर लिया होता तो कोई भी न बचता किंतु
अपने चुने हुओं के कारण वह उन दिनों को कम
करेगा। 23उन दिनों यदि कोई तुम लोगों से कहे, 'देखो,
यह रहा मसीह' 24या 'वह रहा मसीह' तो उसका विश्वास
मत करना। मैं यह कहता हूँ क्योंकि कपटी मसीह और
कपटी नबी खड़े होंगे और ऐसे ऐसे आश्चर्य चिह्न दिखायेंगे
और अद्भुत काम करेंगे कि बन पड़े तो वह चुने हुओं
को भी चकमा दे दें। 25देखो मैंने तुम्हें पहले ही बता
दिया है।

26"सो यदि वे तुमसे कहें, 'देखो वह जंगल में है' तो
वहाँ मत जाना और यदि वे कहें, 'देखो वह उन कमरों
के भीतर छुपा है' तो उनका विश्वास मत करना। 27मैं
यह कह रहा हूँ क्योंकि जैसे बिजली पूरब में शुरू
होकर पश्चिम के आकाश तक कौंध जाती है वैसे ही
मनुष्य का पुत्र भी प्रकट होगा। 28जहाँ कहीं लाश होगी
वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे।

29"उन दिनों जो मुसीबत पड़ेगी उसके तुरंत बाद:

'सूरज काला पड़ जायेगा चाँद से उसकी चाँदनी नहीं
छिटकेगी आसमान से तारे गिरने लगेंगे और आकाश
में महाशक्तियाँ झकझोर दी जायेंगी।'

यशायाह 13:10; 34:4, 5

30"उस समय मनुष्य के पुत्र के आने का संकेत
आकाश में प्रकट होगा। तब पृथ्वी पर सभी जातियों के
लोग विलाप करेंगे और वे मनुष्य के पुत्र को शक्ति
और महिमा के साथ स्वर्ग के बादलों में प्रकट होते
देखेंगे। 31वह ऊँचे स्वर की तुरही के साथ अपने दूतों
को भेजेगा। फिर वे स्वर्ग के एक छोर से दूसरे छोर
तक सब कहीं से अपने चुने हुए लोगों को इकट्ठा
करेगा।

32"अंजीर के पेड़ से शिक्षा लो। जैसे ही उसकी टहनियाँ
कोमल हो जाती हैं और कोंपलें फूटने लगती हैं तुम
लोग जान जाते हो कि गर्मियाँ आने को हैं। 33वैसे ही
जब तुम यह सब घटित होते हुए देखो तो समझ जाना
कि वह समय निकट आ पहुँचा है, बल्कि ठीक द्वार
तक। 34मैं तुम लोगों से सत्य कहता हूँ कि इस पीढ़ी के
लोगों के जीते जी ही ये सब बातें घटेंगी। 35चाहे धरती
और आकाश मिट जायें किन्तु मेरा वचन कभी नहीं
मिटेगा।"

केवल परमेश्वर जानता है कि वह समय कब आएगा

(*मरकुस 13:32-37; लूका 17:26-30; 34-36*)

36"उस दिन या उस घड़ी के बारे में कोई कुछ नहीं
जानता। न स्वर्ग में दूत और न स्वंय पुत्र। केवल परम
पिता जानता है। 37जैसे नूह के दिनों में हुआ, वैसे ही
मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। 38वैसे ही जैसे लोग
जल प्रलय आने से पहले के दिनों तक खाते-पीते रहे,
ब्याह-शादियाँ रचाते रहे जब तक नूह नाव पर नहीं
चढ़ा। 39उन्हें तब तक कुछ पता नहीं चला जब तक
जल प्रलय न आ गया और उन सब को बहा नहीं ले
गया। मनुष्य के पुत्र का आना भी ऐसा ही होगा। 40उस
समय खेत में काम करते दो आदमियों में से एक को
उठा लिया जायेगा और एक को वहीं छोड़ दिया जायेगा।
41चक्की पीसती दो औरतों में से एक उठा ली जायेगी
और एक वहीं पीछे छोड़ दी जायेगी।

42"सो तुम लोग सावधान रहो क्योंकि तुम नहीं जानते
कि तुम्हारा स्वामी कब आ जाये। 43याद रखो यदि घर
का स्वामी जानता कि रात को किस घड़ी चोर आ
जायेगा तो वह सजग रहता और चोर को अपने घर में
सेंध नहीं लगाने देता। 44इसलिए तुम भी तैयार रहो
क्योंकि तुम जब उसकी सोच भी नहीं रहे होंगे, मनुष्य
का पुत्र आ जायेगा।

45"तब सोचो वह भरोसेमंद सेवक कौन है, जिसे
स्वामी ने अपने घर के सेवकों के ऊपर उचित समय
उन्हें उनका भोजन देने के लिए लगाया है। 46धन्य है
वह सेवक जिसे उसका स्वामी जब आता है तो कर्तव्य
करते पाता है। 47मैं तुमसे सत्य कहता हूँ वह स्वामी उसे
अपनी समूची सम्पत्ति का अधिकारी बना देगा। 48दूसरी
तरफ सोचो एक बुरा दास है, जो अपने मन में कहता है
मेरा स्वामी बहुत दिनों से वापस नहीं आ रहा है 49सो
वह अपने साथी दासों से मार पीट करने लगता है और
शराबियों के साथ खाना पीना शुरू कर देता है 50तो
उसका स्वामी ऐसे दिन आ जायेगा जिस दिन वह उसके
आने की सोचता तक नहीं और जिसका उसे पता तक
नहीं।

51और उसका स्वामी उसे बुरी तरह दण्ड देगा और
कपटियों के बीच उसका स्थान निश्चित करेगा जहाँ
बस लोग रोते होंगे और दाँत पीसते होंगे।

दूल्हे की प्रतीक्षा करती दस कन्याओं की दृष्टांत-कथा

25 "उस दिन स्वर्ग का राज्य उन दस कन्याओं
के समान होगा जो मशालें लेकर दूल्हे से
मिलने निकलीं। 2उनमें से पाँच लापरवाह थीं और पाँच
चौकस। 3पाँचों लापरवाह कन्याओं ने अपनी मशालें तो
ले ली पर उनके साथ तेल नहीं लिया। 4उधर चौकस
कन्याओं ने अपनी मशालों के साथ कुप्पियों में तेल भी

ले लिया। 5क्योंकि दूल्हे को आने में देर हो रही थी,
सभी कन्याएँ ऊँघने लगीं और पड़ कर सो गयी।
6"पर आधी रात धूम मची आ हा, 'दूल्हा आ रहा है!
उससे मिलने बाहर चलो।'
7"उसी क्षण वे सभी कन्याएँ उठ खड़ी हुईं और
अपनी मशालें तैयार कीं। 8लापरवाह कन्याओं ने चौकस
कन्याओं से कहा, 'हमें अपना थोड़ा तेल दे दो, हमारी
मशालें बुझी जा रही हैं।'
9"उत्तर में उन चौकस कन्याओं ने कहा, 'नहीं! हम
नहीं दे सकती। क्योंकि फिर न ही यह हमारे लिए
काफी होगा और न ही तुम्हारे लिये। सो तुम तेल बेचने
वाले के पास जाकर अपने लिये मोल ले लो।'
10"जब वे मोल लेने जा ही रही थीं कि दूल्हा आ
पहुँचा। सो वे कन्याएँ, जो तैयार थीं, उसके साथ विवाह
के उत्सव में भीतर चली गई और फिर किसी ने द्वार
बंद कर दिया।
11"आखिरकार वे बाकी की कन्याएँ भी गई और
उन्होंने कहा, 'स्वामी, हे स्वामी, द्वार खोलो, हमें भीतर
आने दो।'
12"किन्तु उसने उत्तर देते हुए कहा, 'मैं तुमसे सच
कह रहा हूँ: मैं तुम्हें नहीं जानता।'
13"सो सावधान रहो। क्योंकि तुम न उस दिन को
जानते हो, न उस घड़ी को, जब मनुष्य का पुत्र लौटेगा।

तीन दासों की दृष्टांत कथा
(लूका 19:11-27)

14"स्वर्ग का राज्य उस व्यक्ति के समान होगा जिसने
यात्रा पर जाते हुए अपने दासों को बुला कर अपनी
सम्पत्ति पर अधिकारी बनाया। 15उसने एक को चाँदी
के सिक्कों से भरी पाँच थैलियाँ दीं। दूसरे को दो और
तीसरे को एक। वह हर एक को उसकी योग्यता के
अनुसार दे कर यात्रा पर निकल पड़ा। 16जिसे चाँदी के
सिक्कों से भरी पाँच थैलियाँ मिली थीं, उसने तुरन्त उस
पैसे को काम में लगा दिया और पाँच थैलियाँ और कमा
ली। 17ऐसे ही जिसे दो थैलियाँ मिली थीं, उसने भी दो
और कमा लीं। 18पर जिसे एक मिली थी उसने कहीं
जाकर धरती में गढ़ा खोदा और अपने स्वामी के धन
को गाड़ दिया।
19"बहुत समय बीत जाने के बाद उन दासों का स्वामी
लौटा और हर एक से लेखा जोखा लेने लगा। 20वह
व्यक्ति जिसे चाँदी के सिक्कों की पाँच थैलियाँ मिली थी,
अपने स्वामी के पास गया और चाँदी की पाँच और
थैलियाँ ले जाकर उससे बोला, 'स्वामी, तुमने मुझे
पाँच थैलियाँ सौंपी थीं। चाँदी के सिक्कों की ये पाँच
थैलियाँ और हैं जो मैंने कमाई हैं।'
21"उसके स्वामी ने उससे कहा, 'शाबाश! तुम भरोसे
के लायक अच्छे दास हो। थोड़ी सी रकम के सम्बन्ध में
तुम विश्वास पात्र रहे, मैं तुम्हें और अधिक का अधिकार
दूँगा। भीतर जा और अपने स्वामी की प्रसन्नता में
शामिल हो।'
22"फिर जिसे चाँदी के सिक्कों की दो थैलियाँ मिली
थीं, अपने स्वामी के पास आया और बोला, 'स्वामी, तूने
मुझे चाँदी की दो थैलियाँ सौंपी थीं, चाँदी के सिक्कों की
ये दो थैलियाँ और हैं जो मैंने कमाई हैं।'
23"उसके स्वामी ने उससे कहा, 'शाबाश! तुम भरोसे
के लायक अच्छे दास हो। थोड़ी सी रकम के सम्बन्ध में
तुम विश्वास पात्र रहे। मैं तुम्हें और अधिक का अधिकार
दूँगा। भीतर जा और अपने स्वामी की प्रसन्नता में
शामिल हो।'
24"फिर वह जिसे चाँदी की एक थैली मिली थी,
अपने स्वामी के पास आया और बोला, 'स्वामी, मैं
जानता हूँ तू बहुत कठोर व्यक्ति है। तू वहाँ काटता है
जहाँ तूने बोया नहीं है, और जहाँ तूने कोई बीज नहीं
डाला वहाँ फसल बटोरता है। 25सो मैं डर गया था
इसलिए मैंने जाकर चाँदी के सिक्कों की थैली को
धरती में गाड़ दिया। यह ले जो तेरा है यह रहा, ले ले।'
26"उत्तर में उसके स्वामी ने उससे कहा, 'तू एक बुरा
और आलसी दास है, तू जानता है कि मैं बिन बोये
काटता हूँ और जहाँ मैंने बीज नहीं बोये, वहाँ से फसल
बटोरता हूँ 27तो तुझे मेरा धन साहूकारों के पास जमा
करा देना चाहिये था। फिर जब मैं आता तो जो मेरा था
सूद के साथ ले लेता।'
28"इसलिये इससे चाँदी के सिक्कों की यह थैली ले
लो और जिसके पास चाँदी के सिक्कों की दस थैलियाँ
हैं, इसे उसी को दे दो। 29क्योंकि हर उस व्यक्ति को,
जिसने जो कुछ उसके पास था उसका सही उपयोग
किया, और अधिक दिया जायेगा। और जितनी उसे
आवश्यकता है, वह उससे अधिक पायेगा। किन्तु उससे,
जिसने जो कुछ उसके पास था उसका सही उपयोग
नहीं किया, सब कुछ छीन लिया जायेगा। 30सो उस
बेकार के दास को बाहर अन्धेरे में धकेल दो जहाँ लोग
रोयेंगे और अपने दाँत पीसेंगे।"

मनुष्य का पुत्र सबका न्याय करेगा

31"मनुष्य का पुत्र जब अपनी स्वर्गिक महिमा में
अपने सभी दूतों समेत अपने शानदार सिंहासन पर
बैठेगा 32तो सभी जातियाँ उसके सामने इकट्ठी की
जायेंगी और वह एक को दूसरे से वैसे ही अलग करेगा,
जैसे एक गड़रिया अपनी बकरियों से भेड़ों को अलग
करता है। 33वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर रखेगा
और बकरियों को बाँई ओर।
34"फिर वह राजा, जो उसके दाहिनी ओर हैं, उनसे
कहेगा, 'मेरे पिता से आशीष पाये लोगो, आओ और जो
राज्य तुम्हारे लिये जगत की रचना से पहले तैयार किया

गया है उसका अधिकार लो। 35यह राज्य तुम्हारा है
क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे कुछ खाने को
दिया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे कुछ पीने को दिया।
मैं पास से जाता हुआ कोई अनजाना था, और तुम मुझे
भीतर ले गये। 36मैं नंगा था, तुमने मुझे कपड़े पहनाए।
मैं बीमार था, और तुमने मेरी सेवा की। मैं बंदी था,
और तुम मेरे पास आये।'

37"फिर उत्तर में धर्मी लोग उससे पूछेंगे, 'प्रभु, हमने
तुझे कब भूखा–देखा और खिलाया या प्यासा देखा और
पीने को दिया? 38तुझे हमने कब पास से जाता हुआ
कोई अनजाना देखा और भीतर ले गये या बिना कपड़ों
के देखकर तुझे कपड़े पहनाए? 39और हमने कब तुझे
बीमार या बंदी देखा और तेरे पास आये?' 40"फिर राजा
उत्तर में उनसे कहेगा, 'मैं तुमसे सच कह रहा हूँ जब
कभी तुमने मेरे भोले–भाले भाइयों में से किसी एक के
लिये भी कुछ किया तो वह तुमने मेरे ही लिये किया।'

41"फिर वह राजा अपनी बाँई ओर वालों से कहेगा,
'अरे अभागो! मेरे पास से चले जाओ, और जो आग
शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गयी है, उस
अनंत आग में जा गिरो। 42यही तुम्हारा दण्ड है क्योंकि
मैं भूखा था पर तुमने मुझे खाने को कुछ नहीं दिया,
43मैं अजनबी था पर तुम मुझे भीतर नहीं ले गये। मैं
कपड़ों के बिना नंगा था, पर तुमने मुझे कपड़े नहीं
पहनाये। मैं बीमार और बंदी था, पर तुमने मेरा ध्यान
नहीं रखा।'

44"फिर वे भी उत्तर में उससे पूछेंगे, 'प्रभु, हमने तुझे
भूखा या प्यासा या अनजाना या बिना कपड़ों के नंगा या
बीमार या बंदी कब देखा और तेरी सेवा नहीं की।'

45"फिर वह उत्तर में उनसे कहेगा, 'मैं तुमसे सच
कह रहा हूँ जब कभी तुमने मेरे इन भोले भाले अनुयायियों
में से किसी एक के लिए भी कुछ करने में लापरवाही
बरती तो वह तुमने मेरे लिए ही कुछ करने में लापरवाही
बरती।' 46"फिर ये बुरे लोग अनंत दण्ड पाएँगे और धर्मी
लोग अनंत जीवन में चले जायेंगे।"

यहूदी नेताओं द्वारा यीशु की हत्या का षड़यंत्र

(मरकुस 14:1-2; लूका 22:1-2; यूहन्ना 11:45-53)

26 इन सब बातों के कह चुकने के बाद यीशु
अपने शिष्यों से बोला, 2"तुम लोग जानते हो
कि दो दिन बाद फसह पर्व है। और मनुष्य का पुत्र
शत्रुओं के हाथों क्रूस पर चढ़ाये जाने के लिये पकड़वाया
जाने वाला है। 3तब प्रमुख याजक और बुज़ुर्ग यहूदी नेता
कैफ़ा नाम के प्रमुख याजक के भवन के आँगन में
इकट्‌ठे हुए। 4और उन्होंने किसी तरकीब से यीशु को
पकड़ने और मार डालने की योजना बनायी। 5फिर भी
वे कह रहे थे "हमें यह पर्व के दिनों नहीं करना चाहिये
नहीं तो हो सकता है लोग कोई दंगा–फ़साद करें।"

यीशु पर इत्र का छिड़काव

(मरकुस 14:3-9; यूहन्ना 12:1-8)

6यीशु जब बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर पर था
7तभी एक स्त्री सफेद चिकने, स्फटिक के पात्र में बहुत
कीमती इत्र भर कर लायी और उसे उसके सिर पर
उँडेल दिया। उस समय वह पटरे पर झुका बैठा था।

8जब उसके शिष्यों ने यह देखा तो वे क्रोध में भर
कर बोले, "इत्र की ऐसी बर्बादी क्यों की गयी? 9यह इत्र
अच्छे दामों में बेचा जा सकता था और फिर उस धन
को दीन दुखियों में बाँटा जा सकता था।"

10यीशु जान गया कि वे क्या कह रहे हैं। सो उनसे
बोला, "तुम इस स्त्री को क्यों तंग कर रहे हो? उसने तो
मेरे लिए एक सुन्दर काम किया है? 11क्योंकि दीन
दुःखी तो सदा तुम्हारे पास रहेंगे पर मैं तुम्हारे साथ सदा
नहीं रहूँगा। 12उसने मेरे शरीर पर यह सुगंधित इत्र
छिड़क कर मेरे गाड़े जाने की तैयारी की है। 13मैं तुमसे
सच कहता हूँ समस्त संसार में जहाँ कहीं भी सुसमाचार
का प्रचार–प्रसार किया जायेगा, वहीं इसकी याद में, जो
कुछ इसने किया है, उसकी चर्चा होगी।"

यहूदा यीशु से शत्रुता ठानता है

(मरकुस 14:10-11; लूका 22:3-6)

14तब यहूदा इस्करियोती जो उसके बारह शिष्यों में से
एक था, प्रधान याजकों के पास गया और उनसे बोला,
15"यदि मैं यीशु को तुम्हें पकड़वा दूँ तो तुम लोग मुझे
क्या दोगे?" तब उन्होंने यहूदा को चाँदी के तीस सिक्के
देने की इच्छा जाहिर की। 16उसी समय से यहूदा यीशु
को धोखे से पकड़वाने की ताक में रहने लगा।

यीशु का अपने शिष्यों के साथ फ़सह भोज

(मरकुस 14:21-22; लूका 22:7-14, 21-23
यूहन्ना 13:21-30)

17बिना ख़मीर की रोटी के पर्व से पहले दिन यीशु के
शिष्यों ने पास आकर पूछा, "तू क्या चाहता है कि हम
तेरे खाने के लिये फ़सह भोज की तैयारी कहाँ जाकर
करें? 18उसने कहा, "गाँव में उस व्यक्ति के पास जाओ
और उससे कहो, कि गुरु ने कहा है, 'मेरी निश्चित
घड़ी निकट है, मैं तेरे घर अपने शिष्यों के साथ फ़सह
पर्व मनाने वाला हूँ।'"

19फिर शिष्यों ने वैसा ही किया जैसा यीशु ने बताया
था और फ़सह पर्व की तैयारी की।

20दिन ढले यीशु अपने बारह शिष्यों के साथ पटरे
पर झुका बैठा था। 21तभी उनके भोजन करते वह
बोला, "मैं सच कहता हूँ, तुममें से एक मुझे धोखे से
पकड़वायेगा।"

22वे बहुत दुखी हुए और उनमें से प्रत्येक उससे पूछने
लगा, "प्रभु, वह मैं तो नहीं हूँ! बता क्या मैं हूँ?"

23तब यीशु ने उत्तर दिया, "वही जो मेरे साथ एक
थाली में खाता है मुझे धोखे से पकड़वायेगा। 24मनुष्य
का पुत्र तो जायेगा ही, जैसा कि उसके बारे में शास्त्र में
लिखा है। पर उस व्यक्ति को धिक्कार है जिस व्यक्ति
के द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जा रहा है। उस
व्यक्ति के लिये कितना अच्छा होता कि उसका जन्म ही
न हुआ होता।"

25तब उसे धोखे से पकड़वाने वाला यहूदा बोल उठा,
"हे रब्बी, वह मैं नहीं हूँ। क्या मैं हूँ?"

यीशु ने उससे कहा, "हाँ, ऐसा ही है जैसा तूने कहा
है।"

प्रभु का भोज

(*मरकुस 14:22-26; लूका 22:15-20; 1 कुरिन्थियों 11:23-25*)

26जब वे खाना खा ही रहे थे, यीशु ने रोटी ली, उसे
आशीष दी और फिर तोड़ा। फिर उसे शिष्यों को देते
हुए वह बोला, "लो, इसे खाओ, यह मेरी देह है।"

27फिर उसने प्याला उठाया और धन्यवाद देने के
बाद उसे उन्हें देते हुए कहा, "तुम सब इसे थोड़ा थोड़ा
पिओ। 28क्योंकि यह मेरा लहू है जो एक नये वाचा की
स्थापना करता है। यह बहुत लोगों के लिए बहाया जा
रहा है। ताकि उनके पापों को क्षमा करना सम्भव हो
सके। 29मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं उस दिन तक दाखरस
को नहीं चखूँगा जब तक अपने परम पिता के राज्य में
तुम्हारे साथ नया दाखरस न पी लूँ।"

30फिर वे फ़सह का भजन गाकर जैतून पर्वत पर
चले गये।

यीशु का कथन : सब शिष्य उसे छोड़ देंगे

(*मरकुस 14:27-31; लूका 22:31-34; यूहन्ना 13:36-38*)

31फिर यीशु ने उनसे कहा, "आज रात तुम सब का
मुझमें से विश्वास डिग जायेगा। क्योंकि शास्त्र में लिखा
है: 'मैं गड़ेरिये को मारूँगा और रेवड़ की भेड़ें तितर
बितर हो जायेंगी।' *जकर्याह 13:7*

32पर फिर से जी उठने के बाद मैं तुमसे पहले ही
गलील चला जाऊँगा।"

33पतरस ने उत्तर दिया, "चाहे सब तुझ में से विश्वास
खो दें किन्तु मैं कभी नहीं खोऊँगा।"

34यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से सत्य कहता हूँ
आज इसी रात मुर्गे के बाँग देने से पहले तू तीन बार
मुझे नकार चुकेगा।"

35तब पतरस ने उससे कहा, "यदि मुझे तेरे साथ
मरना भी पड़े तो भी तुझे मैं कभी नहीं नकारूँगा।"

बाकी सब शिष्यों ने भी यही कहा।

यीशु की एकान्त प्रार्थना

(*मरकुस 14:32-42; लूका 22:39-46*)

36फिर यीशु उनके साथ उस स्थान पर आया जो
गतसमने कहलाता था। और उसने अपने शिष्यों से
कहा, "जब तक मैं वहाँ जाऊँ और प्रार्थना करूँ, तुम
यहीं बैठो।" 37फिर यीशु पतरस और जब्दी के दो बेटों
को अपने साथ ले गया। और दुख तथा व्याकुलता
अनुभव करने लगा। 38फिर उसने उनसे कहा, "मेरा
मन बहुत दुःखी है, जैसे मेरे प्राण निकल जायेंगे। तुम
मेरे साथ यहीं ठहरो और सावधान रहो।"

39फिर थोड़ा आगे बढ़ने के बाद वह धरती पर झुक
कर प्रार्थना करने लगा। उसने कहा, "हे मेरे परम
पिता, यदि हो सके तो यातना का यह प्याला मुझसे टल
जाये। फिर भी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं बल्कि जैसा
तू चाहता है वैसा ही कर। 40फिर वह अपने शिष्यों के
पास गया और उन्हें सोता पाया। वह पतरस से बोला, 'सो
तुम लोग मेरे साथ एक घड़ी भी नहीं जाग सके। 41जागते
रहो और प्रार्थना करो ताकि तुम परीक्षा में न पड़ो।
तुम्हारा मन तो वही करना चाहता है जो उचित है
किन्तु, तुम्हारा शरीर दुर्बल है।"

42एक बार फिर उसने जाकर प्रार्थना की और कहा,
"हे मेरे परम पिता, यदि यातना का यह प्याला मेरे पिये
बिना टल नहीं सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो।" 43तब वह
आया और उन्हें फिर सोते पाया। वे अपनी आँखें खोले
नहीं रख सके। 44सो वह उन्हें छोड़ कर फिर गया और
तीसरी बार भी पहले की तरह उन ही शब्दों में प्रार्थना
की। 45फिर यीशु अपने शिष्यों के पास गया और
उनसे पूछा, "क्या तुम अब भी आराम से सो रहे हो?
सुनो, समय आ चुका है, जब मनुष्य का पुत्र पापियों के
हाथों सौंपा जाने वाला है। 46उठो, आओ चलें। देखो मुझे
पकड़वाने वाला यह रहा।"

यीशु को बंदी बनाना

(*मरकुस 14:43-50; लूका 22:47-53; यूहन्ना 18:3-12*)

47यीशु जब बोल ही रहा था, यहूदा जो बारह शिष्यों
में से एक था, आया। उसके साथ तलवारों और लाठियों
से लैस प्रमुख याजकों और यहूदी नेताओं की भेजी एक
बड़ी भीड़ भी थी। 48यहूदा ने जो उसे पकड़वाने वाला
था, उन्हें एक संकेत देते हुए कहा कि जिस किसी को
मैं चूमूँ, वही यीशु है, उसे पकड़ लो, 49फिर वह यीशु
के पास गया और बोला, "हे नबी।" और बस उसने
यीशु को चूम लिया।

50यीशु ने उससे कहा, "मित्र जिस काम के लिए तू
आया है, उसे कर।" फिर भीड़ के लोगों ने पास जा कर
यीशु को दबोच कर बंदी बना लिया। 51फिर जो लोग
यीशु के साथ थे, उनमें से एक ने तलवार खींच ली

और वार करके महा याजक के दास का कान उड़ा
दिया।
52तब यीशु न उससे कहा, "अपनी तलवार को म्यान
में रखो। जो तलवार चलाते हैं वे तलवार से ही मारे
जायेंगे। 53क्या तुम नहीं सोचते कि मैं अपने परम पिता
को बुला सकता हूँ और वह तुरंत स्वर्गदूतों की बारह
सेनाओं से भी अधिक मेरे पास भेज देगा? 54किन्तु यदि
मैं ऐसा करूँ तो शास्त्रों की लिखी यह कैसे पूरी होगी
कि सब कुछ ऐसे ही होना है?"
55उसी समय यीशु ने भीड़ से कहा, "तुम तलवारों,
लाठियों समेत मुझे पकड़ने ऐसे क्यों आये हो जैसे किसी
चोर को पकड़ने आते हैं? मैं हर दिन मंदिर में बैठा
उपदेश दिया करता था और तुमने मुझे नहीं पकड़ा।
56किन्तु यह सब कुछ घटा ताकि भविष्यवक्ताओं की
लिखी पूरी हो।" फिर उसके सभी शिष्य उसे छोड़ कर
भाग खड़े हुए।

यहूदी नेताओं के सामने यीशु की पेशी

(मरकुस 14:53-65; लूका 22:54-55, 63-71; यूहन्ना 18:13-14, 19-24)

57जिन्होंने यीशु को पकड़ा था, वे उसे कैफ़ा नामक
महा याजक के सामने ले गये। वहाँ यहूदी धर्मशास्त्री
और बुज़ुर्ग यहूदी नेता भी इकट्ठे हुए। 58पतरस उससे
दूर–दूर रहते उसके पीछे पीछे महायाजक के आँगन
के भीतर तक चला गया। और फिर नतीजा देखने वहाँ
पहरेदारों के साथ बैठ गया। 59महा याजक समूची यहूदी
महासभा समेत यीशु को मृत्यु दण्ड देने के लिए उसके
विरोध में कोई अभियोग ढूँढने का यत्न कर रहे थे।
60पर ढूँढ नहीं पाये। यद्यपि बहुत से झूठे गवाहों ने आगे
बढ़ कर झूठ बोले। अंत में दो व्यक्ति आगे आये 61और
बोले, "इसने कहा था कि मैं परमेश्वर के मंदिर को
नष्ट कर सकता हूँ और तीन दिन में उसे फिर बना
सकता हूँ।"
62फिर महा याजक ने खड़े हो कर यीशु से पूछा,
"क्या उत्तर में तुझे कुछ नहीं कहना कि ये लोग तेरे
विरोध में यह क्या गवाही दे रहे हैं?"
63किन्तु यीशु चुप रहा। फिर महायाजक ने उससे
पूछा, "मैं तुझे साक्षात् परमेश्वर की शपथ देता हूँ, हमें
बता क्या तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है?"
64यीशु ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं हूँ। किन्तु मैं तुम्हें
बताता हूँ कि तुम मनुष्य के पुत्र को उस परम शक्तिशाली
की

दाहिनी ओर बैठे और स्वर्ग के बादलों पर आते शीघ्र
ही देखोगे।"
65महायाजक यह सुनकर इतना क्रोधित हुआ कि
वह अपने कपड़े फाड़ते हुए बोला, "इसने जो बातें कही
हैं वे परमेश्वर की निन्दा में जाती हैं। अब हमें और
गवाह नहीं चाहियें। तुम सब ने परमेश्वर के विरोध में
कहते, इसे सुना है। 66तुम लोग क्या सोचते हो?"
उत्तर में वे बोले, "यह अपराधी है। इसे मर जाना
चाहिये।"
67फिर उन्होंने उसके मुँह पर थूका और उसे घूँसे
मारे। कुछ ने थप्पड़ मारे और कहा, 68"अरे मसीह!
भविष्यवाणी कर कि वह कौन है जिसने तुझे मारा?"

पतरस का यीशु को नकारना

(मरकुस 14:66-72; लूका 22:56-62; यूहन्ना 18:15-18, 25-27)

69पतरस अभी नीचे आँगन में ही बाहर बैठा था कि
एक दासी उसके पास आयी और बोली, "तू भी तो उसी
गलीली यीशु के साथ था।"
70किन्तु सब के सामने पतरस मुकर गया। उसने
कहा, "मुझे पता नहीं तू क्या कह रही है।"
71फिर वह ड्योढ़ी तक गया ही था कि एक दूसरी
स्त्री ने उसे देखा और जो लोग वहाँ थे, उनसे बोली,
"यह व्यक्ति यीशु नासरी के साथ था।"
72एक बार फिर पतरस ने इन्कार किया और कसम
खाते हुए कहा, "मैं उस व्यक्ति को नहीं जानता।"
73थोड़ी देर बाद वहाँ खड़े लोग पतरस के पास गये
और उससे बोले, "तेरी बोली साफ बता रही है कि तू
असल में उन्हीं में से एक है।"
74तब पतरस अपने को धिक्कारने और कसमें खाने
लगा, "मैं उस व्यक्ति को नहीं जानता।" तभी मुर्गे ने बाँग
दी।
75तभी पतरस को वह याद हो आया जो यीशु ने
उससे कहा था, "मुर्गे के बाँग देने से पहले तू तीन बार
मुझे नकारेगा।" तब पतरस बाहर चला गया और फूट
फूट कर रो पड़ा।

यीशु की पिलातुस के आगे पेशगी

(मरकुस 15:1; लूका 23:1-2; यूहन्ना 18:28-32)

27 अलख सुबह सभी प्रमुख याजकों और यहूदी
बुज़ुर्ग नेताओं ने यीशु को मरवा डालने के
लिए षड्यन्त्र रचा। 2फिर वे उसे बाँध कर ले गये और
राज्यपाल पिलातुस को सौंप दिया।

यहूदा की आत्महत्या

(प्रेरितों के काम 1:18-19)

3यीशु को पकड़वाने वाले यहूदा ने जब देखा कि
यीशु को दोषी ठहराया गया है, तो वह बहुत पछताया
और उसने प्रमुख याजकों और बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं को
चाँदी के वे तीस सिक्के लौटा दिये। 4उसने कहा, "मैंने
एक निरपराध व्यक्ति को मार डालने के लिए पकड़वा
कर पाप किया है।"

इस पर उन लोगों ने कहा, "हमें क्या! यह तेरा अपना मामला है।"

5इस पर यहूदा चाँदी के उन सिक्कों को मंदिर के भीतर फेंक कर चला गया और फिर बाहर जाकर अपने को फाँसी लगा ली।

6प्रमुख याजकों ने वे सिक्के उठा लिए और कहा, "हमारे नियम के अनुसार इस धन को मंदिर के कोष में रखना उचित नहीं है क्योंकि इसका इस्तेमाल किसी को मरवाने के लिए किया गया था।" 7इसलिए उन्होंने निर्णय करके उस पैसे से यरुशलेम में बाहर से आने वाले लोगों के मर जाने पर गाड़ने के लिये कुम्हार का खेत मोल लिया। 8इसीलिये आज तक वह खेत 'लहू का खेत' के नाम से जाना जाता है। 9इस प्रकार परमेश्वर का, भविष्यवक्ता यर्मियाह के द्वारा कहा यह वचन पूरा हुआ:

"उन्होंने चाँदी के तीस सिक्के लिए, वह रकम जिसे इस्राएल के लोगों ने उसके लिये देना तय किया था। 10और प्रभु द्वारा मुझे दिये गये आदेश के अनुसार उससे कुम्हार का खेत खरीदा।"*

पिलातुस का यीशु से प्रश्न

(मरकुस 15:2-5; लूका 23:3-5; यूहन्ना 18:33-38)

11इसी बीच यीशु राज्यपाल के सामने पेश हुआ। राज्यपाल ने उससे पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा है?"

यीशु ने कहा, "हाँ, मैं हूँ।"

12दूसरी तरफ जब प्रमुख याजक और बुज़ुर्ग यहूदी नेता उस पर दोष लगा रहे थे तो उसने कोई उत्तर नहींदिया।

13तब पिलातुस ने उससे पूछा, "क्या तू नहीं सुन रहा है कि वे तुझ पर कितने आरोप लगा रहे हैं?"

14किन्तु यीशु ने पिलातुस को किसी भी आरोप का कोई उत्तर नहीं दिया। पिलातुस को इस पर बहुत अचरज हुआ।

यीशु को छोड़ने में पिलातुस असफल

(मरकुस 15:6-15; लूका 23:13-25; यूहन्ना 18:39-19:16)

15फसह पर्व के अवसर पर राज्यपाल का रिवाज़ था कि वह किसी भी एक क़ैदी को, जिसे भीड़ चाहती थी, उनके लिए छोड़ दिया करता था। 16उसी समय बरअब्बा नाम का एक बदनाम क़ैदी वहाँ था।

17सो जब भीड़ आ जुटी तो पिलातुस ने उनसे पूछा, "तुम क्या चाहते हो, मैं तुम्हारे लिये किसे छोड़ूँ, बरअब्बा को या उस यीशु को, जो मसीह कहलाता है?"

18पिलातुस जानता था कि उन्होंने उसे डाह के कारण पकड़वाया है।

19पिलातुस जब न्याय के आसन पर बैठा था तो उसकी पत्नी ने उसके पास एक संदेश भेजा: "उस सीधे सच्चे मनुष्य के साथ कुछ मत कर बैठना। मैंने उसके बारे में एक सपना देखा है जिससे आज सारे दिन मैं बेचैन रही।"

20किन्तु प्रमुख याजकों और बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं ने भीड़ को बहकाया, फुसलाया कि वह पिलातुस से बरअब्बा को छोड़ने की और यीशु को मरवा डालने की माँग करें।

21उत्तर में राज्यपाल ने उनसे पूछा, "मुझ से दोनों कैदियों में से तुम अपने लिये किसे छुड़वाना चाहते हो?"

उन्होनें उत्तर दिया, "बरअब्बा को!"

22तब पितालुस ने उनसे पूछा, "तो मैं, जो मसीह कहलाता है उस यीशु का क्या करूँ?"

वे सब बोले, "उसे क्रूस पर चढ़ा दो!"

23पिलातुस ने पूछा, "क्यों, उसने क्या अपराध किया है?"

किन्तु वे तो और अधिक चिल्लाये, "उसे क्रूस पर चढ़ा दो।"

24पिलातुस ने देखा कि अब कोई लाभ नहीं। बल्कि दंगा भड़कने को है। सो उसने थोड़ा पानी लिया और भीड़ के सामने अपने हाथ धोये, वह बोला, "इस व्यक्ति के खून से मेरा कोई सरोकार नहीं है। यह तुम्हारा मामला है।"

25उत्तर में सब लोगों ने कहा, "इसकी मौत की जवाबदेही हम और हमारे बच्चे स्वीकार करते हैं।"

26तब पिलातुस ने उनके लिए बरअब्बा को छोड़ दिया और यीशु को कोड़े लगवा कर क्रूस पर चढ़ाने के लिए सौंप दिया।

यीशु का उपहास

(मरकुस 15:16-20; यूहन्ना 19:2-3)

27फिर राज्यपाल के सिपाही यीशु को राज्यपाल निवास के भीतर ले गये। वहाँ उसके चारों तरफ सिपाहियों की पूरी पलटन इकट्ठी हो गयी। 28उन्होंने उसके कपड़े उतार दिये और चमकीले लाल रंग के वस्त्र पहना कर 29काँटों से बना एक ताज उसके सिर पर रख दिया। उसके दाहिने हाथ में एक सरकंडा थमा दिया और उसके सामने अपने घुटनों पर झुक कर उसकी हँसी उड़ाते हुए बोले, "यहूदियों का राजा अमर रहे।"

30फिर उन्होंने उसके मुँह पर थूका, छड़ी छीन ली और उसके सिर पर मारने लगे। 31जब वे उसकी हँसी उड़ा चुके तो उसकी पोशाक उतार ली और उसे उसके अपने कपड़े पहना कर क्रूस पर चढ़ाने के लिये ले चले।

"उन्होंने ... खरीदा" जकर्या 11:12-13; यिर्म. 32:6-9

यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना

***(मरकुस** 15:21-32; **लूका** 23:26-43;*
***यूहन्ना** 19:17-27)*

32जब वे बाहर जा ही रहे थे तो उन्हें कुरैन का रहने
वाला शिमौन नाम का एक व्यक्ति मिला। उन्होंने उस
पर दबाव डाला कि वह यीशु का क्रूस उठा कर चले।
33फिर जब वे गुलगुता "जिसका अर्थ है खोपड़ी का
स्थान।" नामक स्थान पर पहुँचे तो **34**उन्होंने यीशु को
पित्त मिली दाखरस पीने को दी। किन्तु जब यीशु ने उसे
चखा तो पीने से मना कर दिया। **35**सो उन्होंने उसे क्रूस
पर चढ़ा दिया और उसके वस्त्र पासा फेंक कर आपस
में बाँट लिये। **36**इसके बाद वे वहाँ बैठ कर उस पर
पहरा देने लगे। **37**उन्होंने उसका अभियोग पत्र लिखकर
उसके सिर पर टाँग दिया, "यह यहूदियों का राजा यीशु
है।" **38**इसी समय उसके साथ दो डाकू भी क्रूस पर
चढ़ाये जा रहे थे एक उसके दाहिने ओर और दूसरा
बायीं ओर। **39**पास से जाते हुए लोग अपना सिर मटकाते
हुए उसका अपमान कर रहे थे। **40**वे कह रहे थे, "अरे
मंदिर को गिरा कर तीन दिन में उसे फिर से बनाने
वाले, अपने को तो बचा। यदि तू परमेश्वर का पुत्र है
तो क्रूस से नीचे उतर आ।"

41ऐसे ही महायाजक धर्मशास्त्रियों और बुज़ुर्ग यहूदी
नेताओं के साथ उसकी यह कहकर हँसी उड़ा रहे थे:
42"दूसरों का उद्धार करने वाला यह अपना उद्धार नहीं
कर सकता! यह इस्राएल का राजा है। यह क्रूस से अभी
नीचे उतरे तो हम इसे मान लें। **43**यह परमेश्वर में
विश्वास करता है। सो यदि परमेश्वर चाहे तो अब इसे
बचा ले। आखिर यह तो कहता भी था 'मैं परमेश्वर का
पुत्र हूँ।'"

44उन लुटेरों ने भी जो उसके साथ क्रूस पर चढ़ाये
गये थे, उसकी ऐसे ही हँसी उड़ाई।

यीशु की मृत्यु

***(मरकुस** 15:33-41; **लूका** 23:44-49;*
***यूहन्ना** 19:28-30)*

45फिर समूची धरती पर दोपहर से तीन बजे तक
अन्धेरा छाया रहा। **46**कोई तीन बजे के आस-पास यीशु
ने ऊँचे स्वर में पुकारा "एली, एली, लमा शबकतनी।"
अर्थात्, "मेरे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों
बिसरा दिया?"

47वहाँ खड़े लोगों में से कुछ यह सुनकर कहने लगे
यह एलिय्याह को पुकार रहा है।

48फिर तुरंत उनमें से एक व्यक्ति दौड़ कर सिरके में
डुबोया हुआ स्पंज एक छड़ी पर टाँग कर लाया और
उसे यीशु को चूसने के लिए दिया। **49**किन्तु दूसरे लोग
कहते रहे कि छोड़ो देखते हैं कि एलिय्याह इसे बचाने
आता है या नहीं?

50यीशु ने फिर एक बार ऊँचे स्वर में पुकार कर
प्राण त्याग दिये। **51**उसी समय मंदिर का परदा ऊपर से
नीचे तक फट कर दो टूकड़े हो गया। धरती काँप उठी।
चट्टानें फट पड़ीं।

52यहाँ तक कि कब्रें खुल गयीं और परमेश्वर के
मरे हुए बंदों के बहुत से शरीर जी उठे। **53**वे कब्रों से
निकल आये और यीशु के जी उठने के बाद पवित्र
नगर में जाकर बहुतों को दिखाई दिये।

54रोमी सेना नायक और यीशु पर पहरा दे रहे लोग
भूचाल और वैसी ही दूसरी घटनाओं को देख कर डर
गये थे। वे बोले, "यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र
था।"

55वहाँ बहुत सी स्त्रियाँ खड़ी थीं। जो दूर से देख रही
थीं। वे यीशु की देखभाल के लिए गलील से उसके पीछे
आ रही थीं। **56**उनमें मरियम मगदलीनी, याकूब और
योसेस की माता मरियम तथा जब्दी के बेटों की माँ थी।

यीशु का दफ़न

***(मरकुस** 15:42-47; **लूका** 23:50-56;*
***यूहन्ना** 19:38-42)*

57साँझ के समय अरिमतियाह नगर से यूसुफ़ नाम
का एक धनवान आया। वह खुद भी यीशु का अनुयायी
हो गया था। यूसुफ पिलातुस के पास गया और उससे
यीशु का शव माँगा। **58**तब पिलातुस ने आज्ञा दी कि
शव उसे दे दिया जाये। **59**यूसुफ ने शव ले लिया और
उसे एक नयी चादर में लपेट कर **60**अपनी निजी नयी
कब्र में रख दिया जिसे उसने चट्टान में काट कर
बनवाया था। फिर उसने चट्टान के दरवाजे पर एक
बड़ा सा पत्थर लुढ़काया और चला गया। **61**मरियम
मगदलीनी और दूसरी स्त्री मरियम वहाँ कब्र के सामने
बैठी थीं।

यीशु की कब्र पर पहरा

62अगले दिन जब शुक्रवार बीत गया तो प्रमुख याजक
और फ़रीसी पिलातुस से मिले। **63**उन्होंने कहा, "महोदय
हमें याद है कि उस छली ने, जब वह जीवित था, कहा
था कि तीसरे दिन मैं फिर जी उठूँगा। **64**तो आज्ञा
दीजिये कि तीसरे दिन तक कब्र पर चौकसी रखी
जाये। जिससे ऐसा न हो कि उसके शिष्य आकर उसका
शव चुरा ले जायें और लोगों से कहें वह मरे हुओं में से
जी उठा। यह दूसरा छलावा पहले छलावे से भी बुरा
होगा।"

65पिलातुस ने उनसे कहा, "तुम पहरे के लिये सिपाही
ले सकते हो। जाओ जैसी चौकसी कर सकते हो, करो।"
66तब वे चले गये और उस पत्थर पर मुहर लगा कर
और पहरेदारों को वहाँ बैठा कर कब्र को सुरक्षित कर
दिया।

यीशु का फिर से जी उठना
(मरकुस 16:1-8; लूका 24:1-12;
यूहन्ना 20:1-10)

28 सब्त के बाद जब रविवार की सुबह पौ फट
रही थी, मरियम मगदलीनी और दूसरी स्त्री
मरियम कब्र की जाँच करने आईं।
2क्योंकि स्वर्ग से प्रभु का एक स्वर्गदूत वहाँ उतरा
था, इसलिए उस समय एक बहुत बड़ा भूचाल आया।
स्वर्गदूत ने वहाँ आकर पत्थर को लुढ़का दिया और
उस पर बैठ गया। 3उसका रूप आकाश की बिजली
की तरह चमचमा रहा था और उसके वस्त्र बर्फ़ के
जैसे उजले थे। 4वे सिपाही जो कब्र का पहरा दे रहे थे,
डर के मारे काँपने लगे और ऐसे हो गये जैसे मर गये
हों।
5तब स्वर्गदूत बोला और उसने उन स्त्रियों से कहा,
"डरो मत, मैं जानता हूँ कि तुम यीशु को खोज रही हो
जिसे क्रूस पर चढ़ा दिया गया था। 6वह यहाँ नहीं है।
जैसा कि उसने कहा था, वह मौत के बाद फिर जिला
दिया गया है। आओ, उस स्थान को देखो, जहाँ वह लेटा
था। 7और फिर तुरंत जाओ और उसके शिष्यों से
कहो, 'वह मरे हुओं में से जिला दिया गया है और अब
वह तुमसे पहले गलील को जा रहा है तुम उसे वहीं
देखोगे' जो मैंने तुमसे कहा है, उसे याद रखो।"
8उन स्त्रियों ने तुरंत ही क़ब्र को छोड़ दिया। वे भय
और आनन्द से भर उठीं थीं। फिर यीशु के शिष्यों को
यह बताने के लिये वे दौड़ पड़ीं। 9अचानक यीशु उनसे
मिला और बोला, "अरे तुम!" वे उसके पास आयीं,
उन्होंने उसके चरण पकड़ लिये और उसकी उपासना
की। 10तब यीशु ने उनसे कहा, "डरो मत, मेरे बंधुओं
के पास जाओ, और उनसे कहो कि वे गलील के लिए
रवाना हो जायें, वहीं वे मुझे देखेंगे"

पहरेदारों द्वारा यहूदी नेताओं को घटना की सूचना

11अभी वे स्त्रियाँ अपने रास्ते में ही थीं कि कुछ
सिपाही जो पहरेदारों में थे, नगर में गए और जो कुछ
घटा था, उस सब की सूचना प्रमुख याजकों को जा
सुनाई। 12सो उन्होंने बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं से मिल कर
एक योजना बनायी। उन्होंने सिपाहियों को बहुत सा धन
देकर 13कहा कि वे लोगों से कहें कि यीशु के शिष्य
रात को आये और जब हम सो रहे थे उसकी लाश को
चुरा ले गये। 14यदि तुम्हारी यह बात राज्यपाल तक
पहुँचती है तो हम उसे समझा लेंगे और तुम पर कोई
आँच नहीं आने देंगे।
15पहरेदारों ने धन लेकर वैसा ही किया, जैसा उन्हें
बताया गया था। और यह बात यहूदियों में आज तक
इसी रूप में फैली हुई है।

यीशु की अपने शिष्यों से बातचीत
(मरकुस 16:14-18; लूका 24:36-49;
यूहन्ना 20:19-23; प्रेरितों के काम 1:6-8)

16फिर ग्यारहों शिष्य गलील में उस पहाड़ी पर पहुँचे
जहाँ जाने को उनसे यीशु ने कहा था। 17जब उन्होंने
यीशु को देखा तो उसकी उपासना की। यद्यपि कुछ के
मन में संदेह था। 18फिर यीशु ने उनके पास जाकर
कहा, "स्वर्ग में और पृथ्वी पर सभी अधिकार मुझे सौंपे
गये हैं। 19सो, जाओ और सभी देशों के लोगों को मेरा
अनुयायी बनाओ। तुम्हें यह काम परम पिता के नाम में,
पुत्र के नाम में और पवित्र आत्मा के नाम में उन्हें
बपतिस्मा दे कर पूरा करना है। 20वे सभी आदेश जो
मैंने तुम्हें दिये हैं, उन्हें उन पर चलना सिखाओ। और
याद रखो इस सृष्टि के अंत तक मैं सदा तुम्हारे साथ
रहूँगा।"

मरकुस

यीशु के आने की तैयारी
(मत्ती 3:1-12; लूका 3:1-9, 15-17;
यूहन्ना 1:19-28)

1 यह परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का
प्रारम्भ है। 2भविष्यवक्ता यशायाह की पुस्तक में
लिखा है कि:

"सुन! मैं अपने दूत को तुझसे पहले भेज रहा हूँ। वह
तेरे लिये मार्ग तैयार करेगा।" *मलाकी 3:1*

3"जंगल में किसी पुकारने वाले का शब्द सुनाई दे
रहा है: 'प्रभु के लिये मार्ग तैयार करो। और उसके
लिये राहें सीधी बनाओ।'" *यशायाह 40:3*

4यूहन्ना लोगों को जंगल में बपतिस्मा देता आया था।
उसने लोगों से बपतिस्मा लेने को कहा कि वे अपने
मन फिराव को दिखा सकें और उनके पापों की क्षमा
हो। 5फिर समूचे यहूदिया देश के और यरुशलेम के
लोग उसके पास गये और उस ने यर्दन नदी में उन्हें
बपतिस्मा दिया। क्योंकि उन्होंने अपने पाप मान लिये
थे। 6यूहन्ना ऊँट के बालों के बने वस्त्र पहनता था और
कमर पर चमड़े की पेटी बाँधे रहता था। वह टिड्डियाँ
और जंगली शहद खाया करता था। 7वह इस बात का
प्रचार करता था: "मेरे बाद मुझसे अधिक शक्तिशाली
एक व्यक्ति आ रहा है। मैं इस योग्य भी नहीं हूँ कि झुक
कर उसके जूतों के बन्ध तक खोल सकूँ। 8मैं तुम्हें जल
से बपतिस्मा देता हूँ किन्तु वह पवित्र-आत्मा से तुम्हें
बपतिस्मा देगा।"

यीशु का बपतिस्मा और उसकी परीक्षा
(मत्ती 3:13-17; लूका 3:21-22)

9उन दिनों ऐसा हुआ कि यीशु नासरत से गलील
आया और यर्दन नदी में उसने यूहन्ना से बपतिस्मा
लिया। 10जैसे ही वह जल से बाहर आया उसने आकाश
को खुले हुए देखा। और देखा कि एक कबूतर के रूप
में आत्मा उस पर उतर रही है। 11फिर आकाशवाणी
हुई: "तू मेरा पुत्र है, जिसे मैं प्यार करता हूँ। मैं तुझसे
बहुत प्रसन्न हूँ।" 12फिर आत्मा ने उसे तत्काल बियाबान
जंगल में भेज दिया। 13जहाँ चालीस दिन तक शैतान
उसकी परीक्षा लेता रहा। वह जंगली जानवरों के साथ
रहा और स्वर्गदूत उसकी सेवा करते रहे।

यीशु द्वारा कुछ शिष्यों का चयन
(मत्ती 4:12-22; लूका 4:14-15; 5:1-11)

14युहन्ना को बंदीगृह में डाले जाने के बाद यीशु
गलील आया। और परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार
का प्रचार करने लगा। 15उसने कहा, "समय पूरा हो
चुका है। परमेश्वर का राज्य आ रहा है। मन फिराओ
और सुसमाचार में विश्वास करो।"
16जब यीशु गलील झील के किनारे से हो कर जा
रहा था उसने शमौन और शमौन के भाई अन्द्रियास
को देखा। क्योंकि वे मछुए थे इसलिए झील में जाल
डाल रहे थे। 17यीशु ने उनसे कहा, "मेरे पीछे आओ,
और मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुए बनाऊँगा।" 18उन्होंने
तुरंत अपने जाल छोड़ दिये और उसके पीछे चल पड़े।
19फिर थोड़ा आगे बढ़ कर यीशु ने जब्दी के बेटे याकूब
और उसके भाई युहन्ना को देखा। वे अपनी नाव में
जालों की मरम्मत कर रहे थे। 20उसने उन्हें तुरंत
बुलाया। सो वे अपने पिता जब्दी को मज़दूरों के साथ
नाव में छोड़ कर उसके पीछे चल पड़े।

दुष्टात्मा के चंगुल से छुटकारा
(लूका 4:31-37)

21और कफरनहूम पहुँचे। फिर अगले सब्त के दिन
यीशु प्रार्थनासभा में गया और लोगों को उपदेश देने
लगा। 22उसके उपदेशों पर लोग चकित हुए। क्योंकि
वह उन्हें किसी शास्त्र-ज्ञाता की तरह नहीं बल्कि एक
अधिकारी की तरह उपदेश दे रहा था।
23उनकी यहूदी प्रार्थना सभा में संयोग से एक ऐसा
व्यक्ति भी था जिसमें कोई दुष्टात्मा समायी थी। वह
चिल्ला कर बोला, 24"नासरत के यीशु! तुझे हम से क्या
चाहिये? क्या तू हमारा नाश करने आया है? मैं जानता
हूँ तू कौन है, तू परमेश्वर का पवित्र जन है!"
25इस पर यीशु ने झिड़कते हुए उससे कहा, "चुप
रह! और इसमें से बाहर निकल!" 26दुष्टात्मा ने उस
व्यक्ति को झिंझोड़ा और वह ज़ोर से चिल्लाती हुई उसमें
से निकल गयी।

27हर व्यक्ति चकित हो उठा। इतना चकित, कि सब
आपस में एक दूसरे से पूछने लगे, "यह क्या है? अधिकार
के साथ दिया गया एक नया उपदेश! यह दुष्टात्माओं
को भी आज्ञा देता है और वे उसे मानती हैं।" 28इस
तरह गलील और उसके आसपास हर कहीं यीशु का
नाम जल्दी ही फैल गया।

यीशु द्वारा अनेक व्यक्तियों का चंगा किया जाना
(*मत्ती 8:14-17; लूका 4:38-41*)

29फिर वे प्रार्थना सभागार से निकल कर याकूब
और यूहन्ना के साथ सीधे शमौन और अन्द्रियास के घर
पहुँचे। 30शमौन की सास ज्वर से पीड़ित थी, इसलिए
उन्होंने यीशु को तत्काल उसके बारे में बताया। 31यीशु
उसके पास गया और हाथ पकड़ कर उसे उठाया।
तुरन्त उसका ज्वर उतर गया और वह उनकी सेवा
करने लगी।

32सूरज डूबने के बाद जब शाम हुई तो वहाँ के लोग
सभी रोगियों और दुष्टात्माओं से पीड़ित लोगों को उसके
पास लाये। 33सारा नगर उसके द्वार पर उमड़ पड़ा।
34उसने तरह तरह के रोगों से पीड़ित बहुत से लोगों को
चंगा किया और बहुत से लोगों को दुष्टात्माओं से छुटकारा
दिलाया। क्योंकि वे उसे जानती थीं, इसलिये उसने उन्हें
बोलने नहीं दिया।

लोगों को सुसमाचार सुनाने की तैयारी
(*लूका 4:42-44*)

35अँधेरा रहते, बड़ी सुबह वह घर छोड़ कर किसी
एकांत स्थान पर चला गया जहाँ उसने प्रार्थना की।
36किन्तु शमौन और उसके साथी उसे ढूँढने निकले
37और उसे पा कर बोले, "हर व्यक्ति तेरी खोज में है!"

38इस पर यीशु ने उनसे कहा, "हमें दूसरे नगरों में
जाना ही चाहिये ताकि वहाँ भी उपदेश दिया जा सके
क्योंकि मैं इसी के लिए आया हूँ।" 39इस तरह वह
गलील में सब कहीं उनकी प्रार्थना सभाओं में उपदेश
देता और दुष्टात्माओं को निकालता गया।

कोढ़ से छुटकारा
(*मत्ती 8:1-4; लूका 5:12-16*)

40फिर एक कोढ़ी उसके पास आया। उसने उसके
सामने झुक कर उससे विनती की और कहा, "यदि तू
चाहे, तो तू मुझे ठीक कर सकता है।"

41उसे उस पर दया आयी और उसने अपना हाथ
फैला कर उसे छुआ और कहा, "मैं चाहता हूँ कि तुम
अच्छे हो जाओ!" 42और उसे तत्काल कोढ़ से छुटकारा
मिल गया। वह पूरी तरह शुद्ध हो गया।

43यीशु ने उसे कड़ी चेतावनी दी और तुरन्त भेज
दिया। 44यीशु ने उससे कहा, "देख इसके बारे में तू
किसी को कुछ नहीं बताना। किन्तु याजक के पास जा
और उसे अपने आप को दिखा। और मूसा के नियम
के अनुसार अपने ठीक होने की भेंट अर्पित कर ताकि
हर किसी को तेरे ठीक होने की साक्षी मिले।" 45परन्तु
वह बाहर जाकर खुले तौर पर इस बारे में लोगों से
बातचीत करके इसका प्रचार करने लगा। इससे यीशु
फिर कभी नगर में खुले तौर पर नहीं जा सका। वह
एकांत स्थानों में रहने लगा किन्तु लोग हर कहीं से
उसके पास आते रहे।

लकवे के मारे का चंगा किया जाना
(*मत्ती 9:1-8; लूका 5:17-26*)

2 कुछ दिनों बाद यीशु वापस कफरनहूम आया तो
यह समाचार फैल गया कि वह घर में है। 2फिर
वहाँ इतने लोग इकट्ठे हुए कि दरवाज़े के बाहर भी तिल
धरने तक को जगह न बची। जब यीशु लोगों को
उपदेश दे रहा था 3तो कुछ लोग एक लकवे के मारे
को चार आदमियों से उठवाकर वहाँ लाये। 4किन्तु भीड़
के कारण वे उसे यीशु के पास नहीं ले जा सके।
इसलिये जहाँ यीशु था उसके ऊपर की छत का कुछ
भाग उन्होंने हटाया और जब वे खोद कर छत में एक
खुला सूराख बना चुके तो उन्होंने जिस बिस्तर पर
लकवे का मारा लेटा हुआ था उसे नीचे लटका दिया।
5उनके इतने गहरे विश्वास को देख कर यीशु ने
लकवे के मारे से कहा, "हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए।"

6उस समय वहाँ कुछ धर्मशास्त्री भी बैठे थे। वे अपने
अपने मन में सोच रहे थे। 7"यह व्यक्ति इस तरह बात
क्यों करता है? यह तो परमेश्वर का अपमान करता
है। परमेश्वर के सिवा, और कौन पापों को क्षमा कर
सकता है?"

8यीशु ने अपनी आत्मा में तुरंत यह जान लिया कि वे
मन ही मन क्या सोच रहे हैं। वह उनसे बोला, "तुम
अपने मन में ये बातें क्यों सोच रहे हो? 9सरल क्या है:
इस लकवे के मारे से यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए
या यह कहना कि उठ, अपना बिस्तर उठा और चल
दे? 10किन्तु मैं तुम्हें प्रमाणित करूँगा कि इस पृथ्वी पर
मनुष्य के पुत्र को यह अधिकार है कि वह पापों को
क्षमा करे।" फिर यीशु ने उस लकवे के मारे से कहा,
11"मैं तुझसे कहता हूँ, खड़ा हो, अपना बिस्तर उठा
और अपने घर जा।" 12सो वह खड़ा हुआ, तुरंत अपना
बिस्तर उठाया और उन सब के देखते देखते ही बाहर
चला गया। यह देखकर वे अचरज में पड़ गये। उन्होंने
परमेश्वर की प्रशंसा की और बोले, "हमने ऐसी बातें
कभी नहीं देखीं!"

13एक बार फिर यीशु झील के किनारे गया तो
समूची भीड़ उसके पीछे हो ली। यीशु ने उन्हें उपदेश
दिया। 14चलते हुए उसने हलफई के बेटे लेवी को चुंगी

की चौकी पर बैठे देख कर उससे कहा, "मेरे पीछे आ"
सो लेवी खड़ा हुआ और उसके पीछे हो लिया।
15इसके बाद जब यीशु अपने चेलों या शिष्यों समेत
उसके घर भोजन कर रहा था तो बहुत से कर वसूलने
वाले और पापी लोग भी उसके साथ भोजन कर रहे थे।
इनमें बहुत से वे लोग थे जो उसके पीछे पीछे चले आये
थे। 16जब फ़रीसियों के कुछ धर्मशास्त्रियों ने यह देखा
कि यीशु पापियों और कर वसूलने वालों के साथ
भोजन कर रहा है तो उन्होंने उसके अनुयायिओं से
कहा, "यीशु कर वसूलने वालों और पापियों के साथ
भोजन क्यों करता है?"
17यीशु ने यह सुनकर उनसे कहा, "चंगे-भले लोगों
को वैद्य की आवश्यकता नहीं होती, रोगियों को ही वैद्य
की आवश्यकता होती है। मैं धर्मियों को नहीं बल्कि
पापियों को बुलाने आया हूँ।"

यीशु अन्य धर्मगुरुओं से भिन्न है

(मत्ती 9:14-17; लूका 5:33-39)

18युहन्ना के शिष्य और फरीसियों के शिष्य उपवास
किया करते थे। कुछ लोग यीशु के पास आये और
उससे पूछने लगे, "यूहन्ना और फ़रीसियों के चेले उपवास
क्यों रखते हैं? और तेरे शिष्य उपवास क्यों नहीं रखते?"
19इस पर यीशु ने उनसे कहा, "निश्चय ही बराती
जब तक दूल्हे के साथ हैं, उनसे उपवास रखने की
उम्मीद नहीं की जाती। जब तक दूल्हा उनके साथ है,
वे उपवास नहीं रखते। 20किन्तु वे दिन आयेंगे जब
दूल्हा उनसे अलग कर दिया जायेगा और तब, उस
समय, वे उपवास करेंगे।
21"कोई भी किसी पुराने वस्त्र में अनसिकुड़े कोरे
कपड़े का पैबन्द नहीं लगाता और यदि लगाता है तो
कोरे कपड़े का पैबन्द पुराने कपड़े को भी ले बैठता है
और फटे कपड़े पहले से भी अधिक फट जायेगा 22और
इसी तरह पुरानी मशक में कोई भी नयी दाखरस नहीं
भरता और यदि कोई ऐसा करे तो नयी दाखरस पुरानी
मशक को फाड़ देगी और मशक के साथ साथ दाखरस
भी बर्बाद हो जायेगी। इसीलिये नयी दाखरस नयी मशकों
में ही भरी जाती है।"

यहूदियों द्वारा यीशु और उसके शिष्यों की आलोचना

(मत्ती 12:1-8; लूका 6:1-5)

23ऐसा हुआ कि सब्त के दिन यीशु खेतों से होता
हुआ जा रहा था। जाते जाते उसके शिष्य खेतों से
अनाज की बालें तोड़ने लगे। 24इस पर फरीसी यीशु से
कहने लगे, "देख सब्त के दिन वे ऐसा क्यों कर रहे हैं
जो उचित नही है?"
25इस पर यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुमने कभी
दाऊद के विषय में नहीं पढ़ा कि उसने क्या किया था
जब वह और उसके साथी संकट में थे और उन्हें भूख
लगी थी? 26क्या तुमने नहीं पढ़ा कि, जब अबियातार
महा याजक था तब, वह परमेश्वर के मन्दिर में कैसे
गया और परमेश्वर को भेंट में चढ़ाई रोटियाँ उसने
कैसे खाईं (जिनका खाना महायाजक को छोड़ कर
किसी को भी उचित नहीं है) कुछ रोटियाँ उसने उनको
भी दी थीं जो उसके साथ थे?"
27यीशु ने उनसे कहा, "सब्त मनुष्य के लिये बनाया
गया है, न कि मनुष्य सब्त के लिये। 28इसलिये मनुष्य
का पुत्र सब्त का भी प्रभु है।"

सूखे हाथ वाले को चंगा करना

(मत्ती 12:9-14; लूका 6:6-11)

3 एक बार फिर यीशु यहूदी प्रार्थनालय में गया। वहाँ
एक व्यक्ति था जिसका एक हाथ सूख चुका था।
2कुछ लोग घात लगाये थे कि वह उसे ठीक करता है
कि नहीं, ताकि उन्हें उस पर दोष लगाने का कोई
कारण मिल जाये। 3यीशु ने सूखे हाथ वाले व्यक्ति से
कहा, "लोगों के सामने खड़ा हो जा।"
4और लोगों से पूछ, "सब्त के दिन किसी का भला
करना उचित है या किसी को हानि पहुँचाना? किसी
का जीवन बचाना ठीक है या किसी को मारना?"
किन्तु वे सब चुप रहे।
5फिर यीशु ने क्रोध में भर कर चारों ओर देखा और
उनके मन की कठोरता से वह बहुत दुखी हुआ। फिर
उसने उस मनुष्य से कहा, "अपना हाथ आगे बढ़ा।"
उसने हाथ बढ़ाया, उसका हाथ पहले जैसा ठीक हो
गया। 6तब फरीसी वहाँ से चले गये और हेरोदियों के
साथ मिल कर यीशु के विरुद्ध षड्यंत्र रचने लगे कि वे
उसकी हत्या कैसे कर सकते हैं!

बहुतों का यीशु के पीछे हो लेना

7यीशु अपने शिष्यों के साथ गलील झील पर चला
गया। उसके पीछे एक बहुत बड़ी भीड़ भी हो ली जिसमें
गलील, 8यहूदिया, यरुशलेम, इदूमिया और यर्दन नदी
के पार के तथा सूर और सैदा के लोग भी थे। लोगों की
यह भीड़ उन कामों के बारे में सुनकर उसके पास
आयी थी जिन्हें वह करता था। 9भीड़ के कारण उसने
अपने शिष्यों से कहा कि वे उसके लिये एक छोटी नाव
तैयार रखें ताकि भीड़ उसे दबा न ले। 10यीशु ने बहुत से
लोगों को चंगा किया था इसलिये बहुत से वे लोग जो
रोगी थे, उसे छूने के लिये भीड़ में ढकेलते रास्ता बनाते
उमड़े चले आ रहे थे। 11जब कभी दुष्टात्माएँ यीशु को
देखतीं वे उसके सामने नीचे गिर पड़तीं और चिल्ला
कर कहतीं "तू परमेश्वर का पुत्र है!"
12किन्तु वह उन्हें चेतावनी देता कि वे सावधान रहें
और इसका प्रचार न करें।

यीशु द्वारा अपने बारह प्रेरितों का चयन
(मत्ती 10:1-4; लूका 6:12-16)

13फिर यीशु एक पहाड़ पर चला गया और उसने
जिनको वह चाहता था, अपने पास बुलाया। वे उसके
पास आये। 14जिनमें से उसने बारह को चुना और उन्हें
प्रेरित की पदवी दी। उसने उन्हें चुना ताकि वे उसके
साथ रहें और वह उन्हें उपदेश प्रचार के लिये भेजे
15और वे दुष्टात्माओं को खदेड़ बाहर निकालने का
अधिकार रखें। 16इस प्रकार उसने बारह पुरुषों की
नियुक्ति की। ये थे–शमौन (जिसे उसने पतरस नाम
दिया); 17जब्दी का पुत्र याकूब और याकूब का भाई
यूहन्ना (जिनका नाम उसने बूअनर्गिस रखा, जिसका
अर्थ है "गर्जन का पुत्र"); 18अंद्रियास, फिलिप्पुस,
बरतुलमै, मत्ती, थोमा, हलफई का पुत्र याकूब, तद्दी
और शमौन जिलौती या कनानी 19तथा यहूदा
इस्करियोती जिसने आगे चल कर यीशु को धोखे से
पकड़वाया था।

यहूदियों का कथन: यीशु में शैतान का वास है
(मत्ती 12:22-32; लूका 11:14-23;12:10)

20तब वे सब घर चले गये। जहाँ एक बार फिर इतनी
बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी कि यीशु और उसके शिष्य
खाना तक नहीं खा सके। 21जब उसके परिवार के
लोगों ने यह सुना तो वे उसे लेने चल दिये क्योंकि लोग
कह रहे थे कि उसका चित्त ठिकाने नहीं है।

22यरुशलेम से आये धर्मशास्त्री कहते थे, "उसमें
बालज़ेबुल यानी शैतान समाया है। वह दुष्टात्माओं के
सरदार की शक्ति के कारण ही दुष्टात्माओं को बाहर
निकालता है।"

23यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाया और दुष्टान्तों का
प्रयोग करते हुए उनसे कहने लगा, "शैतान, शैतान को
कैसे निकाल सकता है? 24यदि किसी राज्य में अपने ही
विरुद्ध फूट पड़ जाये तो वह राज्य स्थिर नहीं रह
सकेगा। 25और यदि किसी घर में अपने ही भीतर फूट
पड़ जाये तो वह घर बच नहीं पायेगा। 26इसलिए यदि
शैतान स्वयं अपना विरोध करता है और फूट डालता है
तो वह बना नहीं रह सकेगा और उसका अंत हो
जायेगा। 27किसी शक्तिशाली के मकान में घुस कर
उसके माल–असबाब को लूट कर निश्चय ही कोई
तब तक नहीं ले जा सकता जब तक सबसे पहले वह
उस शक्तिशाली व्यक्ति को बाँध न दे। ऐसा करके ही
वह उसके घर को लूट सकता है। 28मैं तुमसे सत्य
कहता हूँ, लोगों को हर बात की क्षमा मिल सकती है,
उनके पाप और जो निन्दा–बुरा भला कहना–उन्होंने
किये हैं, वे भी क्षमा किये जा सकते हैं। 29किन्तु पवित्र
आत्मा को जो कोई भी अपमानित करेगा, उसे क्षमा
कभी नहीं मिलेगी। वह अनन्त पाप का भागी है।"

30यीशु ने यह इसलिये कहा था कि कुछ लोग कह
रहे थे इसमें कोई दुष्ट आत्मा समाई है।

यीशु के अनुयायी ही उसका सच्चा परिवार
(मत्ती 12:46-50; लूका 8:19-21)

31तभी उसकी माँ और भाई वहाँ आये और बाहर
खड़े हो कर उसे भीतर से बुलवाया। 32यीशु के चारों
ओर भीड़ बैठी थी। उन्होंने उससे कहा, "देख तेरी
माता, तेरे भाई और तेरी बहनें तुझे बाहर बुला रहे हैं।"

33यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मेरी माँ और मेरे भाई
कौन हैं?" 34उसे घेर कर चारों ओर बैठे लोगों पर
उसने दृष्टि डाली और कहा, "ये है मेरी माँ और मेरे
भाई! 35जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वही
मेरा भाई, बहन और माँ है।"

बीज बोने का दृष्टान्त
(मत्ती 13:1-9; लूका 8:4-8)

4 उसने झील के किनारे उपदेश देना फिर शुरू
कर दिया। वहाँ उसके चारों ओर बड़ी भीड़ इकट्ठी
हो गयी। इसलिये वह झील में खड़ी एक नाव पर जा
बैठा। और सभी लोग झील के किनारे धरती पर खड़े
थे। 2उसने दृष्टांत देकर उन्हें बहुत सी बातें सिखाई।
अपने उपदेश में उसने कहा, 3"सुनो! एक बार एक
किसान बीज बोने के लिए निकला। 4तब ऐसा हुआ कि
जब उसने बीज बोये तो कुछ मार्ग के किनारे गिरे। पक्षी
आये और उन्हे चुग गए। 5दूसरे कुछ बीज पथरीली
धरती पर गिरे जहाँ बहुत मिट्टी नहीं थी। वे गहरी
मिट्टी न होने के कारण जल्दी ही उग आये 6और जब
सूरज उगा तो वे झुलस गये और जड़ न पकड़ पाने के
कारण मुरझा गये। 7कुछ और बीज काँटों में जा गिरे।
काटें बड़े हुए और उन्होंने उन्हें दबा लिया जिससे उनमें
दाने नहीं पड़े। 8कुछ बीज अच्छी धरती पर गिरे। वे
उगे, उनकी बढ़वार हुई और उन्होंने अनाज पैदा किया।
तीस गुणी, साठ गुणी और यहाँ तक कि सौ गुणी अधिक
फसल उतरी।"

9फिर उसने कहा, "जिसके पास सुनने को कान हैं,
वह सुने!"

यीशु का कथन: वह दृष्टान्तों का प्रयोग क्यों करता है
(मत्ती 13:10-17; लूका 8:9-10)

10फिर जब वह अकेला था तो उसके बारह शिष्यों
समेत जो लोग उसके आसपास थे, उन्होंने उससे दृष्टान्तों
के बारे में पूछा।

11यीशु ने उन्हें बताया, "तुम्हें तो परमेश्वर के राज्य
का भेद दे दिया गया है, किन्तु उनके लिये जो बाहर के
हैं, सब बातें दृष्टान्तों में होती हैं:

12‘ताकि वे देखें और देखते ही रहें, पर उन्हें कुछ
सूझे नहीं, सुनें और सुनते ही रहें पर कुछ समझें नहीं।
ऐसा न हो जाए कि वे फिरें और क्षमा किए जाएँ।’”
यशायाह 6:9–10

बीज बोने के दृष्टान्त की व्याख्या
(*मत्ती 13:18-23; लूका 8:11-15*)

13उसने उनसे कहा, “यदि तुम इस दृष्टान्त को नहीं
समझते तो किसी भी और दृष्टान्त को कैसे समझोगे?
14किसान जो बोता है, वह वचन है। 15कुछ लोग किनारे
का वह मार्ग हैं जहाँ वचन बोया जाता है। जब वे वचन
को सुनते हैं तो तत्काल शैतान आता है और जो वचन
रूपी बीज उनमें बोया गया है, उसे उठा ले जाता है
16और कुछ लोग ऐसे हैं जैसे पथरीली धरती में बोया
बीज। जब वे वचन को सुनते हैं तो उसे तुरन्त आनन्द
के साथ अपना लेते हैं 17किन्तु उनके भीतर कोई जड़
नहीं होती, इसलिए वे कुछ ही समय ठहर पाते हैं और
बाद में जब वचन के कारण उन पर विपत्ति आती है
और उन्हें यातनाएँ दी जाती हैं, तो वे तत्काल अपना
विश्वास खो बैठते हैं। 18और दूसरे लोग ऐसे हैं जैसे
काँटों में बोये गये बीज। ये वे हैं जो वचन को सुनते हैं
19किन्तु इस जीवन की चिंताएँ, धन दौलत का लालच
और दूसरी वस्तुओं को पाने की इच्छा उनमें आती है
और वचन को दबा लेती है। जिससे उस पर फल नहीं
लग पाता।

20और कुछ लोग उस बीज के समान हैं जो अच्छी
धरती पर बोया गया है। ये वे हैं जो वचन को सुनते
हैं और ग्रहण करते हैं। इन पर फल लगता है कहीं
तीस गुणा, कहीं साठ गुणा तो कहीं सौ गुणे से भी
अधिक।”

जो तुम्हारे पास है, उसका उपयोग करो
(*लूका 8:16-18*)

21फिर उसने उनसे कहा, “क्या किसी दिये को कभी
इसलिये लाया जाता है कि उसे किसी बर्तन के या
बिस्तर के नीचे रख दिया जाये? क्या इसे दीवट के
ऊपर रखने के लिये नहीं लाया जाता? 22क्योंकि कुछ
भी ऐसा गुप्त नहीं है जो प्रकट नहीं होगा और कोई
रहस्य ऐसा नहीं है जो प्रकाश में नहीं आयेगा। 23यदि
किसी के पास कान हैं तो वह सुने!”

24फिर उसने उनसे कहा, “जो कुछ तुम सुनते हो
उस पर ध्यानपूर्वक विचार करो, जिस नाप से तुम
दूसरों को नापते हो, उसी नाप से तुम भी नापे जाओगे।
बल्कि तुम्हारे लिये उसमें कुछ और भी जोड़ दिया
जायेगा। 25जिसके पास है उसे और भी दिया जायेगा
और जिस किसी के पास नहीं है, उसके पास जो कुछ
है, वह भी ले लिया जायेगा।”

बीज का दृष्टान्त

26फिर उसने कहा, “परमेश्वर का राज्य ऐसा है
जैसे कोई व्यक्ति खेत में बीज फैलाये। 27रात को
सोये और दिन को जागे और फिर बीज में अंकुर
निकलें, वे बढ़ें और पता ही न चले कि यह सब कैसे
हो रहा है। 28धरती अपने आप अनाज उपजाती है।
पहले अंकुर फिर बाल और फिर बालों में भरपूर
अनाज। 29जब अनाज पक जाता है तो वह तुरन्त उसे
हंसिये से काटता है क्योंकि फसल काटने का समय आ
जाता है।”

राई के दाने का दृष्टान्त
(*मत्ती 13:31-32, 34-35; लूका 13:18-19*)

30फिर उसने कहा, “हम कैसे बतायें कि परमेश्वर
का राज्य कैसा है? उसकी व्याख्या करने के लिये हम
किस उदाहरण का प्रयोग करें? 31वह राई के दाने जैसा
है जो जब धरती में बोया जाता है तो बीजों में सबसे छोटा
होता है। 32किन्तु जब वह रोप दिया जाता है तो बढ़ कर
भूमि के सभी पौधों से बड़ा हो जाता है। उसकी शाखाएँ
इतनी बड़ी हो जाती हैं कि हवा में उड़ती चिड़ियाएँ
उसकी छाया में घोंसला बना सकती हैं।”

33ऐसे ही और बहुत से दृष्टान्त देकर वह उन्हें वचन
सुनाया करता था। वह उन्हें, जितना वे समझ सकते थे,
बताता था। 34बिना किसी दृष्टान्त का प्रयोग किये वह
उनसे कुछ भी नहीं कहता था। किन्तु जब अपने शिष्यों
के साथ वह अकेला होता तो सब कुछ का अर्थ बता
कर उन्हें समझाता।

बवंडर को शांत करना
(*मत्ती 8:23-27; लूका 8:22-25*)

35उस दिन जब शाम हुई, यीशु ने उनसे कहा, “चलो,
उस पार चलें।”

36इसलिये, वे भीड़ को छोड़ कर, जैसे वह था वैसा ही
उसे नाव पर साथ ले चले। उसके साथ और भी नावें
थीं। 37एक तेज बवंडर उठा। लहरें नाव पर पछाड़ें मार
रही थीं। नाव पानी से भर जाने को थी। 38किन्तु यीशु
नाव के पिछले भाग में तकिया लगाये सो रहा था।
उन्होंने उसे जगाया और उससे कहा, “हे गुरु, क्या तुझे
ध्यान नहीं है कि हम डूब रहे हैं?”

39यीशु खड़ा हुआ। उसने हवा को डाँटा और लहरों
से कहा, “शान्त हो जाओ! थम जाओ!” तभी बवंडर
थम गया और चारों तरफ असीम शांति छा गयी।

40फिर यीशु ने उनसे कहा, “तुम डरते क्यों हो? क्या
तुम्हें अब तक विश्वास नहीं है?”

41किन्तु वे बहुत डर गये थे। फिर उन्होंने आपस में
एक दूसरे से कहा, “आखिर यह है कौन कि हवा और
पानी भी इसकी आज्ञा मानते हैं?”

दुष्टात्माओं से छुटकारे
(मत्ती 8:28-34; लूका 8:26-39)

5 फिर वे झील के उस पार गिरासेनियों के देश
पहुँचे। **2**यीशु जब नाव से बाहर आया तो कब्रों में
से निकल कर तत्काल एक ऐसा व्यक्ति जिस में दुष्टात्मा
का प्रवेश था, उससे मिलने आया। **3**वह कब्रों के बीच
रहा करता था। उसे कोई नहीं बाँध सकता था, यहाँ
तक कि ज़ंजीरों से भी नहीं। **4**क्योंकि उसे जब जब
हथकड़ी और बेड़ियाँ डाली जातीं, वह उन्हें तोड़ देता।
ज़ंजीरों के टुकड़े-टुकड़े कर देता और बेड़ियों को
चकनाचूर। कोई भी उसे काबू नहीं कर पाता था।
5क़ब्रों और पहाड़ियों में रात-दिन लगातार, वह
चीखता-पुकारता अपने को पत्थरों से घायल करता
रहता था। **6**उसने जब दूर से यीशु को देखा, वह उसके
पास दौड़ा आया और उसके सामने प्रणाम करता हुआ
गिर पड़ा। **7**और ऊँचे स्वर में पुकारते हुए बोला, "सबसे
महान परमेश्वर के पुत्र, हे यीशु! तू मुझसे क्या चाहता
है? तुझे परमेश्वर की शपथ, मेरी विनती है तू मुझे
यातना मत दे।" **8**क्योंकि यीशु उससे कह रहा था, "ओ
दुष्टात्मा, इस मनुष्य में से निकल आ।"

9तब यीशु ने उससे पूछा, "तेरा नाम क्या है?"

और उसने उसे बताया, "मेरा नाम लीजन अर्थात्
सेना है क्योंकि हम बहुत से हैं।" **10**उसने यीशु से बार
बार विनती की कि वह उन्हें उस क्षेत्र से न निकाले।

11वहीं पहाड़ी पर उस समय सुअरों का एक बड़ा सा
रेवड़ चर रहा था। **12**दुष्टात्माओं ने उससे विनती की,
"हमें उन सुअरों में भेज दो ताकि हम उन में समा
जायें।" **13**और उसने उन्हें अनुमति दे दी। फिर दुष्टात्माएँ
उस व्यक्ति में से निकल कर सुअरों में समा गयीं, और
वह रेवड़, जिसमें कोई दो हज़ार सुअर थे, ढलवाँ किनारे
से नीचे की तरफ लुढ़कते-पुढ़कते दौड़ता हुआ झील
में जा गिरा। और फिर वहीं डूब मरा।

14फिर रेवड़ के रखवालों ने जो भाग खड़े हुए थे,
शहर और गाँव में जा कर यह समाचार सुनाया। तब जो
कुछ हुआ था, उसे देखने लोग वहाँ आये। **15**वे यीशु के
पास पहुँचे और देखा कि वह व्यक्ति जिस पर दुष्टात्माएँ
सवार थीं, कपड़े पहने पूरी तरह सचेत वहाँ बैठा है;
और यह वही था जिस में दुष्टात्माओं की पूरी सेना
समाई थी, वे डर गये। **16**जिन्होंने वह घटना देखी थी,
लोगों को उसका ब्योरा देते हुए बताया कि जिसमें
दुष्टात्माएँ समाई थीं, उसके साथ और सुअरों के साथ
क्या बीती। **17**तब लोग उससे विनती करने लगे कि वह
उनके यहाँ से चला जाये। **18**और फिर जब यीशु नाव
पर चढ़ रहा था तभी जिस व्यक्ति में दुष्टात्माएँ थीं, यीशु
से विनती करने लगा कि वह उसे भी अपने साथ ले ले।

19किन्तु यीशु ने उसे अपने साथ चलने की अनुमति
नही दी। और उससे कहा, "अपने ही लोगों के बीच घर
चला जा और उन्हें वह सब बता जो प्रभु ने तेरे लिये
किया है। और उन्हें यह भी बता कि प्रभु ने दया कैसे
की।" **20**फिर वह चला गया और दिकपुलिस के लोगों
को बताने लगा कि यीशु ने उसके लिये कितना बड़ा
काम किया है। इससे सभी लोग चकित हुए।

एक मृत लड़की और रोगी स्त्री
(मत्ती 9:18-26; लूका 8:40-56)

21यीशु जब फिर उस पार गया तो उसके चारों तरफ
एक बड़ी भीड़ जमा हो गयी। वह झील के किनारे था।
तभी **22**यहूदी धर्मसभा भवन का एक अधिकारी जिसका
नाम याईर था वहाँ आया और जब उसने यीशु को देखा
तो वह उसके पैरों पर गिर कर **23**आग्रह के साथ
विनती करता हुआ बोला, "मेरी नन्ही सी बच्ची मरने
को पड़ी है, मेरी विनती है कि तू मेरे साथ चल और
अपना हाथ उसके सिर पर रख जिससे वह अच्छी हो
कर जीवित रहे।"

24तब यीशु उसके साथ चल पड़ा और एक बड़ी भीड़
भी उसके साथ हो ली। जिससे वह दबा जा रहा था।

25वहीं एक स्त्री थी, जिसे बारह बरस से लगातार
खून जा रहा था। **26**वह अनेक चिकित्सकों से इलाज
कराते कराते बहुत दुःखी हो चुकी थी। उसके पास जो
कुछ था, सब खर्च कर चुकी थी, पर उसकी हालत में
कोई भी सुधार नहीं आ रहा था, बल्कि और बिगड़ती
जा रही थी। **27**जब उसने यीशु के बारे में सुना तो वह
भीड़ में उसके पीछे आयी और उसका वस्त्र छू लिया।
28वह मन ही मन कह रही थी, "यदि मैं तनिक भी
इसका वस्त्र छू पाऊँ तो ठीक हो जाऊँगी।"

29और फिर जहाँ से खून जा रहा था, वह स्त्रोत तुरंत
ही सूख गया। उसे अपने शरीर में ऐसी अनुभूति हुई जैसे
उसका रोग अच्छा हो गया हो। **30**यीशु ने भी तत्काल
अनुभव किया जैसे उसकी शक्ति उसमें से बाहर निकली
हो। वह भीड़ में पीछे मुड़ा और पूछा, "मेरे वस्त्र किसने
छुए?"

31तब उसके शिष्यों ने उससे कहा, "तू देख रहा है
भीड़ तुझे चारों तरफ़ से दबाये जा रही है और तू पूछता
है 'मुझे किसने छुआ?'"

32किन्तु वह चारों तरफ देखता ही रहा कि ऐसा
किसने किया। **33**फिर वह स्त्री, यह जानते हुए कि
उसको क्या हुआ है, भय से काँपती हुई सामने आई और
उसके चरणों पर गिर कर सब सच सच कह डाला।
34फिर यीशु ने उससे कहा, "बेटी, तेरे विश्वास ने तुझे
बचाया है। चैन से जा और अपनी बीमारी से बची रह।"

35वह अभी बोल ही रहा था कि यहूदी धर्मसभा
भवन के अधिकारी के घर से कुछ लोग आये और
उससे बोले, "तेरी बेटी मर गयी। अब तू गुरु को नाहक
कष्ट क्यों देता है?"

36किन्तु यीशु ने, उन्होंने जो कहा था सुना और
यहूदी धर्मसभा भवन के अधिकारी से वह बोला, "डर
मत, बस विश्वास कर।"
37फिर वह सब को छोड़, केवल पतरस, याकूब,
और याकूब के भाई यूहन्ना को साथ लेकर 38यहूदी
धर्मसभा भवन के अधिकारी के घर गया। उसने देखा
कि वहाँ खलबली मची है; और लोग ऊँचे स्वर में रोते
हुए विलाप कर रहे हैं। 39वह भीतर गया और उनसे
बोला, "यह रोना बिलखना क्यों है? बच्ची मरी नहीं है;
वह सो रही है।" 40इस पर उन्होंने उसकी हँसी उड़ाई।
फिर उसने सब लोगों को बाहर भेज दिया और बच्ची
के पिता, माता और जो उसके साथ थे, केवल उन्हें
साथ रखा। 41उसने बच्ची का हाथ पकड़ा और कहा,
"तलीता, कूमी!" (अर्थात् "छोटी बच्ची, मैं तुझसे कहता
हूँ, खड़ी हो जा!") 42फिर छोटी बच्ची तत्काल खड़ी हो
गयी और इधर उधर चलने फिरने लगी। (वह लड़की
बारह साल की थी)। लोग तुरन्त आश्चर्य से भर उठे।
43यीशु ने उन्हें बड़े आदेश दिये कि किसी को भी इसके
बारे में पता न चले। फिर उसने उन लोगों से कहा कि
वे उस बच्ची को खाने को कुछ दें।

यीशु का अपने नगर जाना

(मत्ती 13:53-58; लूका 4:16-30)

6 फिर यीशु उस स्थान को छोड़ कर अपने नगर
को चल दिया। उसके शिष्य भी उसके साथ थे।
2जब सब्त का दिन आया, उसने प्रार्थना सभागार में
उपदेश देना आरम्भ किया। उसे सुनकर बहुत से लोग
आश्चर्यचकित हुए। वे बोले, "इसको ये बातें कहाँ से
मिली हैं? यह कैसी बुद्धिमानी है जो इसको दी गयी है?
यह ऐसे आश्चर्य कर्म कैसे करता है? 3क्या यह वही
बढ़ई नहीं है जो मरियम का बेटा है, और क्या यह
याकूब, योसेस, यहूदा और शमौन का भाई नही है?
क्या ये जो हमारे साथ रहती हैं इसकी बहनें नही हैं?"
सो उन्हें उसे स्वीकार करने में समस्या हो रही थी।
4यीशु ने तब उनसे कहा, "किसी नबी का अपने
निजी देश, संबंधियों और परिवार को छोड़ और कहीं
अनादर नहीं होता।" 5वहाँ वह कोई आश्चर्य कर्म भी
नहीं कर सकता। सिवाय इसके कि वह कुछ रोगियों
पर हाथ रख कर उन्हें चंगा कर दे। 6यीशु को उनके
अविश्वास पर बहुत अचरज हुआ। फिर वह गाँवों में
लोगों को उपदेश देता घूमने लगा। 7उसने सभी बारह
शिष्यों को अपने पास बुलाया। और दो दो कर के वह
उन्हें बाहर भेजने लगा। उसने उन्हें दुष्टात्माओं पर
अधिकार दिया। 8और यह निर्देश दिया, "आप अपनी
यात्रा के लिए लाठी के सिवा साथ कुछ न लें। न रोटी,
न बिस्तर, न पटुके में पैसे। 9आप चप्पल तो पहन
सकते है किन्तु कोई अतिरिक्त कुर्ती नहीं। 10जिस
किसी घर में तुम जाओ, वहाँ उस समय तक ठहरो जब
तक उस नगर को छोड़ो। 11और यदि किसी स्थान पर
तुम्हारा स्वागत न हो और वहाँ के लोग तुम्हें न सुनें, तो
उसे छोड़ दो। और उनके विरोध में साक्षी देने के लिये
अपने पैरों से वहाँ की धूल झाड़ दो।"
12फिर वे वहाँ से चले गये। और उन्होंने उपदेश दिया
कि लोगों, मन फिराओ! 13उन्होनें बहुत सी दुष्टात्माओं
को बाहर निकाला और बहुत से रोगियों को जैतून के
तेल से अभिषेक करते हुए चंगा किया।

हेरोदेस का विचार: यीशु यूहन्ना है

(मत्ती 14:1-12; लूका 9:7-9)

14राजा हेरोदेस* ने इस बारे में सुना; क्योंकि यीशु
का यश सब कहीं फैल चुका था। कुछ लोग कह रहे
थे, "बपतिस्मा* देने वाला यूहन्ना मरे हुओं में से जी
उठा है और इसीलिये उसमें अद्भुत शक्तियाँ काम कर
रही हैं।"
15दूसरे कह रहे थे, "वह एलिय्याह* है।"
कुछ और कह रहे थे, "यह नबी है या प्राचीन काल
के नबियों जैसा कोई एक।"
16पर जब हेरोदेस ने यह सुना तो वह बोला, "यूहन्ना
जिसका सिर मैंने कटवाया था, वही जी उठा है!"

बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना की हत्या

17क्योंकि हेरोदेस ने स्वयं ही यूहन्ना को बंदी बनाने
और जेल में डालने की आज्ञा दी थी। उसने अपने भाई
फिलिप की पत्नी हेरोदियास के कारण, जिससे उसने
विवाह कर लिया था, ऐसा किया। 18क्योंकि यूहन्ना
हेरोदेस से कहा करता था कि यह उचित नहीं है कि
तुमने अपने भाई की पत्नी से विवाह कर लिया है।
19इस पर हेरोदियास उससे बैर रखने लगी थी। वह
चाहती थी कि उसे मार डाला जाये पर मार नहीं पाती
थी। 20क्योंकि हेरोदेस यूहन्ना से डरता था। हेरोदेस
जानता था कि यूहन्ना एक सच्चा और पवित्र पुरुष है,
इसीलिये वह इसकी रक्षा करता था। हेरोदेस जब यूहन्ना
की बातें सुनता था तो वह बहुत घबराता था, फिर भी
उसे उसकी बातें सुनना बहुत भाता था।
21संयोग से फिर वह समय आया जब हेरोदेस ने ऊँचे
अधिकारियों, सेना के नायकों और गलील के बड़े
लोगों को अपने जन्म दिन पर एक जेवनार दी।

हेरोदेस अर्थात् हेरोद अंतिपस, गलील और पेरि का राजा तथा हेरोद महान का पुत्र।

बपतिस्मा यह यूनानी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है पानी में गोता देना। यह एक धार्मिक प्रक्रिया है।

एलिय्याह एक ऐसा व्यक्ति जो यीशु मसीह से सैंकड़ों साल पहले हुआ था और परमेश्वर के बारे में लोगों को बताता था।

22हेरोदियास की बेटी ने भीतर आकर जो नृत्य किया,
उससे उसने जेवनार में आये मेहमानों और हेरोदेस को
बहुत प्रसन्न किया। इस पर राजा हेरोदेस ने लड़की से
कहा, "माँग, जो कुछ तुझे चाहिये। मैं तुझे दूँगा।"
23फिर उसने उससे शपथपूर्वक कहा, "मेरे आधे
राज्य तक जो कुछ तू माँगेगी, मैं तुझे दूँगा।"
24इस पर वह बाहर निकल कर अपनी माँ के पास
आई और उससे पूछा, "मुझे क्या माँगना चाहिये?" फिर
माँ ने बताया, "बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना का सिर।"
25तब वह तत्काल दौड़ कर राजा के पास भीतर
आयी और कहा, "मैं चाहती हूँ कि तू मुझे बपतिस्मा
देने वाले यूहन्ना का सिर तुरन्त थाली में रख कर दे।"
26इस पर राजा बहुत दुखी हुआ, पर अपनी शपथ
और अपनी जेवनार के मेहमानों के कारण वह उस
लड़की को मना करना नहीं चाहता था।
27इसलिये राजा ने उसका सिर ले आने की आज्ञा
देकर तुरंत एक जल्लाद भेज दिया। फिर उसने जेल में
जाकर उसका सिर काट कर **28**और उसे थाली में रख
कर उस लड़की को दिया। और लड़की ने उसे अपनी
माँ को दे दिया। **29**जब यूहन्ना के शिष्यों ने इस विषय में
सुना तो वे आकर उसका शव ले गये और उसे एक
कब्र में रख दिया।

यीशु का पाँच हज़ार से अधिक को भोजन कराना

(मत्ती 14:13-21; लूका 9:10-17; यूहन्ना 6:1-14)

30फिर दिव्य संदेश का प्रचार करने वाले प्रेरितों ने
यीशु के पास इकट्ठे होकर जो कुछ उन्होंने किया था
और सिखाया था, सब उसे बताया। **31**फिर यीशु ने
उनसे कहा, "तुम लोग मेरे साथ किसी एकांत स्थान
पर चलो और थोड़ा आराम करो" क्योंकि वहाँ बहुत
लोगों का आना जाना लगा हुआ था और उन्हें खाने
तक का मौका नहीं मिल पाता था। **32**इसलिये वे अकेले
ही एक नाव में बैठ कर किसी एकांत स्थान को चले
गये। **33**बहुत से लोगों ने उन्हें जाते देखा और पहचान
लिया कि वे कौन थे। इसलिये वे सारे नगरों से धरती
के रास्ते चल पड़े और उनसे पहले ही वहाँ जा पहुँचे।
34जब यीशु नाव से बाहर निकला तो उसने एक बड़ी
भीड़ देखी। वह उनके लिए बहुत दुखी हुआ क्योंकि वे
बिना चरवाहे की भेड़ों जैसे थे। सो वह उन्हें बहुत सी
बातें सिखाने लगा।
35तब तक बहुत शाम हो चुकी थी। इसलिये उसके
शिष्य उसके पास आये और बोले, "यह एक सुनसान
जगह है और शाम भी बहुत हो चुकी है। **36**लोगों को
आसपास के गाँवों और बस्तियों में जाने दो ताकि वे
अपने लिए कुछ खाने को मोल ले सकें।"
37किन्तु उसने उत्तर दिया, "उन्हें खाने को तुम दो।"
तब उन्होंने उससे कहा, "क्या हम जायें और दो सौ
दीनार की रोटियाँ मोल ले कर उन्हें खाने को दें?"
38उसने उनसे कहा, "जाओ और देखो, तुम्हारे पास
कितनी रोटियाँ हैं?"
पता करके उन्होंने कहा, "हमारे पास पाँच रोटियाँ
और दो मछलियाँ हैं।"
39फिर उसने आज्ञा दी, "हरी घास पर सब को पंगत
में बैठा दो।" **40**तब वे सौ–सौ और पचास–पचास की
पंगतों में बैठ गये। **41**और उसने वे पाँच रोटियाँ और दो
मछलियाँ उठा कर स्वर्ग की ओर देखते हुए धन्यवाद
दिया और 'रोटियाँ तोड़ कर लोगों को परोसने के लिए,
अपने शिष्यों को दीं। और उसने उन दो मछलियों को
भी उन सब लोगों में बाँट दिया। **42**सब ने छक कर
खाया और तृप्त हुए। **43**और फिर उन्होंने बची हुई
रोटियों और मछलियों से भर कर, बारह टोकरियाँ
उठाई। **44**जिन लोगों ने रोटियाँ खाईं, उनमे केवल पुरुषों
की ही संख्या पाँच हज़ार थी।

यीशु का पानी पर चलना

(मत्ती 14:22-23; यूहन्ना 6:15-21)

45फिर उसने अपने चेलों को तुरंत नाव पर चढ़ाया
ताकि जब तक वह भीड़ को बिदा करे, वे उससे पहले
ही परले पार बैतसैदा चले जायें। **46**उन्हें विदा करके,
प्रार्थना करने के लिये, वह पहाड़ी पर चला गया। **47**और
जब शाम हुई तो नाव झील के बीचों–बीच थी और वह
अकेला धरती पर था। **48**उसने देखा कि उन्हें नाव
खेना भारी पड़ रहा था। क्योंकि हवा उनके विरुद्ध थी।
लगभग रात के चौथे पहर वह झील पर चलते हुए
उनके पास आया। वह उनके पास से निकलने को ही
था। **49**उन्होंने उसे झील पर चलते देख सोचा कि वह
कोई भूत है। और उनकी चीख निकल गयी **50**क्योंकि
सभी ने उसे देखा था और वे सहम गये थे। तुरंत उसने
उन्हें संबोधित करते हुए कहा, "साहस रखो, यह मैं हूँ!
डरो मत!" **51**फिर वह उनके साथ नाव पर चढ़ गया
और हवा थम गयी। इससे वे बहुत चकित हुए। **52**वे
रोटियों के आश्चर्य कर्म के विषय में समझ नहीं
पाये थे। उनकी बुद्धि जड़ हो गयी थी।
53झील पार करके वे गन्नेसरत पहुँचे। उन्होंने नाव
बाँध दी। **54**जब वे नाव से उतर कर बाहर आये तो लोग
यीशु को पहचान गये। **55**फिर वे बीमारों को खाटों पर
डाले समूचे क्षेत्र में जहाँ कहीं भी, उन्होंने सुना कि वह
है, उन्हें लिये दौड़ते फिरे। **56**वह गावों में, नगरों में या
बस्तियों में, जहाँ कहीं भी जाता, लोग अपने बीमारों को
बाज़ारों में रख देते और उससे विनती करते कि वह
अपने वस्त्र का बस कोई सिरा ही उन्हें छू लेने दे। और
जो भी उसे छू पाये, सब चंगे हो गये।

मनुष्य के नियमों से परमेश्वर का विधान महान है
(मत्ती 15:1-20)

7 तब फरीसी और कुछ धर्मशास्त्री जो यरुशलेम से
आये थे, यीशु के आसपास एकत्र हुए। 2उन्होंने
देखा कि उसके कुछ शिष्य बिना हाथ धोये भोजन कर
रहे हैं। 3क्योंकि अपने पुरखों की रीति पर चलते हुए
फरीसी और दूसरे यहूदी जब तक सावधानी के साथ
पूरी तरह अपने हाथ नहीं धो लेते भोजन नहीं करते।
4ऐसे ही बाज़ार से लाये खाने को वे बिना धोये नहीं
खाते। ऐसी ही और भी अनेक रूढ़ियाँ है, जिनका वे
पालन करते हैं। जैसे कटोरों, कलसों, ताँबे के बर्तनों
को माँजना, धोना आदि।

5इसलिये फरीसियों और धर्मशास्त्रियों ने यीशु से पूछा,
"तुम्हारे शिष्य पुरखों की परम्परा का पालन क्यों नहीं
करते? बल्कि अपना खाना बिना हाथ धोये ही खा लेते
हैं।"

6यीशु ने उनसे कहा, "यशायाह ने तुम जैसे कपटियों
के बारे में ठीक ही भविष्यवाणी की थी। जैसा कि
लिखा है:

'ये मेरा आदर केवल होठों से करते हैं, पर इनके
मन मुझसे सदा दूर हैं।
7मुझको इनकी उपासना अर्पित है बिना काम की;
और ये मेरी व्यर्थ उपासना करते हैं। क्योंकि ये लोगों
को मनुष्यों के बनाये सिद्धान्त को धार्मिक नियम के
रूप में सिखाते हैं।' *यशायाह 29:13*

8तुमने परमेश्वर का आदेश उठाकर एक तरफ
रख दिया है और तुम मनुष्यों की परम्परा का सहारा ले
रहे हो।"

9उसने उनसे कहा: "तुम परमेश्वर के आदेशों को
टालने में बहुत चतुर हो गये हो ताकि तुम अपनी
रूढ़ियों की स्थापना कर सको! 10उदाहरण के लिये
मूसा ने कहा, 'अपने माता-पिता का आदर कर' और
'जो कोई पिता या माता को बुरा कहे, उसे निश्चय ही
मार डाला जाये।' 11पर तुम कहते हो कि यदि कोई
व्यक्ति अपने माता-पिता से कहता है कि मेरी जिस
किसी वस्तु से तुम्हें लाभ पहुँच सकता था, मैंने परमेश्वर
को समर्पित कर दी है।'

12तो तुम उसके माता-पिता के लिये कुछ भी करना
समाप्त कर देने की अनुमति देते हो। 13इस तरह तुम
अपने बनाये रीति-रिवाजों से परमेश्वर के वचन को
टाल देते हो। ऐसी ही और भी बहुत सी बातें तुम लोग
करते हो।"

14यीशु ने भीड़ को फिर अपने पास बुलाया और
कहा, "हर कोई मेरी बात सुने और समझे। 15ऐसी
कोई वस्तु नहीं है जो बाहर से मनुष्य के भीतर जा
कर उसे अशुद्ध करे, बल्कि जो वस्तुएँ मनुष्य के
भीतर से निकलती हैं, वे ही उसे अशुद्ध कर सकती
हैं।" 16*

17फिर जब भीड़ को छोड़ कर वह घर के भीतर
गया तो उसके शिष्यों ने उससे इस दृष्टान्त के बारे में
पूछा। 18तब उसने उनसे कहा, "क्या तुम भी कुछ नही
समझे? क्या तुम नहीं देखते कि कोई भी वस्तु जो
किसी व्यक्ति में बाहर से भीतर जाती है, वह उसे दूषित
नहीं कर सकती 19क्योंकि वह उसके ह्रदय में नहीं, पेट
में जाती है और फिर पखाने से होकर बाहर निकल
जाती है।" (ऐसा कहकर उसने खाने की सभी वस्तुओं
को शुद्ध कहा।)

20फिर उसने कहा, "मनुष्य के भीतर से जो निकलता
है, वही उसे अशुद्ध बनाता है, 21क्योंकि मनुष्य के हृदय
के भीतर से ही बुरे विचार और अनैतिक कार्य, चोरी,
हत्या, 22व्यभिचार, लालच, दुष्टता, छल-कपट, अभद्रता,
ईर्ष्या, चुगलखोरी, अहंकार और मूर्खता बाहर आते हैं।
23ये सब बुरी बातें भीतर से आती हैं और व्यक्ति को
अशुद्ध बना देती हैं।"

ग़ैर यहूदी महिला को सहायता
(मत्ती 15:21-28)

24फिर यीशु ने वह स्थान छोड़ दिया और सूर के
आस-पास के प्रदेश को चल पड़ा। वहाँ वह एक घर में
गया। वह नहीं चाहता था कि किसी को भी उसके
आने का पता चले। किन्तु वह अपनी उपस्थिति को
छुपा नहीं सका। 25वास्तव में एक स्त्री जिसकी लड़की
में दुष्ट आत्मा का निवास था, यीशु के बारे में सुन कर
तत्काल उसके पास आयी और उसके पैरों में गिर पड़ी।
26यह स्त्री यूनानी थी और सीरिया के फिनीकी में पैदा
हुई थी। उसने अपनी बेटी में से दुष्टात्मा को निकालने
के लिये यीशु से प्रार्थना की। 27यीशु ने उससे कहा,
"पहले बच्चों को तृप्त हो लेने दे क्योंकि बच्चों की रोटी
लेकर उसे कुत्तों के आगे फेंक देना ठीक नहीं है।"

28स्त्री ने उससे उत्तर में कहा, "प्रभु, कुत्ते भी तो मेज़
के नीचे बच्चों के खाते समय गिरे चूरचार को खा लेत
हैं।" 29फिर यीशु ने उससे कहा, "इस उत्तर के कारण,
तू चैन से अपने घर जा सकती है। दुष्टात्मा तेरी बेटी
को छोड़ बाहर जा चुकी है।" 30सो वह घर चल दी और
अपनी बच्ची को खाट पर सोते पाया। तब तक दुष्टात्मा
उससे निकल चुकी थी।

बहरा गूँगा सुनने-बोलने लगा

31फिर वह सूर के इलाके से वापस आ गया और
दिकपुलिस यानी दस-नगर के रास्ते सिदोन होता हुआ
झील गलील पहुँचा। 32वहाँ कुछ लोग यीशु के पास एक

पद 16 "कुछ यूनानी प्रतियों में पद 16 जोड़ा गया है।" यदि किसी के सुनने के कान हों तो सुन ले

व्यक्ति को लाये जो बहरा था और ठीक से बोल भी नहीं
पाता था। लोगों ने यीशु से प्रार्थना की कि वह उस पर
अपना हाथ रख दे।
33यीशु उसे भीड़ से दूर एक तरफ़ ले गया। यीशु ने
अपनी उँगलियाँ उसके कानों में डालीं और फिर उसने
थूका और उस व्यक्ति की जीभ छुई। 34फिर स्वर्ग की
ओर ऊपर देख कर गहरी साँस भरते हुए उससे कहा,
"इप्फत्तह!" (अर्थात् "खुल जा!") 35और उसके कान
खुल गए, और उसकी जीभ की गांठ भी खुल गई, और
वह साफ साफ बोलने लगा। 36फिर यीशु ने उन्हें आज्ञा
दी कि वे किसी को कुछ न बतायें। पर उसने लोगों को
जितना रोकना चाहा, उन्होंने उसे उतना ही अधिक
फैलाया। 37लोग आश्चर्यचकित होकर कहने लगे, "यीशु
जो करता है, भला करता है। यहाँ तक कि वह बहरों
को सुनने की शक्ति और गूँगों को बोली देता है।"

चार हज़ार को भोजन

(मत्ती 15:32-39)

8 उन्हीं दिनों एक दूसरे अवसर पर एक बड़ी भीड़
इकट्ठी हुई। उनके पास खाने को कुछ नहीं था।
यीशु ने अपने शिष्यों को पास बुलाया और उनसे कहा,
2"मुझे इन लोगों पर तरस आ रहा है क्योंकि इन लोगों
को मेरे साथ तीन दिन हो चुके हैं और उनके पास
खाने को कुछ नहीं है। 3और यदि मैं इन्हें भूखा ही घर
भेज देता हूँ तो वे मार्ग में ही थक कर रह जायेंगे। कुछ
तो बहुत दूर से आये हैं।"
4उसके शिष्यों ने उत्तर दिया, "इस जंगल में इन्हें
खिलाने के लिये किसी को पर्याप्त भोजन कहाँ से मिल
सकता है?" 5फिर यीशु ने उनसे पूछा, "तुम्हारे पास
कितनी रोटियाँ हैं?" "सात", उन्होंने उत्तर दिया।
6फिर उसने भीड़ को धरती पर नीचे बैठ जाने की
आज्ञा दी। और उसने वे सात रोटियाँ लीं, धन्यवाद
किया और उन्हें तोड़ कर बाँटने के लिये अपने शिष्यों
को दिया। और फिर उन्होंने भीड़ के लोगों में बाँट
दिया। 7उनके पास कुछ छोटी मछलियाँ भी थीं, उसने
धन्यवाद करके उन्हें भी बाँट देने को कहा। 8लोगों ने
भर पेट भोजन किया। और फिर उन्होंने बचे हुए टुकड़ों
को इकट्ठा करके सात टोकरियाँ भरीं। 9वहाँ कोई
चार हज़ार पुरुष रहे होंगे। फिर यीशु ने उन्हें विदा
किया 10और वह तत्काल अपने शिष्यों के साथ नाव में
बैठ कर दलमनूता प्रदेश को चला गया।

फ़रीसियों की चाहत : यीशु कुछ अनुचित करे

(मत्ती 16:1-4)

11फिर फरीसी आये और उससे प्रश्न करने लगे,
उन्होंने उससे कोई स्वर्गीय आश्चर्य चिह्न प्रकट करने
को कहा। उन्होंने यह उसकी परीक्षा लेने के लिये कहा
था। 12तब अपने मन में गहरी आह भरते हुए यीशु ने
कहा, "इस पीढ़ी के लोग कोई आश्चर्य-चिन्ह क्यों
चाहते हैं? इन्हें कोई चिन्ह नहीं दिया जायेगा।" 13फिर
वह उन्हें छोड़ कर वापस नाव में आ गया और झील के
परले पार चला गया।

यहूदी नेताओं के विरुद्ध यीशु की चेतावनी

(मत्ती 16:5-12)

14यीशु के शिष्य कुछ खाने को लाना भूल गये थे।
एक रोटी के सिवाय उनके पास और कुछ नहीं था।
15यीशु ने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा, "सावधान!
फरीसियों और हेरोदेस के ख़मीर से बचे रहो।"
16"हमारे पास रोटी नहीं हैं, " इस पर, वे आपस में
सोच विचार करने लगे।
17वे क्या कह रहे हैं, यह जानकर यीशु उनसे बोला,
"रोटी पास नहीं होने के विषय में तुम क्यों सोच विचार
कर रहे हो? क्या तुम अभी भी नहीं समझते बूझते?
क्या तुम्हारी बुद्धि इतनी जड़ हो गयी है? 18तुम्हारी
आँखें हैं, क्या तुम देख नहीं सकते? तुम्हारे कान हैं,
क्या तुम सुन नहीं सकते? क्या तुम्हें याद नहीं? 19जब
मैंने पाँच हज़ार लोगों के लिये पाँच रोटियों के टुकड़े
किये थे और तुमने उन्हें कितनी टोकरियों में बटोरा
था?"
उन्होंने कहा "बारह"। 20"और जब मैंने चार हज़ार
के लिये सात रोटियों के टुकड़े किये थे तो तुमने
कितनी टोकरियाँ भर कर उठाई थीं?"
उन्होंने कहा "सात"। 21फिर यीशु ने उनसे कहा,
"क्या तुम अब भी नहीं समझे?"

अंधे को आँखें

22फिर वे बैतसैदा चले आये। वहाँ कुछ लोग यीशु के
पास एक अंधे को लाये और उससे प्रार्थना की कि वह
उसे छू दे। 23उसने अंधे व्यक्ति का हाथ पकड़ा और
उसे गाँव के बाहर ले गया। उसने उसकी आँखों पर
थूका, अपने हाथ उस पर रखे और उससे पूछा, "तुझे
कुछ दीखता है?" 24ऊपर देखते हुए उसने कहा, "मुझे
लोग दीख रहे हैं। वे आसपास चलते पेड़ों जैसे लग रहे
हैं। 25तब यीशु ने उसकी आँखों पर जैसे ही फिर अपने
हाथ रखे, उसने अपनी आँखें पूरी खोल दीं। उसे ज्योति
मिल गयी थी। वह सब कुछ साफ़ साफ़ देख रहा था।
26फिर यीशु ने उसे घर भेज दिया और कहा, "वह गाँव
में न जाये।"

पतरस का कथन: यीशु मसीह है

(मत्ती 16:13-20; लूका 9:18-21)

27और फिर यीशु और उसके शिष्य कैसरिया फिलिप्पी
के आसपास के गाँवों को चल दिये। रास्ते में यीशु ने

अपने शिष्यों से पूछा, “लोग क्या कहते हैं कि मैं
कौन हूँ?”
28उन्होंने उत्तर दिया, “बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना पर
कुछ लोग एलिय्याह और दूसरे तुझे भविष्यवक्ताओं में
से कोई एक कहते हैं।”
29फिर यीशु ने उनसे पूछा, “और तुम क्या कहते हो
कि मैं कौन हूँ?”
पतरस ने उसे उत्तर दिया, “तू मसीह है।”
30फिर उसने उन्हें चेतावनी दी कि वे उसके बारे में
यह किसी से न कहें।
31और उसने उन्हें समझाना शुरू किया, “मनुष्य के
पुत्र को बहुत सी यातनाएँ उठानी होंगी और बुज़ुर्ग प्रमुख
याजक तथा धर्मशास्त्रियों द्वारा वह नकारा जायेगा और
निश्चय ही वह मार दिया जायेगा। और फिर तीसरे दिन
वह मरे हुओं में से जी उठेगा।” 32उसने उनको यह
साफ़ साफ़ बता दिया। फिर पतरस उसे एक तरफ़ ले
गया और झिड़कने लगा। 33किन्तु यीशु ने पीछे मुड़कर
अपने शिष्यों पर दृष्टि डाली और पतरस को फटकारते
हुए बोला, “शैतान, मुझसे दूर हो जा! तू परमेश्वर की
बातों से सरोकार नहीं रखता, बल्कि मनुष्य की बातों से
सरोकार रखता है।”
34फिर अपने शिष्यों के साथ भीड़ को उसने अपने
पास बुलाया और उनसे कहा, “यदि कोई मेरे पीछे
आना चाहता है तो वह अपना सब कुछ त्याग करे और
अपना क्रूस उठा कर मेरे पीछे हो ले। 35क्योंकि जो
कोई अपने जीवन को बचाना चाहता है, उसे इसे खोना
होगा। और जो कोई मेरे लिये और सुसमाचार के लिये
अपना जीवन देगा, उसका जीवन बचेगा। 36यदि कोई
व्यक्ति अपनी आत्मा खोकर सारे जगत् को भी पा लेता
है, तो उसका क्या लाभ? 37क्योंकि कोई भी व्यक्ति
किसी वस्तु के बदले में जीवन नही पा सकता। 38यदि
कोई इस व्यभिचारी और पापी पीढ़ी में मेरे नाम और
वचन के कारण लजाता है तो मनुष्य का पुत्र भी जब
पवित्र स्वर्गदूतों के साथ अपने परम पिता की महिमा
सहित आयेगा, तो वह भी उसके लिए लजायेगा।”

9 और फिर उसने उनसे कहा, “मैं तुमसे सत्य कहता
हूँ, यहाँ जो खड़े हैं, उनमें से कुछ ऐसे हैं जो
परमेश्वर के राज्य को सामर्थ्य सहित आया देखने से
पहले मृत्यु का अनुभव नहीं करेंगे।”

मूसा और एलिय्याह के साथ यीशु का दर्शन देना
(*मत्ती 17:1-13; लूका 9:28-36*)

2छः दिन बाद यीशु केवल पतरस, याकूब और यूहन्ना
को साथ लेकर, एक ऊँचे पहाड़ पर गया। वहाँ उनके
सामने उसने अपना रूप बदल दिया। 3उस के वस्त्र
चमचमा रहे थे। एकदम उजले सफ़ेद! धरती पर कोई
भी धोबी जितना उजला नहीं धो सकता, उससे भी
अधिक उजले सफेद। 4एलिय्याह और मूसा भी उसके
साथ प्रकट हुए। वे यीशु से बात कर रहे थे। 5तब
पतरस बोल उठा और उसने यीशु से कहा, “हे रब्बी,
यह बहुत अच्छा हुआ कि हम यहाँ हैं। हमें तीन मण्डप
बनाने दे–एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये और एक
एलिय्याह के लिये।” 6पतरस ने यह इसलिये कहा कि
वह नहीं समझ पा रहा था कि वह क्या कहे। वे बहुत
डर गये थे।
7तभी एक बादल आया और उन पर छा गया। बादल
में से यह कहते एक वाणी निकली–“यह मेरा प्रिय पुत्र
है। इसकी सुनो!”
8और तत्काल उन्होंने जब चारों ओर देखा तो यीशु
को छोड़ कर अपने साथ किसी और को नहीं पाया।
9जब वे पहाड़ से नीचे उतर रहे थे तो यीशु ने उन्हें
आज्ञा दी कि उन्होंने जो कुछ देखा है, उसे वे तब तक
किसी को न बतायें जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में
से जी न उठे।
10सो उन्होंने इस बात को अपने भीतर ही रखा।
किन्तु वे सोच विचार कर रहे थे कि “मर कर जी
उठने” का क्या अर्थ है? 11फिर उन्होंने यीशु से पूछा,
“धर्मशास्त्री क्यों कहते हैं कि एलिय्याह का पहले आना
निश्चित है?”
12यीशु ने उनसे कहा, “हाँ, सब बातों को ठीक से
व्यवस्थित करने के लिए निश्चय ही एलिय्याह पहले
आयेगा। किन्तु मनुष्य के पुत्र के बारे में यह क्यों लिखा
गया है कि उसे बहुत सी यातनाएँ झेलनी होंगी और उसे
घृणा के साथ नकारा जायेगा? 13मैं तुम्हें बताता हूँ,
एलिय्याह आ चुका है, और उन्होंने उसके साथ जो
कुछ चाहा, किया। ठीक वैसा ही जैसा उसके विषय में
लिखा हुआ है।”

बीमार लड़के को चंगा करना
(*मत्ती 17:14-20; लूका 9:37-43*)

14जब वे दूसरे शिष्यों के पास आये तो उन्होंने उनके
आसपास जमा एक बड़ी भीड़ देखी। उन्होंने देखा कि
उनके साथ धर्मशास्त्री विवाद कर रहे हैं। 15और जैसे
ही सब लोगों ने यीशु को देखा, वे चकित हुए। और
स्वागत करने उसकी तरफ़ दौड़े। 16फिर उसने उनसे
पूछा, “तुम उनसे किस बात पर विवाद कर रहे हो?”
17भीड़ में से एक व्यक्ति ने उत्तर दिया, “हे गुरु, मैं
अपने बेटे को तेरे पास लाया था। उस पर एक दुष्टात्मा
सवार है, जो उसे बोलने नहीं देती। 18जब कभी वह
दुष्टात्मा इस पर आती है, इसे नीचे पटक देती है और
इसके मुँह से झाग निकलने लगते हैं और यह दाँत
पीसने लगता है और अकड़ जाता है। मैंने तेरे शिष्यों से
इस दुष्ट आत्मा को बाहर निकालने की प्रार्थना की
किन्तु वे उसे नहीं निकाल सके।”

19फिर यीशु ने उन्हें उत्तर दिया और कहा, "ओ
अविश्वासी लोगो, मैं तुम्हारे साथ कब तक रहूँगा? और
कब तक तुम्हारी सहूँगा? लड़के को मेरे पास ले आओ!"
20तब वे लड़के को उसके पास ले आये और जब
दुष्टात्मा ने यीशु को देखा तो उसने तत्काल लड़के को
मरोड़ दिया। वह धरती पर जा पड़ा और चक्कर खा
गया। उसके मुँह से झाग निकल रहे थे। **21**तब यीशु ने
उसके पिता से पूछा, "यह ऐसा कितने दिनों से है?"
पिता ने उत्तर दिया, "यह बचपन से ही ऐसा है।
22दुष्टात्मा इसे मार डालने के लिए कभी आग में गिरा
देती है तो कभी पानी में। क्या तू कुछ कर सकता है?
हम पर दया कर, हमारी सहायता कर।"
23यीशु ने उससे कहा, "तूने कहा, 'क्या तू कुछ कर
सकता है?' विश्वासी व्यक्ति के लिए सब कुछ सम्भव
है।"
24तुरंत बच्चे का पिता चिल्लाया और बोला, "मैं
विश्वास करता हूँ। मेरे अविश्वास को हटा!"
25यीशु ने जब देखा कि भीड़ उन पर चढ़ी चली आ
रही है, उसने दुष्टात्मा को ललकारा और उससे कहा,
"ओ बच्चे को बहरा गूँगा कर देने वाली दुष्टात्मा, मैं
तुझे आज्ञा देता हूँ इसमें से बाहर निकल आ और फिर
इसमें दुबारा प्रवेश मत कर!"
26तब दुष्टात्मा चिल्लाई। बच्चे पर भयानक दौरा
पड़ा। और वह बाहर निकल गयी। बच्चा मरा हुआ सा
दिखने लगा, बहुत लोगों ने कहा, "वह मर गया!" **27**फिर
यीशु ने लड़के को हाथ से पकड़ कर उठाया और खड़ा
किया। वह खड़ा हो गया। **28**इसके बाद यीशु अपने घर
चला गया। अकेले में उसके शिष्यों ने उससे पूछा, "हम
इस दुष्टात्मा को बाहर क्यों नहीं निकाल सके?"
29इस पर यीशु ने उनसे कहा, "ऐसी दुष्टात्मा प्रार्थना
के बिना बाहर नहीं निकाली जा सकती थी।"

अपनी मृत्यु के सम्बन्ध में यीशु का कथन
(मत्ती 17:22-23; लूका 9:43-45)

30फिर उन्होंने वह स्थान छोड़ दिया। और जब वे
गलील होते हुए जा रहे थे तो वह नहीं चाहता था कि वे
कहाँ हैं, इसका किसी को भी पता चले। **31**क्योंकि वह
अपने शिष्यों को शिक्षा दे रहा था। उसने उनसे कहा,
"मनुष्य का पुत्र मनुष्य के ही हाथों धोखे से पकड़वाया
जायेगा और वे उसे मार डालेंगे। मारे जाने के तीन दिन
बाद वह जी उठेगा। **32**पर वे इस बात को समझ नहीं
सके और यीशु से इसे पूछने में डरते थे।

सबसे बड़ा कौन है
(मत्ती 18:1-5; लूका 9:46-48)

33फिर वे कफ़रनहूम आये। यीशु जब घर में था,
उसने उनसे पूछा, "रास्ते में तुम किस बात पर सोच
विचार कर रहे थे?" **34**पर वे चुप रहे। क्योंकि वे
राहचलते आपस में विचार कर रहे थे कि सबसे बड़ा
कौन है।
35सो वह बैठ गया। उसने बारहों को अपने पास
बुलाया और उनसे कहा, "यदि कोई सबसे बड़ा बनना
चाहता है तो उसे निश्चय ही सबसे छोटा हो कर सब
का सेवक बनना होगा।"
36और फिर एक छोटे बच्चे को लेकर उसने उनके
सामने खड़ा किया। बच्चे को अपनी गोद में लेकर वह
उनसे बोला, **37**"मेरे नाम में जो कोई इनमें से किसी भी
एक बच्चे को अपनाता है, वह मुझे अपना रहा है; और
जो कोई मुझे अपनाता है, न केवल मुझे अपना रहा है,
बल्कि उसे भी अपना रहा है, जिसने मुझे भेजा है।"

जो हमारा विरोधी नहीं है, हमारा है
(लूका 9:49-50)

38यूहन्ना ने यीशु से कहा, "हे गुरु, हमने किसी को
तेरे नाम से दुष्टात्माएँ बाहर निकालते देखा है। हमने
उसे रोकना चाहा क्योंकि वह हममें से कोई नहीं था।"
39किन्तु यीशु ने कहा, "उसे रोको मत। क्योंकि जो
कोई मेरे नाम से आश्चर्य कर्म करता है, वह तुरंत बाद
मेरे लिए बुरी बातें नहीं कह पायेगा। **40**वह जो हमारे
विरोध में नहीं है, हमारे पक्ष में है। **41**जो इसलिये तुम्हें
एक कटोरा पानी पिलाता है कि तुम मसीह के हो, मैं
तुम्हें सत्य कहता हूँ, उसे इसका प्रतिफल मिले बिना
नहीं रहेगा।
42"और जो कोई इन नन्हे अबोध बच्चों में से किसी
को, जो मुझमें विश्वास रखते हैं, पाप के मार्ग पर ले
जाता है, तो उसके लिये अच्छा है कि उसकी गर्दन में
एक चक्की का पाट बाँध कर उसे समुद्र में फेंक दिया
जाये। **43**यदि तेरा हाथ तुझ से पाप करवाये तो उसे काट
डाल, टुंडा हो कर जीवन में प्रवेश करना कहीं अच्छा
है बजाय इसके कि दो हाथों वाला हो कर नरक में
डाला जाये, जहाँ की आग कभी नहीं बुझती। **44***
45यदि तेरा पैर तुझे पाप की राह पर ले जाये उसे काट
दे। लँगड़ा हो कर जीवन में प्रवेश करना कहीं अच्छा
है, बजाय इसके कि दो पैरों वाला हो कर नरक में
डाला जाये। **46*** **47**यदि तेरी आँख तुझ से पाप करवाए
तो उसे निकाल दे। काना होकर परमेश्वर के राज्य में
प्रवेश करना कहीं अच्छा है, बजाय इसके कि दो
आँखों वाला हो कर नरक में डाला जाये। **48**जहाँ के
कीड़े कभी नहीं मरते और जहाँ की आग कभी बुझती
नहीं। **49**हर व्यक्ति को आग पर नमकीन बनाया जायेगा।

पद 44 मरकुस की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 44 जोड़ा गया है जो पद 48 के समान है।

पद 46 मरकुस की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 46 जोड़ा गया है जो पद 48 के समानहै।

50“नमक अच्छा है। किन्तु नमक यदि अपना
नमकीनपन ही छोड़ दे तो तुम उसे दुबारा नमकीन कैसे
बना सकते हो? अपने में नमक रखो और एक दूसरे
के साथ शांति से रहो।”

तलाक के बारे में यीशु की शिक्षा
(मत्ती 19:1-12)

10 फिर यीशु ने वह स्थान छोड़ दिया और यहूदिया
के क्षेत्र में यर्दन नदी के पार आ गया। भीड़
की भीड़ फिर उसके पास आने लगीं। और अपनी रीति
के अनुसार वह उपदेश देने लगा।
2फिर कुछ फरीसी उसके पास आये और उससे
पूछा, “क्या किसी पुरुष के लिये उचित है कि वह
अपनी पत्नी को तलाक दे?” उन्होंने उसकी परीक्षा
लेने के लिये उससे यह पूछा था। 3उसने उन्हें उत्तर
दिया, “मूसा ने तुम्हें क्या नियम दिया है?”
4उन्होंने कहा, “मूसा ने किसी पुरुष को त्यागपत्र
लिखकर पत्नी को त्यागने की अनुमति दी थी।”
5यीशु ने उनसे कहा, “मूसा ने तुम्हारे लिए यह आज्ञा
इसलिए लिखी थी कि तुम्हें कुछ भी समझ में नहीं आ
सकता। 6सृष्टि के प्रारम्भ से ही, ‘परमेश्वर ने उन्हें
पुरुष और स्त्री के रूप में रचा है।’ 7‘इसीलिये एक पुरुष
अपने माता–पिता को छोड़ कर अपनी पत्नी के साथ
रहेगा। 8और वे दोनों एक तन हो जायेंगे।’ इसलिए वे दो
नहीं रहते बल्कि एक तन हो जाते हैं। 9इसलिये जिसे
परमेश्वरने मिला दिया है, उसे मनुष्य को अलग नहीं
करना चाहिए।”
10फिर वे जब घर लौटे तो शिष्यों ने यीशु से इस
विषय में पूछा। 11उसने उनसे कहा, “जो कोई अपनी
पत्नी को तलाक दे कर दूसरी स्त्री से ब्याह रचाता है,
वह उस पत्नी के प्रति व्यभिचार करता है। 12और यदि
वह स्त्री अपने पति का त्याग करके दूसरे पुरुष से ब्याह
करती है तो वह व्यभिचार करती है।”

बच्चों को यीशु की आशीष
(मत्ती 19:13-15; लूका 18:15-17)

13फिर लोग यीशु के पास नन्हें–मुन्ने बच्चों को लाने
लगे ताकि वह उन्हें छू कर आशीष दे। किन्तु उसके
शिष्यों ने उन्हें झिड़क दिया। 14जब यीशु ने यह देखा तो
उसे बहुत क्रोध आया। फिर उसने उनसे कहा, “नन्हे–मुन्ने
बच्चों को मेरे पास आने दो। उन्हें रोको मत क्योंकि
परमेश्वर का राज्य ऐसों का ही है। 15मैं तुमसे सत्य
कहता हूँ जो कोई परमेश्वर के राज्य को एक छोटे
बच्चे की तरह नहीं अपनायेगा, उसमें कभी प्रवेश नही
करेगा।” 16फिर उन बच्चों को यीशु ने गोद में उठा
लिया और उनके सिर पर हाथ रख कर उन्हें आशीष
दी।

यीशु से एक धनी व्यक्ति का प्रश्न
(मत्ती 19:16-30; लूका 18:18-30)

17यीशु जैसे ही अपनी यात्रा पर निकला, एक व्यक्ति
उसकी ओर दौड़ा और उसके सामने झुक कर उसने
पूछा, “उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकार पाने के
लिये मुझे क्या करना चाहिये?”
18यीशु ने उसे उत्तर दिया, “तू मुझे उत्तम क्यों कहता
है? केवल परमेश्वर के सिवा और कोई उत्तम नहीं है।
19तू व्यवस्था की आज्ञाओं को जानता है: ‘हत्या मत
कर, व्यभिचार मत कर, चोरी मत कर, झूठी गवाही
मत दे, छल मत कर, अपने माता–पिता का आदर
कर…’*” 20उस व्यक्ति ने यीशु से कहा, “गुरु, मैं
अपने लड़कपन से ही इन सब बातों पर चलता रहा हूँ।”
21यीशु ने उस पर दृष्टि डाली और उसके प्रति प्रेम
का अनुभव किया। फिर उससे कहा, “तुझमें एक कमी
है। जा, जो कुछ तेरे पास है, उसे बेच कर गरीबों में बाँट
दे। स्वर्ग में तुझे धन का भंडार मिलेगा। फिर आ, और
मेरे पीछे हो ले।”
22यीशु के ऐसा कहने पर वह व्यक्ति बहुत निराश
हुआ और दु:खी होकर चला गया क्योंकि वह बहुत
धनवान था। 23यीशु ने चारों ओर देख कर अपने शिष्यों
से कहा, “उन लोगों के लिये, जिनके पास धन है,
परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है!”
24उसके शब्दों पर उसके शिष्य अचरज में पड़ गये।
पर यीशु ने उनसे फिर कहा, “मेरे बच्चों, परमेश्वर के
राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है! 25परमेश्वर
के राज्य में किसी धनी के प्रवेश कर पाने से, किसी
ऊँट का सुई के नाके में से निकल जाना आसान है!”
26उन्हें और अधिक अचरज हुआ। वे आपस में
कहने लगे, “फिर किसका उद्धार हो सकता है?”
27यीशु ने उन्हें देखते हुए कहा, “यह मनुष्यों के लिये
असम्भव है किन्तु परमेश्वर के लिये नहीं। क्योंकि
परमेश्वर के लिये सब कुछ सम्भव है।”
28फिर पतरस उससे कहने लगा, “देख, हम सब कुछ
त्याग कर तेरे पीछे हो लिये हैं।”
29यीशु ने कहा, “मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, कोई भी
ऐसा नहीं है जो मेरे लिये और सुसमाचार के लिये घर,
भाइयों, बहनों, माँ, बाप, बच्चों, खेत, सब कुछ को छोड़
देगा। 30और जो इस युग में घरों, भाइयों, बहनों, माताओं,
बच्चों और खेतों को सौ गुणा अधिक करके नहीं
पायेगा–किन्तु यातना के साथ। और आने वाले युग में
अनन्त जीवन। 31और बहुत से वे जो आज सबसे अन्तिम
हैं, सबसे पहले हो जायेंगे, और बहुत से वे जो आज
सबसे पहले हैं, सबसे अन्तिम हो जायेंगे।”

“हत्या … आदर कर” देखें निर्गमन 20:12–16; व्यवस्था. 5:16–20

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी
(मत्ती 20:17-19; लूका 18:31-34)

32फिर यरुशलेम जाते हुए जब वे मार्ग में थे तो यीशु
उनसे आगे चल रहा था। वे डरे हुए थे और जो उनके
पीछे चल रहे थे, वे भी डरे हुए थे। फिर यीशु बारहों
शिष्यों को अलग ले गया और उन्हें बताने लगा कि
उसके साथ क्या होने वाला है। 33"सुनो, हम यरुशलेम
जा रहे हैं। मनुष्य के पुत्र को धोखे से पकड़वा कर
प्रमुख याजकों और धर्मशास्त्रियों को सौंप दिया जायेगा।
और वे उसे मृत्यु दण्ड दे कर ग़ैर यहूदियों को सौंप देंगे
34जो उसकी हँसी उड़ाएँगे और उस पर थूकेंगे। वे उसे
कोड़े लगायेंगे और फिर मार डालेंगे। और फिर तीसरे
दिन वह जी उठेगा।"

याकूब और यूहन्ना का यीशु से आग्रह
(मत्ती 20:20-28)

35फिर जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना यीशु के पास
आये और उससे बोले, "गुरु, हम चाहते हैं कि हम जो
कुछ तुझ से माँगे, तू हमारे लिये वह कर।"

36यीशु ने उनसे कहा, "तुम मुझ से अपने लिये क्या
करवाना चाहते हो?" 37फिर उन्होंने उससे कहा, "हमें
अधिकार दे कि तेरी महिमा में हम तेरे साथ बैठें, हममें
से एक तेरे दायें और दूसरा बायें। 38यीशु ने उनसे कहा,
"तुम नहीं जानते तुम क्या माँग रहे हो। जो कटोरा मैं
पीने को हूँ, क्या तुम उसे पी सकते हो? या जो बपतिस्मा
मैं लेने को हूँ, तुम उसे ले सकतेहो?"

39उन्होंने उससे कहा, "हम वैसा कर सकते हैं!" फिर
यीशु ने उनसे कहा, "तुम वह प्याला पिओगे, जो मैं
पीता हूँ? तुम वह बपतिस्मा लोगे, जो बपतिस्मा मैं लेने
को हूँ? 40किन्तु मेरे दायें और बायें बैठने का स्थान
देना मेरा अधिकार नहीं है। ये स्थान उन्हीं पुरुषों के
लिए हैं जिनके लिये ये तैयार किये गये हैं।"

41जब बाकी के दस शिष्यों ने यह सुना तो वे याकूब
और यूहन्ना पर क्रोधित हुए। 42फिर यीशु ने उन्हें
अपने पास बुलाया और उनसे कहा, "तुम जानते हो कि
जो ग़ैर यहूदियों के शासक माने जाते हैं, उनका और
उनके महत्त्वपूर्ण नेताओं का उन पर प्रभुत्व है। 43पर
तुम्हारे साथ ऐसा नहीं है। तुममें से जो कोई बड़ा बनना
चाहता है, वह तुम सब का दास बने। 44और जो तुम में
प्रधान बनना चाहता है, वह सब का सेवक बने 45क्योंकि
मनुष्य का पुत्र तक सेवा कराने नहीं आया है, बल्कि
सेवा करने आया है। और बहुतों के छुटकारे के लिये
अपना जीवन देने आया है।"

अंधे को आँखें
(मत्ती 20:29-34; लूका 18:35-43)

46फिर वे यरीहो आये और जब यीशु अपने शिष्यों
और एक बड़ी भीड़ के साथ यरीहो को छोड़ कर जा
रहा था, तो तिमाई का पुत्र बरतिमाई नाम का एक
अंधा भिखारी सड़क के किनारे बैठा था। 47जब उसने
सुना कि वह नासरी यीशु है, तो उसने ऊँचे स्वर में
पुकार पुकार कर कहना शुरू किया, "दाऊद के पुत्र
यीशु, मुझ पर दया कर!"

48बहुत से लोगों ने डाँट कर उसे चुप रहने को कहा।
पर वह और भी ऊँचे स्वर में पुकारने लगा, "दाऊद के
पुत्र, मुझ पर दया कर!"

49तब यीशु रुका और बोला, "उसे मेरे पास लाओ।"

सो उन्होंने उस अंधे व्यक्ति को बुलाया और उससे
कहा, "हिम्मत रख! खड़ा हो! वह तुझे बुला रहा है।"
50वह अपना कोट फेंक कर उछल पड़ा और यीशु के
पास आया। 51फिर यीशु ने उससे कहा, "तू मुझ से
अपने लिए क्या करवाना चाहता है?" अंधे ने उससे
कहा, "हे रब्बी, मैं फिर से देखना चाहता हूँ।" 52तब
यीशु बोला, "जा, तेरे विश्वास से तेरा उद्धार हुआ।"
फिर वह तुरंत देखने लगा और मार्ग में यीशु के पीछे हो
लिया।

यरुशलेम में विजय प्रवेश
(मत्ती 21:1-11; लूका 19:28-40; यूहन्ना 12:12-19)

11 फिर जब व यरुशलेम के पास जैतून पर्वत पर
बैतफगे और बैतनिय्याह पहुँचे तो यीशु ने अपने
शिष्यों में से दो को 2यह कह कर सामने के गाँव में
भेजा, "जाओ वहाँ जैसे ही तुम गाँव में प्रवेश करोगे एक
गदही का बछेरा बँधा हुआ मिलेगा जिस पर पहले कभी
कोई नहीं चढ़ा। उसे खोल कर यहाँ ले आओ। 3और
यदि कोई तुमसे पूछे कि 'तुम यह क्यों कर रहे हो?' तो
तुम कहना, 'प्रभु को इसकी आवश्यकता है। फिर वह
इसे तुरंत ही वापस लौटा देगा।' "

4तब वे वहाँ से चल पड़े और उन्होंने खुली गली में
एक द्वार के पास गदही के बछेरे को बँधा पाया। सो
उन्होंने उसे खोल लिया। 5कुछ व्यक्तियों ने, जो वहाँ
खड़े थे, उनसे पूछा, "इस गदही के बछेरे को खोल कर
तुम क्या कर रहे हो?" 6उन्होंने उनसे वही कहा जो
यीशु ने बताया था। इस पर उन्होंने उन्हें जाने दिया। 7
फिर वे उस गदही के बछेरे को यीशु के पास ले आये।
उन्होंने उस पर अपने वस्त्र डाल दिये। फिर यीशु उस
पर बैठ गया। 8बहुत से लोगों ने अपने कपड़े रास्ते में
बिछा दिये और बहुतों ने खेतों से टहनियाँ काट कर
वहाँ बिछा दीं। 9वे लोग जो आगे थे और वे भी जो पीछे
थे, पुकार रहे थे,

"होशन्ना! वह धन्य है जो प्रभु के नाम पर आ रहा
है! *भजन संहिता 118:25,26*

10धन्य है हमारे पिता दाऊद का राज्य जो आ रहा है।
होशन्ना स्वर्ग में!"

11फिर उसने यरुशलेम में प्रवेश किया और मन्दिर
में गया। उसने चारों ओर की हर वस्तु को देखा क्योंकि
शाम को बहुत देर हो चुकी थी, वह बारहों शिष्यों के
साथ बैतनिय्याह को चला गया।

12अगले दिन जब वे बैतनिय्याह से निकल रहे थे,
उसे बहुत भूख लगी थी। 13थोड़ी दूर पर उसे अंजीर का
एक हरा भरा पेड़ दिखाई दिया। यह देखने के लिये वह
पेड़ के पास पहुँचा कि कहीं उसे उसी पर कुछ मिल
जाये। किन्तु जब वह वहाँ पहुँचा तो उसे पत्तों के सिवाय
कुछ न मिला क्योंकि अंजीरों की ऋतु नहीं थी। 14तब
उसने पेड़ से कहा, "अब आगे से कभी कोई तेरा फल
न खाये।" उसके शिष्यों ने यह सुना।

यीशु का मन्दिर जाना
(मत्ती 21:12-17; लूका 19:45-8; यूहन्ना 2:13-22)

15फिर वे यरुशलेम को चल पड़े। जब उन्होंने मन्दिर
में प्रवेश किया तो यीशु ने उन लोगों को जो मन्दिर में
ले बेच कर रहे थे, बाहर निकालना शुरू कर दिया।
उसने पैसे का लेन देन करने वालों की चौकियाँ उलट
दीं और कबूतर बेचने वालों के तख्त पलट दिये। 16और
उसने मंदिर में से किसी को कुछ भी ले जाने नहीं
दिया। 17फिर उसने शिक्षा देते हुए उनसे कहा, "क्या
शास्त्रों में यह नहीं लिखा है, 'मेरा घर सभी जाति के
लोगों के लिये प्रार्थना–गृह कहलायेगा?' किन्तु तुमने
उसे 'चोरों का अड्डा' बना दिया है।"

18जब प्रधान याजकों और धर्मशास्त्रियों ने यह सुना
तो वे उसे मारने का कोई रास्ता ढूँढने लगे। क्योंकि
भीड़ के सभी लोग उसके उपदेश से चकित थे। इसलिये
वे उससे डरते थे। 19फिर जब शाम हुई, तो वे नगर से
बाहरनिकले।

विश्वास की शक्ति
(मत्ती 21:20-22)

20अगले दिन सुबह जब यीशु अपने शिष्यों के साथ
जा रहा था तो उन्होंने उस अंजीर के पेड़ को जड़ तक
से सूखा देखा। 21तब पतरस ने याद करते हुए यीशु से
कहा, "हे रब्बी, देख! जिस अंजीर के पेड़ को तूने शाप
दिया था, वह सूख गया है!"

22यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "परमेश्वर में विश्वास
रखो। 23मैं तुमसे सत्य कहता हूँ: यदि कोई इस पहाड़ से
यह कहे, 'तू उखड़ कर समुद्र में जा गिर' और उसके
मन में किसी तरह का कोई संदेह न हो बल्कि विश्वास
हो कि जैसा उसने कहा है, वैसा ही हो जायेगा तो उसके
लिये वैसा ही होगा। 24इसीलिये मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम
प्रार्थना में जो कुछ माँगोगे, विश्वास करो वह तुम्हें मिल
गया है, वह तुम्हारा हो गया है। 25और जब कभी तुम
प्रार्थना करते खड़े होते हो तो यदि तुम्हें किसी से कोई
शिकायत है तो उसे क्षमा कर दो ताकि स्वर्ग में स्थित
तुम्हारा परम पिता तुम्हारे पापों के लिए तुम्हें भी क्षमा
कर दे।" 26*

यीशु के अधिकार पर यहूदी नेताओं को संदेह
(मत्ती 21:23-27; लूका 20:1-8)

27फिर वे यरुशलेम लौट आये। यीशु जब मन्दिर में
टहल रहा था तो प्रमुख याजक, धर्मशास्त्री और बुज़ुर्ग
यहूदी नेता उसके पास आये। 28और बोले, "तू इन
कार्यों को किस अधिकार से करता है? इन्हें करने का
अधिकार तुझे किसने दिया है?"

29यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे एक प्रश्न पूछता हूँ,
यदि मुझे उत्तर दे दो तो मैं तुम्हें बता दूँगा कि मैं यह
कार्य किस अधिकार से करता हूँ। 30जो बपतिस्मा
यूहन्ना दिया करता था, वह उसे स्वर्ग से प्राप्त हुआ था
या मनुष्य से? मुझे उत्तर दो!"

31वे यीशु के प्रश्न पर यह कहते हुए आपस में
विचार करने लगे, "यदि हम यह कहते हैं, 'यह उसे
स्वर्ग से प्राप्त हुआ था,' तो यह कहेगा, 'तो तुम उसका
विश्वास क्यों नहीं करते?' 32किन्तु यदि हम यह कहते
हैं, 'वह मनुष्य से प्राप्त हुआ था,' तो लोग हम पर ही
क्रोध करेंगे।" (वे लोगों से बहुत डरते थे क्योंकि सभी
लोग यह मानते थे कि यूहन्ना वास्तव में एक भविष्यवक्ता
है।) 33इसलिये उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, "हम नहीं
जानते।"

इस पर यीशु ने उनसे कहा, "तो फिर मैं भी तुम्हें
नहीं बताता कि मैं ये कार्य किस अधिकार से करता
हूँ।"

परमेश्वर का अपने पुत्र को भेजना
(मत्ती 21:33-46; लूका 20:9-19)

12 यीशु दृष्टान्त कथाओं का सहारा लेते हुए उनसे
कहने लगा: "एक व्यक्ति ने अंगूरों का एक
बगीचा लगाया और उसके चारों तरफ़ दीवार खड़ी कर
दी। फिर अंगूर के रस के लिए एक कुण्ड बनाया और
फिर उसे कुछ किसानों को किराये पर दे कर, यात्रा
पर निकल पड़ा। 2फिर अंगूर पकने की ऋतु में उसने
उन किसानों के पास अपना एक दास भेजा ताकि वह
किसानों से बगीचे में जो अंगूर हुए हैं, उनमें से उसका
हिस्सा ले आये। 3किन्तु उन्होंने पकड़ कर उस दास की
मार–पिटाई की और खाली हाथों वहाँ से भगा दिया।
4उसने एक और दास उनके पास भेजा। उन्होंने उसके
सिर पर वार करते हुए उसका बुरी तरह अपमान
किया। 5उसने फिर एक और दास भेजा जिसकी उन्होंने

पद 26 कुछ प्रारम्भिक यूनानी प्रतियों में पद 26 जोड़ा गया है। "किन्तु यदि तुम दूसरों को क्षमा नहीं करोगे तो तुम्हारा स्वर्ग में स्थित पिता तुम्हारे पापों को भी क्षमा नहीं करेगा।"

हत्या कर डाली। उसने ऐसे ही और भी अनेक दास
भेजे जिनमें से उन्होंने कुछ की मार–पिटाई की और
कितनों को मार डाला।
6"अब उसके पास भेजने को अपना प्यारा पुत्र ही
बचा था। आखिरकार उसने उसे भी उनके पास यह
कहते हुए भेज दिया, 'वे मेरे पुत्र का तो सम्मान करेंगे
ही।'
7"उन किसानों ने एक दूसरे से कहा, 'यह तो उसका
उत्तराधिकारी है। आओ इसे मार डालें। इससे उत्तराधिकार
हमारा हो जायेगा।' 8इस तरह उन्होंने उसे पकड़ कर
मार डाला और अंगूरों के बगीचे से बाहर फेंक दिया।
9इस पर अंगूर के बगीचे का मालिक क्या करेगा? वह
आकर उन किसानों को मार डालेगा और बगीचा दूसरों
को दे देगा। 10क्या तुमने शास्त्र का यह वचन नहीं पढ़ा
है: 'वह पत्थर जिसे कारीगरों ने बेकार माना, वही
कोने का पत्थर बन गया।'
11यह प्रभु ने किया, जो हमारी दृष्टि में अद्भुत है।'"
भजन संहिता 118:22–23

12वे यह समझ गये थे कि उसने जो दृष्टान्त कहा है,
उनके विरोध में था। सो वे उसे बंदी बनाने का कोई
रास्ता ढूँढने लगे, पर लोगों से वे डरते थे, इसलिये उसे
छोड़ कर चले गये।

यीशु को छलने का प्रयत्न

(*मत्ती 22:15-22; लूका 20:20-26*)

13तब उन्होंने कुछ फ़रीसियों और हेरोदियों को उसे
बातों में फसाने के लिये उसके पास भेजा। 14वे उसके
पास आये और बोले, "गुरु, हम जानते हैं कि तू बहुत
ईमानदार है और तू इस बात की तनिक भी परवाह
नहीं करता कि दूसरे लोग क्या सोचते हैं। क्योंकि तू
मनुष्यों की हैसियत या रुतबे पर ध्यान दिये बिना प्रभु
के मार्ग की सच्ची शिक्षा देता है। सो बता कैसर को
कर देना उचित है या नहीं? हम उसे कर चुकायें या न
चुकायें?"
15यीशु उनकी चाल समझ गया। उसने उनसे कहा,
"तुम मुझे क्यों परखते हो? एक दीनार लाओ ताकि मैं
उसे देख सकूँ।" 16सो वे दीनार ले आये। फिर यीशु ने
उनसे पूछा, "इस पर किस का चेहरा और नाम अंकित
है?" उन्होंने कहा, "कैसर का।"
17तब यीशु ने उन्हें बताया, "जो कैसर का है, उसे
कैसर को दो और जो परमेश्वर का है, उसे परमेश्वर
को दो।" तब वे बहुत चकित हुए।

सदूकियों की चाल

(*मत्ती 22:23-33; लूका 20:27-40*)

18फिर कुछ सदूकी, जो पुनर्जीवन को नहीं मानते,
उसके पास आये और उन्होंने उससे पूछा, 19"हे गुरु,
मूसा ने हमारे लिये लिखा है कि यदि किसी का भाई
मर जाये और उसकी पत्नी के कोई बच्चा न हो तो
उसके भाई को चाहिये कि वह उसे ब्याह ले और फिर
अपने भाई के वंश को बढ़ाये। 20एक बार की बात है
कि सात भाई थे। सबसे बड़े भाई ने ब्याह किया और
बिना कोई बच्चा छोड़े वह मर गया। 21फिर दूसरे भाई
ने उस स्त्री से विवाह किया, पर वह भी बिना किसी
संतान के ही मर गया। तीसरे भाई ने भी वैसा ही किया।
22सातों में से किसी ने भी कोई बच्चा नहीं छोड़ा।
आखिरकार वह स्त्री भी मर गयी। 23मौत के बाद जब
वे लोग फिर जी उठेंगे, तो बता वह स्त्री किसकी पत्नी
होगी? क्योंकि वे सातों ही उसे अपनी पत्नी के रूप में
रख चुके थे।"
24यीशु ने उनसे कहा, "तुम न तो शास्त्रों को जानते
हो, और न ही परमेश्वर की शक्ति को। निश्चय ही
क्या यही कारण नहीं है जिससे तुम भटक गये हो?
25क्योंकि वे लोग जब मरे हुओं में से जी उठेंगे तो
उनके विवाह नहीं होंगे, बल्कि वे स्वर्गदूतों के समान
स्वर्ग में होंगे। 26मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या
तुमने मूसा की पुस्तक में झाड़ी के बारे में जो लिखा
गया है, नहीं पढ़ा? वहाँ परमेश्वर ने मूसा से कहा था,
'मैं इब्राहीम का परमेश्वर हूँ, इसहाक का परमेश्वर हूँ
और याकूब का परमेश्वर हूँ।'* 27वह मरे हुओं का
नहीं, बल्कि जीवितों का परमेश्वर है। तुम लोग बहुत
बड़ी भूल में पड़े हो!"

सबसे बड़ा आदेश

(*मत्ती 22:34-40; लूका 10:25-28*)

28फिर एक यहूदी धर्मशास्त्री आया और उसने उन्हें
वाद–विवाद करते सुना। यह देख कर कि यीशु ने उन्हें
किस अच्छे ढंग से उत्तर दिया है, उसने यीशु से पूछा,
"सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण आदेश कौन सा है?"
29यीशु ने उत्तर दिया, "सबसे महत्त्वपूर्ण आदेश यह है:
'हे इस्राएल, सुन! केवल हमारा परमेश्वर ही एकमात्र
प्रभु है। 30समूचे मन से, समूचे जीवन से, समूची बुद्धि से
और अपनी सारी शक्ति से तुझे अपने परमेश्वर प्रभु से
प्रेम करना चाहिये।'* 31दूसरा आदेश यह है: 'अपने
पड़ोसी से वैसे ही प्रेम कर जैसे तू अपने आप से करता
है।'* इन आदेशों से बड़ा और कोई आदेश नहीं है।"
32इस पर यहूदी धर्मशास्त्री ने उससे कहा, "गुरु, तूने
ठीक कहा। तेरा यह कहना ठीक है कि परमेश्वर एक
है, उसके अलावा और दूसरा कोई नहीं है। 33अपने
समूचे मन से, सारी समझ–बूझ से सारी शक्ति से परमेश्वर

"मैं इब्राहीम ... हूँ" देखें निर्गमन 3:6

"हे इस्राएल ... करना चाहिये" देखें व्यवस्था. 6:4–5

"अपने पड़ोसी ... करता है" लैव्य. 19:18

को प्रेम करना और अपने समान अपने पड़ोसी से प्यार
रखना, सारी बलियों और समर्पित भेंटों से जिनका
विधान किया गया है, अधिक महत्त्वपूर्ण है।"
34जब यीशु ने देखा कि उस व्यक्ति ने समझदारी के
साथ उत्तर दिया है तो वह उससे बोला, "तू परमेश्वर के
राज्य से दूर नहीं है।" इसके बाद किसी और ने उससे
कोई और प्रश्न पूछने का साहस नहीं किया।
35फिर यीशु ने मन्दिर में उपदेश देते हुए कहा,
"धर्मशास्त्री कैसे कहते हैं कि मसीह दाऊद का पुत्र है?
36दाऊद ने स्वयं पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर कहा
था: 'प्रभु (परमेश्वर) ने मेरे प्रभु (मसीह) से कहा: मेरी
दाहिनी ओर बैठ जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पैरों
तले न कर दूँ।' *भजन संहिता 110:1*

37दाऊद स्वयं उसे 'प्रभु' कहता है। फिर मसीह दाऊद
का पुत्र कैसे हो सकता है?" एक बड़ी भीड़ प्रसन्नता के
साथ उसे सुन रही थी।
38अपने उपदेश में उसने कहा, "धर्मशास्त्रियों से
सावधान रहो। वे अपने लम्बे चोगे पहने हुए इधर उधर
घूमना पसंद करते हैं। बाज़ारों में अपने को नमस्कार
करवाना उन्हें भाता है। **39**और प्रार्थना सभागारों में वे
महत्त्वपूर्ण आसनों पर बैठना चाहते हैं। वे जेवनारों में
भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान पाने की इच्छा रखते हैं।
40वे विधवाओं की सम्पत्ति हड़प जाते हैं। दिखावे के
लिये वे लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएँ बोलते हैं। इन लोगों को
कड़े से कड़ा दण्ड मिलेगा।"

सच्चा दान
(लूका 21:1-4)

41यीशु दान-पात्र के सामने बैठा हुआ देख रहा था
कि लोग दान पात्र में किस तरह धन डाल रहे हैं। बहुत
से धनी लोगों ने बहुत सा धन डाला। **42**फिर वहाँ एक
गरीब विधवा आयी और उसने उसमें दो दमड़ियाँ डालीं
जो एक पैसे के बराबर भी नहीं थीं।
43फिर उसने अपने चेलों को पास बुलाया और उनसे
कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, धनवानों द्वारा इस
दान-पात्र में डाले गये प्रचुर दान से इस निर्धन विधवा
का यह दान कहीं महान है। **44**क्योंकि उन्होंने जो कुछ
उनके पास फालतू था, उसमें से दान दिया, किन्तु इसने
अपनी दीनता में जो कुछ इसके पास था सब कुछ दे
डाला। इसके पास इतना सा ही था जो इसके जीवन का
सहारा था!"

यीशु द्वारा विनाश की भविष्यवाणी
(मत्ती 24:1-44; लूका 21:5-33)

13 जब वह मंदिर से जा रहा था, उसके एक शिष्य
ने उससे कहा, "गुरु, देख! ये पत्थर और भवन
कितने अनोखे हैं।"
2इस पर यीशु ने उनसे कहा, "तू इन विशाल भवनों
को देख रहा है? यहाँ एक पत्थर पर दूसरा पत्थर टिका
नहीं रहेगा। एक-एक पत्थर ढहा दिया जायेगा।"
3जब वह जैतून के पहाड़ पर मन्दिर के सामने बैठा
था तो उससे पतरस, याकूब, यूहन्ना और अन्द्रियास ने
अकेले में पूछा, **4**"हमें बता, यह सब कुछ कब घटेगा?
जब ये सब कुछ पूरा होने को होगा तो उस समय कैसे
संकेत होंगे?" **5**इस पर यीशु कहने लगा "सावधान!
कोई तुम्हें छलने न पाये। **6**मेरे नाम से बहुत से लोग
आयेंगे और दावा करेंगे 'मैं वही हूँ।' वे बहुतों को छलेंगे।
7जब तुम युद्धों या युद्धों की अफवाहों के बारे में सुनो तो
घबराना मत। ऐसा तो होगा ही किन्तु अभी अंत नहीं है।
8एक जाति दूसरी जाति के विरोध में और एक राज्य
दूसरे राज्य के विरोध में खड़े होंगे। बहुत से स्थानों पर
भूचाल आयेंगे और अकाल पड़ेंगे। ये पीड़ाओं का आरम्भ
ही होगा।
9"अपने बारे में सचेत रहो। वे लोग तुम्हें न्यायालयों
के हवाले कर देंगे और फिर तुम्हें उनके सभागारों में
पीटा जाएगा और मेरे कारण तुम्हें शासकों और राजाओं
के आगे खड़ा होना होगा ताकि उन्हें कोई प्रमाण मिल
सके। **10**किन्तु यह आवश्यक है कि पहले सब किसी
को सुसमाचार सुना दिया जाये। **11**और जब कभी वे
तुम्हें पकड़ कर तुम पर मुकदमा चलायें तो पहले से ही
यह चिन्ता मत करने लगना कि तुम्हें क्या कहना है।
उस समय जो कुछ तुम्हें बताया जाये, वही बोलना क्योंकि
ये तुम नहीं हो जो बोल रहे हो, बल्कि बोलने वाला तो
पवित्र आत्मा है।
12"भाई, भाई को धोखे से पकड़वा कर मरवा डालेगा।
पिता, पुत्र को धोखे से पकड़वायेगा। और बाल बच्चे
अपने माता-पिता के विरोध में खड़े होकर उन्हें मरवायेंगे।
13मेरे कारण सब लोग तुमसे घृणा करेंगे। किन्तु जो
अंत तक धीरज धरे रहेगा, उसका उद्धार होगा।
14"जब तुम 'भयानक विनाशकारी वस्तुओं को', जहाँ
वे नहीं होनी चाहियें, वहाँ खड़े देखो" (पढ़ने वाला स्वयं
समझ ले कि इसका अर्थ क्या है) "तब जो लोग यहूदिया
में हों, उन्हें पहाड़ों पर भाग जाना चाहिये और **15**जो
लोग अपने घर की छत पर हों, वे घर में भीतर जा कर
कुछ भी लाने के लिये नीचे न उतरें। **16**और जो बाहर
मैदान में हों, वह पीछे मुड़ कर अपना वस्त्र तक न लें।
17उन स्त्रियों के लिये जो गर्भवती होंगी या जिनके दूध
पीते बच्चे होंगे, वे दिन बहुत भयानक होंगे। **18**प्रार्थना
करो कि यह सब कुछ सर्दियों में न हो। **19**उन दिनों ऐसी
विपत्ति आयेगी जैसी जब से परमेश्वर ने इस सृष्टि को
रचा है, आज तक न कभी आयी है और न कभी
आयेगी। **20**और यदि परमेश्वर ने उन दिनों को घटा न
दिया होता तो कोई भी नहीं बचता। किन्तु उन चुने हुए
व्यक्तियों के कारण जिन्हें उसने चुना है, उसने उस

समय को कम किया है। 21उन दिनों यदि कोई तुमसे
कहे, 'देखो, यह रहा मसीह!' या 'वह रहा मसीह!' तो
उसका विश्वास मत करना। 22क्योंकि झूठे मसीह और
झूठे भविष्यवक्ता दिखाई पड़ने लगेंगे। और वे ऐसे ऐसे
आश्चर्य चिह्न दर्शाएँगे और अद्भुत काम करेंगे कि हो
सके तो चुने हुओं को भी चक्कर में डाल दें। 23इसीलिये
तुम सावधान रहना। मैंने समय से पहले ही तुम्हें सब
कुछ बता दिया है।

24"उन दिनों यातना के उस काल के बाद, 'सूरज
काला पड़ जायेगा, चाँद से उसकी चाँदनी नहीं छिटकेगी।
25आकाश से तारे गिरने लगेंगे और आकाश में
महाशक्तियाँ झकझोर दी जायेंगी।'

यशायाह 13:10; 34:4

26"तब लोग मनुष्य के पुत्र को महाशक्ति और महिमा
के साथ बादलों में प्रकट होते देखेंगे। 27फिर वह अपने
दूतों को भेज कर चारों दिशाओं, पृथ्वी के एक छोर से
आकाश के दूसरे छोर तक सब कहीं से अपने चुने हुए
लोगों को इकट्ठा करेगा।

28"अंजीर के पेड़ से शिक्षा लो कि जब उसकी टहनियाँ
कोमल हो जाती है और उस पर कोंपलें फूटने लगती हैं
तो तुम जान जाते हो कि ग्रीष्म ऋतु आने को है। 29ऐसे
ही जब तुम यह सब कुछ घटित होते देखो तो समझ
जाना कि वह समय* निकट आ पहुँचा है, बल्कि
ठीक द्वार तक। 30मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि निश्चित
रूप से इन लोगों के जीते जी ही ये सब बातें घटेंगी।
31धरती और आकाश नष्ट हो जायेंगे किन्तु मेरा वचन
कभी न टलेगा।

32"उस दिन या उस घड़ी के बारे में किसी को कुछ
पता नहीं, न स्वर्ग में दूतों को और न अभी मनुष्य के
पुत्र को, केवल परम पिता परमेश्वर जानता है।
33सावधान! जागते रहो! क्योंकि तुम नहीं जानते कि
वह समय कब आ जायेगा। 34यह ऐसे ही है जैसे कोई
व्यक्ति किसी यात्रा पर जाते हुए सेवकों के ऊपर अपना
घर छोड़ जाये और हर एक को उसका अपना अपना
काम दे जाये। तथा चौकीदार को यह आज्ञा दे कि वह
जागता रहे।

35इसलिये तुम भी जागते रहो क्योंकि घर का स्वामी
न जाने कब आ जाये। साँझ गये, आधी रात, मुर्गे की
बाँग देने के समय या फिर दिन निकले। 36यदि वह
अचानक आ जाये तो ऐसा करो जिससे वह तुम्हें सोते न
पाये। 37जो मैं तुमसे कहता हूँ, वही सबसे कहता हूँ
'जागते रहो!'"

वह समय यहाँ यीशु जिस समय की चर्चा कर रहा है, वह समय है जब कोई बहुत महत्त्वपूर्ण घटना घटेगी। देखें लूका 21:31 जहाँ यीशु ने कहा है कि वही परमेश्वर के राज्य के आने का समय है।

यीशु की हत्या का षड़यन्त्र

(*मत्ती 26:1-5; लूका 22:1-2; यूहन्ना 11:45-53*)

14 फ़सह पर्व और बिना ख़मीर की रोटी का
पर्व*आने से दो दिन पहले की बात है कि
प्रमुख याजक और यहूदी धर्मशास्त्री कोई ऐसा रास्ता
ढूँढ रहे थे जिससे चालाकी के साथ उसे बंदी बनाया
जाये और मार डाला जाये। 2वे कह रहे थे, "किन्तु यह
हमें पर्व के दिनों में नहीं करना चाहिये, नहीं तो हो
सकता है, लोग कोई फसाद खड़ा करें।"

यीशु पर इत्र उँडेलना

(*मत्ती 26:6-13; यूहन्ना 12:1-8*)

3जब बैतनिय्याह में यीशु शमौन कोढ़ी के घर भोजन
करने बैठा था, तभी एक स्त्री सफेद चिकने स्फटिक
के एक पात्र में शुद्ध बाल छड़ का इत्र लिये आयी।
उसने उस पात्र को तोड़ा और इत्र को यीशु के सिर पर
उँडेल दिया। 4इससे वहाँ कुछ लोग बिगड़ कर आपस में
कहने लगे, "इत्र की ऐसी बर्बादी क्यों की गयी है? 5यह
इत्र तीन सौ दीनारी से भी अधिक में बेचा जा सकता
था। और फिर उस धन को कंगालों में बाँटा जा सकता
था।" उन्होंने उसकी कड़ी आलोचना की।

6तब यीशु ने कहा, "उसे क्यों तंग करते हो? छोड़ो
उसे। उसने तो मेरे लिये एक मनोहर काम किया है।
7क्योंकि कंगाल तो सदा तुम्हारे पास रहेंगे सो तुम जब
चाहो उनकी सहायता कर सकते हो, पर मैं तुम्हारे
साथ सदा नहीं रहूँगा। 8इस स्त्री ने वही किया जो वह
कर सकती थी। उसने समय से पहले ही गाड़े जाने के
लिये, मेरे शरीर पर सुगन्ध छिड़क कर उसे तैयार
किया है। 9मैं तुमसे सत्य कहता हूँ: सारे संसार में जहाँ
कहीं भी सुसमाचार का प्रचार-प्रसार किया जायेगा,
वहीं इसकी याद में जो कुछ इस ने किया है, उसकी
चर्चा होगी।"

10तब यहूदा इसकरियोती जो उसके बारह शिष्यों में
से एक था, प्रधान याजक के पास यीशु को धोखे से
पकड़वाने के लिए गया। 11वे उस की बात सुनकर
बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे धन देने का वचन
दिया। इसलिए फिर यहूदा यीशु को धोखे से पकड़वाने
की ताक में रहने लगा। 12बिना ख़मीर की रोटी के
उत्सव से एक दिन पहले, जब फ़सह (मेमने) की बलि
दी जाया करती थी उसके शिष्यों ने उससे पूछा, "तू क्या
चाहता है कि हम कहाँ जा कर तेरे खाने के लिये
फ़सह भोज की तैयारी करें?"

13तब उसने अपने दो शिष्यों को यह कह कर भेजा,
"नगर में जाओ, जहाँ तुम्हें एक व्यक्ति जल का घड़ा

बिना ख़मीर की रोटी का पर्व यहूदियों का यह पर्व एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पर्व हैं। इस दिन वे बिना खमीर की रोटी के साथ विशेष प्रकार का भोजन करते है।

लिये मिले, उसके पीछे हो लेना। 14फिर जहाँ कहीं भी
वह भीतर जाये, उस घर के स्वामी से कहना, 'गुरु ने
पूछा है भोजन का मेरा वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं
अपने शिष्यों के साथ फ़सह का खाना खा सकूँ।'
15फिर वह तुम्हें ऊपर का एक बड़ा सजा-सजाया
तैयार कमरा दिखायेगा, वहीं हमारे लिये तैयारी करो।"

16तब उसके शिष्य वहाँ से नगर को चल दिये जहाँ
उन्होंने हर बात वैसी ही पायी जैसी उनसे यीशु ने कही
थी। तब उन्होंने फ़सह का खाना तैयार किया है।

17दिन ढले अपने बारह शिष्यों के साथ यीशु वहाँ
पहुँचा। 18जब वे बैठे खाना खा रहे थे, तब यीशु ने
कहा, "मैं सत्य कहता हूँ: तुम में से एक जो मेरे साथ
भोजन कर रहा है, वही मुझे धोखे से पकड़वायेगा।"
19इससे वे दुखी हो कर एक दूसरे से कहने लगे, "निश्चय
ही वह मैं नहीं हूँ!" 20तब यीशु ने उनसे कहा, "वह
बारहों में से वही एक है, जो मेरे साथ एक ही थाली में
खाता है। 21मनुष्य के पुत्र को तो जाना ही है, जैसा कि
उसके बारे में लिखा है। पर उस व्यक्ति को धिक्कार है
जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाएगा। उस
व्यक्ति के लिये कितना अच्छा होता कि वह पैदा ही न
हुआ होता।"

प्रभु का भोज

(*मत्ती 26:26-30; लूका 22:15-20; 1 कुरिन्थियों 11:23-25*)

22जब वे खाना खा ही रहे थे, यीशु ने रोटी ली,
धन्यवाद दिया, रोटी को तोड़ा और उसे उनको देते हुए
कहा, "लो, यह मेरी देह है।" 23फिर उसने कटोरा
उठाया, धन्यवाद किया और उसे उन्हें दिया और उन
सब ने उसमें से पीया।

24तब यीशु बोला, "यह मेरा लहू है जो एक नए वाचा
का आरंभ है। यह बहुतों के लिये बहाया जा रहा है।
25तुमसे सत्य कहता हूँ कि अब मैं उस दिन तक
दाखमधु को चखूँगा तक नहीं जब तक परमेश्वर के
राज्य में नया दाखमधु न पीऊँ।"

26तब एक गीत गा कर वे जैतून के पहाड़ पर चले
गये।

यीशु की भविष्यवाणी–सब शिष्य उसे छोड़ जायेंगे

(*मत्ती 26:31-35; लूका 22:31-34; यूहन्ना 13:36-38*)

27यीशु ने उनसे कहा, "तुम सब का विश्वास डिग
जायेगा। क्योंकि लिखा है:

'मैं गड़ेरिये को मारूँगा और भेड़ें तितर-बितर हो
जायेंगी।' *जकर्याह 13:7*

28किन्तु फिर से जी उठने के बाद मैं तुमसे पहले ही
गलील चला जाऊँगा।"

29तब पतरस बोला, "चाहे सब अपना विश्वास खो
बैठें, पर मैं नही खोऊँगा।"

30इस पर यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से सत्य
कहता हूँ, आज, इसी रात मुर्गे के दो बार बाँग देने से
पहले तू तीन बार मुझे नकार चुकेगा।"

31इस पर पतरस ने और भी बल देते हुए कहा, "यदि
मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े तो भी मैं तुझे कभी नकारूँगा
नहीं!" तब बाकी सब शिष्यों ने भी ऐसा ही कहा।

यीशु की एकांत प्रार्थना

(*मत्ती 26:36-46; लूका 22:39-46*)

32फिर वे एक ऐसे स्थान पर आये जिसे गतसमने
कहा जाता था। वहाँ यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "जब
तक मैं प्रार्थना करता हूँ, तुम यहीं बैठो।" 33और पतरस,
याकूब और यूहन्ना को वह अपने साथ ले गया। वह
बहुत दुखी और व्याकुल हो रहा था। 34उसने उनसे
कहा, "मेरा मन दुखी है, जैसे मेरे प्राण निकल जायेंगे।
तुम यहीं ठहरो और सावधान रहो।"

35फिर थोड़ा और आगे बढ़ने के बाद वह धरती पर
झुक कर प्रार्थना करने लगा कि यदि हो सके तो यह
घड़ी मुझ पर से टल जाये। 36फिर उसने कहा, "हे परम
पिता! तेरे लिये सब कुछ सम्भव है। इस कटोरे* को
मुझ से दूर कर। फिर जो कुछ भी मैं चाहता हूँ, वह
नहीं बल्कि जो तू चाहता है, वही कर।"

37फिर वह लौटा तो उसने अपने शिष्यों को सोते देख
पतरस से कहा, "शमौन, क्या तू सो रहा है? क्या तू एक
घड़ी भी जाग नहीं सका? 38जागते रहो और प्रार्थना
करो ताकि तुम किसी परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तो
चाहती है किन्तु शरीर निर्बल है।"

39वह फिर चला गया और वैसे ही वचन बोलते हुए
उसने प्रार्थना की। 40जब वह दुबारा लौटा तो उसने उन्हें
फिर सोते पाया। उनकी आँखों में नींद भरी थी। उन्हें
सूझ नहीं रहा था कि उसे क्या उत्तर दें।

41वह तीसरी बार फिर लौट कर आया और उनसे
बोला, "क्या तुम अब भी आराम से सो रहे हो? अच्छा,
तो सोते रहो। वह घड़ी आ पहुँची है जब मनुष्य का पुत्र
धोखे से पकड़वाया जा कर पापियों के हाथों सौंपा जा
रहा है। 42खड़े हो जाओ! आओ चलें। देखो, यह आ रहा
है, मुझे धोखे से पकड़वाने वाला व्यक्ति।"

यीशु का बंदी बनाया जाना

(*मत्ती 26:47-56; लूका 22:47-53; यूहन्ना 18:3-12*)

43यीशु बोल ही रहा था कि उसके बारह शिष्यों में से
एक यहूदा वहाँ दिखाई पड़ा। उसके साथ लाठियाँ और

कटोरे यहाँ यीशु उन यातनाओं की ओर संकेत कर रहा है जो आगे चल कर उसे झेलनी है। ये यातनाएँ बहुत कठोर होंगी। उस कटोरे से पीने के समान जिसमें कुछ ऐसा भरा है, जिसे पीना बहुत कठिन है।

तलवारें लिए एक भीड़ थी, जिसे याजकों, धर्मशास्त्रियों और बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं ने भेजा था।

44धोखे से पकड़वाने वाले ने उन्हें यह संकेत बता रखा था, "जिसे मैं चूँमू वही वह है। उसे हिरासत में ले लेना और पकड़ कर सावधानी से ले जाना।"

45सो जैसे ही यहूदा वहाँ आया, उसने यीशु के पास जाकर कहा, "रब्बी!" और उसे चूम लिया। 46फिर तुरंत उन्होंने उसे पकड़ कर हिरासत में ले लिया। 47उसके एक शिष्य ने जो उसके पास ही खड़ा था अपनी तलवार खींच ली और महायाजक के एक दास पर चला दी जिससे उसका कान कट गया।

48फिर यीशु ने उनसे कहा, "क्या मैं कोई अपराधी हूँ जिसे पकड़ने तुम लाठी-तलवार ले कर आये हो? 49हर दिन मन्दिर में उपदेश देते हुए मैं तुम्हारे साथ ही था किन्तु तुमने मुझे नहीं पकड़ा। अब यह हुआ ताकि शास्त्र का वचन पूरा हो।" 50फिर उसके सभी शिष्य उसे अकेला छोड़ भाग खड़े हुए।

51अपनी वस्त्र रहित देह पर चादर लपेटे एक नौजवान उसके पीछे आ रहा था। उन्होंने उसे पकड़ना चाहा 52किन्तु वह अपनी चादर छोड़ कर नंगा भाग खड़ा हुआ।

यीशु की पेशी

(मत्ती 26:57-68; लूका 22:54-55, 63-71; यूहन्ना 18:13-14,19-24)

53वे यीशु को प्रधान याजक के पास ले गये। फिर सभी प्रमुख याजक, बुज़ुर्ग यहूदी नेता और धर्मशास्त्री इकटठे हुए। 54पतरस उससे दूर-दूर रहते हुए उसके पीछे-पीछे महायाजक के आँगन के भीतर तक चला गया। और वहाँ पहरेदारों के साथ बैठ आग तापने लगा।

55सारी यहूदी महासभा और प्रमुख याजक यीशु को मृत्य दण्ड देने के लिये उसके विरोध में कोई प्रमाण ढूँढने का यत्न कर रहे थे पर ढूँढ नहीं पाये। 56बहुतों ने उसके विरोध में झूठी गवाहियाँ दीं, पर वे गवाहियाँ आपस में विरोधी थीं।

57फिर कुछ लोग खड़े हुए और उसके विरोध में झूठी गवाही देते हुए कहने लगे, 58"हमने इसे यह कहते सुना है, 'मनुष्यों के हाथों बने इस मंदिर को मैं ढहा दूँगा और फिर तीन दिन के भीतर दूसरा बना दूँगा जो हाथों से बना नहीं होगा।'" 59किन्तु इसमें भी उनकी गवाहियाँ एक सी नहीं थीं।

60तब उनके सामने महायाजक ने खड़े होकर यीशु से पूछा, "ये लोग तेरे विरोध में ये क्या गवाहियाँ दे रहे हैं? क्या उत्तर में तुझे कुछ नही कहना?" 61इस पर यीशु चुप रहा। उसने कोई उत्तर नहीं दिया। महायाजक ने उससे फिर पूछा, "क्या तू पवित्र परमेश्वर का पुत्र मसीह है?"

62यीशु बोला, "मैं हूँ। और तुम मनुष्य के पुत्र को उस परम शक्तिशाली की दाहिनी ओर बैठे और स्वर्ग के बादलों में आते देखोगे।"

63महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़ते हुए कहा, "हमें और गवाहों की क्या आवश्यकता है? 64तुमने ये अपमानपूर्ण बातें कहते हुए इसे सुना, अब तुम्हारा क्या विचार है?"

उन सब ने उसे अपराधी ठहराते हुए कहा, "इसे मृत्यु-दण्ड मिलना चाहिये।" 65तब कुछ लोग उस पर थूकते, कुछ उसका मुँह ढकते, कुछ घूँसे मारते और कुछ हँसी उड़ाते कहने लगे, "भविष्यवाणी कर!" और फिर पहरेदारों ने पकड़ कर उसे पीटा।

पतरस का यीशु को नकारना

(मत्ती 26:69-75; लूका 22:56-62; यूहन्ना 18:15-18, 25-27)

66पतरस अभी नीचे आँगन ही में बैठा था कि महायाजक की एक दासी आई। 67जब उसने पतरस को वहाँ आग तापते देखा तो बड़े ध्यान से उसे पहचान कर बोली, "तू भी तो उस यीशु नासरी के ही साथ था।" 68किन्तु पतरस मुकर गया और कहने लगा, "मैं नहीं जानता या मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि तू क्या कह रही है।" यह कहते हुए वह ड्योढ़ी तक चला गया।*

69उस दासी ने जब उसे दुबारा देखा तो वहाँ खड़े लोगों से फिर कहने लगी, "यह व्यक्ति भी उन ही में से एक है।"70पतरस फिर मुकर गया। फिर थोड़ी देर बाद वहाँ खड़े लोगों ने पतरस से कहा, "निश्चय ही तू उनमें से एक है क्योंकि तू भी गलील का है।" 71तब पतरस अपने को धिक्कारने और कसमें खाने लगा, "जिसके बारे में तुम बात कर रहे हो, उस व्यक्ति को मैं नहीं जानता! 72तत्काल, मुर्गे ने दूसरी बार बाँग दी। पतरस को उसी समय वे शब्द याद हो आये जो उससे यीशु ने कहे थे: "इससे पहले कि मुर्गा दो बार बाँग दे, तू मुझे तीन बार नकारेगा।" तब पतरस जैसे टूट गया। वह फूट-फूट कर रोने लगा।

यीशु पिलातुस के सामने पेश

(मत्ती 27:1-2, 11-14; लूका 23:1-5; यूहन्ना 18:28-38)

15 जैस ही सुबह हुई महायाजकों, धर्मशास्त्रियों, बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं और समूची यहूदी महासभा ने एक योजना बनायी। वे यीशु को बँधवा कर ले गये और उसे पिलातुस को सौंप दिया। 2पिलातुस ने उससे पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा है?"

"और ... गया" बहुत से युनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है, "और मुर्गे ने बाँग दी।"

यीशु ने उत्तर दिया, "ऐसा ही है। तू स्वयं कह रहा है।
3फिर प्रमुख याजकों ने उस पर बहुत से दोष लगाये।
4पिलातुस ने उससे फिर पूछा, "क्या तुझे उत्तर नहीं देना
है? देख वे कितनी बातों का दोष तुझ पर लगा रहे हैं।"
5किन्तु यीशु ने अब भी कोई उत्तर नहीं दिया। इस
पर पिलातुस को बहुत अचरज हुआ।

पिलातुस यीशु को छोड़ने में विफल

(मत्ती 27:15-31; लूका 23:13-25; यूहन्ना 18:39-19:16)

6फ़सह पर्व के अवसर पर पिलातुस किसी भी एक
बंदी को, जिसे लोग चाहते थे उनके लिये छोड़ दिया
करता था। 7बरअब्बा नाम का एक बंदी उन बलवाइयों
के साथ जेल में था जिन्होंने दंगें में हत्या की थी। 8लोग
आये और पिलातुस से कहने लगे कि वह जैसा सदा से
उनके लिए करता आया है, वैसा ही करे।

9पिलातुस ने उनसे पूछा, "क्या तुम चाहते हो कि मैं
तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को छोड़ दूँ?" 10पिलातुस
ने यह इसलिए कहा कि वह जानता था कि प्रमुख
याजकों ने ईर्ष्या-द्वेष के कारण ही उसे पकड़वाया है।
11किन्तु प्रमुख याजकों ने भीड़ को उकसाया कि वह
उसके बजाय उनके लिये बरअब्बा को ही छोड़े।

12किन्तु पिलातुस ने उनसे बातचीत करके फिर पूछा,
"जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो, उसका मैं क्या
करूँ बताओ तुम क्या चाहते हो?"

13उत्तर में वे चिल्लाये, "उसे क्रूस पर चढ़ा दो!"

14तब पिलातुस ने उनसे पूछा, "क्यों, उसने ऐसा क्या
अपराध किया है?" पर उन्होंने और अधिक चिल्ला
कर कहा, "उसे क्रूस पर चढ़ा दो। 15पिलातुस भीड़ को
खुश करना चाहता था इसलिये उसने उनके लिए बरअब्बा
को छोड़ दिया और यीशु को कोड़े लगवा कर क्रूस पर
चढ़ाने के लिए सौंप दिया।

16फिर सिपाही उसे रोम के राज्यपाल निवास में ले
गये। उन्होंने सिपाहियों की पूरी पलटन को बुला लिया।
17फिर उन्होंने यीशु को बैंजनी रंग का वस्त्र पहनाया
और काँटों का एक ताज बना कर उसके सिर पर रख
दिया। 18फिर उसे सलामी देने लगे: "यहूदियों के राजा
का स्वागत है! 19वे उसके सिर पर सरकंडे मारते जा
रहे थे। वे उस पर थूक रहे थे। और घुटनों के बल
झुक कर वे उसके आगे नमन करते जाते थे। 20इस
तरह जब वे उसकी खिल्ली उड़ा चुके तो उन्होंने उसका
बैंजनी वस्त्र उतारा और उसे उसके अपने कपड़े पहना
दिये। और फिर उसे क्रूस पर चढ़ाने, बाहर ले गये।

यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना

(मत्ती 27:32-44; लूका 23:26-43; यूहन्ना 19:17-27)

21उन्हें कुरैन का रहने वाला शिमौन नाम का एक
व्यक्ति, रास्ते में मिला। वह गाँव से आ रहा था। वह
सिकन्दर और रुफुस का पिता था। सिपाहियों ने उस
पर दबाव डाला कि वह यीशु का क्रूस उठा कर चले।
22फिर वे यीशु को गुलगुता नामक स्थान पर ले गये
(जिसका अर्थ है "खोपड़ी-स्थान।") 23तब उन्होंने उसे
लोहबान मिला हुआ दाखरस पीने को दिया। किन्तु
उसने उसे नहीं लिया। 24फिर उसे क्रूस पर चढ़ा दिया
गया। उसके वस्त्र उन्होंने बाँट लिये और यह देखने के
लिए कि कौन क्या ले, उन्होंने पासे फेंके।

25दिन के नौ बजे थे, जब उन्होंने उसे क्रूस पर
चढ़ाया। 26उसके विरुद्ध एक लिखित अभियोग पत्र उस
पर अंकित था: "यहूदियों का राजा।" 27उसके साथ दो
डाकू भी क्रूस पर चढ़ाये गये। एक उसके दाहिनी ओर
और दूसरा बाँई ओर। 28* 29उसके पास से निकलते
हुए लोग उसका अपमान कर रहे थे। अपना सिर
नचा-नचा कर वे कहते, "अरे, वाह! तू वही है जो
मंदिर को ढहा कर तीन दिन में फिर बनाने वाला था।
30अब क्रूस पर से नीचे उतर और अपने आप को तो
बचा ले!"

31इसी तरह प्रमुख याजकों और धर्मशास्त्रियों ने भी
यीशु की खिल्ली उड़ाई। वे आपस में कहने लगे, "यह
औरों का उद्धार करता था, पर स्वयं अपने को नहीं
बचा सकता है।

32अब इस 'मसीह' और 'इस्राएल के राजा को' क्रूस
पर से नीचे तो उतरने दे ताकि हम यह देख कर उसमें
विश्वास कर सकें।" उन दोनों ने भी, जो उसके साथ
क्रूस पर चढ़ाये गये थे, उसका अपमान किया।

यीशु की मृत्यु

(मत्ती 27:45-56; लूका 23:44-49; यूहन्ना 19:28-30)

33फिर समूची धरती पर दोपहर तक अंधकार छाया
रहा। 34दिन के तीन बजे ऊँचे स्वर में पुकारते हुए यीशु
ने कहा, "इलोई, इलोई, लमा शबकतनी।" अर्थात्, "मेरे
परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों भुला दिया?"

35जो पास में खड़े थे, उनमें से कुछ ने जब यह सुना
तो वे बोले, "सुनो! यह एलिय्याह को पुकार रहा है।"

36तब एक व्यक्ति दौड़ कर सिरके में डुबोया हुआ
स्पंज एक छड़ी पर टाँग कर लाया और उसे यीशु को
पीने के लिए दिया और कहा, "ठहरो, देखते हैं कि इसे
नीचे उतारने के लिए एलिय्याह आता है कि नहीं।"

37फिर यीशु ने ऊँचे स्वर में पुकारा और प्राण त्यागदिये।
38तभी मंदिर का पट ऊपर से नीचे तक फट कर दो
टुकड़े हो गया। 39सेना के एक अधिकारी ने जो यीशु
के सामने खड़ा था, उसे पुकारते हुए सुना और देखा

पद 28 कुछ यूनानी प्रतियों में पद 28 जोड़ा गया है। "तब धर्मशास्त्र का वह वचन, 'वह डाकूओं के संग गिना गया', पूरा हुआ।"

कि उसने प्राण कैसे त्यागे। उसने कहा, “यह व्यक्ति
वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था!”

40कुछ स्त्रियाँ वहाँ दूर से खड़ी देख रही थीं जिनमें
मरियम मगदलीनी, छोटे याकूब और योसेस की माता
मरियम और सलौमी थीं। 41जब यीशु गलील में था तो ये
स्त्रियाँ उसकी अनुयायी थीं और उसकी सेवा करती
थीं। वहीं और भी बहुत सी स्त्रियाँ थीं जो उसके साथ
यरुशलेम तक आयी थीं।

यीशु का दफ़नाया जाना

(*मत्ती 27:57-61; लूका 23:50-56; यूहन्ना 19:38-42*)

42शाम हो चुकी थी और क्योंकि सब्त के पहले का,
वह तैयारी का दिन था 43इसलिये अरिमतिया का यूसुफ़
आया। वह यहूदी महासभा का सम्मानित सदस्य था
और परमेश्वर के राज्य के आने की बाट जोहता था।
साहस के साथ वह पिलातुस के पास गया और उससे
यीशु का शव माँगा। 44पिलातुस को बड़ा अचरज हुआ
कि वह इतनी जल्दी कैसे मर गया। उसने सेना के
अधिकारी को बुलाया और उससे पूछा क्या उसको मरे
काफी देर हो चुकी है? 45फिर जब उसने सेनानायक से
ब्यौरा सुन लिया तो यूसूफ को शव दे दिया। 46फिर
यूसुफ ने सन के उत्तम रेशों का बना थोड़ा कपड़ा
खरीदा, यीशु को क्रूसपर से नीचे उतारा, उसके शव
को उस वस्त्र में लपेटा और उसे एक कब्र में रख दिया
जिसे शिला को काट कर बनाया गया था। और फिर
कब्र के मुँह पर एक बड़ा सा पत्थरलुढ़का कर टिका
दिया। 47मरियम मगदलीनी और योसेस की माँ मरियम
देख रही थीं कि यीशु को कहाँ रखा गया है।

यीशु का फिर से जी उठना

(*मत्ती 28:1-8; लूका 24:1-12; यूहन्ना 20:1-10*)

16 सब्त का दिन बीत जाने पर मरियम मगदलीनी,
सलौमी और याकूब की माँ मरियम ने यीशु के
शव का अभिषेक कर पाने के लिये सुगन्ध-सामग्री
मोल ली। 2सप्ताह के पहले दिन बड़ी सुबह सूरज निकलते
ही वे कब्र पर गयीं। 3वे आपस में कह रही थीं, “हमारे
लिये कब्र के द्वार पर से पत्थर को कौन सरकाएगा?”

4फिर जब उन्होंने आँख उठाई तो देखा कि वह बहुत
बड़ा पत्थर वहाँ से हटा हुआ है। 5फिर जब वे कब्र के
भीतर गयीं तो उन्होंने देखा कि श्वेत वस्त्र पहने हुए
एक युवक दाहिनी ओर बैठा है। वे सहम गयीं।

6फिर युवक ने उनसे कहा, “डरो मत, तुम जिस
यीशु नासरी को ढूँढ रही हो, जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया
था, वह जी उठा है! वह यहाँ नहीं है। इस स्थान को
देखो जहाँ उन्होंने उसे रखा था। 7अब तुम जाओ और
उसके शिष्यों तथा पतरस से कहो कि वह तुम से
पहले ही गलील जा रहा है, जैसा कि उसने तुमसे कहा
था, वह तुम्हें वहीं मिलेगा।”

8तब भय और अचरज में डूबीं वे कब्र से बाहर
निकल कर भाग गयीं। उन्होंने किसी को कुछ नहीं
बताया क्योंकि वे बहुत घबराई हुई थीं

[मरकुस पुस्तक की कुछ आदिम यूनानी प्रतियाँ पद आठ पर ही समाप्त हो जाती हैं।]

कुछ अनुयायियों को यीशु का दर्शन

(*मत्ती 28:9-10; यूहन्ना 20:11-18; लूका 2 4:13-35*)

9सप्ताह के पहले दिन बहुत में जी उठने के बाद वह
सबसे पहले मरियम मगदलीनी के सामने प्रकट हुआ,
जिसे उसने सात दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाया था।
10उसने यीशु के साथियों को, जो शोक में डूबे, विलाप
कर रहे थे, जाकर बताया। 11जब उन्होंने सुना कि यीशु
जीवित है और उसने उसे देखा है, तो उन्होने विश्वास
नहीं किया।

12इसके बाद उनमें से दो के सामने जब वे खेतों को
जाते हुए, मार्ग में थे, वह एक दूसरे रूप में प्रकट हुआ।
13उन्होंने लौट कर औरों को भी इसकी सूचना दी पर
उन्होंने भी उनका विश्वास नहीं किया।

शिष्यों से यीशु की बातचीत

(*मत्ती 28:16-20; लूका 24:36-49; यूहन्ना 20:19-23; प्रेरितों के काम 1:6-8*)

14बाद में, जब उसके ग्यारहों शिष्य भोजन कर रहे
थे, वह उनके सामने प्रकट हुआ और उसने उन्हें
उनके अविश्वास और मन की जड़ता के लिए डाँटा
फटकारा क्योंकि इन्होंने उनका विश्वास ही नहीं किया
था जिन्होंने जी उठने के बाद उसे देखा था।

15फिर उसने उनसे कहा, “जाओ और सारी दुनिया
के लोगों को सुसमाचार का उपदेश दो। 16जो कोई
विश्वास करता है और बपतिस्मा लेता है, उसका उद्धार
होगा और जो अविश्वासी है, वह दोषी ठहराया जायेगा।
17“जो मुझमें विश्वास करेंगे, उनमें ये चिह्न होंगे: वे मेरे
नाम पर दुष्टात्माओं को बाहर निकाल सकेंगे, वे नयी-
नयी भाषा बोलेंगे, 18वे अपने हाथों से साँप पकड़ लेंगे
और वे यदि विष भी पी जायें तो उनको हानि नहीं होगी,
वे रोगियों पर अपने हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जायेंगे।”

19इस प्रकार जब प्रभु यीशु उनसे बात कर चुका तो
उसे स्वर्ग पर उठा लिया गया। वह परमेश्वर के दाहिने
बैठ गया। 20उसके शिष्यों ने बाहर जा कर सब कहीं
उपदेश दिया, उनके साथ प्रभु काम कर रहा था। प्रभु
ने वचन को आश्चर्यकर्म की शक्ति से युक्त करके
सत्य सिद्ध किया।

लूका

1 बहुत से लोगों ने हमारे बीच घटी बातों का ब्यौरा
लिखने का प्रयत्न किया। 2वे ही बातें हमें उन लोगों
द्वारा बतायी गयीं, जिन्होंने उन्हें प्रारम्भ से ही घटते देखा
था और जो सुसमाचार के प्रचारक रहे थे। 3हे मान्यवर
थियुफिलुस! क्योंकि मैंने प्रारम्भ से ही सब कुछ का
बड़ी सावधानी से अध्ययन किया है इसलिए मुझे यह
उचित जान पड़ा कि मैं भी तुम्हारे लिये इसका एक
क्रमानुसार विवरण लिखूँ। 4जिससे तुम उन बातों की
निश्चिंतता को जान लो जो तुम्हें सिखाई गयी हैं।

जकरयाह और इलीशिबा

5उन दिनों जब यहूदिया पर हेरोदेस का राज था वहाँ
जकरयाह नाम का एक यहूदी याजक हुआ करता था।
जो उपासकों के अबिय्याह समुदाय* का था उसकी
पत्नी का नाम इलीशिबा था और वह हारुन के परिवार
से थी। 6वे दोनों ही धर्मी थे। वे बिना किसी दोष के प्रभु
के सभी आदेशों और नियमों का पालन करते थे।
7किन्तु उनके कोई संतान नहीं थी, क्योंकि इलीशिबा
बाँझ थी और वे दोनों ही बहुत बूढ़े हो चले थे।

8जब जकरयाह के समुदाय के मंदिर में याजक के
काम की बारी थी, और वह परमेश्वर के सामने
उपासना के लिये उपस्थित था। 9तो याजकों में चली आ
रही परम्परा के अनुसार पर्ची डालकर उसे चुना गया
कि वह प्रभु के मंदिर में जाकर धूप जलाये। 10जब धूप
जलाने का समय आया तो बाहर इकट्ठे हुए लोग प्रार्थना
कर रहे थे।

11उसी समय जकरयाह के सामने प्रभु का एक दूत
प्रकट हुआ। वह धूप की वेदी के दाहिनी ओर खड़ा
था। 12जब जकरयाह ने उस दूत को देखा तो वह घबरा
गया और भय ने जैसे उसे जकड़ लिया हो। 13फिर प्रभु
के दूत ने उससे कहा, "जकरयाह डर मत, तेरी प्रार्थना
सुन ली गयी है। इसलिये तेरी पत्नी इलीशिबा एक पुत्र
को जन्म देगी, तू उसका नाम यूहन्ना रखना। 14वह
तुम्हें आनन्द और प्रसन्नता देगा ही, साथ ही उसके
जन्म से और भी बहुत से लोग प्रसन्न होंगे। 15क्योंकि
वह प्रभु की दृष्टि में महान होगा। वह कभी भी किसी
दाखरस या किसी भी मदिरा का सेवन नहीं करेगा।
अपने जन्म काल से ही वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण
होगा। 16वह इस्राएल के बहुत से लोगों को उनके प्रभु
परमेश्वर की ओर लौटने को प्रेरित करेगा। 17वह
एलिय्याह की शक्ति और आत्मा में स्थित हो प्रभु के
आगे आगे चलेगा। वह पिताओं का हृदय उनकी
संतानों की ओर वापस मोड़ देगा और वह आज्ञा ना
मानने वालों को ऐसे विचारों की ओर प्रेरित करेगा
जिससे वे धर्मियों के जैसे विचार रखें। यह सब, वह
लोगों को प्रभु की खातिर तैयार करने के लिए करेगा।"

18तब जकरयाह ने प्रभु के दूत से कहा, "मैं यह कैसे
जानूँ कि यह सच है? क्योंकि मैं एक बूढ़ा आदमी हूँ
और मेरी पत्नी भी बूढ़ी हो चली है।"

19तब प्रभु के दूत ने उत्तर देते हुए उससे कहा, "मैं
जिब्राईल हूँ। मैं वह हूँ जो परमेश्वर के सामने खड़ा
रहता हूँ। मुझे तुझ से बात करने और इस सुसमाचार
को बताने को भेजा गया है। 20किन्तु देख! क्योंकि तूने
मेरे शब्दों पर, जो निश्चित समय आने पर सत्य सिद्ध
होंगे, विश्वास नहीं किया, इसलिये तू गूँगा हो जायेगा
और उस दिन तक नहीं बोल पायेगा जब तक यह पूरा
न हो ले।"

21उधर बाहर लोग जकरयाह की प्रतीक्षा कर रहे
थे। उन्हें अचरज हो रहा था कि वह इतनी देर मन्दिर
में क्यों रुका हुआ है। 22फिर जब वह बाहर आया तो
उनसे बोल नहीं पा रहा था। उन्हें लगा जैसे मन्दिर के
भीतर उसे कोई दर्शन हुआ है। वह गूँगा हो गया था
और केवल संकेत कर रहा था। 23और फिर ऐसा हुआ
कि जब उसका उपासना का समय पूरा हो गया तो वह
वापस अपने घर लौट गया। 24थोड़े दिनों बाद उसकी
पत्नी इलीशिबा गर्भवती हुई। पाँच महीने तक वह सबसे
अलग थलग रही। उसने कहा,

25"अब अन्त में जाकर इस प्रकार प्रभु ने मेरी सहायता
की है। लोगों के बीच मेरी लाज रखने को उसने मेरी
सुधि ली।"

कुँवारी मरियम

26इलीशिबा को जब छठा महीना चल रहा था, गलील
के एक नगर नासरत में परमेश्वर द्वारा स्वर्गदूत जिब्राईल

समुदाय यहूदी याजकों को 24 समुदायों में बाँटा गया था। देखें 1 इति. 24:7-18

को 27एक कुँवारी के पास भेजा गया जिसकी यूसुफ़
नाम के एक व्यक्ति से सगाई हो चुकी थी। वह दाऊद
का वंशज था। और उस कुँवारी का नाम मरियम था।
28जिब्राईल उसके पास आया और बोला, "तुझ पर
अनुग्रह हुआ है, तेरी जय हो। प्रभु तेरे साथ हैं।"
29यह वचन सुन कर वह बहुत घबरा गयी, वह सोच
में पड़ गयी कि इस अभिवादन का अर्थ क्या हो सकता
है?
30तब स्वर्गदूत ने उससे कहा, "मरियम, डर मत, तुझ
से परमेश्वर प्रसन्न है। 31सुन! तू गर्भवती होगी और
एक पुत्र को जन्म देगी और तू उसका नाम यीशु
रखेगी। 32वह महान, होगा और वह परम परमेश्वर का
पुत्र कहलायेगा। और प्रभु परमेश्वर उसे उसके पिता
दाऊद का सिंहासन प्रदान करेगें। 33वह अनन्त काल
तक याकूब के घराने पर राज करेगा तथा उसके राज्य
का अंत कभी नहींहोगा।"
34इस पर मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, "यह सत्य
कैसे हो सकता है? क्योंकि मैं तो अभी कुँवारी हूँ!"
35उत्तर में स्वर्गदूत ने उससे कहा, "तेरे पास पवित्र
आत्मा आयेगा और परम प्रधान (परमेश्वर) की शक्ति
तुझे अपनी छाया में ले लेगी। इस प्रकार वह जन्म लेने
वाला पवित्र बालक परमेश्वर का पुत्र कहलायेगा। 36और
यह भी सुन कि तेरे ही कुनबे की इलीशिबा के गर्भ में
भी बुढ़ापे में एक पुत्र है और उसके गर्भ का यह छठा
महीना है। लोग कहते थे कि वह बाँझ है। 37किन्तु
परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं।"
38मरियम ने कहा, "मैं प्रभु की दासी हूँ। जैसा तूने
मेरे लिये कहा है, वैसा ही हो!" और तब वह स्वर्गदूत
उसके पास से चला गया।

जकरयाह और इलीशिबा के पास मरियम का जाना

39उन्हीं दिनों मरियम तैयार होकर तुरन्त यहूदिया
के पहाड़ी प्रदेश में स्थित एक नगर को चल दी।
40फिर वह जकरयाह के घर पहुँची और उसने
इलीशिबा को अभिवादन किया। 41हुआ यह कि जब
इलीशिबा ने मरियम का अभिवादन सुना तो जो बच्चा
उसके पेट में था, उछल पड़ा और इलीशिबा पवित्र
आत्मा से अभिभूत हो उठी। 42ऊँची आवाज में पुकारते
हुए वह बोली, "तू सभी स्त्रियों में सबसे अधिक
भाग्यशाली है और जिस बच्चे को तू जन्म देगी, वह
धन्य है। 43किन्तु यह इतनी बड़ी बात मेरे साथ क्यों घटी
कि मेरे प्रभु की माँ मेरे पास आयी! 44क्योंकि तेरे
अभिवादन का शब्द जैसे ही मेरे कानों में पहुँचा, मेरे
पेट का बच्चा खुशी से उछल पड़ा। 45तू धन्य है, जिसने
यह विश्वास किया कि प्रभु ने जो कुछ कहा है वह हो
कर रहेगा।"

मरियम द्वारा परमेश्वर की स्तुति

46 तब मरियम ने कहा,
47"मेरी आत्मा प्रभु (परमेश्वर) की स्तुति करती है;
मेरी आत्मा मेरे रखवाले परमेश्वर में आनन्दित है।
48उसने अपनी दीन दासी की सुधि ली, हाँ आज के
बाद सभी मुझे धन्य कहेंगे।
49क्योंकि उस शक्तिशाली ने मेरे लिये महान कार्य
किये। उसका नाम पवित्र है।
50जो उससे डरते हैं वह उन पर पीढ़ी दर पीढ़ी दया
करता है। 51उसने अपने हाथों की शक्ति दिखाई। उसने
अहंकारी लोगों को उनके अभिमानपूर्ण विचारों के
साथ तितर–बितर कर दिया।
52उसने सम्राटों को उनके सिंहासनों से नीचे उतार
दिया। और उसने विनम्र लोगों को ऊँचा उठाया।
53उसने भूखे लोगों को अच्छी वस्तुओं से भरपूर
कर दिया और धनी लोगों को खाली हाथों लौटा दिया।
54वह अपने दास इस्राएल की सहायता करने आया
हमारे पुरखों को दिये वचन के अनुसार
55उसे इब्राहीम और उसके वंशजों पर सदा सदा दया
दिखाने की याद रही।"
56मरियम कोई तीन महीने तक इलीशिबा के साथ
ठहरी और फिर अपने घर लौट आयी।

यूहन्ना का जन्म

57फिर इलीशिबा का बच्चे को जन्म देने का समय
आया और उसके घर एक पुत्र पैदा हुआ। 58जब उसके
पड़ोसियों और उसके परिवार के लोगों ने सुना कि प्रभु
ने उस पर दया दर्शायी है तो सबने उसके साथ मिल
कर हर्ष मनाया।
59और फिर ऐसा हुआ कि आठवें दिन बालक का
ख़तना करने के लिए लोग वहाँ आये। वे उसके पिता
के नाम के अनुसार उसका नाम जकरयाह रखने जा
रहे थे, 60तभी उसकी माँ बोल उठी, "नहीं, इसका नाम
तो यूहन्ना रखा जाना है।"
61तब वे उससे बोले, "तुम्हारे किसी भी सम्बन्धी का
यह नाम नहीं है।" 62और फिर उन्होंने संकेतों में उसके
पिता से पूछा कि वह उसे क्या नाम देना चाहता है?
63इस पर जकरयाह ने उनसे लिखने के लिये एक
तख्ती माँगी और लिखा, "इसका नाम है यूहन्ना।" इस
पर वे सब अचरज में पड़ गये। 64तभी तत्काल उसका
मुँह खुल गया और उसकी वाणी फूट पड़ी। वह बोलने
लगा और परमेश्वर की स्तुति करने लगा। 65इससे
सभी पड़ोसी डर गये और यहूदिया के सारे पहाड़ी क्षेत्र
में लोगों में इन सब बातों की चर्चा होने लगी। 66जिस
किसी ने भी यह बात सुनी, अचरज में पड़कर कहने
लगा, "यह बालक क्या बनेगा?" क्योंकि प्रभु का हाथ
उस पर है।

जकरयाह की स्तुति

67तब उसका पिता जकरयाह पवित्र आत्मा से अभिभूत
हो उठा और उसने भविष्यवाणी की:

68"इस्राएल के प्रभु परमेश्वर की जय हो क्योंकि
वह अपने लोगों की सहायता के लिए आया और उन्हें
स्वतन्त्र कराया।

69उसने हमारे लिये अपने सेवक दाऊद के परिवार
से एक रक्षक प्रदान किया।

70जैसा कि उसने बहुत पहले अपने पवित्र
भविष्यवक्ताओं के द्वारा वचन दिया था।

71उसने हमें हमारे शत्रुओं से और उन सब के हाथों
से, जो हमें घृणा करते थे, हमारे छुटकारे का वचन
दिया था।

72हमारे पुरखों पर दया दिखाने का और अपने पवित्र
वचन को याद रखने का।

73उसका वचन था एक वह शपथ जो हमारे पूर्वज
इब्राहीम के साथ ली गयी थी

74कि हमारे शत्रुओं के हाथों से हमारा छुटकारा हो
और बिना किसी डर के प्रभु की सेवा करने की
अनुमति मिले।

75और अपने जीवन भर हर दिन उसके सामने हम
पवित्र और धर्मी रह सकें।

76"हे बालक, अब तू परम प्रधान (परमेश्वर) का
नबी कहलायेगा क्योंकि तू प्रभु के आगे–आगे चल
कर उसके लिए राह तैयार करेगा।

77और उसके लोगों से कहेगा कि उनके पापों की
क्षमा द्वारा उनका उद्धार होगा।

78हमारे परमेश्वर के कोमल अनुग्रह से एक नये
दिन का प्रभात हम पर ऊपर से उतरेगा।

79उन पर चमकने के लिये जो मौत की गहन छाया
में जी रहे हैं ताकि हमारे चरणों को शांति के मार्ग की
दिशा मिले।"

80इस प्रकार वह बालक बढ़ने लगा और उसकी
आत्मा दृढ़ से दृढ़तर होने लगी। वह जनता में प्रकट
होने से पहले तक निर्जन स्थानों में रहता रहा।

यीशु का जन्म
(*मत्ती 1:18-25*)

2 उन्हीं दिनों औगुस्तुस कैसर की ओर से एक आज्ञा
निकली कि सारे रोमी जगत की जनगणना अंकित
की जाये। 2यह पहली जनगणना थी। यह उन दिनों हुई
थी जब सीरिया का राज्यपाल क्विरिनियुस था। 3सो
गणना के लिए हर कोई अपने अपने नगर गया।

4यूसुफ भी, क्योंकि वह दाऊद के परिवार एवं वंश
से था, इसलिये वह भी गलील के नासरत नगर से
यहूदिया में दाऊद के नगर बैतलहम को गया। 5वह वहाँ
अपनी मँगेतर मरियम के साथ, जो गर्भवती भी थी,
अपना नाम लिखवाने गया था। 6ऐसा हुआ कि अभी
जब वे वहीं थे, मरियम का बच्चा जनने का समय आ
गया। 7और उसने अपने पहले पुत्र को जन्म दिया।
क्योंकि वहाँ सराय के भीतर उन लोगों के लिये कोई
स्थान नहीं मिल पाया था इसलिए उसने उसे कपड़ों में
लपेट कर चरनी में लिटा दिया।

यीशु के जन्म की सूचना

8तभी वहाँ उस क्षेत्र में बाहर खेतों में कुछ गडरिये थे
जो रात के समय अपने रेवड़ों की रखवाली कर रहे
थे। 9उसी समय प्रभु का एक स्वर्गदूत उनके सामने
प्रकट हुआ और उनके चारों ओर प्रभु का तेज प्रकाशित
हो उठा। वे सहम गए। 10तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा,
"डरो मत, मैं तुम्हारे लिये अच्छा समाचार लाया हूँ,
जिससे सभी लोगों को महान आनन्द होगा। 11क्योंकि
आज दाऊद के नगर में तुम्हारे उद्धारकर्ता प्रभु मसीह
का जन्म हुआ है। 12तुम्हें उसे पहचानने का चिह्न होगा
कि तुम एक बालक को कपड़ों में लिपटा, चरनी में
लेटा पाओगे।"

13उसी समय अचानक उस स्वर्गदूत के साथ बहुत से
और स्वर्गदूत वहाँ उपस्थित हुए। वे यह कहते हुए प्रभु
की स्तुति कर रहे थे,

14"स्वर्ग में परमेश्वर की जय हो और धरती पर
उन लोगों को शांति मिले जिनसे वह प्रसन्न है।"

15और जब स्वर्गदूत उन्हें छोड़कर स्वर्ग लौट गये तो
वे गड़ेरिये आपस में कहने लगे "आओ हम बैतलहम
चलें और जो घटना घटी है और जिसे प्रभु ने हमें बताया
है, उसे देखें।"

16सो वे शीघ्र ही चल दिये और वहाँ जाकर उन्होंने
मरियम और यूसुफ को पाया और देखा कि बालक
चरनी में लेटा हुआ है। 17गडरियों ने जब उसे देखा तो
इस बालक के विषय में जो संदेश उन्हें दिया गया था,
उसे उन्होंने सब को बता दिया। 18जिस किसी ने भी
उन्हें सुना, वे सभी गड़ेरियों की कही बातों पर आश्चर्य
करने लगे। 19किन्तु मरियम ने इन सब बातों को अपने
मन में बसा लिया और वह उन पर जब तब विचार
करने लगी। 20उधर वे गड़ेरिये जो कुछ उन्होंने सुना था
और देखा था, उस सब कुछ के लिए परमेश्वर की
महिमा और स्तुति करते हुए अपने अपने घरों को लौट
गये।

21और जब बालक के ख़तने का आठवाँ दिन आया
तो उस का नाम यीशु रखा गया। उसे यह नाम उसके
गर्भ में आने से भी पहले स्वर्गदूत द्वारा दे दिया गया था।

यीशु मन्दिर में अर्पित

22और जब मूसा की व्यवस्था के अनुसार सूतक के
दिन पूरे हुए और शुद्ध होने का समय आया तो वे यीशु

को प्रभु को समर्पित करने के लिये यरूशलेम ले गये।
23प्रभु की व्यवस्था में लिखे अनुसार, “हर पहली नर
सन्तान प्रभु को समर्पित मानी जाएगी।”* 24और प्रभु
की व्यवस्था कहती है, “एक जोड़ी कपोत या कबूतर
के दो बच्चे बलि चढ़ाने चाहिए”, इसलिए वे व्यवस्था
के अनुसार बलि चढ़ाने ले गये।

शमौन को यीशु का दर्शन

25यरूशलेम में शमौन नाम का एक धर्मी और भक्त
व्यक्ति हुआ करता था। वह इस्राएल के सुख-चैन की
बाट जोहता रहता था। पवित्र आत्मा उसके साथ था।
26पवित्र आत्मा द्वारा उसे प्रकट किया गया था कि जब
तक वह प्रभु के मसीह के दर्शन नहीं कर लेगा, मरेगा
नहीं। 27वह आत्मा से प्रेरणा पाकर मंदिर में आया और
जब व्यवस्था के विधि के अनुसार कार्य के लिये बालक
यीशु को उसके माता-पिता मंदिर में लाये। 28तो शमौन
यीशु को अपनी गोद में उठा कर परमेश्वर की स्तुति
करते हुए बोला:

29“प्रभु, अब तू अपने वचन के अनुसार मुझ अपने
दास को शांति के साथ मुक्त कर। 30क्योंकि मैं अपनी
आँखों से तेरे उस उद्धार का दर्शन कर चुका हूँ।

31जिसे तूने सभी लोगों के सामने तैयार किया है।

32यह बालक ग़ैर यहूदियों के लिए तेरे मार्ग को
उजागर करने के हेतु प्रकाश का स्रोत है और तेरे
अपने इस्राएल के लोगों के लिये यह महिमा है।”

33उसके माता-पिता यीशु के लिए कही गयी इन
बातों से अचरज में पड़ गये। 34फिर शमौन ने उन्हें
आशीर्वाद दिया और उसकी माँ मरियम से कहा, “यह
बालक इस्राएल में बहुतों के पतन या उत्थान का कारण
बनने और एक ऐसा चिन्ह ठहराया जाने के लिए निर्धारित
किया गया है जिसका विरोध किया जायेगा। 35और
तलवार से यहां तक कि तेरा अपना प्राण भी छिद
जायेगा जिससे असंख्य हृदयों के भाव प्रकट हो जायें।”

हन्नाह द्वारा यीशु के दर्शन

36वहीं हन्नाह नाम की एक महिला नबी थी। वह
अशेर कबीले के फनूएल की पुत्री थी। वह बहुत बूढ़ी
थी। अपने विवाह के बस सात साल बाद तक ही वह
पति के साथ रही थी। 37और फिर चौरासी वर्ष तक
वह वैसे ही विधवा रही। उसने मंदिर कभी नहीं छोड़ा।
उपवास और प्रार्थना करते हुए वह रात-दिन उपासना
करती रहती थी। 38उसी समय वह उस बच्चे और
माता-पिता के पास आई। उसने परमेश्वर को धन्यवाद
दिया और जो लोग यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोह
रहे थे, उन सब को उस बालक के बारे में बताया।

यूसुफ और मरियम का घर लौटना

39प्रभु की व्यवस्था के अनुसार सारा अपेक्षित विधि-
विधान पूरा करके वे गलील में अपने नगर नासरत
लौट आये। 40उधर वह बालक बढ़ता एवं हृष्ट-पुष्ट
होता गया। वह बहुत बुद्धिमान था और उस पर परमेश्वर
का अनुग्रह था।

बालक यीशु

41फ़सह पर्व पर हर वर्ष उसके माता-पिता यरूशलेम
जाया करते थे। 42जब वह बारह साल का हुआ तो सदा
की तरह वे पर्व पर गये। 43जब पर्व समाप्त हुआ और
वे घर लौट रहे थे तो यीशु वहीं यरूशलेम में रह गया
किन्तु माता-पिता को इसका पता नहीं चल पाया।
44यह सोचते हुए कि वह दल में कहीं होगा, वे दिन भर
यात्रा करते रहे। फिर वे उसे अपने संबन्धियों और
मित्रों के बीच खोजने लगे। 45और जब वह उन्हें नहीं
मिला तो उसे ढूँढते ढूँढते वे यरूशलेम लौट आये। 46और
फिर हुआ यह कि तीन दिन बाद वह उपदेशकों के
बीच बैठा, उन्हें सुनता और उनसे प्रश्न पूछता मंदिर में
उन्हें मिला। 47वे सभी जिन्होंने उसे सुना था, उसकी
सूझबूझ और उसके प्रश्नोत्तरों से आश्चर्यचकित थे।
48जब उसके माता-पिता ने उसे देखा तो वे दंग रह गये।
उसकी माता ने उससे पूछा, “बेटे, तुमने हमारे साथ ऐसा
क्यों किया? तेरे पिता और मैं तुझे ढूँढते हुए बुरी तरह
व्याकुल थे।”

49तब यीशु ने उनसे कहा, “आप मुझे क्यों ढूँढ रहे
थे? क्या तुम नहीं जानते कि मुझे मेरे पिता के घर में
ही होना चाहिये?”

50किन्तु यीशु ने उन्हें जो उत्तर दिया था, वे उसे
समझ नहीं पाये।

51फिर वह उनके साथ नासरत लौट आया और
उनकी आज्ञा का पालन करता रहा। उसकी माता इन
सब बातों को अपने मन में रखती जा रही थी। 52उधर
यीशु बुद्धि में, डील-डौल में और परमेश्वर तथा मनुष्यों
के प्रेम में बढ़ने लगा।

यूहन्ना का संदेश

(मत्ती 3:1-12; मरकुस 1:1-8; यूहन्ना 1:19-28)

3 तिबिरियुस कैसर के शासन के पन्द्रहवें साल में
जब यहूदिया का राज्यपाल पुन्तियुस पिलातुस था
और उस प्रदेश के चौथाई भाग के राजाओं में हेरोदेस
गलील का, उसका भाई फिलिप्पुस इतूरैया और
त्रखोनीतिस का, तथा लिसानियास अबिलेने का अधीनस्थ
शासक था। 2और यूहन्ना तथा कैफा महायाजक थे,
तभी जकरयाह के पुत्र यूहन्ना के पास जंगल में परमेश्वर
का वचन पहुँचा। 3सो यर्दन के आसपास के समूचे क्षेत्र
में घूम घूम कर वह पापों की क्षमा के लिये मन फिराव

“हर पहली ... मानी जाएगी” देखें निर्गमन 13:2, 2

के हेतु बपतिस्मा का प्रचार करने लगा। 4भविष्यवक्ता
यशायाह के वचनों की पुस्तक में जैसा लिखा है:
“किसी का जंगल में पुकारता हुआ शब्द: ‘प्रभु के
लिये मार्ग तैयार करो और उसके लिये राहें सीधी करो।
5हर घाटी भर दी जायेगी और हर पहाड़ और पहाड़ी
सपाट हो जायेंगे टेढ़ी–मेढ़ी और ऊबड़–खाबड़ राहें
समतल कर दी जायेंगी
6और सभी लोग परमेश्वर के उद्धार का दर्शन करेंगे!’”
यशायाह 40:3-5

7यूहन्ना उससे बपतिस्मा लेने आये अपार जन समूह
से कहता, “अरे साँप के बच्चो! तुम्हें किसने चेता दिया
है कि तुम आने वाले क्रोध से बच निकलो? 8परिणामों
द्वारा तुम्हें प्रमाण देना होगा कि वास्तव में तुम्हारा मन
फिरा है। और आपस में यह कहना तक आरंभ मत
करो कि ‘इब्राहीम हमारा पिता है।’ मैं तुमसे कहता हूँ
कि परमेश्वर इब्राहीम के लिये इन पत्थरों से भी बच्चे
पैदा करा सकता है। 9पेड़ों की जड़ों पर कुल्हाड़ा रखा
जा चुका है और हर उस पेड़ को जो उत्तम फल नहीं
देता, काट गिराया जायेगा और फिर उसे आग में झोंक
दिया जायेगा।”
10तब भीड़ ने उससे पूछा; “तो हमें क्या करना चाहिये?”
11उत्तर में उसने उनसे कहा, “जिस किसी के पास
दो कुर्ते हों, वह उन्हें, जिसके पास न हों, उनके साथ
बाँट लें। और जिसके पास भोजन हो, वह भी ऐसा ही
करे।”
12फिर उन्होंने उससे पूछा, “हे गुरु, हमें क्या करना
चाहिये?”
13इस पर उसने उनसे कहा, “जितना चाहिये उससे
अधिक एकत्र मत करो।”
14कुछ सैनिकों ने उससे पूछा, “और हमें क्या करना
चाहिये?”
सो उसने उन्हें बताया, “बल पूर्वक किसी से धन मत
लो। किसी पर झूठा दोष मत लगाओ। अपने वेतन में
संतोष करो।”
15लोग जब बड़ी आशा के साथ बाट जोह रहे थे और
यूहन्ना के बारे में अपने मन में यह सोच रहे थे कि
कहीं यही तो मसीह नहीं है।
16तभी यूहन्ना ने यह कहते हुए उन सब को उत्तर
दिया: “मैं तो तुम्हें जल से बपतिस्मा देता हूँ किन्तु वह
जो मुझ से अधिक सामर्थ्यवान है, आ रहा है। मैं उसके
जूतों की तनी खोलने योग्य भी नहीं हूँ। वह तुम्हें पवित्र
आत्मा और अग्नि द्वारा बपतिस्मा देगा। 17उसके हाथ
में फटकने की डाँगी है, जिससे वह अनाज को भूसे से
अलग कर अपने खलिहान में उठा कर रखता है।
किन्तु वह भूसे को ऐसी आग में झोंक देगा जो कभी
नहीं बुझने वाली।” 18इस प्रकार ऐसे ही और बहुत से
शब्दों से वह उन्हें समझाते हुए सुसमाचार सुनाया करता
था।

यूहन्ना के कार्य की समाप्ति

19(बाद में यूहन्ना ने उस चौथाई प्रदेश के अधीनस्थ
राजा हेरोदेस को उसके भाई की पत्नी हिरोदिआस के
साथ उसके बुरे सम्बन्धों और उसके दूसरे बुरे कर्मों के
लिए डाँटा फटकारा। 20इस पर हेरोदेस ने यूहन्ना को
बंदी बनाकर, जो कुछ कुकर्म उसने किये थे, उनमें
एक कुकर्म और जोड़ लिया।)

यूहन्ना द्वारा यीशु को बपतिस्मा
(मत्ती 3:13-17; मरकुस 1:9-11)

21ऐसा हुआ कि जब सब लोग बपतिस्मा ले रहे थे तो
यीशु ने भी बपतिस्मा लिया। और जब यीशु प्रार्थना कर
रहा था, तभी आकाश खुल गया। 22और पवित्र आत्मा
एक कबूतर का देह धारण कर उस पर नीचे उतरा।
और आकाशवाणी हुई कि “तू, मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ
से बहुत प्रसन्न हूँ।”

यूसुफ की वंश परम्परा
(मत्ती 1:1-17)

23यीशु ने जब अपना सेवा कार्य आरम्भ किया तो
वह स्वयं लगभग तीस वर्ष का था। ऐसा सोचा गया कि
वह एली के बेटे यूसुफ का पुत्र था। 24एली जो मत्तात
का, मत्तात जो लेवी का, लेवी जो मलकी का, मलकी
जो यन्ना का, यन्ना जो यूसुफ का, 25यूसुफ जो मत्तित्याह
का, मत्तित्याह जो आमोस का, आमोस जो नहूम का,
नहूम जो असल्याह का, असल्याह जो नोगह का, 26नोगह
जो मात का, मात जो मत्तित्याह का, मत्तित्याह जो शिमी
का, शिमी जो योसेख का, योसेख जो योदाह का
27योदाह जो योनान का, योनान जो रेसा का, रेसा जो
जरुब्बाबिल का, जरुब्बाबिल जो शालतियेल का,
शालतियेल जो नेरी का, 28नेरी जो मलकी का, मलकी
जो अद्दी का, अद्दी जो कोसाम का, कोसाम जो इलमोदाम
का, इलमोदाम जो ऐर का, 29ऐर जो यहोशुआ का
यहोशुआ जो इलाज़ार का, इलाज़ार जो योरीम का,
योरीम जो मत्तात का, मत्तात जो लेवी का, 30लेवी जो
शमौन का, शमौन जो यहूदा का, यहूदा जो यूसुफ का,
यूसुफ जो योनान का, योनान जो इलियाकीम का,
31इलयाकीम जो मेलिया का, मेलिया जो मिन्ना का,
मिन्ना जो मत्तात का, मत्तात जो नातान का, नातान जो
दाऊद का, 32दाऊद जो यिशै का, यिशै जो ओबेद का,
ओबेद जो बोअज का, बोअज जो सलमोन का, सलमोन
जो नहशोन का, 33नहशोन जो अम्मीनादाब का,
अम्मीनादाब जो आदमीन का, आदमीन जो अरनी का,
अरनी जो हिस्रोन का, हिस्रोन जो फिरिस का, फिरिस

जो यहूदाह का, 34यहूदाह जो याकूब का, याकूब जो
इसहाक का, इसहाक जो इब्राहीम का, इब्राहीम जो
तिरह का, तिरह जो नाहोर का, 35नाहोर जो सरूग का,
सरुग जो रऊ का, रऊ जो फिलिग का, फिलिग जो
एबिर का, एबिर जो शिलह का,

36शिलह जो केनान का, केनान जो अरफक्षद का,
अरफक्षद जो शेम का, शेम जो नूह का, नूह जो लिमिक
का, 37लिमिक जो मथूशिलह का, मथूशिलह जो हनोक
का, हनोक जो यिरिद का, यिरिद जो महललेल का,
महललेल जो केनान का, 38केनान जो एनोश का,
एनोश जो शेत का, शेत जो आदम का और आदम जो
परमेश्वर का पुत्र था।

यीशु की परीक्षा

(*मत्ती 4:1-11; मरकुस 1:12-13*)

4 पवित्र आत्मा से भावित होकर यीशु यर्दन नदी से
लौट आया। आत्मा उसे वीराने में राह दिखाता
रहा। 2वहाँ शैतान ने चालीस दिन तक उसकी परीक्षा
ली। उन दिनों यीशु बिना कुछ खाये रहा। फिर जब वह
समय पूरा हुआ तो यीशु को बहुत भूख लगी।
3सो शैतान ने उससे कहा, “यदि तू परमेश्वर का पुत्र
है, तो इस पत्थर से रोटी बन जाने को कह।”
4इस पर यीशु ने उसे उत्तर दिया, “शास्त्र में लिखा है:
‘मनुष्य केवल रोटी पर नहीं जीता।’”

व्यवस्था विवरण 8:3

5फिर शैतान उसे बहुत ऊँचाई पर ले गया और पल
भर में ही सारे संसार के राज्यों को उसे दिखाते हुए,
6शैतान ने उससे कहा, “मैं इन राज्यों का सारा वैभव
और अधिकार तुझे दे दूँगा क्योंकि वह मुझे दिया गया
है और मैं उसे जिसको चाहूँ दे सकता हूँ। 7सो यदि तू
मेरी उपासना करे तो यह सब तेरा हो जायेगा।”
8यीशु ने उसे उत्तर देते हुए कहा, “शास्त्र लिखा गया
है: ‘तुझे बस अपने प्रभु परमेश्वर की ही उपासना
करनी चाहिये। तुझे केवल उसी की सेवा करनी चाहिए!’”

व्यवस्था विवरण 6:13

9तब वह उसे यरूशलेम ले गया और वहाँ मंदिर के
सबसे ऊँचे शिखर पर ले जाकर खड़ा कर दिया। और
उससे बोला, “यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो यहाँ से
अपने आप को नीचे गिरा दे! 10क्योंकि शास्त्र लिखा है:
‘वह अपने स्वर्गदूतों को तेरे विषय में आज्ञा देगा कि वे
तेरी रक्षा करें।’” *भजन संहिता 91:11*

11और लिखा है: ‘वे तुझे अपनी बाहों में ऐसे उठा लेंगे
कि तेरा पैर तक किसी पत्थर को न छुए।’”

भजन संहिता 91:12

12यीशु ने उत्तर देते हुए कहा, “शास्त्र में यह भी
लिखा है:
‘तुझे अपने प्रभु परमेश्वर को परीक्षा में नहीं डालना
चाहिये।’” *व्यवस्था विवरण 6:16*

13सो जब शैतान उसकी सब तरह से परीक्षा ले चुका तो
उचित समय तक के लिये उसे छोड़ कर चला गया।

लोगों को यीशु का उपदेश

(*मत्ती 4:12-17; मरकुस 1:14-15*)

14फिर आत्मा की शक्ति से पूर्ण हो कर यीशु गलील
लौट आया और उस सारे प्रदेश में उसकी चर्चाएँ फैलने
लगी। 15वह उनकी धर्म-सभाओं में उपदेश देने लगा।
सभी उसकी प्रशंसा करते थे।
16फिर वह नासरत आया जहाँ वह पला-बढ़ा था।
और अपनी आदत के अनुसार सब्त के दिन वह यहूदी
धर्म सभागार में गया। जब वह पाठ पढ़ने खड़ा हुआ।
17तो यशायाह नबी की पुस्तक उसे दी गयी। उसने जब
पुस्तक खोली तो उसे वह स्थान मिला जहाँ लिखा था:
18“प्रभु का आत्मा मुझमें समाया है उसने मेरा
अभिषेक किया है ताकि मैं दीनों को सुसमाचार सुनाऊँ।
उसने मुझे बंदियों को यह घोषित करने के लिए कि वे
मुक्त है, अन्धों को यह सन्देश सुनाने को कि वे फिर
दृष्टि पायेंगे, दलितों को छुटकारा दिलाने को और
19प्रभु के अनुग्रह का समय बतलाने को भेजा है।”

यशायाह 61:1-2

20फिर उसने पुस्तक बंद करके सेवक को वापस दे
दी। और वह नीचे बैठ गया। प्रार्थना सभा में सब लोगों
की आँखें उसे ही निहार रही थीं। 21तब उसने उनसे
कहना आरम्भ किया, “आज तुम्हारे सुनते हुए शास्त्र
का यह वचन पूरा हुआ!”
22हर कोई उसकी बड़ाई कर रहा था। उसके मुख
से जो सुन्दर वचन निकल रहे थे, उन पर सब चकित
थे। वे बोले, “क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं है?”
23फिर यीशु ने उनसे कहा, “निश्चय ही तुम मुझे यह
कहावत सुनाओगे, ‘अरे वैद्य, स्वयं अपना इलाज कर।
कफ़रनहूम में तेरे जिन कर्मो के विषय में हमने सुना
है, उन कर्मो को यहाँ अपने स्वयं के नगर में भी
कर!’” 24यीशु ने तब उनसे कहा, “मैं तुमसे सत्य कहता
हूँ कि अपने नगर में किसी नबी की मान्यता नहीं होती।
25मैं तुमसे सत्य कहता हूँ इस्राएल में एलिय्याह के काल
में जब आकाश जैसे मुँद गया था और साढ़े तीन साल
तक सारे देश में भयानक अकाल पड़ा था, तब वहाँ
अनगिनत विधवाएँ थीं। 26किन्तु सैदा प्रदेश के सारपत
नगर की एक विधवा को छोड़ कर एलिय्याह को
किसी और के पास नहीं भेजा गया था। 27और नबी

एलिशा के काल में इस्राएल में बहुत से कोढ़ी थे किन्तु
उनमें से सीरिया के रहने वाले नामान के कोढ़ी को
छोड़ कर और किसी को शुद्ध नहीं किया गया था।"
28सो जब यहूदी प्रार्थना सभा में लोगों ने यह सुना तो
सभी को बहुत क्रोध आया। **29**सो वे खड़े हुए और
उन्होंने उसे नगर से बाहर धकेल दिया। वे उसे पहाड़
की उस चोटी पर ले गये जिस पर उनका नगर बसा था
ताकि वे वहाँ चट्टान से उसे नीचे फेंक दें। **30**किन्तु वह
उनके बीच से निकल कर कहीं अपनी राह चला गया।

दुष्टात्मा से छुटकारा दिलाना
(मत्ती 1:21-28)

31फिर वह गलील के एक नगर कफरनहूम पहुँचा
और सब्त के दिन लोगों को उपदेश देने लगा। **32**लोग
उसके उपदेश से आश्चर्यचकित थे क्योंकि उसका
संदेश अधिकारपूर्ण होता था। **33**वहीं उस प्रार्थना सभा
में एक व्यक्ति था जिसमें दुष्टात्मा समायी थी। वह ऊँचे
स्वर में चिल्लाया, **34**"हे यीशु नासरी! तू हमसे क्या
चाहता है? क्या तू हमारा नाश करने आया है? मैं
जानता हूँ तू कौन है–तू परमेश्वर का पवित्र पुरुष है!"
35यीशु ने झिड़कते हुए उससे कहा, "चुप रह! इसमें से
बाहर निकल आ!" इस पर दुष्टात्मा ने उस व्यक्ति को
लोगों के सामने एक पटकी दी और उसे बिना कोई
हानि पहुँचाए उसमें से बाहर निकल आयी।
36सभी लोग चकित थे। वे एक दूसरे से बात करते
हुए बोले, "यह कैसा वचन है? अधिकार और शक्ति के
साथ यह दुष्टात्माओं को आज्ञा देता है और वे बाहर
निकल आती हैं।" **37**उस क्षेत्र में आसपास हर कहीं
उसके बारे में समाचार फैलने लगा।

रोगी स्त्री का ठीक किया जाना
(मत्ती 8:14-17; मरकुस 1:29-34)

38तब यीशु प्रार्थना सभागार को छोड़ कर शमौन के
घर चला गया। शमौन की सास को बहुत ताप चढ़ा था।
उन्होंने यीशु को उसकी सहायता करने के लिये विनती
की। **39**यीशु उसके सिरहाने खड़ा हुआ और उसने ताप
को डाँटा। ताप ने उसे छोड़ दिया। वह तत्काल खड़ी हो
गयी और उनकी सेवा करने लगी।

यीशु द्वारा बहुतों को चंगा किया जाना

40जब सूरज ढल रहा था तो जिन के यहाँ
विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रस्त रोगी थे, वे सभी उन्हें
उसके पास लाये। और उसने अपना हाथ उनमें से हर
एक के सिर पर रखते हुए उन्हें चंगा कर दिया। **41**उनमें
बहुतों में से दुष्टात्माएँ चिल्लाती हुई यह कहती बाहर
निकल आयीं, "तू परमेश्वर का पुत्र है।" किन्तु उसने
उन्हें बोलने नहीं दिया, क्योंकि वे जानती थी, "वह
मसीह है।"

यीशु की अन्य नगरों को यात्रा
(मरकुस 1:35-39)

42जब पौ फटी तो वह वहाँ से किसी एकांत स्थान को
चला गया। किन्तु भीड़ उसे खोजते खोजते वहीं जा
पहुँची जहाँ वह था। उन्होंने प्रयत्न किया कि वह उन्हें
छोड़ कर न जाये।
43किन्तु उसने उनसे कहा, "परमेश्वर के राज्य का
सुसमाचार मुझे दूसरे नगरों में भी पहुँचाना है क्योंकि
मुझे इसी लिए भेजा गया है।"
44और इस प्रकार वह यहूदिया की प्रार्थना सभाओं में
निरन्तर उपदेश करने लगा।

यीशु के प्रथम शिष्य
(मत्ती 4:18-22; मरकुस 1:16-20)

5 बात यूँ हुई कि भीड़ में लोग यीशु को चारों ओर से
घेर कर जब परमेश्वर का वचन सुन रहे थे और
वह गन्नेसरत नामक झील के किनारे खड़ा था। **2**तभी
उसने झील के किनारे दो नावें देखीं। उनमें से मछुआरे
निकल कर अपने जाल साफ कर रहे थे। **3**यीशु उनमें
से एक नाव पर चढ़ गया जो कि शमौन की थी, और
उसने नाव को किनारे से कुछ हटा लेने को कहा।
फिर वह नाव पर बैठ गया और वहीं नाव पर से जन
समूह को उपदेश देने लगा।
4जब वह उपदेश समाप्त कर चुका तो उसने शमौन
से कहा, "गहरे पानी की तरफ बढ़ और मछली पकड़ने
के लिए अपने जाल डालो।"
5शमौन बोला, "स्वामी, हमने सारी रात कठिन परिश्रम
किया है, पर हमें कुछ नहीं मिल पाया, किन्तु तू कह
रहा है इसलिए मैं जाल डाले देता हूँ।"
6जब उन्होंने जाल फेंके तो बड़ी संख्या में मछलियाँ
पकड़ी गयी। उनके जाल जैसे फट रहे थे। **7**सो उन्होंने
दूसरी नावों में बैठे अपने साथियों को संकेत देकर
सहायता के लिये बुलाया। वे आ गये और उन्होंने दोनों
नावों पर इतनी मछलियाँ लाद दी कि वे मानों डूबने
लगीं।
8जब शमौन पतरस ने यह देखा तो वह यीशु के
चरणों में गिर कर बोला, "प्रभु मैं एक पापी मनुष्य हूँ।
तू मुझसे दूर रह।"
9उसने यह इसलिये कहा था कि इतनी मछलियाँ
बटोर पाने के कारण उसे और उसके सभी साथियों
को बहुत अचरज हो रहा था। **10**जब्दी के पुत्र याकूब
और यूहन्ना को भी, जो शमौन के साथी थे, इस प्रकार
बहुत आश्चर्य हुआ था। सो यीशु ने शमौन से कहा,
"डर मत, क्योंकि अब से आगे तू मनुष्यों को बटोरा
करेगा!"
11फिर वे अपनी नावें किनारे पर लाये और सब
कुछ त्याग कर यीशु के पीछे हो लिये।

कोढ़ी का शुद्ध किया जाना

(मत्ती 8:1-4; मरकुस 1:40-45)

12सो ऐसा हुआ कि जब यीशु एक नगर में था तभी
वहाँ कोढ़ से पूरी तरह ग्रस्त एक कोढ़ी भी था। जब
उसने यीशु को देखा तो दण्डवत प्रणाम करके उससे
प्रार्थना की, "प्रभु, यदि तू चाहे तो मुझे ठीक कर
सकता है।"

13इस पर यीशु ने अपना हाथ बढ़ा कर कोढ़ी को
यह कहते हुए छुआ, "मैं चाहता हूँ, ठीक हो जा!" और
तत्काल उसका कोढ़ जाता रहा। **14**फिर यीशु ने उसे
आज्ञा दी कि वह इस विषय में किसी से कुछ न कहे।
उससे कहा, "याजक के पास जा और उसे अपने आप
को दिखा और मूसा के आदेश के अनुसार भेंट चढ़ा
ताकि लोगों को तेरे ठीक होने का प्रमाण मिले।"

15किन्तु यीशु के विषय में समाचार और अधिक
गति से फैल रहे थे। और दल के दल लोग इकट्ठे हो
कर उसे सुनने और अपनी बीमारियों से छुटकारा पाने
उसके पास आ रहे थे। **16**किन्तु यीशु प्राय: प्रार्थना
करने कहीं एकान्त वन में चला जाया करता था।

लकवे के रोगी को चंगा करना

(मत्ती 9:1-8; मरकुस 2:1-12)

17ऐसा हुआ कि एक दिन जब वह उपदेश दे रहा था
तो वहाँ फ़रीसी और यहूदी धर्मशास्त्री भी बैठे थे। वे
गलील और यहूदिया के हर नगर तथा यरुशलेम से
आये थे। लोगों को ठीक करने के लिए प्रभु की शक्ति
उसके साथ थी। **18**तभी कुछ लोग खाट पर लकवे के
एक रोगी को लिये उसके पास आये। वे उसे भीतर
लाकर यीशु के सामने रखने का प्रयत्न कर रहे थे।
19किन्तु भीड़ के कारण उसे भीतर लाने का रास्ता न
पाते हुए वे ऊपर छत पर जा चढ़े और उन्होंने उसे
उसके बिस्तर समेत छत के बीचोबीच से खपरेल हटाकर
यीशु के सामने उतार दिया। **20**उनके विश्वास को देखते
हुए यीशु ने कहा, "हे मित्र, तेरे पाप क्षमा हुए।"

21तब यहूदी धर्मशास्त्री और फरीसी आपस में सोचने
लगे, "यह कौन है जो परमेश्वर के लिए ऐसे अपमान
के शब्द बोलता है? परमेश्वर को छोड़ दूसरा कौन है
जो पाप क्षमा कर सकता है?"

22किन्तु यीशु उनके सोच-विचार को ताड़ गया। सो
उत्तर में उसने उनसे कहा, "तुम अपने मन में ऐसा क्यों
सोच रहे हो? **23**सरल क्या है? यह कहना कि 'तेरे लिए
तेरे पाप क्षमा हुए' या यह कहना कि 'उठ और चल दे?'
24पर इसलिये कि तुम जान सको कि मनुष्य के पुत्र को
धरती पर पाप क्षमा करने का अधिकार है।" उसने
लकवे के मारे से कहा, "मैं तुझसे कहता हूँ, खड़ा हो,
अपना बिस्तर उठा और घर चला जा! **25**सो वह तुरन्त
खड़ा हुआ और उनके देखते देखते जिस बिस्तर पर
वह लेटा था, उसे उठा परमेश्वर की स्तुति करता हुआ
अपने घर चला गया। **26**वे सभी जो वहाँ थे आश्चर्यचकित
होकर परमेश्वर का गुणगान करने लगे। वे श्रद्धा और
विस्मय से भर उठे और बोले, "आज हमने कुछ अद्भुत
देखा है!"

लेवी को यीशु का बुलावा

(मत्ती 9:9-13; मरकुस 2:13-17)

27इसके बाद यीशु चल दिया। तभी उसने चुंगी की
चौकी पर बैठे लेवी नाम के एक कर वसूलने वाले को
देखा। वह उससे बोला, "मेरे पीछे चला आ!" **28**सो वह
खड़ा हुआ और सब कुछ तज कर उसके पीछे हो
लिया। **29**फिर लेवी ने अपने घर पर यीशु के सम्मान में
एक स्वागत समारोह किया। वहाँ कर वसूलने वालों
और दूसरे लोगों का एक बड़ा जमघट उनके साथ
भोजन कर रहा था। **30**तब फरीसियों और धर्मशास्त्रियों
ने उसके शिष्यों से यह कहते हुए शिकायत की, "तुम
कर वसूलने वालों और पापियों के साथ क्यों खाते-पीते
हो?"

31उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "स्वस्थ लोगों को
नहीं, बल्कि रोगियों को चिकित्सक की आवश्यकता
होती है। **32**मैं धर्मियों को नहीं, बल्कि पापियों को मन
फिराने के लिए बुलाने आया हूँ।"

उपवास पर यीशु का मत

(मत्ती 9:14-17; मरकुस 2:18-22)

33उन्होंने यीशु से कहा, "यूहन्ना के शिष्य प्राय: व्रत
रखते हैं और प्रार्थना करते हैं। और ऐसा ही फरीसियों
के अनुयायी भी करते हैं किन्तु तेरे अनुयायी तो हर
समय खाते पीते रहते हैं।"

34यीशु ने उनसे पूछा, "क्या दूल्हे के अतिथि जब
तक दूल्हा उनके साथ है, उपवास करते हैं? **35**किन्तु वे
दिन भी आयेंगे जब दूल्हा उनसे छीन लिया जायेगा।
फिर उन दिनों में वे भी उपवास करेंगे।"

36उसने उनसे एक दृष्टांत कहा कि, "कोई भी किसी
नयी पोशाक से कोई टुकड़ा फाड़ कर उसे पुरानी
पोशाक पर नहीं लगाता और यदि कोई ऐसा करता है
तो उसकी नयी पोशाक तो फटेगी ही, साथ ही वह नया
पेबन्द भी पुरानी पोशाक के साथ मेल नहीं खायेगा।
37कोई भी पुरानी मशकों में नयी दाखरस नहीं भरता
और यदि भरता है तो नयी दाखरस पुरानी मशकों को
फाड़ देगा। वह बिखर जायेगा और मशकें नष्ट हो
जायेंगी। **38**लोग हमेशा नयाँ दाखरस नयी मशकों में
भरते है। **39**पुराना दाखरस पी कर कोई भी नया की
चाहत नहीं करता क्योंकि वह कहता है, 'पुराना ही
उत्तम है।'"

सब्त का प्रभु यीशु

(मत्ती 12:1-8; मरकुस 2:23-28)

6 अब ऐसा हुआ कि सब्त के एक दिन यीशु जब
अनाज के कुछ खेतों से होता हुआ जा रहा था तो
उसके शिष्य अनाज की बालों को तोड़ते, हथेलियों पर
मसलते उन्हें खाते जा रहे थे। 2तभी कुछ फरीसियों ने
कहा, "जिसका सब्त के दिन किया जाना उचित नहीं
है, उसे तुम लोग क्यों कर रहे हो?"

3उत्तर देते हुए यीशु ने उनसे पूछा, "क्या तुमने नहीं
पढ़ा जब दाऊद और उसके साथी भूखे थे, तब दाऊद ने
क्या किया था? 4क्या तुमने नहीं पढ़ा कि उसने परमेश्वर
के घर में घुस कर, परमेश्वर को अर्पित रोटियाँ उठा
कर खा ली थी और उन्हें भी दी थी, जो उसके साथ
थे? जबकि याजकों को छोड़ कर उनका खाना किसी
के लिये भी उचित नहीं।" 5उसने आगे कहा, "मनुष्य
का पुत्र सब्त के दिन का भी प्रभु है।"

यीशु द्वारा सब्त के दिन रोगी का अच्छा किया जाना

(मत्ती 12:9-14; मरकुस 3:1-6)

6दूसरे सब्त के दिन ऐसा हुआ कि वह यहूदी धर्म
सभा में जाकर उपदेश देने लगा। वहीं एक ऐसा व्यक्ति
था जिसका दाहिना हाथ मुरझाया हुआ था। 7वहीं यहूदी
धर्मशास्त्री और फरीसी यह देखने की ताक में थे कि
वह सब्त के दिन किसी को चंगा करता है कि नहीं।
ताकि वे उस पर दोष लगाने का कोई कारण पा सकें।
8वह उनके विचारों को जानता था, सो उसने उस
मुरझाये हाथ वाले व्यक्ति से कहा, "उठ और सब के
सामने खड़ा हो जा।" वह उठा और वहाँ खड़ा हो गया।
9तब यीशु ने लोगों से कहा, "मैं तुमसे पूछता हूँ–सब्त के
दिन किसी का भला करना उचित है या किसी को
हानि पहुँचाना, किसी का जीवन बचाना उचित है या
किसी के जीवन को नष्ट करना?" 10यीशु ने चारों
ओर उन सब पर दृष्टि डाली और फिर उससे कहा,
"अपना हाथ सीधा फैला।" उसने वैसा ही किया और
उसका हाथ फिर से अच्छा हो गया। 11किन्तु इस पर
आग बबूला होकर वे आपस में विचार करने लगे कि
यीशु का क्या किया जाये?

बारह प्रेरितों का चुना जाना

(मत्ती 10:1-4; मरकुस 3:13-19)

12उन्हीं दिनों ऐसा हुआ कि यीशु प्रार्थना करने के
लिये एक पहाड़ पर गया और सारी रात परमेश्वर को
प्रार्थना करते हुए बिता दी। 13फिर जब भोर हुई तो
उसने अपने अनुयायियों को पास बुलाया। उनमें से
उसने बारह को चुना जिन्हें उसने "प्रेरित" नाम दिया:
14शमौन (जिसे उसने पतरस भी कहा) और उसका
भाई अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना, फिलिप्पुस, बरतुलमै,
15मत्ती, थोमा, हलफ़ई का बेटा याकूब, और शमौन
जिलौती; 16याकूब का बेटा यहूदा और यहूदा इस्करियोती
जो विश्वासघाती बना।

यीशु का लोगों को उपदेश देना और चंगा करना

(मत्ती 4:23-25; 5:1-12)

17फिर यीशु उनके साथ पहाड़ी से नीचे उतर कर
समतल स्थान पर आ खड़ा हुआ। वहीं उसके शिष्यों
की भी एक बड़ी भीड़ थी। साथ ही समूचे यहूदिया,
यरूशलेम, सूर और सैदा के सागर तट से अनगिनत
लोग वहाँ आ इकट्ठे हुए। 18वे उसे सुनने और रोगों से
छुटकारा पाने वहाँ आये थे। जो दुष्टात्माओं से पीड़ित
थे, वे भी वहाँ आकर अच्छे हुए। 19समूची भीड़ उसे छू
भर लेने के प्रयत्न में थी क्योंकि उसमें से शक्ति निकल
रही थी और उन सब को निरोग बना रही थी!

20फिर अपने शिष्यों को देखते हुए वह बोला:
"धन्य हो तुम जो दीन हो, स्वर्ग का राज्य तुम्हारा है,
21धन्य हो तुम, जो अभी भूखे रहे हो, क्योंकि तुम
तृप्त होगे धन्य हो तुम जो आज आँसू बहा रहे हो,
क्योंकि तुम आगे हँसोगे।

22"धन्य हो तुम, जब मनुष्य के पुत्र के कारण लोग
तुमसे घृणा करें, और तुमको बहिष्कृत करें, और तुम्हारी
निन्दा करें, तुम्हारा नाम बुरा समझकर काट दें। 23तब
उसी दिन मगन हो कर तुम मौज में उछलना क्योंकि
स्वर्ग में तुम महा प्रतिफल पाओगे। क्योंकि उनके पुरखों
ने भी भविष्य वक्ताओं के साथ ऐसा ही किया था।

24"तुमको धिक्कार है, ओ धनिक जन, क्योंकि
तुमको पूरा सुख चैन मिल रहा है।

25तुम्हें धिक्कार है, जो अब भरपेट हो क्योंकि तुम
भूखे रहोगे, तुम्हें धिक्कार है, जो अब हँस रहे हो,
क्योंकि तुम आँसू बहा बिलखा करोगे।

26"तुम्हें धिक्कार है, जब तुम्हारी प्रशंसा हो क्योंकि
उनके पूर्वजों ने भी झूठे नबियों के साथ ऐसा व्यवहार
किया।

अपने बैरी से भी प्रेम करो

(मत्ती 5:38-48; 7:12)

27"ओ सुनने वालो! मैं तुमसे कहता हूँ अपने शत्रु से
भी प्रेम करो। जो तुमसे घृणा करते हैं, उनके साथ भी
भलाई करो। 28उन्हें भी आशीर्वाद दो, जो तुम्हें शाप देते
हैं। उनके लिए भी प्रार्थना करो जो तुम्हारे साथ अच्छा
व्यवहार नहीं करते। 29यदि कोई तुम्हारे गाल पर थप्पड़
मारे तो दूसरा गाल भी उसके आगे कर दो। यदि कोई
तुम्हारा कोट ले ले तो उसे अपना कुर्ता भी ले लेने दो।
30जो कोई तुमसे माँगे, उसे दो। यदि कोई तुम्हारा कुछ
रख ले तो उससे वापस मत माँगो। 31तुम अपने लिये
जैसा व्यवहार दूसरों से चाहते हो, तुम्हें दूसरों के साथ

वैसा ही व्यवहार करना चाहिये। 32यदि तुम बस उन्हीं
को प्यार करते हो, जो तुम्हें प्यार करते हैं, तो इसमें
तुम्हारी क्या बड़ाई? क्योंकि अपने से प्रेम करने वालों
से तो पापी तक भी प्रेम करते हैं। 33यदि तुम बस उन्हीं
का भला करो, जो तुम्हारा भला करते हैं, तो तुम्हारी
क्या बड़ाई? ऐसा तो पापी तक करते हैं। 34यदि तुम
केवल उन्हीं को उधार देते हो, जिनसे तुम्हें वापस मिल
जाने की आशा है, तो तुम्हारी क्या बड़ाई? ऐसे तो पापी
भी पापियों को देते हैं कि उन्हें उनकी पूरी रकम वापस
मिल जाये। 35बल्कि अपने शत्रु को भी प्यार करो,
उनके साथ भलाई करो। कुछ भी लौट आने की आशा
छोड़ कर उधार दो। इस प्रकार तुम्हारा प्रतिफल महान
होगा और तुम परम परमेश्वर की संतान बनोगे क्योंकि
परमेश्वर कृतघ्नों और दुष्ट लोगों पर भी दया करता
है। 36जैसे तुम्हारा परम पिता दयालु है, वैसे ही तुम भी
दयालु बनो।

अपने आप को जानो

(मत्ती 7:1-5)

37"किसी को दोषी मत कहो तो तुम्हें भी दोषी नहीं
कहा जायेगा। किसी का खंडन मत करो तो तुम्हारा भी
खंडन नहीं किया जायेगा। क्षमा करो, तुम्हें भी क्षमा
मिलेगी। 38दूसरों को दो, तुम्हें भी दिया जायेगा। तुम्हारा
उपहार पूरी नाप के साथ दबा-दबा कर और हिला-हिला
कर अधिक जगह बनाकर बाहर उडेलकर तुम्हारी
झोली में वापस दिया जायेगा जिस नाप से तुम दूसरों को
देते हो, उसी से तुम्हें भी दिया जायेगा।"

39उसने उनसे एक दृष्टान्त कहा, "क्या कोई अन्धा
किसी दूसरे अन्धे को राह दिखा सकता है? क्या वे
दोनों ही किसी गढ़े में नहीं जा गिरेंगे? 40कोई भी
विद्यार्थी अपने पढ़ाने वाले से बड़ा नहीं हो सकता,
किन्तु जब कोई व्यक्ति पूरी तरह कुशल हो जाता है तो
वह अपने गुरु के समान बन जाता है।

41"तू अपने भाई की आँख में कोई तिनके को क्यों
देखता है और अपनी आँख का लट्ठा भी तुझे नहीं
सूझता? 42सो अपने भाई से तू कैसे कह सकता है:
'बंधु, तू अपनी आँख का तिनका मुझे निकालने दे।'
जब तू अपनी आँख के लट्ठे तक को नहीं देखता! अरे
कपटी, पहले अपनी आँख का लट्ठा दूर कर, तब तुझे
अपने भाई की आँख का तिनका बाहर निकालने के
लिये दिखाई दे पायेगा।

दो प्रकार के फल

(मत्ती 7:17-20; 12:34-35)

43"कोई भी ऐसा उत्तम पेड़ नहीं है जिस पर बुरा फल
लगता हो। न ही कोई ऐसा बुरा पेड़ है, जिस पर उत्तम
फल लगता हो। 44हर पेड़ अपने फल से ही जाना जाता
है। लोग कँटीली झाड़ी से अंजीर नहीं बटोरते। न ही
किसी झड़बेरी से लोग अंगूर उतारते हैं। 45एक अच्छा
मनुष्य उसके मन में अच्छाइयों का जो खजाना है, उसी
से अच्छी बातें उपजाता है। और एक बुरा मनुष्य, जो
उसके मन में बुराई है, उसी से बुराई पैदा करता है।
क्योंकि एक मनुष्य मुँह से वही बोलता है, जो उसके
हृदय से उफन कर बाहर आता है।

दो प्रकार के लोग

(मत्ती 7:24-27)

46"तुम मुझे 'प्रभु, प्रभु' क्यों कहते हो और जो मैं
कहता हूँ, उस पर नहीं चलते। 47हर कोई जो मेरे पास
आता है और मेरा उपदेश सुनता है और उस का
आचरण करता है, वह किस प्रकार का होता है, मैं
तुम्हें बताऊँगा। 48वह उस व्यक्ति के समान है जो मकान
बना रहा है। उसने गहरी खुदाई की और चट्टान पर
नींव डाली। फिर जब बाढ़ आयी और नदी उस मकान
से टकराई तो यह उसे हिला तक न सकी, क्योंकि वह
बहुत अच्छी तरह बना हुआ था। 49किन्तु जो मेरा
उपदेश सुनता है और उस पर चलता नहीं, वह उस
व्यक्ति के समान है जिसने बिना नींव धरे धरती पर
मकान बनाया। नदी उससे टकराई और वह तुरन्त ढह
गया और पूरी तरह तहस-नहस हो गया।"

विश्वास की शक्ति

(मत्ती 8:5-13; यूहन्ना 4:43-54)

7 यीशु लोगों को जो सुनाना चाहता था, उसे कह
चुकने के बाद वह कफ़रनहूम चला आया। 2वहाँ
एक सेनानायक था जिसका दास इतना बीमार था कि
मरने को पड़ा था। वह सेवक उसका बहुत प्रिय था।
3सेनानायक ने जब यीशु के विषय में सुना तो उसने
कुछ बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं को यह विनती करने के लिये
उसके पास भेजा कि वह आकर उसके सेवक के प्राण
बचा ले। 4जब वे यीशु के पास पहुँचे तो उन्होंने सच्चे
मन से विनती करते हुए कहा, "वह इस योग्य है कि तू
उसके लिये ऐसा करे। 5क्योंकि वह हमारे लोगों से प्रेम
करता है। उसने हमारे लिए धर्म-सभा-भवन का
निर्माण किया है।"

6सो यीशु उनके साथ चल दिया। अभी जब वह घर
से अधिक दूर नहीं था, उस सेनानायक ने उसके पास
अपने मित्र को यह कहने के लिये भेजा, "हे प्रभु, अपने
को कष्ट मत दे। क्योंकि मैं इतना अच्छा नहीं हूँ कि तू
मेरे घर में आये। 7इसीलिये मैंने तेरे पास आने तक की
नहीं सोची। किन्तु तू बस कह भर दे, मेरा सेवक स्वस्थ
हो जायेगा। 8मैं स्वयं किसी अधिकारी के नीचे काम
करने वाला व्यक्ति हूँ और मेरे नीचे भी कुछ सैनिक हैं।
मैं जब किसी से कहता हूँ 'जा' तो वह चला जाता है

और जब दूसरे से कहता हूँ 'आ' तो वह आ जाता है।
और जब मैं अपने दास से कहता हूँ, 'यह कर' तो वह
उसे ही करता है।"

9यीशु ने जब यह सुना तो उसे उस पर बहुत आश्चर्य
हुआ। जो जन समूह उसके पीछे चला आ रहा था,
उसकी तरफ़ मुड़ कर यीशु ने कहा, "मैं तुम्हें बताता हूँ
ऐसा विश्वास मुझे इस्राएल में भी कहीं नहीं मिला।"

10फिर भेजे हुए वे लोग जब वापस घर पहुँचे तो
उन्होंने उस सेवक को निरोग पाया।

मृतक को जीवन दान

11फिर ऐसा हुआ कि यीशु नाइन नाम के एक नगर
को चला गया। उसके शिष्य और एक बड़ी भीड़ उसके
साथ थी। 12वह जैसे ही नगर-द्वार के निकट आया तो
वहाँ से एक मुर्दे को ले जाया जा रहा था। वह अपनी
विधवा माँ का इकलौता बेटा था। सो नगर के अनगिनत
लोगों की भीड़ उसके साथ थी। 13जब प्रभु ने उसे देखा
तो उसे उस पर बहुत दया आयी। वह बोला, "रो मत।"
14फिर वह आगे बढ़ा और उसने ताबूत को छुआ वे
लोग जो ताबूत को ले जा रहे थे, निश्चल खड़े थे। यीशु
ने कहा, "नवयुवक, मैं तुझसे कहता हूँ, 'खड़ा हो जा!'"
15सो वह मरा हुआ आदमी उठ बैठा और बोलने लगा।
यीशु ने उसे उसकी माँ को वापस लौटा दिया।

16और फिर वे सभी श्रद्धा और विस्मय से भर उठे।
और यह कहते हुए परमेश्वर की महिमा बखानने लगे,
"हमारे बीच एक महान नबी प्रकट हुआ है।" और
कहने लगे, "परमेश्वर अपने लोगों की सहायता के
लिये आ गया है।" 17यीशु का यह समाचार यहूदिया
और आसपास के गाँवों में सब कहीं फैल गया।

यूहन्ना का प्रश्न
(*मत्ती 11:2-19*)

18इन सब बातों के विषय में यूहन्ना के अनुयायियों ने
उसे सब कुछ जा बताया। सो यूहन्ना ने अपने दो शिष्यों
को बुलाकर 19उन्हें प्रभु से यह पूछने को भेजा कि
"क्या तू वही है, जो आने वाला है या हम किसी और
की बाट जोहें?"

20फिर वे लोग जब यीशु के पास पहुँचे तो उन्होंने
कहा, "बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना ने हमें तुझसे यह
पूछने भेजा है कि क्या तू वही है जो आने वाला है या
हम किसी और की बाट जोहें?"

21उसी समय उसने बहुत से रोगियों को निरोग किया
और उन्हें वेदनाओं तथा दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाया।
और बहुत से अंधों को आँखें दीं। 22फिर उसने उन्हें
उत्तर दिया, "जाओ और जो तुमने देखा है और सुना है,
उसे यूहन्ना को बताओ: कि अंधे लोग फिर देख रहे हैं,
लँगड़े लूले चल फिर रहे हैं और कोढ़ी शुद्ध हो गये हैं।
बहरे सुन पा रहे हैं और मुर्दे फिर जिलाये जा रहे हैं।
और धनहीन लोगों को सुसमाचार सुनाया जा रहा है।
23वहव्यक्ति धन्य है जिसे मुझे स्वीकार करने में कोई
समस्या नहीं।"

24जब यूहन्ना का संदेश लाने वाले चले गये तो यीशु
ने भीड़ में लोगों को यूहन्ना के बारे में बताना प्रारम्भ
किया: "तुम बियाबान जंगल में क्या देखने गये थे? क्या
हवा में झूलता कोई सरकंडा? नहीं? 25फिर तुम क्या
देखने गये थे? क्या कोई पुरुष जिसने बहुत उत्तम वस्त्र
पहने हों? नहीं, वे लोग जो उत्तम वस्त्र पहनते हैं और
जो विलास का जीवन जीते हैं, वे तो राज-भवनों में ही
पाये जाते हैं। 26किन्तु बताओ तुम क्या देखने गये थे?
क्या कोई नबी? हाँ, मैं तुम्हे बताता हूँ कि तुमने जिसे
देखा है, वह किसी नबी से कहीं अधिक है। 27यह वही
है जिसके विषय में लिखा गया है:

'देख मैं तुझसे पहले ही अपना दूत भेज रहा हूँ, वह
तुझसे पहले ही राह तैयार करेगा।' *मलाकी 3:1*

28"मैं तुम्हें बताता हूँ कि किसी स्त्री से पैदा हुओं में
यूहन्ना से महान् कोई नहीं है। किन्तु फिर भी परमेश्वर
के राज्य का छोटे से छोटा व्यक्ति भी उससे बड़ा है।"

29(तब हर किसी ने, यहाँ तक कि कर वसूलने
वालों ने भी यूहन्ना को सुन कर उसका बपतिस्मा
लेकर यह मान लिया कि परमेश्वर का मार्ग सत्य है।
30किन्तु फरीसियों और व्यवस्था के जानकारों ने उसका
बपतिस्मा न लेकर उनके सम्बन्ध में परमेश्वर की
इच्छा को नकार दिया।)

31"तो फिर इस पीढ़ी के लोगों की तुलना मैं किस से
करूँ वे कि कैसे हैं? 32वे बाज़ार में बैठे उन बच्चों के
समान हैं जो एक दूसरे से पुकार कर कहते हैं:

'हमने तुम्हारे लिये बाँसुरी बजायी पर तुम नहीं नाचे।
हमने तुम्हारे लिए शोक-गीत गाया किन्तु तुम नहीं
रोये।'

33"क्योंकि बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना आया जो न तो
रोटी खाता था और न ही दाखरस पीता था और तुम
कहते हो, 'उसमें दुष्टात्मा है।' 34फिर खाते पीते हुए
मनुष्य का पुत्र आया, पर तुम कहते हो, 'देखो यह पेटू
है, पियक्कड़ है, कर वसूलने वालों और पापियों का
मित्र है।' 35बुद्धि की उत्तमता तो उसके परिणाम से ही
सिद्ध होती है।"

शमौन फरीसी

36एक फरीसी ने अपने साथ खाने पर उसे निमंत्रित
किया। सो वह फरीसी के घर गया और उसके यहाँ
भोजन करने बैठा। 37वहीं नगर में उन दिनों एक पापी
स्त्री थी, उसे जब यह पता लगा कि वह एक फरीसी के

घर भोजन कर रहा है तो वह संगमरमर के एक पात्र
में इत्र लेकर आयी। 38वह उसके पीछे उसके चरणों में
खड़ी थी। वह रो रही थी। अपने आँसुओं से वह उसके
पैर भिगोने लगी। फिर उसने पैरों को अपने बालों से
पोंछा और चरणों को चूम कर उन पर इत्र उँड़ेल दिया।
39उस फरीसी ने जिसने यीशु को अपने घर बुलाया था,
यह देखकर मन ही मन सोचा, “यदि यह मनुष्य नबी
होता तो जान जाता कि उसे छूने वाली यह स्त्री कौन है
और कैसी है? वह जान जाता कि यह तो पापिन है।”

40उत्तर में यीशु ने उससे कहा, “शमौन, मुझे तुझ से
कुछ कहना है।” वह बोला, “गुरु, कह।”

41यीशु ने कहा, “किसी साहूकार के दो कर्ज़दार थे।
एक पर उसके पाँच सौ चाँदी के सिक्के* निकलते थे
और दूसरे पर पचास। 42क्योंकि वे कर्ज़ नहीं लौटा पाये
थे इसलिये उसने दया पूर्वक दोनों के कर्ज़ माफ़ कर
दिये। अब बता दोनों में से उसे अधिक प्रेम कौन
करेगा?” 43शमौन ने उत्तर दिया, “मेरा विचार है, वही
जिसका उसने अधिक कर्ज़ छोड़ दिया।”

यीशु ने कहा, “तूने उचित न्याय किया।” 44फिर उस
स्त्री की तरफ़ मुड़ कर वह शमौन से बोला, “तू इस स्त्री
को देख रहा है? मैं तेरे घर में आया, तूने मेरे पैर धोने
को मुझे जल नहीं दिया किन्तु इसने मेरे पैर आँसुओं से
तर कर दिये। और फिर उन्हें अपने बालों से पोंछा।
45तूने स्वागत में मुझे नहीं चूमा किन्तु यह जब से मैं
भीतर आया हूँ, मेरे पैरों को निरन्तर चूमती रही है।
46तूने मेरे सिर पर तेल का अभिषेक नहीं किया,
किन्तु इसने मेरे पैरों पर इत्र छिड़का। 47इसीलिये मैं तुझे
बताता हूँ कि इसका अगाध प्रेम दर्शाता है कि इसके
बहुत से पाप क्षमा कर दिये गये हैं। किन्तु वह जिसे थोड़े
पापों की क्षमा मिली, वह थोड़ा प्रेम करता है।”

48तब यीशु ने उस स्त्री से कहा, “तेरे पाप क्षमा कर
दिये गये हैं।” 49फिर जो उसके साथ भोजन कर रहे थे,
वे मन ही मन सोचने लगे, “यह कौन है जो पापों को भी
क्षमा कर देता है?”

50तब यीशु ने उस स्त्री से कहा, “तेरे विश्वास ने तेरी
रक्षा की है। शान्ति के साथ जा।”

यीशु अपने शिष्यों के साथ

8 इसके बाद ऐसा हुआ कि यीशु परमेश्वर के राज्य
का सुसमाचार लोगों को सुनाते हुए नगर-नगर
और गाँव-गाँव घूमने लगा। उसके बारहों शिष्य भी
उसके साथ हुआ करते थे। 2उसके साथ कुछ स्त्रियाँ
भी हुआ करती थीं जिन्हें उसने रोगों और दुष्टात्माओं
से छुटकारा दिलाया था। इनमें मरियम मगदलीनी नाम
की एक स्त्री थी जिसे सात दुष्टात्माओं से छुटकारा
मिला था। 3हेरोदेस के प्रबन्ध अधिकारी खोजा की पत्नी
योअन्ना भी इन्हीं में थी। साथ ही सुसन्नाह तथा और
बहुत सी स्त्रियाँ भी थीं। ये स्त्रियाँ अपने ही साधनों से
यीशु और उसके शिष्यों की सेवा का प्रबन्ध करती थीं।

बीज बोने की दृष्टान्त कथा

(*मत्ती 13:1-17; मरकुस 4:1-12*)

4जब नगर-नगर से आकर लोगों की बड़ी भीड़
उसके यहाँ एकत्र हो रही थी, तो उसने उनसे एक
दृष्टान्त कथा कही:

5“एक किसान अपने बीज बोने निकला। जब उसने
बीज बोये तो कुछ बीज राह किनारे जा पड़े और पैरों
तले रुँद गये। और चिड़ियाएँ उन्हें चुग गयीं। 6कुछ बीज
चट्टानी धरती पर गिरे, वे जब उगे तो नमी के बिना
मुरझा गये। 7कुछ बीज कँटीली झाड़ियों में गिरे। काँटों
की बढ़वार भी उनके साथ हुई और काँटों ने उन्हें
दबोच लिया। 8और कुछ बीज अच्छी धरती पर गिरे। वे
उगे और उन्होंने सौ गुनी अधिक फसल दी।”

ये बातें बताते हुए उसने पुकार कर कहा, “जिसके
पास सुनने को कान हैं, वह सुन ले।”

9उसके शिष्यों ने उससे पूछा, “इस दृष्टान्त कथा का
क्या अर्थ है?”

10सो उसने बताया, “परमेश्वर के राज्य के रहस्य
जानने की सुविधा तुम्हें दी गयी है किन्तु दूसरों को यह
रहस्य दृष्टान्त कथाओं के द्वारा दिये गये हैं ताकि:

‘वे देखते हुए भी न देख पायें और सुनते हुए भी न
समझ पाये।’ *यशायाह 6:9*

बीज बोने के दृष्टान्त की व्याख्या

(*मत्ती 13:18-23; मरकुस 4:13-20*)

11“इस दृष्टान्त कथा का अर्थ यह है: बीज परमेश्वर
का वचन है। 12वे बीज जो राह किनारे गिरे थे, वे वो
व्यक्ति हैं जो जब वचन को सुनते हैं, तो शैतान आता है
और वचन को उनके मन से निकाल ले जाता है ताकि
वे विश्वास न कर पायें और उनका उद्धार न हो सके।
13वे बीज जो चट्टानी धरती पर गिरे थे उनका अर्थ है,
वे व्यक्ति जो जब वचन को सुनते हैं तो उसे आनन्द के
साथ अपनाते तो हैं। किन्तु उनके भीतर उसकी जड़
नहीं जम पाती। वे कुछ समय के लिये विश्वास करते हैं
किन्तु परीक्षा की घड़ी में वे डिग जाते हैं।

14“और जो बीज काँटो में गिरे, उसका अर्थ है, वे
व्यक्ति जो वचन को सुनते हैं किन्तु जब वे अपनी राह
चलने लगते हैं तो चिन्ताएँ, धन-दौलत और जीवन के
भोग विलास उसे दबा देते हैं, जिससे उन पर कभी पकी
फसल नहीं उतरती। 15और अच्छी धरती पर गिरे बीज
से अर्थ है वे व्यक्ति जो अच्छे और सच्चे मन से जब
वचन को सुनते हैं तो उसे धारण भी करते हैं। फिर
अपने धैर्य के साथ वे उत्तम फल देते हैं।”

चाँदी के सिक्के मूल में दीनारी।

अपने सत्य का उपयोग करो

(मत्ती 4:21-25)

16"कोई भी किसी दिये को बर्तन के नीचे ढक देने
को नहीं जलाता। या उसे बिस्तर के नीचे नहीं रखता।
बल्कि वह उसे दीवट पर रखता है ताकि जो भीतर
आयें, प्रकाश देख सकें। 17क्योंकि कुछ भी ऐसा छिपा
नहीं है जो उजागर नहीं होगा और कुछ भी ऐसा छिपा
नहीं है जिसे जना नहीं दिया जायेगा और जो प्रकाश में
नहीं आयेगा। 18इसलिये ध्यान से सुनो क्योंकि जिसके
पास है उसे और भी दिया जायेगा और जिसके पास नहीं
है, उससे जो उसके पास दिखाई देता है, वह भी ले लिया
जायेगा।"

यीशु के अनुयायी ही उसका सच्चा परिवार है

(मत्ती 12:46-50; मरकुस 3:31-35)

19तभी यीशु की माँ और उसके भाई उसके पास
आये किन्तु वे भीड़ के कारण उसके निकट नहीं जा
सके। 20इसलिये यीशु से यह कहा गया, "तेरी माँ और
तेरे भाई बाहर खड़े हैं। वे तुझसे मिलना चाहते हैं।"
21किन्तु यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मेरी माँ और मेरे
भाई तो ये हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते हैं और उस
पर चलते हैं!"

शिष्यों को यीशु की शक्ति का दर्शन

(मत्ती 8:23-27; मरकुस 4:35-41)

22तभी एक दिन ऐसा हुआ कि वह अपने शिष्यों के
साथ एक नाव पर चढ़ा और उनसे बोला, "आओ, झील
के उस पार चलें।" सो उन्होंने पाल खोल दी। 23जब वे
नाव चला रहे थे, यीशु सो गए। झील पर आँधी-तूफान
उतर आया। उनकी नाव में पानी भरने लगा। वे ख़तरे
में पड़ गये। 24सो वे उसके पास आये और उसे जगाकर
कहने लगे, "स्वामी! स्वामी! हम डूब रहे हैं!"

फिर वह खड़ा हुआ और उसने आँधी तथा लहरों
को डाँटा। वे थम गयीं और वहाँ शान्ति छा गयी। 25फिर
उसने उनसे पूछा, "कहाँ गया तुम्हारा विश्वास?" किन्तु
वे डरे हुए थे और अचरज में पड़े थे। वे आपस में बोले,
"आखिर यह है कौन जो हवा और पानी दोनों को
आज्ञा देता है और वे उसे मानते हैं?"

दुष्टात्मा से छुटकारा

(मत्ती 8:28-34; मरकुस 5:1-20)

26फिर वे गिरासेनियों के प्रदेश में पहुँचे जो गलील
झील के सामने पार था। 27जैसे ही वह किनारे पर
उतरा, नगर का एक व्यक्ति उसे मिला। उसमें दुष्टात्माएँ
समाई हुई थी। एक लम्बे समय से उसने न तो कपड़े
पहने थे और न ही वह घर में रहा था, बल्कि वह
मकबरों में रहा करता था। 28जब उसने यीशु को देखा
तो चिल्लाते हुए उसके सामने गिर कर ऊँचे स्वर में
बोला, "हे परम प्रधान (परमेश्वर) के पुत्र यीशु, तू
मुझसे क्या चाहता है? मैं विनती करता हूँ मुझे पीड़ा मत
पहुँचा।" 29उसने उस दुष्टात्मा को उस व्यक्ति में से
बाहर निकलने का आदेश दिया था, क्योंकि उस दुष्टात्मा
ने उस मनुष्य को बहुत बार पकड़ा था। ऐसे अवसरों
पर उसे बेड़ियों से बाँध कर पहरे में रखा जाता था।
किन्तु वह सदा ज़ंजीरों को तोड़ देता था और दुष्टात्मा
उसे वीराने में भगाए फिरती थी।

30सो यीशु ने उससे पूछा, "तेरा नाम क्या है?"

उसने कहा, "सेना" क्योंकि उसमें बहुत सी दुष्टात्माएँ
समाई थीं। 31वे यीशु से तर्क-वितर्क के साथ विनती
कर रही थीं कि वह उन्हें गहन गर्त में जाने की आज्ञा
न दे। 32अब देखो, तभी वहाँ पहाड़ी पर सुअरों का एक
रेवड़ चर रहा था। दुष्टात्माओं ने उससे विनती की कि
वह उन्हें सुअरों में जाने दे। सो उसने उन्हें अनुमति दे
दी। 33इस पर वे दुष्टात्माएँ उस व्यक्ति में से बाहर
निकली और उन सुअरों में प्रवेश कर गयी। और
सुअरों का वह रेवड़ नीचे उस ढलुआ तट से लुढ़कते
पुढ़कते दौड़ता हुआ झील में जा गिरा और डूब गया।

34रेवड़ के रखवाले, जो कुछ हुआ था, उसे देखकर
वहाँ से भाग खड़े हुए। और उन्होंने इसका समाचार
नगर और गाँव में जा सुनाया। 35फिर वहाँ के लोग जो
कुछ घटा था उसे देखने बाहर आये। वे यीशु से मिले।
और उन्होंने उस व्यक्ति को जिसमें से दुष्टात्माएँ निकली
थीं यीशु के चरणों में बैठे पाया। उस व्यक्ति ने कपड़े
पहने हुए थे और उसका दिमाग एकदम सही था। इससे
वे सभी डर गये। 36जिन्होंने देखा, उन्होंने लोगों को
बताया कि दुष्टात्मा-ग्रस्त व्यक्ति कैसे ठीक हुआ। 37इस
पर गिरासेन प्रदेश के सभी निवासियों ने उससे प्रार्थना
की कि वह वहाँ से चला जाये क्योंकि वे सभी बहुत डर
गये थे। सो यीशु नाव में आया और लौट पड़ा। 38किन्तु
जिस व्यक्ति में से दुष्टात्माएँ निकली थीं, वह यीशु से
अपने को साथ ले चलने की विनती कर रहा था। इस
पर यीशु ने उसे यह कहते हुए लौटा दिया कि, 39"घर
जा और जो कुछ परमेश्वर ने तेरे लिये किया है, उसे
बता।"

सो वह लौटकर, यीशु ने उसके लिये जो कुछ किया
था, उसे सारे नगर में सबसे कहता फिरा।

रोगी स्त्री का अच्छा होना और मृत लड़की को जीवनदान

(मत्ती 9:18-26; मरकुस 5:21-43)

40अब देखो जब यीशु लौटा तो जन समूह ने उसका
स्वागत किया क्योंकि वे सभी उसकी प्रतीक्षा में थे।
41तभी याईर नाम का एक व्यक्ति वहाँ आया। वह वहाँ

के यहूदी धर्म–सभा–भवन का मुखिया था। वह यीशु
के चरणों में गिर पड़ा और उससे अपने घर चलने की
विनती करने लगा। 42क्योंकि उसके बारह साल की
एक इकलौती बेटी थी, वह मरने वाली थी।

सो यीशु जब जा रहा था तो भीड़ उसे कुचले जा रही
थी। 43वहीं एक स्त्री थी जिसे बारह साल से खून बह
रहा था। जो कुछ उसके पास था, उसने चिकित्सकों
पर खर्च कर दिया था, पर वह किसी से भी ठीक नहीं
हो पायी थी। 44वह उसके पीछे आयी और उसने
उसके चोगे की कन्नी छू ली। और उसका खून जाना
तुरन्त रुक गया। 45तब यीशु ने पूछा, "वह कौन है
जिसने मुझे छुआ है?"

जब सभी मना कर रहे थे, पतरस बोला, "स्वामी,
सभी लोगों ने तो तुझे घेर रखा है और वे सभी तो तुझ
पर गिरे पड़ रहे हैं।"

46किन्तु यीशु ने कहा, "किसी ने मुझे छुआ है क्योंकि
मुझे लगा है जैसे मुझ में से शक्ति निकली हो।" 47उस
स्त्री ने जब देखा कि वह छुप नहीं पायी है, तो वह
काँपती हुई आयी और यीशु के सामने गिर पड़ी। वहाँ
सभी लोगों के सामने उसने बताया कि उसने उसे क्यों
छुआ था। और कैसे तत्काल वह अच्छी हो गयी। 48इस
पर यीशु ने उससे कहा, "पुत्री, तेरे विश्वास ने तेरा
उद्धार किया है। चैन से जा।"

49वह अभी बोल ही रहा था कि यहूदी धर्म–सभा–
भवन के मुखिया के घर से वहाँ कोई आया और बोला,
"तेरी बेटी मर चुकी है! सो गुरु को अब और कष्ट मत
दे।" 50यीशु ने यह सुन लिया। सो वह उससे बोला, "डर
मत! विश्वास रख। वह बच जायेगी।"

51जब यीशु उस घर में आया तो उसने अपने साथ
पतरस, यूहन्ना, याकूब और बच्ची के माता–पिता को
छोड़ कर किसी और को अपने साथ भीतर नहीं आने
दिया। 52सभी लोग उस लड़की के लिये रो रहे थे और
विलाप कर रहे थे। यीशु बोला, "रोना बंद करो। यह
मरी नहीं है, बल्कि सो रही है।"

53इस पर लोगों ने उसकी हँसी उड़ाई। क्योंकि वे
जानते थे कि लड़की मर चुकी है। 54किन्तु यीशु ने
उसका हाथ पकड़ा और पुकार कर कहा, "बच्ची,
खड़ी हो जा!" 55उसकी आत्मा लौट आयी, और वह
तुरंत उठ बैठी। यीशु ने आज्ञा दी, "इसे कुछ खाने को
दिया जाये।" 56इस पर लड़की के माता पिता को बहुत
अचरज हुआ किन्तु यीशु ने उन्हें आदेश दिया कि जो
घटना घटी है, उसे वे किसी को न बतायें।

यीशु द्वारा बारह शिष्यों का भेजा जाना

(मत्ती 10:5-15; मरकुस 6:7-13)

9 फिर यीशु ने बारहों शिष्यों को एकसाथ बुलाया।
और उन्हें दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाने का
अधिकार और शक्ति प्रदान की। उसने उन्हें रोग दूर
करने की शक्ति भी दी। 2फिर उसने उन्हें परमेश्वर के
राज्य का सुसमाचार सुनाने और रोगियों को चंगा करने
के लिये बाहर भेजा। 3उसने उनसे कहा, "अपनी यात्रा
के लिये वे कुछ साथ न लें: न लाठी, न झोला, न रोटी,
न चाँदी और न कोई अतिरिक्त वस्त्र। 4तुम जिस किसी
घर के भीतर जाओ, वहीं ठहरो। और जब तक विदा
लो, वहीं ठहरे रहो। 5और जहाँ कहीं लोग तुम्हारा
स्वागत न करें तो जब तुम उस नगर को छोड़ो तो
उनके विरुद्ध गवाही के रूप में अपने पैरों की धूल
झाड़ दो।"

6सो वहाँ से चल कर वे हर कहीं सुसमाचार का
उपदेश देते और लोगों को चंगा करते सभी गाँवों से होते
हुए यात्रा करने लगे।

हेरोदेस की भ्रान्ति

(मत्ती 14:1-12; मरकुस 6:14-29)

7अब जब एक चौथाई देश के राजा हेरोदेस ने, जो
कुछ हुआ था, उसके बारे में सुना तो वह चिंता में पड़
गया क्योंकि कुछ लोगों के द्वारा कहा जा रहा था,
"यूहन्ना को मरे हुओं में से जिला दिया गया है।" 8दूसरे
कह रहे थे, "एलिय्याह प्रकट हुआ है।" कुछ और कह
रहे थे, "पुराने युग का कोई नबी जी उठा है।"

9किन्तु हेरोदेस ने कहा, "मैंने यूहन्ना का तो सिर
कटवा दिया था, फिर यह है कौन जिसके बारे में मैं
ऐसी बातें सुन रहा हूँ?" सो हेरोदेस उसे देखने का जतन
करने लगा।

पाँच हज़ार से अधिक का भोज

(मत्ती 14:13-21; मरकुस 2:30-44; यूहन्ना 6:1-14)

10फिर जब प्रेरित लौट कर आये तो उन्होंने जो कुछ
किया था, सब यीशु को बताया। सो वह उन्हें वहाँ से
अपने साथ लेकर चुपचाप बैतसैदा नामक नगर को
चला गया। 11पर भीड़ को पता चल गया सो वह भी
उसके पीछे हो ली। यीशु ने उनका स्वागत किया और
परमेश्वर के राज्य के विषय में उन्हें बताया। और
जिन्हें उपचार की आवश्यकता थी, उन्हें चंगा किया।

12जब दिन ढलने लग रहा था तो वे बारहों उसके
पास आये और बोले, "भीड़ को विदा कर ताकि वे
आसपास के गाँवों और खेतों में जाकर आसरा और
भोजन पा सकें क्योंकि हम यहाँ सुदूर निर्जन स्थान में
हैं।"

13किन्तु उसने उनसे कहा, "तुम ही इन्हें खाने को
कुछ दो।" वे बोले, "हमारे पास बस पाँच रोटियों और दो
मछलियों को छोड़ कर और कुछ भी नहीं है। तू यह तो
नहीं चाहता है कि हम जाएँ और इन सब के लिए
भोजन मोल लेकर आएँ।" 14(वहाँ लगभग पाँच हज़ार

पुरुष थे।) किन्तु यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "उन्हें
पचास पचास के समूहों में बैठा दो।"
15सो उन्होंने वैसा ही किया और हर किसी को बैठा
दिया। 16फिर यीशु ने पाँच रोटियों और दो मछलियों को
लेकर स्वर्ग की ओर देखते हुए उनके लिये परमेश्वर
को धन्यवाद दिया और फिर उनके टुकड़े करते हुए
उन्हें अपने शिष्यों को दिया कि वे लोगों को परोस दें।
17तब सब लोग खाकर तृप्त हुए और बचे हुए टुकड़ों से
उसके शिष्यों ने बारह टोकरियाँ भरीं।

यीशु ही मसीह है

(मत्ती 16:13-19; मरकुस 8:27-29)

18हुआ यह कि जब यीशु अकेले प्रार्थना कर रहा था
तो उसके शिष्य भी उसके साथ थे। सो यीशु ने उनसे
पूछा, "लोग क्या कहते हैं कि मैं कौन हूँ?"
19उन्होंने उत्तर दिया, "बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना,
कुछ कहते हैं एलिय्याह किन्तु कुछ दूसरे कहते हैं
प्राचीन युग का कोई नबी उठ खड़ा हुआ है।"
20यीशु ने उनसे कहा, "और तुम क्या कहते हो कि
मैं कौन हूँ?" पतरस ने उत्तर दिया, "परमेश्वर का
मसीह। 21किन्तु इस विषय में किसी को भी न बताने
की चेतावनी देते हुए यीशु ने उनसे कहा, 22"यह निश्चित
है कि मनुष्य का पुत्र बहुत सी यातनाएँ झेलेगा और वह
बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं, याजकों और धर्मशास्त्रियों द्वारा
नकारा जाकर मरवा दिया जायेगा। और फिर तीसरे
दिन जीवित कर दिया जायेगा।"
23फिर उसने उन सब से कहा, "यदि कोई मेरे पीछे
चलना चाहता है तो उसे अपने आप को नकारना होगा
और उसे हर दिन अपना क्रूस उठाना होगा। तब वह
मेरे पीछे चले। 24क्योंकि जो कोई अपना जीवन बचाना
चाहता है, वह उसे खो बैठेगा पर जो कोई मेरे लिये
अपने जीवन का त्याग करता है, वही उसे बचा पायेगा।
25क्योंकि इसमें किसी व्यक्ति का क्या लाभ है कि वह
सारे संसार को तो प्राप्त कर ले किन्तु अपने आप को
नष्ट कर दे या भटक जाये। 26जो कोई भी मेरे लिये या
मेरे शब्दों के लिये लज्जित है,उसके लिये परमेश्वर का
पुत्र भी जब अपने वैभव, अपने परमपिता और पवित्र
स्वर्गदूतों के वैभव में प्रकट होगा तो उसके लिये लज्जित
होगा। 27किन्तु मैं सच्चाई के साथ तुमसे कहता हूँ यहाँ
कुछ ऐसे खड़े हैं, जो तब तक मृत्यु का स्वाद नहीं
चखेंगे, जब तक परमेश्वर के राज्य को देख न लें।"

मूसा और एलिय्याह के साथ यीशु

(मत्ती 17:1-8; मरकुस 9:2-8)

28इन शब्दों के कहने के लगभग आठ दिन बाद वह
पतरस, यूहन्ना और याकूब को साथ लेकर प्रार्थना
करने के लिए पहाड़ के ऊपर गया। 29फिर ऐसा हुआ
कि प्रार्थना करते हुए उसके मुख का स्वरूप कुछ भिन्न
ही हो गया और उसके वस्त्र चमचम करते सफेद हो
गये। 30वहीं उससे बात करते हुए दो पुरुष प्रकट हुए। वे
मूसा और एलिय्याह थे। 31जो अपनी महिमा के साथ
प्रकट हुए थे और यीशु की मृत्यु के विषय में बात कर
रहे थे जिसे वह यरुशलेम में पूरा करने पर था। 32किन्तु
पतरस और वे जो उसके साथ थे नींद से घिरे थे। सो
जब वे जागे तो उन्होंने यीशु की महिमा को देखा और
उन्होंने उन दो जनों को भी देखा जो उसके साथ खड़े
थे। 33और फिर हुआ यूँ कि जैसे ही वे उससे विदा ले
रहे थे, पतरस ने यीशु से कहा, "स्वामी, अच्छा है कि
हम यहाँ हैं, हमें तीन मण्डप बनाने हैं–एक तेरे लिए,
एक मूसा के लिये और एक एलिय्याह के लिये।" (वह
नहीं जानता था, वह क्या कह रहा था।) 34वह ये बातें
कर ही रहा था कि एक बादल उमड़ा और उसने उन्हें
अपनी छाया में समेट लिया। जैसे ही उन पर बादल
छाया, वे घबरा गये। 35तभी बादलों से आकाशवाणी हुई,
"यह मेरा पुत्र है, इसे मैंने चुना है, इसकी सुनो।" 36जब
आकाशवाणी हो चुकी तो उन्होंने यीशु को अकेले
पाया। वे इसके बारे में चुप रहे। उन्होंने जो कुछ देखा
था, उस विषय में उस समय किसी से कुछ नहीं कहा।

लड़के को दुष्टात्मा से छुटकारा

(मत्ती 17:14-18; मरकुस 9:14-27)

37अगले दिन ऐसा हुआ कि जब वे पहाड़ी से नीचे
उतरे तो उन्हें एक बड़ी भीड़ मिली। 38तभी भीड़ में से
एक व्यक्ति चिल्ला उठा, "गुरु, मैं प्रार्थना करता हूँ कि
मेरे बेटे पर अनुग्रह-दृष्टि कर। वह मेरी इकलौती
सन्तान है। 39अचानक एक दुष्ट आत्मा उसे जकड़
लेती है और वह चीख उठता है। उसे दुष्टात्मा ऐसे
मरोड़ में डालती है कि उसके मुँह से झाग निकलने
लगता है। वह उसे कभी नहीं छोड़ती और सताए जा
रही है। 40मैंने तेरे शिष्यों से प्रार्थना की कि वह उसे
बाहर निकाल दें किन्तु वे ऐसा नहीं कर सके।"
41तब यीशु ने उत्तर दिया, "अरे अविश्वासियो और
भटकाये गये लोगो, मैं और कितने दिन तुम्हारे साथ
रहूँगा और कब तक तुम्हारी सहता रहूँगा? अपने बेटे
को यहाँ ला।" 42अभी वह लड़का आ ही रहा था कि
दुष्टात्मा ने उसे पटकी दी और मरोड़ दिया। किन्तु यीशु
ने दुष्ट आत्मा को फटकारा और लड़के को निरोग
करके वापस उसके पिता को सौंप दिया। 43वे सभी
परमेश्वर की इस महानता से चकित हो उठे।

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु की चर्चा

(मत्ती 17:22-23; मरकुस 9:30-32)

यीशु जो कुछ कर रहा था उसे देखकर लोग जब
आश्चर्य कर रहे थे तभी यीशु ने अपने शिष्यों से कहा,
44"अब जो मैं तुमसे कह रहा हूँ, उन बातों पर ध्यान दो।

मनुष्य का पुत्र मनुष्य के हाथों पकड़वाया जाने वाला
है।" 45किन्तु वे इस बात को नहीं समझ सके। यह बात
उनसे छुपी हुई थी। सो वे उसे जान नहीं पाये। और वे
उस बात के विषय में उससे पूछने से डरते थे।

सबसे बड़ा कौन?

(मत्ती 18:1-5; मरकुस 9:33-37)

46एक बार यीशु के शिष्यों के बीच इस बात पर
विवाद छिड़ा कि उनमें सबसे बड़ा कौन है? 47यीशु ने
जान लिया कि उनके मन में क्या विचार हैं। सो उसने
एक बच्चे को लिया और उसे अपने पास खड़ा करके
48उनसे बोला, "जो कोई इस छोटे बच्चे का मेरे नाम में
सत्कार करता है, वह मानों मेरा ही सत्कार कर रहा
है। और जो कोई मेरा सत्कार करता है, वह उसका ही
सत्कार कर रहा है जिसने मुझे भेजा है। इसीलिए जो
तुममें सबसे छोटा है, वही सबसे बड़ा है।"

जो तुम्हारा विरोधी नहीं है, वह तुम्हारा ही है

(मरकुस 9:38-40)

49यूहन्ना ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, "स्वामी,
हमने तेरे नाम पर एक व्यक्ति को दुष्टात्माएँ निकालते
देखा है। हमने उसे रोकने का प्रयत्न किया, क्योंकि
वह हममें से कोई नहीं है, जो तेरा अनुसरण करते हैं।"
50इस पर यीशु ने यूहन्ना से कहा, "उसे रोक मत
क्योंकि जो तेरे विरोध में नहीं है, वह तेरे पक्ष में ही है।"

एक सामरी नगर

51अब ऐसा हुआ कि जब उसे ऊपर स्वर्ग में ले जाने
का समय आया तो वह यरूशलेम जाने का निश्चय
कर चल पड़ा। 52उसने अपने दूतों को पहले ही भेज
दिया था। वे चल पड़े और उसके लिये तैयारी करने को
एक सामरी गाँव में पहुँचे। 53किन्तु सामरियों ने वहाँ
उसका स्वागत सत्कार नहीं किया क्योंकि वह यरूशलेम
को जा रहा था। 54जब उसके शिष्यों–याकूब और
यूहन्ना ने यह देखा तो वे बोले, "प्रभु क्या तू चाहता है
कि हमआदेश दें कि आकाश से अग्नि बरसे और
उन्हें भस्म कर दे?"

55इस पर वह उनकी तरफ़ मुड़ा और उनको डाँटा
फटकारा,* 56फिर वे दूसरे गाँव चले गये।

यीशु का अनुसरण

(मत्ती 8:19-22)

57जब वे राह किनारे चले जा रहे थे किसी ने उससे
कहा, "तू जहाँ कहीं भी जाये, मैं तेरे पीछे चलूँगा।"
58यीशु ने उससे कहा, "लोमड़ियों के पास खोह होते
हैं। और आकाश की चिड़ियाओं के भी घोंसले होते हैं
किन्तु मनुष्य के पुत्र के पास सिर टिकाने तक को
कोई स्थान नहीं है।" 59उसने किसी दूसरे से कहा, "मेरे
पीछे हो ले।"

किन्तु वह व्यक्ति बोला, "हे प्रभु, मुझे जाने दे ताकि
मैं पहले अपने पिता को दफ़न कर आऊँ।"

60तब यीशु ने उससे कहा, "मरे हुओं को अपने मुर्दे
गाड़ने दे, तू जा और परमेश्वर के राज्य की घोषणा
कर।"

61फिर किसी और ने भी कहा, "हे प्रभु, मैं तेरे पीछे
चलूँगा किन्तु पहले मुझे अपने घर वालों से विदा ले
आने दे।"

62इस पर यीशु ने उससे कहा, "ऐसा कोई भी जो हल
पर हाथ रखने के बाद पीछे देखता है, परमेश्वर के
राज्य के योग्य नहीं है।"

यीशु द्वारा सत्तर शिष्यों का भेजा जाना

10 इन घटनाओं के बाद प्रभु ने सत्तर* व्यक्तियों
को और नियुक्त किया और फिर जिन–जिन
नगरों और स्थानों पर उसे स्वयं जाना था, दो–दो
करके उसने उन्हें अपने से आगे भेजा। 2वह उनसे
बोला, "फसल बहुत व्यापक है किन्तु, काम करने वाले
मज़दूर कम हैं। इसलिए फसल के प्रभु से विनती करो
कि वह अपनी फसलों में मज़दूर भेजे। 3जाओ और याद
रखो, मैं तुम्हें 'भेड़ियों' के बीच भेड़ के मेमनों के समान
भेज रहा हूँ। 4अपने साथ न कोई बटुआ, न थैला और
न ही जूते लेना। रास्ते में किसी से नमस्कार तक मत
करो। 5जिस किसी घर में जाओ, सबसे पहले कहो 'इस
घर को शान्ति मिले।' 6यदि वहाँ कोई शान्तिपूर्ण व्यक्ति
होगा तो तुम्हारी शान्ति उसे प्राप्त होगी। किन्तु यदि वह
व्यक्ति शान्तिपूर्ण नहीं होगा तो तुम्हारी शान्ति तुम्हारे
पास लौट आयेगी। 7जो कुछ वे लोग तुम्हें दें, उसे खाते
पीते उसी घर में ठहरो। क्योंकि मज़दूरी पर मज़दूर का
हक है। घर–घर मत फिरते रहो। 8और जब कभी तुम
किसी नगर में प्रवेश करो और उस नगर के लोग
तुम्हारा स्वागत सत्कार करें तो जो कुछ वे तुम्हारे
सामने परोसें, बस वही खाओ। 9उस नगर के रोगियों
को निरोग करो और उनसे कहो 'परमेश्वर का राज्य
तुम्हारे निकट आ पहुँचा है।' 10और जब कभी तुम
किसी ऐसे नगर में जाओ जहाँ के लोग तुम्हारा सम्मान
न करें, तो वहाँ की गलियों में जा कर कहो, 11'इस
नगर की वह धूल तक जो हमारे पैरों में लगी है, हम
तुम्हारे विरोध में यहीं पोंछे जा रहे हैं। फिर भी यह

पद 55 कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है। "और यीशु ने कहा, 'क्या तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा से सम्बन्ध रखते हो? 56मनुष्य का पुत्र मनुष्य की आत्माओं को नष्ट करने नहीं बल्कि उनका उद्धार करने आया है।'"

सत्तर लूका ने कदाचित यह संख्या बहत्तर लिखी थी किन्तु लूका की कुछ ग्रीक प्रतियों में यह संख्या सत्तर भी मिलती है।

ध्यान रहे कि परमेश्वर का राज्य निकट आ पहुँचा है।'
12मैं तुमसे कहता हूँ कि उस दिन उस नगर के लोगों से
सदोम के लोगों की दशा कहीं अच्छी होगी।"

अविश्वासियों को यीशु की चेतावनी
(*मत्ती 11:20-24*)

13"ओ खुराजीन, ओ बैतसैदा, तुम्हें धिक्कार है, क्योंकि
जो आश्चर्य कर्म तुममें किये गए, यदि उन्हें सूर और
सैदा में किया जाता, तो न जाने वे कब के टाट के
शोक-वस्त्र धारण कर और राख में बैठ कर मन
फिरा लेते। 14कुछ भी हो न्याय के दिन सूर और सैदा
की स्थिति तुमसे कहीं अच्छी होगी। 15अरे कफ़रनहूम
क्या तू स्वर्ग तक ऊँचा उठाया जायेगा? तू तो नीचे नरक
में पड़ेगा!

16"शिष्यो! जो कोई तुम्हें सुनता है, मुझे सुनता है,
और जो तुम्हारा निषेध करता है, वह मेरा निषेध
करता है। और जो मुझे नकारता है, वह उसे नकारता
है जिसने मुझे भेजा है।"

शैतान का पतन

17फिर वे सत्तर आनन्द के साथ वापस लौटे और
बोले, "हे प्रभु, दुष्टात्माएँ तक तेरे नाम में हमारी आज्ञा
मानती हैं!" 18इस पर यीशु ने उनसे कहा, "मैंने शैतान
को आकाश से बिजली के समान गिरते देखा है। 19सुनो!
साँपों और बिच्छुओं को पैरों तले रौंदने और शत्रु की
समूची शक्ति पर प्रभावी होने का सामर्थ्य मैंने तुम्हें दे
दिया है। तुम्हें कोई कुछ हानि नहीं पहुँचा पायेगा। 20किन्तु
बस इसी बात पर प्रसन्न मत होओ कि आत्माएँ तुम्हारे
वश में हैं बल्कि इस पर प्रसन्न होओ कि तुम्हारे नाम
स्वर्ग में अंकित हैं।"

यीशु की परम पिता से प्रार्थना
(*मत्ती 11:25-27; 13:16-17*)

21उस क्षण वह पवित्र आत्मा में स्थित होकर आनन्दित
हुआ और बोला, "हे परम पिता! हे स्वर्ग और धरती के
स्वामी! मैं तेरी स्तुति करता हूँ कि तूने इन बातों को
चतुर और प्रतिभावान लोगों से छुपा कर रखते हुए भी
शिशुओं* के लिये उन्हें प्रकट कर दिया। हे परम
पिता! निश्चय ही तू ऐसा ही करना चाहता था।

22"मुझे मेरे पिता द्वारा सब कुछ दिया गया है और
पिता के सिवाय कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है और
पुत्र के अतिरिक्त कोई नहीं जानता कि पिता कौन है,
या उसके सिवा जिसे पुत्र इसे प्रकट करना चाहता है।"

23फिर शिष्यों की तरफ मुड़ कर उसने चुपके से
कहा, "धन्य हैं वे आँखें जो तुम देख रहे हो, उसे देखती
हैं। 24क्योंकि मैं तुम्हें बताता हूँ कि उन बातों को बहुत
से नबी और राजा देखना चाहते थे, जिन्हें तुम देख रहे
हो, पर देख नहीं सके। जिन बातों को तुम सुन रहे हो,
वे उन्हें सुनना चाहते थे, पर वे सुन न पाये।"

अच्छे सामरी की कथा

25तब एक न्यायशास्त्री खड़ा हुआ और यीशु की
परीक्षा लेने के लिये उससे पूछा, "गुरु, अनन्त जीवन
पाने के लिये मैं क्या करूँ?"

26इस पर यीशु ने उस से कहा, "व्यवस्था के विधि में
क्या लिखा है, वहाँ तू क्या पढ़ता है?"

27उसने उत्तर दिया, "'तू अपने समूचे मन, सम्पूर्ण
आत्मा, सारी शक्ति और समग्र बुद्धि से अपने प्रभु से
प्रेम कर'।* और 'अपने पड़ोसी से वैसे ही प्यार कर,
जैसे तू अपने आप से करता है।'"*

28तब यीशु ने उससे कहा, "तूने ठीक उत्तर दिया है।
तो तू ऐसा ही कर इसी से तू जीवित रहेगा।"

29किन्तु उसने अपने को न्याय संगत ठहराने की
इच्छा करते हुए यीशु से कहा, "और मेरा पड़ोसी कौन
है?"

30यीशु ने उत्तर में कहा, "देखो, एक व्यक्ति यरूशलेम
से यरीहो जा रहा था कि वह डाकुओं से घिर गया।
उन्होंने सब कुछ छीन कर उसे नंगा कर दिया और
मार पीट कर उसे अधमरा छोड़, वे चले गये। 31अब
संयोग से उसी मार्ग से एक याजक जा रहा था। जब
उसने इसे देखा तो वह मुँह मोड़ कर दूसरी ओर चला
गया। 32उसी रास्ते होता हुआ, एक लेवी* भी वहीं
आया। उसने उसे देखा और वह भी मुँह मोड़ कर दूसरी
ओर चला गया। 33किन्तु एक सामरी भी जाते हुए वहीं
आया जहाँ वह पड़ा था। जब उसने उस व्यक्ति को देखा
तो उसके लिये उसके मन में करुणा उपजी, 34सो वह
उसके पास आया और उसके घावों पर तेल और
दाखरस डाल कर पट्टी बाँध दी। फिर वह उसे अपने
पशु पर लाद कर एक सराय में ले गया और उसकी
देखभाल करने लगा। 35अगले दिन उसने दो दीनारी
निकाली और उन्हें सराय वाले को देते हुए बोला,
'इसका ध्यान रखना और इससे अधिक जो कुछ तेरा
खर्चा होगा, जब मैं लौटूँगा, तुझे चुका दूँगा।'

36"बता तेरे विचार से डाकुओं के बीच घिरे व्यक्ति
का पड़ोसी इन तीनों में से कौन हुआ?"

37न्यायशास्त्री ने कहा, "वही जिसने उस पर दया
की।"

शिशुओं शिशुओं से अभिप्राय है सीधे सादे सरल अबोध जन।

"तू अपने ... प्रेम कर" व्यवस्था. 6:5

"अपने ... करता है" लैव्य. 19:18

लेवी लेविय समूह का एक व्यक्ति। यह परिवार समूह मंदिर में यहूदी याजक का सहायक होता था।

इस पर यीशु ने उससे कहा, "जा और वैसा ही कर
जैसा उसने किया!"

मरियम और मार्था

38जब यीशु और उसके शिष्य अपनी राह चले जा
रहे थे तो यीशु एक गाँव में पहुँचा। एक स्त्री ने, जिसका
नाम मार्था था, उदारता के साथ उसका स्वागत सत्कार
किया। 39उसकी मरियम नाम की एक बहन थी जो
प्रभु के चरणों में बैठी, जो कुछ वह कह रहा था, उसे
सुन रही थी। 40उधर तरह तरह की तैयारियों में लगी
मार्था व्याकुल होकर यीशु के पास आयी और बोली,
"हे प्रभु, क्या तुझे चिंता नहीं है कि मेरी बहन ने सारा
काम बस मुझ ही पर डाल दिया है? इसलिए उससे मेरी
सहायता करने को कह।"
41प्रभु ने उसे उत्तर दिया, "मार्था, हे मार्था, तू बहुत सी
बातों के लिये चिंतित और व्याकुल रहती है। 42किन्तु
बस एक ही बात आवश्यक है, और मरियम ने क्योंकि
अपने लिये उसी उत्तम अंश को चुन लिया है, सो वह
उससे नहीं छीना जायेगा।"

प्रार्थना

(मत्ती 6:9-15; मरकुस 7:7-11)

11 अब ऐसा हुआ कि यीशु कहीं प्रार्थना कर रहा
था। जब वह प्रार्थना समाप्त कर चुका तो उसके
एक शिष्य ने उससे कहा, "हे प्रभु, हमें सिखा कि हम
प्रार्थना कैसे करें। जैसा कि यूहन्ना ने अपने शिष्यों को
सिखाया था।"
2इस पर वह उनसे बोला, "तुम प्रार्थना करो, तो
कहो: 'हे पिता, तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य
आवे, 3हमारी दिन भर की रोटी प्रतिदिन दिया कर।
4हमारे अपराध क्षमा कर, क्योंकि हमने भी अपने
अपराधी क्षमा किये, हमे कठिन परीक्षा में मत पड़ने
दे।'"

माँगते रहो

5फिर उसने उनसे कहा, "मानो तुममें से किसी का
एक मित्र है, सो तुम आधी रात उसके पास जाकर
कहते हो, 'हे मित्र, मुझे तीन रोटियाँ दे। 6क्योंकि मेरा
एक मित्र अभी–अभी यात्रा पर मेरे पास आया है और
मेरे पास उसके सामने परोसने के लिए कुछ भी नहीं
है।' 7और कल्पना करो उस व्यक्ति ने भीतर से उत्तर
दिया, 'मुझे तंग मत कर, द्वार बंद हो चुका है, बिस्तर में
मेरे साथ मेरे बच्चे हैं, सो तुझे कुछ भी देने मैं खड़ा नहीं
हो सकता।' 8मैं तुम्हें बताता हूँ वह यद्यपि नहीं उठेगा
और तुम्हें कुछ नहीं देगा, किन्तु फिर भी क्योंकि वह
तुम्हारा मित्र है, सो तुम्हारे निरन्तर, बिना संकोच मांगते
रहने से वह खड़ा होगा और तुम्हारी आवश्यकता भर,
तुम्हें देगा। 9और इसीलिये मैं तुमसे कहता हूँ माँगो, तुम्हें
दिया जाएगा। खोजो, तुम पाओगे। खटखटाओ, तुम्हारे
लिए द्वार खोल दिया जायेगा। 10क्योंकि हर कोई जो
माँगता है, पाता है। जो खोजता है, उसे मिलता है। और
जो खटखटाता है, उसके लिए द्वार खोल दिया जाता है।
11तुममें ऐसा पिता कौन होगा जो यदि उसका पुत्र मछली
माँगे, तो मछली के स्थान पर उसे साँप थमा दे 12और
यदि वह अण्डा माँगे तो उसे बिच्छू दे दे। 13सो बुरे होते
हुए भी जब तुम जानते हो कि अपने बच्चों को उत्तम
उपहार कैसे दिये जाते हैं, तो स्वर्ग में स्थित परम पिता,
उन्हें पवित्र आत्मा कितना अधिक से अधिक देगा जो
उससे माँगते हैं,।"

यीशु में परमेश्वर की शक्ति

(मत्ती 12:22-30; मरकुस 3:20-27)

14फिर जब यीशु एक गूँगा बना डालने वाली दुष्टात्मा
को निकाल रहा था तो ऐसा हुआ कि जैसे ही वह
दुष्टात्मा बाहर निकली, तो वह गूँगा, बोलने लगा। भीड़
के लोग इससे बहुत चकित हुए। 15किन्तु उनमें से कुछ
ने कहा, "यह दैत्यों के शासक बैल्ज़ाबुल की सहायता
से दुष्टात्माओं को निकालता है।"
16किन्तु औरों ने उसे परखने के लिये किसी स्वर्गीय
चिन्ह की माँग की। 17किन्तु यीशु जान गया कि उनके
मनों में क्या है। सो वह उनसे बोला, "वह राज्य जिसमें
अपने भीतर ही फूट पड़ जाये, नष्ट हो जाता है और ऐसे
ही किसी घर का भी फूट पड़ने पर उसका नाश हो
जाता है। 18यदि शैतान अपने ही विरुद्ध फूट पड़े तो
उसका राज्य कैसे टिक सकता है? यह मैंने तुमसे
इसलिये पूछा है कि तुम कहते हो कि मैं बैल्ज़ाबुल की
सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ। 19किन्तु यदि
मैं बैल्ज़ाबुल की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता
हूँ तो तुम्हारे अनुयायी उन्हें किसकी सहायता से निकालते
हैं? सो तुझे तेरे अपने लोग ही अनुचित सिद्ध करेंगे।
20किन्तु यदि मैं दुष्टात्माओं को परमेश्वर की शक्ति से
निकालता हूँ तो यह स्पष्ट है कि परमेश्वर का राज्य
तुम तक आ पहुँचा है!
21"जब एक शक्तिशाली मनुष्य पूरी तरह हथियार कसे
अपने घर की रक्षा करता है तो उसकी सम्पत्ति सुरक्षित
रहती है। 22किन्तु जब कभी कोई उससे अधिक
शक्तिशाली उस पर हमला कर उसे हरा देता है तो वह
उसके सभी हथियारों को, जिन पर उसे भरोसा था,
उससे छीन लेता है और लूट के माल को वे आपस में
बाँट लेते हैं। 23"जो मेरे साथ नहीं है, मेरे विरोध में है
और वह जो मेरे साथ बटोरता नहीं है, बिखेरता है।"

खाली व्यक्ति

(मत्ती 12:43-45)

24"जब कोई दुष्टात्मा किसी मनुष्य से बाहर निकलती

है तो विश्राम को खोजते हुए सूखे स्थानों से होती हुई जाती है और जब उसे आराम नहीं मिलता तो वह कहती हैं, 'मैं अपने उसी घर लौटूँगी जहाँ से गयी हूँ।'
25और वापस जाकर वह उसे साफ़ सुथरा और व्यवस्थित पाती है। 26फिर वह जाकर अपने से भी अधिक दुष्ट अन्य सात दुष्टात्माओं को वहाँ लाती है। फिर वे उसमें जाकर रहने लगती हैं। इस प्रकार उस व्यक्ति की बाद की यह स्थिति पहली स्थिति से भी अधिक बुरी हो जाती है!"

वे धन्य हैं

27फिर ऐसा हुआ कि जैसे ही यीशु ने ये बातें कहीं, भीड़ में से एक स्त्री उठी और ऊँचे स्वर में बोली, "वह गर्भ धन्य है, जिसने तुझे धारण किया। वे स्तन धन्य है, जिनका तूने पान किया है।"

28इस पर उसने कहा, "धन्य तो बल्कि वे हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते हैं और उस पर चलते हैं!"

प्रमाण की माँग

(*मत्ती 12:38-42; मरकुस 8:12*)

29जैसे जैसे भीड़ बढ़ रही थी, वह कहने लगा, "यह एक दुष्ट पीढ़ी है। यह कोई चिह्न देखना चाहती है। किन्तु इसे योना के चिन्ह के सिवा और कोई चिह्न नहीं दिया जायेगा। 30क्योंकि जैसे नीनवे के लोगों के लिए योना चिह्न बना, वैसे ही इस पीढ़ी के लिये मनुष्य का पुत्र भी चिह्न बनेगा। 31दक्षिण की रानी* न्याय के दिन प्रकट होकर इस पीढ़ी के लोगों पर अभियोग लगायेगी और उन्हें दोषी ठहरायेगी क्योंकि वह धरती के दूसरे छोरों से सुलेमान का ज्ञान सुनने को आयी और अब देखो यहाँ तो कोई सुलेमान से भी बड़ा है। 32नीनवे के लोग न्याय के दिन इस पीढ़ी के लोगों के विरोध में खड़े होकर उन पर दोष लगायेंगे क्योंकि उन्होंने योना के उपदेश को सुन कर मन फिराया था। और देखो अब तो योना से भी महान कोई यहाँ है!

विश्व का प्रकाश बनो

(*मत्ती 5:15; 6-22:23*)

33"दीपक जलाकर कोई भी उसे किसी छिपे स्थान या किसी बर्तन के भीतर नहीं रखता, बल्कि वह इसे दीवट पर रखता है ताकि जो भीतर आयें प्रकाश देख सकें। 34तुम्हारी देह का दीपक तुम्हारी आँखें हैं, सो यदि आँखें साफ हैं तो सारी देह प्रकाश से भरी है किन्तु, यदि ये बुरी हैं तो तुम्हारी देह अंधकारमय हो जाती है। 35सो ध्यान रहे कि तुम्हारे भीतर का प्रकाश अंधकार नहीं है। 36अत: यदि तुम्हारा सारा शरीर प्रकाश से परिपूर्ण है और इसका कोई भी अंग अंधकारमय नहीं है तो वह पूरी तरह ऐसे चमकेगा मानो कोई दीपक तुम पर अपनी किरणों में चमक रहा हो।"

यीशु द्वारा फरीसियों की आलोचना

(*मत्ती 23:1-36; मरकुस 12:38-40; लूका 20:45-47*)

37यीशु ने जब अपनी बात समाप्त की तो एक फरीसी ने उससे अपने साथ भोजन करने का आग्रह किया। सो वह भीतर जाकर भोजन करने बैठ गया। 38किन्तु जब उस फरीसी ने यह देखा कि भोजन करने से पहले उसने अपने हाथ नहीं धोये तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।
39इस पर प्रभु ने उनसे कहा, "अब देखो तुम फरीसी थाली और कटोरी को बस बाहर से तो माँजते हो पर भीतर से तुम हुए लोग लालच और दुष्टता से भरे हो।
40अरे मूर्ख लोगो! क्या जिसने बाहरी भाग को बनाया, वही भीतरी भाग को भी नहीं बनाता? 41इसलिए जो कुछ भीतर है, उसे दीनों को दे दे। फिर तेरे लिए सब कुछ पवित्र हो जायेगा। 42अरे फ़रीसियो! तुम्हें धिक्कार है क्योंकि तुम अपने पुदीने और सुदाब बूटी और हर किसी जड़ी बूटी का दसवाँ हिस्सा तो अर्पित करते हो किन्तु परमेश्वर के लिये प्रेम और न्याय की उपेक्षा करते हो। किन्तु इन बातों को तुम्हें उन बातों की उपेक्षा किये बिना करना चाहिये था। 43ओ फरीसियो, तुम्हें धिक्कार है! क्योंकि तुम यहूदी प्रार्थना सभाओं में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आसन चाहते हो और बाज़ारों में सम्मानपूर्ण नमस्कार लेना तुम्हें भाता है। 44तुम्हें धिक्कार है क्योंकि तुम बिना किसी पहचान की उन क़ब्रों के समान हो जिन पर लोग अनजाने ही चलते हैं।"

यहूदी धर्मशास्त्रियों से यीशु की बातचीत

45तब एक न्यायशास्त्री ने यीशु से कहा, "गुरु, जब तू ऐसी बातें कहता है तो हमारा भी अपमान करता है।"

46इस पर यीशु ने कहा, "अरे न्यायशास्त्रियो! तुम्हें धिक्कार है। क्योंकि तुम लोगों पर ऐसे बोझ लादते हो जिन्हें उठाना कठिन है। और तुम स्वयं उन बोझों को एक उँगली तक से छूना भर नहीं चाहते। 47तुम्हें धिक्कार है क्योंकि तुम नबियों के लिये कब्रें बनाते हो जबकि वे तुम्हारे पूर्वज ही थे जिन्होंने उनकी हत्या की। 48इससे तुम यह दिखाते हो कि तुम अपने पूर्वजों के उन कामों का समर्थन करते हो। क्योंकि उन्होंने तो उन्हें मारा और तुमने उनकी कब्रें बनाई। 49इसीलिये परमेश्वर के ज्ञान ने भी कहा, 'मैं नबियों और प्रेरितों को भी उनके पास भेजूँगा। फिर कुछ को तो वे मार डालेंगे और कुछ को यातनाएँ देंगे।' 50इसीलिये संसार के प्रारम्भ से जितने भी नबियों का खून बहाया गया है, उसका हिसाब इस पीढ़ी के लोगों से चुकता किया जायेगा। 51यानी हाबिल की हत्या से लेकर जकरयाह की हत्या तक का हिसाब,

---

दक्षिण की रानी अर्थात् शीना हज़ार मील चल कर सुलैमान से परमेश्वर का ज्ञान सीखने आयी थी।

जो परमेश्वर के मंदिर और वेदी के बीच की गयी थी।
हाँ, मैं तुमसे कहता हूँ इस पीढ़ी के लोगों को इसके लिए
लेखा जोखा देना ही होगा।
52"हे न्याय शास्त्रियो, तुम्हें धिक्कार है, क्योंकि
तुमने ज्ञान की कुंजी ले तो ली है। पर उसमें न तो तुमने
खुद प्रवेश किया और जो प्रवेश करने का जतन कर
रहे थे उनको भी तुमने बाधा पहुँचाई।"
53और फिर जब यीशु वहाँ से चला गया तो वे धर्म
शास्त्री और फरीसी उससे घोर शत्रुता रखने लगे। बहुत
सी बातों के बारे में वे उससे तीखे प्रश्न पूछने लगे।
54क्योंकि वे उसे उसकी कही किसी बात से फँसाने की
टोह में लगे थे।

फरीसियों जैसे मत बनो

12 और फिर जब हजारों की इतनी भीड़ आ जुटी
कि लोग एक दूसरे को कुचल रहे थे तब यीशु
पहले अपने शिष्यों से कहने लगा, "फरीसियों के ख़मीर
से, जो उनका कपट है, बचे रहो। 2कुछ छिपा नहीं है
जो प्रकट नहीं कर दिया जायेगा। ऐसा कुछ अनजाना
नहीं है जिसे जना नहीं दिया जायेगा। 3इसीलिये हर वह
बात जिसे तुमने अँधेरे में कहा है, उजाले में सुनी
जायेगी। और एकांत कमरों में जो कुछ भी तुमने चुपचाप
किसी के कान में कहा है, मकानों की छतों पर से
घोषित किया जायेगा।

बस परमेश्वर से डरो

(मत्ती 10:28-31)

4"किन्तु मेरे मित्रो! मैं तुमसे कहता हूँ उनसे मत डरो
जो बस तुम्हारे शरीर को मार सकते हैं और उसके
बाद ऐसा कुछ नहीं है जो उनके बस में हो। 5मैं तुम्हें
दिखाऊँगा कि तुम्हें किस से डरना चाहिये। उससे डरो
जो तुम्हें मारकर नरक में डालने की शक्ति रखता है।
हाँ, मैं तुम्हें बताता हूँ, बस उसी से डरो।
6"क्या दो पैसे की पाँच चिड़ियाएँ नहीं बिकती? फिर
भी परमेश्वर उनमें से एक को भी नहीं भूलता। 7और
देखो तुम्हारे सिर का एक एक बाल तक गिना हुआ है।
डरो मत तुम तो बहुत सी चिड़ियाओं से कहीं अधिक
मूल्यवान हो।"

यीशु के नाम पर लज्जाओ मत

(मत्ती 10:32-33; 12:32; 10:19-20)

8"किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ जो कोई व्यक्ति सभी के
सामने मुझे स्वीकार करता है, मनुष्य का पुत्र भी उस
व्यक्ति को परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने स्वीकार
करेगा। 9किन्तु वह जो मुझे दूसरों के सामने न
कारेगा, उसे परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने नकार
दिया जायेगा।
10"और हर उस व्यक्ति को तो क्षमा कर दिया जायेगा
जो मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई शब्द बोलता है,
किन्तु जो पवित्र आत्मा की निन्दा करता है, उसे क्षमा
नहीं किया जायेगा।
11"सो जब वे तुम्हें यहूदी धर्म-सभाओं, शासकों और
अधिकारियों के सामने ले जायें तो चिंता मत करो कि
तुम अपना बचाव कैसे करोगे या तुम्हें क्या कुछ कहना
होगा।
12चिंता मत करो क्योंकि पवित्र आत्मा तुम्हें सिखायेगा
कि उस समय तुम्हें क्या बोलना चाहिये।"

स्वार्थ के विरुद्ध चेतावनी

13फिर भीड़ में से उससे किसी ने कहा, "गुरु, मेरे
भाई से पिता की सम्पत्ति का बँटवारा करने को कह
दे।"
14इस पर यीशु ने उससे कहा, "अरे भले मानुष, मुझे
तुम्हारा न्यायी या बँटवारा करने वाला किसने बनाया
है?" 15सो यीशु ने उनसे कहा, "सावधानी के साथ सभी
प्रकार के लोभ से अपने आप को दूर रखो। क्योंकि
आवश्यकता से अधिक सम्पत्ति होने पर भी जीवन का
आधार उसका संग्रह नहीं होता।"
16फिर उसने उन्हें एक दृष्टान्त कथा सुनाई: "किसी
धनी व्यक्ति की धरती पर भरपूर उपज हुई। 17वह
अपने मन में सोचते हुए कहने लगा, 'मैं क्या करूँ, मेरे
पास फ़सल को रखने के लिये स्थान तो है नहीं।'
18फिर उसने कहा, 'ठीक है मैं यह करूँगा कि अपने
अनाज के कोठों को गिरा कर बड़े कोठे बनवाऊँगा
और अपने समूचे अनाज को और सामान को वहाँ रख
छोड़ूँगा।' 19फिर अपनी आत्मा से कहूँगा, 'अरे मेरी आत्मा
अब बहुत सी उत्तम वस्तुएँ, बहुत से बरसों के लिये तेरे
पास संचित हैं। घबरा मत, खा, पी और मौज उड़ा।'
20किन्तु परमेश्वर उससे बोला, 'अरे मूर्ख, इसी रात तेरी
आत्मा तुझसे ले ली जायेगी। जो कुछ तूने तैयार किया
है, उसे कौन लेगा?' 21देखो, उस व्यक्ति के साथ भी
कुछ ऐसा ही हुआ है, वह अपने लिए भंडार भरता है
किन्तु परमेश्वर की दृष्टि में वह धनी नहीं है।"

परमेश्वर से बढ़कर कुछ नहीं है

(मत्ती 6:25-34; 19:21)

22फिर उसने अपने शिष्यों से कहा, "इसीलिये मैं
तुमसे कहता हूँ, अपने जीवन की चिंता मत करो कि
तुम क्या खाओगे अथवा अपने शरीर की चिंता मत
करो कि तुम क्या पहनोगे? 23क्योंकि जीवन भोजन से
और शरीर वस्त्रों से अधिक महत्त्वपूर्ण है। 24कौवों को
देखो, न वे बोते हैं, न ही वे काटते हैं। न उनके पास
भंडार है और न अनाज के कोठे। फिर भी परमेश्वर
उन्हें भोजन देता है। तुम तो कौवों से कितने अधिक

मूल्यवान हो। 25चिन्ता करके, तुम में से कौन ऐसा है,
जो अपनी आयु में एक घड़ी भी और जोड़ सकता है?
26क्योंकि यदि तुम इस छोटे से काम को भी नहीं कर
सकते तो शेष के लिये चिन्ता क्यों करते हो? 27कुमुदिनियों
को देखो, वे कैसे उगती हैं? न वे श्रम करती हैं, न
कताई, फिर भी मैं तुमसे कहता हूँ कि सुलेमान अपने
सारे वैभव के साथ उन में से किसी एक के समान भी
नहीं सज सका। 28इसलिये जब मैदान की घास को, जो
आज यहाँ है और जिसे कल ही भाड़ में झोंक दिया
जायेगा, परमेश्वर ऐसे वस्त्रों से सजाता है तो ओ अल्प
विश्वासियो, तुम्हें तो वह और कितने ही अधिक वस्त्र
पहनायेगा। 29और चिन्ता मत करो कि तुम क्या खाओगे
और क्या पीओगे। इनके लिये मत सोचो। 30क्योंकि
जगत के और सभी लोग इन वस्तुओं के पीछे दौड़ रहे
हैं पर तुम्हारा पिता तो जानता ही है कि तुम्हें इन
वस्तुओं की आवश्यकता है। 31बल्कि तुम तो उसके
राज्य की ही चिन्ता करो। ये वस्तुएँ तो तुम्हें दे ही दी
जायेंगी।

धन पर भरोसा मत करो

32"मेरी भोली भेड़ो, डरो मत, क्योंकि तुम्हारा परम
पिता तुम्हें स्वर्ग का राज्य देने को तत्पर है। 33सो
अपनी सम्पत्ति बेच कर धन गरीबों में बाँट दो। अपने
पास ऐसी थैलियाँ रखो जो पुरानी न पड़ें अर्थात् कभी
समाप्त न होने वाला धन स्वर्ग में जुटाओ जहाँ उस तक
किसी चोर की पहुँच न हो। और न उसे कीड़े मकौड़े
नष्ट कर सकें। 34क्योंकि जहाँ तुम्हारा कोष है, वहीं
तुम्हारा मन भी रहेगा।

सदा तैयार रहो
(मत्ती 24:45-51)

35"कर्म करने को सदा तैयार रहो। और अपने दीपक
जलाए रखो। 36और उन लोगों के जैसे बनो जो ब्याह के
भोज से लौटकर आते अपने स्वामी की प्रतीक्षा में रहते
है ताकि, जब वह आये और द्वार खटखटाये तो वे
तत्काल उसके लिए द्वार खोल सकें। 37वे सेवक धन्य हैं
जिन्हें स्वामी आकर जागते और तैयार पाएगा। मैं तुम्हें
सच्चाई के साथ कहता हूँ कि वह भी उनकी सेवा के
लिये कमर कस लेगा और उन्हें खाने की चौकी पर
भोजन के लिए बिठायेगा। वह आयेगा और उन्हें भोजन
करायेगा। 38वह चाहे आधी रात से पहले आए और
चाहे आधी रात के बाद यदि उन्हें तैयार पाता है तो वे
धन्य है। 39इस बात के लिए निश्चित रहो कि यदि घर
के स्वामी को यह पता होता कि चोर किस घड़ी आ
रहा है, तो वह उसे अपने घर में सेंध नहीं लगाने देता।
40सो तुम भी तैयार रहो क्योंकि मनुष्य का पुत्र ऐसी
घड़ी आयेगा जिसे तुम सोच भी नहीं सकते।"

विश्वासपात्र सेवक कौन?

41तब पतरस ने पूछा, "हे प्रभु, यह दष्टान्त कथा तू
हमारे लिये कह रहा है या सब के लिये?"

42इस पर यीशु ने कहा, "तो फिर ऐसा विश्वास-पात्र,
बुद्धिमान प्रबन्ध-अधिकारी कौन होगा जिसे प्रभु
अपने सेवकों के ऊपर उचित समय पर, उन्हें भोजन
सामग्री देने के लिये नियुक्त करेगा? 43वह सेवक धन्य
है जिसे उसका स्वामी जब आये तो उसे वैसा ही करते
पाये। 44मैं सच्चाई के साथ तुमसे कहता हूँ कि वह
उसे अपनी सभी सम्पत्तियों का अधिकारी नियुक्त
करेगा। 45किन्तु यदि वह सेवक अपने मन में यह कहे
कि मेरा स्वामी तो आने में बहुत देर कर रहा है और
वह दूसरे पुरुष और स्त्री सेवकों को मारना पीटना
आरम्भ कर दे तथा खाने-पीने और मदमस्त होने
लगे 46तो उस सेवक का स्वामी ऐसे दिन आ
जायेगा जिसकी वह सोचता तक नहीं। एक ऐसी घड़ी
जिसके प्रति वह अचेत है। फिर वह उसके
टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा और उसे अविश्वासियों के
बीच स्थान देगा।

47वह सेवक जो अपने स्वामी की इच्छा जानता है
और उसके लिए तत्पर नहीं होता या जैसा उसका
स्वामी चाहता है, वैसा ही नहीं करता, उस सेवक पर
तीखी मार पड़ेगी। 48किन्तु वह जिसे अपने स्वामी की
इच्छा का ज्ञान नहीं और कोई ऐसा काम कर बैठे जो
मार पड़ने योग्य हो तो उस सेवक पर हल्की मार
पड़ेगी। क्योंकि प्रत्येक उस व्यक्ति से जिसे बहुत अधिक
दिया गया है, अधिक अपेक्षित किया जायेगा। उस व्यक्ति
से जिसे लोगों ने अधिक सौंपा है, उससे लोग अधिक ही
माँगेंगे।

यीशु के साथ असहमति
(मत्ती 10:34-36)

49"मैं धरती पर एक आग भड़काने आया हूँ। मेरी
कितनी इच्छा है कि वह कदाचित् अभी तक भड़क
उठती। 50मेरे पास एक बपतिस्मा है जो मुझे लेना है जब
तक यह पूरा नहीं हो जाता, मैं कितना व्याकुल हूँ।
51तुम क्या सोचते हो मैं इस धरती पर शान्ति स्थापित
करने के लिये आया हूँ? नहीं! मैं तुम्हें बताता हूँ, मैं तो
विभाजन

करने आया हूँ। 52क्योंकि अब से आगे एक घर के
पाँच आदमी एक दूसरे के विरुद्ध बट जायेंगे। तीन दो के
विरोध में, और दो तीन के विरोध में हो जायेंगे।

53पिता पुत्र के विरोध में, और पुत्र पिता के विरोध
में, माँ बेटी के विरोध में, और बेटी माँ के विरोध में,
सास, बहू के विरोध में और बहू सास के विरोध में हो
जायेंगी।"

समय की पहचान
(*मत्ती 16:2-3*)

54फिर वह भीड़ से बोला, "जब तुम पश्चिम की ओर
से किसी बादल को उठते देखते हो तो तत्काल कह
उठते हो, 'वर्षा आ रही है' और फिर ऐसा ही होता है।
55और फिर जब दक्षिणी हवा चलती है, तुम कहते हो,
'गर्मी पड़ेगी' और ऐसा ही होता है। 56अरे कपटियो! तुम
धरती और आकाश के स्वरूपों की व्याख्या करना तो
जानते हो, फिर ऐसा क्योंकि तुम वर्तमान समय की
व्याख्या करना नहीं जानते?"

अपनी समस्याएँ सुलझाओ
(*मत्ती 5:25-26*)

57"जो उचित है, उसके निर्णायक तुम अपने आप
क्यों नहीं बनते? 58जब तुम अपने विरोधी के साथ
अधिकारियों के पास जा रहे हो तो रास्ते में ही उसके
साथ समझौता करने का जतन करो। नहीं तो कहीं ऐसा
न हो कि वह तुम्हें न्यायाधीश के सामने खींच ले जाये
और न्यायाधीश तुम्हें अधिकारी को सौंप दे। और
अधिकारी तुम्हें जेल में बन्द कर दे। 59मैं तुम्हें बताता हूँ,
तुम वहाँ से तब तक नहीं छूट पाओगे जब तक अंतिम
पाई तक न चुका दो।"

मन बदलो

13 उस समय वहाँ उपस्थित कुछ लोगों ने यीशु
को उन गलीलियों के बारे में बताया जिनका
रक्त पिलातुस ने उनकी बलियों के साथ मिला दिया था।
2सो यीशु ने उन से कहा, "तुम क्या सोचते हो कि ये
गलीली दूसरे सभी गलीलियों से बुरे पापी थे क्योंकि उन्हें
ये बातें भुगतनी पड़ीं? 3नहीं, मैं तुम्हें बताता हूँ, यदि तुम
मन नहीं, फिराओगे तो तुम सब भी वैसी ही मौत मरोगे
जैसी वे मरे थे। 4या उन अट्ठारह व्यक्तियों के विषय में
तुम क्या सोचते हो जिनके ऊपर शीलोह के बुर्ज ने गिर
कर उन्हें मार डाला। क्या सोचते हो, वे यरूशलेम में
रहने वाले दूसरे सभी व्यक्तियों से अधिक अपराधी थे?
5नहीं, मैं तुम्हें बताता हूँ कि यदि तुम मन न फिराओगे
तो तुम सब भी वैसे ही मरोगे।"

निष्फल पेड़

6फिर उसने यह दृष्टान्त कथा कही: "किसी व्यक्ति
ने अपनी दाख की बारी में अंजीर का एक पेड़ लगाया
हुआ था सो वह उस पर फल खोजता आया पर उसे
कुछ नहीं मिला। 7इस पर उसने माली से कहा, 'अब
देख मैं तीन साल से अंजीर के इस पेड़ पर फल ढूँढ़ता
आ रहा हूँ किन्तु मुझे एक भी फल नहीं मिला। सो इसे
काट डाल। यह धरती को यूँ ही व्यर्थ क्यों करता रहे?'
8माली ने उसे उत्तर दिया, 'हे स्वामी, इसे इस साल तब
तक छोड़ दे, जब तक मैं इसके चारों तरफ गढ़ा खोद
कर इसमें खाद लगाऊँ। 9फिर यदि यह अगले साल
फल दे तो अच्छा है और यदि नहीं दे तो तू इसे काट
सकता है।'"

सब्त के दिन स्त्री को निरोग करना

10किसी प्रार्थना सभा में सब्त के दिन यीशु जब
उपदेश दे रहा था 11तो वहीं एक ऐसी स्त्री थी जिसमें
दुष्ट आत्मा समाई हुई थी। जिसने उसे अठारह बरसों से
पंगु बनाया हुआ था। वह झुक कर कुबड़ी हो गयी थी
और थोड़ी सी भी सीधी नहीं हो सकती थी। 12यीशु ने
उसे जब देखा तो उसे अपने पास बुलाया और कहा, "हे
स्त्री, तुझे अपने रोग से छुटकारा मिला!" यह कहते हुए
13उसके सिर पर अपने हाथ रख दिये। और वह तुरंत
सीधी खड़ी हो गयी। वह परमेश्वर की स्तुति करने
लगी।

14यीशु ने क्योंकि सब्त के दिन उसे निरोग किया
था, इसलिये यहूदी प्रार्थना–सभा के नेता ने क्रोध में भर
कर लोगों से कहा, "काम करने के लिए छः दिन होते
हैं सो उन्हीं दिनों में आओ और अपने रोग दूर करवाओ
पर सब्त के दिन निरोग होने मत आओ।"

15प्रभु ने उत्तर देते हुए उससे कहा, "ओ कपटियो!
क्या तुममें से हर कोई सब्त के दिन अपने बैल या
अपने गधे को बाड़े से निकाल कर पानी पिलाने कहीं
नहीं ले जाता? 16अब यह स्त्री जो इब्राहीम की बेटी है
और जिसे शैतान ने अट्ठारह साल से जकड़ रखा था,
क्या इसको सब्त के दिन इसके बंधनों से मुक्त नहीं
किया जाना चाहिये था?"

17जब उसने यह कहा तो उसका विरोध करने वाले
सभी लोग लज्जा से गढ़ गये। उधर सारी भीड़ उन
आश्चर्य पूर्ण कर्मों से जिन्हें उसने किया था, आनंदित
हो रही थी।

स्वर्ग का राज्य कैसा है?
(*मत्ती 13:31-33; मरकुस 4:30-32*)

18इसलिए उसने कहा, "परमेश्वर का राज्य कैसा है
और मैं उसकी तुलना किससे करूँ? 19वह सरसों के
बीज जैसा है, जिसे किसी ने लेकर अपने बाग़ में बो
दिया। वह बड़ा हुआ और एक पेड़ बन गया। फिर
आकाश की चिड़ियाओं ने उसकी शाखाओं पर घोंसले
बना लिये।"

20उसने फिर कहा, "परमेश्वर के राज्य की तुलना
मैं किससे करूँ?

21यह उस ख़मीर के समान है जिसे एक स्त्री ने
लेकर तीन भाग आटे में मिलाया और वह समूचा आटा
ख़मीर युक्त हो गया।"

सँकरा द्वार
(*मत्ती 7:13-14; 21:23*)

22यीशु जब नगरों और गांवों से होता हुआ उपदेश
देता यरूशलेम जा रहा था। 23तभी उससे किसी ने पूछा,
"प्रभु, क्या थोड़े से ही व्यक्तियों का उद्धार होगा?" उसने
उससे कहा, 24"सँकरे द्वार से प्रवेश करने को हर
सम्भव प्रयत्न करो, क्योंकि मैं तुम्हें बताता हूँ कि
भीतर जाने का प्रयत्न बहुत से करेंगे पर जा नहीं
पायेंगे। 25जब एक बार घर का स्वामी उठ कर द्वार
बन्द कर देता है, तो तुम बाहर ही खड़े दरवाज़ा खटखटाते
कहोगे, 'हे स्वामी, हमारे लिये दरवाज़ा खोल दे!' किन्तु
वह तुम्हें उत्तर देगा, 'मैं नहीं जानता तुम कहाँ से आये
हो?' 26तब तुम कहने लगोगे, 'हमने तेरे साथ खाया, तेरे
साथ पिया, तूने हमारी गलियों में हमें शिक्षा दी।' 27पर
वह तुमसे कहेगा, 'मैं नहीं जानता तुम कहाँ से आये हो?
अरे कुकर्मियो! मेरे पास से भाग जाओ।' 28तुम इब्राहीम,
इसहाक, याकूब तथा अन्य सभी नबियों को परमेश्वर
के राज्य में देखोगे किन्तु तुम्हें बाहर धकेल दिया जायेगा
तो वहाँ बस रोना और दाँत पीसना ही होगा। 29फिर पूर्व
और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से लोग परमेश्वर के
राज्य में आकर भोजन की चौकी पर अपना स्थान
ग्रहण करेंगे। 30ध्यान रहे कि वहाँ जो अंतिम हैं, पहले
हो जायेंगे और जो पहले हैं, वे अंतिम हो जायेंगे।"

यीशु की मृत्यु यरुशलेम में
(*मत्ती 23:27-39*)

31उसी समय यीशु के पास कुछ फ़रीसी आये और
उससे कहा, "हेरोदेस तुझे मार डालना चाहता है, इसलिये
यहाँ से कहीं और चला जा।"

32तब उसने उनसे कहा, "जाओ और उस लोमड़*
से कहो, 'सुन मैं लोगों में से दुष्टात्माओं को निकालूँगा,
मैं आज भी चंगा करूँगा और कल भी। फिर तीसरे
दिन मैं अपना काम पूरा करूँगा।' 33फिर भी मुझे
आज, कल और परसों चलते ही रहना होगा। क्योंकि
किसी नबी के लिये यह उचित नहीं होगा कि वह
यरूशलेम से बाहर प्राण त्यागे।

34"हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! तू नबियों की हत्या
करता है और परमेश्वर ने जिन्हें तेरे पास भेजा है, उन
पर पत्थर बरसाता है। मैंने कितनी ही बार तेरे लोगों
को वैसे ही परस्पर इकट्ठा करना चाहा है जैसे एक
मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे समेट लेती
है। पर तूने नहीं चाहा। 35देख तेरे लिये तेरा घर परमेश्वर
द्वारा बिसराया हुआ पड़ा है। मैं तुझे बताता हूँ तू मुझे उस
समय तक फिर नहीं देखेगा जब तक वह समय न आ
जाये जब तू कहेगा, 'धन्य है वह, जो प्रभु के नाम पर
आ रहा है।'"

क्या सब्त के दिन उपचार उचित है?

14 एक बार सब्त के दिन प्रमुख फ़रीसियों में से
किसी के घर यीशु भोजन पर गया। उधर वे
बड़ी निकटता से उस पर आँख रखे हुए थे। 2वहाँ
उसके सामने जलोदर से पीड़ित एक व्यक्ति था। 3यीशु
ने यहूदी धर्मशास्त्रियों और फरीसियों से पूछा, "सब्त के
दिन किसी को निरोग करना उचित है या नहीं?"
4किन्तु वे चुप रहे। इसलिए यीशु ने उस आदमी को
लेकर चंगा कर दिया। और फिर उसे कहीं भेज दिया।
5फिर उसने उनसे पूछा, "यदि तुममें से किसी के पास
अपना बेटा है या बैल है, वह कुँए में गिर जाता है तो
क्या सब्त के दिन तुम उसे तत्काल बाहर नहीं निकालोगे?"
6वे इस पर उससे तर्क नहीं कर सके।

अपने को महत्त्व मत दो

7क्योंकि यीशु ने यह देखा कि अतिथि जन अपने
लिये बैठने को कोई सम्मानपूर्ण स्थान खोज रहे थे, सो
उसने उन्हें एक दृष्टान्त कथा सुनाई। वह बोला: 8"जब
तुम्हें कोई विवाह भोज पर बुलाये तो वहाँ किसी आदरपूर्ण
स्थान पर मत बैठो। क्योंकि हो सकता है वहाँ कोई
तुमसे अधिक बड़ा व्यक्ति उसके द्वारा बुलाया गया हो।
9फिर तुम दोनों को बुलाने वाला तुम्हारे पास आकर
तुमसे कहेगा, 'अपना यह स्थान इस व्यक्ति को दे दो।'
और फिर लज्जा के साथ तुम्हें सबसे नीचा स्थान ग्रहण
करना पड़ेगा। 10सो जब तुम्हें बुलाया जाता है तो जाकर
सबसे नीचे का स्थान ग्रहण करो जिससे जब तुम्हें
आमंत्रित करने वाला आएगा तो तुमसे कहेगा, 'हे मित्र,
उठ ऊपर बैठ।' फिर उन सब के सामने, जो तेरे
साथ वहाँ अतिथि होंगे, तेरा मान बढ़ेगा। 11क्योंकि हर
कोई जो अपने आप को उठायेगा, उसे नीचा किया
जायेगा और जो अपने आप को नीचा बनाएगा, उसे
उठाया जायेगा।"

प्रतिफल

12फिर जिसने उसे आमन्त्रित किया था, वह उससे
बोला, "जब कभी तू कोई दिन या रात का भोज दे तो
अपने मित्रों, भाई बंदों, संबंधियों या धनी मानी पड़ोसियों
को मत बुला क्योंकि बदले में वे तुझे बुलायेंगे और इस
प्रकार तुझे उसका फल मिल जायेगा। 13बल्कि जब तू
कोई भोज दे तो दीन दुखियों, अपाहिजों, लँगड़ों और
अंधों को बुला। 14फिर क्योंकि उनके पास तुझे वापस
लौटाने को कुछ नहीं है, सो यह तेरे लिए आशीर्वाद बन
जायेगा। इसका प्रतिफल तुझे धर्मी लोगों के जी उठने
पर दिया जायेगा।"

लोमड़ लोमड़ी चालाक होती है, इसलिये यीशु ने यहाँ हेरोदेस को
लोमड़ के रूप में सम्बोधित करके उसे धूर्त कहना चाहा है।

बड़े भोज की दृष्टान्त कथा
(मत्ती 22:1-10)

15फिर उसके साथ भोजन कर रहे लोगों में से एक
ने यह सुनकर यीशु से कहा, "हर वह व्यक्ति धन्य है,
जो परमेश्वर के राज्य में भोजन करता है!"

16तब यीशु ने उससे कहा, "एक व्यक्ति किसी बड़े
भोज की तैयारी कर रहा था, उसने बहुत से लोगों को
न्योता दिया। 17फिर दावत के समय जिन्हें न्योता दिया
गया था, दास को भेजकर यह कहलवाया, 'आओ
क्योंकि अब भोजन तैयार है।' 18वे सभी एक जैसे
आनाकानी करने लगे। पहले ने उससे कहा, 'मैंने एक
खेत मोल लिया है, मुझे जा कर उसे देखना है, कृपया
मुझे क्षमा करें।' 19फिर दूसरे ने कहा, 'मैंने पाँच जोड़ी
बैल मोल लिये हैं, मैं तो बस उन्हें परखने जा ही रहा हूँ,
कृपया मुझे क्षमा करें।' 20एक और भी बोला, 'मैंने
पत्नी ब्याही है, इस कारण मैं नहीं आ सकता।' 21सो
जब वह सेवक लौटा तो उसने अपने स्वामी को ये बातें
बता दी। इस पर उस घर का स्वामी बहुत क्रोधित हुआ
और अपने सेवक से कहा, 'शीघ्र ही नगर के गली
कूँचों में जा और दीन-हीनों, अपाहिजों, अंधों और
लँगड़ों को यहाँ बुला ला।' 22उस दास ने कहा, 'हे
स्वामी, तुम्हारी आज्ञा पूरी कर दी गयी है किन्तु अभी
भी स्थान बचा है।' 23फिर स्वामी ने सेवक से कहा,
'सड़कों पर और खेतों की मेढ़ों तक जाओ और वहाँ से
लोगों को आग्रह करके यहाँ बुला लाओ ताकि मेरा घर
भर जाये। 24और मैं तुमसे कहता हूँ जो पहले बुलाये गये
थे उनमें से एक भी मेरे भोज को न चखे!'"

नियोजित बनो
(मत्ती 10:37-38)

25यीशु के साथ अपार जन समूह जा रहा था। वह
उनकी तरफ़ मुड़ा और बोला, 26"यदि मेरे पास कोई
भी आता है और अपने पिता, माता, पत्नी और बच्चों,
अपने भाइयों और बहनों और यहाँ तक कि अपने
जीवन तक से मुझ से अधिक प्रेम रखता है, वह मेरा
शिष्य नहीं हो सकता! 27जो अपना क्रूस उठाये बिना
मेरे पीछे चलता है, वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता।
28यदि तुममें से कोई बुर्ज बनाना चाहे तो क्या वह पहले
बैठ कर उसके मूल्य का, यह देखने के लिये कि उसे
पूरा करने के लिये उसके पास काफ़ी कुछ है या नहीं,
हिसाब-किताब नहीं लगायेगा? 29नहीं तो वह नींव तो
डाल देगा और उसे पूरा न कर पाने से, जिन्होंने उसे
शुरू करते देखा, सब उसकी हँसी उड़ायेंगे और कहेंगे।
30'अरे देखो इस व्यक्ति ने बनाना प्रारम्भ तो किया, 'पर
यह उसे पूरा नहीं कर सका।'

31"या कोई राजा ऐसा होगा जो किसी दूसरे राजा के
विरोध में युद्ध छेड़ने जाये और पहले बैठ कर यह
विचार न करे कि अपने दस हज़ार सैनिकों के साथ
क्या वह बीस हज़ार सैनिकों वाले अपने विरोधी का
सामना कर भी सकेगा या नहीं। 32और यदि वह समर्थ
नहीं होगा तो उसका विरोधी अभी मार्ग में ही होगा तभी
वह अपना प्रतिनिधि मंडल भेज कर शांति-संधि का
प्रस्ताव करेगा। 33तो फिर इसी प्रकार तुममें से कोई भी
जो अपनी सभी सम्पत्तियों का त्याग नहीं कर देता, मेरा
शिष्य नहीं हो सकता।

अपना प्रभाव मत खोओ
(मत्ती 5:13; मरकुस 9:50)

34"नमक उत्तम है पर यदि वह अपना स्वाद खो दे तो
उसे किसमें डाला जा सकता है। 35न तो वह मिट्टी के
लायक रहेगा और न खाद की कूड़ी के। लोग बस उसे
यूँ ही फेंक देते हैं।

"जिसके पास सुनने को कान हैं, उसे सुनने दो।"

खोए हुए को पाने के आनन्द की दृष्टान्त-कथाएँ

15 अब जब कर वसूलने वाले और पापी सभी उसे
सुनने उसके पास आने लगे थे। 2तो फरीसी
और यहूदी धर्म शास्त्री बड़बड़ाते हुए कहने लगे, "यह
व्यक्ति तो पापियों का स्वागत करता है और उनके साथ
खाता है।" 3इस पर यीशु ने उन्हें यह दृष्टान्त कथा
सुनाई: 4"मानों तुममें से किसी के पास सौ भेड़ें हैं और
उनमें से कोई एक खो जाये तो क्या वह निन्यानवें भेड़ों
को खुले में छोड़ कर खोई हुई भेड़ का पीछा तब तक
नहीं करेगा, जब तक कि वह उसे पा न ले। 5फिर जब
उसे भेड़ मिल जाती है तो वह उसे प्रसन्नता के साथ
अपने कन्धों पर उठा लेता है। 6और जब घर लौटता है
तो अपने मित्रों और पड़ोसियों को पास बुलाकर उनसे
कहता है, 'मेरे साथ आनन्द मनाओ क्योंकि मुझे मेरी
खोयी हुई भेड़ मिल गयी है।' 7मैं तुमसे कहता हूँ, इसी
प्रकार किसी एक मन फिराने वाले पापी के लिये, उन
निन्यानबें धर्मी पुरुषों से, जिन्हें मन फिराने की
आवश्यकता नहीं है, स्वर्ग में कहीं अधिक आनन्द
मनाया जाएगा।

8"या सोचो कोई औरत है जिसके पास दस चाँदी के
सिक्के हैं और उसका एक सिक्का खो जाता है तो क्या
वह दीपक जला कर घर को तब तक नहीं बुहारती
रहेगी और सावधानी से नहीं खोजती रहेगी जब तक
कि वह उसे मिल न जाये? 9और जब वह उसे पा लेती
है तो अपने मित्रों और पड़ोसियों को पास बुला कर
कहती है, 'मेरे साथ आनन्द मनाओ क्योंकि मेरा सिक्का
जो खो गया था, मिल गया है।' 10मैं तुमसे कहता हूँ कि
इसी प्रकार एक मन फिराने वाले पापी के लिये भी
परमेश्वर के दूतों की उपस्थिति में वहाँ आनन्द मनाया
जायेगा।"

भटके पुत्र को पाने की दृष्टान्त-कथा

11फिर यीशु ने कहा: "एक व्यक्ति के दो बेटे थे।
12सो छोटे ने अपने पिता से कहा, 'जो सम्पत्ति मेरे बँटे
में आती है, उसे मुझे दे दे।' तो पिता ने उन दोनों को
अपना धन बाँट दिया। 13अभी कोई अधिक समय नहीं
बीता था, कि छोटे बेटे ने अपनी समूची सम्पत्ति समेटी
और किसी दूर देश को चल पड़ा। और वहाँ जँगलियों
सा उद्दण्ड जीवन जीते हुए उसने अपना सारा धन बर्बाद
कर डाला। 14जब उसका सारा धन समाप्त हो चुका था
तभी उस देश में सभी ओर व्यापक भयानक अकाल
पड़ा। सो वह अभाव में रहने लगा। 15इसलिये वह उस
देश के किसी व्यक्ति के यहाँ जाकर मज़दूरी करने
लगा उसने उसे अपने खेतों में सुअर चराने भेज दिया।
16वहाँ उसने सोचा कि उसे वे फलियाँ ही पेट भरने को
उसे मिल जायें जिन्हें सुअर खाते थे। पर किसी ने उसे
एक फली तक नहीं दी। 17फिर जब उसके होश ठिकाने
आये तो वह बोला, 'मेरे पिता के पास कितने ही ऐसे
मज़दूर हैं जिनके पास खाने के बाद भी बचा रहता है।
और मैं यहाँ भूखों मर रहा हूँ। 18सो मैं यहाँ से उठकर
अपने पिता के पास जाऊँगा और उससे कहूँगा: पिता
जी, मैंने स्वर्ग के परमेश्वर और तेरे विरुद्ध पाप
किया है। 19अब आगे मैं तेरा बेटा कहलाने योग्य नहीं
रहा हूँ। मुझे अपना मज़दूर समझकर रख ले।' 20सो वह
उठकर अपने पिता के पास चल दिया।

"अभी वह पर्याप्त दूरी पर ही था कि उसके पिता ने
उसे देख लिया और उसके पिता को उस पर बहुत दया
आयी। सो दौड़ कर उसने उसे अपनी बाहों में समेट
लिया और चूमा।

21"पुत्र ने पिता से कहा, 'पिताजी, मैंने तुम्हारी दृष्टि
में और स्वर्ग के विरुद्ध पाप किया है, मैं अब और
अधिक तुम्हारा पुत्र कहलाने योग्य नहीं हूँ।' 22किन्तु
पिता ने अपने सेवकों से कहा, 'जल्दी से उत्तम वस्त्र
निकाल लाओ और उन्हें इसे पहनाओ। इसके हाथ में
अँगूठी और पैरों में चप्पल पहनाओ। 23कोई मोटा ताजा
बछड़ा लाकर मारो और आओ उसे खाकर हम आनन्द
मनायें। 24क्योंकि मेरा यह बेटा जो मर गया था अब जैसे
फिर जीवित हो गया है। यह खो गया था, पर अब यह
मिल गया है।' सो वे आनन्द मनाने लगे।

25"अब उसका बड़ा बेटा जो खेत में था, जब आया
और घर के पास पहुँचा तो उसने गाने नाचने के स्वर
सुने। 26उसने अपने एक सेवक को बुलाकर पूछा, 'यह
सब क्या हो रहा है?' 27सेवक ने उससे कहा, 'तेरा भाई
आ गया है और तेरे पिता ने उसे सुरक्षित और स्वस्थ
पाकर एक मोटा सा बछड़ा कटवाया है!' 28बड़ा भाई
आग बबूला हो उठा, वह भीतर जाना तक नहीं चाहता
था। सो उसके पिता ने बाहर आकर उसे समझाया
बुझाया। 29पर उसने पिता को उत्तर दिया, 'देख मैं बरसों
से तेरी सेवा करता आ रहा हूँ। मैंने तेरी किसी भी
आज्ञा का विरोध नहीं किया, पर तूने मुझे तो कभी
एक बकरी तक नहीं दी कि मैं अपने मित्रों के साथ
कोई आनन्द मना सकता।

30"पर जब तेरा यह बेटा आया जिसने वेश्याओं में
तेरा धन उड़ा दिया, उसके लिये तूने मोटा ताजा बछड़ा
मरवाया।' 31पिता ने उससे कहा, 'मेरे पुत्र, तू सदा ही
मेरे पास है और जो कुछ मेरे पास है, सब तेरा है।
32किन्तु हमें प्रसन्न होना चाहिए और उत्सव मनाना
चाहिये क्योंकि तेरा यह भाई, जो मर गया था, अब फिर
जीवित हो गया है। यह खो गया था, जो फिर अब मिल
गया है।' "

सच्चा धन

16 फिर यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "एक धनी
पुरुष था। उसका एक प्रबन्धक था उस प्रबन्धक
पर लांछन लगाया गया कि वह उसकी सम्पत्ति को नष्ट
कर रहा है। 2सो उसने उसे बुलाया और कहा, 'तेरे
विषय में मै यहं क्या सुन रहा हूँ? अपने प्रबन्ध का
लेखा जोखा दे क्योंकि अब आगे तू प्रबन्धक नहीं रह
सकता।' 3इस पर प्रबन्धक ने मन ही मन कहा, 'मेरा
स्वामी मुझसे मेरा प्रबन्धक का काम छीन रहा है, सो
अब मैं क्या करूँ? मुझमें अब इतनी शक्ति भी नहीं रही
कि मैं खेतों में खुदाई-गुड़ाई का काम तक कर सकूँ
और माँगने में मुझे लाज आती है। 4ठीक, मुझे समझ
आ गया कि मुझे क्या करना चाहिये जिससे जब मैं
प्रबन्धक के पद से हटा दिया जाऊँ तो लोग अपने घरों
में मेरा स्वागत सत्कार करें।' 5सो उसने स्वामी के हर
देनदार को बुलाया। पहले व्यक्ति से उसने पूछा, 'तुझे
मेरे स्वामी का कितना देना है?' 6उसने कहा, 'एक सौ
माप जैतून का तेल।' इस पर वह उससे बोला, 'यह ले
अपनी बही और बैठ कर जल्दी से इसे पचास कर दे।'
7फिर उसने दूसरे से कहा, 'और तुझ पर कितनी
देनदारी है?' उसने बताया, 'एक सौ भार गेहूँ।' वह उससे
बोला, 'यह ले अपनी बही और सौ का अस्सी कर दे।'
8इस पर उसके स्वामी ने उस बेईमान प्रबन्धक की
प्रशंसा की क्योंकि उसने चतुराई से काम लिया था।
सांसारिक व्यक्ति अपने जैसे व्यक्तियों से व्यवहार करने
में आध्यात्मिक व्यक्तियों से अधिक चतुर हैं।

9"मैं तुमसे कहता हूँ सांसारिक धन-सम्पत्ति से अपने
लिये मित्र बनाओ। क्योंकि जब धन-सम्पत्ति समाप्त हो
जायेगी, वे अनन्त निवास में तुम्हारा स्वागत करेंगे।
10वे लोग जिन पर थोड़े से के लिये विश्वास किया जा
सकता है, उन पर अधिक के लिये भी विश्वास किया
जायेगा और इसी तरह जो थोड़े से के लिए बेईमान हो
सकता है वह अधिक के लिए भी बेइमान होगा। 11इस
प्रकार यदि तुम सांसारिक सम्पत्ति के लिये ही भरोसे

योग्य नहीं रहे तो सच्चे धन के विषय में तुम पर कौन
भरोसा करेगा? 12जो किसी दूसरे का है, यदि तुम
उसके लिये विश्वास के पात्र नहीं रहे, तो जो तुम्हारा है,
उसे तुम्हें कौन देगा? 13कोई भी दास दो स्वामियों की
सेवा नहीं कर सकता। वह या तो एक से घृणा करेगा
और दूसरे से प्रेम या वह एक के प्रति समर्पित रहेगा
और दूसरे को तिरस्कार करेगा। तुम धन और परमेश्वर
दोनों की उपासना एकसाथ नहीं कर सकते।"

प्रभु की विधि अटल है
(मत्ती 11:12-13)

14अब जब पैसे के पुजारी फरीसियों ने यह सब सुना
तो उन्होंने यीशु की बहुत खिल्ली उड़ाई। 15इस पर
उसने उनसे कहा, "तुम वो हो जो लोगों को यह जताना
चाहते हो कि तुम बहुत अच्छे हो किन्तु परमेश्वर
तुम्हारे मनों को जानता है। लोग जिसे बहुत मूल्यवान
समझते हैं, परमेश्वर के लिए वह तुच्छ है।

16"यूहन्ना तक व्यवस्था का विधि और नबियों की
प्रमुखता रही। उसके बाद परमेश्वर के राज्य का
सुसमाचार प्रचारित किया जा रहा है और हर कोई बड़ी
तीव्रता से इसकी ओर खिंचा चला आ रहा है। 17फिर
भी स्वर्ग और धरती का डिग जाना तो सरल है किन्तु
व्यवस्था के विधि के एक-एक बिंदु की शक्ति सदा
अटल है।"

तलाक और पुर्नविवाह के बारे में परमेश्वर का नियम

18"वह हर कोई जो अपनी पत्नी को त्यागता है और
दूसरी को ब्याहता है, व्यभिचार करता है। ऐसे ही जो
अपने पति द्वारा त्यागी गयी, किसी स्त्री से ब्याह करता
है, वह भी व्यभिचार करता है।"

धनी पुरुष और लाज़र

19"अब देखो, एक व्यक्ति था जो बहुत धनी था। वह
बैंगनी रंग की उत्तम मलमल के वस्त्र पहनता था और
हर दिन विलासिता के जीवन का आनन्द लेता था।
20वहीं लाजर नाम का एक दीन दुःखी उसके द्वार पर
पड़ा रहता था। उसका शरीर घावों से भरा हुआ था।
21उस धनी पुरुष की जूठन से ही वह अपना पेट भरने
को तरसता रहता था। यहाँ तक कि कुत्ते भी आते और
उसके घावों को चाट जाते। 22और फिर ऐसा हुआ कि
वह दीन-हीन व्यक्ति मर गया। सो स्वर्गदूतों ने ले जाकर
उसे इब्राहीम की गोद में बैठा दिया। फिर वह धनी पुरुष
भी मर गया और उसे दफ़ना दिया गया। 23नरक में
तड़पते हुए उसने जब आँखें उठा कर देखा तो इब्राहीम
उसे बहुत दूर दिखाई दिया किन्तु उसने लाज़र को
उसकी गोद में देखा। 24तब उसने पुकार कर कहा,
'पिता इब्राहीम, मुझ पर दया कर और लाजर को भेज
कि वह पानी में अपनी उँगली डुबो कर मेरी जीभ ठंडी
कर दे, क्योंकि मैं इस आग में तड़प रहा हूँ।' 25किन्तु
इब्राहीम ने कहा, 'हे मेरे पुत्र, याद रख, तूने तेरे जीवन
काल में अपनी अच्छी वस्तुएँ पा लीं जबकि लाज़र को
बुरी वस्तुएँ ही मिली। सो अब वह यहाँ आनन्द भोग रहा
है और तू यातना। 26और इस सब कुछ के अतिरिक्त
हमारे और तुम्हारे बीच एक बड़ी खाई डाल दी गयी है
ताकि यहाँ से यदि कोई तेरे पास जाना चाहे, वह जा न
सके और वहाँ से कोई यहाँ आ न सके।' 27उस सेठ ने
कहा, 'तो फिर हे पिता, मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि
तू लाज़र को मेरे पिता के घर भेज दे 28क्योंकि मेरे
पाँच भाई हैं, वह उन्हें चेतावनी देगा ताकि उन्हें तो इस
यातना के स्थान पर न आना पड़े।' 29किन्तु इब्राहीम ने
कहा, 'उनके पास मूसा है और नबी हैं। उन्हें उनकी
सुनने दे।' 30सेठ ने कहा, 'नहीं, पिता इब्राहीम, यदि कोई
मरे हुओं में से उनके पास जाये तो वे मन फिराएंगे।'
31इब्राहीम ने उससे कहा, 'यदि वे मूसा और नबियों की
नहीं सुनते तो, यदि कोई मरे हुओं में से उठकर उनके
पास जाये तो भी वे नहीं मानेंगे।'"

पाप और क्षमा

17 यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "जिनसे लोग
भटकते हैं, ऐसी बातें तो होंगी ही किन्तु धिक्कार
है उस व्यक्ति को जिसके द्वारा वे बातें हों। 2उसके लिये
अधिक अच्छा यह होता कि बजाय इसके कि वह इन
छोटों में से किसी को पाप करने को प्रेरित कर सके,
उसके गले में चक्की का पाट लटका कर उसे सागर में
धकेल दिया जाता। 3सावधान रहो, यदि तुम्हारा भाई
पाप करे तो उसे डाँटो और यदि वह अपने किये पर
पछताये तो उसे क्षमा कर दो। 4यदि हर दिन वह तेरे
विरुद्ध सात बार पाप करे और सातों बार लौटकर
तुझसे कहे कि मुझे पछतावा है तो तू उसे क्षमा कर दे।"

तुम्हारा विश्वास कितना बड़ा है?

5इस पर शिष्यों ने प्रभु से कहा, "हमारे विश्वास की
बढ़ोतरी कर।"

6प्रभु ने कहा, "यदि तुममें सरसों के दाने जितना भी
विश्वास होता तो तुम इस शहतूत के पेड़ से कह सकते
'उखड़ जा और समुद्र में जा लग।' और वह तुम्हारी बात
मान लेता।

उत्तम सेवक बनो

7"मान लो तुममें से किसी के पास एक दास है जो
हल चलाता या भेड़ों को चराता है। वह जब खेत से लौट
कर आये तो क्या उसका स्वामी उससे कहेगा, 'तुरन्त
आ और खाना खाने को बैठ जा?' 8किन्तु बजाय इसके
क्या वह उससे यह नहीं कहेगा, 'मेरा भोजन तैयार

कर, अपने वस्त्र पहन और जब तक मैं खा–पी न लूँ
मेरी सेवा कर तब इसके बाद तू भी खा पी सकता है?’
9अपनी आज्ञा पूरी करने पर क्या वह उस सेवक का
धन्यवाद करता है। 10तुम्हारे साथ भी ऐसा ही है। जो
कुछ तुमसे करने को कहा गया है, उसे कर चुकने के
बाद तुम्हें कहना चाहिये, ‘हम दास हैं, हम किसी बड़ाई
के अधिकारी नहीं हैं। हमने तो बस अपना कर्तव्य
किया है।’”

आभारी रहो

11फिर जब यीशु यरूशलेम जा रहा था तो वह सामरिया
और गलील के बीच की सीमा के पास से निकला।
12जब वह एक गाँव में जा रहा था तभी उसे दस कोढ़ी
मिले। वे कुछ दूरी पर खड़े थे। 13वे ऊँचे स्वर में पुकार
कर बोले, “हे यीशु! हे स्वामी! हम पर दया कर!”
14फिर जब उसने उन्हें देखा तो वह बोला, “जाओ
और अपने आप को याजकों को दिखाओ।” वे अभी
जा ही रहे थे कि वे कोढ़ से मुक्त हो गये। 15किन्तु
उनमें से एक ने जब यह देखा कि वह शुद्ध हो गया है,
तो वह वापस लौटा और ऊँचे स्वर में परमेश्वर की
स्तुति करने लगा। 16वह मुँह के बल यीशु के चरणों में
गिर पड़ा और उसका आभार व्यक्त किया। और देखो,
वह एक सामरी था। 17यीशु ने उससे पूछा, “क्या सभी
दस के दस कोढ़ से मुक्त नहीं हो गये? फिर वे नौ कहाँ
हैं? 18क्या इस परदेसी को छोड़ कर उनमें से कोई भी
परमेश्वर की स्तुति करने वापस नहीं लौटा” 19फिर
यीशु ने उससे कहा, “खड़ा हो और चला जा, तेरे
विश्वास ने तुझे अच्छा किया है।”

परमेश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर ही है

(मत्ती 24:23-28; 37:41)

20एक बार जब फरीसियों ने यीशु से पूछा, “परमेश्वर
का राज्य कब आयेगा?”
तो उसने उन्हें उत्तर दिया, “परमेश्वर का राज्य ऐसे
प्रत्यक्ष रूप में नहीं आता। 21लोग यह नहीं कहेंगे, ‘वह
यहाँ है’ या ‘वह वहाँ है’, क्योंकि परमेश्वर का राज्य तो
तुम्हारे भीतर ही है।”
22किन्तु उसने शिष्यों को बताया, “ऐसा समय आयेगा
जब तुम मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक दिन को भी
देखने को तरसोगे किन्तु, उसे देख नहीं पाओगे। 23और
लोग तुमसे कहेंगे, ‘देखो, ‘यहाँ!’ या देखो, ‘वहाँ!’ तुम
वहाँ मत जाना या उनका अनुसरण मत करना।”

जब यीशु लौटेगा

24“वैसे ही जैसे बिजली कौंध कर एक छोर से दूसरे
छोर तक आकाश को चमका देती है, वैसे ही मनुष्य
का पुत्र भी अपने दिन होगा। 25किन्तु पहले उसे बहुत
सी यातनाएँ भोगनी होंगी और इस पीढ़ी द्वारा वह निश्चय
ही नकार दिया जायेगा। 26वैसे ही जैसे नूह के दिनों में
हुआ था, मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा। 27उस
दिन तक जब नूह ने नौका में प्रवेश किया, लोग खाते–पीते
रहे, ब्याह रचाते और विवाह में दिये जाते रहे। फिर
जल प्रलय आया और उसने सबको नष्ट कर दिया।
28इसी प्रकार लूत के दिनों में भी ठीक ऐसे ही हुआ था।
लोग खाते–पीते, मोल लेते, बेचते खेती करते और घर
बनाते रहे। 29किन्तु उस दिन जब लूत सदोम से बाहर
निकला तो आकाश से अग्नि और गंधक बरसने लगे
और वे सब नष्ट हो गये। 30उस दिन भी जब मनुष्य का
पुत्र प्रकट होगा, ठीक ऐसा ही होगा।
31“उस दिन यदि कोई व्यक्ति छत पर हो और उसका
सामान घर के भीतर हो तो उसे लेने वह नीचे न उतरे।
इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति खेत में हो तो वह पीछे न
लौटे। 32लूत की पत्नी को याद करो, 33जो कोई अपना
जीवन बचाने का प्रयत्न करेगा, वह उसे खो देगा और
जो अपना जीवन खोयेगा, वह उसे बचा लेगा। 34मैं तुम्हें
बताता हूँ, उस रात एक चारपाई पर जो दो मनुष्य होंगे,
उनमें से एक उठा लिया जायेगा और दूसरा छोड़ दिया
जायेगा। 35दो स्त्रियाँ जो एक साथ चक्की पीसती होंगी,
उनमें से एक उठा ली जायेगी और दूसरी छोड़ दी
जायेगी।” 36*
37फिर यीशु के शिष्यों ने उससे पूछा, “हे प्रभु, ऐसा
कहाँ होगा?” उसने उनसे कहा, “जहाँ लोथ पड़ी होगी,
गिद्ध भी वहीं इकट्ठे होंगे।”

परमेश्वर अपने भक्त जनों की अवश्य सुनेगा

18 फिर उसने उन्हें यह बताने के लिए कि वे
निरन्तर प्रार्थना करते रहें और निराश न हों,
यह दृष्टान्त कथा सुनाई–2वह बोला: “किसी नगर में
एक न्यायाधीश हुआ करता था। वह न तो परमेश्वर से
डरता था और न ही मनुष्यों की परवाह करता था।
3उसी नगर में, एक विधवा भी रहा करती थी। और
वह उसके पास बार बार आती और कहती, ‘देख, मुझे
मेरे प्रति किए गए अन्याय के विरुद्ध न्याय मिलना ही
चाहिये।’ 4सो एक लम्बे समय तक तो वह न्यायाधीश
आनाकानी करता रहा पर आखिरकार उसने अपने
मन में सोचा, ‘चाहे मैं न तो परमेश्वर से डरता हूँ और
न लोगों की परवाह करता हूँ। 5तो भी क्योंकि इस
विधवा ने मेरे कान खा डाले हैं, सो मैं देखूँगा कि उसे
न्याय मिल जाये ताकि यह मेरे पास बार–बार आकर
कहीं मुझे ही न थका डाले।’”
6फिर प्रभु ने कहा, “देखो उस दुष्ट न्यायाधीश ने
क्या कहा था। 7सो क्या परमेश्वर अपने चुने हुए लोगों

पद 36 लूका की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 36 जोड़ा गया है। ‘दो पुरुष जो खेत में होंगे, उनमें से एक उठा लिया जायेगा और दूसरा छोड़ दिया जायेगा।’

पर ध्यान नहीं देगा कि उन्हें, जो उसे रात दिन पुकारते
रहते हैं, न्याय मिले? क्या वह उनकी सहायता करने में
देर लगायेगा? 8मैं तुमसे कहता हूँ कि वह देखेगा कि
उन्हें न्याय मिल चुका है और शीघ्र ही मिल चुका है।
फिर भी जब मनुष्य का पुत्र आयेगा तो क्या वह इस
धरती पर विश्वास को पायेगा?"

दीनता के साथ परमेश्वर की उपासना

9फिर यीशु ने उन लोगों के लिए भी जो अपने आप
को तो नेक मानते थे, और किसी को कुछ नहीं
समझते, यह दृष्टान्त कथा सुनाई: 10"मंदिर में दो व्यक्ति
प्रार्थना करने गये, एक फरीसी था और दूसरा कर
वसूलने वाला। 11वह फरीसी अलग खड़ा होकर यह
प्रार्थना करने लगा, 'हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता
हूँ कि मैं दूसरे लोगों जैसा डाकू, ठग और व्यभिचारी
नहीं हूँ और न ही इस कर वसूलने वाले जैसा हूँ। 12मैं
सप्ताह में दो बार उपवास रखता हूँ और अपनी समूची
आय का दसवाँ भाग दान देता हूँ।'

13"किन्तु वह कर वसूलने वाला जो दूर खड़ा था
और यहाँ तक कि स्वर्ग की ओर अपनी आँखें तक
नहीं उठा रहा था, अपनी छाती पीटते हुए बोला, 'हे
परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर।' 14मैं तुम्हें बताता हूँ,
यही मनुष्य नेक ठहराया जाकर अपने घर लौटा, न
कि वह दूसरा। क्योंकि हर वह व्यक्ति जो अपने आप
को बड़ा समझेगा, उसे छोटा बना दिया जायेगा और जो
अपने आप को दीन मानेगा, उसे बड़ा बना दिया जायेगा।"

बच्चे स्वर्ग के सच्चे अधिकारी हैं

(मत्ती 19:13-15;मरकुस 10:13-16)

15लोग अपने बच्चों तक को यीशु के पास ला रहे थे
कि वह उन्हें बस छू भर दे। किन्तु जब उसके शिष्यों ने
यह देखा तो उन्हें झिड़क दिया। 16किन्तु यीशु ने बच्चों
को अपने पास बुलाया और शिष्यों से कहा, "इन छोटे
बच्चों को मेरे पास आने दो, इन्हें रोको मत, क्योंकि
परमेश्वर का राज्य ऐसों का ही है। 17मैं सच्चाई के
साथ तुमसे कहता हूँ कि ऐसा कोई भी जो परमेश्वर के
राज्य को एक अबोध बच्चे की तरह ग्रहण नहीं करता,
उसमें कभी प्रवेश नहीं पायेगा!"

एक धनिक का यीशु से प्रश्न

(मत्ती 19:16-30; मरकुस 10:17-31)

18फिर किसी यहूदी नेता ने यीशु से पूछा, "उत्तम गुरु,
अनन्त जीवन का अधिकार पाने के लिये मुझे क्या
करना चाहिये?"

19यीशु ने उससे कहा, "तू मुझे उत्तम क्यों कहता है?
केवल परमेश्वर को छोड़ कर और कोई भी उत्तम
नहीं है। 20तू व्यवस्था के आदेशों को तो जानता है:
'व्यभिचार मत कर, हत्या मत कर, चोरी मत कर,
झूठी गवाही मत दे, अपने पिता और माता का आदर
कर।'"*

21वह यहूदी नेता बोला, "मैं इन सब बातों को अपने
लड़कपन से ही मानता आया हूँ।"

22यीशु ने जब यह सुना तो वह उससे बोला, "अभी
भी एक बात है जिसकी तुझ में कमी है। तेरे पास जो
कुछ है, सब कुछ को बेच डाल और फिर जो मिले, उसे
गरीबों में बाँट दे। इससे तुझे स्वर्ग में भण्डार मिलेगा।
फिर आ और मेरे पीछे हो ले।" 23सो जब उस यहूदी
नेता ने यह सुना तो वह बहुत दुःखी हुआ, क्योंकि
उसके पास बहुत सारी सम्पत्ति थी।

24यीशु ने जब यह देखा कि वह बहुत दुःखी है तो
उसने कहा, "उन लोगों के लिये जिनके पास धन है,
परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर पाना कितना कठिन
है! 25हाँ, किसी ऊँट के लिये सूई के नकुए से निकल
जाना तो सम्भव है पर किसी धनिक का परमेश्वर के
राज्य में प्रवेश कर पाना असंभव है!"

उद्धार किसका होगा

26वे लोग जिन्होंने यह सुना, बोले, "फिर भला उद्धार
किसका होगा?"

27यीशु ने कहा, "वे बातें जो मनुष्य के लिए असम्भव
हैं, परमेश्वर के लिए सम्भव हैं।"

28फिर पतरस ने कहा, "देख, हमारे पास जो कुछ
था, तेरे पीछे चलने के लिए हमने वह सब कुछ त्याग
दिया है।"

29तब यीशु उनसे बोला, "मैं सच्चाई के साथ तुमसे
कहता हूँ, ऐसा कोई नहीं है जिसने परमेश्वर के राज्य
के लिये घर-बार या पत्नी या भाई-बंधु या माता-पिता
या संतान का त्याग कर दिया हो, 30और उसे इसी
वर्तमान युग में कई गुणा अधिक न मिले और आने
वाले काल में वह अनन्त जीवन को न पा जाये।"

यीशु मर कर जी उठेगा

(मत्ती 20:17-19; मरकुस 10:32-34)

31फिर यीशु उन बारहों को एक ओर ले जाकर
उनसे बोला, "सुनो, हम यरूशलेम जा रहे हैं। मनुष्य के
पुत्र के विषय में नबियों द्वारा जो कुछ लिखा गया है, वह
पूरा होगा। 32हाँ, वह विधर्मियों को सौंपा जायेगा, उसकी
हँसी उड़ाई जायेगी, उसे कोसा जायेगा और उस पर
थूका जायेगा। 33फिर वे उसे पीटेंगे और मार डालेंगे
और तीसरे दिन वह फिर जी उठेगा।" 34इनमें से कोई
भी बात वे नहीं समझ सके। यह कथन उनसे छिपा ही

"व्यभिचार मत ... आदर कर" निर्गमन 20:12-26; व्यवस्था. 5:16-20

रह गया। वे समझ नहीं सके कि वह किस विषय में
बता रहा था।

अंधे को आँखें
(मत्ती 20:29-34; मरकुस 10:46-52)

35यीशु जब यरीहो के पास पहुँच रहा था तो भीख
माँगता हुआ एक अंधा, वहीं राह किनारे बैठा था।
36जब अन्धे ने पास से लोगों के जाने की आवाज़ सुनी
तो उसने पूछा, "क्या हो रहा है?"

37सो लोगों ने उससे कहा, "नासरी यीशु यहाँ से जा
रहा है।"

38सो अंधा यह कहते हुए पुकार उठा, "दाऊद के
बेटे यीशु! मुझ पर दया कर।"

39वे जो आगे चल रहे थे उन्होंने उससे चुप रहने को
कहा। किन्तु वह और अधिक पुकारने लगा "दाऊद के
पुत्र, मुझ पर दया कर!"

40यीशु रुक गया और उसने आज्ञा दी कि नेत्रहीन
को उसके पास लाया जाये। सो जब वह पास आया तो
यीशु ने उससे पूछा, **41**"तू क्या चाहता है? मैं तेरे लिये
क्या करूँ?"

उसने कहा, "हे प्रभु, मैं फिर से देखना चाहता हूँ।"

42इस पर यीशु ने कहा, "तुझे ज्योति मिले, तेरे विश्वास
ने तेरा उद्धार किया है।"

43और तुरन्त ही उसे आँखें मिल गयीं। वह परमेश्वर
की महिमा का बखान करते हुए यीशु के पीछे हो
लिया। जब सब लोगों ने यह देखा तो वे परमेश्वर की
स्तुति करने लगे।

जक्कई

19 और फिर यीशु यरीहो में प्रवेश करके जब
वहाँ से जा रहा था। **2**तो वहाँ जक्कई नाम का
एक व्यक्ति भी मौजूद था। वह कर वसूलने वालों का
मुखिया था। सो वह बहुत धनी था। **3**वह यह देखने का
जतन कर रहा था कि यीशु कौन है, पर भीड़ के
कारण वह देख नहीं पा रहा था क्योंकि उसका कद
छोटा था। **4**सो वह सब के आगे दौड़ता हुआ एक गूलर
के पेड़ पर जा चढ़ा ताकि, वह उसे देख सके क्योंकि
यीशु को उसी रास्ते से होकर निकलना था। **5**फिर जब
यीशु उस स्थान पर आया तो उसने ऊपर देखते हुए
जक्कई से कहा, "जक्कई, जल्दी से नीचे उतर आ
क्योंकि मुझे आज तेरे ही घर ठहरना है।"

6सो उसने झटपट नीचे उतर प्रसन्नता के साथ उसका
स्वागत किया। **7**जब सब लोगों ने यह देखा तो वे बड़बड़ाने
लगे और कहने लगे, "यह एक पापी के घर अतिथि
बनने जा रहा है!"

8किन्तु जक्कई खड़ा हुआ और प्रभु से बोला, "हे
प्रभु, देख, मैं अपनी सारी सम्पत्ति का आधा ग़रीबों को
दे दूँगा और यदि मैंने किसी का छल से कुछ भी लिया है
तो उसे चौगुना करके लौटा दूँगा!"

9यीशु ने उससे कहा, "इस घर पर आज उद्धार आया
है, क्योंकि यह व्यक्ति भी इब्राहीम की ही एक सन्तान
है। **10**क्योंकि मनुष्य का पुत्र जो कोई खो गया है, उसे
ढूँढने और उसकी रक्षा के लिए आया है।"

परमेश्वर जो देता है उसका उपयोग करो
(मत्ती 25:14-30)

11वे जब इन बातों को सुन रहे थे तो यीशु ने उन्हें
एक और दृष्टान्त-कथा सुनाई क्योंकि यीशु यरुशलेम
के निकट था और वे सोचते थे कि परमेश्वर का राज्य
तुरंत ही प्रकट होने जा रहा है। **12**सो यीशु ने कहा,
"एक उच्च कुलीन व्यक्ति राजा का पद प्राप्त करके
आने को किसी दूर देश को गया। **13**सो उसने अपने दस
सेवकों को बुलाया और उनमें से हर एक को दस दस
थैलियाँ दी और उनसे कहा 'जब तक मैं लौटूँ, इनसे
कोई व्यापार करो।' **14**किन्तु उसके नगर के दूसरे लोग
उससे घृणा करते थे, इसलिये उन्होंने उसके पीछे यह
कहने को एक प्रतिनिधि मंडल भेजा, 'हम नहीं चाहते
कि यह व्यक्ति हम पर राज करे।'

15"किन्तु उसने राजा की पदवी पा ली। फिर जब वह
वापस घर लौटा तो जिन सेवकों को उसने धन दिया था
उनको यह जानने के लिए कि उन्होंने क्या लाभ कमाया
है, उसने बुलावा भेजा। **16**पहला आया और बोला, 'हे
स्वामी, तेरी थैलियों से मैंने दस थैलियाँ और कमायी
हैं।' **17**इस पर उसके स्वामी ने उससे कहा, 'उत्तम
सेवक, तूने अच्छा किया। क्योंकि तू इस छोटी सी बात
पर विश्वास के योग्य रहा। तू दस नगरों का अधिकारी
होगा।' **18**फिर दूसरा सेवक आया और कहा, 'हे स्वामी,
तेरी थैलियों से पाँच थैलियाँ* और कमाई हैं।' **19**फिर
उसने इससे कहा, 'तू पाँच नगरों के ऊपर होगा।' **20**फिर
वह अन्य सेवक आया और कहा, 'हे स्वामी, यह रही
तेरी थैली जिसे मैंने गमछे में बाँध कर कहीं रख दिया
था। **21**मैं तुझ से डरता रहा हूँ, क्योंकि तू, एक कठोर
व्यक्ति है। तूने जो रखा नहीं है तू उसे भी ले लेता है
और जो तूने बोया नहीं तू उसे काटता है।'

22"स्वामी ने उससे कहा, 'अरे दुष्ट सेवक, मैं तेरे
अपने ही शब्दों के आधार पर तेरा न्याय करूँगा। तू तो
जानता ही है कि मैं जो रखता नहीं हूँ, उसे भी ले लेने
वाला और जो बोता नहीं हूँ, उसे भी काटने वाला एक
कठोर व्यक्ति हूँ? **23**तो तूने मेरा धन ब्याज पर क्यों नहीं
लगाया ताकि जब मैं वापस आता तो ब्याज समेत उसे ले
लेता।' **24**फिर पास खड़े लोगों से उसने कहा, 'इसकी

थैलियाँ शाब्दिक मीना। एक मीना बराबर उन दिनों का तीन महीने का वेतन।

थैली इससे ले लो और जिसके पास दस थैलियाँ हैं उसे दे
दो।' **25**इस पर उन्होंने उससे कहा, हे स्वामी, उसके
पास तो दस थैलियाँ है। **26**स्वामी ने कहा, 'मैं तुमसे
कहता हूँ प्रत्येक उस व्यक्ति को जिसके पास है और
अधिक दिया जायेगा और जिसके पास नहीं है, उससे
जो उसके पास है, वह भी छीन लिया जायेगा। **27**किन्तु
मेरे वे शत्रु जो नहीं चाहते कि मैं उन पर शासन करूँ
उनको यहाँ मेरे सामने लाओ और मार डालो।'"

यीशु का यरूशलेम में प्रवेश

(मत्ती 21:1-11; मरकुस 11:1-11; यूहन्ना 12:12-19)

28ये बातें कह चुकने के बाद यीशु आगे चलता हुआ
यरूशलेम की ओर बढ़ने लगा। **29**और फिर जब वह
बैतफगे और बैतनिय्याह में उस पहाड़ी के निकट पहुँचा
जो जैतून की पहाड़ी कहलाती थी तो उसने अपने दो
शिष्यों को यह कह कर भेजा, **30**"यह जो गाँव तुम्हारे
सामने है वहाँ जाओ। जैसे ही तुम वहाँ जाओगे, तुम्हें
गदही का एक बच्चा वहाँ बँधा मिलेगा जिस पर किसी
ने कभी सवारी नहीं की होगी, उसे खोलकर यहाँ ले
आओ **31**और यदि कोई तुमसे पूछे तुम इसे क्यों खोल
रहे हो, तो तुम्हें उससे यह कहना है, 'प्रभु को चाहिये।'"
32फिर जिन्हें भेजा गया था, वे गये और यीशु ने
उनको जैसा बताया था, उन्हें वैसा ही मिला। **33**सो जब
वे उस गदही के बच्चे को खोल ही रहे थे, उसके
स्वामी ने उनसे पूछा, "तुम इस गदही के बच्चे को क्यों
खोल रहे हो?"
34उन्होंने कहा, "यह प्रभु को चाहिये।" **35**फिर वे
गदही के बच्चे यीशु के पास ले आये। उन्होंने अपने
वस्त्र उस गदही के बच्चे पर डाल दिये और यीशु को
उस पर बिठा दिया। **36**जब यीशु जा रहा था तो लोग
अपने वस्त्र सड़क पर बिछाते जा रहे थे।
37और फिर जब वह जैतून की पहाड़ी से तलहटी के
पास आया तो शिष्यों की समूची भीड़ उन सभी अद्भुत
कार्यों के लिये, जो उन्होंने देखे थे, ऊँचे स्वर में प्रसन्नता
के साथ परमेश्वर की स्तुति करने लगी। वे पुकार
उठे:

38"'धन्य है वह राजा, जो प्रभु के नाम में आता है'
भजन संहिता 118:26

स्वर्ग में शान्ति हो, और आकाश में परम परमेश्वर
की महिमा हो!"
39भीड़ में खड़े हुए कुछ फरीसियों ने उससे कहा,
"गुरु, शिष्यों को मना कर।"
40सो उसने उत्तर दिया, "मैं तुमसे कहता हूँ यदि ये
चुप हो भी जायें तो ये पत्थर चिल्ला उठेंगे।"
41जब उसने पास आकर नगर को देखा तो वह उस
पर रो पड़ा।
42और बोला, "यदि तू बस आज यह जानता कि
शान्ति तुझे किस से मिलेगी किन्तु वह अभी तेरी आँखों
से ओझल है। **43**वे दिन तुझ पर आयेंगे जब तेरे शत्रु
चारों ओर बाधाएँ खड़ी कर देंगे। वे तुझे घेर लेंगे और
सब ओर से तुझ पर दबाव डालेंगे। **44**वे तुझे धूल में
मिला देंगे–तुझे और तेरे भीतर रहने वाले तेरे बच्चों
को। तेरी चारदीवारी के भीतर वे एक पत्थर पर दूसरा
पत्थर नहीं रहने देंगे। क्योंकि जब परमेश्वर तेरे पास
आया, तूने उस घड़ी को नहीं पहचाना।"

यीशु मंदिर में

(मत्ती 21:12-17; मरकुस 11:15-19; यूहन्ना 2:13-22)

45फिर यीशु ने मन्दिर में प्रवेश किया और जो वहाँ
दुकानदारी कर रहे थे उन्हें बाहर निकालने लगा।
46उसने उनसे कहा, "लिखा गया है, 'मेरा घर प्रार्थनागृह
होगा'।* किन्तु तुमने इसे 'डाकुओं का अड्डा बना
डाला है।'"
47सो अब तो वह हर दिन मन्दिर में उपदेश देने लगा।
प्रमुख याजक, यहूदी धर्मशास्त्री और मुखिया लोग उसे
मार डालने की ताक में रहने लगे। **48**किन्तु उन्हें ऐसा
कर पाने का कोई अवसर न मिल पाया क्योंकि लोग
उसके वचनों को बहुत महत्त्व दिया करते थे।

यीशु से यहूदियों का एक प्रश्न

(मत्ती 21:23-27; मरकुस 11:27-33)

20 एक दिन जब यीशु मंदिर में लोगों को उपदेशदेते
हुए सुसमाचार सुना रहा था तो प्रमुख याजक
और यहूदी धर्मशास्त्री बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं के साथ
उसके पास आये। **2**उन्होंने उससे पूछा, "हमें बता तू यह
काम किस अधिकार से कर रहा है? वह कौन है
जिसने तुझे यह अधिकार दिया है?"
3यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं भी तुमसे एक प्रश्न
पूछता हूँ, तुम मुझे बताओ **4**यूहन्ना को बपतिस्मा देने
का अधिकार स्वर्ग से मिला था या मनुष्य से?"
5इस पर आपस में विचार विमर्श करते हुए उन्होंने
कहा, "यदि हम कहते हैं 'स्वर्ग से' तो यह कहेगा 'तो
तुम ने उस पर विश्वास क्यों नहीं किया?' **6**और यदि
हम कहें 'मनुष्य से' तो सभी लोग हम पर पत्थर बरसायेंगे।
क्योंकि वे यह मानते हैं कि यूहन्ना एक नबी था।" **7**सो
उन्होंने उत्तर दिया कि वे नहीं जानते कि वह कहाँ से
मिला।
8फिर यीशु ने उनसे कहा, "तो मैं भी तुम्हें नहीं
बताऊँगा कि यह कार्य मैं किस अधिकार से करता
हूँ?"

"मेरा घर ... होगा" यशा. 56:7

परमेश्वर अपने पुत्र को भेजता है

(मत्ती 21:33-46; मरकुस 12:1-12)

9फिर यीशु लोगों से यह दृष्टान्त कथा कहने लगा:
“किसी व्यक्ति ने अंगूरों का एक बगीचा लगाकर उसे
कुछ किसानों को किराये पर चढ़ा दिया और वह एक
लम्बे समय के लिये कहीं चला गया। 10जब फसल
उतारने का समय आया, तो उसने एक सेवक को
किसानों के पास भेजा ताकि वे उसे अंगूरों के बगीचे
के कुछ फल दे दें। किन्तु किसानों ने उसे मार-पीट
कर खाली हाथों लौटा दिया। 11तब उसने एक दूसरा
सेवक वहाँ भेजा। किन्तु उन्होंने उसकी भी पिटाई कर
डाली। उन्होंने उसके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया
और उसे भी खाली हाथों लौटा दिया। 12इस पर उसने
एक तीसरा सेवक भेजा किन्तु उन्होंने इसको भी घायल
करके बाहर धकेल दिया। 13तब बगीचे का स्वामी
कहने लगा, ‘मुझे क्या करना चाहिये? मैं अपने प्यारे
बेटे को भेजूँगा।’ 14किन्तु किसानों ने जब उसके बेटे को
देखा तो आपस में सोच विचार करते हुए वे बोले ‘यह तो
उत्तराधिकारी है, आओ हम इसे मार डालें ताकि
उत्तराधिकार हमारा हो जाये।’ 15और उन्होंने उसे बगीचे
से बाहर खदेड़ कर मार डाला। “तो फिर बगीचे का
स्वामी उनके साथ क्या करेगा? 16वह आयेगा और उन
किसानों को मार डालेगा तथा अंगूरों का बगीचा औरों
को सौंप देगा।”

उन्होंने जब यह सुना तो वे बोले, “ऐसा कभी न हो।”
17तब यीशु ने उनकी ओर देखते हुए कहा, “तो फिर
यह जो लिखा है उसका अर्थ क्या है:

‘जिस पत्थर को कारीगरों ने बेकार समझ लिया था
वही कोने का प्रमुख पत्थर बन गया?’

भजन संहिता 118:22

18हर कोई जो उस पत्थर पर गिरेगा टुकड़े-टुकड़े
हो जायेगा और जिस पर वह गिरेगा चकना चूर हो
जायेगा।”

19उसी क्षण यहूदी धर्मशास्त्री और प्रमुख याजक कोई
रास्ता ढूँढकर उसे पकड़ लेना चाहते थे क्योंकि वे जान
गये थे कि उसने यह दृष्टान्त कथा उनके विरोध में
कही है। किन्तु वे लोगों से डरते थे।

यहूदी नेताओं की चाल

(मत्ती 22:15-22; मरकुस 12:13-17)

20सो वे सावधानी से उस पर नज़र रखने लगे। उन्होंने
ऐसे गुप्तचर भेजे जो ईमानदार होने का स्वांग रचते थे।
ताकि वे उसे उसकी कही किसी बात में फँसा कर
राज्यपाल की शक्ति और अधिकार के अधीन कर दें।
21सो उन्होंने उससे पूछते हुए कहा, “गुरु, हम जानते हैं
कि तू जो उचित है वही कहता है और उसी का उपदेश
देता है और न ही तू किसी का पक्ष लेता है। बल्कि तू
तो सच्चाई से परमेश्वर के मार्ग की शिक्षा देता है। 22सो
बता कैसर को हमांरा कर चुकाना उचित है या नहीं
चुकाना?”

23यीशु उनकी चाल को समझ गया था। सो उसने
उनसे कहा, 24“मुझे एक दीनारी दिखाओ, इस पर मूरत
और लिखावट किसके हैं?” उन्होंने कहा, “कैसर के।”

25इस पर उसने उनसे कहा, “तो फिर जो कैसर का
है, उसे कैसर को दो। और जो परमेश्वर का है उसे
परमेश्वर को।”

26वे उसके उत्तर पर चकित हो कर चुप रह गये
और उसने लोगों के सामने जो कुछ कहा था, उस पर
उसे पकड़ नहीं पाये।

यीशु को पकड़ने के लिये सदूकियों की चाल

(मत्ती 22:23-33; मरकुस 12:18-27)

27अब देखो कुछ सदूकी उसके पास आये। ये सदूकी
वे थे जो पुनरुत्थान को नहीं मानते। उन्होंने उससे पूछते
हुए कहा, 28“गुरु, मूसा ने हमारे लिये लिखा है कि यदि
किसी का भाई मर जाये और उसके कोई बच्चा न हो
और उसके पत्नी हो तो उसका भाई उस विधवा से
ब्याह करके अपने भाई के लिये, उससे संतान उत्पन्न
करे। 29अब देखो, सात भाई थे। पहले भाई ने किसी
स्त्री से विवाह किया और वह बिना किसी संतान के ही
मर गया। 30फिर दूसरे भाई ने उसे ब्याहा, 31और ऐसे
ही तीसरे भाई ने। सब के साथ एक जैसा ही हुआ। वे
बिना कोई संतान छोड़े मर गये। 32बाद में वह स्त्री भी
मर गयी। 33अब बताओ, पुनरुत्थान होने पर वह किसकी
पत्नी होगी क्योंकि उससे तो सातों ने ही ब्याह किया
था?”

34तब यीशु ने उनसे कहा, “इस युग के लोग ब्याह
करते हैं और ब्याह करके विदा होते हैं। 35किन्तु वे
लोग जो उस युग के किसी भाग के योग्य और मरे हुओं
में से जी उठने के लिए ठहराये गये हैं, वे न तो ब्याह
करेंगे और न ही ब्याह करके विदा किये जायेंगे।
36और वे फिर कभी मरेंगे भी नहीं, क्योंकि वे स्वर्गदूतों
के समान हैं, वे परमेश्वर की संतान हैं क्योंकि वे
पुनरुत्थान के पुत्र हैं। 37किन्तु मूसा तक ने झाड़ी से
सम्बन्धित अनुच्छेद में दिखाया है कि मरे हुए जिलाए
गये हैं, जबकि उसने कहा था प्रभु, ‘इब्राहीम का
परमेश्वर है, इसहाक का परमेश्वर है और याकूब का
परमेश्वर है’* 38वह मरे हुओं का नहीं, बल्कि जीवितों
का परमेश्वर है। वे सभी लोग जो उसके हैं, जीवित हैं।”

39कुछ यहूदी धर्मशास्त्रियों ने कहा, “गुरु, अच्छा
कहा।”

“इब्राहीम का ... याकूब का परमेश्वर है” निर्गमन 3:6

40क्योंकि फिर उससे कोई और प्रश्न पूछने का
साहस नहीं कर सका।

क्या मसीह दाऊद का पुत्र है?

(मत्ती 22:41-46; मरकुस 12:35-37)

41यीशु ने उनसे कहा, "वे कहते हैं कि मसीह दाऊद
का पुत्र है। यह कैसे हो सकता है? 42क्योंकि भजन
संहिता की पुस्तक में दाऊद स्वयं कहता है कि
'प्रभु (परमेश्वर) ने मेरे प्रभु (मसीह) से कहा: मेरे
दाहिने हाथ बैठ,
43जब तक कि मैं तेरे विरोधियों को तेरे पैर रखने
की चौकी न बना दूँ।' *भजन संहिता 110:1*

44इस प्रकार जब दाऊद मसीह को 'प्रभु' कहता है तो
मसीह दाऊद का पुत्र कैसे हो सकता है?"

यहूदी धर्मशास्त्रियों के विरोध में यीशु की चेतावनी

(मत्ती 23:1-36; मरकुस 12:38-40; लूका 11:37-54)

45सभी लोगों के सुनते उसने अपने अनुयायिओं से
कहा, 46"यहूदी धर्मशास्त्रियों से सावधान रहो। वे लम्बे
चोगे पहन कर यहाँ-वहाँ घूमना चाहते हैं, हाट-बाजारों
में वे आदर के साथ स्वागत-सत्कार पाना चाहते हैं।
और यहूदी प्रार्थना सभाओं में उन्हें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण
आसन की लालसा रहती है। दावतों में वे आदरपूर्ण
स्थान चाहते हैं। 47वे विधवाओं के घर-बार लूट लेते
हैं। दिखावे के लिये वे लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएँ करते हैं।
इन लोगों को कठिन से कठिन दण्ड भुगतना होगा।"

सच्चा दान

(मत्ती 12:41-44)

21 यीशु ने आँखें उठा कर देखा कि धनी लोग
दान पात्र में अपनी अपनी भेंट डाल रहे हैं।
2तभी उसने एक गरीब विधवा को उसमें ताँबे के दो
छोटे सिक्के डालते हुए देखा। 3उसने कहा, "मैं तुमसे
सत्य कहता हूँ कि दूसरे सभी लोगों से इस गरीब विधवा
ने अधिक दान दिया है। 4यह मैं इसलिये कहता हूँ
क्योंकि इन सब ही लोगों ने अपने उस धन में से
जिसकी उन्हें आवश्यकता नहीं थी, दान दिया था किन्तु
उसने गरीब होते हुए भी जीवित रहने के लिए जो कुछ
उसके पास था, सब कुछ दे डाला।"

मन्दिर का विनाश

(मत्ती 24:1-14; मरकुस 13:1-13)

5कुछ लोग मंदिर के विषय में चर्चा कर रहे थे कि
वह सुंदर पत्थरों और परमेश्वर को अर्पित की गयी
मनौती की भेंटों से कैसे सजाया गया है।
6तभी यीशु ने कहा, "ऐसा समय आयेगा जब, ये जो
कुछ तुम देख रहे हो, उसमें एक पत्थर दूसरे पत्थर पर
टिका नहीं रह पायेगा। वे सभी ढहा दिये जायेंगे।"
7वे उससे पूछते हुए बोले, "गुरु, ये बातें कब होंगी?
और ये बातें जो होने वाली हैं, उसके क्या संकेत होंगे?"
8यीशु ने कहा, "सावधान रहो, कहीं कोई तुम्हें छल
न ले। क्योंकि मेरे नाम से बहुत से लोग आयेंगे और
कहेंगे, 'वह मैं हूँ' और 'समय आ पहुँचा है।' उनके पीछे
मत जाना। 9परन्तु जब तुम युद्धों और दंगों की चर्चा
सुनो तो डरना मत क्योंकि ये बातें तो पहले घटेंगी ही।
और उनका अन्त तुरंत नहीं होगा।"
10उसने उनसे फिर कहा, "एक जाति दूसरी जाति के
विरोध में खड़ी होगी और एक राज्य दूसरे राज्य के
विरोध में। 11बड़े-बड़े भूचाल आयेंगे और अनेक स्थानों
पर अकाल पड़ेंगे और महामारियाँ होंगी। आकाश में
भयानक घटनाएँ घटेंगी और महान संकेत प्रकट होंगे।
12"किन्तु इन बातों के घटने से पहले वे तुम्हें बंदी
बना लेंगे और तुम्हें यातनाएँ देंगे। वे तुम पर अभियोग
चलाने के लिये तुम्हें यहूदी प्रार्थना सभागारों को सौंप
देंगे और फिर तुम्हें जेल भेज दिया जायेगा। और फिर
मेरे नाम के कारण वे तुम्हें राजाओं और राज्यपालों के
सामने ले जायेंगे। 13इससे तुम्हें मेरे विषय में साक्षी देने
का अवसर मिलेगा। 14इसलिये पहले से ही इसकी चिंता
न करने का निश्चय कर लो कि अपना बचाव तुम
कैसे करोगे। 15क्योंकि मैं तुम्हें ऐसी बुद्धि और ऐसे शब्द
दूँगा कि तुम्हारा कोई भी विरोधी तुम्हारा सामना और
तुम्हारा खण्डन नहीं कर सकेगा। 16किन्तु तुम्हारे
माता-पिता, भाई बन्धु, सम्बन्धी और मित्र ही तुम्हें
धोखे से पकड़वायेंगे और तुममें से कुछों को तो मरवा
ही डालेंगे। 17मेरे कारण सब तुमसे बैर करेंगे। 18किन्तु
तुम्हारे सिर का एक बाल तक बांका नहीं होगा। 19तुम्हारी
सहनशीलता, तुम्हारे प्राणों की रक्षा करेगी।"

यरूशलेम का नाश

(मत्ती 24:15-21; मरकुस 13:14-19)

20"अब देखो जब यरुशलेम को तुम सेनाओं से घिरा
देखो तब समझ लेना कि उसका तहस नहस हो जाना
निकट है। 21तब तो जो यहूदिया में हों, उन्हें चाहिये कि
वे पहाड़ों पर भाग जायें और वे जो नगर के भीतर हों,
बाहर निकल आयें और वे जो गांवों में हों उन्हें नगर में
नहीं जाना चाहिये 22क्योंकि वे दिन दण्ड देने के होंगे।
ताकि जो लिखी गयी हैं, वे सभी बातें पूरी हों। 23उन
स्त्रियों के लिये, जो गर्भवती होंगी और उनके लिये जो
दूध पिलाती होंगी, वे दिन कितने भयानक होंगे। क्योंकि
उन दिनों इस धरती पर बहुत बड़ी विपत्ति आयेगी और
इन लोगों पर परमेश्वर का क्रोध होगा। 24वे तलवार
की धार से गिरा दिये जायेंगे। और बंदी बना कर सब

देशों में पहुँचा दिये जायेंगे। और यरूशलेम ग़ैर यहूदियों
के पैरों तले तब तक रौंदा जायेगा जब तक कि ग़ैर
यहूदियों का समय पूरा नहीं हो जाता।"

डरो मत

(मत्ती 24:29-31; मरकुस 13:24-27)

25"सूरज, चाँद और तारों में संकेत प्रकट होंगे और
धरती पर की सभी जातियों पर विपतियाँ आयेंगी और
वे सागर की उथल-पुथल से घबरा उठेंगे। 26लोग डर
और संसार पर आने वाली विपदाओं के डर से मूर्छित
हो जायेंगे क्योंकि स्वर्गिक शक्तियाँ हिलाई जायेंगी। 27और
तभी वे मनुष्य के पुत्र को अपनी शक्ति और महान्
महिमा के साथ एक बादल में आते हुए देखेंगे। 28अब
देखो, ये बातें जब घटने लगें तो तुम खड़े होकर अपने
सिर ऊपर उठा लेना। क्योंकि तुम्हारा छुटकारा निकट
आ रहा होगा।"

मेरा वचन अमर है

(मत्ती 24:32-35; मरकुस 13:28-31)

29फिर उसने उनसे एक दृष्टान्त-कथा कही: "और
सभी पेड़ों तथा अंजीर के पेड़ को देखो। 30उन में जैसे
ही कोंपलें फूटती हैं, तुम अपने आप जान जाते हो कि
गर्मी की ऋतु बस आ ही पहुँची है। 31वैसे ही तुम जब
इन बातों को घटते देखो तो जान लेना कि परमेश्वर
का राज्य निकट है। 32मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि जब
तक ये सब बातें घट नहीं लेतीं, इस पीढ़ी का अंत नहीं
होगा। 33धरती और आकाश नष्ट हो जाएँगे, पर मेरा
वचन सदा अटल रहेगा।

सदा तैयार रहो

34"अपना ध्यान रखो, ताकि तुम्हारे मन कहीं डट
कर पीने पिलाने और सांसारिक चिंताओं से जड़ न हो
जायें। और वह दिन एक फंदे की तरह तुम पर अचानक
न आ पड़े। 35निश्चय ही वह इस समूची धरती पर रहने
वालों पर ऐसे ही आ गिरेगा। 36हर क्षण सतर्क रहो,
और प्रार्थना करो कि तुम्हें उन सभी बातों से, जो घटने
वाली हैं, बचने की शक्ति प्राप्त हो। और आत्म-विश्वास
के साथ मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े हो सको।"

37प्रतिदिन वह मंदिर में उपदेश दिया करता था किन्तु,
रात बिताने के लिए वह हर साँझ जैतून नामक पहाड़ी
पर चला जाता था। 38सभी लोग भोर के तड़के उठते
ताकि मंदिर में उसके पास जाकर, उसे सुनें।

यीशु की हत्या का षड़यन्त्र

(मत्ती 26:1-5; 14:16; मरकुस 14:1-2; 10-11; यूहन्ना 11:45-53)

22 अब फ़सह नाम का बिना ख़मीर की रोटी का
पर्व आने को था। 2उधर प्रमुख याजक तथा
यहूदी धर्मशास्त्री, क्योंकि लोगों से डरते थे इसलिये
किसी ऐसे रास्ते की ताक में थे जिससे वे यीशु को मार
डालें।

यहूदा का षड़यन्त्र

3फिर इस्करियोती कहलाने वाले उस यहूदा में, जो
उन बारहों में से एक था, शैतान आ समाया। 4वह
प्रमुख याजकों और अधिकारियों के पास गया और
उनसे यीशु को वह कैसे पकड़वा सकता है, इस बारे में
बातचीत की। 5वे बहुत प्रसन्न हुए और इसके लिये उसे
धन देने को सहमत हो गये। 6वह भी राज़ी हो गया और
वह ऐसे अवसर की ताक में रहने लगा जब भीड़-भाड़
न हो और वह उसे उनके हाथों सौंप दे।

फ़सह की तैयारी

(मत्ती 26:17-25; मरकुस 14:12-21; यूहन्ना 13:21-30)

7फिर बिना ख़मीर की रोटी का वह दिन आया जब
फ़सह के मेमने की बली देनी होती है। 8सो उसने यह
कहते हुए पतरस और यूहन्ना को भेजा कि "जाओ
और हमारे लिये फ़सह का भोज तैयार करो ताकि हम
उसे खा सकें।"

9उन्होंने उससे पूछा, "तू हमसे उसकी तैयारी कहाँ
चाहता है?" 10उसने उनसे कहा, "तुम जैसे ही नगर में
प्रवेश करोगे तुम्हें पानी का घड़ा ले जाते हुए एक व्यक्ति
मिलेगा, उसके पीछे हो लेना और जिस घर में वह जाये
तुम भी चले जाना। 11और घर के स्वामी से कहना
गुरु ने तुझसे पूछा है कि वह अतिथि-कक्ष कहाँ है
जहाँ मैं अपने शिष्यों के साथ फ़सह पर्व का भोजन
कर सकूँ। 12फिर वह व्यक्ति तुम्हें सीढ़ियों के ऊपर
सजा-सजाया एक बड़ा कमरा दिखायेगा, वहीं तैयारी
करना।"

13वे चल पड़े और वैसा ही पाया जैसा उसने उन्हें
बताया था। फिर उन्होंने फ़सह भोज तैयार किया।

प्रभु का अन्तिम भोज

(मत्ती 26:26-30; मरकुस 14:22-26; 1 कुरिन्थियो 11:23-25)

14फिर वह घड़ी आयी तब यीशु अपने शिष्यों के
साथ भोजन पर बैठा। 15उसने उनसे कहा, "यातना
उठाने से पहले यह फ़सह का भोजन तुम्हारे साथ
करने की मेरी प्रबल इच्छा थी। 16क्योंकि मैं तुमसे
कहता हूँ कि जब तक परमेश्वर के राज्य में यह पूरा
नहीं हो लेता तब तक मैं इसे दुबारा नहीं खाऊँगा।"
17फिर उसने कटोरा उठाकर धन्यवाद दिया और कहा,
"लो इसे आपस में बाँट लो। 18क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ
आज के बाद जब तक परमेश्वर का राज्य नहीं आ
जाता मैं कैसा भी दाखरस कभी नहीं पिऊँगा।"

19फिर उसने थोड़ी रोटी ली और धन्यवाद दिया।
उसने उसे तोड़ा और उन्हें देते हुए कहा, "यह मेरी देह
है जो तुम्हारे लिये दी गयी है। मेरी याद में ऐसा ही
करना।" **20**ऐसे ही जब वे भोजन कर चुके तो उसने
कटोरा उठाया और कहा, "यह प्याला मेरे उस रक्त
के रूप में एक नए वाचा का प्रतीक है जिसे तुम्हारे
लिए उँडेला गया है।"

यीशु का विरोधी कौन होगा?

21"किन्तु देखो, मुझे जो धोखे से पकड़वायेगा, उसका
हाथ यहीं मेज़ पर मेरे साथ है। **22**क्योंकि मनुष्य का पुत्र
तो मारा ही जायेगा जैसा कि सुनिश्चित है किन्तु धिक्कार
है उस व्यक्ति को जिसके द्वारा वह पकड़वाया जाएगा।"
23इस पर वे आपस में एक दूसरे से प्रश्न करने लगे,
"उनमें से वह कौन हो सकता है जो ऐसा करने जा
रहा है?"

सेवक बनो

24फिर उनमें यह बात भी उठी कि उनमें से सबसे
बड़ा किसे समझा जाये। **25**किन्तु यीशु ने उनसे कहा,
"ग़ैर यहूदियों के राजा उन पर प्रभुत्व रखते हैं और वे
जो उन पर अधिकार का प्रयोग करते हैं, स्वयं को
लोगों का उपकारक कहलवाना चाहते हैं। **26**किन्तु तुम
वैसे नहीं हो बल्कि तुममें तो सबसे बड़ा सबसे छोटे जैसा
होना चाहिये और जो शासक है उसे सेवक के समान
होना चाहिए। **27**क्योंकि बड़ा कौन है: वह जो खाने की
मेज़ पर बैठा है या वह जो उसे परोसता है? क्या वही
नहीं जो मेज पर है किन्तु तुम्हारे बीच मैं वैसा हूँ जो
परोसता है।
28"किन्तु तुम वे हो जिन्होंने मेरी परीक्षाओं में मेरासाथ
दिया है। **29**और मैं तुम्हें वैसे ही एक राज्य दे रहा हूँ जैसे
मेरे परम पिता ने इसे मुझे दिया था। **30**ताकि मेरे राज्य
में तुम मेरी मेज़ पर खाओ और पिओ और इस्राएल की
बारहों जनजातियों का न्याय करते हुए सिंहासनों परबैठो।"

विश्वास बनाये रखो

(मत्ती 26:31-35; मरकुस 14:27-31; यूहन्ना 13:36 38)

31"शमौन, हे शमौन, सुन, तुम सब को गेहूँ की तरह
फटकने के लिए शैतान ने चुन लिया है। **32**किन्तु मैंने
तुम्हारे लिये प्रार्थना की है कि तुम्हारा विश्वास न
डगमगाये और जब तू वापस आये तो तेरे बंधुओं की
शक्ति बढ़े।"
33किन्तु शमौन ने उससे कहा, "हे प्रभु, मैं तेरे साथ
जेल जाने और मरने तक को तैयार हूँ।" **34**फिर यीशु
ने कहा, "पतरस, मैं तुझे बताता हूँ कि आज तब तक
मुर्गा बाँग नहीं देगा जब तक तू तीन बार मना नहीं कर
लेगा कि तू मुझे जानता है।"

यातना झेलने को तैयार रहो

35फिर यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "मैंने तुम्हें जब
बिना बटुए, बिना थैले या बिना चप्पलों के भेजा था तो
क्या तुम्हें किसी वस्तु की कमी रही थी?" उन्होंने
कहा, "किसी वस्तु की नहीं।" **36**उसने उनसे कहा,
"किन्तु अब जिस किसी के पास भी कोई बटुआ है, वह
उसे ले ले और वह थैला भी ले चले। और जिसके पास
भी तलवार न हो, वह अपना चोगा तक बेच कर उसे
मोल ले ले। **37**क्योंकि मैं तुम्हें बताता हूँ कि शास्त्र का
यह लिखा मुझ पर निश्चय ही पूरा होगा:

'वह एक अपराधी समझा गया था' *यशायाह 53:12*

हाँ मेरे सम्बन्ध में लिखी गयी यह बात पूरी होने पर
आ रही है।" **38**वे बोले, "हे प्रभु, देख, यहाँ दो तलवारें
हैं।" इस पर उसने उनसे कहा, "बस बहुत हैं।"

प्रेरितों को प्रार्थना का आदेश

(मत्ती 26:36-46; मरकुस 14:32-42)

39फिर वह वहाँ से उठ कर नित्य प्रति की तरह
जैतून–पर्वत चला गया। और उसके शिष्य भी उसके
पीछे पीछे हो लिये। **40**वह जब उस स्थान पर पहुँचा तो
उसने उनसे कहा, "प्रार्थना करो कि तुम्हें परीक्षा में न
पड़ना पड़े।" **41**फिर वह किसी पत्थर को जितनी दूर
तक फेंका जा सकता है, लगभग उनसे उतनी दूर
अलग चला गया। फिर वह घुटनों के बल झुका और
प्रार्थना करने लगा, **42**"हे परम पिता, यदि तेरी इच्छा हो
तो इस प्याले को मुझसे दूर हटा किन्तु फिर भी मेरी
नहीं, बल्कि तेरी इच्छा पूरी हो।" **43**तभी एक स्वर्गदूत
वहाँ प्रकट हुआ और उसे शक्ति प्रदान करने लगा।
44उधर यीशु बड़ी बेचैनी के साथ और अधिक तीव्रता
से प्रार्थना करने लगा। उसका पसीना रक्त की बूँदों के
समान धरती पर गिर रहा था। **45**और जब वह प्रार्थना
से उठकर अपने शिष्यों के पास आया तो उसने उन्हें
शोक में थक कर सोते हुए पाया। **46**सो उसने उनसे
कहा, "तुम सो क्यों रहे हो? उठो और प्रार्थना करो कि
तुम किसी परीक्षा में न पड़ो।"

यीशु को बंदी बनाना

(मत्ती 26:47-56; मरकुस 14:43-50; यूहन्ना 18:3-11)

47वह अभी बोल ही रहा था कि एक भीड़ आ जुटी।
यहूदा नाम का एक व्यक्ति जो बारह शिष्यों में से एक
था, उनकी अगुआई कर रहा था। वह यीशु को चूमने
के लिये उसके पास आया।
48पर यीशु ने उससे कहा, "हे यहूदा, क्या तू एक
चुम्बन के द्वारा मनुष्य के पुत्र को धोखे से पकड़वाने
जा रहा है"

49जो घटने जा रहा था, उसे देखकर उसके आसपास
के लोगों ने कहा, "हे प्रभु, क्या हम तलवार से वार
करें?" 50और उनमें से एक ने तो प्रमुख याजक के
दास पर वार करके उसका दाहिना कान काट ही
डाला।

51किन्तु यीशु ने तुरंत कहा, "उन्हें यह भी करने
दो।" फिर यीशु ने उसके कान को छू कर चंगा कर
दिया। 52फिर यीशु ने उस पर चढ़ाई करने आये प्रमुख
याजकों, मन्दिर के अधिकारियों और बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं
से कहा, "क्या तुम तलवारें और लाठियाँ ले कर किसी
डाकू का सामना करने निकले हो? 53मंदिर में मैं हर
दिन तुम्हारे ही साथ था, किन्तु तुमने मुझ पर हाथ नहीं
डाला। पर यह समय तुम्हारा है। अंधकार के शासन
का काल।"

पतरस का इन्कार

***(मत्ती 26:57-58; मरकुस 14:53-54; 66-72;
यूहन्ना 18:12-18; 25-27)***

54उन्होंने उसे बंदी बना लिया और वहाँ से ले गये।
फिर वे उसे प्रमुख याजक के घर ले गये। पतरस कुछ
दूरी पर उसके पीछे पीछे आ रहा था। 55आँगन के बीच
उन्होंने आग सुलगाई और एक साथ नीचे बैठ गये।
पतरस भी वहीं उन्हीं में बैठा था। 56आग के प्रकाश में
एक दासी ने उसे वहाँ बैठे देखा। उसने उस पर दृष्टि
गढ़ाते हुए कहा, "यह आदमी तो उसके साथ भी था।"

57किन्तु पतरस ने इन्कार करते हुए कहा, "हे स्त्री,
मैं उसे नहीं जानता।" 58थोड़ी देर बाद एक दूसरे व्यक्ति
ने उसे देखा और कहा, "तू भी उन्हीं में से एक है।"
किन्तु पतरस बोला, "भले आदमी, मैं वह नहीं हूँ।"

59कोई लगभग एक घड़ी बीती होगी कि कोई और
भी बलपूर्वक कहने लगा, "निश्चय ही यह व्यक्ति उसके
साथ था। क्योंकि देखो यह गलील वासी भी है।"

60किन्तु पतरस बोला, "भले आदमी, मैं नहीं जानता
तू किसके बारे में बात कर रहा है।"

उसी घड़ी, वह अभी बातें कर ही रहा था कि एक
मुर्गे ने बाँग दी। 61और प्रभु ने मुड़ कर पतरस पर दृष्टि
डाली। तभी पतरस को प्रभु का वह वचन याद आया जो
उसने उससे कहा था: "आज मुर्गे के बाँग देने से पहले
तू मुझे तीन बार नकार चुकेगा।" 62तब वह बाहर चला
आया और फूट-फूट कर रो पड़ा।

यीशु का उपहास

(मत्ती 26:67-68; मरकुस 14:65)

63जिन व्यक्तियों ने यीशु को पकड़ रखा था वे उसका
उपहास करने और उसे पीटने लगे। 64उसकी आँखों
पर पट्टी बाँध दी और उससे यह कहते हुए पूछने लगे
कि "बता वह कौन है जिसने तुझे मारा?"

65उन्होंने उसका अपमान करने के लिए उससे और
भी बहुत सी बातें कहीं।

यीशु यहूदी नेताओं के सामने

***(मत्ती 26:59-66; मरकुस 14:55-64;
यूहन्ना 18:19-24)***

66जब दिन हुआ तो प्रमुख याजकों और धर्मशास्त्रियों
समेत लोगों के बुज़ुर्ग नेताओं की एक सभा हुई। फिर वे
लोग उसे अपनी महा सभा में ले गये। 67उन्होंने पूछा,
"हमें बता क्या तू मसीह है?"

यीशु ने उनसे कहा, "यदि मैं तुमसे कहूँ तो तुम मेरा
विश्वास नहीं करोगे। 68और यदि मैं पूछूँ तो तुम उत्तर
नहीं दोगे। 69किन्तु अब से मनुष्य का पुत्र सर्वशक्तिमान
परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठाया जायेगा।"

70वे सब बोले, "तब तो क्या तू परमेश्वर का पुत्र है?"

71फिर उन्होंने कहा, "अब हमें किसी और प्रमाण
की आवश्यकता क्यों है? हमने स्वयं इसके अपने मुँह
से यह सुन तो लिया है।"

पिलातुस द्वारा यीशु से पूछताछ

***(मत्ती 27:1-2; 11-14; मरकुस 15:1-5;
यूहन्ना 18:28-38)***

23 फिर उनकी सारी पंचायत उठ खड़ी हुई और
वे उसे पिलातुस के सामने ले गये। 2वे उस पर
अभियोग लगाने लगे। उन्होंने कहा, "हमने हमारे लोगों
को बहकाते हुए इस व्यक्ति को पकड़ा है। यह कैसर
को कर चुकाने का विरोध करता है और कहता है
यह स्वयं मसीह है, एक राजा।"

3इस पर पिलातुस ने यीशु से पूछा, "क्या तू यहूदियों
का राजा है?"

यीशु ने उसे उत्तर दिया, "तू ही तो कह रहा है, मैं
वही हूँ।"

4इस पर पिलातुस ने प्रमुख याजकों और भीड़ से
कहा, "मुझे इस व्यक्ति पर किसी आरोप का कोई
आधार दिखाई नहीं देता।"

5पर वे यह कहते हुए दबाव डालते रहे, "इसने समूचे
यहूदिया में लोगों को अपने उपदेशों से भड़काया है। यह
इसने गलील में आरंभ किया था और अब समूचा मार्ग
पार करके यहाँ तक आ पहुँचा है।"

यीशु का हेरोदेस के पास भेजा जाना

6पिलातुस ने यह सुनकर पूछा, "क्या यह व्यक्ति गलील
का है?" 7फिर जब उसको यह पता चला कि वह
हेरोदेस के अधिकार क्षेत्र के अधीन है तो उसने उसे
हेरोदेस के पास भेज दिया जो उन दिनों यरुशलेम में ही
था। 8सो हेरोदेस ने जब यीशु को देखा तो वह बहुत
प्रसन्न हुआ क्योंकि बरसों से वह उसे देखना चाह रहा

था। क्योंकि वह उसके विषय में सुन चुका था और
उसे कोई अद्‌भुत कर्म करते हुए देखने की आशा
रखता था। **9**उसने यीशु से अनेक प्रश्न पूछे किन्तु यीशु
ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। **10**प्रमुख याजक और
यहूदी धर्म शास्त्री वहीं खड़े थे और वे उस पर तीखे ढँग
के साथ दोष लगा रहे थे। **11**हेरोदेस ने भी अपने सैनिकों
समेत उसके साथ अपमानपूर्ण व्यवहार किया और
उसकी हँसी उड़ाई। फिर उन्होंने उसे एक उत्तम चोगा
पहना कर पिलातुस के पास वापस भेज दिया। **12**उस
दिन हेरोदेस और पिलातुस एक दूसरे के मित्र बन गये।
इससे पहले तो वे एक दूसरे के शत्रु थे।

यीशु को मरना होगा

(*मत्ती 27:15-26; मरकुस 15:6-15; यूहन्ना 18:39; 19:16*)

13फिर पिलातुस ने प्रमुख याजकों, यहूदी नेताओं
और लोगों को एकसाथ बुलाया। **14**उसने उनसे कहा,
"तुम इसे लोगों को भटकाने वाले एक व्यक्ति के रूप
में मेरे पास लाये हो। और मैंने यहाँ अब तुम्हारे सामने
ही इसकी जाँच पड़ताल की है और तुमने इस पर जो
दोष लगाये हैं उनका न तो मुझे कोई आधार मिला है
और **15**न ही हेरोदेस को क्योंकि उसने इसे वापस हमारे
पास भेज दिया है। जैसा कि तुम देख सकते हो इसने
ऐसा कुछ नहीं किया है कि यह मौत का भागी बने।
16इसलिये मैं इसे कोड़े मरवा कर छोड़ दूँगा।" **17***

18किन्तु वे सब एक साथ चिल्लाये "इस आदमी को
ले जाओ। हमारे लिए बरअब्बा को छोड़ दो।" **19**(बरअब्बा
को शहर में मार धाड़ और हत्या करने के जुर्म में जेल
में डाला हुआ था।)

20पिलातुस यीशु को छोड़ देना चाहता था, सो उसने
उन्हें फिर समझाया। **21**पर वे नारा लगाते रहे, "इसे
क्रूस पर चढ़ा दो, इसे क्रूस पर चढ़ा दो।"

22पिलातुस ने उनसे तीसरी बार पूछा, "किन्तु इस
व्यक्ति ने क्या अपराध किया है? मुझे इसके विरोध में
कुछ नहीं मिला है जो इसे मृत्यु दण्ड का भागी बनाये।
इसलिए मैं कोड़े लगवाकर इसे छोड़ दूँगा।"

23पर वे ऊँचे स्वर में नारे लगा लगा कर माँग कर
रहे थे कि उसे क्रूस पर चढ़ा दिया जाये। और उनके
नारों का कोलाहल इतना बढ़ गया कि **24**पिलातुस ने
निर्णय दे दिया कि उनकी माँग मान ली जाये। **25**पिलातुस
ने उस व्यक्ति को छोड़ दिया जिसे मार धाड़ और हत्या
करने के जुर्म में जेल में डाला गया था (यह वही था
जिसके छोड़ देने की वे माँग कर रहे थे।) और यीशु
को उनके हाथों में सौंप दिया कि वे जैसा चाहें, करें।

पद 17 लूका की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 17 जोड़ा गया है। "पिलातुस को फ़सह पर्व पर हर साल जनता के लिये कोई एक बंदी छोड़ना पड़ता था।"

यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना

(*मत्ती 27:32-44; मरकुस 15:21-32; यूहन्ना 19:17-27*)

26जब वे यीशु को ले जा रहे थे तो उन्होंने कुरैन के
रहने वाले शमौन नाम के एक व्यक्ति को, जो अपने
खेतों से आ रहा था, पकड़ लिया और उस पर क्रूस
लाद कर उसे यीशु के पीछे पीछे चलने को विवश
किया। **27**लोगों की एक बड़ी भीड़ उसके पीछे चल रही
थी। इसमें कुछ ऐसी स्त्रियाँ भी थी जो उसके लिये रो
रही थीं और विलाप कर रही थीं। **28**यीशु उनकी तरफ
मुड़ा और बोला, "यरूशलेम की पुत्रियों, मेरे लिये मत
बिलखो बल्कि स्वयं अपने लिये और अपनी संतान के
लिये विलाप करो। **29**क्योंकि ऐसे दिन आ रहे हैं जब
लोग कहेंगे, 'वे स्त्रियाँ धन्य हैं, जो बाँझ हैं और धन्य हैं,
वे कोख जिन्होंने किसी को कभी जन्म ही नहीं दिया। वे
स्तन धन्य हैं जिन्होंने कभी दूध नहीं पिलाया।' **30**फिर वे
पर्वतों से कहेंगे 'हम पर गिर पड़ो' और पहाड़ियों से
कहेंगे 'हमें ढक लो' **31**क्योंकि लोग जब पेड़ हरा है,
उसके साथ तब ऐसा करते हैं तो जब पेड़ सूख जायेगा
तब क्या होगा?"

32दो और व्यक्ति, जो दोनों ही अपराधी थे, उसके
साथ मृत्यु-दण्ड के लिये बाहर ले जाये जा रहे थे।
33फिर जब वे उस स्थान पर आये जो खोपड़ी कहलाता
है तो उन्होंने उन दोनों अपराधियों के साथ उसे क्रूस
पर चढ़ा दिया। एक अपराधी को उसके दाहिनी ओर,
दूसरे को बाँई ओर। **34**इस पर यीशु बोला, "हे परम
पिता, इन्हें क्षमा करना क्योंकि ये नहीं जानते कि ये
क्या कर रहे हैं।" फिर उन्होंने पासा फेंक कर उसके
कपड़ों का बटवारा कर लिया।

35'वहाँ खड़े लोग देख रहे थे। यहूदी नेता उसका
उपहास करते हुए बोले, 'इसने दूसरों का उद्धार किया
है। यदि यह परमेश्वर का चुना हुआ मसीह है तो इसे
अपने आप अपनी रक्षा करने दो।"

36सैनिकों ने भी आकर उसका उपहास किया। उन्होंने
उसे सिरका पीने को दिया **37**और कहा, "यदि तू यहूदियों
का राजा है तो अपने आपको बचा ले।" **38**उसके ऊपरयह
सूचना अंकित कर दी गई थी "यह यहूदियों का राजा
है।"

39वहाँ लटकाये गये अपराधियों में से एक ने उसका
अपमान करते हुए कहा, "क्या तू मसीह नहीं है? हमें
और अपने आप को बचा ले।"

40किन्तु दूसरे ने उस पहले अपराधी को फटकारते
हुए कहा, "क्या तू परमेश्वर से नहीं डरता? तुझे भी
वही दण्ड मिल रहा है **41**किन्तु हमारा दण्ड तो न्याय पूर्ण
है क्योंकि हमने जो कुछ किया, उसके लिये जो हमें
मिलना चाहिये था, वही मिल रहा है पर इस व्यक्ति ने
तो कुछ भी बुरा नहीं किया है!"

42फिर वह बोला, "यीशु जब तू अपने राज्य में आये तो मुझे याद रखना।"

43यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से सत्य कहता हूँ, आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।"

यीशु का देहान्त

(मत्ती 27:45-56; मरकुस 15:33-41; यूहन्ना 19:28-30)

44उस समय दिन के बारह बजे होंगे तभी तीन बजे तक समूची धरती पर गहरा अंधकार छा गया। 45सूरज भी नहीं चमक रहा था। उधर मंदिर में परदे के फट कर दो टुकड़े हो गये। 46यीशु ने ऊँचे स्वर में पुकारा, "हे परम पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों सौंपता हूँ।" यह कहकर उसने प्राण छोड़ दिये।

47जब रोमी सेना नायक ने, जो कुछ घटा था, उसे देखा तो परमेश्वर की प्रशंसा करते हुए उसने कहा, "यह निश्चय ही एक अच्छा मनुष्य था!"

48जब वहाँ देखने आये एकत्र लोगों ने, जो कुछ हुआ था, उसे देखा तो वे अपनी छाती पीटते लौट गये। 49किन्तु वे सभी जो उसे जानते थे, उन स्त्रियों समेत, जो गलील से उसके पीछे पीछे आ रहीं थीं, इन बातों को देखने कुछ दूरी पर खड़े थे।

अरमतियाह का यूसुफ़

(मत्ती 27:57-61; मरकुस 15:42-47; यूहन्ना 19:38-42)

50अब वहीं यूसुफ नाम का एक पुरुष था जो यहूदी महासभा का एक सदस्य था। वह एक अच्छा धर्मी पुरुष था। 51वह उनके निर्णय और उसे काम में लाने के लिये सहमत नहीं था। वह यहूदियों के एक नगर अरमतियाह का निवासी था। वह परमेश्वर के राज्य की बाट जोहा करता था। 52यह व्यक्ति पिलातुस के पास गया और यीशु के शव की याचना की। 53उसने शव को क्रूस पर से नीचे उतारा और सन के उत्तम रेशों के बने कपड़े में उसे लपेट दिया। फिर उसने उसे चट्टान में काटी गयी एक कब्र में रख दिया, जिसमें पहले कभी किसी को नहीं रखा गया था। 54वह शुक्रवार का दिन था और सब्त का प्रारम्भ होने को था।

55वे स्त्रियाँ जो गलील से यीशु के साथ आई थी, यूसुफ के पीछे हो लीं। उन्होंने वह कब्र देखी, और देखा कि उसका शव कब्र में कैसे रखा गया। 56फिर उन्होंने घर लौट कर सुंगधित सामग्री और लेप तैयार किये। सब्त के दिन व्यवस्था के विधि के अनुसार उन्होंने आराम किया।

यीशु का फिर से जी उठना

(मत्ती 28:1-10; मरकुस 16:1-8; यूहन्ना 20:1-10)

24 सप्ताह के पहले दिन बहुत सवेरे ही वे स्त्रियाँ कब्र पर उस सुगंधित सामग्री को, जिसे उन्होंने तैयार किया था, लेकर आयीं। 2उन्हें कब्र पर से पत्थर लुढ़का हुआ मिला। 3सो वे भीतर चली गयीं किन्तु उन्हें वहाँ प्रभु यीशु का शव नहीं मिला। 4जब वे इस पर अभी उलझन में ही पड़ी थीं कि, उनके पास चमचमाते वस्त्र पहने दो व्यक्ति आ खड़े हुए। 5डर के मारे उन्होंने धरती की तरफ अपने मुँह लटकाये हुए थे। उन दो व्यक्तियों ने उनसे कहा "जो जीवित है, उसे तुम मुर्दो के बीच क्यों ढूँढ रही हो? 6वह यहाँ नहीं है। वह जी उठा है। याद करो जब वह अभी गलील में ही था, उसने तुमसे क्या कहा था। 7उसने कहा था कि 'मनुष्य के पुत्र का पापियों के हाथों सौंपा जाना निश्चित है। फिर वह क्रूस पर चढ़ा दिया जायेगा और तीसरे दिन उसको फिर से जीवित कर देना निश्चित है।'" 8तब उन स्त्रियों को उसके शब्द याद हो आये।

9वे कब्र से लौट आयीं और उन्होने ये सब बातें उन ग्यारहों और अन्य सभी को बतायीं। 10ये स्त्रियाँ थीं मरियम-मगदलीनी, योअन्ना और याकूब की माता, मरियम। वे तथा उनके साथ की दूसरी स्त्रियाँ इन बातों को प्रेरितों से कह रहीं थीं 11पर उनके शब्द प्रेरितों को व्यर्थ से जान पड़े। सो उन्होंने उनका विश्वास नहीं किया। 12किन्तु पतरस खड़ा हुआ और कब्र की तरफ़ दौड़ आया। उसने नीचे झुक कर देखा पर उसे सन के उत्तम रेशों से बने कफन के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखाई दिया था। फिर अपने मन ही मन जो कुछ हुआ था, उस पर अचरज करता हुआ वह चला गया।

इम्माऊस के मार्ग पर

(मरकुस 16:12-13)

13उसी दिन उसके शिष्यों में से दो, यरूशलेम से कोई सात मील दूर बसे इम्माऊस नाम के गाँव को जा रहे थे। 14जो घटनाएँ घटीं थीं, उन सब पर वे आपस में बातचीत कर रहे थे। 15जब वे उन बातों पर चर्चा और सोच विचार कर रहे थे तभी स्वयं यीशु वहाँ आ उपस्थित हुआ और उनके साथ-साथ चलने लगा। 16किन्तु उन्हें उसे पहचानने नहीं दिया गया। 17यीशु ने उनसे कहा, "चलते चलते एक दूसरे से ये तुम किन बातों की चर्चा कर रहे हो?"

वे चलते हुए रुक गये। वे बड़े दुखी दिखाई दे रहे थे। 18उनमें से किलयुपास नाम के एक व्यक्ति ने उससे कहा, "यरूशलेम में रहने वाला तू अकेला ही ऐसा व्यक्ति होगा जो पिछले दिनों जो बातें घटी हैं, उन्हें नहीं जानता।"

19यीशु ने उनसे पूछा, "कौन सी बातें?" उन्होंने उससे कहा, "सब नासरी यीशु के बारे में हैं।

यह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने जो किया और कहा उससे परमेश्वर और सभी लोगों के सामने यह दिखा

दिया कि वह एक महान् नबी था। 20और हम इस बारे
में बातें कर रहे थे कि हमारे प्रमुख याजकों और
शासकों ने उसे कैसे मृत्यु दण्ड देने के लिए सौंप दिया।
और उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। 21हम आशा
रखते थे कि यही वह था जो इस्राएल को मुक्त कराता।
और इस सब कुछ के अतिरिक्त इस घटना को घटे यह
तीसरा दिन है। 22और हमारी टोली की कुछ स्त्रियों ने
हमें अचम्भे में डाल दिया है। आज भोर के तड़के वे
कब्र पर गयीं। 23किन्तु उन्हें उसका शव नहीं मिला। वे
लौटीं और हमें बताया कि उन्होंने स्वर्गदूतों का दर्शन
पाया है जिन्होंने कहा था कि वह जीवित है। 24फिर हम
में से कुछ कब्र पर गये और जैसा स्त्रियों ने बताया था,
उन्होंने वहाँ वैसा ही पाया। उन्होंने उसे नहीं देखा।"

25तब यीशु ने उनसे कहा, "तुम कितने मूर्ख हो और
नबियों ने जो कुछ कहा, उस पर विश्वास करने में
कितने मंद हो। 26क्या मसीह के लिये यह आवश्यक
नहीं था कि वह इन यातनाओं को भोगे और इस प्रकार
अपनी महिमा में प्रवेश करे?" 27और इस तरह मूसा से
प्रारम्भ करके सब नबियों तक और समूचे शास्त्रों में
उसके बारे में जो कहा गया था, उसने उसकी व्याख्या
करके उन्हें समझाया।

28वे जब उस गाँव के पास आये, जहाँ जा रहे थे, यीशु
ने ऐसे बर्ताव किया, जैसे उसे आगे जाना हो। 29किन्तु
उन्होंने उससे बलपूर्वक आग्रह करते हुए कहा, "हमारे
साथ रुक जा क्योंकि लगभग साँझ हो चुकी है और
अब दिन ढल चुका है।" सो वह उनके साथ ठहरने
भीतर आ गया।

30जब उनके साथ वह खाने की मेज पर था तभी
उसने रोटी उठाई और धन्यवाद किया। फिर उसे तोड़
कर जब वह उन्हें दे रहा था 31तभी उनकी आँखें खोल
दी गयी और उन्होंने उसे पहचान लिया। किन्तु वह
उनके सामने से अदृश्य हो गया। 32फिर वे आपस में
बोले, "राह में जब वह हमसे बातें कर रहा था और हमें
शास्त्रों को समझा रहा था तो क्या हमारे हृदय के भीतर
आग सी नहीं भड़क उठी थी?"

33फिर वे तुरंत खड़े हुए और वापस यरूशलेम को
चल दिये। वहाँ उन्हें ग्यारहों प्रेरित और दूसरे लोग
उनके साथ इकट्ठे मिले, 34जो कह रहे थे, "हे प्रभु,
वास्तव में जी उठा है। उसने शमौन को दर्शन दिया है।"

35फिर उन दोनों ने राह में जो घटा था, उसका ब्योरा
दिया और बताया कि जब उसने रोटी के टुकड़े लिये थे,
तब उन्होंने यीशु को कैसे पहचान लिया था।"

यीशु का अपने शिष्यों के सामने प्रकट होना

(मत्ती 28:16-20; मरकुस 16:14-18; यूहन्ना 20:19-23; प्रेरितों के काम 1:6-8)

36अभी वे उन्हें ये बातें बता ही रहे थे कि वह स्वयं
उनके बीच आ खड़ा हुआ और उनसे बोला, "तुम्हें
शान्ति मिले।" 37किन्तु वे चौंक कर भयभीत हो उठे।
उन्होंने सोचा जैसे वे कोई भूत देख रहे हों।

38किन्तु वह उनसे बोला, "तुम ऐसे घबराये हुए क्यों
हो? तुम्हारे मनों में संदेह क्यों उठ रहे हैं? 39मेरे हाथों
और मेरे पैरों को देखो। मुझे छुओ, और देखो कि
किसी भूत के माँस और हड्डियाँ नहीं होतीं और जैसा
कि तुम देख रहे हो कि, मेरे वे हैं।"

40यह कहते हुए उसने हाथ और पैर उन्हें दिखाये।
41किन्तु अपने आनन्द के कारण वे अब भी इस पर
विश्वास नहीं कर सके। वे भौंचक्के थे सो यीशु ने
उनसे कहा, "यहाँ तुम्हारे पास कुछ खाने को है" 42उन्होंने
पकाई हुई मछली का एक टुकड़ा उसे दिया। 43और
उसने उसे लेकर उनके सामने ही खाया।

44फिर उसने उनसे कहा, "ये बातें वे हैं जो मैंने तुमसे
तब कहीं थीं, जब मैं अभी तुम्हारे साथ था। हर वह
बात जो मेरे विषय में मूसा की व्यवस्था में, नबियों की
पुस्तकों तथा भजनावलियों में लिखी हैं, पूरी होनी ही है।
45फिर पवित्र शास्त्रों को समझने के लिये उसने उनकी
बुद्धि के द्वार खोल दिये। 46और उसने उनसे कहा, "यह
वही है, जो लिखा है कि मसीह यातना भोगेगा और
तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा। 47और पापों की
क्षमा के लिए मनफिराव का यह संदेश यरूशलेम से
आरंभ होकर सब देशों में प्रचारित किया जाएगा। 48तुम
इन बातों के साक्षी हो। 49और अब मेरे परम पिता ने
मुझसे जो प्रतिज्ञा की है, उसे मैं तुम्हारे लिये भेजूँगा।
किन्तु तुम्हें इस नगर में उस समय तक ठहरे रहना
होगा, जब तक तुम स्वर्ग की शक्ति से युक्त न हो जाओ।"

यीशु की स्वर्ग को वापसी

(मरकुस 16:19-20; प्रेरितों के काम 1:9-11)

50यीशु फिर उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया।
और उसने हाथ उठा कर उन्हें आशीर्वाद दिया। 51उन्हें
आशीर्वाद देते देते ही उसने उन्हें छोड़ दिया और फिर
उसे स्वर्ग में उठा लिया गया। 52तब उन्होंने उसकी
आराधना की और असीम आनन्द के साथ वे यरूशलेम
लौट आये। 53और मन्दिर में परमेश्वर की स्तुति करते
हुए वे अपना समय बिताने लगे।

यूहन्ना

यीशु का आना

1 आदि में शब्द* था। शब्द परमेश्वर के साथ था।
शब्द ही परमेश्वर था। 2यह शब्द ही आदि में परमेश्वर
के साथ था। 3दुनिया की हर वस्तु उसी से उपजी।
उसके बिना किसी की भी रचना नहीं हुई। 4उसी में
जीवन था और वह जीवन ही दुनिया के लोगों के लिये
प्रकाश (ज्ञान, भलाई) था। 5प्रकाश अँधेरे में चमकता
है पर अँधेरा उसे समझ नहीं पाया।

6परमेश्वर का भेजा हुआ एक मनुष्य आया जिसका
नाम यूहन्ना था। 7वह एक साक्षी के रूप में आया था
ताकि वह लोगों को प्रकाश के बारे में बता सके।
जिससे सभी लोग उसके द्वारा उस प्रकाश में विश्वास
कर सकें। 8वह खुद प्रकाश नहीं था बल्कि वह तो
लोगों को प्रकाश की साक्षी देने आया था। 9उस प्रकाश
की, जो सच्चा था, जो हर मनुष्य को ज्ञान की ज्योति
देगा, जो धरती पर आने वाला था।

10वह इस जगत में ही था और यह जगत उसी के
द्वारा अस्तित्व में आया पर जगत ने उसे पहचाना नहीं।
11वह अपने घर आया था और उसके अपने ही लोगों
ने उसे अपनाया नहीं। 12पर जिन्होंने उसे अपनाया उन
सबको उसने परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार
दिया। 13परमेश्वर की संतान के रूप में वह कुदरती
तौर पर न तो लहू से पैदा हुआ था, न किसी शारीरिक
इच्छा से और न ही माता–पिता की योजना से। बल्कि
वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ।

14उस आदि शब्द ने देह धारण कर हमारे बीच
निवास किया। हमने परम पिता के एकमात्र पुत्र के रूप
में उसकी महिमा का दर्शन किया। वह करुणा और
सत्य से पूर्ण था। 15यूहन्ना ने उसकी साक्षी दी और
पुकार कर कहा यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा
था 'वह जो मेरे बाद आने वाला है, मुझसे महान है,
मुझसे आगे है क्योंकि वह मुझसे पहले मौजूद था।'

16उसकी करुणा और सत्य की पूर्णता से हम सबने
अनुग्रह पर अनुग्रह प्राप्त किये। 17हमें व्यवस्था का
विधान देने वाला मूसा था पर करुणा और सत्य हमें
यीशु मसीह से मिले। 18परमेश्वर को कभी किसी ने
नहीं देखा किन्तु परमेश्वर के एकमात्र पुत्र ने, जो
सदा परम पिता के साथ है उसे हम पर प्रकट किया।

यूहन्ना की यीशु के विषय में साक्षी

(*मत्ती 3:1-12; मरकुस 1:2-8; लूका 3:15-17*)

19-20जब यरूशलेम के यहूदियों ने उसके पास लेवियों
और याजकों को यह पूछने के लिये भेजा "तुम कौन
हो?" तो उसने साक्षी दी और बिना झिझक स्वीकार
किया, "मैं मसीह नहीं हूँ।"

21उन्होंने यूहन्ना से पूछा, "तो तुम कौन हो, क्या तुम
एलिय्याह हो?"

यूहन्ना ने जवाब दिया, "नहीं, मैं वह नहीं हूँ।"

यहूदियों ने पूछा, "क्या तुम भविष्यवक्ता हो?"

उसने उत्तर दिया, "नही।"

22फिर उन्होंने उससे पूछा, "तो तुम कौन हो? हमें
बताओ ताकि जिन्होंने हमें भेजा है, उन्हें हम उत्तर दे
सकें। तुम अपने विषय में क्या कहते हो?"

23यूहन्ना ने कहा:

"मैं उसकी आवाज़ हूँ जो जंगल में पुकार रहा है:
'प्रभु के लिये सीधा रास्ता बनाओ'" *यशायाह 40:3*

24इन लोगों को फरीसियों ने भेजा था। 25उन्होंने
उससे पूछा, "यदि तुम न मसीह हो, न एलिय्याह हो,
और न भविष्यवक्ता तो लोगों को बपतिस्मा क्यों देते
हो?"

26उन्हें जवाब देते हुए यूहन्ना ने कहा, "मैं उन्हें जल
से बपतिस्मा देता हूँ। तुम्हारे ही बीच एक व्यक्ति
है जिसे तुम लोग नहीं जानते। 27यह वही है जो मेरे
बाद आनेवाला है। मैं उसके जूतों की तनियाँ खोलने
लायक भी नहीं हूँ।"

28ये घटनाएँ यरदन के पार बैतनिय्याह में घटीं जहाँ
यूहन्ना बपतिस्मा दिया करता था।

29अगले दिन यूहन्ना ने यीशु को अपनी तरफ़ आते
देखा और कहा, "परमेश्वर के मेमने को देखो जो
जगत के पाप को हर ले जाता है। 30यह वही है जिसके
बारे में मैंने कहा था, 'एक पुरुष मेरे पीछे आने वाला है

शब्द मूल में यूनानी भाषा का शब्द है लोगोस जिसका अर्थ है संदेश। इसका अनुवाद सुसमाचार भी किया जा सकता है। यहाँ इसका अर्थ है–यीशु, यीशु एक रास्ता है जिसके द्वारा खुद परम पिता ने लोगों को अपने बारे में बताया।

जो मुझसे महान है, मुझसे आगे है क्योंकि वह मुझसे पहले विद्यमान था।' 31मैं खुद उसे नहीं जानता था किन्तु मैं इसलिये बपतिस्मा देता आ रहा हूँ ताकि इस्राएल के लोग उसे जान लें।"

32फिर यूहन्ना ने अपनी यह साक्षी दी, "मैनें देखा कि कबूतर के रूप में स्वर्ग से नीचे उतरती हुई आत्मा उस पर आ टिकी। 33मैं खुद उसे नहीं जान पाया, पर जिसने मुझे जल से बपतिस्मा देने के लिये भेजा था मुझसे कहा, "तुम आत्मा को उतरते और किसी पर टिकते देखोगे, यह वही पुरुष है जो पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देता है।' 34मैनें उसे देखा है और मैं प्रमाणित करता हूँ कि वह परमेश्वर का पुत्र है।"

यीशु के प्रथम अनुयायी

35अगले दिन यूहन्ना अपने दो चेलों के साथ वहाँ फिर उपस्थित था। 36जब उसने यीशु को पास से गुजरते देखा, उसने कहा, "देखो परमेश्वर का मेमना।"

37जब उन दोनों चेलों ने उसे यह कहते सुना तो वे यीशु के पीछे चल पड़े। 38जब यीशु ने मुड़कर देखा कि वे पीछे आ रहे हैं तो उनसे पूछा, "तुम्हें क्या चाहिये?"

उन्होंने जवाब दिया, "रब्बी, ("रब्बी" अर्थात् "गुरु") तेरा निवास कहाँ है?" 39यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "आओ और देखो" और वे उसके साथ हो लिये। उन्होंने देखा कि वह कहाँ रहता है। उस दिन वे उसके साथ ठहरे क्योंकि लगभग शाम के चार बज चुके थे।

40जिन दोनों ने यूहन्ना की बात सुनी थी और यीशु के पीछे गये थे उनमें से एक शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास था। 41उसने पहले अपने भाई शमौन को पाकर उससे कहा, "हमें मसीह: अर्थात् अभिषिक्त* मिल गया है।"

42फिर अन्द्रियास शमौन को यीशु के पास ले आया। यीशु ने उसे देखा और कहा, "तू यूहन्ना का पुत्र शमौन है। तू कैफ़ा (यानी 'पतरस') कहलायेगा

43अगले दिन यीशु ने गलील जाने का निश्चय किया। फिर फिलिप्पुस को पाकर यीशु ने उससे कहा, "मेरे पीछे चला आ।" 44फिलिप्पुस अन्द्रियास और पतरस के नगर बैतसैदा से था। 45फिलिप्पुस को नतनएल मिला और उसने उससे कहा, "हमें वह मिल गया है जिसके बारे में मूसा ने व्यवस्था के विधान में और भविष्यवक्ताओं ने लिखा है। वह है यूसुफ का बेटा, नासरत का यीशु।"

46फिर नतनएल ने उससे पूछा, "नासरत से भी कोई अच्छी वस्तु पैदा हो सकती है?"

फिलिप्पुस ने जवाब दिया, "जाओ और देखो।"

47यीशु ने नतनएल को अपनी तरफ आते हुए देखा और उसके बारे में कहा, "यह है एक सच्चा इस्राएली जिसमें कोई खोट नहीं है।"

48नतनएल ने पूछा, "तू मुझे कैसे जानता है?"

जवाब में यीशु ने कहा, "उससे पहले कि फ़िलिप्पुस ने तुझे बुलाया था, मैंने देखा था कि तू अंजीर के पेड़ के नीचे था।" 49नतनएल ने उत्तर में कहा, "हे रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है, तू इस्राएल का राजा है।"

50 इसके जवाब में यीशु ने कहा, "तुम इसलिये विश्वास कर रहे हो कि मैंने तुमसे यह कहा कि मैंनें तुम्हें अंजीर के पेड़ तले देखा। तुम आगे इससे भी बड़ी बातें देखोगे।" 51इसने उससे फिर कहा, "मैं तुम्हें सत्य बता रहा हूँ तुम स्वर्ग को खुलते और स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र पर उतरते-चढ़ते देखोगे।"

काना में विवाह

2 गलील के काना में तीसरे दिन किसी के यहाँ विवाह था। यीशु की माँ भी मौजूद थी। 2विवाह में यीशु और उसके शिष्यों को भी बुलाया गया था। 3वहाँ जब दाखरस खत्म हो गया, तो यीशु की माँ ने कहा, "उनके पास अब और दाखरस नहीं है।"

4यीशु ने उससे कहा, "यह तू मुझसे क्यों कह रही है? मेरा समय अभी नहीं आया।"

5फिर उसकी माता ने सेवकों से कहा, "वही करो जो तुमसे यह कहता है।" 6वहाँ पानी भरने के पत्थरे के छह मटके रखे थे। ये मटके वैसे ही थे जैसे यहूदी पवित्र स्नान के लिये काम में लाते थे। हर मटके में कोई बीस से तीस गैलन तक पानी आता था।

7यीशु ने सेवकों से कहा, "मटकों को पानी से भर दो।" और सेवकों ने मटकों को लबालब भर दिया।

8फिर उसने उनसे कहा, "अब थोड़ा बाहर निकालो, और दावत का इन्तज़ाम कर रहे प्रधान के पास उसे ले जाओ।" और वे उसे ले गये।

9फिर दावत के प्रबन्धकर्त्ता ने उस पानी को चखा जो दाखरस बन गया था। उसे पता ही नहीं चला कि वह दाखरस कहाँ से आया। पर उन सेवकों को इसका पता था जिन्होंने पानी निकाला था। फिर दावत के प्रबन्धक ने दूल्हे को बुलाया 10और उससे कहा, "हर कोई पहले- बढ़िया दाखरस परोसता है और जब मेहमान काफ़ी तृप्त हो चुकते हैं तो फिर घटिया। पर तुमने तो उत्तम दाखरस अब तक बचा रखा है।"

11यीशु ने गलील के काना में यह पहला आश्चर्यकर्म करके अपनी महिमा प्रकट की। जिससे उसके शिष्यों ने उसमें विश्वास किया।

यीशु मन्दिर में

(मत्ती 21:12-13; मरकुस 11:15-17; लूका 19:45-46)

12इसके बाद यीशु अपनी माता, भाइयों और शिष्यों के साथ कफ़रनहूम चला गया जहाँ वे कुछ दिन ठहरे। 13यहूदियों का फ़सह पर्व नज़दीक था। इसलिये यीशु

अभिषिक्त मूल में ख्रीष्ट।

यरूशलेम चला गया। 14वहाँ मन्दिर में यीशु ने देखा कि
लोग मवेशियों, भेड़ों और कबूतरों की बिक्री कर रहे हैं
और सिक्के बदलने वाले सौदागर अपनी गद्दियों पर बैठे
हैं। 15इसलिए उसने रस्सियों का एक कोड़ा बनाया और
सबको, मवेशियों और भेड़ों समेत, बाहर खदेड़ दिया।
मुद्रा बदलने वालों के सिक्के उड़ेल दिये और उनकी
चौकियाँ पलट दीं। 16कबूतर बेचने वालों से उसने कहा,
"इन्हें यहाँ से बाहर ले जाओ। मेरे परमपिता के घर को
बाजार मत बनाओ।"

17इस पर उसके शिष्यों को याद आया कि शास्त्रों में
लिखा है:

"तेरे घर के लिये मेरी धुन मुझे खा डालेगी।"

भजन संहिता 69:9

18जवाब में यहूदियों ने यीशु से कहा, "तू हमें कौन सा
अद्भुत चिह्न दिखा सकता है, जिससे तू जो कुछ कर
रहा है, उसका तू अधिकारी है यह साबित हो सके?"

19यीशु ने उन्हें जवाब में कहा, "इस मन्दिर को गिरा
दो और मैं तीन दिन के भीतर इसे फिर बना दूँगा।"

20इस पर यहूदी बोले, "इस मन्दिर को बनाने में
छियालीस साल लगे थे, और तू इसे तीन दिन में बनाने
जा रहा है?"

21(किन्तु अपनी बात में जिस मन्दिर की चर्चा यीशु
ने की थी वह उसका अपना ही शरीर था। 22आगे
चलकर जब वह मौत के बाद फिर जी उठा तो उसके
अनुयायियों को याद आया कि यीशु ने यह कहा था,
और शास्त्रों पर और यीशु के शब्दों पर विश्वास किया।)

23फ़सह के पर्व के दिनों जब यीशु यरूशलेम में था,
बहुत से लोगों ने उसके अद्भुत चिह्नों और कर्मों को
देखकर उसमें विश्वास किया। 24किन्तु यीशु ने अपने
आपको उनके भरोसे नहीं छोड़ा, क्योंकि वह सब लोगों
को जानता था। 25उसे इस बात की कोई जरूरत नहीं
थी कि कोई आकर उसे लोगों के बारे में बताए,
क्योंकि लोगों के मन में क्या है, इसे वह जानता था।

यीशु और नीकुदेमुस

3 वहाँ फरीसियों का एक आदमी था जिसका नाम
था नीकुदेमुस। वह यहूदियों का नेता था। 2वह यीशु
के पास रात में आया और उससे बोला, "हे गुरु, हम
जानते हैं कि तू गुरु है और परमेश्वर की ओर से आया
है, क्योंकि ऐसे आश्चर्यकर्म जैसे तू करता है परमेश्वर
की सहायता के बिना कोई नहीं कर सकता।"

3जवाब में यीशु ने उससे कहा, "सत्यसत्य, मैं तुम्हें
बताता हूँ, यदि कोई व्यक्ति नये सिरे से जन्म न ले तो
वह परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकता।"

4नीकुदेमुस ने उससे कहा, "कोई आदमी बूढ़ा हो
जाने के बाद फिर जन्म कैसे ले सकता है? निश्चय ही
वह अपनी माँ की कोख में प्रवेश करके दुबारा तो
जन्म ले नहीं सकता!"

5यीशु ने जवाब दिया, "सच्चाई तुम्हें मैं बताता हूँ। यदि
कोई आदमी जल और आत्मा से जन्म नहीं लेता तो वह
परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं पा सकता। 6माँस से
केवल माँस ही पैदा होता है; और जो आत्मा से उत्पन्न
हो वह आत्मा है। 7मैंने तुमसे जो कहा है उस पर
आश्चर्य मत करो, 'तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना ही
होगा।'

8हवा जिधर चाहती है, उधर बहती है। तुम उसकी
आवाज़ सुन सकते हो। किन्तु तुम यह नहीं जान
सकते कि वह कहाँ से आ रही है, और कहाँ को जा
रही है। आत्मा से जन्म हुआ हर व्यक्ति भी ऐसा ही
है।" 9जवाब में नीकुदेमुस ने उससे कहा, "यह कैसे हो
सकता है?"

10यीशु ने उसे जवाब देते हुए कहा, "तुम इस्राएलियों
के गुरु हो फिर भी यह नहीं जानते? 11मैं तुम्हें सच्चाई
बताता हूँ, हम जो जानते हैं, वही बोलते हैं। और वही
बताते हैं जो हमने देखा है, पर तुम लोग जो हम कहते हैं
उसे स्वीकार नहीं करते। 12मैंने तुम्हें धरती की बातें
बतायीं और तुमने उन पर विश्वास नहीं किया इसलिये
अगर मैं स्वर्ग की बातें बताऊँ तो तुम उन पर कैसे
विश्वास करोगे? 13स्वर्ग में ऊपर कोई नहीं गया, सिवाय
उसके, जो स्वर्ग से उतर कर आया है–यानी मानव–पुत्र।

14"जैसे मूसा ने रेगिस्तान में साँप को ऊपर उठा
लिया था, वैसे ही मानव–पुत्र भी ऊपर उठा लिया
जायेगा 15ताकि वे सब जो उसमें विश्वास करते हैं,
अनन्त जीवन पा सकें।"

16परमेश्वर को जगत से इतना प्रेम था कि उसने
अपने एकमात्र पुत्र को दे दिया, ताकि हर वह आदमी
जो उसमें विश्वास रखता है, नष्ट न हो जाये बल्कि
उसे अनन्त जीवन मिल जाये। 17परमेश्वर ने अपने बेटे
को दुनिया में इसलिये नहीं भेजा कि वह दुनिया को
अपराधी ठहराये बल्कि उसे इसलिये भेजा कि उसके
द्वारा दुनिया का उद्धार हो। 18जो उसमें विश्वास
रखता है उसे दोषी न ठहराया जाय पर जो उसमें
विश्वास नहीं रखता, उसे दोषी ठहराया जा चुका है
क्योंकि उसने परमेश्वर के एकमात्र पुत्र के नाम में
विश्वास नहीं रखा है। 19इस निर्णय का आधार यह है
कि ज्योति इस दुनिया में आ चुकी है पर ज्योति के
बजाय लोग अंधेरे को अधिक महत्त्व देते हैं। क्योंकि
उनके कार्य बुरे हैं। 20हर वह आदमी जो पाप करता है
ज्योति से घृणा रखता है और ज्योति के नज़दीक नहीं
आता ताकि उसके पाप उजागर न हो जायें। 21पर वह
जो सत्य पर चलता है, ज्योति के निकट आता है ताकि
यह प्रकट हो जाये कि उसके कर्म परमेश्वर के
द्वारा कराये गये हैं।

यूहन्ना द्वारा यीशु का बपतिस्मा

22इसके बाद यीशु अपने अनुयायियों के साथ यहूदिया
के इलाके में चला गया। वहाँ उनके साथ ठहर कर,
वह लोगों को बपतिस्मा देने लगा। 23वहीं शालेम के
पास ऐनोन में यूहन्ना भी बपतिस्मा दिया करता था
क्योंकि वहाँ पानी बहुतायत में था। लोग वहाँ आते और
बपतिस्मा लेते थे। 24(यूहन्ना को अभी तक बंदी नहीं
बनाया गया था।)

25अब यूहन्ना के कुछ शिष्यों और एक यहूदी के
बीच स्वच्छताकरण को लेकर बहस छिड़ गयी। 26इसलिये
वे यूहन्ना के पास आये और बोले, "हे रब्बी, जो व्यक्ति
यरदन के उस पार तेरे साथ था और जिसके बारे में
तूने बताया था, वही लोगों को बपतिस्मा दे रहा है, और
हर आदमी उसके पास जा रहा है।"

27जवाब में यूहन्ना ने कहा, "किसी आदमी को तब
तक कुछ नहीं मिल सकता जब तक वह उसे स्वर्ग से
न दिया गया हो। 28तुम सब गवाह हो कि मैंने कहा था
'मैं मसीह नहीं हूँ' बल्कि मैं तो उससे पहले भेजा गया
हूँ। 29दूल्हा वही है जिसे दुल्हन मिलती है। पर दूल्हे का
मित्र जो खड़ा रहता है और उसकी अगुवाई में जब दूल्हे
की आवाज़ को सुनता है, तो बहुत खुश होता है। मेरी
यही खुशी अब पूरी हुई है। 30अब निश्चित है कि
उसकी महिमा बढ़े और मेरी घटे!

वह जो स्वर्ग से उतरा

31"जो ऊपर से आता है वह सबसे महान् है। वह जो
धरती से है, धरती से जुड़ा है। इसलिये वह धरती की ही
बातें करता है। जो स्वर्ग से उतरा है, सबके ऊपर है;
32उसने जो कुछ देखा है, और सुना है, वह उसकी
साक्षी देता है पर उसकी साक्षी को कोई ग्रहण नहीं
करना चाहता। 33जो उसकी साक्षी को मानता है वह
प्रमाणित करता है कि परमेश्वर सच्चा है। 34क्योंकि
वह, जिसे परमेश्वर ने भेजा है, परमेश्वर की ही बातें
बोलता है। क्योंकि परमेश्वर ने उसे आत्मा का अनन्त
दान दिया है। 35पिता अपने पुत्र को प्यार करता है।
और उसी के हाथों में उसने सब कुछ सौंप दिया है।
36इसलिए वह जो उसके पुत्र में विश्वास करता है
अनन्त जीवन पाता है पर वह जो परमेश्वर के पुत्र की
बात नहीं मानता उसे वह जीवन नहीं मिलेगा। इसके
बजाय उस पर परम पिता परमेश्वर का क्रोध बना
रहेगा।"

यीशु और सामरी स्त्री

4 जब यीशु को पता चला कि फरीसियों ने सुना है
कि यीशु यूहन्ना से अधिक लोगों को बपतिस्मा दे
रहा है और उन्हें शिष्य बना रहा है 2(यद्यपि यीशु स्वयं
बपतिस्मा नहीं दे रहा था बल्कि यह उसके शिष्य कर
रहे थे।) 3तो वह यहूदिया को छोड़कर एक बार फिर
वापस गलील चला गया। 4इस बार उसे सामरिया होकर
जाना पड़ा।

5इसलिये वह सामरिया के एक नगर सूखार में आया।
यह नगर उस भूमि के पास था जिसे याकूब ने अपने
बेटे यूसुफ को दिया था। 6वहाँ याकूब का कुआँ था।
यीशु इस यात्रा में बहुत थक गया था इसलिये वह कुएँ
के पास बैठ गया। समय लगभग दोपहर का था। 7एक
सामरी स्त्री जल भरने आई। यीशु ने उससे कहा, "मुझे
जल दे।" 8(शिष्य लोग भोजन खरीदने के लिए नगर में
गये हुए थे।) 9सामरी स्त्री ने उससे कहा, "तू यहूदी
होकर भी मुझसे पीने के लिए जल क्यों माँग रहा है मैं
तो एक सामरी स्त्री हूँ?" (यहूदी तो सामरियों से कोई
सम्बन्ध नहीं रखते।) 10उत्तर में यीशु ने उससे कहा,
"यदि तू केवल इतना जानती कि परमेश्वर ने क्या दिया
है और वह कौन है जो तुझसे कह रहा है 'मुझे जल दे'
तो तू उससे माँगती और वह तुझे स्वच्छ जीवन–जल
प्रदान करता।"

11स्त्री ने उससे कहा, "हे महाशय, तेरे पास तो कोई
बर्तन तक नहीं है और कुआँ बहुत गहरा है फिर तेरे
पास जीवन–जल कैसे हो सकता है? क्या तू हमारे पूर्वज
याकूब से बड़ा है 12जिसने हमें यह कुआँ दिया और
अपने बच्चों और मवेशियों के साथ खुद इसका जल
पिया था।"

13उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "हर एक जो इस कुएँ
का पानी पीता है, उसे फिर प्यास लगेगी 14किन्तु वह
जो उस जल को पियेगा, जिसे मैं दूँगा, फिर कभी प्यासा
नहीं रहेगा। बल्कि मेरा दिया हुआ जल उसके अन्तर में
एक पानी के झरने का रूप ले लेगा जो उमड़–घुमड़
कर उसे अनन्त जीवन प्रदान करेगा।"

15तब उस स्त्री ने उससे कहा, "हे महाशय, मुझे वह
जल प्रदान कर ताकि मैं फिर कभी प्यासी न रहूँ और
मुझे यहाँ पानी खेंचने न आना पड़े।"

16इस पर यीशु ने उससे कहा, "जाओ अपने पति को
बुलाकर यहाँ ले आओ।"

17उत्तर में स्त्री ने कहा, "मेरा कोई पति नहीं है।"
यीशु ने उससे कहा, "जब तुम यह कहती हो कि
तुम्हारा कोई पति नहीं है तो तुम ठीक ही कहती हो।
18तुम्हारे पाँच पति थे और तुम अब जिस पुरुष के साथ
रहती हो वह भी तुम्हारा पति नहीं है इसलिये तुमने जो
कहा है सच कहा है।"

19इस पर स्त्री ने उससे कहा, "महाशय, मुझे तो
लगता है कि तू अन्तर्यामी है। 20हमारे पूर्वजों ने इस
पर्वत पर आराधना की है पर तू कहता है कि यरूशलेम
ही आराधना की जगह है।"

21यीशु ने उससे कहा, "हे स्त्री, मेरा विश्वास कर।
समय आ रहा है जब तुम परमपिता की आराधना न

इस पर्वत पर करोगे और न यरूशलेम में। 22तुम सामरी
लोग उसे नहीं जानते जिसकी आराधना करते हो। पर
हम यहूदी उसे जानते हैं जिसकी आराधना करते हैं।
क्योंकि उद्धार यहूदियों से ही है। 23पर समय आ रहा है
और आ ही गया है जब सच्चे उपासक पिता की आराधना
आत्मा और सच्चाई में करेंगे। परम पिता ऐसा ही उपासक
चाहता है। 24परमेश्वर आत्मा है और इसीलिए जो उसकी
आराधना करें उन्हें आत्मा और सच्चाई में ही उसकी
आराधना करनी होगी।"

25फिर स्त्री ने उससे कहा, "मैं जानती हूँ कि मसीह
यानी ख्रीष्ट आने वाला है। जब वह आयेगा तो हमें सब
कुछ बताएगा।"

26यीशु ने उससे कहा, "मैं जो तुझसे बात कर रहा हूँ,
वही हूँ।"

27तभी उसके शिष्य वहाँ लौट आये। और उन्हें यह
देखकर सचमुच बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह एक स्त्री से
बातचीत कर रहा है। पर किसी ने भी उससे कुछ कहा
नहीं, "तुझे इस स्त्री से क्या लेना है या तू इससे बातें क्यों
कर रहा है?"

28वह स्त्री अपने पानी भरने के घड़े को वहीं छोड़कर
नगर में वापस चली गयी और लोगों से बोली, 29"आओ
और देखो, एक ऐसा पुरुष है जिसने, मैंने जो कुछ किया
है, वह सब कुछ मुझे बता दिया। क्या तुम नहीं सोचते
कि वह मसीह हो सकता है?" 30इस पर लोग नगर
छोड़कर यीशु के पास जा पहुँचे।

31इसी समय यीशु के शिष्य उससे विनती कर रहे थे,
"हे रब्बी, कुछ खा ले।"

32पर यीशु ने उनसे कहा, "मेरे पास खाने के लिए
ऐसा भोजन है जिसके बारे में तुम कुछ भी नहीं जानते।"

33इस पर उसके शिष्य आपस में एक दूसरे से पूछने
लगे, "क्या कोई उसके खाने के लिए कुछ लाया होगा?"

34यीशु ने उनसे कहा, "मेरा भोजन उसकी इच्छा को
पूरा करना है जिसने मुझे भेजा है। और उस काम को
पूरा करना है जो मुझे सौंपा गया है। 35तुम अक्सर
कहते हो, 'चार महीने और हैं तब फ़सल आयेगी 'देखो
मैं तुम्हें बताता हूँ अपनी आँखें खोलो और खेतों की
तरफ़ देखो वे कटने के लिए तैयार हो चुके हैं। वह जो
कटाई कर रहा है, अपनी मज़दूरी पा रहा है। 36और
अनन्त जीवन के लिये फसल इकट्ठी कर रहा है।
ताकि फ़सल बोने वाला और काटने वाला दोनों ही
साथ-साथ आनन्दित हो सकें। 37यह कथन वास्तव में
सच है। एक व्यक्ति बोता है और दूसरा व्यक्ति काटता
है। 38मैंने तुम्हें उस फसल को काटने भेजा है जिस पर
तुम्हारी मेहनत नहीं लगी है। जिस पर दूसरों ने मेहनत
की है और उनकी मेहनत का फल तुम्हें मिला है।"

39उस नगर के बहुत से सामरियों ने यीशु में विश्वास
किया क्योंकि उस स्त्री के उन शब्दों को उन्होंने साक्षी
माना था कि, "मैंने जब कभी जो कुछ किया उसने मुझे
उसके बारे में सब कुछ बता दिया।" 40जब सामरी
उसके पास आये तो उन्होंने उससे उनके साथ ठहरने
के लिए विनती की। इस पर वह दो दिन के लिए वहाँ
ठहरा। 41और उसके वचन से प्रभावित होकर बहुत से
और लोग भी उसके विश्वासी हो गये।

42उन्होंने उस स्त्री से कहा, "अब हम केवल तुम्हारी
साक्षी के कारण ही विश्वास नहीं रखते बल्कि अब
हमने स्वयं उसे सुना है। और अब हम यह जान गये हैं
कि वास्तव में यही वह व्यक्ति है जो जगत् का उद्धारकर्त्ता
है।"

राजकर्मचारी के बेटे को जीवन-दान

(मत्ती 8:5-13; लूका 7:1-10)

43दो दिन बाद वह वहाँ से गलील को चल पड़ा।
44(क्योंकि यीशु ने खुद कहा था कि कोई नबी अपने
ही देश में कभी आदर नहीं पाता है।) 45इस तरह जब
वह गलील आया तो गलीलियों ने उसका स्वागत किया
क्योंकि उन्होंने वह सब कुछ देखा था जो उसने यरूशलेम
में पर्व के दिनों किया था। (क्योंकि वे सब भी इस पर्व
में शामिल थे।)

46यीशु एक बार फिर गलील में काना गया जहाँ
उसने पानी को दाखरस में बदला था। अब की बार
कफ़रनहूम में एक राजा का अधिकारी था जिसका
बेटा बीमार था। 47जब राजाधिकारी ने सुना कि यहूदिया
से यीशु गलील आया है तो वह उसके पास आया और
विनती की कि वह कफ़रनहूम जाकर उसके बेटे को
अच्छा कर दे। क्योंकि उसका बेटा मरने को पड़ा था।
48यीशु ने उससे कहा, "अद्भुत संकेत और आश्चर्यकर्म
देखे बिना तुम लोग विश्वासी नहीं बनोगे।"

49राजाधिकारी ने उससे कहा, "महोदय, इससे पहले
कि मेरा बच्चा मर जाये, मेरे साथ चल।"

50यीशु ने उत्तर में कहा, "जा तेरा पुत्र जीवित रहेगा।"

यीशु ने जो कुछ कहा था, उसने उस पर विश्वास
किया और घर चल दिया। 51वह घर लौटते हुए अभी
रास्ते में ही था कि उसे उसके नौकर मिले और उसे
समाचार दिया कि उसका बच्चा ठीक हो गया।

52उसने पूछा, "सही हालत किस समय से ठीक होना
शुरू हुई थी?"

उन्होंने जवाब दिया, "कल दोपहर एक बजे उसका
बुखार उतर गया था।"

53बच्चे के पिता को ध्यान आया कि यह ठीक वही
समय था जब यीशु ने उससे कहा था, "तेरा पुत्र जीवित
रहेगा।" इस तरह अपने सारे परिवार के साथ वह
विश्वासी हो गया।

54यह दूसरा अद्भुत चिह्न था जो यीशु ने यहूदियों को
गलील आने पर दर्शाया।

तालाब पर ला–इलाज रोगी का ठीक होना

5 इसके बाद यीशु यहूदियों के एक उत्सव में यरूशलेम
गया। 2यरूशलेम में भेड़–द्वार के पास एक तालाब
है, इब्रानी भाषा में इसे 'बैतहसदा' कहा जाता है। इसके
किनारे पाँच बरामदे बने हैं 3जिनमें नेत्रहीन, अपंग और
लकवे के बीमारों की भीड़ पड़ी रहती है। * 5इन
रोगियों में एक ऐसा मरीज़ भी था जो अड़तीस वर्ष से
बीमार था। 6जब यीशु ने उसे वहाँ लेटे देखा और यह
जाना कि वह इतने लम्बे समय से बीमार है तो यीशु ने
उससे कहा, "क्या तुम निरोग होना चाहते हो?" 7रोगी
ने जवाब दिया, "हे प्रभु, मेरे पास कोई नहीं है जो जल
के हिलने पर मुझे तालाब में उतार दे। जब मैं तालाब
में जाने को होता हूँ,
सदा कोई दूसरा आदमी मुझसे पहले उसमें उतर
जाता है।"

8यीशु ने उससे कहा, "खड़ा हो, अपना बिस्तर उठा
और चल पड़।" 9वह आदमी तत्काल अच्छा हो गया।
उसने अपना बिस्तर उठाया और चल दिया। उस दिन
सब्त का दिन था 10इस पर यहूदियों ने उससे, जो निरोग
हुआ था, कहना शुरू किया, "आज सब्त का दिन है
और हमारे नियमों के यह विरुद्ध है कि तू अपना
बिस्तर उठाए।"

11इस पर उसने जवाब दिया, "जिसने मुझे अच्छा
किया है उसने कहा है कि अपना बिस्तर उठा और
चल।"

12उन लोगों ने उससे पूछा, "वह कौन व्यक्ति है
जिसने तुझसे कहा था, अपना बिस्तर उठा और चल?"

13पर वह व्यक्ति जो ठीक हुआ था, नहीं जानता था
कि वह कौन था क्योंकि उस जगह बहुत भीड़ थी और
यीशु वहाँ से चुपचाप चला गया था।

14इसके बाद यीशु ने उस व्यक्ति को मंदिर में देखा
और उससे कहा, "देखो, अब तुम निरोग हो, इसलिये
पाप करना बन्द कर दो। नहीं तो कोई और बड़ा कष्ट
तुम पर आ सकता है।" फिर वह व्यक्ति चला गया।
15और यहूदियों से आकर उसने कहा कि उसे ठीक
करने वाला यीशु था।

16क्योंकि यीशु ने ऐसे काम सब्त के दिन किये थे
इसलिए यहूदियों ने उसे सताना शुरू कर दिया। 17यीशु
ने उन्हें उत्तर देते हुए कहा, "मेरा पिता कभी काम बंद
नहीं करता, इसीलिए मैं भी निरन्तर काम करता हूँ।"
इसलिये यहूदी उसे मार डालने का और अधिक
प्रयत्न करने लगे।
18न केवल इसलिये कि वह सब्त को तोड़ रहा था
बल्कि वह परमेश्वर को अपना पिता भी कहता था।
और इस तरह अपने आपको परमेश्वर के समान
ठहराता था।

यीशु की साक्षी

19उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम्हें सच्चाई
बताता हूँ, कि पुत्र स्वयं अपने आप कुछ नहीं कर
सकता है। वह केवल वही करता है जो पिता को करते
देखता है। पिता जो कुछ करता है पुत्र भी वैसे ही करता
है। 20पिता पुत्र को प्रेम करता है और वह सब कुछ उसे
दिखाता है, जो वह करता है। उन कामों से भी और
बड़ी–बड़ी बातें वह उसे दिखायेगा। तब तुम सब आश्चर्य
करोगे। 21जैसे पिता मृतकों को उठाकर उन्हें जीवन
देता है। 22पिता किसी का भी न्याय नहीं करता किन्तु
उसने न्याय करने का अधिकार बेटे को दे दिया है।
23जिससे सभी लोग पुत्र का आदर वैसे ही करें जैसे वे
पिता का करते हैं। जो व्यक्ति पुत्र का आदर नहीं करता
वह उस पिता का भी आदर नहीं करता जिसने उसे
भेजा है।

24"मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ जो मेरे वचन को सुनता है
और उस पर विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा है,
वह अनन्त जीवन पाता है। न्याय का दण्ड उस पर नहीं
पड़ेगा। इसके विपरीत वह मृत्यु से जीवन में प्रवेश पा
जाता है। 25मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ कि वह समय आने
वाला है बल्कि आ ही चुका है–जब वे, जो मर चुके हैं,
परमेश्वर के पुत्र का वचन सुनेंगे और जो उसे सुनेंगे वे
जीवित हो जायेंगे क्योंकि जैसे पिता जीवन का स्रोत है
26वैसे ही उसने अपने पुत्र को भी जीवन का स्रोत
बनाया है। 27और उसने उसे न्याय करने का अधिकार
दिया है। क्योंकि वह मनुष्य का पुत्र है। 28इस पर
आश्चर्य मत करो कि वह समय आ रहा है जब वे सब
जो अपनी कब्रों में हैं, उसका वचन सुनेंगे 29और बाहर
आ जायेंगे। जिन्होंने अच्छे काम किये हैं वे पुनरुत्थान
पर जीवन पाएँगे पर जिन्होंने बुरे काम किये हैं उन्हें
पुनरुत्थान पर दण्ड दिया जायेगा।

यीशु का यहूदियों से कथन

30"मैं स्वयं अपने आपसे कुछ नहीं कर सकता। मैं
परमेश्वर से जो सुनता हूँ उसी के आधार पर न्याय
करता हूँ और मेरा न्याय उचित है क्योंकि मैं अपनी
इच्छा से कुछ नहीं करता बल्कि उसकी इच्छा से
करता हूँ जिसने मुझे भेजा है।

31"यदि मैं अपनी तरफ से साक्षी दूँ तो मेरी साक्षी
सत्य नहीं है। 32मेरी ओर से साक्षी देने वाला एक और
है। और मैं जानता हूँ कि मेरी ओर से जो साक्षी वह देता
है, सत्य है।

पद 3-4 कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है। "लोग पानी के हिलने की प्रतिक्षा मे थे। 4कभी कभी प्रभु का दूत जलाशय पर उतरता और जल को हिलाता। स्वर्गदूत के ऐसा करने पर जलाशय में जाने वाला पहला व्यक्ति अपने सभी रोगों से छुटकारा पा जाता।"

33"तुमने लोगों को यूहन्ना के पास भेजा और उसने
सत्य की साक्षी दी। 34मैं मनुष्य की साक्षी पर निर्भर
नहीं करता बल्कि यह मैं इसलिए कहता हूँ जिससे
तुम्हारा उद्धार हो सके। 35यूहन्ना उस दीपक की तरह
था जो जलता है और प्रकाश देता है। और तुम कुछ
समय के लिए उसके प्रकाश का आनन्द लेना चाहते
थे।

36"पर मेरी साक्षी यूहन्ना की साक्षी से बड़ी है क्योंकि
परम पिता ने जो काम पूरा करने के लिए मुझे सौंपा है,
मैं उन्हीं कामों को कर रहा हूँ और वे काम ही मेरी
साक्षी हैं कि परम पिता ने मुझे भेजा है। 37परम पिता ने
जिसने मुझे भेजा है, मेरी साक्षी दी है। तुम लोगों ने
उसका वचन कभी नहीं सुना और न तुमने उसका रूप
देखा है। 38और न ही तुम अपने भीतर उसका संदेश
धारण करते हो। क्योंकि तुम उसमें विश्वास नहीं रखते
हो जिसे परम पिता ने भेजा है। 39तुम शास्त्रों का अध्ययन
करते हो क्योंकि तुम्हारा विचार है कि तुम्हें उनके
द्वारा अनन्त जीवन प्राप्त होगा। किन्तु ये सभी शास्त्र
मेरी ही साक्षी देते हैं। 40फिर भी तुम जीवन प्राप्त करने
के लिये मेरे पास नहीं आना चाहते। 41"मैं मनुष्य द्वारा
की गयी प्रशंसा पर निर्भर नहीं करता। 42किन्तु मैं
जानता हूँ कि तुम्हारे भीतर परमेश्वर का प्रेम नहीं है।
43मैं अपने पिता के नाम से आया हूँ फिर भी तुम मुझे
स्वीकार नहीं करते किन्तु यदि कोई और अपने ही
नाम से आए तो तुम उसे स्वीकार कर लोगे। 44तुम
मुझमें विश्वास कैसे कर सकते हो, क्योंकि तुम तो
आपस में एक दूसरे से प्रशंसा स्वीकार करते हो। उस
प्रशंसा की तरफ देखते तक नहीं जो एकमात्र परमेश्वर
से आती है। 45ऐसा मत सोचो कि मैं परम पिता के आगे
तुम्हें दोषी ठहराऊँगा। जो तुम्हें दोषी सिद्ध करेगा वह तो
मूसा होगा जिस पर तुमने अपनी आशाएँ टिकाई हुई हैं।
यदि तुम वास्तव में मूसा में विश्वास करते 46तो तुम
मुझ में भी विश्वास करते क्योंकि उसने मेरे बारे में
लिखा है। 47जब तुम, जो उसने लिखा है उसी में विश्वास
नहीं करते, तो मेरे वचन में विश्वास कैसे करोगे?"

पाँच हजार से अधिक को भोजन

(मत्ती 14:13-21; मरकुस 6:30-44; लूका 9:10-17)

6 इसके बाद यीशु गलील की झील यानी तिबिरियास
के उस पार चला गया। 2और उसके पीछे-पीछे
एक अपार भीड़ चल दी क्योंकि उन्होंने रोगियों को
स्वास्थ्य प्रदान करने में अद्भुत चिह्न देखे थे। 3यीशु
पहाड़ पर चला गया और वहाँ अपने अनुयायियों के
साथ बैठ गया। 4यहूदियों का फ़सह पर्व निकट था।

5जब यीशु ने आँख उठाई और देखा कि एक विशाल
भीड़ उसकी तरफ़ आ रही है तो उसने फिलिप्पुस से
पूछा, "इन सब लोगों को भोजन कराने के लिए रोटी
कहाँ से खरीदी जा सकती है?" 6(यीशु ने यह बात
उसकी परीक्षा लेने के लिए कही थी क्योंकि वह तो
जानता ही था कि वह क्या करने जा रहा है।)

7फिलिप्पुस ने उत्तर दिया, "दो सौ चाँदी के सिक्कों से
भी इतनी रोटियाँ नहीं ख़रीदी जा सकती हैं जिनमें से
हर आदमी को एक निवाले से थोड़ा भी ज़्यादा मिल
सके। 8यीशु के एक दूसरे शिष्य शमौन पतरस के भाई
अन्द्रियास ने कहा, 9"यहाँ एक छोटे लड़के के पास पाँच
जौ की रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं पर इतने सारे लोगों
में इतने से क्या होगा।"

10यीशु ने उत्तर दिया, "लोगों को बैठाओ।" उस स्थान
पर अच्छी खासी घास थी इसलिये लोग वहाँ बैठ गये। ये
लोग लगभग पाँच हजार पुरुष थे 11फिर यीशु ने रोटियाँ
लीं और धन्यवाद देने के बाद जो वहाँ बैठे थे उनको
परोस दीं। इसी तरह जितनी वे चाहते थे, उतनी मछलियाँ
भी उन्हें दे दीं। 12जब उन के पेट भर गये यीशु ने अपने
शिष्यों से कहा, "जो टुकड़े बचे हैं, उन्हें इकट्ठा कर लो
ताकि कुछ बेकार न जाये।"

13फिर शिष्यों ने लोगों को परोसी गयी जौ की उन
पाँच रोटियों के बचे हुए टुकड़ों से बारह टोकरियाँ भरीं।
14यीशु के इस आश्चर्यकर्म को देखकर लोग कहने
लगे, "निश्चय ही यह व्यक्ति वही नबी है जिसे इस जगत्
में आना है।" 15यीशु यह जानकर कि वे लोग आने
वाले हैं और उसे ले जाकर राजा बनाना चाहते हैं,
अकेला ही पर्वत पर चला गया।

यीशु का पानी पर चलना

(मत्ती 14:22-27; मरकुस 6:45-52)

16जब शाम हुई उसके शिष्य झील पर गये 17और
एक नाव में बैठकर वापस झील के पार कफरनहूम
की तरफ़ चल पड़े। अँधेरा काफ़ी हो चला था किन्तु
यीशु अभी भी उनके पास नहीं लौटा था। 18तूफ़ानी हवा
के कारण झील में लहरें तेज़ होने लगी थीं। 19जब वे
कोई पाँच-छ: किलोमीटर आगे निकल गये, उन्होंने
देखा कि यीशु झील पर चल रहा है और नाव के पास
आ रहा है। इससे वे डर गये। 20किन्तु यीशु ने उनसे
कहा, "यह मैं हूँ, डरो मत।" 21फिर उन्होंने तत्परता से
उसे नाव में चढ़ा लिया। और नाव शीघ्र ही वहाँ पहुँच
गयी जहाँ उन्हें जाना था।

यीशु की ढूँढ

22अगले दिन लोगों की उस भीड़ ने जो झील के उस
पार रह गयी थी, देखा कि वहाँ सिर्फ एक नाव थी और
अपने चेलों के साथ यीशु उस पर सवार नहीं हुआ था,
बल्कि उसके शिष्य ही अकेले रवाना हुए थे।
23तिबिरियास की कुछ नावें उस स्थान के पास आकर
रुकीं, जहाँ उन्होंने प्रभु के धन्यवाद देने के बाद रोटी

खायी थी। 24इस तरह जब उस भीड़ ने देखा कि न तो
वहाँ यीशु है और न ही उसके शिष्य तो वे नावों पर
सवार हो गये और यीशु को ढूँढते हुए कफरनहूम की
तरफ चल पड़े।

25जब उन्होंने यीशु को झील के उस पार पाया तो
उससे कहा, “हे रब्बी, तू यहाँ कब आया?” 26उत्तर में
यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ, तुम मुझे
इसलिये नहीं खोज रहे हो कि तुमने आश्चर्यपूर्ण चिह्न
देखे हैं बल्कि इसलिए कि तुमने भर पेट रोटी खायी
थी। 27उस खाने के लिये परिश्रम मत करो जो सड़
जाता है बल्कि उसके लिये जतन करो जो सदा उत्तम
बना रहता है और अनन्त जीवन देता है, जिसे तुम्हें
मानव–पुत्र देगा। क्योंकि परमपिता परमेश्वर ने अपनी
मोहर उसी पर लगायी है।”

28लोगों ने उससे पूछा, “जिन कामों को परमेश्वर
चाहता है, उन्हें करने के लिए हम क्या करें?”

29उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, “परमेश्वर जो चाहता
है, वह यह है कि जिसे उसने भेजा है उस पर विश्वास
करो।”

30लोगों ने पूछा, “तू कौन से आश्चर्य चिन्ह प्रकट
करेगा जिन्हें हम देखें और तुझमें विश्वास करें? तू क्या
कार्य करेगा? 31हमारे पूर्वजों ने रेगिस्तान में मन्ना
खाया था जैसा कि पवित्र शास्त्रों में लिखा है। उसने
उन्हें खाने के लिए, स्वर्ग से रोटी दी।”

32इस पर यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुम्हें सत्य बताता
हूँ वह मूसा नहीं था जिसने तुम्हें खाने के लिए स्वर्ग से
रोटी दी थी बल्कि यह मेरा पिता है जो तुम्हें स्वर्ग से
सच्ची रोटी देता है। 33वह रोटी जिसे परम पिता देता है
वह स्वर्ग से उतरी है और जगत को जीवन देती है।”

34लोगों ने उससे कहा, “हे प्रभु, अब हमें वह रोटी दे
और सदा देता रह।”

35यीशु ने उनसे कहा, “मैं ही वह रोटी हूँ जो जीवन
देती है। जो मेरे पास आता है वह कभी भूखा नहीं रहेगा
और जो मुझमें विश्वास करता है कभी भी प्यासा नहीं
रहेगा। 36मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ कि तुमने मुझे
देख लिया है, फिर भी तुम मुझमें विश्वास नहीं करते।
हर वह व्यक्ति जिसे परम पिता ने मुझे सौंपा है, मेरे पास
आयेगा 37जो मेरे पास आता है, मैं उसे कभी नहीं
लौटाऊँगा। 38क्योंकि मैं स्वर्ग से अपनी इच्छा के अनुसार
काम करने नहीं आया हूँ बल्कि उसकी इच्छा पूरी
करने आया हूँ जिसने मुझे भेजा है। 39और मुझे भेजने
वाले की यही इच्छा है कि मैं जिनको परमेश्वर ने मुझे
सौंपा है, उनमें से किसी को भी न खोऊँ और अन्तिम
दिन उन सबको जिला दूँ। 40यही मेरे परम पिता की
इच्छा है कि हर वह व्यक्ति जो पुत्र को देखता है और
उसमें विश्वास करता है, अनन्त जीवन पाये और अंतिम
दिन मैं उसे जिला उठाऊँगा।”

41इस पर यहूदियों ने यीशु पर बड़बड़ाना शुरू किया
क्योंकि वह कहता था, “वह रोटी मैं हूँ जो स्वर्ग से
उतरी है।”

42और उन्होंने कहा, “क्या यह यूसुफ का बेटा यीशु
नहीं है, क्या हम इसके माता–पिता को नहीं जानते हैं।
फिर यह कैसे कह सकता है यह स्वर्ग से उतरा है?”

43उत्तर में उनसे यीशु ने कहा, “आपस में बड़बड़ाना
बंद करो, 44मेरे पास तब तक कोई नहीं आ सकता जब
तक मुझे भेजने वाला परम पिता उसे मेरे प्रति आकर्षित
न करे। मैं अंतिम दिन उसे पुनर्जीवित करूँगा। 45नबियों
ने लिखा है, ‘और वे सब परमेश्वर के द्वारा सिखाए हुए
होंगे।’ हर वह व्यक्ति जो परम पिता की सुनता है और
उससे सीखता है मेरे पास आता है। 46(किन्तु वास्तव में
परम पिता को सिवाय उसके जिसे उसने भेजा है, किसी
ने नहीं देखा। परम पिता को बस उसी ने देखा है।) 47मैं
तुम्हें सत्य कहता हूँ, जो विश्वासी है, वह अनन्त जीवन
पाता है। 48मैं वह रोटी हूँ जो जीवन देती है। 49तुम्हारे
पुरखों ने रेगिस्तान में मन्ना खाया था तो भी वे मर गये।
50जबकि स्वर्ग से आयी इस रोटी को यदि कोई खाए तो
मरे नहीं। 51मैं ही वह जीवित रोटी हूँ जो स्वर्ग से उतरी
है। यदि कोई इस रोटी को खाता है तो वह अमर हो
जायेगा। और वह रोटी जिसे मैं दूँगा, मेरा शरीर है। इसी
से संसार जीवित रहेगा।”

52फिर यहूदी लोग आपस में यह कहते हुए बहस
करने लगे, “यह अपना शरीर हमें खाने को कैसे दे
सकता है?”

53इस पर यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुम्हें सत्य बताता
हूँ जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का शरीर नहीं खाओगे
और उसका लहू नहीं पिओगे तब तक तुममें जीवन
नहीं होगा। 54जो मेरा शरीर खाता रहेगा और मेरा लहू
पीता रहेगा, अनन्त जीवन उसी का है। अन्तिम दिन मैं
उसे फिर जीवित करूँगा। 55मेरा शरीर सच्चा भोजन है
और मेरा लहू ही सच्चा पेय है। 56जो मेरे शरीर को
खाता रहता है और लहू को पीता रहता है वह मुझ में
ही रहता है, और मैं उसमें। 57बिल्कुल वैसे ही जैसे
जीवित पिता ने मुझे भेजा है और मैं परम पिता के
कारण ही जीवित हूँ, उसी तरह वह जो मुझे खाता रहता
है मेरे ही कारण जीवित रहेगा। 58यही वह रोटी है जो
स्वर्ग से उतरी है। यह वैसी नहीं है जैसी हमारे पूर्वजों ने
खायी थी। और बाद में वे मर गये थे। जो इस रोटी को
खाता रहेगा, सदा के लिये जीवित रहेगा।”

59यीशु ने ये बातें कफरनहूम के आराधनालय में
उपदेश देते हुए कहीं।

अनन्त जीवन की शिक्षा

60यीशु के बहुत से अनुयायियों ने इन बातों को
सुनकर कहा, “यह शिक्षा बहुत कठिन है, इसे कौन

सुन सकता है?" 61यीशु को अपने आप ही पता चल
गया था कि उसके अनुयायियों को इसकी शिकायत है।
इसलिये वह उनसे बोला, "क्या तुम इस शिक्षा से परेशान
हो? 62यदि ऐसा है तो तुमको यदि मनुष्य के पुत्र को
जहाँ वह पहले था वहीं वापस लौटते देखना पड़े तो क्या
होगा? 63आत्मा ही है जो जीवन देता है। देह का कोई
उपयोग नहीं है। वचन, जो मैंने तुमसे कहे हैं, आत्मा है
और वे ही जीवन देते हैं। 64किन्तु तुममें कुछ ऐसे भी हैं
जो विश्वास नहीं करते।" (यीशु शुरू से ही जानता था
कि वे कौन हैं जो विश्वासी नहीं हैं और वह कौन है जो
उसे धोखा देगा।) 65यीशु ने आगे कहा, "इसीलिये मैंने
तुमसे कहा है कि मेरे पास तब तक कोई नहीं आ
सकता जब तक परम पिता उसे मेरे पास आने की
अनुमति नहीं दे देता।"

66इसी कारण यीशु के बहुत से अनुयायी वापस चले
गये। और फिर कभी उसके पीछे नहीं चले।

67फिर यीशु ने अपने बारह शिष्यों से कहा, "क्या
तुम भी चले जाना चाहते हो?"

68शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, हम किसके
पास जायेंगे? वे वचन तो तेरे पास हैं जो अनन्त जीवन
देते हैं। 69अब हमने यह विश्वास कर लिया है और
जान लिया है कि तू ही वह पवित्रतम है जिसे परमेश्वर
ने भेजा है।"

70यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या तुम बारहों को मैंने
नहीं चुना है? फिर भी तुममें से एक शैतान है।"

71वह शमौन इस्करियोती के बेटे यहूदा के बारे में
बात कर रहा था क्योंकि वह यीशु के खिलाफ़ होकर
उसे धोखा देने वाला था। यद्यपि वह भी उन बारह
शिष्यों में से ही एक था।

यीशु और उसके भाई

7 इसके बाद यीशु ने गलील की यात्रा की। वह
यहूदिया जाना चाहता था क्योंकि यहूदी उसे मार
डालना चाहते थे। 2यहूदियों का खेमों का पर्व* आने
वाला था। 3इसलिये यीशु के बंधुओं ने उससे कहा,
"तुम्हें यह स्थान छोड़कर यहूदिया चले जाना चाहिये।
ताकि तुम्हारे अनुयायी तुम्हारे कामों को देख सकें।
4कोई भी वह व्यक्ति जो लोगों में प्रसिद्ध होना चाहता है
अपने कामों को छिपा कर नहीं करता। क्योंकि तुम
आश्चर्य कर्म करते हो इसलिये सारे जगत के सामने
अपने को प्रकट करो।" 5(यीशु के भाई तक उसमें
विश्वास नहीं रखते थे।) 6यीशु ने उनसे कहा, "मेरे
लिये अभी ठीक समय नहीं आया है। पर तुम्हारे लिये
हर समय ठीक है। 7यह जगत तुमसे घृणा नहीं कर
सकता पर मुझसे घृणा करता है। क्योंकि मैं यह कहता
रहता हूँ कि इसकी करनी बुरी है। 8इस पर्व में तुम लोग
जाओ, मैं नहीं जा रहा क्योंकि मेरे लिए अभी ठीक
समय नहीं आया है।" 9ऐसा कहने के बाद यीशु गलील
में रुक गया।

10जब उसके भाई पर्व में चले गये तो वह भी गया।
पर वह खुले तौर पर नहीं, छिप कर गया था। 11यहूदी
नेता उसे पर्व में यह कहते खोज रहे थे, "वह मनुष्य
कहाँ है?"

12यीशु के बारे में छिपे-छिपे उस भीड़ में तरह-तरह
की बातें हो रही थीं। कुछ कह रहे थे, "वह अच्छा
व्यक्ति है।" पर दूसरों ने कहा, "नहीं, वह लोगों को
भटकाता है।" 13कोई भी उसके बारे में खुलकर बातें
नहीं कर पा रहा था क्योंकि वे लोग यहूदी नेताओं से
डरते थे।

यरुशलेम में यीशु का उपदेश

14जब वह पर्व लगभग आधा बीत चुका था, यीशु
मंदिर में गया और उसने उपदेश देना शुरू किया।
15यहूदी नेताओं ने अचरज के साथ कहा, "यह मनुष्य
जो कभी किसी पाठशाला में नहीं गया फिर इतना कुछ
कैसे जानता है?"

16उत्तर देते हुए यीशु ने उनसे कहा, "जो उपदेश मैं
देता हूँ मेरा अपना नहीं है बल्कि उससे आता है, जिसने
मुझे भेजा है। 17यदि मनुष्य वह करना चाहे, जो परम
पिता की इच्छा है तो वह यह जान जायेगा कि जो
उपदेश मैं देता हूँ वह उसका है या मैं अपनी ओर से दे
रहा हूँ। 18जो अपनी ओर से बोलता है, वह अपने लिये
यश कमाना चाहता है; किन्तु वह जो उसे यश देने का
प्रयत्न करता है, जिसने उसे भेजा है, वही व्यक्ति सच्चा
है। उसमें कहीं कोई खोट नहीं है। 19क्या तुम्हें मूसा ने
व्यवस्था का विधान नहीं दिया? पर तुममें से कोई भी
उसका पालन नहीं करता। तुम मुझे मारने का प्रयत्न
क्यों करते हो?" 20लोगों ने जवाब दिया, "तुझ पर भूत
सवार है जो तुझे मारने का यत्न कर रहा है।"

21उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "मैंने एक आश्चर्यकर्म
किया और तुम सब चकित हो गये। 22इसी कारण मूसा
ने तुम्हें ख़तना का नियम दिया था। (यह नियम मूसा
का नहीं था बल्कि तुम्हारे पूर्वजों से चला आ रहा था।)
और तुम सब्त के दिन लड़कों का ख़तना करते हो।
23यदि सब्त के दिन किसी का ख़तना इसलिये किया
जाता है कि मूसा का विधान न टूटे तो इसके लिये तुम
मुझ पर क्रोध क्यों करते हो कि मैंने सब्त के दिन एक
व्यक्ति को पूरी तरह चंगा कर दिया? 24बातें जैसी दिखती
हैं, उसी आधार पर उनका न्याय मत करो बल्कि जो
वास्तव में उचित है उसी के आधार पर न्याय करो।"

खेमों का पर्व यह पर्व हर साल हफ्ते भर मनाया जाता था, जब यहूदी लोग तम्बुओं में रहकर उन दिनों की याद करते थे जब मूसा के काल में उनके पूर्वज चालीस साल तक मरुभूमि में भटकते रहे थे।

क्या यीशु ही मसीह है?

25फिर यरूशलेम में रहने वाले लोगों में से कुछ ने
कहा, "क्या यही वह व्यक्ति नहीं है जिसे वे लोग मार
डालना चाहते हैं? 26मगर देखो वह सब लोगों के बीच में
बोल रहा है और वे लोग कुछ भी नहीं कह रहे हैं। क्या
यह नहीं हो सकता कि यहूदी नेता वास्तव में जान गये
हैं कि वही मसीह है। 27खैर हम जानते हैं कि यह
व्यक्ति कहाँ से आया है। जब वास्तविक मसीह आयेगा
तो कोई नहीं जान पायेगा कि वह कहाँ से आया।"
28यीशु जब मंदिर में उपदेश दे रहा था, उसने ऊँचे
स्वर में कहा, "तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते
हो मैं कहाँ से आया हूँ। फिर भी मैं अपनी ओर से नहीं
आया। जिसने मुझे भेजा है, वह सत्य है, तुम उसे नहीं
जानते। 29पर मैं उसे जानता हूँ क्योंकि मैं उसी से आया
हूँ। 30फिर वे उसे बंदी बनाने का जतन करने लगे पर
कोई भी उस पर हाथ नहीं डाल सका क्योंकि उसका
समय अभी नहीं आया था। 31तो भी बहुत से लोग उसमें
विश्वासी हो गये और कहने लगे, "जब मसीह आयेगा
तो वह जितने आश्चर्य चिन्ह इस व्यक्ति ने प्रकट किये
हैं उनसे अधिक नहीं करेगा। क्या वह ऐसा करेगा?"

यहूदियों का यीशु को बंदी बनाने का यत्न

32भीड़ में लोग यीशु के बारे में चुपके-चुपके क्या
बात कर रहे हैं, फरीसियों ने सुना और प्रमुख
धर्माधिकारियों तथा फरीसियों ने उसे बंदी बनाने के
लिए मंदिर के सिपाहियों को भेजा फिर यीशु बोला,
33"मैं तुम लोगों के साथ कुछ समय और रहूँगा और
फिर उसके पास वापस चला जाऊँगा जिसने मुझे भेजा
है। 34तुम मुझे ढूँढोगे पर तुम मुझे पाओगे नहीं। क्योंकि
तुम लोग वहाँ जा नहीं पाओगे जहाँ मैं होऊँगा।"
35इसके बाद यहूदी नेता आपस में बात करने लगे,
"यह कहाँ जाने वाला है जहाँ हम इसे नहीं ढूँढ पायेंगे।
शायद यह वहीं तो नहीं जा रहा है जहाँ हमारे लोग
यूनानी नगरों में तितर-बितर हो कर रहते हैं। क्या यह
यूनानियों में उपदेश देगा? 36जो इसने कहा है उसका
अर्थ क्या है? कि तुम मुझे ढूँढोगे पर मुझे पाओगे नहीं।
और जहाँ मैं होऊँगा वहाँ तुम नहीं आ सकते।"

यीशु द्वारा पवित्र आत्मा का उपदेश

37पर्व के अन्तिम और महत्त्वपूर्ण दिन यीशु खड़ा
हुआ और उसने ऊँचे स्वर में कहा, "अगर कोई प्यासा
है तो मेरे पास आये और पिये। 38जो मुझमें विश्वासी है,
जैसा कि शास्त्र कहते हैं उसके अंतरात्मा से स्वच्छ
जीवन जल की नदियाँ फूट पड़ेंगी।" 39यीशु ने यह
आत्मा के विषय में कहा था। जिसे वे लोग पायेंगे जो
उसमें विश्वास करेंगे वह आत्मा अभी तक दी नहीं
गयी है क्योंकि यीशु अभी तक महिमावान नहीं हुआ।

यीशु के बारे में लोगों की बातचीत

40भीड़ के कुछ लोगों नें जब यह सुना वे कहने लगे,
"यह आदमी निश्चय ही वही नबी है।"
41कुछ और लोग कह रहे थे, "यही व्यक्ति मसीह
है।" कुछ और लोग कह रहे थे, "मसीह गलील से नहीं
आयेगा। क्या ऐसा हो सकता है? 42क्या शास्त्रों में नहीं
लिखा है कि मसीह दाऊद की संतान होगा और बैतलहम
से आयेगा जिस नगर में दाऊद रहता था।" 43इस तरह
लोगों में फूट पड़ गयी। 44कुछ उसे बंदी बनाना चाहते थे
पर किसी ने भी उस पर हाथ नहीं डाला।

यहूदी नेताओं का यीशु में अविश्वास

45इसलिये मन्दिर के सिपाही प्रमुख धर्माधिकारियों
और फरीसियों के पास लौट आये। इस पर उनसे पूछा
गया, "तुम उसे पकड़कर क्यों नहीं लाये?"
46सिपाहियों नें जवाब दिया, "कोई भी व्यक्ति आज
तक ऐसे नहीं बोला जैसे वह बोलता है।"
47इस पर फरीसियों ने उनसे कहा, "क्या तुम भी तो
नहीं भरमाए गये हो? 48किसी भी यहूदी नेता या फरीसियों
नें उसमें विश्वास नहीं किया है। 49किन्तु ये लोग जिन्हें
व्यवस्था के विधान का ज्ञान नहीं है परमेश्वर के
अभिशाप के पात्र हैं।"
50नीकुदेमुस ने उनसे कहा, यह वही था जो पहले
यीशु के पास गया था यह उन फरीसियों में से ही एक
था 51"हमारी व्यवस्था का विधान किसी को तब तक
दोषी नहीं ठहराता जब तक उसकी सुन नहीं लेता और
यह पता नहीं लगा लेता कि उसने क्या किया है।"
52उत्तर में उन्होंने उससे कहा, "क्या तू भी तो गलील
का ही नहीं है? शास्त्रों को पढ़ तो तुझे पता चलेगा कि
गलील से कोई नबी कभी नहीं आयेगा।"

[कुछ प्राचीन यूनानी प्रतियों में यूहन्ना 7:53-8:11 तक का पद नहीं है।]

दुराचारी स्त्री को क्षमा

53फिर वे सब वहाँ से अपने-अपने घर चले गये।
8 और यीशु जैतून पर्वत पर चला गया। 2अलख
सवेरे वह फिर मन्दिर में गया। सभी लोग उसके
पास आये। यीशु बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा। 3तभी
यहूदी धर्मशास्त्री और फरीसी लोग व्यभिचार के अपराध
में एक स्त्री को वहाँ पकड़ लाये। और उसे लोगों के
सामने खड़ा कर दिया। 4और यीशु से बोले, "हे गुरु, यह
स्त्री व्यभिचार करते रंगे हाथों पकड़ी गयी है। 5मूसा
का विधान हमें आज्ञा देता है कि ऐसी स्त्री को पत्थर
मारना चाहियें। अब बता तेरा क्या कहना है?" 6(यीशु
को जाँचने के लिये वे यह पूछ रहे थे ताकि उन्हें कोई
ऐसा बहाना मिल जाये जिससे उसके विरुद्ध कोई अभियोग

लगाया जा सके)। किन्तु यीशु नीचे झुका और अपनी
उँगली से धरती पर लिखने लगा। **7**क्योंकि वे पूछते ही
जा रहे थे इसलिये यीशु सीधा तन कर खड़ा हो गया
और उनसे बोला, "तुम में से जो पापी नहीं है वही सबसे
पहले इस औरत को पत्थर मारे।" **8**और वह फिर
झुककर धरती पर लिखने लगा।

9जब लोगों ने यह सुना तो सबसे पहले बूढ़े लोग और
फिर और भी एक-एक करके वहाँ से खिसकने लगे
और इस तरह वहाँ अकेला यीशु ही रह गया। यीशु के
सामने वह स्त्री अब भी खड़ी थी। **10**यीशु खड़ा हुआ
और उस स्त्री से बोला, "हे स्त्री, वे सब कहाँ गये। क्या
तुम्हें किसी ने दोषी नहीं ठहराया?"

11स्त्री बोली, "नहीं, महोदय! किसी ने नहीं।"

यीशु ने कहा, "मैं भी तुम्हें दण्ड नहीं दूँगा। जाओ
और अब फिर कभी पाप मत करना।"

जगत का प्रकाश यीशु

12फिर वहाँ उपस्थित लोगों से यीशु ने कहा, "मैं
जगत का प्रकाश हूँ जो मेरे पीछे चलेगा कभी अँधेरे में
नहीं रहेगा। बल्कि उसे उस प्रकाश की प्राप्ति होगी जो
जीवन देता है।"

13इस पर फरीसी उससे बोले, "तू अपनी साक्षी अपने
आप दे रहा है, इसलिये तेरी साक्षी उचित नहीं है।"

14उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "यदि मैं अपनी साक्षी
स्वयं अपनी तरफ से दे रहा हूँ तो भी मेरी साक्षी उचित
है क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और
कहाँ जा रहा हूँ। किन्तु तुम लोग यह नहीं जानते कि मैं
कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। **15**तुम लोग
इंसानी सिद्धान्तों पर न्याय करते हो, मैं किसी का न्याय
नहीं करता। **16**किन्तु यदि मैं न्याय करूँ भी तो मेरा
न्याय उचित होगा। क्योंकि मैं अकेला नहीं हूँ बल्कि
परम पिता, जिसने मुझे भेजा है वह और मैं मिलकर
न्याय करते हैं। **17**तुम्हारे विधान में लिखा है कि दो
व्यक्तियों की साक्षी न्याय संगत है। **18**मैं अपनी साक्षी
स्वयं देता हूँ और परम पिता भी, जिसने मुझे भेजा है,
मेरी ओर से साक्षी देता है।" **19**इस पर लोगों ने उससे
कहा, "तेरा पिता कहाँ है?" यीशु ने उत्तर दिया, "न तो
तुम मुझे जानते हो, और न मेरे पिता को। यदि तुम मुझे
जानते, तो मेरे पिता को भी जान लेते।"

20मन्दिर में उपदेश देते हुए, भेंट-पात्रों के पास से
उसने ये शब्द कहे थे। किन्तु किसी ने भी उसे बंदी नहीं
बनाया क्योंकि उसका समय अभी नहीं आया था।

यहूदियों का यीशु के विषय में अज्ञान

21यीशु ने उनसे एक बार फिर कहा, "मैं चला जाऊँगा
और तुम लोग मुझे ढूँढोगे। पर तुम अपने ही पापों में मर
जाओगे। जहाँ मैं जा रहा हूँ तुम वहाँ नहीं आ सकते।"

22फिर यहूदी नेता कहने लगे, "क्या तुम सोचते हो
कि वह आत्महत्या करने वाला है? क्योंकि उसने कहा
है तुम वहाँ नहीं आ सकते जहाँ मैं जा रहा हूँ।"

23इस पर यीशु ने उनसे कहा, "तुम नीचे के हो और
मैं ऊपर से आया हूँ तुम सांसारिक हो और मैं इस जगत
से नहीं हूँ, **24**इसलिये मैंने तुमसे कहा था कि तुम अपने
पापों में मरोगे। यदि तुम विश्वास नहीं करते कि वह मैं
हूँ। तुम अपने पापों में मरोगे।"

25फिर उन्होंने यीशु से पूछा, "तू कौन है?"

यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं वही हूँ जैसा कि प्रारम्भ
से ही मैं तुमसे कहता आ रहा हूँ। **26**तुमसे कहने को
और तुम्हारा न्याय करने को मेरे पास बहुत कुछ है।
पर सत्य वही है जिसने मुझे भेजा है। मैं वही कहता हूँ
जो मैंने उससे सुना है।"

27वे यह नहीं जान पाये कि यीशु उन्हें परम पिता के
बारे में बता रहा है। **28**फिर यीशु ने उनसे कहा, "जब
तुम मनुष्य के पुत्र को ऊँचा उठा लोगे तब तुम जानोगे
कि वह मैं हूँ। मैं अपनी ओर से कुछ नहीं करता। मैं
यह जो कह रहा हूँ, वही है जो मुझे परम पिता ने
सिखाया है। **29**और वह जिसने मुझे भेजा है, मेरे साथ
है। उसने मुझे कभी अकेला नहीं छोड़ा क्योंकि मैं सदा
वही करता हूँ जो उसे भाता है।" **30**यीशु जब ये बातें
कह रहा था, तो बहुत से लोग उसके विश्वासी हो गये।

पाप से छुटकारे का उपदेश

31सो यीशु उन यहूदी नेताओं से कहने लगा जो उसमें
विश्वास करते थे, "यदि तुम लोग मेरे उपदेशों पर
चलोगे तो तुम वास्तव में मेरे अनुयायी बनोगे। **32**और
सत्य को जान लोगे। और सत्य तुम्हें मुक्त करेगा।"

33इस पर उन्होंने यीशु से प्रश्न किया, "हम इब्राहीम
के वंशज हैं और हमने कभी किसी की दासता नहीं
की। फिर तुम कैसे कहते हो कि तुम मुक्त हो जाओगे।"

34यीशु ने उत्तर देते हुए कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता
हूँ। हर वह जो पाप करता रहता है, पाप का दास है।
35और कोई दास सदा परिवार के साथ नहीं रह सकता।
केवल पुत्र ही सदा साथ रह सकता है। **36**अत: यदि पुत्र
तुम्हें मुक्त करता है तभी तुम वास्तव में मुक्त होगे। मैं
जानता हूँ तुम इब्राहीम के वंश से हो। **37**पर तुम मुझे
मार डालने का यत्न कर रहे हो। क्योंकि मेरे उपदेशों
के लिये तुम्हारे मन में कोई स्थान नहीं है। **38**मैं वही
कहता हूँ जो मुझे मेरे पिता ने दिखाया है और तुम वह
करते हो जो तुम्हारे पिता से तुमने सुना है।"

39इस पर उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, "हमारे पिता
इब्राहीम हैं।" यीशु ने कहा, "यदि तुम इब्राहीम की
संतान होते तो तुम वही काम करते जो इब्राहीम ने किये
थे। **40**पर तुम तो अब मुझे यानी एक ऐसे मनुष्य को, जो
तुमसे उस सत्य को कहता है जिसे उसने परमेश्वर से

सुना है, मार डालना चाहते हो। इब्राहीम ने तो ऐसा नहीं
किया। **41**तुम अपने पिता के कार्य करते हो।"

फिर उन्होंने यीशु से कहा, "हम व्यभिचार के परिणाम
स्वरूप पैदा नहीं हुए हैं। हमारा केवल एक पिता है और
वह है परमेश्वर।"

42यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "यदि परमेश्वर तुम्हारा
पिता होता तो तुम मुझे प्यार करते क्योंकि मैं परमेश्वर
में से ही आया हूँ। और अब मैं यहाँ हूँ। मैं अपने आप से
नहीं आया हूँ। बल्कि मुझे उसने भेजा है। **43**मैं जो कह
रहा हूँ उसे तुम समझते क्यों नहीं? इसका कारण यही
है कि तुम मेरा संदेश नहीं सुनते। **44**तुम अपने पिता
शैतान की संतान हो। और तुम अपने पिता की इच्छा
पर चलना चाहते हो। वह प्रारम्भ से ही एक हत्यारा था।
और उसने सत्य का पक्ष कभी नहीं लिया। क्योंकि
उसमें सत्य का कोई अंश तक नहीं है। जब वह झूठ
बोलता है तो सहज भाव से बोलता है क्योंकि वह झूठा
है और सभी झूठों को जन्म देता है। **45**पर क्योंकि मैं
सत्य कह रहा हूँ, तुम लोग मुझमें विश्वास नहीं करोगे।
46तुममें से कौन मुझ पर पापी होने का लांछन लगा
सकता है। यदि मैं सत्य कहता हूँ, तो तुम मेरा विश्वास
क्यों नहीं करते? **47**वह व्यक्ति जो परमेश्वर का है,
परमेश्वर के वचनों को सुनता है। इसी कारण तुम मेरी
बात नहीं सुनते कि तुम परमेश्वर के नहीं हो।"

अपने और इब्राहीम के विषय में यीशु का कथन

48उत्तर में यहूदियों ने उससे कहा, "यह कहते हुए
क्या हम सही नहीं थे कि तू सामरी है और तुझ पर
कोई दुष्टात्मा सवार है?"

49यीशु ने उत्तर दिया, "मुझ पर कोई दुष्टात्मा नहीं
है। बल्कि मैं तो अपने परम पिता का आदर करता हूँ
और तुम मेरा अपमान करते हो। **50**मैं अपनी महिमा
नहीं चाहता हूँ पर एक ऐसा है जो मेरी महिमा चाहता है
और न्याय भी करता है। **51**मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ यदि
कोई मेरे उपदेशों को धारण करेगा तो वह मौत को
कभी नहीं देखेगा।"

52इस पर यहूदी नेताओं ने उससे कहा, "अब हम यह
जान गये हैं कि तुम में कोई दुष्टात्मा समाया है। यहाँ
तक कि इब्राहीम और नबी भी मर गये और तू कहता
है यदि कोई मेरे उपदेश पर चले तो उसकी मौत कभी
नहीं होगी। **53**निश्चय ही तू हमारे पूर्वज इब्राहीम से बड़ा
नहीं है जो मर गया। और नबी भी मर गये। फिर तू क्या
सोचता है? तू है क्या?"

54यीशु ने उत्तर दिया, "यदि मैं अपनी महिमा करूँ तो
वह महिमा मेरी कुछ भी नहीं है। जो मुझे महिमा देता है
वह मेरा परम पिता है। जिसके बारे में तुम दावा करते
हो कि वह तुम्हारा परमेश्वर है। **55**तुमने उसे कभी
नहीं जाना। पर मैं उसे जानता हूँ, यदि मैं यह कहूँ कि मैं
उसे नहीं जानता तो मैं भी तुम लोगों की ही तरह झूठा
ठहरूँगा। मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ, और जो वह
कहता है उसका पालन करता हूँ। **56**तुम्हारा पूर्वज यह
जानकर कि वह उस दिन को देखेगा जब मैं आऊँगा
आनन्द से भर गया था। उसने इसे देखा और प्रसन्न
हुआ।"

57फिर यहूदी नेताओं ने उससे कहा, "तू अभी पचास
बरस का भी नहीं है और तूने इब्राहीम को देख लिया।"

58यीशु ने इस पर उनसे कहा, "मैं तुम्हें सत्य कहता
हूँ। इब्राहीम से पहले भी मैं हूँ।" **59**इस पर उन्होंने यीशु
पर मारने के लिये बड़े-बड़े पत्थर उठा लिये किन्तु
यीशु छुपते-छिपाते मन्दिर से चला गया।

जन्म से अन्धे को दृष्टि-दान

9 जाते हुए उसने जन्म से अंधे एक व्यक्ति को देखा।
2इस पर यीशु के अनुयायियों ने उससे पूछा, "हे
रब्बी, यह व्यक्ति अपने पापों से अंधा जन्मा है या अपने
माता-पिता के?"

3यीशु ने उत्तर दिया, "न तो इसने पाप किए हैं और
न इसके माता-पिता ने बल्कि यह इसलिये अंधा जन्मा
है ताकि इसे अच्छा करके परमेश्वर की शक्ति दिखायी
जा सके। **4**उसके कामों को जिसने मुझे भेजा है, हमें
निश्चित रूप से दिन रहते ही कर लेना चाहिये क्योंकि
जब रात हो जायेगी कोई काम नहीं कर सकेगा। **5**जब
मैं जगत में हूँ मैं जगत की ज्योति हूँ।"

6इतना कहकर यीशु ने धरती पर थूका और उससे
थोड़ी मिट्टी सानी उसे अंधे की आंखों पर मल दिया।
7और उससे कहा, "जा और शिलोह के तालाब में धो
आ। (शीलोह यानी भेजा हुआ।) और फिर उस अंधे ने
जाकर आँखें धो डालीं। जब वह लौटा तो उसे दिखाई दे
रहा था। **8**फिर उसके पड़ोसी और वे लोग जो उसे भीख
माँगता देखने के आदी थे बोले, "क्या यह वही व्यक्ति
नहीं है जो बैठा हुआ भीख माँगा करता था?"

9कुछ ने कहा, "यह वही है," दूसरो ने कहा, "नहीं,
यह वह नहीं है, उसका जैसा दिखाई देता है।" इस पर
अंधा कहने लगा, "मैं वही हूँ।"

10इस पर लोगों ने उससे पूछा, "तुझे आँखों की ज्योति
कैसे मिली?" **11**उसने जवाब दिया, "यीशु नाम के एक
व्यक्ति ने मिट्टी सान कर मेरी आँखों पर मली और
मुझसे कहा, जा और शीलोह में धो आ और मैं जाकर
धो आया। बस मुझे आँखों की ज्योति मिल गयी।"

12फिर लोगों ने उससे पूछा, "वह कहाँ है?"

उसने जवाब दिया, "मुझे पता नहीं।"

दृष्टि-दान पर फरीसियों का विवाद

13उस व्यक्ति को जो पहले अंधा था, वे लोग फ़रीसियों
के पास ले गये। **14**यीशु ने जिस दिन मिट्टी सानकर उस

अंधे को आँखें दी थीं वह सब्त का दिन था। 15इस तरह
फरीसी उससे एक बार फिर पूछने लगे, “उसने आँखों
की ज्योति कैसे पायी?”

उसने बताया, “उसने मेरी आँखों पर गीली मिट्टी
लगायी, मैंने उसे धोया और अब मैं देख सकता हूँ।”

16कुछ फरीसी कहने लगे, “यह मनुष्य परमेश्वर की
ओर से नहीं है क्योंकि यह सब्त का पालन नहीं करता।”

उस पर दूसरे बोले, “कोई पापी आदमी भला ऐसे
आश्चर्य कर्म कैसे कर सकता है?” इस तरह उनमें
आपस में ही विवाद होने लगा।

17वे एक बार फिर उस अंधे से बोले, “उसके बारे में
तू क्या कहता है? क्योंकि इस तथ्य को तू जानता है कि
उसने तुझे आँखें दी हैं।”

तब उसने कहा, “वह नबी है।”

18यहूदी नेताओं ने उस समय तक उस पर विश्वास
नहीं किया कि वह व्यक्ति अंधा था और उसे आँखों की
ज्योति मिल गयी है। जब तक उसके माता–पिता को
बुलाकर 19उन्होंने यह नहीं पूछ लिया, “क्या यही तुम्हारा
पुत्र है जिसके बारे में तुम कहते हो कि वह अंधा था।
फिर यह कैसे हो सकता है कि वह अब देख सकता
है?”

20इस पर उसके माता पिता ने उत्तर देते हुए कहा,
“हम जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है और यह अंधा
जन्मा था। 21पर हम यह नहीं जानते कि यह अब देख
कैसे सकता है? और न ही हम यह जानते हैं कि इसे
आँखों की ज्योति किसने दी है। इसी से पूछो, यह काफ़ी
बड़ा हो चुका है। अपने बारे में यह खुद बता सकता
है।”

22(उसके माता–पिता ने यह बात इसलिये कही थी
कि वे यहूदी नेताओं से डरते थे। क्योंकि वे इस पर
पहले ही सहमत हो चुके थे कि यदि कोई यीशु को
मसीह माने तो उसे आराधनालय से निकाल दिया जाये।
23इसलिये उसके माता–पिता ने कहा था, “वह काफ़ी
बड़ा हो चुका है, उससे पूछो।)”

24यहूदी नेताओं ने उस व्यक्ति को दूसरी बारी फिर
बुलाया जो अंधा था, और कहा, “सच कहो, और जो तू
ठीक हुआ है उसका सिला परमेश्वर को दे। हमें मालूम
है कि यह व्यक्ति पापी है।”

25इस पर उसने जवाब दिया, “मैं नहीं जानता कि वह
पापी है या नहीं, मैं तो बस यह जानता हूँ कि मैं अंधा
था, और अब देख सकता हूँ।”

26इस पर उन्होंने उससे पूछा, “उसने क्या किया?
तुझे उसने आँखें कैसे दीं?”

27इस पर उसने उन्हें जवाब देते हुए कहा, “मैं तुम्हें
बता तो चुका हूँ, पर तुम मेरी बात सुनते ही नहीं। तुम
वह सब कुछ फिर से क्यों सुनना चाहते हो? क्या तुम
भी उसके अनुयायी बनना चाहते हो?”

28इस पर उन्होंने उसका अपमान किया और कहा,
“तू उसका अनुयायी है पर हम मूसा के अनुयायी हैं।
29हम जानते हैं कि परमेश्वर ने मूसा से बात की थी
पर हम नहीं जानते कि यह आदमी कहाँ से आया है?”

30उत्तर देते हुए उस व्यक्ति ने उनसे कहा, “आश्चर्य
है तुम नहीं जानते कि वह कहाँ से आया है? पर मुझे
उसने आँखों की ज्योति दी है। 31हम जानते हैं कि
परमेश्वर पापियों की नहीं सुनता बल्कि वह तो उनकी
सुनता है जो समर्पित हैं और वही करते हैं जो परमेश्वर
की इच्छा है। 32कभी सुना नहीं गया कि किसी ने
किसी जन्म से अंधे व्यक्ति को आँखों की ज्योति दी हो।
33यदि यह व्यक्ति परमेश्वर की ओर से नहीं होता तो
यह कुछ नहीं कर सकता था।”

34उत्तर में उन्होंने कहा, “तू सदा से पापी रहा है।
ठीक तब से जबसे तू पैदा हुआ। और अब तू हमें पढ़ाने
चला है?” और इस तरह यहूदी नेताओं ने उसे वहाँ से
बाहर धकेल दिया।

आत्मिक अंधापन

35यीशु ने सुना कि यहूदी नेताओं ने उसे धकेल कर
बाहर निकाल दिया है तो उससे मिलकर उसने कहा,
“क्या तू मनुष्य के पुत्र में विश्वास करता है?” उत्तर में
वह व्यक्ति बोला

36“हे प्रभु, बताइये वह कौन है? ताकि मैं उसमें
विश्वास करूँ!”

37यीशु ने उससे कहा, “तू उसे देख चुका है और वह
वही है जिससे तू इस समय बात कर रहा है।”

38फिर वह बोला, “प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ।” और
वह नत मस्तक हो गया।

39यीशु ने कहा, “मैं इस जगत में न्याय करने आया
हूँ, ताकि वे जो नहीं देखते वे देखने लगें और वे जो देख
रहे हैं, नेत्रहीन हो जायें।”

40कुछ फरीसी जो यीशु के साथ थे, यह सुनकर यीशु
से बोले, “निश्चय ही हम अंधे नहीं हैं। क्या हम अंधे
हैं?”

41यीशु ने उनसे कहा, “यदि तुम अँधे होते तो तुम
पापी नहीं होते पर जैसा कि तुम कहते हो कि तुम देख
सकते हो तो वास्तव में तुम पाप युक्त हो।”

चरवाहा और उसकी भेड़ें

10 यीशु ने कहा, “मैं तुमसे सत्य कहता हूँ जो
भेड़ों के बाड़े में द्वार से प्रवेश न करके बाड़ा
फाँद कर दूसरे प्रकार से घुसता है, वह चोर है, लुटेरा
है। 2किन्तु जो दरवाजे से घुसता है, वही भेड़ों का
चरवाहा है। 3द्वारपाल उसके लिए द्वार खोलता है। और
भेड़ें उसकी आवाज सुनती हैं। वह अपनी भेड़ों को नाम
ले लेकर पुकारता है और उन्हें बाड़े से बाहर ले जाता

है। 4जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल लेता है
तो उनके आगे-आगे चलता है। और भेड़ें उसके पीछे
पीछे चलती हैं क्योंकि वे उसकी आवाज पहचानती हैं।
5भेड़ें किसी अनजान का अनुसरण कभी नहीं करतीं।
वे तो उससे दूर भागती हैं। क्योंकि वे उस अनजान की
आवाज नहीं पहचानतीं।"

6यीशु ने उन्हें यह दृष्टान्त दिया पर वे नहीं समझ पाये
कि यीशु उन्हें क्या बता रहा है।

अच्छा चरवाहा यीशु

7इस पर यीशु ने उनसे फिर कहा, "मैं तुम्हें सत्य
बताता हूँ, भेड़ों के लिये द्वार मैं हूँ। 8वे सब जो मुझसे
पहले आये थे, चोर और लुटेरे हैं। किन्तु भेड़ों ने
उनकी नहीं सुनी। 9मैं द्वार हूँ। यदि कोई मुझमें से होकर
प्रवेश करता है तो उसकी रक्षा होगी वह भीतर आयेगा
और बाहर जा सकेगा और उसे चारागाह मिलेगी। 10चोर
केवल चोरी, हत्या और विनाश के लिये ही आता है।
किन्तु मैं इसलिये आया हूँ कि लोग भरपूर जीवन पा
सकें।

11"अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा भेड़ों के
लिये अपनी जान दे देता है। 12किन्तु किराये का मज़दूर
क्योंकि वह चरवाहा नहीं होता, भेड़ें उसकी अपनी नहीं
होतीं, जब भेड़िये को आते देखता है, भेड़ों को छोड़कर
भाग जाता है। और भेड़िया उन पर हमला करके उन्हें
तितर-बितर कर देता है। 13(किराये का मज़दूर, इसलिये
भाग जाता है क्योंकि वह दैनिक मज़दूरी का आदमी है
और इसीलिए भेड़ों की परवाह नहीं करता)।

14"अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अपनी भेड़ों को मैं जानता
हूँ और मेरी भेड़ें मुझे 15वैसे ही जानती हैं जैसे परम
पिता मुझे जानता है और मैं परम पिता को जानता हूँ।
अपनी भेड़ों के लिए मैं अपना जीवन देता हूँ। 16मेरी
और भेड़ें भी हैं जो इस बाड़े की नहीं हैं। मुझे उन्हें भी
लाना होगा। वे भी मेरी आवाज सुनेगीं और इसी बाड़े में
आकर एक हो जायेंगी। फिर सबका एक ही चरवाहा
होगा। 17परम पिता मुझसे इसीलिये प्रेम करता है कि मैं
अपना जीवन देता हूँ। मैं अपना जीवन देता हूँ ताकि मैं
उसे फिर वापस ले सकूँ। इसे मुझसे कोई लेता नहीं है।
18बल्कि मैं अपने आप अपनी इच्छा से इसे देता हूँ। मुझे
इसे देने का अधिकार है। यह आदेश मुझे मेरे परम
पिता से मिला है।"

19इन शब्दों के कारण यहूदी नेताओं में एक और
फूट पड़ गयी। 20बहुत से कहने लगे, "यह पागल हो गया
है। इस पर दुष्टात्मा सवार है। तुम इसकी परवाह क्यों
करते हो।"

21दूसरे कहने लगे, "ये शब्द किसी ऐसे व्यक्ति के
नहीं हो सकते जिस पर दुष्टात्मा सवार हो। निश्चय ही
कोई दुष्टत्मा किसी अंधे को आँखें नहीं दे सकती।"

यहूदी यीशु के विरोध में

22फिर यरूशलेम में समर्पण का पर्व* आया। सर्दी
के दिन थे। 23यीशु मंदिर में सुलेमान के दालान में टहल
रहा था। 24तभी यहूदी नेताओं ने उसे घेर लिया और
बोले, "तू हमें कब तक तंग करता रहेगा? यदि तू मसीह
है, तो साफ-साफ बता।"

25यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हें बता चुका हूँ और तुम
विश्वास नहीं करते। वे काम जिन्हें मैं परम पिता के
नाम पर कर रहा हूँ, स्वयं मेरी साक्षी हैं। 26किन्तु तुम
लोग विश्वास नहीं करते। क्योंकि तुम मेरी भेड़ों में से
नहीं हो। 27मेरी भेड़ें मेरी आवाज को जानती हैं और मैं
उन्हें जानता हूँ। वे मेरे पीछे चलती हैं और 28मैं उन्हें
अनन्त जीवन देता हूँ। उनका कभी नाश नहीं होगा।
और न कोई उन्हें मुझसे छीन पायेगा। 29मुझे उन्हें सौंपने
वाला मेरा परम पिता सबसे महान है। मेरे पिता से उन्हें
कोई नहीं छीन सकता। 30"मेरा पिता और मैं एक हैं।"

31फिर यहूदी नेताओं ने यीशु पर मारने के लिये
पत्थर उठा लिये। 32यीशु ने उनसे कहा, "पिता की
ओर से मैंने तुम्हें अनेक अच्छे कार्य दिखाये हैं। उनमें
से किस काम के लिए तुम मुझ पर पथराव करना
चाहते हो?"

33यहूदी नेताओं ने उसे उत्तर दिया, "हम तुझ पर
किसी अच्छे काम के लिए पथराव नहीं कर रहे हैं
बल्कि इसलिए कर रहे हैं कि तूने परमेश्वर का अपमान
किया है और तू, जो केवल एक मनुष्य है, अपने को
परमेश्वर घोषित कर रहा है!"

34यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या यह तुम्हारे विधान
में नहीं लिखा है, 'मैंने कहा तुम सभी ईश्वर हो?'*
35क्या यहाँ ईश्वर उन्हीं लोगों के लिये नहीं कहा गया
जिन्हें परम पिता का संदेश मिल चुका है? और धर्म
शास्त्र का खंडन नहीं किया जा सकता। 36क्या तुम यह
उसके लिये कह रहे हो, जिसे परम पिता ने समर्पित
कर इस जगत् को भेजा है, केवल इसलिये कि मैंने
कहा, 'मैं परमेश्वर का पुत्र हूँ'? 37यदि मैं अपने परम
पिता के ही कार्य नहीं कर रहा हूँ तो मेरा विश्वास मत
करो 38किन्तु यदि मैं अपने परम पिता के ही कार्य कर
रहा हूँ, तो, यदि तुम मुझ में विश्वास नहीं करते तो उन
कार्यों में ही विश्वास करो जिससे तुम यह अनुभव कर
सको और जान सको कि परम पिता मुझ में है और मैं
परम पिता में।"

39इस पर यहूदियों ने उसे बंदी बनाने का प्रयत्न एक
बार फिर किया। पर यीशु उनके हाथों से बच निकला।
40यीशु फिर यर्दन के पार उस स्थान पर चला गया जहाँ

समर्पण का पर्व दिसम्बर का एक विशेष सप्ताह जिसे यहूदी मनाते थे।

"मैंने कहा ... हो" भजन. 82:6

पहले यूहन्ना बपतिस्मा दिया करता था। यीशु वहाँ ठहरा,
41बहुत से लोग उसके पास आये और कहने लगे,
"यूहन्ना ने कोई आश्चर्यकर्म नहीं किये पर इस व्यक्ति
के बारे में यूहन्ना ने जो कुछ कहा था सब सच निकला।"
42फिर वहाँ बहुत से लोग यीशु में विश्वास करने लगे।

लाज़र की मृत्यु

11 बैतनिय्याह का लाज़र नाम का एक व्यक्ति
बीमार था। यह वह नगर था जहाँ मरियम और
उसकी बहन मारथा रहती थीं। 2(मरियम वह स्त्री थी
जिसने प्रभु पर इत्र डाला था और अपने सिर के बालों
से प्रभु के पैर पोंछे थे। लाज़र नाम का रोगी उसी का
भाई था।) 3इन बहनों ने यीशु के पास समाचार भेजा,
"हे प्रभु, जिसे तू प्यार करता है, वह बीमार है।"

4यीशु ने जब यह सुना तो वह बोला, "यह बीमारी
जान लेवा नहीं है। बल्कि परमेश्वर की महिमा को
प्रकट करने के लिये है। जिससे परमेश्वर के पुत्र को
महिमा प्राप्त होगी।" 5(यीशु मारथा, उसकी बहन और
लाज़र को प्यार करता था।) 6इसलिए जब उसने सुना
कि लाज़र बीमार हो गया है तो जहाँ वह ठहरा था, दो
दिन और रुका। 7फिर यीशु ने अपने अनुयायियों से
कहा, "आओ हम यहूदिया लौट चलें।"

8इस पर उसके अनुयायियों ने उससे कहा, "हे रब्बी,
कुछ ही दिन पहले यहूदी नेता तुझ पर पथराव करने
का यत्न कर रहे थे और तू फिर वहीं जा रहा है।"

9यीशु ने उत्तर दिया, "क्या एक दिन में बारह घंटे
नहीं होते हैं। यदि कोई व्यक्ति दिन के प्रकाश में चले तो
वह ठोकर नहीं खाता क्योंकि वह इस जगत के प्रकाश
को देखता है। 10पर यदि कोई रात में चले तो वह
ठोकर खाता है क्योंकि उसमें प्रकाश नहीं है।"

11उसने यह कहा और फिर उनसे बोला, "हमारा
मित्र लाज़र सो गया है पर मैं उसे जगाने जा रहा हूँ।"

12फिर उसके शिष्यों ने उससे कहा, "हे प्रभु, यदि
उसे नींद आ गयी है तो वह अच्छा हो जायेगा।"

13यीशु लाज़र की मौत के बारे में कह रहा था पर
शिष्यों ने सोचा कि वह स्वाभाविक नींद की बात कर
रहा था। 14इसलिये फिर यीशु ने उनसे स्पष्ट कहा,
"लाज़र मर चुका है।" 15मैं तुम्हारे लिये प्रसन्न हूँ कि मैं
वहाँ नहीं था। क्योंकि अब तुम मुझमें विश्वास कर
सकोगे। आओ अब हम उसके पास चलें।"

16फिर थोमा ने जो दिदुमुस कहलाता था, दूसरे शिष्यों
से कहा, "आओ हम भी प्रभु के साथ वहाँ चलें ताकि
हम भी उसके साथ मर सकें।"

बैतनिय्याह में यीशु

17इस तरह यीशु चल दिया और वहाँ जाकर उसने
पाया कि लाज़र को क़ब्र में रखे चार दिन हो चुके हैं।
18बैतनिय्याह यरूशलेम से लगभग तीन किलोमीटर दूर
था। 19भाई की मृत्यु पर मारथा और मरियम को
सांत्वना देने के लिये बहुत से यहूदी नेता आये थे।

20जब मारथा ने सुना कि यीशु आया है तो वह
उससे मिलने गयी। जबकि मरियम घर में ही रही 21वहाँ
जाकर मारथा ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, यदि तू यहाँ
होता तो मेरा भाई मरता नहीं। 22पर मैं जानती हूँ कि
अब भी तू परमेश्वर से जो कुछ माँगेगा वह तुझे देगा।"

23यीशु ने उससे कहा, "तेरा भाई जी उठेगा।" 24मारथा
ने उससे कहा, "मैं जानती हूँ कि पुनरुत्थान के अन्तिम
दिन वह जी उठेगा।"

25यीशु ने उससे कहा, "मैं ही पुनरुत्थान हूँ और मैं
ही जीवन हूँ। वह जो मुझमें विश्वास करता है जियेगा।
26और हर वह, जो जीवित है और मुझमें विश्वास
रखता है, कभी नहीं मरेगा। क्या तू यह विश्वास रखती
है।"

27वह यीशु से बोली, "हाँ प्रभु, मैं विश्वास करती
हूँकि तू मसीह है, परमेश्वर का पुत्र जो जगत् में आने
वालाथा।"

यीशु रो दिया

28फिर इतना कह कर वह वहाँ से चली गयी और
अपनी बहन को अकेले में बुलाकर बोली, "गुरु यहीं है,
वह तुझे बुला रहा है।" 29जब मरियम ने यह सुना तो
वह तत्काल उठकर उससे मिलने चल दी। 30(यीशु
अभी तक गाँव में नहीं आया था। वह अभी भी उसी
स्थान पर था जहाँ उसे मारथा मिली थी।) 31फिर जो
यहूदी घर पर उसे सांत्वना दे रहे थे, जब उन्होंने देखा
कि मरियम उठकर झटपट चल दी तो वे यह सोच कर
कि वह कब्र पर विलाप करने जा रही है, उसके पीछे
हो लिये। 32मरियम जब वहाँ पहुँची जहाँ यीशु था तो
यीशु को देखकर उसके चरणों में गिर पड़ी और बोली,
"हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता तो मेरा भाई मरता नहीं।"

33यीशु ने जब उसे और उसके साथ आये यहूदियों
को रोते बिलखते देखा तो उसकी आत्मा तड़प उठी।
वह बहुत व्याकुल हुआ। 34और बोला, "तुमने उसे कहाँ
रखा है?" वे उससे बोले, "प्रभु, आ और देख।"

35यीशु फूट-फूट कर रोने लगा।

36इस पर यहूदी कहने लगे, "देखो! यह लाज़र को
कितना प्यार करता है।"

37मगर उनमें से कुछ ने कहा, "यह व्यक्ति जिसने
अंधे को आँखे दीं, क्या लाज़र को भी मरने से नहीं
बचा सकता?"

यीशु का लाज़र को फिर जीवित करना

38तब यीशु अपने मन में एक बार फिर बहुत अधिक
व्याकुल हुआ और कब्र की तरफ गया। यह एक गुफा

थी और उसका द्वार एक चट्टान से ढका हुआ था।
39यीशु ने कहा, “इस चट्टान को हटाओ।” मृतक की
बहन मारथा ने कहा, “हे प्रभु, अब तक तो वहाँ से
दुर्गन्ध आ रही होगी क्योंकि उसे दफनाए चार दिन हो
चुके हैं।”

40यीशु ने उससे कहा, “क्या मैंने तुझसे नहीं कहा
कि यदि तू विश्वास करेगी तो परमेश्वर की महिमा का
दर्शन पायेगी।”

41तब उन्होंने उस चट्टान को हटा दिया। और यीशु ने
अपनी आँखें ऊपर उठाते हुए कहा, “परम पिता मैं तेरा
धन्यवाद करता हूँ क्योंकि तूने मेरी सुन ली है। 42मैं
जानता हूँ कि तू सदा मेरी सुनता है किन्तु चारों ओर
इकट्ठी भीड़ के लिये मैंने यह कहा है जिससे वे यह
मान सकें कि मुझे तूने भेजा है।” 43यह कहने के बाद
उसने ऊँचे स्वर में पुकारा “लाज़र, बाहर आ!” 44वह
व्यक्ति जो मर चुका था बाहर निकल आया। उसके
हाथ पैर अभी भी कफ़न में बँधे थें। उसका मुँह कपड़े
में लिपटा हुआ था। यीशु ने लोगों से कहा, “इसे खोल
दो और जाने दो।”

यहूदी नेताओं द्वारा यीशु की हत्या का षडयन्त्र

(मत्ती 26:1-5; मरकुस 14:1-2; लूका 22:1-2)

45इसके बाद मरियम के साथ आये यहूदियों में से
बहुतों ने यीशु के इस कार्य को देखकर उस पर विश्वास
किया। 46किन्तु उनमें से कुछ फरीसियों के पास गये
और जो कुछ यीशु ने किया था, उन्हें बताया। 47फिर
महायाजकों और फरीसियों ने यहूदियों की सबसे ऊँची
परिषद बुलाई। और कहा, “हमें क्या करना चाहिये?
यह व्यक्ति बहुत से आश्चर्य चिह्न दिखा रहा है। 48यदि
हमने उसे ऐसे ही करते रहने दिया तो हर कोई उस पर
विश्वास करने लगेगा और इस तरह रोमी लोग यहाँ आ
जायेंगे और हमारे मन्दिर व देश को नष्ट कर देंगे।”

49किन्तु उस वर्ष के महायाजक कैफा ने उनसे कहा,
“तुम लोग कुछ भी नहीं जानते। 50और न ही तुम्हें इस
बात की समझ है कि इसी में तुम्हारा लाभ है कि बजाय
इसके कि सारी जाति ही नष्ट हो जाये, सबके लिये एक
आदमी को मारना होगा।”

51यह बात उसने अपनी तरफ़ से नहीं कही थी पर
क्योंकि वह उस साल का महायाजक था उसने
भविष्यवाणी की थी कि यीशु लोगों के लिये मरने जा
रहा है 52न केवल यहूदियों के लिये बल्कि परमेश्वर
की संतान जो तितर-बितर हैं, उन्हें एकत्र करने के
लिये।

53इस तरह उसी दिन से वे यीशु को मारने के कुचक्र
रचने लगे। 54यीशु यहूदियों के बीच फिर कभी प्रकट
होकर नहीं गया। और यरूशलेम छोड़कर वह निर्जन
रेगिस्तान के पास इफ्राईम नगर जा कर अपने शिष्यों
के साथ रहने लगा। 55यहूदियों का फ़सह पर्व आने को
था। बहुत से लोग अपने गाँवों से यरूशलेम चले गये थे
ताकि वे फ़सह पर्व से पहले अपने को पवित्र कर लें।
56वे यीशु को खोज रहे थे। इसलिये जब वे मन्दिर में
खड़े थे तो उन्होंने आपस में एक दूसरे से पूछना शुरू
किया, “तुम क्या सोचते हो, क्या निश्चय ही वह इस
पर्व में नहीं आयेगा।” 57फिर महायाजकों और फरीसियों
ने यह आदेश दिया कि यदि किसी को पता चले कि
यीशु कहाँ है तो वह इसकी सूचना दे ताकि वे उसे बंदी
बना सकें।

यीशु बैतनिय्याह में अपने मित्रों के साथ

(मत्ती 26:6-13; मरकुस 14:3-9)

12 फ़सह पर्व से छह दिन पहले यीशु बैतनिय्याह
को रवाना हो गया। वहीं लाज़र रहता था जिसे
यीशु ने मृतकों मे से जीवित किया था। 2वहाँ यीशु के
लिये उन्होंने भोजन तैयार किया। मारथा ने उसे परोसा।
यीशु के साथ भोजन के लिये जो बैठे थे लाज़र भी
उनमें एक था। 3मरियम ने जटामाँसी से तैयार किया
हुआ कोई आधा लीटर बहुमूल्य इत्र यीशु के पैरों पर
लगायाा और फिर अपने केशों से उसके चरणों को
पोंछा। सारा घर सुगंध से महक उठा। 4उसके शिष्यों में
से एक यहूदा इस्करियोती ने, जो उसे धोखा देने वाला
था कहा, 5“इस इत्र को तीन सौ चाँदी के सिक्कों में
बेचकर धन गरीबों को क्यों नहीं दे दिया गया?” 6उसने
यह बात इसलिये नहीं कही थी कि उसे गरीबों की बहुत
चिन्ता थी बल्कि वह तो स्वयं एक चोर था। और
रूपयों की थैली उसी के पास रहती थी। उसमें जो डाला
जाता उसे वह चुरा लेता था।

7तब यीशु ने कहा, “रहने दो। उसे रोको मत। उसने
मेरे गाड़े जाने की तैयारी में यह सब किया है। 8गरीब
लोग सदा तुम्हारे पास रहेंगे पर मैं सदा तुम्हारे साथ नहीं
रहूँगा।”

लाज़र के विरुद्ध षड़यन्त्र

9फ़सह पर्व पर आयी यहूदियों की भारी भीड़ को जब
यह पता चला कि यीशु वहीं बैतनिय्याह में है तो वह
उससे मिलने आयी। न केवल उससे बल्कि वह उस
लाज़र को देखने के लिये भी आयी थी जिसे यीशु ने
मरने के बाद फिर जीवित कर दिया था। 10इसलिये
महायाजकों ने लाज़र को भी मारने की योजना बनायी।
11क्योंकि उसी के कारण बहुत से यहूदी अपने नेताओं
को छोड़कर यीशु में विश्वास करने लगे थे।

यीशु का यरूशलेम में प्रवेश

(मत्ती 21:1-11; मरकुस 11:1-11; लूका 19:28-40)

12अगले दिन फ़सह पर्व पर आई भीड़ ने जब यह
सुना कि यीशु यरूशलेम में आ रहा है 13तो लोग खजूर

की टहनियाँ लेकर उससे मिलने चल पड़े। वे पुकार रहे
थे, "होशन्ना! धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है।
वह जो इस्राएल का राजा है।" *भजन संहिता 118:25-26*

14तब यीशु को एक गधा मिला और वह उस पर
सवार हो गया। जैसा कि धर्मशास्त्र में लिखा है:
15"सिय्योन की पुत्री,* डर मत! देख! तेरा राजा गधे
के बछेरे पर बैठा आ रहा है।" *जकर्याह 9:9*

16पहले तो उसके अनुयायी इसे समझे ही नहीं किन्तु
जब यीशु की महिमा प्रकट हुई तो उन्हें याद आया कि
शास्त्र में ये बातें उसके बारे में लिखी हुई थीं–और
लोगों ने उसके साथ ऐसा व्यवहार किया था।

यीशु के विषय में लोगों का कथन

17उसके साथ जो भीड़ थी उसने यह साक्षी दी कि
उसने लाज़र को कब्र से पुकार कर मरे हुओं में से
पुनर्जीवित किया। 18लोग उससे मिलने इसलिए आये थे
कि उन्होंने सुना था कि यह वही है जिसने वह आश्चर्यकर्म
किया है। 19तब फरीसी आपस में कहने लगे, "सोचो
तुम लोग कुछ नहीं कर पा रहे हो, देखो सारा जगत्
उसके पीछे हो लिया है।"

अपनी मृत्यु के बारे में यीशु का वचन

20फ़सह पर्व पर जो आराधना करने आये थे उनमें
से कुछ यूनानी थे। 21वे गलील में बैतसैदा के निवासी
फिलिप्पुस के पास गये और उससे विनती करते हुए
कहने लगे, "महोदय, हम यीशु के दर्शन करना चाहते
हैं।" तब फिलिप्पुस ने अन्द्रियास को आकर बताया।
22फिर अन्द्रियास और फिलिप्पुस ने यीशु के पास आकर
कहा।
23यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मानव-पुत्र के महिमावान
होने का समय आ गया है। 24मैं तुमसे सत्य कहता हूँ
कि जब तक गेहूँ का एक दाना धरती पर गिर कर मर
नहीं जाता, तब तक वह एक ही रहता है। पर जब वह
मर जाता है तो अनगिनत दानों को जन्म देता है।"
25जिसे अपना जीवन प्रिय है, वह उसे खो देगा किन्तु
वह, जिसे इस संसार में अपने जीवन से प्रेम नहीं है, उसे
अनन्त जीवन के लिये रखेगा। 26यदि कोई मेरी सेवा
करता है तो वह निश्चय ही मेरा अनुसरण करे और
जहाँ मैं हूँ, वहीं मेरा सेवक भी रहेगा। यदि कोई मेरी
सेवा करता है तो परम पिता उसका आदर करेगा।

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु का संकेत

27"अब मेरा जी घबरा रहा है। क्या मैं कहूँ, 'हे पिता,
मुझे दुख की इस घड़ी से बचा' किन्तु इस घड़ी के लिए
ही तो मैं आया हूँ। 28हे पिता, अपने नाम को महिमा
प्रदानकर!"
तब आकाशवाणी हुई, "मैंने इसकी महिमा की है
और मैं इसकी महिमा फिर करूँगा।"
29तब वहाँ मौजूद भीड़, जिसने यह सुना था, कहने
लगी कि कोई बादल गरजा है। दूसरे कहने लगे, "किसी
स्वर्गदूत ने उससे बात की है।"
30उत्तर में यीशु ने कहा, "यह आकाशवाणी मेरे लिए
नहीं बल्कि तुम्हारे लिए थी। 31अब इस जगत् के न्याय
का समय आ गया है। अब इस जगत् के शासक को
निकाल दिया जायेगा। 32और यदि मैं धरती के ऊपर
उठा लिया गया तो सब लोगों को अपनी ओर आकर्षित
करूँगा।" 33वह यह बताने के लिए ऐसा कह रहा था
कि वह कैसी मृत्यु मरने जा रहा है।
34इस पर भीड़ ने उसको जवाब दिया, "हमने व्यवस्था
की यह बात सुनी है कि मसीह सदा रहेगा इसलिये तुम
कैसे कहते हो कि मनुष्य के पुत्र को निश्चय ही ऊपर
उठाया जायेगा। यह मनुष्य का पुत्र कौन है?"
35तब यीशु ने उनसे कहा, "तुम्हारे बीच ज्योति अभी
कुछ समय और रहेगी। जब तक ज्योति है चलते रहो।
ताकि अँधेरा तुम्हें घेर न ले क्योंकि जो अँधेरे में चलता
है, नहीं जानता कि वह कहाँ जा रहा है। 36जब तक
ज्योति तुम्हारे पास है उसमें विश्वास बनाये रखो ताकि
तुम लोग ज्योतिर्मय हो सको।" यीशु यह कहकर कहीं
चला गया और उनसे छुप गया।

यहूदियों का यीशु में अविश्वास

37यद्यपि यीशु ने उनके सामने ये सब आश्चर्य चिन्ह
प्रकट किये किन्तु उन्होंने विश्वास नहीं किया 38ताकि
भविष्यवक्ता यशायाह ने जो यह कहा था सत्य सिद्ध हो
"प्रभु हमारे संदेश पर किसने विश्वास किया है?
किस पर प्रभु की शक्ति प्रकट की गयी है?"
यशायाह 53:1

39इसी कारण वे विश्वास नहीं कर सके। क्योंकि
यशायाह ने फिर कहा था,
40"उसने उनकी आँखे अंधी और उनका हृदय कठोर
बनाया ताकि वे अपनी आँखों से देख न सकें और
बुद्धि से समझ न पायें और मेरी ओर न मुड़ें जिससे मैं
उन्हें चंगा कर सकूँ।" *यशायाह 6:10*

41यशायाह ने यह इसलिये कहा था कि उसने उसकी
महिमा देखी थी और उसके विषय में बातें भी की थीं।
42फिर भी बहुत थे यहाँ तक कि यहूदी नेताओं में से
भी ऐसे अनेक थे जिन्होंने उसमें विश्वास किया। किन्तु
फ़रीसियों के कारण अपने विश्वास की खुले तौर पर
घोषणा नहीं की, क्योंकि ऐसा करने पर उन्हें आराधना
सभा से निकाले जाने का भय था। 43उन्हें मनुष्यों द्वारा

सिय्योन की पुत्री अर्थात् यरूशलेम।

दिया गया सम्मान परमेश्वर द्वारा दिये गये सम्मान से अधिक प्यारा था।

यीशु के उपदेशों पर ही मनुष्य का न्याय होगा

44यीशु ने पुकार कर कहा, "वह जो मुझ में विश्वास
करता है, वह मुझ में नहीं, बल्कि उसमें विश्वास
करता है जिसने मुझे भेजा है। 45और जो मुझे देखता है,
वह उसे देखता है जिसने मुझे भेजा है। 46मैं जगत् में
प्रकाश के रूप में आया ताकि हर वह व्यक्ति जो मुझ में
विश्वास रखता है, अंधकार में न रहे।

47"यदि कोई मेरे शब्दों को सुनकर भी उनका पालन
नहीं करता तो भी उसे मैं दोषी नहीं ठहराता क्योंकि मैं
जगत् को दोषी ठहराने नहीं बल्कि उसका उद्धार करने
आया हूँ। 48जो मुझे नकारता है और मेरे वचनों को
स्वीकार नहीं करता, उसके लिये एक है जो उसका
न्याय करेगा। वह है मेरा वचन जिसका उपदेश मैंने
दिया है। अन्तिम दिन वही उसका न्याय करेगा। 49क्योंकि
मैंने अपनी ओर से कुछ नहीं कहा है बल्कि परम पिता
ने, जिसने मुझे भेजा है, आदेश दिया है कि मैं क्या कहूँ
और क्या उपदेश दूँ। 50और मैं जानता हूँ कि उसके
आदेश का अर्थ है अनन्त जीवन। इसलिये मैं जो बोलता
हूँ, वह ठीक वही है जो परम पिता ने मुझ से कहा है।"

यीशु का अपने शिष्यों के पैर धोना

13 फ़सह पर्व से पहले यीशु ने देखा कि इस जगत
को छोड़ने और परम पिता के पास जाने का
उसका समय आ पहुँचा है तो इस जगत् में जो उसके
अपने थे और जिन्हें वह प्रेम करता था, उन पर उसने
चरम सीमा का प्रेम दिखाया।

2शाम का खाना चल रहा था। शैतान अब तक
शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा के मन में यह डाल
चुका था कि वह यीशु को धोखे से पकड़वाएगा। 3यीशु
यह जानता था कि परम पिता ने सब कुछ उसके हाथों
सौंप दिया है और वह परमेश्वर से आया है, और
परमेश्वर के पास ही वापस जा रहा है। 4इसलिये वह
खाना छोड़ कर खड़ा हो गया। उसने अपने बाहरी वस्त्र
उतार दिये और एक अँगोछा अपने चारों ओर लपेट
लिया। 5फिर एक घड़े में जल भरा और अपने शिष्यों
के पैर धोने लगा और उस अँगोछे से जो उसने लपेटा
हुआ था, उनके पाँव पोंछने लगा।

6फिर जब वह शमौन पतरस के पास पहुँचा तो
पतरस ने उससे कहा, "प्रभु, क्या तू मेरे पाँव धो रहा
है।"

7उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "अभी तू नहीं जानता
कि मैं क्या कर रहा हूँ पर बाद में जान जायेगा।"

8पतरस ने उससे कहा, "तू मेरे पाँव कभी भी नहीं
धोयेगा।"

यीशु ने उत्तर दिया, "यदि मैं न धोऊँ तो तू मेरे पास
स्थान नहीं पा सकेगा।"

9शमौन पतरस ने उससे कहा, "प्रभु, केवल मेरे पैर
ही नहीं, बल्कि मेरे हाथ और मेरा सिर भी धो दे।"

10यीशु ने उससे कहा, "जो नहा चुका है उसे अपने
पैरों के सिवा कुछ भी और धोने की आवश्यकता नहीं
है। बल्कि वह पूरी तरह शुद्ध होता है। तुम लोग शुद्ध हो
पर सबके सब नहीं।"

11वह उसे जानता था जो उसे धोखे से पकड़वाने
वाला है। इसलिए उसने कहा था, "तुम में से सभी शुद्ध
नहीं हैं।"

12जब वह उनके पाँव धो चुका तो उसने अपने
बाहरी वस्त्र फिर पहन लिये और वापस अपने स्थान
पर आकर बैठ गया। और उनसे बोला, "क्या तुम
जानते हो कि मैंने तुम्हारे लिये क्या किया है? 13तुम
लोग मुझे 'गुरु' और 'प्रभु' कहते हो। और तुम उचित
हो। क्योंकि मैं वही हूँ। 14इसलिये यदि मैनें प्रभु और गुरु
होकर भी जब तुम्हारे पैर धोये हैं तो तुम्हें भी एक दूसरे
के पैर धोने चाहियें। मैनें तुम्हारे सामने एक उदाहरण
रखा है 15ताकि तुम दूसरों के साथ वही कर सको जो
मैनें तुम्हारे साथ किया है। 16मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ
एक दास स्वामी से बड़ा नहीं है और न ही एक संदेशवाहक
उससे बड़ा है जो उसे भेजता है। 17यदि तुम लोग इन
बातों को जानते हो और उन पर चलते हो तो तुम सुखी
होगे।

18"मैं तुम सब के बारे में नहीं कह रहा हूँ। मैं उन्हें
जानता हूँ जिन्हें मैंने चुना है। (और यह भी कि यहूदा
विश्वासघाती है) किन्तु मैंने उसे इसलिये चुना है ताकि
शास्त्र का यह वचन सत्य हो, 'वही जिसने मेरी रोटी
खायी मेरे विरोध में हो गया।' 19अब यह घटित होने से
पहले ही मैं तुम्हें इसलिये बता रहा हूँ कि जब यह घटित
हो तब तुम विश्वास करो कि वह 'मैं हूँ'। 20मैं तुम्हें
सत्य कहता हूँ कि वह जो किसी भी मेरे भेजे हुए को
ग्रहण करता है, मुझको ग्रहण करता है। और जो मुझे
ग्रहण करता है, उसे ग्रहण करता है जिसने मुझे भेजा
है।"

यीशु का कथन: मरवाने के लिये उसे कौन पकड़वायेगा

(मत्ती 26:20-25; मरकुस 14:17-21; लूका 22:21-23)

21यह कहने के बाद यीशु बहुत व्याकुल हुआ और
साक्षी दी, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, तुम में से एक मुझे
धोखा देकर पकड़वायेगा।"

22तब उसके शिष्य एक दूसरे की तरफ़ देखने लगे।
वे निश्चय ही नहीं कर पा रहे थे कि वह किस के बारे
में कह रहा है। 23उसका एक शिष्य यीशु के निकट ही
बैठा हुआ था। इसे यीशु बहुत प्यार करता था। 24तब

शमौन पतरस ने उसे इशारा किया कि पूछे वह कौन
हो सकता है जिस के विषय में यीशु बता रहा था।
25यीशु के प्रिय शिष्य ने सहज में ही उसकी छाती पर
झुक कर उससे पूछा, "हे प्रभु, वह कौन है?"
26यीशु ने उत्तर दिया, "रोटी का टुकड़ा कटोरे में
डुबो कर जिसे मैं दूँगा, वही वह है।" फिर यीशु ने रोटी
का टुकड़ा कटोरे में डुबोया और उसे उठा कर शमौन
इस्करियोती के पुत्र यहूदा को दिया। 27जैसे ही यहूदा ने
रोटी का टुकड़ा लिया उसमें शैतान समा गया। फिर
यीशु ने उससे कहा, "जो तू करने जा रहा है, उसे तुरन्त
कर।" 28किन्तु वहाँ बैठे हुओं में से किसी ने भी यह
नहीं समझा कि यीशु ने उससे यह बात क्यों कही।
29कुछ ने सोचा कि रुपयों की थैली यहूदा के पास रहती
है इसलिए यीशु उससे कह रहा है कि 'पर्व' के लिये
आवश्यक सामग्री मोल ले आओ या कह रहा है कि
ग़रीबों को वह कुछ दे दे। इसलिए यहूदा ने रोटी का
टुकड़ा लिया 30और तत्काल चला गया। यह रात का
समय था।

अपनी मृत्यु के विषय में यीशु का वचन

31उसके चले जाने के बाद यीशु ने कहा, "मनुष्य का
पुत्र अब महिमावान हुआ है। और उसके द्वारा परमेश्वर
की महिमा हुई है। 32यदि उसके द्वारा परमेश्वर की
महिमा हुई है तो परमेश्वर अपने द्वारा उसे महिमावान
करेगा। और वह उसे महिमा शीघ्र ही देगा।"
33"हे मेरे प्यारे बच्चों, मैं अब थोड़ी ही देर और
तुम्हारे साथ हूँ। तुम मुझे ढूँढोगे और जैसा कि मैंने
यहूदी नेताओं से कहा था, तुम वहाँ नहीं आ सकते,
जहाँ मैं जा रहा हूँ, वैसा ही अब मैं तुमसे कहता हूँ।
34"मैं तुम्हें एक नयी आज्ञा देता हूँ कि तुम एक दूसरे
से प्रेम करो। जैसे मैंने तुमसे प्यार किया है वैसे ही तुम
भी एक दूसरे से प्रेम करो। 35यदि तुम एक दूसरे से प्रेम
रखोगे तभी हर कोई यह जान पायेगा कि तुम मेरे
अनुयायी हो।"

यीशु का वचन—पतरस उसे पहचानने से इन्कार करेगा

(मत्ती 26:31-35; मरकुस 14:27-31; लूका 22:31-34)

36शमौन पतरस ने उससे पूछा, "हे प्रभु, तू कहाँ जा
रहा है?"
यीशु ने उसे उत्तर दिया, "तू अब मेरे पीछे नहीं आ
सकता। पर तू बाद में मेरे पीछे आयेगा।"
37पतरस ने उससे पूछा, "हे प्रभु, अभी मैं तेरे पीछे
क्यों नहीं आ सकता? मैं तो तेरे लिये अपने प्राण तक
त्याग दूँगा।"
38यीशु ने उत्तर दिया, "तू अपना प्राण त्यागेगा? मैं
तुझे सत्य कहता हूँ कि जब तक तू तीन बार इन्कार
नहीं कर लेगा तब तक मुर्गा बाँग नहीं देगा।"

यीशु का शिष्यों को समझाना

14 "तुम्हारे हृदय दुखी नहीं होने चाहियें। परमेश्वर
में विश्वास रखो और मुझमें भी विश्वास बनाये
रखो। 2मेरे परम पिता के घर में बहुत से कमरे हैं।
(यदि ऐसा नहीं होता तो मैं तुमसे कह देता) मैं तुम्हारे
लिए स्थान बनाने जा रहा हूँ। 3और यदि मैं वहाँ जाऊँ
और तुम्हारे लिए स्थान तैयार करूँ तो मैं फिर यहाँ
आऊँगा और अपने साथ तुम्हें भी वहाँ ले चलूँगा ताकि
तुम भी वहीं रहो जहाँ मैं हूँ। 4और जहाँ मैं जा रहा हूँ
तुम वहाँ का रास्ता जानते हो।"
5थोमा ने उससे कहा, "हे प्रभु, हम नहीं जानते तू
कहाँ जा रहा है। फिर वहाँ का रास्ता कैसे जान सकते
हैं?"
6यीशु ने उससे कहा, "मैं ही मार्ग हूँ, सत्य हूँ और
जीवन हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई भी परम पिता के पास
नहीं आता। 7यदि तूने मुझे जान लिया होता तो तू परम
पिता को भी जानता। अब तू उसे जानता है और उसे
देख भी चुका है।"
8फिलिप्पुस ने उससे कहा, "हे प्रभु, हमे परम पिता
के दर्शन करा दे। हमे संतोष हो जायेगा।"
9यीशु ने उससे कहा, "फिलिप्पुस मैं इतने लम्बे समय
से तेरे साथ हूँ और तब भी तू मुझे नहीं जानता? जिसने
मुझे देखा है, उसने परम पिता को देख लिया है। फिर तू
कैसे कहता है?, 'हमें परम पिता के दर्शन करा दे।'
10क्या तुझे विश्वास नहीं है कि मैं परम पिता में हूँ और
परम पिता मुझ में है? वे वचन जो मैं तुम लोगों से
कहता हूँ, अपनी ओर से ही नहीं कहता। परम पिता जो
मुझ में निवास करता है, अपने काम करता है। 11जब
मैं कहता हूँ कि मैं परम पिता में हूँ और परम पिता मुझ
में है तो मेरा विश्वास करो और यदि नहीं तो स्वयं
कामों के कारण ही विश्वास करो। 12मैं तुम्हें सत्य
कहता हूँ, जो मुझ में विश्वास करता है, वह भी उन
कार्यो को करेगा जिन्हें मैं करता हूँ। वास्तव में वह इन
कामों से भी बड़े काम करेगा। क्योंकि मैं परम पिता के
पास जा रहा हूँ। 13और मैं वह सब कुछ करूँगा जो तुम
लोग मेरे नाम से माँगोगे जिससे पुत्र के द्वारा परम पिता
महिमावान हो। 14यदि तुम मुझसे मेरे नाम में कुछ भी
माँगोगे तो मैं उसे करूँगा।

पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा

15"यदि तुम मुझे प्रेम करते हो, तो मेरी आज्ञाओं
का पालन करोगे। 16मैं परम पिता से विनती करूँगा
और वह तुम्हें एक दूसरा सहायक* देगा ताकि
वह सदा तुम्हारे साथ रह सके। 17यानी सत्य का

सहायक अथवा 'सुखदाता' यहाँ यीशु पवित्र आत्मा के विषय में बता रहा है।

आत्मा* जिसे जगत् ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि वह उसे न तो देखता है और न ही उसे जानता है। तुम लोग उसे जानते हो क्योंकि वह आज तुम्हारे साथ रहता है और भविष्य में तुम में रहेगा।

18"मैं तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ूँगा। मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ। **19**कुछ ही समय बाद जगत् मुझे और नहीं देखेगा किन्तु तुम मुझे देखोगे क्योंकि मैं जीवित हूँ और तुम भी जीवित रहोगे। **20**उस दिन तुम जानोगे कि मैं परम पिता में हूँ, तुम मुझ में हो और मैं तुममें। **21**वह जो मेरे आदेशों को स्वीकार करता है और उनका पालन करता है, मुझसे प्रेम करता है। जो मुझमें प्रेम रखता है उसे मेरा परम पिता प्रेम करेगा। मैं भी उसे प्रेम करूँगा और अपने आप को उस पर प्रकट करूँगा।"

22यहूदा ने (यहूदा इस्करियोती ने नहीं) उससे कहा, "हे प्रभु, ऐसा क्यों है कि तू अपने आपको हम पर प्रकट करना चाहता है और जगत् पर नहीं?"

23उत्तर में यीशु ने उससे कहा, "यदि कोई मुझमें प्रेम रखता है तो वह मेरे वचन का पालन करेगा। और उससे मेरा परम पिता प्रेम करेगा। और हम उसके पास आयेंगे और उसके साथ निवास करेंगे। **24**जो मुझ में प्रेम नहीं रखता, वह मेरे उपदेशों पर नहीं चलता। यह उपदेश जिसे तुम सुन रहे हो, मेरा नहीं है, बल्कि उस परम पिता का है जिसने मुझे भेजा है।

25"ये बातें मैंने तुमसे तभी कही थीं जब मैं तुम्हारे साथ था। **26**किन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे परम पिता मेरे नाम से भेजेगा, तुम्हें सब कुछ बतायेगा। और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है उसे तुम्हें याद दिलायेगा।

27"मैं तुम्हारे लिये अपनी शांति छोड़ रहा हूँ। मैं तुम्हें स्वयं अपनी शांति दे रहा हूँ पर तुम्हें इसे मैं वैसे नहीं दे रहा हूँ जैसे जगत देता है। तुम्हारा मन व्याकुल नहीं होना चाहिये और न ही उसे डरना चाहिये। **28**तुमने मुझे कहते सुना है कि मैं जा रहा हूँ और तुम्हारे पास फिर आऊँगा। यदि तुमने मुझसे प्रेम किया होता तो तुम प्रसन्न होते क्योंकि मैं परम पिता के पास जा रहा हूँ। क्योंकि परम पिता मुझ से महान है। **29**और अब यह घटित होने से पहले ही मैंने तुम्हें बता दिया है ताकि जब यह घटित हो तो तुम्हें विश्वास हो। **30**और अधिक समय तक मैं तुम्हारे साथ बात नहीं करूँगा क्योंकि इस जगत का शासक आ रहा है। मुझ पर उसका कोई बस नहीं चलता। किन्तु ये बातें इसलिए घट रहीं हैं ताकि जगत् जान जाये कि मैं परम पिता से प्रेम करता हूँ। **31**और पिता ने जैसी आज्ञा मुझे दी है, मैं वैसा ही करता हूँ। "अब उठो, हम यहाँ से चलें।"

आत्मा पवित्र आत्मा। इसे परमेश्वर की आत्मा, और सुखदाता भी कहा है। वह मसीह से जुड़ा है। जगत में लोगों के बीच वह परमेश्वर का कार्य करता है। देखें यूहन्ना 16:13

यीशु–सच्ची दाखलता

15 यीशु ने कहा, "सच्ची दाखलता मैं हूँ। और मेरा परम पिता देख-रेख करने वाला माली है। **2**मेरी हर उस शाखा को जिस पर फल नहीं लगता, वह काट देता है। और हर उस शाखा को जो फलती है, वह छाँटता है ताकि उस पर और अधिक फल लगें। **3**तुम लोग तो जो उपदेश मैंने तुम्हें दिया है, उसके कारण पहले ही शुद्ध हो। **4**तुम मुझ में रहो और मैं तुम में रहूँगा। वैसे ही जैसे कोई शाखा जब तक दाखलता में बनी नहीं रहती, तब तक अपने आप फल नहीं सकती वैसे ही तुम भी तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक मुझ में नहीं रहते। **5**वह दाखलता मैं हूँ और तुम उसकी शाखाएँ हो। जो मुझमें रहता है, और मैं जिस में रहता हूँ वह बहुत फलता है क्योंकि मेरे बिना तुम कुछ भी नहीं कर सकते। **6**यदि कोई मुझमें नहीं रहता तो वह टूटी शाखा की तरह फेंक दिया जाता है और सूख जाता है। फिर उन्हें बटोर कर आग में झोंक दिया जाता है और उन्हें जला दिया जाता है।

7"यदि तुम मुझ में रहो, और मेरे उपदेश तुम में रहें, तो जो कुछ तुम चाहते हो माँगो, वह तुम्हें मिलेगा। **8**इससे मेरे परम पिता की महिमा होती है कि तुम बहुत सफल होवो और मेरे अनुयायी रहो। **9**जैसे परम पिता ने मुझे प्रेम किया है, मैंने भी तुम्हें वैसे ही प्रेम किया है। मेरे प्रेम में बने रहो। **10**यदि तुम मेरे आदेशों का पालन करोगे तो तुम मेरे प्रेम में बने रहोगे। वैसे ही जैसे मैं अपने परम पिता के आदेशों को पालते हुए उसके प्रेम में बना रहता हूँ। **11**मैंने ये बातें तुमसे इसलिये कही हैं कि मेरा आनन्द तुम में रहे और तुम्हारा आनन्द परिपूर्ण हो जाये। यह मेरा आदेश है **12**कि तुम आपस में प्रेम करो, वैसे ही जैसे मैंने तुम से प्रेम किया है। **13**बड़े से बड़ा प्रेम जिसे कोई व्यक्ति कर सकता है, वह है अपने मित्रों के लिए प्राण न्योछावर कर देना। **14**जो आदेश तुम्हें मैं देता हूँ, यदि तुम उन पर चलते रहो तो तुम मेरे मित्र हो। **15**अब से मैं तुम्हें 'दास' नहीं कहूँगा क्योंकि कोई दास नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या कर रहा है बल्कि मैं तुम्हें 'मित्र' कहता हूँ। क्योंकि मैंने तुम्हें वह हर बात बता दी है, जो मैंने अपने परम पिता से सुनी है। **16**तुमने मुझे नहीं चुना, बल्कि मैंने तुम्हें चुना है और नियुक्त किया है कि तुम जाओ और सफल बनो। मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी सफलता बनी रहे ताकि मेरे नाम में जो कुछ तुम चाहो, परम पिता तुम्हें दे। **17**मैं तुम्हें यह आदेश दे रहा हूँ कि तुम एक दूसरे से प्रेम करो।

यीशु की चेतावनी

18"यदि संसार तुमसे बैर करता है तो याद रखो वह तुमसे पहले मुझसे बैर करता है। **19**यदि तुम जगत् के होते तो जगत् तुम्हें अपनों की तरह प्यार करता पर तुम

जगत् के नहीं हो मैंनें तुम्हें जगत् में से चुन लिया है और
इसीलिए जगत् तुमसे बैर करता है। **20**मेरा वचन याद
रखो एक दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं है। इसलिये
यदि उन्होंने मुझे यातनाएँ दी हैं तो वे तुम्हें भी यातनाएँ
देंगे। और यदि उन्होंने मेरा वचन माना तो वे तुम्हारा
वचन भी मानेंगे। **21**पर वे मेरे कारण तुम्हारे साथ ये
सब कुछ करेंगे क्योंकि वे उसे नहीं जानते जिसने मुझे
भेजा है। **22**यदि मैं न आता और उनसे बातें न करता तो
वे किसी भी पाप के दोषी न होते। पर अब अपने पाप
के लिए उनके पास कोई बहाना नहीं है। **23**जो मुझसे
बैर करता है वह परम पिता से बैर करता है। **24**यदि मैं
उनके बीच वे कार्य नहीं करता जो कभी किसी ने नहीं
किये तो वे पाप के दोषी न होते पर अब जब वे देख
चुके हैं तब भी मुझसे और मेरे परम पिता दोनों से बैर
रखते हैं। **25**किन्तु यह इसलिये हुआ कि उनके
व्यवस्था-विधान में जो लिखा है वह सच हो सके।
'उन्होंने बेकार ही मुझ से बैर किया है।'

26"जब वह सहायक (जो सत्य की आत्मा है और
परम पिता की ओर से आता है) तुम्हारे पास आयेगा
जिसे मैं परम पिता की ओर से भेजूँगा, वह मेरी ओर से
साक्षी देगा। **27**और तुम भी साक्षी दोगे क्योंकि तुम आदि
से ही मेरे साथ रहे हो।

16 "ये बातें मैंने इसलिये तुमसे कही हैं कि तुम्हारा
विश्वास न डगमगा जाये। **2**वे तुम्हें आराधना
सभा से निकाल देंगे। वास्तव में वह समय आ रहा है
जब तुम में से किसी को भी मार कर हर कोई सोचेगा
कि वह परमेश्वर की सेवा कर रहा है। **3**वे ऐसा
इसलिए करेंगे कि वे न तो परम पिता को जानते हैं
और न ही मुझे। **4**किन्तु मैंने तुमसे यह इसलिये कहा है
ताकि जब उनका समय आये तो तुम्हें याद रहे कि मैंने
उनके विषय में तुमको बता दिया था।

पवित्र आत्मा के कार्य

"आरम्भ में ये बातें मैंने तुम्हें नहीं बतायी थीं क्योंकि
मैं तुम्हारे साथ था। **5**किन्तु अब मैं उसके पास जा रहा
हूँ जिसने मुझे भेजा है और तुममें से मुझ से कोई नहीं
पूछेगा, 'तू कहाँ जा रहा है?' **6**क्योंकि मैंने तुम्हें ये बातें
बता दी हैं, तुम्हारे हृदय शोक से भर गये हैं। **7**किन्तु मैं
तुमसे सत्य कहता हूँ इसमें तुम्हारा भला है कि मैं जा
रहा हूँ। क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो सहायक तुम्हारे पास
नहीं आयेगा। किन्तु यदि मैं चला जाता हूँ तो मैं उसे
तुम्हारे पास भेज दूँगा। **8**और जब वह आयेगा तो पाप,
धार्मिकता और न्याय के विषय में जगत् के संदेह दूर
करेगा। **9**पाप के विषय में इसलिये कि वे मुझ में विश्वास
नहीं रखते, **10**धार्मिकता के विषय में इसलिये कि अब
मैं परम पिता के पास जा रहा हूँ। और तुम मुझे अब
और अधिक नहीं देखोगे। **11**न्याय के विषय में इसलिये
कि इस जगत के शासक को दोषी ठहराया जा चुका है।
12मुझे अभी तुमसे बहुत सी बातें कहनी हैं किन्तु तुम
अभी उन्हें सह नहीं सकते। **13**किन्तु जब सत्य का
आत्मा आयेगा तो वह तुम्हें पूर्ण सत्य की राह दिखायेगा
क्योंकि वह अपनी ओर से कुछ नहीं कहेगा। वह जो
कुछ सुनेगा वही बतायेगा। और जो कुछ होने वाला है
उसको प्रकट करेगा। **14**वह मेरी महिमा करेगा क्योंकि
जो मेरा है उसे लेकर वह तुम्हें बतायेगा। हर वस्तु जो
पिता की है, वह मेरी है। **15**इसीलिए मैंने कहा है कि जो
कुछ मेरा है वह उसे लेगा और तुम्हें बतायेगा।

शोक आनन्द में बदल जायेगा

16"कुछ ही समय बाद तुम मुझे और अधिक नहीं
देख पाओगे। और थोड़े समय बाद तुम मुझे फिर देखोगे।"

17तब उसके कुछ शिष्यों ने आपस में कहा, "यह
क्या है जो वह हमें बता रहा है, 'थोड़ी देर बाद तुम मुझे
नहीं देख पाओगे?' और 'थोड़े समय बाद तुम मुझे फिर
देखोगे?' और 'मैं परम पिता के पास जा रहा हूँ।'"

18फिर वे कहने लगे यह, "थोड़ी देर बाद क्या है!
जिसके बारे में वह बता रहा है। वह क्या कह रहा है
हम समझ नहीं रहे हैं।"

19यीशु समझ गया कि वे उससे प्रश्न करना चाहते
हैं। इसलिये उसने उनसे कहा, "क्या मैंने यह जो कहा
है, उस पर तुम आपस में सोच-विचार कर रहे हो,
'कुछ ही समय बाद तुम मुझे और अधिक नहीं देख
पाओगे।' और 'फिर थोड़े समय बाद तुम मुझे देखोगे?'
20मैं तुम्हें सत्य कहता हूँ, तुम विलाप करोगे और
रोओगे किन्तु यह जगत् प्रसन्न होगा। तुम्हें शोक होगा
किन्तु तुम्हारा शोक आनन्द में बदल जायेगा। **21**जब
कोई स्त्री जनने लगती है, तब उसे पीड़ा होती है क्योंकि
उसकी पीड़ा की घड़ी आ चुकी होती है। किन्तु जब वह
बच्चा जन चुकी होती है तो इस आनन्द से कि एक
व्यक्ति इस संसार में पैदा हुआ है वह आनन्दित होती है
और अपनी पीड़ा को भूल जाती है। **22**सो तुम सब भी
इस समय वैसे ही दुखी हो किन्तु मैं तुमसे फिर मिलूँगा
और तुम्हारे हृदय आनन्दित होंगे। और तुम्हारे आनन्द
को तुमसे कोई छीन नहीं सकेगा। **23**उस दिन तुम मुझसे
कोई प्रश्न नहीं पूछोगे। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ मेरे नाम
में परम पिता से तुम जो कुछ भी माँगोगे वह उसे तुम्हें
देगा। **24**अब तक मेरे नाम में तुमने कुछ नहीं माँगा है।
माँगो, तुम पाओगे। ताकि तुम्हें भरपूर आनन्द हो।

जगत पर विजय

25"मैंने ये बातें तुम्हें दृष्टान्त देकर बतायी हैं। वह
समय आ रहा है जब मैं तुमसे दृष्टान्त दे- देकर और
अधिक समय बात नहीं करूँगा। बल्कि परम पिता के
विषय में खोल कर तुम्हें बताऊँगा। **26**उस दिन तुम मेरे
नाम में माँगोगे और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि

तुम्हारी ओर से मैं परम पिता से प्रार्थना करूँगा। 27परम पिता स्वयं तुम्हें प्यार करता है क्योंकि तुमने मुझे प्यार किया है। और यह माना है कि मैं परम पिता से आया हूँ। 28मैं परम पिता से प्रकट हुआ और इस जगत् में आया। और अब मैं इस जगत् को छोड़कर परम पिता के पास जा रहा हूँ।"

29उसके शिष्यों ने कहा, "देख अब तू बिना किसी दृष्टान्त के खोल कर बता रहा है। 30अब हम समझ गये हैं कि तू सब कुछ जानता है। अब तुझे अपेक्षा नहीं है कि कोई तुझसे प्रश्न पूछे। इससे हमें यह विश्वास होता है कि तू परमेश्वर से प्रकट हुआ है।"

31यीशु ने इस पर उनसे कहा, "क्या तुम्हें अब विश्वास हुआ है? 32सुनो, समय आ रहा है, बल्कि आ ही गया है जब तुम सब तितर-बितर हो जाओगे और तुम में से हर कोई अपने-अपने घर लौट जायेगा और मुझे अकेला छोड़ देगा किन्तु मैं अकेला नहीं हूँ क्योंकि मेरा परम पिता मेरे साथ है।

33"मैंने ये बातें तुमसे इसलिये कहीं कि मेरे द्वारा तुम्हें शांति मिले। जगत् में तुम्हें यातना मिली है किन्तु साहस रखो, मैंने जगत् को जीत लिया है!"

अपने शिष्यों के लिए यीशु की प्रार्थना

17 ये बातें कहकर यीशु ने आकाश की ओर देखा और बोला, "हे परम पिता, वह घड़ी आ पहुँची है अपने पुत्र को महिमा प्रदान कर ताकि तेरा पुत्र तेरी महिमा कर सके। 2तूने उसे समूचे मनुष्य जाति पर अधिकार दिया है कि वह, हर उसको, जिसको तूने उसे दिया है, अनन्त जीवन दे। 3अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर और यीशु मसीह को, जिसे तूने भेजा है, जानें। 4जो काम तूने मुझे सौंपे थे, उन्हें पूरा करके जगत् में मैंने तुझे महिमावान किया है। 5इसलिये अब तू अपने साथ मुझे भी महिमावान कर। हे परम पिता! वही महिमा मुझे दे जो जगत् से पहले, तेरे साथ मुझे प्राप्त थी।

6"जगत से जिन मनुष्यों को तूने मुझे दिया, मैंने उन्हें तेरे नाम का बोध कराया है। वे लोग तेरे थे किन्तु तूने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने तेरे वचन का पालन किया। 7अब वे जानते हैं कि हर वह वस्तु जो तूने मुझे दी है, वह तुझ ही से आती है। 8मैंने उन्हें वे ही उपदेश दिये हैं जो तूने मुझे दिये थे और उन्होंने उनको ग्रहण किया। वे निश्चयपूर्वक जानते हैं कि मैं तुझसे ही आया हूँ। और उन्हें विश्वास हो गया है कि तूने मुझे भेजा है। 9मैं उनके लिये प्रार्थना कर रहा हूँ। मैं जगत के लिये प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ बल्कि उनके लिए कर रहा हूँ जिन्हें तूने मुझे दिया है, क्योंकि वे तेरे हैं। 10वह सब कुछ जो मेरा है, वह तेरा है और जो तेरा है, वह मेरा है। और मैंने उनके द्वारा महिमा पायी है। 11मैं अब और अधिक समय जगत् में नहीं हूँ किन्तु वे जगत में हैं अब मैं तेरे पास आ रहा हूँ। हे पवित्र पिता अपने उस नाम की शक्ति से उनकी रक्षा कर जो तूने मुझे दिया है ताकि जैसे तू और मैं एक हैं, वे भी एक हो सकें। 12जब मैं उनके साथ था, मैंने तेरे उस नाम की शक्ति से उनकी रक्षा की, जो तूने मुझे दिया था। मैंने रक्षा की और उनमें से कोई भी नष्ट नहीं हुआ सिवाय उसके जो विनाश का पुत्र था ताकि शास्त्र का कहना सच हो।

13"अब मैं तेरे पास आ रहा हूँ किन्तु ये बातें मैं जगत् में रहते हुए कह रहा हूँ ताकि वे अपने हृदयों में मेरे पूर्ण आनन्द को पा सकें। 14मैंने तेरा वचन उन्हें दिया है पर संसार ने उनसे घृणा की क्योंकि वे सांसारिक नहीं हैं। वैसे ही जैसे मैं संसार का नहीं हूँ। 15मैं यह प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ कि तू उन्हें संसार से निकाल ले बल्कि यह कि तू उनकी दुष्ट शैतान से रक्षा कर। 16वे संसार के नहीं हैं, वैसे ही जैसे मैं संसार का नहीं हूँ। 17सत्य के द्वारा तू उन्हें अपनी सेवा के लिये समर्पित कर। तेरा वचन सत्य है। 18जैसे तूने मुझे इस जगत् में भेजा है, वैसे ही मैंने उन्हें जगत में भेजा है। 19मैं उनके लिए अपने को तेरी सेवा में अर्पित कर रहा हूँ ताकि वे भी सत्य के द्वारा स्वयं को तेरी सेवा में अर्पित करें।

20"किन्तु मैं केवल उन ही के लिये प्रार्थना नहीं कर रहा हूँ बल्कि उनके लिये भी जो इनके उपदेशों द्वारा मुझ में विश्वास करेंगे। 21वे सब एक हों। वैसे ही जैसे हे परम पिता तू मुझ में है और मैं तुझ में। वे भी हममें एक हों। ताकि जगत विश्वास करे कि मुझे तूने भेजा है। 22वह महिमा जो तूने मुझे दी है, मैंने उन्हें दी है; ताकि वे भी वैसे ही एक हो सकें जैसे हम एक हों। 23मैं उनमें होऊँगा और तू मुझमें होगा, जिससे वे पूर्ण एकता को प्राप्त हों और जगत जान जाये कि मुझे तूने भेजा है और तूने उन्हें भी वैसे ही प्रेम किया है जैसे तू मुझे प्रेम करता है।

24"हे परम पिता! जो लोग तूने मुझे सौंपे हैं, मैं चाहता हूँ कि जहाँ मैं हूँ, वे भी मेरे साथ हों ताकि वे मेरी उस महिमा को देख सकें जो तूने मुझे दी है। क्योंकि सृष्टि की रचना से भी पहले तूने मुझसे प्रेम किया है। 25हे धार्मिक-पिता, जगत तुझे नहीं जानता किन्तु मैंने तुझे जान लिया है। और मेरे शिष्य जानते हैं कि मुझे तूने भेजा है। 26न केवल मैंने तेरे नाम का उन्हें बोध कराया है बल्कि मैं इसका बोध कराता भी रहूँगा ताकि वह प्रेम जो तूने मुझ पर दर्शाया है उनमें भी हो। और मैं भी उनमें रहूँ।"

यीशु का बंदी बनाया जाना

(मत्ती 26:47-56; मरकुस 14:43-50; लूका 22:47-53)

18 यीशु यह कहकर अपने शिष्यों के साथ छोटी नदी किद्रोन के पार एक बगीचे में चला गया।

2धोखे से उसे पकड़वाने वाला यहूदा भी उस जगह को जानता था क्योंकि यीशु वहाँ प्राय: अपने शिष्यों से मिला करता था। 3इसलिये यहूदा रोमी सिपाहियों की एक टुकड़ी और महायाजकों और फरीसियों के भेजे लोगों और मन्दिर के पहरेदारों के साथ मशालें दीपक और हथियार लिये वहाँ आ पहुँचा।

4फिर यीशु जो सब कुछ जानता था कि उसके साथ क्या होने जा रहा है, आगे आया और उनसे बोला, "तुम किसे खोज रहे हो?"

5उन्होंने उसे उत्तर दिया, "यीशु नासरी को।"

यीशु ने उनसे कहा, "वह मैं हूँ।" (तब उसे धोखे से पकड़वाने वाला यहूदा भी वहाँ खड़ा था।) 6जब
उसनेउनसे कहा, "वह मैं हूँ" तो वे पीछे हटे और धरती पर गिर पड़े।

7इस पर एक बार फिर यीशु ने उनसे पूछा, "तुम किसे खोज रहे हो?" वे बोले, "यीशु नासरी को।"

8यीशु ने उत्तर दिया, "मैंनें तुमसे कहा, वह मैं ही हूँ। यदि तुम मुझे खोज रहे हो तो इन लोगों को जाने दो।"
9यह उसने इसलिये कहा कि जो उसने कहा था, वह सच हो, "मैंने उनमें से किसी को भी नहीं खोया, जिन्हें तूने मुझे सौंपा था।"

10फिर शमौन पतरस ने, जिसके पास तलवार थी, अपनी तलवार निकाली और महायाजक के दास का दाहिना कान काटते हुए उसे घायल कर दिया। (उस दास का नाम मलखुस था।) 11फिर यीशु ने पतरस से
कहा, "अपनी तलवार म्यान में रख। क्या मैं यातना का वह प्याला न पीऊँ जो परम पिता ने मुझे दिया है?"

यीशु का हन्ना के सामने लाया जाना

(मत्ती 26:57-58; मरकुस 14:53-54;लूका 22:54

12फिर रोमी टुकड़ी के सिपाहियों और उनके सूबेदारों तथा यहूदियों के मंदिर के पहरेदारों ने यीशु को बंदी बना लिया। 13और उसे बाँध कर पहले हन्ना के पास ले गये जो उस साल के महायाजक कैफा का ससुर था।
14यह कैफा वही व्यक्ति था जिसने यहूदी नेताओं को सलाह दी थी कि सब लोगों के लिए एक का मरना अच्छा है।

पतरस का यीशु को पहचानने से इन्कार

(मत्ती 26:69-70; मरकुस 14:66-68;लूका 22:55-57)

15शमौन पतरस तथा एक और शिष्य यीशु के पीछे हो लिये। महायाजक इस शिष्य को अच्छी तरह जानता था इसलिए वह यीशु के साथ महायाजक के आँगन में घुस गया। 16किन्तु पतरस बाहर द्वार के पास ही ठहर गया। फिर महायाजक की जान पहचान वाला दूसरा शिष्य बाहर गया और द्वारपालिन से कह कर पतरस को भीतर ले आया। 17इस पर उस दासी ने जो द्वारपालिन थी कहा, "हो सकता है कि तू भी यीशु का ही शिष्य है?" पतरस ने उत्तर दिया, "नहीं, मैं नहीं हूँ।"

18क्योंकि ठंड बहुत थी दास और मंदिर के पहरेदार आग जलाकर वहाँ खड़े ताप रहे थे। पतरस भी उनके साथ वहीं खड़ा था और ताप रहा था।

महायाजक की यीशु से पूछताछ

(मत्ती 26:59-66; मरकुस 14:55-64; लूका 22:66-71)

19फिर महायाजक ने यीशु से उसके शिष्यों और उसकी शिक्षा के बारे में पूछा। 20यीशु ने उसे उत्तर दिया, "मैंने सदा लोगों के बीच हर किसी से खुल कर बात की है। सदा मैंने प्रार्थना सभाओं में और मन्दिर में, जहाँ सभी यहूदी इकट्ठे होते हैं, उपदेश दिया है। मैंने कभी भी छिपा कर कुछ नहीं कहा है। 21फिर तू मुझ
से क्यों पूछ रहा है? मैंने क्या कहा है उनसे पूछ जिन्होंने मुझे सुना है। मैंनें क्या कहा, निश्चय ही वे जानते हैं।"

22जब उसने यह कहा तो मन्दिर के एक पहरेदार ने, जो वहीं खड़ा था, यीशु को एक थप्पड़ मारा और बोला, "तूने महायाजक को ऐसे उत्तर देने की हिम्मत कैसेकी?"

23यीशु ने उसे उत्तर दिया, "यदि मैंने कुछ बुरा कहा है तो प्रमाणित कर और बता कि उसमें बुरा क्या था, और यदि मैंने ठीक कहा है तो तू मुझे क्यों मारता है?"

24फिर हन्ना ने उसे बँधे हुए ही महायाजक कैफा के पास भेज दिया।

पतरस का यीशु को पहचानने से फिर इन्कार

(मत्ती 26:71-75; मरकुस 14:69-72;लूका 22:58-62)

25जब शमौन पतरस खड़ा हुआ आग ताप रहा था तो उससे पूछा गया, "क्या यह सम्भव है कि तू भी उसका एक शिष्य है?" उसने इससे इन्कार किया। वह बोला, "नहीं मैं नहीं हूँ।"

26महायाजक के एक सेवक ने जो उस व्यक्ति का सम्बन्धी था जिसका पतरस ने कान काटा था, पूछा, "बता क्या मैंने तुझे उसके साथ बगीचे में नहीं देखा था?"

27इस पर पतरस ने एक बार फिर इन्कार किया। और तभी मुर्गे ने बाँग दी।

यीशु का पिलातुस के सामने लाया जाना

(मत्ती 27:1-2; मरकुस 15:1-20; लूका 23:1-25)

28फिर वे यीशु को कैफा के घर से रोमी राज्यपाल के महल में ले गये। सुबह का समय था। यहूदी लोग राज्यपाल के भवन में आप नहीं जाना चाहते थे कि कहीं वे अपवित्र* न हो जायें। और फ़सह का भोजन

अपवित्र यहूदी यह मानते थे कि किसी ग़ैर यहूदी के घर में जाने से उनकी पवित्रता नष्ट हो जाती है। देखें यूहन्ना 11:55

न खा सकें। 29तब पिलातुस उनके पास बाहर आया
और बोला, "इस व्यक्ति के ऊपर तुम क्या दोष लगाते
हो?"
30उत्तर में उन्होंने उससे कहा, "यदि यह अपराधी न
होता तो हम इसे तुम्हें न सौंपते।" 31इस पर पिलातुस ने
उनसे कहा, "इसे तुम ले जाओ और अपनी व्यवस्था के
विधान के अनुसार इसका न्याय करो।"
यहूदियों ने उससे कहा, "हमें किसी को प्राणदण्ड देने
का अधिकार नहीं है।" 32(यह इसलिए हुआ कि यीशु
ने जो बात उसे कैसी मृत्यु मिलेगी, यह बताते हुए कही
थी, सत्य सिद्ध हो।)
33तब पिलातुस राज्यपाल के महल में वापस चला
गया। और यीशु को बुला कर उससे पूछा, "क्या तू
यहूदियों का राजा है?"
34यीशु ने उत्तर दिया, "यह बात क्या तू अपने आप
कह रहा है या मेरे बारे में यह औरों ने तुझसे कही है?"
35पिलातुस ने उत्तर दिया, "क्या तू सोचता है कि मैं
यहूदी हूँ? तेरे लोगों और महायाजकों ने तुझे मेरे हवाले
किया है। तूने क्या किया है?"
36यीशु ने उत्तर दिया, "मेरा राज्य इस जगत् का नहीं
है। यदि मेरा राज्य इस जगत् का होता तो मेरी प्रजा मुझे
यहूदियों को सौंपे जाने से बचाने के लिए युद्ध करती।
किन्तु वास्तव में मेरा राज्य यहाँ का नहीं है।"
37इस पर पिलातुस ने उससे कहा, "तो तू राजा है?"
यीशु ने उत्तर दिया, "तू कहता है कि मैं राजा हूँ। मैं
इसीलिए पैदा हुआ हूँ और इसी प्रयोजन से मैं इस संसार
में आया हूँ कि सत्य की साक्षी दूँ। हर वह व्यक्ति जो
सत्य के पक्ष में है, मेरा वचन सुनता है।"
38पिलातुस ने उससे पूछा, "सत्य क्या है?" ऐसा कह
कर वह फिर यहूदियों के पास बाहर गया और उनसे
बोला, "मैं उसमें कोई खोट नहीं पा सका हूँ, 39और
तुम्हारी यह रीति है कि फ़सह पर्व के अवसर पर मैं
तुम्हारे लिए किसी एक को मुक्त कर दूँ। तो क्या तुम
चाहते हो कि मैं इस 'यहूदियों के राजा' को तुम्हारे लिये
छोड़ दूँ?"
40एक बार वे फिर चिल्लाये, "इसे नहीं, बल्कि बरअब्बा
को छोड़ दो!" (बरअब्बा एक बाग़ी था।)

यीशु को मृत्यु-दण्ड

19 तब पिलातुस ने यीशु को पकड़वा कर कोड़े
लगवाये। 2फिर सैनिकों ने कँटीली टहनियों
को मोड़ कर एक मुकुट बनाया और उसके सिर पर
रख दिया। और उसे बैंजनी रंग के कपड़े पहनाये।
3और उसके पास आ-आकर कहने लगे, "यहूदियों
का राजा जीता रहे" और फिर उसे थप्पड़ मारने लगे।
4पिलातुस एक बार फिर बाहर आया और उनसे
बोला, "देखो, मैं तुम्हारे पास उसे फिर बाहर ला रहा हूँ
ताकि तुम जान सको कि मैं उसमें कोई खोट नहीं पा
सका।" 5फिर यीशु बाहर आया। वह काँटों का मुकुट
और बैंजनी रंग का चोगा पहने हुए था। तब पिलातुस ने
कहा, "यह रहा वह पुरुष।"
6जब उन्होंने उसे देखा तो महायाजकों और मंदिर के
पहरेदारों ने चिल्ला कर कहा, "इसे क्रूस पर चढ़ा दो!
इसे क्रूस पर चढ़ा दो!"
पिलातुस ने उससे कहा, "तुम इसे ले जाओ और
क्रूस पर चढ़ा दो, मैं इसमें कोई खोट नहीं पा सका हूँ।"
7यहूदियों ने उसे उत्तर दिया, "हमारी व्यवस्था है जो
कहती है, इसे मरना होगा क्योंकि इसने परमेश्वर का
पुत्र होने का दावा किया है।"
8अब जब पिलातुस ने उन्हें यह कहते सुना तो वह
बहुत डर गया। 9और फिर राज्यपाल के महल के
भीतर जाकर यीशु से कहा, "तू कहाँ से आया है?
किन्तु यीशु ने उसे उत्तर नहीं दिया।"
10फिर पिलातुस ने उससे कहा, "क्या तू मुझसे बात
नहीं करना चाहता? क्या तू नहीं जानता कि मैं तुझे
छोड़ने का अधिकार रखता हूँ और तुझे क्रूस पर
चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है।"
11यीशु ने उसे उत्तर दिया, "तुम्हें तब तक मुझ पर
कोई अधिकार नहीं हो सकता था जब तक वह तुम्हें
परम पिता द्वारा नहीं दिया गया होता। इसलिये जिस
व्यक्ति ने मुझे तेरे हवाले किया है, तुझसे भी बड़ा
पापी है।"
12यह सुन कर पिलातुस उसे छोड़ने का कोई उपाय
ढूँढने का यत्न करने लगा। किन्तु यहूदी चिल्लाये,
"यदि तू इसे छोड़ता है, तो तू कैसर का मित्र नहीं है,
कोई भी जो अपने आप को राजा होने का दावा करता
है, वह कैसर का विरोधी है।"
13जब पिलातुस ने ये शब्द सुने तो वह यीशु को
बाहर उस स्थान पर ले गया जो "पत्थर का चबूतरा"
कहलाता था। (इसे इब्रानी भाषा में "गब्बता" कहा गया
है।) और वहाँ न्याय के आसन पर बैठा। 14यह फ़सह
सप्ताह की तैयारी का दिन था।* लगभग दोपहर हो
रही थी। पिलातुस ने यहूदियों से कहा, "यह रहा तुम्हारा
राजा।"
15वे फिर चिल्लाये, "इसे ले जाओ। इसे ले जाओ। इसे
क्रूस पर चढ़ा दो।" पिलातुस ने उनसे कहा, "क्या तुम
चाहते हो तुम्हारे राजा को मैं क्रूस पर चढ़ाऊँ?"
इस पर महायाजकों ने उत्तर दिया, "कैसर को छोड़कर
हमारा कोई दूसरा राजा नहीं है!"
16फिर पिलातुस ने उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए उन्हें
सौंप दिया।

"यह फसह ... दिन था" अर्थात् शुक्रवार जब यहूदी सब्त की
तैयारी करते थे।

यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना

(मत्ती 27:32-44; मरकुस 15:21-32 लूका 23:26-43)

इस तरह उन्होंने यीशु को हिरासत में ले लिया।
17अपना क्रूस उठाये हुए वह उस स्थान पर गया जिसे,
"खोपड़ी का स्थान" कहा जाता था। (इसे इब्रानी भाषा
में "गुलगुता" कहते थे।) 18वहाँ से उन्होंने उसे दो अन्य
के साथ क्रूस पर चढ़ाया। एक इधर, दूसरा उधर और
बीच में यीशु। 19पिलातुस ने दोषपत्र क्रूस पर लगा दिया।
इसमें लिखा था, "यीशु नासरी, यहूदियों का राजा" 20बहुत
से यहूदियों ने उस दोषपत्र को पढ़ा क्योंकि जहाँ यीशु
को क्रूस पर चढ़ाया गया था, वह स्थान नगर के पास
ही था। और वह ऐलान इब्रानी, युनानी और लातीनी में
लिखा था। तब प्रमुख यहूदी नेता पिलातुस से कहने
लगे–21यहूदियों का राजा मत कहो, "बल्कि कहो, 'उसने
कहा था कि मैं यहूदियों का राजा हूँ।'"

22पिलातुस ने उत्तर दिया, "मैंने जो लिख दिया, सो
लिख दिया।" 23जब सिपाही यीशु को क्रूस पर चढ़ा चुके
तो उन्होंने उसके वस्त्र लिए और उन्हें चार भागों में
बाँट दिया। हर भाग एक सिपाही के लिये। उन्होंने कुर्ता
भी उतार लिया। क्योंकि वह कुर्ता बिना सिलाई के
ऊपर से नीचे तक बुना हुआ था। 24इसलिये उन्होंने
आपस में कहा, "इसे फाड़ें नहीं बल्कि इसे कौन ले,
इसके लिए पर्ची डाल लें।" ताकि शास्त्र का यह वचन
पूरा हो, "उन्होंने मेरे कपड़े आपस में बाँट लिये और
मेरे वस्त्र के लिए पर्ची डाली।" *भजन संहिता 22:18*

इसलिए सिपाहियों ने ऐसा ही किया।

25यीशु के क्रूस के पास उसकी माँ, मौसी क्लोपास
की पत्नी मरियम, और मरियम मगदलिनी खड़ी थीं।
26यीशु ने जब अपनी माँ और अपने प्रिय शिष्य को पास
ही खड़े देखा तो अपनी माँ से कहा, "प्रिय महिला, यह
रहा तेरा बेटा।" 27फिर वह अपने शिष्य से बोला, "यह
रही तेरी माँ।" और फिर उसी समय से वह शिष्य उसे
अपने घर ले गया।

यीशु की मृत्यु

(मत्ती 27:45-56; मरकुस 15:33-41; लूका 23:44-49)

28इसके बाद यीशु ने जान लिया कि सब कुछ पूरा हो
चुका है। फिर इसलिए कि शास्त्र सत्य सिद्ध हो उसने
कहा, "मैं प्यासा हूँ।" 29वहाँ सिरके से भरा एक बर्तन
रखा था। इसलिये उन्होंने एक स्पंज को सिरके में पूरी
तरह डुबो कर हिस्सप अर्थात् जूफे की टहनी पर रखा
और ऊपर उठा कर, उसके मुँह से लगाया। 30फिर
जब यीशु ने सिरका ले लिया तो वह बोला, पूरा हुआ।"
तब उसने अपना सिर झुका दिया और प्राण त्याग दिये।

31यह फ़सह की तैयारी का दिन था। सब्त के दिन
उनके शव क्रूस पर न लटके रहें क्योंकि सब्त का वह
दिन बहुत महत्त्वपूर्ण था इसके लिए यहूदियों ने पिलातुस
से कहा कि वह आज्ञा दे कि उनकी टाँगें तोड़ दी जाएँ
और उनके शव वहाँ से हटा दिए जाएँ। 32तब सिपाही
आये और उनमें से पहले, पहले की और फिर दूसरे
व्यक्ति की, जो उसके साथ क्रूस पर चढ़ाये गये थे, टाँगें
तोड़ी। 33पर जब वे यीशु के पास आये, उन्होंने देखा कि
वह पहले ही मर चुका है। इसलिए उन्होंने उसकी टाँगें
नहीं तोड़ीं 34पर उनमें से एक सिपाही ने यीशु के पंजर
में अपना भाला बेधा जिससे तत्काल ही खून और पानी
बह निकला। 35(जिसने यह देखा था उसने साक्षी दी;
और उसकी साक्षी सच है, वह जानता है कि वह सच
कह रहा है ताकि तुम लोग विश्वास करो।) 36यह
इसलिए हुआ कि शास्त्र का वचन पूरा हो कि "उसकी
कोई भी हड्डी तोड़ी नहीं जायेगी।" 37और धर्मशास्त्र में
लिखा है, "जिसे उन्होंने भाले से बेधा, वे उसकी ओर
ताकेंगे।"*

यीशु की अन्त्येष्टि

(मत्ती 27:57-61; मरकुस 15:42-47; लूका 23:50-56)

38इसके बाद अरमतियाह के यूसुफ़ ने जो यीशु का
एक अनुयायी था किन्तु यहूदियों के डर से इसे छिपाये
रखता था, पिलातुस से विनती की कि उसे यीशु के शव
को वहाँ से ले जाने की अनुमति दी जाये। पिलातुस ने
उसे अनुमति दे दी। सो वह आकर उसका शव ले गया।
39निकुदेमुस भी, जो यीशु के पास रात को पहले आया
था, वहाँ कोई तीस किलो मिला हुआ गंधरस और
एलवा लेकर आया। फिर वे यीशु के शव को ले गये
40और यहूदियों के शव को गाड़ने की व्यवस्था के
अनुसार उसे सुगंधित सामग्री के साथ कफ़न में लपेट
दिया। 41जहाँ यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था, वहाँ
एक बगीचा था। और उस बगीचे में एक नयी कब्र थी
जिसमें अभी तक किसी को रखा नहीं गया था। 42क्योंकि
वह सब्त की तैयारी का दिन शुक्रवार था और वह
कब्र बहुत पास थी, इसलिये उन्होंने यीशु को उसी में
रख दिया।

यीशु की क़ब्र खाली

(मत्ती 28:1-10; मरकुस 16:1-8; लूका 24:1-12)

20 सप्ताह के पहले दिन सुबह अन्धेरा रहते मरियम
मगदलिनी कब्र पर आयी। और उसने देखा
कि क़ब्र से पत्थर हटा हुआ है। 2फिर वह दौड़ कर
शमौन पतरस और उस दूसरे शिष्य के पास जो यीशु
का प्रिय था, पहुँची। और उनसे बोली, "वे प्रभु को क़ब्र
से निकाल कर ले गये हैं। और हमें नहीं पता कि
उन्होंने उसे कहाँ रखा है।"

"जिसे ... ताकेंगे" जकर्य. 12:10

3फिर पतरस और वह दूसरा शिष्य वहाँ से क़ब्र को
चल पड़े। 4वे दोनों साथ-साथ दौड़ रहे थे पर दूसरा
शिष्य पतरस से आगे निकल गया और क़ब्र पर पहले
जा पहुँचा। 5उसने नीचे झुककर देखा कि वहाँ
कफ़न के कपड़े पड़े हैं। किन्तु वह भीतर नहीं गया।
6तभी शमौन पतरस भी, जो उसके पीछे आ रहा था,
आ पहुँचा। और क़ब्र के भीतर चला गया। उसने
देखा कि वहाँ कफ़न के कपड़े पड़े हैं 7और वह
कपड़ा जो गाड़ते समय उसके सिर पर था कफ़न के
साथ नहीं, बल्कि उससे अलग एक स्थान पर तह
करके रखा हुआ है। 8फिर दूसरा, शिष्य भी जो क़ब्र
पर पहले पहुँचा था, भीतर गया। उसने देखा और
विश्वास किया। 9(वे अब भी शास्त्र के इस वचन को
नहीं समझे थे कि उसका मरे हुओं में से जी उठना
निश्चित है।)

मरियम मगदलिनी को यीशु ने दर्शन दिये

(मरकुस 16:9-11)

10फिर वे शिष्य अपने घरों को वापस लौट गये।
11मरियम रोती बिलखती कब्र के बाहर खड़ी थी।
रोते-बिलखते वह क़ब्र में अंदर झाँकने के लिये नीचे
झुकी। 12जहाँ यीशु का शव रखा था वहाँ उसने श्वेत
वस्त्र धारण किये, दो स्वर्गदूत, एक सिरहाने और दूसरा
पैताने, बैठे देखे।

13उन्होंने उससे पूछा, "हे स्त्री, तू क्यों विलाप कर
रही है?"

उसने उत्तर दिया, "वे मेरे प्रभु को उठा ले गये हैं
और मुझे पता नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रखा है?"
14इतना कह कर वह मुड़ी और उसने देखा कि वहाँ
यीशु खड़ा है। यद्यपि वह जान नहीं पायी कि वह यीशु
था।

15यीशु ने उससे कहा, "हे स्त्री, तू क्यों रो रही है? तू
किसे खोज रही है?" यह सोचकर कि वह माली है,
उसने उससे कहा, "श्रीमान, यदि कहीं तुमने उसे उठाया
है तो मुझे बताओ तुमने उसे कहाँ रखा है? मैं उसे ले
जाऊँगी।"

16यीशु ने उससे कहा, "मरियम!" वह पीछे मुड़ी और
इब्रानी में कहा, "रब्बूनी।" (अर्थात् "हे गुरु।")

17यीशु ने उससे कहा, "मुझे मत छू क्योंकि मैं अभी
तक परम पिता के पास ऊपर नहीं गया हूँ। बल्कि मेरे
भाइयों के पास जा और उन्हें बता, "मैं अपने परम पिता
और तुम्हारे परम पिता तथा अपने परमेश्वर और
तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जा रहा हूँ।"

18मरियम मगदलिनी यह कहती हुई शिष्यों के पास
आई, "मैने प्रभु को देखा है, और उसने मुझे ये बातें
बताई हैं।"

शिष्यों को दर्शन देना

(मत्ती 28:16-20; मरकुस 16:14-18; लूका 24:36-49)

19उसी दिन शाम को, जो सप्ताह का पहला दिन था,
उसके शिष्य यहूदियों के डर के कारण दरवाज़े बंद
किये हुए थे। तभी यीशु वहाँ आकर उनके बीच खड़ा
हो गया और उनसे बोला, "तुम्हें शांति मिले।" 20इतना
कह चुकने के बाद उसने उन्हें अपने हाथ और अपनी
बगल दिखाई। शिष्यों ने जब प्रभु को देखा तो वे बहुत
प्रसन्न हुए।

21तब यीशु ने उनसे फिर कहा, "तुम्हें शांति मिले।
वैसे ही जैसे परम पिता ने मुझे भेजा है, मैं भी तुम्हें भेज
रहा हूँ।" 22यह कह कर उसने उन पर फूँक मारी और
उनसे कहा, "पवित्र आत्मा को ग्रहण करो। 23जिस
किसी भी व्यक्ति के पापों को तुम क्षमा करते हो, उन्हें
क्षमा मिलती है और जिनके पापों को तुम क्षमा नहीं
करते, वे बिना क्षमा पाए रहते हैं।"

यीशु का थोमा को दर्शन देना

24थोमा जो बारहों में से एक था और दिदिमस अर्थात्
जुड़वाँ कहलाता था, जब यीशु आया था तब उनके साथ
न था। 25दूसरे शिष्य उससे कह रहे थे, "हमने प्रभु को
देखा है।" किन्तु उसने उनसे कहा, "जब तक मैं उसके
हाथों में कीलों के निशान न देख लूँ और उनमें अपनी
उँगली न डाल लूँ तथा उसके पंजर में अपना हाथ न
डाल लूँ, तब तक मुझे विश्वास नहीं होगा।"

26आठ दिन बाद उसके शिष्य एक बार फिर घर के
भीतर थे। और थोमा उनके साथ था। (यद्यपि दरवाज़े
पर ताला पड़ा था।) यीशु आया और उनके बीच खड़ा
होकर बोला, "तुम्हें शांति मिले।" 27फिर उसने थोमा से
कहा, "हाँ अपनी उँगली डाल और मेरे हाथ देख,
अपना हाथ फैला कर मेरे पंजर में डाल। संदेह करना
छोड़ और विश्वास कर।"

28उत्तर देते हुए थोमा बोला, "हे मेरे प्रभु, हे मेरे
परमेश्वर!" 29यीशु ने उससे कहा, "तूने मुझे देखकर,
मुझमें विश्वास किया है। किन्तु धन्य वे हैं जो बिना देखे
विश्वास रखते हैं।"

यह पुस्तक यूहन्ना ने क्यों लिखी

30यीशु ने और भी अनेक आश्चर्य चिह्न अपने
अनुयायियों को दर्शाए जो इस पुस्तक में नहीं लिखे हैं।
31और जो बातें यहाँ लिखी हैं, वे इसलिए हैं कि तुम
विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र, मसीह है।
और इसलिये कि विश्वास करते हुए उसके नाम से तुम
जीवन पाओ।

यीशु झील पर प्रकट हुआ

21 इसके बाद झील तिबिरियास पर यीशु ने शिष्यों
के सामने फिर अपने आपको प्रकट किया।

उसने अपने आपको इस तरह प्रकट किया। 2शमौन
पतरस, थोमा (जो जुड़वा कहलाता था) गलील के काना
का नतनएल, जब्दी के बेटे और यीशु के दो अन्य
शिष्य वहाँ इकट्ठे थे। 3शमौन पतरस ने उनसे कहा, "मैं
मछली पकड़ने जा रहा हूँ।"

वे उससे बोले, "हम भी तेरे साथ चल रहे हैं।" तो वे
उसके साथ चल दिये और नाव में बैठ गये। पर उस
रात वे कुछ नहीं पकड़ पाये।

4अब तक सुबह हो चुकी थी। तभी वहाँ यीशु किनारे
पर आ खड़ा हुआ। किन्तु शिष्य जान नहीं सके कि वह
यीशु है। 5फिर यीशु ने उनसे कहा, "बालकों तुम्हारे
पास कोई मछली है?" उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं।"

6फिर उसने कहा, "नाव की दाहिनी तरफ़ जाल
फेंको तो तुम्हें कुछ मिलेगा।" सो उन्होंने जाल फेंका
किन्तु बहुत अधिक मछलियों के कारण वे जाल को
वापस खेंच नहीं सके।

7फिर यीशु के प्रिय शिष्य ने पतरस से कहा, "यह तो
प्रभु है।" जब शमौन ने यह सुना कि वह प्रभु है तो
उसने अपना बाहर पहनने का वस्त्र कस लिया (क्योंकि
वह नंगा था।) और पानी में कूद पड़ा। 8किन्तु दूसरे
शिष्य मछलियों से भरा हुआ जाल खेंचते हुए नाव से
किनारे पर आये (क्योंकि वे धरती से अधिक दूर नहीं
थे, उनकी दूरी कोई सौ मीटर की थी।)

9जब वे किनारे आए उन्होंने वहाँ दहकते कोयलों
की आग जलती देखी। उस पर मछली और रोटी पकाने
को रखी थी। 10यीशु ने उनसे कहा, "तुमने अभी जो
मछलियाँ पकड़ी हैं, उनमें से कुछ ले आओ।"

11फिर शमौन पतरस नाव पर गया और 153 बड़ी
मछलियों से भरा हुआ जाल किनारे पर खींचा। जाल में
यद्यपि इतनी अधिक मछलियाँ थीं, फिर भी जाल फटा
नहीं।

12यीशु ने उनसे कहा, "यहाँ आओ और भोजन
करो।" उसके शिष्यों में से किसी को साहस नहीं हुआ
कि वह उससे पूछे, "तू कौन है?" क्योंकि वे जान गये
थे कि वह प्रभु है। 13यीशु आगे बढ़ा। उसने रोटी ली
और उन्हें दे दी और ऐसे ही मछलियाँ भी दीं। 14अब यह
तीसरा मोका था जब मरे हुओं में से जी उठने के बाद
यीशु अपने शिष्यों के सामने प्रकट हुआ था।

यीशु की पतरस से बातचीत

15जब वे भोजन कर चुके तो यीशु ने शमौन पतरस
से कहा, "यूहन्ना के पुत्र शमौन, जितना प्रेम ये मुझ से
करते हैं, क्या तू मुझसे उससे अधिक प्रेम करता है?"

पतरस ने यीशु से कहा, "हाँ प्रभु, तू जानता है कि मैं
तुझे प्रेम करता हूँ।"

यीशु ने पतरस से कहा, "मेरे मेमनो* की रखवाली
कर।"

16वह उससे दोबारा बोला, "यूहन्ना के पुत्र शमौन,
क्या तू मुझे प्रेम करता है?" पतरस ने यीशु से कहा,
"हाँ प्रभु, तू जानता है कि मैं तुझे प्रेम करता हूँ।"

यीशु ने पतरस से कहा, "मेरी भेड़ों की रखवालीकर।"

17यीशु ने फिर तीसरी बार पतरस से कहा, "यूहन्ना
के पुत्र शमौन, क्या तू मुझे प्रेम करता है?"

पतरस बहुत व्यथित हुआ कि यीशु ने उससे तीसरी
बार यह पूछा, "क्या तू मुझसे प्रेम करता है?" सो पतरस
ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, तू सब कुछ जानता है, तू
जानता है कि मैं तुझसे प्रेम करता हूँ!"

यीशु ने उससे कहा, "मेरी भेड़ों को चरा। 18मैं तुझसे
सत्य कहता हूँ, जब तू जवान था, तब तू अपनी कमर
पर फेंटा कस कर, जहाँ चाहता था, चला जाता था। पर
जब तू बूढ़ा होगा, तो हाथ पसारेगा और कोई दूसरा तुझे
बाँधकर जहाँ तू नहीं जाना चाहता, वहाँ ले जायेगा।"

19(उसने यह दर्शाने के लिए ऐसा कहा कि वह कैसी
मृत्यु से परमेश्वर की महिमा करेगा।) इतना कहकर
उसने उससे कहा, "मेरे पीछे चला आ!"

20पतरस पीछे मुड़ा और देखा कि वह शिष्य जिसे
यीशु प्रेम करता था, उनके पीछे आ रहा है। (यह वही
था जिसने भोजन करते समय उसकी छाती पर झुककर
पूछा था, "हे प्रभु, वह कौन है, जो तुझे धोखे से
पकड़वायेगा?") 21सो जब पतरस ने उसे देखा तो वह
यीशु से बोला, "हे प्रभु, इसका क्या होगा?"

22यीशु ने उससे कहा, "यदि मैं यह चाहूँ कि जब तक
मैं आऊँ यह यहीं रहे, तो तुझे क्या? तू मेरे पीछे चला
आ।"

23इस तरह यह बात भाइयों में यहाँ तक फैल गयी
कि वह शिष्य नहीं मरेगा। यीशु ने यह नहीं कहा था
कि वह नहीं मरेगा। बल्कि यही कहा था, "यदि मैं यह
चाहूँ कि जब तक मैं आऊँ, यह यहीं रहे, तो तुझे
क्या?"

24यही वह शिष्य है जो इन बातों की साक्षी देता है
और जिसने ये बातें लिखी हैं। हम जानते हैं कि उसकी
साक्षी सच है।

25यीशु ने और भी बहुत से काम किये। यदि एक-एक
करके वे सब लिखे जाते तो मैं सोचता हूँ कि जो पुस्तकें
लिखी जातीं वे इतनी अधिक होतीं कि समूची धरती पर
नहीं समा पातीं।

मेमना, भेड़ इन शब्दों को यीशु अपने अनुयायिओं के लिए प्रयोग में लाता था।

प्रेरितों के काम

लूका द्वारा लिखी गयी दूसरी पुस्तक का परिचय

1 हे थियुफिलुस, मैंने अपनी पहली पुस्तक में उन सब
कार्यों के बारे में लिखा जिन्हें प्रारंभ से ही यीशु ने
किया और 2उस दिन तक उपदेश दिया जब तक पवित्र
आत्मा के द्वारा अपने चुने हुए प्रेरितों को निर्देश दिए
जाने के बाद उसे ऊपर स्वर्ग में उठा न लिया गया।
3अपनी मृत्यु के बाद उसने अपने आपको बहुत से ठोस
प्रमाणों के साथ उनके सामने प्रकट किया कि वह
जीवित है। वह चालीस दिनों तक उनके सामने प्रकट
होता रहा तथा परमेश्वर के राज्य के विषय में उन्हें
बताता रहा। 4फिर एक बार जब वह उनके साथ भोजन
कर रहा था तो उसने उन्हें आज्ञा दी, "यरूशलेम को
मत छोड़ना बल्कि जिसके बारे में तुमने मुझसे सुना है,
परम पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरा होने की प्रतीक्षा
करना। 5क्योंकि यूहन्ना ने तो जल से बपतिस्मा दिया
था, किन्तु तुम्हें अब थोड़े ही दिनों बाद पवित्र आत्मा से
बपतिस्मा दिया जायेगा।"

यीशु का स्वर्ग में ले जाया जाना

6सो जब वे आपस में मिले तो उन्होंने उससे पूछा, " हे
प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल के राज्य की फिर से
स्थापना कर देगा?"

7उसने उनसे कहा, "उन अवसरों या तिथियों को
जानना तुम्हारा काम नहीं है, जिन्हें परम पिता ने स्वयं
अपने अधिकार से निश्चित किया है। 8बल्कि जब
पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा, तुम्हें शक्ति प्राप्त हो
जायेगी। और यरुशलेम में, समूचे यहूदिया और सामरिया
में और धरती के छोरों तक तुम मेरे साक्षी बनोगे।"

9इतना कहने के बाद उनके देखते देखते उसे स्वर्ग
में ऊपर उठा लिया गया। और फिर एक बादल ने उसे
उनकी आँखों से ओझल कर दिया। 10जब वह जा रहा
था तो वे आकाश में उसके लिये आँखें बिछाये थे। तभी
तत्काल श्वेत वस्त्र धारण किये हुए दो पुरुष उनके
बराबर आ खड़े हुए 11और कहा, "हे गलीली लोगो, तुम
वहाँ खड़े-खड़े आकाश में टकटकी क्यों लगाये हो?
यह यीशु जिसे तुम्हारे बीच से स्वर्ग में ऊपर उठा लिया
गया, जैसे तुमने उसे स्वर्ग में जाते देखा, वैसे ही वह
फिर वापस लोटेगा।"

एक नये प्रेरित का चुनाव

12फिर वे जैतून नाम के पर्वत से, जो यरूशलेम से
कोई एक किलोमीटर * की दूरी पर स्थित है, यरूशलेम
लौट आये। 13और वहाँ पहुँच कर वे ऊपर के
उस कमरे में गये जहाँ वे ठहरे हुए थे। ये लोग थे-पतरस,
यूहन्ना, याकूब, अन्द्रियास, फिलिप्पुस, थोमा, बर्तुलमै
और मत्ती, हलफई का पुत्र याकूब, उत्साही शमौन और
याकूब का पुत्र यहूदा। 14इनके साथ कुछ स्त्रियाँ, यीशु
की माता मरियम और यीशु के भाई भी थे। ये सभी
अपने आपको एक साथ प्रार्थना में लगाये रखते थे।

15फिर इन्हीं दिनों पतरस ने भाई-बंधुओं के बीच
खड़े होकर, जिनकी संख्या कोई एक सौ बीस थी,
कहा, 16"हे मेरे भाइयो, यीशु को बंदी बनाने वालों के
अगुआ यहूदा के विषय में, पवित्र शास्त्र का वह लेख
जिसे दाऊद के मुख से पवित्र आत्मा ने बहुत पहले ही
कह दिया था, उसका पूरा होना आवश्यक था। 17वह
हम में ही गिना गया था और इस सेवा में उसका भी
भाग था।"

18(इस मनुष्य ने जो धन उसे उसके नीचतापूर्ण काम
के लिये मिला था, उससे एक खेत मोल लिया किन्तु
वह पहले तो सिर के बल गिरा और फिर उसका शरीर
फट गया और उसकी आँतें बाहर निकल आईं। 19और
सभी यरूशलेम वासियों को इसका पता चल गया। इसीलिये
उनकी भाषा में उस खेत को हक्लदमा कहा गया
जिसका अर्थ है "लहू का खेत।")

20"क्योंकि भजन संहिता में यह लिखा है कि, 'उसका
घर उजड़ जाये और उसमें कोई न बसे।'

भजन संहिता 69:25

और 'उसका मुखियापन कोई दूसरा व्यक्ति ले ले।"

भजन संहिता 109:8

21'इसलिए यह आवश्यक है कि जब प्रभु यीशु हमारे
बीच था तब जो लोग सदा हमारे साथ थे, उनमें से किसी
एक को चुना जाये। 22यानी उस समय से लेकर जब से
यूहन्ना ने लोगों को बपतिस्मा देना प्रारम्भ किया था

किलोमीटर शाब्दिक सब्त के एक दिन की दूरी पर यानी सब्त के दिन विधान के द्वारा जितनी दूर चलना वैध था।

और जब तक यीशु को हमारे बीच से उठा लिया गया
था। इन लोगों में से किसी एक को उसके फिर से जी
उठने का हमारे साथ साक्षी होना चाहिये।”

23इसलिये उन्होंने दो व्यक्ति सुझाये! एक यूसुफ़ जिसे
बरसब्बा कहा जाता था (यह यूसतुस नाम से भी जाना
जाता था) और दूसरा मत्तियाह। 24फिर वे यह कहते हुए
प्रार्थना करने लगे, “हे प्रभु, तू सब के मनों को जानता
है, हमें दर्शा कि इन दोनों में से तूने किसे चुना है 25जो
एक प्रेरित के रूप में सेवा के इस पद को ग्रहण करे
जिसे अपने स्थान को जाने के लिए यहूदा छोड़ गया
था।” 26फिर उन्होंने उनके लिये पर्चियाँ डालीं और पर्ची
मत्तियाह के नाम की निकली। इस तरह वह ग्यारह
प्रेरितों के दल में सम्मिलित कर लिया गया।

पवित्र आत्मा का आगमन

2 जब पिन्तेकुस्त का दिन आया तो वे सब एक ही
स्थान पर इकटठे थे। 2तभी अचानक वहाँ आकाश
से भयंकर आँधी का सा शब्द आया। और जिस घर में
वे बैठे थे, उसमें भर गया। 3और आग की फैलती
लपटों जैसी जीभें वहाँ सामने दिखायी देने लगीं। वे आग
की विभाजित जीभें उनमें से हर एक के ऊपर आ
टिकीं। 4वे सभी पवित्र आत्मा से भावित हो उठे। और
आत्मा के द्वारा दिये गये सामर्थ्य के अनुसार वे दूसरी
भाषाओं में बोलने लगे।

5वहाँ यरुशलेम में आकाश के नीचे के सभी देशों से
आये यहूदी भक्त रहा करते थे। 6जब यह शब्द गरजा तो
एक भीड़ एकत्र हो गयी। वे लोग अचरज में पड़े थे
क्योंकि हर किसी ने उन्हें उसकी अपनी भाषा में बोलते
सुना। 7वे आश्चर्य में भर कर विस्मय के साथ बोले,
“ये बोलने वाले सभी लोग क्या गलीली नहीं हैं? 8फिर
हममें से हर एक उन्हें हमारी अपनी ही मातृभाषा में
बोलते हुए कैसे सुन रहा है? 9वहाँ पारथी, मेदी और
एलामी, मैसोपोटामिया के निवासी, यहूदिया और
कप्पूदूकिया पुन्तुस और एशिया 10फ्रिगिया और
पंफीलिया, मिस्र और साइरीन नगर के निकट लीबिया
के कुछ प्रदेशों के लोग, रोम से आये यात्री जिनमें
जन्मजात यहूदी और यहूदी धर्म ग्रहण करने वाले लोग,
क्रेती तथा अरब के रहने वाले 11हम सब परमेश्वर के
आश्चर्य पूर्ण कामों को अपनी अपनी भाषाओं में सुन
रहे हैं।” 12वे सब विस्मय में पड़ कर भौंचक्के हो
आपस में पूछ रहे थे “यह सब क्या हो रहा है?”

13किन्तु दूसरे लोगों ने प्रेरितों का उपहास करते हुए
कहा, “ये सब कुछ ज्यादा ही, नई मदिरा चढ़ा गये हैं।”

पतरस का संबोधन

14फिर उन ग्यारहों के साथ पतरस खड़ा हुआ और
ऊँचे स्वर में लोगों को सम्बोधित करने लगा, “यहूदी
साथियो और यरुशलेम के सभी निवासियो! इसका अर्थ
मुझे बताने दो। मेरे बाजों को ध्यान से सुनो। 15ये लोग
पिये हुए नहीं हैं, जैसा कि तुम समझ रहे हो। क्योंकि
अभी तो सुबह के नौ बजे हैं। 16बल्कि यह वह बात है
जिसके बारे में योएल नबी ने कहा था: 17‘परमेश्वर
कहता है: अंतिम दिनों में ऐसा होगा कि मैं सभी मनुष्यों
पर अपनी आत्मा उँड़ेल दूँगा फिर तुम्हारे पुत्र और
पुत्रियाँ भविष्यवाणी करने लगेंगे। तथा तुम्हारे युवा लोग
दर्शन पायेंगे और तुम्हारे बूढ़े लोग स्वप्न देखेंगे।

18हाँ, उन दिनों मैं अपने सेवकों और सेविकाओं पर
अपनी आत्मा उँड़ेल दूँगा और वे भविष्यवाणी करेंगे।

19मैं ऊपर आकाश में अद्भुत कर्य और नीचे धरती
पर चिन्ह दिखाऊँगा लहू, आग और धुएँ के बादल।

20प्रभु के महान और महिमामय दिन आने के पहिले
सूर्य अन्धेरे में और चाँद रक्त में बदल जायेगा।

21और तब हर उस किसी का बचाव होगा जो प्रभु
का नाम पुकारेगा।’ *योएल 2:28-32*

22“हे इस्राएल के लोगों, इन वचनों को सुनो: यीशु
नासरी एक ऐसा पुरुष था जिसे परमेश्वर ने तुम्हारे
सामने अद्भुत कर्मों, आश्चर्यो और चिह्नों समेत-जिन्हें
परमेश्वर ने उसके द्वारा किया था-तुम्हारे बीच प्रकट
किया। जैसा कि तुम स्वयं जानते ही हो। 23इस पुरुष को
परमेश्वर की निश्चित योजना और निश्चित पूर्व ज्ञान
के अनुसार तुम्हारे हवाले कर दिया गया। और तुमने
नीच मनुष्यों की सहायता से उसे क्रूस पर चढ़ाया और
कीलें ठुकवा कर मार डाला। 24किन्तु परमेश्वर ने उसे
मृत्यु की वेदना से मुक्त करते हुए फिर से जिला दिया।
क्योंकि उसके लिये यह सम्भव ही नहीं था कि मृत्यु
उसे अपने वश में रख पाती। 25जैसा कि दाऊद ने
उसके विषय में कहा है:

‘मैंने प्रभु को सदा ही अपने सामने देखा है। वह मेरी
दाहिनी ओर विराजता है, ताकि मैं डिग न जाऊँ।

26इससे मेरा हृदय प्रसन्न है और मेरी वाणी हर्षित है;
मेरी देह भी आशा में जियेगी। 27क्योंकि तू मेरी आत्मा
को अधोलोक में नहीं छोड़ देगा। तू अपने पवित्र जन
को क्षय की अनुभूति नहीं होने देगा।

28तू ने मुझे जीवन की राह का ज्ञान कराया है।
अपनी उपस्थिति से तू मुझे आनन्द से पूर्ण कर देगा।’
भजन संहिता 16:8-11

29“हे मेरे भाइयों! मैं विश्वास के साथ आदि पुरुष
दाऊद के बारे में तुमसे कह सकता हूँ कि उसकी मृत्यु
हो गयी और उसे दफ़ना दिया गया। और उसकी कब्र
हमारे यहाँ आज तक मौजूद है। 30किन्तु क्योंकि वह
एक नबी था और जानता था कि परमेश्वर ने शपथपूर्वक
उसे वचन दिया है कि वह उसके वंश में से किसी एक

को उसके सिंहासन पर बैठायेगा। **31**इसलिये आगे जो
घटने वाला है, उसे देखते हुए उसने जब यह कहा था:

'उसे अधोलोक में नहीं छोड़ा गया और न ही उसकी
देह ने सड़ने गलने का अनुभव किया'

तो उसने मसीह के फिर से जी उठने के बारे में ही
कहा था। **32**इसी यीशु को परमेश्वर ने पुनर्जीवित कर
दिया। इस तथ्य के हम सब साक्षी हैं। **33**परमेश्वर के
दाहिने हाथ सब से ऊँचा पद पाकर यीशु ने परम पिता
से प्रतिज्ञा के अनुसार पवित्र आत्मा प्राप्त की और फिर
उसने इस आत्मा को उँडेल दिया जिसे अब तुम देख रहे
हो और सुन रहे हो। **34**दाऊद क्योंकि स्वर्ग में नहीं गया
सो वह स्वयं कहता है:

'प्रभु (परमेश्वर) ने मेरे प्रभु से कहा: मेरे दाहिने
बैठ, जब तक मैं

35तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों तले पैर रखने की
चौकी की तरह न कर दूँ।' *भजन संहिता 110:1*

36"इसलिये समूचा इस्राएल निश्चय-पूर्वक जान ले
कि परमेश्वर ने इस यीशु को जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ा
दिया था, 'प्रभु' और 'मसीह' दोनों ही ठहराया था!"

37लोगों ने जब यह सुना तो वे व्याकुल हो उठे और
पतरस तथा अन्य प्रेरितों से कहा, "तो बंधुओ, हमें क्या
करना चाहिये?"

38पतरस ने उनसे कहा, "मन फिरावओ और अपने
पापों की क्षमा पाने के लिये तुममें से हर एक को यीशु
मसीह के नाम से बपतिस्मा लेना चाहिये। फिर तुम
पवित्र आत्मा का उपहार पा जाओगे। **39**क्योंकि यह
प्रतिज्ञा तुम्हारे लिये, तुम्हारी संतानों के लिए और उन
सब के लिये है जो बहुत दूर स्थित हैं। यह प्रतिज्ञा उन
सबके लिए है जिन्हें हमारा प्रभु परमेश्वर अपने पास
बुलाता है। **40**और बहुत से वचनों द्वारा उसने उन्हें
चेतावनी दी और आग्रह के साथ उनसे कहा "इस
कुटिल पीढ़ी से अपने आपको बचाये रखो।" **41**सो जिन्होंने
उसके संदेश को ग्रहण किया, उन्हें बपतिस्मा दिया गया।
इस प्रकार उस दिन उनके समूह में कोई तीन हज़ार
व्यक्ति और जुड़ गये। **42**उन्होंने प्रेरितों के उपदेश,
संगत,रोटी के तोड़ने और प्रार्थनाओं के प्रति अपने को
समर्पित कर दिया।

विश्वासियों का साझा जीवन

43हर व्यक्ति पर भय मिश्रित विस्मय का भाव छाया
रहा और प्रेरितों द्वारा आश्चर्य कर्म और चिह्न प्रकट
किये जाते रहे। **44**सभी विश्वासी एक साथ रहते थे और
उनके पास जो कुछ था, उसे वे सब आपस में बाँट लेते
थे। **45**उन्होंने अपनी सभी वस्तुएँ और सम्पत्ति बेच डाली
और जिस किसी को आवश्यकता थी, उन सब में उसे
बाँट दिया। **46**मंदिर में एक समूह के रूप में वे हर दिन
मिलते-जुलते रहे। वे अपने घरों में रोटी को विभाजित
करते और उदार मन से आनन्द के साथ, मिल-जुलकर
खाते। **47**सभी लोगों की सद्भावनाओं का आनन्द लेते
हुए वे प्रभु की स्तुति करते। और प्रतिदिन परमेश्वर,
जिन्हें उद्धार मिल जाता, उन्हें उनके दल में और जोड़
देता।

लँगड़े भिखारी का अच्छा किया जाना

3 दोपहर बाद तीन बजे प्रार्थना के समय पतरस और
यूहन्ना मंदिर जा रहे थे। **2**तभी एक ऐसे व्यक्ति को
जो जन्म से ही लँगड़ा था, ले जाया जा रहा था। वे हर
दिन उसे मन्दिर के सुन्दर नामक द्वार पर बैठा दिया
करते थे। ताकि वह मंदिर में जाने वाले लोगों से भीख
में पैसे माँग लिया करे। **3**इस व्यक्ति ने जब देखा कि
यूहन्ना और पतरस मंदिर में प्रवेश करने ही वाले हैं तो
उसने उनसे पैसे माँगे। **4**यूहन्ना के साथ पतरस उसकी
ओर एकटक देखते हुए बोला, "हमारी तरफ़ देख।" **5**सो
उसने उनसे कुछ मिल जाने की आशा करते हुए उनकी
ओर देखा। **6**किन्तु पतरस ने कहा, "मेरे पास सोना या
चाँदी तो है नहीं किन्तु जो कुछ है, मैं तुझे दे रहा हूँ।
नासरी यीशु मसीह के नाम से खड़ा हो जा और चल
दे।" **7**फिर उसका दाहिना हाथ पकड़ कर उसने उसे
उठाया। तुरन्त उसके पैरों और टखनों में जान आ गयी।
8और वह अपने पैरों के बल उछला और चल पड़ा। वह
उछलते कूदते चलता और परमेश्वर की स्तुति करता
उनके साथ ही मंदिर में गया। **9**सभी लोगों ने उसे चलते
और परमेश्वर की स्तुति करते देखा। **10**लोगों ने पहचान
लिया कि यह तो वही है जो मंदिर के सुन्दर द्वार पर
बैठा भीख माँगा करता था। उसके साथ जो कुछ घटा
था उस पर वे आश्चर्य और विस्मय से भर उठे।

पतरस का प्रवचन

11वह व्यक्ति अभी पतरस और यूहन्ना के साथ-साथ
ही था। सो सभी लोग अचरज में भर कर उस स्थान
पर उनके पास दौड़े-दौड़े आये जो सुलेमान की डयोढ़ी
कहलाता था। **12**पतरस ने जब यह देखा तो वह लोगों से
बोला, "हे इस्राएल के लोगो, तुम इस बात पर चकित
क्यों हो रहे हो? ऐसे घूर घूर कर हमें क्यों देख रहे हो,
जैसे मानो हमने ही अपनी शक्ति या भक्ति के बल पर
इस व्यक्ति को चलने फिरने योग्य बना दिया है। **13**इब्राहीम,
इसहाक और याकूब के परमेश्वर, हमारे पूर्वजों के
परमेश्वर ने अपने सेवक यीशु को महिमा से मंडित
किया। और तुमने उसे मरवा डालने को पकड़वा दिया।
और फिर पिलातुस के द्वारा उसे छोड़ दिये जाने का
निश्चय करने पर पिलातुस के सामने ही तुमने उसे
नकार दिया। **14**उस पवित्र और नेक बंदे को तुमने
अस्वीकार किया और यह माँगा कि एक हत्यारे को

तुम्हारे लिये छोड़ दिया जाये। 15लोगों को जीवन की राह
दिखाने वाले को तुमने मार डाला किन्तु परमेश्वर ने
मरे हुओं में से उसे फिर से जिला दिया है। हम इसके
साक्षी हैं। 16क्योंकि हम यीशु के नाम में विश्वास करते
हैं इसलिये यह उसका नाम ही है जिसने इस व्यक्ति में
जान फूँकी है जिसे तुम देख रहे हो और जानते हो। हाँ,
उसी विश्वास ने जो यीशु से प्राप्त होता है, तुम सब के
सामने इस व्यक्ति को पूरी तरह चंगा किया है।

17"हे भाइयो, अब मैं जानता हूँ कि जैसे अनजाने में
तुमने वैसा किया, वैसे ही तुम्हारे नेताओं ने भी किया।
18परमेश्वर ने अपने सब भविष्यवक्ताओं के मुख से
पहले ही कहलवा दिया था कि उसके मसीह को यातनाएँ
भोगनी होंगी। उसने उसे इस तरह पूरा किया। 19इसलिये
तुम अपना मन फिराओ और परमेश्वर की ओर लौट
आओ ताकि तुम्हारे पाप धुल जायें। 20ताकि प्रभु की
उपस्थिति में आत्मिक शांति का समय आ सके और
प्रभु तुम्हारे लिये मसीह को भेजे जिसे वह तुम्हारे लिये
चुन चुका है, यानी यीशु को। 21मसीह को उस समय
तक स्वर्ग में रहना होगा जब तक सभी बातें पहले जैसी
न हो जायें जिनके बारे में बहुत पहले से ही परमेश्वर ने
अपने पवित्र नबियों के मुख से बता दिया था। 22मूसा ने
कहा था, 'प्रभु परमेश्वर तुम्हारे लिये, तुम्हारे अपने
लोगों में से ही एक मेरे जैसा नबी खड़ा करेगा। वह
तुमसे जो कुछ कहे, तुम उसी पर चलना। 23और जो
कोई व्यक्ति उस नबी की बातों को नहीं सुनेगा, लोगों में
से उसे पूरी तरह नष्ट कर दिया जायेगा।'* 24हाँ!
शमूएल और उसके बाद आये सभी नबियों ने जब कभी
कुछ कहा तो इन ही दिनों की घोषणा की। 25और तुम
तो उन नबियों और उस करार के उत्तराधिकारी हो
जिसे परमेश्वर ने तुम्हारे पूर्वजों के साथ किया था।
उसने इब्राहीम से कहा था, 'तेरी संतानों से धरती के
सभी लोग आशीर्वाद पायेंगे।'* 26परमेश्वर ने जब अपने
सेवक को पुनर्जीवित किया तो पहले-पहले उसे तुम्हारे
पास भेजा ताकि तुम्हें तुम्हारे बुरे रास्तों से हटा कर
आशीर्वाद दे।"

पतरस और यूहन्ना: यहूदी सभा के सामने

4 अभी पतरस और यूहन्ना लोगों से बात कर ही रहे
थे कि याजक, मंदिर के सिपाहियों का मुखिया
और कुछ सदूकी उनके पास आये। 2वे उनसे इस बात
पर चिढ़े हुए थे कि पतरस और यूहन्ना लोगों को उपदेश
देते हुए यीशु के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा
पुनरुत्थान का प्रचार कर रहे थे। 3सो उन्होंने उन्हें बंदी
बना लिया और क्योंकि उस समय साँझ हो चुकी थी,
इसलिये अगले दिन तक हिरासत में रख छोड़ा। 4किन्तु
जिन्होंने वह संदेश सुना उनमें से बहुतों ने उस पर
विश्वास किया और इस प्रकार उनकी संख्या लगभग
पाँच हजार पुरुषों तक जा पहुँची। 5अगले दिन उनके
नेता, बुजुर्ग और यहूदी धर्मशास्त्री यरूशलेम में इकट्ठे
हुए। 6महायाजक हन्ना, कैफ़ा, यूहन्ना, सिकन्दर और
महायाजक के परिवार के सभी लोग भी वहाँ उपस्थित
थे। 7वे इन प्रेरितों को उनके सामने खड़ा करके पूछने
लगे, "तुम ने किस शक्ति या अधिकार से यह कार्य
किया?"

8फिर पवित्र आत्मा से भावित होकर पतरस ने उनसे
कहा, "हे लोगों के नेताओं और बुजुर्ग नेताओं! 9यदि
आज हमसे एक लँगड़े व्यक्ति के साथ की गयी भलाई
के बारे में यह पूछताछ की जा रही है कि वह अच्छा
कैसे हो गया 10तो तुम सब को और इस्राएल के लोगों
को यह पता हो जाना चाहिये कि यह काम नासरी यीशु
मसीह के नाम से हुआ है जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ा दिया
और जिसे परमेश्वर ने मरे हुओं में से पुनर्जीवित कर
दिया है। उसी के द्वारा पूरी तरह से ठीक हुआ यह
व्यक्ति तुम्हारे सामने खड़ा है। 11यह यीशु वही

'वह पत्थर जिसे तुम राजमिस्त्रियों ने नाकारा ठहराया
था, वही अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पत्थर बन गया है।'

भजन संहिता 118:22

12किसी भी दूसरे में उद्धार निहित नहीं है। क्योंकि
इस आकाश के नीचे लोगों को कोई दूसरा ऐसा नाम
नहीं दिया गया है जिसके द्वारा हमारा उद्धार हो पाये।"
13जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना की निर्भीकता को
देखा और यह समझा कि वे बिना पढ़े लिखे और
साधारण से मनुष्य हैं तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। फिर
वे जान गये कि ये यीशु के साथ रह चुके लोग हैं।
14और क्योंकि वे उस व्यक्ति को जो चंगा हुआ था, उन
ही के साथ खड़ा देख पा रहे थे सो उनके पास कहने
को कुछ नहीं रहा। 15उन्होंने उनसे यहूदी महासभा से
निकल जाने को कहा और फिर वे यह कहते हुए
आपस में विचार-विमर्श करने लगे, 16"इन लोगों के
साथ कैसा व्यवहार किया जाये? क्योंकि यरूशलेम में
रहने वाला हर कोई जानता है कि इनके द्वारा एक
उल्लेखनीय आश्चर्यकर्म किया गया है और हम उसे
नकार भी नहीं सकते। 17किन्तु हम इन्हें चेतावनी दे दें
कि वे इस नाम की चर्चा किसी और व्यक्ति से न करें
ताकि लोगों में इस बात को और फैलने से रोका जा
सके।"

18सो उन्होंने उन्हें भीतर बुलाया और आज्ञा दी कि
यीशु के नाम पर वे न तो किसी से कोई ही चर्चा करें
और न ही कोई उपदेश दें। 19किन्तु पतरस और यूहन्ना
ने उन्हें उत्तर दिया, "तुम ही बताओ, क्या परमेश्वर के

"प्रभु परमेश्वर ... दिया जायेगा" व्यवस्था. 18:15,19

"तेरी ... पायेंग" उत्पत्ति 22:18; 26:24

सामने हमारे लिये यह उचित होगा कि परमेश्वर की न
सुन कर हम तुम्हारी सुनें? **20**हम, जो कुछ हमने देखा
है और सुना है, उसे बताने से नहीं चूक सकते।" **21**फिर
उन्होंने उन्हें और धमकाने के बाद छोड़ दिया। उन्हें
दण्ड देने का उन्हें कोई रास्ता नहीं मिल सका क्योंकि
जो घटना घटी थी, उसके लिये सभी लोग परमेश्वर की
स्तुति कर रहे थे। **22**जिस व्यक्ति पर अच्छा करने का
यह आश्चर्य कर्म किया गया था, उसकी आयु चालीस
साल से ऊपर थी।

पतरस और यूहन्ना की वापसी

23जब उन्हें छोड़ दिया गया तो वे अपने ही लोगों के
पास आ गये और उनसे जो कुछ प्रमुख याजकों और
बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं ने कहा था, वह सब उन्हें कह
सुनाया। **24**जब उन्होंने यह सुना तो मिल कर ऊँचे स्वर
में वे परमेश्वर को पुकारते हुए बोले, "स्वामी, तूने ही
आकाश, धरती, समुद्र और उनके भीतर जो कुछ है,
उसकी रचना की है। **25**तूने ही पवित्र आत्मा के द्वारा
अपने सेवक, हमारे पूर्वज दाऊद के मुख से कहा था:

'इन जातियों ने जाने क्यों अपना अहंकार दिखाया?
लोगों ने व्यर्थ ही षड़यन्त्र क्यों रच डाले?
26धरती के राजाओं ने, उसके विरुद्ध युद्ध करने
को तैयार किया। और शासक प्रभु और उसके मसीह
के–विरोध में एकत्र हुए।' *भजन संहिता 2:1–2*

27हाँ, हेरोदेस और पुन्तियुस पिलातुस भी इस नगर में
ग़ैर यहूदियों और इस्राएलियों के साथ मिल कर तेरे
पवित्र सेवक यीशु के विरोध में, जिसे तूने मसीह के
रूप में अभिषिक्त किया था, वास्तव में एकजुट हो गये
थे। **28**वे इकट्ठे हुए ताकि तेरी शक्ति और इच्छा के
अनुसार जो कुछ पहले ही निश्चित हो चुका था, वह
पूरा हो। **29**और अब हे प्रभु, उनकी धमकियों पर ध्यान
दे और अपने सेवकों को निर्भयता के साथ 'तेरे वचन'
सुनाने की शक्ति दे **30**जबकि चंगा करने के लिये तू
अपना हाथ बढ़ाये और चिह्न तथा अदभुत कर्म तेरे
पवित्र सेवकों द्वारा यीशु के नाम पर किये जा रहे हों।"

31जब उन्होंने प्रार्थना पूरी की तो जिस स्थान पर वे
एकत्र थे, वह हिल उठा और उन सब में 'पवित्र आत्मा'
समा गया। और वे निर्भयता के साथ परमेश्वर के
वचन बोलने लगे।

विश्वासियों का सहयोगी जीवन

32विश्वासियों का यह समूचा दल एक मन और एक
तन था। कोई भी यह नहीं कहता था कि उसकी कोई
भी वस्तु उसकी अपनी है। उनके पास जो कुछ होता,
उस सब कुछ को वे बाँट लेते थे। **33**और वे प्रेरित
समूची शक्ति के साथ प्रभु यीशु के फिर से जी उठने
की साक्षी दिया करते थे। परमेश्वर का महान बरदान
उन सब पर बना रहता। **34**उस दल में से किसी को भी
कोई कमी नहीं थी। क्योंकि जिस किसी के पास खेत
या घर होते, वे उन्हें बेच दिया करते थे और उससे जो
धन मिलता, उसे लाकर **35**प्रेरितों के चरणों में रख देते।
और जिसको जितनी आवश्यकता होती, उसे उतना
धन दे दिया जाता था। **36**उदाहरण के लिये युसूफ़ नाम
का, साइप्रस में पैदा हुआ, एक लेवी था जिसे प्रेरित
बरनाबास [अर्थात शान्ति का पुत्र] भी कहा करते थे।
37उसने एक खेत बेच दिया जिसका वह मालिक था
और उस धन को लाकर प्रेरितों के चरणों पर रख
दिया।

हनन्याह और सफ़ीरा

5 हनन्याह नाम के एक व्यक्ति और उसकी पत्नी
सफ़ीरा ने मिलकर अपनी सम्पत्ति का एक हिस्सा
बेच दिया। **2**और अपनी पत्नी की जानकारी में उसने
इसमें से कुछ धन बचा लिया। और कुछ धन प्रेरितों के
चरणों में रख दिया। **3**इस पर पतरस ने कहा, "हे
हनन्याह, शैतान को तूने अपने मन में यह बात क्यों
डालने दी कि तूने पवित्र आत्मा से झूठ बोला और
धरती को बेचने से मिले धन में से थोड़ा बचा कर रख
लिया? **4**उसे बेचने से पहले क्या वह तेरी ही नहीं थी?
और जब तूने उसे बेच दिया तो वह धन क्या तेरे ही
अधिकार में नहीं था? तूने इस बात की क्यों सोची? तूने
मनुष्यों से नहीं, परमेश्वर से झूठ बोला है।" **5**हनन्याह
ने जब ये शब्द सुने तो वह पछाड़ खाकर गिर पड़ा और
दम तोड़ दिया। जिस किसी ने भी इस विषय में सुना, सब
पर गहरा भय छा गया। **6**फिर जवान लोगों ने उठ कर
उसे कफ़न में लपेटा और बाहर ले जाकर गाड़ दिया।

7कोई तीन घण्टे बाद, जो कुछ घटा था, उससे अनजान
उसकी पत्नी भीतर आयी। **8**पतरस ने उससे कहा,
"बता, तूने तेरे खेत क्या इतनें में ही बेचे थे?"

सो उसने कहा, "हाँ। इतने में ही।" **9**तब पतरस ने
उससे कहा, "तुम दोनों प्रभु की आत्मा की परीक्षा लेने
को सहमत क्यों हुए? देख तेरे पति को दफ़नाने वालों
के पैर दरवाज़े तक आ पहुँचे हैं और वे तुझे भी उठा ले
जायेंगे।" **10**तब वह उसके चरणों पर गिर पड़ी और मर
गयी। फिर युवक लोग भीतर आये और मरा पा कर
उसे उठा ले गये और उसके पति के पास ही उसे दफ़ना
दिया। **11**सो समूची कलीसिया और जिस किसी ने भी
इन बातों को सुना, उन सब पर गम्भीर भय छा गया।

प्रमाण

12प्रेरितों द्वारा लोगों के बीच बहुत से चिह्न प्रकट हो
रहे थे और आश्चर्य कर्म किये जा रहे थे। वे सभी
सुलेमान के दालान में एकत्र थे। **13**उनमें सम्मिलित होने
का साहस कोई नहीं करता था। पर लोग उनकी प्रशंसा

अवश्य करते थे। 14उधर प्रभु पर विश्वास करने वाले
स्त्री और पुरुष अधिक से अधिक बढ़ते जा रहे थे।
15परिणामस्वरूप लोग अपने बीमारों को लाकर
चारपाइयों और बिस्तरों पर गलियों में लिटाने लगे ताकि
जब पतरस उधर से निकले तो उनमें से कुछ पर कम
से कम उसकी छाया ही पड़ जाये। 16यरूशलेम के
आसपास के नगरों से अपने बीमारों और दुष्टात्माओं से
पीड़ित लोगों को लेकर ठट के ठट लोग आने लगे।
और वे सभी अच्छे हो जाया करते थे।

यहूदियों का प्रेरितों को रोकने का जतन

17फिर महायाजक और उसके साथी, यानी सदूकियों
का दल, उनके विरोध में खड़े हो गये। वे ईर्ष्या से भरे
हुए थे। 18सो उन्होंने प्रेरितों को बंदी बना लिया और
उन्हें सार्वजनिक बंदीगृह में डाल दिया। 19किन्तु रात के
समय प्रभु के एक स्वर्गदूत ने बंदीगृह के द्वार खोल
दिये। उसने उन्हें बाहर ले जाकर कहा,

20"जाओ, मंदिर में खड़े हो जाओ और इस नये
जीवन के विषय में लोगों को सब कुछ बताओ।"

21जब उन्होंने यह सुना तो भोर के तड़के वे मंदिर में
प्रवेश कर गये और उपदेश देने लगे।

फिर जब महायाजक और उसके साथी वहाँ पहुचे तो
उन्होंने यहूदी संघ तथा इस्राएल के बुज़ुर्गो की पूरी सभा
बुलायी। फिर उन्होंने बंदीगृह से प्रेरितों को बुलवा भेजा।
22किन्तु जब अधिकारी बंदीगृह में पहुँचे तो वहाँ उन्हें
प्रेरित नहीं मिले। उन्होंने लौट कर इसकी सूचना दी
और 23कहा, "हमें बंदीगृह की सुरक्षा के ताले लगे हुए
और द्वारों पर सुरक्षा-कर्मी खड़े मिले थे किन्तु जब
हमने द्वार खोले तो हमें भीतर कोई नहीं मिला।" 24मंदिर
के रखवालों के मुखिया ने और महायाजकों ने जब ये
शब्द सुने तो वे उनके बारे में चक्कर में पड़ गये और
सोचने लगे, "अब क्या होगा।" 25फिर किसी ने भीतर
आकर उन्हें बताया, "जिन लोगों को तुमने जेल में डाल
दिया था, वे मंदिर में खड़े लोगों को उपदेश दे रहे हैं।"

26सो मंदिर के सुरक्षा-कर्मियों का मुखिया अपने
अधिकारियों के साथ वहाँ गया और प्रेरितों को बिना
बल प्रयोग किये वापस ले आया क्योंकि उन्हें डर था
कि कहीं लोग उन्हें (मंदिर के सुरक्षाकर्मियों को) पत्थर
न मारें। 27वे उन्हें भीतर ले आये और सर्वोच्च यहूदी
सभा के सामने खड़ा कर दिया। फिर महायाजक ने
उन से पूछते हुए कहा, 28"हमने इस नाम से उपदेश न
देने के लिए तुम्हें कठोर आदेश दिया था और तुमने
फिर भी समूचे यरुशलेम को अपने उपदेशों से भर
दिया है। और तुम इस व्यक्ति की मृत्यु का अपराध हम
पर लादना चाहते हो।"

29पतरस और दूसरे प्रेरितों ने उत्तर दिया, "हमें मनुष्यों
की अपेक्षा परमेश्वर की बात माननी चाहिये। 30उस
यीशु को हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने मृत्यु से फिर
जिला कर खड़ा कर दिया है जिसे एक पेड़ पर लटका
कर तुम लोगों ने मार डाला था। 31उसे ही प्रमुख और
उद्धारकर्ता के रूप में महत्त्व देते हुए परमेश्वर ने अपने
दाहिने स्थित किया है ताकि इस्राएलियों को मन फिराव
और पापों की क्षमा प्रदान की जा सके। 32इन सब बातों
के हम साक्षी हैं और वैसे ही वह पवित्र आत्मा भी है
जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है जो उसकी आज्ञा का
पालन करते हैं।"

33जब उन्होंने यह सुना तो वे आग बबूला हो उठे
और उन्हें मार डालना चाहा। 34किन्तु महासभा में से
एक गमलिएल नामक फरीसी, जो धर्मशास्त्र का शिक्षक
भी था, तथा जिसका सब लोग आदर करते थे, खड़ा
हुआ और आज्ञा दी कि इन्हें थोड़ी देर के लिये बाहर
कर दिया जाये। 35फिर वह उनसे बोला, "इस्राएल के
पुरुषों, तुम इन लोगों के साथ जो कुछ करने पर उतारू
हो, उसे सोच समझ कर करना। 36कुछ समय पहले
अपने आपको बड़ा घोषित करते हुए थियूदास प्रकट
हुआ था। और कोई चार सौ लोग उसके पीछे भी हो
लिये थे, पर वह मार डाला गया और उसके सभी
अनुयायी तितर-बितर हो गये। परिणाम कुछ नहीं
निकला।

37उसके बाद जनगणना के समय गलील का रहने
वाला यहूदा प्रकट हुआ। उसने भी कुछ लोगों को अपने
पीछे आकर्षित कर लिया था। वह भी मारा गया। उसके
भी सभी अनुयायी इधर उधर बिखर गये।

38इसीलिए इस वर्तमान विषय में मैं तुमसे कहता हूँ,
इन लोगों से अलग रहो, इन्हें ऐसे ही अकेले छोड़ दो
क्योंकि इनकी यह योजना या यह काम मनुष्य की ओर
से है तो स्वयं समाप्त हो जायेगा। 39किन्तु यदि यह
परमेश्वर की ओर से है तो तुम उन्हें रोक नहीं पाओगे।
और तब हो सकता है तुम अपने आपको ही परमेश्वर
के विरोध में लड़ते पाओ।" उन्होंने उसकी सलाह मान
ली। 40और प्रेरितों को भीतर बुला कर उन्होंने कोड़े
लगवाये और यह आज्ञा देकर कि वे यीशु के नाम की
कोई चर्चा न करें, उन्हें चले जाने दिया। 41सो वे प्रेरित
इस बात का आनन्द मनाते हुए कि उन्हें उसके नाम के
लिये अपमान सहने योग्य गिना गया है, यहूदी महासभा
से चले गये। 42फिर मंदिर और घर-घर में हर दिन इस
सुसमाचार का कि यीशु मसीह है उपदेश देना और
प्रचार करना उन्होंने कभी नहीं छोड़ा।

विशेष कार्य के लिए सात पुरुषों का चुना जाना

6 उन्हीं दिनों जब शिष्यों की संख्या बढ़ रही थी, तो
यूनानी बोलने वाले और इब्रानी बोलने वाले यहूदियों
में एक विवाद उठ खड़ा हुआ क्योंकि वस्तुओं के
दैनिक वितरण में उनकी विधवाओं के साथ उपेक्षा

बरती जा रही थी। 2सो बारहों प्रेरितों ने शिष्यों की
समूची मण्डली को एक साथ बुला कर कहा, "हमारे
लिये परमेश्वर के वचन की सेवा को छोड़ कर भोजन
का प्रबन्ध करना उचित नहीं है। 3सो बंधुओ अच्छी
साख वाले पवित्र आत्मा और सूझबूझ से पूर्ण सात पुरुषों
को अपने में से चुन लो। हम उन्हें इस काम का
अधिकारी बना देंगे। 4और अपने आपको प्रार्थना और
वचन की सेवा के कामों में समर्पित रखेंगे।"

5इस सुझाव से सारी मण्डली बहुत प्रसन्न हुई। सो
उन्होंने विश्वास और पवित्र आत्मा से युक्त स्तिफनुस
नाम के व्यक्ति को और फिलिप्पुस, प्रखुरूस, नीकानोर,
तिमोन, परमिनास और अंताकिया के निकुलाऊस को,
जिसने यहूदी धर्म अपना लिया था, चुन लिया। 6और
इन लोगों को फिर उन्होंने प्रेरितों के सामने उपस्थित
कर दिया। प्रेरितों ने प्रार्थना की और उन पर हाथ रखे।
7इसप्रकार परमेश्वर का वचन फैलने लगा और यरुशलेम
में शिष्यों की संख्या बहुत अधिक बढ़ गयी। याजकों
का एक बड़ा समूह भी इस मत को मानने लगा था।

यहूदियों द्वारा स्तिफनुस का विरोध

8स्तिफनुस एक ऐसा व्यक्ति था जो अनुग्रह और
सामर्थ्य से परिपूर्ण था। वह लोगों के बीच बड़े-बड़े
आश्चर्य कर्म और अद्भुत चिन्ह प्रकट किया करता
था। 9किन्तु तथाकथित स्वतन्त्र किये गये लोगों के
सभागार के कुछ लोग जो कुरेनी और सिकन्दरिया से
तथा किलिकिया और एशिया से आये यहूदी थे, वे
उसके विरोध में वाद-विवाद करने लगे। 10किन्तु वह
जिस बुद्धिमानी और आत्मा से बोलता था, वे उसके
सामने नहीं ठहर सके। 11फिर उन्होंने कुछ लोगों को
लालच देकर कहलवाया, "हमने मूसा और परमेश्वर
के विरोध में इसे अपमानपूर्ण शब्द कहते सुना है।"
12इस तरह उन्होंने जनता को, बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं को
और यहूदी धर्मशास्त्रियों को भड़का दिया। फिर उन्होंने
आकर उसे पकड़ लिया और सर्वोच्च यहूदी महासभा
के सामने ले आये।

13उन्होंने वे झूठे गवाह पेश किये जिन्होंने कहा, "यह
व्यक्ति इस पवित्र स्थान और व्यवस्था के विरोध में
बोलते कभी रुकता ही नहीं है। 14हमने इसे कहते सुना
है कि यह नासरी यीशु इस स्थान को नष्ट-भ्रष्ट कर
देगा और मूसा ने जिन रीति रिवाजों को हमें दिया है
उन्हें बदल देगा।"

15फिर सर्वोच्च यहूदी महासभा में बैठे हुए सभी लोगों
ने जब उसे ध्यान से देखा तो पाया कि उसका मुख
किसी स्वर्गदूत के मुख के समान दिखाई दे रहा था।

स्तिफनुस का भाषण

7 फिर महायाजक ने कहा, "क्या यह बात ऐसे ही
है?" 2उसने उत्तर दिया, "बंधुओं और पितृ तुल्य
बुज़ुर्गों! मेरी बात सुनो। हारान में रहने से पहले अभी
जब हमारा पिता इब्राहीम मैसोपोटामिया में ही था, तो
महिमामय परमेश्वर ने उसे दर्शन दिये 3और कहा,
'अपने देश और अपने लोगों को छोड़कर तू उस धरती
पर चला जा, जिसे तुझे मैं दिखाऊँगा।' 4सो वह कसदियों
की धरती को छोड़ कर हारान में जा बसा जहाँ से
उसके पिता की मृत्यु के बाद परमेश्वर ने उसे इस देश
में आने की प्रेरणा दी जहाँ तुम अब रह रहे हो। 5परमेश्वर
ने यहाँ उसे उत्तराधिकार में कुछ नहीं दिया, डग भर
धरती तक नहीं। यद्यपि उसके कोई संतान नहीं थी
किन्तु परमेश्वर ने उससे प्रतिज्ञा की कि यह देश वह
उसे और उसके वंशजों को उनकी सम्पत्ति के रूप में
देगा। 6परमेश्वर ने उससे यह भी कहा, 'तेरे वंशज कहीं
विदेश में परदेसी होकर रहेंगे और चार सौ साल तक
उन्हें दास बनाकर, उनके साथ बहुत बुरा बर्ताव किया
जाएगा।' 7परमेश्वर ने कहा, 'दास बनाने वाली उस
जाति को मैं दण्ड दूँगा और इसके बाद वे उस देश से
बाहर आ जायेंगे और इस स्थान पर वे मेरी सेवा
करेंगे।' 8परमेश्वर ने इब्राहीम को ख़तने की मुद्रा से
मुद्रित करके करार-प्रदान किया। और इस प्रकार वह
इसहाक का पिता बना। उसके जन्म के बाद आठवें
दिन उसने उसका ख़तना किया। फिर इसहाक से याकूब
और याकूब से बारह कुलों के आदि पुरुष पैदा हुए।

9"वे आदि पुरुष यूसुफ़ से ईर्ष्या रखते थे। सो उन्होंने
उसे मिस्र में दास बनने के लिए बेच दिया। किन्तु
परमेश्वर उसके साथ था 10और उसने उसे सभी विपत्तियों
से बचाया। परमेश्वर ने यूसुफ़ को विवेक दिया और
उसे इस योग्य बनाया जिससे वह मिस्र के राजा फ़ैरो का
अनुग्रह पात्र बन सका। फ़ैरो ने उसे मिस्र का राज्यपाल
और अपने घर-बार का अधिकारी नियुक्त किया।
11फिर समूचे मिस्र और कनान देश में अकाल पड़ा
और बड़ा संकट छा गया। हमारे पूर्वज खाने को कुछ
नहीं पा सके। 12जब याकूब ने सुना कि मिस्र में अन्न है,
तो उसने हमारे पूर्वजों को वहाँ भेजा-यह पहला अवसर
था। 13उनकी दूसरी यात्रा के अवसर पर यूसुफ़ ने
अपने भाइयों को अपना परिचय दे दिया और तभी फ़ैरो
को भी यूसुफ़ के परिवार की जानकारी मिली। 14सो
यूसुफ़ ने अपने पिता याकूब और परिवार के सभी
लोगों को, जो कुल मिलाकर पिचहत्तर थे, बुलवा भेजा।
15तब याकूब मिस्र आ गया और उसने वहाँ वैसे ही प्राण
त्यागे जैसे हमारे पूर्वजों ने वहाँ प्राण त्यागे थे। 16उनके
शव वहाँ से वापस सेकेम ले जाये गये जहाँ उन्हें मकबरे
में दफ़ना दिया गया। यह वही मकबरा था जिसे इब्राहीम
ने हमोर के बेटों से कुछ धन देकर खरीदा था।

17"जब परमेश्वर ने इब्राहीम को जो वचन दिया था,
उसके पूरा होने का समय निकट आया तो मिस्र में
हमारे लोगों की संख्या बहुत अधिक बढ़ गयी।

18आख़िरकार मिस्र पर एक ऐसे राजा का शासन हुआ
जो यूसुफ को नहीं जानता था। 19उसने हमारे लोगों के
साथ धूर्तता पूर्ण व्यवहार किया। उसने हमारे पूर्वजों को
बड़ी निर्दयता के साथ विवश किया कि वे अपने बच्चों
को बाहर मरने को छोड़ें ताकि वे जीवित ही न बच
पायें। 20उसी समय मूसा का जन्म हुआ। वह बहुत सुन्दर
बालक था। तीन महीने तक वह अपने पिता के घर के
भीतर पलता बढ़ता रहा। 21फिर जब उसे बाहर छोड़
दिया गया तो फ़िरौन की पुत्री उसे अपना पुत्र बना कर
उठा ले गयी। उसने अपने पुत्र के रूप में उसका
लालन-पालन किया। 22मूसा को मिस्रियों के सम्पूर्ण
कला-कौशल की शिक्षा दी गयी। वह वाणी और कर्म
दोनों में ही समर्थ था।

23“जब वह चालीस साल का हुआ तो उसने इस्राएल
की संतान, अपने भाई-बंधुओं के पास जाने का निश्चय
किया। 24सो जब एक बार उसने देखा कि उनमें से
किसी एक के साथ बुरा व्यवहार किया जा रहा है तो
उसने उसे बचाया और मिस्री व्यक्ति को मार कर उस
दलित व्यक्ति का बदला ले लिया। 25उसने सोचा था कि
उसके अपने भाई बंधु जान जायेंगे कि उन्हें छुटकारा
दिलाने के लिये परमेश्वर उसका उपयोग कर रहा है।
किन्तु वे इसे नहीं समझ पाये। 26अगले दिन उनमें से
(उसके अपने लोगों में से) जब कुछ लोग झगड़ रहे थे
तो वह उनके पास पहुँचा और यह कहते हुए उनमें
बीच-बचाव का जतन करने लगा कि तुम लोग तो
आपस में भाई-भाई हो। एक दूसरे के साथ बुरा बर्ताव
क्यों करते हो? 27किन्तु उस व्यक्ति ने जो अपने पड़ोसी
के साथ झगड़ रहा था, मूसा को धक्का मारते हुए कहा,
‘तुझे हमारा शासक और न्यायकर्ता किसने बनाया? 28जैसे
तूने कल उस मिस्री की हत्या कर दी थी,’ क्या तू वैसे
ही मुझे भी मार डालना चाहता है?* 29मूसा ने जब
यह सुना तो वह वहाँ से चला गया और मिद्यान में एक
परदेसी के रूप में रहने लगा। वहाँ उसके दो पुत्र हुए।

30“चालीस वर्ष बीत जाने के बाद सिनाई पर्वत के
पास मरुभूमि में एक जलती झाड़ी की लपटों के बीच
उसके सामने एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ। 31मूसा ने जब
यह देखा तो इस दृश्य पर वह आश्चर्य चकित हो उठा।
जब और अधिक निकटता से देखने के लिये वह
उसके पास गया तो उसे प्रभु की वाणी सुनाई दी: 32‘मैं
तेरे पूर्वजों का परमेश्वर हूँ, इब्राहीम का, इसहाक का
और याकूब का परमेश्वर हूँ।’* भय से काँपते हुए
मूसा कुछ देखने का साहस नहीं कर पा रहा था। 33तभी
प्रभु ने उससे कहा, ‘अपने पैरों की चप्पलें उतार क्योंकि
जिस स्थान पर तू खड़ा है, वह पवित्र भूमि है। 34मैंने
मिस्र में अपने लोगों के साथ हो रहे दुर्व्यवहार को देखा
है, परखा है। मैंने उन्हें विलाप करते हुए सुना है। उन्हें
मुक्त कराने के लिये मैं नीचे उतरा हूँ। आ, अब मैं तुझे
मिस्र भेजूँगा।’*

35“यह वही मूसा है जिसे उन्होंने यह कहते हुए नकार
दिया था, ‘तुझे शासक और न्यायकर्ता किसने बनाया
है?’ यह वही है जिसे परमेश्वर ने उस स्वर्गदूत द्वारा, जो
उसके लिए झाड़ी में प्रकट हुआ था, शासक और
मुक्तिदाता होने के लिये भेजा। 36वह उन्हें मिस्र की
धरती और लाल सागर तथा वनों में से चालीस साल
तक आश्चर्य कर्म करते हुए और चिह्न दिखाते हुए,
बाहर निकाल लाया। 37यह वही मूसा है जिसने इस्राएल
की संतानों से कहा था, ‘तुम्हारे भाइयों में से ही तुम्हारे
लिये परमेश्वर एक मेरे जैसा नबी भेजेगा।’* 38यह
वही है जो वीराने में सभा के बीच हमारे पूर्वजों और
उस स्वर्गदूत के साथ मौजूद था जिसने सिनाई पर्वत पर
उससे बातें की थीं। इसी ने हमें देने के लिये परमेश्वर
से सजीव वचन प्राप्त किये थे।

39“किन्तु हमारे पूर्वजों ने उसका अनुसरण करने
को मना कर दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने उसे नकार
दिया और अपने हृदयों में वे फिर मिस्र की ओर लौट
गये। 40उन्होंने हारून से कहा था, ‘हमारे लिये ऐसे
देवताओं की रचना करो जो हमें मार्ग दिखायें। इस मूसा
के बारे में, जो हमें मिस्र से बाहर निकाल लाया, हम
नहीं जानते कि उसके साथ क्या कुछ घटा।”*

41उन्हीं दिनों उन्होंने बछड़े की एक मूर्ति बनायी।
और उस मूर्ति पर बलि चढ़ाई। वे, जिसे उन्होंने अपने
हाथों से बनाया था, उस पर आनन्द मनाने लगे।

42किन्तु परमेश्वर ने उनसे मुँह मोड़ लिया था। उन्हें
आकाश के ग्रह-नक्षत्रों की उपासना के लिये छोड़
दिया गया था। जैसा कि नबियों की पुस्तक में लिखा है:

‘हे इस्राएल के परिवार के लोगो, क्या तुम पशुबलि
और अन्न बलियाँ वीराने में मुझे नहीं चढ़ाते रहे?
चालीस वर्ष तक

43तुम मोलेक के तम्बू और अपने देवता रिफान के
तारे को भी अपने साथ ले गये थे। वे मूर्तियाँ भी तुम ले
गये जिन्हें तुमने उपासना के लिये बनाया था। इसलिये मैं
तुम्हें बेबिलोन से भी परे भेजूँगा।’ *आमोस 5:25-27*

44“साक्षी का तम्बू भी उस वीराने में हमारे पूर्वजों के
साथ था। यह तम्बू उसी नमूने पर बनाया गया था जैसा
कि उसने देखा था और जैसा कि मूसा से बात करने
वाले ने बनाने को उससे कहा था। 45हमारे पूर्वज उसे
प्राप्त करके तभी वहाँ से आये थे जब यहोशू के नेतृत्त्व

“मुझे ... चाहता है” निर्गमन 2:14

“मैं ... परमेश्वर हूँ” निर्गमन 3:6

“अपने पैरों ... मिस्र भेजूँगा ” निर्गमन 3:5-10

“तुम्हारे .... भेजेगा” व्यवस्था. 18:15

“हमारे लिये ... कुछ घटा” निर्गमन 32:1

में उन्होंने उन जातियों से यह धरती ले ली थी जिन्हें
हमारे पूर्वजों के सम्मुख परमेश्वर ने निकाल बाहर
किया था। दाऊद के समय तक वह वहीं रहा। 46दाऊद
ने परमेश्वर के अनुग्रह का आनन्द उठाया। उसने
चाहा कि वह याकूब के परमेश्वर के लिए एक मंदिर
बनवा सके 47किन्तु वह सुलेमान ही था जिसने उसके
लिए मंदिर बनवाया।

48"कुछ भी हो परम परमेश्वर तो हाथों से बनाये
भवनों में नहीं रहता। जैसा कि नबी ने कहा है: प्रभु न
कहा, 'स्वर्ग मेरा सिंहासन है 49और धरती चरण की
चौकी बनी है। किस तरह का मेरा घर तुम बनाओगे?
कहीं कोई जगह ऐसी है, जहाँ विश्राम पाऊँ?

50क्या यह सभी कुछ, मेरे करों की रचना नही
रही?' *यशायाह 66:1–2*

51"हे बिना ख़तने के मन और कान वाले हठीले
लोगो! तुमने सदा ही पवित्र आत्मा का विरोध किया है।
तुम अपने पूर्वजों के जैसे ही हो। 52क्या कोई भी ऐसा
नबी था, जिसे तुम्हारे पूर्वजों ने नहीं सताया? उन्होंने तो
उन्हें भी मार डाला जिन्होंने बहुत पहले से ही उस धर्मी
के आने की घोषणा कर दी थी, जिसे अब तुमने धोखा
देकर पकड़वा दिया और मरवा डाला। 53तुम वही हो
जिन्होंने स्वर्गदूतों द्वारा दिये गये व्यवस्था के विधान को
पा तो लिया किन्तु उस पर चले नहीं!"

स्तिफनुस की हत्या

54जब उन्होंने यह सुना तो वे क्रोध से आगबबूला हो
उठे और उस पर दाँत पीसने लगे। 55किन्तु पवित्र
आत्मा से भावित स्तिफनुस स्वर्ग की ओर देखता रहा।
उसने देखा परमेश्वर की महिमा को और परमेश्वर
के दाहिने खड़े यीशु को। 56सो उसने कहा, "देखो। मैं
देख रहा हूँ कि स्वर्ग खुला हुआ है और मनुष्य का पुत्र
परमेश्वर के दाहिने खड़ा है।"

57इस पर उन्होंने चिल्लाते हुए अपने कान बन्द कर
लिये और फिर वे सभी उस पर एक साथ झपट पड़े।
58वे उसे घसीटते हुए नगर से बाहर ले गये और उस पर
पथराव करने लगे। तभी गवाहों ने अपने वस्त्र उतार
कर शाउल नाम के एक युवक के चरणों में रख दिये।
59स्तिफ़नुस पर जब से उन्होंने पत्थर बरसाना प्रारम्भ
किया, वह यह कहते हुए प्रार्थना करता रहा, "हे प्रभु
यीशु, मेरी आत्मा को स्वीकार कर।"

60फिर वह घुटनों के बल गिर पड़ा और ऊँचे स्वर
में चिल्लाया, "प्रभु, इस पाप को उनके विरुद्ध मत ले।"
इतना कह कर वह चिर निद्रा में सो गया।

विश्वासियों पर अत्याचार

8 इस तरह शाऊल ने स्तिफनुस की हत्या का समर्थन
किया। उसी दिन से यरूशलेम की कलीसिया पर
घोर अत्याचार होने आरम्भ हो गये। प्रेरितों को छोड़ वे
सभी लोग यहूदिया और सामरिया के गाँवों में तितर-बितर
हो कर फैल गये। 2कुछ भक्त जनों ने स्तिफनुस को
दफना दिया और उसके लिये गहरा शोक मनाया।
3शाऊल ने कलीसिया को नष्ट करना आरम्भ कर
दिया। वह घर-घर जा कर औरत और पुरुषों को
घसीटते हुए जेल में डालने लगा। 4उधर तितर-बितर
हुए लोग हर कहीं जा कर सुसमाचार का संदेश देने
लगे।

सामरिया में फिलिप्पुस का उपदेश

5फिलिप्पुस सामरिया नगर को चला गया और वहाँ
लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा। 6फिलिप्पुस के
लोगों ने जब सुना और जिन अद्भुत चिन्हों को वह
प्रकट किया करता था, देखा, तो जिन बातों को वह
बताया करता था, उन पर उन्होंने गम्भीरता के साथ
ध्यान दिया। 7बहुत से लोगों में से, जिनमें दुष्टात्माएँ
समायी थीं, वे ऊँचे स्वर में चिल्लाती हुई बाहर निकल
आयीं थी। बहुत से लकवे के रोगी और विकलांग
अच्छे हो रहे थे। 8उस नगर में उल्लास छाया हुआ था।
9वहीं शमौन नाम का एक व्यक्ति हुआ करता था। वह
काफी समय से उस नगर में जादू टोना किया करता
था। और सामरिया के लोगों को आश्चर्य में डालता
रहता था। वह महापुरुष होने का दावा किया करता
था। 10छोटे से लेकर बड़े तक सभी लोग उसकी बात
पर ध्यान देते और कहते, "यह व्यक्ति परमेश्वर की
वही शक्ति है जो महान शक्ति कहलाती है।"

11क्योंकि उसने बहुत दिनों से उन्हें अपने चमत्कारों
के चक्कर में डाल रखा था, इसीलिए वे उस पर ध्यान
दिया करते थे। 12किन्तु उन्होंने जब फिलिप्पुस पर
विश्वास किया क्योंकि उसने उन्हें परमेश्वर के राज्य
का सुसमाचार और यीशु मसीह का नाम सुनाया था, तो
वे स्त्री और पुरुष दोनों ही बपतिस्मा लेने लगे। 13और
स्वयं शमौन ने भी उन पर विश्वास किया। और बपतिस्मा
लेने के बाद फिलिप्पुस के साथ वह बड़ी निकटता से
रहने लगा। उन महान् चिह्नों और किये जा रहे अद्भुत
कार्यों को जब उसने देखा, तो वह दंग रह गया।

14उधर यरुशलेम में प्रेरितों ने जब यह सुना कि
सामरिया के लोगों ने परमेश्वर के वचन को स्वीकार
कर लिया है तो उन्होंने पतरस और यूहन्ना को उनके
पास भेजा। 15सो जब वे पहुँचे तो उन्होंने उनके लिये
प्रार्थना की कि उन्हें पवित्र आत्मा प्राप्त हो। 16क्योंकि
अभी तक पवित्र आत्मा किसी पर भी नहीं उतरा था,
उन्हें बस प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा ही दिया गया
17सो पतरस और यूहन्ना ने उन पर अपने हाथ रखे
और उन्हें पवित्र आत्मा प्राप्त हो गया। 18जब शमौन ने
देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने भर से पवित्र आत्मा दे

दिया गया तो उनके सामने धन प्रस्तुत करते हुए वह
बोला, 19“यह शक्ति मुझे दे दो ताकि जिस किसी पर मैं
हाथ रखूँ, उसे पवित्र आत्मा मिल जाये।”
20पतरस ने उससे कहा, “तेरा और तेरे धन का
सत्यानाश हो, क्योंकि तूने यह सोचा कि तू धन से
परमेश्वर के वरदान को मोल ले सकता है। 21इस
विषय में न तेरा कोई हिस्सा है, और न कोई साझा
क्योंकि परमेश्वर के सम्मुख तेरा हृदय ठीक नहीं है।
22इसलिये अपनी इस दुष्टता से मन फिराव कर और
प्रभु से प्रार्थना कर। हो सकता है तेरे मन में जो विचार
था, उस विचार के लिये तू क्षमा कर दिया जाये।
23क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि तू कटुता से भरा है और
पाप के चंगुल में फँसा है।”
24इस पर शमौन ने उत्तर दिया, “तुम प्रभु से मेरे लिये
प्रार्थना करो ताकि तुमने जो कुछ कहा है, उसमें से
कोई भी बात मुझ पर न घटे।!”
25फिर प्रेरित अपनी साक्षी देकर और प्रभु का वचन
सुना कर रास्ते के बहुत से सामरी गाँवों में सुसमाचार
का उपदेश करते हुए यरूशलेम लौट आये।

इथोपिया से आये व्यक्ति को फिलिप्पुस का उपदेश

26प्रभु के एक दूत ने फिलिप्पुस को कहते हुए बताया,
“तैयार हो, और दक्षिण दिशा में उस राह पर जा, जो
यरूशलेम से गाजा को जाती है।” (यह एक सुनसान
मार्ग है।) 27सो वह तैयार हुआ और चल पड़ा। वहीं एक
इथोपिया का खोजा था। वह इथोपिया की रानी कंदाके
का एक अधिकारी था जो उसके समुचे कोष का
कोषपाल था। वह आराधना के लिये यरूशलेम गया
था। 28लौटते हुए वह अपने रथ में बैठा भविष्यवक्ता
यशायाह का ग्रंथ पढ़ रहा था। 29तभी फिलिप्पुस को
आत्मा से प्रेरणा मिली, “उस रथ के पास जा और वहीं
ठहर।” 30फिलिप्पुस जब उस रथ के पास दौड़ कर गया
तो उसने उसे यशायाह को पढ़ते सुना। सो वह बोला,
“क्या जिसे तू पढ़ रहा है, उसे समझता भी है?”
31उसने कहा, “मैं भला तब तक कैसे समझ सकता
हूँ, जब तक कोई मुझे इसकी व्याख्या नहीं करे?” फिर
उसने फिलिप्पुस को रथ पर अपने साथ बैठने को
बुलाया। 32शास्त्र के जिस अंश को वह पढ़ रहा था, वह
था:

“उसे वध होने वाली भेड़ के समान ले जाया जा रहा
था। वह तो उस मेमने के समान चुप था। जो अपनी
ऊन काटने वाले के समक्ष चुप रहता है, ठीक वैसे ही
उसने अपना मुँह खोला नहीं!
33ऐसी दीन दशा में उसको न्याय से वंचित किया
गया! उसकी पीढ़ी का कौन वर्णन करेगा? क्योंकि
धरती से उसका जीवन तो ले लिया था।”

यशायाह 53:7-8

34उस खोजे ने फिलिप्पुस से कहा, “अनुग्रह करके
मुझे बता कि भविष्यवक्ता यह किसके बारे में कह रहा
है? अपने बारे में या किसी और के?”
35फिर फिलिप्पुस ने कहना शुरू किया और इस
शास्त्र से लेकर यीशु के सुसमाचार तक सब उसे कह
सुनाया। 36मार्ग में आगे बढ़ते हुए वे कहीं पानी के पास
पहुँचे। फिर उस खोजे ने कहा, “देख! यहाँ जल है। अब
मुझे बपतिस्मा लेने में क्या बाधा है?” [37“फिलिप्पुस ने
उत्तर दिया, ‘यदि तू अपने सम्पूर्ण हृदय से विश्वास
करता है, तो ले सकता है।’ उसने उत्तर दिया, ‘हाँ! मैं
विश्वास करता हूँ कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र
है।’”]* 38तब उसने रथ को रोकने की आज्ञा दी।
फिर फिलिप्पुस और वह खोजा दोनों ही पानी में उतर
गये और फिलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा दिया। 39और
फिर जब वे पानी से बाहर निकले तो फिलिप्पुस को
प्रभु की आत्मा कहीं उठा ले गई और उस खोजे ने
फिर उसे कभी नहीं देखा। उधर खोजा आनन्द मनाता
हुआ अपने मार्ग पर आगे चला गया। 40उधर फिलिप्पुस
ने अपने आपको अशदोद में पाया और जब तक वह
कैसरिया नहीं पहुँच गया, सभी नगरों में सुसमाचार का
प्रचार करते हुए यात्रा करता रहा।

शाऊल का हृदय परिवर्तन

9 शाऊल अभी प्रभु के अनुयायिओं को मार डालने
की धमकियाँ दिया करता था। वह प्रमुख याजक
के पास गया 2और उसने दमिश्क के प्रार्थना सभागारों
के नाम माँग कर अधिकार पत्र ले लिया जिससे उसे
वहाँ यदि कोई इस पंथ का अनुयायी मिले, फिर चाहे
वह स्त्री हो, चाहे पुरुष, तो वह उन्हें बंदी बना सके और
फिर वापस यरूशलेम ले आये।
3सो जब चलते चलते वह दमिश्क के निकट पहुँचा,
तो अचानक उसके चारों ओर आकाश से एक प्रकाश
कौंध गया 4और वह धरती पर जा पड़ा। उसने एक
आवाज सुनी जो उससे कह रही थी, “शाऊल, अरे ओ
शाऊल। तू मुझे क्यों सता रहा है?” 5शाऊल ने पूछा,
“प्रभु, तू कौन है?” वह बोला, “मैं यीशु हूँ जिसे तू सता
रहा है। 6पर तू अब खड़ा हो और नगर में जा। वहाँ तुझे
बता दिया जायेगा कि तुझे क्या करना चाहिये।”
7जो पुरुष उसके साथ यात्रा कर रहे थे, अवाक् खड़े
थे। उन्होंने आवाज़ तो सुनी किन्तु किसी को भी देखा
नहीं। 8फिर शाऊल धरती पर से खड़ा हुआ। किन्तु जब
उसने अपनी आखें खोलीं तो वह कुछ भी देख नहीं
पाया। सो वे उसे हाथ पकड़ कर दमिश्क ले गये। 9तीन
दिन तक वह न तो कुछ देख पाया, और न ही उसने
कुछ खाया या पिया। 10दमिश्क में हनन्याह नाम का

पद 37 ‘प्रेरितों के काम’ की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 37
जोड़ा गया है।

एक शिष्य था। प्रभु ने दर्शन देकर उससे कहा, "हनन्याह।"
सो वह बोला, "प्रभु, मैं यह रहा।"
11प्रभु ने उससे कहा, "खड़ा हो और सीधी कहलाने
वाली गली में जा। और वहाँ यहूदा के घर में जाकर
तरसुस निवासी शाऊल नाम के एक व्यक्ति के बारे में
पूछताछ कर क्योंकि वह प्रार्थना कर रहा है। 12उसने
एक दर्शन में देखा है कि हनन्याह नाम के एक व्यक्ति
ने घर में आकर उस पर हाथ रखे हैं ताकि वह फिर से
देख सके।" 13हनन्याह ने उत्तर दिया, "प्रभु, मैंने इस
व्यक्ति के बारे में बहुत से लोगों से सुना है। यरूशलेम में
तेरे संतों के साथ इसने जो बुरी बातें की हैं, वे सब मैंने
सुनी हैं। 14और यहाँ भी यह प्रमुख याजकों से तेरे नाम
में सभी विश्वास रखने वालों को बंदी बनाने का अधिकार
लेकर आया है।" 15किन्तु प्रभु ने उससे कहा, "तू जा
क्योंकि इस व्यक्ति को विधर्मियों, राजाओं और इस्राएल
के लोगों के सामने मेरा नाम लेने के लिये, एक साधन
के रूप में मैंने चुना है। 16मैं स्वयं उसे वह सब कुछ
बताऊँगा, जो उसे मेरे नाम के लिए सहना होगा।"
17सो हनन्याह चल पड़ा और उस घर के भीतर
पहुँचा और शाऊल पर उसने अपने हाथ रख दिये और
कहा, "भाई शाऊल, प्रभु यीशु ने मुझे भेजा है, जो तेरे
मार्ग में तेरे सम्मुख प्रकट हुआ था ताकि तू फिर से देख
सके और पवित्र आत्मा से भावित हो जाये।" 18फिर
तुरंत छिलकों जैसी कोई वस्तु उसकी आँखों से ढलकी
और उसे फिर दिखाई देने लगा। वह खड़ा हुआ और
उसने बपतिस्मा लिया। 19फिर थोड़ा भोजन लेने के बाद
उसने अपनी शक्ति पुन: प्राप्त कर ली।

शाऊल का दमिश्क में प्रचार कार्य

वह दमिश्क में शिष्यों के साथ कुछ समय ठहरा।
20फिर वह सीधा यहूदी धर्म सभागार में पहुँचा और
यीशु का प्रचार करने लगा। वह बोला, "यह यीशु
परमेश्वर का पुत्र है।"
21जिस किसी ने भी उसे सुना, चकित रह गया और
बोला, "क्या यह वही नहीं है, जो यरूशलेम में यीशु के
नाम में विश्वास रखने वालों को नष्ट करने का यत्न
किया करता था। और क्या यह उन्हें यहाँ पकड़ने और
प्रमुख याजकों के सामने ले जाने नहीं आया था?"
22किन्तु शाऊल अधिक से अधिक शक्तिशाली होता
गया और दमिश्क में रहने वाले यहूदियों को यह प्रमाणित
करते हुए कि यह यीशु ही मसीह है, पराजित करने
लगा।

शाऊल का यहूदियों से बच निकलना

23बहुत दिन बीत जाने के बाद यहूदियों ने उसे मार
डालने का षड्यन्त्र रचा। 24किन्तु उनकी योजनाओं का
शाऊल को पता चल गया। वे नगर द्वारों पर रात दिन
घात लगाये रहते थे ताकि उसे मार डालें। 25किन्तु
उसके शिष्य रात में उसे उठा ले गये और टोकरी में
बैठा कर नगर की चारदीवारी से लटका कर उसे नीचे
उतार दिया।

यरूशलेम में शाऊल का पहुँचना

26फिर जब वह यरूशलेम पहुँचा तो वह शिष्यों के
साथ मिलने का जतन करने लगा। किन्तु वे तो सभी
उससे डरते थे। उन्हें यह विश्वास नहीं था कि वह भी
एक शिष्य है। 27किन्तु बरनाबास उसे अपने साथ प्रेरितों
के पास ले गया और उसने उन्हें बताया कि शाऊल ने
प्रभु को मार्ग में किस प्रकार देखा और प्रभु ने उससे
कैसे बातें कीं। और दमिश्क में किस प्रकार उसने
निर्भयता से यीशु के नाम का प्रचार किया। 28फिर
शाऊल उनके साथ यरूशलेम में स्वतन्त्रतापूर्वक आते
जाते रहने लगा। वह निर्भीकता के साथ प्रभु के नाम
का प्रवचन किया करता था। 29वह यूनानी भाषा-भाषी
यहूदियों के साथ वाद-विवाद और चर्चाएँ करता किन्तु
वे तो उसे मार डालना चाहते थे। 30किन्तु जब बंधुओं
को इस बात का पता चला तो वे उसे कैसरिया ले गये
और फिर उसे तरसुस पहुँचा दिया। 31इस प्रकार समूचे
यहूदिया, गलील और सामरिया के कलीसिया का वह
समय शांति से बीता। वह कलीसिया और अधिक
शक्तिशाली होने लगी। क्योंकि वह प्रभु से डर कर
अपना जीवन व्यतीत करती थी, और पवित्र आत्मा ने
उसे और अधिक प्रोत्साहित किया था सो उसकी संख्या
बढ़ने लगी।
32फिर उस समूचे क्षेत्र में घूमता फिरता पतरस लिद्दा
के संतों से मिलने पहुँचा। 33वहाँ उसे अनियास नाम का
एक व्यक्ति मिला जो आठ साल से बिस्तर में पड़ा था।
उसे लकवा मार गया था। 34पतरस ने उससे कहा,
"अनियास, यीशु मसीह तुझे स्वस्थ करता है। खड़ा हो
और अपना बिस्तर ठीक कर।" सो वह तुरंत खड़ा हो
गया। 35फिर लिद्दा और शारोन में रहने वाले सभी लोगों
ने उसे देखा और वे प्रभु की ओर मुड़ गये।

पतरस याफा में

36याफा में तबीता नाम की एक शिष्या रहा करती
थी (जिसका यूनानी अनुवाद है दोरकास अर्थात् हिरणी)।
वह सदा अच्छे अच्छे काम करती और गरीबों को दान
देती। 37उन्हीं दिनों वह बीमार हुई और मर गयी। उन्होंने
उसके शव को स्नान करा के सीढ़ियों के ऊपर कमरे
में रख दिया। 38लिद्दा याफा के पास ही था, सो शिष्यों ने
जब यह सुना कि पतरस लिद्दा में है तो उन्होंने उसके
पास दो व्यक्ति भेजे कि वे उससे विनती करें, "अनुग्रह
कर के जल्दी से जल्दी हमारे पास आ जा!" 39सो
पतरस तैयार होकर उनके साथ चल दिया। जब पतरस

वहाँ पहुँचा तो वे उसे सीढ़ियों के ऊपर कमरे में ले गये।
वहाँ सभी विधवाएँ विलाप करते हुए और उन कुर्तियों
और दूसरे वस्त्रों को जिन्हें दोरकास ने जब वह उनके
साथ थी, बनाया था, दिखाते हुए उसके चारों ओर खड़ी
हो गयीं। 40पतरस ने हर किसी को बाहर भेज दिया
और घुटनों के बल झुक कर उसने प्रार्थना की। फिर
शव की ओर मुड़ते हुए उसने कहा, "तबीता-खड़ी हो
जा!" उसने अपनी आखें खोल दीं और पतरस को
देखते हुए वह उठ बैठी। 41उसे अपना हाथ देकर
पतरस ने खड़ा किया और फिर संतों और विधवाओं
को बुलाकर उन्हें उसे जीवित सौंप दिया। 42समूचे याफा
में हर किसी को इस बात का पता चल गया और बहुत
से लोगों ने प्रभु में विश्वास किया। 43फिर याफा में
शमोन नाम के एक चर्मकार के यहाँ पतरस बहुत दिनों
तक ठहरा।

पतरस और कुरनेलियुस

10 कैसरिया में कुरनेलियुस नाम का एकव्यक्ति
था। वह सेना के उस दल का नायक था जिसे
इतालवी कहा जाता था। 2वह परमेश्वर से डरने वाला
भक्त था और वैसा ही उसका परिवार भी था। वह
गरीब लोगों की सहायता के लिये उदारतापूर्वक दान
दिया करता था और सदा ही परमेश्वर की प्रार्थना
करता रहता था। 3दिन के नवें पहर के आसपास उसने
एक दर्शन में स्पष्ट रूप से देखा कि परमेश्वर का एक
स्वर्गदूत उसके पास आया है और उससे कह रहा है,
"कुरनेलियुस।"
4सो कुरनेलियुस डरते हुए स्वर्गदूत की ओर देखते
हुए बोला, "हे प्रभु, यह क्या है?"
स्वर्गदूत ने उससे कहा, "तेरी प्रार्थनाएँ और दीन
दुखियों को दिया हुआ तेरा दान एक स्मारक के रूप में
तुझे याद दिलाने के लिए परमेश्वर के पास पहुचें हैं।
5सो अब कुछ व्यक्तियों को याफा भेज और शमौन नाम
के एक व्यक्ति को, जो पतरस भी कहलाता है, यहाँ
बुलवा ले। 6वह शमौन नाम के एक चर्मकार के साथ
रह रहा है। उसका घर सागर के किनारे है।" 7वह
स्वर्गदूत जो उससे बात कर रहा था, जब चला गया तो
उसने अपने दो सेवकों और अपने निजी सहायकों में से
एक भक्त सिपाही को बुलाया 8और जो कुछ घटित हुआ
था, उन्हें सब कुछ बताकर याफा भेज दिया। 9अगले
दिन जब वे चलते चलते नगर के निकट पहुँचने ही
वाले थे, पतरस दोपहर के समय प्रार्थना करने को छत
पर चढ़ा। 10उसे भूख लगी, सो वह कुछ खाना चाहता
था। वे जब भोजन तैयार कर ही रहे थे तो उसकी
समाधि लग गयी। 11और उसने देखा कि आकाश खुल
गया है और एक बड़ी चादर जैसी कोई वस्तु नीचे उतर
रही है। उसे चारों कोनों से पकड़ कर धरती पर उतारा
जा रहा है। 12उस पर हर प्रकार के पशु, धरती के
रेंगने वाले जीव-जंतु और आकाश के पक्षी थे। 13फिर
एक स्वर ने उससे कहा, "पतरस उठ। मार और खा।"
14पतरस ने कहा, "प्रभु, निश्चित रूप से नहीं, क्योंकि
मैंने कभी भी किसी तुच्छ या समय के अनुसार अपवित्र
आहार को नहीं लिया है।"
15इस पर उन्हें दूसरी बार फिर वाणी सुनाई दी,
"किसी भी वस्तु को जिसे परमेश्वर ने पवित्र बनाया है,
तुच्छ मत कहना!" 16तीन बार ऐसा ही हुआ और वह
वस्तु फिर तुरंत आकाश में वापस उठा ली गयी।
17पतरस ने जिस दृश्य को दर्शन में देखा था, उस पर
वह अभी चक्कर में ही पड़ा हुआ था कि कुरनेलियुस
के भेजे वे लोग दरवाजे पर खड़े पूछ रहे थे कि शमौन
का घर कहाँ है? 18उन्होंने बाहर बुलाते हुए पूछा, "क्या
पतरस कहलाने वाला शमौन अतिथि के रूप में यहीं
ठहरा है?"
19पतरस अभी उस दर्शन के बारे में सोच ही रहा था
कि आत्मा ने उससे कहा, "सुन, तीन व्यक्ति तुझे ढूँढ
रहे हैं। 20सो खड़ा हो, और नीचे उतर बेझिझक उनके
साथ चला जा, क्योंकि उन्हें मैंने ही भेजा है।" 21इस
प्रकार पतरस नीचे उतर आया और उन लोगों से बोला,
"मैं वही हूँ, जिसे तुम खोज रहे हो। तुम क्यों आये हो।?"
22वे बोले, "हमें सेनानायक कुरनेलियुस ने भेजा है।
वह परमेश्वर से डरने वाला नेक पुरुष है। यहूदी लोगों
में उसका बहुत सम्मान है। उससे पवित्र-स्वर्गदूत ने
तुझे अपने घर बुलाने का निमन्त्रण देने को और जो
कुछ तू कहे उसे सुनने को कहा है।" 23इस पर पतरस
ने उन्हें भीतर बुला लिया और ठहरने को स्थान दिया।
फिर अगले दिन तैयार होकर वह उनके साथ चला
गया। और याफा के निवासी कुछ अन्य बन्धु भी उसके
साथ हो लिये। 24अगले ही दिन वह कैसरिया जा पहुँचा।
वहाँ अपने सम्बन्धियों और निकट-मित्रों को बुलाकर
कुरनेलियुस उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। 25पतरस जब
भीतर पहुँचा तो कुरनेलियुस से उसकी भेंट हुई।
कुरनेलियुस ने उसके चरणों पर गिरते हुए उसको
दण्डवत प्रणाम किया। 26किन्तु उसे उठाते हुए पतरस
बोला, "खड़ा हो। मैं तो स्वयं मात्र एक मनुष्य हूँ।"
27फिर उसके साथ बात करते करते वह भीतर चला
गया। और वहाँ उसने बहुत से लोगों को एकत्र पाया।
28उसने उनसे कहा, "तुम जानते हो कि एक यहूदी के
लिये किसी दूसरी जाति के व्यक्ति के साथ कोई सम्बन्ध
रखना या उसके यहाँ जाना विधान के विरुद्ध है किन्तु
फिर भी परमेश्वर ने मुझे दर्शाया है कि मैं किसी भी
व्यक्ति को अशुद्ध या अपवित्र न कहूँ। 29इसीलिए मुझे
जब बुलाया गया तो मैं बिना किसी आपत्ति के आ गया।
इसलिये मैं तुमसे पूछता हूँ कि तुमने मुझे किस लिये
बुलाया है।"

30इस पर कुरनेलियुस ने कहा, "चार दिन पहले इसी
समय दिन के नवें पहर (तीन बजे) मैं अपने घर में
प्रार्थना कर रहा था। अचानक चमचमाते वस्त्रों में एक
व्यक्ति मेरे सामने आ खड़ा हुआ। 31और कहा,
'कुरनेलियुस! तेरी विनती सुन ली गयी है और दीन
दुखियों को दिये गये तेरे दान परमेश्वर के सामने याद
किये गये हैं। 32इसलिये याफा भेजकर पतरस कहलाने
वाले शमौन को बुलवा भेज। वह सागर किनारे चर्मकार
शमौन के घर ठहरा हुआ है।'

33इसीलिए मैंने तुरंत तुझे बुलवा भेजा और तूने यहाँ
आने की कृपा करके बहुत अच्छा किया। सो अब प्रभु
ने जो कुछ आदेश तुझे दिये हैं, उस सब कुछ को सुनने
के लिये हम सब यहाँ परमेश्वर के सामने उपस्थित
हैं।"

कुरनेलियुस के घर पतरस का प्रवचन

34फिर पतरस ने अपना मुँह खोला। उसने कहा,
"अब सचमुच मैं समझ गया हूँ कि परमेश्वर कोई भेद
भाव नहीं करता 35बल्कि हर जाति का कोई भी ऐसा
व्यक्ति जो उससे डरता है और नेक काम करता है, वह
उसे स्वीकार करता है। 36यही है वह संदेश जिसे उसने
यीशु मसीह के द्वारा शांति के सुसमाचार का उपदेश देते
हुए इस्राएल के लोगों को दिया था। वह सभी का प्रभु है।
37तुम उस महान घटना को जानते हो, जो समूचे यहूदिया
में घटी थी। गलील में प्रारम्भ होकर यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा
दिए जाने के बाद से जिसका प्रचार किया गया था।
38तुम नासरी यीशु के विषय में जानते हो कि परमेश्वर
ने पवित्र आत्मा और शक्ति से उसका अभिषेक कैसे
किया था और उत्तम कार्य करते हुए तथा उन सब को
जो शैतान के बस में थे, चंगा करते हुए चारों ओर वह
कैसे घूमता रहा था। क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।
39और हम उन सब बातों के साक्षी हैं जिन्हें उसने
यहूदियों के प्रदेश और यरुशलेम में किया था। उन्होंने
उसे ही एक पेड़ पर लटका कर मार डाला। 40किन्तु
परमेश्वर ने तीसरे दिन उसे फिर से जीवित कर दिया
और उसे प्रकट होने को प्रेरित किया।

41सब लोगों के सामने नहीं वरन् बस उन साक्षियों
के सामने जो परमेश्वर के द्वारा पहले से चुन लिये
गये थे। अर्थात् हमारे सामने जिन्होंने उसके मरे हुओं
में से जी उठने के बाद उसके साथ खाया और पिया।
42उसी ने हमें आदेश दिया है कि हम लोगों को उपदेश
दें और प्रमाणित करें कि यह वही है, जो परमेश्वर
के द्वारा जीवितों और मरे हुओं का न्यायकर्ता बनने
को नियुक्त किया गया है। 43सभी भविष्यवक्ताओं ने
उसके विषय में साक्षी दी है कि उसमें विश्वास करने
वाला हर व्यक्ति उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा
पाता है।"

ग़ैर यहूदियों पर पवित्र आत्मा का उतरना

44पतरस अभी ये बातें कह ही रहा था कि उन सब
पर पवित्र आत्मा उतर आया जिन्होंने सुसंदेश सुना था।
45क्योंकि पवित्र आत्मा का वरदान ग़ैर यहूदियों पर भी
उँडेला जा रहा था, सो पतरस के साथ आये यहूदी
विश्वासी आश्चर्य में डूब गये। 46वे उन्हें नाना भाषाएँ
बोलते और परमेश्वर की स्तुति करते हुए सुन रहे थे।
तब पतरस बोला, 47"क्या कोई इन लोगों को बपतिस्मा
देने के लिये, जल सुलभ कराने को मना कर सकता
है? इन्हें भी वैसे ही पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ हैं, जैसे
हमें।" 48इस प्रकार उसने यीशु मसीह के नाम में उन्हें
बपतिस्मा देने की आज्ञा दी। फिर उन्होंने पतरस से
अनुरोध किया कि वह कुछ दिन उनके साथ ठहरे।

पतरस का यरूशलेम लौटना

11 समूचे यहूदिया में बंधुओं और प्रेरितों ने सुना
कि प्रभु का वचन ग़ैर यहूदियों ने भी ग्रहण
कर लिया है। 2सो जब पतरस यरुशलेम पहुँचा तो
उन्होंने जो ख़तना के पक्ष में थे, उसकी आलोचना की।
3वे बोले, "तू ख़तना रहित लोगों के घर में गया है और
तूने उनके साथ खाना खाया है।"

4इस पर पतरस वास्तव में जो घटा था, उसे सुनाने
समझाने लगा। 5"मैंने याफा नगर में प्रार्थना करते हुए
समाधि में एक दृश्य देखा। मैंने देखा कि एक बड़ी
चादर जैसी कोई वस्तु नीचे उतर रही है, उसे चारों
कोनों से पकड़ कर आकाश से धरती पर उतारा जा
रहा है। फिर वह उतर कर मेरे पास आ गयी। 6मैंने
उस को ध्यान से देखा। मैंने देखा कि उसमें धरती के
चौपाये जीव-जंतु, जँगली पशु रेंगने वाले जीव और
आकाश के पक्षी थे। 7फिर मैंने एक आवाज़ सुनी, जो
मुझसे कह रही थी, 'पतरस उठ, मार और खा।' 8किन्तु
मैंने कहा, 'प्रभु, निश्चित रूप से नहीं, क्योंकि मैंने
कभी भी किसी तुच्छ या समय के अनुसार किसी
अपवित्र आहार को नहीं लिया है।' 9आकाश से दूसरी
बार उस स्वर ने फिर कहा, 'जिसे परमेश्वर ने पवित्र
बनाया है, उसे तू अपवित्र मत समझ।' 10तीन बार ऐसा
ही हुआ। फिर वह सब आकाश में वापस उठा लिया
गया। 11उसी समय जहाँ मैं ठहरा हुआ था, उस घर में
तीन व्यक्ति आ पहुचें। उन्हें मेरे पास कैसरिया से भेजा
गया था। 12आत्मा ने मुझसे उनके साथ बेझिझक चले
जाने को कहा। ये छह: बन्धु भी मेरे साथ गये। और
हमने उस व्यक्ति के घर में प्रवेश किया। 13उसने हमें
बताया कि एक स्वर्गदूत को अपने घर में खड़े उसने
कैसे देखा था। जो कह रहा था याफा भेज कर पतरस
कहलाने वाले शमौन को बुलवा ले। 14वह तुझे वचन
सुनायेगा जिससे तेरा और तेरे परिवार का उद्धार होगा।
15जब मैंने प्रवचन आरम्भ किया तो पवित्र आत्मा उन

पर उतर आया। ठीक वैसे ही जैसे प्रारम्भ में हम पर
उतरा था।
16"फिर मुझे प्रभु का कहा यह वचन याद हो आया,
'यूहन्ना जल से बपतिस्मा देता था किन्तु तुम्हें पवित्र
आत्मा से बपतिस्मा दिया जायेगा।' 17इस प्रकार यदि
परमेश्वर ने उन्हें भी वही बरदान दिया जिसे उसने जब
हमने प्रभु यीशु मसीह में विश्वास किया था, तब हमें
दिया था, तो विरोध करने वाला मैं कौन होता था?"
18विश्वासियों ने जब यह सुना तो उन्होंने प्रश्न करना
बन्द कर दिया। वे परमेश्वर की महिमा करते हुए
कहने लगे, "अच्छा, तो परमेश्वर ने विधर्मियों तक को
मन फिराव का वह अवसर दिया है, जो जीवन की
ओर ले जाता है!"

अंताकिया में सुसमाचार का आगमन

19वे लोग जो स्तिफनुस के समय में दी जा रही
यातनाओं के कारण तितर-बितर हो गये थे, दूर-दूर
तक फीनीक, साइप्रस और अंताकिया तक जा पहुँचे।
ये यहूदियों को छोड़ किसी भी और को सुसमाचार नहीं
सुनाते थे। 20इन्हीं विश्वासियों में से कुछ साइप्रस और
कुरैन के थे। सो जब वे अंताकिया आये तो यूनानियों
को भी प्रवचन देते हुए प्रभु यीशु का सुसमाचार सुनाने
लगे। 21प्रभु की शक्ति उनके साथ थी। सो एक विशाल
जन समुदाय विश्वास धारण करके प्रभु की ओर मुड़
गया।
22इसका समाचार जब यरुशलेम में कलीसिया के
कानों तक पहुँचा तो उन्होंने बरनाबास को अंताकिया
जाने को भेजा। 23जब बरनाबास ने वहाँ पहुँच कर प्रभु
के अनुग्रह को सकारथ होते देखा तो वह बहुत प्रसन्न
हुआ और उसने उन सभी को प्रभु के प्रति भक्तिपूर्ण
हृदय से विश्वासी बने रहने को उत्साहित किया। 24क्योंकि
वह पवित्र आत्मा और विश्वास से पूर्ण एक उत्तम पुरुष
था। फिर प्रभु के साथ एक विशाल जनसमूह और जुड़
गया।
25बरनाबास शाऊल को खोजने तरसुस को चला
गया। 26फिर वह उसे ढूँढ कर अंताकिया ले आया।
सारे साल वे कलीसिया से मिलते जुलते और विशाल
जनसमूह को उपदेश देते रहे। अंताकिया में सबसे पहले
इन्हीं शिष्यों को "मसीही" कहा गया।
27इसी समय यरुशलेम से कुछ नबी अंताकिया आये।
28उनमें से अगबुस नाम के एक भविष्यवक्ता ने खड़े
होकर पवित्र आत्मा के द्वारा यह भविष्यवाणी की कि
सारी दुनिया में एक भयानक अकाल पड़ने वाला है
(क्लोदियुस के काल में यह अकाल पड़ा था) 29तब हर
शिष्य ने अपनी शक्ति के अनुसार यहूदिया में रहने
वाले बन्धुओं की सहायता के लिये कुछ भेजने का
निश्चय किया था। 30सो उन्होंने ऐसा ही किया और
उन्होंने बरनाबास और शाऊल के हाथों अपने बुज़ुर्गों
के पास अपने उपहार भेजे

हेरोदेस का कलीसिया पर अत्याचार

12 उसी समय के आसपास राजा हेरोदेस*ने
कलीसिया के कुछ सदस्यों को सताना प्रारम्भ
कर दिया। 2उसने यूहन्ना के भाई याकूब की, तलवार से
हत्या करवा दी। 3उसने जब यह देखा कि इस बात से
यहूदी प्रसन्न होते हैं तो उसने पतरस को भी बंदी बनाने
के लिये हाथ बढ़ाया (यह बिना ख़मीर की रोटी के
उत्सव के दिनों की बात है) 4हेरोदेस ने पतरस को
पकड़ कर जेल में डाल दिया। उसे चार चार सैनिकों
की चार पंक्तियों के पहरे के हवाले कर दिया गया।
प्रयोजन यह था कि उस पर मुकदमा चलाने के लिये
फसह पर्व के बाद उसे लोगों के सामने बाहर लाया
जाये। 5सो पतरस को जेल में रोके रखा गया। उधर
कलीसिया हृदय से उसके लिये परमेश्वर से प्रार्थना
करती रही।

जेल से पतरस का छुटकारा

6जब हेरोदेस मुकदमा चलाने के लिये उसे बाहर
लाने को था, उस रात पतरस दो सैनिकों के बीच सोया
हुआ था। वह दो ज़ंजीरों से बँधा था और द्वार पर
पहरेदार जेल की रखवाली कर रहे थे। 7अचानक प्रभु
का एक स्वर्गदूत वहाँ आ खड़ा हुआ, जेल की कोठरी
प्रकाश से जगमग हो उठी, उसने पतरस की बगल
थपथपाई और उसे जगाते हुए कहा, "जल्दी खड़ा हो।"
जंजीरें उसके हाथों से खुल कर गिर पड़ी। 8तभी स्वर्गदूत
ने उसे आदेश दिया, "तैयार हो और अपनी चप्पल पहन
ले।" सो पतरस ने वैसा ही किया। स्वर्गदूत ने उससे फिर
कहा, "अपना चोगा पहन ले और मेरे पीछे चला आ।"
9फिर उसके पीछे-पीछे पतरस बाहर निकल आया।
वह समझ नहीं पाया कि स्वर्गदूत जो कुछ कर रहा था,
वह यथार्थ था। उसने सोचा कि वह कोई दर्शन देख
रहा है। 10पहले और दूसरे पहरेदार को छोड़ कर आगे
बढ़ते हुए वे लोहे के उस फाटक पर आ पहुँचे जो नगर
की ओर जाता था। वह उनके लिये आप से आप खुल
गया। और वे बाहर निकल गये। वे अभी गली पार ही
गये थे कि वह स्वर्गदूत अचानक उसे छोड़ गया।
11फिर पतरस को जैसे होश आया, वह बोला, "अब
मेरी समझ में आया कि यह वास्तव में सच है कि प्रभु
ने अपने स्वर्गदूत को भेज कर हेरोदेस के पंजे से मुझे
छुड़ाया है। यहूदी लोग मुझ पर जो कुछ घटने की सोच
रहे थे, उससे उसी ने मुझे बचाया है। 12जब उसने यह
समझ लिया तो वह यूहन्ना की माता मरियम के घर

हेरोदेस यहाँ हेरोदेस से अभिप्राय है हेरोदेस प्रथम जो हेरोदेस महान का पोता था।

चला गया। (यूहन्ना जो मरकुस भी कहलाता है।) वहाँ
बहुत से लोग एक साथ प्रार्थना कर रहे थे। 13पतरस ने
द्वार को बाहर से खटखटाया। उसे देखने रूदे नाम की
एक दासी वहाँ आयी। 14पतरस की आवाज़ को पहचान
कर आनन्द के मारे उसके लिए द्वार खोले बिना ही वह
उल्टी भीतर दौड़ गयी और उसने बताया कि पतरस
द्वार पर खड़ा है। 15वे उससे बोले, "तू पागल हो गयी है।"
किन्तु वह बलपूर्वक कहती रही कि यह ऐसा ही है। इस
पर उन्होंने कहा, "वह उसका स्वर्गदूत होगा।"

16उधर पतरस द्वार खटखटाता ही रहा। फिर उन्होंने
जब द्वार खोला और उसे देखा तो वे अचरज में पड़ गये।
17उन्हें हाथ से चुप रहने का संकेत करते हुए उसने
खोलकर बताया कि प्रभु ने उसे जेल से कैसे बाहर
निकाला है। उसने कहा, "याकूब तथा अन्य बन्धुओं
को इस विषय में बता देना।" और तब वह उस स्थान
को छोड़कर किसी दूसरे स्थान को चला गया।

18जब भोर हुई तो पहरेदारों में बड़ी खलबली फैल
गयी। वे अचरज में पड़े सोच रहे थे कि पतरस के साथ
क्या हुआ होगा। 19इसके बाद हेरोदेस जब उसकी खोज
बीन कर चुका और वह उसे नहीं मिला तो उसने
पहरेदारों से पूछताछ की और उन्हें मार डालने की
आज्ञा दी।

हेरोदेस की मृत्यु

हेरोदेस फिर यहूदिया से जा कर कैसरिया में रहने
लगा। वहाँ उसने कुछ समय बिताया। 20वह सूर और
सैदा के लोगों से बहुत क्रोधित रहता था। वे एक समूह
बनाकर उससे मिलने आये। राजा के निजी सेवक
बलासतुस को मानकर उन्होंने हेरोदेस से शांति की
प्रार्थना की क्योंकि उनके देश को राजा के देश से ही
खाने को मिलता था। 21एक निश्चित दिन हेरोदेस अपनी
राजसी वेश-भूषा पहन कर अपने सिंहासन पर बैठा
और लोगों को भाषण देने लगा।

22लोग चिल्लाये, "यह तो किसी देवता की वाणी है,
मनुष्य की नहीं।" 23क्योंकि हेरोदेस ने परमेश्वर को
महिमा प्रदान नहीं की थी, इसलिए तत्काल प्रभु के एक
स्वर्गदूत ने उसे बीमार कर दिया। और उसमें कीड़े पड़
गये जो उसे खाने लगे और वह मर गया। 24किन्तु
परमेश्वर का वचन प्रचार पाता रहा और फैलता रहा।
25बरनाबास और शाऊल यरूशलेम में अपना काम
पूरा करके मरकुस कहलाने वाले यूहन्ना को भी साथ
लेकर अंताकिया लौट आये

बरनाबास और शाऊल का चुना जाना

13 अंताकिया के कलीसिया में कुछ नबी और
बरनाबास, काला कहलाने वाला शमौन, कुरेन
का लूकियुस, देश के चौथाई भाग के राजा हेरोदेस के
साथ पालितपोषित मनाहेम और शाऊल जैसे कुछ शिक्षक
थे। 2वे जब उपवास करते हुए प्रभु की उपासना में लगे
हुए थे, तभी पवित्र आत्मा ने कहा, "बरनाबास और
शाऊल को जिस काम के लिये मैंने बुलाया है, उसे
करने के लिये मेरे निमित्त, उन्हें अलग कर दो।"

3सो जब शिक्षक और नबी अपना उपवास और
प्रार्थना पूरी कर चुके तो उन्होंने बरनाबास और शाउल
पर अपने हाथ रखे और उन्हें विदा कर दिया।

बरनाबास और शाऊल की साइप्रस यात्रा

4पवित्र आत्मा के द्वारा भेजे हुए वे सिलुकिया गये
जहाँ से जहाज़ में बैठ कर वे साइप्रस पहुँचें। 5फिर जब
वे सलमीस पहुँचे तो उन्होंने यहूदियों के सभागारों में
परमेश्वर के वचन का प्रचार किया। यूहन्ना सहायक
के रूप में उनके साथ था।

6उस समूचे द्वीप की यात्रा करते हुए वे पाफुस तक
जा पहुँचे। वहाँ उन्हें एक जादूगर मिला, वह झूठा नबी
था। उस यहूदी का नाम था बार-यीशु। 7वह एक
अत्यंत बुद्धिमान पुरुष था। वह राज्यपाल सिरगियुस
पौलुस का सेवक था जिसने परमेश्वर का वचन फिर
सुनने के लिये बरनाबास और शाऊल को बुलाया था।
8किन्तु इलीमास जादूगर ने उनका विरोध किया। (यह
बार-यीशु का अनुवादित नाम है)। उसने नगर-पति
के विश्वास को डिगाने का जतन किया। 9फिर शाऊल
ने जिसे पौलूस भी कहा जाता था, पवित्र आत्मा से
अभिभूत होकर इलीमास पर पैनी दृष्टि डालते हुए
कहा, 10"सभी प्रकार के छलों और धूर्तताओं से भरे,
अरे शैतान के बेटे, तू हर नेकी का शत्रु है। क्या तू प्रभु
के सीधे-सच्चे मार्ग को तोड़ना मरोड़ना नहीं छोड़ेगा?
11अब देख प्रभु का हाथ तुझ पर आ पड़ा है। तू अंधा
हो जायेगा और कुछ समय के लिये सूर्य तक को नहीं
देख पायेगा।"

तुरन्त एक धुंध और अँधेरा उस पर छा गया और
वह इधर-उधर टटोलने लगा कि कोई उसका हाथ
पकड़ कर उसे चलाये। 12सो नगर-पति ने, जो कुछ
घटा था, जब उसे देखा तो उसने विश्वास धारण किया।
वह प्रभु सम्बन्धी उपदेशों से बहुत चकित हुआ।

पौलुस और बरनाबास का साइप्रस से प्रस्थान

13फिर पौलुस और उसके साथी पाफुस से नाव के
द्वारा पम्फूलिया के पिरगा में आ गये। किन्तु यूहन्ना उन्हें
वहीं छोड़ कर यरुशलेम लौट आया। 14उधर वे अपनी
यात्रा पर बढ़ते हुए पिरगा से पिसिदिया के अंताकिया में
आ पहुँचे। फिर सब्त के दिन यहूदी प्रार्थना-सभागार में
जा कर बैठ गये। 15व्यवस्था के विधान और नबियों के
ग्रन्थों का पाठ कर चुकने के बाद यहूदी प्रार्थना सभागार
के अधिकारियों ने उनके पास यह संदेशा कहला भेजा,

"हे भाइयो, लोगों को शिक्षा देने के लिये तुम्हारे पास
कहने को कोई और वचन है तो उसे सुनाओ।"
16इस पर पौलुस खड़ा हुआ और अपने हाथ हिलाते
हुए बोलने लगा, "हे इस्राएल के लोगो और परमेश्वर से
डरने वाले ग़ैर यहूदियो, सुनो: 17इन इस्राएल के लोगों
के परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को चुना था और जब
हमारे लोग मिस्र में ठहरे हुए थे, उसने उन्हें महान्
बनाया था और अपनी महान शक्ति से ही वह उनको
उस धरती से बाहर निकाल लाया था। 18और लगभग
चालीस वर्ष तक वह जंगल में उनकी सहता रहा।
19और कनान देश की सात जातियों को नष्ट करके
उसने वह धरती इस्राएल के लोगों को उत्तराधिकार के
रूप में दे दी। 20इस सब कुछ में कोई लगभग साढ़े चार
सौ वर्ष लगे।
"इसके बाद शमूएल नबी के समय तक उसने उन्हें
अनेक न्यायकर्ता दिये। 21फिर उन्होंने एक राजा की
माँग की, सो परमेश्वर ने बेंजामिन के गोत्र के एक
व्यक्ति कीश के बेटे शाऊल को चालीस साल के लिये
उन्हें दे दिया। 22फिर शाऊल को हटा कर उसने उनका
राजा दाऊद को बनाया जिसके विषय में उसने यह
साक्षी दी थी, 'मैंने यिशै के बेटे दाऊद को एक ऐसे
व्यक्ति के रूप में पाया है, जो मेरे मन के अनुकूल है।
जो कुछ मैं उससे कराना चाहता हूँ, वह उस सब कुछ
को करेगा।' 23इस ही मनुष्य के एक वंशज को अपनी
प्रतिज्ञा के अनुसार परमेश्वर इस्राएल में उद्धार कर्ता
यीशु के रूप में ला चुका है। 24उसके आने से पहले
यूहन्ना इस्राएल के सभी लोगों में मन फिराव के बपतिस्मा
का प्रचार करता रहा है। 25यूहन्ना जब अपने काम को
पूरा करने को था, तो उसने कहा था, 'तुम मुझे जो
समझते हो, मैं वह नहीं हूँ। किन्तु एक ऐसा है जो मेरे
बाद आ रहा है। मैं जिसकी जूतियों के बन्ध खोलने
लायक भी नहीं हूँ।'
26"भाइयो, इब्राहीम की सन्तानो और परमेश्वर के
उपासक ग़ैर यहूदियो! उद्धार का यह सुसंदेश हमारे
लिए ही भेजा गया है। 27यरुशलेम में रहने वालों और
उनके शासकों ने यीशु को नहीं पहचाना। और उसे
दोषी ठहरा दिया। इस तरह उन्होंने नबियों के उन
वचनों को ही पूरा किया जिनका हर सब्त के दिन पाठ
किया जाता है। 28और यद्यपि उन्हें उसे मृत्यु दण्ड देने
का कोई आधार नहीं मिला, तो भी उन्होंने पिलातुस से
उसे मरवा डालने की माँग की। 29उसके विषय में जो
कुछ लिखा था, जब वे उस सब कुछ को पूरा कर चुके
तो उन्होंने उसे क्रूस पर से नीचे उतार लिया और एक
कब्र में रख दिया। 30किन्तु परमेश्वर ने उसे मरने के
बाद फिर से जीवित कर दिया। 31और फिर जो लोग
गलील से यरुशलेम तक उसके साथ रहे थे वह उनके
सामने कई दिनों तक प्रकट होता रहा। ये अब लोगों के
लिये उसकी साक्षी हैं। 32हम तुम्हें उस प्रतिज्ञा के विषय
में सुसमाचार सुना रहे हैं जो हमारे पूर्वजों के साथ की
गयी थी
33यीशु को, मर जाने के बाद पुनर्जीवित करके,
उनकी संतानों के लिये परमेश्वर ने उसी प्रतिज्ञा को
हमारे लिए पूरा किया है। जैसा कि भजन संहिता के
दूसरे भजन में लिखा भी गया है:

'तू मेरा पुत्र है, आज ही मैंने तुझे जन्म दिया है।'

भजन संहिता 2:7

34और उसने उसे मरे हुओं में से जिला कर उठाया
ताकि क्षय होने के लिये उसे फिर लौटना न पड़े। उसने
इस प्रकार कहा था:

'मैं तुझे वे पवित्र और अटल आशिष दूँगा जिन्हें देने
का वचन मैंने दाऊद को दिया।' *यशायाह 55:3*

35इसी प्रकार एक अन्य भजन में वह कहता है: 'तू
अपने उस पवित्र जन को क्षय का अनुभव नहीं होने
देगा।' *भजन संहिता 16:10*

36फिर दाऊद अपने युग में परमेश्वर के प्रयोजन के
अनुसार अपना सेवा-कार्य पूरा करके चिर-निद्रा में
सो गया, उसे उसके पूर्वजों के साथ दफना दिया गया
और उसका क्षय हुआ। 37किन्तु जिसे परमेश्वर ने मरे
हुओं के बीच से जिला कर उठाया, उसका क्षय नहीं
हुआ। 38-39सो हे भाइयों, तुम्हें जान लेना चाहिये कि
यीशु के द्वारा ही पापों की क्षमा का उपदेश तुम्हें दिया
गया है। और इसी के द्वारा हर कोई जो विश्वासी है,
उन पापों से छुटकारा पा सकता है, जिनसे तुम्हें मूसा
की व्यवस्था छुटकारा नहीं दिला सकती थी। 40सो
सावधान रहो, कहीं नबियों ने जो कुछ कहा है, तुम पर
न घट जाये:

41'निन्दा करने वालो, देखो, भोचक्के हो कर मर
जाओ, क्योंकि तुम्हारे युग में एक कार्य ऐसा करता हूँ,
जिसकी चर्चा तक पर तुमको कभी प्रतीति नहीं होने
की!'" *हबक्कूक 1:5*

42पौलुस और बरनाबास जब वहाँ से जा रहे थे तो
लोगों ने उनसे अगले सब्त के दिन ऐसी ही और बातें
बताने की प्रार्थना की। 43जब सभा समाप्त हुई तो बहुत
से यहूदियों और ग़ैर यहूदी भक्तों ने पौलुस और बरनाबास
का अनुसरण किया। पौलुस और बरनाबास ने उनसे
बातचीत करते हुए आग्रह किया कि वे परमेश्वर के
अनुग्रह में स्थिति बनाये रखें।
44अगले सब्त के दिन तो लगभग समूचा नगर ही प्रभु
का वचन सुनने के लिये उमड़ पड़ा। 45इस विशाल जन
समूह को जब यहूदियों ने देखा तो वे बहुत कुढ़ गये

और अपशब्दों का प्रयोग करते हुए पौलुस ने जो कुछ
कहा था, उसका विरोध करने लगे।

46किन्तु पौलुस और बरनाबास ने निडर होकर कहा,
“यह आवश्यक था कि परमेश्वर का वचन पहले तुम्हें
सुनाया जाता किन्तु क्योंकि तुम उसे नकारते हो तथा
तुम अपने आपको अनन्त जीवन के योग्य नहीं समझते,
सो हम अब ग़ैर यहूदियों की ओर मुड़ते हैं। 47क्योंकि
प्रभु ने हमें ऐसी आज्ञा दी है:

‘मैंने तुमको ग़ैर यहूदियों के लिये ज्योति बनाया,
ताकि सभी का उद्धार करें, दूर धरा के अपर छोर
तक।’” *यशायाह 49:6*

48ग़ैर यहूदियों ने जब यह सुना तो वे बहुत प्रसन्न हुए
और उन्होंने प्रभु के वचन का सम्मान किया। फिर
उन्होंने जिन्हें अनन्त जीवन पाने के लिये निश्चित
किया था, विश्वास ग्रहण कर लिया।

49इस प्रकार उस समूचे क्षेत्र में प्रभु के वचन का
प्रचार प्रसार होता रहा। 50उधर यहूदियों ने उच्च कुल
की भक्त महिलाओं और नगर के प्रमुख व्यक्तियों को
भड़काया तथा पौलुस और बरनाबास के विरुद्ध अत्याचार
करने आरम्भ कर दिये और दबाव डाल कर उन्हें
अपने क्षेत्र से बाहर निकलवा दिया। 51फिर पौलुस और
बरनाबास उनके विरोध में अपने पैरों की धूल झाड़
कर इकुनियुम को चल दिये। 52किन्तु उनके शिष्य,
आनन्द और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते रहे।

इकुनियुम में पौलुस और बरनाबास

14 इसी प्रकार पौलुस और बरनाबास इकुनियुम
में यहूदी प्रार्थना सभागार में गये। वहाँ उन्होंने
इस ढंग से व्याख्यान दिया कि यहूदियों के एक विशाल
जन समूह ने विश्वास धारण किया। 2किन्तु उन यहूदियों
ने जो विश्वास नहीं कर सके थे, ग़ैर यहूदियों को
भड़काया और बन्धुओं के विरुद्ध उन के मनों में
कटुता पैदा कर दी। 3सो पौलुस और बरनाबास वहाँ
बहुत दिनों तक ठहरे रहे तथा प्रभु के विषय में निर्भयता
से प्रवचन करते रहे। उनके द्वारा प्रभु अद्भुत चिन्ह
और आश्चर्यकर्मो को करवाता हुआ अपने दया के
संदेश की प्रतिष्ठा कराता रहा। 4उधर नगर के लोगों में
फूट पड़ गयी। कुछ प्रेरितों की तरफ और कुछ यहूदियों
की तरफ़ हो गये।

5फिर जब ग़ैर यहूदियों और यहूदियों ने अपने नेताओं
के साथ मिलकर उनके साथ बुरा व्यवहार करने और
उन पर पथराव करने की चाल चली, 6‘तो पौलुस और
बरनाबास को इसका पता चल गया और वे लुकाउनिया
के लिस्त्रा और दिरबे जैसे नगरों तथा आसपास के
क्षेत्र में बच भागे। 7वहाँ भी वे सुसमाचार का प्रचार
करते रहे।

लिस्तरा और दिरबे में पौलुस

8लिस्तरा में एक व्यक्ति बैठा हुआ था। वह अपने पैरों
से अपंग था। वह जन्म से ही लँगड़ा था, चल फिर तो
वह कभी नहीं पाया। 9इस व्यक्ति ने पौलुस को बोलते
हुए सुना था। पौलुस ने उस पर दृष्टि गड़ाई और देखा
कि अच्छा हो जाने का विश्वास उसमें है। 10सो पौलुस
ने ऊँचे स्वर में कहा, “अपने पैरों पर सीधा खड़ा हो
जा।” सो वह ऊपर उछला और चलने-फिरने लगा।
11पौलुस ने जो कुछ किया था, जब भीड़ ने उसे देखा तो
लोग लुकाउनिया की भाषा में पुकार कर कहने लगे,
“हमारे बीच मनुष्यों का रूप धारण करके, देवता उतर
आये हैं।”

12वे बरनाबास को “ज़ेअस”* और पौलुस को
“हिरमेस”* कहने लगे। (पौलुस को हिरमेस इसलिये
कहा गया क्योंकि वह प्रमुख वक्ता था।) 13नगर के
ठीक बाहर बने ज़ेअस के मंदिर का याजक नगर द्वार
पर साँड़ों और मालाओं को लेकर आ पहुँचा। वह भीड़
के साथ पौलुस और बरनाबास के लिये बलि चढ़ाना
चाहता था। 14किन्तु जब प्रेरित बरनाबास और पौलुस ने
यह सुना तो उन्होंने अपने कपड़े फाड़ डाले* और वे
ऊँचे स्वर में यह कहते हुए भीड़ में घुस गये, 15“हे
लोगो, तुम यह क्यों कर रहे हो? हम भी वैसे ही मनुष्य
हैं, जैसे तुम हो। यहाँ हम तुम्हें सुसमाचार सुनाने आये हैं
ताकि तुम इन व्यर्थ की बातों से मुड़ कर उस सजीव
परमेश्वर की ओर लौटो जिसने आकाश, धरती, सागर
और इनमें जो कुछ है, उसकी रचना की। 16बीते काल
में उसने सभी जातियों को उनकी अपनी-अपनी राहों
पर चलने दिया। 17किन्तु तुम्हें उसने स्वयं अपनी साक्षी
दिये बिना नहीं छोड़ा। क्योंकि उसने तुम्हारे साथ भलाइयाँ
कीं। उसने तुम्हें आकाश से वर्षा दी और ऋतु के
अनुसार फसलें दीं। वही तुम्हें भोजन देता है और तुम्हारे
मन को आनन्द से भर देता है।”

18इन वचनों के बाद भी वे भीड़ को उनके लिये बलि
चढ़ाने से प्राय: नहीं रोक पाये। 19फिर अंताकिया और
इकुनियुम से आये यहूदियों ने भीड़ को अपने पक्ष में
करके पौलुस पर पथराव किया और उसे मरा जान
कर नगर के बाहर घसीट ले गये। 20फिर जब शिष्य
उसके चारों ओर इकट्ठे हुए, तो वह उठा और नगर में
चला आया और फिर अगले दिन बरनाबास के साथ
वह दिरबे के लिए चल पड़ा।

ज़ेअस यूनानी बहुदेववादी हैं। ज़ेअस उनका एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण देवता था।

हिरमेस एक और दूसरा यूनानी देवता। यूनानियों के विश्वास के अनुसार हिरमेस दूसरे देवताओं का संदेशवाहक।

“पौलुस ... डाले” लोगों के इस आचरण पर पौलुस और बरनाबास ने क्रोध व्यक्त करने के लिये अपने वस्त्र फाड़ डाले।

सीरिया के अंताकिया को लौटना

21-22उस नगर में उन्होंने सुसमाचार का प्रचार करके
बहुत से शिष्य बनाये। और उनकी आत्माओं को स्थिर
करके विश्वास में बने रहने के लिये उन्हें यह कह
कर प्रेरित किया "हमें बड़ी यातनाएँ झेल कर परमेश्वर
के राज्य में प्रवेश करना है," वे लिस्तरा, इकुनियुम
और अंताकिया लौट आये। 23हर कलीसिया में उन्होंने
उन्हें उस प्रभु को सौंप दिया जिसमें उन्होंने विश्वास
किया था।

24इसके पश्चात पिसिदिया से होते हुए वे पम्फूलिया
आ पहुचें। 25और पिरगा में जब सुसमाचार सुना चुके तो
इटली चले गये। 26वहाँ से वे अंताकिया को जहाज़ द्वारा
गये जहाँ जिस काम को अभी उन्होंने पूरा किया था,
उस काम के लिये वे परमेश्वर के अनुग्रह को समर्पित
हो गये। 27सो जब वे पहुँचे तो उन्होंने कलीसिया के
लोगों को इकट्ठा किया और परमेश्वर ने उनके साथ
जो कुछ किया था, उसका विवरण कह सुनाया। और
उन्होंने घोषणा की कि परमेश्वर ने विधर्मियों के लिये
भी विश्वास का द्वार खोल दिया है। 28फिर अनुयायियों
के साथ वे बहुत दिनों तक वहाँ ठहरे रहे।

यरुशलेम में एक सभा

15 फिर कुछ लोग यहूदिया से आये और भाइयों
को शिक्षा देने लगे: "यदि मूसा की विधि के
अनुसार तुम्हारा ख़तना नहीं हुआ है तो तुम्हारा उद्धार
नहीं हो सकता।" 2पौलुस और बरनाबास उनसे सहमत
नहीं थे, सो उनमें एक बड़ा विवाद उठ खड़ा हुआ। सो
पौलुस बरनाबास तथा उनके कुछ और साथियों को इस
समस्या के समाधान के लिये प्रेरितों और मुखियाओं के
पास यरुशलेम भेजने का निश्चय किया गया।

3वे कलीसिया के द्वारा भेजे जाकर फीनीके और
सामरिया होते हुए सभी भाइयों को अधर्मियों के हृदय
परिवर्तन का विस्तार के साथ समाचार सुनाकर उन्हें
हर्षित कर रहे थे। 4फिर जब वे यरूशलेम पहुँचे तो
कलीसिया ने, प्रेरितों ने और बुज़ुर्गों ने उनका स्वागत
सत्कार किया। और उन्होंने उनके साथ परमेश्वर ने
जो कुछ किया था, वह सब कुछ उन्हें कह सुनाया।
5इस पर फरीसियों के दल के कुछ विश्वासी खड़े हुए
और बोले, "उनका खतना अवश्य किया जाना चाहिये
और उन्हें आदेश दिया जाना चाहिए कि वे मूसा की
व्यवस्था के विधान का पालन करें।"

6सो इस प्रश्न पर विचार करने के लिये प्रेरित तथा
बुज़ुर्ग लोग परस्पर एकत्र हुए। 7एक लम्बे चौड़े वाद-विवाद
के बाद पतरस खड़ा हुआ और उनसे बोला, "भाइयो!
तुम जानते हो कि बहुत दिनों पहले तुममें से प्रभु ने एक
चुनाव किया था कि मेरे द्वारा अधर्मी लोग सुसमाचार
का संदेश सुनेंगे और विश्वास करेंगे। 8और अन्तर्यामी
परमेश्वर ने हमारे ही समान उन्हें भी पवित्र आत्मा का
वरदान देकर, उनके सम्बन्ध में अपना समर्थन दर्शाया
था। 9विश्वास के द्वारा उनके हृदयों को पवित्र करके
हमारे और उनके बीच उसने कोई भेद भाव नहीं
किया। 10सो अब शिष्यों की गर्दन पर एक ऐसा जुआ
लाद कर जिसे न हम उठा सकते हैं और न हमारे
पूर्वज, तुम परमेश्वर को झमेले में क्यों डालते हो?
11किन्तु हमारा तो यह विश्वास है कि प्रभु यीशु के
अनुग्रह से जैसे हमारा उद्धार हुआ है, वैसे ही हमें
भरोसा है कि उनका भी उद्धार होगा!" 12इस पर समूचा
दल चुप हो गया और बरनाबास तथा पौलुस को सुनने
लगा। वे, ग़ैर यहूदियों के बीच परमेश्वर ने उनके द्वारा
दो अद्भुत चिन्ह प्रकटकिए थे, और आश्चर्य कर्म
किये थे, उनका विवरण दे रहे थे। 13वे जब बोल चुके
तो याकूब कहने लगा, "हे भाइयो, मेरी सुनो, 14शमौन
ने बताया था कि परमेश्वर ने ग़ैर यहूदियों में से कुछ
लोगों को अपने नाम के लिये चुनकर सर्वप्रथम कैसे
प्रेम प्रकट किया था। 15नबियों के वचन भी इसका
समर्थन करते हैं। जैसा कि लिखा गया है:

16'मैं इसके बाद आऊँगा। फिर से मैं खड़ा करूँगा
दाऊद के उस घर को जो गिर चुका। फिर से सँवारूँगा
उसके खण्डहरों को जीर्णोद्धार करूँगा।

17ताकि जो बचे हैं वे ग़ैर यहूदी सभी जो अब मेरे
कहलाते हैं, प्रभु की खोज करें

18यह बात वही प्रभु कहता है जो युगयुग से इन बातो
को प्रकटाता रहा है।' *आमोस 9:11-12*

19"इस प्रकार मेरा यह निर्णय है कि हमें उन लोगों
को, जो ग़ैर यहूदी होते हुए भी परमेश्वर की ओर मुड़े
हैं, सताना नहीं चाहिये। 20बल्कि हमें तो उनके पास
लिख भेजना चाहिये कि वे मूर्तियों द्वारा अपवित्र किये
गये खाने से बचें। व्यभिचार से बचें, गला घोट कर मारे
गये किसी भी पशु का माँस खाने से बचें और लहू को
कभी न खायें। 21अनादि काल से मूसा की व्यवस्था
के विधान का पाठ करने वाले नगर-नगर में पाए जाते
रहे हैं। हर सब्त के दिन मूसा की व्यवस्था के विधान
का प्रार्थना सभाओं में पाठ होता रहा है।"

ग़ैर यहूदी-विश्वासियों के नाम पत्र

22फिर प्रेरितों और बुज़ुर्गों ने समूचे कलीसिया के
साथ यह निश्चय किया कि उन्हीं में से कुछ लोगों को
चुनकर पौलुस और बरनाबास के साथ अंताकिया भेजा
जाये। सो उन्होंने बरसब्बा कहे जाने वाले यहूदा और
सिलास को चुन लिया। वे भाइयों में सर्व प्रमुख थे।
23उन्होंने उनके हाथों यह पत्र भेजा:

तुम्हारे बंधु, बुज़ुर्गो और प्रेरितों की ओर से
अंताकिया, सीरिया और किलिकिया के गैर यहूदी
भाइयों को नमस्कार पहुँचे

24हमने जब से यह सुना है कि हमसे कोई आदेश
पाये बिना ही, हममें से कुछ लोगों ने जाकर अपने
शब्दों से तुम्हें दुःख पहुँचाया है, और तुम्हारे मन
को अस्थिर कर दिया है25हम सब ने परस्पर
सहमत होकर यह निश्चय किया है कि हम अपने
में से कुछ लोग चुनें और अपने प्रिय बरनाबास
और पौलुस के साथ उन्हें तुम्हारे पास भेजें। 26ये वे
ही लोग हैं जिन्होंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम
के लिये अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी थी। 27हम
यहूदा और सिलास को भेज रहे हैं। वे तुम्हें अपने
मुँह से इन सब बातों को बताएँगें। 28पवित्र आत्मा
को और हमें यही उचित जान पड़ा कि तुम पर इन
आवश्यक बातों के अतिरिक्त और किसी बात का
बोझ न डाला जाये:

29मूर्तियों पर चढ़ाया गया भोजन तुम्हें नहीं लेना
चाहिये। रक्त, गला घोंट कर मारे गये पशु और व्यभिचार
से बचे रहो।

यदि तुम ने अपने आप को इन बातों से बचाये
रखा तो तुम्हारा कल्याण होगा। अच्छा विदा।'

30इस प्रकार उन्हें विदा कर दिया गया और वे अंताकिया
जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने धर्म-सभा बुलाई और उन्हें वह
पत्र दे दिया। 31पत्र पढ़ कर जो प्रोत्साहन उन्हें मिला,
उस पर उन्होंने आनन्द मनाया। 32यहूदा और सिलास
ने, जो स्वयं ही दोनों नबी थे, भाइयों के सामने उन्हें
उत्साहित करते हुए और दृढ़ता प्रदान करते हुए, एक
लम्बा प्रवचन किया। 33वहाँ कुछ समय बिताने के बाद,
भाइयों ने उन्हें शांतिपूर्वक उन्हीं के पास लौट जाने को
विदा किया जिन्होंने उन्हें भेजा था। 34* 35पौलुस तथा
बरनाबास ने अंताकिया में कुछ समय बिताया। बहुत से
दूसरे लोगों के साथ उन्होंने प्रभु के वचन का उपदेश
देते हुए लोगों में सुसमाचार का प्रचार किया।

पौलुस और बरनाबास का अलग होना

36कुछ दिनों बाद बरनाबास से पौलुस ने कहा, "आओ,
जिन-जिन नगरों में हमने प्रभु के वचन का प्रचार
किया है, वहाँ अपने भाइयों के पास वापस चल कर यह
देखें कि वे क्या कुछ कर रहे हैं।" 37बरनाबास चाहता
था कि मरकुस कहलाने वाले यूहन्ना को भी वे अपने
साथ ले चलें। 38किन्तु पौलुस ने यही ठीक समझा कि वे
उसे अपने साथ न लें जिसने पम्फूलिया में उनका साथ
छोड़ दिया था और (प्रभु के) कार्य में जिसने उनका
साथ नहीं निभाया। 39इस पर उन दोनों में तीव्र विरोध
पैदा हो गया। परिणाम यह हुआ कि वे आपस में एक
दूसरे से अलग हो गये। बरनाबास मरकूस को लेकर
पानी के जहाज़ से साइप्रस चला गया। 40पौलुस सिलास
को चुनकर वहाँ से चला गया और भाइयों ने उसे प्रभु
के संरक्षण में सौंप दिया। 41सो पौलुस सीरिया और
किलिकिया की यात्रा करते हुए वहाँ की कलीसिया को
सुदृढ़ करता रहा।

तिमुथियुस का पौलुस और सिलास के साथ जाना

16 पौलुस दिरबे और लुस्तरा में भी आया। वहीं
तिमुथियुस नामक एक शिष्य हुआ करता था।
वह किसी विश्वासी यहूदी महिला का पुत्र था किन्तु
उसका पिता यूनानी था। 2लिस्तरा और इकुनियुम के
बंधुओं के साथ उसकी अच्छी बोलचाल थी। 3पौलुस
तिमुथियुस को यात्रा पर अपने साथ ले जाना चाहता
था। सो उसे उसने साथ ले लिया और उन स्थानों पर
रहने वाले यहूदियों के कारण उसका ख़तना किया;
क्योंकि वे सभी जानते थे कि उसका पिता एक यूनानी
था। 4नगरों से यात्रा करते हुए उन्होंने वहाँ के लोगों को
उन नियमों के बारे में बताया जिन्हें यरुशलेम में प्रेरितों
और बुज़ुर्गो ने निश्चित किया था। 5इस प्रकार वहाँ की
कलीसिया का विश्वास और सुदृढ़ होता गया और दिन
प्रतिदिन उनकी संख्या बढ़ने लगी।

पौलुस का एशिया से बाहर बुलाया जाना

6सो वे फ्रूगिया और गलातिया के क्षेत्र से होकर
निकले क्योंकि पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया में वचन
सुनाने को मना कर दिया था। 7फिर वे जब मूसिया की
सीमा पर पहुँचे तो उन्होंने बितुनिया जाने का जतन
किया। किन्तु यीशु की आत्मा ने उन्हें वहाँ भी नहीं
जाने दिया। 8सो वे मूसिया होते हुए त्रोआस पहुँचे। 9रात
के समय पौलुस ने दिव्यदर्शन में देखा कि मैसिडोनिया
का एक पुरुष उस से प्रार्थना करते हुए कह रहा है,
"मैसिडोनिया में आ और हमारी सहायता कर।" 10इस
दिव्य दर्शन को देखने के बाद तुरन्त ही यह परिणाम
निकालते हुए कि परमेश्वर ने उन लोगों के बीच
सुसमाचार का प्रचार करने हमें बुलाया है, हमने
मैसिडोनिया जाने की ठान ली।

लीदिया का हृदय परिवर्तन

11इस प्रकार हमने त्रोआस से जल मार्ग द्वारा जाने के
लिये अपनी नावें खोल दीं और सीधे समोथ्राके जा
पहुँचे। फिर अगले दिन नियापुलिस चले गये। 12वहाँ से
हम एक रोमी उपनिवेश फिलिप्पी पहुँचे जो मैसिडोनिया
के उस क्षेत्र का एक प्रमुख नगर है। इस नगर में हमने
कुछ दिन बिताये।

13फिर सब्त के दिन यह सोचते हुए कि प्रार्थना
करने के लिये वहाँ कोई स्थान होगा हम नगर-द्वार के
बाहर नदी पर गये। हम वहाँ बैठ गये और एकत्र स्त्रियों
से बातचीत करने लगे। 14वहीं लीदिया नाम की एक

पद 34 कुछ यूनानी प्रतियों में पद 34 जोड़ा गया है। 'किन्तु सिलास ने वहीं ठहरे रहने का निश्चय किया।'

महिला थी। वह बैंजनी रंग के कपड़े बेचा करती थी।
वह परमेश्वर की उपासक थी। वह बड़े ध्यान से हमारी
बातें सुन रही थी। प्रभु ने उसके हृदय के द्वार खोल दिये
थे ताकि, जो कुछ पौलुस कह रहा था, वह उन बातों
पर ध्यान दे सके। 15अपने समूचे परिवार समेत बपतिस्मा
लेने के बाद उसने हमसे यह कहते हुए विनती की,
"यदि तुम मुझे प्रभु की सच्ची भक्त मानते हो तो आओ
और मेरे घर ठहरो।" सो उसने हमें जाने के लिए तैयार
कर लिया।

पौलुस और सिलास का बंदी बनाया जाना

16फिर ऐसा हुआ कि जब हम प्रार्थना स्थल की ओर
जा रहे थे, हमें एक दासी मिली जिसमें एक शकुन
बताने वाली आत्मा* समायी थी। वह लोगों का भाग्य
बता कर अपने स्वामियों को बहुत सा धन कमा कर
देती थी। 17वह हमारे और पौलुस के पीछे पीछे यह
चिल्लाते हुए हो ली, "ये लोग परम परमेश्वर के सेवक
हैं। ये तुम्हें मुक्ति के मार्ग का संदेश सुना रहे हैं।"

18वह बहुत दिनों तक ऐसा ही करती रही सो पौलुस
परेशान हो उठा। उसने मुड़ कर उस आत्मा से कहा,
"मैं यीशु मसीह के नाम पर तुझे आज्ञा देता हूँ, 'इस
लड़की में से बाहर निकल आ!'" सो वह उसमें से
तत्काल बाहर निकल गयी। 19फिर उसके स्वामियों ने
जब देखा कि उनकी कमाई की आशा पर ही पानी
फिर गया है तो उन्होंने पौलुस और सिलास को धर
दबोचा और उन्हें घसीटते हुए बाजार के बीच अधिकारियों
के सामने ले गये। 20फिर दण्डनायक के पास उन्हें ले
जाकर वे बोले, "ये लोग यहूदी हैं और हमारे नगर में
गड़बड़ी फैला रहे हैं। 21ये ऐसे रीति रिवाजों की वकालत
करते हैं जिन्हें अपनाना या जिन पर चलना हम रोमियों
के लिये न्यायपूर्ण नहीं है।"

22भीड़ भी विरोध में लोगों के साथ हो कर उन पर
चढ़ आयी। दण्डाधिकारी ने उनके कपड़े फड़वा कर
उतरवा दिये और आज्ञा दी कि उन्हें पीटा जाये। 23उन
पर बहुत मार पड़ चुकने के बाद उन्होंने उन्हें जेल में
डाल दिया और जेल के अधिकारी को आज्ञा दी कि
उन पर कड़ा पहरा बैठा दिया जाये। 24ऐसी आज्ञा पाकर
उसने उन्हें जेल की भीतरी कोठरी में डाल दिया। उसने
उनके पैर काठ में कस दिये।

25लगभग आधी रात गये पौलुस और सिलास परमेश्वर
के भजन गाते हुए प्रार्थना कर रहे थे और दूसरे कैदी
उन्हें सुन रहे थे। 26तभी वहाँ अचानक एक ऐसा भयानक
भूचाल आया कि जेल की नीवें हिल उठीं। और तुरंत
जेल के फाटक खुल गये। हर किसी की बेड़ियाँ ढीली
हो कर गिर पड़ीं। 27जेल के अधिकारी ने जाग कर
जब देखा कि जेल के फाटक खुले पड़े हैं तो उसने
अपनी तलवार खींच ली और यह सोचते हुए कि कैदी
भाग निकले हैं वह स्वयं को जब मारने ही वाला था
तभी 28पौलुस ने ऊँचे स्वर में पुकारते हुए कहा, "अपने
को हानि मत पहुँचा क्योंकि हम सब यहीं हैं।"

29इस पर जेल के अधिकारी ने मशाल मँगवाई और
जल्दी से भीतर गया। और भय से काँपते हुए पौलुस
और सिलास के सामने गिर पड़ा। 30फिर वह उन्हें
बाहर ले जा कर बोला, "महानुभावो, उद्धार पाने
के लिये मुझे क्या करना चाहिये?"

31उन्होंने उत्तर दिया, "प्रभु यीशु पर विश्वास कर।
इससे तेरा उद्धार होगा-तेरा और तेरे परिवार का।"
32फिर उसके समूचे परिवार के साथ उन्होंने उसे प्रभु
का वचन सुनाया। 33फिर जेल का वह अधिकारी उसी
रात और उसी घड़ी उन्हें वहाँ से ले गया। उसने उनके
घाव धोये और अपने सारे परिवार के साथ उनसे
बपतिस्मा लिया। 34फिर वह पौलुस और सिलास को
अपने घर ले आया और उन्हें भोजन कराया। परमेश्वर
में विश्वास ग्रहण कर लेने के कारण उसने अपने
समूचे परिवार के साथ आनन्द मनाया।

35जब पौ फटी तो दण्डाधिकारियों ने यह कहने अपने
सिपाहियों को वहाँ भेजा कि उन लोगों को छोड़ दिया
जाये। 36फिर जेल के अधिकारी ने ये बातें पौलुस को
बतायीं कि दण्डाधिकारी ने तुम्हें छोड़ देने के लिये
कहलवा भेजा है। इसलिये अब तुम बाहर आओ और
शांति के साथ चले जाओ।

37किन्तु पौलुस ने उन सिपाहियों से कहा, "यद्यपि हम
रोमी नागरिक हैं पर उन्होंने हमें अपराधी पाये बिना ही
सब के सामने मारा-पीटा और जेल में डाल दिया। और
अब चुपके-चुपके वे हमें बाहर भेज देना चाहते हैं,
निश्चय ही ऐसा नहीं होगा। होना तो यह चाहिये कि वे
स्वयं आकर हमें बाहर निकालें!"

38सिपाहियों ने दण्डाधिकारियों को ये शब्द जा सुनाये।
दण्डाधिकारियों को जब यह पता चला कि पौलुस और
सिलास रोमी हैं तो वे बहुत डर गये। 39सो वे वहाँ आये
और उनसे क्षमा याचना करके उन्हें बाहर ले गये और
उनसे उस नगर को छोड़ जाने को कहा। 40पौलुस और
सिलास जेल से बाहर निकल कर लीदिया के घर पहुँचे।
धर्म-बंधुओं से मिलते हुए उन्होंने उनका उत्साह बढ़ाया
और फिर वहाँ से चल दिये।

पौलुस और सिलास थिस्सलुनिके में

17 फिर अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया की यात्रा
समाप्त करके वे थिस्सुलुनिके जा पहुँचे। वहाँ
यहूदियों का एक प्रार्थना सभागार था। 2अपने सामान्य
स्वभाव के अनुसार पौलुस उनके पास गया और तीन
सब्त तक उनके साथ शास्त्रों पर विचार-विनिमय करता

आत्मा यह आत्मा एक शैतान की रूह थी जिसने इस लड़की
को एक विशेष ज्ञान दे रखा था।

रहा। 3और शास्त्रों से लेकर उन्हें समझाते हुए यह सिद्ध
करता रहा कि मसीह को यातनाएँ झेलनी ही थीं और
फिर उसे मरे हुओं में से जी उठना था। वह कहता,
"यह यीशु ही, जिसका मैं तुम्हारे बीच प्रचार करता हूँ,
मसीह है।" 4उनमें से कुछ जो सहमत हो गए थे, पौलुस
और सिलास के मत में सम्मिलित हो गये। परमेश्वर से
डरने वाले अनगिनत यूनानी भी उनमें मिल गये। इनमें
अनेक महत्त्वपूर्ण स्त्रियाँ भी सम्मिलित थीं। 5पर यहूदी
तो डाह में जले जा रहे थे। उन्होंने कुछ बाज़ारू गुंडों को
इकट्ठा किया और एक हुजूम बना कर नगर में दंगे
करा दिये। उन्होंने यासोन के घर पर धावा बोल दिया।
और यह कोशिश करने लगे कि किसी तरह पौलुस
और सिलास को लोगों के सामने ले आयें। 6किन्तु जब
वे उन्हें नहीं पा सके तो यासोन को और कुछ दूसरे
बन्धुओं को नगर अधिकारियों के सामने घसीट लाये।
वे चिल्लाये, "ये लोग जिन्होंने सारी दुनिया में उथल
पुथल मचा रखी है, अब यहाँ आये हैं। 7और यासोन
सम्मान के साथ उन्हें अपने घर में ठहराये हुए है। और
वे सभी कैसर के आदेशों के विरोध में काम करते हैं।
और कहते हैं 'एक राजा और है जिसका नाम है यीशु।"
8जब भीड़ ने और नगर के अधिकारियों ने यह सुना
तो वे भड़क उठे। 9और इस प्रकार उन्होंने यासोन तथा
दूसरे लोगों को ज़मानती मुचलके लेकर छोड़ दिया।

पौलुस और सिलास बिरिया में

10फिर तुरन्त रातों रात भाइयों ने पौलुस और सिलास
को बिरिया भेज दिया। वहाँ पहुँच कर वे यहूदी, प्रार्थना
सभागार में गये। 11ये लोग थिस्सुलुनिके के लोगों से
अधिक अच्छे थे। इन लोगों ने पूरा मन लगाकर वचन
को सुना और हर दिन शास्त्रों को उलटते पलटते यह
जाँचते रहे कि पौलुस ने जो बातें बतायी हैं, क्या वे सत्य
हैं। 12परिणामस्वरुप बहुत से यहूदियों और महत्त्वपूर्ण
यूनानी स्त्री-पुरुषों ने भी विश्वास ग्रहण किया। 13किन्तु
जब थिस्सुलुनिके के यहूदियों को यह पता चला कि
पौलुस बिरिया में भी परमेश्वर के वचन का प्रचार कर
रहा है तो वे वहाँ भी आ धमके। और वहाँ भी दंगे
करना और लोगों को भड़काना शुरू कर दिया। 14इसलिए
तभी भाइयों ने तुरन्त पौलुस को सागर तट पर जाने को
भेज दिया। किन्तु सिलास और तिमुथियुस वहीं ठहरे
रहे। 15पौलुस को ले जाने वाले लोगों ने उसे एथेंस पहुँचा
दिया और सिलास तथा तिमुथियुस के लिये यह आदेश
देकर कि वे जल्दी से जल्दी उसके पास आ जायें, वहाँ
से चल पड़े।

पौलुस एथेंस में

16पौलुस एथेंस में तिमुथियुस और सिलास की प्रतीक्षा
करते हुए नगर को मूर्तियों से भरा हुआ देखकर मन
ही मन तिलमिला रहा था। 17इसीलिये हर दिन वह
यहूदी धर्मसभा-भवन में यहूदियों और यूनानी भक्तों से
वाद-विवाद करता रहता था। वहाँ हाट-बाजार में जो
कोई होता वह उससे भी हर दिन बहस करता रहता।
18कुछ इपीकुरी और स्तोइकी दार्शनिक भी उससे
शास्त्रार्थ करने लगे। उनमें से कुछ ने कहा, "यह
अंटशंट बोलने वाला कहना क्या चाहता है?" दूसरों ने
कहा, "यह तो विदेशी देवताओं का प्रचारक मालूम
होता है।" उन्होंने यह इसलिये कहा था कि वह यीशु के
बारे में उपदेश देता था और उसके फिर से जी उठने
का प्रचार करता था। 19वे उसे पकड़कर अरियुपगुस
की सभा में अपने साथ ले गये और बोले, "क्या हम
जान सकते हैं कि तू जिसे लोगों के सामने रख रहा है,
वह नयी शिक्षा क्या है? 20तू कुछ विचित्र बातें हमारे
कानों में डाल रहा है, सो हम जानना चाहते हैं कि इन
बातों का अर्थ क्या है?" 21वहाँ रह रहे एथेंस के सभी
लोग और परदेसी केवल कुछ नया सुनने या उन्हीं बातों
की चर्चा के अतिरिक्त किसी भी और बात में अपना
समय नहीं लगाते थे।

22तब पौलुस ने अरियुपगुस के सामने खड़े होकर
कहा, "हे एथेंस के लोगो! मैं देख रहा हूँ तुम हर प्रकार
से धार्मिक हो। 23घूमते फिरते तुम्हारी उपासना की
वस्तुओं को देखते हुए मुझे एक ऐसी वेदी भी मिली जिस
पर लिखा था, 'अज्ञात परमेश्वर के लिये' सो तुम बिना
जाने ही जिस की उपासना करते हो, मैं तुम्हें उसी का
वचन सुनाता हूँ। 24परमेश्वर, जिसने इस जगत की
और इस जगत के भीतर जो कुछ है, उसकी रचना की
वही धरती और आकाश का प्रभु है। वह हाथों से
बनाये मंदिरों में नहीं रहता। 25उसे किसी वस्तु का
अभाव नहीं है सो मनुष्य के हाथों से उसकी सेवा नहीं
हो सकती। वही सब को जीवन, साँसें और अन्य सभी
कुछ दिया करता है। 26एक ही मनुष्य से उसने मनुष्य
की सभी जातियों का निर्माण किया ताकि वे समूची
धरती पर बस जायें और उसी ने लोगों का समय निश्चित
कर दिया और उस स्थान की, जहाँ वे रहें, सीमाएँ बाँध
दीं। 27उस का प्रयोजन यह था कि लोग परमेश्वर को
खोजें। हो सकता है वे उसे उस तक पहुँच कर पा लें।
इतना होने पर भी हममें से किसी से भी वह दूर नहीं हैं:
28'क्योंकि उसी में हम रहते हैं उसी में हमारी गति है
और उसी में है हमारा अस्तित्व!'
इसी प्रकार स्वयं तुम्हारे ही कुछ लेखकों ने भी
कहा है: 'क्योंकि हम उसके ही बच्चे हैं।'

29और क्योंकि हम परमेश्वर की संतान हैं इसलिये हमें
यह कभी नहीं सोचना चाहिये कि वह दिव्य अस्तित्व
सोने या चाँदी या पत्थर की बनी मानव कल्पना या
कारीगरी से बनी किसी मूर्ति जैसा है। 30ऐसे अज्ञान के

युग की परमेश्वर ने उपेक्षा कर दी है और अब हर
कहीं के मनुष्यों को वह मन फिरावने का आदेश दे
रहा है। 31उसने एक दिन निश्चित किया है जब वह
अपने नियुक्त किये गये एक पुरुष के द्वारा न्याय के
साथ जगत का निर्णय करेगा। मरे हुओं में से उसे
जिलाकर उसने हर किसी को इस बात का प्रमाण दिया
है!"

32जब उन्होंने मरे हुओं में से जी उठने की बात सुनी
तो उनमें से कुछ तो उसकी हँसी उड़ाने लगे किन्तु कुछ
ने कहा, "हम इस विषय पर तेरा प्रवचन फिर कभी
सुनेंगे।" 33तब पौलुस उन्हें छोड़ कर चल दिया। 34कुछ
लोगों ने विश्वास ग्रहण कर लिया और उसके साथ हो
लिये। इनमें अरियुपगुसका* सदस्य दियुनुसियुस और
दमरिस नामक एक महिला तथा उनके साथ के और
लोग भी थे।

पौलुस कुरिन्थियुस में

18 इसके बाद पौलुस एथेंस छोड़ कर कुरिन्थियुस
चला गया। 2वहाँ वह पुन्तुस के रहने वाले
अक्विला नाम के एक यहूदी से मिला। जो हाल में ही
अपनी पत्नी प्रिस्किल्ला के साथ इटली से आया था।
उन्होंने इटली इसलिये छोड़ी थी कि क्लौदियुस ने सभी
यहूदियों को रोम से निकल जाने का आदेश दिया था।
सो पौलुस उनसे मिलने गया। 3और क्योंकि उनका
काम धन्धा एक ही था सो वह उन ही के साथ ठहरा
और काम करने लगा। व्यवसाय से वे तम्बू बनाने वाले
थे। 4हर सब्त के दिन वह यहूदी धर्मसभा भवनों में
तर्क-वितर्क करके यहूदियों और यूनानियों को समझाने
बुझाने का जतन करता।

5जब वे मैसिडोनिया से सिलास और तिमुथियुस आये
तब पौलुस ने अपना सारा समय वचन के प्रचार में लगा
रखा था। वह यहूदियों को यह प्रमाणित किया करता
था कि यीशु ही मसीह है। 6सो जब उन्होंने उसका
विरोध किया और उससे भला बुरा कहा तो उसने
उनके विरोध में अपने कपड़े झाड़ते हुए उनसे कहा,
"तुम्हारा खून तुम्हारे ही सिर पड़े। उसका मुझ से कोई
सरोकार नहीं है। अब से आगे मैं ग़ैर-यहूदियों के पास
चला जाऊँगा।" 7इस तरह पौलुस वहाँ से चल पड़ा और
तीतुस-यूसतुस नाम के एक व्यक्ति के घर गया। वह
परमेश्वर का उपासक था। उसका घर यहूदी
धर्म-सभा-भवन से लगा हुआ था। 8क्रिसपुस ने, जो
यहूदी प्रार्थना सभागार का प्रधान था, अपने समूचे घराने
के साथ प्रभु में विश्वास ग्रहण किया। साथ ही उन बहुत
से कुरिन्थियों ने जिन्होंने पौलुस का प्रवचन सुना था,
विश्वास ग्रहण करके बपतिस्मा लिया। 9एक रात सपने
में प्रभु ने पौलुस से कहा, "डर मत, बोलता रह और चुप
मत हो। 10क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। सो तुझ पर हमला
करके कोई भी तुझे हानि नहीं पहुँचायेगा क्योंकि इस
नगर में मेरे बहुत से लोग हैं।" 11सो पौलुस, वहाँ डेढ़
साल तक परमेश्वर के वचन की उनके बीच शिक्षा
देते हुए, ठहरा।

पौलुस का गल्लियो के सामने लाया जाना

12जब अखाया का राज्यपाल गल्लियो था तभी यहूदी
एक जुट हो कर पौलुस पर चढ़ आये और उसे पकड़
कर अदालत में ले गये 13और बोले, "यह व्यक्ति लोगों
को परमेश्वर की उपासना ऐसे ढंग से करने के लिये
बहका रहा है जो व्यवस्था के विधान के विपरीत है।"

14पौलुस अभी अपना मुँह खोलने को ही था कि
गल्लियो ने यहूदियों से कहा, "अरे यहूदियो, यदि यह
विषय किसी अन्याय या गम्भीर अपराध का होता तो
तुम्हारी बात सुनना मेरे लिये न्यायसंगत होता 15किन्तु
क्योंकि यह विषय शब्दों, नामों और तुम्हारी अपनी
व्यवस्था के प्रश्नों से सम्बन्धित है, इसलिए इसे तुम
अपने आप ही सुलटो। ऐसे विषयों में मैं न्यायाधीश नहीं
बनना चाहता।" 16और फिर उसने उन्हें अदालत से
बाहर निकाल दिया।

17सो उन्होंने प्रार्थना सभागार के नेता सोस्थिनेस को
धर दबोचा और अदालत के सामने ही उसे पीटने लगे।
किन्तु गल्लियो ने इन बातों पर तनिक भी ध्यान नहीं
दिया।

पौलुस की वापसी

18बहुत दिनों बाद तक पौलुस वहाँ ठहरा रहा। फिर
भाइयों से विदा लेकर वह नाव के रास्ते सीरिया को
चल पड़ा। उसके साथ प्रिसकिल्ला तथा अक्विला भी
थे। पौलुस ने किंखिया में अपने केश उतरवाये क्योंकि
उसने एक मन्नत मानी थी। 19फिर वे इफिसुस पहुँचे
और पौलुस ने प्रिसकिल्ला और अक्विला को वहीं छोड़
दिया। और आप प्रार्थना सभागार में जाकर यहूदियों के
साथ बहस करने लगा।

20जब वहाँ के लोगों ने उससे कुछ दिन और ठहरने
को कहा तो उसने मना कर दिया। 21किन्तु जाते समय
उसने कहा, "यदि परमेश्वर की इच्छा हुई तो मैं तुम्हारे
पास फिर आऊँगा।" फिर उसने इफिसुस से नाव द्वारा
यात्रा की।

22फिर केसरिया पहुँच कर वह यरुशलेम गया और
वहाँ कलीसिया के लोगों से भेंट की। फिर वह अंताकिया
की ओर चला गया। 23वहाँ कुछ समय बिताने के बाद
उसने विदा ली और गलातिया एवम् फ्रिगिया के क्षेत्रों में
एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते हुए सभी
अनुयायिओं के विश्वास को बढ़ाने लगा।

अरियुपगुस एथेंस के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों का एक दल। ये लोग
न्यायधीशों के समान हुआ करते थे।

इफिसुस में अपुल्लोस

24वहीं अपुल्लोस नाम का एक यहूदी हुआ करता
था। वह सिकंदरिया का निवासी था। वह विद्वान वक्ता
था। वह इफिसुस में आया। शास्त्रों का उसे संपूर्ण ज्ञान
था। 25उसे प्रभु के मार्ग की दीक्षा भी मिली थी। वह
हृदय में उत्साह भर कर प्रवचन करता तथा यीशु के
विषय में बड़ी सावधानी से उपदेश देता था। यद्यपि उसे
केवल यूहन्ना के बपतिस्मा का ही ज्ञान था। 26यहूदी
धर्म सभा में वह निर्भय हो कर बोलने लगा। जब
प्रिस्किल्ला और अक्विला ने उसे बोलते सुना तो वे उसे
एक ओर ले गये और अधिक बारीकी के साथ उसे
परमेश्वर के मार्ग की व्याख्या समझाई। 27सो जब उसने
अखाया को जाना चाहा तो भाइयों ने उसका साहस
बढ़ाया और वहाँ के अनुयायिओं को उसका स्वागत
करने को लिख भेजा। जब वह वहाँ पहुँचा तो उनके
लिये बड़ा सहायक सिद्ध हुआ जिन्होंने परमेश्वर के
अनुग्रह से विश्वास ग्रहण कर लिया था। 28क्योंकि
शास्त्रों से यह प्रमाणित करते हुए कि यीशु ही मसीह है,
उसने यहूदियों को जनता के बीच जोरदार शब्दों में
बोलते हुए शास्त्रार्थ में पछाड़ा था।

पौलुस इफ़िसुस में

19 ऐसा हुआ कि जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था
तभी पौलुस भीतरी प्रदेशों से यात्रा करता हुआ
इफिसुस में आ पहुँचा। वहाँ उसे कुछ शिष्य मिले। 2और
उसने उनसे कहा, "क्या जब तुमने विश्वास धारण
किया था तब पवित्र आत्मा को ग्रहण किया था?"
उन्होंने उत्तर दिया, "हमने तो सुना तक नहीं है कि
कोई पवित्र आत्मा है भी।"

3सो वह बोला, "तो तुमने कैसा बपतिस्मा लिया है?"
उन्होंने कहा, "यूहन्ना का बपतिस्मा।"

4फिर पौलुस ने कहा, "यूहन्ना का बपतिस्मा तो
मनफिराव का बपतिस्मा था। उसने लोगों से कहा था
कि जो मेरे बाद आ रहा है, उस पर अर्थात् यीशु पर
विश्वास करो। 5यह सुन कर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम
का बपतिस्मा ले लिया। 6फिर जब पौलुस ने उन पर
अपने हाथ रखे तो उन पर पवित्र आत्मा उतर आया
और वे अलग अलग भाषाएँ बोलने और भविष्यवाणियाँ
करने लगे। 7कुल मिला कर वे कोई बारह व्यक्ति थे।

8फिर पौलुस यहूदी प्रार्थना सभागार में चला गया
और तीन महीने तक निडर होकर बोलता रहा। वह
यहूदियों के साथ बहस करते हुए उन्हें परमेश्वर के
राज्य के विषय में समझाया करता था। 9किन्तु उनमें से
कुछ लोग बहुत हठी थे उन्होंने विश्वास ग्रहण करने
को मना कर दिया और लोगों के सामने पंथ को भला
बुरा कहते रहे। सो वह अपने शिष्यों को साथ ले उन्हें
छोड़ कर चला गया। और तरन्नुस की पाठशाला में हर
दिन विचार-विमर्श करने लगा। 10दो साल तक ऐसा ही
होता रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि सभी
एशिया-निवासी यहूदियों और ग़ैर यहूदियों ने प्रभु का
वचन सुन लिया।

स्कीवा के बेटे

11परमेश्वर पौलुस के हाथों अनहोने आश्चर्य कर्म
कर रहा था। 12यहाँ तक कि उसके छुए रूमालों और
अँगोछों को रोगियों के पास ले जाया जाता और उन की
बीमारियाँ दूर हो जातीं तथा दुष्टात्माएँ उनमें से निकल
भागतीं।

13-14कुछ यहूदी लोग, जो दुष्टात्माएँ उतारते इधर-उधर
घूमा फिरा करते थे। यह करने लगे कि जिन लोगों में
दुष्टात्माएँ समायी थीं, उन पर प्रभु यीशु के नाम का
प्रयोग करने का यत्न करते और कहते, "मैं तुम्हें उस
यीशु के नाम पर जिसका प्रचार पौलुस करता है,
आदेश देता हूँ।" एक स्कीवा नाम के यहूदी महायाजक
के सात पुत्र जब ऐसा कर रहे थे,

15तो दुष्टात्मा ने (एक बार) उनसे कहा, "मैं यीशु
को पहचानती हूँ और पौलुस के बारे में भी जानती हूँ,
किन्तु तुम लोग कौन हो?"

16फिर वह व्यक्ति जिस पर दुष्टात्मा सवार थी, उन
पर झपटा। उसने उन पर काबू पा कर उन दोनों को
हरा दिया। इस तरह वे नंगे ही घायल होकर उस घर से
निकल कर भाग गये। 17इफिसुस में रहने वाले सभी
यहूदियों और यूनानियों को इस बात का पता चल गया।
वे सब लोग बहुत डर गये थे। इस प्रकार प्रभु यीशु के
नाम का आदर और अधिक बढ़ गया। 18उनमें से बहुत
से जिन्होंने विश्वास ग्रहण किया था, अपने द्वारा किये
गये बुरे कामों को सबके सामने स्वीकार करते हुए
वहाँ आये। 19जादू टोना करने वालों में से बहुतों ने
अपनी अपनी पुस्तकें लाकर वहाँ इकट्ठी कर दीं और
सब के सामने उन्हें जला दिया। उन पुस्तकों का मूल्य
पचास हजार चाँदी के सिक्कों के बराबर कूता गया।
20इस प्रकार प्रभु का वचन अधिक प्रभावशाली होते
हुए दूर दूर तक फैलने लगा।

पौलुस की यात्रा-योजना

21इन घटनाओं के बाद पौलुस ने अपने मन में
मेसिडोनिया और अखाया होते हुए यरुशलेम जाने का
निश्चय किया। उसने कहा, "वहाँ जाने के बाद मुझे
रोम भी देखना चाहिये।" 22सो उसने अपने तिमुथियुस
और इरासतुस नामक दो सहायकों को मैसिडोनिया भेज
दिया और स्वयं एशिया में थोड़ा समय और बिताया।

इफ़िसुस में उपद्रव

23उन्हीं दिनों इस पंथ को लेकर वहाँ बड़ा उपद्रव
हुआ। 24वहाँ देमेत्रियुस नाम का एक चाँदी का काम

करने वाला सुनार हुआ करता था। वह अरतिमिस के
चाँदी के मंदिर बनवाता था जिससे कारीगरों को बहुत
कारोबार मिला था। **25**उसने उन्हें और इस काम से जुड़े
हुए दूसरे कारीगरों को इक्ट्ठा किया और कहा, "देखो
लोगो, तुम जानते हो कि इस काम से हमें एक अच्छी
आमदनी होती है। **26**तुम देख सकते हो और सुन सकते
हो कि इस पौलुस ने न केवल इफिसुस में बल्कि
लगभग एशिया के समूचे क्षेत्र में लोगों को बहका-फुसला
कर बदल दिया है। वह कहता है कि मनुष्य के हाथों
के बनाये देवता सच्चे देवता नहीं हैं। **27**इससे न केवल
इस बात का भय है कि हमारा व्यवसाय बदनाम होगा
बल्कि महान देवी अरतिमिस के मंदिर की प्रतिष्ठा
समाप्त हो जाने का भी डर है। और जिस देवी की
उपासना समूचे एशिया और संसार द्वारा की जाती है,
उसकी गरिमा छिन जाने का भी डर है।"

28जब उन्होंने यह सुना तो वे बहुत क्रोधित हुए और
चिल्ला चिल्ला कर कहने लगे, "इफ़िसियों की देवी
अरतिमिस महान है!" **29**उधर सारे नगर में अव्यवस्था
फैल गयी। सो लोगों ने मैसिडोनिया से आये तथा पौलुस
के साथ यात्रा कर रहे गयुस और अरिस्तर्खुस को धर
दबोचा और उन्हें रंगशाला* में ले भागे। **30**पौलुस लोगों
के सामने जाना चाहता था किन्तु शिष्यों ने उसे नहीं
जाने दिया। **31**कुछ प्रांतीय अधिकारियों ने जो उसके
मित्र थे, उससे कहलवा भेजा कि वह वहाँ रंगशाला में
आने का दुस्साहस न करे। **32**अब देखो कोई कुछ
चिल्ला रहा था, और कोई कुछ, क्योंकि समूची सभा में
हड़बड़ी फैली हुई थी। उनमें से अधिकतर यह नहीं
जानते थे कि वे वहाँ एकत्र क्यों हुए हैं। **33**यहूदियों ने
सिकन्दर को जिसका नाम भीड़ में से उन्होंने सुझाया
था, आगे खड़ा कर रखा था। सिकन्दर ने अपने हाथों
को हिला हिला कर लोगों के सामने बचाव पक्ष प्रस्तुत
करना चाहा। **34**किन्तु जब उन्हें यह पता चला कि वह
एक यहूदी है तो वे सब कोई दो घण्टे तक एक स्वर में
चिल्लाते हुए कहते रहे, "इफिसुसियों की देवी अरतिमिस
महान है। **35**फिर नगर लिपिक ने भीड़ को शांत करके
कहा, "हे इफिसुस के लोगो क्या संसार में कोई ऐसा
व्यक्ति है जो यह नहीं जानता कि इफिसुस नगर महान
देवी अरतिमिस और स्वर्ग से गिरी हुई पवित्र शिला का
संरक्षक है?' **36**क्योंकि इन बातों से इन्कार नहीं किया
जा सकता। इसलिये तुम्हें शांत रहना चाहिये और बिना
विचारे कुछ नहीं करना चाहिये। **37**तुम इन लोगों को
पकड़ कर यहाँ लाये हो यद्यपि उन्होंने न तो कोई मंदिर
लूटा है और न ही हमारी देवी का अपमान किया है।
38फिर भी देमेत्रियुस और उसके साथी कारीगरों को
किसी के विरुद्ध कोई शिकायत है तो अदालतें खुली हैं
और वहाँ राज्यपाल हैं। वहाँ आपस में एक दूसरे पर वे
अभियोग चला सकते हैं। **39**किन्तु यदि तुम इससे कुछ
अधिक जानना चाहते हो तो उसका फैसला नियमित
सभा में किया जायेगा। **40**जो कुछ है उसके अनुसार हमें
इस बात का डर है कि आज के उपद्रवों का दोष कहीं
हमारे ही सिर न मढ़ दिया जाये। इस दंगे के लिये हमारे
पास कोई भी हेतु नहीं है जिससे हम इसे उचित ठहरा
सकें।"

41इतना कहने के बाद उसने सभा विसर्जित कर दी।

पौलुस का मैसिडोनिया और यूनान जाना

20 फिर इस उपद्रव के शांत हो जाने के बाद
पौलुस ने यीशु के शिष्यों को बुलाया और
उनका हौसला बढ़ाने के बाद उनसे विदा ले कर वह
मैसिडोनिया को चल दिया। **2**उस प्रदेश से होकर उसने
यात्रा की और वहाँ के लोगों को उत्साह के अनेक
वचन प्रदान किये। फिर वह यूनान आ गया। **3**वह वहाँ
तीन महीने ठहरा और क्योंकि यहूदियों ने उसके विरुद्ध
एक षड्यन्त्र रच रखा था सो जब वह जल मार्ग से
सीरिया जाने को ही था कि उसने निश्चय किया कि
वह मैसिडोनिया को लौट जाये। **4**बिरिया के पिरूस का
बेटा सोपत्रुस, थिसलुनिकिया के रहने वाले अरिस्तर्खुस
और सिकुन्दुस, दिरबे का निवासी गयूस और तिमुथियुस
तथा एशियाई क्षेत्र के तुखिकुस और त्रुफिमुस उसके
साथ थे। **5**ये लोग पहले चले गये थे और त्रोआस में
हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। **6**बिना ख़मीर की रोटी के
दिनों के बाद हम फिलिप्पी से नाव द्वारा चल पड़े और
पाँच दिन बाद त्रोआस में उनसे जा मिले। वहाँ हम सात
दिन तक ठहरे।

त्रोआस को पौलुस की अन्तिम यात्रा

7सप्ताह के पहले दिन जब हम रोटी विभाजित करने
के लिये आपस में इकट्ठे हुए तो पौलुस उनसे बातचीत
करने लगा। उसे अगले ही दिन चले जाना था सो वह
आधी रात तक बातचीत करता ही रहा। **8**सीढ़ियों के
ऊपर के कमरे में जहाँ हम इकट्ठे हुए थे, वहाँ बहुत से
दीपक थे। **9**वहीं युतुखुस नामक एक युवक खिड़की में
बैठा था वह गहरी नींद में डूबा था। क्योंकि पौलुस बहुत
देर से बोले ही चला जा रहा था सो उसे गहरी नींद आ
गयी थी। इससे वह तीसरी मंजिल से नीचे लुढ़क पड़ा
और जब उसे उठाया तो वह मर चुका था। **10**पौलुस
नीचे उतरा और उस पर भुका। उसे अपनी बाहों में ले
कर उसने कहा, "घबराओ मत क्योंकि उसके प्राण
अभी उसी में हैं।" **11**फिर वह ऊपर चला गया और
उसने रोटी को तोड़ कर विभाजित किया और उसे
खाया। वह उनके साथ बहुत देर, पौ-फटे तक बातचीत

रंगशाला एक विशेष स्थान जिसे रंगशाला के रूप में याजक सभाओं के लिये प्रयोग मे लाते थे।

करता रहा। फिर उसने उनसे विदा ली। 12उस जीवित
युवक को वे घर ले आये। इससे उन्हें बहुत चैन मिला।

त्रोआस से मितुलेने की यात्रा

13हम जहाज़ पर पहले ही पहुँच गये और अस्सुस को
चल पड़े। वहाँ पौलुस को हमें जहाज़ पर लेना था। उसने
ऐसी ही योजना बनायी थी। वह स्वयं पैदल आना चाहता
था। 14वह जब अस्सुस में हमसे मिला तो हमने उसे
जहाज़ पर चढ़ा लिया और हम मितेलेने को चल पड़े।
15दूसरे दिन वहाँ से चल कर हम खियुस के सामने जा
पहुँचे और अगले दिन उस पार सामोस आ गये। फिर
उसके एक दिन बाद हम मिलेतुस आ पहुँचे। 16क्योंकि
पौलुस जहाँ तक हो सके पिन्तेकुस्त के दिन तक यरुशलेम
पहुँचने की जल्दी कर रहा था, सो उसने निश्चय किया
कि वह इफिसुस में रुके बिना आगे चला जायेगा जिससे
उसे एशिया में समय न बिताना पड़े।

पौलुस की इफ़िसुस के बुजुर्गो से बातचीत

17उसने मिलेतुस से इफिसुस के बुजुर्गो और कलीसिया
को संदेसा भेज कर अपने पास बुलाया। 18उनके आने
पर पौलुस ने उनसे कहा, "यह तुम जानते हो कि
एशिया पहुँचने के बाद पहले दिन से ही हर समय मैं
तुम्हारे साथ कैसे रहा हूँ 19और दीनतापूर्वक आँसू
बहा-बहा कर यहूदियों के षड्यन्त्रों के कारण मुझ पर
पड़ी अनेक परीक्षाओं में भी मैं प्रभु की सेवा करता
रहा। 20तुम जानते हो कि मैं तुम्हें तुम्हारे हित की कोई
बात बताने से कभी हिचकिचाया नहीं। और मैं तुम्हें
उन बातों का सब लोगों के बीच और घर-घर जा कर
उपदेश देने में कभी नहीं झिझका। 21यहूदियों और
यूनानियों को मैं समान भाव से मन फिराव के परमेश्वर
की तरफ़ मुड़ने को कहता रहा हूँ और हमारे प्रभु यीशु
में विश्वास के प्रति उन्हें सचेत करता रहा हूँ। 22और
अब पवित्र आत्मा के अधीन होकर मैं यरुशलेम जा
रहा हूँ। मैं नहीं जानता वहाँ मेरे साथ क्या कुछ घटेगा।
23मैं तो बस इतना जानता हूँ कि हर नगर में पवित्र
आत्मा यह कहते हुए मुझे सचेत करती रहती है कि
बंदीगृह और कठिनताएँ मेरी प्रतीक्षा कर रही हैं। 24किन्तु
मेरे लिये मेरे प्राणों का कोई मूल्य नहीं है। मैं तो बस
उस दौड़ धूप और उस सेवा को पूरा करना चाहता हूँ
जिसे मैंने प्रभु यीशु से ग्रहण किया है वह है-परमेश्वर
के अनुग्रह के सुसमाचार की साक्षी देना।

25"और अब मैं जानता हूँ कि तुममें से कोई भी,
जिनके बीच मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता
फिरा, मेरा मुँह आगे कभी नहीं देख पायेगा। 26इसलिये
आज मैं तुम्हारे सामने घोषणा करता हूँ कि तुममें से
किसी के भी खून का दोषी मैं नहीं हूँ। 27क्योंकि मैं
परमेश्वर की सम्पूर्ण इच्छा को तुम्हें बताने में कभी नहीं
हिचकिचाया हूँ। 28अपनी और अपने समुदाय की रखवाली
करते रहो। पवित्र आत्मा ने उनमें से तुम्हें उन पर दृष्टि
रखने वाला बनाया है ताकि तुम परमेश्वर की उस
कलीसिया का ध्यान रखो जिसे उसने अपने रक्त के
बदले मोल लिया था। 29मैं जानता हूँ कि मेरे विदा होने
के बाद हिंसक भेड़िये तुम्हारे बीच आयेंगे और वे इस
भोले-भाले समूह को नहीं छोड़ेंगे। 30यहाँ तक कि
तुम्हारे अपने बीच में से ही ऐसे लोग भी उठ खड़े होंगे,
जो शिष्यों को अपने पीछे लगा लेने के लिए बातों को
तोड़-मरोड़ कर कहेंगे। 31इसलिये सावधान रहना। याद
रखना कि मैंने तीन साल तक एक एक को दिन रात
रो रो कर सचेत करना कभी नहीं छोड़ा था।

32"अब मैं तुम्हें परमेश्वर और उसके सुसंदेश के
अनुग्रह के हाथों सौंपता हूँ। वही तुम्हारा निर्माण कर
सकता है और तुम्हें उन लोगों के साथ जिन्हें पवित्र
किया जा चुका है, तुम्हारा उत्तराधिकार दिला सकता
है। 33मैंने कभी किसी के सोने-चाँदी या वस्त्रों की
अभिलाषा नहीं की। 34तुम स्वयं जानते हो कि मेरे इन
हाथों ने ही मेरी और मेरे साथियों की आवश्यकताओं
को पूरा किया है। 35मैंने अपने हर कर्म से तुम्हें यह
दिखाया है कि कठिन परिश्रम करते हुए हमें निर्बलों
की सहायता किस प्रकार करनी चाहिये और हमें प्रभु
यीशु का वह वचन याद रखना चाहिये जिसे उसने स्वयं
कहा था, 'लेने से देने में अधिक सुख है।' "

36यह कह चुकने के बाद वह उन सब के साथ घुटनों
के बल झुका और उसने प्रार्थना की। 37हर कोई फूट
फूट कर रो रहा था। गले मिलते हुए वे उसे चूम रहे थे।
38उसने जो यह कहा था कि वे उसका मुँह फिर कभी
नहीं देखेगें, इससे लोग बहुत अधिक दुखी थे। फिर
उन्होंने उसे सुरक्षा पूर्वक जहाज़ तक पहुँचा दिया।

पौलुस का यरुशलेम जाना

21 फिर उनसे विदा हो कर हम ने सागर में
अपनी नाव खोल दी और सीधे रास्ते कास जा
पहुँचे और अगले दिन रोदुस। फिर वहाँ से हम पतरा
को चले गये। 2वहाँ हमने एक जहाज़ लिया जो फिनीके
जा रहा था। 3जब साइप्रस दिखाई पड़ने लगा तो हम उसे
बायीं तरफ़ छोड़ कर सीरिया की ओर मुड़ गये क्योंकि
जहाज़ को सूर में माल उतारना था सो हम भी वहीं
उतर पड़े। 4वहाँ हमें अनुयायी मिले जिनके साथ हम
सात दिन तक ठहरे। उन्होंने आत्मा से प्रेरित होकर
पौलुस को यरुशलेम जाने से रोकना चाहा। 5फिर वहाँ
ठहरने का अपना समय पूरा करके हमने विदा ली
और अपनी यात्रा पर निकल पड़े। अपनी पत्नियों और
बच्चों समेत वे सभी नगर के बाहर तक हमारे साथ
आये। फिर वहाँ सागर तट पर हमने घुटनों के बल
झुक कर प्रार्थना की। 6और एक दूसरे से विदा लेकर

हम जहाज़ पर चढ़ गये। और वे अपने-अपने घरों को
लौट गये।

7सूर से जल मार्ग द्वारा यात्रा करते हुए हम पतुलिमयिस
में उतरे। वहाँ भाइयों का स्वागत सत्कार करते हम
उनके साथ एक दिन ठहरे। 8अगले दिन उन्हें छोड़ कर
हम कैसरिया आ गये। और इंजील के प्रचारक फिलिप्पुस
के, जो चुने हुए विशेष सात सेवकों में से एक था, घर
जा कर उसके साथ ठहरे। 9उसके चार कुवाँरी बेटियाँ
थीं जो भविष्यवाणी किया करती थीं। 10वहाँ हमारे कुछ
दिनों ठहरे रहने के बाद यहूदिया से अगबुस नामक
एक नबी आया। 11हमारे निकट आते हुए उसने पौलुस
का कमर बंध उठा कर उससे अपने ही पैर और हाथ
बाँध लिये और बोला, “यह है जो पवित्र आत्मा कह रहा
है-यानी यरुशलेम में यहूदी लोग, जिसका यह कमर
बंध है, उसे ऐसे ही बाँध कर विधर्मियों के हाथों सौंप
देगें।”

12हमने जब यह सुना तो हमने और वहाँ के लोगों ने
उससे यरुशलेम न जाने की प्रार्थना की। 13इस पर
पौलुस ने उत्तर दिया, “इस प्रकार रो-रो कर मेरा दिल
तोड़ते हुए यह तुम क्या कर रहे हो? मैं तो यरुशलेम में
न केवल बाँधे जाने के लिये बल्कि प्रभु यीशु मसीह के
नाम पर मरने तक को तैयार हूँ।”

14क्योंकि हम उसे मना नहीं पाये। सो बस इतना कह
कर चुप हो गये, “जैसी प्रभु की इच्छा।”

15इन दिनों के बाद फिर हम तैयारी करके यरुशलेम
को चल पड़े। 16कैसरिया से कुछ शिष्य भी हमारे साथ
हो लिये थे। वे हमें साइप्रस के एक व्यक्ति मनासोन के
यहाँ ले गये जो एक पुराना शिष्य था। हमें उसी के साथ
ठहरना था।

पौलुस की याकूब से भेंट

17यरुशलेम पहुँचने पर भाइयों ने बड़े उत्साह के साथ
हमारा स्वागत सत्कार किया। 18अगले दिन पौलुस हमारे
साथ याकूब से मिलने गया। वहाँ सभी अग्रज उपस्थित
थे। 19पौलुस ने उनका स्वागत सत्कार किया और उन
सब कामों के बारे में जो परमेश्वर ने उसके द्वारा
विधर्मियों के बीच कराये थे, एक एक करके कह
सुनाया। 20जब उन्होंने यह सुना तो वे परमेश्वर की
स्तुति करते हुए उससे बोले, “बंधु तुम तो देख ही रहे हो
यहाँ कितने ही हज़ारों यहूदी ऐसे हैं जिन्होंने विश्वास
ग्रहण कर लिया है। किन्तु वे सभी व्यवस्था के प्रति
अत्यधिक उत्साहित हैं। 21तेरे विषय में उनसे कहा गया
है कि तू विधर्मियों के बीच रहने वाले सभी यहूदियों को
मूसा की शिक्षाओं को त्यागने की शिक्षा देता है। और
उनसे कहता है कि वे न तो अपने बच्चों का ख़तना
करायें और न ही हमारे रीति-रिवाजों पर चलें। 22सो
किया क्या जाये? वे यह तो सुन ही लेंगे कि तू आया
हुआ है। 23इसलिये तू वही कर जो तुझ से हम कह रहे
हैं। हमारे साथ चार ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने कोई मन्नत
मानी है। 24इन लोगों को ले जा और उनके साथ
शुद्धीकरण समारोह में सम्मिलित हो जा। और उनका
खर्चा दे दे ताकि वे अपने सिर मुँडवा लें। इससे सब लोग
जान जायेंगे कि उन्होंने तेरे बारे में जो सुना है, उसमें
कोई सचाई नहीं है बल्कि तू तो स्वयं ही व्यवस्था के
अनुसार जीवन जीता है।

25जहाँ तक विश्वास ग्रहण करने वाले ग़ैर यहूदियों
का प्रश्न है, हमने उन्हें एक पत्र में लिख भेजा है,

‘वे मूर्तियों पर चढ़ाये गये भोजन, लहू के खाने, गला
घोट कर मारे हुए पशुओं और यौन अनाचार से अपने
आप को दूर रखें।’”

26इस प्रकार पौलुस ने उन लोगों को अपने साथ
लिया और उन लोगों के साथ अपने आप को भी अगले
दिन शुद्ध कर लिया। फिर वह मंदिर में गया जहाँ उसने
घोषणा की कि शुद्धीकरण के दिन कब पूरे होंगे और
हममें से हर एक के लिये चढ़ावा कब चढ़ाया जायेगा।
27जब वे सात दिन लगभग पूरे होने वाले थे, कुछ
यहूदियों ने उसे मंदिर में देख लिया। उन्होंने भीड़ में
सभी लोगों को भड़का दिया और पौलुस को पकड़
लिया। 28फिर वे चिल्ला कर बोले, “इस्राएल के लोगो
सहायता करो। यह वही व्यक्ति है जो हर कहीं हमारी
जनता के, हमारी व्यवस्था के और हमारे इस स्थान के
विरोध में लोगों को सिखाता फिरता है। और अब तो
यह विधर्मियों को मंदिर में ले आया है। और इसने इस
प्रकार इस पवित्र स्थान को ही भ्रष्ट कर दिया है।”
29(उन्होंने ऐसा इसलिये कहा था कि त्रुफिमुस नाम के
एक इफिसी को नगर में उन्होंने उसके साथ देखकर
ऐसा समझा था कि पौलुस उसे मंदिर में ले गया है)

30सो सारा नगर विरोध में उठ खड़ा हुआ। लोग
दौड़-दौड़ कर चढ़ आये और पौलुस को पकड़ लिया।
फिर वे उसे घसीटते हुए मंदिर से बाहर ले गये और
तत्काल फाटक बंद कर दिये गये। 31वे उसे मारने का
जतन कर ही रहे थे कि रोमी टुकड़ी के सेनानायक के
पास यह सूचना पहुँची कि समुचे यरुशलेम में खलबली
मची हुई है। 32उसने तुरंत कुछ सिपाहियों और सेना के
अधिकारियों को अपने साथ लिया और पौलुस पर
हमला करने वाले यहूदियों की ओर बढ़ा। यहूदियों ने
जब उस सेनानायक और सिपाहियों को देखा तो उन्होंने
पौलुस को पीटना बंद कर दिया। 33तब वह सेना नायक
पौलुस के पास आया और उसे बंदी बना लिया। उसने
उसे दो ज़ंजीरों में बाँध लेने का आदेश दिया। फिर उसने
पूछा कि वह कौन है और उसने क्या किया है?

34भीड़ में से कुछ लोगों ने एक बात कही तो दूसरों ने
दूसरी। इस हो-हुल्लड़ में क्योंकि वह यह नहीं जान
पाया कि सच्चाई क्या है, इसलिये उसने आज्ञा दी कि

उसे छावनी में ले चला जाये। 35पौलुस जब सीढ़ियों के
पास पहुँचा तो भीड़ में फैली हिंसा के कारण सिपाहियों
को उसे अपनी सुरक्षा में ले जाना पड़ा 36क्योंकि उसके
पीछे लोगों की एक बड़ी भीड़ यह चिल्लाते हुए चल रही
थी कि इसे मार डालो। 37जब वह छावनी के भीतर ले
जाया जाने वाला ही था कि पौलुस ने सैनानायक से
कहा, "क्या मैं तुझसे कुछ कह सकता हूँ?"

सेनानायक बोला, "क्या तू यूनानी बोलता है? 38तो तू
वह मिस्री तो नहीं है न जिसने कुछ समय पहले विद्रोह
शुरू कराया था और जो यहाँ रेगिस्तान में चार हज़ार
आतंकवादियों की अगुआई कर रहा था?"

39पौलुस ने कहा, "मैं सिलिकिया के तरसुस नगर
का एक यहूदी व्यक्ति हूँ। और एक प्रसिद्ध नगर का
नागरिक हूँ। मैं तुझसे चाहता हूँ कि तू मुझे इन लोगों के
बीच बोलने दे।"

40उससे अनुमति पा कर पौलुस ने सीढ़ियों पर खड़े
होकर लोगों की तरफ़ हाथ हिलाते हुए संकेत किया।
जब सब शांत हो गया तो पौलुस इब्रानी भाषा में लोगों से
कहने लगा।

पौलुस का भाषण

22 पौलुस ने कहा, "हे भाइयो और पितृ तुल्य
सज्जनो! मेरे बचाव में अब मुझे जो कुछ
कहना है, उसे सुनो।" 2उन्होंने जब उसे इब्रानी भाषा में
बोलते हुए सुना तो वे और अधिक शांत हो गये। फिर
पौलुस कहा, 3"मैं एक यहूदी व्यक्ति हूँ। किलिकिया के
तरसुस में मेरा जन्म हुआ था और मैं इसी नगर में
पल-पुस कर बड़ा हुआ। गमलिएल* के चरणों में बैठ
कर हमारे परम्परागत विधान के अनुसार बड़ी कड़ाई
के साथ मेरी शिक्षा-दीक्षा हुई। परमेश्वर के प्रति मैं
बड़ा उत्साही था। ठीक वैसे ही जैसे आज तुम सब हो।
4इस पंथ के लोगों को मैंने इतना सताया कि उनके
प्राण तक निकल गये। मैंने पुरूषों और स्त्रियों को बंदी
बनाया और जेलों में ठूँस दिया। 5स्वयं महा याजक और
बुजुर्गों की समूची सभा इसे प्रमाणित कर सकती है। मैंने
दमिश्क में इनके भाइयों के नाम इनसे पत्र भी लिया था
और इस पंथ के वहाँ रह रहे लोगों को पकड़ कर बंदी
के रूप में यरुशलेम लाने के लिये मैं गया भी था ताकि
उन्हें दण्ड दिलाया जा सके।

पौलुस का मन कैसे बदला

6"फिर ऐसा हुआ कि मैं जब यात्रा करते-करते
दमिश्क के पास पहुँचा तो लगभग दोपहर के समय
आकाश से अचानक एक तीव्र प्रकाश मेरे चारों और
कौंध गया। 7मैं धरती पर जा पड़ा। तभी मैंने एक
आवाज़ सुनी जो मुझसे कह रही थी, 'शाऊल, ओ
शाऊल! तू मुझे क्यों सता रहा है?' 8तब मैंने उत्तर में
कहा, 'प्रभु, तू कौन है?' वह मुझसे बोला, 'मैं वही
नासरी यीशु हूँ जिसे तू सता रहा है।' 9जो मेरे साथ थे,
उन्होंने भी वह प्रकाश देखा किन्तु उस ध्वनि को जिस
ने मुझे सम्बोधित किया था, वे समझ नहीं पाये। 10मैंने
पूछा, 'हे प्रभु, मैं क्या करूँ?' इस पर प्रभु ने मुझसे कहा,
'खड़ा हो, और दमिश्क को चला जा। वहाँ तुझे वह सब
बता दिया जायेगा, जिसे करने के लिये तुझे नियुक्त
किया गया है।' 11क्योंकि मैं उस तीव्र प्रकाश की चौंध
के कारण कुछ देख नहीं पा रहा था, सो मेरे साथी मेरा
हाथ पकड़ कर मुझे ले चले और मैं दमिश्क जा
पहुँचा।

12"वहाँ हनन्याह* नाम का एक व्यक्ति था। वह
व्यवस्था का पालन करने वाला एक भक्त था। वहाँ के
निवासी सभी यहूदियों के साथ उसकी अच्छी बोलचाल
थी। 13वह मेरे पास आया और मेरे निकट खड़े हो कर
बोला, 'भाई शाऊल, फिर से देखने लग' और उसी क्षण
मैं उसे देखने योग्य हो गया। 14उसने कहा, 'हमारे पूर्वजों
के परमेश्वर ने तुझे चुन लिया है कि तू उसकी इच्छा
को जाने, उस धर्म-स्वरूप को देखे और उसकी वाणी
को सुने। 15क्योंकि तूने जो देखा है और जो सुना है,
उसके लिये सभी लोगों के सामने तू उसकी साक्षी होगा।
16सो अब तू किसकी बाट जोह रहा है, खड़ा हो बपतिस्मा
ग्रहण कर और उसका नाम पुकारते हुए अपने पापों
को धो डाल।'

17"फिर ऐसा हुआ कि जब मैं यरुशलेम लौट कर
मंदिर में प्रार्थना कर रहा था तभी मेरी समाधि लग गयी
18और मेंने देखा वह मुझसे कह रहा है, 'जल्दी कर
और तुरंत यरुशलेम से बाहर चला जा क्योंकि मेरे बारे
में वे तेरी साक्षी स्वीकार नहीं करेंगे।' 19सो मैंने कहा,
'प्रभु ये लोग तो जानते हैं कि तुझ पर विश्वास करने
वालों को बंदी बनाते हुए और पीटते हुए मैं यहूदी धर्म
सभागारों में घूमता फिरा हूँ। 20और तो और जब तेरे
साक्षी स्तिफनुस का रक्त बहाया जा रहा था, तब भी मैं
अपना समर्थन देते हुए वहीं खड़ा था। जिन्होंने उसकी
हत्या की थी, मैं उनके कपड़ों की रखवाली कर रहा
था। 21फिर वह मुझसे बोला, 'तू जा, क्योंकि मैं तुझे
विधर्मियों के बीच दूर-दूर तक भेजूँगा।'"

22इस बात तक वे उसे सुनते रहे पर फिर ऊँचे स्वर
में पुकार कर चिल्ला उठे, "ऐसे मनुष्य से धरती को
मुक्त करो। यह जीवित रहने योग्य नहीं है!" 23वे जब
चिल्ला रहे थे और अपने कपड़ों को उतार उतार कर
फेंक रहे थे तथा आकाश में धूल उड़ा रहे थे, 24तभी

गमलीएल यहूदियों की एक धार्मिक शाखा फरीसियों का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण धर्म-गुरु।

हनन्याह 'प्रेरितों के काम' में हनन्याह नाम के तीन व्यक्तियों का उल्लेख मिलता है। अन्य दो के लिए देखें प्र.क. 5:1; 23:2

सेना–नायक ने आज्ञा दी कि पौलुस को किले में ले
जाया जाये। उसने कहा कि कोड़े लगा लगा कर उससे
पूछ–ताछ की जाये ताकि पता चले कि उस पर लोगों
के इस प्रकार चिल्लाने का कारण क्या है। 25किन्तु
जब वे उसे कोड़े लगाने के लिये बाँध रहे थे तभी वहाँ
खड़े सेनानायक से पौलुस ने कहा, "किसी रोमी नागरिक
को, जो अपराधी न पाया गया हो, कोड़े लगाना क्या
तुम्हारे लिये उचित है? 26यह सुनकर सेना–नायक
सेनापति के पास गया और बोला, "यह तुम क्या कर
रहे हो? क्योंकि यह तो रोमी नागरिक है।"

27इस पर सेनापति ने उसके पास आकर पूछा, "मुझे
बता, क्या तू रोमी नागरिक है?" पौलुस ने कहा, "हाँ।"

28इस पर सेना–पति ने उत्तर दिया, "इस नागरिकता
को पाने में मुझे तो बहुत सा धन खर्च करना पड़ा है।"

पौलुस ने कहा, "किन्तु मैं तो जन्मजात रोमी नागरिक
हूँ।" 29सो वे लोग जो उससे पूछताछ करने को थे तुरंत
पीछे हट गये और वह सेनापति भी यह समझ कर कि
वह एक रोमी नागरिक है और उसने उसे बंदी बनाया
है, बहुत डर गया।

यहूदी नेताओं के सामने पौलुस का भाषण

30क्योंकि वह सेनानायक इस बात का ठीक ठीक
पता लगाना चाहता था कि यहूदियों ने पौलुस पर अभियोग
क्यों लगाया, इसलिये उसने अगले दिन उसके बन्धन
खोल दिए। फिर प्रमुख याजकों और सर्वोच्च यहूदी महा
सभा को बुला भेजा और पौलुस को उनके सामने ला
कर खड़ा कर दिया।

23 पौलुस ने यहूदी महा सभा पर गम्भीर दृष्टि
डालते हुए कहा, "मेरे भाइयो! मैंने परमेश्वर
के सामने आज तक उत्तम निष्ठा के साथ जीवन जिया
है। 2इस पर महा याजक हनन्याह ने पौलुस के पास
खड़े लोगों को आज्ञा दी कि वे उसके मुँह पर थप्पड़
मारें। 3तब पौलुस ने उससे कहा, "अरे सफेदी पुती
दीवार! तुझ पर परमेश्वर की मार पड़ेगी। तू यहाँ
व्यवस्था के विधान के अनुसार मेरा कैसा न्याय करने
बैठा है कि तू व्यवस्था के विरोध में मेरे थप्पड़ मारने
की आज्ञा दे रहा है।"

4पौलुस के पास खड़े लोगों ने कहा, "परमेश्वर के
महायाजक का अपमान करने का साहस तुझे हुआ
कैसे?"

5पौलुस ने उत्तर दिया, "मुझे तो पता ही नहीं कि यह
महायाजक है। क्योंकि शासन मे लिखा है 'तुझे अपनी
प्रजा के शासक के लिये बुरा बोल नहीं बोलना चाहिये।'" *

6फिर जब पौलुस को पता चला कि उनमें से आधे
लोग सदूकी हैं और आधे फ़रीसी तो महासभा के बीच
उसने ऊँचे स्वर में कहा, "हे भाइयो, मैं फ़रीसी हूँ–एक
फ़रीसी का बेटा हूँ। मरने के बाद फिर से जी उठने के
प्रति मेरी मान्यता के कारण मुझ पर अभियोग चलाया
जा रहा है!"

7उसके ऐसा कहने पर फ़रीसियों और सदूकियों में
एक विवाद उठ खड़ा हुआ और सभा के बीच फूट पड़
गयी। 8(सदूकियों का कहना है कि पुनरुत्थान नहीं
होता न स्वर्गदूत होते हैं और न ही आत्माएँ। किन्तु
फ़रीसियों का इनके अस्तित्त्व में विश्वास है।) 9वहाँ
बहुत शोरगुल मचा। फ़रीसियों के दल में से कुछ धर्मशास्त्री
उठे और तीखी बहस करते हुए कहने लगे, "इस व्यक्ति
में हम कोई खोट नहीं पाते हैं। यदि किसी आत्मा ने या
किसी स्वर्गदूत ने इससे बातें की हैं तो इससे क्या?"

10क्योंकि यह विवाद हिंसक रूप ले चुका था, इससे
वह सेनापति डर गया कि कहीं वे पौलुस के टुकड़े–टुकड़े
न कर डालें। सो उसने सिपाहियों को आदेश दिया कि
वे नीचे जा कर पौलुस को उनसे अलग करके छावनी
में ले जायें। 11अगली रात प्रभु ने पौलुस के निकट खड़े
होकर उससे कहा, "हिम्मत रख, क्योंकि तूने जैसे
दृढ़ता के साथ यरुशलेम में मेरी साक्षी दी है, वैसे ही
रोम में भी तुझे मेरी साक्षी देनी है।"

12फिर दिन निकले। यहूदियों ने एक षड्यन्त्र रचा।
उन्होंने शपथ उठायी कि जब तक वे पौलुस को मार
नहीं डालेंगे, न कुछ खायेंगे, न पियेंगे। 13उनमें से चालीस
से भी अधिक लोगों ने यह षड्यन्त्र रचा था 14वे प्रमुख
याजकों और बुज़ुर्गों के पास गये और बोले, "हमने
सौगन्ध उठाई है कि हम जब तक पौलुस को मार नहीं
डालते हैं, तब तक न हमें कुछ खाना है, न पीना।" 15तो
अब तुम और यहूदी महासभा, सेनानायक से कहो कि
वह उसे तुम्हारे पास ले आए यह बहाना बनाते हुए कि
तुम उसके विषय में और गहराई से छानबीन करना
चाहते हो। इससे पहले कि वह यहाँ पहुँचे, हम उसे मार
डालने को तैयार हैं। 16किन्तु पौलुस के भांजे को इस
षड्यन्त्र की भनक लग गयी थी, सो वह छावनी में जा
पहुँचा और पौलुस को सब कुछ बता दिया। 17इस पर
पौलुस ने किसी एक सेना–नायक को बुलाकर उससे
कहा, "इस युवक को सेनापति के पास ले जाओ क्योंकि
इसे उससे कुछ कहना है।" 18सो वह उसे सेनापति के
पास ले गया और बोला, "बंदी पौलुस ने मुझे बुलाया
और मुझसे इस युवक को तेरे पास पहुँचाने को कहा
क्योंकि यह तुझसे कुछ कहना चाहता है।"

19सेनापति ने उसका हाथ पकड़ा और उसे एक ओर
ले जाकर पूछा, "बता तू मुझ से क्या कहना चाहता है?"

20युवक बोला, "यहूदी इस बात पर एकमत हो गये हैं
कि वे पौलुस से और गहराई के साथ पूछताछ करने के
बहाने महासभा में उसे लाये जाने की तुझ से प्रार्थना
करें। 21इसलिये उनकी मत सुनना। क्योंकि चालीस से
भी अधिक लोग घात लगाये उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

"तुझे अपनी ... बोलना चाहिये" निर्गमन 22:28

उन्होंने यह कसम उठाई है कि जब तक वे उसे मार न लें, उन्हें न कुछ खाना है, न पीना। बस अब तेरी अनुमति की प्रतीक्षा में वे तैयार बैठे हैं।" **22**फिर सेनापति ने युवक को यह आदेश देकर भेज दिया, "तू यह किसी को मत बताना कि तूने मुझे इसकी सूचना दे दी है।"

पौलुस का कैसरिया भेजा जाना

23फिर सेनापति ने अपने दो सेना-नायकों को बुलाकर कहा, "दो सौ सैनिकों, सत्तर घुड़सवारों, और सौ भालैतों को कैसरिया जाने के लिये तैयार रखो। रात के तीसरे पहर चल पड़ने के लिये तैयार रहना। **24**पौलुस की सवारी के लिये घोड़ों का भी प्रबन्ध रखना और उसे सुरक्षा पूर्वक राज्यपाल फ़ेलिक्स के पास ले जाना।" **25**उसने एक पत्र लिखा जिसका विषय था:

> **26**महामहिम राज्यपाल फेलिक्स को क्लोदियुस लूसियास का नमस्कार पहुँचे।
>
> **27**इस व्यक्ति को यहूदियों ने पकड़ लिया था और वे इसकी हत्या करने ही वाले थे कि मैंने यह जानकर कि यह एक रोमी नागरिक है, अपने सैनिकों के साथ जा कर इसे बचा लिया। **28**मैं क्योंकि उस कारण को जानना चाहता था जिससे वे उस पर दोष लगा रहे थे, उसे उनकी महा-धर्म-सभा में ले गया। **29**मुझे पता चला कि उनकी व्यवस्था से संबंधित प्रश्नों के कारण उस पर दोष लगाया गया था। किन्तु उस पर कोई ऐसा अभियोग नहीं था जो उसे मृत्यु दण्ड के योग्य या बंदी बनाये जाने योग्य सिद्ध हो। **30**फिर जब मुझे सूचना मिली कि वहाँ इस मनुष्य के विरोध में कोई षड्यन्त्र रचा गया है तो मैंने इसे तुरंत तेरे पास भेज दिया है। और इस पर अभियोग लगाने वालों को यह आदेश दे दिया है कि वे इसके विरुद्ध लगाये गये अपने अभियोग को तेरे सामने रखें।

31सो सिपाहियों ने इन आज्ञाओं को पूरा किया और वे रात में ही पौलुस को अंतिपतरिस के पास ले गये। **32**फिर अगले दिन घुड़-सवारों को उसके साथ आगे जाने के लिये छोड़ कर वे छावनी को लौट आये। **33**जब वे कैसरिया पहुँचे तो उन्होंने राज्यपाल को वह पत्र देते हुए पौलुस को उसे सौंप दिया।

34राज्यपाल ने पत्र पढ़ा और पौलुस से पूछा कि वह किस प्रदेश का निवासी है। जब उसे पता चला कि वह किलिकिया का रहने वाला है **35**तो उसने उससे कहा, "तुझ पर अभियोग लगाने वाले जब आ जायेंगे, मैं तभी तेरी सुनवाई करूँगा।" उसने आज्ञा दी कि पौलुस को पहरे के भीतर हेरोदेस के महल में रखा जाये।

यहूदियों द्वारा पौलुस पर अभियोग

24 पाँच दिन बाद महायाजक हनन्याह कुछ बुज़ुर्ग यहूदी नेताओं और तिरतुल्लुस नाम के एक वकील को साथ लेकर कैसरिया आया। वे राज्य पाल के सामने पौलुस पर अभियोग सिद्ध करने आये थे। **2**फेलिक्स के सामने पौलुस की पेशी होने पर मुकदमे की कार्यवाही आरम्भ करते हुए तिरतुल्लुस बोला, "हे महोदय, तुम्हारे कारण हम बड़ी शांति के साथ रह रहे हैं और तुम्हारी दूर-दृष्टि से देश में बहुत से अपेक्षित सुधार आये हैं। **3**हे सर्वश्रेष्ट फेलिक्स, हम बड़ी कृतज्ञता के साथ इसे हर प्रकार से हर कहीं स्वीकार करते हैं।

4तुम्हारा और अधिक समय न लेते हुए, मेरी प्रार्थना है कि कृपया आप संक्षेप में हमें सुन लें। **5**बात यह है कि इस व्यक्ति को हमने एक उत्पाती के रूप में पाया है। सारी दुनिया के यहूदियों में इसने दंगे भड़कवाए हैं। यह नासरियों के पंथ का नेता है। **6-8**इसने मंदिर को भी अपवित्र करने का जतन किया है। हमने इसे इसीलिए पकड़ा है। हम इस पर जो आरोप लगा रहे हैं,* उन सब को आप स्वयं इससे पूछ ताछ करके जान सकते हो। **9**इस अभियोग में यहूदी भी शामिल हो गये। वे दृढ़ता के साथ कह रहे थे कि ये सब बातें सच हैं।

10फिर राज्यपाल ने जब पौलुस को बोलने के लिये इशारा किया तो उसने उत्तर देते हुए कहा, "तू बहुत दिनों से इस देश का न्यायाधीश है। यह जानते हुए मैं प्रसन्नता के साथ अपना बचाव प्रस्तुत कर रहा हूँ। **11**तू स्वयं यह जान सकता है कि अभी आराधना के लिए मुझे यरुशलेम गये बस बारह दिन बीते हैं। **12**वहाँ मंदिर में मुझे न तो किसी के साथ बहस करते पाया गया है और न ही प्रार्थना सभाओं या नगर में कहीं और लोगों को दंगों के लिए भड़काते हुए **13**और अब तेरे सामने जिन अभियोगों को ये मुझ पर लगा रहे हैं उन्हें प्रमाणित नहीं कर सकते हैं। **14**किन्तु मैं तेरे सामने यह स्वीकार करता हूँ कि मैं अपने पूर्वजों के परमेश्वर की आराधना अपने पंथ के अनुसार करता हूँ, जिसे ये एक पंथ कहते हैं। मैं हर उस बात में विश्वास करता हूँ जिसे व्यवस्था बताती है और जो नबियों के ग्रन्थों में लिखी है। **15**और मैं परमेश्वर में वैसे ही भरोसा रखता हूँ जैसे स्वयं ये लोग रखते हैं कि धर्मियों और अधर्मियों दोनों का ही पुनरुत्थान होगा। **16**इसीलिये मैं भी परमेश्वर और लोगों के समक्ष सदा अपनी अन्तरात्मा को शुद्ध बनाये रखने के लिए प्रयत्न करता रहता हूँ।

पद 6-8 "इसने...रहे हैं" कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है। "हम अपनी व्यवस्था के अनुसार इसका न्याय करना चाहते थे [7]किन्तु सेनानायक लिसिआस ने बलपूर्वक उसे हमसे छीन लिया [8]और अपने लोगो को आज्ञा दी कि वे इसे अभियोग लगाने के लिए तेरे सामने ले जाये।"

17"बरसों तक दूर रहने के बाद मैं अपने दीन जनों
के लिये उपहार ले कर भेंट चढ़ाने आया था। और
18जब मैं यह कर ही रहा था उन्होंने मुझे मंदिर में पाया,
तब मैं विधि-विधान पूर्वक शुद्ध था। न वहाँ कोई भीड़
थी और न कोई अशांति। 19एशिया से आये कुछ यहूदी
वहाँ मौजूद थे। यदि मेरे विरुद्ध उनके पास कुछ है तो
उन्हें तेरे सामने उपस्थित हो कर मुझ पर आरोप
लगाने चाहियें। 20या ये लोग जो यहाँ हैं वे बतायें कि जब
मैं यहूदी महासभा के सामने खड़ा था, तब उन्होंने मुझ
में क्या खोट पाया21सिवाय इसके कि जब मैं उनके
बीच में खड़ा था तब मैंने ऊँचे स्वर में कहा था, 'मरे
हुओं में से जी उठने के विषय में आज तुम्हारे द्वारा मेरा
न्याय किया जा रहा है।'"

22फिर फेलिक्स, जो इस-पंथ की पूरी जानकारी
रखता था, मुकदमे की सुनवाई को स्थगित करते हुए
बोला, "जब सेनानायक लुसिआस आयेगा, मैं तभी तुम्हारे
इस मुकदमे पर अपना निर्णय दूँगा। 23फिर उसने सूबेदार
को आज्ञा दी कि थोड़ी छूट देकर पौलुस को पहरे के
भीतर रखा जाये और उसके मित्रों को उसकी
आवश्यकताएँ पूरी करने से न रोका जाये।

पौलुस की फेलिक्स और उसकी पत्नी से बातचीत

24कुछ दिनों बाद फेलिक्स अपनी पत्नी द्रुसिल्ला के
साथ वहाँ आया। वह एक यहूदी महिला थी। फेलिक्स ने
पौलुस को बुलवा भेजा और यीशु मसीह में विश्वास के
विषय में उससे सुना। 25किन्तु जब पौलुस नेकी, आत्मसंयम
और आने वाले न्याय के विषय में बोल रहा था तो
फेलिक्स डर गया और बोला, "इस समय तू चला जा,
अवसर मिलने पर मैं तुझे फिर बुलवाऊँगा।"

26उसी समय उसे यह आशा भी थी कि पौलुस उसे
कुछ धन देगा इसीलिए फेलिक्स पौलुस को बातचीत के
लिए प्रायः बुलवा भेजता था। 27दो साल ऐसे ही बीत जाने
के बाद फेलिक्स का स्थान पुरखियुस फेस्तुस ने ग्रहण
कर लिया। और क्योंकि फेलिक्स यहूदियों को प्रसन्न
रखना चाहता था इसीलिये उसने पौलुस को बंदीगृह में
ही रहने दिया।

पौलुस कैसर से अपना न्याय चाहता है

25 फिर फेस्तुस ने उस प्रदेश में प्रवेश किया
और तीन दिन बाद वह कैसरिया से यरुशलेम
को रवाना हो गया। 2वहाँ प्रमुख याजकों और यहूदियों
के मुखियाओं ने पौलुस के विरुद्ध लगाये गये अभियोग
उसके सामने रखे और उससे प्रार्थना की3कि वह पौलुस
को यरुशलेम भिजवा कर उन का पक्ष ले। (वे रास्ते में
ही उसे मार डालने का षड्यन्त्र बनाये हुए थे।) 4फेस्तुस
ने उत्तर दिया, "पौलुस कैसरिया में बंदी है और वह
जल्दी ही वहाँ जाने वाला है।" उसने कहा, 5"तुम अपने
कुछ मुखियाओं को मेरे साथ भेज दो और यदि उस
व्यक्ति ने कोई अपराध किया है तो वे वहाँ उस पर
अभियोग लगायें। 6उनके साथ कोई आठ दस दिन
बिता कर फेस्तुस कैसरिया चला गया। अगले ही दिन
अदालत में न्यायासन पर बैठ कर उसने आज्ञा दी कि
पौलुस को पेश किया जाये। 7जब वह पेश हुआ तो
यरुशलेम से आये यहूदी उसे घेर कर खड़े हो गये।
उन्होंने उस पर अनेक गम्भीर आरोप लगाये किन्तु
उन्हें वे प्रमाणित नहीं कर सके। 8पौलुस ने स्वयं अपना
बचाव करते हुए कहा, "मेंने यहूदियों के विधान के
विरोध में कोई काम नहीं किया है, न ही मंदिर के
विरोध में और न ही कैसर के विरोध में।"

9किन्तु क्योंकि फेस्तुस यहूदियों को प्रसन्न करना
चाहता था, उत्तर में उसने पौलुस से कहा, "तो क्या तू
यरुशलेम जाना चाहता है ताकि मैं वहाँ तुझ पर लगाये
गये इन अभियोगों का न्याय करूँ?"

10पौलुस ने कहा, "इस समय मैं कैसर की अदालत
के सामने खड़ा हूँ। मेरा न्याय यहीं किया जाना चाहिये।
मैंने यहूदियों के साथ कुछ बुरा नहीं किया है, इसे तू भी
बहुत अच्छी तरह जानता है। 11यदि मैं किसी अपराध
का दोषी हूँ और मैंने कुछ ऐसा किया है, जिसका दण्ड
मृत्यु है तो मैं मरने से बचना नहीं चाहूँगा, किन्तु यदि ये
लोग मुझ पर जो अभियोग लगा रहे हैं, उनमें कोई सत्य
नहीं है तो मुझे कोई भी इन्हें नहीं सौंप सकता। यही
कैसर से मेरी प्रार्थना है।"

12अपनी परिषद् से सलाह करने के बाद फेस्तुस ने
उसे उत्तर दिया, "तूने कैसर से पुनर्विचार की प्रार्थना
की है, इसलिये तुझे कैसर के सामने ही ले जाया जायेगा।"

पौलुस की अग्रिप्पा के सामने पेशी

13कुछ दिन बाद राजा अग्रिप्पा और बिरनिके फेस्तुस
से मिलते कैसरिया आये। 14जब वे वहाँ कई दिन बिता
चुके तो फेस्तुस ने राजा के सामने पौलुस के मुकदमे
को इस प्रकार समझाया, "यहाँ एक ऐसा व्यक्ति है जिसे
फेलिक्स बंदी के रूप में छोड़ गया था। 15जब मैं यरुशलेम
में था, प्रमुख याजकों और बुजुर्गों ने उसके विरुद्ध
मुकदमा प्रस्तुत किया था और माँग की थी कि उसे
दंडित किया जाये। 16मैंने उनसे कहा, 'रोमियों में ऐसा
चलन नहीं है कि किसी व्यक्ति को, जब तक
वादी-प्रतिवादी को आमने-सामने न करा दिया जाये
और उस पर लगाये गये अभियोगों से उसे बचाव का
अवसर न दे दिया जाये, उसे दण्ड के लिये, सौंपा जाये।'
17सो वे लोग जब मेरे साथ यहाँ आये तो मैंने बिना देर
लगाये अगले ही दिन न्यायासन पर बैठ कर उस व्यक्ति
को पेश किये जाने की आज्ञा दी। 18जब उस पर दोष
लगाने वाले बोलने खड़े हुए तो उन्होंने उस पर ऐसा
कोई दोष नहीं लगाया जैसा कि मैं सोच रहा था। 19बल्कि

उनके अपने धर्म की कुछ बातों पर ही और यीशु नाम
के एक व्यक्ति पर जो मर चुका है, उनमें कुछ मतभेद
था। यद्यपि पौलुस का दावा है कि वह जीवित है। **20**मैं
समझ नहीं पा रहा था कि इन विषयों की छानबीन कैसे
की जाये, इसलिये मैंने उससे पूछा कि क्या वह अपने
इन अभियोगों का न्याय कराने के लिये यरुशलेम जाने
को तैयार है? **21**किन्तु पौलुस ने जब प्रार्थना की कि
उसे सम्राट के न्याय के लिये ही वहाँ रखा जाये, तो मैंने
आदेश दिया, कि मैं जब तक उसे कैसर के पास न
भिजवा दूँ, उसे यहीं रखा जाये।"

22इस पर अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, "इस व्यक्ति
की सुनवाई मैं स्वयं करना चाहता हूँ।"

फेस्तुस ने कहा, "तुम उसे कल सुन लेना।"

23सो अगले दिन अग्रिप्पा और बिरनिके बड़ी सजधज
के साथ आये और उन्होंने सेना-नायकों तथा नगर के
प्रमुख व्यक्तियों के साथ सभाभवन में प्रवेश किया।
फेस्तुस ने आज्ञा दी और पौलुस को वहाँ ले आया गया।
24फिर फेस्तुस बोला, "महाराजा अग्रिप्पा तथा उपस्थित
सज्जनो! तुम इस व्यक्ति को देख रहे हो जिसके विषय
में समूचा यहूदी-समाज, यरुशलेम में और यहाँ, मुझसे
चिल्ला-चिल्ला कर माँग करता रहा है कि इसे अब
और जीवित नहीं रहने देना चाहिये। **25**किन्तु मैंने जाँच
लिया है कि इसने ऐसा कुछ नहीं किया है कि इसे
मृत्यु-दण्ड दिया जाये। और क्योंकि इसने स्वयं सम्राट
से पुनर्विचार की प्रार्थना की है इसलिये मैंने इसे वहाँ
भेजने का निर्णय लिया है। **26**किन्तु इसके विषय में
सम्राट के पास लिख भेजने को मेरे पास कोई निश्चित
बात नहीं है। मैं इसे इसीलिये आप लोगों के सामने, और
विशेष रूप से हे महाराजा अग्रिप्पा! तुम्हारे सामने लाया
हूँ ताकि इस जाँच पड़ताल के बाद लिखने को मेरे पास
कुछ हो। **27**कुछ भी हो मुझे किसी बंदी को उसका
अभियोग-पत्र तैयार किये बिना वहाँ भेज देना असंगत
जान पड़ता है।"

पौलुस राजा अग्रिप्पा के सामने

26 अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, "तुझे स्वयं अपनी
ओर से बोलने की अनुमति है।" इस पर
पौलुस ने अपना हाथ उठाया और अपने बचाव में
बोलना आरम्भ किया, **2**"हे राजा अग्रिप्पा! मैं अपने
आप को भाग्यवान समझता हूँ कि यहूदियों ने मुझ पर
जो आरोप लगाये हैं, उन सब बातों के बचाव में, मैं तेरे
सामने बोलने जा रहा हूँ। **3**विशेष रूप से यह इसलिये
सत्य है कि तुझे सभी यहूदी प्रथाओं और उनके विवादों
का ज्ञान है। इसलिये मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि धैर्य
के साथ मेरी बात सुनी जाये।

4"सभी यहूदी जानते हैं कि प्रारम्भ से ही स्वयं अपने
देश में और यरुशलेम में भी बचपन से ही मैंने कैसा
जीवन जिया है। **5**वे मुझे बहुत समय से जानते हैं और
यदि वे चाहें तो इस बात की गवाही दे सकते हैं कि मैंने
हमारे धर्म के एक सबसे अधिक कट्टर पंथ के अनुसार
एक फ़रीसी के रूप में जीवन जिया है। **6**और अब इस
विचाराधीन स्थिति में खड़े हुए मुझे उस वचन का ही
भरोसा है जो परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को दिया था।
7यह वही वचन है जिसे हमारी बारहों जातियाँ दिन रात
तल्लीनता से परमेश्वर की सेवा करते हुए, प्राप्त करने
का भरोसा रखती हैं। हे राजन्, इसी भरोसे के कारण
मुझ पर यहूदियों द्वारा आरोप लगाया जा रहा है। **8**तुम में
से किसी को भी यह बात विश्वास के योग्य क्यों नहीं
लगती है कि परमेश्वर मरे हुए को जिला देता है।

9"मैं भी सोचा करता था नासरी यीशु के नाम का
विरोध करने के लिए जो भी बन पड़े, वह बहुत कुछ
करूँ। **10**और ऐसा ही मैंने यरुशलेम में किया भी। मैंने
परमेश्वर के बहुत से भक्तों को जेल में ठूँस दिया
क्योंकि प्रमुख याजकों से इसके लिये मुझे अधिकार
प्राप्त था। और जब उन्हें मारा गया तो मैंने अपना मत
उन के विरोध में दिया। **11**यहूदी धर्म सभागारों में मैं
उन्हें प्रायः दण्ड दिया करता और परमेश्वर के विरोध
में बोलने के लिए उन पर दबाव डालने का यत्न करता
रहता। उनके प्रति मेरा क्रोध इतना अधिक था कि
उन्हें सताने के लिए मैं बाहर के नगरों तक गया।

पौलुस द्वारा यीशु के दर्शन के विषय में बताना

12"ऐसी ही एक यात्रा के अवसर पर जब मैं प्रमुख
याजकों से अधिकार और आज्ञा पाकर दमिश्क जा
रहा था, **13**तभी दोपहर को जब मैं अभी मार्ग में ही था
कि मैंने हे राजन, स्वर्ग से एक प्रकाश उतरते देखा।
उसका तेज सूर्य से भी अधिक था। वह मेरे और मेरे
साथ के लोगों के चारों ओर कौंध गया। **14**हम सब
धरती पर लुढ़क गये। फिर मुझे एक वाणी सुनाई दी।
वह इब्रानी भाषा में मुझसे कह रही थी, 'हे शाऊल, हे
शाऊल, तू मुझे क्यों सता रहा है? पैंने की नोक पर
लात मारना तेरे बस की बात नहीं है।' **15**फिर मैंने पूछा,
'हे प्रभु, तू कौन है?' प्रभु ने उत्तर दिया, 'मैं यीशु हूँ जिसे
तू यातनाएँ दे रहा है। **16**किन्तु अब तू उठ और अपने
पैरों पर खड़ा हो जा। मैं तेरे सामने इसीलिए प्रकट हुआ
हूँ कि तुझे एक सेवक के रूप में नियुक्त करूँ और जो
कुछ तूने मेरे विषय में देखा है और जो कुछ मैं तुझे
दिखाऊँगा, उसका तू साक्षी रहे। **17**मैं जिन यहूदियों और
विधर्मियों के पास **18**उनकी आँखें खोलने, उन्हें अंधकार
से प्रकाश की ओर लाने और शैतान की ताकत से
परमेश्वर की ओर मोड़ने के लिये, तुझे भेज रहा हूँ,
उनसे तेरी रक्षा करता रहूँगा। इससे वे पापों की क्षमा
प्राप्त करेंगे और उन लोगों के बीच स्थान पायेंगे जो
मुझ में विश्वास रखने के कारण पवित्र हुए हैं।'

पौलुस के कार्य

19“हे राजन अग्रिप्पा, इसीलिये तभी से उस दर्शन की
आज्ञा का कभी भी उल्लंघन न करते हुए 20बल्कि
उसके विपरीत मैं पहले उन्हें दमिश्क में, फिर यरुशलेम
में और यहूदिया के समूचे क्षेत्र में और ग़ैर यहूदियों को
भी उपदेश देता रहा कि मन फिराव के, परमेश्वर की
ओर मुड़े और मनफिराव के योग्य काम करें। 21इसी
कारण जब मैं यहाँ मंदिर में था, यहूदियों ने मुझे पकड़
लिया और मेरी हत्या का यत्न किया। 22किन्तु आज
तक मुझे परमेश्वर की सहायता मिलती रही है और
इसीलिए मैं यहाँ छोटे और बड़े सभी लोगों के सामने
साक्षी देता खड़ा हूँ। मैं बस उन बातों को छोड़ कर और
कुछ नहीं कहता जो नबियों और मूसा के अनुसार
घटनी ही थी 23कि मसीह को यातनाएँ भोगनी होंगी
और वही मरे हुओं में से पहला जी उठने वाला होगा
और वह यहूदियों और ग़ैर यहूदियों को ज्योति का
सन्देश देगा।”

पौलुस द्वारा अग्रिप्पा का भ्रम दूर करने का यत्न

24वह अपने बचाव में जब इन बातों को कह ही रहा
था कि फेस्तुस ने चिल्ला कर कहा, “पौलुस, तेरा
दिमाग ख़राब हो गया है! तेरी अधिक पढ़ाई तुझे पागल
बनाये डाल रही है!”

25पौलुस ने कहा, “हे परमगुणी फेस्तुस, मैं पागल
नहीं हूँ बल्कि जो बातें मैं कह रहा हूँ, वे सत्य हैं और
संगत भी। 26स्वयं राजा इन बातों को जानता है और मैं
मुक्त भाव से उससे कह सकता हूँ। मेरा निश्चय है
कि इनमें से कोई भी बात उसकी आँखों से ओझल नहीं
है। मैं ऐसा इसलिये कह रहा हूँ कि यह बात किसी कोने
में नहीं की गयी। 27हे राजन अग्रिप्पा! नबियों ने जो
लिखा है, क्या तू उसमें विश्वास रखता है? मैं जानता
हूँ कि तेरा विश्वास है।”

28इस पर अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, “क्या तू यह
सोचता है कि इतनी सरलता से तू मुझे मसीही बनने को
मना लेगा?”

29पौलुस ने उत्तर दिया, “थोड़े समय में, चाहे अधिक
समय में, परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है कि न केवल तू
बल्कि वे सब भी, जो आज मुझे सुन रहे हैं, वैसे ही हो
जायें, जैसा में हूँ, सिवाय इन ज़ंजीरों के।”

30फिर राजा खड़ा हो गया और उसके साथ ही
राज्यपाल, बिरनिके और साथ में बैठे हुए लोग भी उठ
खड़े हुए। 31वहाँ से बाहर निकल कर वे आपस में बात
करते हुए कहने लगे, इस व्यक्ति ने तो ऐसा कुछ नहीं
किया है, जिससे इसे मृत्यु-दण्ड या कारावास मिल
सके। 32अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, “यदि इसने कैसर
के सामने पुनर्विचार की प्रार्थना न की होती, तो इस
व्यक्ति को छोड़ा जा सकता था।”

पौलुस को रोम भेजा जाना

27 जब यह निश्चय हो गया कि हमें जहाज़ से
इटली जाना है तो पौलुस तथा कुछ दूसरे
बंदियों को सम्राट की सेना के यूलियस नाम के एक
सेना-नायक को सौंप दिया गया। 2अद्रमुत्तियुम से हम
एक जहाज. पर चढ़े जो एशिया के तटीय क्षेत्रों से हो
कर जाने वाला था और समुद्र यात्रा पर निकल पड़े।
थिस्सलुनीके निवासी एक मकदूनी, जिसका नाम
अरिस्तर्खुस था, भी हमारे साथ था। 3अगले दिन हम
सैदा में उतरे। वहाँ यूलियस ने पौलुस के साथ अच्छा
व्यवहार किया और उसे उसके मित्रों का स्वागत सत्कार
ग्रहण करने के लिए उनके यहाँ जाने की अनुमति दे
दी। 4वहाँ से हम समुद्र-मार्ग से फिर चल पड़े। हम
साइप्रस की आड़ लेकर चल रहे थे क्योंकि हवाएँ
हमारे प्रतिकूल थीं। 5फिर हम किलिकिया और पंफूलिया
के सागर को पार करते हुए लुकिया और मीरा पहुँचे।
6वहाँ सेनानायक को सिकन्दरिया का इटली जाने वाला
एक जहाज़ मिला। उसने हमें उस पर चढ़ा दिया।

7कई दिन तक हम धीरे धीरे आगे बढ़ते हुए बड़ी
कठिनाई के साथ कनिदुस के सामने पहुँचे किन्तु क्योंकि
हवा हमें अपने मार्ग पर नहीं बने रहने दे रही थी, सो
हम सलभौने के सामने से क्रीत की ओट में अपनी नाव
बढ़ाने लगे। 8क्रीत के किनारे-किनारे बड़ी कठिनाई
से नाव को आगे बढ़ाते हुए हम एक ऐसे स्थान पर
पहुँचे जिसका नाम था सुरक्षित बंदरगाह। यहाँ से लसेआ
नगर पास ही था। 9समय बहुत बीत चुका था और नाव
को आगे बढ़ाना भी संकटपूर्ण था क्योंकि तब तक
उपवास का दिन समाप्त हो चुका था इसलिए पौलुस ने
चेतावनी देते हुए उनसे कहा, 10“हे पुरुषो, मुझे लगता है
कि हमारी यह सागर-यात्रा विनाशकारी होगी, न केवल
माल असबाब और जहाज़ के लिए बल्कि हमारे प्राणों
के लिये भी।” 11किन्तु पौलुस ने जो कहा था, उस पर
कान देने के बजाय उस सेना नायक ने जहाज़ के
मालिक और कप्तान की बातों का अधिक विश्वास
किया।12और क्योंकि वह बन्दरगाह शीत ऋतु के अनुकूल
नहीं था, इसलिए अधिकतर लोगों ने, यदि हो सके तो
फिनिक्स पहुँचने का प्रयत्न करने की ही ठानी। और
सर्दी वहीं बिताने का निश्चय किया। फिनिक्स क्रीत का
एक ऐसा बन्दरगाह है जिसका मुख दक्षिण-पश्चिम
और उत्तर-पश्चिम दोनों के ही सामने पड़ता है।

तूफ़ान

13जब दक्षिणी पवन हौले-हौले बहने लगा तो उन्होंने
सोचा कि जैसा उन्होंने चाहा था, वैसा उन्हें मिल गया है।
सो उन्होंने लंगर उठा लिया और क्रीत के किनारे-किनारे
जहाज़ बढ़ाने लगे। 14किन्तु अभी कोई अधिक समय
नहीं बीता था कि द्वीप की ओर से एक भीषण आँधी

उठी और आरपार लपेटती चली गयी। यह ‘उत्तर-पूर्वी’
आंधी कहलाती थी। 15जहाज़ तूफान में घिर गया। वह
आँधी को चीर कर आगे नहीं बढ़ पा रहा था सो हमने
उसे यों ही छोड़ कर हवा के रूख बहने दिया। 16हम
क्लोदा नाम के एक छोटे से द्वीप की ओट में बहते हुए
बड़ी कठिनाई से रक्षा नौकाओं को पा सके। 17फिर
रक्षा-नौकाओं को उठाने के बाद जहाज़ को रस्सों से
लपेट कर बाँध दिया गया और कहीं सुरतिस के उथले
पानी में फँस न जायें, इस डर से उन्होंने पालें उतार दीं
और जहाज़ को बहने दिया। 18दूसरे दिन तूफान के
घातक थपेड़े खाते हुए वे जहाज़ से माल-असबाब बाहर
फेंकने लगे। 19और तीसरे दिन उन्होंने अपने ही हाथों
से जहाज़ पर रखे उपकरण फेंक दिये। 20फिर बहुत
दिनों तक जब न सूरज दिखाई दिया, न तारे और
तूफान अपने घातक थपेड़े मारता ही रहा तो हमारे बच
पाने की आशा पूरी तरह जाती रही।

21बहुत दिनों से किसी ने भी कुछ खाया नहीं था। तब
पौलुस ने उनके बीच खड़े हो कर कहा, “हे पुरुषो, यदि
क्रीत से रवाना न होने की मेरी सलाह तुमने मानी होती
तो तुम इस विनाश और हानि से बच जाते। 22किन्तु मैं
तुमसे अब भी आग्रह करता हूँ कि अपनी हिम्मत बाँधे
रखो। क्योंकि तुममें से किसी को भी अपने प्राण नहीं
खोने हैं। हाँ! बस यह जहाज़ नष्ट हो जायेगा 23क्योंकि
पिछली रात उस परमेश्वर का एक स्वर्गदूत, जिसका
मैं हूँ और जिसकी सेवा करता हूँ, मेरे पास आकर
खड़ा हुआ। 24और बोला, ‘पौलुस डर मत। तुझे निश्चय
ही कैसर के सामने खड़ा होना है और उन सब को जो
तेरे साथ यात्रा कर रहे हैं, परमेश्वर ने तुझे दे दिया है।’
25सो लोगो! अपना साहस बनाये रखो क्योंकि परमेश्वर
में मेरा विश्वास है, इसलिये जैसा मुझे बताया गया है,
ठीक वैसा ही होगा। 26किन्तु हम किसी टापू के उथले
पानी में अवश्य जा फँसेगें।”

27फिर जब चौदहवीं रात आयी हम अद्रिया के सागर
में थपेड़े खा रहे थे तभी आधी रात के आसपास जहाज़
के चालकों को लगा जैसे कोई तट पास में ही हो।
28उन्होंने सागर की गहराई नापी तो पाया कि वहाँ कोई
अस्सी हाथ गहराई थी। थोड़ी देर बाद उन्होंने पानी की
गहराई फिर नापी और पाया कि अब गहराई साठ हाथ
रह गयी थी। 29इस डर से कि वे कहीं किसी चट्टानी
उथले किनारे में न फँस जायें, उन्होंने जहाज के पिछले
हिस्से से चार लंगर फेंके और प्रार्थना करने लगे कि
किसी तरह दिन निकल आये। 30उधर जहाज़ के चलाने
वाले जहाज़ से भाग निकलने का प्रयत्न कर रहे थे।
उन्होंने यह बहाना बनाते हुए कि वे जहाज़ के अगले
भाग से कुछ लंगर डालने के लिये जा रहे हैं, रक्षा-नौकाएँ
समुद्र में उतार दीं। 31तभी सेना-नायक से पौलुस ने
कहा, “यदि ये लोग जहाज़ पर नहीं रुके तो तुम भी नहीं
बच पाओगे।” 32सो सैनिकों ने रस्सियों को काट कर
रक्षा नौकाओं को नीचे गिरा दिया।

33भोर होने से थोड़ा पहले पौलुस ने यह कहते हुए
सब लोगों से थोड़ा भोजन कर लेने का आग्रह किया
कि चौदह दिन हो चुके हैं और तुम निरन्तर चिंता के
कारण भूखे रहे हो। तुमने कुछ भी तो नहीं खाया है।
34मैं तुमसे अब कुछ खाने के लिए इसलिए आग्रह कर
रहा हूँ कि तुम्हारे जीवित रहने के लिये यह आवश्यक
है। क्योंकि तुममें से किसी के सिर का एक बाल तक
बाँका नहीं होना है। 35इतना कह चुकने के बाद उसने
थोड़ी रोटी ली और सबके सामने परमेश्वर का धन्यवाद
किया। फिर रोटी को विभाजित किया और खाने लगा।
36इससे उन सब की हिम्मत बढ़ी और उन्होंने भी थोड़ा
भोजन लिया। 37जहाज़ पर कुल मिलाकर हम दो सौ
छिहत्तर व्यक्ति थे। 38पूरा खाना खा चुकने के बाद उन्होंने
समुद्र में अनाज फेंक कर जहाज़ को हल्का किया।

जहाज़ का टूटना

39जब भोर हुई तो वे उस धरती को पहचान नहीं पाये
किन्तु उन्हें लगा जैसे वहाँ कोई किनारेदार खाडी है।
उन्होंने निश्चय किया कि यदि हो सके तो जहाज़ को
वहाँ टिका दें। 40सो उन्होंने लंगर काट कर ढीले कर
दिये और उन्हें समुद्र मे नीचे गिर जाने दिया। उसी समय
उन्होंने पतवारों से बँधे रस्से ढीले कर दिये; फिर जहाज़
के अगले पतवार चढ़ा कर तट की ओर बढ़ने लगे।
41और उनका जहाज़ रेते में जा टकराया। जहाज़ का
अगला भाग उसमें फँस कर अचल हो गया। और
शक्तिशाली लहरों के थपेड़ों से जहाज़ का पिछला भाग
टूटने लगा। 42तभी सैनिकों ने कैदियों को मार डालने
की एक योजना बनायी ताकि उनमें से कोई भी तैर
कर बच न निकले। 43किन्तु सेना-नायक पौलुस को
बचाना चाहता था, इसलिये उसने उन्हें उनकी योजना
को अमल में लाने से रोक दिया। उसने आज्ञा दी कि
जो भी तैर सकते हैं, वे पहले ही कूद कर किनारे जा
लगें 44और बाकी के लोग तख्तों या जहाज़ के दूसरे
टुकड़ों के सहारे चले जायें। इस प्रकार हर कोई सुरक्षा
के साथ किनारे आ लगा।

माल्टा द्वीप पर पौलुस

28 इस सब कुछ से सुरक्षापुर्वक बच निकलने के
बाद हमें पता चला कि उस द्वीप का नाम
माल्टा था। 2वहाँ के मूल निवासियों ने हमारे साथ
असाधारण रूप से अच्छा व्यवहार किया। क्योंकि सर्दी
थी और वर्षा होने लगी थी, इसलिए उन्होंने आग जलाई
और हम सब का स्वागत किया। 3पौलुस ने लकड़ियों
का एक गट्ठर बनाया और वह जब लकड़ियों को आग
पर रख रहा था तभी गर्मी खा कर एक विषैला नाग
बाहर निकला और उसने उसके हाथ को डस लिया।

4वहाँ के निवासियों ने जब उस जंतु को उसके हाथ से
लटकते देखा तो वे आपस में कहने लगे, “निश्चय ही
यह व्यक्ति एक हत्यारा है। यद्यपि यह सागर से बच
निकला है किन्तु न्याय इसे जीने नहीं दे रहा है।”
5किन्तु पौलुस ने उस नाग को आग में ही झटक दिया।
पौलुस को किसी प्रकार की हानि नहीं हुई। 6लोग सोच
रहे थे कि वह या तो सूज जायेगा या फिर बरबस धरती
पर गिर कर मर जायेगा। किन्तु बहुत देर तक प्रतीक्षा
करने के बाद और यह देख कर कि उसे असाधारण
रूप से कुछ भी नहीं हुआ है, उन्होंने अपनी धारणा
बदल दी और बोले, “यह तो कोई देवता है।”

7उस स्थान के पास ही उस द्वीप के प्रधान अधिकारी
पबलियुस के खेत थे। उसने अपने घर ले जा कर
हमारा स्वागत-सत्कार किया। बड़े मुक्त भाव से तीन
दिन तक वह हमारी आवभगत करता रहा। 8पबलियुस
का पिता बिस्तर में था। उसे बुखार और पेचीश हो रही
थी। पौलुस उससे मिलने भीतर गया। फिर प्रार्थना करने
के बाद उसने उस पर अपने हाथ रखे और वह अच्छा
हो गया। 9इस घटना के बाद तो उस द्वीप के शेष सभी
रोगी भी वहाँ आये और वे ठीक हो गये। 10अनेक
उपहारों द्वारा उन्होंने हमारा मान बढ़ाया और जब हम
वहाँ से नाव पर आगे को चले तो उन्होंने सभी आवश्यक
वस्तुएँ ला कर हमें दीं।

पौलुस का रोम जाना

11फिर सिकंदरिया के एक जहाज़ पर हम वही चल
पड़े। इस द्वीप पर ही जहाज़ जाड़े में रुका हुआ था।
जहाज़ के अगले भाग पर जुड़वाँ भाइयों का चिन्ह
अंकित था। 12फिर हम सरकुस जा पहुँचे जहाँ हम तीन
दिन ठहरे। 13वहाँ से जहाज़ द्वारा हम रेगियुम पहुँचे और
फिर अगले ही दिन दक्षिणी हवा चल पड़ी। सो अगले
दिन हम पुतियुली आ गये। 14वहाँ हमें कुछ बंधु मिले
और उन्होंने हमें वहाँ सात दिन ठहरने को कहा और
इस तरह हम रोम आ पहुँचे। 15जब वहाँ के बंधुओं को
हमारी सूचना मिली तो वे अप्पियुस का बाज़ार और
तीन सराय' तक हमसे मिलने आये। पौलुस ने जब उन्हें
देखा तो परमेश्वर को धन्यवाद देकर वह बहुत उत्साहित
हुआ।

पौलुस का रोम आना

16जब हम रोम पहुँचे तो एक सिपाही की देखरेख में
पौलुस को अपने आप अलग से रहने की अनुमति दे दी
गयी। 17तीन दिन बाद पौलुस ने यहूदी नेताओं को बुलाया
और उनके एकत्र हो जाने पर वह उनसे बोला, “हे
भाइयो, चाहे मैंने अपनी जाति या अपने पूर्वजों के
विधि-विधान के प्रतिकूल कुछ भी नहीं किया है, तो
भी यरुशलेम में मुझे बंदी के रूप में रोमियों को सौंप
दिया गया था। 18उन्होंने मेरी जाँच पड़ताल की और
मुझे छोड़ना चाहा क्योंकि ऐसा कुछ मैंने किया ही नहीं
था जो मृत्युदण्ड के लायक होता19किन्तु जब यहूदियों
ने आपत्ति की तो मैं कैसर से पुनर्विचार की प्रार्थना
करने को विवश हो गया। इसलिये नहीं कि मैं अपने ही
लोगों पर कोई आरोप लगाना चाहता था। 20यही कारण
है जिससे मैं तुमसे मिलना और बातचीत करना चाहता
था क्योंकि यह इस्राएल का वह भरोसा ही है जिसके
कारण मैं ज़ंजीर में बँधा हूँ।”

21यहूदी नेताओं ने पौलुस से कहा, “तुम्हारे बारे में
यहूदिया से न तो कोई पत्र ही मिला है, और न ही वहाँ
से आने वाले किसी भी भाई ने तेरा कोई समाचार दिया
और न तेरे बारे में कोई बुरी बात कही। 22किन्तु तेरे
विचार क्या हैं, यह हम तुझसे सुनना चाहते हैं क्योंकि
हम जानते हैं कि लोग सब कहीं इस पंथ के विरोध में
बोलते हैं।”

23सो उन्होंने उसके साथ एक दिन निश्चित किया।
और फिर जहाँ वह ठहरा था, बड़ी संख्या में आकर वे
लोग एकत्र हो गये। मूसा की व्यवस्था और नबियों के
ग्रंथों से यीशु के विषय में उन्हें समझाने का जतन करते
हुए उसने परमेश्वर के राज्य के बारे में अपनी साक्षी
दी और समझाया। वह सुबह से शाम तक इसी में लगा
रहा। 24उसने जो कुछ कहा था, उससे कुछ तो सहमत
हो गये किन्तु कुछ ने विश्वास नहीं किया। 25फिर
आपस में एक दूसरे से असहमत होते हुए वे वहाँ से जाने
लगे। तब पौलुस ने एक यह बात और कही, “यशायाह
भविष्यवक्ता के द्वारा पवित्र आत्मा ने तुम्हारे पूर्वजों से
कितना ठीक कहा था, 26‘जाकर इन लोगों से कह दे:
“तुम सुनोगे, पर न समझोगे कदाचित्! तुम बस देखते
ही देखते रहोगे, पर न बूझोगे कभी भी!

27“क्योंकि इनका हृदय जड़ता से भर गया कान
इनके कठिनता से श्रवण करते और इन्होंने अपनी
आँखे बंद कर ली क्योंकि कभी ऐसा न हो जाये कि ये
अपनी आँख से देखें, और कान से सुनें और हृदय से
समझे, और कदाचित् लौटें मुझको स्वस्थ करना पड़े
उनको।”’ *यशायाह 6:9-10*

28“इसलिये तुम्हें जान लेना चाहिये कि परमेश्वर का
यह उद्धार विधर्मियों के पास भेज दिया गया है। वे इसे
सुनेंगे।” 29* 30वहाँ किराये के अपने मकान में पौलुस
पूरे दो साल तक ठहरा। जो कोई भी उससे मिलने
आता, वह उसका स्वागत करता। 31वह परमेश्वर के
राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह के विषय
में उपदेश देता। वह इस कार्य को पूरी निर्भयता और
बिना कोई बाधा माने किया करता था।

पद 29 'प्रेरितों के कार्य की कुछ यूनानी प्रतियों में पद 29 जोड़ा गया है। “जब पौलुस ये बातें कह चुका तो आपस में विवाद करते हुए यहूदी वहाँ से चले गये।”

रोमियों

1 पौलुस जो यीशु मसीह का दास है, जिसे परमेश्वर ने
प्रेरित होने के लिए बुलाया, जिसे परमेश्वर के उस
सुसमाचार के प्रचार के लिए चुना गया
2जिसकी पहले ही नबियों द्वारा पवित्र शास्त्रों में घोषणा
कर दी गयी **3**जिसका सम्बन्ध पुत्र से है, जो शरीर से
दाऊद का वंशज है **4**किन्तु पवित्र आत्मा के द्वारा मरे
हुओं में से जिलाए जाने के कारण जिसे सामर्थ्य के साथ
परमेश्वर का पुत्र दर्शाया गया है, यही यीशु मसीह
हमारा प्रभु है। **5**इसी के द्वारा मुझे अनुग्रह और प्रेरिताई
मिली, ताकि सभी ग़ैर यहूदियों में, उसके नाम में, वह
आस्था जो विश्वास से जन्म लेती है, पैदा की जा सके।
6उनमें परमेश्वर के द्वारा यीशु मसीह का होने के लिये
तुम लोग भी बुलाये गये हो।
7वह मैं, तुम सब के लिए, जो रोम में हो और
परमेश्वर के प्यारे हो, जो परमेश्वर के पवित्र जन होने
के लिए बुलाये गये हो, यह पत्र लिख रहा हूँ। हमारे
परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से
तुम्हें उसका अनुग्रह और शांति मिले।

धन्यवाद की प्रार्थना

8सबसे पहले मैं यीशु मसीह के द्वारा तुम सब के लिये
अपने परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहता हूँ। क्योंकि
तुम्हारे विश्वास की चर्चा संसार में सब कहीं हो रही है।
9प्रभु, जिसकी सेवा उसके पुत्र के सुसमाचार का उपदेश
देते हुए मैं अपने हृदय से करता हूँ, प्रभु मेरा साक्षी है,
कि मैं तुम्हें लगातार याद करता रहता हूँ। **10**अपनी
प्रार्थनाओं में मैं सदा ही विनती करता रहता हूँ कि
परमेश्वर की इच्छा से तुम्हारे पास आने की मेरी यात्रा
किसी तरह पूरी हो। **11**मैं बहुत इच्छा रखता हूँ क्योंकि
मैं तुमसे मिल कर कुछ आत्मिक उपहार देना चाहता
हूँ, जिससे तुम शक्तिशाली बन सको। **12**या मुझे कहना
चाहिये कि मैं जब तुम्हारे बीच होऊँ, तब एक दूसरे के
विश्वास से हम परस्पर प्रोत्साहित हों। **13**भाइयो, मैं
चाहता हूँ कि तुम्हें पता हो कि मैंने तुम्हारे पास आना
बार-बार चाहा है ताकि जैसा फल मैंने ग़ैर यहूदियों में
पाया है, वैसा ही तुमसे भी पा सकूँ, किन्तु अब तक
बाधा आती ही रही। **14**मुझ पर यूनानियों और ग़ैर
यूनानियों, बुद्धिमानों और मूर्खो सभी का क़र्ज़ है।
15इसीलिये मैं तुम रोमवासियों को भी सुसमाचार का
उपदेश देने को तैयार हूँ।
16मैं सुसमाचार के लिए शर्मिंदा नहीं हूँ क्योंकि उसमें
पहले यहूदी और फिर ग़ैर यहूदी-जो भी उसमें विश्वास
रखता है-उसके उद्धार के लिये परमेश्वर की सामर्थ्य
है। **17**क्योंकि सुसमाचार में यह दर्शाया गया है, परमेश्वर
मनुष्य को अपने प्रति सही कैसे बनाता है। यह आदि से
अंत तक विश्वास पर टिका है जैसा कि शास्त्र में लिखा
है, "धर्मी मनुष्य विश्वास से जीवित रहेगा।"

सबने पाप किया है

18उन लोगों के-जो सत्य को अधर्म से दबाते हैं, बुरे
कर्मों और हर बुराई पर स्वर्ग से परमेश्वर का कोप
प्रकट होगा। **19**और ऐसा हो रहा है क्योंकि परमेश्वर
के बारे में वे पूरी तरह जानते हैं क्योंकि परमेश्वर ने
इसे उन्हें जनाया है। **20**जब से संसार की रचना हुई
उसकी अदृश्य विशेषताएँ अनन्त शक्ति और परमेश्वरत्व
साफ-साफ दिखाई देते हैं क्योंकि उन वस्तुओं से वे
पूरी तरह जानी जा सकती हैं, जो परमेश्वर ने रचीं।
इसलिए लोगों के पास कोई बहाना नहीं। **21**यद्यपि वे
परमेश्वर को जानते हैं किन्तु वे उसे परमेश्वर के रूप
में सम्मान या धन्यवाद नहीं देते। बल्कि वे अपने विचारों
में निरर्थक हो गये। और उनके जड़ मन अन्धेरे से भर
गये। **22**वे बुद्धिमान होने का दावा करके मूर्ख ही रह
गये। **23**और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशवान
मनुष्यों, चिड़ियाओं, पशुओं और साँपो से मिलती जुलती
मूर्तियों में उन्होंने ढाल दिया।
24इसीलिये परमेश्वर ने उन्हें मन की बुरी
इच्छाओं के हाथों सौंप दिया। वे दुराचार में पड़ कर
एक दूसरे के शरीरों का अनादर करने लगे। **25**उन्होंने
झूठ के साथ परमेश्वर के सत्य का सौदा किया और
वे सृष्टि के बनाने वाले को छोड़ कर उसकी बनायी
सृष्टि की उपासना सेवा करने लगे। परमेश्वर धन्य है।
आमीन।
26इसलिए परमेश्वर ने उन्हें तुच्छ वासनाओं के हाथों
सौंप दिया। उनकी स्त्रियाँ स्वाभाविक यौन सम्बन्धों की
बजाय अस्वाभाविक यौन सम्बन्ध रखने लगीं। **27**इसी
तरह पुरुषों ने स्त्रियों के साथ स्वाभाविक संभोग छोड़

दिया और वे आपस में ही वासना में जलने लगे। और
पुरुष परस्पर एक दूसरे के साथ बुरे कर्म करने लगे।
उन्हें अपने भ्रष्टाचार का यथोचित फल भी मिलने
लगा।

28और क्योंकि उन्होंने परमेश्वर को पहचानने से
मना कर दिया सो परमेश्वर ने उन्हें कुबुद्धि के हाथों
सौंप दिया। और ये ऐसे अनुचित काम करने लगे जो
नहीं करने चाहिये थे। 29वे हर तरह के अधर्म, पाप,
लालच और वैर से भर गये। वे डाह, हत्या, लड़ाई–झगड़े,
छल–छद्म और दुर्भावना से भरे हैं। वे दूसरों का सदा
अहित सोचते हैं। वे कहानियाँ गड़ते रहते हैं। 30वे पर
निन्दक हैं, और परमेश्वर से घृणा करते हैं। वे उद्दण्ड
हैं, अहंकारी हैं, बड़बोला हैं, बुराई के जन्मदाता हैं और
माता–पिता की आज्ञा नहीं मानते। 31वे मूढ़, वचन–भंग
करने वाले, प्रेम–रहित और निर्दय हैं। 32चाहे वे परमेश्वर
की धर्म–पूर्ण विधि को जानते हैं जो बताती है कि जो
ऐसी बातें करते हैं, वे मौत के योग्य हैं, फिर भी वे न
केवल उन कामों को करते हैं, बल्कि वैसा करने
वालों का समर्थन भी करते हैं।

तुम लोग भी पापी हो

2 सो, न्याय करने वाले मेरे मित्र तू चाहे कोई भी है,
तेरे पास कोई बहाना नहीं है क्योंकि जिस बात के
लिये तू किसी दूसरे को दोषी मानता है, उसी से तू अपने
आपको भी अपराधी सिद्ध करता है क्योंकि तू जिन
कर्मों का न्याय करता है उन्हें आप भी करता है। 2अब
हम यह जानते हैं कि जो लोग ऐसे काम करते हैं उन्हें
परमेश्वर का उचित दण्ड मिलता है। 3किन्तु हे मेरे
मित्र क्या तू सोचता है कि तू जिन कामों के लिए दूसरों
को अपराधी ठहराता है और अपने आप वैसे ही काम
करता है तो क्या तू सोचता है कि तू परमेश्वर के न्याय
से बच जायेगा। 4या तू उसके महान अनुग्रह, सहनशक्ति
और धैर्य को हीन समझता है? और इस बात की उपेक्षा
करता है कि उसकी करुणा तुझे प्रायश्चित्त की तरफ़
ले जाती है। 5किन्तु अपनी कठोरता और कभी पछतावा
नहीं करने वाले मन के कारण उसके क्रोध को अपने
लिए उस दिन के वास्ते इकट्ठा कर रहा है जब
परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रकट होगा। 6परमेश्वर हर
किसी को उसके कर्मों के अनुसार फल देगा। 7जो
लगातार अच्छे काम करते हुए महिमा, आदर, और
अमरता की खोज में हैं, उन्हें वह बदले में अनन्त
जीवन देगा। 8किन्तु जो अपने स्वार्थीपन से सत्य पर
नहीं चल कर अधर्म पर चलते हैं उन्हें बदले में क्रोध
और प्रकोप मिलेगा। 9हर उस मनुष्य पर दुःख और
संकट आएगा जो बुराई पर चलता है। पहले यहूदी पर
और फिर ग़ैर यहूदी पर। 10और जो कोई अच्छाई पर
चलता है उसे महिमा, आदर और शांति मिलेगी। पहले
यहूदी को और फिर ग़ैर यहूदी को 11क्योंकि परमेश्वर
किसी का पक्षपात नहीं करता।

12जिन्होंने व्यवस्था को पाये बिना पाप किये, वे व्यवस्था
से बाहर रहते हुए नष्ट होंगे। और जिन्होंने व्यवस्था में
रहते हुए पाप किया उन्हें व्यवस्था के अनुसार ही दण्ड
मिलेगा। 13क्योंकि वे जो केवल व्यवस्था की कथा
सुनते हैं परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी नहीं हैं। बल्कि जो
व्यवस्था पर चलते हैं वे ही धर्मी ठहराये जायेंगे। 14सो
जब ग़ैर यहूदी लोग जिनके पास व्यवस्था नहीं है स्वभाव
से ही व्यवस्था की बातों पर चलते हैं तो चाहे उनके
पास व्यवस्था नहीं है तो भी वे अपनी व्यवस्था आप हैं।
15वे अपने मन पर लिखे हुए, व्यवस्था के कर्मों को
दिखाते हैं। उनका विवेक भी इसकी ही साक्षी देता है
और उनका मानसिक संघर्ष उन्हें अपराधी बताता है या
निर्दोष कहता है। 16ये बातें उस दिन होंगी जब परमेश्वर
मनुष्य की छुपी बातों का, जिसका मैं उपदेश देता हूँ उस
सुसमाचार के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा न्याय करेगा।

यहूदी और व्यवस्था

17किन्तु यदि तू अपने आप को यहूदी कहता है और
व्यवस्था में तेरा विश्वास है और अपने परमेश्वर का
तुझे अभिमान है 18और तू उसकी इच्छा को जानता है
और उत्तम बातों को ग्रहण करता है, क्योंकि व्यवस्था
से तुझे सिखाया गया है, 19तू यह मानता है कि तू अंधों
का अगुआ है, जो अंधेरे में भटक रहे हैं उनके लिए तू
प्रकाश है, 20अबोध लोगों को सिखाने वाला है, बच्चों
का उपदेशक है क्योंकि व्यवस्था में तुझे साक्षात् ज्ञान
और सत्य ठोस रूप में प्राप्त हैं 21तो तू जो औरों को
सिखाता है, अपने को क्यों नहीं सिखाता। तू जो चोरी
नहीं करने का उपदेश देता है, स्वयं चोरी क्यों करता
है? 22तू जो कहता है व्यभिचार नहीं करना चाहिये,
स्वयं व्यभिचार क्यों करता है? तू जो मूर्तियों से घृणा
करता है मंदिरों का धन क्यों छीनता है? 23तू जो
व्यवस्था का अभिमानी है, व्यवस्था को तोड़ कर
परमेश्वर का निरादर क्यों करता है? 24"तुम्हारे कारण
ही ग़ैर यहूदियों में परमेश्वर के नाम का अपमान होता
है।" जैसा कि शास्त्र में लिखा है।

25यदि तुम व्यवस्था का पालन करते हो तभी ख़तने
का महत्त्व है पर यदि तुम व्यवस्था को तोड़ते हो तो
तुम्हारा ख़तना रहित होने के समान ठहरा। 26यदि
किसी का ख़तना नहीं हुआ है और वह व्यवस्था के
पवित्र नियमों पर चलता है तो क्या उसके ख़तना रहित
होने को भी ख़तना न गिना जाये? 27वह मनुष्य जिसका
शरीर से ख़तना नहीं हुआ है और जो व्यवस्था का
पालन करता है, तुझे अपराधी ठहरायेगा। जिसके पास
लिखित व्यवस्था का विधान है, और जिसका ख़तना
भी हुआ है, और जो व्यवस्था को तोड़ता है,

28जो बाहर से ही यहूदी है, वह वास्तव में यहूदी नहीं
है। शरीर का ख़तना वास्तव में ख़तना नहीं है। 29सच्चा
यहूदी वही है जो भीतर से यहूदी है। सच्चा ख़तना
आत्मा द्वारा मन का ख़तना है, न कि लिखित व्यवस्था
का। ऐसे व्यक्ति की प्रशंसा मनुष्य नहीं बल्कि परमेश्वर
की ओर से की जाती है।

3 सो यहूदी होने का क्या लाभ या ख़तने का क्या
मूल्य? 2हर प्रकार से बहुत कुछ। क्योंकि सबसे
पहले परमेश्वर का उपदेश तो उन्हें ही सौंपा गया। 3यदि
उनमें से कुछ विश्वासघाती हो भी गये तो क्या है? क्या
उनका विश्वासघातीपन परमेश्वर की विश्वासपूर्णता
को बेकार कर देगा? 4निश्चय ही नहीं, यदि हर कोई
झूठा भी है तो भी परमेश्वर सच्चा ठहरेगा। जैसा कि
शास्त्र में लिखा है:

"ताकि जब तू कहे तू उचित सिद्ध हो और जब तेरा
न्याय हो, तू विजय पाये।" *भजन संहिता 51:4*

5सो यदि हमारी अधार्मिकता परमेश्वर की धार्मिकता
सिद्ध करे तो हम क्या कहें? क्या यह कि वह अपना
कोप हम पर प्रकट करके अन्याय नहीं करता? (मैं
एक मनुष्य के रूप में अपनी बात कह रहा हूँ।) 6निश्चय
ही नहीं, नहीं तो वह जगत का न्याय कैसे करेगा।

7किन्तु तुम कह सकते हो: "जब मेरी मिथ्यापूर्णता से
परमेश्वर की सत्यपूर्णता और अधिक उजागर होती है
तो इससे उसकी महिमा ही होती है, फिर भी मैं दोषी
करार क्यों दिया जाता हूँ?" 8और फिर क्यों न कहें:
"आओ! बुरे काम करें ताकि भलाई प्रकट हो।" जैसा
कि हमारे बारे में निन्दा करते हुए कुछ लोग हम पर
आरोप लगाते हैं कि हम ऐसा कहते हैं। ऐसे लोग दोषी
करार दिये जाने योग्य हैं। वे सभी दोषी हैं

कोई भी धर्मी नहीं

9 तो फिर क्या हुआ? क्या हम यहूदी ग़ैर यहूदियों से
किसी भी तरह अच्छे हैं, नहीं बिल्कुल नहीं। क्योंकि
हम यह दर्शा चुके हैं कि चाहे यहूदी हों, चाहे ग़ैर यहूदी,
सभी पाप के वश में हैं। 10शास्त्र कहता है:

"कोई भी धर्मी नहीं, एक भी! 11कोई समझदार नहीं,
एक भी! कोई ऐसा नहीं, जो प्रभु को खोजता!

12सब के सब भटके हैं एक से खोटे हुए, साथ-साथ
सब के सब, कोई भी यहाँ पर दया तो दिखाता नहीं,
एक भी नहीं!" *भजन संहिता 14:1-3*

13"उनके मुँह खुली कब्र से बने हैं वे अपनी जबान
से छल करते हैं।" *भजन संहिता 5:9*

"उनके होंठों पर नाग विष रहता है"
भजन संहिता 140:3

14"शाप से-कटुता से मुँह भरे रहते हैं।"
भजन संहिता 10:7

15"हत्या करने को वे हरदम उतावले रहते है।
16वे जहाँ कहीं जाते नाश ही करते हैं, संताप देते हैं।
17उनको शांति का मार्ग पता नहीं।"
यशायाह 59:7-8

18"उनकी आँखों में प्रभु का भय नहीं है।"
भजन संहिता 36:1

19अब हम यह जानते हैं कि व्यवस्था में जो कुछ
कहा गया है, वह उन को सम्बोधित है जो व्यवस्था के
अधीन हैं। ताकि हर मुँह को बन्द किया जा सके और
सारा जगत परमेश्वर के दण्ड के योग्य ठहरे। 20व्यवस्था
के कामों से कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के सामने धर्मी
सिद्ध नहीं हो सकता। क्योंकि व्यवस्था से जो कुछ
मिलता है, वह है पाप की पहचान करना।

परमेश्वर मनुष्यों को धर्मी कैसे बनाता है

21किन्तु अब वास्तव में मनुष्य के लिए यह दर्शाया
गया है कि परमेश्वर व्यवस्था के बिना ही उसे अपने
प्रति सही कैसे बनाता है। निश्चय ही व्यवस्था और
नबियों ने इसकी साक्षी दी है। 22सभी विश्वासियों के
लिये यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा परमेश्वर की
धार्मिकता प्रकट की गयी है बिना किसी भेदभाव के।
23क्योंकि सभी ने पाप किये हैं और सभी परमेश्वर की
महिमा से रहित हैं। 24किन्तु यीशु मसीह में संपन्न किए
गए अनुग्रह के छुटकारे के द्वारा उसके अनुग्रह से वे
एक सेंतमेत के उपहार के रूप में धर्मी ठहराये गये हैं।
25परमेश्वर ने यीशु मसीह को, उसमें विश्वास के द्वारा
पापों से छुटकारा दिलाने के लिये, लोगों को दिया।
उसने यह काम यीशु मसीह के बलिदान के रूप में
किया। ऐसा यह प्रमाणित करने के लिए किया गया कि
परमेश्वर सहनशील है क्योंकि उसने पहले उन्हें उनके
पापों का दंड दिये बिना छोड़ दिया था 26आज भी अपना
न्याय दर्शाने के लिए कि वह न्यायपूर्ण है और न्यायकर्ता
भी है; उनका जो यीशु मसीह में विश्वास रखते हैं।

27तो घमण्ड करना कहाँ रहा? वह तो समाप्त हो
गया। भला कैसे? क्या उस विधि से जिसमें व्यवस्था
जिन कर्मों की अपेक्षा करती है, उन्हें किया जाता है?
नहीं, बल्कि उस विधि से जिसमें विश्वास समाया है।
28कोई व्यक्ति व्यवस्था के कामों के अनुसार चल कर
नहीं बल्कि विश्वास के द्वारा ही धर्मी बन सकता है।
29या परमेश्वर क्या केवल यहूदियों का है? क्या वह
ग़ैर यहूदियों का नहीं है? हाँ वह ग़ैर यहूदियों का भी है।
30क्योंकि परमेश्वर एक है। वही उनको जिनका उनके

विश्वास के आधार पर ख़तना हुआ है, और उनको
जिनका ख़तना नहीं हुआ है उसी विश्वास के द्वारा,
धर्मी ठहरायेगा। 31सो क्या हम विश्वास के आधार पर
व्यवस्था को व्यर्थ ठहरा रहे हैं? निश्चय ही नहीं।
बल्कि हम तो व्यवस्था को और अधिक शक्तिशाली
बना रहे हैं।

इब्राहीम का उदाहरण

4 तो फिर हम क्या कहें कि हमारे शारीरिक पिता
इब्राहीम को इसमें क्या मिला? 2क्योंकि यदि
इब्राहीम को उसके कामों के कारण धर्मी ठहराया
जाता है तो उसके गर्व करने की बात थी। किन्तु
परमेश्वर के सामने वह वास्तव में गर्व नहीं कर सकता।
3पवित्र शास्त्र क्या कहता है? "इब्राहीम ने परमेश्वर में
विश्वास किया और वह विश्वास उसके लिये धार्मिकता
गिना गया"*

4काम करने वाले को मज़दूरी देना कोई दान नहीं
है, वह तो उसका अधिकार है। 5किन्तु यदि कोई
व्यक्ति काम करने की बजाय उस परमेश्वर में विश्वास
करता है, जो पापी को भी छोड़ देता है; तो उसका
विश्वास ही उसके धार्मिकता का कारण बन जाता है।
6ऐसे ही दाऊद भी उसे धन्य मानता है जिसे कामों के
आधार के बिना ही परमेश्वर धर्मी मानता है। वह जब
कहता है:

7"धन्य हैं वे जिनके व्यवस्था रहित कामों को क्षमा
मिली और जिनके पापों को ढक दिया गया!
8धन्य है वह पुरुष जिसके पापों को परमेश्वर ने
गिना नहीं है!" *भजन संहिता 32:1-2*

9तब क्या यह धन्यपन केवल उन्हीं के लिये हैं जिनका
ख़तना हुआ है, या उनके लिए भी जिनका ख़तना नहीं
हुआ। (हाँ, यह उन पर भी लागू होता है जिनका ख़तना
नहीं हुआ) क्योंकि हमने कहा है इब्राहीम का विश्वास
ही उसके लिये धार्मिकता गिना गया। 10तो यह कब
गिना गया? जब उसका ख़तना हो चुका था या जब वह
बिना ख़तने का था। नहीं ख़तना होने के बाद नहीं
बल्कि ख़तना होने की स्थिति से पहले। 11और फिर
एक चिह्न के रूप में उसने ख़तना ग्रहण किया। जो उस
विश्वास के परिणामस्वरूप धार्मिकता की एक छाप थी
जो उसने उस समय दर्शाया था जब उसका ख़तना नहीं
हुआ था। इसीलिए वह उन सभी का पिता है जो यद्यपि
बिना ख़तने के हैं किन्तु विश्वासी हैं। (इसलिए वे भी
धर्मी गिने जाएँगे) 12और वह उनका भी पिता है जिनका
ख़तना हुआ है किन्तु जो हमारे पूर्वज इब्राहीम के विश्वास
का जिसेउसने ख़तना होने से पहले प्रकट किया था,
अनुसरणकरते हैं।

"इब्राहीम ... गया" उत्पत्ति 15:6

विश्वास और परमेश्वर का वचन

13इब्राहीम या उसके वंशजों को यह वचन कि वे
संसार के उत्तराधिकारी होंगे, व्यवस्था से नहीं मिला था
बल्कि उस धार्मिकता से मिला था जो विश्वास के द्वारा
उत्पन्न होती है। 14यदि जो व्यवस्था को मानते हैं, वे
जगत के उत्तराधिकारी हैं तो विश्वास का कोई अर्थ
नहीं रहता और वचन भी बेकार हो जाता है। 15लोगों
द्वारा व्यवस्था का पालन नहीं किये जाने से परमेश्वर
का क्रोध उपजता है किन्तु जहाँ व्यवस्था ही नहीं है
वहाँ व्यवस्था का तोड़ना ही क्या?

16इसीलिए सिद्ध है कि परमेश्वर का वचन विश्वास
का फल है और यह सेंतमेत में ही मिलता है। इस
प्रकार उसका वचन इब्राहीम के सभी वंशजों के लिए
सुनिश्चित है; न केवल उनके लिये जो व्यवस्था को
मानते हैं बल्कि उन सब के लिये भी जो इब्राहीम के
समान विश्वास रखते हैं। वह हम सब का पिता है।
17शास्त्र बताता है, "मैंने तुझे (इब्राहीम) अनेक राष्टों
का पिता बनाया।"* उस परमेश्वर की दृष्टि में वह
इब्राहीम हमारा पिता है जिस पर उसका विश्वास है।
परमेश्वर जो मरे हुए को जीवन देता है और जो नहीं है,
उसे अस्तित्व देता है। 18सभी मानवीय आशाओं के
विरुद्ध अपने मन में आशा सँजोये हुए इब्राहीम ने उसमें
विश्वास किया, इसीलिए वह कहे गये के अनुसार अनेक
राष्टों का पिता बना। "तेरे अनगिनत वंशज होंगे।"*
19अपने विश्वास को बिना डगमगाये और यह जानते
हुए भी कि उसकी देह सौ साल की बूढ़ी मरियल हो
चुकी है और सारा बाँझ है, 20परमेश्वर के वचन में
विश्वास बनाये रखा। इतना हीनहीं, विश्वास को और
मज़बूत करते हुए परमेश्वर को महिमादी। 21उसे पूरा
भरोसा था कि परमेश्वर ने उसे जो वचनदिया है, उसे
पूरा करने में वह पूरी तरह समर्थ है। 22इसलिये, "यह
विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना गया।"*

23शास्त्र का यह वचन कि विश्वास उसके लिये
धार्मिकता गिना गया, न केवल उसके लिये है, 24बल्कि
हमारे लिये भी है परमेश्वर हमें, जो उसमें विश्वास
रखते हैं, धार्मिकता स्वीकार करेगा। उसने हमारे प्रभु
यीशु को फिर से जीवित किया। 25यीशु जिसे हमारे पापों
के लिए मारे जाने को सौंपा गया और हमें धर्मी बनाने
के लिए, मरे हुओं में से पुन: जीवित किया गया।

परमेश्वर का प्रेम

5 क्योंकि हम अपने विश्वास के कारण परमेश्वर
के लिए धर्मी हो गये हैं, सो अपने प्रभु यीशु मसीह

"शास्त्र बताता ... बनाया" उत्पत्ति 17:5

"तेरें ... होंगे" उत्पत्ति 15:5

"यह विश्वास ... गया " उत्पत्ति 15:6

के द्वारा हमारा परमेश्वर से मेल हो गया है। **2**उसी के
द्वारा विश्वास के कारण उसकी जिस अनुग्रह में हमारी
स्थिति है, उस तक हमारी पहुँच हो गयी है। और हम
परमेश्वर की महिमा का कोई अंश पाने की आशा का
आनन्द लेते हैं। **3**इतना ही नहीं, हम अपनी विपत्तियों में
भी आनन्द लेते हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि विपत्ति
धीरज को जन्म देती है। **4**और धीरज से परखा हुआ
चरित्र निकलता है। परखा हुआ चरित्र आशा को जन्म
देता है। **5**और आशा हमें निराश नहीं होने देती क्योंकि
पवित्र आत्मा के द्वारा, जो हमें दिया गया है, परमेश्वर
का प्रेम हमारे हृदय में उँडेल दिया गया है।

6क्योंकि हम जब अभी निर्बल ही थे तो उचित समय
पर हम भक्तिहीनों के लिए मसीह ने अपना बलिदान
दिया। **7**अब देखो, किसी धर्मी मनुष्य के लिए भी कोई
कठिनाई से मरता है। किसी अच्छे आदमी के लिए
अपने प्राण त्यागने का साहस तो कोई कर भी सकता
है। **8**पर परमेश्वर ने हम पर अपना प्रेम दिखाया। जब
कि हम तो पापी ही थे; किन्तु यीशु ने हमारे लिए प्राण
त्यागे।

9क्योंकि अब जब हम उसके लहू के कारण धर्मी हो
गये हैं तो अब उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से
अवश्य ही बचाये जायेंगे। **10**क्योंकि जब हम उसके बैरी
थे तो उसने अपनी मृत्यु के द्वारा परमेश्वर से हमारा
मेलमिलाप कराया तो चुँकि अब हमारा मेलमिलाप हो
चुका है तो उसके जीवन से हमारी अधिक से अधिक
रक्षा होगी। **11**इतना ही नहीं है हम अपने प्रभु यीशु के
द्वारा परमेश्वर की भक्ति पाकर अब उसमें आनन्द लेते
हैं।

आदम और यीशु

12इसीलिये एक व्यक्ति (आदम) के द्वारा जैसे धरती
पर पाप आया और पाप से मृत्यु और इस प्रकार मृत्यु
सब लोगों के लिए आयी क्योंकि सभी ने पाप किये थे।
13अब देखो व्यवस्था के आने से पहले जगत में पाप था
किन्तु जब तक कोई व्यवस्था नहीं होती किसी का भी
पाप नहीं गिना जाता **14**किन्तु आदम से लेकर मूसा के
समय तक मौत सब पर राज करती रही। मौत उन पर
भी वैसे ही हावी रही जिन्होंने पाप नहीं किये थे जैसे
आदम पर। आदम भी वैसा ही था जैसा वह जो (मसीह)
आने वाला था। **15**किन्तु परमेश्वर का वरदान आदम
के अपराध के जैसा नहीं था क्योंकि यदि उस एक
व्यक्ति के अपराध के कारण सभी लोगों की मृत्यु हुई
तो उस एक व्यक्ति यीशु मसीह की करुणा के कारण
मिले परमेश्वर के अनुग्रह और वरदान तो सभी लोगों
की भलाई के लिए कितना कुछ और अधिक हैं।
16और यह वरदान भी उस पापी के द्वारा लाए गए
परिणाम के समान नहीं है क्योंकि दंड के हेतु न्याय का
आगमन एक अपराध के बाद हुआ था। किन्तु यह
वरदान, जो दोष-मुक्ति की ओर ले जाता है, अनेक
अपराधों के बाद आया था। **17**अत: यदि एक व्यक्ति की
उस अपराध के कारण मृत्यु का शासन हो गया। तो जो
परमेश्वर के अनुग्रह और उसके वरदान की प्रचुरता
का-जिसमें धर्मी का निवास है-उपभोग कर रहे हैं-वे
तो जीवन में उस एक व्यक्ति यीशु मसीह के द्वारा और
भी अधिक शासन करेंगे।

18सो जैसे एक अपराध के कारण सभी लोगों को
दोषी ठहराया गया, वैसे ही एक धर्म के काम के द्वारा
सब के लिए परिणाम में अनन्त जीवन प्रदान करने
वाली धार्मिकता मिली। **19**अत: जैसे उस एक व्यक्ति के
आज्ञा न मानने के कारण सब लोग पापी बना दिये गये
वैसे ही उस एक व्यक्ति की आज्ञाकारिता के कारण
सभी लोग धर्मी भी बना दिये जायेंगे। **20**व्यवस्था का
आगमन इसलिये हुआ कि अपराध बढ़ पायें। किन्तु
जहाँ पाप बढ़ा, वहाँ परमेश्वर का अनुग्रह और भी
अधिक बढ़ा। **21**ताकि जैसे मृत्यु के द्वारा पाप ने राज्य
किया ठीक वैसे ही हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा
अनन्त जीवन को लाने के लिये परमेश्वर की अनुग्रह
धार्मिकता के द्वारा राज्य करे।

पाप के लिए मृत किन्तु मसीह में जीवित

6 तो फिर हम क्या कहें? क्या हम पाप ही करते रहें
ताकि परमेश्वर का अनुग्रह बढ़ता रहे? **2**निश्चय
ही नहीं। हम जो पाप के लिए मर चुके हैं पाप में ही
कैसे जियेंगे? **3**या क्या तुम नहीं जानते कि हम, जिन्होंने
यीशु मसीह में बपतिस्मा लिया है, उसकी मृत्यु का ही
बपतिस्मा लिया है। **4**सो उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लेने से
हम भी उसके साथ ही गाड़ दिये गये थे ताकि जैसे परम
पिता की महिमामय शक्ति के द्वारा यीशु मसीह को मरे
हुओं में से जिला दिया गया था, वैसे ही हम भी एक नया
जीवनपायें।

5क्योंकि जब हम उसकी मृत्यु में उसके साथ रहे हैं
तो उसके जैसे पुनरुत्थान में भी उसके साथ रहेंगे। **6**हम
यह जानते हैं कि हमारा पुराना व्यक्तित्त्व यीशु के साथ
ही क्रूस पर चढ़ा दिया गया था ताकि पाप से भरे हमारे
शरीर नष्ट हो जायें। और हम आगे के लिये पाप के
दास न बने रहें। **7**क्योंकि जो मर गया वह पाप के
बन्धन से छुटकारा पा गया।

8और क्योंकि हम मसीह के साथ मर गये, सो हमारा
विश्वास है कि हम उसी के साथ जियेंगे भी। **9** हम
जानते हैं कि मसीह जिसे मरे हुओं में से जीवित किया
था अमर है। उस पर मौत का वश कभी नहीं चलेगा।
10जो मौत वह मरा है, वह सदा के लिए पाप के लिए
मरा है किन्तु जो जीवन वह जी रहा है, वह जीवन
परमेश्वर के लिए है। **11**इसी तरह तुम अपने लिए भी

सोचो कि तुम पाप के लिए मर चुके हो किन्तु यीशु
मसीह में परमेश्वर के लिए जीवित हो।

12इसलिए तुम्हारे नाशवान् शरीरों के ऊपर पाप का
वश न चले। ताकि तुम पाप की इच्छाओं पर कभी न
चलो। 13अपने शरीर के अंगों को अधर्म की सेवा के
लिए पाप के हवाले न करो बल्कि मरे हुओं में से जी
उठने वालों के समान परमेश्वर के हवाले कर दो।
और अपने शरीर के अंगों को धार्मिकता की सेवा के
साधन के रूप में परमेश्वर के हवाले कर दो। 14तुम
पर पाप का शासन नहीं होगा क्योंकि तुम व्यवस्था के
सहारे नहीं जीते हो बल्कि परमेश्वर की अनुग्रह के
सहारे जीते हो।

धार्मिकता के सेवक

15तो हम क्या करें? क्या हम पाप करें? क्योंकि हम
व्यवस्था के अधीन नहीं, बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह
के अधीन जीते हैं। निश्चय ही नहीं। 16क्या तुम नहीं
जानते कि जब तुम किसी की आज्ञा मानने के लिए
अपने आप को दास के रूप में उसे सौंपते हो तो तुम
दास हो। फिर चाहे तुम पाप के दास बनो, जो तुम्हें मार
डालेगा और चाहे आज्ञाकारिता के, जो तुम्हें धार्मिकता
की तरफ ले जायेगी। 17किन्तु प्रभु का धन्यवाद है कि
यद्यपि तुम पाप के दास थे, तुमने अपने मन से उन
उपदेशों की रीति को माना जो तुम्हें सौंपे गये थे। 18तुम्हें
पापों से छुटकारा मिल गया और तुम धार्मिकता के
सेवक बन गए हो। 19(मैं एक उदाहरण दे रहा हूँ जिसे
सभी लोग समझ सकें क्योंकि उसे समझना तुम लोगों
के लिए कठिन है।) क्योंकि तुमने अपने शरीर के
अंगों को अपवित्रता और व्यवस्था हीनता के आगे
उनके दास के रूप में सौंप दिया था जिससे व्यवस्था
हीनता पैदा हुई, अब तुम लोग ठीक वैसे ही अपने
शरीर के अंगों को दास के रूप में धार्मिकता के हाथों
सौंप दो ताकि संपूर्ण समर्पण उत्पन्न हो। 20क्योंकि तुम
जब पाप के दास थे तो धार्मिकता की ओर से तुम पर
कोई बन्धन नहीं था। 21और देखो उस समय तुम्हें कैसा
फल मिला? जिसका लिए आज तुम शर्मिन्दा हो। जिसका
अंतिम परिणाम मृत्यु है। 22किन्तु अब तुम्हें पाप से
छुटकारा मिल चुका है और परमेश्वर के दास बना
दिये गये हो तो जो खेती तुम काट रहे हो, तुम्हें परमेश्वर
के प्रति संपूर्ण समर्पण में ले जायेगी। जिसका अंतिम
परिणाम है अनन्त जीवन। 23क्योंकि पाप का मजदूरी
तो बस मृत्यु ही है जबकि हमारे प्रभु यीशु मसीह में
अनन्त जीवन, परमेश्वर का संतमेतका वरदानहै।

विवाह का दृष्टान्त

7 हे भाइयो, क्या तुम नहीं जानते (मैं उन लोगों से
कह रहा हूँ जो व्यवस्था को जानते हैं) कि व्यवस्था
का शासन किसी व्यक्ति पर तभी तक है जब तक वह
जीता है? 2उदाहरण के लिए एक विवाहिता स्त्री अपने
पति के साथ विधान के अनुसार तभी तक बँधी है जब
तक वह जीवित है किन्तु यदि उसका पति मर जाता है,
तो वह विवाह सम्बन्धी नियमों से छूट जाती है। 3पति के
जीते जी यदि किसी दूसरे पुरुष से सम्बन्ध जोड़े तो उसे
व्यभिचारिणी कहा जाता है किन्तु यदि उसका पुरुष मर
जाता है तो विवाह सम्बन्धी नियम उस पर नहीं लगता
और इसीलिये यदि वह दूसरे पुरुष की हो जाती है तो भी
वह व्यभिचारिणी नहीं है।

4हे मेरे भाइयो, ऐसे ही मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था
के लिये तुम भी मर चुके हो। इसीलिये अब तुम भी
किसी दूसरे से नाता जोड़ सकते हो। उससे जिसे मरे
हुओं में से पुनर्जीवित किया गया है। ताकि हम परमेश्वर
के लिए कर्मों की उत्तम खेती कर सकें। 5क्योंकि जब
हम मानव स्वभाव के अनुसार जी रहे थे, हमारी पाप–पूर्ण
वासनाएँ जो व्यवस्था के द्वारा आयी थीं, हमारे अंगों पर
हावी थीं। ताकि हम कर्मों की ऐसी खेती करें जिसका
अंत मौत में होता है। 6किन्तु अब हमें व्यवस्था से
छुटकारा दे दिया गया है क्योंकि जिस व्यवस्था के
अधीन हमें बंदी बनाया हुआ था, हम उसके लिये मर
चुके हैं। और अब पुरानी लिखित व्यवस्था से नहीं,
बल्कि आत्मा की नयी रीति से प्रेरित हो कर हम अपने
स्वामी परमेश्वर की सेवा करतेहैं।

पाप से लड़ाई

7तो फिर हम क्या कहें? क्या हम कहें कि व्यवस्था
पाप है? निश्चय ही नहीं। जो भी हो, यदि व्यवस्था नहीं
होती तो मैं पहचान ही नहीं पाता कि पाप क्या है? यदि
व्यवस्था नहीं बताती, “जो अनुचित है उसकी चाहत
मत करो” तो निश्चय ही मैं पहचान ही नहीं पाता कि
अनुचित इच्छा क्या है।”

8किन्तु पाप ने मौका मिलते ही व्यवस्था का लाभ
उठाते हुए मुझमें हर तरह की ऐसी इच्छाएँ भर दीं जो
अनुचित के लिए थीं। व्यवस्था के अभाव में पाप तो
मर गया। 9एक समय मैं बिना व्यवस्था के ही जीवित
था, किन्तु जब व्यवस्था का आदेश आया तो पाप
जीवन में उभर आया। 10और मैं मर गया। वही व्यवस्था
का आदेश जो जीवन देने के लिए था, मेरे लिये मृत्यु ले
आया। 11क्योंकि पाप को अवसर मिल गया और उसने
उसी व्यवस्था के आदेश के द्वारा मुझे छला और उसी
के द्वारा मुझे मार डाला।

12इस तरह व्यवस्था पवित्र है और वह विधान पवित्र,
धर्मी और उत्तम है। 13तो फिर क्या इसका यह अर्थ है
कि जो उत्तम है, वही मेरी मृत्यु का कारण बना?
निश्चय ही नहीं। बल्कि पाप उस उत्तम के द्वारा मेरे
लिए मृत्यु का इसलिये कारण बना कि पाप को पहचाना

जा सके। और व्यवस्था के विधान के द्वारा उसकी
भयानक पाप–पूर्णता दिखाई जा सके।

मानसिक द्वन्द्व

14क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है
और मैं हाड़–माँस का भौतिक मनुष्य हूँ जो पाप की
दासता के लिए बिका हुआ है। **15**मैं नहीं जानता मैं क्या
कर रहा हूँ क्योंकि मैं जो करना चाहता हूँ, नहीं
करता, बल्कि मुझे वह करना पड़ता है, जिससे मैं घृणा
करता हूँ। **16**और यदि मैं वही करता हूँ जो मैं नहीं
करना चाहता तो मैं स्वीकार करता हूँ कि व्यवस्था
उत्तम है। **17**किन्तु वास्तव में वह मैं नहीं हूँ जो यह सब
कुछ कर रहा है, बल्कि यह मेरे भीतर बसा पाप है।
18हाँ, मैं जानता हूँ कि मुझ में यानी मेरे भौतिक मानव
शरीर में किसी अच्छी वस्तु का वास नहीं है। नेकी
करने की इच्छा तो मुझ में है पर नेक काम मुझ से
नहीं होते। **19**क्योंकि जो अच्छा काम मैं करना चाहता
हूँ, मैं नहीं करता बल्कि जो मैं नहीं करना चाहता, वे
ही बुरे काम मैं करता हूँ। **20**और यदि मैं वही काम
करता हूँ जिन्हें करना नहीं चाहता तो वास्तव में
उनका कर्त्ता जो उन्हें कर रहा है, मैं नहीं हूँ, बल्कि
वह पाप है जो मुझ में बसा है।

21इसीलिए मैं अपने में यह नियम पाता हूँ कि मैं जब
अच्छा करना चाहता हूँ, तो अपने में बुराई को ही पाता
हूँ। **22**अपनी अन्तरात्मा में मैं परमेश्वर की व्यवस्था
को सहर्ष मानता हूँ। **23**पर अपने शरीर में मैं एक दूसरे
ही नियम को काम करते देखता हूँ यह मेरे चिन्तन पर
शासन करने वाली व्यवस्था से युद्ध करता है और मुझे
पाप की व्यवस्था का बंदी बना लेता है। यह व्यवस्था
मेरे शरीर में क्रियाशील है। **24**मैं एक अभागा इंसान हूँ।
मुझे इस शरीर से, जो मौत का निवाला है, छुटकारा
कौन दिलायेगा? **25**अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा मैं
परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ! सो अपने हाड़ माँस
के शरीर से मैं पाप की व्यवस्था का गुलाम होते हुए भी
अपनी बुद्धि से परमेश्वर की व्यवस्था का सेवक हूँ।

आत्मा से जीवन

8 इस प्रकार अब उनके लिये जो यीशु मसीह में
स्थित हैं, कोई दण्ड नहीं है। [क्योंकि वे शरीर के
अनुसार नहीं बल्कि आत्मा के अनुसार चलते है।]*
2क्योंकि आत्मा की व्यवस्था ने जो यीशु मसीह में
जीवन देती है, तुझे पाप की व्यवस्था से जो मृत्यु की
ओर ले जाती है, स्वतन्त्र कर दिया है। **3**जिसे मूसा की
वह व्यवस्था जो मनुष्य के भौतिक स्वभाव के कारण
दुर्बल बना दी गई थी, नहीं कर सकी उसे परमेश्वर ने
अपने पुत्र को हमारे ही जैसे शरीर में भेजकर–जिससे
हम पाप करते हैं–उसकी भौतिक देह को पाप वाली
बनाकर पाप को निरस्त कर के पूरा किया। **4**जिससे
कि हमारे द्वारा, जो देह की भौतिक विधि से नहीं,
बल्कि आत्मा की विधि से जीते हैं, व्यवस्था की
आवश्यकताएँ पूरी की जा सकें।

5क्योंकि वे जो अपने भौतिक मानव स्वभाव के
अनुसार जीते हैं, उनकी बुद्धि मानव स्वभाव की इच्छाओं
पर टिकी रहती है परन्तु वे जो आत्मा के अनुसार जीते
हैं, उनकी बुद्धि जो आत्मा चाहती है उन अभिलाषाओं
में लगी रहती है। **6**भौतिक मानव स्वभाव के बस में
रहने वाले मन का अन्त मृत्यु है; किन्तु आत्मा के वश
में रहनेवाली बुद्धि का परिणाम है जीवन और शांति।
7इस तरह भौतिक मानव स्वभाव से अनुशासित मन
परमेश्वरका विरोधी है। क्योंकि वह न तो परमेश्वर
के नियमों केअधीन है और न हो सकता है। **8**और वे
जो भौतिकमानव स्वभाव के अनुसार जीते हैं, परमेश्वर
को प्रसन्न नहीं कर सकते।

9किन्तु तुम लोग भौतिक मानव स्वभाव के अधीन
नहीं हो, बल्कि आत्मा के अधीन हो यदि वास्तव में
तुममें परमेश्वर की आत्मा का निवास है। किन्तु यदि
किसी में यीशु मसीह की आत्मा नहीं है तो वह मसीह
का नहीं है। **10**दूसरी तरफ यदि तुममें मसीह है तो चाहे
तुम्हारी देह पाप के हेतु मर चुकी है पवित्र आत्मा,
परमेश्वर के साथ तुम्हें धार्मिक ठहराकर स्वयं तुम्हारे
लिए जीवन बन जाती है। **11**और यदि वह आत्मा जिसने
यीशु को मरे हुओं में से जिलाया था, तुम्हारे भीतर वास
करती है, तो वह परमेश्वर जिस ने यीशु को मरे हुओं
में से जिलाया था, तुम्हारे नाशवान शरीरों को अपनी
आत्मा से जो तुम्हारे ही भीतर बसती है, जीवन देगा।

12इसलिए मेरे भाइयो, हम पर इस भौतिक शरीर का
क़र्ज़ तो है किन्तु ऐसा नहीं कि हम इसके अनुसार
जियें। **13**क्योंकि यदि तुम भौतिक शरीर के अनुसार
जिओगे तो मरोगे। किन्तु यदि तुम आत्मा के द्वारा शरीर
के व्यवहारों को मारोगे दोगे तो तुम जी जाओगे।

14जो परमेश्वर की आत्मा के अनुसार चलते हैं, वे
परमेश्वर की संतान हैं। **15**क्योंकि वह आत्मा जो तुम्हें
मिली है, तुम्हें फिर से दास बन डरने के लिए नहीं है,
बल्कि वह आत्मा जो तुमने पायी है तुम्हें परमेश्वर की
संपालित संतान बनाती है। जिससे हम पुकार उठते हैं,
"हे अब्बा, हे पिता!" **16**वह पवित्र आत्मा स्वयं हमारी
आत्मा के साथ मिल कर साक्षी देती है कि हम परमेश्वर
की संतान हैं। **17**और क्योंकि हम उसकी संतान हैं, हम
भी उत्तराधिकारी हैं, परमेश्वर के उत्तराधिकारी और
मसीह के साथ हम उत्तराधिकारी यदि वास्तव में उसके
साथ दुःख उठाते हैं तो हमें उसके साथ महिमा मिलेगी
ही।

"क्योंकि ... है" कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है

हमें महिमा मिलेगी

18क्योंकि मेरे विचार में इस समय की हमारी यातनाएँ
प्रकट होने वाली भावी महिमा के आगे कुछ भी नहीं
है। **19**क्योंकि यह सृष्टि बड़ी आशा से उस समय का
इंतज़ार कर रही है जब परमेश्वर की संतान को प्रकट
किया जायेगा। **20**यह सृष्टि निःसार थी अपनी इच्छा से
नहीं,बल्कि उसकी इच्छा से जिसने इसे इस आशा के
अधीन किया**21**कि यह भी कभी अपनी विनाशमानता
से छुटकारा पा कर परमेश्वर की संतान की शानदार
स्वतन्त्रता का आनन्द लेगी।

22क्योंकि हम जानते हैं कि आज तक समूची सृष्टि
पीड़ा में कराहती और तड़पती रही है। **23**न केवल यह
सृष्टि बल्कि हम भी जिन्हें आत्मा का पहला फल मिला
है, अपने भीतर कराहते रहे हैं। क्योंकि हमें उसके
द्वारा पूरी तरह अपनाये जाने का इंतजार है कि हमारी
देह–मुक्ति हो जायेगी। **24**हमारा उद्धार हुआ है। इसी से
हमारे मन में आशा है किन्तु जब हम जिसकी आशा
करते हैं, उसे देख लेते हैं तो वह आशा नहीं रहती। जो
दिख रहा है उसकी आशा कौन कर सकता है। **25**किन्तु
यदि जिसे हम देख नहीं रहे उसकी आशा करते हैं तो
धीरज और सहनशीलता के साथ उसकी बाट जोहते हैं।

26ऐसे ही जैसे हम कराहते हैं, आत्मा हमारी दुर्बलता
में हमारी सहायता करने आती है क्योंकि हम नहीं
जानते कि हम किसके लिये प्रार्थना करें। किन्तु आत्मा
स्वयं ऐसी आहें भर कर जिनकी शब्दों में अभिव्यक्ति
नहीं की जा सकती, हमारे लिए विनती करती है।
27किन्तु वह अन्तर्यामी जानता है कि आत्मा की मनसा
क्या है। क्योंकि परमेश्वर की इच्छा से ही वह परमेश्वर
के पवित्र जनों के लिए मध्यस्थता करती है।

28और हम जानते हैं कि हर परिस्थिति में वह आत्मा
परमेश्वर के भक्तों के साथ मिल कर वह काम करता
है जो भलाई ही लाते हैं उन सब के लिए जिन्हें उसके
प्रयोजन के अनुसार ही बुलाया गया है। **29**जिन्हें उसने
पहले ही चुना उन्हें पहले ही अपने पुत्र के रूप में
ठहराया ताकि बहुत से भाइयों में वह सबसे बड़ा भाई
बन सके। **30**जिन्हें उसने पहले से निश्चित किया,
उन्हें भी उसने बुलाया और जिन्हें उसने बुलाया, उन्हें
उसने धर्मी ठहराया। और जिन्हें उसने धर्मी ठहराया,
उन्हें महिमा भी प्रदान की।

परमेश्वर का प्रेम

31तो इसे देखते हुए हम क्या कहें? यदि परमेश्वर
हमारे पक्ष में है तो हमारे विरोध में कौन हो सकता है?
32उसने जिसने अपने पुत्र तक को बचा कर नहीं रखा
बल्कि उसे हम सब के लिए मरने को सौंप दिया। वह
भला हमें उसके साथ और सब कुछ क्यों नहीं देगा?
33परमेश्वर के चुने हुए लोगों पर ऐसा कौन है जो, दोष
लगायेगा? वह परमेश्वर ही है जो उन्हें निर्दोष ठहराता
है। **34**ऐसा कौन है जो उन्हें दोषी ठहराएगा? मसीह यीशु
वह है जो मर गया और (और इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण
यह है कि) उसे फिर जिलाया गया। जो परमेश्वर के
दाहिनी ओर बैठा है और हमारी ओर से विनती भी
करता है **35**कौन है जो हमें मसीह के प्यार से अलग
करेगा? यातना या कठिनाई या अत्याचार या अकाल
या नंगापन या जोखिम या तलवार? **36**जैसा कि शास्त्र
कहता है:

"तेरे (मसीह) लिए सारे दिन हमें मौत को सौंपा
जाताहै। हम काटी जाने वाली भेड़ जैसे समझे जाते हैं।"

भजन संहिता 44:22

37तब भी उसके द्वारा जो हमें प्रेम करता है, इन सब
बातों में हम एक शानदार विजय पा रहे हैं। **38**क्योंकि मैं
मान चुका हूँ कि न मृत्यु और न जीवन, न स्वर्गदूत
और न शासन करने वाली आत्माएँ, न वर्तमान की
कोई वस्तु और न भविष्य की कोई वस्तु, न आत्मिक
शक्तियाँ, **39**न कोई हमारे ऊपर का, और न हमसे नीचे
का, न सृष्टि की कोई और वस्तु हमें प्रभु के उस प्रेम
से, जो हमारे भीतर प्रभु यीशु मसीह के प्रति है, हमें
अलग कर सकेगी।

परमेश्वर और यहूदी लोग

9 मैं मसीह में सच कह रहा हूँ। मैं झूठ नहीं कहता
और मेरी चेतना जो पवित्र आत्मा के द्वारा प्रकाशित
है, मेरे साथ मेरी साक्षी देती है **2**कि मुझे गहरा दुःख है
और मेरे मन में निरन्तर पीड़ा है। **3**काश मैं चाह
सकता कि अपने भाई बंदों और दुनियावी संबन्धियों के
लिए मैं मसीह का शाप अपने ऊपर ले लेता और उससे
अलग हो जाता।

4जो इस्राएली हैं और जिन्हें परमेश्वर की संपालित
संतान होने का अधिकार है, जो परमेश्वर की महिमा
का दर्शन कर चुके हैं, जो परमेश्वर के करार के
भागीदार हैं। जिन्हें मूसा की व्यवस्था, सच्ची उपासना
और वचन प्रदान किया गया है। **5**पुरखे उन्हीं से सम्बन्ध
रखते हैं और मानव शरीर की दृष्टि से मसीह उन्हीं में
पैदा हुआ जो सब का परमेश्वर है और सदा धन्य है!
आमीन।

6ऐसा नहीं है कि परमेश्वर ने अपना वचन पूरा नहीं
किया है क्योंकि जो इस्राएल के वंशज हैं, वे सभी
इस्राएली नहीं हैं। **7**और न ही इब्राहीम के वंशज होने के
कारण वे सब सचमुच इब्राहीम की संतान हैं। बल्कि
(जैसा परमेश्वर ने कहा), "तेरे वंशज इसहाक के द्वारा
अपनी परम्परा बढ़ाएंगे।"*

"तेरे वंशज ... बढ़ाएंगे " उत्पत्ति 21:12

8अर्थात् यह नहीं है कि प्राकृतिक तौर पर शरीर से
पैदा होने वाले बच्चे परमेश्वर के वंशज हैं, बल्कि
परमेश्वर के वचन से प्रेरित होने वाले उसके वंशज
माने जाते हैं। 9वचन इस प्रकार कहा गया था: "निश्चित
समय पर मैं लौटूँगा और सारा पुत्रवती होगी।"*

10इतना ही नहीं जब रिबका भी एक व्यक्ति, हमारे
पूर्व पिता इसहाक से गर्भवती हुई 11तो बेटों के पैदा होने
से पहले और उनके कुछ भी भला बुरा करने से पहले
कहा गया था जिससे परमेश्वर का वह प्रयोजन सिद्ध हो
जो चुनाव से सिद्ध होता है। 12और जो व्यक्ति के कर्मों
पर नहीं टिका बल्कि उस परमेश्वर पर टिका है जो
बुलाने वाला है। रिबका से कहा गया, "बड़ा बेटा छोटे
बेटे की सेवा करेगा।"* 13शास्त्र कहता है: "मैंने याकूब
को चुना और एसाव को नकार दिया।"*

14तो फिर हम क्या कहें? क्या परमेश्वर अन्यायी है?
15निश्चय ही नहीं। क्योंकि उसने मूसा से कहा था, "मैं
जिस किसी पर भी दया करने की सोचूँगा, दया दिखाऊँगा।
और जिस किसी पर भी अनुग्रह करना चाहूँगा, अनुग्रह
करूँगा।"* 16इसलिये न तो यह किसी की इच्छा पर
निर्भर करता है और न किसी की दौड़ धूप पर बल्कि
दयालु परमेश्वर पर निर्भर करता है। 17क्योंकि शास्त्र
में परमेश्वर ने फिरौन से कहा था, "मैंने तुझे इसीलिए
खड़ा किया था कि मैं अपनी शक्ति तुझ में दिखा सकूँ।
और मेरा नाम समूची धरती पर घोषित किया जाये।"*
18सो परमेश्वर जिस पर चाहता है दया करता है और
जिसे चाहता है कठोर बना देता है।

19तो फिर तू शायद मुझ से कहे, "यदि हमारे कर्मों
का नियन्त्रण करने वाला परमेश्वर है तो फिर भी वह
उसमें हमारा दोष क्यों समझता है?" आख़िरकार उसकी
इच्छा का विरोध कौन कर सकता है? 20मनुष्य तू
कौन होता है जो परमेश्वर को उलट कर उत्तर दे?
क्या कोई रचना अपने रचने वाले से पूछ सकती है,
"तूने मुझे ऐसा क्यों बनाया?" 21क्या किसी कुम्हार को
मिट्टी पर यह अधिकार नहीं है कि वह किसी एक
लौंदे से एक बरतनों विशेष प्रयोजन के लिए और दूसरा
हीन प्रयोजन के लिए बनाये?

22किन्तु इसमें क्या है यदि परमेश्वर ने अपना क्रोध
दिखाने और अपनी शक्ति जताने के लिए उन बरतनों
की, जो क्रोध के पात्र थे और जिनका विनाश होने को
था, बड़े धीरज के साथ सही, 23उसने उनकी सही
ताकि वह उन भाँड़ों के लाभ के लिए जो दया के पात्र
थे और जिन्हें उसने अपनी महिमा पाने के लिए बनाया
था, उन पर अपनी महिमा प्रकट कर सके। 24अर्थात्
हम जिन्हें उसने न केवल यहूदियों में से बुलाया बल्कि
ग़ैर यहूदियों में से भी 25जैसा कि होशे की पुस्तक में
लिखा है:

"जो लोग मेरे नहीं थे उन्हें मैं अपना कहूँगा। और
वह स्त्री जो प्रिय नहीं थी मैं उसे प्रिया कहूँगा।"

होशे 2:23

26"और वैसा ही घटेगा जैसा उसी भाग में उनसे
कहा गया था, 'तुम लोग मेरी प्रजा नहीं हो।' वहीं वे
जीवित परमेश्वर की सन्तान कहलाएँगे।" *होशे 1:10*

27और यशायाह इस्राएल के बारे में पुकार कर
कहता है:

"यद्यपि इस्राएल की सन्तान समुद्र की बालू के कणों
के समान असंख्य हैं तो भी उनमें से केवल थोड़े ही बच
पायेंगे।

28क्योंकि प्रभु पृथ्वी पर अपने न्याय को पूरी तरह से
और जल्दी ही पूरा करेगा।"*

29और जैसे यशायाह ने भविष्यवाणी की थी:

"यदि सर्वशक्तिशाली प्रभु हमारे लिए वंशज न छोड़ता
तो हम सदोम जैसे और अमोरा जैसे ही हो जाते।"*

30तो फिर हम क्या कहें? हम इस नतीजे पर पहुँचे हैं
कि अन्य जातियों के लोग जो धार्मिकता की खोज में
नहीं थे, उन्होंने धार्मिकता को पा लिया है। वे जो
विश्वास के कारण ही धार्मिक ठहराए गए। 31किन्तु
इस्राएल के लोगों ने जो ऐसी व्यवस्था पर चलना चाहते
थे जो उन्हें धार्मिक ठहराती, उसके अनुसार नहीं जी
सके। 32क्यों नहीं? क्योंकि वे इसका पालन विश्वास से
नहीं, बल्कि अपने कर्मों से कर रहे थे, वे उस चट्टान
पर ठोकर खा गये, जो ठोकर दिलाती है। 33जैसा कि
शास्त्र कहता है:

"देखो, मैं सिय्योन में एक पत्थर रख रहा हूँ जो
ठोकर दिलाता है और एक चट्टान जो अपराध कराती
है। किन्तु वह जो उस में विश्वास करता है, उसे कभी
निराश नहीं होना होगा।" *यशायाह 8:14;23:16*

10 हे भाइयो, मेरे हृदय की इच्छा है और मैं परमेश्वर
से उन सब के लिये प्रार्थना करता हूँ कि
उनका उद्धार हो 2क्योंकि मैं साक्षी देता हूँ कि उनमें
परमेश्वर की धुन है। किन्तु वह ज्ञान पर नहीं टिकी है
3क्योंकि वे उस धार्मिकता को नहीं जानते थे जो परमेश्वर

"निश्चित ... होगी" उत्पत्ति 18:10,14

"बड़ा ... करेगा" उत्पत्ति 25:23

"मैंने याकूब ... दिया" मलाकी 1:2-3

"मैं ... करूँगा" निर्गमन 33:19

"मैंने ... जाये " निर्गमन 9:16

"यद्यपि ... करेगा" यशायाह 10:22-23

"यदि ... जाते" यशायाह 1:9

से मिलती है और वे अपनी ही धार्मिकता की स्थापना
का जतन करते रहे सो उन्होंने परमेश्वर की धार्मिकता
को नहीं स्वीकारा। **4**मसीह ने व्यवस्था का अंत किया
ताकि हर कोई जो विश्वास करता है, परमेश्वर के
लिए धार्मिक हो।

5धार्मिकता के बारे में जो व्यवस्था से प्राप्त होती है,
मूसा ने लिखा है, “जो व्यवस्था के नियमों पर चलेगा,
वह उनके कारण जीवित रहेगा।”* **6**किन्तु विश्वास से
मिलने वाली धार्मिकता के विषय में शास्त्र यह कहता
है, “तू अपने से यह मत पूछ, ‘स्वर्ग में ऊपर कौन
जायेगा?’*” (यानी, “मसीह को नीचे धरती पर लाने।”)
7“या, ‘नीचे पाताल में कौन जायेगा?” (यानी, “मसीह
को धरती के नीचे से ऊपर लाने।” यानी मसीह को मरे
हुओं में से वापस लाने।”*) **8**शास्त्र यह कहता है,
“वचन तेरे पास है, तेरे ओठों पर है और तेरे मन में
है।”* यानी विश्वास का वह वचन जिसका हम प्रचार
करते है। **9**कि यदि तू अपने मुँह से कहे, “यीशु मसीह
प्रभु है” और तू अपने मन में यह विश्वास करे कि
परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जीवित किया तो तेरा
उद्धार हो जायेगा। **10**क्योंकि अपने हृदय के विश्वास से
व्यक्ति धार्मिक ठहराया जाता है और अपने मुँह से
उसके विश्वास को स्वीकार करने से उसका उद्धार
होता है। **11**शास्त्र कहता है, “जो कोई उसमें विश्वास
रखता है उसे निराश नहीं होना पड़ेगा।”* **12**यह इसलिये
है कि यहूदियों और ग़ैर यहूदियों में कोई भेद नहीं
क्योंकि सब का प्रभु तो एक ही है। और उसकी दया
उन सब के लिये, जो उसका नाम लेते हैं, अपरम्पार है।
13“हर कोई जो प्रभु का नाम लेता है, उद्धार पायेगा।”*

14किन्तु वे जो उसमें विश्वास नहीं करते, उसका
नाम कैसे पुकारेंगे? और वे जिन्होने उसके बारे में सुना
ही नहीं, उसमें विश्वास कैसे कर पायेंगे? और फिर
भला जब तक कोई उन्हें उपदेश देने वाला न हो, वे
कैसे सुन सकेंगे? **15**और उपदेशक तब तक उपदेश
कैसे दे पायेंगे जब तक उन्हें भेजा न गया हो? जैसा कि
शास्त्रों में कहा है: “सुसमाचार लाने वालों के चरण
कितने सुंदर हैं।”*

16किन्तु सब ने सुसमाचार को स्वीकारा नहीं। यशायाह
कहता है, “हे प्रभु, हमारे उपदेश को किसने स्वीकार
किया?”* **17**सो उपदेश के सुनने से विश्वास उपजता है
और उपदेश तब सुना जाता है जब कोई मसीह के
विषयमें उपदेश देता है।

18किन्तु मैं कहता हूँ, “क्या उन्होंने हमारे उपदेश को
नहीं सुना?” हाँ, निश्चय ही। शास्त्र कहता है:

“उनका स्वर समूची धरती पर फैल गया और उनके
वचन जगत के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचे।”

भजन संहिता 19:4

19किन्तु मैं पूछता हूँ, “क्या इस्राएली नहीं समझते
थे?” मूसा कहता है:

“पहले मैं तुम लोगों के मन में ऐसे लोगों के द्वारा जो
वास्तव में कोई जाति नहीं है, डाह पैदा करूँगा। मैं
विश्वासहीन जाति के द्वारा तुम्हें क्रोध दिलाऊँगा।”

व्यवस्था विवरण 32:21

20फिर यशायाह साहस के साथ कहता है:

“मुझे उन लोगों ने पा लिया जो मुझे नहीं खोज रहे
थे। मैं उनके लिए प्रकट हो गया जो मेरी खोज खबर में
नहीं थे।” *यशायाह 65:1*

21किन्तु परमेश्वर ने इस्राएलियों के बारे में कहा है,
“मैं सारे दिन आज्ञा न मानने वाले और अपने विरोधियों
के आगे हाथ फैलाए रहा।’*

परमेश्वर अपने लोगों को नहीं भूला

11 तो मैं पूछता हूँ, “क्या परमेश्वर ने अपने ही
लोगों को नकार नहीं दिया?” निश्चय ही नहीं।
क्योंकि मैं भी एक इस्राएली हूँ, इब्राहीम के वंश से और
बैंजामिन के गोत्र से हूँ। **2**परमेश्वर ने अपने लोगों को
नहीं नकारा जिन्हें उसने पहले से ही चुना था। अथवा
क्या तुम नहीं जानते कि एलिय्याह के बारे में शास्त्र
क्या कहता है जब एलिय्याह परमेश्वर से इस्राएल के
लोगों के विरोध में प्रार्थना कर रहा था? **3**“हे प्रभु,
उन्होंने तेरे नबियों को मार डाला। तेरी वेदियों को तोड़
कर गिरा दिया। केवल एक नबी मैं ही बचा हूँ और वे
मुझे भी मार डालने का जतन कर रहे हैं।”* **4**किन्तु
तब परमेश्वर ने उसे कैसे उत्तर दिया था, “मैने अपने
लिए सात हजार लोग बचा रखे हैं जिन्होंने बाल के आगे
माथा नहीं टेका।” **5**सो वैसे ही आज कल भी कुछ ऐसे
लोग बचे हैं जो उसके अनुग्रह के कारण चुने हुए हैं।
6और यदि यह परमेश्वर के अनुग्रह का परिणाम है तो
लोग जो कर्म करते हैं, यह उन कर्मों का परिणाम नहीं

“जो ... रहेगा” लैव्य. 18:5

“तू अपने ... कौन जायेगा” व्यवस्था. 30:12

“मसीह ... लाने” व्यवस्था. 30:12

“वचन ... है” व्यवस्था. 30:14

“जो ... पड़ेगा” यशा. 28:16

“हर ... पायेगा” योएल 2:32

“सुसमाचार ... है” यशा. 52:7

“हे प्रभु ... किया” यशा. 53:1

“मैं ... रहा” यशा. 65:2

“हे प्रभु ... है” 1 राजा 19:10-14

है। नहीं तो परमेश्वर का अनुग्रह, अनुग्रह ही नहीं
ठहरती। **7**तो इससे क्या? इस्राएल के लोग जिसे खोज रहे
थे, वे उसे नहीं पा सके। किन्तु चुने हुओं को वह मिल
गया। जबकि बाकी सब को जड़ बना दिया गया। **8**शास्त्र
कहता है:
"परमेश्वर ने उन्हें एक चेतना शून्यआत्मा प्रदान
की" *यशायाह 29:10*

"ऐसी आँखें दीं जो देख नहीं सकती थीं और ऐसे
कान दिए जो सुन नहीं सकते थे। और यही दशा ठीक
आज तक बनी हुई है।' *व्यवस्था विवरण 29:4*

9दाऊद कहता है: "अपने ही भोगों में फँसकर वे बंदी
बन जाएँ उनका पतन हो और उन्हें दण्ड मिले।
10उनकी आँखें धुँधली हो जायें ताकि वे देख न सकें
और तू उनकी पीड़ाओं तले, उनकी कमर सदा–सदा
झुकाए रखे।" *भजन संहिता 69:22–23*

11सो मैं कहता हूँ क्या उन्होंने इसलिये ठोकर खाई
कि वे गिर कर नष्ट हो जायें? निश्चय ही नहीं। बल्कि
उनके गलती करने से ग़ैर यहूदी लोगों को छुटकारा
मिला ताकि यहूदियों में स्पर्धा पैदा हो। **12**इस प्रकार यदि
उनके ग़लती करने का अर्थ सारे संसार का बड़ा लाभ
है और यदि उनके भटकने से ग़ैर यहूदियों का लाभ है
तो उनकी संपूर्णता से तो बहुत कुछ होगा।
13यह अब मैं तुमसे कह रहा हूँ, जो यहूदी नहीं हो।
क्योंकि मैं विशेष रूप से ग़ैर–यहूदियों के लिये प्रेरित हूँ,
मैं अपने काम के प्रति पूरा प्रयत्नशील हूँ **14**इस आशा
से कि मैं अपने लोगों में भी स्पर्धा जगा सकूँ और उनमें
से कुछ का उद्धार करूँ। **15**क्योंकि यदि परमेश्वर के
द्वारा उनके नकार दिये जाने से जगत् में परमेश्वर के
साथ मेलमिलाप पैदा होता है तो फिर उनका अपनाया
जाना क्या मरे हुओं में से जिलाया जाना नहीं होगा?
16यदि हमारी भेंट का एक भाग पवित्र है तो क्या वह
समूचा ही पवित्र नहीं है? यदि पेड़ की जड़ पवित्र है तो
उसकी शाखाएँ भी पवित्र हैं।
17किन्तु यदि कुछ शाखाएँ तोड़ कर फेंक दी गयीं
और तू जो एक जँगली जैतून की टहनी है उस पर पेबंद
चढ़ा दिया जाये और वह जैतून के अच्छे पेड़ की जड़ों
की शक्ति का हिस्सा बटाने लगे **18**तो तुझे उन टहनियों
के आगे, जो तोड़ कर फेंक दी गयीं, अभिमान नहीं
करना चाहिये। और यदि तू अभिमान करता है तो याद
रख यह तू नहीं है जो जड़ों को पाल रहा है, बल्कि यह
तो वह जड़ ही है जो तुझे पाल रही है। **19**अब तू कहेगा,
"हाँ, किन्तु शाखाएँ इसलिये तोड़ी गयीं कि मेरा पेबंद
चढ़े।" **20**यह सत्य है, वे अपने अविश्वास के कारण
तोड़ फेंकी गयीं किन्तु तुम अपने विश्वास के बल पर
अपनी जगह टिके रहे। इसलिये इसका गर्व मत कर
बल्कि डरता रह। **21**यदि परमेश्वर ने प्राकृतिक डालियाँ
नहीं रहने दीं तो वह तुझे भी नहीं रहने देगा।
22इसलिये तू परमेश्वर की कोमलता को देख और
उसकी कठोरता पर ध्यान दे। यह कठोरता उनके लिए
है जो गिर गये किन्तु उसकी करुणा तेरे लिये है यदि तू
अपने पर उसका अनुग्रह बना रहने दे। नहीं तो पेड़ से
तू भी काट फेंका जायेगा। **23**और यदि वे अपने अविश्वास
में न रहें तो उन्हें भी फिर पेड़ से जोड़ लिया जायेगा
क्योंकि परमेश्वर समर्थ है कि उन्हें फिर से जोड़ दे।
24जब तुझे प्राकृतिक रूप से जँगली जैतून के पेड़ से
एक शाखा की तरह काट कर प्रकृति के विरुद्ध एक
उत्तम जैतून के पेड़ से जोड़ दिया गया, तो ये जो उस पेड़
की अपनी डालियाँ हैं, अपने ही पेड़ में आसानी से, फिर
से क्यों नहीं जोड़ दी जायेंगी।
25हे भाइयो! मैं तुम्हें इस छिपे हुए सत्य से अंजान नहीं
रखना चाहता। (कि तुम अपने आप को बुद्धिमान समझने
लगो) कि इस्राएल के कुछ लोग ऐसे ही कठोर बना दिए
गए हैं और ऐसे ही कठोर बने रहेंगे जब तक कि
काफी ग़ैर यहूदी परमेश्वर के परिवार के अंग नहीं
बन जाते। **26**और इस तरह समुचे इस्राएल का उद्धार
होगा। जैसा कि शास्त्र कहता है:
"उद्धार करने वाला सिय्योन से आयेगा। वह याकूब
के परिवार से सभी बुराइयाँ दूर करेगा।
27मेरा यह वाचा उनके साथ तब होगा जब मैं उनके
पापों को हर लूँगा।" *यशायाह 59:20–21; 27:9*

28जहाँ तक सुसमाचार का सम्बन्ध है, वे तुम्हारे हित
में परमेश्वर के शत्रु हैं किन्तु जहाँ तक परमेश्वर द्वारा
उनके चुने जाने का सम्बन्ध है, वे उनके पुरखों को
दिये वचन के अनुसार परमेश्वर के प्यारे हैं। **29**क्योंकि
परमेश्वर जिसे बुलाता है और जिसे वह देता है, उसकी
तरफ़ से अपना मन कभी नहीं बदलता। **30**क्योंकि जैसे
तुम लोग पहले कभी परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते थे
किन्तु अब तुम्हें उसकी अवज्ञा के कारण परमेश्वर
की दया प्राप्त है। **31**वैसे ही अब वे उसकी आज्ञा नहीं
मानते क्योंकि परमेश्वर की दया तुम पर है। ताकि
अब उन्हें भी परमेश्वर की दया मिले। **32**क्योंकि परमेश्वर
ने सब लोगों को अवज्ञा के कारागार में इसीलिए डाल
रखा है कि वह उन पर दया कर सके।

परमेश्वर धन्य है

33परमेश्वर की करुणा, बुद्धि और ज्ञान कितने
अपरम्पार हैं। उसके न्याय कितने गहन हैं; उसके
रास्ते कितने गूढ़ हैं। शास्त्र कहता है:
34"प्रभु के मन को कौन जानता है? और उसे सलाह
देने वाला कौन हो सकताहै"' *यशायाह 40:13*

35"परमेश्वर को किसी ने क्या दिया है कि वह
किसी को उसके बदले कुछ दे।" *अय्यूब 41:11*

36क्योंकि सब का रचने वाला वही है। उसी से सब
स्थिर हैं और यह उसी के लिए है। उसकी सदा महिमा
हो! आमीन।

अपने जीवन प्रभु को अर्पण करो

12 इसलिए हे भाइयो, परमेश्वर की दया का स्मरण
दिलाकर मैं तुमसे आग्रह करता हूँ कि अपने
जीवन एक जीवित बलिदान के रूप में परमेश्वर को
प्रसन्न करते हुए अर्पित कर दो। यह तुम्हारी आध्यात्मिक
उपासना है जिसे तुम्हें उसे चुकाना है। 2अब और आगे
इस दुनिया की रीति पर मत चलो बल्कि अपने मनों को
नया करके अपने आप को बदल डालो ताकि तुम्हें पता
चल जाये कि परमेश्वर तुम्हारे लिए क्या चाहता है।
यानी जो उत्तम है, जो उसे भाता है और जो सम्पूर्ण है।
3इसलिये उसके अनुग्रह के कारण जो उपहार उसने
मुझे दिया है, उसे ध्यान में रखते हुए मैं तुममें से हर
एक से कहता हूँ, अपने को यथोचित समझो अर्थात्
जितना विश्वास उसने तुम्हें दिया है, उसी के अनुसार
अपने को समझना चाहिये। 4क्योंकि जैसे हममें से हर
एक के शरीर में बहुत से अंग हैं। चाहे सब अंगों का
काम एक जैसा नहीं है। 5हम अनेक हैं किन्तु मसीह में
हम एक देह के रूप में हो जाते हैं। इस प्रकार हर एक
अंग हर दूसरे अंग से जुड़ जाता है। 6तो फिर उसके
अनुग्रह के अनुसार हमें जो अलग-अलग उपहार मिले
हैं, हम उनका प्रयोग करें। यदि किसी को भविष्यवाणी
की क्षमता दी गयी है तो वह उसके पास जितना विश्वास
है उसके अनुसार भविष्यवाणी करे। 7यदि किसी को
सेवा करने का उपहार मिला है तो अपने आप को सेवा
के लिये अर्पित करे, यदि किसी को उपदेश देने का
काम मिला है तो उसे अपने आप को प्रचार में लगाना
चाहिये। 8यदि कोई सलाह देने को है तो उसे सलाह देनी
चाहिये। यदि किसी को दान देने का उपहार मिला है तो
उसे मुक्त भाव से दान देना चाहिए। यदि किसी को
अगुआई करने का उपहार मिलता है तो वह लगन के
साथ अगुआई करे। जिसे दया दिखाने को मिली है, वह
प्रसन्नता से दया करे।

9तुम्हारा प्रेम सच्चा हो। बदी से घृणा करो। नेकी से
जुड़ो। 10भाई चारे के साथ एक दूसरे के प्रति समर्पित
रहो। आपस में एक दूसरे को आदर के साथ अपने से
अधिक महत्त्व दो। 11उत्साही बनो, आलसी नहीं, आत्मा
के तेज से चमको। प्रभु की सेवा करो। 12अपनी आशा
में प्रसन्न रहो। विपत्ति में धीरज धरो। निरन्तर प्रार्थना
करते रहो। 13परमेश्वर के जनों की आवश्यकताओं में
हाथ बटाओ। अतिथि-सत्कार के अवसर ढूँढते रहो।
14जो तुम्हें सताते हों उन्हें आशीर्वाद दो। उन्हें शाप
मत दो, आशीर्वाद दो। 15जो प्रसन्न हैं उनके साथ प्रसन्न
रहो। जो दुःखी हैं, उनके दुःख में दुखी होओ। 16मेल-
मिलाप से रहो। अभिमान मत करो बल्कि दीनों की
संगति करो। अपने को बुद्धिमान मत समझो।

17बुराई का बदला बुराई से किसी को मत दो। सभी
लोगों की आँखों में जो अच्छा हो उसे ही करने की
सोचो। 18जहाँ तक बन पड़े सब मनुष्यों के साथ शांति से
रहो। 19किसी से अपने आप बदला मत लो। मेरे मित्रों,
बल्कि इसे परमेश्वर के क्रोध पर छोड़ दो क्योंकि
शास्त्र में लिखा है: "प्रभु ने कहा है बदला लेना मेरा
काम है। प्रतिदान में दूँगा।"* 20"बल्कि तू तो यदि तेरा
शत्रु भूखा है तो उसे भोजन करा, यदि वह प्यासा है तो
उसे पीने को दे। क्योंकि यदि तू ऐसा करता है तो वह
तुझसे शर्मिन्दा होगा।"* 21बदी से मत हार बल्कि अपनी
नेकी से बदी को हरा दे।

13 हर व्यक्ति को प्रधान सत्ता की अधीनता
स्वीकारनी चाहिये। क्योंकि शासन का अधिकार
परमेश्वर की ओर से है। और जो अधिकार मौजूद हैं
उन्हें परमेश्वर ने नियत किया है। 2इसलिए जो सत्ता का
विरोध करता है, वह परमेश्वर की आज्ञा का विरोध
करता है। और जो परमेश्वर की आज्ञा का विरोध
करते हैं, वे दण्ड पायेंगे। 3अब देखो कोई शासक, उस
व्यक्ति को, जो नेकी करता है, नहीं डराता बल्कि उसी
को डराता है, जो बुरे काम करता है। यदि तुम सत्ता से
नहीं डरना चाहते हो, तो भले काम करते रहो। तुम्हें
सत्ता की प्रशंसा मिलेगी। 4जो सत्ता में है वह परमेश्वर
का सेवक है वह तेरा भला करने के लिए है। किन्तु
यदि तू बुरा करता है तो उससे डर क्योंकि उसकी
तलवार बेकार नहीं है। वह परमेश्वर का सेवक है जो
बुरा काम करने वालों पर परमेश्वर का क्रोध लाता है।
5इसलिये समर्पण आवश्यक है। न केवल डर के कारण
बल्कि तुम्हारी अपनी चेतना के कारण।

6इसीलिये तो तुम लोग कर भी चुकाते हो क्योंकि
अधिकारी परमेश्वर के सेवक हैं जो अपने कर्तव्यों
को ही पूरा करने में लगे रहते हैं। 7 जिस किसी का
तुझे देना है, उसे चुका दे। जो कर तुझे देना है, उसे दे।
जिसकी चुंगी तुझ पर निकलती है, उसे चुंगी दे। जिससे
तुझे डरना चाहिये, तू उससे डर। जिसका आदर करना
चाहिये उसका आदर कर।

प्रेम ही विधान है

8आपसी प्रेम के अलावा किसी का ऋण अपने ऊपर
मत रख क्योंकि जो अपने साथियों से प्रेम करता है, वह

"प्रभु … दूँगा" व्यवस्था. 32:35

"बल्कि … होगा" नीति. 25:21-22

इस प्रकार व्यवस्था को ही पूरा करता है। 9मैं यह
इसलिये कह रहा हूँ, "व्यभिचार मत कर, हत्या मत
कर, चोरी मत कर, लालच मत रख।"* और जो भी
दूसरी व्यवस्थाएँ हो सकती हैं, इस वचन में समा जाती
हैं, "तुझे अपने साथी को ऐसे ही प्यार करना चाहिये,
जैसे तू अपने आप को करता है।"* 10प्रेम अपने साथी
का बुरा कभी नहीं करता। इसीलिए प्रेम करना व्यवस्था
के विधान को पूरा करना है।

11यह सब कुछ तुम इसलिये करो कि जैसे समय में
तुम रह रह हो, उसे जानते हो। तुम जानते हो कि
तुम्हारे लिये अपनी नींद से जागने का समय आ पहुँचा
है, क्योंकि जब हमने विश्वास धारण किया था हमारा
उद्धार अब उससे अधिक निकट है। 12"रात" लगभग
पूरी हो चुकी है, "दिन" पास ही है, इसलिए आओ हम
उन कर्मों से छुटकारा पा लें जो अंधकार के हैं। आओ
हम प्रकाश के अस्त्रों को धारण करें। 13इसलिए हम
वैसे ही उत्तमरीति से रहें जैसे दिन के समय रहते हैं।
बहुत अधिक दावतों में जाते हुए खा पीकर धुत्त न हो
जाओ। लुच्चेपन दुराचार व्यभिचार में न पड़ें। न झगड़ें
और न ही डाह रखें। 14बल्कि प्रभु यीशु मसीह को
धारण करें। और अपनी मानव देह की इच्छाओं को
पूरा करने में ही मत लगे रहो।

दूसरों में दोष मत निकाल

14 जिसका विश्वास दुर्बल है, उसका भी स्वागत
करो किन्तु मतभेदों पर झगड़ा करने के लिए
नहीं। 2कोई मानता है कि वह सब कुछ खा सकता है,
किन्तु कोई दुर्बल व्यक्ति बस साग-पात ही खाता है। 3तो
वह जो हर तरह का खाना खाता है, उसे उस व्यक्ति को
हीन नहीं समझना चाहिये जो कुछ वस्तुएँ नहीं खाता।
वैसे ही वह जो कुछ वस्तुएँ नहीं खाता है, उसे सब कुछ
खाने वाले को बुरा नहीं कहना चाहिये। क्योंकि परमेश्वर
ने उसे अपना लिया है। 4तू किसी दूसरे घर के दास पर
दोष लगाने वाला कौन होता है? उसका अनुमोदन या
उसे अनुचित ठहराना स्वामी पर ही निर्भर करता है।
वह अवलम्बित रहेगा क्योंकि उसे प्रभु ने अवलम्बित
होकर टिके रहने की शक्ति दी।

5और फिर कोई किसी एक दिन को सब दिनों से
श्रेष्ठ मानता है और दूसरा उसे सब दिनों के बराबर
मानता है तो हर किसी को पूरी तरह अपनी बुद्धि की
बात माननी चाहिये। 6जो किसी विशेष दिन को मनाता
है वह उसे प्रभु को आदर देने के लिये ही मनाता है।
और जो सब कुछ खाता है वह भी प्रभु को आदर देने
के लिये ही खाता है। क्योंकि वह परमेश्वर का धन्यवाद
करता है। और जो किन्हीं वस्तुओं को नहीं खाता, वह
भी ऐसा इसीलिए करता है क्योंकि वह भी प्रभु को ही
आदर देना चाहता है। वह भी परमेश्वर को ही धन्यवाद
देता है। 7हम में से कोई भी न तो अपने लिये जीता है,
और न अपने लिये मरता है। 8हम जीते हैं तो प्रभु के
लिये और यदि मरते हैं तो भी प्रभु के लिये। सो चाहे हम
जियें चाहे मरें, हम हैं तो प्रभु के ही।

9इसीलिये मसीह मरा; और इसीलिए जी उठा ताकि
वह, वे जो अब मर चुके हैं और वे जो अभी जीवित हैं,
दोनों का प्रभु हो सके। 10सो तू अपने विश्वास में सशक्त
भाई पर दोष क्यों लगाता है? या तू अपने विश्वास में
निर्बल भाई को हीन क्यों मानता है? हम सभी को
परमेश्वर के न्याय के सिंहासन के आगे खड़ा होना है।
11शास्त्र में लिखा है: "प्रभु ने कहा है, मेरे जीवन की
शपथ हर किसी को मेरे सामने घुटने टेकने होंगे।
और हर ज़ुबान परमेश्वर को पहचानेगी।"

12सो हममें से हर एक को परमेश्वर के आगे अपना
लेखा-जोखा देना होगा।

पाप के लिए प्रेरित मत कर

13सो हम आपस में दोष लगाना बंद करें और यह
निश्चय करें कि अपने भाई के रास्ते में हम कोई
अड़चन खड़ी नहीं करेंगे और न ही उसे पाप के लिये
उकसायेंगे। 14प्रभु यीशु में आस्थावान होने के कारण
मैं मानता हूँ कि अपने आप में कोई भोजन अपवित्र
नहीं है। वह केवल उसके लिए अपवित्र है, जो उसे
अपवित्र मानता है। उसके लिए उसका खाना अनुचित
है। 15यदि तेरे भाई को तेरे भोजन से ठेस पहँचती है तो
तू वास्तव में प्यार का व्यवहार नहीं कर रहा। तो तू
अपने भोजन से उसे ठेस मत पहुँचा क्योंकि मसीह ने
उस तक के लिए भी अपने प्राण तजे। 16सो जो तेरे लिए
अच्छा है उसे निन्दनीय मत बनने दे। 17क्योंकि परमेश्वर
का राज्य बस खाना-पीना नहीं है बल्कि वह तो धार्मिकता
है, शांति है, और पवित्र आत्मा से प्राप्त आनन्द है। 18जो
मसीह की इस तरह सेवा करता है, उससे परमेश्वर
प्रसन्न रहता है और लोग उसे सम्मान देते हैं। 19इसलिए,
उन बातों में लगें जो शांति को बढ़ाती हैं और जिनसे
एक दूसरे को आत्मिक बढ़ोतरी में सहायता मिलती है।
20भोजन के लिये परमेश्वर के काम को मत बिगाड़ो।
हर तरह का भोजन पवित्र है किन्तु किसी भी व्यक्ति
के लिये वह कुछ भी खाना ठीक नहीं है जो किसी और
भाई को पाप के रास्ते पर ले जाये। 21माँस नहीं खाना
श्रेष्ठ है, शराब नहीं पीना अच्छा है और कुछ भी ऐसा
नहीं करना उत्तम है जो तेरे भाई को पाप में ढकेलता
हो।

22अपने विश्वास को परमेश्वर और अपने बीच ही
रख। वह धन्य है जो जिसे उत्तम समझता है, उसके लिए

"व्यभिचार ... रख" निर्गमन 20:13-15,17

"तुझे ... है" लैव्य. 19:18

अपने को दोषी नहीं पाता। 23किन्तु यदि कोई ऐसी वस्तु
को खाता है, जिसके खाने के प्रति वह आश्वस्त नहीं है
तो वह दोषी ठहरता है। क्योंकि उसका खाना उसके
विश्वास के अनुसार नहीं है और वह सब कुछ जो
विश्वास पर नहीं टिका है, पाप है।

15 हम जो आत्मिक रूप से शक्तिशाली हैं, उन्हें
उनकी दुर्बलता सहनी चाहिये जो शक्तिशाली
नहीं हैं। हम बस अपने आपको ही प्रसन्न न करें। 2हम
में से हर एक, दूसरों की अच्छाइयों के लिए इस भावना
के साथ कि उनकी आत्मिक बढ़ोतरी हो, उन्हें प्रसन्न
करे। 3यहाँ तक कि मसीह ने भी स्वयं को प्रसन्न नहीं
किया था। बल्कि जैसा कि मसीह के बारे में शास्त्र
कहता है, "उनका अपमान जिन्होंने तेरा अपमान किया
है, मुझ पर आ पड़ा है।"* 4हर वह बात जो शास्त्रों में
पहले लिखी गयी, हमें शिक्षा देने के लिए थी ताकि जो
धीरज और बढ़ावा शास्त्रों से मिलता है, हम उससे
आशा प्राप्त करें। 5और समूचे धीरज और बढ़ावे का
स्रोत परमेश्वर तुम्हें वरदान दे कि तुम लोग एक दूसरे
के साथ यीशु मसीह के उदाहरण पर चलते हुए आपस
में मिल जुल कर रहो। 6ताकि तुम सब एक साथ एक
स्वर से हमारे प्रभु यीशु मसीह के परम पिता, परमेश्वर
को महिमा प्रदान करो। 7इसलिए एक दूसरे को अपनाओ
जैसे तुम्हें मसीह ने अपनाया। यह परमेश्वर की महिमा
के लिए करो। 8मैं तुम लोगों को बताता हूँ कि यह
प्रकट करने को कि परमेश्वर विश्वसनीय है उनके
पुरखों को दिये गए परमेश्वर के वचन को दृढ़ करने
को मसीह यहूदियों का सेवक बना। 9ताकि ग़ैर यहूदी
लोग भी परमेश्वर को उसकी करुणा के लिए महिमा
प्रदान करें। शास्त्र कहता है:

"इसलिये मैं ग़ैर यहूदियों के बीच तुझे पहचानूँगा और
तेरे नाम की महिमा गाऊँगा।" *भजन संहिता* 18:49

10और यह भी कहा गया है, "हे ग़ैर यहूदियो, परमेश्वर
के चुने हुए लोगों के साथ प्रसन्न रहो।"

व्यवस्था विवरण 32:43

11और फिर शास्त्र यह भी कहता है, "हे ग़ैर यहूदी
लोगो, तुम प्रभु की स्तुति करो। और सभी जातियो,
परमेश्वर की स्तुति करो।" *भजन संहिता 117:1*

12और फिर यशायाह भी कहता है, "यिशै का एक
वंशज प्रकट होगा जो ग़ैर यहूदियों के शासक के रूप में
उभरेगा। ग़ैर यहूदी उस पर अपनी आशा लगाएँगे।"

यशायाह 11:10

13सभी आशाओं का स्रोत परमेश्वर, तुम्हें सम्पूर्ण
आनन्द और शांति से भर दे। जैसा कि उसमें तुम्हारा
विश्वास है। ताकि पवित्र आत्मा की शक्ति से तुम आशा
से भरपूर हो जाओ।

पौलुस द्वारा अपने पत्र और कामों की चर्चा

14हे मेरे भाइयो, मुझे स्वयं तुम पर भरोसा है कि तुम
नेकी से भरे हो और ज्ञान से परिपूर्ण हो। तुम एक दूसरे
को शिक्षा दे सकते हो। 15किन्तु तुम्हें फिर से याद
दिलाने के लिये मैंने कुछ विषयों के बारे में साफ साफ
लिखा है। मैंने परमेश्वर का जो अनुग्रह मुझे मिला है,
उसके कारण यह किया है। 16यानी मैं ग़ैर यहूदियों के
लिए यीशु मसीह का सेवक बन कर परमेश्वर के
सुसमाचार के लिए एक याजक के रूप में काम करूँ
ताकि ग़ैर यहूदी परमेश्वर के आगे स्वीकार करने
योग्य भेंट बन सकें और पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर
के लिये पूरी तरह पवित्र बनें।

17सो मसीह यीशु में एक व्यक्ति के रूप में परमेश्वर
के प्रति अपनी सेवा का मुझे गर्व है। 18क्योंकि मैं बस
उन्हीं बातों को कहने का साहस रखता हूँ जिन्हें मसीह
ने ग़ैर यहूदियों को परमेश्वर की आज्ञा मानने का
रास्ता दिखाने का काम मेरे वचनों, मेरे कर्मों, 19आश्चर्य
चिह्नों और अद्भुत कामों की शक्ति और परमेश्वर की
आत्मा के सामर्थ्य से, मेरे द्वारा पूरा किया। सो यरूशलेम
से लेकर इल्लुरिकुम के चारों ओर मसीह के सुसमाचार
के उपदेश का काम मैंने पूरा किया। 20मेरे मन में सदा
यह अभिलाषा रही है कि मैं सुसमाचार का उपदेश वहाँ
दूँ जहाँ कोई मसीह का नाम तक नहीं जानता, ताकि मैं
किसी दूसरे व्यक्ति की नींव पर निर्माण न करूँ। 21किन्तु
शास्त्र कहता है:

"जिन्हें उसके बारे में नहीं बताया गया है, वे उसे
देखेंगे। और जिन्होंने सुना तक नहीं है, वे समझेंगे।"

यशायाह 32:15

पौलुस की रोम जाने की योजना

22मेरे ये कर्तव्य मुझे तुम्हारे पास आने से बार बार
रोकते रहे हैं। 23किन्तु क्योंकि अब इन प्रदेशों में कोई
स्थान नहीं बचा है और बहुत बरसों से मैं तुमसे मिलना
चाहता रहा हूँ, 24सो मैं जब स्पेन जाऊँगा तो आशा
करता हूँ तुमसे मिलूँगा! मुझे उम्मीद है कि स्पेन जाते
हुए तुमसे भेंट होगी। तुम्हारे साथ कुछ दिन ठहरने का
आनन्द लेने के बाद मुझे आशा है कि वहाँ की यात्रा के
लिए मुझे तुम्हारी मदद मिलेगी। 25किन्तु अब मैं परमेश्वर
के पवित्र जनों की सेवा में यरूशलेम जा रहा हूँ। 26क्योंकि
मकदूनिया और अखैया के कलीसिया के लोगों ने
यरूशलेम में परमेश्वर के पवित्र जनों में जो दरिद्र हैं,
उनके लिए कुछ देने का निश्चय किया है। 27हाँ,

"उनका ... है" भजन. 69:9

उनके प्रति उनका कर्तव्य भी बनता है क्योंकि यदि ग़ैर
यहूदियों ने यहूदियों के आध्यात्मिक कार्यों में हिस्सा
बँटाया है तो ग़ैर यहूदियों को भी उनके लिये भौतिक
सुख जुटाने चाहिये। **28**सो अपना यह काम पूरा करके
और इकट्ठा किये गये इस धन को सुरक्षा के साथ
उनके हाथों सौंप कर मैं तुम्हारे नगर से होता हुआ
स्पेन के लिये रवाना होऊँगा **29**और मैं जानता हूँ कि
जब मैं तुम्हारे पास आऊँगा तो तुम्हारे लिए मसीह के
पूरे आशीर्वादों समेत आऊँगा।

30हे भाइयो, तुमसे मैं प्रभु यीशु मसीह की ओर से
आत्मा से जो प्रेम हम पाते हैं, उसकी साक्षी दे कर
प्रार्थना करता हूँ कि तुम मेरी ओर से परमेश्वर के
प्रति सच्ची प्रार्थनाओं में मेरा साथ दो **31**कि मैं यहूदियों
में अविश्वासियों से बचा रहूँ और यरूशलेम के प्रति
मेरी सेवा को परमेश्वर के पवित्र जन स्वीकार करें।
32ताकि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मैं प्रसन्नता के
साथ तुम्हारे पास आकर तुम्हारे साथ आनन्द मना
सकूँ। **33**सम्पूर्ण शांति का धाम परमेश्वर तुम्हारे साथ
रहे। आमीन।

रोम के मसीहियों को पौलुस का संदेश

16 मैं किंखिया की कलीसिया की विशेष
सेविका हमारी बहन फ़ीबे की तुम से सिफारिश
करता हूँ **2**कि तुम उसे प्रभु में ऐसी रीति से ग्रहण
करो जैसी रीति परमेश्वर के लोगों के योग्य है। उसे
तुमसे जो कुछ अपेक्षित हो सब कुछ से तुम उसकी
मदद करना क्योंकि वह मुझ समेत बहुतों की
सहायक रही है।

3प्रिस्का और अक्विला को मेरा नमस्कार। वे यीशु
मसीह में मेरे सहकर्मी हैं। **4**उन्होंने मेरे प्राण बचाने के
लिये अपने जीवन को भी दाव पर लगा दिया था। न
केवल मैं उनका धन्यवाद करता हूँ बल्कि ग़ैर यहूदियों
की सभी कलीसिया भी उनके धन्यवादी हैं। **5**उस
कलीसिया को भी मेरा नमस्कार जो उनके घर में
एकत्र होती है। मेरे प्रिय मित्र इपनितुस को मेरा नमस्कार
जो एशिया में मसीह को अपनाने वालों में पहला है।
6मरियम को, जिसने तुम्हारे लिये बहुत काम किया है,
नमस्कार। **7**मेरे कुटुम्बी अन्द्रनीकुस और यूनियास को,
जो मेरे साथ कारागार में थे और जो प्रमुख धर्म–प्रचारकों
में प्रसिद्ध हैं, और जो मुझ से भी पहले मसीह में थे, मेरा
नमस्कार। **8**प्रभु में मेरे प्रिय मित्र अम्पलियातुस को
नमस्कार। **9**मसीह में हमारे सहकर्मी उरबानुस तथा
मेरे प्रिय मित्र इस्तुखुस को नमस्कार। **10**मसीह में खरे
और सच्चे अपिल्लेस को नमस्कार। अरिस्तुबुलुस के
परिवार को नमस्कार। **11**यहूदी साथी हिरोदियोन को
नमस्कार। नरकिस्सुस के परिवार के उन लोगों को
नमस्कार जो प्रभु में हैं। **12**त्रुफेना और त्रुफोसा को जो
प्रभु में परिश्रमी कार्यकर्ता हैं, नमस्कार। मेरी प्रिया
परसिस को, जिसनें प्रभु में कठिन परिश्रम किया है,
मेरा नमस्कार। **13**प्रभु के असाधारण सेवक रूफुस को
और उसकी माँ को, जो मेरी भी माँ रही है, नमस्कार।
14असुंक्रितुस, फिलगोन, हिर्मेस, पत्रुबास, हिर्मास और
उनके साथी बंधुओं को नमस्कार। **15**फिलुलुगुस, यूलिया,
नेर्युस तथा उसकी बहन उलुम्पास और उनके सभी
साथी संतों को नमस्कार। **16**तुम लोग पवित्र चुंबन द्वारा
एक दूसरे का स्वागत करो। तुम्हें सभी मसीही कलीसियों
की ओर से नमस्कार।

17हे भाइयो, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुमने जो
शिक्षा पाई हैं, उसके विपरीत तुममें जो फूट डालते हैं
और दूसरों के विश्वास को बिगाड़ते हैं, उनसे सावधान
रहो, और उनसे दूर रहो। **18**क्योंकि ये लोग हमारे प्रभु
यीशु मसीह की नहीं बल्कि अपने पेट की उपासना
करते हैं। और अपनी खुशामद भरी चिकनी चुपड़ी
बातों से भोले भाले लोगों के हृदय को छलते हैं।
19तुम्हारी आज्ञाकारिता की चर्चा बाहर हर किसी
तक पहुँच चुकी है। इस लिये तुमसे मैं बहुत प्रसन्न हूँ।
किन्तु मैं चाहता हूँ कि तुम नेकी के लिये बुद्धिमान
बने रहो और बदी के लिये अबोध रहो। **20**शांति का
स्रोत परमेश्वर शीघ्र ही शैतान को तुम्हारे पैरों तले
कुचल देगा। हमारे प्रभु यीशु मसीह का तुम पर
अनुग्रह हो।

21हमारे साथी कार्यकर्ता तीमुथियुस और मेरे
यहूदीसाथी लूकियुस, यासोन तथा सोसिपत्रुस की ओर
से तुम्हें नमस्कार। **22**इस पत्र के लेखक मुझ तिरतियुस
का प्रभु में तुम्हें नमस्कार।

23मेरे और समूची कलीसिया के आतिथ्यकर्ता गयुस
का तुम्हें नमस्कार। इरास्तुस जो नगर का ख़ज़ांची
है और हमारे बन्धु क्वारतुस का तुम को नमस्कार।
24*

परमेश्वर की महिमा

25उसकी महिमा हो जो तुम्हारे विश्वास के अनुसार–
यानी यीशु मसीह के सन्देश के जिस सुसमाचार का मैं
उपदेश देता हूँ उसके अनुसार–तुम्हें सुदृढ़ बनाने में
समर्थ है। परमेश्वर का यह रहस्यपूर्णसत्य युगयुगान्तर
से छिपा हुआ था। **26**किन्तु जिसे अनन्त परमेश्वर के
आदेश से भविष्यवक्ताओं के लेखों द्वारा अब हमें और
ग़ैर यहूदियों को प्रकट करके बता दिया गया है जिससे
विश्वास से पैदा होने वाली आज्ञाकारिता पैदा हो। **27**यीशु
मसीह द्वारा उस एक मात्र ज्ञानमय परमेश्वर की अनन्त
काल तक महिमा हो। आमीन!

पद 24 कुछ यूनानी प्रतियों में पद 24 जोड़ा गया है। "हमारेप्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सबके साथ रहे। आमीन।"

1 कुरिन्थियों

1 हमारे भाई सोस्थिनिस के साथ पौलुस की ओर से
जिसे परमेश्वर ने अपनी इच्छानुसार यीशु मसीह का
प्रेरित बनने के लिए चुना
2कुरिन्थुस में स्थित परमेश्वर की उस कलीसिया के
नाम; जो यीशु मसीह में पवित्र किये गये, जिन्हें परमेश्वर
ने पवित्र लोग बनने के लिये उनके साथ ही चुना है। जो
हर कहीं हमारे और उनके प्रभु यीशु मसीह का नाम
पुकारते रहते हैं।
3हमारे परम पिता की ओर से तथा हमारे प्रभु यीशु
मसीह की ओर से तुम सब को उसकी अनुग्रह और
शांति प्राप्त हो।

पौलुस का परमेश्वर को धन्यवाद

4तुम्हें प्रभु यीशु में जो अनुग्रह प्रदान की गयी है,
उसके लिये मैं तुम्हारी ओर से परमेश्वर का सदा
धन्यवाद करता हूँ। 5तुम्हारी यीशु मसीह में स्थिति के
कारण तुम्हें हर किसी प्रकार से अर्थात् समस्त वाणी
और सम्पूर्ण ज्ञान से सम्पन्न किया गया है। 6मसीह के
विषय में हमने जो साक्षी दी है वह तुम्हारे बीच प्रमाणित
हुई है। 7और इसी के परिणामस्वरूप तुम्हारे पास उसके
किसी पुरस्कार की कमी नहीं है। तुम हमारे प्रभु यीशु
मसीह के प्रकट होने की प्रतीक्षा करते रहते हो। 8वह
तुम्हें अन्त तक हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन एक दम
निष्कलंक, खरा बनाये रखेगा। 9परमेश्वर विश्वासपूर्ण
है। उसी के द्वारा तुम्हें हमारे प्रभु और उसके पुत्र यीशु
मसीह की सत् संगति के लिये चुना गया है।

कुरिन्थुस के कलीसिया की समस्याएँ

10हे भाइयो, हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम में मेरी
तुमसे प्रार्थना है कि तुम में कोई मतभेद न हो। तुम सब
एक साथ जुटे, रहो और तुम्हारा चिंतन और लक्ष्य एक
ही हो। 11मुझे खलोए के घराने के लोगों से पता चला है
कि तुम्हारे बीच आपसी झगड़े हैं। 12मैं यह कह रहा हूँ
कि तुम में से कोई कहता है, "मैं पौलुस का हूँ", तो
कोई कहता है, "मैं अपुल्लोस का हूँ।" किसी का मत
है, "वह पतरस का है", तो कोई कहता है, "वह मसीह
का है।" 13क्या मसीह बँट गया है? पौलुस तो तुम्हारे
लिये क्रूस पर नहीं चढ़ा था। क्या वह चढ़ा था? तुम्हें
पौलुस के नाम का बपतिस्मा तो नहीं दिया गया। बताओ
क्या दिया गया था? 14परमेश्वर का धन्यवाद है कि मैंने
तुममें से क्रिसपुस और गयुस को छोड़ कर किसी भी
और को बपतिस्मा नहीं दिया। 15ताकि कोई भी यह
न कह सके कि तुम लोगों को मेरे नाम का बपतिस्मा
दिया गया है। 16(मैंने स्तिफनुस के परिवार को भी
बपतिस्मा दिया था किन्तु जहाँ तक बाकी के लोगों की
बात है, सो मुझे याद नहीं कि मैंने किसी भी और को
कभी बपतिस्मा दिया हो।) 17क्योंकि मसीह ने मुझे
बपतिस्मा देने के लिए नहीं, बल्कि वाणी के किसी
तर्क-वितर्क के बिना सुसमाचार का प्रचार करने के
लिये भेजा था ताकि मसीह का क्रूस यूँ ही व्यर्थ न चला
जाये।

परमेश्वर की शक्ति और ज्ञान-स्वरूप मसीह

18वे जो भटक रहे हैं, उनके लिए क्रूस का सन्देश
एक निरी मूर्खता है। किन्तु जो उद्धार पा रहे हैं उनके
लिये वह परमेश्वर की शक्ति है। 19शास्त्रों में लिखा है:
"ज्ञानियों के ज्ञान को मैं नष्ट कर दूँगा; और सारी
चतुर की चतुरता मैं कुंठित करूँगा।" *यशायाह 29:14*

20कहाँ है ज्ञानी व्यक्ति? कहाँ है विद्वान? और इस
युग का शास्त्रार्थी कहाँ है? क्या परमेश्वर ने सांसारिक
बुद्धिमानी को मूर्खता नहीं सिद्ध किया? 21इसीलिये क्योंकि
परमेश्वरीय ज्ञान के द्वारा यह संसार अपने बुद्धि बल से
परमेश्वर को नहीं पहचान सका तो हम संदेश की
तथाकथित मूर्खता का प्रचार करते हैं। 22यहूदी लोग तो
चमत्कारपूर्ण संकेतों की माँग करते हैं और ग़ैर यहूदी
विवेक की खोज में हैं। 23किन्तु हम तो बस क्रूस पर
चढ़ाये गये मसीह का ही उपदेश देते हैं। एक ऐसा
उपदेश जो यहूदियों के लिये विरोध का कारण है और
ग़ैर यहूदियों के लिये निरी मूर्खता। 24किन्तु उनके लिये
जिन्हें बुला लिया गया है, फिर चाहे वे यहूदी हैं या ग़ैर
यहूदी, यह उपदेश मसीह है जो परमेश्वर की शक्ति है,
और परमेश्वर का विवेक है। 25क्योंकि परमेश्वर की
तथाकथित 'मूर्खता' मनुष्यों के ज्ञान से कहीं अधिक
विवेकपूर्ण है। और परमेश्वर की तथाकथित 'दुर्बलता'
मनुष्य की शक्ति से कहीं अधिक सक्षम है।

26हे भाइयो, अब तनिक सोचो कि जब परमेश्वर ने
तुम्हें बुलाया था तो तुममें से बहुतेरे न तो सांसारिक
दृष्टि से बुद्धिमान थे और न ही शक्तिशाली। तुममें से
अनेक का सामाजिक स्तर भी कोई ऊँचा नहीं था।
27बल्कि परमेश्वर ने तो संसार में जो तथाकथित
मूर्खतापूर्ण था, उसे चुना ताकि बुद्धिमान लोग लज्जित
हों। परमेश्वर ने संसार में दुर्बलों को चुना ताकि जो
शक्तिशाली हैं, वे लज्जित हों। 28परमेश्वर ने संसार में
से उनको भी चुना जो नीचे थीं, जिनसे घृणा की जाती
थी और जो कुछ भी नहीं है। परमेश्वर ने इन्हें चुना
ताकि संसार जिसे कुछ समझता है, उसे वह नष्ट कर
सके। 29ताकि परमेश्वर के सामने कोई भी व्यक्ति
अभिमान न कर पाये। 30किन्तु तुम यीशु मसीह में उसी
के कारण स्थित हो। वही परमेश्वर के वरदान के रूप
में हमारी बुद्धि बन गया है। उसी के द्वारा हम निर्दोष
ठहराये गये ताकि परमेश्वर को समर्पित हो सकें और
हमें पापों से छुटकारे मिल पाये 31जैसा कि शास्त्र में
लिखा है: "यदि किसी को कोई गर्व करना है तो वह
प्रभु में अपनी स्थिति का गर्व करे।"*

क्रूस पर चढ़े मसीह के विषय में संदेश

2 हे भाइयो, जब मैं तुम्हारे पास आया था तो परमेश्वर
के रहस्यपूर्ण सत्य का, वाणी की चतुरता अथवा
मानव बुद्धि के साथ उपदेश देते हुए नहीं आया था
2क्योंकि मैंने यह निश्चय कर लिया था कि तुम्हारे
बीच रहते, मैं यीशु मसीह और क्रूस पर हुई उसकी
मृत्यु को छोड़ कर किसी और बात को जानूँगा तक
नहीं। 3इसलिए मैं दीनता के साथ भय से पूरी तरह
काँपता हुआ तुम्हारे पास आया। 4और मेरी वाणी तथा
मेरा संदेश मानव बुद्धि के लुभावने शब्दों से युक्त नहीं
थे बल्कि उनमें था आत्मा की शक्ति का प्रमाण 5ताकि
तुम्हारा विश्वास मानव बुद्धि के बजाय परमेश्वर की
शक्ति पर टिके।

परमेश्वर का ज्ञान

6जो समझदार हैं, उन्हें हम बुद्धि देते हैं किन्तु यह
बुद्धि इस युग की बुद्धि नहीं है, न ही इस युग के उन
शासकों की बुद्धि है जिन्हें विनाश के कगार पर लाया
जा रहा है। 7इसके स्थान पर हम तो परमेश्वर के उस
रहस्यपूर्ण विवेक को देते हैं जो छिपा हुआ था और
जिसे अनादि काल से परमेश्वर ने हमारी महिमा के
लिये निश्चित किया था। 8और जिसे इस युग के किसी
भी शासक ने नहीं समझा क्योंकि यदि वे उसे समझ
पाये होते तो वे उस महिमावान प्रभु को क्रूस पर न
चढ़ाते। 9किन्तु शास्त्र में लिखा है:

"जिन्हें आँखों ने देखा नहीं और कानों ने सुना नहीं;
जहाँ मनुष्य की बुद्धि तक कभी नहीं पहुँची ऐसी बातें
उनके हेतु प्रभु ने बनायी जो जन उसके प्रेमी होते।"
यशायाह 64:4

10किन्तु परमेश्वर ने उन ही बातों को आत्मा के
द्वारा हमारे लिये प्रकट किया है क्योंकि आत्मा हर
किसी बात को ढूँढ निकालती है यहाँ तक कि परमेश्वर
की छिपी गहराइयों तक को। 11ऐसा कौन है जो दूसरे
मनुष्य के मन की बातें जान ले सिवाय उस व्यक्ति के
उस आत्मा के जो उसके अपने भीतर ही है। इसी
प्रकार परमेश्वर के विचारों को भी परमेश्वर की
आत्मा को छोड़ कर और कौन जान सकता है। 12किन्तु
हमने तो सांसारिक आत्मा नहीं बल्कि वह आत्मा पायी
है जो परमेश्वर से मिलती है ताकि हम उन बातों को
जान सकें जिन्हें परमेश्वर ने हमें मुक्त रूप से दिया है।
13उन ही बातों को हम मानवबुद्धि द्वारा विचारे गये
शब्दों में नहीं बोलते बल्कि आत्मा द्वारा विचारे गये
शब्दों से आत्मा की वस्तुओं की व्याख्या करते हुए
बोलते हैं। 14एक प्राकृतिक व्यक्ति परमेश्वर की आत्मा
द्वारा प्रकाशित सत्य को ग्रहण नहीं करता क्योंकि उसके
लिए वे बातें निरी मूर्खता होती हैं, वह उन्हें समझ नहीं
पाता क्योंकि वे आत्मा के आधार पर ही परखी जा
सकती हैं। 15आध्यात्मिक मनुष्य सब बातों का न्याय
कर सकता है किन्तु उसका न्याय कोई नहीं कर
सकता। क्योंकि शास्त्र कहता है:

16"प्रभु के मन को किसने जाना? उसको कौन
सिखाए?" *यशायाह 40:13*

किन्तु हमारे पास यीशु मसीह का मन है।

मनुष्यों का अनुसरण उचित नहीं

3 किन्तु हे भाइयो, मैं तुम लोगों से वैसे बात नहीं कर
सका जैसे आध्यात्मिक लोगों से करता हूँ। मुझे
इसके विपरीत तुम लोगों से वैसे बात करनी पड़ी जैसे
सांसारिक लोगों से की जाती है। यानी उनसे जो अभी
मसीह में बच्चे हैं। 2मैंने तुम्हें पीने को दूध दिया, ठोस
आहार नहीं; क्योंकि तुम अभी उसे खा नहीं सकते थे
और न ही तुम इसे आज भी खा सकते हो 3क्योंकि तुम
अभी तक सांसारिक हो। क्या तुम सांसारिक नहीं हो?
जबकि तुममें आपसी ईर्ष्या और कलह मौजूद है। और
तुम सांसारिक व्यक्तियों जैसा व्यवहार करते हो। 4जब
तुममें से कोई कहता है, "मैं पौलुस का हूँ", और दूसरा
कहता है, "मैं अपुल्लोस का हूँ", तो क्या तुम सांसारिक
मनुष्यों का सा आचरण नहीं करते?
5अच्छा तो बताओ अपुल्लोस क्या है और पौलुस क्या
है? हम तो केवल वे सेवक हैं जिनके द्वारा तुमने

"यदि ... गर्व करे" यिर्म. 9:24

विश्वास को ग्रहण किया है। हममें से हर एक ने बस
वह काम किया है जो प्रभु ने हमें सौंपा था। 6मैंने बीज
बोया, अपुल्लोस ने उसे सींचा; किन्तु उसकी बढ़वार तो
परमेश्वर ने ही की। 7इस प्रकार न तो वह जिसने बोया,
बड़ा है, और न ही वह जिसने उसे सींचा। बल्कि बड़ा
तो परमेश्वर है जिसने उसकी बढ़वार की। 8वह जो
बोता है और वह जो सींचता है, दोनों का प्रयोजन समान
है। सो हर एक अपने कर्मो के परिणामों के अनुसार ही
प्रतिफल पायेगा। 9परमेश्वर की सेवा में हम सब सहकर्मी
हैं। तुम परमेश्वर के खेत हो। परमेश्वर के मन्दिर हो।
10परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार जो मुझे दिया
गया था, मैंने एक कुशल प्रमुख शिल्पी के रूप में नींव
डाली किन्तु उस पर निर्माण तो कोई और ही करता है;
किन्तु हर एक को सावधानी के साथ ध्यान रखना
चाहिये कि वह उस पर निर्माण कैसे कर रहा है।
11क्योंकि जो नींव डाली गई है वह स्वयं यीशु मसीह ही
है और उससे भिन्न दूसरी नींव कोई डाल ही नहीं
सकता। 12यदि लोग उस नींव पर निर्माण करते हैं, फिर
चाहे वे उसमें सोना लगायें, चाँदी लगायें, बहुमूल्य रत्न
लगायें, लकड़ी लगायें, फूस लगायें या तिनकों का प्रयोग
करें। 13हर व्यक्ति का कर्म स्पष्ट रूप से दिखाई देगा।
क्योंकि वह दिन* उसे उजागर कर देगा। क्योंकि वह
दिन ज्वाला के साथ प्रकट होगा और वही ज्वाला हर
व्यक्ति के कर्मो को परखेगी कि वे कर्म कैसे हैं। 14यदि
उस नींव पर किसी व्यक्ति के कर्मो की रचना टिकाऊ
होगी 15तो वह उसका प्रतिफल पायेगा और यदि किसी
का कर्म उस ज्वाला में भस्म हो जायेगा तो उसे हानि
उठानी होगी। किन्तु फिर भी वह स्वयं वैसे ही बच
निकलेगा जैसे कोई आग लगे भवन में से भाग कर बच
निकले।

16क्या तुम नहीं जानते कि तुम लोग स्वयं परमेश्वर
का मंदिर हो और परमेश्वर की आत्मा तुममें निवास
करती है? 17यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को हानि
पहुँचाता है तो परमेश्वर उसे नष्ट कर देगा। क्योंकि
परमेश्वर का मंदिर तो पवित्र है। हाँ, तुम ही तो वह
मंदिर हो।

18अपने आपको मत छलो। यदि तुममें से कोई यह
सोचता है कि इस युग के अनुसार वह बुद्धिमान है तो
उसे बस तथाकथित मूर्ख ही बने रहना चाहिये ताकि
वह सचमुच बुद्धिमान बन जाये; 19क्योंकि परमेश्वर
की दृष्टि में सांसारिक चतुरता मूर्खता है। शास्त्र कहता
है, "परमेश्वर बुद्धिमानों को उनकी ही चतुरता में फँसा
देता।" 20शाख में लिखा है, "प्रभु जाता है बुद्धिमानों के
विचार सब व्यर्थ हैं।" 21इसलिये मनुष्यों पर किसी को
भी गर्व नहीं करना चाहिये क्योंकि यह सब कुछ तुम्हारा
ही तो है। 22फिर चाहे वह पौलुस हो, अपुल्लोस हो या
पतरस चाहे संसार हो, जीवन हो या मृत्यु हो, चाहे ये
आज की बातें हों या आने वाले कल की। सभी कुछ
तुम्हारा ही तो है। 23और तुम मसीह के हो और मसीह
परमेश्वर का।

मसीह के संदेशवाहक

4 हमारे बारे में किसी व्यक्ति को इस प्रकार सोचना
चाहिये कि हम लोग मसीह के सेवक हैं। परमेश्वर
ने हमें और रहस्यपूर्ण सत्य सौंपे हैं। 2और फिर जिन्हें ये
रहस्य सौंपे हैं, उन पर यह दायित्व भी है कि वे विश्वास
योग्य हों। 3मुझे इसकी तनिक भी चिंता नहीं है कि तुम
लोग मेरा न्याय करो या मनुष्यों की कोई और अदालत।
मैं स्वयं भी अपना न्याय नहीं करता। 4क्योंकि मेरा मन
स्वच्छ है। किन्तु इसी कारण मैं छूट नहीं जाता। प्रभु तो
एक ही है जो न्याय करता है। 5इसलिये ठीक समय
आने से पहले अर्थात् जब तक प्रभु न आ जाये, तब
तक किसी भी बात का न्याय मत करो। वही अन्धेरे में
छिपी बातों को उजागर करेगा और मन की प्रेरणा को
प्रकट करेगा। उस समय परमेश्वर की ओर से हर
किसी की उपयुक्त प्रशंसा होगी।

6हे भाइयो, मैंने इन बातों को अपुल्लोस पर और
स्वयं अपने पर तुम लोगों के लिये ही चरितार्थ किया है
ताकि तुम हमारा उदाहरण देखते हुए उन बातों को न
उलाँघ जाओ जो शास्त्र में लिखी हैं। ताकि एक व्यक्ति
का पक्ष लेते हुए और दूसरे का विरोध करते हुए
अहंकार में न भर जाओ। 7कौन कहता है कि तू किसी
दूसरे से अधिक अच्छा है। तेरे पास अपना ऐसा क्या है?
जो तुझे दिया नहीं गया है? और जब तुझे सब कुछ
किसी के द्वारा दिया गया है तो फिर इस रूप में अभिमान
किस बात का कि जैसे तूने किसी से कुछ पाया ही न
हो।

8तुम लोग सोचते हो कि जिस किसी वस्तु की तुम्हें
आवश्यकता थी, अब वह सब कुछ तुम्हारे पास है। तुम
सोचते हो अब तुम सम्पन्न हो गए हो। तुम हमारे बिना ही
राजा बन बैठे हो। कितना अच्छा होता कि तुम सचमुच
राजा होते ताकि तुम्हारे साथ हम भी राज्य करते।
9क्योंकि मेरा विचार है कि परमेश्वर ने हम प्रेरितों को
कर्म-क्षेत्र में उन लोगों के समान सबसे अंत में स्थान
दिया है जिन्हें मृत्यु-दण्ड दिया जा चुका है। क्योंकि हम
समूचे संसार, स्वर्गदूतों और लोगों के सामने तमाशा बने
हैं। 10हम मसीह के लिये मूर्ख बने हैं किन्तु तुम लोग
मसीह में बहुत बुद्धिमान हो। हम दुर्बल हैं किन्तु तुम तो
बहुत सबल हो। तुम सम्मानित हो और हम अपमानित।
11इस घड़ी तक हम तो भूखे-प्यासे हैं। फटे-पुराने
चिथड़े पहने हैं। हमारे साथ बुरा व्यवहार किया जाता

वह दिन वह दिन जब यीशु सभी लोगों का न्याय करने के लिये
आयेगा

है। हम बेघर हैं। 12अपने हाथों से काम करते हुए हम
मेहनत मज़दूरी करते हैं। 13गाली खा कर भी हम
आशीर्वाद देते हैं। सताये जाने पर हम उसे सहते हैं। जब
हमारी बदनामी हो जाती है, हम तब भी मीठा बोलते हैं।
हम अभी भी जैसे इस दुनिया का मल–फेन और कूड़ा
कचरा बने हुए हैं।

14तुम्हें लज्जित करने के लिये मैं यह नहीं लिख रहा
हूँ। बल्कि अपने प्रिय बच्चों के रूप में तुम्हें चेतावनी दे
रहा हूँ। 15क्योंकि चाहे तुम्हारे पास मसीह में तुम्हारे
दसियों हजार संरक्षक मौजूद हैं, किन्तु तुम्हारे पिता तो
अनेक नहीं हैं। क्योंकि सुसमाचार द्वारा मसीह यीशु में
मैं तुम्हारा पिता बना हूँ। 16इसलिये तुमसे मेरा आग्रह है,
मेरा अनुकरण करो। 17मैंने इसीलिये तिमुथियुस को
तुम्हारे पास भेजा है। वह प्रभु में स्थित मेरा प्रिय एवम्
विश्वास करने योग्य पुत्र है। यीशु मसीह में मेरे आचरणों
की वह तुम्हें याद दिलायेगा। जिनका मैंने हर कहीं, हर
कलीसिया में उपदेश दिया है।

18कुछ लोग अंधकार में इस प्रकार फूल उठे हैं जैसे
अब मुझे तुम्हारे पास कभी आना ही न हो। 19अस्तु
यदि परमेश्वर ने चाहा तो शीघ्र ही मैं तुम्हारे पास
आऊँगा और फिर अहंकार में फूले उन लोगों की मात्र
वाचालता को नहीं बल्कि उनकी शक्ति को देख लूँगा।
20क्योंकि परमेश्वर का राज्य वाचालता पर नहीं, शक्ति
पर टिका है। 21तुम क्या चाहते हो:

हाथ में छड़ी थामे मैं तुम्हारे पास आऊँ या कि प्रेम
और कोमल आत्मा साथ में लाऊँ?

कलीसिया में दुराचार

5 सचमुच ऐसा बताया गया है कि तुम लोगों में दुराचार
फैला हुआ है। ऐसा दुराचार– व्यभिचार तो अधर्मियों
तक में नहीं मिलता। जैसे कोई तो अपनी विमाता तक
के साथ सहवास करता है। 2और फिर तुम लोग अभिमान
में फूले हुए हो। किन्तु क्या तुम्हें इसके लिये दुखी नहीं
होना चाहिये? जो कोई ऐसा दुराचार करता है उसे तो
तुम्हें अपने बीच से निकाल बाहर करना चाहिये था।
3मैं यद्यपि शारीरिक रूप से तुम्हारे बीच नहीं हूँ किन्तु
आत्मिक रूप से तो वहीं उपस्थित हूँ। और मानो वहाँ
उपस्थित रहते हुए जिसने ऐसे बुरे काम किये हैं, उसके
विरुद्ध मैं अपना यह निर्णय दे चुका हूँ 4कि जब तुम मेरे
साथ हमारे प्रभु यीशु के नाम में मेरी आत्मा और हमारे
प्रभु यीशु की शक्ति के साथ एकत्रित होओगे 5तो ऐसे
व्यक्ति को उसके पापपूर्ण मानव स्वभाव को नष्ट कर
डालने के लिये शैतान को सौंप दिया जायेगा ताकि प्रभु
के दिन उसकी आत्मा का उद्धार हो सके।

6तुम्हारा यह बड़बोलापन अच्छा नहीं है। तुम इस
कहावत को तो जानते ही हो, "थोड़ा सा ख़मीर आटे के
पूरे लौंदे को खमीरमय कर देता है।" 7पुराने ख़मीर से
छुटकारा पाओ ताकि तुम आटे का नया लौंदा बन
सको। तुम तो बिना ख़मीर वाली फ़सह की रोटी के
समान हो। हमें पवित्र करने के लिये मसीह को फ़सह
के मेमने के रूप में बलि चढ़ा दिया गया। 8इसलिये
आओ हम अपना फ़सह पर्व बुराई और दुष्टता से युक्त
पुराने ख़मीर की रोटी से नहीं बल्कि निष्ठा और सत्य
से युक्त बिना ख़मीर की रोटी से मनायें।

9अपने पिछले पत्र में मैंने लिखा था कि तुम्हें उन
लोगों से अपना नाता नहीं रखना चाहिए जो व्यभिचारी
हैं। 10मेरा यह प्रयोजन बिलकुल नहीं था कि तुम इस
दुनिया के व्यभिचारियों, लोभियों, ठगों या मूर्तिपूजकों से
कोई सम्बन्ध ही मत रखो। ऐसा होने पर तो तुम्हें इस
संसार से ही निकल जाना होगा। 11किन्तु मैंने तुम्हें जो
लिखा है, वह यह है कि किसी ऐसे व्यक्ति से नाता मत
रखो जो अपने आपको मसीही बन्धु कहला कर भी
व्यभिचारी, लोभी, मूर्तिपूजक चुगलखोर, पियक्कड़ या
एक ठग है। ऐसे व्यक्ति के साथ तो भोजन भी ग्रहण मत
करो।

12जो लोग बाहर के हैं, कलीसिया के नहीं, उनका
न्याय करने का भला मेरा क्या काम। क्या तुम्हें उन ही
का न्याय नहीं करना चाहिये जो कलीसिया के भीतर
के हैं? 13कलीसिया के बाहर वालों का न्याय परमेश्वर
करेगा। शास्त्र कहता है, "तुम पाप को अपने बीच से
बाहर निकाल दो।"*

आपसी विवादों का निबटारा

6 क्या तुममें से कोई ऐसा है जो अपने साथी के साथ
कोई झगड़ा होने पर परमेश्वर के पवित्र पुरुषों के
पास न जा कर अधर्मी लोगों की अदालत में जाने का
साहस करता हो? 2अथवा क्या तुम नहीं जानते कि
परमेश्वर के पवित्र पुरुष ही जगत का न्याय करेंगे?
और जब तुम्हारे द्वारा सारे संसार का न्याय किया जाना
है तो क्या अपनी इन छोटी–छोटी बातों का न्याय करने
योग्य तुम नहीं हो? 3क्या तुम नहीं जानते कि हम
स्वर्गदूतों का भी न्याय करेंगे? फिर इस जीवन की इन
रोज़मर्रा की छोटी मोटी बातों का तो कहना ही क्या।
4यदि हर दिन तुम्हारे बीच कोई न कोई विवाद रहता
ही है तो क्या न्यायाधीश के रूप में तुम ऐसे व्यक्तियों की
नियुक्ति करोगे जिनका कलीसिया में कोई स्थान नहीं
है। 5यह मैं तुमसे इसलिये कह रहा हूँ कि तुम्हें कुछ
लाज आये। क्या स्थिति इतनी बिगड़ चुकी है कि तुम्हारे
बीच कोई ऐसा बुद्धिमान पुरुष है ही नहीं जो अपने
मसीही भाइयों के आपसी झगड़े सुलझा सके? 6क्या एक
भाई कभी अपने दूसरे भाई से मुकदमा लड़ता है! और
तुम तो अविश्वासियों के सामने ऐसा कर रहे हो।

"अपने … पापी को" व्यवस्था. 22:21–24

7वास्तव में तुम्हारी पराजय तो इसी में हो चुकी कि
तुम्हारे बीच आपस में कानूनी मुकदमे हैं। इसके स्थान
पर तुम आपस में अन्याय ही क्यों नहीं सह लेते? अपने
आप को क्यों नहीं लुट जाने देते। 8तुम तो स्वयं अन्याय
करते हो और अपने ही मसीही भाइयों को लूटते हो!

9अथवा क्या तुम नहीं जानते कि बुरे लोग परमेश्वर
के राज्य का उत्तराधिकार नहीं पायेंगे? अपने आप को
मूर्ख मत बनाओ। यौनानाचार करने वाले, मूर्ति पूजक,
व्यभिचारी, गुदा-भंजन कराने वाले, लौंडेबाज़, 10लुटेरे,
लालची, पियक्कड़, चुगलखोर और ठग परमेश्वर के
राज्य के उत्तराधिकारी नहीं होंगे। 11तुममें से कुछ ऐसे
ही थे। किन्तु अब तुम्हें धोया गया और पवित्र कर दिया
है। तुम्हें परमेश्वर की सेवा में अर्पित कर दिया गया है।
प्रभु यीशु मसीह के नाम और हमारे परमेश्वर के
आत्मा के द्वारा उन्हें धर्मी करार दिया जा चुका है।

अपने शरीर को परमेश्वर की महिमा में लगाओ

12"मैं कुछ भी करने को स्वतन्त्र हूँ।" किन्तु हर
कोई बात हितकर नहीं होती। हाँ! "मैं सब कुछ करने
को स्वतन्त्र हूँ।" किन्तु मैं अपने पर किसी को भी हावी
नहीं होने दूँगा।

13कहा जाता है, "भोजन पेट के लिये, और पेट
भोजन के लिये है।" किन्तु परमेश्वर इन दोनों को ही
समाप्त कर देगा। और हमारे शरीर भी तो यौनअनाचार
के लिये नहीं हैं बल्कि प्रभु की सेवा के लिये हैं। और
प्रभु हमारी देह के कल्याण के लिये है। 14परमेश्वर ने
केवल प्रभु को ही पुनर्जीवित नहीं किया बल्कि अपनी
शक्ति से वह मृत्यु से हम सब को भी जिला उठायेगा।
15क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे शरीर स्वयं यीशु
मसीह से जुड़े हैं? तो क्या मुझे उन्हें, जो मसीह के अंग
हैं, किसी वेश्या के अंग बना देना चाहिये? 16निश्चय ही
नहीं। अथवा क्या तुम यह नहीं जानते, कि जो अपने
आपको वेश्या से जोड़ता है, वह उसके साथ एक देह हो
जाता है। शास्त्र में कहा गया है: "क्योंकि वे दोनों एक
देह हो जायेंगे।"*

17किन्तु वह जो अपनी लौ प्रभु से लगाता है, उसकी
आत्मा में एकाकार हो जाता है।

18यौनाचार से दूर रहो। दूसरे सभी पाप जिन्हें एक
व्यक्ति करता है, उसके शरीर से बाहर होते हैं किन्तु
ऐसा व्यक्ति जो व्यभिचार करता है वह तो अपने शरीर
के ही विरुद्ध पाप करता है। 19अथवा क्या तुम नहीं
जानते कि तुम्हारे शरीर उस पवित्र आत्मा के मंदिर हैं
जिसे तुमने परमेश्वर से पाया है और जो तुम्हारे भीतर
निवास करता है। और वह आत्मा तुम्हारा अपना नहीं
है 20क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें कीमत चुका कर खरीदा
है इसलिये अपने शरीरों के द्वारा परमेश्वर को महिमा
प्रदान करो।

विवाह

7 अब उन बातों के बारे में जो तुमने लिखीं थीं:
अच्छा यह है कि कोई पुरुष किसी स्त्री को छुए ही
नहीं। 2किन्तु यौन अनैतिकता की घटनाओं की
सम्भावनाओं के कारण हर पुरुष की अपनी पत्नी
होनी चाहिये और हर स्त्री का अपना पति। 3पति को
चाहिये कि पत्नी के रूप में जो कुछ पत्नी का अधिकार
बनता है, उसे दे। और इसी प्रकार पत्नी को भी चाहिये
कि पति को उसका यथोचित प्रदान करे। 4अपने शरीर
पर पत्नी का कोई अधिकार नहीं हैं बल्कि उसके पति
का है। और इसी प्रकार पति का भी उसके अपने
शरीर पर कोई अधिकार नहीं है, बल्कि उसकी पत्नी
का है। 5अपने आप को प्रार्थना में समर्पित करने के
लिये थोड़े समय तक एक दूसरे से समागम न करने की
आपसी सहमति को छोड़कर, एक दूसरे को संभोग से
वंचित मत करो। फिर आत्म-संयम के अभाव के
कारण कहीं शैतान तुम्हें किसी परीक्षा में न डाल दे,
इसलिये तुम फिर समागम कर लो। 6मैं यह एक छूट के
रूप में कह रहा हूँ, आदेश के रूप में नहीं। 7मैं तो
चाहता हूँ सभी लोग मेरे जैसे होते। किन्तु हर व्यक्ति को
परमेश्वर से एक विशेष बरदान मिला है। किसी का
जीने का एक ढंग है तो दूसरे का दूसरा।

8अब मुझे अविवाहितों और विधवाओं के बारे में यह
कहना है: यदि वे मेरे समान अकेले ही रहें तो उनके
लिए यह उत्तम रहेगा। 9किन्तु यदि वे अपने आप पर
काबू न रख सकें तो उन्हें विवाह कर लेना चाहिये;
क्योंकि वासना की आग में जलते रहने से विवाह कर
लेना अच्छा है।

10अब जो विवाहित हैं उनको मेरा यह आदेश है,
(यद्यपि यह मेरा नहीं है, बल्कि प्रभु का आदेश है) कि
किसी पत्नी को अपना पति नहीं त्यागना चाहिये 11किन्तु
यदि वह उसे छोड़ ही दे तो उसे फिर अनब्याहा ही
रहना चाहिये या अपने पति से मेल-मिलाप कर लेना
चाहिये। और ऐसे ही पति को भी अपनी पत्नी को
छोड़ना नहीं चाहिये।

12अब शेष लोगों से मेरा यह कहना है: (यह मैं कह
रहा हूँ न कि प्रभु) यदि किसी मसीही भाई की कोई
ऐसी पत्नी है जो इस मत में विश्वास नहीं रखती और
उसके साथ रहने को सहमत है तो उसे त्याग नहीं देना
चाहिये। 13ऐसे ही यदि किसी स्त्री का कोई ऐसा पति है
जो पंथ का विश्वासी नहीं है किन्तु उसके साथ रहने
को सहमत है तो उस स्त्री को भी अपना पति त्यागना
नहीं चाहिये। 14क्योंकि वह अविश्वासी पति विश्वासी
पत्नी से निकट संबन्धों के कारण पवित्र हो जाता है

"क्योंकि … जायेंगे" उत्पत्ति 2:24

और इसी प्रकार वह अविश्वासिनी पत्नी भी अपने
विश्वासी पति के निरन्तर साथ रहने से पवित्र हो जाती
है। नहीं तो तुम्हारी संतान अस्वच्छ हो जाती किन्तु अब
तो वे पवित्र हैं।

15फिर भी यदि कोई अविश्वासी अलग होना चाहता
है तो वह अलग हो सकता है। ऐसी स्थितियों में किसी
मसीही भाई या बहन पर कोई बंधन लागू नहीं होगा।
परमेश्वर ने हमें शांति के साथ रहने को बुलाया है।
16हे पत्नियो, क्या तुम जानती हो? हो सकता है तुम
अपने अविश्वासी पति को बचा लो।

जैसे हो, वैसे जिओ

17प्रभु ने जिसको जैसा दिया है और जिसको जिस
रूप में चुना है, उसे वैसे ही जीना चाहिये। सभी
कलीसियाओं में मैं इसी का आदेश देता हूँ। **18**जब किसी
को परमेश्वर के द्वारा बुलाया गया, तब यदि वह ख़तना
युक्त था तो उसे अपना ख़तना छिपाना नहीं चाहिये।
और किसी को ऐसी दशा में बुलाया गया जब वह बिना
ख़तने के था तो उसका ख़तना कराना नहीं चाहिये।
19ख़तना तो कुछ नहीं है, और न ही ख़तना नहीं होना
कुछ है। बल्कि परमेश्वर के आदेशों का पालन करना
ही सब कुछ है। **20**हर किसी को उसी स्थिति में रहना
चाहिये, जिसमें उसे बुलाया गया है। **21**क्या तुझे दास के
रूप में बुलाया गया है? तू इसकी चिंता मत कर। किन्तु
यदि तू स्वतन्त्र हो सकता है तो आगे बढ़ और अवसर
का लाभ उठा। **22**क्योंकि जिसे प्रभु के दास के रूप में
बुलाया गया, वह तो प्रभु का स्वतन्त्र व्यक्ति है। इसी
प्रकार जिसे स्वतन्त्र व्यक्ति के रूप में बुलाया गया, वह
मसीह का दास है।

23परमेश्वर ने कीमत चुका कर तुम्हें खरीदा है।
इसलिए मनुष्यों के दास मत बनो। **24**हे भाइयो, तुम्हें
जिस भी स्थिति में बुलाया गया है, परमेश्वर के सामने
उसी स्थिति में रहो।

विवाह करने सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर

25अविवाहितों के सम्बन्ध में प्रभु की ओर से मुझे
कोई आदेश नहीं मिला है। इसीलिये मैं प्रभु की दया
प्राप्त करके विश्वसनीय होने के कारण अपनी राय
देता हूँ। **26**मैं सोचता हूँ कि इस वर्तमान संकट के
कारण यही अच्छा है कि कोई व्यक्ति मेरे समान ही
अकेला रहे। **27**यदि तुम विवाहित हो तो उससे छुटकारा
पाने का यत्न मत करो। यदि तुम स्त्री से मुक्त हो तो
उसे खोजो मत। **28**किन्तु यदि तुम्हारा जीवन विवाहित है
तो तुमने कोई पाप नहीं किया है। और यदि कोई
कुँवारी कन्या विवाह करती है, तो कोई पाप नहीं
करती है किन्तु ऐसे लोग शारीरिक कष्ट उठायेंगे
जिनसे मैं तुम्हें बचाना चाहता हूँ।

29हे भाइयो, मैं तो यही कह रहा हूँ, वक्त बहुत थोड़ा
है। इसलिये अब से आगे, जिनके पास पत्नियाँ हैं, वे ऐसे
रहें, मानो उनके पास पत्नियाँ हैं ही नहीं। **30**और वे जो
बिलख रहे हैं, वे ऐसे रहें, मानो कभी दुखी ही न हुए
हों। और जो आनन्दित हैं, वे ऐसे रहें, मानो प्रसन्न ही न
हुए हों। और वे जो वस्तुएँ मोल लेते हैं, ऐसे रहें मानो
उनके पास कुछ भी न हो। **31**और जो सांसारिक सुख–
विलासों का भोग कर रहे हैं, वे ऐसे रहें, मानों वे वस्तुएँ
उनके लिए कोई महत्त्व नहीं रखतीं। क्योंकि यह संसार
अपने वर्तमान स्वरूप में नाशमान है।

32मैं चाहता हूँ आप लोग चिंताओं से मुक्त रहें। एक
अविवाहित व्यक्ति प्रभु सम्बन्धी विषयों के चिंतन में
लगा रहता है कि वह प्रभु को कैसे प्रसन्न करे। **33**किन्तु
एक विवाहित व्यक्ति सांसारिक विषयों में ही लिप्त
रहता है कि वह अपनी पत्नी को कैसे प्रसन्न कर
सकता है। **34**इस प्रकार उसका व्यक्तित्व बँट जाता है।
और ऐसे ही किसी अविवाहित स्त्री या कुँवारी कन्या
को जिसे बस प्रभु सम्बन्धी विषयों की ही चिंता रहती है।
जिससे वह अपने शरीर और अपनी आत्मा से पवित्र हो
सके। किन्तु एक विवाहित स्त्री सांसारिक विषयभोगों में
इस प्रकार लिप्त रहती है कि वह अपने पति को
रिझाती रह सके। **35**ये मैं तुमसे तुम्हारे भले के लिये ही
कह रहा हूँ तुम पर प्रतिबन्ध लगाने के लिये नहीं।
बल्कि अच्छी व्यवस्था के हित में और इसलिए भी कि
तुम चित्त की चंचलता के बिना प्रभु को समर्पित हो
सको।

36यदि कोई सोचता है कि वह अपनी युवा हो चुकी
कुँवारी प्रिया के प्रति उचित नहीं कर रहा है और यदि
उसकी कामभावना तीव्र है, तथा दोनों को ही आगे बढ़
कर विवाह कर लेने की आवश्यकता है, तो जैसा वह
चाहता है, उसे आगे बढ़ कर वैसा कर लेना चाहिये।
वह पाप नहीं कर रहा है। उन्हें विवाह कर लेना
चाहिये। **37**किन्तु जो अपने मन में बहुत पक्का है और
जिस पर कोई दबाव भी नहीं हैं, बल्कि जिसका अपनी
इच्छाओं पर भी पूरा बस है और जिसने अपने मन में
पूरा निश्चय कर लिया है कि वह अपनी प्रिया से
विवाह नहीं करेगा तो वह अच्छा ही कर रहा है। **38**सो
वह जो अपनी प्रिया से विवाह कर लेता है, अच्छा
करता है और जो उससे विवाह नहीं करता, वह और
भी अच्छा करता है।

39जब तक किसी स्त्री का पति जीवित रहता है, तभी
तक वह विवाह के बन्धन में बँधी होती है किन्तु यदि
उसके पति का देहान्त हो जाता है, तो जिसके साथ
चाहे, विवाह करने, वह स्वतन्त्र है किन्तु केवल प्रभु
में। **40**पर यदि जैसी वह है, वैसी ही रहती है तो अधिक
प्रसन्न रहेगी। यह मेरा विचार है। और मैं सोचता हूँ कि
मुझमें भी परमेश्वर के आत्मा का ही निवास है।

चढ़ावे का भोजन

8 अब मूर्तियों पर चढ़ाई गई बलि के विषय में हम
यह जानते हैं, “हम सभी ज्ञानी है।” “ज्ञान” लोगों
को अहंकार से भर देता है। किन्तु प्रेम से व्यक्ति
अधिक शक्तिशाली बनता है। 2यदि कोई सोचे कि वह
कुछ जानता है तो जिसे जानना चाहिये उसके बारे में
तो उसने अभी कुछ जाना ही नहीं। 3यदि कोई
परमेश्वर को प्रेम करता है तो वह परमेश्वर के द्वारा
जाना जाता है।

4इसलिए मूर्तियों पर चढ़ाये गये भोजन के बारे में हम
जानते हैं कि इस संसार में वास्तविक प्रतिमा कहीं नहीं
है। और यह कि ‘परमेश्वर केवल एक ही है।’ 5और
धरती या आकाश में यद्यपि तथाकथित देवता बहुत से
हैं (बहुत से “देवता” हैं, बहुत से “प्रभु” हैं।) 6किन्तु
हमारे लिये तो एक ही परमेश्वर है, हमारा पिता। उसी
से सब कुछ आता है। और उसी के लिये हम जीते हैं।
प्रभु केवल एक है, यीशु मसीह। उसी के द्वारा सब
वस्तुओं का अस्तित्व है और उसी के द्वारा हमारा
जीवन है।

7किन्तु यह ज्ञान हर किसी के पास नहीं है। कुछ
लोग जो अब तक मूर्ति उपासना के आदी हैं, ऐसी वस्तुएँ
खाते हैं और सोचते हैं जैसे मानो वे वस्तुएँ मूर्ति का
प्रसाद हों। उनके इस कर्म से उनकी आत्मा निर्बल होने
के कारण दूषित हो जाती है। 8किन्तु वह प्रसाद तो हमें
परमेश्वर के निकट नहीं ले जायेगा। यदि हम उसे न
खायें तो कुछ घट नहीं जाता और यदि खायें तो कुछ
बढ़ नहीं जाता।

9सावधान रहो। कहीं तुम्हारा यह अधिकार उनके
लिये, जो दुर्बल हैं, पाप में गिरने का कारण न बन जाये।
10क्योंकि दुर्बल मन का कोई व्यक्ति यदि तुझ जैसे इस
विषय के जानकार को मूर्ति वाले मंदिर में खाते हुए
देखता है तो उसका दुर्बल मन क्या उस हद तक नहीं
भटक जायेगा कि वह मूर्ति पर बलि चढ़ाई गयी वस्तुओं
को खाने लगे। 11तेरे ज्ञान से, दुर्बल मन के व्यक्ति का
तो नाश ही हो जायेगा तेरे उसी बन्धु का, जिसके लिए
मसीह ने जान दे दी। 12इस प्रकार अपने भाइयों के
विरुद्ध पाप करते हुए और उनके दुर्बल मन को चोट
पहुँचाते हुए तुम लोग मसीह के विरुद्ध पाप कर रहे हो।
13इस लिए यदि भोजन मेरे भाई को पाप की राह पर
बढ़ाता है तो मैं फिर कभी भी माँस नहीं खाऊँगा ताकि
मैं अपने भाई के लिए, पाप करने की प्रेरणा न बनूँ।

पौलुस भी दूसरे प्रेरितों जैसा ही है

9 क्या मैं स्वतन्त्र नहीं हूँ? क्या मैं भी प्रेरित नहीं हूँ?
क्या मैंने हमारे प्रभु यीशु मसीह के दर्शन नहीं
किये हैं? क्या तुम लोग प्रभु में मेरे ही कर्म का परिणाम
नहीं हो? 2चाहे दूसरों के लिये मैं प्रेरित न भी होऊँ–तो
भी मैं तुम्हारे लिये तो प्रेरित हूँ ही। क्योंकि तुम एक ऐसी
मुहर के समान हो जो प्रभु में मेरे प्रेरित होने को
प्रमाणित करती है।

3वे लोग जो मेरी जाँच करना चाहते हैं, उनके प्रति
आत्मरक्षा में मेरा उत्तर यह है: 4 क्या मुझे खाने पीने
का अधिकार नहीं है? 5 क्या मुझे यह अधिकार नहीं
कि मैं अपनी विश्वासिनी पत्नी को अपने साथ ले
जाऊँ? जैसा कि दूसरे प्रेरित, प्रभु के बन्धु और पतरस
ने किया है। 6अथवा क्या बरनाबास और मुझे ही अपनी
आजीविका कमाने के लिये कोई काम करना चाहिए?
7सेना में ऐसा कौन होगा जो अपने ही खर्च पर एक
सिपाही के रूप में काम करे। अथवा कौन होगा जो
अंगूर की बगिया लगाकर भी उसका फल न चखे? या
कोई ऐसा है जो भेड़ों के रेवड़ की देखभाल तो करता
हो पर उनका थोड़ा बहुत भी दूध न पीता हो?

8क्या मैं मानवीय चिन्तन के रूप में ही ऐसा कह रहा
हूँ? आखिरकार क्या व्यवस्था का विधान भी ऐसा ही
नहीं कहता? 9मूसा की व्यवस्था के विधान में लिखा है,
“खलिहान में बैल का मुँह मत बाँधो।”* परमेश्वर क्या
केवल बैलों के बारे में बता रहा है?

10नहीं! निश्चित रूप से वह इसे क्या हमारे लिये नहीं
बता रहा? हाँ, यह हमारे लिये ही लिखा गया था।
क्योंकि खेत जोतने वाला किसी आशा से ही खेत जोतने
और खलिहान में भूसे से अनाज अलग करने वाला
फसल का कुछ भाग पाने की आशा तो रखेगा ही।
11फिर यदि हमने तुम्हारे हित के लिये आध्यात्मिकता
के बीज बोये हैं तो हम तुमसे भौतिक वस्तुओं की
फसल काटना चाहते हैं, यह क्या कोई बहुत बड़ी बात
है? 12यदि दूसरे लोग तुमसे भौतिक वस्तुएँ पाने का
अधिकार रखते हैं तो हमारा तो तुम पर क्या और भी
अधिक अधिकार नहीं हैं? किन्तु हमने इस अधिकार
का उपयोग नहीं किया है। बल्कि हम तो सब कुछ
सहते रहे हैं ताकि हम मसीह के सुसमाचार के मार्ग में
कोई बाधा न डाल दें। 13क्या तुम नहीं जानते कि जो
लोग मंदिर में काम करते हैं, वे अपना भोजन मन्दिर से
ही पाते हैं। और जो नियमित रूप से वेदी की सेवा करते
हैं, वेदी के चढ़ावे में उनका हिस्सा होता है? 14इसी
प्रकार प्रभु ने व्यवस्था दी है कि सुसमाचार के प्रचारकों
की आजीविका सुसमाचार के प्रचार से ही होनी
चाहिये।

15किन्तु इन अधिकारों में से मैंने एक का भी कभी
प्रयोग नहीं किया। और ये बातें मैंने इसलिये लिखी भी
नहीं हैं कि ऐसा कुछ मेरे विषय में किया जाये। बजाय
इसके कि कोई मुझ से उस बात को ही छीन ले जिसका
मुझे गर्व है। इस से तो मैं मर जाना ही ठीक समझूँगा।

“खलिहान ... बाँधो” व्यवस्था. 25:4

16इसलिये यदि मैं सुसमाचार का प्रचार करता हूँ तो
इसमें मुझे गर्व करने का कोई हेतु नहीं हैं क्योंकि मेरा
तो यह कर्तव्य है। और यदि मैं सुसमाचार का प्रचार न
करूँ तो मेरे लिए यह कितना बुरा होगा। 17फिर यदि
यह मैं अपनी इच्छा से करता हूँ तो मैं इसका फल पाने
योग्य हूँ, किन्तु यदि अपनी इच्छा से नहीं बल्कि किसी
नियुक्ति के कारण यह काम मुझे सौंपा गया है 18तो
फिर मेरा प्रतिफल काहे का। इसलिये जब मैं सुसमाचार
का प्रचार करूँ तो बिना कोई मूल्य लिये ही उसे करूँ।
ताकि सुसमाचार के प्रचार में जो कुछ पाने का मेरा
अधिकार है, मैं उसका पूरा उपयोग न करूँ।

19यद्यपि मैं किसी भी व्यक्ति के बन्धन में नहीं हूँ,
फिर भी मैंने स्वयं को आप सब का सेवक बना लिया
है। ताकि मैं अधिकतर लोगों को जीत सकूँ। 20यहूदियों
के लिये मैं एक यहूदी जैसा बना, ताकि मैं यहूदियों को
जीत सकूँ। जो लोग व्यवस्था के विधान के अधीन हैं,
उनके लिये मैं एक ऐसा व्यक्ति बना जो व्यवस्था के
विधान के अधीन जैसा है। यद्यपि मैं स्वयं व्यवस्था के
विधान के अधीन नहीं हूँ। यह मैंने इसलिये किया कि
मैं व्यवस्था के विधान के अधीनों को जीत सकूँ। 21मैं
एक ऐसा व्यक्ति भी बना जो व्यवस्था के विधान को
नहीं मानता। यद्यपि मैं परमेश्वर की व्यवस्था से रहित
नहीं हूँ बल्कि मसीह की व्यवस्था के अधीन हूँ। ताकि
मैं जो व्यवस्था के विधान को नहीं मानते हैं उन्हें जीत
सकूँ। 22जो दुर्बल हैं, उनके लिये मैं दुर्बल बना ताकि मैं
दुर्बलों को जीत सकूँ। हर किसी के लिये मैं हर किसी
के जैसा बना ताकि हर सम्भव उपाय से उनका उद्धार
कर सकूँ। 23यह सब कुछ मैं सुसमाचार के लिये करता
हूँ ताकि इसके वरदानों में मेरा भी कुछ भाग हो।

24क्या तुम लोग यह नहीं जानते कि खेल के मैदान
में दौड़ते तो सभी धावक हैं किन्तु पुरस्कार किसी एक
को ही मिलता है। एसे दौड़ो कि जीत तुम्हारी ही हो!
25किसी खेल प्रतियोगिता में प्रत्येक प्रतियोगी को हर
प्रकार का आत्मसंयम करना होता है। वे एक नाशमान
जयमाल से सम्मानित होने के लिये ऐसा करते हैं किन्तु
हम तो एक अविनाशी मुकुट को पाने के लिए यह
करते हैं। 26इस प्रकार मैं उस व्यक्ति के समान दौड़ता
हूँ जिसके सामने एक लक्ष्य है। मैं हवा में मुक्के नहीं
मारता। 27बल्कि मैं तो अपने शरीर को कठोर अनुशासन
में तपा कर, उसे अपने वश में करता हूँ। ताकि कहीं
ऐसा न हो जाय कि दूसरों को उपदेश देने के बाद
परमेश्वर के द्वारा मैं ही व्यर्थ ठहरा दिया जाऊँ।

यहूदियों जैसे मत बनो

10 हे भाइयो, मैं चाहता हूँ कि तुम यह जानलो
कि हमारे सभी पूर्वज बादल की छत्र छाया में
सुरक्षा पूर्वक लाल सागर पार कर गए थे। 2उन सब को
बादल के नीचे, समुद्र के बीच मूसा के अनुयायियों के
रूप में बपतिस्मा दिया गया था। 3उन सभी ने समान
आध्यात्मिक भोजन खाया था 4और समान आध्यात्मिक
जल पिया था। क्योंकि वे अपने साथ चल रही उस
आध्यात्मिक चट्टान से ही जल ग्रहण कर रहे थे। और
वह चट्टान थी मसीह। 5किन्तु उनमें से अधिकांश लोगों
से परमेश्वर प्रसन्न नहीं था, इसीलिये वे मरुभूमि में मारे
गये।

6ये बातें ऐसे घटीं कि हमारे लिये उदाहरण सिद्ध हों
और हम बुरी बातों की कामना न करें जैसे उन्होंने की
थी। 7मूर्तिपूजक मत बनो, जैसे कि उनमें से कुछ थे।
शास्त्र कहता है: "व्यक्ति खाने पीने के लिये बैठा और
परस्पर आनन्द मनाने के लिए उठा।" 8इसलिए आओ
हम कभी व्यभिचार न करें जैसे उनमें से कुछ किया
करते थे। इसी नाते उनमें से 23,000 व्यक्ति एक ही
दिन मर गए। 9आओ हम मसीह की परीक्षा न लें, जैसे
कि उनमें से कुछ ने ली थी। परिणामस्वरूप साँपों के
काटने से वे मार गए। 10शिकवा शिकायत मत करो
जैसे कि उनमें से कुछ किया करते थे और इसी कारण
विनाश के स्वर्गदूत द्वारा मार डाले गए।

11ये बातें उनके साथ ऐसे घटीं कि उदाहरण रहे।
और उन्हें लिख दिया गया कि हमारे लिए जिन पर युगों
का अन्त उतरा हुआ है, चेतावनी रहे। 12इसलिए जो
यह सोचता है कि वह दृढ़ता के साथ खड़ा है, उसे
सावधान रहना चाहिये कि वह गिर न पड़े। 13तुम
किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े हो, जो मनुष्यों के लिये
सामान्य नहीं है। परमेश्वर विश्वसनीय है। वह तुम्हारी
सहन शक्ति से अधिक तुम्हें परीक्षा में नहीं पड़ने देगा।
परीक्षा के साथ साथ उससे बचने का मार्ग भी वह तुम्हें
देगा ताकि तुम परीक्षा को उत्तीर्ण कर सको।

14हे मेरे प्रिय मित्रो, अंत में मैं कहता हूँ मूर्ति उपासना
से दूर रहो। 15तुम्हें समझदार समझ कर मैं ऐसा कह
रहा हूँ। जो मैं कह रहा हूँ, उसे अपने आप परखो।
16धन्यवाद का वह प्याला जिसके लिये हम धन्यवाद
देते हैं, वह क्या मसीह के लहू में हमारी साझेदारी नहीं
है? वह रोटी जिसे हम विभाजित करते हैं, क्या यीशु
की देह में हमारी साझेदारी नहीं? 17रोटी का होना एक
ऐसा तथ्य है, जिसका अर्थ है कि हम सब एक ही
शरीर से हैं। क्योंकि उस एक रोटी में ही हम सब
साझेदार हैं।

18उन इस्राएलियों के बारे में सोचो, जो बलि की
वस्तुएँ खाते हैं। क्या वे उस वेदी के साझेदार नहीं हैं?
19इस बात को मेरे कहने का प्रयोजन क्या है? क्या मैं
यह कहना चाहता हूँ कि मूर्तियों पर चढ़ाया गया भोजन
कुछ है या कि मूर्ति कुछ भी नहीं है। नहीं। 20बल्कि
मेरा आशय तो यह है कि वे अधर्मी जो बलि चढ़ाते हैं,
वे उन्हें परमेश्वर के लिये नहीं, बल्कि दुष्ट आत्माओं

के लिये चढ़ाते हैं। और मैं नहीं चाहता कि तुम दुष्टात्माओं
के साझेदार बनो। 21तुम प्रभु के कटोरे और दुष्टात्माओं
के कटोरे में से एक साथ नहीं पी सकते। तुम प्रभु के
भोजन की चौकी और दुष्टात्माओं के भोजन की चौकी,
दोनों में एक साथ हिस्सा नहीं बँटा सकते। 22क्या हम
प्रभु को चिड़ाना चाहते हैं? क्या जितना शक्तिशाली वह
है, हम उससे अधिक शक्तिशाली हैं?

अपनी स्वतन्त्रता का प्रयोग परमेश्वर की महिमा के लिये करो

23जैसा कि कहा गया है कि हम कुछ भी करने के
लिये स्वतन्त्र हैं। पर सब कुछ हितकारी तो नहीं है। 'हम
कुछ भी करने के लिए स्वतन्त्र हैं' किन्तु हर किसी
बात से विश्वास सुदृढ़ तो नहीं होता। 24किसी को भी
मात्र स्वार्थ की ही चिन्ता नहीं करनी चाहिये बल्कि
औरों के परमार्थ की भी सोचनी चाहिये।

25बाजार में जो कुछ बिकता है, अपने अन्तर्मन के
अनुसार वह सब कुछ खाओ। उसके बारे में कोई प्रश्न
मत करो। 26क्योंकि शास्त्र कहता है: "यह धरती और
इस पर जो कुछ है, सब प्रभु का है।"*

27यदि अविश्वासियों में से कोई व्यक्ति तुम्हें भोजन
पर बुलाये और तुम वहाँ जाना चाहो तो तुम्हारे सामने
जो भी परोसा गया है, अपने अन्तर्मन के अनुसार सब
खाओ। कोई प्रश्न मत पूछो। 28किन्तु यदि कोई तुम
लोगों को यह बताये, "यह देवता पर चढ़ाया गया चढ़ावा
है" तो जिसने तुम्हें यह बताया है, उसके कारण और
अपने अन्तर्मन के कारण उसे मत खाओ। 29मैं जब
अन्तर्मन कहता हूँ तो मेरा अर्थ तुम्हारे अन्तर्मन से नहीं
बल्कि उस दूसरे व्यक्ति के अन्तर्मन से है। एकमात्र
यही कारण है। क्योंकि मेरी स्वतन्त्रता भला दूसरे
व्यक्ति के अन्तर्मन द्वारा लिये गये निर्णय से सीमित क्यों
रहे? 30यदि मैं धन्यवाद देकर, भोजन में हिस्सा लेता हूँ
तो जिस वस्तु के लिये मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता
हूँ, उसके लिये मेरी आलोचना नहीं की जानी
चाहिये।

31इसलिये चाहे तुम खाओ, चाहे पिओ, चाहे कुछ
और करो, बस सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये
करो। 32यहूदियों के लिये या ग़ैर यहूदियों के लिये या जो
परमेश्वर के कलीसिया के हैं, उनके लिये कभी बाधा
मत बनो 33जैसे मैं स्वयं हर प्रकार से हर किसी को
प्रसन्न रखने का जतन करता हूँ, और बिना यह सोचे
कि मेरा स्वार्थ क्या है, परमार्थ की सोचता हूँ ताकि
उनका उद्धार हो।

11 सो तुम लोग वैसे ही मेरा अनुसरण करो जैसे मैं
मसीह का अनुसरण करता हूँ।

अधीन रहना

2मैं तुम्हारी प्रशँसा करता हूँ। क्योंकि तुम मुझे हर
समय याद करते रहते हो; और जो शिक्षाएँ मैंने तुम्हें दी
हैं, उनका सावधानी से पालन कर रहे हो। 3पर मैं
चाहता हूँ कि तुम यह जान लो कि स्त्री का सिर पुरुष
है, पुरुष का सिर मसीह है, और मसीह का सिर परमेश्वर
है। 4हर ऐसा पुरुष जो सिर ढक कर प्रार्थना करता है
या परमेश्वर की ओर से बोलता है, वह परमेश्वर का
अपमान करता है जो अपना सिर है। 5पर हर ऐसी स्त्री
जो बिना सिर ढके प्रार्थना करती है या जनता में परमेश्वर
की ओर से बोलती है, वह अपने पुरुष का अपमान
करती है जो उसका सिर है। वह ठीक उस स्त्री के
समान है जिसने अपना सिर मुँडवा दिया है। 6यदि कोई
स्त्री अपना सिर नहीं ढकती तो वह अपने बाल भी क्यों
नहीं मुँडवा लेती। किन्तु यदि स्त्री के लिये बाल मुँडवाना
लज्जा की बात है तो उसे अपना सिर भी ढकना चाहिये।
7किन्तु पुरुष के लिये अपना सिर ढकना उचित नहीं है
क्योंकि वह परमेश्वर के स्वरूप और महिमा का
प्रतिबिम्ब है। किन्तु एक स्त्री अपने पुरुष की महिमा
को प्रतिबिंबित करती है 8मैं ऐसा इसलिए कहता हूँ
क्योंकि पुरुष किसी स्त्री से नहीं, बल्कि स्त्री पुरुष से
बनी है। 9पुरुष स्त्री के लिये नहीं रचा गया बल्कि स्त्री
की रचना पुरुष के लिये की गयी है। 10इसलिये परमेश्वर
ने उसे जो अधिकार दिया है, उसके प्रतीक रूप में स्त्री
को चाहिये कि वह अपना सिर ढके। उसे स्वर्गदूतों के
कारण भी ऐसा करना चाहिये। 11फिर भी प्रभु में न तो
स्त्री पुरुष से स्वतन्त्र हैं और न ही पुरुष स्त्री से। 12क्योंकि
जैसे पुरुष से स्त्री आयी, वैसे ही स्त्री ने पुरुष को जन्म
दिया। किन्तु सब कोई परमेश्वर से आते हैं। 13स्वयं
निर्णय करो। क्या जनता के बीच एक स्त्री का सिर
उघाड़े परमेश्वर की प्रार्थना करना अच्छा लगता है?
14क्या स्वयं प्रकृति तुम्हें नहीं सिखाती कि यदि कोई
पुरुष अपने बाल लम्बे बढ़ने दे तो यह उसके लिए
लज्जा की बात है, 15और यह कि एक स्त्री के लिए
यही उसकी शोभा है? वास्तव में उसे उसके लंबे बाल
एक प्राकृतिक ओढ़नी के रूप में दिये गये हैं। 16अब
इस पर यदि कोई विवाद करना चाहे तो मुझे कहना
होगा कि न तो हमारे यहाँ कोई ऐसी प्रथा है और न ही
परमेश्वर की कलीसिया में।

प्रभु का भोज

17अब यह अगला आदेश देते हुए मैं तुम्हारी प्रशंसा
नहीं कर रहा हूँ क्योंकि तुम्हारा आपस में मिलना
तुम्हारा भला करने की बजाय तुम्हें हानि पहुँचा रहा है।
18सबसे पहले यह कि मैंने सुना है कि तुम लोग सभा में
जब परस्पर मिलते हो तो तुम्हारे बीच मतभेद रहता है।
कुछ अंश तक मैं इस पर विश्वास भी करता हूँ।

"यह ... का है" भजन. 24:1; 50:12; 89:11

19(आखिरकार तुम्हारे बीच मतभेद भी होंगे ही। जिससे
कि तुम्हारे बीच में जो उचित ठहराया गया है, वह
सामने आ जाये।) 20सो जब तुम आपस में इकट्ठे होते
हो तो सचमुच प्रभु का भोज पाने के लिये नहीं इकट्ठे
होते, 21बल्कि जब तुम भोज ग्रहण करते हो तो तुममें से
हर कोई आगे बढ़ कर अपने ही खाने पर टूट पड़ता है।
और बस कोई व्यक्ति तो भूखा ही चला जाता है, जबकि
कोई व्यक्ति अत्यधिक खा-पी कर मस्त हो जाता है।
22क्या तुम्हारे पास खाने पीने के लिये अपने घर नहीं
हैं। अथवा इस प्रकार तुम परमेश्वर की कलीसिया का
अनादर नहीं करते? और जो दीन हैं उनका तिरस्कार
करने की चेष्टा नहीं करते? मैं तुमसे क्या कहूँ? इसके
लिये क्या मैं तुम्हारी प्रशंसा करूँ। इस विषय में मैं
तुम्हारी प्रशंसा नहीं करूँगा।

23क्योंकि जो सीख मैंने तुम्हें दी है, वह मुझे प्रभु से
मिली थी। प्रभु यीशु ने उस रात, जब उसे मरवा डालने
के लिये पकड़वाया गया था, एक रोटी ली 24और
धन्यवाद देने के बाद उसने उसे तोड़ा और कहा, "यह
मेरा शरीर है, जो तुम्हारे लिए है। मुझे याद करने के
लिए तुम ऐसा ही किया करो।"

25उनके भोजन कर चुकने के बाद इसी प्रकार
उसने प्याला उठाया और कहा, "यह प्याला मेरे लहू के
द्वारा किया गया एक नया वाचा है। जब कभी तुम इसे
पिओ तभी मुझे याद करने के लिये ऐसा करो।"

26क्योंकि जितनी बार भी तुम इस रोटी को खाते
हो और इस प्याले को पीते हो, उतनी ही बार जब
तक वह आ नहीं जाता, तुम प्रभु की मृत्यु का प्रचार
करते हो। 27अत: जो कोई भी प्रभु की रोटी या प्रभु के
प्याले को अनुचित रीति से खाता पीता है, वह प्रभु की
देह और उस के लहू के प्रति अपराधी होगा। 28व्यक्ति
को चाहिये कि वह पहले अपने को परखे और तब इस
रोटी को खाये और इस प्याले को पिये। 29क्योंकि प्रभु
के देह का अर्थ समझे बिना जो इस रोटी को खाता
और इस प्याले को पीता है। वह इस प्रकार खा-पी कर
अपने ऊपर दण्ड को बुलाता है। 30इसी लिये तो तुममें से
बहुत से लोग दुर्बल हैं, बीमार हैं और बहुत से तो
चिरनिद्रा में सो गये हैं। 31किन्तु यदि हमने अपने आप
को अच्छी तरह से परख लिया होता तो हमें प्रभु का
दण्ड न भोगना पड़ता।

32प्रभु हमें अनुशासित करने के लिये दण्ड देता है।
ताकि हमें संसार के साथ दंडित न किया जाये।

33इसलिये हे मेरे भाइयो, जब भोजन करने तुम इकट्ठे
होते हो तो परस्पर एक दूसरे की प्रतीक्षा करो। 34यदि
सचमुच किसी को बहुत भूख लगी हो तो उसे घर पर
ही खा लेना चाहिये ताकि तुम्हारा एकत्र होना तुम्हारे
लिये दण्ड का कारण न बने। और दूसरी बातों को जब
मैं आऊँगा, तभी सुलझाऊँगा।

पवित्र आत्मा के वरदान

12 हे भाइयो, अब मैं नहीं चाहता कि तुम आत्मा
के वरदानों के विषय में अनजान रहो। 2तुम
जानते हो कि जब तुम विधर्मी थे तब तुम्हें गूँगी जड़
मूर्तियों की ओर जैसे भटकाया जाता था, तुम वैसे ही
भटकते थे। 3सो मैं तुम्हें बताता हूँ कि परमेश्वर के
आत्मा की ओर से बोलने वाला कोई भी यह नहीं
कहता, "यीशु को शाप लगे" और पवित्र आत्मा के
द्वारा कहने वाले को छोड़ कर न कोई यह कह सकता
है, "यीशु प्रभु है।"

4हर एक को आत्मा के अलग-अलग वरदान मिले
हैं। किन्तु उन्हें देने वाली आत्मा तो एक ही है। 5 सेवाएँ
अनेक प्रकार की निश्चित की गयी हैं किन्तु हम सब
जिसकी सेवा करते हैं, वह प्रभु तो एक ही है। 6काम-काज
तो बहुत से बताये गये हैं किन्तु सभी के बीच सब कर्मों
को करने वाला वह परमेश्वर तो एक ही है। 7हर
किसी में आत्मा किसी न किसी रूप में प्रकट होता है
जो हर एक की भलाई के लिये होता है। 8किसी को
आत्मा के द्वारा परमेश्वर के ज्ञान से युक्त होकर बोलने
की योग्यता दी गयी है तो किसी को उसी आत्मा द्वारा
दिव्य ज्ञान के प्रवचन की योग्यता। 9और किसी को
उसी आत्मा द्वारा विश्वास का वरदान दिया गया है तो
किसी को चंगा करने की क्षमताएँ उसी आत्मा के द्वारा
दी गयी हैं। 10और किसी अन्य व्यक्ति को आश्चर्यपूर्ण
शक्तियाँ दी गयी हैं तो किसी दूसरे को परमेश्वर की
ओर से बोलने का सामर्थ्य दिया गया है। और किसी को
मिली है भली बुरी आत्माओं के अंतर को पहचानने
की शक्ति। किसी को अलग-अलग भाषाएँ बोलने की
शक्ति प्राप्त हुई है, तो किसी को भाषाओं की व्याख्या
करके उनका अर्थ निकालने की शक्ति। 11किन्तु यह
वही एक आत्मा है जो जिस-जिस को जैसा-जैसा ठीक
समझता है, देते हुए, इन सब बातों को पूरा करता है।

मसीह की देह

12जैसे हममें से हर एक का शरीर तो एक है, पर
उसमें अंग अनेक हैं। और यद्यपि अंगों के अनेक रहते
हुए भी उनसे देह एक ही बनती है, वैसे ही मसीह है
13क्योंकि चाहे हम यहूदी रहे हों, चाहे ग़ैर यहूदी, सेवक
रहे हों या स्वतन्त्र। एक ही देह के विभिन्न अंग बन
जाने के लिए हम सब को एक ही आत्मा द्वारा बपतिस्मा
दिया गया और प्यास बुझाने को हम सब को एक ही
आत्मा प्रदान कीगयी।

14अब देखो, मानव शरीर किसी एक अंग से ही तो
बना नहीं होता, बल्कि उसमें बहुत से अंग होते हैं।
15यदि पैर कहे, "मैं हाथ नहीं हूँ, इसलिये मेरा शरीर से
कोई सम्बन्ध नहीं।" तो इसीलिये क्या वह शरीर का
अंग नहीं रहेगा। 16इसी प्रकार यदि कान कहे, "मैं

आँख नहीं हूँ, इसलिये मैं शरीर का नहीं हूँ।" तो क्या
इसी कारण से वह शरीर का नहीं रहेगा। 17यदि एक
आँख ही सारा शरीर होता तो सुना कहाँ से जाता? यदि
कान ही सारा शरीर होता तो सूँघा कहाँ से जाता।
18किन्तु वास्तव में परमेश्वर ने जैसा ठीक समझा,
हरअंग को शरीर में वैसा ही स्थान दिया। 19सो यदि
शरीर के सारे अंग एक से हो जाते तो शरीर ही कहाँ
होता। 20किन्तु स्थिति यह है कि अंग तो अनेक होते हैं
किन्तु शरीर एक ही रहता है। 21आँख हाथ से यह नहीं
कह सकती, "मुझे तेरी आवश्यकता नहीं!" या ऐसे ही
सिर, पैरों से यह नहीं कह सकता, "मुझे तुम्हारी
आवश्यकता नहीं!"

22इसके बिल्कुल विपरीत शरीर के जिन अंगों को
हम दुर्बल समझते हैं, वे बहुत आवश्यक होते हैं। 23और
शरीर के जिन अंगों को हम कम आदरणीय समझते हैं,
उनका हम अधिक ध्यान रखते हैं। और हमारे गुप्त
अंग और अधिक शालीनता पा लेते हैं। 24जबकि हमारे
प्रदर्शनीय अंगों को इस प्रकार के उपचार की आवश्यकता
नहीं होती। किन्तु परमेश्वर ने हमारे शरीर की रचना
इस ढंग से की है जिससे उन अंगों को जो कम सुन्दर हैं
और अधिक आदर प्राप्त हो। 25ताकि देह में कहीं कोई
फूट न पड़े बल्कि देह के अंग परस्पर एक दूसरे का
समान रूप से ध्यान रखें। 26यदि शरीर का कोई एक
अंग दुख पाता है तो उसके साथ शरीर के और सभी
अंग दुखी होते हैं। यदि किसी एक अंग का मान बढ़ता
है तो उसकी प्रसन्नता में सभी अंग हिस्सा बटाते हैं।

27इस प्रकार तुम सभी लोग मसीह का शरीर हो और
अलग-अलग रूप में उसके अंग हो। 28इतना ही नहीं
परमेश्वर ने कलीसिया में पहले प्रेरितों को, दूसरे नबियों
को, तीसरे उपदेशकों को, फिर आश्चर्यकर्म करने
वालों को, फिर चंगा करने की शक्ति से युक्त व्यक्तियों
को, फिर उनको जो दूसरों की सहायता करते हैं,
प्रस्थापित किया है, फिर अगुवाई करने वालों को और
फिर उन लोगों को जो विभिन्न भाषाएँ बोल सकते हैं।
29क्या ये सभी प्रेरित हैं? ये सभी क्या नबी हैं? क्या ये
सभी उपदेशक हैं? क्या ये सभी आश्चर्यकार्य करते हैं?
30क्या इन सब के पास चंगा करने की शक्ति है? क्या ये
सभी दूसरी भाषाएँ बोलते हैं? क्या ये सभी अन्य भाषाओं
की व्याख्या करते हैं? 31हाँ, किन्तु तुम आत्मा के और
बड़े वरदान पाने के लिए यत्न करते रहो। और इन सब
के लिए उत्तम मार्ग तुम्हें अब मैं दिखाऊँगा।

प्रेम महान है

13 यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की भाषाएँ तो
बोल सकूँ किन्तु मुझमें प्रेम न हो, तो मैं एक
बजता हुआ घड़ियाल या झंकारती हुई झाँझ मात्र हूँ।
2यदि मुझमें परमेश्वर की ओर से बोलने की शक्ति हो
और मैं परमेश्वर के सभी रहस्यों को जानता होऊँतथा
समूचा दिव्य ज्ञान भी मेरे पास हो और इतना विश्वास
भी मुझमें हो कि पहाड़ों को अपने स्थान से सरका सकूँ
किन्तु मुझमें प्रेम न हो 3तो मैं कुछ नहीं हूँ। यदि मैं
अपनी सारी सम्पत्ति थोड़ी-थोड़ी कर के जरूरत मन्दों
के लिए दान कर दूँ और अब चाहे अपने शरीर तक
को जला डालने के लिए सौंप दूँ किन्तु यदि मैं प्रेम नहीं
करता तो। 4इससे मेरा भला होने वाला नहीं है।

प्रेम धैर्यपूर्ण है, प्रेम दयामय है, प्रेम में ईर्ष्या नहीं होती,
प्रेम अपनी प्रशंसा आप नहीं करता। 5वह अभिमानी
नहीं होता। वह अनुचित व्यवहार कभी नहीं करता,
वह स्वार्थी नहीं है, प्रेम कभी झुँझलाता नहीं, वह बुराइयों
का कोई लेखा-जोखा नहीं रखता। 6बुराई पर कभी
उसे प्रसन्नता नहीं होती। वह तो दूसरों के साथ सत्य पर
आनंदित होता है। 7वह सदा रक्षा करता है, वह सदा
विश्वास करता है। प्रेम सदा आशा से पूर्ण रहता है। वह
सहनशील है।

8प्रेम अमर है। जबकि भविष्यवाणी का सामर्थ्य तो
समाप्त हो जायेगा, दूसरी भाषाओं को बोलने की क्षमता
युक्त जीभें एक दिन चुप हो जायेंगी, दिव्य ज्ञान का
उपहार जाता रहेगा, 9क्योंकि हमारा ज्ञान तो अधूरा है,
हमारी भविष्यवाणियाँ अपूर्ण हैं। 10किन्तु जब पूर्णता
आयेगी तो वह अधूरापन चला जायेगा। 11जब मैं बच्चा
था तो एक बच्चे की तरह ही बोला करता था, वैसे ही
सोचता था और उसी प्रकार सोच विचार करता था,
किन्तु अब जब मैं बड़ा होकर पुरुष बन गया हूँ, तो वे
बचपने की बातें जाती रही हैं। 12क्योंकि अभी तो दर्पण
में हमें एक धुँधला सा प्रतिबिंब दिखायी पड़ रहा है
किन्तु पूर्णता प्राप्त हो जाने पर हम पूरी तरह
आमने-सामने देखेंगे। अभी तो मेरा ज्ञान आंशिक है
किन्तु समय आने पर वह परिपूर्ण होगा। वैसे ही जैसे
परमेश्वर मुझे पूरी तरह जानता है। 13इस दौरान विश्वास,
आशा और प्रेम तो बने ही रहेंगे और इन तीनों में भी
सबसे महान् है प्रेम।

आध्यात्मिक वरदानों को कलीसिया की सेवा में लगाओ

14 प्रेम के मार्ग पर प्रयत्नशील रहो। और
आध्यात्मिक वरदानों की निष्ठा के साथ
अभिलाषा करो। विशेष रूप से परमेश्वर की ओर से
बोलने की। 2क्योंकि जिसे दूसरे की भाषा में बोलने का
वरदान मिला है, वह तो वास्तव में लोगों से नहीं, बल्कि
परमेश्वर से बातें कर रहा है। क्योंकि उसे कोई समझ
नहीं पाता, वह तो आत्मा की शक्ति से रहस्यमय वाणी
बोल रहा है। 3किन्तु वह जिसे परमेश्वर की ओर से
बोलने का बरदान प्राप्त है, वह लोगों से उन्हें आत्मा में
दृढ़ता, प्रोत्साहन और चैन पहुँचाने के लिए बोल रहा है।

4जिसे विभिन्न भाषाओ में बोलने का बरदान प्राप्त है वह
तो बस अपनी आत्मा को ही सुदृढ़ करता है किन्तु जिसे
परमेश्वर की ओर से बोलने का सामर्थ्य मिला है वह
समूची कलीसिया को आध्यात्मिक रूप से सुदृढ़ बनाता
है। 5अब मैं चाहता हूँ कि तुम सभी दूसरी अनेक भाषाएँ
बोलो किन्तु इससे भी अधिक मैं यह चाहता हूँ कि तुम
परमेश्वर की ओर से बोल सको क्योंकि कलीसिया की
आध्यात्मिक सुदृढ़ता के लिये अपने कहे की व्याख्या
करने वाले को छोड़ कर, दूसरी भाषाएँ बोलने वाले से
परमेश्वर की ओर से बोलने वाला बड़ा है।

6हे भाइयो, यदि दूसरी भाषाओं में बोलते हुए मैं तुम्हारे
पास आऊँ तो इससे तुम्हारा क्या भला होगा, जब तक
कि तुम्हारे लिये मैं कोई रहस्य उद्घाटन, दिव्यज्ञान,
परमेश्वर का सन्देश या कोई उपदेश न दूँ। 7यह
बोलना तो ऐसे ही होगा जैसै किसी बाँसुरी या सारंगी
जैसे निर्जीव वाद्य की ध्वनि। यदि किसी वाद्य के स्वरों
में परस्पर स्पष्ट अन्तर नहीं होगा तो कोई कैसे पता
लगा पायेगा कि बाँसुरी या सारंगी पर कौन सी धुन
बजायी जा रही है। 8और यदि बिगुल से अस्पष्ट ध्वनि
निकलने लगे तो फिर युद्ध के लिये तैयार कौन होगा?
9इसी प्रकार किसी दूसरे की भाषा में जब तक कि तुम
साफ-साफ न बोलो, तब तक कोई कैसे समझ पायेगा
कि तुमने क्या कहा है। क्योंकि ऐसे में तुम तो बस हवा
में बोलने वाले ही रह जाओगे। 10इसमें कोई सन्देह
नहीं है कि संसार में भाँति-भाँति की बोलियाँ हैं और
उनमें से कोई भी निरर्थक नहीं है। 11सो जब तक मैं
उस भाषा का जानकार नहीं हूँ, तब तक बोलने वाले
के लिये मैं एक अजनबी ही रहूँगा। और वह बोलने
वाला मेरे लिये भी अजनबी ही ठहरेगा। 12तुम पर भी
यही बात लागू होती है क्योंकि तुम आध्यात्मिक वरदानों
को पाने के लिये उत्सुक हो। इसलिये उनमें भरपूर
होने का प्रयत्न करो, जिससे कलीसिया को
आध्यात्मिक सुदृढ़ता प्राप्त हो।

13परिणामस्वरूप जो दूसरी भाषा में बोलता है, उसे
प्रार्थना करनी चाहिये कि वह अपने कहे का अर्थ भी
बता सके। 14क्योंकि यदि मैं किसी अन्य भाषा में प्रार्थना
करूँ तो मेरी आत्मा तो प्रार्थना कर रही होती है किन्तु
मेरी बुद्धि व्यर्थ रहती है। 15तो फिर क्या करना चाहिये?
मैं अपनी आत्मा से तो प्रार्थना करूँगा ही किन्तु साथ ही
अपनी बुद्धि से भी प्रार्थना करूँगा। अपनी आत्मा से तो
उसकी स्तुति करूँगा ही किन्तु अपनी बुद्धि से भी
उसकी स्तुति करूँगा। 16क्योंकि यदि तू केवल अपनी
आत्मा से ही कोई आशीर्वाद दे तो वहाँ बैठा कोई व्यक्ति
जो बस सुन रहा है, तेरे धन्यवाद पर "आमीन" कैसे
कहेगा क्योंकि तू जो कह रहा है, उसे वह जानता ही
नहीं। 17अब देख तू तो चाहे भली-भाँति धन्यवाद दे रहा
है किन्तु दूसरे व्यक्ति की तो उससे कोई आध्यात्मिक
सुदृढ़ता नहीं होती। 18मैं परमेश्वर को धन्यवाद देता हूँ
कि मैं तुम सब से बढ़कर विभिन्न भाषाएँ बोल सकता
हूँ। 19किन्तु कलीसिया सभा के बीच किसी दूसरी भाषा
में दसियों हज़ार शब्द बोलने की अपेक्षा अपनी बुद्धि
का उपयोग करते हुए बस पाँच शब्द बोलना अच्छा
समझता हूँ ताकि दूसरों को भी शिक्षा दे सकूँ। 20हे
भाइयो, अपने विचारों में बचकाने मत रहो बल्कि
बुराइयों के विषय में अबोध बच्चे जैसे बने रहो। किन्तु
अपने चिन्तन में सयाने बनो। 21व्यवस्था के विधान में
लिखा है:

"उनका उपयोग करते हुए जो अन्य बोली बोलते हैं,
उनके मुखों का उपयोग करते हुए जो पराए हैं मैं इनसे
बात करूँगा, पर तब भी ये मेरी न सुनेंगे।"

यशायाह 28:11-12

प्रभु ऐसा ही कहता है।

22सो दूसरी भाषाएँ बोलने का वरदान अविश्वासियों
के लिए संकेत है न कि विश्वासियों के लिये। जबकि
परमेश्वर की ओर से बोलना अविश्वासियों के लिये
नहीं, बल्कि विश्वासियों के लिये है। 23सो यदि समूचा
कलीसिया एकत्र हो और हर कोई दूसरी-दूसरी भाषाओं
में बोल रहा हो तभी बाहर के लोग या अविश्वासी
भीतर आ जायें तो क्या वे तुम्हें पागल नहीं कहेंगे।
24किन्तु यदि हर कोई परमेश्वर की ओर से बोल रहा
हो और तब तक कुछ अविश्वासी या बाहर के आ जाएँ
तो क्या सब लोग उसे उसके पापों का बोध नहीं करा
देंगे। सब लोग जो कह रहे हैं, उसी पर उसका न्याय
होगा। 25जब उसके मन के भीतर छिपे भेद खुल जायेंगे
तब तक वह यह कहते हुए "सचमुच तुम्हारे बीच परमेश्वर
है" दण्डवत प्रणाम करके परमेश्वर की उपासना करेगा।

तुम्हारी सभाएँ और कलीसिया

26हे भाइयो, तो फिर क्या करना चाहिये? तुम जब
इकट्ठे होते हो तो तुममें से कोई भजन, कोई उपदेश
और कोई आध्यात्मिक रहस्य का उद्घाटन करता है।
कोई किसी अन्य भाषा में बोलता है तो कोई उसकी
व्याख्या करता है। ये सब बातें कलीसिया की आत्मिक
सुदृढ़ता के लिये की जानी चाहियें। 27यदि किसी अन्य
भाषा में बोलना है तो अधिक से अधिक दो या तीन को
ही बोलना चाहिये-बारी-बारी, एक-एक करके। और
जो कुछ कहा गया है, एक को उसकी व्याख्या करनी
चाहिये। 28यदि वहाँ व्याख्या करने वाला कोई न हो तो
बोलने वाले को चाहिये कि वह सभा में चुप ही रहे और
फिर उसे अपने आप से और परमेश्वर से ही बातें
करनी चाहियें। 29परमेश्वर की ओर से उसके दूत के
रूप में बोलने का जिन्हें वरदान मिला है, ऐसे दो या तीन
व्यक्तियों को ही बोलना चाहिये और दूसरों को चाहिये

कि जो कुछ उन्होंने कहा है, वे उसे परखते रहें। 30यदि
वहाँ किसी बैठे हुए पर किसी बात का रहस्य उद्‌घाटन
होता है तो परमेश्वर की ओर से बोल रहे पहले वक्ता
को चुप हो जाना चाहिये। 31क्योंकि तुम एक-एक
करके परमेश्वर की ओर से बोल सकते हो ताकि
सभी लोग सीखें और प्रोत्साहित हों। 32नबियों की
आत्माएँ नबियों के वश में रहती हैं। 33क्योंकि परमेश्वर
अव्यवस्था नहीं, शांति देता है। जैसा कि सन्तों की सभी
कलीसियों में होता है।

34स्त्रियों को चाहिये कि वे सभाओं में चुप रहें क्योंकि
उन्हें बोलने की अनुमति नहीं है। बल्कि जैसा कि
व्यवस्था के विधान में भी कहा गया है, उन्हें दब कर
रहना चाहिये। 35यदि वे कुछ जानना चाहती हैं तो उन्हें
घर पर अपने-अपने पति से पूछना चाहिये क्योंकि एक
स्त्री के लिये यह शोभा नहीं देता कि वह सभा में बोले।
36क्या परमेश्वर का वचन तुमसे उत्पन्न हुआ? या वह
मात्र तुम तक पहुँचा? निश्चित ही नहीं।

37यदि कोई सोचता है कि वह नबी है अथवा उसे
आध्यात्मिक वरदान प्राप्त है तो उसे पहचान लेना चाहिये
कि मैं तुम्हें जो कुछ लिख रहा हूँ, वह प्रभु का आदेश
है। 38सो यदि कोई इसे नहीं पहचान पाता तो उसे भी
नहीं पहचाना जायेगा।

39इसलिये हे मेरे भाइयो, परमेश्वर की ओर से बोलने
को तत्पर रहो तथा दूसरी भाषाओं में बोलने वालों को
भी मत रोको। 40किन्तु ये सभी बातें सही ढँग से और
व्यवस्थानुसार की जानी चाहियें।

यीशु का सुसमाचार

15 हे भाइयो, अब मैं तुम्हें उस सुसमाचार की याद
दिलाना चाहता हूँ जिसे मैंने तुम्हें सुनाया था
और तुमने भी जिसे ग्रहण किया था और जिसमें तुम
निरन्तर स्थिर बने हुए हो। 2और जिसके द्वारा तुम्हारा
उद्धार भी हो रहा है बशर्ते तुम उन शब्दों को जिनका
मैंने तुम्हें आदेश दिया था, अपने में दृढ़ता से थामे रखो।
नहीं तो तुम्हारा विश्वास धारण करना ही बेकार गया।

3जो सर्वप्रथम बात मुझे प्राप्त हुई थी, उसे मैंने तुम
तक पहुँचा दिया कि शास्त्रों के अनुसार: मसीह हमारे
पापों के लिये मरा 4और उसे दफ़ना दिया गया। और
शास्त्र कहता है कि फिर तीसरे दिन उसे जिला कर
उठा दिया गया। 5और फिर वह पतरस के सामने प्रकट
हुआ और उसके बाद बारहों प्रेरितों को उसने दर्शन
दिये। 6फिर वह पाँच सौ से भी अधिक भाइयों को एक
साथ दिखाई दिया। उनमें से बहुतेरे आज तक जीवित
हैं। यद्यपि कुछ की मृत्यु भी हो चुकी है। 7इसके बाद
वह याकूब के सामने प्रकट हुआ। और तब उसने सभी
प्रेरितों को फिर दर्शन दिये। 8और सब से अंत में उसने
मुझे भी दर्शन दिये। मैं तो समय से पूर्व असामान्य जन्मे
सतमासे बच्चे जैसा हूँ। 9क्योंकि मैं तो प्रेरितों में सबसे
छोटा हूँ। यहाँ तक कि मैं तो प्रेरित कहलाने योग्य भी
नहीं हूँ क्योंकि मैं तो परमेश्वर की कलीसिया को
सताया करता था। 10किन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से मैं
वैसा बना हूँ जैसा आज हूँ। मुझ पर उसका अनुग्रह
बेकार नहीं गया। मैंने तो उन सब से बढ़ चढ़कर
परिश्रम किया है, यद्यपि वह परिश्रम करने वाला मैं
नहीं था, बल्कि परमेश्वर का वह अनुग्रह था जो मेरे
साथ रहता था। 11सो चाहे तुम्हें मैंने उपदेश दिया हो
चाहे उन्होंने, हम सब यही उपदेश देते हैं और इसी पर
तुमने विश्वास किया है।

हमारा पुनरुत्थान

12किन्तु जब कि मसीह को मरे हुओं में से पुनरुत्थापित
किया गया तो तुममें से कुछ ऐसा क्यों कहते हो कि
मृत्यु के बाद फिर से जी उठना सम्भव नहीं है। 13और
यदि मृत्यु के बाद जी उठना है ही नहीं तो फिर मसीह
भी मृत्यु के बाद नहीं जिलाया गया। 14और यदि मसीह
को नहीं जिलाया गया तो हमारा उपदेश देना बेकार है
और तुम्हारा विश्वास भी बेकार है। 15और हम भी
फिर तो परमेश्वर के बारे में झूठे गवाह ठहरते हैं
क्योंकि हमने परमेश्वर के सामने कसम उठा कर यह
साक्षी दी है कि उसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया।
किन्तु उनके कथन के अनुसार यदि मरे हुए जिलाये
नहीं जाते तो फिर परमेश्वर ने मसीह को भी नहीं
जिलाया। 16क्योंकि यदि मरे हुए नहीं जिलाये जाते हैं तो
मसीह को भी नहीं जिलाया गया। 17और यदि मसीह को
फिर से जीवित नहीं किया गया है, फिर तो तुम्हारा
विश्वास ही निरर्थक है और तुम अभी भी अपने पापों
में फँसे हो। 18हाँ, फिर तो जिन्होंने मसीह के लिए अपने
प्राण दे दिये, वे यूँ ही नष्ट हुए। 19यदि हमने केवल
अपने इस भौतिक जीवन के लिये ही यीशु मसीह में
अपनी आशा रखी है तब तो हम और सभी लोगों से
अधिक अभागे हैं। 20किन्तु अब वास्तविकता यह है
कि मसीह को मरे हुओं में से जिलाया गया है। वह मरे
हुओं की फ़सह का पहला फल है। 21क्योंकि जब एक
मनुष्य के द्वारा मृत्यु आयी तो एक मनुष्य के द्वारा ही
मृत्यु से पुनर्जीवित हो उठना भी आया। 22क्योंकि ठीक
वैसे ही जैसे आदम के कर्मों के कारण हर किसी के
लिए मृत्यु आयी, वैसे ही मसीह के द्वारा सब को फिर से
जिला उठाया जायेगा 23किन्तु हर एक को उसके अपने
कर्म के अनुसार सबसे पहले मसीह को, जो फसल का
पहला फल है और फिर उसके पुन: आगमन पर
उनको, जो मसीह के हैं। 24इसके बाद जब मसीह सभी
शासकों, अधिकारियों, हर प्रकार की शक्तियों का अंत
करके राज्य को परम पिता परमेश्वर के हाथों सौंप
देगा, तब प्रलय हो जायेगी। 25किन्तु जब तक परमेश्वर

मसीह के शत्रुओं को उसके पैरों तले न कर दे तब
तक उसका राज्य करते रहना आवश्यक है। **26**सबसे
अंतिम शत्रु के रूप में मृत्यु का नाश किया जायेगा।
27क्योंकि "परमेश्वर ने हर किसी को मसीह के चरणों
के अधीन रखा है।* अब देखो जब शास्त्र कहता है,
"सब कुछ" को उसके अधीन कर दिया गया है। तो
जिसने "सब कुछ" को उसके चरणों के अधीन किया
है, वह स्वयं इससे अलग रहा है। **28**और जब सब कुछ
मसीह के अधीन कर दिया गया है, तो यहाँ तक कि
स्वयं पुत्र को भी उस परमेश्वर के अधीन कर दिया
जायेगा जिसने सब कुछ को मसीह के अधीन कर दिया
ताकि हर किसी पर पूरी तरह परमेश्वर का शासन हो।
29नहीं तो जिन्होंने अपने प्राण दे दिये हैं, उनके कारण
जिन्होंने बपतिस्मा लिया है, वे क्या करेंगे। यदि मरे हुए
कभी पुनर्जीवित होते ही नहीं तो लोगों को उनके लिये
बपतिस्मा दिया ही क्यों जाता है?
30और हम भी हर घड़ी संकट क्यों झेलते रहते हैं?
31भाइयो! तुम्हारे लिए मेरा वह गर्व जिसे मैं हमारे प्रभु
यीशु मसीह में स्थित होने के नाते रखता हूँ, उसे साक्षी
करके शपथपूर्वक कहता हूँ कि मैं हर दिन मरता हूँ।
32यदि मैं इफ्रिसुस में जँगली पशुओं के साथ मानवीय
स्तर पर ही लड़ा था तो उससे मुझे क्या मिला। यदि मरे
हुए जिलाये नहीं जाते, "तो आओ, खायें, पीएँ और मौज
मनायें क्योंकि कल तो मर ही जाना है।"*
33भटकना बंद करो: "बुरी संगति से अच्छी आदतें
नष्ट हो जाती हैं।" **34**होश में आओ, अच्छा जीवन
अपनाओ, जैसा कि तुम्हें होना चाहिये। पाप करना बंद
करो। क्योंकि तुममें से कुछ तो ऐसे हैं जो परमेश्वर के
बारे में कुछ भी नहीं जानते। मैं यह इसलिये कह रहा हूँ
कि तुम्हें लज्जा आए।

हमें कैसी देह मिलेगी?

35किन्तु कोई पूछ सकता है, "मरे हुए कैसे जिलाये
जाते हैं? और वे फिर कैसी देह धारण करके आते हैं?"
36तुम कितने मूर्ख हो। तुम जो बोते हो वह जब तक
पहले मर नहीं जाता, जीवित नहीं होता। **37**और जहाँ
तक जो तुम बोते हो, उसका प्रश्न है, तो जो पौधा
विकसित होना है, तुम उस भरेपूरे पौधे को तो धरती में
नहीं बोते। बस केवल बीज बोते हो, चाहे वह गेहूँ का
दाना हो और चाहे कुछ और। **38**फिर परमेश्वर जैसा
चाहता है, वैसा रूप उसे देता है। हर बीज को वह
उसका अपना शरीर प्रदान करता है। **39**सभी जीवित
प्राणियों के शरीर एक जैसे नहीं होते। मनुष्यों का शरीर
एक तरह का होता है जबकि पशुओं का शरीर दूसरी
तरह का। चिड़ियाओं की देह अलग प्रकार की होती है
और मछलियों की अलग। **40**कुछ देह दिव्य होती हैं
और कुछ पार्थिव किन्तु दिव्य देह की आभा एक
प्रकार की होती है और पार्थिव शरीरों की दूसरे प्रकार
की। **41**सूरज का तेज एक प्रकार का होता है और चाँद
का दूसरे प्रकार का। तारों में भी एक भिन्न प्रकार का
प्रकाश रहता है। और हाँ, तारों का प्रकाश भी एक
दूसरे से भिन्न रहता है।
42सो जब मरे हुए जी उठेंगे तब भी ऐसा ही होगा। वह
देह जिसे धरती में दफना कर "बोया" गया है, नाशमान
है किन्तु वह देह जिसका पुनरुत्थान हुआ है, अविनाशी
है। **43**वह काया जो धरती में "दफनाई" गयी है, अनादरपूर्ण
है किन्तु वह काया जिसका पुनरुत्थान हुआ है, महिमा
से मंडित है। वह काया जिसे धरती मे "गाड़ा" गया है,
दुर्बल है किन्तु वह काया जिसे पुनर्जीवित किया गया है,
शक्तिशाली है। **44**जिस काया को धरती में "दफनाया"
गया है, वह प्राकृतिक है किन्तु जिसे पुनर्जीवित किया
गया है, वह आध्यात्मिक शरीर है। यदि प्राकृतिक शरीर
होते हैं तो आध्यात्मिक शरीरों का भी अस्तित्व है।
45शास्त्र कहता है: "पहला मनुष्य (आदम) एक सजीव
प्राणी बना।"* किन्तु अंतिम आदम (मसीह) जीवनदाता
आत्मा बना। **46**आध्यात्मिक पहले नहीं आता, बल्कि
पहले आता है भौतिक और फिर उसके बाद ही आता
है आध्यात्मिक। **47**पहले मनुष्य को धरती की मिट्टी से
बनाया गया और दूसरा मनुष्य (मसीह) स्वर्ग से आया।
48जैसे उस मनुष्य की रचना मिट्टी से हुई, वैसे ही सभी
लोग मिट्टी से ही बने। और उस दिव्य पुरुष के समान
अन्य दिव्य पुरुष भी स्वर्गीय हैं। **49**सो जैसे हम उस मिट्टी
से बने का रूप धारण करते हैं, वैसे ही उस स्वर्गिक
का रूप भी हम धारणकरेंगे।
50हे भाइयो, मैं तुम्हें यह बता रहा हूँ: मांस और लहू
(हमारे ये पार्थिव शरीर) परमेश्वर के राज्य के
उत्तराधिकार नहीं पा सकते। और न ही जो विनाशमान
है, वह अविनाशी का उत्तराधिकारी हो सकता है।
51सुनो, मैं तुम्हें एक रहस्यपूर्ण सत्य बताता हूँ: हम सभी
मरेंगे नहीं, बल्कि हम सब बदल दिये जायेंगे। **52**जब
अंतिम तुरही बजेगी तब पलक झपकते एक क्षण में ही
ऐसा हो जायेगा क्योंकि तुरही बजेगी और मरे हुए अमर
हो कर जी उठेंगे और हम जो अभी जीवित हैं, बदल
दिये जायेंगे। **53**क्योंकि इस नाशवान देह का अविनाशी
चोले को धारण करना आवश्यक है और इस मरणशील
काया का अमर चोला धारण कर लेना अनिवार्य है।
54सो जब यह नाशमान देह अविनाशी चोले को धारण
कर लेगी और वह मरणशील काया अमर चोले को
ग्रहण कर लेगी तो शास्त्र का लिखा यह पूरा हो जायेगा:

"परमेश्वर ... रखा है" भजन. 8:6

"आओ ... जाना है" यशा. 22:13; 56:12

"पहला ... बना" उत्पत्ति 2:7

“विजय ने मृत्यु को निगल लिया है।” *यशायाह 25:8*

55“हे मृत्यु तेरी विजय कहाँ है। ओ मृत्यु, तेरा दंश
कहाँ है?” *होशे 13:14*

56पाप मृत्यु का दंश है और पाप को शक्ति मिलती है
व्यवस्था से। 57किन्तु परमेश्वर का धन्यवाद है जो प्रभु
यीशु मसीह के द्वारा हमें विजय दिलाता है।
58सो मेरे प्यारे भाइयो, अटल बने डटे रहो। प्रभु के
कार्य के प्रति अपने आपको सदा पूरी तरह समर्पित
कर दो। क्योंकि तुम तो जानते ही हो कि प्रभु में किया
गया तुम्हारा कार्य व्यर्थ नहीं है।

दूसरे विश्वासियों के लिये भेंट

16 अब देखो, संतों के लिये दान इकट्ठा करने
के बारे में मैंने गलातिया की कलीसियाओं को
जो आदेश दिया है तुम भी वैसे ही करो। 2हर रविवार
को अपनी आय में से कुछ न कुछ अपने घर पर ही
इकट्ठा करते रहो। ताकि जब मैं आऊँ, उस समय
दान इकट्ठा न करना पड़े। 3मेरे वहाँ पहुँचने पर जिस
किसी व्यक्ति को तुम चाहोगे, मैं उसे परिचय पत्र देकर
तुम्हारा उपहार यरुशलेम ले जाने के लिए भेज दूँगा।
4और यदि मेरा जाना भी उचित हुआ तो वे मेरे साथ ही
चले जायेंगे।

पौलुस की योजनाएँ

5मैं जब मकिदुनिया होकर जाऊँगा तो तुम्हारे पास
भी आऊँगा क्योंकि मैसिडोनिया से होते हुए जाने का
कार्यक्रम मैं निश्चित कर चुका हूँ। 6हो सकता है मैं
कुछ समय तुम्हारे साथ ठहरूँ या सर्दियाँ ही तुम्हारे साथ
बिताऊँ ताकि जहाँ कहीं मुझे जाना हो, तुम मुझे विदा
कर सको। 7मैं यह तो नहीं चाहता कि वहाँ से जाते जाते
ही बस तुमसे मिल लूँ बल्कि मुझे तो आशा है कि मैं
यदि प्रभु ने चाहा तो कुछ समय तुम्हारे साथ रहूँगा भी।
8मैं पिन्तेकुस्त के उत्सव तक इफिसुस में ही ठहरूँगा।
9क्योंकि ठोस काम करने की सम्भावनाओं का वहाँ
बड़ा द्वार खुला है और फिर वहाँ मेरे विरोधी भी तो
बहुत से हैं।
10यदि तिमुथियुस आ पहुँचे तो ध्यान रखना उसे
तुम्हारे साथ कष्ट न हो क्योंकि मेरे समान ही वह भी
प्रभु का काम कर रहा है। 11इसलिये कोई भी उसे
छोटा न समझे। उसे उसकी यात्रा पर शान्ति के साथ
विदा करना ताकि वह मेरे पास आ पहुँचे। मैं दूसरे
भाइयों के साथ उसके आने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।
12अब हमारे भाई अपुल्लौस की बात यह है कि मैने
उसे दूसरे भाइयों के साथ तुम्हारे पास जाने को अत्यधिक
प्रोत्साहित किया है। किन्तु परमेश्वर की यह इच्छा
बिल्कुल नहीं थी कि वह अभी तुम्हारे पास आता। सो
अवसर पाते ही वह आ जायेगा।

पौलुस के पत्र की समाप्ति

13सावधान रहो। दृढ़ता के साथ अपने विश्वास में
अटल बने रहो। 14साहसी बनो, शक्तिशाली बनो। तुम
जो कुछ करो, प्रेम से करो। 15तुम लोग स्तिफनुस के
घराने को तो जानते ही हो कि वे अरवाया की फसल
के पहले फल हैं। उन्होने परमेश्वर के पुरुषों की सेवा
का बीड़ा उठाया है। सो भाइयो! तुम से मेरा निवेदन है
कि 16तुम लोग भी अपने आप को ऐसे लोगों की और
हर उस व्यक्ति की अगुवाई में सौंप दो जो इस काम से
जुड़ता है और प्रभु के लिये परिश्रम करता है।
17स्तिफ़नुस, फुरतुनातुस और अखइकुस की
उपस्थिति से मैं प्रसन्न हूँ। क्योंकि मेरे लिये जो तुम नहीं
कर सके, वह उन्होंने कर दिखाया। 18उन्होंने मेरी
तथा तुम्हारी आत्मा को आनन्दित किया है। इसलिये
ऐसे लोगों का सम्मानकरो। 19एशिया प्रान्त की
कलीसियाओं की ओर से तुम्हें प्रभु में नमस्कार। अक्विला
और प्रिस्किल्ला! उनके घर पर एकत्र होने वाली
कलीसिया की ओर से तुम्हें हार्दिक नमस्कार। 20सभी
बंधुओं की ओर से तुम्हें नमस्कार।पवित्र चुम्बन के
साथ तुम आपस में एक दूसरे का सत्कार करो।
21मैं, पौलुस, तुम्हें अपने हाथों से नमस्कार लिख
रहा हूँ।
22यदि कोई प्रभु में प्रेम नहीं रखे तो उसे अभिशाप
मिले। हमारे प्रभु आओ!*
23प्रभु यीशु का अनुग्रह तुम्हें प्राप्त हो। 24यीशु मसीह
में तुम्हारे प्रति मेरा प्रेम तुम सबके साथ रहे।

हमारे प्रभु आओ अरामिक भाषा मे: “मारनाथा।”

2 कुरिन्थियों

1 परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु के प्रेरित पौलुस
तथा हमारे भाई तिमुथियुस की ओर से कुरिन्थुस
परमेश्वर की कलीसिया तथा अखाया के समूचे क्षेत्र
के पवित्र जनों के नाम:
2हमारे परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह
की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले।

पौलुस का परमेश्वर को धन्यवाद

3हमारे प्रभु यीशु मसीह का परम पिता परमेश्वर
धन्य है। वह करुणा का स्वामी है और आनन्द का स्रोत
है। 4हमारी हर विपत्ति में वह हमें शांति देता है ताकि
हम भी हर प्रकार की विपत्ति में पड़े लोगों को वैसे ही
शांति दे सकें, जैसे परमेश्वर ने हमें दी है। 5क्योंकि जैसे
मसीह की यातनाओं में हम सहभागी हैं, वैसे ही मसीह
के द्वारा हमारा आनन्द भी तुम्हारे लिये उमड़ रहा है।
6यदि हम कष्ट उठाते हैं तो वह तुम्हारे आनन्द और
उद्धार के लिए है। यदि हम आनन्दित हैं तो वह तुम्हारे
आनन्द के लिये है। यह आनन्द उन्हीं यातनाओं को
जिन्हें हम भी सह रहे हैं तुम्हें धीरज के साथ सहने को
प्रेरित करता है। 7तुम्हारे विषय में हमें पूरी आशा है
क्योंकि हम जानते हैं कि जैसे हमारे कष्टों को तुम
बँटाते हो, वैसे ही हमारे आनन्द में भी तुम्हारा भाग है।
8हे भाइयो, हम यह चाहते हैं कि तुम उन यातनाओं
के बारे में जानो जो हमें एशिया में झेलनी पड़ी थीं। वहाँ
हम, हमारी सहन शक्ति की सीमा से कहीं अधिक बोझ
के तले दब गये थे। यहाँ तक कि हमें जीने तक की
कोई आशा नहीं रह गयी थी। 9हाँ अपने–अपने मन में
हमें ऐसा लगता था जैसे हमें मृत्यु–दण्ड दिया जा चुका है
ताकि हम अपने आप पर और अधिक भरोसा न रख
कर उस परमेश्वर पर भरोसा करें जो मरे हुए को भी
फिर से जिला देता है। 10हमें उस भयानक मृत्यु से उसी
ने बचाया और हमारी वर्तमान परिस्थितियों में भी वही
हमें बचाता रहेगा। हमारी आशा उसी पर टिकी है। वही
हमें आगे भी बचाएगा। 11यदि तुम भी हमारी ओर से
प्रार्थना करके सहयोग दोगे तो हमें बहुत से लोगों की
प्रार्थनाओं द्वारा परमेश्वर का जो अनुग्रह मिला है,
उसके लिये बहुत से लोगों को हमारी ओर से धन्यवाद
देने का कारण मिल जायेगा।

पौलुस की योजनाओं में परिवर्तन

12हमें इसका गर्व है कि हम यह बात साफ मन से
कह सकते हैं कि हमने इस जगत के साथ और
खासकर तुम लोगों के साथ परमेश्वर के अनुग्रह के
अनुरूप व्यवहार किया है। हमने उस सरलता और
सच्चाई के साथ व्यवहार किया है जो परमेश्वर से
मिलती है न कि दुनियावी बुद्धि से। 13हाँ। इसीलिये हम
उसे छोड़ तुम्हें बस और कुछ नहीं लिख रहे हैं, जिससे
तुम हमें पूरी तरह वैसे ही समझ लोगे। 14जैसे तुमने हमें
आंशिक रूप से समझा है। तुम हमारे लिये वैसे ही गर्व
कर सकते हो जैसे हम तुम्हारे लिये उस दिन गर्व करेंगे
जब हमारा प्रभु यीशु फिर आयेगा।
15और इसी विश्वास के कारण मैंने पहले तुम्हारे
पास आने की ठानी थी ताकि तुम्हें दोबारा से आशीर्वाद
का लाभ मिल सके। 16मैं सोचता हूँ कि मकिदुनिया
जाते हुए तुमसे मिलूँ और जब मकिदुनिया से लौटूँ तो
फिर तुम्हारे पास जाऊँ। और फिर, तुम्हारे द्वारा ही
यहूदिया के लिये विदा किया जाऊँ। 17मैंने जब ये योजनाएँ
बनायी थीं, तो मुझे कोई संशय नहीं था। या मैं जो
योजनाएँ बनाता हूँ तो क्या उन्हें सांसारिक ढंग से बनाता
हूँ कि एक ही समय "हाँ, हाँ" भी कहता रहूँ और "ना,
ना" भी करता रहूँ।
18परमेश्वर विश्वसनीय है और वह इसकी साक्षी
देगा कि तुम्हारे प्रति हमारा जो वचन है एक साथ "हाँ"
और "ना" नहीं कहता। 19क्योंकि तुम्हारे बीच जिस
परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह का हमने, यानी सिलवानुस,
तिमुथियुस और मैंने, प्रचार किया है, वह "हाँ" और
"ना" दोनों एक साथ नहीं है बल्कि उसके द्वारा एक
चिरन्तन "हाँ" की ही घोषणा की गयी है। 20क्योंकि
परमेश्वर ने जो अनन्त प्रतिज्ञाएँ की हैं, वे यीशु में सब
के लिए "हाँ" बन जाती हैं। इसीलिये हम उसके द्वारा भी
जो "आमीन" कहते हैं, वह परमेश्वर की ही महिमा के
लिये होता है।
21वह जो तुम्हें मसीह के व्यक्ति के रूप में हमारे साथ
सुनिश्चित करता है और जिसने हमें भी अभिशिक्त
किया है वह परमेश्वर ही है।
22जिसने हम पर अपने स्वामित्व की मुहर लगायी
और हमारे भीतर बयाने के रूप में वह पवित्र आत्मा दी

जो इस बात का आश्वासन है कि जो देने का वचन
उसने हमें दिया है, उसे वह हमें देगा।
23साक्षी के रूप में परमेश्वर की दुहाई देते हुए और
अपने जीवन की शपथ लेते हुए मैं कहता हूँ कि मैं
दोबारा कुरिन्थुस इसलिये नहीं आया था कि मैं तुम्हें
पीड़ा से बचाना चाहता था। 24इसका अर्थ यह नहीं है
कि हम तुम्हारे विश्वास पर काबू पाना चाहते हैं। तुम
तो अपने विश्वास में अड़िग हो। बल्कि बात यह है कि
हम तो तुम्हारी प्रसन्नता के लिए तुम्हारे सहकर्मी हैं।
2 इसीलिए मैंने यह निश्चय कर लिया था कि तुम्हें
फिर से दुःख देने तुम्हारे पास न आऊँ। 2क्योंकि
यदि मैं तुम्हें दुखी करूँगा तो फिर भला ऐसा कौन होगा
जो मुझे सुखी करेगा? सिवाय तुम्हें जिन्हें मैंने दुःख दिया
है। 3यही बात तो मैंने तुम्हें लिखी है कि जब मैं तुम्हारे
पास आऊँ तो जिनसे मुझे आनन्द मिलना चाहिये, उनके
द्वारा मुझे दुःख न पहुँचाया जाये। क्योंकि तुम सब में
मेरा यह विश्वास रहा है कि मेरी प्रसन्नता में ही तुम सब
प्रसन्न होगे। 4क्योंकि तुम्हें मैंने दुःख भरे मन और वेदना
के साथ आँसू बहा-बहा कर यह लिखा है। पर तुम्हें
दुःखी करने के लिये नहीं, बल्कि इस लिये कि तुम्हारे
प्रति जो मेरा प्रेम है, वह कितना महान् है, तुम इसे जान
सको।

बुरा करने वाले को क्षमा कर

5किन्तु यदि किसी ने मुझे कोई दुःख पहुँचाया है तो
वह मुझे ही नहीं, बल्कि किसी न किसी मात्रा में तुम
सब को पहुँचाया है। 6ऐसे व्यक्ति को तुम्हारे समुदाय ने
जो दण्ड दे दिया है, वही पर्याप्त है। 7इसलिये तुम तो अब
उसके विपरीत उसे क्षमा कर दो और उसे प्रोत्साहित
करो ताकि वह कहीं बढ़े चढ़े दुःख में ही डूब न जाये।
8इसीलिये मेरी तुमसे विनती है कि तुम उसके प्रति
अपने प्रेम को बढ़ाओ। 9यह मैंने तुम्हें यह देखने के
लिये लिखा है कि तुम परीक्षा में पूरे उतरते हो कि नहीं
और सब बातों में आज्ञाकारी रहोगे या नहीं। 10किन्तु
यदि तुम किसी को किसी बात के लिये क्षमा करते हो
तो उसे मैं भी क्षमा करता हूँ और जो कुछ मैंने क्षमा
किया है (यदि कुछ क्षमा किया है) तो वह मसीह की
उपस्थिति में तुम्हारे लिये ही किया है। 11ताकि हम
शैतान से मात न खा जायें। क्योंकि उसकी चालों से हम
अनजान नहीं हैं।

पौलुस की अशांति

12जब मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने के लिये
मैं त्रोवास आया तो वहाँ मेरे लिये प्रभु का द्वार खुला
हुआ था। 13अपने भाई तितुस को वहाँ न पा कर मेरा
मन बहुत व्याकुल था। सो उनसे विदा लेकर मैं मकिदुनिया
को चल पड़ा।

मसीह से विजय

14किन्तु परमेश्वर धन्य है जो मसीह के द्वारा अपने
विजय-अभियान में हमें सदा राह दिखाता है। और
हमारे द्वारा हर कहीं अपने ज्ञान की सुगंध फैलाता है।
15क्योंकि उनके लिये, जो अभी उद्धार की राह पर हैं
और उनके लिये भी जो विनाश के मार्ग पर हैं, हम
मसीह की परमेश्वर को समर्पित मधुर भीनी सुगंधित
धूप हैं 16किन्तु उनके लिये जो विनाश के मार्ग पर हैं,
यह मृत्यु की ऐसी दुर्गन्ध है, जो मृत्यु की ओर ले जाती
है। पर उनके लिये जो उद्धार के मार्ग पर बढ़ रहे हैं,
यह जीवन की ऐसी सुगंध है, जो जीवन की ओर
अग्रसर करती है। किन्तु इस काम के लिए सुपात्र कौन
हैं? 17परमेश्वर के वचन को अपने लाभ के लिये,
उसमें मिलावट करके बेचने वाले बहुत से दूसरे लोगों
जैसे हम नहीं हैं। नहीं! हम तो परमेश्वर के सामने
परमेश्वर की ओर से भेजे हुए व्यक्तियों के समान
मसीह में स्थित होकर, सच्चाई के साथ बोलते हैं।

नयी वाचा

3 इससे क्या ऐसा लगता है कि हम फिर से अपनी
प्रशंसा अपने आप करने लगे हैं? अथवा क्या हमें
तुम्हारे लिये या तुमसे परिचय-पत्र लेने की आवश्यकता
है? जैसा कि कुछ लोग करते हैं। निश्चय ही नहीं
2हमारा पत्र तो तुम स्वयं हो जो हमारे मन में लिखा है,
जिसे सभी लोग जानते हैं और पढ़ते हैं 3और तुम भी तो
ऐसा ही दिखाते हो मानो तुम मसीह का पत्र हो। जो
हमारी सेवा का परिणाम है। जिसे स्याही से नहीं बल्कि
सजीव परमेश्वर की आत्मा से लिखा गया है। जिसे
पथरीली शिलाओं* पर नहीं बल्कि मनुष्य के हृदय
पटल पर लिखा गया है।
4हमें मसीह के कारण परमेश्वर के सामने ऐसा दावा
करने का भरोसा है। 5ऐसा नहीं है कि हम अपने आप
में इतने समर्थ हैं जो सोचने लगे हैं कि हम अपने आप
से कुछ कर सकते हैं बल्कि हमें सामर्थ्य तो परमेश्वर
से मिलता है। 6उसी ने हमें एक नये करार का सेवक
बनने योग्य ठहराया है। यह कोई लिखित संहिता नहीं है
बल्कि आत्मा का वाचा है क्योंकि लिखित संहिता तो
मारती है जबकि आत्मा जीवन देता है।

पौलुस की सेवा मूसा की सेवा से महान् है

7किन्तु वह सेवा जो मृत्यु से युक्त थी यानी व्यवस्था
का विधान जो पत्थरों पर अंकित किया गया था उसमें
इतना तेज था कि इस्राएल के लोग मूसा के उस तेजस्वी
मुख को एकटक न देख सके। और यद्यपि उस का वह

शिलाओं परमेश्वर ने सिनाई पर्वत पर मूसा को जो व्यवस्था का विधान दिया था वह शिला पटलो पर लिखा हुआ था। देखें निर्गमन 24:12; 25:16

तेज बाद में क्षीण हो गया। 8फिर भला आत्मा से युक्त
सेवा और अधिक तेजस्वी क्यों नहीं होगी। 9और फिर
जब दोषी ठहराने वाली सेवा में इतना तेज है तो उस
सेवा में कितना अधिक तेज होगा जो धर्मी ठहराने वाली
सेवा है। 10क्योंकि जो पहले तेज से परिपूर्ण था वह अब
उस तेज के सामने जो उससे कहीं अधिक तेजस्वी है,
तेज रहित हो गया है। 11क्योंकि वह सेवा जिसका
तेजहीन हो जाना निश्चित था, वह तेजस्वी थी, तो जो
नित्य है, वह कितनी तेजस्वी होगी।

12अपनी इसी आशा के कारण हम इतने निर्भय हैं।
13हम उस मूसा के जैसे नहीं हैं जो अपने मुख पर पर्दा
डाले रहता था कि कहीं इस्राएल के लोग (यहूदी)
अपनी आँखें गड़ा कर जिसका विनाश सुनिश्चित था,
उस सेवा के अंत को न देख लें। 14किन्तु उनकी बुद्धि
जड़ हो गयी थी, क्योंकि आज तक जब वे उस पुराने
वाचा को पढ़ते हैं, तो वही पर्दा उन पर बिना हटाये पड़ा
रहता है। क्योंकि वह पर्दा बस मसीह के द्वारा ही हटाया
जाता है। 15आज तक जब जब मूसा का ग्रंथ पढ़ा जाता
है तो पढ़ने वालों के मन पर वह पर्दा पड़ा ही रहता है।
16किन्तु जब किसी का हृदय प्रभु की ओर मुड़ता है तो
वह पर्दा हटा दिया जाता है। 17देखो। जिस प्रभु की ओर
मैं इंगित कर रहा हूँ, वही आत्मा है। और जहाँ प्रभु की
आत्मा है, वहाँ छुटकारा है। 18सो हम सभी अपने खुले
मुख के साथ दर्पण में प्रभु के तेज का जब ध्यान करते
हैं तो हम भी वैसे ही होने लगते हैं और हमारा तेज
अधिकाधिक बढ़ने लगता है। यह तेज उस प्रभु से ही
प्राप्त होता है। यानी आत्मा से।

माटी के भाँडों में अध्यात्म का धन

4 क्योंकि परमेश्वर केअनुग्रह से यह सेवा हमें प्राप्त
हुई है, इसीलिये हम निराश नहीं होते। 2हमने तो
लज्जापूर्ण गुप्त कार्यो को छोड़ दिया है। हम कपट नहीं
करते और न ही हम परमेश्वर के वचन में मिलावट
करते हैं, बल्कि सत्य को सरल रूप में प्रकट करके
लोगों की चेतना में परमेश्वर के सामने अपने आप को
प्रशंसा के योग्य ठहराते हैं। 3जिस सुसमाचार का हम
प्रचार करते हैं, उस पर यदि कोई पर्दा पड़ा है तो यह
केवल उनके लिये पड़ा है, जो विनाश की राह पर चल
रहे हैं। 4इस युग के स्वामी (शैतान) ने इन अविश्वासियों
की बुद्धि को अंधा कर दिया है ताकि वे परमेश्वर के
साक्षात् प्रतिरूप मसीह की महिमा के सुसमाचार से फूट
रहे प्रकाश को न देख पायें। 5हम स्वयं अपना प्रचार
नहीं करते बल्कि प्रभु के रूप में मसीह यीशु का
उपदेश देते हैं। और अपने बारे में तो यही कहते हैं कि
हम यीशु के नाते तुम्हारे सेवक हैं। 6क्योंकि उसी
परमेश्वर ने, जिसने कहा था, "अंधकार से ही प्रकाश
चमकेगा" वही हमारे हृदयों में प्रकाशित हुआ है, ताकि
हमें यीशु मसीह के व्यक्तित्व में परमेश्वर की महिमा
के ज्ञान की ज्योति मिल सके।

7किन्तु हम जैसे मिट्टी के भाँडों में यह सम्पत्ति इसलिये
रखी गयी है कि यह अलौकिक शक्ति हमारी नहीं;
बल्कि परमेश्वर की सिद्ध हो। 8हम हर समय हर
किसी प्रकार से कठिन दबावों में जीते हैं, किन्तु हम
कुचले नहीं गये हैं। हम घबराये हुए हैं किन्तु निराश
नहीं हैं। 9हमें यातनाएँ दी जाती हैं किन्तु हम छोड़े नहीं
गये हैं। हम झुका दिये गये हैं, पर नष्ट नहीं हुए हैं।
10हम सदा अपनी देह में यीशु की मृत्यु को हर कहीं
लिये रहते हैं। ताकि यीशु का जीवन भी हमारी देहों में
स्पष्ट रूप से प्रकट हो। 11यीशु के कारण हम जीवितों
को निरन्तर मौत के हाथों सौंपा जाता है ताकि यीशु का
जीवन भी नाशवान शरीरों में स्पष्ट रूप से उजागर हो।
12इसी से मृत्यु हममें और जीवन तुममें सक्रिय हैं।

13शास्त्र में लिखा है, "मैंने विश्वास किया था इसीलिये
मैं बोला।" हममें भी विश्वास की वही आत्मा है और
हम भी विश्वास करते हैं इसलिए हम भी बोलते हैं।
14क्योंकि हम जानते हैं कि जिसने प्रभु यीशु को मरे
हुओं में से जिला कर उठाया, वह हमें भी उसी तरह
जीवित करेगा जैसे उसने यीशु को जिलाया था। और
हमें भी तुम्हारे साथ अपने सामने खड़ा करेगा। 15ये सब
बातें तुम्हारे लिये ही की जा रही हैं, ताकि अधिक से
अधिक लोगों में फैलती जा रही परमेश्वर का अनुग्रह,
परमेश्वर को महिमा मंडित करने वाले अधिकाधिक
धन्यवाद देने में प्रतिफलित हो सके।

विश्वास से जीवन

16इसलिए हम निराश नहीं होते। यद्यपि हमारे भौतिक
शरीर क्षीण होते जा रहे हैं, तो भी हमारी अंतरात्मा
प्रतिदिन नयी से नयी होती जा रही है। 17हमारा पल भर
का यह छोटा-मोटा दुःख एक अनन्त अतुलनीय महिमा
पैदा कर रहा है। 18जो कुछ देखा जा सकता है, हमारी
आँखें उस पर नहीं टिकी हैं, बल्कि अदृश्य पर टिकी
हैं। क्योंकि जो देखा जा सकता है, वह विनाशी है,
जबकि जिसे नहीं देखा जा सकता, वह अविनाशी है।

5 क्योंकि हम जानते हैं कि हमारी यह काया अर्थात्
यह तम्बू जिसमें हम इस धरती पर रहते हैं गिरा
दिया जाये तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग में एक
चिरस्थायी भवन मिल जाता है जो मनुष्य के हाथों बना
नहीं होता। 2सो हम जब तक इस आवास में हैं, हम
रोते-धोते रहते हैं और यही चाहते रहते हैं कि अपने
स्वर्गीय भवन में जा बसें। 3(निश्चय ही हमारी यह
धारणा है कि हम उसे पायेंगे और फिर बेघर नहीं
रहेंगे)। 4हममें से वे जो इस तम्बू यानी भौतिक शरीर में
स्थित हैं, बोझ से दबे कराह रहे हैं। कारण यह है कि
हम इन वस्त्रों को त्यागना नहीं चाहते बल्कि उनके ही

ऊपर उन्हें धारण करना चाहते हैं ताकि जो कुछ
नाशवान है, उसे अनन्त जीवन निगल ले। 5जिसने हमें
इस प्रयोजन के लिये ही तैयार किया है, वह परमेश्वर
ही है। उसी ने इस आश्वासन के रूप में कि अपने
वचन के अनुसार वह हमको देगा, बयाने के रूप में
हमें आत्मा दी है।

6हमें पूरा विश्वास है, क्योंकि हम जानते हैं कि जब
तक हम अपनी देह में रह रहे हैं, प्रभु से दूर हैं।
7क्योंकि हम विश्वास के सहारे जीते हैं। बस आँखों
देखी के सहारे नहीं। 8हमें विश्वास है, इसी से मैं कहता
हूँ कि हम अपनी देह को त्याग कर प्रभु के साथ रहने
को अच्छा समझते हैं। 9इसी से हमारी यह अभिलाषा है
कि हम चाहे उपस्थित रहें और चाहे अनुपस्थित, उसे
अच्छे लगते रहें। 10हम सब को अपने शरीर में स्थित
रह कर भला या बुरा, जो कुछ किया है, उसका फल
पाने के लिये मसीह के न्यायासन के सामने अवश्य
उपस्थित होना होगा।

परोपकारी परमेश्वर के मित्र होते हैं

11इसलिये प्रभु से डरते हुए हम सत्य को ग्रहण करने
के लिये लोगों को समझाते–बुझाते हैं। हमारे और
परमेश्वर के बीच कोई पर्दा नहीं है। और मुझे आशा है
कि तुम भी हमें पूरी तरह जानते हो। 12हम तुम्हारे
सामने फिर से अपनी कोई प्रशंसा नहीं कर रहे हैं।
बल्कि तुम्हें एक अवसर दे रहे हैं कि तुम हम पर गर्व
कर सको। ताकि, जो प्रत्यक्ष दिखाई देने वाली वस्तु पर
गर्व करते हैं, न कि उस पर जो कुछ उनके मन में है,
उन्हें उसका उत्तर मिल सके। 13क्योंकि यदि हम दीवाने
हैं तो परमेश्वर के लिये हैं और यदि सयाने हैं तो वह
तुम्हारे लिये हैं। 14हमारा नियन्ता तो मसीह का प्रेम है
क्योंकि हमने अपने मन में यह धार लिया है कि वह
एक व्यक्ति (मसीह) सब लोगों के लिये मरा। अत: सभी
मर गये। 15और वह सब लोगों के लिए मरा क्योंकि जो
लोग जीवित हैं, वे अब आगे बस अपने ही लिये न जीते
रहें, बल्कि उसके लिये जियें जो मरने के बाद फिर
जीवित कर दिया गया।

16परिणामस्वरूप अब से आगे हम किसी भी व्यक्ति
को सांसारिक दृष्टि से न देखें यद्यपि एक समय हमने
मसीह को भी सांसारिक दृष्टि से देखा था। कुछ भी हो,
अब हम उसे उस प्रकार नहीं देखते। 17इसीलिये यदि
कोई मसीह में स्थित है तो अब वह परमेश्वर की नयी
सृष्टि का अंग है। पुरानी बातें जाती रही हैं। सब कुछ
नया हो गया है 18और फिर ये सब बातें उस परमेश्वर
की ओर से हुआ करती हैं, जिसने हमें मसीह के द्वारा
अपने में मिला लिया है और लोगों को परमेश्वर से
मिलाप का काम हमें सौंपा है। 19हमारा संदेश है कि
परमेश्वर लोगों के पापों की अनदेखी करते हुए मसीह
के द्वारा उन्हें अपने में मिला रहा है और उसी ने मनुष्य
को परमेश्वर से मिलाने का संदेश हमें सौंपा है। 20इसीलिये
हम मसीह के प्रतिनिधि के रूप में काम कर रहे हैं।
मानो परमेश्वर हमारे द्वारा तुम्हें चेता रहा है। मसीह की
ओर से हम तुमसे विनती करते हैं कि परमेश्वर के
साथ मिल जाओ।

21जो पाप रहित है, उसे उसने इसलिये पाप–बली
बनाया कि हम उसके द्वारा परमेश्वर के सामने नेक
ठहराये जायें।

6 परमेश्वर के कार्य में साथ–साथ काम करने के
नाते हम तुम लोगों से आग्रह करते हैं कि परमेश्वर
का जो अनुग्रह तुम्हें मिला है, उसे व्यर्थ मत जाने दो।
2क्योंकि उसने कहा है:

"मैंने उचित समय पर तेरी सुन ली, और मैं उद्धार
के दिन तुझे सहारा देना आया।" *यशायाह 49:8*

देखो "उचित समय" यही है। देखो "उद्धार का
दिन" यही है।

3हम किसी के लिए कोई विरोध उपस्थित नहीं करते
जिससे हमारे काम में कोई कमी आये। 4बल्कि परमेश्वर
के सेवक के रूप में हम हर तरह से अपने आप को
अच्छा सिद्ध करते रहते हैं। धैर्य के साथ सब कुछ सहते
हुए यातनाओं के बीच, विपत्तियों के बीच, कठिनाइयों
के बीच 5मार खाते हुए, बंदी गृहों में रहते हुए, अशांति
के बीच, परिश्रम करते हुए, रातों–रात पलक भी न
झपका कर, भूखे रह कर 6अपनी पवित्रता, ज्ञान और
धैर्य से, अपनी दयालुता, पवित्र आत्मा के वरदानों और
सच्चे प्रेम, 7अपने सच्चे संदेश और परमेश्वर की शक्ति
से नेकी को ही अपने दायें–बायें हाथों में ढाल के रूप में
लेकर 8हम आदर और निरादर के बीच अपमान और
सम्मान में अपने को उपस्थित करते रहते हैं। हमें ठग
समझा जाता है, यद्यपि हम सच्चे हैं। 9हमें गुमनाम
समझा जाता है, जबकि हमें सभी जानते हैं। हमें मरते
हुओं सा जाना जाता है, पर देखो हम तो जीवित हैं। हमें
दंड भोगते हुओं सा जाना जाता है, तब भी देखो हम मृत्यु
को नहीं सौंपे जा रहे हैं। 10हमें शोक से व्याकुल समझा
जाता है, जबकि हम तो सदा ही प्रसन्न रहते हैं। हम
दीन–हीनों के रूप में जाने जाते हैं, जबकि हम बहुत सों
को वैभवशाली बना रहे हैं। लोग समझते हैं हमारे पास
कुछ नहीं है, जबकि हमारे पास तो सब कुछ है।

11हे कुरिन्थियो, हमने तुमसे पूरी तरह खुल कर
बातें की हैं। तुम्हारे लिये हमारा मन खुला है। 12हमारा
प्रेम तुम्हारे लिये कम नहीं हुआ है। किन्तु तुमने हमसे
प्यार करना रोक दिया है। 13तुम्हें अपना बच्चा
समझते हुए मैं कह रहा हूँ कि उचित प्रतिदान के रूप
में अपना मन तुम्हें भी हमारे लिये पूरी तरह खुला
रखना चाहिये।

ग़ैर मसीहियों की संगत के विरुद्ध चेतावनी

14अविश्वासियों के साथ बेमेल संगत मत करो क्योंकि
नेकी और बदी की भला कैसी समानता? या प्रकाश
और अंधेरे में भला मित्रता कैसे हो सकती है? 15ऐसे ही
मसीह का शैतान से कैसा तालमेल? अथवा अविश्वासी
के साथ विश्वासी का कैसा साझा? 16परमेश्वर के
मंदिर का मूर्तियों से क्या नाता? क्योंकि हम स्वयं उस
सजीव परमेश्वर के मंदिर हैं, जैसा कि परमेश्वर ने
कहा था :

“मैं उनमें निवास करूँगा; चलूँ-फिरूँगा, मैं उनका
परमेश्वर होऊँगा और वे मेरे जन बनेंगे।

लैव्यव्यवस्था 26:11-12

17“इसीलिये तुम उनमें से बाहर आ जाओ, उनसे
अपने को अलग करो अब तुम कभी कुछ भी न छूओ
जो अशुद्ध है तब मैं तुमको अपनाऊँगा।”

यशायाह 52:11

18“और मैं तुम्हारा पिता बनूँगा, तुम मेरे पुत्र और
पुत्री होवोगे, सर्वशक्तिमान प्रभु यह कहता है।”

2 शमूएल 7:14; 7:8

7 हे प्रिय मित्रो, क्योंकि हमारे पास ये प्रतिज्ञाएँ हैं।
इसलिये आओ, परमेश्वर के प्रति श्रद्धा के कारण
हम अपनी पवित्रता को परिपूर्ण करते हुए अपने बाहरी
और भीतरी सभी दोषों को धो डालें।

पौलुस का आनन्द

2अपने मन में हमें स्थान दो। हमने किसी का भी
कुछ बिगाड़ा नहीं है। हमने किसी को भी ठेस नहीं
पहुँचाई है। हमने किसी के साथ छल नहीं किया है। 3मैं
तुम्हें नीचा दिखाने के लिये ऐसा नहीं कह रहा हूँ
क्योंकि मैं तुम्हें बता ही चुका हूँ कि तुम तो हमारे मन
में बसते हो। यहाँ तक कि हम तुम्हारे साथ मरने को या
जीने को तैयार हैं। 4मैं तुम पर भरोसा रखता हूँ। तुम
पर मुझे बड़ा गर्व है। मैं सुख चैन से हूँ। अपनी सभी
यातनाएँ झेलते हुए मुझमें आनन्द उमड़ता रहता है।
5जब हम मकिदुनिया आये थे तब भी हमें आराम नहीं
मिला था, बल्कि हमें तो हर प्रकार के दुःख उठाने पड़े
थे बाहर झगड़ों से और मन के भीतर डर से। 6किन्तु
दीन दुखियों को सुखी करने वाले परमेश्वर ने तितुस
को यहाँ पहुँचा कर हमें सान्त्वना दी है। 7और वह भी
केवल उसके, यहाँ पहुँचने से नहीं बल्कि इससे हमें
और अधिक सान्त्वना मिली कि तुमने उसे कितना
सुख दिया था। उसने हमें बताया कि हमसे मिलने को
तुम कितने व्याकुल हो। तुम्हें हमारी कितनी चिंता हैं।
इससे हम और भी प्रसन्न हुए।

8यद्यपि अपने पत्र से मैंने तुम्हें दुख पहुँचाया है किन्तु
फिर भी मुझे उस के लिखने का खेद नहीं हैं। चाहे
पहले मुझे इसका दुःख हुआ था किन्तु अब मैं देख रहा
हूँ कि उस पत्र से तुम्हें बस पल भर को ही दुःख पहुँचा
था। 9सो अब मैं प्रसन्न हूँ। इसलिये नहीं कि तुम को दुख
पहुँचा था बल्कि इसलिये कि उस दुःख के कारण ही
तुमने पछतावा किया। तुम्हें वह दुख परमेश्वर की ओर
से ही हुआ था ताकि तुम्हें हमारे कारण कोई हानि न
पहुँच पाये। 10क्योंकि वह दुख जिसे परमेश्वर देता है
एक ऐसे मनफिराव को जन्म देता है जिसके लिए पछताना
नहीं पड़ता और जो मुक्ति दिलाता है। किन्तु वह दुख जो
सांसारिक होता है, उससे तो बस मृत्यु जन्म लेती है।
11देखो। यह दुख जिसे परमेश्वर ने दिया है, उसने तुममें
कितना उत्साह जगा दिया है, अपने भोलेपन की कितनी
प्रतिरक्षा, कितना आक्रोश, कितनी आकुलता, हमसे
मिलने की कितनी बेचैनी, कितना साहस, पापी के प्रति
न्याय चुकाने की कैसी भावना पैदा कर दी है। तुमने
हर बात में यह दिखा दिया है कि इस बारे में तुम कितने
निर्दोष थे। 12सो यदि मैंने तुम्हें लिखा था तो उस व्यक्ति
के कारण नहीं जो अपराधी था और न ही उसके
कारण जिसके प्रति अपराध किया गया था। बल्कि इस
लिए लिखा था कि परमेश्वर के सामने हमारे प्रति
तुम्हारी चिंता का तुम्हें बोध हो जाये। 13इससे हमें प्रोत्साहन
मिला है। हमारे इस प्रोत्साहन के अतिरिक्त तितुस के
आनन्द से हम और अधिक आनन्दित हुए, क्योंकि तुम
सब के कारण उसकी आत्मा को चैन मिला है। 14तुम्हारे
लिए मैंने उससे जो बढ़ चढ़ कर बातें की थीं, उसके
लिए मुझे लजाना नहीं पड़ा है। बल्कि हमने जैसे तुमसे
सब कुछ सच-सच कहा था, वैसे ही तुम्हारे बारे में
हमारा गर्व तितुस के सामने सत्य सिद्ध हुआ है। 15वह
जब यह याद करता है कि तुम सब ने किस प्रकार
उसकी आज्ञा मानी और डर से थरथर काँपते हुए
तुमने कैसे उसको अपनाया तो तुम्हारे प्रति उसका प्रेम
और भी बढ़ जाता है। 16मैं प्रसन्न हूँ कि मैं तुममें पूरा
भरोसा रख सकता हूँ।

हमारा दान

8 देखो, हे भाइयो, अब हम यह चाहते हैं कि तुम
परमेश्वर के उस अनुग्रह के बारे में जानो जो
मकिदुनिया क्षेत्र की कलीसियाओं पर किया गया है।
2मेरा अभिप्राय यह है कि यद्यपि उनकी कठिन परीक्षा
ली गयी तो भी वे प्रसन्न रहे और अपनी गहन दरिद्रता
के रहते हुए भी उनकी सम्पूर्ण उदारता उमड़ पड़ी। 3मैं
प्रमाणित करता हूँ कि उन्होंने जितना दे सकते थे दिया।
इतना ही नहीं, बल्कि अपने सामर्थ्य से भी अधिक मन
भर के दिया। 4वे बड़े आग्रह के साथ संत जनों की
सहायता करने में हमें सहयोग देने को विनय करते

रहे। 5उनसे जैसी हमें अपेक्षा थी, वैसे नहीं बल्कि पहले
अपने आप को प्रभु को समर्पित किया और फिर
परमेश्वर की इच्छा के अनुकूल वे हमें अर्पित हो गये।
6इसीलिये हमने तितुस से प्रार्थना की कि जैसे वह अपने
कार्य का प्रारम्भ कर ही चुका है, वैसे ही इस अनुग्रह
के कार्य को वह तुम्हारे लिये करे। 7और जैसे कि तुम
हर बात में यानी विश्वास में, वाणी में, ज्ञान में, अनेक
प्रकार से उपकारकरने में और हमने तुम्हें जिस प्रेम
की शिक्षा दी है उस प्रेम में, भरपूर हो, वैसे ही अनुग्रह
के इस कार्य में भी भरपूर हो जाओ।

8यह मैं आज्ञा के रूप में नहीं कह रहा हूँ बल्कि
अन्य व्यक्तियों के मन में तुम्हारे लिए जो तीव्रता है, उस
प्रेम की सच्चाई को प्रमाणित करने के लिये ऐसा कह
रहा हूँ। 9क्योंकि हमारे प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह से
तुम परिचित हो। तुम यह जानते हो कि धनी होते हुए
भी तुम्हारे लिये वह निर्धन बन गया। ताकि उसकी
निर्धनता से तुम मालामाल हो जाओ।

10इस विषय में मैं तुम्हें अपनी सलाह देता हूँ। तुम्हें
यह शोभा देता है। तुम पिछले साल न केवल दान देने
की इच्छा में सबसे आगे थे बल्कि दान देने में भी सबसे
आगे रहे। 11अब दान करने की उस तीव्र इच्छा को
तुम जो कुछ तुम्हारे पास है, उसी से पूरा करो। तुम इसे
उतनी ही लगन से "पूरा करो" जितनी लगन से तुमने
इसे "चाहा" था। 12क्योंकि यदि दान देने की लगन है तो
व्यक्ति के पास जो कुछ है, उसी के अनुसार उसका
दान ग्रहण करने योग्य बनता है, न कि उसके अनुसार
जो उसके पास नहीं है। 13हम यह नहीं चाहते कि दूसरों
को तो सुख मिले और तुम्हें कष्ट; बल्कि हम तो
बराबरी चाहते हैं। 14हमारी इच्छा है कि उनके इस
अभाव के समय में तुम्हारी सम्पन्नता उनकी
आवश्यकताएँ पूरी करे ताकि आवश्यकता पड़ने पर
आगे चल कर उनकी सम्पन्नता भी तुम्हारे अभाव को
दूर कर सके ताकि समानता स्थापित हो। 15जैसा कि
शास्त्र कहता है:

"जिसने बहुत बटोरा उसके पास अधिक न रहा;
और जिसने अल्प बटोरा, उसके पास स्वल्प न रहा।"

निर्गमन 16:18

तितुस और उसके साथी

16परमेश्वर का धन्यवाद है जिसने तितुस के मन में
तुम्हारी सहायता के लिए वैसी ही तीव्र इच्छा भर दी है,
जैसी हमारे मन में है। 17क्योंकि उसने हमारी प्रार्थना
स्वीकार की और वह उसके लिए विशेष रूप से अपनी
इच्छा भी रखता है, इसलिए वह स्वयं अपनी इच्छा से ही
तुम्हारे पास आने को विदा हो रहा है। 18हम उसके
साथ उस भाई को भी भेज रहे हैं, जिसका सुसमाचार
के प्रचार के रूप में सभी कलीसियाओं में हर कहीं यश
फैल रहा है। 19इसके अतिरिक्त इस दयापूर्ण कार्य में
कलीसियाओं ने उसे हमारे साथ यात्रा करने को नियुक्त
भी किया है। यह दया कार्य जिसका प्रबन्ध हमारे द्वारा
किया जा रहा है, स्वयं प्रभु को सम्मानित करने के
लिये और परोपकार में हमारी तत्परता को दिखाने के
लिए है।

20हम सावधान रहने की चेष्टा कर रहे हैं इस बड़े
धन के लिए जिसका प्रबन्ध कर रहे हैं, कोई हमारी
आलोचना न करे। 21क्योंकि हमें अपनी अच्छी साख
बनाए रखने की चिंता है। न केवल प्रभु के आगे,
बल्कि लोगों के बीचभी।

22और उनके साथ हम अपने उस भाई को भी भेज
रहे हैं, जिसे बहुत से विषयों में और बहुत से अवसरों
पर हमने परोपकार के लिए उत्सुक व्यक्ति के रुप में
प्रमाणित किया है। और अब तो तुम्हारे लिये उसमें जो
असीम विश्वास है, उससे उसमें सहायता करने का
उत्साह और अधिक हो गया है।

23जहाँ तक तितुस का क्षेत्र है, तो वह तुम्हारे बीच
सहायता कार्य में मेरा साथी और साथ साथ काम करने
वाला रहा है। और जहाँ तक हमारे बन्धुओं का प्रश्न है,
वे तो कलीसियाओं के प्रतिनिधि तथा मसीह के सम्मान
हैं। 24सो तुम उन्हें अपने प्रेम का प्रमाण देना और
तुम्हारे लिये हम इतना गर्व क्यों रखते हैं, इसे सिद्ध
करना ताकि सभी कलीसिया उसे देख सकें।

साथियों की मदद करो

9 अब संतों की सेवा के विषय में: तुम्हें इस प्रकार
लिखते चले जाना मेरे लिये आवश्यक नहीं है।
2क्योंकि सहायता के लिये तुम्हारी तत्परता को मैं जानता
हूँ और उसके लिए मकिदुनिया निवासियों के सामने
यह कहते हुए मुझे गर्व है कि अखाया के लोग तो,
पिछले साल से ही तैयार हैं और तुम्हारे उत्साह ने उन
में से अधिकतर को कार्य के लिए प्रेरणा दी है। 3किन्तु
मैं भाइयों को तुम्हारे पास इसलिये भेज रहा हूँ कि तुम
को लेकर हम जो गर्व करते हैं, वह इस बारे में व्यर्थ
सिद्ध न हो। और इसलिये भी कि तुम तैयार रहो, जैसा
कि मैं कहता आया हूँ। 4नहीं तो जब कोई मकिदुनिया
वासी मेरे साथ तुम्हारे पास आयेगा और तुम्हें तैयार
नहीं पायेगा तो हम उस विश्वास के कारण जिसे हमने
तुम्हारे प्रति दर्शाया है, लज्जित होंगे। (और तुम तो और
भी अधिक लज्जित होगे।) 5इसीलिये मैंने भाइयों से यह
कहना आवश्यक समझा कि वे हमसे पहले ही तुम्हारे
पास जायें और जिन उपहारों को देने का तुम पहले ही
वचन दे चुके हो उन्हें पहले ही से उदारतापूर्वक तैयार
रखें। इसलिये यह दान स्वेच्छापूर्वक तैयार रखा जाये न
कि दबाव के साथ तुमसे छीनी गयी किसी वस्तु के रूप
में।

6इसे याद रखो। जो थोरा बोता है, वह थोरा ही
काटेगा और जिस की बुआई अधिक है, वह अधिक ही
काटेगा। 7हर कोई बिना किसी कष्ट के या बिना किसी
दबाव के, उतना ही दे जितना उसने मन में सोचा है।
क्योंकि परमेश्वर प्रसन्न-दाता से ही प्रेम करता है।
8और परमेश्वर तुम पर हर प्रकार के उत्तम वरदानों
की वर्षा कर सकता है जिससे तुम अपनी आवश्यकता
की सभी वस्तुओं में सदा प्रसन्न हो सकते हो और सभी
अच्छे कार्यों के लिये फिर तुम्हारे पास आवश्यकता से
भी अधिक रहेगा। 9जैसा कि शास्त्र में लिखा है:

"वह मुक्त भाव से देता है, वह दीन जनों को देता है,
और उसकी चिरउदारता सदा-सदा को बनी रहती
है।" *भजन संहिता 112:9*

10वह परमेश्वर ही बोने वाले को बीज और खाने
वाले को भोजन सुलभ कराता है। वही तुम्हें बीज देगा
और उसकी बढ़वार करेगा, उसी से तुम्हारे धर्म की
खेती फूलेगी फलेगी। 11तुम हर प्रकार से सम्पन्न बनाये
जाओगे ताकि तुम हर अवसर पर उदार बन सको।
तुम्हारी उदारता परमेश्वर के प्रति लोगों के धन्यवाद
को पैदा करेगी। 12दान की इस पवित्र सेवा से न केवल
पवित्र लोगों की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं बल्कि
परमेश्वर के प्रति अत्यधिक धन्यवाद का भाव भी
उपजता है। 13क्योंकि तुम्हारी इस सेवा से जो प्रमाण
प्रकट होता है, उससे संत जन परमेश्वर की स्तुति
करेंगे। क्योंकि यीशु मसीह के सुसमाचार में तुम्हारे
विश्वास की घोषणा से उत्पन्न हुई तुम्हारी आज्ञाकारिता
के कारण और अपनी उदारता के कारण उनके लिये
तथा दूसरे सभी लोगों के लिये तुम दान देते हो। 14और
वे भी तुम्हारे लिए प्रार्थना करते हुए तुमसे मिलने की
तीव्र इच्छा करेंगे। तुम पर परमेश्वर के असीम अनुग्रह
के कारण 15उस वरदान के लिये जिसका बखान
नहीं किया जा सकता, परमेश्वर का धन्यवाद है।

पौलुस द्वारा अपनी सेवा का समर्थन

10 मैं, पौलुस, निजी तौर पर मसीह की कोमलता
और सहनशीलता को साक्षी करके तुमसे
निवेदन करता हूँ। लोगों का कहना है कि मैं जो तुम्हारे
बीच रहते हुए विनम्र हूँ किन्तु वही मैं जब तुम्हारे बीच
नहीं हूँ, तो तुम्हारे लिये निर्भय हूँ। 2अब मेरी तुमसे
प्रार्थना है कि जब मैं तुम्हारे बीच होऊँतो उसी विश्वास
के साथ वैसी निर्भयता दिखाने को मुझ पर दबाव मत
डालना जैसी कि मेरे विचार में मुझे कुछ उन लोगों के
विरुद्ध दिखानी होगी जो सोचते हैं कि हम एक संसारी
जीवन जीते हैं। 3क्योंकि यद्यपि हम भी इस संसार में ही
रहते हैं किन्तु हम संसारी लोगों की तरह नहीं लड़ते हैं।
4क्योंकि जिन शस्त्रों से हम युद्ध लड़ते हैं, वे सांसारिक
नहीं हैं, बल्कि उनमें गढ़ों को तहस-नहस कर डालने
के लिए परमेश्वर की शक्ति निहित है। 5और उन्हीं
शस्त्रों से हम लोगों के तर्कों का और उस प्रत्येक
अवरोध का, जो परमेश्वर के ज्ञान के विरुद्ध खड़ा है,
खण्डन करते हैं। 6जब तुममें पूरी आज्ञाकारिता है तो
हम हर प्रकार की अनाज्ञा को दण्ड देने के लिए तैयार
हैं।

7तुम्हारे सामने जो तथ्य हैं उन्हें देखो। यदि कोई
अपने मन में यह मानता है कि वह मसीह का है, तो
वह अपने बारे में फिर से याद करे कि वह भी उतना
ही मसीह का है जितना कि हम है। 8और यदि मैं अपने
उस अधिकार के विषय में कुछ और गर्व करूँ, जिसे
प्रभु ने हमें तुम्हारे विनाश के लिये नहीं बल्कि
आध्यात्मिक निर्माण के लिये दिया है। 9तो इसके लिये
मैं लज्जित नहीं हूँ। मैं अपने पर नियत्रण रखूँगा कि
अपने पत्रों के द्वारा तुम्हें भयभीत करने वाले के रूप में
न दिखूँ। 10मेरे विरोधियों का कहना है, "पौलुस के पत्र
तो भारी भरकम और प्रभावपूर्ण होते हैं। किन्तु मेरा
व्यक्तित्व दुर्बल, और वाणी अर्थहीन है।" 11किन्तु ऐसे
कहने वाले व्यक्ति को समझ लेना चाहिये कि तुम्हारे
बीच न रहते हुए जब हम अपने पत्रों में कुछ
लिखते हैं तो उसमें और तुम्हारे बीच रहते हुए हम
जो कर्म करते हैं उनमें कोई अन्तर नहीं है।

12हम उन कुछ लोगों के साथ अपनी तुलना करने
का साहस नहीं करते जो अपने आपको बहुत महत्त्वपूर्ण
मानते हैं। किन्तु जब वे अपने को एक दूसरे से नापते हैं
और परस्पर अपनी तुलना करते हैं तो वे यह दर्शाते हैं
कि वे नहीं जानते कि वे कितने मूर्ख हैं। 13जो भी हो,
हम उचित सीमाओं से बाहर बढ़ चढ़ कर बात नहीं
करेंगे, बल्कि परमेश्वर ने हमारी गतिविधियों की जो
सीमाएँ हमें सौंपी हैं, हम उन्हीं में रहते हैं और वे सीमाएँ
तुम तक पहुँचती हैं। 14हम अपनी सीमा का उल्लंघन
नहीं कर रहे हैं, जैसा कि यदि हम तुम तक नहीं पहुँच
पाते तो हो जाता। किन्तु तुम तक यीशु मसीह का
सुसमाचार लेकर हम तुम्हारे पास सबसे पहले पहुँचे हैं।
15अपनी उचित सीमा से बाहर जाकर किसी दूसरे व्यक्ति
के काम पर हम गर्व नहीं करते किन्तु हमें आशा है
कि तुम्हारा विश्वास जैसे जैसे बढ़ेगा तो वैसे वैसे ही
हमारी गतिविधियों के क्षेत्र के साथ तुम्हारे बीच हम भी
व्यापक रूप से फैलेंगे। 16इससे तुम्हारे क्षेत्र से आगे भी
हम सुसमाचार का प्रचार कर पायेंगे। किसी अन्य को
जो काम सौंपा गया था उस क्षेत्र में अब तक जो काम
हो चुका है हम उसके लिए शेखी नहीं बघारते। 17जैसा
कि शास्त्र कहता है: "जिसे गर्व करना है वह, प्रभु ने
जो कुछ किया है, उसी पर गर्व करे।"*

"जिसे ... करे" यिर्म. 9:24

18क्योंकि अच्छा वही माना जाता है जिसे प्रभु अच्छा
स्वीकारता है, न कि वह जो अपने आप को स्वयं
अच्छा समझता है।

बनावटी प्रेरित और पौलुस

11 काश, तुम मेरी थोड़ी सी मूर्खता सह लेते। हाँ,
तुम उसे सह ही लो। 2क्योंकि मैं तुम्हारे लिये
ऐसी सजगता के साथ, जो परमेश्वर से मिलती है, सजग
हूँ। मैंने तुम्हारी मसीह से सगाई करा दी है ताकि तुम्हें
एक पवित्र कन्या के समान उसे अर्पित कर सकूँ।
3किन्तु मैं डरता हूँ कि कहीं जैसे उस सर्प ने हव्वा को
अपने कपट से भ्रष्ट कर दिया था, वैसे ही कहीं तुम्हारा
मन भी उस एकनिष्ठ भक्ति और पवित्रता से, जो हमें
मसीह के प्रति रखनी चाहिये, भटका न दिया जाये।
4क्योंकि जब कोई तुम्हारे पास आकर जिस यीशु का
उपदेश हमने तुम्हें दिया है, उसे छोड़ किसी दूसरे यीशु
का तुम्हें उपदेश देता है, अथवा जो आत्मा तुमने ग्रहण
की है, उससे अलग किसी और आत्मा को तुम ग्रहण
करते हो अथवा छुटकारे के जिस संदेश को तुमने
ग्रहण किया है, उससे भिन्न किसी दूसरे संदेश को भी
ग्रहण करते हो।

5तो तुम बहुत प्रसन्न होते हो। पर मैं अपने आप को
तुम्हारे उन "बड़े प्रेरितों" से बिलकुल भी छोटा नहीं
मानता। 6हो सकता है मेरी बोलने की शक्ति सीमित है
किन्तु मेरा ज्ञान तो असीम है। इस बात को हमने सभी
बातों में तुम्हें स्पष्ट रूप से दर्शाया है।

7और फिर मैंने सेंत मेंत में सुसमाचार का उपदेश
देकर तुम्हें ऊँचा उठाने के लिये अपने आप को झुकाते
हुए, क्या कोई पाप किया है? 8मैंने दूसरी कलीसियाओं
से अपना पारिश्रमिक लेकर उन्हें लूटा है ताकि मैं
तुम्हारी सेवा कर सकूँ। 9और जब मैं तुम्हारे साथ था
तब भी आवश्यकता पड़ने पर मैंने किसी पर बोझ नहीं
डाला क्योंकि मकिदुनिया से आये भाइयों ने मेरी
आवश्यकताएँ पूरी कर दी थीं। मैंने हर बात में अपने
आप को तुम पर न बोझ बनने दिया है और न बनने
दूँगा। 10और क्योंकि मुझमें मसीह का सत्य निवास
करता है, इसलिये अखाया के समूचे क्षेत्र में मुझे बढ़
चढ़कर बोलने से कोई नहीं रोक सकता। 11भला क्यों?
क्या इसलिये कि मैं तुम्हें प्यार नहीं करता? परमेश्वर
जानता है, मैं तुमसे प्यार करता हूँ।

12किन्तु जो मैं कर रहा हूँ उसे तो करता ही रहूँगा;
ताकि उन तथाकथित प्रेरितों के गर्व को, जो गर्व करने
का कोई ऐसा बहाना चाहते हैं जिससे वे भी उन कामों
में हमारे बराबर समझे जा सकें जिनका उन्हें गर्व है; मैं
उनके उस गर्व को समाप्त कर सकूँ। 13ऐसे लोग नकली
प्रेरित हैं। वे छली हैं, वे मसीह के प्रेरित होने का ढोंग
करते हैं। 14इसमें कोई अचरज नहीं है, क्योंकि शैतान
भी तो परमेश्वर के दूत का रूप धारण कर लेता है।
15इसलिये यदि उसके सेवक भी नेकी के सेवकों का
सा रूप धर लें तो इसमें क्या बड़ी बात है? किन्तु अंत में
उन्हें अपनी करनी के अनुसार फल तो मिलेगा ही।

पौलुस की यातनाएँ

16मैं फिर दोहराता हूँ कि मुझे कोई मूर्ख न समझे।
किन्तु यदि फिर भी तुम ऐसे समझते हो तो मुझे मूर्ख
बनाकर ही स्वीकार करो। ताकि मैं भी कुछ गर्व कर
सकूँ। 17अब यह जो मैं कह रहा हूँ, वह प्रभु के
अनुसार नहीं कह रहा हूँ बल्कि एक मूर्ख के रूप में
गर्वपूर्ण विश्वास के साथ कह रहा हूँ। 18क्योंकि बहुत
से लोग अपने सांसारिक जीवन पर ही गर्व करते हैं।
19फिर तो मैं भी गर्व करूँगा। और फिर तुम तो इतने
समझदार हो कि मूर्खों की बातें प्रसन्नता के साथ सह
लेते हो। 20क्योंकि यदि कोई तुम्हें दास बनाये, तुम्हारा
शोषण करे, तुम्हें किसी जाल में फँसाये, अपने को तुमसे
बड़ा बनाये अथवा तुम्हारे मुँह पर थप्पड़ मारे तो तुम
उसे सह लेते हो। 21मैं लज्जा के साथ कह रहा हूँ, हम
बहुत दुर्बल रहे हैं। (मैं मूर्खतापूर्वक कह रहा हूँ) यदि
कोई व्यक्ति किसी वस्तु पर गर्व करने का साहस
करता है तो वैसा ही साहस मैं भी करूँगा। 22इब्रानी वे
ही तो नहीं हैं। मैं भी हूँ। इस्राएली वे ही तो नहीं हैं। मैं भी
हूँ। इब्राहीम की संतान वे ही तो नहीं हैं। मैं भी हूँ। 23क्या
वे ही मसीह के सेवक हैं? (एक सनकी की तरह मैं यह
कहता हूँ) कि मैं तो उससे भी बड़ा मसीह का दास हूँ।
मैंने बहुत कठोर परिश्रम किया है। मैं बार बार जेल
गया हूँ। मुझे बार बार पीटा गया है। अनेक अवसरों पर
मेरा मौत से सामना हुआ है। 24पाँच बार मैंने यहूदियों से
एक कम चालीसचालीस कोड़े खाये हैं। 25मैं तीन-तीन
बार लाठियों से पीटा गया हूँ। एक बार तो मुझ पर
पथराव भी किया गया। तीन बार मेरा जहाज़ डूबा। एक
दिन और एक रात मैंने समुद्र के गहरे जल में बिताई।
26मैंने भयानक नदियों, खूँखार डाकुओं, स्वयं अपने
लोगों, विधर्मियों, नगरों, ग्रामों, समुद्रों और दिखावटी
बंधुओं के संकटों के बीच अनेक यात्राएँ की हैं। 27मैंने
कड़ा परिश्रम करके थकावट से चूर हो कर जीवन
जीया है। अनेक अवसरों पर मैं सो तक नहीं पाया हूँ।
भूखा और प्यासा रहा हूँ। प्राय: मुझे खाने तक को नहीं
मिल पाया है। बिना कपड़ों के ठण्ड में ठिठुरता रहा हूँ।
28और अब और अधिक क्या कहूँ? मुझ पर सभी
कलीसियाओं की चिंता का भार भी प्रतिदिन बना रहा
है। 29किसकी दुर्बलता मुझे शक्तिहीन नहीं कर देती है
और किसके पाप में प्रवृत्त होना मुझे बैचेन नहीं बना
डालताहै।

30यदि मुझे बढ़ चढ़कर बातें करनी ही हैं तो मैं उन
बातों को करूँगा जो मेरी दुर्बलता की हैं। 31परमेश्वर

और प्रभु यीशु का परम पिता जो सदा ही धन्य है,
जानता है कि मैं कोई झूठ नहीं बोल रहा हूँ। 32जब मैं
दमिश्क में था तो महाराजा अरितास के राज्यपाल ने
दमिश्क परघेरा डाल कर मुझे बंदी कर लेने का जतन
किया था। 33किन्तु मुझे नगर की चारदीवारी की खिड़की
से टोकरी में बैठाकर नीचे उतार दिया गया और मैं
उसके हाथों से बच निकला।

पौलुस पर प्रभु का विशेष अनुग्रह

12 अब तो मुझे गर्व करना ही होगा। इससे कुछ
मिलना नहीं है। किन्तु मैं तो प्रभु के दर्शनों
और प्रभु के दैवी संदेशों पर गर्व करता ही रहूँगा। 2मैं
मसीह में स्थित एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जिसे
चौदह साल पहले (मैं नहीं जानता बस परमेश्वर ही
जानता है) देह सहित या देह रहित तीसरे स्वर्ग में उठा
लिया गया था। 3और मैं जानता हूँ कि इसी व्यक्ति को
(मैं नहीं जानता, बस परमेश्वर ही जानता है) बिना
शरीर के या शरीर सहित 4स्वर्गलोक में उठा लिया गया
था। और उसने अनिर्वचनीय शब्द सुने जिन्हें बोलने की
अनुमति मनुष्य को नहीं है। 5हाँ, ऐसे मनुष्य पर मैं
अभिमान करूँगा किन्तु स्वयं अपने पर, अपनी
दुर्बलताओं को छोड़कर अभिमान नहीं करूँगा। 6क्योंकि
यदि मैं अभिमान करने की सोचूँ तो भी मैं मूर्ख नहीं
बनूँगा क्योंकि तब मैं सत्य कह रहा होऊँगा। किन्तु
तुम्हें मैं इससे बचाता हूँ ताकि कोई मुझे जैसा करते
देखता है या कहते सुनता है, उससे अधिकश्रेय न दे।

7असाधारण दैवी संदेशों के कारण मुझे कोई गर्व न
हो जाये इसीलिये मुझे सालते रहने वाला एक काँटा भी
दे दिया है। जो शैतान का दूत है, वह मुझे दुखता रहता
है ताकि मुझे बहुत अधिक घमण्ड न हो जाये। 8काँटे
की इस समस्या के बारे में मैंने प्रभु से तीन बार प्रार्थना
की है कि वह इस काँटे को मुझमें से निकाल ले,
9किन्तु उसने मुझसे कह दिया है, "तेरे लिये मेरा अनुग्रह
पर्याप्त है क्योंकि निर्बलता में ही मेरी शक्ति सबसे
अधिक होती है, इसीलिये मैं अपनी निर्बलता पर प्रसन्नता
के साथ गर्व करता हूँ। ताकि मसीह की शक्ति मुझ में
रहे। 10इस प्रकार मसीह की ओर से मैं अपनी निर्बलताओं,
अपमानों, कठिनाइयों, यातनाओं और बाधाओं में आनन्द
लेता हूँ क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूँ, तभी शक्तिशाली
होता हूँ।

कुरिन्थियों के प्रति पौलुस का प्रेम

11मैं मूर्खों की तरह बतियाता रहा हूँ किन्तु ऐसा
करने को मुझे विवश तुमने किया। तुम्हें तो मेरी प्रशंसा
करनी चाहिये थी यद्यपि वैसे तो मैं कुछ नहीं हूँ पर
तुम्हारे उन "महाप्रेरितों" से मैं किसी प्रकार भी छोटा
नहीं हूँ। 12किसी को प्रेरित सिद्ध करने वाले आश्चर्य
पूर्ण संकेत, अदभुत कर्म और आश्चर्य कर्म भी तुम्हारे
बीच धीरज के साथ प्रकट किये गये हैं। मैंने हर प्रकार
की यातना झेली है। चाहे संकेत हो, चाहे कोई चमत्कार
या आश्चर्य कर्म 13तुम दूसरी कलीसियाओं से किस
दृष्टि से कम हो? सिवाय इसके कि मैं तुम पर किसी
प्रकार भी कभी भार नहीं बना हूँ? मुझे इस के लिए
क्षमा करो।

14देखो, तुम्हारे पास आने को अब मैं तीसरी बार
तैयार हूँ। पर मैं तुम पर किसी तरह का बोझ नहीं
बनूँगा। मुझे तुम्हारी सम्पत्तियों की नहीं तुम्हारी चाहत
है। क्योंकि बच्चों को अपने माता पिता के लिये कोई
बचत करने की आवश्यकता नहीं होती बल्कि अपने
बच्चों के लिये माता-पिता को ही बचत करनी होती है।
15जहाँ तक मेरी बात है, मेरे पास जो कुछ है, तुम्हारे
लिए प्रसन्नता के साथ खर्च करूँगा यहाँ तक कि अपने
आप को भी तुम्हारे लिए खर्च कर डालूँगा। यदि मैं
तुमसे अधिक प्रेम रखता हूँ, तो भला तुम मुझे कम
प्यार कैसे करोगे।

16हो सकता है, मैंने तुम पर कोई बड़ा बोझ न डाला
हो किन्तु (तुम्हारा कहना है) मैं कपटी था मैंने तुम्हें
अपनी चालाकी से फँसा लिया। 17क्या जिन लोगों को
मैंने तुम्हारे पास भेजा था, उनके द्वारा तुम्हें छला था?
नहीं! 18तितुस और उसके साथ हमारे भाई को मैंने
तुम्हारे पास भेजा था। क्या उसने तुम्हें कोई धोखा
दिया? नहीं क्या हम उसी निष्कपट आत्मा से नहीं
चलते रहे? क्या हम उन्हीं चरण चिह्नों पर नहीं चले?

19अब तुम क्या यह सोच रहे हो कि एक लम्बे समय
से हम तुम्हारे सामने अपना पक्ष रख रहे हैं। किन्तु हम
तो परमेश्वर के सामने मसीह के अनुयायी के रूप में
बोल रहे हैं। मेरे प्रिय मित्रो! हम जो कुछ भी कर रहे हैं,
वह तुम्हें आध्यात्मिक रूप से शक्तिशाली बनाने के लिए
है। 20क्योंकि मुझे भय है कि कहीं जब मैं तुम्हारे पास
आऊँ तो तुम्हें वैसा न पाऊँ, जैसा पाना चाहता हूँ और
तुम भी मुझे वैसा न पाओ जैसा मुझे पाना चाहते हो।
मुझे भय है कि तुम्हारे बीच मुझे कहीं आपसी झगड़े,
ईर्ष्या, क्रोधपूर्ण कहा-सुनी, व्यक्तिगत षड्यन्त्र, अपमान,
काना-फूसी, हेकड़पन और अव्यवस्था न मिले। 21मुझे
डर है कि जब मैं फिर तुमसे मिलने आऊँ तो तुम्हारे
सामने मेरा परमेश्वर कहीं मुझे लज्जित न करे; और
मुझे उन बहुतों के लिए विलाप न करना पड़े जिन्होंने
पहले पाप किये हैं और अपवित्रता, व्यभिचार तथा
भोग-विलास में डूबे रहने के लिये पछतावा नहीं किया
है।

अंतिम चेतावनी और नमस्कार

13 यह तीसरा अवसर है जब मैं तुम्हारे पास आरहा
हूँ। शास्त्र कहता है: "हर बात की पुष्टि, दो या

तीन गवाहियों की साक्षी पर की जायेगी।" 2जब दूसरी
बार मैं तुम्हारे साथ था, मैंने तुम्हें चेतावनी दी थी और
अब जब मैं तुमसे दूर हूँ, मैं तुम्हें फिर चेतावनी देता हूँ
कि यदि मैं फिर तुम्हारे पास आया तो जिन्होंने पाप
किये हैं और जो पाप कर रहे हैं उन्हें और शेष दूसरे
लोगों को भी नहीं छोड़ूँगा। 3ऐसा मैं इसलिये कर रहा हूँ
कि तुम इस बात का प्रमाण चाहते हो कि मुझमें मसीह
बोलता है। वह तुम्हारे लिए निर्बल नहीं है, बल्कि समर्थ
है। 4यह सच है कि उसे उसकी दुर्बलता के कारण क्रूस
पर चढ़ाया गया किन्तु अब वह परमेश्वर की शक्ति के
कारण ही जी रहा है। यह भी सच है कि मसीह में स्थित
हम निर्बल हैं किन्तु तुम्हारे लाभ के लिए परमेश्वर की
शक्ति के कारण हम उसके साथ जीयेंगे।

5यह देखने के लिए अपने आप को परखो कि क्या
तुम विश्वासपूर्वक जी रहे हो। अपनी जाँच पड़ताल
करो अथवा क्या तुम नहीं जानते कि वह यीशु मसीह
तुम्हारे भीतर ही है। यदि ऐसा नहीं है, तो तुम इस परीक्षा
में पूरे नहीं उतरे। 6मैं आशा करता हूँ कि तुम यह जान
जाओगे कि हम इस परीक्षा में किसी भी तरह विफल
नहीं हुए। 7हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि तुम
कोई बुराई न करो। इसलिये नहीं कि हम इस परीक्षा में
खरे दिखाई दें, बल्कि इसलिए कि तुम वही करो जो
उचित है। चाहे हम इस परीक्षा में विफल हुए ही क्यों न
दिखाई दें। 8वास्तव में हम सत्य के विरुद्ध कुछ कर ही
नहीं सकते। हम तो जो करते हैं, सत्य के लिये ही करते
हैं। 9हमारी निर्बलता और तुम्हारी सबलता हमें प्रसन्न
करती है और हम इसी के लिये प्रार्थना करते रहते हैं
कि तुम दृढ़ से दृढ़तर बनो। 10इसीलिये तुमसे दूर रहते
हुए भी मैं इन बातों को तुम्हें लिख रहा हूँ ताकि जब मैं
तुम्हारे बीच होऊँतो मुझे प्रभु के द्वारा दिये गये अधिकार
से तुम्हें हानि पहुँचाने के लिए नहीं बल्कि तुम्हारे
आध्यात्मिक विकास के लिए तुम्हारे साथ कठोरता न
बरतनी पड़े।

11अब हे भाइयो, मैं तुमसे विदा लेता हूँ। अपने आचरण
ठीक रखो। वैसा ही करते रहो जैसा करने को मैंने
कहा है। एक जैसा सोचो। शांतिपूर्वक रहो। जिससे प्रेम
और शांति का स्रोत परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा।

12पवित्र चुम्बन द्वारा एक दूसरे का स्वागत करो।
13सभी संतों का तुम्हें नमस्कार।

14तुम पर प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह,परमेश्वर का
प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ
रहे।

गलातियों

1 पौलुस की ओर से, जो एक प्रेरित है, जिसने एक
ऐसा सेवा व्रत धारण किया है, जो उसे न तो मनुष्यों
से प्राप्त हुआ है और न किसी एक मनुष्य द्वारा दिया
गया है, बल्कि यीशु मसीह द्वारा उस परम पिता परमेश्वर
से, जिसने यीशु मसीह को मरे हुओं में से फिर से जिला
दिया था, दिया गया है।
2और मेरे साथ जो भाई हैं, उन सब की ओर से
गलातिया* क्षेत्र की कलीसियाओं के नाम:
3हमारे परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह
की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति मिले।। 4जिसने
हमारे पापों के लिए अपने आप को समर्पित कर दिया
ताकि इस पापपूर्ण संसार से, जिसमें हम रह रहे हैं, वह
हमें छुटकारा दिला सके। हमारे परम पिता परमेश्वर
की यही इच्छा है। 5वह सदा सर्वदा महिमावान हो
आमीन!

सच्चा सुसमाचार एक ही है

6मुझे अचरज है! कि तुम लोग इतनी जल्दी उस
परमेश्वर से मुँह मोड़ कर, जिसने मसीह के अनुग्रह
द्वारा तुम्हें बुलाया था, किसी दूसरे सुसमाचार की ओर
जा रहे हो। 7कोई दूसरा सुसमाचार तो वास्तव में है ही
नहीं, किन्तु कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हें भ्रम में डाल रहे हैं
और मसीह के सुसमाचार में हेर-फेर का जतन कर
रहे हैं। 8किन्तु चाहे हम हों और चाहे कोई स्वर्गदूत,
यदि तुम्हें हमारे द्वारा सुनाये गये सुसमाचार से भिन्न
सुसमाचार सुनाता है तो उसे धिक्कार है। 9जैसा कि हम
पहले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर दोहरा रहा हूँ
कि यदि चाहे हम हों, और चाहे कोई स्वर्गदूत, यदि
तुम्हारे द्वारा स्वीकार किए गए सुसमाचार से भिन्न
सुसमाचार सुनाता है तो उसे धिक्कार है।
10क्या इससे तुम्हें ऐसा लगता है कि मैं मनुष्यों का
समर्थन चाहता हूँ? या यह कि मुझे परमेश्वर का
समर्थन मिले? अथवा क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करने
का जतन कर रहा हूँ? यदि मैं मनुष्यों को प्रसन्न करता
तो मैं मसीह के सेवक का सा नहीं होता।

पौलुस का सुसमाचार परमेश्वर से प्राप्त है

11हे भाइयों, मैं तुम्हें जताना चाहता हूँ कि वह
सुसमाचार जिसका उपदेश तुम्हें मैंने दिया है, 12कोई
मनुष्य से प्राप्त सुसमाचार नहीं हैं क्योंकि न तो मैंने
इसे किसी मनुष्य से पाया है और न ही किसी मनुष्य
ने इसकी शिक्षा मुझे दी है। बल्कि दैवी संदेश के रूप
में यह यीशु मसीह द्वारा मेरे सामने प्रकट हुआ है।
13यहूदी धर्म में मैं पहले कैसे जीया करता था, उसे
तुम सुन चुके हो, और तुम यह भी जानते हो कि
मैंने परमेश्वर की कलीसिया पर कितना अत्याचार
किया है और उसे मिटा डालने का प्रयास तक किया
है। 14यहूदी धर्म के पालने में मैं अपने युग के
समकालीन यहूदियों से आगे था क्योंकि मेरे पूर्वजों से
जो परमपराएँ मुझे मिली थीं, उनमें मेरी उत्साहपूर्ण
आस्था थी।
15किन्तु परमेश्वर ने तो मेरे जन्म से पहले ही मुझे
चुन लिया था और अपने अनुग्रह में मुझे बुला लिया
था। 16ताकि वह मुझे अपने पुत्र का ज्ञान करा दे जिससे
मैं ग़ैर यहूदियों के बीच उसके सुसमाचार का प्रचार
करूँ। उस समय तत्काल मैंने किसी मनुष्य से कोई राय
नहीं ली। 17और न ही मैं उन लोगों के पास यरूशलेम
गया जो मुझसे पहले प्रेरित बने थे। बल्कि मैं अरब को
गया और फिर वहाँ से दमिश्क लौट आया।
18फिर तीन साल के बाद पतरस से मिलने के लिए मैं
यरूशलेम पहुँचा और उसके साथ एक पखवाड़े ठहरा।
19किन्तु वहाँ मैं प्रभु के भाई याकूब को छोड़ कर
किसी भी दूसरे प्रेरित से नहीं मिला। 20मैं परमेश्वर के
सामने शपथपूर्वक कहता हूँ कि जो कुछ मैं लिख रहा
हूँ उसमें झूठ नहीं है। 21उसके बाद मैं सीरिया और
किलिकिया के प्रदेशों में गया।
22किन्तु यहूदिया के मसीह को मानने वाले कलीसिया
व्यक्तिगत रूप से मुझे नहीं जानते थे। 23किन्तु वे लोगों
को कहते सुनते थे, "वही व्यक्ति जो पहले हमें सताया
करता था, उसी विश्वास, यानी उसी मत का प्रचार
कर रहा है, जिसे उसने कभी नष्ट करने का प्रयास
किया था।" 24मेरे कारण उन्होंने परमेश्वर की स्तुति
की।

गलातिया कदाचित यह वही क्षेत्र रहा होगा जहाँ अपनी पहली धार्मिक सेवा यात्रा के अवसर पर पौलुस ने उपदेश दिया था और कलीसिया की स्थापना की थी। देखें प्रेरितों के काम 13 और 14

पौलुस को प्रेरितों की मान्यता

2 चौदह साल बाद मैं फिर से यरूशलेम गया। बरनाबास मेरे साथ था और तितुस को भी मैंने साथ ले लिया था। 2मैं परमेश्वर के दिव्य दर्शन के कारण वहाँ गया था। मैं ग़ैर यहूदियों के बीच जिस सुसमाचार का उपदेश दिया करता हूँ, उसी सुसमाचार को मैंने एक निजी सभा के बीच कलीसिया के मुखियाओं को सुनाया। मैं वहाँ इसलिए गया था कि परमेश्वर ने मुझे दर्शाया था कि मुझे वहाँ जाना चाहिए। ताकि जो काम मैंने पिछले दिनों किया था, या जिसे मैं कर रहा हूँ, वह बेकार न चला जाये। 3परिणाम–स्वरूप तितुस तक को, जो मेरे साथ था, यद्यपि वह यूनानी है, फिर भी उसे ख़तना कराने के लिये विवश नहीं किया गया। 4किन्तु उन झूठे बंधुओं के कारण जो लुके–छिपे हमारे बीच भेदियों के रूप में यीशु मसीह में हमारी स्वतन्त्रता का पता लगाने को इसलिए घुस आये थे कि हमें दास बना सकें, यह बात उठी 5किन्तु हमने उनकी अधीनता में घुटने नहीं टेके ताकि वह सत्य जो सुसमाचार में निवास करता है, तुम्हारे भीतर बना रहे।

6किन्तु जाने माने प्रतिष्ठित लोगों से मुझे कुछ नहीं मिला। (वे कैसे भी थे, मुझे इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। बिना किसी भेदभाव के सभी मनुष्य परमेश्वर के सामने एक जैसे हैं।) उन सम्मानित लोगों से मुझे या मेरे सुसमाचार को कोई लाभ नहीं हुआ। 7किन्तु इन मुखियाओं ने देखा कि परमेश्वर ने मुझे वैसे ही एक विशेष काम सौंपा है जैसे पतरस को परमेश्वर ने यहूदियों को सुसमाचार सुनाने का काम दिया था। किन्तु परमेश्वर ने ग़ैर यहूदी लोगों को सुसमाचार सुनाने का काम मुझे दिया। 8परमेश्वर ने पतरस को एक प्रेरित के रूप में काम करने की शक्ति दी थी। पतरस ग़ैर यहूदी लोगों के लिए एक प्रेरित है। परमेश्वर ने मुझे भी एक प्रेरित के रूप में काम करने की शक्ति दी है। किन्तु मैं उन लोगों का प्रेरित हूँ जो यहूदी नहीं हैं। 9इस प्रकार उन्होंने मुझ पर परमेश्वर के उस अनुग्रह को समझ लिया और कलीसिया के स्तम्भ समझे जाने वाले याकूब, पतरस और यूहन्ना ने बरनाबास और मुझसे साझेदारी के प्रतीक रूप में हाथ मिला लिया। और वे सहमत हो गये कि हम विधर्मियों के बीच उपदेश देते रहें और वे यहूदियों के बीच। 10उन्होंने हमसे बस यही कहा कि हम उनके निर्धनों का ध्यान रखें। और मैं इसी काम को न केवल करना चाहता था बल्कि इसके लिए लालायित भी था।

पौलुस की दृष्टि में पतरस अनुचित

11किन्तु जब पतरस अंताकिया आया तो मैंने खुल कर उसका विरोध किया क्योंकि वह अनुचित था। 12क्योंकि याकूब द्वारा भेजे हुए कुछ लोगों के यहाँ पहुँचने से पहले वह ग़ैर यहूदियों के साथ खाता पीता था। किन्तु उन लोगों के आने के बाद उसने ग़ैर यहूदियों से अपना हाथ खींच लिया और स्वयं को उनसे अलग कर लिया। उसने उन लोगों के डर से ऐसा किया जो चाहते थे कि ग़ैर यहूदियों का भी ख़तना होना चाहिए। 13दूसरे यहूदियों ने भी इस दिखावे में उसका साथ दिया। यहाँ तक कि इस दिखावे के कारण बरनाबास तक भटक गया। 14मैंने जब यह देखा कि सुसमाचार में निहित सत्य के अनुसार वे सीधे रास्ते पर नहीं चल रहे हैं तो सब के सामने पतरस से कहा, "जब तुम यहूदी होकर भी ग़ैर यहूदी का सा जीवन जीते हो, तो फिर ग़ैर यहूदियों को यहूदियों की रीति पर चलने को विवश कैसे कर सकते हो?"

15हम तो जन्म के यहूदी हैं। हमारा पापी ग़ैर यहूदी से कोई सम्बन्ध नहीं है। 16फिर भी हम यह जानते हैं कि किसी व्यक्ति को व्यवस्था के विधान का पालन करने के कारण नहीं बल्कि यीशु मसीह में विश्वास के कारण नेक ठहराया जाता है। हमने इसलिये यीशु मसीह का विश्वास धारण किया है ताकि इस विश्वास के कारण हम नेक ठहराये जायें, न कि व्यवस्था के विधान के पालन के कारण। क्योंकि उसे पालने से तो कोई भी मनुष्य धर्मी नहीं होता।

17किन्तु यदि हम जो यीशु मसीह में अपनी स्थिति के कारण धर्मी ठहराया जाना चाहते हैं, हम ही विधर्मियों के समान पापी पाये जायें तो इसका अर्थ क्या यह नहीं है कि मसीह पाप को बढ़ावा देता है। निश्चय ही नहीं।" 18यदि जिसका मैं त्याग कर चुका हूँ, उस रीति का ही फिर से उपदेश देने लगूँ तब तो मैं आज्ञा का उल्लंघन करने वाला अपराधी बन जाऊँगा। 19क्योंकि व्यवस्था के विधान के द्वारा व्यवस्था के लिये तो मैं मर चुका ताकि परमेश्वर के लिये मैं फिर से जी जाऊँ मसीह के साथ मुझे क्रूस पर चढ़ा दिया है। 20इसी से अब आगे मैं जीवित नहीं हूँ किन्तु मसीह मुझ में जीवित है। सो इस शरीर में अब मैं जिस जीवन को जी रहा हूँ, वह तो विश्वास पर टिका है। परमेश्वर के उस पुत्र के प्रति विश्वास पर जो मुझसे प्रेम करता था, और जिसने अपने आप को मेरे लिए अर्पित कर दिया। 21मैं परमेश्वर केअनुग्रह को नहीं नकार रहा हूँ, किन्तु यदि धार्मिकता व्यवस्था के विधान के द्वारा परमेश्वर से नाता जुड़ा पाता तो मसीह बेकार ही अपने प्राण क्यों देता।

परमेश्वर का वरदान विश्वास से मिलता है

3 हे मूर्ख गलातियो, तुम पर किसने जादू कर दिया है? तुम्हें तो, सब के सामने यीशु मसीह को क्रूस पर कैसे चढ़ाया गया था, इसका पूरा विवरण दे दिया गया था। 2मैं तुमसे बस इतना जानना चाहता हूँ कि तुमने आत्मा का वरदान क्या व्यवस्था के विधान को

पालने से पाया था अथवा सुसमाचार के सुनने और उस
पर विश्वास करने से? 3क्या तुम इतने मूर्ख हो सकते
हो कि जिस जीवन को तुमने आत्मा से आरम्भ किया,
उसे अब हाड़–माँस के शरीर की शक्ति से पूरा करोगे?
4तुमने इतने कष्ट क्या बेकार ही उठाये? आशा है कि
वे बेकार नहीं थे। 5परमेश्वर, जो तुम्हें आत्मा प्रदान
करता है और जो तुम्हारे बीच आश्चर्य कर्म करता है,
वह यह इसलिए करता है कि तुम व्यवस्था के विधान
को पालते हो या इसलिए कि तुमने सुसमाचार को सुना
है और उस पर विश्वास किया है।

6यह वैसे ही है जैसे कि इब्राहीम के विषय में शास्त्र
कहता है: "उसने परमेश्वर में विश्वास किया और यह
उसके लिये धार्मिकता गिनी गई।"* 7 तो फिर तुम यह
जान लो, "इब्राहीम के सच्चे वंशज वे ही हैं जो विश्वास
करते हैं। 8शास्त्र ने पहले ही बता दिया था, "परमेश्वर
ग़ैर यहूदियों को भी उनके विश्वास के कारण धर्मी
ठहरायेगा। और इन शब्दों के साथ पहले से ही इब्राहीम
को परमेश्वर द्वारा सुसमाचार से अवगत करा दिया
गया था।"* 9 इसलिये वे लोग जो विश्वास करते हैं
विश्वासी इब्राहीम के साथ आशीष पाते हैं। 10किन्तु वे
सभी लोग जो व्यवस्था के विधानों के पालन पर निर्भर
रहते हैं, वे तो किसी अभिशाप के अधीन हैं। शास्त्र में
लिखा है: "ऐसा हर व्यक्ति शापित है जो व्यवस्था के
विधान की पुस्तक में लिखी हर बात का लगन के साथ
पालन नहीं करता।"*

11अब यह स्पष्ट है कि व्यवस्था के विधान के द्वारा
परमेश्वर के सामने कोई भी नेक नहीं ठहरता है।
क्योंकि शास्त्र के अनुसार, "धर्मी व्यक्ति विश्वास के
सहारे जीयेगा।"*

12किन्तु व्यवस्था का विधान तो विश्वास पर नहीं
टिका है बल्कि शास्त्र के अनुसार, "जो व्यवस्था के
विधान को पालेगा, वह उन ही के सहारे जीयेगा।"*
13मसीह ने हमारे शाप को अपने ऊपर ले कर व्यवस्था
के विधान के शाप से हमें मुक्त कर दिया। शास्त्र
कहता है: "हर कोई जो वृक्ष पर टाँग दिया जाता है,
शापित है।"*

14मसीह ने हमें इसलिये मुक्त किया कि, इब्राहीम को
दी गयी आशीश मसीह यीशु के द्वारा ग़ैर यहूदियों को
भी मिल सके ताकि विश्वास के द्वारा हम उस आत्मा
को प्राप्त करें, जिसका वचन दिया गया था।

व्यवस्था का विधान और वचन

15हे भाइयो, अब मैं तुम्हें दैनिक जीवन से एक उदाहरण
देने जा रहा हूँ। देखो, जैसे किसी मनुष्य द्वारा कोई
करार कर लिया जाने पर, न तो उसे रद्द किया जा
सकता है और न ही उसमें से कुछ घटाया जा सकता
है। और न बढ़ाया, 16वैसे ही इब्राहीम और उसके भावी
वंशज के साथ की गयी प्रतिज्ञा के संदर्भ में भी है।
(देखो, शास्त्र यह नहीं कहता, "और उसके वंशजों
को" यदि ऐसा होता तो बहुतों की ओर संकेत होता
किन्तु शास्त्र में एक वचन का प्रयोग है। शास्त्र कहता
है, "और तेरे वंशज को" जो मसीह है।) 17मेरा अभिप्राय
यह है कि जिस करार को परमेश्वर ने पहले ही
सुनिश्चित कर दिया उसे चार सौ तीस साल बाद आने
वाला व्यवस्था का विधान नहीं बदल सकता और न ही
उसके वचन को नाकारा ठहरा सकता है। 18क्योंकि
यदि उत्तराधिकार व्यवस्था के विधान पर टिका है तो
फिर वह वचन पर नहीं टिकेगा। किन्तु परमेश्वर ने
उत्तराधिकार वचन के द्वारा मुक्त रूप से इब्राहीम को
दिया था। 19फिर भला व्यवस्था के विधान का प्रयोजन
क्या रहा? आज्ञा उल्लंघन के अपराध के कारण व्यवस्था
के विधान को वचन से जोड़ दिया गया था ताकि जिस
के लिए वचन दिया गया था, उस वंशज के आने तक
वह रहे। व्यवस्था का विधान एक मध्यस्थ के रूप में
मूसा की सहायता से स्वर्गदूत द्वारा दिया गया था। 20अब
देखो,मध्यस्थ तो दो के बीच होता है, किन्तु परमेश्वर
तो एक ही है।

मूसा की व्यवस्था के विधान का प्रयोजन

21क्या इसका यह अर्थ है कि व्यवस्था का विधान
परमेश्वर के वचन का विरोधी है? निश्चित रूप से
नहीं। क्योंकि यदि ऐसी व्यवस्था का विधान दिया गया
होता जो लोगों में जीवन का संचार कर सकता तो वह
व्यवस्था का विधान ही परमेश्वर के सामने धार्मिकता
को सिद्ध करने का साधन बन जाता। 22किन्तु शास्त्र ने
घोषणा की है कि यह समूचा संसार पाप की शक्ति के
अधीन है। ताकि यीशु मसीह में विश्वास के आधार पर
जो वचन दिया गया है, वह विश्वासी जनों को भी मिले।

23इस विश्वास के आने से पहले, हमें व्यवस्था के
विधान की देखरेख में, इस आने वाले विश्वास के
प्रकट होने तक, बंदी के रूप में रखा गया। 24इस प्रकार
व्यवस्था का विधान हमें मसीह तक ले जाने के लिए
एक कठोर अभिभावक था ताकि अपने विश्वास के
आधार पर हम नेक ठहरें। 25अब जब यह विश्वास
प्रकट हो चुका है तो हम उस कठोर अभिभावक के
अधीन नहीं हैं। 26यीशु मसीह में विश्वास के कारण
तुम सभी परमेश्वर की संतान हो। 27क्योंकि तुम सभी
जिन्होंने मसीह का बपतिस्मा ले लिया है, मसीह में समा

"उसने ... गिनी गई उत्पत्ति 15:6

"परमेश्वर ग़ैर ... गया था" उत्पत्ति 12:3

"ऐसा हर ... नहीं करता" व्यवस्था. 27:26

"धर्मी ... जीयेगा" हबक. 2:4

"जो व्यवस्था ... जीयेगा" लैव्य. 18:5

"हर कोई ... शापित है" व्यवस्था. 21:22–23

गये हो। 28सो अब किसी में कोई अन्तर नहीं रहा न
कोई यहूदी रहा, न ग़ैर यहूदी, न दास रहा, न स्वतन्त्र,
न पुरुष रहा, न स्त्री, क्योंकि मसीह यीशु में तुम सब
एक हो। 29और क्योंकि तुम मसीह के हो तो फिर तुम
इब्राहीम के वंशज हो। और परमेश्वर ने जो वचन
इब्राहीम को दिया था, उस वचन के उत्तराधिकारी हो।

4 मैं कहता हूँ कि उत्तराधिकारी जब तक बालक है
तो चाहे सब कुछ का स्वामी वही होता है, फिर
भी वह दास से अधिक कुछ नहीं रहता। 2वह अभिभावकों
और घर के सेवकों के तब तक अधीन रहता है, जब
तक उसके पिता द्वारा निश्चित समय नहीं आ जाता।
3हमारी भी ऐसी ही स्थिति है। हम भी जब बच्चे थे तो
सांसारिक नियमों के दास थे। 4किन्तु जब उचित अवसर
आया तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो एक स्त्री
से जन्मा था। और व्यवस्था के अधीन जीता था। 5ताकि
वह व्यवस्था के अधीन व्यक्तियों को मुक्त कर सके
जिससे हम परमेश्वर के गोद लिये बच्चे बन सकें।

6और फिर क्योंकि तुम परमेश्वर के पुत्र हो, सो
उसने तुम्हारे हृदयों में पुत्र की आत्मा को भेजा। वही
आत्मा "हे अब्बा," "हे पिता" कहते हुए पुकारती है।
7इसलिये अब तू दास नहीं है बल्कि पुत्र है और क्योंकि
तू पुत्र है, इसलिये तुझे परमेश्वर ने अपना उत्तराधिकारी
भी बनाया है।

गलाती मसीहियों के लिए पौलुस का प्रेम

8पहले तुम लोग जब परमेश्वर को नहीं जानते थे तो
तुम लोग देवताओं के दास थे। वे वास्तव में परमेश्वर
नहीं थे। 9किन्तु अब तुम परमेश्वर को जानते हो, या यूँ
कहना चाहिये कि परमेश्वर के द्वारा अब तुम्हें पहचान
लिया गया है। फिर तुम उन साररहित, दुर्बल नियमों की
ओर क्यों लौट रहे हो। तुम फिर से उनके अधीन क्यों
होना चाहते हो? 10तुम किन्हीं विशेष दिनों, महीनों,
ऋतुओं और वर्षो को मानने लगे हो। 11तुम्हारे बारे में
मुझे डर है कि तुम्हारे लिए जो काम मैंने किया है, वह
सारा कहीं बेकार तो नहीं हो गया है।

12हे भाइयों, कृपया मेरे जैसे बन जाओ। देखो, मैं भी
तो तुम्हारे जैसा बन गया हूँ, यह मेरी तुमसे प्रार्थना है,
ऐसा नहीं है कि तुमने मेरे प्रति कोई अपराध किया है।
13तुम तो जानते ही हो कि अपनी शारीरिक व्याधि के
कारण मैंने पहली बार तुम्हें ही सुसमाचार सुनाया था।
14और तुमने भी, मेरी अस्वस्थता के कारण, जो तुम्हारी
परीक्षा ली गयी थी, उससे मुझे छोटा नहीं समझा और न
ही मेरा निषेध किया। बल्कि तुमने परमेश्वर के स्वर्ग
दूत के रूप में मेरा स्वागत किया। मानों मैं स्वयं मसीह
यीशु ही था। 15सो तुम्हारी उस प्रसन्नता का क्या हुआ?
मैं तुम्हारे लिये स्वयं इस बात का साक्षी हूँ कि यदि तुम
समर्थ होते तो तुम अपनी आँखें तक निकाल कर मुझे
दे देते। 16सो क्या सच बोलने से ही मैं तुम्हारा शत्रु हो
गया?

17तुम्हें व्यवस्था के विधान पर चलाना चाहने वाले
तुममें बड़ी गहरी रुचि लेते हैं। किन्तु उनका उद्देश्य
अच्छा नहीं है। वे तुम्हें मुझ से अलग करना चाहते हैं।
ताकि तुम भी उनमें गहरी रुचि ले सको। 18कोई किसी
में सदा गहरी रुचि लेता रहे, यह तो एक अच्छी बात है
किन्तु यह किसी अच्छे के लिए होना चाहिये। और बस
उसी समय नहीं, जब मैं तुम्हारे साथ हूँ। 19मेरे प्रिय
बच्चो! मैं तुम्हारे लिये एक बार फिर प्रसव वेदना को
झेल रहा हूँ, जब तक तुम मसीह जैसे ही नहीं हो जाते।
20मैं चाहता हूँ कि अभी तुम्हारे पास आ पहुँचूँ और
तुम्हारे साथ अलग ही तरह से बातें करूँ, क्योंकि मैं
समझ नहीं पा रहा हूँ कि तुम्हारे लिये क्या किया जाये।

सारा और हाजिरा का उदाहरण

21व्यवस्था के विधान के अधीन रहना चाहने वालों
से मैं पूछना चाहता हूँ: क्या तुमने व्यवस्था के विधान
का यह कहना नहीं सुना 22कि इब्राहीम के दो पुत्र थे।
एक का जन्म एक दासी से हुआ था और दूसरे का एक
स्वतन्त्र स्त्री से। 23दासी से पैदा हुआ पुत्र प्राकृतिक
परिस्थितियों में जन्मा था किन्तु स्वतन्त्र स्त्री से जो पुत्र
उत्पन्न हुआ था, वह परमेश्वर के द्वारा की गयी प्रतिज्ञा
का परिणाम था।

24इन बातों का प्रतीकात्मक अर्थ है: ये दो स्त्रियाँ, दो
वाचाओं का प्रतीक हैं। एक वाचा सिनै पर्वत से प्राप्त
हुआ था जिसने उन लोगों को जन्म दिया जो दासता के
लिये थे। यह वाचा हाजिरा से सम्बन्धित है। 25हाजिरा
अरब में स्थित सिनै पर्वत का प्रतीक है, वह वर्तमान
यरूशलेम की ओर संकेत करती है क्योंकि वह अपने
बच्चों के साथ दासता भुगत रही है। 26किन्तु स्वर्ग में
स्थित यरूशलेम स्वतन्त्र है। और वही हमारी माता है।
27शास्त्र कहता है:

"बाँझ! आनन्द मना, तूने किसी को न जना; हर्ष नाद
कर, तुझ को प्रसव वेदना न हुई, और हँसी-खुशी में
खिलखिला। क्योंकि परित्यक्ता की अनगिनत संतानें हैं
उसकी उतनी नहीं है जो पतिवंती है।" *यशायाह 54:1*

28इसलिए भाइयों, अब तुम इसहाक की जैसी परमेश्वर
के वचन की संतान हो। 29 किन्तु जैसे उस समय
प्राकृतिक परिस्थितियों के अधीन पैदा हुआ आत्मा की
शक्ति से उत्पन्न हुए को सताता था, वैसी ही स्थिति आज
है। 30किन्तु देखो, पवित्र शास्त्र क्या कहता है? "इस
दासी और इसके पुत्र को निकाल कर बाहर करो
क्योंकि यह दासी पुत्र तो स्वतन्त्र स्त्री के पुत्र के साथ
उत्तराधिकारी नहीं होगा।"*

"इस दासी ... नहीं होगा" उत्पत्ति 21:10

31इसीलिए हे भाइयो, हम उस दासी की संतान नहीं
हैं, बल्कि हम तो स्वतन्त्र स्त्री की संताने हैं।

स्वतन्त्र बने रहो

5 मसीह ने हमें स्वतन्त्र किया है, ताकि हम स्वतन्त्रता
का आनन्द ले सकें। इसलिये अपने विश्वास को
दृढ़ बनाये रखो और फिर से व्यवस्था के विधान के
जुए का बोझ मत उठाओ। 2सुनो! स्वयं मैं, पौलुस तुमसे
कह रहा हूँ कि यदि ख़तना करा कर तुम फिर से
व्यवस्था के विधान की ओर लौटते हो तो तुम्हारे लिये
मसीह का कोई महत्व नहीं रहेगा। 3अपना ख़तना
कराने देने वाले प्रत्येक व्यक्ति को, मैं एक बार फिर से
जताये देता हूँ कि उसे समूचे व्यवस्था के विधान पर
चलना अनिवार्य है। 4तुममें से जितने भी लोग व्यवस्था
के पालन के कारण धर्मी के रूप में स्वीकृत होना
चाहते हैं, वे सभी मसीह से दूर हो गये हैं और परमेश्वर
के अनुग्रह के क्षेत्र से बाहर हैं। 5किन्तु हम विश्वास के
द्वारा परमेश्वर के सामने धर्मी स्वीकार किये जाने की
आशा रखते हैं। आत्मा की सहायता से हम इसकी बाट
जोह रहे हैं। 6क्योंकि मसीह यीशु में स्थिति के लिये न
तो ख़तना कराने का कोई महत्त्व है और न ख़तना
नहीं कराने का बल्कि उसमें तो प्रेम से पैदा होने वाले
विश्वास का ही महत्त्व है।

7तुम तो बहुत अच्छी तरह एक मसीह का जीवन
जीते रहे हो। अब तुम्हें, ऐसा क्या है जो सत्य पर चलने
से रोक रहा है। 8ऐसी विमति जो तुम्हें सत्य से दूर कर
रही है, तुम्हारे बुलाने वाले परमेश्वर की ओर से नहीं
आयी है।

9"थोड़ा सा ख़मीर गुँधे हुए समूचे आटे को ख़मीर से
उठा लेता है।" 10प्रभु के प्रति मेरा पूरा भरोसा है कि
तुम किसी भी दूसरे मत को नहीं अपनाओगे किन्तु
तुम्हें विचलित करने वाला चाहे कोई भी हो, उचित दंड
पायेगा।

11हे भाइयों, यदि मैं आज भी, जैसा कि कुछ लोग
मुझ पर लांछन लगाते हैं कि मैं ख़तने का प्रचार करता
हूँ तो मुझे अब तक यातनाएँ क्यों दी जा रही हैं? और
यदि मैं अब भी ख़तने की आवश्यकता का प्रचार
करता हूँ, तब तो मसीह के क्रूस के कारण पैदा हुई
मेरी सभी बाधाएँ समाप्त हो जानी चाहियें। 12मैं तो
चाहता हूँ कि वे जो तुम्हें डिगाना चाहते हैं, ख़तना
कराने के साथ साथ अपने आपको बधिया ही करा
डालते।

13किन्तु भाइयो, तुम्हें परमेश्वर ने स्वतन्त्र रहने को
चुना है। किन्तु उस स्वतन्त्रता को अपने आप पूर्ण
स्वभाव की पूर्ति का साधन मत बनने दो, इसके विपरीत
प्रेम के कारण परस्पर एक दूसरे की सेवा करो। 14क्योंकि
समूचे व्यवस्था के विधान का सार संग्रह इस एक
कथन में ही है: "अपने साथियों से वैसे ही प्रेम करो,
जैसे तुम अपने आप से करते हो।"*

15किन्तु आपस में काट करते हुए यदि तुम एक दूसरे
को खाते रहोगे तो देखो! तुम आपस में ही एक दूसरे
को समाप्त कर दोगे।

मानव-प्रकृति और आत्मा

16किन्तु मैं कहता हूँ कि आत्मा के अनुशासन के
अनुसार आचरण करो और अपनी पाप पूर्ण प्रकृति की
इच्छाओं की पूर्ति मत करो। 17क्योंकि शारीरिक भौतिक
अभिलाषाएँ पवित्र आत्मा की अभिलाषाओं के और
पवित्र आत्मा की अभिलाषाएँ शारीरिक भौतिक
अभिलाषाओं के विपरीत होती हैं। इनका आपस में
विरोध है। इसीलिए तो जो तुम करना चाहते हो, वह
कर नहीं सकते। 18किन्तु यदि तुम पवित्र आत्मा के
अनुशासन में चलते हो तो फिर व्यवस्था के विधान के
अधीन नहीं रहते।

19अब देखो। हमारे शरीर की पापपूर्ण प्रकृति के
कामों को तो सब जानते हैं। वे हैं: व्यभिचार अपवित्रता,
भोगविलास, 20मूर्ति पूजा, जादू-टोना, बैरभाव,
लड़ाई-झगड़ा, डाह, क्रोध, स्वार्थीपन, मतभेद, फूट,
ईर्ष्या, 21नशा, लंपटता या ऐसी ही और बातें। अब मैं
तुम्हें इन बातों के बारे में वैसे ही चेता रहा हूँ जैसे मैंने
तुम्हें पहले ही चेता दिया था कि जो लोग ऐसी बातों में
भाग लेंगे, वे परमेश्वर के राज्य का उत्तराधिकार नहीं
पायेंगे। 22जबकि पवित्र आत्मा प्रेम, प्रसन्नता, शांति, धीरज,
दयालुता, नेकी, विश्वास, 23नम्रता और आत्म-संयम
उपजाता है। ऐसी बातों के विरोध में कोई व्यवस्था का
विधान नहीं है। 24उन लोगों ने जो यीशु मसीह के हैं,
अपने पापपूर्ण मानव-स्वभाव को वासनाओं और
इच्छाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। 25क्योंकि जब
हमारे इस नये जीवन का स्रोत आत्मा है तो आओ
आत्मा के ही अनुसार चलें। 26हम अभिमानी न बनें।
एक दूसरे को न चिड़ायें। और न ही परस्पर ईर्ष्या
रखें।

एक दूसरे की सहायता करो

6 हे भाइयो, तुममें से यदि कोई व्यक्ति कोई पाप
करते पकड़ा जाए तो तुम आध्यात्मिक जनों को
चाहिये कि नम्रता के साथ उसे धर्म के मार्ग पर वापस
लाने में सहायता करो। और स्वयं अपने लिये भी सावधानी
बरतो कि कहीं तुम स्वयं भी किसी परीक्षा में न पड़
जाओ। 2परस्पर एक दूसरे का भार उठाओ। इस प्रकार
तुम मसीह की व्यवस्था का पालन करोगे। 3यदि
कोई व्यक्ति महत्त्वपूर्ण न होते हुए भी अपने को महत्त्वपूर्ण

"अपने साथियों ... करते हो" लैव्य. 19:18

समझता है तो वह अपने को धोखा देता है। 4अपने कर्म
का मूल्यांकन हर किसी को स्वयं करते रहना चाहिये।
ऐसा करने पर ही उसे अपने आप पर, किसी दूसरे के
साथ तुलना किये बिना, गर्व करने का अवसर मिलेगा।
5क्योंकि अपना दायित्व हर किसी को स्वयं ही उठाना
है। 6जिसे परमेश्वर का वचन सुनाया गया है, उसे
चाहिये कि जो उत्तम वस्तुएँ उसके पास हैं, उनमें अपने
उपदेशक को साझी बनाए।

जीवन खेत–बोने जैसा है

7अपने आपको मत छलो। परमेश्वर को कोई बुद्धू
नहीं बना सकता क्योंकि जो जैसा बोयेगा, वैसा ही
काटेगा। 8जो अपनी काया के लिए बोयेगा, वह अपनी
काया से विनाश की फसल काटेगा। किन्तु जो आत्मा
के खेत में बीज बोएगा, वह आत्मा के द्वारा अनन्त
जीवन की फसल काटेगा। 9इसलिये आओ हम भलाई
करते कभी न थकें, क्योंकि यदि हम भलाई करते ही
रहेंगे तो उचित समय आने पर हमें उसका फल मिलेगा।
10सो जैसे ही कोई अवसर मिले, हमें सभी के साथ
भलाई करनी चाहिये, विशेषकर अपने धर्म–भाइयों के
साथ।

पत्र का समापन

11देखो, मैंने तुम्हें स्वयं अपने हाथ से कितने बड़े बड़े
अक्षरों में लिखा है। 12ऐसे लोग जो शारीरिक रूप से
अच्छा दिखावा करना चाहते हैं, तुम पर ख़तना कराने
का दबाव डालते हैं। किन्तु वे ऐसा बस इसलिए करते हैं
कि उन्हें मसीह के क्रूस के कारण यातनाएँ न सहनीं
पड़ें। 13क्योंकि वे स्वयं भी जिनका ख़तना हो चुका है,
व्यवस्था के विधान का पालन नहीं करते किन्तु फिर
भी वे चाहते हैं कि तुम ख़तना कराओ ताकि वे तुम्हारे
द्वारा इस शारीरिक प्रथा को अपनाए जाने पर डींगे मार
सकें। 14किन्तु जिसके द्वारा मैं संसार के लिये और
संसार मेरे लिये मर गया, प्रभु यीशु मसीह के उस क्रूस
को छोड़ कर मुझे और किसी पर गर्व न हो। 15क्योंकि
न तो ख़तने का कोई महत्त्व है और न बिना ख़तने
का। यदि महत्त्व है तो वह नयी सृष्टि का है। 16इसलिये
जो लोग इस धर्म–नियम पर चलेंगे उन पर, और परमेश्वर
के इस्राएल पर शांति तथा दया होती रहे।

17पत्र को समाप्त करते हुए मैं तुमसे विनती करता हूँ
कि अब मुझे कोई और दु:ख मत दो। क्योंकि मैं तो
पहले ही अपने देह में यीशु के घावों को लिए घूम रहा
हूँ। 18हे भाइयों, हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह
तुम्हारी आत्माओं के साथ बना रहे। आमीन।

इफिसियों

1 पौलुस की ओर से, जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु
मसीह का एक प्रेरित है, इफिसुस के रहने वाले संत
जनों और मसीह यीशु में विश्वास रखने वालों के नाम:
2तुम्हें हमारे परम पिता परमेश्वर और यीशु मसीह
की ओर से अनुग्रह तथा शांति मिले।

मसीह में स्थितों के लिये आध्यात्मिक आशीषें

3हमारे प्रभु यीशु मसीह का पिता और परमेश्वर
धन्य हो। उसने हमें मसीह के रूप में स्वर्ग के क्षेत्र में
हर तरह के आशीर्वाद दिये हैं। 4-5संसार की रचना से
पहले ही परमेश्वर ने हमें, जो मसीह में स्थित हैं, अपने
सामने पवित्र और निर्दोष बनने के लिये चुना। हमारे
प्रति उसका जो प्रेम है उसी के कारण उसने यीशु मसीह
के द्वारा हमें अपने बेटों के रूप में स्वीकार किये जाने
के लिए नियुक्त किया। यही उसकी इच्छा थी और यही
प्रयोजन भी था। 6उसने ऐसा इसलिये किया कि वह
अपनी महिमाय अनुग्रह के कारण स्वयं को प्रशंसित
करे। उसने इसे हमें, जो उसके प्रिय पुत्र में स्थित हैं
मुक्त भाव से प्रदान किया। 7उसकी बलिदानी मृत्यु के
द्वारा अब हम अपने पापों से छुटकारे का आनन्द ले रहे
हैं। उसके सम्पन्न अनुग्रह के कारण हमें हमारे पापों की
क्षमा मिलती है। अपने उसी प्रेम के अनुसार जिसे वह
मसीह के द्वारा हम पर प्रकट करना चाहता था। 8उसने
हमें अपनी इच्छा के रहस्य को बताया है। 9जैसा कि
मसीह के द्वारा वह हमें दिखाना चाहता था। 10परमेश्वर
की यह योजना थी कि उचित समय आने पर स्वर्ग की
और पृथ्वी पर की सभी वस्तुओं को मसीह में एकत्र
करे। 11सब बातें योजना और परमेश्वर के निर्णय के
अनुसार की जाती हैं। और परमेश्वर ने अपने निजी
प्रयोजन के कारण ही हमें उसी मसीह में संत बनने के
लिये चुना है। यह उसके अनुसार ही हुआ जिसे परमेश्वर
ने अनादिकाल से सुनिश्चित कर रखा था। 12ताकि
हम उसकी महिमा की प्रशंसा के कारण बन सकें।
हम, यानी जिन्होंने अपनी सभी आशाएँ मसीह पर केन्द्रित
कर दी हैं।

13जब तुमने उस सत्य का संदेश सुना जो तुम्हारे
उद्धार का सुसमाचार था, और जिस मसीह पर तुमने
विश्वास किया था, तो जिस पवित्र आत्मा का वचन
दिया था, मसीह के माध्यम से उसकी छाप परमेश्वर के
द्वारा तुम लोगों पर भी लगायी गयी। 14वह आत्मा हमारे
उत्तराधिकार के भाग की जमानत के रूप में उस समय
तक के लिये हमें दिया गया है, जब तक कि वह हमें,
जो उसके अपने हैं, पूरी तरह छुटकारा नहीं दे देता।
इसके कारण लोग उसकी महिमा की प्रशंसा करेंगे।

इफिसियों के लिये पौलुस की प्रार्थना

15इसीलिये जब से मैंने प्रभु यीशु में तुम्हारे विश्वास
और सभी संतों के प्रति तुम्हारे प्रेम के विषय में सुना है,
16मैं तुम्हारे लिये परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर कर
रहा हूँ। अपनी प्रार्थनाओं में मैं तुम्हारा उल्लेख किया
करता हूँ। 17मैं प्रार्थना किया करता हूँ कि हमारे प्रभु
यीशु मसीह का परमेश्वर तुम्हें विवेक और दिव्यदर्शन
की ऐसी आत्मा की शक्ति प्रदान करे जिससे तुम उस
महिमावान परम पिता को जान सको। 18मेरी विनती है
कि तुम्हारे हृदय की आँखे खुल जायें और तुम प्रकाश
का दर्शन कर सको ताकि तुम्हें पता चल जाये कि वह
आशा क्या है जिसके लिये तुम्हें उसने बुलाया है। और
जिस उत्तराधिकार को वह अपने सभी लोगों को देगा,
वह कितना अद्भुत और सम्पन्न है। 19तथा हम विश्वासियों
के लिये उसकी शक्ति अतुलनीय रूप से कितनी महान
है। यह शक्ति अपनी महान शक्ति के उस प्रयोग के
समान है, 20जिसे उसने मसीह में तब काम में लिया था
जब मरे हुओं में से उसे फिर से जिला कर स्वर्ग के क्षेत्र
में अपनी दाहिनी ओर बिठाकर 21सभी शासकों,
अधिकारियों, सामर्थ्यों और प्रभुताओं तथा हर किसी
ऐसी शक्तिशाली पदवी के ऊपर स्थापित किया था,
जिसे न केवल इस युग में बल्कि आने वाले युग में भी
किसी को दिया जा सकता है। 22परमेश्वर ने सब कुछ
को मसीह के चरणों के नीचे कर दिया और उसी ने
मसीह को कलीसिया का सर्वोच्च शिरोमणि बनाया।
23कलीसिया मसीह की देह है और सब विधियों से सब
कुछ को उसकी पूर्णता ही परिपूर्ण करती है।

मृत्यु से जीवन की ओर

2 एक समय था जब तुम लोग उन अपराधों और
पापों के कारण आध्यात्मिक रूप से मरे हुए थे

2जिनमें तुम पहले, संसार के बुरे रास्तों पर चलते हुए
और उस आत्मा का अनुसरण करते हुए जीते थे जो
इस धरती के ऊपर की आत्मिक शक्तियों की स्वामी
है। वही आत्मा अब उन व्यक्तियों में काम कर रही है
जो परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानते। 3एक समय हम भी
उन्हीं के बीच जीते थे और अपनी पापपूर्ण प्रकृति की
भौतिक इच्छाओं को तृप्त करते हुए अपने हृदयों और
पापपूर्ण प्रकृति की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए
संसार के दूसरे लोगों के समान परमेश्वर के क्रोध के
पात्र थे।

4किन्तु परमेश्वर करुणा का धनी है। हमारे प्रति
अपने महान् प्रेम के कारण 5उस समय अपराधों के
कारण हम आध्यात्मिक रूप से अभी मरे ही हुए थे,
मसीह के साथ साथ उसने हमें भी जीवन दिया (परमेश्वर
के अनुग्रह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है।) 6और क्योंकि
हम यीशु मसीह में हैं इसलिये परमेश्वर ने हमें मसीह
के साथ ही फिर से जी उठाया और उसके साथ ही
स्वर्ग के सिंहासन पर बैठाया। 7ताकि वह आने वाले हर
युग में अपने अनुग्रह के अनुपम धन को दिखाये जिसे
उसने मसीह यीशु में अपनी दया के रूप में हम पर
दर्शाया है। 8परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा अपने विश्वास
के कारण तुम्हारा उद्धार हुआ है। यह तुम्हें तुम्हारी
ओर से प्राप्त नहीं हुआ है, बल्कि यह तो परमेश्वर का
वरदान है। 9यह हमारे किये कर्मों का परिणाम नहीं है
कि हम इसका गर्व कर सकें। 10क्योंकि परमेश्वर
हमारा सृजनहार है। उसने मसीह यीशु में हमारी सृष्टि
इसलिए की है कि हम नेक काम करें जिन्हें परमेश्वर
ने पहले से ही इसलिये तैयार किया हुआ है कि हम
उन्हीं को करते हुए अपना जीवन बितायें।

मसीह में एक

11इसलिये याद रखो, वे लोग, जो अपने शरीर में
मानव हाथों द्वारा किये गये ख़तने के कारण अपने
आपको “ख़तना युक्त” बताते हैं, विधर्मी के रूप में जन्मे
तुम लोगों को “ख़तना रहित” कहते थे। 12उस समय
तुम बिना मसीह के थे, तुम इस्राएल की बिरादरी से
बाहर थे। परमेश्वर ने अपने भक्तों को जो वचन दिए थे
उन पर आधारित वाचा से अनजाने थे। तथा इस संसार
में बिना परमेश्वर के निराश जीवन जीते थे। 13किन्तु
अब तुम्हें, जो कभी परमेश्वर से बहुत दूर थे, मसीह के
बलिदान के द्वारा मसीह यीशु में तुम्हारी स्थिति के
कारण, परमेश्वर के निकट ले आया गया है 14यहूदी
और गैर यहूदी आपस में एक दूसरे से नफ़रत करते थे
और अलग हो गये थे। ठीक ऐसे जैसे उन के बीच कोई
दीवार खड़ी हो। किन्तु मसीह ने स्वयं अपनी देह का
बलिदान देकर नफ़रत की उस दीवार को गिरा दिया।
15उसने ऐसा तब किया जब अपने समूचे नियमों और
व्यवस्थाओं के विधान को समाप्त कर दिया। उसने
ऐसा इसलिये किया कि वह अपने में इन दोनों को ही
एक में मिला सके। और इस प्रकार मिलाप करा दे।
क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा उसने उस घृणा का अंत
कर दिया। और उन दोनों को परमेश्वर के साथ उस
एक देह में मिला दिया। 16और क्रूस पर अपनी मृत्यु के
द्वारा वैर भाव का नाश करके एक ही देह में उन दोनों
को संयुक्त करके परमेश्वर से फिर मिला दे। 17सो
आकर उसने तुम्हें, जो परमेश्वर से बहुत दूर थे और
जो उसके निकट थे, उन्हें शांति का सुसमाचार सुनाया।
18क्योंकि उसी के द्वारा एक ही आत्मा से परम पिता के
पास तक हम दोनों की पहुँच हुई।

19परिणामस्वरूप अब तुम न अनजान रहे और न ही
पराये। बल्कि अब तो तुम संत जनों के स्वदेशी संगी–साथी
हो गये हो। 20तुम एक ऐसा भवन हो जो प्रेरितों और
नबियों की नींव पर खड़ा है। तथा स्वयं मसीह यीशु
जिसका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कोने का पत्थर है। 21–22मसीह
में स्थित एक ऐसे स्थान की रचना के रूप में, जहाँ
आत्मा के द्वारा स्वयं परमेश्वर निवास करता है, दूसरे
लोगों के साथ तुम्हारा भी निर्माण किया जा रहा है।

ग़ैर यहूदियों में पौलुस का प्रचार कार्य

3 इसीलिये मैं, पौलुस तुम ग़ैर यहूदियों के लिये मसीह
यीशु के हेतु बंदी बना हूँ। 2तुम्हारे कल्याण के लिए
परमेश्वर ने अनुग्रह के साथ जो काम मुझे सौंपा है,
उसके बारे में तुमने अवश्य ही सुना होगा। 3कि वह
रहस्यमयी योजना दिव्यदर्शन द्वारा मुझे जनाई गयी थी,
जैसा कि मैं तुम्हें संक्षेप में लिख ही चुका हूँ। 4और यदि
तुम उसे पढ़ोगे तो मसीह विषयक रहस्यपूर्ण सत्य में
मेरी अन्तर्दृष्टि की समझ तुम्हें हो जायेगी। 5यह रहस्य
पिछली पीढ़ी के लोगों को वैसे नहीं जनाया गया था जैसे
अब उसके अपने पवित्र प्रेरितों और नबियों को आत्मा
के द्वारा जनाया जा चुका है। 6यह रहस्य है कि यहूदियों
के साथ ग़ैर यहूदी भी सह उत्तराधिकारी हैं, एक ही देह
के अंग हैं और मसीह यीशु में जो वचन हमें दिया गया
है, उसमें सहभागी हैं।

7सुसमाचार के कारण मैं उस सुसमाचार का प्रचार
करने वाला एक सेवक बन गया, जो उसकी शक्ति के
अनुसार परमेश्वर के अनुग्रह के वरदान स्वरूप मुझे
दिया गया था। 8यद्यपि सभी संत जनों में मैं छोटे से भी
छोटा हूँ किन्तु मसीह के अनन्त धन रूपी सुसमाचार
का ग़ैर यहूदियों में प्रचार करने का यह अनुग्रह मुझे
दिया गया 9कि मैं सभी लोगों के लिए उस रहस्यपूर्ण
योजना को स्पष्ट करूँ जो सब कुछ के सिरजनहार
परमेश्वर में सृष्टि के प्रारम्भ से ही छिपी हुई थी।
10ताकि वह स्वर्गिक क्षेत्र की शक्तियों और प्रशासकों
को अब उस परमेश्वर के बहुविध ज्ञान को कलीसिया

के द्वारा प्रकट कर सके। 11यह उस सनातन प्रयोजन के अनुसार सम्पन्न हुआ जो उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में पूरा किया था। 12मसीह में विश्वास के कारण हम परमेश्वर तक भरोसे और निर्भीकता के साथ पहुँच रखते हैं। 13इसलिये मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारे लिये मैं जो यातनाएँ भोग रहा हूँ, उन से आशा मत छोड़ बैठना क्योंकि इस यातना में ही तो तुम्हारी महिमा है।

मसीह का प्रेम

14इसीलिए मैं परम पिता के आगे झुकता हूँ। 15उसी से स्वर्ग में या धरती पर के सभी वंश अपने अपने नाम ग्रहण करते हैं। 16मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह महिमा के अपने धन के अनुसार अपनी आत्मा के द्वारा तुम्हारे भीतरी व्यक्तित्व को शक्तिपूर्वक सुदृढ़ करे। 17और विश्वास के द्वारा तुम्हारे हृदयों में मसीह का निवास हो। तुम्हारी जड़ें और नींव प्रेम पर टिकें 18जिससे तुम्हें अन्य सभी संत जनों के साथ यह समझने की शक्ति मिल जाये कि मसीह का प्रेम कितना व्यापक, विस्तृत, विशाल और गम्भीर है। 19और तुम मसीह के उस प्रेम को जान लो जो सभी प्रकार के ज्ञानों से परे है ताकि तुम परमेश्वर की सभी परिपूर्णताओं से भर जाओ। 20अब उस परमेश्वर के लिये जो अपनी उस शक्ति से जो हममें काम कर रही है, जितना हम माँग सकते हैं या जहाँ तक हम सोच सकते हैं, उससे भी कहीं अधिक कर सकता है, 21उसकी कलीसिया में और मसीह यीशु में अनन्त पीढ़ियों तक सदा सदा के लिये महिमा होती रहे। आमीन।

एक देह

4 इसलिए मैं, जो प्रभु का होने के कारण बंदी बना हुआ हूँ, तुम लोगों से प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हें अपना जीवन वैसे ही जीना चाहिए जैसा कि सन्तों के अनुकूल होता है। 2सदा नम्रता और कोमलता के साथ, धैर्यपूर्वक आचरण करो। एक दूसरे की प्रेम से सहते रहो। 3वह शांति, जो तुम्हें आपस में बाँधती है, उससे उत्पन्न आत्मा की एकता को बनाये रखने के लिये हर प्रकार का यत्न करते रहो। 4देह एक है और पवित्र आत्मा भी एक ही है। ऐसे ही जब तुम्हें भी बुलाया गया तो एक ही आशा में भागीदार होने के लिये ही बुलाया गया। 5 एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास है और है एक ही बपतिस्मा। 6परमेश्वर एक ही है और वह सबका पिता है। वही सब का स्वामी है, हर किसी के द्वारा वही क्रियाशील है, और हर किसी में वही समाया है।

7हममें से हर किसी को उसके अनुग्रह का एक विशेष उपहार दिया गया है जो मसीह की उदारता के अनुकूल ही है। 8इसीलिए शास्त्र कहता है,

"उसने विजयी को ऊँचे चढ़, बंदी बनाया और उसने लोगों को अपने आनन्दी वर दिये।" *भजन संहिता 68:18*

9अब देखो, जब वह कहता है, "ऊँचे चढ़" तो इसका अर्थ इसके अतिरिक्त क्या है? कि वह धरती के निचले भागों पर भी उतरा था। 10जो नीचे उतरा था, वह वही है जो ऊँचे भी चढ़ा था–इतना ऊँचा कि सभी आकाशों से भी ऊपर, ताकि वह सब कुछ को सम्पूर्ण कर दे। 11उसने स्वयं ही कुछ को प्रेरित होने का बरदान दिया तो कुछ को नबी होने का तो कुछ को सुसमाचार के प्रचारक होने का तो कुछ को परमेश्वर के जनों की सुरक्षा और शिक्षा का। 12मसीह ने उन्हें ये वरदान संत जनों की सेवा कार्य के, हेतु तैयार करने को दिये ताकि हम जो मसीह की देह हैं, आत्मा में और दृढ़ हों। 13जब तक कि हम सभी विश्वास में और परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान में एकाकार होकर परिपक्व पुरुष बनने के लिये विकास करते हुए मसीह के सम्पूर्ण गौरव की ऊँचाई को न छू लें।

14ताकि हम ऐसे बच्चे ही न बने रहें जो हर किसी ऐसी नयी शिक्षा की हवा से उछले जायें, जो हमारे रास्ते में बहती है, लोगों के छलपूर्ण व्यवहार से, ऐसी धूर्तता से, जो ठगी से भरी योजनाओं को प्रेरित करती है, इधर उधर भटका दिये जाते हैं। 15बल्कि हम प्रेम के साथ सत्य बोलते हुए हर प्रकार से मसीह के जैसे बनने के लिये विकास करते जायें। मसीह सिर है, 16जिस पर समूची देह निर्भर करती है। यह देह उससे जुड़ती हुई प्रत्येक सहायक नस से संयुक्त होती है और जब इसका हर अंग जो काम उसे करना चाहिये, उसे पूरा करता है तो प्रेम के साथ समूची देह का विकास होता है और यह देह स्वयं सुदृढ़ होती है।

ऐसे जीओ

17मैं इसीलिये यह कहता हूँ और प्रभु को साक्षी करके तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि उनके व्यर्थ के विचारों के साथ अधर्मियों के जैसा जीवन मत जीते रहो। 18उनकी बुद्धि अंधकार से भरी है। वे परमेश्वर से मिलने वाले जीवन से दूर हैं। क्योंकि वे अबोध हैं और उनके मन जड़ हो गये हैं। 19लज्जा की भावना उनमें से जाती रही है। और उन्होंने अपने को इन्द्रिय उपासना में लगा दिया है। बिना कोई बन्धन माने वे हर प्रकार की अपवित्रता में जुटे हैं। 20किन्तु मसीह के विषय में तुमने जो जाना है, वह तो ऐसा नहीं है। 21(मुझे कोई संदेह नहीं है कि तुमने उसके विषय में सुना है; और वह सत्य जो यीशु में निवास करता है, उसके अनुसार तुम्हें उसके शिष्यों के रूप में शिक्षित भी किया गया है।) 22जहाँ तक तुम्हारे पुराने जीवन–प्रकार का संबन्ध हैं तुम्हें शिक्षा दी गयी थी कि तुम अपने पुराने व्यक्तित्व को उतार

फेंको जो उसकी भटकाने वाली इच्छाओं के कारण
भ्रष्ट बना हुआ है। 23जिससे बुद्धि और आत्मा में तुम्हें
नया किया जा सके। 24और तुम उस नये स्वरूप को
धारण कर सको जो परमेश्वर के अनुरूप सचमुच
धार्मिक और पवित्र बनने के लिए रचा गया है।

25सो तुम लोग झूठ बोलने का त्याग कर दो। अपने
साथियों से हर किसी को सच बोलना चाहिये, क्योंकि
हम सभी एक शरीर के ही अंग हैं। 26क्रोध मे आकर
पाप मत कर बैठो। सूरज ढलने से पहले ही अपने क्रोध
को समाप्त कर दो। 27शैतान को अपने पर हावी मत
होने दो। 28जो चोरी करता आ रहा है, वह आगे चोरी न
करे। बल्कि उसे काम करना चाहिये, स्वयं अपने
हाथों से कोई उपयोगी काम। ताकि उसके पास, जिसे
आवश्यकता है, उसके साथ बटाने को कुछ हो सके।

29तुम्हारे मुख से कोई अनुचित शब्द नहीं निकलना
चाहिये, बल्कि लोगों के विकास के लिये जिसकी अपेक्षा
है, ऐसी उत्तम बात ही निकलनी चाहिये, ताकि जो सुनें
उनका उससे भला हो। 30परमेश्वर की पवित्र आत्मा
को दुःखी मत करते रहो क्योंकि परमेश्वर की सम्पत्ति
के रूप में तुम पर छुटकारे के दिन के लिए आत्मा के
साथ मुहर लगा दिया गया है। 31समूची कड़वाहट,
झुँझलाहट, क्रोध, चीख–चिल्लाहट और निन्दा को तुम
अपने भीतर से हर तरह की बुराई के साथ निकाल
बाहर फेंको। 32परस्पर एक दूसरे के प्रति दयालु और
करुणावान बनो। तथा आपस में एक दूसरे के अपराधों
को वैसे ही क्षमा करो जैसे मसीह के द्वारा तुम को
परमेश्वर ने भी क्षमा किया है।

ज्योतिर्मय जीवन

5 प्यारे बच्चों के समान परमेश्वर का अनुकरण
करो। 2प्रेम के साथ जीओ। ठीक वैसे ही जैसे
मसीह ने हमसे प्रेम किया है और अपने आप को,
मधुर–गंध–भेंट के रूप में, हमारे लिए परमेश्वर को
अर्पित कर दिया है। 3तुम्हारे बीच व्यभिचार और हर
किसी तरह की अपवित्रता अथवा लालच की चर्चा
तक नहीं चलनी चाहिये। जैसा कि संत जनों के लिये
उचित ही है। 4तुममें न तो अश्लील भाषा का प्रयोग
होना चाहिये, न मूर्खतापूर्ण बातें या भद्दा हँसी ठट्टा। ये
तुम्हारे अनुकूल नहीं हैं। बल्कि तुम्हारे बीच धन्यवाद
ही दिये जायें। 5क्योंकि तुम निश्चय के साथ यह जानते
हो कि ऐसा कोई भी व्यक्ति जो दुराचारी है, अपवित्र है,
अथवा लालची है (जो एक मूर्ति पूजक होने जैसा है)
मसीह के और परमेश्वर के, राज्य का उत्तराधिकार
नहीं पा सकता।

6देखो, तुम्हें कोरे शब्दों से कोई छल न ले। क्योंकि
इन बातों के कारण ही आज्ञा का उल्लंघन करने वालों
पर परमेश्वर का कोप होने को है। 7इसलिये उनके
साथी मत बनो। 8यह मैं इसलिये कह रहा हूँ कि एक
समय था जब तुम अंधकार से भरे थे किन्तु अब तुम
प्रभु के अनुयायी के रूप में ज्योति से परिपूर्ण हो।
इसलिए प्रकाश–पुत्रों का सा आचरण करो। 9हर प्रकार
के धार्मिकता, नेकी और सत्य में ज्योति का प्रतिफलन
दिखायी देता है। 10हर समय यह जानने का जतन करते
रहो कि परमेश्वर को क्या भाता है। 11ऐसे काम जो
अंधकारपूर्ण हैं, उन बेकार के कामों में हिस्सा मत
बटाओ बल्कि उनका भाँडा–फोड़ करो। 12क्योंकि ऐसे
काम जिन्हें वे गुपचुप करते हैं, उनके बारे में की गयी
चर्चा तक लज्जा की बात है। 13ज्योति जब प्रकाशित
होती है तो सब कुछ दृश्यमान हो जाता है 14और जो
कुछ दृश्यमान हो जाता है, वह स्वयं ज्योति ही बन जाता
है। इसीलिये हमारा भजन कहता है:

"अरे जाग, हे सोने वाले! मृतकों में से जी उठ बैठ,
तेरे ही सिर स्वयं मसीह प्रकाशित होगा।"

15इसलिये सावधानी के साथ देखते रहो कि तुम
कैसा जीवन जी रहे हो। विवेकहीन का सा आचरण मत
करो, बल्कि बुद्धिमान का सा आचरण करो। 16जो हर
अवसर का अच्छे कर्म करने के लिये पूरा–पूरा उपयोग
करते हैं, क्योंकि ये दिन बुरे हैं। 17इसलिए मूर्ख मत
बनो बल्कि यह जानो कि प्रभु की इच्छा क्या है।
18मदिरा पान करके मतवाले मत बने रहो क्योंकि
इससे कामुकता पैदा होती है। इसके विपरीत आत्मा से
परिपूर्ण हो जाओ। 19आपस में भजनों, स्तुतियों और
आध्यात्मिक गीतों का, परस्पर आदानप्रदान करते रहो।
अपने मन में प्रभु के लिये गीत गाते उसकी स्तुति करते
रहो। 20हर किसी बात के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह
के नाम पर हमारे परम पिता परमेश्वर का सदा धन्यवाद
करो।

पत्नी और पति

21मसीह के प्रति सम्मान के कारण एक दूसरे को
समर्पित हो जाओ। 22हे पत्नियो, अपने–अपने पतियों के
प्रति ऐसे समर्पित रहो, जैसे तुम प्रभु को समर्पित होती
हो। 23क्योंकि अपनी पत्नी के ऊपर उसका पति ही
प्रमुख है। वैसे ही जैसे हमारी कलीसिया का सिर मसीह
है। वह स्वयं ही इस देह का उद्धार करता है। 24जैसे
कलीसिया मसीह के अधीन है, वैसे ही पत्नियों को सब
बातों में अपने अपने पतियों के प्रति समर्पित रहना
चाहिये।

25हे पतियो, अपनी पत्नियों से प्रेम करो। वैसे ही जैसे
मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और अपने आपको
उसके लिये बलि दे दिया। 26ताकि वह उसे प्रभु की
सेवा में जल में स्नान करा के पवित्र कर हमारी घोषणा
के साथ परमेश्वर को अर्पित कर दे। 27इस प्रकार वह
कलीसिया को एक ऐसी चमचमाती दुलहन के रूप में

स्वयं के लिए प्रस्तुत कर सकता है जो निष्कलंक हो,
झुरियों से रहित हो या जिसमें ऐसी और कोई कमी न
हो। बल्कि वह पवित्र हो और सर्वथा निर्दोष हो। 28पतियों
को अपनी-अपनी पत्नियों से उसी प्रकार प्रेम करना
चाहिये जैसे वे स्वयं अपनी देहों से करते हैं। जो अपनी
पत्नी से प्रेम करता है, वह स्वयं अपने आप से ही प्रेम
करता है। 29कोई अपनी देह से तो कभी घृणा नहीं
करता, बल्कि वह उसे पालता-पोसता है और उसका
ध्यान रखता है। वैसे ही जैसे मसीह अपनी कलीसिया
का 30क्योंकि हम भी तो उसकी देह के अंग ही हैं।
31शास्त्र कहता है: "इसीलिये एक पुरुष अपने माता-पिता
को छोड़कर अपनी पत्नी से बंध जाता है और दोनों
एक देह हो जाते हैं।"* 32यह रहस्यपूर्ण सत्य बहुत
महत्त्वपूर्ण है और मैं तुम्हें बताता हूँ कि यह मसीह और
कलीसिया पर भी लागू होता है। 33सो कुछ भी हो, तुममें
से हर एक को अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करना
चाहिये जैसे तुम स्वयं अपने आपको करते हो। और
एक पत्नी को भी अपने पति का डर मानते हुए उसका
आदर करना चाहिये।

बच्चे और माता-पिता

6 हे बालको, प्रभु में आस्था रखते हुए माता-पिता
की आज्ञा का पालन करो क्योंकि यही उचित है।
2"अपने माता पिता का सम्मान कर।"* यह पहली
आज्ञा है जो इस प्रतिज्ञा से भी युक्त है, 3"तेरा भला हो
और तू धरती पर चिरायु हो।"*
4और हे पिताओ, तुम भी अपने बालकों को क्रोध
मत दिलाओ बल्कि प्रभु से मिली शिक्षा और निर्देशों
को देते हुए उनका पालन-पोषण करो।

सेवक और स्वामी

5हे सेवको, तुम अपने सांसारिक स्वामियों की आज्ञा
निषकपट हृदय से भय और आदर के साथ उसी प्रकार
मानो जैसे तुम मसीह की आज्ञा मानते हो। 6केवल
किसी के देखते रहते ही काम मत करो जैसे तुम्हें लोगों
के समर्थन की आवश्यकता हो। बल्कि मसीह के
सेवक के रूप में काम करो जो अपना मन लगाकर
परमेश्वर की इच्छा पूरी करते हैं। 7उत्साह के साथ
एक सेवक के रूप में ऐसे काम करो जैसे मानो तुम
लोगों की नहीं प्रभु की सेवा कर रहे हो। 8याद रखो,
तुममें से हर एक, चाहे वह सेवक या स्वतन्त्र है यदि
कोई अच्छा काम करता है, तो प्रभु से उसका प्रतिफल
पायेगा।

9हे स्वामियो, तुम भी अपने सेवकों के साथ वैसा ही
व्यवहार करो और उन्हें डराना-धमकाना छोड़ दो।
याद रखो, उनका और तुम्हारा स्वामी स्वर्ग में है और
वह कोई पक्षपात नहीं करता।

प्रभु का अभेद्य कवच धारण करो

10मतलब यह कि प्रभु में स्थित हो कर उसकी
असीम शक्ति के साथ अपने आपको शक्तिशाली बनाओ।
11परमेश्वर के सम्पूर्ण कवच को धारण करो। ताकि
तुम शैतान की योजनाओं के सामने टिक सको। 12क्योंकि
हमारा संघर्ष मनुष्यों से नहीं है, बल्कि शासकों,
अधिकारियों, इस अन्धकारपूर्ण युग की आकाशी शक्तियों
और अम्बर की दुष्टात्मिक शक्तियों के साथ है।
13इसीलिये परमेश्वर के सम्पूर्ण कवच को धारण करो
ताकि जब बुरे दिन आयें तो जो कुछ सम्भव है, उसे
कर चुकने के बाद तुम दृढ़तापूर्वक अडिग रह सको।
14-15सो अपनी कमर पर सत्य का फेंटा कस कर
धार्मिकता की झिलम पहन कर तथा पैरों में शांति के
सुसमाचार सुनाने की तत्परता के जूते धारण करके
तुम लोग अटल खड़े रहो। 16इन सब से बड़ी बात यह है
कि विश्वास को ढाल के रूप में ले लो। जिसके द्वारा
तुम उन सभी जलते तीरों को बुझा सकोगे, जो बदी के
द्वारा छोड़े गये हैं। 17छुटकारे का शिरस्त्राण पहन लो
और परमेश्वर के संदेश रूपी आत्मा की तलवार उठा
लो। 18हर प्रकार की प्रार्थना और निवेदन सहित आत्मा
की सहायता से हर अवसर पर विनती करते रहो। इस
लक्ष्य से सभी प्रकार का यत्न करते हुए सावधान रहो।
तथा सभी संतों के लिये प्रार्थना करो।
19और मेरे लिये भी प्रार्थना करो कि मैं जब भी
अपना मुख खोलूँ, मुझे एक सुसंदेश प्राप्त हो ताकि
निर्भयता के साथ सुसमाचार के रहस्यपूर्ण सत्य को,
प्रकट कर सकूँ। 20इसी के लिये मैं ज़ंजीरों में जकड़े हुए
राजदूत के समान सेवा कर रहा हूँ। प्रार्थना करो कि
मैं, जिस प्रकार मुझे बोलना चाहिये, उसी प्रकार निर्भयता
के साथ सुसमाचार का प्रवचन कर सकूँ।

अंतिम नमस्कार

21तुम भी, मैं कैसा हूँ और क्या कर रहा हूँ, इसे जान
जाओ। सो तुखिकुस तुम्हें सब कुछ बता देगा। वह
हमारा प्रिय बंधु है और प्रभु में स्थित एक विश्वासपूर्ण
सेवक है 22इसीलिये मैं उसे तुम्हारे पास भेज रहा हूँ
ताकि तुम मेरे समाचार जान सको और इसलिये भी कि
वह तुम्हारे मन को शांति दे सके।
23हे भाइयो, तुम सब को परम पिता परमेश्वर और
प्रभु यीशु मसीह की ओर से विश्वास शांति और प्रेम
प्राप्त हो। 24जो हमारे प्रभु यीशु मसीह से अमर प्रेम
रखते हैं, उन पर परमेश्वर का अनुग्रह होता है।

"इसीलिये एक ... जाते है" उत्पत्ति 2:24

"अपने ... कर" निर्गमन 20:12; व्यवस्था. 5:16

"तेरा ... चिरायु हो" निर्गमन 20:12; व्यवस्था. 5:16

फिलिप्पियों

1 यीशु मसीह के सेवक पौलुस और तिमुथियुस की
ओर से मसीह यीशु में स्थित फिलिप्पी के रहने वाले
सभी संत जनों के नाम जो वहाँ निरीक्षकों और कलीसिया
के सेवकों के साथ निवास करते हैं:
2हमारे परम पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु
मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति प्राप्त हो।

पौलुस की प्रार्थना

3मैं जब जब तुम्हें याद करता हूँ, तब तब परमेश्वर
को धन्यवाद देता हूँ। 4अपनी हर प्रार्थना में मैं सदा
प्रसन्नता के साथ तुम्हारे लिये प्रार्थना करता हूँ। 5क्योंकि
पहले ही दिन से आज तक तुम सुसमाचार के प्रचार में
मेरे सहयोगी रहे हो। 6मुझे इस बात का पूरा भरोसा है
कि वह परमेश्वर जिसने तुम्हारे बीच ऐसा उत्तम कार्य
प्रारम्भ किया है, वही उसे उसी दिन तक बनाए रखेगा,
जब मसीह यीशु फिर आकर उसे पूरा करेगा।
7तुम सब के विषय में मेरे लिये ऐसा सोचना ठीक ही
है। क्योंकि तुम सब मेरे मन में बसे हुए हो। और न
केवल तब जब मैं जेल में हूँ, बल्कि तब भी जब मैं
सुसमाचार के सत्य की रक्षा करते हुए, उसकी प्रतिष्ठा
में लगा था, तुम सब इस विशेषाधिकार में मेरे साथ
अनुग्रह में सहभागी रहे हो। 8परमेश्वर मेरा साक्षी है
कि मसीह यीशु द्वारा प्रकट प्रेम से मैं तुम सब के लिये
व्याकुल रहता हूँ।
9मैं यही प्रार्थना करता रहता हूँ: तुम्हारा प्रेम गहन
दृष्टि और ज्ञान के साथ निरन्तर बढ़े।
10ये गुण पाकर भले बुरे में अन्तर करके, सदा भले
को अपना लोगे। और इस तरह तुम पवित्र अकलुष
बन जाओगे उस दिन को जब मसीह आयेगा।
11यीशु मसीह की करुणा को पा कर तुम अति
उत्तम काम करोगे जो प्रभु को महिमा देते हैं, और
उसकी स्तुति बनते।

पौलुस की विपत्तियाँ प्रभु के कार्य में सहायक

12हे भाइयों, मैं तुम्हें जना देना चाहता हूँ कि मेरे साथ
जो कुछ हुआ है, उससे सुसमाचार को बढ़ावा ही मिला
है। 13परिणामस्वरूप संसार के समूचे सुरक्षा दल तथा
अन्य सभी लोगों को यह पता चल गया है कि मुझे
मसीह का अनुयायी होने के कारण ही बंदी बनाया गया
है। 14इसके अतिरिक्त प्रभु में स्थित अधिकतर भाई मेरे
बंदी होने के कारण उत्साहित हुए हैं और अधिकाधिक
साहस के साथ सुसमाचार को निर्भयतापूर्वक सुना रहे
हैं। 15यह सत्य है कि उनमें से कुछ ईर्ष्या और वैर के
कारण मसीह का उपदेश देते हैं किन्तु दूसरे लोग
सद्भावना से प्रेरित होकर मसीह का उपदेश देते हैं।
16ये लोग प्रेम के कारण ऐसा करते हैं क्योंकि ये जानते
हैं कि परमेश्वर ने सुसमाचार का बचाव करने के लिए
ही मुझे यहाँ रखा है। 17किन्तु कुछ और लोग तो
सच्चाई के साथ नहीं, बल्कि स्वार्थ पूर्ण इच्छा से मसीह
का प्रचार करते हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि इससे वे
बंदीगृह में मेरे लिये कष्ट पैदा कर सकेंगे।
18किन्तु इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। महत्वपूर्ण तो
यह है कि एक ढंग से या दूसरे ढंग से, चाहे बुरा उद्देश्य
हो, चाहे भला प्रचार तो मसीह का ही होता है और
इससे मुझे आनन्द मिलता है और आनन्द मिलता ही
रहेगा। 19क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के
द्वारा और उस सहायता से जो यीशु मसीह की आत्मा से
प्राप्त होती है, परिणाम में मेरी रिहाई ही होगी। 20मेरी
तीव्र इच्छा और आशा यही है और मुझे इसका विश्वास
है कि मैं किसी भी बात से निराश नहीं होऊँगा बल्कि
पूर्ण निर्भयता के साथ जैसे मेरे देह से मसीह की महिमा
सदा होती रही है, वैसे ही आगे भी होती रहेगी; चाहे मैं
जीऊँ और चाहे मर जाऊँ। 21क्योंकि मेरे जीवन का
अर्थ है मसीह और मृत्यु का अर्थ है एक उपलब्धि।
22किन्तु यदि मैं अपने इस शरीर से जीवित ही रहूँ तो
इसका अर्थ यह होगा कि मैं अपने कर्म के परिणाम
का आनन्द लूँ। सो मैं नहीं जानता कि मैं क्या चुनूँ।
23दोनों विकल्पों के बीच चुनाव में मुझे कठिनाई हो
रही है। मैं अपने जीवन से विदा होकर मसीह के पास
जाना चाहता हूँ क्योंकि वह अति उत्तम होगा। 24किन्तु
इस शरीर के साथ ही मेरा यहाँ रहना तुम्हारे लिये
अधिक आवश्यक है। 25और क्योंकि यह मैं निश्चय
के साथ जानता हूँ कि मैं यहीं रहूँगा और तुम सब की
आध्यात्मिक उन्नति और विश्वास से उत्पन्न आनन्द के
लिये तुम्हारे साथ रहता ही रहूँगा। 26ताकि तुम्हारे पास
मेरे लौट आने के परिणामस्वरूप तुम्हें मसीह यीशु में

स्थित मुझ पर गर्व करने का और अधिक आधार
मिल जाये।
27किन्तु हर प्रकार से ऐसा करो कि तुम्हारा आचरण
मसीह के सुसमाचार के अनुकूल रहे। जिससे चाहे मैं
तुम्हारे पास आकर तुम्हें देखूँ और चाहे तुमसे दूर रहूँ,
तुम्हारे बारे में यही सुनूँ कि तुम एक ही आत्मा में दृढ़ता
के साथ स्थिर हो और सुसमाचार से उत्पन्न विश्वास के
लिए एक जुट होकर संघर्ष कर रहे हो। 28तथा मैं यह
भी सुनना चाहता हूँ कि तुम अपने विरोधियों से किसी
प्रकार भी नहीं डर रहे हो। तुम्हारा यह साहस उनके
विनाश का प्रमाण है और यही प्रमाण है तुम्हारी मुक्ति
का और परमेश्वर की ओर से ऐसा ही किया जायेगा।
29क्योंकि मसीह की ओर से तुम्हें न केवल उसमें
विश्वास करने का बल्कि उसके लिये यातनाएँ झेलने
का भी विशेषाधिकार दिया गया है। 30तुम जानते हो कि
तुम उसी संघर्ष में जुटे हो, जिसमें मैं जुटा था और जैसा
कि तुम सुनते हो आज तक मैं उसी में लगा हूँ।

एकतापूर्वक एक दूसरे का ध्यान रखो

2 फिर तुम लोगों में यदि मसीह में कोई उत्साह है,
प्रेम से पैदा हुई कोई सांत्वना है, यदि आत्मा में
कोई भागेदारी है, स्नेह की कोई भावना और सहानुभूति
है 2तो मुझे पूरी तरह प्रसन्न करो। मैं चाहता हूँ, तुम एक
तरह से सोचो, परस्पर एक जैसा प्रेम करो, आत्मा में
एका रखो और एक जैसा ही लक्ष्य रखो। 3ईर्ष्या और
बेकार के अहंकार से कुछ मत करो। बल्कि नम्र बनो
तथा दूसरों को अपने से उत्तम समझो। 4तुममें से हर
एक को चाहिये कि केवल अपना ही नहीं, बल्कि
दूसरों के हित का भी ध्यान रखे।

यीशु से निःस्वार्थ होना सीखो

5अपना चिंतन ठीक वैसा ही रखो जैसा मसीह यीशु
का था।
6जो अपने स्वरूप में यद्यपि साक्षात् परमेश्वर था,
किन्तु उसने परमेश्वर के साथ अपनी इस समानता को
कभी ऐसे महाकोष के समान नहीं समझा जिससे वह
चिपका ही रहे।
7बल्कि उसने तो अपना सब कुछ त्याग कर एक
सेवक का रूप ग्रहण कर लिया और मनुष्य के समान
बन गया। और जब वह अपने बाहरी रूप में मनुष्य जैसा
बन गया 8तो उसने अपने आप को नवा लिया। और
इतना आज्ञाकारी बन गया कि अपने प्राण तक न्योछावर
कर दिये और वह भी क्रूस पर।
9इसीलिये परमेश्वर ने भी उसे ऊँचे से ऊँचे स्थान
पर उठाया और उसे वह नाम दिया जो सब नामों के
ऊपर है 10ताकि सब कोई जब यीशु के नाम का
उच्चारण होते हुए सुनें, तो नीचे झुक जायें। चाहे वे स्वर्ग
के हों, धरती पर के हों और चाहे धरती के नीचे के
हों। 11और हर जीभ परम पिता परमेश्वर की महिमा
के लिए स्वीकार करे, "यीशु मसीह ही प्रभु है।"

परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप बनो

12इसलिये मेरे प्रियों, तुम मेरे निर्देशों का जैसा उस
समय पालन किया करते थे जब मैं तुम्हारे साथ था,
अब जबकि मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँ तब तुम और अधिक
लगन से उनका पालन करो। परमेश्वर के प्रति सम्पूर्ण
आदर भाव के साथ अपने उद्धार को पूरा करने के
लिये तुम लोग काम करते जाओ। 13क्योंकि वह परमेश्वर
ही है जो उन कामों की इच्छा और उन्हें पूरा करने का
कर्म, जो परमेश्वर को भाते हैं, तुममें पैदा करता है।
14बिना कोई शिकायत या लड़ाई-झगड़ा किये सब
काम करते रहो 15ताकि तुम भोले भाले और पवित्र
बन जाओ। तथा इस कुटिल और पथभ्रष्ट पीढ़ी के
लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक बालक बन
जाओ। उन के बीच अन्धेरी दुनिया में तुम उस समय
तारे बन कर चमको 16जब तुम उन्हें जीवनदायी सुसंदेश
सुनाते होवो। तुम ऐसा ही करते रहो ताकि मसीह के
फिर से लौटने के दिन मैं यह देख कर कि मेरे जीवन
की भाग दौड़ बेकार नहीं गयी, तुम पर गर्व कर सकूँ।
17तुम्हारा विश्वास एक बलि के रूप में है और यदि
मेरा लहू तुम्हारी बलि पर दाखमधु के समान उँडेल
दिया भी जाये तो मुझे प्रसन्नता है। तुम्हारी प्रसन्नता में
मेरा भी सहभाग है। 18उसी प्रकार तुम भी प्रसन्न रहो
और मेरे साथ आनन्द मनाओ।

तीमुथियुस और इपफ्रुदीतुस

19प्रभु यीशु की सहायता से मुझे तीमुथियुस को तुम्हारे
पास शीघ्र ही भेज देने की आशा है ताकि तुम्हारे
समाचारों से मेरा भी उत्साह बढ़ सके। 20क्योंकि दूसरा
कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसकी भावनाएँ मेरे जैसी हों
और जो तुम्हारे कल्याण के लिये सच्चे मन से चिंतित
हो। 21क्योंकि और सभी अपने-अपने कामों में लगे हैं।
यीशु मसीह के कामों में कोई नहीं लगा है। 22तुम
उसके चरित्र को जानते हो कि सुसमाचार के प्रचार में
मेरे साथ उसने वैसे ही सेवा की है, जैसे एक पुत्र अपने
पिता के साथ करता है। 23सो मुझे जैसे ही यह पता
चलेगा कि मेरे साथ क्या कुछ होने जा रहा है मैं उसे
तुम्हारे पास भेज देने की आशा रखता हूँ। 24और मेरा
विश्वास है कि प्रभु की सहायता से मैं भी जल्दी ही
आऊँगा।
25मैं यह आवश्यक समझता हूँ कि इपफ्रुदीतुस को
तुम्हारे पास भेजूँ जो मेरा भाई है, साथी कार्यकर्ता है
और सहयोगी कर्म-वीर है तथा मुझे आवश्यकता पड़ने
पर मेरी सहायता के लिये तुम्हारा प्रतिनिधि रहा है,

26क्योंकि वह तुम सब के लिये व्याकुल रहा करता था
और इससे बहुत खिन्न था कि तुमने यह सुना था कि
वह बीमार पड़ गया था। 27हाँ, वह बीमार तो था, और
वह भी इतना कि जैसे मर ही जायेगा। किन्तु परमेश्वर
ने उस पर अनुग्रह किया (न केवल उस पर बल्कि
मुझ पर भी) ताकि मुझे दुख पर दुख न मिलें। 28इसीलिये
मैं उसे और भी तत्परता से भेज रहा हूँ ताकि जब तुम
उसे देखो तो एक बार फिर प्रसन्न हो जाओ और मेरा
दुःख भी जाता रहे। 29इसलिये प्रभु में बड़ी प्रसन्नता के
साथ उसका स्वागत करो और ऐसे लोगों का अधिकाधिक
आदर करते रहो।

30क्योंकि मसीह के काम के लिये वह लगभग मर
गया था ताकि तुम्हारे द्वारा की गयी मेरी सेवा में जो
कमी रह गई थी, उसे वह पूरा कर दे, इसके लिये
उसने अपने प्राणों की बाजी लगा दी।

मसीह सबके ऊपर है

3 अत: मेरे भाइयो, प्रभु में आनन्द मनाते रहो। तुम्हें
फिर-फिर उन्हीं बातों को लिखते रहने से मुझे
कोई कष्ट नहीं होता है और तुम्हारे लिये तो यह
सुरक्षित है ही। 2इन कुत्तों से सावधान रहो जो कुकर्मों
में लगे हैं। उन बुरे काम करने वालों से सावधान रहो।
3क्योंकि सच्चे ख़तना युक्त व्यक्ति तो हम हैं जो अपनी
उपासना को परमेश्वर की आत्मा द्वारा अर्पित करते
हैं। और मसीह यीशु पर गर्व रखते हैं तथा जो कुछ
शारीरिक है, उस पर भरोसा नहीं करते हैं। 4यद्यपि मैं
शारीर पर भी भरोसा कर सकता था। पर यदि कोई
और ऐसे सोचे कि उसके पास शारीरिकता पर विश्वास
करने का विचार है तो मेरे पास तो वह और भी
अधिक है। 5जब मैं आठ दिन का था, मेरा ख़तना कर
दिया गया था। मैं इस्राएली हूँ। मैं बिन्यामीन के वंश का
हूँ। मैं इब्रानी माता-पिता से पैदा हुआ एक इब्रानी हूँ।
जहाँ तक व्यवस्था के विधान तक मेरी पहुँच का प्रश्न
है, मैं एक फरीसी हूँ। 6जहाँ तक मेरी निष्ठा का प्रश्न
है, मैंने कलीसिया को बहुत सताया था। जहाँ तक उस
धार्मिकता का सवाल है जिसे व्यवस्था का विधान सिखाता
है, मैं निर्दोष था। 7किन्तु तब जो मेरा लाभ था, आज
उसी को मसीह के लिये मैं अपनी हानि समझता हूँ।
8इससे भी बड़ी बात यह है कि मैं अपने प्रभु मसीह यीशु
के ज्ञान की श्रेष्ठता के कारण आज तक सब कुछ को
हीन समझता हूँ। उसी के लिए मैंने सब कुछ का त्याग
कर दिया है और मैं सब कुछ को घृणा की वस्तु
समझने लगा हूँ ताकि मसीह को पा सकूँ9और उसी में
पाया जा सकूँ-मेरी उस धार्मिकता के कारण नहीं जो
व्यवस्था के विधान पर टिकी थी, बल्कि उस धार्मिकता
के कारण जो मसीह में विश्वास के कारण मिलती है,
जो परमेश्वर से मिलती है और जिसका आधार विश्वास
है। 10मैं मसीह को जानना चाहता हूँ और उस शक्ति का
अनुभव करना चाहता हूँ जिससे उसका पुनरुत्थान
हुआ था। मैं उसकी यातनाओं का भी सहभोगी होना
चाहता हूँ। और उसी रूप को पा लेना चाहता हूँ जिसे
उसने अपनी मृत्यु के द्वारा पाया था। 11इस आशा के
साथ कि मैं भी इस प्रकार मरे हुओं में से उठ कर
पुनरुत्थान को प्राप्त करूँ।

लक्ष्य पर पहुँचने को यत्न करते रहो

12ऐसा नहीं है कि मुझे अपनी उपलब्धि हो चुकी है
अथवा मैं पूरा सिद्ध ही बन चुका हूँ। किन्तु मैं उस
उपलब्धि को पा लेने के लिये निरन्तर यत्न कर रहा हूँ
जिसके लिये मसीह यीशु ने मुझे अपना बँधुआ बनाया
था। 13हे भाइयों! मैं यह नहीं सोचता कि मैं उसे प्राप्त
कर चुका हूँ। पर बात यह है कि बीती को बिसार कर,
जो मेरे सामने है, उस लक्ष्य तक पहुँचने के लिये मैं
संघर्ष करता रहता हूँ। 14मैं उस लक्ष्य के लिये निरन्तर
यत्न करता रहता हूँ कि मैं अपने उस पारितोषिक को
जीत लूँ, जिसे मसीह यीशु में पाने के लिये परमेश्वर ने
हमें ऊपर बुलाया है।

15ताकि उन लोगों का, जो हममें से सिद्ध पुरुष बन
चुके हैं, भाव भी ऐसा ही रहे। किन्तु यदि तुम किसी
बात को किसी और ही ढँग से सोचते हो तो तुम्हारे लिये
उसका स्पष्टीकरण परमेश्वर कर देगा। 16जिस सत्य
तक हम पहुँच चुके हैं, हमें उसी पर चलते रहना
चाहिये।

17हे भाइयों, औरों के साथ मिलकर मेरा अनुकरण
करो। जो उदाहरण हमने तुम्हारे सामने रखा है, उसके
अनुसार जो जीते हैं, उन पर ध्यान दो। 18क्योंकि ऐसे
भी बहुत से लोग हैं जो मसीह के क्रूस से शत्रुता रखते
हुए जीते हैं। (मैंने तुम्हें बहुत बार बताया है और अब भी
मैं यह बिलख बिलख कर कह रहा हूँ।) 19उनका नाश
उनकी नियति है। उनका पेट ही उनका ईश्वर है।
और जिस पर उन्हें लजाना चाहिये, उस पर वे गर्व
करते हैं। उन्हें बस भौतिक वस्तुओं की चिंता है। 20किन्तु
हमारी जन्मभूमि तो स्वर्ग में है। वहीं से हम अपने
उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के आने की बाट जोह रहे
हैं। 21अपनी उस शक्ति के द्वारा जिससे सब वस्तुओं को
वह अपने अधीन कर लेता है, हमारी दुर्बल देह को
बदल कर अपनी दिव्य देह जैसा बना देगा।

फिलिप्पियों को पौलुस का निर्देश

4 हे मेरे प्रिय भाइयो, तुम मेरी प्रसन्नता हो, मेरे गौरव
हो। तुम्हें जैसे मैंने बताया है, प्रभु में तुम वैसे ही
दृढ़ बने रहो।

2मैं यूहोदिया और संतुखे दोनों को प्रोत्साहित करता
हूँ कि तुम प्रभु में एक जैसे विचार बनाये रखो। 3मेरे

सच्चे साथी तुझसे भी मेरा आग्रह है कि इन महिलाओं
की सहायता करना। ये क्लेमेन्स तथा मेरे दूसरे सहकर्मियों
सहित सुसमाचार के प्रचार में मेरे साथ जुटी रही हैं।
इनके नाम जीवनकी पुस्तक में लिखे गये हैं।
4प्रभु में सदा आनन्द मनाते रहो।
5इसे मैं फिर दोहराता हूँ, आनन्द मनाते रहो। तुम्हारी
सहनशील आत्मा का ज्ञान सब लोगों को हो। प्रभु पास
ही है। **6**किसी बात की चिंता मत करो, बल्कि हर
परिस्थिति में धन्यवाद सहित प्रार्थना और विनय के
साथ अपनी याचना परमेश्वर के सामने रखते जाओ।
7इसी से परमेश्वर की ओर से मिलने वाली शांति, जो
समझ से परे है तुम्हारे हृदय और तुम्हारी बुद्धि को
मसीह यीशु में सुरक्षित बनाये रखेगी।
8हे भाइयों, उन बातों का ध्यान करो जो सत्य हैं, जो
भव्य हैं, जो उचित हैं, जो पवित्र हैं, जो आनन्द-दायी हैं,
जो सराहने योग्य हैं या कोई भी अन्य गुण या कोई
प्रशंसा **9**जिसे तुमने मुझसे सीखा है, पाया है या सुना है
या जिसे करते मुझे देखा है। उन बातों का अभ्यास
करते रहो। शांति का स्रोत परमेश्वर तुम्हारे साथ रहेगा।

फिलिप्पी मसीहियों के उपहार के लिये पौलुस का धन्यवाद

10तुम निश्चय ही मेरी भलाई के लिये सोचा करते थे
किन्तु तुम्हें उसे दिखाने का अवसर नहीं मिला था,
किन्तु अब आखिरकार तुममें मेरे प्रति फिर से चिंता
जागी है। इससे मैं प्रभु में बहुत आनन्दित हुआ हूँ।
11किसी आवश्यकता के कारण मैं यह नहीं कह रहा
हूँ। क्योंकि जैसी भी परिस्थिति में मैं रहूँ, मैंने उसी में
संतोष करना सीख लिया है। **12**मैं अभावों के बीच रहने
का रहस्य भी जानता हूँ और यह भी जानता हूँ कि
सम्पन्नता में कैसे रहा जाता है। कैसा भी समय हो
और कैसी भी परिस्थिति, चाहे पेट भरा हो और चाहे
भूखा, चाहे पास में बहुत कुछ हो और चाहे कुछ भी
नहीं, मैंने उन सब में सुखी रहने का भेद सीख लिया है।
13जो मुझे शक्ति देता है, उसके द्वारा मैं सभी परिस्थितियों
का सामना कर सकता हूँ।
14कुछ भी हो तुमने मेरे कष्टों में हाथ बटा कर
अच्छा ही किया है। **15**हे फिलिप्पियो, तुम तो जानते ही
हो, सुसमाचार के प्रचार के उन आरम्भिक दिनों में
जब मैंने मकिदुनिया छोड़ा था, तो लेने-देने के विषय में
केवल मात्र तुम्हारी कलीसिया को छोड़ कर किसी
और कलीसिया ने मेरा हाथ नहीं बटाया था। **16**मैं जब
थिस्सिलुनीके में था, मेरी आवश्यकताएँ पूरी करने के
लिये तुमने बार बार मुझे सहायता भेजी थी। **17**ऐसा नहीं
है कि मैं उपहारों का इच्छुक हूँ, बल्कि मैं तो यह
चाहता हूँ कि तुम्हारे खाते में लाभ जुड़ता ही चला जाये।
18तुमने इपफ्रुदीतुस के हाथों जो उपहार मधुर गंध भेंट
के रूप में मेरे पास भेजे हैं वे एक ऐसा स्वीकार करने
योग्य बलिदान हैं जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है। उन
उपहारों के कारण मेरे पास मेरी आवश्यकता से कहीं
अधिक हो गया है, मुझे पूरी तरह दिया गया है, बल्कि
उससे भी अधिक भरपूर दिया गया है। वे वस्तुएँ मधुर
गंध भेंट के रूप में हैं, एक ऐसा स्वीकार करने योग्य
बलिदान जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है। **19**मेरा परमेश्वर
तुम्हारी सभी आवश्यकताओं को मसीह यीशु में प्राप्त
अपने भव्य धन से पूरा करेगा। **20**हमारे परम पिता
परमेश्वर की सदा सदा महिमा होती रहे। आमीन!

पत्र का समापन

21मसीह यीशु के हर एक संत को नमस्कार। मेरे
साथ जो भाई हैं, तुम्हें नमस्कार करते हैं। **22**तुम्हें सभी
संत और विशेष कर कैसर परिवार के लोग नमस्कार
करते हैं। **23**तुम में से हर एक पर हमारे प्रभु यीशु
मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे।

कुलुस्सियों

1 पौलुस जो परमेश्वर की इच्छानुसार यीशु मसीह
का प्रेरित है उसकी, तथा हमारे भाई तिमुथियुस
की ओर से। 2मसीह में स्थित कुलुस्से में रहने वाले
विश्वासी भाइयों और सन्तों के नाम:
हमारे परम पिता परमेश्वर की ओर से तुम्हें अनुग्रह
और शांति मिले।
3जब हम तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं, सदा ही अपने
प्रभु यीशु मसीह के परम पिता परमेश्वर का धन्यवाद
करते हैं। 4क्योंकि हमने मसीह यीशु में तुम्हारे विश्वास
तथा सभी संत जनों के प्रति तुम्हारे प्रेम के बारे में सुना
है। 5 यह उस आशा के कारण हुआ है जो तुम्हारे लिये
स्वर्ग में सुरक्षित है और जिस के विषय में तुम पहले ही
सच्चे संदेश अर्थात् सुसमाचार के द्वारा सुन चुके हो।
6सुसमाचार समूचे संसार में सफलता पा रहा है। यह वैसे
ही सफल हो रहा है जैसे तुम्हारे बीच यह उस समय से
ही सफल होने लगा था जब तुमने परमेश्वर के अनुग्रह
के बारे में सुना था और सचमुच उसे समझा था। 7हमारे
प्रिय साथी दास इपफ्रास से, जो हमारे लिये मसीह का
विश्वासी सेवक है, तुमने सुसमाचार की शिक्षा पायी
थी। 8आत्मा के द्वारा उत्तेजित तुम्हारे प्रेम के विषय में
उसने भी हमें बताया है।
9इसीलिये जिस दिन से हमने इसके बारे में सुना है,
हमने भी तुम्हारे लिये प्रार्थना करना और यह विनती
करना नहीं छोड़ा है:
प्रभु का ज्ञान, सब प्रकार की समझ–बूझ जो आत्मा
देता, तुम्हें प्राप्त हो। और तुम बुद्धि भी प्राप्त करो
10ताकि वैसे जी सको, जैसे प्रभु को साजे। हर प्रकार
से तुम प्रभु को सदा प्रसन्न करो। तुम्हारे सब सत् कर्म
सतत सफलता पावें तुम्हारे जीवन से सत्कर्मों के फल
लगें तुम प्रभु परमेश्वर के ज्ञान में निरन्तर बढ़ते रहो।
11वह तुम्हें अपनी महिमापूर्ण शक्ति से सुदृढ़ बनाता
जाये ताकि विपत्ति के काल खुशी से महाधैर्य से तुम
सब सह लो।
12उस परम पिता का धन्यवाद करो, जिसने तुम्हें इस
योग्य बनाया कि परमेश्वर के उन संत जनों के साथ
जो ज्योतिर्मय जीवन जीते हैं, तुम उत्तराधिकार पाने में
सहभागी बन सके। 13परमेश्वर ने अन्धकार की शक्ति
से हमारा उद्धार किया और अपने प्रिय पुत्र के राज्य में
हमारा प्रवेश कराया। 14उस पुत्र द्वारा ही हमें छुटकारा
मिला है यानी हमें मिली है हमारे पापों की क्षमा।

मसीह के दर्शन में, परमेश्वर के दर्शन

15वह अदृश्य परमेश्वर का दृश्य रूप है। वह सारी
सृष्टि का सिरमौर है। 16क्योंकि जो कुछ स्वर्ग में है
और धरती पर है, उसी की शक्ति से उत्पन्न हुआ है।
कुछ भी चाहे दृश्यमान हो और चाहे अदृश्य, चाहे
सिंहासन हो चाहे राज्य, चाहे कोई शासक हो और चाहे
अधिकारी, सब कुछ उसी के द्वारा रचा गया है और
उसी के लिए रचा गया है। 17सबसे पहले उसी का
अस्तित्व था, उसी की शक्ति से सब वस्तुएँ बनी रहती
हैं। 18इस देह, अर्थात् कलीसिया का सिर वही है। वही
आदि है और मरे हुओं को फिर से जी उठाने का
सर्वोच्च अधिकारी भी वही है ताकि हर बात में पहला
स्थान उसी को मिले। 19क्योंकि अपनी समग्रता के साथ
परमेश्वर ने उसी में वास करना चाहा। 20उसी के द्वारा
समूचे ब्रह्माण्ड को परमेश्वर ने अपने से पुन: संयुक्त
करना चाहा–उन सभी को जो धरती के हैं और स्वर्ग
के हैं। उसी लहू के द्वारा परमेश्वर ने मिलाप कराया
जिसे मसीह ने क्रूस पर बहाया था।
21एक समय था जब तुम अपने विचारों और बुरे
कामों के कारण परमेश्वर के लिये अनजाने और
उसके विरोधी थे। 22किन्तु अब जब मसीह अपनी
भौतिक देह में था, तब मसीह की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर
ने तुम्हें स्वयं अपने आप से ले लिया। ताकि तुम्हें अपने
सम्मुख पवित्र, निश्कलंक और निर्दोष बना कर प्रस्तुत
किया जाये। 23यह तभी हो सकता है जब तुम अपने
विश्वास में स्थिरता के साथ अटल बने रहो और
सुसमाचार के द्वारा दी गयी उस आशा का परित्याग न
करो, जिसे तुमने सुना है। इस आकाश के नीचे हर
किसी प्राणी को उसकाउपदेश दिया गया है, और मैं
पौलुस उसी का सेवक बना हूँ।

कलीसिया के लिये पौलुस का कार्य

24अब देखो, मैं तुम्हारे लिये जो कष्ट उठाता हूँ,
उनमें आनन्द का अनुभव करता हूँ और मसीह की
देह, अर्थात् कलीसिया के लिये मसीह की यातनाओं में

जो कुछ कमी रह गयी थी, उसे अपने शरीर में पूरा
करता हूँ। 25परमेश्वर ने तुम्हारे लाभ के लिये मुझे जो
आदेश दिया था, उसी के अनुसार मैं उसका एक सेवक
ठहराया गया हूँ। ताकि मैं परमेश्वर के समाचार का
पूरी तरह प्रचार करूँ। 26यह संदेश रहस्यपूर्ण सत्य है।
जो आदिकाल से सभी की आँखों से ओझल था। किन्तु
अब इसे परमेश्वर के द्वारा संत जनों पर प्रकट कर
दिया गया है।

27परमेश्वर अपने संत जनों को यह प्रकट कर देना
चाहता था कि वह रहस्यपूर्ण सत्य कितना वैभवपूर्ण है।
उसके पास यह रहस्यपूर्ण सत्य सभी के लिये है। और
वह रहस्यपूर्ण सत्य यह है कि मसीह तुम्हारे भीतर ही
रहता है और परमेश्वर की महिमा प्राप्त करने के
लिये वही हमारी एक मात्र आशा है। 28हमें जो ज्ञान
प्राप्त है उस समूचे का उपयोग करते हुए हम हर किसी
को निर्देश और शिक्षा प्रदान करते हैं ताकि हम उसे
मसीह में एक परिपूर्ण व्यक्ति बनाकर परमेश्वर के
आगे उपस्थित कर सकें। व्यक्ति को उसी की सीख देते
हैं तथा अपनी समस्त बुद्धि से हर व्यक्ति को उसी की
शिक्षा देते हैं ताकि हर व्यक्ति को मसीह में परिपूर्ण बना
कर परमेश्वर के आगे उपस्थित कर सकें। 29मैं इसी
प्रयोजन से मसीह का उस शक्ति से जो मुझमें शक्तिपूर्वक
कार्यरत है, संघर्ष करते हुए कठोर परिश्रम कर रहा
हूँ।

2 मैं चाहता हूँ कि तुम्हें इस बात का पता चल जाये
कि मैं तुम्हारे लिए, लौदीकिया के रहने वालों के
लिये और उन सबके लिए जो निजी तौर पर मुझसे
कभी नहीं मिले हैं, कितना कठोर परिश्रम कर रहा हूँ
2ताकि उनके मन को प्रोत्साहन मिले और वे परस्पर
प्रेम में बँध जायें। तथा विश्वास का वह सम्पूर्ण धन जो
सच्चे ज्ञान से प्राप्त होता है, उन्हें मिल जाये तथा परमेश्वर
का रहस्यपूर्ण सत्य उन्हें प्राप्त हो वह रहस्यपूर्ण सत्य
स्वयं मसीह है। 3जिसमें विवेक और ज्ञान की सारी
निधियाँ छिपी हुई हैं। 4ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूँ कि
कोई तुम्हें मीठी मीठी तर्कपूर्ण युक्तियों से धोखा न दे।
5यद्यपि दैहिक रूप से मैं तुममें नहीं हूँ फिर भी आध्यात्मिक
रूप से मैं तुम्हारे भीतर हूँ। मैं तुम्हारे जीवन के अनुशासन
और मसीह में तुम्हारे विश्वास की दृढ़ता को देख कर
प्रसन्न हूँ।

मसीह में बने रहो

6इसलिए तुमने जैसे यीशु को मसीह और प्रभु के रूप
में ग्रहण किया है, तुम उसमें वैसे ही बने रहो। 7तुम्हारी
जड़ें उसी में हों और तुम्हारा निर्माण उसी पर हो तथा
तुम अपने विश्वास में दृढ़ता पाते रहो जैसा कि तुम्हें
सिखाया गया है। परमेश्वर के प्रति अत्यधिक आभारी
बनो।

8ध्यान रखो कि तुम्हें अपने उन भौतिक विचारों
और खोखले प्रपंच से कोई धोका न ले जो मानवीय
परम्परा से प्राप्त होते हैं, जो ब्रह्माण्ड को अनुशासित
करने वाली आत्माओं की देन है, न कि मसीह की।
9क्योंकि परमेश्वर अपनी सम्पूर्णता के साथ सदैव उसी
में निवास करता है। 10और उसी में स्थित होकर तुम
परिपूर्ण बने हो। वह हर शासक और अधिकारी का
शिरोमणि है।

11तुम्हारा ख़तना भी उसी में हुआ है। यह ख़तना
मनुष्य के हाथों से सम्पन्न नहीं हुआ, बल्कि यह ख़तना
जब तुम्हें तुम्हारी पापपूर्ण मानव प्रकृति के प्रभाव से
छुटकारा दिला दिया गया था तब मसीह के द्वारा सम्पन्न
हुआ। 12यह इसलिए हुआ कि जब तुम्हें बपतिस्मा में
उसके साथ गाड़ दिया गया तो जिस परमेश्वर ने उसे
मरे हुओं के बीच से जिला दिया था, उस परमेश्वर के
कार्य में तुम्हारे विश्वास के कारण, उसी के साथ तुम्हें
भी पुनःजीवित कर दिया गया। 13अपने पापों और अपने
ख़तना रहित शरीर के कारण तुम मरे हुए थे किन्तु
तुम्हें परमेश्वर ने मसीह के साथ–साथ जीवन प्रदान
किया तथा हमारे सब पापों को मुक्त रूप से क्षमा कर
दिया। 14परमेश्वर ने उस अभिलेख को हमारे बीच में
से हटा दिया जिसमें उन विधियों का उल्लेख किया गया
था जो हमारे प्रतिकूल और हमारे विरुद्ध था। उसने उसे
कीलों से क्रूस पर जड़कर मिटा दिया है। 15परमेश्वर ने
क्रूस के द्वारा आध्यात्मिक शासकों और अधिकारियों
को साधन विहीन कर दिया और अपने विजय अभियान
में बंदियों के रूप में अपने पीछे–पीछे चलाया।

मनुष्य की शिक्षा और उसकेबनाये नियमों पर मत चलो

16इसलिए खाने पीने की वस्तुओं अथवा पर्वों, नये
चाँद के पर्व, या सब्त के दिनों को लेकर कोई तुम्हारी
आलोचना न करे। 17ये तो, जो बातें आने वाली हैं,
उनकी छाया भर हैं। किन्तु इस छाया की वास्तविक
काया तो मसीह की ही है। 18कोई व्यक्ति जो अपने आप
को प्रताड़ित करने के कर्मों या स्वर्गदूतों की उपासना
के कामों में लगा हुआ हो, उसे तुम्हें तुम्हारे प्रतिफल
को पाने में बाधक नहीं बनने देना चाहिये। ऐसा व्यक्ति
सदा ही उन दिव्य दर्शनों की डींग मारता रहता है जिन्हें
उसने देखा है और अपने दुनियावी सोच की वजह से
झूठे अभिमान से भरा रहता है। 19वह अपने आपको
मसीह के अधीन नहीं रखता जो प्रमुख है जो जोड़ों और
नसों से सम्बद्ध तथा समर्थित होकर सारी देह का उपकार
करता है, और जिससे आध्यात्मिक विकास का अनुभव
होता है।

20क्योंकि तुम मसीह के साथ मर चुके हो और तुम्हे
“संसार की बुनियादी शिक्षाओं से छुटकारा दिलाया जा

चुका है।" तो इस तरह का आचरण क्यों करते हो जैसे
तुम इस दुनिया के हो और ऐसे नियमों का पालन करते
हो जैसे 21"इसे हाथ मत लगाओ," "इसे चखो मत" या
"इसे छुओ मत।" 22ये सब वस्तुएँ तो काम में आते-आते
नष्ट हो जाने के लिये हैं। ऐसे आचार व्यवहारों की
अधीनता स्वीकार करके तो तुम मनुष्य के बनाये
आचार व्यवहारों और शिक्षाओं का ही अनुसरण कर
रहे हो। 23मनमानी उपासना, अपने शरीर को प्रताड़ित
करने और अपनी काया को कष्ट देने से सम्बन्धित ये
नियम बुद्धि पर आधारित प्रतीत होते हैं पर वास्तव
में इन मूल्यों का कोई नियम नहीं है। ये नियम तो
वास्तव में लोगों को उनकी पापपूर्ण मानव प्रकृति
में लगा डालते हैं।

मसीह में नया जीवन

3 क्योंकि यदि तुम्हें मसीह के साथ मरे हुओं में से
जिला कर उठाया गया है तो उन वस्तुओं के लिये
प्रयत्नशील रहो जो स्वर्ग में हैं जहाँ परमेश्वर की दाहिनी
ओर मसीह विराजित है। 2स्वर्ग की वस्तुओं के सम्बन्ध
में ही सोचते रहो। भौतिक वस्तुओं के सम्बन्ध में मत
सोचो। 3क्योंकि तुम लोगों का पुराना व्यक्तित्व मर
चुका है और तुम्हारा नया जीवन मसीह के साथ साथ
परमेश्वर में छिपा है। 4जब मसीह, जो हमारा जीवन है,
फिर से प्रकट होगा तो तुम भी उसके साथ उसकी
महिमा में प्रकट होओगे।

5इसलिये तुममें जो कुछ सांसारिक है, उसका अंत
कर दो-व्यभिचार, अपवित्रता, वासना, बुरी इच्छाएँ और
लालच जो मूर्ति उपासना का ही एक रूप है, 6इन ही
बातों के कारण परमेश्वर का क्रोध प्रकट होने जा रहा
है।* 7एक समय था जब तुम भी ऐसे कर्म करते हुए
इसी प्रकार का जीवन जीया करते थे।

8किन्तु अब तुम्हें इन सब बातों के साथ साथ क्रोध,
झुँझलाहट, शत्रुता, निन्दा-भाव, और अपशब्द बोलने
से छुटकारा पा लेना चाहिये। 9आपस में झूठ मत बोलो
क्योंकि तुमने अपने पुराने व्यक्तित्व को उसके कर्मों
सहित उतार फेंका है 10और नये व्यक्तित्व को धारण
कर लिया है जो अपने रचयिता के स्वरूप में स्थित
होकर परमेश्वर के सम्पूर्ण ज्ञान के निमित्त निरन्तर
नया होता जा रहा है। 11परिणामस्वरूप वहाँ यहूदी और
ग़ैर यहूदी में कोई अन्तर नहीं रह गया है, न किसी
ख़तना युक्त और खतना रहित में, न किसी असभ्य
और बर्बर* में, न दास और एक स्वतन्त्र व्यक्ति में
कोई अन्तर है। मसीह सर्वेसर्वा है और सब विश्वासियों
में उसी का निवास है।

12क्योंकि तुम परमेश्वर के चुने हुए पवित्र और प्रिय
जन हो इसलिए सहानुभूति, दया, नम्रता, कोमलता और
धीरज को धारण करो। 13तुम्हें आपस में जब कभी
किसी से कोई कष्ट हो तो एक दूसरे की सह लो और
परस्पर एक दूसरे को मुक्त भाव से क्षमा कर दो। तुम्हें
आपस में एक दूसरे को ऐसे ही क्षमा कर देना चाहिए
जैसे परमेश्वर ने तुम्हें मुक्त भाव से क्षमा कर दिया।
14इन बातों के अतिरिक्त प्रेम को धारण करो। प्रेम ही
सब को आपस में बाँधता और परिपूर्ण करता है। 15तुम्हारे
मन पर मसीह से प्राप्त होने वाली शांति का शासन हो।
इसी के लिये तुम्हें उसी एक देह* में बुलाया गया है।
सदा धन्यवाद करते रहो। 16अपनी सम्पन्नता के साथ
मसीह का संदेश तुम में वास करे। भजनों, स्तुतियों और
आत्मा के गीतों को गाते हुए बड़े विवेक के साथ एक
दूसरे को शिक्षा और निर्देश देते रहो। परमेश्वर को
मन ही मन धन्यवाद देते हुए गाते रहो। 17और तुम जो
कुछ भी करो या कहो, वह सब प्रभु यीशु के नाम पर
हो। उसी के द्वारा तुम हर समय परम पिता परमेश्वर
को धन्यवाद देते रहो।

नये जीवन के नियम

18हे पत्नियो, अपने पतियों के प्रति उस प्रकार समर्पित
रहो जैसे प्रभु के अनुयायियों को शोभा देता है। 19हे
पतियो, अपनी पत्नियों से प्रेम करो, उनके प्रति कठोर
मत बनो। 20हे बालको, सब बातों में अपने माता पिता
की आज्ञा का पालन करो। क्योंकि प्रभु के अनुयायिओं
के इस व्यवहार से परमेश्वर प्रसन्न होता है।

21हे पिताओ, अपने बालकों को कड़ुवाहट से मत
भरो। कहीं ऐसा न हो कि वे जतन करना ही छोड़ दें।

22हे सेवको, अपने सांसारिक स्वामियों की सब बातों
का पालन करो। केवल लोगों को प्रसन्न भर करने के
लिये उसी समय नहीं जब वे देख रहे हों, बल्कि सच्चे
मन से उनकी मानो। क्योंकि तुम प्रभु का आदर करते
हो। 23तुम जो कुछ करो अपने समूचे मन से करो।
मानों तुम उसे लोगों के लिये नहीं बल्कि प्रभु के लिये
कर रहे हो। 24याद रखो कि तुम्हें प्रभु से उत्तराधिकार
का प्रतिफल प्राप्त होगा। अपने स्वामी मसीह की सेवा
करते रहो25क्योंकि जो बुरा कर्म करेगा, उसे उसका
फल मिलेगा और वहाँ कोई पक्षपात नहीं है।

4 हे स्वामियो, तुम अपने सेवकों को जो उनका
बनता है और उचित है, दो। याद रखो स्वर्ग में
तुम्हारा भी कोई स्वामी है।

पद 6 कुछ यूनानी प्रतियों मे ये शब्द जोड़े गये है: "उन पर जो आज्ञा को नहीं मानते।"

बर्बर शाब्दिक सिथियन, ये लोग बड़े जंगली और असभ्य समझे जाते थे।

देह मसीह का आत्मिक शरीर अर्थात् उसकी कलीसिया अथवा उसके लोग।

पौलुस की मसीहियों के लिये सलाह

2प्रार्थना में सदा लगे रहो। और जब तुम प्रार्थना करो
तो सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहो। **3**साथ ही
साथ हमारे लिये भी प्रार्थना करो कि परमेश्वर हमें
अपने संदेश के प्रचार का तथा मसीह से संबंधित रहस्यपूर्ण
सत्य के प्रवचन का अवसर प्रदान करे क्योंकि इसके
कारण ही मैं बंदीगृह में हूँ। **4**प्रार्थना करो कि मैं इसे ऐसे
स्पष्टता के साथ बता सकूँ जैसे मुझे बताना चाहिये।

5बाहर के लोगों के साथ विवेकपूर्ण व्यवहार करो।
हर अवसर का पूरा-पूरा उपयोग करो। **6**तुम्हारी बोली
सदा मीठी रहे और उससे बुद्धि की छटा बिखरे ताकि
तुम जान लो कि किस व्यक्ति को कैसे उत्तर देना है।

पौलुस के साथियों के समाचार

7हमारा प्रिय बंधु तुखिकुस जो एक विश्वासी सेवक
और प्रभु में स्थित साथी दास है, तुम्हें मेरे सभी समाचार
बता देगा। **8**मैं उसे तुम्हारे पास इसलिए भेज रहा हूँ कि
तुम्हें उससे हमारे हालचाल का पता चल जाये वह
तुम्हारे हृदयों को प्रोत्साहित करेगा। **9**मैं अपने विश्वासी
तथा प्रिय बंधु उनेसिमुस को भी उसके साथ भेज रहा हूँ
जो तुम्हीं में से एक है। वे, यहाँ जो कुछ घट रहा है, उसे
तुम्हें बतायेंगे।

10अरिस्तरखुस का जो बंदी गृह में मेरे साथ रहा है
तथा बरनाबास के बंधु मरकुस का तुम्हें नमस्कार,
(उसके विषय में तुम निर्देश पा ही चुके हो कि यदि वह
तुम्हारे पास आये तो उसका स्वागत करना,) **11**यूसतुस
कहलाने वाले यीशु का भी तुम्हें नमस्कार पहुँचे। यहूदी
विश्वासियों में बस ये ही परमेश्वर के राज्य के लिये
मेरे साथ काम कर रहे हैं। ये मेरे लिये आनन्द का
कारण रहे हैं। **12**इपफ्रास का भी तुम्हें नमस्कार पहुँचे।
वह तुम्हीं में से एक है और मसीह यीशु का सेवक है।
वह सदा बड़ी वेदना के साथ तुम्हारे लिये लगनपूर्वक
प्रार्थना करता रहता है कि तुम आध्यात्मिक रूप से
सम्पूर्ण बनने के लिये विकास करते रहो। तथा
विश्वासपूर्वक परमेश्वर की इच्छा के अनुकूल बने
रहो। **13**मैं इसका साक्षी हूँ कि वह तुम्हारे लिये और
लौदीकिया तथा हियरापुलिस के रहने वालों के लिये
सदा कड़ा परिश्रम करता रहा है। **14**प्रिय चिकित्सक
लूका तथा देमास तुम्हें नमस्कार भेजते हैं। **15**लौदीकिया
में रहने वाले भाइयों को तथा नमुफास और उस
कलीसिया को जो उसके घर में जुड़ती है,

नमस्कार पहुँचे। **16**और देखो, पत्र जब तुम्हारे सम्मुख
पढ़ा जा चुके, तब इस बात का निश्चय कर लेना कि
इसे लौदीकिया के कलीसिया में भी पढ़वा दिया जाये।
और लौदीकिया से मेरा जो पत्र तुम्हें मिले, उसे तुम भी
पढ़ लेना। **17**अखिप्पुस से कहना कि वह इस बात का
ध्यान रखे कि प्रभु में जो सेवा उसे सौंपी गयी है, वह
उसे निश्चय के साथ पूरा करे। **18**मैं पौलुस स्वयं अपनी
लेखनी से यह नमस्कार लिख रहा हूँ। याद रखना मैं
कारागार में हूँ, परमेश्वर का अनुग्रह तुम्हारे साथ रहे।

1 थिस्सलुनीकियों

1 थिस्सलुनीकियों के परम पिता परमेश्वर और प्रभु
यीशु मसीह में स्थित कलीसिया को पौलुस, सिलवानुस
और तीमुथियुस की ओर से:
परमेश्वर का अनुग्रह और शांति तुम्हारे साथ रहे।

थिस्सलुनीकियों का जीवन और विश्वास

2हम तुम सब के लिए सदा परमेश्वर को धन्यवाद
देते रहते हैं। और अपनी प्रार्थनाओं में हमें तुम्हारी याद
बनी रहती है। 3प्रार्थना करते हुए हम सदा तुम्हारे उस
काम की याद करते हैं जो फल है, विश्वास का, प्रेम
से पैदा हुए तुम्हारे कठिन परिश्रम का, और हमारे प्रभु
यीशु मसीह में आशा से उत्पन्न तुम्हारी धैर्यपूर्ण
सहनशीलता का हमें सदा ध्यान बना रहता है।
4परमेश्वर के प्रिय हमारे भाइयो, हम जानते हैं कि तुम
उसके चुने हुए हो। 5क्योंकि हमारे सुसमाचार का विवरण
तुम्हारे पास मात्र शब्दों में ही नहीं पहुँचा है बल्कि पवित्र
आत्मा सामर्थ्य और गहन श्रद्धा के साथ पहुँचा है तुम
जानते हो कि हम जब तुम्हारे साथ थे, तुम्हारे लाभ के
लिये कैसा जीवन जीते थे। 6कठोर यातनाओं के बीच
तुमने पवित्र आत्मा से मिलने वाली प्रसन्नता के साथ
सुसंदेश को ग्रहण किया और हमारा तथा प्रभु का
अनुकरण करने लगे। 7और इसलिये मकिदुनिया और
अखाया के सभी विश्वासियों के लिये तुम एक आदर्श
बन गये 8क्योंकि तुमसे प्रभु के संदेश की जो गूँज उठी,
वह न केवल मकिदुनिया और अखाया में सुनी गयी
बल्कि परमेश्वर में तुम्हारा विश्वास सब कहीं जाना
माना गया। सो हमें कुछ भी कहने की आवश्यकता
नहीं है।

9-10क्योंकि वे स्वयं ही हमारे विषय में बताते हैं कि
तुमने हमारा कैसा स्वागत किया था और सजीव तथा
सच्चे परमेश्वर की सेवा करने के लिए और स्वर्ग से
उसके पुत्र के आगमन की प्रतीक्षा करने के लिए तुम
मूर्तियों की ओर से सजीव परमेश्वर की ओर कैसे मुड़े
थे। पुत्र अर्थात् यीशु को उसने मरे हुओं में से फिर से
जिला उठाया था। और वही परमेश्वर के आने वाले
कोप से हमारी रक्षा करता है।

थिस्सलुनीका में पौलुस का कार्य

2 हे भाइयों, तुम्हारे पास हमारे आने के सम्बन्ध में
तुम स्वयं ही जानते हो कि वह निरर्थक नहीं था।
2तुम जानते हो कि फिलिप्पी में यातनाएँ झेलने और
दुर्व्यवहार सहने के बाद भी परमेश्वर की सहायता से
हमें कड़े विरोध के रहते हुए भी परमेश्वर के सुसमाचार
को सुनाने का साहस प्राप्त हुआ। 3निश्चय ही हम जब
लोगों का ध्यान अपने उपदेशों की ओर खींचना चाहते
हैं तो वह इसलिए नहीं कि हम कोई भटके हुए हैं। और
न ही इसलिए कि हमारे उद्देश्य दूषित हैं और इसलिए
भी नहीं कि हम लोगों को छलने का जतन करते हैं।
4हम लोगों को खुश करने की कोशिश नहीं करते
बल्कि हम तो उस परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं जो
हमारे मन का भेद जानता है। 5निश्चय ही हम कभी
भी चापलूसी की बातों के साथ तुम्हारे सामने नहीं
आये। जैसा कि तुम जानते ही हो, हमारा उपदेश किसी
लोभ का बहाना नहीं है। परमेश्वर साक्षी है 6हमने लोगों
से कोई मान सम्मान भी नहीं चाहा। न तुमसे और न ही
किसी और से।

7यद्यपि हम मसीह के प्रेरितों के रूप में अपना अधिकार
जता सकते थे किन्तु हम तुम्हारे बीच वैसे ही नम्रता के
साथ रहे* जैसे एक माँ अपने बच्चे को दूध पिला कर
उसका पालन-पोषण करती है। 8हमने तुम्हारे प्रति
वैसी ही नम्रता का अनुभव किया है, इसलिये परमेश्वर
से मिले सुसमाचार को ही नहीं, बल्कि स्वयं अपने
आपको भी हम तुम्हारे साथ बाँट लेना चाहते हैं क्योंकि
तुम हमारे प्रिय हो गये हो। 9हे भाइयो, तुम हमारे कठोर
परिश्रम और कठिनाई को याद रखो जो हमने दिन-रात
इसलिये किया है ताकि हम परमेश्वर के सुसमाचार
को सुनाते हुए तुम पर बोझ न बनें। 10तुम साक्षी हो
और परमेश्वर भी साक्षी है कि तुम विश्वासियों के प्रति
हमने कितनी आस्था, धार्मिकता और दोष रहितता के
साथ व्यवहार किया है। 11तुम जानते ही हो कि जैसे
एक पिता अपने बच्चों के साथ व्यवहार करता है
12वैसे ही हमने तुममें से हर एक को आग्रह के साथ
सुख चैन दिया है। और उस रीति से जाने को कहा है

किन्तु … रहे” कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग भी मिलता है: किन्तु तुम्हारे बीच हम बच्चे ही बने रहे।

जिससे परमेश्वर, जिसने तुम्हें अपने राज्य और महिमा
में बुला भेजा है, प्रसन्न होता है। 13और इसीलिये हम
परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर करते रहते हैं क्योंकि
हमसे तुमने जब परमेश्वर का वचन ग्रहण किया तो
उसे मानवीय सन्देश के रूप में नहीं, बल्कि परमेश्वर
के सन्देश के रूप में ग्रहण किया, जैसा कि वह वास्तव
में है। और तुम विश्वासियों पर जिसका प्रभाव भी है।
14हे भाइयो, तुम यहूदियों में स्थित मसीह यीशु में परमेश्वर
की कलीसियाओं का अनुसरण करते रहे हो। तुमने
अपने साथी देश-भाइयों से वैसी ही यातनाएँ झेली हैं
जैसी उन्होंने उन यहूदियों के हाथों झेली थीं 15जिन्होंने
प्रभु यीशु को मार डाला और नबियों को बाहर खदेड़
दिया। वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं करते वे तो समूची
मानवता के विरोधी हैं। 16वे विधर्मियों को सुसमाचार
का उपदेश देने में बाधा खड़ी करते हैं कि कहीं उन
लोगों का उद्धार न हो जाये। इन बातों से वे सदा अपने
पापों का घड़ा भरते रहते हैं और अन्ततः अब तो
परमेश्वर का प्रकोप उन पर पूरी तरह से आ पड़ा है

फिर मिलने की इच्छा

17हे भाइयो, जहाँ तक हमारी बात है, हम थोड़े समय
के लिये तुमसे बिछुड़ गये थे। विचारों से नहीं, केवल
शरीर से। सो हम तुमसे मिलने को बहुत उतावले हो
उठे। हमारी इच्छा तीव्र हो उठी थी। 18हाँ! हम तुमसे
मिलने के लिए बहुत जतन कर रहे थे। मुझ पौलुस ने
अनेक बार प्रयत्न किया किन्तु शैतान ने उसमें बाधा
डाली। 19भला बताओ तो हमारी आशा, हमारा उल्लास
या हमारा वह मुकुट जिस पर हमें इतना गर्व है, क्या है?
क्या वह तुम्हीं नहीं हो। हमारे प्रभु यीशु के दुबारा आने
पर जब हम उसके सामने उपस्थित होंगे 20तो वहाँ तुम
हमारी महिमा और हमारे आनन्द होंगे।

3 क्योंकि हम और अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकते
थे इसलिये हमने एथेंस में अकेले ही ठहर जाने का
निश्चय कर लिया।2और हमनेहमारे बन्धु तथा परमेश्वर
के लिये मसीह के सुसमाचार के प्रचार में अपने सहकर्मी
तिमुथियुस को तुम्हें सुदृढ़ बनाने और विश्वास में उत्साहित
करने को तुम्हारे पास भेज दिया 3ताकि इन वर्तमान
यातनाओं से कोई विचलित न हो उठे। क्योंकि तुम तो
जानते ही हो कि हम तो यातना के लिये ही निश्चित
किये गये हैं। 4वास्तव में जब हम तुम्हारे पास थे, तुम्हें
पहले से ही कहा करते थे कि हम पर कष्ट आने वाले
हैं, और यह ठीक वैसे ही हुआ भी है। तुम तो यह जानते
ही हो। 5इसलिए क्योंकि मैं और अधिक प्रतीक्षा नहीं
कर सकता था, इसलिये मैंने तुम्हारे विश्वास के विषय
में जानने तिमुथियुस को भेज दिया। क्योंकि मुझे डर था
कि लुभाने वाले ने कहीं तुम्हें प्रलोभित करके हमारे
कठिन परिश्रम को व्यर्थ तो नहीं कर दिया है।

6तुम्हारे पास से तिमुथियुस अभी अभी हमारे पास
वापस लौटा है और उसने हमें तुम्हारे विश्वास और
तुम्हारे प्रेम का शुभ समाचार दिया है। उसने हमें बताया
है कि तुम्हें हमारी मधुर याद आती है और तुम हमसे
मिलने को बहुत अधीर हो। वैसे ही जैसे हम तुमसे
मिलने को। 7इसलिए हे भाइयो, हमारी सभी पीड़ाओं
और यातनाओं में तुम्हारे विश्वास के कारण हमारा
उत्साह बहुत बढ़ा है। 8हाँ! अब हम फिर साँस ले पा रहे
हैं क्योंकि हम जान गये हैं कि प्रभु में तुम अटल खड़े
हो। 9तुम्हारे विषय में तुम्हारे कारण जो आनन्द हमें
मिला है, उसके लिये हम परमेश्वर का धन्यवाद कैसे
करें। अपने परमेश्वर के सामने 10रात-दिन यथासम्भव
लगन से हम प्रार्थना करते रहते हैं कि किसी प्रकार
तुम्हारा मुँह फिर देख पायें और तुम्हारे विश्वास में जो
कुछ कमी रह गयी है, उसे पूरा करें। 11हमारा परम
पिता परमेश्वर और हमारा प्रभु यीशु तुम्हारे पास आने
को हमें मार्ग दिखाये। 12और प्रभु एक दूसरे के प्रति
तथा सभी के लिए तुममें जो प्रेम है, उसकी बढ़ोतरी
करे। वैसे ही जैसे तुम्हारे लिये हमारा प्रेम उमड़ पड़ता
है। 13इस प्रकार वह तुम्हारे हृदयों को सुदृढ़ करे और
उन्हें हमारे परम पिता परमेश्वर के सामने हमारे प्रभु
यीशु के आगमन पर अपने सभी पवित्र स्वर्गदूतों के
साथ पवित्र एवम् दोष-रहित बना दे

परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन

4 हे भाइयो, अब मुझे तुम्हें कुछ और बातें बतानी
हैं। यीशु मसीह के नाम पर हम तुमसे प्रार्थना
एवम् निवेदन करते हैं कि तुमने हमसे जिस प्रकार
उपदेश ग्रहण किया है, तुम्हें परमेश्वर को प्रसन्न करने
के लिये उसी के अनुसार चलना चाहिये। निश्चय ही
तुम उसी प्रकार चल भी रहे हो। किन्तु तुम वैसे ही और
अधिक से अधिक करते चलो। 2क्योंकि तुम यह जानते
हो कि प्रभु यीशु के अधिकार से हमने तुम्हें क्या निर्देश
दिये हैं। 3और परमेश्वर की यही इच्छा है कि तुम उसे
पवित्र हो जाओ, व्यभिचारों से दूर रहो, 4अपने शरीर
की वासनाओं* पर नियन्त्रण रखना सीखो-ऐसे ढंग से
जो पवित्र है और आदरणीय भी। 5न कि उस वासनापूर्ण
भावना से जो परमेश्वर को नहीं जानने वाले अधर्मियों
की जैसी है। 6यह भी परमेश्वर की इच्छा है कि इस
विषय में कोई अपने भाई के प्रति कोई अपराध न करे
या कोई अनुचित लाभ न उठाये; क्योंकि ऐसे सभी पापों
के लिये प्रभु दण्ड देगा जैसा कि हम तुम्हें बता ही चुके
हैं और तुम्हें सावधान भी कर चुके हैं। 7परमेश्वर ने
हमें अपवित्र बनने के लिये नहीं बुलाया है बल्कि पवित्र
बनने के लिये बुलाया है। 8इसलिये जो इस शिक्षा को

वासनाओं इसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है:
अपनी ही पत्नी के साथ कैसे रहा जाता है।

नकारता है वह किसी मनुष्य को नहीं नकार रहा है
बल्कि परमेश्वर को ही नकार रहा है। उस परमेश्वर
को जो तुम्हें अपनी पवित्र आत्मा भी प्रदान करता है।
9अब तुम्हें तुम्हारे भाई बहनों के प्रेम के विषय में भी
लिखा जाये, इसकी तुम्हें आवश्यकता नहीं है क्योंकि
परमेश्वर ने स्वयं तुमको एक दूसरे के प्रति प्रेम करने
की शिक्षा दी है। 10और वास्तव में तुम अपने सभी
भाइयों के साथ समूचे मकिदुनिया में ऐसा ही कर भी
रहे हो। किन्तु भाइयो! हम तुमसे ऐसा ही अधिक से
अधिक करने को कहते हैं।
11शांतिपूर्वक जीने को आदर की वस्तु समझो। अपने
काम से काम रखो। स्वयं अपने हाथों से काम करो।
जैसा कि हम तुम्हें बता ही चुके हैं। 12इससे कलीसिया
से बाहर के लोग तुम्हारे जीने के ढंग का आदर करेंगे।
इससे तुम्हें किसी भी दूसरे पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा।

प्रभु का लौटना

13हे भाइयो, हम चाहते हैं कि जो चिर–निद्रा में सो
गये हैं, तुम उनके विषय में भी जानो ताकि तुम्हें उन
औरों के समान, जिनके पास आशा नहीं है, शोक न
करना पड़े। 14क्योंकि यदि हम यह विश्वास करते हैं
कि यीशु की मृत्यु हो गयी और वह फिर से जी उठा, तो
उसी प्रकार जिन्होंने उसमें विश्वास करते हुए प्राण
त्याग दिए हैं, उनके साथ भी परमेश्वर वैसा ही करेगा।
और यीशु के साथ वापस ले जायेगा। 15जब प्रभु का
फिर से आगमन होगा तो हम जो जीवित हैं और अभी
यहीं हैं उनसे आगे नहीं निकल पाएँगे जो मर चुके हैं।
16क्योंकि स्वर्गदूतों का मुखिया जब अपने ऊँचे स्वर से
आदेश देगा तथा जब परमेश्वर की बिगुल बजेगी तो
प्रभु स्वयं स्वर्ग से उतरेगा। उस समय जिन्होंने मसीह में
प्राण त्यागे हैं, वे पहले उठेंगे। 17उसके बाद हमें जो
जीवित हैं, और अभी भी यहीं हैं उनके साथ ही हवा में
प्रभु से मिलने के लिये बादलों के बीच ऊपर उठा लिया
जाएगा और इस प्रकार हम सदा के लिये प्रभु के साथ
हो जायेंगे। 18अत: इन शब्दों के साथ एक दूसरे को
उत्साहित करते रहो।

प्रभु के स्वागत को तैयार रहो

5 हे भाइयो, समयों और तिथियों के विषय में तुम्हें
लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है 2क्योंकि
तुम स्वयं बहुत अच्छी तरह जानते हो कि जैसे चोर रात
में चुपके से चला आता है, वैसे ही प्रभु के फिर से
लौटने का दिन भी आ जायेगा। 3जब लोग कह रहे होंगे
कि "सब कुछ शांत और सुरक्षित है" तभी जैसे एक
गर्भवती स्त्री को अचानक प्रसव वेदना आ घेरती है वैसे
ही उनपर विनाश उतर आयेगा और वे कहीं बच कर
भाग नहीं पायेंगे। 4किन्तु हे भाइयो, तुम अन्धकार के
वासी नहीं हो कि तुम पर वह दिन चुपके से चोर की
तरह आ जाये। 5तुम सब तो प्रकाश के पुत्र हो और दिन
की संतान हो। हम न तो रात्रि से सम्बन्धित हैं और न
ही अन्धेरे से। 6इसलिये हमें औरों की तरह सोते नहीं
रहना चाहिये, बल्कि सावधानी के साथ हमें तो अपने
पर नियन्त्रण रखना चाहिये। 7क्योंकि जो सोते हैं, रात
में सोते हैं और जो नशा करते हैं, वे भी रात में ही
मदमस्त होते हैं। 8किन्तु हम तो दिन से सम्बन्धित हैं
इसलिए हमें अपने पर काबू रखना चाहिये। आओ
विश्वास और प्रेम की झिलम धारण कर लें और
उद्धार पाने की आशा को शिरस्त्राण की तरह ओढ़ लें।
9क्योंकि परमेश्वर ने हमें उसके प्रकोप के लिये
नहीं, बल्कि हमारे प्रभु यीशु द्वारा मुक्ति प्राप्त करने के
लिये बनाया है। 10यीशु मसीह ने हमारे लिये प्राण त्याग
दिये ताकि चाहे हम सजीव हैं चाहे मृत, जब वह पुन:
आए उसके साथ जीवित रहें। 11इसलिये एक दूसरे को
सुख पहुँचाओ और एक दूसरे को आध्यात्मिक रूप से
सुदृढ़ बनाते रहो। जैसा कि तुम कर भी रहे हो।

अंतिम निर्देश और अभिवादन

12हे भाइयो, हमारा तुमसे निवेदन है कि जो लोग
तुम्हारे बीच परिश्रम कर रहे हैं और प्रभु में जो तुम्हें
राह दिखाते हैं, उनका आदर करते रहो। 13हमारा
तुमसे निवेदन है कि उनके काम के कारण प्रेम के
साथ उन्हें पूरा आदर देते रहो। परस्पर शांति से रहो।
14हे भाइयो, हमारा तुमसे निवेदन है आलसियों को
चेताओ, डरपोकों को प्रोत्साहित करो, दीनों की सहायता
में रुचि लो, सब के साथ धीरज रखो। 15देखते रहो कोई
बुराई का बदला बुराई से न दे, बल्कि सब लोग सदा
एक दूसरे के साथ भलाई करने का ही जतन करें।
16सदा प्रसन्न रहो। 17 प्रार्थना करना कभी न छोड़ो।
18हर परिस्थिति में परमेश्वर का धन्यवाद करो।
19पवित्र आत्मा के कार्य का दमन मत करते रहो।
20नबियों के संदेशों को कभी छोटा मत जानो। 21हर
बात की असलियत को परखो, जो उत्तम है, उसे ग्रहण
किये रहो 22और हर प्रकार की बुराई से बचे रहो।
23शांति का स्रोत परमेश्वर स्वयं तुम्हें पूरी तरह
पवित्र करे। पूरी तरह उसको समर्पित हो जाओ और
तुम अपने सम्पूर्ण अस्तित्व अर्थात् आत्मा, प्राण और
देह को हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूर्णत: दोष
रहित बनाये रखो। 24वह परमेश्वर जिसने तुम्हें बुलाया
है, विश्वास के योग्य है। निश्चयपूर्वक वह ऐसा ही
करेगा। 25हे भाइयो! हमारे लिये भी प्रार्थना करो। 26सब
भाइयों का पवित्र चुम्बन से सत्कार करो। 27तुम्हें प्रभु
की शपथ देकर मैं यह आग्रह करता हूँ कि इस पत्र को
सब भाइयों को पढ़ कर सुनाया जाये। 28हमारे प्रभु यीशु
मसीह का अनुग्रह तुम्हारे साथ रहे।

2 थिस्सलुनीकियों

1 पौलुस, सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से हमारे
परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में स्थित
थिस्सलुनीकियों की कलीसिया के नाम:
2तुम्हें परम पिता परमेश्वर और यीशु मसीह की
ओर से अनुग्रह तथा शांति प्राप्त हो।

पौलुस का धन्यवाद तथा परमेश्वर के न्याय की चर्चा

3हे भाइयो, तुम्हारे लिये हमें सदा परमेश्वर का धन्यवाद
करना चाहिये: ऐसा करना उचित भी है। क्योंकि तुम्हारे
विश्वास का आश्चर्यजनक रूप से विकास हो रहा है
तथा तुममें आपसी प्रेम भी बढ़ रहा है। 4इसीलिये परमेश्वर
की कलीसियाओं में हम स्वयं तुम पर गर्व करते हैं।
तुम्हारी यातनाओं के बीच तथा कष्टों को सहते हुए धैर्य
पूर्वक सहन करना तुम्हारे विश्वास को प्रकट करता
है।
5यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि परमेश्वर का
न्याय सच्चा है। उसका उद्देश्य यही है कि तुम परमेश्वर
के राज्य में प्रवेश करने योग्य ठहरो। तुम अब उसी के
लिये तो कष्ट उठा रहे हो। 6निश्चय ही परमेश्वर की
दृष्टि में यह न्यायोचित है कि तुम्हें जो दुख दे रहे हैं,
उन्हें बदले में दुख ही दिया जाये। 7और तुम जो कष्ट
उठा रहे हो, उन्हें हमारे साथ उस समय विश्राम दिया
जाये जब प्रभु यीशु अपने सामर्थ्यवान दूतों के साथ स्वर्ग
से 8धधकती आग में प्रकट हो। और जो परमेश्वर को
नहीं जानते तथा हमारे प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार
पर नहीं चलते, उन्हें दण्ड दिया जाएगा। 9उन्हें अनन्त
विनाश का दण्ड दिया जायेगा। तथा उन्हें प्रभु और
उसकी महिमापूर्ण शक्ति के सामने से हटा दिया जायेगा।
10ऐसा तब होगा जब वह अपने पवित्र जनों के बीच
महिमा मंडित तथा सभी विश्वासियों के लिए आश्चर्य
का हेतु बनने के लिए आयेगा उसमें तुम लोग भी
शामिल होवोगे क्योंकि हमने उसके विषय में जो साक्षी
दी थी, उस पर तुमने विश्वास किया था।
11इसीलिये हम तुम्हारे हेतु परमेश्वर से सदा प्रार्थना
करते हैं कि हमारा परमेश्वर तुम्हें उस जीवन के योग्य
समझे जिसे जीने के लिए तुम्हें बुलाया गया है। और वह
तुम्हारी हर उत्तम इच्छा को प्रबल रूप से परिपूर्ण करे
और हर उस काम को वह सफल बनाये जो तुम्हारे
विश्वास का परिणाम है।
12इस प्रकार हमारे प्रभु यीशु मसीह का नाम तुम्हारे
द्वारा आदर पायेगा। और तुम उसके द्वारा आदर पाओगे।
यह सब कुछ हमारे परमेश्वर के और यीशु मसीह के
अनुग्रह से होगा।

प्रभु के आने से पूर्व दुर्घटनाएँ घटेंगी

2 हे भाइयो, अब हम अपने प्रभु यीशु मसीह के फिर
से आने और उसके साथ परस्पर एकत्र होने के
विषय में निवेदन करते हैं 2कि तुम अचानक अपने
विवेक को किसी भविष्यवाणी, किसी उपदेश अथवा
किसी ऐसे पत्र से मत खोना जिसे हमारे द्वारा लिखा गया
समझा जाता हो और तथाकथित रूप से जिसमें बताया
गया हो कि प्रभु का दिन आ चुका है, तुम अपने मन में
डावाँडोल मत होना।3तुम अपने आपको किसी के भी
द्वारा किसी भी प्रकार छला मत जाने दो। मैं ऐसा इसीलिये
कह रहा हूँ क्योंकि वह दिन उस समय तक नहीं
आयेगा जब तक कि परमेश्वर से मुँह मोड़ लेने का
समय नहीं आ जाताऔर व्यवस्थाहीनता काव्यक्ति प्रकट
नहीं हो जाता। उस व्यक्ति की नियति तो विनाश है।
4वह अपने को हर वस्तु से ऊपर कहेगा और उनका
विरोध करेगा। ऐसी वस्तुओं का जो परमेश्वर की हैं या
जोपूजनीय हैं। यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मंदिर में
जा कर सिंहासन पर बैठ यह दावा करेगा कि वही
परमेश्वर है।
5क्या तुम्हें याद नहीं है कि जब मैं तुम्हारे साथ ही था
तो तुम्हें यह सब बताया गया था। 6और तुम तो अब यह
जानते ही हो कि उसे क्या रोके हुए हैं ताकि वह उचित
अवसर आने पर ही प्रकट हो। 7मैं ऐसा इसलिये कह
रहा हूँ क्योंकि व्यवस्थाहीनता की रहस्यमयी शक्ति
अभी भी अपना काम कर रही है। अब कोई इसे रोक
रहा है और वह तब तक इसे रोकता रहेगा, जब तक,
उसे रोके रखने वाले को रास्ते से हटा नहीं दिया
जायेगा। 8तब ही वह व्यवस्थाहीन प्रकट होगा। जब प्रभु
यीशु अपनी महिमा में फिर प्रकट होगा वह इसे मार
डालेगा तथा अपने पुन:आगमन के अवसर पर अपनी
उपस्थिति से उसे नष्टकर देगा।

9उस व्यवस्थाहीन का आना शैतान की शक्ति से
होगा तथा वह बहुत बड़ी शक्ति, झूठे चिह्नों और
आश्चर्यकर्मों 10तथा हर प्रकार के पाप पूर्ण छल–प्रपंच
से भरा होगा। वह इनका उपयोग उन व्यक्तियों के
विरुद्ध करेगा जो सर्वनाश के मार्ग में खोये हुए हैं। वे
भटक गए हैं क्योंकि उन्होंने सत्य से प्रेम नहीं किया है;
कहीं उनका उद्धार न हो जाये

11इसीलिये परमेश्वर उनमें एक छली शक्ति को
कार्यरत कर देगा जिससे वे झूठ में विश्वास करने लगे
थे। इससे उनका विश्वास जो झूठा है, उस पर होगा।
12इससे वे सभी जिन्होंने सत्य पर विश्वास नहीं किया
और झूठ में आनन्द लेते रहे, दण्ड पायेंगे।

तुम्हें छुटकारे के लिये चुना गया है

13प्रभु में प्रिय भाइयो, तुम्हारे लिये हमें सदा परमेश्वर
का धन्यवाद करना चाहिये क्योंकि परमेश्वर ने आत्मा
के द्वारा तुम्हें पवित्र करके और सत्य में तुम्हारे विश्वास
के कारण उद्धार पाने के लिये तुम्हें चुना है। जिन
व्यक्तियों का उद्धार होना है, तुम उस पहली फसल के
एक हिस्से हो। 14और इसी उद्धार के लिए जिस
सुसमाचार का हमने तुम्हें उपदेश दिया है उसके द्वारा
परमेश्वर ने तुम्हें बुलाया ताकि तुम भी हमारे प्रभु यीशु
मसीह की महिमा को धारण कर सको। 15इसलिये
भाइयो, अटल बने रहो तथा जो उपदेश तुम्हें मौखिक
रूप से या हमारे पत्रों के द्वारा दिया गया है, उसे थामे
रखो।

16अब हमारा प्रभु स्वयं यीशु मसीह और हमारा परम
पिता परमेश्वर जिसने हम पर अपना प्रेम दर्शाया है
और हमें परम आनन्द प्रदान किया है तथा जिसने हमें
अपने अनुग्रह में सुदृढ़ आशा प्रदान की है। 17तुम्हारे
हृदयों को आनन्द दे और हर अच्छी बात में जिसे तुम
कहते हो या करते हो, तुम्हें सुदृढ़ बनाये।

हमारे लिये प्रार्थना करो

3 हे भाइयो, तुम्हें कुछ और बातें हमें बतानी हैं।
हमारे लिए प्रार्थना करो कि प्रभु का संदेश तीव्रता
से फैले और महिमा पाये। जैसा कि तुम लोगों के बीच
हुआ है। 2प्रार्थना करो कि हम भटके हुओं और दुष्ट
मनुष्यों से दूर रहें। (क्योंकि सभी लोगों का तो प्रभु में
विश्वास नहींह ोता।) 3किन्तु प्रभु तो विश्वासपूर्ण है।
वह तुम्हारी शक्ति बढ़ायेगा और तुम्हें उस दुष्ट से बचाये
रखेगा। 4हमें प्रभु में तुम्हारी स्थिति के विषय में विश्वास
है। और हमें पूरा निश्चय है कि हमने तुम्हें जो कुछ
करने को कहा है, तुम वैसे ही कर रहे हो और करते
रहोगे। 5प्रभु तुम्हारे हृदयों को परमेश्वर के प्रेम और
मसीह की धैर्यपूर्ण दृढ़ता की ओर अग्रसर करे।

कर्म की अनिवार्यता

6भाइयो! अब तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम में
यह आदेश है कि तुम हर उस भाई से दूर रहो जो
ऐसा जीवन जीता है जो उस के लिए उचित नहीं है। 7मैं
यह इसलिये कह रहा हूँ क्योंकि तुम तो स्वयं ही जानते
हो कि तुम्हें हमारा अनुकरण कैसे करना चाहिये क्योंकि
तुम्हारे बीच रहते हुए हम कभी आलसी नहीं रहे।
8हमने

बिना मूल्य चुकाये किसी से भोजन ग्रहण नहीं किया,
बल्कि जतन और परिश्रम करते हुए हम दिन रात
काम में जुटे रहे ताकि तुममें से किसी पर भी बोझ न
पड़े। 9ऐसा नहीं कि हमें तुमसे सहायता लेने का कोई
अधिकार नहीं है, बल्कि हम इसलिये कड़ी मेहनत
करते रहे ताकि तुम उसका अनुसरण कर सको।
10इसीलिये हम जब तुम्हारे साथ थे, हमने तुम्हें यह
आदेश दिया था: “यदि कोई काम न करना चाहे तो वह
खाना भी न खाये।”

11हमें ऐसा बताया गया है कि तुम्हारे बीच कुछ ऐसे
भी हैं जो ऐसा जीवन जीते हैं जो उनके अनुकूल नहीं है।
वे कोई काम नहीं करते, दूसरों की बातों में टाँग अड़ाते
हुए इधर–उधर घूमते फिरते हैं।

12ऐसे लोगों को हम यीशु मसीह के नाम पर समझाते
हुए आदेश देते हैं कि वे शांति के साथ अपना काम
करें और अपनी कमाई का ही खाना खायें। 13किन्तु हे
भाइयो, जहाँ तक तुम्हारी बात है, भलाई करते हुए
कभी थको मत।

14इस पत्र के माध्यम से दिये गये हमारे आदेशों पर
यदि कोई न चले तो उस व्यक्ति पर नजर रखो और
उसकी संगत से दूर रहो ताकि उसे लज्जा आये। 15किन्तु
उसके साथ शत्रु जैसा व्यवहार मत करो बल्कि भाई के
समान उसे चेताओ।

पत्र का समापन

16अब शांति का प्रभु स्वयं तुम्हें हर समय, हर प्रकार
से शांति दे। प्रभु तुम सब के साथ रहे।

17मैं पौलुस स्वयं अपनी लिखावट में यह नमस्कार
लिख रहा हूँ।

मैं इसी प्रकार हर पत्र पर हस्ताक्षर करता हूँ। मेरे
लिखने की शैली यही है।

18हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम सब पर
बना रहे।

1 तीमुथियुस

1 पौलुस की ओर से, जो हमारे उद्धार करने वाले परमेश्वर और हमारी आशा मसीह यीशु के आदेश से मसीह यीशु का प्रेरित बना है,

2तिमुथियुस को जो विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र है, परम पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से अनुग्रह, दया और शांति प्राप्त हो।

झूठे उपदेशों के विरोध में चेतावनी

3मकिदुनिया जाते समय मैंने तुझसे जो इफिसुस में ठहरे रहने को कहा था, मैं अब भी उसी आग्रह को दोहरा रहा हूँ। ताकि तू वहाँ कुछ लोगों को झूठी शिक्षाएँ देते रहने, 4काल्पनिक कहानियों और अनन्त वंशावलियों पर जो लड़ाई-झगड़ों को बढ़ावा देती हैं और परमेश्वर के उस प्रयोजन को सिद्ध नहीं होने देतीं, जो विश्वास पर टिका है, ध्यान देने से रोक सके। 5इस आग्रह का प्रयोजन है वह प्रेम जो पवित्र हृदय, उत्तम चेतना और छल रहित विश्वास से उत्पन्न होता है। 6कुछ लोग तो इन बातों से छिटक कर भटक गये हैं और बेकार के वाद-विवादों में जा फँसे हैं। 7वे व्यवस्था के विधान के उपदेशक तो बनना चाहते हैं, पर जो कुछ वे कह रहे हैं या जिन बातों पर वे बहुत बल दे रहे हैं, उन तक को वे नहीं समझते।

8हम अब यह जानते हैं कि यदि कोई व्यवस्था के विधान का ठीक ठीक प्रकार से प्रयोग करे, तो व्यवस्था उत्तम है। 9अर्थात् यह जानते हुए कि व्यवस्था का विधान धर्मियों के लिये नहीं बल्कि उद्दण्डों, विद्रोहियों, अश्रद्धालुओं, पापियों, अपवित्रों, अधार्मिकों, माता-पिता को मार डालने वालों, हत्यारों, 10व्यभिचारियों, समलिंग कामुकों, शोषण कर्त्ताओं, मिथ्या वादियों, कसम तोड़ने वालों या ऐसे ही अन्य कामों के लिए हैं, जो उत्तम शिक्षा के विरोध में हैं। 11वह शिक्षा परमेश्वर के महिमा-मय सुसमाचार के अनुकूल है। वह सुधन्य परमेश्वर से प्राप्त होती है। और उसे मुझे सौंपा गया है।

परमेश्वर के अनुग्रह का धन्यवाद

12मैं, हमारे प्रभु यीशु मसीह का धन्यवाद करता हूँ। मुझे उसी ने शक्ति दी है। उसने मुझे विश्वसनीय समझ कर अपनी सेवा में नियुक्त किया है। 13यद्यपि पहले मैं उसका अपमान करने वाला, सताने वाला तथा एक अविनीत व्यक्ति था किन्तु मुझ पर दया की गयी क्योंकि एक अविश्वासी के रूप में यह नहीं जानते हुए कि मैं क्या कुछ कर रहा हूँ, मैंने सब कुछ किया 14और प्रभु का अनुग्रह मुझे बहुतायत से मिला, और साथ ही वह विश्वास और प्रेम भी जो मसीह यीशु में है। 15यह कथन सत्य है और हर किसी के स्वीकार करने योग्य है कि यीशु मसीह इस संसार में पापियों का उद्धार करने के लिए आया है। फिर मैं तो सब से बड़ा पापी हूँ। 16और इसीलिये तो मुझ पर दया की गयी। कि मसीह यीशु एक बड़े पापी के रूप में मेरा उपयोग करते हुए आगे चल कर जो लोग उसमें विश्वास ग्रहण करेंगे, उनके लिये अनंत जीवन प्राप्ति के हेतु एक उदाहरण के रूप में मुझे स्थापित कर अपनी असीम सहनशीलता प्रदर्शित कर सके। 17अब उस अनन्त सम्राट अविनाशी, अदृश्य एक मात्र परमेश्वर का युग युगान्तर तक सम्मान और महिमा होती रहे। आमीन!

18मेरे पुत्र तीमुथियुस, भविष्यवक्ताओं के वचनों के अनुसार बहुत पहले से ही तेरे सम्बन्ध में जो भविष्यवाणियाँ कर दी गयी थीं, मैं तुझे ये आदेश दे रहा हूँ, ताकि तू उनके अनुसार 19विश्वास और उत्तम चेतना से युक्त हो कर नेकी की लड़ाई लड़ सके। कुछ ऐसे हैं जिनकी उत्तम चेतना और विश्वास नष्ट हो गये हैं। 20हुमिनयुस और सिकंदर ऐसे ही हैं। मैंने उन्हें शैतान को सौंप दिया है ताकि उन्हें परमेश्वर के विरोध में परमेश्वर की निन्दा करने से रोकने का पाठ पढ़ाया जा सके।

स्त्री-पुरुषों के लिये कुछ नियम

2 सबसे पहले मेरा विशेष रूप से यह निवेदन है कि सबके लिये आवेदन, प्रार्थनाएँ, अनुरोध और सब व्यक्तियों की ओर से धन्यवाद दिए जाएँ। 2शासकों और सभी अधिकारियों को धन्यवाद दिये जाएँ। ताकि हम चैन के साथ शांतिपूर्वक सम्पूर्ण श्रद्धा और परमेश्वर के प्रति सम्मान से पूर्ण जीवन जी सकें। 3यह हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला है। यह उत्तम है। 4वह सभी व्यक्तियों का उद्धार चाहता है और चाहता है कि वे सत्य को पहचानें 5 क्योंकि परमेश्वर एक ही है और मनुष्य तथा परमेश्वर के बीच में

मध्यस्थ भी एक ही है। वह स्वयं एक मनुष्य है, मसीह
यीशु। 6उसने सब लोगों के लिये स्वयं को फिरौती के
रूप में दे डाला है। इस प्रकार उसने उचित समय पर
इसकी साक्षी दी। 7तथा इसी साक्षी का प्रचार करने के
लिये मुझे एक प्रचारक और प्रेरित नियुक्त किया गया।
(यह मैं सत्य कह रहा हूँ, झूठ नहीं) मुझे विधर्मियों के
लिये विश्वास तथा सत्य के उपदेशक के रूप में भी
ठहराया गया।

8इसीलिये मेरी इच्छा है कि हर कहीं सब पुरुष पवित्र
हाथों को ऊपर उठाकर परमेश्वर के प्रति समर्पित हो
बिना किसी क्रोध अथवा मन–मुटाव के प्रार्थना करें।

9इसी प्रकार स्त्रियों से भी मैं यह चाहता हूँ कि वे
सीधी–सादी वेश–भूषा में शालीनता और आत्म–नियन्त्रण
के साथ रहें। अपने आप को सजाने सँवारने के लिये वे
केशों की वेणियाँ न सजायें तथा सोने, मोतियों और
बहुमूल्य वस्त्रों से श्रृंगार न करें, 10बल्कि ऐसी स्त्रियों
को जो अपने आप को परमेश्वर की उपासिका मानती
हैं, उनके लिए उचित यह है कि वे स्वयं को उत्तम
कार्यों से सजायें।

11एक स्त्री को चाहिये कि वह शांत भाव से समग्र
समर्पण के साथ शिक्षा ग्रहण करे। 12मैं यह नहीं चाहता
कि कोई स्त्री किसी पुरुष को सिखाए पढ़ाये अथवा उस
पर शासन करे। बल्कि उसे तो चुपचाप ही रहना
चाहिए। 13क्योंकि आदम को पहले बनाया गया था और
तब पीछे हव्वा को। 14आदम को बहकाया नहीं जा
सका था किन्तु स्त्री को बहका लिया गया और वह पाप
में पतित हो गयी। 15किन्तु यदि वे माता के कर्तव्यों को
निभाते हुए विश्वास, प्रेम, पवित्रता और परमेश्वर के
प्रति समर्पण में बनी रहें तो उद्धार को अवश्य प्राप्त
करेंगी।

कलीसिया के निरीक्षक

3 यह एक विश्वास करने योग्य कथन है कि यदि
कोई निरीक्षक बनना चाहता है तो वह एक अच्छे
काम की इच्छा रखता है। 2अब देखो उसे एक ऐसा
जीवन जीना चाहिये जिसकी लोग न्यायसंगत आलोचना
न कर पायें। उसके एक ही पत्नी होनी चाहिये। उसे
शालीन होना चाहिये, आत्मसंयमी, सुशील तथा अतिथि
सत्कार करने वाला एवं शिक्षा देने में निपुण होना
चाहिये। 3वह पियक्कड़ नहीं होना चाहिये, न ही उसे
झगड़ालू होना चाहिये। उसे तो सज्जन तथा शांति–प्रिय
होना चाहिये। उसे पैसे का प्रेमी नहीं होना चाहिये।
4अपने परिवार का वह अच्छा प्रबन्धक हो तथा उसके
बच्चे उसके नियन्त्रण में रहते हों। उसका पूरा सम्मान
करते हों। 5(यदि कोई अपने परिवार का ही प्रबन्ध
करना नहीं जानता तो वह परमेश्वर की कलीसिया का
प्रबन्ध कैसे कर पायेगा?) 6वह एक नया शिष्य नहीं
होना चाहिये ताकि वह अहंकार से फूल न जाये। और
उसे शैतान का जैसा ही दण्ड पाना पड़े। 7इसके अतिरिक्त
बाहर के लोगों में भी उसका अच्छा नाम हो ताकि वह
किसी आलोचना में फँस कर शैतान के फंदे में न पड़
जाये।

कलीसिया के सेवक

8इसी प्रकार कलीसिया के सेवकों को भी सम्मानीय
होना चाहिये जिसके शब्दों पर विश्वास किया जाता हो।
मदिरा पान में उसकी रुचि नहीं होनी चाहिये। बुरे रास्तों
से उन्हें धन कमाने का इच्छुक नहीं होना चाहिये।
9उन्हें तो पवित्र मन से हमारे विश्वास के गहन सत्यों
को थामे रखना चाहिये। 10इनको भी पहले निरीक्षकों
के समान परखा जाना चाहिये। फिर यदि उनके विरोध
में कुछ न हो तभी इन्हें कलीसिया के सेवक के रूप में
सेवा–कार्य करने देना चाहिये। 11इसी प्रकार स्त्रियों को
भी सम्मान के योग्य होना चाहिए। वे निंदक नहीं होनी
चाहियें बल्कि शालीन और हर बात में विश्वसनीय
होनी चाहियें। 12कलीसिया के सेवक के केवल एक ही
पत्नी होनी चाहिये तथा उसे अपने बाल–बच्चों तथा
अपने घरानों का अच्छा प्रबन्धक होना चाहिये। 13क्योंकि
यदि वे कलीसिया के ऐसे सेवक के रूप में होंगे जो
उत्तम सेवा प्रदान करते हैं, तो वे अपने लिये सम्मानपूर्ण
स्थान अर्जित करेंगे। यीशु मसीह के प्रति विश्वास में
निश्चय ही उनकी आस्था होगी।

हमारे जीवन का रहस्य

14मैं इस आशा के साथ तुम्हें ये बातें लिख रहा हूँ कि
जल्दी ही तुम्हारे पास आऊँगा। 15यदि मुझे आने में
समय लग जाये तो तुम्हें पता रहे कि परमेश्वर के
परिवार में, जो सजीव परमेश्वर की कलीसिया है,
किसी को अपना व्यवहार कैसा रखना चाहिये। कलीसिया
ही सत्य की नींव और आधार स्तम्भ है। 16हमारे धर्म
के सत्य का रहस्य निस्सन्देह महान् है: वह नर देह धर
प्रकट हुआ, आत्मा ने उसे नेक साधा, स्वर्गदूतों ने उसे
देखा, वह राष्टों में प्रचारित हुआ। जग ने उस पर
विश्वास किया, और उसे महिमा में ऊपर उठाया गया।

झूठे उपदेशकों से सचेत रहो

4 आत्मा ने स्पष्ट रूप से कहा है कि आगे चल कर
कुछ लोग भटकाने वाले झूठे भविष्यवक्ताओं के
उपदेशों और दुष्टात्माओं की शिक्षा पर ध्यान देने लगेंगे
और विश्वास से भटक जायेंगे। 2उन झूठे पाखण्डी लोगों
के कारण ऐसा होगा जिनका मन मानो तपते लोहे से
दाग दिया गया हो। 3वे विवाह का निषेध करेंगे। कुछ
वस्तुएँ खाने को मना करेंगे जिन्हें परमेश्वर के विश्वासियों
तथा जो सत्य को पहचानते हैं, उनके लिये धन्यवाद

देकर ग्रहण कर लेने को बनाया गया है। 4क्योंकि
परमेश्वर की रची हर वस्तु उत्तम है तथा कोई भी
वस्तु त्यागने योग्य नहीं है बशर्ते उसे धन्यवाद के साथ
ग्रहण किया जाये। 5क्योंकि वह परमेश्वर के वचन
और प्रार्थना से पवित्र हो जाती है।

मसीह के उत्तम सेवक बनो

6यदि तुम भाइयों को इन बातों का ध्यान दिलाते
रहोगे तो मसीह यीशु के ऐसे उत्तम सेवक ठहरोगे जिसका
पालन–पोषण, विश्वास के द्वारा और उसी सच्ची शिक्षा
के द्वारा होता है जिसे तू ने ग्रहण किया है। 7बुढ़ियाओं
की परमेश्वर विहीन कल्पित कथाओं से दूर रहो तथा
परमेश्वर की सेवा के लिये अपने को साधने में लगे
रहो। 8क्योंकि शारीरिक साधना से तो थोड़ा सा ही लाभ
होता है जबकि परमेश्वर की सेवा हर प्रकार से मूल्यवान
है क्योंकि इसमें आज के समय और आने वाले जीवन
के लिये दिया गया आशीर्वाद समाया हुआ है। 9इस बात
पर पूरी तरह निर्भर किया जा सकता है और यह पूरी
तरह ग्रहण करने योग्य है। 10और हम लोग इसीलिये
कठिन परिश्रम करते हुए जूझते रहते हैं। हमने अपनी
आशाएँ सबके, विशेष कर विश्वासियों के, उद्धारकर्त्ता
सजीव परमेश्वर पर टिका दी हैं।

11इन्हीं बातों का आदेश और उपदेश दो। 12तू अभी
युवक है। इसी से कोई तुझे तुच्छ न समझे। बल्कि तू
अपनी बात–चीत, चाल–चलन, प्रेम–प्रकाशन, अपने
विश्वास और पवित्र जीवन से विश्वासियों के लिये एक
उदाहरण बन जा। 13जब तक मैं आऊँ तू शास्त्रों के
सार्वजनिक पाठ करने, उपदेश और शिक्षा देने में
अपने आप को लगाये रख। 14तुझे जो वरदान प्राप्त है,
तू उसका उपयोग कर यह तुझे नबियों की भविष्यवाणी
के परिणामस्वरूप बुज़ुर्गों के द्वारा तुझ पर हाथ रख
कर दिया गया है। 15इन बातों पर पूरा ध्यान लगाये
रख। इन ही में स्थित रह ताकि तेरी प्रगति सब लोगों के
सामने प्रकट हो। 16अपने जीवन और उपदेशों का
विशेष ध्यान रख। उन ही पर टिका रह क्योंकि ऐसा
आचरण करते रहने से तू स्वयं अपने आपका और
अपने सुनने वालों का उद्धार करेगा।

व्यवहार के कुछ नियम

5 किसी बड़ी आयु के व्यक्ति के साथ कठोरता से
मत बोलो, बल्कि उन्हें पिता के रूप में देखते हुए
उनके प्रति विनम्र रहो। अपने से छोटों के साथ भाइयों
जैसा बर्ताव करो। 2बड़ी महिलाओं को माँ समझो तथा
युवा स्त्रियों को अपनी बहन समझ कर पूर्ण पवित्रता के
साथ बर्ताव करो।

3उन विधवाओं का विशेष ध्यान रखो जो वास्तव में
विधवा हैं। 4किन्तु यदि किसी विधवा के पुत्र–पुत्री अथवा
नाती–पोते हैं तो उन्हें सबसे पहले अपने धर्म पर चलते
हुए अपने परिवार की देखभाल करना सीखना चाहिये।
उन्हें चाहिये कि वे अपने माता–पिताओं के पालन–पोषण
का बदला चुकायें क्योंकि इससे परमेश्वर प्रसन्न होता
है। 5वह स्त्री जो वास्तव में विधवा है और जिसका
ध्यान रखने वाला कोई नहीं है, तथा परमेश्वर ही
जिसकी आशाओं का सहारा है वह दिन रात विनती
तथा प्रार्थना में लगी रहती है। 6किन्तु विषय भोग की
दास विधवा जीते जी मरे हुए के समान है। 7इसलिये
विश्वासी लोगों को इन बातों का (उनकी सहायता का)
आदेश दो ताकि कोई भी उनकी आलोचना न कर
पाये। 8किन्तु यदि कोई अपने रिश्तेदारों, विशेषकर
अपने परिवार के सदस्यों की सहायता नहीं करता, तो
वह विश्वास से फिर गया है तथा किसी अविश्वासी से
भी अधिक बुरा है।

9उन विधवाओं की विशेष सूची में जो आर्थिक सहायता
ले रही हैं उसी विधवा का नाम लिखा जाये जो कम से
कम साठ साल की हो चुकी हो तथा जो पतिव्रता रही
हो 10तथा जो बाल बच्चों को पालते हुए, अतिथि सत्कार
करते हुए, पवित्र लोगों के पांव धोते हुए दुखियों की
सहायता करते हुए, अच्छे कामों के प्रति समर्पित हो
कर सब तरह के उत्तम कार्यों के लिये जानी–मानी
जाती हो।

11किन्तु युवती–विधवाओं को इस सूची में सम्मिलित
मत करो क्योंकि मसीह के प्रति उनके समर्पण पर जब
उनकी विषय वासना पूर्ण इच्छाएँ हावी होती हैं तो वे
फिर विवाह करना चाहती हैं। 12वे अपराधिनी हैं क्योंकि
उन्होंने अपनी मूलभूत प्रतिज्ञा को तोड़ा है। 13इसके
अतिरिक्त उन्हें आलस की आदत पड़ जाती है। वे एक
घर से दूसरे घर घूमती फिरती हैं तथा वे न केवल
आलसी हो जाती हैं, बल्कि वे बातूनी बन कर लोगों के
कामों में टाँग अड़ाने लगती हैं और ऐसी बातें बोलने
लगती हैं जो उन्हें नहीं बोलनी चाहियें। 14इसलिए मैं
चाहता हूँ कि युवती- विधवाएँ विवाह कर लें और
संतान का पालनपोषण करते हुए अपने घर बार की
देखभाल करें ताकि हमारे शत्रुओं को हम पर कटाक्ष
करने का कोई अवसर न मिल पाये। 15मैं यह इसलिये
बता रहा हूँ कि कुछ विधवाएँ भटक कर शैतान के
पीछे चलने लगी हैं।

16यदि किसी विश्वासी महिला के घर में विधवाएँ हैं
तो उसे उनकी सहायता स्वयं करनी चाहिए और
कलीसिया पर कोई भार नहीं डालना चाहिये ताकि
कलीसिया सच्ची विधवाओं की सहायता कर सके।

17जो बुज़ुर्ग कलीसिया की उत्तम अगुआई करते हैं, वे
दुगुने सम्मान के पात्र होने चाहियें। विशेष कर वे जिनका
काम उपदेश देना और पढ़ाना है। 18क्योंकि शास्त्र में
कहा गया है, “बैल जब खलिहान में हो तो उसका मुँह

मत बाँधो।'* तथा, "मज़दूर को अपनी मज़दूरी पाने का
अधिकार है।"*
19किसी बुज़ुर्ग पर लगाये गये किसी लांछन को तब
तक स्वीकार मत करो जब तक दो या तीन गवाहियाँ न
हों। 20जो सदा पाप में लगे रहते हैं उन्हें सब के सामने
डाँटो–फटकारो ताकि बाकी के लोग भी डरें।
21परमेश्वर, यीशु मसीह और चुने हुए स्वर्गदूतों के
सामने मैं सचाई के साथ आदेश देता हूँ कि तू बिना
किसी पूर्वाग्रह के इन बातों का पालन कर। पक्षपात के
साथ कोई काम मत कर।
22बिना विचारे किसी को कलीसिया का मुखिया
बनाने के लिए उस पर जल्दी में हाथ मत रख। किसी
के पापों में भागीदार मत बन। अपने को सदा पवित्र
रख। 23केवल पानी ही मत पीता रह। बल्कि अपने
हाज़मे और बार बार बीमार पड़ने से बचने के लिए
थोड़ा सा दाखरस भी ले लिया कर।
24कुछ लोगों के पाप स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाते हैं
और न्याय के लिये प्रस्तुत कर दिये जाते हैं किन्तु दूसरे
लोगों के पाप बाद में प्रकट होते हैं। 25इसी प्रकार भले
कार्य भी स्पष्ट रूप से प्रकट हो जाते हैं किन्तु जो प्रकट
नहीं होते वे भी छिपे नहीं रह सकते।

6 लोग जो अंधविश्वासियों के जूए के नीचे दास बने
हैं, उन्हें अपने स्वामियों को सम्मान के योग्य
समझना चाहिये ताकि परमेश्वर के नाम और हमारे
उपदेशों की निन्दा न हो। 2और ऐसे दासों को भी
जिनके स्वामी विश्वासी हैं, बस इसलिये कि वे उनके
धर्म भाई हैं, उनके प्रति कम सम्मान नहीं दिखाना
चाहिये, बल्कि उन्हें तो अपने स्वामियों की और अधिक
सेवा करनी चाहिये क्योंकि जिन्हें इसका लाभ मिल रहा
है, वे विश्वासी हैं, जिन्हें वे प्रेम करते हैं।

मिथ्या उपदेश और सच्चा धन

इन बातों को सिखाते रहो तथा इनका प्रचार करते
रहो। 3यदि कोई इनसे भिन्न बातें सिखाता है तथा हमारे
प्रभु यीशु मसीह के उन सद् वचनों को नहीं मानता है
तथा भक्ति से परिपूर्ण शिक्षा से सहमत नहीं है, 4तो वह
अहंकार में फूला है तथा कुछ भी नहीं जानता है। वह
तो कुतर्क करने और शब्दों को लेकर झगड़ने के रोग
से घिरा है। इन बातों से तो ईर्ष्या, बैर, निन्दा–भाव तथा
गाली–गलौज 5एवम् उन लोगों के बीच जिनकी बुद्धि
बिगड़ गयी है, निरन्तर बने रहने वाले मतभेद पैदा होते
हैं, वे सत्य से वंचित हैं। ऐसे लोगों का विचार है कि
परमेश्वर की सेवा धन कमाने का ही एक साधन है।
6निश्चय ही परमेश्वर की सेवा–भक्ति से ही व्यक्ति
सम्पन्न बनता है। इसी से संतोष मिलता है। 7क्योंकि हम
संसार में न तो कुछ लेकर आये थे और न ही यहाँ से
कुछ लेकर जा पाएँगे। 8सो यदि हमारे पास रोटी और
कपड़ा है तो हम उसी में सन्तुष्ट हैं। 9किन्तु वे जो
धनवान बनना चाहते हैं, प्रलोभनों में पड़कर जाल में
फँस जाते हैं तथा उन्हें ऐसी अनेक मूर्खतापूर्ण और
विनाशकारी इच्छाएँ घेर लेती हैं जो लोगों को पतन
और विनाश की खाई में ढकेल देती हैं। 10क्योंकि धन
का प्रेम हर प्रकार की बुराई को जन्म देता है। कुछ
लोग अपनी इच्छाओं के कारण ही विश्वास से भटक
गये हैं और उन्होंने अपने लिये महान दुख की सृष्टि
कर ली है।

याद रखने योग्य बातें

11किन्तु हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से दूर रह
तथा धार्मिकता, भक्तिपूर्ण सेवा, विश्वास, प्रेम, धैर्य
और सज्जनता में लगा रह। 12हमारा विश्वास जिस
उत्तम स्पर्द्धा की अपेक्षा करता है, तू उसी के लिये संघर्ष
करता रह और अपने लिये अनन्त जीवन को अर्जित
कर ले। तुझे उसी के लिये बुलाया गया है। तूने बहुत से
साक्षियों के सामने उसे बहुत अच्छी तरह स्वीकारा है।
13परमेश्वर के सामने, जो सबको जीवन देता है तथा
यीशु मसीह के सम्मुख जिसने पुन्तियुस पिलातुस के
सामने बहुत अच्छी साक्षी दी थी, मैं तुझे यह आदेश देता
हूँ कि 14जब तक हमारा प्रभु यीशु मसीह प्रकट होता है,
तब तक तुझे जो आदेश दिया गया है, तू उसी पर बिना
कोई कमी छोड़े हुए निर्दोष भाव से चलता रह।
15वह उस परम धन्य, एक छत्र, राजाओं के राजा
और सम्राटों के प्रभु को उचित समय आने पर प्रकट
कर देगा। 16वह अगम्य प्रकाश का निवासी है। उसे न
किसी ने देखा है, न कोई देख सकता है। उसका सम्मान
और उसकी अनन्त शक्ति का विस्तार होता रहे। आमीन।
17वर्तमान युग की वस्तुओं के कारण जो धनवान
बने हुए हैं, उन्हें आज्ञा दे कि वे अभिमान न करें।
अथवा उस धन से जो शीघ्र चला जाएगा कोई आशा न
रखें। परमेश्वर पर ही अपनी आशा टिकायें जो हमें
हमारे आनन्द के लिये सब कुछ भरपूर देता है। 18उन्हें
आज्ञा दे कि वे अच्छे–अच्छे काम करें। उत्तम कामों से
ही धनी बनें। उदार रहें और दूसरों के साथ अपनी
वस्तुएँ बाँटें। 19ऐसा करने से ही वे एक स्वर्गीय कोष
का संचय करेंगे जो भविष्य के लिये सुदृढ़ नींव सिद्ध
होगा। इसी से वे सच्चे जीवन को थामे रहेंगे।
20तीमुथियुस, तुझे जो सौंपा गया है, तू उसकी रक्षाकर।
व्यर्थ की सांसारिक बातों से बचा रह। तथा जो "मिथ्या
ज्ञान" से सम्बन्धित व्यर्थ के विरोधी विश्वास हैं, उनसे
दूर रह क्योंकि 21कुछ लोग उन्हें स्वीकार करते हुए
विश्वास से डिग गये हैं। परमेश्वर का अनुग्रह तुम्हारे
साथ रहे।

"बैल ... बाँधो " व्यवस्था. 25:4

"मजदूर ... है" लूका 10:7

2 तीमुथियुस

तिमुथियुस के नाम

1 पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित है और जिसे यीशु मसीह में जीवन पाने की प्रतिज्ञा का प्रचार करने के लिये भेजा गया है:

2प्रिय पुत्र तीमुथियुस के नाम। परम पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुझे करुणा, अनुग्रह और शांति प्राप्त हो।

धन्यवाद तथा प्रोत्साहन

3रात दिन अपनी प्रार्थनाओं में निरन्तर तुम्हारी याद करते हुए, मैं उस परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, और उसकी सेवा अपने पूर्वजों की रीति के अनुसार शुद्ध मन से करता हूँ। **4**मेरे लिये तुमने जो आँसू बहाये हैं, उनकी याद करके मैं तुमसे मिलने को आतुर हूँ, ताकि आनन्द से भर उठूँ। **5**मुझे तेरा वह सच्चा विश्वास भी याद है जो पहले तेरी नानी लोईस और तेरी माँ यूनीके में था। मुझे भरोसा है कि वही विश्वास तुझमें भी है। **6**इसीलिये मैं तुझे याद दिला रहा हूँ कि परमेश्वर के वरदान की उस ज्वाला को जलाये रख जो तुझे तब प्राप्त हुई थी जब तुझ पर मैंने अपना हाथ रखा था। **7**क्योंकि परमेश्वर ने हमें जो आत्मा दी है, वह हमें कायर नहीं बनाती बल्कि हमें प्रेम, संयम और शक्ति से भर देती है।

8इसलिये तू हमारे प्रभु या मेरी जो उसके लिये बंदी बना हुआ है, साक्षी देने से लजा मत। बल्कि तुझे परमेश्वर ने जो शक्ति दी है, उससे सुसमाचार के लिये यातनाएँ झेलने में मेरा साथ दे। **9**उसी ने हमारी रक्षा की है और पवित्र जीवन के लिये हमें बुलाया है—हमारे अपने किये कर्मो[5] के आधार पर नहीं, बल्कि उसके अपने उस प्रयोजन और अनुग्रह के अनुसार जो परमेश्वर द्वारा यीशु मसीह में हमें पहले ही अनादि काल से सौंप दिया गया है। **10**किन्तु अब हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के प्रकट होने के साथ-साथ हमारे लिये प्रकाशित किया गया है। उसने मृत्यु का अंत कर दिया तथा जीवन और अमरता को सुसमाचार के द्वारा प्रकाशित किया है। **11**इसी सुसमाचारको फैलाने के लिये मुझे एक प्रचारक, प्रेरित और शिक्षक के रूप में नियुक्त किया गया है। **12**और यही कारण है जिससे मैं इन बातों का दुख उठा रहा हूँ। और फिर भी लज्जित नहीं हूँ क्योंकि जिस पर मैंने विश्वास किया है, मैं उसे जानता हूँ और मैं यह मानता हूँ कि उसने मुझे जो सौंपा है, वह उसकी रक्षा करने में समर्थ है जब तक वह दिन* आये, **13**उस उत्तम शिक्षा को जिसे तूने मुझसे यीशु मसीह में प्राप्त होने वाले विश्वास और प्रेम के साथ सुना है तू जो सिखाता है उसका आदर्श वही उत्तम शिक्षा है। **14**हमारे भीतर निवास करने वाली पवित्र आत्मा के द्वारा तू उस बहुमूल्य धरोहर की रखवाली कर जिसे तुझे सौंपा गया है।

15जैसा कि तू जानता है कि वे सभी जो एशिया में रहते हैं, मुझे छोड़ गये हैं। फुगिलुस और हिरमुगिनेस उन्हीं में से हैं। **16**उनेसिफिरुस के परिवार पर प्रभु अनुग्रह करे। क्योंकि उसने अनेक अवसरों पर मुझे सुख पहुँचाया है। तथा वह मेरे जेल में रहने से लज्जित नहीं हुआ है। **17**बल्कि वह तो जब रोम आया था, जब तक मुझसे मिल नहीं लिया, यत्नपूर्वक मुझे ढूँढता रहा। **18**प्रभु करे उसे,उस दिन प्रभु की ओर से दया प्राप्त हो, उसने इफिसुस में मेरी तरह तरह से जो सेवाएँ की हैं तू उन्हें बहुत अच्छी तरह जानता है।

मसीह यीशु का सच्चा सिपाही

2 जहाँ तक तुम्हारी बात है, मेरे पुत्र, यीशु मसीह में प्राप्त होने वाले अनुग्रह से सुदृढ़ हो जा। **2**बहुत से लोगों की साक्षी में मुझसे तूने जो कुछ सुना है, उसे उन विश्वास करने योग्य व्यक्तियों को सौंप दे जो दूसरों को भी शिक्षा देने में समर्थ हों। **3**यातनाएँ झेलने में मसीह यीशु के एक उत्तम सैनिक के समान मेरे साथ आ मिल। **4**ऐसा कोई भी, जो सैनिक के समान सेवा कर रहा है, अपने आपको साधारण जीवन के जंजाल में नहीं फँसाता क्योंकि वह अपने शासक अधिकारी को प्रसन्न करने के लिये यत्नशील रहता है।

5और ऐसे ही यदि कोई किसी दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेता है, तो उसे विजय का मुकुट उस समय तक नहीं मिलता, जब तक कि वह नियमों का पालन करते

वह दिन अर्थात् वह दिन जब सभी लोगों का न्याय करने के लिए यीशु मसीह आएगा और उन्हें अपने साथ रहने के लिए ले जाएगा।

हुए प्रतियोगिता में भाग नहीं लेता। 6परिश्रमी कामगार
किसान ही उपज का सबसे पहला भाग पाने का अधिकारी
है। 7मैं जो बताता हूँ, उस पर विचार कर। प्रभु तुझे सब
कुछ समझने की क्षमता प्रदान करेगा।

8यीशु मसीह का स्मरण करते रहो जो मरे हुओं में से
पुनर्जीवित हो उठा है और जो दाऊद का वंशज है। यही
उस सुसमाचार का सार है जिसका मैं उपदेश देता हूँ
9इसी के लिये मैं यातनाएँ झेलता हूँ। यहाँ तक कि एक
अपराधी के समान मुझे ज़ंजीरों से जकड़ दिया गया है।
किन्तु परमेश्वर का वचन तो बंधन रहित है। 10इसी
कारण परमेश्वर के चुने हुए लोगों के लिये मैं हर दुःख
उठाता रहता हूँ ताकि वे भी मसीह यीशु में प्राप्त होने
वाले उद्धार को अनन्त महिमा के साथ प्राप्त कर सकें।

11यह वचन विश्वास के योग्य है कि: यदि हम उसके
साथ मरे हैं, तो उसी के साथ जीयेंगे,

12यदि दुःख उठाये हैं तो उसके साथ शासन भी
करेंगे। यदि हम उसको छोड़ तजेंगे, तो वह भी हमको
तज देगा।

13हम चाहे विश्वास हीन हों पर वह सदा सर्वदा
विश्वसनीय रहेगा क्योंकि नहीं हो सकता है वह आत्मा
निषेधी, अपने ही प्रति, मिथ्यावादी।

स्वीकृत कार्यकर्त्ता

14लोगों को इन बातों का ध्यान दिलाते रहो और
परमेश्वर को साक्षी करके उन्हें सावधान करते रहो
कि वे शब्दों को लेकर लड़ाई झगड़ा न करें। ऐसे
लड़ाई झगड़ों से कोई लाभ नहीं होता, बल्कि इन्हें जो
सुनते हैं, वे भी नष्ट हो जाते हैं। 15अपने आप को
परमेश्वर द्वारा ग्रहण करने योग्य बनाकर एक ऐसे
सेवक के रूप में प्रस्तुत करने का यत्न करते रहो
जिससे किसी बात के लिये लज्जित होने की
आवश्यकता न हो। और जो परमेश्वर के सत्य वचन
का सही ढंग से उपयोग करता है। 16और सांसारिक
वाद विवादों तथा व्यर्थ की बातों से बचा रहता है।
क्योंकि ये बातें लोगों को परमेश्वर से दूर ले जाती हैं।
17ऐसे लोगों की शिक्षाएँ नासूर की तरह फैलेंगी।
हुमिनयुस और फिलेतुस ऐसे ही हैं। 18जो सच्चाई के
बिन्दु से भटक गये हैं। उनका कहना है कि पुनरुत्थान
तो अब तक हो भी चुका है। ये कुछ लोगों के विश्वास
को नष्ट कर रहे हैं।

19कुछ भी हो परमेश्वर ने जिस सुदृढ़ नींव को डाला
है, वह दृढ़ता के साथ खड़ी है। उस पर अंकित है, "प्रभु
अपने भक्तों को जानता है।"* और "वह हर एक, जो
कहता है कि वह प्रभु का है, उसे बुराइयों से बचे रहना
चाहिये।"

20एक बड़े घर में बस सोने-चाँदी के ही पात्र तो नहीं
होते हैं, उसमें लकड़ी और मिट्टी के बरतन भी होते हैं।
कुछ विशेष उपयोग के लिए होते हैं और कुछ साधारण
उपयोग के लिये।

21इसलिये यदि व्यक्ति अपने आपको बुराइयों से
शुद्ध कर लेता है तो वह विशेष उपयोग का बनेगा और
फिर पवित्र बन कर अपने स्वामी के लिये उपयोगी
सिद्ध होगा। और किसी भी उत्तम कार्य के लिए तत्पर
रहेगा।

22जवानी की बुरी इच्छाओं से दूर रहो धार्मिक जीवन,
विश्वास, प्रेम और शांति के लिये उन सब के साथ जो
शुद्ध मन से प्रभु का नाम पुकारते हैं, प्रयत्नशील रहो।
23मूर्खतापूर्ण, बेकार के तर्क वितर्कों से सदा बचे रहो।
क्योंकि तुम जानते ही हो कि इनसे लड़ाई-झगड़े पैदा
होते हैं। 24और प्रभु के सेवक को तो झगड़ना ही नहीं
चाहिये। उसे तो सब पर दया करनी चाहिये। उसे शिक्षा
देने में योग्य होना चाहिये। उसे सहनशील होना चाहिये।
25उसे अपने विरोधियों को भी इस आशा के साथ कि
परमेश्वर उन्हें भी मन फिराव करने की शक्ति देगा,
विनम्रता के साथ समझाना चाहिये। ताकि उन्हें भी सत्य
का ज्ञान हो जाये 26और वे सचेत हो कर शैतान के उस
फन्दे से बच निकलें जिसमें शैतान ने उन्हें जकड़ रखा
है ताकि वे परमेश्वर की इच्छा का अनुसरण कर
सकें।

अंतिम दिनों में

3 याद रखो अंतिम दिनों में हम पर बहुत बुरा समय
आयेगा। 2लोग स्वार्थी, लालची, अभिमानी, उद्दण्ड,
परमेश्वर के निन्दक, माता-पिता की अवहेलना करने
वाले, निर्दय, अपवित्र,

53प्रेम रहित, क्षमा-हीन, निन्दक, असंयमी, बर्बर,
जो कुछ अच्छा है उसके विरोधी, 4विश्वासघाती,
अविवेकी, अहंकारी और परमेश्वर-प्रेमी होने की
अपेक्षा सुखवादी हो जायेंगे। 5वे धर्म के दिखावटी रूप
का पालन तो करेंगे किन्तु उसकी भीतरी शक्ति को
नकार देंगे। उनसे सदा दूर रहो। 6क्योंकि इनमें से कुछ
ऐसे हैं जो घरों में घुस पैठ करके पापी, दुर्बल इच्छा
शक्ति की पापपूर्ण हर प्रकार की इच्छाओं से चलायमान
स्त्रियों को वश में कर लेते हैं। 7ये स्त्रियाँ सीखने का
जतन तो सदा करती रहती हैं, किन्तु सत्य के सम्पूर्ण
ज्ञान तक वे कभी नहीं पहुँच पातीं। 8यन्नेस और यम्ब्रेस
ने जैसे मूसा का विरोध किया था, वैसे ही ये लोग सत्य
के विरोधी हैं। इन लोगों की बुद्धि भ्रष्ट है और विश्वास
का अनुसरण करने में ये असफल हैं। 9किन्तु ये और
अधिक आगे नहीं बढ़ पायेंगे क्योंकि जैसे यन्नेस और
यम्ब्रेस की मूर्खता प्रकट हो गयी थी, वैसे ही इनकी
मूर्खता भी सबके सामने उजागर हो जायेगी।

"प्रभु ... है" गिनती 16:5

अंतिम आदेश

10कुछ भी हो, तूने मेरी शिक्षा का पालन किया है।
मेरी जीवन–पद्धति, मेरे जीवन के उद्देश्य, मेरे विश्वास,
मेरी सहनशीलता, मेरे प्रेम, मेरे धैर्य, 11मेरी उन यातनाओं
और पीड़ाओं में मेरा साथ दिया है तुम तो जानते ही हो
कि अंताकिया, इकुनियुम और लुस्त्रा में मुझे कितनी
भयानक यातनाएँ दी गयी थीं जिन्हें मैंने सहा था। किन्तु
प्रभु ने उन सबसे मेरी रक्षा की। 12वास्तव में परमेश्वर
की सेवा में जो नेकी के साथ जीना चाहते हैं, सताये ही
जायेंगे। 13किन्तु पापी और ठग दूसरों को छलते हुए
तथा स्वयं छले जाते हुए बुरे से बुरे होते चले जायेंगे।

14किन्तु तुमने जिन बातों को सीखा और माना है,
उन्हें करते जाओ। तुम जानते हो कि उन बातों को
तुमने किनसे सीखा है। 15और तुझे पता है कि तू
बचपन से ही पवित्र शास्त्रों को भी जानता है। वे तुझे
उस विवेक को दे सकते हैं जिससे मसीह यीशु में
विश्वास के द्वारा छुटकारा मिल सकता है। 16सम्पूर्ण
पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है। यह
लोगों को सत्य की शिक्षा देने, उनको सुधारने, उन्हें
उनकी बुराइयाँ दर्शाने और धार्मिक जीवन के शिक्षा में
उपयोगी है। 17जिससे परमेश्वर का प्रत्येक सेवक सुधर
जाएगा और शास्त्रों का प्रयोग करते हुए हर प्रकार के
उत्तम कार्यों को करने के लिये समर्थ और तैयार होगा।

4 परमेश्वर को साक्षी करके और मसीह यीशु
कोअपनी साक्षी बना कर जो सभी जीवितों और
जो मर चुके हैं, उनका न्याय करने वाला है, और
क्योंकि उसका पुन:आगमन तथा उसका राज्य निकट
है, मैं तुझे शपथ पूर्वक आदेश देता हूँ: 2सुसमाचार का
प्रचार कर। चाहे तुझे सुविधा हो चाहे असुविधा, अपना
कर्तव्य करने को तैयार रह। लोगों को क्या करना
चाहिये, उन्हें समझा। जब वे कोई बुरा काम करें, उन्हें
चेतावनी दे। लोगों को धैर्य के साथ समझाते हुए प्रोत्साहित
कर। 3मैं यह इसलिये बता रहा हूँ कि एक समय ऐसा
आयेगा जब लोग उत्तम उपदेश को सुनना तक नहीं
चाहेंगे। वे अपनी इच्छाओं के अनुकूल अपने लिए बहुत
से गुरु इकट्ठे कर लेंगे, जो वही सुनाएँगे जो वे सुनना
चाहते हैं। 4वे अपने कानों को सत्य से फेर लेंगे और
कल्पित कथाओं पर ध्यान देने लगेंगे। 5किन्तु तू
निश्चयपूर्वक हर परिस्थिति में अपने पर नियन्त्रण रख,
यातनाएँ झेल और सुसमाचार के प्रचार का काम कर।
जो सेवा तुझे सौंपी गयी है, उसे पूरा कर।

6जहाँ तक मेरी बात है, मैं तो अब अर्घ के समान
उँडेला जाने पर हूँ। और मेरा तो इस जीवन से विदा लेने
का समय भी आ पहुँचा है। 7मैं उत्तम प्रतिस्पर्द्धा में लगा
रहा हूँ। मैं अपनी दौड़ दौड़ चुका हूँ। मैंने विश्वास के
पन्थ की रक्षा की है। 8अब विजय मुकुट मेरी प्रतीक्षा में
है। जो धार्मिक जीवन के लिये मिलना है। उस दिन
न्यायकर्ता प्रभु मुझे विजय मुकुट पहनायेगा। न केवल
मुझे, बल्कि उन सब को जो प्रेम के साथ उसके प्रकट
होने की बाट जोहते रहे हैं।

निजी संदेश

9मुझसे जितना शीघ्र हो सके, मिलने आने का पूरा
प्रयत्न करना। 10क्योंकि इस जगत के मोह में पड़ कर
देमास ने मुझे त्याग दिया है और वह थिस्सलुनी की
चला गया है। क्रेसकैंस गलातिया को तथा तीतुस
दलमतिया को चला गया है। 11केवल लूका ही मेरे
पास है। मरकुस के पास जाना और जब तू आये, उसे
अपने साथ ले आना क्योंकि मेरे काम में वह मेरा
सहायक हो सकता है। 12तिखिकुस को मैं इफिसुस भेज
रहा हूँ।

13जब तू आये, तो उस कोट को, जिसे मैं त्रोआस में
करपुस के घर छोड़ आया था, ले आना। मेरी पुस्तकों,
विशेष कर चर्म–पत्रों को भी ले आना।

14ताम्रकार सिकन्दर ने मुझे बहुत हानि पहुँचाई है।
उसने जैसा किया है, प्रभु उसे वैसा ही फल देगा। 15तू
भी उस से सचेत रहना क्योंकि वह हमारे उपदेश का
घोर विरोध करता रहा है।

16प्रारम्भ में जब मैं अपना बचाव प्रस्तुत करने लगा
तो मेरे पक्ष में कोई सामने नहीं आया। बल्कि उन्होंने
तो मुझे अकेला छोड़ दिया था। परमेश्वर करे उन्हें
इसका हिसाब न देना पड़े। 17मेरे पक्ष में तो प्रभु ने खड़े
होकर मुझे शक्ति दी। ताकि मेरे द्वारा सुसमाचार का
भरपूर प्रचार हो सके, जिसे सभी ग़ैर यहूदी सुन पायें।
सिंह के मुँह से मुझे बचा लिया गया है। 18किसी भी
पापपूर्ण हमले से प्रभु मुझे बचायेगा और अपने स्वर्गीय
राज्य में सुरक्षा पूर्वक ले जायेगा। उसकी महिमा सदा
सदा होती रहे। आमीन।

पत्र का समापन

19प्रिसकिल्ला, अक्विला और उनेसिफुरुस के परिवार
को नमस्कार कहना। 20इरास्तुस कुरिन्थुस में ठहर
गया है। मैंने त्रुफिमुस को उसकी बीमारी के कारण
मिलेतुस में छोड़ दिया है।

21जाड़ों से पहले आने का जतन करना। यूबुलुस,
पूदेंस, लिनुस तथा क्लौदिया तथा और सभी भाइयों का
तुझे नमस्कार पहुँचे।

22प्रभु तेरे साथ रहे। तुम सब पर प्रभु का अनुग्रह हो।

तीतुस

1 पौलुस की ओर से जिसे परमेश्वर के चुने हुए लोगों
को उनके विश्वास में सहायता देने के लिये और
हमारे धर्म की सचाई के सम्पूर्ण ज्ञान की रहनुमाई के
लिए भेजा गया है; 2वह मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूँ कि
परमेश्वर के चुने हुओं को अनन्त जीवन की आस
बँधे। परमेश्वर ने, जो कभी झूठ नहीं बोलता, अनादिकाल
से अनन्त जीवन का वचन दिया है। 3उचित समय पर
परमेश्वर ने अपने सुसमाचार को उपदेशों के द्वारा
प्रकट किया। वही सुसन्देश हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर
की आज्ञा से मुझे सौंपा गया है।

4हमारे समान विश्वास में मेरे सच्चे पुत्र तीतुस को:
हमारे परमपिता परमेश्वर और उद्धारकर्ता मसीह यीशु
की ओर से अनुग्रह और शांति प्राप्त हो।

क्रेते में तीतुस का कार्य

5मैंने तुझे क्रेते में इसलिये छोड़ा था कि वहाँ जो कुछ
अधूरा रह गया है, तू उसे ठीक ठाक कर दे और मेरे
आदेश के अनुसार हर नगर में बुज़ुर्गों को नियुक्त करे।
6उसे नियुक्त तभी किया जाये जब वह निर्दोष हो। एक
पत्नी व्रती हो। उसके बच्चे विश्वासी हों और
अनुशासनहीनता का दोष उन पर न लगाया जा सके।
तथा वे निरंकुश भी न हों। 7निरीक्षक को निर्दोष तथा
किसी भी बुराई से अछूता होना चाहिये। क्योंकि जिसे
परमेश्वर का काम सौंपा गया है, उसे अड़ियल, चिड़चिड़ा
और दाखमधु पीने में उसकी रूचि नहीं होनी चाहिए।
उसे झगड़ालू, नीच कमाई का लोलुप नहीं होना चाहिये
8बल्कि उसे तो अतिथियों की आवभगत करने वाला,
नेकी को चाहने वाला, विवेक-पूर्ण, धर्मी, भक्त, तथा
अपने पर नियंत्रण रखने वाला होना चाहिये। 9उसे उस
विश्वास करने योग्य संदेश को दृढ़ता से धारण किये
रहना चाहिये जिसकी उसे शिक्षा दी गयी है, ताकि वह
लोगों को सद्शिक्षा देकर उन्हें प्रबोधित कर सके। तथा
जो इसके विरोधी हों, उनका खण्डन कर सके।

10यह इसलिये महत्त्वपूर्ण है क्योंकि बहुत से लोग
विद्रोही हो कर व्यर्थ की बातें बनाते हुए दूसरों को
भटकाते हैं। मैं विशेष रूप से यहूदी पृष्ठभूमि के लोगों
का उल्लेख कर रहा हूँ। 11उनका तो मुँह बन्द किया
ही जाना चाहिये। क्योंकि वे जो बातें नहीं सिखाने की हैं,
उन्हें सिखाते हुए घर के घर बिगाड़ रहे हैं। बुरे रास्तों से
धन कमाने के लिये ही वे ऐसा करते हैं। 12एक क्रेते के
निवासी ने अपने लोगों के बारे में स्वयं कहा है: "क्रेते
के निवासी सदा झूठ बोलते हैं, वे जंगली पशु हैं, वे
आलसी हैं, पेटू हैं।" 13यह कथन सत्य है, इसीलिये उन्हें
बलपूर्वक डाँटो-फटकारो ताकि उनका विश्वास पक्का
हो सके। 14यहूदियों के पुराने वृत्तान्तों पर और उन
लोगों के आदेशों पर, जो सत्य से भटक गये हैं, कोई
ध्यान मत दो। 15पवित्र लोगों के लिये सब कुछ पवित्र है,
किन्तु अशुद्ध और जिन में विश्वास नहीं है, उनके
लिये कुछ भी पवित्र नहीं है। 16वे परमेश्वर को जानने
का दावा करते हैं। किन्तु उनके कर्म दर्शाते हैं कि वे
उसे जानते ही नहीं। वे घृणित और आज्ञा का उल्लंघन
करने वाले हैं। तथा किसी भी अच्छे काम को करने में
वे असमर्थ हैं।

सच्ची शिक्षा का अनुसरण

2 किन्तु तुम सदा ऐसी बातें बोला करो जो सच्ची
शिक्षा के अनुकूल हों। 2वृद्ध पुरुषों को शिक्षा दो
कि वे शालीन और अपने पर नियन्त्रण रखने वाले
बनें। वे गंभीर, विवेकी, प्रेम और विश्वास में दृढ़ और
धैर्यपूर्वक सहनशील हों। 3इसी प्रकार वृद्ध महिलाओं
को सिखाओ कि वे पवित्रजनों के योग्य उत्तम व्यवहार
वाली बनें। निन्दक न बनें तथा बहुत अधिक दाखमधु
पान की लत उन्हें न हो। वे अच्छी अच्छी बातें सिखाने
वाली बनें 4ताकि युवतियों को अपने-अपने बच्चों और
पतियों से प्रेम करने की सीख दे सकें। 5जिससे वे
संयमी, पवित्र, अपने-अपने घरों की देखभाल करने
वाली, दयालु, अपने पतियों की आज्ञामानने वाली बनें
जिससे परमेश्वर के वचन की निन्दा न हो। 6इसी तरह
युवकों को सिखाते रहो कि वे संयमी बनें। 7तुम अपने
आप को हर बात में आदर्श बना कर दिखाओ। तेरा
उपदेश शुद्ध और गम्भीर होना चाहिये। 8ऐसी सद्वाणी
का प्रयोग करो, जिसकी आलोचना न की जा सके
ताकि तेरे विरोधी लज्जित हों क्योंकि उनके पास तेरे
विरोध में बुरा कहने को कुछ नहीं होगा।

9दासों को सिखाओ कि वे हर बात में अपने स्वामियों
की आज्ञा का पालन करें। उन्हें प्रसन्न करते रहें। उलट

कर बात न बोलें। 10चोरी चालाकी न करें। बल्कि
सम्पूर्ण विश्वसनीयता का प्रदर्शन करें। ताकि हमारे
उद्धारकर्ता परमेश्वर के उपदेश की हर प्रकार से
शोभा बढ़े।11क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह सब मनुष्यों
के उद्धार के लिए प्रकट हुआ है। 12इससे हमें सीख
मिलती है कि हम परमेश्वर विहीनता को नकारें और
सांसारिक इच्छाओं का निषेध करते हुए ऐसा जीवन
जीयें जो विवेकपूर्ण नेक, भक्ति से भरपूर और पवित्र
हो। आज के इस संसार में 13आशा के उस धन्य दिन
की प्रतीक्षा करते रहें जब हमारे परम परमेश्वर और
उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा प्रकट होगी। 14उसने
हमारे लिये अपने आपको दे डाला। ताकि वह सभी
प्रकार की दुष्टताओं से हमें बचा सके और अपने चुने
हुए लोगों के रूप में अपने लिये हमें शुद्ध कर ले—हमें,
जो उत्तम कर्म करने को लालायित हैं।

15इन बातों को पूरे अधिकार के साथ कह और
समझाता रह, उत्साहित करता रह और विरोधियों को
झिड़कता रह। ताकि कोई तेरी अनसुनी न कर सके।

जीवन की उत्तम रीति

3 लोगों को याद दिलाता रह कि वे राजाओं और
अधिकारियों के अधीन रहें। उनकी आज्ञा का
पालन करें। हर प्रकार के उत्तम कार्यों को करने के
लिये तैयार रहें। 2किसी की निन्दा न करें। शांति-प्रिय
और सज्जन बनें। सब लोगों के साथ अच्छा व्यवहार
करें।

3यह मैं इसलिये बता रहा हूँ क्योंकि हम भी, एक
समय था, जब मूर्ख थे। आज्ञा का उल्लंघन करते थे।
भ्रम में पड़े थे। तथा वासनाओं एवम् हर प्रकार के
सुख-भोग के दास बने थे। हम दुष्टता और ईर्ष्या में
अपना जीवन जीते थे। हम से लोग घृणा करते थे तथा
हम भी परस्पर एक दूसरे को घृणा करते थे।

4किन्तु जब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की मानवता
के प्रति करुणा और प्रेम प्रकट हुए 5उसने हमारा
उद्धार किया। यह हमारे निर्दोष ठहराये जाने के लिये
हमारे किसी धर्म के कामों के कारण नहीं हुआ बल्कि
उसकी करुणा द्वारा हुआ। उसने हमारी रक्षा उस स्नान
के द्वारा की जिसमें हम फिर पैदा होते है और पवित्र
आत्मा के द्वारा नये बनाये जाते हैं। 6उसने हम पर
पवित्र आत्मा को हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा
भरपूर उँडेला है। 7अब परमेश्वर ने हमें अपनी
अनुग्रह के द्वारा निर्दोष ठहराया है ताकि जिसकी हम
आशा कर रहे थे उस अनन्त जीवन के उत्तराधिकार
को पा सकें। 8यह कथन विश्वास करने योग्य है और
मैं चाहता हूँ कि तुम इन बातों पर डटे रहो ताकि वे जो
परमेश्वर में विश्वास करते हैं, अच्छे कर्मों में ही लगे
रहें। ये बातें लोगों के लिए उत्तम और हितकारी हैं।

9वंशावलि सम्बन्धी विवादों, व्यवस्था सम्बन्धी झगड़ों
झमेलों और मूर्खतापूर्ण मतभेदों से बचा रह क्योंकि
उनसे कोई लाभ नहीं, वे व्यर्थ हैं। 10जो व्यक्ति फूट
डालता हो, उससे एक या दो बार चेतावनी देकर अलग
हो जाओ। 11क्योंकि तुम जानते हो कि ऐसा व्यक्ति मार्ग
से भटक गया है और पाप कर रहा है। उसने तो स्वयं
अपने को दोषी ठहराया है।

याद रखने की कुछ बातें

12मैं तुम्हारे पास जब अरतिमास या तुखिकुस को
भेजूँ तो मेरे पास निकुपुलिस आने का भरपूर जतन
करना क्योंकि मैंने वहीं सर्दियाँ बिताने का निश्चय कर
रखा है। 13वकील जेनास और अप्पुलोस को उनकी
यात्रा के लिये जो कुछ आवश्यक हो, उसके लिये तुम
भरपूर सहायता जुटा देना ताकि उन्हें किसी बात की
कोई कमी न रहे। 14हमारे लोगों को भी सत्कर्मों में
लगे रहना सीखना चाहिये। उनमें से भी जिनको अत्यधिक
आवश्यकता हो, उसको पूरी करना ताकि वे विफल न
हों।

15जो मेरे साथ हैं, उन सब का तुम्हें नमस्कार। हमारे
विश्वास के कारण जो लोग हमसे प्रेम करते हैं, उन्हें
भी नमस्कार।

परमेश्वर का अनुग्रह तुम सब के साथ रहे।

फिलेमोन

यीशु मसीह के लिये बंदी बने पौलुस तथा हमारे भाई
तिमुथियुस की ओर से: हमारे प्रिय मित्र और सहकर्मी
फिलेमोन, 2हमारी बहन अफफ़िया, हमारे साथी सैनिक
अरखिप्पुस तथा तुम्हारे घर पर एकत्रित होने वाली
कलीसिया को:
3हमारे परम पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह
की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शांति प्राप्त हो।

फिलेमोन का प्रेम और विश्वास

4अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हारा उल्लेख करते हुए मैं
सदा अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। 5क्योंकि
मैं संत जनों के प्रति तुम्हारे प्रेम और यीशु मसीह में
तुम्हारे विश्वास के विषय में सुनता रहता हूँ। 6मेरी
प्रार्थना है कि तुम्हारे विश्वास से उत्पन्न उदार सहभागिता
लोगों का मार्ग दर्शन करे। जिससे उन्हें उन सभी उत्तम
वस्तुओं का ज्ञान हो जाये जो मसीह के उद्देश्य को आगे
बढ़ाने में हमारे बीच घटित हो रही हैं। 7हे भाई, तेरे
प्रयत्नों से संत जनों के हृदय हरे-भरे हो गये हैं, इसलिये
तेरे प्रेम से मुझे बहुत आनन्द मिला है।

उनेसिमुस को भाई स्वीकारो

8इसलिये कि मसीह में मुझे तुम्हारे कर्त्तव्यों के लिये
आदेश देने का अधिकार है। 9किन्तु प्रेम के आधार पर
मैं तुमसे निवेदन करना ही ठीक समझता हूँ। मैं पौलुस
जो अब बूढ़ा हो चला है और मसीह यीशु के लिये अब
बंदी भी बना हुआ है,10उस उनेसिमुस के बारे में निवेदन
कर रहा हूँ जो तब मेरा धर्मपुत्र बना था, जब मैं बंदीगृह
में था। 11एक समय था जब वह तेरे किसी काम का
नहीं था, किन्तु अब न केवल तेरे लिए बल्कि मेरे
लिये भी वह बहुत काम काहै।
12मैं उसे फिर तेरे पास भेज रहा हूँ (बल्कि मुझे तो
कहना चाहिये अपने हृदय को ही तेरे पास भेज रहा
हूँ।) 13मैं उसे यहाँ अपने पास ही रखना चाहता था,
ताकि सुसमाचार के लिए मुझ बंदी की वह तेरी ओर से
सेवा कर सके। 14किन्तु तेरी अनुमति के बिना मैं कुछ
भी करना नहीं चाहता ताकि तेरा कोई उत्तम कर्म किसी
विवशता से नहीं बल्कि स्वयं अपनी इच्छा से ही हो।
15हो सकता है कि उसे थोड़े समय के लिये तुझसे दूर
करने का कारण यही हो कि तू उसे फिर सदा के लिए
पा ले। 16दास के रूप में नहीं, बल्कि दास से अधिक
एक प्रिय बन्धु के रूप में। मैं उस से बहुत प्रेम करता हूँ
किन्तु तू उसे और अधिक प्रेम करेगा। केवल एक
मनुष्य के रूप में ही नहीं बल्कि प्रभु में स्थित एक
बन्धु के रूप में भी।
17सो यदि तू मुझे अपने साझीदार के रूप में समझता
है तो उसे भी मेरी तरह ही समझ। 18और यदि उसने
तेरा कुछ बुरा किया है या उसे तेरा कुछ देना है तो उसे
मेरे खाते में डाल दे। 19मैं पौलुस स्वयं अपने हस्ताक्षरों
से यह लिख रहा हूँ। उसकी भरपाई तुझे मैं करूँगा।
(मुझे यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि तू तो
अपने जीवन तक के लिए मेरा ऋणी है।) 20हाँ भाई,
मुझे तुझसे यीशु मसीह में यह लाभ प्राप्त हो कि मेरे
हृदय को चैन मिले। 21तुझपर विश्वास रखते हुए यह
पत्र मैं तुझे लिख रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि तुझसे मैं
जितना कह रहा हूँ, तू उससे कहीं अधिक करेगा।
22मेरे लिये निवास का प्रबन्ध करते रहना क्योंकि
मेरा विश्वास है कि तुम्हारी प्रार्थनाओं के परिणामस्वरूप
मुझे सुरक्षित रुप से तुम्हें सौंप दिया जायेगा।

पत्र का समापन

23यीशु मसीह में स्थित मेरे साथी बंदी इपफ्रास का
तुम्हें नमस्कार। 24मेरे साथी कार्यकर्ता, मरकुस,
अरिस्तर्खुस, देमास और लूका का तुम्हें नमस्कार पहुँचे।
25तुम सब पर प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह बना रहे।

इब्रानियों

परमेश्वर अपने पुत्र के माध्यम से बोलता है

1 परमेश्वर ने अतीत में नबियों के द्वारा अनेक अवसरों
पर अनेक प्रकार से हमारे पूर्वजों से बातचीत की।
2किन्तु इन अंतिम दिनों में उसने हमसे अपने पुत्र के
माध्यम से बातचीत की, जिसे उसने सब कुछ का
उत्तराधिकारी नियुक्त किया है और जिसके द्वारा उसने
समूचे ब्रह्माण्ड की रचना की है। 3वह पुत्र परमेश्वर की
महिमा का तेज–मंडल है तथा उसके स्वरूप का यथावत
प्रतिनिधि। वह अपने समर्थ वचन के द्वारा सब वस्तुओं
की स्थिति बनाये रखता है। सबको पापों से मुक्त करने
का विधान करके वह स्वर्ग में उस महामहिम के
दाहिने हाथ बैठ गया। 4इस प्रकार वह स्वर्गदूतों से
उतना ही उत्तम बन गया जितना कि उनके नामों से वह
नाम उत्तम है जो उसने उत्तराधिकार में पाया है।
5क्योंकि परमेश्वर ने किसी भी स्वर्गदूत से कभी
ऐसा नहीं कहा: "तू मेरा पुत्र; आज मैं तेरा पिता बन
गया हूँ।" *भजन संहिता 2:7*

और न हीं किसी स्वर्गदूत से उसने यह कहा है, "मैं
उसका पिता बनूँगा, और वह मेरा पुत्र होगा।"
2 शमूएल 7:14

6और फिर वह जब अपनी प्रथम एवं महत्त्वपूर्ण संतान
को संसार में भेजता है तो कहता है, "परमेश्वर के सब
स्वर्गदूत उसका उपासना करें।" *व्यवस्था विवरण 32:43*

7स्वर्गदूत के विषय में बताते हुए वह कहता है:
"उसने अपने सब स्वर्गदूत को पवन बनाये और
अपने सेवकों को आग की लपट बनाये।"
भजन संहिता 104:4

8किन्तु अपने पुत्र के विषय में वह कहता है: "हे
परमेश्वर! तेरा सिंहासन शाश्वत है, तेरा राजदण्ड
धार्मिकता है;
9तुझको धार्मिकता प्रिय है, और पापों से घृणा रही,
इसलिए परमेश्वर, तेरे परमेश्वर ने तुझको चुना
है, और उस आदर का आनन्द दिया। तुझको तेरे
साथियों से कहीं अधिक दिया। *भजन संहिता 45:6–7*

10वह यह भी कहता है, "हे प्रभु, जब सृष्टि का जन्म
हो रहा था, तूने धरती की नींव धरी। और ये सारे स्वर्ग
तेरे हाथ का कतृत्व हैं।
11ये नष्ट हो जायेंगे पर तू चिरन्तन रहेगा, ये सब वस्त्र
से फट जायेंगे।
12और तू परिधान सा उनको लपेटेगा। वे फिर वस्त्र
जैसे बदल जायेंगे। किन्तु तू यूँ ही, यथावत रहेगा ही,
तेरे काल का अंत युग युग न होगा।"
भजन संहिता 102:25–27

13परमेश्वर ने कभी किसी स्वर्गदूत से ऐसा नहीं
कहा: "तू मेरे दाहिने बैठ जा, जब तक मैं तेरे शत्रुओं
को, तेरे चरण तल की चौकी न बना दूँ।"
भजन संहिता 110:1

14सभी स्वर्गदूत उद्धार पाने वालों की सेवा के लिये
भेजी गयी सहायक आत्माएँ हैं।

सावधान रहने को चेतावनी

2 इसीलिये हमें और अधिक सावधानी के साथ, जो
कुछ हमने सुना है, उस पर ध्यान देना चाहिये
ताकि हम भटकने न पायें। 2क्योंकि यदि स्वर्गदूतों द्वारा
दिया गया संदेश प्रभावशाली था तथा उसके प्रत्येक
उल्लंघन और अवज्ञा के लिए उचित दण्ड दिया गया तो
यदि हम ऐसे महान् उद्धार की उपेक्षा कर देते हैं, 3तो
हम कैसे बच पायेंगे। इस उद्धार की पहली घोषणा प्रभु
के द्वारा की गयी थी। और फिर जिन्होंने इसे सुना था,
उन्होंने हमारे लिये इसकी पुष्टि की। 4परमेश्वर ने भी
चिह्नों, आश्चर्यो तथा तरह–तरह के चमत्कारपूर्ण कर्मों
तथा पवित्र आत्मा के उन उपहारों द्वारा, जो उसकी
इच्छा के अनुसार बाँटे गये थे, इसे प्रमाणित किया।

उद्धारकर्ता मसीह का मानव देह धारण

5उस भावी संसार को, जिसकी हम चर्चा कर रहे हैं,
उसने स्वर्गदूतों के अधीन नहीं किया 6बल्कि शास्त्र में
किसी स्थान पर किसी ने यह साक्षी दी है:
"मनुष्य क्या है, जो तू उसकी सुधि लेता है? मानव
पुत्र क्या है जिसके लिए तू चिंतित है?

7तू ने स्वर्गदूतों से उसे थोड़े से समय को किंचित कम किया। उसके सिर मर महिमा और आदर का राजमुकुट रख दिया।
8और उसके चरणों तले उसकी अधीनता मे सभी कुछ रख दिया।" *भजन संहिता 8:4-6*

सब कुछ को उसके अधीन रखते हुए परमेश्वर ने कुछ भी ऐसा नहीं छोड़ा जो उसके अधीन न हो। फिर भी आजकल हम प्रत्येक वस्तु को उसके अधीन नहीं देख रहे हैं। 9किन्तु हम यह देखते हैं कि वह यीशु
जिसको थोड़े समय के लिये स्वर्गदूतों से नीचे कर दिया गया था, अब उसे महिमा और आदर का मुकुट पहनाया गया है क्योंकि उसने मृत्यु की यातना झेली थी। जिससे परमेश्वर के अनुग्रह के कारण वह प्रत्येक के लिये मृत्यु का अनुभव करे।
10अनेक पुत्रों को महिमा प्रदान करते हुए उस परमेश्वर के लिये जिसके द्वारा और जिसके लिये सब का अस्तित्त्व बना हुआ है, उसे यह शोभा देता है कि वह उनके छुटकारे के विधाता को यातनाओं के द्वारा सम्पूर्ण सिद्ध करे।
11वे दोनों ही–वह जो मनुष्यों को पवित्र बनाता है तथा वे जो पवित्र बनाए जाते हैं, एक ही परिवार के हैं। इसीलिए यीशु उन्हें भाई कहने में लज्जा नहीं करता।
12उसने कहा:
"मैं सभा के बीच अपने बन्धुओं में तेरे नाम का उदघोष करूँगा। सबके सामने मैं तेरे प्रशंसा गीत गाऊँगा।" *भजन संहिता 22:22*

13और फिर, "मैं उसका विश्वास करूँगा।"
यशायाह 8:17

और फिर वह कहता है: "मैं यहाँ हूँ। और वे संतान जो मेरे साथ हैं। जिनको मुझे परमेश्वर ने दिया है।"
यशायाह 8:18

14क्योंकि संतान माँस और लहू युक्त थी इसीलिये वह भी उनकी इस मनुष्यता में सहभागी हो गया ताकि अपनी मृत्यु के द्वारा वह उसे अर्थात् शैतान को नष्ट कर सके जिसके पास मारने की शक्ति है। 15और उन
व्यक्तियों को मुक्त कर ले जिनका समूचा जीवन मृत्यु के प्रति अपने भय के कारण दासता में बीता है। 16क्योंकि
यह निश्चित है कि वह स्वर्गदूतों की नहीं बल्कि इब्राहीम के वंशजों की सहायता करता है। 17इसीलिये उसे हर
प्रकार से उसके भाइयों के जैसा बनाया गया ताकि वह परमेश्वर की सेवा में दयालु और विश्वसनीय महायाजक बन सके। और लोगों को उनके पापों की क्षमा दिलाने के लिए बलि दे सके। 18क्योंकि उसने स्वयं उस समय,
जब उसकीपरीक्षा ली जा रही थी, यातनाएँ भोगी हैं। इसलिये जिनकी परीक्षा ली जा रही है, वह उनकी सहायता करने में समर्थ है।

यीशु मूसा से महान है

3 अत: स्वर्गीय बुलावे में भागीदार हे पवित्र भाइयो अपना ध्यान उस यीशु पर लगाये रखो जो परमेश्वर का प्रतिनिधि तथा हमारे घोषित विश्वास के अनुसार प्रमुख याजक है। 2जैसे परमेश्वर के समूचे
घराने में मूसा विश्वसनीय था, वैसे ही यीशु भी, जिसने उसे नियुक्त किया था उस परमेश्वर के प्रति, विश्वासपूर्ण
था। 3जैसे भवन का निर्माण करने वाला स्वयं भवन से अधिक आदर पाता है, वैसे ही यीशु मूसा से अधिक
आदर का पात्र माना गया। 4क्योंकि प्रत्येक भवन का कोई न कोई बनाने वाला होता है, किन्तु परमेश्वर तो
हर वस्तु का सिरजनहार है। 5परमेश्वर के समूचे घराने में मूसा एक सेवक के समान विश्वास पात्र था, वह उन बातों का साक्षी था जो भविष्य में परमेश्वर के द्वारा
कही जानी थीं। 6किन्तु परमेश्वर के घराने में मसीह तो एक पुत्र के रूप में विश्वास करने योग्य है और यदि हम अपने साहस और उस आशा में विश्वास को बनाये रखते हैं तो हम ही उसका घराना हैं।

अविश्वास के विरुद्ध चेतावनी

7इसीलिए पवित्र आत्मा कहता है:
8"यदि आज उसकी आवाज़ सुनो! अपने हृदय जड़ मत करो। जैसे बगावत के दिनों में किये थे। जब मरुस्थल में परीक्षा हो रही थी।
9मुझे तुम्हारे पूर्वजों ने परखा था, उन्होंने मेरे धैर्य की परीक्षा ली और मेरे कार्य देखे, जिन्हें मैं चालीस वर्षो से करता रहा!
10वह यही कारण था जिससे मैं उन जनों से क्रोधित था, और फिर मैंने कहा था, इनके हृदय सदा भटकते रहते हैं ये मेरे मार्ग जानते नहीं हैं।'
11मैंने क्रोध में इसी से तब शपथ ले कर कहा था, 'ये कभी मेरी विश्राम-स्थल में सम्मिलित नहीं होंगे।'"
भजन संहिता 95:7-11

12हे भाइयो, देखते रहो कहीं तुममें से किसी के मन में पाप और अविश्वास न समा जाय जो तुम्हें सजीव परमेश्वर से ही दूर भटका दे। 13जब तक यह "आज"
का दिन कहलाता है, तुम प्रतिदिन परस्पर एक दूसरे का ढाँढ़स बँधाते रहो ताकि तुममें से कोई भी पाप के छलावे में पड़कर जड़ न बन जाये। 14यदि हम अंत तक
दृढ़ता के साथ अपने प्रारम्भ के विश्वास को थामे रहते हैं तो हम मसीह के भागीदार बन जाते हैं। 15जैसा कि
कहा भी गया है:

"यदि आज उसकी आवाज सुनो, अपने हृदय जड़
मत करो जैसे बगावत के दिनों में किये थे।"

भजन संहिता 95:7-8

16भला वे कौन थे जिन्होंने सुना और विद्रोह किया?
क्या वे, वे ही नहीं थे जिन्हें मूसा ने मिस्र से बचा कर
निकाला था? 17वह चालीस बरसों तक किन पर क्रोधित
रहा? क्या उन्हीं पर नहीं जिन्होंने पाप किया था और
जिनके शव मरुस्थल में पड़े रहे थे? 18परमेश्वर ने
किनके लिये शपथ उठायी थी कि वे उसकी विश्राम-
स्थल में प्रवेश नहीं कर पायेंगे? क्या वे ही नहीं थे
जिन्होंने उसकी आज्ञा का उल्लंघन किया था? 19इस
प्रकार हम देखते हैं कि वे अपने अविश्वास के कारण
ही वहाँ प्रवेश पाने में समर्थ नहीं हो सके थे।

संतों के लिए विश्राम-स्थल

4 अत: जब उसकी विश्राम-स्थल में प्रवेश की प्रतिज्ञा
अब तक बनी हुई है तो हमें सावधान रहना चाहिये
कि तुममें से कोई अनुपयुक्त सिद्ध न हो। 2क्योंकि हमें
भी उन्हीं के समान सुसमाचार का उपदेश दिया गया है।
किन्तु जो सुसमाचार उन्होंने सुना, वह उनके लिये व्यर्थ
था। क्योंकि उन्होंने जब उसे सुना तो इसे विश्वास के
साथ धारण नहीं किया। 3अब देखो, हमने, जो विश्वासी
हैं, उस विश्राम-स्थल में प्रवेश पाया है। जैसा कि परमेश्वर
ने कहा भी है:

"मैंने क्रोध में इसीसे तब शपथ लेकर कहा था, 'ये
कभी मेरी विश्राम-स्थल में सम्मिलित नहीं होंगे।'"

भजन संहिता 95:11

जब संसार की सृष्टि करने के बाद उसका काम पूरा
हो गया था। 4उसने सातवें दिन के सम्बन्ध में इन शब्दों
में कहीं शास्त्रों में कहा है, "और फिर सातवें दिन
अपने सभी कामों से परमेश्वर ने विश्राम लिया।" 5और
फिर उपरोक्त सन्दर्भ में भी वह कहता है:"ये कभी मेरी
विश्राम-स्थल में सम्मिलित नहीं होंगे।"*

6जिन्हें पहले सुसमाचार सुनाया गया था अपनी
अनाज्ञाकारिता के कारण वे तो विश्रान्ति में प्रवेश नहीं
पा सके किन्तु औरों के लिए विश्राम-स्थल का द्वार
अभी भी खुला है। 7इसलिये परमेश्वर ने फिर एक
विशेष दिन निश्चित किया और उसे नाम दिया "आज"
कुछ वर्षों के बाद दाऊद के द्वारा परमेश्वर ने उस दिन
के बारे में शास्त्र में बताया था। जिसका उल्लेख
हमने अभी किया है:

"यदि आज उसकी आवाज सुनो, अपने हृदय जड़
मत करो।" *भजन संहिता 95:7-8*

8अत: यदि यहोशू उन्हें विश्राम-स्थल में ले गया होता
तो परमेश्वर बाद में किसी और दिन के विषय में नहीं
बताता। 9तो खैर जो भी हो। परमेश्वर के भक्तों के लिये
एक वैसी विश्राम-स्थल रहता ही है जैसी परमेश्वर
सातवें दिन विश्राम लिया। 10क्योंकि जो कोई भी परमेश्वर
की विश्राम-स्थल में प्रवेश करता है, अपने कर्मों से
विश्राम पा जाता है। वैसे ही जैसे परमेश्वर ने अपने
कर्मों से विश्राम पा लिया। 11सो आओ हम भी उस
विश्राम-स्थल में प्रवेश पाने के लिये प्रत्येक प्रयत्न करें
ताकि उनकी अनाज्ञाकारिता के उदाहरण का अनुसरण
करते हुए किसी का भी पतन न हो।

12परमेश्वर का वचन तो सजीव और क्रियाशील है,
वह किसी दुधारी तलवार से भी अधिक पैना है। वह
आत्मा और प्राण, सन्धियों और मज्जा तक में गहरा
बेध जाता है। वह मन की वृत्तियों और विचारों को
परख लेता है। 13परमेश्वर की दृष्टि से इस समूची सृष्टि
में कुछ भी ओझल नहीं है। उसकी आँखों के सामने,
जिसे हमें लेखा-जोखा देना है, हर वस्तु बिना किसी
आवरण के उघड़ी हुई है।

महान महायाजक यीशु

14इसीलिये क्योंकि परमेश्वर का पुत्र यीशु एक ऐसा
महान् महायाजक है, जो स्वर्गों में से होकर गया है तो
हमें अपने अंगीकृत एवं घोषित विश्वास को दृढ़ता के
साथ थामे रखना चाहिये। 15क्योंकि हमारे पास जो
महायाजक है, वह ऐसा नहीं है जो हमारी दुर्बलताओं के
साथ सहानुभूति न रख सके। उसे हर प्रकार से वैसे ही
परखा गया है जैसे हमें फिर भी वह सर्वथा पाप रहित
है। 16तो फिर आओ, हम भरोसे के साथ अनुग्रह पाने
परमेश्वर के सिंहासन की ओर बढ़ें ताकि आवश्यकता
पड़ने पर हमारी सहायता के लिए हम दया और अनुग्रह
को प्राप्त कर सकें।

5 प्रत्येक महायाजक मनुष्यों में से ही चुना जाता है।
और परमात्मा सम्बन्धी विषयों में लोगों का
प्रतिनिधित्व करने के लिये उसकी नियुक्ति की जाती है
ताकि वह पापों के लिये भेंट या बलियाँ चढ़ाये। 2क्योंकि
वह स्वयं भी दुर्बलताओं के अधीन है, इसलिये वह ना
समझों और भटके हुओं के साथ कोमल व्यवहार कर
सकता है। 3इसीलिये उसे अपने पापों के लिये और वैसे
ही लोगों के पापों के लिये बलियाँ चढ़ानी पड़ती हैं।

4इस सम्मान को कोई भी अपने पर नहीं लेता। जब
तक कि हारून के समान परमेश्वर की ओर से ठहराया
न जाता। 5इसी प्रकार मसीह ने भी महायाजक बनने
की महिमा को स्वयं ग्रहण नहीं किया, बल्कि परमेश्वर
ने उससे कहा,

"तू मेरा पुत्र है, आज मै तेरा पिता बना हूँ।"

भजन संहिता 2:7

"ये कभी ... होंगे" उत्पत्ति 2:2

6और एक अन्य स्थान पर भी वह कहता है, "तू
एक शाश्वत याजक है, मलिकिसिदक* के जैसा!"

भजन संहिता 110:4

7यीशु ने इस धरती पर के जीवन काल में जो उसे
मृत्यु से बचा सकता था, ऊँचे स्वर में पुकारते हुए और
रोते हुए उससे प्रार्थनाएँ तथा विनतियाँ की थीं और
आदरपूर्ण समर्पण के कारण उसकी सुनी गयी। 8यद्यपि
वह उसका पुत्र था फिर भी यातनाएँ झेलते हुए उसने
आज्ञा का पालन करना सीखा। 9और एक बार सम्पूर्ण
बन जाने पर उन सब के लिए जो उसकी आज्ञा का
पालन करते हैं, वह अनन्त छुटकारे का स्रोत बन गया।
10तथा परमेश्वर के द्वारा मिलिकिसिदक की परम्परा
में उसे महायाजक बनाया गया।

पतन के विरुद्ध चेतावनी

11इसके विषय में हमारे पास कहने को बहुत कुछ
है, पर उसकी व्याख्या कठिन है क्योंकि तुम्हारी समझ
बहुत धीमी है। 12वास्तव में इस समय तक तो तुम्हें
शिक्षा देने वाला बन जाना चाहिये था। किन्तु तुम्हें तो
अभी किसी ऐसे व्यक्ति की ही आवश्यकता है जो तुम्हें
नये सिरे से परमेश्वर की शिक्षा की प्रारम्भिक बातें ही
सिखाये। तुम्हें तो बस अभी दूध ही चाहिये, ठोस आहार
नहीं। 13जो अभी दुध-मुहा बच्चा ही है, उसे धार्मिकता
के वचन की पहचान नहीं होती 14किन्तु ठोस आहार
तो उन बड़ों के लिये ही होता है जिन्होंने अपने अनुभव
से भले-बुरे में पहचान करना सीख लिया है।

6 अत: आओ, मसीह सम्बन्धी आरम्भिक शिक्षा को
छोड़ कर हम परिपक्वता की ओर बढ़ें। हमें उन
बातों की ओर नहीं बढ़ना चाहिए जिनसे हमने शुरूआत
की जैसेमृत्यु की ओर ले जाने वाले कर्मों के लिए
मनफिराव, परमेश्वर में विश्वास, 2बपतिस्माओं* की
शिक्षा हाथ रखना, मरने के बाद फिर से जी उठना
और वह न्याय जिससे हमारा भावी अनन्त जीवन निश्चित
होगा। 3और यदि परमेश्वर ने चाहा तो हम ऐसा ही
करेंगे।

4-6जिन्हें एक बार प्रकाश प्राप्त हो चुका है, जो
स्वर्गीय वरदान का आस्वादन कर चुके हैं, जो पवित्र
आत्मा के सहभागी हो गए हैं जो परमेश्वर के वचन
की उत्तमता तथा आने वाले युग की शक्तियों का अनुभव
कर चुके हैं, यदि वे भटक जायें तो उन्हें मनफिराव की
ओर लौटा लाना असम्भव है। उन्होंने जैसे अपने ढंग से
नये सिरे से परमेश्वर के पुत्र को फिर क्रूस पर चढ़ाया
तथा उसे सब के सामने अपमान का विषय बनाया।

7वे लोग ऐसी धरती के जैसे हैं जो प्राय: होने वाली
वर्षा के जल को सोख लेती है, और जोतने बोने वाले
के लिए उपयोगी फसल प्रदान करती है, वह परमेश्वर
की आशीष पाती है। 8किन्तु यदि वह धरती काँटे और
गोखरू उपजाती है, तो वह बेकार की है। और उसे
अभिशप्त होने का भय है। अन्त में उसे जला दिया
जायेगा।

9हे प्रिय मित्रो, चाहे हम इस प्रकार कहते हैं किन्तु
तुम्हारे विषय में हमें इससे भी अच्छी बातों का विश्वास
है-बातें जो उद्धार से सम्बन्धित हैं। 10तुमने परमेश्वर के
जनों की निरन्तर सहायता करते हुए जो प्रेम दर्शाया है,
उसे और तुम्हारे दूसरे कामों को परमेश्वर कभी नहीं
भुलायेगा। वह अन्यायी नहीं है। 11हम चाहते हैं कि
तुममें से हर कोई जीवन भर ऐसा ही कठिन परिश्रम
करता रहे। यदि तुम ऐसा करते हो तो तुम निश्चय ही
उसे पा जाओगे जिसकी तुम आशा करते रहे हो। 12हम
यह नहीं चाहते कि तुम आलसी हो जाओ। बल्कि तुम
उनका अनुकरण करो जो विश्वास और धैर्य के साथ
उन वस्तुओं को पा रहे हैं जिनका परमेश्वर ने वचन
दिया था।

परमेश्वर की प्रतिज्ञा अटल है

13जब परमेश्वर ने इब्राहीम से प्रतिज्ञा की थी, तब
स्वयं उससे बड़ा और कोई नहीं था, जिसकी शपथ ली
जा सके, इसलिये अपनी शपथ लेते हुए वह 14कहने
लगा, "निश्चय ही मैं तुझे आशीर्वाद दूँगा तथा मैं तुझे
अनेक वंशज दूँगा।"* 15और इस प्रकार धीरज के
साथ बाट जोहने के बाद उसने वह प्राप्त किया, जिसकी
उससे प्रतिज्ञा की गयी थी।

16लोग उसकी शपथ लेते हैं, जो कोई उनसे महान
होता है और वह शपथ सभी तर्क-वितर्कों का अन्त
करके जो कुछ कहा जाता है, उसे पक्का कर देती है।
17परमेश्वर इसे उन लोगों के लिये, पूरी तरह स्पष्ट
कर देना चाहता था, जिन्हें उसे पाना था, जिसे देने की
उसने प्रतिज्ञा की थी कि वह अपने प्रयोजन को कभी
नहीं बदलेगा। इसीलिए अपने वचन के साथ उसने
अपनी शपथ को जोड़ दिया। 18तो फिर यहाँ दो बातें
हैं-उसकी प्रतिज्ञा और उसकी शपथ-जो कभी नहीं
बदल सकतीं और जिनके बारे में परमेश्वर कभी झूठ
नहीं कह सकता। इसलिए हम जो परमेश्वर के निकट
सुरक्षा पाने को आये हैं और जो आशा उसने हमें दी है,
उसे थामे हुए हैं, अत्यधिक उत्साहित हैं। 19इस आशा
को हम आत्मा के सुदृढ़ और सुनिश्चित लंगर के रूप

मलिकिसिदक इब्राहिम के समया का एख याजक और सम्राट था। देखें उत्पत्ति 14:17-24

बपत्तिस्मा बपत्तिसमाओं से यहा या तो अभिप्राय मसीही बपत्तिस्मा से है या यहूदी रीति की जल में गोता लेने की बपतिस्मा से।

"निश्चय ... दूँगा" उत्पत्ति 22:17

में रखते हैं। यह परदे के पीछे भीतर से भीतर तक
पहुँचती है। 20जहाँ यीशु ने हमारी ओर से हम से पहले
प्रवेश किया। वह मिलिकिसिदक की परम्परा में सदा
सर्वदा के लिये प्रमुख याजक बन गया।

याजक मिलिकिसिदक

7 यह मिलिकिसिदक सालेम का राजा था और सर्वोच्च
परमेश्वर का याजक था। जब इब्राहीम राजाओं
को पराजित करके लौट रहा था तो वह इब्राहीम से
मिला और उसे आशीर्वाद दिया। 2और इब्राहीम ने उसे
उस सब कुछ में से जो उसने युद्ध में जीता था उसका
दसवाँ भाग प्रदान किया। (उसके नाम का पहला अर्थ
है–"धार्मिकता का राजा" और फिर उसका यह अर्थ
भी है–"सालेम का राजा" अर्थात् "शांति का राजा।")
3उसके पिता अथवा उसकी माँ अथवा उसके पूर्वजों
का कोई इतिहास नहीं मिलता है। उसके जन्म अथवा
मृत्यु का भी कहीं कोई उल्लेख नहीं है। परमेश्वर के
पुत्र के समान ही वह सदा–सदा के लिये याजक बना
रहता है।

4तनिक सोचो, वह कितना महान था। जिसे कुल
प्रमुख इब्राहीम तक ने अपनी प्राप्ति का दसवाँ भाग
दिया था। 5अब देखो व्यवस्था के अनुसार लेवी वंशज
जो याजक बनते हैं, लोगों से अर्थात् अपने ही बंधुओं से
दसवाँ भाग लें। यद्यपि उनके वे बंधु इब्राहीम के वंशज
हैं। 6फिर भी मिलिकिसिदक ने, जो लेवी वंशी भी नहीं
था, इब्राहीम से दसवाँ भाग लिया। और उस इब्राहीम को
आशीर्वाद दिया जिसके पास परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ थीं।
7इसमें कोई सन्देह नहीं है कि जो आशीर्वाद देता है वह
आशीर्वाद लेने वाले से बड़ा होता है। 8जहाँ तक लेवियों
का प्रश्न है, उनमें दसवाँ भाग उन व्यक्तियों द्वारा इकट्ठा
किया जाता है, जो मरण शील हैं किन्तु मिलिकिसिदक
का जहाँ तक प्रश्न है दसवाँ भाग उसके द्वारा एकत्र
किया जाता है जो शास्त्र के अनुसार अभी भी जीवित
है। 9तो फिर कोई यहाँ तक कह सकता है कि वह
लेवी जोदसवाँ भाग एकत्र करता है, उसने इब्राहीम के
द्वारा दसवाँ भाग प्रदान कर दिया। 10क्योंकि जब
मिलिकिसिदक इब्राहीमसे मिला था, तब भी लेवी अपने
पूर्वजों के शरीर में वर्तमान था।

11यदि लेवी सम्बन्धी याजकता के द्वारा सम्पूर्णता प्राप्त
की जा सकती (क्योंकि इसी के आधार पर लोगों को
व्यवस्था का विधान दिया गया था) तो किसी दूसरे
याजक के आने की आवश्यकता ही क्या थी? एक ऐसे
याजक की जो मिलिकिसिदक की परम्परा का हो, न
कि औरों की परम्परा का। 12क्योंकि जब याजकता
बदलती है, तो व्यवस्था में भी परिवर्तन होना चाहिये।
13जिसके विषय में ये बातें कही गयी हैं, वह किसी दूसरे
गोत्र का है, और उस गोत्र का कोई भी व्यक्ति कभी
वेदी का सेवक नहीं रहा। 14क्योंकि यह तो स्पष्ट ही है
कि हमारा प्रभु यहूदा का वंशज था और मूसा ने उस
गोत्र के लिए याजकों के विषय में कुछ नहीं कहा था।

यीशु मिलिकिसिदक के समान है

15और जो कुछ हमने कहा है, वह और भी स्पष्ट है
कि मिलिकिसिदक के जैसा एक दूसरा याजक प्रकट
होता है। 16वह अपनी वंशावली के नियम के आधार
पर नहीं, बल्कि एक अमर जीवन की शक्ति के आधार
पर याजक बना है। 17क्योंकि घोषित किया गया था: "तू
है एक याजक शाश्वत मिलिकिसिदक के जैसा"*

18पहला नियम इसलिये रद्द कर दिया गया क्योंकि
वह निर्बल और व्यर्थ था। 19(क्योंकि व्यवस्था के
विधान ने किसी को सम्पूर्ण सिद्ध नहीं किया।) और
एक उत्तम आशा का सूत्रपात किया गया जिसके द्वारा
हम परमेश्वर के निकट खिंचते हैं।

20यह बात भी महत्त्वपूर्ण है कि परमेश्वर ने यीशु को
शपथ के द्वारा प्रमुख याजक बनाया था। जबकि औरों
को बिना शपथ के ही प्रमुख याजक बनाया गया था।
21किन्तु यीशु तब एक शपथ से याजक बना था, जब
परमेश्वर ने उससे कहा था,

"प्रभु ने शपथ ली है, और वह अपना मन कभी नहीं
बदलेगा: 'तू एक शाश्वत याजक है।'"

भजन संहिता 110:4

22इस शपथ के कारण यीशु एक अच्छे वाचा की
जमानत बन गया है।

23अब देखो, ऐसे बहुत से याजक हुआ करते थे जिन्हें
मृत्यु ने अपने पदों पर नहीं बने रहने दिया। 24किन्तु
क्योंकि यीशु अमर है, इसलिये उसका याजकपन भी
सदा–सदा बना रहने वाला है। 25अत: जो उसके द्वारा
परमेश्वर तक पहुँचते हैं, वह उनका सर्वदा के लिए
उद्धार करने में समर्थ है क्योंकि वह उनकी मध्यस्थता
के लिये ही सदा जीता है।

26ऐसा ही महायाजक हमारी आवश्यकता को पूरा
कर सकता है, जो पवित्र हो, दोषरहित हो, शुद्ध हो,
पापियों के प्रभाव से दूर रहता हो, स्वर्गों से भी जिसे
ऊँचा उठाया गया हो। 27जिसके लिये दूसरे महायाजकों
के समान यह आवश्यक न हो कि वह दिन प्रतिदिन
पहले अपने पापों के लिये और फिर लोगों के पापों के
लिए बलियाँ चढ़ाये। उसने तो सदा–सदा के लिये उनके
पापों के हेतु स्वयं अपने आपको बलिदान कर दिया।
28किन्तु परमेश्वर ने शपथ के साथ एक वाचा दिया।
यह वाचा व्यवस्था के विधान के बाद आया और इस
वाचा ने प्रमुख याजक के रूप में पुत्र को नियुक्त किया
जो सदा–सदा के लिये सम्पूर्ण बन गया।

"तू ... जैसा" भजन. 110:4

नये वाचा का महा याजक

8 जो कुछ हम कह रहे हैं, उसकी मुख्य बात यह है:
निश्चय ही हमारे पास एक ऐसा महायाजक है जो
स्वर्ग में उस महा महिमावान के सिंहासन के दाहिने
हाथ विराजमान है। 2वह उस पवित्र गर्भ गृह में यानी
सच्चे तम्बू में जिसे परमेश्वर ने स्थापित किया था, न
कि मनुष्य ने, सेवा कार्य करता है।

3प्रत्येक महायाजक को इसलिये नियुक्त किया जाता
है कि वह भेंटों और बलिदानों–दोनों को ही अर्पित
करे। और इसीलिये इस महायाजक के लिए भी यह
आवश्यक था कि उसके पास भी चढ़ावे के लिये कुछ
हो। 4यदि वह धरती पर होता तो वह याजक नहीं हो
पाता क्योंकि वहाँ पहले से ही ऐसे व्यक्ति हैं जो व्यवस्था
के विधान के अनुसार भेंट चढ़ाते हैं। 5पवित्र उपासना
स्थान में उनकी सेवा–उपासना स्वर्ग के यथार्थ की
एक छाया प्रतिकृति है। इसीलिए जब मूसा पवित्र तम्बू
का निर्माण करने ही वाला था, तभी उसे चेतावनी दे दी
गयी थी। "ध्यान रहे कि तू हर वस्तु ठीक उसी प्रतिरूप
के अनुसार बनाये जो तुझे पर्वत पर दिखाया गया था।"
6किन्तु जो सेवा कार्य यीशु को प्राप्त हुआ है, वह
उनके सेवा कार्य से श्रेष्ठ है। क्योंकि वह जिस वाचा
का मध्यस्थ है वह पुराने वाचा से उत्तम है और उत्तम
वस्तुओं की प्रतिज्ञाओं पर आधारित है।

7क्योंकि यदि पहली वाचा में कोई भी खोट नहीं होता
तो दूसरे वाचा के लिये कोई स्थान ही नहीं रह जाता।
8किन्तु परमेश्वर को उन लोगों में खोट मिला। उसने
कहा:

"प्रभु घोषित करता है: वह समय आ रहा जब मैं
इस्राएल के घराने से और यहूदा के घराने से एक नई
वाचा करूँगा।

9यह वाचा वैसा नहीं होगा जैसा मैंने उनके पूर्वजों के
साथ उस समय किया था। जब मैंने उनका हाथ मिस्र से
निकाल लाने पकड़ा था। क्योंकि प्रभु कहता है,
वे मेरे वाचा के विश्वासी नहीं रहे। मैंने उनसे मुँह फेर
लिया।

10यह है वह वाचा जिसे मैं इस्राएल के घराने से
करूँगा। और फिर उसके बाद प्रभु घोषित करता है।
उनके मनों में अपनी व्यवस्था बसाऊँगा, उनके हृदयों
पर मैं उसको लिख दूँगा। मैं उनका परमेश्वर बनूँगा,
और वे मेरे जन होंगे।

11फिर तो कभी कोई भी, जन अपने पड़ोसी को ऐसे
न सिखायेगा अथवा कोई जन अपने बन्धु से न, कभी
कहेगा तुम प्रभु को पहचानो। क्योंकि तब तो वे सभी
छोटे से लेकर बड़े से बड़े तक मुझे जानेंगे।

12क्योंकि मैं उनके दुष्कर्मो को क्षमा करूँगा और
कभी उनके पापों को याद नहीं रखूँगा।"

यिर्मयाह 31:31–34

13इस वाचा को नया कहकर उसने पहले को व्यवहार
के अयोग्य ठहराया और जो पुराना पड़ रहा है तथा
व्यवहार के अयोग्य है, वह तो फिर शीघ्र ही लुप्त हो
जायेगा।

पुराने वाचा की उपासना

9 अब देखो पहले वाचा में भी उपासना के नियम थे।
तथा एक मनुष्य के हाथों का बना उपासना गृह
भी था। 2एक तम्बू बनाया गया था जिसके पहले कक्ष में
दीपाधार थे, मेज़ थी, और भेंट की रोटी थी। इसे पवित्र
स्थान कहा जाता था। 3दूसरे परदे के पीछे एक और
कमरा था जिसे परम पवित्र कहा जाता है। 4इसमें
सुगन्धित सामग्री के लिये सोने की वेदी और सोने की
मढ़ी वाचा की सन्दूक थी। इस सन्दूक में सोने का बना
मन्ना का एक पात्र था, हारून की वह छड़ी थी जिस पर
कोंपलें फूटी थीं तथा वाचा के पत्थर के पतरे थे।
5सन्दूक के ऊपर परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति
के प्रतीक यानी करूब बने थे जो क्षमा के स्थान पर
छाया कर रहे थे। किन्तु इस समय हम इन बातों की
विस्तार के साथ चर्चा नहीं कर सकते।

6सब कुछ के इस प्रकार व्यवस्थित हो जाने के बाद
याजक बाहरी कक्ष में प्रति दिन प्रवेश करके अपनी
सेवा का काम करने लगे। 7किन्तु भीतरी कक्ष में
केवल प्रमुख याजक ही प्रवेश करता था और वह भी
साल में एक बार। वह बिना उस लहू के कभी प्रवेश
नहीं करता था जिसे वह स्वयं अपने द्वारा और लोगों
के द्वारा अनजाने में किये गये पापों के लिए भेंट
चढ़ाता था। 8इसके द्वारा पवित्र आत्मा यह दर्शाया
करता था कि जब तक अभी पहला तम्बू खड़ा हुआ
है, तब तक परम पवित्र स्थान का मार्ग उजागर नहीं
हो पाता।

9यह आज के युग के लिये एक प्रतीक है जो यह
दर्शाता है कि वे भेंटे और बलिदान जिन्हें अर्पित किया
जा रहा है, उपासना करने वाले की चेतना को शुद्ध
नहीं कर सकतीं। 10ये तो बस खाने–पीने और अनेक
पर्व विशेष–स्थानों के बाहरी नियम हैं और नयी व्यवस्था
के समय तक के लिए ही ये लागू होते हैं।

मसीह का लहू

11किन्तु अब मसीह इस और अच्छी व्यवस्था का,
जो अब हमारे पास है, महा याजक बनकर आ गया है।
उसने उस अधिक उत्तम और सम्पूर्ण तम्बू में से होकर
प्रवेश किया जो मनुष्य के हाथों की बनायी हुई नहीं
थी। अर्थात् जो सांसारिक नहीं है। 12बकरों और बछड़ों
के लहू को लेकर उसने प्रवेश नहीं किया था बल्कि
सदा–सर्वदा के लिये भेंट स्वरूप अपने ही रक्त को
लेकर परम पवित्र स्थान में प्रविष्ट हुआ था। इस प्रकार

उसने हमारे लिये पापों से अनन्त छुटकारे सुनिश्चित
कर दिए हैं।
13बकरों और साँडों का लहू तथा बछिया की भभूत
का उन पर छिड़का जाना, अशुद्धों को शुद्ध बनाता है
ताकि वे बाहरी तौर पर पवित्र हो जायें। 14जब यह सच
है तो मसीह का लहू कितना प्रभावशाली होगा। उसने
अनन्त आत्मा के द्वारा अपने आपको एक सम्पूर्ण बलि
के रूप में परमेश्वर को समर्पित कर दिया। सो उसका
लहू हमारी चेतना को उन कर्मों से छुटकारा दिलायेगा
जो मृत्यु की ओर ले जाते हैं ताकि हम सजीव परमेश्वर
की सेवा कर सकें। 15इसी कारण से मसीह एक नये
वाचा का मध्यस्थ बना ताकि जिन्हें बुलाया गया है, वे
उत्तराधिकार का अनन्त आशीर्वाद पा सकें जिसकी
परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी। अब देखो, पहले वाचा के
अधीन किये गये पापों से उन्हें मुक्त कराने के लिये
फिरौती के रूप में वह अपने प्राण दे चुका है।
16जहाँ तक वसीयतनामे* का प्रश्न है, तो उसके
लिए जिसने उसे लिखा है, उसकी मृत्यु को प्रमाणित
किया जाना आवश्यक है। 17क्योंकि कोई वसीयतनामा
केवल तभी प्रभावी होता है जब उसके लिखने वाले की
मृत्यु हो जाती है। जब तक उसको लिखने वाला जीवित
रहता है, वह कभी प्रभावी नहीं होता। 18इसीलिए पहली
वाचा भी बिना एक मृत्यु और लहू के गिराए कार्यान्वित
नहीं किया गया। 19मूसा जब व्यवस्था के विधान के
सभी आदेशों की सब लोगों को घोषणा कर चुका तो
उसने जल के साथ बकरों और बछड़ों के लहू को लाल
ऊन और हिस्सप की टहनियों से चर्म पत्रों और सभी
लोगों पर छिड़क दिया था। 20उसने कहा था, "यह उस
वाचा का लहू है, परमेश्वर ने जिसके पालन की आज्ञा
तुम्हें दी है।" 21उसने इसी प्रकार तम्बू और उपासना
उत्सवों में काम आने वाली हर वस्तु पर लहू छिड़का
था। 22वास्तव में व्यवस्था चाहती है कि प्राय: हर
वस्तु को लहू से शुद्ध किया जाये। और बिना लहू
बहाये क्षमा है ही नहीं।

मसीह का बलिदान पापों को धो डालता है

23तो फिर यह आवश्यक है कि वे वस्तुएँ जो स्वर्ग
की प्रतिकृति हैं, उन्हें पशुओं के बलिदानों से शुद्ध
किया जाये किन्तु स्वर्ग की वस्तुएँ तो इनसे भी उत्तम
बलिदानों से शुद्ध किए जाने की अपेक्षा करती हैं।
24मसीह ने मनुष्य के हाथों के बने परम पवित्र स्थान
में, जो सच्चे परम पवित्र स्थान की एक प्रतिकृति मात्र
था, प्रवेश नहीं किया। उसने तो स्वयं स्वर्ग में ही प्रवेश
किया ताकि अब वह हमारी ओर से परमेश्वर की
उपस्थिति में प्रकट हो। 25और न ही अपना बार-बार
बलिदान चढ़ाने के लिये उसने स्वर्ग में उस प्रकार
प्रवेश किया जैसे महायाजक उस लहू के साथ, जो
उसका अपना नहीं है, परम पवित्र स्थान में हर साल
प्रवेश करता है। 26नहीं तो फिर मसीह को सृष्टि के
आदि से ही अनेक बार यातनाएँ झेलनी पड़तीं। किन्तु
अब देखो, इतिहास के चरम बिन्दु पर अपने बलिदान
के द्वारा पापों का अंत करने के लिए वह सदा सदा के
लिये एक ही बार प्रकट हो गया है। 27जैसे एक बार
मरना और उसके बाद न्याय का सामना करना मनुष्य
की नियति है। 28इसलिए वैसे ही मसीह को, एक ही
बार अनेक व्यक्तियों के पापों को उठाने के लिये बलिदान
कर दिया गया। और वह पापों को वहन करने के लिए
नहीं, बल्कि जो उसकी बाट जोह रहे हैं, उनके लिए
उद्धार लाने को फिर दूसरी बार प्रकट होगा।

अंतिम बलिदान

10 व्यवस्था का विधान तो आने वाली उत्तम बातों
की छाया मात्र प्रदान करता है। अपने आप में
वे बातें यथार्थ नहीं हैं। इसीलिये उन्हीं बलियों के द्वारा
जिन्हें निरन्तर प्रतिवर्ष अनन्त रूप से दिया जाता रहता
है, उपासना के लिये निकट आने वालों को सदा-सदा
के लिये सम्पूर्ण सिद्ध नहीं किया जा सकता। 2यदि ऐसा
हो पाता तो क्या उनका चढ़ाया जाना बंद नहीं हो जाता?
क्योंकि फिर तो उपासना करने वाले एक ही बार में
सदा सर्वदा के लिये पवित्र हो जाते। और अपने पापों के
लिये फिर कभी स्वयं को अपराधी नहीं समझते। 3किन्तु
वे बलियाँ तो बस पापों की एक वार्षिक स्मृति मात्र हैं।
4क्योंकि साँडों और बकरों का लहू पापों को दूर कर
दे, यह सम्भव नहीं हैं।
5इसीलिये जब यीशु इस जगत् में आया था तो उसने
कहा था:
"तूने बलिदान और कोई भेंट नहीं चाहा, किन्तु मेरे
लिए एक देह तैयार की है।
6तू किसी किसी होमबलि से न ही पापबलि से प्रसन्न
नहीं हुआ।
7तब फिर मैंने कहा था, 'और पुस्तक में मेरे लिये
यह भी लिखा है, मैं यहाँ हूँ। हे परमेश्वर तेरी इच्छा पूरी
करने को आया हूँ।'" *भजन संहिता 40: 6-8*

8उसने पहले कहा था, "बलियाँ और भेंटें, होमबलियाँ
और पापबलियाँ न तो तू चाहता है और न ही तू उनसे
प्रसन्न होता है।" (यद्यपि व्यवस्था का विधान यह चाहता
है कि वे चढ़ाई जायें।) 9तब उसने कहा था, "मैं यहाँ हूँ।
मैं तेरी इच्छा पूरी करने आया हूँ।" तो वह दूसरी
व्यवस्था को स्थापित करने के लिये, पहली को रद्द
कर देता है। 10इसलिए परमेश्वर की इच्छा से एक

वसीयतनामे यूनानी में जो शब्द वाचा है वही शब्द वसीयत
का अर्थ भी देता है।

बार ही सदा–सर्वदा के लिये यीशु मसीह की देह के बलिदान द्वारा हम पवित्र कर दिये गये।

11हर याजक एक दिन के बाद दूसरे दिन खड़ा हो होकर अपने धार्मिक कर्त्तव्यों को पूरा करता है। वह पुन: पुन: एक जैसी ही बलियाँ चढ़ाता है जो पापों को कभी दूर नहीं कर सकतीं। 12किन्तु याजक के रूप में मसीह तो पापों के लिये, सदा के लिए एक ही बलि चढ़ा कर परमेश्वर के दाहिने हाथ जा बैठा, 13और उसी समय से उसे अपने विरोधियों को उसके चरण की चौकी बना दिये जाने की प्रतीक्षा है। 14क्योंकि उसने एक ही बलिदान के द्वारा, जो पवित्र किये जा रहे हैं, उन्हें सदा–सर्वदा के लिए सम्पूर्ण सिद्ध कर दिया।

15इसके लिये पवित्र आत्मा भी हमें साक्षी देता है। पहले वह बताता है:

16“यह वह वाचा है जिसे मैं उनसे करूँगा। और फिर उसके बाद प्रभु घोषित करता है। अपनी व्यवस्था उनके हृदयों में बसाऊँगा मैं उनके मनो पर उनको लिख दूँगा।” *यिर्मयाह 31:33*

17वह यह भी कहता है: “उनके पापों और उनके दुष्कर्मों को और अब मैं कभी याद नहीं रखूँगा।” *यिर्मयाह 31:34*

18और फिर जब पाप क्षमा कर दिये गये तो पापों के लिये किसी बलि की कोई आवश्यकता रह ही नहीं जाती।

परमेश्वर के निकट आओ

19इसलिये भाइयो, क्योंकि यीशु के लहू के द्वारा हमें उस परम पवित्र स्थान में प्रवेश करने का निडर भरोसा है, 20जिसे उसने परदे के द्वारा, अर्थात् जो उसका शरीर ही है, एक नये और सजीव मार्ग के माध्यम से हमारे लिये खोल दिया है। 21और क्योंकि हमारे पास एक ऐसा महान याजक है जो परमेश्वर के घराने का अधिकारी है। 22तो फिर आओ, हम सच्चे हृदय, निश्चयपूर्ण विश्वास अपनी अपराधपूर्ण चेतना से हमें शुद्ध करने के लिये किए गए छिड़काव से युक्त अपने हृदयों को लेकर शुद्ध जल से धोये हुए अपने शरीरों के साथ परमेश्वर के निकट पहुँचते हैं। 23तो आओ जिस आशा को हमने अंगीकार किया है, हम अडिग भाव से उस पर डटे रहें क्योंकि जिसने हमें वचन दिया है, वह विश्वासपूर्ण है।

24तथा आओ, हम ध्यान रखें कि हम प्रेम और अच्छे कर्मों के प्रति एक दूसरे को कैसे बढ़ावा दे सकते हैं। 25हमारी सभाओं में आना मत छोड़ो। जैसी कि कुछों को तो वहाँ नहीं आने की आदत ही पड़ गयी है। बल्कि हमें तो एक दूसरे को उत्साहित करना चाहिये। और जैसा कि तुम देख ही रहे हो–कि वह दिन* निकट आ रहा है– इसलिए तुम्हें तो यह और अधिक करना चाहिये।

मसीह से मुँह मत फेरो

26सत्य का ज्ञान पा लेने के बाद भी यदि हम जानबूझ कर पाप करते ही रहते हैं फिर तो पापों के लिए कोई बलिदान बचा ही नहीं रहता। 27बल्कि फिर तो न्याय की भयानक प्रतीक्षा और भीषण अग्नि ही शेष रह जाती है जो परमेश्वर के विरोधियों को चट कर जायेगी। 28जो कोई मूसा की व्यवस्था के विधान का पालन करने सेमना करता है, उसे बिना दया दिखाये दो या तीन साक्षियों की साक्षी पर मार डाला जाता है। 29सोचो, वह मनुष्य कितने अधिक कड़े दंड का पात्र है, जिसने अपने पैरों तले परमेश्वर के पुत्र को कुचला, जिसने वाचा के उस लहू को, जिसने उसे पवित्र किया था, एक अपवित्र वस्तु माना और जिसने अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया। 30क्योंकि हम उसे जानते हैं जिसने कहा था: “बदला लेना काम है मेरा, मैं ही बदला लूँगा।”* और फिर, “प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा।”*

31किसी पापी का सजीव परमेश्वर के हाथों में पड़ जाना एक भयानक बात है।

विश्वास बनाये रखो

32आरम्भ के उन दिनों को याद करो जब तुमने प्रकाश पाया था, और उसके बाद जब तुम कष्टों का सामना करते हुए कठोर संघर्ष में दृढ़ता के साथ डटे रहे थे। 33तब कभी तो सब लोगों के सामने तुम्हें अपमानित किया गया और सताया गया और कभी जिनके साथ ऐसा बर्ताव किया जा रहा था, तुमने उनका साथ दिया। 34तुमने, जो बंदीगृह में पड़े थे, उनसे सहानुभूति की तथा अपनी सम्पत्ति का जब्त किया जाना सहर्ष स्वीकार किया क्योंकि तुम यह जानते थे कि स्वयं तुम्हारे अपने पास उनसे अच्छी और टिकाऊ सम्पत्तियाँ हैं।

35सो अपने निडर विश्वास को मत त्यागो क्योंकि इसका भरपूर प्रतिफल दिया जायेगा। 36तुम्हें धैर्य की आवश्यकता है ताकि तुम जब परमेश्वर की इच्छा पूरी कर चुको तो जिसका वचन उसने दिया है, उसे तुम पा सको। 37क्योंकि बहुत शीघ्र ही, “जिसको आना है वह शीघ्र ही आयेगा,

38मेरा धर्मी जन विश्वास से जियेगा और यदि वह पीछे हटेगा तो मैं उससे प्रसन्न न रहूँगा।” *हबक्कूक 2:3–4*

वह दिन अर्थात् वह जब मसीह फिर प्रकट होगा।

“बदला ... लूँगा” व्यवस्था. 32:35

“प्रभु ... करेगा” भजन. 135:14

39किन्तु हम उनमें से नहीं हैं जो पीछे हटते हैं और
नष्ट हो जाते हैं बल्कि उनमें से हैं जो विश्वास करते हैं
और उद्धार पाते हैं।

विश्वास की महिमा

11 विश्वास का अर्थ है, जिसकी हम आशा करते
हैं, उस के लिए निश्चित होना। और विश्वास
का अर्थ है कि हम चाहे किसी वस्तु को देख नहीं रहे
हों किन्तु उसके अस्तित्त्व के विषय में निश्चित होना
कि वह है। 2इसी कारण प्राचीन काल के लोगों को
परमेश्वर का आदर प्राप्त हुआ था।

3विश्वास के आधार पर ही हम यह जानते हैं कि
परमेश्वर के आदेश से ब्रह्माण्ड की रचना हुई थी।
इसीलिये जो दृश्य है, वह दृश्य से ही नहीं बना है।

4हाबिल ने विश्वास के कारण ही परमेश्वर को कैन
से उत्तम बलि चढ़ाई थी। विश्वास के कारण ही उसे
एक धर्मी पुरुष के रूप में तब सम्मान मिला था जब
परमेश्वर ने उसकी भेंटों की प्रशंसा की थी। और
विश्वास के कारण ही वह आज भी बोलता है यद्यपि
वह मर चुका है।

5विश्वास के कारण ही हनोक को इस जीवन से
ऊपर उठा लिया गया ताकि उसे मृत्यु का अनुभव न
हो। परमेश्वर ने क्योंकि उसे दूर हटा दिया था इसलिये
वह पाया नहीं गया। क्योंकि उसे उठाये जाने से पहले
परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले के रूप में उसे सम्मान
मिल चुका था। 6और विश्वास के बिना तो परमेश्वर
को प्रसन्न करना असम्भव है। क्योंकि हर एक वह जो
उसके पास आता है, उसके लिये यह आवश्यक है कि
वह इस बात का विश्वास करे कि परमेश्वर का अस्तित्त्व
है और वे जो उसे सच्चाई के साथ खोजते हैं, वह उन्हें
उसका प्रतिफल देता है।

7विश्वास के कारण ही नूह को जब उन बातों की
चेतावनी दी गयी जो उसने देखी तक नहीं थीं तो उसने
पवित्र भयपूर्वक अपने परिवार को बचाने के लिये एक
नाव का निर्माण किया था। अपने विश्वास से ही उसने
इस संसार को दोषपूर्ण माना और उस धार्मिकता का
उत्तराधिकारी बना जो विश्वास से आती है।

8विश्वास के कारण ही, जब इब्राहीम को ऐसे स्थान
पर जाने के लिये बुलाया गया था, जिसे बाद में उत्तराधिकार
के रूप में उसे पाना था, यद्यपि वह यह जानता तक
नहीं था कि वह कहाँ जा रहा है, फिर भी उसने आज्ञा
मानी और वह चला गया। 9विश्वास के कारण ही जिस
धरती को देने का उसे वचन दिया गया था, उस पर
उसने एक अनजाने परदेसी के समान अपना घर बना
कर निवास किया। वह तम्बुओं में वैसे ही रहा जैसे
इसहाक और याकूब रहे थे जो उसके साथ परमेश्वर
की उसी प्रतिज्ञा के उत्तराधिकारी थे। 10वह सुदृढ़ आधार
वाली उस नगरी की बाट जोह रहा था जिसका शिल्पी
और निर्माणकर्त्ता परमेश्वर है।

11विश्वास के कारण ही, इब्राहीम जो बूढ़ा हो चुका
था और सारा जो स्वयं बाँझ थी, जिसने वचन दिया था,
उसे विश्वसनीय समझकर गर्भवती हुई और इब्राहीम
को पिता बना दिया। 12और इस प्रकार इस एक ही
व्यक्ति से जो मरियल सा था, आकाश के तारों जितनी
असंख्य और सागर-तट के रेत-कणों जितनी अनगिनत
संतानें हुई।

13विश्वास को अपने मन में लिए हुए ये लोग मर
गए। जिन वस्तुओं की प्रतिज्ञा दी गयी थी, उन्होंने वे
वस्तुएँ नहीं पायीं। उन्होंने बस उन्हें दूर से ही देखा और
उनका स्वागत किया तथा उन्होंने यह मान लिया कि वे
इस धरती पर परदेसी और अनजाने हैं। 14वे लोग जो
ऐसी बातें कहते हैं, वे यह दिखाते हैं कि वे एक ऐसे देश
की खोज में हैं जो उनका अपना है। 15यदि वे उस देश
के विषय में सोचते जिसे वे छोड़ चुके हैं तो उनके फिर
से लौटने का अवसर रहता 16किन्तु उन्हें तो स्वर्ग के
एक श्रेष्ठ प्रदेश की उत्कट अभिलाषा है। इसीलिये
परमेश्वर को उनका परमेश्वर कहलाने में संकोच
नहीं होता क्योंकि उसने तो उनके लिये एक नगर
तैयार कर रखा है।

17विश्वास के कारण ही इब्राहीम ने, जब परमेश्वर
उसकी परीक्षा ले रहा था, इसहाक की बलि चढ़ाई।
वही जिसे प्रतिज्ञाएँ प्राप्त हुई थीं, अपने एक मात्र पुत्र की
जब बलि देने वाला था 18तो यद्यपि परमेश्वर ने उससे
कहा था, "इसहाक के द्वारा ही तेरा वंश बढ़ेगा।" 19किन्तु
इब्राहीम ने सोचा कि परमेश्वर मरे हुए को भी जिला
सकता है और यदि आलंकारिक भाषा में कहा जाये तो
उसने इसहाक को मृत्यु से फिर वापस पा लिया। 20विश्वास
के कारण ही इसहाक ने याकूब और इसाऊ को उनके
भविष्य के विषय में आशीर्वाद दिया। 21विश्वास के
कारण ही याकूब ने, जब वह मर रहा था, यूसुफ के
हर पुत्र को आशीर्वाद दिया और अपनी लाठी के ऊपरी
सिरे पर झुक कर सहारा लेते हुए परमेश्वर की उपासना
की।

22विश्वास के कारण ही युसुफ ने जब उसका अंत
निकट था, इस्राएल निवासियों के मिस्र से निर्गमन के
विषय में बताया तथा अपनी अस्थियों के बारे में आदेश
दिये।

23विश्वास के आधार पर ही, मूसा के माता-पिता
ने, मूसा के जन्म के बाद उसे तीन महीने तक छुपाये
रखा क्योंकि उन्होंने देख लिया था कि वह कोई सामान्य
बालक नहीं था और वे राजा की आज्ञा से नहीं डरे।

24विश्वास से ही, मूसा जब बड़ा हुआ तो उसने फिरौन
की पुत्री का बेटा कहलाने से इन्कार कर दिया। 25उसने
पाप के क्षणिक सुख भोगों की अपेक्षा परमेश्वर के संत

जनों के साथ दुर्व्यवहार झेलना ही चुना। 26उसने मसीह के लिये अपमान झेलने को मिस्र के धन भंडारों की अपेक्षा अधिक मूल्यवान माना क्योंकि वह अपना प्रतिफल पाने की बाट जोह रहा था। 27विश्वास के कारण ही, राजा के कोप से न डरते हुए उसने मिस्र का परित्याग कर दिया; वह डटा रहा, मानो उसे अदृश्य परमेश्वर दिख रहा हो।

28विश्वास से ही, उसने फसह पर्व और लहू छिड़कने का पालन किया, ताकि पहली संतानों का विनाश करने वाला, इस्राएल की पहली संतान को छू तक न पाये।

29विश्वास के कारण ही, लोग लाल सागर से ऐसे पार हो गये जैसे वह कोई सूखी धरती हो। किन्तु जब मिस्र के लोगों ने ऐसा करना चाहा तो वे डूब गये।

30विश्वास के कारण ही, यरिहो का नगर–परकोटा लोगों के सात दिन तक उसके चारों ओर परिक्रमा कर लेने के बाद ढह गया।

31विश्वास के कारण ही, राहब नाम की वेश्या आज्ञा का उल्लंघन करने वालों के साथ नहीं मारी गयी थी क्योंकि उसने गुप्तचरों का स्वागत सत्कार किया था। 32अब मैं और अधिक क्या कहूँ। गिदोन, बाराक, शिमशोन, यिफतह, दाऊद, शमुएल तथा उन नबियों की चर्चा करने का मेरे पास समय नहीं है 33जिन्होंने विश्वास से, राज्यों को जीत लिया, धार्मिकता के कार्य किये तथा परमेश्वर ने जो देने का वचन दिया था, उसे प्राप्त किया। जिन्होंने सिंहों के मुँह बन्द कर दिये, 34लपलपाती लपटों के क्रोध को शांत किया तथा तलवार की धार से बच निकले; जिनकी दुर्बलता ही शक्ति में बदल गयी; और युद्ध में जो शक्तिशाली बने तथा जिन्होंने विदेशी सेनाओं को छिन्न–भिन्न कर डाला। 35स्त्रियों ने अपने मरे हुओं को फिर से जीवित पाया। बहुतों को सताया गया, किन्तु उन्होंने छुटकारा पाने से मना कर दिया ताकि उन्हें एक और अच्छे जीवन में पुनरुत्थान मिल सके।

36कुछ को उपहासों और कोड़ों का सामना करना पड़ा जबकि कुछ को ज़ंजीरों से जकड़ कर बंदी गृह में डाल दिया गया। 37कुछ पर पथराव किया गया। उन्हें आरे से चीर कर दो फाँक कर दिया गया, उन्हें तलवार से मौत के घाट उतार दिया गया। वे ग़रीब थे, उन्हें यातनाएँ दी गई और उनके साथ बुरा व्यवहार किया गया। वे भेड़–बकरियों की खालें ओढ़े इधर–उधर भटकते रहे। 38यह संसार उनके योग्य नहीं था। वे बियाबानों, और पहाड़ों में घूमते रहेऔर गुफाओं और धरती में बने बिलों में, छिपते–छिपाते फिरे।

39अपने विश्वास के कारण ही, इन सब को सराहा गया। फिर भी परमेश्वर को जिसका महान वचन उन्हें दिया था, उसे इनमें से कोई भी नहीं पा सका। 40परमेश्वर के पास अपनी योजना के अनुसार हमारे लिये कुछ और अधिक उत्तम था जिससे उन्हें भी बस हमारे साथ ही सम्पूर्ण सिद्ध किया जाये।

परमेश्वर अपने पुत्रों को सिधाता है

12 क्योंकि हम साक्षियों की ऐसी इतनी बड़ी भीड़ से घिरे हुए हैं, जो हमें विश्वास का अर्थ क्या है इस की साक्षी देती है इसलिये आओ बाधा पहुँचाने वाली प्रत्येक वस्तु को और उस पाप को जो सहज में ही हमें उलझा लेता है झटक फेंकें और वह दौड़ जो हमें दौड़नी है, आओ धीरज के साथ उसे दौड़ें। 2हमारे विश्वास के अगुआ और उसे सम्पूर्ण सिद्ध करने वाले यीशु पर आओ हम दृष्टि लगायें। जिसने अपने सामने उपस्थित आनन्द के लिये क्रूस की यातना झेली, उसकी लज्जा की कोई चिंता नहीं की और परमेश्वर के सिंहासन के दाहिने हाथ विराजमान हो गया। 3उसका ध्यान करो जिसने पापियों का ऐसा विरोध इसलिये सहन किया ताकि थक कर तुम्हारा मन हार न मान बैठे।

4पाप के विरुद्ध अपने संघर्ष में तुम्हें इतना नहीं अड़ना पड़ा है कि अपना लहू ही बहाना पड़ा हो। 5तुम उस साहसपूर्ण वचन को भूल गये हो। जो तुम्हें पुत्र के नाते सम्बोधित है:

"हे मेरे पुत्र, प्रभु के अनुशासन का तिरस्कार मत कर, उसकी फटकार का बुरा कभी मत मान, 6क्योंकि प्रभु उनको डाँटता है जिनसे वह प्रेम करता है। वैसे ही जैसे पिता उस पुत्र को दण्ड देता, जो उसको अति प्रिय है।"

नीतिवचन 3:11–12

7कठिनाई को अनुशासन के रूप में सहन करो। परमेश्वर तुम्हारे साथ अपने पुत्र के समान व्यवहार करता है। ऐसा पुत्र कौन होगा जिसे अपने पिता के द्वारा ताड़ना न गया हो? 8यदि तुम्हें वैसे ही नहीं ताड़ना दी गयी है जैसे सबको ताड़ना दी जाती है तो तुम अपने पिता से पैदा हुए पुत्र नहीं हो और सच्ची संतान नहीं हो। 9और फिर यह भी कि इन सब को वे पिता भी जिन्होंने हमारे शरीर को जन्म दिया है, हमें ताड़ना देते हैं। और इसके लिये हम उन्हें मान देते हैं तो फिर हमें अपनी आत्माओं के पिता के अनुशासन के तो कितना अधिक अधीन रहते हुए जीना चाहिये। 10हमारे पिताओं ने थोड़े से समय के लिये जैसा उन्होंने उत्तम समझा, हमें ताड़ना दी, किन्तु परमेश्वर हमें हमारी भलाई के लिये ताड़ना दी है, जिससे हम उसकी पवित्रता के सह भागी हो सकें। 11जिस समय ताड़ना दी जा रहा होता है, उस समय ताड़ना अच्छी नहीं लगता, बल्कि वह दुखद लगता है किन्तु कुछ भी हो, वे जो ताड़ना का अनुभव करते हैं, उनके लिये यह आगे चलकर नेकी और शांति का सुफल प्रदान करता है।

12इसलिये अपनी दुर्बल बाहों और निर्बल घुटनों को
सबल बनाओ। 13अपने पैरों के लिए तू समतल मार्ग
बना। ताकि जो लँगड़ा है, वह अपंग नहीं, वरन चंगा हो
जाये।

चेतावनी: परमेश्वर को नकारो मत

14सभी के साथ शांति के साथ रहने और पवित्र होने
के लिये हर प्रकार से प्रयत्नशील रहो; बिना पवित्रता
के कोई भी प्रभु का दर्शन नहीं कर पायेगा। 15इस बात
का ध्यान रखो कि परमेश्वर के अनुग्रह से कोई भी
विमुख न हो जाये और तुम्हें कष्ट पहुँचाने तथा बहुतसों
को विकृत करने के लिये कोई झगड़े की जड़ न फूट
पड़े। 16देखो कि कोई भी व्यभिचार न करे अथवा उस
एसाव के समान परमेश्वर विहीन न हो जाये जिसे सबसे
बड़ा पुत्र होने के नाते उत्तराधिकार पाने का अधिकार
था किन्तु जिसने उसे बस एक जून के खाने भर के
लिये बेच दिया। 17जैसा कि तुम जानते ही हो बाद में जब
उसने इस वरदान को प्राप्त करना चाहा तो उसे अयोग्य
ठहराया गया। यद्यपि उसने रो-रो कर वरदान पाना
चाहा किन्तु वह अपने किये का पश्चाताप नहीं कर
पाया।

18तुम अग्नि से जलते हुए इस पर्वत के पास नहीं
आये जिसे छुआ जा सकता था और न ही अंधकार,
विषाद और बवंडर के निकट आये हो। 19और न ही
तुरही की तीव्र ध्वनि अथवा किसी ऐसे स्वर के सम्पर्क
में आये जो वचनों का उच्चारण कर रही हो, जिससे
जिन्होंने उसे सुना, प्रार्थना की कि उनके लिये किसी
और वचन का उच्चारण न किया जाये। 20क्योंकि जो
आदेश दिया गया था, वे उसे झेल नहीं पाये: "यदि कोई
पशु तक उस पर्वत को छुए तो उस पर पथराव किया
जाये।"* 21वह दृश्य इतना भयभीत कर डालने वाला
था कि मूसा ने कहा, "मैं भय से थर थर काँप रहा
हूँ।"*

22किन्तु तुम तो सिओन पर्वत, सजीव परमेश्वर की
नगरी, स्वर्ग के यरूशलेम के निकट आ पहुँचे हो। तुम
तो हज़ारों-हज़ार स्वर्गदूतों की आनन्दपूर्ण सभा,
23परमेश्वर की पहली संतानों, जिनके नाम स्वर्ग में
लिखे हैं, उनकी सभा के निकट पहुँच चुके हो। तुम
सबके न्यायकर्त्ता परमेश्वर और उन धर्मात्मा, सिद्ध
पुरुषों की आत्माओं, 24तथा एक नये करार के मध्यस्थ
यीशु और छिड़के हुए उस लहू से निकट आ चुके हो
जो हाबिल के लहू की अपेक्षा उत्तम वचन बोलता है।

25ध्यान रहे! कि तुम उस बोलने वाले को मत नकारो।
यदि वे उसको नकार कर नहीं बच पाये जिसने उन्हें
धरती पर चेतावनी दी थी तो यदि हम उससे मुँह मोड़ेंगे
जो हमें स्वर्ग से चेतावनी दे रहा है, तो हम तो दण्ड से
बिल्कुल भी नहीं बच पायेंगे। 26उसकी वाणी ने उस
समय धरती को झकझोर दिया था किन्तु अब उसने
प्रतिज्ञा की है, "एक बार फिर न केवल धरती को ही
बल्कि आकाशों को भी मैं झकझोर दूँगा।" 27"एक
बार फिर" ये शब्द उस हर वस्तु की ओर इंगित करते
हैं जिसे रचा गया है (यानी वे वस्तुएँ जो अस्थिर हैं) वे
नष्ट हो जायेंगी। केवल वे वस्तुएँ ही बचेंगी जो स्थिर हैं।

28अत: क्योंकि जब हमें एक ऐसा राज्य मिल रहा है,
जिसे झकझोरा नहीं जा सकता, तो आओ हम धन्यवादी
बनें और आदर मिश्रित भय के साथ परमेश्वर की
उपासना करें। 29क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म कर
डालने वाली एक आग है।

निष्कर्ष

13 भाई के समान परस्पर प्रेम करते रहो।
2अतिथियों का सत्कार करना मत भूलो, क्योंकि
ऐसा करते हुए कुछ लोगों ने अनजाने में ही स्वर्गदूतों
का स्वागत-सत्कार किया है। 3बंदियों को इस रूप में
याद करो जैसे तुम भी उनके साथ बंदी रहे हो। जिनके
साथ बुरा व्यवहार हुआ है उनकी इस प्रकार सुधि लो
जैसे मानो तुम स्वयं पीड़ित हो।

4विवाह का सब को आदर करना चाहिये। विवाह
की सेज को पवित्र रखो। क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों
और दुराचारियों को दण्ड देगा। 5अपने जीवन को धन
के लालच से मुक्त रखो। जो कुछ तुम्हारे पास है, उसी
में संतोष करो क्योंकि परमेश्वर ने कहा है:

"मैं तुझको कभी नहीं छोड़ूँगा, मैं तुझे कभी नहीं
तजूँगा। *व्यवस्था विवरण 31:6*

6इसीलिये हम विश्वास के साथ कहते हैं: "प्रभु मेरी
सहाय करता है, मैं कभी भयभीत न बनूँगा। कोई
मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?" *भजन संहिता 118:6*

7अपने मार्गदर्शकों को याद रखो जिन्होंने तुम्हें
परमेश्वर का वचन सुनाया है। उनकी जीवन-विधि के
परिणाम पर विचार करो तथा उनके विश्वास का
अनुसरण करो। 8यीशु मसीह कल भी वैसा ही था,
आज भी वैसा ही है और युग-युगान्तर तक वैसा ही
रहेगा।

9हर प्रकार की विचित्र शिक्षाओं से भरमाये मत
जाओ। तुम्हारे मनों के लिये यह अच्छा है कि वे
अनुग्रह के द्वारा सुदृढ़ बनें न कि खाने पीने सम्बन्धी
नियमों के मानने से, जिनसे उनका कभी कोई भला
नहीं हुआ, जिन्होंने उन्हें माना।

"यदि कोई ... जाये" नर्गमन 19:12

"मैं ... रहा हूँ" व्यवस्था. 9:19

10हमारे पास एक ऐसी वेदी है जिस पर से खाने का
अधिकार उनको नहीं है जो तम्बू में सेवा करते हैं।
11महायाजक परम पवित्र स्थान पर पाप–बलि के रूप
में पशुओं का लहू तो ले जाता है, किन्तु उनके शरीर
डेरों के बाहर जला दिये जाते हैं। **12**इसलिये यीशु ने भी
स्वयं अपने लहू से लोगों को पवित्र करने के लिये नगर
द्वार के बाहर यातना झेली। **13**तो फिर आओ हम भी
इसी अपमान को झेलते हुए जिसे उसने झेला था, डेरों
के बाहर उसके पास चलें। **14**क्योंकि यहाँ हमारा कोई
स्थायी नगर नहीं है बल्कि हम तो उस नगर की बाट
जोह रहे हैं जो आनेवाला है।

15अत: आओ हम यीशु के द्वारा परमेश्वर को स्तुति
रूपी बलि अर्पित करें जो उन ओठों का फल है जिन्होंने
उसके नाम को पहचाना है। **16**तथा नेकी करना और
अपनी वस्तुओं को औरों के साथ बाँटना मत भूलो।
क्योंकि परमेश्वर ऐसी ही बलियों से प्रसन्न होता है।

17अपने मार्ग दर्शकों की आज्ञा मानो। उनके अधीन
रहो। वे तुम पर ऐसे चौकसी रखते हैं जैसे उन व्यक्तियों
पर रखी जाती है जिनको अपना लेखा जोखा उन्हें देना
है। उनकी आज्ञा मानो जिससे उनका कर्म आनन्द बन
जाये। न कि एक बोझ बने। क्योंकि उससे तो तुम्हारा
कोई लाभ नहीं होगा।

18हमारे लिए विनती करते रहो। हमें निश्चय है कि
हमारी चेतना शुद्ध है। और हम हर प्रकार से वही
करना चाहते हैं जो उचित है। **19**मैं विशेष रूप से आग्रह
करता हूँ कि तुम प्रार्थना किया करो ताकि शीघ्र ही मैं
तुम्हारे पास आ सकूँ।

20जिसने भेड़ों के उस महान रखवाले हमारे प्रभु
यीशु के लहू द्वारा उस सनातन करार पर मुहर लगाकर
मरे हुओं में से जिला उठाया, वह शांति–दाता परमेश्वर
21तुम्हें सभी उत्तम साधनों से सम्पन्न करे। जिससे तुम
उसकी इच्छा पूरी कर सको। और यीशु मसीह के द्वारा
वह हमारे भीतर उस सब कुछ को सक्रिय करे जो उसे
भाता है। युग–युगान्तर तक उसकी महिमा होती रहे।
आमीन!

22हे भाइयो, मेरा आग्रह है कि तुम प्रेरणा देने वाले
मेरे इस वचन को धारण करो मैंने तुम्हें यह पत्र बहुत
संक्षेप में लिखा है। **23**मैं चाहता हूँ कि तुम्हें ज्ञात हो कि
हमारा भाई तिमुथियुस रिहा कर दिया गया है। यदि वह
शीघ्र ही आ पहुँचा तो मैं उसी के साथ तुमसे मिलने
आऊँगा।

24अपने सभी अग्रणियों और संत जनों को नमस्कार
कहना। इटली से आये लोग तुम्हें नमस्कार भेजते हैं।

25परमेश्वर का अनुग्रह तुम सब के साथ रहे!

याकूब

1 याकूब का, जो परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह का दास है, संतों के बारहों कुलों को नमस्कार पहुँचे जो समूचे संसार में फैले हुए हैं।

विश्वास और विवेक

2हे मेरे भाइयों, जब कभी तुम तरह तरह की परीक्षाओं में पड़ो तो इसे बड़े आनन्द की बात समझो। **3**क्योंकि तुम यह जानते हो कि तुम्हारा विश्वास जब परीक्षा में सफल होता है तो उससे धैर्यपूर्ण सहन शक्ति उत्पन्न होती है। **4**और वह धैर्यपूर्ण सहन शक्ति एक ऐसी पूर्णता को जन्म देती है जिससे तुम ऐसे सिद्ध बन सकते हो जिनमें कोई कमी नहीं रह जाती है। **5**सो यदि तुममें से किसी में विवेक की कमी है तो वह उसे परमेश्वर से माँग सकता है। वह सभी को प्रसन्नता पूर्वक उदारता के साथ देता है। **6**बस विश्वास के साथ माँगा जाये। थोड़ा सा भी संदेह नहीं होना चाहिये। क्योंकि जिसको संदेह होता है, वह सागर की उस लहर के समान है जो हवा से उठती है और थरथराती है। **7**ऐसे मनुष्य को यह नहीं सोचना चाहिये कि उसे प्रभु से कुछ भी मिल पायेगा। **8**ऐसे मनुष्य का मन तो दुविधा से ग्रस्त है। वह अपने सभी कर्मों में अस्थिर रहता है।

सच्चा धन

9साधारण परिस्थितियों वाले भाई को गर्व करना चाहिये कि परमेश्वर ने उसे आत्मा का धन दिया है। **10**और धनी भाई को गर्व करना चाहिये कि परमेश्वर ने उसे नम्रता दी है। क्योंकि उसे तो घास पर खिलने वाले फूल के समान झड़ जाना है। **11**सूरज कड़कड़ाती धूप लिये उगता है और पौधों को सुखा डालता है। उनकी फूल पत्तियाँ झड़ जाती हैं और सुन्दरता समाप्त हो जाती है। इसी प्रकारधनी व्यक्ति भी अपनी भाग दौड़ के साथ समाप्त हो जाता है।

परमेश्वर परीक्षा नहीं लेता

12वह व्यक्ति धन्य है जो परीक्षा में अटल रहता है क्योंकि परीक्षा में खरा उतरने के बाद वह जीवन के उस विजय मुकुट को धारण करेगा, जिसे परमेश्वर ने अपने प्रेम करने वालों को देने का वचन दिया है।, **13**परीक्षा की घड़ी में किसी को यह नहीं कहना चाहिये कि "परमेश्वर मेरी परीक्षा ले रहा है।" क्योंकि बुरी बातों से परमेश्वर को कोई लेना देना नहीं है। वह किसी की परीक्षा नहीं लेता। **14**हर कोई अपनी ही बुरी इच्छाओं के भ्रम में फँस कर परीक्षा में पड़ता है। **15**फिर जब वह इच्छा गर्भवती होती है तो पाप पूरा बढ़ जाता है और वह मृत्यु को जन्म देता है।

16सो मेरे प्रिय भाइयों, धोखा मत खाओ। **17**प्रत्येक उत्तम दान और परिपूर्ण उपहार ऊपर से ही मिलते हैं। और वे उस परम पिता के द्वारा जिसने स्वर्गीय प्रकाश को जन्म दिया है, नीचे लाये जाते हैं। वह नक्षत्रों की गतिविधि से उत्पन्न छाया से कभी बदलता नही है। **18**सत्य के सुसंदेश के द्वारा अपनी संतान बनाने के लिये उसने हमें चुना। ताकि हम सभी प्राणियों के बीच उसकी फ़सल के पहले फल सिद्ध हों।

सुनना और उस पर चलना

19हे मेरे प्रिय भाइयों, याद रखो, हर किसी को तत्परता के साथ सुनना चाहिये, बोलने में शीघ्रता मत करो, क्रोध करने में उतावली मत बरतो। **20**क्योंकि मनुष्य के क्रोध से परमेश्वर की धार्मिकता नहीं उपजती। **21**हर घिनौने आचरण और चारों ओर फैली दुष्टता से दूर रहो। तथा नम्रता के साथ तुम्हारे हृदयों में रोपे गये परमेश्वर के वचन को ग्रहण करो जो तुम्हारी आत्माओं को उद्धार दिला सकता है। **22**परमेश्वर की शिक्षा पर चलने वाले बनो, न कि केवल उसे सुनने वाले।यदि तुम केवल उसे सुनते भर हो तो तुम अपने आपको छल रहे हो। **23**क्योंकि यदि कोई परमेश्वर की शिक्षा को सुनता तो है और उस पर चलता नहीं है, तो वह उस पुरुष के समान ही है जो अपने भौतिक मुख को दर्पण में देखता भर है। **24**वह स्वयं को अच्छी तरह देखता है, पर जब वहाँ से चला जाता है तो तुरंत भूल जाता है कि वह कैसा दिख रहा था। **25**किन्तु जो परमेश्वर की उस सम्पूर्ण व्यवस्था को निकटता से देखता है, जिससे स्वतन्त्रता प्राप्त होती है और उसी पर आचरण भी करता रहता है, और सुन कर उसे भूले बिना अपने आचरण में उतारता रहता है, वही अपने कर्मों के लिये धन्य होगा।

भक्ति का सच्चा मार्ग

26यदि कोई सोचता है कि वह भक्त है और अपनी
जीभ पर कस कर लगाम नहीं लगाता तो वह धोखे में
है। उसकी भक्ति निरर्थक है। 27परम पिता परमेश्वर
के सामने सच्ची और शुद्ध भक्ति वही है जिसमें अनाथों
और विधवाओं की उनके दुःख दर्द में सुधि ली जाये
और स्वयं को कोई सांसारिक कलंक न लगने दिया
जाये।

सबसे प्रेम करो

2 हे मेरे भाइयो, हमारे महिमावान प्रभु यीशु मसीह में
जो तुम्हारा विश्वास है, वह पक्षपातपूर्ण न हो।
2कल्पना करो तुम्हारी सभा में कोई व्यक्ति सोने की
अँगूठी और भव्य वस्त्र धारण किये हुए आता है। और
तभी मैले कुचैले कपड़े पहने एक निर्धन व्यक्ति भी
आता है। 3और तुम जिसने भव्य वस्त्र धारण किये हैं,
उसको विशेष महत्त्व देते हुए कहते हो, "यहाँ इस उत्तम
स्थान पर बैठो", जबकि उस निर्धन व्यक्ति से कहते हो,
"वहाँ खड़ा रह" या "मेरे पैरों के पास बैठ जा।" 4ऐसा
करते हुए क्या तुमने अपने बीच कोई भेद-भाव नहीं
किया और बुरे विचारों के साथ न्यायकर्ता नहीं बन
गये?

5हे मेरे प्यारे भाइयो, सुनो क्या परमेश्वर ने संसार
की आँखों में उन निर्धनों को विश्वास में धनी और उस
राज्य के उत्तराधिकारी के रूप में नहीं चुना, जिसका
उसने, जो उसे प्रेम करते हैं, देने का वचन दिया है।
6किन्तु तुमने तो उस निर्धन व्यक्ति के प्रति घृणा दर्शायी
है। क्या ये धनिक व्यक्ति वे ही नहीं हैं, जो तुम्हारा
शोषण करते है और तुम्हें कचहरियों में घसीट ले जाते
है? 7क्या ये वे ही नहीं हैं, जो मसीह के उस उत्तम नाम
की निन्दा करते हैं, जो तुम्हें दिया गया है?

8यदि तुम शास्त्र में प्राप्त होने वाली इस उच्चतम
व्यवस्था का सचमुच पालन करते हो, "अपने पड़ोसी से
वैसे ही प्रेम करो, जैसे तुम अपने आप से करते हो"*
तो तुम अच्छा ही करते हो। 9किन्तु यदि तुम पक्षपात
दिखाते हो तो तुम पाप कर रहे हो। फिर तुम्हें व्यवस्था
के विधान को तोड़ने वाला ठहराया जायेगा। 10क्योंकि
कोई भी यदि समग्र व्यवस्था का पालन करता है और
एक बात में चूक जाता है तो वह समूची व्यवस्था के
उल्लंघन का दोषी हो जाता है। 11क्योंकि जिसने यह
कहा था, "व्यभिचार मत करो"* उसी ने यह भी कहा
था, "हत्या मत करो।"* सो यदि तुम व्यभिचार नहीं
करते किन्तु हत्या करते हो तो तुम व्यवस्था को तोड़ने
वाले हो। 12तुम उन्हीं लोगों के समान बोलो और उनही
के जैसा आचरण करो जिनका उस व्यवस्था के अनुसार
न्याय होने जा रहा है, जिससे छुटकारा मिलता है। 13जो
दयालु नहीं है, उसके लिये परमेश्वर का न्याय भी बिना
दया के ही होगा। किन्तु दया न्याय पर विजयी है।

विश्वास और सत् कर्म

14हे मेरे भाइयो, यदि कोई व्यक्ति कहता है कि वह
विश्वासी है तो इसका क्या लाभ जब तक कि उसके
कर्म विश्वास के अनुकूल न हों? ऐसा विश्वास क्या
उसका उद्धार कर सकता है? 15यदि भाइयों और बहनों
को वस्त्रों की आवश्यकता हो, उनके पास खाने तक
को न हो 16और तुममें से ही कोई उनसे कहे "शांति से
जाओ, परमेश्वर तुम्हारा कल्याण करे, अपने को
गरमाओ तथा अच्छी प्रकार भोजन करो" और तुम
उनकी देह की आवश्यकताओं की वस्तुएँ उन्हें न दो
तो फिर इसका क्या मूल्य है? 17इसी प्रकार यदि विश्वास
के साथ कर्म नहीं है तो वह अपने आप में निष्प्राण है।

18किन्तु कोई कह सकता है, "तुम्हारे पास विश्वास
है, जबकि मेरे पास कर्म है अब तुम बिना कर्मों के
अपना विश्वास दिखाओ और मैं तुम्हें अपना विश्वास
अपने कर्मों के द्वारा दिखाऊँगा।" 19क्या तुम विश्वास
करते हो कि परमेश्वर केवल एक है? अदभुत! दुष्टात्माएँ
यह विश्वास करती है कि परमेश्वर है और वे काँपती
रहती हैं।

20अरे मूर्ख! क्या तुझे प्रमाण चाहिये कि कर्म रहित
विश्वास व्यर्थ है? 21क्या हमारा पिता इब्राहीम अपने
कर्मों के आधार पर ही उस समय धर्मी नहीं ठहराया
गया था जब उसने अपने पुत्र इसहाक को वेदी पर
अर्पित कर दिया था? 22तू देख कि उसका वह विश्वास
उसके कर्मों के साथ ही सक्रिय हो रहा था। और
उसके कर्मो से ही उसका विश्वास परिपूर्ण किया गया
था। 23इस प्रकार शास्त्र का यह कहा पूरा हुआ था,
"इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और विश्वास
के आधार पर ही वह धर्मी ठहरा"* और इसी से वह
"परमेश्वर का मित्र"* कहलाया। 24तुम देखो कि केवल
विश्वास से नहीं, बल्कि अपने कर्मो से ही व्यक्ति धर्मी
ठहरता है।

25इसी प्रकार राहब वेश्या भी क्या उस समय अपने
कर्मों से धर्मी नहीं ठहरायी गयी, जब उसने दूतों को
अपने घर में शरण दी और फिर उन्हें दूसरे मार्ग से
कहीं भेज दिया।

26इस प्रकार जैसे बिना आत्मा का देह मरा हुआ है,
वैसे ही कर्म विहीन विश्वास भी निर्जीव है!

"अपने ... हो" लैव्य. 19:18

"व्यभिचार मत करो" निर्गमन 20:14; व्यवस्था. 5:18

"हत्या मत करो" निर्गमन 20:13; व्यवस्था. 5:17

"इब्राहीम ... ठहरा" उत्पत्ति 15:6

"परमेश्वर ... मित्र" 2 इति. 20:7; यशा. 41:8

वाणी का संयम

3 हे मेरे भाइयों, तुममें से बहुत से को शिक्षक बनने की इच्छा नहीं करनी चाहिये। तुम जानते ही हो कि हम उपदेशक का और अधिक कड़ाई के साथ न्याय किया जायेगा। 2मैं तुम्हें ऐसे इसलिये चेता रहा हूँ कि हम सबसे बहुत सी भूल होती ही रहती हैं। यदि कोई बोलने में कोई भी चूक न करे तो वह एक सिद्ध व्यक्ति है तो फिर ऐसा कौन है जो उस पर पूरी तरह काबू पा सकता हैं? 3हम घोड़ों के मुँह में इसलिये लगाम लगाते हैं कि वे हमारे बस में रहें। और इस प्रकार उनके समूचे देह को हम वश में कर सकते हैं। 4अथवा जलयानों का उदाहरण भी लिया जा सकता है। देखो, चाहे वे कितने ही बड़े होते हैं और शक्तिशाली हवाओं द्वारा चलाये जाते है, किन्तु एक छोटी सी पतवार से उनका नाविक उन्हें जहाँ कहीं ले जाना चाहता है, उन पर काबू पाकर उन्हें ले जाता है। 5इसी प्रकार जीभ, जो देह का एक छोटा सा अंग है, बड़ी बड़ी बातें कर डालने की डींगे मारती है।

अब तनिक सोचो एक जरा सी लपट समूचे जंगल को जला सकती है। 6हाँ, जीभः एक लपट है। यह बुराई का एक पूरा संसार है। यह जीभ हमारे देह के अंगों में एक ऐसा अंग है, जो समूचे देह को भ्रष्ट कर डालता है और हमारे समूचे जीवन चक्र में ही आग लगा देता है। यह जीभ नरक की आग से धधकती रहती है। 7देखो, हर प्रकार के हिंसक पशु, पक्षी, रेंगने वाले जीव जंतु, पानी में रहने वाले प्राणी मनुष्य द्वारा वश में किये जा सकते हैं और किये भी गए हैं। 8किन्तु जीभ को कोई मनुष्य वश में नहीं कर सकता। यह घातक विष से भरी एक ऐसी बुराई है जो कभी चैन से नहीं रहती। 9हम इसी से अपने प्रभु और परमेश्वर की स्तुति करते हैं और इसी से लोगों को जो परमेश्वर की समरूपता में उत्पन्न किये गये हैं, कोसते भी हैं। 10एक ही मुँह से आशीर्वाद और अभिशाप दोनों निकलते हैं। मेरे भाइयों, ऐसा तो नहीं होना चाहिये। 11सोते के एक ही मुहाने से भला क्या मीठा और खारा दोनों तरह का जल निकल सकता है। 12मेरे भाइयो, क्या अंजीर के पेड़ पर जैतून या अंगूर की लता पर कभी अंजीर लगते हैं? निश्चय ही नहीं। और न ही खारे स्रोत से कभी मीठा जल निकल पाता है।

सच्चा विवेक

13भला तुममें, ज्ञानी और समझदार कौन है? जो है, उसे अपने व्यवहार से यह दिखाना चाहिये कि उसके कर्म उस सज्जनता के साथ किये गये हैं जो ज्ञान से जुड़ी है। 14किन्तु यदि तुम लोगों के हृदयों में भयंकर ईर्ष्या और स्वार्थ भरा हुआ है, तो अपने ज्ञान का ढोल मत पीटो। ऐसा करके तो तुम सत्य पर पर्दा डालते हुए असत्य बोल रहे हो। 15ऐसा "ज्ञान" तो ऊपर अर्थात् स्वर्ग से, प्राप्त नहीं होता, बल्कि वह तो भौतिक है। आत्मिक नहीं है। तथा शैतान का है। 16क्योंकि जहाँ ईर्ष्या और स्वार्थ पूर्ण महत्वकाँक्षाएँ रहती हैं, वहाँ अव्यवस्था और हर प्रकार की बुरी बातें रहती हैं। 17किन्तु स्वर्ग से आने वाला ज्ञान सबसे पहले तो पवित्र होता है, फिर शांतिपूर्ण, सहनशील, सहज-प्रसन्न, करुणापूर्ण होता है। और उससे उत्तम कर्मों की फ़सल उपजती है। वह पक्षपात-रहित और सच्चा भी होता है। 18शांति के लिए काम करने वाले लोगों को ही धार्मिक जीवन का फल प्राप्त होगा यदि उसे शांतिपूर्ण वातावरण में बोया गया है।

परमेश्वर को समर्पित हो जाओ

4 तुम्हारे बीच लड़ाई-झगड़े क्यों होते हैं? क्या उनका कारण तुम्हारे अपने ही भीतर नहीं है? तुम्हारी वे भोग-विलासपूर्ण इच्छाएँ ही जो तुम्हारे भीतर निरन्तर द्वन्द्व करती रहती हैं, क्या उन्हीं से ये पैदा नहीं होते? 2तुम लोग चाहते तो हो किन्तु तुम्हें मिल नहीं पाता। तुम में ईर्ष्या है और तुम दूसरों की हत्या करते हो, फिर भी जो चाहते हो, प्राप्त नहीं कर पाते। और इसीलिये लड़ते झगड़ते हो। अपनी इच्छित वस्तुओं को तुम प्राप्त नहीं कर पाते क्योंकि तुम उन्हें परमेश्वर से नहीं माँगते। 3और जब माँगते भी हो तो तुम्हारा उद्देश्य अच्छा नहीं होता। क्योंकि तुम उन्हें अपने भोग-विलास में ही उड़ाने को माँगते हो। 4अरे, विश्वास विहीन लोगो! क्या तुम नहीं जानते कि संसार से प्रेम करना परमेश्वर से घृणा करने जैसा ही है? जो कोई इस दुनिया से दोस्ती रखना चाहता है, वह अपने आपको परमेश्वर का शत्रु बनाता है। 5अथवा क्या तुम ऐसा सोचते हो कि शास्त्र ऐसा व्यर्थ में ही कहता है कि, "परमेश्वर ने हमारे भीतर जो आत्मा दी है, वह ईर्ष्या पूर्ण इच्छाओं से भरी रहती है।" 6किन्तु परमेश्वर ने हम पर अत्यधिक अनुग्रह दर्शाया है, इसीलिए शास्त्र में कहा गया है, "परमेश्वर अभिमानियों का विरोधी है, जबकि दीन जनों पर अपनी अनुग्रह दर्शाता है।"* 7इसीलिए अपने आपको परमेश्वर के अधीन कर दो। शैतान का विरोध करो, वह तुम्हारे सामने से भाग खड़ा होगा। 8परमेश्वर के पास आओ, वह भी तुम्हारे पास आयेगा। अरे पापियो! अपने हाथ शुद्ध करो और अरे सन्देह करने वालो, अपने हृदयों को पवित्र करो। 9शोक करो, विलाप करो और दुःखी होओ। हो सकता है तुम्हारे ये अट्टहास शोक में बदल जायें और तुम्हारी यह प्रसन्नता विषाद में बदल जाये। 10प्रभु के सामने दीन बनो। वह तुम्हें ऊँचा उठायेगा।

"परमेश्वर ... है" नीति. 3:34

न्यायकर्त्ता तुम नहीं हो
11हे भाइयो, एक दूसरे के विरोध में बोलना बंद
करो। जो अपने ही भाई के विरोध में बोलता है, अथवा
उसे दोषी ठहराता है, वह व्यवस्था के ही विरोध में
बोलता है और व्यवस्था को दोषी ठहराता है। और यदि
तुम व्यवस्था पर दोष लगाते हो तो व्यवस्था के विधान
का पालन करने वाले नहीं रहते वरना उसके न्यायकर्त्ता
बन जाते हो। **12**व्यवस्था के विधान को देने वाला और
उसका न्याय करने वाला तो बस एक ही है। और वही
रक्षा कर सकता है और वही नष्ट करता है। तो फिर
अपने साथी का न्याय करने वाले तुम कौन होते हो?

अपना जीवन परमेश्वर को चलाने दो
13ऐसा कहने वालो सुनो, "आज या कल हम इस या
उस नगर में जाकर साल–एक भर वहाँ व्यापार में धन
लगा बहुत सा पैसा बना लेंगे।" **14**किन्तु तुम तो इतना भी
नहीं जानते कि कल तुम्हारे जीवन का क्या बनेगा!
देखो, तुम तो उस धुंध के समान हो जो थोड़ी सी देर को
उठती है और फिर खो जाती है। **15**सो इसके स्थान पर
तुम्हें तो सदा यही कहना चाहिये, "यदि प्रभु ने चाहा तो
हम जीयेंगे और यह या वह करेंगे।" **16**किन्तु स्थिति तो
यह है कि तुम तो अपने आडम्बरों के लिये स्वयं पर
गर्व करते हो। ऐसे सभी गर्व बुरे हैं। **17**तो फिर यह जानते
हुए भी कि यह उचित है, उसे नहीं करना पाप है।

स्वार्थी धनी दण्ड के भागी होंगे
5 धनवानो सुनो, जो विपत्तियाँ तुम पर आने वाली हैं,
उनके लिये रोओ और ऊँचे स्वर में विलाप करो।
2तुम्हारा धन सड़ चुका हैं। तुम्हारी पोशाकें कीड़ों द्वारा
खा ली गयी हैं। **3**तुम्हारा सोना चाँदी जंग लगने से बिगड़
गया है। उन पर लगी जंग तुम्हारे विरोध में गवाही देगी
और तुम्हारे मांस को अग्नि की तरह चट कर जायेगी।
तुमने अपना खजाना उस आयु में एक ओर उठा कर
रख दिया है जिसका अंत आने को है। **4**देखो, तुम्हारे
खेतों में जिन मजदूरों ने काम किया, तुमने उनका
मेहनताना रोक रखा है। वही मेहनताना चीख पुकार
कर रहा है और खेतों में काम करने वालों की वे चीख
पुकारें सर्वशक्तिमान प्रभु के कानों तक जा पहुँची हैं।
5धरती पर तुमने विलासपूर्ण जीवन जीया है और अपने
आपको भोग–विलासों में डुबोये रखा है। इस प्रकार
तुमने अपने आपको वध किये जाने के दिन के लिये
पाल–पोसकर हृष्ट–पुष्ट कर लिया है। **6**तुमने भोले
लोगों को दोषी ठहराकर उनके किसी प्रतिरोध के
अभाव में ही उनकी हत्याएँ कर डालीं।

धैर्य रखो
7इसलिए भाइयो, प्रभु के फिर से आने तक धीरज
धरो। उस किसान का ध्यान धरो जो अपनी धरती की
मूल्यवान उपज के लिये बाट जोहता रहता है। इसके
लिये वह आरम्भिक वर्षा से लेकर बाद की वर्षा तक
निरन्तर धैर्य के साथ बाट जोहता रहता है। **8**तुम्हें भी
धैर्य के साथ बाट जोहनी होगी। अपने हृदयों को दृढ़
बनाये रखो क्योंकि प्रभु का दुबारा आना निकट ही है।
9हे भाइयों, आपस में एक दूसरे की शिकायतें मत करो
ताकि तुम्हें अपराधी न ठहराया जाये। देखो, न्यायकर्त्ता
तो भीतर आने के लिये द्वार पर ही खड़ा है। **10**हे
भाइयों, उन भविष्यवक्ताओं को याद रखो जिन्होंने प्रभु
के लिये बोला। वे हमारे लिए यातनाएँ झेलने और धैर्य
पूर्ण सहनशीलता के उदाहरण हैं। **11**ध्यान रखना, हम
उन की सहनशीलता के कारण उनको धन्य मानते हैं।
तुमने अय्यूब के धीरज के बारे में सुना ही है और प्रभु
ने उसे उसका जो परिणाम प्रदान किया, उसे भी तुम
जानते ही हो कि प्रभु कितना दयालु और करुणापूर्ण है।

सोच विचार कर बोलो
12हे मेरे भाइयो, सबसे बड़ी बात यह है कि स्वर्ग की
अथवा धरती की या किसी भी प्रकार की कसमें खाना
छोड़ो। तुम्हारी "हाँ", हाँ होनी चाहिये, और "ना" ना
होनी चाहिये। ताकि तुम पर परमेश्वर का दण्ड न पड़े।

प्रार्थना की शक्ति
13यदि तुममें से कोई विपत्ति में पड़ा है तो उसे प्रार्थना
करनी चाहिये और यदि कोई प्रसन्न है तो उसे स्तुति–गीत
गाने चाहिये। **14**यदि तुम्हारे बीच कोई रोगी है तो उसे
कलीसिया के अगुवाओं को बुलाना चाहिये कि वे उसके
लिये प्रार्थना करें और उस पर प्रभु के नाम में तेल मलें
15विश्वास के साथ की गयी प्रार्थना से रोगी निरोग होता
है। और प्रभु उसे उठाकर खड़ा कर देता है। यदि उसने
पाप किये हैं तो प्रभु उसे क्षमा कर देगा। **16**इसलिये
अपने पापों को परस्पर स्वीकार और एक दूसरे के
लिए प्रार्थना करो ताकि तुम भले चंगे हो जाओ। धार्मिक
व्यक्ति की प्रार्थना शक्तिशाली और प्रभावपूर्ण होती है।
17नबी एलिय्याह एक मनुष्य ही था ठीक हमारे जैसा।
उसने तीव्रता के साथ प्रार्थना की कि वर्षा न हो और
साढ़े तीन साल तक धरती पर वर्षा नहीं हुई। **18**उसने
फिर प्रार्थना की और आकाश में वर्षा उमड़ पड़ी तथा
धरती ने अपनी फसलें उपजायीं।

एक आत्मा की रक्षा
19हे मेरे भाइयो, तुम में से कोई यदि सत्य से भटक
जाये और उसे कोई फिर लौटा लाये तो उसे यह पता
होना चाहिये कि **20**जो किसी पापी को पाप के मार्ग से
लौटा लाता है वह उस पापी की आत्मा को अनन्त मृत्यु
से बचाता है और उसके अनेक पापों के क्षमा किये
जाने का कारण बनता है।

1 पतरस

1 पतरस की ओर से, जो यीशु मसीह का प्रेरित है:
परमेश्वर के उन चुने हुए लोगों के नाम जो पुन्तुस,
गलातिया, कप्पदुकिया, एशिया और बिथुनिया के क्षेत्रों
में सब कहीं फैले हुए हैं। 2तुम, जिन्हें परम पिता परमेश्वर
के पूर्व-ज्ञान के अनुसार चुना गया है, जो अपनी
आत्मा के कार्य द्वारा उसे समर्पित हो, जिन्हें उसके
आज्ञाकारी होने के लिए और जिन पर यीशु मसीह के
लहू के छिड़काव के पवित्र किये जाने के लिए चुना
गया है। तुम पर परमेश्वर का अनुग्रह और शांति
अधिक से अधिक होते रहें।

सजीव आशा

3हमारे प्रभु यीशु मसीह का परम पिता परमेश्वर
धन्य हो। मरे हुओं में से यीशु मसीह के पुनरुत्थान के
द्वारा उसकी अपार करुणा में एक सजीव आशा पा लेने
के लिये उसने हमें नया जन्म दिया है। 4ताकि तुम
तुम्हारे लिये स्वर्ग में सुरक्षित रूप से रखे हुए अजर-अमर
दोष रहित अविनाशी उत्तराधिकार को पा लो। 5जो
विश्वास से सुरक्षित है, उन्हें वह उद्धार जो समय के
अंतिम छोर पर प्रकट होने को है, प्राप्त हो। 6इस पर
तुम बहुत प्रसन्न हो। यद्यपि अब तुमको थोड़े समय के
लिए तरह तरह की परीक्षाओं में पड़कर दुखी होना
बहुत आवश्यक है। 7ताकि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास
जो आग में परखे हुए सोने से भी अधिक मूल्यवान है,
उसे जब यीशु मसीह प्रकट होगा तब परमेश्वर से प्रशंसा,
महिमा और आदर प्राप्त हो, 8यद्यपि तुमने उसे देखा
नहीं है, फिर भी तुम उसे प्रेम करते हो। यद्यपि तुम
अभी उसे देख नहीं पा रहे हो, किन्तु फिर भी उसमें
विश्वास रखते हो और एक ऐसे आनन्द से भरे हुए हो
जो अकथनीय एवं महिमामय है। 9और तुम अपने
विश्वास के परिणामस्वरूप अपनी आत्मा का उद्धार
कर रहे हो। 10इस उद्धार के विषय में उन नबियों ने,
बड़े परिश्रम के साथ खोजबीन की है और बड़ी सावधानी
के साथ पता लगाया है, जिन्होंने तुम पर प्रकट होने
वाले अनुग्रह के सम्बन्ध में भविष्यवाणी कर दी थी।
11उन नबियों ने मसीह की आत्मा से यह जाना जो
मसीह पर होने वाले दुःखों को बता रही थी और वह
महिमा जो इन दुःखों के बाद प्रकट होगी। यह आत्मा
उन्हें बता रही थी। यह बातें इस दुनिया पर कब होंगी
और तब इस दुनिया का क्या होगा। 12उन्हें यह दर्शा
दिया गया था कि उन बातों का प्रवचन करते हुए वे
स्वयं अपनी सेवा नहीं कर रहे थे बल्कि तुम्हारी कर
रहे थे। वे बातें स्वर्ग से भेजे गए पवित्र आत्मा के द्वारा
तुम्हें सुसमाचार का उपदेश देने वालों के माध्यम से
बता दी गयी थीं। और उन बातों को जानने के लिए तो
स्वर्गदूत तक तरसते हैं।

पवित्र जीवन के लिए बुलावा

13इसलिए मानसिक रूप से सचेत रहो और अपने पर
नियन्त्रण रखो। उस वरदान पर पूरी आशा रखो जो
यीशु मसीह के प्रकट होने पर तुम्हें दिया जाने को है।
14आज्ञा मानने वाले बच्चों के समान उस समय की बुरी
इच्छाओं के अनुसार अपने को मत ढालो जो तुममें
पहले थीं, जब तुम अज्ञानी थे। 15बल्कि जैसे तुम्हें
बुलाने वाला परमेश्वर पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने
प्रत्येक कर्म में पवित्र बनो। 16शास्त्र भी ऐसा ही कहता
है: "पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।"*
17और यदि तुम, प्रत्येक के कर्मों के अनुसार पक्षपात
रहित होकर न्याय करने वाले परमेश्वर को हे पिता
कह कर पुकारते हो तो इस परदेसी धरती पर अपने
निवास काल में सम्मानपूर्ण भय के साथ जीवन जीओ।
18तुम यह जानते हो कि चाँदी या सोने जैसी वस्तुओं से
तुम्हें उस व्यर्थ जीवन से छुटकारा नहीं मिल सकता, जो
तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों से मिला है 19बल्कि वह तो तुम्हें
निर्दोष और कलंक रहित मेमने के समान मसीह के
बहुमूल्य रक्त से ही मल सकता है। 20इस जगत की
सृष्टि से पहले ही उसे चुन लिया गया था किन्तु तुम
लोगों के लिये उसे इन अंतिम दिनों में प्रकट किया
गया। 21उस मसीह के कारण ही तुम उस परमेश्वर में
विश्वास करते रहे जिसने उसे मरे हुओं में से पुनर्जीवित
कर दिया और उसे महिमा प्रदान की। इस प्रकार
तुम्हारी आशा और तुम्हारा विश्वास परमेश्वर में स्थिर
हो।
22अब देखो जब तुमने सत्य का पालन करते हुए,
सच्चे भाईचारे के प्रेम को प्रदर्शित करने के लिए अपने

"पवित्र ... हूँ" *लैव्य.* 11:44,45; 19:2; 20:7

आत्मा को पवित्र कर लिया है तो पवित्र मन से तीव्रता
के साथ परस्पर प्रेम करने को अपना लक्ष्य बना लो।
23तुमने नाशमान बीज से पुनर्जीवन प्राप्त नहीं किया है
बल्कि यह उस बीज का परिणाम है जो अमर है।
तुम्हारा पुनर्जन्म परमेश्वर के उस सुसंदेश से हुआ है
जो सजीव और अटल है। **24**क्योंकि शास्त्र कहता है:

"प्राणी तो सभी घास के समान हैं और उनकी सज-धज
सब घास के फूलों सी घास सूख जाती है और फूल उड़
जाते हैं। **25**किन्तु प्रभु का वनच सदा सर्वदा टिका रहता
है।" *यशायाह 40:6-8*

यह वही वनच है जिसका तुम्हें उपदेश दिया गया है।

सजीव पत्थर और पवित्र प्रजा

2 इसलिये सभी बुराइयों, छल-छद्मों, पाखण्ड तथा
वैर-विरोधों और परस्पर दोष लगाने से बचे रहो।
2नवजात बच्चों के समान शुद्ध आध्यात्मिक दूध के
लिये लालायित रहो ताकि उससे तुम्हारा विकास और
उद्धार हो। **3**अब देखो, तुमने तो प्रभु के अनुग्रह का
स्वाद ले ही लिया है।" **4**यीशु मसीह के निकट आओ।
वह सजीव "पत्थर" है। उसे संसारी लोगों ने नकार दिया
था किन्तु जो परमेश्वर के लिये बहुमूल्य है और जो
उसके द्वारा चुना गया है। **5**तुम भी सजीव पत्थरों के
समान एक आध्यात्मिक मन्दिर के रूप में बनाये जा
रहे हो ताकि एक ऐसे पवित्र याजकमण्डल के रूप में
सेवा कर सको जिसका कर्तव्य ऐसे आध्यात्मिक बलिदान
समर्पित करना है जो यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को
ग्राह्य हों। **6**शास्त्र में लिखा है:

"देखो, मैं सिय्योन में एक कोने का पत्थर रख रहा
हूँ, जो बहुमूल्य है और चुना हुआ है इस पर जो कोई
भी विश्वास करेगा उसे कभी भी नहीं लजाना पड़ेगा।"
यशायाह 28:16

7इसका मूल्य तो तुम विश्वासियों के लिये बहुमूल्य है
किन्तु जो विश्वास नहीं करते हैं उनके लिये: "वही
पत्थर जिसे शिल्पियों ने नकारा था सब से महत्त्वपूर्ण
बन गया कोने का सिर।" *भजन संहिता 118:22*

8तथा वह एक ऐसा पत्थर बन गया जिससे लोगों ठेस
लगे और ऐसी एक चट्टान जिससे जन को ठोकर
लगे।" *यशायाह 8:14*

लोग ठोकर खाते हैं क्योंकि वे परमेश्वर के वचन का
पालन नहीं करते और बस यही उनके लिए ठहराया
गया है।

9किन्तु तुम तो चुने हुए लोग हो याजकों का एक
राज्य, एक पवित्र प्रजा एक ऐसा नर-समूह जो परमेश्वर
का अपना है, ताकि तुम परमेश्वर के अद्भुत कर्मों
की घोषणा कर सको। वह परमेश्वर जिसने तुम्हें
अन्धकार से अद्भुत प्रकाश में बुलाया। **10**एक समय
था जब तुम प्रजा नहीं थे किन्तु अब तुम परमेश्वर की
प्रजा हो। एक समय था जब तुम दया के पात्र नहीं थे
किन्तु अब तुम पर परमेश्वर ने दया दिखायी है।

परमेश्वर के लिये जीओ

11हे प्रिय मित्रो, मैं तुम से, जो इस संसार में अजनबियों
के रूप में हो, निवेदन करता हूँ कि उन शारीरिक
इच्छाओं से दूर रहो जो तुम्हारी आत्मा से जूझती रहती
हैं। **12**विधर्मियों के बीच अपना व्यवहार इतना उत्तम
बनाये रखो कि चाहे वे अपराधियों के रूप में तुम्हारी
आलोचना करें किन्तु तुम्हारे उत्तम कर्मों के परिणाम
स्वरूप परमेश्वर के आने के दिन वे परमेश्वर को
महिमा प्रदान करें।

अधिकारी की आज्ञा मानो

13प्रभु के लिये हर मानव अधिकारी के अधीन रहो।
14राजा के अधीन रहो। वह सर्वोच्च अधिकारी है। शासकों
के अधीन रहो। उन्हें उसने कुकर्मियों को दण्ड देने
और उत्तम कर्म करने वालों की प्रशंसा के लिये भेजा
है। **15**क्योंकि परमेश्वर की यही इच्छा है कि तुम अपने
उत्तम कार्यों से मूर्ख लोगों की अज्ञान से भरी बातों को
चुप करा दो। **16**स्वतन्त्र व्यक्ति के समान जीओ किन्तु
उस स्वतन्त्रता को बुराई के लिये आड़ मत बनने दो।
परमेश्वर के सेवकों के समान जीओ। **17**सबका सम्मान
करो। अपने धर्म भाइयों से प्रेम करो। परमेश्वर का
आदर के साथ भय मानो। शासक का सम्मान करो।

मसीह की यातना का दृष्टांत

18हे सेवको, यथोचित आदर के साथ अपने स्वामियों
के अधीन रहो। न केवल उनके, जो अच्छे हैं और
दूसरों के लिये चिंता करते हैं बल्कि उनके भी जो
कठोर हैं। **19**क्योंकि यदि कोई परमेश्वर के प्रति सचेत
रहते हुए यातनाएँ सहता है और अन्याय झेलता है तो
वह प्रशंसनीय है। **20**किन्तु यदि बुरे कर्मों के कारण
तुम्हें पीटा जाता है और तुम उसे सहते हो तो इसमें
प्रशंसा की क्या बात है। किन्तु यदि तुम्हें तुम्हारे अच्छे
कामों के लिये सताया जाता है तो परमेश्वर के सामने
वह प्रशंसा के योग्य है। **21**परमेश्वर ने तुम्हें इसीलिये
बुलाया है क्योंकि मसीह ने भी हमारे लिये दु:ख उठाये
हैं और ऐसा करके हमारे लिए एक उदाहरण छोड़ा है
ताकि हम भी उसी के चरण चिह्नों पर चल सकें।

22"उसने कोई पाप नहीं किया और न ही उसके
मुख से कोई छल की बात ही निकली।"
यशायाह 53:9

23जब वह अपमानित हुआ तब उसने किसी का
अपमान नहीं किया, जब उसने दु:ख झेले, उसने किसी
को धमकी नहीं दी, बल्कि उस सच्चे न्याय करने वाले
परमेश्वर के आगे अपने आपको अर्पित कर दिया।
24उसने क्रूस पर अपनी देह में हमारे पापों को ओढ़
लिया। ताकि अपने पापों के प्रति हमारी मृत्यु हो जाये
और जो कुछ नेक है उसके लिये हम जीयें। यह उसके
उन घावों के कारण ही हुआ जिनसे तुम चंगे किये गये
हो। 25क्योंकि तुम भेड़ों के समान भटक रहे थे किन्तु
अब तुम अपने गडरिये और तुम्हारी आत्माओं के
रखवाले के पास लौट आये हो।

पत्नी और पति

3 इसी प्रकार हे पत्नियो! अपने अपने पतियों के प्रति
समर्पित रहो। ताकि यदि उनमें से कोई परमेश्वर
के वचन का पालन नहीं करते हों तो तुम्हारे पवित्र
और आदरपूर्ण चाल चलन को देखकर बिना किसी
बातचीत के ही अपनी-अपनी पत्नियों के व्यवहार से
जीत लिये जायें। 3तुम्हारा साज-श्रृंगार दिखावटी नहीं
होना चाहिए। अर्थात् जो केशों की वेणियाँ सजाने, सोने
के आभूषण पहनने और अच्छे-अच्छे कपड़ों से किया
जाता है, 4बल्कि तुम्हारा श्रृंगार तो तुम्हारे मन का
भीतरी व्यक्तित्व होना चाहिये जो कोमल और शान्त
आत्मा के अविनाशी सौन्दर्य से युक्त हो। परमेश्वर की
दृष्टि में जो मूल्यवान हो। 5क्योंकि बीते युग की उन
पवित्र महिलाओं का, अपने आपको सजाने-सँवारने
का यही ढंग था, जिनकी आशाएँ परमेश्वर पर टिकी
हैं। वे अपने अपने पति के अधीन वैसे ही रहा करती
थीं 6जैसे इब्राहीम के अधीन रहने वाली सारा जो उसे
अपना स्वामी मानती थी। तुम भी बिना कोई भय माने
यदि नेक काम करती हो तो उसी की बेटी हो।

7ऐसे ही हे पतियो, तुम अपनी पत्नियों के साथ समझदारी
पूर्वक रहो। उन्हें निर्बल समझ कर, उनका आदर
करो। जीवन के वरदान में उन्हें अपना सह उत्तराधिकारी
भी मानो ताकि तुम्हारी प्रार्थनाओं में बाधा न पड़े।

सतकर्मों के लिये दु:ख झेलना

8अन्त में तुम सब को समानविचार, सहानुभूतिशील,
अपने बन्धुओं से प्रेम करने वाला, दयालु और नम्र
बनना चाहिये। 9एक बुराई का बदला दूसरी बुराई से
मत दो। अथवा अपमान के बदले अपमान मत करो
बल्कि बदले में आशीर्वाद दो क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें
ऐसा ही करने को बुलाया है। इसी से तुम्हें परमेश्वर के
आशीर्वाद का उत्तराधिकारी मिलेगा। 10शास्त्र कहता है:

"जो जीवन का आनन्द उठाना चाहे जो समय की
सद्गति को देखना चाहे उसे चाहिए वह कभी कहीं बुरे
बोल न बोले। वह अपने अधरों को छल वाणी से रोके
11उसे चाहिये वह मुँह फेरे उससे जो नेक नहीं होता
वह उन कर्मों को सदा करे जो उत्तम है, उसे चाहिये
यत्नशील हो शांति पाने को उसे चाहिये वह शांति का
अनुसरण करे

12प्रभु की आँखें टिकी है उन्हीं पर जो उत्तम हैं प्रभु
के कान लगे उनकी प्रार्थनाओं पर पर जो बुरे कर्म
करते हैं प्रभु उनसे सदा मुख फेरता है।"

भजन संहिता 34:12-16

13यदि जो उत्तम है तुम उसे ही करने को लालायित
रहो तो भला तुम्हें कौन हानि पहुँचा सकता है? 14किन्तु
यदि तुम्हें भले के लिये दु:ख उठाना ही पड़े तो तुम धन्य
हो। "इसलिए उनके किसी भी भय से न तो भयभीत
होवो और न ही विचलित।" 15अपने मन में मसीह को
प्रभु के रुप में आदर दो। तुम सब जिस विश्वास को
रखते हो, उसके विषय में यदि कोई तुमसे पूछे तो उसे
उत्तर देने के लिये सदा तैयार रहो। 16किन्तु विनम्रता
और आदर के साथ ही ऐसा करो। अपना हृदय शुद्ध
रखो ताकि यीशु मसीह में तुम्हारे उत्तम आचरण की
निन्दा करने वाले लोग तुम्हारा अपमान करते हुए
लजायें। 17यदि परमेश्वर की इच्छा यही है कि तुम दु:ख
उठाओ तो उत्तम कार्य करते हुए दु:ख झेलो न कि बुरे
काम करते हुए। 18क्योंकि मसीह ने भी हमारे पापों के
लिये दु:ख उठाया। अर्थात् वह जो निर्दोष था हम पापियों
के लिये एक बार मर गया कि हमें परमेश्वर के समीप
ले जाये। शरीर के भाव से तो वह मारा गया पर आत्मा
के भाव से जिलाया गया। 19आत्मा की स्थिति में ही
उसने जाकर उन स्वर्गीय आत्माओं को जो बंदी थीं उन
बंदी आत्माओं को संदेश दिया 20जो उस समय परमेश्वर
की आज्ञा नहीं मानने वाली थीं जब नूह की नाव बनायी
जा रही थी और परमेश्वर धीरज के साथ प्रतीक्षा कर
रहा था उस नाव में थोड़े से अर्थात् केवल आठ-व्यक्ति
ही पानी से बच पाये थे। 21यह पानी उस बपतिस्मा के
समान है जिससे अब तुम्हारा उद्धार होता है। इस में
शरीर का मैल छुड़ाना नहीं, वरना एक शुद्ध अन्त:करण
के लिये परमेश्वर से विनती है। अब तो बपतिस्मा तुम्हे
यीशु मसीह वे पुनरूत्थान के द्वारा बचाता है। 22वह
स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिने विराजमान है, और अब
स्वर्गदूत, अधिकारीगण और सभी शक्तियाँ उसके अधीन
कर दी गयी हैं।

बदला हुआ जीवन

4 जब मसीह ने शारीरिक दु:ख उठाया तो तुम भी
उसी मानसिकता को शस्त्र के रूप में धारण करो
क्योंकि जो शारीरिक दु:ख उठाता है, वह पापों से
छुटकारा पा लेता है। 2इसलिए वह फिर मानवीय इच्छाओं
का अनुसरण न करे, बल्कि परमेश्वर की इच्छा के

अनुसार कर्म करते हुए अपने शेष भौतिक जीवन को
समर्पित कर दे। 3क्योंकि तुम अब तक अबोध व्यक्तियों
के समान विषय-भोगों, वासनाओं, पियक्कड़पन, उन्माद
से भरे आमोद-प्रमोदों, मधुपान-उत्सवों और घृणा-पूर्ण
मूर्तिपूजाओं में पर्याप्त समय बिता चुके हो। 4अब जब
तुम इस घृणित रहन-सहन में उनका साथ नहीं देते हो
तो उन्हें आश्चर्य होता है। वे तुम्हारी निन्दा करते हैं।
5उन्हें जो अभी जीवित हैं या मर चुके हैं, अपने व्यवहार
का लेखा-जोखा उस मसीह को देना होगा जो उनका
न्याय करने वाला है। 6इसीलिए उन विश्वासियों को जो
मर चुके हैं, सुसमाचार का उपदेश दिया गया कि शारीरिक
रूप से चाहे उनका न्याय मानवीय स्तर पर हो किन्तु
आत्मिक रूप से वे परमेश्वर के अनुसार रहें।

अच्छे प्रबन्धकर्ता बनो

7वह समय निकट है जब सब कुछ का अंत हो
जायेगा। इसलिये समझदार बनो और अपने पर काबू
रखो ताकि तुम्हें प्रार्थना करने में सहायता मिले। 8और
सबसे बड़ी बात यह है कि एक दूसरे के प्रति निरन्तर
प्रेम बनाये रखो क्योंकि प्रेम से अनगिनत पापों का
निवारण होता है। 9बिना कुछ कहे सुने एक दूसरे का
स्वागत सत्कार करो। 10जिस किसी को परमेश्वर की
ओर से जो भी वरदान मिला है, उसे चाहिये कि परमेश्वर
के विविध अनुग्रह के उत्तम प्रबन्धकों के समान, एक
दूसरे की सेवा के लिए उसे काम में लाये। 11जो कोई
प्रवचन करे, वह ऐसे करे, जैसे मानो परमेश्वर से प्राप्त
वचनों को ही सुना रहा हो। जो कोई सेवा करे, वह उस
शक्ति के साथ करे, जिसे परमेश्वर प्रदान करता है
ताकि सभी बातों में यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की
महिमा हो। महिमा और सामर्थ्य सदा सर्वदा उसी की है।
आमीन!

मसीही के रूप में दुःख उठाना

12हे प्रिय मित्रो, तुम्हारे बीच की इस अग्नि-परीक्षा
पर जो तुम्हें परखने को है, ऐसे अचरज मत करना जैसे
तुम्हारे साथ कोई अनहोनी घट रही हो, 13बल्कि आनन्द
मनाओ कि तुम मसीह की यातनाओं में हिस्सा बटा रहे
हो। ताकि जब उसकी महिमा प्रकट हो तब तुम भी
आनन्दित और मगन हो सको। 14यदि मसीह के नाम
पर तुम अपमानित होते हो तो उस अपमान को सहन
करो क्योंकि तुम मसीह के अनुयायी हो, तुम धन्य हो
क्योंकि परमेश्वर की महिमावान आत्मा तुममें निवास
करती है। 15इसलिए तुममें से कोई भी एक हत्यारा,
चोर, कुकर्मी अथवा दूसरे के कामों में बाधा पहुँचाने
वाला बनकर दुःख न उठाये। 16किन्तु यदि वह एक
मसीही होने के नाते दुःख उठाता है तो उसे लज्जित
नहीं होना चाहिये; बल्कि उसे तो परमेश्वर को महिमा
प्रदान करनी चाहिये कि वह इस नाम को धारण करता
है। 17क्योंकि परमेश्वर के अपने परिवार से ही आरम्भ
होकर न्याय प्रारम्भ करने का समय आ पहुँचा है। और
यदि यह हमसे ही प्रारम्भ होता है तो जिन्होंने परमेश्वर
के सुसमाचार का पालन नहीं किया है, उनका परिणाम
क्या होगा? 18और "यदि एक धार्मिक व्यक्ति का ही
उद्धार पाना कठिन है तो परमेश्वर विहीन और पापियों
के साथ क्या घटेगा।"* 19तो फिर जो परमेश्वर की
इच्छानुसार दुःख उठाते हैं, उन्हें उत्तम कार्य करते हुए,
उस विश्वासमय, सृष्टि के रचयिता को अपनी-अपनी
आत्माएँ सौंप देनी चाहियें।

परमेश्वर का जन-समूह

5 अब मैं तुम्हारे बीच जो बुजुर्ग हैं, उनसे निवेदन
करता हूँ: (मैं, जो स्वयं एक बुजुर्ग हूँ और मसीह
ने जो यातनाएँ झेली हैं, उनका साक्षी हूँ तथा वह भावी
महिमा जो प्रकट होने को है, उसका सहभागी हूँ) 2राह
दिखाने वाले परमेश्वर का जनसमूह तुम्हारी देखरेख में
है और निरीक्षक के रूप में तुम उसकी सेवा करते हो;
किसी दबाव के कारण नहीं, बल्कि परमेश्वर की
इच्छानुसार ऐसा करने की स्वेच्छा के कारण तुम अपना
यह काम धन के लालच में नहीं बल्कि सेवा करने के
प्रति अपनी तत्परता के कारण करते हो। 3देखरेख के
लिये जो तुम्हें सौंपे गये हैं, तुम उनके कठोर निरंकुश
शासक मत बनो। बल्कि लोगों के लिये एक आदर्श
बनो। 4ताकि जब वह प्रधान रखवाला प्रकट हो तो तुम्हें
विजय का वह भव्य मुकुट प्राप्त हो जिसकी शोभा
कभी घटती नहीं है।

5इसी प्रकार हे नव युवको! तुम अपने धर्मवृद्धों के
अधीन रहो। तुम एक दूसरे के प्रति विनम्रता धारण
करो, क्योंकि

"परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है किन्तु
दीन जनों पर सदा अनुग्रह रहता है।" *नीतिवचन 3:34*

6इसलिए परमेश्वर के महिमावान हाथ के नीचे अपने
आपको नवाओ। ताकि वह उचित अवसर आने पर
तुम्हें ऊँचा उठाये। 7तुम अपनी सभी चिंताएँ उस पर
छोड़ दो क्योंकि वह तुम्हारे लिये चिंतित है।

8अपने पर नियन्त्रण रखो। सावधान रहो। तुम्हारा
शत्रु शैतान एक गरजते सिंह के समान इधर-उधर
घूमते हुए इस ताक में रहता है कि जो मिले उसे फाड़
खाये। 9उसका विरोध करो और अपने विश्वास पर
डटे रहो क्योंकि तुम तो जानते ही हो कि समूचे संसार
में तुम्हारे भाई बहन ऐसी ही यातनाएँ झेल रहे हैं।

10किन्तु सम्पूर्ण अनुग्रह का स्रोत परमेश्वर जिसने
तुम्हें यीशु मसीह में अनन्त महिमा का सहभागी होने के

"यदि एक ... घटेगा" नीति. 11:31

लिये बुलाया है, तुम्हारे थोड़े समय यातनाएँ झेलने केबाद
स्वयं ही तुम्हें फिर से स्थापित करेगा, समर्थ बनाएगा
और स्थिरता प्रदान करेगा। 11उसकी शक्ति अनन्त है।
आमीन।

पत्र का समापन

12मैंने तुम्हें यह छोटा सा पत्र, सिलवानुस के सहयोग
से, जिसे मैं अपना विश्वासपूर्ण भाई मानता हूँ, तुम्हें
प्रोत्साहित करने के लिये कि परमेश्वर का सच्चा
अनुग्रह यही है, इस बात की साक्षी देने के लिए लिखा
है। इसी पर डटे रहो।

13बाबुल की कलीसिया जो तुम्हारे ही समान परमेश्वर
द्वारा चुनी गई है, तुम्हें नमस्कार कहती है। मसीह में
मेरे पुत्र मरकुस का भी तुम्हें नमस्कार। 14प्रेमपूर्ण
चुम्बन से एक दूसरे का स्वागत सत्कार करो।

तुम सब को, जो मसीह में हो, शान्ति मिले।

2 पतरस

1 यीशु मसीह के सेवक तथा प्रेरित शमौन पतरस की ओर से उन लोगों के नाम जिन्हें परमेश्वर से हमारे जैसा ही विश्वास प्राप्त है। क्योंकि हमारा परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह न्यायपूर्ण हैं।

2तुम परमेश्वर और हमारे प्रभु यीशु मसीह को जान चुके हो इसलिए तुम्हें परमेश्वर की कृपा और अनुग्रह अधिक से अधिक प्राप्त हों।

परमेश्वर ने हमें सब कुछ दिया है

3अपने जीवन के लिये और परमेश्वर की सेवा के लिये जो कुछ हमें चाहिये, अपनी दिव्य शक्ति के द्वारा उसने सब कुछ हमें दिया है। क्योंकि हम उसे जानते हैं, जिसने अपनी धार्मिकता और महिमा के कारण हमें
बुलाया है। 4इन्हीं के द्वारा उसने हमें वे महान और अमूल्य वरदान दिये हैं, जिन्हें देने की उसने प्रतिज्ञा की थी ताकि उनके द्वारा तुम स्वयं परमेश्वर के समान हो जाओ और उस विनाश से बच जाओ जो लोगों की बुरी इच्छाओं के कारण इस जगत में स्थित है।

5सो इसीलिये अपने विश्वास में उत्तम गुणों को, उत्तम
गुणों में ज्ञान को, 6ज्ञान में आत्मसंयम को, आत्मसंयम
में धैर्य को, धैर्य में परमेश्वर की भक्ति को, 7भक्ति में
भाईचारे को और भाईचारे में प्रेम को उदारता के साथ
बढ़ाते चलो। 8क्योंकि यदि ये गुण तुममें हैं और उनका विकास हो रहा है तो वे तुम्हें कर्मशील और सफल बना देंगे तथा उनसे तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह का परिपूर्ण
ज्ञान प्राप्त होगा। 9किन्तु जिसमें ये गुण नहीं हैं, उसमें दूर-दृष्टि नहीं है, वह अन्धा है। तथा वह यह भूल चुका है कि उसके पूर्व पापों को धोया जा चुका है।

10इसलिये हे भाइयो, यह दिखाने के लिये और अधिक तत्पर रहो कि तुम्हें वास्तव में परमेश्वर द्वारा बुलाया गया है और चुना गया है क्योंकि यदि तुम इन बातों को करते हो तो न कभी ठोकर खाओगे और न ही गिरोगे
11और इस प्रकार हमारे प्रभु एवम् उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में तुम्हें प्रवेश देकर परमेश्वर अपनी उदारता दिखायेगा।

12इसी कारण मैं तुम्हें, यद्यपि तुम उन्हें जानते ही हो और जो सत्य तुम्हें मिला है, उस पर टिके भी हुए हो,
इन बातों को सदा याद दिलाता रहूँगा। 13मैं जब तक इस
काया में हूँ, तुम्हें याद दिलाकर सचेत करते रहने को उचित समझता हूँ।

14क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि मुझे अपनी इस काया को शीघ्र ही छोड़ देना है। जैसा कि हमारे प्रभु यीशु
मसीह ने मुझे समझाया है। 15इसलिये मैं हर प्रयत्न करूँगा कि मेरे मर जाने के बाद भी तुम इन बातों को सदा याद कर सको।

हमने मसीह की महिमा के दर्शन किये हैं

16जब हमारे प्रभु यीशु मसीह के समर्थ के आगमन के विषय में हमने तुम्हें बताया था, तब चतुरतापूर्वक गढ़ी हुई कहानियों का सहारा नहीं लिया था क्योंकि
हम तो उसकी महानता के स्वयं साक्षी हैं। 17जब परम
पिता परमेश्वर से उसने सम्मान और महिमा प्राप्त की तो उस दिव्य-महिमा से विशिष्ट वाणी प्रकट हुई-"यह
मेरा प्रिय पुत्र है, मैं इससे प्रसन्न हूँ।" 18हमने आकाश से आयी वह वाणी सुनी थी। तब हम पवित्र पर्वत पर उसके साथ ही थे।

19हमें भी नबियों के वचन पर और अधिक आस्था हुई। इस पर ध्यान देकर तुम भी अच्छा कर रहे हो क्योंकि यह तो एक प्रकाश है, जो एक अन्धेरे स्थान में तब तक चमक रहा है जब तक पौ फटती है और
तुम्हारे हृदयों में भोर के तारे का उदय होता है। 20किन्तु सबसे बड़ी बात यह है कि तुम्हें यह जान लेना चाहिये कि शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी नबी के
निजी विचारों का परिणाम नहीं है 21क्योंकि कोई मनुष्य जो कहना चाहता है, उसके अनुसार भविष्यवाणी नहीं होती। बल्कि पवित्र आत्मा की प्रेरणा से मनुष्य परमेश्वर की वाणी बोलते हैं।

झूठे शिक्षक

2 जैसा भी रहा हो उन संत जनों के बीच जैसे झूठे नबी दिखाई पड़ने लगे थे बिलकुल वैसे ही झूठे नबी तुम्हारे बीच भी प्रकट होंगे। वे घातक धारणओं का सूत्र-पात करेंगे और उस स्वामी तक को नकार देंगे जिसने उन्हें स्वतन्त्रता दिलायी। ऐसा करके वे अपने
शीघ्र विनाश को निमन्त्रण देंगे। 2बहुत से लोग उनकी भोग-विलास की प्रवृत्तियों का अनुसरण करेंगे। उनके

कारण सच्चाई का मार्ग बदनाम होगा। 3लोभ के कारण
अपनी बनावटी बातों से वे तुमसे धन कमाएँगे। उनका
दंड परमेश्वर के द्वारा बहुत पहले से निर्धारित किया जा
चुका है। उनका विनाश तैयार है और उनकी प्रतीक्षा
कर रहा है।

4क्योंकि परमेश्वर ने पाप करने वाले दूतों तक को
जब नहीं छोड़ा और उन्हें पाताललोक की अन्धेरे से
भरी कोठरियों में डाल दिया कि वे न्याय के दिन तक
वहीं पड़े रहें। 5उसने उस पुरातन संसार को भी नहीं
छोड़ा किन्तु नूह की उस समय रक्षा की जब अधर्मियों
के संसार पर जल–प्रलय भेजी गयी थी। नूह उन आठ
व्यक्तियों में से एक था जो जल प्रलय से बचे थे। धार्मिकता
का प्रचारक नूह उपदेश दिया करता था। 6सदोम और
अमोरा जैसे नगरों को विनाश का दण्ड देकर राख बना
डाला गया ताकि अधर्मी लोगों के साथ जो बातें घटेंगी,
उनके लिये यह एक चेतावनी ठहरे।

7उसने लूत को बचा लिया जो एक नेक पुरूष था।
वह उद्दण्ड लोगों के अनैतिक आचरण से दुःखी रहा
करता था। 8वह धर्मी पुरुष उनके बीच रहते हुए
दिन–प्रतिदिन जैसा देखता था और सुनता था, उससे
उनके व्यवस्था रहित कर्मों के कारण, उसकी सच्ची
आत्मा तड़पती रहती थी। 9इस प्रकार प्रभु जानता है कि
भक्तों को न्याय के दिन तक कैसे बचाया जाता है और
दुष्टों को दण्ड के लिये कैसे रखा जाता है। 10विशेषकर
उनको जो अपनी पापपूर्ण प्रकृति की बुरी वासनाओं के
पीछे चलते हैं और प्रभु की प्रभुता से घृणा रखते हैं। ये
उद्दण्ड और स्वेच्छाचारी हैं। ये महिमावान स्वर्गदूतों का
अपमान करने से भी नहीं डरते। 11जबकि ये स्वर्गदूत
जो शक्ति और सामर्थ्य में इन लोगों से बड़े हैं, प्रभु के
सामने उन पर कोई निन्दापूर्ण दोष नहीं लगाते। 12किन्तु
ये लोग तो विचारहीन पशुओं के समान हैं जो अपनी
सहजवृत्ति के अनुसार काम करते हैं। जिनका जन्म ही
इसलिये होता है कि वे पकड़े जायें और मार डाले जायें।
वे उन विषयों के विरोध में बोलते हैं, जिनके बारे में वे
अबोध हैं। जैसे पशु मार डाले जाते हैं, वैसे ही इन्हें भी
नष्ट कर दिया जायेगा। 13इन्हें बुराई का बदला बुराई से
मिलेगा। दिन के प्रकाश में भोग–विलास करना इन्हें
भाता है। ये लज्जापूर्ण धब्बे हैं। ये लोग जब तुम्हारे साथ
उत्सवों में सम्मिलत होते हैं तो 14ये सदा किसी ऐसी स्त्री
की ताक में रहते हैं जिसके साथ व्यभिचार किया जा
सके। इस प्रकार इनकी आँखें पाप करने से बाज़ नहीं
आतीं। ये अस्थिर लोगों को पाप के लिये फुसला लेते
हैं। इनके मन पूरी तरह लालच के आदी हैं। ये अभिशाप
के पुत्र हैं। 15सीधा–सादा मार्ग छोड़कर ये भटक गये हैं।
बओर के बेटे बिलाम के मार्ग पर ये लोग अग्रसर हैं;
बिलाम, जिसे बदी की मज़दूरी प्यारी थी। 16किन्तु उसके
बुरे कामों के लिये एक गदही, जो बोल नहीं पाती,
मनुष्य की वाणी में बोली और उसे डाँटा फटकारा तथा
उस नबी के उन्मादपूर्ण काम को रोका।

17ये झूठे उपदेशक सूखे जल–स्रोत हैं, तथा ऐसे जल
रहित बादल हैं जिन्हें तूफान उड़ा ले जाता है। इनके
लिये सघन अन्धकारपूर्ण स्थान निश्चित किया गया है।
18ये उन्हें जो भटके हुओं से बच निकलने का अभी
आरम्भ ही कर रहे हैं, अपनी व्यर्थ की अहंकारपूर्ण
बातों से उनकी भौतिक वासनापूर्ण इच्छाओं को जगा
कर सत् पथ से डिगा लेते हैं। 19ये झूठे उपदेशक उन्हें
छुटकारे का वचन देते हैं। क्योंकि कोई व्यक्ति जो उसे
जीत लेता है, वह उसी का दास हो जाता है।

20सो यदि ये हमारे प्रभु एवम् उद्धारकर्ता यीशु मसीह
को जान लेने और संसार के खोट से बच निकलने के
बाद भी फिर से उन ही में फंस कर हार गये हैं, तो
उनके लिये उनकी यह बाद की स्थिति, उनकी पहली
स्थिति से कहीं बुरी है 21क्योंकि उनके लिये यही
अच्छा था कि वे इस धार्मिकता के मार्ग को जान ही
नहीं पाते बजाय इसके कि जो पवित्र आज्ञा उन्हें दी गयी
थी, उसे जानकर उससे मुँह फेर लेते। 22उनके साथ तो
वैसे ही घटी जैसे कि उन सच्ची कहावतों में कहा गया
है: "कुत्ता अपनी उल्टी के पास ही लौटता है।"* और
"एक नहलायी हुई सुअरनी कीचड़ में लोट लगाने के
लिये फिर लौट जाती है।"

यीशु फिर आयेगा

3 हे प्रिय मित्रो, अब यह दूसरा पत्र है जो मैं तुम्हें
लिख रहा हूँ। इन दोनों पत्रों में उन बातों को याद
दिलाकर मैंने तुम्हारे पवित्र हृदयों को जगाने का जतन
किया है 2ताकि तुम पवित्र नबियों द्वारा अतीत में कहे
गये वचनों को याद करो और हमारे प्रभु तथा उद्धारकर्ता
के आदेशों का, जो तुम्हारे प्रेरितों द्वारा तुम्हें दिये गये हैं,
ध्यान रखो। 3सबसे पहले तुम्हें यह जान लेना चाहिये
कि अंतिम दिनों में स्वेच्छाचारी हँसी उड़ाने वाले हँसी
उड़ाते हुए आयेंगे 4और कहेंगे–"क्या हुआ उसके फिर
से आने की प्रतिज्ञा का? क्योंकि हमारे पूर्वज तो चल
बसे। पर जब से सृष्टि बनी है, हर बार, वैसे की वैसी ही
चली आ रही है।" 5किन्तु जब वे यह आक्षेप करते हैं
तो वे यह भूल जाते हैं कि परमेश्वर के वचन द्वारा
आकाश युगों से विद्यमान है और पृथ्वी जल में से बनी
और जल में स्थिर है, 6और इसी से उस युग का संसार
जल प्रलय से नष्ट हो गया। 7किन्तु यह आकाश और
यह धरती जो आज अपने अस्तित्व में हैं, उसी आदेश
के द्वारा अग्नि के द्वारा नष्ट होने के लिये सुरक्षित हैं।
इन्हें उस दिन के लिए रखा जा रहा है जब अधर्मी लोगों
का न्याय होगा और वे नष्ट कर दिये जायेंगे।

"कुत्ता...है" नीति. 26:11

8पर प्यारे मित्रो! इस एक बात को मत भूलो: प्रभु के
लिये एक दिन हज़ार साल के बराबर हैं और हज़ार
साल एक दिन जैसे हैं। 9प्रभु अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने में
देर नहीं लगाता। जैसा कि कुछ लोग सोचते हैं। बल्कि
वह हमारे प्रति धीरज रखता है क्योंकि वह किसी भी
व्यक्ति को नष्ट नहीं होने देना चाहता। बल्कि वह तो
चाहता है कि सभी मन फिराव की ओर बढ़ें।

10किन्तु प्रभु का दिन चुपके से चोर की तरह आयेगा।
उस दिन एक भयंकर गर्जना के साथ आकाश विलीन
हो जायेंगे और आकाशीय पिंड आग में जलकर नष्ट हो
जाएंगे तथा यह धरती और इस धरती पर की सभी
वस्तुएँ जल जाएगी। 11क्योंकि जब ये सभी वस्तुएँ इस
प्रकार नष्ट होने को जा रही हैं तो सोचो तुम्हें किस
प्रकार का बनना चाहिये? (तुम्हें पवित्र जीवन जीना
चाहिये, पवित्र जीवन जो परमेश्वर को अर्पित है तथा
हर प्रकार के उत्तम कर्म करने चाहियें)। 12और तुम्हें
परमेश्वर के दिन की बाट जोहनी चाहिए और उस दिन
को लाने के लिये प्रयत्नशील रहना चाहिए। उस दिन
के आते ही आकाश लपटों में जल कर नष्ट हो जायेगा
और आकाशीय पिण्ड उस ताप से पिघल उठेंगे। 13किन्तु
हम परमेश्वर के वचन के अनुसार ऐसे नये आकाश
और नयी धरती की बाट जोह रहे हैं जहाँ धार्मिकता
निवास करती है।

14इसलिये हे प्रिय मित्रो, क्योंकि तुम इन बातों की
बाट जोह रहे हो, पूरा प्रयत्न करो कि प्रभु की दृष्टि में
और शांति में निर्दोष और कलंक रहित पाये जाओ।
15हमारे प्रभु के धीरज को उद्धार समझो। जैसा कि
हमारे प्रिय बन्धु पौलुस ने परमेश्वर के द्वारा दिये गये
विवेक के अनुसार तुम्हें लिखा था। 16अपने अन्य सभी
पत्रों के समान उस पत्र में उसने इन बातों के विषय में
कहा है। उन पत्रों में कुछ बातें ऐसी हैं जिनका समझना
कठिन है। अज्ञानी और अस्थिर लोग उनके अर्थ का
अनर्थ करते हैं। दूसरे शास्त्रों के साथ भी वे ऐसा ही
करते हैं। इससे वे अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारते
हैं।

17इसलिए हे प्रिय मित्रो, क्योंकि तुम्हें ये बातें पहले से
ही पता हैं इसलिये सावधान रहो कि तुम बुराइयों और
व्यवस्थाहीन लोगों के द्वारा भटकाये जा कर अपनी
स्थिर स्थिति से डिग न जाओ। 18बल्कि हमारे प्रभु तथा
उद्धारकर्ता यीशु मसीह की अनुग्रह और ज्ञान में तुम
आगे बढ़ते जाओ। अब और अनन्त समय तक उसकी
महिमा होतीर हे।

1 यूहन्ना

1 यह सृष्टि के आरम्भ से ही था: हमने इसे सुना है,
अपनी आँखों से देखा, ध्यान से निहारा, और इसे
स्वयं अपने ही हाथों से हमने इसे छुआ है। हम उस
वचन के विषय में बता रहे हैं जो जीवन है। 2उसी
जीवन का ज्ञान हमें कराया गया। हमने उसे देखा। हम
उसके साक्षी हैं और अब हम तुम लोगों को उसी
अनन्त जीवन की उद्घोषणा कर रहे हैं जो पिता के
साथ था और हमें जिसका बोध कराया गया। 3हमने
उसे देखा है और सुना है। अब तुम्हें भी उसी का
उपदेश दे रहे हैं ताकि तुम भी हमारे साथ सहभागिता
रखो। हमारी यह सहभागिता परम पिता और उसके पुत्र
यीशु मसीह के साथ है। 4हम इन बातों को तुम्हें इसलिए
लिख रहे हैं कि हमारा आनन्द परिपूर्ण हो जाये।

परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करता है

5हमने यीशु मसीह से जो सुसमाचार सुना है, वह यह
है: और इसे ही हम तुम्हें सुना रहे हैं: परमेश्वर प्रकाश
है और उसमें लेशमात्र भी अंधकार नहीं है। 6यदि हम
कहें कि हम उसके साझी हैं और पाप के अन्धकारपूर्ण
जीवन को जीते रहें तो हम झूठ बोल रहे हैं और सत्य
का अनुसरण नहीं कर रहे हैं। 7किन्तु यदि हम अब
प्रकाश में आगे बढ़ते हैं क्योंकि प्रकाश में ही परमेश्वर
है–तो हम विश्वासी के रूप में एक दूसरे के सहभागी
हैं। और परमेश्वर के पुत्र यीशु का लहू हमें सभी पापों
से शुद्ध कर देता है। 8यदि हम कहते हैं कि हममें कोई
पाप नहीं हैं तो हम स्वयं अपने आपको छल रहे हैं और
हममें सच्चाई नहींहै।

9यदि हम अपने पापों को स्वीकार कर लेते हैं तो
हमारे पापों को क्षमा करने के लिये परमेश्वर विश्वसनीय
है और न्यायपूर्ण है और समुचित है। तथा वह सभी पापों
से हमें शुद्ध करता है। 10यदि हम कहते हैं कि हमने
कोई पाप नहीं किया तो हम परमेश्वर को झूठा बनाते
हैं और उसका वचन हम में नहीं है।

यीशु हमारा सहायक है

2 मेरे प्यारे पुत्र-पुत्रियों, ये बातें मैं तुम्हें इसलिए लिख
रहा हूँ कि तुम पाप न करो। किन्तु यदि कोई पाप
करता है तो परमेश्वर के सामने हमारे पापों का बचाव
करने वाला एक है और वह है धर्मी यीशु मसीह। 2वह
एक बलिदान है जो हमारे पापों का हरण करता है न
केवल हमारे पापों का बल्कि समूचे संसार के पापोंका।
3यदि हम परमेश्वर के आदेशों का पालन करते हैं तो
यही वह मार्ग है जिससे हम निश्चय करते हैं कि हमने
सचमुच उसे जान लिया है। 4यदि कोई कहता है कि,
"मैं परमेश्वर को जानता हूँ!" और उसकी आज्ञाओं
का पालन नहीं करता तो वह झूठा है। उसके मन में
सत्य नहीं है। 5किन्तु यदि कोई परमेश्वर के उपदेश
का पालन करता है तो उसमें परमेश्वर के प्रेम ने
परिपूर्णता पा ली है। यही वह मार्ग है जिससे हमें निश्चय
होता है कि हम परमेश्वर में स्थित हैं: 6जो यह कहता
है कि वह परमेश्वर में स्थित है, उसे यीशु के जैसा
जीवन जीना चाहिये।

सबसे प्रेम करो

7हे प्यारे मित्रो, मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं लिख
रहा हूँ बल्कि यह एक सनातन आज्ञा है, जो तुम्हें
प्रारम्भ में ही दे दी गयी थी। यह पुरानी आज्ञा वह
सुसंदेश है जिसे तुम सुन चुके हो। 8मैं तुम्हें एक और
दूसरी नयी आज्ञा लिख रहा हूँ। इस तथ्य का सत्य
मसीह के जीवन में और तुम्हारे जीवनों में उजागर हुआ
है क्योंकि अन्धकार विलीन हो रहा है और सच्चा
प्रकाश तो चमक ही रहा है।

9जो कहता है, "वह प्रकाश में स्थित है और फिर भी
अपने भाई से घृणा करता है, तो वह अब तक अंधकार
में बना हुआ है।

10जो अपने भाई को प्रेम करता है, प्रकाश में स्थित
रहता है। उसके जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे
कोई पाप में पड़े। 11किन्तु जो अपने भाई से घृणा करता
है, अँधेरे में है। वह अन्धकारपूर्ण जीवन जी रहा है। वह
नहीं जानता, वह कहाँ जा रहा है। क्योंकि अँधेरे ने उसे
अंधा बना दिया है।

12हे प्यारे बच्चो, मैं तुम्हें इसलिये लिख रहा हूँ,
क्योंकि यीशु मसीह के कारण तुम्हारे पाप क्षमा किये
गये हैं।

13 हे पिताओ, मैं तुम्हें इसलिये लिख रहा हूँ, क्योंकि
तुम, जो अनादिकाल से स्थित है उसे जानते हो। हे

युवको, मैं तुम्हें इसलिये लिख रहा हूँ, क्योंकि तुमने
उस दुष्ट पर विजय पा लीहै।
14हे बच्चो, मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, क्योंकि तुम पिता
को पहचान चुके हो। हे पिताओ, मैं तुम्हें लिख रहा हूँ,
क्योंकि तुम जो सृष्टि के अनादि काल से स्थित है, उसे
जान गये हो। हे नौजवानो, मैं तुम्हें लिख रहा हूँ, क्योंकि
तुम शक्तिशाली हो, परमेश्वर का वचन तुम्हारे भीतर
निवास करता है और तुमने उस दुष्ट आत्मा पर
विजय पा ली है। **15**संसार को अथवा सांसारिक वस्तुओं
को प्रेम मत करते रहो। यदि कोई संसार से प्रेम रखता
है तो उसके हृदय में परमेश्वर के प्रति प्रेम नहीं है।
16क्योंकि इस संसार की हर वस्तु:
जो तुम्हारे पापपूर्ण स्वभाव को आकर्षित करती है,
तुम्हारी आँखों को भाती है और इस संसार की प्रत्येक
वह वस्तु, जिस पर लोग इतना गर्व करते हैं।
परम पिता की ओर से नहीं है बल्कि वह तो सांसारिक
है। **17**यह संसार अपनी लालसाओं और इच्छाओं समेत
विलीन होता जा रहा है किन्तु वह जो परमेश्वर की
इच्छा का पालन करता है, अमर हो जाता है।

मसीह के विरोधियों का अनुसरण मत करो

18हे प्रिय बच्चो, अन्तिम घड़ी आ पहुँची है! और जैसा
कि तुमने सुना है कि मसीह का विरोधी आ रहा है।
इसलिए अब अनेक मसीह–विरोधी प्रकट हो गये हैं।
इसी से हम जानते हैं कि अन्तिम घड़ी आ पहुँची है।
19मसीह के विरोधी हमारे ही भीतर से निकले हैं पर
वास्तव में वे हमारे नहीं हैं क्योंकि यदि वे सचमुच
हमारे होते तो हमारे साथ ही रहते। किन्तु वे हमें छोड़
गये ताकि वे यह दिखा सकें कि उनमें से कोई भी
वास्तव में हमारा नहीं है।
20किन्तु तुम्हारा तो उस परम पवित्र ने आत्मा के
द्वारा अभिषेक कराया है। इसीलिये तुम सब सत्य को
जानते हो। **21**मैंने तुम्हें इसलिये नहीं लिखा है कि तुम
सत्य को नहीं जानते हो? बल्कि तुम तो उसे जानते हो
और इसलिये भी कि सत्य से कोई झूठ नहीं निकलता।
22किन्तु जो यह कहता है कि यीशु मसीह नहीं है,
वह झूठा है। ऐसा व्यक्ति मसीह का शत्रु है। वह तो पिता
और पुत्र दोनों को नकारता है। **23**वह जो पुत्र को
नकारता है, उसके पास पिता भी नहीं है किन्तु जो पुत्र
को मानता है, वह पिता को भी मानता है।
24जहाँ तक तुम्हारी बात है, तुमने अनादिकाल से जो
सुना है, उसे अपने भीतर बनाये रखो। जो तुमने
अनादिकाल से सुना है,यदि तुममें बना रहता है तो तुम
पुत्र और पिता दोनों में स्थित रहोगे। **25**उसने हमें अनन्त
जीवन प्रदान करने का वचन दिया है।
26मैं ये बातें तुम्हें उन लोगों के सम्बन्ध में लिख रहा
हूँ, जो तुम्हें छलने का जतन कर रहे हैं। **27**किन्तु जहाँ
तक तुम्हारी बात है, तुममें तो उस परम पवित्र से प्राप्त
अभिषेक वर्तमान है, इसलिये तुम्हें तो आवश्यकता ही
नहीं है कि कोई तुम्हें उपदेश दे, बल्कि तुम्हें तो वह
आत्मा जिससे उस परम पवित्र ने तुम्हारा अभिषेक
किया है, तुम्हें सब कुछ सिखाती है। (और याद रखो,
वही सत्य है, वह मिथ्या नहीं है।) उसने तुम्हें जैसे
सिखाया है, तुम मसीह में वैसे ही बने रहो।
28इसलिए प्यारे बच्चो, उसी में बने रहो ताकि जब
हमें उसका ज्ञान हो तो हम आत्मविश्वास पा सकें।
और उसके पुन:आगमन के समय हमें लज्जित न होना
पड़े। **29**यदि तुम यह जानते हो कि वह नेक है तो तुम
यह भी जान लो कि वह जो धार्मिकता पर चलता है
परमेश्वर की ही सन्तान है।

हम परमेश्वर की सन्तान हैं

3 विचार कर देखो कि परम पिता ने हम पर कितना
महान प्रेम दर्शाया है! ताकि हम उसके पुत्र–पुत्री
कहला सकें और वास्तव में वे हम हैं ही। इसीलिये
संसार हमें नहीं पहचानता क्योंकि वह मसीह को नहीं
पहचानता। **2**हे प्रिय मित्रो, अब हम परमेश्वर की सन्तान
हैं किन्तु भविष्य में हम क्या होंगे, अभी तक इसका
बोध नहीं कराया गया है। जो भी हो, हम यह जानते हैं
कि मसीह के पुन: प्रकट होने पर हम उसी के समान
हो जायेंगे क्योंकि वह जैसा है, हम उसे ठीक वैसा ही
देखेंगे। **3**हर कोई जो उस पर ऐसी आशा रखता है, वह
अपने आपको वैसे ही पवित्र करता है जैसे मसीह पवित्र
है।**4**जो कोई पाप करता है, वह परमेश्वर के नियम को
तोड़ता है क्योंकि नियम का तोड़ना ही पाप है। **5**तुम तो
जानते ही हो कि मसीह लोगों के पापों को हरने के लिये
ही प्रकट हुआ। और यह भी, कि उसमें कोई पाप नहीं
है। **6**जो कोई मसीह में बना रहता है, पाप नहीं करता
रहता और हर कोई जो पाप करता रहता है, उसने न
तो उसके दर्शन किये हैं और न ही कभी उसे जाना है।
7हे प्यारे बच्चो, तुम कहीं छले न जाओ। वह जो धर्म
पूर्वक आचरण करता रहता है, धर्मी है। ठीक वैसे ही
जैसे मसीह धर्मी है। **8**वह जो पाप करता ही रहता है,
शैतान का है क्योंकि शैतान अनादिकाल से पाप करता
चला आ रहा है। इसीलिये परमेश्वर का पुत्र प्रकट हुआ
कि वह शैतान के काम को नष्ट कर दे।
9जो परमेश्वर की सन्तान बन गया, पाप नहीं करता
रहता, क्योंकि उसका बीज तो उसी में रहता है। सो वह
पाप करता नहीं रह सकता क्योंकि वह परमेश्वर की
संतान बन चुका है। **10**परमेश्वर की संतान कौन है?
और शैतान के बच्चे कौन से हैं? तुम उन्हें इस प्रकार
जान सकते हो: प्रत्येक वह व्यक्ति जो धर्म पर नहीं
चलता और अपने भाई को प्रेम नहीं करता, परमेश्वर
का नहीं है।

परस्पर प्रेम से रहो

11यह उपदेश तुमने आरम्भ से ही सुना है कि हमें
परस्पर प्रेम रखना चाहिये। 12हमें कैन* के जैसा नहीं
बनना चाहिये जो उस दुष्टात्मा से सम्बन्धित था और
जिसने अपने भाई की हत्या कर दी थी। उसने अपने
भाई को भला क्यों मार डाला? उसने इसलिये ऐसा
किया कि उसके कर्म बुरे थे जबकि उसके भाई के
कर्म धार्मिकता के।

13हे भाइयो, यदि संसार तुमसे घृणा करता है, तो
अचरज मत करो। 14हमें पता है कि हम मृत्यु के पार
जीवन में आ पहुँचे हैं क्योंकि हम अपने बन्धुओं से प्रेम
करते हैं। जो प्रेम नहीं करता, वह मृत्यु में स्थित है।
15प्रत्येक व्यक्ति जो अपने भाई से घृणा करता है, हत्यारा
है और तुम तो जानते ही हो कि कोई हत्यारा अपनी
सम्पत्ति के रूप में अनन्त जीवन को नहीं रखता। 16मसीह
ने हमारे लिये अपना जीवन त्याग दिया। इसी से हम
जानते हैं कि प्रेम क्या है? हमें भी अपने भाइयों के लिए
अपने प्राण न्यौछावर कर देने चाहियें। 17सो जिसके पास
भौतिक वैभव है, और जो अपने भाई को अभावग्रस्त
देखकर भी उस पर दया नहीं करता, उसमें परमेश्वर
का प्रेम है, यह कैसे कहा जा सकता है? 18हे प्यारे
बच्चो, हमारा प्रेम केवल शब्दों और बातों तक ही
सीमित नहीं रहना चाहिये बल्कि वह कर्ममय और
सच्चा होना चाहिए।

19इसी से हम जान लेंगे कि हम सत्य के हैं और
परमेश्वर के आगे अपने हृदयों को आश्वस्त कर
सकेंगे। 20बुरे कामों के लिये हमारा मन जब भी
हमारा निषेध करता है तो यह इसलिये होता है कि
परमेश्वर हमारे मनों से बड़ा है और वह सब कुछ को
जानता है।

21हे प्यारे बच्चो, यदि कोई बुरा काम करते समय
हमारा मन हमें दोषी नहीं ठहराता तो परमेश्वर के
सामने हमें विश्वास बना रहता है। 22और जो कुछ हम
उससे माँगते हैं, उसे पाते हैं। क्योंकि हम उसके आदेशों
पर चल रहे हैं और उन्हीं बातों को कर रहे हैं, जो उसे
भाती हैं। 23उसका आदेश है: हम उसके पुत्र यीशु
मसीह के नाम में विश्वास रखें तथा जैसा कि उसने हमें
आदेश दिया है हम एक दूसरे से प्रेम करें। 24जो उसके
आदेशों का पालन करता है वह उसी में बना रहता है।
और उसमें परमेश्वर का निवास रहता है। इस प्रकार,
उस आत्मा के द्वारा जिसे परमेश्वर ने हमें दिया है, हम
यह जानते हैं कि हमारे भीतर परमेश्वर निवास करता
है।

कैन कैन और अबेल आदम और हव्वा के पुत्र थे। कैन अबेल से जलता था। सो उसने उसे मार डाला। देखें उत्पत्ति 4:1-16

झूठे उपदेशकों से सचेत रहो

4 हे प्रिय मित्रो, हर आत्मा का विश्वास मत करो
बल्कि सदा उन्हें परख कर देखो कि वे, क्या
परमात्मा के हैं? यह मैं तुमसे इसलिये कह रहा हूँ
क्योंकि बहुत से झूठे नबी संसार में फैले हुए हैं। 2परमेश्वर
की आत्मा को तुम इस तरह पहचान सकते हो: हर वह
आत्मा जो यह मानती है कि, "यीशु मसीह मनुष्य के
रूप में पृथ्वी पर आया है।" वह परमेश्वर की ओर से
है। 3और हर वह आत्मा जो यीशु को नहीं मानती,
परमेश्वर की ओर से नहीं है। ऐसा व्यक्ति तो मसीह का
शत्रु है, जिसके विषय में तुमने सुना है कि वह आ रहा
है, बल्कि अब तो वह इस संसार में ही है।

4हे प्यारे बच्चो, तुम परमेश्वर के हो। इसीलिये तुमने
मसीह के शत्रुओं पर विजय पा ली है। क्योंकि वह
परमेश्वर जो तुममें है, संसार में रहने वाले शैतान से
महान है। 5वे मसीह विरोधी लोग सांसारिक हैं। इसीलिये
वे जो कुछ बोलते हैं, वह सांसारिक है और संसार ही
उनकी सुनता है। 6किन्तु हम परमेश्वर के हैं इसलिए
जो परमेश्वर को जानता है, हमारी सुनता है। किन्तु जो
परमेश्वर का नहीं है, हमारी नहीं सुनता। इस प्रकार से
हम सत्य की आत्मा को और लोगों को भटकाने वाली
आत्मा को पहचान सकते हैं।

प्रेम परमेश्वर से मिलता है

7हे प्यारे मित्रो, हम परस्पर प्रेम करें। क्योंकि प्रेम
परमेश्वर से मिलता है और हर कोई जो प्रेम करता है,
वह परमेश्वर की सन्तान बन गया है और परमेश्वर
को जानता है। 8वह जो प्रेम नहीं करता है, परमेश्वर
को नहीं जान पाया है। क्योंकि परमेश्वर ही प्रेम है।
9परमेश्वर ने अपना प्रेम इस प्रकार दर्शाया है: उसने
अपने एकमात्र पुत्र को इस संसार में भेजा जिससे कि
हम उसके पुत्र के द्वारा जीवन प्राप्त कर सकें। 10सच्चा
प्रेम इसमें नहीं है कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया है,
बल्कि इसमें है कि एक ऐसे बलिदान के रूप में जो
हमारे पापों को धारण कर लेता है, उसने अपने पुत्र को
भेज कर हमारे प्रति अपना प्रेम दर्शाया है।

11हे प्रिय मित्रो, यदि परमेश्वर ने इस प्रकार हम पर
अपना प्रेम दिखाया है तो हमें भी एक दूसरे से प्रेम
करना चाहिये। 12परमेश्वर को कभी किसी ने नहीं
देखा है किन्तु यदि हम आपस में प्रेम करते हैं तो
परमेश्वर हममें निवास करता है और उसका प्रेम
हमारे भीतर सम्पूर्ण हो जाता है। 13इस प्रकार हम जान
सकते हैं कि हम परमेश्वर में ही निवास करते हैं और
वह हमारे भीतर रहता है। क्योंकि उसने अपनी आत्मा
का कुछ अंश हमें दिया है। 14इसे हमने देखा है और
हम इसके साक्षी हैं कि परम पिता ने जगत के उद्धारकर्त्ता
के रूप में अपने पुत्र को भेजा है।

15यदि कोई यह मानता है कि, "यीशु परमेश्वर का
पुत्र है," तो परमेश्वर उसमें निवास करता है। और वह
परमेश्वर में रहने लगता है।

16इसलिए हम जानते हैं कि हमने अपना विश्वास
उस प्रेम पर टिकाया है जो परमेश्वर में हमारे लिये है।
परमेश्वर प्रेम है और जो प्रेम में स्थित रहता है, वह
परमेश्वर में स्थित रहता है और परमेश्वर उसमें स्थित
रहता है। 17हमारे विषय में इसी रूप में प्रेम सिद्ध हुआ है
ताकि न्याय के दिन हमें विश्वास बना रहे। हमारा यह
विश्वास इसलिये बना हुआ है कि हम इस जगत में जो
जीवन जी रहे हैं, वह मसीह के जीवन जैसा है। 18प्रेम में
कोई भय नहीं होता बल्कि सम्पूर्ण प्रेम तो भय को भगा
देता है। भय का संबन्ध तो दंड से है। सो जिसमें भय है,
उसके प्रेम को अभी पूर्णता नहीं मिली है।

19हम प्रेम करते हैं क्योंकि पहले परमेश्वर ने हमें
प्रेम किया है। 20यदि कोई कहता है, "मैं परमेश्वर को
प्रेम करता हूँ," और अपने भाई से घृणा करता है तो
वह झूठा है। क्योंकि अपने उस भाई को, जिसे उसने
देखा है, जब वह प्रेम नहीं करता, तो परमेश्वर को
जिसे उसने देखा ही नहीं है, वह प्रेम नहीं कर सकता।
21मसीह से हमें यह आदेश मिला है।

वह जो परमेश्वर को प्रेम करता है, उसे अपने भाई
से भी प्रेम करना चाहिये।

परमेश्वर की सन्तान संसार पर विजयी होती है

5 जो कोई यह विश्वास करता है कि यीशु मसीह
है, वह परमेश्वर की सन्तान बन जाता है और जो
कोई परम पिता से प्रेम करता है वह उसकी सन्तान से
भी प्रेम करेगा। 2इस प्रकार जब हम परमेश्वर को प्रेम
करते हैं और उसके आदेशों का पालन करते हैं तो हम
जान लेते हैं कि हम परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम करते
हैं। 3उसके आदेशों का पालन करते हुए हम यह दर्शाते
हैं कि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं। उसके आदेश
अत्यधिक कठोर नहीं हैं। 4क्योंकि जो कोई परमेश्वर
की संतान बन जाता है, वह जगत पर विजय पा लेता है
और संसार के ऊपर हमें जिससे विजय मिली है, वह है
हमारा विश्वास। 5जो यह विश्वास करता है कि यीशु
परमेश्वर का पुत्र है, वही संसार पर विजयी होता है।

परमेश्वर का कथन: अपने पुत्र के विषय में

6वह यीशु मसीह ही है जो हमारे पास जल और लहू
के साथ आया–केवल जल के साथ नहीं, बल्कि जल
और लहू के साथ। और वह आत्मा है जो उसकी साक्षी
देता है क्योंकि आत्मा ही सत्य है। 7साक्षी देने वाले तीन
हैं–8आत्मा, जल और लहू और ये तीनों साक्षियाँ एक
ही साक्षी देकर परस्पर सहमत हैं। 9जब हम मनुष्य द्वारा
दी गयी साक्षी को मानते हैं तो परमेश्वर द्वारा दी गयी
साक्षी तो और अधिक मूल्यवान है। परमेश्वर की
साक्षी का महत्त्व इसमें है कि अपने पुत्र के विषय में
साक्षी उसने दी है। 10वह जो परमेश्वर के पुत्र में विश्वास
रखता है, वह अपने भीतर उस साक्षी को रखता है।
परमेश्वर ने जो कहा है, उस पर जो विश्वास नहीं
रखता, वह परमेश्वर को झूठा ठहराता है। क्योंकि
उसने उस साक्षी का विश्वास नहीं किया है, जो परमेश्वर
ने अपने पुत्र के विषय में दी है। 11और वह साक्षी यह
है: कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है और वह
जीवन उसके पुत्र में प्राप्त होता है। 12वह जो उसके
पुत्र को धारण करता है, उस जीवन को धारण करता
है। किन्तु जिसके पास परमेश्वर का पुत्र नहीं है, उसके
पास वह जीवन भी नहीं है।

अब अनन्त जीवन हमारा है

13परमेश्वर में विश्वास रखने वालो, तुमको ये बातें
मैं इसलिए लिख रहा हूँ जिससे तुम यह जान लो कि
अनन्त जीवन तुम्हारे पास है। 14हमारा परमेश्वर में यह
विश्वासहै कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार उससे
विनती करेंतो वह हमारी सुनता है, 15और जब हम यह
जानते हैं किवह हमारी सुनता है–चाहे हम उससे कुछ
भीमाँगे तो हम यह भी जानते हैं कि जो हमने माँगा है,
वह हमारा हो चुका है।

16यदि कोई देखता है कि उसका भाई कोई ऐसा पाप
कर रहा है जिसका फल अनन्त मृत्यु नहीं है, तो उसे
अपने भाई के लिए प्रार्थना करनी चाहिये। परमेश्वर
उसे जीवन प्रदान करेगा। मैं उनके लिये जीवन के
विषय में बात कर रहा हूँ, जो ऐसे पाप में लगे हैं, जो
उन्हें अनन्त मृत्यु तक नहीं पहुँचायेगा। ऐसा पाप भी
होता है जिसका फल मृत्यु है। मैं तुमसे ऐसे पाप के
सम्बन्ध में विनती करने को नहीं कह रहा हूँ। 17सभी
बुरे काम पाप हैं। किन्तु ऐसा पाप भी होता है जो मृत्यु
की ओर नहीं ले जाता।

18हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर का पुत्र बन
गया, वह पाप नहीं करता रहता। बल्कि परमेश्वर का
पुत्र उसकी रक्षा करता रहता है।* वह दुष्ट उसका
कुछ नहीं बिगाड़ पाता। 19हम जानते हैं कि हम परमेश्वर
के हैं। यद्यपि यह समूचा संसार उस दुष्ट के वश में है।
20किन्तु हमको पता है कि परमेश्वर का पुत्र आ गया
है और उसने हमें वह ज्ञान दिया है ताकि हम उस
परमेश्वर को जान लें जो सत्य है। और यह कि हम
उसी में स्थित हैं, जो सत्य है, क्योंकि हम उसके पुत्र
यीशु मसीह में स्थिर हैं। परम पिता ही सच्चा परमेश्वर
है और वही अनन्तजीवन है। 21हे बच्चो, अपने आप को
झूठे देवताओं से दूर रखो।

बल्कि ... रहता है शाब्दिक "जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ उसे वह बचाए रखता है।" या "अपने आप को बचाए रखता है।"

2 यूहन्ना

मुझे बुजुर्ग की ओर से उस महिला को–जो परमेश्वर
के द्वारा चुनी गयी है तथा उसके बालकों के नाम जिन्हें
मैं सत्य के सहभागी व्यक्तियों के रूप में प्रेम करता हूँ।
केवल मैं ही तुम्हें प्रेम नहीं करता हूँ, बल्कि वे सभी
तुम्हें प्रेम करते हैं जो सत्य को जान गये हैं। 2यह उसी
सत्य के कारण हुआ है जो हममें निवास करता है और
जो सदा सदा हमारे साथ रहेगा।

3परम पिता परमेश्वर की ओर से उसका अनुग्रह,
दया और शांति सदा हमारे साथ रहेंगी तथा परम पिता
परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह की ओर से सत्य और प्रेम
में हमारी स्थिति बनी रहेगी।

4तुम्हारे पुत्र–पुत्रियों को उस सत्य के अनुसार जीवन
जीते देख कर जिसका आदेश हमें परम पिता से प्राप्त
हुआ है, मैं बहुत आनन्दित हुआ हूँ, 5और अब हे
महिला, मैं तुम्हें कोई नया आदेश नहीं बल्कि उसी
आदेश को लिख रहा हूँ, जिसे हमने अनादि काल से
पाया है हमें परस्पर प्रेम करना चाहिये।

6प्रेम का अर्थ यही है कि हम उसके आदेशों पर
चलें। यह वही आदेश है जिसे तुमने प्रारम्भ से ही सुना
है कि तुम्हें प्रेमपूर्वक जीना चाहिये।

7संसार में बहुत से भटकाने वाले हैं। ऐसा व्यक्ति जो
यह नहीं मानता कि इस धरती पर मनुष्य के रूप में
यीशु मसीह आया है, वह छली है तथा मसीह का शत्रु
है। 8स्वयं को सावधान बनाये रखो! ताकि तुम उसे गँवा
न बैठो जिसके लिये हमने कठोर परिश्रम किया है,
बल्कि तुम्हें तो तुम्हारा पूरा प्रतिफल प्राप्त करना है।

9जो कोई बहुत दूर चला जाता है और मसीह के
विषय में दिये गये सच्चे उपदेश में टिका नहीं रहता, वह
परमेश्वर को प्राप्त नहीं करता और जो उसकी शिक्षा
में बना रहता है, परम पिता और पुत्र दोनों ही उसके
पास हैं। 10यदि कोई तुम्हारे पास आकर इस उपदेश को
नहीं देता है तो अपने घर उसका आदर सत्कार मत
करो तथा उसके स्वागत में 'नमस्कार' भी मत कहो।
11क्योंकि जो ऐसे व्यक्ति का सत्कार करता है, वह
उसके बुरे कामों में भागीदार बनता है। 12यद्यपि तुम्हें
लिखने को मेरे पास बहुत सी बातें हैं किन्तु उन्हें मैं
लेखनी और स्याही से नहीं लिखना चाहता। बल्कि मुझे
आशा है कि तुम्हारे पास आकर आमने सामने बैठ
बातें करूँगा। जिससे हमारा आनन्द परिपूर्ण हो। 13तेरी
बहन* के पुत्र पुत्रियों का तुझे नमस्कार पहुँचे।

बहन यहाँ 'बहन' से अभिप्राय उस स्थानीय कलीसिया से मालूम पड़ता है, जहाँ से यूहन्ना ने यह पत्र लिखा है तथा 'पुत्र पुत्रियों, से अभिप्राय है उस कलीसिया के सदस्य जो अपना नमस्कार भेज रहे हैं।

3 यूहन्ना

यूहन्ना की ओर से: प्रिय मित्र, गयुस के नाम जिसे मैं
सत्य में सहभागी के रूप में प्रेम करता हूँ। 2हे मेरे प्रिय
मित्र, मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू जैसे आध्यात्मिक रूप
से उन्नति कर रहा है, वैसे ही सब प्रकार से उन्नति
करता रह और स्वास्थ्य का आनन्द उठाता रह। 3जब
हमारे कुछ भाइयों ने मेरे पास आकर सत्य के प्रति
तुम्हारी निष्ठा के बारे में बताया तो मैं बहुत आनन्दित
हुआ। उन्होंने मुझे यह भी बताया कि तुम सत्य के मार्ग
पर किस प्रकार चल रहे हो। 4मुझे यह सुनने से अधिक
आनन्द और किसी में नहीं आता कि मेरे बालक सत्य
के मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं।

5हे मेरे प्यारे मित्र, तुम हमारे भाइयों के हित में जो
कुछ कर सकते हो, उसे विश्वास के साथ कर रहे हो।
यद्यपि वे लोग तुम्हारे लिये अनजाने हैं! 6जो प्रेम तुमने
उन पर दर्शाया है, उन्होंने कलीसिया के सामने उसकी
साक्षी दी है। उनकी यात्रा को बनाये रखने के लिए
कृपया उनकी इस प्रकार सहायता करना जिसका समर्थन
परमेश्वर करे। 7क्योंकि वे मसीह की सेवा के लिये
यात्रा पर निकल पड़े हैं तथा उन्होंने विधर्मियों से कोई
सहायता नहीं ली हैं।

8इसलिये हम विश्वासियों को ऐसे लोगों की सहायता
करनी चाहिये ताकि हम भी सत्य के प्रति सहकर्मी
सिद्ध हो सकें।

9एक पत्र मैंने कलीसिया को भी लिखा था किन्तु
दियुत्रिफेस जो उनका नेता बनना चाहता है। 10वह जो
कुछ हम कहते हैं, उसे स्वीकार नहीं करेगा। इस कारण
यदि मैं आऊँगा तो बताऊँगा कि वह क्या कर रहा है।
वह झूठे तौर पर अपशब्दों के साथ मुझ पर दोष लगाता
है और इन बातों से ही वह संतुष्ट नहीं है। वह हमारे
बंधुओं के प्रति आदर सत्कार नहीं दिखाता है बल्कि
जो ऐसा करना चाहते हैं, उन्हें भी बाधा पहुँचाता हैं और
उन्हें कलीसिया से बाहर धकेल देता है।

11हे प्रिय मित्र, बदी का नहीं बल्कि नेकी का अनुकरण
करो! जो नेकी करता है, वह परमेश्वर का है! जो बदी
करता है, उसने परमेश्वर को नहीं देखा।

12दिमेत्रियुस के विषय में हर किसी ने साक्षी दी है।
यहाँ तक कि स्वयं सत्य ने भी। हमने भी उसके विषय
में साक्षी दी है। और तुम तो जानते ही हो कि हमारी
साक्षी सत्य है।

13तुझे लिखने के लिये मेरे पास बहुत सी बातें हैं
किन्तु मैं तुझे लेखनी और स्याही से वह सब कुछ नहीं
लिखना चाहता। 14बल्कि मुझे तो आशा है कि मैं तुझसे
जल्दी ही मिलूँगा। तब हम आमने–सामने बातें कर
सकेंगे। 15शांति तुम्हारे साथ रहे। तेरे सभी मित्रों का
तुझे नमस्कार पहुँचे। वहाँ हमारे सभी मित्रों को निजी
तौर पर नमस्कार कहना।

यहूदा

यीशु मसीह के सेवक और याकूब के भाई यहूदा की
ओर से तुम लोगों के नाम जो परमेश्वर के प्रिय तथा
यीशु मसीह के लिये सुरक्षित तथा परमेश्वर द्वारा बुलाये
गये हैं। 2तुम्हें दया, शांति और प्रेम बहुतायत से प्राप्त
होता रहे।

पापी दण्ड पायेंगे

3प्रिय मित्रो, यद्यपि मैं बहुत चाहता था कि तुम्हें उस
उद्धार के विषय में लिखूँ, जिसके हम भागीदार हैं। मैंने
तुम्हें लिखने की और तुम्हें प्रोत्साहित करने की
आवश्यकता अनुभव की ताकि तुम उस विश्वास के
लिये संघर्ष करते रहो जिसे परमेश्वर ने संत जनों को
सदा सदा के लिये दे दिया है। 4क्योंकि हमारे समूह में
कुछ लोग चोरी से आ घुसे हैं। इन लोगों के दण्ड के
विषय में शास्त्रों ने बहुत पहले ही भविष्यवाणी कर दी
थी। ये लोग परमेश्वर विहीन हैं। इन लोगों ने परमेश्वर
के अनुग्रह को भोग-विलास का एक बहाना बना डाला
है तथा ये हमारे प्रभु तथा एकमात्र स्वामी यीशु मसीह
को नहीं मानते। 5मैं तुम्हें स्मरण कराना चाहता हूँ
यद्यपि तुम तो इन सब बातों को जानते ही हो कि जिस
प्रभु ने पहले अपने लोगों को मिस्र की धरती से बचा
कर निकाल लिया था, बाद में जिन्होंने विश्वास को
नकार दिया, उन्हें किस प्रकार नष्ट कर दिया गया।
6मैं तुम्हें यह भी याद दिलाना चाहता हूँ कि जो दूत
अपनी प्रभुसत्ता को बनाये नहीं रख सके, बल्कि जिन्होंने
अपने निजी निवास को उस भीषण दिन के न्याय के
लिये अंधकार में जो सदा के लिये है बन्धनों में रखा है।

7इसी प्रकार मैं तुम्हें यह भी याद दिलाना चाहता हूँ
कि सदोम और अमोरा तथा आस-पास के नगरों ने
इन दूतों के समान ही यौन अनाचार किया तथा
अप्राकृतिक यौन सम्बन्धों के पीछे दौड़ते रहे। उन्हें
कभी नहीं बुझने वाली अग्नि में झोंक देने का दण्ड
दिया गया। वे हमारे लिये उदाहरण के रूप में स्थित हैं।

8ठीक इसी प्रकार हमारे समूह में घुस आने वाले ये
लोग अपने स्वप्नों के पीछे दौड़ते हुए अपने शरीरों को
विकृत कर रहे है। ये प्रभु के सामर्थ्य को उठा कर
ताक पर रख छोड़ते हैं तथा महिमावान स्वर्गदूतों के
विरोध में बोलते हैं।

9प्रमुख स्वर्गदूत मीकाईल जब शैतान के साथ विवाद
करते हुए मूसा के शव के बारे में बहस कर रहा था तो
वह उसके विरुद्ध अपमानजनक आक्षेपों के प्रयोग का
साहस नहीं कर सका। उसने मात्र इतना कहा, "प्रभु
तुझे डाँटे-फटकारे।"

10किन्तु ये लोग तो उन बातों की आलोचना करते
हैं, जिन्हें ये समझते ही नहीं और ये लोग

बुद्धिहीन पशुओं के समान जिन बातों से सहज रूप
से परिचित हैं, वे बातें वे ही हैं जिनसे उनका नाश होने
को है।

11उन लोगों के लिये यह बहुत बुरा है कि उन्होंने
कैन का सा वही मार्ग चुना। धन कमाने के लिये
उन्होंने अपने आपको वैसे ही गलती के हवाले कर
दिया जैसे बिलाम ने किया था। सो वे ही नष्ट हो
जायेंगे जैसे कोरह के विद्रोह में भाग लेने वाले नष्ट
कर दिये गये थे। 12ये लोग तुम्हारे प्रीतिभोजों में उन
छुपी हुई चट्टानों के समान हैं जो घातक हैं। ये लोग
निर्भयता के साथ तुम्हारे संग खाते-पीते हैं किन्तु उन्हें
केवल अपने स्वार्थ की ही चिंता रहती है। वे बिना
जल के बादल हैं। वे पतझड़ के ऐसे पेड़ हैं जिन पर
फल नहीं होता। वे दोहरे मरे हुए हैं। उन्हें उखाड़ा जा
चुका है।

13वे समुद्र की ऐसी भयानक लहरें हैं, जो अपने
लज्जापूर्ण कार्यों का झाग उगलती रहती हैं। वे
इधर-उधर भटकते ऐसे तारे हैं जिनके लिये अनन्त
गहन अंधकार सुनिश्चित कर दिया गया है।

14आदम से सातवीं पीढ़ी के हनोक ने भी इन
लोगों के लिये इन शब्दों में भविष्यवाणी की थी:
"देखो, वह प्रभु अपने हज़ारों-हज़ार स्वर्गदूतों के साथ
आया।

15सब लोगों का न्याय करने के लिए आ रहा है।
ताकि लोगों ने जो बुरे काम किये हैं, उन्हें उनके लिये
और उन्होंने जो परमेश्वर के विरुद्ध बुरे वचन बोले हैं,
उनके लिये दण्ड दे।"

16ये लोग चुगलखोर हैं और दोष ढूँढने वाले हैं। ये
अपनी इच्छाओं के दास हैं तथा अपने मुँह से अहंकारपूर्ण
बातें बोलते हैं। अपने लाभ के लिये ये दूसरों की चापलूसी
करते हैं।

जतन करते रहने के लिये चेतावनी

17किन्तु प्यारे मित्रो, उन शब्दों को याद रखो जो
हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेरितों द्वारा पहले ही कहे जा
चुके हैं। 18वे तुमसे कहा करते थे कि "अंत समय में
ऐसे लोग होंगे जो परमेश्वर से जो कुछ संबंधित होगा
उसकी हँसी उड़ाया करेंगे।" तथा वे अपवित्र इच्छाओं
के पीछे-पीछे चला करेंगे। 19ये लोग वे ही हैं जो फूट
डलवाते हैं।

20ये लोग अपनी प्राकृतिक इच्छाओं के दास हैं।
इनके आत्मा नहीं है। किन्तु प्रिय मित्रो तुम एक दूसरे
को आध्यात्मिक रूप से अपने अति पवित्र विश्वास में
सुदृढ़ करते रहो। पवित्र आत्मा के साथ प्रार्थना करो।
21हमारे प्रभु यीशु मसीह की करुणा की बाट जोहते हुए
जो तुम्हें अनन्त जीवन तक ले जायेगी परमेश्वर की
भक्ति में लीन रहो। 22जो डावाँडोल हैं उन पर दया
करो। 23दूसरों को आगे बढ़ कर आग में से निकाल
लो। किन्तु दया दिखाते समय सावधान रहो तथा उनके
उन वस्त्रों तक से घृणा करो जिन पर उनके पापपूर्ण
स्वभाव के धब्बे लगे हुए हैं।

परमेश्वर की स्तुति

24अब उसके प्रति जो तुम्हें गिरने से बचा सकता है
तथा उसकी महिमापूर्ण उपस्थिति में तुम्हें महान आनन्द
के साथ निर्दोष करके प्रस्तुत कर सकता है। 25हमारे
प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमारे उद्धारकर्त्ता उस एकमात्र
परमेश्वर की महिमा, वैभव, पराक्रम और अधिकार
सदा सदा से अब तक और युग-युगांतर तक बने रहें।
आमीन!

प्रकाशित वाक्य

1 यह यीशु मसीह का प्रकाशित वाका है जो उसे
परमेश्वर द्वारा इसलिये दिया गया था कि जो बातें
शीघ्र ही घटने वाली हैं, उन्हें अपने दासों को दर्शा दिया
जाये। अपना स्वर्गदूत भेज कर यीशु मसीह ने इसे अपने
सेवक यूहन्ना को संकेत द्वारा बताया। 2यूहन्ना ने जो
कुछ देखा था, उसके बारे में बताया। यह वह सत्य है
जिसे उसे यीशु मसीह ने बताया था। यह वह सन्देश है
जो परमेश्वर की ओर से है। 3वे धन्य हैं जो परमेश्वर
के इस दैवी सुसन्देश के शब्दों को सुनते हैं और जो बातें
इसमें लिखी हैं, उन पर चलते हैं। क्योंकि संकट की
घड़ी निकट है।

कलीसियाओं के नाम यूहन्ना का सन्देश

4-5यूहन्ना की ओर से एशिया प्रान्त* में स्थित सात
कलीसियाओं के नाम: उस परमेश्वर की ओर से जो
वर्तमान है, जो सदासदा से था और जो आनेवाला है, उन
सात आत्माओं की ओर से जो उसके सिंहासन के
सामने हैं एवम् उस यीशु मसीह की ओर से जो विश्वासपूर्ण
साक्षी, मरे हुओं में से पहला जी उठने वाला तथा धरती
के राजाओं का भी राजा है, तुम्हें अनुग्रह और शांति
प्राप्त हो। वह जो हमसे प्रेम करता है तथा जिसने अपने
लहू से हमारे पापों से हमें छुटकारा दिलाया है। 6उसने
हमें एक राज्य तथा अपने परम पिता परमेश्वर की
सेवा में याजक होने को रचा। उसकी महिमा और
सामर्थ्य सदा सर्वदा होती रहे। आमीन! 7देखो, मेघों के
साथ मसीह आ रहा है। हर एक आँख उसका दर्शन
करेगी। उनमें वे भी होंगे, जिन्होंने उसे बेघा था।* तथा
धरती के सभी लोग उसके कारण विलाप करेंगे। हाँ!
हाँ निश्चयपूर्वक ऐसा ही हो–आमीन! 8प्रभु परमेश्वर
वह जो है, जो था और जो आनेवाला है, जो सर्वशक्तिमान
है, यह कहता है, “मैं ही अलफा और ओमेगा हूँ।”*

एशिया प्रान्त एशिया माइनर का एक प्रान्त।

जिन्होंने उसे बेघा था देखें यूहन्ना 19:34

अलफा और ओमेगा हूँ मूल में 'मैं ही अलफा हूँ और मैं ही ओमेगा' ये यूनानी की बाहरखड़ी के पहले और अंतिम अक्षरों के नाम हैं। अर्थात् अल्फा यानि 'आदि' और ओमेगा यानी 'अंत', दोनों प्रभु परमेश्वर ही है।

9मैं यूहन्ना तुम्हारा भाई हूँ और यातनाओं, राज्य तथा
यीशु में, धैर्यपूर्ण सहनशीलता में तुम्हारा साक्षी हूँ।
परमेश्वर के वचन और यीशु की साक्षी के कारण
मुझे पत्तमुस* नाम के द्वीप में देश निकाला दे दिया गया
था। 10प्रभु के दिन मैं आत्मा के वशीभूत हो उठा और
मैंने अपने पीछे तुरही की सी एक तीव्र आवाज सुनी।
11वह कह रही थी, “जो कुछ तू देख रहा है, उसे एक
पुस्तक में लिखता जा और फिर उसे इफिसुस, स्मुरना,
पिरगमुन, थूआतीरा, सरदीस, फिलादेलफिया और
लौदीकिया की सातों कलीसियाओं को भेज दे।”
12फिर यह देखने को कि वह आवाज किसकी है जो
मुझसे बोल रही थी, मैं मुड़ा। और जब मैं मुड़ा तो मैंने
सोने के सात दीपाधार देखे। 13और उन दीपाधारों के
बीच मैंने एक व्यक्ति को देखा जो “मनुष्य के पुत्र” के
जैसा कोई पुरुष था। उसने अपने पैरों तक लम्बा चोगा
पहन रखा था। तथा उसकी छाती पर एक सुनहरी
पटका लिपटा हुआ था।
14उसका सिर तथा केश सफेद ऊन जैसे उजले थे।
तथा उसके नेत्र अग्नि की चमचमाती लपटों के समान
थे। 15उसके चरण भट्टी में अभी–अभी तपाये गये उत्तम
काँसे के समान चमक रहे थे। उसका स्वर अनेक
जलधाराओं के गर्जन के समान था। 16तथा उसने अपने
दाहिने हाथ में सात तारे लिये हुए थे। उसके मुख से
एक तेज दोधारी तलवार बाहर निकल रही थी। उसकी
छवि तीव्रतम दमकते सूर्य के समान उज्ज्वल थी।

17मैंने जब उसे देखा तो मैं उसके चरणों पर मरे हुए
के समान गिर पड़ा। फिर उसने मुझ पर अपना दाहिना
हाथ रखते हुए कहा, “डर मत, मैं ही प्रथम हूँ और मैं
ही अंतिम भी हूँ। 18और मैं ही वह हूँ, जो जीवित है। मैं
मर गया था, किन्तु देख अब मैं सदा–सर्वदा के लिये
जीवित हूँ। मेरे पास मृत्यु और अधोलोक* की कुंजियाँ
हैं। 19इसलिए जो कुछ तूने देखा है, जो कुछ घट रहा है,
और जो भविष्य में घटने जा रहा है, उसे लिखता जा।

पत्तमुस एइजियन सागर में एशिया माइनर (जो आजकल टर्की कहलाता है) के तट के निकट छोटा द्वीप।

अधोलोक मूल में हेइस अर्थात् वह लोग जहाँ मरने के बाद जाते है।

20ये जोसात तारे हैं जिन्हें तूने मेरे हाथ में देखा है और
ये जो सात दीपाधार हैं, इनका रहस्यपूर्ण अर्थ है: ये सात
तारे सात कलीसियाओं के दूत हैं तथा ये सात दीपाधार
सात कलीसियाएँ हैं।

इफिसुस की कलीसिया को मसीह का सन्देश

2 “इफिसुस की कलीसिया के स्वर्गदूत के नाम यह
लिख: “वह जो अपने दाहिने हाथ में सात तारों को
धारण करता है तथा जो सात दीपाधारों के बीच विचरण
करता है; इस प्रकार कहता है: 2मैं तेरे कर्मों कठोर
परिश्रम और धैर्यपूर्ण सहनशीलता को जानता हूँ तथा मैं
यह भी जानता हूँ कि तू बुरे लोगों को सहन नहीं कर
पाता है तथा तूने उन्हें परखा है जो कहते हैं कि वे
प्रेरित हैं किन्तु हैं नहीं। तूने उन्हें झूठा पाया है। 3मैं
जानता हूँ कि तुझ में धीरज है और मेरे नाम पर तूने
कठिनाइयाँ झेली हैं और तू थका नहीं है।
4“किन्तु मेरे पास तेरे विरोध में यह है: तूने वह प्रेम
त्याग दिया है जो आरम्भ में तुझ में था। 5सो याद कर
कि तू कहाँ से गिरा है, मनफिरा तथा उन कर्मों को
कर जिन्हें तू प्रारम्भ में किया करता था, नहीं तो, यदि
तूने मन न फिराया, तो मैं तेरे पास आऊँगा और तेरे
दीपाधार को उसके स्थान से हटा दूँगा। 6किन्तु यह बात
तेरे पक्ष में है कि तू नीकुलइयों* के कामों से घृणा
करता है, जिनसे मैं भी घृणा करता हूँ।
7“जिसके पास कान हैं, वह उसे सुनें जो आत्मा
कलीसियाओं से कह रहा है। “जो विजय पायेगा मैं उसे
परमेश्वर के उपवन में लगे जीवन के वृक्ष से फल
खाने का अधिकार दूँगा।”

स्मुरना की कलीसिया को मसीह का सन्देश

8“स्मुरना की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिख;
“वह जो प्रथम है और जो अन्तिम है, जो मर गया था
तथा जो पुनर्जीवित हो उठा है, इस प्रकार कहता है–9मैं
तुम्हारी यातना और तुम्हारी दीनता के विषय में जानता
हूँ। यद्यपि वास्तव में तुम धनवान हो! जो अपने आपको
यहूदी कह रहे हैं, उन्होंने तुम्हारी जो निन्दा की है, मैं
उसे भी जानता हूँ। यद्यपि वे यहूदी हैं नहीं। बल्कि वे तो
उपासकों का एक ऐसा जमघट है जो शैतान से सम्बन्धित
है। 10उन यातनाओं से तू बिल्कुल भी मत डर जो तुझे
झेलनी हैं। सुनो, शैतान तुम लोगों में से कुछ को बंदीगृह
में डाल कर तुम्हारी परीक्षा लेने जा रहा है। और तुम्हें
वहाँ दस दिन तक यातना भोगनी होगी। चाहे तुझे मर ही
जाना पड़े, पर सच्चा बने रहना मैं तुझे अनन्त जीवन
का विजय मुकुट प्रदान करूँगा।

11“जो सुन सकता है, वह सुन ले कि आत्मा
कलीसियाओं से क्या कह रहा है। जो विजयी होगा उसे
दूसरी मृत्यु से कोई हानि नहीं उठानी होगी।

पिरगमुन की कलीसिया को मसीह का सन्देश

12“पिरगमुन की कलीसिया के स्वर्गदूत यह लिख:
वह जो तेज दोधारी तलवार को धारण करता है, इस
प्रकार कहता है: 13मैं जानता हूँ तू कहाँ रह रहा है। तू
वहाँ रह रहा है जहाँ शैतान का सिंहासन है और मैं यह
भी जानता हूँ कि तू मेरे नाम को थामे हुए है तथा तूने
मेरे प्रति अपने विश्वास को कभी नहीं नकारा है।
तुम्हारे उस नगर में जहाँ शैतान का निवास है, मेरा
विश्वास पूर्ण साक्षी अन्तिपास मार दिया गया था।
14“कुछ भी हो, मेरे पास तेरे विरोध में कुछ बातें हैं।
तेरे यहाँ कुछ ऐसे लोग भी हैं जो बिलाम की सीख पर
चलते हैं। उसने बालाक को सिखाया था कि वह इस्राएल
के लोगों को मूर्तियों का चढ़ावा खाने और व्यभिचार
करने को प्रोत्साहित करे। 15इसी प्रकार तेरे यहाँ भी
कुछ ऐसे लोग हैं जो नीकुलइयों की सीख पर चलते हैं।
16इसलिये मन फिरा नहीं तो मैं जल्दी ही तेरे पास
आऊँगा और उनके विरोध में उस तलवार से युद्ध
करूँगा जो मेरे मुख से निकलती है।
17“जो सुन सकता है, वह सुने कि आत्मा कलीसियाओं
से क्या कह रहा है, “जो विजयी होगा, मैं उसे स्वर्ग में
छिपा मन्ना दूँगा। मैं उसे एक श्वेत पत्थर भी दूँगा जिस
पर एक नया नाम अंकित होगा। जिसे उसके सिवा और
कोई नहीं जानता जिसे वह दिया गया है।

थूआतीरा की कलीसिया को मसीह का सन्देश

18“थूआतीरा की कलीसिया के स्वर्गदूत के नाम:
“परमेश्वर का पुत्र, जिसके नेत्र धधकती आग के
समान हैं, तथा जिसके चरण शुद्ध काँसे के जैसे हैं, इस
प्रकार कहता है: 19मैं तेरे कर्मों, तेरे विश्वास, तेरी सेवा
तथा तेरी धैर्यपूर्ण सहनशक्ति को जानता हूँ। मैं जानता हूँ
कि अब तू जितना पहले किया करता था, उससे अधिक
कर रहा है। 20किन्तु मेरे पास तेरे विरोध में यह है: तू
इजेबेल नाम की उस स्त्री को सह रहा है जो अपने
आपको नबी कहती है। अपनी शिक्षा से वह मेरे सेवकों
को व्यभिचार के प्रति तथा मूर्तियों का चढ़ावा खाने को
प्रेरित करती है। 21मैंने उसे मन फिराने का अवसर
दिया है किन्तु वह परमेश्वर के प्रति व्यभिचार के लिये
मन फिराना नहीं चाहती। 22इसलिये अब मैं उसे पीड़ा
की शैया पर डालने ही वाला हूँ। तथा उन्हें भी जो
उसके साथ व्यभिचार में सम्मिलित हैं। ताकि वे उस
समय तक गहन पीड़ा का अनुभव करते रहें जब तक
वे उसके साथ किये अपने बुरे कर्मों के लिये मन न
फिराव। 23मैं महामारी से उसके बच्चों को मार डालूँगा

नीकुलइयों एशिया माइनर का एक धर्म समूह। यह झूठे विश्वासों और धारणाओं का अनुयायी था। इसका नामकरण किसी नीकुलइयो नाम के व्यक्ति पर किया गया होगा।

और सभी कलीसियाओं को यह पता चल जायेगा कि मैं
वही हूँ जो लोगों के मन और उनकी बुद्धि को जानता
है। मैं तुम सब लोगों को तुम्हारे कर्मो के अनुसार दूँगा।
24“अब मुझे थूआतीरा के उन शेष लोगों से कुछ
कहना है जो इस सीख पर नहीं चलते और जो शैतान
के तथा कथित गहन रहस्यों को नहीं जानते। मुझे तुम
पर कोई और बोझ नहीं डालना है। 25किन्तु जो तुम्हारे
पास है, उस पर मेरे आने तक चलते रहो।
26“जो विजय प्राप्त करेगा और जिन बातों का मैंने
आदेश दिया है, अंत तक उन पर टिका रहेगा, मैं उन्हें
जातियों पर अधिकार दूँगा।
27तथा ‘वह उन पर लोहे के डण्डे से शासन करेगा।
वह उन्हें माटी के भाँडों की तरह चूर चूर कर देगा।’

भजन संहिता 2:9

28यह वही अधिकार है जिसे मैंने अपने परमपिता से
पाया है। मैं भी उस व्यक्ति को भोर का तारा दूँगा।
29जिसके पास कान हैं, वह सुने कि आत्मा कलीसियाओं
से क्या कह रहा है।

सरदीस की कलीसिया के नाम मसीह का सन्देश

3 “सरदीस की कलीसिया के स्वर्गदूत को इस प्रकार
लिख–ऐसा वह कहता है जिसके पास परमेश्वर
की सात आत्माएँ तथा सात तारे हैं, “मैं तुम्हारे कर्मो
को जानता हूँ, लोगों का कहना है कि तुम जीवित हो
किन्तु वास्तव में तुम मरे हुए हो। 2सावधान रह! तथा
जो कुछ शेष है, इससे पहले कि वह पूरी तरह नष्ट हो
जाये, उसे सुदृढ़ बना क्योंकि अपने परमेश्वर की निगाह
में मैंने तेरे कर्मो को उत्तम नहीं पाया है। 3सो जिस
उपदेश को तूने सुना है और प्राप्त किया है, उसे याद
कर। उसी पर चल और मनफिराव कर। यदि तू जागा
नहीं तो अचानक चोर के समान मैं चला आऊँगा। मैं
तुझे कब अचरज में डाल दूँ, तुझे पता भी नहीं चल
पायेगा। 4कुछ भी हो सरदीस में तेरे पास कुछ ऐसे लोग
हैं जिन्होंने अपने को अशुद्ध नहीं किया है। वे श्वेत
वस्त्र धारण किये हुए मेरे साथ–साथ घूमेंगे क्योंकि वे
सुयोग्य हैं। 5जो विजयी होगा वह इसी प्रकार श्वेत वस्त्र
धारण करेगा। मैं जीवन की पुस्तक से उसका नाम
नहीं मिटाऊँगा, बल्कि मैं तो उसके नाम को अपने परम
पिता और उसके स्वर्गदूतों के सम्मुख मान्यता प्रदान
करूँगा।” 6जिसके पास कान हैं, वह सुन ले कि आत्मा
कलीसियाओं से क्या कह रहा है।

फिलादेलफिया की कलीसिया को मसीह का सन्देश

7“फिलादेलफिया की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह
लिख: “वह जो पवित्र और सत्य है तथा जिसके पास
दाऊद की कुंजी है जो ऐसा द्वार खोलता है जिसे कोई
बंद नहीं कर सकता, तथा जो ऐसा द्वार बंद करता है,
जिसे कोई खोल नहीं सकता; इस प्रकार कहता है। 8मैं
तुम्हारे कर्मों को जानता हूँ। देखो मैंने तुम्हारे सामने
एक द्वार खोल दिया है, जिसे कोई बंद नहीं कर सकता।
मैं जानता हूँ कि तेरी शक्ति थोड़ी सी है किन्तु तूने मेरे
उपदेशों का पालन किया है तथा मेरे नाम को नकारा
नहीं है। 9सुनो कुछ ऐसे हैं जो शैतान की मण्डली के हैं
तथा जो यहूदी न होते हुए भी अपने को यहूदी कहते हैं,
जो मात्र झूठे हैं, मैं उन्हें यहाँ आने को विवश करके
तेरे चरणों तले झुका दूँगा तथा मैं उन्हें विवश करूँगा
कि वे यह जानें की तुम मेरे प्रिय हो। 10क्योंकि तुमने
धैर्यपूर्वक सहनशीलता के मेरे आदेश का पालन किया
है। बदले में मैं भी उस परीक्षा की घड़ी से तुम्हारी रक्षा
करूँगा जो इस धरती पर रहने वालों को परखने के
लिये समूचे संसार पर बस आने ही वाली है।”
11“मैं बहुत जल्दी आ रहा हूँ। जो कुछ तुम्हारे पास है,
उस पर डटे रहो ताकि तुम्हारे विजय मुकुट को कोई
तुमसे न ले ले। 12जो विजयी होगा उसे मैं अपने परमेश्वर
के मन्दिर का स्तम्भ बनाऊँगा। फिर कभी वह इस
मन्दिर से बाहर नहीं जायेगा। तथा मैं अपने परमेश्वर
का और अपने परमेश्वर की नगरी का नये यरुशलेम
का नाम उस पर लिखूँगा, जो मेरे परमेश्वर की ओर से
स्वर्ग से नीचे उतरने वाली है। उस पर मैं अपना नया
नाम भी लिखूँगा।” 13जो सुन सकता है, वह सुन ले कि
आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रहा है?

लौदीकिया की कलीसिया को मसीह के सन्देश

14लौदीकिया की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिख:
जो आमीन* है, विश्वासपूर्ण है तथा सच्चा साक्षी है, जो
परमेश्वर की सृष्टि का शासक है, इस प्रकार कहता
है: 15‘मैं तेरे कर्मों को जानता हूँ और यह भी कि न तो
तू शीतल होता है और न गर्म। 16इसलिए क्योंकि तू
गुनगुना है न गर्म और न ही शीतल, मैं तुझे अपने मुख
से उगलने जा रहा हूँ। 17तू कहता है, मैं धनी हो गया हूँ
और मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है किन्तु
तुझे पता नहीं है कि तू अभागा है, दयनीय है, दीन है,
अंधा है और नंगा है। 18मैं तुझे सलाह देता हूँ कि तू
मुझसे आग में तपाया हुआ सोना मोल ले ले ताकि तू
सचमुच धनवान हो जाये। पहनने के लिए श्वेत वस्त्र
भी मोल ले ले ताकि तेरी लज्जापूर्ण नग्नता का तमाशा
न बने। अपने नेत्रों में आँजने के लिये तू अंजन भी ले
ले ताकि तू देख पाये।
19“उन सभी को जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ, मैं डाँटता हूँ
और अनुशासित करता हूँ। तो फिर कठिन जतन और

आमीन आमीन शब्द का अर्थ है उस परम सत्य के अनुरुप हो जाना। किन्तु यहाँ इसे यीशु के एक नाम के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

मनफिराव कर। 20सुन, मैं द्वार पर खड़ा हूँ और खटखटा रहा हूँ। यदि कोई मेरी आवाज़ सुनता है और द्वार खोलता है तो मैं उसके घर में प्रवेश करूँगा तथा उसके साथ बैठ कर खाना खाऊँगा और वह मेरे साथ बैठकर खाना खायेगा।

21“जो विजयी होगा मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठने का गौरव प्रदान करूँगा। ठीक वैसे ही जैसे मैं विजयी बनकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठा हूँ। 22जो सुन सकता है सुने, कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कह रहा है।”

स्वर्ग के दर्शन

4 इसके बाद मैंने दृष्टि उठाई और स्वर्ग का खुला द्वारमेरे सामने था। और वही आवाज़ जिसे मैंने पहले सुना था, तुरही के से स्वर में मुझसे कह रही थी, “यहीं ऊपर आ जा। मैं तुझे वह दिखाऊँगा जिसका भविष्य में होना निश्चित है।” 2फिर मैं तुरन्त ही आत्मा के वशीभूत हो उठा। मैंने देखा कि मेरे सामने स्वर्ग का सिंहासन था और उस पर कोई विराजमान था। 3जो वहाँ विराजमान था, उसकी आभा यशब और गोमेद के समान थी। उसके सिंहासन के चारों ओर एक इन्द्रधनुष था जो पन्ने जैसा दमक रहा था। 4उस सिंहासन के चारों ओर चौबीस सिंहासन और थे। जिन पर चौबीस प्राचीन बैठे हुए थे। उन्होंने श्वेत वस्त्र पहने थे। उनके सिर पर सोने के मुकुट थे। 5सिंहासन में से बिजली की चकाचौंध, घड़घड़ाहट तथा मेघों का गर्जन–तर्जन निकल रहे थे। सिंहासन के सामने ही लपलपाती हुई सात मशालें जल रही थीं। ये मशालें परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं। 6सिंहासन के सामने पारदर्शी काँच का स्फटिक सागर सा फैला था। सिंहासन के ठीक सामने तथा उसके दोनों ओर चार प्राणी थे। उनके आगे और पीछे आँखें ही आँखें थीं। 7पहला प्राणी सिंह के समान था, दूसरा प्राणी बैल के जैसा था, तीसरे प्राणी का मुख मनुष्य के जैसा था और चौथा प्राणी उड़ते हुए गरूड़ जैसा था। 8इन चारों ही प्राणियों के छह छह पंख थे। उनके चारों ओर तथा भीतर आँखें ही आँखें भरी पड़ीं थीं। दिन रात वे निरन्तर कहते रहते थे:

“सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर पवित्र है, पवित्र है, पवित्र है, जो था, जो है और जो आने वाला है।”

9जब ये सजीव प्राणी उस अजर अमर की महिमा, आदर और धन्यवाद कर रहे हैं जो सिंहासन पर विराजमान था तो 10वे चौबीसों प्राचीन* उसके चरणों में गिरकर, उस सदा सर्वदा जीवित रहने वाले की उपासना करते हैं। वे सिंहासन के सामने अपने मुकुट डाल देते हैं और कहते हैं:

11“हे हमारे प्रभु और हमारे परमेश्वर! तू ही महिमा, समादर और शक्ति पाने को सुयोग्य है। क्योंकि तूने ही अपनी इच्छा से सभी वस्तु सरजी हैं। तेरी ही इच्छा से उनका अस्तित्व है। और तेरी ही इच्छा से हुई है उनकी सृष्टि।”

5 फिर मैंने देखा कि जो सिंहासन पर विराजमान था, उसके दाहिने हाथ में एक लपेटा हुआ चर्मपत्र* अर्थात् एक ऐसी पुस्तक जिसे लिखकर लपेट दिया जाता था। जिस पर दोनों ओर लिखावट थी। तथा उसे सात मुहर लगाकर मुद्रित किया हुआ था। 2मैंने एक शक्तिशाली स्वर्गदूत की ओर देखा जो दृढ़ स्वर से घोषणा कर रहा था, “इस लपेटे हुए चर्मपत्र की मुहरों को तोड़ने और इसे खोलने में समर्थ कौन है?” 3किन्तु स्वर्ग में अथवा पृथ्वी पर या पाताल लोक में कोई भी ऐसा नहीं था जो उस लपेटे हुए चर्मपत्र को खोले और उसके भीतर झाँके। 4क्योंकि उस चर्मपत्र को खोलने की क्षमता रखने वाला या भीतर से उसे देखने की शक्ति वाला कोई भी नहीं मिल पाया था इसलिए मैं सुबक–सुबक कर रो पड़ा। 5फिर उन प्राचीनों में से एक ने मुझसे कहा, “रोना बंद कर। सुन, यहूदा के वंश का सिंह जो दाऊद का वंशज है विजयी हुआ है। वह इन सातों मुहरों को तोड़ने और इस लपेटे हुए चर्मपत्र को खोलने में समर्थ है।”

6फिर मैंने देखा कि उस सिंहासन तथा उन चार प्राणियों के सामने और उन पूर्वजों की उपस्थिति में एक मेमना खड़ा है। वह ऐसे दिख रहा था, मानो उसकी बलि चढ़ाई गयी हो। उसके सात सींग थे और सात आँखें थीं जो परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं। जिन्हें समूची धरती पर भेजा गया था। 7फिर वह आया और जो सिंहासन पर विराजमान था, उसके दाहिने हाथ से उसने वह लपेटा हुआ चर्मपत्र ले लिया। 8जब उसने वह लपेटा हुआ चर्मपत्र ले लिया तो उन चारों प्राणियों तथा चौबीसों प्राचीनों ने उस मेमने को दण्डवत प्रणाम किया। उनमें से हरेक के पास वीणा थी तथा वे सुगन्धित सामग्री से भरे सोने के धूपदान थामे थे; जो संत जनों की प्रार्थनाएँ हैं। 9वे एक नया गीत गा रहे थे:

“तू यह चर्मपत्र लेने को समर्थ है, और जो इस पर लगी मुहर खोलने को क्योंकि तेरा वध बलि के रूप कर दिया, और अपने लहू से तूने परमेश्वर के हेतु जनों को हर जाति से, हर भाषा से, सभी कुलों से, सब राष्टों, से मोल लिया। 10और तूने उनको रूप का राज्य दे दिया। और हमारे परमेश्वर के हेतु उन्हें याजक बनाया। वहीं धरा पर राज्य करेंगे।

चौबीस प्राचीन कदाचित इन चौबीस प्राचीन में बारह वे पुरुष हैं जो परमेश्वर के संत जनों के महान नेता थे। हो सकता है ये यहूदियों के बारह परिवार समूहों के नेता हो। तथा शेष बारह यीशु के प्रेरित हैं।

चर्मपत्र एक लम्बा लपेटा हुआ कागज अथवा चमड़ा जिसे प्राचीन युग में लिखने के काम में लाया जाता था।

11तभी मैंने देखा और अनेक स्वर्गदूतों की ध्वनियों
को सुना। वे उस सिंहासन, उन प्राणियों तथा प्राचीनों के
चारों ओर खड़े थे। स्वर्गदूतों की संख्या लाखों और
करोड़ों थी 12वे ऊँचे स्वर में कह रहे थे:

"वह मेमना जो मार डाला गया था, वह बल, धन, विवेक आदर महिमा और स्तुति प्राप्त करने योग्य है।"

13फिर मैंने सुना कि स्वर्ग की, धरती पर की पाताल
लोक की, समुद्र की, समूची सृष्टि—हाँ, उस समूचे ब्रह्माण्ड
का हर प्राणी कह रहा था:

"जो सिंहासन पर बैठा है और मेमना का स्तुति, आदर, महिमा और पराक्रम सदा सर्वदा रहें।"

14फिर उन चारों प्राणियों ने "आमीन" कहा और
प्राचीनों ने नत मस्तक होकर उपासना की।

6 मैंने देखा कि मेमने ने सात मुहरों में से एक को
खोला तभी उन चार प्राणियों में से एक को मैंने
मेघ गर्जना जैसे स्वर में कहते सुना "आ!" 2जब मैंने
दृष्टि उठाई तो पाया कि मेरे सामने एक सफेद घोड़ा था।
घोड़े का सवार धनुष लिये हुए था। उसे विजय, मुकुट
पहनाया गया और वह विजय पाने के लिये विजय प्राप्त
करता हुआ बाहर चला गया।

3जब मेमने ने दूसरी मुहर तोड़ी तो मैंने दूसरे प्राणी
को कहते सुना, "आ!" इस पर अग्नि के समान लाल
रंग का 4एक और घोड़ा बाहर आया। इस पर बैठे
सवार को धरती से शांति छीन लेने और लोगों से परस्पर हत्याएँ करवाने को उकसाने का अधिकार दिया गया था। उसे एक लम्बी तलवार दे दी गयी।

5मेमने ने जब तीसरी मुहर तोड़ी तो मैंने तीसरे प्राणी
को कहते सुना, "आ!" जब मैंने दृष्टि उठायी तो वहाँ
मेरे सामने एक काला घोड़ा खड़ा था। उस पर बैठे
सवार के हाथ में एक तराजू थी। 6तभी मैंने उन चारों
प्राणियों के बीच से एक शब्द सा आते सुना, जो कह रहा था, "एक दिन की मज़दूरी के बदले एक दिन के खाने का गेहूँ और एक दिन की मज़दूरी के बदले तीन दिन तक खाने का जौ। किन्तु जैतून के तेल और मदिरा को क्षति मत पहुँचा।"

7फिर मेमने ने जब चौथी मुहर खोली तो चौथे प्राणी
को मैंने कहते सुना, "आ!" 8फिर जब मैंने दृष्टि उठायी
तो मेरे सामने मरियल सा पीले हरे से रंग का एक घोड़ा उपस्थित था। उस पर बैठे सवार का नाम था 'मृत्यु' और उसके पीछे सटा हुआ चल रहा था प्रेत लोक। धरती के एक चौथाई भाग पर उन्हें यह अधिकार दिया गया कि युद्धों, अकालों, महामारियों तथा धरती के हिंसक पशुओं के द्वारा वे लोगों को मार डालें।

9फिर उस मेमने ने जब पाँचवी मुहर तोड़ी तो मैंने
वेदी के नीचे उन आत्माओं को देखा जिनकी परमेश्वर के वनच के प्रति आत्मा के तथा जिस साक्षी को उन्होंने दिया था, उसके कारण हत्याएँ कर दी गयीं थीं।
10ऊँचे स्वर में पुकारते हुए उन्होंने कहा, "हे पवित्र
एवम् सच्चे प्रभु। हमारी हत्याएँ करने के लिये धरती के लोगों का न्याय करने को और उन्हें दण्ड देने के लिये
तू कब तक प्रतीक्षा करता रहेगा? 11उनमें से हर एक
को सफेद चोगा प्रदान किया गया तथा उनसे कहा गया कि वे थोड़ी देर उस समय तक, प्रतीक्षा और करें जब तक कि उनके उन साथी सेवकों और बंधुओं की संख्या पूरी नहीं हो जाती जिनकी वैसे ही हत्या की जाने वाली है, जैसे तुम्हारी की गयी थी।

12फिर जब मेमने ने छठी मुहर तोड़ी तो मैंने देखा
कि वहाँ एक बड़ा भूचाल आया हुआ है। सूरज ऐसे काला पड़ गया है जैसे किसी शोक मनाते हुए व्यक्ति के वस्त्र होते हैं तथा पूरा चाँद, लहू के जैसा लाल हो गया
है। 13आकाश के तारे धरती पर ऐसे गिर गये थे जैसे
किसी तेज आँधी द्वारा झकझोरे जाने पर अंजीर के पेड़
से कच्ची अंजीर गिरती हैं। 14आकाश फट पड़ा था और
एक चर्मपत्र के समान सिकुड़ कर लिपट गया था। सभी पर्वत और द्वीप अपने-अपने स्थानों से डिग गये थे।

15संसार के सम्राट, शासक, सेनानायक, धनी
शक्तिशाली और सभी लोग तथा सभी स्वतन्त्र एवम दास लोगों ने पहाड़ों पर चट्टानों के बीच और गुफाओं में अपने आपको छिपा लिया था।

16वे पहाड़ों और चट्टानों से कह रहे थे, "हम पर
गिर पड़ो और वह जो सिंहासन पर विराजमान है तथा उस मेमने के क्रोध के सामने से हमें छिपा लो। 17उनके
क्रोध का भंयकर दिन आ पहुँचा है। ऐसा कौन है जो इसे झेल सकता है?"

इस्राएल के 1,44,000 लोग

7 इसके बाद धरती केचारों कोनों पर चार स्वर्गदूतों
को मैंने खड़े देखा। धरती की चारों हवाओं को उन्होंने पकड़ा हुआ था ताकि धरती पर, सागर पर अथवा वृक्षों पर उनमें से कोई सी भी हवा चल न पाये।
2फिर मैंने देखा कि एक और स्वर्गदूत है जो पूर्व दिशा
से आ रहा है। उसने सजीव परमेश्वर की मुहर ली हुई थी। तथा वह उन चारों स्वर्गदूतों से जिन्हें धरती और आकाश को नष्ट कर देने का अधिकार दिया गया था, ऊँचे स्वर में पुकार कर कह रहा था, 3"जब तक हम
अपने परमेश्वर के सेवकों के माथे पर मुहर नहीं लगा देते, तब तक तुम धरती, सागर और वृक्षों को हानि मत पहुँचाओ।"

4फिर जिन लोगों पर मुहर लगायी गयी थी, मैंने
उनकी संख्या सुनी। वे एक लाख चवालीस हजार थे। जिन पर मुहर लगायी गयी थी, इस्राएल के सभी परिवार समूहों से थे:

5 यहूदा के परिवार समूह के	12,000
रूबेन के परिवार समूह के	12,000
गाद परिवार समूह के	12,000
6 आशेर परिवार समूह के	12,000
नप्ताली परिवार समूह के	12,000
मनश्शे परिवार समूह के	12,000
7 शमौन परिवार समूह के	12,000
लेवी परिवार समूह के	12,000
इस्साकार परिवार समूह के	12,000
8 जबूलून परिवार समूह के	12,000
यूसुफ परिवार समूह के	12,000
बिन्यामीन परिवार समूह के	12,000

विशाल भीड़

9इसके बाद मैंने देखा कि मेरे सामने एक विशाल
भीड़ खड़ी थी जिसकी गिनती कोई नहीं कर सकता
था। इस भीड़ में हर जाति के हर वंश के, हर कुल के
तथा हर भाषा के लोग थे। वे उस सिंहासन और उस
मेमने के आगे खड़े थे। वे श्वेत वस्त्र पहने थे और
उन्होंने अपने हाथों में खजूर की टहनियाँ ली हुई थीं।
10वे पुकार रहे थे, "सिंहासन पर विराजमान हमारे
परमेश्वर की जय हो और मेमने की जय हो।" 11सभी
स्वर्गदूत सिंहासन प्राचीनों और उन चारों प्राणियों को
घेरे खड़े थे। सिंहासन के सामने दंडवत प्रणाम करके
इन स्वर्गदूतों ने परमेश्वर की उपासना की। 12उन्होंने
कहा, "आमीन!* हमारे परमेश्वर की स्तुति, महिमा,
विवेक, धन्यवाद, आदर, शक्ति और बल सदा सर्वदा
होते रहें। आमीन!" 13तभी उन प्राचीनों में से किसी ने
मुझसे प्रश्न किया, "ये श्वेत वस्त्रधारी लोग कौन हैं
तथा ये कहाँ से आये हैं?"

14मैंने उसे उत्तर दिया, "मेरे प्रभु तू तो जानता ही है।"

इस पर उसने मुझसे कहा, "ये वे लोग हैं जो कठोर
यातनाओं के बीच से होकर आ रहे हैं उन्होंने अपने
वस्त्रों को मेमने के लहू से धोकर स्वच्छ एवम् उजला
किया है। 15इसीलिये अब ये परमेश्वर के सिंहासन के
सामने खड़े तथा उसके मन्दिर में दिन रात उसकी
उपासना करते हैं। वह जो सिंहासन पर विराजमान है
उनमें निवास करते हुए उनकी रक्षा करेगा। 16न कभी
उन्हें भूख सताएगी और न ही वे फिर कभी प्यासे
रहेंगे। सूरज उनका कुछ नहीं बिगाड़ेगा और न ही
चिलचिलाती धूप कभी उन्हें तपायेगी। 17क्योंकि वह
मेमना जो सिंहासन के बीच में है उनकी देखभाल
करेगा। वह उन्हें जीवन देने वाले जल स्रोतों के पास ले
जायेगा और परमेश्वर उनकी आँखों के हर आँसू को
पोंछ देगा।"

आमीन जब कोई व्यक्ति आमीन कहता है तो इसका अर्थ होता है कि वह पूरी तरह उसके साथ सहमत है।

सातवीं मुहर

8 फिर मेमने ने जब सातवीं मुहर तोड़ी तो स्वर्ग में
कोई आधा घण्टे तक सन्नाटा छाया रहा। 2फिर
मैंने परमेश्वर के सामने खड़े होने वाले सात स्वर्गदूतों
को देखा। उन्हें सात तुरहियाँ प्रदान की गयीं थीं।

3फिर एक और स्वर्गदूत आया और वेदी पर खड़ा हो
गया। उसके पास सोने का एक धूपदान था। उसे संत
जनों की प्रार्थनाओं के साथ सोने की उस वेदी पर जो
सिंहासन के सामने थी, चढ़ाने के लिये बहुत सारी धूप
दी गयी। 4फिर स्वर्गदूत के हाथ से धूप का वह धुआँ
संत जनों की प्रार्थनाओं के साथ-साथ परमेश्वर के
सामने पहुँचा। 5इसके बाद स्वर्गदूत ने उस धूप दान को
उठाया, उसे वेदी की आग से भरा और उछाल कर
धरती पर फेंक दिया। इस पर मेघों का गर्जन-तर्जन,
भीषण शब्द, बिजली की चमकार और भूकम्प होने
लगे।

सात स्वर्गदूतों का उनकी तुरहियाँ बजाना

6फिर वे सात स्वर्गदूत, जिनके पास सात तुरहियाँ थी,
उन्हें फूँकने को तैयार हो गये।

7पहले स्वर्गदूत ने तुरही में जैसे ही फूँक मारी, वैसे ही
लहू ओले और अग्नि एक साथ मिले जुले दिखाई देने
लगे और उन्हें धरती पर नीचे उछाल कर फेंक दिया
गया। जिससे धरती का एक तिहाई भाग जल कर भस्म
हो गया। एक तिहाई पेड़ जल गये और समूची हरी घास
राख हो गयी।

8दूसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूँकी तो मानो अग्नि का
जलता हुआ एक विशाल पहाड़ सा समुद्र में फेंक दिया
गया हो। इससे एक तिहाई समुद्र रक्त में बदल गया।
9तथा समुद्र के एक तिहाई जीव जन्तु मर गये और एक
तिहाई जल पोत नष्ट हो गये।

10तीसरे स्वर्गदूत ने जब तुरही बजाई तो आकाश से
मशाल की तरह जलता हुआ एक विशाल तारा गिरा।
यह तारा एक तिहाई नदियों तथा झरनों के पानी पर जा
पड़ा। 11इस तारे का नाम था 'नागदौना'* सो समूचे जल
का एक तिहाई भाग नागदौना में ही बदल गया। तथा
उस जल के पीने से बहुत से लोग मारे गये। क्योंकि जल
कड़वा हो गया था। 12जब चौथे स्वर्गदूत ने तुरही बजायी
तो एक तिहाई सूर्य, और साथ में ही एक तिहाई चन्द्रमा
और एक तिहाई तारों पर विपत्ति आई। सो उनका एक
तिहाई काला पड़ गया। परिणामस्वरूप एक तिहाई दिन
तथा उसी प्रकार एक तिहाई रात अन्धेरे में डूब गये।

13फिर मैंने देखा कि एक गरुड़ ऊँचे आकाश में उड़
रहा है। मैंने उसे ऊँचे स्वर में कहते हुए सुना, "उन बचे

नागदौना मूल में अपसिन्तोस जो यूनानी भाषा का शब्द है और जिसका अंग्रेजी पर्याय है वर्मवुड जिसका अर्थ है एक बहुत कड़वा पौधा। इसलिए इसे गहन दुःख का प्रतीक माना जाता है।

हुए तीन स्वर्गदूतों की तुरहियों के उद्घोष के कारण जो
अपनी तुरहियाँ अभी बजाने ही वाले हैं, धरती के
निवासियों पर कष्ट हो! कष्ट हो! कष्ट हो!"

9 पाँचवे स्वर्गदूत ने जब अपनी तुरही फूँकी तब मैंने
आकाश से धरती पर गिरा हुआ एक तारा देखा।
इसे उस चिमनी की कुंजी दी गयी थी जो पाताल में
उतरती है। 2फिर उस तारे ने उस चिमनी का ताला
खोल दिया जो पाताल में उतरती थी और चिमनी से वैसे
ही धुआँ फूट पड़ा जैसे वह एक बड़ी भट्टी से निकलता
है। सो चिमनी से निकले धुआँ से सूर्य और आकाश
काले पड़ गये। 3तभी उस धुआँ से धरती पर टिड्डी दल
उतर आया। उन्हें धरती के बिच्छुओं के जैसी शक्ति दी
गयी थी। 4किन्तु उनसे कह दिया गया था कि वे न तो
धरती की घास को कोई हानि पहुँचायें और न ही हरे
पौधों या पेड़ों को। उन्हें तो बस उन लोगों को ही हानि
पहुँचानी थी जिनके माथों पर परमेश्वर की मुहर नहीं
लगी हुई थी। 5टिड्डी दल को निर्देश दे दिया गया था
कि वे लोगों के प्राण न लें बल्कि पाँच महीने तक उन्हें
पीड़ा पहुँचाते रहें। वह पीड़ा जो उन्हें पहुँचाई जा रही थी,
वैसी थी जैसी किसी व्यक्ति को बिच्छू के काटने से होती
है। 6उन पाँच महीनों के भीतर लोग मौत को ढूँढते
फिरेंगे किन्तु मौत उन्हें मिल नहीं पायेगी। वे मरने के
लिये तरसेंगे किन्तु मौत उन्हें चकमा देकर निकल
जायेगी।

7और अब देखो कि वे टिड्डी युद्ध के लिये तैयार
किये गये घोड़ों जैसी दिख रहीं थीं। उनके सिरों पर
सुनहरी मुकुट से बँधे थे। उनके मुख मानव मुखों के
समान थे। 8उनके बाल स्त्रियों के केशों के समान थे
तथा उनके दाँत सिंहों के दाँतों के समान थे। 9उनके
सीने ऐसे थे जैसे लोहे के कवच हों। उनके पंखों की
ध्वनि युद्ध में जाते हुए असंख्य अश्व रथों से पैदा हुए
शब्द के समान थी। 10उनकी पूँछों के बाल ऐसे थे जैसे
बिच्छू के डंक हों। तथा उनमें लोगों को पाँच महीने
तक क्षति पहुँचाने की शक्ति थी। 11पाताल के अधिकारी
दूत को उन्होंने अपने राजा के रूप में लिया हुआ था।
इब्रानी भाषा में उसका नाम है 'अबद्दोन'* और यूनानी
भाषा में वह 'अपुल्लयोन' (अर्थात् विनाश करनेवाला)
कहलाता है।

12पहली महान विपत्ति तो बीत चुकी है किन्तु इसके
बाद अभी दो बड़ी विपत्तियाँ और आने वाली हैं।

13फिर छठे स्वर्गदूत ने जैसे ही अपनी तुरही फूँकी,
वैसे ही मैंने परमेश्वर के सामने एक सुनहरी वेदी देखी,
उसके चार सींगों से आती हुई एक ध्वनि सुनी।

14तुरही लिये हुए उस छठे स्वर्गदूत से उस आवाज ने
कहा, "उन चार स्वर्गदूतों को मुक्त कर दो जो फरात
महानदी के पास बँधे पड़े हैं।"

15सो चारों स्वर्गदूत मुक्त कर दिये गये। वे उसी घड़ी,
उसी दिन, उसी महीने और उसी वर्ष के लिये तैयार
रखे गये थे ताकि वे एक तिहाई मानव जाति को मार
डालें। 16उनकी पूरी संख्या कितनी थी, यह मैंने सुना।
घुड़सवार सैनिकों की संख्या बीस करोड़ थी।

17उस मेरे दिव्य दर्शन में वे घोड़े और उनके सवार
मुझे इस प्रकार दिखाई दिये: उन्होंने कवच धारण किये
हुए थे जो धधकती आग जैसे लाल, गहरे नीले और
गंधक जैसे पीले थे। 18इन तीन महाविनाशों से यानी
उनके मुखों से निकल रही अग्नि, धुआँ और गंधक से
एक तिहाई मानव जाति को मार डाला गया। 19इन घोड़ों
की शक्ति उनके मुख और उनकी पूँछों में निहित थी
क्योंकि उनकी पूँछों सिरदार साँपों के समान थी
जिनका प्रयोग वे मनुष्यों को हानि पहुँचाने के लिये
करते थे।

20इस पर भी बाकी के ऐसे लोगों ने जो इन महा
विनाशों से भी नहीं मारे जा सके थे उन्होंने अपने हाथों
से किये कामों के लिए अब भी मन न फिराया तथा
भूत-प्रेतों की अथवा सोने, चाँदी, काँसे, पत्थर और
लकड़ी की उन मूर्तियों की उपासना नहीं छोड़ी, जो न
देख सकती हैं, न सुन सकती हैं और न ही चल सकती
हैं। 21उन्होंने अपने द्वारा की गयी हत्याओं, जादू टोनों,
व्यभिचारों अथवा चोरी-चकारी करने से मन न फिराया।

स्वर्गदूत और छोटी पोथी

10 फिर मैंने आकाश से नीचे उतरते हुए एक
और बलवान स्वर्गदूत को देखा। उसने बादल
को ओढ़ा हुआ था तथा उसके सिर के आसपास एक
मेघ धनुष था। उसका मुखमण्डल सूर्य के समान तथा
उसकी टाँगें अग्नि स्तम्भों के जैसी थीं। 2अपने हाथ में
उसने एक छोटी सी खुली पोथी ली हुई थी। उसने
अपना दाहिना चरण सागर में और बायाँ चरण धरती
पर रखा। फिर वह सिंह के समान दहाड़ता हुआ ऊँचे
स्वर में चिल्लाया। उसके चिल्लाने पर सातों गर्जन
तर्जन के शब्द सुनाई देने लगे। 4जब सातों गर्जन हो चुके
और मैं लिखने को ही था, तभी मैंने एक आकाशवाणी
सुनी, "सातों गर्जनों ने जो कुछ कहा है, उसे छिपा ले
तथा उसे लिख मत।"

5फिर उस स्वर्गदूत ने जिसे मैंने समुद्र में और धरती
पर खड़े देखा था, आकाश में ऊपर दाहिना हाथ उठाया।
6और जो नित्य रूप से सजीव है, जिसने आकाश को
तथा आकाश की सब वस्तुओं को, धरती एवम् धरती
पर की तथा सागर और जो कुछ उसमें है, उन सब की
रचना की है, उसकी शपथ लेकर कहा, "अब और
अधिक देर नहीं होगी। 7किन्तु जब सातवें स्वर्गदूत को
सुनने का समय आयेगा अर्थात् जब वह अपनी तुरही
बजाने को होगा तभी परमेश्वर की वह गुप्त योजना

अबद्दोन अर्थात् विनाश का स्थान।

पूरी हो जायेगी जिसे उसने अपने सेवक नबियों को बता दिया था।"

8उस आकाशवाणी ने, जिसे मैंने सुना था, मुझसे फिर कहा, "जा और उस स्वर्गदूत से जो सागर में और धरती पर खड़ा है, उसके हाथ से उस खुली पोथी को ले ले।"

9इसलिए मैं उस स्वर्गदूत के पास गया और मैंने उससे कहा कि वह उस छोटी पोथी को मुझे दे दे। उसने मुझसे कहा, "यह ले और इसे खा जा। इससे तेरा पेट कड़वा हो जायेगा किन्तु तेरे मुँह में यह शहद से भी ज्यादा मीठी बन जायेगी।" 10फिर उस स्वर्गदूत के हाथ से मैंने वह छोटी सी पोथी ले ली और मैंने उसे खा लिया। मेरे मुख में यह शहद सी मीठी लगी किन्तु मैं जब उसे खा चुका तो मेरा पेट कड़वा हो गया। 11इस पर वह मुझसे बोला, "तुझे बहुत से लोगों राष्ट्रों, भाषाओं और राजाओं के विषय में फिर भविष्यवाणी करनी होगी।"

दो साक्षी

11 इसके पश्चात् नापन के लिये एक सरकंडा मुझे दिया गया जो नापने की छड़ी जैसा दिख रहा था। मुझसे कहा गया, "उठ और परमेश्वर के मन्दिर तथा वेदी को नाप और जो लोग मन्दिर के भीतर उपासना कर रहे हैं, उनकी गिनती कर। 2किन्तु मन्दिर के बाहरी आँगन को रहने दे, उसे मत नाप क्योंकि यह अधर्मियों को दे दिया गया है। वे बयालीस महीने तक पवित्र नगर को अपने पैरों तले रौंदेंगे। 3मैं अपने दो गवाहों को खुली छूट दे दूँगा और वो एक हजार दो सौ साठ दिनों तक भविष्यवाणी करेंगे। वे ऊन के ऐसे वस्त्र धारण किये हुए होंगे जिन्हें शोक प्रदर्शित करने के लिये पहना जाता है।" 4ये दो साक्षियाँ वे दो जैतून के पेड़ तथा वे दो दीपदान हैं जो धरती के प्रभु के सामने स्थित रहते हैं। 5यदि कोई भी उन्हें हानि पहुँचाना चाहता है तो उनके मुखों से ज्वाला फूट पड़ती है और उनके शत्रुओं को निगल जाती है। सो यदि कोई उन्हें हानि पहुँचाना चाहता है तो निश्चित रूप से उसकी इस प्रकार मृत्यु हो जाती है। 6वे आकाश को बाँध देने की शक्ति रखते हैं ताकि जब वे भविष्यवाणी कर रहे हों, तब कोई वर्षा न होने पाये। उन्हें झरनों के जल पर भी अधिकार था जिससे वे उसे लहू में बदल सकते थे। उनमें ऐसी शक्ति भी थी कि वे जितनी बार चाहते, उतनी ही बार धरती पर हर प्रकार के विनाशों का आघात कर सकते थे।

7उनके साक्षी दे चुकने के बाद, वह पशु उस महागर्त से बाहर निकलेगा और उन पर आक्रमण करेगा। वह उन्हें हरा देगा और मार डालेगा। 8उनकी लाशें उस महानगर की गलियों में पड़ी रहेंगी। (यह नगर प्रतीक रूप से सदोम तथा मिस्र कहलाता है।) यहीं उनके प्रभु को भी क्रूस पर चढ़ा कर मारा गया था। 9सभी जातियों, उपजातियों, भाषाओं और देशों के लोग उनके शवों को साढ़े तीन दिन तक देखते रहेंगे तथा वे उनके शवों को कब्रों में नहीं रखने देंगे।

10धरती के वासी उन पर आनन्द मनायेंगे। वे उत्सव करेंगे तथा परस्पर उपहार भेजेंगे। क्योंकि इन दोनों नबियों ने धरती के निवासियों को बहुत दुःख पहुँचाया था।

11किन्तु साढ़े तीन दिन बाद परमेश्वर की ओर से उनमें जीवन के श्वास ने प्रवेश किया और वे अपने पैरों पर खड़े हो गये। जिन्होंने उन्हें देखा, वे बहुत डर गये थे। 12फिर उन दोनों नबियों ने ऊँचे स्वर में आकाशवाणी को उनसे कहते हुए सुना, "यहाँ ऊपर आ जाओ।" इसलिए वे आकाश के भीतर बादल में ऊपर चले गये। उन्हें ऊपर जाते हुए उनके विरोधियों ने देखा।

13ठीक उसी क्षण वहाँ एक भारी भूचाल आया और नगर का दसवाँ भाग ढह गया। भूचाल में सात हज़ार लोग मारे गये तथा जो लोग बचे थे, वे भयभीत हो उठे और वे स्वर्ग के परमेश्वर की महिमा का बखान करने लगे।

14इस प्रकार अब दूसरी विपत्ति बीत गयी है किन्तु सावधान! तीसरी महाविपत्ति शीघ्र ही आने वाली है।

सातवीं तुरही

15सातवें स्वर्गदूत ने जब अपनी तुरही फूँकी तो आकाश में तेज आवाजें होने लगीं। वे कह रही थीं:

"अब जगत का राज्य हमारे प्रभु का है, और उसके मसीह का हो गया। अब वह सुशासन युगयुगों तक करेगा।"

16और तभी परमेश्वर के सामने अपने-अपने सिंहासनों पर विराजमान चौबीसों प्राचीनों ने दण्डवत प्रणाम करके परमेश्वर की उपासना की। 17वे बोले:

"हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, जो है, जो था, हम तेरा धन्यवाद करते हैं। तू ने ही अपनी महाशक्ति को लेकर सबके शासन का आरम्भ किया था।

18अन्य जातियाँ क्रोध में भरी थीं किन्तु अब तेरा कोप प्रकटे समय और न्याय का समय आ गया। उन सब ही के जो प्राण थे बिसारे। और समय आ गया कि तेरे सेवक प्रतिफल पावें सभी नबी जन, तेरे सब जन और सभी जो तुझको आदर देते। और सभी जो छोटे जन हैं और सभी जो बड़े बने हैं अपना प्रतिफल पावें। उन्हें मिटाने का समय आ गया, धरती को जो मिटा रहे हैं।"

19फिर स्वर्ग में स्थित परमेश्वर के मन्दिर को खोला गया तथा वहाँ मन्दिर में वाचा की वह पेटी दिखाई दी। फिर बिजली की चकाचौंध होने लगी। मेघों का गर्जन-

तर्जन और घड़घड़ाहट के शब्द भूकम्प और भयानक
ओले बरसने लगे।

स्त्री और विशालकाय अजगर

12 इसके पश्चात् आकाश में एक बड़ा सा संकेत
प्रकट हुआ: एक महिला दिखायी दी जिसने
सूरज को धारण किया हुआ था और चन्द्रमा उसके
पैरों तले था। उसके माथे पर मुकुट था जिसमें बारह
तारे जड़े थे। 2वह गर्भवती थी। और क्योंकि प्रसव होने
ही वाला था इसलिए प्रजनन की पीड़ा से वह कराह रही
थी। 3स्वर्ग में एक और संकेत प्रकट हुआ। मेरे सामने
ही एक लाल रंग का विशालकाय अजगर खड़ा था।
उसके सातों सिरों पर सात मुकुट थे। 4उसकी पूँछ ने
आकाश के तारों के एक तिहाई भाग को सपाटा मार
कर धरती पर नीचे फेंक दिया। वह स्त्री जो बच्चे को
जन्म देने ही वाली थी, वह अजगर उसके सामने खड़ा
हो गया ताकि वह जैसे ही उस बच्चे को जन्म दे, वह
उसके बच्चे को निगल जाये। 5फिर उस स्त्री ने एक
बच्चे को जन्म दिया जो एक लड़का था। उसे सभी
जातियों पर लौह दण्ड के साथ शासन करना था। किन्तु
उस बच्चे को उठाकर परमेश्वर और उसके सिंहासन
के सामने ले जाया गया। 6और वह स्त्री निर्जन वन में
भाग गयी। एक ऐसा स्थान जो परमेश्वर ने उसी के
लिये तैयार किया था ताकि वहाँ उसे एक हजार दो सौ
साठ दिन तक जीवित रखा जा सके।

7फिर स्वर्ग में एक युद्ध भड़क उठा। मीकाईल और
उसके दूतों का उस विशालकाय अजगर से संग्राम
हुआ। उस विशालकाय अजगर ने भी उसके दूतों के
साथ लड़ाई लड़ी। 8किन्तु वह उन पर भारी नहीं पड़
सका, सो स्वर्ग में उनका स्थान उनके हाथ से निकल
गया। 9और उस विशालकाय अजगर को नीचे धकेल
दिया गया। यह वही पुराना महानाग है जिसे दानव
अथवा शैतान कहा गया है। यह समूचे संसार को छलता
रहता है। हाँ, इसे धरती पर धकेल दिया गया था।

10फिर मैंने ऊँचे स्वर में एक आकाशवाणी को
कहते सुना: "यह हमारे परमेश्वर के विजय की घड़ी
है। उसने अपनी शक्ति और संप्रभुता का बोध करा
दिया है। उसके मसीह ने अपनी शक्ति को प्रकट कर
दिया है क्योंकि हमारे बन्धुओं पर परमेश्वर के सामने
दिन-रात लांछन लगाने वाले को नीचे धकेल दिया गया
है। 11उन्होंने मेमने के बलिदान के रक्त और उनके
द्वारा दी गयी साक्षी से उसे हरा दिया है। उन्होंने अपने
प्राणों का परित्याग करने तक अपने जीवन की परवाह
नहीं की। 12इसलिए हे स्वर्गो, और स्वर्गो के निवासियो,
आनन्द मनाओ। किन्तु हाय, धरती और सागर, तुम्हारे
लिए कितना बुरा होगा क्योंकि शैतान अब तुम पर
उतर आया है। वह क्रोध से आग बबूला हो रहा है।
क्योंकि वह जानता है कि अब उसका बहुत थोड़ा समय
शेष है।"

13जब उस विशाल काय अजगर ने देखा कि उसे
धरती पर नीचे धकेल दिया गया है तो उसने उस स्त्री
का पीछा करना शुरू कर दिया जिसने पुत्र जना था।
14किन्तु उस स्त्री को एक बड़े उकाब के दो पंख दिये
प्रदान किये गये ताकि वह उस वन प्रदेश को उड़ जाये,
जो उसके लिये तैयार किया गया था। साढ़े तीन साल
तक वहीं उस विशाल काय अजगर से दूर उसका
भरण-पोषण किया जाना था। 15तब उस महानाग ने
उस स्त्री के पीछे अपने मुख से नदी के समान जल
धारा प्रवाहित की ताकि वह उसमें बह कर डूब जाये।
16किन्तु धरती ने अपना मुख खोल कर उस स्त्री की
सहायता की और उस विशालकाय अजगर ने अपने
मुख से जो नदी निकाली थी, उसे निगल लिया।

17इसके बाद तो वह विशालकाय अजगर उस स्त्री
पर बहुत क्रोधित हो उठा और उसके उन वंशजों के
साथ जो परमेश्वर के आदेशों का पालन करते हैं और
यीशु की साक्षी को धारण करते हैं, युद्ध करने को
निकल पड़ा। 18तथा सागर के किनारे जा खड़ा हुआ।

दो पशु

13 फिर मैंने सागर में से एक पशु को बाहर आते
देखा। उसके दस सींग थे और सात सिर थे।
तथा अपने सीगों पर उसने दस राजसी मुकुट पहने हुए
थे। उसके सिरों पर दुष्ट नाम अंकित थे।

2मैंने जो पशु देखा था, वह चीते जैसा था। उसके पैर
भालू के पैर जैसे थे और उसका मुख सिंह के मुख के
समान था। उस विशालकाय अजगर ने अपनी शक्ति,
अपना सिंहासन और अपना प्रचुर अधिकार उसे सौंप
दिया। 3मैंने देखा कि उसका एक सिर ऐसा दिखाई दे
रहा था जैसे उस पर कोई घातक घाव लगा हो किन्तु
उसका वह घातक घाव भर चुका था। समूचा संसार
आश्चर्य चकित होकर उस पशु के पीछे हो लिया।
4तथा वे उस विशालकाय अजगर को पूजने लगे। क्योंकि
उसने अपना समूचा अधिकार उस पशु को दे दिया था।
वे उस पशु की भी उपासना करते हुए कहने लगे, "इस
पशु के समान कौन है? और ऐसा कौन है जो उससे
लड़ सके?"

5उसे अनुमति दे दी गयी कि वह अहंकारपूर्ण तथा
निन्दा से भरे शब्द बोलने में अपने मुख का प्रयोग करे।
उसे बयालीस महीने तक अपनी शक्ति के प्रयोग का
अधिकार दिया गया। 6सो उसने परमेश्वर की निन्दा
करना आरम्भ कर दिया। वह परमेश्वर के नाम और
उसके मन्दिर तथा जो स्वर्ग में रहते हैं, उनकी निन्दा
करने लगा। 7परमेश्वर के संत जनों के साथ युद्ध
करने और उन्हें हराने की अनुमति उसे दे दी गयी।

तथा हर वंश, हर जाति, हर परिवार समूह हर भाषा
और हर देश पर उसे अधिकार दिया गया। 8धरती के
वे सभी निवासी उस पशु की उपासना करेंगे जिनके
नाम उस मेमने की जीवन-पुस्तक में संसार के आरम्भ
से ही नहीं लिखे जिसका बलिदान किया जाना सुनिश्चित
है। 9यदि किसी के कान हैं तो वह सुने:

10बंदीगृह में बंदी होना, जिसकी नियति बनी है वह
निश्चय ही बंदी होगा। यदि कोई असि से मारेगा तो
वह भी उस ही असि से मारा जायेगा।

इसी में तो परमेश्वर के संत जनों से धैर्यपूर्ण सहनशीलता
और विश्वास की अपेक्षा है।

11इसके पश्चात् मैंने धरती से निकलते हुए एक और
पशु को देखा। उसके मेमने के सींगों जैसे दो सींग थे।
किन्तु वह एक महानाग के समान बोलता था। 12उस
विशालकाय अजगर के सामने वह पहले पशु के सभी
अधिकारों का उपयोग करता था। उसने धरती और
धरती पर सभी रहने वालों से उस पहले पशु की
उपासना करवाई जिसका घातक घाव भर चुका था।
13दूसरे पशु ने बड़े-बड़े चमत्कार किये। यहाँ तक कि
सभी लोगों के सामने उसने धरती पर आकाश से आग
बरसवा दी। 14वह धरती के निवासियों को छलता चला
गया क्योंकि उसके पास पहले पशु की उपस्थिति में
चमत्कार दिखाने की शक्ति थी। दूसरे पशु ने धरती के
निवासियों से उस पहले पशु को आदर देने के लिये
जिस पर तलवार का घाव लगा था और जो ठीक हो
गया था, उसकी मूर्ति बनाने को कहा। 15दूसरे पशु को
यह शक्ति दी गयी कि वह पहले पशु की मूर्ति में प्राण
प्रतिष्ठा करे ताकि पहले पशु की वह मूर्ति न केवल
बोल सके बल्कि उन सभी को मार डालने का आदेश
भी दे सके जो इस मूर्ति की उपासना नहीं करते।
16-17दूसरे पशु ने छोटों-बड़ों, धनियों-निर्धनों, स्वतन्त्रों
और दासों-सभी को विवश किया कि वे अपने-अपने
दाहिने हाथों या माथों पर उस पशु के नाम या उसके
नामों से सम्बन्धित संख्या की छाप लगवायें ताकि उस
छाप को धारण किये बिना कोई भी ले बेच न कर
सके। 18जिसमें बुद्धि हो, वह उस पशु के अंक का
हिसाब लगा ले क्योंकि वह अंक किसी व्यक्ति के नाम
से सम्बन्धित है। उसका अंक है छ: सौ छियासठ।

मुक्त जनों का गीत

14 फिर मैंने देखा कि मेरे सामने सिय्योन पर्वत
पर मेमना खड़ा है। उसके साथ ही एक लाख
चवालीस हजार वे लोग भी खड़े थे जिनके माथों पर
उसका और उसके पिता का नाम अंकित था। 2फिर
मैंने एक आकाशवाणी सुनी, उसका महा नाद एक
विशाल जल प्रपात के समान था या घनघोर मेघ गर्जन
के जैसा था। जो महानाद मैंने सुना था, वह अनेक वीणा
वादकों द्वारा एक साथ बजायी गयी वीणाओं से उत्पन्न
संगीत के समान था।

3वे लोग सिंहासन, चारों प्राणियों तथा प्राचीनों के
सामने एक नया गीत गा रहे थे। जिन एक लाख चवालीस
हजार लोगों को धरती पर फिरौती देकर बन्धन से छुड़ा
लिया गया था उन्हें छोड़ अन्य कोई भी व्यक्ति उस गीत
को नहीं सीख सकता था। 4वे ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने
किसी स्त्री के संसर्ग से अपने आपको दूषित नहीं किया
था। क्योंकि वे कुंवारे थे जहाँ कहीं मेमना जाता, वे
उसका अनुसरण करते। सारी मानव जाति से उन्हें
फिरौती देकर बन्धन से छुड़ा लिया गया था। वे परमेश्वर
और मेमने के लिये फसल के पहले फल थे। 5उन्होंने
कभी झूठ नहीं बोला था, वे निर्दोष थे।

तीन स्वर्गदूत

6फिर मैंने आकाश में ऊँची उड़ान भरते एक और
स्वर्गदूत को देखा। उसके पास धरती के निवासियों,
प्रत्येक देश, जाति, भाषा और कुल के लोगों के लिये
सुसमाचार का एक अनन्त सन्देश था। 7ऊँचे स्वर में
वह बोला, "परमेश्वर से डरो और उसकी स्तुति करो।
क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ गया है।
उसकी उपासना करो, जिसने आकाश पृथ्वी, सागर
और जल-स्रोतों की रचना की है।"

8इसके पश्चात् उसके पीछे एक और स्वर्गदूत आया
और बोला, "उसका पतन हो चुका है, महान नगरी
बाबुल का पतन हो चुका है। उसने सभी जातियों को
अपने व्यभिचार से उत्पन्न क्रोध की वासनामय मदिरा
पिलायी थी।"

9उन दोनों के पश्चात् फिर एक और स्वर्गदूत आया
और ऊँचे स्वर में बोला, "यदि कोई उस पशु और
उसकी मूर्ति की उपासना करता है और अपने हाथ या
माथे पर उसका छाप धारण करता है, 10तो वह
परमेश्वर के प्रकोप की मदिरा पीयेगा। ऐसी अमिश्रित
तीखी मदिरा जो परमेश्वर के प्रकोप के कटोरे में
तैयार की गयी है। उस व्यक्ति को पवित्र स्वर्गदूतों और
मेमने से सामने धधकती हुई गंधक में यातनाएँ दी
जायेंगी। 11युग-युगान्तर तक उनकी यातनाओं से धूआँ
उठता रहेगा। और जिस किसी पर भी पशु के नाम की
छाप अंकित होगी और जो उसकी और उसकी मूर्ति
की उपासना करता होगा, उन्हें रात-दिन कभी चैन
नहीं मिलेगा।" 12इसी स्थान पर परमेश्वर के उन संत
जनों की धैर्यपूर्ण सहनशीलता की अपेक्षा है जो परमेश्वर
की आज्ञाओं और यीशु में अपने विश्वास का पालन
करती है।

13फिर एक आकाशवाणी को मैंने यह कहते सुना,
"इसे लिख अब से आगे वे ही लोग धन्य होंगे जो प्रभु में
स्थित हो कर मरे हैं।"

आत्मा कहता है, "हाँ, यही ठीक है। उन्हें अपने
परिश्रम से अब विश्राम मिलेगा क्योंकि उनके कर्म,
उनके साथ हैं।"

धरती की फसल की कटनी

14फिर मैंने देखा कि मेरे सामने वहाँ एक सफेद
बादल था। और उस बादल पर एक व्यक्ति बैठा था जो
मनुष्य के पुत्र* जैसा दिख रहा था। उसने सिर पर एक
स्वर्ण मुकुट धारण किया हुआ था और उसके हाथ में
एक तेज हँसिया था। 15तभी मन्दिर में से एक और
स्वर्गदूत बाहर निकला। उसने जो बादल पर बैठा था,
उससे ऊँचे स्वर में कहा, "हँसिया चला और फसल
इकट्ठी कर क्योंकि फसल काटने का समय आ पहुँचा
है। धरती की फसल पक चुकी है।" 16सो जो बादल पर
बैठा था, उसने धरती पर अपना हँसिया चलाया तथा
धरती की फसल काट ली गयी।

17फिर आकाश में स्थित मन्दिर में से एक और
स्वर्गदूत बाहर निकला। उसके पास भी एक तेज हँसिया
था। 18तभी वेदी से एक और स्वर्गदूत आया। अग्नि पर
उसका अधिकार था। उस स्वर्गदूत से ऊँचे स्वर में
कहा, "अपने तेज हँसिये का प्रयोग कर और धरती की
बेल से अंगूर के गुच्छे उतार ले क्योंकि इसके अंगूर
पक चुके हैं।" 19सो उस स्वर्गदूत ने धरती पर अपना
हँसिया चलाया और धरती के अंगूर उतार लिये और
उन्हें परमेश्वर के भयंकर कोप की धानी में डाल
दिया। 20अंगूर नगर के बाहर की धानी में रौंद कर
निचोड़ लिये गये। धानी में से लहू बह निकला। लहू घोड़े
की लगाम जितना ऊपर चढ़ आया और कोई तीन सौ
किलो मीटर की दूरी तक फैल गया।

अंतिम विनाश के दूत

15 आकाश में फिर मैंने एक और महान एवम्
अदभुत चिह्न देखा। मैंने देखा कि सात दूत हैं
जो सात अंतिम महाविनाशों को लिये हुए हैं। ये अंतिम
विनाश हैं क्योंकि इनके साथ परमेश्वर का कोप भी
समाप्त हो जाता है।

2फिर मुझे काँच का एक सागर सा दिखायी दिया
जिसमें मानो आग मिली हो। और मैंने देखा कि उन्होंने
उस पशु की मूर्ति पर तथा उसके नाम से सम्बन्धित
संख्या पर विजय पा ली है, वे भी उस काँच के सागर
पर खड़े हैं। उन्होंने परमेश्वर के द्वारा दी गयी वीणाएँ
ली हुई थीं। 3वे परमेश्वर के सेवक मूसा और मेमने
का यह गीत गा रहे थे:

"वे कार्य जिन्हें तू करता रहता, महान है। तेरे कार्य
अदभुत, तेरी शक्ति अनन्त है। हे प्रभु परमेश्वर, तेरे
मार्ग सच्चे और धार्मिकता से भरे हुए हैं। सभी जातियों
का राजा,

4हे प्रभु, तुझसे सब लोग सदा भयभीत रहेंगे। तेरा
नाम लेकर सब जन स्तुति करेंगे क्योंकि तू मात्र ही
पवित्र है। सभी जातियों तेरे सम्मुख उपस्थित हुई तेरी
उपासना करें। क्योंकि उजागर तथ्य यही है, हे प्रभु, तू
जो करता वही न्याय है।"

5इसके पश्चात् मैंने देखा कि स्वर्ग के मन्दिर अर्थात्
वाचा के तम्बू को खोला गया, 6और वे सातों दूत
जिनके पास अंतिम सात विनाश थे, मन्दिर से बाहर
आये। उन्होंने चमकीले स्वच्छ सन के उत्तम रेशों के
बने वस्त्र पहने हुए थे। अपने सीनों पर सोने के पटके
बाँधे हुए थे। 7फिर उन चार प्राणियों में से एक ने उन
सातों दूतों को सोने के कटोरे दिये जो सदा-सर्वदा के
लिये अमर परमेश्वर के कोप से भरे हुए थे। 8वह
मन्दिर परमेश्वर की महिमा और उसकी शक्ति के धुएँ
से भरा हुआ था ताकि जब तक उन सात दूतों के सात
विनाश पूरे न हो जायें, तब तक मन्दिर में कोई भी
प्रवेश न करने पाये।

परमेश्वर के प्रकोप के कटोरे

16 फिर मैंने सुना कि मन्दिर में से एक ऊँचा
स्वरउन सात दूतों से कह रहा है, "जाओ और
परमेश्वर के प्रकोप के सातों कटोरों को धरती पर
उँड़ेल दो।"

2इसलिए पहला दूत गया और उसने धरती पर अपना
प्याला उँड़ेल दिया। परिणामस्वरूप उन लोगों के, जिन
पर उस पशु का चिह्न अंकित था और जो उसकी मूर्ति
को पूजते थे, भयानक पीड़ा पूर्ण छाले फूट आये।

3इसके पश्चात् दूसरे दूत ने अपना कटोरा समुद्र पर
उँड़ेल दिया और सागर का जल मरे हुए व्यक्ति के लहू
के रूप में बदल गया और समुद्र में रहने वाले सभी
जीव-जन्तु मारे गये।

4फिर तीसरे दूत ने नदियों और जल के झरनों पर
अपना कटोरा उँड़ेल दिया। और वे लहू में बदल गये
5तभी मैंने जल के स्वामी स्वर्गदूत को यह कहते सुना:

"वह तू ही है जो न्यायी जो है, जो था सदा-सदा से तू
ही है जो पवित्र। तू ने जो किया है वह न्याय है।

6उन्हों ने पवित्र जनों का और नबियों का लहू बहाया।
तू न्यायी है तूने उनके पीने को बस रक्त ही दिया,
क्योंकि वे इसी के योग्य रहे।"

7फिर मैंने वेदी से आते हुए ये शब्द सुने: "हाँ, हे
सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर! तेरे न्याय सच्चे और
नेक हैं।"

8फिर चौथे दूत ने अपना प्याला सूरज पर उँड़ेल
दिया। इसलिए उसे लोगों को आग से जला डालने की
शक्ति प्रदान कर दी गयी। 9और लोग भयानक गर्मी से

मनुष्य के पुत्र देखें दानि. 7:13-14 यीशु स्वयं अपने लिए प्राय:
इन नाम का प्रयोग किया करता था।

झुलसने लगे। उन्होंने परमेश्वर के नाम को कोसा
क्योंकि इन विनाशों पर उसी का नियन्त्रण है। किन्तु
उन्होंने कोई मन न फिराया और न ही उसे महिमा
प्रदान की।

10इसके पश्चात् पाँचवे दूत ने अपना प्याला उस पशु
के सिंहासन पर उँड़ेल दिया और उस का राज्य अंधकार
में डूब गया। लोगों ने पीड़ा के मारे अपनी जीभ काट
ली। 11अपनी-अपनी पीड़ाओं और छालों के कारण
उन्होंने स्वर्ग के परमेश्वर की भर्त्सना तो की, किन्तु
अपने कर्मों के लिए मन न फिराया।

12फिर छठे दूत ने अपना कटोरा फरात नामक
महानदी पर उँडेल दिया और उसका पानी सूख गया।
इससे पूर्व दिशा के राजाओं के लिये मार्ग तैयार हो गया।
13फिर मैंने देखा कि उस विशालकाय अजगर के मुख
से, उस पशु के मुख से और कपटी नबियों के मुख से
तीन दुष्टात्माएँ निकलीं, जो मेंढक के समान दिख रहीं
थीं। 14ये शैतानी दुष्ट आत्माएँ थीं और उनमें चमत्कार
दिखाने की शक्ति थी। वे समूचे संसार के राजाओं को
परम शक्तिमान परमेश्वर के महान दिन, युद्ध करने
के लिये एकत्र करने को निकल पड़ीं।

15"सावधान! मैं दबे पाँव आकर तुम्हें अचरज में
डाल दूँगा। वह धन्य है जो जागता रहता है, और अपने
वस्त्रों को अपने साथ रखता है ताकि वह नंगा न फिरे
और लोग उसे लज्जित होते न देखें।"

16इस प्रकार वे दुष्टात्माएँ उन राजाओं को इकट्ठा
करके उस स्थान पर ले आई, जिसे इब्रानी भाषा में
हरमगिदोन कहा जाता है।

17इसके बाद सातवें दूत ने अपना प्याला हवा में
उँड़ेल दिया। और सिंहासन से उत्पन्न हुई एक घनघोर
ध्वनि मन्दिर में से यह कहती निकली, "यह समाप्त हो
गया।" 18तभी बिजली कौंधने लगी, गड़गड़ाहट और
मेघों का गर्जन-तर्जन होने लगा तथा एक बड़ा भूचाल
भी आया। मनुष्य के इस धरती पर प्रकट होने के बाद
का यह सबसे भयानक भूचाल था। 19वह महान् नगरी
तीन टुकड़ों में बिखर गयी तथा अधर्मियों के नगर
ध्वस्त हो गये। परमेश्वर ने बाबुल की महानगरी को
दण्ड देने के लिए याद किया था। ताकि वह उसे अपने
भभकते क्रोध की मदिरा से भरे प्याले को उसे दे दे।
20सभी द्वीप लुप्त हो गये। किसी पहाड़ तक का पता नहीं
चल पा रहा था। 21चालीस चालीस किलो के ओले,
आकाश से लोगों पर पड़ रहे थे। ओलों के इस महाविनाश
के कारण लोग परमेश्वर को कोस रहे थे क्योंकि यह
एक भयानक विपत्ति थी।

पशु पर बैठी स्त्री

17 इसके बाद उन सात दूतों में से जिनके पास
सात कटोरे थे, एक मेरे पास आया और बोला,
"आ, मैं तुझे बहुत सी नदियों के किनारे बैठी उस महान
वेश्या के दण्ड को दिखाऊँगा। 2धरती के राजाओं ने
उसके साथ व्यभिचार किया है और वे जो धरती पर
रहते हैं वे उसकी व्यभिचार की मदिरा से मतवाले हो
गए।"

3फिर मैं आत्मा से भावित हो उठा और वह दूत मुझे
बीहड़ वन में ले गया जहाँ मैंने एक स्त्री को लाल रंग के
एक ऐसे पशु पर बैठे देखा जो परमेश्वर के प्रति अपशब्दों
से भरा था। उसके सात सिर थे और दस सींग। 4उस
स्त्री ने बैजनी और लाल रंग के वस्त्र पहने हुए थे। वह
सोने, बहुमूल्य रत्नों और मोतियों से सजी हुई थी। वह
अपने हाथ में सोने का एक कटोरा लिये हुए थी जो बुरी
बातों और उसके व्यभिचार की अशुद्ध वस्तुओं से भरा
हुआ था। 5उसके माथे पर एक प्रतीकात्मक शीर्षक
था: 'महान बाबुल वेश्याओं और धरती पर की सभी
अश्लीलताओं की जननी।"

6मैंने देखा कि उस स्त्री ने संत जनों और उन व्यक्तियों
के लहू पीने से मतवाली हुई है। जिन्होंने यीशु के प्रति
अपने विश्वास की साक्षी को लिये हुए अपने प्राण त्याग
दिये।

उसे देखकर मैं बड़े अचरज में पड़ गया। 7तभी उस
दूत ने मुझसे पूछा, "तुम अचरज में क्यों पड़े हो? मैं तुम्हें
इस स्त्री के और जिस पशु पर वह बैठी है, उसके
प्रतीक को समझाता हूँ। सात सिरों और दस सीगों वाला
यह पशु 8जो तुमने देखा है, पहले कभी जीवित था,
किन्तु अब जीवित नहीं है। फिर भी वह पाताल से अभी
निकलने वाला है। और तभी उसका विनाश हो जायेगा।
फिर धरती के वे लोग जिन के नाम सृष्टि के प्रारम्भ से
ही जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे गये हैं, उस पशु को
देखकर चकित होंगे क्योंकि कभी वह जीवित था,
किन्तु अब जीवित नहीं है, पर फिर भी वह आने वाला
है।

9यही वह बिन्दू है जहाँ विवेकशील बुद्धि की
आवश्यकता है। ये सात सिर, वे सात पर्वत हैं, जिन पर
वह स्त्री बैठी है। वे सात सिर, उन सात राजाओं के भी
प्रतीक हैं, 10जिनमें से पहले पाँच का पतन हो चुका है,
एक अभी भी राज्य कर रहा है, और दूसरा अभी तक
आया नहीं है। किन्तु जब वह आयेगा तो उसकी यह
नियति है कि वह कुछ देर ही टिक पायेगा।

11वह पशु जो पहले कभी जीवित था, किन्तु अब
जीवित नहीं है, स्वयं आठवाँ राजा है जो उन सातों में से
ही एक है, उसका भी विनाश होने वाला है।

12जो दस सींग तुमने देखे हैं, वे दस राजा हैं, उन्होंने
अभी अपना शासन आरम्भ नहीं किया है परन्तु पशु
के साथ घड़ी भर राज्य करने को उन्हें अधिकार दिया
जायेगा। 13इन दसों राजाओं का एक ही प्रयोजन है कि
वे अपनी शक्ति और अपना अधिकार उस पशु को

सौप दें। 14वे मेमने के विरुद्ध युद्ध करेंगे किन्तु मेमना
अपने बुलाए हुओं, चुने हुओं और अनुयायिओं के साथ
उन्हें हरा देगा। क्योंकि वह राजाओं का राजा और
प्रभुओं का प्रभु है।”

15उस दूत ने मुझसे फिर कहा, “वे नदियाँ जिन्हें
तुमने देखा था, जहाँ वह वेश्या बैठी थी, विभिन्न कुलों,
समुदायों, जातियों और भाषाओं की प्रतीक है। 16वे दस
सींग जिन्हें तुमने देखा, और वह पशु उस वेश्या से घृणा
करेंगे तथा उससे सब कुछ छीन कर उसे नंगा छोड़
जायेंगे। वे शरीर को खा जायेंगे और उसे आग में जला
डालेंगे। 17अपने प्रयोजन को पूरा कराने के लिये परमेश्वर
ने उन सब को एक मत करके, उनके मन में यही
बैठा दिया है कि वे, जब तक परमेश्वर के वचन पूरे
नहीं हो जाते, तब तक शासन करने का अपना अधिकार
उस पशु को सौंप दें। 18वह स्त्री जो तुमने देखी थी, वह
महानगरी थी, जो धरती के राजाओं पर शासन करती
है।”

बाबुल का विनाश

18 इसके बाद मैंने एक और स्वर्गदूत को आकाश
से बड़ी शक्ति के साथ नीचे उतरते देखा। उसकी
महिमा से सारी धरती प्रकाशित हो उठी। 2शक्तिशाली
स्वर से पुकारते हुए वह बोला:

“वह मिट गयी, बाबुल नगरी मिट गयी। वह दानवों
का आवास बन गयी थी। हर किसी दुष्टात्मा का वह
बसेरा बन गयी थी हर किसी घृणित पक्षी का वह
बसेरा बन गयी थी! हर किसी अपवित्र, निन्दा-योग्य
पशु का।

3 क्योंकि उसने सब जनों को व्यभिचार के क्रोध की
मदिरा पिलायी थी। इस जगत के शासकों ने जो स्वयं
जगाई थी उससे व्यभिचार किया था। और उसके भोग
व्यय से जगत के व्यापारी सम्पन्न बने थे।

4आकाश से मैंने एक और स्वर सुना जो कह रहा
था:

“हे, मेरे जनो, तुम वहाँ से बाहर निकल आओ तुम
उसके पापों में कहीं साक्षी न बन जाओ; कहीं ऐसा न
हो, तुम पर ही वे नाश गिरें जो उसके रहे थे,

5क्योंकि उसके पाप की ढेरी बहुत ऊँची गगन तक
है। परमेश्वर उसके बुरे कर्मो को याद कर रहा है।

6हे! तुम भी तो उससे ठीक वैसा व्यवहार करो जैसा
तुम्हारे साथ उसने किया था। जो उसने तुम्हारे साथ
किया उससे दुगुना उसके साथ करो। दूसरों के हेतु
उसने जिस कटोरे में मदिरा मिलाई वही मदिरा तुम
उसके हेतु दुगनी मिलाओ।

7क्योंकि जो महिमा और वैभव उसने स्वयं को दिया
तुम उसी ढँग से उसे यातनाएँ और पीड़ा दो क्योंकि वह
स्वयं अपने आप ही से कहती रही है, ‘मैं अपनी नृपासन
विराजित महारानी मैं विधवा नहीं फिर शोक क्यों
करूँगी?’

8इसलिए वे नाश जो महा मृत्यु, महारोदन और वह
दुर्भिक्ष भीषण है। उसको एक ही दिन घेर लेंगे, और
उसको जला कर भस्म कर देंगे क्योंकि परमेश्वर प्रभु
जो बहुत सक्षम है, उसी ने इसका यह न्याय किया है।

9जब धरती के राजा, जिन्होंने उसके साथ व्यभिचार
किया और उसके भोग-विलास में हिस्सा बटाया, उसके
जलने से निकलते घुआँ को देखेंगे तो वे उसके लिये
रोयेंगे और विलाप करेंगे। 10वे उसके कष्टों से डर कर
वहीं से बहुत दूर ही खड़े हुए कहेंगे:

“हे! शक्तिशाली नगर बाबुल! भयावह ओ, हाय
भयानक! तेरा दण्ड तुझको बस घड़ी भर में मिल
गया।”

11इस धरती पर के व्यापारी भी उसके कारण रोयेंगे
और विलाप करेंगे क्योंकि उनकी वस्तुएँ अब कोई
और मोल नहीं लेगा, 12वस्तुएँ-सोने की, चाँदी की,
बहुमूल्य रत्न मोती, मलमल, बैजनी, रेशमी और किरमिजी
वस्त्र, हर प्रकार की सुंगधित लकड़ी हाथी दाँत की
बनी हुई हर प्रकार की वस्तुएँ, अनमोल लकड़ी, काँसे
लोहे और संगमरमर से बनी हुई तरह-तरह की वस्तुएँ
13दार चीनी, गुलमेंहदी, सुगंधित धूप, रस गंध, लोहबान,
मदिरा, जैतून का तेल, मैदा, गेहूँ, मवेशी, भेड़े, घोड़े
और रथ, दास, हाँ, मनुष्यों की देह और उनकी आत्माएँ
तक।

14“हे बाबुल! वे सभी उत्तम वस्तुएँ, जिनमें तेरा हृदय
रमा था, तुझे सब छोड़ चली गयी हैं तेरा सब विलास
वैभव भी आज नहीं है। अब न कभी वे तुझे मिलेंगी।”

15वे व्यापारी जो इन वस्तुओं का व्यापार करते थे
और उससे सम्पन्न बन गये थे, वे दूर-दूर ही खड़े रहेंगे
क्योंकि वे उसके कष्टों से डर गये हैं। वे रोते-बिलखते
16कहेंगे:

“कितना भयावह और कितना भयानक है, महानगरी!
यह उसके हेतु हुआ। उत्तम मलमली वस्त्र पहनती थी
बैजनी किर और मिजी! और स्वर्ण से बहुमूल्य रत्नों से
सुसज्जित मोतियो से सजती ही रही थी।’

17और बस घड़ी भर में   यह सारी सम्पत्ति मिट
गयी।”

फिर जहाज का हर कप्तान, या हर वह व्यक्ति जो
जहाज से चाहे कहीं भी जा सकता है तथा सभी मल्लाह
और वे सब लोग भी जो सागर से अपनी जीविका चलाते
हैं, उस नगरी से दूर ही खड़े रहे 18और जब उन्होंने
उसके जलने से उठती धुआँ को देखा तो वे पुकार उठे,
“इस विशाल नगरी के समान और कौन सी नगरी
है?”

19फिर उन्होंने अपने सिर पर धूल डालते हुए रोते-
बिलखते कहा,

“महानगरी! हाय यह कितना भयावह! हाय यह कितना
भयानक। जिनके पास जलयान थे, सिंधु जल पर
सम्पत्तिशाली बन गये, क्योंकि उसके पास सम्पत्ति थी
पर अब बस घड़ी भर में नष्ट हो गयी।
20उसके हेतु आनन्द मनाओ तुम हे स्वर्ग! प्रेरित!
और नबियो! तुम परमेश्वर के जनों आनन्द मनाओ!
क्योंकि प्रभु ने उसको ठीक वैसा दण्ड दे दिया है जैसा
वह दण्ड उसने तुम्हें दिया था।
21फिर एक शक्तिशाली स्वर्गदूत ने चक्की के पाट
जैसी एक बड़ी सी चट्टान उठाई और उसे सागर में
फेंकते हुए कहा,
“महानगरी! हे बाबुल महानगरी! ठीक ऐसे ही तू गिरा
दी जायेगी तू फिर लुप्त हो जायेगी, और तू नहीं मिल
पायेगी।
22तुझमें फिर कभी नहीं वीणा बजेगी, और गायक
कभी भी स्तुति पाठ न कर पायेंगे। वंशी कभी नहीं
गूँजेंगी कोई भी तुरही तान न सुनेगा, तुझमें अब कोई
कला शिल्पी कभी न मिलेगा अब तुझमें कोई भी कला
न बचेगा! अब चक्की पीसने का स्वर कभी भी ध्वनित
न होगा।
23दीप की किंचित किरण तुझमें कभी भी न चमकेगी,
अब तुझमें किसी वर की किसी वधु की मधुर ध्वनि
कभी न गुंजेगी। तेरे व्यापारी जगती के महा मनुज थे
तेरे जादू ने सब जातों को भरमाया
24नगरी ने नबियों का संत जनों का उन सब ही का
लहू बहाया था। इस धरती पर जिनको बलि पर चढ़ा
दिया था।”

स्वर्ग में परमेश्वर की स्तुति

19 इसके पश्चात् मैंने भीड़ का सा एक ऊँचा स्वर
सुना। लोग कह रहे थे:
“हल्लिलूय्याह! परमेश्वर की जय हो, जय हो! महिमा
और सामर्थ्य सदा हो!
2उसके न्याय सदा सच्चे हैं, धर्मयुक्त हैं, उस महती
वेश्या का उसने न्याय किया है जिसने अपने व्यभिचार
से इस धरती को भ्रष्ट किया था जिनको उसने मार
दिया उन दास जनों की हत्या का प्रतिशोध हो चुका।”
3उन्होंने यह फिर गाया: “हल्लिलूय्याह! जय हो
उसकी उससे धुआँ युग युग उठेगा।”
4फिर चौबीसों प्राचीनों और चारों प्राणियों ने सिंहासन
पर विराजमान परमेश्वर को झुक कर प्रणाम किया
और उसकी उपासना करते हुए गाने लगे: “आमीन!
हल्लिलूय्याह” जय हो उसकी
5स्वर्ग से फिर एक आवाज आयी जो कह रही थी:
“हे उसके सेवको, तुम सभी हमारे परमेश्वर का स्तुति
गान करो तुम चाहे छोटे हो, चाहे बड़े बने हो, जो उससे
डरते रहते हो।”
6फिर मैंने एक बड़े जनसमुद्र का सा शब्द सुना जो
एक विशाल जल-प्रवाह और मेघों के शक्तिशाली
गर्जन-तर्जन जैसा था। लोग गा रहे थे:
“हल्लिलूय्याह! उसकी जय हो, क्योंकि हमारा प्रभु
परमेश्वर! सर्वशक्ति मान राज्य कर रहा है।
7इसलिए आओ, खुश हो-हो कर आनन्द मनाएँ आओ,
उसको महिमा देवें! क्योंकि अब मेमने के ब्याह का
समय आ गया उसकी दुल्हन सजी-धजी तैयार हो गयी।
8उसको अनुमति मिली स्वच्छ धवल पहन ले वह
निर्मल मलमल।”
(यह मलमल संत जनों के धर्ममय कार्यों का प्रतीक
है।)
9फिर वह मुझसे कहने लगा, “लिखो वे धन्य हैं जिन्हें
इस विवाह भोज में बुलाया गया है।” उसने फिर कहा,
“ये परमेश्वर के सत्य वचन हैं।”
10और मैं उसकी उपासना करने के लिये उसके
चरणों में गिर पड़ा। किन्तु वह मुझसे बोला, “सावधान।
ऐसा मत कर। मैं तो तेरे और तेरे बंधुओं के साथ
परमेश्वर का संगी सेवक हूँ जिन पर यीशु के द्वारा
साक्षी दिये गये सन्देश के प्रचार का दायित्व है। परमेश्वर
की उपासना कर क्योंकि यीशु के द्वारा प्रमाणित सन्देश
इस बात का प्रमाण है कि उनमें एक नबी की आत्मा
है।”

सफ़ेद घोड़े का सवार

11फिर मैंने स्वर्ग को खुलते देखा और वहाँ मेरे
सामने एक सफेद घोड़ा था। घोड़े का सवार ‘विश्वसनीय’
और ‘सत्य’ कहलाता था क्योंकि न्याय के साथ वह
निर्णय करता है और युद्ध करता है। 12उसकी आँखें
ऐसी थीं मानों अग्नि की लपट हो। उसके सिर पर बहुत
से मुकुट थे। उस पर एक नाम लिखा था, जिसे उसके
अतिरिक्त कोई और नहीं जानता। 13उसने ऐसा वस्त्र
पहना था जिसे लहू में डुबाया गया था। उसे नाम दिया
गया था परमेश्वर का वचन।
14सफेद घोड़ों पर बैठी स्वर्ग की सेनाएँ उसके पीछे
पीछे चल रही थीं। उन्होंने शुद्ध श्वेत मलमल के वस्त्र
पहने थे। 15अधर्मियों पर प्रहार करने के लिये उसके
मुख से एक तेज धार की तलवार बाहर निकल रही
थी। वह उन पर लोहे के दण्ड से शासन करेगा और
सर्वशक्ति मान्न परमेश्वर के प्रचण्ड क्रोध की धानी में
वह अंगूरों का रस निचोड़ेगा। 16उसके वस्त्र तथा उसकी
जाँघ पर लिखा था:

राजाओं का राजा, और प्रभुओं का प्रभु

17इसके बाद मैंने देखा कि सूर्य के ऊपर एक स्वर्गदूत
खड़ा है। उसने ऊँचे आकाश में उड़ने वाले सभी पक्षियों

से ऊँचे स्वर में कहा, “आओ, परमेश्वर के महा भोज
के लिये एकत्र हो जाओ, 18ताकि तुम शासकों सेनापतियों
प्रसिद्ध पुरुषों, घोड़ों और उनके सवारों का माँस खा
सको। और सभी लोगों स्वतन्त्र व्यक्तियों, सेवकों छोटे
लोगों और महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों की देहों को खा सको।”
19फिर मैंने उस पशु को और धरती के राजाओं को
देखा। उनके साथ उनकी सेना थी। वे उस घुड़सवार
और उसकी सेना से युद्ध करने के लिये एक साथ आ
जुटे थे। 20पशु को घेर लिया गया था। उसके साथ वह
झूठा नबी भी था जो उसके सामने चमत्कार दिखाया
करता था और उनको छला करता था जिन पर उस
पशु की छाप लगी थी और जो उसकी मूर्ति की उपासना
किया करते थे। उस पशु और झूठे नबी दोनों को ही
जलते गंधक की भभकती झील में जीवित ही डाल दिया
गया था। 21घोड़े के सवार के मुख से जो तलवार
निकल रही थी, बाकी के सैनिक उससे मार डाले गये
फिर पक्षियों ने उनके शवों के माँस को भर पेट खाया।

एकहज़ार वर्ष

20 फिर आकाश से मैंने एक स्वर्गदूत को नीचे
उतरते देखा। उसके हाथ में पाताल की चाबी
और एक बड़ी साँकल थी। 2उसने उस पुराने महा सर्प
को पकड़ लिया जो दैत्य यानी शैतान है फिर एक हजार
वर्ष के लिये उसे साँकल से बाँध दिया। 3तब उस स्वर्गदूत
ने उसे महा गर्त में धकेल कर ताला लगा दिया और
उस पर कपाट लगा कर मुहर लगा दी ताकि जब तक
हजार साल पूरे न हो जायें वह लोगों को धोखा न दे
सके। हजार साल पूरे होने के बाद थोड़े समय के लिये
उसे छोड़ा जाना है।
4फिर मैंने कुछ सिंहासन देखे जिन पर कुछ लोग बैठे
थे। उन्हें न्याय करने का अधिकार दिया गया था। और
मैंने उन लोगों की आत्माओं को देखा जिनके सिर, उस
सत्य के कारण, जो यीशु द्वारा प्रमाणित है, और
परमेश्वर के संदेश के कारण काटे गये थे, जिन्होंने
उस पशु या उसकी प्रतिमा की कभी उपासना नहीं की
थी। तथा जिन्होंने अपने माथों पर या अपने हाथों पर
उसका संकेत चिह्न धारण नहीं किया था। वे फिर से
जीवित हो उठे और उन्होंने मसीह के साथ एक हजार
वर्ष तक राज्य किया। 5(शेष लोग हज़ार वर्ष पूरे होने
तक फिर से जीवित नहीं हुए।) यह पहला पुनरुत्थान
है। 6वह धन्य है और पवित्र भी है जो पहले पुनरुत्थान
में भाग ले रहा है। इन व्यक्तियों पर दूसरी मृत्यु को कोई
अधिकार प्राप्त नहीं है। बल्कि वे तो परमेश्वर और
मसीह के अपने याजक होंगे और उसके साथ एक
हज़ार वर्ष तक राज्य करेंगे।
7फिर एक हज़ार वर्ष पूरे हो चुकने पर शैतान को
उसके बंदीगृह से छोड़ दिया जायेगा। 8और वह समूची
धरती पर फैली जातियों को छलने के लिये निकल
पड़ेगा। वह गोग और मागोग को छलेगा। वह उन्हें युद्ध
के लिये एकत्र करेगा। वे उतने ही अनगिनत होगें
जितने समुद्र तट के रेत-कण। 9शैतान की सेना समूची
धरती पर फैल जायेगी और वे संत जनों के डेरे और
प्रिय नगरी को घेर लेंगे। किन्तु आग उतरेगी और उन्हें
निगल जाएगी, 10इस के पश्चात् उस शैतान को जो
उन्हें छलता रहा है भभकती गंधक की झील में
फेंक दिया जायेगा जहाँ वह पशु और झूठे नबी, दोनों ही
डाले गये हैं। सदा-सदा के लिये उन्हें रात दिन तड़पाया
जायेगा।

संसार के लोगों का न्याय

11फिर मैंने एक विशाल श्वेत सिंहासन को और उसे
जो उस पर विराजमान था, देखा। उसके सामने से
धरती और आकाश भाग खड़े हुए। उनका पता तक
नहीं चल पाया। 12फिर मैंने छोटे और बड़े मृतकों को
देखा। वे सिंहासन के आगे खड़े थे। कुछ पुस्तकें खोली
गयीं। फिर एक और पुस्तक खोली गयी। यही ‘जीवन
की पुस्तक है। उन कर्मों के अनुसार जो पुस्तकों में
लिखे गये थे, मृतकों का न्याय किया गया। 13जो मृतक
सागर में थे, उन्हें सागर ने दे दिया, तथा मृत्यु और
पाताल ने भी अपने अपने मृतक सौंप दिये। प्रत्येक का
न्याय उसके कर्मों के अनुसार किया गया। 14इसके बाद
मृत्यु को और पाताल को आग की झील में झोंक दिया
गया। यह आग की झील ही दूसरी मृत्यु है। 15यदि किसी
का नाम ‘जीवन की पुस्तक’ में लिखा नहीं मिला, तो
उसे भी आग की झील में धकेल दिया गया।

नया यरूशलेम

21 फिर मैंने एक नया स्वर्ग और नयी धरती
देखी। क्योंकि पहला स्वर्ग और पहली धरती
लुप्त हो चुके थे। और वह सागर भी अब नहीं रहा था।
2मैंने यरुशलेम की वह पवित्र नगरी भी आकाश से
बाहर निकल कर परमेश्वर की ओर से नीचे उतरते
देखी। उस नगरी को ऐसे सजाया गया था जैसे मानों
किसी दुल्हन को उसके पति के लिये सजाया गया हो।
3तभी मैंने आकाश में एक ऊँची ध्वनि सुनी। वह कह
रही थी, “देखो अब परमेश्वर का मन्दिर मनुष्यों के
बीच है और वह उन्हीं के बीच घर बनाकर रहा
करेगा। वे उसकी प्रजा होंगे और स्वयं परमेश्वर उनका
परमेश्वर होगा। 4उनकी आँख से वह हर आँसू पोंछ
डालेगा। और वहाँ अब न कभी मृत्यु होगी, न शोक के
कारण कोई रोना-धोना और नहीं कोई पीड़ा। क्योंकि
वे सब पुरानी बातें अब समाप्त हो चुकी हैं।”
5इस पर जो सिंहासन पर बैठा था, वह बोला, “देखो,
मैं सब कुछ को नया किये दे रहा हूँ।” उसने फिर

कहा, "इसे लिख ले क्योंकि ये वचन विश्वास करने योग्य हैं और सत्य हैं।"

6वह मुझसे फिर बोला, "सब कुछ पूरा हो चुका है। मैं ही अल्फा हूँ और मैं ही ओमेगा हूँ। मैं ही आदि हूँ और मैं ही अन्त हूँ।" जो भी प्यासा है मैं उसे जीवन-जल के स्रोत से सेंत-मेत में मुक्त भाव से जल पिलाऊँगा। 7जो विजयी होगा, उस सब कुछ का मालिक बनेगा। मैं उसका परमेश्वर होऊँगा और वह मेरा पुत्र होगा। 8किन्तु कायरों अविश्वासियों, दुर्बुद्धियों, हत्यारों, व्यभिचारियों, जादूटोना करने वालों मूर्ति-पूजकों और सभी झूठ बोलने वालों को भभकती गंधक की जलती झील में अपना हिस्सा बँटाना होगा। यही दूसरी मृत्यु है।"

9फिर उन सात दूतों में से, जिनके पास सात अंतिम विनाशों से भरे कटोरे थे, एक आगे आया और मुझसे बोला, "यहाँ आ। मैं तूझे वह दुल्हन दिखा दूँ जो मेमने की पत्नी है।"

10अभी मैं आत्मा के आवेश में ही था कि वह मुझे एक विशाल और ऊँचे पर्वत पर ले गया। फिर उसने मुझे यरुशलेम की पवित्र नगरी का दर्शन कराया। वह परमेश्वर की ओर से आकाश से नीचे उतर रही थी।

11वह परमेश्वर की महिमा से मण्डित थी। वह सर्वथा निर्मल यशब नामक महामूल्यवान रत्न के समान चमक रही थी। 12नगरी के चारों ओर एक विशाल ऊँचा परकोटा था जिसमें बारह द्वार थे। उन बारहों द्वारों पर बारह स्वर्गदूत थे। तथा बारहों द्वारों पर इस्राएल के बारह कुलों के नाम अंकित थे। 13इनमें से तीन द्वार पूर्व की ओर थे, तीन द्वार उत्तर की ओर, तीन द्वार दक्षिण की ओर और तीन द्वार पश्चिम की ओर थे। 14नगर का परकोटा बारह नीवों पर बनाया गया था तथा उन पर मेमने के बारह प्रेरितों के नाम अंकित थे।

15जो स्वर्गदूत मुझसे बात कर रहा था, उसके पास सोने से बनी नापने की एक छड़ी थी जिससे वह उस नगर को, उसके द्वारों को और उसके परकोटे को नाप सकता था। 16नगर को वर्गाकार में बसाया गया था। यह जितना लम्बा था उतना ही चौड़ा था। उस स्वर्गदूत ने उस छड़ी से उस नगरी को नापा। वह कोई बारह हज़ार स्टोडिया पायी गयी। उसकी लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई एक जैसी थी। 17स्वर्गदूत ने फिर उसके परकोटे को नापा। वह कोई एक सौ चवालीस हाथ था। उसे मनुष्य के हाथों की लम्बाई से नापा गया था जो हाथ स्वर्गदूत का भी हाथ है। 18नगर का परकोटा यशब नामक रत्नें का बना था तथा नगर को काँच के समान चमकते शुद्ध सोने से बनाया गया था। 19नगर के परकोटे की नीवें हर प्रकार के बहुमूल्य रत्नों से सजाई गयी थी। नींव का पहला पत्थर यशब का बना था, दूसरी नीलम से, तीसरी स्फटिक से, चौथी पन्ने से, 20पाँचवीं गोमेद से, छठी मानक से, सातवीं पीत मणि से, आठवीं पेरोज से, नवीं पुखराज से, दसवीं लहसनिया से, ग्यारहवीं धूम्रकांत से, और बारहवीं चन्द्रकाँत मणि से बनी थी। 21बारहों द्वार बारह मोतियों से बने थे, हर द्वार एक-एक मोती से बना था। नगर की गलियाँ स्वच्छ काँच जैसे शुद्ध सोने की बनी थीं।

22नगर में मुझे कोई मन्दिर दिखाई नहीं दिया। क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेमना ही उसके मन्दिर थे। 23उस नगर को किसी सूर्य या चन्द्रमा की कोई आवश्यकता नहीं है कि वे उसे प्रकाश दें; क्योंकि वह तो परमेश्वर के तेज से आलोकित था। और मेमना ही उस नगर का दीपक है। 24सभी जातियों के लोग इसी दीपक के प्रकाश के सहारे आगे बढ़ेंगे। और इस धरती के राजा अपनी भव्यता को इस नगर में लायेंगे। 25दिन के समय इसके द्वार कभी बंद नहीं होंगे और वहाँ रात तो कभी होगी ही नहीं। 26जातियों के कोष और धन सम्पत्ति को उस नगर में लाया जायेगा। 27कोई अपवित्र वस्तु तो उसमें प्रवेश तक नहीं कर पायेगी और न ही लज्जापूर्ण कार्य करने वाले और झूठ बोलने वाले उसमें प्रवेश कर पाएँगे उस नगरी में तो प्रवेश बस उन्हीं को मिलेगा जिनके नाम मेमने की जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।

22 इसके पश्चात् उस स्वर्गदूत ने मुझे जीवन देने वाले जल की एक नदी दिखाई। वह नदी स्फटिक की तरह उज्ज्वल थी। वह परमेश्वर और मेमने के सिंहासन के निकलती हुई 2नगर की गलियों के बीच से होती हुई बह रही थी। नदी के दोनों तटों पर जीवन वृक्ष उगा था। उन पर हर साल बारह फसल लगा करतीं थीं। इसके प्रत्येक वृक्ष पर प्रतिमास एक फसल लगती थी तथा इन वृक्षों की पत्तियाँ अनेक जातियों को निरोग करने के लिये थीं। 3वहाँ किसी प्रकार का कोई अभिशाप नहीं होगा। परमेश्वर और मेमने का सिंहासन वहाँ बना रहेगा। तथा उसके सेवक उसकी उपासना करेंगे 4तथा उसका नाम उनके माथों पर अंकित रहेगा। 5वहाँ कभी रात नहीं होगी और न ही उन्हें सूर्य के अथवा दीपक के प्रकाश की कोई आवश्यकता रहेगी। क्योंकि उन पर प्रभु परमेश्वर अपना प्रकाश डालेगा और वे सदा सदा शासन करेंगे।

6फिर उस स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, "ये वचन विश्वास करने योग्य और सत्य हैं। प्रभु ने जो नबियों के आत्माओं का परमेश्वर है, अपने सेवकों को, जो कुछ शीघ्र ही घटने वाला है, उसे जताने के लिये अपना स्वर्गदूत भेजा है।"

7"सुनो! मैं शीघ्र ही आ रहा हूँ। धन्य हैं वह जो इस पुस्तक में दिये गये उन वचनों का पालन करते हैं जो भविष्यवाणी हैं।"

8मैं यूहन्ना हूँ। मैंने ये बातें सुनी और देखी हैं। जब मैंने ये बातें देखी सुनी तो उस स्वर्गदूत के चरणों में गिर कर

मैंने उसकी उपासना की जो मुझे ये बातें दिखाया करता
था। 9उसने मुझसे कहा, "सावधान, तू ऐसा मत कर।
क्योंकि मैं तो तेरा, तेरे बंधु नबियों का जो इस पुस्तक
में लिखे वचनों का पालन करते हैं, एक सह-सेवक हूँ।
बस परमेश्वर की ही उपासना कर।"

10उसने मुझसे फिर कहा, "इस पुस्तक में जो
भविष्यवाणियाँ दी गयी हैं, उन्हें छुपा कर मत रख
क्योंकि इन बातों के घटित होने का समय निकट ही है।
11जो बुरा करते चले आ रहे हैं, वे बुरा करते रहें।
जो अपवित्र बने हुए हैं, वे अपवित्र ही बने रहें। जो
धर्मी हैं, वे धर्मी ही करते रहें। जो पवित्र हैं वे पवित्र
बने रहें।"

12"देखो, मैं शीघ्र ही आ रहा हूँ और अपने साथ
तुम्हारे लिये प्रतिफल ला रहा हूँ। जिसने जैसे कर्म किये
हैं, मैं उन्हें उसके अनुसार ही दूँगा। 13मैं ही अल्फा हूँ
और मैं ही ओमेगा हूँ। मैं ही पहला हूँ और मैं ही अन्तिम
हूँ।" मैं ही आदि और मैं ही अन्त हूँ।

14"धन्य हैं वह जो अपने वस्त्रों को धो लेते हैं। उन्हें
जीवन-वृक्ष के फल खाने का अधिकार होगा। वे द्वार
से होकर नगर में प्रवेश करने के अधिकारी होंगे।
15किन्तु 'कुत्ते', जादू-टोना करने वाले, व्यभिचारी, मूर्ति
पूजक या प्रत्येक वह जो झूठ पर चलता है और झूठ
को प्रेम करता है, बाहर ही पड़े रहेंगे।"

16"स्वयं मुझ यीशु ने तुम लोगों के लिये और
कलीसियाओं के लिये, इन बातों की साक्षी देने को
अपना स्वर्गदूत भेजा है। मैं दाऊद के परिवार का वंशज
हूँ। मैं भोर का दमकता हुआ तारा हूँ।"

17आत्मा और दुल्हन कहती है "आ!" और जो इसे
सुनता है, वह भी कहे, "आ" और जो प्यासा हो वह भी
आये और जो चाहे वह भी इस जीवन दायी जल के
उपहार को मुक्त भाव से ग्रहण करे।

18मैं शपथ पूर्वक उन व्यक्तियों के लिये घोषणा कर
रहा हूँ जो इस पुस्तक में लिखे भविष्यवाणी के वचनों
को सुनते हैं: उनमें से यदि कोई भी उनमें कुछ भी और
जोड़ेगा तो इस पुस्तक में लिखे विनाश परमेश्वर उस
पर ढायेगा। 19और यदि नबियों की इस पुस्तक में लिखे
वचनों में से कोई कुछ घटायेगा तो परमेश्वर इस पुस्तक
में लिखे जीवन-वृक्ष और पवित्र नगरी में से उसका
भाग उससे छीन लेगा। 20यीशु जो इन बातों का साक्षी है,
वह कहता है, "हाँ! मैं शीघ्र ही आ रहा हूँ।"

आमीन। हे प्रभु यीशु आ!

21प्रभु यीशु का अनुग्रह सबके साथ रहे! आमीन।